उत्पत्ति

संसार का आरम्भ

पहला दिन–उजियाला

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। [2]पृथ्वी बेडौल और सुनसान थी। धरती पर कुछ भी नहीं था। समुद्र पर अंधेरा छाया था और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।* [3]तब परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो"* और उजियाला हो गया। [4]परमेश्वर ने उजियाले को देखा और वह जान गया कि यह अच्छा है। तब परमेश्वर ने उजियाले को अंधियारे से अलग किया। [5]परमेश्वर ने उजियाले का नाम "दिन" और अंधियारे का नाम "रात" रखा।

शाम हुई और तब सवेरा हुआ। यह पहला दिन था।

दूसरा दिन–आकाश

[6]तब परमेश्वर ने कहा, "जल को दो भागों में अलग करने के लिए वायुमण्डल* हो जाए।" [7]इसलिए परमेश्वर ने वायुमण्डल बनाया और जल को अलग किया। कुछ जल वायुमण्डल के ऊपर था और कुछ वायुमण्डल के नीचे। [8]परमेश्वर ने वायुमण्डल को "आकाश" कहा!

तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह दूसरा दिन था।

तीसरा दिन–सूखी धरती और पेड़ पौधे

[9]और तब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी का जल एक जगह इकट्ठा हो जिससे सूखी भूमि दिखाई दे" और ऐसा ही हुआ। [10]परमेश्वर ने सूखी भूमि का नाम "पृथ्वी" रखा और जो पानी इकट्ठा हुआ था, उसे "समुद्र" का नाम दिया। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

[11]तब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी, घास, पौधे जो अन्न उत्पन्न करते हैं, और फलों कें पेड़ उगाये। फलों के पेड़ ऐसे फल उत्पन्न करें जिनके फलों के अन्दर बीज हो और हर एक पौधा अपनी जाति का बीज बनाए। इन पौधों को पृथ्वी पर उगनें दो" और ऐसा ही हुआ। [12]पृथ्वी ने घास और पौधे उपजाए जो अन्न उत्पन्न करते हैं और ऐसे पेड़, पौधे उगाए जिनके फलों के अन्दर बीज होते हैं। हर एक पौधे ने अपने जाति अनुसार बीज उत्पन्न किये और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

[13]तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह तीसरा दिन था।

चौथा दिन–सूरज, चाँद और तारे

[14]तब परमेश्वर ने कहा, "आकाश में ज्योतियाँ होने दो। यह ज्योतियाँ दिन को रात से अलग करेंगी। यह ज्योतियाँ एक विशेष चिन्ह के रूप में प्रयोग की जाएंगी जो यह बताएंगी कि विशेष सभाएं* कब शुरू

मण्डराता था हिब्रू भाषा में इस शब्द का अर्थ है "ऊपर उड़ना" या "तेजी से ऊपर से नीचे आना। जैसे कि एक पक्षी अपने बच्चों की रक्षा के लिए घोंसले के ऊपर मण्डराता है।

तब परमेश्वर ... उजियाला हो "उत्पत्ति में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का सृजन किया। जबकि [2]पृथ्वी का कोई विशेष आकार न था, और समुद्र के ऊपर घनघोर अंधेरा छाया था और परमेश्वर का आत्मा पानी के ऊपर मण्डरा रहा था। [3]परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो!" या, "जब परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना शुरू की, [2]जबकि पृथ्वी बिल्कुल खाली थी, और समुद्र पर अंधेरा छाया था, और पानी के ऊपर एक जोरदार हवा बही, [3]परमेश्वर ने कहा, 'उजियाला होने दो।'"

वायुमण्डल इस हिब्रू शब्द का अर्थ "फैलाव" "विस्तार" या "मण्डल" है।

विशेष सभाएं महीनों और सालों का शुरू होने का निर्णय इस्राएली सूरज और चाँद के द्वारा करते थे और बहुत सी यहूदी छुट्टियाँ और विशेष सभाएं नये चाँद या पूर्णिमा के समय शुरु होते थे।

की जाएं और यह दिनों तथा वर्षों के समयों को निश्चित करेंगे। [15]वे पृथ्वी पर प्रकाश देने के लिए आकाश में ज्योतियाँ ठहरें" और ऐसा ही हुआ।

[16]तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ बनाई। परमेश्वर ने उन में से बड़ी ज्योति को दिन पर राज्य करने के लिए बनाया और छोटी ज्योति को रात पर राज्य करने के लिए बनाया। परमेश्वर ने तारे भी बनाए। [17]परमेश्वर ने इन ज्योतियों को आकाश में इसलिए रखा कि वह पृथ्वी पर चमकें। [18]परमेश्वर ने इन ज्योतियों को आकाश में इसलिए रखा कि वह दिन तथा रात पर राज्य करें। इन ज्योतियों ने उजियाले को अंधकार से अलग किया और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

[19]तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह चौथा दिन था।

पाँचवाँ दिन–मछलियाँ और पक्षी

[20]तब परमेश्वर ने कहा, "जल, अनेक जलचरों से भर जाए और पक्षी पृथ्वी के ऊपर वायुमण्डल में उड़ें।" [21]इसलिए परमेश्वर ने समुद्र में बहुत बड़े बड़े जलजन्तु बनाए। परमेश्वर ने समुद्र में विचरण करने वाले सभी जीवित प्राणियों को बनाया। समुद्र में भिन्न–भिन्न जाति के जलजन्तु हैं। परमेश्वर ने इन सब की सृष्टि की। परमेश्वर ने हर तरह के पक्षी भी बनाये जो आकाश में उड़ते हैं। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

[22]परमेश्वर ने इन जानवरों को आशीष दी, और कहा, "जाओ और बहुत से बच्चे उत्पन्न करो और समुद्र के जल को भर दो। पक्षी भी बहुत बढ़ जाये।"

[23]तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह पाँचवाँ दिन था।

छठवाँ दिन–भूमि के जीवजन्तु और मनुष्य

[24]तब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी हर एक जाति के जीवजन्तु उत्पन्न करे। बहुत से भिन्न जाति के जानवर हों। हर जाति के बड़े जानवर और छोटे रेंगनेवाले जानवर हो और यह जानवर अपने जाति के अनुसार और जानवर बनाए" और यही सब हुआ।

[25]तो, परमेश्वर ने हर जाति के जानवरों को बनाया। परमेश्वर ने जंगली जानवर, पालतू जानवर, और सभी छोटे रेंगनेवाले जीव बनाये और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

[26]तब परमेश्वर ने कहा, "अब हम मनुष्य* बनाएं। हम मनुष्य को अपने स्वरूप जैसा बनाएंगे। मनुष्य हमारी तरह होगा। वह समुद्र की सारी मछलियों पर और आकाश के पक्षियों पर राज करेगा। वह पृथ्वी के सभी बड़े जानवरों और छोटें रेंगनेवाले जीवों पर राज करेगा।"

[27]इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में* बनाया। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में सृजा। परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया। [28]परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी। परमेश्वर ने उनसे कहा, "तुम्हारे बहुत सी संताने हों। पृथ्वी को भर दो और उस पर राज्य करो। समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों पर राज्य करो। हर एक पृथ्वी के जीवजन्तु पर राज्य करो।"

[29]परमेश्वर ने कहा, "देखो, मैंने तुम लोगों को सभी बीज वाले पेड़ पौधे और सारे फलदार पेड़ दिए हैं। ये अन्न तथा फल तुम्हारा भोजन होगा। [30]मैं प्रत्येक हरे पेड़ पौधे जानवरों के लिए दे रहा हूँ। ये हरे पेड़–पौधे उन का भोजन होगा। पृथ्वी का हर एक जानवर, आकाश का हर एक पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने वाले सभी जीवजन्तु इस भोजन को खाएंगे।" ये सभी बातें हुईं।

[31]परमेश्वर ने अपने द्वारा बनाई हर चीज़ को देखा और परमेश्वर ने देखा कि हर चीज़ बहुत अच्छी है। शाम हुई और तब सवेरा हुआ। यह छठवाँ दिन था।

सातवाँ दिन–विश्राम

2 इस तरह पृथ्वी, आकाश और उसकी प्रत्येक वस्तु की रचना पूरी हुई। [2]परमेश्वर ने अपने किए जा रहे काम को पूरा कर लिया। अत: सातवें दिन परमेश्वर ने अपने काम से विश्राम किया। [3]परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीषित किया और उसे पवित्र दिन बना दिया। परमेश्वर ने उस दिन को पवित्र दिन इसलिए बनाया कि संसार को बनाते समय जो काम वह कर रहा था उन सभी कार्यों से उसने उस दिन विश्राम किया।

मनुष्य इस हिब्रू शब्द का अर्थ "मानव जाति" या एक नाम "आदम" है। यह हिब्रू शब्द "पृथ्वी" या "लाल मिट्टी" जैसा है।

परमेश्वर ... स्वरूप में तुलना करें उत्पत्ति 5:1–3

मानव जाति का आरम्भ

[4]यह पृथ्वी और आकाश का इतिहास है। यह कथा उन चीज़ों की है, जो परमेश्वर द्वारा पृथ्वी और आकाश बनाते समय, घटित हुई। [5]तब पृथ्वी पर कोई पेड़ पौधा नहीं था और खेतों में कुछ भी नहीं उग रहा था, क्योंकि यहोवा ने तब तक पृथ्वी पर वर्षा नहीं भेजी थी तथा पेड़ पौधों की देखभाल करने वाला कोई व्यक्ति भी नहीं था। [6]परन्तु कोहरा* पृथ्वी से उठता था और जल सारी पृथ्वी को सींचता था।

[7]तब यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी से धूल उठाई और मनुष्य को बनाया। यहोवा ने मनुष्य की नाक में जीवन की साँस फूँकी और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया। [8]तब यहोवा परमेश्वर ने पूर्व में अदन नामक जगह में एक बाग लगाया। यहोवा परमेश्वर ने अपने बनाए मनुष्य को इसी बाग में रखा। [9]यहोवा परमेश्वर ने हर एक सुन्दर पेड़ और भोजन के लिए सभी अच्छे पेड़ों को उस बाग में उगाया। बाग के बीच में परमेश्वर ने जीवन के पेड़ को रखा और उस पेड़ को भी रखा जो अच्छे और बुरे की जानकारी देता है।

[10]अदन से होकर एक नदी बहती थी और वह बाग़ को पानी देती थी। वह नदी आगे जाकर चार छोटी नदियाँ बन गयी। [11]पहली नदी का नाम पीशोन है। यह नदी हवीला* प्रदेश के चारों ओर बहती है। [12](उस प्रदेश में सोना है और वह सोना अच्छा है। मोती* और गोमेदक रत्न* उस प्रदेश में हैं।) [13]दूसरी नदी का नाम गीहोन है जो सारे कूश* प्रदेश के चारों ओर बहती है। [14]तीसरी नदी का नाम दजला है। यह नदी अश्शूर के पूर्व में बहती है। चौथी नदी फरात* है।

[15]यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को अदन के बाग में रखा। मनुष्य का काम पेड़–पौधे लगाना और बाग की देख भाल करना था। [16]यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, "तुम बग़ीचे के किसी भी पेड़ से फल खा सकते हो। [17]लेकिन तुम अच्छे और बुरे की जानकारी देने वाले पेड़ का फल नहीं खा सकते। यदि तुमने उस पेड़ का फल खा लिया तो तुम मर जाओगे।"

पहली स्त्री

[18]तब यहोवा परमेश्वर ने कहा, "मैं समझता हूँ कि मनुष्य का अकेला रहना ठीक नहीं है। मैं उसके लिए एक सहायक बनाऊँगा जो उसके लिए उपयुक्त होगा।"

[19]यहोवा ने पृथ्वी के हर एक जानवर और आकाश की हर एक पक्षी को भूमि की मिट्टी से बनाया। यहोवा इन सभी जीवों को मनुष्य के सामने लाया और मनुष्य ने हर एक का नाम रखा। [20]मनुष्य ने पालतू जानवरों, आकाश के सभी पक्षियों और जंगल के सभी जानवरों का नाम रखा। मनुष्य ने अनेक जानवर और पक्षी देखे लेकिन मनुष्य कोई ऐसा सहायक नहीं पा सका जो उसके योग्य हो। [21]अत: यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को गहरी नींद में सुला दिया और जब वह सो रहा था, यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य के शरीर से एक पसली निकाल ली। तब यहोवा ने मनुष्य की उस त्वचा को बन्द कर दिया जहाँ से उसने पसली निकाली थी। [22]यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य की पसली से स्त्री की रचना की। तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री को मनुष्य के पास लाया

[23]और मनुष्य ने कहा,

"अन्तत! हमारे समान एक व्यक्ति।
इसकी हड्डियाँ मेरी हड्डियों से आई
इसका शरीर मेरे शरीर से आया।
क्योंकि यह मनुष्य से निकाली गई,
इसलिए मैं इसे स्त्री कहूँगा।"

[24]इसलिए पुरुष अपने माता–पिता को छोड़ कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन हो जाऐंगे।

[25]मनुष्य और उसकी पत्नी बाग में नंगे थे, परन्तु वे लजाते नहीं थे।

पाप का आरम्भ

3 यहोवा द्वारा बनाए गए सभी जानवरों में सबसे अधिक चतुर साँप* था। (वह स्त्री को धोखा देना चाहता

कोहरा 'बादल,' 'धुन्ध।'

हवीला अरब प्राय द्वीप के पश्चिमी किनारे के प्रदेश या संभवत: कूश के दक्षिण में अफ्रीका का भाग।

मोती कीमती मीठी सुगन्धवाला गोंद।

गोमेदक रत्न कीमती नग जिसमें नीली या भूरी परतें होती हैं।

कूश अफ्रीका में लाल सागर के पास एक देश।

फरात दो सबसे बड़ी नदी जो बाबेल और अश्शूर के देशों से होकर बहती हैं।

साँप शायद शैतान। उसे बहुधा साँप, अजदहा और "सागर का दैत्य" कहा गया है।

था।) साँप ने कहा, “हे स्त्री क्या परमेश्वर ने सचमुच तुम से कहा है कि तुम बाग के किसी पेड़ से फल ना खाना?”

[2]स्त्री ने साँप से कहा, “नहीं परमेश्वर ने यह नहीं कहा। हम बाग के पेड़ों से फल खा सकते हैं। [3]लेकिन एक पेड़ है जिसके फल हम लोग नहीं खा सकते। परमेश्वर ने हम लोगों से कहा, ‘बाग के बीच के पेड़ के फल तुम नहीं खा सकते, तुम उसे छूना भी नहीं, नहीं तो मर जाओगे।’”

[4]लेकिन साँप ने स्त्री से कहा, “तुम मरोगी नहीं। [5]परमेश्वर जानता है कि यदि तुम लोग उस पेड़ से फल खाओगे तो अच्छे और बुरे के बारे में जान जाओगे और तब तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे।”

[6]स्त्री ने देखा कि पेड़ सुन्दर है। उसने देखा कि फल खाने के लिए अच्छा है और पेड़ उसे बुद्धिमान बनाएगा। तब स्त्री ने पेड़ से फल लिया और उसे खाया। उसका पति भी उसके साथ था इसलिए उसने कुछ फल उसे दिया और उसने उसे खाया।

[7]तब पुरुष और स्त्री दोनों बदल गए। उनकी आँखे खुल गई और उन्होंने वस्तुओं को भिन्न दृष्टि से देखा। उन्होंने देखा कि उनके कपड़े नहीं हैं, वे नंगे हैं। इसलिए उन्होंने कुछ अंजीर के पत्ते लेकर उन्हें जोड़ा और कपड़ो के स्थान पर अपने लिए पहना।

[8]तब पुरुष और स्त्री ने दिन के ठण्डे समय में यहोवा परमेश्वर के आने की आवाज बाग में सुनी। वे बाग में पेड़ों के बीच में छिप गए। [9]यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर पुरुष से पूछा, “तुम कहाँ हो?”

[10]पुरुष ने कहा, “मैंने बाग में तेरे आने की आवाज सुनी और मैं डर गया। मैं नंगा था, इसलिए छिप गया।”

[11]यहोवा परमेश्वर ने पुरुष से पूछा, “तुम्हें किसने बताया कि तुम नंगे हो? तुम किस कारण से शरमाए? क्या तुमने उस विशेष पेड़ का फल खाया जिसे मैंने तुम्हें न खाने की आज्ञा दी थी?”

[12]पुरुष ने कहा, “तूने जो स्त्री मेरे लिए बनाई उसने उस पेड़ से मुझे फल दिए, और मैंने उसे खाया।”

[13]तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, “यह तुमने क्या किया?” स्त्री ने कहा, “साँप ने मुझे धोखा दिया। उसने मुझे बेवकूफ बनाया और मैंने फल खा लिया।”

[14]तब यहोवा परमेश्वर ने साँप से कहा,
“तुमने यह बहुत बुरी बात की।
इसलिए तुम्हारा बुरा ही होगा।
अन्य जानवरों की अपेक्षा तुम्हारा
बहुत बुरा होगा।
तुम अपने पेट के बल रेंगने को मजबूर होगे।
और धूल चाटने को विवश होगे
जीवन के सभी दिनों में।

[15] मैं तुम्हें और स्त्री को
एक दूसरे का दुश्मन बनाऊँगा।
तुम्हारे बच्चे और इसके बच्चे
आपस में दुश्मन होंगे।
तुम इसके बच्चे के पैर में डसोगे
और वह तुम्हारा सिर कुचल देगा।”

[16] तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा,
“मैं तेरे गर्भावस्था में तुझे बहुत दुःखी करूँगा
और जब तू बच्चा जनेगी
तब तुझे बहुत पीड़ा होगी।
तेरी चाहत तेरे पति के लिये होगी
किन्तु वह तुझ पर प्रभुता करेगा।”*

[17]तब यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य से कहा,
“मैंने आज्ञा दी थी कि तुम विशेष
पेड़ का फल न खाना।
किन्तु तुमने अपनी पत्नी की बाते सुनीं
और तुमने उस पेड़ का फल खाया।
इसलिए मैं तुम्हारे कारण इस
भूमि को शाप देता हूँ*
अपने जीवन के पूरे काल तक
उस भोजन के लिए जो धरती देती है
तुम्हें कठिन मेहनत करनी पड़ेगी।

[18] तुम उन पेड़ पौधों को खाओगे
जो खेतों में उगते हैं।
किन्तु भूमि तुम्हारे लिए काँटे और
खर–पतवार पैदा करेगी।

तेरी चाहत ... प्रभुता करेगा शाब्दिक तुम अपने पति पर हुकम चलाना चाहोगी। लेकिन वह तुझ पर प्रभुता करेगा।
शाप देता हूँ शाब्दिक किसी वस्तु या व्यक्ति के लिये बुरा आत्मा लेकिन वह तुझ पर प्रभुता करेगा।

19 तुम अपने भोजन के लिए कठिन परिश्रम करोगे।
तुम तब तक परिश्रम करोगे जब तक
माथे पर पसीना न आ जाये।
तुम तब तक कठिन मेहनत करोगे
जब तक तुम्हारी मृत्यु न आ जाये।
उस समय तुम दुबारा मिट्टी बन जाओगे।
जब मैंने तुमको बनाया था,
तब तुम्हें मिट्टी से बनाया था
और जब तुम मरोगे तब तुम उसी
मिट्टी में पुन: मिल जाओगे।"

20आदम* ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा* रखा, क्योंकि सारे मनुष्यों की वह आदिमाता थी।

21यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य और उसकी पत्नी के लिए जानवरों के चमड़ों से पोशाक बनाया। तब यहोवा ने ये पोशाक उन्हें दी। 22यहोवा परमेश्वर ने कहा, "देखो, पुरुष हमारे जैसा हो गया है। पुरुष अच्छाई और बुरा जानता है और अब पुरुष जीवन के पेड़ से भी फल ले सकता है। अगर पुरुष उस फल को खायेगा तो सदा ही जीवित रहेगा।"

23तब यहोवा परमेश्वर ने पुरुष को अदन के बाग छोड़ने के लिए मजबूर किया। जिस मिट्टी से आदम बना था उस पृथ्वी पर आदम को कड़ी मेहनत करनी पड़ी। 24परमेश्वर ने आदम को बाग से बाहर निकाल दिया। तब परमेश्वर ने करूब* (स्वर्गदूतों) को बाग के फाटक की रखवाली के लिए रखा। परमेश्वर ने वहाँ एक आग की तलवार भी रख दी। यह तलवार जीवन के पेड़ के रास्ते की रखवाली करती हुई चारों ओर चमकती थी।

पहला परिवार

4 आदम और उसकी पत्नी हव्वा के बीच शारीरिक सम्बन्ध हुए और हव्वा ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चे का नाम कैन* रखा गया। हव्वा ने कहा, "यहोवा की मदद से मैंने एक मनुष्य पाया है।" 2इसके बाद हव्वा ने दूसरे बच्चे को जन्म दिया। यह बच्चा कैन का भाई हाबिल था। हाबिल गड़ेंरिया बना। कैन किसान बना।

पहली हत्या

3-4फसल के समय* कैन एक भेंट यहोवा के पास लाया। जो अन्न कैन ने अपनी ज़मीन में उपजाया था उसमें से थोड़ा अन्न वह लाया। परन्तु हाबिल अपने जानवरों के झुण्ड में से कुछ जानवर लाया। हाबिल अपनी सबसे अच्छी भेड़ का सबसे अच्छा हिस्सा लाया।*

यहोवा ने हाबिल तथा उसकी भेंट को स्वीकार किया। 5परन्तु यहोवा ने कैन तथा उसके द्वारा लाई भेंट को स्वीकार नहीं किया इस कारण कैन क्रोधित हो गया। वह बहुत व्याकुल और निराश* हो गया। 6यहोवा ने कैन से पूछा, "तुम क्रोधित क्यों हो? तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ क्यों दिखाई पड़ता है? 7अगर तुम अच्छे काम करोगे तो तुम मेरी दृष्टि में ठीक रहोगे। तब मैं तुम्हें अपनाऊँगा। लेकिन अगर तुम बुरे काम करोगे तो वह पाप तुम्हारे जीवन में रहेगा। तुम्हारे पाप तुम्हें अपने वश में रखना चाहेंगे लेकिन तुम को अपने पाप को अपने बस में रखना होगा।"*

8कैन ने अपने भाई हाबिल से कहा, "आओ हम मैदान में चलें।" इसलिए कैन और हाबिल मैदान में गए। तब कैन ने अपने भाई पर हमला किया और उसे मार डाला।

आदम इस नाम का मतलब "आदमी" या "मानवजाति" है। यह हिब्रू शब्द पृथ्वी और लाल मिट्टी की तरह है।

हव्वा यह नाम उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ जीवन है।

करूब परमेश्वर के द्वारा भेजे हुए विशेष दूत। इन की मूर्तियाँ वाचा के सन्दूक के ऊपर थी।

कैन यह उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ बनाना या पाना है।

फसल के समय इसका अर्थ फसल काटने का समय। या कुछ निश्चित समय के बाद भी हो सकता है।

अच्छा हिस्सा लाया शाब्दिक उसकी चर्बी। यह जानवर का वह हिस्सा था जो हमेशा परमेश्वर के लिये बचाया जाता था। जब यह वेदी पर जलाया जाता था तो उसमें से बहुत मनभावनी सुगन्ध निकलती थी।

व्याकुल और निराश शाब्दिक, "उसका मुँह झुक गया"

लेकिन ... रखना होगा अगर तुम सही नहीं करते तब पाप तुम्हारे दरवाजे पर एक सिंह की तरह घात लगा है। यह तुम्हें दबोचना चाहता है किन्तु तुम इस पर हावी रहो।

[9]बाद में यहोवा ने कैन से पूछा, "तुम्हारा भाई हाबिल कहाँ है?"

कैन ने जवाब दिया, "मैं नहीं जानता। क्या यह मेरा काम है कि मैं अपने भाई की निगरानी और देख भाल करुँ?"

[10]तब यहोवा ने कहा, "तुमने यह क्या किया? तुम्हारे भाई का खून जमीन से बोल रहा है कि क्या हो गया है? [11]तुमने अपने भाई की हत्या की है, पृथ्वी तुम्हारे हाथों से उसका खून लेने के लिए खुल गई है। इसलिए अब मैं उस जमीन को बुरा करने वाली चीज़ों को पैदा करूँगा। [12]बीते समय में तुमने फ़सलें लगाई और वे अच्छी उगीं। लेकिन अब तुम फसल बोओगे और जमीन तुम्हारी फसल अच्छी होने में मदद नहीं करेगी। तुम्हें पृथ्वी पर घर नहीं मिलेगा। तुम जगह जगह भटकोगे।"

[13]तब कैन ने कहा, "यह दण्ड इतना अधिक है कि मैं सह नहीं सकता। [14]मेरी ओर देख। तूने मुझे जमीन में फसल के काम को छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया है और मैं अब तेरे करीब भी नहीं रहूँगा। मेरा कोई घर नहीं होगा और पृथ्वी पर से मैं नष्ट हो जाऊँगा और यदि कोई मनुष्य मुझे पाएगा तो मार डालेगा।"

[15]तब यहोवा ने कैन से कहा, "मैं यह नहीं होने दूँगा। यदि कोई तुमको मारेगा तो मैं उस आदमी को बहुत कठोर दण्ड दूँगा।" तब यहोवा ने कैन पर एक चिन्ह बनाया। यह चिन्ह वह बताता था कि कैन को कोई न मारे।

कैन का परिवार

[16]तब कैन यहोवा को छोड़कर चला गया। कैन नोद देश में रहने लगा।

[17]कैन ने अपनी पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। वह गर्भवती हुई। उसने हनोक नामक बच्चे को जन्म दिया। कैन ने एक शहर बसाया, और उसका नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक ही रखा।

[18]हनोक से ईराद उत्पन्न हुआ, ईराद से महूयाएल उत्पन्न हुआ, महूयाएल से मतूशाएल उत्पन्न हुआ और मतूशाएल से लेमेक उत्पन्न हुआ।

[19]लेमेक ने दो स्त्रियों से विवाह किया। एक पत्नी का नाम आदा और दूसरी का नाम सिल्ला था। [20]आदा ने याबाल को जन्म दिया। याबाल उन लोगों का पिता था* जो तम्बूओं में रहते थे तथा पशुओं का पालन करके जीवन–निर्वाह करते थे। [21]आदा का दूसरा पुत्र यूबाल भी था। यूबाल, याबाल का भाई था। यूबाल उन लोगों का पिता था जो वीणा और बाँसुरी बजाते थे। [22]सिल्ला ने तूबलकैन को जन्म दिया। तूबलकैन उन लोगों का पिता था जो काँसे और लोहे का काम करते थे। तूबलकैन की बहन का नाम नामा था।

[23]लेमेक ने अपनी पत्नियों से कहा:

"ऐ आदा और सिल्ला मेरी बात सुनो।
लेमेक की पत्नियों जो बाते
मैं कहता हूँ, सुनो।
एक पुरुष ने मुझे चोट पहुँचाई,
मैंने उसे मार डाला।
एक जवान ने मुझे चोट दी इसलिए
मैंने उसे मार डाला।
[24] कैन की हत्या का दण्ड बहुत भारी था।
इसलिए मेरी हत्या का दण्ड भी
उससे बहुत, बहुत भारी होगा।"

आदम और हव्वा को नया पुत्र हुआ

[25]आदम ने हव्वा के साथ फिर शारीरिक सम्बन्ध किया और हव्वा ने एक और बच्चे को जन्म दिया। उन्होंने इस बच्चे का नाम शेत* रखा। हव्वा ने कहा, "यहोवा ने मुझे दूसरा पुत्र दिया है। कैन ने हाबिल को मार डाला किन्तु अब शेत मेरे पास है।" [26]शेत का भी एक पुत्र था। इसका नाम एनोश था। उस समय लोग यहोवा पर विश्वास करने लगे।*

उन लोगों का पिता था इसका मतलब शायद यह है इसने इन चीजों का आविष्कार किया या इनका इस्तेमाल करने वाला यह पहला व्यक्ति था।

शेत यह नाम उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ देना होता है।

उस समय ... लगे शाब्दिक उस समय लोग यहोवा को पुकारने लगे।

आदम के परिवार का इतिहास

5 यह अध्याय आदम के परिवार के बारे में है। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में* बनाया। [2]परमेश्वर ने एक पुरुष और एक स्त्री को बनाया। जिस दिन परमेश्वर ने उन्हें बनाया, आशीष दी। एवं उसका नाम "आदम" रखा।

[3]जब आदम एक सौ तीस वर्ष का हो गया तब वह एक और बच्चे का पिता हुआ। यह पुत्र ठीक आदम*सा दिखाई देता था। आदम ने पुत्र का नाम शेत रखा। [4]शेत के जन्म के बाद आदम आठ सौ वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में आदम के अन्य पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुईं। [5]इस तरह आदम पूरे नौ सौ तीस वर्ष तक जीवित रहा, तब वह मरा।

[6]जब शेत एक सौ पाँच वर्ष का हो गया तब उसे एनोश नाम का पुत्र पैदा हुआ। [7]एनोश के जन्म के बाद शेत आठ सौ सात वर्ष जीवित रहा। इसी शेत के अन्य पुत्र–पुत्रियाँ पैदा हुईं। [8]इस तरह शेत पूरे नौ सौ बारह वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

[9]एनोश जब नब्बे वर्ष का हुआ, उसे केनान नाम का पुत्र पैदा हुआ। [10]केनान के जन्म के बाद एनोश आठ सौ पन्द्रह वर्ष जीवित रहा। इन दिनों इसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुईं। [11]इस तरह एनोश पूरे नौ सौ पाँच वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

[12]जब केनान सत्तर वर्ष का हुआ, उसे महललेल नाम का पुत्र पैदा हुआ। [13]महललेल के जन्म के बाद केनान आठ सौ चालीस वर्ष जीवित रहा। इन दिनों केनान के दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुईं। [14]इस तरह केनान पूरे नौ सौ दस वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

[15]जब महललेल पैंसठ वर्ष का हुआ, उसे येरेद नाम का पुत्र पैदा हुआ। [16]येरेद के जन्म के बाद महललेल आठ सौ तीस वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुईं। [17]इस तरह महललेल पूरे आठ सौ पंचानबे वर्ष जीवित रहा। तब वह मरा।

[18]जब येरेद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ तो उसे हनोक नाम का पुत्र पैदा हुआ। [19]हनोक के जन्म के बाद येरेद आठ सौ वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुईं। [20]इस तरह येरेद पूरे नौ सौ बासठ वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

[21]जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ, उसे मतूशेलह नाम का पुत्र पैदा हुआ। [22]मतूशेलह के जन्म के बाद हनोक* परमेश्वर के साथ तीन सौ वर्ष रहा। इन दिनों उसके दूसरे पुत्र–पुत्रियाँ पैदा हुईं। [23]इस तरह हनोक पूरे तीन सौ पैंसठ वर्ष जीवित रहा। [24]एक दिन हनोक परमेश्वर के साथ चल रहा था* और गायब हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।

[25]जब मतूशेलह एक सौ सत्तासी वर्ष का हुआ, उसे लेमेक नाम का पुत्र पैदा हुआ। [26]लेमेक के जन्म के बाद मतूशेलह सात सौ बयासी वर्ष जीवित रहा। इन दिनों उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुईं। [27]इस तरह मतूशेलह पूरे नौ सौ उनहत्तर वर्ष जीवित रहा, तब यह मरा।

[28]जब लेमेक एक सौ बयासी वर्ष का हुआ, वह एक पुत्र का पिता बना। [29]लेमेक के पुत्र का नाम नूह* रखा। लेमेक ने कहा, "हम किसान लोग बहुत कड़ी मेहनत करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने भूमि को शाप दे दिया है। किन्तु नूह हम लोगों को विश्राम देगा।"

[30]नूह के जन्म के बाद, लेमेक पाँच सौ पंचानबे वर्ष जीवित रहा। इन दिनों उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुईं। [31]इस तरह लेमेक पूरे सात सौ सतहत्तर वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

[32]जब नूह पाँच सौ वर्ष का हुआ, उसके शेम, हाम, और येपेत नाम के पुत्र हुए।

लोग पापी हो गये

6 पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढ़ती रही। इन लोगों के लड़कियाँ पैदा हुईं। [2-4]परमेश्वर के पुत्रों ने देखा कि ये लड़कियाँ सुन्दर हैं। इसलिए परमेश्वर के पुत्रों ने अपनी इच्छा के अनुसार जिससे चाहा उसी से विवाह किया।

अपने स्वरूप में उसने उसे परमेश्वर के समान बनाया। तुलना करे उत्पत्ति 1:27; 5:3

आदम वह उस पुत्र का पिता बना जो उसका प्रतिरूप था और उससे मिलता जुलता था।

हनोक यहोवा के साथ चला।

हनोक ... रहा था शाब्दिक "हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था।"

नूह इस नाम का अर्थ "आराम" है।

इन स्त्रियों ने बच्चों को जन्म दिया। इन दिनों और बाद में भी नेफिलिम* लोग उस देश में रहते थे। ये प्रसिद्ध लोग थे। ये लोग प्राचीन काल से बहुत वीर थे।*

तब यहोवा ने कहा, "मनुष्य शरीर ही है। मैं सदा के लिए इनसे अपनी आत्मा को परेशान नहीं होने दूँगा। मैं उन्हें एक सौ बीस वर्ष का जीवन दूँगा।"*

[5]यहोवा ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य बहुत अधिक पापी हैं। यहोवा ने देखा कि मनुष्य लगातार बुरी बातें ही सोचता है। [6]यहोवा को इस बात का दुःख हुआ, कि मैंने पृथ्वी पर मनुष्यों को क्यों बनाया? यहोवा इस बात से बहुत दुःखी हुआ। [7]इसलिए यहोवा ने कहा, "मैं अपनी बनाई पृथ्वी के सारे लोगों को खतम कर दूँगा। मैं हर एक व्यक्ति, जानवर और पृथ्वी पर रेंगने वाले हर एक जीवजन्तु को खतम करूँगा। मैं आकाश के पक्षियों को भी खतम करूँगा। क्यों? क्योंकि मैं इस बात से दुःखी हूँ कि मैंने इन सभी चीज़ों को बनाया।"

[8]लेकिन पृथ्वी पर यहोवा को खुश करने वाला एक व्यक्ति था—नूह।

नूह और जल प्रलय

[9]यह कहानी नूह के परिवार की है। अपने पूरे जीवन में नूह ने सदैव परमेश्वर का अनुसरण किया। [10]नूह के तीन पुत्र थे, शेम, हाम, और येपेत।

[11-12]परमेश्वर ने पृथ्वी पर दृष्टि की और उसने देखा की पृथ्वी को लोगों ने बर्बाद कर दिया है। हर जगह हिंसा फैली हुई। लोग पापी और भ्रष्ट हो गये है, और उन्होंने पृथ्वी पर अपना जीवन बर्बाद कर दिया है।

[13]इसलिए परमेश्वर ने नूह से कहा, "सारे लोगों ने पृथ्वी को क्रोध और हिंसा से भर दिया है। इसलिए मैं सभी जीवित प्राणियों को नष्ट करूँगा। मैं उनको पृथ्वी से हटाऊँगा। [14]गोपेर की लकड़ी* का उपयोग करो और अपने लिए एक जहाज बनाओ। जहाज में कमरे बनाओ* और उसे राल* से भीतर और बाहर पोत दो।

[15]"जो जहाज मैं बनवाना चाहता हूँ उसका नाप तीन सौ हाथ* लम्बाई, पचास हाथ* चौड़ाई, तीस हाथ* ऊँचाई है। [16]जहाज के लिए छत से करीब एक हाथ* नीचे एक खिड़की बनाओ* जहाज की बगल में एक दरवाज़ा बनाओ। जहाज में तीन मंजिलें बनाओ। ऊपरी मंजिल, बीच की मंजिल और नीचे की मंजिल।"

[17]"तुम्हें जो बता रहा हूँ उसे समझो। मैं पृथ्वी पर बड़ा भारी जल का बाढ़ लाऊँगा। आकाश के नीचे सभी जीवों को मैं नष्ट कर दूँगा। पृथ्वी के सभी जीव मर जाएंगें। [18]किन्तु मैं तुमको बचाऊँगा। तब मैं तुम से एक विशेष वाचा करूँगा। तुम, तुम्हारे पुत्र तुम्हारी पत्नी तुम्हारे पुत्रों की पत्नियाँ सभी जहाज़ में सवार होगें। [19]साथ ही साथ पृथ्वी पर जीवित प्राणियों के जोड़े भी तुम्हें लाने होंगे। हर एक के नर और मादा को जहाज में लाओ। अपने साथ उनको जीवित रखो। [20]पृथ्वी की हर तरह की चिड़ियों के जोड़ों को भी खोजो। पृथ्वी के हर तरह के जानवरों के जोड़ों को भी खोजो। पृथ्वी पर रेंगने वाले हर एक जीव के जोड़ों को भी खोजो। पृथ्वी के हर प्रकार के जानवरों के नर और मादा तुम्हारे साथ होंगे। जहाज पर उन्हें जीवित रखो। [21]पृथ्वी के सभी प्रकार के भोजन भी जहाज पर लाओ। यह भोजन तुम्हारे लिए तथा जानवरों के लिए होगा।"

नेफिलिम बाद में, मूसा के काल में नेफिलिम एक प्रसिद्ध शूरवीर परिवार था।

ये लोग ... वीर थे नेफिलिम लोग उन दिनों उस देश में रहते थे। ये इसके बाद भी वहाँ रहते रहे जब परमेश्वर के पुत्रों ने मानव की पुत्रियों से विवाह किया और इन स्त्रियों ने बच्चों को जन्म दिया। ये बच्चे प्रसिद्ध हुए। ये प्राचीन काल से वीर थे।"

मनुष्य ... दूँगा मेरी आत्मा मनुष्य के साथ सदा नहीं रहेगी क्योंकि वे हाड़ माँस हैं। आदमी केवल 120 वर्ष जीवित रहेगा। या "मेरा विवेक लोगों का न्याय सदा नहीं करता रहेगा क्योंकि वे सभी 120 वर्ष की उम्र में ही मरेंगे।

गोपेर की लकड़ी हम नहीं जानते कि यह असली में किस तरह की लकड़ी है। शायद यह एक किस्म का एक पेड़ हो या तराशी हुई लकड़ी।

जहाज में कमरे बनाओ जहाज के लिए तैल—जूट आदि बनाओ, "ये छोटे पौधे हो सकते हैं जो जहाजों के जोड़ों में घुसाए जाते थे और राल से पोते दिए

राल "पिच," गाढ़ा तेल जिसे द्रव बनाने के लिए गरम किया जाता है।

तीन सौ हाथ चार सौ पचास फीट।

पचास हाथ पचहत्तर फीट।

तीस हाथ पैंतालीस फीट।

एक हाथ शाब्दिक ढेढ़ फीट।

जहाज ... बनाओ जहाज के लिए करीब ढेढ़ फीट ऊँचा एक खुला भाग रखो।

[22]नूह ने यह सब कुछ किया। नूह ने परमेश्वर की सारी आज्ञाओं का पालन किया।

जल प्रलय आरम्भ होता है

7 तब यहोवा ने नूह से कहा, "मैंने देखा है कि इस समय के पापी लोगों में तुम्हीं एक अच्छे व्यक्ति हो। इसलिए तुम अपने परिवार को इकट्ठा करो और तुम सभी जहाज में चले जाओ। [2]हर एक शुद्ध जानवर* के सात जोड़े, (सात नर तथा सात मादा) साथ में ले लो और पृथ्वी के दूसरे अशुद्ध जानवरों के एक–एक जोड़े एक नर और एक मादा लाओ। इन सभी जानवरों को अपने साथ जहाज में ले जाओ। [3]हवा में उड़ने वाले सभी पक्षियों के सात जोड़े (सात नर और सात मादा) लाओ। इससे ये सभी जानवर पृथ्वी पर जीवित रहेंगे, जब दूसरे जानवर नष्ट हो जाएंगे। [4]अब से सातवें दिन मैं पृथ्वी पर बहुत भारी वर्षा भेजूँगा। यह वर्षा चालीस दिन और चालीस रात होती रहेगी। पृथ्वी के सभी जीवित प्राणी नष्ट हो जाएंगे। मेरी बनाई सभी चीज़ें खतम हो जाएंगी।" [5]नूह ने उन सभी बातों को माना जो यहोवा ने आज्ञा दी।

[6]वर्षा आने के समय नूह छ: सौ वर्ष का था। [7]नूह और उसका परिवार बाढ़ के जल से बचने के लिए जहाज में चला गया। नूह की पत्नी, उसके पुत्र और उनकी पत्नियाँ उसके साथ थीं। [8]पृथ्वी के सभी शुद्ध जानवर एवं अन्य जानवर, पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने वाले सभी जीव [9]नूह के साथ जहाज में चढ़े। इन जानवरों के नर और मादा जोड़े परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार जहाज में चढ़े। [10]सात दिन बाद बाढ़ प्रारम्भ हुई। धरती पर वर्षा होने लगी।

[11-13]दूसरे महीने के सातवें दिन, जब नूह छ: सौ वर्ष का था, जमीन के नीचे के सभी सोते खुल पड़े और जमीन से पानी बहना शुरु हो गया। उसी दिन पृथ्वी पर भारी वर्षा होने लगी। ऐसा लगा मानो आकाश की खिड़कियाँ खुल पड़ी हों। चालीस दिन और चालीस रात तक वर्षा पृथ्वी पर होती रही।" ठीक उसी दिन नूह, उसकी पत्नी, उसके पुत्र, शेम, हाम और येपेत और उनकी पत्नियाँ जहाज़ पर चढ़ें। [14]वे लोग और पृथ्वी के हर एक प्रकार के जानवर जहाज में थे। हर प्रकार के मवेशी, पृथ्वी पर रेंगने वाले हर प्रकार के जीव और हर प्रकार के पक्षी जहाज में थे। [15]ये सभी जानवर नूह के साथ जहाज़ में चढ़े। हर जाति के जीवित जानवरों के ये जोड़े थे। [16]परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सभी जानवर जहाज़ में चढ़े। उनके अन्दर जाने के बाद यहोवा ने दरवाजा बन्द कर दिया।

[17]चालीस दिन तक पृथ्वी पर जल प्रलय होता रहा। जल बढ़ना शुरु हुआ और उसने जहाज को जमीन से ऊपर उठा दिया। [18]जल बढता रहा और जहाज पृथ्वी से बहुत ऊपर तैरती रही। [19]जल इतना ऊँचा उठा कि ऊँचे–से–ऊँचे पहाड़ भी पानी में डूब गए। [20]जल पहाड़ों के ऊपर बढ़ता रहा। सबसे ऊँचे पहाड़ से तेरह हाथ ऊँचा था।

[21-22]पृथ्वी के सभी जीव मारे गए। हर एक स्त्री और पुरुष मर गए। सभी पक्षियों और सभी तरह के जानवर मर गए। [23]इस तरह परमेश्वर ने पृथ्वी के सभी जीवित हर एक मनुष्य, हर एक जानवर, हर एक रेंगने वाले जीव और हर एक पक्षी को नष्ट कर दिया। ये सभी पृथ्वी से खतम हो गए। केवल नूह, उसके साथ जहाज में चढ़े लोगों और जानवरों का जीवन बचा रहा। [24]और जल एक सौ पचास दिन तक पृथ्वी को डुबाए रहा।

जल प्रलय खतम होता है

8 लेकिन परमेश्वर नूह को नहीं भूला। परमेश्वर ने नूह और जहाज में उसके साथ रहने वाले सभी पशुओं और जानवरों को याद रखा। परमेश्वर ने पृथ्वी पर आँधी चलाई और सारा जल गायब होने लगा।

[2]आकाश से वर्षा रूक गई और पृथ्वी के नीचे से पानी का बहना भी रूक गया। [3]पृथ्वी को डुबाने वाला पानी बराबर घटता चला गया। एक सौ पचास दिन बाद पानी इतना उतर गया कि जहाज फिर से भूमि पर आ गई। [4]जहाज अरारात* के पहाड़ों में से एक पर आ टिकी। यह सातवें महीने का सत्तरहवाँ दिन था। [5]जल उतरता गया और दसवें महीने के पहले दिन पहाड़ों की चोटियाँ जल के ऊपर दिखाई देने लगी।

[6]जहाज में बनी खिड़की को नूह ने चालीस दिन बाद खोला। [7]नूह ने एक कौवे* को बाहर उड़ाया।

शुद्ध जानवर चिड़िया तथा जानवर जिन्हें यहोवा ने बलि तथा भोजन के लिए ठीक कहा।

अरारात पूर्वी तुर्की का एक प्रदेश।

कौवे एक प्रकार का बहुत काला पक्षी।

कौवा उड़ कर तब तक फिरता रहा जब तक कि पृथ्वी पूरी तरह से न सूख गयी। [8]नूह ने एक फ़ाख्ता भी बाहर भेजा। वह जानना चाहता था कि पृथ्वी का पानी कम हुआ है या नहीं।

[9]फ़ाख्ते को कहीं बैठने की जगह नहीं मिली क्योंकि अभी तक पानी पृथ्वी पर फैला हुआ था। इसलिये वह नूह के पास जहाज पर वापस लौट आया। नूह ने अपना हाथ बढ़ा कर फ़ाख्ते को वापस जहाज के अन्दर ले लिया।

[10]सात दिन बाद नूह ने फिर फ़ाख्ते को भेजा। [11]उस दिन दोपहर बाद फ़ाख्ता नूह के पास आया। फ़ाख्ते के मुँह में एक ताज़ी जैतून की पत्ती थी। यह चिन्ह नूह को यह बताने के लिए था कि अब पानी पृथ्वी पर धीरे–धीरे कम हो रहा है। [12]नूह ने सात दिन बाद फिर फ़ाख्ते को भेजा। किन्तु इस समय फ़ाख्ता लौटा ही नहीं।

[13]उसके बाद नूह ने जहाज का दरवाजा खोला* नूह ने देखा और पाया कि भूमि सूखी है। यह वर्ष के पहले महीने का पहला दिन था। नूह छ: सौ एक वर्ष का था। [14]दूसरे महीने के सत्ताइसवें दिन तक भूमि पूरी तरह सूख गई।

[15]तब परमेश्वर ने नूह से कहा, [16]"जहाज को छोड़ो। तुम, तुम्हारी पत्नी, तुम्हारे पुत्र और उनकी पत्नियाँ सभी अब बाहर निकलों। [17]हर एक जीवित प्राणी, सभी पक्षियों, जानवरों तथा पृथ्वी पर रेंगने वाले सभी को जहाज के बाहर लाओ। ये जानवर अनेक जानवर उत्पन्न करेंगे और पृथ्वी को फिर भर देंगे।"

[18]अत: नूह अपने पुत्रों, अपनी पत्नी, अपने पुत्रों की पत्नियों के साथ जहाज से बाहर आया। [19]सभी जानवरों, सभी रेंगने वाले जीवों और सभी पक्षियों ने जहाज को छोड़ दिया। सभी जानवर जहाज से नर और मादा के जोड़े में बाहर आए।

[20]तब नूह ने यहोवा के लिए एक वेदी* बनाई। उसने कुछ शुद्ध पक्षियों और कुछ शुद्ध जानवरो* को लिया और उनको वेदी पर परमेश्वर को भेंट के रूप में जलाया।

[21]यहोवा इन बलियों की सुगन्ध पाकर खुश हुआ। यहोवा ने मन–ही–मन कहा, "मैं फिर कभी मनुष्य के कारण पृथ्वी को शाप नहीं दूँगा। मानव छोटी आयु से ही बुरी बातें सोचने लगता हैं। इसलिये जैसा मैंने अभी किया है इस तरह मैं अब कभी भी सारे प्राणियों को सजा नहीं दूँगा। [22]जब तक यह पृथ्वी रहेगी तब तक इस पर फसल उगाने और फ़सल काटने का समय सदैव रहेगा। पृथ्वी पर गरमी और जाड़ा तथा दिन और रात सदा होते रहेंगे।"

नया आरम्भ

9 परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी और उनसे कहा, "बहुत से बच्चे पैदा करो और अपने लोगों से पृथ्वी को भर दो। [2]पृथ्वी के सभी जानवर तुम्हारे डर से काँपेंगे और आकाश के हर एक पक्षी भी तुम्हारा आदर करेंगे और तुमसे डरेंगे। पृथ्वी पर रेंगने वाला हर एक जीव और समुद्र की हर एक मछली तुम लोगों का आदर करेगी और तुम लोगो से डरेगी। तुम इन सभी के ऊपर शासन करोगे। [3]बीते समय में तुमको मैंने हर पेड़–पौधे खाने को दिए थे। अब हर एक जानवर भी तुम्हारा भोजन होगा। मैं पृथ्वी की सभी चीज़ें तुमको देता हूँ–अब ये तुम्हारी हैं। [4]मैं तुम्हें एक आज्ञा देता हूँ कि तुम किसी जानवर को तब तक न खाना जब तक कि उसमें जीवन (खून) है। [5]मैं तुम्हारे जीवन बदले में तुम्हारा खून माँगूगा। अर्थात् मैं उस जानवर का जीवन मागूँगा जो किसी व्यक्ति को मारेगा और मैं हर एक ऐसे व्यक्ति का जीवन मागूँगा जो दूसरे व्यक्ति को जिन्दगी नष्ट करेगा।"

[6]"परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया है। इसलिए जो कोई किसी व्यक्ति का खून बहाएगा, उसका खून व्यक्ति द्वारा ही बहाया जाएगा।"

[7]"नूह तुम्हें और तुम्हारे पुत्रों के अनेक बच्चे हों और धरती को लोगों से भर दो।"

[8]तब परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से कहा, [9]"अब मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को वचन देता हूँ। [10]मैं यह वचन तुम्हारे साथ जहाज से बाहर आने वाले सभी पक्षियों, सभी पशुओं तथा सभी जानवरों को देता हूँ। मैं यह वचन पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों को देता हूँ।" [11]मैं तुमको वचन देता हूँ, "जल की बाढ़ से पृथ्वी का सारा जीवन नष्ट हो गया था। किन्तु अब यह कभी नहीं होगा। अब बाढ़ फिर कभी पृथ्वी के जीवन को नष्ट नहीं करेगी।"

दरवाजा खोला पर्दे को हटाया

वेदी एक पत्थर की मेज जिस पर यहोवा को भेंट बलि के रूप में जलाई जाती हैं।

शुद्ध ... शुद्ध जानवर वे पक्षियों और जानवर जिनके बारे में यहोवा ने कहा कि ये भोजन और बलि बनाए जा सकते हैं।

[12]और परमेश्वर ने कहा, "यह प्रमाणित करने के लिए कि मैंने तुमको वचन दिया है कि मैं तुमको कुछ दूँगा। यह प्रमाण बतायेगा कि मैंने तुम से और पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों से एक वाचा बाँधी है। यह वाचा भविष्य में सदा बनी रहेगी जिसका प्रमाण यह है [13]कि मैंने बादलों में मेघधनुष बनाया है। यह मेघधनुष मेरे और पृथ्वी के बीच हुए वाचा का प्रमाण है। [14]जब मैं पृथ्वी के ऊपर बादलों को लाऊँगा तो तुम बादलों में मेघधनुष को देखोगे। [15]जब मैं इस मेघधनुष को देखूँगा तब मैं तुम्हारे, पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों और अपने बीच हुई वाचा को याद करूँगा। यह वाचा इस बात की है कि बाढ़ फिर कभी पृथ्वी के प्राणियों को नष्ट नहीं करेगी। [16]जब मैं ध्यान से बादलों में मेघधनुष को देखूँगा तब मैं उस स्थायी वाचा को याद करूँगा। मैं अपने और पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों के बीच हुई वाचा को याद करूँगा।"

[17]इस तरह यहोवा ने नूह से कहा, "वह मेघधनुष मेरे और पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों के बीच हुई वाचा का प्रमाण है।"

समस्यायें फिर शुरु होती हैं

[18]नूह के पुत्र उसके साथ जहाज से बाहर आए। उनके नाम शेम, हाम और येपेत थे। (हाम तो कनान का पिता था।) [19]ये तीनों नूह के पुत्र थे और संसार के सभी लोग इन तीनों से ही पैदा हुए।

[20]नूह किसान बना। उसने अंगूरों का बाग लगाया। [21]नूह ने दाखमधु बनाया और उसे पिया। वह मतवाला हो गया और अपने तम्बू में लेट गया। नूह कोई कपड़ा नहीं पहना था। [22]कनान के पिता हाम ने अपने पिता को नंगा देखा। तम्बू के बाहर अपने भाईयों से हाम ने यह बताया। [23]तब शेम और येपेत ने एक कपड़ा लिया। वे कपड़े को पीठ पर डाल कर तम्बू में ले गए। वे उल्टे मुँह तम्बू में गए। इस तरह उन्होंने अपने पिता को नंगा नहीं देखा।

[24]बाद में नूह सोकर उठा। वह दाखमधु के कारण सो रहा था। तब उसे पता चला कि उसके सब से छोटे पुत्र हाम ने उसके बारे में क्या किया है। [25]इसलिए नूह ने शाप दिया,

"यह शाप कनान* के लिए हो कि
वह अपने भाईयों का दास हो।"

[26]नूह ने यह भी कहा,

"शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य हो!
कनान शेम का दास हो।
[27] परमेश्वर येपेत को अधिक भूमि दे।
परमेश्वर शेम के तम्बूओं में रहे
और कनान उनका दास बनें।"

[28]बाढ़ के बाद नूह साढ़े तीन सौ वर्ष जीवित रहा। [29]नूह पूरे साढ़े नौ सौ वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

राष्ट्र बढ़े और फैले

10 नूह के पुत्र शेम, हाम, और येपेत थे। बाढ़ के बाद ये तीनों बहुत से पुत्रों के पिता हुए। यहाँ शेम, हाम और येपेत से पैदा होने वाले पुत्रों की सूची दी जा रही है:

येपेत के वंशज

[2]येपेत के पुत्र थे: गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास।

[3]गोमेर के पुत्र थे: अशकनज, रीपत और तोगर्मा

[4]यावान के पुत्र थे: एलीशा, तर्शीश, कित्ती और दोदानी*

[5]भूमध्य सागर के चारों ओर तटों पर जो लोग रहने लगे वे येपेत के वंशज के ही थे। हर एक पुत्र का अपना अलग प्रदेश था। सभी परिवार बढ़े और अलग राष्ट्र बन गए। हर एक राष्ट्र की अपनी भाषा थी।

हाम के वंशज

[6]हाम के पुत्र थे: कूश, मिस्र, फूत और कनान।

[7]कूश के पुत्र थे: सबा, हवीला, सबता, रामा, सबूतका।

रामा के पुत्र थे: शबा और ददान।

[8]कूश का एक पुत्र निम्रोद नाम का भी था। निम्रोद पृथ्वी पर बहुत शक्तिशाली व्यक्ति हुआ। [9]यहोवा के सामने निम्रोद एक बड़ा शिकारी था। इसलिए लोग दूसरे

कनान हाम का पुत्र। कनान के लोग पलिश्ती, लबानोन और सूर के समुद्र के तट के सहारे रहते थे। बाद में परमेश्वर ने यह भूमि इस्राएल के लोगों को दे दी।

दोदानी दोदानी इसका अर्थ रादस के लोग हो सकता हैं।

व्यक्तियों की तुलना निम्रोद से करते हैं और कहते हैं, “वह व्यक्ति यहोवा के सामने बड़ा शिकारी निम्रोद के समान है।”

[10]निम्रोद का राज्य शिनार देश में बाबुल, एरेख और अक्कद प्रदेश में प्रारम्भ हुआ। [11]निम्रोद अश्शूर में भी गया। वहाँ उसने नीनवे, रहोबोतीर, कालह और [12]रेसेन नाम के नगरों को बसाया। (रेसेन, नीनवे और बड़े शहर कालह के बीच का शहर है।)

[13-14]मिस्रम (मिस्र)—लूद, अनाम, लहाब, नप्तूह, पत्रूस, कसलूह और कप्तोर देशों के निवासियों का पिता था। (पलिश्ती लोग कसलूह लोगों से आए थे।)

[15]कनान सीदोन का पिता था। सिदोन कनान का पहला पुत्र था। कनान, हित्त (जो हित्ती लोगों का पिता था) का भी पिता था। [16]और कनान, यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी, [17]हिव्वी, अर्की, सीनी, [18]अर्वदी, समारी, हमाती लोगों का पिता था। कनान के परिवार संसार के विभिन्न भागों मे फैले।

[19]कनान लोगों का देश सीदोन से उत्तर में और दक्षिण में गरार तक, पश्चिम में अज्जा से पूर्व में सदोम और अमोरा तक, अदमा और सबोयीम से लाशा तक था।

[20]ये सभी लोग हाम के वंशज थे। उन सभी परिवारों की अपनी भाषाएँ और अपने प्रदेश थे। वे अलग-अलग राष्ट्र बन गये।

शेम के वंशज

[21]शेम येपेत का बड़ा भाई था। शेम का एक वंशज एबेर हिब्रू लोगों का पिता था।*

[22]शेम के पुत्र एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद और अराम थे।

[23]अराम के पुत्र ऊस, हूल, गेतेर और मश थे।

[24]अर्पक्षद शेलह का पिता था। शेलह एबेर का पिता था। [25]एबेर के दो पुत्र थे। एक पुत्र का नाम पेलेग* था। उसे यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि जीवन काल में धरती का विभाजन हुआ। दूसरे भाई का नाम योक्तान था।

[26]योक्तान अल्मोदाद, शेलेप, हसर्मावेत, येरह, [27]यदोरवाम, ऊजाल, दिक्ला, [28]ओबाल, अबीमाएल, शबा, [29]ओपीर हवीला और योबाब का पिता था। ये सभी लोग योक्तान की संतान हुए। [30]ये लोग मेशा और पूर्वी पहाड़ी प्रदेश के बीच की भूमि में रहते थे। मेशा सपारा प्रदेश की ओर था।

[31]वे लोग शेम के परिवार से थे। वे परिवार, भाषा, प्रदेश और राष्ट्र की इकाईयों में व्यवस्थित थे।

[32]नूह के पुत्रों से चलने वाले परिवारों की यह सूची है। वे अपने-अपने राष्ट्रो में बँटकर रहते थे। बाढ़ के बाद सारी पृथ्वी पर फैलने वाले लोग इन्हीं परिवारों से निकले।

शेम … था एबेर के सन्तानों का पिता शेम से पैदा हुआ था।”
पेलेग इस नाम का अर्थ “विभाजन” है।

संसार बँटा

11 बाढ़ के बाद सारा संसार एक ही भाषा बोलता था। सभी लोग एक ही शब्द-समूह का प्रयोग करते थे। [2]लोग पूर्व से बढ़े। उन्हें शिनार देश में एक मैदान मिला। लोग वहाँ रहने के लिए ठहर गए।

[3]लोगों ने कहा, “हम लोगों को ईंटें बनाना और उन्हें आग में तपाना चाहिये, ताकि वे कठोर हो जायें।” इसलिये लोगों ने अपने घर बनाने के लिये पत्थरों के स्थान पर ईंटों का प्रयोग किया और लोगों ने गारे के स्थान पर राल का प्रयोग किया।

[4]लोगों ने कहा, “हम अपने लिए एक नगर बनाएँ और हम एक बहुत ऊँची इमारत बनाएंगे जो आकाश को छुएगी। हम लोग प्रसिद्ध हो जाएंगे। अगर हम लोग ऐसा करेंगे तो पूरी धरती पर बिखरेंगे नहीं हम लोग एक जगह पर एक साथ रहेंगे।”

[5]यहोवा नगर और बहुत ऊँची इमारत को देखने के लिए नीचे आया। यहोवा ने लोगों को यह सब बनाते देखा। [6]यहोवा ने कहा, “ये सभी लोग एक ही भाषा बोलते हैं और मैं देखता हूँ कि वे इस काम को करने के लिए एकजुट हैं। यह तो, ये जो कुछ कर सकते हैं उसका, केवल आरम्भ है। शीघ्र ही वे वह सब कुछ करने के योग्य हो जाएंगे जो ये करना चाहेंगे। [7]इसलिए आओ हम नीचे चले और इनकी भाषा को गड़बड़ कर दें। तब ये एक दूसरे की बात नहीं समझेंगे।”

[8]यहोवा ने लोगों को पूरी पृथ्वी पर फैला दिया। इससे लोगों ने नगर को बनाना पूरा नहीं किया। [9]यही वह जगह थी जहाँ यहोवा ने पूरे संसार की भाषा को गड़बड़ कर दिया था। इसलिए इस जगह का नाम बाबुल* पड़ा।

बाबुल अर्थात् “संभ्रामित” करना।

इस प्रकार यहोवा ने उस जगह से लोगों को पृथ्वी के सभी देशों में फैलाया।

शेम के परिवार की कथा

[10]यह शेम के परिवार की कथा है। बाढ़ के दो वर्ष बाद जब शेम सौ वर्ष का था उसके पुत्र अर्पक्षद का जन्म हुआ। [11]उसके बाद शेम पाँच सौ वर्ष जीवित रहा। उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ थीं।

[12]जब अर्पक्षद पैंतीस वर्ष का था उसके पुत्र शेलह का जन्म हुआ। [13]शेलह के जन्म होने के बाद अर्पक्षद चार सौ तीन वर्ष जीवित रहा। इन दिनों उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई।

[14]शेलह के तीस वर्ष के होने पर उसके पुत्र एबेर का जन्म हुआ। [15]एबेर के जन्म के बाद शेलह चार सौ तीन वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ उत्पन्न हुई।

[16]एबेर के चौंतीस वर्ष के होने के बाद उसके पुत्र पेलेग का जन्म हुआ। [17]पेलेग के जन्म के बाद एबेर चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों में इसको दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ हुई।

[18]जब पेलेग तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र 'रु' का जन्म हुआ। [19]'रु' के जन्म के बाद पेलेग दो सौ नौ वर्ष और जीवित रहा। उन दिनों में उसके अन्य पुत्रियों और पुत्रों का जन्म हुआ।

[20]जब रु बत्तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र सरूग का जन्म हुआ। [21]सरुग के जन्म के बाद रु दो सौ सात वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ हुई।

[22]जब सरुग तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र नाहोर का जन्म हुआ। [23]नाहोर के जन्म के बाद सरूग दो सौ वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों में उसके दूसरे पुत्रों और पुत्रियों का जन्म हुआ।

[24]जब नाहोर उनतीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र तेरह का जन्म हुआ। [25]तेरह के जन्म के बाद नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों में उसके दूसरी पुत्रियों और पुत्रों का जन्म हुआ।

[26]तेरह जब सत्तर वर्ष का हुआ, उसके पुत्र अब्राम, नाहोर और हारान का जन्म हुआ।

तेरह के परिवार की कथा

[27]यह तेरह के परिवार की कथा है। तेरह अब्राम, नाहोर और हारान का पिता था। हारान लूत का पिता था। [28]हारान अपनी जन्मभूमि कसदियों* के उर नगर में मरा। जब हारान मरा तब उसका पिता तेरह जीवित था। [29]अब्राम और नाहोर दोनों ने विवाह किया। अब्राम की पत्नी सारै थी। नाहोर की पत्नी मिल्का थी। मिल्का हारान की पुत्री थी। हारान मिल्का और यिस्का का बाप था। [30]सारै के कोई बच्चा नहीं था क्योंकि वह किसी बच्चे को जन्म देने योग्य नहीं थी।

[31]तेरह ने अपने परिवार को साथ लिया और कसदियों के उर नगर को छोड़ दिया। उन्होंने कनान की यात्रा करने का इरादा किया। तेरह ने अपने पुत्र अब्राम, अपने पोते लूत (हारान का पुत्र), अपनी पुत्रवधू (अब्राम की पत्नी) सारै को साथ लिया। उन्होंने हारान तक यात्रा की और वहाँ ठहरना तय किया। [32]तेरह दो सौ पाँच वर्ष जीवित रहा। तब वह हारान में मर गया।

परमेश्वर अब्राम को बुलाता है

12 यहोवा ने अब्राम से कहा,
"अपने देश और अपने लोगों को छोड़ दो।
अपने पिता के परिवार को छोड़ दो और
उस देश जाओ जिसे मैं तुम्हें दिखाऊँगा।
[2] मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।
मैं तुझसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा।
मैं तुम्हारे नाम को प्रसिद्ध करूँगा।
लोग तुम्हारे नाम का प्रयोग दूसरों के
कल्याण के लिए करेंगे।
[3] मैं उन लोगों को आशीर्वाद दूँगा
जो तुम्हारा भला करेंगे।
किन्तु उनको दण्ड दूँगा जो तुम्हारा बुरा करेंगे।
पृथ्वी के सारे मनुष्यो को
आशीर्वाद देने के लिये
मैं तुम्हारा उपयोग करूँगा।"

कसदियों कसदियों यह दक्षिणी बाबेल का उर नगर हो सकता है, या यह हारान के पास कोई नगर हो सकता है।

अब्राम कनान जाता है

[4]अब्राम ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने हारान को छोड़ दिया और लूत उसके साथ गया। इस समय अब्राम पच्हत्तर वर्ष का था। [5]अब्राम ने जब हारान छोड़ा तो वह अकेला नहीं था। अब्राम अपनी पत्नी सारै, भतीजे लूत और हारान में उनके पास जो कुछ था, सबको साथ लाया। हारान में जो दास अब्राम को मिले थे वे भी उनके साथ गए। अब्राम और उसके दल ने हारान को छोड़ा और कनान देश तक यात्रा की। [6]अब्राम ने कनान देश में शकेम के नगर और मोरे के बड़े पेड़ तक यात्रा की। उस समय कनानी लोग उस देश में रहते थे।

[7]यहोवा अब्राम के सामने आया* यहोवा ने कहा, "मैं यह देश तुम्हारे वंशजो* को दूँगा।"

यहोवा अब्राम के सामने जिस जगह पर प्रकट हुआ उस जगह पर अब्राम ने एक वेदी यहोवा की उपासना के लिए बनाया। [8]तब अब्राम ने उस जगह को छोड़ा और बेतेल के पूर्व पहाड़ों तक यात्रा की। अब्राम ने वहाँ अपना तम्बू लगाया। बेतेल नगर पश्चिम में था। ये नगर पूर्व में था। उस जगह अब्राम ने यहोवा के लिए दूसरी वेदी बनाई और अब्राम ने वहाँ यहोवा की उपासना की। [9]इसके बाद अब्राम ने फिर यात्रा आरम्भ की। उसने नेगव* की ओर यात्रा की।

मिस्र में अब्राम

[10]इन दिनों भूमि बहुत सूखी थी। वर्षा नहीं हो रही थी और कोई खाने की चीज़ नहीं उग सकती थी। इसलिए अब्राम जीवित रहने के लिए मिस्र चला गया। [11]अब्राम ने देखा कि उसकी पत्नी सारै बहुत सुन्दर थी। इसलिए मिस्र में आने के पहले अब्राम ने सारै से कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम बहुत सुन्दर स्त्री हो। [12]मिस्र के लोग तुम्हें देखेंगे। वे कहेंगे 'यह स्त्री इसकी पत्नी है।' तब वे मुझे मार डालेंगे क्योंकि वे तुमको लेना चाहेंगे। [13]इसलिए तुम लोगों से कहना कि तुम मेरी बहन हो। तब वे मुझको नहीं मारेंगे। वे मुझ पर दया करेंगे क्योंकि वे समझेंगे कि मैं तुम्हारा भाई हूँ। इस तरह तुम मेरा जीवन बचाओगी।"

[14]इस प्रकार अब्राम मिस्र में पहुँचा। मिस्र के लोगों ने देखा, सारै बहुत सुन्दर स्त्री है। [15]कुछ मिस्र के अधिकारियों ने भी उसे देखा। उन्होंने फ़िरौन से कहा कि वह बहुत सुन्दर स्त्री है। वे अधिकारी सारै को फ़िरौन के घर ले गए। [16]फ़िरौन ने अब्राम के ऊपर दया की क्योंकि उसने समझा कि वह सारै का भाई है। फ़िरौन ने अब्राम को भेड़ें मवेशी और गधे दिए। अब्राम को ऊँटों के साथ–साथ आदमी और स्त्रियाँ दास दासी के रूप में मिले।

[17]फ़िरौन अब्राम की पत्नी को रख लिया। इससे यहोवा ने फ़िरौन और उसके घर के मनुष्यों में बुरी बीमारी फैला दी। [18]इसलिए फ़िरौन ने अब्राम को बुलाया। फिरौन ने कहा, "तुमने मेरे साथ बड़ी बुराई की है। तुमने यह नहीं बताया कि सारै तुम्हारी पत्नी है। क्यों? [19]तुमने कहा, 'यह मेरी बहन है।' तुमने ऐसा क्यों कहा? मैंने इसे इसलिए रखा कि यह मेरी पत्नी होगी। किन्तु अब मैं तुम्हारी पत्नी को तुम्हें लौटाता हूँ। इसे लो और जाओ।" [20]तब फ़िरौन ने अपने पुरुषों को आज्ञा दी कि वे अब्राम को मिस्र के बाहर पहुँचा दे। इस तरह अब्राम और उसकी पत्नी ने वह जगह छोड़ी और वे सभी चीज़ें अपने साथ ले गए जो उनकी थीं।

अब्राम कनान लौटा

13 अब्राम ने मिस्र छोड़ दिया। अब्राम ने अपनी पत्नी तथा अपने सभी सामान के साथ नेगव से होकर यात्रा की। लूत भी उसके साथ था। [2]इस समय अब्राम बहुत धनी था। उसके पास बहुत से जानवर, बहुत सी चाँदी और बहुत सा सोना था।

[3]अब्राम चारों तरफ यात्रा करता रहा। उसने नेगेव को छोड़ा और बेतेल को लौट गया। वह बेतेल नगर और ऐ नगर के बीच के प्रदेश में पहुँचा। यह वही जगह थी जहाँ अब्राम और उसका परिवार पहले तम्बू लगाकर ठहरा था। [4]यह वही जगह थी जहाँ अब्राम ने एक वेदी बनाई थी। इसलिए अब्राम ने यहाँ यहोवा की उपासना की।

अब्राम और लूत अलग हुए

[5]इस समय लूत भी अब्राम के साथ यात्रा कर रहा था। लूत के पास बहुत से जानवर और तम्बू थे। [6]अब्राम

यहोवा ... आया परमेश्वर प्राय: विशेष रीति से दिखाई पड़ा। जिससे लोग उसे देख सके जैसे आदमी, स्वर्गदूत, आग तो कभी तेज ज्योति बनता था।

वंशजों एक व्यक्ति के बच्चे और उसके सभी भविष्य के परिवार ।

नेगव यहूदा के दक्षिण की मरुभूमि।

और लूत के पास इतने अधिक जानवर थे कि भूमि एक साथ उनको चारा नहीं दे सकती थी। [7]अब्राम और लूत के मजदूर आपस में बहस करने लगे। उन दिनों कनानी लोग और परिज्जी लोग भी इसी प्रदेश में रहते थे।

[8]अब्राम ने लूत से कहा, "हमारे और तुम्हारे बीच कोई बहस नहीं होनी चाहिए। हमारे और तुम्हारे लोग भी बहस न करें। हम सभी भाई हैं। [9]हम लोगों को अलग हो जाना चाहिए। तुम जो चाहो जगह चुन लो। अगर तुम बायीं ओर जाओगे तो मैं दाहिनी ओर जाऊँगा। अगर तुम दाहिनी ओर जाओगे तो मैं बायीं ओर जाऊँगा।"

[10]लूत ने निगाह दौड़ाई और यरदन की घाटी को देखा। लूत ने देखा कि वहाँ बहुत पानी है। (यह बात उस समय की है जब यहोवा ने सदोम और अमोरा को नष्ट नहीं किया था। उस समय यरदन की घाटी सोअर तक यहोवा के बाग की तरह पूरे रास्ते के साथ साथ फैली थी। यह प्रदेश मिस्र देश की तरह अच्छा था।) [11]इसलिए लूत ने यरदन घाटी में रहना स्वीकार किया। इस तरह दोनों व्यक्ति अलग हुए और लूत ने पूर्व की ओर यात्रा शुरु की। [12]अब्राम कनान प्रदेश में रहा और लूत घाटी के नगरों में रहा। लूत सदोम के दक्षिण में बढ़ा और ठहर गया। [13]सदोम के लोग बहुत पापी थे। वे हमेशा यहोवा के विरुद्ध पाप करते थे।

[14]जब लूत चला गया तब यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने चारों ओर देखो, उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की ओर देखो। [15]यह सारी भूमि, जिसे तुम देखते हो, मैं तुमको और तुम्हारे बाद जो तुम्हारे लोग रहेंगे उनको देता हूँ। यह प्रदेश सदा के लिए तुम्हारा है। [16]मैं तुम्हारे लोगों को पृथ्वी के कणों के समान अनगिनत बनाऊँगा। अगर कोई व्यक्ति पृथ्वी के कणों को गिन सके तो वह तुम्हारे लोगों को भी गिन सकेगा। [17]इसलिए जाओ। अपनी भूमि पर चलो। मैं इसे अब तुमको देता हूँ।"

[18]इस तरह अब्राम ने अपने तम्बू हटाया। वह मम्रे के बड़े पेड़ों के पास रहने लगा। यह हेब्रोन नगर के करीब था। उस जगह पर अब्राम ने एक वेदी यहोवा की उपासना के लिए बनायी।

लूत पकड़ा गया

14 अम्रापेल शिनार का राजा था। अर्योक एल्लासार का राजा था। कदोर्लाओमेर एलाम का राजा था। तिदाल गोयीम का राजा था। [2]इन सभी राजाओं ने सदोम के राजा बेरा, अमोरा के राजा बिर्शा, अद्मा के राजा शिनाब, सबोयीम के राजा शेमेबेर तथा बेला (बेला सोअर भी कहा जाता है) के राजा के साथ एक लड़ाई लड़ी।

[3]सिद्दीम की घाटी में ये सभी राजा अपनी सेनाओं से मिले। (सिद्दीम की घाटी आजकल लवण सागर है।) [4]इन राजाओं ने कदोर्लाओमेर की सेवा बारह वर्ष तक की थी। किन्तु तेरहवें वर्ष वे सभी उसके विरुद्ध हो गए। [5]इसलिए चौदहवें वर्ष कदोर्लाओमेर अन्य राजाओं के साथ उनसे लड़ने आया। कदोर्लाओमेर और उसके साथ के राजाओं ने रपाई लोगों को अशतरोत्कनम में हराया। उन्होंने हाम में जूजि लोगों को भी हराया। उन्होंने एमि लोगों को शाबेकिर्यातैम में हराया [6]और उन्होंने होरीत लोगों को सेईर* के पहाड़ी प्रदेश से हराकर एल्पारान* की ओर भगाया। (एल्पारान मरूभूमि के करीब है।) [7]तब राजा कदोर्लाओमेर पीछे को मुड़ा और एन्मिशपात को गया। (यह कादेश भी कहलाता है।) और सभी अमालेकी लोगों को हराया। उसने एमोरी लोगों को भी हराया। ये लोग हससोन्तामार में रहते हैं।

[8]उस समय सदोम का राजा, अमोरा का राजा, अदमा का राजा, सबोयीम का राजा, और बेला का राजा, (बेला सोअर ही है।) सभी एक साथ मिल कर अपने शत्रुओं से लड़ने के लिए गए। [9]वे एलाम के राजा कदोर्लाओमेर, गोयीम के राजा तिदाल, शिनार के राजा अम्रापेल, और एल्लासार के राजा अर्योक से लड़े। इस तरह चार राजा पाँच राजाओं से लड़ रहे थे।

[10]सिद्दीम की घाटी* में राल से भरे हुए अनेक गड्ढे थे। सदोम और अमोरा के राजा और उनकी सेनाएं भाग गई। अनेक सैनिक उन गड्ढों में गिर गए। किन्तु दूसरे लोग पहाड़ों में भाग गए।

[11]सदोम और अमोरा के पास जो कुछ था उसे उनके शत्रुओं ने ले लिया। उन्होंने उनके सारे भोजन–वस्त्रों को ले लिया और वे चले गए। [12]अब्राम

सेईर एदोम देश में पहाड़ की श्रेणियाँ।

एल्पारान शायद एलथ नगर जो लाल सागर के करीब इस्राएल के दक्षिणी छोर पर है।

सिद्दीम की घाटी मृत सागर से पूर्व या दक्षिण पर्व से लगी घाटी या मैदान।

के भाई का पुत्र लूत सदोम में रहता था, उसे शत्रुओं ने पकड़ लिया। उसके पास जो कुछ था उसे भी शत्रु लेकर चले गए। [13]एक व्यक्ति ने, जो पकड़ा नहीं जा सका था उसने अब्राम (जो हिब्रू था) को ये सारी बातें बतायीं। एमोरी मम्रे के पेड़ों के पास अब्राम ने अपना डेरा डाला था। मम्रे एशकोल और आनेर ने एक सन्धि एक दूसरे की मदद करने के लिए की थी* और उन्होंने अब्राम की मदद के लिए भी एक वाचा की थी।

अब्राम लूत को छुड़ाता है

[14]तब अब्राम को पता चला कि लूत पकड़ा गया है। तो उसने अपने पूरे परिवार को इकट्ठा किया और उनमें से तीन सौ अट्ठारह प्रशिक्षित सैनिको को लेकर अब्राम ने दान नगर तक शत्रुओं का पीछा किया। [15]उसी रात उसने और उसके पुरुषों ने शत्रुओं पर अचानक धावा बोल दिया। उन्होंने शत्रुओं को हराया तथा दमिश्क के उत्तर मे होबा तक उनका पीछा किया। [16]तब अब्राम शत्रु द्वारा चुराई गई सभी चीज़ें लाया। अब्राम स्त्रियों, नौकर, लूत और लूत की अपनी सभी चीजें ले आया।

[17]कदोर्लाओमेर और उसके साथ के सभी राजाओं को हराने के बाद अब्राम अपने घर लौट आया। जब वह घर आया तो सदोम का राजा उससे मिलने शावे की घाटी पहुँचा। (इसे अब राजा की घाटी कहते है।)

मेल्कीसेदेक

[18]शालेम का राजा मेल्कीसेदेक भी अब्राम से मिलने गया। मेल्कीसेदेक, सबसे महान परमेश्वर का याजक था। मेल्कीसेदेक रोटी और दाखरस लाया। [19]मेल्कीसेदेक ने अब्राम को आशीर्वाद दिया और कहा:

"अब्राम, सबसे महान परमेश्वर तुम्हें आशीष दे।
परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश बनाया।
[20] और हम सबसे महान परमेश्वर की
स्तुति करते हैं।
परमेश्वर ने शत्रुओं को हराने में
तुम्हारी मदद की।"

तब अब्राम ने लड़ाई में मिली हर एक चीज़ का दसवाँ हिस्सा मेल्कीसेदेक को दिया। [21]तब सदोम के राजा ने कहा, "तुम ये सभी चीज़ें अपने पास रख सकते हो, मुझे केवल मेरे उन मनुष्यों को दे दो जिन्हें शत्रु पकड़ कर ले गये थे।"

[22]किन्तु अब्राम ने सदोम के राजा से कहा, "मैंने सबसे महान परमेश्वर यहोवा जिसने पृथ्वी और आकाश को बनाया है। उसके सम्मुख यह शपथ ली है [23]कि जो आपकी चीज है उसमें से कुछ भी न लूँगा। यहाँ तक की एक धागा व जूते का तस्मा भी नहीं लूँगा। मैं यह नहीं चाहता कि आप कहें, 'मैंने अब्राम को धनी बनाया।' [24]मैं केवल वह भोजन स्वीकार करूँगा जो हमारे जवानों ने खाया है किन्तु आप दूसरे लोगों को उनका हिस्सा दे। हमारी लड़ाई में जीती हुई चीज़ें आप लें और इसमें से कुछ आनेर, एश्कोल और मम्रे को दे। इन लोगों ने लड़ाई में मेरी मदद की थी।"

अब्राम के साथ परमेश्वर की वाचा

15 इन बातों के हो जाने के बाद यहोवा का आदेश अब्राम को एक दर्शन* में आया। परमेश्वर ने कहा, "अब्राम, डरो, नहीं। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा और मैं तुम्हें एक बड़ा पुरस्कार दूँगा।"

[2]किन्तु अब्राम ने कहा, "हे यहोवा ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे तू मुझे देगा और वह मुझे प्रसन्न करेगा। क्यों? क्योंकि मेरे पुत्र नहीं है। इसलिए मेरा दास दमिश्क का निवासी एलीएजेर मेरे मरने के बाद मेरा सब कुछ पाएगा। [3]अब्राम ने कहा, "तू ही देख, तूने मुझे कोई पुत्र नहीं दिया है। इसलिए मेरे घर में पैदा एक दास मेरे सभी चीज़ें पाएगा।"

[4]तब यहोवा ने अब्राम से बातें की। परमेश्वर ने कहा, "तुम्हारी चीज़ों को तुम्हारा यह दास नहीं पाएगा। तुमको एक पुत्र होगा और तुम्हारा पुत्र ही तुम्हारी चीज़ें पाएगा।"

[5]तब परमेश्वर अब्राम को बाहर ले गया। परमेश्वर ने कहा, "आकाश को देखो। अनेक तारों को देखो। ये इतने हैं कि तुम गिन नहीं सकते। भविष्य में तुम्हारा कुटुम्ब ऐसा ही होगा।"

[6]अब्राम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर ने उसके विश्वास को एक अच्छा काम* माना, [7]परमेश्वर

मम्रे ... लिये की थी एश्कोल का भाई और अनेर का भाई था।

दर्शन स्वप्न के समान। परमेश्वर ने अपने भक्तों को अनके दर्शन में देखने ओर सुनने की शक्ति देकर अपना सन्देश दिया।

अच्छा काम या सच्चाई हिब्रू शब्द का अर्थ "धार्मिकता" या "भला काम" हो सकता है।

ने अब्राम से कहा, "मैं ही वह यहोवा हूँ जो तुम्हें कसदियों के ऊर से बाहर लाया। यह मैंने इसलिए किया कि यह प्रदेश मैं तुम्हें दे सकूँ, तुम इस प्रदेश को अपने कब्ज़े में कर सको।"

[8]किन्तु अब्राम ने कहा, "हे यहोवा, मेरे स्वामी, मुझे कैसे विश्वास हो कि यह प्रदेश मुझे मिलेगा?"

[9]परमेश्वर ने अब्राम से कहा, "हम लोग एक वाचा बांधेंगे। तुम मुझको तीन वर्ष की एक गाय, तीन वर्ष की एक बकरी, और तीन वर्ष का एक भेड़ लाओ। एक फाख्ता और एक कबूतर का बच्चा भी लाओ।"

[10]अब्राम ये सभी चीज़ें परमेश्वर के पास लाया। अब्राम ने इन प्राणियों को मार डाला और हर एक के दो टुकड़े कर डाले। अब्राम ने एक आधा टुकड़ा एक तरफ तथा उसका दूसरा आधा टुकड़ा उसके विपरीत दूसरी तरफ रखा। अब्राम ने पक्षियों के दो टुकड़े नहीं किए। [11]थोड़ी देर बाद माँसाहारी पक्षी वेदी पर चढ़ाए हुए मृत जीवों को खाने के लिये नीचे आए किन्तु अब्राम ने उनको भगा दिया।

[12]बाद में सूरज डूबने लगा। अब्राम को गहरी नींद आ गयी। घनघोर अंधकार ने उसे चारों तरफ से घेर लिया। [13]तब यहोवा ने अब्राम से कहा, "तुम्हें ये बातें जाननी चाहिए। तुम्हारे वंशज विदेशी बनेंगे और वे उस देश में जाएंगे जो उनका नहीं होगा। वे वहाँ दास होंगे। चार सौ वर्ष तक उनके साथ बुरा व्यवहार होगा। [14]मैं उस राष्ट्र का न्याय करूँगा तथा उसे सजा दूँगा, जिसने उन्हें गुलाम बनाया और जब तुम्हारे बाद आने वाले लोग उस देश को छोड़ेंगे तो अपने साथ अनेक अच्छी वस्तुएं ले जायेंगे।"

[15]"तुम बहुत लम्बी आयु तक जीवित रहोगे। तुम शान्ति के साथ मरोगे और तुम अपने पुरखाओं के पास दफनाए जाओगे। [16]चार पीढ़ियों के बाद तुम्हारे लोग इसी प्रदेश में फिर आएंगे। उस समय तुम्हारे लोग एमोरियों को हराएंगे। यहाँ रहने वाले एमोरियों को, दण्ड देने के लिए मैं तुम्हारे लोगों का प्रयोग करूँगा। यह बात भविष्य में होगी क्योंकि एमोरी दण्ड पाने योग्य बुरे अभी नही हुए हैं।"

[17]जब सूरज ढ़ल गया, तो बहुत अंधेरा छा गया। मृत जानवर अभी तक जमीन पर पड़े हुए थे। हर जानवर दो भागों में कटे पड़े थे। उसी समय धुएँ तथा आग का एक खम्भा* मरे जानवरों के टुकड़ों के बीच से गुजरा।* [18]इस तरह उस दिन यहोवा ने अब्राम को वचन दिया और उसके साथ वाचा की। यहोवा ने कहा, "मैं यह प्रदेश तुम्हारे वंशजों को दूँगा। मैं मिस्र की नदी और बड़ी नदी परात के बीच का प्रदेश उनको दूँगा। [19]यह देश केनी, कनिज्जी, कदमोनी, [20]हित्ती, परीज्जी, रपाई, [21]एमोरी, कनानी, गिर्गाशी तथा यबूसी लोगों का है।"

दासी हाजिरा

16 सारै अब्राम की पत्नी थी। अब्राम और उसके कोई बच्चा नहीं था। सारै के पास एक मिस्र की दासी थी। उसका नाम हाजिरा था। [2]सारै ने अब्राम से कहा, "देखो, यहोवा ने मुझे कोई बच्चा नहीं दिया है। इसलिए मेरी दासी को रख लो। मैं इसके बच्चे को अपना बच्चा ही मान लूँगी।"

अब्राम ने अपनी पत्नी का कहना मान लिया। [3]कनान में अब्राम के दस वर्ष रहने के बाद यह बात हुई और सारै ने अपने पति अब्राम को हाजिरा को दे दिया। (हाजिरा मिस्री दासी थी।)

[4]हाजिरा, अब्राम से गर्भवती हुई। जब हाजिरा ने यह देखा तो उसे बहुत गर्व हुआ और यह अनुभव करने लगी कि मैं अपनी मालकिन सारै से अच्छी हूँ। [5]लेकिन सारै ने अब्राम से कहा, "मेरी दासी अब मुझसे घृणा करती है और इसके लिए मैं तुमको दोषी मानती हूँ। मैंने उसको तुमको दिया। वह गर्भवती हुई और तब वह अनुभव करने लगी कि वह मुझसे अच्छी है। मैं चाहती हूँ कि यहोवा सही न्याय करे।"

[6]लेकिन अब्राम ने सारै से कहा, "तुम हाजिरा की मालकिन हो। तुम उसके साथ जो चाहो कर सकती हो।" इसलिए सारै ने अपनी दासी को दण्ड दिया और उसकी दासी भाग गई।

धुँए ... का खम्भा इन चिन्हों को परमेश्वर दिखाया करता था जिससे लोग जाने कि परमेश्वर उनके साथ है।
मरे जानवरों ... से गुजरा इससे यह पता चला कि परमेश्वर ने अब्राम और अपने बीच की वाचा पर हस्ताक्षर कर दिया है या अपनी मुहर लगा दी है। जब लोग वाचा करते थे तो कटे जानवरों के बीच से जाते थे और कुछ इस तरह कहते थे। यदि मैं वाचा का पालन न करुँ तो मेरे साथ भी ऐसा ही हो।

हाजिरा का पुत्र इश्माएल

[7]यहोवा के दूत ने मरुभूमि में पानी के सोते के पास दासी को पाया। यह सोता शूर जाने वाले रास्ते पर था। [8]दूत ने कहा, "हाजिरा, तुम सारै की दासी हो। तुम यहाँ क्यों हो? तुम कहाँ जा रही हो?"

हाजिरा ने कहा, "मैं अपने मालकिन सारै के यहाँ से भाग रही हूँ।"

[9]यहोवा के दूत ने उससे कहा, "तुम अपने मालकिन के घर जाओ और उसकी बातें मानों।" [10]यहोवा के दूत ने उससे यह भी कहा, "तुम से बहुत से लोग उत्पन्न होंगे। ये लोग इतने हो जाएंगे कि गिने नहीं जा सकेंगे।"

[11]दूत ने और भी कहा,

"अभी तुम गर्भवती हो
और तुम्हें एक पुत्र होगा।
तुम उसका नाम इश्माएल* रखना।
क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे कष्ट को सुना है
और वह तुम्हारी मदद करेगा।

[12] "इश्माएल जंगली और आजाद होगा
एक जंगली गधे की तरह।
वह सबके विरुद्ध होगा।
वह एक स्थान से दूसरे स्थान को जायेगा।
वह अपने भाईयों के पास अपना डेरा डालेगा
किन्तु वह उनके विरुद्ध होगा।"

[13]तब यहोवा ने हाजिरा से बातें की उसने परमेश्वर को जो उससे बाते कर रहा था, एक नये नाम से पुकारा। उसने कहा, "तुम वह 'यहोवा हो जो मुझे देखता है।'" उसने उसे वह नाम इसलिये दिया क्योंकि उसने अपने आप से कहा, "मैंने देखा है कि वह मेरे ऊपर नज़र रखता है।" [14]इसलिए उस कुएँ का नाम लहैरोई* पड़ा। यह कुआँ कादेश तथा बेरेद के बीच में है।

[15]हाजिरा ने अब्राम के पुत्र को जन्म दिया। अब्राम ने पुत्र का नाम इश्माएल रखा। [16]अब्राम उस समय छियासी वर्ष का था जब हाजिरा ने इश्माएल को जन्म दिया।

इश्माएल हाजिरा से पैदा पुत्र। इस नाम का अर्थ "परमेश्वर सुनता है" या "परमेश्वर ध्यान देता है" है।

लहैरोई इसका अर्थ "उस जीवित रहने वाले का कुआँ जो मुझे देखता है।"

खतना वाचा का सबूत

17 जब अब्राम निन्यानबें वर्ष का हुआ, यहोवा ने उससे बात की। यहोवा ने कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ।* मेरे लिए ये काम करो। मेरी आज्ञा मानो और सही रास्ते पर चलो। [2]अगर तुम यह करो तो मैं अपने और तुम्हारे बीच एक वाचा तैयार करूँगा। मैं तुम्हारे लोगों को एक महान राष्ट्र बनाने का वचन दूँगा।"

[3]अब्राम ने अपना मुँह जमीन की ओर झुकाया। तब परमेश्वर ने उससे बातचीत की और कहा, [4]"हमारी वाचा का यह भाग मेरा है। मैं तुम्हें कई राष्ट्रों का पिता बनाऊँगा। [5]मैं तुम्हारे नाम को बदल दूँगा। तुम्हारा नाम अब्राम* नहीं रहेगा। तुम्हारा नाम इब्राहीम* होगा। मैं तुम्हें यह नाम इसलिए दे रहा हूँ कि तुम बहुत से राष्ट्रों के पिता बनोगे।" [6]"मैं तुमको बहुत वंशज दूँगा। तुमसे नये राष्ट्र उत्पन्न होंगे। तुमसे नये राजा उत्पन्न होंगे [7]और मैं अपने और तुम्हारे बीच एक वाचा करूँगा। यह वाचा तुम्हारे सभी वंशजों के लिए होगी। मैं तुम्हारा और तुम्हारे सभी वंशजों का परमेश्वर रहूँगा। यह वाचा सदा के लिए बनी रहेगी [8]और मैं यह प्रदेश तुमको और तुम्हारे सभी वंशजों को दूँगा। मैं वह प्रदेश तुम्हें दूँगा जिससे होकर तुम यात्रा कर रहे हो। मैं तुम्हें कनान प्रदेश दूँगा। मैं तुम्हें यह प्रदेश सदा के लिए दूँगा और मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा।"

[9]परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, "अब वाचा का यह तुम्हारा भाग है। मेरी इस वाचा का पालन तुम और तुम्हारे वंशज करेंगे। [10]यह वह वाचा है जिसका तुम पालन करोगे। यह वाचा मेरे और तुम्हारे बीच है। यह तुम्हारे सभी वंशजो के लिए है। हर एक बच्चा जो पैदा होगा उसका खतना* अवश्य होगा। [11]तुम चमड़े को यह बताने के लिए काटोगे कि तुम अपने और मेरे बीच के वाचा का पालन करते हो। [12]जब बच्चा आठ दिन का हो जाये, तब तुम उसका खतना करना। हर एक लड़का जो तुम्हारे लोगों में पैदा हो या कोई लड़का जो तुम्हारे लोगों

मैं ... परमेश्वर हूँ शाब्दिक "अल शदद्इ।"

अब्राम इस नाम का अर्थ "पूज्य पिता" है।

इब्राहीम इस नाम का अर्थ "महान पिता या "बहुतों का पिता" है।

खतना पुरुष के लिंग के आगे के चमड़े को काटना। इस्राएल में यह इस बात का सबूत था कि उस आदमी ने परमेश्वर के नियमों और उपदेशों के पालन की विशेष वाचा की है।

का दास हो, उसका खतना अवश्य होगा। [13]इस प्रकार तुम्हारे राष्ट्र के प्रत्येक बच्चे का खतना होगा। जो लड़का तुम्हारे परिवार में उत्पन्न होगा या दास के रूप में खरीदा जायेगा उसका खतना होगा। [14]यही मेरा नियम है और मेरे और तुम्हारे बीच वाचा है। जिस किसी व्यक्ति का खतना नहीं होगा वह तुम्हारे लोगों से अलग कर दिया जायेगा। क्यों? क्योंकि उस व्यक्ति ने मेरी वाचा तोड़ी है।"

इसहाक प्रतिज्ञा का पुत्र

[15]परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, "मैं सारै* को जो तुम्हारी पत्नी है, नया नाम दूँगा। उसका नाम सारा* होगा। [16]मैं उसे आशीर्वाद दूँगा। मैं उसे पुत्र दूँगा और तुम पिता होगे। वह बहुत से नये राष्ट्रों की माँ होगी। उससे राष्ट्रों के राजा पैदा होंगे।"

[17]इब्राहीम ने अपना सिर परमेश्वर को भक्ति दिखाने के लिए जमीन तक झुकाया। लेकिन वह हँसा और अपने से बोला, "मैं सौ वर्ष का बूढ़ा हूँ। मैं पुत्र पैदा नहीं कर सकता और सारा नब्बे वर्ष की बुढ़िया है। वह बच्चों को जन्म नहीं दे सकती।"

[18]तब इब्राहीम के कहने का मतलब परमेश्वर से पूछा, "क्या इश्माएल जीवित रहे और तेरी सेवा करे?"

[19]परमेश्वर ने कहा, "नहीं, मैंने कहा कि तुम्हारी पत्नी सारा पुत्र को जन्म देगी। तुम उसका नाम इसहाक रखोगे। मैं उसके साथ वाचा करूँगा। यह वाचा ऐसी होगी जो उसके सभी वंशजों के साथ सदा बनी रहेगी।

[20]"तुमने मुझसे इश्माएल के बारे में पूछा और मैंने तुम्हारी बात सुनी। मैं उसे आशीर्वाद दूँगा। उसके बहुत से बच्चे होंगे। वह बारह बड़े राजाओं का पिता होगा। उसका परिवार एक बड़ा राष्ट्र बनेगा। [21]किन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक के साथ बनाऊँगा। इसहाक ही वह पुत्र होगा जिसे सारा जनेगी। यह पुत्र अगले वर्ष इसी समय मे पैदा होगा।"

[22]परमेश्वर ने जब इब्राहीम से बात करनी बन्द की, इब्राहीम अकेला रह गया। परमेश्वर इब्राहीम के पास से आकाश की ओर उठ गया। [23]परमेश्वर ने कहा था कि तुम अपने कुटुम्ब के सभी लड़कों और पुरुषों का खतना कराना। इसलिए इब्राहीम ने इश्माएल और अपने घर में पैदा सभी दासों को एक साथ बुलाया। इब्राहीम ने उन दासों को भी एक साथ बुलाया जो धन से खरीदे गए थे। इब्राहीम के घर के सभी पुरुष और लड़के इकट्ठे हुए और उन सभी का खतना उसी दिन उनका माँस काट कर दिया गया।

[24]जब खतना हुआ इब्राहीम निन्यानबे वर्ष का था [25]और उसका पुत्र इश्माएल खतना होने के समय तेरह वर्ष का था। [26]इब्राहीम और उसके पुत्र का खतना उसी दिन हुआ। [27]उसी दिन इब्राहीम के सभी पुरुषों का खतना हुआ। इब्राहीम के घर में पैदा सभी दासों और खरीदे गए सभी दासों का खतना हुआ।

तीन अतिथि

18 बाद में यहोवा फिर इब्राहीम के सामने प्रकट हुआ। इब्राहीम मम्रे के बांज के पेड़ों के पास रहता था। एक दिन, दिन के सबसे गर्म पहर में इब्राहीम अपने तम्बू के दरवाजे पर बैठा था। [2]इब्राहीम ने आँख उठा कर देखा और अपने सामने तीन पुरुषों को खड़े पाया। जब इब्राहीम ने उनको देखा, वह उनके पास गया और उन्हें प्रणाम किया। [3]इब्राहीम ने कहा, "महोदयों,* आप अपने इस सेवक के साथ ही थोड़ी देर ठहरें। [4]मैं आप लोगों के पैर धोने के लिए पानी लाता हूँ। आप पेड़ों के नीचे आराम करें। [5]मैं आप लोगों के लिए कुछ भोजन लाता हूँ और आप लोग जितना चाहे खाएं। इसके बाद आप लोग अपनी यात्रा आरम्भ कर सकते हैं।"

तीनों ने कहा, "यह बहुत अच्छा है। तुम जैसा कहते हो, करो।"

[6]इब्राहीम जल्दी से तम्बू में घुसा। इब्राहीम ने सारा से कहा, "जल्दी से तीन रोटियों के लिए आटा तैयार करो।" [7]तब इब्राहीम अपने मवेशियों की ओर दौड़ा। इब्राहीम ने सबसे अच्छा एक जवान बछड़ा लिया। इब्राहीम ने बछड़ा नौकर को दिया। इब्राहीम ने नौकर से कहा कि तुम जल्दी करो, इस बछड़े को मारो और भोजन के लिए तैयार करो। [8]इब्राहीम ने तीनों को भोजन के लिए माँस दिया। उसने दूध और मक्खन भी दिया।जब तक तीनों पुरुष खाते रहे तब तक इब्राहीम पेड़ के नीचे उनके पास खड़ा रहा।

सारै एक अरामी नाम जिसका अर्थ "राजकुमारी" होता है।
सारा एक हिब्रू नाम जिसका अर्थ "राजकुमारी" होता है।

महोदय इस हिब्रू शब्द का अर्थ "सामन्त" या "यहोवा" हो सकता है। इससे पता चल सकता है कि वे साधारण पुरुष नहीं थे।

[9]उन व्यक्तियों ने इब्राहीम से कहा, "तुम्हारी पत्नी सारा कहाँ है?"

इब्राहीम ने कहा, "वह तम्बू में है।"

[10]तब यहोवा ने कहा, "मैं बसन्त में फिर आऊँगा उस समय तुम्हारी पत्नी सारा एक पुत्र को जन्म देगी।"

सारा तम्बू में सुन रही थी और उसने इन बातों को सुना। [11]इब्राहीम और सारा दोनों बहुत बूढ़े थे। सारा प्रसव की उम्र को पार कर चुकी थी। [12]सारा मन ही मन मुस्करायी। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने अपने आप से कहा, "मैं और मेरे पति दोनों ही बूढ़े हैं। मैं बच्चा जनने के लिये काफी बूढ़ी हूँ।"

[13]तब यहोवा ने इब्राहीम से कहा, "सारा हंसी और बोली, 'मैं इतनी बूढ़ी हूँ कि बच्चा जन नहीं सकती।' [14]क्या यहोवा के लिए कुछ भी असम्भव है? नहीं, मैं फिर बसन्त में अपने बताए समय पर आऊँगा और तुम्हारी पत्नी सारा पुत्र जनेगी।"

[15]लेकिन सारा ने कहा, "मैं हंसी नहीं।" (उसने ऐसा कहा, क्योंकि वह डरी हुई थी।)

लेकिन यहोवा ने कहा, "नहीं, मै जानता हूँ कि तुम्हारा कहना सही नहीं है। तुम जरूर हंसी।"

[16]तब वे पुरुष जाने के लिए उठे। उन्होंने सदोम की ओर देखा और उसी ओर चल पड़े। इब्राहीम उनको विदा करने के लिए कुछ दूर तक उनके साथ गया।

परमेश्वर के साथ इब्राहीम का सौदा

[17]यहोवा ने मन में कहा, "क्या मैं इब्राहीम से वह कह दूँ जो मैं अभी करूँगा? [18]इब्राहीम एक बड़ा और शक्तिशाली राष्ट्र बन जाएगा। इसी के कारण पृथ्वी के सारे मनुष्य आशीर्वाद पायेंगे। [19]मैंनें इब्राहीम के साथ खास वाचा की है। मैंने यह इसलिए किया है कि वह अपने बच्चे और अपने वंशज को उस तरह जीवन बिताने के लिए आज्ञा देगा जिस तरह का जीवन बिताना यहोवा चाहता है। मैंने यह इसलिए किया कि वे सच्चाई से रहेंगे और भले बनेंगे। तब मैं यहोवा प्रतिज्ञा की गई चीजों को दूँगा।"

[20]तब यहोवा ने कहा, "मैने बार बार सुना है कि सदोम और अमोरा के लोग बहुत बुरे हैं। [21]इसलिए मैं वहाँ जाऊँगा और देखूँगा कि क्या हालत उतनी ही खराब है जितनी मैंने सुनी है। तब मै ठीक–ठीक जान लूँगा।"

[22]तब वे लोग मुड़े और सदोम की ओर चल पड़े। किन्तु इब्राहीम यहोवा के सामने खड़ा रहा। [23]तब इब्राहीम यहोवा से बोला "हे यहोवा, क्या तू बुरे लोगों को नष्ट करने के साथ अच्छे लोगों को भी नष्ट करने की बात सोच रहा है? [24]यदि उस नगर में पचास अच्छे लोग हों तो क्या होगा? क्या तब भी तू नगर को नष्ट कर देगा? निश्चय ही तू वहाँ रहने वाले पचास अच्छे लोगों के लिए उस नगर को बचा लेगा। [25]निश्चय ही तू नगर को नष्ट नहीं करेगा। बुरे लोगों को मारने के लिए तू पचास अच्छे लोगों को नष्ट नहीं करेगा। अगर ऐसा हुआ तो अच्छे और बुरे लोग एक ही हो जाएँगे, दोनों को ही दण्ड मिलेगा। तू पूरी पृथ्वी को न्याय देने वाला है। मैं जानता हूँ कि तू न्याय करेगा।"

[26]तब यहोवा ने कहा, "यदि मुझे सदोम नगर में पचास अच्छे लोग मिले तो मैं पूरे नगर को बचा लूँगा।"

[27]तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा, तेरी तुलना में, मैं केवल धूलि और राख हूँ। लेकिन तू मुझको फिर थोड़ा कष्ट देने का अवसर दे और मुझे यह पूछने दे कि [28]यदि पाँच अच्छे लोग कम हों तो क्या होगा? यदि नगर में पैंतालीस ही अच्छे लोग हो तो क्या होगा? क्या तू केवल पाँच लोगों के लिए पूरा नगर नष्ट करेगा?" तब यहोवा ने कहा, "यदि मुझे वहाँ पैंतालीस अच्छे लोग मिले तो मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"

[29]इब्राहीम ने फिर यहोवा से कहा, "यदि तुझे वहाँ केवल चालीस अच्छे लोग मिले तो क्या तू नगर को नष्ट कर देगा?"

यहोवा ने कहा, "यदि मुझे चालीस अच्छे लोग वहाँ मिले तो मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"

[30]तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा कृपा करके मुझ पर नाराज न हो। मुझे यह पूछने दे कि यदि नगर में केवल तीस अच्छे लोग हो तो क्या तू नगर को नष्ट करेगा?"

यहोवा ने कहा, "यदि मुझे तीस अच्छे लोग वहाँ मिले तो मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"

[31]तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा, क्या मैं तुझे फिर कष्ट दूँ और पूछ लूँ कि यदि बीस ही अच्छे लोग वहाँ हो तो?"

यहोवा ने उत्तर दिया, "अगर मुझे बीस अच्छे लोग मिले तो भी मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"

[32]तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा तू मुझसे नाराज न हो मुझे अन्तिम बार कष्ट देने का मौका दे। यदि तुझे वहाँ दस अच्छे लोग मिले तो तू क्या करेगा?"

यहोवा ने कहा, "यदि मुझे नगर में दस अच्छे लोग मिले तो भी मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"

[33]यहोवा ने इब्राहीम से बोलना बन्द कर दिया, इसलिए यहोवा चला गया और इब्राहीम अपने घर लौट आया।

लूत के अतिथि

19 उनमे से दो स्वर्गदूत* साँझ को सदोम नगर में आए। लूत नगर के द्वार पर बैठा था और उसने स्वर्गदूतों को देखा। लूत ने सोचा कि वे लोग नगर के बीच से यात्रा कर रहे हैं। लूत उठा और स्वर्गदूतों के पास गया तथा जमीन तक सामने झुका। [2]लूत ने कहा, "आप सब महोदय, कृपा कर मेरे घर चलें और मैं आप लोगों की सेवा करूँगा। वहाँ आप लोग अपना पैर धो सकते हैं और रात को ठहर सकते हैं। तब कल आप लोग अपनी यात्रा आरम्भ कर सकते हैं।"

स्वर्गदूतों ने उत्तर दिया, "नहीं, हम लोग रात को मैदान* में ठहरेंगे।"

[3]किन्तु लूत अपने घर चलने के लिए बार–बार कहता रहा। इस तरह स्वर्गदूत लूत के घर जाने के लिए तैयार हो गए। जब वे घर पहुँचे तो लूत उनके पीने के लिए कुछ लाया। लूत ने उनके लिए रोटियाँ बनाई। लूत का पकाया भोजन स्वर्गदूतों ने खाया।

[4]उस शाम सोने के समय के पहले ही नगर के सभी भागों से लोग लूत के घर आए। सदोम के पुरुषों ने लूत का घर घेर लिया और बोले। [5]उन्होंने कहा, "आज रात को जो लोग तुम्हारे पास आए, वे दोनों पुरुष कहाँ है? उन पुरुषों को बाहर हमें दे दो। हम उनके साथ कुकर्म करना चाहते हैं।"

[6]लूत बाहर निकला और अपने पीछे से उसने दरवाजा बन्द कर लिया। [7]लूत ने पुरुषों से कहा, "नहीं मेरे भाईयों मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप यह बुरा काम न करें। [8]देखो मेरी दो पुत्रियाँ हैं, वे इसके पहले किसी पुरुष के साथ नहीं सोयी हैं। मैं अपनी पुत्रियों को तुम लोगों को दे देता हूँ। तुम लोग उनके साथ जो चाहो कर सकते हो। लेकिन इन व्यक्तियों के साथ कुछ न करो। ये लोग हमारे घर आए हैं और मैं इनकी रक्षा जरूर करूँगा।"

[9]घर के चारों ओर के लोगों ने उत्तर दिया, "रास्ते से हट जाओ।" तब पुरुषों ने अपने मन में सोचा, "यह व्यक्ति लूत हमारे नगर में अतिथि के रूप में आया। अब यह सिखाना चाहता है कि हम लोग क्या करें।" तब लोगों ने लूत से कहा, "हम लोग उनसे भी अधिक तुम्हारा बुरा करेंगे।" इसलिए उन व्यक्तियों ने लूत को घेर कर उसके निकट आना शुरु किया। वे दरवाजे को तोड़कर खोलना चाहते थे।

[10]किन्तु लूत के साथ ठहरे व्यक्तियों ने दरवाजा खोला और लूत को घर के भीतर खींच लिया। तब उन्होंने दरवाजा बन्द कर लिया। [11]दोनों व्यक्तियों ने दरवाजे के बाहर के पुरुषों को अन्धा कर दिया। इस तरह घर में घुसने की कोशिश करने वाले जवान व बूढ़े सब अन्धे हो गए और दरवाजा न पा सके।

सदोम से बच निकलना

[12]दोनों व्यक्तियों ने लूत से कहा, "क्या इस नगर में ऐसा कोई व्यक्ति है जो तुम्हारे परिवार का है? क्या तुम्हारे दामाद, तुम्हारी पुत्रियाँ या अन्य कोई तुम्हारे परिवार का व्यक्ति है? यदि कोई दूसरा इस नगर में तुम्हारे परिवार का है तो तुम अभी नगर छोड़ने के लिए कह दो। [13]हम लोग इस नगर को नष्ट करेंगे। यहोवा ने उन सभी बुराईयों को सुन लिया है जो इस नगर में है। इसलिए यहोवा ने हम लोगों को इसे नष्ट करने के लिए भेजा है।"

[14]इसलिए लूत बाहर गया और अपनी अन्य पुत्रियों से विवाह करने वाले दामादों से बातें की। लूत ने कहा, "शीघ्रता करो और इस नगर को छोड़ दो।" यहोवा इसे तुरन्त नष्ट करेगा। लेकिन उन लोगों ने समझा कि लूत मजाक कर रहा है।

[15]दूसरी सुबह को भोर के समय ही स्वर्गदूत लूत से जल्दी करने की कोशिश की। उन्होंने कहा, "देखो इस नगर को दण्ड मिलेगा। इसलिए तुम अपनी पत्नी और तुम्हारे साथ जो दो पुत्रियाँ जो अभी तक हैं, उन्हें

स्वर्गदूत इस शब्द का अर्थ "सन्देशवाहक" होता है। कभी–कभी यह एक पुरुष होता है और कभी–कभी वह स्वर्गदूत होता है।

मैदान नगर में खुली जगह, शायद नगर के द्वार के पास ही। कभी–कभी यात्री नगर में आने पर मैदान में डेरा डालते थे।

लेकर इस जगह को छोड़ दो। तब तुम नगर के साथ नष्ट नहीं होगे।"

[16]लेकिन लूत दुविधा में रहा और नगर छोड़ने की जल्दी उसने नहीं की। इसलिए दोनों स्वर्गदूतों ने लूत, उसकी पत्नी और उसकी दोंनो पुत्रियों के हाथ पकड़ लिए। उन दोनों ने लूत और उसके परिवार को नगर के बाहर सुरक्षित स्थान में पहुँचाया। लूत और उसके परिवार पर यहोवा की कृपा थी। [17]इसलिए दोनों ने लूत और उसके परिवार को नगर के बाहर पहुँचा दिया। जब वे बाहर हो गए तो उनमें से एक ने कहा, "अपना जीवन बचाने के लिए अब भागो। नगर को मुड़कर भी मत देखो। इस घाटी में किसी जगह न रूको। तब तक भागते रहो जब तक पहाड़ों में न जा पहुँचो। अगर तुम ऐसा नहीं करते, तो तुम नगर के साथ नष्ट हो जाओगे।"

[18]तब लूत ने दोनों से कहा, "महोदयों, कृपा करके इतनी दूर दौड़ने के लिए विवश न करें। [19]आप लोगों ने मुझ सेवक पर इतनी अधिक कृपा की है। आप लोगों ने मुझे बचाने की कृपा की है। लेकिन मैं पहाड़ी तक दौड़ नहीं सकता। अगर मैं आवश्यकता से अधिक धीरे दौड़ा तो कुछ बुरा होगा और मैं मारा जाऊँगा। [20]लेकिन देखें यहाँ पास में एक बहुत छोटा नगर है। हमें उस नगर तक दौड़ने दें। तब हमारा जीवन बच जायेगा।"

[21]स्वर्गदूत ने लूत से कहा, "ठीक है, मैं तुम्हें ऐसा भी करने दूँगा। मैं उस नगर को नष्ट नही करूँगा जिसमें तुम जा रहे हो। [22]लेकिन वहाँ तक तेज दौड़ो। मैं तब तक सदोम को नष्ट नहीं करूँगा जब तक तुम उस नगर में सुरक्षित नहीं पहुँच जाते।" (इस नगर का नाम सोअर है क्योंकि यह छोटा है।)

सदोम और अमोरा नष्ट किए गए

[23]जब लूत सोअर में घुस रहा था, सवेरे का सूरज चमकने लगा [24]और यहोवा ने सदोम और अमोरा को नष्ट करना आरम्भ किया। यहोवा ने आग तथा जलते हुए गन्धक को आकाश से नीचें बरसाया। [25]इस तरह यहोवा ने उन नगरों को जला दिया और पूरी घाटी के सभी जीवित मनुष्यों तथा सभी पेड़ पौधों को भी नष्ट कर दिया।

[26]जब वे भाग रहे थे, तो लूत की पत्नी ने मुड़कर नगर को देखा। जब उसने मुड़कर देखा तब वह एक नमक की ढेर हो गई। [27]उसी दिन बहुत सवेरे इब्राहीम उठा और उस जगह पर गया जहाँ वह यहोवा के सामने खड़ा होता था। [28]इब्राहीम ने सदोम और अमोरा नगरों की ओर नजर डाली। इब्राहीम ने उस घाटी की पूरी भूमि की ओर देखा। इब्राहीम ने उस प्रदेश से उठते हुए घने धुँए को देखा। बड़ी भयंकर आग से उठते धुँए के समान वह दिखाई पड़ा।

[29]घाटी के नगरों को परमेश्वर ने नष्ट कर दिया। जब परमेश्वर ने यह किया तब इब्राहीम ने जो कुछ माँगा था उसे उसने याद रखा। परमेश्वर ने लूत का जीवन बचाया लेकिन परमेश्वर ने उस नगर को नष्ट कर दिया जिसमें लूत रहता था।

लूत और उसकी पुत्रियाँ

[30]लूत सोअर में लगातार रहने से डरा। इसलिए वह और उसकी दोनों पुत्रियाँ पहाड़ों में गई और वहीं रहने लगीं। वे वहाँ एक गुफा में रहते थे। [31]एक दिन बड़ी पुत्री ने छोटी से कहा, "पृथ्वी पर चारों ओर पुरुष और स्त्रियाँ विवाह करते हैं। लेकिन यहाँ आस पास कोई पुरुष नहीं है जिससे हम विवाह करें। हम लोगों के पिता बूढ़े हैं। [32]इसलिए हम लोग अपने पिता का उपयोग बच्चों को जन्म देने के लिए करें जिससे हम लोगों का वंश चल सके। हम लोग अपने पिता के पास चलेंगे और दाखरस पिलायेंगे तथा उसे मदहोश कर देंगे। तब हम उसके साथ सो सकते हैं।"

[33]उस रात दोनों पुत्रियाँ अपने पिता के पास गई और उसे उन्होंने दाखरस पिलाकर मदहोश कर दिया। तब बड़ी पुत्री पिता के बिस्तर में गई और उसके साथ सोई। लूत अधिक मदहोश था इसलिए यह न जान सका कि वह उसके साथ सोया।

[34]दूसरे दिन बड़ी पुत्री ने छोटी से कहा, "पिछली रात मैं अपने पिता के साथ सोई। आओ इस रात फिर हम उसे दाखरस पिलाकर मदहोश कर दें। तब तुम उसके बिस्तर में जा सकती हो और उसके साथ सो सकती हो। इस तरह हम लोगों को अपने पिता का उपयोग बच्चों को जन्म देकर अपने वंश को चलाने के लिए करना चाहिए।" [35]इसलिए उन दोनों पुत्रियों ने अपने पिता को दाखरस पिलाकर मदहोश कर दिया। तब छोटी पुत्री उसके बिस्तर में गई और उसके पास सोई।

लूत इस बार भी न जान सका कि उसकी पुत्री उसके साथ सोई।

[36]इस तरह लूत की दोनों पुत्रियाँ गर्भवती हुई। उनका पिता ही उनके बच्चों का पिता था। [37]बड़ी पुत्री ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने लड़के नाम मोआब रखा। मोआब उन सभी मोआबी लोगों का पिता है, जो अब तक रह रहे हैं। [38]छोटी पुत्री ने भी एक पुत्र जना। इसने अपने पुत्र का नाम बेनम्मी रखा। बेनम्मी अभी उन सभी अम्मोनी लोगों का पिता है जो अब तक रह रहे हैं।

इब्राहीम गरार जाता है

20 इब्राहीम ने उस जगह को छोड़ दिया और नेगेव की यात्रा की। इब्राहीम कादेश और शूर के बीच गरार में बस गया। [2]गरार में इब्राहीम ने लोगों से कहा कि सारा मेरी बहन है। गरार के राजा अबीमेलेक ने यह बात सुनी। अबीमेलेक सारा को चाहता था इसलिए उसने कुछ नौकर उसे लाने के लिए भेजे। [3]लेकिन एक रात परमेश्वर ने अबीमेलेक से स्वप्न में बात की। परमेश्वर ने कहा, "देखो, तुम मर जाओगे। जिस स्त्री को तुमने लिया है उसका विवाह हो चुका है।"

[4]लेकिन अबीमेलेक अभी सारा के साथ नहीं सोया था। इसलिए अबीमेलेक ने कहा, "हे यहोवा, मैं दोषी नहीं हूँ। क्या तू निर्दोष व्यक्ति को मारेगा। [5]इब्राहीम ने मुझसे खुद कहा, 'यह स्त्री मेरी बहन है' और स्त्री ने भी कहा, 'यह पुरुष मेरा भाई है।' मैं निर्दोष हूँ। मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ?"

[6]तब परमेश्वर ने अबीमेलेक से स्वप्न में कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ कि तुम निर्दोष हो और मैं यह भी जानता हूँ कि तुम यह नहीं जानते थे कि तुम क्या कर रहे थे? मैंने तुमको बचाया। मैंने तुम्हें अपने विरूद्ध पाप नहीं करने दिया। यह मैं ही था जिसने तुम्हें उसके साथ सोने नहीं दिया। [7]इसलिए इब्राहीम को उसकी पत्नी लौटा दो। इब्राहीम एक नबी* है। वह तुम्हारे लिए प्रार्थना करेगा और तुम जीवित रहोगे किन्तु यदि तुम सारा को नहीं लौटाओगे तो मैं शाप देता हूँ कि तुम मर जाओगे। तुम्हारा सारा परिवार तुम्हारे साथ मर जाएगा।"

[8]इसलिए दूसरे दिन बहुत सवेरे अबीमेलेक ने अपने सभी नौकरों को बुलाया। अबीमेलेक ने सपने में हुई सारी बातें उनको बताई। नौकर बहुत डर गए। [9]तब अबीमेलेक ने इब्राहीम को बुलाया और उससे कहा, "तुमने हम लोगों के साथ ऐसा क्यों किया? मैंनें तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? तुम ने यह झूठ क्यों बोला कि वह तुम्हारी बहन है। तुमने हमारे राज्य पर बहुत बड़ी विपत्ति ला दी है। यह बात तुम्हें मेरे साथ नहीं करनी चाहिए थी। [10]तुम किस बात से डर रहे थे? तुमने ये बातें मेरे साथ क्यों की?"

[11]तब इब्राहीम ने कहा, "मैं डरता था। क्योंकि मैंने सोचा कि यहाँ कोई भी परमेश्वर का आदर नहीं करता। मैंने सोचा कि सारा को पाने के लिए कोई मुझे मार डालेगा। [12]वह मेरी पत्नी है, किन्तु वह मेरी बहन भी है। वह मेरे पिता की पुत्री तो है परन्तु मेरी माँ की पुत्री नहीं है। [13]परमेश्वर ने मुझे पिता के घर से दूर पहुँचाया है। परमेश्वर ने कई अलग-अलग प्रदेशों में मुझे भटकाया। जब ऐसा हुआ तो मैंने सारा से कहा, 'मेरे लिए कुछ करो, लोगों से कहो कि तुम मेरी बहन हो।'"

[14]तब अबीमेलेक ने जाना कि क्या हो चुका है। इसलिए अबीमेलेक ने इब्राहीम को सारा लौटा दी। अबीमेलेक ने इब्राहीम को कुछ भेड़ें, मवेशी तथा दास भी दिए। [15]अबीमेलेक ने कहा, "तुम चारों ओर देख लो। यह मेरा देश है। तुम जिस जगह चाहो, रह सकते हो।"

[16]अबीमेलेक ने सारा से कहा, "देखो, मैंने तुम्हारे भाई को एक हजार चाँदी के टुकड़े दिए हैं। मैने यह इसलिए किया कि जो कुछ हुआ उससे मैं दुःखी हूँ। मैं चाहता हूँ कि हर एक व्यक्ति यह देखे कि मैंने अच्छे काम किए हैं।"

[17-18]परमेश्वर ने अबीमेलेक के परिवार की सभी स्त्रियों को बच्चा जनने के अयोग्य बनाया। परमेश्वर ने वह इसलिए किया कि उसने इब्राहीम की पत्नी सारा को रख लिया था। लेकिन इब्राहीम ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने अबीमेलेक, उसकी पत्नियों और दास-कन्याओं को स्वस्थ कर दिया।

अन्त में सारा को एक बच्चा

21 यहोवा ने सारा को यह वचन दिया था कि वह उस पर कृपा करेगा। यहोवा अपने वचन के अनुसार उस पर दयालु हुआ। [2]सारा गर्भवती हुई और उसने बुढ़ापे में इब्राहीम के लिए एक बच्चा जनी।

नबी वह व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने अपने लिये बोलने के लिये बुलाया।

सही समय पर जैसा परमेश्वर ने वचन दिया था वैसा ही हुआ। [3]सारा ने पुत्र जना और इब्राहीम ने उसका नाम इसहाक रखा। [4]परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार इब्राहीम ने आठ दिन का होने पर इसहाक का खतना किया।

[5]इब्राहीम सौ वर्ष का था जब उसका पुत्र इसहाक* उत्पन्न हुआ [6]और सारा ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे सुखी* बना दिया है। हर एक व्यक्ति जो इस बारे में सुनेगा वह मुझसे खुश होगा। [7]कोई भी यह नहीं सोचता था कि सारा इब्राहीम को उसके बुढ़ापे के लिये उसे एक पुत्र देगी। लेकिन मैंने बूढ़े इब्राहीम को एक पुत्र दिया है।"

घर में परेशानी

[8]अब बच्चा इतना बड़ा हो गया कि माँ का दूध छोड़ वह ठोस भोजन खाना शुरू करे। जिस दिन उसका दूध छुड़वाया गया उस दिन इब्राहीम ने एक बहुत बड़ा भोज रखा। [9]बीते समय में मिस्री दासी हाजिरा ने एक पुत्र को जन्म दिया था। इब्राहीम उस पुत्र का भी पिता था। सारा ने हाजिरा के पुत्र को खेलते हुए देखा। [10]इसलिए सारा ने इब्राहीम से कहा, "उस दासी स्त्री तथा उसके पुत्र को यहाँ से भेज दो। जब हम लोग मरेंगे हम लोगों की सभी चीज़ें इसहाक को मिलेंगी। मैं नहीं चाहती कि उसका पुत्र इसहाक के साथ उन चीज़ों में हिस्सा ले।"

[11]इन सभी बातों ने इब्राहीम को बहुत दुःखी कर दिया। वह अपने पुत्र इश्माएल के लिए दुःखी था। [12]किन्तु परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, "उस लड़के के बारे में दुःखी मत होओ। उस दासी स्त्री के बारे में भी दुःखी मत होओ। जो सारा चाहती है तुम वही करो। तुम्हारा वंश इसहाक के वंश से चलेगा। [13]लेकिन मैं तुम्हारे दासी के पुत्र को भी आशीर्वाद दूँगा। वह तुम्हारा पुत्र है इसलिए मैं उसके परिवार कोभी एक बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा।"

[14]दूसरे दिन बहुत सवेरे इब्राहीम ने कुछ भोजन और पानी लिया। इब्राहीम ने यह चीज़ें हाजिरा को दे दी। हाजिरा ने वे चीज़ें ली और बच्चे के साथ वहाँ से चली गई। हाजिरा ने वह स्थान छोड़ा और वह बेर्शेबा की मरुभूमि में भटकने लगी।

[15]कुछ समय बाद हाजिरा का सारा पानी समाप्त हो गया। पीने के लिए कुछ भी पानी न बचा। इसलिए हाजिरा ने अपने बच्चे को एक झाड़ी के नीचे रखा। [16]हाजिरा वहाँ से कुछ दूर गई। तब वह रूकी और बैठ गई। हाजिरा ने सोचा कि उसका पुत्र मर जाएगा क्योंकि वहाँ पानी नहीं था। वह उसे मरता हुआ देखना नहीं चाहती थी। वह वहाँ बैठ गई और रोने लगी।

[17]परमेश्वर ने बच्चे का रोना सुना। स्वर्ग से एक दूत हाजिरा के पास आया। उसने पूछा, "हाजिरा, तुम्हें क्या कठिनाई है। परमेश्वर ने वहाँ बच्चे का रोना सुन लिया। [18]जाओ, और बच्चे को संभालो। उसका हाथ पकड़ लो और उसे साथ ले चलो। मैं उसे बहुत से लोगों का पिता बनाऊँगा।"

[19]परमेश्वर ने हाजिरा की आँखे इस प्रकार खोली कि वह एक पानी का कुआँ देख सकी। इसलिए कुएँ पर हाजिरा गई और उसने थैले को पानी से भर लिया। तब उसने बच्चे को पीने के लिए पानी दिया।

[20]बच्चा जब तक बड़ा न हुआ तब तक परमेश्वर उसके साथ रहा। इश्माएल मरुभूमि में रहा और एक शिकारी बन गया। उसने बहुत अच्छा तीर चलाना सीख लिया। [21]उसकी माँ मिस्र से उसके लिए दुल्हन लाई। वे पारान मरूभूमि में रहने लगे।

इब्राहीम का अबीमेलेक से सन्धि

[22]तब अबीमेलेक और पीकोल ने इब्राहीम से बातें की। पीकोल अबीमेलेक की सेना का सेनापति था। उन्होंने इब्राहीम से कहा, "तुम जो कुछ करते हो, परमेश्वर तुम्हारा साथ देता है। [23]इसलिए तुम परमेश्वर के सामने वचन दो। यह वचन दो कि तुम मेरे और मेरे बच्चों के लिए भले रहोगे। तुम यह वचन दो कि तुम मेरे प्रति और जहाँ रहे हो उस देश के प्रति दयालु रहोगे। तुम यह भी वचन दो कि मैं तुम्हारे प्रति जितना दयालु रहा उतना तुम मुझ पर भी दयालु रहोगे।"

[24]इब्राहीम ने कहा, "मैं वचन देता हूँ कि तुमसे मैं वैसा ही व्यवहार करूँगा जैसा तुमने मेरे साथ व्यवहार किया है। [25]तब इब्राहीम ने अबीमेलेक से शिकायत की। इब्राहीम ने इसलिये शिकायत की कि अबीमेलेक के नौकरों ने पानी के एक कुएँ पर कब्जा कर लिया था।

इसहाक सारा से इब्राहीम का पुत्र। इस नाम का अर्थ "वह हँसता है" या "वह सुखी है" है।

सुखी हिब्रू में "सुखी" शब्द इसहाक के नाम की तरह है।

[26]अबीमेलेक ने कहा, "इसके बारे में मैंने यह पहली बार सुना है! मुझे नहीं पता है, कि यह किसने किया है, और तुमने भी इसकी चर्चा मुझसे इससे पहले कभी नहीं की।"

[27]इसलिए इब्राहीम और अबीमेलेक ने एक सन्धि की। [28]इब्राहीम ने सन्धि के प्रमाण के रूप में अबीमेलेक को कुछ भेड़े और मवेशी दिए। इब्राहीम सात* मादा मेमने भी अबीमेलेक के सामने लाया।

[29]अबीमेलेक ने इब्राहीम से पूछा, "तुम ये सात मादा मेमने अलग क्यों दे रहे हो?"

[30]इब्राहीम ने कहा, "जब तुम इन सात मेमनों को मुझसे लोगे तो यह सबूत रहेगा कि यह कुआँ मैंने खोदा है।"

[31]इसलिए इसके बाद वह कुआँ बेर्शेबा* कहलाया। उन्होंने कुएँ को यह नाम दिया क्योंकि यह वह जगह थी जहाँ उन्होंने एक दूसरे को वचन दिया था।

[32]इस प्रकार इब्राहीम और अबीमेलेक ने बेर्शेबा में सन्धि की। तब अबीमेलेक और सेनापति दोनों पलिश्तियों के प्रदेश में लौट गए।

[33]इब्राहीम ने बेर्शेबा में एक विशेष पेड़ लगाया। उस जगह इब्राहीम ने यहोवा परमेश्वर से प्रार्थना की [34]और इब्राहीम पलिश्तियों के देश में बहुत समय तक रहा।

इब्राहीम, अपने पुत्र को मार डालो!

22 इन बातों के बाद परमेश्वर ने इब्राहीम के विश्वास की परीक्षा लेना तय किया। परमेश्वर ने उससे कहा, "इब्राहीम!"

और इब्राहीम ने कहा, "हाँ।"

[2]परमेश्वर ने कहा, "अपना पुत्र लो, अपना एकलौता पुत्र, इसहाक जिससे तुम प्रेम करते हो मोरिय्याह पर जाओ तुम उस पहाड़ पर जाना जिसे मैं तुम्हें दिखाऊँगा। वहाँ तुम अपने पुत्र को मारोगे और उसको होमबलि स्वरूप मुझे अर्पण करोगे।"

[3]सवेरे इब्राहीम उठा और उसने गधे को तैयार किया। इब्राहीम ने इसहाक और दो नौकरों को साथ लिया। इब्राहीम ने बलि के लिए लकड़ियाँ काटकर तैयार कीं। तब वे उस जगह गए जहाँ जाने के लिए परमेश्वर ने कहा। [4]उनकी तीन दिन की यात्रा के बाद इब्राहीम ने ऊपर देखा और दूर उस जगह को देखा जहाँ वे जा रहे थे। [5]तब इब्राहीम ने अपने नौकरों से कहा, "यहाँ गधे के साथ ठहरो। मैं अपने पुत्र को उस जगह ले जाऊँगा और उपासना करूँगा। तब हम बाद में लौट आयेंगे।"

[6]इब्राहीम ने बलि के लिए लकड़ियाँ ली और इन्हें पुत्र के कन्धों पर रखा। इब्राहीम ने एक विशेष छुरी और आग ली। तब इब्राहीम और उसका पुत्र दोनों उपासना के लिए उस जगह एक साथ गए।

[7]इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम से कहा, "पिताजी!"

इब्राहीम ने उत्तर दिया, "हाँ, पुत्र।"

इसहाक ने कहा, "मैं लकड़ी और आग तो देखता हूँ, किन्तु वह मेमना कहाँ है जिसे हम बलि के रूप में जलाएंगे?"

[8]इब्राहीम ने उत्तर दिया, "पुत्र परमेश्वर बलि के लिये मेमना स्वयं जुटा रहा है।"

इसहाक बचाया गया

इस तरह इब्राहीम और उसका पुत्र उस जगह साथ–साथ गए। [9]वे उस जगह पर पहुँचे जहाँ परमेश्वर ने पहुँचने को कहा था। वहाँ इब्राहीम ने एक बलि की वेदी बनाई। इब्राहीम ने वेदी पर लकड़ियाँ रखी। तब इब्राहीम ने अपने पुत्र को बाँधा। इब्राहीम ने इसहाक को वेदी की लकड़ियों पर रखा। [10]तब इब्राहीम ने अपनी छुरी निकाली और अपने पुत्र को मारने की तैयारी की। [11]तब यहोवा के दूत ने इब्राहीम को रोक दिया। दूत ने स्वर्ग से पुकारा और कहा, "इब्राहीम, इब्राहीम।"

इब्राहीम ने उत्तर दिया, "हाँ।"

[12]दूत ने कहा, "तुम अपने पुत्र को मत मारो अथवा उसे किसी प्रकार की चोट न पहुँचाओ। मैंने अब देख लिया कि तुम परमेश्वर का आदर करते हो और उसकी आज्ञा मानते हो। मैं देखता हूँ कि तुम अपने एकलौते पुत्र को मेरे लिए मारने के लिए तैयार हो।"

[13]इब्राहीम ने ऊपर दृष्टि की और एक मेढ़े को देखा। मेढ़े की सींगे एक झाड़ी में फँस गयी थी। इसलिए इब्राहीम वहाँ गया, उसे पकड़ा और उसे मार डाला। इब्राहीम ने मेढ़े को अपने पुत्र के स्थान पर बलि

सात "सात" के लिये हिब्रू शब्द "शपथ," या "वचन देना जैसा है इसलिए "सात" जानवर उसे वचन देने के प्रमाण थे।
बेर्शेबा यहूदा में नेगव मरुभूमि का एक नगर। इस नाम का अर्थ शपथ का कुआँ है।

चढ़ाया। इब्राहीम का पुत्र बच गया। [14]इसलिए इब्राहीम ने उस जगह का नाम "यहोवा यिरे"* रखा। आज भी लोग कहते हैं, "इस पहाड़ पर यहोवा को देखा जा सकता है।" [15]यहोवा के दूत ने स्वर्ग से इब्राहीम को दूसरी बार पुकारा। [16]दूत ने कहा, "तुम मेरे लिए अपने पुत्र को मारने के लिए तैयार थे। यह तुम्हारा एकलौता पुत्र था। तुमने मेरे लिए ऐसा किया है इसलिए मैं, यहोवा तुमको वचन देता हूँ कि। [17]मैं तुम्हें निश्चय ही आशीर्वाद दूँगा। मैं तुम्हें उतने वंशज दूँगा जितने आकाश में तारे हैं। ये इतने अधिक लोग होंगे जितने समुद्र के तट पर बालू के कण और तुम्हारे लोग अपने सभी शत्रुओं को हराएंगे। [18]संसार के सभी राष्ट्र तुम्हारे परिवार के द्वारा आशीर्वाद पाएँगे।* मैं यह इसलिए करूँगा क्योंकि तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया।"

[19]तब इब्राहीम अपने नौकरों के पास लौटा। उन्होंने बेर्शेबा तक वापसी यात्रा की और इब्राहीम वहीं रहने लगा।

[20]इसके बाद, इब्राहीम को यह खबर मिला। खबर यह था, "तुम्हारे भाई नाहोर और उसकी पत्नी मिल्का के अब बच्चे हैं। [21]पहला पुत्र ऊस है। दूसरा पुत्र बूज है। तीसरा पुत्र अराम का पिता कमूएल है। [22]इसके अतिरिक्त केसेद, हजो, पिल्दाश, यिदलाप और बतूएल है।" [23]बतूएल, रिबका का पिता था। मिल्का इन आठ पुत्रों की माँ थी और नाहोर पिता था। नाहोर इब्राहीम का भाई था। [24]नाहोर के दूसरे चार लड़के उसकी एक रखैल* रुमा से थे। ये पुत्र तेबह, गहम, तहश, माका थे।

सारा मरती है

23 सारा एक सौ सत्ताईस वर्ष तक जीवित रही। [2]वह कनान प्रदेश के किर्यतर्बा (हेब्रोन) नगर में मरी। इब्राहीम बहुत दुःखी हुआ और उसके लिए वहाँ रोया। [3]तब इब्राहीम ने अपनी मरी पत्नी को छोड़ा और हित्ती लोगों से बात करने गया। उसने कहा, [4]"मैं इस प्रदेश में नहीं रहता। मैं यहाँ केवल एक यात्री हूँ। इसलिए मेरे पास अपनी पत्नी को दफनाने के लिए कोई जगह नहीं है। मैं कुछ भूमि चाहता हूँ जिसमें अपनी पत्नी को दफना सकूँ।"

[5]हित्ती लोगों ने इब्राहीम को उत्तर दिया, [6]"महोदय, आप हम लोगों के बीच परमेश्वर के प्रमुख व्यक्तियों में से एक है। आप अपने मरे को दफनाने के लिए सबसे अच्छी जगह, जो हम लोगों के पास है, ले सकते हैं। आप हम लोगों की कोई भी दफनाने की जगह, जो आप चाहते हैं, ले सकते हैं। हम लोगों में से कोई भी आपको अपनी पत्नी को दफनाने से नहीं रोकेगा।"

[7]इब्राहीम उठा और लोगों की तरफ सिर झुकाया। [8]इब्राहीम ने उनसे कहा, "यदि आप लोग सचमुच मेरी मरी हुई पत्नी को दफनाने में मेरी मदद करना चाहते हैं तो सोहर के पुत्र एप्रोन से मेरे लिए बात करें। [9]मैं मकपेला की गुफा को खरीदना पसन्द करूँगा। एप्रोन इसका मालिक है। यह उसके खेत के सिरे पर है। मैं इसके मूल्य के अनुसार उसे पूरी कीमत दूँगा। मैं चाहता हूँ कि आप लोग इस बात के गवाह रहे कि मैं इस भूमि को कब्रिस्तान के रुप में खरीद रहा हूँ।"

[10]एप्रोन वहीं लोगों के बीच बैठा था। एप्रोन ने इब्राहीम को उत्तर दिया, [11]"नहीं, महोदय। मैं आपको भूमि दूँगा। मैं आपको वह गुफा दूँगा। मैं यह आपको इसलिए दूँगा कि आप इसमें अपनी पत्नी को दफना सकें।"

[12]तब इब्राहीम ने हित्ती लोगों के सामने अपना सिर झुकाया। [13]इब्राहीम ने सभी लोगों के सामने एप्रोन से कहा, "किन्तु मैं तो खेत की पूरी कीमत देना चाहता हूँ। मेरा धन स्वीकार करें। मैं अपने मरे हुए को इसमें दफनाऊँगा।"

[14]एप्रोन ने इब्राहीम को उत्तर दिया, [15]"महोदय, मेरी बात सुनें। चार सौ चाँदी के शेकेल।* हमारे और आपके लिए क्या अर्थ रखते हैं? भूमि लें और अपनी मरी पत्नी को दफनाएँ।"

[16]इब्राहीम ने समझा कि एप्रोन उसे भूमि की कीमत बता रहा है, इसलिये हित्ती लोगों को गवाह मानकर, इब्राहीम ने चाँदी के चार सौ शेकेल एप्रोन के लिये तौले। इब्राहीम ने पैसा उस व्यापारी* को दे दिया जो इस भूमि के बेचने का धन्धा कर रहा था।

याहवे ... यिरे या "यहोवा यिरे" इसका अर्थ "ईश्वर देखता है" या "ईश्वर पूर्ति करता है" है।

तुम्हारे ... पाएंगे या "तुम्हारे वंशजों द्वारा पृथ्वी के सभी राष्ट्र वरदान पाएंगें।"

रखैल एक दास स्त्री जो एक पुरुष की पत्नी के समान थी।

शेकेल यह लगभग दस पौंड चाँदी के बराबर है।

व्यापारी कोई व्यक्ति जो अपनी रोजी खरीद और बेचकर चलाता है। यह एप्रोन या कोई दूसरा व्यक्ति हो सकता है।

[17-18]इस प्रकार एप्रोन के खेत के मालिक बदल गये। यह खेत मम्रे के पूर्व मकपेला में था। नगर के सभी लोगों ने एप्रोन और इब्राहीम के बीच हुई वाचा को देखा। [19]इसके बाद इब्राहीम ने अपनी पत्नी सारा को मम्रे कनान प्रदेश में हेब्रोन के निकट उस खेत की गुफा में दफनाया। [20]इब्राहीम ने खेत और उसकी गुफा को हित्ती लोगों से खरीदा। यह उसकी सम्पत्ति हो गई, और उसने इसका प्रयोग कब्रिस्तान के रूप में किया।

इसहाक के लिए पत्नी

24 इब्राहीम बहुत बुढ़ापे तक जीवित रहा। यहोवा ने इब्राहीम को आशीर्वाद दिया और उसके हर काम में उसे सफलता प्रदान की। [2]इब्राहीम का एक बहुत पुराना नौकर था जो इब्राहीम का जो कुछ था उसका प्रबन्धक था। इब्राहीम ने उस नौकर को बुलाया और कहा, "अपने हाथ मेरी जांघों के नीचे रखो। [3]अब मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे एक वचन दो। धरती और आकाश के परमेश्वर यहोवा के सामने तुम वचन दो कि तुम कनान की किसी लड़की से मेरे पुत्र का विवाह नहीं होने दोगे। हम लोग उनके बीच रहते हैं, किन्तु एक कनानी लड़की से उसे विवाह न करने दो। [4]तुम मेरे देश और मेरे अपने लोगो में लौटकर जाओ। वहाँ मेरे पुत्र इसहाक के लिए एक दुल्हन खोजो। तब उसे यहाँ उसके पास लाओ।"

[5]नौकर ने उससे कहा, "यह हो सकता है कि वह दुल्हन मेरे साथ इस देश में लौटना न चाहे। तब, क्या मैं तुम्हारे पुत्र को तुम्हारी जन्मभूमि को ले जाऊँ?"

[6]इब्राहीम ने उससे कहा, "नहीं, तुम हमारे पुत्र को उस देश में न ले जाओ। [7]यहोवा, स्वर्ग का परमेश्वर मुझे मेरी जन्मभूमि से यहाँ लाया। वह देश मेरे पिता और मेरे परिवार का घर था। किन्तु यहोवा ने यह वचन दिया कि वह नया प्रदेश मेरे परिवार वालों का होगा। यहोवा अपना एक दूत तुम्हारे सामने भेजे जिससे तुम मेरे पुत्र के लिए दुल्हन चुन सको। [8]किन्तु यदि लड़की तुम्हारे साथ आना मना करे तो तुम अपने वचन से छुटकारा पा जाओगे। किन्तु तुम मेरे पुत्र को उस देश में वापस मत ले जाना।"

[9]इस प्रकार नौकर ने अपने मालिक के जांघों के नीचे अपना हाथ रखकर वचन दिया।

खोज आरम्भ होती है

[10]नौकर ने इब्राहीम के दस ऊँट लिए और उस जगह से वह चला गया। नौकर कई प्रकार की सुन्दर भेंटें अपने साथ ले गया। वह नाहोर के नगर मेसोपोटामिया को गया। [11]वह नगर के बाहर के कुएँ पर गया। यह बात शाम को हुई जब स्त्रियाँ पानी भरने के लिए बाहर आती हैं। नौकर ने वहीं ऊँटों को घुटनों के बल बिठाया।

[12]नौकर ने कहा, "हे यहोवा, तू मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर है। आज तू उसके पुत्र के लिए मुझे एक दुल्हन प्राप्त करा। कृपया मेरे स्वामी इब्राहीम पर यह दया कर। [13]मैं यहाँ इस जल के कुएँ के पास खड़ा हूँ और पानी भरने के लिए नगर से लड़कियाँ आ रहीं हैं। [14]मैं एक विशेष चिन्ह की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिससे मैं जान सकूँ कि इसहाक के लिए कौन सी लड़की ठीक है। यह विशेष चिन्ह है: मैं लड़की से कहूँगा 'कृपा कर आप घड़े को नीचे रखे जिससे मैं पानी पी सकूँ।' मैं तब समझूँगा कि यह ठीक लड़की है जब वह कहेगी, 'पीओ, और मैं तुम्हारे ऊँटों के लिए भी पानी दूँगी।' यदि ऐसा होगा तो तू प्रमाणित कर देगा कि इसहाक के लिए यह लड़की ठीक है। मैं समझूँगा कि तूने मेरे स्वामी पर कृपा की है।"

एक दुल्हन मिली

[15]तब नौकर की प्रार्थना पूरी होने के पहले ही रिबका नाम की एक लड़की कुएँ पर आई। रिबका बतूएल की पुत्री थी। बतूएल इब्राहीम के भाई नाहोर और मिल्का का पुत्र था। रिबका अपने कंधे पर पानी का घड़ा लेकर कुएँ पर आई थी। [16]लड़की बहुत सुन्दर थी। वह कुँवारी थी। वह किसी पुरुष के साथ कभी नहीं सोई थी। वह अपना घड़ा भरने के लिए कुएँ पर आई। [17]तब नौकर उसके पास तक दौड़ कर गया और बोला, "कृपा कर के अपने घड़े से पीने के लिए थोड़ा जल दें।"

[18]रिबका ने जल्दी कंधे से घड़े को नीचे उतारा और उसे पानी पिलाया। रिबका ने कहा, "महोदय, यह पिएँ।" [19]ज्यों ही उसने पीने के लिए कुछ पानी देना खतम किया। रिबका ने कहा, "मैं आपके ऊँटों को भी पानी दे सकती हूँ।" [20]इसलिए रिबका ने झट से घड़े का सारा पानी ऊँटों के लिए बनी नाद में उंडेल दिया। तब वह और पानी लाने के लिए कुएँ को दौड़ गई और उसने सभी ऊँटों को पानी पिलाया।

[21]नौकर ने उसे चुपचाप ध्यान से देखा। वह तय करना चाहता था कि यहोवा ने शायद बात मान ली है और उसकी यात्रा को सफल बना दिया है। [22]जब ऊँटों ने पानी पी लिया तब उसने रिबका को चौथाई औंस* तौल की एक सोने की अँगूठी दी।

उसने उसे दो बाजूबन्द भी दिए जो तौल में हर एक पाँच औंस* थे। [23]नौकर ने पूछा, "तुम्हारा पिता कौन है? क्या तुम्हारे पिता के घर में इतनी जगह है कि हम सब के रहने तथा सोने का प्रबन्ध हो सके?"

[24]रिबका ने उत्तर दिया, "मेरे पिता बतूएल हैं जो मिल्का और नाहोर के पुत्र हैं।" [25]तब उसने कहा, "और हाँ हम लोगों के पास तुम्हारे ऊँट के लिए चारा है और तुम्हारे लिए सोने की जगह है।"

[26]नौकर ने सिर झुकाया और यहोवा की उपासना की। [27]नौकर ने कहा, "मेरे मालिक इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा की कृपा है। यहोवा हमारे मालिक पर दयालु है। यहोवा ने मुझे अपने मालिक के पुत्र के लिए सही दुल्हन* दिया है।"

[28]तब रिबका दौड़ी और जो कुछ हुआ था अपने परिवार को बताया। [29-30]रिबका का एक भाई था। उसका नाम लाबान था। रिबका ने उसे वे बातें बताई जो उससे उस व्यक्ति ने की थी। लाबान उसकी बातें सुन रहा था। जब लाबान ने अगूँठी और बहन की बाहों पर बाजूबन्द देखा तो वह दौड़कर कुएँ पर पहुँचा और वहाँ वह व्यक्ति कुएँ के पास, ऊँटों के बगल में खड़ा था। [31]लाबान ने कहा, "महोदय, आप पधारें आपका स्वागत है।* आपको यहाँ बाहर खड़ा नहीं रहना है। मैंने आपके ऊँटों के लिए एक जगह बना दी है और आपके सोने के लिए एक कमरा ठीक कर दिया है।"

[32]इसलिए इब्राहीम का नौकर घर में गया। लाबान ने ऊँटों और उस की मदद की और ऊँटों को खाने के लिए चारा दिया। तब लाबान ने पानी दिया जिससे वह व्यक्ति तथा उसके साथ आए हुए दूसरे नौकर अपने पैर धो सकें। [33]तब लाबान ने उसे खाने के लिए भोजन दिया। लेकिन नौकर ने भोजन करना मना किया। उसने कहा, "मैं तब तक भोजन नहीं करूँगा जब तक मैं यह न बता दूँ कि मैं यहाँ किसलिए आया हूँ।"

इसलिए लाबान ने कहा, "तब हम लोगों को बताओ।"

रिबका इसहाक की पत्नी बनी

[34]नौकर ने कहा, "मैं इब्राहीम का नौकर हूँ। [35]यहोवा ने हमारे मालिक पर हर एक विषय में कृपा की है। मेरे मालिक महान व्यक्ति हो गए हैं। यहोवा ने इब्राहीम को कई भेड़ों की रेवड़े तथा मवेशियों के झुण्ड दिए हैं। इब्राहीम के पास बहुत सोना, चाँदी और नौकर हैं। इब्राहीम के पास बहुत से ऊँट और गधे हैं। [36]सारा, मेरे मालिक की पत्नी थी। जब वह बहुत बूढ़ी हो गई थी उसने एक पुत्र को जन्म दिया और हमारे मालिक ने अपना सब कुछ उस पुत्र को दे दिया है। [37]मेरे स्वामी ने मुझे एक वचन देने के लिए विवश किया। मेरे मालिक ने मुझ से कहा, 'तुम मेरे पुत्र को कनान की लड़की से किसी भी तरह विवाह नहीं करने दोगे। हम लोग उनके बीच रहते हैं, किन्तु मैं नहीं चाहता कि वह किसी कनानी लड़की से विवाह करे। [38]इसलिए तुम्हें वचन देना होगा कि तुम मेरे पिता के देश को जाओगे। मेरे परिवार में जाओ और मेरे पुत्र के लिए एक दुल्हन चुनो।' [39]मैंने अपने मालिक से कहा, 'यह हो सकता है कि वह दुल्हन मेरे साथ इस देश को न आए।' [40]लेकिन मेरे मालिक ने कहा, 'मैं यहोवा की सेवा करता हूँ और यहोवा तुम्हारे साथ अपना दूत भेजेगा और तुम्हारी मदद करेगा। तुम्हें वहाँ मेरे अपने लोगों में मेरे पुत्र के लिए एक दुल्हन मिलेगी। [41]किन्तु यदि तुम मेरे पिता के देश को जाते हो और वे लोग मेरे पुत्र के लिए एक दुल्हन देना मना करते हैं तो तुम्हे इस वचन से छुटकारा मिल जाएगा।'

[42]"आज मैं इस कुएँ पर आया और मैंने कहा, 'हे यहोवा मेरे मालिक के परमेश्वर कृपा करके मेरी यात्रा सफल बना। [43]मैं यहाँ कुएँ के पास ठहरुँगा और पानी भरने के लिए आने वाली किसी युवती का प्रतिक्षा करूँगा। तब मैं कहूँगा, कृपा करके आप अपने घड़े से पीने के लिए पानी दें। [44]उपयुक्त लड़की ही विशेष रूप से उत्तर देगी। वह कहेगी यह पानी पीओ और मैं तुम्हारे ऊँटों के लिए भी पानी लाती हूँ। इस तरह मैं जानूँगा कि यह वही स्त्री है जिसे यहोवा ने मेरे मालिक के पुत्र के लिए चुना है।'

चौथाई औंस शाब्दिक "एक बेक।"
पाँच औंस शाब्दिक पाँच माप।
सही दुल्हन शाब्दिक "मेरे मालिक के भाई के घर।"
महोदय ... स्वागत है शाब्दिक "यहोवा के कृपापात्र, अन्दर आयें" यह "स्वागत" की तरह ही प्रेम–भाव से मिलना है।

[45]“मेरी प्रार्थना पूरी होने के पहले ही रिबका कुएँ पर पानी भरने आई। पानी का घड़ा उसने अपने कंधे पर ले रखा था। वह कुएँ तक गई और उसने पानी भरा। मैंने इससे कहा, “कृपा करके मुझे थोड़ा पानी दें।”

[46]उसने तुरन्त कंधे से घड़े को झुकाया और मेरे लिए पानी डाला और कहा, ‘यह पीएं और मैं आपके ऊँटों के लिए भी पानी लाऊँगी।’ इसलिए मैंने पानी पीया और अपने ऊँटों को भी पानी पिलाया। [47]तब मैंने इससे पूछा, ‘तुम्हारे पिता कौन हैं?’ इसने उत्तर दिया, ‘मेरा पिता बतूएल है।’ मेरे पिता के माता–पिता मिल्का और नाहोर हैं। तब मैंने इसे अँगूठी और बाहों के लिए बाजूबन्द दिए। [48]उस समय मैंने अपना सिर झुकाया और यहोवा को धन्य कहा। मैंने अपने मालिक इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा को कृपालु कहा। मैंने उसे धन्य कहा क्योंकि उसने सीधे मेरे मालिक के भाई की पोती तक मुझे पहुँचाया। [49]अब बताओ कि तुम क्या करोगे? क्या तुम मेरे मालिक पर दयालु और श्रद्धालु बनोगे और अपनी पुत्री उसे दोगे? या तुम अपनी पुत्री देना मना करोगे? मुझे बताओ, जिससे, मैं यह समझ सकूँ कि मुझे क्या करना है।”

[50]तब लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया, “हम लोग यह देखते हैं कि यह यहोवा की ओर से है। इसे हम टाल नहीं सकते। [51]रिबका तुम्हारी है। उसे लो और जाओ। अपने मालिक के पुत्र से इसे विवाह करने दो। यही है जिसे यहोवा चाहता है।”

[52]इब्राहीम के नौकर ने यह सुना और वह यहोवा के सामने भूमि पर झुका। [53]तब उसने रिबका को वे भेंटे दीं जो वह साथ लाया था। उसने रिबका को सोने और चाँदी के गहने और बहुत से सुन्दर कपड़े दिए। उसने, उसके भाई और उसकी माँ को कीमती भेंटे दीं। [54]नौकर और उसके साथ के व्यक्ति वहाँ ठहरे तथा खाया और पीया। वे वहाँ रातभर ठहरे। वे दूसरे दिन सवेरे उठे और बोले “अब हम अपने मालिक के पास जाएँगे।”

[55]रिबका की माँ और भाई ने कहा, “रिबका को हम लोगों के पास कुछ दिन और ठहरने दो। उसे दस दिन तक हमारे साथ ठहरने दो। इसके बाद वह जा सकती है।”

[56]लेकिन नौकर ने उनसे कहा, “मुझ से प्रतीक्षा न करवाएँ। यहोवा ने मेरी यात्रा सफल की है। अब मुझे अपने मालिक के पास लौट जाने दें।”

[57]रिबका के भाई और माँ ने कहा, “हम लोग रिबका को बुलाएंगे और उस से पूछेंगे कि वह क्या चाहती है?” [58]उन्होंने रिबका को बुलाया और उससे कहा, “क्या तुम इस व्यक्ति के साथ अभी जाना चाहती हो?”

रिबका ने कहा, “हाँ, मैं जाऊँगी।”

[59]इसलिए उन्होंने रिबका को इब्राहीम के नौकर और उसके साथियों के साथ जाने दिया। रिबका की धाय भी उनके साथ गई। [60]जब वह जाने लगी तब वे रिबका से बोले,

“हमारी बहन, तुम लाखों लोगों की जननी बनो
और तुम्हारे वंशज अपने शत्रुओं को
हराएँ और उनके नगरों को ले लें।”

[61]तब रिबका और धाय ऊँट पर चढ़ीं और नौकर तथा उसके साथियों के पीछे चलने लगीं। इस तरह नौकर ने रिबका को साथ लिया और घर को लौटने की यात्रा शुरू की।

[62]इस समय इसहाक ने लहैरोई को छोड़ दिया था और नेगेव में रहने लगा था। [63]एक शाम इसहाक मैदान में विचरण* करने गया। इसहाक ने नजर उठाई और बहुत दूर से ऊँटों को आते देखा।

[64]रिबका ने नजर डाली और इसहाक को देखा। तब वह ऊँट से कूद पड़ी। [65]उसने नौकर से पूछा, “हम लोगों से मिलने के लिये खेतों में टहलने वाला वह युवक कौन है?”

नौकर ने कहा, “यह मेरे मालिक का पुत्र है।” इसलिए रिबका ने अपने मुँह को पर्दे में छिपा लिया।

[66]नौकर ने इसहाक को वे सभी बातें बताई जो हो चुकी थीं। [67]तब इसहाक लड़की को अपनी माँ के तम्बू में लाया। उसी दिन इसहाक ने रिबका से विवाह कर लिया। वह उससे बहुत प्रेम करता था। अत: उसे उसकी माँ की मृत्यु के पश्चात् भी सांत्वना मिली।

इब्राहीम का परिवार

25 इब्राहीम ने फिर विवाह किया। उसकी नयी पत्नी का नाम कतूरा था। [2]कतूरा ने जिम्रान, योक्षान, मदना, मिद्यान, यिशबाक और शूह को जन्म दिया। [3]योक्षान, शबा और ददान का पिता हुआ। ददान

विचरण इस शब्द का अर्थ “प्रार्थना करना” या “टहलना” है।

के वंशज अश्शूर* और लुम्मी लोग थे। [4]मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीद और एल्दा थे। ये सभी पुत्र इब्राहीम और कतूरा से पैदा हुए। [5-6]इब्राहीम ने मरने से पहले अपनी दासियों* के पुत्रों को कुछ भेंट दिया। इब्राहीम ने पुत्रों को पूर्व को भेजा। उसने इन्हें इसहाक से दूर भेजा। इसके बाद इब्राहीम ने अपनी सभी चीज़ें इसहाक को दे दीं।

[7]इब्राहीम एक सौ पचहत्तर वर्ष की उम्र तक जीवित रहा। [8]इब्राहीम धीरे–धीरे कमजोर पड़ता गया और भरे–पूरे जीवन के बाद चल बसा। उसने लम्बा भरपूर जीवन बिताया और फिर वह अपने पुरखों के साथ दफनाया गया। [9]उसके पुत्र इसहाक और इश्माएल ने उसे मकपेला की गुफा में दफनाया। यह गुफा सोहर के पुत्रों एप्रोन के खेत में है। यह मम्रे के पूर्व में थी। [10]यह वही गुफा है जिसे इब्राहीम ने हित्ती लोगों से खरीदा था। इब्राहीम को उसकी पत्नी सारा के साथ दफनाया गया। [11]इब्राहीम के मरने के बाद परमेश्वर ने इसहाक पर कृपा की और इसहाक लहैरोई में रहता रहा।

[12]इश्माएल के परिवार की यह सूची है। इश्माएल इब्राहीम और हाजिरा का पुत्र था। (हाजिरा सारा की मिस्री दासी थी।) [13]इश्माएल के पुत्रों के ये नाम हैं पहला पुत्र नबायोत था, तब केदार पैदा हुआ, तब अदबेल, मिबसाम, [14]मिश्मा, दूमा, मस्सा, [15]हदर, तेमा, यतूर, नापीश और केदमा हुए। [16]ये इश्माएल के पुत्रों के नाम थे। हर एक पुत्र के अपने पड़ाव थे जो छोटे नगर में बदल गये। ये बारह पुत्र अपने लोगों के साथ बारह राजकुमारों के समान थे। [17]इश्माएल एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। [18]इश्माएल के लोग हवीला से लेकर शूर के पास मिस्र की सीमा और उससे भी आगे अश्शूर के किनारे तक, घूमते रहे और अपने भाईयों और उनसे सम्बन्धित देशों में आक्रमण करते रहे।*

इसहाक का परिवार

[19]यह इसहाक की कथा है। इब्राहीम का एक पुत्र इसहाक था। [20]जब इसहाक चालीस वर्ष का था तब उसने रिबका से विवाह किया। रिबका पद्दनराम की रहने वाली थी। वह अरामी बतूएल की पुत्री थी और लाबान की बहन थी। [21]इसहाक की पत्नी बच्चे नहीं जन सकी। इसलिए इसहाक ने यहोवा से अपनी पत्नी के लिए प्रार्थना की। यहोवा ने इसहाक की प्रार्थना सुनी और यहोवा ने रिबका को गर्भवती होने दिया।

[22]जब रिबका गर्भवती थी तब वह अपने गर्भ के बच्चों से बहुत परेशान थी, लड़के उसके गर्भ में आपस में लिपट के एक दूसरे को मारने लगे। रिबका ने यहोवा से प्रार्थना की और बोली, "मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है।" [23]यहोवा ने कहा "तुम्हारे गर्भ में दो राष्ट्र हैं। दो परिवारों के राजा तुम से पैदा होगें और वे बँट जाएंगे। एक पुत्र दूसरे से बलवान होगा। बड़ा पुत्र छोटे पुत्र की सेवा करेगा" [24]और जब समय पूरा हुआ तो रिबका ने जुड़वे बच्चों को जन्म दिया। [25]पहला बच्चा लाल हुआ। उसकी त्वचा रोंयेदार पोशाक की तरह थी। इसलिए उसका नाम एसाव* पड़ा। [26]जब दूसरा बच्चा पैदा हुआ, वह एसाव की एड़ी को मजबूती से पकड़े था। इसलिए उस बच्चे का नाम याकूब* पड़ा। इसहाक की उम्र उस समय साठ वर्ष की थी। जब याकूब और एसाव पैदा हुए।

[27]लड़के बड़े हुए। एसाव एक कुशल शिकारी हुआ। वह मैदानों में रहना पसन्द करने लगा। किन्तु याकूब शान्त व्यक्ति था। वह अपने तम्बू में रहता था। [28]इसहाक एसाव को प्यार करता था। वह उन जानवरों को खाना पसन्द करता था जो एसाव मार कर लाता था। किन्तु रिबका याकूब को प्यार करती थी।

[29]एक बार एसाव शिकार से लौटा। वह थका हुआ और भूख से परेशान था। याकूब कुछ दाल* पका रहा था।

[30]इसलिए एसाव ने याकूब से कहा, "मैं भूख से कमजोर हो रहा हूँ। तुम उस लाल दाल में से कुछ मुझे दो।" (यही कारण है कि लोग उसे एदोम* कहते हैं।)

अश्शूर या "असीरिया।"

दासियों शाब्दिक "रखैल" दास स्त्रियाँ जो उसके लिये पत्नियाँ थीं।

अपने भाईयों ... रहे देखें उत्पत्ति 16:12

एसाव एसाव नाम का अर्थ "रोयेंदार" होता है।

याकूब याकूब नाम हिब्रू शब्द "एड़ी" की तरह है। इसका अर्थ "अनुयायी" या "चालाक" भी है।

दाल या "अरहर।"

एदोम एदोम नाम का अर्थ "लाल" है।

[31]किन्तु याकूब ने कहा, “तुम्हे पहलौठा होने का अधिकार* मुझको आज बेचना होगा।”

[32]एसाव ने कहा, “मैं भूख से मरा जा रहा हूँ। यदि मैं मर जाता हूँ तो मेरे पिता का सारा धन भी मेरी सहायता नहीं कर पाएगा। इसलिए तुमको मैं अपना हिस्सा दूँगा।”

[33]किन्तु याकूब ने कहा, “पहले वचन दो कि तुम यह मुझे दोगे।” इसलिए एसाव ने याकूब को वचन दिया। एसाव ने अपने पिता के धन का अपना हिस्सा याकूब को बेच दिया। [34]तब याकूब ने एसाव को रोटी और भोजन दिया। एसाव ने खाया, पिया और तब चला गया। इस तरह एसाव ने यह दिखाया कि वह पहलौठे होने के अपने हक की परवाह नहीं करता।

इसहाक अबीमेलेक से झूठ बोलता है

26 एक बार अकाल* पड़ा। यह अकाल वैसा ही था जैसा इब्राहीम के समय में पड़ा था। इसलिए इसहाक गरार नगर में पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक के पास गया। [2]यहोवा ने इसहाक से बात की। यहोवा ने इसहाक से यह कहा, “मिस्र को न जाओ। उसी देश में रहो जिसमें रहने का आदेश मैंने तुम्हें दिया है। [3]उसी देश में रहो और मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। मैं तुम्हें और तुम्हारे परिवार को यह सारा प्रदेश दूँगा। मैं वही करूँगा जो मैंने तुम्हारे पिता इब्राहीम को वचन दिया है। [4]मैं तुम्हारे परिवार को आकाश के तारागणों की तरह बहुत से बनाऊँगा और मैं सारा प्रदेश तुम्हारे परिवार को दूँगा। पृथ्वी के सभी राष्ट्र तुम्हारे परिवार के कारण मेरा आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। [5]मैं यह इसलिए करूँगा कि तुम्हारे पिता इब्राहीम ने मेरी आज्ञा का पालन किया और मैंने जो कुछ कहा, उसने किया। इब्राहीम ने मेरे आदेशों, मेरे विधियों और मेरे नियमों का पालन किया।”

[6]इसहाक ठहरा और गरार में रहा। [7]इसहाक की पत्नी रिबका बहुत ही सुन्दर थी। उस जगह के लोगों ने इसहाक से रिबका के बारे में पूछा। इसहाक ने कहा, “यह मेरी बहन है।” इसहाक यह कहने से डर रहा था कि रिबका मेरी पत्नी है। इसहाक डरता था कि लोग उसकी पत्नी को पाने के लिए उसको मार डालेंगे।

[8]जब इसहाक वहाँ बहुत समय तक रह चुका, अबीमेलेक ने अपनी खिड़की से बाहर झाँका और देखा कि इसहाक, रिबका के साथ छेड़ खानी कर रहा है। [9]अबीमेलेक ने इसहाक को बुलाया और कहा, “यह स्त्री तुम्हारी पत्नी है। तुमने हम लोगों से यह क्यों कहा कि यह मेरी बहन है।”

इसहाक ने उससे कहा, “मैं डरता था कि तुम उसे पाने के लिए मुझे मार डालोगे।”

[10]अबीमेलेक ने कहा, “तुमने हम लोगों के लिए बुरा किया है। हम लोगों का कोई भी पुरुष तुम्हारी पत्नी के साथ सो सकता था। तब वह बड़े पाप का दोषी होता।”

[11]इसलिए अबीमेलेक ने सभी लोगों को चेतावनी दी। उसने कहा, “इस पुरुष और इस स्त्री को कोई चोट नहीं पहुँचाएगा। यदि कोई इन्हें चोट पहुँचाएगा तो वह व्यक्ति जान से मार दिया जाएगा।”

इसहाक धनी बना

[12]इसहाक ने उस भूमि पर खेती की और उस साल उसे बहुत फसल हुई। यहोवा ने उस पर बहुत अधिक कृपा की। [13]इसहाक धनी हो गया। वह अधिक से अधिक धन तब तक बटोरता रहा जब तक बहुत धनी नहीं हो गया।[14]उसके पास बहुत सी रेवड़े और मवेशियों के झुण्ड थे। उसके पास अनेक दास भी थे। सभी पलिश्ती उससे डाह रखते थे। [15]इसलिए पलिश्तियों ने उन सभी कुओं को नष्ट कर दिया जिन्हें इसहाक के पिता इब्राहीम और उसके साथियों ने वर्षों पहले खोदा था। पलिश्तयों ने उन्हें मिट्टी से भर दिया [16]और अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, “हमारा देश छोड़ दो। तुम हम लोगों से बहुत अधिक शक्तिशाली हो गए हो।”

[17]इसलिए इसहाक ने वह जगह छोड़ दी और गरार की छोटी नदी के पास पड़ाव डाला। इसहाक वहीं ठहरा और वहीं रहा। [18]इसके बहुत पहले इब्राहीम ने कई कुएँ खोदे थे। जब इब्राहीम मरा तो पलिश्तियों ने मिट्टी से कुओं को भर दिया। इसलिए वहीं इसहाक लौटा और उन कुओं को फिर खोद डाला। [19]इसहाक

पहलौठा ... अधिकार पिता के मरने के बाद पिता की अधिक से अधिक सम्पत्ति पहलौठे पुत्र को प्राय: मिलती थी और बड़ा पुत्र ही परिवार का नया संरक्षक होता था।

अकाल वह समय जब बहुत समय तक वर्षा न हो और कोई फसल न उग सके। आमतौर पर आदमी और जानवर पर्याप्त खाना और पानी न मिलने से मर जाते हैं।

के नौकरों ने छोटी दी के पास एक कुआँ खोदा। उस कुएँ से एक पानी का सोता फूट पड़ा। [20]तब गरार के गड़ेंरिये उस कुएँ की वजह से इसहाक के नौकरों से झगड़ा करने लगे। उन्होंने कहा, "यह पानी हमारा है।" इसलिए इसहाक ने उसका नाम एसेक* रखा।

उसने यह नाम इसलिए दिया कि उसी जगह पर उन लोगों ने उससे झगड़ा किया था।

[21]तब इसहाक के नौकरों ने दूसरा कुआँ खोदा। वहाँ के लोगों ने उस कुएँ के लिए भी झगड़ा किया। इसलिए इसहाक ने उस कुएँ का नाम सित्रा* रखा।

[22]इसहाक वहाँ से हटा और दूसरा कुआँ खोदा। उस कुएँ के लिए झगड़ा करने कोई नहीं आया। इसलिए इसहाक ने उस कुएँ का नाम रहोबोत* रखा। इसहाक ने कहा, "यहोवा ने यहाँ हमारे लिए जगह उपलब्ध कराई है। हम लोग बढ़ेंगे और इसी भूमि पर सफल होंगे।"

[23]उस जगह से इसहाक बेर्शेबा को गया। [24]यहोवा उस रात इसहाक से बोला, "मैं तुम्हारे पिता इब्राहीम का परमेश्वर हूँ। डरो मत। मैं तुम्हारे साथ हूँ और मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को महान बनाऊँगा। मैं अपने सेवक इब्राहीम के कारण यह करूँगा।" [25]इसलिए इसहाक ने उस जगह यहोवा की उपासना के लिए एक वेदी बनाई। इसहाक ने वहाँ पड़ाव डाला और उसके नौकरों ने एक कुआँ खोदा।

[26]अबीमेलेक गरार से इसहाक को देखने आया। अबीमेलेक अपने साथ सलाहकार अहुज्जत और सेनापति पीकोल को लाया।

[27]इसहाक ने पूछा, "तुम मुझे देखने क्यों आए हो? तुम इसके पहले मेरे साथ मित्रता नहीं रखते थे। तुमने मुझे अपना देश छोड़ने को विवश किया।"

[28]उन्होंने जवाब दिया, "अब हम लोग जानते हैं कि यहोवा तुम्हारे साथ है। हम चाहते हैं कि हम तुम्हारे साथ एक वाचा करें। हम चाहते हैं कि तुम हमें एक वचन दो। [29]हम लोंगो ने तुम्हें चोट नहीं पहुँचाई, अब तुम्हें यह वचन देना चाहिए कि तुम हम लोगों को चोट नहीं पहुँचाओगे। हम लोगों ने तुमको भेजा। लेकिन हम लोगों ने तुम्हें शान्ति से भेजा। अब साफ है कि यहोवा ने तुम्हें आशीर्वाद दिया है।"

[30]इसलिए इसहाक ने उन्हें दावत दी। सभी ने खाया और पीया। [31]दूसरे दिन सवेरे हर एक व्यक्ति ने वचन दिया और शपथ खाई।* तब इसहाक ने उनको शान्ति से विदा किया और वे सकुशल उसके पास से चले आये।

[32]उस दिन इसहाक के नौकर आए और उन्होंने अपने खोदे हुए कुएँ के बारे में बताया। नौकरों ने कहा, "हम लोगों ने उस कुएँ से पानी पीया।" [33]इसलिए इसहाक ने उसका नाम शिबा रखा और वह नगर अभी भी बेर्शेबा कहलाता है।

एसाव की पत्नियाँ

[34]जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, उसने हित्ती स्त्रियों से विवाह किया। एक बेरी की पुत्री यहूदीत थी। दूसरी एलोन की पुत्री बाशमत थी। [35]इन विवाहों ने इसहाक और रिबका का मन दु:खी कर दिया।

वसीयत के झगड़े

27 जब इसहाक बूढ़ा हो गया तो उसकी आँखे अच्छी न रहीं। इसहाक साफ–साफ नहीं देख सकता था। एक दिन उसने अपने बड़े पुत्र एसाव को बुलाया। इसहाक ने कहा, "पुत्र।"

एसाव ने उत्तर दिया, "हाँ, पिताजी।"

[2]इसहाक ने कहा, "देखो, मैं बूढ़ा हो गया। हो सकता है मैं जल्दी ही मर जाऊँ। [3]अब तू अपना तरकश और धनुष लेकर, मेरे लिए शिकार पर जाओ। मेरे खाने के लिए एक जानवर मार लाओ। [4]मेरा प्रिय भोजन बनाओ। उसे मेरे पास लाओ, और मैं इसे खाऊँगा। तब मैं मरने से पहले तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।" [5]इसलिए एसाव शिकार करने गया।

याकूब ने इसहाक से चाल चली

रिबका ने वे बातें सुन ली थी, जो इसहाक ने अपने पुत्र एसाव से कहीं। [6]रिबका ने अपने पुत्र याकूब से कहा,

---

एसेक इस नाम का अर्थ "बहस" या "लड़ाई" है।

सित्रा इस नाम का अर्थ "घृणा" या "किसी के शत्रु" के समान है।

रहोबोत इस नाम का अर्थ "खुली जगह" या चौराहा" है।

शपथ खाना परमेश्वर को विशेष वचन देना। आमतौर पर जो शपथ खाता है। वह परमेश्वर को विशेष बलि या भेंट कुछ समय तक कुछ विशेष काम करने के बाद चढ़ाता है।

"सुनों, मैंने तुम्हारे पिता को, तुम्हारे भाई से बातें करते सुना है। [7]तुम्हारे पिता ने कहा, 'मेरे खाने के लिए एक जानवर मारो। मेरे लिए भोजन बनाओ और मैं उसे खाऊँगा। तब मैं मरने के पहले तुमको आशीर्वाद दूँगा।' [8]इसलिए पुत्र सुनो। मैं जो कहती हूँ, करो। [9]अपनी बकरियों के बीच जाओ और दो नयी बकरियाँ लाओ। मैं उन्हें वैसा बनाऊँगी जैसा तुम्हारे पिता को प्रिय है। [10]तब तुम वह भोजन अपने पिता के पास ले जाओगे और वह मरने के पहले तुमको ही आशीर्वाद देगा।"

[11]लेकिन याकूब ने अपनी माँ रिबका से कहा, "किन्तु मेरा भाई रोयेंदार है और मैं उसकी तरह रोयेंदार नहीं हूँ। [12]यदि मेरे पिता मुझको छूते हैं, तो जान जाएंगे कि मैं एसाव नहीं हूँ। तब वे मुझे आशीर्वाद नहीं देंगे। वे मुझे शाप* देंगे क्योंकि मैंने उनके साथ चाल चलने का प्रयत्न किया।"

[13]इस पर रिबका ने उससे कहा, "यदि कोई परेशानी होगी तो मैं अपना दोष मान लूँगी। जो मैं कहती हूँ करो। जाओ, और मेरे लिए बकरियाँ लाओ।"

[14]इसलिए याकूब बाहर गया और उसने दो बकरियों को पकड़ा और अपनी माँ के पास लाया। उसकी माँ ने इसहाक की पसंद के अनुसार विशेष ढंग से उन्हें पकाया। [15]तब रिबका ने उस पोशाक को उठाया जो उसका बड़ा पुत्र एसाव पहनना पसंद करता था। रिबका ने अपने छोटे पुत्र याकूब को वे कपड़े पहना दिए। [16]रिबका ने बकरियों के चमड़े को लिया और याकूब के हाथों और गले पर बांध दिया। [17]तब रिबका ने अपना पकाया भोजन उठाया और उसे याकूब को दिया।

[18]याकूब पिता के पास गया और बोला, "पिताजी।"

और उसके पिता ने पूछा, "हाँ पुत्र, तुम कौन हो?"

[19]याकूब ने अपने पिता से कहा, "मैं आपका बड़ा पुत्र एसाव हूँ। आपने जो कहा है, मैंने कर दिया है। अब आप बैठें और उन जानवरों को खाएं जिनका शिकार मैंने आपके लिए किया है। तब आप मुझे आशीर्वाद दे सकते हैं।"

[20]लेकिन इसहाक ने अपने पुत्र से कहा, "तुमने इतनी जल्दी शिकार करके जानवरों को कैसे मारा है?"

याकूब ने उत्तर दिया, "क्योंकि आपके परमेश्वर यहोवा ने मुझे जल्दी ही जानवरों को प्राप्त करा दिया।"

[21]तब इसहाक ने याकूब से कहा, "मेरे पुत्र मेरे पास आओ जिससे मैं तुम्हें छू सकूँ। यदि मैं तुम्हें छू सकूँगा तो मैं यह जान जाऊँगा कि तुम वास्तव में मेरे पुत्र एसाव ही हो।"

[22]याकूब अपने पिता इसहाक के पास गया। इसहाक ने उसे छुआ और कहा,"तुम्हारी आवाज याकूब की आवाज जैसी है। लेकिन तुम्हारी बाहें एसाव की रोयेंदार बाहों की तरह है।" [23]इसहाक यह नहीं जान पाया कि यह याकूब है क्योंकि उसकी बाहें एसाव की बाहों की तरह रोयेंदार थीं। इसलिए इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया।

[24]इसहाक ने कहा, "क्या सचमुच तुम मेरे पुत्र एसाव हो?"

याकूब ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ।"

याकूब के लिए "आशीर्वाद"

[25]तब इसहाक ने कहा, "भोजन लाओ। मैं इसे खाऊँगा और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।" इसलिए याकूब ने उसे भोजन दिया और उसने खाया। याकूब ने उसे दाखमधु दी, और उसने उसे पीया।

[26]तब इसहाक ने उससे कहा, "पुत्र, मेरे करीब आओ और मुझे चूमों।" [27]इसलिए याकूब अपने पिता के पास गया और उसे चूमा। इसहाक ने एसाव के कपड़ों की गन्ध पाई और उसको आशीर्वाद दिया। इसहाक ने कहा,

"अहा, मेरे पुत्र की सुगन्ध यहोवा से वरदान पाए
खेतों की सुगन्ध की तरह है।
[28] यहोवा तुम्हें बहुत वर्षा दे।
जिससे तुम्हें बहुत फसल और दाखमधु मिले।
[29] सभी लोग तुम्हारी सेवा करें।
राष्ट्र तुम्हारे सामने झुकें।
तुम अपने भाईयों के ऊपर शासक होगे।
तुम्हारी माँ के पुत्र तुम्हारे सामने
झुकेंगे और तुम्हारी आज्ञा मानेंगे।
हर एक व्यक्ति जो तुम्हें शाप देगा,
शाप पाएगा और हर एक व्यक्ति
जो तुम्हें आशीर्वाद देगा, आशीर्वाद पाएगा।"

एसाव को "आशीर्वाद"

[30]इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देना पूरा किया। तब ज्योंही याकूब अपने पिता इसहाक के पास से

शाप यह माँगना कि किसी का बुरा हो।

गया त्योंही एसाव शिकार करके अन्दर आया। [31]एसाव ने अपने पिता की पसंद का विशेष भोजन बनाया। एसाव इसे अपने पिता के पास लाया। उसने अपने पिता से कहा, "पिताजी, उठें और उस भोजन को खाएं जो आपके पुत्र ने आपके लिए मारा है। तब आप मुझे आशीर्वाद दे सकते है।"

[32]किन्तु इसहाक ने उससे कहा, "तुम कौन हो?"

उसने उत्तर दिया, "मैं आपका पहलौठा पुत्र एसाव हूँ।"

[33]तब इसहाक बहुत झल्ला गया और बोला, "तब तुम्हारे आने से पहले वह कौन था? जिसने भोजन पकाया और जो मेरे पास लाया। मैंने वह सब खाया और उसको आशीर्वाद दिया। अब अपने आशीर्वादों को लौटाने का समय निकल चुका है।"

[34]एसाव ने अपने पिता की बात सुनी। उसका मन बहुत गुस्से और कड़वाहट से भर गया। वह चीखा। वह अपने पिता से बोला, "पिताजी, तब मुझे भी आशीर्वाद दें।"

[35]इसहाक ने कहा, "तुम्हारे भाई ने मुझे धोखा दिया। वह आया और तुम्हारा आशीर्वाद लेकर गया।"

[36]एसाव ने कहा, "उसका नाम ही याकूब ("चालबाज") है। यह नाम उसके लिए ठीक ही है। उसका यह नाम बिल्कुल सही रखा गया है वह सचमुच में चालबाज है। उसने मुझे दो बार धोखा दिया। उसने पहलौठा होने के मेरे अधिकार को ले ही चुका था और अब उसने मेरे हिस्से के आशीर्वाद को भी ले लिया। क्या आपने मेरे लिए कोई आशीर्वाद बचा रखा है?"

[37]इसहाक ने जवाब दिया, "नहीं, अब बहुत देर हो गई। मैंनें याकूब को तुम्हारे ऊपर शासन करने का अधिकार दे दिया है। मैंने यह भी कह दिया कि सभी भाई उसके सेवक होंगे। मैंने उसे बहुत अधिक अन्न और दाखमधु का आशीर्वाद दिया है। पुत्र तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं बचा है।"

[38]किन्तु एसाव अपने पिता से माँगता रहा। "पिताजी, क्या आपके पास एक भी आशीर्वाद नहीं है? पिताजी, मुझे भी आशीर्वाद दें।" यों एसाव रोने लगा।

[39]तब इसहाक ने उससे कहा,

"तुम अच्छी भूमि पर नहीं रहोगे।
तुम्हारे पास बहुत अन्न नहीं होगा।
[40] तुम्हें जीने के लिए संघर्ष करना होगा।
और तुम अपने भाई के दास होगे।
किन्तु तुम आजादी के लिए लड़ोगे,
और उसके शासन से आजाद हो जाओगे।"

[41]इसके बाद इस आशीर्वाद के कारण एसाव याकूब से घृणा करता रहा। एसाव ने मन ही मन सोचा, "मेरा पिता जल्दी ही मरेगा और मैं उसका शोक मनाऊँगा। लेकिन उसके बाद मैं याकूब को मार डालूँगा।"

[42]रिबका ने एसाव द्वारा याकूब को मारने का षड़यन्त्र सुना। उसने याकूब को बुलाया और उससे कहा, "सुनो, तुम्हारा भाई एसाव तुम्हें मारने का षड़यन्त्र कर रहा है। [43]इसलिए पुत्र जो मैं कहती हूँ, करो। मेरा भाई लाबान हारान में रहता है। उसके पास जाओ और छिपे रहो। [44]उसके पास थोड़े समय तक ही रहो जब तक तुम्हारे भाई का गुस्सा नहीं उतरता। [45]थोड़े समय बाद तुम्हारा भाई भूल जाएगा कि तुमने उसके साथ क्या किया? तब मैं तुम्हें लौटाने के लिए एक नौकर को भेजूँगी। मैं एक ही दिन दोनों पुत्रों को खोना नहीं चाहती।"

[46]तब रिबका ने इसहाक से कहा, "तुम्हारे पुत्र एसाव ने हित्ती स्त्रियों से विवाह कर लिया है। मैं इन स्त्रियों से परेशान हूँ क्योंकि ये हमारे लोगों में से नहीं हैं। यदि याकूब भी इन्हीं स्त्रियों में से किसी के साथ विवाह करता है तो मैं मर जाना चाहूँगी।"

याकूब पत्नी की खोज करता है

28 इसहाक ने याकूब को बुलाया और उसको आशीर्वाद दिया। तब इसहाक ने उसे आदेश दिया। इसहाक ने कहा, "तुम कनानी स्त्री से विवाह नहीं कर सकते। [2]इसलिए इस जगह को छोड़ो और पद्दनराम को जाओ। अपने नाना बतूएल के घराने में जाओ। वहाँ तुम्हारा मामा लाबान रहता है। उसकी किसी एक पुत्री से विवाह करो। [3]मैं प्रार्थना करता हूँ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे और तुम्हें बहुत से पुत्र दे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम एक महान राष्ट्र के पिता बनो। [4]मैं प्रार्थना करता हूँ कि जिस तरह परमेश्वर ने इब्राहीम को वरदान दिया था उसी तरह वह तुमको भी आशीर्वाद दे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तुम्हें इब्राहीम का आशीर्वाद दे, यानी वह तुम्हें और तुम्हारी आने वाली पीढ़ी को, यह जगह जहाँ तुम आज परदेशी की तरह रहते हो, हमेशा के लिए तुम्हारी सम्पत्ति बना दे।"

[5]इस तरह इसहाक ने याकूब को पद्दनराम के प्रदेश को भेजा। याकूब अपने मामा लाबान के पास गया। अरामी बतूएल लाबान और रिबका का पिता था और रिबका याकूब और एसाव की माँ थी।

[6]एसाव को पता चला कि उसके पिता इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया है और उसने याकूब को पद्दरनाम में एक पत्नी की खोज के लिए भेजा है। एसाव को यह भी पता लगा कि इसहाक ने याकूब को आदेश दिया है कि वह कनानी स्त्री से विवाह न करे। [7]एसाव ने यह समझा कि याकूब ने अपने पिता और माँ की आज्ञा मानी और वह पद्दरनाम को चला गया। [8]एसाव ने इससे यह समझा कि उसका पिता नहीं चाहता कि उसके पुत्र कनानी स्त्रियों से विवाह करें। [9]एसाव की दो पत्नियाँ पहले से ही थीं। किन्तु उसने इश्माएल की पुत्री महलत से विवाह किया। इश्माएल इब्राहीम का पुत्र था। महलत नबायोत की बहन थी।

परमेश्वर का घर बेतेल

[10]याकूब ने बेर्शेबा को छोड़ा और वह हारान को गया। [11]याकूब के यात्रा करते समय ही सूरज डूब गया था। इसलिए याकूब रात बिताने के लिए एक जगह ठहरने गया। याकूब ने उस जगह एक चट्टान देखी और सोने के लिए इस पर अपना सिर रखा। [12]याकूब ने सपना देखा। उसने देखा कि एक सीढ़ी पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुँची है। [13]याकूब ने स्वर्गदूतों को उस सीढ़ी पर चढ़ते उतरते देखा और यहोवा को सीढ़ी के पास खड़ा देखा। यहोवा ने कहा, "मैं तुम्हारे पितामह इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं इसहाक का परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें वह भूमि दूँगा जिस पर तुम अब सो रहे हो। मैं यह भूमि तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को दूँगा। [14]तुम्हारे वंशज उतने होंगे जितने पृथ्वी पर मिट्टी के कण हैं। वे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, तथा दक्षिण में फैलेंगे। पृथ्वी के सभी परिवार तुम्हारे वंशजों के कारण वरदान पाएंगे।

[15]"मैं तुम्हारे साथ हूँ और मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा जहाँ भी जाओगे और मैं इस भूमि पर तुम्हें लौटा ले आऊँगा। मैं तुमको तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक मैं वह नहीं कर लूँगा जो मैंने करने का वचन दिया है।"

[16]तब याकूब अपनी नींद से उठा और बोला, "मैं जानता हूँ कि यहोवा इस जगह पर है। किन्तु यहाँ जब तक मैं सोया नहीं था, मैं नहीं जानता था कि वह यहाँ है।"

[17]याकूब डर गया। उसने कहा, "यह बहुत महान जगह है। यह तो परमेश्वर का घर है। यह तो स्वर्ग का द्वार है।"

[18]याकूब दूसरे दिन बहुत सवेरे उठा। याकूब ने उस शिला को उठाया और उसे किनारे से खड़ा कर दिया। तब उसने इस पर तेल चढ़ाया। इस तरह उसने इसे परमेश्वर का स्मरण स्तम्भ बनाया। [19]उस जगह का नाम लूज था किन्तु याकूब ने उसे बेतेल* नाम दिया।

[20]तब याकूब ने एक वचन दिया। उसने कहा, "यदि परमेश्वर मेरे साथ रहेगा और अगर परमेश्वर, जहाँ भी मैं जाता हूँ, वहाँ मेरी रक्षा करेगा, अगर परमेश्वर मुझे खाने को भोजन और पहनने को वस्त्र देगा। [21]अगर मैं अपने पिता के पास शान्ति से लौटूँगा, यदि परमेश्वर ये सभी चीज़ें करेगा, तो यहोवा मेरा परमेश्वर होगा। [22]इस जगह, जहाँ मैंने यह पत्थर खड़ा किया है, परमेश्वर का पवित्र स्थान होगा, और परमेश्वर जो कुछ तू मुझे देगा उसका दशमांश मैं तुझे दूँगा।"

याकूब राहेल से मिलता है

29 तब याकूब ने अपनी यात्रा जारी रखी। वह पूर्व के प्रदेश में गया। [2]याकूब ने दृष्टि डाली, उसने मैदान में एक कुआँ देखा। वहाँ कुएँ के पास भेड़ों की तीन रेवड़े पड़ी हुई थीं। यही वह कुआँ था जहाँ ये भेड़े पानी पीती थी। वहाँ एक बड़े शिला से कुएँ का मुँह ढका था। [3]जब सभी भेड़े वहाँ इकट्ठी हो जातीं तो गड़ेंरिये चट्टान को कुएँ के मुँह पर से हटाते थे। तब सभी भेड़े उसका जल पी सकती थी। जब भेड़े पी चुकती थी तब गड़ेंरिये शिला को फिर अपनी जगह पर रख देते थे।

[4]याकूब ने वहाँ गड़ेंरियों से कहा, "भाईयों, आप लोग कहाँ के हैं?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हम हारान के हैं।"

[5]तब याकूब ने कहा, "क्या आप लोग नाहोर के पुत्र लाबान को जानते हैं?"

गड़ेरियों ने जवाब दिया, "हम लोग उसे जानते हैं।"

बेतेल इस्राएल का एक नगर। इस नाम का अर्थ "परमेश्वर का घर" है।

[6]तब याकूब ने पूछा, "वह कुशल से तो है?"

उन्होंने कहा, "वे ठीक हैं। सब कुछ बहुत अच्छा है। देखो, वह उसकी पुत्री राहेल अपनी भेड़ों के साथ आ रही है।"

[7]याकूब ने कहा, "देखो, अभी दिन है और सूरज डूबने में अभी काफी देर है। रात के लिए जानवरों को इकट्ठा करने का अभी समय नहीं है। इसलिए उन्हें पानी दो और उन्हें मैदान में लौट जाने दो।"

[8]लेकिन उस गड़ेरियें ने कहा, "हम लोग यह तब तक नहीं कर सकते जब तक सभी रेवड़े इकट्ठी नहीं हो जाती। तब हम लोग शिला को कुएँ से हटाएंगें और सभी भेड़े पानी पीएँगी।"

[9]याकूब जब तक गड़ेरियों से बातें कर रहा था तब राहेल अपने पिता की भेड़ों के साथ आई। (राहेल का काम भेड़ों की देखभाल करना था।) [10]राहेल लाबान की पुत्री थी। लाबान, रिबका का भाई था, जो याकूब की माँ थी। जब याकूब ने राहेल को देखा तो जाकर शिला को हटाया और भेड़ों को पानी पिलाया। [11]तब याकूब ने राहेल को चूमा और जोर से रोया। [12]याकूब ने बताया कि मैं तुम्हारे पिता के खानदान से हूँ। उसने राहेल को बताया कि मैं रिबका का पुत्र हूँ। इसलिए राहेल घर को दौड़ गई और अपने पिता से यह सब कहा।

[13]लाबान ने अपनी बहन के पुत्र, याकूब के बारे में खबर सुनी। इसलिए लाबान उससे मिलने के लिए दौड़ा। लाबान उससे गले मिला, उसे चूमा और उसे अपने घर लाया। याकूब ने जो कुछ हुआ था, उसे लाबान को बताया। [14]तब लाबान ने कहा, "आश्चर्य है, तुम हमारे खानदान से हो।" अत: याकूब लाबान के साथ एक महीने तक रुका।

लाबान याकूब के साथ धोखा करता है

[15]एक दिन लाबान ने याकूब से कहा, "यह ठीक नहीं है कि तुम हमारे यहाँ बिना वेतन में काम करते रहो। तुम रिश्तेदार हो, दास नहीं। मैं तुम्हें क्या वेतन दूँ?"

[16]लाबान की दो पुत्रियाँ थीं। बड़ी लिआ थी और छोटी राहेल।

[17]राहेल सुन्दर थी और लिआ की धुंधली आँखें थी।* [18]याकूब राहेल से प्रेम करता था। याकूब ने लाबान से कहा, "यदि तुम मुझे अपनी पुत्री राहेल के साथ विवाह करने दो तो मैं तुम्हारे यहाँ सात साल तक काम कर सकता हूँ।"

[19]लाबान ने कहा, "यह उसके लिए अच्छा होगा कि किसी दूसरे के बजाय वह तुझसे विवाह करे। इसलिए मेरे साथ ठहरो।"

[20]इसलिए याकूब ठहरा और सात साल तक लाबान के लिए काम करता रहा। लेकिन यह समय उसे बहुत कम लगा क्योंकि वह राहेल से बहुत प्रेम करता था।

[21]सात साल के बाद उसने लाबान से कहा, "मुझे राहेल को दो जिससे मैं उससे विवाह करुँ। तुम्हारे यहाँ मेरे काम करने का समय पूरा हो गया।"

[22]इसलिए लाबान ने उस जगह के सभी लोगों को एक दावत दी। [23]उस रात लाबान अपनी पुत्री लिआ को याकूब के पास लाया। याकूब और लिआ ने परस्पर शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किया। [24](लाबान ने अपनी पुत्री को, सेविका के रूप में अपनी नौकरानी जिल्पा को दिया।) [25]सवेरे याकूब ने जाना कि वह लिआ के साथ सोया था। याकूब ने लाबान से कहा, "तुमने मुझे धोखा दिया है। मैंने तुम्हारे लिए कठिन परिश्रम इसलिए किया कि मैं राहेल से विवाह कर सकूँ। तुमने मुझे धोखा क्यों दिया?"

[26]लाबान ने कहा, "हम लोग अपने देश में छोटी पुत्री का बड़ी पुत्री से पहले विवाह नहीं करने देते। [27]किन्तु विवाह के उत्सव को पूरे सप्ताह मनाते रहो और मैं राहेल को भी तुम्हें विवाह के लिए दूँगा। परन्तु तुम्हें और सात वर्ष तक मेरी सेवा करनी पड़ेगी।"

[28]इसलिए याकूब ने यही किया और सप्ताह को बिताया। तब लाबान ने अपनी पुत्री राहेल को भी उसे उसकी पत्नी के रूप में दिया। [29](लाबान ने अपनी पुत्री राहेल की सेविका के रूप में अपनी नौकरानी बिल्हा को दिया।) [30]इसलिए याकूब ने राहेल के साथ भी शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किया और याकूब ने राहेल को लिआ से अधिक प्यार किया। याकूब ने लाबान के लिए और सात वर्ष तक काम किया।

याकूब का परिवार बढ़ता है

[31]यहोवा ने देखा कि याकूब लिआ से अधिक राहेल को प्यार करता है। इसलिए यहोवा ने लिआ को इस

लिआ ... थी यह यही कहने का एक विनम्र ढँग हो सकता है कि लिआ बहुत सुन्दर नहीं थी।

योग्य बनाया कि वह बच्चों को जन्म दे सके। लेकिन राहेल को कोई बच्चा नहीं हुआ।

[32]लिआ ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसका नाम रूबेन* रखा। लिआ ने उसका यह नाम इसलिये रखा क्योंकि उसने कहा, "यहोवा ने मेरे कष्टों को देखा है। मेरा पति मुझको प्यार नहीं करता, इसलिए हो सकता है कि मेरा पति अब मुझसे प्यार करे।" [33]लिआ फिर गर्भवती हुई और उसने दूसरे पुत्र को जन्म दिया। उसने इस पुत्र का नाम शिमोन* रखा। लिआ ने कहा, "यहोवा ने सुना कि मुझे प्यार नहीं मिलता, इसलिए उसने मुझे यह पुत्र दिया।"

[34]लिआ फिर गर्भवती हुई और एक ओर पुत्र को जन्म दिया। उसने पुत्र का नाम लेवी* रखा। लिआ ने कहा, "अब निश्चय ही मेरा पति मुझको प्यार करेगा। मैंने उसे तीन पुत्र दिए हैं।"

[35]तब लिआ ने एक और पुत्र को जन्म दिया। उसने इस लड़के का नाम यहूदा* रखा। लिआ ने उसे यह नाम दिया क्योंकि उसने कहा, "अब मैं यहोवा की स्तुति करूँगी।" तब लिआ को बच्चा होना बन्द हो गया।

30 राहेल ने देखा कि वह याकूब के लिए किसी बच्चे को जन्म नहीं दे रही है। राहेल अपनी बहन लिआ से ईर्ष्या करने लगी। इसलिए राहेल ने याकूब से कहा, "मुझे बच्चे दो, वरना मैं मर जाऊँगी।"

[2]याकूब राहेल पर क्रुद्ध हुआ। उसने कहा, "मैं परमेश्वर नहीं हूँ। वह परमेश्वर ही है जिसने तुम्हें बच्चों को जन्म देने से रोका है।"

[3]तब राहेल ने कहा, "तुम मेरी दासी बिल्हा को ले सकते हो। उसके साथ सोओ और वह मेरे लिए बच्चे को जन्म देगी।* तब मैं उसके द्वारा माँ बनूँगी।"

[4]इस प्रकार राहेल ने अपने पति याकूब के लिए बिल्हा को दिया। याकूब ने बिल्हा के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। [5]बिल्हा गर्भवती हुई और याकूब के लिए एक पुत्र को जन्म दिया।

[6]राहेल ने कहा, "परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली है। उसने मुझे एक पुत्र देने का निश्चय किया।" इसलिए राहेल ने इस पुत्र का नाम दान* रखा।

[7]बिल्हा दूसरी बार गर्भवती हुई और उसने याकूब को दूसरा पुत्र दिया। [8]राहेल ने कहा, "अपनी बहन से मुकाबले के लिए मैंने कठिन लड़ाई लड़ी है और मैंने विजय पा ली है।" इसलिए उसने इस पुत्र का नाम नप्ताली* रखा।

[9]लिआ ने सोचा कि वह और अधिक बच्चों को जन्म नहीं दे सकती। इसलिए उसने अपनी दासी जिल्पा को याकूब के लिए दिया। [10]तब जिल्पा ने एक पुत्र को जन्म दिया। [11]लिआ ने कहा, "मैं भाग्यवती हूँ। अब स्त्रियाँ मुझे भाग्यवती कहेंगी।" इसलिए उसने पुत्र का नाम गाद* रखा। [12]जिल्पा ने दूसरे पुत्र को जन्म दिया। [13]लिआ ने कहा, "मैं बहुत प्रसन्न हूँ।" इसलिए उसने लड़के का नाम आशेर* रखा।

[14]गेहूँ कटने के समय रूबेन खेतों में गया और कुछ विशेष फूलों* को देखा। रूबेन इन फूलों को अपनी माँ लिआ के पास लाया। लेकिन राहेल ने लिआ से कहा, "कृपाकर अपने पुत्र के फूलों में से कुछ मुझे दे दो।"

[15]लिआ ने उत्तर दिया, "तुमने तो मेरे पति को पहले ही ले लिया है। अब तुम मेरे पुत्र के फूलों को भी ले लेना चाहती हो।"

लेकिन राहेल ने उत्तर दिया, "यदि तुम अपने पुत्र के फूल मुझे दोगी तो तुम आज रात याकूब के साथ सो सकती हो।"

[16]उस रात याकूब खेतों से लौटा। लिआ ने उसे देखा और उससे मिलने गई। उसने कहा, "आज रात तुम मेरे साथ सोओगे। मैंने अपने पुत्र के फूलों को तुम्हारी कीमत के रूप में दिया है।" इसलिए याकूब उस रात लिआ के साथ सोया।

रूबेन इस नाम का अर्थ "देखो एक पुत्र" है।
शिमोन इस नाम का अर्थ "वह सुनता है" है।
लेवी इस नाम का अर्थ "साथ देना" "एक साथ होना" या "सम्बन्धित होना" है।
यहूदा इस नाम का अर्थ "वह प्रशंसित है।
वह ... देगी शाब्दिक "वह मेरी गोद में ही बच्चे को जन्म देगी और उसके द्वारा मेरा भी पुत्र होगा।
दान इस नाम का अर्थ "निर्णय करना" या "न्याय करना" है।
नप्ताली इस नाम का अर्थ "मेरा संघर्ष" है।
गाद इस नाम का अर्थ "भाग्यशाली अच्छा भाग्य" या "सेना" है।
आशेर इस नाम का अर्थ "प्रसन्न" या "ईश्वर का कृपापात्र" है।
विशेष फूल मेनड्रेक्स हिब्रू शब्द का अर्थ "प्रेम–पुष्प" है।

[17]तब परमेश्वर ने लिआ को फिर गर्भवती होने दिया। उसने पाँचवें पुत्र को जन्म दिया। [18]लिआ ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे इस बात का पुरस्कार दिया है कि मैंने अपनी दासी को अपने पति को दिया।" इसलिए लिआ ने अपने पुत्र का नाम इस्साकार* रखा।

[19]लिआ फिर गर्भवती हुई और उसने छठे पुत्र को जन्म दिया। [20]लिआ ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे एक सुन्दर भेंट दी है। अब निश्चय ही याकूब मुझे अपनाएगा, क्योंकि मैंने उसे छः बच्चे दिए हैं।" इसलिए लिआ ने पुत्र का नाम जबूलून* रखा।

[21]इसके बाद लिआ ने एक पुत्री को जन्म दिया। उसने पुत्री का नाम दीना रखा।

[22]तब परमेश्वर ने राहेल की प्रार्थना सुनी। परमेश्वर ने राहेल के लिए बच्चे उत्पन्न करना संभव बनाया। [23-24]राहेल गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। राहेल ने कहा, "परमेश्वर ने मेरी लज्जा समाप्त कर दी है और मुझे एक पुत्र दिया है।" इसलिए राहेल ने अपने पुत्र का नाम यूसुफ* रखा।

याकूब ने लाबान के साथ चाल चली

[25]यूसुफ के जन्म के बाद याकूब ने लाबान से कहा, "अब मुझे अपने घर लौटने दो। [26]मुझे मेरी पत्नियाँ और बच्चे दो। मैंने चौदह वर्ष तक तुम्हारे लिए काम करके उन्हें कमाया है। तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारी अच्छी सेवा की है।"

[27]लाबान ने उससे कहा, "मुझे कुछ कहने दो।* मैं अनुभव करता हूँ* कि यहोवा ने तुम्हारी वजह से मुझ पर कृपा की है। [28]बताओ कि तुम्हें मैं क्या दूँ और मैं वही तुमको दूँगा।"

[29]याकूब ने उत्तर दिया, "तुम जानते हो, कि मैंने तुम्हारे लिए कठिन परिश्रम किया है। तुम्हारी रेवड़े बड़ी हैं और जब तक मैंने उनकी देखभाल की है, ठीक रही हैं। [30]जब मैं आया था, तुम्हारे पास थोड़ी सी थीं। अब तुम्हारे पास बहुत अधिक है। हर बार जब मैंने तुम्हारे लिए कुछ किया है यहोवा ने तुम पर कृपा की है। अब मेरे लिए समय आ गया है कि मैं अपने लिए काम करुँ, यह मेरे लिए अपना घर बनाने का समय है।"

[31]लाबान ने पूछा, "तब मैं तुम्हें क्या दूँ?"

याकूब ने उत्तर दिया, "मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे कुछ दो। मैं केवल चाहता हूँ कि तुम जो मैंने काम किया है उसकी कीमत चुका दो। केवल यही एक काम करो। मैं लौटूँगा और तुम्हारी भेड़ों की देखभाल करूँगा। [32]मुझे अपनी सभी रेवड़ों के बीच से जाने दो और दागदार या धारीदार हर एक मेमने को मुझे ले लेने दो और काली नई बकरी को ले लेने दो हर एक दागदार और धारीदार बकरी को ले लेने दो। यही मेरा वेतन होगा। [33]भविष्य में तुम सरलता से देख लोगे कि मैं ईमानदार हूँ। तुम मेरी रेवड़ों को देखने आ सकते हो। यदि कोई बकरी दागदार नहीं होगी या कोई भेड़ काली नहीं होगी तो तुम जान लोगे कि मैंने उसे चुराया है।"

[34]लाबान ने उत्तर दिया, "मैं इसे स्वीकार करता हूँ। हम तुमको जो कुछ मागोगे देंगे।" [35]लेकिन उस दिन लाबान ने दागदार बकरों को छिपा दिया और लाबान ने सभी दागदार या धारीदार बकरियों को छिपा दिया। लाबान ने सभी काली भेड़ों को भी छिपा दिया। लाबान ने अपने पुत्रों को इन भेड़ों की देखभाल करने को कहा। [36]इसलिए पुत्रों ने सभी दागदार जानवरों को लिया और वे दूसरी जगह चले गए। उन्होंने तीन दिन तक यात्रा की। याकूब रूक गया और बचे हुए जानवरों की देखभाल करने लगा। किन्तु उनमें कोई जानवर दागदार या काला नहीं था।

[37]इसलिए याकूब ने चिनार, बादाम और अर्मोन पेड़ों की हरी शाखाएँ काटी। उसने उनकी छाल इस तरह उतारी कि शाखाएँ सफेद धारीदार बन गई। [38]याकूब ने पानी पिलाने की जगह पर शाखाओं को रेवड़े के सामने रख दिया। जब जानवर पानी पीने आए तो उस जगह पर वे गाभिन होने के लिए मिले। [39]तब बकरियाँ

इस्साकार यह नाम इब्रानी शब्द "पुरस्कार" या "वेतन" के समान है।

जबूलून यह नाम उस शब्द की तरह है जिसका अर्थ "प्रशंसा" या "प्रतिष्ठा" है।

यूसुफ यह नाम का अर्थ "जोड़ना" "इकट्ठा करना" या "बटोरना" है।

मुझे कुछ कहने दो "यदि आपकी दृष्टि में मैं कृपापात्र हूँ।" कुछ कहने के लिए आज्ञा पाने का यह तरीका प्रायः प्रयोग में आता है।

मैं अनुभव करता हूँ "अनुमान किया" "दिव्य ज्ञान हुआ" या "निर्णय किया।"

जब शाखाओं के सामने गाभिन होने के लिए मिली तो जो बच्चे पैदा हुए वे दागदार, धारीदार या काले हुए।

[40]याकूब ने दागदार और काले जानवरो को रेवड़ के अन्य जानवरों से अलग किया। सो इस प्रकार, याकूब ने अपने जानवरों को लाबान के जानवरों से अलग किया। उसने अपनी भेड़ों को लाबान की भेड़ों के पास नहीं भटकने दिया। [41]जब कभी रेवड़ में स्वस्थ जानवर गाभिन होने के लिए मिलते थे तब याकूब उनकी आँखों के सामने शाखाएँ रख देता था, उन शाखाओं के करीब ही ये जानवर गाभिन होने के लिए मिलते थे। [42]लेकिन जब कमजोर जानवर गाभिन होने के लिए मिलते थे। तो याकूब वहाँ शाखाएँ नहीं रखता था। इस प्रकार कमजोर जानवरों से पैदा बच्चे लाबान के थे। स्वस्थ जानवरों से पैदा बच्चे याकूब के थे। [43]इस प्रकार याकूब बहुत धनी हो गया। उसके पास बड़ी रेवड़ें, बहुत से नौकर ऊँट और गधे थे।

विदा होने के समय याकूब भागता है

31 एक दिन याकूब ने लाबान के पुत्रों को बात करते सुना। उन्होंने कहा, "हम लोगों के पिता का सब कुछ याकूब ने ले लिया है। याकूब धनी हो गया है, और यह सारा धन उसने हमारे पिता से लिया है।" [2]याकूब ने यह देखा कि लाबान पहले की तरह प्रेम भाव नहीं रखता है। [3]परमेश्वर ने याकूब से कहा, "तुम अपने पूर्वजों के देश को वापस लौट जाओ जहाँ तुम पैदा हुए। मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"

[4]इसलिए याकूब ने राहेल और लिआ से उस मैदान में मिलने के लिए कहा जहाँ वह बकरियों और भेड़ों की रेवड़े रखता था। [5]याकूब ने राहेल और लिआ से कहा, "मैनें देखा है कि तुम्हारे पिता मुझ से क्रोधित हैं। उन का मेरे प्रति वह पहले जैसा प्रेम–भाव अब नहीं रहा। [6]तुम दोनों जानती हो कि मैंने तुम लोगों के पिता के लिए उतनी कड़ी मेहनत की, जितनी कर सकता था। [7]लेकिन तुम लोगों के पिता ने मुझे धोखा दिया। तुम्हारे पिता ने मेरा वेतन दस बार बदला है। लेकिन इस पूरे समय में परमेश्वर ने लाबान के सारे धोखों से मुझे बचाया है।

[8]"एक बार लाबान ने कहा, 'तुम दागदार सभी बकरियों को रख सकते हो। यह तुम्हारा वेतन होगा।' जब से उसने यह कहा तब से सभी जानवरों ने धारीदार बच्चे दिये। इस प्रकार वे सभी मेरे थे। लेकिन लाबान ने तब कहा, 'मैं दागदार बकरियों को रखूँगा। तुम सारी धारीदार बकरियाँ ले सकते हो। यही तुम्हारा वेतन होगा।' उसके इस तरह कहने के बाद सभी जानवरों ने धारीदार बच्चे दिये। [9]इस प्रकार परमेश्वर ने जानवरों को तुम लोगों के पिता से ले लिया है और मुझे दे दिया है।

[10]"जिस समय जानवर गाभिन होने के लिए मिल रहे थे मैंने एक स्वप्न देखा। मैंने देखा कि केवल नर जानवर जो गाभिन करने के लिए मिल रहे थे धारीदार और दागदार थे। [11]स्वप्न में परमेश्वर के दूत ने मुझ से बातें की। स्वर्गदूत ने कहा, 'याकूब!'

"मैंने उत्तर दिया 'हाँ।'

[12]"स्वर्गदूत कहा, 'देखो, केवल दागदार और धारीदार बकरियाँ ही गाभिन होने के लिए मिल रही हैं। मैं ऐसा कर रहा हूँ। मैंने वह सब बुरा देखा है जो लाबान तुम्हारे लिए करता है। मैं यह इसलिए कर रहा हूँ कि सभी नये बकरियों के बच्चे तुम्हारे हो जायें। [13]मैं वही परमेश्वर हूँ जिससे तुमने बेतेल में वाचा बाँधी थी। उस जगह तुमने एक स्मरण स्तम्भ बनाया था और जैतून के तेल से उसका अभिषेक किया था और उस जगह तुमने मुझसे एक प्रतिज्ञा की थी। अब, उठो और यह जगह छोड़ दो और वापस अपने जन्म भूमि को लौट जाओ।'"

[14-15]राहेल और लिआ ने याकूब को उत्तर दिया, "हम लोगों के पिता के पास मरने पर हम लोगों को देने के लिए कुछ नहीं है। उसने हम लोगों के साथ अजनबी जैसा व्यवहार किया है। उसने हम लोगों को और तुमको बेच दिया और इस प्रकार हम लोगों का सारा धन उसने खर्च कर दिया। [16]परमेश्वर ने यह सारा धन हमारे पिता से ले लिया है और अब यह हमारा है। इसलिए तुम वही करो जो परमेश्वर ने करने के लिए कहा है।"

[17]इसलिए याकूब ने यात्रा की तैयारी की। उसने अपनी पत्नियों और पुत्रों को ऊँटों पर बैठाया। [18]तब वे कनान की ओर लौटने लगे जहाँ उसका पिता रहता था। जानवरों की भी सभी रेवड़े, जो याकूब की थीं, उनके आगे चल रही थीं। वह वो सभी चीज़ें साथ ले जा रहा था जो उसने पद्दनराम में रहते हुए प्राप्त की थी।

[19]इस समय लाबान अपनी भेड़ों का ऊन काटने गया था। जब वह बाहर गया तब राहेल उसके घर में घुसी और अपने पिता के गृह देवताओं को चुरा लाई।

[20]याकूब ने अरामी लाबान को धोखा दिया। उसने लाबान को यह नहीं बताया कि वह वहाँ से जा रहा है। [21]याकूब ने अपने परिवार और अपनी सभी चीज़ों को लिया तथा शीघ्रता से चल पड़ा। उन्होंने फरात नदी को पार किया और गिलाद पहाड़ की ओर यात्रा की।

[22]तीन दिन बाद लाबान को पता चला कि याकूब भाग गया। [23]इसलिए लाबान ने अपने आदमियों को इकट्ठा किया और याकूब का पीछा करना आरम्भ किया। सात दिन बाद लाबान ने याकूब को गिलाद पहाड़ के पास पाया।[24]उस रात परमेश्वर लाबान के पास स्वप्न में प्रकट हुआ। परमेश्वर ने कहा, "याकूब से तुम जो कुछ कहो उसके एक–एक शब्द के लिए सावधान रहो।"

चुराए गए देवताओं की खोज

[25]दूसरे दिन सवेरे लाबान ने याकूब को जा पकड़ा। याकूब ने अपना तम्बू पहाड़ पर लगाया था। इसलिए लाबान और उसके आदमियों ने अपने तम्बू गिलाद पहाड़ पर लगाये।

[26]लाबान ने याकूब से कहा, "तुमने मुझे धोखा क्यों दिया? तुम मेरी पुत्रियों को ऐसे क्यों ले जा रहे हो मानो वे युद्ध में पकड़ी गई स्त्रियाँ हो? [27]मुझसे बिना कहे तुम क्यों भागे? यदि तुमने कहा होता तो मैं तुम्हें दावत देता। उसमें बाजे के साथ नाचना और गाना होता। [28]तुमने मुझे अपने नातियों को चूमने तक नहीं दिया और न ही पुत्रियों को विदा कहने दिया। तुमने यह करके बड़ी भारी मूर्खता की। [29]तुम्हें सचमुच चोट पहुँचाने की शक्ति मुझमें है। किन्तु पिछली रात तुम्हारे पिता का परमेश्वर मेरे स्वप्न में आया। उसने मुझे चेतावनी दी कि मैं किसी प्रकार तुमको चोट न पहुँचाऊँ। [30]मैं जानता हूँ कि तुम अपने घर लौटना चाहते हो। यही कारण है कि तुम वहाँ से चल पड़े हो। किन्तु तुमने मेरे घर से देवताओं को क्यों चुराया?"

[31]याकूब ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे बिना कहे चल पड़ा, क्योंकि मैं डरा हुआ था। मैंने सोचा कि तुम अपनी पुत्रियों को मुझसे ले लोगे। [32]किन्तु मैंने तुम्हारे देवताओं को नहीं चुराया। यदि तुम यहाँ मेरे पास किसी व्यक्ति को, जो तुम्हारे देवताओं को चुरा लाया है, पाओ, तो वह मार दिया जाएगा। तुम्हारे लोग ही मेरे गवाह होंगे। तुम अपनी किसी भी चीज़ को यहाँ ढूँढ सकते हो। जो कुछ भी तुम्हारा हो, ले लो।" (याकूब को यह पता नहीं था कि राहेल ने लाबान के गृह देवता चुराये हैं।) [33]इसलिए लाबान याकूब के तम्बू में गया और उसमें ढूँढा। उसने याकूब के तम्बू में ढूँढा और तब लिआ के तम्बू में भी। तब उसने उस तम्बू में ढूँढा जिसमें दोनो दासियाँ ठहरी थी। किन्तु उसने उसके घर से देवताओं को नहीं पाया। तब लाबान राहेल के तम्बू में गया। [34]राहेल ने ऊँट की जीन में देवताओं को छिपा रखा था और वह उन्ही पर बैठी थी। लाबान ने पूरे तम्बू में ढूँढा किन्तु वह देवताओं को न खोज सका।

[35]और राहेल ने अपने पिता से कहा, "पिताजी, मुझ पर क्रुद्ध न हों। मैं आपके सामने खड़ी होने में असमर्थ हूँ। इस समय मेरा मासिकधर्म चल रहा है।" इसलिए लाबान ने पूरे तम्बू में ढूँढा, लेकिन वह उसके घर से देवताओं को नहीं पा सका।

[36]तब याकूब बहुत क्रुद्ध हुआ। याकूब ने कहा, "मैंने क्या बुरा किया है? मैंने कौन सा नियम तोड़ा है? मेरा पीछा करने और मुझे रोकने का अधिकार तुम्हें कैसे है? [37]मेरा जो कुछ है उसमें तुमने ढूँढ लिया। तुमने ऐसी कोई चीज़ नहीं पाई जो तुम्हारी है। यदि तुमने कोई चीज़ पाई हो तो मुझे दिखाओ। उसे यहीं रखो जिससे हमारे साथी देख सकें। हमारे साथियों को तय करने दो कि हम दोनों में कौन ठीक है। [38]मैंने तुम्हारे लिए बीस वर्ष तक काम किया है। इस पूरे समय में बच्चा देते समय कोई भी बच्चा या भेड़ नहीं मरे और मैंने कोई मेमना तुम्हारी रेवड़ में से नहीं खाया है। [39]यदि कभी जंगली जानवरों ने कोई भेड़ मारी तो मैंने तुरन्त उसकी कीमत स्वयं दे दी। मैंने कभी मरे जानवर को तुम्हारे पास ले जाकर यह नहीं कहा कि इसमें मेरा दोष नहीं। किन्तु रात–दिन मुझे लूटा गया। [40]दिन में सूरज मेरी ताकत छीनता था और रात को सर्दी मेरी आँखों से नींद चुरा लेती थी। [41]मैंने बीस वर्ष तक तुम्हारे लिए एक दास की तरह काम किया। पहले के चौदह वर्ष मैंने तुम्हारी दो पुत्रियों को पाने के लिये काम किया। बाद के छः वर्ष मैंने तुम्हारे जानवरों को पाने के लिए काम किया और इस बीच तुमने मेरा वेतन दस बार बदला। [42]लेकिन मेरे पूर्वजों के परमेश्वर इब्राहीम का परमेश्वर और

इसहाक का भय परमेश्वर का ही एक नाम। इससे पता चलता है कि परमेश्वर बहुत शक्तिशाली है जिससे बहुत लोग डरते हैं।

इसहाक का भय* मेरे साथ था। यदि परमेश्वर मेरे साथ नहीं होता तो तुम मुझे खाली हाथ भेज देते। किन्तु परमेश्वर ने मेरी परेशानियों को देखा। परमेश्वर ने मेरे किए काम को देखा और पिछली रात परमेश्वर ने प्रमाणित कर दिया कि मैं ठीक हूँ।"

याकूब और लाबान की सन्धि

[43]लाबान ने याकूब से कहा, "ये लड़कियाँ मेरी पुत्रियाँ हैं। उनके बच्चे मेरे हैं। ये जानवर मेरे हैं। जो कुछ भी तुम यहाँ देखते हो, मेरा है। लेकिन मैं अपनी पुत्रियों और उनके बच्चों को रखने के लिए कुछ नहीं कर सकता। [44]इसलिए मैं तुमसे एक सन्धि करना चाहता हूँ। हम लोग पत्थरों का एक ढेर लगाएगें जो यह बताएगा कि हम लोग सन्धि कर चुके हैं।"

[45]इसलिए याकूब ने एक बड़ी चट्टान ढूँढी और उसे यह पता देने के लिए वहाँ रखा कि उसने सन्धि की है। [46]उसने अपने पुरुषों को और अधिक चट्टानें ढूँढने और चट्टानों का एक ढेर लगाने को कहा। तब उन्होंने चट्टानों के समीप भोजन किया। [47]लाबान ने उस जगह का नाम यज्र सहादूथा* रखा। लेकिन याकूब ने उस जगह का नाम गिलियाद* रखा।

[48]लाबान ने याकूब से कहा, "यह चट्टानों का ढेर हम दोनों को हमारी सन्धि की याद दिलाने में सहायता करेगा।" यह कारण है कि याकूब ने उस जगह को गिलियाद कहा।

[49]तब लाबान ने कहा, "यहोवा हम लोगों के एक दूसरे से अलग होने का साक्षी रहे।" इसलिए उस जगह का नाम मिजपा* भी होगा।

[50]तब लाबान ने कहा, "यदि तुम मेरी पुत्रियों को चोट पहुँचाओगे तो याद रखो, परमेश्वर तुमको दण्ड देगा। यदि तुम दूसरी स्त्री से विवाह करोगे तो याद रखो, परमेश्वर तुमको देख रहा है। [51]यहाँ ये चट्टानें हैं, जो हमारे बीच में रखी हैं और यह विशेष चट्टान है जो बताएगी कि हमने सन्धि की है। [52]चट्टानों का ढेर तथा यह विशेष चट्टान हमें अपनी सन्धि को याद कराने में सहायता करेगा। तुमसे लड़ने के लिए मैं इन चट्टानों के पार कभी नहीं जाऊँगा और तुम मुझसे लड़ने के लिए इन चट्टानों से आगे मेरी ओर कभी नहीं आओगे। [53]यदि हम लोग इस सन्धि को तोड़ें तो इब्राहीम का परमेश्वर, नाहोर का परमेश्वर और उनके पूर्वजों का परमेश्वर हम लोगों का न्याय करेगा।"

याकूब के पिता इसहाक ने परमेश्वर को "भय" नाम से पुकारा। इसलिए याकूब ने सन्धि के लिए उस नाम का प्रयोग किया। [54]तब याकूब ने एक पशु को मारा और पहाड़ पर बलि के रूप में भेंट किया और उसने अपने पुरुषो को भोजन में सम्मिलित होने के लिए बुलाया। भोजन करने के बाद उन्होंने पहाड़ पर रात बिताई। [55]दूसरे दिन सवेरे लाबान ने अपने नातियों को चूमा और पुत्रियों को विदा दी। उसने उन्हें आशीर्वाद दिया और घर लौट गया।

एसाव के साथ फिर मेल

32 याकूब ने भी वह जगह छोड़ी। जब वह यात्रा कर रहा था। उसने परमेश्वर के स्वर्गदूत को देखा। [2]जब याकूब ने उन्हें देखा तो कहा, "यह परमेश्वर का पड़ाव है।" इसलिए याकूब ने उस जगह का नाम महनैम* रखा।

[3]याकूब का भाई एसाव सेईर नामक प्रदेश में रहता था। यह एदोम* का पहाड़ी प्रदेश था। याकूब ने एसाव के पास दूत भेजा। [4]याकूब ने दूत से कहा, "मेरे स्वामी एसाव को यह खबर दो: 'तुम्हारा सेवक याकूब कहता है, मैं इन सारे वर्षों लाबान के साथ रहा हूँ। [5]मेरे पास मवेशी, गधे, रेवड़े और बहुत से नौकर हैं। मैं इन्हें तुम्हारे पास भेजता हूँ और चाहता हूँ कि तुम हमें स्वीकार करो।'"

[6]दूत याकूब के पास लौटा और बोला, "हम तुम्हारे भाई एसाव के पास गए। वह तुमसे मिलने आ रहा है। उसके साथ चार सौ सशस्त्र वीर हैं।"

[7]उस सन्देश ने याकूब को डरा दिया। उसने अपने सभी साथीयों को दो दलों में बाँट दिया। उसने अपनी सभी रेवड़ों, मवेशियों के झुण्ड और ऊँटों को दो भागों में बाँटा। [8]याकूब ने सोचा, "यदि एसाव आकर

यज्र सहादूथा अरामी शब्द जिसका अर्थ सन्धि की चट्टानों का ढेर है।

गिलियाद गिलाद का दूसरा नाम। इस नाम का अर्थ सन्धि की चट्टानों का ढेर है।

मिजपा इस नाम का अर्थ "ढूंढ" या "निरीक्षण स्तम्भ" है।

महनैम इस नाम का अर्थ "दो पड़ाव" है।

एदोम यहूदा के पूर्व का एक प्रदेश।

एक भाग को नष्ट करता है तो दूसरा भाग सकता है और बच सकता है।"

[9]याकूब ने कहा, "हे मेरे पूर्वज इब्राहीम के परमेश्वर। हे मेरे पिता इसहाक के परमेश्वर। तूने मुझे अपने देश में लौटने और अपने परिवार में आने के लिए कहा। तूने कहा कि तू मेरी भलाई करेगा। [10]तू मुझ पर बहुत दयालु रहा है। तूने मेरे लिए बहुत अच्छी चीज़ें की हैं। पहली बार मैंने यरदन नदी के पास यात्रा की, मेरे पास टहलने की छड़ी* के अतिरिक्त कुछ भी न था। किन्तु मेरे पास अब इतनी चीज़ें हैं कि मैं उनको पूरे दो दलों में बाँट सकूँ। [11]तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि कृपा करके मुझे मेरे भाई एसाव से बचा। मैं उससे डरा हुआ हूँ। इसलिए कि वह आएगा और हम सभी को, यहाँ तक कि बच्चों सहित माताओं को भी जान से मार डालेगा। [12]हे यहोवा, तूने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हारी भलाई करूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को बढ़ाऊँगा और तुम्हारे वंशजो को समुद्र के बालू के कणों के समान बढ़ा दूँगा। वे इतने अधिक होंगे कि गिने नहीं जा सकेंगे।'"

[13]याकूब रात को उस जगह ठहरा। याकूब ने कुछ चीजें एसाव को भेंट देने के लिए तैयार कीं। [14]याकूब ने दो सौ बकरियाँ, बीस बकरे, दो सौ भेड़ें तथा बीस नर भेड़े लिए। [15]याकूब ने तीस ऊँट और उनके बच्चें, चालीस गायें और दस बैल, बीस गदहियाँ और दस गदहे लिए। [16]याकूब ने जानवरों का हर एक झुण्ड नौकरों को दिया। तब याकूब ने नौकरों से कहा, "सब जानवरों के हर झुण्ड को अलग कर लो। मेरे आगे–आगे चलो और हर झुण्ड के बीच कुछ दूरी रखो।" [17]याकूब ने उन्हें आदेश दिया। जानवरों के पहले झुण्ड वाले नौकर से याकूब ने कहा, "मेरा भाई एसाव जब तुम्हारे पास आए और तुमसे पूछे, 'यह किसके जानवर हैं? तुम कहाँ जा रहे हो? तुम किसके नौकर हो? [18]तब तुम उत्तर देना, "ये जानवर आपके सेवक याकूब के हैं। याकूब ने इन्हें अपने स्वामी एसाव को भेंट के रूप में भेजे है, और याकूब भी हम लोगों के पीछे आ रहा है।'"

[19]याकूब ने दूसरे नौकर, तीसरे नौकर, और सभी अन्य नौकरों को यही बात करने का आदेश दिया। उसने कहा, "जब तुम लोग एसाव से मिलो तो यही एक बात कहोगे। [20]तुम लोग कहोगे, 'यह आपकी भेंट हैं, और आपका सेवक याकूब भी लोगों के पीछे आ रहा है।'"

याकूब ने सोचा, "यदि मैं भेंट के साथ इन पुरुषों को आगे भेजता हूँ तो यह हो सकता है कि एसाव मुझे क्षमा कर दे और मुझको स्वीकार कर ले।" [21]इसलिए याकूब ने एसाव को भेंट भेजी। किन्तु याकूब उस रात अपने पड़ाव में ही ठहरा।

[22]बाद में उसी रात याकूब उठा और उस जगह को छोड़ दिया। याकूब ने अपनी दोनों पत्नियों, अपनी दोनों दासियों और अपने ग्यारह पुत्रों को साथ लिया। घाट पर जाकर याकूब ने यब्बोक नदी को पार किया। [23]याकूब ने अपने परिवार को नदी के उस पार भेजा। तब याकूब ने अपनी सभी चीज़ें नदी के उस पार भेज दीं।

परमेश्वर से मल्ल युद्ध

[24]याकूब नदी को पार करने वाला अन्तिम व्यक्ति था। किन्तु पार करने से पहले जब तक वह अकेला ही था, एक व्यक्ति आया और उससे मल्ल युद्ध करने लगा। उस व्यक्ति ने उससे तब तक मल्ल युद्ध किया जब तक सूरज न निकला। [25]व्यक्ति ने देखा कि वह याकूब को हरा नहीं सकता। इसलिए उसने याकूब के पैर को उसके कूल्हे के जोड़ पर छुआ। उस समय याकूब के कूल्हे का जोड़ अपने स्थान से हट गया।

[26]तब उस व्यक्ति ने याकूब से कहा, "मुझे छोड़ दो। सूरज ऊपर चढ़ रहा है।"

किन्तु याकूब ने कहा, "मैं तुमको नहीं छोड़ूँगा। मुझको तुम्हें आशीर्वाद देना होगा।"

[27]और उस व्यक्ति ने उससे कहा, "तुम्हारा क्या नाम है?" और याकूब ने कहा, "मेरा नाम याकूब है।"

[28]तब व्यक्ति ने कहा, "तुम्हारा नाम याकूब नहीं रहेगा। अब तुम्हारा नाम इस्राएल* होगा। मैं तुम्हें यह नाम इसलिए देता हूँ कि तुमने परमेश्वर के साथ और मनुष्यों के साथ युद्ध किया है और तुम हराए नहीं जा सके हो।"

[29]तब याकूब ने उससे पूछा, "कृपया मुझे अपना नाम बताएं।"

किन्तु उस व्यक्ति ने कहा, "तुम मेरा नाम क्यों पूछते हो?" उस समय उस व्यक्ति ने याकूब को आशीर्वाद दिया।

छड़ी या गड़रिये की लाठी।

इस्राएल इस नाम का अर्थ वह परमेश्वर के लिए युद्ध करता है। या वह परमेश्वर से युद्ध करता है।

[30]इसलिए याकूब ने उस जगह का नाम पनीएल* रखा। याकूब ने कहा, "इस जगह मैंने परमेश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन किया है। किन्तु मेरे जीवन की रक्षा हो गई।" [31]जैसे ही वह पनीएल से गुजरा, सूरज निकल आया। याकूब अपने पैरों के कारण लंगड़ाकर चल रहा था। [32]इसलिए आज भी इस्राएल के लोग पुट्ठे की माँसपेशी को नहीं खाते क्योंकि इसी माँसपेशी पर याकूब को चोट लगी थी।

याकूब अपनी वीरता दिखाता है

33 याकूब ने दृष्टि उठाई और एसाव को आते हुए देखा। एसाव आ रहा था और उसके साथ चार सौ पुरूष थे। याकूब ने अपने परिवार को चार समूहों मे बाँटा। लिआ और उसके बच्चे एक समूह में थे, राहेल और यूसुफ एक समूह में थे, दासी और उनके बच्चे दो समूहों में थे। [2]याकूब ने दासियों और उनके बच्चों को आगे रखा। उसके बाद उनके पीछे लिआ और उसके बच्चों को रखा और याकूब ने राहेल और यूसुफ को सबके अन्त में रखा।

[3]याकूब स्वयं एसाव की ओर गया। इसलिए वह पहला व्यक्ति था जिसके पास एसाव आया। अपने भाई की ओर बढ़ते समय याकूब ने सात बार जमीन पर झुककर प्रणाम किया।

[4]जब एसाव ने याकूब को देखा, वह उससे मिलने को दौड़ पड़ा। एसाव ने याकूब को अपनी बाहों में भर लिया और छाती से लगाया। तब एसाव ने उसकी गर्दन को चूमा और दोनों आनन्द में रो पड़े। [5]एसाव ने नजर उठाई और स्त्रियों तथा बच्चों को देखा। उसने कहा, "तुम्हारे साथ ये कौन लोग हैं?"

याकूब ने उत्तर दिया, "ये वे बच्चे हैं जो परमेश्वर ने मुझे दिए हैं। परमेश्वर मुझ पर दयालु रहा है।"

[6]तब दोनों दासियाँ अपने बच्चों के साथ एसाव के पास गए। उन्होंने उसको झुककर प्रणाम किया। [7]तब लिआ अपने बच्चों के साथ एसाव के सामने गई और उसने प्रणाम किया और तब राहेल और यूसुफ एसाव के सामने गए और उन्होंने भी प्रणाम किया। [8]एसाव ने कहा, "मैंने जिन सब लोगों को यहाँ आते समय देखा वे कौन थे? और वे सभी जानवर किसलिए थे?"

याकूब ने उत्तर दिया, "वे तुमको मेरी भेंट हैं जिससे तुम मुझे स्वीकार कर सको।"

[9]किन्तु एसाव ने कहा, "भाई, तुम्हें मुझको कोई भेंट नहीं देनी चाहिए क्योंकि मेरे पास सब कुछ बहुतायत से हैं।"

[10]याकूब ने कहा, "नहीं! मैं तुमसे विनती करता हूँ। यदि तुम सचमुच मुझे स्वीकार करते हो तो कृपया जो भेंटें देता हूँ तुम स्वीकार करो। मैं तुमको दुबारा देख कर बहुत प्रसन्न हूँ। यह तो परमेश्वर को देखने जैसा है। मैं यह देखकर बहुत प्रसन्न हूँ कि तुमने मुझे स्वीकार किया है। [11]इसलिए मैं विनती करता हूँ कि जो भेंट मैं देता हूँ उसे भी स्वीकार करो। परमेश्वर मेरे ऊपर बहुत कृपालु रहा है। मेरे पास अपनी आवश्यकता से अधिक है।" इस प्रकार याकूब ने एसाव से भेंट स्वीकार करने को विनती की। इसलिए एसाव ने भेंट स्वीकार की।

[12]तब एसाव ने कहा, "अब तुम अपनी यात्रा जारी रख सकते हो। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

[13]किन्तु याकूब ने उससे कहा, "तुम यह जानते हो कि मेरे बच्चे अभी कमजोर हैं और मुझे अपनी रेवड़ों और उनके बच्चों की विशेष देख–रेख करनी चाहिए। यदि मैं उन्हें बहुत दूर एक दिन में चलने के लिए विवश करता हूँ तो सभी पशु मर जाएंगें। [14]इसलिए तुम आगे चलो और मैं धीरे–धीरे तुम्हारे पीछे आऊँगा। मैं पशुओं और अन्य जानवरों की रक्षा के लिए काफी धीरे–धीरे बढ़ूँगा और मैं काफी धीरे–धीरे इसलिए चलूँगा कि मेरे बच्चे बहुत अधिक थक न जायें। मैं सेईर में तुमसे मिलूँगा।"

[15]इसलिए एसाव ने कहा, "तब मैं अपने कुछ साथियों को तुम्हारी सहायता के लिए छोड़ दूँगा।"

किन्तु याकूब ने कहा, "यह तुम्हारी विशेष दया है।" किन्तु ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।" [16]इसलिए उस दिन एसाव सेईर की वापसी यात्रा पर चल पड़ा। [17]किन्तु याकूब सुक्कोत को गया। वहाँ उसने अपने लिए एक घर बनाया और अपने मवेशियों के लिये छोटी पशुशालाऐं बनाई। इसी कारण इस जगह का नाम सुक्कोत* रखा।

[18]बाद में याकूब ने अपना जो कुछ था उसे कनान प्रदेश से शकेम नगर को भेज दिया। याकूब ने नगर

पनीएल इस नाम का अर्थ "परमेश्वर का मुख" है।

सुक्कोत यरदन नदी के पूर्व में एक कस्बा। इस नाम का अर्थ तम्बू या अस्थायी निवास है।

के समीप मैदान में अपना डेरा डाला। [19]याकूब ने उस भूमि को शकेम के पिता हमोर के परिवार से खरीदा। याकूब ने चाँदी के सौ सिक्के दिए। [20]याकूब ने परमेश्वर की उपासना के लिए वहाँ एक विशेष स्मरण स्तम्भ बनाया। याकूब ने जगह का नाम "एले, इस्राएल का परमेश्वर" रखा।

दीना के साथ कुकर्म

34 दीना लिआ और याकूब की पुत्री थी। एक दिन दीना उस प्रदेश की स्त्रियों को देखने के लिए बाहर गई। [2]उस प्रदेश के राजा हमोर के पुत्र शकेम ने दीना को देखा। उसने उसे पकड़ लिया और अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध करने के लिए उसे विवश किया। [3]शकेम दीना से प्रेम करने लगा और उससे विवाह करना चाहा। [4]शकेम ने अपने पिता से कहा, "कृपया इस लड़की को प्राप्त करें जिससे मैं इसके साथ विवाह कर सकूँ।"

[5]याकूब ने यह जान लिया कि शकेम ने उसकी पुत्री के साथ ऐसी बुरी बात की है। किन्तु याकूब के सभी पुत्र अपने पशुओं के साथ मैदान में गए थे। इसलिए वे जब तक नहीं आए, याकूब ने कुछ नहीं किया। [6]उस समय शकेम का पिता हमोर याकूब के साथ बात करने गया।

[7]खेतों में याकूब के पुत्रों ने जो कुछ हुआ था, उसकी खबर सुनी। जब उन्होंने यह सुना तो वे बहुत क्रुद्ध हुए। वे पागल से हो गए क्योंकि शकेम ने याकूब की पुत्री के साथ सोकर इस्राएल को कलंकित किया था। शकेम ने बहुत घिनौनी बात की थी। इसलिए सभी भाई खेतों से घर लौटे।

[8]किन्तु हमोर ने भाईयों से बात की। उसने कहा, "मेरा पुत्र शकेम दीना से बहुत प्रेम करता है। कृपया उसे इसके साथ विवाह करने दो। [9]यह विवाह इस बात का प्रमाण होगा कि हम लोगों ने विशेष सन्धि की है। तब हमारे लोग तुम लोगों की स्त्रियों और तुम्हारे लोग हम लोगों की स्त्रियों के साथ विवाह कर सकते हैं। [10]तुम लोग हमारे साथ एक प्रदेश में रह सकते हो। तुम भूमि के स्वामी बनने और यहाँ व्यापार करने के लिए स्वतन्त्र होगे।"

[11]शकेम ने भी याकूब और भाईयों से बात की। शकेम ने कहा, "कृपया मुझे स्वीकार करें और मैंने जो किया उसके लिए क्षमा करें। मुझे जो कुछ आप लोग करने को कहेंगे, करूँगा। [12]मैं कोई भी भेंट* जो तुम चाहोगे, दूँगा, अगर तुम मुझे दीना के साथ विवाह करने दोगे।"

[13]याकूब के पुत्रों ने शकेम और उसके पिता से झूठ बोलने का निश्चय किया। भाई अभी भी पागल हो रहे थे क्योंकि शकेम ने उनकी बहन दीना के साथ ऐसा घिनौना व्यवहार किया था। [14]इसलिए भाईयों ने उससे कहा, "हम लोग तुम्हें अपनी बहन के साथ विवाह नहीं करने देंगे क्योंकि तुम्हारा खतना अभी नहीं हुआ है। हमारी बहन का तुमसे विवाह करना अनुचित होगा। [15]किन्तु हम लोग तुम्हें उसके साथ विवाह करने देगें यदि तुम यही एक काम करो कि तुम्हारे नगर के हर पुरुष का खतना हम लोगों की तरह हो जाये। [16]तब तुम्हारे पुरुष हमारी स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं और हमारे पुरुष तुम्हारी स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं। तब हम एक ही लोग बन जाएंगे। [17]यदि तुम खतना कराना अस्वीकार करते हो तो हम लोग दीना को ले जाएंगे।"

[18]इस सन्धि ने हमोर और शकेम को बहुत प्रसन्न किया। [19]दीना के भाईयों ने जो कुछ कहा उसे करने में शकेम बहुत प्रसन्न हुआ।

बदला

शकेम परिवार का सबसे अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति था। [20]हमोर और शकेम अपने नगर के सभास्थल को गए। उन्होंने नगर के लोगों से बातें कीं और कहा [21]"इस्राएल के ये लोग हमारे मित्र होना चाहते हैं। हम लोग उन्हें अपने प्रदेश में रहने देना चाहते हैं और अपने साथ शान्ति बनाए रखना चाहते हैं। हम लोगों के पास अपने सभी लोगों के लिए काफी भूमि है। हम लोग इनकी स्त्रियों के साथ विवाह करने को स्वतन्त्र हैं और हम लोग अपनी स्त्रियाँ उनको विवाह के लिए देने में प्रसन्न हैं। [22]किन्तु एक बात है जिसे करने के लिए हम सभी को सन्धि करनी होगी। [23]यदि हम ऐसा करेगें तो उनके पशुओं तथा जानवरों से हम धनी हो जाएंगे। इसलिए हम लोग उनके साथ यह सन्धि करें और वे यहाँ हम लोगों के साथ रहेंगे।" [24]सभास्थल पर जिन लोगों ने यह बात सुनी वे हमोर और शकेम के साथ सहमत हो गए और उस समय हर एक पुरुष का खतना कर दिया गया।

भेंट या दहेज। यहाँ इसका अर्थ वह धन है जो पत्नी को पाने के लिए दिया जाता है।

[25]तीन दिन बाद खतना कर दिए गए पुरुष अभी जख्मी थे। याकूब के दो पुत्र शिमोन और लेवी जानते थे कि इस समय लोग कमजोर होगें, इसलिए वे नगर को गए और उन्होंने सभी पुरुषों को मार डाला। [26]दीना के भाई शिमोन और लेवी ने हमोर और उसके पुत्र शकेम को मार डाला। उन्होंने दीना को शकेम के घर से निकाल लिया और वे चले आए। [27]याकूब के अन्य पुत्र नगर में गए और उन्होंने वहाँ जो कुछ था, लूट लिया। शकेम ने उनकी बहन के साथ जो कुछ किया था, उससे वे तब तक क्रुद्ध थे। [28]इसलिए भाईयों ने उनके सभी जानवर ले लिए। उन्होंने उनके गधे तथा नगर और खेतों में अन्य जो कुछ था सब से लिया। [29]भाईयों ने उन लोगों का सब कुछ ले लिया। भाईयों ने उनकी पत्नियों और बच्चों तक को ले लिया।

[30]किन्तु याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा, "तुम लोगों ने मुझे बहुत कष्ट दिया है और इस प्रदेश के निवासियों के मन में घृणा उत्पन्न करायी। सभी कनानी और परिज्जी लोग हमारे विरुद्ध हो जाएंगे। यहाँ हम बहुत थोड़े हैं। यदि इस प्रदेश के लोग हम लोगों के विरुद्ध लड़ने के लिए इकट्ठे होंगे तो मैं नष्ट हो जाऊँगा और हमारे साथ हमारे सभी लोग नष्ट हो जाएंगे।"

[31]किन्तु भाईयों ने उत्तर दिया, "क्या हम लोग उन लोगों को अपनी बहन के साथ वेश्या* जैसा व्यवहार करने दें? नहीं हमारी बहन के साथ वैसा व्यवहार करने वाले लोग बुरे थे।"

याकूब बेतेल में

35 परमेश्वर ने याकूब से कहा, "बेतेल नगर को जाओ, वहाँ बस जाओ और वहाँ उपासना की वेदी बनाओ। परमेश्वर को याद करो, वह जो तुम्हारे सामने प्रकट हुआ था जब तुम अपने भाई एसाव से बच कर भाग रहे थे। उस परमेश्वर की उपासना के लिए वहाँ वेदी बनाओ।"

[2]इसलिए याकूब ने अपने परिवार और अपने सभी सेवकों से कहा, "लकड़ी और धातु के बने जो झूठे देवता तुम लोगों के पास हैं उन्हें नष्ट कर दो। अपने को पवित्र करो। साफ कपड़े पहनो। [3]हम लोग इस जगह को छोड़ेंगे और बेतेल को जाएंगे। उस जगह में अपने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनायेंगे। यह वही परमेश्वर है जो मेरे कष्टों के समय में मेरी सहायता की और जहाँ कहीं मैं गया वह मेरे साथ रहा।"

[4]इसलिए लोगों के पास जो झूठे देवता थे, उन सभी को उन्होंने याकूब को दे दिया। उन्होंने अपने कानों में पहनी हुई सभी बालियों को भी याकूब को दे दिया। याकूब ने शकेम नाम के शहर के समीप एक सिन्दूर के पेड़ के नीचे इन सभी चीज़ों को गाड़ दिया।

[5]याकूब और उसके पुत्रों ने वह जगह छोड़ दी। उस क्षेत्र के लोग उनका पीछा करना चाहते थे और उन्हें मार डालना चाहते थे। किन्तु वे बहुत डर गए और उन्होंने याकूब का पीछा नहीं किया। [6]इसलिए याकूब और उसके लोग लूज पहुँचे। अब लूज को बेतेल कहते हैं। यह कनान प्रदेश में है। [7]याकूब ने वहाँ एक वेदी बनायी। याकूब ने उस जगह का नाम "एलबेतेल" रखा। याकूब ने इस नाम को इसलिए चुना कि जब वह अपने भाई के यहाँ से भाग रहा था, तब पहली बार परमेश्वर यहीं प्रकट हुआ था।

[8]रिबका की धाय दबोरा यहाँ मरी थी, उन्होंने बेतेल में सिन्दूर के पेड़ के नीचे उसे दफनाया। उन्होंने उस स्थान का नाम अल्लोन बक्कूत* रखा।

याकूब का नया नाम

[9]जब याकूब पद्दनराम से लौटा तब परमेश्वर फिर उसके सामने प्रकट हुआ। परमेश्वर ने याकूब को आशीर्वाद दिया। [10]परमेश्वर ने याकूब से कहा, "तुम्हारा नाम याकूब है। किन्तु मैं उस नाम को बदलूँगा। अब तुम याकूब नहीं कहलाओगे। तुम्हारा नया नाम इस्राएल होगा।" इसलिए इसके बाद याकूब का नाम इस्राएल हुआ।

[11]परमेश्वर ने उससे कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ और तुमको मैं यह आशीर्वाद देता हूँ तुम्हारे बहुत बच्चे हों और तुम एक महान राष्ट्र बन जाओ। तुम ऐसा राष्ट्र बनोगे जिसका सम्मान अन्य सभी राष्ट्र करेंगे। अन्य राष्ट्र और राजा तुमसे पैदा होंगे। [12]मैंने इब्राहीम और इसहाक को कुछ विशेष प्रदेश दिए थे। अब वह प्रदेश मैं तुमको देता हूँ।" [13]तब परमेश्वर ने वह जगह छोड़ दी। [14-15]याकूब ने इस स्थान पर एक

वेश्या ऐसी स्त्री जो शारीरिक सम्बन्ध के लिए कीमत लेती है।

बक्कूत इस नाम का अर्थ "शोक का बांज–वृक्ष" है।

विशेष चट्टान खड़ी की। याकूब ने उस पर दाखरस और तेल चढ़ाकर उस चट्टान को पवित्र बनाया। यह एक विशेष स्थान था क्योंकि परमेश्वर ने वहाँ याकूब से बात की थी और याकूब ने उस स्थान का नाम बेतेल रखा।

राहेल जन्म देते समय मरी

[16]याकूब और उसके दल ने बेतेल को छोड़ा। एप्राता (बेतलेहेम) आने से ठीक पहले राहेल अपने बच्चे को जन्म देने लगी। [17]लेकिन राहेल को इस जन्म से बहुत कष्ट होने लगा। उसे बहुत दर्द हो रहा था। राहेल की धाय ने उसे देखा और कहा, "राहेल, डरो नहीं। तुम एक और पुत्र को जन्म दे रही हो।"

[18]पुत्र को जन्म देते समय राहेल मर गई। मरने के पहले राहेल ने बच्चे का नाम बेनोनी* रखा। किन्तु याकूब ने उसका नाम बिन्यामीन* रखा।

[19]एप्राता को आनेवाली सड़क पर राहेल को दफनाया गया। (एप्राता बेतलेहेम है) [20]और याकूब ने राहेल के सम्मान में उसकी कब्र पर एक विशेष चट्टान रखी। वह विशेष चट्टान वहाँ आज तक है। [21]तब इस्राएल (याकूब) ने अपनी यात्रा जारी रखी। उसने एदेर स्तम्भ* के ठीक दक्षिण में अपना डेरा डाला।

[22]इस्राएल वहाँ थोड़े समय ठहरा। जब वह वहाँ था तब रूबेन इस्राएल की दासी बिल्हा के साथ सोया। इस्राएल ने इस बारे में सुना और बहुत क्रुद्ध हुआ।

इस्राएल का परिवार

याकूब (इस्राएल) के बारह पुत्र थे।

[23]उसकी पत्नी लिआ से उसके छ: पुत्र थे: रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, जबूलून।

[24]उसकी पत्नी राहेल से उसके दो पुत्र थे: यूसुफ, बिन्यामीन।

[25]राहेल की दासी बिल्हा से उसके दो पुत्र थे: दान, नप्ताली।

[26]और लिआ की दासी जिल्पा से उसके दो पुत्र थे: गाद, आशेर।

ये याकूब (इस्राएल) के पुत्र हैं जो पद्दनराम में पैदा हुए थे।

[27]मम्रे के किर्यतर्बा (हेब्रोन) में याकूब अपने पिता इसहाक के पास गया। यह वही जगह है जहाँ इब्राहीम और इसहाक रह चुके थे। [28]इसहाक एक सौ अस्सी वर्ष का था। [29]इसहाक बहुत वर्षों तक जीवित रहा। जब वह मरा, वह बहुत बुढ़ा था। उसके पुत्र एसाव और याकूब ने उसे वहीं दफनाया जहाँ उसका पिता को दफनाया गया था।

एसाव का परिवार

36 एसाव ने कनान देश की पुत्रियों से विवाह किया। यह एसाव के परिवार की एक सूची है। (जो एदोम भी कहा जाता है।) [2]एसाव की पत्नियाँ थी: आदा, हित्ती एलोन की पुत्री। ओहोलीबामा हिव्वी सिबोन की नतिनी और अना की पुत्री। [3]बासमत इश्माएल की पुत्री और नबायोत की बहन। [4]आदा ने एसाव को एक पुत्र एलीपज दिया। बासमत को रूएल नाम पुत्र हुआ। [5]ओहोलीबामा ने एसाव को तीन पुत्र दिए यूश, यालाम और कोरह ये एसाव के पुत्र थे। ये कनान प्रदेश में पैदा हुए थे।

[6-8]याकूब और एसाव के परिवार अब बहुत बढ़ गये और कनान में इस बड़े परिवार का खान–पान जुटा पाना कठिन हो गया। इसलिए एसाव ने कनान छोड़ दिया और अपने भाई याकूब से दूर दूसरे प्रदेश में चला गया। एसाव अपनी सभी चीज़ों को अपने साथ लाया। कनान में रहते हुए उसने ये चीज़ें प्राप्त की थीं। इसलिए एसाव अपने साथ अपनी पत्नियों, पुत्रों, पुत्रियों सभी सेवकों, पशु, और अन्य जानवरों को लाया। एसाव और याकूब के परिवार इतने बड़े हो रहे थे कि उनका एक स्थान पर रहना कठिन था। वह भूमि दोनों परिवारों के पोषण के लिए काफी बड़ी नहीं थी। उनके पास अत्याधिक पशु थे। एसाव पहाड़ी प्रदेश सेईर की ओर बढ़ा। (एसाव का नाम एदोम भी है।)

[9]एसाव एदोम के लोगों का आदि पिता है। सेईर एदोम के पहाड़ी प्रदेश में रहने वाले एसाव के परिवार के ये नाम हैं।

[10]एसाव के पुत्र थे: एलीपज, आदा और एसाव का पुत्र। रूएल बासमत और एसाव का पुत्र।

बेनोनी इस नाम का अर्थ "मेरे कष्टों का पुत्र" है।
बिन्यामीन इस नाम का अर्थ दायें हाथ (प्रिय) पुत्र है।
एदेर स्तम्भ "मिग्दल एदर।"

[11]एलीपज के पाँच पुत्र थे: तेमान, ओमार, सपो, गाताम, कनज।

[12]एलीपज की एक तिम्ना नामक दासी भी थी। तिम्ना और एलीपज ने अमालेक को जन्म दिया।

[13]रुएल के चार पुत्र थे : नहत, जेरह, शम्मा, मिज्जा। ये एसाव की पत्नी बासमत से उसके पौत्र हैं।

[14]एसाव की तीसरी पत्नी अना की पुत्री ओहोलीबामा थी। अना सिबोन का पुत्र था। एसाव और ओहोलीबामा के पुत्र थे: यूश, यालाम, कोरह।

[15]एसाव से चलने वाले वंश ये ही हैं।

एसाव का पहला पुत्र एलीपज था। एलीपज से आए: तेमान, ओमार, सपो, कनज, [16]कोरह, गाताम, अमालेक।

ये सभी परिवार एसाव की पत्नी आदा से आए।

[17]एसाव का पुत्र रुएल इन परिवारों का आदि पिता था: नहत, जेरह, शम्मा, मिज्जा।

ये सभी परिवार एसाव की पत्नी बासमत से आए।

[18]अना की पुत्री एसाव की पत्नी ओहोलीबामा ने यूश, यालाम और कोरह को जन्म दिया। ये तीनों अपने–अपने परिवारों के पिता थे। [19]ये सभी परिवार एसाव से चले।

[20]एसाव के पहले एदोम में सईर नामक एक होरी व्यक्ति रहता था। सेईर के पुत्र ये हैं: लोतान, शोबाल, शिबोन, अना [21]दीशोन, एसेर, दिशान। ये पुत्र अपने परिवारों के मुखिया थे।

[22]लोतान, होरी, हेमाम का पिता था। (तिम्ना लोतान की बहन थी।)

[23]शोाबल, आल्वान, मानहत एबल शपो, ओनाम का पिता था।

[24]शिबोन के दो पुत्र थे: अय्या, अना, (अना वह व्यक्ति है जिसने अपने पिता के गधों की देखभाल करते समय पहाड़ों में गर्म पानी का सोता दूँढा।)

[25]अना, दीशोन और ओहोलीबामा का पिता था।

[26]दीशोन के चार पुत्र थे: हेमदान, एश्बान, यित्रान, करान।

[27]एसेर के तीन पुत्र थे: बिल्हान, जावान, अकान।

[28]दीशान के दो पुत्र थे: ऊस और अरान।

[29]ये होरी परिवारों के मुखियाओं के नाम हैं। लोतान, शोबाल, शिबोन, अना। [30]दिशोन, एसेर, दीशोन। ये व्यक्ति उन परिवारों के मुखिया थे जो सेईर (एदोम) प्रदेश में रहते थे। [31]उस समय एदोम में कई राजा थे। इस्राएल में राजाओं के होने के बहुत पहले ही एदोम में राजा थे।

[32]बोर का पुत्र बेला एदोम में शासन करने वाला राजा था। वह दिन्हाबा नगर पर शासन करता था। [33]जब बेला मरा तो योबाब राजा हुआ। योबाब बोस्रा से जेरह का पुत्र था। [34]जब योबाब मरा, हूशाम ने शासन किया। हूशाम तेमानी लोगों के देश का था। [35]जब हूशाम मरा, हदद ने उस क्षेत्र पर शासन किया। हदद बदद का पुत्र था। (हदद वह व्यक्ति था जिसने मिद्यानी लोगों को मोआब देश में हराया था।) हदद अबीत नगर का था। [36]जब हदद मरा, सम्ला ने उस प्रदेश पर शासन किया। सम्ला मस्रेका का था। [37]जब सम्ला मरा, शाऊल ने उस क्षेत्र पर शासन किया। शाऊल फरात नदी के किनारे रहोबोत का था। [38]जब शाऊल मरा, बाल्हानान ने उस देश पर शासन किया। बाल्हानान अकबोर का पुत्र था। [39]जब बाल्हानान मरा, हदर ने उस देश पर शासन किया। हदर पाऊ नगर का था। मत्रेद की पुत्री हदर की पत्नी का नाम महेतबेल था। मत्रेद का पिता मेजाहब था।

[40-43]एदोमी परिवारों, तिम्ना, अल्बा, यतेत, ओहोलीबामा, एला, पीपोन, कनज, तेमान, मिबसार, मग्दीएल और ईराम आदि का पिता एसाव था। हर एक परिवार एक ऐसे प्रदेश में रहता था जिसका नाम वही था जो उनका पारिवारिक नाम था।

स्वप्नदृष्टा यूसुफ

37 याकूब ठहर गया और कनान प्रदेश में रहने लगा। यह वही प्रदेश है जहाँ उसका पिता आकर बस गया था। [2]याकूब के परिवार की यही कथा है। यूसुफ एक सत्रह वर्ष का युवक था। उसका काम भेड़ बकरियों कि देख भाल करना था। यूसुफ यह काम अपने भाईयों यानि कि बिल्हा और जिल्पा के पुत्रों के साथ करता था। (बिल्हा और जिल्पा उस के पिता की पत्नियाँ थी।) [3]यूसुफ अपने पिता को अपने भाईयों की बुरी बातें बताया करता था। यूसुफ उस समय उत्पन्न हुआ जब उसका पिता इस्राएल (याकूब) बहुत बुढ़ा था। इसलिए इस्राएल (याकूब), यूसुफ को अपने अन्य पुत्रों से अधिक प्यार करता था। याकूब ने अपने पुत्र को एक विशेष अंगरखा दिया। यह अंगरखा लम्बा और बहुत सुन्दर था।

[4]यूसुफ के भाईयों ने देखा कि उनका पिता उनकी अपेक्षा यूसुफ को अधिक प्यार करता है। वे इसी कारण अपने भाई से घृणा करते थे। वे यूसुफ से अच्छी तरह बात नहीं करते थे।

[5]एक बार यूसुफ ने एक विशेष सपना देखा। बाद में यूसुफ ने अपने इस सपने के बारे मे अपने भाईयों को बताया। इसके बाद उसके भाई पहले से भी अधिक उससे घृणा करने लगे।

[6]यूसुफ ने कहा, “मैंने एक सपना देखा। [7]हम सभी खेत में काम कर रहे थे। हम लोग गेंहूँ को एक साथ गट्ठे बाँध रहे थे। मेरा गट्ठा खड़ा हुआ और तुम लोगों के गट्ठों ने मेरे गट्ठें के चारों ओर घेरा बनाया। तब तुम्हारे सभी गट्ठों ने मेरे गट्ठे को झुककर प्रणाम किया।”

[8]उसके भाईयों ने कहा, “क्या, तुम सोचते हो कि इसका अर्थ है कि तुम राजा बनोगे और हम लोगों पर शासन करोगे?” उसके भाईयों ने यूसुफ से अब और अधिक घृणा करनी आरम्भ की क्योंकि उसने उनके बारे में सपना देखा था।

[9]तब यूसुफ ने दूसरा सपना देखा। यूसुफ ने अपने भाईयों से इस सपने के बारे में बताया। यूसुफ ने कहा, “मैंने दूसरा सपना देखा है। मैंने सूरज, चाँद और ग्यारह नक्षत्रों को अपने को प्रणाम करते देखा।”

[10]यूसुफ ने अपने पिता को भी इस सपने के बारे में बताया। किन्तु उसके पिता ने इसकी आलोचना की। उसके पिता ने कहा, “यह किस प्रकार का सपना है? क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारी माँ, तुम्हारे भाई और हम तुमको प्रणाम करेंगे?” [11]यूसुफ के भाई उससे लगातार इर्षा करते रहे। किन्तु यूसुफ के पिता ने इन सभी बातों के बारे में बहुत गहराई से विचार किया और सोचा कि उनका अर्थ क्या होगा?

[12]एक दिन यूसुफ के भाई अपने पिता की भेड़ों की देखभाल के लिए शकेम गए। [13]याकूब ने यूसुफ से कहा, “शकेम जाओ। तुम्हारे भाई मेरी भेड़ों के साथ वहाँ हैं।”

यूसुफ ने उत्तर दिया, “मैं जाऊँगा।”

[14]यूसुफ के पिता ने कहा, “जाओ और देखो कि तुम्हारे भाई सुरक्षित हैं। लौटकर आओ और बताओ कि क्या मेरी भेड़ें ठीक हैं?” इस प्रकार यूसुफ के पिता ने उसे हेब्रोन की घाटी से शकेम को भेजा।

[15]शकेम में यूसुफ खो गया। एक व्यक्ति ने उसे खेतों में भटकते हुए पाया। उस व्यक्ति ने कहा, “तुम क्या खोज रहे हो?” [16]यूसुफ ने उत्तर दिया, “मैं अपने भाईयों को खोज रहा हूँ। क्या तुम बता सकते हो कि वे अपनी भेड़ों के साथ कहाँ हैं?”

[17]व्यक्ति ने उत्तर दिया, “वे पहले ही चले गए हैं। मैंने उन्हें कहते हुए सुना कि वे दोतान को जा रहें हैं।” इसलिए यूसुफ अपने भाईयों के पीछे गया और उसने उन्हें दोतान में पाया।

यूसुफ दासता के लिए बेचा गया

[18]यूसुफ के भाईयों ने बहुत दूर से उसे आते देखा। उन्होंने उसे मार डालने की योजना बनाने का निश्चय किया। [19]भाईयों ने एक दूसरे से कहा, “यह सपना देखने वाला यूसुफ आ रहा है। [20]मौका मिले हम लोग उसे मार डाले हम उसका शरीर सूखे कुओं में से किसी एक में फेंक सकते हैं। हम अपने पिता से कह सकते हैं कि एक जंगली जानवर ने उसे मार डाला। तब हम लोग उसे दिखाएँगे कि उसके सपने व्यर्थ हैं।”

[21]किन्तु रूबेन यूसुफ को बचाना चाहता था। रूबेन ने कहा, “हम लोग उसे मारे नहीं। [22]हम लोग उसे चोट पहुँचाए बिना एक कुएँ में डाल सकते हैं।” रूबेन ने यूसुफ को बचाने और उसके पिता के पास भेजने की योजना बनाई। [23]यूसुफ अपने भाईयों के पास आया। उन्होंने उस पर आक्रमण किया और उसके लम्बे सुन्दर अंगरखा को फाड़ डाला। [24]तब उन्होंने उसे खाली सूखे कुएँ में फेंक दिया।

[25]यूसुफ कुएँ में था, उसके भाई भोजन करने बैठे। तब उन्होंने नजर उठाई और व्यापारियों* का एक दल को देखा। जो गिलाद से मिस्र की यात्रा पर थे। उनके ऊँट कई प्रकार के मसाले और धन ले जा रहे थे। [26]इसलिए यहूदा ने अपने भाईयों से कहा, अगर हम लोग अपने भाई को मार देंगे और उसकी मृत्यु को छिपाएंगे तो उससे हमें क्या लाभ होगा? [27]हम लोगों को अधिक लाभ तब होगा जब हम उसे इन व्यापारियों के हाथ बेच देंगे। अन्य भाई मान गए। [28]जब मिद्यानी व्यापारी पास आए, भाईयों ने यूसुफ को कुएँ से बाहर निकाला। उन्होंने बीस चाँदी के

व्यापारी शाब्दिक इश्माएली।

टुकड़ों में उसे व्यापारियों को बेच दिया। व्यापारी उसे मिस्र ले गए।

[29]इस पूरे समय रूबेन भाईयों के साथ वहाँ नहीं था। वह नहीं जानता था कि उन्होंने यूसुफ को बेच दिया था। जब रूबेन कुएँ पर लौटकर आया तो उसने देखा कि यूसुफ वहाँ नहीं है। रूबेन बहुत अधिक दुःखी हुआ। उसने अपने कपड़ों को फाड़ा। [30]रूबेन भाईयों के पास गया और उसने उनसे कहा, "लड़का कुएँ पर नहीं है। मैं क्या करुँ?" [31]भाईयों ने एक बकरी को मारा और उसके खून को यूसुफ के सुन्दर अंगरखे पर डाला। [32]तब भाईयों ने उस अंगरखे को अपने पिता को दिखाया और भाईयों ने कहा, "हमे यह अंगरखा मिला है, क्या यह यूसुफ का अंगरखा है?"

[33]पिता ने अंगरखे को देखा और पहचाना कि यह यूसुफ का है। पिता ने कहा, "हाँ, यह उसी का है। संभव है उसे किसी जंगली जानवर ने मार डाला हो। मेरे पुत्र यूसुफ को कोई जंगली जानवर खा गया।" [34]याकूब अपने पुत्र के लिए इतना दुःखी हुआ कि उसने अपने कपड़े फाड़ डाले। तब याकूब ने विशेष वस्त्र पहने जो उसके शोक के प्रतीक थे। याकूब लम्बे समय तक अपने पुत्र के शोक में पड़ा रहा। [35]याकूब के सभी पुत्रों, पुत्रियों ने उसे धीरज बँधाने का प्रयत्न किया। किन्तु याकूब कभी धीरज न धर सका। याकूब ने कहा, "मैं मरने के दिन तक अपने पुत्र यूसुफ के शोक में डूबा रहूँगा।"

[36]उन मिद्यानी व्यापारियों ने जिन्होनें यूसुफ को खरीदा था, बाद में उसे मिस्र में बेच दिया। उन्होंने फ़िरौन के अंगरक्षकों के सेनापति पोतीपर के हाथ उसे बेचा।

यहूदा और तामार

38 उन्हीं दिनों यहूदा ने अपने भाइयों को छोड़ दिया और हीरा नामक व्यक्ति के साथ रहने चला गया। हीरा अदुल्लाम नगर का था। [2]यहूदा एक कनानी स्त्री से वहाँ मिला और उसने उससे विवाह कर लिया। स्त्री के पिता का नाम शूआ था। [3]कनानी स्त्री ने एक पुत्र को जन्म दिया। उन्होंने उसका नाम एर रखा। [4]बाद में उसने दूसरे पुत्र को जन्म दिया। उन्होंने लड़के का नाम ओनान रखा। [5]बाद में उसे अन्य पुत्र शेला नाम का हुआ। यहूदा तीसरे बच्चे के जन्म के समय कजीब में रहता था।

[6]यहूदा ने अपने पहले पुत्र एर के लिए पत्नी के रूप में एक स्त्री को चुना। स्त्री का नाम तामार था। [7]किन्तु एर ने बहुत सी बुरी बातें की। यहोवा उससे प्रसन्न नहीं था। इसलिए यहोवा ने उसे मार डाला। [8]तब यहूदा ने एर के भाई ओनान से कहा, "जाओ और मृत भाई की पत्नी के साथ सोओ।"* तुम उसके पति के समान बनो। अगर बच्चे होंगे तो वे तुम्हारे भाई एर के होंगे।"

[9]ओनान जानता था कि इस जोड़े से पैदा बच्चे उसके नही होंगे। ओनान ने तामार के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। किन्तु उसने उसे अपना गर्भधारण करने नहीं दिया। [10]इससे यहोवा क्रुद्ध हुआ। इसलिए यहोवा ने ओनान को भी मार डाला। [11]तब यहूदा ने अपनी पुत्रवधू तामार से कहा, "अपने पिता के घर लौट जाओ। वहीं रहो और तब तक विवाह न करो जब तक मेरा छोटा पुत्र शेला बड़ा न हो जाए।" यहूदा को डर था कि शेला भी अपने भाईयों की तरह मार डाला जाएगा। तामार अपने पिता के घर लौट गई।

[12]बाद में शुआ की पुत्री यहूदा की पत्नी मर गई। यहूदा अपने शोक के समय के बाद अदुल्लाम के अपने मित्र हीरा के साथ तिम्नाथ गया। यहूदा अपनी भेड़ों का ऊन काटने तिम्नाथ गया। [13]तामार को यह मालुम हुआ कि उसके ससुर यहूदा अपनी भेड़ों का ऊन काटने तिम्नाथ को जा रहा है। [14]तामार सदा ऐसे वस्त्र पहनती थी जिससे मालुम हो कि वह विधवा है। इसलिए उसने कुछ अन्य वस्त्र पहने और मुँह को पर्दे में ढक लिया। तब वह तिम्नाथ नगर के पास एनैम को जाने वाली सड़क के किनारे बैठ गई। तामार जानती थी कि यहूदा का छोटा पुत्र शेला अब बड़ा हो गया है। लेकिन यहूदा उससे उसके विवाह की कोई योजना नहीं बना रहा था।

[15]यहूदा ने उसी सड़क से यात्रा की। उसने उसे देखा, किन्तु सोचा कि वह वेश्या है। (उसका मुख वेश्या की तरह ढका हुआ था।) [16]इसलिए यहूदा उसके पास गया और बोला, "मुझे अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध करने दो।" (यहूदा नहीं जानता था कि वह उसकी पुत्र वधू तामार है।) तामार बोली, "तुम मुझे कितना दोगे?"

जाओं ... सोओ इस्राएल में यह रिवाज था कि यदि कोई व्यक्ति बिना सन्तान के मर जाता था तो विधवा को भाईयों में से कोई एक रख लेता था। यदि कोई बच्चा पैदा होता था तो वह मृत व्यक्ति का बच्चा समझा जाता था।

[17]यहूदा ने उत्तर दिया, "मैं अपनी रेवड़ से तुम्हें एक नयी बकरी भेजूँगा।"

उसने उत्तर दिया, "मैं इसे स्वीकार करती हूँ किन्तु पहले तुम मुझे कुछ रखने को दो जब तक तुम बकरी नहीं भेजते।"

[18]यहूदा ने पूछा, "मैं बकरी भेजूँगा इसके प्रमाण के लिए तुम मुझ से क्या लेना चाहोगी?"

तामार ने उत्तर दिया, "मुझे विशेष मुहर और इसकी रस्सी,* जो तुम अपने पत्रों के लिए प्रयोग करते हो, दो और मुझे अपने टहलने की छड़ी दो।" यहूदा ने ये चीजें उसे दे दी। तब यहूदा और तामार ने शारीरिक सम्बन्ध किया और तामार गर्भवती हो गई। [19]तामार घर गई और मुख को ढकने वाले पर्दे को हटा दिया। तब उसने फिर अपने को विधवा बताने वाले विशेष वस्त्र पहन लिए।

[20]यहूदा ने अपने मित्र हीरा को तामार के घर उसको वचन दी हुई बकरी देने के लिए भेजा। यहूदा ने हीरा से विशेष मुहर तथा टहलने की छड़ी भी उससे लेने के लिए कहा। किन्तु हीरा उसका पता न लगा सका। [21]हीरा ने एनैम नगर के कुछ लोगों से पूछा, "सड़क के किनारे जो वेश्या थी वह कहाँ है?"

लोगों ने कहा, "यहाँ कभी कोई वेश्या नहीं थी।"

[22]इसलिए यहूदा का मित्र यहूदा के पास लौट गया और उससे कहा, "मैं उस स्त्री का पता नहीं लगा सका। जो लोग उस स्थान पर रहते हैं उन्होंने बताया कि वहाँ कभी कोई वेश्या नहीं थी।"

[23]इसलिए यहूदा ने कहा, "उसे वे चीज़ें रखने दो। मैं नहीं चाहता कि लोग हम पर हँसे। मैंने उसे बकरी देनी चाही, किन्तु हम उसका पता नहीं लगा सके यही पर्याप्त है।"

तामार गर्भवती है

[24]लगभग तीन महीने बाद किसी ने यहूदा से कहा, "तुम्हारी पुत्रवधु तामार ने वेश्या की तरह पाप किया है और अब वह गर्भवती है।"

तब यहूदा ने कहा, "उसे बाहर निकालो और मार डालो। उसके शरीर को जला दो।"

[25]उसके आदमी तामार को मारने गए। किन्तु तामार ने अपने ससुर के पास सन्देश भेजा। तामार ने कहा, "जिस पुरुष ने मुझे गर्भवती किया है उसी की ये चीज़ें हैं। तब उसने उसे विशेष मुहर बाजूबन्द और टहलने की छड़ी दिखाई। इन चीज़ों को देखो। ये किसकी है? यह किस की विशेष मुहर बाजूबन्द और रस्सी है? किसकी यह टहलने की छड़ी है?"

[26]यहूदा ने उन चीज़ों को पहचाना और कहा, "यह ठीक कहती है। मैं गलती पर था। मैंने अपने वचन के अनुसार अपने पुत्र शेला को इसे नहीं दिया" और यहूदा उसके साथ फिर नहीं सोया।

[27]तामार के बच्चा देने का समय आया और उन्होंने देखा कि वह जुड़वे बच्चों को जन्म देगी। [28]जिस समय वह जन्म दे रही थी एक बच्चे ने बाहर हाथ निकाला। धाय ने हाथ पर लाल धागा बाँधा और कहा, "यह बच्चा पहले पैदा हुआ।" [29]लेकिन उस बच्चे ने अपना हाथ वापस भीतर खींच लिया। तब दूसरा बच्चा पहले पैदा हुआ। तब धाय ने कहा, "तुम ही पहले बाहर निकलने में समर्थ हुए।" इसलिए उन्होंने उसका नाम पेरेस रखा। (इस नाम का अर्थ "खुल पड़ना" या "फट पड़ना" है।) [30]इसके बाद दूसरा बच्चा उत्पन्न हुआ। यह बच्चा हाथ पर लाल धागा था। उन्होंने उसका नाम जेरह* रखा।

यूसुफ मिस्री पोतीपर को बेचा गया

39 व्यापारी जिसने यूसुफ को खरीदा वह उसे मिस्र ले गए। उन्होंने फ़िरौन के अंगरक्षक के नायक के हाथ उसे बेचा। [2]किन्तु यहोवा ने यूसुफ की सहायता की। यूसुफ एक सफल व्यक्ति बन गया। यूसुफ अपने मिस्री स्वामी पोतीपर के घर में रहा।

[3]पोतीपर ने देखा कि यहोवा यूसुफ के साथ है। पोतीपर ने यह भी देखा कि यहोवा जो कुछ यूसुफ करता है, उसमें उसे सफल बनाने में सहायक है। [4]इसलिए पोतीपर यूसुफ को पाकर बहुत प्रसन्न था। पोतीपर ने उसे अपने लिए काम करने तथा घर के प्रबन्ध में सहायता करने में लगाया। पोतीपर की अपनी हर एक चीज़ का यूसुफ

विशेष … रस्सी मुहर रबर की मुहर की तरह प्रयुक्त होती थी। लोग वाचा लिखते थे, उसकी तय करते थे, उसे रस्सी से बाँधते थे, रस्सी पर मोम या मिट्टी लगाते थे और हस्ताक्षर के रूप में मुहर लगाते थे।

जेरह इस नाम का अर्थ "चमकीला" या चमक है।

अधिकारी था। [5]जब यूसुफ घर का अधिकारी बना दिया गया तब यहोवा ने उस घर और पोतीपर की हर एक चीज़ को आशीर्वाद दिया। यहोवा ने यह यूसुफ के कारण किया और यहोवा ने पोतीपर के खेतों में उगने वाली हर चीज़ को आशीर्वाद दिया। [6]इसलिए पोतीपर ने घर की हर चीज़ की जिम्मेदारी यूसुफ को दी। पोतीपर किसी चीज़ की चिन्ता नहीं करता था वह जो भोजन करता था एक मात्र उसकी उसे चिन्ता थी।

यूसुफ पोतीपर की पत्नी को मना करता है

यूसुफ बहुत सुन्दर और सुरूप था। [7]कुछ समय बाद यूसुफ के मालिक की पत्नी यूसुफ से प्रेम करने लगी। एक दिन उसने कहा, "मेरे साथ सोओ।"

[8]किन्तु यूसुफ ने मना कर दिया। उसने कहा, "मेरा मालिक घर की अपनी हर चीज़ के लिए मुझ पर विश्वास करता है। उसने यहाँ की हर एक चीज़ की जिम्मेवारी मुझे दी है। [9]मेरे मालिक ने अपने घर में मुझे लगभग अपने बराबर मान दिया है। किन्तु मुझे उसकी पत्नी के साथ नहीं सोना चाहिए। यह अनुचित है। यह परमेश्वर के विरुद्ध पाप है।"

[10]वह स्त्री हर दिन यूसुफ से बात करती थी किन्तु यूसुफ ने उसके साथ सोने से मना कर दिया। [11]एक दिन यूसुफ अपना काम करने घर में गया। उस समय वह घर में अकेला व्यक्ति था। [12]उसके मालिक की पत्नी ने उसका अंगरखा पकड़ लिया और उससे कहा, "आओ और मेरे साथ सोओ।" किन्तु यूसुफ घर से बाहर भाग गया और उसने अपना अंगरखा उसके हाथ में छोड़ दिया। [13]स्त्री ने देखा कि यूसुफ ने अपना अंगरखा उसके हाथों में छोड़ दिया है और उसने जो कुछ हुआ उसके बारे में झूठ बोलने का निश्चय किया। वह बाहर दौड़ी। [14]और उसने बाहर के लोगों को पुकारा। उसने कहा, "देखो, यह हिब्रू दास हम लोगों का उपहास करने यहाँ आया था। वह अन्दर आया और मेरे साथ सोने की कोशिश की। किन्तु मैं जोर से चिल्ला पड़ी। [15]मेरी चिल्लाहट ने उसे डरा दिया और वह भाग गया। किन्तु वह अपना अंगरखा मेरे पास छोड़ गया।" [16]इसलिए उसने यूसुफ के मालिक अपने पति के घर लौटने के समय तक उसके अंगरखे को अपने पास रखा। [17]और उसने अपने पति को वही कहानी सुनाई। उसने कहा, "जिस हिब्रू दास को तुम यहाँ लाए उसने मुझ पर हमला करने का प्रयास किया। [18]किन्तु जब वह मेरे पास आया तो मैं चिल्लाई। वह भाग गया, किन्तु अपना अंगरखा छोड़ गया।"

यूसुफ कारागार में

[19]यूसुफ के मालिक ने जो उसकी पत्नी ने कहा, उसे सुना और वह बहुत क्रुद्ध हुआ। [20]वहाँ एक कारागार था जिसमें राजा के शत्रु रखे जाते थे। इसलिए पोतीपर ने यूसुफ को उसी बंदी खाने में डाल दिया और यूसुफ वहाँ पड़ा रहा।

[21]किन्तु यहोवा यूसुफ के साथ था। यहोवा उस पर कृपा करता रहा। [22]कुछ समय बाद कारागार के रक्षकों का मुखिया युसूफ से स्नेह करने लगा। रक्षकों के मुखिया ने सभी कैदियों का अधिकारी यूसुफ को बनाया। यूसुफ उनका मुखिया था, किन्तु काम वही करता था जो वे करते थे। [23]रक्षकों का अधिकारी कारागार की सभी चीज़ों के लिए यूसुफ पर विश्वास करता था। यह इसलिए हुआ कि यहोवा यूसुफ के साथ था। यहोवा यूसुफ को, वह जो कुछ करता था, सफल करने में सहायता करता था।

यूसुफ दो सपनों की व्याख्या करता है

40 बाद में फ़िरौन के दो नौकरों ने फ़िरौन का कुछ नुकसान किया। इन नौकरों में से एक रोटी पकाने वाला तथा दूसरा फ़िरौन को दाखमधु देने की सेवा करता था। [2]फ़िरौन अपने रोटी पकाने वाले तथा दाखमधु देने वाले नौकर पर क्रुद्ध हुआ। [3]इसलिए फ़िरौन ने उसी कारागार में उन्हें भेजा जिसमें यूसुफ था। फ़िरौन के अंगरक्षकों का नायक पोतीपर उस कारागार का अधिकारी था। [4]नायक ने दोनों कैदियों को यूसुफ की देख रेख में रखा। दोनों कुछ समय तक कारागार में रहे। [5]एक रात दोनों कैदियों ने एक सपना देखा। (दोनों कैदी मिस्र के राजा के रोटी पकानेवाले तथा दाखमधु देने वाले नौकर थे।) हर एक कैदी के अपने–अपने सपने थे और हर एक सपने का अपना अलग अलग अर्थ था। [6]यूसुफ अगली सुबह उनके पास गया। यूसुफ ने देखा कि दोनों व्यक्ति परेशान थे। [7]यूसुफ ने पूछा, "आज तुम लोग इतने परेशान क्यों दिखाई पड़ते हो?"

[8]दोनों व्यक्तियों ने उत्तर दिया, "पिछली रात हम लोगों ने सपना देखा, किन्तु हम लोग नहीं समझते कि

सपने का क्या अर्थ है? कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो सपनों की व्याख्या करे या हम लोगों को स्पष्ट बताए।"

यूसुफ ने उनसे कहा, "केवल परमेश्वर ही ऐसा है जो सपने को समझता और उसकी व्याख्या करता है। इसलिए मैं निवेदन करता हूँ कि अपने सपने मुझे बताओ।"

दाखमधु देने वाले नौकर का सपना

[9]इसलिए दाखमधु देने वाले नौकर ने यूसुफ को अपना सपना बताया। नौकर ने कहा, "मैंने सपने में अँगूर की बेल देखी। [10]उस अँगूर की बेल की तीन शाखाएँ थी। मैंने शाखाओं में फूल आते और उन्हें अँगूर बनते देखा। [11]मैं फ़िरौन का प्याला लिए था। इसलिए मैंने अँगूरों को लिया और प्याले में रस निचोड़ा। तब मैंने प्याला फ़िरौन को दिया।"

[12]तब यूसुफ ने कहा, "मैं तुमको सपने की व्याख्या समझाऊँगा। तीन शाखाओं का अर्थ तीन दिन है। [13]तीन दिन बीतने के पहले फ़िरौन तुमको क्षमा करेगा और तुम्हें तुम्हारे काम पर लौटने देगा। तुम फ़िरौन के लिए वही काम करोगे और जो पहले करते थे। [14]किन्तु जब तुम स्वतन्त्र हो जाओगे तो मुझे याद रखना। मेरी सहायता करना। फिरौन से मेरे बारे में कहना जिससे मैं इस कारागार से बाहर हो सकूँ। [15]मुझे अपने घर से लाया गया था जो मेरे अपने लोगों हिब्रूओं का देश है। मैंने कोई अपराध नहीं किया है। इसलिए मुझे कारागार में नहीं होना चाहिए।"

रोटी बनाने वाले का सपना

[16]रोटी बनाने वाले ने देखा कि दूसरे नौकर का सपना अच्छा था। इसलिए रोटी बनाने वाले ने यूसुफ से कहा, "मैंने भी सपना देखा। मैंने देखा कि मेरे सिर पर तीन रोटियों की टोकरियाँ हैं। [17]सबसे ऊपर की टोकरी में हर प्रकार के पके भोजन थे। यह भोजन राजा के लिए था। किन्तु इस भोजन को चिड़ियाँ खा रही थीं।"

[18]यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें बताऊँगा कि सपने का क्या अर्थ है? तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है। [19]तीन दिन बीतने के पहले राजा तुमको इस जेल से बाहर निकालेगा। तब राजा तुम्हारा सिर काट डालेगा। वह तुम्हारे शरीर को एक खम्भे पर लटकाएगा और चिड़ियाँ तुम्हारे शरीर को खाएंगी।"

यूसुफ को भुला दिया गया

[20]तीन दिन बाद फ़िरौन का जन्म दिन था। फ़िरौन ने अपने सभी नौकरों को दावत दी। दावत के समय फ़िरौन ने दाखमधु देने वाले तथा रोटी पकाने वाले नौकरों को कारागार से बाहर आने दिया। [21]फ़िरौन ने दाखमधु देने वाले नौकर को स्वतन्त्र कर दिया। फ़िरौन ने उसे नौकरी पर लौटा लिया और दाखमधु देने वाले नौकर ने फ़िरौन के हाथ में एक दाखमधु का प्याला दिया। [22]लेकिन फ़िरौन ने रोटी बनाने वाले को मार डाला। सभी बातें जैसे यूसुफ ने होनी बताई थी वैसे ही हुई। [23]किन्तु दाखमधु देने वाले नौकर को यूसुफ की सहायता करना याद नहीं रहा। उसने यूसुफ के बारे में फ़िरौन से कुछ नहीं कहा। दाखमधु देने वाला नौकर यूसुफ के बारे में भूल गया।

फ़िरौन के सपने

41 दो वर्ष बाद फ़िरौन ने सपना देखा। फ़िरौन ने सपने में देखा कि वह नील नदी के किनारे खड़ा है। [2]तब फ़िरौन ने सपने में नदी से सात गायों को बाहर आते देखा। गायें मोटी और सुन्दर थीं। गायें वहाँ खड़ी थी और घास पर चर रही थीं। [3]तब सात अन्य गायें नदी से बाहर आई, और नदी के किनारे मोटी गायों के पास खड़ी हो गई। किन्तु ये गायें दुबली और भद्दी थी। [4]ये सातों दुबली गायें, सुन्दर मोटी सात गायों को खा गई। तब फ़िरौन जाग उठा।

[5]फ़िरौन फिर सोया और दूसरी बार सपना देखा। उसने सपने में अनाज की सात बालें* एक अनाज के पीछे उगी हुई देखीं। अनाज की बालें मोटी और अच्छी थी। [6]तब उसने उसी अनाज के पीछे सात अन्न बालें उगी देखीं। अनाज की ये बालें पतली और गर्म हवा से नष्ट हो गई थीं। [7]तब सात पतली बालों ने सात मोटी और अच्छी बालों को खा लिया। फ़िरौन फिर जाग उठा और उसने समझा कि यह केवल सपना ही है। [8]अगली सुबह फ़िरौन इन सपनों के बारे में परेशान था। इसलिए उसने मिस्र के सभी जादूगरों को और सभी गुणी लोगों को बुलाया। फ़िरौन ने उनको सपना बताया। किन्तु उन लोगों में से कोई भी सपने को स्पष्ट या उसकी व्याख्या न कर सका।

बालें "अन्नों के अग्र भाग।"

नौकर फ़िरौन को यूसुफ के बारे में बताता है

[9]तब दाखमधु देने वाले नौकर को यूसुफ याद आ गया। नौकर ने फ़िरौन से कहा, "मेरे साथ जो कुछ घटा वह मुझे याद आ रहा है। [10]आप मुझ पर और एक दूसरे नौकर पर क्रुद्ध थे और आपने हम दोनों को कारागार में डाल दिया था। [11]कारागार में एक ही रात हम दोनों ने सपने देखे। हर सपना अलग अर्थ रखता था। [12]एक हिब्रू युवक हम लोगों के साथ कारागार में था। वह अंगरक्षको के नायक का नौकर था। हम लोगों ने अपने सपने उसको बताए, और उसने सपने की व्याख्या हम लोगों को समझाई। उसने हर सपने का अर्थ हम लोगों को बताया। [13]जो अर्थ उसने बताए वे ठीक निकले। उसने बताया कि मैं स्वतन्त्र होऊँगा और अपनी पुरानी नौकरी फिर पाऊँगा और यही हुआ। उसने कहा कि रोटी पकाने वाला मरेगा और वही हुआ।"

यूसुफ सपनें की व्याख्या करने के लिए बुलाया गया

[14]इसलिए फ़िरौन ने यूसुफ को कारागार से बुलाया। रक्षक जल्दी से यूसुफ को कारागार से बाहर लाए। यूसुफ ने बाल कटाए और साफ कपड़े पहने। तब वह गया और फ़िरौन के सामने खड़ा हुआ। [15]तब फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "मैंने एक सपना देखा है। किन्तु कोई ऐसा नहीं है जो सपने की व्याख्या मुझको समझा सके। मैंने सुना है कि जब कोई सपने के बारे में तुमसे कहता है तब तुम सपनों की व्याख्या और उन्हें स्पष्ट कर सकते हो।"

[16]यूसुफ ने उत्तर दिया, "मेरी अपनी बुद्धि नहीं है कि मैं सपनों को समझ सकूँ केवल परमेश्वर ही है जो ऐसी शक्ति रखता है और फ़िरौन के लिए परमेश्वर ही यह करेगा।"

[17]तब फ़िरौन ने कहा, "अपने सपने में, मैं नील नदी के किनारे खड़ा था। [18]मैंने सात गायों को नदी से बाहर आते देखा और घास चरते देखा। ये गायें मोटी और सुन्दर थीं। [19]तब मैंने अन्य सात गायों को नदी से बाहर आते देखा। ये गाये पतली और भद्दी थीं। मैंने मिस्र देश में जितनी गायें देखी हैं उनमें वे सब से अधिक बुरी थीं। [20]और इन भद्दी और पतली गायों ने पहली सुन्दर सात गायों को खा डाला। [21]लेकिन सात गायों को खाने के बाद तक भी वे पतली और भद्दी ही रहीं। तुम उनको देखो तो नहीं जान सकते कि उन्होंने अन्य सात गायों को खाया है। वे उतनी ही भद्दी और पतली दिखाई पड़ती थीं जितनी आरम्भ में थीं। तब मैं जाग गया।

[22]"तब मैंने अपने दूसरे सपने में अनाज की सात बालें एक ही अनाज के पीछे उगी देखीं। ये अनाज की बालें भरी हुई, अच्छी और सुन्दर थीं। [23]तब उनके बाद सात अन्य बालें उगीं। किन्तु ये बाले पतली, भद्दी और गर्म हवा से नष्ट थीं। [24]तब पतली बालों ने सात अच्छी बालों को खा डाला।

"मैंनें इस सपने को अपने लोगों को बताया जो जादूगर और गुणी हैं। किन्तु किसी ने सपने की व्याख्या मुझको नहीं समझाई। इसका अर्थ क्या हैं?"

यूसुफ सपने का अर्थ बताता है

[25]तब यूसुफ ने फ़िरौन से कहा, "ये दोनों सपने एक ही अर्थ रखते हैं। परमेश्वर तुम्हें बता रहा है जो जल्दी ही होगा। [26]सात अच्छी गायें और सात अच्छी अनाज की बालें* सात वर्ष हैं दोनों सपने एक ही हैं। [27]सात दुबली और भददी गायें तथा सात बुरी अनाज की बालें देश में भूखमरी के सात वर्ष हैं। ये सात वर्ष, अच्छे सात वर्षों के बाद आयेंगे। [28]परमेश्वर ने आपको यह दिखा दिया है कि जल्दी ही क्या होने वाला है। यह वैसा ही होगा जैसा मैंने कहा है। [29]आपके सात वर्ष पूरे मिस्र में अच्छी पैदावार और भोजन बहुतायत के होंगे। [30]लेकिन इन सात वर्षों के बाद पूरे देश में भूखमरी के सात वर्ष आएंगे। जो सारा भोजन मिस्र में पैदा हुआ है उसे लोग भूल जाएंगे। यह अकाल देश को नष्ट कर देगा। [31]भरपूर भोजनस्मरण रखना लोग भूल जायेंगे कि क्या होता है?

[32]"हे फ़िरौन, आपने एक ही बात के बारे में दो सपने देखे थे। यह इस बात को दिखाने के लिए हुआ कि परमेश्वर निश्चय ही ऐसा होने देगा और यह बताया है कि परमेश्वर इसे जल्दी ही होने देगा। [33]इसलिए हे फ़िरौन आप एक ऐसा व्यक्ति चुनें जो बहुत चुस्त और बुद्धिमान हो। आप उसे मिस्र देश का प्रशासक बनाएँ। [34]तब आप दूसरे व्यक्तियों को जनता से भोजन इकट्ठा करने के लिए चुने। हर व्यक्ति सात अच्छे वर्षों में जितना भोजन उत्पन्न करे, उसका पाँचवाँ हिस्सा दे। [35]इन लोगों को आदेश दें कि जो अच्छे वर्ष आ रहे हैं उनमें सारा भोजन इकट्ठा करें। व्यक्तियों से कह दें कि उन्हें नगरों में

सात ... बालें या अनाज का अग्र भाग सात वर्ष है।

भोजन जमा करने का अधिकार है। तब वे भोजन की रक्षा उस समय तक करेंगे जब उनकी आवश्यकता होगी। [36]वह भोजन मिस्र देश में आने वाले भूखमरी के सात वर्षों में सहायता करेगा। तब मिस्र में सात वर्षों में लोग भोजन के अभाव में मरेंगे नहीं।"

[37]फ़िरौन को यह अच्छा विचार मालूम हुआ। इससे सभी अधिकारी सहमत थे। [38]फ़िरौन ने अपने अधिकारियों से पूछा, "क्या तुम लोगों में से कोई इस काम को करने के लिए यूसुफ से अच्छा व्यक्ति ढूँढ सकता है? परमेश्वर की आत्मा ने इस व्यक्ति को सचमुच बुद्धिमान बना दिया है।"

[39]फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "परमेश्वर ने ये सभी चीज़ें तुम को दिखाई हैं। इसलिये तुम ही सर्वाधिक बुद्धिमान हो। [40]इसलिए मैं तुमको देश का प्रशासक बनाऊँगा। जनता तुम्हारे आदेशों का पालन करेगी। मैं अकेला इस देश में तुम से बड़ा प्रशासक रहूँगा।"

[41]एक विशेष समारोह और प्रदर्शन था जिसमें फ़िरौन ने यूसुफ को प्रशासक बनाया तब फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "मैं अब तुम्हें मिस्र के पूरे देश का प्रशासक बनाता हूँ।" [42]तब फ़िरौन ने अपनी राजकीय मुहर वाली अगूँठी यूसुफ को दी और यूसुफ को एक सुन्दर रेशमी वस्त्र पहनने को दिया। फ़िरौन ने यूसुफ के गले में एक सोने का हार डाला। [43]फ़िरौन ने दूसरे श्रेणी के राजकीय रथ पर यूसुफ को सवार होने को कहा। उसके रथ के आगे विशेष रक्षक चलते थे। वे लोगों से कहते थे, "हे लोगों, यूसुफ को झुककर प्रणाम करो।

इस तरह यूसुफ पूरे मिस्र का प्रशासक बना। [44]फ़िरौन ने उससे कहा, "मैं सम्राट फ़िरौन हूँ। इसलिए मैं जो करना चाहूँगा, करूँगा। किन्तु मिस्र में कोई अन्य व्यक्ति हाथ पैर नहीं हिला सकता है जब तक तुम उसे न कहो।"

[45]फ़िरौन ने उसे दूसरा नाम सापन तपानेह* दिया। फ़िरौन ने आसनत नाम की एक स्त्री, जो ओन के याजक पोतीपेरा का पुत्री थी, यूसुफ को पत्नी के रूप में दी। इस प्रकार यूसुफ पूरे मिस्र देश का प्रशासक हो गया।

[46]यूसुफ उस समय तीस वर्ष का था जब वह मिस्र के सम्राट की सेवा करने लगा। यूसुफ ने पूरे मिस्र देश में यात्राएँ की। [47]अच्छे सात वर्षों में देश में पैदावार बहुत अच्छी हुई [48]और यूसुफ ने मिस्र में सात वर्ष खाने की चीज़ें बचायीं। यूसुफ ने भोजन नगरों में जमा किया। यूसुफ ने नगर के चारों ओर के खेतों के उपजे अन्न को हर नगर में जमा किया। [49]यूसुफ ने बहुत अन्न इकट्ठा किया। यह समुद्र के बालू के सदृश था। उसने इतना अन्न इकट्ठा किया कि उसके वजन को भी न आँका जा सके।

[50]यूसुफ की पत्नी आसनत ओन के याजक पोतीपरा कि पुत्री थी। भूखमरी के पहले वर्ष के आने के पूर्व यूसुफ और आसनेत के दो पुत्र हुए। [51]पहले पुत्र का नाम मनश्शे* रखा गया। यूसुफ ने उसका यह नाम रखा क्योंकि उसने बताया, "मुझे जितने सारे कष्ट हुए तथा घर की हर बात परमेश्वर ने मुझसे भुला दी।" [52]यूसुफ ने दूसरे पुत्र का नाम एप्रैम* रखा। यूसुफ ने उसका नाम यह रखा क्योंकि उसने बताया, "मुझे बहुत दुःख मिला, लेकिन परमेश्वर ने मुझे फुलाया-फलाया।"

भूखमरी का समय आरम्भ होता है

[53]सात वर्ष तक लोगों के पास खाने के लिए वह सब भोजन था जिसकी उन्हें आवश्यकता थी और जो चीज़ें उन्हें आवश्यक थीं वे सभी उगती थीं। [54]किन्तु सात वर्ष बाद भूखमरी के दिन शुरु हुए। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ ने कहा था। सारी भूमि में चारों ओर अन्न पैदा न हुआ। लोगों के पास खाने को कुछ न था। किन्तु मिस्र में लोगों के खाने के लिए काफी था, क्योंकि यूसुफ ने अन्न जमा कर रखा था। [55]भूखमरी का समय शुरू हुआ और लोग भोजन के लिए फ़िरौन के सामने रोने लगे। फ़िरौन ने मिस्री लोगों से कहा, "यूसुफ से पूछो। वही करो जो वह करने को कहता है।"

[56]इसलिए जब देश में सर्वत्र भूखमरी थी, यूसुफ ने अनाज के गोदामों से लोगों को अन्न दिया। यूसुफ ने जमा अन्न को मिस्र के लोगों को बेचा। मिस्र में बहुत भयंकर अकाल था। [57]मिस्र के चारों ओर के देशों के लोग अनाज खरीदने मिस्र आए। वे यूसुफ के पास आए क्योंकि वहाँ संसार के उस भाग में सर्वत्र भूखमरी थी।

तपानेह इस मिस्री नाम का अर्थ शायद 'जीवन रक्षक' है, किन्तु यह हिब्रू शब्दों की तरह है जिनका अर्थ "ऐसा व्यक्ति जो गुप्त बातों की व्याख्या करे" है।

मनश्शे यह नाम उस शब्द की तरह है जिसका अर्थ भूलना है।

एप्रैम यह नाम हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "दुबारा फलदायक" है।

स्वप्न सच हुआ

42 इस समय याकूब के प्रदेश में भूखमरी थी। किन्तु याकूब को यह पता लगा कि मिस्र में अन्न है। इसलिए याकूब ने अपने पुत्रों से कहा, "हम लोग यहाँ हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठे हैं? [2]मैंने सुना है कि मिस्र में खरीदने के लिए अन्न है। इसलिए हम लोग वहाँ चलें और वहाँ से अपने खाने के लिए अन्न खरीदें, तब हम लोग जीवित रहेंगे, मरेंगे नहीं।"

[3]इसलिए यूसुफ के भाईयों में से दस अन्न खरीदने मिस्र गए। [4]याकूब ने बिन्यामीन को नहीं भेजा। (बिन्यामीन यूसुफ का एकमात्र सगा भाई* था।)

[5]कनान में भूखमरी का समय बहुत भयंकर था। इसलिए कनान के बहुत से लोग अन्न खरीदने मिस्र गए। उन्हीं लोगों में इस्राएल के पुत्र भी थे।

[6]इस समय यूसुफ मिस्र का प्रशासक था। केवल यूसुफ ही था जो मिस्र आने वाले लोगों को अन्न बेचने का आदेश देता था। यूसुफ के भाई उसके पास आए और उन्होंने उसे झुककर प्रणाम किया। [7]यूसुफ ने अपने भाईयों को देखा और उसने उन्हें पहचान लिया कि वे कौन हैं। किन्तु यूसुफ उनसे इस तरह बात करता रहा जैसे वह उन्हें पहचानता ही नहीं। उसने उनके साथ क्रूरता से बात की। उसने कहा, "तुम लोग कहाँ से आए हो?" भाईयों ने उत्तर दिया, "हम कनान देश से आए हैं। हम लोग अन्न खरीदने आये हैं।"

[8]यूसुफ जानता था कि ये लोग उसके भाई हैं। किन्तु वे नहीं जानते थे कि वह कौन हैं? [9]यूसुफ ने उन सपनों को याद किया जिन्हें उसने अपने भाईयों के बारे में देखा था।

यूसुफ अपने भाईयों को जासूस कहता है

यूसुफ ने अपने भाईयों से कहा, "तुम लोग अन्न खरीदने नहीं आए हो। तुम लोग जासूस* हो। तुम लोग यह पता लगाने आए हो कि हम कहाँ कमज़ोर हैं?"

[10]किन्तु भाईयों ने उससे कहा, "नहीं, महोदय! हम तो आपके सेवक के रूप में आए हैं। हम लोग केवल अन्न खरीदने आए हैं। [11]हम सभी लोग भाई हैं, हम लोगों का एक ही पिता है। हम लोग ईमानदार हैं। हम लोग केवल अन्न खरीदने आए हैं।"

[12]तब यूसुफ ने उनसे कहा, "नहीं, तुम लोग यह पता लगाने आए हो कि हम कहाँ कमजोर हैं?"

[13]भाईयों ने कहा, "नहीं, हम सभी भाई हैं। हमारे परिवार में बारह भाई हैं। हम सबका एक ही पिता है। हम लोगों का सबसे छोटा भाई अभी भी हमारे पिता के साथ घर पर है और दूसरा भाई बहुत समय पहले मर गया। हम लोग आपके सामने सेवक की तरह हैं। हम लोग कनान देश के हैं।"

[14]किन्तु यूसुफ ने कहा, "नहीं मुझे पता है कि मैं ठीक हूँ। तुम भेदिये हो। [15]किन्तु मैं तुम लोगों को यह प्रमाणित करने का अवसर दूँगा कि तुम लोग सच कह रहे हो। तुम लोग यह जगह तब तक नहीं छोड़ सकते जब तक तुम लोगों का छोटा भाई यहाँ नहीं आता। [16]इसलिए तुम लोगों में से एक लौटे और अपने छोटे भाई को यहाँ लाए। उस समय तक अन्य यहाँ कारागार में रहेंगे। हम देखेंगे कि क्या तुम लोग सच बोल रहे हो। किन्तु मुझे विश्वास है कि तुम लोग जासूस हो।" [17]तब यूसुफ ने उन सभी को तीन दिन के लिए कारागार में डाल दिया।

शिमोन बन्धक के रूप में रखा गया

[18]तीन दिन बाद यूसुफ ने उनसे कहा, "मैं परमेश्वर का भय मानता हूँ। इसलिए मैं तुम लोगों को यह प्रमाणित करने का एक अवसर दूँगा कि तुम लोग सच बोल रहे हो। तुम लोग यह काम करो और मैं तुम लोगों को जीवित रहने दूँगा। [19]अगर तुम लोग ईमानदार व्यक्ति हो तो अपने भाईयों में से एक को कारागार में रहने दो। अन्य जा सकते हैं और अपने लोगों के लिए अन्न ले जा सकते है। [20]तब अपने सबसे छोटे भाई को लेकर यहाँ मेरे पास आओ। इस प्रकार मैं विश्वास करूँगा कि तुम लोग सच बोल रहे हो।"

भाईयों ने इस बात को मान लिया। [21]उन्होंने आपस में बात की, "हम लोग दण्डित किए गए हैं।"* क्योंकि हम लोगों ने अपने छोटे भाई के साथ बुरा किया है। हम लोगों ने उसके कष्टों को देखा जिसमें वह था। उसने अपनी रक्षा के लिए हम लोगों से प्रार्थना की। किन्तु हम लोगों ने उसकी एक न सुनी। इसलिए हम लोग दुःखों में है।"

सगा भाई शाब्दिक "भाई" यूसुफ और बिन्यामीन की एक ही माँ थी।

जासूस वे लोग जो गुप्त रूप से शत्रु के देश में शत्रु की शक्ति और कमजोरी का पता लगाने जाते है।

हम ... गये हैं शाब्दिक "हम अपराधी हैं।"

[22]तब रूबेन ने उनसे कहा, "मैंने तुमसे कहा था कि उस लड़के का कुछ भी बुरा न करो। लेकिन तुम लोगों ने मेरी एक न सुनी। इसलिए अब हम उसकी मृत्यु के लिए दण्डित हो रहे हैं।"

[23]यूसुफ अपने भाईयों से बात करने के लिए एक दुभाषिये से काम ले रहा था। इसलिए भाई नहीं जानते थे कि यूसुफ उनकी भाषा जानता है। किन्तु वे जो कुछ कहते थे उसे यूसुफ सुनता और समझता था। [24]उनकी बातों से यूसुफ बहुत दुःखी हुआ। इसलिए यूसुफ उनसे अलग हट गया और रो पड़ा। थोड़ी देर में यूसुफ उनके पास लौटा। उसने भाईयों में से शिमोन को पकड़ा और उसे बाँधा जब कि अन्य भाई देखते रहे। [25]यूसुफ ने कुछ सेवकों को उनकी बोरियों को अन्न से भरने को कहा। भाईयों ने इस अन्न का मूल्य यूसुफ को दिया। किन्तु यूसुफ ने उस धन को अपने पास नहीं रखा। उसने उस धन को उनकी अनाज की बोरियों में रख दिया। तब यूसुफ ने उन्हें वे चीज़ें दी, जिनकी आवश्यकता उन्हें घर तक लौटने की यात्रा में हो सकती थी।

[26]इसलिए भाईयों ने अन्न को अपने गधों पर लादा और वहाँ से चल पड़े। [27]वे सभी भाई रात को ठहरे और भाईयों में से एक ने कुछ अन्न के लिए अपनी बोरी खोली और उसने अपना धन अपनी बोरी में पाया। [28]उसने अन्य भाईयों से कहा, "देखो, जो मूल्य मैंने अन्न के लिए चुकाया, वह यहाँ है। किसी ने मेरी बोरी में ये धन लौटा दिया है। वे सभी भाई बहुत अधिक भयभीत हो गए। उन्होंने आपस में बातें की, परमेश्वर हम लोगों के साथ क्या कर रहा है?"

भाईयों ने याकूब को सूचित किया

[29]वे भाई कनान देश में अपने पिता याकूब के पास गए। उन्होंने जो कुछ हुआ था अपने पिता को बताया। [30]उन्होंने कहा, "उस देश का प्रशासक हम लोगों से बहुत रूखाई से बोला। उसने सोचा कि हम लोग उस सेना की ओर से भेजे गए हैं जो वहाँ के लोगों को नष्ट करना चाहती है। [31]लेकिन हम लोगों ने कहा कि हम लोग ईमानदार हैं। हम लोग किसी सेना में से नहीं हैं। [32]हम लोगों ने उसे बताया कि हम लोग बारह भाई हैं। हम लोगों ने अपने पिता के बारे में बताया, और यह कहा कि हम लोगों का सबसे छोटा भाई अब भी कनान देश में है।

[33]"तब देश के प्रशासक ने हम लोगों से यह कहा, 'यह प्रमाणित करने के लिये कि तुम ईमानदार हो यह रास्ता है: अपने भाईयों में से एक को हमारे पास यहाँ छोड़ दो। अपना अन्न लेकर अपने परिवारों के पास लौट जाओ। [34]अपने सबसे छोटे भाई को हमारे पास लाओ। तब मैं समझूँगा कि तुम लोग ईमानदार हो अथवा तुम लोग हम लोगों को नष्ट करने वाली सेना की ओर नहीं भेजे गए हो। यदि तुम लोग सच बोल रहे हो तो मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें दे दूँगा।'"

[35]तब सब भाई अपनी बोरियों से अन्न लेने गए और हर एक भाई ने अपने धन की थैली अपने अन्न की बोरी में पाई। भाईयों और उनके पिता ने धन को देखा, और वे बहुत डर गए।

[36]याकूब ने उनसे कहा, "क्या तुम लोग चाहते हो कि मैं अपने सभी पुत्रों से हाथ धो बैठूँ। यूसुफ तो चला ही गया। शिमोन भी गया और तुम लोग बिन्यामीन को भी मुझसे दूर ले जाना चाहते हो।"

[37]तब रूबेन ने अपने पिता से कहा, "पिताजी आप मेरे दो पुत्रों को मार देना यदि मैं बिन्यामीन को आपके पास न लौटाऊँ। मुझ पर विश्वास करें। मैं आपके पास बिन्यामीन को लौटा लाऊँगा।"

[38]किन्तु याकूब ने कहा, "मैं बिन्यामीन को तुम लोगों के साथ नहीं जाने दूँगा। उसका भाई मर चुका है और मेरी पत्नी राहेल का वही अकेला पुत्र बचा है। मिस्र तक की यात्रा में यदि उसके साथ कुछ हुआ तो वह घटना मुझे मार डालेगी। तुम लोग मुझ वृद्ध को कब्र में बहुत दुःखी करके भेजोगे।"

याकूब ने बिन्यामीन को मिस्र जाने की आज्ञा दी

43 देश में भूखमरी का समय बहुत ही बुरा था। वहाँ कोई भी खाने की चीज़ नहीं उग रही थी। [2]लोग वह सारा अन्न खा गए जो वे मिस्र से लाये थे। जब अन्न समाप्त हो गया, याकूब ने अपने पुत्रों से कहा, "फिर मिस्र जाओ। हम लोगों के खाने के लिए कुछ और अन्न खरीदो।"

[3]किन्तु यहूदा ने याकूब से कहा, "उस देश के प्रशासक ने हम लोगों को चेतावनी दी है। उसने कहा है, 'यदि तुम लोग अपने भाई को मेरे पास वापस नहीं लाओगे तो मैं तुम लोगों से बात करने से मना भी कर दूँगा।' [4]यदि तुम

हम लोगों के साथ बिन्यामीन को भेजोगे तो हम लोग जाएंगे और अन्न खरीदेंगे। [5]किन्तु यदि तुम बिन्यामीन को भेजना मना करोगे तब हम लोग नहीं जाएंगे। उस व्यक्ति ने चेतावनी दी कि हम लोग उसके बिना वापस न आयें।"

[6]इस्राएल (याकूब) ने कहा, "तुम लोगों ने उस व्यक्ति से क्यों कहा, कि तुम्हारा अन्य भाई भी है।" तुम लोगों ने मेरे साथ ऐसी बुरी बात क्यों की?"

[7]भाईयों ने उत्तर दिया, "उस व्यक्ति ने सावधानी से हम लोगों से प्रश्न पूछे। वह हम लोगों तथा हम लोगों के परिवार के बारे में जानना चाहता था। उसने हम लोगों से पूछा, 'क्या तुम लोगों का पिता अभी जीवित है? क्या तुम लोगों का अन्य भाई घर पर है?' हम लोगों ने केवल उसके प्रश्नों के उत्तर दिए। हम लोग नहीं जानते थे कि वह हमारे दूसरे भाई को अपने पास लाने को कहेगा।"

[8]तब यहूदा ने अपने पिता इस्राएल से कहा, "बिन्यामीन को मेरे साथ भेजो। मैं उसकी देखभाल करूँगा हम लोग मिस्र अवश्य जाएंगे और भोजन लाएंगे। यदि हम लोग नहीं जाते हैं तो हम लोगों के बच्चे भी मर जाएंगे। [9]मैं विश्वास दिलाता हूँ कि वह सुरक्षित रहेगा। मैं इसका उत्तरदायी रहूँगा। यदि मैं उसे तुम्हारे पास लौटाकर न लाऊँ तो तुम सदा के लिए मुझे दोषी ठहरा सकते हो। [10]यदि तुमने हमें पहले जाने दिया होता तो भोजन के लिए हम लोग दो यात्राएँ अभी तक कर चुके होते।"

[11]तब उनके पिता इस्राएल ने कहा, "यदि यह सचमुच सही है तो बिन्यामीन को अपने साथ ले जाओ। किन्तु प्रशासक के लिए कुछ भेंट ले जाओ। उन चीज़ों में से कुछ ले जाओ जो हम लोग अपने देश में इकट्ठा कर सके हैं उसके लिए कुछ शहद, पिस्ते बादाम, गोंद* और लोबान ले जाओ। [12]इस समय, पहले से दुगना धन भी ले लो जो पिछली बार देने के बाद लौटा दिया गया था। संभव है कि प्रशासक से गलती हुई हो। [13]बिन्यामीन को साथ लो और उस व्यक्ति के पास ले जाओ। [14]मैं प्रार्थना करता हूँ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम लोगों की उस समय सहायता करेगा जब तुम प्रशासक के सामने खड़े होओगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह बिन्यामीन और शिमोन को भी सुरक्षित आने देगा। यदि नहीं तो मैं अपने पुत्र से हाथ धोकर फिर दुःखी होऊँगा।"

[15]इसलिए भाईयों ने प्रशासक को देने के लिए भेंटें ली और उन्होंने जितना धन पहले लिया था उसका दुगना धन अपने साथ लिया। बिन्यामीन भाईयों के साथ मिस्र गया।

भाई यूसुफ के घर निमन्त्रित होते हैं

[16]मिस्र में यूसुफ ने उनके साथ बिन्यामीन को देखा। यूसुफ ने अपने सेवक से कहा, "उन व्यक्तियों को मेरे घर लाओ। एक जानवर मारो और पकाओ। वे व्यक्ति आज दोपहर को मेरे साथ भोजन करेंगे।" [17]सेवक को जैसा कहा गया था वैसा किया। वह उन व्यक्तियों को यूसुफ के घर लाया।

[18]भाई डरे हुए थे जब वे यूसुफ के घर लाए गए। उन्होंने कहा, "हम लोग यहाँ उस धन के लिए लाए गए हैं जो पिछली बार हम लोगों की बोरियों में रख दिया गया था। वे हम लोगों को अपराधी सिद्ध करने लिए उनका उपयोग करेंगे। तब वे हम लोगों के गधों को चुरा लेंगे और हम लोगों को दास बनाएंगे।"

[19]अत: यूसुफ के घर की देख–रेख करने वाले सेवक के पास सभी भाई गए। [20]उन्होंने कहा, "महोदय मैं प्रतिज्ञापूर्वक सच कहता हूँ कि पिछली बार हम आए थे। हम लोग भोजन खरीदने आए थे। [21–22]घर लौटते समय हम लोगों ने अपनी बोरियाँ खोलीं और हर एक बोरी में अपना धन पाया। हम लोग नहीं जानते कि उनमें धन कैसे पहुँचा। किन्तु हम वह धन आपको लौटाने के लिए साथ लाए हैं और इस समय हम लोग जो अन्न खरीदना चाहते हैं उसके लिए अधिक धन लाए हैं।"

[23]किन्तु सेवक ने उत्तर दिया, "डरो नहीं, मुझ पर विश्वास करो। तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने तुम लोगों के धन को तुम्हारी बोरियों में भेंट के रूप में रखा होगा। मुझे याद है कि तुम लोगों ने पिछली बार अन्न का मूल्य मुझे दे दिया था।"

सेवक शिमोन को कारागार से बाहर लाया। [24]सेवक उन लोगों को यूसुफ के घर ले गया। उसने उन्हें पानी दिया और उन्होंने अपने पैर धोए। तब तक उसने उनके गधों को खाने के लिये चारा दिया।

[25]भाईयों ने सुना कि वे यूसुफ के साथ भोजन करेंगे। इसलिए उसके लिए अपनी भेंट तैयार करने में वे दोपहर तक लगे रहे। [26]यूसुफ घर आया और भाईयों ने उसे भेंट

गोंद कुछ पौधों से मिलने वाला रस। इसका प्रयोग कीमती सुगन्ध और इत्र बनाने में होता था।

दीं जो वे अपने साथ लाए थे। तब उन्होंने धरती पर झुककर प्रणाम किया।

[27]यूसुफ ने उनकी कुशल पूछी। यूसुफ ने कहा, "तुम लोगों का वृद्ध पिता जिसके बारे में तुम लोगों ने बताया, ठीक तो है? क्या वह अब तक जीवित है?"

[28]भाईयों ने उत्तर दिया, "महोदय, हम लोगों के पिता ठीक हैं। वे अब तक जीवित है" और वे फिर यूसुफ के सामने झुके।

यूसुफ अपने भाई बिन्यामीन से मिलता है

[29]तब यूसुफ ने अपने भाई बिन्यामीन को देखा। (बिन्यामीन और यूसुफ की एक ही माँ थी) यूसुफ ने कहा, "क्या यह तुम लोगों का सबसे छोटा भाई है जिसके बारे में तुम ने बताया था?" तब यूसुफ ने बिन्यामीन से कहा, "परमेश्वर तुम पर कृपालु हो।"

[30]तब यूसुफ कमरे से बाहर दौड़ गया। यूसुफ बहुत चाहता था कि वह अपने भाईयों को दिखाए कि वह उनसे बहुत प्रेम करता है। वह रोने–रोने सा हो रहा था, किन्तु वह नहीं चाहता था कि उसके भाई उसे रोता देखें। इसलिए वह अपने कमरे में दौड़ता हुआ पहुँचा और वहीं रोया। [31]तब यूसुफ ने अपना मुँह धोया और बाहर आया। उसने अपने को संभाला और कहा, "अब भोजन करने का समय है।"

[32]यूसुफ ने अकेले एक मेज पर भोजन किया। उसके भाईयों ने दूसरी मेज पर एक साथ भोजन किया। मिस्री लोगों ने अन्य मेज पर एक साथ खाया। उनका विश्वास था कि उनके लिए यह अनुचित है कि वे हिब्रू लोगों के साथ खाएँ। [33]यूसुफ के भाई उसके सामने की मेज पर बैठे थे। सभी भाई सबसे बड़े भाई से आरम्भ कर सबसे छोटे भाई तक क्रम में बैठे थे। सभी भाई एक दूसरे को, जो हो रहा था उस पर आश्चर्य करते हुए देखते जा रहे थे। [34]सेवक यूसुफ की मेज से उनको भोजन ले जाते थे। किन्तु औरों की तुलना में सेवकों ने बिन्यामीन को पाँच गुना अधिक दिया। यूसुफ के साथ वे सभी भाई तब तक खाते और दाखमधु पीते रहे जब तक वे नशे में चूर नहीं हो गया।

यूसुफ जाल बिछाता है

44 तब यूसुफ ने अपने नौकर को आदेश दिया। यूसुफ ने कहा, "उन व्यक्तियों की बोरियों में इतना अन्न भरो जितना ये ले जा सके और हर एक का धन उस की अन्न की बोरी में रख दो। [2]सबसे छोटे भाई की बोरी में धन रखो। किन्तु उसकी बोरी में मेरी विशेष चाँदी का प्याला भी रख दो।" सेवक ने यूसुफ का आदेश पूरा किया।

[3]अगले दिन बहुत सुबह सब भाई अपने गधों के साथ अपने देश को वापस भेज दिये गए। [4]जब वे नगर को छोड़ चुके, यूसुफ ने अपने सेवक से कहा, "जाओ और उन लोगों का पीछा करो। उन्हें रोको और उनसे कहो, 'हम लोग आप लोगों के प्रति अच्छे रहे। किन्तु आप लोगों ने हमारे यहाँ चोरी क्यों की? आप लोगों ने यूसुफ का चाँदी का प्याला क्यों चुराया? [5]हमारे मालिक यूसुफ इसी प्याले से पीते हैं। वे सपने की व्याख्या के लिए इसी प्याले का उपयोग करते हैं। इस प्याले को चुराकर आप लोगों ने अपराध किया है।'"

[6]अत: सेवक ने आदेश का पालन किया। वह सवार हो कर भाईयों तक गया और उन्हें रोका। सेवक ने उनसे वे ही बातें कहीं जो यूसुफ ने उनसे कहने के लिए कही थीं।

[7]किन्तु भाईयों ने सेवक से कहा, "प्रशासक ऐसी बातें क्यों कहते हैं? हम लोग ऐसा कुछ नहीं कर सकते। [8]हम लोग वह धन लौटाकर लाए जो पहले हम लोगों की बोरियों में मिले थे। इसलिए निश्चय ही हम तुम्हारे मालिक के घर से चाँदी या सोना नहीं चुराएंगे। [9]यदि आप किसी बोरी में चाँदी का वह प्याला पा जाये तो उस व्यक्ति को मर जाने दिया जाये। तुम उसे मार सकते हो और हम लोग तुम्हारे दास होंगे।"

[10]सेवक ने कहा, "जैसा तुम कहते हो हम वैसा ही करेंगे, किन्तु मैं उस व्यक्ति को मारुँगा नहीं। यदि मुझे चाँदी का प्याला मिलेगा तो वह व्यक्ति मेरा दास होगा। अन्य भाई स्वतन्त्र होंगे।"

जाल फेंका गया, बिन्यामीन पकड़ा गया

[11]तब सभी भाईयों ने अपनी बोरियाँ जल्दी जल्दी जमीन पर खोलीं। [12]सेवक ने बोरियों में देखा। उसने सबसे बड़े भाई से आरम्भ किया और सबसे छोटे भाई पर अन्त किया। उसने बिन्यामीन की बोरी में प्याला

पाया। [13]भाई बहुत दु:खी हुए। उन्होंने दु:ख के कारण अपने वस्त्र फाड़ डाले। उन्होंने अपनी बोरियाँ गधों पर लादीं और नगर को लौट पड़े।

[14]यहूदा और उसके भाई यूसुफ के घर लौटकर गए। यूसुफ तब तक वहाँ था। भाईयों ने पृथ्वी तक झुककर प्रणाम किया। [15]यूसुफ ने उनसे कहा, "तुम लोगों ने यह क्यों किया? क्या तुम लोगों को पता नहीं है कि गुप्त बातों को जानने का मेरा विशेष ढंग है। मुझसे बढ़कर अच्छी तरह कोई दूसरा यह नहीं कर सकता।"

[16]यहूदा ने कहा, "महोदय, हम लोगों को कहने के लिए कुछ नहीं है। स्पष्ट करने का कोई रास्ता नहीं है। यह दिखाने का कोई तरीका नहीं है कि हम लोग अपराधी नहीं है। हम लोगों ने और कुछ किया होगा जिसके लिए परमेश्वर ने हमें अपराधी ठहराया। इसलिए हम सभी बिन्यामीन भी, आपके दास होंगे।"

[17]किन्तु यूसुफ ने कहा, "मैं तुम सभी को दास नहीं बनाऊँगा। केवल वह व्यक्ति जिसने प्याला चुराया है, मेरा दास होगा। अन्य तुम लोग शान्ति से अपने पिता के पास जा सकते हो।"

यहूदा बिन्यामीन की सिफारिश करता है

[18]तब यहूदा यूसुफ के पास गया और उसने कहा, "महोदय, कृपाकर मुझे स्वयं आपसे स्पष्ट कह लेने दें। कृपा कर मुझ से अप्रसन्न न हों। मैं जानता हूँ कि आप स्वयं फिरौन जैसे हैं। [19]जब हम लोग पहले यहाँ आए थे, आपने पूछा था कि 'क्या तुम्हारे पिता या भाई हैं?' [20]और हमने आपको उत्तर दिया, 'हमारे एक पिता है, वे बूढ़े हैं और हम लोगों का एक छोटा भाई है। हमारे पिता उससे बहुत प्यार करते हैं। क्योंकि उसका जन्म उनके बूढ़ापे में हुआ था, यह अकेला पुत्र है। हम लोगों के पिता उसे बहुत प्यार करते हैं।' [21]तब आपने हमसे कहा था, 'उस भाई को मेरे पास लाओ। मैं उसे देखना चाहता हूँ।' [22]और हम लोगों ने कहा था, 'वह छोटा लड़का नहीं आ सकता। वह अपने पिता को नहीं छोड़ सकता। यदि उसके पिता को उससे हाथ धोना पड़ा तो उसका पिता इतना दु:खी होगा कि वह मर जाएगा।' [23]किन्तु आपने हमसे कहा, 'तुम लोग अपने छोटे भाई को अवश्य लाओ, नहीं तो मैं फिर तुम लोगों के हाथ अन्न नहीं बेचूँगा।'

[24]"इसलिए हम लोग अपने पिता के पास लौटे और आपने जो कुछ कहा, उन्हें बताया।

[25]"बाद में हम लोगों के पिता ने कहा, 'फिर जाओ और हम लोगों के लिए कुछ और अन्न खरीदो।' [26]और हम लोगों ने अपने पिता से कहा, 'हम लोग अपने सबसे छोटे भाई के बिना नहीं जा सकते। शासक ने कहा है कि वह तब तक हम लोगों को फिर अन्न नहीं बेचेगा जब तक वह हमारे सबसे छोटे भाई को नहीं देख लेता।' [27]तब मेरे पिता ने हम लोगों से कहा, 'तुम लोग जानते हो कि मेरी पत्नी राहेल ने मुझे दो पुत्र दिये। [28]मैंने एक पुत्र को दूर जाने दिया और वह जंगली जानवर द्वारा मारा गया और तब से मैंने उसे नहीं देखा है। [29]यदि तुम लोग मेरे दूसरे पुत्र को मुझसे दूर ले जाते हो और उसे कुछ हो जाता है तो मुझे इतना दु:ख होगा कि मैं मर जाऊँगा।' [30]इसलिए यदि अब हम लोग अपने सबसे छोटे भाई के बिना घर जायेंगे तब हम लोगों के पिता को यह देखना पड़ेगा। यह छोटा लड़का हमारे पिता के जीवन में सबसे अधिक महत्व रखता है। [31]जब वे देखेंगे कि छोटा लड़का हम लोगों के साथ नहीं है वे मर जायेंगे और यह हम लोगों का दोष होगा। हम लोग अपने पिता के घोर दु:ख एवं मृत्यु का कारण होंगे।

[32]"मैंने छोटे लड़के का उत्तरदायित्व लिया है। मैंने अपने पिता से कहा, 'यदि मैं उसे आपके पास लौटाकर न लाऊँ तो आप मेरे सारे जीवनभर मुझे दोषी ठहरा सकते हैं।' [33]इसलिए अब मैं आपसे माँगता हूँ, और आप से प्रार्थना करता हूँ कि कृपया छोटे लड़के को अपने भाईयों के साथ लौट जाने दें और मैं यहाँ रुकूँगा और आपका दास होऊँगा। [34]मैं अपने पिता के पास लौट नहीं सकता यदि हमारे साथ छोटा भाई नहीं रहेगा। मैं इस बात से बहुत भयभीत हूँ कि मेरे पिता के साथ क्या घटेगा।"

यूसुफ अपने को प्रकट करता है कि वह कौन है

45 यूसुफ अपने को और अधिक न संभाल सका। वह वहाँ उपस्थित सभी लोगों के सामने रो पड़ा। यूसुफ ने कहा, "हर एक से कहो कि यहाँ से हट जाये।" इसलिए सभी लोग चले गये। केवल उसके भाई ही यूसुफ के साथ रह गए। तब यूसुफ ने उन्हें बताया कि वह कौन है। [2]यूसुफ रोता रहा, और फ़िरौन के महल के सभी मिस्री व्यक्तियों ने सुना। [3]यूसुफ ने

अपने भाईयों से कहा, "मैं आप लोगों का भाई यूसुफ हूँ। क्या मेरे पिता सकुशल हैं?" किन्तु भाईयों ने उसको उत्तर नहीं दिया। वे डरे हुए तथा उलझन में थे।

[4]इसलिए यूसुफ ने अपने भाईयों से फिर कहा, "मेरे पास आओ।" इसलिए यूसुफ के भाई निकट गए और यूसुफ ने उनसे कहा, "मैं आप लोगों का भाई यूसुफ हूँ।" मैं वही हूँ जिसे मिस्रियों के हाथ आप लोगों ने दास के रूप में बेचा था। [5]अब परेशान न हों। आप लोग अपने किए हुए के लिए स्वयं भी पश्चाताप न करें। वह तो मेरे लिए परमेश्वर की योजना थी कि मैं यहाँ आऊँ। मैं यहाँ तुम लोगों का जीवन बचाने के लिए आया हूँ। [6]यह भयंकर भूखमरी का समय दो वर्ष ही अभी बीता है और अभी पाँच वर्ष बिना पौधे रोपने या उपज के आएंगे। [7]इसलिए परमेश्वर ने तुम लोगों से पहले मुझे यहाँ भेजा जिससे मैं इस देश में तुम लोगों को बचा सकूँ। [8]यह आप लोगों का दोष नहीं था कि मैं यहाँ भेजा गया। यह परमेश्वर की योजना थी। परमेश्वर ने मुझे फ़िरौन के पिता सदृश बनाया। ताकि मैं उसके सारे घर और सारे मिस्र का शासक रहूँ।"

इस्राएल मिस्र के लिए आमन्त्रित हुआ

[9]यूसुफ ने कहा, "इसलिए जल्दी मेरे पिता के पास जाओ। मेरे पिता से कहो कि उसके पुत्र यूसुफ ने यह सन्देश भेजा है।"

परमेश्वर ने मुझे पूरे मिस्र का शासक बनाया है। मेरे पास आइये। प्रतीक्षा न करें। अभी आएँ। [10]आप मेरे निकट गोशेन प्रदेश में रहेंगे। आपका, आपके पुत्रों का, आपके सभी जानवरों एवं झुण्डों का यहाँ स्वागत है। [11]भुखमरी के अगले पाँच वर्षों में मैं आपका देखभाल करूँगा। इस प्रकार आपके और आपके परिवार की जो चीज़ें हैं उनसे आपको हाथ धोना नहीं पड़ेगा।

[12]यूसुफ अपने भाईयों से बात करता रहा। उसने कहा, "अब आप लोग देखते हैं कि यह सचमुच मैं ही हूँ" और आप लोगों का भाई बिन्यामीन जानता है कि यह मैं हूँ। मैं आप लोगों का भाई आप लोगों से बात कर रहा हूँ। [13]इसलिए मेरे पिता से मेरी मिस्र की अत्याधिक सम्पत्ति के बारे में कहें। आप लोगों ने जो यहाँ देखा है उस हर एक चीज़ के बारे में मेरे पिता को बताएं। अब जल्दी करो और मेरे पिता को लेकर मेरे पास लौटो।" [14]तब यूसुफ ने अपने भाई बिन्यामीन को गले लगाया और रो पड़ा और बिन्यामीन भी रो पड़ा। [15]तब यूसुफ ने सभी भाईयों को चूमा और उनके लिए रो पड़ा। इसके बाद भाई उसके साथ बातें करने लगे।

[16]फ़िरौन को पता लगा कि यूसुफ के भाई उसके पास आए हैं। यह खबर फ़िरौन के पूरे महल में फैल गई। फ़िरौन और उसके सेवक इस बारे में बहुत प्रसन्न हुए। [17]इसलिये फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "अपने भाईयों से कहो कि उन्हें जितना भोजन चाहिए, लें और कनान देश को लौट जायें। [18]अपने भाईयों से कहो कि वे अपने पिता और अपने परिवारों को लेकर यहाँ मेरे पास आयें। मैं तुम्हें जीविका के लिए मिस्र में सबसे अच्छी भूमि दूँगा और तुम्हारा परिवार सबसे अच्छा भोजन करेगा जो हमारे पास यहाँ है।" [19]तब फ़िरौन ने कहा, "हमारी सबसे अच्छी गाड़ियों में से कुछ अपने भाईयों को दो। उन्हें कनान जाने और गाड़ियों में अपने पिता, स्त्रियों और बच्चों को यहाँ लाने को कहो। [20]उनकी कोई भी चीज़ यहाँ लाने की चिन्ता न करो। हम उन्हें मिस्र में जो कुछ सबसे अच्छा है, देंगे।"

[21]इसलिए इस्राएल के पुत्रों ने यही किया। यूसुफ ने फ़िरौन के वचन के अनुसार अच्छी गाड़ियाँ दी और यूसुफ ने यात्रा के लिए उन्हें भरपूर भोजन दिया। [22]यूसुफ ने हर एक भाई को एक एक जोड़ा सुन्दर वस्त्र दिया। किन्तु यूसुफ ने बिन्यामीन को पाँच जोड़े सुन्दर वस्त्र दिये और यूसुफ ने बिन्यामीन को तीन सौ चाँदी के सिक्के भी दिए। [23]यूसुफ ने अपने पिता को भी भेंटें भेजी। उसने मिस्र से बहुत सी अच्छी चीज़ों से भरी बोरियों से लदे दस गधों को भेजा और उसने अपने पिता के लिए अन्न, रोटी और अन्य भोजन से लदी हुई दस गदहियों को उनकी वापसी यात्रा के लिए भेजा। [24]तब यूसुफ ने अपने भाईयों को जाने के लिए कहा। जब वे जाने को हुए थे यूसुफ ने उनसे कहा, "सीधे घर जाओ और रास्ते में लड़ना नहीं।"

[25]इस प्रकार भाईयों ने मिस्र को छोड़ा और कनान देश में अपने पिता के पास गए। [26]भाईयों ने उससे कहा, "पिताजी यूसुफ अभी जीवित है और वह पूरे मिस्र देश का प्रशासक है।"

उनका पिता चकित हुआ। उसने उन पर विश्वास नहीं किया। [27]किन्तु यूसुफ ने जो बातें कहीं थी, भाईयों

ने हर एक बात अपने पिता से कहीं। तब याकूब ने उन गाड़ियों को देखा जिन्हें यूसुफ ने उसे मिस्र की वापसी यात्रा के लिए भेजा था। तब याकूब भावुक हो गया और अत्यन्त प्रसन्न हुआ। [28]इस्राएल ने कहा, "अब मुझे विश्वास है कि मेरा पुत्र यूसुफ अभी जीवित है। मैं मरने से पहले उसे देखने जा रहा हूँ।"

परमेश्वर इस्राएल को विश्वास दिलाता है

46 इसलिए इस्राएल ने मिस्र की अपनी यात्रा प्रारम्भ की। पहले इस्राएल बेर्शेबा पहुँचा। वहाँ इस्राएल ने अपने पिता इसहाक के परमेश्वर की उपासना की। उसने बलि* दी।

[2]रात में परमेश्वर इस्राएल से सपने में बोला। परमेश्वर ने कहा, "याकूब, याकूब"

और इस्राएल ने उत्तर दिया, "मैं यहाँ हूँ।"

[3]तब यहोवा ने कहा, "मैं यहोवा हूँ तुम्हारे पिता का परमेश्वर। मिस्र जाने से न डरो। मिस्र में मैं तुम्हें महान राष्ट्र बनाऊँगा। [4]मैं तुम्हारे साथ मिस्र चलूँगा और मैं तुम्हें फिर मिस्र से बाहर निकाल लाऊँगा। तुम मिस्र में मरोगे। किन्तु यूसुफ तुम्हारे साथ रहेगा। जब तुम मरोगे तो वह स्वयं अपने हाथों से तुम्हारी आँखे बन्द करेगा।"

इस्राएल मिस्र को जाता है

[5]तब याकूब ने बेर्शेबा छोड़ा और मिस्र तक यात्रा की। उसके पुत्र, अर्थात् इस्राएल के पुत्र अपने पिता, अपनी पत्नियों और अपने सभी बच्चों को मिस्र ले आए। उन्होंने फिरौन द्वारा भेजी गयी गाड़ियों में यात्रा की। [6]उनके पास, उनके पशु और कनान देश में उनका अपना जो कुछ था, वह भी साथ था। इस प्रकार इस्राएल अपने सभी बच्चे और अपने परिवार के साथ मिस्र गया। [7]उसके साथ उसके पुत्र और पुत्रियाँ एवं पौत्र और पौत्रियाँ थी। उसका सारा परिवार उसके साथ मिस्र को गया।

याकूब का परिवार

[8]यह इस्राएल* के उन पुत्रों और परिवारों के नाम है जो उसके साथ मिस्र गए:

रूबेन याकूब का पहला पुत्र था। [9]रुबेन के पुत्र थे: हनोक, पललू, हेस्रोन और कर्म्मी।

[10]शिमोन के पुत्र: यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन और सोहर। वहाँ शाऊल भी था। (शाऊल कनानी पत्नी से पैदा हुआ था।)

[11]लेवी के पुत्र: गेर्शोन, कहात और मरारी

[12]यहूदा के पुत्र: एर, ओनान, शेला, पेरेस और जेरह। (एर और ओनान कनान में रहते समय मर गये थे।) पेरेस के पुत्र: हेस्रोन और हामूल।

[13]इस्साकार के पुत्र: तोला, पुब्बा, योब और शिम्रोन।

[14]जबूलून के पुत्र: सेरेद, एलोन और यहलेल।

[15]रूबेन, शिमोन लेवी, इस्साकार और जबूलून और याकूब की पत्नी लिआ से उसकी पुत्री दीना भी थी। इस परिवार में तैंतीस व्यक्ति थे।

[16]गाद के पुत्र: सिय्योन, हाग्गी, शूनी, एसबोन, एरी, अरोदी, और अरेली।

[17]आशेर के पुत्र : यिम्ना, यिश्वा, यिस्वी, बरीआ और उनकी बहन सेरह और बरीआ के पुत्र: हेबेर और मल्कीएल थे।

[18]ये सभी याकूब की पत्नी की दासी जिल्पा से उसके पुत्र थे। इस परिवार में सोलह व्यक्ति थे।

[19]याकूब के साथ उसकी पत्नी राहेल से पैदा हुआ पुत्र बिन्यामीन भी था। (यूसुफ भी राहेल से पैदा था, किन्तु वह पहले से ही मिस्र में था।)

[20]मिस्र में यूसुफ के दो पुत्र थे, मनश्शे, एप्रैम। (यूसुफ की पत्नी ओन के याजक पोतीपेरा की पुत्री आसनत थी।)

[21]बिन्यामीन के पुत्र: बेला, बेकेर, अश्बेल, गेरा, नामान, एही, रोश, हुप्पीम, मुप्पीम और आर्द।

[22]वे याकूब की पत्नी राहेल से पैदा हुए उसके पुत्र थे। इस परिवार में चौदह व्यक्ति थे।

[23]दान का पुत्र: हूशीम। [24]नप्ताली के पुत्र: यहसेल गूनी, सेसेर शिल्लेम।

[25]वे याकूब और बिल्हा के पुत्र थे। (बिल्हा राहेल की सेविका थी।) इस परिवार में सात व्यक्ति थे।

बलि परमेश्वर को भेंट। कभी–कभी यह विशेष पशु होता था जो मारा जाता था और एक चौरे या वेदी पर जलाया जाता था।

इस्राएल याकूब का अन्य नाम। इस नाम का अर्थ है, "वह परमेश्वर के लिए लड़ता है, या वह परमेश्वर से लड़ता है।

[26]इस प्रकार याकूब का परिवार मिस्र में पहुँचा। उनमें छियासठ उसके सीधे वंशज थे। (इस संख्या में याकूब के पुत्रों की पत्नियाँ सम्मिलित नहीं थीं।) [27]यूसुफ के भी दो पुत्र थे। वे मिस्र में पैदा हुए थे। इस प्रकार मिस्र में याकूब के परिवार में सत्तर व्यक्ति थे।

इस्राएल मिस्र पहुँचता है

[28]याकूब ने पहले यहूदा को यूसुफ के पास भेजा। यहूदा गोशेन प्रदेश में यूसुफ के पास गया। जब याकूब और उसके लोग उस प्रदेश में गए। [29]यूसुफ को पता लगा कि उसका पिता निकट आ रहा है। इसलिए यूसुफ ने अपना रथ तैयार कराया और अपने पिता इस्राएल से गोशेन में मिलने चला। जब यूसुफ ने अपने पिता को देखा तब वह उसके गले से लिपट गया और देर तक रोता रहा।

[30]तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "अब मैं शान्ति से मर सकता हूँ। मैंने तुम्हारा मुँह देख लिया और मैं जानता हूँ कि तुम अभी जीवित हो।"

[31]यूसुफ ने अपने भाईयों और अपने पिता के परिवार से कहा, "मैं जाऊँगा और फ़िरौन से कहूँगा कि मेरे पिता यहाँ आ गए हैं। मैं फ़िरौन से कहूँगा, 'मेरे भाईयों और मेरे पिता के परिवार ने कनान देश छोड़ दिया है और यहाँ मेरे पास आ गए हैं। [32]यह चरवाहों का परिवार है। उन्होंने सदैव पशु और रेवड़े रखी हैं। वे अपने सभी जानवर और उनका जो कुछ अपना है उसे अपने साथ लाए हैं।' [33]जब फ़िरौन आप लोगों को बुलाएंगे और आप लोगों से पूछेंगे कि 'आप लोग क्या काम करते हैं?' [34]आप लोग उनसे कहना, 'हम लोग चरवाहे हैं। हम लोगों ने पूरा जीवन अपने जानवरों की देखभाल में बिताया है। हम लोगों से पहले हमारे पूर्वज भी ऐसे ही रहे।' तब फ़िरौन तुम लोगों को गोशेन प्रदेश में रहने की आज्ञा दे देगा। मिस्री लोग चरवाहों को पसन्द नहीं करते, इसलिये अच्छा यही होगा कि आप लोग गोशेन में ही ठहरें।"

इस्राएल गोशेन में बसता है

47 यूसुफ फ़िरौन के पास गया और उसने कहा, "मेरे पिता, मेरे भाई और उनके सब परिवार यहाँ आ गए हैं।" वे अपने सभी जानवर तथा कनान में उनका अपना जो कुछ था, उसके साथ हैं। इस समय वे गोशेन प्रदेश में हैं।" [2]यूसुफ ने अपने भाईयों में से पाँच को फ़िरौन के सामने अपने साथ रहने के लिए चुना।

[3]फ़िरौन ने भाईयों से पूछा, "तुम लोग क्या काम करते हो?"

भाईयों ने फ़िरौन से कहा, "मान्यवर. हम लोग चरवाहे हैं। हम लोगों से पहले हमारे पूर्वज भी चरवाहे थे।" [4]उन्होंने फ़िरौन से कहा, "कनान में भूखमरी का यह समय बहुत बुरा है। हम लोगों के जानवरों के लिए घास वाला कोई भी खेत बचा नहीं रह गया है। इसलिए हम लोग इस देश में रहने आए हैं। आपसे हम लोग प्रार्थना करते हैं कि आप कृपा करके हम लोगों को गोशेन प्रदेश में रहने दें।"

[5]तब फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "तुम्हारे पिता और तुम्हारे भाई तुम्हारे पास आए हैं। [6]तुम मिस्र में कोई भी स्थान उनके रहने के लिए चुन सकते हो। अपने पिता और अपने भाईयों को सबसे अच्छी भूमि दो। उन्हें गोशेन प्रदेश में रहने दो और यदि ये कुशल चरवाहे हैं, तो वे मेरे जानवरों की भी देखभाल कर सकते हैं।"

[7]तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब को अन्दर फ़िरौन के सामने बुलाया। याकूब ने फ़िरौन को आशीर्वाद दिया। [8]तब फ़िरौन ने याकूब से पूछा, "आपकी उम्र क्या है?"

[9]याकूब ने फ़िरौन से कहा, "बहुत से कष्टों के साथ मेरा छोटा जीवन रहा। मैं केवल एक सौ तीस वर्ष जीवन बिताया हूँ। मेरे पिता और उनके पिता मुझसे अधिक उम्र तक जीवित रहे।"

[10]याकूब ने फ़िरौन को आशीर्वाद दिया। तब फ़िरौन से विदा लेकर चल दिया।

[11]यूसुफ ने फ़िरौन का आदेश माना। उसने अपने पिता और भाईयों को मिस्र में भूमि दी। यह रामसेस नगर के निकट मिस्र में सबसे अच्छी भूमि थी। [12]यूसुफ ने अपने पिता, भाईयों और उनके अपने लोगों को, जो भोजन उन्हें आवश्यक था, दिया।

यूसुफ फ़िरौन के लिए भूमि खरीदता है

[13]भूखमरी का समय और भी अधिक बुरा हो गया। देश में कहीं भी भोजन न रहा। इस बुरे समय के कारण मिस्र और कनान बहुत गरीब हो गए। [14]देश में लोग अधिक से अधिक अन्न खरीदने लगे। यूसुफ ने धन बचाया और उसे फ़िरौन के महल में लाया। [15]कुछ समय

बाद मिस्र और कनान में लोगों के पास पैसा नहीं रहा। उन्होंने अपना सारा धन अन्न खरीदने में खर्च कर दिया। इसलिए लोग यूसुफ के पास गए और बोले, "कृपा कर हमें भोजन दें। हम लोगों का धन समाप्त हो गया। यदि हम लोग नहीं खाएंगे तो आपके देखते–देखते हम मर जायेंगे।"

[16]लेकिन यूसुफ ने उत्तर दिया, "अपने पशु मुझे दो और मैं तुम लोगों को भोजन दूँगा।" [17]इसलिए लोग अपने पशु, घोड़े और अन्य सभी जानवरों को भोजन खरीदने के लिए उपयोग में लाने लगे और उस वर्ष यूसुफ ने उनके जानवरों को लिया तथा भोजन दिया।

[18]किन्तु दूसरे वर्ष लोगों के पास जानवर नहीं रह गए और भोजन खरीदने के लिए कुछ भी न रहा। इसलिए लोग यूसुफ के पास गए और बोले, "आप जानते हैं कि हम लोगों के पास धन नहीं बचा है और हमारे सभी जानवर आपके हो गये हैं। इसलिए हम लोगों के पास कुछ नहीं बचा है। वह बचा है केवल, जो आप देखते हैं, हमारा शरीर और हमारी भूमि। [19]आपके देखते हुए ही हम निश्चय ही मर जाएंगे। किन्तु यदि आप हमें भोजन देते हैं तो हम फ़िरौन को अपनी भूमि देंगे और उसके दास हो जाएंगे। हमें बीज दो जिन्हें हम बो सकें। तब हम लोग जीवित रहेगें और मरेंगे नहीं और भूमि हम लोगों के लिए फिर अन्न उगाएगी।"

[20]इसलिए यूसुफ ने मिस्र की सारी भूमि फ़िरौन के लिए खरीद ली। मिस्र के सभी लोगों ने अपने खेतों को यूसुफ के हाथ बेच दिया। उन्होंने यह इसलिए किया क्योंकि वे बहुत भूखे थे। [21]और सभी लोग फ़िरौन के दास हो गए। मिस्र में सर्वत्र लोग फ़िरौन के दास थे। [22]एक मात्र वही भूमि यूसुफ ने नहीं खरीदी जो याजकों के अधिकार में थी। याजकों को भूमि बेचने की आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि फ़िरौन उनके काम के लिए उन्हें वेतन देता था। इसलिए उन्होंने इस धन को खाने के लिए भोजन खरीदने में खर्च किया।

[23]यूसुफ ने लोगों से कहा, "अब मैंने तुम लोगों की और तुम्हारी भूमि को फ़िरौन के लिए खरीद लिया है। इसलिए मैं तुमको बीज दूँगा और तुम लोग अपने खेतों में पौधे लगा सकते हो। [24]फसल काटने के समय तुम लोग फसल का पाँचवाँ हिस्सा फ़िरौन को अवश्य देना। तुम लोग अपने लिए पाँच में से चार हिस्से रख सकते हो। तुम लोग उस बीज को जिसे भोजन और बोने के लिए रखोगे उसे दूसरे वर्ष उपयोग में ला सकोगे। अब तुम अपने परिवारों और बच्चों को खिला सकते हो।"

[25]लोगों ने कहा, "आपने हम लोगों का जीवन बचा लिया है।" हम लोग आपके और फिरौन के दास होने में प्रसन्न हैं।"

[26]इसलिए यूसुफ ने उस समय देश में एक नियम बनाया और वह नियम अब तक चला आ रहा है। नियम के अनुसार भूमि से हर एक उपज का पाँचवाँ हिस्सा फ़िरौन का है। फ़िरौन सारी भूमि का स्वामी है। केवल वही भूमि उसकी नहीं है जो याजकों की है।

"मुझे मिस्र में मत दफनाना"

[27]इस्राएल (याकूब) मिस्र में रहा। वह गोशेन प्रदेश में रहा। उसका परिवार बढ़ा और बहुत बड़ा हो गया। उन्होंने मिस्र में उस भूमि को पाया और अच्छा जीवन बिताया। [28]याकूब मिस्र में सत्रह वर्ष रहा। इस प्रकार याकूब एक सौ सैंतालीस वर्ष का हो गया। [29]वह समय आ गया जब इस्राएल (याकूब) समझ गया कि वह जल्दी ही मरेगा, इसलिए उसने अपने पुत्र यूसुफ को अपने पास बुलाया। उसने कहा, "यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो तुम अपने हाथ मेरी जांघ के नीचे रख कर मुझे वचन दो।* वचन दो कि तुम, जो मैं कहूँगा करोगे और तुम मेरे प्रति सच्चे रहोगे। जब मैं मरुँ तो मुझे मिस्र में मत दफनाना। [30]उसी जगह मुझे दफनाना जिस जगह मेरे पूर्वज दफनाए गए हैं। मुझे मिस्र से बाहर ले जाना और मेरे परिवार के कब्रिस्तान में दफनाना।"

यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं वचन देता हूँ कि वही करूँगा जो आप कहते है।"

[31]तब याकूब ने कहा, "मुझसे एक प्रतिज्ञा करो" और यूसुफ ने उससे प्रतिज्ञा की कि वह इसे पूरा करेगा। तब इस्राएल(याकूब) ने अपना सिर पलंग पर पीछे को रखा।*

तुम ... वचन दो यह संकेत करता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण शपथ था और याकूब विश्वास करता था कि यूसुफ अपना वचन पूरा करेगा।

तब इस्राएल ... रखा या तब इस्राएल ने अपने डंडे का सहारा लेकर उपासना में अपना सिर झुकाया। डंडे के लिए हिब्रू शब्द "बिछौने" शब्द की तरह है और उपासना के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ "प्रणाम करना" "लेटना" होता है।

मनश्शे और एप्रैम को आशीर्वाद

48 कुछ समय बाद यूसुफ को पता लगा कि उसका पिता बहुत बीमार है। इसलिए यूसुफ ने अपने दोनों पुत्रों मनश्शे और एप्रैम को साथ लिया और अपने पिता के पास गया। [2]जब यूसुफ पहुँचा तो किसी ने इस्राएल से कहा, "तुम्हारा पुत्र यूसुफ तुम्हें देखने आया है।" इस्राएल बहुत कमजोर था, किन्तु उसने बहुत प्रयत्न किया और पलंग पर बैठ गया।

[3]तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "कनान देश में लूज के स्थान पर सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे स्वयं दर्शन दिया। परमेश्वर ने वहाँ मुझे आशीर्वाद दिया। [4]परमेश्वर ने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हारा एक बड़ा परिवार बनाऊँगा। मैं तुमको बहुत से बच्चे दूँगा और तुम एक महान राष्ट्र बनोगे। तुम्हारे लोगों का अधिकार इस देश पर सदा बना रहेगा।' [5]और अब तुम्हारे दो पुत्र हैं। मेरे आने से पहले–मिस्र देश में यहाँ ये पैदा हुए थे। तुम्हारे दोनों पुत्र एप्रैम और मनश्शे मेरे अपने पुत्रों की तरह होंगे। वे वैसे ही होंगे जैसे मुझे रूबेन और शिमोन हैं। [6]इस प्रकार ये दोनों मेरे पुत्र होगें वे मेरी सभी चीज़ों में हिस्सेदार होंगे। किन्तु यदि तुम्हारे अन्य पुत्र होंगे तो वे तुम्हारे बच्चे होगें। किन्तु वे भी एप्रैम और मनश्शे के पुत्रों के समान होंगे। अर्थात् भविष्य में एप्रैम और मनश्शे का जो कुछ होगा, उसमें हिस्सेदार होंगे। [7]पद्दनराम से यात्रा करते समय राहेल मर गई। इस बात ने मुझे बहुत दुःखी किया। वह कनान देश में मरी। हम लोग अभी एप्राता की ओर यात्रा कर रहे थे। मैंने उसे एप्राता की ओर जाने वाली सड़क पर दफनाया (एप्राता बेतलेहेम है।)"

[8]तब इस्राएल ने यूसुफ के पुत्रों को देखा। इस्राएल ने पूछा, "ये लड़के कौन हैं?"

[9]यूसुफ ने अपने पिता से कहा, "ये मेरे पुत्र हैं। ये वे लड़के हैं जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है।"

इस्राएल ने कहा, "अपने पुत्रों को मेरे पास लाओ। मैं उन्हें आशीर्वाद दूँगा।"

[10]इस्राएल बूढा था, और उसकी आँखें ठीक नहीं थीं। इसलिए यूसुफ अपने पुत्रों को अपने पिता के निकट ले गया। इस्राएल ने बच्चों को चूमा और गले लगाया। [11]तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "मैंने कभी नहीं सोचा कि मैं तुम्हारा मुँह फिर देखूँगा किन्तु देखो! परमेश्वर ने तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को भी मुझे देखने दिया।"

[12]तब यूसुफ ने बच्चों को इस्राएल की गोद से लिया और वे उसके पिता के सामने प्रणाम करने को झुके। [13]यूसुफ ने एप्रैम को अपनी दायीं ओर किया और मनश्शे को अपनी बायीं ओर (इस प्रकार एप्रैम इस्राएल की बायीं ओर था और मनश्शे इस्राएल की दायीं ओर था।) [14]किन्तु इस्राएल ने अपने हाथों की दिशा बदलकर अपने दायें हाथ को छोटे लड़के एप्रैम के सिर पर रखा और तब बायें हाथ को इस्राएल ने बड़े लड़के मनश्शे के सिर पर रखा। उसने अपने बायें हाथ को मनश्शे पर रखा, यद्यपि मनश्शे का जन्म पहले हुआ था [15]और इस्राएल ने यूसुफ को आशीर्वाद दिया और कहा,

"मेरे पूर्वज इब्राहीम और इसहाक ने हमारे
परमेश्वर की उपासना की और वही
परमेश्वर मेरे पूरे जीवन का
पथ–प्रदर्शक रहा है।

[16] वही दूत रहा जिसने मुझे सभी कष्टों से बचाया
और मेरी प्रार्थना है कि इन लड़कों को
वह आशीर्वाद दे।
अब ये बच्चे मेरा नाम पाएंगे।
वे हमारे पूर्वज इब्राहीम और इसहाक
का नाम पाएंगे।
मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे इस धरती पर
बड़े परिवार और राष्ट्र बनेंगे।"

[17]यूसुफ ने देखा कि उसके पिता ने एप्रैम के सिर पर दायाँ हाथ रखा है। यह यूसुफ को प्रसन्न न कर सका। यूसुफ ने अपने पिता के हाथ को पकड़ा। वह उसे एप्रैम के सिर से हटा कर मनश्शे के सिर पर रखना चाहता था। [18]यूसुफ ने अपने पिता से कहा, "आपने अपना दायाँ हाथ गलत लड़के पर रखा है। मनश्शे का जन्म पहले है।"

[19]किन्तु उसके पिता ने तर्क दिया और कहा, "पुत्र, मैं जानता हूँ। मनश्शे का जन्म पहले है और वह महान होगा। वह बहुत से लोगों का पिता भी होगा। किन्तु छोटा भाई बड़े भाई से बड़ा होगा और छोटे भाई का परिवार उससे बहुत बड़ा होगा।"

[20]इस प्रकार इस्राएल ने उस दिन उन्हें आशीर्वाद दिया।

उसने कहा,

"इस्राएल के लोग तुम्हारे नाम का प्रयोग
आशीर्वाद देने के लिये करेंगे,

तुम्हारे कारण कृपा प्राप्त करेंगे।
लोग प्रार्थना करेंगे, 'परमेश्वर तुम्हें
एप्रैम और मनश्शे के समान बनायें।'"
इस प्रकार इस्राएल ने एप्रैम को मनश्शे से बड़ा बनाया।

[21]तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "देखो मेरी मृत्यु का समय निकट आ गया है। किन्तु परमेश्वर तुम्हारे साथ अब भी रहेगा। वह तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के देश तक लौटा ले जायेगा। [22]मैंने तुमको ऐसा कुछ दिया है जो तुम्हारे भाईयों को नहीं दिया है। मैं तुमको वह पहाड़ देता हूँ जिसे मैंने एमोरी लोगों से जीता था। उस पहाड़ के लिए मैंने अपनी तलवार और अपने धनुष से युद्ध किया था और मेरी जीत हुई थी।"

याकूब अपने पुत्रों को आशीर्वाद देता है

49 तब याकूब ने अपने सभी पुत्रों को अपने पास बुलाया। उसने कहाँ, "मेरे सभी पुत्रों, यहाँ मेरे पास आओ। मैं तुम्हें बताऊँगा कि भविष्य में क्या होगा।

[2]"याकूब के पुत्रों, एक साथ आओ और सुनो, अपने पिता इस्राएल की सुनो।"

रूबेन

3 "रूबेन, तुम मेरे प्रथम पुत्र हो।
तुम मेरे पहले पुत्र और मेरे
शक्ति का पहला सबूत हो।
तुम मेरे सभी पुत्रों से अधिक
गर्वीले और बलवान हो।
4 किन्तु तुम बाढ़ की तरंगों की तरह प्रचण्ड हो।
तुम मेरे सभी पुत्रों से अधिक
महत्व के नहीं हो सकोगे।
तुम उस स्त्री के साथ सोए जो
तुम्हारे पिता की थी।
तुमने अपने पिता के बिछौने को
सम्मान नहीं दिया।"

शिमोन और लेवी

5 "शिमोन और लेवी भाई हैं।
उन्हें अपनी तलवारों से लड़ना प्रिय है।
6 उन्होंने गुप्त रूप से बुरी योजनाएँ बनाई।
मेरी आत्मा उनकी योजना का
कोई अंश नहीं चाहती।
मैं उनकी गुप्त बैठकों को स्वीकार नहीं करूँगा।
उन्होंने आदमियों की हत्या की
जब वे क्रोध में थे
और उन्होंने केवल विनोद के लिए
जानवरों को चोट पहुँचाई।
7 उनका क्रोध एक अभिशाप है।
ये अत्याधिक कठोर और अपने
पागलपन में क्रुद्ध हैं।
याकूब के देश में इनके परिवारों की
अपनी भूमि नहीं होगी।
वे पूरे इस्राएल में फैलेंगे।"

यहूदा

8 "यहूदा, तुम्हारे भाई तुम्हारी प्रशंसा करेंगे।
तुम अपने शत्रुओं को हराओगे।
तुम्हारे भाई तुम्हारे सामने झुकेंगे।
9 यहूदा उस शेर की तरह है जिसने किसी
जानवर को मारा हो।
हे मेरे पुत्र, तुम अपने शिकार पर खड़े शेर के
समान हो जो आराम करने के लिये
लेटता है, और कोई इतना बहादुर
नहीं कि उसे छेड़ दे।
10 यहूदा के परिवार के व्यक्ति राजा होंगे।
उसके परिवार का राज–चिन्ह उसके
परिवार से वास्तविक शासक के आने से
पहले समाप्त नहीं होगा।
तब अनेकों लोग उसका आदेश मानेंगे
और सेवा करेंगे।
11 वह अपने गधे को अँगूर की बेल से बाँधता है।
वह अपने गधे के बच्चों को सबसे अच्छी
अँगूर की बेलों में बाँधता है।
वह अपने वस्त्रों को धोने के लिए सबसे अच्छी
दाखमधु का उपयोग करता है।
12 उसकी आँखे दाखमधु पीने से लाल रहती हैं।
उसके दाँत दूध पीने से उजले हैं।"*

जबूलून

13 “जबूलून समुद्र के निकट रहेगा।
इसका समुद्री तट जहाजों के लिए
सुरक्षित होगा।
इसका प्रदेश सीदोन तक फैला होगा।”

इस्साकर

14 “इस्साकर उस गधे के समान है जिसने
अत्याधिक कठोर काम किया है।
वह भारी बोझ ढोने के कारण पस्त पड़ा है।
15 वह देखेगा कि उसके आराम की
जगह अच्छी है।
तथा यह कि उसकी भूमि सुहावनी है।
तब वह भारी बोझे ढोने को तैयार होगा।
वह दास के रूप में काम
करना स्वीकार करेगा।”

दान

16 “दान अपने लोगों का न्याय वैसे ही करेगा जैसे
इस्राएल के अन्य परिवार करते हैं।
17 दान सड़क के किनारे के साँप के समान है।
वह रास्ते के पास लेटे हुये उस भयंकर
साँप की तरह है, जो घोड़े के पैर को
डसता है, और सवार घोड़े से गिर पड़ता है।
18 यहोवा, मैं उद्धार की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।”

गाद

19 “डाकुओं का एक गिरोह गाद पर आक्रमण करेगा।
किन्तु गाद उन्हें मार भगाएगा।”

आशेर

20 “आशेर की भूमि बहुत अच्छी उपज देगी।
उसे वही भोजन मिलेगा जो
राजाओं के लिये उपयुक्त होगा।”

नप्ताली

21 “नप्ताली स्वतन्त्र दौड़नेवाले हिरन की तरह है
और उसकी बोली उनके सुन्दर
बच्चों की तरह है।”

यूसुफ

22 “यूसुफ बहुत सफल है।
यूसुफ फलों से लदी अंगूर की
बेल के समान है।
वह सोते के समीप उगी अँगूर की बेल की
तरह है, बाड़े के सहारे उगी
अँगूर की बेल की तरह है।
23 बहुत से लोग उसके विरुद्ध हुए
और उससे लड़े।
धर्नुधारी लोग उसे पसन्द नहीं करते।
24 किन्तु उसने अपने शक्तिशाली धनुष और कुशल
भुजाओं से युद्ध जीता।
वह याकूब के शक्तिशाली परमेश्वर चरवाहे,
इस्राएल की चट्टान, से शक्ति पाता है
25 और अपने पिता के परमेश्वर से
शक्ति पाता है।
परमेश्वर तुम को आशीर्वाद दे।
सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम को
आशीर्वाद दे।
वह तुम्हें ऊपर आकाश से आशीर्वाद दे और
नीचे गहरे समुद्र से आशीर्वाद दे।
वह तुम्हें स्तनों और गर्भ का आशीर्वाद दे।”
26 मेरे माता–पिता को बहुत सी अच्छी
चीज़ें होती रही और तुम्हारे पिता से
मुझको और अधिक आशीर्वाद मिला।
तुम्हारे भाईयों ने तुमको बेचना चाहा।
किन्तु अब तुम्हें एक ऊँचे पर्वत के समान,
मेरे सारे आशीर्वाद का ढेर मिलेगा।”

उसकी आँखे ... उजले हैं या उसका गधा अँगूर की बेल में बंधेगा, उसके गधे के बच्चे सर्वोतम अँगूर की बेल में बांधे जायेंगे। वह अपने वस्त्र दाखमधु से धोएगा और सर्वोतम वस्त्र अँगूर के रस से धोएगा। उसकी आँखे दाखमधु से अधिक लाल होंगी और उसके दाँत दूध से अधिक सफेद होंगे।

बिन्यामीन

27 “बिन्यामीन एक ऐसे भूखे भेड़िये के समान है।
जो सवेरे मारता है और उसे खाता है।
शाम को वह बचे खुचे से काम चलाता है।”

28ये इस्राएल के बारह परिवार है और वही चीज़ें हैं जिन्हें उनके पिता ने उनसे कहा था। उसने हर एक पुत्र को वह आशीर्वाद दिया जो उसके लिए ठीक था। 29तब इस्राएल ने उनको एक आदेश दिया। उसने कहा, “जब मैं मरुँ तो मैं अपने लोगों के बीच रहना चाहता हूँ। मैं अपने पूर्वजों के साथ हित्ती एप्रोन के खेतों की गुफा में दफनाया जाना चाहता हूँ। 30वह गुफा मम्रे के निकट मकपेला के खेत में है। यह कनान देश में है। इब्राहीम ने उस खेत को एप्रोन से इसलिए खरीदा था जिससे उसके पास एक कब्रिस्तान हो सके। 31इब्राहीम और उसकी पत्नी सारा उसी गुफा में दफनाए गए हैं। इसहाक और उसकी पत्नी रिबका उसी गुफा में दफनाए गए। मैंने अपनी पत्नी लिआ को उसी गुफा में दफनाया।” 32वह गुफा उस खेत में है जिसे हित्ती लोगों से खरीदा गया था। 33अपने पुत्रों से बातें समाप्त करने के बाद याकूब लेट गया, पैरों को अपने बिछोने पर रखा और मर गया।

याकूब का अन्तिम संस्कार

50 जब इस्राएल मरा, यूसुफ बहुत दुःखी हुआ। वह पिता के गले लिपट गया, उस पर रोया और उसे चूमा। 2यूसुफ ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे उसके पिता के शरीर को तैयार करें (ये सेवक वैद्य थे।) वैद्यों ने याकूब के शरीर को दफनाने के लिए तैयार किया। उन्होंने मिस्री लोगों के विशेष तरीके से शरीर को तैयार किया। 3जब मिस्री लोगों ने विशेष तरह से शव तैयार किया तब उसे दफनाने के पहले चालीस दिन तक प्रतिक्षा की। उसके बाद मिस्रियों ने याकूब के लिए शोक का विशेष समय रखा। यह समय सत्तर दिन का था।

4सत्तर दिन बाद शोक का समय समाप्त हुआ। इसलिए यूसुफ ने फ़िरौन के अधिकारियों से कहा, “कृपया फ़िरौन से यह कहो, 5‘जब मेरे पिता मर रहे थे तब मैंने उनसे एक प्रतिज्ञा की थी। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं उन्हें कनान देश की गुफा में दफनाऊँगा। यह वह गुफा है जिसे उन्होंने अपने लिए बनाई है। इसलिए कृपा करके मुझे जाने दें और वहाँ पिता को दफनाने दें। तब मैं आपके पास वापस यहाँ लौट आऊँगा।’”

6फ़िरौन ने कहा, “अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो। जाओ और अपने पिता को दफनाओ।”

7इसलिए यूसुफ अपने पिता को दफनाने गया। फ़िरौन के सभी अधिकारी यूसुफ के साथ गए। फ़िरौन के बड़े लोग (नेता) और मिस्र के बड़े लोग यूसुफ के साथ गए। 8यूसुफ और उसके भाईयों के परिवार के सभी व्यक्ति उसके साथ गए और उसके पिता के परिवार के सभी लोग भी यूसुफ के साथ गए। (केवल बच्चे और जानवर गोशेन प्रदेश में रह गए।) 9यूसुफ के साथ जाने के लिए लोग रथों और घोड़ो पर सवार हुए। यह बहुत बड़ा जनसमूह था।

10वे गोरन आताद* को गए। जो यरदन नदी के पूर्व में था। इस स्थान पर इन्होंने इस्राएल का अन्तिम संस्कार किया। ये अन्तिम संस्कार सात दिन तक होता रहा। 11कनान के निवासियों ने गोरन आताद में अन्तिम संस्कार को देखा। उन्होंने कहा, “वे मिस्री सचमुच बहुत शोक भरा संस्कार कर रहे हैं।” इसलिए उस जगह का नाम अब आबेल मिस्रैम है।

12इस प्रकार याकूब के पुत्रों ने वही किया जो उनके पिता ने आदेश दिया था। 13वे उसके शव को कनान ले गए और मकपेला की गुफा में उसे दफनाया। यह गुफा मम्रे के निकट उस खेत में थी जिसे इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन से खरीदा था। 14यूसुफ ने जब अपने पिता को दफना दिया तो वह और उसके साथ समूह का हर एक व्यक्ति मिस्र को लौट गया।

भाई यूसुफ से डरे

15याकूब के मरने के बाद यूसुफ के भाई चिंतित हुए। वे डर रहे थे कि उन्होंने जो कुछ पहले किया था उसके लिए यूसुफ अब भी उनसे क्रोध में पागल होगा। उन्होंने कहा, “क्या जो कुछ हम ने किया उसके लिए यूसुफ अब भी हम से घृणा करता है?” 16इसलिए भाईयों ने यह सन्देश यूसुफ को भेजा:

तुम्हारे पिता ने मरने के पहले हम लोगों को
आदेश दिया था। 17उसने कहा, ‘यूसुफ से कहना

गोरन आताद या “आताद का खलिहान।”

कि मैं निवेदन करता हूँ कि कृपा कर वह उस अपराध को क्षमा कर दे जो उन्होंने उसके साथ किया।' इसलिए अब हम तुमसे प्रार्थना करते हैं कि उस अपराध को क्षमा कर दो जो हम ने किया। हम लोग केवल तुम्हारे पिता के परमेश्वर के सेवक हैं।

यूसुफ के भाईयों ने जो कुछ कहा उससे उसे बड़ा दु:ख हुआ और वह रो पड़ा। [18]यूसुफ के भाई उसके सामने गए और उसके सामने झुककर प्रणाम किया। उन्होंने कहा, "हम लोग तुम्हारे सेवक होंगे।"

[19]तब यूसुफ ने उनसे कहा, "डरो नहीं मैं परमेश्वर नहीं हू। [20]तुम लोगों ने मेरे साथ जो कुछ बुरा करने की योजना बनाई थी। किन्तु परमेश्वर सचमुच अच्छी योजना बना रहा था। परमेश्वर की योजना बहुत से लोगों का जीवन बचाने के लिए मेरा उपयोग करने की थी और आज भी उसकी यही योजना है। [21]इसलिए डरो नहीं। मैं तुम लोगों और तुम्हारे बच्चों की देखभाल करूँगा।" इस प्रकार, यूसुफ ने उन्हें सान्त्वना दी और उनसे कोमलता से बातें की। [22]यूसुफ अपने पिता के परिवार के साथ मिस्र में रहता रहा। यूसुफ एक सौ दस वर्ष का होकर मरा। [23]यूसुफ के जीवन काल में एप्रैम के पुत्र और पौत्र हुए और उसके पुत्र मनश्शे का एक पुत्र माकीर नाम का हुआ। यूसुफ माकीर के बच्चों को देखने के लिए जीवित रहा।

यूसुफ की मृत्यु

[24]जब यूसुफ मरने को हुआ, उसने अपने भाईयों से कहा, "मेरे मरने का समय आ गया। किन्तु मैं जानता हूँ कि परमेश्वर तुम लोगों की रक्षा करेगा। वह इस देश से तुम लोगों को बाहर ले जायेगा। परमेश्वर तुम लोगों को उस देश में ले जायेगा जिसे उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब को देने का वचन दिया था।"

[25]तब यूसुफ ने अपने लोगों से एक प्रतिज्ञा करने को कहा। यूसुफ ने कहा, "मुझ से प्रतिज्ञा करो कि तब मेरी अस्थियाँ अपने साथ ले जाओगे जब परमेश्वर तुम लोगों को नये देश में ले जायेगा।"

[26]यूसुफ मिस्र में मरा, जब वह एक सौ दस वर्ष का था। वैद्यों ने उसके शव को दफनाने के लिए तैयार किया और मिस्र में उसके शव को एक डिब्बे में रखा।

निर्गमन

मिस्र में याकूब का परिवार

1 याकूब (इस्राएल) ने अपने पुत्रों के साथ मिस्र की यात्रा की थी, और हर एक पुत्र के साथ उसका अपना परिवार था। इस्राएल के पुत्रों के नाम हैं: [2]रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, [3]इस्साकर, जबूलून, बिन्यामीन, [4]दान, नप्ताली, गाद, आशेर। [5]याकूब के अपने वंश*में सत्तर लोग थे। उसके बारह पुत्रों में एक यूसुफ़ पहले से ही मिस्र में था।

[6]बाद में यूसुफ़, उसके भाई और उसकी पीढ़ी के सभी लोग मर गए। [7]किन्तु इस्राएल के लोगों की बहुत सन्तानें थीं, और उनकी संख्या बढ़ती ही गई। ये लोग शक्तिशाली हो गए और इन्हीं लोगों से मिस्र भर गया था।

इस्राएल के लोगों को कष्ट

[8]तब एक नया राजा मिस्र पर शासन करने लगा। यह व्यक्ति यूसुफ को नहीं जानता था। [9]इस राजा ने अपने लोगों से कहा, "इस्राएल के लोगों को देखो, इनकी संख्या अत्याधिक है, और हम लोगों से अधिक शक्तिशाली हैं। [10]हम लोगों को निश्चय ही इनके विरुद्ध योजना बनानी चाहिए। यदि हम लोग ऐसा नहीं करते तो हो सकता है, कि कोई युद्ध छिड़े और इस्राएल के लोग हमारे शत्रुओं का साथ देने लगें। तब वे हम लोगों को हरा सकते हैं और हम लोगों के हाथों से निकल सकते हैं।"

[11]मिस्र के लोग इस्राएल के लोगों का जीवन कठिन बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने इस्राएल के लोगों पर दास-स्वामी नियुक्त किए। उन स्वामियों ने फ़िरौन के लिए पितोम और रामसेस नगरों को बनाने के लिए इस्राएली लोगों को विवश किया। उन्होंने इन नगरों में अन्न तथा अन्य चीज़ें इकट्ठी कीं।

[12]मिस्री लोगों ने इस्राएल के लोगों को कठिन से कठिन काम करने को विवश किया। किन्तु जितना अधिक काम करने के लिए इस्राएली लोगों को विवश किया गया उनकी संख्या उतनी ही बढ़ती चली गई और मिस्री लोग इस्राएली लोगों से अधिकाधिक भयभीत होते गए। [13]इसलिए मिस्र के लोगों ने इस्राएली लोगों को और भी अधिक कठिन काम करने को विवश किया।

[14]मिस्री लोगों ने इस्राएली लोगों का जीवन दूभर कर दिया। उन्होंने इस्राएली लोगों को ईंट-गारा बनाने का बहुत कड़ा काम करने के लिए विवश किया। उन्होंने उन्हे खेतों में भी बहुत कड़ा काम करने को विवश किया। वे जो कुछ करते थे उन्हे कठिन परिश्रम के साथ करने को विवश किया।

यहोवा की अनुगामी धाइयाँ

[15]वहाँ शिप्रा और पूआ नाम की दो धाइयाँ थीं। ये धाइयाँ इस्राएली स्त्रियों के बच्चों का जन्म देने में सहायता करती थीं। मिस्र के राजा ने धाइयों से बातचीत की। [16]राजा ने कहा, "तुम हिब्रू* स्त्रियों को बच्चा जनने में सहायता करती रहोगी। यदि लड़की पैदा हो तो उसे जीवित रहने दो। किन्तु यदि लड़का पैदा हो तो तुम लोग उसे मार डालो।"

[17]किन्तु धाइयों ने परमेश्वर पर विश्वास* किया। इसलिए उन्होंने मिस्र के राजा के आदेश का पालन नहीं किया। उन्होंने सभी लड़कों को जीवित रहने दिया।

[18]मिस्र के राजा ने धाइयों को बुलाया और कहा, "तुम लोगों ने ऐसा क्यों किया? तुम लोगों ने पुत्रों (लड़कों) को क्यों जीवित रहने दिया?"

वंश एक व्यक्ति के बच्चे और उनके भविष्य के परिवार।

हिब्रू इस्राएल के लोग। इस नाम का अर्थ एवर के वंशज भी हो सकता है या फरात नदी के पूर्व के लोग। देखें उत्पत्ति 10:25-31

विश्वास शाब्दिक "डरी" या "सम्मान दिया।"

[19]धाइयों ने फ़िरौन से कहा, "हिब्रू स्त्रियाँ मिस्री स्त्रियों से अधिक बलवान हैं। उनकी सहायता के लिए हम लोगों के पहुँचने से पहले ही वे बच्चों को जन्म दे देती हैं।" [20–21](परमेश्वर धाइयों पर कृपालु था क्योंकि वे परमेश्वर से डरती थीं। इसलिए परमेश्वर उनके लिए अच्छा रहा और उन्हें अपने परिवार बनाने दिया और हिब्रू लोग अधिक बच्चे उत्पन्न करते रहे और वे बहुत शक्तिशाली हो गए।)

[22]इसलिए फ़िरौन ने अपने सभी लोगों को यह आदेश दिया: "जब कभी पुत्र पैदा हो तब तुम अवश्य ही उसे नील नदी में फेंक दो। किन्तु सभी पुत्रियों को जीवित रहने दो।"

बालक मूसा

2 लेवी के परिवार का एक व्यक्ति वहाँ था। उसने लेवी के परिवार की ही एक स्त्री से विवाह किया। [2]वह स्त्री गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। माँ ने देखा कि बच्चा अत्याधिक सुन्दर है और उसने उसे तीन महीने तक छिपाए रखा। [3]किन्तु तीन महीने बाद माँ डरी कि बच्चा ढूँढ लिया जायेगा तब वह मार डाला जाएगा, क्योंकि वह लड़का है। इसलिए उसने एक टोकरी बनाई और उस पर तारकोल का लेप इस प्रकार किया कि वह तैर सके। उसने बच्चे को टोकरी में रख दिया। तब उसने टोकरी को नदी के किनारे लम्बी घास में रख दिया। [4]बच्चे की बहन वहाँ रुकी और उसकी रखवाली करती रही। वह देखना चाहती थी कि बच्चे के साथ क्या घटित होगा।

[5]उसी समय फ़िरौन की पुत्री नहाने के लिए नदी को गई। उसकी सखियाँ नदी के किनारे टहल रही थीं। उसने ऊँची घास में टोकरी देखी। उसने अपने दासियों में से एक को जाकर उसे लाने को कहा। [6]राजा की पुत्री ने टोकरी को खोला और लड़के को देखा। बच्चा रो रहा था और उसे उस पर दया आ गई। उसने कहा, यह हिब्रू बच्चों में से एक है।

[7]बच्चे की बहन अभी तक छिपी थी। तब वह खड़ी हुई और फ़िरौन* की पुत्री से बोली, "क्या आप चाहती हैं कि मैं बच्चे की देखभाल करने में आपकी सहायता के लिए एक हिब्रू स्त्री जाकर ढूँढ लाऊँ?"

[8]फ़िरौन की पुत्री ने कहा, "धन्यवाद हो।"

इसलिए लड़की गई और बच्चे की अपनी माँ को ही ढूँढ लाई।

[9]फ़िरौन की पुत्री ने कहा, "इस बच्चे को ले जाओ और मेरे लिए इसे पालो। इस बच्चे को अपना दूध पिलाओ मैं तुम्हे वेतन दूँगी।"

सो उस स्त्री ने अपने बच्चे को ले लिया और उसका पालन पोषण किया। [10]बच्चा बड़ा हुआ और कुछ समय बाद वह स्त्री उस बच्चे को फ़िरौन की पुत्री के पास लाई। फ़िरौन की पुत्री ने अपने पुत्र के रूप में उस बच्चे को अपना लिया। फ़िरौन की पुत्री ने उसका नाम मूसा* रखा। क्योंकि उसने उसे पानी से निकाला था।

मूसा अपने लोगों की सहायता करता है

[11]मूसा बड़ा हुआ और युवक हो गया। उसने देखा कि उसके हिब्रू लोग अत्यन्त कठिन काम करने के लिए विवश किए जा रहे हैं। एक दिन मूसा ने एक मिस्री व्यक्ति द्वारा एक हिब्रू व्यक्ति को पीटते देखा। [12]इसलिए मूसा ने चारों ओर नज़र घुमाई और देखा कि कोई देख नहीं रहा है। सो मूसा ने मिस्री को मार डाला और उसे रेत में छिपा दिया।

[13]अगले दिन मूसा ने दो हिब्रू व्यक्तियों को परस्पर लड़ते देखा। मूसा ने देखा कि एक व्यक्ति गलती पर था। मूसा ने उस आदमी से कहा, "तुम अपने पड़ोसी को क्यों मार रहे हो?"

[14]उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "क्या किसी ने कहा है कि तुम हमारे शासक और न्यायाधीश बनो? नहीं! मुझे बताओ कि क्या तुम मुझे भी उसी प्रकार मार डालोगे जिस प्रकार तुमने कल* मिस्री को मार डाला?"

तब मूसा डरा। मूसा ने मन ही मन सोचा, "अब हर एक व्यक्ति जानता है कि मैंने क्या किया है।"

[15]फ़िरौन ने सुना कि मूसा ने मिस्री की हत्या की है मूसा ने जो कुछ किया फ़िरौन ने उसके बारे में

फ़िरौन मिस्र के राजाओं के लिए यह शब्द एक पदवी के रूप में प्रयोग में लाया जाता था। इस शब्द का अर्थ है 'शाही घराना' है।

मूसा मूसा उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "खींचना" या "बाहर निकालना" है।

कल यह शब्द प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है किन्तु हिब्रू पाठ में नहीं है।

सुना, इसलिए उसने मूसा को मार डालने का निश्चय किया। किन्तु मूसा फ़िरौन की पकड़ से निकल भागा।

मिद्यान में मूसा

मूसा मिद्यान देश में गया। उस प्रदेश में मूसा एक कुएँ के समीप रुका। [16]मिद्यान में एक याजक था जिसकी सात पुत्रियाँ थीं। एक दिन उसकी पुत्रियाँ अपने पिता की भेड़ों के लिए पानी लेने उसी कुएँ पर गई। वे कठौती को पानी से भरने का प्रयत्न कर रही थीं। [17]किन्तु कुछ चरवाहों ने उन लड़कियों को भगा दिया और पानी नहीं लेने दिया। इसलिए मूसा ने लड़कियों की सहायता की और उनके जानवरों को पानी दिया।

[18]तब वे अपने पिता रुएल* के पास लौट गई। उनके पिता ने उनसे पूछा, "आज तुम लोग क्यों जल्दी घर चली आई?"

[19]लड़कियों ने उत्तर दिया, "चरवाहों ने हम लोगों को भगाना चाहा। किन्तु एक मिस्री व्यक्ति ने हम लोगों की सहायता की। उसने हम लोगों के लिए पानी निकाला और हम लोगों के जानवरों को दिया।"

[20]इसलिए रुएल ने अपनी पुत्रियों से कहा, "यह व्यक्ति कहाँ है? तुम लोगों ने उसे छोड़ा क्यों? उसे यहाँ बुलाओ और हम लोगों के साथ उसे भोजन करने दो।"

[21]मूसा उस आदमी के साथ ठहरने से प्रसन्न हुआ। और उस आदमी ने अपनी पुत्री सिप्पोरा को मूसा की पत्नी के रूप में उसे दे दिया। [22]सिप्पोरा ने एक पुत्र को जन्म दिया। मूसा ने अपने पुत्र का नाम गेर्शोम* रखा। मूसा ने अपने पुत्र को यह नाम इसलिए दिया कि वह उस देश में अजनबी था जो उसका अपना नहीं था।

परमेश्वर ने इस्राएल को सहायता देने का निश्चय किया

[23]लम्बा समय बीता और मिस्र का राजा मर गया। इस्राएली लोगों को जब भी कठिन परिश्रम करने के लिए विवश किया जाता था। वे सहायता के लिए पुकारते थे। और परमेश्वर ने उनकी पुकार सुनी। [24]परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाएँ सुनीं और उस वाचा को याद किया जो उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ की थी। [25]परमेश्वर ने इस्राएली लोगों के कष्टों को देखा और उसने सोचा कि वे शीघ्र ही उनकी सहायता करेगा।

जलती हुई झाड़ी

3 मूसा के ससुर का नाम यित्रो* था। यित्रो मिद्यान का याजक था। मूसा यित्रो की भेड़ों का चरवाहा था। एक दिन मूसा भेड़ों को मरुभूमि के पश्चिम की ओर ले गया। मूसा होरेब नाम के उस एक पहाड़ को गया, जो परमेश्वर का पहाड़ था। [2]मूसा ने उस पहाड़ पर यहोवा के दूत को एक जलती हुई झाड़ी में देखा। यह इस प्रकार घटित हुआ। मूसा ने एक झाड़ी को जलते हुए देखा जो भस्म नहीं हो रही थी। [3]इसलिए मूसा ने कहा कि मैं झाड़ी के निकट जाऊँगा और देखूँगा कि बिना राख हुए कोई झाड़ी कैसे जलती रह सकती है।

[4]यहोवा ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है। इसलिए परमेश्वर ने झाड़ी से मूसा को पुकारा। उसने कहा, "मूसा, मूसा!"

और मूसा ने कहा, "हाँ, यहोवा।"

[5]तब यहोवा ने कहा, "निकट मत आओ। अपनी जूतियाँ उतार लो। तुम पवित्र भूमि पर खड़े हो। [6]मैं तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर हूँ। मैं इब्राहीम का परमेश्वर इसहाक का परमेश्वर तथा याकूब का परमेश्वर हूँ।"

मूसा ने अपना मुँह ढक लिया क्योंकि वह परमेश्वर को देखने से डरता था।

[7]तब यहोवा ने कहा, "मैंने उन कष्टों को देखा है जिन्हें मिस्र में हमारे लोगों ने सहा है और मैंने उनका रोना भी सुना है जब मिस्री लोग उन्हें चोट पहुँचाते हैं। मैं उनकी पीड़ा के बारे में जानता हूँ। [8]मैं अब जाऊँगा और मिस्रियों से अपने लोगों को बचाऊँगा। मैं उन्हें उस देश से निकालूँगा और उन्हें मैं एक अच्छे देश में ले जाऊँगा जहाँ वे कष्टों से मुक्त हो सकेंगे। जो अनेक अच्छी चीज़ों से भरा पड़ा है।* उस प्रदेश में विभिन्न लोग रहते हैं। कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी हिब्बी और यबूसी। [9]मैंने इस्राएल के लोगों की पुकार सुनी है। मैंने देखा है कि

रुएल रुएल को यित्रो भी कहा जाता है।

गेर्शोम यह नाम उन हिब्रू शब्दों के समान है जिसका अर्थ है "वहाँ एक अजनबी।"

यित्रो यित्रो को रुएल भी कहा जाता है।

जो … पड़ा है शाब्दिक वह प्रदेश जिसमें मधु और दूध की नदियाँ बहती हों।

मिस्रियों ने किस तरह उनके लिए जीवन को कठिन कर दिया है। [10]इसलिए अब मैं तुमको फ़िरौन के पास भेज रहा हूँ। जाओ! मेरे लोगों अर्थात् इस्राएल के लोगों को मिस्र से बाहर लाओ।"

[11]किन्तु मूसा ने परमेश्वर से कहा, "मैं कोई महत्वपूर्ण आदमी नहीं हूँ। मैं ही वह व्यक्ति क्यों हूँ जो फ़िरौन के पास जाए और इस्राएल के लोगों को मिस्र के बाहर निकाल कर ले चले?"

[12]परमेश्वर ने कहा, "क्योंकि मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुमको भेज रहा हूँ, यह प्रमाण होगा: लोगों को मिस्र के बाहर निकाल लाने के बाद तुम आओगे और इस पर्वत पर मेरी उपासना करोगे।"

[13]तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, "किन्तु यदि मैं इस्राएल के लोगों के पास जाऊँगा और उनसे कहूँगा, 'तुम लोगों के पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम लोगों के पास भेजा है,' 'तब लोग पूछेंगे, उसका क्या नाम है?' मैं उनसे क्या कहूँगा?"

[14]तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "उनसे कहो, 'मैं जो हूँ सो हूँ।'* जब तुम इस्राएल के लोगों के पास जाओ, तो उनसे कहो, 'मैं हूँ' जिसने मुझे तुम लोगों के पास भेजा है।"

[15]परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, "लोगों से तुम जो कहोगे वह यह है की: 'यहवे* तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर है। मेरा नाम सदा यहोवा रहेगा। इसी रूप में लोग आगे पीढ़ी दर पीढ़ी मुझे जानेंगे।' लोगों से कहो, 'यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।'"

[16]यहोवा ने यह भी कहा, "जाओ और इस्राएल के बुज़ुर्गों (नेताओं) को इकट्ठा करो और उनसे कहो, 'तुम्हारे, पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा, मेरे सामने प्रकट हुआ। इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर ने मुझसे बातें कीं। यहोवा ने कहा है: मैंने तुम लोगों के बारे में सोचा है और उस सबके बारे में भी जो तुम लोगों के साथ मिस्र में घटित हुआ है। [17]मैंने निश्चय किया है कि मिस्र में तुम लोग जो कष्ट सह रहे हो उससे तुम्हें बाहर निकालूँ। मैं तुम लोगों को उस देश में ले चलूँगा जो अनेक लोगों अर्थात्: कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी का है। मैं तुम लोगों को ऐसे अच्छे देश को ले जाऊँगा जो बहुत अच्छी चीज़ों से भरा पूरा है।

[18]"बुज़ुर्ग (नेता) तुम्हारी बातें सुनेंगे और तब तुम और बुज़ुर्ग (नेता) मिस्र के राजा के पास जाओगे। तुम उससे कहोगे 'हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा है। हमारा परमेश्वर हम लोगों के पास आया था। उसने हम लोगों से तीन दिन तक मरुभूमि में यात्रा करने के लिए कहा है। वहाँ हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा को निश्चय ही बलियाँ चढायेंगे।'

[19]"किन्तु मैं जानता हूँ कि मिस्र का राजा तुम लोगों को जाने नहीं देगा। केवल एक महान शक्ति ही तुम लोगों को जाने देने के लिए उसे विवश करेगी। [20]इसलिए मैं अपनी महान शक्ति का उपयोग मिस्र के विरुद्ध करूँगा। मैं उस देश में चमत्कार होने दूँगा। जब मैं ऐसा करूँगा तो वह तुम लोगों को जाने देगा। [21]और मैं मिस्री लोगों को इस्राएली लोगों के प्रति कृपालु बनाऊँगा। इसलिए जब तुम लोग विदा होंगे तो वे तुम्हें भेंट देंगे।

[22]"हर एक हिब्रू स्त्री अपने मिस्री पड़ोसी से तथा अपने घर में रहने वालों से मांगेगी और वे लोग उसे भेंट देंगे। तुम्हारे लोग भेंट में चाँदी, सोना और सुन्दर वस्त्र पाएंगे। जब तुम लोग मिस्र को छोड़ोगे तुम लोग उन भेटों को अपने बच्चों को पहनाओगे। इस प्रकार तुम लोग मिस्रियों का धन ले आओगे।"

मूसा के लिए प्रमाण

4 तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, "किन्तु इस्राएल के लोग मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे जब मैं उनसे कहूँगा कि तूने मुझे भेजा है। वे कहेगें, 'यहोवा ने तुमसे बातें नहीं कीं।'"

[2]किन्तु परमेश्वर ने मूसा से कहा, "तुमने अपने हाथ में क्या ले रखा है?"

मूसा ने उत्तर दिया, "यह मेरी टहलने की लाठी है।"

[3]तब परमेश्वर ने कहा, "अपनी लाठी को जमीन पर फेंको।"

इसलिए मूसा ने अपनी लाठी को जमीन पर फेंका और लाठी एक साँप बन गया। मूसा डरा और इससे

मैं जो हूँ सो हूँ हिब्रू शब्द "यहवे (यहोवा) नाम की तरह है।"
यहवे इस हिब्रू नाम का अनुवाद प्राय: "यहोवा" किया जाता है। यह नाम उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "वह है।" या "वह पदार्थों को अस्तित्व देता है।"

दूर भागा। [4]किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, "आगे बढ़ो और साँप की पूँछ पकड़ लो।"

इसलिए मूसा आगे बढ़ा और उसने साँप की पूँछ पकड़ लिया। जब मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन गया। [5]तब परमेश्वर ने कहा, "अपनी लाठी का इसी प्रकार उपयोग करो और लोग विश्वास करेंगे कि तुमने यहोवा अर्थात् अपने पूर्वजों के परमेश्वर, इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर तथा याकूब के परमेश्वर को देखा है।"

[6]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं तुमको दूसरा प्रमाण दूँगा। तुम अपने हाथ को अपने लबादे के अन्दर करो।"

इसलिए मूसा ने अपने लबादे को खोला और हाथ को अन्दर किया। तब मूसा ने अपने हाथ को लबादे से बाहर निकाला और वह बदला हुआ था। उसका हाथ बर्फ की तरह सफेद दाग़ों से ढका था।

[7]तब परमेश्वर ने कहा, "अब तुम अपना हाथ फिर लबादे के भीतर रखो।" इसलिए मूसा ने अपना हाथ अपने लबादे के भीतर फिर किया। तब मूसा ने अपना हाथ बाहर निकाला, और उसका हाथ बदल गया था। अब उसका हाथ पहले की तरह ठीक हो गया था।

[8]तब परमेश्वर ने कहा, "यदि लोग तुम्हारा विश्वास लाठी का उपयोग करने पर न करें, तो वे तुम पर तब विश्वास करेंगे जब तुम इस चिन्ह को दिखाओगे। [9]यदि वे दोनों चीज़ों को दिखाने के बाद भी विश्वास न करें तो तुम नील नदी से कुछ पानी लेना। पानी को जमीन पर गिराना शुरू करना और ज्योंही यह जमीन को छुएगा, खून बन जाएगा।"

[10]किन्तु मूसा ने यहोवा से कहा, "किन्तु हे यहोवा, मै सच कहता हूँ मैं कुशल वक्ता नहीं हूँ। मैं लोगों से कुशलतापूर्वक बात करने के योग्य नहीं हुआ और अब तुझ से बातचीत करने के बाद भी मैं कुशल वक्ता नहीं हूँ। तू जानता हैं कि मैं धीरे-धीरे बोलता हूँ* और उत्तम शब्दों का उपयोग नहीं करता।"

[11]तब यहोवा ने उससे कहा, "मनुष्य का मुँह किसने बनाया? और एक व्यक्ति को कौन बोलने और सुनने में असमर्थ बना सकता है? मनुष्य को कौन देखनेवाला और अन्धा बना सकता है? यह मैं हूँ जो इन सभी चीज़ों को कर सकता हूँ। मैं यहोवा हूँ। [12]इसलिए जाओ। जब तुम बोलोगे, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें बोलने के लिए शब्द दूँगा।"

[13]किन्तु मूसा ने कहा, "मेरे यहोवा, मैं दूसरे व्यक्ति को भेजने के लिए प्रार्थना करता हूँ मुझे न भेज।"

[14]यहोवा मूसा पर क्रुद्ध हुआ। यहोवा ने कहा, "मैं तुमको सहायता के लिये एक व्यक्ति दूँगा। मैं तुम्हारे भाई हारून का उपयोग करूँगा। वह कुशल वक्ता है। हारून पहले ही तुम्हारे पास आ रहा था। वह तुमको देखकर बहुत प्रसन्न होगा। [15]वह तुम्हारे साथ फ़िरौन के पास जाएगा। मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या कहना है। तब तुम हारून को बताओगे। हारून फ़िरौन से कहने के लिए उचित शब्द चुनेगा। [16]हारून ही तुम्हारे लिए लोगों से बात करेगा। तुम उसके लिए महान राजा के रूप में रहोगे, और वह तुम्हारा अधिकृत वक्ता होगा।* [17]इसलिए जाओ और अपनी लाठी साथ ले जाओ। अपनी लाठी और दूसरे चमत्कारों का उपयोग लोगों को यह दिखाने के लिए करो कि मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

मूसा मिस्र लौटता है

[18]तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा। मूसा ने यित्रो से कहा, "मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे मिस्र में अपने लोगों के पास जाने दे। मैं यह देखना चाहता हूँ कि क्या वे अभी तक जीवित हैं।"

यित्रो ने मूसा से कहा, "तुम शान्तिपूर्वक जा सकते हो।"

[19]उस समय जब मूसा मिद्यान में ही था, परमेश्वर ने उससे कहा, "इस समय तुम्हारे लिए मिस्र को जाना सुरक्षित है। जो व्यक्ति तुमको मारना चाहते थे वे मर चुके हैं।"

[20]इसलिए मूसा ने अपनी पत्नी और अपने पुत्रों को लिया और उन्हें गधे पर बिठाया। तब मूसा ने मिस्र देश की वापसी यात्रा की। मूसा उस लाठी को अपने साथ ले गया जिसमें परमेश्वर की शक्ति थी।

[21]जिस समय मूसा मिस्र की वापसी यात्रा पर था, परमेश्वर उससे बोला। परमेश्वर ने कहा, "जब तुम फ़िरौन से बात करो तो उन सभी चमत्कारों को दिखाना।

मैं धीरे ... हूँ या "मैं हकलाता हूँ और साफ़ नहीं बोलता।"

तुम्हारा ... होगा शाब्दिक "वह तुम्हारी वाणी होगा, और तुम उसके परमेश्वर होगे।"

याद रखना जिन्हें दिखाने की शक्ति मैंने तुम्हे दी है। किन्तु फ़िरौन को मैं बहुत हठी बना दूँगा। वह लोगों को जाने नहीं देगा। [22]तब तुम फ़िरौन से कहना: [23]यहोवा कहता है, 'इस्राएल मेरा पहलौठा पुत्र है और मैं तुम से कहता हूँ कि मेरे पुत्र को जाने दो तथा मेरी उपासना करने दो। यदि तुम इस्राएल को जाने से मना करते हो तो मैं तुम्हारे पहलौठे पुत्र को मार डालूँगा।'"

मूसा के पुत्र का ख़तना

[24]मूसा मिस्र की अपनी यात्रा करता रहा। यात्रियों के लिए बने एक स्थान पर वह सोने के लिए रुका। यहोवा इस स्थान पर मूसा से मिला और उसे मार डालने की कोशिश की। [25]किन्तु सिप्पोरा ने पत्थर का एक तेज चाकू लिया और अपने पुत्र का खतना किया। उसने चमड़े को लिया और उसके पैर छुए। तब उसने मूसा से कहा, "तुम मेरे खून बहाने वाले पति हो।" [26]सिप्पोरा ने यह इसलिए कहा कि उसे अपने पुत्र का ख़तना करना पड़ा था। इसलिए परमेश्वर ने मूसा को क्षमा किया और उसे मारा नहीं।

परमेश्वर के सामने मूसा और हारून

[27]यहोवा ने हारून से बात की थी। यहोवा ने उससे कहा था, "मरुभूमि में जाओ और मूसा से मिलो।" इसलिए हारून गया और परमेश्वर के पहाड़* पर मूसा से मिला। जब हारून ने मूसा को देखा, उसने उसे चूमा। [28]मूसा ने हारून को यहोवा द्वारा भेजे जाने का कारण बताया और मूसा ने हारून को उन चमत्कारों और उन संकेतों को भी समझाया जिन्हें उसे प्रमाण रूप में प्रदर्शित करना था। मूसा ने हारून को वह सब कुछ बताया जो यहोवा ने कहा था।

[29]इस प्रकार मूसा और हारून गए और उन्होंने इस्राएल के लोगों के सभी बुज़ुर्गों (नेताओं) को इकट्ठा किया। [30]तब हारून ने लोगों से कहा। उसने लोगों को वे सारी बातें बताई जो यहोवा ने मूसा से कहीं थीं। तब मूसा ने सब लोगों को दिखाने के लिए सारे प्रमाणों को करके दिखाया। [31]लोगों ने विश्वास किया कि परमेश्वर ने मूसा को भेजा है। उन्होंने झुक कर प्रणाम किया और परमेश्वर की उपासना की, क्योंकि वे जान गए कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों की सहायता करने आ गया है और उन्होंने परमेश्वर की इसलिए उपासना की क्योंकि वे जान गए कि यहोवा ने उनके कष्टों को देखा है।

मूसा और हारून फ़िरौन के सामने

5 लोगों से बात करने के बाद मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए। उन्होंने कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मेरे लोगों को मरुभूमि में जाने दे जिससे वे मेरे लिए उत्सव कर सकें।'"

[2]किन्तु फ़िरौन ने कहा, "यहोवा कौन है? मैं उसका आदेश क्यों मानूँ? मैं इस्राएलियों को क्यों जाने दूँ? मैं उसे नहीं जानता जिसे तुम यहोवा कहते हो। इसलिए मैं इस्रााएलियों को जाने देने से मना करता हूँ।"

[3]तब हारून और मूसा ने कहा, "हिब्रूओं के परमेश्वर ने हम लोगों को दर्शन दिया है। इसलिए हम लोग आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हम लोगों को तीन दिन तक मरुभूमि में यात्रा करने दें। वहाँ हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा को एक बलि चढ़ाएंगे। यदि हम लोग ऐसा नहीं करेंगे तो वह क्रुद्ध हो जायेगा और हमें नष्ट कर देगा। वह हम लोगों को रोग या तलवार से मार सकता है।"

[4]किन्तु फ़िरौन ने उनसे कहा, "मूसा और हारून, तुम लोगों को परेशान कर रहे हैं। तुम उन्हें काम करने से हटा रहे हो। उन दासों को काम पर लौटने को कहो। [5]यहाँ बहुत से श्रमिक हैं तुम लोग उन्हें अपना काम करने से रोक रहे हो।"

फ़िरौन द्वारा लोगों को दण्ड

[6]ठीक उसी दिन फ़िरौन ने इस्राएल के लोगों के काम को और अधिक कड़ा बनाने का आदेश दिया। फ़िरौन ने दास स्वामियों से कहा, [7]"तुम ने लोगों को सदा भूसा दिया है जिसका उपयोग वे ईंट बनाने में करते हैं। किन्तु अब उनसे कहो कि वे ईंटें बनाने के लिए भूसा स्वयं जाकर इकट्ठा करें। [8]किन्तु वे संख्या में अब भी उतनी ही ईंटें बनाएं जितनी वे पहले बनाते थे। वे आलसी हो गए हैं। यही कारण है कि वे जाने की माँग कर रहे हैं। उनके पास करने के लिए काफी काम नहीं है इसलिए वे मुझसे माँग कर रहे हैं कि मैं उन्हें उनके परमेश्वर को बलि चढ़ाने दूँ। [9]इसलिए इन लोगों से अधिक कड़ा काम

परमेश्वर का पहाड़ अर्थात् "होरेब पहाड़" जो "सिनै का पहाड़" भी कहा जाता है।

कराओ। इन्हें काम में लगाए रखो। तब उनके पास इतना समय ही नहीं होगा कि वे मूसा की झूठी बातें सुनें।"

[10]इसलिए मिस्री दास स्वामी और हिब्रू कार्य-प्रबन्धक इस्राएल के लोगों के पास गए और उन्होंने कहा, "फ़िरौन ने निर्णय किया है कि वह तुम लोगों को तुम्हारी ईंटों के लिए तुम्हें भूसा नहीं देगा। [11]तुम लोगों को स्वयं जाना होगा और अपने लिए भूसा स्वयं इकट्ठा करना होगा। इसलिए जाओ और भूसा जुटाओ। किन्तु तुम लोग उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।"

[12]इस प्रकार हर एक आदमी मिस्र में भूसा खोजने के लिए चारों ओर गया। [13]दास स्वामी लोगों को अधिक कड़ा काम करने के लिए विवश करते रहे। वे लोगों को उतनी ही ईंटें बनाने के लिए विवश करते रहे जितनी वे पहले बनाया करते थे। [14]मिस्री दास स्वामियों ने हिब्रू कार्य-प्रबन्धक चुन रखे थे और उन्हें लोगों के काम का उत्तरदायी बना रखा था। मिस्री दास स्वामी इन कार्य-प्रबन्धकों को पीटते थे और उनसे कहते थे, "तुम उतनी ही ईंटें क्यों नहीं बनाते जितनी पहले बना रहे थे। जब तुम यह काम पहले कर सकते थे तो तुम इसे अब भी कर सकते हो।"

[15]तब हिब्रू कार्य-प्रबन्धक फ़िरौन के पास गए। उन्होंने शिकायत की और कहा, "आप अपने सेवकों के साथ ऐसा बरताव क्यों कर रहे हैं? [16]आपने हम लोगों को भूसा नहीं दिया। किन्तु हम लोगों को आदेश दिया गया कि उतनी ही ईंटें बनाएं जितनी पहले बनती थीं और अब हम लोगों के स्वामी हमे पीटते हैं। ऐसा करने में आपके लोगों की ग़लती है।"

[17]फ़िरौन ने उत्तर दिया, "तुम लोग आलसी हो। तुम लोग काम करना नहीं चाहते। यही कारण है कि तुम लोग माँग करते हो कि मैं तुम लोगों को जाने दूँ और यही कारण है कि तुम लोग यह स्थान छोड़ना चाहते हो और यहोवा को बलि चढ़ाना चाहते हो। [18]अब काम पर लौट जाओ! हम तुम लोगों को कोई भूसा नहीं देंगे। किन्तु तुम लोग उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाया करते थे।"

[19]हिब्रू कार्य-प्रबन्धक समझ गए कि वे परेशानी में पड़ गए हैं। कार्य-प्रबन्धक जानते थे कि वे उतनी ईंटें नहीं बना सकते जितनी बीते समय में बनाते थे।

[20]जब वे फ़िरौन से मिलने के बाद जा रहे थे, वे मूसा, और हारून के पास से निकले। मूसा और हारून उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। [21]इसलिए उन्होंने मूसा और हारून से कहा, "तुम लोगों ने बुरा किया कि तुम ने फ़िरौन से हम लोगों को जाने देने के लिए कहा। यहोवा तुम को दण्ड दे क्योंकि तुम लोगों ने फ़िरौन और उसके प्रशासकों में हम लोगों के प्रति घृणा उत्पन्न की। तुम ने हम लोगों को मारने का एक बहाना उन्हें दिया है।"

मूसा की परमेश्वर से शिकायत

[22]तब मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की और कहा, "हे स्वामी, तूने अपने लोगों के लिए यह बुरा काम क्यों किया है? तूने हमको यहाँ क्यों भेजा है? [23]मैं फ़िरौन के पास गया और जो तूने कहने को कहा उसे मैंने उससे कहा। किन्तु उस समय से वह लोगों के प्रति अधिक क्रूर हो गया। और तूने उनकी सहायता के लिए कुछ नहीं किया है।"

6 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अब तुम देखोगे कि फ़िरौन का मैं क्या करता हूँ। मैं अपनी महान शक्ति का उपयोग उसके विरोध में करूँगा और वह मेरे लोगों को जाने देगा। वह उन्हें छोड़ने के लिए इतना अधिक आतुर होगा कि वह स्वयं उन्हें जाने के लिए विवश करेगा।"

[2]तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, [3]"मै यहोवा हूँ। मैं इब्राहीम, इसहाक और याकूब के सामने प्रकट हुआ था। उन्होंने मुझे एल-सद्दायी (सर्वशक्तिमान परमेश्वर) कहा। मैंने उनको यह नहीं बताया था कि मेरा नाम यहोवा (परमेश्वर) है। [4]मैंने उनके साथ एक साक्षीपत्र बनाया मैंने उनको कनान प्रदेश देने का वचन दिया। वे उस प्रदेश में रहते थे, किन्तु वह उनका अपना प्रदेश नहीं था। [5]अब मैं इस्राएल के लोगों के कष्ट के बारे में जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि वे मिस्र के दास हैं और मुझे अपना साक्षीपत्र याद है। [6]इसलिए इस्राएल के लोगों से कहो कि मैं उनसे कहता हूँ, 'मैं यहोवा हूँ। मैं तुम लोगों की रक्षा करूँगा। मैं तुम लोगों को स्वतन्त्र करूँगा। तुम लोग मिस्रियों के दास नहीं रहोगे। मैं अपनी महान शक्ति का उपयोग करूँगा और मिस्रियों को भयंकर दण्ड दूँगा। तब मैं तुम लोगों को बचाऊँगा। [7]तुम लोग मेरे लोग होगे और मैं तुम लोगों का परमेश्वर। मैं यहोवा तुम लोगों का परमेश्वर हूँ और जानोगे कि मैंने तुम लोगों को मिस्र की दासता से मुक्त किया। [8]मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से बड़ी प्रतिज्ञा

की थी। मैंने उन्हें विशेष प्रदेश देने का वचन दिया था। इसलिए मैं तुम लोगों को उस प्रदेश तक ले जाऊँगा। मैं वह प्रदेश तुम लोगों को दूँगा। वह तुम लोगों का होगा। मैं यहोवा हूँ।'"

[9]इसलिए मूसा ने यह बात इस्राएल के लोगों को बताई। किन्तु लोग इतना कठिन श्रम कर रहे थे कि वे मूसा के प्रति धीरज न रख सकें। उन्होंने उसकी बात नहीं सुनी।

[10]तब यहोवा ने मूसा से कहा, [11]"जाओ और फ़िरौन से कहो कि वह इस्राएल के लोगों को इस देश से निश्चय ही जाने दे।"

[12]किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, "इस्राएल के लोग मेरी बात सुनना भी नहीं चाहते हैं इसलिए निश्चय ही फ़िरौन भी सुनना नहीं चाहेगा। मैं बहुत खराब वक्ता हूँ!*"

[13]किन्तु यहोवा ने मूसा और हारून से बातचीत की। परमेश्वर ने उन्हें जाने और इस्राएल के लोगों से बातें करने का आदेश दिया और यह भी आदेश दिया कि वे जाएं और फ़िरौन से बातें करें। परमेश्वर ने आदेश दिया कि वे इस्राएल के लोगों को मिस्र के बाहर ले जाए।

इस्राएल के कुछ परिवार

[14]इस्राएल के परिवारों के प्रमुख लोगों के नाम हैं: इस्राएल के पहले पुत्र रूबेन के चार पुत्र थे। वे थे हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्म्मी। [15]शिमोन के पुत्र थे: यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर और शाउल। शाउल एक कनानी स्त्री का पुत्र था। [16]लेवी एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। लेवी के पुत्र थे गेर्शोन, कहात और मरारी। [17]गेर्शोन के दो पुत्र थे–लिबनी और शिमी। [18]कहात एक सौ तैंतीस वर्ष जीवित रहा। कहात के पुत्र थे अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल। [19]मरारी के पुत्र थे महली और मूशी। ये सभी परिवार इस्राएल के पुत्र लेवी के थे।

[20]अम्राम एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। अम्राम ने अपने पिता की बहन योकेबेद से विवाह किया। अम्राम और योकेबेद ने हारून और मूसा को जन्म दिया। [21]यिसहार के पुत्र थे कोरह नेपग और जिक्री। [22]उज्जीएल के पुत्र थे मीशाएल एलसापान और सित्री।

[23]हारून ने ऐलीशेबा से विवाह किया। (एलीशेबा अम्मीनादाब की पुत्री थी और नहशोन की बहन।) हारून और एलीशेबा ने नादाब, अबीहू, ऐलाजार, और ईतामार को जन्म दिया। [24]कोरह के पुत्र अर्थात् कोरही थे: अस्सीर एलकाना और अबीआसाप। [25]हारून के पुत्र एलाजार ने पूतीएल की पुत्री से विवाह किया और उन्होंने पीनहास को जन्म दिया। ये सभी लोग इस्राएल के पुत्र लेवी से थे।

[26]इस प्रकार हारून और मूसा इसी परिवार समूह से थे और ये ही वे व्यक्ति हैं जिनसे परमेश्वर ने बातचीत की और कहा, "मेरे लोगों को समूहों* में बाँटकर मिस्र से निकालो।" [27]हारून और मूसा ने ही मिस्र के राजा फ़िरौन से बातचीत की। उन्होंने फ़िरौन से कहा कि वह इस्राएल के लोगों को मिस्र से जाने दे।

यहोवा का मूसा को फिर बुलावा

[28]मिस्र देश में परमेश्वर ने मूसा से बातचीत की। [29]उसने कहा, "मैं यहोवा हूँ। मिस्र के राजा से वे सारी बातें कहो जो मैं तुमसे कहता हूँ।"

[30]किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, "मैं अच्छा वक्ता नहीं हूँ। राजा मेरी बात नहीं सुनेगा।"

7 यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। फ़िरौन के लिए तुम एक महान राजा* की तरह होगे और हारून तुम्हारा अधिकृत वक्ता* होगा। [2]जो आदेश मैं दे रहा हूँ वह सब कुछ हारून से कहो। तब वह वे बातें जो मैं कह रहा हूँ, फ़िरौन से कहेगा और फ़िरौन इस्राएल के लोगों को इस देश से जाने देगा। [3]किन्तु मैं फ़िरौन को हठी बनाऊँगा। वह उन बातों को नहीं मानेगा जो तुम कहोगे। तब मैं मिस्र में बहुत से चमत्कार करूँगा। किन्तु वह फिर भी नहीं सुनेगा। [4]इसलिए तब मैं मिस्र को बुरी तरह दण्ड दूँगा और मैं अपने लोगों को उस देश के बाहर ले चलूँगा। [5]तब मिस्र के लोग जानेंगे कि मैं यहोवा

मैं बहुत खराब वक्ता हूँ या "मैं बोली से विदेशी सा लगता हूँ।" शाब्दिक "मेरे ओंठ ख़तना रहित हैं।" यह एक अलंकार पूर्ण प्रयोग है।

समूहों या "टुकड़ियों।" यह सैनिक परिभाषिक शब्द है और इससे पता चलता है कि इस्राएल सेना के रूप में संगठित था।

महान राजा या "परमेश्वर।"

वक्ता या "नबी।"

हूँ। मैं उनके विरुद्ध हो जाऊँगा, और वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। तब मैं अपने लोगों को उनके देश से बाहर ले जाऊँगा।"

[6]मूसा और हारून ने उन बातों का पालन किया जिन्हें यहोवा ने कहा था। [7]इस समय मूसा अस्सी वर्ष का था और हारून तिरासी का।

मूसा की लाठी का साँप बनना

[8]यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [9]"फ़िरौन तुमसे तुम्हारी शक्ति को प्रमाणित करने के लिए कहेगा। वह तुम्हें चमत्कार दिखाने के लिए कहेगा। तुम हारून से उसकी लाठी ज़मीन पर फेंकने को कहना। जिस समय फ़िरौन देख रहा होगा तभी लाठी साँप बन जाएगी।"

[10]इसलिए मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए और यहोवा की आज्ञा का पालन किया। हारून ने अपनी लाठी नीचे फेंकी। फ़िरौन और उसके अधिकारियों के देखते देखते लाठी साँप बन गयी।

[11]इसलिए फ़िरौन ने अपने गुणी पुरुषों और जादूगरों को बुलाया। इन लोगों ने अपने रहस्य चातुर्य का उपयोग किया और वे भी हारून के समान कर सके। [12]उन्होंने अपनी लाठियाँ जमीन पर फेंकी और वे साँप बन गई। किन्तु हारून की लाठी ने उनकी लाठियों को खा डाला। [13]फ़िरौन ने फिर भी, लोगों का जाना मना कर दिया। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। फ़िरौन ने मूसा और हारून की बात सुनने से मना कर दिया।

पानी का ख़ून बनना

[14]तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "फ़िरौन हठ पकड़े हुए है। फ़िरौन लोगों को जाने से मना करता है। [15]सवेरे फ़िरौन नदी पर जाएगा। उसके साथ नील नदी के किनारे–किनारे जाओ। उस लाठी को अपने साथ ले लो जो साँप बनी थी। [16]उससे यह कहो: 'हिब्रू लोगों के परमेश्वर यहोवा ने हमको तुम्हारे पास भेजा है। यहोवा ने मुझे तुमसे यह कहने को कहा है, मेरे लोगों को मेरी उपासना करने के लिए मरुभूमि में जाने दो। तुमने भी अब तक यहोवा की बात पर कान नहीं दिया है। [17]इसलिए यहोवा कहता है कि, मैं ऐसा करूँगा जिससे तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। जो मैं अपने हाथ की इस लाठी को लेकर नील नदी के पानी पर मारूँगा और नील नदी खून में बदल जाएगी। [18]तब नील नदी की मछलियाँ मर जाएंगी और नदी से दुर्गन्ध आने लगेगी। और मिस्री लोग नदी से पानी नहीं पी पाएँगे।'"

[19]यहोवा ने मूसा को यह आदेश दिया: "हारून से कहो कि वह नदियों, नहरों, झीलों तथा तालाबों सभी स्थानों पर जहाँ मिस्र के लोग पानी एकत्र करते हैं, अपने हाथ की लाठी को बढ़ाए। जब वह ऐसा करेगा तो सारा जल खून में बदल जाएगा। सारा पानी, यहाँ तक कि लकड़ी और पत्थर के घड़ों का पानी भी, खून में बदल जाएगा।"

[20]इसलिए मूसा और हारून ने यहोवा का जैसा आदेश था, वैसा किया। उसने लाठी को उठाया और नील नदी के पानी पर मारा। उसने यह फ़िरौन और उसके अधिकारियों के सामने किया। फिर नदी का सारा जल खून में बदल गया। [21]नदी में मछलियाँ मर गई और नदी से दुर्गन्ध आने लगी। इसलिए मिस्री नदी से पानी नहीं पी सकते थे। मिस्र में सर्वत्र खून था।

[22]जादूगरों ने अपनी जादूगरी दिखाई और उन्होंने भी वैसा ही किया। इसलिए फ़िरौन ने मूसा और हारून को सुनने से इन्कार कर दिया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। [23]फ़िरौन मुड़ा और अपने घर चला गया। फ़िरौन ने, मूसा और हारून ने जो कुछ किया, उसकी उपेक्षा की।

[24]मिस्री नदी से पानी नहीं पी सकते थे। इसलिए पीने के पानी के लिए उन्होंने नदी के चारों ओर कुएँ खोदे।

मेंढक

[25]यहोवा द्वारा नील नदी के बदले जाने के बाद सात दिन बीत गये।

8 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास जाओ और उससे कहो कि यहोवा यह कहता है, 'मेरे आदमियों को मेरी उपासना के लिए जाने दो! [2]यदि फ़िरौन उनको जाने से रोकता है तो मैं मिस्र को मेंढकों से भर दूँगा। [3]नील नदी मेंढकों से भर जाएगी। वे नदी से निकलेंगे और तुम्हारे घरों में घुसेंगे। वे तुम्हारे सोने के कमरों और तुम्हारे बिछौनों में होंगे। मेंढक तुम्हारे अधिकारियों के घरों में, रसोई में और तुम्हारे पानी के घड़ों मे होंगे। [4]मेंढक पूरी तरह तुम्हारे ऊपर, तुम्हारे लोगों के ऊपर और तुम्हारे अधिकारियों के ऊपर होंगे।'"

[5]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून से कहो कि वह अपने हाथ की लाठी को नहरों, नदियों और झीलों के ऊपर उठाए और मेंढक बाहर निकलकर मिस्र देश में भर जाएँगे।"

[6]तब हारून ने मिस्र देश में जहाँ भी जल था उसके ऊपर हाथ उठाया और मेंढक पानी से बाहर आने आरम्भ हो गए और पूरे मिस्र को ढक दिया।

[7]जादूगरों ने भी वैसा ही किया। वे भी मिस्र देश में मेंढक ले आए।

[8]फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फ़िरौन ने कहा, "यहोवा से कहो कि वे मुझ पर तथा मेरे लोगों पर से मेंढकों को हटाएं। तब मैं लोगों को यहोवा के लिए बलि चढ़ाने को जाने दूँगा।"

[9]मूसा ने फ़िरौन से कहा, "मुझे यह बताएं कि आप कब चाहते हैं कि मेंढक चले जाएं। मैं आपके लिए, आपके लोगों के लिए तथा आपके अधिकारियों के लिए प्रार्थना करूँगा। तब मेंढक आपको और आपके घरों को छोड़ देंगे। मेंढ़क केवल नदी में रह जाएंगे। आप कब चाहते हैं कि मेंढक चले जाएं?"

[10]फ़िरौन ने कहा, "कल"

मूसा ने कहा, "जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा। इस प्रकार आप जान जायेंगे कि हमारे परमेश्वर यहोवा के समान कोई अन्य देवता नहीं है। [11]मेंढक आपको, आपके घर को, आपके अधिकारियों को और आपके लोगों को छोड़ देंगे। मेंढक केवल नदी में रह जाएंगे।"

[12]मूसा और हारून फ़िरौन से विदा हुए। मूसा ने उन मेंढको के लिए, जिन्हें फ़िरौन के विरुद्ध यहोवा ने भेजा था, यहोवा को पुकारा। [13]और यहोवा ने वह किया जो मूसा ने कहा था। मेंढक घरों में, घर के आँगनों में और खेतों में मर गए। [14]वे सड़ने लगे और पूरा देश दुर्गन्ध से भर गया। [15]जब फ़िरौन ने देखा कि वे मेंढकों से मुक्त हो गए हैं तो वह फिर हठी हो गया। फ़िरौन ने वैसा नहीं किया जैसा मूसा और हारून ने उससे करने को कहा था। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

जूँएं

[16]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून से कहो कि वह अपनी लाठी उठाए और जमीन पर की धूल पर मारे। मिस्र में सर्वत्र धूल जूँएं बन जाएगीं।"

[17]उन्होंने यह किया। हारून ने अपने हाथ की लाठी को उठाया और जमीन पर धूल में मारा मिस्र में सर्वत्र धूल जूँएं बन गई। जूँएं जानवरों और आदमियों पर छा गई।

[18]जादूगरों ने अपने जादूओं का उपयोग किया और वैसा ही करना चाहा। किन्तु जादूगर धूल से जूँएं न बना सके। जूँएं जानवरों और आदमियों पर छाई रहीं। [19]इसलिए जादूगरों ने फ़िरौन से कहा कि परमेश्वर की शक्ति ने ही यह किया है। किन्तु फ़िरौन ने उनकी सुनने से इन्कार कर दिया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

मक्खियाँ

[20]यहोवा ने मूसा से कहा, "सवेरे उठो और फ़िरौन के पास जाओ। फ़िरौन नदी पर जाएगा। उससे कहो कि यहोवा कह रहा है, 'मेरे लोगों को मेरी उपासना के लिए जाने दो! [21]यदि तुम मेरे लोगों को नहीं जाने दोगे तो तुम्हारे घरों में मक्खियाँ आएँगी। मक्खियाँ तुम्हारे और तुम्हारे अधिकारियों के ऊपर छा जाएंगी। मिस्र के घर मक्खियों से भर जाएंगे। मक्खियाँ पूरी जमीन पर छा जाएंगी।

[22]"'किन्तु मैं इस्राएल के लोगों के साथ वैसा ही बरताव नहीं करूँगा जैसा मिस्री लोगों के साथ करूँगा। जहाँ गोशेन में मेरे लोग रहते हैं वहाँ कोई मक्खी नहीं होगी। इस प्रकार तुम जानोगे कि मैं यहोवा, इस देश में हूँ। [23]अत: मैं कल अपने लोगों के साथ तुम्हारे लोगों से भिन्न बरताव करूँगा। यही मेरा प्रमाण होगा।'"

[24]अत: यहोवा ने वही किया, उसने जो कहा। झुण्ड की झुण्ड मक्खियाँ मिस्र में आई। मक्खियाँ फ़िरौन के घर और उसके सभी अधिकारियों के घर में भरी थीं। मक्खियाँ पूरे मिस्र देश में भरी थीं। मक्खियाँ देश को नष्ट कर रही थीं। [25]इसलिए फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फ़िरौन ने कहा, "तुम लोग अपने परमेश्वर यहोवा को इसी देश में बलियाँ भेंट करो।"

[26]किन्तु मूसा ने कहा, "वैसा करना ठीक नहीं होगा। मिस्री सोचते हैं कि हमारे परमेश्वर यहोवा को जानवरों को मार कर बलि चढ़ाना एक भयंकर बात है। इसलिए यदि हम लोग यहाँ ऐसा करते तो मिस्री हमें देखेंगे वे हम लोगों पर पत्थर फेकेंगे और हमें मार डालेंगे। [27]हम लोगों को तीन दिन तक मरुभूमि में जाने दो और हमें

अपने यहोवा परमेश्वर को बलि चढ़ाने दो। यही बात है जो यहोवा ने हम लोगों से करने को कहा है।"

[28]इसलिए फ़िरौन ने कहा, "मैं तुम लोगों को जाने दूँगा और मरुभूमि में तुम लोगों के यहोवा परमेश्वर को बलियाँ भेंट करने दूँगा। किन्तु तुम लोगों को ज्यादा दूर नहीं जाना होगा। अब तुम जाओ और मेरे लिए प्रार्थना करो।"

[29]मूसा ने कहा, "देखो, मैं जाऊँगा और यहोवा से प्रार्थना करूँगा कि कल वे तुम से, तुम्हारे लोगों से और तुम्हारे अधिकारियों से मक्खियों को हटा लें। किन्तु तुम लोग यहोवा को बलियाँ भेंट करने से मत रोको।"

[30]इसलिए मूसा फ़िरौन के पास से गया और यहोवा से प्रार्थना की [31]और यहोवा ने यह किया जो मूसा ने कहा। यहोवा ने मक्खियों को फ़िरौन, उसके अधिकारियों और उसके लोगों से हटा लिया। कोई मक्खी नहीं रह गई। [32]किन्तु फ़िरौन फिर हठी हो गया और उसने लोगों को नहीं जाने दिया।

खेतों के जानवरों को बीमारियाँ

9 तब यहोवा ने मूसा से कहा फ़िरौन के पास जाओ और उससे कहो : "हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मेरी उपासना के लिए मेरे लोगों को जाने दो!' [2]यदि तुम उन्हें रोकते रहे और उनका जाना मना करते रहे [3]तब यहोवा अपनी शक्ति का उपयोग तुम्हारे खेत के जानवरों के विरुद्ध करेगा। यहोवा तुम्हारे सभी घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय, बैल, बकरियों और भेड़ों को भयंकर बीमारियों का शिकार बना देगा। [4]यहोवा इस्राएल के जानवरों के साथ मिस्र के जानवरों से भिन्न बरताव करेगा। इस्राएल के लोगों का कोई जानवर नहीं मरेगा। [5]यहोवा ने इसके घटित होने का समय निश्चित कर दिया है। कल यहोवा इस देश में इसे घटित होने देगा।"

[6]अगली सुबह मिस्र के सभी खेत के जानवर मर गए। किन्तु इस्राएल के लोगों के जानवरों में से कोई नहीं मरा। [7]फ़िरौन ने लोगों को यह देखने भेजा कि क्या इस्राएल के लोगों का कोई जानवर मरा या इस्राएल के लोगों का कोई जानवर नहीं मरा था। फ़िरौन हठ पकड़े रहा। उसने लोगों को नहीं जाने दिया।

फोड़े फुंसियाँ

[8]यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "अपनी अंजलियों में भट्टी की राख भरो। और मूसा तुम फ़िरौन के सामने राख को हवा में फेंको। [9]यह धूल बन जाएगी और पूरे मिस्र देश में फैल जाएगी। जैसे ही धूल आदमी या जानवर पर मिस्र में पड़ेगी, चमड़े पर फोड़े फुंसी (घाव) फूट निकलेंगे।"

[10]इसलिए मूसा और हारून ने भट्टी से राख ली। तब वे गए और फ़िरौन के सामने खड़े हो गए। उन्होंने राख को हवा में फेंका और लोगों और जानवरों को फोड़े होने लगे। [11]जादूगर मूसा को ऐसा करने से न रोक सके, क्योंकि जादूगरों को भी फोड़े हो गए थे। सारे मिस्र में ऐसा ही हुआ। [12]किन्तु यहोवा ने फ़िरौन को हठी बनाए रखा। इसलिए फ़िरौन ने मूसा और हारून को सुनने से मना कर दिया। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

ओले

[13]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "सवेरे उठो और फ़िरौन के पास जाओ। उससे कहो कि हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मेरे लोगों को मेरी उपासना के लिए जाने दो! [14]यदि तुम यह नहीं करोगे तो मैं तुम्हें, तुम्हारे अधिकारियों और तुम्हारे लोगों के विरुद्ध पूरी शक्ति का प्रयोग करूँगा। तब तुम जानोगे कि मेरे समान दुनिया में अन्य कोई परमेश्वर नहीं है। [15]मैं अपनी शक्ति का प्रयोग कर सकता हूँ तथा मैं ऐसी बीमारी फैला सकता हूँ जो तुम्हें और तुम्हारे लोगों को धरती से समाप्त कर देगी। [16]किन्तु मैंने तुम्हें यहाँ किसी कारणवश रखा है। मैंने तुम्हें यहाँ इसलिए रखा है कि तुम मेरी शक्ति को देख सको। तब सारे संसार के लोग मेरे बारे में जान जाएंगे। [17]तुम अब भी मेरे लोगों के विरुद्ध हो। तुम उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक नहीं जाने दे रहे हो। [18]इसलिए कल मैं इसी समय भयंकर ओला बारिश उत्पन्न करूँगा। जब से मिस्र राष्ट्र बना तब से मिस्र में ऐसी ओला बारिश पहले कभी नहीं आई होगी। [19]अत: अपने जानवरों को सुरक्षित जगह में रखना। जो कुछ तुम्हारा खेतों में हो उसे सुरक्षित स्थानों में अवश्य रख लेना। क्यों? क्योंकि कोई भी व्यक्ति या जानवर जो मैदानों में होगा, मारा जाएगा। जो कुछ तुम्हारे घरों के भीतर नहीं रखा होगा उस सब पर ओले गिरेंगे।'"

[20]फ़िरौन के कुछ अधिकारियों ने यहोवा के सन्देश पर ध्यान दिया। उन लोगों ने जल्दी–जल्दी अपने जानवरों और दासों को घरों में कर लिया। [21]किन्तु अन्य लोगों ने यहोवा के सन्देश की उपेक्षा की। उन लोगों के वे दास और जानवर नष्ट हो गए जो बाहर मैदानों में थे।

[22]यहोवा ने मूसा से कहा, "अपनी भुजाएं हवा में उठाओ और मिस्र पर ओले गिरने आरम्भ हो जाएंगे। ओले पूरे मिस्र के सभी खेतों में लोगों, जानवरों और पेड़–पौधों पर गिरेंगे।"

[23]अत: मूसा ने अपनी लाठी को हवा में उठाया और यहोवा ने गर्जन और बिजलियां भेजे, तथा ज़मीन पर ओले बरसायें। ओले पूरे मिस्र पर पड़े। [24]ओले पड़ रहे थे, और ओलों के साथ बिजली चमक रही थी। जब से मिस्र राष्ट्र बना था तब से मिस्र को हानि पहुँचाने वाले ओले वृष्टि में यह सबसे भयंकर थे। [25]आँधी ने मिस्र के खेतों में जो कुछ था उसे नष्ट कर दिया। ओलों ने आदमियों, जानवरों और पेड़–पौधों को नष्ट कर दिया। ओले ने खेतों में सारे पेड़ों को भी तोड़ दिया। [26]गोशेन प्रदेश ही, जहाँ इस्राएल के लोग रहते थे, ऐसी जगह थी जहाँ ओले नहीं पड़े।

[27]फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फ़िरौन ने उनसे कहा, "इस बार मैंने पाप किया है। यहोवा सच्चा है, और मैं तथा मेरे लोग दुष्ट हैं। [28]ओले और परमेश्वर की गरजती आवाजे अत्याधिक हैं! परमेश्वर से तूफान को रोकने को कहो। मैं तुम लोगों को जाने दूँगा। तुम लोगों को यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।"

[29]मूसा ने फ़िरौन से कहा, "जब मैं नगर को छोड़ूँगा तब मैं प्रार्थना में अपनी भुजाओं को यहोवा के सामने उठाऊँगा और गर्जन तथा ओले रूक जाएंगे। तब तुम जानोगे कि पृथ्वी यहोवा ही की हैं। [30]किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम और तुम्हारे अधिकारी अब भी यहोवा से नहीं डरते हैं और न ही उसका सम्मान करते हैं।"

[31]जूट में दाने पड़ चुके थे। और जौ पहले ही फट चुका था। इसलिए ये फ़सलें नष्ट हो गईं। [32]गेहूँ और कठिया नामक गेहूँ अन्य अन्नों से बाद में पकते हैं अत: ये फ़सलें नष्ट नहीं हुई थीं।

[33]मूसा ने फ़िरौन को छोड़ा और नगर के बाहर गया। उसने यहोवा के सामने अपनी भुजाएं फैलायीं और गरज तथा ओले बन्द हो गये। वर्षा भी धरती पर होना बन्द हो गई। [34]जब फ़िरौन ने देखा कि वर्षा, ओले और गर्जन बन्द हो गये तो उसने फिर गलत काम किया। वह और उसके अधिकारी फिर हठ पकड़े रहे। [35]फ़िरौन ने इस्राएल के लोगों को स्वतन्त्रतापूर्वक जाने से इन्कार कर दिया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था।

टिड्डियाँ

10 यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के यहाँ जाओ। मैंने उसे और उसके अधिकारियों को हठी बना दिया है। मैंने यह इसलिए किया है कि मैं उन्हें अपने शक्तिशाली चमत्कार दिखा सकूँ। [2]मैंने इसे इसलिए भी किया कि तुम अपने पुत्र–पुत्रियों तथा पौत्र–पौत्रियों से उन चमत्कारों और अद्‌भुत बातों को बता सको जो मैंने मिस्र में किया है। तब तुम सभी जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

[3]इसलिए मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए। उन्होंने उससे कहा, "हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'तुम मेरे आदेशों का पालन करने से कब तक इन्कार करोगे? मेरे लोगों को मेरी उपासना करने के लिए जाने दो! [4]यदि तुम मेरे लोगों को जाने से मना करते हो तो मैं कल तुम्हारे देश में टिड्डियों को लाऊँगा। [5]टिड्डियाँ पूरी जमीन को ढक लेंगी। टिड्डियों की संख्या इतनी अधिक होगी कि तुम जमीन नहीं देख सकोगे। जो कोई चीज़ ओले भरी आँधी से बच गई है उसे टिड्डियाँ खा जाएंगी। टिड्डियाँ मैदानों में पेड़ों की सारी पत्तियाँ खा डालेंगी। [6]टिड्डियाँ तुम्हारे सभी घरों, तुम्हारे अधिकारियों के सभी घरों और मिस्र के सभी घरों में भर जाएंगी। जितनी टिड्डियाँ तुम्हारे बाप–दादों ने कभी देखीं होंगी उससे भी अधिक टिड्डियाँ यहाँ होंगी। जब से लोग मिस्र में, रहने लगे तब से जब कभी जितनी टिड्डियाँ हुई होंगी उससे अधिक टिड्डियाँ होंगी।'" तब मूसा मुड़ा और उसने फ़िरौन को छोड़ दिया।

[7]फ़िरौन के अधिकारियों ने उससे पूछा, "हम लोग कब तक इन लोगों के जाल में फँसे रहेंगे। लोगों को उनके परमेश्वर यहोवा की उपासना करने जाने दें। यदि आप उन्हें नहीं जाने देंगे तो आपके जानने से पहले मिस्र नष्ट हो जाएगा।"

[8]अत: फ़िरौन के अधिकारियों ने मूसा और हारून को उसके पास वापस बुलाने को कहा। फ़िरौन ने उनसे कहा, "जाओ और अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो।

किन्तु मुझे बताओ कि सचमुच कौन–कौन जा रहा है?" [9]मूसा ने उत्तर दिया, "हमारे युवक और बूढ़े लोग जाएंगे और हम लोग अपने साथ अपने पुत्रों और पुत्रियों, तथा भेड़ों और पशुओं को भी ले जाएंगे। हम सभी जाएंगे क्योंकि यह हमारे लिये हम लोगों के यहोवा का त्यौहार है।"

[10]फ़िरौन ने उनसे कहा, "इससे पहले कि मैं तुम्हें और तुम्हारे सभी बच्चों को मिस्र छोड़कर जाने दूँ यहोवा को वास्तव में तुम्हारे साथ होना होगा। देखो तुम लोग एक बहुत बुरी योजना बना रहे हो। [11]केवल पुरुष जा सकते हैं और यहोवा की उपासना कर सकते हैं। तुमने प्रारम्भ में यही माँग की थी। किन्तु तुम्हारे सारे लोग नहीं जा सकते।" तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को भेज दिया।

[12]यहोवा ने मूसा से कहा, "मिस्र की भूमि के ऊपर अपना हाथ उठाओ और टिड्डियाँ आ जाएंगी। टिड्डियाँ मिस्र की सारी भूमि पर फैल जाएंगी। टिड्डियाँ ओलों से बचे सभी पेड़–पौधों को खा जाएंगी।"

[13]मूसा ने अपनी लाठी को मिस्र देश के ऊपर उठाया और यहोवा ने पूर्व से प्रबल आँधी उठाई। आँधी उस पूरे दिन और रात चलती रही। जब सवेरा हुआ, आँधी ने मिस्र देश में टिड्डियों को ला दिया था। [14]टिड्डियाँ मिस्र देश में उड़कर आई और भूमि पर बैठ गई। मिस्र में कभी जितनी टिड्डियाँ हुई थीं उनसे अधिक टिड्डियाँ हुई और उतनी संख्या में वहाँ टिड्डियाँ फिर कभी नहीं होंगी। [15]टिड्डियों ने जमीन को ढक लिया और पूरे देश में अँधेरा छा गया। टिड्डियों ने उन सभी पौधों और पेड़ों के हर फल को, जो ओले से नष्ट नहीं हुआ था, खा डाला। मिस्र में कहीं भी किसी पेड़ या पौधे पर कोई पत्ती नहीं रह गई।

[16]फ़िरौन ने मूसा और हारून को जल्दी बुलवाया। फ़िरौन ने कहा, "मैंने तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। [17]इस समय मेरे पाप को अब क्षमा करो। अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करो कि इस 'मृत्यु' (टिड्डियों) को मुझ से दूर करे।"

[18]मूसा फ़िरौन को छोड़ कर चला गया और उसने यहोवा से प्रार्थना की। [19]इसलिए यहोवा ने हवा का रूख बदल दिया। यहोवा ने पश्चिम से तेज़ आँधी उठाई और उसने टिड्डियों को दूर लाल सागर* में उड़ा दिया। एक भी टिड्डी मिस्र में नहीं बची। [20]किन्तु यहोवा ने फ़िरौन को फिर हठी बनाया और फ़िरौन ने इस्राएल के लोगों को जाने नहीं दिया।

अंधकार

[21]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अपनी बाहों को आकाश में ऊपर उठाओ और अंधकार मिस्र को ढक लेगा। यह अंधकार इतना सघन होगा कि तुम मानो उसे महसूस कर सकोगे।"

[22]अत: मूसा ने हवा में बाहें उठाई और घोर अन्धकार ने मिस्र को ढक लिया। मिस्र में तीन दिन तक अंधकार रहा। [23]कोई भी किसी अन्य को नहीं देख सकता था और तीन दिन तक कोई अपनी जगह से नहीं उठ सका। किन्तु उन सभी जगहों पर जहाँ इस्राएल के लोग रहते थे, प्रकाश था।

[24]फ़िरौन ने मूसा को फिर बुलाया। फ़िरौन ने कहा, "जाओ और यहोवा की उपासना करो! तुम अपने साथ अपने बच्चों को ले जा सकते हो। केवल अपनी भेड़ें और पशु यहाँ छोड़ देना।"

[25]मूसा ने कहा, "हम लोग केवल अपनी भेड़ें और पशु ही अपने साथ नहीं ले जाएंगे बल्कि जब हम लोग जाएंगे तुम हम लोगों को भेंट और बलि भी दोगे और हम लोग इन बलियों का अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना के रूप में प्रयोग करेंगे। [26]हम लोग अपने जानवर अपने साथ अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना के लिए ले जाएंगे। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा। अभी तक हम नहीं जानते कि यहोवा की उपासना के लिए किन चीज़ों की सचमुच आवश्यकता पड़ेगी। यह हम लोग तब जान सकेंगे जब हम लोग वहाँ पहुँचेंगे जहाँ हम जा रहे हैं। अत: ये सभी चीज़ें अवश्य ही हम अपने साथ ले जाएंगे।"

[27]यहोवा ने फ़िरौन को फिर हठी बनाया। इसलिए फ़िरौन ने उनको जाने से मना कर दिया। [28]तब फ़िरौन ने मूसा से कहा, "मुझ से दूर हो जाओ! मैं नहीं चाहता कि तुम यहाँ फिर आओ! इसके बाद यदि तुम मुझसे मिलने आओगे तो मारे जाओगे!"

[29]तब मूसा ने फ़िरौन से कहा, "तुम जो कहते हो, सही है। मैं तुमसे मिलने फिर कभी नहीं आऊँगा!"

लाल सागर शाब्दिक "सरकण्डों का सागर।" देखें 1 राजा 9:26

पहलौठों की मृत्यु

11 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन और मिस्र के विरुद्ध मैं एक और विपत्ति लाऊँगा इसके बाद वह तुम लोगों को मिस्र से भेज देगा। वस्तुत: वह तुम लोगों को यह देश छोड़ने को विवश करेगा। [2]तुम इस्राएल के लोगों को यह सन्देश अवश्य देना: 'तुम सभी स्त्री और पुरुष अपने पड़ोसियों से चाँदी और सोने की बनी चीज़ें माँगना। [3]यहोवा मिस्रियों को तुम लोगों पर कृपालु बनाएगा। मिस्री लोग, यहाँ तक कि फ़िरौन के अधिकारी भी पहले से मूसा को महान पुरुष समझते हैं।'"

[4]मूसा ने लोगों से कहा, "यहोवा कहता है, 'आज आधी रात के समय, मैं मिस्र से होकर गुजरुँगा, [5]और मिस्र का हर एक पहलौठे पुत्र मिस्र के शासक फ़िरौन के पहलौठे पुत्र से लेकर चक्की चलाने वाली दासी तक का पहलौठा पुत्र मर जाएगा। पहलौठे नर जानवर भी मरेंगे। [6]मिस्र की समूची धरती पर रोना-पीटना मचेगा। यह रोना-पीटना किसी भी गुजरे समय के रोने-पीटने से अधिक बुरा होगा और यह भविष्य के किसी भी रोने-पीटने के समय से अधिक बुरा होगा। [7]किन्तु इस्राएल के किसी व्यक्ति को कोई चोट नहीं पहुँचेगी। यहाँ तक कि उन पर कोई कुत्ता तक नहीं भौंकेगा। इस्राएल के लोगों के किसी व्यक्ति या किसी जानवर को कोई चोट नहीं पहुँचेगी। इस प्रकार तुम लोग जानोगे कि मैंने मिस्रियों के साथ इस्राएल वालों से भिन्न व्यवहार किया है। [8]तब ये सभी तुम लोगों के दास मिस्री झुक कर मुझे प्रणाम करेंगे और मेरी उपासना करेंगे। वे कहेंगे, "जाओ, और अपने सभी लोगों को अपने साथ ले जाओ।" तब मैं फ़िरौन को क्रोध में छोड़ दूँगा।'"

[9]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन ने तुम्हारी बात नहीं सुनी। क्यों? इसलिए कि मैं अपनी महान शक्ति मिस्र में दिखा सकूँ।" [10]यही कारण था कि मूसा और हारून ने फ़िरौन के सामने ये बड़े-बड़े चमत्कार दिखाए। और यही कारण है कि यहोवा ने फ़िरौन को इतना हठी बनाया कि उसने इस्राएल के लोगों को अपना देश छोड़ने नहीं दिया।

फसह पर्व के निर्देश

12 मूसा और हारून जब मिस्र में ही थे, यहोवा ने उनसे कहा। [2]"यह महीना* तुम लोगों के लिए वर्ष का पहला महीना होगा। [3]इस्राएल की पूरी जाति के लिए यह आदेश है: इस महीने के दसवें दिन हर एक व्यक्ति अपने परिवार के लोगों के लिए एक मेमना अवश्य प्राप्त करेगा। [4]यदि पूरा मेमना खा सकने वाले पर्याप्त आदमी अपने परिवारों में न हों तो उस भोजन में सम्मिलित होने के लिए अपने कुछ पड़ोसियों को निमन्त्रित करना चाहिए। खाने के लिए हर एक को पर्याप्त मेमना होना चाहिए। [5]एक वर्ष का यह नर मेमना दोषरहित होना चाहिए। यह जानवर या तो एक भेड़ का बच्चा हो सकता है या बकरे का बच्चा। [6]तुम्हें इस जानवर को महीने के चौदहवें दिन तक सावधानी के साथ रखना चाहिए। उस दिन इस्राएल जाति के सभी लोग सन्ध्या काल में इन जानवरों को मारेंगे। [7]इन जानवरों का खून तुम्हें इकट्ठा करना चाहिए। कुछ खून उन घरों के दरवाजों की चौखटों के ऊपरी सिरे तथा दोनों पटों पर लगाना चाहिए जिन घरों में लोग यह भोजन करें।

[8]"इस रात को तुम मेमने को अवश्य भून लेना और उसका माँस खा जाना। तुम्हें कड़वी जड़ी-बूटियों और अख़मीरी रोटियाँ भी खानी चाहिए। [9]तुम्हें मेमने को पानी में उबालना नहीं चाहिए। तुम्हें पूरे मेमने को आग पर भूनना चाहिए। इस दशा में भी मेमने का सिर, उसके पैर तथा उसका भीतरी भाग ठीक बना रहना चाहिए। [10]उसी रात को तुम्हें सारा माँस अवश्य खा लेना चाहिए। यदि थोड़ा माँस सवेरे तक बच जाये तो उसे आग में अवश्य ही जला देना चाहिए।

[11]"जब तुम भोजन करो तो ऐसे वस्त्रों को पहनो जैसे तुम लोग यात्रा पर जा रहे हो तुम लोगों के लबादे* तुम्हारी पेटियों में कसे होने चाहिए। तुम लोग अपने जूते पहने रहना और अपनी यात्रा की छड़ी को अपने हाथों में रखना। तुम लोगों को शीघ्रता से भोजन कर लेना चाहिए।

महीना अर्थात् "आबीब" जिसे "निसन" भी कहते हैं। यह लगभग मार्च के मध्य से अप्रैल के मध्य तक था।

लबादा लबादा पोशाक की तरह था। अत: लोग काम करने या लम्बी दूरी तय करने के समय निचली छोरों को अपनी टाँगों के बीच में खींच लेते थे और पेटी से दबा लेते थे।

क्यों? क्योंकि यह यहोवा का फसह* है वह समय जब यहोवा ने अपने लोगों की रक्षा की और उन्हें शीघ्रता से मिस्र के बाहर ले गया।

[12]"आज रात मैं मिस्र से होकर गुजरूँगा और मिस्र में प्रत्येक पहलौठे पुत्र को मार डालूँगा। मैं सभी पहलौठे जानवरों और मनुष्यों को मार डालूँगा। मैं मिस्र के सभी देवताओं को दण्ड दूँगा और दिखा दूँगा कि मैं यहोवा हूँ। [13]किन्तु तुम लोगों के घरों पर लगा हुआ खून एक विशेष चिन्ह होगा। जब मैं खून देखूँगा, तो तुम लोगों के घरों को छोड़ता हुआ गुजर जाऊँगा।* मैं मिस्र के लोगों के लिए हानिकारक चीजें उत्पन्न करूँगा। किन्तु उन बुरी बीमारियों में से कोई भी तुम लोगों को हानि नहीं पहुँचाएगी।

[14]"सो तुम लोग आज की इस रात को सदा याद रखोगे, तुम लोगों के लिए यह एक विशेष पवित्र पर्व होगा। तुम्हारे वंशज सदा इस पवित्र पर्व को यहोवा की भक्ति किया करेंगे। [15]इस पवित्र पर्व पर तुम लोग अख़मीरी आटे की रोटियाँ सात दिनों तक खाओगे। इस पवित्र पर्व के आने पर तुम लोग पहले दिन अपने घरों से सारे ख़मीर को निकाल बाहर करोगे। इस पवित्र पर्व के पूरे सात दिन तक किसी को भी ख़मीर नहीं खाना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति ख़मीर खाए तो उसे तुम इस्राएल के अन्य व्यक्तियों से निश्चय ही अलग कर देना। [16]इस पवित्र पर्व के प्रथम और अन्तिम दिनों में धर्म सभा होगी। इन दिनों तुम्हें कोई भी काम नहीं करना होगा। इन दिनों केवल एक काम जो किया जा सकता, वह है अपना भोजन तैयार करना। [17]तुम लोगों को अवश्य अखमीरी रोटी*का पवित्र पर्व याद रखना होगा। क्यों? क्योंकि इस दिन ही मैंने तुम्हारे लोगों के सभी वर्गो को मिस्र से निकाला। अत: तुम लोगों के सभी वंशजो को यह दिन याद रखना ही होगा। यह नियम ऐसा है जो सदा रहेगा। [18]इसलिए प्रथम महीने निसन के चौदहवें दिन की सन्ध्या से तुम लोग अखमीरी रोटी खाना आरम्भ करोगे। उसी महीने के इक्कीसवें दिन की सन्ध्या तक तुम ऐसी रोटी खाओगे। [19]सात दिन तक तुम लोगों के घरों में कोई खमीर नहीं होना चाहिए। कोई भी व्यक्ति चाहे वह इस्राएल का नागरिक हो या विदेशी, जो इस समय खमीर खाएगा अन्य इस्राएलियों से अवश्य अलग कर दिया जाएगा। [20]इस पवित्र पर्व में तुम लोगों को खमीर नहीं खाना चाहिए। तुम जहाँ भी रहो अखमीरी रोटी ही खाना।"

[21]इसलिए मूसा ने सभी बुज़ुर्गों (नेताओं) को एक स्थान पर बुलाया। मूसा ने उनसे कहा, "अपने परिवारों के लिए मेमने प्राप्त करो। फसह पर्व के लिए मेमने को मारो। [22]जूफा* के गुच्छों को लो और खून से भरे प्यालों में उन्हें डुबाओ। खून से चौखटों के दोनों पटों और सिरों को रंग दो। कोई भी व्यक्ति सवेरा होने से पहले अपना घर न छोड़े। [23]उस समय जब यहोवा पहलौठे सन्तानों को मारने के लिए मिस्र से होकर जाएगा तो वह चौखट के दोनों पटों और सिरों पर खून देखेगा तब यहोवा उस घर की रक्षा* करेगा। यहोवा नाश करने वाले को तुम्हारे घरों के भीतर आने और तुम लोगों को चोट नहीं पहुँचाने देगा। [24]तुम लोग इस आदेश को अवश्य याद रखना। यह नियम तुम लोगों तथा तुम लोगों के वंशजों के निमित्त सदा के लिए है। [25]तुम लोगों को यह कार्य तब भी याद रखना होगा जब तुम लोग उस देश में पहुँचोगे जो यहोवा तुम लोगों को देगा। [26]जब तुम लोगों के बच्चे तुम से पूछेंगे, 'हम लोग यह त्योहार क्यों मनाते हैं?' [27]तो तुम लोग कहोगे, 'यह फसह पर्व यहोवा की भक्ति के लिए है। क्यों? क्योंकि जब हम लोग मिस्र में थे तब यहोवा इस्राएल के घरों से होकर गुजरा* था। यहोवा ने मिस्रियों को मार डाला, किन्तु उसने हम लोगों के घरों में लोगों को बचाया। इसलिए लोग अब यहोवा को झुककर प्रणाम करते हैं तथा उपासना करते हैं।'"

[28]यहोवा ने यह आदेश मूसा और हारून को दिया था। इसलिए इस्राएल के लोगों ने वही किया जो यहोवा का आदेश था।

[29]आधी रात को यहोवा ने मिस्र के सभी पहलौठे पुत्रों, फ़िरौन के पहलौठे पुत्र (जो मिस्र का शासक था) से

फसह हिब्रू शब्द का अर्थ "कूद जाना", "गुज़र जाना" या "रक्षा करना" है।

गुजर जाऊँगा या "रक्षा करूँगा।"

अखमीरी रोटी ख़मीर के बिना बनी रोटी।

जूफा लगभग 3 फीट ऊँचे तनेवाला पौधा। इसकी पत्तियाँ और शाखाएं केशों की तरह होती हैं, जिससे उनका उपयोग कूची की तरह हो सके।

रक्षा या "परिगमन" (गुजर जाना।)

होकर गुजरा या "रक्षा की।"

लेकर बन्दीगृह में बैठे कैदी के पुत्र तक सभी को मार डाला। पहलौठे जानवर भी मर गए। [30]मिस्र में उस रात को हर घर में कोई न कोई मरा। फ़िरौन, उसके अधिकारी और मिस्र के सभी लोग जोर से रोने चिल्लाने लगे।

इस्राएलियों द्वारा मिस्र को छोड़ना

[31]इसलिए उस रात फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फ़िरौन ने उनसे कहा, "तैयार हो जाओ और हमारे लोगों को छोड़ कर चले जाओ। तुम और तुम्हारे लोग वैसा ही कर सकते हैं जैसा तुमने कहा है। जाओ और अपने यहोवा की उपासना करो। [32]और तुम लोग जैसा तुमने कहा है कि तुम चाहते हो, अपनी भेड़ें और मवेशी अपने साथ ले जा सकते हो, जाओ! और मुझे भी आशीष दो!" [33]मिस्र के लोगों ने भी उनसे शीघ्रता से जाने के लिए कहा। क्यों? क्योंकि उन्होंने कहा, "यदि तुम लोग नहीं जाते हो हम सभी मर जाएंगे।"

[34]इस्राएल के लोगों के पास इतना समय न रहा कि वे अपनी रोटी में खमीर डालें। उन्होंने गुँधे आटे की परातों को अपने कपड़ों में लपेटा और अपने कंधों पर रख कर ले गए। [35]तब इस्राएल के लोगों ने वही किया जो मूसा ने करने को कहा। वे अपने मिस्री पड़ोसियों के पास गए और उनसे वस्त्र तथा चाँदी और सोने की बनी चीज़े माँगी। [36]यहोवा ने मिस्रियों को इस्राएल के लोगों के प्रति दयालु बना दिया। इसलिए उन्होंने अपना धन इस्राएल के लोगों को दे दिया।

[37]इस्राएल के लोग रमसिज से सुक्कॉम गए। वे लगभग छः लाख* पुरुष थे। इसमें बच्चे सम्मिलित नहीं है। [38]उनके साथ अनेक भेड़ें, गाय–बकरियाँ और अन्य पशुधन था। उनके साथ ऐसे अन्य लोग भी यात्रा कर रहे थे। जो इस्राएली नहीं थे, किन्तु वे इस्राएल के लोगों के साथ गए। [39]किन्तु लोगों को रोटी में खमीर डालने का समय न मिला। और उन्होंने अपनी यात्रा के लिए कोई विशेष भोजन नहीं बनाया। इसलिए उन्हें बिना खमीर के ही रोटियाँ बनानी पड़ीं।

[40]इस्राएल के लोग मिस्र* में चार सौ तीस वर्ष तक रहे। [41]चार सौ तीस वर्ष बाद, ठीक उसी दिन, यहोवा की सारी सेना* ने मिस्र से प्रस्थान किया। [42]वह विशेष रात है जब लोग याद करते हैं कि यहोवा ने क्या किया। इस्राएल के सभी लोग उस रात को सदा याद रखेंगे।

[43]यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "फसह पर्व के नियम ये हैं: कोई विदेशी फसह पर्व में से नहीं खाएगा। [44]किन्तु यदि कोई व्यक्ति दास को खरीदेगा और यदि उसका खतना करेगा तो वह दास उस में से खा सकेगा। [45]किन्तु यदि कोई व्यक्ति केवल तुम लोगों के देश में रहता है या किसी व्यक्ति को तुम्हारे लिए मजदूरी पर रखा गया है तो उस व्यक्ति को उस में से नहीं खाना चाहिए। वह केवल इस्राएल के लोगों के लिए है।

[46]"प्रत्येक परिवार को घर के भीतर ही भोजन करना चाहिए। कोई भी भोजन घर के बाहर नहीं ले जाना चाहिए। मेमने की किसी हड्डी को न तोड़े। [47]पूरी इस्राएली जाति इस उत्सव को अवश्य मनाए। [48]यदि कोई ऐसा व्यक्ति तुम लोगों के साथ रहता है जो इस्राएल की जाति का सदस्य नहीं है किन्तु वह फसह पर्व में सम्मिलित होना चाहता है तो उसका खतना अवश्य होना चाहिए। तब वह इस्राएल के नागरिक के समान होगा, और वह भोजन में भाग ले सकेगा। किन्तु यदि उस व्यक्ति का खतना नहीं हुआ हो तो वह इस फसह पर्व के भोजन को नहीं खा सकता। [49]ये ही नियम हर एक पर लागू होंगे। नियमों के लागू होने में इस बात का कोई महत्व नहीं होगा कि वह व्यक्ति तुम्हारे देश का नागरिक है या विदेशी है।"

[50]इसलिए इस्राएल के सभी लोगों ने उन आदेशों का पालन किया जिन्हें यहोवा ने मूसा और हारून को दिया था। [51]इस प्रकार यहोवा उसी दिन इस्राएल के सभी लोगों को मिस्र से बाहर ले गया। लोगों ने समूहों में प्रस्थान किया।

छः लाख या "छः सौ परिवारों के समूह" हिब्रू शब्द "सहस्र" उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "परिवार के समूह" होता है।

मिस्र प्राचीन ग्रीक और समरीती अनुवादों में "मिस्र और कनान" है। इससे पता चलता है कि वे लगभग इब्राहीम के समय से वर्षों की गणना कर रहे थे, यूसुफ के समय से नहीं। देखें उत्पत्ति 15:12−16 और गलतियों 3:17

यहोवा की सारी सेना अर्थात् इस्राएल के लोग।

13 तब यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"प्रत्येक पहलौठा इस्राएली लड़का मुझे समर्पित होगा। हर एक स्त्री का पहलौठा नर बच्चा मेरा ही होगा। तुम लोग हर एक नर पहलौठे जानवर को भी मुझे समर्पित करना।"

[3]मूसा ने लोगों से कहा, "इस दिन को याद रखो। तुम लोग मिस्र में दास थे। किन्तु इस दिन यहोवा ने अपनी महान शक्ति का उपयोग किया और तुम लोगों को स्वतन्त्र किया। तुम लोग ख़मीर के साथ रोटी मत खाना। [4]आज के दिन आबीब* के महीने में तुम लोग मिस्र से प्रस्थान कर रहे हो। [5]यहोवा ने तुम लोगों के पूर्वजों से विशेष प्रतिज्ञा की थी। यहोवा ने तुम लोगों को कनानी, हित्ती, एमोरी, हिब्बी और यबूसी लोगों की धरती देने की प्रतिज्ञा की थी। यहोवा जब तुम लोगों को उस सम्पन्न और सुन्दर देश में पहुँचा दे तब तुम लोग इस दिन को अवश्य याद रखना। तुम लोग हर वर्ष के पहले महीने में इस दिन को उपासना का विशेष दिन रखना।

[6]"सात दिन तक तुम लोग वही रोटी खाना जिसमें खमीर न हो। सातवें दिन एक बड़ी दावत होगी। यह दावत यहोवा के सम्मान का सूचक होगी। [7]अत: सात दिन तक लोगों को खमीर के साथ बनी रोटी खानी नहीं चाहिए। तुम्हारे प्रदेश में किसी भी जगह खमीर की कोई रोटी नहीं होनी चाहिए। [8]इस दिन तुम को अपने बच्चों से कहना चाहिए, 'हम लोग यह दावत इसलिए कर रहे हैं कि यहोवा ने मुझ को मिस्र से बाहर निकाला।'

[9]"यह पवित्र दिन तुम लोगों को याद रखने में सहायता करेगा अर्थात् तुम लोगों की हाथ पर बंधे धागे* का काम करेगा। यह पवित्र दिन यहोवा के उपदेशों को याद करने में तुमको सहायता करेगा। तुम्हें यह याद दिलाने में सहायता करेगा कि यहोवा ने तुम लोगों को मिस्र से बाहर निकालने के लिए अपनी महान शक्ति का उपयोग किया। [10]इसलिए हर वर्ष इस दिन को ठीक समय पर याद रखो।

[11]"यहोवा तुम लोगों को उस देश में ले चलेगा जिसे तुम लोगों को देने के लिए उसने प्रतिज्ञा की है। इस समय वहाँ कनानी लोग रहते हैं। किन्तु यहोवा ने तुम से पहले तुम्हारे पूर्वजों से यह प्रतिज्ञा की थी कि वह यह प्रदेश तुम लोगों को देगा। परमेश्वर जब यह प्रदेश तुम को देगा उसके बाद [12]तुम लोग अपने हर एक पहलौठे पुत्र को उसे समर्पित करना याद रखना और हर एक पहलौठा नर जानवर यहोवा को अवश्य समर्पित होना चाहिए। [13]हर एक पहलौठा गधा यहोवा से वापस खरीदा जा सकता है। तुम लोग उसके बदले मेमने को अर्पित कर सकते हो और गधे को वापस ले सकते हो। यदि तुम यहोवा से गधे को खरीदना नहीं चाहते तो इसे मार डालो। यह एक बलि होगी तुम उसकी गर्दन अवश्य तोड़ दो। हर एक पहलौठा लड़का यहोवा से पुन: अवश्य खरीद लिया जाना चाहिए।

[14]"भविष्य में तुम्हारे बच्चे पूछेंगे कि तुम यह क्यों करते हो। वे कहेंगे, 'इस सबका क्या मतलब है?' और तुम उत्तर दोगे, 'यहोवा ने हम लोगों को मिस्र से बचाने के लिए महान शक्ति का उपयोग किया। हम लोग वहाँ दास थे। किन्तु यहोवा ने हम लोगों को बाहर निकाला और वह यहाँ लाया। [15]मिस्र में फ़िरौन हठी था। उसने हम लोगों को प्रस्थान नहीं करने दिया। किन्तु यहोवा ने उस देश के सभी पहलौठे नर सन्तानों को मार डाला। (यहोवा ने पहलौठे नर जानवरों और पहलौठे पुत्रों को मार डाला।) इसलिए हम लोग हर एक पहलौठे नर जानवर को यहोवा को समर्पित करते हैं। और यही कारण है कि हम प्रत्येक पहलौठे पुत्रों को फिर यहोवा से खरीदते हैं।' [16]यह तुम्हारी हाथ पर बँधे धागे की तरह है और यह तुम्हारी आँखों के सामने बँधे चिन्ह की तरह है। यह इसे याद करने में सहायक है कि यहोवा अपनी महान शक्ति से हम लोगों को मिस्र से बाहर लाया।"

मिस्र से बाहर यात्रा

[17]फ़िरौन ने लोगों को मिस्र छोड़ने के लिये विवश किया। यहोवा ने लोगों को समुद्र के तट की सड़क को नहीं पकड़ने दिया। वह सड़क पलिश्ती तक का सबसे छोटा रास्ता है, किन्तु यहोवा ने कहा, "यदि लोग उस रास्ते से जाएंगे तो उन्हें लड़ना पड़ेगा। तब वे अपना मन बदल सकते हैं और मिस्र को लौट सकते हैं।" [18]इसलिए यहोवा उन्हें अन्य रास्ते से ले गया। वह लाल सागर की

आबीब या "बसन्त" यह प्राचीन यहूदी वर्ष का पहला महीना निसन है।

बंधे धागे शाब्दिक तुम्हारे हाथों पर एक चिन्ह, तुम्हारे ललाट पर एक प्रतीक। यह उस विशेष चीज़ का संकेत कर सकता है जिसे यहूदी व्यक्ति अपनी भुजाओं और ललाट पर परमेश्वर के नियमों को याद दिलाने के लिए बाँधता है।

तटीय मरुभूमि से उन्हें ले गया। किन्तु इस्राएल के लोग तब युद्ध के लिए वस्त्र पहने थे जब उन्होंने मिस्र छोड़ा।

यूसुफ़ की अस्थियों का घर ले जाया जाना

[19]मूसा यूसुफ़ की अस्थियों को अपने साथ ले गया। (मरने के पहले यूसुफ़ ने इस्राएल की सन्तानों से प्रतिज्ञा कराई कि वे यह करेंगे। मरने के पहले यूसुफ़ ने कहा, "जब परमेश्वर तुम लोगों को बचाए, मेरी अस्थियों को मिस्र के बाहर अपने साथ ले जाना याद रखना।")

यहोवा का अपने लोगों को ले जाया जाना

[20]इस्राएल के लोगों ने सुक्कोत नगर छोड़ा और एताम में डेरा डाला। एताम मरुभूमि के छोर पर था। [21]यहोवा ने रास्ता दिखाया। दिन में यहोवा ने एक बड़े बादल का उपयोग लोगों को ले चलने के लिए किया। और रात में यहोवा ने रास्ता दिखाने के लिए एक ऊँचे अग्नि स्तम्भ का उपयोग किया। यह आग उन्हें प्रकाश देती थी अत: वे रात को भी यात्रा कर सकते थे। [22]एक ऊँचे स्तम्भ के रूप में बादल सदा उनके साथ दिन में रहा और रात को अग्नि स्तम्भ सदा उनके साथ रहा।

14 तब यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"लोगों से पीहाहीरोत तक पीछे मुड़कर यात्रा करने को कहो। रात में मिगदोल और समुद्र के बीच उनसे ठहरने को कहो। यह बाल सपोन के करीब है। [3]फ़िरौन सोचेगा कि इस्राएल के लोग मरुभूमि में भटक गए है और वह सोचेगा कि लोगों को कोई स्थान नहीं मिलेगा जहाँ वे जाएं। [4]मैं फ़िरौन की हिम्मत बढ़ाऊँगा ताकि वह तुम लोगों का पीछा करे। किन्तु फ़िरौन और उसकी सेना को हराऊँगा। इससे मुझे गौरव प्राप्त होगा। तब मिस्र के लोग जानेंगे कि मैं ही यहोवा हूँ।" इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर का आदेश माना अर्थात् उन्होंने वही किया जो उसने कहा।

फ़िरौन द्वारा इस्राएलियों का पीछा किया जाना

[5]जब फ़िरौन को यह सूचना मिली कि इस्राएल के लोग भाग गये हैं तो उसने और उसके अधिकारियों ने उन्हें वहाँ से चले जाने देने का जो वचन दिया था, उसके प्रति अपना मन बदल दिया। फ़िरौन ने कहा, "हमने इस्राएल के लोगों को क्यों जाने दिया? हमने उन्हें भागने क्यों दिया? अब हमारे दास हमारे हाथों से निकल चुके हैं।"

[6]इसलिए फ़िरौन ने अपने युद्ध रथ को तैयार किया और अपनी सेना को साथ लिया। [7]फ़िरौन ने अपने लोगों में से छ: सौ सबसे अच्छे आदमियों तथा अपने सभी रथों को लिया। हर एक रथ में एक अधिकारी बैठा था। [8]इस्राएल के लोग विजय के उत्साह में अपने शस्त्रों को ऊपर उठाए जा रहे थे किन्तु यहोवा ने मिस्र के राजा फ़िरौन को साहसी बनाया। और फ़िरौन ने इस्राएल के लोगों का पीछा करना शुरु कर दिया।

[9]मिस्री सेना के पास बहुत से घोड़े, सैनिक, और रथ थे। उन्होंने इस्राएल के लोगों का पीछा किया और उस समय जब वे लाल सागर के तट पर पीहाहीरोत में, बालसपोन के पूर्व में डेरा डाले थे,वे उनके समीप आ गए।

[10]इस्राएल के लोगों ने फ़िरौन और उसकी सेना को अपनी ओर आते देखा तो लोग बुरी तरह डर गए। उन्होंने सहायता के लिए यहोवा को पुकारा। [11]उन्होंने मूसा से कहा, "तुम हम लोगों को मिस्र से बाहर क्यों लाए? तुम हम लोगों को इस मरुभूमि में मरने के लिए क्यों ले आए? हम लोग शान्तिपूर्वक मिस्र में मरते, मिस्र में बहुत सी कब्रें थीं। [12]हम लोगों ने कहा था कि ऐसा होगा। मिस्र में हम लोगों ने कहा था, 'कृपया हम लोगों को कष्ट न दो। हम लोगों को यहीं ठहरने और मिस्रियों की सेवा करने दो।' यहाँ आकर मरुभूमि में मरने से अच्छा यह होता कि हम लोग वहीं मिस्रियों के दास बनकर रहते।"

[13]किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, "डरो नहीं! भागो नहीं रुक जाओ! जरा ठहरो और देखो कि आज तुम लोगों को यहोवा कैसे बचाता है। आज के बाद तुम लोग इन मिस्रियों को कभी नहीं देखोगे! [14]तुम लोगों को शान्त रहने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करना है। यहोवा तुम लोगों के लिए लड़ता रहेगा।"

[15]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम्हें मुझको पुकारना नहीं पड़ेगा! इस्राएल के लोगों को आगे चलने का आदेश दो। [16]अपने हाथ की लाठी को लाल सागर के ऊपर उठाओ और लाल सागर फट जाएगा। तब लोग सूखी भूमि से समुद्र को पार कर सकेंगे। [17]मैंने मिस्रियों को साहसी बनाया है। इस प्रकार वे तुम्हारा पीछा करेंगे। किन्तु मैं दिखाऊँगा कि मैं फ़िरौन, उसके सभी घुड़सवारों और रथों से अधिक शक्तिशाली हूँ। [18]तब मिस्री समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ। जब मैं फ़िरौन, उसके घुड़सवारों और रथों को हराऊँगा वे तब मुझे सम्मान देंगे।"

यहोवा का मिस्री सेना को हराना

[19]उस समय यहोवा का दूत लोगों के पीछे गया। (यहोवा का दूत प्राय: लोगों के आगे था और उन्हें ले जा रहा था।) इसलिए बादल का स्तम्भ लोगों के आगे से हट गया और उनके पीछे आ गया। [20]इस प्रकार बादल मिस्रियों और इस्राएलियों के बीच खड़ा हुआ। इस्राएल के लोगों के लिए प्रकाश था किन्तु मिस्रियों के लिए अँधेरा। इसलिए मिस्री उस रात इस्राएलियों के अधिक निकट न आ सके।

[21]मूसा ने अपनी बाहें लाल सागर के ऊपर उठाईं। और यहोवा ने पूर्व से तेज आँधी चला दी। आँधी रात भर चलती रही। समुद्र फटा और पुरवायी हवा ने जमीन को सुखा दिया। [22]इस्राएल के लोग सूखी जमीन पर चलकर समुद्र के पार गए। उनकी दायीं और बाईं ओर पानी दीवार की तरह खड़ा था। [23]तब फ़िरौन के सभी रथों और घुड़सवारों ने समुद्र में उनका पीछा किया। [24]बहुत सवेरे ही यहोवा ने लम्बे बादल और आग के स्तम्भ पर से मिस्र की सेना को देखा और यहोवा ने उन पर हमला किया और उन्हें हरा दिया। [25]रथों के पहिए धंस गए। रथों का नियन्त्रण कठिन हो गया। मिस्री चिल्लाए, "हम लोग यहाँ से निकल चलें! यहोवा हम लोगों के विरुद्ध लड़ रहा है। यहोवा इस्राएल के लोगों के लिए लड़ रहा है।"

[26]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अपने हाथ को समुद्र के ऊपर उठाओ। फिर पानी गिरेगा तथा मिस्री रथों और घुड़सवारों को डूबो देगा।"

[27]इसलिए ठीक दिन निकलने से पहले मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर उठाया और पानी अपने उचित तल पर वापस पहुँच गया। मिस्री भागने का प्रयत्न कर रहे थे। किन्तु यहोवा ने मिस्रियों को समुद्र में बहा कर डूबो दिया। [28]पानी अपने उचित तल तक लौटा और उसने रथों तथा घुड़सवारों को ढक लिया। फ़िरौन की पूरी सेना जो इस्राएली लोगों का पीछा कर रही थी, डूबकर नष्ट हो गई। उनमें से कोई भी न बचा!

[29]किन्तु इस्राएल के लोगों ने सूखी जमीन पर चलकर समुद्र पार किया। उनकी दायीं और बायीं ओर पानी दीवार की तरह खड़ा था। [30]इसलिए उस दिन यहोवा ने इस्राएल के लोगों को मिस्रियों से बचाया और इस्राएल के लोगों ने मिस्रियों के शवों को लाल सागर के किनारे देखा। [31]इस्राएल के लोगों ने यहोवा की महान शक्ति को देखा जब उसने मिस्रियों को हराया। अत: लोगों ने यहोवा का भय माना और सम्मान किया और उन्होंने यहोवा और उसके सेवक मूसा पर विश्वास किया।

मूसा का गीत

15 तब मूसा और इस्राएल के लोग यहोवा के लिए यह गीत गाने लगे:

"मैं यहोवा के लिए गाऊँगा
क्योंकि उसने महान काम कियें हैं।
उसने घोड़ों और सवारों को समुद्र में फेंका है।
2 यहोवा ही मेरी शक्ति है।
वह हमें बचाता है
और मैं गाता हूँ गीत उसकी प्रशंसा के।*
मेरा परमेश्वर यहोवा है
और मैं उसकी स्तुति करता हूँ।
मेरे पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा है
और मैं उसका आदर करता हूँ।
3 यहोवा महान योद्धा है।
उसका नाम यहोवा है।
4 उसने फ़िरौन के रथ
और सैनिकों को समुद्र में फेंक दिया।
फ़िरौन के उत्तम अधिकारी
लाल सागर में डूब गए।
5 गहरे पानी ने उन्हें ढका।
वे चट्टानों की तरह गहरे पानी में डूबे।
6 तेरी दायीं भुजा अद्भुत शक्तिशाली है।
यहोवा, तेरी दायीं भुजा ने
शत्रु को चकनाचूर कर दिया।
7 तूने अपनी महामहिमा में नष्ट किया
उन्हें जो व्यक्ति तेरे विरुद्ध खड़े हुए।
तेरे क्रोध ने उन्हें उस प्रकार नष्ट किया
जैसे आग तिनके को जलाती है।
8 तूने जिस तेज आँधी को चलाया,
उसने जल को ऊँचा उठाया।

यहोवा ... प्रशंसा के शाब्दिक "यहोवा मेरी शक्ति और स्तुति और वह मेरी मुक्ति बनता है।"

वह तेज बहता जल ठोस दीवार बना।
समुद्र ठोस बन गया अपने
गहरे से गहरे भाग तक।

9 शत्रु ने कहा,
'मैं उनका पीछा करूँगा और उनको पकड़ूँगा।
मैं उनका सारा धन लूँगा।
मैं अपनी तलवार चलाऊँगा
और उनसे हर चीज़ लूँगा।
मैं अपने हाथों का उपयोग करूँगा
और अपने लिए सब कुछ लूँगा।'

10 किन्तु तू उन पर टूट पड़ा
और उन्हें समुद्र से ढक दिया तूने
वे सीसे की तरह डूबे गहरे समुद्र में।

11 क्या कोई देवता यहोवा के समान है?
नहीं! तेरे समान कोई देवता नहीं,
तू है अद्‌भुत अपनी पवित्रता में!
तुझमें है विस्मयजनक शक्ति
तू अद्‌भुत चमत्कार करता है!

12 तू अपना दाँया हाथ उठा कर
संसार को नष्ट कर सकता था!

13 परन्तु तू कृपा कर उन लोगों को ले चला
जिन्हें तूने बचाया है।
तू अपनी शक्ति से इन लोगों को अपने पवित्र
और सुहावने देश को ले जाता है।

14 अन्य राष्ट्र इस कथा को सुनेंगे
और वे भयभीत होंगे।
पलिश्ती लोग भय से काँपेंगे।

15 तब एदोम के मुखिया
भय से कँपेंगे मोआब के शक्तिशाली नेता
भय से कँपेंगे कनान के व्यक्ति
अपना साहस खो देंगे।

16 वे लोग आतंक और भय से आक्रांत होंगे
जब वे तेरी शक्ति देखेंगे।
वे चट्टान के समान शान्त रहेंगे
जब तक तुम्हारे लोग गुज़रेंगे
जब तक तेरे द्वारा लाए गए लोग गुज़रेंगे।

17 यहोवा अपने लोगों को स्वयं ले जाएगा
अपने पर्वत पर उस स्थान तक जिसे तूने
अपने सिंहासन के लिए बनाया है।
हे स्वामी, तू अपना मन्दिर
अपने हाथों बनायेगा!

18 यहोवा सदा सर्वदा शासन करता रहेगा।"

[19]हाँ, ये सचमुच हुआ! फ़िरौन के घोड़े, सवार, और रथ समुद्र में चले गए और यहोवा ने उन्हें समुद्र के पानी से ढक दिया। किन्तु इस्राएल के लोग सूखी जमीन पर चलकर समुद्र के पार चले गए। [20]तब हारून की बहन नबिया मरियम ने एक डफ़ली ली। मरियम और स्त्रियों ने नाचना, गाना आरम्भ किया। मरियम की टेक थी,

21 "यहोवा के लिए गाओ
क्योंकि उसने महान काम किये हैं
फेंका उसने घोड़े को और उसके
सवार को सागर के बीच में।"

[22]मूसा इस्राएल के लोगों को लाल सागर से दूर ले जाता रहा, लोग शूर मरुभूमि में पहुँचे। वे तीन दिन तक मरुभूमि में यात्रा करते रहे। लोग तनिक भी पानी न पा सके। [23]तीन दिन के बाद लोगों ने मारा* की यात्रा की। मारा में पानी था, किन्तु पानी इतना कड़वा था कि लोग पी नहीं सकते थे। (यही कारण था कि इस स्थान का नाम मारा पड़ा।)

[24]लोगों ने मूसा से शिकायत शुरू की। लोगों ने कहा, "अब हम लोग क्या पीएं?"

[25]मूसा ने यहोवा को पुकारा। इसलिए यहोवा ने उसे एक पेड़ दिखाया। मूसा ने पेड़ को पानी में डाला। जब उसने ऐसा किया, पानी अच्छा पीने योग्य हो गया।

उस स्थान पर यहोवा ने लोगों की परीक्षा ली और उन्हें एक नियम दिया। यहोवा ने लोगों के विश्वास की जाँच की। [26]यहोवा ने कहा, "तुम लोगों को अपने परमेश्वर यहोवा का आदेश अवश्य मानना चाहिए। तुम लोगों को वह करना चाहिए जिसे वह ठीक कहता है। यदि तुम लोग यहोवा के आदेशों और नियमों का पालन करोगे तो तुम लोग मिस्रियों की तरह बीमार नहीं होगे। मैं तुम्हारा यहोवा तुम लोगों को कोई ऐसी बीमारी नहीं दूँगा जैसी मैंने मिस्रियों को दी। मैं यहोवा हूँ। मैं ही वह हूँ जो तुम्हें स्वस्थ बनाता है।"

[27]तब लोगों ने एलीम तक की यात्रा की। एलीम में पानी के बारह सोते थे। और वहाँ सत्तर खजूर के पेड़ थे। इसलिए लोगों ने वहाँ पानी के निकट डेरा डाला।

मारा इस नाम का अर्थ "कड़वा" है।

16 तब लोगों ने एलीम से यात्रा की और सीनै मरुभूमि में पहुँचे। यह स्थान एलीम और सीनै के बीच था। वे इस स्थान पर दूसरे महीने के पन्द्रहवें दिन* मिस्र छोड़ने के बाद पहुँचे। [2]तब इस्राएल के लोगों ने फिर शिकायत करनी शुरू की। उन्होंने मूसा और हारून से मरूभूमि में शिकायत की। [3]लोगों ने मूसा और हारून से कहा, "यह हमारे लिये अच्छा होता कि यहोवा ने हम लोगों को मिस्र में मार डाला होता। मिस्र में हम लोगों के पास खाने को बहुत था। हम लोगों के पास वह सारा भोजन था जिसकी हमें आवश्यकता थी। किन्तु अब तुम हमें मरुभूमि में ले आये हो। हम सभी यहाँ भूख से मर जाएंगे।"

[4]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं आकाश से भोजन गिराऊँगा। यह भोजन तुम लोगों के खाने के लिए होगा। हर एक दिन लोग बाहर जायें और उस दिन खाने के जरूरत के लिए भोजन इकट्ठा करें। मैं यह इसलिए करूँगा कि मैं देखूँ कि क्या लोग वही करेंगे जो मैं करने को कहूँगा। [5]हर एक दिन लोग प्रत्येक दिन के लिए पर्याप्त भोजन इकट्ठा करें। किन्तु शुक्रवार को जब भोजन तैयार करने लगे तो देखें कि वे दो दिन के लिए पर्याप्त भोजन रखते हैं।"*

[6]इसलिए मूसा और हारून ने इस्राएल के लोगों से कहा, "आज की रात तुम लोग यहोवा की शक्ति देखोगे। तुम लोग जानोगे कि एक मात्र वह ही ऐसा है जिसने तुम लोगों को मिस्र देश से बचा कर बाहर निकाला। [7]कल सवेरे तुम लोग यहोवा की महिमा देखोगे। तुम लोगों ने यहोवा से शिकायत की। उसने तुम लोगों की सुनी। तुम लोग हम लोगों से शिकायत पर शिकायत कर रहे हो। संभव है कि हम लोग अब कुछ आराम कर सकें।"

[8]और मूसा ने कहा, "तुम लोगों ने शिकायत की और यहोवा ने तुम लोगों कि शिकायतें सुन ली है। इसलिए रात को यहोवा तुम लोगों को माँस देगा और हर सवेरे तुम लोग वह सारा भोजन पाओगे, जिसकी तुम को जरूरत है। तुम लोग मुझसे और हारून से शिकायत करते रहे हो। याद रखो तुम लोग मेरे और हारून के विरुद्ध शिकायत नहीं कर रहे हो। तुम लोग यहोवा के विरुद्ध शिकायत कर रहे हो।"

[9]तब मूसा ने हारून से कहा, "इस्राएल के लोगों को सम्बोधित करो। उनसे कहो, 'यहोवा के सामने इकट्ठे हों क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुनी हैं।'"

[10]हारून ने इस्राएल के सभी लोगों को सम्बोधित किया। वे सभी एक स्थान पर इकट्ठे थे। जब हारून बातें कर रहा था तभी लोग मुड़े और उन्होंने मरुभूमि की ओर देखा और उन्होंने यहोवा की महिमा को बादल में प्रकट होते देखा।

[11]यहोवा ने मूसा से कहा, [12]"मैंने इस्राएल के लोगों की शिकायत सुनी है। इसलिए उनसे मेरी बातें कहो। मैं कहता हूँ, 'आज साँझ को तुम माँस खाओगे और कल सवेरे तुम लोग भरपेट रोटियाँ खाओगे, तब तुम लोग जानोगे कि तुम लोग अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास कर सकते हो।'"

[13]उस रात बटेरें (पक्षियाँ) डेरे के चारों ओर आईं। लोगों ने इन बटेरों को माँस के लिए पकड़ा। सवेरे डेरे के पास ओस पड़ी होती थी। [14]सूरज के निकलने पर ओस पिघल जाती थी किन्तु ओस के पिघलने पर पाले की तह की तरह जमीन पर कुछ रह जाता था। [15]इस्राएल के लोगों ने इसे देखा और परस्पर कहा, "वह क्या है?"* उन्होंने यह प्रश्न इसलिए पूछा कि वे नहीं जानते थे कि वह क्या चीज़ है। इसलिए मूसा ने उनसे कहा, "यह भोजन है जिसे यहोवा तुम्हें खाने को दे रहा है। [16]यहोवा कहता है, 'हर व्यक्ति उतना इकट्ठा करे जितना उसे आवश्यक है। तुम लोगों में से हर एक लगभग दो क्वार्ट* अपने परिवार के हर व्यक्ति के लिए इकट्ठा करे।'"

[17]इसलिए इस्राएल के लोगों ने ऐसा ही किया। हर व्यक्ति ने इस भोजन को इकट्ठा किया। कुछ व्यक्तियों ने अन्य लोगों से अधिक इकट्ठा किया। [18]उन लोगों ने अपने परिवार के हर एक व्यक्ति को भोजन दिया। जब भोजन नापा गया तो हर एक व्यक्ति के लिए सदा पर्याप्त

दूसरे महीने के पन्द्रहवें दिन अर्थात् पन्द्रहवाँ इययर। इस्राएल के लोग एक महीने तक यात्रा करते रहे थे।

शुक्रवार ... है यह इसलिए हुआ ताकि लोग सब्त (शनिवार) को विश्राम न करें।

"वह क्या है?" हिब्रू में यह "मन्ना" की तरह उच्चारित होता है।

दो क्वार्ट मूल में एक ओमेर ।

रहा, किन्तु कभी भी आवश्यकता से अधिक नहीं हुआ। हर व्यक्ति ने ठीक अपने लिए तथा अपने परिवार के खाने के लिए पर्याप्त इकट्ठा किया।

[19]मूसा ने उनसे कहा, "अगले दिन खाने के लिए वह भोजन मत बचाओ।" [20]किन्तु लोगों ने मूसा की बात न मानी। कुछ लोगों ने अपना भोजन बचाया जिससे वे उसे अगले दिन खा सकें। किन्तु जो भोजन बचाया गया था उसमें कीड़े पड़ गए और वह दुर्गन्ध देने लगा। मूसा उन लोगों पर क्रुद्ध हुआ जिन्होंने यह किया था।

[21]हर सवेरे लोग भोजन इकट्ठा करते थे। हर एक व्यक्ति उतना इकट्ठा करता था जितना वह खा सके। किन्तु जब धूप तेज होती थी भोजन गल जाता था और वह समाप्त हो जाता था।

[22]शुक्रवार को लोगों ने दुगना भोजन इकट्ठा किया। उन्होंने चार क्वार्ट हर व्यक्ति के लिए इकट्ठा किया। इसलिए लोगों के सभी मुखिया आए और उन्होंने यह बात मूसा से कही।

[23]मूसा ने उनसे कहा, "यह वैसा ही है जैसा यहोवा ने बताया था। क्यों? क्योंकि कल यहोवा के आराम का पवित्र दिन सब्त है। तुम लोग आज के लिए जितना भोजन तुम्हें चाहिए पका सकते हो। किन्तु शेष भोजन कल सवेरे के लिए बचाना।"

[24]इसलिए लोगों ने अगले दिन के लिए बाकी भोजन बचाया और कोई भोजन खराब नहीं हुआ। और इनमें कहीं कोई कीड़े नहीं पड़े।

[25]शनिवार को मूसा ने लोगों से कहा, "आज यहोवा को समर्पित आराम का पवित्र दिन सब्त है। इसलिए तुम लोगों में से कल कोई भी खेत में बाहर नहीं होगा। कल का इकट्ठा भोजन खाओ। [26]तुम लोगों को छः दिन भोजन इकट्ठा करना चाहिए। किन्तु सातवाँ दिन आराम का दिन है इसलिए जमीन पर कोई विशेष भोजन नहीं होगा।"

[27]शनिवार को कुछ लोग थोड़ा भोजन एकत्र करने गए, किन्तु वे वहाँ जरा सा भी भोजन नहीं पा सके। [28]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम्हारे लोग मेरे आदेश का पालन करने और उपदेशों पर चलने से कब तक मना करेंगे? [29]देखो यहोवा ने शनिवार को तुम्हारे आराम का दिन बनाया है। इसलिए शुक्रवार को यहोवा दो दिन के लिये पर्याप्त भोजन तुम्हें देगा। इसलिए सब्त को हर एक को बैठना और आराम करना चाहिए। वहीं ठहरे रहो जहाँ हो।" [30]इसलिए लोगों ने सब्त को आराम किया।

[31]इस्राएली लोगों ने इस विशेष भोजन को "मन्ना"* कहना आरम्भ किया। मन्ना छोटे सफ़ेद धनिया के बीजों के समान था और इसका स्वाद शहद के साथ बने पापड़ की तरह था। [32]तब मूसा ने कहा, "यहोवा ने आदेश दिया कि, 'इस भोजन का आठ प्याले भर अपने वंशजों के लिए बचाना। तब वे उस भोजन को देख सकेंगे जिसे मैंने तुम लोगों को मरुभूमि में तब दिया था जब मैंने तुम लोगों को मिस्र से निकाला था।'"

[33]इसलिए मूसा ने हारून से कहा, "एक घड़ा लो और इसे आठ प्याले मन्ना से भरो और इस मन्ना को यहोवा के सामने रखने के लिये और अपने वंशजों के लिए बचाओ।" [34](इसलिए हारून ने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। हारून ने आगे चलकर मन्ना के घड़े को साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने रखा।) [35]लोगों ने चालीस वर्ष तक मन्ना खाया। वे मन्ना तब तक खाते रहे जब तक उस प्रदेश में नहीं आ गए जहाँ उन्हें बसना था। वे उसे तब तक खाते रहे जब तक वे कनान के निकट नहीं आ गए। [36](वे मन्ना के लिए जिस तोल का उपयोग करते थे, वह ओमेर* था। एक ओमेर लगभग आठ प्यालों के बराबर था।)

17

इस्राएल के सभी लोगों ने सीन की मरुभूमि से एक साथ यात्रा की। वे यहोवा जैसा आदेश देता रहा, एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते रहे। लोगों ने रपीदीम की यात्रा की और वहाँ उन्होंने डेरा डाला। वहाँ लोगों के पीने के लिए पानी न था। [2]इसलिए वे मूसा के विरुद्ध हो गए और उससे बहस करने लगे। लोगों ने कहा, "हमें पीने के लिए पानी दो।"

किन्तु मूसा ने उनसे कहा, "तुम लोग मेरे विरुद्ध क्यों हो रहे हो? तुम लोग यहोवा की परीक्षा क्यों ले रहे हो? क्या तुम लोग समझते हो कि यहोवा हमारे साथ नहीं है?"

[3]किन्तु लोग बहुत प्यासे थे। इसलिए उन्होंने मूसा से शिकायत जारी रखी। लोगों ने कहा, "हम लोगों को तुम

मन्ना यह शब्द उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "वह क्या है?"

ओमेर एक ओमेर एपा का 1/10 भाग था।

मिस्र से बाहर क्यों लाए? क्या तुम इसलिए लाए कि पानी के बिना हमको, हमारे बच्चों को, और हमारी गाय, बकरियों को प्यासा मार डालो?"

[4]इसलिए मूसा ने यहोवा को पुकारा, "मैं इन लोगों के साथ क्या करुँ? ये मुझे मार डालने को तैयार हैं।"

[5]यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएल के लोगों के पास जाओ और उनके कुछ बुज़ुर्गों (नेताओं) को अपने साथ लो। अपनी लाठी अपने साथ ले जाओ। यह वही लाठी है जिसे तुमने तब उपयोग में लिया था जब नील नदी पर इससे चोट की थी। [6]होरेब (सीनै) पहाड़ पर मैं तुम्हारे सामने एक चट्टान पर खड़ा होऊँगा। लाठी को चट्टान पर मारो और इससे पानी बाहर आ जाएगा। तब लोग पी सकते हैं।"

मूसा ने वही बातें कीं और इस्राएल के बुज़ुर्गों (नेताओ) ने इसे देखा। [7]मूसा ने इस स्थान का नाम मरीबा* और मस्सा* रखा। क्योंकि यह वह स्थान था जहाँ इस्राएल के लोग उसके विरुद्ध हुए और उन्होंने यहोवा की परीक्षा ली थी। लोग यह जानना चाहते थे कि यहोवा उनके साथ है या नहीं।

[8]अमालेकी लोग रपीदीम आए और इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़े। [9]इसलिए मूसा ने यहोशू से कहा, "कुछ लोगों को चुनों और अगले दिन अमालेकियों से जाकर लड़ो। मैं पर्वत की चोटी पर खड़ा होकर तुम्हें देखूँगा। मैं परमेश्वर द्वारा दी गई छड़ी को पकड़े रहूँगा।"

[10]यहोशू ने मूसा की आज्ञा मानी और अगले दिन अमालेकियों से लड़ने गया। उसी समय मूसा, हारून और हूर पहाड़ी की चोटी पर गए। [11]जब कभी मूसा अपने हाथ को हवा में उठाता तो इस्राएल के लोग युद्ध जीत लेते। किन्तु जब मूसा अपने हाथ को नीचे करता तो इस्राएल के लोग युद्ध में हारने लगते।

[12]कुछ समय बाद मूसा की बाहें थक गई। मूसा के साथ के लोग ऐसा उपाय करना चाहते थे जिससे मूसा की बाहें हवा में रह सकें। इसलिए उन्होंने एक बड़ी चट्टान मूसा के नीचे बैठने के लिए रखी तथा हारून और हूर ने मूसा की बाहों को हवा में पकड़े रखा। हारून मूसा की एक ओर था तथा हूर दूसरी ओर। वे उसके हाथों को वैसे ही ऊपर तब तक पकड़े रहे जब तक सूरज नहीं डूबा। [13]इसलिए यहोशू और उसके सैनिकों ने अमालेकियों को इस युद्ध में हरा दिया।

[14]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "इस युद्ध के बारे में लिखो। इस युद्ध की घटनाओं को एक पुस्तक में लिखो जिससे लोग याद करेंगे कि यहाँ क्या हुआ था और यहोशू से कहो कि मैं अमालेकी लोगों को धरती से पूर्णरूप से नष्ट कर दूँगा।"

[15]तब मूसा ने एक वेदी बनायी। मूसा ने वेदी का नाम "यहोवा निस्सी"* रखा। [16]मूसा ने कहा, "मैंने यहोवा के सिंहासन की ओर अपने हाथ फैलाए। इसलिए यहोवा अमालेकी लोगों से लड़ा जैसा उसने सदा किया है।"

मूसा को उसके ससुर की सलाह

18 मूसा का ससुर यित्रो मिद्यान में याजक था। परमेश्वर ने मूसा और इस्राएल के लोगों की अनेक प्रकार से जो सहायता की उसके बारे में यित्रो ने सुना। यित्रो ने इस्राएल के लोगों को यहोवा द्वारा मिस्र से बाहर ले जाए जाने के बारे में सुना। [2]इसलिए यित्रो मूसा के पास गया जब वह परमेश्वर के पर्वत के पास डेरा डाले था। वह मूसा की पत्नी सिप्पोरा को अपने साथ लाया। (सिप्पोरा मूसा के साथ नहीं थी क्योंकि मूसा ने उसे उसके घर भेज दिया था।) [3]यित्रो मूसा के दोनो पुत्रों को भी साथ लाया। पहले पुत्र का नाम गेर्शोम रखा क्योंकि जब वह पैदा हुआ, मूसा ने कहा, "मैं विदेश में अजनबी हूँ।" [4]दूसरे पुत्र का नाम एलीएज़ेर* रखा क्योंकि जब वह उत्पन्न हुआ तो मूसा ने कहा, "मेरे पिता के परमेश्वर ने मेरी सहायता की और मिस्र के राजा की तलवार से मुझे बचाया है।" [5]इसलिए यित्रो मूसा के पास तब गया जब वह परमेश्वर के पर्वत (सीनै पर्वत) के निकट मरुभूमि में डेरा डाले था। मूसा की पत्नी और उसके दो पुत्र यित्रो के साथ थे।

[6]यित्रो ने मूसा को एक सन्देश भेजा। यित्रो ने कहा, "मैं तुम्हारा ससुर यित्रो हूँ और मैं तुम्हारी पत्नी और उसके दोनों पुत्रों को तुम्हारे पास ला रहा हूँ।"

मरीबा इस नाम का अर्थ "विद्रोह" है।

मस्सा इस नाम का अर्थ "परिक्षण", "परिक्षा और "जाँच है।"

यहोवा निस्सी "यहोवा मेरा ध्वज है।"

एलीएज़ेर इस नाम का अर्थ है "मेरा परमेश्वर सहायता करता है।"

[7]इसलिए मूसा अपने ससुर से मिलने गया। मूसा उसके सामने झुका और उसे चूमा। दोनों लोगों ने एक दूसरे का कुशल क्षेम पूछा। तब वे मूसा के डेरे में और अधिक बातें करने गए। [8]मूसा ने अपने ससुर यित्रो को हर एक बात बताई जो यहोवा ने इस्राएल के लोगों के लिए की थी। मूसा ने वे चीज़ें भी बताई जो यहोवा ने फ़िरौन और मिस्र के लोगों के लिए की थीं। मूसा ने रास्ते की सभी समस्याओं के बारे में बताया और मूसा ने अपने ससुर को बताया कि किस तरह यहोवा ने इस्राएली लोगों को बचाया, जब–जब वे कष्ट में थे।

[9]यित्रो उस समय बहुत प्रसन्न हुआ जब उसने यहोवा द्वारा इस्राएल के लिए की गई सभी अच्छी बातों को सुना। यित्रो इसलिए प्रसन्न था कि यहोवा ने इस्राएल के लोगों को मिस्रियों से स्वतन्त्र कर दिया था।

[10]यित्रो ने कहा,

"यहोवा की स्तुति करो!
उसने तुम्हें मिस्र के लोगों से स्वतन्त्र कराया।
यहोवा ने तुम्हें फ़िरौन से बचाया है।
[11] अब मैं जानता हूँ कि यहोवा सभी
देवताओं से महान है
उन्होंने सोचा कि सबकुछ उनके काबू में है
लेकिन देखो, परमेश्वर ने क्या किया!"

[12]तब यित्रो ने परमेश्वर के सम्मान में बलि तथा भेंटे दीं। तब हारून तथा इस्राएल के सभी बुज़ुर्ग (नेता) मूसा के ससुर यित्रो के साथ भोजन करने आए। यह उन्होंने परमेश्वर की उपासना की विशेष विधि के रूप में किया।

[13]अगले दिन मूसा लोगों का न्याय करने वाला था। वहाँ लोगों की संख्या बहुत अधिक थी। इस कारण लोगों को मूसा के सामने सारे दिन खड़ा रहना पड़ा। [14]यित्रो ने मूसा को न्याय करते देखा। उसने पूछा, "तुम ही यह क्यों कर रहे हो? एक मात्र न्यायाधीश तुम्हीं क्यों हो? और लोग केवल तुम्हारे पास ही सारे दिन क्यों आते हैं?"

[15]तब मूसा ने अपने ससुर से कहा, "लोग मेरे पास आते हैं और अपनी समस्याओं के बारे में मुझ से परमेश्वर का निर्णय पूछते हैं। [16]यदि उन लोगों का कोई विवाद होता है तो वे मेरे पास आते हैं। मैं निर्णय करता हूँ कि कौन ठीक है। इस प्रकार मैं परमेश्वर के नियमों और उपदेशों की शिक्षा लोगों को देता हूँ।"

[17]किन्तु मूसा के ससुर ने उससे कहा, "जिस प्रकार तुम यह कर रहे हो, ठीक नहीं है। [18]तुम्हारे अकेले के लिए यह काम अत्याधिक है। इससे तुम थक जाते हो और इससे लोग भी थक जाते हैं। तुम यह काम स्वयं अकेले नहीं कर सकते। [19]मैं तुम्हें कुछ सुझाव दूँगा। मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर तुम्हारा साथ देगा। जो तुम्हें करना चाहिए वह यह है। तुम्हें परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व करते रहना चाहिए और तुम्हें उनके इन विवादों और समस्याओं को परमेश्वर के सामने रखना चाहिए। [20]तुम्हें परमेश्वर के नियमों और उपदेशों की शिक्षा लोगों को देनी चाहिए। लोगों को चेतावनी दो कि वे नियम न तोड़ें। लोगों को जीने की ठीक राह बताओ। उन्हें बताओ कि वे क्या करें। [21]किन्तु तुम्हें लोगों में से अच्छे लोगों को चुनना चाहिए।

"तुम्हें अपने विश्वासपात्र आदमियों का चुनाव करना चाहिए अर्थात् उन आदमियों का जो परमेश्वर का सम्मान करते हों। उन आदमियों को चुनो जो धन के लिए अपना निर्णय न बदलें। इन आदमियों को लोगों का प्रशासक बनाओ। हजार, सौ, पचास, और दस लोगों पर भी प्रशासक होने चाहिए। [22]इन्हीं प्रशासकों को लोगों का न्याय करने दो। यदि कोई बहुत ही गंभीर मामला हो तो वे प्रशासक निर्णय के लिए तुम्हारे पास आ सकते हैं। किन्तु अन्य मामलों का निर्णय वे स्वयं ही कर सकते हैं। इस प्रकार यह तुम्हारे लिए अधिक सरल होगा। इसके अतिरिक्त, ये तुम्हारे काम में हाथ बटा सकेंगे। [23]यदि तुम यहोवा की इच्छानुसार ऐसा करते हो तब तुम अपना कार्य करते रहने योग्य हो सकोगे। और इसके साथ ही साथ सभी लोग अपनी समस्याओ के हल हो जाने से शान्तिपूर्वक घर जा सकेंगे।"

[24]इसलिए मूसा ने वैसा ही किया जैसा यित्रो ने कहा था। [25]मूसा ने इस्राएल के लोगों मे से योग्य पुरुषों को चुना। मूसा ने उन्हें लोगों का अगुआ बनाया। वहाँ हजार, सौ, पचास और दस लोगों के ऊपर प्रशासक थे। [26]ये प्रशासक लोगों के न्यायाधीश थे। लोग अपनी समस्याएं इन प्रशासको के पास सदा ला सकते थे। और मूसा को केवल गंभीर मामले ही निपटाने पड़ते थे।

[27]कुछ समय बाद मूसा ने अपने ससुर यित्रो से विदा ली और यित्रो अपने घर लौट गया।

इस्राएल के साथ परमेश्वर का साक्षीपत्र

19 मिस्र से अपनी यात्रा करने के तीसरे महीने में इस्राएल के लोग सीनै मरुभूमि में पहुँचे। [2]लोगों ने रपीदीम को छोड़ दिया था और वे सीनै मरुभूमि में आ पहुँचे थे। इस्राएल के लोगों ने मरुभूमि में पर्वत* के निकट डेरा डाला। [3]तब मूसा पर्वत के ऊपर परमेश्वर के पास गया। जब मूसा पर्वत पर था तभी पर्वत से परमेश्वर ने उससे कहा, "ये बातें इस्राएल के लोगों अर्थात् याकूब के बड़े परिवार से कहो: [4]'तुम लोगों ने देखा कि मैं अपने शत्रुओं के साथ क्या कर सकता हूँ। तुम लोगों ने देखा कि मैंने मिस्र के लोगों के साथ क्या किया। तुम ने देखा कि मैंने तुम को मिस्र से बाहर एक उकाब की तरह पंखों पर बैठाकर निकाला। और यहाँ अपने समीप लाया। [5]इसलिए अब मैं कहता हूँ तुम लोग मेरा आदेश मानो। मेरे साक्षीपत्र का पालन करो। यदि तुम मेरे आदेश मानोगे तो तुम मेरे विशेष लोग बनोगे। समस्त संसार मेरा हैं। [6]तुम एक विशेष लोग और याजकों का राज्य बनोगे।' मूसा, जो बातें मैंने बताई हैं उन्हें इस्राएल के लोगों से अवश्य कह देना।"

[7]इसलिए मूसा पर्वत से नीचे आया और लोगों के बुज़ुर्गो (नेताओं) को एक साथ बुलाया। मूसा ने बुज़ुर्गो से वह बातें कहीं जिन्हें कहने का आदेश यहोवा ने उसे दिया था। [8]फिर सभी लोग एक साथ बोले, "हम लोग यहोवा की कही हर बात मानेगें।"

तब मूसा परमेश्वर के पास पर्वत पर लौट आया। मूसा ने कहा कि लोग उसके आदेश का पालन करेंगे। [9]और यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं घने बादल में तुम्हारे पास आऊँगा। मैं तुमसे बात करूँगा। सभी लोग मुझे तुमसे बातें करते हुए सुनेंगे। मैं यह इसलिए करूँगा जिससे लोग उन बातों में सदा विश्वास करेंगे जो तुमने उनसे कहीं।"

तब मूसा ने परमेश्वर को वे सभी बातें बताईं जो लोगों ने कही थीं।

[10]यहोवा ने मूसा से कहा, "आज और कल तुम लोगों को विशेष सभा के लिए अवश्य तैयार करो। लोगों को अपने वस्त्र धो लेने चाहिए [11]और तीसरे दिन मेरे लिए तैयार रहना चाहिए। तीसरे दिन मैं (यहोवा) सीनै पर्वत पर नीचे आऊँगा और सभी लोग मुझ (यहोवा) को देखेंगे। [12-13]किन्तु उन लोगों से अवश्य कह देना कि वे पर्वत से दूर ही रूकें। एक रेखा खींचना और उसे लोगों को पार न करने देना। यदि कोई व्यक्ति या जानवर पर्वत को छूएगा तो उसे अवश्य मार दिया जाएगा। वह पत्थरों से मारा जाएगा या बाणों से बेधा जाएगा। किन्तु किसी व्यक्ति को उसे छूने नहीं दिया जाएगा। लोगों को तुरही बजने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। उसी समय उन्हें पर्वत पर जाने दिया जाएगा।"

[14]सो मूसा पर्वत से नीचे उतरा। वह लोगों के समीप गया और विशेष बैठक के लिए उन्हें तैयार किया। लोगों ने अपने वस्त्र धोए।

[15]तब मूसा ने लोगों से कहा, "परमेश्वर से मिलने के लिए तीन दिन में तैयार हो जाओ। उस समय तक कोई भी पुरुष स्त्री से सर्म्पक न करे।"

[16]तीसरे दिन पर्वत पर बिजली की चमक और मेघ की गरज हुई। एक घना बादल पर्वत पर उतरा और तुरही की तेज ध्वनि हुई। डेरे के सभी लोग डर गए। [17]तब मूसा लोगों को पर्वत की तलहटी पर परमेश्वर से मिलने के लिए डेरे के बाहर ले गया। [18]सीनै पर्वत धूएँ से ढका था। पर्वत से धूआँ इस प्रकार उठा जैसे किसी भट्टी से उठता है। यह इसलिए हुआ कि यहोवा आग में पर्वत पर उतरे और साथ ही सारा पर्वत भी काँपने लगा। [19]तुरही की ध्वनि तीव्र से तीव्रतर होती चली गई। जब भी मूसा ने परमेश्वर से बात की, मेघ की गरज में परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया।

[20]इस प्रकार यहोवा सीनै पर्वत पर उतरा। यहोवा स्वर्ग से पर्वत की चोटी पर उतरा। तब यहोवा ने मूसा को अपने साथ पर्वत की चोटी पर आने को कहा। इसलिए मूसा पर्वत पर चढ़ा।

[21]यहोवा ने मूसा से कहा, "जाओ और लोगों को चेतावनी दो कि वे मेरे पास न आएं न ही मुझे देखें। यदि वे ऐसा करेंगे तो वे मर जाएंगे और इस तरह बहुत सी मौतें हो जाएंगी। [22]उन याजकों से भी कहो जो मेरे पास आएंगे कि वे इस विशेष, मिलन के लिए स्वंय को तैयार करें। यदि वे ऐसा नहीं करते तो मैं उन्हें दण्ड दूँगा।"

[23]मूसा ने यहोवा से कहा, "किन्तु लोग पर्वत पर नहीं आ सकते। तूने स्वयं ही हम से एक रेखा खींचकर पर्वत को पवित्र समझने और उसे पार न करने के लिए कहा था।"

पर्वत अर्थात् होरेब पर्वत जिसे सीनै पर्वत भी कहा जाता हैं।

[24]यहोवा ने उससे कहा, "लोगों के पास जाओ और हारून को लाओ। उसे अपने साथ वापस लाओ। किन्तु याजकों और लोगों को मत आने दो। यदि वे मेरे पास आएंगे तो मैं उन्हें दण्ड दूँगा।" [25]इसलिए मूसा लोगों के पास गया और उनसे ये बातें कहीं।

दस आदेश

20 तब परमेश्वर ने ये बातें कहीं, [2]"मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं तुम्हें मिस्र देश से बाहर लाया। मैंने तुम्हें दासता से मुक्त किया। इसलिए तुम्हें निश्चय ही इन आदेशों का पालन करना चाहिए:

[3]"तुम्हे मेरे अतिरिक्त किसी अन्य देवता को, नहीं मानना चाहिए।

[4]"तुम्हें कोई भी मूर्ति नहीं बनानी चाहिए। किसी भी उस चीज़ की आकृति मत बनाओ जो ऊपर आकाश में या नीचे धरती पर अथवा धरती के नीचे पानी में हो। [5]किसी भी प्रकार की मूर्ति की पूजा मत करो, उसके आगे मत झुको। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मेरे लोग जो दूसरे देवताओं की पूजा करते है मैं उनसे घृणा करता हूँ। यदि कोई व्यक्ति मेरे विरुद्ध पाप करता है तो मैं उसका शत्रु हो जाता हूँ। मैं उस व्यक्ति की सन्तानों की तीसरी और चौथी पीढ़ी तक को दण्ड दूँगा। [6]किन्तु मैं उन व्यक्तियों पर बहुत कृपालू रहूँगा जो मुझसे प्रेम करेंगे और मेरे आदेशों को मानेंगे। मैं उनके परिवारों के प्रति सहस्रों पीढ़ी तक कृपालु रहूँगा।

[7]"तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के नाम का उपयोग तुम्हें गलत ढंग से नहीं करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति यहोवा के नाम का उपयोग गलत ढंग से करता है तो वह अपराधी है और यहोवा उसे निरपराध नहीं मानेंगा।

[8]"सब्त* को एक विशेष दिन के रूप में मानने का ध्यान रखना। [9]सप्ताह में तुम छ: दिन अपना कार्य कर सकते हो। [10]किन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की प्रतिष्ठा में आराम का दिन है। इसलिए उस दिन कोई व्यक्ति चाहें तुम, या तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ तुम्हारे दास और दासियाँ, पशु तथा तुम्हारे नगर में रहनें वाले सभी विदेशी काम नहीं करेंगे।" [11]क्यों? क्योंकि यहोवा ने छ: दिन काम किया और आकाश, धरती, सागर, और उनकी हर चीज़ें बनाई। और सातवें दिन परमेश्वर ने आराम किया। इस प्रकार यहोवा ने शनिवार को वरदान दिया कि उसे आराम के पवित्र दिन के रूप में मनाया जाएगा। यहोवा ने उसे बहुत ही विशेष दिन के रूप में स्थापित किया।

[12]"अपने माता और अपने पिता का आदर करो। यह इसलिए करो कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा जिस धरती को तुम्हें दे रहा है, उसमें तुम दीर्घ जीवन बिता सको।

[13]"तुम्हें किसी व्यक्ति की हत्या नहीं करनी चाहिए।

[14]"तुम्हें व्यभिचार नहीं करना चाहिए।

[15]"तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए।

[16]"तुम्हें अपने पड़ोसियों के विरुद्ध झूठी गवाही नहीं देनी चाहिए।

[17]"दूसरे लोगों की चीज़ों को लेने की इच्छा तुम्हें नहीं करनी चाहिए। तुम्हें अपने पड़ोसी का घर, उसकी पत्नी, उसके सेवक और सेविकाओं, उसकी गायों, उसके गधों को लेने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। तुम्हें किसी की भी चीज़ को लेने की इच्छा नहीं करनी चाहिए।"

लोगों का परमेश्वर से डरना

[18]घाटी में लोगों ने इस पूरे समय गर्जन सुनी और पर्वत पर बिजली की चमक देखी। उन्होंने तुरही की ध्वनि सुनी और पर्वत से उठते धूएँ को देखा। लोग डरे और भय से काँप उठे। वे पर्वत से दूर खड़े रहे और देखते रहे। [19]तब लोगों ने मूसा से कहा, "यदि तुम हम लोगों से कुछ कहना चाहोगे तो हम लोग सुनेंगे। किन्तु परमेश्वर को हम लोगों से बात न करने दो। यदि यह होगा तो हम लोग मर जाएंगे।"

[20]तब मूसा ने लोगों से कहा, "डरो मत! यहोवा यह प्रमाणित करने आया है कि वह तुमसे प्रेम करता है।"

[21]लोग उस समय उठकर पर्वत से दूर चले आए जबकि मूसा उस गहरे बादल में गया जहाँ यहोवा था। [22]तब यहोवा ने मूसा से इस्राएलियों को बताने के लिए ये बातें कहीं: "तुम लोगों ने देखा कि मैंने तुमसे आकाश से

सब्त अर्थात् शनिवार, यहूदियों के लिए उपासना और विश्राम का विशेष दिन।

बातें की। [23]इसलिए तुम लोग मेरे विरोध में सोने या चाँदी की मूर्तियाँ न बनाना। तुम्हें इन झूठे देवताओं की मूर्तियाँ कदापि नहीं बनानी हैं।

[24]"मेरे लिए एक विशेष वेदी बनाओ। इस वेदी को बनाने के लिए धूलि का उपयोग करो। इस वेदी पर बलि के रूप में होमबलि तथा मेलबलि चढ़ाओ। इस काम के लिए अपनी भेड़ों और गाय, बकरियों का उपयोग करो। उन सभी स्थानों पर यही करो जहाँ मैं अपने को याद करने के लिए कह रहा हूँ। तब मैं आऊँगा और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। [25]यदि तुम लोग वेदी को बनाने के लिए चट्टानों का उपयोग करो तो तुम लोग उन चट्टानों का उपयोग न करो जिन्हें तुम लोगों ने अपने किसी लोहे के औज़ारों से चिकना किया है। यदि तुम लोग चट्टानों पर किसी औज़ारों का उपयोग करोगे तो मैं वेदी को स्वीकार नहीं करूँगा। [26]तुम लोग वेदी तक पहुँचाने वाली सीढ़ियाँ भी न बनाना। यदि सीढ़ियाँ होंगी तो जब लोग ऊपर वेदी को देखेंगे तो वे तुम्हारे वस्त्रों के भीतर नीचे से तुम्हारी नग्नता को भी देख सकेंगे।"

अन्य नियम एवं आदेश

21 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "ये वे अन्य नियम हैं, जिन्हें तुम लोगों को बताओगे:

[2]"यदि तुम एक हिब्रू दास खरीदते हो तो उसे तुम्हारी सेवा केवल छः वर्ष करनी होगी। छः वर्ष बाद वह स्वतन्त्र हो जाएगा। उसे कुछ भी नहीं देना पड़ेगा। [3]तुम्हारा दास होने के पहले यदि उसका विवाह नहीं हुआ है तो वह पत्नी के बिना ही स्वतन्त्र होकर चला जाएगा। किन्तु यदि दास होने के समय वह व्यक्ति विवाहित होगा तो स्वतन्त्र होने के समय वह अपनी पत्नी को अपने साथ ले जाएगा। [4]यदि दास विवाहित नहीं होगा तो उसका स्वामी उसे पत्नी दे सकेगा। यदि वह पत्नी, पुत्र या पुत्रियों को जन्म देगी तो वह स्त्री तथा बच्चे उस दास के स्वामी के होंगे। अपने सेवाकाल के पूरा होने पर केवल वह दास ही स्वतन्त्र किया जाएगा।

[5]"किन्तु यह हो सकता है कि दास यह निश्चय करे कि वह अपने स्वामी के साथ रहना चाहता है। तब उसे कहना पड़ेगा, 'मैं अपने स्वामी से प्रेम करता हूँ। मैं अपनी पत्नी और अपने बच्चों से प्रेम करता हूँ। मैं स्वतन्त्र नहीं होऊँगा मैं यहीं रहूँगा।' [6]यदि ऐसा हो तो दास का स्वामी उसे परमेश्वर के सामने लाएगा। दास का स्वामी उसे किसी दरवाजे तक या उसकी चौखट तक ले जाएगा और दास का स्वामी एक तेज औज़ार से दास के कान में एक छेद करेगा। तब दास उस स्वामी की सेवा जीवन भर करेगा।

[7]"कोई भी व्यक्ति अपनी पुत्री को दासी के रूप में बेचने का निश्चय कर सकता है। यदि ऐसा हो तो उसे स्वतन्त्र करने के लिए वे ही नियम नहीं हैं जो पुरुष दासों को स्वतन्त्र करने के लिए हैं। [8]यदि स्वामी उस स्त्री से सन्तुष्ट नहीं है तो वह उसके पिता को उसे वापस बेच सकता है। किन्तु यदि दासी का स्वामी उस स्त्री से विवाह करने का वचन दे तो वह दूसरे व्यक्ति को उसे बेचने का अधिकार खो देता है। [9]यदि दासी का स्वामी उस दासी से अपने पुत्र का विवाह करने का वचन दे तो उससे दासी जैसा व्यवहार नहीं किया जाएगा। उसके साथ पुत्री जैसा व्यवहार करना होगा।

[10]"यदि दासी का स्वामी किसी दूसरी स्त्री से भी विवाह करे तो उसे चाहिए कि वह पहली पत्नी को कम भोजन या वस्त्र न दे और उसे चाहिए कि उन चीज़ों को लगातार वह उसे देता रहे जिन्हें पाने का उसे अधिकार विवाह से मिला है। [11]उस व्यक्ति को ये तीन चीज़ें उसके लिए करनी चाहिए। यदि वह इन्हें नहीं करता तो स्त्री स्वतन्त्र की जाएगी और इसके लिए उसे कुछ देना भी नहीं पड़ेगा। उसे उस व्यक्ति को कोई धन नहीं देना होगा।

[12]"यदि कोई व्यक्ति किसी को चोट पहुँचाए और उसे मार डाले तो उस व्यक्ति को भी मार दिया जाय। [13]किन्तु यदि ऐसा संयोग होता है कि कोई बिना पूर्व योजना के किसी व्यक्ति को मार दे, तो ऐसा परमेश्वर की इच्छा से ही हुआ होगा। मैं कुछ विशेष स्थानों को चुनूँगा जहाँ लोग सुरक्षा के लिए दौड़कर जा सकते हैं। इस प्रकार वह व्यक्ति दौड़कर इनमें से किसी भी स्थान पर जा सकता है। [14]किन्तु कोई व्यक्ति यदि किसी व्यक्ति के प्रति क्रोध या घृणा रखने के कारण उसे मारने की योजना बनाए तो हत्यारे को दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। उसे मेरी वेदी* से दूर ले जाओ और उसे मार डालो।

[15]"कोई व्यक्ति जो अपने माता–पिता को चोट पहुँचायें वह अवश्य ही मार दिया जाये। [16]यदि कोई व्यक्ति किसी

वेदी मेज या ऊँचा स्थान जिसका इस्तेमाल बलि चढ़ाने के लिये किया जाता था।

को दास के रूप में बेचने या अपना दास बनाने के लिए चुराए तो उसे अवश्य मार दिया जाये। [17]कोई व्यक्ति, जो अपने माता-पिता को शाप* दे तो उसे अवश्य मार दिया जाये।

[18]"दो व्यक्ति बहस कर सकते हैं और एक दूसरे को पत्थर या मुक्के से मार सकते हैं। उस व्यक्ति को तुम्हें कैसे दण्ड देना चाहिए? यदि चोट खाया हुआ व्यक्ति मर न जाये तो चोट पहुँचाने वाला व्यक्ति मारा न जाए। [19]किन्तु यदि चोट खाए व्यक्ति को कुछ समय तक चारपाई पकड़नी पड़े तो चोट पहुँचाने वाले व्यक्ति को उसे हर्जाना देना चाहिए। चोट पहुँचाने वाला व्यक्ति उसके समय की हानि को धन से पूरा करे। वह व्यक्ति तब तक उसे हर्जाना दे जब तक वह पूरी तरह ठीक न हो जाये।

[20]"कभी-कभी लोग अपने दास और दासियों को पीटते हैं। यदि पिटाई के बाद दास मर जाये तो हत्यारे को अवश्य दण्ड दिया जाये। [21]किन्तु दास यदि मरता नहीं और कुछ दिनों बाद वह स्वस्थ हो जाता है तो उस व्यक्ति को दण्ड* नहीं दिया जायेगा। क्यों? क्योंकि दास के स्वामी ने दास के लिए धन दिया और दास उसका है।

[22]"दो व्यक्ति आपस में लड़ सकते हैं और किसी गर्भवती स्त्री को चोट पहुँचा सकते हैं। यदि वह स्त्री अपने बच्चे को समय से पहले जन्म देती है, और माँ बुरी तरह घायल नहीं है तो चोट पहुँचानेवाला व्यक्ति उसे अवश्य धन दे। उस स्त्री का पति यह निश्चित करेगा कि वह व्यक्ति कितना धन दे। न्यायाधीश उस व्यक्ति को यह निश्चय करने में सहायता करेंगे कि वह धन कितना होगा। [23]किन्तु यदि स्त्री बुरी तरह घायल हो तो वह व्यक्ति जिसने उसे चोट पहुँचाई है अवश्य दण्डित किया जाये। यदि एक व्यक्ति मार दिया जाता है तो हत्यारा अवश्य मार दिया जाये। तुम एक जीवन के बदले दूसरा जीवन लो। [24]तुम आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पैर के बदले पैर लो। [25]जले के बदले जलाओ, खरोंच के बदले खरोंच करो और घाव के बदले घाव।

[26]"यदि कोई व्यक्ति किसी दास की आँख को चोट पहुँचाए और दास उस आँख से अन्धा हो जाये तो वह दास स्वतन्त्र हो जाने दिया जाएगा। उसकी आँख उसकी स्वतन्त्रता का मूल्य है। यह नियम दास या दासी दोनों के लिए समान है। [27]यदि दास का स्वामी दास के मुँह पर मारे और दास का कोई दाँत टूट जाए तो दास को स्वतन्त्र कर दिया जाएगा। दास का दाँत उसकी स्वतन्त्रता का मूल्य है। यह दास और दासी दोनों के लिए समान है।

[28]"यदि किसी व्यक्ति का कोई बैल किसी स्त्री को या पुरुष को मार देता है तो तुम पत्थरों का उपयोग करो और बैल को मार डालो। तुम्हें उस बैल को खाना नहीं चाहिए। किन्तु बैल का स्वामी अपराधी नहीं है। [29]किन्तु यदि बैल ने पहले लोगों को चोट पहुँचाई हो और स्वामी को चेतावनी दी गई हो तो वह स्वामी अपराधी है। क्यों? क्योंकि इसने बैल को बाँधा या बन्द नहीं रखा। यदि बैल स्वतन्त्र छोड़ा गया हो और किसी को वह मारे तो स्वामी अपराधी है। तुम पत्थरों से बैल और उसके स्वामी को भी मार दो। [30]किन्तु मृतक का परिवार यदि चाहे तो बदले में धन लेकर बैल के मालिक को छोड़ सकता है। किन्तु वह उतना धन दे जितना न्यायाधीश निश्चित करे।

[31]"यही नियम उस समय भी लागू होगा जब बैल किसी व्यक्ति के पुत्र या पुत्री को मारता है। [32]किन्तु बैल यदि दास को मार दे तो बैल का स्वामी दास के स्वामी को एक नये दास का मूल्य चाँदी के तीस सिक्के* दे और बैल भी पत्थरों से मार डाला जाये। यह नियम दास और दासी के लिए समान होगा।

[33]"कोई व्यक्ति कोई गड्ढा या कुँआ खोदे और उसे ढके नहीं और यदि किसी व्यक्ति का जानवर आए और उसमें गिर जाये तो गड्ढे का स्वामी दोषी है। [34]गड्ढे का स्वामी जानवर के लिए धन देगा। किन्तु जानवर के लिए धन देने के बाद उसे उस मरे जानवर को लेने दिया जायेगा।

[35]"यदि किसी का बैल किसी दूसरे व्यक्ति के बैल को मार डाले तो वे दोनों उस जीवित बैल को बेच दें। दोनों व्यक्ति बेचने से प्राप्त आधा-आधा धन और मरे बैल का आधा-आधा भाग ले लें। [36]किन्तु यदि उस व्यक्ति के बैल ने पहले भी किसी दूसरे जानवर को चोट पहुँचाई हो तो उस बैल का स्वामी अपने बैल के लिए उत्तरदायी है। यदि उसका बैल दूसरे बैल को मार डालता है तो वह अपराधी है क्योंकि उसने बैल को स्वतन्त्र छोड़ा। वह

शाप किसी के लिए बुरी बातें घटित होने की कामना करना।

दण्ड "हत्या के लिये दण्ड।"

चाँदी के तीस सिक्के नये दास के लिए मूल्य।

व्यक्ति बैल के बदले बैल अवश्य दे। वह मारे गए बैल के बदले अपना बैल दे।

22 “जो व्यक्ति किसी बैल या भेड़ को चुराता है उसे तुम कैसे दण्ड दोगे? यदि वह व्यक्ति जानवर को मार डाले या बेच दे तो वह उसे लौटा तो नहीं सकता। इसलिए वह एक चुराए बैल के बदले पाँच बैल दे। या वह एक चुराई गई भेड़ के बदले चार भेड़ दे। वह चोरी के लिए कुछ धन भी दे। [2-4]किन्तु यदि उसके पास अपना कुछ भी नहीं है तो चोरी के लिए उसे दास के रूप में बेचा जाएगा। किन्तु यदि उसके पास चोरी का जानवर पाया जाए तो वह व्यक्ति जानवर के स्वामी को हर एक चुराए गए जानवर के बदले दो जानवर देगा। इस बात का कोई अन्तर नहीं पड़ेगा कि जानवर बैल, गधा या भेड़ हो।

“यदि कोई चोर रात को घर में सेंध लगाने का प्रयत्न करते समय मारा जाये तो उसे मारने का अपराधी कोई नहीं होगा। किन्तु यदि यह दिन में हो तो उसका हत्यारा व्यक्ति अपराध का दोषी होगा। चोर को निश्चय ही क्षतिपूर्ति करनी होगी।

[5]“यदि कोई व्यक्ति अपने खेत या अँगूर के बाग में आग लगाये और वह उस आग को फैलने दे और वह उसके पड़ोसी के खेत या अँगूर के बाग को जला दे तो वह अपने पड़ोसी की हानि की पूर्ति में देने के लिए अपनी सबसे अच्छी फसल का उपयोग करेगा।*

[6]“कोई व्यक्ति अपने खेत की झाड़ियों को जलाने के लिए आग लगाए। किन्तु यदि आग बढ़े और उसके पड़ोसी की फसल या पड़ोसी के खेत में उगे अन्न को जला दे तो आग लगाने वाला व्यक्ति जली हुयी चीज़ों के बदले भुगतान करेगा।

[7]“कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से उसके घर में कुछ धन या कुछ अन्य चीज़ें रखने को कहे और यदि वह धन या वे चीज़ें पड़ोसी के घर से चोरी चली जायें तो तुम क्या करोगे? तुम्हें चोर का पता लगाने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि तुमने चोर को पकड़ लिया तो वह चीज़ों के मूल्य का दुगना देगा। [8]किन्तु यदि तुम चोर का पता न लगा सके तब परमेश्वर निर्णय करेगा कि पड़ोसी अपराधी है या नहीं। घर का स्वामी परमेश्वर के सामने जाए और परमेश्वर ही निर्णय करेगा कि उसने चुराया है या नहीं।

[9]“यदि दो व्यक्ति किसी खोए बैल, गधा, भेड़, वस्त्र, यदि किसी अन्य खोई हुई चीज़ के बारे में सहमत न हों तो तुम क्या करोगे? एक व्यक्ति कहता है, ‘यह मेरी है।’ और दूसरा कहता है, ‘नहीं, यह मेरी है।’ दोनों व्यक्ति परमेश्वर के सामने जाएँ। परमेश्वर निर्णय करेगा कि अपराधी कौन है। जिस व्यक्ति को परमेश्वर अपराधी पाएगा वह उस चीज़ के मूल्य से दुगना भुगतान करे।

[10]“कोई अपने पड़ोसी से कुछ समय के लिए अपने जानवर की देखभाल के लिए कहे। यह जानवर बैल, भेड़, गधा या कोई अन्य पशु हो और यदि वह जानवर मर जाये, उसे चोट आ जाये या कोई उसे तब हाँक ले जाये जब कोई न देख रहा हो तो तुम क्या करोगे? [11]वह पड़ोसी स्पष्ट करे कि उसने जानवर को नहीं चुराया है। यदि यह सत्य हो तब पड़ोसी यहोवा की शपथ उठाए कि उसने वह नहीं चुराया है। जानवर का मालिक इस शपथ को अवश्य स्वीकार करे। पड़ोसी को जानवर के लिए मालिक को भुगतान नहीं करना होगा। [12]किन्तु यदि पड़ोसी ने जानवर को चुराया हो तो वह मालिक को जानवर के लिए भुगतान अवश्य करे। [13]यदि जंगली जानवरों ने जानवर को मारा हो तो प्रमाण के लिए उसके शरीर को पड़ोसी लाए। पड़ोसी मारे गए जानवर के लिए मालिक को भुगतान नहीं करेगा।

[14]“यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से किसी जानवर को उधार ले तो उसके लिए वह व्यक्ति ही उत्तरदायी है। यदि उस जानवर को चोट पहुँचे या वह मर जाये तो पड़ोसी मालिक को उस जानवर के लिए भुगतान करे। पड़ोसी इसलिए उत्तरदायी है क्योंकि उसका मालिक स्वयं वहाँ नहीं था। [15]किन्तु यदि मालिक जानवर के साथ वहाँ हो तब पड़ोसी को भुगतान नहीं करना होगा। या यदि पड़ोसी काम लेने के लिए धन का भुगतान कर रहा हो तो जानवर के मरने या चोट खाने पर उसे कुछ भी नहीं देना होगा। जानवर के उपयोग के लिए दिया गया भुगतान ही पर्याप्त होगा।

व्यक्ति ... उपयोग करेगा “यदि कोई व्यक्ति अपने जानवरों को अपने खेत या अपने अँगूर के बाग में चरने के लिए छोड़े और जानवर दूसरे के खेत या अँगूर के बाग में बहक जाएं तो स्वामी को अवश्य बदले में देना होगा। भुगतान उसकी सबसे अच्छी फ़सल का किया जायेगा।”

[16]"यदि कोई पुरुष किसी अविवाहित* कुँवारी कन्या से यौन सम्बन्ध करे तो वह उससे निश्चय ही विवाह करे। और वह उस लड़की के पिता को पूरा दहेज* दे। [17]यदि पिता अपनी पुत्री को उसे विवाह के लिए देने से इन्कार करता है तो भी उस व्यक्ति को धन देना पड़ेगा। वह उसे दहेज का पूरा धन दे।

[18]"तुम किसी स्त्री को जादू टोना मत करने देना। यदि वह ऐसा करे तो तुम उसे जीवित मत रहने देना।

[19]"तुम किसी व्यक्ति को किसी जानवर के साथ यौन सम्बन्ध न रखने देना। यदि ऐसा हो तो वह व्यक्ति अवश्य मार डाला जाये।

[20]"यदि कोई किसी मिथ्या देवता को बलि चढ़ाए तो उस व्यक्ति को अवश्य नष्ट कर दिया जाये। केवल परमेश्वर यहोवा ही ऐसा है जिसे तुमको बलि चढ़ानी चाहिए।

[21]"याद रखो इससे पहले तुम लोग मिस्र देश में विदेशी थे। अत: तुम लोग उस व्यक्ति को न ठगो, न ही चोट पहुँचाओ जो तुम्हारे देश में विदेशी हो।

[22]"निश्चय ही तुम लोग ऐसी स्त्रियों का कभी बुरा नहीं करोगे जिनके पति मर चुके हों या उन बच्चों का जिनके माता-पिता न हों। [23]यदि तुम लोग उन विधवाओं या अनाथ बच्चों का कुछ बुरा करोगे तो वे मेरे आगे रोएंगे और मैं उनके कष्टों को सुनूँगा [24]और मुझे बहुत क्रोध आएगा। मैं तुम्हें तलवार से मार डालूँगा। तब तुम्हारी पत्नियाँ विधवा हो जाएंगी और तुम्हारे बच्चे अनाथ हो जाएंगे।

[25]"यदि मेरे लोगों में से कोई गरीब हो और तुम उसे कर्ज़ दो तो उस धन के लिए तुम्हें ब्याज नहीं लेना चाहिए। और जल्दी चुकाने के लिए भी तुम उसे मजबूर नहीं करोगे। [26]कोई व्यक्ति उधार लिए हुए धन के भुगतान के लिए अपना लबादा गिरवी रख सकता है। किन्तु तुम सूरज डूबने के पहले उसका वह वस्त्र अवश्य लौटा देना। [27]यदि वह व्यक्ति अपना लबादा नहीं पाता तो उसके पास शरीर ढकने को कुछ भी नहीं रहेगा। जब वह सोएगा तो उसे सर्दी लगेगी। यदि वह मुझे रोकर पुकारेगा तो मैं उसकी सुनूँगा। मैं उसकी बात सुनूँगा क्योंकि मैं कृपालु हूँ।

[28]"तुम्हें परमेश्वर या अपने लोगों के मुखियाओं को शाप नहीं देना चाहिए।

[29]"फ़सल कटने के समय तुम्हें अपना प्रथम अन्न और प्रथम फल का रस मुझे देना चाहिए। इसे टालो मत।

"मुझे अपने पहलौठे पुत्रों को दो। [30]अपनी पहलौठी गायों तथा भेड़ों को भी मुझे देना। पहलौठे को उसकी माँ के साथ सात दिन रहने देना। उसके बाद आठवें दिन उसे मुझको देना।

[31]"तुम लोग मेरे विशेष लोग हो। इसलिए ऐसे किसी जानवर का माँस मत खाना जिसे किसी जंगली जानवर ने मारा हो। उस मरे जानवर को कुत्तों को खाने दो।

23

"लोगों के विरुद्ध झूठ मत बोलो। यदि तुम न्यायालय में गवाह हो तो बुरे व्यक्ति की सहायता के लिए झूठ मत बोलो।

[2]"उस भीड़ का अनुसरण मत करो, जो गलत कर रहा हो। जो जन समूह बुरा कर रहा हो उसका अनुसरण करते हुए न्यायालय में उसका समर्थन मत करो।

[3]"न्यायालय में किसी गरीब का इसलिए पक्ष मत लो कि वह गरीब है। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। यदि वह सही है तब ही उसका समर्थन करो।

[4]"यदि तुम्हें कोई खोया हुआ बैल या गधा मिले तो तुम्हें उसे उसके मालिक को लौटा देना चाहिए। चाहे वह तुम्हारा शत्रु ही क्यों न हो।

[5]"यदि तुम देखो कि कोई जानवर इसलिए नहीं चल पा रहा है कि उसे अत्याधिक बोझ ढोना पड़ रहा है तो तुम्हें उसे रोकना चाहिए और उस जानवर की सहायता करनी चाहिए। तुम्हें उस जानवर की सहायता तब भी करनी चाहिए जब वह जानवर तुम्हारे शत्रुओं में से भी किसी का हो।

[6]"तुम्हें, लोगों को गरीबों के प्रति अन्यायी नहीं होने देना चाहिए। उनके साथ भी अन्य लोगों के समान ही न्याय होना चाहिए।

[7]"तुम किसी को किसी बात के लिए अपराधी कहते समय बहुत सावधान रहो। किसी व्यक्ति पर झूठे दोष न लगाओ। किसी निर्दोष व्यक्ति को उस अपराध के दण्ड के द्वारा मत मरने दो जो उसने नहीं किया। कोई व्यक्ति

अविवाहित या "वाग्दत्ता" प्राचीन इस्राएल में यदि युवती का वाग्दान हो जाता था तो उसके नियमों में से कोई वैसे ही थे जैसे विवाहित स्त्री के लिये हुआ करते थे।

दहेज वह धन जो एक व्यक्ति दुल्हन के पिता को इसलिए देता था ताकि वह उस युवती से विवाह कर सके।

जो निर्दोष की हत्या करे, दुष्ट है। और मैं उस दुष्ट व्यक्ति को क्षमा (माफ़) नहीं करूँगा।

[8]"यदि कोई व्यक्ति गलत होने पर अपने से सहमत होने के लिए रिश्वत देने का प्रयत्न करे तो उसे मत लो। ऐसी रिश्वत न्यायाधीशों को अन्धा कर देगी जिससे वे सत्य को नहीं देख सकेंगे। रिश्वत अच्छे लोगों को झूठ बोलना सिखाएगी।

[9]"तुम किसी विदेशी के साथ कभी बुरा बरताव न करो। याद रखो जब तुम मिस्र देश में रहते थे तब तुम विदेशी थे।

विशेष पर्व

[10]"छ: वर्ष तक बीज बोओ, अपनी फ़सलों को काटो और खेत को तैयार करो। [11]किन्तु सातवें वर्ष अपनी भूमि का उपयोग न करो। सातवाँ वर्ष भूमि के विश्राम का विशेष समय होगा। अपने खेतों में कुछ भी न बोओ। यदि कोई फ़सल वहाँ उगती है तो उसे गरीब लोगों को ले लेने दो। जो भी खाने की चीज़ें बच जायें उन्हें जंगली जानवरों को खा लेने दो। यही बात तुम्हें अपने अंगूर और जैतून के बागों के सम्बन्ध में भी करनी चाहिए।

[12]"छ: दिन तक काम करो। तब सातवें दिन विश्राम करो। इससे तुम्हारे दासों और तुम्हारे दूसरे मजदूरों को भी विश्राम का समय मिलेगा। और तुम्हारे बैल और गधे भी आराम कर सकेंगे।

[13]"संकल्प करो कि तुम इन नियमों का पालन करोगे। मिथ्या देवताओं की पूजा मत करो। तुम्हें उनका नाम भी नहीं लेना चाहिए!

[14]"प्रति वर्ष तुम्हारे तीन विशेष पवित्र पर्व होंगे। इन दिनों तुम लोग मेरी उपासना के लिए मेरी विशेष जगह पर आओगे। [15]पहला पवित्र पर्व अखमीरी रोटी का पर्व होगा। यह वैसा ही होगा, जैसा मैंने आदेश दिया है। इस दिन तुम लोग ऐसी रोटी खाओगे जिसमें ख़मीर न हो। यह सात दिन तक चलेगा। तुम लोग यह आबीब के महीने* में करोगे। क्योंकि यही वह समय है जब तुम लोग मिस्र से आए थे। इन दिनों कोई भी व्यक्ति मेरे सामने खाली हाथ नहीं आएगा।

[16]"दूसरा पवित्र पर्व कटनी का पर्व होगा। यह पवित्र पर्व ग्रीष्म के आरम्भ में, तब होगा जब तुम अपने खेतों मे उगायी गई फ़सल को काटोगे।

"तीसरा पवित्र पर्व बटोरने का पर्व होगा। यह पतझड़ में होगा।* यह उस समय होगा जब तुम अपनी सारी फ़सलें खेतों से इकट्ठा करते हो।

[17]"इस प्रकार प्रति वर्ष तीन बार सभी पुरुष यहोवा परमेश्वर के सामने उपस्थित होंगे।

[18]"जब तुम किसी जानवर को मारो और इसका ख़ून बलि के रूप में भेंट चढ़ाओ तब ऐसी रोटी भेंट नहीं करो जिसमें खमीर हो। और जब तुम इस बलि के माँस को खाओ तब तुम्हें एक ही दिन में वह सारा माँस खा लेना चाहिए। अगले दिन के लिए कुछ भी माँस न बचाओ।

[19]"फ़सल काटने के समय जब तुम अपनी फ़सलें इकट्ठी करो तब अपनी काटी हुई फ़सल की पहली उपज अपने यहोवा परमेश्वर के भवन में लाओ।

"तुम्हें छोटी बकरी के उस माँस को नहीं खाना चाहिए जो उस बकरी की माँ के दूध में पका हो।

परमेश्वर इस्राएलियों को उनकी भूमि लेने में सहायता करेगा

[20]परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारे सामने एक दूत भेज रहा हूँ। यह दूत तुम्हें उस स्थान तक ले जाएगा जिसे मैंने तुम्हारे लिए तैयार किया है। यह दूत तुम्हारी रक्षा करेगा। [21]दूत की आज्ञा मानो और उसका अनुसरण करो। उसके विरुद्ध विद्रोह न करो। वह दूत उन अपराधों को क्षमा नहीं करेगा जो तुम उसके प्रति करोगे। उसमें मेरी शक्ति निहित है। [22]वह जो कुछ कहे उसे मानो। तुम्हें हर एक वह कार्य करना चाहिए जो मैं तुम्हें कहता हूँ। यदि तुम यह करोगे तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हारे सभी शत्रुओं के विरुद्ध होऊँगा। और मैं उस हर व्यक्ति का शत्रु होऊँगा जो तुम्हारे विरुद्ध होगा।"

[23]परमेश्वर ने कहा, "मेरा दूत तुम्हें इस देश से होकर ले जाएगा। वह तुम्हें कई भिन्न लोगों–एमोरी, हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिब्बी, और यबूसी के विरुद्ध कर देगा। किन्तु मैं उन सभी लोगों को नष्ट कर दूँगा।

आबीब का महीना या "बसन्त का महीना" यह निसन है। यह लगभग मार्च अप्रैल है।

पतझड़ में होगा शाब्दिक "वर्ष के अन्त में।" इसका अर्थ फसल उगाने के मौसम की समाप्ति है।

[24]"उनके देवताओं को मत पूजो। उन देवताओं को झुककर कभी प्रणाम मत करो। तुम उस ढंग से कभी न रहो जिस ढ़ग से वे रहते हैं। तुम्हें उनकी मूर्तियों को निश्चय ही नष्ट कर देना चाहिए और तुम्हें उनके प्रस्तर पिण्ड़ों को तोड़ देना चाहिए जो उन्हें उनके देवताओं को याद दिलाने में सहायता करती है। [25]तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करनी चाहिए। यदि तुम यह करोगे तो मैं तुम्हें भरपूर रोटी और पानी का वरदान दूँगा। मैं तुम्हारी सारी बीमारियों को दूर कर दूँगा। [26]तुम्हारी सभी स्त्रियाँ बच्चों को जन्म देने लायक होंगी। जन्म के समय उनका कोई बच्चा नहीं मरेगा और मैं तुम लोगों को भरपूर लम्बा जीवन प्रदान करूँगा।

[27]"जब तुम अपने शत्रुओं से लड़ोगे, मैं अपनी प्रबल शक्ति तुमसे भी पहले वहाँ भेज दूँगा।* मैं तुम्हारे सभी शत्रुओं के हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा। वे लोग जो तुम्हारे विरुद्ध होंगे वे युद्ध में घबरा कर भाग जाएंगे। [28]मैं तुम्हारे आग–आगे बर्रे* भेजूँगा वह तुम्हारे शत्रुओं को भागने के लिए विवश करेंगे। हिब्बी, कनानी और हित्ती लोग तुम्हारा प्रदेश छोड़ कर भाग जाएंगे। [29]किन्तु मैं उन लोगों को तुम्हारे प्रदेश से बाहर जाने को शीघ्रतापूर्वक विवश नहीं करूँगा। मैं यह केवल एक वर्ष में नहीं करूँगा। यदि मैं लोगों को अति शीघ्रता से बाहर जाने को विवश करूँ तो प्रदेश ही निर्जन हो जाए। तब सभी प्रकार के जंगली जानवर बढ़ेंगे और वे तुम्हारे लिए बहुत कष्टकर होंगे। [30]मैं उन्हें धीरे और उस समय तक बाहर खदेड़ता रहूँगा जब तक तुम उस धरती पर फैल न जाओ और उस पर अधिकार न कर लो।

[31]"मैं तुम लोगों को लाल सागर से लेकर फरात तक का सारा प्रदेश दूँगा। पश्चिमी सीमा पलिश्ती सागर (भूमध्य सागर) होगा और पूर्वी सीमा अरब मरुभूमि होगी। मैं ऐसा करूँगा कि वहाँ के रहने वालों को तुम हराओ। और तुम इन सभी लोगों को वहाँ से भाग जाने के लिए विवश करोगे। [32]तुम उनके देवताओं या उन लोगों में से किसी के साथ कोई समझौता नहीं करोगे। [33]उन्हें अपने देश में मत रहने दो। यदि तुम उन्हें रहने दोगे तो तुम उनके जाल में फँस जाओगे। वे तुमसे मेरे विरुद्ध पाप करवाएंगे और तुम उनके देवताओं की सेवा आरम्भ कर दोगे।"

परमेश्वर का इस्राएल से वाचा

24 परमेश्वर ने मूसा से कहा, "तुम हारून नादाब, अबीहू और इस्राएल के सत्तर बुज़ुर्ग (नेता) पर्वत पर आओ और कुछ दूर से मेरी उपासना करो। [2]तब मूसा अकेले यहोवा के समीप आयेगा। अन्य लोग यहोवा के समीप न आएँ, और शेष व्यक्ति पर्वत तक भी न आएँ।"

[3]इस प्रकार मूसा ने यहोवा के सभी नियमों और आदेशों को लोगों को बताया। तब सभी लोगों ने कहा, "यहोवा ने जिन सभी आदेशों को दिया उनका हम पालन करेंगे।"

[4]इसलिए मूसा ने यहोवा के सभी आदेशों को चर्म पत्र पर लिखा। अगली सुबह मूसा उठा और पर्वत की तलहटी के समीप उसने एक वेदी बनाई और उसने बारह शिलाएँ इस्राएल के बारह कबीलों के लिए स्थापित कीं। [5]तब मूसा ने इस्राएल के युवकों को बलि चढ़ाने के लिए बुलाया। इन व्यक्तियों ने यहोवा को होमबलि और मेलबलि के रूप में बैल की बलि चढ़ाई।

[6]मूसा ने इन जानवरों के खून को इकट्ठा किया। मूसा ने आधा खून प्याले में रखा और उसने दूसरा आधा खून वेदी पर छिड़का।*

[7]मूसा ने चर्म पत्र पर लिखे विशेष साक्षीपत्र को पढ़ा। मूसा ने साक्षीपत्र को इसलिए पढ़ा कि सभी लोग उसे सुन सकें और लोगों ने कहा, "हम लोगों ने उन नियमों को जिन्हें यहोवा ने हमें दिया, सुन लिया है और हम सब लोग उनके पालन करने का वचन देते हैं।"

[8]तब मूसा ने खून को लिया और उसे लोगों पर छिड़का। उसने कहा, "यह खून बताता है कि यहोवा ने तुम्हारे साथ विशेष साक्षीपत्र स्थापित किया। ये नियम जो यहोवा ने दिए हैं वे साक्षीपत्र को स्पष्ट करते हैं।"

[9]तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू और इस्राएल के सत्तर बुज़ुर्ग (नेता) ऊपर पर्वत पर चढ़े। [10]पर्वत पर इन

मैं ... दूँगा या मेरी शक्ति का समाचार तुमसे पहले पहुँच जाएगा और तुम्हारे शत्रु डर जाएंगे।

बर्रे डंक मारने वाला एक पतंगा जो बड़ी ततैया या मधुमक्खी जैसा होता है। यह वास्तविक बर्रा हो सकता है, या इसका अर्थ यहोवा का दूत या उसकी बड़ी शक्ति हो सकता है।

मूसा ... छिड़का खून यहोवा और लोगों के बीच की वाचा की पुष्टि के लिये प्रयोग में आता था। ख़ून वेदी पर यह दिखाने के लिये डाला जाता था कि यहोवा वाचा में साथ है।

लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर को देखा। परमेश्वर किसी ऐसे आधार पर खड़ा था जो नीलमणि सा दिखता था ऐसा निर्मल जैसा आकाश। [11]इस्राएल के सभी नेताओं ने परमेश्वर को देखा, किन्तु परमेश्वर ने उन्हें नष्ट नहीं किया।* तब उन्होंने एक साथ खाया और पिया।"

मूसा को पत्थर की पट्टियाँ मिलीं

[12]यहोवा ने मूसा से कहा, "मेरे पास पर्वत पर आओ। मैंने अपने उपदेशों और आदेशों को दो समतल पत्थरों पर लिखा है। ये उपदेश लोगों के लिए हैं। मैं इन समतल पत्थरों को तुम्हें दूँगा।"

[13]इसलिए मूसा और उसका सहायक यहोशू परमेश्वर के पर्वत तक गए। [14]मूसा ने चुने हुए बुज़ुर्गों से कहा, "हम लोगों की यहीं प्रतीक्षा करो, हम तुम्हारे पास लौटेंगे। जब तक मैं अनुपस्थित रहूँ, हारून और हूर आप लोगों के अधिकारी होंगे। यदि किसी को कोई समस्या हो तो वह उनके पास जाए।"

मूसा का परमेश्वर से मिलना

[15]तब मूसा पर्वत पर चढ़ा और बादल ने पर्वत को ढक लिया। [16]यहोवा की दिव्यज्योति* सीनै पर्वत पर उतरी। बादल ने छः दिन तक पर्वत को ढके रखा। सातवें दिन यहोवा, बादल में से मूसा से बोला। [17]इस्राएल के लोग यहोवा की दिव्यज्योति को देख सकते थे। यह पर्वत की चोटी पर दीप्त प्रकाश की तरह थी। [18]तब मूसा बादलों में और ऊपर पर्वत पर चढ़ा। मूसा पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।

पवित्र वस्तुओं के लिए भेंट

25 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएल के लोगों से मेरे लिए भेंट लाने को कहो। हर एक व्यक्ति अपने मन में निश्चय करे कि वह मुझे इन वस्तुओं में से क्या अर्पित करना चाहता है। इन उपहारों को मेरे लिए अर्पित करो। [3]इन वस्तुओं की सूची यह है जिन्हें तुम लोगों से स्वीकार करोगे: सोना, चाँदी, काँसा; [4]नीला बैंगनी और लाल सूत, सुन्दर रेशमी कपड़ा; बकरियों के बाल, [5]लाल रंग से रंगा भेड़ का चमड़ा, सुइसों के चमड़ें; बबूल की लकड़ी; [6]दीपक में जलाने का तेल, धूप के लिए सुगन्धित द्रव्य, अभिषेक के तेल* के लिए भीनी सुगन्ध देने वाले मसाले। [7]गोमेदक रत्न तथा अन्य मूल्यवान रत्न भी जो याजकों के पहनने की एपोद और न्याय की थैली* पर जड़े जायें, अर्पित करो।"

पवित्र तम्बू

[8]परमेश्वर ने यह भी कहा, "लोग मेरे लिए एक पवित्र तम्बू बनाएंगे। तब मैं उनके साथ रह सकूँगा। [9]मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि पवित्र तम्बू* कैसा दिखाई पड़ना चाहिए। मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि इसमें सभी चीज़े कैसी दिखाई देनी चाहिए। जैसा मैंने दिखाया हैं हर एक चीज़ ठीक वैसा ही बनाओ।

साक्षीपत्र का सन्दूक

[10]"बबूल की लकड़ी का उपयोग करके एक विशेष सन्दूक बनाओ। यह सन्दूक निश्चय ही पैतालिस इंच* लम्बा, सत्ताईस इंच* चौड़ा और सत्ताईस इंच ऊँचा होना चाहिए। [11]सन्दूक को भीतर और बाहर से ढकने के लिए शुद्ध सोने का उपयोग करो। सन्दूक के कोनों को सोने से मढ़ो। [12]सन्दूक को उठाने के लिए सोने के चार कड़े बनाओ। सोने के कड़ो

परमेश्वर ... किया बाइबल कहती है कि यहोवा अदृश्य है। उसे देखा नहीं जा सकता। किन्तु यहोवा चाहता था कि ये प्रमुख उसे किसी विशेष प्रकार से देख सकें सो यहोवा ने उन्हें अपना दर्शन करने दिया।

यहोवा की दिव्यज्योति यहोवा के रूपों में से एक वह रूप जिसका उपयोग वह लोगों के सामने प्रकट होने पर करता है। यह एक चमकते तेज प्रकाश जैसा था।

अभिषेक का तेल अच्छा जैतून का तेल जो लोगों या वस्तुओं पर यह दिखाने के लिए उंड़ेला जाता था कि वे किसी कार्य या उद्देश्य के लिए चुने गये हैं।

न्याय की थैली एक प्रकार का वस्त्र जो बच्चों की गतिया (बिब) या पेशबन्द के समान था और याजक की छाती को ढकता था।

पवित्र तम्बू इसे "मण्डप" भी कहा जाता था। परमेश्वर से मिलने के लिए लोग इस तम्बू में जाते थे। इसे मिलापवाला तम्बू भी कहा जाता था।

पैतालिस इंच शाब्दिक "ढाई हाथ।"

सत्ताईस इंच शाब्दिक "डेढ़ हाथ।"

को चारों कोनों पर लगाओ। दोनों तरफ़ दो-दो कड़े हों। [13]तब सन्दूक ले चलने के लिए बल्लियाँ बनाओ। ये बल्लियाँ बबूल की लकड़ी की बनी हो और सोने से मढ़ी होनी चाहिए। [14]सन्दूक के बगलों के कोनों पर लगे कड़ों में इन बल्लियों को डाल देना। इन बल्लियों का उपयोग सन्दूक को ले जाने के लिए करो। [15]ये बल्लियाँ सन्दूक के कड़ों में सदा पड़ी रहनी चाहिए। बल्लियों को बाहर न निकालो।"

[16]परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हें साक्षीपत्र* दूँगा। इस साक्षीपत्र को इस सन्दूक में रखो। [17]तब एक ढक्कन* बनाओ। इसे शुद्ध सोने का बनाओ। इसे पैंतालिस इंच लम्बा और सत्ताईस इंच चौड़ा बनाओ। [18]तब दो करूब बनाओ और उन्हें ढक्कन के दोनों सिरों पर लगाओ। इन करूबों को बनाने के लिए स्वर्ण पत्रों का उपयोग करो। [19]एक करूब को ढक्कन के एक सिरे पर लगाओ तथा दूसरे को दूसरे सिरे पर। करूब और ढक्कन को परस्पर जोड़ कर के एक इकाई के रूप में बनाया जाये। [20]करूब एक दूसरे के आमने-सामने होने चाहिए। करूबों के मुख ढक्कन की ओर देखते हुए होने चाहिए। करूबों के पंख ढक्कन पर फैले हों।

[21]"मैंने तुमको साक्षीपत्र को जो प्रमाण दिया है उसे साक्षीपत्र के सन्दूक में रखो और विशेष ढक्कन से सन्दूक को बन्द करो। [22]जब मैं तुमसे मिलूँगा तब मैं करूबो के बीच से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक के विशेष ढक्कन पर हैं, बात करूँगा। मैं अपने सभी आदेश इस्राएल के लोगों को उसी स्थान से दूँगा।

विशेष रोटी की मेज़

[23]"बबूल की लकड़ी का एक मेज बनाओ। मेज छत्तीस इंच * लम्बा अट्ठारह इंच चौड़ा और सत्ताईस इंच ऊँचा होना चाहिए। [24]मेज को शुद्ध सोने से मढ़ो और उसके चारों ओर सोने की झालर लगाओ। [25]तब तीन इंच चौड़ा सोने का चौखरा मेज के ऊपर चारों ओर जड़ दो। और उसके चारों ओर सोने की झालर लगाओ। [26]तब सोने के चार कड़े बनाओ और मेज के चारों कोनों पर पायों के पास लगाओ। [27]हर एक पाए पर एक कड़ा लगा दो। जो मेज के ऊपर की चारों ओर की सजावट के समीप हो। इन कड़ों में मेज को ले जाने के लिए बनी बल्लियाँ फँसी होंगी। [28]बल्लियों को बनाने के लिए बबूल की लकड़ी का उपयोग करो और उन्हें सोने से मढ़ो। बल्लियाँ मेज को ले जाने के लिए हैं। [29]पात्र, तवे, मर्तबान और अर्ध के लिए कटोरे-इन सबको शुद्ध सोने का बनाना। [30]विशेष रोटी* मेज पर मेरे सम्मुख रखो। यह सदैव मेरे सम्मुख वहाँ रहनी चाहिए।

दीपाधार

[31]"तब तुम्हें एक दीपाधार बनाना चाहिए। दीपाधार के हर एक भाग को बनाने के लिए शुद्ध सोने के पत्तर तैयार करो। सुन्दर दिखने के लिए दीप पर फूल बनाओ। ये फूल, इनकी कलियाँ और पंखुडियाँ शुद्ध सोने की बनी होनी चाहिए और ये सभी चीज़ें एक ही में जुड़ी हुई होनी चाहिए।

[32]"दीपाधार की छ: शाखाएँ होनी चाहिए। तीन शाखाएँ एक ओर और तीन शाखाएँ दूसरी ओर होनी चाहिए। [33]हर शाखा पर बादाम के आकार के तीन प्याले होने चाहिए। हर प्याले के साथ एक कली और एक फूल होना चाहिए। [34]और स्वयं दीपाधार पर बादाम के फूल के आकार के चार और प्याले होने चाहिए। इन प्यालों के साथ भी कली और फूल होने चाहिए। [35]दीपाधार से निकलने वाली छ: शाखाएँ दो दो के तीन भागों में बटीं होनी चाहिए। हर एक दो शाखाओं के जोड़े के नीचे एक एक कली बनाओ जो दीपाधार से निकलती हो। [36]ये सभी शाखाएँ और कलियाँ दीपाधार के साथ एक इकाई बननी चाहिए। और हर एक चीज़ शुद्ध सोने से तैयार की जानी चाहिए। [37]तब सात छोटे दीपक* दीपाधार पर रखे जाने के लिए बनाओ। ये दीपक दीपाधार के सामने के

साक्षीपत्र या "प्रमाण", समतल पत्थर जिस में यह दस आदेश लिखे थे। यहोवा और इस्राएल के बीच वाचा के प्रमाण थे।

ढक्कन इसे "दया पीठ" भी कहा जाता है। यहाँ इस शब्द का अलंकारिक प्रयोग किया गया है। हिब्रू शब्द का अर्थ "ढक्कन" या "पाप को क्षमा करने का स्थान" हो सकता है।

छत्तीस इंच शाब्दिक "दो हाथ।"

विशेष रोटी इसे "उपस्थिति की रोटी" भी कहा जाता है। पवित्र स्थान में विशेष मेज़ पर यह रोटी प्रतिदिन परमेश्वर के सम्मुख रखी जाती थी।

दीपक ये छोटी तेल से भरी कटोरियाँ थी। एक बत्ती कटोरी में रखी जाती है और प्रकाश के लिए जलाई जाती है।

स्थान को प्रकाश देंगे। [38]दीपक की बत्तियाँ बुझाने के पात्र* और तश्तरियाँ शुद्ध सोने के बनाने चाहिए। [39]पचहत्तर पौंड* शुद्ध सोने का उपयोग दीपाधार और इसके साथ की सभी चीज़ों को बनाने में करें। [40]सावधानी के साथ हर एक चीज़ ठीक–ठीक उसी ढँग से बनायी जाये जैसी मैंने पर्वत पर तुम्हें दिखाई है।"

पवित्र तम्बू

26 यहोवा ने मूसा से कहा, "पवित्र तम्बू दस कनातों से बनाओ। इन कनातों को अच्छे रेशम तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़ों से बनाओ। किसी कुशल कारीगर को चाहिए कि वह करूबों को पंख सहित कनातों पर काढ़े। [2]हर एक कनात को एक बराबर बनाओ। हर एक कनात चौदह गज़* लम्बी और दो गज़* चौड़ी होनी चाहिए। [3]सभी कनातों को दो भागों में सीओ। एक भाग में पाँच कनातों को एक साथ सीओ और दूसरे भाग में पाँच को एक साथ। [4]आखिरी कनात के सिरे के नीचे छल्ले बनाओ। इन छल्लों को बनाने के लिए नीला कपड़ा उपयोग में लाओ। कनातों के दोनों भागों में एक और नीचे छल्ले होंगे। [5]पहले भाग की आखिरी कनात में पचास छल्ले होंगे और दूसरे भाग की आखिरी कनात में पचास। [6]तब पचास सोने के कड़े छल्लों को एक साथ मिलाने के लिए बनाओ। यह कनातों को इस प्रकार जोड़ेंगे कि पवित्र तम्बू एक ही हो जायेगा।

[7]"तब तुम दूसरा तम्बू बनाओगे जो पवित्र तम्बू को ढकेगा। इस तम्बू को बनाने के लिए बकरियों के बाल से बनी ग्यारह कनातों का उपयोग करो। [8]ये सभी कनातें एक बराबर होनी चाहिए। वे पन्द्रह गज* लम्बी और दो गज़ चौडी होनी चाहिए। [9]एक भाग में पाँच कनातों को एक साथ सीओ तब बाकी छ: कनातों को दूसरे भाग में एक साथ सीओ। छठी कनात का उपयोग तम्बू के सामने के पर्दे के लिए करो। इसे इस प्रकार लपेटो कि यह द्वार की तरह खुले। [10]एक भाग की आखिरी कनात के सिरे पर पचास छल्ले बनाओ, ऐसा ही दूसरे भाग की आखिरी कनात के लिए करो। [11]तब पचास काँसे के कड़े बनाओ। इन काँसे के कड़ों का उपयोग छल्लों को एक साथ जोड़ने के लिए करो। ये कनातों को एक साथ तम्बू के रूप में जोड़ेंगे। [12]ये कनातें पवित्र तम्बू से अधिक लम्बी होंगी। इस प्रकार अन्त के कनात का आधा हिस्सा तम्बू के पीछे किनारों के नीचे लटका रहेगा। [13]वहाँ अट्ठारह इंच* कनात तम्बू के बगलों में निचले किनारों से लटकती रहेगी। यह तम्बू को पूरी तरह ढक लेगी। [14]बाहरी आवरण को ढकने के लिए दो अन्य पर्दे बनाओ। एक लाल रंगे मेढ़े के चमड़े से बनाना चाहिए तथा दूसरा पर्दा सुइसों के चमड़े का बना होना चाहिए।

[15]"तम्बू के सहारे के लिए बबूल की लकड़ी के तख़्ते बनाओ। [16]तख़्ते पन्द्रह फुट* लम्बे और सत्ताईस इंच चौड़े होने चाहिए। [17]हर तख़्ता एक जैसा होना चाहिए। हर एक तख़्ते के तले में* उन्हें जोड़ने के लिए साथ–साथ दो खूंटियाँ होनी चाहिए। [18]तम्बू के दक्षिणी भाग के लिए बीस तख़्ते बनाओ। [19]ढाँचें के ठीक नीचे चाँदी के दो आधार हर एक तख़्ते के लिए होने चाहिए। इसलिए तुम्हें तख़्तों के लिए चाँदी के चालीस आधार बनाने चाहिए। [20]तम्बू के उत्तरी भाग के लिए बीस तख़्ते और बनाओ। [21]इन तख़्तों के लिए भी चाँदी के चालीस आधार बनाओ, अर्थात् एक तख़्ते के लिए दो आधार। [22]तुम्हें तम्बू के पश्चिमी छोर के लिए छ: और तख़्ते बनाने चाहिए। [23]दो तख़्ते पिछले कोनों के लिए बनाओ। [24]कोने के दोनों तख़्ते एक साथ जोड़ देने चाहिए। तले में दोनों तख़्तों की खूँटियाँ चाँदी के एक ही आधार में लगेंगी, और ऊपर धातु का एक छल्ला दोनों तख़्तों को एक साथ रखेगा। [25]इस प्रकार सब मिलाकर आठ तख़्ते तम्बू के सिरे के लिए होंगे, और हर तख़्ते के नीचे दो आधारों के होने से सोलह चाँदी के आधार पश्चिमी छोर के लिए होंगे।

[26]"बबूल की लकड़ी का उपयोग करो और तम्बू के तख़्तों के लिए कुण्डियाँ बनाओ। तम्बू के पहले भाग के लिए पाँच कुण्डियाँ होंगी। [27]और तम्बू के दूसरे भाग के ढाँचे के लिए पाँच कुण्डियाँ होंगी। और तम्बू के पश्चिमी

बुझाने के पात्र ये दीपक को बुझाने के साधन थे।
पचहत्तर पौंड शाब्दिक "एक किक्कार।"
चौदह गज शाब्दिक "अट्ठाइस हाथ।"
दो गज शाब्दिक "चार हाथ।"
पन्द्रह गज शाब्दिक "तीस हाथ।"

अट्ठारह इंच शाब्दिक "एक हाथ।"
पन्द्रह फुट शाब्दिक "दस हाथ।"
तले में धातु के आधार पर बने छेदों में ये खूंटियाँ बैठाई जाएंगी जिससे तख़्ते कनातों के लिए खड़े ढाँचे बन सकें।

भाग के ढाँचे के लिए पाँच कुण्डियाँ होंगी अर्थात् तम्बू के पीछे। [28]पाँचों कुण्डियों के बीच की कुण्डी तख़्तों के मध्य में होनी चाहिए। यह कुण्डी तख़्तों के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचनी चाहिए।*

[29]"तख़्तों को सोने से मढ़ो। और तख़्तों की कुण्डियों को फँसाने के लिए कड़े बनवाओ। ये कड़े भी सोने के ही बनने चाहिए। कुण्डियों को भी सोने से मढ़ो। [30]पवित्र तम्बू को तुम उसी ढंग की बनाओ जैसा मैंने तुम्हें पर्वत पर दिखाया था।

पवित्र तम्बू का भीतरी भाग

[31]"सन के अच्छे रेशों का उपयोग करो और तम्बू के भीतरी भाग के लिए एक विशेष पर्दा बनाओ। इस पर्दे को नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े से बनाओ। करूब के प्रतिरूप कपड़े में काढ़ो। [32]बबूल की लकड़ी के चार खम्भे बनाओ। चारों खम्भों पर सोने की बनी खूँटियाँ लगाओ। खम्भों को सोने से मढ़ दो। खम्भों के नीचे चाँदी के चार आधार रखो। तब सोने की खूँटियों में पर्दा लटकाओ। [33]खूँटियों पर पर्दे को लटकाने के बाद, साक्षीपत्र के सन्दूक को पर्दे के पीछे रखो। यह पर्दा पवित्र स्थान को सर्वाधिक पवित्र स्थान से अलग करेगा। [34]सर्वाधिक पवित्र स्थान में साक्षीपत्र के सन्दूक पर ढक्कन रखो।

[35]"पवित्र स्थान में पर्दे के दूसरी ओर विशेष मेज़ को रखो। मेज तम्बू के उत्तर में होनी चाहिए। तब दीपाधार को तम्बू के दक्षिण में रखो। दीपाधार मेज़ के ठीक सामने होगा।

पवित्र तम्बू का मुख्य द्वार

[36]"तब तम्बू के मुख्य द्वार के लिए एक पर्दा बनाओ। इस पर्दे को बनाने के लिए नीले बैंगनी, लाल कपड़े तथा सन के उत्तम रेशों का उपयोग करो। और कपड़े में चित्रों की कढ़ाई करो। [37]द्वार के इस पर्दे के लिए सोने के छल्ले बनवाओ। सोने से मढ़े बबूल की लकडी के पाँच खम्भे बनाओ और पाँचों खम्भों के लिए काँसे के पाँच आधार बनाओ।"

यह कुण्डी ... चाहिए या मध्यवर्ती कुण्डी तख़्तों से होती हुई एक सिरे से दूसरे सिरे तक होनी चाहिए।

भेंट जलाने के लिए वेदी

27 यहोवा ने मूसा से कहा, "बबूल की लकड़ी का उपयोग करो और एक वेदी बनाओ। वेदी वर्गाकार होनी चाहिए। यह साढ़े सात फुट* लम्बी साढ़े सात फुट चौड़ी और साढ़े चार फुट* ऊँची होनी चाहिए। [2]वेदी के चारों कोनों पर सींग बनाओ। हर एक सींग को इसके कोनों से ऐसे जोड़ो कि सभी एक हो जाये तब वेदी को काँसे से मढो।

[3]"वेदी पर काम आने वाले सभी उपकरणों और तश्तरियों को काँसे का बनाओ। काँसे के बर्तन, पल्टे, कटोरे, काँटे और तसले बनाओ। ये वेदी से राख को निकालने में काम आएंगे। [4]जाल के जैसी काँसे की एक बड़ी जाली बनाओ। जाली के चारों कोनों पर काँसे के कड़े बनाओ। [5]जाली को वेदी की परत के नीचे रखो। जाली वेदी के भीतर बीच तक रहेगी।

[6]"वेदी के लिए बबूल की लकड़ी के बल्ले बनाओ और उन्हे काँसे से मढ़ो। [7]वेदी के दोनों ओर लगे कड़ों में इन बल्लों को डालो। इन बल्लों को वेदी को ले जाने के लिए काम में लो। [8]वेदी भीतर से खोखली रहेगी और इसकी अगल-बगल तख़्तों की बनी होगी। वेदी वैसी ही बनाओ जैसी मैंने तुमको पर्वत पर दिखाई थी।

पवित्र तम्बू का आँगन

[9]"तम्बू के चारों ओर कनातों की एक दीवार बनाओ। यह तम्बू के लिए एक आँगन बनाएगी। दक्षिण की ओर कनातों की यह दीवार पचास गज* लम्बी होनी चाहिए। ये कनातें सन के उत्तम रेशों से बनी होनी चाहिए। [10]बीस खम्भों और उनके नीचे बीस काँसे के आधारों का उपयोग करो। खम्भों के छल्लें और पर्दे की छड़े* चाँदी की बननी चाहिए। [11]उत्तर की ओर लम्बाई उतनी ही होनी चाहिए जितनी दक्षिण की ओर थी। इसमें पचास गज़ लम्बी पर्दो की दीवार, बीस खम्भे और बीस काँसे के आधार होने चाहिए। खम्भे और उनके पर्दों की छड़ों के छल्ले चाँदी के बनने चाहिए।

साढ़े सात फुट शाब्दिक "पाँच हाथ।"
साढ़े चार फुट शाब्दिक "तीन हाथ।"
पचास गज़ शाब्दिक "सौ हाथ।"
छड़े ये या तो खम्भों को एक साथ जोड़ने वाली छड़े थी या पर्दे में सिले कड़े थे।

[12]"आँगन के पश्चिमी सिरे पर कनातों की एक दीवार पच्चीस गज़ लम्बी होनी चाहिए। वहाँ उस दीवार के साथ दस खम्भे और दस आधार होने चाहिए। [13]आँगन का पूर्वी सिरा भी पच्चीस गज लम्बा होना चाहिए। [14–15]यह पूर्वी सिरा आँगन का प्रवेश द्वार है। प्रवेश द्वार की हर एक ओर की कनातें साढ़े सात गज लम्बी होनी चाहिए। उस ओर तीन खम्भे और तीन आधार होने चाहिए।

[16]"एक कनात दस गज* लम्बी आँगन के प्रवेश द्वार को ढ़कने के लिए बनाओ। इस कनात को सन के उत्तम रेशों और नीले, लाल और बैंगनी कपड़े से बनाओ। इन कनातों पर चित्रों को काढ़ो। उस पर्दे के लिए चार खम्भे और चार आधार होने चाहिए। [17]आँगन के चारों ओर के सभी खम्भे चाँदी की छड़ों से ही जोड़े जाने चाहिए।* खम्भों के छल्ले चाँदी के बनाने चाहिए और खम्भों के आधार काँसे के होने चाहिए। [18]आँगन पचास गज लम्बा और पच्चीस गज* चौड़ा होना चाहिए। आँगन के चारों ओर की दीवार साढ़े सात फुट ऊँची होनी चाहिए। पर्दा सन के उत्तम रेशों का बना होना चाहिए। सभी खम्भों के नीचे के आधार काँसे के होने चाहिए। [19]सभी उपकरण, तम्बू की खूँटियाँ, और तम्बू में लगी हर एक चीज़ काँसे की ही बननी चाहिए। और आँगन के चारों ओर के पर्दों के लिए खूँटियाँ काँसे की ही होनी चाहिए।

दीपक के लिए तेल

[20]"इस्राएल के लोगों को सर्वोत्तम जैतून का तेल लाने का आदेश दो। इस तेल का उपयोग हर एक सन्ध्या को जलने वाले दीपक के लिए करो। [21]हारून और उसके पुत्र प्रकाश का प्रबन्ध करने का कार्य संभालेंगे। वे मिलापवाले तम्बू के पहले कमरे में जाएंगे। यह कमरा साक्षीपत्र के सन्दूक वाले कमरे के बाहर उस पर्दे के सामने है जो दोनों कमरों को अलग करता है। वे इसका ध्यान रखेंगे कि इस स्थान पर यहोवा के सामने दीपक सन्ध्या, से प्रात: तक लगातार जलते रहेंगे। इस्राएल के लोग और उनके वंशज इस नियम का पालन सदैव करेंगे।"

याजकों के वस्त्र

28 "अपने भाई हारून और उसके पुत्रों नादाब, अबीहू, एलिआजार और ईतामर को इस्राएल के लोगों में से अपने पास आने को कहो। ये व्यक्ति मेरी सेवा याजक के रूप में करेंगे।

[2]"अपने भाई हारून के लिए विशेष वस्त्र बनाओ। ये वस्त्र उसे आदर और गौरव देंगे। [3]लोगों में ऐसे कुशल कारीगर हैं जो ये वस्त्र बना सकते हैं। मैंने इन व्यक्तियों को विशेष बुद्धि दी है। उन लोगों से हारून के लिए वस्त्र बनाने को कहो। ये वस्त्र बताएंगे कि वह मेरी सेवा विशेष रूप से करता है। तब वह मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकता है। [4]कारीगरों को इन वस्त्रों को बनाना चाहिए: न्याय का थैला एपोद बिना बाँह की विशेष एपोद एक नीले रंग का लबादा, एक सफ़ेद बुना चोगा, सिर को ढकने के लिये एक साफ़ा और एक पटुका लोगों को ये विशेष वस्त्र तुम्हारे भाई हारून और उसके पुत्रों के लिए बनवाने चाहिए। तब हारून और उसके पुत्र मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकते हैं। [5]लोगों से कहो कि वे सुनहरे धागों, सन के उत्तम रेशों तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़े उपयोग में लाएं।

एपोद और पटुका

[6]"एपोद* बनाने के लिए सुनहरे धागे, सन के उत्तम रेशों तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़े का उपयोग करो। इस विशेष एपोद को कुशल कारीगर बनाएंगे। [7]एपोद के हर एक कंधे पर पट्टी लगी होगी। कंधे की ये पट्टियाँ एपोद के दोनों कोनों पर बंधी होंगी।

[8]"कारीगर बड़ी सावधानी से एपोद पर बांधने के लिए एक पटुका बुनेंगे। (यह पटुका उन्हीं चीज़ों का होगा जिनका एपोद, सुनहरे धागे, सन के उत्तम रेशों और बैंगनी कपड़े।)

[9]"तुम्हें दो गोमेदक रत्न लेने चाहिए। इन नगों पर इस्राएल के बारह पुत्रों के नाम खोदो। [10]छ: नाम एक नग पर और छ: नाम दूसरे नग पर। नामों को सबसे बड़े से सबसे छोटे के क्रम में लिखो। [11]इस्राएल के पुत्रों के नामों को इन नगों पर खुदवाओ। यह उसी प्रकार करो जिस प्रकार वह व्यक्ति जो मुहरें बनाता है, शब्द और चित्रों को खोदता है। नग के चारों ओर सोना लगाओ जिससे

दस गज शाब्दिक "बीस हाथ।"

आँगन ... चाहिए ये सम्भवत: पर्दे की छड़ें हैं जिनका वर्णन सँख्या दस में हुआ है।

पच्चीस गज शाब्दिक "पचास हाथ।"

एपोद एक विशेष चोगा (अंगरखा) जिसे याजक पहनता था।

उन्हें एपोद के कंधों पर टाँका जा सके। [12]तब एपोद के हर एक कंधे के पट्टी पर इन दोनों नगों को जड़ो। हारून यहोवा के सम्मुख जब खड़ा होगा, इस विशेष एपोद को पहनेगा और इस्राएल के पुत्रों के नाम वाले दोनों नग एपोद पर होंगे। यह इस्राएल के लोगों को याद रखने में यहोवा की सहायता करेगा। [13]अच्छा सोना ही नगों को एपोद पर ढाँकने के लिए उपयोग में लाओ। [14]रस्सी की तरह एक में शुद्ध सोने की जंजीरें बटो। सोने की ऐसी दो जंजीरे बनाओ और सोने के जड़ाव के साथ इन्हें बांधो।

सीनाबन्द

[15]"महायाजक के लिए सीनाबन्द बनाओ। कुशल कारीगर इस सीनाबन्द को वैसे ही बनाए जैसे एपोद को बनाया। वे सुनहरे धागे, सन के उत्तम रेशों तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़े का उपयोग करें। [16]सीनाबन्द नौ इंच* लम्बा और नौ इंच चौड़ा होना चाहिए। चौकोर जेब बनाने के लिए इसकी दो तह करनी चाहिए। [17]सीनाबन्द पर सुन्दर रत्नों की चार पक्तियाँ जड़ो। रत्नों की पहली पंक्ति में एक लाल, एक पुखराज और एक मर्कत मणि होनी चाहिए। [18]दूसरी पंक्ति मे फिरोज़ा, नीलम तथा पन्ना होना चाहिए। [19]तीसरी पंक्ति मे धूम्रकान्त, अकीक और याकूत लगना चाहिए। [20]चौथी पंक्ति में लहसुनिया, गोमेदक रत्न और कपिश मणि लगानी चाहिए। सीनाबन्द पर इन्हें लगाने के लिए इन्हें सोने मे जड़ो। [21]सीनाबन्द पर बारह रत्न होगें जो इस्राएल के बारह पुत्रों का एक प्रतिनिधित्व करेंगे। हर एक नग पर इस्राएल के पुत्रों* में से एक-एक का नाम लिखो। मुहर की तरह हर एक नग पर इन नामों को खोदो।

[22]"सीनाबन्द के चारों ओर जाती हुई सोने की जंजीरें बनाओ। ये जंजीर बटी हुई रस्सी की तरह होंगी। [23]दो सोने के छल्ले बनाओ और इन्हें सीनाबन्द के दोनों कोनों पर लगाओ। [24](दोनों सुनहरी जंजीरों को सीनाबन्द में दोनों में लगे छल्लों में डालो।) [25]सोने की जंजीरों को दूसरे सिरों को कंधे की पट्टियों पर के जड़ाव में लगाओ। जिससे वे एपोद के साथ सोने पर कसे रहें। [26]दो अन्य सोने के छल्ले बनाओ और उन्हें सीनाबन्द के दूसरे दोनों कोनों पर लगाओ। यह सीनाबन्द का भीतरी भाग एपोद के समीप होगा। [27]दो और सोने के छल्ले बनाओ और उन्हें कंधे की पट्टी के तले एपोद के सामने लगाओ। सोने के छल्लों को एपोद की पेटी के समीप ऊपर के स्थान पर लगाओ। [28]सीनाबन्द के छल्लों को एपोद के छल्लों से जोड़ो। उन्हें पेटी से एक साथ जोड़ने के लिए नीली पट्टियों का उपयोग करो। इस प्रकार सीनाबन्द एपोद से अलग नहीं होगा।

[29]"हारून जब पवित्र स्थान में प्रवेश करे तो उसे इस सीनाबन्द को पहने रहना चाहिए। इस प्रकार इस्राएल के बारहों पुत्रों के नाम उसके मन में रहेंगे और यहोवा को सदा ही उन लोगों की याद दिलाई जाती रहेगी। [30]ऊरीम और तुम्मीम को सीनाबन्द में रखो। हारून जब यहोवा के सामने जाएगा तब ये सभी चीज़ें उसे याद होंगी। इसलिए हारून जब यहोवा के सामने होगा तब वह इस्राएल के लोगों का न्याय करने का साधन सदा अपने साथ रखेगा।

याजक के अन्य वस्त्र

[31]"एपोद के नीचे पहनने के लिए एक चोग़ा बनाओ। चोगा केवल नीले कपड़े का बनाओ। [32]सिर के लिए इस कपड़े के बीचोबीच एक छेद बनाओ। इस छेद के चारों ओर गोट लगाओ जिससे यह फटे नहीं। [33]नीले, लाल और बैंगनी कपड़े के फुँदने बनाओ जो अनार के आकार के हों। इन अनारों को चोगे के निचले सिरे में लटकाओं और उनके बीच सोने की घंटियाँ लटकाओ। [34]इस प्रकार चोग़े के निचले सिरे के चारों ओर क्रमश: एक अनार और एक सोने की घंटी होगी। [35]हारून तब इस चोग़े को पहनेगा जब वह याजक के रूप में सेवा करेगा और यहोवा के सामने पवित्र स्थान में जाएगा। जब वह पवित्र स्थान में प्रवेश करेगा और वहाँ से निकलेगा तब ये घंटियाँ बजेंगी। इस प्रकार हारून मरेगा नही।*

[36]"शुद्ध सोने का एक पतरा बनाओ। सोने में मुहर की तरह शब्द लिखो। ये शब्द लिखो: "यहोवा के लिए पवित्र" [37]सोने के इस पतरे को उस पगड़ी पर लगाओ जो सिर को ढकने के लिए पहनी गयी है। उस पगड़ी से सोने के

नौ इंच शाब्दिक "बालिस्त" अँगूठे के सिरे से छोटी अँगुली के सिरे तक की दूरी।

इस्राएल के पुत्रों अर्थात् बारह वंशों के नाम, ये नाम इस्राएल (याकूब) के बारह पुत्रों के नाम पर ही रखे गए थे।

इस ... नहीं इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता हैं। इससे पता चलता रहेगा कि हारून जीवित है।

पतरे को बाँधने के लिए नीले कपड़े की पट्टी का उपयोग करो। [38]हारून यह दर्शाने के लिए इसे अपने ललाट पर पहनेगा कि इस्राएल के लोगों ने अपने अपराधों के लिए जो पवित्र भेंटें यहोवा को अर्पित की हैं उनके अपराधों को प्रतीक रूप में हारून वहन कर रहा है। हारून जब भी यहोवा के सामने जायेगा ये सदा पहने रहेगा, ताकि यहोवा उन्हें स्वीकार कर ले।

[39]"लबादा बनाने के लिए सन के उत्तम रेशों को उपयोग में लाओ, और उस कपड़े को बनाने के लिए भी सन के उत्तम रेशों को उपयोग में लाओ जो सिर को ढ़कता है, इसमें कढ़ाई कढ़ी होनी चाहिए। [40]लबादा, पटुका और पगड़ियाँ हारून के पुत्रों के लिए भी बनाओ, ये उन्हें गौरव तथा आदर देंगे। [41]ये पोशाक अपने भाई हारून और उसके पुत्रों को पहनाओ। उसके बाद जैतून का तेल उनके सिर पर यह दिखाने के लिए डालो कि वे याजक हैं, यह उन्हें पवित्र बनायेगा। तब वे मेरी सेवा याजक के रूप में करेंगे।

[42]"उन के वस्त्रों को बनाने के लिए सन के उत्तम रेशों का उपयोग करो जो विशेष याजक के वस्त्रों के नीचे पहनने के लिए होंगे। ये अधोवस्त्र कमर से जाँघ तक पहने जाएंगे। [43]हारून और उसके पुत्रों को इन वस्त्रों को ही पहनना चाहिए जब कभी वे मिलापवाले तम्बू में जाएं। उन्हें इन्हीं वस्त्रों को पहनना चाहिए जब कभी वे पवित्र स्थान में याजक के रूप में सेवा के लिए वेदी के समीप आएं। यदि वे इन पोशाकों को नहीं पहनेंगे, तो वे अपराध करेंगे और उन्हें मरना होगा। यह ऐसा नियम होना चाहिए जो हारून और उसके बाद उसके वंश के लोगों के लिए सदा के लिए बना रहेगा।"

याजकों की नियुक्ति का उत्सव

29 "अब मैं तुम्हे बताऊँगा कि हारून और उसके पुत्र मेरी सेवा विशेष रूप में करते हैं, यह दिखाने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए। एक दोष रहित बछड़ा और दो दोष रहित मेढ़े लाओ। [2]जिसमें खमीर न मिलाया गया हो ऐसा महीन आटा लो और उससे तीन तरह की रोटियाँ बनाओ–पहली बिना खमीर की सादी रोटी। दूसरी तेल का मोमन डली रोटी और तीसरी वैसे ही आटे की छोटी पतली रोटी बनाकर उस पर तेल चुपड़ो। [3]इन रोटियों को एक टोकरी में रखो और फिर इस टोकरी को हारून और उसके पुत्रों को दो, साथ ही वह बछड़ा और दोनों मेढ़े भी दो। [4]"तब हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के द्वार के सामने लाओ, तब उन्हें पानी से नहलाओ। [5]हारून की विशेष पोशाक उसे पहनाओ, लबादा, चोग़ा और एपोद। फिर उस पर सीनाबन्द, फिर विशेष पटुका बांधो [6]और फिर पगड़ी उसके सिर पर बाँधों। सोने की पट्टी को जो एक विशेष मुकुट के जैसी है पगड़ी के चारों ओर बाँधो [7]और जैतून का तेल डालो। जो बताएगा कि हारून इस काम के लिए चुना गया है। [8]"तब उसके पुत्रों को उस स्थान पर लाओ और उन्हें चोगे पहनाओ। [9]तब उनकी कमर के चारों ओर पटुके बाँधों। उन्हें पहनने को पगड़ी दो। उस समय से वे याजक के रूप में काम करना आरम्भ करेंगे। वे उस नियम के अनुसार जो सदा रहेगा, याजक होंगे। यही ढंग है जिससे तुम हारून और उसके पुत्रों को याजक बनाओगे।

[10]"तब मिलापवाले तम्बू के सामने के स्थान पर बछड़े को लाओ। हारून और उसके पुत्रों को चाहिए कि वे बछड़े के सिर पर हाथ रखें। [11]तब उस बछड़े को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने मार डालो। [12]तब बछड़े का कुछ खून लो और वेदी तक जाओ। अपनी उँगली से वेदी पर लगे सींगों पर कुछ खून लगाओ। बचा हुआ सारा खून नीचे वेदी पर डालो। [13]तब बछड़े में से सारी चर्बी निकालो। तब कलेजे के चारों ओर की चर्बी और दोनों गुर्दे और उसकी चारों ओर की चर्बी लो। इस चर्बी को वेदी पर जलाओ। [14]तब बछड़े के माँस, उसके चमड़े, और उसके दूसरे अंगों को लो और अपने डेरे से बाहर जाओ। इन चीज़ों को डेरे के बाहर जलाओ। यह भेंट है जो याजकों के पापों को दूर करने के लिए चढ़ाई जाती है।

[15]"तब हारून और उसके पुत्रों से मेढ़े के सिर पर हाथ रखने को कहो। [16]तब उस मेढ़े को मार डालो और उसके खून को लो। खून को वेदी के चारों ओर छिड़को। [17]तब मेढ़े को कई टुकड़ों में काटो। मेढ़े के भीतर के सभी अंगो और पैरों को धोओ। इन चीज़ों को सिर तथा मेढ़े के अन्य टुकडों के साथ रखो। [18]तब वेदी पर इन को जलाओ। यह वह विशेष भेंट है जो जलाई जाती है। यह होमबलि यहोवा के लिए है। इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी। यह ऐसी होमबलि है जो यहोवा को आग के द्वारा दी जाती है।

[19]“हारून और उसके पुत्रों को दूसरे मेढ़े पर हाथ रखने को कहो। [20]उस मेढ़े को मारो और उसका कुछ खून लो। उस खून को हारून और उसके पुत्रों के दाएं कान के निचले भाग में लगाओं। उनके दाएँ हाथ के अंगूठों पर भी कुछ खून लगाओ और कुछ खून उनके दाएँ पैर के अगूंठों पर लगाओ। बाकी के खून को वेदी के चारों और छिड़को। [21]तब वेदी पर छिड़के खून में से कुछ खून लो। इसे अभिषेक के तेल में मिलाओ और हारून तथा उसके वस्त्रों पर छिड़को और उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों पर भी छिड़को। यह बताएगा कि हारून और उसके पुत्र मेरी सेवा विशेष रूप से करते हैं। और यह सूचित करेगा कि उनके वस्त्र विशेष अवसर पर ही काम में आते हैं।

[22]“तब उस मेढ़े से चर्बी लो। (यही मेढ़ा है जिसका उपयोग, हारून को महायाजक बनाने में होगा।) पूँछ के चारों ओर की चर्बी तथा उस चर्बी को लो जो शरीर के भीतर के अंगों को ढकती है, कलेजे को ढकने वाली चर्बी को लो, दोनों गुर्दो और दाएँ पैर को लो। [23]तब उस रोटी की टोकरी को लो जिसमें तुमने अख़मीरी रोटियाँ रखी थीं। यही टोकरी है जिसे तुम्हें यहोवा के सम्मुख रखना है। इन रोटियों को टोकरी से बाहर निकालो। एक रोटी, सादी, एक तेल से बनी और एक छोटी पतली चुपड़ी हुई। [24]तब इन को हारून और उसके पुत्रों को दो: फिर उनसे कहो कि वे यहोवा के सामने इन्हें अपने हाथों में उठाएँ। यह यहोवा को विशेष भेंट होगी। [25]तब इन रोटियों को हारून और उसके पुत्रों से लो और इन्हें वेदी पर मेढ़ें के साथ रखो। यह एक होमबलि है, यह यहोवा को ऐसी भेंट होगी जो आग के द्वारा दी जाती है। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।

[26]“तब इस मेढ़े से उसकी छाती को निकालो। यही मेढ़ा है जिसका उपयोग हारून को महायाजक बनाने के लिए बलि दिया जाएगा। मेढ़े की छाती को विशेष भेंट के रूप में यहोवा के सामने पकड़ो। जानवर का यह भाग तुम्हारा होगा। [27]तब मेढ़े की उस छाती और टाँग को लो जो हारून को महायाजक बनाने के लिए उपयोग में आयी थी। इन्हें पवित्र बनाओ और इन्हें हारून और उसके पुत्रों को दो। यह भेंट का विशेष अंश होगा। [28]इस्राएल के लोग इन अंगो को हारून और उसके पुत्रों को सदा देंगे जब कभी इस्राएल के लोग यहोवा को मेलबलि चढ़ायेंगे तो ये भाग सदा याजकों के होंगे। जब वे इन भागों को याजकों को देंगे तो यह यहोवा को देने जैसा ही होगा।

[29]“उन विशेष वस्त्रों को सुरक्षित रखो जो हारून के लिए बने थे। ये वस्त्र उसके उत्तराधिकारी वंशजों के लिए होंगे। वे उन वस्त्रों को तब पहनेंगे जब याजक नियुक्त किए जाएँगे। [30]हारून का जो पुत्र उसके बाद अगला महायाजक होगा, वह सात दिन तक उन वस्त्रों को पहनेगा, जब वह मिलापवाले तम्बू के पवित्र स्थान में सेवा करने आएगा।

[31]“उस मेढ़े के माँस को पकाओ जो हारून को महायाजक बनाने के लिए उपयोग में आया था। उस माँस को एक पवित्र स्थान पर पकाओ। [32]तब हारून और उसके पुत्र मिलापवाले तम्बू के द्वार पर माँस खाएंगे, और वे उस टोकरी की रोटी भी खाएँगे। [33]इन भेंटों का उपयोग उनके पाप को समाप्त करने के लिए तब हुआ था जब वे याजक बने थे। ये मेढ़े बस उन्हीं को खाना चाहिए किसी अन्य को नहीं। क्योंकि ये पवित्र हैं। [34]यदि उस मेढ़े का कुछ माँस या कोई रोटी अगले सवेरे के लिए बच जाये तो उसे जला देना चाहिए। तुम्हें वह रोटी या माँस नहीं खाना चाहिए क्योंकि यह केवल विशेष ढंग से विशेष समय पर ही खाया जाना चाहिए।

[35]“वैसा ही करो जैसा मैंने तुम्हें हारून और उसके पुत्रों के लिए करने को आदेश दिया है। यह समारोह सात दिन तक चलेगा। [36]सात दिन तक हर रोज़ एक-एक बछड़े को मारो। यह हारून और उसके पुत्रों के पाप के लिए भेंट होगी। तुम इन दिनों दिए गए बलिदानों का उपयोग वेदी को शुद्ध करने के लिए करना, और वेदी को पवित्र बनाने के लिए जैतून का तेल इस पर डालना। [37]तुम सात दिन तक वेदी को शुद्ध और पवित्र करना। उस समय वेदी अत्याधिक पवित्र होगी। वेदी को छूने वाली कोई भी चीज़ पवित्र हो जाएगी।

[38]“हर एक दिन वेदी पर तुम्हें एक भेंट चढानी चाहिए। तुम्हें एक-एक वर्ष के दो मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। [39]एक मेमने की भेंट प्रात: काल चढ़ाओ और दूसरे की सन्ध्या के समय। [40-41]जब तुम पहले मेमने को मारो, दो पौण्ड* गेहूँ का महीन आटा भी भेंट चढ़ाओ। गेहूँ के आटे को एक क्वार्ट* भेंट स्वरूप दाखमधु में मिलाओ।

दो पौण्ड शाब्दिक “एपा माप का 1/10”
एक क्वाट शाब्दिक “1 हिन।”

जब तुम दूसरे मेमने को सन्ध्या के समय मारो तब दो पौण्ड़ महीन आटा भी भेंट में चढ़ाओ और एक क्वार्ट दाखमधु भी भेंट करो। यह वैसा ही है जैसा तुमने प्रात: काल किया था। यह यहोवा को भोजन की भेंट होगी। जब तुम उस भेंट को जलाओगे तो यहोवा इसकी सुगन्ध लेगा और यह उसे प्रसन्न करेगी।

[42]"तुम्हें इन चीज़ों को यहोवा को भेंट में रोज़ जलाना चाहिए। यह यहोवा के सामने, मिलापवाले तम्बू के द्वार पर करो। यह सदा करते रहो। जब तुम भेंट चढाओगे तब मैं अर्थात् यहोवा, वहाँ तुम से मिलूँगा और तुमसे बातें करूँगा। [43]मैं इस्राएल के लोगों से उस स्थान पर मिलूँगा, और वह स्थान मेरे तेज के कारण पवित्र बन जाएगा।

[44]"इस प्रकार मैं मिलापवाले तम्बू को पवित्र बनाऊँगा, और मैं वेदी को भी पवित्र बनाऊँगा, और मैं हारून और उसके पुत्रों को पवित्र बनाऊँगा जिससे वे मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकें। [45]मैं इस्राएल के लोगों के साथ रहूँगा। मैं उनका परमेश्वर होऊँगा। [46]लोग यह जानेंगे कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ। वे जानेंगे कि मैं ही वह हूँ जो उन्हें मिस्र से बाहर लाया ताकि मैं उनके साथ रह सकूँ। मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ।"

धूप जलाने की वेदी

30 परमेश्वर ने मूसा से कहा, "बबूल की लकड़ी की एक वेदी बनाओ। तुम इस वेदी का उपयोग धूप जलाने के लिए करोगे। [2]तुम्हें वेदी को वर्गाकार अट्ठारह इंच लम्बी और अट्ठारह इंच चौड़ी बनानी चाहिए। यह छत्तीस इंच ऊँची होनी चाहिए। चारों कोनों पर सींग लगे होने चाहिए। ये सींग वेदी के साथ एक ही इकाई के रूप में वेदी के साथ जड़े जाने चाहिए। [3]वेदी के ऊपरी सिरे तथा उसकी सभी भुजाओं को शुद्ध सोने से मढो। वेदी के चारों ओर सोने की पट्टी लगाओ। [4]इस पट्टी के नीचे सोने के दो छल्ले होने चाहिए। वेदी के दूसरी ओर भी सोने के दो छल्ले होने चाहिए। ये छल्ले वेदी को ले जाने के लिए बल्लियों को फँसाने के लिए होंगे। [5]बल्लियों को भी बबूल की लकड़ी से ही बनाओ। बल्लियों को सोने से मढ़ो। [6]वेदी को विशेष पर्दे के सामने रखो। साक्षीपत्र का सन्दूक उस पर्दे के दूसरी ओर है। उस सन्दूक को ढकने वाले ढक्कन के सामने वेदी रहेगी। यही वह स्थान है जहाँ मैं तुमसे मिलूँगा।

[7]"हारून हर प्रात: सुगन्धित धूप वेदी पर जलाएगा। वह यह तब करेगा जब वह दीपकों की देखभाल करने आएगा। [8]उसे शाम को जब वह दीपकों की देखभाल करने आए फिर धूप जलानी चाहिए। जिससे यहोवा के सामने नित्य प्रति सुबह शाम धूप जलती रहे। [9]इस वेदी का उपयोग किसी अन्य प्रकार की धूप या होमबलि के लिए मत करना। इस वेदी का उपयोग अन्नबलि या पेय भेंट के लिए मत करना।

[10]"वर्ष में एक बार हारून यहोवा को विशेष बलिदान अवश्य चढाए। हारून पापबलि के खून का उपयोग लोगों के पापों को धोने के लिए करेगा, हारून इस वेदी के सींगों पर यह करेगा। यह दिन प्रायश्चित का दिन कहलाएगा। यह यहोवा के लिए अति पवित्र दिन होगा।"

मन्दिर के लिए कर

[11]यहोवा ने मूसा से कहा, [12]"इस्राएल के लोगों को गिनो जिससे तुम जानोगे कि वहाँ कितने लोग हैं। जब कभी यह किया जाएगा हर एक व्यक्ति अपने जीवन के लिए यहोवा को धन देगा। यदि हर एक व्यक्ति यह करेगा तो लोगों के साथ कोई भी भयानक घटना घटित नहीं होगी। [13]हर व्यक्ति जिसे गिना जाये वह आधा शेकेल* चाँदी अवश्य दे। [14]हर एक पुरुष जिसे गिना जाये और जो बीस वर्ष या उससे अधिक आयु का हो, यहोवा को यह भेंट देगा। [15]धनी लोग आधे शेकेल से अधिक नहीं देंगे, और गरीब लोग आधे शेकेल से कम नहीं देंगे। सभी लोग यहोवा को बराबर ही भेंट देंगे यह तुम्हारे जीवन का मूल्य होगा। [16]इस्राएल के लोगों से यह धन इकट्ठा करो। मिलापवाले तम्बू में सेवा के लिए इसका उपयोग करो। यह भुगतान यहोवा के लिए अपने लोगों को याद करने का एक तरीका होगा। वे अपने जीवन के लिए भुगतान करते रहेंगे।"

हाथ पैर धोने की चिलमची

[17]यहोवा ने मूसा से कहा, [18]"एक काँसे की चिलमची बनाओ और इसे काँसे के आधार पर रखो। तुम इसका

आधा शेकेल अर्थात् सरकारी शेकेल का आधा। इस शेकेल का तोल बीस गरस होता है। यह आधा शेकेल यहोवा के लिये भेंट है।

उपयोग हाथ पैर धोने के लिए करोगे। चिलमची को मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच रखो। चिलमची को पानी से भरो। [19]हारून और उसके पुत्र इस चिलमची के पानी से अपने हाथ पैर धोएंगे। [20]हर बार जब वे मिलापवाले तम्बू में आएँ तो पानी से हाथ पैर अवश्य धोएँ, इससे वे मरेंगे नहीं। जब वे वेदी के समीप यहोवा की सेवा करने या धूप जलाने आयें, [21]तो वे अपने हाथ पैर अवश्य धोएं, इससे वे मरेंगे नहीं। यह ऐसा नियम होगा जो हारून और उसके लोगों के लिए सदा बना रहेगा। यह नियम हारून के उन सभी लोगों के लिए बना रहेगा जो भविष्य में होंगे।"

अभिषेक का तेल

[22]तब यहोवा ने मूसा से कहा, [23]"बहुत अच्छे मसाले लाओ। बारह पौंड* द्रव लोबान लाओ और इस तोल का आधा अर्थात् छ: पौंड*, सुगन्धित दालचीनी और बारह पौंड सुगन्धित छाल, [24]और बारह पौंड तेजपात लाओ। इन्हें नापने के लिए प्रामाणिक बाटों का उपयोग करो। एक गैलन* जैतून का तेल भी लाओ।

[25]"सुगन्धित अभिषेक का तेल* बनाने के लिए इन सभी चीज़ों को मिलाओ। [26]मिलापवाले तम्बू और साक्षीपत्र के सन्दूक पर इस तेल को डालो। यह इस बात का संकेत करेगा कि इन चीज़ों का विशेष उद्देश्य है। [27]मेज और मेज़ पर की सभी तश्तरियों पर तेल डालो। इस तेल को दीपक और सभी उपकरणों पर डालो। [28]धूप वाली वेदी पर तेल डालो। यहोवा के लिए होमबलि वाली वेदी पर भी तेल डालो। उस वेदी की सभी चीज़ों पर यह तेल डालो। कटोरे और उसके नीचे के आधार पर यह तेल डालो। [29]तुम इन सभी चीज़ों को समर्पित करोगे। वे अत्यन्त पवित्र होंगी। कोई भी चीज़ जो इन्हें छूएगी वह भी पवित्र हो जाएगी।

[30]"हारून और उसके पुत्रों पर तेल डालो। यह स्पष्ट करेगा कि वे मेरी विशेष ढंग से सेवा करते हैं। तब ये मेरी सेवा याजक कि तरह कर सकते हैं। [31]इस्राएल के लोगों से कहो कि अभिषेक का तेल मेरे लिए सदैव अति विशेष होगा। [32]साधारण सुगन्ध की तरह कोई भी इस तेल का उपयोग नहीं करेगा। उस प्रकार कोई सुगन्ध न बनाओ जिस प्रकार तुमने यह विशेष तेल बनाया। यह तेल पवित्र है और यह तुम्हारे लिए अति विशेष होना चाहिए। [33]यदि कोई इस पवित्र तेल की तरह सुगन्ध बनाए और उसे किसी विदेशी को दे तो उस व्यक्ति को अपने लोगों से अवश्य अलग कर दिया जाये।"

धूप

[34]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "इन सुगन्धित मसालों को लो: रसगंधा, कस्तूरी गंधिका, बिरोजा और शुद्ध लोबान। सावधानी रखो कि तुम्हारे पास मसालों की बराबर मात्रा हो। [35]मसालों को सुगन्धित धूप बनाने के लिए आपस में मिलाओ। इसे उसी प्रकार करो जैसा सुगन्ध बनाने वाला व्यक्ति करता है। इस धूप में नमक भी मिलाओ। यह इसे शुद्ध और पवित्र बनाएगा। [36]कुछ धूप को तब तक पीसते रहो जब तक उसका बारीक चूर्ण न हो जाये। मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने इस चूर्ण को रखो। यही वह स्थान है जहाँ मैं तुमसे मिलूँगा। तुम्हें इस धूप के चूर्ण का उपयोग इसके अति विशेष अवसर पर ही करना चाहिए। [37]तुम्हें इस चूर्ण का उपयोग केवल विशेष ढँग से यहोवा के लिए ही करना चाहिए। तुम इस धूप को विशेष ढँग से बनाओगे। इस विशेष ढँग का उपयोग अन्य कोई धूप बनाने के लिए मत करो। [38]कोई व्यक्ति अपने लिए कुछ ऐसे धूप बनाना चाह सकता है जिससे वह सुगन्ध का आनन्द ले सके। किन्तु यदि वह ऐसा करे तो उसे अपने लोगों से अवश्य अलग कर दिया जाये।"

बसलेल और ओहोलीआब

31 तब यहोवा ने मूसा के कहा, [2]"मैंने यहूदा के कबीले से ऊरी के पुत्र बसलेल को चुना है। ऊरी हूर का पुत्र था। [3]मैंने बसलेल को परमेश्वर की आत्मा से भर दिया है, अर्थात् मैंने उसे सभी प्रकार की चीज़ों को करने का ज्ञान और निपुणता दे दी है।

बारह पौंड शाब्दिक "पाँच सौ माप।"
छ: पौंड शाब्दिक "ढ़ाई सौ माप।"
एक गैलन शाब्दिक "एक हिन।"
सुगन्धित अभिषेक का तेल यह तेल, चीज़ों और लोगों पर यह दिखाने के लिए डाला जाता था कि वे विशेष उद्देश्य के प्रति समर्पित थे।

[4]बसलेल बहुत अच्छा शिल्पकार है और वह सोना, चाँदी तथा काँसे की चीज़ें बना सकता है। [5]बसलेल सुन्दर रत्नों को काट और जड़ सकता है। वह लकड़ी का भी काम कर सकता है। बसलेल सब प्रकार के काम कर सकता है। [6]मैंने ओहोलीआब को भी उसके साथ काम करने को चुना है। आहोलीआब दान कबीले के अहीसामाक का पुत्र है और मैंने दूसरे सब श्रमिकों को भी ऐसी निपुणता दी है कि वे उन सभी चीज़ों को बना सकते हैं जिसे मैंने तुमको बनाने का आदेश दिया है:

7 मिलापवाला तम्बू,
साक्षीपत्र का सन्दूक,
सन्दूक को ढकने वाला ढक्कन,
मिलापवाले तम्बू का साजोसामान,
8 मेज और उस पर की सभी चीज़ें,
शुद्ध सोना का दीपाधार,
धूप जलाने की वेदी,
9 भेंट जलाने के लिए वेदी,
और वेदी पर उपयोग की चीज़ें,
चिलमची और उसके नीचे का आधार,
10 याजक हारून के लिए सभी विशेष वस्त्र और
उसके पुत्रों के लिए सभी विशेष वस्त्र, जिन्हें वे
याजक के रूप मे सेवा करते समय पहनेंगे,
11 अभिषेक का सुगन्धित तेल, और
पवित्र स्थान के लिए सुगन्धित धूप।

इन सभी चीज़ों को उसी ढंग से बनांएगे जैसा मैंने तुमको आदेश दिया है।"

सब्त

[12]"तब यहोवा ने मूसा से कहा, [13]"इस्राएल के लोगों से यह कहो: 'तुम लोग मेरे विशेष विश्राम के दिन वाले नियमों का पालन करोगे। तुम्हें यह अवश्य करना चाहिए, क्योंकि ये मेरे और तुम्हारे बीच सभी पीढ़ियों के लिए प्रतीक स्वरूप रहेंगें। इससे तुम्हें पता चलेगा कि मैंनें अर्थात् यहोवा ने तुम्हें अपना विशेष जनसमूह बनाया है।

[14]"'सब्त के दिन को विशेष दिवस मनाओ। यदि कोई व्यक्ति सब्त के दिन को अन्य दिनों की तरह मानता है तो वह व्यक्ति अवश्य मार दिया जाना चाहिए। कोई व्यक्ति जो सब्त के दिन काम करता है अपने लोगों से अवश्य अलग कर दिया जाना चाहिए। [15]सप्ताह में दूसरे अन्य छः दिन काम करने के लिए हैं, किन्तु सातवाँ दिन विश्राम करने का विशेष दिन है, अर्थात् यहोवा को सम्मान देने का विशेष दिन है, कोई व्यक्ति जो सब्त के दिन काम करेगा अवश्य ही मार दिया जाये। [16]इस्राएल के लोग सब्त के दिन को अवश्य याद रखें और इसे विशेष दिन बनाएं। वे इसे लगातार मनाते रहें। यह मेरे और उनके बीच साक्षीपत्र है जो सदा बना रहेगा। [17]सब्त का दिन मेरे और इस्राएल के लोगों के बीच सदा के लिए प्रतीक रहेगा। यहोवा ने छः दिन काम किया तथा आकाश एवं धरती को बनाया। सातवें दिन उसने अपने को विश्राम दिया।'"

[18]इस प्रकार परमेश्वर ने मूसा से सीनै पर्वत पर बात करना समाप्त किया। तब परमेश्वर ने उसे आदेश लिखे हुए दो समतल पत्थर दिए। परमेश्वर ने अपनी अंगुलियों का उपयोग किया और पत्थर पर उन नियमों को लिखा।

सोने का बछड़ा

32 लोगों ने देखा कि लम्बा समय निकल गया और मूसा पर्वत से नीचे नहीं उतरा। इसलिए लोग हारून के चारों ओर इकट्ठा हुए। उन्होंने उससे कहा, "देखो, मूसा ने हमें मिस्र देश से बाहर निकाला। किन्तु हम यह नहीं जानते कि उसके साथ क्या घटित हुआ है। इसलिए कोई देवता हमारे आगे चलने और हमें आगे ले चलने वाला बनाओ।"

[2]हारून ने लोगों से कहा, "अपनी पत्नियों, पुत्रों और पुत्रियों के कानों की बालियाँ मेरे पास लाओ।"

[3]इसलिए सभी लोगों ने कान की बालियाँ इकट्ठी कीं और वे उन्हें हारून के पास लाए। [4]हारून ने लोगों से सोना लिया, और एक बछड़े की मूर्ति बनाने के लिए उसका उपयोग किया। हारून ने मूर्ति बनाने के लिए मूर्ति को आकार देने वाले एक औज़ार का उपयोग किया। तब इसे उसने सोने से मढ़ दिया।

तब लोगों ने कहा, "इस्राएल के लोगों, ये तुम्हारे वे देवता हैं जो तुम्हें मिस्र से बाहर ले आया।"*

इस्राएल के … आए यहाँ मूल में पाँच बछड़ों के लिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है। इसका मतलब यह हो सकता है कि सोने का वह बछड़ा बहुत से मिथ्या देवताओं का प्रतीक था।

[5]हारून ने इन चीज़ों को देखा। इसलिए उसने बछड़े के सम्मुख एक वेदी बनाई। तब हारून ने घोषणा की। उसने कहा, “कल यहोवा के लिए विशेष दावत होगी।”

[6]अगले दिन सुबह लोग शीघ्र उठ गए। उन्होंने जानवरों को मारा और होमबलि तथा मेलबलि चढ़ाई। लोग खाने और पीने के लिये बैठे। तब वे खड़े हुए और उनकी एक उन्मत्त दावत हुई।

[7]उसी समय यहोवा ने मूसा से कहा, “इस पर्वत से नीचे उतरो। तुम्हारे लोग अर्थात् उन लोगों ने, जिन्हें तुम मिस्र से लाए हो, भयंकर पाप किया है। [8]उन्होंने उन चीज़ों को करने से शीघ्रता से इन्कार कर दिया है जिन्हें करने का आदेश मैंने उन्हें दिया था। उन्होंने पिघले सोने से अपने लिए एक बछड़ा बनाया है। वे उस बछड़े की पूजा कर रहे हैं और उसे बलि भेंट कर रहे हैं। लोगों ने कहा है, ‘इस्राएल, ये देवता है जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाए हैं।’”

[9]यहोवा ने मूसा से कहा, “मैंने इन लोगों को देखा है। मैं जानता हूँ कि ये बड़े हठी लोग हैं जो सदा मेरे विरुद्ध जाएंगे। [10]इसलिए अब मुझे इन्हें क्रोध करके नष्ट करने दो। तब मैं तुझसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा।”

[11]किन्तु मूसा ने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की। मूसा ने कहा, “हे यहोवा, तू अपने क्रोध को अपने लोगों को नष्ट न करने दे। तू अपार शक्ति और अपने बल से इन्हें मिस्र से बाहर ले आया। [12]किन्तु यदि तू अपने लोगों को नष्ट करेगा तब मिस्र के लोग कह सकते हैं, ‘यहोवा ने अपने लोगों के साथ बुरा करने की योजना बनाई। यही कारण है कि उसने इनको मिस्र से बाहर निकाला। वह उन्हें पर्वतों में मार डालना चाहता था। वह अपने लोगों को धरती से मिटाना चाहता था।’ इसलिए तू लोगों पर क्रुद्ध न हो। अपना क्रोध त्याग दे। अपने लोगों को नष्ट न कर। [13]तू अपने सेवक इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल (याकूब) को याद कर। तूने अपने नाम का उपयोग किया और तूने उन लोगों को वचन दिया। तूने कहा: ‘मैं तुम्हारे लोगों को उतना अनगिनत बनाऊँगा जितने आकाश में तारे हैं। मैं तुम्हारे लोगों को वह सारी धरती दूँगा जिसे मैंने उनको देने का वचन दिया है। यह धरती सदा के लिए उनकी होगी।’” [14]इसलिए यहोवा ने लोगों के लिए अफ़सोस किया। यहोवा ने वह नहीं किया जो उसने कहा कि वह करेगा अर्थात् लोगों को नष्ट नहीं किया।

[15]तब मूसा पर्वत से नीचे उतरा। मूसा के पास आदेश वाले दो समतल पत्थर थे। ये आदेश पत्थर के सामने तथा पीछे दोनों तरफ लिखे हुए थे। [16]परमेश्वर ने स्वयं उन पत्थरों को बनाया था और परमेश्वर ने स्वयं उन आदेशों को उन पत्थरों पर लिखा था।

[17]जब वे पर्वत से उतर रहे थे यहोशू ने लोगों का उन्मत्त शोर सुना। यहोशू ने मूसा से कहा, “नीचे पड़ाव में युद्ध की तरह का शोर है!”

[18]मूसा ने उत्तर दिया, “यह सेना का विजय के लिए शोर नहीं है। यह हार से चिल्लाने वाली सेना का शोर भी नहीं है। मैं जो आवाज़ सुन रहा हूँ वह संगीत* की है।”

[19]जब मूसा डेरे के समीप आया तो उसने सोने के बछड़े और गाते हुए लोगों को देखा। मूसा बहुत क्रोधित हो गया और उसने उन विशेष पत्थरों को ज़मीन पर फेंक दिया। पर्वत की तलहटी में पत्थरों के कई टुकडें हो गए। [20]तब मूसा ने लोगों के बनाए बछड़े को नष्ट कर दिया। उसने इसे आग में गला दिया। उसने सोने को तब तक पीसा जब तक यह चूर्ण न हो गया और उसने उस चूर्ण को पानी में फेंक दिया। उसने इस्राएल के लोगों को वह पानी पीने को विवश किया।

[21]मूसा ने हारून से कहा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया? तुम उन्हें ऐसा बुरा पाप करने की ओर क्यों ले गए?”

[22]हारून ने उत्तर दिया, “महाशय, क्रोधित मत हो। आप जानते हैं कि ये लोग सदा गलत काम करने को तैयार रहते हैं। [23]लोगों ने मुझ से कहा, ‘मूसा हम लोगों को मिस्र से बाहर लाया। किन्तु हम लोग नहीं जानते कि उसके साथ क्या घटित हुआ।’ इसलिए हम लोगों का मार्ग दिखाने वाला कोई देवता बनाओ, [24]इसलिए मैंने लोंगो से कहा, ‘यदि तुम्हारे पास सोने की अंगूठियाँ हों तो उन्हें मुझे दे दो।’ लोगों ने मुझे अपना सोना दिया। मैंने इस सोने को आग में फेंका और उस आग से यह बछड़ा आया।”

[25]मूसा ने देखा कि हारून ने विद्रोह उत्पन्न किया है। लोग मूर्खों की तरह उग्र व्यवहार इस तरह कर रहे थे कि उनके सभी शत्रु देख सकें। [26]इसलिए मूसा डेरे के द्वार पर खड़ा हुआ। मूसा ने कहा, “कोई व्यक्ति जो यहोवा का अनुसरण करना चाहता है मेरे पास आए” तब

संगीत या “गाने का।”

लेवी के परिवार के सभी लोग दौड़कर मूसा के पास आए।

[27]तब मूसा ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें बताऊँगा कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा क्या कहता है: 'हर व्यक्ति अपनी तलवार अवश्य उठा ले और डेरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाये। तुम लोग इन लोगों को अवश्य दण्ड दोगे चाहे किसी व्यक्ति को अपने भाई, मित्र और पड़ोसी को ही क्यों न मारना पड़े।'"

[28]लेवी के परिवार के लोगों ने मूसा का आदेश माना। उस दिन इस्राएल के लगभग तीन हज़ार लोग मरे। [29]तब मूसा ने कहा, "यहोवा ने आज तुम को ऐसे लोगों के रूप में चुना है जो अपने पुत्रों और भाइयों को आशीर्वाद देंगे।"

[30]अगली सुबह मूसा ने लोगों से कहा, "तुम लोगों ने भयंकर पाप किया है। किन्तु अब मैं यहोवा के पास ऊपर जाऊँगा और ऐसा कुछ कर सकूँगा जिससे वह तुम्हारे पापों को क्षमा कर दें।" [31]इसलिए मूसा वापस यहोवा के पास गया और उसने कहा, "कृपया सुन! इन लोगों ने बहुत बुरा पाप किया है और सोने का एक देवता बनाया है। [32]अब उन्हें इस पाप के लिए क्षमा कर। यदि तू क्षमा नहीं करेगा तो मेरा नाम उस किताब से मिटा दें जिसे तूने लिखा है।"*

[33]किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, "जो मेरे विरुद्ध पाप करते हैं केवल वे ही ऐसे लोग हैं जिनका नाम मैं अपनी पुस्तक से मिटाता हूँ। [34]इसलिए जाओ और लोगों को वहाँ ले जाओ जहाँ मैं कहता हूँ। मेरा दूत तुम्हारे आगे आगे चलेगा और तुम्हें रास्ता दिखाएगा। जब उन लोगों को दण्ड देने का समय आएगा जिन्होंने पाप किया है तब उन्हें दण्ड दिया जायेगा।" [35]इसलिए यहोवा ने लोगों में एक भयंकर बीमारी उत्पन्न की। उन्होंने यह इसलिए किया कि उन लोगों ने हारून से सोने का बछड़ा बनाने को कहा था।

"मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा"

33 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम और तुम्हारे वे लोग जिन्हें तुम मिस्र से लाए हो उस जगह को अवश्य छोड़ दो। और उस प्रदेश में जाओ जिसे मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब को देने का वचन दिया था। मैंने उन्हें वचन दिया मैंने कहा, मैं वह प्रदेश तुम्हारे भावी वंशजों को दूँगा। [2]मैं एक दूत तुम्हारे आगे आगे चलने के लिए भेजूँगा, और मैं कनानी, एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी लोगो को हराऊँगा, मैं उन लोगों को तुम्हारा प्रदेश छोड़ने को विवश करूँगा। [3]इसलिए उस प्रदेश को जाओ जो बहुत ही अच्छी चीज़ों* से भरा है। किन्तु मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा, तुम लोग बड़े हठी हो, यदि मैं तुम्हारे साथ गया तो मैं तुम्हें शायद रास्ते में ही नष्ट कर दूँ।"

[4]लोगों ने यह बुरी खबर सुनी और वे बहुत दुःखी हुए। इसके बाद लोगों ने आभूषण नहीं पहने। [5]उन्होंने आभूषण नहीं पहने क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएल के लोगों से कहो, 'तुम हठी लोग हो। यदि मैं तुम लोगों के साथ थोड़े समय के लिए भी यात्रा करुँ तो मैं तुम लोगों को नष्ट कर दूँगा, इसलिए अपने सभी गहने उतार लो। तब मैं निश्चय करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या करुँ।'"

[6]इसलिए इस्राएल के लोगों ने होरेब (सीनै) पर्वत पर अपने सभी गहने उतार लिए।

मिलापवाला तम्बू

[7]मूसा मिलापवाला तम्बू को डेरे से कुछ दूर ले गया। वहाँ उसने उसे लगाया और उसका नाम "मिलापवाला तम्बू" रखा। कोई व्यक्ति जो यहोवा से कुछ जानना चाहता था उसे डेरे के बाहर मिलापवाले तम्बू तक जाना होता था। [8]जब कभी मूसा बाहर तम्बू में जाता तो लोग उसको देखते रहते। लोग अपने तम्बूओं के द्वार पर खड़े रहते और मूसा को तब तक देखते रहते जब तक वह मिलापवाले तम्बू में चला जाता। [9]जब मूसा तम्बू में जाता तो एक लम्बा बादल का स्तम्भ सदा नीचे उतरता था। वह बादल तम्बू के द्वार पर ठहरता। इस प्रकार यहोवा मूसा से बात करता था। [10]जब लोग तम्बू के द्वार पर बादल को देखते तो सामने झुकते और उपासना करते थे। हर एक व्यक्ति अपने तम्बू के द्वार पर उपासना करता था।

[11]यहोवा मूसा से आमने-सामने बात करता था। यहोवा मूसा से इस प्रकार बात करता था जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने मित्र से बात करता है। यहोवा से बात करने

उस किताब ... लिखा है संभवत यह "जीवन की पुस्तक" की ओर संकेत है। यह वैसा ही है कि परमेश्वर एक किताब रखता है जिसमें उसके सभी लोगों के नाम लिखे रहते हैं।

अच्छी चीज़ें अर्थात् दूध और शहद से भरपूर।

के बाद मूसा हमेशा अपने डेरे मे वापस लौटता था। नून का पुत्र नवयुवक यहोशू मूसा का सहायक था। यहोशू सदा तम्बू में रहता था जब मूसा उसे छोड़ता था।

मूसा को यहोवा की महिमा का दर्शन

12मूसा ने यहोवा से कहा, "तूने मुझे इन लोगों को ले चलने को कहा। किन्तु तूने यह नहीं बताया कि मेरे साथ किसे भेजेगा। तूने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ और मैं तुमसे प्रसन्न हूँ।' 13यदि तुझे मैंने सचमुच प्रसन्न किया है तो अपने निर्णय मुझे बता। तुझे मैं सचमुच जानना चाहता हूँ। तब मैं तुझे लगातार प्रसन्न रख सकता हूँ। याद रख कि ये सभी तेरे लोग हैं।"

14यहोवा ने कहा, "मैं स्वयं तुम्हारे साथ चलूँगा। मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊँगा।"*

15तब मूसा ने उससे कहा, "यदि तू हम लोगों के साथ न चले तो तू इस स्थान से हम लोगों को दूर मत भेज। 16हम यह भी कैसे जानेंगे कि तू मुझसे और इन लोगों से प्रसन्न है? यदि तू साथ चलेगा तो हम लोग निश्चयपूर्वक यह जानेंगे। यदि तू हम लोगों के साथ नहीं जाता तो मैं और ये लोग धरती के अन्य दूसरे लोगों से भिन्न नहीं होंगे।"

17तब यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं वह करूँगा जो तू कहता है। मैं यह करूँगा क्योकि मैं तुझसे प्रसन्न हूँ। मैं तुझे अच्छी तरह जानता हूँ।"

18तब मूसा ने कहा, "अब कृपया मुझे अपनी महिमा दिखा।"

19तब यहोवा ने उत्तर दिया, "मैं अपनी सम्पूर्ण भलाई को तुम तक जाने दूँगा। मैं यहोवा हूँ और मैं अपने नाम की घोषणा करूँगा जिससे तुम उसे सुन सको। मैं उन लोगों पर कृपा और प्रेम दिखाऊँगा जिन्हें मैं चुनूँगा। 20किन्तु तुम मेरा मुख नहीं देख सकते। कोई भी व्यक्ति मुझे देख नहीं सकता और यदि देख ले तो जीवित नहीं रह सकता है।

21"मेरे समीप के स्थान पर एक चट्टान है। तुम उस चट्टान पर खड़े हो सकते हो। 22मेरी महिमा उस स्थान से होकर गुज़रेगी। उस चट्टान की बड़ी दरार में मैं तुम को रखूँगा और गुजरते समय मैं तुम्हें अपने हाथ से ढकूँगा। 23तब मैं अपना हाथ हटा लूँगा और तुम मेरी पीठ मात्र देखोगे। किन्तु तुम मेरा मुख नहीं देख पाओगे।"

मैं ... दिखाऊँगा या "आराम दूँगा।"

पत्थर की नयी पट्टियाँ

34 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "दो और समतल चट्टानें ठीक वैसी ही बनाओ जैसे पहली दो थीं जो टूट गई। मैं इन पर उन्हीं शब्दों को लिखूँगा जो पहले दोनों पर लिखे थे। 2कल प्रात:काल तैयार रहना और सीनै पर्वत पर आना। वहाँ मेरे सामने पर्वत की चोटी पर खड़े रहना। 3किसी व्यक्ति को तुम्हारे साथ नहीं आने दिया जाएगा। पर्वत के किसी भी स्थान पर कोई भी व्यक्ति दिखाई तक नहीं पड़ना चाहिए। यहाँ तक कि तुम्हारे जानवरों के झुण्ड और भेड़ों की रेवडें भी पर्वत की तलहटी में घास नहीं चर सकेंगी।"

4इसलिए मूसा ने पहले पत्थरों की तरह पत्थर की दो समतल पट्टियाँ बनाईं। तब अगले सवेरे ही वह सीनै पर्वत पर गया। उसने हर एक चीज़ यहोवा के आदेश के अनुसार की। मूसा अपने साथ पत्थर की दोनों समतल पट्टियाँ ले गया। 5मूसा के पर्वत पर पहुँच जाने के बाद यहोवा उसके पास बादल में नीचे पर्वत पर आया। यहोवा वहाँ मूसा के साथ खड़ा रहा, और उसने यहोवा का नाम लिया।*

6यहोवा मूसा के सामने से गुज़रा था और उसने कहा, "यहोवा दयालु और कृपालु परमेश्वर है। यहोवा जल्दी क्रोधित नहीं होता। यहोवा महान, प्रेम से भरा है। यहोवा विश्वसनीय है। 7यहोवा हजारों पीढ़ियों पर कृपा करता है। यहोवा लोगों को उन गलतियों के लिए जो वे करते हैं क्षमा करता है। किन्तु यहोवा अपराधियों को दण्ड देना नहीं भूलता। यहोवा केवल अपराधी को ही दण्ड नहीं देगा अपितु उनके बच्चों, उनके पौत्रों और प्रपौत्रों को भी उस बुरी बात के लिए कष्ट सहना होगा जो वे लोग करते हैं।"

8तब तत्काल मूसा भूमि पर झुका और उसने यहोवा की उपासना की। मूसा ने कहा, 9"यहोवा, यदि तू मुझसे प्रसन्न हैं तो मेरे साथ चल। मैं जानता हूँ कि ये लोग हठी

यहोवा ... लिया शाब्दिक "उसने यहोवा के नाम पर पुकारा" इस का अर्थ "मूसा ने यहोवा की उपासना की" या "यहोवा ने अपना नाम मूसा से कहा।"

हैं। किन्तु तू हमें उन पापों और अपराधों के लिए क्षमा कर जो हमने किए हैं। अपने लोगों के रूप में हमें स्वीकार कर।"

[10]तब यहोवा ने कहा, "मैं तुम्हारे सभी लोगों के साथ यह साक्षीपत्र बना रहा हूँ। मैं ऐसे अद्‌भुत काम करूँगा जैसे इस धरती पर किसी भी दूसरे राष्ट्र के लिए पहले कभी नहीं किए। तुम्हारे साथ सभी लोग देखेंगे कि मैं यहोवा अत्यन्त महान हूँ। लोग उन अद्‌भुत कामों को देखेंगे जो मैं तुम्हारे लिए करूँगा। [11]आज मैं जो आदेश देता हूँ उसका पालन करो और मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारा देश छोड़ने को विवश करूँगा। मैं एमोरी, कनानी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी को बाहर निकल जाने को विवश करूँगा। [12]सावधान रहो। उन लोगों के साथ कोई सन्धि न करो जो उस प्रदेश में रहते हैं जहाँ तुम जा रहे हो। यदि तुम उनके साथ सन्धि करोगे जो उस प्रदेश में रहते हैं जहाँ तुम जा रहे हो। यदि तुम उनके साथ साक्षीपत्र बनाओगे तो तुम उस में फँस जाओगे। [13]उनकी वेदियों को नष्ट कर दो। उन पत्थरों को तोड़ दो जिनकी वे पूजा करते हैं। उनकी मूर्तियों* को काट गिराओ। [14]किसी दूसरे देवता की पूजा न करो। मैं यहोवा (कना) जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ। यह मेरा नाम है। मैं (एलकना) जल उठने वाला परमेश्वर हूँ।

[15]"सावधान रहो उस प्रदेश में जो लोग रहते हैं उनसे कोई सन्धि न हो। यदि तुम यह करोगे तो जब वे अपने देवताओं की पूजा करेंगे तब तुम उनके साथ हो सकोगे। वे लोग तुम्हें अपने में मिलने के लिए आमंत्रित करेंगे और तुम उनकी बलियों को खाओगे। [16]तुम उनकी कुछ लड़कियों को अपने पुत्रों की पत्नियों के रूप में चुन सकते हो। वे पुत्रियाँ असत्य देवताओं की सेवा करतीं हैं। वे तुम्हारे पुत्रों से भी वही करवा सकतीं हैं।

[17]"मूर्तियाँ मत बनाना।

[18]"अखमीरी रोटियों की दावत का उत्सव मनाओ। मेरे दिए आदेश के अनुसार सात दिन तक अखमीरी रोटी खाओ। इसे उस महीने में करो जिसे मैंने चुना हैं–आबीब का महीना। क्यों? क्योंकि यह वही महीना है जब तुम मिस्र से बाहर आए।

[19]"किसी भी स्त्री का पहलौठा बच्चा सदा मेरा है। पहलौठा जानवर भी जो तुम्हारी गाय, बकरियों या भेड़ों से उत्पन्न होता है, मेरा है। [20]यदि तुम पहलौठे गधे को रखना चाहते हो तो तुम इसे एक मेमने के बदले खरीद सकते हो। किन्तु यदि तुम उस गधे को मेमने के बदले नहीं ख़रीदते तो तुम उस गधे की गर्दन तोड़ दो। तुम्हें अपने पहलौठे सभी पुत्र मुझसे वापस खरीदने होंगे। कोई व्यक्ति बिना भेंट के मेरे सामने नहीं आएगा।

[21]"तुम छः दिन काम करोगे। किन्तु सातवें दिन अवश्य विश्राम करोगे। पौधे रोपने और फसल काटने के समय भी तुम्हें विश्राम करना होगा।

[22]"सप्ताह की दावत* को मनाओ। गेहूँ की फ़सल के पहले अनाज का उपयोग इस दावत में करो और वर्ष के अन्त* में फ़सल कटने की दावत* मनाओ।

[23]"हर वर्ष तुम्हारे सभी पुरुष तीन बार अपने स्वामी, परमेश्वर इस्राएल के यहोवा के पास जाएंगे।

[24]"जब तुम अपने प्रदेश में पहुँचोगे तो मैं तुम्हारे शत्रुओं को उस प्रदेश से बाहर जाने को विवश करूँगा। मैं तुम्हारी सीमाओं को बढ़ाऊँगा और तुम अधिकाधिक प्रदेश पाओगे। तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने वर्ष में तीन बार जाओगे। और उन दिनों तुम्हारा देश तुम से लेने का कोई भी प्रयत्न नहीं करेगा।

[25]"यदि तुम मुझे बलि से खून भेंट करो तो उसी समय मुझे खमीर भेंट मत करो

"और फसह पर्व का कुछ भी माँस अगली सुबह तक के लिए नहीं छोड़ा जाना चाहिए।

[26]"यहोवा को अपनी पहली काटी हुई फ़सलें दो। उन चीज़ों को अपने परमेश्वर यहोवा के घर लाओ।

"कभी बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न पकाओ।"

[27]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "जो बातें मैंने बताई हैं उन्हें लिख लो। ये बातें हमारे तुम्हारे और इस्राएल के लोगों के मध्य साक्षीपत्र हैं।"

पत्थरों ... मूर्तियाँ शाब्दिक "स्मारक अशेरा स्तम्भ।" ये पत्थर के प्रतीक और लकड़ी के स्तम्भ थे जिन्हें लोग असत्य देवताओं को याद रखने तथा श्रद्धा अर्पित करने के लिए खड़ी करते थे।"

सप्ताह की दावत "पेन्तकास्ट" और "सव्योथ" भी कहा जाता है।

अन्त शाब्दिक "वर्ष के परिवर्तन के समय।"

फ़सल कटने की दावत जिसे "फ़सल बटोरने की दावत" और "सुक्कार्थ" भी कहा जाता है।

[28]मूसा वहाँ यहोवा के साथ चालीस दिन और चालीस रात रहा। उस पूरे समय उसने न भोजन किया न ही पानी पिया। और मूसा ने साक्षीपत्र के शब्दों के दस–आदेशों को, पत्थर की दो समतल पट्टियों पर लिखा।

मूसा का तेजस्वी मुख

[29]तब मूसा सीनै पर्वत से नीचे उतरा। वह यहोवा की दोनों पत्थरों की समतल पट्टियों को साथ लाया जिन पर यहोवा के नियम लिखे थे। मूसा का मुख चमक रहा था। क्योंकि उसने परमेश्वर से बातें की थीं। किन्तु मूसा यह नहीं जानता था कि उसके मुख पर तेज है। [30]हारून और इस्राएल के सभी लोगों ने देखा कि मूसा का मुख चमक रहा था। इसलिए वे उसके पास जाने से डरे। [31]किन्तु मूसा ने उन्हें बुलाया। इसलिए हारून और लोगों के सभी अगुवा मूसा के पास गए। मूसा ने उन से बातें कीं। [32]उसके बाद इस्राएल के सभी लोग मूसा के पास आए। और मूसा ने उन्हें वे आदेश दिए जो यहोवा ने सीनै पर्वत पर उसे दिए थे। [33]जब मूसा ने बातें करना खत्म किया तब उसने अपने मुख को एक कपड़े से ढक लिया। [34]जब कभी मूसा यहोवा के सामने बातें करने जाता तो कपड़े को हटा लेता था। तब मूसा बाहर आता और इस्राएल के लोगों को वह बताता जो यहोवा का आदेश होता था। [35]इस्राएल के लोग देखते थे कि मूसा का मुख तेज से चमक रहा है। इसलिए मूसा अपना मुख फिर ढक लेता था। मूसा अपने मुख को तब तक ढके रखता था जब तक वह यहोवा के साथ बात करने अगली बार नहीं जाता था।

सब्त के नियम

35 मूसा ने इस्राएल के सभी लोगों को एक साथ इकट्ठा किया। मूसा ने उनसे कहा, "मैं वे बातें बताऊँगा जो यहोवा ने तुम लोगों को करने के लिए कही हैं:

[2]"काम करने के छ: दिन हैं। किन्तु सातवाँ दिन तुम लोगों का विश्राम का विशेष दिन होगा। उस विशेष दिन को विश्राम करके तुम लोग यहोवा को श्रद्धा अर्पित करोगे। यदि कोई सातवें दिन काम करेगा तो उसे अवश्य मार दिया जाएगा। [3]सब्त के दिन तुम्हें किसी स्थान पर आग तक नहीं जलानी चाहिए, जहाँ कहीं तुम रहते हो।"

पवित्र तम्बू के लिए चीज़ें

[4]मूसा ने इस्राएल के सभी लोगों से कहा, "यही है जो यहोवा ने आदेश दिया है। [5]यहोवा के लिए विशेष भेंट इकट्ठी करो। तुम्हें अपने मन में निश्चय करना चाहिए कि तुम क्या भेंट करोगे। और तब तुम वह भेंट यहोवा के पास लाओ। सोना, चाँदी और काँसा; [6]नीला बैंगनी और लाल कपड़ा, सन का उत्तम रेशा; बकरी के बाल; [7]भेंड़ की लाल रंगी खाल, सुइसों का चमड़ा; बबूल की लकड़ी; [8]दीपकों के लिए जैतून का तेल; अभिषेक के तेल के लिए मसाले, सुगन्धित धूप के लिए मसाले, [9]गोमेदक नग तथा अन्य रत्न भेंट में लाओ। ये नग और रत्न एपोद और सीनाबन्द पर लगाए जाएंगे।

[10]"तुम सभी कुशल कारीगरों को चाहिए कि यहोवा ने जिन चीज़ों का आदेश दिया है उन्हें बनाए। ये वे चीज़ें हैं जिनके लिए यहोवा ने आदेश दिया है: [11]पवित्र तम्बू, इसका बाहरी तम्बू, और इसका आच्छादन, छल्ले, तख्ते, पट्टियाँ, स्तम्भ और आधार; [12]पवित्र सन्दूक, और इसकी बल्लियाँ तथा सन्दूक का ढक्कन, और सन्दूक रखे जाने की जगह को ढकने के लिए पर्दे; [13]मेज और इसकी बल्लियाँ, मेज पर रहने वाली सभी चीज़ें, और मेज पर रखी जाने वाली विशेष रोटी; [14]प्रकाश के लिए उपयोग में आने वाला दीपाधार, और वे सभी चीज़ें जो दीपाधार के साथ होती हैं अर्थात् दीपक, और प्रकाश के लिए तेल; [15]धूप जलाने के लिए वेदी और इसकी बल्लियाँ अभिषेक का तेल और सुगन्धित धूप, मिलापवाले तम्बू के प्रवेश द्वार को ढकने वाली कनात; [16]होमबलियों के लिए वेदी और इसकी काँसे की जाली, बल्लियाँ और वेदी पर उपयोग में आने वाली सभी चीज़ें, काँसे की चिलमची और इसका आधार; [17]आँगन की चारों ओर की कनातें, और उनके खंभे और आधार, और आँगन के प्रवेशद्वार को ढकने वाला कनात; [18]आँगन और तम्बू के सहारे के लिए उपयोग में आने वाली खूँटियाँ, और खूँटियों से बँधने वाली रस्सियाँ; [19]और विशेष बुने वस्त्र जिन्हें याजक पवित्र स्थानों में पहनेंगे। ये विशेष वस्त्र याजक हारून और उसके पुत्रों के पहनने के लिए हैं वे इन वस्त्रों को तब पहनेंगे जब वे याजक के रूप में सेवा–कार्य करेंगे।"

लोगों की महान भेंट

[20]तब इस्राएल के सभी लोग मूसा के पास से चले गए। [21]सभी लोग जो भेंट चढ़ाना चाहते थे आए और यहोवा के लिए भेंट लाए। ये भेंटे मिलापवाले तम्बू को बनाने, तम्बू की सभी चीज़ों, और विशेष वस्त्र बनाने के काम में लाई गई। [22]सभी स्त्री और पुरुष, जो चढ़ाना चाहते थे, हर प्रकार के अपने सोने के गहने लाए। वे चिमटी* कान की बालियाँ, अगूंठियाँ, अन्य गहने लेकर आए। उन्होंने अपने सभी सोने के गहने यहोवा को अर्पित किए। यह यहोवा को विशेष भेंट थी।

[23]हर व्यक्ति जिसके पास सन के उत्तम रेशे, नीला, बैंगनी और लाल कपड़ा था वह इन्हें यहोवा के पास लाया। वह व्यक्ति जिसके पास बकरी के बाल, लाल रंग से रंगी भेड़ की खाल, सुइसों का खाल था उसे वह यहोवा के पास लाया। [24]हर एक व्यक्ति जो चाँदी, काँसा, चढ़ाना चाहता था यहोवा को भेंट के रूप में उसे लाया। हर एक व्यक्ति जिसके पास बबूल की लकड़ी थी, आया और उसे यहोवा को अर्पित किया। [25]हर एक कुशल स्त्री ने सन के उत्तम रेशों और नीला, बैंगनी तथा लाल कपड़ा बनाया। [26]उन सभी स्त्रियों ने जो कुशल थीं और हाथ बँटाना चाहती थीं उन्होंने बकरी के बालों से कपड़ा बनाया।।

[27]अगुवा लोग गोमेदक नग तथा अन्य रत्न ले आए। ये नग और रत्न याजक के एपोद तथा सीनाबन्द में लगाए गए। [28]लोग मसाले और जैतून का तेल भी लाए। ये चीज़ें सुगन्धित धूप, अभिषेक का तेल और दीपकों के तेल के लिए उपयोग में आई।

[29]इस्राएल के वे सभी लोग जिनके मन में प्रेरणा हुई यहोवा के लिए भेंट लाए। ये भेंटें मुक्त भाव से दी गई थीं, लोगों ने इन्हें दिया क्योंकि वे देना चाहते थे। ये भेंट उन सभी चीज़ों के बनाने के लिए उपयोग में आई जिन्हें यहोवा ने मूसा और लोगों को बनाने का आदेश दिया था।

बसलेल और ओहोलीआब

[30]तब मूसा ने इस्राएल के लोगों से कहा, "देखो! यहोवा ने बसलेल को चुना है जो ऊरी का पुत्र और यहूदा के परिवार समूह का है। (ऊरी हूर का पुत्र था।) [31]यहोवा ने बसलेल को परमेश्वर की शक्ति से भर दिया अर्थात् बसलेल को हर प्रकार का काम करने की विशेष निपुणता और जानकारी दी। [32]वह सोने, चाँदी और काँसे की चीज़ों का आलेखन करके उन्हें बना सकता है। [33]वह नग और रत्न को काट और जड़ सकता है। बसलेल लकड़ी का काम कर सकता है और सभी प्रकार की चीजें बना सकता है। [34]यहोवा ने बसलेल और ओहोलीआब को अन्य लोगों के सिखाने की विशेष निपुणता दे रखी है। (ओहोलीआब दान के परिवार समूह से अहीसामाक का पुत्र था।) [35]यहोवा ने इन दोनों व्यक्तियों को सभी प्रकार का काम करने की विशेष निपुणता दे रखी है। वे बढ़ई और ठठेरे का काम करने की निपुणता रखते हैं, वे नीले, बैंगनी, और लाल कपड़े और सन के उत्तम रेशों में चित्रों को काढ़ कर उन्हें सी सकते हैं और वे ऊन से भी चीजों को बुन सकते हैं।"

36 "इसलिए, बसलेल, ओहोलीआब और सभी निपुण व्यक्ति उन कामों को करेंगे जिनका आदेश यहोवा ने दिया है। यहोवा ने इन व्यक्तियों को उन सभी निपुण काम करने की बुद्धि और समझ दे रखी है जिनकी आवश्यकता इस पवित्र स्थान को बनाने के लिए है।"

[2]तब मूसा ने बसलेल, ओहोलीआब और सभी अन्य निपुण लोगों को बुलाया जिन्हें यहोवा ने विशेष निपुणता दी थी और ये लोग आए क्योंकि ये काम में सहायता करना चाहते थे। [3]मूसा ने इस्राएल के इन लोगों को उन सभी चीज़ों को दे दिया जिन्हें इस्राएल के लोग भेंट के रूप में लाए थे। और उन्होंने उन चीज़ों का उपयोग पवित्र स्थान बनाने में किया। लोग प्रत्येक सुबह भेंट लाते रहे। [4]अन्त में प्रत्येक निपुण कारीगरों ने उस काम को छोड़ दिया जिसे वे पवित्र स्थान पर कर रहे थे और वे मूसा से बातें करने गए। [5]उन्होंने कहा, "लोग बहुत कुछ लाए हैं। हम लोगों के पास उससे अधिक है जितना तम्बू को पूरा करने के लिए यहोवा ने कहा है।"

[6]तब मूसा ने पूरे डेरे में यह खबर भेजी : "कोई पुरुष या स्त्री अब कोई अन्य भेंट तम्बू के लिए नहीं चढ़ाएगा।" इस प्रकार लोग और अधिक न देने के लिए विवश किए गए। [7]लोगों ने पर्याप्त से अधिक चीज़ें पवित्र स्थान को बनाने के लिए दीं।

चिमटी या "काँटा" ये सुरक्षित चिमटी की तरह थे और वस्त्रों को फंसाने के लिए बटन की तरह उपयोग में आते थे।

पवित्र तम्बू

[8]तब निपुण कारीगरों ने पवित्र तम्बू बनाना आरम्भ किया। उन्होंने नीले, बैंगनी और लाल कपड़े और सन के उत्तम रेशों की दस कनातें बनाई। और उन्होंने करूब* के पंख सहित चित्रों को कपड़े पर काढ़ दिया। [9]हर एक कनात बराबर नाप की थी। यह चौदह गज* लम्बी तथा, दो गज़ चौड़ी थी। [10]पाँच कनातें एक साथ आपस में जोड़ी गई जिससे वे एक ही बन गई। दूसरी को बनाने के लिए अन्य पाँच कनातें आपस में जोड़ी गई। [11]पाँच से बनी पहली कनात को अन्तिम कनात के सिरे के साथ लुप्पी बनाने के लिए उन्होंने नीले कपड़े का उपयोग किया। उन्होंने वही काम दूसरी पाँच से बनी अन्य कनातों के साथ भी किया। [12]एक में पचास छेद थे और दूसरी में भी पचास छेद थे। छेद एक दूसरे के आमने–सामने थे। [13]तब उन्होंने पचास सोने के छल्ले बनाए। उन्होंने इन छल्लों का उपयोग दोनों कनातों को जोड़ने के लिए किया। इस प्रकार पूरा तम्बू एक ही कपड़े में जुड़कर एक हो गया।

[14]तब कारीगरों ने बकरी के बालों का उपयोग तम्बू को ढकने वाली ग्यारह कनातों को बनाने के लिए किया। [15]सभी ग्यारह कनातें एक ही माप की थी। वे पन्द्रह गज लम्बी और दो गज चौड़ी थीं। [16]कारीगरों ने पाँच कनातों को एक में सीआ, और तब छ: को एक दूसरे में एक साथ सीआ। [17]उन्होंने पहले समूह की अन्तिम कनात के सिरे में पचास लुप्पियाँ बनाई। और दूसरे समूह की अन्तिम कनात के सिरे में पचास। [18]कारीगरों ने दोनों को एक में मिलाने के लिए पचास काँसे के छल्ले बनाए। [19]तब उन्होंने तम्बू के दो और आच्छादन बनाए। एक आच्छादन लाल रंगे हुए मेढ़े की खाल से बनाया गया। दूसरा आच्छादन सुइसों के चमड़ें का बनाया गया।

[20]तब बसलेल ने बबूल की लकड़ी के तख़्ते बनाए। [21]हर एक तख़्ता पन्द्रह फीट लम्बा और सत्ताइस इंच चौड़ा बनाया। [22]हर एक तख़्ते के तले में अगल बगल दो चूलें थीं। इनका उपयोग तख़्तों को जोड़ने के लिए किया जाता था। पवित्र तम्बू के लिए हर एक तख़्ता इसी प्रकार का था। [23]बसलेल ने तम्बू के दक्षिण भाग के लिए बीस तख़्ते बनाए। [24]तब उसने चालीस चाँदी के आधार बनाए जो बीस तख़्तों के नीचे लगे। हर एक तख़्ते के दो आधार थे अर्थात् हर तख़्ते की हर "चूल" के लिए एक। [25]उसने बीस तख़्ते तम्बू की दूसरी ओर उत्तर की तरफ़ के भी बनाए। [26]उसने हर एक तख़्ते के नीचे दो लगने वाले चाँदी के चालीस आधार बनाए। [27]उसने तम्बू केपिछले भाग (पश्चिमी ओर) के लिए छ: तख़्ते बनाए। [28]उसने तम्बू के पिछले भाग के कोनों के लिए दो तख़्ते बनाए। [29]ये तख़्ते तले में एक दूसरे से जोड़े गए थे, और ऐसे छल्लों में लगे थे जो उन्हें जोड़ते थे। उसने प्रत्येक सिरे के लिए ऐसा किया। [30]इस प्रकार वहाँ आठ तख़्ते थे, और हर एक तख़्ते के लिए दो आधार के हिसाब से सोलह चाँदी के आधार थे।

[31–32]तब उसने तम्बू के पहली बाजू के लिए पाँच, और तम्बू की दूसरी बाजू के लिए पाँच तथा तम्बू के पश्चिमी (पिछली) ओर के लिए पाँच कीकर की कड़ियाँ बनाईं। [33]उसमें बीच की कड़ियाँ ऐसी बनाईं जो तख़्तों में से एक दूसरे से होकर एक दूसरे तक जाती थीं। [34]उसने इन तख़्तों को सोने से मढ़ा। उसने कड़ियों को भी सोने से मढ़ा और उसने कड़ियों को पकड़े रखने के लिए सोने के छल्ले बनाए।

[35]तब उसने सर्वाधिक पवित्र स्थान के द्वार के लिए पर्दे बनाए। उसने सन के उत्तम रेशों और नीले लाल तथा बैंगनी कपड़े का उपयोग किया। उसने सन के उत्तम रेशों में करूबों का चित्र काढ़ा। [36]उसने बबूल की लकड़ी के चार खम्भे बनाए और उन्हें सोने से मढ़ा। तब उसने खम्भों के लिए सोने के छल्ले बनाए और उसने खम्भों के लिए चार चाँदी के आधार बनाए। [37]तब उसने तम्बू के द्वार के लिए पर्दा बनाया। उसने नीले, बैंगनी और लाल कपड़े तथा सन के उत्तम रेशों का उपयोग किया। उसने कपड़े में चित्र काढ़े। [38]तब उसने इस पर्दे के लिए पाँच खम्भे और उनके लिए छल्ले बनाए। उसने खम्भों के सिरों और पर्दे की छड़ों को सोने से मढ़ा, और उसने काँसे के पाँच आधार खम्भों के लिए बनाए।

साक्षीपत्र का सन्दूक

37 बसलेल ने बबूल की लकड़ी का पवित्र सन्दूक बनाया। सन्दूक पैतालिस इंच लम्बा, सत्ताईस इंच चौड़ा, और सत्ताईस इंच ऊँचा था। [2]उसने सन्दूक के

करूब परमेश्वर के विशेष स्वर्गदूत।

चौदह गज़ शाब्दिक "अट्ठाइस हाथ।"
,

भीतरी और बाहर भाग को शुद्ध सोने से मढ़ दिया। तब उसने सोने की पट्टी सन्दूक के चारों ओर लगाई। [3]फिर उसने सोने के चार कड़े बनाए और उन्हें नीचे के चारों कोनों पर लगाया। ये कड़े सन्दूक को ले जाने के लिए उपयोग में आते थे। दोनों तरफ दो–दो कड़े थे। [4]तब उसने सन्दूक ले चलने के लिए बल्लियों को बनाया। बल्लियों के लिए उसने बबूल की लकड़ी का उपयोग किया और बल्लियों को शुद्ध सोने से मढ़ा। [5]उसने सन्दूक के हर एक सिरे पर बने कड़ों में बल्लियों को डाला। [6]तब उसने शुद्ध सोने से ढक्कन को बनाया। ये ढाई हाथ लम्बा तथा डेढ़ हाथ चौड़ा था। [7]तब बसलेल ने सोने को पीट कर दो करूब बनाए। उसने ढक्कन के दोनों छोरो पर करूब लगाये। [8]उसने एक करूब को एक ओर तथा दूसरे को दूसरी ओर लगाया। करूब को ढक्कन से एक बनाने के लिए जोड़ दिया गया। [9]करूबों के पंख आकाश की ओर उठा दिए गए। करूबों ने सन्दूक को अपने पंखों से ढक लिया। करूबों एक दूसरे के सामने ढक्कन को देख रहे थे।

विशेष मेज

[10]तब बसलेल ने बबूल की लकड़ी की मेज बनाई। मेज़ छत्तीस इंच लम्बी, अट्ठारह इंच चौड़ी और सत्ताईस इंच ऊँची थी। [11]उसने मेज को शुद्ध सोने से मढ़ा। उसने सोने की सजावट मेज के चारों ओर की। [12]तब उसने मेज के चारों ओर एक किनारे बनायी। यह किनारे लगभग तीन इंच* चौड़ी थी। उसने किनारे पर सोने की झालर लगाई। [13]तब उसने मेज के लिए चार सोने के कड़े बनाए। उसने नीचे के चारों कोनों पर सोने के चार कड़े लगाए। ये वहीं–वहीं थे जहाँ चार पैर थे। [14]कड़े किनारी के समीप थे। कड़ों में वे बल्लियाँ थीं जो मेज को ले जाने में काम आती थीं। [15]तब उसने मेज को ले जाने के लिए बल्लियाँ बनाई। बल्लियों के लिए उसने बबूल की लकड़ी का उपयोग किया और उन को शुद्ध सोने से मढ़ा। [16]तब उसने उन चीज़ों को बनाया जो मेज पर काम आती थीं। उसने तश्तरी, चम्मच, परात, और पेय भेंटों के लिए उपयोग में आने वाले घड़े बनाए। ये सभी चीज़ें शुद्ध सोने से बनाई गई थीं।

दीपाधार

[17]तब उसने दीपाधार बनाया। इसके लिए उसने शुद्ध सोने का उपयोग किया और उसे पीट कर आधार तथा उसके डंडे को बनाया। तब उसने फूलों के समान दिखने वाले प्याले बनाए। प्यालों के साथ कलियाँ और खिले हुए पुष्प थे। हर एक चीज़ शुद्ध सोने की बनी थी। ये सभी चीज़ें एक ही इकाई बनाने के रूप में परस्पर जुड़ी थी। [18]दीपाधार के दोनों ओर छ: शाखाएं थीं। एक ओर तीन शाखाएं थी तथा तीन शाखाएं दूसरी ओर। [19]हर एक शाखा पर सोने के तीन फूल थे। ये फूल बादाम के फूल के आकार के बने थे। उनमें कलियाँ और पंखुडियाँ थीं। [20]दीपाधार की डंडी पर सोने के चार फूल थे। वे भी कली और पंखुडियों सहित बादाम के फूल के आकार के बने थे। [21]छ: शाखाएं दो–दो करके तीन भागों में थीं। हर एक भाग की शाखाओं के नीचे एक कली थी। [22]ये सभी कलियां, शाखाएं और दीपाधार शुद्ध सोने के बने थे। इस सारे सोने को पीट कर एक ही में मिला दिया गया था। [23]उसने इस दीपाधार के लिए सात दीपक बनाए तब उसने तश्तरियाँ और चिमटे बनाए। हर एक वस्तु को शुद्ध सोने से बनाया। [24]उसने लगभग पचहत्तर पौंड़ शुद्ध सोना दीपाधार और उसके उपकरणों को बनाने में लगाया।

धूप जलाने की वेदी

[25]तब उसने धूप जलाने की एक वेदी बनाई। उसने इसे बबूल की लकड़ी का बनाया। वेदी वर्गाकार थी। यह अट्ठारह इंच लम्बी, अट्ठारह इंच चौड़ी और छत्तीस इंच ऊँची थी। वेदी पर चार सींग बनाए गए थे। हर एक कोने पर एक सींग बना था। ये सींगे वेदी के साथ एक इकाई बनाने के लिए जोड़ दिए गए थे। [26]उसने सिरे, सभी बाजुओं और सींगो को शुद्ध सोने के पतरे से मढ़ा। तब उसने वेदी के चारों ओर सोने की झालर लगाई। [27]उसने सोने के दो कड़े वेदी के लिए बनाए। उसने सोने के कड़ों को वेदी के हर ओर की झालर से नीचे रखा। इन कड़ों में वेदी को ले जाने के लिए बल्लियाँ डाली जाती थीं। [28]तब उसने बबूल की लकड़ी की बल्लियाँ बनाई और उन्हें सोने से मढ़ा।

[29]तब उसने अभिषेक का पवित्र तेल बनाया। उसने शुद्ध सुगन्धित धूप भी बनाई। ये चीज़ें उसी प्रकार बनाई गईं जिस प्रकार कोई निपुण बनाता है।

तीन इंच शाब्दिक "एक हथेली" एक व्यक्ति के हाथ की चौड़ाई।

होमबलि की वेदी

38 तब उसने होमबलि की वेदी बनाई। यह वेदी होमबलि के लिए उपयोग में आने वाली थी। उसने बबूल की लकड़ी से इसे बनाया। वेदी वर्गाकार थी। यह साढ़े सात फुट लम्बी, साढ़े सात फुट चौड़ी और साढ़े चार फुट ऊँची थी। [2]उसने हर एक कोने पर एक सींग बनाये। उसने सींगों को वेदी के साथ जोड़ दिया। तब उसने हर चीज़ को काँसे से ढक लिया।

[3]तब उसने वेदी पर उपयोग में आने वाले सभी उपकरणों को बनाया। उसने इन चीज़ों को काँसे से ही बनाया। उसने पात्र, बेलचे, कटोरे, माँस के लिए काँटे, और कढ़ाहियाँ बनाईं। [4]तब उसने वेदी के लिए एक जाली बनायी। यह जाली काँसे की जाली की तरह थी। जाली को वेदी के पायदान से लगाया। यह वेदी के भीतर लगभग मध्य में था। [5]तब उसने काँसे के कड़े बनाए। ये कड़े वेदी को ले जाने के लिए बल्लियों को फँसाने के काम आते थे। उसने पर्दे के चारों कोनों पर कड़ों को लगाया। [6]तब उसने बबूल की लकड़ी की बल्लियाँ बनाई और उन्हें काँसे से मढ़ा। [7]उसने बल्लियाँ को कड़ों में डाला। बल्लियाँ वेदी की बगल में थीं। वे वेदी को ले जाने के काम आती थीं। उसने वेदी को बनाने के लिए बबूल के तख़्तों का उपयोग किया। वेदी भीतर खाली थी, एक खाली सन्दूक की तरह।

[8]उसने हाथ धोने के बड़े पात्र तथा उसके आधार को उस काँसे से बनाया जिसे पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर सेवा करने वाली स्त्रियों द्वारा दर्पण* के रूप में काम में लाया जाता था।

पवित्र तम्बू के चारों ओर का आँगन

[9]तब उसने आँगन के चारों ओर पर्दे की दीवार बनाई। दक्षिण की ओर के पर्दे की दीवार पचास गज लम्बी थी। ये पर्दे सन के उत्तम रेशों के बने थे। [10]दक्षिणी ओर के पर्दो को बीस खम्भों पर सहारा दिया गया था। ये खम्भे काँसे के बीस आधारों पर थे। खम्भों और बल्लियों के लिए छल्ले चाँदी के बने थे। [11]उत्तरी तरफ़ का आँगन भी पचास गज लम्बा था और उसमे बीस खम्भे बीस काँसे के आधारों के साथ थे। खम्भों और बल्लियों के लिए छल्ले चाँदी के बने थे।

[12]आँगन के पश्चिमी तरफ के पर्दे पच्चीस गज लम्बे थे। वहाँ दस खम्भे और दस आधार थे। खम्भों के लिए छल्ले तथा कुँड़े चाँदी के बनाए गए थे।

[13]आँगन की पूर्वी दीवार पच्चीस गज चौड़ी थी। आँगन का प्रवेश द्वार इसी ओर था। [14]प्रवेश द्वार के एक तरफ पर्दे की दीवार साढ़े सात गज लम्बी थी। इस तरफ तीन खम्भे और तीन आधार थे। [15]प्रवेश द्वार के दूसरी तरफ़ पर्दे की दीवार की लम्बाई भी साढ़े सात गज़ थी। वहाँ भी तीन खम्भे और तीन आधार थे। [16]आँगन के चारों ओर की कनाते सन के उत्तम रेशों की बनी थीं। [17]खम्भों के आधार काँसे के बने थे। छल्लों और कनातों की छड़े चाँदी की बनी थीं। खम्भों के सिरे भी चाँदी से मढ़े थे। आँगन के सभी खम्भे कनात की चाँदी की छड़ों से जुड़े थे।

[18]आँगन के प्रवेश द्वार की कनात सन के उत्तम रेशों और नीले, लाल तथा बैंगनी कपड़े की बनी थी। इस पर कढ़ाई कढ़ी हुई थी। कनात दस गज लम्बी और ढाई गज* ऊँची थी। ये उसी ऊँचाई की थी जिस ऊँचाई की आँगन की चारों ओर की कनातें थीं। [19]कनात चार खम्भों और चार काँसें के आधारों पर खड़ी थी। खम्भों के छल्ले चाँदी के बने थे। खम्भों के सिरे चाँदी से मढ़े थे और पर्दे की छड़े भी चाँदी की बनी थी। [20]पवित्र तम्बू और आँगन के चारों ओर की कनातों की खूँटियाँ काँसे की बनी थी।

[21]मूसा ने सभी लेवी लोगों को आदेश दिया कि वे तम्बू अर्थात् साक्षीपत्र का तम्बू बनाने में काम आई हुई चीज़ों को लिख ले। हारून का पुत्र ईतामार इस सूची को रखने का अधिकारी था। [22]यहूदा के परिवार समूह से हूर के पुत्र ऊरी के पुत्र बसलेल ने भी सभी चीज़ें बनाई जिनके लिए यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। [23]दान के परिवार समूह से अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब ने भी उसे सहायता दी। ओहोलीआब एक निपुण कारीगर और शिल्पकार था। वह सन के उत्तम रेशों और नीला, बैंगनी और लाल कपड़े बुनने में निपुण था।

[24]दो टन* से अधिक सोना पवित्र तम्बू के लिए यहोवा को भेंट किया गया था। (यह मन्दिर के प्रामाणिक बाटों से तोला गया था।)

दर्पण उस युग में काँसे को चमका कर दर्पण बनाये जाते थे।

ढ़ाई गज़ शाब्दिक "पाँच हाथ।"

दो टन शाब्दिक "उनतीस किक्कार और सात सौ शेकेल।"

[25]लोगों ने पौने चार टन* से अधिक चाँदी दी। (यह अधिकारिक मन्दिर के बाट से तोली गयी थी।) [26]यह चाँदी उनके द्वारा कर वसूल करने से आई। लेवी पुरुषों ने बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के लोगों की गणना की। छ: लाख तीन हजार पाँच सौ पचास लोग थे और हर एक पुरुष को एक बेका* चाँदी कर के रूप में देनी थी। (मन्दिर के अधिकारिक बाट के अनुसार एक बेका आधा शेकेल होता था।) [27]पौने चार टन चाँदी का उपयोग पवित्र तम्बू के सौ आधारों और कनातों को बनाने में हुआ था। उन्होंने पचहत्तर पौंड चाँदी हर एक आधार में लगायी। [28]अन्य पचास पौंड* चाँदी का उपयोग खूँटियों कनातों की छड़ों और खम्भों के सिरों को बनाने में हुआ था।

[29]साढ़े छब्बीस टन* से अधिक काँसा यहोवा को भेंट चढ़ाया गया। [30]उस काँसे का उपयोग मिलापवाले तम्बू के प्रवेश द्वार के आधारों को बनाने में हुआ। उन्होंने काँसे का उपयोग वेदी और काँसे की जाली बनाने में भी किया और वह काँसा, सभी उपकरण और वेदी की तश्तरियों को बनाने के काम में आया। [31]इसका उपयोग आँगन के चारों ओर की कनातों के आधारों और प्रवेश द्वार की कनातों के आधारों के लिए भी हुआ। और काँसे का उपयोग तम्बू के लिए खूँटियों को बनाने और आँगन के चारों ओर की कनातों के लिए हुआ।

याजकों के विशेष वस्त्र

39 कारीगरों ने नीले, लाल और बैंगनी कपड़ों के विशेष वस्त्र याजकों के लिए बनाए जिन्हें वे पवित्र स्थान में सेवा के समय पहनेंगे। उन्होंने हारून के लिए भी वैसे ही विशेष वस्त्र बनाये जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

एपोद

[2]उन्होंने एपोद सन के उत्तम रेशों और नीले, लाल और बैंगनी कपड़े से बनाया। [3](उन्होंने सोने को बारीक पट्टियों के रूप मे पीटा और तब उन्होंने उसे लम्बे धागों के रूप में काटा। उन्होंने सोने को नीले, बैंगनी, लाल कपड़ों और सन के उत्तम रेशों में बुना। इसे निपुणता के साथ किया गया।) [4]उन्होंने एपोद के कंधों की पट्टियाँ बनाई। और कंधे की इन पट्टियों को एपोद के कंधे पर टाँका। [5]पटुका उसी प्रकार बनाया गया था। यह एपोद से एक ही इकाई के रूप मे जोड़ दिया गया। यह सोने के तार, सन के उत्तम रेशों, नीला, लाल और बैंगनी कपड़े से वैसा ही बना जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

[6]कारीगरों ने रत्नों को सोने को पट्टी में जड़ा। उन्होंने इस्राएल के पुत्रों के नाम रत्नों पर लिखे। [7]तब उन्होंने रत्नों को एपोद के कंधें के पेबन्द पर लगाया। हर एक रत्न इस्राएल के बारह पुत्रों मे से एक–एक का प्रतिनिधित्व करता था। यह वैसा ही किया गया जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

सीनाबन्द

[8]तब उन्होंने सीनाबन्द बनाया। यह वही निपुणता के साथ बनाया गया था। सीनाबन्द एपोद की तरह बनाया गया था। यह सोने के तार, सन के उत्तम रेशों, नीला, लाल और बैंगनी कपड़े का बनाया गया था। 9सीनाबन्द वर्गाकार दोहरा तह किया हुआ था। यह नौ इंच लम्बा और नौ इंच चौड़ा था। [10]तब कारीगर ने इस पर सुन्दर रत्नों की पक्तियाँ जड़ीं। पहली पंक्ति में एक लाल, एक पुखराज और एक मर्कतमणि थी। [11]दूसरी पंक्ति में एक फिरोज़ा, एक नीलम तथा एक पन्ना था। [12]तीसरी पंक्ति में एक धूम्रकान्त, अकीक और एक याकूत था। [13]चौथी पंक्ति में एक लहसुनिया, एक गोमेदक मणि, और एक कपिश मणि थी। ये सभी रत्न सोने में जड़े थे। [14]इन बारह रत्नों पर इस्राएल के पुत्रों के नाम उसी प्रकार लिखे गये थे जिस प्रकार एक कारीगर मुहर पर खोदता है। हर एक रत्न पर इस्राएल के बारह पुत्रों में से एक–एक का नाम था।

[15]सीनाबन्द के लिए शुद्ध सोने की एक जंजीर बनाई गई। ये रस्सी की तरह बटी थी। [16]कारीगरों ने सोने की दो पट्टियों और दो सोने के छल्ले बनाए। उन्होंने दोनों छल्लों को सीनाबन्द के ऊपरी कोनों पर लगाया। [17]तब उन्होंने दोनों सोने की जंजीरों को दोनों छल्लों में बाँधा। [18]उन्होंने सोने की जंजीरों के दूसरी सिरों को दोनों पट्टियों से बाँधा। तब उन्होंने एपोद के दोनों कंधों से सामने की ओर

पौने चार टन शाब्दिक "सौ किक्कर और 1,775 शेकेल।"
एक बेका या "1/5 औंस।"
पचास पौंड शाब्दिक "1,775 शेकेल।"
साढ़े छब्बीस टन शाब्दिक "सत्तर किक्कर और दो हजार चार सौ शेकेल।"

उन्हें फँसाया। [19]तब उन्होंने दो और सोने के छल्ले बनाए और सीनाबन्द के निचले कोनों पर उन्हें लगाया। उन्होंने छल्लों को चोगे के समीप अन्दर लगाया। [20]उन्होंने सामने की ओर कंधे की पट्टी के तले में सोने के दो छल्ले लगाए। ये छल्ले बटनों के समीप ठीक पटुके के ऊपर थे। [21]तब उन्होंने एक नीली पट्टी का उपयोग किया और सीनाबन्द के छल्लों को एपोद के छल्लों से बाँधा। इस प्रकार सीनाबन्द पेटी के समीप लगा रहा। यह गिर नहीं सकता था। उन्होंने यह सब चीज़ें यहोवा के आदेश के अनुसार कीं।

याजक के अन्य वस्त्र

[22]तब उन्होंने एपोद के नीचे का चोगा बनाया। उन्होंने इसे नीले कपड़े से बनाया। यह एक निपुण व्यक्ति का काम था। [23]चोग़े के बीचोंबीच एक छेद था। इस छेद के चारों ओर कपड़े की गोट लगी थी। यह गोट छेद को फटने से बचाती थी। [24]तब उन्होंने सन के उत्तम रेशों, नीले, लाल और बैंगनी कपड़े से फूँदने बनाए जो अनार के आकार के नीचे लटके थे। उन्होंने इन अनारों को चोग़े के नीचे के सिरे पर चारों ओर बाँधा। [25]तब उन्होंने शुद्ध सोने की घंटियाँ बनाई। उन्होंने अनारों के बीच में चोगे के नीचे के सिरे के चारों ओर इन्हें बाँधा। [26]लबादे के नीचे के सिरे के चारो ओर अनार और घंटियाँ थी। हर एक अनारों के मध्य घंटी थी। याजक उस चोगे को तब पहनता था जब वह यहोवा की सेवा करता था, जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

[27]कारीगरों ने हारून ओर उसके पुत्रों के लिए लबादे बनाए। ये लबादे सन के उत्तम रेशों के थे। [28]और कारीगरों ने सन के उत्तम रेशों के साफ़े बनाए। उन्होंने सिर की पगड़ियाँ और अधोवस्त्र भी बनाए। उन्होंने इन चीज़ों को सन के उत्तम रेशों का बनाया। [29]तब उन्होंने पटुके को सन के उत्तम रेशों, नीले, बैंगनी और लाल कपड़े से बनाया। कपड़े में काढ़ने काढ़े गए। ये चीज़ें वैसी ही बनाई गई जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

[30]तब उन्होंने सिर पर बाँधने के लिए सोने का पतरा बनाया। उन्होंने सोने पर ये शब्द लिखे: यहोवा के लिए पवित्र। [31]तब उन्होंने पतरे से एक नीली पट्टी बाँधी और उसे पगड़ी पर इस प्रकार बाँधा जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

मूसा द्वारा पवित्र तम्बू का निरीक्षण

[32]इस प्रकार मिलापवाले तम्बू का सारा काम पूरा हो गया। इस्राएल के लोगों ने हर चीज़ ठीक वैसी ही बनाई जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। [33]तब उन्होंने मिलापवाला तम्बू मूसा को दिखाया। उन्होंने उसे तम्बू और उसमें की सभी चीज़ें दिखाईं। उन्होंने उसे छल्ले, तख्ते, छड़ें खम्भें तथा आधार दिखाए। [34]उन्होंने उसे तम्बू का आच्छादन दिखाया जो लाल रंगी हुई भेड़ की खाल का बना था और उन्होंने वह आच्छादन दिखाया जो सुइसों के चमड़े का बना था और उन्होंने वह कनात दिखाई जो प्रवेश द्वार से सब से अधिक पवित्र स्थान को ढकती थी।

[35]उन्होंने मूसा को साक्षीपत्र का सन्दूक दिखाया। उन्होंने सन्दूक को ले जाने वाली बल्लियाँ तथा सन्दूक को ढकने वाले ढक्कन को दिखाया। [36]उन्होंने विशेष रोटी की मेज़ तथा उस पर रहने वाली सभी चीज़ें और साथ में विशेष रोटी मूसा को दिखायी। [37]उन्होंने मूसा को शुद्ध सोने का दीपाधार और उस पर रखे हुए दीपकों को दिखाया। उन्होंने तेल और अन्य सभी चीज़ें मूसा को दिखाई, जिनका उपयोग दीपकों के साथ होता था। [38]उन्होंने उसे सोने की वेदी, अभिषेक का तेल, सुगन्धित धूप, और तम्बू के प्रवेश द्वार को ढकने वाली कनात को दिखाया। [39]उन्होने काँसे की वेदी और काँसे की जाली को दिखाया। उन्होंने वेदी को ले जाने के लिए बनी बल्लियों को भी मूसा को दिखाया। और उन्होंने उन सभी चीज़ों को दिखाया जो वेदी पर काम मे आती थी। उन्होंने चिलमची और उसके नीचे का आधार दिखाया।

[40]उन्होंने आँगन के चारों ओर की कनातों को, खम्भों ओर आधारों के साथ मूसा को दिखाया। उन्होंने उसको उस कनात को दिखाया जो आँगन के प्रवेशद्वार को ढके थी। उन्होने उसे रस्सियाँ और काँसे की तम्बू वाली खूँटियाँ दिखाईं। उन्होंने मिलापवाले तम्बू में उसे सभी चीज़ें दिखाईं।

[41]तब उन्होंने मूसा को पवित्र स्थान में सेवा करने वाले याजकों के लिए बने वस्त्रों को दिखाया। वे उन वस्त्रों को तब पहनते थे जब वे याजक के रूप में सेवा करते थे।

[42]यहोवा ने मूसा को जैसा आदेश दिया था इस्राएल के लोगों ने ठीक सभी काम उसी तरह किया। [43]मूसा ने सभी कामों को ध्यान से देखा। मूसा ने देखा कि सब काम ठीक उसी प्रकार हुआ जैसा यहोवा ने आदेश दिया था। इसलिए मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया।

मूसा द्वारा पवित्र तम्बू की स्थापना

40 तब यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"पहले महीने के पहले दिन पवित्र तम्बू जो मिलाप वाला तम्बू है खड़ा करो। [3]साक्षीपत्र के सन्दूक को मिलापवाले तम्बू मे रखो। सन्दूक को पर्दे से ढक दो। [4]तब विशेष रोटी की मेज को अन्दर लाओ। जो सामान मेज पर होने चाहिए उन्हें उस पर रखो। तब दीपाधार को तम्बू में रखो। दीपाधार पर दीपकों को ठीक स्थानों पर रखो। [5]सोने की वेदी को, धूप की भेंट के लिए तम्बू में रखो। वेदी को साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने रखो। तब कनात को पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर लगाओ।

[6]"होमबलि की वेदी को मिलापवाले तम्बू की पवित्र तम्बू के प्रवेशद्वार पर रखो। [7]चिलमची को वेदी और मिलापवाले तम्बू के बीच में रखो। चिलमची में पानी भरो। [8]आँगन के चारों ओर कनाते लगाओ। तब आँगन के प्रवेशद्वार पर कनात लगाओ।

[9]"अभिषेक के तेल को डालकर पवित्र तम्बू और इसमें की हर एक चीज़ का अभिषेक करो। जब तुम इन चीज़ों पर तेल डालोगे तो तुम इन्हें पवित्र बनाओगे।* [10]होमबलि की वेदी का अभिषेक करो। वेदी की हर एक चीज़ का अभिषेक करो। तुम वेदी को पवित्र करोगे। यह अत्यधिक पवित्र होगी। [11]तब चिलमची और उसके नीचे के आधार का अभिषेक करो। ऐसा उन चीज़ों के पवित्र करने के लिए करो।

[12]"हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के प्रवेशद्वार पर लाओ। उन्हें पानी से नहलाओ। [13]तब हारून को विशेष वस्त्र पहनाओ। तेल से उसका अभिषेक करो और उसे पवित्र करो। तब वह याजक के रूप में मेरी सेवा कर सकता है। [14]तब उसके पुत्रों को वस्त्र पहनाओ। [15]पुत्रों का अभिषेक वैसे ही करो जैसे उनके पिता का अभिषेक किया। तब वे भी मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकते हैं। जब तुम अभिषेक करोगे, वे याजक हो जाएंगे। वह परिवार भविष्य में भी सदा के लिए याजक बना रहेगा।" [16]मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने वह सब किया जिसका यहोवा ने आदेश दिया था।

[17]इस प्रकार ठीक समय पर पवित्र तम्बू खड़ा किया गया। यह मिस्र छोड़ने के बाद के दूसरे वर्ष में पहले महीने का पहला दिन था। [18]मूसा ने पवित्र तम्बू को यहोवा के कथानानुसार खड़ा किया। पहले उसने आधारों को रखा। तब उसने आधारों पर तख़्तों को रखा। फिर उसने बल्लियाँ लगाईं और खम्भों को खड़ा किया। [19]उसके बाद मूसा ने पवित्र तम्बू के ऊपर आच्छादन रखा। इसके बाद उसने तम्बू के आच्छादन पर दूसरा आच्छादन रखा। उसने यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया।

[20]मूसा ने साक्षीपत्र के उन पत्थरों को जिन पर यहोवा के आदेश लिखे थे, सन्दूक में रखा। मूसा ने बल्लियों को सन्दूक के छल्लों में लगाया। तब उसने ढक्कन को सन्दूक के ऊपर रखा। [21]तब मूसा सन्दूक को पवित्र तम्बू के भीतर लाया। और उसने पर्दे को ठीक स्थान पर लटकाया। उसने पवित्र तम्बू में साक्षीपत्र के सन्दूक को ढक दिया। मूसा ने ये चीज़ें यहोवा के आदेश के अनुसार कीं। [22]तब मूसा ने विशेष रोटी की मेज को मिलापवाले तम्बू में रखा। उसने इसे पवित्र तम्बू के उत्तर की ओर रखा। उसने इसे पर्दे के सामने रखा। [23]तब उसने यहोवा के सामने मेज पर रोटी रखी। उसने यह यहोवा ने जैसा आदेश दिया था, वैसा ही किया। [24]तब मूसा ने दीपाधार को मिलापवाले तम्बू में रखा। उसने दीपाधार को पवित्र तम्बू के दक्षिण ओर मेज के पार रखा। [25]तब यहोवा के सामने मूसा ने दीपाधार पर दीपक रखे। उसने यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया।

[26]तब मूसा ने सोने की वेदी को मिलापवाले तम्बू में रखा। उसने सोने की वेदी को पर्दे के सामने रखा। [27]तब उसने सोने की वेदी पर सुगन्धित धूप जलाई। उसने यह यहोवा के आदेशानुसार किया। [28]तब मूसा ने पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर कनात लगाई।

[29]मूसा ने होमबलि वाली वेदी को, मिलापवाले तम्बू के प्रवेशद्वार पर रखा। तब मूसा ने एक होमबलि उस वेदी पर चढ़ाई। उसने अन्नबलि भी यहोवा को चढ़ाई। उसने ये चीज़ें यहोवा के आदेशानुसार कीं।

[30]तब मूसा ने मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच चिलमची को रखा। और उसमे धोने के लिए पानी भरा। [31]मूसा, हारून और हारून के पुत्रों ने अपने हाथ और पैर धोने के लिए इस चिलमची का उपयोग किया। [32]वे हर बार जब मिलापवाले तम्बू में जाते तो अपने हाथ

पवित्र बनाओगे या "दिखाओ कि वे विशेष उद्देश्य के लिए दूसरों से अलग हैं।"

और पैर धोते थे। जब वे वेदी के निकट जाते थे तब भी वे हाथ और पैर धोते थे। वे इसे वैसे ही करते थे जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

[33]तब मूसा ने पवित्र तम्बू के आँगन के चारों ओर कनातें खड़ी कीं। मूसा ने वेदी को आँगन में रखा। तब उसने आँगन के प्रवेश द्वार पर कनात लगाई। इस प्रकार मूसा ने वे सभी काम पूरे कर लिए जिन्हें करने का आदेश यहोवा ने दिया था।

यहोवा की महिमा

[34]जब सभी चीज़ें पूरी हो गई, बादल ने मिलापवाले तम्बू को ढक लिया। और यहोवा के तेज से पवित्र तम्बू भर गया। [35]बादल मिलापवाले तम्बू पर उतर आया। और यहोवा के तेज ने पवित्र तम्बू को भर दिया। इसलिए मूसा मिलापवाले तम्बू में नहीं घुस सका।

[36]इस बादल ने लोगों को संकेत दिया कि उन्हें कब चलना है। जब बादल तम्बू से उठता तो इस्राएल के लोग चलना आरम्भ कर देते थे। [37]किन्तु जब बादल तम्बू पर ठहर जाता तो लोग चलने की कोशिश नहीं करते थे। वे उसी स्थान पर ठहरे रहते थे, जब तक बादल तम्बू से नहीं उठता था। [38]इसलिए दिन में यहोवा का बादल तम्बू पर रहता था, और रात को बादल में आग होती थी। इसलिए इस्राएल के सभी लोग यात्रा करते समय बादल को देख सकते थे।

लैव्यव्यवस्था

होमबलि के नियम

1 यहोवा परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और मिलापवाले तम्बू में से उससे बोला। यहोवा ने कहा, [2]"इस्राएल के लोगों से कहो: तुम लोगों में से कोई जब यहोवा को भेंट लाए तो वह भेंट तुम्हें उन जानवरों में से लानी चाहिए जो तुम्हारे झुण्ड या रेवड़ में से हो।

[3]"यदि कोई व्यक्ति अपने पशुओं में से किसी की होमबलि दे तो वह नर होना चाहिए और उस जानवर में कोई दोष नहीं होना चाहिए। उस व्यक्ति को चाहिए कि वह जानवर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले जाये। तब यहोवा भेंट स्वीकार करेगा। [4]इस व्यक्ति को अपना हाथ जानवर के सिर पर रखना चाहिए। परमेश्वर होमबलि को व्यक्ति के पाप के लिए भुगतान के रूप में स्वीकार करेगा।

[5]"व्यक्ति को चाहिए कि वह बछड़े को यहोवा के सामने मारे। हारून के याजक पुत्रों को बछड़े का खून लाना चाहिए। उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार की वेदी पर चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। [6]वह उस जानवर का चमड़ा हटा देगा और उसे टुकड़ों में काटेगा। [7]हारून के याजक पुत्रों को वेदी पर लकड़ी और आग रखनी चाहिए। [8]हारून के याजक पुत्रों को वे टुकड़े, (सिर और चर्बी) लकड़ी पर रखनी चाहिए। वह लकड़ी वेदी पर आग के ऊपर होती है। [9]याजक को जानवर के भीतरी भागों और पैरों को पानी से धोना चाहिए। तब याजक को जानवर के सभी भागों को वेदी पर जलाना चाहिए। यही होमबलि है अर्थात् आग के द्वारा यहोवा को सुगन्ध से प्रसन्न करना।

[10]"यदि कोई व्यक्ति भेड़ या बकरी की होमबलि चढ़ाए तो वह एक ऐसे नर पशु की भेंट दे जिसमें कोई दोष न हो। [11]उस व्यक्ति को वेदी के उत्तर की ओर यहोवा के सामने पशु को मारना चाहिए। हारून के याजक पुत्रों को वेदी के चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। [12]तब याजक को चाहिए कि वह पशु को टुकड़ों में काटे। पशु का सिर और चर्बी याजक को लकड़ी के ऊपर क्रम से रखना चाहिए। लकड़ी वेदी पर आग के ऊपर रहती है। [13]याजक को पशु के भीतरी भागों और उसके पैरों को पानी से धोना चाहिए। तब याजक को चाहिए कि वह पशु के सभी भागों को वेदी पर जलाएँ। यह होमबलि है अर्थात् आग के द्वारा यहोवा को सुगन्ध से प्रसन्न करना।

[14]"यदि कोई व्यक्ति यहोवा को पक्षी की होमबलि चढ़ाए तो यह पक्षी फ़ाख्ता या नया कबूतर होना चाहिए। [15]याजक भेंट को वेदी पर लाएगा। याजक पक्षी के सिर को अलग करेगा। तब याजक पक्षी को वेदी पर जलाएगा। पक्षी का खून वेदी की ओर बहना चाहिए। [16]याजक को पक्षी के गले की थैली* और उसके पंखों को वेदी के पूर्व की ओर फेंक देना चाहिए। यह वही जगह है जहाँ वे वेदी से निकालकर राख डालते हैं। [17]तब याजक को पंख के पास से पक्षी को चीरना चाहिए, किन्तु पक्षी को दो भागों में नहीं बाँटना चाहिए। याजक को वेदी के ऊपर आग पर रखी लकड़ी के ऊपर पक्षी को जलाना चाहिए। यह होमबलि है अर्थात् आग के द्वारा यहोवा को सुगन्ध से प्रसन्न करना।

अन्नबलि के नियम

2 "जब कोई व्यक्ति यहोवा को अन्नबलि चढ़ाये तो उसकी भेंट महीन आटे की होनी चाहिए। वह व्यक्ति उस आटे पर तेल डाले और उस पर लोबान रखे। [2]तब वह इसे हारून के याजक पुत्रों के पास लाए। वह व्यक्ति तेल और लोबान से मिला हुआ एक मुट्ठी महीन आटा ले

थैली पक्षी के गले के भीतर की छोटी थैली। जब पक्षी खाता है तो पहले भोजन उसके इस भाग में जाता है। पेट में जाने के पहले यहाँ यह मुलायम हो जाता है।

तब याजक वेदी पर स्मृतिभेंट के रूप में आटे को आग में जलाए। यह यहोवा के लिए सुगन्ध होगी [3]और बची हुई अन्नबलि हारून और उसके पुत्रों के लिए होगी। यह भेंट यहोवा को आग से दी जाने वाली भेंटों में सबसे अधिक पवित्र होगी।

चूल्हे में पकी अन्नबलि के नियम

[4]"जब तुम चूल्हे में पकी अन्नबलि लाओ तो यह अखमीरी* मैदे के फुलके या ऊपर से तेल डाली हुई अख़मीरी चपातियाँ होनी चाहिए। [5]यदि तुम भूनने की कड़ाही से अन्नबलि लाते हो तो यह तेल मिली अख़मीरी महीन आटे की होनी चाहिए। [6]तुम्हें इसे कई टुकड़े करके कई भागों में बाँटना चाहिए और इन पर तेल डालना चाहिए। यह अन्नबलि है। [7]यदि तुम अन्नबलि तलने की कड़ाही से लाते हो तो यह तेल मिले महीन आटे की होनी चाहिए।

[8]"तुम इन चीज़ों से बनी अन्नबलि यहोवा के लिए लाओगे। तुम उन चीज़ों को याजक के पास ले जाओगे और वह उन्हें वेदी पर रखेगा। [9]फिर उस अन्नबलि में से याजक इसका कुछ भाग लेकर उसे स्मृति भेंट के रूप में वेदी पर जलायेगा। यह आग द्वारा दी गई एक भेंट है। इस की सुगन्ध से यहोवा प्रसन्न होता है। [10]बची हुई अन्नबलि हारून और उसके पुत्रों की होगी। यह भेंट यहोवा को आग से चढ़ाई जाने वाली भेंटों में अति पवित्र होगी।

[11]"तुम्हें यहोवा को ख़मीर वाली कोई अन्नबलि नहीं चढ़ानी चाहिए। तुम्हें यहोवा को, आग द्वारा भेंट के रूप में ख़मीर या शहद नहीं जलाना चाहिए। [12]तुम पहली फ़सल से तैयार की गई खमीर या शहद यहोवा को भेंट के रूप में ला सकते हो, किन्तु खमीर और शहद मधुर गन्ध के रूप में ऊपर जाने के लिए वेदी पर जलाने नहीं चाहिए। [13]तुम्हें अपनी लायी हुई हर एक अन्नबलि पर नमक भी रखना चाहिए। यहोवा से तुम्हारे वाचा के प्रतीक रूप, नमक का अभाव तुम्हारी किसी अन्नबलि में नहीं होना चाहिए। तुम्हें अपनी सभी भेंटों के साथ नमक लाना चाहिए।

पहली फ़सल से अन्नबलि के नियम

[14]"यदि तुम पहली फ़सल से यहोवा को अन्नबलि लाते हो तो तुम्हें भुनी हुई अन्न की बालें लानी चाहिए। इस अन्न को दलकर छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाना चाहिए। इस पहली फ़सल से तुम्हारी अन्नबलि होगी। [15]तुम्हें इस पर तेल डालना और लोबान रखना चाहिए। यह अन्नबलि है। [16]याजक को चाहिए कि वह स्मृति भेंट के रूप में दले गए अन्न के कुछ भाग, तेल और इस पर रखे पूरे लोबान को जलाए। यह यहोवा को आग से चढ़ाई भेंट है।

मेलबलि के नियम

3 "यदि यह भेंट मेलबलि है और यह यहोवा को अपने पशुओं के झुण्ड से एक नर या मादा पशु देता है, तो इस पशु में कोई दोष नहीं होना चाहिए। [2]इस व्यक्ति को अपना हाथ पशु के सिर पर रखना चाहिए। मिलापवाले तम्बू के द्वार पर उस व्यक्ति द्वारा उस पशु को मार डालना चाहिए। तब हारून के याजक पुत्रों को वेदी पर चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। [3]इस व्यक्ति को मेलबलि में से यहोवा को आग द्वारा भेंट चढ़ानी चाहिए। भीतरी भागों को ढकने वाली और भीतरी भागों में रहने वाली चर्बी की भेंट चढ़ानी चाहिए। [4]उस के दोनों गुर्दों पर की चर्बी और पुट्ठे* की चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए। गुर्दों के साथ कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी निकाल लेनी चाहिए। [5]तब हारून के पुत्र चर्बी को वेदी पर जलाएंगे। वे आग पर रखी हुई लकड़ी, जिस पर होमबलि रखी गई, उसके ऊपर उसे रखेंगे। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करती है।

[6]"यदि व्यक्ति यहोवा के लिए अपनी रेवड़ में से मेलबलि के रूप में पशु को लाता है तब उसे एक नर या मादा पशु भेंट में देना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। [7]यदि वह भेंट में एक मेमना लाता है तो उसे यहोवा के सामने लाना चाहिए। [8]उसे अपना हाथ पशु के सिर पर रखना चाहिए और मिलापवाले तम्बू के सामने उसे मारना चाहिए। हारून के पुत्र वेदी पर चारों ओर पशु का खून डालेंगे। [9]तब वह व्यक्ति मेलबलि का एक भाग यहोवा

अखमीरी खमीर के बिना बनी रोटी।

पुट्ठे पशु की पसली के पिछली से लेकर उसकी पिछली टाँगों तक का भाग।

को आग द्वारा भेंट के रूप में चढ़ाएगा। इस व्यक्ति को चर्बी और चर्बी से भरी सम्पूर्ण पूँछ और पशु के भीतरी भागों के ऊपर और चारों ओर की चर्बी लानी चाहिए। (उसे उस पूँछ* को रीढ़ की हड्डी के एकदम पास से काटना चाहिए।) [10]इस व्यक्ति को दोनों गुर्दे और इन्हें ढकने वाली चर्बी और पुट्ठे की चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए। उसे कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए। उसे गुर्दों के साथ कलेजे को भी निकाल लेना चाहिए। [11]तब याजक वेदी पर इस को जलाएगा। यह यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट होगी तथा यह लोगों के लिए भी भोजन होगी।

मेलबलि के रूप में बकरे की बलि के नियम

[12]"यदि किसी व्यक्ति की भेंट एक बकरा है तो वह उसे यहोवा के सामने भेंट करे। [13]इस व्यक्ति को बकरे के सिर पर हाथ रखना चाहिए और मिलापवाले तम्बू के सामने उसे मारना चाहिए। तब हारून के पुत्र बकरे का खून वेदी पर चारों ओर डालेंगे। [14]तब व्यक्ति को बकरे का एक भाग यहोवा को अग्नि द्वारा भेंट के रूप में चढ़ाने के लिए लाना चाहिए। इस व्यक्ति को भीतरी भाग के ऊपर और उसके चारों ओर की चर्बी की भेंट चढ़ानी चाहिए। [15]उसे दोनों गुर्दे, उसे ढकने वाली चर्बी तथा पशु के पुट्ठे की चर्बी भेंट में चढ़ानी चाहिए। उसे कलेजे को ढकने वाली चर्बी चढ़ानी चाहिए। उसे कलेजे के साथ गुर्दे को निकाल लेना चाहिए। [16]याजक को वेदी पर बकरे के भागों को जलाना चाहिए। यह यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट तथा याजक का भोजन होगा। इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करती है। (लेकिन सारा उत्तम भाग यहोवा का है।) [17]यह नियम तुम्हारी सभी पीढ़ियों में सदा चलता रहेगा। तुम जहाँ कहीं भी रहो, तुम्हें खून या चर्बी नहीं खानी चाहिए।"

संयोगवश हुए पापों के लिए पापबलि के नियम

4 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएल के लोगों से कहो: यदि किसी व्यक्ति से संयोगवश कोई ऐसा पाप हो जाए जिसे यहोवा ने न करने का आदेश दिया है तो उस व्यक्ति को निम्न बातें करनी चाहिए:

[3]"यदि अभिषिक्त याजक से कोई ऐसा पाप हुआ हो जिसका बुरा असर लोगों पर पड़ा हो तो उसे अपने किए गए पाप के लिये यहोवा को बलि चढ़ानी चाहिए : उसे एक बछड़ा यहोवा को भेंट में देना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। उसे यहोवा को बछड़ा पापबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए। [4]अभिषिक्त याजक को उस बछड़े को परमेश्वर के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाना चाहिए। उसे अपना हाथ उस बछड़े के सिर पर रखना चाहिए और यहोवा के सामने उसे मार देना चाहिए। [5]तब अभिषिक्त याजक को बछड़े का कुछ खून लेना चाहिए और मिलापवाले तम्बू में ले जाना चाहिए। [6]याजक को अपनी उँगलियाँ खून में डालनी चाहिए और महापवित्र स्थान के पर्दे के सामने खून को सात बार परमेश्वर के सामने छिड़कना चाहिए। [7]याजक को कुछ खून सुगन्धित धूप की वेदी के सिरे पर लगाना चाहिए। यह वेदी यहोवा के सामने मिलापवाले तम्बू में है। याजक को बछड़े का सारा ख़ून होमबलि की वेदी की नींव पर डालना चाहिए। (वह वेदी मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है।) [8]और उसे पापबलि किए गए बछड़े की सारी चर्बी को निकाल लेना चाहिए। उसे भीतरी भागों के ऊपर और उसके चारों ओर की चर्बी को निकाल लेनी चाहिए। [9]उसे दोनों गुर्दे, उसके ऊपर की चर्बी और पुट्ठे पर की चर्बी ले लेनी चाहिए। उसे कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी लेनी चाहिये और उसे कलेजे को गुर्दे के साथ निकाल लेना चाहिए। [10]याजक को ये चीज़ें ठीक उसी तरह लेनी चाहिए जिस प्रकार उसने ये चीज़ें मेलबलि के बछड़े से ली थी।* याजक को होमबलि की वेदी पर पशु के भागों को जलाना चाहिए। [11-12]किन्तु याजक को बछड़े का चमड़ा, सिर सहित इसका सारा माँस, पैर, भीतरी भाग और शरीर का बेकार भाग निकाल लेना चाहिए। याजक को डेरे के बाहर विशेष स्थान पर बछड़े के पूरे शरीर को ले जाना चाहिए जहाँ राख डाली जाती है। याजक को वहाँ लकड़ी की आग पर बछड़े को जलाना चाहिए। बछड़े को वहाँ जलाया जाना चाहिए जहाँ राख डाली जाती है।

[13]"ऐसा हो सकता है कि पूरे इस्राएल राष्ट्र से अनजाने में कोई ऐसा पाप हो जाए जिसे न करने का आदेश

पूँछ यहाँ दुंबे मेढ़े के से पशु की पूँछ का उल्लेख है जिस में सात किलो से भी अधिक चर्बी होती है। उस क्षेत्र में प्राय: इसी प्रकार के दुंबे मेढ़े हुआ करते थे।

जिस प्रकार ... ली थी देखें लैव्यव्यवस्था 3:1–5

परमेश्वर ने दिया है। यदि ऐसा होता है तो वे दोषी होंगे। [14]यदि उन्हें इस पाप का पता चलता है तो पूरे राष्ट्र के लिए एक बछड़ा पापबलि के रूप में चढ़ाया जाना चाहिए। उन्हें बछड़े को मिलापवाले तम्बू के सामने लाना चाहिए। [15]बुजुर्गों को यहोवा के सामने बछड़े के सिर पर अपने हाथ रखने चाहिए। यहोवा के सामने बछड़े को मारना चाहिए। [16]तब अभिषिक्त याजक को बछड़े का कुछ खून मिलापवाले तम्बू में लाना चाहिए। [17]याजक को अपनी उँगलियाँ खून में डुबानी चाहिए और पर्दे के सामने सात बार खून को यहोवा के सामने छिड़कना चाहिए। [18]तब याजक को कुछ खून वेदी के सिरे के सींगों पर डालना चाहिए। (वह वेदी मिलापवाले तम्बू में यहोवा के सामने है।) याजक को सारा खून होमबलि की वेदी की नींव पर डालना चाहिए। वह वेदी मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है।

[19]"तब याजक को पशु की सारी चर्बी निकाल लेनी चाहिए और उसे वेदी पर जलाना चाहिए। [20]वह बछड़े के साथ वैसा ही करेगा जैसा उसने पापबलि के रूप में चढ़ाये गये बछड़े के साथ किया था। इस प्रकार याजक लोगों के पाप का भुगतान करता है, इससे यहोवा इस्राएल के लोगों को क्षमा कर देगा। [21]याजक डेरे के बाहर बछड़े को ले जाएगा और उसे वहाँ जलाएगा। यह पहले के समान होगा। यह पूरे समाज के लिये पापबलि होगी।

[22]"हो सकता है किसी शासक से संयोगवश, कोई ऐसी बात हो जाए जिसे उसके परमेश्वर यहोवा ने न करने का आदेश दिया है, तो यह शासक दोषी होगा। [23]यदि उसे इस पाप का पता चलता है तब उसे एक ऐसा बकरा लाना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। यही उसकी भेंट होगी। [24]शासक को बकरे के सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे उस स्थान पर मारना चाहिए जहाँ वे होमबलि को यहोवा के सामने मारते हैं। बकरा पापबलि है। [25]याजक को पापबलि का कुछ खून अपनी उँगली पर लेना चाहिए। याजक होमबलि की वेदी के सिरे पर खून छिड़केगा। याजक को बाकी खून होमबलि की वेदी की नींव पर डालना चाहिए [26]और याजक को बकरे की सारी चर्बी वेदी पर जलानी चाहिए। इसे उसी प्रकार जलाना चाहिए जिस प्रकार वह मेलबलि की चर्बी को जलाता है। इस प्रकार याजक शासक के पाप का भुगतान करता है और यहोवा शासक को क्षमा करेगा।

[27]"हो सकता है कि साधारण जनता में से किसी व्यक्ति से संयोगवश कोई ऐसी बात हो जाए जिसे यहोवा ने न करने का आदेश दिया है। [28]यदि उस व्यक्ति को अपने पाप का पता चले तो वह एक बकरी लाए जिसमें कोई दोष न हो। यह उस व्यक्ति की भेंट होगी। वह इस बकरी को उस पाप के लिए लाए जो उसने किया है। [29]उसे अपना हाथ पशु के सिर पर रखना चाहिए और होमबलि के स्थान पर उसे मारना चाहिए। [30]तब याजक को उस बकरी का कुछ खून अपनी उँगली पर लेना चाहिए और होमबलि की वेदी के सिरे पर डालना चाहिए। याजक को वेदी की नींव पर बकरी का सारा खून उँडेलना चाहिए। [31]तब याजक को बकरी की सारी चर्बी उसी प्रकार निकालनी चाहिए जिस प्रकार मेलबलि से चर्बी निकाली जाती है। याजक को इसे यहोवा के लिये सुगन्धित धूप की वेदी पर जलाना चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान कर देगा और यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा कर देगा।

[32]"यदि यह व्यक्ति पापबलि के रूप में एक मेमने को लाता है तो उसे एक मादा मेमना लानी चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। [33]व्यक्ति को उसके सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे उस स्थान पर पापबलि के रूप मे मारना चाहिए जहाँ वे होमबलि के पशु को मारते हैं। [34]याजक को अपनी उँगली पर पापबलि का खून लेना चाहिए और इसे होमबलि की वेदी के सिरे पर डालना चाहिए। तब उसे मेमने के सारे खून को वेदी की नींव पर उँड़ेलना चाहिए। [35]याजक को मेमने की सारी चर्बी उसी प्रकार लेनी चाहिए जिस प्रकार मेलबलि के मेमने की चर्बी ली जाती है। याजक को यहोवा के लिए आग द्वारा दी जाने वाली भेंटों के समान ही वेदी पर इन टुकड़ों को जलाना चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा और यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा कर देगा।

असावधानी में किए गए विभिन्न अपराध

5 "यदि कोई व्यक्ति न्यायालय में गवाही देने के लिए बुलाया जाता है और जो कुछ उसने देखा है या सुना है, उसे नहीं बताता तो वह पाप करता है। उसे उसके अपराध के लिए अवश्य ही दण्ड भोगना होगा। [2]अथवा कोई व्यक्ति किसी ऐसी चीज़ को छूता है जो अशुद्ध है जैसे अशुद्ध जंगली जानवर का शव या अशुद्ध मवेशी

का शव अथवा रेंगने वाले किसी अशुद्ध जन्तु का शव और उस व्यक्ति को इसका पता भी नहीं चलता कि उसने उन चीज़ों को छुआ है, तो भी वह बुरा करने का दोषी होगा। [3]किसी भी व्यक्ति से बहुत सी ऐसी चीज़ें निकलती है जो शुद्ध नहीं होतीं। कोई व्यक्ति इनमें से दूसरे व्यक्ति की किसी भी अशुद्ध वस्तु को अनजाने में ही छू लेता है तब वह दोषी होगा। [4]अथवा ऐसा हो सकता है कि कोई व्यक्ति अच्छा या बुरा करने का जल्दी में वचन दे देता है। लोग बहुत प्रकार के वचन जल्दी में दे देते हैं। यदि कोई व्यक्ति ऐसा वचन दे देता है और उसे भूल जाता है* तो वह अपराधी है और जब उसे अपना वचन याद आता है* तब भी वह अपराधी है। [5]अत:, यदि वह इनमें से किसी का दोषी है तो उसे अपनी बुराई स्वीकार करनी चाहिए। [6]उसे परमेश्वर को अपने किए हुए पाप के लिए दोषबलि लानी चाहिए। उसे दोषबलि के रूप में अपनी रेवड़ से एक मादा जानवर लाना चाहिए। यह मेमना या बकरी हो सकता है। तब याजक वह कार्य करेगा जिससे उस व्यक्ति के पाप का भुगतान होगा।

[7]"यदि कोई व्यक्ति मेमना भेंट करने में असमर्थ है तो उसे दो फ़ाख्ता या कबूतर के दो बच्चे यहोवा को भेंट में देना चाहिए। यह उसके पाप के लिए दोषबलि होगी। एक पक्षी दोषबलि के लिए होना चाहिए तथा दूसरा होमबलि के लिए होना चाहिए। [8]उस व्यक्ति को चाहिए कि वह उन पक्षियों को याजक के पास लाए। पहले याजक को दोषबलि के रूप में एक पक्षी को चढ़ाना चाहिए। याजक पक्षी की गर्दन को मोड़ देगा। किन्तु याजक पक्षी को दो भागों में नहीं बाँटेगा। [9]तब याजक को दोषबलि के खून को वेदी के सिरों पर डालना चाहिए। तब याजक को बचा हुआ खून वेदी की नींव पर डालना चाहिए। यह दोषबलि है। [10]तब याजक को नियम के अनुसार होमबलि के रूप में दूसरे पक्षी की भेंट चढ़ानी चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के अपराधों का भुगतान देगा। और परमेश्वर उस व्यक्ति को क्षमा करेगा।

[11]"यदि कोई व्यक्ति दो फ़ाख़्ता या दो कबूतर भेंट चढ़ाने में असमर्थ हो तो उसे एपा का दसवाँ भाग* महीन आटा लाना चाहिए। यह उसकी दोषबलि होगी। उस व्यक्ति को आटे पर तेल नहीं डालना चाहिए। उसे इस पर लोबान नहीं रखना चाहिए क्योंकि यह दोषबलि है। [12]व्यक्ति को आटा याजक के पास लाना चाहिए। याजक इसमें से मुट्ठी भर आटा निकालेगा। यह स्मृति भेंट होगी। याजक यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट पर वेदी के ऊपर आटे को जलाएगा। यह दोषबलि है। [13]इस प्रकार याजक व्यक्ति के अपराधों के लिए भुगतान करेगा और यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा करेगा। बची हुई दोषबलि याजक की वैसे ही होगी जैसे अन्नबलि होती है।"

[14]यहोवा ने मूसा से कहा, [15]"कोई व्यक्ति यहोवा की पवित्र वस्तुओं* के प्रति अकस्मात् कोई गलती कर सकता है। तो उस व्यक्ति को एक दोष रहित मेढ़ा लाना चाहिए। यह मेढ़ा यहोवा के लिए उसकी दोषबलि होगी। तुम्हें उस मेढ़े का मूल्य निर्धारित करने के लिए अधिकृत मानक का प्रयोग करना चाहिए। [16]उस व्यक्ति को पवित्र चीज़ों के विपरीत किये गये पाप के लिए भुगतान अवश्य करना चाहिए। जिन चीज़ों का उसने वायदा किया है, वे अवश्य देनी चाहिए। उसे मूल्य में पाँचवाँ भाग जोड़ना चाहिए। उसे यह धन याजक को देना चाहिए। इस प्रकार याजक दोषबलि के मेढ़े द्वारा उस व्यक्ति के पाप को धोएगा और यहोवा उसके पाप को क्षमा करेगा।

[17]"यदि कोई व्यक्ति पाप करता है और जिन चीज़ों को न करने का आदेश यहोवा ने दिया है, उन्हें करता है तो इस बात का कोई महत्व नहीं कि वह इसे नहीं जानता। वह व्यक्ति अपराधी है और उसे अपने पाप का फल भोगना होगा। [18]उस व्यक्ति को एक निर्दोष मेढ़ा अपनी रेवड़ से याजक के पास लाना चाहिए। मेढ़ा दोषबलि होगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के उस पाप का भुगतान करेगा जिसे उसने अनजाने में किया। यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा करेगा। [19]व्यक्ति अपराधी ह चाहे वह यह न जानता हो कि वह पाप कर रहा है। इसलिए उसे यहोवा को दोषबलि देनी होगी।"

बेईमान लोगों की दोषबलि

6 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"कोई व्यक्ति यहोवा के प्रति इनमें से किसी एक को करके अपराध

उसे भूल जाता है "यह उससे ओझल हो जाता है।"
याद आता है "जानता है।"
एपा का दसवां भाग अर्थात् लगभग बराबर दो लीटर।

यहोवा की पवित्र वस्तुओं ये संभवत: विशेष भेंटे हैं जिन्हें व्यक्ति चढ़ाने का वचन देता है।

कर सकता है: वह किसी अन्य के लिए जिसकी वह देखभाल कर रहा हो, उसे कुछ होने के बारे में झूठ बोल सकता है, अथवा कोई व्यक्ति अपने दिए वचन* के बारे में झूठ बोल सकता है, अथवा कोई व्यक्ति कुछ चुरा सकता है, या कोई व्यक्ति किसी को ठग सकता है, [3]अथवा किसी को कोई खोई चीज़ मिले और तब वह उसके विषय में झूठ बोल सकता है या कोई व्यक्ति कुछ करने का वचन दे सकता है और तब अपने दिए गए वचन को पूरा नहीं करता है, अथवा कोई कुछ अन्य बुरा कर सकता है। [4]यदि कोई व्यक्ति इनमें से किसी को करता है तो वह पाप करने का दोषी है। उस व्यक्ति को जो कुछ उसने चुराया हो या ठगकर जो कुछ लिया हो या किसी व्यक्ति के कहने से उसकी धरोहर के रूप में जो रखा हो, या किसी का खोया हुआ पाकर उसके बारे में झूठ बोला हो [5]या जिस किसी के बारे में झूठा वचन दिया हो, वह उसे लौटाना चाहिए। उसे पूरा मूल्य चुकाना चाहिए और तब उसे वस्तु के मूल्य का पाँचवाँ हिस्सा अतिरिक्त देना चाहिए। उसे असली मालिक को धन देना चाहिए। उसे यह उसी दिन करना चाहिए जिस दिन वह दोषबलि लाए।

[6]"उस व्यक्ति को दोषबलि याजक के पास लाना चाहिए। यह रेवड़ से एक मेढ़ा होना चाहिए। मेढ़े में कोई दोष नहीं होना चाहिए। यह उसी मूल्य का होना चाहिए जो याजक कहे। यह यहोवा को दी गई दोषबलि होगी। [7]तब याजक यहोवा के पास जाएगा और उस व्यक्ति के उन पापों के लिए भुगतान करेगा जिनका वह अपराधी है, और यहोवा उस व्यक्ति को उन सभी पापों के लिए क्षमा करेगा जिन्होंने उसे अपराधी बनाया।"

होमबलि

[8]यहोवा ने मूसा से कहा, [9]"हारून और उसके पुत्रों को यह आदेश दो: यह होमबलि का नियम है। होमबलि को वेदी के अग्नि कुण्ड* में पूरी रात सवेरा होने तक रखना चाहिए। वेदी की आग को वेदी पर जलती रहनी चाहिए। [10]याजक को सन के उत्तम रेशों के बने वस्त्र पहनने चाहिए। उसे अपने शरीर से चिपका सन का अन्तर्वस्त्र पहनना चाहिए। तब याजक को वेदी पर होमबलि पर जलने के बाद बची हुई राख को उठाना चाहिए। याजक को वेदी की एक ओर राख को रखना चाहिए। [11]तब याजक को अपने वस्त्रों को उतारना चाहिए और अन्य वस्त्र पहनने चाहिए। तब उसे डेरे से बाहर स्वच्छ स्थान पर राख ले जानी चाहिए। [12]किन्तु वेदी की आग वेदी में जलती रहनी चाहिए। इसे बुझने नहीं देना चाहिए। याजक को हर सुबह वेदी पर लकड़ी जलानी चाहिए। उसे वेदी पर लकड़ी रखनी चाहिए। उसे मेलबलि की चर्बी जलानी चाहिए। [13]वेदी पर आग लगातार जलती रहनी चाहिए। यह बुझनी नहीं चाहिए।

अन्नबलि

[14]"अन्नबलि का यह नियम है कि: हारून के पुत्रों को वेदी के सामने यहोवा के लिए इसे लाना चाहिए। [15]याजक को अन्नबलि में से मुट्ठी भर उत्तम आटा लेना चाहिए। तेल और लोबान अन्नबलि पर अवश्य होना चाहिए। याजक को अन्नबलि को वेदी पर जलाना चाहिए। यह यहोवा को एक सुगन्धित और स्मृति भेंट होगी।

[16]"हारून और उसके पुत्रों को बची हुई अन्नबलि को खाना चाहिए। अन्नबलि एक प्रकार की अख़मीरी रोटी की भेंट है। याजक को इस रोटी को पवित्र स्थान में खाना चाहिए। उन्हें मिलापवाले तम्बू के आँगन में अन्नबलि खानी चाहिए। [17]अन्नबलि खमीर के साथ नहीं पकाई जानी चाहिए। मुझको (यहोवा को) आग द्वारा दी जाने वाली बलि में से उनके (याजकों के) भाग के रूप में मैंने इसे दिया है। यह पापबलि तथा दोषबलि के समान अत्यन्त पवित्र है। [18]हारून की सन्तानों में से हर एक लड़का आग द्वारा यहोवा को चढ़ाई गई भेंट में से खा सकता है। यह तुम्हारी पीढ़ियों का सदा के लिए नियम है। इन बलियों का स्पर्श उन व्यक्तियों को पवित्र करता है।"*

याजकों की अन्नबलि

[19]यहोवा ने मूसा से कहा, [20]"हारून तथा उसके पुत्रों को जो बलि यहोवा को लानी चाहिए, वह यह है। उन्हें यह उस दिन करना चाहिए जिस दिन हारून का अभिषेक

अपने दिए वचन "बन्धक सा सुरक्षा धन" यह ऐसा कुछ है जिसे तुम किसी व्यक्ति को इस बात के प्रमाण के रूप में देते हो कि तुम उससे कुछ अधिक महत्वपूर्ण करोगे।

कुण्ड वह स्थान जहाँ बलि को जलाया जाता है।

इन... करता है इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: इन्हें जो कोई छुए उसे पहले पवित्र (शुद्ध) हो लेना चाहिए।

हुआ है। उन्हें सदा दो क्वार्ट* उत्तम महीन आटा अन्नबलि के लिए लेना चाहिए। उन्हें इसका आधा प्रात:काल तथा आधा सन्ध्या काल में लाना चाहिए। [21]उत्तम महीन आटे में तेल मिलाना चाहिए और उसे कड़ाही में भूनना चाहिए। जब यह भुन जाए तब इसे अन्दर लाना चाहिए। तुम्हें अन्नबलि का चूरमा बना लेना चाहिए। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।

[22]"हारून के वंश में से वह याजक जिसका हारून के स्थान पर अभिषेक हो, यहोवा को यह अन्नबलि चढ़ाए। यह नियम सदा के लिये है। यहोवा के लिए अन्नबलि पूरी तरह जलाई जानी चाहिए। [23]याजक की हर एक अन्नबलि पूरी तरह जलाई जानी चाहिए। इसे खाना नहीं चाहिए।"

पापबलि के नियम

[24]यहोवा ने मूसा से कहा, [25]"हारून और उसके पुत्रों से कहो: पापबलि के लिए यह नियम है कि पापबलि को भी वहीं मारा जाना चाहिए जहाँ यहोवा के सामने होमबलि को मारा जाता है। यह अत्यन्त पवित्र है। [26]उस याजक को इसे खाना चाहिए, जो पापबलि चढ़ाता है। उसे पवित्र स्थान पर मिलापवाले तम्बू के आँगन में इसे खाना चाहिए। [27]पापबलि के माँस का स्पर्श किसी भी व्यक्ति को पवित्र करता है। यदि छिड़का हुआ खून किसी के वस्त्रों पर पड़ता है तो उन वस्त्रों को धो दिया जाना चाहिए। तुम्हें उन वस्त्रों को एक निश्चित, पवित्र स्थान में धोना चाहिए। [28]यदि पापबलि किसी मिट्टी के बर्तन में उबाली जाए तो उस बर्तन को फोड़ देना चाहिए। यदि पापबलि को काँसे के बर्तन में उबाला जाय तो बर्तन को माँजा जाए और पानी में धोया जाए।

[29]"परिवार का प्रत्येक पुरुष सदस्य याजक, पापबलि को खा सकता है। यह अत्यन्त पवित्र है। [30]किन्तु यदि पापबलि का खून पवित्र स्थान को शुद्ध करने के लिए मिलापवाले तम्बू में ले जाया गया हो तो पापबलि को आग में जला देना चाहिए। याजक उस पापबलि को नहीं खा सकते।

दोषबलि

7 "दोषबलि के लिए यह नियम है। यह अत्यन्त पवित्र है। [2]याजक को दोषबलि को उसी स्थान पर मारना चाहिए जिस पर वह होमबलियों को मारता है। याजक को दोषबलि में से वेदी के चारों ओर खून छिड़कना चाहिए।

[3]"याजक को दोषबलि की सारी चर्बी चढ़ानी चाहिए। उसे चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भागों को ढकने वाली चर्बी, [4]दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी, पुट्ठो की चर्बी, और कलेजे की चर्बी चढ़ानी चाहिए। [5]याजक को वेदी पर उन सभी चीज़ों को जलाना चाहिए। ये यहोवा को आग द्वारा दी गई बलि होगी। यह दोषबलि है।

[6]"हर एक पुरुष जो याजक है, दोषबलि खा सकता है। यह बहुत पवित्र है। अत: इसे एक निश्चित पवित्र स्थान में खाना चाहिए। [7]दोषबलि पापबलि के समान है। दोनों के लिए एक जैसे नियम हैं। वह याजक, जो बलि चढ़ाता है, उसको वह प्राप्त करेगा। [8]वह याजक जो बलि चढ़ाता है चमड़ा* भी होमबलि से ले सकता है। [9]हर एक अन्नबलि चढ़ाने वाले याजक की होती है। याजक उन अन्नबलियों को लेगा जो चूल्हे में पकी हों, या कड़ाही में पकी हों या तवे पर पकी हों। [10]अन्नबलि हारून के पुत्रों की होगी। उससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा कि वे सूखी अथवा तेल मिली हैं। हारून के पुत्र याजक समान भागीदार होंगे।

मेलबलि

[11]"ये मेलबलि के नियम हैं, जिसे कोई व्यक्ति यहोवा को चढ़ाता है: [12]कोई व्यक्ति मेलबलि अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए ला सकता है। यदि वह कृतज्ञता प्रकट करने के लिए बलि लाता है तो उसे तेल मिले अखमीरी फुलके, अखमीरी चपातियाँ और तेल मिले उत्तम आटे के फुलके भी लाने चाहिए।[13]उस व्यक्ति को अपनी मेलबलि के लिए खमीरी रोटियों के साथ अपनी बलि लानी चाहिए। यह वह बलि है जिसे कोई व्यक्ति यहोवा के प्रति कृतज्ञता दर्शाने के लिए लाता है। [14]उन रोटियों में से एक उस याजक की होगी जो मेलबलि के खून को छिड़कता है। [15]इस मेलबलि का माँस उसी दिन खाया जाना चाहिए जिस दिन यह चढ़ाया जाए। कोई व्यक्ति परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए यह भेंट चढ़ाता

दो क्वार्ट "1/10 एपा।"

चमड़ा इसका उपयोग पका चमड़ा बनाने के लिए होता था।

है। किन्तु कुछ भी माँस अगले दिन के लिए नहीं बचना चाहिए।

16"कोई व्यक्ति मेलबलि यहोवा को केवल भेंट चढ़ाने की इच्छा से ला सकता है अथवा सम्भवत: उस व्यक्ति ने यहोवा को विशेष वचन दिया हो। यदि यह सत्य है तो बलि उसी दिन खायी जानी चाहिए जिस दिन वह उसे चढ़ाये। यदि कुछ बच जाए तो उसे अगले दिन खा लेना चाहिए। 17किन्तु यदि इस बलि का कुछ माँस फिर भी तीसरे दिन के लिए बच जाए तो उसे आग में जला दिया जाना चाहिए। 18यदि कोई व्यक्ति मेलबलि का माँस तीसरे दिन खाता है तो यहोवा उस व्यक्ति से प्रसन्न नहीं होगा। यहोवा उस बलि को उसके लिए महत्व नहीं देगा। यह बलि घृणित वस्तु बन जाएगी और यदि कोई व्यक्ति उस माँस का कुछ भी खाता है तो वह अपने पाप के लिए उत्तरदायी होगा।

19"लोगों को ऐसा माँस भी नहीं खाना चाहिए जिसे कोई अशुद्ध वस्तु छू ले। उन्हें इस माँस को आग में जला देना चाहिए। वे सभी व्यक्ति जो शुद्ध हों, मेलबलि का माँस खा सकते हैं। 20किन्तु यदि कोई व्यक्ति अपवित्र हो और यहोवा के लिए मेलबलि में से कुछ माँस खा ले तो उस व्यक्ति को उस के लोगों से अलग कर देना चाहिए।

21"सम्भव है कि कोई व्यक्ति कोई ऐसी चीज़ छू ले जो अशुद्ध है। यह चीज़ लोगों द्वारा या गन्दे जानवर द्वारा या किसी घृणित गन्दी चीज़ द्वारा अशुद्ध बनाई जा सकती है। वह व्यक्ति अशुद्ध हो जाएगा और यदि वह यहोवा के लिए मेलबलि से कुछ माँस खा ले तो उस व्यक्ति को उसके लोगों से अलग कर देना चाहिए।"

22यहोवा ने मूसा से कहा, 23"इस्राएल के लोगों से कहो: तुम लोगों को गाय, भेड़ और बकरी की चर्बी नहीं खानी चाहिए। 24तुम उस जानवर की चर्बी का प्रयोग कर सकते हो जो स्वत: मरा हो या अन्य जानवरों द्वारा फाड़ दिया गया हो। किन्तु तुम उस जानवर को कभी नहीं खाना। 25यदि कोई व्यक्ति उस जानवर की चर्बी खाता है जो यहोवा को आग द्वारा भेंट चढ़ाया गया हो तो उस व्यक्ति को उस के लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए। 26तुम चाहे जहाँ भी रहो, तुम्हें किसी पक्षी या जानवर का खून कभी नहीं खाना चाहिए। 27यदि कोई व्यक्ति कुछ खून खाता है तो उस व्यक्ति को उस के लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए।"

उत्तोलन बलि के नियम

28यहोवा ने मूसा से कहा, 29"इस्राएल के लोगों से कहो: यदि कोई व्यक्ति यहोवा को मेलबलि लाए तो उस व्यक्ति को उस भेंट का एक भाग यहोवा को देना चाहिए। 30भेंट का वह भाग आग में जलाया जाएगा। उसे उस भेंट का वह भाग अपने हाथ में लेकर चलना चाहिए। उसे जानवर की छाती की चर्बी लेकर चलना चाहिए और छाती को याजक के पास ले जाना चाहिए। छाती को यहोवा के सामने ऊपर उठाया जायेगा। यह उत्तोलन बलि होगी। 31तब याजक को वेदी पर चर्बी जलानी चाहिए। किन्तु जानवर की छाती हारून और उसके पुत्रों की होगी। 32मेलबलि से दायीं जांघ हारून के पुत्रों में से याजक को देनी चाहिये। 33मेलबलि में से दायीं जांघ उस याजक की होगी जो मेलबलि की चर्बी और खून चढ़ाता है। 34मैं (यहोवा) उत्तोलन बलि की छाती तथा मेलबलि की दायीं जांघ इस्राएल के लोगों से ले रहा हूँ और मैं उन चीज़ों को हारून और उसके पुत्रों को दे रहा हूँ। इस्राएल के लोगों के लिए यह नियम सदा के लिए होगा।"

35यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट हारून और उसके पुत्रों की है, जब कभी हारून और उसके पुत्र यहोवा के याजक के रूप में सेवा करते हैं तब वे बलि का वह भाग पाते हैं। 36जिस समय यहोवा ने याजकों का अभिषेक किया उसी समय उन्होंने इस्राएल के लोगों को वे भाग याजकों को देने का आदेश दिया। वे भाग सदा उनकी पीढ़ी याजकों को दिए जाने हैं। 37ये होमबलि, अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि, याजकों की नियुक्ति, और मेलबलि के नियम हैं। 38यहोवा ने सीनै पर्वत पर ये नियम मूसा को दिए। यहोवा ने ये नियम उस दिन दिए जिस दिन उसने इस्राएल के लोगों को सीनै मरुभूमि में यहोवा के लिए अपनी भेंट लाने का आदेश दिया था।

मूसा हारून और उसके पुत्रों को उपासना के लिए पवित्र करता है

8 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"हारून और उसके साथ उसके पुत्रों, उनके वस्त्र, अभिषेक का तेल, पापबलि का बैल, दो भेड़ें और अखमीरी मैदे के फुलके की टोकरी लो, 3तब मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लोगों को एक साथ लाओ।"

[4]मूसा ने वही किया जो यहोवा ने उसे आदेश दिया। लोग मिलापवाले तम्बू के द्वार पर एक साथ मिले। [5]तब मूसा ने लोगों से कहा, "यह वही है जिसे करने का आदेश यहोवा ने दिया है।"

[6]तब मूसा, हारून और उसके पुत्रों को लाया। उसने उन्हें पानी से नहलाया। [7]तब मूसा ने हारून को अन्त:वस्त्र पहनाया। मूसा ने हारून के चारों ओर एक पेटी बाँधी। तब मूसा ने हारून को बाहरी लबादा पहनाया। इसके ऊपर मूसा ने हारून को चोगा पहनाया और उस पर एपोद* पहनाई, फिर उस पर सुन्दर पटुका बाँधा। [8]तब मूसा ने न्याय की थैली की जेब में ऊरीम और तुम्मीम* रखा। [9]मूसा ने हारून के सिर पर पगड़ी भी बाँधी। मूसा ने इस पगड़ी के अगले भाग पर सोने की पट्टी बांधी। यह सोने की पट्टी पवित्र मुकुट के समान है। मूसा ने यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया।

[10]तब मूसा ने अभिषेक का तेल लिया और पवित्र तम्बू तथा इसमें की सभी चीज़ों पर छिड़का। इस प्रकार मूसा ने उन्हें पवित्र किया। [11]मूसा ने अभिषेक का कुछ तेल वेदी पर सात बार छिड़का। मूसा ने वेदी, उसके उपकरणों और तश्तरियों का अभिषेक किया। मूसा ने बड़ी चिलमची और उसके आधार पर भी अभिषेक का तेल छिड़का। इस प्रकार मूसा ने उन्हें पवित्र किया। [12]तब मूसा ने अभिषेक के कुछ तेल को हारून के सिर पर डाला। इस प्रकार उसने हारून को पवित्र किया। [13]तब मूसा हारून के पुत्रों को लाया और उन्हें विशेष वस्त्र पहनाए। उसने उन्हें पटुके पेटियाँ बाँधे। तब उसने उन के सिर पर पगड़ियाँ बाँधी। मूसा ने ये सब वैसे ही किया जैसे यहोवा ने आदेश दिया था।

[14]तब मूसा पापबलि के बैल को लाया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथों को पापबलि के बैल के सिर पर रखा। [15]तब मूसा ने बैल को मारा। मूसा ने उसके खून को लिया। मूसा ने अपनी उँगली का उपयोग किया और कुछ खून वेदी पर के सभी कोनों पर छिड़का। इस प्रकार मूसा ने वेदी को बलि के लिए शुद्ध किया। तब मूसा ने वेदी की नींव पर खून को उँडेला। इस प्रकार मूसा ने वेदी को लोगों के पापों के भुगतान के लिए पाप बलियों के लिए तैयार किया। [16]मूसा ने बैल के भीतरी भागों से सारी चर्बी ली। मूसा ने दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी के साथ कलेजे को ढकने वाली चर्बी ली। तब उसने उन्हें वेदी पर जलाया। [17]किन्तु मूसा बैल के चमड़े, उसके माँस और शरीर के व्यर्थ भीतरी भाग को डेरे के बाहर ले गया। मूसा ने डेरे के बाहर आग में उन चीज़ों को जलाया। मूसा ने ये सब वैसा ही किया जैसा यहोवा ने आदेश दिया था।

[18]मूसा होमबलि के मेढ़े को लाया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। [19]तब मूसा ने मेढ़े को मारा। उसने वेदी के चारों ओर खून छिड़का। [20-21]मूसा ने मेढ़े को टुकड़ों में काटा। मूसा ने भीतरी भागों और पैरों को पानी से धोया। तब मूसा ने पूरे मेढ़े को वेदी पर जलाया। मूसा ने उसका सिर, टुकड़े और चर्बी को जलाया। यह आग द्वारा होमबलि थी। यह यहोवा के लिए सुगन्ध थी। मूसा ने यहोवा के आदेश के अनुसार वे सब काम किए।

[22]तब मूसा दूसरे मेढ़े को लाया। इस मेढ़े का उपयोग हारून और उसके पुत्रों को याजक बनाने के लिए किया गया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। [23]तब मूसा ने मेढ़े को मारा। उसने इसका कुछ खून हारून के कान के निचले सिरे पर, दाएं हाथ के अंगूठे पर और हारून के दाएं पैर के अंगूठे पर लगाया। [24]तब मूसा हारून के पुत्रों को वेदी के पास लाया। मूसा ने कुछ खून उनके दाएं कान के निचले सिरे पर, दाएं हाथ के अंगूठे पर और उनके दाएं पैर के अंगूठों पर लगाया। तब मूसा ने वेदी के चारों ओर खून डाला। [25]मूसा ने चर्बी, चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भाग की सारी चर्बी, कलेजे को ढकने वाली चर्बी, दोनों गुर्दे और उनकी चर्बी और दायीं जाँघ को लिया। [26]एक टोकरी अखमीरी मैदे के फुलके हर एक दिन यहोवा के सामने रखी जाती हैं। मूसा ने उन फुलकियों में से एक रोटी, और एक तेल से सनी फुलकी, और एक अखमीरी चपाती ली। मूसा ने उन फुलकियों के टुकड़ों को चर्बी तथा मेढ़े की दायीं जाँघ पर रखा। [27]तब मूसा ने उन सभी को हारून और उसके पुत्रों के हाथों में

एपोद एक विशेष अंगरखा जो महायाजक पहनता था।
ऊरीम और तुम्मीम ये सम्भवत: पत्थर, लकड़ी या हड्डी से बने गोट की तरह थे जिसे निर्णय लेने के लिये पासे की तरह फेंका जाता था। याजक इनका इस्तेमाल, परमेश्वर का उत्तर जानने के लिये करता था।

रखा। मूसा ने उन टुकड़ों को यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के रूप में हाथों में ऊपर उठवाया। [28]तब मूसा ने इन चीज़ों को हारून और उसके पुत्रों के हाथों से लिया। मूसा ने उन्हें वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया। इस प्रकार वह बलि हारून और उसके पुत्रों को याजक नियुक्त करने के लिए थी। यह आग द्वारा दी गई बलि थी। यह यहोवा को प्रसन्न करने के लिए सुगन्ध थी। [29]तब मूसा ने उस मेढ़े की छाती को लिया और यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के लिए ऊपर उठवाया। याजकों को नियुक्त करने के लिए यह मूसा के हिस्से का मेढ़ा था। यह ठीक वैसा ही था जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

[30]मूसा ने अभिषेक का कुछ तेल और वेदी पर का कुछ खून लिया। मूसा ने उस में से थोड़ा हारून और उसके वस्त्रों पर छिड़का और कुछ हारून के उन पुत्रों पर जो उसके साथ थे और कुछ उनके वस्त्रों पर छिड़का। इस प्रकार मूसा ने हारून, उसके वस्त्रों, उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों को पवित्र बनाया।

[31]तब मूसा ने हारून और उसके पुत्रों से कहा, "क्या तुम्हें मेरा आदेश* याद है? मैंने कहा, 'हारून और उसके पुत्र इन चीज़ों को खाएंगे।' अत: याजक नियुक्ति संस्कार से रोटी की टोकरी और माँस लो। मिलापवाले तम्बू के द्वार पर उस माँस को उबालो। तुम उस माँस और उस रोटी को उसी स्थान पर खाओगे। [32]यदि कुछ माँस या रोटी बच जाए तो उसे जला देना। [33]याजक नियुक्ति संस्कार सात दिन तक चलेगा। तुम मिलापवाले तम्बू से तब तक नहीं जाओगे जब तक तुम्हारा याजक नियुक्ति संस्कार का समय पूरा नहीं हो जाता। [34]यहोवा ने उन कामों को करने का आदेश दिया था जो आज किए गए उन्होंने तुम्हारे पापों के भुगतान के लिए यह आदेश दिया था। [35]तुम्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सात दिन तक, पूरे दिन रात रहना चाहिए। यदि तुम यहोवा का आदेश नहीं मानते हो तो तुम मर जाओगे। यहोवा ने मुझे ये आदेश दिया था।"

[36]इसलिए हारून और उसके पुत्रों ने वह सब कुछ किया जिसे करने का आदेश यहोवा ने मूसा को दिया था।

परमेश्वर द्वारा याजकों को स्वीकृति

9 आठवें दिन, मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को बुलाया। उस ने इस्राएल के बुजुर्गों (नेताओं) को भी बुलाया। [2]मूसा ने हारून से कहा, "अपने पशुओं में से एक बछड़ा और एक मेढ़ा लो। इन जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। बछड़ा पापबलि होगा और मेढ़ा होमबलि होगा। इन जानवरों को यहोवा को भेंट करो। [3]इस्राएल के लोगों से कहो, 'पापबलि हेतु एक बकरा लो। एक बछड़ा और एक मेमना होमबलि के लिए लो। बछड़ा और मेमना दोनों एक वर्ष के होने चाहिए। इन जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। [4]एक साँड़ और एक मेढ़ा मेलबलि के लिए लो। उन जानवरों को और तेल मिली अन्नबलि लो और उन्हें यहोवा को भेंट चढ़ाओ। क्यों? क्योंकि आज यहोवा की महिमा तुम्हारे सामने प्रकट होगी।'"

[5]इसलिए सभी लोग मिलापवाले तम्बू में आए और वे सभी उन चीज़ों को लाए जिनके लिए मूसा ने आदेश दिया था। सभी लोग यहोवा के सामने खड़े हुए। [6]मूसा ने कहा, "तुमने वही किया है जो यहोवा ने आदेश दिया। तुम लोग यहोवा की महिमा देखोगे।"

[7]तब मूसा ने हारून से ये बातें कहीं, "जाओ और वह करो जिसके लिए यहोवा ने आदेश दिया था। वेदी के पास जाओ और पापबलि तथा होमबलि चढ़ाओ। यह सब अपने और लोगों के पापों के भुगतान के लिए करो। तुम लोगों की लायी हुई बलि को लो और उसे यहोवा को अर्पित करो। यह उनके पापों का भुगतान होगा।"

[8]इसलिए हारून वेदी के पास गया। उसने बछड़े को पापबलि हेतु मारा। यह पापबलि स्वयं उसके अपने लिए थी। [9]तब हारून के पुत्र हारून के पास खून लाए। हारून ने अपनी उँगली ख़ून में डाली और वेदी के सिरों पर इसे लगाया। तब हारून ने वेदी की नींव पर खून उँडेला। [10]हारून ने पापबलि से चर्बी, गुर्दे और कलेजे की चर्बी को लिया। उस ने उन्हें वेदी पर जलाया। उसने उसी प्रकार किया जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। [11]तब हारून ने डेरे के बाहर माँस और चमड़े को जलाया। [12]इसके बाद,

---

मेरा आदेश यहाँ मेरा आदेश से अभिप्राय है मेरे द्वारा दिया गया यहोवा का आदेश मूसा का वचन, यहोवा का वचन है क्योंकि वह यहोवा का प्रवक्ता है। इसलिए यहाँ मूसा ने यहोवा के आदेश को मेरा आदेश कहा है।

हारून ने होमबलि के लिए उस जानवर को मारा। जानवर को टुकड़ों में काटा गया। हारून के पुत्र खून को हारून के पास लाए और हारून ने वेदी के चारों ओर खून डाला। 13हारून के पुत्रों ने उन टुकड़ों और होमबलि का सिर हारून को दिया। तब हारून ने उन्हें वेदी पर जलाया। 14हारून ने होमबलि के भीतरी भागों और पैरों को धोया और उसने उन्हें वेदी पर जलाया।

15तब हारून लोगों की बलि लाया। उसने लोगों के लिए पापबलि वाले बकरे को मारा। उसने बकरे को पहले की तरह पापबलि के लिए चढ़ाया। 16हारून होमबलि को लाया और उसने वह बलि चढ़ाई। वैसे ही जैसे यहोवा ने आदेश दिया था। 17हारून अन्नबलि को वेदी के पास लाया। उसने मुट्ठी भर अन्न लिया और प्रात: काल की नित्य बलि के साथ उसे वेदी पर रखा।

18हारून ने लोगों के लिए मेलबलि के साँड़ और मेढ़े को मारा। हारून के पुत्र खून को हारून के पास लाए। हारून ने इस खून को वेदी के चारों ओर उँडेला। 19हारून के पुत्र साँड़ और मेढ़े की चर्बी भी लाए। वे चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भागों को ढकने वाली चर्बी, गुर्दे और कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी लाए। 20हारून के पुत्रों ने चर्बी के इन भागों को साँड़ और मेढ़े की छातियों पर रखा। हारून ने चर्बी के भागों को लेकर उसे वेदी पर जलाया। 21मूसा के आदेश के अनुसार हारून ने छातियों और दायीं जाँघ को उत्तोलन भेंट के लिए यहोवा के सामने हाथों में ऊपर उठाया।

22तब हारून ने अपने हाथ लोगों की ओर उठाए और उन्हें आशीर्वाद दिया। हारून पापबलि, होमबलि और मेलबलि को चढ़ाने के बाद वेदी से नीचे उतर आया।

23मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू में गए और फिर बाहर आकर उन्होंने लोगों को आशीर्वाद दिया। यहोवा की उपस्थिति से सभी लोगों के सामने तेज प्रकट हुआ। 24यहोवा से अग्नि प्रकट हुई और उसने वेदी पर होमबलि और चर्बी को जलाया। सभी लोगों ने जब यह देखा तो वे चिल्लाए और उन्होंने धरती पर गिरकर प्रणाम किया।

परमेश्वर की ज्वाला द्वारा विनाश

10 फिर तभी हारून के पुत्रों नादाब और अबीहू ने पाप किया। दोनों पुत्रों ने लोबान जलाने के लिए तश्तरी ली। उन्होंने एक अलग ही आग का प्रयोग किया और लोबान को जलाया। उन्होंने उस आग का उपयोग नहीं किया जिसके उपयोग का आदेश मूसा ने उन्हें दिया था। 2इसलिए यहोवा से ज्वाला प्रकट हुई और उसने नादाब और अबीहू को नष्ट कर दिया। वे यहोवा के सामने मरे।

3तब मूसा ने हारून से कहा, "यहोवा कहता है, 'जो याजक मेरे पास आए, उन्हें मेरा सम्मान करना चाहिए! मै उन के लिये और सब ही के लिये पवित्र माना जाऊँ।'" इसलिए हारून अपने मरे हुए पुत्रों के लिए खामोश रहा।

4हारून के चाचा उज्जीएल के दो पुत्र थे। वे मीशाएल और एलसाफान थे। मूसा ने उन पुत्रों से कहा, "पवित्र स्थान के सामने के भाग में जाओ। अपने चचेरे भाइयों के शवों को उठाओ और उन्हें डेरे के बाहर ले जाओ।"

5इसलिए मीशाएल और एलसाफान ने मूसा का आदेश माना। वे नादाब और अबीहू के शवों को बाहर लाए। नादाब और अबीहू तब तक अपने विशेष अन्त:वस्त्र पहने थे।

6तब मूसा ने हारून और उसके अन्य पुत्रों एलीआज़ार और ईतामार से बात की। मूसा ने उनसे कहा, "कोई शोक प्रकट न करो! अपने वस्त्र न फाड़ो या अपने बालों को न बिखेरो! शोक प्रकट न करो, तुम मरोगे नहीं और यहोवा तुम सभी लोगों से अप्रसन्न नहीं होगा। इस्राएल का पूरा राष्ट्र तुम लोगों का सम्बन्धी है। वे यहोवा द्वारा नादाब और अबीहू के जलाने के विषय में रो पीट सकते हैं। 7किन्तु तुम लोगों को मिलापवाला तम्बू भी नहीं छोड़ना चाहिए। यदि तुम लोग उस द्वार से बाहर जाओगे तो मर जाओगे। क्यों? क्योंकि यहोवा के अभिषेक का तेल* तुम ने लगा रखा है।" सो हारून, एलीआज़ार और ईतामार ने मूसा की आज्ञा मानी।

8तब यहोवा ने हारून से कहा, 9"तुम्हें और तुम्हारे पुत्रों को दाखमधु या मद्य उस समय नहीं पीनी चाहिए जब तुम लोग मिलापवाले तम्बू में आओ। यदि तुम ऐसा करोगे तो मर जाओगे! यह नियम तुम्हारी पीढ़ियों में सदा चलता रहेगा। 10तुम्हें, जो चीज़ें पवित्र हैं तथा जो पवित्र नहीं हैं, जो शुद्ध हैं और जो शुद्ध नहीं हैं

अभिषेक का तेल जैतून का तेल जिसे चीज़ों या लोगों पर ये दिखाने के लिये उँडेला जाता था कि वे किसी विशेष कार्य या उद्देश्य के लिये चुने गये हैं।

उनमें अन्तर करना चाहिए। [11]यहोवा ने मूसा को अपने नियम दिए और मूसा ने उन नियमों को लोगों को दिया। "हारून, तुम्हें उन सभी नियमों की शिक्षा लोगों को देनी चाहिए।"

[12]अभी तक हारून के दो पुत्र एलीआज़ार और ईतामार जीवित थे। मूसा ने हारून और उसके दोनों पुत्रों से बात की। मूसा ने कहा, "कुछ अन्नबलि उन बलियों में से बची है जो आग में जलाई गई थी। तुम लोग अन्नबलि का वह भाग खाओगे। किन्तु तुम लोगों को इसे बिना ख़मीर मिलाए खाना चाहिये। इसे वेदी के पास खाओ। क्यों? क्योंकि वह भेंट बहुत पवित्र है। [13]वह उस भेंट का भाग है, जो यहोवा के लिए आग में जलाई गई थी और जो नियम मैंने तुमको बताया, वह सिखाता है कि वह भाग तुम्हारा और तुम्हारे पुत्रों का है। किन्तु तुम्हें इसे पवित्र स्थान पर ही खाना चाहिए।

[14]"तुम, तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ भी उत्तोलन बलि से छाती को और मेलबलि से जाँघ को खा सकेंगे। इन्हें तुम्हें किसी पवित्र स्थान पर नहीं खाना है। बल्कि तुम्हें इन्हें किसी शुद्ध स्थान पर खाना चाहिए। क्यों? क्योंकि ये मेलबलियों में से मिली है। इस्राएल के लोग ये बलि यहोवा को देते हैं। उन जानवरों के कुछ भाग को लोग खाते हैं किन्तु छाती और जाँघ तुम्हारा भाग है। [15]लोगों को अपने जानवरों की चर्बी आग में जलाई जाने वाली बलि के रूप में लानी चाहिए। उन्हें मेलबलि की जाँघ और उत्तोलन बलि की छाती भी लानी चाहिए। उसे यहोवा के सामने उत्तोलित करना होगा और यह बलि तुम्हारा भाग होगा। यह तुम्हारा और तुम्हारे बच्चों का होगा। यहोवा के आदेश के अनुसार बलि का वह भाग सदा तुम्हारा होगा।"

[16]मूसा ने पापबलि के बकरे के बारे में पूछा। किन्तु उसे पहले ही जला दिया गया था। मूसा हारून के शेष पुत्रों एलीआज़ार और ईतामार पर बहुत क्रोधित हुआ। मूसा ने कहा, [17]"तुम लोगों को यह बकरा पवित्र स्थान पर खाना था। यह बहुत पवित्र है! तुम लोगों ने इसे यहोवा के सामने क्यों नहीं खाया? यहोवा ने उसे तुम लोगों के अपराधों को दूर करने के लिए दिया। वह बकरा लोगों के पापों के भुगतान के लिए था। [18]देखो! तुम उस बकरे का खून पवित्र स्थान के भीतर नहीं लाए। तुम्हें इस बकरे को पवित्र स्थान पर खाना था जैसा कि मैंने आदेश दिया है।"

[19]किन्तु हारून ने मूसा से कहा, "सुनों, आज वे अपनी पापबलि और होमबलि यहोवा के सामने लाए। किन्तु तुम जानते हो कि आज मेरे साथ क्या हुआ! क्या तुम यह समझते हो कि यदि मैं पापबलि को आज खाऊँगा तो यहोवा प्रसन्न होगा? नहीं!"* [20]जब मूसा ने यह सुना तो वह सहमत हो गया।

माँस भोजन के नियम

11 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [2]"इस्राएल के लोगों से कहो: ये जानवर हैं जिन्हें तुम खा सकते हो: [3]यदि जानवर के खुर* दो भागों में बँटे हों और वह जानवर जुगाली* भी करता हो तो तुम उस जानवर का माँस खा सकते हो।

ऐसे जानवर जिनका माँस नहीं खाना चाहिए

[4-6]"कुछ जानवर जुगाली करते हैं, किन्तु उनके खुर फटे नहीं होते। तो ऐसे जानवरों को मत खाओ–ऊँट, शापान* और खरगोश वैसे हैं, इसलिए वे तुम्हारे लिए अपवित्र* हैं। [7]अन्य जानवर दो भागों में बँटी खुरों वाले हैं, किन्तु वे जुगाली नही करते। उन जानवरों को मत खाओ। सुअर वैसे ही हैं, अत: वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं। [8]उन जानवरों का माँस मत खाओ! उनके शव को छूना भी मत! वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं!

क्या ... नहीं हारून अपने दो पुत्रों की मृत्यु के कारण इतना अधिक परेशान था कि पापबलि को नहीं खा सका था।

खुर घोड़ों और गायों की तरह जानवरों के पैर का कठोर भाग।

जुगाली कुछ जानवर गाय की तरह एक से अधिक पेट वाले होते हैं। पहले पेट में भोजन निगल लिया जाता है और उसका कुछ अंश पचता है। बाद में वह भोजन जानवर के मुँह में लाया जाता है और पुन: चबाया जाता है। वह भोजन जुगाली है।

शापान अर्थात् रेकवेजर यह कृन्तक जाति का जीव है तथा यह मृतसागर में हरमोन की पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है। यह खरगोश के आकार का होता है। इसका चर्म पीले या भूरे रंग का होता है।

अपवित्र "अशुद्ध" इसका अर्थ है कि उस पशु को न तो खाया जा सकता है और न ही यहोवा को उसकी बलि दी जा सकती है।

समुद्री भोजन के नियम

[9]"यदि कोई जानवर समुद्र या नदी में रहता है और उसके पंख और परतें हैं तो तुम उस जानवर को खा सकते हो। [10-11]किन्तु यदि जानवर समुद्र या नदी में रहता है और उसके पंख और परतें नहीं होतीं तो उस जानवर को तुम्हें नहीं खाना चाहिए। वह गन्दे* जानवरों में से एक हैं। उस जानवर का माँस मत खाओ। उसके शव को छूना भी मत! [12]तुम्हें पानी के हर एक जानवर को, जिसके पंख और परतें नहीं होतीं, उसे घिनौने जानवरों में समझना चाहिए।

अभोज्य पक्षी

[13]"तुम्हें निम्न पक्षियों को भी घिनौने पक्षी समझना चाहिए। इन पक्षियों में से किसी को मत खाओ : उकाब, गिद्ध, शिकारी पक्षी, [14]चील, सभी प्रकार के बाज नामक पक्षी, [15]सभी प्रकार के काले पक्षी, [16]शुतुर्मुर्ग, सींग वाला उल्लू, समुद्री जलमुर्ग, सभी प्रकार के बाज, [17]उल्लू, समुद्री काग, बड़ा उल्लू, [18]जलमुर्ग, मछली खाने वाले पेलिकन नामक खेत जलपक्षी, समुद्री गिद्ध, [19]हंस, सभी प्रकार के सारस, कठफोड़वा और चमगादड़।

कीटपतंगों को खाने के नियम

[20]"और सभी ऐसे कीट पतंगे जिनके पंख होते हैं तथा जो रेंग कर चलते भी हैं। ये घिनौने कीट पतंगे हैं! [21]किन्तु यदि पतंगों के पंख हैं और वह रेंग कर चलता भी है तथा उसके पैरों के ऊपर टांगों में ऐसे जोड़ हैं कि वह उछल सके तो तुम उन पतंगों को खा सकते हो। [22]ये पतंगे हैं जिन्हें तुम खा सकते हो: हर प्रकार की टिड्डियाँ, हर प्रकार की सपंख टिड्डियाँ, हर प्रकार के झींगुर, हर प्रकार के टिड्डे।

[23]"किन्तु अन्य सभी वे कीट पतंगे जिनके पंख हैं और जो रेंग भी सकते हैं, तुम्हारे लिये घिनौने प्राणी हैं। [24]वे कीट पतंगे तुमको अशुद्ध करेंगे। कोई व्यक्ति जो मरे कीट पतंगे को छुएगा, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [25]यदि कोई मरे कीट पतंगों में से किसी को उठाता है तो उस व्यक्ति को अपने कपड़े धो लेने चाहिए। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

घिनौने जानवरों के विषय में अन्य नियम

[26-27]"कुछ जानवरों के खुर फटे होते हैं किन्तु खुर के ठीक-ठीक दो भाग नहीं होते। कुछ जानवर जुगाली नहीं करते। कुछ जानवरों के खुर नहीं होते, वे अपने पंजों* पर चलते हैं ऐसे सभी जानवर तुम्हारे लिए घिनौने हैं। कोई व्यक्ति, जो उन्हें छुयेगा अशुद्ध हो जाएगा। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [28]यदि कोई व्यक्ति उनके मरे शरीर को उठाता है तो उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। वे जानवर तुम्हारे लिए अशुद्ध है।

रेंगने वाले जानवरों के बारे में नियम

[29] "ये रेंगने वाले जानवर तुम्हारे लिए घिनौने हैं: छछून्दर, चूहा, सभी प्रकार के बड़े गिरगिट, [30]छिपकली, मगरमच्छ, गिरगिट, रेगिस्तानी गोहेर, और रंग बदलता गिरगिट। [31]ये रेंगने वाले जानवर तुम्हारे लिए घिनौने हैं। कोई व्यक्ति जो उन मरे हुओं को छुएगा सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

घिनौने जानवरों के बारे में नियम

[32]"यदि किसी घिनौने जानवरों में से कोई मरा हुआ जानवर किसी चीज़ पर गिरे तो वह चीज़ अशुद्ध हो जाएगी। यह लकड़ी, चमड़ा, कपड़ा, शोक वस्त्र या कोई भी औज़ार हो सकता है। जो कुछ भी वह हो उसे पानी से धोना चाहिए। यह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। तब यह फिर शुद्ध हो जाएगा। [33]यदि उन गन्दे जानवरों में से कोई मरा हुआ मिट्टी के कटोरे में गिरे तो कटोरे की कोई भी चीज़ अशुद्ध हो जाएगी। तुम्हें कटोरा अवश्य तोड़ देना चाहिए। [34]यदि अशुद्ध मिट्टी के कटोरे का पानी किसी भोजन पर पड़े तो भोजन अशुद्ध हो जाएगा। अपवित्र कटोरे में कोई भी दाखमधु अशुद्ध हो जाएगी। [35]यदि किसी मरे हुए घिनौने जानवर का कोई भाग किसी चीज़ पर आ पड़े तो वह चीज़ शुद्ध नहीं रहेगी।

गन्दे या "घृणित, नापसन्द, उबकाई उत्पन्न करने वाला या अत्यन्त अरूचिकर जानवर। ये ऐसे जानवर थे जिसके छूने या खाने के विषय में लोगों को सोचना तक नहीं चाहिए।

पंजें जानवरों के पैर। पंजों के तले में नाख़ून और नरम गद्दी होती है खुर की तरह कठोर भाग नहीं होता।

इसे टुकड़े–टुकड़े कर देना चाहिए। चाहे वह चूल्हा हो चाहे कड़ाही। वे तुम्हारे लिए सदा अशुद्ध रहेगी।

[36]“कोई सोता या कुआँ, जिसमें पानी रहता है, शुद्ध बना रहेगा किन्तु कोई व्यक्ति जो किसी मरे घिनौने जानवर को छुयेगा, अशुद्ध हो जाएगा। [37]यदि उन घिनौने मरे जानवरों का कोई भाग बोए जाने वाले बीज पर आ पड़े तो भी वह शुद्ध ही रहेगा। [38]किन्तु भिगोने के लिए यदि तुम कुछ बीजों पर पानी डालते हो और तब यदि मरे घिनौने जानवर का कोई भाग उन बीजों पर आ पड़े तो वे बीज तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।

[39]“और भी, यदि भोजन के लिए उपयुक्त कोई जानवर अपने आप मर जाए तो जो व्यक्ति उसके मरे शरीर को छुयेगा, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा [40]और उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए। जो उस मृत जानवर के शरीर का माँस खाए। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। जो व्यक्ति मरे जानवर के शरीर को उठाए उसे भी अपने वस्त्रों को धोना चाहिए। यह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

[41]“हर एक ऐसा जानवर जो धरती पर रेंगता है, वो उन जानवरों में से एक है, जिसे यहोवा ने खाने को मना किया है। [42]तुम्हें ऐसे किसी भी रेंगने वाले जानवर को नहीं खाना चाहिए जो पेट के बल रेंगता है या चारों पैरों पर चलता है, या जिसके बहुत से पैर हैं। ये तुम्हारे लिए घिनौने जानवर हैं! [43]उन घिनौने जानवरों से अपने को अशुद्ध मत बनाओ। तुम्हें उनके साथ अपने को अशुद्ध नहीं बनाना चाहिए! [44]क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ! मैं पवित्र हूँ इसलिए तुम्हें अपने को पवित्र रखना चाहिए! उन घिनौने रेंगने वाले जानवरों से अपने को घिनौना न बनाओ! [45]मैं तुम लोगों को मिस्र से लाया। मैंने यह इसलिए किया कि तुम लोग मेरे विशेष जन बने रह सको। मैंने यह इसलिए किया कि मैं तुम्हारा परमेश्वर बन सकूँ। मैं पवित्र हूँ, अत: तुम्हें भी पवित्र रहना है!”

[46]वे नियम सभी मवेशियों, पक्षियों और धरती के अन्य जानवरों के लिए हैं। वे नियम समुद्र में रहने वाले सभी जानवरों और धरती पर रेंगने वाले सभी जानवरों के लिए हैं। [47]वे उपदेश इसलिए हैं कि लोग शुद्ध जानवरों और घिनौने जानवरों में अन्तर कर सकें। इस प्रकार लोग जानेंगे कि कौन सा जानवर खाने योग्य है और कौन सा खाने योग्य नहीं है।

नयी माताओं के लिए नियम

12 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]“इस्राएल के लोगों से कहो: यदि कोई स्त्री एक लड़के को जन्म देती है तो वह स्त्री सात दिन तक अशुद्ध रहेगी। यह उसके रक्त–स्राव के मासिकधर्म के समय अशुद्ध होने की तरह होगा। [3]आठवें दिन लड़के का खतना होना चाहिए। [4]खून की हानि से उत्पन्न अशुद्धि से शुद्ध होने के तैंतीस दिन बाद तक यह होगा। उस स्त्री को वह कुछ नहीं छूना चाहिए जो पवित्र है। उसे पवित्र स्थान में तब तक नहीं जाना चाहिए जब तक उसके पवित्र होने का समय पूरा न हो जाए। [5]किन्तु यदि स्त्री लड़की को जन्म देती है तो माँ रक्त स्राव के मासिक धर्म के समय की तरह दो सप्ताह तक शुद्ध नहीं होगी। वह अपने खून की हानि के छियासठ दिन बाद शुद्ध हो जाती है।

[6]“नई माँ जिसने अभी लड़की या लड़के को जन्म दिया है, ऐसी माँ के शुद्ध होने का विशेष समय पूरा होने पर उसे मिलापवाले तम्बू में विशेष भेंटें लानी चाहिए। उसे उन भेंटों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक को देना चाहिए। उसे एक वर्ष का मेमना होमबलि के लिए और पापबलि के हेतु एक फ़ाख्ता या कबूतर का बच्चा लाना चाहिए। [7-8]यदि स्त्री मेमना लाने में असमर्थ हो तो वह दो फ़ाख्ते या दो कबूतर के बच्चे ला सकती है। एक पक्षी होमबलि के लिए होगा तथा एक पापबलि के लिये। याजक यहोवा के सामने उन्हें अर्पित करेगा। इस प्रकार वह उसके लिए उसके पापों का भुगतान करेगा। तब वह अपने खून की हानि की अशुद्धि से शुद्ध होगी। ये नियम उन स्त्रियों के लिए है जो एक लड़का या लड़की को जन्म देती हैं।”

गंभीर चर्मरोगों के बारे में नियम

13 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [2]“किसी व्यक्ति के चर्म पर कोई भयंकर सूजन हो सकती है, या खुजली अथवा सफेद दाग हो सकते हैं। यदि घाव चर्मरोग* की तरह दिखाई पड़े तो व्यक्ति को याजक हारून या उसके किसी एक याजक पुत्र के पास लाया जाना चाहिए। [3]याजकों को व्यक्ति के चर्म के घाव को

चर्मरोग शाब्दिक कोढ़, इसके लिए हिब्रू के मूलपाठ में जिस शब्द का प्रयोग किया गया है, वह बहुत प्रकार के भयानक चर्म रोगों का बोधक है।

देखना चाहिए। यदि घाव के बाल सफेद हो गए हों और घाव व्यक्ति के चर्म से अधिक गहरा मालूम हो तो यह भयंकर चर्म रोग है। जब याजक व्यक्ति की जाँच खत्म करे तो उसे घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है।

[4]"कभी-कभी किसी व्यक्ति के चर्म पर कोई सफेद दाग हो जाता है किन्तु दाग़ चर्म से गहरा नहीं मालूम होता। यदि वह सत्य हो तो याजक उस व्यक्ति को सात दिन के लिए अन्य लोगों से अलग करे। [5]सातवें दिन याजक को उस व्यक्ति की जाँच करनी चाहिए। यदि याजक देखे कि घाव में परिवर्तन नहीं हुआ है और वह चर्म पर और अधिक फैला नहीं है तो याजक को और सात दिन के लिए उसे अलग करना चाहिए। [6]सात दिन बाद याजक को उस व्यक्ति की फिर जाँच करनी चाहिए। यदि घाव सूख गया हो और चर्म पर फैला न हो, तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है। वह केवल एक खुरंड है। तब रोगी को अपने वस्त्र धोने चाहिए और फिर से शुद्ध होना चाहिए।

[7]"किन्तु यदि व्यक्ति ने याजक को फिर अपने आपको शुद्ध बनाने के लिए दिखा लिया हो और उसके बाद चर्मरोग त्वचा पर अधिक फैलने लगे तो उस व्यक्ति को फिर याजक के पास आना चाहिए। [8]याजक को जाँच करके देखना चाहिए। यदि घाव चर्म पर फैला हो तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह व्यक्ति अशुद्ध है अर्थात् उसे कोई भयानक चर्मरोग है।

[9]"यदि व्यक्ति को भयानक चर्मरोग हुआ हो तो उसे याजक के पास लाया जाना चाहिए। [10]याजक को उस व्यक्ति की जाँच करके देखना चाहिए। यदि चर्म पर सफ़ेद दाग़ हो और उसमे सूजन हो, उस स्थान के बाल सफ़ेद हों गए हो और यदि वहाँ घाव कच्चा हो [11]तो यह कोई भयानक चर्मरोग है जो उस व्यक्ति को बहुत समय से है। अत: याजक को उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित कर देना चाहिए। याजक उस व्यक्ति को केवल थोड़े से समय के लिए ही अन्य लोगों से अलग नहीं करेगा। क्यों? क्योंकि वह जानता है कि वह व्यक्ति अशुद्ध है।

[12]"यदि कभी चर्मरोग व्यक्ति के सारे शरीर पर फैल जाए, वह चर्मरोग उस व्यक्ति के चर्म को सिर से पाँव तक ढक ले, [13]और याजक देखे कि चर्मरोग पूरे शरीर को इस प्रकार ढके है कि उस व्यक्ति का पूरा शरीर ही सफेद हो गया है तो याजक को उसे शुद्ध घोषित कर देना चाहिए। [14]किन्तु यदि व्यक्ति का चर्म घाव जैसा कच्चा हो तो वह शुद्ध नहीं है। [15]जब याजक कच्चा चर्म देखे, तब उसे घोषित करना चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। कच्चा चर्म शुद्ध नहीं है। यह भयानक चर्मरोग है।

[16]"यदि चर्म फिर कच्चा पड़ जाये और सफेद हो जाये तो व्यक्ति को याजक के पास आना चाहिए। [17]याजक को उस व्यक्ति की जाँच करके देखना चाहिए। यदि रोग ग्रस्त अंग सफेद हो गया हो तो याजक को घोषित करना चाहिए कि वह व्यक्ति जिसे छूत रोग है, वह अंग शुद्ध है। सो वह व्यक्ति शुद्ध है।

[18]"हो सकता है कि शरीर के चर्म पर कोई फोड़ा हो। और फोड़ा ठीक हो जाय। [19]किन्तु फोड़े की जगह पर सफेद सूजन, या गहरी लाली लिए सफेद और चमकीला दाग रह जाय तब चर्म का यह स्थान याजक को दिखाना चाहिए। [20]याजक को उसे देखना चाहिए। यदि सूजन चर्म से गहरा है और इस पर के बाल सफेद हो गये हैं तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह व्यक्ति अशुद्ध है। वह दाग भयानक चर्मरोग है। यह फोड़े के भीतर से फूट पड़ा है। [21]किन्तु यदि याजक उस स्थान को देखता है और उस पर सफेद बाल नहीं हैं और दाग चर्म से गहरा नहीं है, बल्कि धुंधला है तो याजक को उस व्यक्ति को सात दिन के लिए अलग करना चाहिए। [22]यदि दाग का अधिक भाग चर्म पर फैलता है तब याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। यह छूत रोग है। [23]किन्तु यदि सफेद दाग अपनी जगह बना रहता है, फैलता नहीं तो वह पुराने फोड़े का केवल घाव है। याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है।

[24-25]"किसी व्यक्ति का चर्म जल सकता है। यदि कच्चा चर्म सफेद या लालीयुक्त दाग होता है तो याजक को इसे देखना चाहिए। यदि वह दाग चर्म से गहरा मालूम हो और उस स्थान के बाल सफेद हो तो यह भयंकर चर्म रोग है। जो जले में से फूट पड़ा है। तब याजक को उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित करना चाहिए। यह भयंकर चर्म रोग है। [26]किन्तु याजक यदि उस स्थान को देखता है और सफेद दाग में सफेद बाल नहीं है और दाग चर्म से गहरा नहीं है, बल्कि हल्का है तो याजक को उसे सात दिन के लिए ही अलग करना चाहिए। [27]सातवें दिन याजक को उस व्यक्ति को फिर देखना चाहिए। यदि दाग चर्म पर फैले तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि

व्यक्ति अशुद्ध है। यह भयंकर चर्म रोग है। [28]किन्तु यदि सफेद दाग चर्म पर न फैले, अपितु धुंधला हो तो यह जलने से पैदा हुई सूजन है। याजक को उस व्यक्ति को शुद्ध घोषित करना चाहिए। यह केवल जले का निशान है। [29]किसी व्यक्ति के सिर की खाल पर या दाढ़ी में कोई छूत रोग हो सकता है। [30]याजक को छूत के रोग को देखना चाहिए। यदि छूत का रोग चर्म से गहरा मालूम हो और इसके चारों ओर के बाल बारीक और पीले हों तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। यह बुरा चर्मरोग है। [31]यदि रोग चर्म से गहरा न मालूम हो, और इसमें कोई काला बाल न हो तो याजक को उसे सात दिन के लिए अलग कर देना चाहिए। [32]सातवें दिन याजक को छूत के रोगी को देखना चाहिए। यदि रोग फैला नहीं है या इसमें पीले बाल नहीं उग रहे है और रोग चर्म से गहरा नहीं है, [33]तो व्यक्ति को बाल काट लेने चाहिए। किन्तु उसे रोग वाले स्थान के बाल नहीं काटने चाहिए। याजक को उस व्यक्ति को और सात दिन के लिए अलग करना चाहिए। [34]सातवें दिन याजक को रोगी को देखना चाहिए। यदि रोग चर्म में नहीं फैला है और यह चर्म से गहरा नहीं मालूम होता है तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है। व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए तथा शुद्ध हो जाना चाहिए। [35]किन्तु यदि व्यक्ति के शुद्ध हो जाने के बाद चर्म में रोग फैलता है [36]तो याजक को फिर व्यक्ति को देखना चाहिए। यदि रोग चर्म में फैला है तो याजक को पीले बालों को देखने की आवश्यकता नहीं है, व्यक्ति अशुद्ध है। [37]किन्तु यदि याजक यह समझता है कि रोग का बढ़ना रुक गया है और इसमें काले बाल उग रहे हैं तो रोग अच्छा हो गया है। व्यक्ति शुद्ध है। याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है।

[38]"जब व्यक्ति के चर्म पर सफेद दाग हों, [39]तो याजक को उन दागों को देखना चाहिए। यदि व्यक्ति के चर्म के दाग धुंधले सफेद हैं, तो रोग केवल अहानिकारक फुंसियाँ है। वह व्यक्ति शुद्ध है।

[40]"किसी व्यक्ति के सिर के बाल झड़ सकते है। वह शुद्ध है। यह केवल गंजापन है। [41]किसी आदमी के सिर के माथे के बाल झड़ सकते हैं। वह शुद्ध है। यह दूसरे प्रकार का गंजापन है। [42]किन्तु यदि उसके सिर की चमड़ी पर लाल सफेद फुंसियाँ हैं तो यह भयानक चर्म रोग है। [43]याजक को ऐसे व्यक्ति को देखना चाहिए। यदि छूत ग्रस्त त्वचा की सूजन लाली युक्त सफेद है और कुष्ठ की तरह शरीर के अन्य भागों पर दिखाई पड़ रही है [44]तो उस व्यक्ति के सिर की चमड़ी पर भयानक चर्मरोग है। व्यक्ति अशुद्ध है, याजक को घोषणा करनी चाहिए।

[45]"यदि किसी व्यक्ति को भयानक चर्मरोग हो तो उस व्यक्ति को अन्य लोगों को सावधान करना चाहिए। उस व्यक्ति को जोर से 'अशुद्ध! अशुद्ध!' कहना चाहिए, उस व्यक्ति के वस्त्रों को, सिलाई से फाड़ देना चाहिए। उस व्यक्ति को अपने बालों को सँवारना नहीं चाहिए और उस व्यक्ति को अपना मुख ढकना चाहिए। [46]जो व्यक्ति अशुद्ध होगा उसमें छूत का रोग सदा रहेगा। वह व्यक्ति अशुद्ध है। उसे अकेले रहना चाहिए। उनका निवास डेरे से बाहर होना चाहिए।

[47-48]"कुछ वस्त्रों पर फफूँदी* लग सकती हैं। वस्त्र सन का या ऊनी हो सकता है। वस्त्र बुना हुआ या कढ़ा हुआ हो सकता है। फफूँदी किसी चमड़े या चमड़े से बनी किसी चीज पर हो सकती है। [49]यदि फफूँदी हरी या लाल हो तो उसे याजक को दिखाना चाहिए। [50]याजक को फफूँदी देखनी चाहिए। उसे उस चीज को सात दिन तक अलग स्थान पर रखना चाहिए। [51-52]सातवें दिन, याजक को फफूँदी देखनी चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि फफूँदी चमड़े या कपड़े पर है। यह महत्वपूर्ण नहीं कि वस्त्र बुना हुआ या कढ़ा हुआ है। यह महत्वपूर्ण नहीं कि चमड़े का उपयोग किस लिए किया गया था। यदि फफूँदी फैलती है तो वह कपड़ा या चमड़ा अशुद्ध है। वह फफूँदी अशुद्ध है। याजक को उस कपड़े या चमड़े को जला देना चाहिए।

[53]"यदि याजक देखे कि फफूँदी फैली नहीं तो वह कपड़ा या चमड़ा धोया जाना चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं कि यह चमड़ा है या कपड़ा, अथवा कपड़ा बुना हुआ है या कढ़ा हुआ, इसे धोना चाहिए। [54]याजक को लोगों को यह आदेश देना चाहिए कि वे चमड़े या कपड़े के टुकड़ों को धोएं, तब याजक वस्त्रों को और सात दिनों के लिए अलग करे। [55]उस समय के बाद याजक को फिर देखना चाहिए। यदि फफूँदी ठीक वैसी ही दिखाई देती है तो

फफूँदी एक प्रकार की काई जो गर्मी और नमी वाली जगहों के वस्त्रों, चमड़ों या लकड़ी में उग आती है। हिब्रू शब्द का अर्थ "कोढ़" या "भयानक चर्मरोग" भी है।

वह वस्तु अशुद्ध है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि छूत फैली नहीं है। तुम्हें उस कपड़े या चमड़े को जला देना चाहिए।

[56]"किन्तु यदि याजक उस चमड़े या कपड़े को देखता है कि फफूँदी मुरझा गई है तो याजक को चमड़े या कपड़े के फफूँदी युक्त दाग को चमड़े या कपड़े से फाड़ देना चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं कि कपड़ा कढ़ा हुआ है या बारीक बुना हुआ है। [57]किन्तु फफूँदी उस चमड़े या कपड़े पर लौट सकती है। यदि ऐसा होता है तो फफूँदी बढ़ रही है। उस चमड़े या कपड़े को जला देना चाहिए। [58]किन्तु यदि धोने के बाद फफूँदी न लौटे, तो वह चमड़ा या कपड़ा शुद्ध है। इसका कोई महत्व नहीं कि कपड़ा कढ़ा हुआ या बुना हुआ था। वह कपड़ा शुद्ध है।" [59]चमड़े या कपड़े पर की फफूँदी के विषय में ये नियम हैं। इसका कोई महत्व नहीं कि कपड़ा कढ़ा हुआ है या बुना हुआ है।

भयानक चर्म रोगी को शुद्ध करने के नियम

14 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"ये उन लोगों के लिए नियम हैं जिन्हें भयानक चर्म रोग था और जो स्वस्थ हो गए। ये नियम उस व्यक्ति को शुद्ध बनाने के लिए है।

"याजक को उस व्यक्ति को देखना चाहिए जिसे भयानक चर्म रोग है। [3]याजक को उस व्यक्ति के पास डेरे के बाहर जाना चाहिए। याजक को यह देखने का प्रयत्न करना चाहिए कि वह चर्म रोग अच्छा हो गया है। [4]यदि व्यक्ति स्वस्थ है तो याजक उसे यह करने को कहेगा: उसे दो जीवित शुद्ध पक्षी, एक देवदारू की लकड़ी, लाल कपड़े का एक टुकड़ा और एक जूफा* का पौधा लाना चाहिए। [5]याजक को बहते हुए पानी के ऊपर मिट्टी के एक कटोरे में एक पक्षी को मारने का आदेश देना चाहिए। [6]तब याजक दूसरे पक्षी को ले, जो अभी जीवित है और देवदारू की लकड़ी, लाल कपड़े के टुकड़े और जूफा का पौधा ले। याजक को जीवित पक्षी और अन्य चीज़ों को बहते हुए पानी के ऊपर मारे गए पक्षी के खून में डूबाना चाहिए। [7]याजक उस व्यक्ति पर सात बार खून छिड़केगा जिसे भयानक चर्म रोग है। तब याजक को घोषित करना चाहिए कि वह व्यक्ति शुद्ध है। तब याजक को खुले मैदान में जाना चाहिए और जीवित पक्षी को उड़ा देना चाहिए।

[8]"इसके बाद उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए। उसे अपने सारे बाल काट डालने चाहिए और पानी से नहाना चाहिए। वह शुद्ध हो जाएगा। तब वह व्यक्ति डेरे में जा सकेगा। किन्तु उसे अपने खेमे के बाहर सात दिन तक रहना चाहिए। [9]सातवें दिन उसे अपने सारे बाल काट डालने चाहिए। उसे अपने सिर, दाढ़ी, भौंहों के सभी बाल कटवा लेने चाहिए। तब उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और पानी से नहाना चाहिए। तब वह व्यक्ति शुद्ध होगा।

[10]"आठवें दिन उस व्यक्ति को दो नर मेमने लेने चाहिए जिनमें कोई दोष न हो। उसे एक वर्ष की एक मादा मेमना भी लेनी चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। उसे छ: क्वार्ट* तेल मिला उत्तम महीन आटा लेना चाहिए। यह आटा अन्नबलि के लिए है। व्यक्ति को दो तिहाई पिन्ट* जैतून का तेल लेना चाहिए। [11]याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह व्यक्ति शुद्ध है। याजक को उस व्यक्ति और उसकी बलि को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने लाना चाहिए। [12]याजक नर मेमनों में से एक को दोषबलि के रूप में चढ़ाएगा। वह उस मेमनों और उस तेल को यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के रूप में चढ़ाएगा। [13]तब याजक नर मेमने को उसी पवित्र स्थान पर मारेगा जहाँ वे पापबलि और होमबलि को मारते हैं। दोषबलि, पापबलि के समान है। यह याजक की है। यह अत्यन्त पवित्र है।

[14]"याजक दोषबलि का कुछ खून लेगा और फिर याजक इसमें से कुछ खून शुद्ध किये जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के निचले सिरे पर लगाएगा। याजक कुछ खून उस व्यक्ति के हाथ के दाएँ अंगूठे और दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। [15]याजक कुछ तेल भी लेगा और अपनी बाँयी हथेली पर डालेगा। [16]तब याजक अपने दाएँ हाथ की उँगलियाँ अपने बाएँ हाथ की हथेली में रखे हुये तेल में डुबाएगा। वह अपनी उँगली

जूफा अर्थात् कटिंजर का पौधा इसकी कोमल पत्तियों और शाखाओं का उपयोग शुद्धीकरण की प्रक्रियाओं में खून या पानी छिड़कने में किया जाता था।

छ: क्वार्ट 3/10 एपा।

दो तिहाई पिन्ट "एक लोज।"

का उपयोग कुछ तेल यहोवा के सामने सात बार छिड़कने के लिए करेगा। [17]याजक अपनी हथेली का कुछ तेल शुद्ध किये जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के निचले सिरे पर लगाएगा। याजक कुछ तेल उस व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। याजक कुछ तेल दोषबलि के खून पर लगाएगा।* [18]याजक अपनी हथेली में बचा हुआ तेल शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति के सिर पर लगाएगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पाप का यहोवा के सामने भुगतान करेगा।

[19]"उसके बाद याजक पापबलि चढ़ाएगा और व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा जिससे वह शुद्ध हो जाएगा। इसके पश्चात याजक होमबलि के लिए जानवर को मारेगा। [20]तब याजक होमबलि और अन्नबलि को वेदी पर चढ़ाएगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा और वह व्यक्ति शुद्ध हो जायेगा।

[21]"किन्तु यदि व्यक्ति गरीब है और उन बलियों को देने में असमर्थ है तो उसे एक मेमना दोषबलि के रूप में लेना चाहिए। यह उत्तोलनबलि होगी जिससे याजक उसके पापों के भुगतान के लिए देगा। उसे दो क्वार्ट* तेल मिला उत्तम महीन आटा लेना चाहिए। यह आटा अन्नबलि के रूप में उपयोग में आएगा। व्यक्ति को दो तिहाई पिन्ट जैतून का तेल [22]और दो फ़ाख्ते या दो कबूतर के बच्चे लेने चाहिए। इन चीज़ों को देने में गरीब लोग भी समर्थ होंगे। एक पक्षी पापबलि के लिए होगा और दूसरा होमबलि का होगा

[23]"आठवें दिन, वह व्यक्ति उन चीज़ों को याजक के पास मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाएगा। वे चीज़ें यहोवा के सामने बलि चढ़ाई जाएंगी जिससे व्यक्ति शुद्ध हो जाएगा। [24]याजक, दोषबलि के रूप में तेल और मेमने को लेगा तथा यहोवा के सामने उत्तोलनबलि के रूप में चढ़ाएगा। [25]तब याजक दोषबलि के मेमने को मारेगा। याजक दोषबलि का कुछ खून लेगा। याजक इसमें से कुछ खून शुद्ध बनाए जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के निचले सिरे पर लगाएगा। याजक इसमें से कुछ खून इस व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। [26]याजक इस तेल में से कुछ अपनी बायीं हथेली में भी डालेगा। [27]याजक अपने दाएँ हाथ की उँगली का उपयोग अपनी हथेली के तेल को यहोवा के सामने सात बार छिड़कने के लिए करेगा। [28]तब याजक अपनी हथेली के कुछ तेल को शुद्ध बनाए जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के सिरे पर लगाएगा। याजक इस तेल में से कुछ तेल व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और उसके दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। याजक दोषबलि के खून लगे स्थान पर इसमें से कुछ तेल लगाएगा। [29]याजक को अपनी हथेली के बचे हुये तेल को शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति के सिर पर डालना चाहिए। इस प्रकार यहोवा के सामने याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा।

[30]"तब व्यक्ति फ़ाख्तों में से एक या कबूतर के बच्चों में से एक की बलि चढ़ाएगा। गरीब लोग भी इन पक्षियों को भेंट करने में समर्थ होंगे। [31]व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के अनुसार बलि चढ़ानी चाहिए। उसे पक्षियों में से एक को पापबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए और दूसरे पक्षी को होमबलि के रूप में उसे उनको अन्नबलि के साथ भेंट चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार याजक यहोवा के सामने उस व्यक्ति के पाप का भुगतान करेगा और वह व्यक्ति शुद्ध हो जाएगा।"

[32]ये भयानक चर्मरोग के ठीक होने के बाद किसी एक व्यक्ति को शुद्ध करने के नियम हैं। ये नियम उन व्यक्तियों के लिए हैं जो शुद्ध होने के लिए सामान्य बलियों का व्यय नहीं उठा सकते।

घर में लगी फफूँदी के लिए नियम

[33]यहोवा ने मूसा और हारून से यह भी कहा, [34]"मैं तुम्हारे लोगों को कनान देश दे रहा हूँ। तुम्हारे लोग इस भूमि पर जाएंगे। उस समय मैं हो सकता है, कुछ लोगों के घरों में फफूँदी लगा दूँ। [35]तो उस घर के मालिक को याजक के पास आकर कहना चाहिए, 'मैंने अपने घर में फफूँदी जैसी कोई चीज़ देखी है।'

[36]"तब याजक को आदेश देना चाहिए कि घर को खाली कर दिया जाय। लोगों को याजक के फफूँदी देखने जाने से पहले ही यह करना चाहिए। इस तरह घर की सभी चीज़ों को याजक को अशुद्ध नहीं कहना पड़ेगा। लोगों द्वारा घर खाली कर दिए जाने पर याजक घर में देखने जाएगा। [37]याजक फफूँदी को देखेगा।

याजक ... लगाएगा अर्थात् तेल उस खून के ऊपर लगाया जाता है जो व्यक्ति के कान, अंगूठे और पैर के अंगूठे पर लगा था।

दो क्वार्ट "1/10 एपा।"

यदि फफूँदी ने घर की दीवारों पर हरे या लाल रंग के चकत्ते बना दिए हैं और फफूँदी दीवार की सतह पर बढ़ रही है, [38]तो याजक को घर से बाहर निकल आना चाहिए और सात दिन तक घर बन्द कर देना चाहिए।

[39]"सातवें दिन, याजक को वहाँ लौटना चाहिए और घर की जाँच करनी चाहिए। यदि घर की दीवारों पर फफूँदी फैल गई हो [40]तो याजक को लोगों को आदेश देना चाहिए कि वे फफूँदी सहित पत्थरों को उखाड़ें और उन्हें दूर फेंक दें। उन्हें उन पत्थरों को नगर से बाहर विशेष अशुद्ध स्थान पर फेंकना चाहिए। [41]तब याजक को पूरे घर को अन्दर से खुरचवा डालना चाहिए। लोगों को उस लेप* को जिसे उन्होंने खुरचा है, फेंक देना चाहिए। उन्हें उस लेप को नगर के बाहर विशेष अशुद्ध स्थान पर डालना चाहिए। [42]तब उस व्यक्ति को नए पत्थर दीवारों में लगाने चाहिए और उसे उन दीवारों को नए लेप से ढक देना चाहिए।

[43]"सम्भव है कोई व्यक्ति पुराने पत्थरों और लेप को निकाल कर नये पत्थरों और लेप को लगाए और सम्भव है वह फफूँदी उस घर में फिर प्रकट हो। [44]तब याजक को आकर उस घर की जाँच करनी चाहिए। यदि फफूँदी घर में फैल गई है तो यह रोग है जो दूसरी जगहों में जल्दी से फैलता है। अत: घर अशुद्ध है। [45]उस व्यक्ति को वह घर गिरा देना चाहिए। उन्हें सारे पत्थर, लेप तथा अन्य लकड़ी के टुकड़ों को नगर से बाहर अशुद्ध स्थान पर ले जाना चाहिए [46]और कोई व्यक्ति जो उसमें जाता है, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [47]यदि कोई व्यक्ति उसमें भोजन करता है या उसमें सोता है तो उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए।

[48]"घर में नये पत्थर और लेप लगाने के बाद याजक को घर की जाँच करनी चाहिए। यदि फफूँदी घर में नहीं फैली है तो याजक घोषणा करेगा कि घर शुद्ध है। क्यों? क्योंकि फफूँदी समाप्त हो गई है!

[49]"तब, घर को शुद्ध करने के लिए याजक को दो पक्षी, एक देवदारू की लकड़ी, एक लाल कपड़े का टुकड़ा और जूफा का पौधा लेना चाहिए। [50]याजक बहते पानी के ऊपर मिट्टी के कटोरे में एक पक्षी को मारेगा। [51]तब याजक देवदारू की लकड़ी, जूफा का पौधा, लाल कपड़े का टुकड़ा और जीवित पक्षी को लेगा। याजक बहते जल के ऊपर मारे गए पक्षी के खून में उन चीज़ों को डुबाएगा। तब याजक उस खून को उस घर पर सात बार छिड़केगा। [52]इस प्रकार याजक उन चीज़ों का उपयोग घर को शुद्ध करने के लिए करेगा। [53]याजक खुले मैदान में नगर के बाहर जाएगा और पक्षी को उड़ा देगा। इस प्रकार याजक घर को शुद्ध करेगा। घर शुद्ध हो जाएगा।"

[54]वे नियम भयानक चर्मरोग के, [55]घर या कपड़े के टुकड़ों पर की फफूँदी के बारे में है। [56]वे नियम सूजन, फुंसियों या चर्मरोग पर सफेद दाग से सम्बन्धित हैं।[57]वे नियम सिखाते हैं कि चीज़े कब अशुद्ध हैं तथा कब शुद्ध हैं। वे नियम उस प्रकार की बिमारियों से सम्बन्धित हैं।

शरीर से बहने वाले स्रावों के नियम

15 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [2]"इस्राएल के लोगों से कहो: जब किसी व्यक्ति के शरीर से धात का स्राव* होता है तब वह व्यक्ति अशुद्ध होता है। [3]वह धात शरीर से खुला बहता है या शरीर उसे बहने से रोक देता है इसका कोई महत्व नहीं।

[4]"यदि धात त्याग करने वाला बिस्तर पर सोया रहता है तो वह बिस्तर अशुद्ध हो जाता है। जिस चीज़ पर भी वह बैठता है वह अशुद्ध हो जाती है। [5]यदि कोई व्यक्ति उसके बिस्तर को छूता भी है तो उसे अपने वस्त्रों को धोना और पानी से नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [6]यदि कोई व्यक्ति उस चीज पर बैठता है जिस पर धात त्याग करने वाला व्यक्ति बैठा हो तो उसे अपने वस्त्र धोना और बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [7]यदि कोई व्यक्ति उस व्यक्ति को छूता है जिसने धात त्याग किया है तो उसे अपने वस्त्रों को धोना चाहिए तथा बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

[8]"यदि धात त्याग करने वाला व्यक्ति किसी शुद्ध व्यक्ति पर थूकता है तो शुद्ध व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए तथा नहाना चाहिए। यह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [9]पशु पर बैठने की कोई काठी

लेप एक प्रकार का गारा सीमेन्ट जिसे लोग दीवार को ढकने और चिकना बनाने के लिए उपयोग में लाते हैं।

स्राव कोई द्रव जो व्यक्ति के शरीर से बाहर आता है। हिब्रू शब्द का अर्थ घाव से निकलने वाला पीप हो सकता है, किन्तु यह पुरुष का वीर्य और स्त्री का मासिकधर्म भी हो सकता है।

जिस पर धात त्याग करने वाला व्यक्ति बैठा हो तो वह अशुद्ध हो जाएगी। [10]इसलिए कोई व्यक्ति जो धात त्याग करने वाले व्यक्ति के नीचे रहने वाली किसी चीज़ को छूता है, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। जो व्यक्ति धात त्याग करने वाले व्यक्ति के नीचे की चीज़ें ले जाता है उसे अपने वस्त्रों को धोना चाहिए तथा बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

[11]"यह सम्भव है कि धात त्याग करने वाला व्यक्ति पानी में हाथ धोए बिना किसी अन्य व्यक्ति को छूए। तब दूसरा व्यक्ति अपने वस्त्रों को धोए और बहते पानी में नहाए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

[12]"धात त्याग करने वाला व्यक्ति यदि मिट्टी का कटोरा छूए तो वह कटोरा फोड़ देना चाहिए। यदि धात त्याग करने वाला व्यक्ति कोई लकड़ी का कटोरा छूए तो उस कटोरे को बहते पानी में अच्छी तरह धोना चाहिए।

[13]"जब धात त्याग करने वाला कोई व्यक्ति अपने धात त्याग से शुद्ध किया जाता है तो उसे अपनी शुद्धि के लिए उस दिन से सात दिन गिनने चाहिए। तब उसे अपने वस्त्र धोने चाहिए और बहते पानी में नहाना चाहिए। वह शुद्ध हो जाएगा। [14]आठवें दिन उस व्यक्ति को दो फ़ाख्ते या दो कबूतर के बच्चे लेने चाहिए। उसे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने आना चाहिए। वह व्यक्ति दो पक्षी याजक को देगा। [15]याजक पक्षियों की बलि चढ़ाएगा। एक को पापबलि के लिए तथा दूसरे को होमबलि के लिये। इस प्रकार याजक इस व्यक्ति को यहोवा के सामने उस के धात त्याग से हुई अशुद्धता से शुद्ध करेगा।

पुरुषों के लिये नियम

[16]"यदि व्यक्ति का वीर्य निकल जाता है तो उसे सम्पूर्ण शरीर से बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [17]यदि वीर्य किसी वस्त्र या चमड़े पर गिरे तो वह वस्त्र या चमड़ा पानी में धोना चाहिए। यह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [18]यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के साथ सोता है और वीर्य निकलता है तो स्त्री पुरुष दोनों को बहते पानी में नहाना चाहिए। वे सन्ध्या तक अशुद्ध रहेंगे।

स्त्रियों के लिये नियम

[19]"यदि कोई स्त्री मासिक रक्त स्राव के समय मासिकधर्म से है तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी। यदि कोई व्यक्ति उसे छूता है तो वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [20]अपने मासिकधर्म के समय स्त्री जिस किसी चीज़ पर लेटेगी, वह भी अशुद्ध होगी और उस समय में जिस चीज़ पर वह बैठेगी, वह भी अशुद्ध होगी। [21]यदि कोई व्यक्ति उस स्त्री के बिस्तर को छूता है तो उसे अपने वस्त्रों को बहते पानी में धोना और नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [22]यदि कोई व्यक्ति उस चीज़ को छूता है जिस पर वह स्त्री बैठी हो तो उस व्यक्ति को अपने वस्त्र बहते पानी में धोने चाहिए और नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [23]वह व्यक्ति स्त्री के बिस्तर को छूता है या उस चीज़ को छूता है जिस पर वह बैठी हो, तो वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

[24]"यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के साथ मासिक धर्म के समय यौन सम्बन्ध करता है तो वह व्यक्ति सात दिन तक अशुद्ध रहेगा। हर एक बिस्तर जिस पर वह सोता है, अशुद्ध होगा।

[25]"यदि किसी स्त्री को कई दिन तक रक्त स्राव रहता है जो उसके मासिकधर्म के समय नहीं होता, या निश्चित समय के बाद मासिकधर्म होता है तो वह उसी प्रकार अशुद्ध होगी जिस प्रकार मासिकधर्म के समय और तब तक अशुद्ध रहेगी जब तक रहेगा। [26]पूरे रक्त स्राव के समय वह स्त्री जिस बिस्तर पर लेटेगी, वह वैसा ही होगा जैसा मासिकधर्म के समय। जिस किसी चीज़ पर वह स्त्री बैठेगी, वह वैसे ही अशुद्ध होगी जैसे वह मासिकधर्म से अशुद्ध होती है। [27]यदि कोई व्यक्ति उन चीज़ों को छूता है तो वह अशुद्ध होगा। इस व्यक्ति को बहते पानी से अपने कपड़े धोने चाहिए तथा नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [28]उसके बाद जब स्त्री अपने मासिकधर्म से अशुद्ध हो जाती है तब से उसे सात दिन गिनने चाहिए। इसके बाद वह शुद्ध होगी। [29]फिर आठवें दिन उसे दो फ़ाख्ते और दो कबूतर के बच्चे लेने चाहिए। उसे उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास लाना चाहिए। [30]तब याजक को एक पक्षी पापबलि के रूप में तथा दूसरे को होमबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार वह याजक उसे यहोवा के सामने उसके स्राव से उत्पन्न अशुद्धि से शुद्ध करेगा।

[31]"इसलिए तुम इस्राएल के लोगों को अशुद्ध होने और उनको अशुद्धि से दूर रहने के बारे में सावधान

करना। यदि तुम लोगों को सावधान नहीं करते तो वे मेरे पवित्र तम्बू को अशुद्ध कर सकते हैं और तब उन्हें मरना होगा!"

[32]ये नियम धात त्याग करने वाले लोगों के लिए हैं। ये नियम उन व्यक्तियों के लिए हैं जो वीर्य के शरीर से बाहर निकलने से अशुद्ध होते हैं [33]और ये नियम उन स्त्रियों के लिए हैं जो अपने मासिकधर्म के रक्त स्राव के समय अशुद्ध होती हैं और वे नियम उन पुरुषों के लिए हैं जो अशुद्ध स्त्रियों के साथ सोने से अशुद्ध होते हैं।

पाप से निस्तार का दिन

16 हारून के दो पुत्र यहोवा को सुगन्ध भेंट चढ़ाते समय मर गए थे।* फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"अपने भाई हारून से बात करो कि वह जब चाहे तब पर्दे के पीछे महापवित्र स्थान में नहीं जा सकता है। उस पर्दे के पीछे जो कमरा है उसमें पवित्र सन्दूक रखा है। उस पवित्र सन्दूक के ऊपर उसका विशेष ढक्कन लगा है। उस विशेष ढक्कन के ऊपर एक बादल में मैं प्रकट होता हूँ। यदि हारून उस कमरे में जाता है तो वह मर जायेगा!

[3]"पाप से निस्तार के दिन पवित्र स्थान में जाने के पहले हारून को पापबलि के रूप में एक बछड़ा और होमबलि के लिए एक मेढ़ा भेंट करना चाहिए। [4]हारून अपने पूरे शरीर को पानी डालकर धोएगा। तब हारून इन वस्त्रों को पहनेगा: हारून पवित्र सन के वस्त्र पहनेगा। सन के निचले वस्त्र शरीर से सटे होगें। उसकी पेटी सन का पटुका होगी। हारून सन की पगड़ी बांधेगा। ये पवित्र वस्त्र है।

[5]"हारून को इस्राएल के लोगों से दो बकरे पापबलि के रूप में और एक मेढ़ा होमबलि के लिए लेना चाहिए। [6]तब हारून बैल की पापबलि चढ़ाएगा। यह पापबलि उसके अपने लिए और उसके परिवार के लिए है। तब हारून वह उपासना करेगा जिसमें वह और उसका परिवार शुद्ध होंगे।

[7]"इसके बाद हारून दो बकरे लेगा और मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने लाएगा। [8]हारून दोनों बकरों के लिए चिठ्ठी डालेगा। एक चिठ्ठी यहोवा के लिए होगी। दूसरी चिठ्ठी अजाजेल* के लिए होगी। [9]"तब हारून चिठ्ठी डालकर यहोवा के लिए चुने गए बकरे की भेंट चढ़ाएगा। हारून को इस बकरे को पापबलि के लिये चढ़ाना चाहिए। [10]किन्तु चिठ्ठी डालकर अजाजेल के लिए चुना गया बकरा यहोवा के सामने जीवित लाया जाना चाहिए। याजक उसे शुद्ध बनाने के लिये उपासना करेगा। तब यह बकरा मरुभूमि में अजाजेल के पास भेजा जाएगा।

[11]"तब हारून अपने लिए बैल को पापबलि के रूप में चढ़ाएगा। हारून अपने आप को और अपने परिवार को शुद्ध करेगा। हारून बैल को अपने लिए पापबलि के रूप में मारेगा। [12]तब उसे आग के लिए एक तसला* वेदी के अंगारों से भरा हुआ यहोवा के सामने लाना चाहिए। हारून दो मुट्ठी वह मधुर सुगन्धित धूप लेगा जो बारीक पीसी गई है। हारून को पर्दे के पीछे कमरे में उस सुगन्धि को लाना चाहिए। [13]हारून को यहोवा के सामने सुगन्धि को आग में डालना चाहिए। तब सुगन्धित धूप के धुएँ का बादल साक्षीपत्र के ऊपर के विशेष ढक्कन* को ढक लेगा। इस प्रकार हारून नहीं मरेगा। [14]साथ ही साथ हारून को बैल का कुछ खून लेना चाहिए और उसे अपनी उँगली से उस विशेष ढक्कन के पूर्व की ओर छिड़कना चाहिए। इस के सामने वह अपनी उँगली से सात बार खून छिड़केगा।

[15]"तब हारून को लोगों के लिए पापबलि स्वरूप बकरे को मारना चाहिए। हारून को बकरे का खून पर्दे के पीछे कमरे में लाना चाहिए। हारून को बकरे के खून से वैसा ही करना चाहिए जैसा बैल के खून से उसने किया। हारून को उस ढक्कन पर और ढक्कन के सामने बकरे का खून छिड़कना चाहिए। [16]ऐसा अनेक बार हुआ जब इस्राएल के लोग अशुद्ध हुए। इसलिए हारून इस्राएल के लोगों के अपराध और पाप से महापवित्र

हारून के दो पुत्र ... थे देखें लैव्यव्यवस्था 10:1–2

अजाजेल या "बलि का बकरा" इस शब्द का अर्थ या इस नाम का अर्थ ज्ञात नहीं है। किन्तु इसका अभिप्राय: यह प्रतीत होता है कि यह बकरा लोगों को पापों से निस्तार का बकरा है।

तसला बेलचे की तरह का एक उपकरण। यह उपकरण वेदी से राख ले जाने के लिए था।

विशेष ढक्कन इसे दया की पीठ भी कहा गया है। यहाँ प्रयुक्त हिब्रु शब्द का अर्थ ढक्कन, ढकना अथवा वह स्थान हो सकता है जहाँ पाप क्षमा किये जाते हैं।

स्थान को शुद्ध करने के लिए उपासना करेगा। हारून को ये काम क्यों करना चाहिए? क्योंकि मिलापवाला तम्बू अशुद्ध लोगों के बीच में स्थित है।[17]जिस समय हारून महापवित्र स्थान को शुद्ध करे, उस समय कोई व्यक्ति मिलापवाले तम्बू में नहीं होना चाहिए। किसी व्यक्ति को उसके भीतर तब तक नहीं जाना चाहिए जब तक हारून बाहर न आ जाय। इस प्रकार, हारून अपने को और अपने परिवार को शुद्ध करेगा और तब इस्राएल के सभी लोगों को शुद्ध करेगा। [18]तब हारून उस वेदी पर जाएगा जो यहोवा के सामने है। हारून वेदी को शुद्ध करेगा। हारून बैल का कुछ खून और कुछ बकरे का खून लेकर वेदी के कोनों पर चारों ओर लगाएगा। [19]तब हारून कुछ खून अपनी उँगली से वेदी पर सात बार छिड़केगा। इस प्रकार हारून इस्राएल के लोगों के सभी पापों से वेदी को शुद्ध और पवित्र करेगा।

[20]"हारून महापवित्र स्थान, मिलापवाले तम्बू तथा वेदी को पवित्र बनाएगा। इन कामों के बाद हारून यहोवा के पास बकरे को जीवित लाएगा। [21]हारून अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे के सिर पर रखेगा। तब हारून बकरे के ऊपर इस्राएल के लोगों के अपराध और पाप को कबूल करेगा। इस प्रकार हारून लोगों के पापों को बकरे के सिर पर डालेगा। तब वह बकरे को दूर मरुभूमि में भेजेगा। एक व्यक्ति बगल में बकरे को ले जाने के लिए खड़ा रहेगा। [22]इस प्रकार बकरा सभी लोगों के पाप अपने ऊपर सूनी मरुभूमि में ले जाएगा। जो व्यक्ति बकरे को ले जाएगा वह मरुभूमि में उसे खुला छोड़ देगा।

[23]"तब हारून मिलापवाले तम्बू में जाएगा। वह सन के उन वस्त्रों को उतारेगा जिन्हें उसने महापवित्र स्थान में जाते समय पहना था। उसे उन वस्त्रों को वहीं छोड़ना चाहिए। [24]वह अपने पूरे शरीर को पवित्र स्थान में पानी डालकर धोएगा। तब वह अपने अन्य विशेष वस्त्रों को पहनेगा। वह बाहर आएगा और अपने लिये होमबलि और लोगों के लिये होमबलि चढ़ाएगा। वह अपने को तथा लोगों को पापों से मुक्त करेगा। [25]तब वह वेदी पर पापबलि की चर्बी को जलाएगा।

[26]"जो व्यक्ति बकरे को अजाजेल के पास ले जाए, उसे अपने वस्त्र तथा अपने पूरे शरीर को पानी डालकर धोना चाहिए। उसके बाद वह व्यक्ति डेरे में आ सकता है।

[27]"पापबलि के बैल और बकरे को डेरे के बाहर ले जाना चाहिए। उन जानवरों का खून पवित्र स्थान में पवित्र चीज़ों को शुद्ध करने के लिए लाया गया था। याजक उन जानवरों का चमड़ा, शरीर और शरीर मल आग में जलाएगा। [28]तब उन चीज़ों को जलाने वाले व्यक्ति को अपने वस्त्र और पूरे शरीर को पानी डालकर धोना चाहिए। उसके बाद वह व्यक्ति डेरे में आ सकता है।

[29] "यह नियम तुम्हारे लिए सदैव रहेगा: सातवें महीने के दसवें दिन तुम्हें उपवास करना चाहिए। तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। तुम्हारे साथ रहने वाले यात्री या विदेशी भी कोई काम नहीं कर सकेंगे। [30]क्यों? क्योंकि इस दिन याजक तुम्हें शुद्ध करता है और तुम्हारे पापों को धोता है। तब तुम यहोवा के लिए शुद्ध होंगे। [31]यह दिन तुम्हारे लिए आराम करने का विशेष दिन है। तुम्हें इस दिन उपवास करना चाहिए। यह नियम सदैव के लिए होगा।

[32]"सो वह पुरुष जो महायाजक बनने के लिए अभिषिक्त है, वस्तुओं को शुद्ध करने की उपासना को सम्पन्न करेगा। यह वही पुरुष है जिसे उसके पिता की मृत्यु के बाद महायाजक के रूप में सेवा के लिए नियुक्त किया गया है। उस याजक को सन के पवित्र वस्त्र धारण करने चाहिए। [33]उसे पवित्र स्थान, मिलापवाले तम्बू और वेदी को शुद्ध करना चाहिए और उसे याजक और इस्राएल के सभी लोगों को शुद्ध करना चाहिए। [34]इस्राएल के लोगों को शुद्ध करने का यह नियम सदैव रहेगा। इस्राएल के लोगों के पाप के निस्तार के लिए तुम उन क्रियाओं को वर्ष में एक बार करोगे।"

इसलिए उन्होंने वही किया जो यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

जानवरों को मारने और खाने के नियम

17 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"हारून, उसके पुत्रों और इस्राएल के सभी लोगों से कहो। उनको कहो कि यहोवा ने यह आदेश दिया है: [3]कोई इस्राएली व्यक्ति किसी बैल या मेमने या बकरे को डेरे में या डेरे के बाहर मार सकता है। [4]वह व्यक्ति उस जानवर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाएगा। उसे उस जानवर का एक भाग यहोवा को भेंट के रूप में देना चाहिए। उस व्यक्ति ने खून बहाया है, मारा है इसलिए उसे यहोवा

के पवित्र तम्बू में भेंट ले जानी चाहिए। यदि वह जानवर के भाग को भेंट के रूप में यहोवा को नहीं ले जाता तो उसे अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए। [5]यह नियम इसलिए है कि लोग मेलबलि यहोवा को अर्पित करें। इस्राएल के लोगों को उन जानवरों को लाना चाहिए जिन्हें वे मैदानों में मारते हैं। उन्हें उन जानवरों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाना चाहिए। उन्हें उन जानवरों को याजक के पास लाना चाहिए। [6]तब याजक उन जानवरों का खून मिलापवाले तम्बू के द्वार के समीप यहोवा की वेदी तक फेंकेगा और याजक उन जानवरों की चर्बी को वेदी पर जलाएगा। यह यहोवा के लिए मधुर सुगन्ध होगी। [7]उन्हें आगे अब कोई भी भेंट 'बकरे की मूर्तियों' को नहीं चढ़ानी चाहिए। ये लोग उन अन्य देवताओं के पीछे लग चुके हैं। इस प्रकार उन्होंने वेश्याओं जैसा काम किया है। ये नियम सदैव ही रहेंगे!

[8]"लोगों से कहो: इस्राएल का कोई नागरिक, या कोई यात्री, या कोई विदेशी जो तुम लोगों के बीच रहता है, होमबलि या बलि चढ़ा सकता है। [9]उस व्यक्ति को वह बलि मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले जानी चाहिए और उसे यहोवा को चढ़ानी चाहिए। यदि वह व्यक्ति ऐसा नहीं करता तो उसे अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए।

[10]"मैं (परमेश्वर) हर ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा जो खून खाता है। चाहे वह इस्राएल का नागरिक हो या वह तुम्हारे बीच रहने वाला कोई विदेशी हो। मैं उसे उसके लोगों से अलग करूँगा। [11]क्यों? क्योंकि प्राणी का जीवन खून में है। मैंने तुम्हें उस खून को वेदी पर डालने का नियम दिया है। तुम्हें अपने को शुद्ध करने के लिए यह करना चाहिए। तुम्हें वह खून उस जीवन के बदले में मुझे देना होगा जो तुम लेते हो। [12]इसलिए मैं इस्राएल के लोगों से कहता हूँ: तुममें से कोई खून नहीं खा सकता और न ही तुम्हारे बीच रहने वाला कोई विदेशी खून खा सकता है।

[13]"यदि कोई व्यक्ति किसी जंगली जानवर या पक्षी को पकड़ता है जिसे खाया जा सके तो उस व्यक्ति को खून जमीन पर बहा देना चाहिए और मिट्टी से उसे ढक देना चाहिए। चाहे वह व्यक्ति इस्राएल का नागरिक हो या तुम्हारे बीच रहनेवाला विदेशी। [14]तुम्हें यह क्यों करना चाहिए? क्योंकि यदि खून तब भी माँस में है तो उस जानवर का प्राण भी माँस में है। इसलिए मैं इस्राएल के लोगों को आदेश देता हूँ: उस माँस को मत खाओ जिसमें खून हो! कोई भी व्यक्ति जो खून खाता है अपने लोगों से अलग कर दिया जाए।

[15]"यदि कोई व्यक्ति अपने आप मरे जानवर या किसी दूसरे जानवर द्वारा मारे गए जानवर को खाता है तो वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। उस व्यक्ति को अपने वस्त्र और अपना पूरा शरीर पानी से धोना चाहिए। चाहे वह व्यक्ति इस्राएल का नागरिक हो या तुम्हारे बीच रहने वाला कोई विदेशी। [16]यदि वह व्यक्ति अपने वस्त्रों को नहीं धोता और न ही नहाता है तो वह पाप करने का अपराधी होगा।"

यौन सम्बन्धों के बारे में नियम

18 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएल के लोगों से कहो : मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। [3]यहाँ आने के पहले तुम लोग मिस्र में थे। तुम्हें वह नहीं करना चाहिए जो वहाँ हुआ करता था! मैं तुम लोगों को कनान ले जा रहा हूँ। तुम लोगों को वह नहीं करना है जो उस देश में किया जाता है! [4]तुम्हें मेरे नियमों का पालन करना चाहिए और मेरे नियमों के अनुसार चलना चाहिए। उन नियमों के पालन में सावधान रहो! क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

[5]इसलिए तुम्हें मेरे नियमों और निर्णयों का पालन करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति मेरे विधियों और नियमों का पालन करता है तो वह जीवित रहेगा! मैं यहोवा हूँ!

[6]"तुम्हें अपने निकट सम्बन्धियों से कभी यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए! मैं यहोवा हूँ!

[7]"तुम्हें अपने पिता का अपमान नहीं करना चाहिए अर्थात् तुम्हें अपनी माता के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

[8]तुम्हें अपनी विमाता से भी यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। पिता की पत्नी से यौन सम्बन्ध केवल तुम्हारे पिता के लिए है।

[9]"तुम्हें अपने पिता या माँ की पुत्री अर्थात् अपनी बहन से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। इससे अन्तर नहीं पड़ता कि तुम्हारी उस बहन का पालन पोषण तुम्हारे घर हुआ या किसी अन्य जगह।

[10]"तुम्हें अपने नाती पोतियों से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। वे बच्चे तुम्हारे अंग हैं!*

[11]"यदि तुम्हारे पिता और उनकी पत्नी की कोई पुत्री है* तो वह तुम्हारी बहन है। तुम्हें उसके साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

[12]"अपने पिता की बहन के साथ तुम्हारा यौन सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। वह तुम्हारे पिता के गोत्र की है। [13]तुम्हें अपनी माँ की बहन के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। वह तुम्हारी माँ के गोत्र की है।

[14]तुम्हें अपने पिता के भाई का अपमान नहीं करना चाहिये अर्थात् उसकी पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध के लिए नहीं जाना चाहिए।

[15]"तुम्हें अपनी पुत्रवधू के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। वह तुम्हारे पुत्र की पत्नी है। तुम्हें उसके साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

[16]"तुम्हें अपने भाई की वधू के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिये। यह अपने भाई के साथ यौन सम्बन्ध रखने जैसा होगा। केवल तुम्हारा भाई अपनी पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध रख सकता है।*

[17]"तुम्हें किसी स्त्री और उसकी पुत्री के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए और तुम्हें इस स्त्री की पोती से यौन सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए। इससे अन्तर नहीं पड़ता कि वह पोती उस स्त्री के पुत्र की या पुत्री की बेटी है। उसकी पोतियाँ उसके गोत्र की हैं। उनके साथ यौन सम्बन्ध करना अनुचित है।

[18]"जब तक तुम्हारी पत्नी जीवित है, तुम्हें उसकी बहन को दूसरी पत्नी नहीं बनाना चाहिए। यह बहनों को परस्पर शत्रु बना देगा। तुम्हें अपनी पत्नी की बहन से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

[19]"तुम्हें किसी स्त्री के पास उसके मासिकधर्म के समय यौन सम्बन्ध के लिए नही जाना चाहिए। वह इस समय अशुद्ध है।

[20]"तुम्हें अपने पड़ोसी की पत्नी से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यह तुम्हें केवल अशुद्ध* बनाएगा!

[21]"तुम्हें अपने किसी बच्चे को आग द्वारा मोलेक* को भेंट नहीं चढ़ाना चाहिए। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम यही दिखाते हो कि तुम अपने यहोवा के नाम का सम्मान नहीं करते! मैं यहोवा हूँ।

[22]"तुम्हें किसी पुरुष के साथ वैसा ही यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए जैसा किसी स्त्री के साथ किया जाता है। यह भयंकर पाप है!

[23] "किसी जानवर के साथ तुम्हारा यौन सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। यह केवल तुम्हें घिनौना बना देगा! स्त्री को भी किसी जानवर के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यह प्रकृति के विरुद्ध है!

[24]"इन अनुचित कामों में से किसी से अपने को अशुद्ध न करो! मैं उन जातियों को उनके देश से बाहर कर रहा हूँ और मैं उनकी धरती तुम को दे रहा हूँ! क्यों? क्योंकि वे लोग वैसे भयंकर पाप करते हैं! [25]इसलिए वह देश अशुद्ध हो गया है! वह देश अब उन कामों से ऊब गया है और वह देश उसमें रहने वालों को बाहर निकाल फेंक रहा है!*

[26]"इसलिए तुम मेरे नियमों और निर्णयों का पालन करोगे। तुम्हें उन में से कोई भयंकर पाप नहीं करना चाहिए। ये नियम इस्राएल के नागरिकों और जो तुम्हारे बीच रहते हैं, उनके लिए है। [27]जो लोग तुम से पहले वहाँ रहे उन्होंने वे सभी भयंकर काम किए। जिससे वह धरती गन्दी हो गयी। [28]यदि तुम भी वही काम करोगे तो तुम धरती को गंदा बनाओगे। यह तुम लोगों को वैसे ही निकाल बाहर करेगी, जैसे तुमसे पहले रहने वाली जातियों को किया गया। [29]यदि कोई व्यक्ति वैसे भयंकर पाप करता है तो उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए। [30]अन्य लोगों ने उन भयंकर पापों को किया है। किन्तु मेरे नियमों का पालन करना चाहिए। तुम्हें उन भयंकर पापों में से कोई भी नहीं करना चाहिए। उन भयंकर पापों से अपने को अशुद्ध मत बनाओ। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

वे बच्चे तुम्हारे अंग है शाब्दिक "उनकी नग्नता तुम्हारी नग्नता है।"

यदि ... पुत्री है इसका तात्पर्य यह है कि यह आवश्यक नहीं कि पिता की पत्नी आवश्यक रूप से व्यक्ति की माँ हो, किन्तु वह व्यक्ति और पिता की पुत्री भाई बहन हैं।

तुम्हारा भाई ... है "वह तुम्हारे भाई की नग्नता है।"

अशुद्ध "गन्दा या घिनौना।

मोलेक मोलेख एक मिथ्या देवता। लोग प्राय: अपने बच्चों को मोलेक की पूजा के लिये मारते थे।

निकाल फेंक रहा है उल्टी कर रहा है।

इस्राएल परमेश्वर का है

19 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]“इस्राएल के सभी लोगों से कहो: कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ मैं पवित्र हूँ! इसलिए तुम्हें पवित्र होना चाहिए!

[3]“तुम में से हर एक व्यक्ति को अपने माता पिता का सम्मान करना चाहिए और मेरे विश्राम के विशेष दिनों* को मानना चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

[4]“मूर्तियों की उपासना मत करो। अपने लिए देवताओं की मूर्तियाँ धातु गला कर मत बनाओ। मैं तुम लोगों का परमेश्वर यहोवा हूँ!

[5]“जब तुम यहोवा को मेलबलि चढ़ाओ तो तुम उसे ऐसे चढ़ाओ कि तुम यहोवा द्वारा स्वीकार किए जा सको। [6]तुम इसे चढ़ाने के दिन खा सकोगे और अगले दिन भी। किन्तु यदि बलि का कुछ भाग तीसरे दिन भी बच जाए तो उसे तुम्हें आग में जला देना चाहिए। [7]किसी भी बलि को तीसरे दिन नहीं खाना चाहिए। यह अशुद्ध है। यह स्वीकार नहीं होगी। [8]यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो वह अपराधी होगा! क्यों? क्योंकि उसने यहोवा की पवित्र चीज़ों का सम्मान नहीं किया। उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए।

[9]“जब तुम कटनी के समय अपनी फ़सल काटो तो तुम सब ओर से खेत के कोनों तक मत काटो और यदि अन्न जमीन पर गिर जाता है तो तुम्हें उसे इकट्ठा नहीं करना चाहिए। [10]अपने अँगूर के बाग के सारे अँगूर न तोड़ो और जो जमीन पर गिर जाएँ उन्हें न उठाओ। क्यों? क्योंकि तुम्हें वे चीज़ें गरीब लोगों और जो तुम्हारे देश से यात्रा करेंगे, उनके लिए छोड़नी चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

[11]“तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए। तुम्हें लोगों को ठगना नहीं चाहिए। तुम्हें आपस में झूठ नहीं बोलना चाहिए। [12]तुम्हें मेरे नाम पर झूठा वचन नहीं देना चाहिए। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम यह दिखाते हो कि तुम अपने परमेश्वर के नाम का सम्मान नहीं करते हो। मैं यहोवा हूँ!

[13]“तुम्हें अपने पड़ोसी को धोखा नहीं देना चाहिए। तुम्हें उसकी चोरी नहीं करनी चाहिए। तुम्हें मजदूर की मजदूरी पूरी रात, सवेरे तक नहीं रोकनी चाहिए।*

[14]“तुम्हें किसी बहरे आदमी को अपशब्द नहीं कहना चाहिए। तुम्हें किसी अन्धे को गिराने के लिए उसके सामने कोई चीज़ नहीं रखनी चाहिए। किन्तु तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा का सम्मान करना चाहिए। मैं यहोवा हूँ!

[15]“तुम्हें न्याय करने में ईमानदार होना चाहिए। न तो तुम्हें ग़रीब के साथ विशेष पक्षपात करना चाहिए और न ही बड़े एवं धनी लोगों के प्रति कोई आदर दिखाना चाहिए। तुम्हें अपने पड़ोसी के साथ न्याय करते समय ईमानदार होना चाहिए। [16]तुम्हें अन्य लोगों के विरुद्ध चारों ओर अफवाहें फैलाते हुए नहीं चलना चाहिए। ऐसा कुछ न करो जो तुम्हारे पड़ोसी के जीवन को ख़तरे में डाले। मैं यहोवा हूँ!

[17]“तुम्हें अपने हृदय में अपने भाईयों से घृणा नहीं करनी चाहिए। यदि तुम्हारा पड़ोसी कुछ बुरा करता है तो इसके बारे में उसे समझाओ। किन्तु उसे क्षमा करो।! [18]लोग, जो तुम्हारा बुरा करें, उसे भूल जाओ। उससे बदला लेने का प्रयत्न न करो। अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे अपने आप से करते हो। मैं यहोवा हूँ!

[19]“तुम्हें मेरे नियमों का पालन करना चाहिए। दो जातियों के पशुओं को प्रजनन के लिए आपस में मत मिलाओ। तुम्हें खेत में दो प्रकार के बीज नहीं बोने चाहिए। तुम्हें दो प्रकार की चीज़ों के मिलावट से बने वस्त्रों को नहीं पहनना चाहिए।

[20]“यह हो सकता है कि किसी दूसरे व्यक्ति की दासी से किसी व्यक्ति का यौन सम्बन्ध हो। यदि यह दासी न तो खरीदी गई है न ही स्वतन्त्र कराई गई है तो उन्हें दण्ड दिया जाना चाहिए। किन्तु वे मारे नहीं जाएंगे। क्यों? क्योंकि स्त्री स्वतन्त्र नहीं थी। [21]उस व्यक्ति को अपने अपराध के लिए मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा को बलि चढ़ानी चाहिए। व्यक्ति को एक मेढ़ा दोषबलि के रूप में लाना चाहिए। [22]याजक उस व्यक्ति के पापों के भुगतान करने के लिए उपासना करेगा। याजक यहोवा को दोषबलि के रूप में मेढ़े को चढ़ाएगा। यह व्यक्ति के किए हुए पापों के लिए होगा। तब व्यक्ति अपने किए पाप के लिए क्षमा किया जाएगा।

विश्राम के विशेष दिन “सब्त” यह शनिवार हो सकता है या इसमें आराम के विशेष दिन सम्मिलित हो सकते हैं। व्यक्तियों से उन विशेष दिनों को काम न करने की आशा की जाती थी।

तुम्हें मजदूर ... रोकनी चाहिये इससे यह पता चलता है कि मजदूरी पर रखे गए मजदूर को उस दिन किए गए काम की मजदूरी उसी दिन दी जाती थी। देखें मत्ती 20:1–16

[23]"भविष्य में तुम अपने प्रदेश में प्रवेश करोगे। उस समय भोजन के लिए तुम अनेकों प्रकार के पेड़ लगाओगे। पेड़ लगाने के बाद पेड़ के किसी फल का उपयोग करने के लिए तुम्हें तीन वर्ष तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। तुम्हें उससे पहले के फल का उपयोग नहीं करना चाहिए। [24]चौथे वर्ष उस पेड़ के फल यहोवा के होंगे। यह यहोवा की स्तुति के लिए पवित्र भेंट होगी। [25]तब, पाँचवें वर्ष तुम उस पेड़ का फल खा सकते हो और पेड़ तुम्हारे लिए अधिक से अधिक फल पैदा करेगा। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

[26]"तुम्हें कोई चीज़, उसमें खून रहते तक नहीं खानी चाहिए।

"तुम्हें भविष्यवाणी करने के लिये जादू या शगुन आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए।

[27]"तुम्हें अपने सिर के बगल के बढ़े बालों को कटवाना नहीं चाहिए। तुम्हें अपनी दाढ़ी के किनारे नहीं कटवाने चाहिए। [28]किसी मरे व्यक्ति की याद को बनाए रखने के लिए तुम्हें अपने शरीर को काटना नहीं चाहिए। तुम्हें अपने ऊपर कोई चिन्ह गुदवाना नहीं चाहिए। मैं यहोवा हूँ!

[29]"तुम अपनी पुत्री को वेश्या* मत बनने दो। इससे केवल यह पता चलता है कि तुम उसका आदर नहीं करते। तुम अपने देश में स्त्रियों को वेश्याएँ मत बनने दो। तुम अपने देश को इस प्रकार के पापों से मत भर जाने दो।

[30]"तुम्हें मेरे विश्राम के विशेष दिनों में काम नहीं करना चाहिए।* तुम्हें मेरे पवित्र स्थान का सम्मान करना चाहिए। मैं यहोवा हूँ!"

[31]"ओझाओं तथा भूतसिद्धियों के पास सलाह के लिए मत जाओ। उनके पास तुम मत जाओ, वे केवल तुम्हें अशुद्ध बनाएँगे। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!"

[32]"बूढ़े लोगो*का सम्मान करो। जब वे कमरे में आएँ तो खड़े हो जाओ। अपने परमेश्वर का सम्मान करो। मैं यहोवा हूँ!"

[33]"अपने देश में रहने वाले विदेशियों के साथ बुरा व्यवहार मत करो! [34]तुम्हें विदेशियों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा तुम अपने नागरिकों के साथ करते हो। तुम विदेशियों से वैसा प्यार करो जैसा अपने से करते हो। क्यों? क्योंकि तुम भी एक समय मिस्र में विदेशी थे। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

[35]"तुम्हें न्याय करते समय लोगों के प्रति ईमानदार होना चाहिए। तुम्हें चीज़ों के नापने और तौलने में ईमानदार होना चाहिए। [36]तुम्हारी टोकरियाँ ठीक माप की होनी चाहिए। तुम्हारे नापने के पात्रों में द्रव की उचित मात्रा आनी चाहिए। तुम्हारे तराजू और तुम्हारे बाट चीज़ों को ठीक तौलने वाले होने चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ! मैं तुम्हें मिस्र देश से बाहर लाया!

[37]"तुम्हें मेरे सभी नियमों और निर्णयों को याद रखना चाहिए और तुम्हें उनका पालन करना चाहिए। मैं यहोवा हूँ!"

मूर्ति पूजा के विरुद्ध चेतावनी

20 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"तुम्हें इस्राएल के लोगों से यह भी कहना चाहिए: तुम्हारे देश में कोई व्यक्ति अपने बच्चों में से किसी को झूठे देवता मोलेक को दे सकता है। उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। इससे अन्तर नहीं पड़ता कि वह इस्राएल का नागरिक है या इस्राएल में रहने वाला कोई विदेशी है, तुम्हें उसे पत्थर फेंक-फेंक कर मार डालना चाहिए। [3]मैं उस व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा। मैं उसे उसके लोगों से अलग करूँगा। क्यों? क्योंकि उसने अपने बच्चों को मोलेक को दिया। उसने यह प्रकट किया कि वह मेरे पवित्र नाम का सम्मान नहीं करता। उसने मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध किया। [4]सम्भव है साधारण लोग उस व्यक्ति की उपेक्षा करे। सम्भव है वे उस व्यक्ति को न मारे जिसने बच्चों को मोलेक को दिया है। [5]किन्तु मैं उस व्यक्ति और उसके परिवार के विरुद्ध होऊँगा। मैं उसे उसके लोगों से अलग करूँगा। मैं किसी भी ऐसे व्यक्ति को उसके लोगों से अलग करूँगा जो मेरे प्रति विश्वास नहीं रखता और मोलेक का अनुसरण करता है।

[6]"मैं उस व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा जो किसी ओझा और भूतसिद्धि के पास सलाह के लिए जाता है। वह व्यक्ति मुझसे विश्वासघात करता है। इसलिए मैं उस व्यक्ति को उसके लोगों से अलग करूँगा।

वेश्या वह स्त्री जो यौन सम्बन्ध के लिये अपने शरीर को बेचती है।

विश्राम के विशेष दिन ... चाहिये शाब्दिक "सब्त"। इसका अर्थ शनिवार हो सकता है, या इसका अर्थ विशेष पवित्र दिनों में से कोई दिन हो सकता है जिस दिन लोगों को काम न करने का आदेश दिया गया है।

बूढ़े लोग शाब्दिक जिनके बाल सफेद हो चुके हैं।

[7]"विशेष बनो। अपने को पवित्र बनाओ। क्यों? क्योंकि मैं पवित्र हूँ! मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। [8]मेरे आज्ञाओं का पालन करो और उन्हें याद रखो। मैं यहोवा हूँ और मैंने तुम्हें अपना विशेष लोग बनाया है।

[9]"यदि कोई व्यक्ति अपने माता–पिता के अनिष्ट की कामना करता है तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। उसने अपने पिता या माँ का अनिष्ट चाहा है, इसलिए उसे दण्ड देना चाहिए।*

यौन पापों के दण्ड

[10] "यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध करता है तो स्त्री और पुरुष दोनों अनैतिक सम्बन्ध के अपराधी हैं। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों को मार डालना चाहिए। [11]यदि कोई व्यक्ति अपनी विमाता से यौन सम्बन्ध करता है तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। उस व्यक्ति को और उसकी विमाता दोनों को मार डालना चाहिए।* उस व्यक्ति ने अपने पिता के विरूद्ध पाप किया है।*

[12]"यदि कोई व्यक्ति अपनी पुत्रवधू के साथ यौनसम्बन्ध करता है तो दोनों को मार डालना चाहिए। उन्होंने बहुत बुरा यौन पाप किया है। उन्हें दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

[13] "यदि कोई व्यक्ति किसी पुरुष के साथ स्त्री जैसा यौन सम्बन्ध करता है तो दोनों को मार डालना चाहिए। उन्होंने बहुत बुरा यौन पाप किया है। उन्हें दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

[14]"यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री और उसकी माँ के साथ यौन सम्बन्ध करता है तो यह यौन पाप है। लोगों को उस व्यक्ति तथा दोनों स्त्रियों को आग में जला देना चाहिए। इस यौन पाप को अपने लोगों में मत होने दो।

[15]"यदि कोई व्यक्ति किसी जानवर से यौन सम्बन्ध करे तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए और तुम्हें उस जानवर को भी मार देना चाहिए। [16]यदि कोई स्त्री किसी जानवर से यौन सम्बन्ध करती है तो तुम्हें उस स्त्री और जानवर को मार डालना चाहिए। उन्हें अवश्य मार देना चाहिए। उन्हें दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

[17]"यह एक भाई और उसकी बहन के लिए लज्जाजनक है कि आपस में वे यौन सम्बन्ध करे।* उन्हें सामाजिक रूप में दण्ड मिलना चाहिए। वे अपने लोगों से अलग कर दिए जाने चाहिए। वह व्यक्ति जिसने अपनी बहन के साथ यौन सम्बन्ध किया है, अपने पाप के लिए दण्ड पाएगा।*

[18]"यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के साथ मासिकधर्म के रक्त स्राव के समय यौन सम्बन्ध करेगा तो स्त्री पुरुष दोनों को अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए। उन्होंने पाप किया है क्योंकि उसने खून के स्रोत को उघाड़ा।

[19]"तुम्हें यौन सम्बन्ध* अपनी माँ की बहन या पिता की बहन के साथ नहीं करना चाहिए। यह गोत्रीय अनैतिकता का पाप है।* उन्हें उनके पाप के लिए दण्ड मिलेगा।

[20]"किसी पुरुष को अपने चाचा/मामा की पत्नी के साथ नहीं सोना चाहिए। यह व्यक्ति तथा उसकी चाची व मामी को उनके पापों के लिए दण्ड मिलेगा। वे बिना किसी सन्तान के मरेंगे।

[21]"किसी व्यक्ति के लिए यह बुरा है कि वह अपने भाई की पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध करे। उस व्यक्ति ने अपने भाई के विरुद्ध पाप किया है।* उनकी कोई सन्तान नहीं होगी।

[22]"तुम्हें मेरे सारे नियमों और निर्णयों को याद रखना चाहिए और तुम्हें उनका पालन अवश्य करना चाहिए। मैं तुम्हें तुम्हारे प्रदेश को ले जा रहा हूँ। तुम लोग उस प्रदेश में रहोगे। यदि तुम लोग मेरे नियमों और निर्णयों को मानते रहे तो वह प्रदेश तुम लोगों को निकाल बाहर नहीं करेगा। [23]मैं अन्य लोगों को उस प्रदेश को छोड़ने के लिए विवश कर रहा हूँ। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने वे सभी पाप किए। मैं उन पापों से घृणा करता हूँ। इसलिए जिस प्रकार वे लोग रहे, उस तरह तुम नहीं रहोगे।

उसने पिता ... देना चाहिये शाब्दिक "उसने अपनी मौत आप बुलाई है।"

उस व्यक्ति ... डालना चाहिये शाब्दिक अपनी मौत उन्होंने ख़ुद बुलाई है।

पिता ... है शाब्दिक "उसने अपने पिता की नग्नता को उघाड़ा।"

आपस में यौन सम्बन्ध करें शाब्दिक "वह उसकी नग्नता को देखता है और वह उसकी नग्नता को देखती हैं।

वह व्यक्ति ... दण्ड पायेगा शाब्दिक "वह अपने अपराध को भोगेगा।"

यौन सम्बन्ध शाब्दिक "नग्नता को उघाड़ना।"

गोत्रीय ... पाप है गोत्र के व्यक्तियों के यौन सम्बन्ध का पाप।

उस व्यक्ति ... पाप किया है शाब्दिक "उस व्यक्ति ने अपने भाई की नग्नता को उघाड़ा हैं।"

[24]"मैंने कहा है कि तुम उनका प्रदेश प्राप्त करोगे। मैं उनका प्रदेश तुमको दूँगा। यह तुम्हारा प्रदेश होगा। वह प्रदेश बहुत सुन्दर है। उसमें दूध व मधु की नदियाँ बहती हैं। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

"मैंने तुम्हें विशेष बनाया है। मैंने तुम्हारे साथ अन्य लोगों से भिन्न व्यवहार किया है। [25]इसलिए तुम्हें शुद्ध जानवरों के साथ अशुद्ध जानवरों से भिन्न व्यवहार करना चाहिए। तुम्हें शुद्ध पक्षियों के साथ अशुद्ध पक्षियों से भिन्न व्यवहार करना चाहिए। उन में से किसी भी अशुद्ध पक्षी, जानवर और कीट–पतंग को मत खाओ जो भूमि पर रेंगते हैं। मैंने उन चीज़ों को अशुद्ध बनाया है। [26]मैंने तुम्हें अपना विशेष जन बनाया है। इसलिए तुम्हें मेरे लिए पवित्र होना चाहिए। क्यों? क्योंकि मैं यहोवा हूँ और मैं पवित्र हूँ!

[27]"कोई पुरुष या कोई स्त्री जो ओझा हो या कोई भूतसिद्धि हो, तो उन्हें निश्चय ही मार दिया जाना चाहिए। लोगों को चाहिए कि वे उन्हें पत्थर मार–मार कर मार दें। उन्हें मार ही दिया जाना चाहिए।"

याजकों के लिये नियम

21 यहोवा ने मूसा से कहा, "ये बातें हारून के याजक पुत्रों से कहो: किसी मरे व्यक्ति को छूकर याजक अपने को अशुद्ध न करें। [2] किन्तु यदि मरा हुआ व्यक्ति उसके नजदीकी सम्बन्धियों में से कोई है तो वह मृतक के शरीर को छू सकता है। याजक अपने को अशुद्ध कर सकता है यदि मृत व्यक्ति उसकी माँ, पिता, उसका पुत्र, या पुत्री, उसका भाई, [3]उसकी अविवाहित* बहन है। (यह बहन उसकी नजदीकी है क्योंकि उसका पति नहीं है।) इसलिए याजक अपने को अशुद्ध कर सकता है, यदि वह मरती है। [4]किन्तु याजक अपने को अशुद्ध नहीं कर सकता, यदि मरा व्यक्ति उसके दासों में से एक हो।*

[5]"याजक को शोक प्रकट करने के लिए अपने सिर का मुण्डन नहीं कराना चाहिए। याजक को अपनी दाढ़ी के सिरे नहीं कटवाने चाहिए। याजक को अपने शरीर को कहीं भी काटना नहीं चाहिए। [6]याजक को अपने परमेश्वर के लिए पवित्र होना चाहिए। इन्हे परमेश्वर के नाम के लिए सम्मान दिखाना चाहिए। क्यों? क्योंकि वे रोटी और आग द्वारा भेंट यहोवा को पहुँचाते हैं। इसलिए उन्हें पवित्र होना चाहिए।

[7]"याजक परमेश्वर की सेवा विशेष ढंग से करता है। इसलिए याजक को ऐसी स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए जिसने किसी के साथ यौन सम्बन्ध किया हो। याजक को किसी वेश्या, या किसी तलाक दी गई स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए। [8]याजक परमेश्वर की सेवा विशेष ढंग से करता है। इसलिए तुम्हें उसके साथ विशेष व्यवहार करना चाहिए। क्यों? क्योंकि वह पवित्र चीज़ें ले चलता है। वह पवित्र रोटी यहोवा को पहुँचाता है और मैं पवित्र हूँ। मैं यहोवा हूँ, और मैं तुम्हें पवित्र बनाता हूँ।

[9]"यदि याजक की पुत्री वेश्या बन जाती है तो वह अपनी प्रतिष्ठा नष्ट करती है तथा अपने पिता को कलंक लगाती है। इसलिए उसे जला देना चाहिए।

[10]"महायाजक अपने भाइयों में से चुना जाता था। अभिषेक का तेल उसके सिर पर डाला जाता था। इस प्रकार वह महायाजक के विशेष कर्त्तव्य के लिए नियुक्त किया जाता था। वह महायाजक के विशेष वस्त्र को पहनने के लिए चुना जाता था। इसलिए उसे अपने दुःख को प्रकट करने वाला कोई काम समाज में नहीं करना चाहिए। उसे अपने बाल जंगली ढंग से नहीं बिखेरने चाहिए। उसे अपने वस्त्र नहीं फाड़ने चाहिए। [11]उसे मुर्दे को छूकर अपने को अशुद्ध नहीं बनाना चाहिए। उसे किसी मुर्दे के पास नहीं जाना चाहिए। चाहे वह उसके अपने माता–पिता का ही क्यों न हो। [12]महायाजक को परमेश्वर के पवित्र स्थान के बाहर नहीं जाना चाहिए। यदि उसने ऐसा किया तो वह अशुद्ध हो जायेगा और तब वह परमेश्वर के पवित्र स्थान को अशुद्ध कर देगा। अभिषेक का तेल महायाजक के सिर पर डाला जाता था। यह उसे शेष लोगों से भिन्न करता था। मैं यहोवा हूँ!

[13]"महायाजक को विवाह करके उसे पत्नी बनाना चाहिए जो कुवाँरी* हो। [14]महायाजक को ऐसी स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए जो किसी अन्य पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध रख चुकी हो। महायाजक को किसी वेश्या,

---

अविवाहित शाब्दिक "कुमारी" एक लड़की जिसने कभी विवाह नहीं किया और किसी के साथ कभी यौन सम्बन्ध नहीं किया।

किन्तु याजक ... एक हो शाब्दिक "किन्तु स्वामी को अपने लोगों के लिए अशुद्ध नहीं होना चाहिये।"

कुवाँरी पवित्र स्त्री जिसने कभी भी यौन सम्बन्ध नहीं किया है।

या तलाक दी गई स्त्री, या विधवा स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए। महायाजक को अपने लोगों में से एक कुवाँरी से विवाह करना चाहिए। [15]इस प्रकार लोग उसके बच्चों को सम्मान देंगे। मैं, यहोवा ने, याजक को विशेष काम के लिए भिन्न बनाया है।"

[16]यहोवा ने मूसा से कहा, [17]"हारून से कहो: यदि तुम्हारे वंशजों की सन्तानों में से कोई अपने में कोई दोष पाए तो उन्हें विशेष रोटी परमेश्वर तक नहीं ले जानी चाहिए। [18]कोई व्यक्ति, जिसमें कोई दोष हो, याजक का काम न करे और न ही मेरे पास भेंट लाए, ये लोग याजक के रूप में सेवा नहीं कर सकते :

अन्धे व्यक्ति, लगंड़े व्यक्ति,
विकृत चेहरे वाले व्यक्ति,
अत्यधिक लम्बी भुजा
और टाँग वाले व्यक्ति।
[19] टूटे पैर या हाथ वाले व्यक्ति,
[20] कुबड़े व्यक्ति, बौने,*
आँख में दोष वाले व्यक्ति,।
खुजली और चर्म रोग वाले व्यक्ति,
बधिया किए गए नपुंसक व्यक्ति।

[21]यदि हारून के वंशजों मे से कोई कुछ दोष वाला है तो वह यहोवा को आग से बलि नहीं चढ़ा सकता और वह व्यक्ति विशेष रोटी अपने परमेश्वर को नहीं पहुँचा सकता। [22]वह व्यक्ति याजकों के परिवार से है अत: वह पवित्र रोटी खा सकता है। वह अति पवित्र रोटी भी खा सकता है। [23]किन्तु वह सबसे अधिक पवित्र स्थान में पर्दे से होकर नहीं जा सकता और न ही वह वेदी के पास जा सकता है। क्यों? क्योंकि उस में कुछ दोष है। उसे मेरे पवित्र स्थान को अपवित्र नहीं बनाना चाहिए। मैं यहोवा उन स्थानों को पवित्र बनाता हूँ।"

[24]इसलिए मूसा ने ये बातें हारून से, हारून के पुत्रों और इस्राएल के सभी लोगों से कही।

22 परमेश्वर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"हारून और उसके पुत्रों से कहो: इस्राएल के लोग जो चीज़ें मुझे देंगे, वे पवित्र हो जाएंगी। वे मेरी हैं। इसलिए तुम याजकों को वे चीज़ें नहीं लेनी चाहिए। यदि तुम उन पवित्र चीज़ों का उपयोग करते हो तो तुम यह प्रकट करोगे कि तुम मेरे पवित्र नाम का सम्मान नहीं करते। मैं यहोवा हूँ। [3]यदि तुम्हारे सभी वंशजो में से कोई व्यक्ति उन चीज़ों को छूएगा तो वह अशुद्ध हो जाएगा। वह व्यक्ति मुझसे अलग हो जाएगा। इस्राएल के लोगों ने वे चीज़ें मुझे दीं। मैं यहोवा हूँ!

[4]"यदि हारून के किसी वंशज को बुरे चर्म रोगों में से कोई रोग* हो या उससे कुछ रिस रहा हो तो वह तब तक पवित्र भोजन नहीं कर सकता जब तक वह शुद्ध न हो जाय। यह नियम किसी भी याजक के लिए है जो अशुद्ध हो। वह याजक किसी शव को छू कर या अपने वीर्य पात से अशुद्ध हो सकता है। [5]वह तब अशुद्ध हो सकता है जब वह किसी रेंगने वाले जानवर को छूए। वह तब अशुद्ध हो सकता है जब वह किसी अशुद्ध व्यक्ति को छूए। इसका कोई महत्व नहीं कि उस व्यक्ति को किस चीज़ ने अशुद्ध किया है। [6]यदि कोई व्यक्ति उन चीज़ों को छुएगा तो वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। उस व्यक्ति को पवित्र भोजन में से कुछ भी नहीं खाना चाहिए। पानी डालकर नहाये बिना वह पवित्र भोजन नहीं कर सकता है। [7]वह सूरज के डूबने पर ही शुद्ध होगा। तभी वह पवित्र भोजन कर सकता है। क्यों? क्योंकि वह भोजन उसका है।

[8]"यदि याजक को कोई ऐसा जानवर मिलता है जो स्वयं मर गया हो या किसी अन्य जानवर द्वारा मार दिया गया हो तो उसे मरे जानवर को नहीं खाना चाहिए। यदि वह व्यक्ति उस जानवर को खाता है तो वह अशुद्ध होगा। मैं यहोवा हूँ!

[9]"याजक को मेरी सेवा के विशेष समय रखने होंगे। उन्हें उन दिनों सावधान रहना होगा। उन्हें इस बात के लिए सावधान रहना होगा कि वे पवित्र चीज़ों को अपवित्र न बनाएँ। यदि वे सावधान रहेंगे तो मरेंगे नहीं। मैं यहोवा ने उन्हें इस विशेष काम के लिए दूसरों से भिन्न किया है। [10]केवल याजकों के परिवार के व्यक्ति ही पवित्र भोजन खा सकते हैं। याजक के साथ ठहरने वाला अतिथि या मजदूर पवित्र भोजन में से कुछ भी नहीं खाएगा। [11]किन्तु यदि याजक अपने धन से किसी दास को खरीदता है तो वह पवित्र चीज़ों में से कुछ को खा सकता है और याजक के घर में उत्पन्न दास भी उस पवित्र भोजन में से कुछ खा सकता है। [12]किसी याजक की पुत्री ऐसे व्यक्ति

बौना बौना व्यक्ति वह है जिसके शरीर का उचित रूप में बढ़ना रूक गया।

रोग यह कोई गम्भीर चर्मरोग हो सकता है।

से विवाह कर सकती है जो याजक न हो। यदि वह ऐसा करती है तो पवित्र भेंट में से कुछ नहीं खा सकती। [13]किसी याजक की पुत्री विधवा हो सकती है, या उसे तलाक दिया जा सकता है। यदि उसके भरन पोषण के लिए उसके बच्चे नहीं हैं और वह अपने पिता के यहाँ लौटती है, जहाँ वह बचपन में रही है तो वह पिता के भोजन में से कुछ खा सकती है। किन्तु केवल याजक के परिवार के व्यक्ति ही इस भोजन को खा सकते हैं।

[14]"कोई व्यक्ति भूल से कुछ पवित्र भोजन खा सकता है। उस व्यक्ति को वह पवित्र भोजन याजक को देना चाहिए और उसके अतिरिक्त उस भोजन के मूल्य का पाँचवाँ भाग उसे और देना होगा।

[15]"इस्राएल के लोग यहोवा को भेंट चढ़ाएँगे। वे भेंटें पवित्र हो जाती हैं। इसलिए याजक को उन पवित्र चीज़ों को अपवित्र नहीं बनाना चाहिए। [16]यदि याजक उन चीज़ों को अपवित्र समझते हैं तो वे तब अपने पाप को बढ़ाएँगे जब पवित्र भोजन को खाएँगे। मैं, यहोवा, उन्हें पवित्र बनाता हूँ!"

[17]यहोवा ने मूसा से कहा, [18]"हारून और उसके पुत्रों, और इस्राएल के सभी लोगों से कहो: सम्भव है कि इस्राएल का कोई नागरिक या कोई विदेशी कोई भेंट लाना चाहे। सम्भव है उसने कोई विशेष वचन दिया हो, और यह उसके लिए हो। या सम्भव है यह वह विशेष भेंट हो जिसे वह व्यक्ति अर्पित करना चाहता हो। [19-20]ये ऐसी भेंटें हैं जिन्हें लोग इसलिए लाते हैं कि वे यहोवा को भेंट चढ़ाना चाहते हैं। तुम्हें कोई ऐसी भेंट नहीं स्वीकार करनी चाहिए जिसमें कोई दोष हो। मैं उस भेंट से प्रसन्न नहीं होऊँगा! यदि भेंट एक साँड़ है, या एक भेड़ है, या एक बकरा है तो वह नर होना चाहिए और इसमें कोई दोष नहीं होना चाहिए।

[21]"कोई व्यक्ति यहोवा को मेलबलि चढ़ा सकता है। वह मेलबलि उस व्यक्ति द्वारा दिए गए किसी वचन के लिए भेंट के रूप में हो सकती है या यह कोई स्वत: प्रेरित भेंट हो सकती है जिसे वह व्यक्ति यहोवा को चढ़ाना चाहता है। यह बैल या मेढ़ा हो सकता है। किन्तु वह स्वस्थ तथा दोष रहित होना चााहिए। [22]तुम्हें यहोवा को ऐसा कोई जानवर नहीं भेंट करना चाहिए जो अन्धा हो या जिसकी हड्डियाँ टूटी हों, या जो लंगड़ा हो, या जिसके कोई घाव रिस रहा हो या बुरे चर्म रोग वाला हो। तुम्हें यहोवा की वेदी की आग पर उस बीमार जानवर की भेंट नहीं चढ़ानी चाहिए।

[23]"कभी-कभी किसी मवेशी या मेमने के पैर अत्याधिक लम्बे हो सकते हैं या ऐसे पैर हो सकते हैं जिनका विकास ठीक से न हुआ हो। यदि कोई व्यक्ति ऐसे जानवर को यहोवा को विशेष भेंट के रूप में चढ़ाना चाहता है तो वह स्वीकार किया जाएगा। किन्तु इसे किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए वचन के लिए किये जाने वाले भुगतान के रूप में स्वीकार नहीं किया जाएगा।

[24]"यदि जानवर के अण्ड कोष जख़्मी, कुचले हुए या फाड़े हुए हों तो तुम्हें उस जानवर की भेंट यहोवा को नहीं चढ़ानी चाहिए।

[25]"तुम्हें विदेशियों से बलि के लिए ऐसे जानवरों को नहीं लेना चाहिए। क्यों? क्योंकि ये जानवर किसी प्रकार चोट खाए हुए हैं। उनमें कुछ दोष है। ये स्वीकार नहीं किए जाएंगे!"

[26]यहोवा ने मूसा से कहा, [27]"जब कोई बछड़ा, या भेड़, या बकरी पैदा हो तो अपनी माँ के साथ उसे सात दिन रहने देना चाहिए। तब आठवें दिन और उसके बाद यह जानवर यहोवा को आग द्वारा दी जाने वाली बलि के रूप में स्वीकार किया जाएगा। [28]किन्तु तुम्हें उसी दिन उस जानवर और उसकी माँ को नहीं मारना चाहिए। यही नियम गाय और भेड़ों के लिए है।

[29]"यदि तुम्हें यहोवा को कोई विशेष कृतज्ञता बलि चढ़ानी हो तो तुम उस भेंट को चढ़ाने में स्वतन्त्र हो। किन्तु यह इस प्रकार करो कि वह परमेश्वर को प्रसन्न करे। [30]तुम्हें पूरा जानवर उसी दिन खा लेना चाहिए। तुम्हें अगली सुबह के लिए कुछ भी माँस नहीं छोड़ना चाहिए। मै यहोवा हूँ!

[31]"मेरे आदेशों को याद रखो और उनका पालन करो। मैं यहोवा हूँ! [32]मेरे पवित्र नाम का सम्मान करो! मुझे इस्राएल के लोगों के लिए बहुत विशिष्ट होना चाहिए। मैं, यहोवा ने तुम्हें अपना विशेष लोग बनाया है। [33]मैं तुम्हें मिस्र से लाया। मैं तुम्हारा परमेश्वर बना। मैं यहोवा हूँ!"

विशेष पवित्र दिन

23 यहोवा ने मूसा के कहा, [2]"इस्राएल के लोगों से कहो: तुम यहोवा के निश्चित पर्वों को पवित्र घोषित करो। ये मेरे विशेष पवित्र दिन हैं:

सब्त

[3]"छ: दिन काम करो। किन्तु सातवाँ दिन, आराम का एक विशेष दिन या पवित्र मिलन का दिन होगा। उस दिन तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। यह तुम्हारे सभी घरों में यहोवा का सब्त है।

फ़सह पर्व

[4]"ये यहोवा के चुने हुए पवित्र दिन हैं। उनके लिए निश्चित समय पर तुम पवित्र सभाओ की घोषणा करोगे। [5]यहोवा का फ़सह पर्व पहले महीने की चौदह तारीख को सन्ध्या काल में है।

अख़मीरी मैदे के फुलकों का पर्व

[6]"उसी महीने की पन्द्रह तारीख को अखमीरी मैदे के फुलकों का पर्व होगा तुम सात दिन तक अखमीरी मैदे के फुलके खाओगे। [7] इस पर्व के पहले दिन तुम एक पवित्र सभा करोगे। उस दिन तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। [8]सात दिन तक तुम यहोवा को आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। सातवें दिन एक पवित्र सभा होगी। उस दिन तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए।"

पहली फ़सल का पर्व

[9]यहोवा ने मूसा से कहा, [10] "इस्राएल के लोगों से कहो: तुम उस धरती पर जाओगे जिसे मैं तुम्हें दूँगा। तुम उसकी फ़सल काटोगे। उस समय तुम्हें अपनी फ़सल की पहली पूली* याजक के पास लानी चाहिए। [11]याजक पूली को यहोवा के सामने उत्तोलित करेगा। तब वह तुम्हारे लिए स्वीकार कर ली जाएगी। याजक पूली को रविवार* के प्रात: काल उत्तोलित करेगा।

[12]"जिस दिन तुम पूली को उत्तोलित करो, उस दिन तुम एक वर्ष का एक नर मेमना बलि चढ़ाओगे। उस मेमने में कोई दोष नहीं होना चाहिए। वह मेमना यहोवा को होमबलि होगी। [13]तुम्हें चार क्वार्ट अच्छे जैतून के तेल मिले आटे की अन्नबलि देनी चाहिए। तुम्हें एक क्वार्ट दाखमधु भी देनी चाहिए। यह भेंट यहोवा को प्रसन्न करने वाली सुगन्ध होगी। [14]जब तक तुम अपने परमेश्वर को भेंट नहीं चढ़ाते, तब तक तुम्हें कोई नया अन्न, या फल या नये अन्न से बनी रोटी नहीं खानी चाहिए। यह नियम तुम चाहे जहाँ भी रहो, तुम्हारी पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहेगा।

सप्ताहों का पर्व*

[15]"उस रविवार के प्रात:काल से वह दिन जब तुम पूली उत्तोलन भेंट के लिए लाते हो, सात सप्ताह गिनो। [16]सातवें सप्ताह के अगले रविवार को (अर्थात् पचास दिन) बाद तुम यहोवा के लिये नये अन्नबलि लाओगे। [17]उस दिन तुम अपने घरों से दो-दो रोटियाँ लाओ। ये रोटियाँ उत्तोलन भेंट होगी। खमीर का उपयोग करो और चार क्वार्ट आटे की रोटियाँ बनाओ। वह तुम्हारी पहली फसल से यहोवा की भेंट होगी।

[18]"लोगों से अन्नबलि के साथ में एक बछड़ा, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के सात नर मेमने भेंट किए जाएंगे। इन जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। ये यहोवा की होमबलि होंगे। वे आग द्वारा यहोवा को दी गई भेंट होगी। इस की सुगन्ध से यहोवा प्रसन्न होगा।। [19]तुम भी पापबलि के रूप में एक बकरा तथा एक वर्ष के दो मेमने मेलबलि के रूप में चढ़ाओगे।

[20]"याजक यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के लिए दो मेमने और पहली फ़सल की रोटी उन्हें उत्तोलित करेगा। वे यहोवा के लिए पवित्र हैं। वे याजक के होंगे। [21]उसी दिन, तुम एक पवित्र सभा बुलाओगे। तुम कोई काम नहीं करोगे। यह नियम तुम्हारे सभी घरों में सदैव चलेगा।

[22]"जब तुम अपने खेतों की फ़सल काटो तो खेतों के कोनों की सारी फ़सल मत काटो। जो अन्न जमीन पर गिरे, उसे मत उठाओ। उसे तुम गरीब लोगों तथा तुम्हारे देश में यात्रा करने वाले विदेशियों के लिए छोड़ दो। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!"

तुरही का पर्व

[23]यहोवा ने मूसा से फिर कहा, [24]"इस्राएल के लोगों से कहो: सातवें महीने के प्रथम दिन तुम्हें आराम का विशेष दिन मानना चाहिए। उस दिन एक धर्म सभा होगी।

पूली अनाज का ढेर।
रविवार शाब्दिक "सब्त के बाद अगले सवेरे।"

सप्ताहो का पर्व इसे नये नियम में पिन्तेकुस्त कहा गया है। इसे कृषि उत्सव के नाम से भी जाना जाता है।

तुम्हें इसे मनाने के लिए तुरही बजानी चाहिए। [25]तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। तुम यहोवा को आग द्वारा बलि चढ़ाने के लिए बलि लाओगे।"

प्रायश्चित्त का दिन

[26]यहोवा ने मूसा से कहा, [27]"सातवें महीने के दसवें दिन प्रायश्चित्त का दिन* होगा। उस दिन एक धर्म सभा होगी। तुम भोजन नहीं करोगे* और तुम यहोवा को आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। [28]तुम उस दिन कोई काम नहीं करोगे। क्यों? क्योंकि यह प्रायश्चित्त का दिन है। उस दिन याजक यहोवा के सामने जाएगा और वह उपासना करेगा जो तुम्हें शुद्ध बनाती है।

[29]"यदि कोई व्यक्ति उस दिन उपवास करने से मना करता है तो उसे अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए। [30]यदि कोई व्यक्ति उस दिन काम करेगा तो उसे मैं (परमेश्वर) उसके लोगों में से काट दूँगा। [31]तुम्हें कोई भी काम नहीं करना चाहिए। यह नियम तुम जहाँ कहीं रहो, सदैव रहेगा। [32]यह तुम्हारे लिए आराम का विशेष दिन होगा। तुम्हें भोजन नहीं करना चाहिए। तुम आराम के इस विशेष दिन को महीने के नवें दिन की सन्ध्या* से आरम्भ करोगे। यह आराम का विशेष दिन उस सन्ध्या से आरम्भ करके अगली सन्ध्या तक रहता है।"

आश्रय का पर्व

[33]यहोवा ने मूसा से फिर कहा, [34]"इस्राएल के लोगों से कहो : सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन आश्रय का पर्व होगा। यहोवा के लिए यह पवित्र पर्व सात दिन तक चलेगा। [35]पहले दिन एक धर्म सभा होगी। तुम्हें तब कोई काम नहीं करना चाहिए। [36]तुम सात दिनों तक यहोवा के लिये आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। आठवें दिन तुम दूसरी धर्म सभा करोगे। तुम यहोवा को आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। यह एक धर्म सभा होगी। तुम्हें तब कोई काम नहीं करना चाहिए।

[37]"ये यहोवा का विशेष पवित्र दिन है। उन दिनों धर्म सभाएँ होंगी। तुम यहोवा को होमबलि, अन्नबलि, बलियाँ, पेयबलि अग्नि द्वारा चढ़ाओगे। तुम वे बलियाँ ठीक समय पर लाओगे। [38]तुम यहोवा के सब्त दिवसों को याद करने के अतिरिक्त उन पवित्र दिनों का पर्व मनाओगे। तुम उन बलियों को यहोवा को अपनी अन्नबलि के अतिरिक्त दोगे। तुम विशेष दिए गए अपने वचन को पूरा करने के रूप में दी गई किसी भेंट के अतिरिक्त उन चीज़ों को दोगे। वे उन विशेष भेंटों के अतिरिक्त होंगी जिन्हें तुम यहोवा को देना चाहते हो।

[39]"सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन, जब तुम अपने खेतों से फसल ला चुकोगे, सात दिन तक यहोवा का पर्व मनाओगे। तुम पहले और आठवें दिन आराम करोगे। [40]पहले दिन तुम फलदार पेड़ों से अच्छे फल लोगे और तुम नाले के किनारे के खजूर के पेड़, चीड़ और बेंत के पेड़ों से शाखाएँ लोगे। तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने सात दिन तक पर्व मनाओगे। [41]तुम इस पवित्र दिन को हर वर्ष यहोवा के लिये सात दिनों तक मनाओगे। यह नियम सदैव रहेगा। तुम इस पवित्र दिन को सातवें महीने में मनाओगे। [42]तुम सात दिन तक अस्थायी आश्रयों में रहोगे। इस्राएल में उत्पन्न हुए सभी लोग उन आश्रयों में रहेंगे। [43]क्यों? इससे तुम्हारे सभी वंशज यह जानेंगे कि मैंने इस्राएल के लोगों को अस्थायी आश्रयों में रहने वाला उस समय बनाया जिस समय मैं उन्हें मिस्र से लाया। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!"

[44]इस प्रकार मूसा ने इस्राएल के लोगों को यहोवा के विशेष पवित्र दिनों के बारे में बताया।

दीपाधार और पवित्र रोटी

24 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएल के लोगों को कोल्हू से निकाला हुआ जैतून का शुद्ध तेल अपने पास लाने का आदेश दो। वह तेल दीपकों के लिए है। ये दीपक बिना बुझे जलते रहने चाहिए। [3]हारून यहोवा के मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के पर्दे के आगे सन्ध्या समय से प्रात:काल तक दीपकों को जलाये रखेगा। यह नियम सदा–सदा के लिए है। [4]हारून को सोने की

प्रायश्चित का दिन इसे 'युम किप्पुर' भी कहा गया है। यह यहूदियों का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पवित्र दिन है। इस दिन महायाजक महापवित्र स्थान में जाता था और उन क्रियाओं को करता था जिससे लोगों के पापों का प्रायश्चित होता था।
भोजन नहीं करोगे शाब्दिक "अपने को विनीत दिखाओगे।"
सन्ध्या यहूदी लोगों के लिए दिन का आरम्भ सन्ध्या से होता है।

दीपाधार पर यहोवा के सामने दीपकों को सदैव जलता हुआ रखना चाहिए।

[5]“अच्छा महीन आटा लो और उसकी बारह रोटियाँ बनाओ। हर एक रोटी के लिए चार क्वार्ट आटे का उपयोग करो। [6]उन्हें दो पँक्तियों में सुनहरी मेज़ पर यहोवा के सामने रखो। हर एक पँक्ति में छः रोटियाँ होंगी। [7]हर एक पँक्ति पर शुद्ध लोबान रखो। यह यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट के सम्बन्ध में यहोवा को याद दिलाने में सहायता करेगा। [8]हर एक सब्त दिवस को हारून रोटियों को यहोवा के सामने क्रम में रखेगा। इसे सदैव करना चाहिए। इस्राएल के लोगों के साथ यह वाचा सदैव बनी रहेगी। [9]वह रोटी हारून और उसके पुत्रों की होगी। वे रोटियों को पवित्र स्थान में खायेंगे। क्यों? क्योंकि वह रोटी यहोवा को आग द्वारा चढ़ाई गई भेंटों में से है। वह रोटी सदैव हारून का हिस्सा है।”

वह व्यक्ति जिसने यहोवा को शाप दिया

[10]एक इस्राएली स्त्री का पुत्र था। उसका पिता मिस्री था। इस्राएली स्त्री का यह पुत्र इस्राएली था। वह इस्राएली लोगों के बीच में घूम रहा था और उसने डेरे में लड़ना आरम्भ किया। [11]इस्राएली स्त्री के लड़के ने यहोवा के नाम के बारे में बुरी बातें कहनी शुरू कीं । इसलिए लोग उस पुत्र को मूसा के सामने लाए। (लड़के की माँ का नाम शलोमीत था जो दान के परिवार समूह से दिब्री की पुत्री थी।) [12]लोगों ने लड़के को कैदी की तरह पकड़े रखा और तब तक प्रतीक्षा की, जब तक यहोवा का आदेश उन्हें स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं हो गया।

[13]तब यहोवा ने मूसा से कहा, [14]“उस व्यक्ति को डेरे के बाहर एक स्थान पर लाओ, जिसने शाप दिया है। तब उन सभी लोगों को एक साथ बुलाओ जिन्होंने उसे शाप देते सुना है। वे लोग अपने हाथ उसके सिर पर रखेंगे।* और तब सभी लोग उस पर पत्थर मारेंगे और उसे मार डालेंगे। [15]तुम्हें इस्राएल के लोगों से कहना चाहिए : यदि कोई व्यक्ति अपने परमेश्वर को शाप देता है तो उस व्यक्ति को दण्ड मिलना चाहिए। [16]कोई व्यक्ति, जो यहोवा के नाम के विरुद्ध बोलता है, अवश्य मार दिया जाना चाहिए। सभी लोगों को उसे पत्थर मारने चाहिए। विदेशी को वैसे ही दण्ड मिलना चाहिए जैसे इस्राएल में जन्म लेने वाले व्यक्ति को मिलता है। यदि कोई व्यक्ति यहोवा के नाम को अपशब्द कहता है तो उसे अवश्य मार देना चाहिए।

[17]“और यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को मार डालता है तो उसे अवश्य मार डालना चाहिए। [18]यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के जानवर को मार डालता है तो उसके बदले में उसे दूसरा जानवर देना चाहिए।*

[19]“यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोस में किसी को चोट पहुँचाता है तो उस व्यक्ति को उसी प्रकार की चोट उस व्यक्ति को पहुँचानी चाहिए।* [20]एक टूटी हड्डी के लिए एक टूटी हड्डी, एक आँख के लिए एक आँख, और एक दाँत के लिए दाँत। उसी प्रकार की चोट उस व्यक्ति को पहुँचानी चाहिए, जैसा उसने दूसरे को पहुँचाई है। [21]इसलिए जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के जानवर को मारे तो इसके बदले में उसे दूसरा जानवर देना चाहिए। किन्तु जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को मार डालता है वह अवश्य मार डाला जाना चाहिए।

[22]“तुम्हारे लिए एक ही प्रकार का न्याय होगा। यह विदेशी और तुम्हारे अपने देशवासी के लिए समान होगा। क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!”

[23]तब मूसा ने इस्राएल के लोगों से बात की और वे उस व्यक्ति को डेरे के बाहर एक स्थान पर लाए, जिसने शाप दिया था। तब उन्होंने उसे पत्थरों से मार डाला। इस प्रकार इस्राएल के लोगों ने वह किया जो यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

भूमि के लिए आराम का समय

25 यहोवा ने मूसा से सीनै पर्वत पर कहा। यहोवा ने कहा, [2]“इस्राएल के लोगों से कहो, तुम लोग उस भूमि पर जाओगे जिसे मैं तुमको दे रहा हूँ। उस समय तुम्हें भूमि को आराम का विशेष समय देना चाहिए। यह यहोवा को सम्मान देने के लिए धरती के आराम

हाथ उसके सिर पर रखेंगे इससे पता चलता है कि वे सब लोग उस लड़के को दण्ड देने में हाथ बटा रहे थे।

दूसरा जानवर देना चाहिये शाब्दिक इसके लिए भुगतान करो “जीवन के लिये जीवन।”

यदि ... चाहिये यह नियम समाज को अपराधों का दण्ड निश्चत करने के लिए एक दिशा निर्देश देता है। निजी रूप से बदला लेने की अपेक्षा अपराध के अनुरूप दण्ड समाज को निश्चित करना है।

का विशेष समय होगा। [3]तुम छ: वर्ष तक अपने खेतों में बीज बोओगे। तुम अपने अँगूर के बागों में छ: वर्ष तक कटाई करोगे और उसके फल लाओगे। [4]किन्तु सातवें वर्ष तुम उस भूमि को आराम करने दोगे। यह यहोवा को सम्मान देने के लिए आराम का विशेष समय होगा। तुम्हें अपने खेतों में बीज नहीं बोना चाहिए और अँगूर के बागों में बेलों की कटाई नहीं करनी चाहिए। [5]तुम्हें उन फ़सलों की कटाई नहीं करनी चाहिए जो फ़सल काटने के बाद अपने आप उगती है। तुम्हें अपनी उन अँगूर की बेलों से अँगूर नहीं उतारने चाहिए जिनकी तुमने कटाई नहीं की है। यह भूमि के विश्राम का वर्ष होगा।

[6]"यह भूमि के विश्राम का वर्ष होगा, किन्तु तुम्हारे पास फिर भी पर्याप्त भोजन रहेगा। तुम्हारे पुरुष व स्त्री दासों के लिए पर्याप्त भोजन रहेगा। मज़दूरी पर रखे गए तुम्हारे मजदूर और तुम्हारे देश में रहने वाले विदेशियों के लिए भोजन रहेगा। [7]तुम्हारे मवेशियों और अन्य जानवरों के खाने के लिए पर्याप्त चारा होगा।

जुबली* मुक्ति वर्ष

[8]"तुम सात वर्षों के सात समूहों को गिनोगे। ये उन्नचास वर्ष होंगे। इस समय के भीतर भूमि के लिए सात वर्ष आराम के होंगे। [9]प्रायश्चित्त के दिन तुम्हें मेढ़े का सींग बजाना चाहिए। वह सातवें महीने के दसवें दिन होगा। तुम्हें पूरे देश में मेढ़े का सींगा बजाना चाहिए। [10]तुम पचासवें वर्ष को विशेष वर्ष मनाओगे। तुम अपने देश में रहने वाले सभी लोगों की स्वतन्त्रता घोषित करोगे। इस समय को "जुबली मुक्तिवर्ष" कहा जाएगा। तुममें से हर एक को उसकी धरती लौटा दी जाएगी।* और तुममें से हर एक अपने परिवार में लौट जाएगा। [11]पचासवाँ वर्ष तुम्हारे लिए विशेष उत्सव* का वर्ष होगा। उस वर्ष तुम बीज मत बोओ। अपने आप उगी फसल न काटो। अँगूर की उन बेलों से अँगूर मत लो। [12]वह जुबली वर्ष है। यह तुम्हारे लिए पवित्र समय होगा। तुम उस पैदावार को खाओगे जो तुम्हारे खेतों से आती है। [13]जुबली वर्ष में हर एक व्यक्ति को उसकी धरती वापस हो जाएगी।

[14]"किसी व्यक्ति को अपनी भूमि बेचने में मत ठगो और जब तुम उससे भूमि खरीदो तब उसे अपने को मत ठगने दो। [15]यदि तुम किसी की भूमि खरीदना चाहते हो तो पिछले जुबली से काल गणना करो और उस गणना का उपयोग धरती का ठीक मूल्य तय करने के लिए करो। यदि तुम भूमि को बेचो, तो फसलों के काटने के वर्षों को गिनो और वर्षों की उस गणना का उपयोग ठीक मूल्य तय करने के लिए करो। [16]यदि अधिक वर्ष हैं तो मूल्य ऊँचा होगा। यदि वर्ष थोड़े हैं तो मूल्य कम करो। क्यों? क्योंकि वह व्यक्ति तुमको सचमुच कुछ वर्षों की कुछ फसलें ही बेच रहा है। अगली जुबली पर भूमि उसके परिवारों की हो जाएगी। [17]तुम्हें एक दूसरे को ठगना नहीं चाहिए। तुम्हें अपने परमेश्वर का सम्मान करना चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

[18]"मेरे नियमों और निर्णयों को याद रखो। उनका पालन करो। तब तुम अपने देश में सुरक्षित रहोगे। [19]भूमि तुम्हारे लिए उत्तम फ़सल पैदा करेगी। तब तुम्हारे पास बहुत अधिक भोजन होगा और तुम अपने प्रदेश में सुरक्षित रहोगे।

[20]"किन्तु कदाचित तुम यह कहो, 'यदि हम बीज न बोए या अपनी फ़सलें न इकट्ठी करें तो सातवें वर्ष हम लोगों के लिए खाने को कुछ भी नहीं रहेगा।' [21]चिन्ता मत करो! मैं छठे वर्ष में अपनी आशीष को तुम्हारे पास आने का आदेश दूँगा। भूमि तीन वर्ष तक फ़सल पैदा करती रहेगी। [22]जब आठवें वर्ष तुम बोओगे तब तक फ़सल पैदा करती रहेगी। तुम पुरानी पैदावार को नवें वर्ष तक खाते रहोगे जब आठवें वर्ष में बोयी हुई फ़सल घरों में आ जाएगी।

आवासीय भूमि के नियम

[23]"भूमि वस्तुत: मेरी है। इसलिए तुम इसे स्थायी रूप में नहीं बेच सकते। तुम मेरे साथ मेरी भूमि पर केवल विदेशी और यात्री के रूप में रह रहे हो। [24]कोई व्यक्ति अपनी भूमि बेच सकता है, किन्तु उसका परिवार सदैव अपनी भूमि वापस पाएगा। [25]कोई व्यक्ति तुम्हारे देश में

जुबली हिब्रू भाषा के शब्द नर–सिंगा से आया है जो इस अवसर पर फूँक कर बजाया जाता था।

धरती लौटा दी जाएगी इस्राएल में भूमि परिवारों और परिवार–समूहों की थी। कोई व्यक्ति अपनी भूमि बेच सकता था, किन्तु जुबली के समय वह भूमि फिर उसी परिवार या सयुँक्त परिवार की हो जाती थी जिसे वह सर्वप्रथम दी गई थी।

विशेष उत्सव शाब्दिक "जयन्तियाँ।"

बहुत गरीब हो सकता है। वह इतना गरीब हो सकता कि उसे अपनी सम्पत्ति बेचनी पड़े। ऐसी हालत में उसके नजदीकी रिश्तेदारों को आगे आना चाहिए और अपने रिश्तेदार के लिए वह सम्पत्ति वापस खरीदनी चाहिए। [26]किसी व्यक्ति का कोई ऐसा नजदीकी रिश्तेदार नहीं भी हो सकता है जो उसके लिए सम्पत्ति वापस खरीदे। किन्तु हो सकता है वह स्वयं भूमि को वापस खरीदने के लिए पर्याप्त धन पा ले। [27]तो उसे जब से भूमि बिकी थी तब से वर्षों को गिनना चाहिए। उसे उस गणना का उपयोग, भूमि का मूल्य निश्चित करने के लिए करना चाहिए। तब उसे भूमि को वापस खरीदना चाहिए। तब भूमि फिर उसकी हो जाएगी। [28]किन्तु यदि वह व्यक्ति अपने लिए भूमि को वापस खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं जुटा पाता तो जो कुछ उसने बेचा है वह उस व्यक्ति के हाथ में जिसने उसे खरीदा है, जुबली पर्व के आने तक रहेगा । तब उस विशेष उत्सव के समय भूमि प्रथम भू स्वामी के परिवार की हो जाएगी। इस प्रकार सम्पत्ति पुन: मूल अधिकारी परिवार की हो जाएगी।

[29]"यदि कोई व्यक्ति नगर परकोटे के भीतर अपना घर बेचता है तो घर के बेचे जाने के बाद एक वर्ष तक उसे वापस लेने का अधिकार होगा। घर को वापस लेने का उसका अधिकार एक वर्ष तक रहेगा। [30]किन्तु यदि घर का स्वामी एक पूरा वर्ष बीतने के पहले अपना घर वापस नहीं खरीदता तो नगर परकोटे के भीतर का घर जो व्यक्ति खरीदता है उसका और उसके वंशजों का हो जाता है। जुबली के समय प्रथम गृह स्वामी को वापस नहीं होगा। [31]बिना परकोटे वाले नगर खुले मैदान माने जाएंगे। अत: उन छोटे नगरों में बने हुए घर जुबली पर्व के समय प्रथम गृहस्वामी को वापस होंगे।

[32]"किन्तु लेवियों के नगर के बारे में: जो नगर लेवियों के अपने हैं, उनमें वे अपने घरों को किसी भी समय वापस खरीद सकते हैं। [33]यदि कोई व्यक्ति लेवी से कोई घर खरीदे तो लेवीयों के नगर का वह घर फिर जुबली पर्व के समय लेवियों का हो जाएगा। क्यों? क्योंकि लेवी नगर के घर लेवी के परिवार समूह के लोगों के हैं। इस्राएल के लोगों ने उन नगरों को लेवी लोगों को दिया। [34]लेवी नगरों के चारों ओर के खेत और चरागाह बेचे नहीं जा सकते। वे खेत सदा के लिए लेवियों के हैं।

दासों के स्वामियों के लिए नियम

[35]"सम्भवत: तुम्हारे देश का कोई व्यक्ति* इतना अधिक गरीब हो जाए कि अपना भरण पोषण न कर सके। तुम उसे एक अतिथि की तरह जीवित रखोगे। [36]उसे दिए गए अपने कर्ज़ पर कोई सूद मत लो। अपने परमेश्वर का सम्मान करो और अपने भाई को अपने साथ रहने दो। [37]उसे सूद पर पैसा उधार मत दो। जो भोजन वह करे, उस पर कोई लाभ लेने का प्रयत्न मत करो। [38]मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं तुम्हें मिस्र देश से कनान प्रदेश देने और तुम्हारा परमेश्वर बनने के लिए बाहर लाया।

[39]"सम्भवत: तुम्हारा कोई बन्धु इतना गरीब हो जाय कि वह दास के रूप में तुम्हे अपने को बेचे। तुम्हें उससे दास की तरह काम नहीं लेना चाहिए। [40]वह जुबली वर्ष तक मजदूर और एक अतिथि की तरह तुम्हारे साथ रहेगा। [41]तब वह तुम्हें छोड़ सकता है। वह अपने बच्चों को अपने साथ ले जा सकता है और अपने परिवार में लौट सकता है। वह अपने पूर्वजों की सम्पत्ति को लौट सकता है। [42]क्यों? क्योंकि वे मेरे सेवक हैं। मैंने उन्हें मिस्र की दासता से मुक्त किया। वे फिर दास नहीं होने चाहिए। [43]तुम्हें ऐसे व्यक्ति पर क्रूरता से शासन नहीं करना चाहिए। तुम्हें अपने परमेश्वर का सम्मान करना चाहिए।

[44]"तुम्हारे दास दासियों के बारे में : तुम अपने चारों ओर के अन्य राष्ट्रों से दास दासियाँ ले सकते हो। [45]यदि तुम्हारे देश में रहने वाले विदेशियों के परिवारों के बच्चे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम उन्हें भी दास रख सकते हो। वे बच्चे तुम्हारे दास होंगे। [46]तुम इन विदेशी दासों को अपने बच्चों को भी दे सकते हो जो तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारे बच्चों के होंगे। वे सदा के लिए तुम्हारे दास रहेंगे। तुम इन विदेशियों को दास बना सकते हो। किन्तु तुम्हें अपने भाईयों, इस्राएल के लोगों पर क्रूरता से शासन नहीं करना चाहिए।

[47]"सम्भव है कि कोई विदेशी यात्री या अतिथि तुम्हारे बीच धनी हो जाय। सम्भव है कि तुम्हारे देश का कोई व्यक्ति इतना गरीब हो जाय कि वह अपने को तुम्हारे बीच रहने वाले किसी विदेशी या विदेशी परिवार के सदस्य को दास के रूप में बेचे। [48]वह व्यक्ति वापस खरीदे जाने और स्वतन्त्र होने का अधिकारी होगा। उसके

देश का कोई व्यक्ति शाब्दिक "भाई।"

भाईयों में से कोई भी उसे वापस खरीद सकता है [49]अथवा उसके चाचा, मामा व चचेरे, ममेरे भाई उसे वापस खरीद सकते हैं या उसके नजदीकी रिश्तेदारों में से उसे कोई खरीद सकता है अथवा यदि व्यक्ति पर्याप्त धन पाता है तो स्वयं धन देकर वह फिर मुक्त हो सकता है।

[50]"तुम उसका मूल्य कैसे निश्चित करोगे? विदेशी के पास जब से उसने अपने को बेचा है तब से अगली जुबली तक के वर्षों को तुम गिनोगे। उस गणना का उपयोग मूल्य निश्चित करने में करो। क्यों? क्योंकि वस्तुत: उस व्यक्ति ने कुछ वर्षों के लिए उसे 'मजदूरी' पर रखा। [51]यदि जुबली के वर्ष के पूर्व कई वर्ष हो तो व्यक्ति को मूल्य का बड़ा हिस्सा लौटाना चाहिए। यह उन वर्षों की संख्या पर आधारित है। [52]यदि जुबली के वर्ष तक कुछ ही वर्ष शेष हो तो व्यक्ति को मूल कीमत का थोड़ा सा भाग ही लौटाना चाहिए। [53]किन्तु वह व्यक्ति प्रति वर्ष विदेशी के यहाँ मजदूर की तरह रहेगा, विदेशी को उस व्यक्ति पर क्रूरता से शासन न करने दो।

[54]"वह व्यक्ति किसी के द्वारा वापस न खरीदे जाने पर भी मुक्त होगा। जुबली के वर्ष वह तथा उसके बच्चे मुक्त हो जाएंगे। [55]क्यों? क्योंकि इस्राएल के लोग मेरे दास हैं। वे मेरे सेवक हैं। मैंने मिस्र की दासता से उन्हें मुक्त किया। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

परमेश्वर की आज्ञा पालन का पुरस्कार

26 "अपने लिए मूर्तियाँ मत बनाओ। मूर्तियाँ या यादगार के पत्थर स्थापित मत करो। अपने देश में उपासना करने के लिए पत्थर की मूर्तियाँ स्थापित न करो। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

[2]"मेरे आराम के विशेष दिनों को याद रखो और मेरे पवित्र स्थान का सम्मान करो। मैं यहोवा हूँ!

[3]"मेरे नियमों और आदेशों को याद रखो और उनका पालन करो। [4]यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं जिस समय वर्षा आनी चाहिए, उसी समय वर्षा कराऊँगा। भूमि फ़सलें पैदा करेंगी और पेड़ अपने फल देंगे। [5]तुम्हारा अनाज निकालने का काम तब तक चलेगा जब तक अँगूर इकट्ठा करने का समय आएगा और अँगूर का इकट्ठा करना तब तक चलेगा जब तक बोने का समय आएगा। तब तुम्हारे पास खाने के लिए बहुत होगा, और तुम अपने प्रदेश में सुरक्षित रहोगे। [6]मैं तुम्हारे देश को शान्ति दूँगा। तुम शान्ति से सो सकोगे। कोई व्यक्ति भयभीत करने नहीं आएगा। मैं विनाशकारी जानवरों को तुम्हारे देश से बाहर रखूँगा। और सेनाएं तुम्हारे देश से नहीं गुजरेंगी।

[7]"तुम अपने शत्रुओं को पीछा करके भगाओगे और उन्हें हराओगे। तुम उन्हें अपनी तलवार से मार डालोगे। [8]तुम्हारे पाँच व्यक्ति सौ व्यक्तियों को पीछा कर के भगाएंगे और तुम्हारे सौ व्यक्ति हजार व्यक्तियों का पीछा करेंगे। तुम अपने शत्रुओं को हराओगे और उन्हें तलवार से मार डालोगे।

[9]"तब मैं तुम्हारी ओर मुड़ूंगा मैं तुम्हें बहुत से बच्चों वाला बनाऊँगा। मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा का पालन करूँगा। [10]तुम्हारे पास एक वर्ष से अधिक चलने वाली पर्याप्त पैदावार रहेगी। तुम नयी फसल काटोगे। किन्तु तब तुम्हें पुरानी पैदावार नयी पैदावार के लिए जगह बनाने हेतु फेंकनी पड़ेगी। [11]तुम लोगों के बीच मैं अपना पवित्र तम्बू रखूँगा। मैं तुम लोगों से अलग नहीं होऊँगा। [12]मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा। तुम मेरे लोग रहोगे। [13]मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। तुम मिस्र में दास थे। किन्तु मैं तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। तुम लोग दास के रूप में भारी बोझ ढोने से झुके हुए थे किन्तु मैंने तुम्हारे कंधों के जुंए को तोड़ फेंका। मैंने तुम्हें पुन: गर्व से चलने वाला बनाया।

यहोवा की आज्ञा पालन न करने के लिए दण्ड

[14]"किन्तु यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करोगे और मेरे ये सब आदेश नहीं मानोगे तो ये बुरी बातें होंगी। [15]यदि तुम मेरे नियमों और आदेशों को मानना अस्वीकार करते हो तो तुमने मेरी वाचा को तोड़ दिया है। [16]यदि तुम ऐसा करते हो तो मैं ऐसा करूँगा कि तुम्हारा भयंकर अनिष्ट होगा। मैं तुमको असाध्य रोग और तीव्र ज्वर लगाऊँगा। वे तुम्हारी आँखे नष्ट करेंगे और तुम्हारा जीवन ले लेंगे। जब तुम अपने बीज बोओगे तो तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी तुम्हारी पैदावार तुम्हारे शत्रु खाएंगे। [17]मैं तुम्हारे विरुद्ध होऊँगा, अत: तुम्हारे शत्रु तुमको हराएंगे। वे शत्रु तुमसे घृणा करेंगे और तुम्हारे ऊपर शासन करेंगे। तुम तब भी भागोगे, जब तुम्हारा पीछा कोई न कर रहा होगा।

[18]"यदि इस के बाद भी तुम मेरी आज्ञा पालन नहीं करते हो तो मैं तुम्हारे पापों के लिए सात गुना अधिक

दण्ड दूँगा। [19]मैं उन बड़े नगरों को भी नष्ट करूँगा जो तुम्हें गर्वीला बनाते हैं। आकाश वर्षा नहीं देगा और धरती पैदावार नहीं उत्पन्न करेगी।* [20]तुम कठोर परिश्रम करोगे, किन्तु इससे कुछ भी नहीं होगा। तुम्हारी भूमि में कोई पैदावार नहीं होगी और तुम्हारे पेड़ों पर फल नहीं आएंगे।

[21]"यदि तब भी तुम मेरे विरुद्ध जाते हो और मेरी आज्ञा का पालन करना अस्वीकार करते हो तो मैं सात गुना कठोरता से मारूँगा। जितना अधिक पाप करोगे उतना अधिक दण्ड पाओगे। [22]मैं तुम्हारे विरुद्ध जंगली जानवरों को भेजूँगा। वे तुम्हारे बच्चों को तुमसे छीन ले जाएगें। वे तुम्हारे मवेशियों को नष्ट करेंगे। वे तुम्हारी संख्या बहुत कम कर देंगे। लोग यात्रा करने से भय खाएंगे, सड़कें खाली हो जाएंगी!

[23]"यदि उन चीज़ों के होने पर भी तुम्हें सबक नहीं मिलता और तुम मेरे विरुद्ध जाते हो, [24]तो मैं तुम्हारे विरुद्ध होऊँगा। मैं, हाँ, मैं (यहोवा), तुम्हारे पापों के लिए तुम्हें सात गुना दण्ड दूँगा। [25]तुमने मेरी वाचा तोड़ी है, अत: मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध सेनाएँ भेजूँगा। तुम सुरक्षा के लिए अपने नगरों में जाओगे। किन्तु मैं ऐसा करूँगा कि तुम लोगों में बीमारियाँ फैलें। तब तुम्हारे शत्रु तुम्हें हराएंगे। [26]मैं उस नगर में छोड़े गए अन्न का एक भाग तुम्हें दूँगा। किन्तु खाने के लिए बहुत कम अन्न रहेगा। दस स्त्रियाँ अपनी सभी रोटी एक चूल्हे में पका सकेंगी। वे रोटी के हर एक टूकड़े को नापेंगी। तुम खाओगे, किन्तु फिर भी भूखे रहोगे!

[27]"यदि तुम इतने पर भी मेरी बातें सुनना अस्वीकार करते हो, और मेरे विरुद्ध रहते हो [28]तो मैं वस्तुत: अपना क्रोध प्रकट करूँगा! मैं, हाँ, मैं (यहोवा), तुम्हें तुम्हारे पापों के लिए सात गुना दण्ड दूँगा। [29]तुम अपने पुत्र, पुत्रियों के शरीरों को खाओगे। [30]मैं तुम्हारे ऊँचे स्थानों* को नष्ट करूँगा। मैं तुम्हारी सुगन्धित वेदियों को काट डालूँगा। मैं तुम्हारे शवों को तुम्हारी निर्जीव मूर्तियों के शवों पर डालूँगा। तुम मुझको अत्यन्त घिनौने लगोगे। [31]मैं तुम्हारे नगरों को नष्ट करूँगा। मैं ऊँचे पवित्र स्थानों को खाली कर दूँगा। मैं तुम्हारी भेंटों की मधुर सुगन्ध को नहीं लूँगा। [32]मैं तुम्हारे देश को इतना खाली कर दूँगा कि तुम्हारे शत्रु तक जो इसमें रहने आएंगे, वे इस पर चकित होंगे। [33]और मैं तुम्हें विभिन्न प्रदेशों में बिखेर दूँगा। मैं अपनी तलवार खीचूँगा और तुम्हें नष्ट करूँगा। तुम्हारी भूमि ख़ाली हो जाएगी और तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएंगे।

[34]"तुम अपने शत्रु के देशों में ले जाये जाओगे। तुम्हारी धरती खाली हो जायेगी और वह अंत में उस विश्राम* को पायेगी। [35]जिसे तुमने उसे तब नहीं दिया था जब तुम उस पर रहते थे। [36]बचे हुए व्यक्ति अपने शत्रुओं के देश में अपना साहस खो देंगे। वह हर चीज़ से भयभीत होंगे। वह हवा में उड़ती पत्ती की तरह चारों ओर भागेंगें। वे ऐसे भागेंगे मानों कोई तलवार लिए उनका पीछा कर रहा हो। [37]वे एक दूसरे पर तब भी गिरेंगे, जब कोई भी उनका पीछा नहीं कर रहा होगा।

"तुम इतने शक्तिशाली नहीं रहोगे कि अपने शत्रुओं के मुकाबले खड़े रह सको। [38]तुम अन्य लोगों में विलीन हो जाओगे। तुम अपने शत्रुओं के देश में लुप्त हो जाओगे। [39]इस प्रकार तुम्हारी सन्तानें तुम्हारे शत्रुओं के देश में अपने पापों में सड़ेंगी। वे अपने पापों में ठीक वैसे ही सड़ेंगी जैसे उनके पूर्वज सड़े।

आशा सदा रहती है

[40]"सम्भव है कि लोग अपने पाप स्वीकार करें और वे अपने पूर्वजों के पापों को स्वीकार करेंगे। सम्भव है वे स्वीकार करें कि वे मेरे विरुद्ध हुए। सम्भव है वे यह स्वीकार करें कि उन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया है। [41]सम्भव है कि वे स्वीकार करें कि मैं उनके विरुद्ध हुआ और उन्हें उनके शत्रुओं के देश में लाया। उन लोगों ने मेरे साथ अजनबी का सा व्यवहार किया। यदि वे विनम्र* हो जाएं और अपने पापों के लिए दण्ड स्वीकार करें [42]तो मैं याकूब के साथ के अपनी वाचा को याद करूँगा। इसहाक के साथ के

आकाश ... करेगी शाब्दिक "तुम्हारे लिए आकाश लोहा सा होगा और भूमि काँसे जैसी।"

ऊँचे स्थानों परमेश्वर अथवा मिथ्या देवताओं की उपासना के स्थान। ये स्थान प्राय: पहाड़ियों और पर्वतों पर बनाये जाते थे।

विश्राम नियम के अनुसार हर सातवें वर्ष भूमि को विश्राम का एक वर्ष मिलना चाहिये।

उन लोगो ... विनम्र शाब्दिक "यदि वे अपने खतनारहित हृदय को विनम्र करें।"

अपनी वाचा को याद करूँगा। इब्राहीम के साथ की गई वाचा को मैं याद करूँगा और मैं उस भूमि को याद करूँगा।

[43]"भूमि खाली रहेगी। भूमि आराम के समय का आनन्द लेगी। तब तुम्हारे बचे हुए लोग अपने पाप के लिए दण्ड स्वीकार करेगें। वे सीखेंगे कि उन्हें इसलिए दण्ड मिला कि उन्होंने मेरे व्यवस्था से घृणा की और नियमों का पालन करना अस्वीकार किया। [44]उन्होंने सचमुच पाप किया। किन्तु यदि वे मेरे पास सहायता के लिए आते हैं तो मैं उनसे दूर नहीं रहूँगा। मैं उनकी बातें तब भी सुनूँगा जब वे अपने शत्रुओं के देश में भी होगें। मैं उन्हें पूरी तरह नष्ट नहीं करूँगा। मैं उनके साथ अपनी वाचा को नहीं तोडूँगा। क्यों? क्योंकि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ! [45]मैं उनके पूर्वजों के साथ की गई वाचा को याद रखूँगा। मैं उनके पूर्वजों को इसलिए मिस्र से बाहर लाया कि मैं उनका परमेश्वर हो सकूँ। दूसरे राष्टों ने उन बातों को देखा। मैं यहोवा हूँ!"

[46]ये वे विधियाँ, नियम और व्यवस्थाएं हैं जिन्हें यहोवा ने इस्राएल के लोगों को दिया। वे नियम इस्राएल के लोगों और यहोवा के बीच वाचा है। यहोवा ने उन नियमों को सीनै पर्वत पर दिया था। उसने मूसा को नियम दिए और मूसा ने उन्हें लोगों को दिया।

वचन महत्वपूर्ण हैं

27 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएल के लोगों से कहो : कोई व्यक्ति यहोवा को विशेष वचन दे सकता है। वह व्यक्ति यहोवा को किसी व्यक्ति को अर्पित करने का वचन दे सकता है। वह व्यक्ति यहोवा की सेवा विशेष ढंग से करेगा। याजक उस व्यक्ति के लिए विशेष मूल्य निश्चित करेगा। यदि लोग उसे यहोवा से वापस खरीदना चाहते हैं तो वे मूल्य देंगे। [3]बीस से साठ वर्ष तक की आयु के पुरुष का मूल्य पचास शेकेल चाँदी होगी। (तुम्हें चाँदी को तोलने के लिए पवित्र स्थान से प्रामाणिक शेकेल का उपयोग करना चाहिए।) [4]बीस से साठ वर्ष आयु की स्त्री का मूल्य तीस शेकेल है। [5]पाँच से बीस वर्ष की आयु के पुरुष का मूल्य बीस शेकेल है। पाँच से बीस वर्ष आयु की स्त्री का मूल्य दस शेकेल हैं। [6]एक महीने से पाँच महीने तक के बालक का मूल्य पाँच शेकेल है। एक बालिका का मूल्य तीन शेकेल है। [7]साठ या साठ से अधिक आयु के पुरुष का मूल्य पन्द्रह शेकेल है। एक स्त्री का मूल्य दस शेकेल है।

[8]"यदि व्यक्ति इतना गरीब है कि मूल्य देने में असमर्थ है तो उस व्यक्ति को याजक के सामने लाओ। याजक यह निश्चित करेगा कि वह व्यक्ति कितना मूल्य भुगतान में दे सकता है।

यहोवा को भेंट

[9]"कुछ जानवरों का उपयोग यहोवा की बलि के रूप में किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति उन जानवरों में से किसी को लाता है तो वह जानवर पवित्र हो जाएगा। [10]वह व्यक्ति यहोवा को उस जानवर को देने का वचन देता है। इसलिए उस व्यक्ति को उस जानवर के स्थान पर दूसरा जानवर रखने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। उसे अच्छे जानवर को बुरे जानवर से नहीं बदलना चाहिए। उसे बुरे जानवर को अच्छे जानवर से नहीं बदलना चाहिए। यदि वह व्यक्ति दोनों जानवरों को बदलना ही चाहता है तो दोनों जानवर पवित्र हो जाएगें। दोनों जानवर यहोवा के हो जाएंगे।

[11]"कुछ जानवर यहोवा को बलि के रूप में नहीं भेंट किए जा सकते। यदि कोई व्यक्ति उन अशुद्ध जानवरों में से किसी को यहोवा के लिए लाता है तो वह जानवर याजक के सामने लाया जाना चाहिए। [12]याजक उस जानवर का मूल्य निश्चित करेगा। इससे कोई जानवर नहीं कहा जाएगा कि वह जानवर अच्छा है या बुरा, यदि याजक मूल्य निश्चित कर देता है तो जानवर का वही मूल्य है। [13]यदि व्यक्ति जानवर को वापस खरीदना चाहता है* तो उसे मूल्य में पाँचवाँ हिस्सा और जोड़ना चाहिए।

यहोवा को भेंट किए गए मकान का मूल्य

[14]"यदि कोई व्यक्ति अपने मकान को पवित्र मकान के रूप में यहोवा को अर्पित करता है तो याजक को

वापस खरीदना चाहता है पहलौठा बच्चे या जानवर यहोवा को दिये जाते थे। किन्तु गधों की तरह बच्चों की बलि नहीं दी जाती थी। इस प्रकार व्यक्ति प्रथम उत्पन्न को याजक को देता था। याजक मूल्य निश्चित करता था, और व्यक्ति प्रथम उत्पन्न को धन या बलि चढ़ाने योग्य जानवर से वापस खरीद लेता था। देखें निर्गमन 13:1–16

इसका मूल्य निश्चित करना चाहिए। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि मकान अच्छा है या बुरा, यदि याजक मूल्य निश्चित करता है तो वही मकान का मूल्य है। [15]किन्तु वह व्यक्ति जो मकान अर्पित करता है यदि उसे वापस खरीदना चाहता है तो उसे मूल्य में पाँचवाँ हिस्सा जोड़ना चाहिए। तब घर उस व्यक्ति का हो जाएगा।

भूसम्पत्ति का मूल्य

[16]"यदि कोई व्यक्ति अपने खेत का कोई भाग यहोवा को अर्पित करता है तो उन खेतों का मूल्य उनको बोने के लिए आवश्यक बीज पर आधारित होगा। एक होमेर* जौ के बीज की कीमत चाँदी के पचास शेकेल होगी। [17]यदि व्यक्ति जुबली के वर्ष खेत का दान करता है तब मूल्य वह होगा जो याजक निश्चित करेगा। [18]किन्तु व्यक्ति यदि जुबली के बाद खेत का दान करता है तो याजक को वास्तविक मूल्य निश्चित करना चाहिए। उसे अगले जुबली वर्ष तक के वर्षों को गिनना चाहिए। तब वह उस गणना का उपयोग मूल्य निश्चित करने के लिए करेगा। [19]यदि खेत दान देने वाला व्यक्ति खेत को वापस खरीदना चाहे तो उसके मुल्य में पाँचवाँ भाग और जोड़ा जाएगा। [20]यदि वह व्यक्ति खेत को वापस नहीं खरीदता है तो खेत सदैव याजकों का होगा। यदि खेत किसी अन्य को बेचा जाता है तो पहला व्यक्ति उसे वापस नहीं खरीद सकता। [21]यदि व्यक्ति खेत को वापस नहीं खरीदता है तो जुबली के वर्ष खेत केवल यहोवा के लिए पवित्र रहेगा। यह सदैव याजकों का रहेगा। यह उस भूमि की तरह होगा जो पूरी तरह यहोवा को दे दी गई हो।

[22]"यदि कोई अपने खरीदे खेत को यहोवा को अर्पित करता है जो उसकी निजी सम्पत्ति* का भाग नहीं है। [23]तब याजक को जुबली के वर्ष तक वर्षों को गिनना चाहिए और खेत का मूल्य निश्चित करना चाहिए। तब वह खेत यहोवा का होगा। [24]जुबली के वर्ष वह खेत मूल भूस्वामी के पास चला जाएगा। वह उस परिवार को जाएगा जो उसका स्वामी है।

[25]"तुम्हें पवित्र स्थान से प्रामाणिक शेकेल का उपयोग उन मूल्यों को अदा करने के लिए करना चाहिए। पवित्र स्थान के प्रामाणिक शेकेल का तोल बीस गेरा* है।

जानवरों का मूल्य

[26]"लोग मवेशियों और भेड़ों को यहोवा को दान दे सकते हैं, किन्तु यदि जानवर पहलौठा है तो वह जानवर जन्म से ही यहोवा का है। इसलिए लोग पहलौठा जानवर का दान नहीं कर सकते। [27]लोगों को पहलौठा जानवर यहोवा को देना चाहिए। किन्तु यदि पहलौठा जानवर अशुद्ध है तो व्यक्ति को उस जानवर को वापस खरीदना चाहिए। याजक उस जानवर का मूल्य निश्चित करेगा और व्यक्ति को उस मूल्य का पाँचवाँ भाग उसमें जोड़ना चाहिए। यदि व्यक्ति जानवर को वापस नहीं खरीदता तो याजक को अपने निश्चित किए गए मूल्य पर उसे बेच देना चाहिए।

विशेष भेंटें

[28]"एक विशेष प्रकार की भेंट* है जिसे लोग यहोवा को चढ़ाते हैं। वह भेंट पूरी तरह यहोवा की है। वह भेंट न तो वापस खरीदी जा सकती है न ही बेची जा सकती है। वह भेंट यहोवा की है। उस प्रकार की भेंटें ऐसे लोग, जानवर और खेत हैं, जो परिवार की सम्पत्ति है।

[29]"यदि वह विशेष प्रकार की यहोवा को भेंट कोई व्यक्ति है तो उसे वापस खरीदा नहीं जा सकता। उसे अवश्य मार दिया जाना चाहिए।

[30]"सभी पैदावारों का दसवाँ भाग यहोवा का है। इसमें खेतों, फसलें और पेड़ों के फल सम्मिलित हैं। वह दसवाँ भाग यहोवा का है। [31]इसलिए यदि कोई व्यक्ति अपना दसवाँ भाग वापस लेना चाहता है तो उसके मूल्य का पाँचवाँ भाग उसमें जोड़ना चाहिए और वापस खरीदना चाहिए।

एक होमेर माप वाली सूखी चीज़ों का तोल। यह लगभग छ: बुशल।

निजी सम्पत्ति अर्थात् वह भूमि जो उसके परिवार या उसके परिवार समूह को दी गई हो।

बीस गेरा 1/50 औंस।

विशेष प्रकार की भेंट ये प्राय: वे चीज़ें हैं जो युद्ध में ली जाती थीं। वे भेंट पूरी तरह प्रभु की है अत: अन्य किसी काम के लिए उनका उपयोग नहीं हो सकता। यदि युद्ध में पकड़ा गया व्यक्ति भेंट किया गया था तो वह व्यक्ति मार दिया जाता था।

[32]“याजक व्यक्तियों के मवेशियों और भेड़ों में से हर दसवाँ जानवर लेगा। हर दसवाँ जानवर यहोवा का होगा। [33]मालिक को यह चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि वह जानवर अच्छा है या बुरा। उसे जानवर को अन्य जानवर से नहीं बदलना चाहिए। यदि वह बदलने का निश्चय करता है तो दोनों जानवर यहोवा के होंगे। वह जानवर वापस नहीं खरीदा जा सकता।”

[34]ये वे आदेश हैं जिन्हें यहोवा ने सीनै पर्वत पर मूसा को दिये। ये आदेश इस्राएल के लोगों के लिए हैं।

गिनती

इस्राएल की गिनती की जाती है

1 यहोवा ने मूसा से मिलापवाले तम्बू में बात की। यह सीनै मरुभूमि में हुई। यह बात इस्राएल के लोगों द्वारा मिस्र छोड़ने के बाद दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहले दिन की थी। यहोवा ने मूसा से कहा: [2]"इस्राएल के सभी लोगों को गिनो। हर एक व्यक्ति की सूची उसके परिवार और उसके परिवार समूह के साथ बनाओ। [3]तुम तथा हारून इस्राएल के सभी पुरुषों को गिनोगे। उन पुरुषों को गिनो जो बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के हैं। (ये वे हैं जो इस्राएल की सेना में सेवा करते हैं।) इनकी सूची इनके समुदाय* के आधार पर बनाओ। [4]हर एक परिवार समूह से एक व्यक्ति तुम्हारी सहायता करेगा। यह व्यक्ति अपने परिवार समूह का नेता होगा। [5]तुम्हारे साथ रहने और तुम्हारी सहायता करने वाले व्यक्तियों के नाम ये हैं:

रूबेन परिवार समूह से–शदेऊर का पुत्र एलीसूर;
[6] शिमोन परिवार समूह से–सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल;
[7] यहूदा के परिवार समूह से–अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन;
[8] इस्साकार के परिवार समूह से–सूआर का पुत्र नतनेल;
[9] जबूलून के परिवार समूह से–हेलोन का पुत्र एलीआब;
[10] यूसुफ के वंश से, एप्रैम के परिवार समूह से–अम्मीहूद का पुत्र एप्रैम;
मनश्शे के परिवार समूह से–पदासूर का पुत्र गम्लीऐल;
[11] बिन्यामीन के परिवार समूह से–गिदोनी का पुत्र अबीदान;
[12] दान के परिवार समूह से–अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर;
[13] आशेर के परिवार समूह से–ओक्रान का पुत्र पगीएल;
[14] गाद के परिवार समूह से–दूएल* का पुत्र एल्यासाप;
[15] नप्ताली के परिवार समूह से–एनाम का पुत्र अहीरा;

[16]ये सभी व्यक्ति अपने लोगों द्वारा अपने परिवार समूह के नेता चुने गए। ये लोग अपने परिवार समूह के नेता हैं। [17]मूसा और हारून ने इन व्यक्तियों (और इस्राएल के लोगों) को एक साथ लिया जो नेता होने के लिये आये थे। [18]मूसा और हारून ने इस्राएल के सभी लोगों को बुलाया। तब लोगों की सूची उनके परिवार और परिवार समूह के अनुसार बनी। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के सभी व्यक्तियों की सूची बनी। [19]मूसा ने ठीक वैसा ही किया जैसा यहोवा का आदेश था। मूसा ने लोगों को तब गिना जब वे सीनै की मरुभूमि में थे।

[20]रूबेन के परिवार समूह को गिना गया। (रूबेन इस्राएल का पहलौठा पुत्र था।) उन सभी पुरुषों की सूची बनी जो बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के थे और सेना में सेवा करने योग्य थे। उनकी सूची उनके परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। [21]रूबेन के परिवार समूह से गिने गए पुरुषों की संख्या छियालीस हजार पाँच सौ थी।

[22]शिमोन के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। [23]शिमोन के

समुदाय या, "टुकड़ी"। यह सेना का पारिभाषिक शब्द है जो यह संकेत करता है कि इस्राएल एक सेना की तरह संगठित था।

दूएल या, "रूएल।"

परिवार समूह को गिनने पर सारे पुरुषों की संख्या उनसठ हजार तीन सौ थी।

[24]गाद के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। [25]गाद के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या पैंतालीस हजार छ: सौ पचास थी।

[26]यहूदा के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। [27]यहूदा के परिवार समूह को गिनने पर सारी संख्या चौहत्तर हजार छ: सौ थी।

[28]इस्साकार के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके परिवार समूह के साथ बनी। [29]इस्साकार के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या चौवन हजार चार सौ थी।

[30]जबूलून के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। [31]जबूलून के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या सत्तावन हजार चार सौ थी।

[32]एप्रैम के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके परिवार समूह के साथ बनी। [33]एप्रैम के परिवार समूह को गिनने पर सारी संख्या चालीस हजार पाँच सौ थी।

[34]मनश्शे के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके परिवार समूह के साथ बनी। [35]मनश्शे के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या बत्तीस हजार दो सौ थी।

[36]बिन्यामीन के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। [37]बिन्यामिन के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या पैंतीस हजार चार सौ थी।

[38]दान के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। [39]दान के परिवार समूह को गिनने पर सारी संख्या बासठ हजार सात सौ थी।

[40]आशेर के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। [41]आशेर के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या एकतालीस हजार पाँच सौ थी।

[42]नप्ताली के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। [43]नप्ताली के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या तिरपन हजार चार सौ थी।

[44]मूसा, हारून और इस्राएल के नेताओं ने इन सभी पुरुषों को गिना। वहाँ बारह नेता थे। (हर परिवार समूह से एक नेता था।) [45]इस्राएल का हर एक पुरुष जो बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य था, गिना गया। इन पुरुषों की सूची उनके परिवार समूह के साथ बनी। [46]पुरुषों की सारी संख्या छ: लाख तीन हजार पाँच सौ पचास थी।

[47]लेवी के परिवार समूह से परिवारों की सूची इस्राएल के अन्य पुरुषों के साथ नहीं बनी। [48]यहोवा ने मूसा से कहा था: [49]"लेवी के परिवार समूह के पुरुषों को तुम्हें नहीं गिनना चाहिए। इस्राएल के अन्य पुरुषों के एक भाग के रूप में उनकी संख्या को मत जोड़ो। [50]लेवीवंश के पुरुषों से कहो कि वे साक्षीपत्र के पवित्र तम्बू के लिए उत्तरदायी हैं। वे उसकी और उसमें जो चीज़ें हैं, उनकी देखभाल करेंगे। वे मिलापवाले तम्बू और उसकी सभी चीजें लेकर चलेंगे। वे अपना डेरा उसके चारों ओर डालेंगे तथा उसकी देखभाल करेंगे। [51]जब कभी वह पवित्र तम्बू कहीं ले जाया जाएगा, तो लेवीवंश के पुरुषों को ही उसे उतारना होगा। जब कभी मिलापवाला तम्बू

किसी स्थान पर लगाया जाएगा तो लेवीवंश के पुरुषों को ही यह करना होगा। वे ही ऐसे पुरुष हैं जो मिलापवाले तम्बू की देखभाल करते हैं। यदि कोई ऐसा अन्य पुरुष तम्बू के निकट आना चाहता है जो लेवी के परिवार समूह का नहीं है तो वह मार डाला जाएगा। [52]इस्राएल के लोग अपने डेरे अलग अलग समूहों में लगाएंगे। हर एक व्यक्ति को अपना डेरा अपने परिवार के झण्डे के पास लगाना चाहिए। [53]किन्तु लेवी के लोगों को अपना डेरा पवित्र तम्बू के चारों ओर डालना चाहिए। लेवीवंश के लोग साक्षीपत्र के पवित्र तम्बू की रक्षा करेंगे। वे पवित्र तम्बू की रक्षा करेंगे जिससे इस्राएल के लोगों का कुछ भी बुरा नहीं होगा।"

[54]इसलिए इस्राएल के लोगों ने उन सभी बातों को माना जिसका आदेश यहोवा ने मूसा को दिया था।

डेरे की व्यवस्था

2 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा: [2]"इस्राएल के लोगों को मिलापवाले तम्बू के चारों ओर अपने डेरे लगाने चाहिए। हर एक समुदाय का अपना विशेष झण्डा होगा और हर एक व्यक्ति को अपने समूह के झण्डे के पास अपना डेरा लगाना चाहिए।"

[3]यहूदा के डेरे का झण्डा पूर्व में होगा, जिधर सूरज निकलता है। यहूदा के लोग वहीं डेरा लगाएंगे। यहूदा के लोगों का नेता अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन है। [4]इस समूह में चौहत्तर हजार छ: सौ पुरुष थे।

[5]इस्साकार का परिवार समूह यहूदा के लोगों के ठीक बाद में होगा। इस्साकार के लोगों का नेता सूआर का पुत्र नतनेल है। [6]इस समूह में चौवन हजार चार सौ पुरुष थे।

[7]जबूलून का परिवार समूह भी यहूदा के परिवार समूह से ठीक बाद में अपना डेरा लगाएगा। जबूलून के लोगों का नेता हेलोन का पुत्र एलीआब है। [8]इस समूह में सत्तावन हजार चार सौ पुरुष थे। [9]यहूदा के डेरे में एक लाख छियासी हजार चार सौ पुरुष थे। ये सभी अपने अलग अलग परिवार समूह में बंटे हुए हैं। यहूदा पहला समूह होगा जो उस समय आगे चलेगा जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करेंगे। [10]रूबेन का झण्डा पवित्र तम्बू के दक्षिण में होगा। हर एक समूह अपने झण्डे के पास अपना डेरा लगाएगा। रूबेन के लोगों का नेता शदेऊर का पुत्र एलीसूर है। [11]इस समूह में छियालीस हजार पाँच सौ पुरुष थे।

[12]शिमोन का परिवार समूह रूबेन के परिवार समूह के ठीक बाद अपना डेरा लगाएगा। शिमोन के लोगों का नेता सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल है। [13]इस समूह में उनसठ हजार तीन सौ पुरुष थे।

[14]गाद का परिवार समूह भी रूबेन के लोगों के ठीक बाद अपना डेरा लगाएगा। गाद के लोगों का नेता रूएल का पुत्र एल्यासाप है। [15]इस समूह में पैंतालीस हजार चार सौ पचास पुरुष थे।

[16]रूबेन के डेरे में सभी समूहों के एक लाख इकयावन हजार चार सौ पचास पुरुष थे। रूबेन का डेरा दूसरा समूह होगा जो उस समय चलेगा जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करेंगे।

[17]जब लोग यात्रा करेंगे तो लेवी का डेरा ठीक उसके बाद चलेगा। मिलापवाला तम्बू दूसरे अन्य डेरों के बीच उनके साथ रहेगा। लोग अपने डेरे उसी क्रम में लगाएंगे जिस क्रम में वे चलेंगे। हर एक व्यक्ति अपने परिवार के झण्डे के साथ रहेगा।

[18]एप्रैम का झण्डा पश्चिम की ओर रहेगा। एप्रैम के परिवार के समूह वहीं डेरा लगाएंगे। एप्रैम के लोगों का नेता अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा है। [19]इस समूह में चालीस हजार पाँच सौ पुरुष थे।

[20]मनश्शे का परिवार समूह एप्रैम के परिवार के ठीक बाद अपना डेरा लगाएगा। मनश्शे के लोगों का नेता पदासूर का पुत्र गम्लीएल है। [21]इस समूह में बत्तीस हजार दो सौ पुरुष थे।

[22]बिन्यामीन का परिवार समूह भी एप्रैम के परिवार के ठीक बाद अपना डेरा लगाएगा। बिन्यामीन के लोगों का नेता गिदोनी का पुत्र अबीदान है। [23]इस समूह में पैंतीस हजार चार सौ पुरुष थे।

[24]एप्रैम के डेरे में एक लाख आठ हजार एक सौ पुरुष थे। यह तीसरा परिवार होगा जो तब चलेगा जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करेंगे।

[25]दान के डेरे का झण्डा उत्तर की ओर होगा। दान के परिवार का समूह वहीं डेरा लगाएगा। दान के लोगों का नेता अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर है। [26]इस समूह में बासठ हजार सात सौ पुरुष थे। [27]आशेर का परिवार समूह दान के परिवार समूह के ठीक बाद अपना डेरा

लगाएगा। आशेर के लोगों का नेता ओक्रान का पुत्र पगीएल है। [28]इस समूह मे इकतालीस हजार पाँच सौ पुरुष थे।

[29]नप्ताली का परिवार समूह भी दान के परिवार समूह के ठीक बाद अपने डेरे लगाएगा। नप्ताली के लोगों का नेता एनान का पुत्र अहीरा है। [30]इस समूह में तिरपन हजार चार सौ पुरुष थे।

[31]दान के डेरे में एक लाख सत्तावन हजार छ: सौ पुरुष थे। जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करेंगे तो यह चलने वाला आखिरी परिवार होगा। ये अपने झण्डे के नीचे अपना डेरा लगाएंगे।

[32]इस प्रकार ये इस्राएल के लोग थे। वे परिवार के अनुसार गिने गये थे। सभी डेरों में अलग–अलग समूहों के सभी परिवारों के पुरुषों की समूची संख्या थी छ: लाख तीन हजार पाँच सौ पचास। [33]मूसा ने इस्राएल के अन्य लोगों में लेवीवंश के लोगों को नहीं गिना। यह यहोवा का आदेश था।

[34]यहोवा ने मूसा को जो कुछ करने को कहा उस सबका पालन इस्राएल के लोगों ने किया। हर एक समूहों ने अपने झण्डों के नीचे अपने डेरे लगाए और हर एक व्यक्ति अपने परिवार और अपने परिवार समूह के साथ रहा।

हारून का याजक परिवार

3 जिस समय यहोवा ने सीनै पर्वत पर मूसा से बात की, उस समय हारून और मूसा के परिवार का इतिहास यह है।

[2]हारून के चार पुत्र थे। नादाब पहलौठा पुत्र था। उसके बाद अबीहू, एलीआज़ार और ईतामार थे। [3]ये पुत्र चुने हुए* याजक थे।

इन्हें याजक के रूप में यहोवा की सेवा का विशेष कार्य सौंपा गया था। [4]किन्तु नादाब और अबीहू यहोवा की सेवा करते समय पाप करने के कारण मर गए। उन्होंने यहोवा को भेंट चढ़ाई, किन्तु उन्होंने उस आग का उपयोग किया जिसके लिए यहोवा ने आज्ञा नहीं दी थी। इस प्रकार नादाब और अबीहू वहीं सीनै की मरुभूमि में मर गए। उनके पुत्र नहीं थे, अत: एलीआज़ार और ईतामार याजक बने और यहोवा की सेवा करने लगे। वे यह उस समय तक करते रहे जब तक उनका पिता हारून जीवित था।

लेवीवंशी–याजकों के सहायक

[5]यहोवा ने मूसा से कहा, “[6]लेवी के परिवार समूह के सभी लोगों को याजक हारून के सामने लाओ। वे लोग हारून के सहायक होंगे। [7]लेवीवंशी हारून की उस समय सहायता करेंगे जब वह मिलापवाले तम्बू में सेवा करेगा और लेवीवंशी इस्राएल के सभी लोगों की उस समय सहायता करेंगे जिस समय वे पवित्र तम्बू में उपासना करने आएंगे। [8]इस्राएल के लोग मिलापवाले तम्बू की हर एक चीज़ की रक्षा करेंगे, यह उनका कर्तव्य है। किन्तु इन चीज़ों की देखभाल करके ही लेवीवंश के लोग इस्राएल के लोगों की सेवा करेंगे। पवित्र तम्बू में उपासना करने की उनकी यही पद्धति होगी।

[9]“इस्राएल के सभी लोगों में से लेवीवंशी चुने गए थे। ये लेवी, हारून और उसके पुत्रों की सहायता के लिए चुने गए थे।

[10]“तुम हारून और उसके पुत्रों को याजक नियुक्त करोगे। वे अपना कर्तव्य पूरा करेंगे और याजक के रूप में सेवा करेंगे। कोई अन्य व्यक्ति जो पवित्र चीज़ों के समीप आने का प्रयत्न करता है,* मार दिया जाना चाहिए।”

[11]यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, [12]“मैंने तुमसे कहा कि इस्राएल का हर एक परिवार अपना पहलौठा पुत्र मुझ को देगा, किन्तु अब मैं लेवीवंश को अपनी सेवा के लिए चुन रहा हूँ। वे मेरे होंगे। अत: इस्राएल के सभी अन्य लोगों को अपना पहलौठा पुत्र मुझको नहीं देना पड़ेगा।

[13]“जब तुम मिस्र में थे, मैंने मिस्र के लोगों के पहलौठों को मार डाला था। उस समय मैंने इस्राएल के सभी पहलौठों को अपने लिए लिया। सभी पहलौठे बच्चे और सभी पहलौठे जानवर मेरे हैं। किन्तु अब मैं तुम्हारे पहलौठे बच्चों को तुम्हें वापस करता हूँ और लेवीवंश को अपना बनाता हूँ। मैं यहोवा हूँ।”

[14]यहोवा ने फिर सीनै की मरुभूमि में मूसा से बात की। यहोवा ने कहा, [15]“लेवीवंश के सभी परिवार समूहों और परिवारों को गिनो। प्रत्येक पुरुष या लड़कों को जो एक

चुने हुए अथवा ‘अभिषिक्त’, वे परमेश्वर के द्वारा चुने गए है। यह दिखाने के लिए उनके सिर पर तेल डाला जाता था।

कोई ... करता है या, “याजक के रूप में सेवा करना चाहता है।”

महीने या उससे अधिक के हैं, उनको गिनो।" [16]अत: मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने उन सभी को गिना।

[17]लेवी के तीन पुत्र थे: उनके नाम थे: गेर्शोन, कहात और मरारी। [18]हर एक पुत्र परिवार समूहों का नेता था।

गेर्शोन के परिवार समूह थे: लिब्नी और शिमी।

[19]कहात के परिवार समूह थे: अम्राम, यिसहार, हेब्रोन, उज्जीएल।

[20]मरारी के परिवार समूह थे: महली और मूशी। ये ही वे परिवार थे जो लेवी के परिवार समूह से सम्बन्धित थे।

[21]लिब्नी और शिमियों के परिवार गेर्शोन के परिवार समूह से सम्बन्धित थे। वे गेर्शोनवंशी परिवार समूह थे। [22]इन दोनों परिवार समूहों में एक महीने से अधिक उम्र के लड़के या पुरुष सात हजार पाँच सौ थे। [23]गेर्शोन वंश के परिवार समूहों को पश्चिम में डेरा लगाने के लिये कहा गया। उन्होंने पवित्र तम्बू के पीछे अपना डेरा लगाया। [24]गेर्शोन वंश के परिवार समूहों का नेता लाएल का पुत्र एल्यासाप था। [25]मिलापवाले तम्बू में गेर्शोन वंशी लोग पवित्र तम्बू, आच्छादन और बाहरी तम्बू की देखभाल का कार्य करने वाले थे। वे मिलापवाले तम्बू के प्रवेश द्वार के पर्दे की भी देखभाल करते थे। [26]वे आँगन के पर्दे की देखभाल करते थे। वे आँगन के द्वार के पर्दे की भी देखभाल करते थे। यह आँगन पवित्र तम्बू और वेदी के चारों ओर था। वे रस्सियों और पर्दे के लिए काम में आने वाली हर एक चीज़ की देखभाल करते थे।

[27]अम्रामियों, यिसहारियों, हेब्रोनियों और उज्जीएल के परिवार कहात के परिवार से सम्बन्धित थे। वे कहात परिवार समूह के थे। [28]इस परिवार समूह में एक महीने या उससे अधिक उम्र के लड़के और पुरुष आठ हजार छ: सौ थे। कहात वंश के लोगों को पवित्र स्थान की देखभाल का कार्य सौंपा गया। [29]कहात के परिवार समूहों को "पवित्र तम्बू" के दक्षिण का क्षेत्र दिया गया। यह वह क्षेत्र था जहाँ उन्होंने डेरे लगाए। [30]कहात के परिवार समूह का नेता उज्जीएल का पुत्र एलीसापान था। [31]उनका कार्य पवित्र सन्दूक, मेज, दीपाधार, वेदियों और पवित्र स्थान के उपकरणों की देखभाल करना था। वे पर्दे और उनके साथ उपयोग में आने वाली सभी चीज़ों की भी देखभाल करते थे। [32]लेवीवंश के प्रमुखों का नेता हारून का पुत्र एलीआज़ार था। वह याजक था। एलीआज़ार पवित्र चीज़ों की देखभाल करने वाले सभी लोगों का अधीक्षक था।

[33-34]महली और मूशियों के परिवार समूह मरारी परिवार से सम्बन्धित थे। एक महीने या उससे अधिक उम्र के लड़के और पुरुष महली परिवार समूह में छ: हजार दो सौ थे। [35]मरारी समूह का नेता अबीहैल का पुत्र सूरीएल था। इस परिवार समूह को पवित्र तम्बू के उत्तर का क्षेत्र दिया गया था। यही वह क्षेत्र है जहाँ उन्होंने डेरा लगाया। [36]मरारी लोगों को पवित्र तम्बू के ढाँचे की देखभाल का कार्य सौंपा गया। वे सभी छड़ों, खम्बों, आधारों और पवित्र तम्बू के ढाँचे में जो कुछ लगा था, उन सब की देखभाल करते थे। [37]पवित्र तम्बू के चारों ओर के आँगन के सभी खम्भों की भी देखभाल किया करते थे। इनमें सभी आधार, तम्बू की खूँटियाँ और रस्सियाँ शामिल थीं।

[38]मूसा, हारून और उसके पुत्रों ने मिलापवाले तम्बू के सामने पवित्र तम्बू के पूर्व में अपने डेरे लगाए। उन्हें पवित्र स्थान की देखभाल का काम सौंपा गया। उन्होंने यह इस्राएल के सभी लोगों के लिए किया। कोई दूसरा व्यक्ति जो पवित्र स्थान के समीप आता, मार दिया जाता था।

[39]यहोवा ने लेवी परिवार समूह के एक महीने या उससे अधिक उम्र के लड़कों और पुरुषों को गिनने का आदेश दिया। सारी संख्या बाइस हजार थी।

लेवीवंशी पहलौठे पुत्र का स्थान लेते हैं

[40]यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएल में सभी एक महीने या उससे अधिक उम्र के पहलौठे लड़के और पुरुषों को गिनो। उनके नामों की एक सूची बनाओ। [41]अब मैं इस्राएल के सभी पहलौठे लड़कों और पुरुषों को नहीं लूँगा। अब मैं अर्थात् यहोवा लेवीवंशी को ही लूँगा। इस्राएल के अन्य सभी लोगों के पहलौठे जानवरों को लेने के स्थान पर अब मैं लेवीवंश के लोगों के पहलौठे जानवरों को ही लूँगा।"

[42]इस प्रकार मूसा ने वह किया जो यहोवा ने आदेश दिया। मूसा ने इस्राएल के पहलौठी सारी सन्तानों को गिना। [43]मूसा ने सभी पहलौठे एक महीने या उससे अधिक उम्र के लड़कों और पुरुषों की सूची बनाई। उस सूची में बाइस हजार दो सौ तिहत्तर नाम थे।

[44]यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, [45]"मैं अर्थात् यहोवा यह आदेश देता हूँ: 'इस्राएल के अन्य परिवारों के पहलौठे

पुरुषों के स्थान पर लेवीवंश के लोगों को लो और मैं अन्य लोगों के जानवरों के स्थान पर लेवीवंश के जानवरों को लूँगा। लेवीवंशी मेरे हैं। [46]लेवीवंश के लोग बाइस हजार हैं और अन्य परिवारों के बाइस हजार दो सौ तिहत्तर पहलौठे पुत्र हैं। इस प्रकार केवल दो सौ तिहत्तर पहलौठे पुत्र लेवीवंश के लोगों से अधिक हैं। [47]इसलिए पहलौठे दो सौ तिहत्तर पुत्रों में से हर एक के लिए पाँच शेकेल* चाँदी दो। यह चाँदी इस्राएल के लोगों से इकट्ठा करो। [48]वह चाँदी हारून और उसके पुत्रों को दो। यह इस्राएल के दो सौ तिहत्तर लोगों के लिए भुगतान है।'"

[49]मूसा ने दो सौ तिहत्तर लोगों के लिए धन इकट्ठा किया। क्योंकि यहाँ इतने लेवी नहीं थे जो दूसरे परिवार समूह के दो सौ तिहत्तर पहलौठों की जगह ले सकें। [50]मूसा ने इस्राएल के पहलौठे लोगों से चाँदी इकट्ठा की। उसने एक हजार तीन सौ पैंसठ शेकेल चाँदी "अधिकृत भार" का उपयोग करके इकट्ठा की। [51]मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। मूसा ने यहोवा के आदेश के अनुसार वह चाँदी हारून और उसके पुत्रों को दी।

कहात परिवार के सेवा–कार्य

4 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा: [2]"कहात परिवार समूह के पुरुषों को गिनो। (कहात परिवार समूह लेवी परिवार समूह का एक भाग है।) [3]अपने सेवा कर्तव्य का निर्वाह करने वाले तीस से पचास वर्ष की उम्र वाले पुरुषों को गिनो। ये व्यक्ति मिलापवाले तम्बू में कार्य करेंगे। [4]उनका कार्य मिलापवाले तम्बू के सर्वाधिक पवित्र स्थान की देखभाल करना है।

[5]"जब इस्राएल के लोग नए स्थान की यात्रा करें तो हारून और उसके पुत्रों को चाहिए कि वे पवित्र तम्बू में जाएँ और पर्दे को उतारें और साक्षीपत्र के पवित्र सन्दूक को उससे ढकें। [6]तब वे इन सबको सुइसों के चमड़े से बने आवरण में ढकें। तब वे पवित्र सन्दूक पर बिछे चमड़े पर पूरी तरह से एक नीला वस्त्र फैलाएंगे और पवित्र सन्दूक में लगे कड़ों में डंडे डालेंगे।

[7]"तब वे एक नीला कपड़ा पवित्र मेज के ऊपर फैलाएंगे। तब वे उस पर थाली, चम्मच, कटोरे और पेय भेंट के कलश रखेंगे। वे विशेष रोटी भी मेज पर रखेंगे। [8]तब तुम इन सभी चीज़ों के ऊपर एक लाल कपड़ा डालोगे। तब हर एक चीज़ को सुइसों के चमड़े से ढक दो। तब मेज के कड़ों में डंडे डालो।

[9]"तब दीपाधार और दीपकों को नीले कपड़े से ढको। दीपक जलने के लिए उपयोग में आनेवाली सभी चीज़ों और दीपक के लिए उपयोग में आने वाले तेल के सभी घड़ों को ढको। [10]तब सभी चीज़ों को सुइसों के चमड़े में लपेटो और इन्हें ले जाने के लिये उपयोग में आने वाले डंडों पर इन्हें रखो।

[11]"सुनहरी वेदी पर एक नीला कपड़ा फैलाओ। उसे सुइसों के चमड़े से ढको। तब वेदी को ले जाने के लिए उसमें लगे हुए कड़ों में डंडे डालो।

[12]"पवित्र स्थान में उपासना के उपयोग में आने वाली सभी विशेष चीज़ों को एक साथ इकट्ठा करो। इन्हें एक साथ इकट्ठा करो और इनको नीले कपड़े में लपेटो। तब इसे सुइसों के चमड़े से ढको। इन चीज़ों को ले जाने के लिए इन्हें एक ढाँचे पर रखो।

[13]"काँसेवाली वेदी से राख को साफ कर दो और इसके ऊपर एक बैंगनी रंग का कपड़ा फैलाओ। [14]तब वेदी पर उपासना के लिए उपयोग में आने वाली चीज़ों को इकट्ठा करो। आग के तसले, माँस के लिए काँटे, बेलचे और चिलमची हैं। इन चीज़ों को काँसे की वेदी पर रखो। तब वेदी के ऊपर सुइसों के चमड़े का आवरण फैलाओ। वेदी में लगे कड़ों में, इसे ले जाने वाले डंडे डालो।

[15]"जब हारून और उसके पुत्र पवित्र स्थान की सभी पवित्र चीज़ों को ढकना पूरा कर लें तब कहात परिवार के व्यक्ति अन्दर आ सकते हैं और उन चीज़ों को ले जाना आरम्भ कर सकते हैं। इस प्रकार वे इस पवित्र वस्तुओं को छुएंगे नहीं। सो वे मरेंगे नहीं।

[16]"याजक हारून का पुत्र एलीआज़ार पवित्र तम्बू के लिए उत्तरदायी होगा। वह पवित्र स्थान और इसकी हर एक चीज़ के लिए उत्तरदायी होगा। वह दीपक के तेल, मधुर सुगन्धवाली सुगन्धि तथा दैनिक बलि* और अभिषेक के तेल* के लिये उत्तरदायी होगा।"

पाँच शेकेल या, "दो औंस"

दैनिक बलि परमेश्वर को बलि के रूप में पवित्र स्थान में प्रतिदिन दो बार रखी जाने वाली भेंट।

अभिषेक का तेल जैतून का वह तेल जो वस्तु या महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों पर डाला जाता था। यह बताता था कि वे लोग विशेष कार्य या उद्देश्य के लिये चुने गये हैं।

[17]यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [18]"सावधान रहो! इन कहातवंशी व्यक्तियों को नष्ट मत होने दो। [19]तुम्हें यह इसलिए करना चाहिए ताकि कहातवंशी सर्वाधिक पवित्र स्थान तक जाएँ और मरें नहीं: हारून और उसके पुत्रों को अन्दर जाना चाहिए और हर एक कहातवंशी को बताना चाहिए कि वह क्या करे। उन्हें हर एक व्यक्ति को वह चीज़ देनी चाहिए जो उसे ले जानी है। [20]यदि तुम ऐसा नहीं करते हो तो कहातवंशी अन्दर जा सकते हैं और पवित्र चीज़ों को देख सकते हैं। यदि वे एक क्षण के लिए भी उन पवित्र वस्तुओं की ओर देखते हैं तो उन्हें मरना होगा।"

गेर्शोन परिवार के सेवा-कार्य

[21]यहोवा ने मूसा से कहा, [22]"गेर्शोन परिवार के सभी लोगों को गिनो। उनकी सूची परिवार और परिवार समूह के अनुसार बनाओ। [23]अपना सेवा कर्तव्य कर चुकने वाले तीस वर्ष से पचास वर्ष तक के पुरुषों को गिनो। ये लोग मिलापवाले तम्बू की देखभाल का सेवा-कार्य करेंगे।

[24]"गेर्शोन परिवार को यही करना चाहिए और इन्हीं चीजों को ले चलना चाहिए: [25]इन्हें पवित्र तम्बू के पर्दे, मिलापवाले तम्बू, इसके आवरण और सुइसों के चमड़े से बना आवरण ले चलना चाहिए। उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार के पर्दे भी ले चलना चाहिए। [26]उन्हें आँगन के उन पर्दों को, जो पवित्र तम्बू और वेदी के चारों ओर लगे हैं, ले चलना चाहिए। उन्हें आँगन के प्रवेश द्वार का पर्दा भी ले चलना चाहिए। उन्हें सारी रस्सियाँ और पर्दे के साथ उपयोग में आनेवाली सभी चीज़ें ले चलनी चाहिए। गेर्शोन वंश के लोग उस किसी भी चीज़ के लिए उत्तरदायी होंगे जो इन चीज़ों से की जानी है। [27]हारून और उसके पुत्र इन सभी किए गए कार्यों की निगरानी करेंगे। गेर्शोन वंश के लोग जो कुछ ले जाएंगे और जो दूसरे कार्य करेंगे उनकी निगरानी हारून और उसके पुत्र करेंगे। तुम्हें उनको वे सभी चीज़ें बतानी चाहिए जिनके ले जाने के लिये वे उत्तरदायी हैं। [28]यही काम है जिसे गेर्शोन वंश के परिवार समूह के लोगों को मिलापवाले तम्बू के लिए करना है। हारून का पुत्र ईतामार याजक उनके काम के लिए उत्तरदायी होगा।"

मरारी परिवार के सेवा-कार्य

[29]"मरारी परिवार समूह के परिवार और परिवार समूह के पुरुषों को गिनो। [30]सेवा-कर्तव्य कर चुके तीस से पचास वर्ष के सभी पुरुषों को गिनो। ये लोग मिलापवाले तम्बू के लिए विशेष कार्य करेंगे। [31]जब तुम यात्रा करोगे तब उनका यह कार्य है कि वे मिलापवाले तम्बू के तख्ते ले चलें। उन्हें तख़्ते, खम्भों और आधारों को ले चलना चाहिए। [32]उन्हें आँगन के चारों ओर के खम्भों को भी ले चलना चाहिए। उन्हें उन तम्बू की खूंटियों, रस्सियों और वे सभी चीज़ें जिनका उपयोग आँगन के चारों ओर के खम्भों के लिए होता है, ले चलना चाहिए। नामों की सूची बनाओ और हर एक व्यक्ति को बताओ कि उसे क्या-क्या चीज़ें ले जाना है। [33]यही बातें हैं जिसे मरारी वंश के लोग मिलापवाले तम्बू के कार्यों में सेवा करने के लिए करेंगे। हारून का पुत्र ईतामार याजक इनके कार्य के लिए उत्तरदायी होगा।"

लेवी परिवार

[34]मूसा, हारून और इस्राएल के लोगों के नेताओं ने कहातवंश के लोगों को गिना। उन्होंने इनको परिवार और परिवार समूह के अनुसार गिना। [35]उन्होंने अपना सेवा-कर्तव्य कर चुके तीस से पचास वर्ष के उम्र के लोगों को गिना। इन लोगों को मिलापवाले तम्बू के लिए विशेष कार्य करने को दिए गए।

[36]कहात परिवार समूह में जो इस कार्य को करने की योग्यता रखते थे, दो हजार सात सौ पचास पुरुष थे। [37]इस प्रकार कहात परिवार के इन लोगों को मिलापवाले तम्बू के विशेष कार्य करने के लिए दिए गए। मूसा और हारून ने इसे वैसे ही किया जैसा यहोवा ने मूसा से करने को कहा था। [38]गेर्शोन परिवार समूह को भी गिना गया। [39]सभी पुरुष जो अपना कर्तव्य सेवा कर चुके थे और तीस से पचास वर्ष की उम्र के थे, गिने गए। इन लोगों को मिलापवाले तम्बू में विशेष कार्य करने का सेवा-कार्य दिया गया। [40]गेर्शोन परिवार समूह के परिवारों में जो योग्य थे, वे दो हजार छ: सौ तीस पुरुष थे। [41]इस प्रकार इन पुरुषों को जो गेर्शोन परिवार समूह के थे, मिलापवाले तम्बू में विशेष कार्य करने का सेवा-कार्य सौंपा गया। मूसा और हारून ने इसे वैसे ही किया जैसा यहोवा ने मूसा को करने को कहा था।

[42]मरारी के परिवार और परिवार समूह भी गिने गए। [43]सभी पुरुष जो अपना सेवा–कर्तव्य कर चुके थे और तीस से पचास वर्ष की उम्र के थे, गिने गए। इन व्यक्तियों को मिलापवाले तम्बू के लिए विशेष कार्य करने का सेवा–कार्य दिया गया। [44]मरारी परिवार समूह के परिवारों में जो लोग योग्य थे, वे तीन हजार दो सौ व्यक्ति थे। [45]इस प्रकार मरारी परिवार समूह के इन लोगों को विशेष कार्य दिया गया। मूसा और हारून ने इसे वैसे ही किया जैसा यहोवा ने मूसा से करने को कहा था।

[46]मूसा, हारून और इस्राएल के लोगों के नेताओं ने लेवीवंश परिवार समूह के सभी सदस्यों को गिना। उन्होंने प्रत्येक परिवार और प्रत्येक परिवार समूह को गिना। [47]सभी व्यक्ति जो अपने सेवा–कर्तव्य का निर्वाह कर चुके थे और जो तीस वर्ष से पचास वर्ष उम्र के थे, गिने गए। इन व्यक्तियों को मिलापवाले तम्बू के लिए विशेष कार्य करने का सेवा–कार्य दिया गया। उन्होंने मिलापवाले तम्बू को ले चलने का कार्य तब किया जब उन्होंने यात्रा की। [48]पुरुषों की सारी संख्या आठ हजार पाँच सौ अस्सी थी।

[49]यहोवा ने यह आदेश मूसा को दिया था। हर एक पुरुष को अपना कार्य दिया गया था और हर एक पुरुष से कहा गया था कि उसे क्या–क्या ले चलना चाहिए। इसलिए यहोवा ने जो आदेश दिया था उन चीज़ों को पूरा किया गया। सभी पुरुषों को गिना गया।

शुद्धता सम्बन्धी नियम

5 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"मैं इस्राएल के लोगों को, उनके डेरे बीमारियों व रोगों से मुक्त रखने का आदेश देता हूँ। इस्राएल के लोगों से कहो कि हर उस व्यक्ति को जो बुरे चर्म रोगों, शरीर से निकलने वाले स्रावों या किसी शव को छूने के कारण अशुद्ध हो गये हैं, उन्हें डेरे से बाहर निकाल दें, [3]चाहे वे पुरुष हो चाहे स्त्री। उन्हें डेरे से बाहर निकाल दें ताकि वे जिस डेरे में मेरा निवास है उसे वे अशुद्ध न कर दें। मैं तुम्हारे डेरे में तुम लोगों के बीच रह रहा हूँ।"

[4]अत: इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर का आदेश माना। उन्होंने उन लोगों को डेरे के बाहर भेज दिया। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

अपराध के लिए अर्थ–दण्ड

[5]यहोवा ने मूसा से कहा, [6]"इस्राएल के लोगों को यह बताओ: जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति का कुछ बुरा करता है तो वस्तुत: वह यहोवा के विरुद्ध पाप करता है। वह व्यक्ति अपराधी है। [7]इसलिए वह व्यक्ति लोगों को अपने किए गए पाप को बताए। तब यह व्यक्ति अपने बुरे किए गए काम का पूरा भुगतान करे। वह भुगतान में पाँचवाँ हिस्सा जोड़े और उसका भुगतान उसे करे जिसका बुरा उसने किया है। [8]किन्तु जिस व्यक्ति का उसने बुरा किया है, वह मर भी सकता है और सम्भव है उस मृतक का कोई नजदीकी सम्बन्धी न हो जिसे भुगतान किया जाए। उस स्थिति में, बुरा करने वाला व्यक्ति यहोवा को भुगतान करेगा। वह व्यक्ति पूरा भुगतान याजक को करेगा। याजक को क्षमादान रूपी मेढ़े* की बलि देनी चाहिए। बुरा करने वाले व्यक्ति के पापों को ढकने के लिए इस मेढ़े की बलि दी जानी चाहिए किन्तु याजक बाकी बचे भुगतान को अपने पास रख सकता है।

[9]"यदि इस्राएल का कोई व्यक्ति यहोवा को विशेष भेंट देता है तो वह याजक जो उसे स्वीकार करता है उसे अपने पास रख सकता है। यह उसकी है। [10]किसी व्यक्ति को ये विशेष भेंट देनी नहीं पड़ेगी। किन्तु यदि वह उनको देता है तो वह याजक की होगी।"

शंकालु पति

[11]तब यहोवा ने मूसा से कहा: [12]"इस्राएल के लोगों से यह कहो, किसी व्यक्ति की पत्नी पतिव्रता नहीं भी हो सकती है। [13]उस का किसी दूसरे व्यक्ति के साथ शारीरिक सम्बन्ध हो सकता है और वह इसे अपने पति से छिपा सकती है। कोई ऐसा व्यक्ति भी नहीं होता जो कहे कि उसने यह पाप किया। उसका पति उसे कभी जान भी नहीं सकता जो बुराई उसने की है और वह स्त्री भी अपने पति से अपने पाप के बारे में नहीं कहेगी। [14]किन्तु पति शंका करना आरम्भ कर सकता है कि उसकी पत्नी ने उसके विरुद्ध पाप किया है। वह उसके प्रति ईर्ष्या रख

क्षमादान रूपी मेढ़ा एक ऐसा मेढ़ा जिसे वेदी पर इसलिए जलाया जाता था कि उससे व्यक्ति को उसकी की हुई बुराई के लिए क्षमा कर दिया गया। उसके पाप के लिए यह भेंट "ढका गया" क्षमादान के समान थी।

सकता है। चाहे वह सच्ची हो चाहे नहीं। [15]यदि ऐसा होता है तो वह अपनी पत्नी को याजक के पास ले जाए। पति एक भेंट भी ले जाएगा। यह भेंट 1/10 एपा* जौ का आटा होगा। उसे जौ के आटे पर तेल या सुगन्धि नहीं डालनी चाहिये। यह जौ का आटा यहोवा को अन्नबलि है। यह इसलिए दिया जाता कि पति ईर्ष्यालु है। यह भेंट यह संकेत करेगी कि उसे विश्वास है कि उसकी पत्नी पतिव्रता नहीं है।

[16]"याजक स्त्री को यहोवा के सामने ले जाएगा और स्त्री यहोवा के सामने खड़ी होगी। [17]तब याजक कुछ विशेष पानी लेगा और उसे मिट्टी के घड़े में डालेगा। याजक पवित्र तम्बू के फर्श से कुछ मिट्टी पानी में डालेगा। [18]याजक स्त्री को यहोवा के सामने खड़ा रहने के लिए विवश करेगा। तब वह उसके बाल खोलेगा और उसके हाथ में अन्नबलि देगा। यह जौ का आटा होगा जिसे उसके पति ने ईर्ष्या के कारण उसे दिया था। उसी समय वह विशेष कड़वे जल वाले मिट्टी के घड़े को पकड़े रहेगा। यह विशेष कड़वा जल ही है जो स्त्री को परेशानी पैदा करता है।

[19]"तब याजक स्त्री से कहेगा कि उसे झूठ नहीं बोलना चाहिए। उसे सत्य बोलने का वचन देना चाहिए। याजक उससे कहेगा: 'यदि तुम दूसरे व्यक्ति के साथ नहीं सोई हो, और तुमने अपने पति के विरुद्ध पाप नहीं किया है, जबकि तुम्हारा विवाह उसके साथ हुआ है, तो यह कड़वा जल तुमको हानि नहीं पहुँचाएगा। [20]किन्तु यदि तुमने अपने पति के विरुद्ध पाप किया है, यदि तुम किसी अन्य पुरुष के साथ सोई हो तो तुम शुद्ध नहीं हो। क्यों? क्योंकि जो तुम्हारे साथ सोया है तुम्हारा पति नहीं है और उसने तुम्हें अशुद्ध बनाया है। [21]इसलिए जब तुम इस विशेष जल को पीओगी तो तुम्हें बहुत परेशानी होगी। तुम्हारा पेट फूल जाएगा* और तुम कोई बच्चा उत्पन्न नहीं कर सकोगी। यदि तुम गर्भवती हो, तो तुम्हारा बच्चा मर जाएगा। तब तुम्हारे लोग तुम्हें छोड़ देंगे और वे तुम्हारे बारे में बुरी बातें कहेंगे।'

"तब याजक को स्त्री से यहोवा को विशेष वचन देने के लिए कहना चाहिए। स्त्री को स्वीकार करना चाहिए कि ये बुरी बातें उसे होगी, यदि वह झूठ बोलेगी। [22]याजक को कहना चाहिए, 'तुम इस जल को लोगी जो तुम्हारे शरीर में परेशानी उत्पन्न करेगा। यदि तुमने पाप किया है तो तुम बच्चों को जन्म नहीं दे सकोगी और यदि तुम्हारा कोई बच्चा गर्भ में है तो वह जन्म लेने के पहले मर जाएगा।' तब स्त्री को कहना चाहिए: 'मैं वह स्वीकार करती हूँ जो आप कहते हैं।'

[23]"याजक को इन चेतावनियों को चर्म–पत्र पर लिखनी चाहिए। फिर उसे इस लिखावट को पानी में धो देना चाहिए। [24]तब स्त्री उस पानी को पीएगी जो कड़वा है। वह पानी उसमें जाएगा और यदि वह अपराधी है, तो उसे बहुत परेशानी उत्पन्न करेगा।

[25]"तब याजक उस अन्नबलि को उससे लेगा। ईर्ष्या के लिए भेंट और उसे यहोवा के सामने उठाएगा और उसे वेदी तक ले जाएगा।

[26]तब याजक अपनी अंजली में अन्न भरेगा और उसे वेदी पर रखेगा। तब वह उसे जलाएगा। उसके बाद, वह स्त्री से पानी पीने को कहेगा। [27]यदि स्त्री ने पति के विरुद्ध पाप किया होगा, तो पानी उसे परेशान करेगा। पानी उसके शरीर में जाएगा और उसे बहुत कष्ट देगा और कोई बच्चा जो उसके गर्भ में होगा, पैदा होने से पहले मर जाएगा और वह कभी बच्चे को जन्म नहीं दे सकेगी। सभी लोग उसके विरुद्ध हो जायेंगे। [28]किन्तु यदि स्त्री ने पति के विरुद्ध पाप नहीं किया है तो वह पवित्र है, फिर याजक घोषणा करेगा कि वह अपराधी नहीं है और बच्चों को जन्म देने के योग्य हो जाएगी।

[29]"इस प्रकार यह ईर्ष्या के विषय में नियम है। तुम्हें यही करना चाहिए यदि कोई विवाहित स्त्री अपने पति के विरुद्ध पाप करती है। [30]या यदि कोई व्यक्ति ईर्ष्या करता है और अपनी पत्नी के सम्बन्ध में शंका करता है कि उसने उसके विरुद्ध पाप किया है तो व्यक्ति को यही करना चाहिए। याजक को कहना चाहिए कि वह स्त्री यहोवा के सामने खड़ी हो। तब याजक इन सभी कार्यों को करेगा। यही नियम है। [31]पति कोई बुरा करने का अपराधी नहीं होगा। किन्तु स्त्री कष्ट उठाएगी, यदि उसने पाप किया है।"

नाज़ीरों का वंश

6 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"ये बातें इस्राएल के लोगों से कहो: कोई पुरुष या स्त्री कुछ समय के

1/10 एपा शाब्दिक आठ प्याला।

पेट फूल जायेगा शाब्दिक, "तुम्हारा गर्भपात होगा।"

लिए किन्हीं अन्य लोगों से अलग रहना चाह सकता है। इस अलगाव का उद्देश्य यह हो कि वह व्यक्ति पूरी तरह अपने को उस समय के लिए यहोवा को समर्पित कर सके। वह व्यक्ति नाज़ीर* कहलाएगा। [3]उस काल में व्यक्ति को कोई दाखमधु या कोई अधिक नशीली चीज़ नहीं पीनी चाहिए। व्यक्ति को सिरका जो दाखमधु से बना हो या किसी अधिक नशीले पेय को नहीं पीना चाहिए। उस व्यक्ति को अंगूर का रस नहीं पीना चाहिए और न ही अंगूर या किशमिश खाने चाहिए। [4]उस अलगाव के विशेष काल में उस व्यक्ति को अंगूर से बनी कोई चीज़ नहीं खानी चाहिए। उस व्यक्ति को अंगूर का बीज या छिलका भी नहीं खाना चाहिए।

[5]"उस अलगाव के काल में उस व्यक्ति को अपने बाल नहीं काटने चाहिए। उस व्यक्ति को उस समय तक पवित्र रहना चाहिए जब तक अलगाव का समय समाप्त न हो। उसे अपने बालों को लम्बे होने देना चाहिए। उस व्यक्ति के बाल, परमेश्वर को दिए गये उसके वचन का एक विशेष भाग है। वह उन बालों को परमेश्वर के लिए भेंट के रूप में देगा। इसलिए वह व्यक्ति अपने बालों को तब तक लम्बा होने देगा जब तक अलगाव का समय समाप्त न होगा।

[6]"इस अलगाव के काल में नाज़ीर को किसी शव के पास नहीं जाना चाहिए। क्यों? क्योंकि उस व्यक्ति ने अपने को पूरी तरह यहोवा को समर्पित कर दिया है। [7]यदि उसके अपने पिता, अपनी माता, अपने भाई या अपनी बहन भी मरें तो भी उसे उनको छूना नहीं चाहिए। यह उसे अपवित्र करेगा। उसे यह दिखाना चाहिए कि उसे अलग किया गया है और अपने को पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित कर चुका है। [8]जिस पूरे काल में वह अलग किया गया, वह पूरी तरह अपने को यहोवा को समर्पित किए हुए है।

[9]"यह संभव है कि नाज़ीर किसी दूसरे व्यक्ति के साथ हो और वह दूसरा व्यक्ति अचानक मर जाए। यदि नाज़ीर मरे व्यक्ति को छुएगा तो वह अपवित्र हो जाएगा। यदि ऐसा होता है तो नाज़ीर को सिर से अपने बाल कटवा लेना चाहिए। वे बाल उसके विशेष दिए गए वचन के भाग थे। उसे अपने बालों को सातवें दिन काटना चाहिए क्योंकि उस दिन वह पवित्र किया जाता है। [10]तब आठवें दिन उसे दो फ़ाख्ते या कबूतर के दो बच्चे याजक के पास लाने चाहिए। उसे याजक को उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर देना चाहिए। [11]तब याजक एक को पापबलि के रूप में भेंट करेगा। वह दूसरे को होमबलि के रूप में भेंट करेगा। यह होमबलि उस व्यक्ति द्वारा किये गये पाप के लिए भुगतान होगी। उसने पाप किया क्योंकि वह शव के पास था। उस समय वह व्यक्ति फिर वचन देगा कि सिर के बालों को परमेश्वर को भेंट करेगा। [12]इसका यह तात्पर्य हुआ कि उस व्यक्ति को फिर अलगाव के दूसरे समय के लिए अपने आपको यहोवा को समर्पित कर देना चाहिए। उस व्यक्ति को एक वर्ष का एक मेढ़ा लाना चाहिए। वह इसे पाप के लिए भेंट के रूप में देगा। उसके अलगाव के सभी दिन भुला दिये जाते हैं। उस व्यक्ति को नये अलगाव के समय का आरम्भ करना होगा। यह अवश्य किया जाना चाहिए क्योंकि उसने अलगाव के प्रथम काल में एक शव का स्पर्श किया।

[13]"जब व्यक्ति के अलगाव का समय पूरा हो तो उसे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाना चाहिए। [14]वहाँ वह अपनी भेंट यहोवा को देगा। उसकी भेंट होनी चाहिए:

होमबलि के लिए बिना दोष का
एक वर्ष का एक मेढ़ा;
पापबलि के लिए बिना दोष की एक वर्ष की
एक मादा भेड़;
मेलबलि के लिए बिना दोष का
एक नर भेड़;
[15] अखमीरी रोटियों की एक टोकरी,
(तेल से मिश्रित अच्छे आटे के फुलके
इन "फुलकों" पर तेल लगाना चाहिए।)
अन्य भेंट तथा पेय भेंट
जो इन भेंटों का एक भाग है।

[16]"तब याजक इन चीज़ों को यहोवा को देगा। याजक पापबलि और होमबलि चढ़ाएगा। [17]याजक रोटियों की टोकरी यहोवा को देगा। तब वह यहोवा की मेलबलि के रूप में नर भेड़ को मारेगा। वह यहोवा को अन्नबलि और पेय भेंट के साथ इसे देगा।

[18]"नाज़ीर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाना चाहिए। वहाँ उसे अपने बाल कटवाने चाहिए जिन्हें उसने

नाज़ीर वह व्यक्ति जिसने परमेश्वर को विशेष वचन दिया है। यह नाम हिब्रू शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ, "किसी से अलग होना" है।

यहोवा के लिए बढ़ाया था। उन बालों को मेलबलि के रूप में दी गई बलि के नीचे जल रही आग में डाला जाना चाहिए।

[19]"जब नाज़ीर अपने बालों को काट चुकेगा तो याजक उसे नर मेढ़ का एक पका हुआ कंधा और टोकरी से एक बड़ा और एक छोटा "फुलका" देगा। ये दोनों अख़मीरी फुलके होंगे। [20]तब याजक इन चीज़ों को यहोवा के सामने उत्तोलित करेगा। यह एक उत्तोलन भेंट हैं। ये चीज़ें पवित्र हैं और याजक की हैं। नर भेड़ की छाती और जांघ भी यहोवा के सामने उत्तोलित किये जाएंगे। ये चीज़ें भी याजक की हैं। इसके बाद नाज़ीर दाखमधु पी सकता है।

[21]"यह नियम उन व्यक्तियों के लिए है जो नाज़ीर होने का वचन लेते हैं। उस व्यक्ति को यहोवा को ये सभी भेंटे देनी चाहिए यदि कोई व्यक्ति अधिक देने का वचन देता है तो उसे अपने वचन का पालन करना चाहिए। लेकिन उसे कम से कम वह सभी चीज़ें देनी चाहिए जो नाज़ीर के नियम में लिखी हैं।

याजक का आशीर्वाद

[22]यहोवा ने मूसा से कहा, [23]"हारून और उसके पुत्रों से कहो। इस्राएल के लोगों को आशीर्वाद देने का ढंग यह है। उन्हें कहना चाहिए:

[24] यहोवा तुम पर कृपा करे और तुम्हारी रक्षा करे।
[25] यहोवा की कृपादृष्टि तुम पर प्रकाशित हो।
वह तुमसे प्रेम करे।
[26] यहोवा की दृष्टि तुम पर हो।
वह तुम्हें शान्ति दे।"

[27]तब यहोवा ने कहा, "इस प्रकार हारून और उसके पुत्र इस्राएल के लोगों के सामने मेरा नाम लेंगे और मैं उन्हें आशीर्वाद दूँगा।"

पवित्र तम्बू का समर्पण

7 जिस दिन मूसा ने पवित्र तम्बू का लगाना पूरा किया, उसने इसे यहोवा को समर्पित किया। मूसा ने तम्बू और इसमें उपयोग आने वाली चीज़ों को अभिषिक्त किया। मूसा ने वेदी और इसके साथ उपयोग में आने वाली चीज़ों को भी अभिषिक्त किया। ये दिखाती थी कि ये सभी वस्तुएं केवल यहोवा की उपासना के लिये प्रयोग की जानी चाहिए।

[2]तब इस्राएल के नेताओं ने भेंटे चढ़ाई। ये अपने–अपने परिवारों के मुखिया थे जो अपने परिवार समूह के नेता थे। इन्हीं नेताओं ने लोगों को गिना था। [3]ये नेता यहोवा के लिये भेंटे लाए। वे चारों ओर से ढकी छः गाड़ियाँ और बारह गायें लाए। (हर एक नेता द्वारा एक गाय दी गई थी। हर नेता ने दूसरे नेता से चारों ओर से ढकी गाड़ी को देने में साझा किया।) नेताओं ने पवित्र तम्बू पर यहोवा को ये चीज़ें दीं।

[4]यहोवा ने मूसा से कहा, [5]"नेताओं की इन भेंटों को स्वीकार करो। ये भेंटें मिलापवाले तम्बू के काम में उपयोग की जा सकती हैं। इन चीज़ों को लेवीवंश के लोगों को दो। यह उन्हें अपने काम करने में सहायक होंगी।"

[6]इसलिए मूसा ने चारों ओर से ढकी गाड़ियों और गायों को लिया। उसने इन चीज़ों को लेवीवंश के लोगों को दिया। [7]उसने दो गाड़ियाँ और चार गायें गेर्शोन वंशियों को दीं। उन्हें अपने काम के लिए उन गाड़ियों और गायों की आवश्यकता थी। [8]तब मूसा ने चार गाड़ियों और आठ गायें मरारी वंश को दीं। उन्हें अपने काम के लिए गाड़ियों और गायों की आवश्यकता थी। याजक हारून का पुत्र ईतामार इन सभी व्यक्तियों के कार्य के लिए उत्तरदायी था। [9]मूसा ने कहात वंशियों को कोई गाय या कोई गाड़ी नहीं दी। इन व्यक्तियों को पवित्र चीज़ें अपने कंधों पर ले जानी थीं। यही कार्य उनको करने के लिए सौंपा गया था।

[10]उस दिन के अभिषेक के पश्चात नेता अपनी भेंटे वेदी पर समर्पण के लिए लाए। उन्होंने अपनी भेंटे वेदी के सामने यहोवा को अर्पित कीं। [11]यहोवा ने पहले से ही मूसा से कह रखा था, "वेदी को समर्पण के रूप में दी जाने वाली अपनी भेंट का भाग हर एक नेता एक एक दिन लाएगा।"

[12–83]*बारह नेताओं में से प्रत्येक नेता अपनी–अपनी भेंटे लाया। वे भेंटे ये हैं: प्रत्येक नेता चाँदी की एक थाली लाया जिसका वजन था एक सौ तीस शेकेल।* प्रत्येक

पद 12–83 मूल में प्रत्येक नेता की भेंटों की सूची अलग–अलग दी गई है। किन्तु प्रत्येक भेंट का लिखित पाठ एक जैसा ही है। इसलिए पाठ–सुविधा को ध्यान में रखते हुए पद संख्या 12 से 83 तक को यहाँ एक साथ मिलाकर अनुवादित किया गया है।

एक सौ तीस शेकेल अर्थात् 3 1/4 पौंड।

नेता चाँदी का एक कटोरा लाया जिसका वजन सत्तर शेकेल।* इन दोनों ही उपहारों को पवित्र अधिकृत भार* से तोला गया था। हर कटोरे और हर थाली में तेल मिला बारीक आटा भरा हुआ था। यह अन्नबलि के रूप में प्रयोग में लाया जाना था। प्रत्येक नेता सोने की एक बड़ी करछी भी लेकर आया जिसका भार दस शेकेल* था। इस करछी में धूप* भरी हुई थी। प्रत्येक नेता एक बछड़ा, एक मेढ़ा और एक वर्ष का एक मेमना भी लाया। ये पशु होमबलि* के लिए थे। प्रत्येक नेता पापबलि के रूप में इस्तेमाल किये जाने के लिए एक बकरा भी लाया। प्रत्येक नेता दो गाय, पाँच मेढ़े, पाँच बकरे और एक–एक वर्ष के पाँच मेमने लाया। इन सभी की मेलबलि दी गयी।

अम्मीनादाब का पुत्र नहशोम, जो यहूदा के परिवार समूह से था, पहले दिन अपनी भेंटे लाया।

दूसरे दिन सूआर का पुत्र नतनेल जो इस्साकार का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

तीसरे दिन हेलोन का पुत्र एलीआब जो जबूलूनियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

चौथे दिन शदेऊर का पुत्र एलीसूर जो रूबेनियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

पाँचवे दिन सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल जो शिमौनियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

छठे दिन दूएल का पुत्र एल्यासाप जो गादियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

सातवें दिन अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा जो एप्रैम के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

आठवें दिन पदासूर का पुत्र गम्लीएल जो मनश्शे के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

नवें दिन गिदोनी का पुत्र अबीदान जो बिन्यामिन के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

दसवें दिन अम्मीशद्दै का पुत्र अखीआजर जो दान के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

ग्यारहवें दिन ओक्रान का पुत्र पजीएल जो आशेर के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

और फिर बारहवें दिन एनान का पुत्र अहीरा जो नप्ताली के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लेकर आया।

[84]इस प्रकार ये सभी चीज़ें इस्राएल के लोगों के नेताओं की भेंटें थी। ये चीज़ें तब लाई गई जब मूसा ने वेदी को विशेष तेल डालकर समर्पित किया। वे बारह चाँदी की तश्तरियाँ, बारह चाँदी के कटोरे और बारह सोने के चम्मच लाए। [85]चाँदी की हर एक तश्तरी का वजन लगभग सवा तीन पौंड़ था और हर एक कटोरे का वजन लगभग पौने दो पौंड़ था। चाँदी की तश्तरियों और चाँदी के कटोरों का कुल अधिकृत भार साठ पौंड़ था। [86]सुगन्धि से भरे सोने के चम्मचों में से प्रत्येक का अधिकृत भार दस शेकेल था। बारह सोने के चम्मचों का कुल वजन लगभग तीन पौंड़ था।

[87]होमबलि के लिए जानवरों की कुल संख्या बारह बैल, बारह मेढ़े और बारह एक वर्ष के मेमने थे। वहाँ अन्नबलि भी थी। यहोवा को पापबलि के रूप में उपयोग में आने वाले बारह बकरे भी थे। [88]नेताओं ने मेलबलि के रूप में उपयोग और मारे जाने के लिए भी जानवर दिए। इन जानवरों की संख्या थी चौबीस बैल, साठ मेढ़े, साठ बकरे और साठ एक वर्ष के मेमने थे। वेदी के समर्पण काल में ये चीज़ें भेंट के रूप में दी गई। यह मूसा द्वारा अभिषेक का तेल उन पर डालने के बाद हुआ।

[89]मूसा मिलापवाले तम्बू में यहोवा से बात करने गया। उस समय उसने अपने से बात करती हुई यहोवा की वाणी सुनी। वह वाणी साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर के विशेष ढक्कन पर के दोनों करूबों के मध्य से आ रही थी। इस प्रकार परमेश्वर ने मूसा से बातें की।

दीपाधार

8 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"हारून से बात करो और उससे कहो, उन स्थानों पर सात दीपकों को रखो जिन्हें मैंने तुम्हें दिखाया था। वे दीपक दीपाधार के सामने के क्षेत्र को प्रकाशित करेंगे।"

सत्तर शेकेल अर्थात् 1 3/4 पौंड।

अधिकृत भार शाब्दिक पवित्र शेकेल। यह वह मानक भार था जिसका प्रयोग पवित्र तम्बू और मंदिर में तोल के लिए किया जाता था।

दस शेकेल अर्थात् चार औंस।

धूप धूप पेड़ों का एक विशेष प्रकार का सूरवा सार जिसे सुगंधपूर्ण धुँएं के लिए जलाया जाता था। इसे परमेश्वर को भेंट के रुप में अर्पित किया जाता था।

होमबलि पशुओं को अग्नि में डालकर पूरी तरह जला दिया जाता था। पशु अग्नि में जलकर राख हो जाते थे।

[3]हारून ने यह किया। हारून ने दीपकों को उचित स्थान पर रखा और उनका रुख ऐसा कर दिया कि उससे दीपाधार के सामने का क्षेत्र प्रकाशित हो सके। उसने मूसा को दिये गए यहोवा के आदेश का पालन किया। [4]दीपाधार सोने की पट्टियों से बना था। सोने का उपयोग आधार से आरम्भ हुआ था और ऊपर सुनहरे फूलों तक पहुँचा हुआ था। यह सब उसी प्रकार बना था जैसा कि यहोवा ने मूसा को दिखाया था।

लेवीवंशियों का समर्पण

[5]यहोवा ने मूसा से कहा, [6]"लेवीवंश के लोगों को इस्राएल के अन्य लोगों से अलग ले जाओ। उन लेवीवंशी लोगों को शुद्ध करो। [7]यह तुम्हें पवित्र बनाने के लिए करना होगा। पापबलि से विशेष पानी* उन पर छिड़को। यह पानी उन्हें पवित्र करेगा। तब वे अपने शरीर के बाल कटवायेंगे तथा अपने कपड़ों को धोएंगे। यह उनके शरीर को शुद्ध करेगा।

[8]"तब वे एक नया बैल और उसके साथ उपयोग में आने वाली अन्नबलि लेंगे। यह अन्नबलि, तेल मिला हुआ आटा होगा। तब अन्य बैल को पापबलि के रूप में लो। [9]लेवीवंश के लोगों को मिलापवाले तम्बू के सामने के क्षेत्र में लाओ। तब इस्राएल के सभी लोगों को चारों ओर से इकट्ठा करो। [10]तब तुम्हें लेवीवंश के लोगों को यहोवा के सामने लाना चाहिए और इस्राएल के लोग अपना हाथ उन पर रखेंगे।* [11]तब हारून लेवीवंश के लोगों को यहोवा के सामने लाएगा—वे परमेश्वर के लिए भेंट के रूप में होंगे। इस ढंग से लेवीवंश के लोग यहोवा का विशेष कार्य करने के लिए तैयार होंगे।

[12]"लेवीवंश के लोगों से कहो कि वे अपना हाथ बैलों के सिर पर रखें। एक बैल यहोवा को पापबलि के रूप में होगा। दूसरा बैल यहोवा को होमबलि के रूप में काम आएगा। ये भेंटे लेवीवंश के लोगों को शुद्ध करेंगी। [13]लेवीवंश के लोगों से कहो कि वे हारून और उसके पुत्रों के सामने खड़े हों। तब यहोवा के सामने लेवीवंश के लोगों को उत्तोलन भेंट के रूप में प्रस्तुत करो। [14]यह लेवीवंश के लोगों को पवित्र बनायेगा। यह दिखायेगा कि वे परमेश्वर के लिये विशेष रीति से इस्तेमाल होंगे। वे इस्राएल के अन्य लोगों से भिन्न होंगे और लेवीवंश के लोग मेरे होंगे।

[15]"इसलिए लेवीवंश के लोगों को शुद्ध करो और उन्हें यहोवा के सामने उत्तोलन भेंट के रूप में प्रस्तुत करो। जब यह पूरा हो जाए तब वे आ सकते हैं और मिलापवाले तम्बू में अपना काम कर सकते हैं। [16]ये लेवीवंशी इस्राएल के वे लोग हैं जो मुझको दिये गए हैं। मैंने उन्हें अपने लोगों के रूप में स्वीकार किया है। बीते समय में हर एक इस्राएल के परिवार में पहलौठा पुत्र मुझे दिया जाता था किन्तु मैंने लेवीवंश के लोगों को इस्राएल के अन्य परिवारों के पहलौठे पुत्रों के स्थान पर स्वीकार किया है। [17]इस्राएल का हर पुरुष जो हर एक परिवार में पहलौठा है, मेरा है। यदि यह पुरुष या जानवर है तो भी मेरा है। मैंने मिस्र में सभी पहलौठे बच्चों और जानवरों को मार डाला था। इसलिए मैंने पहलौठे पुत्रों को अलग किया जिससे वे मेरे हो सकें। [18]अब मैंने लेवीवंशी लोगों को ले लिया है। मैंने इस्राएल के अन्य लोगों के परिवारों में पहलौठे बच्चों के स्थान पर इनको स्वीकार किया है। [19]मैंने इस्राएल के सभी लोगों में से लेवीवंश के लोगों को चुना है। मैंने उन्हें हारून और उसके पुत्रों को इन्हें भेंट के रूप में दिया है। मैं चाहता हूँ कि वे मिलापवाले तम्बू में काम करें। वे इस्राएल के सभी लोगों के लिए सेवा करेंगे और वे उन बलिदानों को करने में सहायता करेंगे जो इस्राएल के लोगों के पापों को ढकने में सहायता करेंगी। तब कोई बड़ा रोग या कष्ट इस्राएल के लोगों को नहीं होगा जब वे पवित्र स्थान के पास आएंगे।"

[20]इसलिए मूसा, हारून और इस्राएल के सभी लोगों ने यहोवा का आदेश माना। उन्होंने लेवीवंशियों के प्रति वैसा ही किया जैसा उनके प्रति करने का यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। [21]लेवीयों ने अपने को शुद्ध किया और अपने वस्त्रों को धोया। तब हारून ने उन्हें यहोवा के सामने उत्तोलन भेंट के रूप में प्रस्तुत किया। हारून ने वे भेंटें भी चढ़ाई जिन्होंने उनके पापों को नष्ट करके उन्हें शुद्ध किया था। [22]उसके बाद लेवीवंश के लोग अपना काम करने के लिए मिलापवाले तम्बू में आए। हारून और उसके पुत्रों ने उनकी देखभाल की। वे लेवीवंश के लोगों के

विशेष पानी इस पानी में लाल गायों की राख थी जिन्हें पापबलि के रूप में वेदी पर जलाया गया था।

हाथ उन पर रखेंगे यह संकेत करता था कि लोग सम्मिलित रूप से लेवीवंश के लोगों को उनके विशेष कार्य के लिये नियुक्त करते थे।

कार्य के लिए उत्तरदायी थे। हारून और उसके पुत्रों ने उन आदेशों का पालन किया जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया था।

[23]यहोवा ने मूसा से कहा, [24]"लेवीवंश के लोगों के लिए यह विशेष आदेश है: हर एक लेवीवंशी पुरुष को, जो पच्चीस वर्ष या उससे अधिक उम्र का है, अवश्य आना चाहिए और मिलापवाले तम्बू के कामों में हाथ बटाना चाहिए। [25]जब कोई व्यक्ति पचास वर्ष का हो जाए तो उसे नित्य के कामों से छुट्टी लेनी चाहिए। उसे पुन: काम करने की आवश्यकता नहीं है। [26]पचास वर्ष या उससे अधिक उम्र के लोग मिलापवाले तम्बू में अपने भाईयों को उनके काम में सहायता दे सकते हैं। किन्तु वे लोग स्वयं काम नहीं करेंगे। उन्हें सेवा-निवृत्त होने की स्वीकृति दी जाएगी। इसलिए उस समय लेवीवंश के लोगों से यह कहना याद रखो जब तुम उन्हें उनका सेवा-कार्य सौंपो।"

फसह पर्व

9 यहोवा ने मूसा को सीनै की मरुभूमि में कहा। उस समय से एक वर्ष और एक महीना हो गया जब इस्राएल के लोग मिस्र से निकले थे। यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएल के लोगों से कहो कि वे निश्चित समय पर फसह पर्व की दावत को खाना याद रखें। [3]वह निश्चित समय इस महीने का चौदहवाँ दिन है। उन्हें सन्ध्या के समय दावत खानी चाहिए और दावत के बारे में मैंने जो नियम दिए हैं उनको उन्हें याद रखना चाहिए।"

[4]इसलिए मूसा ने इस्राएल के लोगों से फसह पर्व की दावत खाने को याद रखने के लिए कहा [5]और लोगों ने चौदहवें दिन सन्ध्या के समय सीनै की मरुभूमि में वैसा ही किया। यह पहले महीने में था। इस्राएल के लोगों ने हर एक काम वैसे ही किया जैसे यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। [6]किन्तु कुछ लोग फसह पर्व की दावत उसी दिन नहीं खा सके। वे एक शव के कारण शुद्ध नहीं थे। इसलिए वे उस दिन मूसा और हारून के पास गए। [7]उन लोगों ने मूसा से कहा, "हम लोग एक शव को छूने के कारण अशुद्ध हुए हैं। याजकों ने हमें निश्चित समय पर यहोवा को चढ़ाई जाने वाली भेंट देने से रोक दिया है। अत: हम फसह पर्व को अन्य इस्राएली लोगों के साथ नहीं मना सकते। हमें क्या करना चाहिए?"

[8]मूसा ने उनसे कहा, "मैं यहोवा से पूछूँगा कि वह इस सम्बन्ध में क्या कहता है।"

[9]तब यहोवा ने मूसा से कहा, [10]"इस्राएल के लोगों से ये बातें कहो: यह हो सकता है कि तुम ठीक समय पर फसह पर्व न मना सको क्योंकि तुम या तुम्हारे परिवार का कोई व्यक्ति शव को स्पर्श करने के कारण अशुद्ध हो या संभव है कि तुम किसी यात्रा पर गए हुए हो।" [11]तो भी तुम फसह पर्व मना सकते हो। तुम फसह पर्व को दूसरे महीने के चौदहवें दिन सन्ध्या के समय मनाओगे। उस समय तुम मेमना, अख़मीरी रोटी और कड़वा सागपात खाओगे। [12]अगली सुबह तक के लिए तुम्हें उसमें से कोई भी भोजन नहीं छोड़ना चाहिए। तुम्हें मेमने की किसी हड्डी को भी नहीं तोड़ना चाहिए। उस व्यक्ति को फसह पर्व के सभी नियमों का पालन करना चाहिए। [13]किन्तु कोई भी व्यक्ति जो समर्थ है, फसह पर्व की दावत को ठीक समय पर ही खाये। यदि वह शुद्ध है और किसी यात्रा पर नहीं गया है तो उसके लिये कोई बहाना नहीं है। यदि वह व्यक्ति फसह पर्व को ठीक समय पर नहीं खाता है तो उसे अपने लोगों से अलग भेज दिया जायेगा। वह अपराधी है! क्योंकि उसने यहोवा को ठीक समय पर अपनी भेंट नहीं चढ़ाई सो उसे दण्ड अवश्य दिया जाना चाहिए।"

[14]"तुम लोगों के साथ रहने वाला कोई भी व्यक्ति जो इस्राएली लोगों का सदस्य नहीं है, यहोवा के फसह पर्व में तुम्हारे साथ भाग लेना चाह सकता है। यह स्वीकृत है, किन्तु उस व्यक्ति को उन नियमों का पालन करना होगा जो तुम्हें दिए गए हैं। तुम्हें अन्य लोगों के लिए भी वे ही नियम रखने होंगे जो तुम्हारे लिए हैं।"

बादल और अग्नि

[15]जिस दिन पवित्र साक्षीपत्र का तम्बू लगाया गया, एक बादल इसके ऊपर रूक गया। रात को बादल अग्नि की तरह दिखाई पड़ता था। [16]बादल तम्बू के ऊपर निरन्तर ठहरा रहा और रात को बादल अग्नि की तरह दिखाई दिया। [17]जब बादल तम्बू के ऊपर अपने स्थान से चलता था, इस्राएली इसका अनुसरण करते थे। जब बादल रूक जाता था तब इस्राएल के लोग वहीं अपना डेरा डालते थे। [18]यही ढंग था जिससे यहोवा इस्राएल के लोगों को यात्रा करने का आदेश देता था, और यही उसका उस

स्थान के लिए आदेश था जहाँ उन्हें डेरा लगाना चाहिए था और जब तक बादल तम्बू के ऊपर ठहरता था, लोग उसी स्थान पर डेरा डाले रहते थे। [19]कभी–कभी बादल तम्बू के ऊपर लम्बे समय तक ठहरता था। इस्राएली यहोवा का आदेश मानते थे और यात्रा नहीं करते थे। [20]कभी–कभी बादल तम्बू के ऊपर कुछ ही दिनों के लिए रहता था और लोग यहोवा के आदेश का पालन करते थे। वे बादल का अनुसरण तब करते जब वह चलता था। [21]कभी–कभी बादल केवल रात में ही ठहरता था और जब बादल अगली सुबह चलता था तब लोग अपनी चीजें इकट्ठी करते थे और उसका अनुसरण करते थे, रात में या दिन में, यदि बादल चलता था तो लोग उसका अनुसरण करते थे। [22]यदि बादल तम्बू के ऊपर दो दिन या एक महीना या एक वर्ष ठहरता था तो लोग यहोवा के आदेश का पालन करते रहते थे। वे उसी डेरे में ठहरते थे और तब तक नहीं चलते थे, जब तक बादल नहीं चलता था। जब बादल अपने स्थान से उठता और चलता तब लोग भी चलते थे। [23]इस प्रकार लोग यहोवा के आदेश का पालन करते थे। वे वहाँ डेरा डालते थे जिस स्थान को यहोवा दिखाता था और जब यहोवा उन्हें स्थान छोड़ने के लिए आदेश देता था तब लोग बादल का अनुसरण करते हुए स्थान छोड़ते थे। लोग यहोवा के आदेश का पालन करते थे। यह आदेश था जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा उन्हें दिया।

चाँदी का बिगुल

10 यहोवा ने मूसा से कहा: [2]"बिगुल बनाने के लिये चाँदी का उपयोग करो। चाँदी का पतरा बना कर उससे दो बिगुल बनाओ। ये बिगुल लोगों को एक साथ बुलाने और यह बताने के लिए होंगी कि डेरे को कब चलाना है। [3]जब तुम इन दोनों बिगुलों को बजाओगे, तो सभी लोगों को मिलापवाले तम्बू के सामने तुम्हारे आगे इकट्ठा हो जाना चाहिए। [4]यदि तुम केवल एक बिगुल बजाते हो, तो नेता (इस्राएल के बारह परिवारों के मुखिया) तुम्हारे सामने इकट्ठे होंगे।

[5]"जब तुम बिगुल को पहली बार कम बजाओ, तब पूर्व में डेरा लगाए हुए परिवारों के समूहों को चलना आरम्भ कर देना चाहिए। [6]जब तुम बिगुल को दूसरी बार कम बजाओगे तो दक्षिण के डेरे को चलना आरम्भ कर देना चाहिए। बिगुल की ध्वनि यह घोषणा करेगी कि लोग चलें। [7]जब तुम सभी लोगों को इकट्ठा करना चाहते हो तो बिगुल को दूसरे ढंग से लम्बी स्थिर ध्वनि निकालते हुए बजाओ। [8]केवल हारून के याजक पुत्रों को बिगुल बजाना चाहिए। यह तुम लोगों के लिए नियम है जो भविष्य में माना जाता रहेगा।

[9]"यदि तुम अपने देश में किसी शत्रु से लड़ रहे हो तो, तुम उनके विरुद्ध जाने के पहले बिगुल को जोर से बजाओ। तब तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारी बात सुनेगा, और वह तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं से बचाएगा। [10]अपनी विशेष प्रसन्नता के समय में भी तुम्हें अपना बिगुल बजाना चाहिए। अपने विशेष पवित्र दिनों और नये चाँद की दावतों में बिगुल बजाओ और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को तुम्हें याद करने का यह विशेष तरीका होगा। मैं तुम्हें यह करने का आदेश देता हूँ; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

इस्राएल के लोग अपने डेरे को ले चलते हैं

[11]दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में इस्राएल के लोगों द्वारा मिस्र छोड़ने के बीसवें दिन के बाद साक्षीपत्र के तम्बू के ऊपर से बादल उठा। [12]इसलिए इस्राएल के सभी लोगों ने सीनै की मरुभूमि से यात्रा करनी आरम्भ की। वे एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा तब तक करते रहे जब तक बादल पारान की मरुभूमि में नहीं रूका। [13]यह पहला समय था कि लोगों ने अपने डेरों को वैसे चलाया जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

[14]यहूदा के डेरे से तीन दल पहले गए। उन्होंने अपने झण्डे के साथ यात्रा की। पहला दल यहूदा के परिवार समूह का था। अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन उस दल का नेता था। [15]उसके ठीक बाद इस्साकार का परिवार समूह आया। सूआर का पुत्र नतनेल उस दल का नेता था [16]और तब जबूलून का परिवार समूह आया। हेलोन का पुत्र एलीआब उस दल का नेता था।

[17]तब मिलापवाले तम्बू उतारे गए और गेर्शोन तथा मरारी परिवार के लोग पवित्र तम्बू को लेकर चले। इसलिए इन परिवारों के लोग पंक्ति में ठीक बाद में थे।

[18]तब रूबेन के डेरे के तीन दल आए। उन्होंने अपने झण्डे के साथ यात्रा की। पहला दल रूबेन परिवार समूह का था। शदेऊर का पुत्र एलीआज़र इस दल का नेता था। [19]इसके ठीक बाद शिमोन का परिवार समूह आया। सूरीशद्दै

का पुत्र शलूमीएल उस दल का नेता था। [20]और तब गाद का परिवार समूह आया। दूएल का पुत्र एल्यासाप उस दल का नेता था। [21]तब कहात परिवार के लोग आए। वे उन पवित्र चीज़ों को ले जा रहे थे जो पवित्र तम्बू में थीं। ये लोग इस समय इसलिए आए ताकि इन लोगों के पहुँचने के पहले पवित्र तम्बू लगा दिया जाए और तैयार कर दिया जाए।

[22]इसके ठीक बाद एप्रैम के डेरे के तीन दल आए। उन्होंने अपने झण्डे के साथ यात्रा की। पहला दल एप्रैम के परिवार समूह का था। अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा उस दल का नेता था। [23]ठीक उसके बाद मनश्शे का परिवार समूह आया। पदासूर का पुत्र गम्लीएल उस दल का नेता था। [24]तब बिन्यामीन का परिवार समूह आया। गिदोनी का पुत्र अबीदान उस दल का नेता था।

[25]पंक्ति में आखिरी तीन परिवार समूह अन्य सभी परिवार समूहों के लिए पृष्ठ रक्षक थे। ये दल दान के डेरे मे से थे। उन्होंने अपने झण्डे के साथ यात्रा की। पहला दल दान के परिवार समूह का था। अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर उस दल का नेता था। [26]उसके ठीक बाद आशेर का परिवार समूह आया। ओक्रान का पुत्र पजीएल उस दल का नेता था। [27]तब नप्ताली का परिवार समूह आया। एनान का पुत्र अहीरा उस दल का नेता था। [28]जब इस्राएल के लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते थे तब उनका यही ढंग था।

[29]रूएल का पुत्र होबाब मिद्यानी था। रूएल मूसा का ससुर था। मूसा ने होबाब से कहा, "हम लोग उस देश की यात्रा कर रहे हैं जिसे परमेश्वर ने हम लोगों को देने का वचन दिया है। इसलिए हम लोगों के साथ आओ, हम लोग तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे। परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को अच्छी चीज़ें देने का वचन दिया है।"

[30]किन्तु होबाब ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। मैं अपने देश और अपने लोगों के पास लौटूँगा।"

[31]तब मूसा ने कहा, "हमें छोड़ो मत। तुम रेगिस्तान के बारे में हम लोगों से अधिक जानते हो। तुम हमारे पथ पदर्शक हो सकते हो। [32]यदि तुम हम लोगों के साथ आते हो तो यहोवा जो कुछ अच्छी चीज़ें देगा उसमें तुम्हारे साथ हम हिस्सा बटाएंगे।"

[33]इसलिए होबाब मान गया और उन्होंने यहोवा के पर्वत से यात्रा आरम्भ की। याजकों ने यहोवा के साक्षीपत्र के पवित्र सन्दूक को लिया और लोगों के आगे चले। वे डेरा डालने के स्थान की खोज में तीन दिन तक पवित्र सन्दूक ढोते रहे। [34]यहोवा का बादल हर एक दिन उनके ऊपर था और हर एक सुबह जब वे अपने डेरे को छोड़ते थे तो उनको रास्ता दिखाने के लिए बादल वहाँ रहता था।

[35]जब लोग पवित्र सन्दूक के साथ यात्रा आरम्भ करते थे और पवित्र सन्दूक डेरे से बाहर ले जाया जाता था, मूसा सदा कहता था,

"यहोवा, उठ!
तेरे शत्रु सभी दिशाओं में भागें।
जो लोग तेरे विरुद्ध हों तेरे सामने से भागें।"

[36]और जब पवित्र सन्दूक अपनी जगह पर रखा जाता था तब मूसा सदा यह कहता था,

"यहोवा, वापस आ,
इस्राएल के लाखों लोगों के पास।"

लोग फिर शिकायत करते हैं

11 इस समय लोगों ने अपने कष्टों के लिए शिकायत की। यहोवा ने उनकी शिकायतें सुनी। जब यहोवा ने ये बातें सुनी तो वह क्रोधित हुआ। यहोवा की तरफ से डेरे में आग लग गई। आग ने डेरे के छोर पर के कुछ हिस्से को जला दिया। [2]इसलिए लोगों ने मूसा को सहायता के लिये पुकारा। मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की और आग का जलना बन्द हो गया। [3]इसलिए उस स्थान को तबेरा* कहा गया। लोगों ने उस स्थान को यही नाम दिया क्योंकि यहोवा ने उनके बीच आग जला दी थी।

सत्तर अग्रज नेता

[4]इस्राएल के लोगों के साथ जो विदेशी मिल गए थे अन्य चीज़ें खाने की इच्छा करने लगे। शीघ्र ही इस्राएल के लोगों ने फिर शिकायत करनी आरम्भ की। लोगों ने कहा, "हम माँस खाना चाहते हैं! [5]हम लोग मिस्र में खायी गई मछलियों को याद करते हैं। उन मछलियों का कोई मूल्य नहीं देना पड़ता था। हम लोगों के पास बहुत सी सब्जियाँ थीं जैसे ककड़ियाँ, खरबूजे, गन्दने, प्याज और

तबेरा इस नाम का अर्थ जलना है।

लहसुन। [6]किन्तु अब हम अपनी शक्ति खो चुके हैं हम और कुछ भी नहीं खाते, इस मन्ने के अतिरिक्त!" [7](मन्ना धनियाँ के बीज के समान था, वह गूगुल के पारदर्शी पीले गौंद* के समान दिखता था। [8]लोग इसे इकट्ठा करते थे और तब इसे पीसकर आटा बनाते थे या वे इसे कुचलने के लिए चट्टान का उपयोग करते थे। तब वे इसे बर्तन में पकाते थे अथवा इसके "फुलके" बनाते थे। "फुलके" का स्वाद जैतून के तेल से पकी रोटी के समान होता था। [9]हर रात को जब भूमि ओस से गीली होती थी तो मन्ना भूमि पर गिरता था।)

[10]मूसा ने हर एक परिवार के लोगों को अपने खेमों के द्वारों पर खड़े शिकायत करते सुना। यहोवा बहुत क्रोधित हुआ। इससे मूसा बहुत परेशान हो गया। [11]मूसा ने यहोवा से पूछा, "यहोवा, तूने अपने सेवक मुझ पर यह आपत्ति क्यों डाली है? मैंने क्या किया है? जो बुरा है। मैंने तुझे अप्रसन्न करने के लिए क्या किया है? तूने मेरे ऊपर इन सभी लोगों का उत्तरदायित्व क्यों सौंपा है? [12]तू जानता है कि मैं इन सभी लोगों का पिता नहीं हूँ। तू जानता है कि मैंने इनको पैदा नहीं किया है। किन्तु यह तो ऐसे हैं कि मैं इन्हें अपनी गोद में वैसे ही ले चलूँ जैसे कोई धाय बच्चे को ले चलती है। तू हमें ऐसा करने को विवश क्यों करता है? तू मुझे क्यों विवश करता है कि मैं इन्हें उस देश को ले जाऊँ जिसे देने का वचन तूने उनके पूर्वजों को दिया है? [13]मेरे पास इन लोगों के लिए पर्याप्त माँस नहीं है। किन्तु वे लगातार मुझसे शिकायत कर रहे हैं। वे कहते हैं, 'हमें खाने के लिए माँस दो!' [14]मैं अकेले इन सभी लोगों की देखभाल नहीं कर सकता। यह बोझ मेरी बरदाश्त के बाहर है। [15]यदि तू उनके कष्ट को मुझे देकर चलाते रहना चाहता है तो तू मुझे अभी मार डाल। यदि तू मुझे अपना सेवक मानता है तो अभी मुझे मर जाने दे। तब मेरे सभी कष्ट समाप्त हो जाएंगे!"

[16]यहोवा ने मूसा से कहा, "मेरे पास इस्राएल के ऐसे सत्तर अग्रजों को लाओ, जो लोगों के अग्रज और अधिकारी हों। इन्हें मिलापवाले तम्बू में लाओ। वहाँ उन्हें अपने साथ खड़ा करो। [17]तब मैं आऊँगा और तुमसे बातें करूँगा। अब तुम पर आत्मा आई है। किन्तु मैं उन्हें भी आत्मा का कुछ अंश दूँगा। तब वे लोगों की देखभाल करने में तुम्हारी सहायता करेंगे। इस प्रकार, तुमको अकेले इन लोगों के लिए उत्तरदायी नहीं होना पड़ेगा।

[18]"लोगों से कहो: कल के लिए अपने को तैयार करो। कल तुम लोग माँस खाओगे। यहोवा ने सुना है जब तुम लोग रोए–चिल्लाए। यहोवा ने तुम लोगों की बातें सुनीं जब तुम लोगों ने कहा, 'हमें खाने के लिए माँस चाहिए! हम लोगों के लिए मिस्र में अच्छा था।" अब यहोवा तुम लोगों को माँस देगा और तुम लोग उसे खाओगे। [19]तुम लोग उसे केवल एक दिन नहीं, दो, पाँच, दस या बीस दिन भी खा सकोगे। [20]तुम लोग वह माँस महीने भर खाओगे। तुम लोग वह माँस तब तक खाओगे जब तक उससे ऊब नहीं जाओगे। यह होगा, क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा के विरुद्ध शिकायत की है। यहोवा तुम लोगों में घूमता है और तुम्हारी आवश्यकताओं को समझता है। किन्तु तुम लोग उसके सामने रोए–चिल्लाए और शिकायत की है! तुम लोगों ने कहा, 'हम लोगों ने आखिर मिस्र छोड़ा ही क्यों?'"

[21]मूसा ने कहा, "यहोवा, यहाँ छ: लाख पुरुष साथ चल रहे हैं और तू कहता है, 'मैं उन्हें पूरे महीने खाने के लिए पर्याप्त माँस दूँगा!' [22]यदि हमें सभी भेड़ें और मवेशी मारने पड़े तो भी इतनी बड़ी संख्या में लोगों के महीने भर खाने के लिए वह पर्याप्त नहीं होगा और यदि हम समुद्र की सारी मछलियाँ पकड़ लें तो भी उनके लिए वे पर्याप्त नहीं होंगी।"

[23] किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, "यहोवा की शक्ति को सीमित न करो। तुम देखोगे कि यदि मैं कहता हूँ कि मैं कुछ करूँगा तो उसे मैं कर सकता हूँ।"

[24] इसलिए मूसा लोगों से बात करने बाहर गया। मूसा ने उन्हें वह बताया जो यहोवा ने कहा था। तब मूसा ने सत्तर अग्रज नेताओं को इकट्ठा किया। मूसा ने उनसे तम्बू के चारों ओर खड़ा रहने को कहा। [25]तब यहोवा एक बादल में उतरा और उसने मूसा से बातें की। आत्मा मूसा पर थी। यहोवा ने उसी आत्मा को सत्तर अग्रज नेताओं पर भेजा। जब उन में आत्मा आई तो वे भविष्यवाणी करने लगे। किन्तु यह केवल उसी समय हुआ जब उन्होंने ऐसा किया।

[26]अग्रजों में से दो एलदाद और मेदाद तम्बू में नहीं गए। उनके नाम अग्रज नेताओं की सूची में थे। किन्तु वे डेरे में रहे किन्तु आत्मा उन पर भी आई और वे भी डेरे

गौंद मूल में बडोलाक अर्थात् डेलियम।

में भविष्यवाणी करने लगे। [27]एक युवक दौड़ा और मूसा से बोला। उस पुरुष ने कहा, "एलदाद और मेदाद डेरे में भविष्यवाणी कर रहे हैं।"

[28]किन्तु नून के पुत्र यहोशू ने मूसा से कहा, "मूसा, तुम्हें उन्हें रोकना चाहिए!" (यहोशू मूसा का तब से सहायक था जब वह किशोर था।)

[29]किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, "क्या तुम्हें डर है कि लोग सोचेंगे कि अब मैं नेता नहीं हूँ? मैं चाहता हूँ कि यहोवा के सभी लोग भविष्यवाणी करने योग्य हों। मैं चाहता हूँ कि यहोवा अपनी आत्मा उन सभी पर भेजे।" [30]तब मूसा और इस्राएल के नेता डेरे में लौट गए।

बटेरें आई

[31]तब यहोवा ने समुद्र की ओर से भारी आंधी चलाई। आंधी ने उस क्षेत्र में बटेरों को पहुँचाया। बटेरें डेरों के चारों ओर उड़ने लगीं। वहाँ इतनी बटेरें थीं कि भूमि ढक गई। भूमि पर बटेरों की तीन फीट ऊँची परत जम गई थी। कोई व्यक्ति एक दिन में जितनी दूर जा सकता था उतनी दूर तक चारों ओर बटेरें थीं। [32]लोग बाहर निकले और पूरे दिन और पूरी रात बटेरों को इकट्ठा किया और फिर पूरे अगले दिन भी उन्होंने बटेरें इकट्ठी कीं। हर एक आदमी ने साठ बुशेल* या उससे अधिक बटेरें इकट्ठी की। तब लोगों ने बटेरों को अपने डेरे के चारों ओर फैलाया। [33]लोगों ने माँस खाना आरम्भ किया, किन्तु यहोवा बहुत क्रोधित हुआ। जब माँस उनके मुँह में था और लोग जब तक इसको खाना खत्म करें इसके पहले ही, यहोवा ने एक बीमारी लोगों में फैला दी। [34]इसलिए लोगों ने उस स्थान का नाम किब्रोथत्तावा रखा। उन्होंने उस स्थान को वह नाम इसलिए दिया कि यह वही स्थान है जहाँ उन्होंने उन लोगों को दफनाया था जो स्वादिष्ट भोजन की प्रबल इच्छा रखते थे।

[35] किब्रोथत्तावा से लोगों ने हसेरोत की यात्रा की और वे वहीं ठहरे।

मरियम और हारून मूसा की पत्नी के विरुद्ध कहते हैं

12 मरियम और हारून मूसा के विरुद्ध बात करने लगे। उन्होंने उसकी आलोचना की, क्योंकि उसकी पत्नी कूशी* थी। उन्होंने सोचा कि यह अच्छा नहीं कि मूसा ने कूशी लोगों में से एक के साथ विवाह किया। [2]उन्होंने आपस में कहा, "यहोवा ने लोगों से बात करने के लिए मूसा का उपयोग किया है। किन्तु मूसा ही एकमात्र नहीं है। यहोवा ने हम लोगों के द्वारा भी कहा है।"

यहोवा ने यह सुना। [3](मूसा बहुत विनम्र व्यक्ति था। वह न डींग हाँकता था, न शेखी बघारता था। वह धरती पर के किसी व्यक्ति से अधिक विनम्र था।) [4]इसलिये यहोवा अचानक आया और मूसा, हारून और मरियम से बोला। यहोवा ने कहा, "तुम तीनों को अब मिलापवाले तम्बू में आना चाहिए।"

इसलिए मूसा, हारून और मरियम तम्बू में गए। [5]तब यहोवा बादल में उतरा। यहोवा तम्बू के द्वार पर खड़ा हुआ। यहोवा ने "हारून और मरियम" को अपने पास आने के लिए कहा! जब दोनों उसके समीप आए तो, [6]यहोवा ने कहा, "मेरी बात सुनो जब मैं तुम लोगों में नबी भेजूँगा, तब मैं अर्थात् यहोवा अपने आपको उसके दर्शन में दिखाऊँगा और मैं उससे उसके सपने में बात करूँगा। [7]किन्तु मैंने अपने सेवक मूसा के साथ ऐसा नहीं किया। मैंने उसे अपने सभी लोगों के ऊपर शक्ति दी है। [8]जब मैं उससे बात करता हूँ तो मैं उसके आमने–सामने बात करता हूँ। मैं जो बात कहना चाहता हूँ उसे साफ–साफ कहता हूँ। मैं छिपे अर्थ वाले विचित्र विचारों को उसके सामने नहीं रखता और मूसा यहोवा के स्वरूप को देख सकता है। इसलिए तुमने मेरे सेवक मूसा के विरुद्ध बोलने का साहस कैसे किया?"

[9]तब यहोवा उनके पास से गया। किन्तु वह उनसे बहुत क्रोधित था। [10]बादल तम्बू से उठा। तब हारून मुड़ा और उसने मरियम को देखा और उसे दिखाई पड़ा कि उसे भयंकर चर्मरोग हो गया है। उसकी त्वचा बर्फ की तरह सफेद थी! [11]तब हारून ने मूसा से कहा, "महोदय, कृपा करके जो मूर्खता भरा पाप हम लोगों ने किया है, उसके लिए क्षमा करें। [12]उसकी त्वचा का रंग उस प्रकार न उड़ने दे जैसा मरे हुए उत्पन्न बच्चे का होता है।" (कभी–कभी इस प्रकार का बच्चा आधी गली हुई त्वचा के साथ उत्पन्न होता है।)

[13]इसलिए मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, "परमेश्वर, कृपा करके इस बीमारी से उसे स्वस्थ कर!"

साठ बुशेल एक बुशल बराबर हुआ करता था लगभग छत्तीस लिटर के।

कूशी अफ्रीका का व्यक्ति।

[14] यहोवा ने मूसा को उत्तर दिया, "यदि उसका पिता उसके मुँह पर थूके, तो वह सात दिन तक लज्जित रहेगी। इसलिए उसे सात दिन तक डेरे से बाहर रखो। उस समय के बाद वह ठीक हो जायेगी। तब वह डेरे में वापस आ सकती है।"

[15]इसलिए मरियम सात दिन के लिए डेरे से बाहर ले जाई गई और तब तक वे वहाँ से नहीं चले जब तक वह फिर वापस नहीं लाई गई। [16]उसके बाद लोगों ने हसेरोत को छोड़ा और पारान मरुभूमि की उन्होंने यात्रा की। लोगों ने उस मरुभूमि में डेरे लगाए।

जासूस कनान को गए

13 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"कुछ व्यक्तियों को कनान देश का अध्ययन करने के लिए भेजो। यही वह देश है जिसे मैं इस्राएल के लोगों को दूँगा। हर एक बारह परिवार समूह से एक नेता को भेजो।"

[3]इसलिए मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने परान के रेगिस्तान से नेताओं को भेजा। [4] ये उनके नाम हैं:

जककूर का पुत्र शम्मू–रूबेन के
परिवार समूह से;
[5] होरी का पुत्र शापात–शिमोन के
परिवार समूह से;
[6] यपुन्ने का पुत्र कालेब–यहूदा के
परिवार समूह से;
[7] योसेप का पुत्र यिगास–इस्साकार के
परिवार समूह से;
[8] नून का पुत्र होशे*–एप्रैम के
परिवार समूह से;
[9] रापू का पुत्र पलती–बिन्यामीन के
परिवार समूह से;
[10] सोदी का पुत्र गद्दीएल–जबूलून के
परिवार समूह से;
[11] सूसी का पुत्र गद्दी–मनश्शे के
परिवार समूह से;
[12] गमल्ली का पुत्र अम्मीएल–दान के
परिवार समूह से;
[13] मीकाएल का पुत्र सतूर–आशेर के
परिवार समूह से;
[14] वोप्सी का पुत्र नहूबी–नप्ताली
परिवार समूह से;
[15] माकी का पुत्र गूएल–गाद के
परिवार समूह से;

[16]ये उन व्यक्तियों के नाम हैं जिन्हें मूसा ने प्रदेश को देखने और जाँच करने के लिए भेजा। मूसा से नून के पुत्र होशे को दूसरे नाम से पुकारा। मूसा ने उसे यहोशू कहा।

[17]मूसा जब उन्हें कनान की छानबीन के लिए भेज रहा था, तब उसने कहा, "नेगेव घाटी से होकर पहाड़ी प्रदेश में जाओ। [18]यह देखो कि देश कैसा दिखाई देता है और उन लोगों की जानकारी प्राप्त करो जो वहाँ रहते हैं। वे शक्तिशाली हैं या कमजोर हैं? वे थोड़े हैं या अधिक संख्या में हैं? [19]उस प्रदेश के बारे में जानकारी करो जिसमें वे रहते हैं। क्या यह अच्छा प्रदेश है या बुरा? किस प्रकार के नगरों में वे रहते हैं? क्या उन नगरों के परकोटे हैं? क्या नगर शक्तिशाली ढंग से सुरक्षित है? [20]और प्रदेश के बारे में अन्य बातों की जानकारी प्राप्त करो। क्या भूमि उपज के लिए उपजाऊ है या ऊसर है? क्या जमीन पर पेड़ उगे हैं? और उस भूमि से कुछ फल लाने का प्रयत्न करो।" (यह उस समय की बात है जब अंगूर की पहली फसल पकी हो।)

[21]तब उन्होंने प्रदेश की छानबीन की। वे जिन मरुभूमि से रहोब और लेबो हमात तक गए। [22]वे नेगेव से होकर तब तक यात्रा करते रहे जब तक वे हेब्रोन नगर को पहुँचे। हेब्रोन मिस्र में सोअन नगर के बसने के सात वर्ष पहले बना था। अहीमन, शेशै और तल्मै वहाँ रहते थे। ये लोग अनाक* के वंशज थे। [23]तब वे लोग एश्कोल की घाटी में आये उन व्यक्तियों ने अंगूर की बेल की एक शाखा काटी। उस शाखा में अंगूर का एक गुच्छा था। लोगों में से दो व्यक्ति अपने बीच एक डंडे पर उसे रख कर लाए। वे कुछ अनार और अंजीर भी लाए। [24]उस स्थान का नाम एश्कोल* की घाटी था। क्योंकि यह वही स्थान है जहाँ इस्राएल के आदमियों ने अंगूर के गुच्छे काटे थे। [25]उन व्यक्तियों ने उस प्रदेश की छानबीन चालीस दिन तक की। तब वे डेरे को लौटे। [26]वे व्यक्ति मूसा, हारून और अन्य इस्राएल के लोगों के पास कादेश में

होशे या "यहोशू।"

अनाक विशालकाय व्यक्ति।

एश्कोल एश्कोल नाम उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "अंगूर का गुच्छा" होता है।

लौटे। यह पारान मरुभूमि में था। तब उन्होंने मूसा, हारून और सभी लोगों को, जो कुछ देखा, सब कुछ सुनाया और उन्होंने उन्हें उस प्रदेश के फलों को दिखाया। [27]उन लोगों ने मूसा से यह कहा, "हम लोग उस प्रदेश में गए जहाँ आपने हमें भेजा। वह प्रदेश अत्यधिक अच्छा है–यहाँ दूध और मधु की नदियाँ बह रही हैं! ये वे कुछ फल हैं जिन्हें हम लोगों ने वहाँ पाया। [28]किन्तु वहाँ जो लोग रहते हैं, वे बहुत शक्तिशाली और मजबूत हैं। उनके नगर मजबूती के साथ सुरक्षित हैं और उनके नगर बहुत विशाल हैं। हम लोगों ने वहाँ उनके परिवार के कुछ लोगों को देखा भी। [29]अमालेकी लोग नेगेव की घाटी में रहते हैं। हित्ती, यबूसी और एमोरी पहाड़ी प्रदेशों में रहते हैं। कनानी लोग समुद्र के किनारे और यरदन नदी के किनारे रहते हैं।"

[30]तब कालेब ने मूसा के समीप के लोगों को शान्त होने को कहा। कालेब ने कहा, "हम लोगों को वहाँ जाना चाहिए और उस प्रदेश को अपने लिए लेना चाहिए। हम लोग उस प्रदेश को सरलता से ले सकते हैं।"

[31]किन्तु जो व्यक्ति उसके साथ गया था, वह बोला, "हम लोग उन लोगों के विरुद्ध लड़ नहीं सकते। वे हम लोगों की तुलना में अधिक शक्तिशाली हैं" [32]और उन लोगों ने सभी इस्राएली लोगों से कहा कि उस प्रदेश के लोगों को पराजित करने के लिए वे पर्याप्त शक्तिशाली नहीं हैं। उन्होंने कहा, "जिस प्रदेश को हम लोगों ने देखा, वह शक्तिशाली लोगों से भरा है। वे लोग इतने अधिक शक्तिशाली हैं कि जो कोई व्यक्ति वहाँ जाएगा उसे वे सरलता से हरा सकते हैं। [33]हम लोगों ने वहाँ नपीलियों को देखा! अनाक के परिवार के लोग जो नपीलों के वंश के थे, उनके सामने खड़े होने पर हम लोगों ने अपने आपको टिड्डा अनुभव किया। उन लोगों ने हम लोगों को ऐसे देखा मानो हम टिड्डे के समान छोटे हों।"

लोग फिर शिकायत करते हैं

14 उस रात डेरे के सब लोगों ने जोर से रोना आरम्भ किया। [2]इस्राएल के सभी लोगों ने हारून और मूसा के विरुद्ध फिर शिकायत की। सभी लोग एक साथ आए और मूसा तथा हारून से उन्होंने कहा, "हम लोगों को मिस्र या मरुभूमि में मर जाना चाहिए था, अपने नए प्रदेश में तलवार से मरने की अपेक्षा यह बहुत अच्छा रहा होता। [3]क्या यहोवा हम लोगों को इस नये प्रदेश में मरने के लिए लाया है? हमारी पत्नियाँ और हमारे बच्चे हमसे छीन लिए जाएंगे और हम तलवार से मार डाले जाएंगे। यह हम लोगों के लिए अच्छा होगा कि हम लोग मिस्र को लौट जाएं।"

[4]तब लोगों ने एक दूसरे से कहा, "हम लोगों को दूसरा नेता चुनना चाहिए और मिस्र लौट चलना चाहिए।"

[5]तब मूसा और हारून वहाँ इकट्ठे सारे इस्राएल के लोगों के सामने भूमि पर झुक गए। [6]उस प्रदेश की छानबीन करने वाले लोगों में से दो व्यक्ति बहुत परेशान हो गए। वे दोनों नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालेब थे। [7]इन दोनों ने वहाँ इकट्ठे इस्राएल के सभी लोगों से कहा, "जिस प्रदेश को हम लोगों ने देखा है वह बहुत अच्छा है [8]और यदि यहोवा हम लोगों से प्रसन्न है तो वह हम लोगों को उस प्रदेश में ले चलेगा। वह प्रदेश सम्पन्न है, ऐसा है जैसे वहाँ दूध और मधु की नदियाँ बहती हो और यहोवा उस प्रदेश को हम लोगों को देने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करेगा। [9]किन्तु हम लोगों को यहोवा के विरुद्ध नहीं जाना चाहिए। हम लोगों को उस प्रदेश के लोगों से डरना नहीं चाहिए। हम लोग उन्हें सरलता से हरा देंगे। उनके पास कोई सुरक्षा नहीं है, उन्हें सुरक्षित रखने के लिए उनके पास कुछ नहीं है। किन्तु हम लोगों के साथ यहोवा है। इसलिए इन लोगों से डरो मत!"

[10]तब इस्राएल के सभी लोग उन दोनों व्यक्तियों को पत्थरों से मार देने की बातें करने लगे। किन्तु यहोवा का तेज मिलापवाले तम्बू पर आया। इस्राएल के सभी लोग इसे देख सकते थे। [11]यहोवा ने मूसा से कहा, "ये लोग इस प्रकार मुझसे कब तक घृणा करते रहेंगे? वे प्रकट कर रहे हैं कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। वे दिखाते हैं कि उन्हें मेरी शक्ति पर विश्वास नहीं। वे मुझ पर विश्वास करने से तब भी इन्कार करते हैं जबकि मैंने उन्हें बहुत से शक्तिशाली चिन्ह दिखाये हैं। मैंने उनके बीच अनेक बड़ी चीज़ें की हैं। [12]मैं उन्हें नष्ट कर दूँगा और तुम्हारा उपयोग दूसरा राष्ट्र बनाने के लिए करूँगा और तुम्हारा राष्ट्र इन लोगों से अधिक बड़ा और अधिक शक्तिशाली होगा।"

[13]तब मूसा ने यहोवा से कहा, "यदि तू ऐसा करता है तो मिस्र में लोग यह सुनेंगे कि तूने अपने सभी लोगों को मार डाला। तूने अपनी बड़ी शक्ति का उपयोग उन लोगों को मिस्र से बाहर लाने के लिए किया [14]और मिस्र के

लोगों ने इसके बारे में कनान के लोगों को बताया है। वे पहले से ही जानते हैं कि तू यहोवा है। वे जानते हैं कि तू अपने लोगों के साथ है और वे जानते हैं कि तू प्रत्यक्ष है। इस देश में रहने वाले लोग उस बादल के बारे में जानेंगे जो लोगों के ऊपर ठहरता है तूने उस बादल का उपयोग दिन में अपने लोगों को रास्ता दिखाने के लिए किया और रात को वह बादल लोगों को रास्ता दिखाने के लिए आग बन जाता है। [15]इसलिए तुझे अब लोगों को मारना नहीं चाहिए। यदि तू उन्हें मारता है तो सभी राष्ट्, जो तेरी शक्ति के बारे में सुन चुके हैं, कहेंगे, [16]'यहोवा इन लोगों को उस प्रदेश में ले जाने में समर्थी नहीं था जिस प्रदेश को उसने उन्हें देने का वचन दिया था। इसलिए यहोवा ने उन्हें मरुभूमि में मार दिया।'

[17]"इसलिए तुझे अपनी शक्ति दिखानी चाहिए। तुझे इसे वैसे ही दिखाना चाहिए जैसा दिखाने की घोषणा तूने की है। [18]तूने कहा था, 'यहोवा क्रोधित होने में सहनशील है। यहोवा प्रेम से परिपूर्ण है। यहोवा पाप को क्षमा करता है और उन लोगों को क्षमा करता है जो उसके विरुद्ध भी हो जाते हैं। किन्तु यहोवा उन लोगों को अवश्य दण्ड देगा जो अपराधी हैं। यहोवा तो बच्चों को, उनके पितामह और प्रपितामह के पापों के लिए भी दण्ड देता है!' [19]इसलिए इन लोगों को अपना महान प्रेम दिखा। उनके पाप को क्षमा कर। उनको उसी प्रकार क्षमा कर जिस प्रकार तू उनको मिस्र छोड़ने के समय से अब तक क्षमा करता रहा है।"

[20]यहोवा ने उत्तर दिया, "मैंने लोगों को तुम्हारे कहे अनुसार क्षमा कर दिया है। [21]किन्तु मैं तुमसे यह सत्य कहता हूँ, क्योंकि मैं शाश्वत हूँ और मेरी शक्ति इस सारी पृथ्वी पर फैली है। अत: मैं तुमको यह वचन दूँगा। [22]उन लोगों में से कोई भी व्यक्ति जिसे मैं मिस्र से बाहर लाया, उस देश को कभी नहीं देखेगा। उन लोगों ने मिस्र में मेरे तेज और मेरे महान संकेतों को देखा है और उन लोगों ने उन महान कार्यों को देखा जो मैंने मरुभूमि में किए। किन्तु उन्होंने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया और दस बार मेरी परीक्षा ली। [23]मैंने उनके पूर्वजों को वचन दिया था। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं उनको एक महान देश दूँगा। किन्तु उनमें से कोई भी व्यक्ति जो मेरे विरुद्ध में हो चुका है उस देश में प्रवेश नहीं करेगा। [24]किन्तु मेरा सेवक कालेब इनसे भिन्न है। वह पूरी तरह मेरा अनुसरण करता है। इसलिए मैं उसे उस देश में ले जाऊँगा जिसे उसने पहले देखा है और उसके लोग यह प्रदेश प्राप्त करेंगे। [25]अमालेकियों और कनानी लोग घाटी में रह रहें हैं इसलिये तुम्हारे जाने के लिए कोई जगह नहीं है। कल इस स्थान को छोड़ो और रेगिस्तान की ओर लालसागर से होकर लौट जाओ।"

यहोवा लोगों को दण्ड देता है

[26]यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [27]"ये लोग कब तक मेरे विरुद्ध शिकायत करते रहेंगे? मैं इन लोगों की शिकायत और पीड़ा को सुन चुका हूँ। [28]इसलिए इनसे कहो, "यहोवा कहता है कि वह निश्चय ही सभी काम करेगा जिनके बारे में तुम लोगों की शिकायत है। [29]तुम लोगों को यह सब होगा: तुम लोगों के शरीर इस मरुभूमि में मरे हुए गिरेंगे। हर एक व्यक्ति जो बीस वर्ष या अधिक उम्र का था हमारे लोगों के सदस्य के रूप में गिना गया और तुम लोगों में से हर एक ने मेरे अर्थात् यहोवा के विरुद्ध शिकायत की। इसलिए तुम लोगों में से हर एक मरुभूमि में मरेगा। [30]तुम लोगों में से कोई भी कभी उस देश में प्रवेश नहीं करेगा जिसे मैंने तुमको देने का वचन दिया था। केवल यपुन्ने का पुत्र कालेब और नून का पुत्र यहोशू उस देश में प्रवेश करेंगे। [31]तुम लोग डर गए थे और तुम लोगों ने शिकायत की कि उस नये देश में तुम्हारे शत्रु तुम्हारे बच्चों को तुमसे छीन लेंगे। किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं उन बच्चों को उस देश में ले जाऊँगा। वे उन चीज़ों का भोग करेंगे जिनका भोग करना तुमने स्वीकार नहीं किया। [32]जहाँ तक तुम लोगों की बात है, तुम्हारे शरीर इस मरुभूमि में गिर जाएंगे।

[33]"तुम्हारे बच्चे यहाँ मरुभूमि में चालीस वर्ष तक गड़ेंरिए रहेंगे। उनको यह कष्ट होगा क्योंकि तुम लोगों ने विश्वास नहीं किया। वे इस मरुभूमि में तब तक रहेंगे जब तक तुम सभी यहाँ मर नहीं जाओगे। तब तुम सबके शरीर इस मरुभूमि में दफन हो जाएंगे। [34]तुम लोग अपने पाप के लिए चालीस वर्ष तक कष्ट भोगोगे। (तुम लोगों ने इस देश की छानबीन में जो चालीस दिन लगाए उसके प्रत्येक दिन के लिए एक वर्ष होगा।) तुम लोग जानोगे कि मेरा तुम लोगों के विरुद्ध होना कितना भयानक है।

[35]"मैं यहोवा हूँ और मैंने यह कहा है। मैं वचन देता हूँ कि मैं इन सभी बुरे लोगों के लिए यह करूँगा। ये लोग

मेरे विरुद्ध एक साथ आए इसलिए वे सभी यहाँ मरुभूमि में मरेंगे।"

[36]जिन लोगों को मूसा ने नये प्रदेश की छानबीन के लिए भेजा, वे ऐसे थे जो लौट आए और जो सभी इस्राएलियों में शिकायत करते हुए फैल गए। उन लोगों ने कहा कि लोग उस प्रदेश में प्रवेश करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली नहीं हैं। [37]वे लोग इस्राएली लोगों में परेशानी फैलाने के लिए उत्तरदायी थे। इसलिए यहोवा ने एक बीमारी उत्पन्न करके उन सभी को मर जाने दिया। [38]किन्तु नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालेब उन लोगों में थे जिन्हें देश की छानबीन करने के लिए भेजा गया था और यहोवा ने उन दोनों आदमियों को बचाया। उनको वह बीमारी नहीं हुई जिसने अन्य लोगों को मार डाला।

लोग कनान में जाने का प्रयत्न करते हैं

[39]मूसा ने ये सभी बातें इस्राएल के लोगों से कहीं। लोग बहुत अधिक दुःखी हुए। [40]अगले दिन बहुत सवेरे लोगों ने ऊँचे पहाड़ी प्रदेश की ओर बढ़ना आरम्भ किया। लोगों ने कहा, "हम लोगों ने पाप किया है। हम लोगों को दुःख है कि हम लोगों ने यहोवा पर विश्वास नहीं किया। हम लोग उस स्थान पर जाएंगे जिसे यहोवा ने देने का वचन दिया है।"

[41]किन्तु मूसा ने कहा, "तुम लोग यहोवा के आदेश का पालन क्यों नहीं कर रहे हो? तुम लोग सफल नहीं हो सकोगे। [42]उस देश में प्रवेश न करो। यहोवा तुम लोगों के साथ नहीं है। तुम लोग सरलता से अपने शत्रुओं से हार जाओगे। [43]अमालेकी और कनानी लोग वहाँ तुम्हारे विरुद्ध लड़ेंगे। तुम लोग यहोवा से विमुख हुए हो। इसलिए वह तुम लोगों के साथ नहीं होगा जब तुम लोग उनसे लड़ोगे और तुम सभी उनकी तलवार से मारे जाओगे।"

[44]किन्तु लोगों ने मूसा पर विश्वास नहीं किया। वे ऊँचे पहाड़ी प्रदेश की ओर गए। किन्तु मूसा और यहोवा का साक्षीपत्र का सन्दूक लोगों के साथ नहीं गया। [45]तब अमालेकी और कनानी लोग जो पहाड़ी प्रदेशों में रहते थे, आए और उन्होंने इस्राएली लोगों पर आक्रमण कर दिया। अमालेकी और कनानी लोगों ने उनको सरलता से हरा दिया और होर्मा तक उनका पीछा किया।

बलि के नियम

15 यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएल के लोगों से बातें करो और उनसे कहो: तुम लोग ऐसे प्रदेश में प्रवेश करोगे जिसे मैं तुम लोगों को तुम्हारे घर के रूप में दे रहा हूँ। [3]जब तुम उस प्रदेश में पहुँचोगे तब तुम्हें यहोवा को आग द्वारा विशेष भेंट देनी चाहिए। इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी। तुम अपनी गायें, भेड़ें और बकरियों का इस्तेमाल होमबलि, बलिदानों, विशेष मनौतियों, मेलबलि, शान्ति भेंट या विशेष पर्वों में करोगे।

[4]"और उस समय जो अपनी भेंट लाएगा उसे यहोवा को अन्नबलि भी देनी होगी। यह अन्नबलि एक क्वार्ट जैतून के तेल में मिली हुई दो क्वार्ट* अच्छे आटे की होगी। [5]हर एक बार जब तुम एक मेमना होमबलि के रूप में दो तो तुम्हें एक क्वार्ट दाखमधु पेय भेंट के रूप में तैयार करनी चाहिए।

[6]"यदि तुम एक मेढ़ा दे रहे हो तो तुम्हें अन्नबलि भी तैयार करनी चाहिए। यह अन्नबलि एक चौथाई क्वार्ट जैतून के तेल में मिली हुई चार क्वार्ट अच्छे आटे की होनी चाहिए [7]और तुम्हें एक चौथाई क्वार्ट दाखमधु पेय भेंट के रूप में तैयार करनी चाहिए। इसे यहोवा को भेंट करो। इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।

[8]"होमबलि, शान्ति भेंट अथवा किसी मनौती के लिए यहोवा को भेंट के रूप में तुम एक बछड़े को तैयार कर सकते हो। [9]इसलिए तुम्हें बैल के साथ अन्नबलि भी लानी चाहिए। अन्नबिल दो क्वार्ट जैतून के तेल में मिली हुई छः क्वार्ट अच्छे आटे की होनी चाहिए। [10]दो क्वार्ट दाखमधु भी पेय भेंट के रूप में लाओ। आग में जलाई गई यह भेंट यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। [11]प्रत्येक बैल या मेढ़ा या मेमना या बकरी का बच्चा, जिसे तुम यहोवा को भेंट करो, उसी प्रकार तैयार होना चाहिए। [12]जो जानवर तुम भेंट करो उनमें से हर एक के लिए यह करो।

[13]"इसलिए जब लोग यह होमबलि देंगे तो यहोवा को यह सुगन्ध प्रसन्न करेगी। किन्तु इस्राएल के हर एक नागरिक को इसे वैसे ही करना चाहिए जिस प्रकार मैंने बताया है। [14]और भविष्य के सभी दिनों में, यदि कोई व्यक्ति जो इस्राएल के परिवार में उत्पन्न नहीं है और तुम्हारे बीच रह रहा है तो उसे भी इन सब चीज़ों का पालन करना चाहिए। उसे ये वैसे ही करना होगा जैसा

दो क्वार्ट या "1/2 हिन।"

मैंने तुमको बताया है। [15]इस्राएल के परिवार में उत्पन्न लोगों के लिये जो नियम होगें वही नियम उन अन्य लोगों के लिये भी होंगे जो तुम्हारे बीच रहते हैं। यह नियम अब से भविष्य में लागू रहेगा। तुम और तुम्हारे बीच रहने वाले लोग यहोवा के सामने समान होंगे। [16]इसका यह तात्पर्य है कि तुम्हें एक ही विधि और नियम का पालन करना चाहिए। वे नियम इस्राएल के परिवार में उत्पन्न तुम्हारे लिए और अन्य लोगों के लिए भी है जो तुम्हारे बीच रहते हैं।"

[17]यहोवा ने मूसा से कहा, [18]"इस्राएल के लोगों से यह कहो: मैं तुम्हें दूसरे देश में ले जा रहा हूँ। [19]जब तुम वह भोजन करो जो उस प्रदेश में उत्पन्न हो तो भोजन का कुछ अंश यहोवा को भेंट के रूप में दो। [20]तुम अन्न इकट्ठा करोगे और इसे आटे के रूप में पीसोगे और उसे रोटी बनाने के लिए गूँदोगे। फिर उस आटे की पहली रोटी को यहोवा को अर्पित करोगे। वह ऐसी अन्नबलि होगी जो खलिहान से आती है। [21]यह नियम सदा सर्वदा के लिए है। इसका तात्पर्य है कि जिस अन्न को तुम आटे के रूप में माढ़ते हो, उसकी पहली रोटी यहोवा को अर्पित की जानी चाहिए।

[22]"यदि तुम यहोवा द्वारा मूसा को दिये गए आदेशों में से किसी का पालन करना भूल जाओ तो तुम क्या करोगे? [23]ये आदेश उसी दिन से आरम्भ हो गए थे जिस दिन यहोवा ने इन्हें तुमको दिया था और ये आदेश भविष्य में भी लागू रहेंगे।

[24]इसलिये यदि तुम कोई गलती करते हो और इन सभी आज्ञाओं का पालन करना भूल जाते हो तो तुम क्या करोगे? यदि इस्राएल के सभी लोग गलती करते हैं, तो सभी लोगों को मिलकर एक बछड़ा यहोवा को भेंट चढ़ाना चाहिए। यह होमबलि होगी और इसकी यह सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी। बैल के साथ अन्नबलि और पेय भेंट भी याद रखो और तुम्हें एक बकरा भी पापबलि के रूप में देना चाहिए।

[25]"याजक लोगों को पापों से शुद्ध करने के लिये ऐसा करेगा। वह इस्राएल के सभी लोगों के लिए ऐसा करेगा। लोगों ने नहीं जाना था कि वे पाप कर रहे हैं। किन्तु जब उन्होंने यह जाना तब वे यहोवा के पास भेंट लाए। वे एक भेंट अपने पाप के लिए देने आए और एक होमबलि के लिये जिसे आग में जलाया जाना था। इस प्रकार लोग क्षमा किये जाएंगे। [26]इस्राएल के सभी लोग और उनके बीच रहने वाले सभी अन्य लोग क्षमा कर दिये जाएंगे। वे इसलिए क्षमा किये जाएंगे क्योंकि वे नहीं जानते थे कि वे बुरा कर रहे हैं।

[27] "किन्तु यदि एक व्यक्ति आदेश का पालन करना भूल जाता है तो उसे एक वर्ष की बकरी पापबलि के रूप में लानी चाहिए। [28]याजक इसे उस व्यक्ति के पापों के लिए यहोवा को अर्पित करेगा और उस व्यक्ति को क्षमा कर दिया जाएगा क्योंकि याजक ने उसके लिए भुगतान कर दिया है। [29]यही हर उस व्यक्ति के लिए नियम है जो पाप करता है, किन्तु जानता नहीं कि बुरा किया है। यही नियम इस्राएल के परिवार में उत्पन्न लोगों के लिए है या अन्य लोगों के लिए भी जो तुम्हारे बीच में रहते हैं।

[30]"किन्तु कोई व्यक्ति जो पाप करता है और जानता है कि वह बुरा कर रहा है, वह यहोवा का अपमान करता है। उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग भेज देना चाहिए। यह इस्राएल के परिवार में उत्पन्न व्यक्ति तथा किसी भी अन्य व्यक्ति के लिए, जो तुम्हारे बीच रहता है, समान है। [31]वह व्यक्ति यहोवा के आदेश के विरुद्ध गया है। उसने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया है। उस व्यक्ति को तुम्हारे समूह से अलग कर दिया जाना चाहिए। वह व्यक्ति अपराधी ही रहेगा और दण्ड का भागी होगा।"

एक व्यक्ति विश्राम के दिन काम करता है

[32]इस समय, इस्राएल के लोग अभी तक मरुभूमि में ही थे। ऐसा हुआ कि एक व्यक्ति को जलाने के लिए कुछ लकड़ी मिली। इसलिए वह व्यक्ति लकड़ियाँ इकट्ठी करता रहा। किन्तु वह सब्त (विश्राम) का दिन था। कुछ अन्य लोगों ने उसे यह करते देखा। [33]जिन लोगों ने उसे लकड़ी इकट्ठी करते देखा, वे उसे मूसा और हारून के पास लाए और सभी लोग चारों ओर इकट्ठे हो गए। [34]उन्होंने उस व्यक्ति को वहाँ रखा क्योंकि वे नहीं जानते थे कि उसे कैसे दण्ड दें।

[35]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "इस व्यक्ति को मरना चाहिए। सभी लोग डेरे के बाहर इसे पत्थर से मारेंगे।" [36]इसलिए लोग उसे डेरे से बाहर ले गए और उसे पत्थरों से मार डाला। उन्होंने यह वैसे ही किया जैसा मूसा को यहोवा ने आदेश दिया था।

परमेश्वर नियमों को याद रखने में लोगों की सहायता करता है

[37]यहोवा ने मूसा से कहा, [38]"इस्राएल के लोगों से बातें करो और उनसे यह कहो: मैं तुम लोगों को कुछ अपने आदेशों को याद रखने के लिए दूँगा। धागे के कई टुकड़ों को एक साथ बांधकर उन्हें अपने वस्त्रों के कोने पर बांधो। एक नीले रंग का धागा हर एक ऐसी गुच्छियों में डालो। तुम इन्हें अब से हमेशा के लिये पहनोगे। [39]तुम लोग इन गुच्छियों को देखते रहोगे और यहोवा ने जो आदेश तुम्हें दिये हैं, उन्हें याद रखोगे। तब तुम आदेशों का पालन करोगे। तुम लोग आदेशों को नहीं भूलोगे और आँखों तथा शरीर की आवश्यकताओं से प्रेरित हो कर कोई पाप नहीं करोगे। [40]तुम हमारे सभी आदेशों के पालन की बात याद रखोगे। तब तुम यहोवा के विशेष लोग बनोगे। [41]मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। वह मैं हूँ जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। मैंने यह किया अत: मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

कोरह, दातान और अबीराम मूसा के विरुद्ध हो जाते हैं

16 कोरह, दातान, अबीराम और ओन मूसा के विरुद्ध हो गए। (कोरह यिसहार का पुत्र था। यिसहार कहात का पुत्र था, और कहात लेवी का पुत्र था। एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम भाई थे और ओन पेलेत का पुत्र था। दातान, अबीराम और ओन रूबेन के वंशज थे।) [2]इन चार व्यक्तियों ने इस्राएल के दो सौ पचास व्यक्तियों को एक साथ इकट्ठा किया और ये मूसा के विरुद्ध आए। ये दो सौ पचास इस्राएली व्यक्ति लोगों में आदरणीय नेता थे। वे समिति के सदस्य चुने गए थे। [3]वे एक समूह के रूप में मूसा और हारून के विरुद्ध बात करने आए। इन व्यक्तियों ने मूसा और हारून से कहा, "हम उससे सहमत नहीं जो तुमने किया है। इस्राएली समूह के सभी लोग पवित्र हैं। यहोवा उनके साथ है। तुम अपने को सभी लोगों से ऊँचे स्थान पर क्यों रख रहे हो?"

[4]जब मूसा ने यह बात सुना तो वह भूमि पर गिर गया। [5]तब मूसा ने कोरह और उसके अनुयायियों से कहा, "कल सवेरे यहोवा दिखाएगा कि कौन व्यक्ति सचमुच उसका है। यहोवा दिखाएगा कि कौन व्यक्ति सचमुच पवित्र है और यहोवा उसे अपने समीप ले जाएगा। यहोवा उस व्यक्ति को चुनेगा और यहोवा उस व्यक्ति को अपने निकट लेगा। [6]इसलिए कोरह, तुम्हें और तुम्हारे सभी अनुयायियों को यह करना चाहिए: [7]किसी विशेष अग्निपात्र में आग और सुगन्धित धूप रखो। तब उन पात्रों को यहोवा के सामने लाओ। यहोवा एक पुरुष को चुनेगा जो सचमुच पवित्र होगा। किन्तु मुझे डर है कि तुमने और तुम्हारे लेवीवंशी भाईयों ने सीमा का अतिक्रमण किया है।"

[8]मूसा ने कोरह से यह भी कहा, "लेवीवंशियों! मेरी बात सुनो। [9]तुम लोगों को प्रसन्न होना चाहिए कि इस्राएल के परमेश्वर ने तुम लोगों को अलग और विशेष बनाया है। तुम लोग बाकी इस्राएली लोगों से भिन्न हो। यहोवा ने तुम्हें अपने समीप लिया जिससे तुम यहोवा की उपासना में इस्राएल के लोगों की सहायता के लिए यहोवा के पवित्र तम्बू में विशेष कार्य कर सको। क्या यह पर्याप्त नहीं है? [10]यहोवा ने तुम्हें और अन्य सभी लेवीवंश के लोगों को अपने समीप लिया है। किन्तु अब तुम याजक भी बनना चाहते हो। [11]तुम और तुम्हारे अनुयायी परस्पर एकत्र होकर यहोवा के विरोध में आए हो। क्या हारून ने कुछ बुरा किया है? नहीं। तो फिर उसके विरुद्ध शिकायत करने क्यों आए हो?"

[12]तब मूसा ने एलीआब के पुत्रों दातान और अबीराम को बुलाया। किन्तु दोनों आदमियों ने कहा, "हम लोग नहीं आएंगे! [13]तुम हमें उस देश से बाहर निकाल लाए हो जो सम्पन्न था और जहाँ दूध और मधु की नदियाँ बहती थीं। तुम हम लोगों को यहाँ मरुभूमि में मारने के लिए लाए हो और अब तुम दिखाना चाहते हो कि तुम हम लोगों पर अधिक अधिकार भी रखते हो। [14]हम लोग तुम्हारा अनुसरण क्यों करें? तुम हम लोगों को उस नये देश में नहीं लाए हो जो सम्पन्न है और जिसमें दूध और मधु की नदियाँ बहती हैं। तुमने हम लोगों को वह देश नहीं दिया है जिसे देने का वचन यहोवा ने दिया था। तुमने हम लोगों को खेत या अंगूर के बाग नहीं दिये हैं। क्या तुम इन लोगों को अपना गुलाम बनाओगे? नहीं! हम लोग नहीं आएंगे।"

[15]इसलिए मूसा बहुत क्रोधित हो गया। उसने यहोवा से कहा, "इनकी भेंटे स्वीकार न कर! मैंने इनसे कुछ नहीं लिया है–एक गधा तक नहीं और मैंने इनमें से किसी का बुरा नहीं किया है।"

[16]तब मूसा ने कोरह से कहा, "तुम्हें और तुम्हारे अनुयायियों को कल यहोवा के सामने खड़ा होना चाहिए।

हारून तुम्हारे साथ यहोवा के सामने खड़ा होगा। [17]तुम में से हर एक को एक अग्निपात्र लेना चाहिए और उसमें धूप रखनी चाहिए। ये दो सौ पचास अग्निपात्र प्रमुखों के लिये होंगे। हर एक अग्निपात्र को यहोवा के सामने ले जाओ। तुम्हें और हारून को अपने अग्निपात्रों को यहोवा के सामने ले जाना चाहिए।" [18]इसलिए हर एक व्यक्ति ने एक अग्निपात्र लिया और उसमें जलती हुई धूप रखी। तब वे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़े हुए। मूसा और हारून भी वहाँ खड़े हुए। [19]कोरह ने अपने सभी अनुयायियों को एक साथ इकट्ठा किया। ये वे व्यक्ति हैं जो मूसा और हारून के विरुद्ध हो गए थे। कोरह ने उन सभी को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठा किया। तब यहोवा का तेज वहाँ हर एक व्यक्ति पर प्रकट हुआ।

[20]यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [21]"इन पुरुषों से दूर हटो! मैं अब उन्हें नष्ट करना चाहता हूँ!"

[22]किन्तु मूसा और हारून भूमि पर गिर पड़े और चिल्लाए, "हे परमेश्वर, तू जानता है कि लोग क्या सोच रहे हैं। कृपा करके इस पूरे समूह पर क्रोधित न हो। एक ही व्यक्ति ने सचमुच पाप किया है।"

[23]तब यहोवा ने मूसा से कहा, [24]"लोगों से कहो कि वे कोरह, दातान और अबीराम के डेरों से दूर हट जाए।"

[25]मूसा खड़ा हुआ और दातान और अबीराम के पास गया। इस्राएल के सभी अग्रज (नेता) उसके पीछे चले। [26]मूसा ने लोगों को चेतावनी दी, "इन बुरे आदमियों के डेरों से दूर हट जाओ। इनकी किसी चीज़ को न छुओ! यदि तुम लोग छूओगे तो इनके पापों के कारण नष्ट हो जाओगे।"

[27]इसलिए लोग कोरह, दातान और अबीराम के तम्बुओं से दूर हट गए। दातान और अबीराम अपने डेरे के बाहर अपनी पत्नी, बच्चे और छोटे शिशुओं के साथ खड़े थे।

[28]तब मूसा ने कहा, "मैं प्रमाण प्रस्तुत करूँगा कि यहोवा ने मुझे उन चीज़ों को करने के लिए भेजा है जो मैंने तुमको कहा है। मैं दिखाऊँगा कि वे सभी मेरे विचार नहीं थे। [29]ये पुरुष यहाँ मरेंगे। किन्तु यदि ये सामान्य ढंग से मरते हैं अर्थात् जिस प्रकार आदमी सदा मरते हैं तो यह प्रकट करेगा कि यहोवा ने वस्तुत: मुझे नहीं भेजा है। [30]किन्तु यदि यहोवा इन्हें दूसरे ढंग अर्थात् कुछ नये ढंग से मरने देता है तो तुम लोग जानोगे कि इन व्यक्तियों ने सचमुच यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। पृथ्वी फटेगी और इन व्यक्तियों को निगल लेगी। वे अपनी कब्रों में जीवित ही जाएंगे और इनकी हर एक चीज़ इनके साथ नीचे चली जाएगी।"

[31]जब मूसा ने इन बातों का कहना समाप्त किया, व्यक्तियों के पैरों के नीचे पृथ्वी फटी। [32]यह ऐसा था मानों पृथ्वी ने अपना मुँह खोला और इन्हें खा गई और उनके सारे परिवार और कोरह के सभी व्यक्ति तथा उनकी सभी चीज़ें पृथ्वी में चली गई। [33]वे जीवित ही कब्र में चले गए। उनकी हर एक चीज़ उनके साथ गई। तब पृथ्वी उनके ऊपर से बन्द हो गई। वे नष्ट हो गए और वे उस डेरे से लुप्त हो गए।

[34]इस्राएल के लोगों ने नष्ट किये जाते हुए लोगों का रोना चिल्लाना सुना। इसलिए वे चारों ओर दौड़ पड़े और कहने लगे, "पृथ्वी हम लोगों को भी निगल जाएगी।"

[35]तब यहोवा से आग आई और उसने दो सौ पचास पुरुषों को, जो सुगन्धि भेंट कर रहे थे, नष्ट कर दिया।

[36]यहोवा ने मूसा से कहा, [37-38]"हारून के पुत्र याजक एलीआज़ार से कहो कि वह आग में से सुगन्धि के पात्रों को एकत्र करे। डेरे से दूर के क्षेत्र में उन कोयलों को फैलाओ। सुगन्धि के बर्तन अब भी पवित्र हैं। ये वे पात्र हैं जो उन व्यक्तियों के हैं जिन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया था। उनके पाप का मूल्य उनका जीवन हुआ। बर्तनों को पीट कर पत्तरों में बदलो। इन धातुओं के पत्तरों का उपयोग वेदी को ढकने के लिए करो। वे पवित्र थे क्योंकि उन्हें यहोवा के सामने प्रस्तुत किया गया था। उन चपटे बर्तनों को इस्राएल के सभी लोगों के लिए चेतावनी बनने दो।"

[39]तब याजक एलीआज़ार ने काँसे के उन सभी बर्तनों को इकट्ठा किया जिन्हें वे लोग लाए थे। वे सभी व्यक्ति जल गए थे, किन्तु बर्तन तब भी वहाँ थे। तब एलीआज़ार ने कुछ व्यक्तियों को बर्तनों को, चपटी धातु के रूप में पीटने को कहा। तब उसने धातु की चपटी चादरों को वेदी पर रखा। [40]उसने इसे वैसे ही किया जैसा यहोवा ने मूसा के द्वारा आदेश दिया था। यह संकेत था कि जिससे इस्राएल के लोग याद रख सकें कि केवल हारून के परिवार के व्यक्ति को यहोवा के सामने सुगन्धि भेंट करने का अधिकार है। यदि कोई अन्य व्यक्ति यहोवा के सामने सुगन्धि जलाता है तो वह व्यक्ति कोरह और उसके अनुयायियों की तरह हो जाएगा।

हारून लोगों की रक्षा करता है

[41]अगले दिन इस्राएल के लोगों ने मूसा और हारून के विरुद्ध शिकायत की। उन्होंने कहा, "तुमने यहोवा के लोगों को मारा है।"

[42]मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़े थे। लोग उस स्थान पर मूसा और हारून की शिकायत करने के लिए इकट्ठा हुए। किन्तु जब उन्होंने मिलापवाले तम्बू को देखा तो बादल ने उसे ढक लिया और वहाँ यहोवा का तेज प्रकट हुआ। [43]तब मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू के सामने गए।

[44]तब यहोवा ने मूसा से कहा, [45]"उन लोगों से दूर हट जाओ जिससे मैं उन्हें अब नष्ट कर दूँ।" मूसा और हारून धरती पर गिर पड़े।

[46]तब मूसा ने हारून से कहा, "वेदी की आग और अपने काँसे के बर्तन को लो। तब इसमें सुगन्धि डालो। लोगों के समूह के पास शीघ्र जाओ और उनके पाप के लिए भुगतान करो। यहोवा उन पर क्रोधित है। परेशानी आरम्भ हो चुकी है।"

[47]इसलिए, हारून ने मूसा के कथनानुसार काम किया। सुगन्धि और आग को लेने के बाद वह लोगों के बीच दौड़कर पहुँचा। किन्तु लोगों में बीमारी पहले ही आरम्भ हो चुकी थी। हारून ने लोगों के भुगतान के लिए सुगन्धि की भेंट दी। [48]हारून मरे हुए और जीवित लोगों में खड़ा हुआ और तब बीमारी रूक गई।

[49]किन्तु इसके पहले कि हारून उनके पापों के लिए भुगतान करे, चौदह हजार सात सौ लोग उस बीमारी से मर गए। तब यहोवा ने इसे रोका। वहाँ ऐसे लोग भी थे जो कोरह के कारण मरे। [50] तब हारून मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मूसा के पास लौटा। लोगों की भयंकर बीमारी रोक दी गई।

परमेश्वर प्रमाणित करता है कि हारून महायाजक है

17 यहोवा ने मूसा से कहा, [2] "इस्राएल के लोगों से कहो। अपने लोगों से बारह लकड़ी की छड़ियाँ लें। बारह परिवार समूहों में हर एक के नेता से एक छड़ी लो। हर एक व्यक्ति की छड़ी पर उसका नाम लिख दो। [3]लेवी की छड़ी पर हारून का नाम लिखो। बारह परिवार समूहों के हर एक मुखिया की छड़ी होनी चाहिए। [4]इन छड़ियों को साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने मिलापवाले तम्बू में रखो। यही वह स्थान है जहाँ मैं तुमसे मिलता हूँ। [5]मैं एक व्यक्ति को चुनूँगा। तुम जान जाओगे कि किस व्यक्ति को मैंने चुना है। क्योंकि उस छड़ी में नयी पत्तियाँ उगनी आरम्भ होंगी। इस प्रकार, मैं लोगों को अपने और तुम्हारे विरुद्ध सदा शिकायत करने से रोक दूँगा।"

[6]इसलिए मूसा ने इस्राएली लोगों से बातें कीं। प्रत्येक नेता ने उसे एक छड़ी दी। सारी छड़ियों की संख्या बारह थी। हर एक परिवार समूह के नेता की एक छड़ी उसमें थी। हारून की छड़ी उनमें थी। [7]मूसा ने साक्षी के मिलापवाले तम्बू में यहोवा के सामने छड़ियों को रखा।

[8]अगले दिन मूसा ने तम्बू में प्रवेश किया। उसने देखा कि हारून की वह छड़ी, जो लेवीवंश की थी, एक मात्र ऐसी थी जिससे नयी पत्तियाँ उगनी आरम्भ हुई थीं। उस छड़ी में कलियाँ, फूल और बादाम भी लग गए थे। [9]इसलिए मूसा यहोवा के स्थान से सभी छड़ियों को लाया। मूसा ने इस्राएल के लोगों को छड़ियाँ दिखाई। उन सभी ने छड़ियों को देखा और हर एक पुरुष ने अपनी छड़ी वापस ली।

[10]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून की छड़ी को तम्बू में रख दो। यह उन लोगों के लिए चेतावनी होगी जो सदा मेरे विरुद्ध जाते हैं। यह उनकी मेरे विरुद्ध शिकायतों को रोकेगा। इस प्रकार वे नहीं मरेंगे।" [11]मूसा ने उन आदेशों का पालन किया जो यहोवा ने दिए थे।

[12]इस्राएल के लोगों ने मूसा से कहा, "हम जानते हैं कि हम मरेंगे! हमें नष्ट होना ही है! हम सभी को नष्ट होना ही हैं! [13]कोई व्यक्ति यहोवा के पवित्र तम्बू के निकट आने पर भी मरेगा। क्या हम सभी मर जाएंगे?"

याजकों और लेवीवंशियों के कार्य

18 यहोवा ने हारून से कहा, "तुम, तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे पिता का परिवार अब किसी भी बुराई के लिए उत्तरदायी है जो पवित्र स्थान के विरुद्ध की जाएंगी। तुम और तुम्हारे पुत्र उन बुराइयों के लिए उत्तरदायी होंगे जो याजकों के विरुद्ध होंगी। [2]अन्य लेवीवंशी लोगों को अपना साथ देने के लिए अपने परिवार समूह से लाओ। वे तुम्हारी और तुम्हारे पुत्रों की सहायता साक्षी के पवित्र तम्बू के कार्यों को करने में करेंगे। [3]लेवी परिवार के वे लोग तुम्हारे अधीन हैं। वे उन सभी कार्यों को करेंगे जिन्हें तम्बू में किया जाना है। किन्तु उन्हें वेदी या पवित्र

स्थान की चीज़ों के पास नहीं जाना चाहिए। यदि वे ऐसा करेंगे तो वे मर जायेंगे और तुम भी मर जाओगे। [4]वे तुम्हारे साथ होंगे और तुम्हारे साथ काम करेंगे। वे मिलापवाले तम्बू की देखभाल करने के उत्तरदायी होंगे। सभी कार्य, जिन्हें तम्बू में किया जाना चाहिए, वे करेंगे। अन्य कोई भी उस स्थान के निकट नहीं आएगा जहाँ तुम हो।

[5]"पवित्र स्थान और वेदी की देखभाल करने के उत्तरदायी तुम हो। मैं इस्राएल के लोगों पर फिर क्रोधित होना नहीं चाहता। [6]मैंने तुम्हारे लोगों अर्थात् लेवीवंश के लोगों को स्वयं इस्राएल के सभी लोगों में से चुना है। वे तुमको भेंट की तरह हैं। उनका एकमात्र उपयोग परमेश्वर की सेवा और मिलापवाले तम्बू के काम को करने में है। [7]किन्तु केवल तुम और तुम्हारे पुत्र याजक के रूप में सेवा कर सकते हो। एक मात्र तुम्हीं वेदी के पास जा सकते हो। केवल तुम्हीं पर्दे के भीतर अति पवित्र स्थान में जा सकते हो। मैं याजक के रूप में तुम्हारी सेवा को तुम्हें एक भेंट के रूप में दे रहा हूँ। कोई भी अन्य, जो पवित्र स्थान के पास आएगा, मार डाला जाएगा।"

[8]तब यहोवा ने हारून से कहा, "मैंने अपने लिए चढ़ाई गई भेटों का उत्तरदायित्व तुमको दिया है। इस्राएल के लोग जो सारी भेंट मुझको देंगे, वह मैं तुमको देता हूँ। तुम और तुम्हारे पुत्र इन पवित्र भेंटों को आपस में बाँट सकते हैं। यह सदा तुम्हारी होंगी। [9]उन सभी पवित्र भेंटों में तुम्हारा अपना भाग होगा जो जलाई नहीं जाएंगी। लोग मेरे पास भेंटे सर्वाधिक पवित्र भेंट के रूप में लाते हैं। ये अन्नबलि, या पापबलि या दोषबलि है। किन्तु ये सभी चीजें तुम्हारी और तुम्हारे पुत्रों की होंगी। [10]इन सबको सर्वाधिक पवित्र चीज़ों के रूप में खाओ। तुम्हारे परिवार का हर एक पुरुष इसे खाएगा। तुम्हें इसको पवित्र मानना चाहिए।

[11]"और वे सभी भी जो इस्राएल के लोगों द्वारा उत्तोलन–भेंट के रूप में दी जाएंगी, तुम्हारी ही होंगी। मैं इसे तुमको, तुम्हारे पुत्रों और तुम्हारी पुत्रियों को देता हूँ। यह तुम्हारा भाग है। तुम्हारे परिवार का हर एक व्यक्ति जो पवित्र होगा, इसे खा सकेगा।

[12]"और मैं सारा अच्छा जैतून का तेल, सारी सर्वोत्तम नयी दाखमधु और अन्न तुम्हें देता हूँ। ये वे चीज़ें हैं जिन्हें इस्राएल के लोग मुझे अर्थात् अपने यहोवा को देते हैं। ये वे पहली चीज़ें हैं जिन्हें वे अपनी फसल पकने पर इकट्ठी करते हैं। [13]जब लोग अपनी फसलें इकट्ठी करते हैं तब लोग पहली चीज़ यहोवा के पास लाते हैं। अत: ये चीज़ें मैं तुमको दूँगा और हर एक व्यक्ति जो तुम्हारे परिवार में पवित्र है, इसे खा सकेगा।

[14]"और इस्राएल में हर एक चीज़ जो यहोवा को दी जाती है, तुम्हारी है।

[15]"किसी भी परिवार में पहलौठा बालक या जानवर यहोवा की भेंट होगा और वह तुम्हारा होगा। किन्तु तुम्हें प्रत्येक पहलौठे बच्चे और हर एक पहलौठे अशुद्ध पशु को फिर से खरीदने के लिए स्वीकार करना चाहिए। तब पहलौठा बच्चा फिर उस परिवार का हो जाएगा। [16]जब वे एक महीने के हो जाए तब तुम्हें उनके लिए भुगतान ले लेना चाहिए। उसका मूल्य दो औंस चाँदी होगी।

[17]"किन्तु तुम्हें पहलौठे गाय, भेड़ या बकरे के लिए भुगतान नहीं लेना चाहिए। वे पशु पवित्र हैं–वे शुद्ध हैं। उनका खून वेदी पर छिड़को और उनकी चर्बी जलाओ। यह भेंट अग्नि द्वारा समर्पित है। इस भेंट की सुगन्ध मेरे लिए अर्थात् यहोवा के लिए मधुर सुगन्ध होगी। [18]किन्तु इन पशुओं का माँस तुम्हारा होगा। और उत्तोलन भेंट की छाती भी तुम्हारी होगी। अन्य भेंटों की दायीं जांघ तुम्हारी होगी। [19]कोई भी चीज़, जिसे लोग पवित्र भेंट के रूप में मुझे चढ़ाते हैं, मैं यहोवा उसे तुमको देता हूँ। यह तुम्हारा हिस्सा है। मैं इसे तुमको और तुम्हारे पुत्रों और तुम्हारी पुत्रियों को देता हूँ। यह यहोवा के साथ की गयी वाचा है जो सदा बनी रहेगी। मैं यह वचन तुमको और तुम्हारे वंशजों को देता हूँ।"

[20]यहोवा ने हारून से यह भी कहा, "तुम कोई भूमि नहीं प्राप्त करोगे और ऐसी कोई चीज़ नहीं रखोगे जैसी अन्य लोग रखते हैं। मैं, यहोवा, तुम्हारा रहूँगा। इस्राएल के लोग वह देश प्राप्त करेंगे जिसके लिए मैंने वचन दिया है। किन्तु तुम्हारे लिए अपना उपहार मैं स्वयं होऊँगा।

[21]"इस्राएल के लोग उनके पास जो कुछ होगा उसका दसवाँ भाग देंगे। इस प्रकार मैं लेवीवंश के लोगों को दसवाँ भाग देता हूँ। यह उनके उस कार्य के लिए भुगतान है जो वे मिलापवाले तम्बू में सेवा करते हुए करते हैं। [22]किन्तु इस्राएल के अन्य लोगों को मिलापवाले तम्बू के निकट कभी नहीं जाना चाहिए। यदि वे ऐसा करते हैं तो उन्हें अपने पाप के लिए भुगतान करना पड़ेगा और वे

मर जाएंगे! [23]जो लेवीवंशी मिलापवाले तम्बू में काम कर रहे हैं वे इसके विरुद्ध किये गए पापों के लिए उत्तरदायी हैं। यह नियम भविष्य के दिनों के लिए भी रहेगा। लेवीवंशी लोग उस भूमि को नहीं लेंगे जिसे मैंने इस्राएल के अन्य लोगों को दिया है। [24]किन्तु इस्राएल के लोगों के पास जो कुछ होगा उसका दसवाँ हिस्सा मुझको देंगे। इस तरह मैं लेवीवंशी लोगों को दसवाँ हिस्सा दूँगा। यही कारण है कि मैंने लेवीवंशियों के लिये कहा है: वे लोग उस भूमि को नहीं पाएंगे जिसे मैंने इस्राएल के लोगों को देने का वचन दिया है।"

[25]यहोवा ने मूसा से कहा, [26]"लेवीवंशी लोगों से बातें करो और उनसे कहो: इस्राएल के लोग अपनी हर एक चीज का दसवाँ भाग यहोवा को देंगे। वह दसवाँ भाग लेवीवंशियों का होगा। किन्तु तुम्हें उसका दसवाँ भाग यहोवा को उनकी भेंट के रूप में देना चाहिए। [27]फसल कटने के बाद तुम लोग खलिहानों से अन्न और दाखमधुशाला से रस प्राप्त करोगे। तब वह भी यहोवा को तुम्हारी भेंट होगी। [28]इस प्रकार, तुम यहोवा को वैसे ही भेंट दोगे जिस प्रकार इस्राएल के अन्य लोग देते हैं। तुम इस्राएल के लोगों का दिया हुआ दसवाँ भाग प्राप्त करोगे और तब तुम उसका दसवाँ भाग याजक हारून को दोगे। [29]जब इस्राएल के लोग अपनी हर एक चीज़ का दसवाँ भाग दें तो तुम्हें उनमें से सर्वोत्तम और पवित्रतम भाग चुनना चाहिए। वही दसवाँ भाग है जिसे तुम्हें यहोवा को देना चाहिए।

[30] "मूसा, लेवियों से यह कहो: इस्राएल के लोग तुम लोगों को अपनी फसल या अपनी दाखमधु का दसवाँ भाग देंगे। तब तुम लोग उसका सर्वोत्तम भाग यहोवा को दोगे। [31]जो बचेगा उसे तुम और तुम्हारे परिवार के व्यक्ति खा सकते हैं। यह तुम लोगों के उस काम के लिए भुगतान है जो तुम लोग मिलापवाले तम्बू में करते हो। [32]और यदि तुम सदा इसका सर्वोत्तम भाग यहोवा को देते रहोगे तो तुम कभी दोषी नहीं होगे। तुम इस्राएल के लोगों की पवित्र भेंट के प्रति पाप नहीं करोगे और तुम मरोगे नहीं।"

लाल गाय की राख

19 यहोवा ने मूसा और हारून से बात की। उसने कहा, [2]"ये नियम और उपदेश हैं जिन्हें यहोवा इस्राएल के लोगों को देता है। उन्हें दोष से रहित एक लाल गाय लेनी चाहिए और उसे तुम्हारे पास लाना चाहिए। उस गाय को कोई खरोंच भी न लगी हो और उस गाय के कंधे पर कभी जुआ* नहीं रखा गया हो। [3]इस गाय को याजक एलीआज़ार को दो। एलीआज़ार गाय को डेरे से बाहर ले जाएगा और वह वहाँ गाय को मारेगा। [4]तब याजक एलीआज़ार को इसका कुछ खून अपनी उंगलियों पर लगाना चाहिए और उसे कुछ खून पवित्र तम्बू की दिशा में छिड़कना चाहिए। उसे यह सात बार करना चाहिए। [5]तब पूरी गाय को उसके सामने जलाना चाहिए। चमड़ा, माँस, खून और आतें सभी जला डालनी चाहिए। [6]तब याजक को एक देवदारु की लकड़ी, एक जूफा की शाखा और लाल रंग का कपड़ा लेना चाहिए। याजक को इन चीज़ों को उस आग में डालना चाहिए जिसमें गाय जल रही हो। [7]तब याजक को, अपने को तथा अपने कपड़ों को पानी से धोना चाहिए। तब उसे डेरे में लौटना चाहिए। याजक सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [8]जो व्यक्ति गाय को जलाए उसे अपने को तथा अपने वस्त्रों को पानी से धोना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

[9]"तब एक पुरुष जो शुद्ध होगा, गाय की राख को इकट्ठा करेगा। वह इस राख को डेरे के बाहर एक शुद्ध स्थान पर रखेगा। यह राख उस समय उपयोग में आएगी जब लोग शुद्ध होने के लिए विशेष संस्कार करेंगे। यह राख व्यक्ति के पाप को दूर करने के लिए उपयोग में आएगी।

[10]"वह व्यक्ति, जिसने गाय की राख को इकट्ठा किया, अपने कपड़े धोएगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

"यह नियम सदा चलता रहेगा। यह नियम इस्राएल के नागरिकों के लिए है और यह उन विदेशियों के लिए भी है जो तुम्हारे बीच रहते हैं। [11]यदि कोई व्यक्ति एक मरे व्यक्ति को छूता है, तो वह सात दिन के लिए अशुद्ध हो जाएगा। [12]उसे अपने को तीसरे दिन तथा फिर सातवें दिन विशेष पानी से धोना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करता, तो वह अशुद्ध रह जाएगा। [13]यदि कोई व्यक्ति किसी शव को छूता है, तो वह व्यक्ति अशुद्ध है। यदि वह व्यक्ति अशुद्ध रहता है और तब पवित्र तम्बू में जाता है तो पवित्र तम्बू अशुद्ध हो जाती है। इसलिए उस व्यक्ति को इस्राएल के लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए। यदि अशुद्ध

जुआ एक डंडा जो किसी व्यक्ति या जानवर को भारी बोझ ढोने या गाड़ी खींचने में सहायक होता है।

व्यक्ति पर विशेष जल नहीं डाला जाता तो वह व्यक्ति अशुद्ध रहेगा।

[14]"यह नियम उन लोगों से सम्बन्धित है जो अपने खेमों में मरते हैं। यदि कोई व्यक्ति खेमें में मरता है तो उस खेमे का हर एक व्यक्ति अशुद्ध हो जाएगा। वे सात दिन तक अशुद्ध रहेंगे [15]और हर एक ढक्कन रहित बर्तन और घड़ा अशुद्ध हो जाता है। [16]यदि कोई शव को छूता है, तो वह व्यक्ति सात दिन तक अशुद्ध रहेगा। यह तब भी सत्य होगा जब व्यक्ति बाहर देश में मरा हो या युद्ध में मारा गया हो। यदि कोई व्यक्ति मरे व्यक्ति की हड्डी या किसी कब्र को छूता है तो वह व्यक्ति अशुद्ध हो जाता है।

[17]"इसलिए तुम्हें दग्ध गाय की राख का उपयोग उस व्यक्ति को पुन: शुद्ध करने के लिए करना चाहिए। स्वच्छ पानी* घड़े में रखी हुई राख पर डालो। [18]शुद्ध व्यक्ति को एक जूफा की शाखा लेनी चाहिए और इसे पानी में डुबाना चाहिए। तब उसे तम्बू, बर्तनों तथा डेरे में जो व्यक्ति हैं उन पर यह जल छिड़कना चाहिए। तुम्हें यह उन सभी व्यक्तियों के साथ करना चाहिए जो शव को छुएंगे। तुम्हें यह उस के साथ भी करना चाहिए जो युद्ध में मरे व्यक्ति के शव को छूता है या उस किसी के साथ भी जो किसी मरे व्यक्ति की हड्डियों या कब्र को छूता है।

[19]"तब कोई शुद्ध व्यक्ति इस जल को अशुद्ध व्यक्ति पर तीसरे दिन और फिर सातवें दिन छिड़के। सातवें दिन वह व्यक्ति शुद्ध हो जाता है। उसे अपने कपड़ों को पानी में धोना चाहिए। वह सन्ध्या के समय पवित्र हो जाता है।

[20]"यदि कोई व्यक्ति अशुद्ध हो जाता है और शुद्ध नहीं होता तो उसे इस्राएल के लोगों से अलग कर देना चाहिए। उस व्यक्ति पर विशेष पानी नहीं छिड़का गया। वह शुद्ध नहीं हुआ। तो वह पवित्र तम्बू को अशुद्ध कर सकता है। [21]यह नियम तुम्हारे लिए सदा के लिए होगा। जो व्यक्ति इस विशेष जल को छिड़कता है, उसे भी अपने कपड़े अवश्य धो लेने चाहिए। कोई व्यक्ति जो इस विशेष जल को छुएगा, वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। [22]यदि कोई अशुद्ध व्यक्ति किसी अन्य को छूए, तो वह व्यक्ति भी अशुद्ध हो जाएगा। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।"

स्वच्छ पानी शाब्दिक, "जीवन–जल" इसका अर्थ संभवत: ताजा बहता पानी है।

मरियम मरी

20 इस्राएल के लोग सीन मरुभूमि में पहले महीने में पहुँचे। लोग कादेश में ठहरे। मरियम की मृत्यु हो गई और वह वहाँ दफनाई गई।

मूसा की गलती

[2]उस स्थान पर लोगों के लिये पर्याप्त पानी नहीं था। इसलिए लोग मूसा और हारून के विरुद्ध शिकायत करने के लिए इकट्ठे हुए। [3]लोगों ने मूसा से बहस की। उन्होंने कहा, "क्या ही अच्छा होता हम अपने भाइयों की तरह यहोवा के सामने मर गए होते। [4]तुम यहोवा के लोगों को इस मरुभूमि में क्यों लाए? क्या तुम चाहते हो कि हम और हमारे जानवर यहाँ मर जाए? तुम हम लोगों को मिस्र से क्यों लाए? [5]तुम हम लोगों को इस बुरे स्थान पर क्यों लाए? यहाँ कोई अन्न नहीं है, कोई अंजीर, अंगूर या अनार नहीं है और यहाँ पीने के लिये पानी नहीं है।" [6]इसलिए मूसा और हारून ने लोगों को छोड़ा और वे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पहुँचे। उन्होंने दण्डवत् (प्रणाम) किया और उन पर यहोवा का तेज प्रकाशित हुआ।

[7]यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, [8]"अपने भाई हारून और लोगों की भीड़ को साथ लो और उस चट्टान तक जाओ। अपनी छड़ी को भी लो। लोगों के सामने चट्टान से बातें करो। तब चट्टान से पानी बहेगा और तुम वह पानी अपने लोगों और जानवरों को दे सकते हो।"

[9]छड़ी यहोवा के सामने पवित्र तम्बू में थी। मूसा ने यहोवा के कहने के अनुसार छड़ी ली। [10]तब उसने तथा हारून ने लोगों को चट्टान के सामने इकट्ठा होने को कहा। तब मूसा ने कहा, "तुम लोग सदा शिकायत करते हो। अब मेरी बात सुनो। हम इस चट्टान से पानी बहायेंगे।" [11]मूसा ने अपनी भुजा उठाई और दो बार चट्टान पर चोट की। चट्टान से पानी बहने लगा और लोगों तथा जानवरों ने पानी पिया।

[12]किन्तु यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "इस्राएल के सभी लोग चारों ओर इकट्ठे थे। किन्तु तुमने मुझको सम्मान नहीं दिया। तुमने लोगों को नहीं दिखाया कि पानी निकालने की शक्ति मुझसे तुममें आई। तुमने लोगों को यह नहीं बताया कि तुमने मुझ पर विश्वास किया। मैं उन

लोगों को वह देश दूँगा मैंने जिसे देने का वचन दिया है। लेकिन तुम उस देश में उनको पहुँचाने वाले नहीं रहोगे।"

[13]इस स्थान को मरीबा* का पानी कहा जाता था। यही वह स्थान था जहाँ इस्राएल के लोगों ने यहोवा के साथ बहस की और यह वह स्थान था जहाँ यहोवा ने यह दिखाया कि वह पवित्र था।

एदोम ने इस्राएल को पार नहीं होने दिया

[14]जब मूसा कादेश में था, उसने कुछ व्यक्तियों को एदोम के राजा के पास एक संदेश के साथ भेजा। सन्देश यह था: "तुम्हारे भाई इस्राएल के लोग तुमसे यह कहते हैं: तुम जानते हो कि हम लोगों ने कितनी कठिनाइयाँ सही हैं। [15]अनेक वर्ष पहले हमारे पूर्वज मिस्र चले गये थे और हम लोग वहाँ अनेक वर्ष रहे। मिस्र के लोग हम लोगों के प्रति क्रूर थे। [16]किन्तु हम लोगों ने यहोवा से सहायता के लिए प्रार्थना की।" यहोवा ने हम लोगों की प्रार्थना सुनी और उन्होंने हम लोगों की सहायता के लिए एक दूत भेजा। यहोवा हम लोगों को मिस्र से बाहर लाया है।

"अब हम लोग यहाँ कादेश में हैं जहाँ से तुम्हारा प्रदेश आरम्भ होता है। [17]कृपया अपने देश से हम लोगों को यात्रा करने दें। हम लोग किसी खेत या अंगूर के बाग से यात्रा नहीं करेंगे। हम लोग तुम्हारे किसी कुएँ से पानी नहीं पीएंगे। हम लोग केवल राजपथ से यात्रा करेंगे। हम राजपथ को छोड़कर दायें या बायें नहीं बढ़ेंगे। हम लोग तब तक राजपथ पर ही ठहरेंगे जब तक तुम्हारे देश को पार नहीं कर जाते।"

[18]किन्तु एदोम के राजा ने उत्तर दिया, "तुम हमारे देश से होकर यात्रा नहीं कर सकते। यदि तुम हमारे देश से होकर यात्रा करने का प्रयत्न करते हो तो हम लोग आएंगे और तुमसे तलवारों से लड़ेंगे।"

[19]इस्राएल के लोगों ने उत्तर दिया, "हम लोग मुख्य सड़क से यात्रा करेंगे। यदि हमारे जानवर तुम्हारा कुछ पानी पीएंगे, तो हम लोग उसके मूल्य का भुगतान करेंगे। हम लोग तुम्हारे देश से केवल चलकर पार जाना चाहते हैं। हम लोग इसे अपने लिए लेना नहीं चाहते।"

[20]किन्तु एदोम ने फिर उत्तर दिया, "हम अपने देश से होकर तुम्हें जाने नहीं देंगे।"

तब एदोम के राजा ने एक विशाल और शक्तिशाली सेना इकट्ठी की और इस्राएल के लोगों से लड़ने के लिए निकल पड़ा। [21]एदोम के राजा ने इस्राएल के लोगों को अपने देश से यात्रा करने से मना कर दिया और इस्राएल के लोग मुड़े और दूसरे रास्ते से चल पड़े।

हारून मर जाता है

[22]इस्राएल के सभी लोगों ने कादेश से होर पर्वत तक यात्रा की। [23]होर पर्वत एदोम की सीमा पर था। यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [24]"हारून को अपने पूर्वजों के साथ जाना होगा। यह उस प्रदेश में नहीं जाएगा जिसे देने के लिए मैंने इस्राएल के लोगों को वचन दिया है। मूसा, मैं तुमसे यह कहता हूँ क्योंकि तुमने और हारून ने मरीबा के पानी के विषय में मेरे दिये आदेश का पूरी तरह पालन नहीं किया। [25]हारून और उसके पुत्र एलीआज़ार को होर पर्वत पर लाओ। [26]हारून के विशेष वस्त्रों को उससे लो और उन वस्त्रों को उसके पुत्र एलीआज़ार को पहनाओ। हारून वहाँ पर्वत पर मरेगा और वह अपने पूर्वजों के साथ हो जाएगा।"

[27]मूसा ने यहोवा के आदेश का पालन किया। मूसा, हारून और एलीआज़ार होर पर्वत पर गए। इस्राएल के सभी लोगों ने उन्हें जाते देखा। [28]मूसा ने हारून के वस्त्र उतार लिए और उन वस्त्रों को हारून के पुत्र एलीआज़ार को पहनाया। तब हारून पर्वत की चोटी पर मर गया। मूसा और एलीआज़ार पर्वत से उतर आए। [29]तब इस्राएल के सभी लोगों ने जाना कि हारून मर गया। इसलिए इस्राएल के हर व्यक्ति ने तीस दिन तक शोक मनाया।

कनानियों से युद्ध

21 अराद का कनानी राजा नेगेव मरुभूमि में रहता था। उस ने सुना कि इस्राएल के लोग अथारीम को जाने वाली सड़क से आ रहे हैं। इसलिए राजा बाहर निकला और उसने इस्राएल के लोगों पर आक्रमण कर दिया। उसने उनमें से कुछ को पकड़ लिया और उन्हें बन्दी बनाया। [2]तब इस्राएल के लोगों ने यहोवा को यह वचन दिया: "हे यहोवा, इन लोगों को पराजित करने में हमारी मदद करो। उन्हें हमारे अधीन कर दो। यदि तू ऐसा करेगा, तो हम लोग उनके नगरों को पूरी तरह नष्ट कर देंगे।" [3]यहोवा ने इस्राएल के लोगों की

मरीबा इस नाम का अर्थ है बहस या विद्रोह।

प्रार्थना सुनी और यहोवा ने इस्राएल के लोगों से कनानी लोगों को हरवा दिया। इस्राएल के लोगों ने कनानी लोगों तथा उनके नगरों को पूरी तरह नष्ट कर दिया। इसलिए उस स्थान का नाम होर्मा* पड़ा।

काँसे* का साँप

[4]इस्राएल के लोगों ने होर पर्वत को छोड़ा और लाल सागर के किनारे-किनारे चले। उन्होंने ऐसा इसलिए किया जिससे वे एदोम कहे जाने वाले स्थान के चारों ओर जा सकें। किन्तु लोगों को धीरज नहीं था। जिस समय वे चल रहे थे उसी समय उन्होंने लम्बी यात्रा के विरुद्ध शिकायत करनी आरम्भ की। [5]लोगों ने परमेश्वर और मूसा के विरुद्ध बातें की। लोगों ने कहा, "तुम हमें मिस्र से बाहर क्यों लाए हो? हम लोग यहाँ मरुभूमि में मर जाएंगे! यहाँ रोटी नहीं मिलती! यहाँ पानी नहीं है और हम लोग इस खराब भोजन से घृणा करते हैं।"

[6]इसलिए यहोवा ने लोगों के बीच जहरीले साँप भेजे। साँपों ने उन लोगों को डसा और बहुत से लोग मर गए। [7]लोग मूसा के पास आए और उससे कहा, "हम जानते हैं कि जब हमने यहोवा और तुम्हारे विरुद्ध शिकायत की तो हमने पाप किया। यहोवा से प्रार्थना करो। उनसे कहो कि इन साँपों को दूर करे।" इसलिए मूसा ने लोगों के लिए प्रार्थना की।

[8]यहोवा ने मूसा से कहा, "एक काँसे का साँप बनाओ और उसे एक ऊँचे डंडे पर रखो। यदि किसी व्यक्ति को साँप काटे, तो उस व्यक्ति को डंडे के ऊपर काँसे के साँप को देखना चाहिए। तब वह व्यक्ति मरेगा नहीं।" [9]इसलिए मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी और एक काँसे का साँप बनाया तथा उसे एक डंडे के ऊपर रखा। तब जब किसी व्यक्ति को साँप काटता था तो वह डंडे के ऊपर के साँप को देखता था और जीवित रहता था।

होर पर्वत से मोआब घाटी को

[10]इस्राएल के लोग यात्रा करते रहे। उन्होंने ओबोत नामक स्थान पर डेरा डाला। [11]तब लोगों ने ओबोत से ईय्ये अबीराम तक की यात्रा की और वहाँ डेरा डाला। यह मोआब के पूर्व में मरुभूमि में था। [12]तब लोगों ने उस स्थान को छोड़ा और जेरेद की यात्रा की। उन्होंने वहाँ डेरा डाला। [13]तब लोगों ने अर्नोन घाटी की यात्रा की। उन्होंने उस क्षेत्र के समीप डेरा डाला। यह एमोरियों के प्रदेश के पास मरुभूमि में था। अर्नोन घाटी मोआब और एमोरी लोगों के बीच की सीमा है। [14]यही कारण है कि यहोवा के युद्धों की पुस्तक में निम्न विवरण प्राप्त है:

"...और सूपा में वाहेब, अर्नोन की घाटी [15]और
आर की बस्ती तक पहुँचाने वाली घाटी के किनारे
की पहाड़ियाँ। ये स्थान मोआब की सीमा पर हैं।"

[16]इस्राएल के लोगों ने उस स्थान को छोड़ा और उन्होंने बैर की यात्रा की। इस स्थान पर एक कुँआ था। यहोवा ने मूसा से कहा, "यहाँ सभी लोगों को इकट्ठा करो और मैं उन्हें पानी दूँगा।" [17]तब इस्राएल के लोगों ने यह गीत गाया:

"कुएँ! पानी से उमड़ बहो!
इसका गीत गाओ!
[18] महापुरुषों ने इस कुएँ को खोदा।
महान नेताओं ने इस कुएँ को खोदा।
अपनी छड़ों और डण्डों से इसे खोदा।
यह मरुभूमि में एक भेंट* है।"

लोग "मत्ताना" नाम के कुएँ पर थे। [19]तब लोगों ने मत्ताना से नहलीएल की यात्रा की। तब उन्होंने नहलीएल से बामोत की यात्रा की। [20]लोगों ने बामोत घाटी की यात्रा की। इस स्थान पर पिसगा पर्वत की चोटी मरुभूमि के ऊपर दिखाई पड़ती है।

सीहोन और ओग

[21]इस्राएल के लोगों ने कुछ व्यक्तियों को एमोरी लोगों के राजा सीहोन के पास भेजा। इन लोगों ने राजा से कहा, [22]"अपने देश से होकर हमें यात्रा करने दो। हम लोग किसी खेत या अंगूर के बाग से होकर नहीं जाएंगे। हम तुम्हारे किसी कुएँ से पानी नहीं पीएंगे। हम लोग केवल राजपथ से यात्रा करेंगे। हम लोग तब तक उस सड़क पर ही ठहरेंगे जब तक हम लोग तुम्हारे देश से होकर यात्रा पूरी नहीं कर लेते।"

होर्मा इस नाम का अर्थ "खण्डहर" या "परमेश्वर को दी जाने वाली सम्पूर्ण भेंट" होता है। देखें लैव्य. 27:28, 29.
काँसा हिब्रू में इसे 'तांबा' भी कहा जाता हैं।

मरुभूमि में एक भेंट हिब्रू में यह उस नाम की तरह है जिसका अर्थ "मत्ताना" होता है।

[23]किन्तु राजा सीहोन इस्राएल के लोगों को अपने देश से होकर यात्रा करने की अनुमति नहीं दी। राजा ने अपनी सेना इकट्ठी की और मरुभूमि की ओर चल पड़ा। वह इस्राएल के लोगों के विरुद्ध आक्रमण कर रहा था। यहस नाम के एक स्थान पर राजा की सेना ने इस्राएल के लोगों के साथ युद्ध किया। [24]किन्तु इस्राएल के लोगों ने राजा को मार डाला। तब उन्होंने अर्नोन घाटी से लेकर यब्बोक क्षेत्र तक के उसके प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस्राएल के लोगों ने अम्मोनी लोगों की सीमा तक के प्रदेश पर अधिकार किया। उन्होंने और अधिक क्षेत्र पर अधिकार नहीं जमाया क्योंकि वह सीमा अम्मोनी लोगों द्वारा दृढ़ता से सुरक्षित थी। [25]किन्तु इस्राएल ने अम्मोनी लोगों के सभी नगरों पर कब्जा कर लिया। उन्होंने हेशबोन नगर तक को और उसके चारों ओर के छोटे नगरों को भी हराया। [26]हेशबोन वह नगर था जिसमें राजा सीहोन रहता था। इसके पहले सीहोन ने मोआब के राजा को हराया था और सीहोन ने अर्नोन घाटी तक के सारे प्रदेश पर अधिकार कर लिया था। [27]यही कारण है कि गायक यह गीत गाते हैं:

"आओ हेशबोन को, इसे फिर से बसाना है।
सीहोन के नगर को फिर से बनने दो।
[28] हेशबोन में आग लग गई थी।
वह आग सीहोन के नगर में लगी थी।
आग ने आर (मोआब) को नष्ट किया इसने
ऊपरी अर्नोन की पहाड़ियों को जलाया।
[29] ऐ मोआब! यह तुम्हारे लिए बुरा है,
कमोश* के लोग नष्ट कर दिए गए हैं।
उसके पुत्र भाग खड़े हुए।
उसकी पुत्रियाँ बन्दी बनीं–
एमोरी लोगों के राजा सीहोन द्वारा।
[30] किन्तु हमने उन एमोरियों को हराया,
हमने उनके हेशबोन से दीबोन तक नगरों को
मिटाया मेदबा के निकट नशिम से नोपह तक।"

[31]इसलिए इस्राएल के लोगों ने एमोरियों के देश में अपना डेरा लगाया।

[32]मूसा ने गुप्तचरों को याजेर नगर पर निगरानी के लिए भेजा। मूसा के ऐसा करने के बाद, इस्राएल के लोगों ने उस नगर पर अधिकार कर लिया। उन्होंने उसके चारों ओर के छोटे नगर पर भी अधिकार जमाया। इस्राएल के लोगों ने उस स्थान पर रहने वाले एमोरियों को वह स्थान छोड़ने को विवश किया।

[33]तब इस्राएल के लोगों ने बाशान की ओर जाने वाली सड़क पर यात्रा की। बाशान के राजा ओग ने अपनी सेना ली और इस्राएल के लोगों का सामना करने निकला। वह एद्रेई नाम के क्षेत्र में उनके विरुद्ध लड़ा। [34]किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, "उस राजा से मत डरो। मैं तुम्हें उसको हराने दूँगा। तुम उसकी पूरी सेना और प्रदेश को प्राप्त करोगे। तुम उसके साथ वही करो जो तुमने एमोरी लोगों के राजा सीहोन के साथ किया।" [35]अत: इस्राएल के लोगों ने ओग और उसकी सेना को हराया। उन्होंने उसे, उसके पुत्रों और उसकी सारी सेना को हराया। तब इस्राएल के लोगों ने उसके पूरे देश पर अधिकार कर लिया।

बिलाम और मोआब का राजा

22 तब इस्राएल के लोगों ने मोआब के मैदान की यात्रा की। उन्होंने यरीहो के उस पार यरदन नदी के निकट डेरा डाला। [2-3]सिप्पोर के पुत्र बालाक ने एमोरी लोगों के साथ इस्राएल के लोगों ने जो कुछ किया था, उसे देखा था और मोआब बहुत अधिक भयभीत था क्योंकि वहाँ इस्राएल के बहुत लोग थे। मोआब इस्राएल के लोगों से बहुत आतंकित था।

[4]मोआब के नेताओं ने मिद्यान के अग्रजों से कहा, "लोगों का यह विशाल समूह हमारे चारों ओर की सभी चीज़ों को वैसे ही नष्ट कर देगा जैसे कोई गाय मैदान की घास चर जाती है।"

इस समय सिप्पोर का पुत्र बालाक मोआब का राजा था। [5]उसने कुछ व्यक्तियों को बोर के पुत्र बिलाम को बुलाने के लिए भेजा। बिलाम नदी के निकट पतोर नाम के क्षेत्र में था। बालाक ने कहा, "लोगों का एक नया राष्ट्र मिस्र से आया है। वे इतने अधिक हैं कि पूरे प्रदेश में फैल सकते हैं। उन्होंने ठीक हमारे पास डेरा डाला है। [6]आओ और इन लोगों के साथ निपटने में मेरी सहायता करो। वे मेरी शक्ति से बहुत अधिक शक्तिशाली हैं। संभव है कि तब इनको मैं हरा सकूँ। तब मैं उन्हें अपना देश छोड़ने को विवश कर सकता हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम बड़ी शक्ति रखते हो। यदि तुम किसी व्यक्ति को आशीर्वाद

कमोश मोआबी लोगों का देवता।

देते हो तो उसका भला हो जाता है। यदि तुम किसी व्यक्ति के विरुद्ध कहते हो तो उसका बुरा हो जाता है। इसलिए आओ और इन लोगों के विरुद्ध कुछ कहो।"

[7]मोआब और मिद्यान के अग्रज चले। वे बिलाम से बातचीत करने गए। वे उसकी सेवाओं के लिए धन देने को ले गए। तब उन्होंने, बालाक ने जो कुछ कहा था, उससे कहा।

[8]बिलाम ने उनसे कहा, "यहाँ रात में रुको। मैं यहोवा से बातें करूँगा और जो उत्तर, वह मुझे देगा, वह तुमसे कहूँगा।" इसलिए उस रात मोआबी लोगों के नेता उसके साथ ठहरे।

[9]परमेश्वर बिलाम के पास आया और उसने पूछा, "तुम्हारे साथ ये कौन लोग हैं?"

[10]बिलाम ने परमेश्वर से कहा,"मोआब के राजा सिप्पोर के पुत्र बालाक ने उन्हें मुझको एक सन्देश देने को भेजा है। [11]सन्देश यह है: लोगों का एक नया राष्ट मिस्र से आया है। वे इतने अधिक हैं कि सारे देश में फैल सकते हैं। इसलिए आओ और इन लोगों के विरुद्ध कुछ कहो। तब सम्भव है कि उनसे लड़ने में मैं समर्थ हो सकूँ और अपने देश को छोड़ने के लिए उन्हें विवश कर सकूँ।"

[12]किन्तु परमेश्वर ने बिलाम से कहा, "उनके साथ मत जाओ। तुम्हें उन लोगों के विरुद्ध कुछ नहीं कहना चाहिए। उन्हें यहोवा से वरदान प्राप्त है।"

[13]दूसरे दिन सवेरे बिलाम उठा और बालाक के नेताओं से कहा, "अपने देश को लौट जाओ। यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने नहीं देगा।"

[14]इसलिए मोआबी नेता बालाक के पास लौटे और उससे उन्होंने ये बातें कहीं। उन्होंने कहा, "बिलाम ने हम लोगों के साथ आने से इन्कार कर दिया।"

[15]इसलिए बालाक ने दूसरे नेताओं को बिलाम के पास भेजा। इस बार उसने पहली बार की अपेक्षा बहुत अधिक आदमी भेजे और ये नेता पहली बार के नेताओं की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण थे। [16]वे बिलाम के पास गए और उन्होंने उससे कहा, "सिप्पोर का पुत्र बालाक तुमसे कहता है: कृपया अपने को यहाँ आने से किसी को रोकने न दें। [17]जो मैं तुमसे माँगता हूँ यदि तुम वह करोगे तो मैं तुम्हें बहुत अधिक भुगतान करूँगा। आओ और इन लोगों के विरुद्ध मेरे लिए कुछ कहो।"

[18]किन्तु बिलाम ने उन लोगों को उत्तर दिया। उसने कहा, "मुझे यहोवा मेरे परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिए। मैं उसके आदेश के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता। मैं बड़ा–छोटा कुछ भी तब तक नहीं कर सकता जब तक यहोवा नहीं कहता कि मैं उसे कर सकता हूँ। यदि राजा बालाक अपने सोने–चाँदी भरे सुन्दर घर को दे तो भी मैं अपने परमेश्वर यहोवा के आदेश के विरुद्ध कुछ नहीं करूँगा। [19]किन्तु तुम भी उन दूसरे लोगों की तरह आज की रात यहाँ ठहर सकते हो और रात में मैं जान जाऊँगा कि यहोवा मुझसे क्या कहलवाना चाहता है।"

[20]उस रात परमेश्वर बिलाम के पास आया। परमेश्वर ने कहा, "ये लोग अपने साथ ले जाने के लिए कहने को फिर आ गए हैं। इसलिए तुम उनके साथ जा सकते हो। किन्तु केवल वही करो जो मैं तुमसे करने को कहूँ।"

बिलाम और उसका गधा

[21]अगली सुबह, बिलाम उठा और अपने गधे पर काठी रखी। तब वह मोआबी नेताओं के साथ गया। [22]बिलाम अपने गधे पर सवार था। उसके सेवकों में से दो उसके साथ थे। जब बिलाम यात्रा कर रहा था, परमेश्वर उस पर क्रोधित हो गया। इसलिए यहोवा का दूत बिलाम के सामने सड़क पर खड़ा हो गया। दूत बिलाम को रोकने जा रहा था।* [23] बिलाम के गधे ने यहोवा के दूत को सड़क पर खड़ा देखा। दूत के हाथ में एक तलवार थी। इसलिए गधा सड़क से मुड़ा और खेत में चला गया। बिलाम दूत को नहीं देख सकता था। इसलिए वह गधे पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने गधे को मारा और उसे सड़क पर लौटने को विवश किया।

[24]बाद में, यहोवा का दूत ऐसी जगह पर खड़ा हुआ जहाँ सड़क सँकरी हो गई थी। यह दो अंगूर के बागों के बीच का स्थान था। वहाँ सड़क के दोनों ओर दीवारें थीं। [25]गधे ने यहोवा के दूत को फिर देखा। इसलिए गधा एक दीवार से सटकर निकला। इससे बिलाम का पैर दीवार से छिल गया। इसलिए बिलाम ने अपने गधे को फिर मारा।

[26]इसके बाद, यहोवा का दूत दूसरे स्थान पर खड़ा हुआ। यह दूसरी जगह थी जहाँ सड़क सँकरी हो गई थी। वहाँ कोई ऐसी जगह नहीं थी जहाँ गधा मुड़ सके। गधा दायें या बायें नहीं मुड़ सकता था। [27]गधे ने यहोवा के दूत

रोकने ... रहा था शाब्दिक "उसका विरोध करने।"

को देखा इसलिए गधा बिलाम को अपनी पीठ पर लिए हुए जमीन पर बैठ गया। बिलाम गधे पर बहुत क्रोधित था। इसलिए उसने उसे अपने डंडे से पीटा।

[28]तब यहोवा ने गधे को बोलने वाला बनाया। गधे ने बिलाम से कहा, "तुम मुझ पर क्यों क्रोधित हो? मैंने तुम्हारे साथ क्या किया है? तुमने मुझे तीन बार मारा है!"

[29]बिलाम ने गधे को उत्तर दिया, "तुमने दूसरों की नजर में मुझे मूर्ख बनाया है यदि मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं अभी तुम्हें मार डालता।"

[30]किन्तु गधे ने बिलाम से कहा, "मैं तुम्हारा अपना गधा हूँ जिस पर तुम अनेक वर्ष से सवार हुए हो और तुम जानते हो कि मैंने ऐसा इसके पहले कभी नहीं किया है।"

"यह सही है।" बिलाम ने कहा।

[31]तब यहोवा ने बिलाम को सड़क पर खड़े दूत को देखने दिया। बिलाम ने दूत और उसकी तलवार को देखा। तब बिलाम ने झुक कर प्रणाम किया।

[32]यहोवा के दूत ने बिलाम से पूछा, "तुमने अपने गधे को तीन बार क्यों मारा? तुम्हें मुझ पर क्रोध से पागल होना चाहिए। मैं तुमको रोकने के लिए यहाँ आया हूँ। तुम्हें कुछ अधिक सावधान रहना चाहिए।* [33]गधे ने मुझे देखा और वह तीन बार मुझसे मुड़ा। यदि गधा मुड़ा न होता तो मैंने तुमको मार डाला होता। किन्तु मुझे तुम्हारे गधे को नहीं मारना था।"

[34]तब बिलाम ने यहोवा के दूत से कहा, "मैंने पाप किया है। मैं यह नहीं जानता था कि तुम सड़क पर खड़े हो। यदि मैं बुरा कर रहा हूँ तो मैं घर लौट जाऊँगा।"

[35]यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, "नहीं, तुम इन लोगों के साथ जा सकते हो। किन्तु सावधान रहो। वही बातें कहो जो मैं तुमसे कहने के लिए कहूँगा।" इसलिए बिलाम बालाक द्वारा भेजे गए नेताओं के साथ गया।

[36]बालाक ने सुना कि बिलाम आ रहा है। इसलिए बालाक उससे मिलने के लिए अर्नोन सीमा पर मोआबी नगर को गया। यह उसके देश की छोर थी। [37]जब बालाक ने बिलाम को देखा तो उसने बिलाम से कहा, "मैंने इसके पहले तुमसे आने के लिए कहा था और यह भी बताया था कि यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तुम हमारे पास क्यों नहीं आए? क्या यह सच है कि तुम मुझसे कोई भी पुरस्कार या भुगतान नहीं पाना चाहते?"

[38]किन्तु बिलाम ने उत्तर दिया, "मैं अब तुम्हारे पास आया हूँ।" लेकिन मैं, जो तुमने करने को कहा था उनमें से, शायद कुछ भी न कर सकूँ। मैं केवल वही बातें तुमसे कह सकता हूँ जो परमेश्वर मुझसे कहने को कहता है।"

[39]तब बिलाम बालाक के साथ किर्यथूसोत गया। [40]बालाक ने कुछ मवेशी तथा कुछ भेड़ें उसकी भेंट के रूप मे मारीं। उसने कुछ माँस बिलाम तथा कुछ उसके साथ के नेताओं को दिया।

[41]अगली सुबह बालाक को बमोथ बाल नगर को ले गया। उस नगर से वे इस्राएली लोगों के कुछ डेरों को देख सकते थे।

बिलाम की पहली भविष्यवाणी

23 बिलाम ने कहा, "यहाँ सात वेदियाँ बनाओ और मेरे लिए सात बैल और सात मेढ़े तैयार करो।" [2]बालाक ने वह सब किया जो बिलाम ने कहा। तब बिलाम ने हर एक वेदी पर एक बैल और एक मेढ़े को मारा।

[3]तब बिलाम ने बालाक से कहा, "इस वेदी के समीप ठहरो। मैं दूसरी जगह जाऊँगा। तब कदाचित यहोवा मेरे पास आएगा और बताएगा कि मैं क्या कहूँ।" तब बिलाम एक अधिक ऊँचे स्थान पर गया।

[4]परमेश्वर उस स्थान पर बिलाम के पास आया और बिलाम ने कहा, "मैंने सात वेदियाँ तैयार की हैं और मैंने हर एक वेदी पर एक बैल और एक मेढ़े को मारा है।"

[5]तब यहोवा ने बिलाम को वह बताया जो उसे कहना चाहिए। तब यहोवा ने कहा, "बालाक के पास जाओ और इन बातों को कहो जो मैंने कहने के लिए बताई हैं।"

[6]इसलिए बिलाम बालाक के पास लौटा। बालाक तब तक वेदी के पास खड़ा था और मोआब के सभी नेता उसके साथ खड़े थे। [7]तब बिलाम ने ये बातें कहीं:

मोआब के राजा बालाक ने मुझे आराम से
बुलाया पूर्व के पहाड़ों से।
बालाक ने मुझसे कहा–
"आओ और मेरे लिए याकूब के विरुद्ध कहो,
आओ और इस्राएल के लोगों के विरुद्ध कहो।"

सावधान रहना चाहिये शाब्दिक "जैसे कि मेरे सामने से मार्ग हट गया है" या "क्योंकि तुम उचित नहीं कर रहे हो..." यहाँ हिब्रू पाठ समझना कठिन है।

8 परमेश्वर उन लोगों के विरुद्ध नहीं है,
अत: मैं भी उनके विरुद्ध नहीं कह सकता।
यहोवा ने उनका बुरा होने के लिए नहीं कहा है।
अत: मैं भी वैसा नहीं कर सकता।
9 मैं उन लोगों को पर्वत से देखता हूँ।
मैं ऐसे लोगों को देखता हूँ जो अकेले रहते हैं।
वे लोग किसी अन्य राष्ट्र के अंग नहीं हैं।
10 याकूब के लोग बालू के कण से भी अधिक हैं।
इस्राएल के लोगों की चौथाई को भी
कोई गिन नहीं सकता।
मुझे एक अच्छे मनुष्य की तरह
मरने दो, मुझे उन लोगों की तरह ही मरने दो।

11बालाक ने बिलाम से कहा, "तुमने हमारे लिए क्या किया है? मैंने तुमको अपने शत्रुओं के विरुद्ध कुछ कहने को बुलाया था। किन्तु तुमने उन्हीं को आशीर्वाद दिया है।"

12किन्तु बिलाम ने उत्तर दिया, "मुझे वही करना चाहिए जो यहोवा मुझे करने को कहता है।"

13तब बालाक ने उससे कहा, "इसलिए मेरे साथ दूसरे स्थान पर आओ। उस स्थान पर तुम लोगों को भी देख सकते हो। किन्तु तुम उनके एक भाग को ही देख सकते हो, सभी को नहीं देख सकते और उस स्थान से तुम मेरे लिए उनके विरुद्ध कुछ कह सकते हो।" 14इसलिए बालाक बिलाम को सोपीम के मैदान में ले गया। यह पिसगा पर्वत की चोटी पर था। बालाक ने उस स्थान पर सात वेदियाँ बनाई। तब बालाक ने हर एक वेदी पर बलि के रूप में एक बैल और एक मेढ़ा मारा।

15इसलिए बिलाम ने बालाक से कहा, "इस वेदी के पास खड़े रहो। मैं उस स्थान पर परमेश्वर से मिलने जाऊँगा।"

16इसलिए यहोवा बिलाम के पास आया और उसने बिलाम को बताया कि वह क्या कहे। तब यहोवा ने बिलाम को बालाक के पास लौटने और उन बातों को कहने को कहा। 17इसलिए बिलाम बालाक के पास गया। बालाक तब तक वेदी के पास खड़ा था। मोआब के नेता उसके साथ थे। बालाक ने उसे आते हुए देखा और उससे पूछा, "यहोवा ने क्या कहा?"

बिलाम की दूसरी भविष्यवाणी

18तब बिलाम ने ये बातें कहीं:
"बालाक! खड़े हो और मेरी बात सुनों।
सिप्पोर के पुत्र बालाक! मेरी बात सुनो।
19 परमेश्वर मनुष्य नहीं है, वह झूठ नहीं बोलेगा;
परमेश्वर मनुष्य पुत्र नहीं,
उसके निर्णय बदलेंगे नहीं।
यदि यहोवा कहता है कि वह कुछ करेगा–
तो वह अवश्य उसे करेगा।
यदि यहोवा वचन देता है
तो अपने वचन को अवश्य पूरा करेगा।
20 यहोवा ने मुझे उन्हें आशीर्वाद देने का
आदेश दिया।
यहोवा ने उन्हें आशीर्वाद दिया है,
इसलिए मैं उसे बदल नहीं सकता।
21 याकूब के लोगों में कोई दोष नहीं था।
इस्राएल के लोगों में कोई पाप नहीं था।
यहोवा उनका परमेश्वर है और वह
उनके साथ है।
महाराजा (परमेश्वर) की वाणी उनके साथ है!
22 परमेश्वर उन्हें मिस्र से बाहर लाया।
इस्राएल के वे लोग जंगली
साँड़ की तरह शक्तिशाली हैं।
23 कोई जादुई शक्ति नहीं जो याकूब के
लोगों को हरा सके।
याकूब के बारे में और इस्राएल के लोगों के
विषय में भी लोग यह कहेंगे।
"परमेश्वर ने जो महान कार्य किये हैं
उन पर ध्यान दो!"
24 वे लोग सिंह की तरह शक्तिशाली होंगे।
वे सिंह जैसे लड़ेंगे।
और यह सिंह कभी विश्राम नहीं करेगा,
जब तक वह शत्रु को खा नहीं डालता,
और वह सिंह कभी विश्राम नहीं करेगा
जब तक वह उनका रक्त नहीं पीता
जो उसके विरुद्ध हैं।"

25तब बालाक ने बिलाम से कहा, "तुमने उन लोगों के लिए अच्छी चीज़ें होने की मांग नहीं की। किन्तु तुमने उनके लिए बुरी चीज़ें होने की भी माँग नहीं की।"

[26]बिलाम ने उत्तर दिया, "मैंने पहले ही तुमसे कह दिया कि मैं केवल वही कहूँगा जो यहोवा मुझसे कहने के लिए कहता है।"

[27]तब बालाक ने बिलाम से कहा, "इसलिए तुम मेरे साथ दूसरे स्थान पर चलो। सम्भव है कि परमेश्वर प्रसन्न हो जाये और तुम्हें उस स्थान से शाप देने दे।" [28]इसलिए बालाक बिलाम को पोर पर्वत की चोटी पर ले गया। यह पर्वत मरुभूमि के छोर पर स्थित है।

[29]बिलाम ने कहा, "यहाँ सात वेदियाँ बनाओ। तब सात साँड़ तथा सात मेढ़े वेदियों पर बलि के लिये तैयार करो।" [30]बालाक ने वही किया जो बिलाम ने कहा। बालाक ने बलि के रूप में हर एक वेदी पर एक साँड़ तथा एक मेढ़ा मारा।

बिलाम की तीसरी भविष्यवाणी

24 बिलाम को मालूम हुआ कि यहोवा इस्राएल को आशीर्वाद देना चाहता है। इसलिए बिलाम ने किसी प्रकार के जादू मन्तर का उपयोग करके उसे बदलना नहीं चाहा। किन्तु बिलाम मुड़ा और उसने मरुभूमि की ओर देखा। [2]बिलाम ने मरुभूमि के पार तक देखा और इस्राएल के सभी लोगों को देख लिया। वे अपने अलग–अलग परिवार समूहों के क्षेत्र में डेरा डाले हुए थे। तब परमेश्वर ने बिलाम को प्रेरित किया। [3]और बिलाम ने ये शब्द कहे:

"बोर का पुत्र बिलाम जो सब कुछ स्पष्ट देख
सकता है ये बातें कहता है।
[4] ये शब्द कहे गए, क्योंकि मैं परमेश्वर की
बात सुनता हूँ।
मैं उन चीज़ों को देख सकता हूँ जिसे
सर्वशक्तिमान परमेश्वर चाहता है कि मैं देखूँ।
मैं जो कुछ स्पष्ट देख सकता हूँ वही
नम्रता के साथ कहता हूँ।
[5] याकूब के लोगों तुम्हारे खेमे बहुत सुन्दर हैं!
इस्राएल के लोगों जिनके घर सुन्दर हैं!
[6] तुम्हारे डेरे घाटियों की तरह प्रदेश के
आर–पार फैले हैं।
ये नदी के किनारे उगे बाग की तरह हैं।
ये यहोवा द्वारा बोयी गई फसल की तरह हैं।
ये नदियों के किनारे उगे देवदार के
सुन्दर पेड़ों की तरह हैं।
[7] तुम्हें पीने के लिए सदा पर्याप्त पानी मिलेगा।
तुम्हें फसलें उगाने के लिये पर्याप्त पानी मिलेगा।
तुम लोगों का राजा अगाग से महान होगा।
तुम्हारा राज्य बहुत महान हो जाएगा।
[8] परमेश्वर उन लोगों को मिस्र से बाहर लाया।
वे इतने शक्तिशाली हैं जितना कोई जंगली साँड़।
वे अपने सभी शत्रुओं को हरायेंगे।
वे अपने शत्रुओं की हड्डियाँ चूर करेंगे।
और उनके बाण उनके शत्रु को मार डालेंगे
वे उस सिंह की तरह हैं जो अपने शिकार
पर टूट पड़ना चाहता हो।
[9] वे उस सिंह की तरह है जो सो रहा हो।
कोई व्यक्ति इतना साहसी नहीं
जो उसे जगा दे!
कोई व्यक्ति जो तुम्हें आशीर्वाद देगा,
आशीष पाएगा, और कोई व्यक्ति जो
तुम्हारे विरुद्ध बोलेगा विपत्ति में पड़ेगा।"

[10]तब बिलाम पर बालाक बहुत क्रोधित हुआ। बालाक ने बिलाम से कहा, "मैंने तुम्हें आने और अपने शत्रुओं के विरुद्ध कुछ कहने के लिए बुलाया। किन्तु तुमने उनको आशीर्वाद दिया है। तुमने उन्हें तीन बार आशीर्वाद दिया है। [11]अब विदा हो और घर जाओ। मैंने कहा था कि मैं तुम्हें बहुत अधिक सम्पन्न बनाऊँगा। किन्तु यहोवा ने तुम्हें पुरस्कार से वंचित कराया है।"

[12]बिलाम ने बालाक से कहा, "तुमने आदमियों को मेरे पास भेजा। उन व्यक्तियों ने मुझसे आने के लिए कहा। किन्तु मैंने उनसे कहा, [13]'बालाक अपना सोने–चाँदी से भरा घर मुझको दे सकता है। परन्तु मैं तब भी केवल वही बातें कह सकता हूँ जिसे कहने के लिए यहोवा आदेश देता है। मैं अच्छा या बुरा स्वयं कुछ नहीं कर सकता। मुझे वही करना चाहिए जो यहोवा का आदेश हो।' क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने ये बातें तुम्हारे लोगों से कहीं? [14]अब मैं अपने लोगों के बीच जा रहा हूँ किन्तु तुमको एक चेतावनी दूँगा। मैं तुमसे कहूँगा कि भविष्य में इस्राएल के ये लोग तुम्हारे और तुम्हारे लोगों के साथ क्या करेंगे।"

बिलाम की अन्तिम भविष्यवाणी

15 तब बिलाम ने ये बातें कहीं:

"बोर के पुत्र बिलाम के ये शब्द हैं:
ये उस व्यक्ति के शब्द हैं जो चीज़ों को
साफ–साफ देख सकता है।
16 ये उस व्यक्ति के शब्द हैं जो
परमेश्वर की बातें सुनता है।
सर्वोच्च परमेश्वर ने मुझे ज्ञान दिया है।
मैंने वह देखा है जिसे सर्वशक्तिमान
परमेश्वर ने मुझे दिखाना चाहा है।
मैं जो कुछ स्पष्ट देखता हूँ वही
नम्रता के साथ कहता हूँ।
17 मैं देखता हूँ कि यहोवा आ रहा है,
किन्तु अभी नहीं।
मैं उसका आगमन देखता हूँ,
किन्तु यह शीघ्र नहीं है।
याकूब के परिवार से एक तारा आएगा।
इस्राएल के लोगों में से एक नया शासक आएगा। वह शासक मोआबी लोगों के
सिर कुचल देगा।
वह शासक सेईर के सभी पुत्रों के
सिर कुचल देगा।
18 एदोम देश पराजित होगा
नये राजा का शत्रु सेईर* पराजित होगा।
इस्राएल के लोग शक्तिशाली हो जाएंगे।
19 याकूब के परिवार से
एक नया शासक आएगा।
नगर में जीवित बचे लोगों को
वह शासक नष्ट करेगा।"

20 तब बिलाम ने अपने अमालेकी लोगों को देखा और ये बातें कहीं:

"सभी राष्ट्रों में अमालेक सबसे अधिक बलवान था।
किन्तु अमालेक भी नष्ट किया जाएगा।"

21 तब बिलाम ने केनियों को देखा और उनसे ये बातें कहीं:

"तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारा देश उसी
प्रकार सुरक्षित है।
जैसे किसी ऊँचे खड़े पर्वत पर बना घोंसला।
22 किन्तु केनियों, तुम नष्ट किये जाओगे।
अश्शूर तुम्हें बन्दी बनाएगा।"
23 तब बिलाम ने ये शब्द कहे,
"कोई व्यक्ति नहीं रह सकता
जब परमेश्वर यह करता है।
24 कित्तियों के तट से जहाज आएंगे।
वे जहाज अश्शूर और एबेर को हराएंगे।
किन्तु तब वे जहाज भी नष्ट कर दिए जाएंगे।"

25 तब बिलाम उठा और अपने घर को लौट गया और बालाक भी अपनी राह चला गया।

पोर में इस्राएल

25 इस्राएल के लोग अभी तक शित्तीम के क्षेत्र में डेरा डाले हुए थे। उस समय लोग मोआबी स्त्रियों के साथ यौन सम्बन्धी पाप करने लगे। 2 मोआबी स्त्रियों ने पुरुषों को आने और अपने मिथ्या देवताओं को भेंट चढ़ाने में सहायता करने के लिए आमंन्त्रित किया। इस्राएली लोगों ने वहाँ भोजन किया और मिथ्या देवताओं की पूजा की। 3 अत: इस्राएल के लोगों ने इसी प्रकार मिथ्या देवता पोर के बाल की पूजा आरम्भ की। यहोवा इन लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ।

4 यहोवा ने मूसा से कहा, "इन लोगों के नेताओं को लाओ। तब उन्हें सभी लोगों की आँखों के सामने मार डालो। उनके शरीर को यहोवा के सामने डालो। तब यहोवा इस्राएल के लोगों पर क्रोधित नहीं होगा।"

5 इसलिए मूसा ने इस्राएल के न्यायाधीशों से कहा, "तुम लोगों में से हर एक को अपने परिवार समूह में उन लोगों को ढूँढ निकालना है जिन्होंने लोगों को पोर के मिथ्या देवता बाल की पूजा के लिए प्रेरित किया है। तब तुम्हें उन लोगों को अवश्य मार डालना चाहिए।"

6 उस समय मूसा और सभी इस्राएल के अग्रज (नेता) मिलापवाले तम्बू के द्वार पर एक साथ इकट्ठे थे। एक इस्राएली व्यक्ति एक मिद्यानी स्त्री को अपने भाईयों के पास अपने घर लाया। उसने यह वहाँ किया जहाँ उसे मूसा और सारे नेता देख सकते थे। मूसा और नेता बहुत दु:खी हुए। 7 याजक हारून के पोते तथा एलीआज़ार के पुत्र पीनहास ने इसे देखा। इसलिए उसने बैठक छोड़ी और अपना भाला उठाया। 8 वह इस्राएली व्यक्ति के पीछे–पीछे उसके खेमे में गया। तब उसने इस्राएली पुरुष और मिद्यानी

सेईर एदोम का दूसरा नाम है।

स्त्री को अपने भाले से मार डाला। उसने अपने भाले को दोनों के शरीरों के पार कर दिया। उस समय इस्राएल के लोगों में एक बड़ी बीमारी फैली थी। किन्तु जब पीनहास ने इन दोनों लोगों को मार डाला तो बीमारी रूक गई। [9]इस बीमारी से चौबीस हजार लोग मर चुके थे।

[10]यहोवा ने मूसा से कहा, [11]"याजक हारून के पोते तथा एलीआज़ार के पुत्र पीनहास ने इस्राएल के लोगों को मेरे क्रोध से बचा लिया है। उसने मुझे प्रसन्न करने के लिए कठिन प्रयत्न किया। वह वैसा ही है जैसा मैं हूँ। उसने मेरी प्रतिष्ठा को लोगों में सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया। इसलिए मैं लोगों को वैसे ही नहीं मारूँगा जैसे मैं मारना चाहता था। [12]इसलिए पीनहास से कहो कि मैं उसके साथ एक शान्ति की वाचा करना चाहता हूँ। [13]वह और उसके बाद के वंशज मेरे साथ एक वाचा करेंगे। वे सदा याजक रहेंगे क्योंकि उसने अपने परमेश्वर की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए कठिन प्रयत्न किया। इस प्रकार उसने इस्राएली लोगों के दोषों के लिए हर्जाना दिया।"

[14]जो इस्राएली मिद्यानी स्त्री के साथ मारा गया था उसका नाम जिम्रि था वह साल का पुत्र था। वह शिमोन के परिवार समूह के परिवार का नेता था [15]और मारी गई मिद्यानी स्त्री का नाम कोजबी था। वह सूर की पुत्री थी। वह अपने परिवार का मुखिया था और वह मिद्यानी परिवार समूह का नेता था।

[16]यहोवा ने मूसा से कहा, [17]"मिद्यानी लोग तुम्हारे शत्रु हैं। तुम्हें उनको मार डालना चाहिए। [18]उन्होंने पहले ही तुमको अपना शत्रु बना लिया है। उन्होंने तुमको धोखा दिया और तुमसे अपने मिथ्या देवताओं की पोर में पूजा करवाई और उन्होंने तुममें से एक व्यक्ति का विवाह कोजबी के साथ लगभग करा दिया जो मिद्यानी नेता की पुत्री थी। यही स्त्री उस समय मारी गयी जब इस्राएली लोगों में बीमारी आई। बीमारी इसलिए उत्पन्न की गई कि लोग पोर में मिथ्या देवता बाल की पूजा कर रहे थे।"

दूसरी गिनती

26 बड़ी बीमारी के बाद यहोवा ने मूसा और हारून के पुत्र याजक एलीआज़ार से बातें की। [2]उसने कहा, "सभी इस्राएली लोगों की संख्या गिनो। हर एक परिवार को देखो और बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के हर एक पुरुष को गिनो। ये वे पुरुष हैं जो इस्राएल की सेना में सेवा करने योग्य हैं।"

[3]इस समय लोग मोआब के मैदान में डेरा डाले थे। यह यरीहो के पार यरदन नदी के समीप था। इसलिए मूसा और याजक एलीआज़ार ने लोगों से बातें कीं। [4]उन्होंने कहा, "तुम्हें बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के हर एक पुरुष को गिनना चाहिए। यही वह आदेश था जो यहोवा ने मूसा को पालन करने के लिए दिया था।" यहाँ उन इस्राएल के लोगों की सूची है जो मिस्र से आए थे:

[5]ये रूबेन के परिवार के लोग हैं। (रूबेन इस्राएल (याकूब) का पहलौठा पुत्र था।) ये परिवार थे:

हनोक–हनोकी परिवार।
पल्लू–पल्लिय परिवार।
[6] हेस्रोन–हेस्रोनी परिवार।
कर्मी–कर्मी परिवार।

[7]रूबेन के परिवार समूह में वे परिवार थे। योग में सभी तैंतालीस हजार सात सौ तीस पुरुष थे।

[8] पल्लू का पुत्र एलीआब था। [9] एलीआब के तीन पुत्र थे–नमूएल, दातान और अबीराम। याद रखो कि दातान और अबीराम वे दो नेता थे जो मूसा और हारून के विरोधी हो गए थे। वे कोरह के अनुयायी थे और कोरह यहोवा का विरोधी हो गया था। [10]वही समय था जब पृथ्वी फटी थी और कोरह एवं उसके सभी अनुयायियों को निगल गई थी। कुल दो सौ पचास पुरुष मर गये थे। यह इस्राएल के सभी लोगों के लिए एक संकेत और चेतावनी थी।

[11]किन्तु कोरह के परिवार के अन्य लोग नहीं मरे।

[12] शिमोन के परिवार समूह के ये परिवार थे:

नमूएल–नमूएल परिवार।
यामीन–यामीन परिवार।
याकीन–याकीन परिवार।
[13] जेरह–जेराही परिवार।
शाऊल–शाऊल परिवार।

[14] शिमोन के परिवार समूह में वे परिवार थे। इसमें कुल बाइस हजार पुरुष थे।

[15] गाद के परिवार समूह के ये परिवार हैं:

सपोन–सपोन परिवार।
हाग्गी–हाग्गी परिवार।
शूनी–शूनी परिवार।

16 ओजनी–ओजनी परिवार।
ऐरी–ऐरी परिवार।
17 अरोद–अरोद परिवार।
अरेली–अरेली परिवार।

18गाद के परिवार समूह के वे परिवार थे। इनमें कुल चालीस हजार पाँच सौ पुरुष थे।

19-20 यहूदा के परिवार समूह के ये परिवार हैं:
शेला–शेला परिवार।
पेरेस–पेरेस परिवार।
जेरह–जेरह परिवार।
(यहूदा के दो पुत्र एर, ओनान–कनान में मर गए थे।)

21 पेरेस के ये परिवार हैं:
हेस्रोन–हेस्रोनी परिवार।
हामूल–हामूल परिवार।

22यहूदा के परिवार समूह के वे परिवार थे। इनके कुल पुरुषों की संख्या छिहत्तर हजार पाँच सौ थी।

23 इस्साकार के परिवार समूह के परिवार ये थे:
तोला–तोला परिवार।
पुव्वा–पुव्वा परिवार।
24 याशूब–याशूब परिवार।
शिम्रोन–शिम्रोन परिवार।

25इस्साकार के परिवार समूह के वे परिवार थे। इनमें कुल पुरुषों की संख्या चौसठ हजार तीन सौ थी।

26जबूलून के परिवार समूह के परिवार ये थे:
सेरेद–सेरेद परिवार।
एलोन–एलोन परिवार।
यहलेल–यहलेल परिवार।

27जबूलून के परिवार समूह के वे परिवार थे। इनमें कुल पुरुषों की संख्या साठ हजार पाँच सौ थी।

28यूसुफ के दो पुत्र मनश्शे और एप्रैम थे। हर एक पुत्र अपने परिवारों के साथ परिवार समूह बन गया था।

29मनश्शे के परिवार में ये थे:
माकीर–माकीर परिवार, (माकीर गिलाद का पिता था।)
गिलाद–गिलाद परिवार।

30गिलाद के परिवार ये थे:
ईएजेर–ईएजेर परिवार।
हेलेक–हेलेकी परिवार।
31 अस्रीएल–अस्रीएली परिवार।
शेकेम–शेकेमी परिवार।
32 शमीदा–शमीदा परिवार।
हेपेर–हेपेरी परिवार।

33हेपेर का पुत्र सलोफाद था। किन्तु उसका कोई पुत्र न था। केवल पुत्री थी। उसकी पुत्रियों के नाम महला, नोआ, होग्ला, मिल्का, और तिर्सा थे।

34मनश्शे परिवार समूह के ये परिवार हैं। इनमें कुल पुरुष बावन हजार सात सौ थे।

35 एप्रैम के परिवार समूह के ये परिवार थे:
शूतेलह–शूतेलही परिवार।
बेकेर–बेकेरी परिवार।
तहन–तहनी परिवार।
36 एरान शूतेलह परिवार का था।
उसका परिवार एरनी था।

37एप्रैम के परिवार समूह में ये परिवार थे। कुल पुरुषों की संख्या इसमें बत्तीस हजार पाँच सौ थी। वे ऐसे सभी लोग हैं जो यूसुफ के परिवार समूहों के हैं।

38बिन्यामीन के परिवार समूह के परिवार ये थे:
बेला–बेला परिवार।
अशबेल–अश्बेली परिवार।
अहीरम–अहीरमी परिवार।
39 शपूपाम–शपूपाम परिवार।
हूपाम–हूपामी परिवार।
40 बेला के परिवार में ये थे:
अर्द–अर्दी परिवार।
नामान–नामानी परिवार।

41बिन्यामीन के परिवार समूह के ये सभी परिवार थे। इसमें पुरुषों की कुल संख्या पैंतालीस हजार छः सौ थी।

42दान के परिवार समूह में ये परिवार थे:
शूहाम–शूहाम परिवार समूह।
दान के परिवार समूह से वह परिवार समूह था।

43शूहामी परिवार समूह में बहुत से परिवार थे। इनमें पुरुषों की कुल संख्या चौंसठ हजार चार सौ थी।

44आशेर के परिवार समूह के ये परिवार हैं:
यिम्ना–यिम्नी परिवार।
यिश्री–यिश्री परिवार।
बरीआ–बरीआ परिवार।

[45] बरीआ के ये परिवार हैं:
हेबेर–हेबेरी परिवार।
मल्कीएल–मल्कीएली परिवार।

[46](आशेर की एक पुत्री सेरह नाम की थी।) [47]आशेर के परिवार समूह में वे परिवार थे। इसमें पुरुषों की संख्या तिरपन हजार चार सौ थी।

[48]नप्ताली के परिवार समूह के ये परिवार थे:
यहसेल–यहसेली परिवार।
गूनी–गूनी परिवार।
[49] येसेर–येसेरी परिवार।
शिल्लेम–शिल्लेमी परिवार।

[50]नप्ताली के परिवार समूह के ये परिवार थे। इसमें पुरुषों की कुल संख्या पैंतालीस हजार चार सौ थी।

[51]इस प्रकार इस्राएल के पुरुषों की कुल संख्या छ: लाख एक हजार सात सौ तीस थी। [52]यहोवा ने मूसा से कहा, [53]“हर एक परिवार समूह को भूमि दी जाएगी। यह वही प्रदेश है जिसके लिए मैंने वचन दिया था। हर एक परिवार समूह उन लोगों के लिये पर्याप्त भूमि प्राप्त करेंगे जिन्हें गिना गया। [54]बड़ा परिवार समूह अधिक भूमि पाएगा और छोटा परिवार समूह कम भूमि पाएगा। किन्तु हर एक परिवार समूह को भूमि मिलेगी जिसके लिए मैंने वचन दिया है और जो भूमि वे पाएंगे वह उनकी गिनी गई संख्या के बराबर होगी। [55]हर एक परिवार समूह को पासों के आधार पर निश्चय करके धरती दी जाएगी और उस प्रदेश का वही नाम होगा जो उस परिवार समूह का होगा। [56]वह प्रदेश जिसे मैंने लोगों को देने का वचन दिया, उनके उत्तराधिकार में होगा। यह बड़े और छोटे परिवार समूहों को दिया जाएगा। निर्णय करने के लिए तुम्हें पासे फेंकने होंगे।”

[57]लेवी का परिवार समूह भी गिना गया। लेवी के परिवार समूह के ये परिवार है:
गेर्शोन–गेर्शोन परिवार।
कहात–कहात परिवार।
मरारी–मरारी परिवार।

[58]लेवी के परिवार समूह से ये परिवार भी थे:
लिब्नि परिवार।
हेब्रोनी परिवार।
महली परिवार।
मूशी परिवार।
कहात परिवार।

अम्राम कहात के परिवार समूह का था। [59]अम्राम की पत्नी का नाम योकेबेद था। वह भी लेवी के परिवार समूह की थी। उसका जन्म मिस्र में हुआ था। अम्राम और योकेबेद के दो पुत्र हारून और मूसा थे। उनकी एक पुत्री मरियम भी थी।

[60]हारून, नादाब, अबीहू, एलीआज़ार तथा ईतामार का पिता था। [61]किन्तु नादाब और अबीहू मर गए। वे मर गए क्योंकि उन्होंने यहोवा को उस आग से भेंट चढ़ाई जो उनके लिए स्वीकृत नहीं थी।

[62]लेवी परिवार समूह के सभी पुरुषों की संख्या तेईस हजार थी। किन्तु ये लोग इस्राएल के अन्य लोगों के साथ नहीं गिने गए थे। वे भूमि नहीं पा सके जिसे अन्य लोगों को देने का वचन यहोवा ने दिया था।

[63]मूसा और याजक एलीआज़ार ने इन सभी लोगों को गिना। उन्होंने इस्राएल के लोगों को मोआब के मैदान में गिना। यह यरीहो से यरदन नदी के पार था। [64]बहुत समय पहले मूसा और याजक हारून ने इस्राएल के लोगों को सीनै मरुभूमि में गिना था। किन्तु वे सभी लोग मर चुके थे। मोआब के मैदान में मूसा ने जिन लोगों को गिना, वे पहले गिने गए लोगों से भिन्न थे। [65]यह इसलिए हुआ कि यहोवा ने इस्राएल के लोगों से यह कहा था कि वे सभी मरुभूमि में मरेंगे। जो केवल दो जीवित बचे थे यपुन्ने का पुत्र कालेब और नून का पुत्र यहोशू थे।

सलोफाद की पुत्रियाँ

27 सलोफाद हेपेर का पुत्र था। हेपेर गिलाद का पुत्र था। गिलाद माकीर का पुत्र था। माकीर मनश्शे का पुत्र था और मनश्शे यूसुफ का पुत्र था। सलोफाद की पाँच पुत्रियाँ थीं। उनके नाम महला, नोवा, होग्ला, मिल्का और तिर्सा था। [2]ये पाँचों स्त्रियाँ मिलापवाले तम्बू में गई और मूसा, याजक एलीआज़ार, नेतागण और सब इस्राएलियों के सामने खड़ी हो गई।

पाँचों पुत्रियों ने कहा, [3]“हमारे पिता उस समय मर गये जब हम लोग मरुभूमि से यात्रा कर रहे थे। वह उन लोगों में से नहीं था जो कोरह के दल में सम्मिलित हुए थे। (कोरह वही था जो यहोवा के विरुद्ध हो गया था।) हम लोगों के पिता की मृत्यु स्वाभाविक थी।

किन्तु हमारे पिता का कोई पुत्र नहीं था। [4]इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमारे पिता का नाम नहीं चलेगा। यह ठीक नहीं है कि हमारे पिता का नाम मिट जाए। इसलिए हम लोग यह माँग करते हैं कि हमें भी कुछ भूमि दी जाए जिसे हमारे पिता के भाई पाएंगे।"

[5]इसलिए मूसा ने यहोवा से पूछा कि वह क्या करे। [6]यहोवा ने उससे कहा, [7]"सलोफाद की पुत्रियाँ ठीक कहती हैं। तुम्हें उनके चाचाओं के साथ-साथ उन्हें भी भूमि का भाग अवश्य देना चाहिए जो तुम उनके पिता को देते।

[8]"इसलिए इस्राएल के लोगों के लिए इसे नियम बना दो। 'यदि किसी व्यक्ति के पुत्र न हो और वह मर जाए तो हर एक चीज जो उसकी है, उसकी पुत्री की होगी। [9]यदि उसे कोई पुत्री न हो तो, जो कुछ भी उसका है उसके भाईयों को दिया जाएगा। [10]यदि उसका कोई भाई न हो तो, जो कुछ उसका है उसके पिता के भाईयों को दिया जाएगा। [11]यदि उसके पिता का कोई भाई नहीं है तो, जो कुछ उसका हो उसे उसके परिवार के निकटतम सम्बन्धी को दिया जाएगा। इस्राएल के लोगों में यह नियम होना चाहिए। यहोवा मूसा को यह आदेश देता है।'"

[12]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "उस पर्वत के ऊपर चढ़ो। जो अबारीम पर्वत श्रृंखला में से एक है। वहाँ तुम उस प्रदेश को देखोगे जिसे मैं इस्राएल के लोगों को दे रहा हूँ। [13]जब तुम इस प्रदेश को देख लोगे तब तुम अपने भाई हारून की तरह मर जाओगे। [14]उस बात को याद करो जब लोग सीन की मरुभूमि में पानी के लिए क्रोधित हुए थे। तुम और हारून दोनों ने मेरा आदेश मानना अस्वीकार किया था। तुम लोगों ने मेरा सम्मान नहीं किया था और लोगों के सामने मुझे पवित्र नहीं बनाया था।" (यह पानी सीन की मरुभूमि में कादेश के अन्तर्गत मरीबा में था।)

[15]मूसा ने यहोवा से कहा, [16]"यहोवा परमेश्वर है वही जानता है कि लोग क्या सोच रहे हैं। यहोवा मेरी प्रार्थना है कि तू इन लोगों के लिये एक नेता चुन।* [17]मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा एक ऐसा नेता चुन जो उन्हें इस प्रदेश से बाहर ले जाएगा तथा उन्हें नये प्रदेश में पहुँचायेगा। तब यहोवा के लोग गड़ेरिया रहित भेड़ के समान नहीं होंगे।"

[18]इसलिए यहोवा ने मूसा से कहा, नून का पुत्र यहोशू नेता होगा। यहोशू बहुत बुद्धिमान है* उसे नया नेता बनाओ। [19]उससे याजक एलीआज़ार और सभी लोगों के सामने खड़े होने को कहो। तब उसे नया नेता बनाओ। [20]"लोगों को यह दिखाओ कि तुम उसे नेता बना रहे हो, तब सभी उसका आदेश मानेंगे। [21]यदि यहोशू कोई विशेष निर्णय लेना चाहेगा तो उसे याजक एलीआज़ार के पास जाना होगा। एलीआज़ार ऊरीम* का उपयोग यहोवा के उत्तर को जानने के लिए करेगा। तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोग वह करेंगे जो परमेश्वर कहेगा। यदि परमेश्वर कहेगा, 'युद्ध करने जाओ।' तो वे युद्ध करने जाएंगे और यदि परमेश्वर कहे, 'घर जाओं,' तो घर जायेंगे।"

[22]मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। मूसा ने यहोशू से याजक एलीआज़ार और इस्राएल के सब लोगों के सामने खड़ा होने के लिए कहा। [23]तब मूसा ने अपने हाथों को उसके सिर पर यह दिखाने के लिए रखा कि वह नया नेता है। उसने यह वैसे ही किया जैसा यहोवा ने कहा था।

नित्य-भेंट

28 तब यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, [2]"इस्राएल के लोगों को यह आदेश दो। उनसे कहो कि वे ठीक समय पर निश्चयपूर्वक मुझे विशेष भेंट चढ़ाएं। उनसे कहो कि वे अन्नबलि और होमबलि चढ़ाएं। यहोवा उन होमबलियों की सुगन्ध पसन्द करता है। [3]इन होमबलियों को उन्हें यहोवा को चढ़ाना ही चाहिए। उन्हें

यहोवा ... चुन इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है– सभी लोगों की आत्माओं के परमेश्वर यहोवा, इन लोगों के लिए एक नेता नियुक्त कर ।

नून ... है शाब्दिक "नून के पुत्र यहोशू को चुनो। वह व्यक्ति अपने भीतर विशेष शक्ति रखता है।" इसका अर्थ यह हो सकता है कि यहोशू बहुत बुद्धिमान था अथवा यह भी अर्थ हो सकता है कि उसमें परमेश्वर की आत्मा का निवास था।

ऊरीम याजक प्रश्नों के परमेश्वर द्वारा दिए गए उत्तर को जानने के लिए ऊरीम और तुम्मीम का उपयोग करते थे। हम लोग ठीक ठीक नहीं जानते कि वे क्या थे, किन्तु संभवत: वे गोट की तरह थे। ये गोटें पत्थर, लकड़ी के टुकड़े या हड्डियां होती थीं। जो पांसे की तरह निर्णय करने में लोगों की सहायता के लिए फेंकी जाती थीं।

दोषरहित एक वर्ष के दो मेढ़े नित्य भेंट के रूप में चढ़ाना चाहिए। [4]मेढ़ों में से एक को सवेरे चढ़ाओ और दूसरे मेढ़े को सन्ध्या के समय। [5]इसके अतिरिक्त दो क्वार्ट* अन्नबलि एक क्वार्ट* जैतून के तेल के साथ मिला आटा दो।" [6](उन्होंने सीनै पर्वत पर नित्य भेंट देनी आरम्भ की थी। यहोवा ने उन होमबलियों की सुगन्ध पसन्द की थी।) [7]लोगों को होमबलि के साथ पेय भेंट भी चढ़ानी चाहिए। उन्हें हर एक मेमने के साथ एक क्वार्ट दाखमधु देनी चाहिए। उस पेय भेंट को पवित्र स्थान में वेदी पर डालो। यह यहोवा को भेंट है। [8]दूसरे मेढ़े की भेंट गोधूलि के समय चढ़ाओ। इसे सवेरे की भेंट की तरह चढ़ाओ। वैसे ही पेय भेंट भी चढ़ाओ। ये आग द्वारा दी गई भेंट होगी। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।"

सब्त भेंट

[9] "शनिवार को, जो छुट्टी का दिन है, एक वर्ष के दोष रहित दो मेमने जैतून के तेल के साथ मिले चार क्वार्ट*अच्छे आटे की अन्नबलि और पेय भेंट चढ़ाओ। [10]यह छुट्टी के दिन की विशेष भेंट है। यह भेंट नियमित नित्य भेंट और पेय भेंट के अतिरिक्त है।"

मासिक बैठकें

[11]"हर एक महीने के प्रथम दिन तुम यहोवा को होमबलि चढ़ाओगे। यह भेंट दोष रहित दो बैलों, एक मेढ़ा और सात एक वर्ष के मेमनों की होगी। [12]हर एक बैल के साथ जैतून के तेल के साथ मिले छः क्वार्ट* अच्छे आटे की अन्नबलि भी चढ़ाओ। हर एक मेढ़े के साथ जैतून के तेल के साथ मिले चार क्वार्ट अच्छे आटे की अन्नबलि भी चढ़ाओ। [13]हर एक मेमने के साथ जैतून के तेल के साथ मिले दो क्वार्ट अच्छे आटे की अन्नबलि भी चढ़ाओ। यह ऐसी होमबलि होगी जो यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। [14]पेय भेंट में दो क्वार्ट दाखमधु हर एक बैल के साथ, एक चौथाई क्वार्ट* दाखमधु हर एक मेढ़े के साथ और एक क्वार्ट दाखमधु हर एक मेमने के साथ होगी। यह होमबलि है जो वर्ष के हर एक महीने चढ़ाई जानी चाहिए। [15]नित्य दैनिक होमबलि और पेय भेंट के अतिरिक्त तुम्हें यहोवा को एक बकरा देना चाहिए। वह बकरा पापबलि होगा।

फसह पर्व

[16]"पहले महीने के चौदहवें दिन यहोवा के सम्मान में फसह पर्व होगा। [17]उस महीने के पन्द्रहवें दिन अख़मीरी रोटी की दावत आरम्भ होती है। यह पर्व सात दिन तक रहता है। तुम वही रोटी खा सकते हो जो अख़मीरी हो। [18]इस पर्व के पहले दिन तुम्हें विशेष बैठक बुलानी चाहिए। उस दिन तुम कोई काम नहीं करोगे। [19]तुम यहोवा को होमबलि दोगे। यह होमबलि दोष रहित दो बैल, एक मेढ़ा और एक वर्ष के सात मेमनों की होगी। [20-21]हर एक बैल के साथ जैतून के तेल के साथ मिले हुए छः क्वार्ट अच्छे आटे, मेढ़े के साथ जैतून के तेल के साथ मिले हुए चार क्वार्ट अच्छे आटे और हर एक मेमने के साथ दो क्वार्ट जैतून के तेल के साथ मिले हुए आटे की अन्नबलि भी होगी। [22]तुम्हें एक बकरा भी देना चाहिए। वह बकरा तुम्हारे लिए पापबलि होगा। यह तुम्हारे पापों को ढकेगा। [23]तुम लोगों को वे भेंटे उन भेंटों के अतिरिक्त देनी चाहिए जो तुम हर एक सवेरे होमबलि के रूप में देते हो।

[24]उसी प्रकार तुम्हें सात दिन तक आग द्वारा भेंट देनी चाहिए और इस के साथ पेय भेंट भी देनी चाहिए। यह भेंट यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। तुम्हें ये भेंटे होमबलि के अतिरिक्त देनी चाहिए जो तुम प्रतिदिन देते हो।

[25]तब फसह पर्व के सातवें दिन तुम एक विशेष बैठक बुलाओगे और उस दिन तुम कोई काम नहीं करोगे।

सप्ताहों का पर्व (कटनी का पर्व)

[26]"प्रथम फल* का पर्व या सप्ताहों के पर्व के समय तुम यहोवा को नये फसल की अन्नबलि दो। उस समय तुम्हें एक विशेष बैठक भी बुलानी चाहिए। तुम उस दिन कोई काम नहीं करोगे। [27]तुम होमबलि चढ़ाओगे। वह बलि यहोवा के लिए सुगन्ध होगी। तुम दोष रहित दो

दो क्वार्ट शाब्दिक "1/2 हिन।"
एक क्वार्ट शाब्दिक "1/4 हिन।"
चार क्वार्ट आठ प्याला।
छः क्वार्ट अर्थात् लगभग एक लीटर।
एक चौथाई क्वार्ट मूल में "1/3 हिन।"

प्रथम फल अन्न, जैसे गेहूँ और अन्य फसलें जो मई और जून में पकनी आरम्भ होती हैं। प्रथम काटी गई फसल परमेश्वर को दी जाती थी।

साँड़, एक मेढ़ा और एक वर्ष के सात मेमनों की भेंट चढ़ाओगे। [28]तुम हर एक साँड़ के साथ जैतून के तेल के साथ मिले हुए छः क्वार्ट अच्छे आटे, हर एक मेढ़े के साथ चार क्वार्ट [29]और हर एक मेमने के साथ दो क्वार्ट आटे की भेंट चढ़ाओगे। [30]तुम्हें अपने पापों को ढकने के लिए एक बकरे की बलि चढ़ानी चाहिए। [31]तुम्हें यह भेंट प्रतिदिन होमबलि और इसकी अन्नबलि के अतिरिक्त चढ़ानी चाहिए। निश्चय कर लो कि जानवरों में कोई दोष न हो और यह निश्चय कर लो कि पेय भेंट ठीक है।

बिगुल का पर्व

29 "सातवें महीने के प्रथम दिन एक विशेष बैठक होगी। तुम उस दिन कोई काम नहीं करोगे। वह बिगुल बजाने* का दिन है। [2]तुम होमबलि चढ़ाओगे। ये भेंटे यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। तुम दोष रहित एक साँड़, एक मेढ़ा और एक वर्ष के सात मेमनों की भेंट चढ़ाओगे। [3]तुम छः क्वार्ट तेल मिला अच्छा आटा भी बैल के साथ, चार क्वार्ट मेढ़े के साथ और [4] सात मेमनों में से हर एक के साथ दो क्वार्ट आटे की भेंट चढ़ाओगे। [5]इसके अतिरिक्त, पापबलि के लिए एक बकरा भी चढ़ाओगे। यह तुम्हारे पापों को ढकेगी। [6]ये भेंटे नवचन्द्र बलि और उसकी अन्नबलि के अतिरिक्त होगी और ये नित्य की भेंटों, इसकी अन्नबलियों तथा पेय भेंटों के अतिरिक्त होगी। ये नियम के अनुसार की जानी चाहिए। इन्हें आग में जलाना चाहिए। इसकी सुगन्धि यहोवा को प्रसन्न करेगी।

प्रायश्चित का दिन

[7]"सातवें महीने के दसवें दिन एक विशेष बैठक होगी। उस दिन तुम उपवास करोगे।* और तुम कोई काम नहीं करोगे। [8]तुम होमबलि दोगे। यह यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। तुम दोष रहित दो साँड़, एक मेढ़ा और एक वर्ष के सात मेमनों की भेंट चढ़ाओगे। [9]तुम हर एक बैल के साथ जैतून के मिले हुए छः क्वार्ट आटे, मेढ़े के साथ चार क्वार्ट आटे [10]और हर एक सातों मेमनों के साथ दो क्वार्ट आटे की भेंट चढ़ाओगे। [11]तुम एक बकरा भी पापबलि के रूप में चढ़ाओगे। यह प्रायश्चित के दिन की पापबलि के अतिरिक्त होगी। यह दैनिक बलि, अन्न और पेय भेंटों के भी अतिरिक्त होगी।

बटोरने का पर्व

[12]"सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन एक विशेष बैठक होगी। तुम उस दिन कोई काम नहीं करोगे। तुम यहोवा के लिए सात दिन तक छुट्टी मनाओगे। [13]तुम होमबलि चढ़ाओगे। यह यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। तुम दोष रहित तेरह साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमने भेंट चढ़ाओगे। [14]तुम तेरह बैलों में से हर एक के साथ जैतून के साथ मिले हुए छः क्वार्ट आटे, दोनों मेढ़ों में से हर एक के लिए चार क्वार्ट [15]और चौदह मेढ़ों में से हर एक के लिए दो क्वार्ट आटे की भेंट चढ़ाओगे। [16]तुम्हें एक बकरा भी पापबलियों के रूप में अर्पित करना चाहिए। यह दैनिकबलि, अन्न और पेय भेंट के अतिरिक्त होगी।

[17]"इस पर्व के दूसरे दिन तुम्हें दोष रहित बारह साँड़, दो मेढ़ें और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। [18]तुम्हें साँड़, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय भेंट भी चढ़ानी चाहिए। [19]तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

[20]"इस छुट्टी के तीसरे दिन तुम्हें दोष रहित ग्यारह साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। [21]तुम्हें बैलों, मेढों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भेंट भी चढ़ानी चाहिए। [22]तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होनी चाहिए।

[23]"इस छुट्टी के चौथे दिन तुम्हें दोष रहित दस साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। [24]तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भी भेंट चढ़ानी चाहिए। [25]तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

बिगुल बजाना या 'चिल्लाना' और शोर मचाना व खुशी मनाना भी शामिल है।

उपवास करोगे शाब्दिक, "तुम अपनी आत्मा को विनीत करोगे।"

[26]"इस छुट्टी के पाँचवें दिन तुम्हें दोष रहित नौ साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। [27]तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न तथा पेय की भी भेंट चढ़ानी चाहिए। [28]तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

[29]"इस छुट्टी के छठे दिन तुम्हें दोष रहित आठ साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। [30]तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भेंट भी चढ़ानी चाहिए। [31]तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

[32]"इस छुट्टी के सातवें दिन तुम्हें दोष रहित सात साँड़, दो मेढ़े, और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। [33]तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भी भेंट चढ़ानी चाहिए। [34]तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

[35]"इस छुट्टी का आठवाँ दिन तुम्हारी विशेष बैठक का दिन है। तुम्हें उस दिन कोई काम नहीं करना चाहिए। [36]तुम्हें होमबलि चढ़ानी चाहिए। ये आग द्वारा दी गई भेंट होगी। यह यहोवा के लिए मधुर सुगन्ध होगी। तुम्हें दोषरहित एक साँड़, एक मेढ़ा और एक-एक वर्ष के सात मेमने भेंट में चढ़ाने चाहिए। [37]तुम्हें साँड़, मेढ़ा और मेमनों के लिए अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भी भेंट देनी चाहिए। [38]तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होनी चाहिए।

[39]"वे (तुम्हारे) विशेष छुट्टियाँ यहोवा के सम्मान के लिए है। तुम्हें उन विशेष मनौतियों, स्वेच्छा भेंटों, होमबलियों मेलबलियों या अन्न और पेय भेंटें, जो तुम यहोवा को देना चाहते हो, उसके अतिरिक्त इन विशेष दिनों को मनाना चाहिए।"

[40]मूसा ने इस्राएल के लोगों से उन सभी बातों को कहा जो यहोवा ने उसे आदेश दिया था।

विशेष दिए गए वचन

30 मूसा ने सभी इस्राएली परिवार समूहों के नेताओं से बातें कीं। मूसा ने यहोवा के इन आदेशों के बारें में उनसे कहा: [2]यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को विशेष वचन देता है या यदि वह व्यक्ति यहोवा को कुछ विशेष अर्पित करने का वचन देता है तो उसे वैसा ही करने दो। किन्तु उस व्यक्ति को ठीक वैसा ही करना चाहिए जैसा उसने वचन दिया है।

[3]सम्भव है कि कोई युवती अपने पिता के घर पर ही रहती हो और वह युवती यहोवा को कुछ चढ़ाने का विशेष वचन देती है। [4]और उसका पिता इस वचन के विषय में सुनता है और उसे स्वीकार कर लेता है तो उस युवती को उस वचन को अवश्य ही पूरा कर देना चाहिए जिसे करने का उसने वचन दिया है। [5]किन्तु यदि उसका पिता उसके दिये गये वचन के बारे में सुन कर उसे स्वीकार नहीं करता तो उस युवती को वह वचन पूरा नहीं करना है। उसके पिता ने उसे रोका अत: यहोवा उसे क्षमा करेगा।

[6]सम्भव है कोई स्त्री अपने विवाह से पहले यहोवा को कोई वचन देती है अथवा बात ही बात में बिना सोचे विचारे कोई वचन ले लेती है और बाद में उसका विवाह हो जाता है [7]और पति दिये गये वचन के बारे में सुनता है और उसे स्वीकार करता है तो उस स्त्री को अपने दिये गए वचन के अनुसार काम को पूरा करना चाहिए। [8]किन्तु यदि पति दिये गए वचन के बारे में सुनता है और उसे स्वीकार नहीं करता तो स्त्री को अपने दिये गए वचन को पूरा नहीं करना पड़ेगा। उसके पति ने उसका वचन तोड़ दिया और उसने उसे उसकी कही बात को पूरा नहीं करने दिया, अत: यहोवा उसे क्षमा करेगा।

[9]कोई विधवा या तलाक दी गई स्त्री विशेष वचन दे सकती है। यदि वह ऐसा करती है तो उसे ठीक अपने वचन के अनुसार करना चाहिए। [10]एक विवाहित स्त्री यहोवा को कुछ चढ़ाने का वचन दे सकती है। [11]यदि उसका पति दिये गए वचन के बारे में सुनता है और उसे अपने वचन को पूरा करने देता है, तो उसे ठीक अपने दिए वचनों के अनुसार ही वह कार्य करना चाहिए। [12]किन्तु यदि उसका पति उसके दिये गए वचन को सुनता है और उसे वचन पूरा करने से इन्कार करता है, तो उसे अपने दिये वचन के अनुसार वह कार्य पूरा नहीं करना

पड़ेगा। इसका कोई महत्व नहीं होगा कि उसने क्या वचन दिया था, उसका पति उस वचन को भंग कर सकता है। यदि उसका पति वचन को भंग करता है, तो यहोवा उसे क्षमा करेगा। [13]एक विवाहित स्त्री यहोवा को कुछ चढ़ाने का वचन दे सकती है या स्वयं को किसी चीज़ से वंचित रखने का वचन दे सकती है* या वह परमेश्वर को कोई विशेष वचन दे सकती है। उसका पति उन वचनों में से किसी को रोक सकता है या पति उन वचनों में से किसी को पूरा करने दे सकता है। [14]पति अपनी पत्नी को कैसे अपने वचन पूरा करने देगा? यदि वह दिये वचन के बारे में सुनता है और उन्हें रोकता नहीं है तो स्त्री को अपने दिए वचन के अनुसार कार्य को पूरा करना चाहिए। [15]किन्तु यदि पति दिये गए वचन के बारे में सुनता है और उन्हें रोकता है तो उसके वचन तोड़ने का उत्तरदायित्व पति पर होगा।*

[16]ये आदेश है जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया। ये आदेश एक व्यक्ति और उसकी पत्नी के बारे में है तथा पिता और उसकी उस पुत्री के बारे में है जो युवती हो और अपने पिता के घर में रह रही हो।

इस्राएल ने मिद्यानियों के विरुद्ध प्रत्याक्रमण किया

31 यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, [2] "मैं इस्राएल के लोगों के साथ मिद्यानियों ने जो किया है उसके लिए उन्हें दण्ड दूँगा। उसके बाद, मूसा, तू मर जाएगा।"*

[3]इसलिए मूसा ने लोगों से बात की। उसने कहा, "अपने कुछ पुरुषों को युद्ध के लिये तैयार करो। यहोवा उन व्यक्तियों का उपयोग मिद्यानियों को दण्ड देने में करेगा। [4] ऐसे एक हजार पुरुषों को इस्राएल के हर एक कबीले से चुनो। [5]इस्राएल के सभी परिवार समूहों से बारह हजार सैनिक होंगे।"

[6]मूसा ने उन बारह हजार पुरुषों को युद्ध के लिए भेजा। उसने याजक एलीआज़ार को उनके साथ भेजा। एलीआज़ार ने अपने साथ पवित्र वस्तुएं, सींग और बिगुल ले लिये। [7]इस्राएली लोगों के साथ वैसे ही लड़े जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। उन्होंने सभी मिद्यानीं पुरुषों को मार डाला। [8]जिन लोगों को उन्होंने मार डाला उनमें एवी, रेकेम, सूर, हूर, और रेबा ये पाँच मिद्यानी राजा थे। उन्होंने बोर के पुत्र बिलाम को भी तलवार से मार डाला।

[9]इस्राएल के लोगों ने मिद्यानी स्त्रियों और बच्चों को बन्दी बनाया। उन्होंने उनकी सारी रेवड़ों, मवेशियों के झुण्डों और अन्य चीज़ों को ले लिया। [10]तब उन्होंने उनके उन सारे खेमों और नगरों में आग लगा दी जहाँ वे रहते थे। [11]उन्होंने सभी लोगों और जानवरों को ले लिया, [12]और उन्हें मूसा, याजक एलीआज़ार और इस्राएल के सभी लोगों के पास लाए। वे उन सभी चीज़ों को इस्राएल के डेरे में लाए जिन्हें उन्होंने वहाँ प्राप्त किया। इस्राएल के लोग मोआब में स्थित यरदन घाटी में डेरा डाले थे। यह यरीहो के समीप यरदन नदी के पूर्व की ओर था। [13]तब मूसा, याजक एलीआज़ार और लोगों के नेता सैनिकों से मिलने के लिए डेरों से बाहर गए।

[14]मूसा सेनापतियों पर बहुत क्रोधित था। वह उन एक हजार की सेना के संचालकों और सौ की सेना के संचालकों पर क्रोधित था जो युद्ध से लौट कर आए थे। [15]मूसा ने उनसे कहा, "तुम लोगों ने स्त्रियों को क्यों जीवित रहने दिया? [16]देखो यह स्त्री ही थी जिसके कारण बिलाम की घटना में इस्रालियों के लिए समस्याएं पैदा हुई और पोर में वे यहोवा के विरुद्ध हो गये जिससे इस्राएल के लोगों को महामारी झेलनी पड़ी। [17]अब सभी मिद्यानी लड़कों को मार डालो और उन सभी मिद्यानी स्त्रियों को मार डालो जो किसी व्यक्ति के साथ रही हैं। उन सभी स्त्रियों को मार डालो जिनका किसी पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध था। [18]तुम केवल उन सभी लड़कियों को जीवित रहने दे सकते हो जिनका किसी पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध नहीं हुआ है। [19]तब अन्य व्यक्तियों को मारने वाले तुम लोगों को सात दिन तक डेरे के बाहर रहना पडेगा। तुम्हें डेरे से बाहर रहना होगा यदि तुमने किसी शव को छूआ हो। तीसरे दिन, तुम्हें और तुम्हारें बन्दियों को अपने आप को शुद्ध करना होगा। तुम्हें वही कार्य सातवें दिन फिर करना

स्वंय को ... सकती है शाब्दिक, "अपनी आत्मा को विनीत करना।" इसका सामान्य तात्पर्य है कि अपने शरीर को कुछ कष्ट दिया जाय, जैसे उपवास रखना।

पति ... होगा शाब्दिक, "वह पत्नी के दोष का भागी होता है।"

तू मर जाएगा शाब्दिक, "अपने पूर्वजों के साथ हो जाओगे।"

होगा। [20]तुम्हें अपने सभी कपड़े धोने चाहिए। तुम्हें चमड़े की बनी हर वस्तु ऊनी और लकड़ी की बनी वस्तुओं को भी धोना चाहिए। तुम्हें शुद्ध हो जाना चाहिए।"

[21]तब याजक एलीआज़ार ने सैनिकों से बात की। उसने कहा, "ये नियम वे ही हैं जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिए थे । वे नियम युद्ध से लौटने वाले सैनिकों के लिये हैं। [22-23]किन्तु जो चीज़ें आग में डाली जा सकती हैं उनके बारे में अलग–अलग नियम हैं। तुम्हें सोना, चाँदी, काँसा, लोहा, टिन या सीसे को आग में डालना चहिए और जब उन्हें पानी से धोओ वे शुद्ध हो जाएंगी। यदि चीज़ें आग में न डाली जा सकें तो तुम्हें उन्हें पानी से धोना चाहिए। [24]सातवें दिन तुम्हें अपने सारे वस्त्र धोने चाहिये। जब तुम शुद्ध हो जाओगे।"

[25]उसके बाद तुम डेरे में आ सकते हो। तब यहोवा ने मूसा से कहा, [26]"मूसा तुम्हें याजक एलीआज़ार और सभी नेताओं को चाहिये कि तुम उन बन्दियों, जानवरों और सभी चीजों को गिनों जिन्हें सैनिक युद्ध से लाए हों।

[27]तब उन चीज़ों को युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों और शेष इस्राएल के लोगों में बाँट देना चाहिए। [28]जो सैनिक युद्ध में भाग लेने गये थे उनसे उन चीज़ों का आधा लो। वह हिस्सा यहोवा का होगा। हर एक पाँच सौ चीजों में से एक यहोवा का हिस्सा होगा। इसमें व्यक्ति मवेशी, गधे और भेड़े सम्मिलित हैं। [29]सैनिकों ने युद्ध में जो चीज़ें प्राप्त कीं उनका आधा हर एक से लो। तब उन चीज़ों को (प्रत्येक पाँच सौ में से एक) याजक एलीआज़ार को दो। वह भाग यहोवा का होगा [30]और तब बाकी के लोगों के आधे में से हर एक पचास चीज़ों में से एक चीज़ लो। इसमें व्यक्ति, मवेशी, गधा, भेड़ या कोई अन्य जानवर शामिल हैं। यह हिस्सा लेवीवंशी को दो। क्यों? क्योंकि लेवीवंशी यहोवा के पवित्र तम्बू की देखभाल करते हैं।"

[31]इस प्रकार मूसा और याजक एलीआज़ार ने वही किया जो मूसा को यहोवा का आदेश था। [32]सैनिकों ने छ: लाख पचहत्तर हजार भेड़ें, [33]बहत्तर हजार मवेशी, [34]एकसठ हजार गधे, [35]बत्तीस हजार स्त्रियाँ लूटी थी। ये ऐसी स्त्रियाँ थीं जिनका किसी पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध नहीं हुआ था। [36]जो सैनिक युद्ध में गए थे उन्होंने अपने हिस्से की तीन लाख सैंतीस हजार पाँच सौ भेड़ें प्राप्त कीं। [37]उन्होंने छ: सौ पचहत्तर भेड़ें यहोवा को दीं। [38]सैनिकों को छत्तीस हजार मवेशी मिले। उन्होंने बहत्तर यहोवा को दिए। [39]सैनिकों ने साढ़े तीस हजार गधे प्राप्त किये। उन्होंने यहोवा को एकसठ गधे दिये। [40]सैनिकों को सोलह हजार स्त्रियाँ मिलीं। उन्होंने बत्तीस स्त्रियाँ यहोवा को दीं। [41]यहोवा के आदेश के अनुसार मूसा ने यहोवा के लिए दी गई उन सारी भेटों को याजक एलीआज़ार को दे दिया।

[42]तब मूसा ने लोगों को प्राप्त आधे हिस्से को गिना। यह वह हिस्सा था जिसे मूसा ने युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों से लिया था। [43]लोगों ने तीन लाख सैंतीस हजार पाँच सौ भेड़ें, [44]छत्तीस हजार मवेशी, [45]तीस हजार पाँच सौ गधे [46]और सोलह हजार स्त्रियाँ प्राप्त कीं। [47]मूसा ने हर एक पचास चीज़ों पर एक चीज़ यहोवा के लिए ली। इसमें जानवर और व्यक्ति दोनों शामिल थे। तब उन चीज़ों को उसने लेवीवंशी को दे दिया। क्यों? क्योंकि वे यहोवा के पवित्र तम्बू की देखभाल करते थे। मूसा ने यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया।

[48]तब सेना के संचालक एक हजार सैनिकों के सेनापति तथा एक सौ सैनिकों के सेनापति मूसा के पास गए। [49]उन्होंने मूसा से कहा, "तेरे सेवक हम लोगों ने अपने सभी सैनिकों को गिना है। हम लोगों में से कोई भी कम नहीं है। [50]इसलिए हम लोग हर एक सैनिक से यहोवा की भेंट ला रहे हैं। हम लोग सोने की चीज़ें बाजूबन्द, शुजबन्द, अंगूठी, कान की बालियाँ और हार ला रहे हैं। यहोवा को ये भेंटे हमारे पापों के भुगतान के लिए हैं।"

[51]इसलिए मूसा ने वे सभी सोने की चीज़ें लीं और याजक एलीआज़ार को उन्हें दिया। [52]एक हजार सैनिकों और सौ सैनिकों के सेनापतियों ने जो सोना एकत्र किया और यहोवा को दिया उसका वजन लगभग चार सौ बीस पौंड* था। [53]प्रत्येक सैनिक ने युद्ध में प्राप्त चीज़ों का अपना हिस्सा अपने पास रख लिया। [54]मूसा और एलीआज़ार ने एक हजार सैनिकों और एक सौ सैनिकों के सेनापतियों से सोना लिया। तब उन्होंने सोने को मिलापवाले तम्बू में रखा। यह भेंट एक यादगार* के रूप में इस्राएल के लोगों के लिए यहोवा के सामने थी।

चार सौ बीस पौंड मूल में, 16,750 शेकेल।

यादगार कोई ऐसी चीज़ जिसे लोग इस रूप में याद करते हैं कि कभी अतीत में ऐसा हुआ।

यरदन नदी के पूर्व के परिवार समूह

32 रूबेन और गाद के परिवार समूहों के पास भारी संख्या में मवेशी थे। उन लोगों ने याजेर और गिलाद के समीप की भूमि को देखा। उन्होंने सोचा कि वह भूमि उनके मवेशियों के लिए ठीक है। [2]इसलिए रूबेन और गाद परिवार समूह के लोग मूसा के पास आए। उन्होंने मूसा, याजक एलीआज़ार तथा लोगों के नेताओं से बात की। [3-4]उन्होंने कहा, "तेरे सेवक, हम लोगों के पास भारी संख्या में मवेशी हैं और वह भूमि जिसे यहोवा ने इस्राएल के लोगों को युद्ध में दिया है, मवेशियों के लिए ठीक है। इस प्रदेश में अतारोत, दीबोन याजेर, निम्रा, हेशबोन, एलाले, सबाम* नबो और बोन शामिल हैं। [5]यदि तेरी स्वीकृति हो तो हम लोग चाहेंगे कि यह प्रदेश हम लोगों को दिया जाए। हम लोगों को यरदन नदी की दूसरी ओर न ले जाए।"

[6]मूसा ने रूबेन और गाद के परिवार समूह से पूछा, "क्या तुम लोग यहाँ बसोगे और अपने भाइयों को यहाँ से जाने और युद्ध करने दोगे? [7]तुम लोग इस्राएल के लोगों को निरुत्साहित क्यों करना चाहते हो? तुम लोग उन्हें नदी पार करने की सोचने नहीं दोगे और जो प्रदेश यहोवा ने उन्हें दिया है उसे नहीं लेने दोगे। [8]तुम्हारे पिताओं ने मेरे साथ ऐसा ही किया। कादेशबर्ने से मैंने जासूसों को प्रदेश की छान-बीन करने के लिये भेजा। [9]वे लोग एश्कोल घाटी तक गए। उन्होंने प्रदेश को देखा और उन लोगों ने इस्राएल के लोगों को उस धरती पर जाने को निरुत्साहित किया। उन लोगों ने इस्राएल के लोगों को उस प्रदेश में जाने की इच्छा नहीं करने दी जिसे यहोवा ने उनको दे दिया था। [10]यहोवा लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने यह निर्णय सुनाया: [11]'मिस्र से आने वाले लोगों और बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र का कोई भी व्यक्ति इस प्रदेश को नहीं देख पाएगा। मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब को यह वचन दिया था। मैंने यह प्रदेश इन व्यक्तियों को देने का वचन दिया था। किन्तु इन्होंने मेरा अनुसरण पूरी तरह नहीं किया। इसलिए वे इस प्रदेश को नहीं पाएंगे। [12]केवल कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू ने यहोवा का पूरी तरह अनुसरण किया।'

[13]"यहोवा इस्राएल के लोगों के विरुद्ध बहुत क्रोधित था। इसलिए यहोवा ने लोगों को चालीस वर्ष तक मरुभूमि में रोके रखा। यहोवा ने उनको तब तक वहाँ रोके रखा जब तक वे लोग, जिन्होंने यहोवा के विरुद्ध पाप किए थे, मर न गए [14]और अब तुम लोग वही कर रहे हो जो तुम्हारे पूर्वजों ने किया। अरे पापियों! क्या तुम चाहते हो कि यहोवा इस्राएल के लोगों के विरुद्ध और अधिक क्रोधित हो? [15]यदि तुम लोग यहोवा का अनुसरण करना छोड़ोगे तो यहोवा इस्राएल को और अधिक समय तक मरुभूमि में ठहरा देगा। तब तुम इन सभी लोगों को नष्ट कर दोगे!"

[16]किन्तु रूबेन और गाद परिवार समूहों के लोग मूसा के पास गए। उन्होंने कहा, "यहाँ हम लोग अपने बच्चों के लिए नगर और अपने जानवरों के लिए बाड़े बनाएंगे। [17]तब हमारे बच्चे उन अन्य लोगों से सुरक्षित रहेंगे जो इस प्रदेश में रहते हैं। किन्तु हम लोग प्रसन्नता से आगे बढ़कर इस्राएल के लोगों की सहायता करेंगे। हम लोग उन्हें उनके प्रदेश में ले जाएंगे। [18]हम लोग तब तक घर नहीं लौटेंगे जब तक हर एक व्यक्ति इस्राएल में अपनी भूमि का हिस्सा नहीं पा लेता। [19]हम लोग यरदन नदी के पश्चिम में कोई भूमि नहीं लेंगे। नहीं! हम लोगों की भूमि का भाग यरदन नदी के पूर्व ही है।"

[20]मूसा ने उनसे कहा, "यदि तुम लोग यह सब करोगे तो यह भूमि तुम लोगों की होगी। किन्तु तुम्हारे सैनिक यहोवा के सामने युद्ध में जाने चाहिए। [21]तुम्हारे सैनिकों को यरदन नदी पार करनी चाहिए और शत्रु को उस देश को छोड़ने के लिए विवश करना चाहिए। [22]जब हम सभी को भूमि प्राप्त कराने में यहोवा सहायता कर चुके तब तुम घर वापस जा सकते हो। तब यहोवा और इस्राएल तुमको अपराधी नहीं मानेंगे। तब यहोवा तुमको यह प्रदेश लेने देगा। [23] किन्तु यदि तुम ये बातें पूरी नहीं करते हो, तो तुम लोग यहोवा के विरुद्ध पाप करोगे और यह गाँठ बांधो कि तुम अपने पाप के लिए दण्ड पाओगे। [24]अपने बच्चों के लिए नगर और अपने जानवरों के लिए बाड़े बनाओ। किन्तु उसके बाद उसे पूरा करो जिसे करने का तुमने वचन दिया है।"

[25]तब गाद और रूबेन परिवार समूह के लोगों ने मूसा से कहा, "हम तेरे सेवक हैं। तू हमारा स्वामी है। इसलिए हम लोग वही करेंगे जो तू कहता है। [26]हमारी पत्नियाँ,

---

सबाम या, "शबम।"

बच्चे और हमारे जानवर गिलाद नगर में रहेंगे। [27]किन्तु तेरे सेवक, हम यरदन नदी को पार करेंगे। किन्तु हम लोग यहोवा के सामने अपने स्वामी के कथनानुसार युद्ध में कूद पड़ेंगे।"

[28]मूसा ने याजक एलीआज़ार, नून के पुत्र यहोशू और इस्राएल के परिवार समूह के सभी नेताओं को उनके बारे में आज्ञा दी। [29]मूसा ने उनसे कहा, "गाद और रूबेन के पुरुष यरदन नदी को पार करेंगे। वे यहोवा के आगे युद्ध में धावा बोलेंगे। वे देश जीतने में तुम्हारी सहायता करेंगे और तुम लोग गिलाद का प्रदेश उनके हिस्से के रूप में उन्हें दोगे। [30]वे वचन देते हैं कि वे कनान देश को जीतने में तुम्हारी सहायता करेंगे।"

[31]गाद और रूबेन के लोगों ने उत्तर दिया, "हम लोग वही करने का वचन देते हैं जो यहोवा का आदेश है। [32]हम लोग यरदन नदी पार करेंगे और कनान देश पर यहोवा के सामने धावा बोलेंगे और हमारे देश का भाग यरदन नदी के पूर्व की भूमि होगी।"

[33]इस प्रकार मूसा ने उस प्रदेश को गाद, रूबेन और मनश्शे परिवार समूह के आधे लोगों को दिया। मनश्शे यूसुफ का पुत्र था। उस प्रदेश में एमोरियों के राजा सीहोन का राज्य और बाशान के राजा ओग का राज्य शामिल थे। उस प्रदेश में उस क्षेत्र के चारों ओर के नगर भी शामिल थे।

[34]गाद के लोगों ने दीबोन, अतारोत, अरोएर, [35]अत्रौत, शोपान, याजेर, योगबहा, [36]बेतनिम्रा और बेथारान नगरों को बनाया। उन्होंने मजबूत चाहारदीवारों के साथ नगरों को बनाया और अपने जानवरों के लिए बाड़े बनाए।

[37]रूबेन के लोगों ने हेशबोन, एलाले, किर्यातैम, [38]नबो, बालमोन, मूसा–बॉथ और तित्पा नगर बनाए। उन्होंने जिन नये नगरों को फिर से बनाया उनके पुराने नामों का ही उपयोग किया गया किन्तु नबो और बालमोन को नये नाम दिये गए।

[39]मनश्शे परिवार समूह की सन्तान माकीर से उत्पन्न लोग गिलाद को गए। उन्होंने नगर को हराया। उन्होंने उन एमोरी को हराया जो वहाँ रहते थे। [40]इसलिए मनश्शे के परिवार समूह के माकीर को मूसा ने गिलाद दिया। इसलिए उसका परिवार वहाँ बस गया। [41]मनश्शे की सन्तान याईर ने वहाँ के छोटे नगरों को हराया। तब उसने उन्हें याईर के नगर नाम दिया। [42]नोबह ने कनात और उसके पास के छोटे नगरों को हराया। तब उसने उस स्थान का नाम अपने नाम पर नोबह रखा।

मिस्र से इस्राएलियों की यात्रा

33 मूसा और हारून ने इस्राएल के लोगों को मिस्र से समूहों में निकाला ये वे स्थान हैं जिनकी उन्होंने यात्रा की। [2]मूसा ने उन यात्राओं के बारे में लिखा। मूसा ने वे बातें लिखीं जिन्हें यहोवा चाहता था। वे यात्रायें यहाँ हैं।

[3]प्रथम महीने के पन्द्रहवें दिन उन्होंने रामसेस छोड़ा। फसह पर्व के बाद सवेरे, इस्राएल के लोगों ने विजय के साथ अपने अस्त्र–शस्त्रों को उठाए हुए मिस्र से बाहर प्रस्थान किया। मिस्र के सभी लोगों ने उन्हें देखा। [4]मिस्री उन लोगों को जला रहे थे जिन्हें यहोवा ने मार डाला था। वे अपने सभी पहलौठे पुत्रों को जला रहे थे। यहोवा ने मिस्र के देवताओं के विरुद्ध अपना निर्णय दिखाया था।

[5]इस्राएल के लोगों ने रामसेस को छोड़ा और सुक्कोत की यात्रा की। [6]सुक्कोत से उन्होंने एताम की यात्रा की। वहाँ पर लोगों ने मरुभूमि के छोर पर डेरे डाले। [7]उन्होंने एताम को छोड़ा और पीहहीरोत को गए। यह बालसपोन के पास था। लोगों ने मिगदोल के पास डेरे डाले।

[8]लोगों ने पीहहीरोत छोड़ा और समुद्र के बीच से चले। वे मरुभूमि की ओर चले। तब वे तीन दिन तक एताम मरुभूमि से होकर चले। लोगों ने मारा में डेरे डाले। [9]लोगों ने मारा को छोड़ा और एलीम गए तथा वहाँ डेरे डाले। वहाँ पर बारह पानी के सोते थे और सत्तर खजूर के पेड़ थे।

[10]लोगों ने एलीम छोड़ा और लाल सागर के पास डेरे डाले।

[11]लोगों ने लालसागर को छोड़ा और सीन मरुभूमि में डेरे डाले।

[12]लोगों ने सीन मरुभूमि को छोड़ा और दोपका में डेरे डाले।

[13]लोगों ने दोपका छोड़ा और आलूश में डेरे डाले।

[14] लोगों ने आलूश छोड़ा और रपीदीम में डेरे डाले। वहाँ लोगों को पीने के लिए पानी नहीं था।

[15]लोगों ने रपीदीम छोड़ा और सीनै मरुभूमि में डेरे डाले।

[16]लोगों ने सीनै मरुभूमि को छोड़ा और किब्रोथत्तावा में डेरे डाले।

[17]लोगों ने किब्रोथत्तावा छोड़ा और हसेरोत में डेरे डाले।

[18]लोगों ने हसेरोत को छोड़ा और रित्मा में डेरे डाले।

[19]लोगों ने रित्मा को छोड़ा और रिम्मोनपेरेस में डेरे डाले।

[20]लोगों ने रिम्मोनपेरेस को छोड़ा और लिब्ना में डेरे डाले।

[21]लोगों ने लिब्ना छोड़ा और रिस्सा में डेरे डाले।

[22]लोगों ने रिस्सा छोड़ा और कहेलाता में डेरे डाले।

[23]लोगों ने कहेलाता छोड़ा और शेपेर पर्वत पर डेरे डाले।

[24]लोगों ने शेपेर पर्वत छोड़ा और हरादा में डेरे डाले।

[25]लोगों ने हरादा छोड़ा और मखेलोत में डेरे डाले।

[26]लोगों ने मखेलोत छोड़ा और तहत में डेरे डाले।

[27]लोगों ने तहत छोड़ा और तेरह में डेरे डाले।

[28]लोगों ने तेरह को छोड़ा और मित्का में डेरे डाले।

[29]लोगों ने मित्का छोड़ा और हशमोना में डेरे डाले।

[30]लोगों ने हशमोना को छोड़ा और मोसेरोत में डेरे डाले।

[31]लोगों ने मोसेरोत छोड़ा और बने–याकान में डेरे डाले।

[32]लोगों ने बने–याकान छोड़ा और होर्हग्गिदगाद में डेरे डाले।

[33]लोगों ने होर्हग्गिदगाद छोड़ा और योतबाता में डेरे डाले।

[34]लोगों ने योतबाता छोड़ा और अब्रोना में डेरे डाले।

[35]लोगों ने अब्रोना छोड़ा और एस्योनगेबेर में डेरे डाले ।

[36]लोगों ने एस्योनगेबेर छोड़ा और सीन मरुभूमि में कादेश में डेरे डाले।

[37] लोगों ने कादेश छोड़ा और होर में डेरे डाले। यह एदोम देश की सीमा पर एक पर्वत था। [38]याजक हारून ने यहोवा की आज्ञा मानी और वह होर पर्वत पर चढ़ा। हारून पाँचवें महीने के प्रथम दिन मरा। वह मिस्र को इस्राएल के लोगों द्वारा छोड़ने का चालीसवाँ वर्ष था। [39]हारून जब होर पर्वत पर मरा तब वह एक सौ तेईस वर्ष का था।

[40]अरात कनान के नेगेव प्रदेश में था। कनानी राजा ने वहाँ सुना कि इस्राएल के लोग आ रहे हैं। [41]लोगों ने होर पर्वत को छोड़ा और सलमोना में डेरे डाले।

[42]लोगों ने सलमोना को छोड़ा और पूनोन में डेरे डाले।

[43]लोगों ने पूनोन छोड़ा और ओबोस में डेरे डाले।

[44]लोगों ने ओबोस छोड़ा और अबारीम में डेरे डाले। यह मोआब देश की सीमा पर था।

[45]लोगों ने इयीम (इयीम अबारीम) को छोड़ा और दीबोन–गाद में डेरे डाले।

[46]लोगों ने दीबोन–गाद छोड़ा और अल्मोनदिबलातैम में डेरे डाले।

[47]लोगों ने अल्मोनदिबलातैम छोड़ा और नबो के पास अबारीम पर्वतों पर डेरे डाले।

[48]लोगों ने अबारीम पर्वतों को छोड़ा और यरदन नदी के पास मोआब के प्रदेश में डेरे डाले। यह यरीहो के पास था। [49]उन्होंने यरदन के पास डेरे डाले। उनके डेरे बेत्यशीमोत से अबेलशित्तीम चरागाह तक फैले थे। यह अबारीम मोआब के मैदानों में था।

[50]यरीहो के पार यरदन घाटी के मोआब के मैदानों में, यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, [51]"इस्राएल के लोगों से बात करो। उनसे यह कहो: तुम लोग यरदन नदी को पार करोगे। तुम लोग कनान देश में जाओगे। [52]तुम लोग उन लोगों से भूमि ले लोगे जिन्हें तुम वहाँ पाओगे। तुम लोगों को उनकी उत्कीर्ण मूर्तियों और प्रतीकों को नष्ट कर देना चाहिए। तुम्हें उनके सभी उच्च स्थानों को नष्ट कर देना चाहिए। [53]तुम वह देश लोगे और वहाँ बसोगे। क्यों? क्योंकि यह देश मैं तुमको दे रहा हूँ। यह तुम्हारे परिवारों का होगा। [54]तुम्हारा हर एक परिवार भूमि का हिस्सा पाएगा। तुम इस बात के लिए गोट डालोगे कि देश का कौन सा हिस्सा किस परिवार को मिलता है। बड़े परिवार भूमि का बड़ा हिस्सा पाएंगे। छोटे परिवार देश का छोटा भाग पाएंगे। भूमि उन लोगों को दी जाएगी जिनके नाम गोट निश्चित करेगी। हर एक परिवार समूह अपनी भूमि पाएगा।

[55]तुम लोगों को उन अन्य लोगों से देश खाली करा लेना चाहिए। यदि तुम उन लोगों को अपने देश में ठहरने दोगे तो वे तुम्हारे लिए बहुत परेशानियाँ उत्पन्न करेंगे। वे तुम्हारी आँखों में काँटे या तुम्हारी बगल के कीलें की

तरह होंगे। वे उस देश पर बहुत विपत्तियाँ लाएंगे जहाँ तुम रहोगे। [56]मैंने तुम लोगों को समझा दिया जो मुझे उनके साथ करना है और मैं तुम्हारे साथ वही करूँगा यदि तुम लोग उन लोगों को अपने देश में रहने दोगे।"

कनान की सीमाएँ

34 यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, [2]"इस्राएल के लोगों को यह आदेश दो: तुम लोग कनान देश में आ रहे हो। तुम लोग इस देश को हराओगे। तुम लोग पूरा कनान देश ले लोगे। [3]दक्षिणी ओर तुम लोग एदोम के निकट सीन मरुभूमि का भाग प्राप्त करोगे। तुम्हारी दक्षिणी सीमा मृत सागर की दक्षिणी छोर से आरम्भ होगी। [4]यह बिच्छूदर्रे (स्कार्पियन पास) के दक्षिण से गुजरेगी। यह सीन मरुभूमि से होकर कादेशबर्ने तक जाएगी, और तब हसरद्दार तथा तब यह अस्मोन से होकर जाएगी। [5]अस्मोन से सीमा मिस्र की नदी तक जाएगी और इसका अन्त भूमध्य सागर पर होगा। [6]तुम्हारी पश्चिमी सीमा भूमध्य सागर होगी। [7]तुम्हारी उत्तरी सीमा भूमध्य सागर पर आरम्भ होगी और होर पर्वत तक जाएगी। लबानोन में [8]होर पर्वत से यह लेबोहामात को जाएगी और तब सदाद को। [9]तब यह सीमा जिप्रोन को जाएगी तथा यह हसेरनान पर समाप्त होगी। इस प्रकार यह तुम्हारी उत्तरी सीमा होगी। [10]तुम्हारी पूर्वी सीमा एनान पर आरम्भ होगी और यह शापान तक जाएगी। [11]शापान से सीमा ऐन के पूर्व रिबला तक जाएगी। किन्नरेत सागर गलील के सागर के साथ की पहाड़ियों के साथ सीमा चलती रहेगी। [12]तब सीमा यरदन नदी के साथ-साथ चलेगी। इसका अन्त मृत सागर पर होगा। तुम्हारे देश के चारों ओर की सीमा यही है।"

[13]मूसा ने इस्राएल के लोगों को आदेश दिया: "यही वह देश है जिसे तुम प्राप्त करोगे। तुम लोग नौ परिवार समूहों और मनश्शे परिवार समूह के आधे लोगों के लिए भूमि बाँटने के लिए उनके नाम गोटें डालोगे। [14]रूबेन, गाद और मनश्शे के आधे परिवार के लोगों के परिवार समूहों ने पहले ही अपना प्रदेश ले लिया है। [15]उस ढाई परिवार समूह ने यरीहो के निकट यरदन नदी के पूर्व अपना प्रदेश ले लिया है।"

[16]तब यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, [17]"ये वे लोग हैं जो भूमि बाँटने में तुम्हारी सहायता करेंगे: याजक एलीआज़ार, नून का पुत्र यहोशू [18]और हर एक परिवार समूह से तुम एक नेता चुनोगे। ये लोग भूमि का बँटवारा करेंगे। [19]नेताओं के नाम ये हैं:

यहूदा के परिवार समूह से, यपुन्ने का पुत्र कालेब;
[20] शिमोन के परिवार समूह से,
अम्मीहूद का पुत्र शमूएल।
[21] बिन्यामीन के परिवार समूह से,
किसलोन का पुत्र एलीदाद।
[22] दान के परिवार समूह से, योग्ली का पुत्र बुक्की।
[23] मनश्शे (यूसुफ का पुत्र) के परिवार समूह से,
एपोद का पुत्र हन्नीएल।
[24] एप्रैम (यूसुफ का पुत्र) के परिवार समूह से,
शिप्तान का पुत्र कमूएल।
[25] जबूलून के परिवार समूह से,
पर्नाक का पुत्र एलीसापान।
[26] इस्साकार के परिवार समूह से,
अज्जान का पुत्र पलतीएल।
[27] आशेर के परिवार समूह से,
शलोमी का पुत्र अहीदूद।
[28] नप्ताली के परिवार समूह से,
अम्मीहूद का पुत्र पदहेल।"

[29] यहोवा ने इन पुरुषों को इस्राएल के लोगों में कनान की भूमि बाँटने के लिये चुना।

लेवीवंश के नगर

35 यहोवा ने मूसा से बात की जो यरीहो के पार यरदन नदी के किनारे मोआब की यरदन घाटी में हुई। यहोवा ने कहा, [2]"इस्राएल के लोगों से कहो कि उन्हें अपने हिस्से के देश में कुछ नगर लेवीवंशियों को देने चाहिए। इस्राएल के लोगों को नगर और उसके चारों ओर की चरागाहें लेवीवंशियों को देनी चाहिए। [3]लेवीवंशी उन नगरों में रह सकेंगे और सभी मवेशी तथा अन्य जानवर, जो लेवीवंशियों के होंगे, नगर के चारों ओर की चरागाहों में चर सकेंगे।

[4]तुम लेवीवंशियों को अपने देश का कितना भाग दोगे? नगरों की दीवारों से डेढ़ हजार फीट* बाहर

डेढ़ हजार फीट शाब्दिक, "एक हजार हाथ" लोग, संभवत: अपनी भेड़ों और मवेशियों को इस भूमि का उपयोग करने देते थे।

तक नापते जाओ। वह सारी भूमि लेवीवंशियों की होगी। [5]सारी तीन हजार फीट भूमि नगर के पूर्व तीन हजार फीट नगर के दक्षिण, तीन हजार फीट नगर के पश्चिम तथा तीन हजार फीट* नगर के उत्तर, भी लेवीवंशियों की होगी। उस भूमि के मध्य में नगर होगा। [6]उन नगरों में से छ: नगर सुरक्षा नगर होंगे। यदि कोई व्यक्ति किसी को संयोगवश मार डालता है तो वह सुरक्षा के लिए उन नगरों में भाग कर जा सकता है। उन छ: नगरों के अतिरिक्त तुम लेवीवंशियों को बयालीस अन्य नगर दोगे। [7]इस प्रकार तुम लेवीवंशियों को कुल अड़तालीस नगर दोगे। तुम उन नगरों को चारों ओर की भूमि भी दोगे। [8]इस्राएल के बड़े परिवार भूमि के बड़े भाग देंगे। इस्राएल के छोटे परिवार भूमि के छोटे भाग देंगे। सभी परिवार समूह लेवीवंशियों को अपने हिस्से के प्रदेश में से कुछ भाग प्रदान करेंगे।"

[9]तब यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, [10]"लोगों से यह कहो: तुम लोग यरदन नदी को पार करोगे और कनान देश में जाओगे। [11]तुम्हें "सुरक्षा नगर" बनाने के लिए नगरों को चुनना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति संयोगवश किसी को मार डालता है, तो यह सुरक्षा के लिए इन नगरों में से किसी में भागकर जा सकता है। [12]वह उस किसी भी व्यक्ति से सुरक्षित रहेगा जो मृतक व्यक्ति के परिवार का हो और उसे पकड़ना चाहता हो। वह तब तक सुरक्षित रहेगा जब तक न्यायालय में उनके बारे में निर्णय नहीं हो जाता। [13]"सुरक्षा नगर" छ: होंगे। [14]उन नगरों में तीन नगर यरदन नदी के पूर्व होंगे और तीन अन्य नगर कनान प्रदेश में यरदन नदी के पश्चिम में होंगे। [15]वे नगर इस्राएल के नागरिकों, विदेशियों और यात्रियों के लिए सुरक्षा नगर होंगे। कोई भी व्यक्ति, जो संयोगवश किसी को मार डालता है, इन किसी एक नगर में भाग कर जा सकेगा।

[16]"यदि कोई व्यक्ति किसी को मारने के लिए लोहे का हथियार उपयोग में लाता है, तो उस व्यक्ति को मरना चाहिए [17]और यदि कोई व्यक्ति एक पत्थर उठाता है और किसी को मार डालता है, तो उसे भी मरना चाहिए। पत्थर उस आकार का होना चाहिए जिसे व्यक्तियों को मारने के लिए प्राय: उपयोग में लाया जाता है। [18]यदि कोई व्यक्ति किसी लकड़ी का उपयोग करता है और किसी को मार डालता है, तो उसे मरना चाहिए। लकड़ी एक हथियार के रूप में होनी चाहिए जिसका उपयोग प्राय: लोग मनुष्यों को मारने के लिए करते हैं। [19]मृतक व्यक्ति के परिवार का सदस्य* उस हत्यारे का पीछा कर सकता है और उसे मार सकता है।

[20-21]"कोई व्यक्ति किसी पर हाथ से प्रहार कर सकता है और उसे मार सकता है या कोई व्यक्ति किसी को धक्का दे सकता है और उसे मार सकता है या कोई व्यक्ति पर कुछ फेंक सकता है और उसे मार सकता है। यदि उस मारने वाले ने घृणा के कारण ऐसा किया तो वह हत्यारा है। उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। मृतक के परिवार का कोई सदस्य उस हत्यारे का पीछा कर सकता है और उसे मार सकता है।

[22]"किन्तु कोई व्यक्ति संयोगवश किसी को मार सकता है। वह व्यक्ति उस व्यक्ति से घृणा नहीं करता था, वह घटना संयोगवश हो गई या कोई व्यक्ति कुछ फेंक सकता है और संयोगवश किसी को मार सकता है, उसने मारने का इरादा नहीं किया था। [23]या कोई व्यक्ति कोई बड़ा पत्थर फेंक सकता है और वह पत्थर किसी ऐसे व्यक्ति पर गिर पड़े जो उसे न देख रहा हो और वह उसे मार डाले। उस व्यक्ति ने किसी को मार डालने का इरादा नहीं किया था। उसने मृतक व्यक्ति के प्रति घृणा नहीं रखी थी, यह केवल संयोगवश हुआ। [24]यदि ऐसा हो, तो जाति निर्णय करेगी कि क्या किया जाए। जाति का न्यायालय यह निर्णय देगा कि मृतक व्यक्ति के परिवार का सदस्य उसे मार सकता है। [25]यदि न्यायालय को यह निर्णय देना है कि वह जीवित रहे तो उसे अपने "सुरक्षा नगर" में जाना चाहिए। उसे वहाँ तब तक रहना चाहिए जब तक महायाजक न मरे, यह महायाजक वही होना चाहिए जिसका अभिषेक पवित्र तेल से हुआ हो।

[26-27]"उस व्यक्ति को अपने "सुरक्षा नगर" की सीमाओं के कभी बाहर नहीं जाना चाहिए। यदि वह सीमाओं के पार जाता है और मृतक व्यक्ति परिवार का सदस्य उसे पकड़ता है और उसको मार डालता है तो वह सदस्य

तीन हजार फीट शाब्दिक "दो हजार हाथ।" लेवीवंशी इस भूमि का उपयोग, संभवत: बगीचों और अंगूर के बाग के लिये करते थे।

मृतक व्यक्ति परिवार का सदस्य शाब्दिक, "खून का बदला लेने वाला।" प्राय: यह मित्र या परिवार का सदस्य होता था जो मृतक व्यक्ति के हत्यारे का पीछा कर सकता था और उसे मार सकता था।

हत्या का अपराधी नहीं होता। [28]उस व्यक्ति को, जिसने संयोगवश किसी को मार डाला है, "सुरक्षा नगर" में तब तक रहना पड़ेगा जब तक महायाजक मर नहीं जाता। महायाजक के मरने के बाद वह व्यक्ति अपने देश को लौट सकता है। [29]ये नियम तुम्हारे लोगों के नगरों के लिये सदा के लिए नियम होंगे।

[30]"हत्यारे को तभी मृत्यु दण्ड दिया जा सकेगा। जब उसके विरोध में एक से अधिक गवाहियाँ होंगी। यदि एक ही गवाह होगा तो किसी व्यक्ति को प्राणदण्ड नहीं दिया जाएगा।

[31]"यदि कोई व्यक्ति हत्यारा है, तो उसे मार डालना चाहिए। धन के बदले उसे छोड़ नहीं दिया जाना चाहिए। उस हत्यारे को मार दिया जाना चाहिए।

[32]"यदि किसी व्यक्ति ने किसी को मारा और वह भाग कर किसी "सुरक्षा नगर" में गया, तो घर लौटने के लिये उससे धन न लो। उस व्यक्ति को उस नगर में तब तक रहना पड़ेगा जब तक याजक न मरे।

[33]"अपने देश को निरपराधों के खून से भ्रष्ट मत होने दो। यदि कोई व्यक्ति किसी को मारता है, तो उस अपराध का बदला केवल यही है कि उस व्यक्ति को मार दिया जाए। अन्य कोई ऐसा भुगतान नहीं है जो उस अपराध से उस देश को मुक्त कर सके। [34]मैं यहोवा हूँ! मैं इस्राएल के लोगों के साथ तुम्हारे देश में सदा रहता रहूँगा। मैं उस देश में रहता रहूँगा अत: निरपराध लोगों के खून से उस देश को अपवित्र न करो।"

सलोफाद की पुत्रियों का देश

36 मनश्शे यूसुफ का पुत्र था। माकीर मनश्शे का पुत्र था। गिलाद माकीर का पुत्र था। गिलाद परिवार के नेता मूसा और इस्राएल के परिवार समूह के नेताओं से बात करने गए। [2]उन्होंने कहा, "महोदय, यहोवा ने आदेश दिया कि हम लोग अपनी भूमि गोट डालकर प्राप्त करें और महोदय, यहोवा ने आदेश दिया कि सलोफाद की भूमि उसकी पुत्रियों को मिले। सलोफाद हमारा भाई था। [3]यह हो सकता है कि किसी दूसरे परिवार समूह का व्यक्ति सलोफाद की किसी पुत्री से विवाह करे। क्या वह भूमि हमारे परिवार से निकल जाएगी? क्या उस दूसरे परिवार समूह के व्यक्ति उस भूमि को प्राप्त करेंगे? क्या हम लोग वह भूमि खो देंगे जिसे हम लोगों ने गोट डालकर प्राप्त किया था? [4] लोग अपनी भूमि बेच सकते हैं। किन्तु जुबली के वर्ष*में सारी भूमि उस परिवार समूह को लौट जाती है जो इसका असली मालिक होता है। उस समय सलोफाद की पुत्रियों की भूमि कौन पाएगा? यदि वैसा होता है तो हमारा परिवार उस भूमि से सदा के लिए वंचित हो जाएगा।"

[5]मूसा ने इस्राएल के लोगों को यह आदेश दिया। यह आदेश यहोवा का था। "यूसुफ के परिवार समूह के ये व्यक्ति ठीक कहते हैं! [6]सलोफाद की पुत्रियों के लिए यहोवा का यह आदेश है: यदि तुम किसी से विवाह करना चाहती हो तो तुम्हें अपने परिवार समूह के किसी पुरुष के साथ ही विवाह करना चाहिए। [7]इस प्रकार, इस्राएल के लोगों में भूमि एक परिवार समूह से दूसरे परिवार समूह में नहीं जाएगी। हर एक इस्राएली अपने पूर्वजों की भूमि को ही अपने पास रखेगा। [8]और यदि कोई पुत्री पिता की भूमि प्राप्त करती है, तो उसे अपने परिवार समूह में से ही किसी के साथ विवाह करना चाहिए। इस प्रकार, हर एक व्यक्ति वही भूमि अपने पास रखेगा जो उसके पूर्वजों की थी। [9]इस प्रकार, इस्राएल के लोगों में एक परिवार समूह से दूसरे परिवार समूह में नहीं जाएगी। हर एक इस्राएली वह भूमि रखेगा जो उसके अपने पूर्वजों की थी।"

[10]सलोफाद की पुत्रियों ने, मूसा को दिये गए यहोवा के आदेश को स्वीकार किया। [11]इसलिए सलोफाद की पुत्रियाँ महला, तिर्सा, होग्ला, मिल्का और नोआ ने अपने चचेरे भाइयों के साथ विवाह किया। [12]उनके पति यूसुफ के पुत्र मनश्शे के परिवार समूह के थे, इसलिए उनकी भूमि उनके पिता के परिवार और परिवार समूह की बनी रही।

[13]इस प्रकार ये नियम और आदेश यरीहो के पार यरदन नदी के किनारे मोआब क्षेत्र में मूसा को दिये गए यहोवा के आदेश थे और मूसा ने उन नियमों और आदेशों को इस्राएल के लोगों को दिया।

जुबली वर्ष यहूदी इन नियमों को विशेष समय में अनुसरण करते थे। देखें लैव्य. 25

व्यवस्था विवरण

मूसा इस्राएल के लोगों से बातचीत करता है

1 मूसा द्वारा इस्राएल के लोगों को दिया गया सन्देश यह है। उसने उन्हें यह सन्देश तब दिया जब वे यरदन की घाटी में, यरदन नदी के पूर्व के मरुभूमि में थे। यह सूप के उस पार एक तरफ पारान मरुभूमि और दूसरी तरफ तोपेल, लाबान, हसेरोत और दीजाहाब नगरों के बीच में था।

[2]होरेब (सीनै) पर्वत से सेईर पर्वत से होकर कादेशबर्ने की यात्रा केवल ग्यारह दिन की है। [3]किन्तु जब मूसा ने इस्राएल के लोगों को इस स्थान पर सन्देश दिया तब इस्राएल के लोगों को मिस्र छोड़े चालीस वर्ष हो चुके थे। यह चालीस वर्ष के ग्यारहवें महीने का पहला दिन था, जब मूसा ने लोगों से बातें कीं तब उसने उनसे वही बातें कहीं जो यहोवा ने उसे कहने का आदेश दिया था। [4]यह यहोवा की सहायता से उनके द्वारा एमोरी लोगों के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग को पराजित किए जाने के बाद हुआ। (सीहोन हेशबोन और ओग अशतारोत एवं एद्रेई में रहते थे।) [5]उस समय वे यरदन नदी के पूर्व की ओर मोआब के प्रदेश में थे और मूसा ने परमेश्वर के आदेशों की व्याख्या की। मूसा ने कहा:

[6]"यहोवा, हमारे परमेश्वर ने होरेब (सीनै) पर्वत पर हमसे कहा। उसने कहा, 'तुम लोग काफी समय तक इस पर्वत पर ठहर चुके हो। [7]यहाँ से चलने के लिए हर एक चीज़ तैयार कर लो। एमोरी लोगों के यरदन घाटी, पहाड़ी क्षेत्र, पश्चिमी ढाल–अराबा का पहाड़ी प्रदेश, नीची भूमि, नेगेव* और समुद्र से लगे क्षेत्रों में जाओ। कनानी लोगों के देश में तथा लबानोन में परात नामक बड़ी नदी तक जाओ। [8]देखो, मैंने यह सारा देश तुम्हें दिया है। अन्दर जाओ, और स्वयं उस पर अधिकार करो। यह वही देश है जिसे देने का वचन मैंने तुम्हारे पूर्वजों इब्राहीम, इसहाक और याकूब को दिया था। मैंने यह प्रदेश उन्हें तथा उनके वंशजों* को देने का वचन दिया था।'"

मूसा प्रमुखों की नियुक्ति करता है

[9]मूसा ने कहा, "उस समय जब मैंने तुमसे बात की थी तब कहा था, मैं अकेले तुम लोगों का नेतृत्व करने और देखभाल करने मे समर्थ नहीं हूँ। [10]यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने क्रमश: लोगों को इतना बढ़ाया है कि तुम लोग अब उतने हो गए हो जितने आकाश में तारे हैं! [11]तुम्हें यहोवा, तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, आज तुम जितने हो, उससे हजार गुना अधिक करे! वह तुम्हें वह आशीर्वाद दे जो उसने तुम्हें देने का वचन दिया है! [12]किन्तु मैं अकेले तुम्हारी देखभाल नहीं कर सकता और न तो तुम्हारी सारी समस्याओं और वाद–विवाद का समाधान कर सकता हूँ। [13]'इसलिए हर एक परिवार समूह से कुछ व्यक्तियों को चुनो और मैं उन्हें तुम्हारा नेता बनाऊँगा। उन बुद्धिमान लोगों को चुनो जो समझदार और अनुभवी हों।'

[14]"और तुम लोगों ने कहा, 'हम लोग समझते हैं ऐसा करना अच्छा है।'

[15]"इसलिए मैंने, तुम लोगों द्वारा अपने परिवार समूह से चुने गए बुद्धिमान और अनुभवी व्यक्तियों को लिया और उन्हें तुम्हारा प्रमुख बनाया। मैंने उनमें से कुछ को हजार का, कुछ को सौ का, कुछ को पचास का और कुछ को दस का प्रमुख बनाया है। उनको मैंने तुम्हारे परिवार समूहों के लिये अधिकारी नियुक्त किया है।

[16]"उस समय, मैंने तुम्हारे इन प्रमुखों को तुम्हारा न्यायाधीश बनाया था। मैंने उनसे कहा, 'अपने लोगों के बीच के वाद–प्रतिवाद को सुनों। हर एक मुकदमे का फैसला सही–सही करो। इसका कोई महत्व नहीं कि मुकदमा दो इस्राएली लोगों के बीच है या इस्राएली

नेगेव यहूदा के दक्षिण का मरुस्थल।

वंशज किसी व्यक्ति के बच्चे और उनके भविष्य के परिवार।

और विदेशी के बीच। तुम्हें हर एक मुकदमे का फैसला सही करना चाहिए। [17]जब तुम फैसला करो तब यह न सोचो कि कोई व्यक्ति दूसरे की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। तुम्हें हर एक व्यक्ति का फैसला एक समान समझकर करना चाहिए। किसी से डरो नहीं क्योंकि तुम्हारा फैसला परमेश्वर से आया है। किन्तु यदि कोई मुकदमा इतना जटिल हो कि तुम फैसला ही न कर सको तो उसे मेरे पास लाओ और इसका फैसला मैं करूँगा।' [18]उसी समय, मैंने वे सभी दूसरी बातें बताई जिन्हें तुम्हें करना है।

जासूस कनान देश में गए

[19]"तब हम लोगों ने वह किया जो हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमें आदेश दिया। हम लोगों ने होरेब पर्वत को छोड़ा और एमोरी लोगों के पहाड़ी प्रदेश की यात्रा की। हम लोग उन बड़ी और सारी भयंकर मरुभूमि से होकर गुजरे जिन्हें तुमने भी देखा। हम लोग कादेशबर्ने पहुँचे। [20]तब मैंने तुमसे कहा, 'तुम लोग एमोरी लोगों के पहाड़ी प्रदेश में आ चुके हो। यहोवा हमारा परमेश्वर यह देश हमको देगा। [21]देखो, यह देश वहाँ है! आगे बढ़ो और भूमि को अपना बना लो! तुम्हारे पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर ने तुम लोगों को ऐसा करने को कहा है। इसलिए डरो नहीं, किसी प्रकार की चिन्ता न करो!'

[22]"तब तुम सभी मेरे पास आए और बोले, 'हम लोगों के पहले उस देश को देखने के लिए व्यक्तियों को भेजो। वे वहाँ के सभी कमजोर और शक्तिशाली स्थानों को देख सकते हैं। वे तब वापस आ सकते हैं और हम लोगों को उन रास्तों को बता सकते हैं जिनसे हमें जाना है तथा उन नगरों को बता सकते हैं जिन तक हमें पहुँचना है।'

[23]"मैंने सोचा कि यह अच्छा विचार है। इसलिए मैंने तुम लोगों में से हर परिवार समूह के लिए एक व्यक्ति के हिसाब से बारह व्यक्तियों को चुना। [24]तब वे व्यक्ति हमें छोड़कर पहाड़ी प्रदेश में गए। वे एशकोल की घाटी में गए और उन्होंने उसकी छान–बीन की। [25]उन्होंने उस प्रदेश के कुछ फल लिए और उन्हें हमारे पास लाए। उन्होंने हम लोगों को विवरण दिया और कहा, 'यह अच्छा देश है जिसे यहोवा हमारा परमेश्वर हमें दे रहा है!'

[26]"किन्तु तुमने उसमें जाने से इन्कार किया। तुम लोगों ने अपने यहोवा परमेश्वर के आदेश को मानने से इन्कार किया। [27]तुम लोगों ने अपने खेमों में शिकायत की। तुम लोगों ने कहा, 'यहोवा हमसे घृणा करता है! वह हमें मिस्र से बाहर एमोरी लोगों को देने के लिए ले आया। जिससे वे हमें नष्ट कर सकें! [28]अब हम लोग कहाँ जायें? हमारे बारह जासूस भाईयों ने अपने विवरण से हम लोगों को डराया। उन्होंने कहा: वहाँ के लोग हम लोगों से बड़े और लम्बे हैं, नगर बड़े हैं और उनकी दीवारें आकाश को छूती हैं और हम लोगों ने दानव लोगों* को वहाँ देखा।'

[29]"तब मैंने तुमसे कहा, 'घबराओ नहीं! उन लोगों से डरो नहीं! [30]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे सामने जायेगा और तुम्हारे लिए लड़ेगा। वह यह वैसे ही करेगा जैसे उसने मिस्र में किया। तुम लोगों ने वहाँ अपने सामने उसको [31]मरुभूमि में जाते देखा। तुमने देखा कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें वैसे ले आया जैसे कोई व्यक्ति अपने पुत्र को लाता है। यहोवा ने पूरे रास्ते तुम लोगों की रक्षा करते हुए तुम्हें यहाँ पहुँचाया है।'

[32]"किन्तु तब भी तुमने यहोवा अपने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया। [33]जब तुम यात्रा कर रहे थे तब वह तुम्हारे आगे तुम्हारे डेरे डालने के लिए जगह खोजने गया। तुम्हें यह बताने के लिए कि तुम्हें किस राह जाना है वह रात को आग में और दिन को बादल में चला।

लोगों के कनान जाने पर प्रतिबन्ध

[34]"यहोवा ने तुम्हारा कहना सुना, वह क्रोधित हुआ। उसने प्रतिज्ञा की। उसने कहा, [35]'आज तुम जीवित बुरे लोगों में से कोई भी व्यक्ति उस अच्छे देश में नहीं जाएगा जिसे देने का वचन मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया है। [36]यपुन्ने का पुत्र कालेब ही केवल उस देश को देखेगा। मैं कालेब को वह देश दूँगा जिस पर वह चला और मैं उस देश को कालेब के वंशजों को दूँगा। क्यों? क्योंकि कालेब ने वह सब किया जो मेरा आदेश था।'

[37]"यहोवा तुम लोगों के कारण मुझसे भी अप्रसन्न था। उसने मुझसे कहा, 'तुम भी उस देश में नहीं जा सकते। [38]किन्तु तुम्हारा सहायक, नून का पुत्र यहोशू उस देश में जाएगा। यहोशू को उत्साहित करो, क्योंकि वही इस्राएल के लोगों को भूमि पर अपना अधिकार जमाने के लिए ले जाएगा।'

दानव लोगों अनाकी के वंशज। जो हेब्रोन मे रहते थे। वे लम्बे और बलवान के रूप में प्रसिद्ध थे। देखें गिनती 13:33

[39]“और यहोवा ने हमसे कहा, ‘तुमने कहा, कि तुम्हारे छोटे बच्चे शत्रु द्वारा ले लिए जायेंगे। किन्तु वे बच्चे उस देश में जायेंगे। मैं तुम्हारी गलतियों के लिए तुम्हारे बच्चों को दोषी नहीं मानता। क्योंकि वे अभी इतने छोटे हैं कि वे यह जान नहीं सकते कि क्या सही है और क्या गलत। इसलिए मैं उन्हें वह देश दूँगा। तुम्हारे बच्चे अपने देश के रूप में उसे प्राप्त करेंगे। [40]लेकिन तुम्हें, पीछे मुड़ना चाहिए और लाल सागर जाने वाले मार्ग से मरुभूमि को जाना चहिए।’

[41]“तब तुमने कहा, ‘मूसा, हम लोगों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। किन्तु अब हम आगे बढ़ेंगे और जैसे पहले यहोवा हमारे परमेश्वर ने आदेश दिया था वैसे ही लड़ेंगे।’ तब तुम में से हर एक ने युद्ध के लिये शस्त्र धारण किये। तुम लोगों ने सोचा कि पहाड़ में जाना सरल होगा।

[42]“किन्तु यहोवा ने मुझसे कहा, ‘लोगों से कहो कि वे वहाँ न जायें और न लड़ें। क्यों? क्योंकि मैं उनका साथ नहीं दूँगा और उनके शत्रु उनको हरा देंगे।’

[43]“इसलिए मैंने तुम लोगों को समझाने की कोशिश की, किन्तु तुम लोगों ने मेरी एक न सुनी। तुम लोगों ने यहोवा का आदेश मानने से इन्कार कर दिया। तुम लोगों ने अपनी शक्ति का उपयोग करने की बात सोची। इसलिए तुम लोग पहाड़ी प्रदेश में गए। [44]तब एमोरी लोग तुम्हारे विरुद्ध आए। वे उस पहाड़ी प्रदेश में रहते हैं। उन्होंने तुम्हारा वैसे पीछा किया जैसे मधुमक्खियाँ लोगों का पीछा करती हैं। उन्होंने तुम्हारा सेईर से लेकर होर्मा तक पूरे रास्ते पीछा किया और तुम्हें वहाँ हराया। [45]तुम सब लौटे और यहोवा के सामने सहायता के लिये रोए–चिल्लाए। किन्तु यहोवा ने तुम्हारी बात कुछ न सुनी। उसने तुम्हारी बात सुनने से इन्कार कर दिया। [46]इसलिए तुम लोग कादेश में बहुत समय तक ठहरे।

इस्राएल के लोग मरुभूमि में भटकते हैं

2 “तब हम लोग मुड़े और लालसागर के सड़क पर मरुभूमि की यात्रा की। यह वह काम है जिसे यहोवा ने कहा कि हमें करना चाहिए। हम लोग सेईर के पहाड़ी प्रदेश से होकर कई दिन चले। [2]तब यहोवा ने मुझसे कहा, [3]‘तुम इस पहाड़ी प्रदेश से होकर काफी समय चल चुके हो। उत्तर की ओर मुड़ो। [4]और उसने मुझे तुमसे यह कहने को कहा: तुम सेईर प्रदेश से होकर गुजरोगे। यह प्रदेश तुम लोगों के सम्बन्धी एसाव के वंशजों का है। वे तुमसे डरेंगे। बहुत सावधान रहो। [5]उनसे लड़ो मत। मैं उनकी कोई भी भूमि एक फुट भी तुमको नहीं दूँगा। क्यों? क्योंकि मैंने एसाव को सेईर का पहाड़ी प्रदेश उसके अधिकार में दे दिया। [6]तुम्हें एसाव के लोगों को वहाँ पर भोजन करने या पानी पीने का मूल्य चुकाना चाहिए। [7]यह याद रखो कि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर, ने तुमको तुमने जो कुछ भी किया उन सभी के लिए आशीर्वाद दिया। वह इस विस्तृत मरुभूमि से तुम्हारा गुजरना जानता है। यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर इन चालीस वर्षों में तुम्हारे साथ रहा है। तुम्हें वे सभी चीज़ें मिली हैं जिनकी तुम्हें आवश्यकता थी।’

[8]“इसलिए हम लोग सेईर में रहने वाले अपने सम्बन्धी एसाव के लोगों के पास से आगे बढ़ गए। यरदन घाटी से एलत और एस्योनगेबेर नगरों को जाने वाली सड़क को पीछे छोड़ दिया। तब हम उस मरुभूमि की तरफ जाने वाली सड़क पर मुड़े जो मोआब में है।

आर–प्रदेश में इस्राएल

[9]“यहोवा ने मुझसे कहा, ‘मोआब के लोगों को परेशान न करो। उनके खिलाफ लड़ाई न छेड़ो। मैं उनकी कोई भूमि तुमको नहीं दूँगा। वे लूत के वंशज* हैं, और मैंने उन्हें आर प्रदेश दिया है।’”

([10]पहले, आर में एमी लोग रहते थे। वे शक्तिशाली लोग थे और वहाँ उनमें से बहुत से थे। वे अनाकी लोगों की तरह बहुत लम्बे थे। [11]अनाकी लोगो की तरह, एमी रपाई लोगों के एक भाग समझे जाते थे। किन्तु मोआबी लोग उन्हें “एमी” कहते थे। [12]पहले होरी लोग भी सेईर में रहते थे, किन्तु एसाव के लोगों ने उनकी भूमि ले ली। एसाव के लोगों ने होरीतों को नष्ट कर दिया। तब एसाव के लोग वहाँ रहने लगे जहाँ पहले होरीत रहते थे। यह वैसा ही काम था जैसा इस्राएल के लोगों द्वारा उन लोगों के प्रति किया गया जो यहोवा द्वारा इस्राएली अधिकार में भूमि को देने के पहले वहाँ रहते थे।)

[13]“यहोवा ने मुझसे कहा, ‘अब तैयार हो जाओ और जेरेद घाटी के पार जाओ।’ इसलिए हमने जेरेद घाटी को

लूत के वंशज लूत के पुत्र मोआब और अम्मोन थे। देखें उत्पत्ति 19:30–38

पार किया। [14]कादेशबर्ने को छोड़ने और जेरेद घाटी को पार करने में अड़तीस वर्ष का समय बीता था। उस पीढ़ी के सभी योद्धा मर चुके थे। यहोवा ने कहा था कि ऐसा ही होगा। [15]यहोवा उन लोगों के विरुद्ध तब तक रहा जब तक वे सभी नष्ट न हो गए।

[16]"जब सभी योद्धा मर गए और लोगों के बीच से सदा के लिए समाप्त हो गए। [17]तब यहोवा ने मुझसे कहा, [18]'आज तुम्हें आर नगर की सीमा से होकर जाना चाहिए। [19]जब तुम अम्मोनी लोगों के पास पहुँचो तो उन्हें तंग मत करना। उनसे लड़ना नहीं क्योंकि मैं तुम्हें उनकी भूमि नहीं दूँगा। क्यों? क्योंकि मैंने वह भूमि लूत के वंशजों को अपने पास रखने के लिए दी है।'"

[20](वह प्रदेश रपाई लोगों का देश भी कहा जाता है। वे ही लोग पहले वहाँ रहते थे। अम्मोनी के लोग उन्हें "जमजुम्मी लोग" कहते थे। [21]जमजुम्मी लोग बहुत शक्तिशाली थे और उनमें से बहुत से वहाँ थे। वे अनाकी लोगों की तरह लम्बे थे। किन्तु यहोवा ने जमजुम्मी लोगों को अम्मोनी लोगों के लिए नष्ट किया। अम्मोनी लोगों ने जमजुम्मी लोगों का प्रदेश ले लिया और अब वे वहाँ रहते थे। [22]परमेश्वर ने यही काम एसावी लोगों के लिए किया जो सेईर में रहते थे। उन्होंने वहाँ रहने वाले होरी लोगों को नष्ट किया। अब एसाव के लोग वहाँ रहते हैं जहाँ पहले होरी लोग रहते थे। [23]और कुछ लोग कप्तोर से आए और अव्वियों को उन्होंने नष्ट किया। अव्वी लोग अज्जा तक, नगरों में रहते थे किन्तु यहोवा ने अव्वियों को कप्तोरी लोगों के लिए नष्ट किया।)

एमोरी लोगों के विरुद्ध युद्ध करने का आदेश

[24]"यहोवा ने मुझसे कहा, 'यात्रा के लिए तैयार हो जाओ। अर्नोन नदी की घाटी से होकर जाओ। मैं तुम्हें हेशबोन के राजा एमोरी सीहोन पर विजय की शक्ति दे रहा हूँ। मैं तुम्हें उसका देश जीतने की शक्ति दे रहा हूँ। इसलिए उसके विरुद्ध लड़ो और उसके देश पर अधिकार करना आरम्भ करो। [25]आज मैं तुम्हें सारे संसार के लोगों को भयभीत करने वाला बनाना आरम्भ कर रहा हूँ। वे तुम्हारे बारे में सूचनाएँ पाएंगे और वे भय से काँप उठेंगे। जब वे तुम्हारे बारे में सोचेंगे तब वे घबरा जाएंगे।'

[26]"कदेमोत की मरुभूमि से मैंने हेशबोन के राजा सीहोन के पास एक दूत को भेजा। दूत ने सीहोन के सामने शान्ति-सन्धि रखी। उन्होंने कहा, [27]'अपने देश से होकर हमें जाने दो। हम लोग सड़क पर ठहरेंगे। हम लोग सड़क से दायें या बाएं नहीं मुड़ेंगे। [28]हम जो भोजन करेंगे या जो पानी पीएंगे उसका मूल्य चाँदी में चुकाएंगे। हम केवल तुम्हारे देश से यात्रा करना चाहते हैं। [29]अपने देश से होकर तुम हमें तब तक जाने दो जब तक हम यरदन नदी को पार कर उस देश में न पहुँचे जिसे यहोवा, हमारा परमेश्वर, हमे दे रहा है। अन्य लोगों में सेईर में रहने वाले एसाव तथा आर में रहने वाले मोआबी लोगों ने अपने देश से हमें गुजरने दिया है।'

[30]"किन्तु हेशबोन के राजा सीहोन ने, अपने देश से हमें गुजरने नहीं दिया। यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने, उसे बहुत हठी बना दिया था। यहोवा ने यह इसलिए किया कि वह सीहोन को तुम्हारे अधिकार में दे सके और उसने अब यह कर दिया है।

[31]"यहोवा ने मुझसे कहा, 'मैं राजा सीहोन और उसके देश को तुम्हें दे रहा हूँ। भूमि लेना आरम्भ करो। यह तब तुम्हारी होगी।'

[32]"तब राजा सीहोन और उसके सब लोग हमसे यहस में युद्ध करने बाहर निकले। [33]किन्तु हमारे परमेश्वर ने उसे हमें दे दिया। हमने उसे, उसके नगरों और उसके सभी लोगों को हराया। [34]हम लोगों ने उन सभी नगरों पर अधिकार कर लिया जो सीहोन के अधिकार में उस समय थे। हम लोगों ने हर एक नगर में लोगों–पुरुष, स्त्री तथा बच्चों को पूरी तरह नष्ट कर दिया। हम लोगों ने किसी को जीवित नहीं छोड़ा। [35]हम लोगों ने जिन नगरों को जीता उनसे केवल पशु और कीमती चीज़ें ली। [36]हमने अरोएर नगर को जो अर्नोन की घाटी में है तथा उस घाटी के मध्य के अन्य नगर को भी हराया। यहोवा हमारे परमेश्वर ने हमें अर्नोन घाटी और गिलाद के बीच के सभी नगरों को पराजित करने दिया। कोई नगर हम लोगों के लिए हमारी शक्ति से बाहर दृढ़ नहीं था। [37]किन्तु उस प्रदेश के निकट नहीं गए जो अम्मोनी लोगों का था। तुम यब्बोक नदी के तटों या पहाड़ी प्रदेश के नगरों के निकट नहीं गए। तुम ऐसी किसी जगह के निकट नहीं गए जिसे यहोवा, हमारा परमेश्वर हमें लेने देना नहीं चाहता था।

बाशान के लोगों के साथ युद्ध

3 "हम मुड़े और बाशान को जानेवाली सड़क पर चलते रहे। बाशान का राजा ओग और उसके सभी लोग प्रदेश में हम लोगों से लड़ने आए। [2]यहोवा ने मुझसे कहा, 'ओग से डरो मत, क्योंकि मैंने इसे तुम्हारे हाथ में देने का निश्चय किया है। मैं इसके सभी लोगों और भूमि को तुम्हें दूँगा। तुम इसे वैसे ही हराओगे जैसे तुमने हेशबोन के शासक एमोरी राजा सीहोन को हराया।'

[3]"इस प्रकार यहोवा, हमारे परमेश्वर ने बाशान के राजा ओग और उसके सभी लोगों को हमारे हाथ में दिया। हमने उसे इस तरह हराया कि उसका कोई आदमी नहीं बचा। [4]तब हम लोगों ने उन नगरों पर अधिकार किया जो उस समय ओग के थे। हमने ओग के लोगों से, बाशान में ओग के राज्य अर्गोब क्षेत्र के सारे साठ नगर लिए। [5]ये सभी नगर ऊँची दीवारों, द्वारों और द्वारों में मजबूत छड़ों के साथ बहुत शक्तिशाली थे। कुछ दूसरे नगर बिना दीवारों के थे। [6]हम लोगों ने उन्हें वैसे नष्ट किया जैसे हेशबोन के राजा सीहोन के नगरों को नष्ट किया था। हमने हर एक नगर को उनके लोगों के साथ, स्त्रियों और बच्चों को भी, नष्ट किया। [7]किन्तु हमने नगरों से सभी पशुओं और कीमती चीज़ों को अपने लिए रखा।

[8]"उस समय, हमने एमोरी लोगों के दो राजाओं से भूमि ली। यह भूमि यरदन नदी की दूसरी ओर है। यह भूमि अर्नोन घाटी से लेकर हेर्मोन पर्वत तक है। [9](सिदोनी हेर्मोन पर्वत को "सिर्योन" कहते हैं, किन्तु एमोरी इसे "सनीर" कहते हैं।) [10]हमने समतल मैदान के नगर और गिलाद और सारे बाशान में सल्का और एद्रेई तक के नगर पर आधिपत्य स्थापित किया। सल्का और एद्रेई बाशान में ओग के राज्य के नगर थे।"

([11]बाशान का राजा ओग अकेला व्यक्ति था जो रपाई लोगों में जीवित छोड़ा गया था। ओग की चारपाई लोहे की थी। यह लगभग नौ हाथ लम्बी और चार हाथ चौड़ी* थी। रब्बा नगर में यह चारपाई अभी तक है, जहाँ एमोरी लोग रहते हैं।)

यरदन नदी के पूर्व की भूमि

[12]"उस समय उस भूमि को हम लोगों ने जीता था। मैंने रूबेन परिवार समूह को और गादी परिवार समूह को अर्नोन घाटी के सहारे अरोएर से लेकर गिलाद के आधे पहाड़ी भाग तक उसके नगरों के साथ का प्रदेश दिया है। [13]मनश्शे के आधे परिवार समूह को मैंने गिलाद का दूसरा आधा भाग और पूरा बाशान दिया अर्थात् अर्गोब का पूरा क्षेत्र बाशान ओग का राज्य था।"

(बाशान का क्षेत्र रपाईयों का प्रदेश कहा जाता था। [14]मनश्शे के एक वंशज याईर ने अर्गोब के पूरे क्षेत्र अर्थात् बाशान, गशूरी और माका लोगों की सीमा तक के पूरे प्रदेश पर आधिपत्य स्थापित किया। याईर ने बाशान के इन शहरों को अपने नाम पर रखा। इसी से आज भी याईर नगर के नाम से पुकारा जाता है।)

[15]"मैंने गिलाद माकीर को दिया। [16]और रूबेन परिवार समूह को तथा गाद परिवार समूह को मैंने वह प्रदेश दिया जो अर्नोन घाटी से यब्बोक नदी तक जाता है। घाटी के मध्य एक सीमा है। यब्बोक नदी अम्मोनी लोगों की सीमा है। [17]यरदन घाटी में यरदन नदी पश्चिम सीमा निर्मित करती है। इस क्षेत्र के उत्तर में किन्नेरेत झील* और दक्षिण में अराबा सागर*है (जिसे लवण सागर कहते हैं।) यह पूर्व में पिसगा की चोटी के तलहटी में स्थित है।

[18]"उस समय, मैंने उन परिवार समूहों को यह आदेश दिया था: 'यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने तुमको रहने के लिए यरदन नदी के इस तरफ का प्रदेश दिया है। किन्तु अब तुम्हारे योद्धाओ को अपने हथियार उठाने चाहिए और अन्य इस्राएली परिवार समूहों को नदी के पार ले जाने की अगुवाई करना चाहिए। [19]तुम्हारी पत्नियाँ, तुम्हारे छोटे बच्चे और तुम्हारे पशु (मैं जानता हूँ कि तुम्हारे पास बहुत से पशु हैं।) यहाँ उन शहरों में रहेंगे जिन्हें मैंने तुम्हें दिया है। [20]किन्तु तुम्हें अपने इस्राएली सम्बन्धियों की सहायता तब तक करनी चाहिए जब तक वे यरदन नदी के दूसरे किनारे पर उस प्रदेश को पा नहीं लेते जो यहोवा ने दिया है। उनकी तब तक सहायता करो जब तक वे ऐसी शान्ति पा ले जैसी तुमने यहाँ पा ली है। तब तुम यहाँ अपने देश में लौट सकते हो जिसे मैंने तुम्हें दिया है।'

नौ हाथ लम्बी और चार हाथ चौड़ी शाब्दिक तेरह फुट लम्बी और छः फुट चौड़ी।

किन्नेरेत झील गलिली झील।

अराबा सागर मृत सागर।

[21]"तब मैंने यहोशू से कहा, 'तुमने वह सब देखा है। जो यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने इन दो राजाओं के साथ किया है। यहोवा ऐसा ही उन सभी राजाओं के साथ करेगा जिनके राज्य में तुम प्रवेश करोगे। [22]इन देशों के राजाओं से डरो मत, क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर, तुम्हारे लिए लड़ेगा।'

मूसा को कनान में प्रवेश करने से मना

[23]"मैंने उस समय यहोवा से विशेष कृपा की प्रार्थना की। [24]मैंने यहोवा से कहा, 'मेरे स्वामी, यहोवा, मैं तेरा सेवक हूँ। मैं जानता हूँ कि तूने उन शक्तिशाली और अद्भुत चीज़ों का एक छोटा भाग ही मुझे दिखाया है जो तू कर सकता है। स्वर्ग या पृथ्वी पर कोई ऐसा दूसरा ईश्वर नहीं है, जो तूने किया है तेरे समान महान और शक्तिशाली कार्य कर सके! [25]मैं तुमसे निवेदन करता हूँ कि तू मुझे पार जाने दे और यरदन नदी के दूसरी ओर के अच्छे प्रदेश, सुन्दर पहाड़ी प्रदेश लबानोन को देखने दे।'

[26]"किन्तु यहोवा तुम्हारे कारण मुझ पर अप्रसन्न था। उसने मेरी बात सुनने से इन्कार कर दिया। उसने मुझसे कहा, 'तुम अपनी बात यहीं खत्म करो! इसके बारे में एक शब्द भी न कहो। [27]पिसगा पर्वत की चोटी पर जाओ। पश्चिम की ओर, उत्तर की ओर, दक्षिण की ओर, पूर्व की ओर देखो। सारे प्रदेश को तुम अपनी आँखों से ही देखो क्योंकि तुम यरदन नदी को पार नहीं करोगे। [28]तुम्हें यहोशू को निर्देश देना चाहिए। उसे दृढ़ और साहसी बनाओ! क्यों? क्योंकि यहोशू लोगों को यरदन नदी के पार ले जाएगा। यहोशू उन्हें प्रदेश को लेने और उसमें रहने के लिए ले जाएगा। यही वह प्रदेश है जिसे तुम देखोगे।'

[29]"इसलिए हम बेतपोर की दूसरी ओर घाटी में ठहर गये।"

मूसा लोगों को परमेश्वर के नियमों पर ध्यान देने के लिए चेतावनी देता है

4 "इस्राएल, अब उन नियमों और आदेशों को सुनो जिनका उपदेश मैं दे रहा हूँ। उनका पालन करो। तब तुम जीवित रहोगे और जा सकोगे तथा उस प्रदेश को ले सकोगे जिसे यहोवा तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। [2]जो मैं आदेश देता हूँ उसमें और कुछ जोड़ना नहीं। तुम्हें उसमें से कुछ घटाना भी नहीं चाहिए। तुम्हें अपने यहोवा परमेश्वर के उन आदेशों का पालन करना चाहिए जिन्हें मैंने तुम्हें दिये हैं।

[3]"तुमने देखा है कि बालपोर में यहोवा ने क्या किया। तुम्हारे यहोवा परमेश्वर ने तुम्हारे उन सभी लोगों को नष्ट कर दिया जो पोर में बाल के अनुयायी थे। [4]किन्तु तुम लोग सभी जो यहोवा अपने परमेश्वर के साथ रहे आज जीवित हो।

[5]"ध्यान दो, मेरे परमेश्वर यहोवा ने जो मुझे आदेश दिये उन्ही नियमों, विधियों की मैंने तुमको शिक्षा दी है। मैंने यहोवा के इन नियमों की शिक्षा इसलिए दी कि जिस देश में प्रवेश करने और जिसे अपना बनाने के लिये तैयार हो उसमें उनका पालन कर सको। [6]इन नियमों का सावधानी से पालन करो। यह अन्य राष्ट्रों को सूचित करेगा कि तुम बुद्धि और समझ रखते हो। जब उन देशों के लोग इन नियमों के बारे में सुनेंगे तो वे कहेंगे कि, 'सचमुच, इस महान राष्ट्र (इस्राएल) के लोग बुद्धिमान और समझदार हैं।'

[7]"किसी राष्ट्र का कोई देवता उनके साथ उतना निकट नहीं रहता जिस तरह हमारा परमेश्वर यहोवा जो हम लोगों के पास रहता है, जब हम उसे पुकारते हैं [8]और कोई दूसरा राष्ट्र इतना महान नहीं कि उसके पास वे अच्छे विधि और नियम हो जिनका उपदेश मैं आज कर रहा हूँ। [9]किन्तु तुम्हें सावधान रहना है। निश्चय कर लो कि जब तक तुम जीवित रहोगे, तब तक तुम देखी गई चीजों को नहीं भूलोगे। तुम्हें इन उपदेशों को अपने पुत्रों और पौत्रों को देना चाहिए। [10]उस दिन को याद रखो जब तुम होरेब (सीनै) पर्वत पर अपने यहोवा परमेश्वर के सामने खड़े थे। यहोवा ने मुझसे कहा, 'मैं जो कुछ कहता हूँ, उसे सुनने के लिए लोगों को इकट्ठा करो। तब वे मेरा सम्मान सदा करना सीखेंगे जब तक वे धरती पर रहेंगे। और वे ये उपदेश अपने बच्चों को भी देंगे।' [11]तुम समीप आए और पर्वत के तले खड़े हुए। पर्वत में आग लग गई और वह आकाश छूने लगी। घने काले बादल और अंधकार उठे। [12]तब यहोवा ने आग में से तुम लोगों से बातें कीं। तुमने किसी के बोलने वाले की आवाज सुनी। किन्तु तुमने कोई रूप नहीं देखा। केवल आवाज सुनाई पड़ रही थी। [13]यहोवा ने तुम्हें यह साक्षीपत्र दिया। उसने दस आदेश दिए और उन्हें पालन करने का आदेश दिया।

यहोवा ने साक्षीपत्र के नियमों को दो पत्थर की शिलाओं पर लिखा। [14]उस समय यहोवा ने मुझे भी आदेश दिया कि मैं तुम्हें इन विधियों और नियमों का उपदेश दूँ। ये वे नियम व विधि हैं जिनका पालन तुम्हें उस देश में करना चाहिए जिसे तुम लेने और जिसमें रहने तुम जा रहे हो।

[15]"उस दिन यहोवा ने होरेब पर्वत की आग से तुमसे बातें कीं। तुमने उसको किसी शारीरिक रूप में नहीं देखा। [16]इसलिए सावधान रहो! पाप मत करो और किसी जीवित के रूप में किसी का प्रतीक या उसकी मूर्ति बनाकर अपने जीवन को चौपट न करो। ऐसी मूर्ति न बनाओ जो किसी पुरुष या स्त्री के सदृश हो। [17]ऐसी मूर्ति न बनाओ जो धरती के किसी जानवर या आकाश के किसी पक्षी की तरह दिखाई देती हो। [18]और ऐसी मूर्ति न बनाओ जो धरती पर रेंगने वाले या समुद्र की मछली की तरह दिखाई देती है। [19]जब तुम आकाश की ओर दृष्टि डालो और सूरज, चाँद, तारे और बहुत कुछ तुम जो कभी आकाश में देखो, उससे सावधान रहो कि तुम में उनकी पूजा या सेवा के लिए प्रलोभन न उत्पन्न हो। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने इन सभी चीजों को संसार के दूसरे लोगों को दिया है। [20]किन्तु यहोवा तुम्हें मिस्र से बाहर लाया है जो तुम्हारे लिए लोहे की भट्टी*थी। वह तुम्हें इसलिये लाया कि तुम उसके निज लोग वैसे ही बन सको जैसे तुम आज हो।

[21]"यहोवा तुम्हारे कारण मुझ से क्रुद्ध था। उसने एक विशेष वचन दिया: उसने कहा कि मैं यरदन नदी के उस पार नहीं जा सकता। उसने कहा कि मैं उस सुन्दर प्रदेश में प्रवेश नहीं पा सकता जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें दे रहा है। [22]इसलिए मुझे इस देश में मरना चाहिए। मैं यरदन नदी के पार नहीं जा सकता। किन्तु तुम तुरन्त उसके पार जाओगे और उस देश को रहने के लिए प्राप्त करोगे। [23]उस नये देश में तुम्हें सावधान रहना चाहिए कि तुम उस वाचा को न भूल जाओ जो यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने तुमसे की है। तुम्हें किसी भी प्रकार की मूर्ति नहीं बनानी चाहिये। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें उन्हें न बनाने की आज्ञा दी है। [24]क्यों? क्योंकि यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर अपने लोगों द्वारा किसी दूसरे देवता की पूजा से घृणा करता है और यहोवा नष्ट करने वाली आग की तरह प्रलयंकर हो सकता है!

[25]"जब तुम उस देश में बहुत समय रह लो और तुम्हारे पुत्र, पौत्र हों तब अपने को नष्ट न करो, बुराई न करो। किसी भी रूप में कोई मूर्ति न बनाओ। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है कि यह बुरा है! इससे वह क्रोधित होगा! [26]यदि तुम उस बुराई को करोगे तो मैं धरती और आकाश को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी के लिए बुलाता हूँ कि यह होगा। तुम शीघ्र ही नष्ट हो जाओगे। तुम यरदन नदी को उस देश को लेने के लिए पार कर रहे हो, किन्तु तुम वहाँ बहुत समय तक नहीं रहोगे। नहीं, तुम पूरी तरह नष्ट हो जाओगे! [27]यहोवा तुमको राष्ट्रों में तितर–बितर कर देगा और तुम लोगों में से उस देश में कुछ ही जीवित रहेंगे जिसमें यहोवा तुम्हें भेजेगा। [28]तुम लोग वहाँ मनुष्यों के बनाए देवताओं की पूजा करोगे, उन चीजों की जो लकड़ी और पत्थर की होंगी जो देख नहीं सकती, सुन नहीं सकतीं, खा नहीं सकतीं, सूँघ नहीं सकतीं। [29]किन्तु इन दूसरे देशों में तुम यहोवा अपने परमेश्वर की खोज करोगे। यदि तुम अपने हृदय और पूरी आत्मा से उसकी खोज करोगे तो उसे पाओगे। [30]जब तुम विपत्ति में पड़ोगे और वे सभी बातें तुम पर घटेंगी तो तुम यहोवा अपने परमेश्वर के पास लौटोगे और उसकी आज्ञा का पालन करोगे। [31]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर कृपालु है, वह तुम्हारा परित्याग नहीं करेगा। वह तुम्हें नष्ट नहीं करेगा। वह उस वाचा को नहीं भूलेगा जो उसने तुम्हारे पूर्वजों को वचन के रूप में दी।

उन महान कर्मों को सोचो जो यहोवा ने तुम्हारे लिये किये

[32]"क्या इतनी महान घटनाओं में से कोई इसके पहले हुई? कभी नहीं! बीते समय को देखो। तुम्हारे जन्म के पहले जो महान घटनाएँ घटी उन्हें याद करो। उस समय तक पीछे जाओ जब परमेश्वर ने धरती पर आदमी को बनाया। उन सभी घटनाओं को देखो जो संसार में कभी कहीं भी घटी हैं। क्या इस महान घटना जैसी घटना किसी ने कभी पहले सुनी है? नहीं! [33]तुम लोगों ने परमेश्वर को तुमसे आग में से बोलते सुना और तुम लोग अभी भी जीवित हो। [34]क्या ऐसी घटना किसी के साथ घटित हुई है? नहीं! और क्या किसी दूसरे ईश्वर ने कभी किसी

भट्टी वह जगह जहाँ बहुत प्रखर आग जलती है। यहाँ मिस्र की तुलना गर्म भट्टी से की गई है।

दूसरे राष्ट्रों के भीतर जाकर स्वयं वहाँ से लोगों को बाहर लाने का प्रयत्न किया है? नहीं! किन्तु तुमने स्वयं यहोवा अपने परमेश्वर को, इन अद्भुत कार्यों को करते देखा है। उसने अपनी शक्ति और दृढ़ता को दिखाया। तुमने उन विपत्तियों को देखा जो लोगों के लिए परीक्षा थी। तुम लोगों ने चमत्कार और आश्चर्य देखे। तुम लोगों ने युद्ध और जो भंयकर घटनाएँ हुई, उन्हें देखा। [35]उसने तुम्हें ये सब दिखाए जिससे तुम जान सको कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसके समान कोई अन्य देवता नहीं है। [36]यहोवा आकाश से अपनी बात इसलिए सुनने देता था जिससे वह तुम्हें शिक्षा दे सके। धरती पर उसने अपनी महान आग दिखायी और वह उसमें से बोला।

[37]"यहोवा तुम्हारे पूर्वजों से प्यार करता था। यही कारण था कि उसने उनके वंशजों अर्थात् तुमको चुना और यही कारण है कि यहोवा तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। वह तुम्हारे साथ था और अपनी बड़ी शक्ति से तुम्हें बाहर लाया। [38]जब तुम आगे बढ़े तो यहोवा ने तुम्हारे सामने से राष्ट्रों को बाहर जाने के लिए विवश किया। ये राष्ट्र तुमसे बड़े और अधिक शक्तिशाली थे। किन्तु यहोवा तुम्हें उनके देश में ले आया। उसने उनका देश तुमको रहने को दिया और यह देश आज भी तुम्हारा है।

[39]"इसलिए आज तुम्हें याद रखना चाहिए और स्वीकार करना चाहिए कि यहोवा परमेश्वर है। वहाँ ऊपर स्वर्ग में तथा यहाँ धरती का परमेश्वर है। यहाँ और कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है! [40]और तुम्हें उसके उन नियमों और आदेशों का पालन करना चाहिए जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। तब हर एक बात तुम्हारे और तुम्हारे उन बच्चों के लिए ठीक रहेगी जो तुम्हारे बाद होंगे और तुम लम्बे समय तक उस देश में रहोगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें सदा के लिए दे रहा है।"

मूसा सुरक्षा के नगरों को चुनता है

[41]तब मूसा ने तीन नगरों को यरदन नदी की पूर्व की ओर चुना। [42]यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को संयोगवश मार डाले तो वह इन नगरों में से किसी में भागकर जा सकता था और सुरक्षित रह सकता था। यदि वह मारे गए व्यक्ति से घृणा नहीं करता था और उसे मार डालने का इरादा नहीं रखता था तो वह उन नगरों में से किसी एक में जा सकता था और उसे प्राण–दण्ड नहीं दिया जा सकता था। [43]मूसा ने जिन तीन नगरों को चुना, वे ये थे: रुबेनी लोगों के लिए मरुभूमि की मैदानी भूमि में बेसेर; गादी लोगों के लिए गिलाद में रामोत और मनश्शे लोगों को लिए बाशान में गोलान।

मूसा के नियमों का परिचय

[44]इस्राएली लोगों के लिए जो नियम मूसा ने दिया वह यह है। [45]ये उपदेश, विधि और नियम मूसा ने लोगों को तब दिये जब वे मिस्र से बाहर आए। [46]मूसा ने इन नियमों को तब दिया जब लोग यरदन नदी के पूर्वी किनारे पर बेतपोर के पार घाटी में थे। वे एमोरी राजा सीहोन के देश में थे, जो हेशबोन में रहता था। (मूसा और इस्राएल के लोगों ने सीहोन को तब हराया था जब वे मिस्र से आए थे। [47]उन्होंने सीहोन के देश को अपने पास रखने के लिए ले लिया था। ये दोनों एमोरी राजा यरदन नदी के पूर्व में रहते थे। [48]यह प्रदेश अर्नोन घाटी के सिरे पर स्थित अरोएर से लेकर सीओन*पर्वत तक फैला था, (अर्थात् हेर्मोन पर्वत तक।) [49]इस प्रदेश में यरदन नदी के पूर्व का पूरा अराबा सम्मिलित था। दक्षिण में यह अराबा सागर तक पहुँचता था और पूर्व में पिसगा पर्वत के चरण तक पहुँचता था।)

दस आदेश

5 मूसा ने इस्राएल के सभी लोगों को एक साथ बुलाया और उनसे कहा, "इस्राएल के लोगों, आज जिन नियम व विधियों को मैं बता रहा हूँ उन्हें सुनो। इन नियमों को सीखो और दृढ़ता से उनका पालन करो। [2]यहोवा, हम लोगों के परमेश्वर ने होरेब (सीनै) पर्वत पर हमारे साथ वाचा की थी। [3]यहोवा ने यह वाचा हम लोगों के पूर्वजों के साथ नहीं की थी, अपितु हम लोगों के साथ की थी। हाँ, हम लोगों के साथ जो यहाँ आज जीवित हैं। [4]यहोवा ने पर्वत पर तुमसे आमने–सामने बातें कीं। उसने तुम से आग में से बातें कीं। [5]उस समय तुमको यह बताने के लिए कि यहोवा ने क्या कहा, मैं तुम लोगों और यहोवा के बीच खड़ा था। क्यों? क्योंकि तुम आग से डर गए थे और तुमने पर्वत पर जाने से इन्कार कर दिया था। यहोवा ने कहा: [6]मैं यहोवा तुम्हारा वह परमेश्वर हूँ जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाया जहाँ तुम दास की तरह रहते थे।

सीओन या सिर्योन।

[7]“मेरे अतिरिक्त किसी अन्य देवता की पूजा न करो।
[8]“किसी की मूर्तियाँ या किसी के चित्र जो आकाश में ऊपर, पृथ्वी पर या नीचे समुद्र में हो, न बनाओ।
[9]“किसी प्रकार के प्रतीक की पूजा या सेवा न करो। क्यों? क्योंकि मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं अपने लोगों द्वारा किसी अन्य देवता की पूजा से घृणा करता हूँ। ऐसे लोग जो मेरे विरुद्ध पाप करते हैं, मेरे शत्रु हो जाते हैं। मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा और मैं उनके पुत्रों, पौत्रों और प्रपौत्रों को दण्ड दूँगा। [10]किन्तु मैं उन लोगों पर बहुत दयालु रहूँगा जो मुझसे प्रेम करते हैं और मेरे आदेशों को मानते हैं। मैं उनकी सहस्र पीढ़ी तक उन पर दयालु रहूँगा!
[11]“यहोवा, अपने परमेश्वर के नाम का उपयोग गलत ढ़ंग से न करो। यदि कोई व्यक्ति उसके नाम का उपयोग गलत ढ़ंग से करता हो तो वह दोषी है और यहोवा उसे निर्दोष नहीं बनाएगा।
[12]“सब्त के दिन को विशेष महत्व देना याद रखो। यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने आदेश दिया है कि तुम सब्त के दिन को सप्ताह के अन्य दिनों से भिन्न करो। [13]पहले छः दिन तुम्हारे काम करने के लिए हैं। [14]किन्तु सातवाँ दिन यहोवा तुम्हारे परमेश्वर के सम्मान में आराम का दिन है। इसलिए सब्त के दिन कोई व्यक्ति काम न करे, अर्थात् तुम, तुम्हारे पुत्र, तुम्हारी पुत्रियाँ, तुम्हारे सेवक, दास स्त्रियाँ, तुम्हारी गायें, तुम्हारे गधे, अन्य जानवर, और तुम्हारे ही नगरों में रहने वाले विदेशी, कोई भी नहीं! तुम्हारे दास तुम्हारी ही तरह आराम करने की स्थिति में होने चाहिए। [15]यह मत भूलो कि तुम मिस्र में दास थे। यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर महान शक्ति से तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। उसने तुम्हें स्वतन्त्र किया। यही कारण है कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर आदेश देता है कि तुम सब्त के दिन को हमेशा विशेष दिन मानो।
[16]“अपने माता–पिता का सम्मान करो। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें यह करने का आदेश दिया है। यदि तुम इस आदेश का पालन करते हो तो तुम्हारी उम्र लम्बी होगी और उस देश में जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमको दे रहा है तुम्हारे साथ सब कुछ अच्छा होगा।
[17]“किसी की हत्या न करो।
[18]“व्यभिचार का पाप न करो।
[19]“कोई चीज मत चुराओ।
[20]“दूसरों ने जो कुछ किया है उसके बारे में झूठ मत बोलो।
[21]“तुम दूसरों की चीज़ों को अपना बनाने की इच्छा न करो। दूसरे व्यक्ति की पत्नी, घर, खेत, पुरुष या स्त्री सेवक, गायें और गधे को लेने की इच्छा तुम्हें नहीं करनी चाहिए!”

लोगों का भय

[22]मूसा ने कहा, “यहोवा ने ये आदेश तुम सभी को दिये जब तुम एक साथ पर्वत पर थे। यहोवा ने स्पष्ट शब्दों में बातें कीं और उसकी तेज आवाज आग, बादल और घने अन्धकार से सुनाई दे रही थी। जब उसने यह आदेश दे दिये तब और कुछ नहीं कहा। उसने अपने शब्दों को दो पत्थर की शिलाओं पर लिखा और उन्हें मुझे दे दिया।

[23]“तुमने आवाज को अंधेरे में तब सुना जब पर्वत आग से जल रहा था। तब तुम मेरे पास आए, तुम्हारे परिवार समूह के सभी नेता और तुम्हारे सभी बुजुर्ग। [24]उन्होंने कहा, ‘यहोवा हमारे परमेश्वर ने अपना गौरव और महानता दिखाई है। हमने उसे आग में से बोलते सुना है! आज हम लोगों ने देख लिया है कि किसी व्यक्ति का परमेश्वर से बात करने के बाद भी जीवित रह सकना, सम्भव है। [25]किन्तु यदि हमने यहोवा अपने परमेश्वर को दुबारा बात करते सुना तो हम जरूर मर जाएंगे! वह भयानक आग हमें नष्ट कर देगा। किन्तु हम मरना नहीं चाहते। [26]कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जिसने हम लोगों की तरह कभी जीवित परमेश्वर को आग में से बात करते सुना हो और जीवित हो! [27]मूसा, तुम समीप जाओ और यहोवा हम लोगों का परमेश्वर, जो कहता है सुनो। तब वह सब बातें हमें बताओ जो यहोवा तुमसे कहता है, और हम लोग वह सब करेंगे जो तुम कहोगे।’

यहोवा मूसा से बात करता है

[28]“यहोवा ने वे बाते सुनीं जो तुमने मुझसे कहीं। तब यहोवा ने मुझसे कहा, ‘मैंने वे बाते सुनीं जो इन लोगों ने

कही। जो कुछ उन्होंने कहा है, ठीक है। [29]मैं केवल यह चाहता हूँ कि वे हृदय से मेरा सम्मान करें और मेरे आदेशों को मानें। तब हर एक चीज़ उनके तथा उनके वंशजों के लिए सदैव अच्छी रहेगी।

[30]"'जाओ और लोगों से कहो कि अपने डेरों में लौट जायें। [31]किन्तु मूसा, तुम मेरे निकट खड़े रहो। मैं तुम्हें सारे आदेश, विधि और नियम दूँगा जिसकी शिक्षा तुम उन्हें दोगे। उन्हें ये सभी बातें उस देश में करनी चाहिए जिसे मैं उन्हें रहने के लिए दे रहा हूँ।'

[32]"इसलिए तुम सभी लोगों को वह सब कुछ करने के लिए सावधान रहना चाहिए जिसके लिए यहोवा का तुम्हें आदेश है। तुम्हें न दाहिने हाथ मुड़ना चाहिये और न ही बायें हाथ। सदैव उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिये! [33]तुम्हें उसी तरह रहना चाहिए, जिस प्रकार रहने का आदेश यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुमको दिया है। तब तुम सदा जीवित रह सकते हो और हर चीज़ तुम्हारे लिए अच्छी होगी। उस देश में, जो तुम्हारा होगा, तुम्हारी आयु लम्बी हो जायेगी।

सदैव परमेश्वर से प्रेम करो तथा आज्ञा मानों!

6 "जिन आदेशों, विधियों और नियमों को यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें सिखाने को मुझे कहा है, वे ये हैं। इनका पालन उस देश में करो जिसमे रहने के लिए तुम प्रवेश कर रहे हो। [2]तुम और तुम्हारे वंशजों को जब तक जीवित रहो, यहोवा अपने परमेश्वर का सम्मान करना चाहिए। तुम्हें उनके उन सभी नियमों और आदेशों का पालन करना चाहिए जिन्हें मैं तुम्हें दे रहा हूँ। यदि तुम ऐसा करोगे तो उस नये देश में लम्बी उम्र पाओगे। [3]इस्राएल के लोगों, इसे ध्यान से सुनो और इन नियमों का पालन करो। तब सब कुछ तुम्हारे साथ अच्छा होगा और तुम एक महान राष्ट्र बनोगे। यहोवा, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने, इन सबके लिए वचन दिया है कि तुम बहुत सी अच्छी वस्तुओं से युक्त धरती को, जहाँ दूध और शहद बहता है, प्राप्त करोगे।

[4]"इस्राएल के लोगों, ध्यान से सुनो! यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक है! [5]और तुम्हें यहोवा, अपने परमेश्वर से अपने सम्पूर्ण हृदय, आत्मा और शक्ति से प्रेम करना चाहिए। [6]इन आदेशों को सदा याद रखो जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। [7]इनकी शिक्षा अपने बच्चों को देने के लिये सावधान रहो। इन आदेशों के बारे में तुम अपने घर में बैठे और सड़क पर घूमते बातें करो। जब तुम लेटो और जब जागो तब इनके बारे में बातें करो। [8]इन आदेशों को लिखो और मेरे उपदेशों को याद रखने में सहायता के लिए अपने हाथों पर इसे बांधो तथा प्रतीक रूप में अपने ललाट पर धारण करो। [9]अपने घरों के दरवाजों, खम्भों और फाटकों पर इसे लिखो।

[10]"यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें उस देश में ले जाएगा जिसके लिए उसने तुम्हारे पूर्वजों–इब्राहीम, इसहाक और याकूब को देने का वचन दिया था। तब वह तुम्हें बड़े और सम्पन्न नगर देगा जिन्हें तुमने नहीं बनाया। [11]यहोवा तुम्हें अच्छी चीज़ों से भरे घर देगा जिन्हें तुमने वहाँ नहीं रखा। यहोवा तुम्हें कुएँ देगा जिन्हें तुमने नहीं खोदा है। यहोवा तुम्हें अंगूरों और जैतून के बाग देगा जिन्हें तुमने नहीं लगाया। तुम्हारे खाने के लिए भरपूर होगा।

[12]"किन्तु सावधान रहो। यहोवा को मत भूलो जो तुम्हें मिस्र से लाया, जहाँ तुम दास थे। [13]यहोवा अपने परमेश्वर का सम्मान करो और केवल उसी की सेवा करो। वचन देने के लिए तुम केवल उसी के नाम का उपयोग करोगे। [14]तुम्हें अन्य देवताओं का अनुसरण नहीं करना चाहिए। तुम्हें अपने चारों ओर रहने वाले लोगों के देवताओं का अनुसरण नहीं करना चाहिए। [15]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर सदा तुम्हारे साथ है और यदि तुम दूसरे देवताओं का अनुसरण करोगे तो वह तुम पर बहुत क्रोधित होगा! वह धरती से तुम्हारा सफाया कर देगा। यहोवा अपने लोगों द्वारा अन्य देवताओं की पूजा से घृणा करता है।

[16]"तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर का परीक्षण उस प्रकार नहीं करना चाहिए जिस प्रकार तुमने मस्सा में किया। [17]तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर के आदेशों के पालन के लिए दृढ़ निश्चय रखना चाहिए। तुम्हें उसके सभी उन उपदेशों और नियमों का पालन करना चाहिए जिन्हें उसने तुमको दिया है। [18]तुम्हें वे बातें करनी चाहिए जो ठीक और अच्छी अर्थात् यहोवा को प्रसन्न करने वाली हों। तब तुम्हारे लिये हर एक बात ठीक होगी और तुम उस अच्छे देश में जा सकते हो जिसके लिए यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों को वचन दिया था [19]और तुम अपने सभी शत्रुओं को बलपूर्वक बाहर निकाल सकोगे, जैसा यहोवा ने कहा है।

अपने बच्चों को परमेश्वर के कार्यों की शिक्षा दो

[20]"भविष्य में, तुम्हारा पुत्र तुमसे यह पूछ सकता है कि 'यहोवा हमारे परमेश्वर ने हमें जो उपदेश, विधि और नियम दिये, उनका अर्थ क्या है?' [21]तब तुम अपने पुत्र से कहोगे, 'हम मिस्र में फ़िरौन के दास थे, किन्तु यहोवा हमें बड़ी शक्ति से मिस्र से बाहर लाया। [22]यहोवा ने हमें महान, भयंकर चिन्ह और चमत्कार दिखाए। हम लोगों ने उनके द्वारा इन घटनाओं को मिस्र के लोगों, फिरौन और फिरौन के महल के लोगों के साथ होते देखा [23]और यहोवा हम लोगों को मिस्र से इसलिए लाया कि वह वो देश हमें दे सके जिसके लिए उसने हमारे पूर्वजों को वचन दिया था। [24]यहोवा ने हमें इन सभी उपदेशों के पालन का आदेश दिया। इस प्रकार हम लोग यहोवा, अपने परमेश्वर का सम्मान करते हैं। तब यहोवा सदा हम लोगों को जीवित रखेगा और हम अच्छा जीवन बिताएंगे जैसा इस समय है। [25]यदि हम इस सारे नियमों का पालन परमेश्वर के निर्देशों के आधार पर करते हैं तो परमेश्वर हमें अच्छाईयों से भर देगा।'

इस्राएल, परमेश्वर के विशेष लोग

7 "यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें उस देश में ले जायेगा जिसे अपना बनाने के लिए तुम उसमें जा रहे हो। यहोवा तुम्हारे लिए बहुत से राष्ट्रों को बलपूर्वक हटाएगा–हित्ती, गिर्गाशी, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी, सात तुमसे बड़े और अधिक शक्तिशाली राष्ट्रों को। [2]यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर इन राष्ट्रों को तुम्हारे अधीन करेगा और तुम उन्हें हराओगे। तुम्हें उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। उनके साथ कोई सन्धि न करो। उन पर दया न करो। [3]उन लोगों में से किसी के साथ विवाह न करो, और उन राष्ट्रों के किसी व्यक्ति के साथ अपने पुत्र और पुत्रियों का विवाह न करो। [4]क्यों? क्योंकि वे लोग तुम्हें परमेश्वर से दूर ले जायेगें, इसलिये तुम्हारे बच्चे दूसरे देवताओं की सेवा करेंगे और यहोवा तुम पर बहुत क्रोधित होगा। वह शीघ्रता से तुम्हें नष्ट कर देगा।

बनावटी देवताओं को नष्ट करने का आदेश

[5]"तुम्हें इन राष्ट्रों के साथ यह करना चाहिए: तुम्हें उनकी वेदियाँ नष्ट करनी चाहिए और विशेष पत्थरों को टुकड़ों में तोड़ डालना चाहिए। उनके अशेरा स्तम्भों को काट डालो और उनकी मूर्तियों को जला दो! [6]क्यों? क्योंकि तुम यहोवा के अपने लोग हो। तुम यहोवा की निज सम्पत्ति हो। संसार के सभी लोगों में से यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें विशेष लोग, ऐसे लोग जो उसके अपने हैं, चुना। [7]यहोवा तुमसे क्यों प्रेम करता है और तुम्हें उसने क्यों चुना? इसलिए नहीं कि अन्य लोगों की तुलना में तुम्हारी संख्या बहुत अधिक है। तुम सभी लोगों में सबसे कम थे। [8]किन्तु यहोवा तुमको अपनी बड़ी शक्ति के द्वारा मिस्र के बाहर लाया। उसने तुम्हें दासता से मुक्त किया। उसने मिस्र के सम्राट फ़िरौन की अधीनता से तुम्हें स्वतन्त्र किया। क्यों? क्योंकि यहोवा तुमसे प्रेम करता है और तुम्हारे पूर्वजों को दिए गए वचन को पूरा करना चाहता था।

[9]"इसलिए याद रखो कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर है, और वही विश्वसनीय है! वह अपनी वाचा को पूरा करता है। वह उन सभी लोगों से प्रेम करता तथा उन पर दया करता है जो उससे प्रेम करते और उसके आदेशों का पालन करते हैं। वह हजारों पीढ़ियों तक प्रेम और दया करता रहता है। [10]किन्तु यहोवा उन लोगों को दण्ड देता है जो उससे घृणा करते हैं। वह उनको नष्ट करेगा। वह उस व्यक्ति को दण्ड देने में देर नहीं करेगा जो उससे घृणा करता है। [11]इसलिए तुम्हें उन आदेशों, विधियों और नियमों के पालन में सावधान रहना चाहिए जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।

[12]"यदि तुम मेरे इन नियमों पर ध्यान दोगे और उनके पालन में सावधान रहोगे तो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमसे प्रेम की वाचा का पालन करेगा। उसने यह वचन तुम्हारे पूर्वजों को दिया था। [13]वह तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हें आशीर्वाद देगा। तुम्हारे राष्ट्र में लोग बराबर बढ़ते जाएंगे। वह तुम्हें बच्चे होने का आशीर्वाद देगा। वह तुम्हारे खेतों में अच्छी फसल का आशीर्वाद देगा वह तुम्हें अन्न, नई दाखमधु और तेल देगा। वह तुम्हारी गायों को बछड़े और तुम्हारी भेड़ों को मेमने पैदा करने का आशीर्वाद देगा। तुम वे सभी आशीर्वाद उस देश में पाओगे जिसे तुम्हें देने का वचन यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था।

[14]"तुम अन्य लोगों से अधिक आशीर्वाद पाओगे। हर एक पति–पत्नी बच्चे उत्पन्न करने योग्य होंगे। तुम्हारे पशु बछड़े उत्पन्न करने योग्य होंगे। [15]और यहोवा तुमसे सभी बीमारियों को दूर करेगा। यहोवा तुमको

उन भयंकर बीमारियों से बचायेगा तथा उन भयंकर बीमारियों को उन सभी लोगों को देगा जो तुमसे घृणा करते हैं। [16]तुम्हें उन सभी लोगों को नष्ट करना चाहिए जिन्हें हराने में यहोवा तुम्हारा परमेश्वर सहायता करता है। उन पर दया न करो। उनके देवताओं की सेवा न करो! क्यों? क्योंकि यदि तुम उनके देवताओं की सेवा करोगे तो तुम्हें दण्ड भुगतना होगा।

यहोवा अपने लोगों को सहायता का वचन देता है

[17]"अपने मन में यह न सोचो, 'ये राष्ट्र हम लोगों से अधिक शक्तिशाली हैं। हम उन्हें बलपूर्वक कैसे भगा सकते हैं?' [18]तुम्हें उनसे डरना नहीं चाहिए। तुम्हें वह याद रखना चाहिए जो परमेश्वर, तुम्हारे यहोवा ने फ़िरौन और मिस्र के लोगों के साथ किया। [19]जो बड़ी विपत्तियाँ उसने दीं तुमने उन्हें देखा। तुमने उसके किये चमत्कार और आश्चर्यों को देखा। तुमने यहोवा की बड़ी शक्ति और दृढ़ता को, तुम्हें बाहर लाने में उपयोग करते देखा। यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर उसी शक्ति का उपयोग उन लोगों के विरुद्ध करेगा जिनसे तुम डरते हो।

[20]"यहोवा तुम्हारा परमेश्वर, बड़ी बर्रों को उन सभी लोगों का पता लगाने के लिए भेजेगा जो तुमसे भागे हैं और अपने को छिपाया है। यहोवा उन सभी लोगों को नष्ट करेगा। [21]तुम उनसे डरो नहीं, क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे साथ है। वह महान और विस्मयकारी परमेश्वर है। [22]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उन राष्ट्रों को तुम्हारा देश थोड़ा–थोड़ा करके छोड़ने को विवश करेगा। तुम उन्हें एक ही बार में सभी को नष्ट नहीं कर पाओगे। यदि तुम ऐसा करोगे तो जंगली जानवरों की संख्या तुम्हारी तुलना में अधिक हो जाएगी। [23]किन्तु यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उन राष्ट्रों को तुमको देगा। यहोवा उनको युद्ध में भ्रमित कर देगा, जब तक वे नष्ट नहीं होते। [24]यहोवा तुम्हें उनके राजाओं को हराने में सहायता करेगा। तुम उन्हें मार डालोगे और संसार भूल जाएगा कि वे कभी थे। कोई भी तुम लोगों को रोक नहीं सकेगा। तुम उन सभी को नष्ट करोगे!

[25]"तुम्हें उनके देवताओं की मूर्तियों को जला देना चाहिए। तुम्हें उन मूर्तियों पर मढ़े सोने या चाँदी को लेने की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। तुम्हें उस सोने और चाँदी को अपने लिए नहीं लेना चाहिए। यदि तुम उसे लोगे तो दण्ड पाओगे। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उन मूर्तियों से घृणा करता है [26]और तुम्हें अपने घर में उन मूर्तियों में से कोई लानी नहीं चाहिए जिनसे यहोवा घृणा करता है। यदि तुम उन मूर्तियों को अपने घर में लाते हो तो तुम मूर्तियों की तरह नष्ट हो जाओगे। तुम्हें उन मूर्तियों से घृणा करनी चाहिए। तुम्हें उनसे तीव्र घृणा करनी चाहिए! यहोवा ने उन मूर्तियों को नष्ट करने की प्रतिज्ञा की है!

यहोवा को याद रखो

8 "तुम्हें आज जो आदेश दे रहा हूँ उसे ध्यान से सुनना और उनका पालन करना चाहिए। क्योंकि तब तुम जीवित रहोगे। तुम्हारी संख्या अधिक से अधिक होती जाएगी। तुम उस देश में जाओगे और उसमें रहोगे जिसे यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों को देने का वचन दिया है [2]और तुम्हें उस लम्बी यात्रा को याद रखना है जिसे यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने मरुभूमि में चालीस वर्ष तक कराई है। यहोवा तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। वह तुम्हें विनम्र बनाना चाहता था। वह चाहता था कि वह तुम्हारे हृदय की बात जानें कि तुम उसके आदेशों का पालन करोगे या नहीं। [3]यहोवा ने तुमको विनम्र बनाया और तुम्हें भूखा रहने दिया। तब उसने तुम्हें मन्ना खिलाया, जिसे तुम पहले से नहीं जानते थे, जिसे तुम्हारे पूर्वजों ने कभी नहीं देखा था। यहोवा ने यह क्यों किया? क्योंकि वह चाहता था कि तुम जानो कि केवल रोटी ही ऐसी नहीं है जो लोगों को जीवित रखती है। लोगों का जीवन यहोवा के वचन पर आधारित है। [4]इन पिछले चालीस वर्षों में तुम्हारे वस्त्र फटे नहीं और यहोवा ने तुम्हारे पैरों की रक्षा सूजन से भी की। [5]इसलिए तुम्हें जानना चाहिए कि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें शिक्षित करने और सुधारने के लिए वह सब वैसे ही किया जैसे कोई पिता अपने पुत्र की शिक्षा के लिए करता है।

[6]"तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर के आदेशों को पालन करना चाहिए। उसके बताए मार्ग पर जीवन बिताओ और उसका सम्मान करो। [7]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें एक अच्छे देश में ले जा रहा है, ऐसे देश में जिसमें नदियाँ और पानी के ऐसे सोते हैं जिनसे जमीन से पानी घाटियों और पहाड़ियों में बहता है। [8]यह ऐसा देश है जिसमें गेहूँ, जौ, अंगूर की बेलें, अंजीर के पेड़ और अनार होते हैं। यह ऐसा देश है जिसमें

जैतून का तेल और शहद होता हैं। [9]वहाँ तुम्हें बहुत अधिक भोजन मिलेगा। तुम्हें वहाँ किसी चीज़ की कमी नहीं होगी। यह ऐसा देश है जहाँ लोहे की चट्टाने हैं। तुम पहाड़ियों से तांबा खोद सकते हो। [10]तुम्हारे खाने के लिये पर्याप्त होगा और तुम संतुष्ट होगे । तब तुम यहोवा अपने परमेश्वर की प्रशंसा करोगे कि उसने तुम्हें ऐसा अच्छा देश दिया।

यहोवा के कार्यों को मत भूलो

[11]“सावधान रहो, यहोवा अपने परमेश्वर को न भूलो। सावधान रहो कि आज मैं जिन आदेशों, विधियों और नियमों को दे रहा हूँ उनका पालन हो। [12]तुम्हारे खाने के लिए बहुत अधिक होगा और तुम अच्छे मकान बनाओगे और उनमें रहोगे। [13]तुम्हारे गाय, मवेशी और भेड़ों के झुण्ड बहुत बड़े होंगे, तुम अधिक से अधिक सोना और चाँदी पाओगे और तुम्हारे पास बहुत सी चीज़ें होंगी। [14]जब ऐसा होगा तो तुम्हें सावधान रहना चाहिए कि तुम्हें घमण्ड न हो। तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर को नहीं भूलना चाहिए। वह तुमको मिस्र से लाया, जहाँ तुम दास थे। [15]यहोवा तुम्हें विशाल और भंयकर मरुभूमि से लाया। जहरीले साँप और बिच्छू* उस मरुभूमि में थे। जमीन शुष्क थी और कहीं पानी नहीं था। किन्तु यहोवा ने चट्टान के नीचे से पानी दिया। [16]मरुभूमि में यहोवा ने तुम्हें मन्ना खिलाया, ऐसी चीज जिसे तुम्हारे पूर्वज कभी नहीं जान सके। यहोवा ने तुम्हारी परीक्षा ली। क्यों? क्योंकि यहोवा तुमको विनम्र बनाना चाहता था। वह चाहता था कि अन्तत: तुम्हारा भला हो। [17]अपने मन में कभी ऐसा न सोचो, ‘मैंने यह सारी सम्पत्ति अपनी शक्ति और योग्यता से पाई है।’ [18]यहोवा अपने परमेश्वर को याद रखो। याद रखो कि वह ही एक है जो तुम्हें ये कार्य करने की शक्ति देता है। यहोवा ऐसा क्यों करता है? क्योंकि इन दिनों वह तुम्हारे पूर्वजों के साथ की गई वाचा को पूरा कर रहा है।

[19]“यहोवा अपने परमेश्वर को कभी न भूलो। तुम किसी दूसरे देवता की पूजा या सेवा के लिए उसका अनुसरण न करो! यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें आज चेतावनी देता हूँ: तुम निश्चय ही नष्ट कर दिये जाओगे! [20]यहोवा तुम्हारे लिये अन्य राष्ट्रों को नष्ट कर रहा है। तुम भी उन्हीं राष्ट्रों की तरह नष्ट हो जाओगे जिन्हें यहोवा तुम्हारे सामने नष्ट कर रहा है। यह होगा क्योंकि तुमने यहोवा अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया।

यहोवा इस्राएल के लोगों का साथ देगा!

9 “ध्यान दो, इस्राएल के लोगों! आज तुम यरदन नदी को पार करोगे। तुम उस देश में अपने से बड़े और शक्तिशाली राष्ट्रों को बलपूर्वक हटाने के लिए जाओगे। उनके नगर बड़े और उनकी दीवारें आकाश को छूती हैं। [2]वहाँ के लोग लम्बे और बलवान हैं। वे अनाकी लोग हैं। तुम इन लोगों के बारे में जानते हो। तुम लोगों ने अपने गुप्तचरों को यह कहते हुए सुना, ‘कोई व्यक्ति अनाकी लोगों को नहीं हरा सकता।’ [3]किन्तु तुम पूरा विश्वास कर सकते हो कि यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग की तरह तुम्हारे आगे नदी के पार जा रहा है। यहोवा उन राष्ट्रों को नष्ट करेगा। वह उन्हें तुम्हारे सामने पराजित करायेगा। तुम उन राष्ट्रों को बलपूर्वक निकाल बाहर करोगे। तुम शीघ्र ही उन्हें नष्ट करोगे। यहोवा ने यह प्रतिज्ञा की है कि ऐसा होगा।

[4]“यहोवा तुम्हारा परमेश्वर जब उन राष्ट्रों को बलपूर्वक तुमसे दूर हटा दे तो अपने मन में यह न कहना कि,‘यहोवा हम लोगों को इस देश में रहने के लिए इसलिए लाया कि हम लोगों के रहने का ढंग उचित है।’ यहोवा ने उन राष्ट्रों को तुम लोगों से दूर बलपूर्वक क्यों हटाया? क्योंकि वे बुरे ढंग से रहते थे। [5]तुम उनका देश लेने के लिए जा रहे हो, किन्तु इसलिए नहीं कि तुम अच्छे हो और उचित ढंग से रहते हो। तुम उस देश में जा रहे हो और यहोवा तुम्हारा परमेश्वर चाहता है कि जो वचन उसने तुम्हारे पूर्वजों—इब्राहीम, इसहाक और याकूब को दिया वह पूरा हो। [6]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उस अच्छे देश को तुम्हें रहने के लिए दे रहा है, किन्तु तुम्हें यह जानना चाहिए कि ऐसा तुम्हारी जिन्दगी के अच्छे ढंग के होने के कारण नहीं हो रहा है। सच्चाई यही है कि तुम अड़ियल लोग हो!

यहोवा का क्रोध याद रखो

[7]“यह मत भूलो कि तुमने यहोवा अपने परमेश्वर को मरुभूमि में क्रोधित किया! तुमने उसी दिन से जिस दिन से मिस्र से बाहर निकले और इस स्थान पर

बिच्छू पूँछ में डंक वाला कीड़ा जिसके डंक मारने से बहुत दर्द होता है।

आने के दिन तक यहोवा के आदेश को मानने से इन्कार किया है। [8]तुमने यहोवा को होरेब (सीनै) पर्वत पर भी क्रोधित किया। यहोवा तुम्हें नष्ट कर देने की सीमा तक क्रोधित था! [9]मैं पत्थर की शिलाओं को लेने के लिए पर्वत के ऊपर गया, जो वाचा यहोवा ने तुम्हारे साथ किया, उन शिलाओं में लिखे थे। मैं वहाँ पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात ठहरा। मैंने न रोटी खाई, न ही पानी पिया। [10]तब यहोवा ने मुझे पत्थर की शिलाएँ दी। यहोवा ने उन शिलाओं पर अपनी उंगलियों से लिखा है। उसने उस हर एक बात को लिखा है जिन्हें उसने आग में से कहा था। जब तुम पर्वत के चारों ओर इकट्ठे थे।

[11]"इसलिए, चालीस दिन और चालीस रात के अन्त में यहोवा ने मुझे साक्षीपत्र की दो शिलाएँ दी। [12]तब यहोवा ने मुझसे कहा, 'उठो और शीघ्रता से यहाँ से नीचे जाओ। जिन लोगों को तुम मिस्र से बाहर लाए हो उन लोगों ने अपने को बरबाद कर लिया है। वे उन बातों से शीघ्रता से हट गए हैं, जिनके लिए मैंने आदेश दिया था। उन्होंने सोने को पिघला कर अपने लिए एक मूर्ति बना ली है।'

[13]"यहोवा ने मुझसे यह भी कहा, 'मैंने इन लोगों पर अपनी निगाह रखी है। वे बहुत अड़ियल हैं! [14]मुझे इन लोगों को पूरी तरह नष्ट कर देने दो, कोई व्यक्ति उनका नाम कभी याद नहीं करेगा। तब मैं तुमसे दूसरा राष्ट्र बनाऊँगा जो उन के राष्ट्र से बड़ा और अधिक शक्तिशाली होगा।'

सोने का बछड़ा

[15]"तब मैं मुड़ा और पर्वत से नीचे आया। पर्वत आग से जल रहा था। साक्षीपत्र की दोनों शिलाएँ मेरे हाथ में थीं। [16]जब मैंने नजर डाली तो देखा कि तुमने यहोवा अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है, तुमने अपने लिए पिघले सोने से एक बछड़ा बनाया है। यहोवा ने जो आदेश दिया है उससे तुम शीघ्रता से दूर हट गए हो। [17]इसलिए मैंने दोनों शिलाएँ लीं और उन्हें नीचे डाल दिया। वहाँ तुम्हारी आँखों के सामने शिलाओं के टुकड़े कर दिए। [18]तब मैं यहोवा के सामने झुका और अपने चेहरे को जमीन पर करके चालीस दिन और चालीस रात वैसे ही रहा। मैंने न रोटी खाई, न पानी पिया। मैंने यह इसलिए किया कि तुमने इतना बुरा पाप किया था। तुमने वह किया जो यहोवा के लिए बुरा है और तुमने उसे क्रोधित किया। [19]मैं यहोवा के भयंकर क्रोध से डरा हुआ था। वह तुम्हारे विरुद्ध इतना क्रोधित था कि तुम्हें नष्ट कर देता। किन्तु यहोवा ने मेरी बात फिर सुनी। [20]यहोवा हारून पर बहुत क्रोधित था, उसे नष्ट करने के लिए उतना क्रोध काफी था! इसलिए उस समय मैंने हारून के लिए भी प्रार्थना की। [21]मैंने उस पापपूर्ण तुम्हारे बनाए सोने के बछड़े को लिया और उसे आग में जला दिया। मैंने उसे छोटे–छोटे टुकड़ों में तोड़ा और मैंने बछड़े के टुकड़ों को तब तक कुचला जब तक वे धूलि नहीं बन गए और तब मैंने उस धूलि को पर्वत से नीचे बहने वाली नदी में फेंका।

मूसा यहोवा से इस्राएल के लिये क्षमा माँगता है

[22]"मस्सा में तबेरा और किब्रोतहतावा पर तुमने फिर यहोवा को क्रोधित किया [23]और जब यहोवा ने तुमसे कादेशबर्ने छोड़ने को कहा तब तुमने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया। उसने कहा, 'आगे बढ़ो और उस देश में रहो जिसे मैंने तुम्हें दिया है।' किन्तु तुमने उस पर विश्वास नहीं किया। तुमने उसके आदेश की अनसुनी की। [24]पूरे समय जब से मैं तुम्हें जानता हूँ तुम लोगों ने यहोवा की आज्ञा पालन करने से इन्कार किया है।

[25]"इसलिए मैं चालीस दिन और चालीस रात यहोवा के सामने झुका रहा। क्यों? क्योंकि यहोवा ने कहा कि वह तुम्हें नष्ट करेगा। [26]मैंने यहोवा से प्रार्थना की। मैंने कहा: यहोवा मेरे स्वामी, अपने लोगों को नष्ट न करो। वे तुम्हारे अपने हैं। तूने अपनी बड़ी शक्ति और दृढ़ता से उन्हें स्वतन्त्र किया और मिस्र से लाया। [27]तू अपने सेवकं इब्राहीम, इसहाक और याकूब को दी गई अपनी प्रतिज्ञा को याद कर। तू यह भूल जा कि ये लोग कितने हठीले हैं। तू उनके बुरे ढंग और पाप को न देख। [28]यदि तू अपने लोगों को दण्ड देगा तो मिस्री कह सकते हैं, 'यहोवा अपने लोगों को उस देश में ले जाने में समर्थ नहीं था जिसमें ले जाने का उसने वचन दिया था और वह उनसे घृणा करता था। इसलिए वह उन्हें मारने के लिए मरुभूमि में ले गया।' [29]किन्तु वे लोग तेरे लोग हैं, यहोवा वे तेरे अपने हैं। तू अपनी बड़ी शक्ति और दृढ़ता से उन्हें मिस्र से बाहर लाया।

नई पत्थर की शिलाएँ

10 "उस समय, यहोवा ने मुझसे कहा, 'तुम पहली शिलाओं की तरह पत्थर काटकर दो शिलाएँ बनाओ। तब तुम मेरे पास पर्वत पर आना। अपने लिए एक लकड़ी का सन्दूक भी बनाओ। [2]मैं पत्थर की शिलाओं पर वे ही शब्द लिखूँगा जो तुम्हारे द्वारा तोड़ी गई पहली शिलाओं पर थे। तब तुम्हें इन नयी शिलाओं को सन्दूक में रखना चाहिए।'

[3]"इसलिए मैंने देवदार का एक सन्दूक बनाया। मैंने पहली शिलाओं की तरह पत्थर काटकर दो शिलाएँ बनाई। तब मैं पर्वत पर गया। मेरे हाथ में दोनों शिलाएँ थीं [4]और यहोवा ने उन्हीं शब्दों को लिखा जिन्हें उसने तब लिखा था जब दस आदेशों को उसने आग में से तुम्हें दिया था और तुम पर्वत के चारों ओर इकट्ठे थे। तब यहोवा ने पत्थर की शिलाएँ मुझे दीं। [5]मैं मुड़ा और पर्वत के नीचे आया। मैंने अपने बनाएँ सन्दूक में शिलाओं को रखा। यहोवा ने मुझे उसमें रखने को कहा और शिलाएँ अब भी उसी सन्दूक में हैं।"

([6]इस्राएल के लोगों ने याकान के लोगों के कुँए से मोसेरा की यात्रा की। वहाँ हारून मरा और दफनाया गया। हारून के पुत्र एलीआज़र ने हारून के स्थान पर याजक के रूप में सेवा आरम्भ की। [7]तब इस्राएल के लोग मोसेरा से गुदगोदा गए और वे गुदगोदा से नदियों के प्रदेश योतबाता को गए। [8]उस समय यहोवा ने लेवी के परिवार समूह को अपने विशेष काम के लिए अन्य परिवार समूहों से अलग किया। उन्हें यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को ले चलने का कार्य करना था। वे याजक की सहायता भी यहोवा के मन्दिर में करते थे और यहोवा के नाम पर, वे लोगों को आशीर्वाद देने का काम भी करते थे। वे अब भी यह विशेष काम करते हैं। [9]यही कारण है कि लेवीवंश के लोगों को भूमि का कोई भाग अन्य परिवार समूहों की भांति नहीं मिला। लेवीवंशियों के हिस्से में यहोवा पड़ा। यही यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने उन्हें दिया।)

[10]"मैं पर्वत पर पहली बार की तरह चालीस दिन और चालीस रात रुका रहा। यहोवा ने उस समय भी मेरी बातें सुनी। यहोवा ने तुम लोगों को नष्ट न करने का निश्चय किया। [11]यहोवा ने मुझसे कहा, 'जाओ और लोगों को यात्रा पर ले जाओ। वे उस देश में जाएंगे और उसमें रहेंगे जिसे मैंने उनके पूर्वजों को देने का वचन दिया है।'

यहोवा वास्तव में क्या चाहता है

[12]"इस्राएल के लोगों, अब सुनो! यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर चाहता है कि तुम ऐसा करो: यहोवा अपने परमेश्वर का सम्मान करो और वह जो कुछ तुमसे कहे, करो। यहोवा अपने परमेश्वर से प्रेम करो और उसकी सेवा हृदय और आत्मा से करो। [13]आज मैं जिस यहोवा के नियमों और आदेशों को बता रहा हूँ, उसका पालन करो। ये आदेश और नियम तुम्हारी अपनी भलाई के लिए हैं।

[14]"हर एक चीज़, यहोवा तुम्हारे परमेश्वर की है। स्वर्ग, सबसे ऊँचा भी उसी का है। पृथ्वी और उस पर की सारी चीज़ें यहोवा तुम्हारे परमेश्वर की हैं। [15]यहोवा तुम्हारे पूर्वजों से बहुत प्रेम करता था। वह उनसे इतना प्रेम करता था कि उनके वंशज, तुमको, उसने अपने लोग बनाया। उसने किसी अन्य राष्ट्र के स्थान पर तुम्हें चुना और आज भी तुम उसके चुने हुये लोग हो।

इस्राएलियों को यहोवा को याद रखना चाहिए

[16]"तुम्हें अड़ियल होना छोड़ देना चाहिए और अपने हृदय को यहोवा पर लगाना चाहिए। [17]क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर है। वह देवताओं का परमेश्वर, और ईश्वरों का ईश्वर है। वह महान परमेश्वर है। वह आश्चर्यजनक और शक्तिशाली योद्धा है। यहोवा की दृष्टि में सभी मनुष्य बराबर है। यहोवा अपने इरादे को बदलने के लिए धन नहीं लेता। [18]वह अनाथ बच्चों की सहायता करता है। वह विधवाओं* की सहायता करता है। वह हमारे देश में अजनबियों से भी प्रेम करता है। वह उन्हें भोजन और वस्त्र देता है। [19]इसलिए तुम्हें भी इन अजनबियों से प्रेम करना चाहिए। क्यों? क्योंकि तुम स्वयं भी मिस्र मे अजनबी थे।

[20]"तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर का सम्मान करना चाहिए और केवल उसी की उपासना करनी चाहिए। उसे कभी न छोड़ो। जब तुम वचन दो तो केवल उसके नाम का उपयोग करो। [21]तुम्हें एकमात्र यहोवा की प्रशंसा करनी चाहिए। उसने तुम्हारे लिए महान और आश्चर्यजनक काम किया है। इन कामों को तुमने अपनी आँखों से देखा है। [22]जब तुम्हारे पूर्वज मिस्र गए थे तो केवल सत्तर थे। अब यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें बहुत अधिक लोगों के रूप में इतना बढ़ा दिया है जितने आकाश में तारे हैं।

विधवा वह स्त्री जिसका पति मर गया हो।

यहोवा का स्मरण रखो

11 "इसलिए तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा से प्यार करना चाहिए। तुम्हें वही करना चाहिए जो वह करने के लिए तुमसे कहता है। तुम्हें उसके विधियों, नियमों और आदेशों का सदैव पालन करना चाहिए। [2]उन बड़े चमत्कारों को आज तुम याद करो जिन्हें यहोवा ने तुम्हें शिक्षा देने के लिए दिखाया। वे तुम लोग थे तुम्हारे बच्चे नहीं, जिन्होंने उन घटनाओं को होते देखा और उनके बीच जीवन बिताया। तुमने देखा है कि यहोवा कितना महान है। तुमने देखा है कि वह कितना शक्तिशाली है और तुमने उसके पराक्रमपूर्ण किये गए कार्यों को देखा है। [3]तुम्हारे बच्चों ने नहीं, तुमने उसके चमत्कार देखे हैं। तुमने वह सब देखा जो उसने मिस्र के सम्राट फ़िरौन और उसके पूरे देश के साथ किया। [4]तुम्हारे बच्चों ने नहीं, तुमने मिस्र की सेना, उनके घोड़ों और रथों के साथ यहोवा ने जो किया, देखा। वे तुम्हारा पीछा कर रहे थे, किन्तु तुमने देखा यहोवा ने उन्हें लालसागर के जल में डुबा दिया। तुमने देखा कि यहोवा ने उन्हें पूरी तरह नष्ट कर दिया। [5]वे तुम थे, तुम्हारे बच्चे नहीं, जिन्होंने यहोवा अपने परमेश्वर को अपने लिए मरुभूमि में सब कुछ तब तक करते देखा जब तक तुम इस स्थान पर आ न गए। [6]तुमने देखा कि यहोवा ने रूबेन के परिवार के एलिआब के पुत्रों दातान और अबीराम के साथ क्या किया। इस्राएल के सभी लोगों ने पृथ्वी को मुँह की तरह खुलते और उन आदमियों को निगलते देखा और पृथ्वी ने उनके परिवार, खेमे, सारे सेवकों और उनके सभी जानवरों को निगल लिया। [7]वे तुम थे तुम्हारे बच्चे नहीं, जिन्होंने यहोवा द्वारा किये गए इन बड़े चमत्कारों को देखा।

[8]"इसलिए तुम्हें आज जो आदेश मैं दे रहा हूँ, उन सबका पालन करना चाहिए। तब तुम शक्तिशाली बनोगे और तुम नदी को पार करने योग्य होगे और उस देश को लोगे जिसमें प्रवेश करने के लिए तुम तैयार हो। [9]उस देश में तुम्हारी उम्र लम्बी होगी। यह वही देश है जिसे यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों और उनके वंशजों को देने का वचन दिया था। इस देश में दूध तथा शहद बहता है। [10]जो देश तुम पाओगे वह मिस्र की तरह नहीं है जहाँ से तुम आए। मिस्र में तुम बीज बोते थे और अपने पौधों को सींचने के लिए नहरों से अपने पैरों का उपयोग कर पानी निकालते थे। तुम अपने खेतों को वैसे ही सींचते थे जैसे तुम सब्जियों के बागों की सिंचाई करते थे। [11]लेकिन जो प्रदेश तुम शीघ्र ही पाओगे, वैसा नहीं है। इस्राएल में पर्वत और घाटियाँ हैं। यहाँ की भूमि वर्षा से जल प्राप्त करती है जो आकाश से गिरती है। [12]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उस देश की देख–रेख करता है! यहोवा तुम्हारा परमेश्वर वर्ष के आरम्भ से अन्त तक उसकी देख–रेख करता है।

[13]'तुम्हें जो आदेश मैं आज दे रहा हूँ, उसे तुम्हें सावधानी से सुनना चाहिए: यहोवा से प्रेम और उसकी सेवा पूरे हृदय और आत्मा से करनी चाहिए। यदि तुम वैसा करोगे [14]तो मैं ठीक समय पर तुम्हारी भूमि के लिए वर्षा भेजूँगा। मैं पतझड़ और बसंत के समय की भी वर्षा भेजूँगा। तब तुम अपना अन्न, नया दाखमधु और तेल इकट्ठा करोगे [15]और मैं तुम्हारे खेतों में तुम्हारे मवेशियों के लिए घास उगाऊँगा। तुम्हारे भोजन के लिए बहुत अधिक होगा।'

[16]"किन्तु सावधान रहो कि मूर्ख न बनाए जाओ! दूसरे देवताओं की पूजा और सेवा के लिए उनकी ओर न मुड़ो। [17]यदि तुम ऐसा करोगे तो यहोवा तुम पर बहुत क्रोधित होगा। वह आकाश को बन्द कर देगा और वर्षा नहीं होगी। भूमि से फसल नहीं उगेगी और तुम उस अच्छे देश में शीघ्र मर जाओगे जिसे यहोवा तुम्हें दे रहा है।

[18]"जिन आदेशों को मैं दे रहा हूँ, याद रखो, उन्हें हृदय और आत्मा में धारण करो। इन आदेशों को लिखो और याद दिलाने वाले चिन्ह के रूप में इन्हें अपने हाथों पर बांधों तथा ललाट पर धारण करो। [19]इन नियमों की शिक्षा अपने बच्चों को दो। इनके बारे में अपने घर में बैठे, सड़क पर टहलते, लेटते और जागते हुए बताया करो। [20]इन आदेशों को अपने घर के द्वार स्तम्भों और फाटकों पर लिखो। [21]तब तुम और तुम्हारे बच्चे उस देश में लम्बे समय तक रहेंगे जिसे यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों को देने का वचन दिया है। तुम तब तक रहोगे जब तक धरती के ऊपर आकाश रहेगा।

[22]"सावधान रहो कि तुम उस हर एक आदेश का पालन करते रहो जिसे पालन करने के लिए मैंने तुमसे कहा है: अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, उसके बताये सभी मार्गों पर चलो और उसके ऊपर विश्वास रखने वाले बनो। [23]जब, तुम उस देश में जाओगे तब यहोवा उन सभी दूसरे राष्ट्रों को बलपूर्वक बाहर करेगा। तुम उन राष्ट्रों से भूमि लोगे जो तुम से बड़े और शक्तिशाली

हैं। [24]वह सारा प्रदेश जिस पर तुम चलोगे, तुम्हारा होगा। तुम्हारा देश दक्षिण में मरुभूमि से लेकर लगातार उत्तर में लबानोन तक होगा। यह पूर्व में फरात नदी से लेकर लगातार भूमध्य सागर तक होगा। [25]कोई व्यक्ति तुम्हारे विरुद्ध खड़ा नहीं होगा। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उन लोगों को तुमसे भयभीत करेगा जहाँ कहीं तुम उस देश में जाओगे। यह वही है जिसके लिए यहोवा ने पहले तुमको वचन दिया था।

इस्राएलियों के लिए चुनाव: आशीर्वाद या अभिशाप

[26]"आज मैं तुम्हें आशीर्वाद या अभिशाप में से एक को चुनने दे रहा हूँ। [27]तुम आशीर्वाद पाओगे, यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर के उन आदेशों पर ध्यान दोगे और उनका पालन करोगे। [28]किन्तु तुम उस समय अभिशाप पाओगे जब तुम यहोवा अपने परमेश्वर के आदेशों के पालन से इन्कार करोगे, अर्थात् जिस मार्ग पर चलने का आदेश मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ, उससे मुड़ोगे और उन देवताओं का अनुसरण करोगे जिन्हें तुम जानते नहीं।

[29]"जब यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें उस देश में पहुँचा देगा जहाँ तुम रहोगे, तब तुम्हें गरीज्जीम पर्वत की चोटी पर जाना चाहिए और वहाँ से आशीर्वादों को पढ़कर लोगों को सुनाना चाहिए। तुम्हें एबाल पर्वत की चोटी पर भी जाना चाहिए और वहाँ से अभिशापों को लोगों को सुनाना चाहिए। [30]ये पर्वत यरदन नदी की दूसरी ओर कनानी लोगों के प्रदेश में है जो यरदन घाटी में रहते हैं। ये पर्वत गिल्गाल नगर के समीप मोरे के बांज के पेड़ों के निकट पश्चिम की ओर हैं। [31]तुम यरदन नदी को पार करके जाओगे। तुम उस प्रदेश को लोगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमको दे रहा है। यह देश तुम्हारा होगा। जब तुम इस देश में रहने लगो तो [32]उन सभी विधियों और नियमों का पालन सावधानी से करो जिन्हें आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ।

परमेश्वर की उपासना का स्थान

12 "ये विधियाँ और नियम हैं जिनका जीवन भर पालन करने के लिए तुम्हें सावधान रहना चाहिए। तुम्हें इन नियमों का पालन तब तक करना चाहिए जब तक तुम उस देश में रहो जिसे यहोवा तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, तुमको दे रहा है। [2]तुम उस प्रदेश को उन राष्ट्रों से लोगे जो अब वहाँ रह रहे हैं। तुम्हें उन सभी जगहों को पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए जहाँ ये राष्ट्र अपने देवताओं की पूजा करते हैं। ये स्थान ऊँचे पहाड़ों, पहाड़ियों और हरे वृक्षों के नीचे हैं। [3]तुम्हें उनकी वेदियों को नष्ट करना चाहिए और उनके विशेष पत्थरों को टुकड़े–टुकड़े कर देना चाहिए। तुम्हें उनके अशेरा स्तम्भों को जलाना चाहिए। उनके देवताओं की मूर्तियों को काट डालना चाहिए और उनके नाम वहाँ से मिटा देना चाहिये।

[4]"किन्तु तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर की उपासना उस प्रकार नहीं करनी चाहिए जिस प्रकार वे लोग अपने देवताओं की पूजा करते हैं। [5]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर अपने मन्दिर के लिए तुम्हारे परिवार समूह से विशेष स्थान चुनेगा। वह वहाँ अपना नाम प्रतिष्ठित करेगा। तुम्हें उसकी उपासना करने के लिए उस स्थान पर जाना चाहिए। [6]वहाँ तुम्हें अपनी होमबलि, अपनी बलियाँ, दशमांश,* अपनी विशेष भेंट, यहोवा को वचन दी गई कोई भेंट, अपनी स्वेच्छा भेंट और अपने मवेशियों के झुण्ड एवं रेवड़ के पहलौठे बच्चे लाने चाहिए। [7]तुम और तुम्हारे परिवार वहाँ भोजन करेंगे और यहोवा तुम्हारा परमेश्वर वहाँ तुम्हारे साथ होगा। जिन अच्छी चीज़ों के लिये तुमने काम किया है उसका भोग तुम करोगे, क्योंकि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुमको आशीर्वाद दिया है।

[8]"उस समय तुम्हें उसी प्रकार उपासना करते नहीं रहना चाहिए जिस प्रकार हम उपासना करते आ रहे हैं। अभी तक हममें से हर एक जैसा चाहे परमेश्वर की उपासना कर रहा था। [9]क्यों? क्योंकि अभी तक हम उस शान्त देश में नहीं पहुँचे थे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। [10]लेकिन तुम यरदन नदी को पार करोगे और उस देश में रहोगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। वहाँ यहोवा तुम्हें सभी शत्रुओं से चैन से रहने देगा और तुम सुरक्षित रहोगे। [11]तब यहोवा अपने लिये विशेष स्थान चुनेगा वह वहाँ अपना नाम प्रतिष्ठित करेगा और तुम उन सभी चीज़ों को वहीं लाओगे जिनके लिए मैं आदेश दे रहा हूँ। वहीं तुम अपनी होमबलि, अपनी बलियाँ, दशमांश, अपनी विशेष भेंट यहोवा को वचन दी गई भेंट, अपनी स्वेच्छा भेंट और अपने मवेशियों के

दशमांश व्यक्ति की आय का दसवाँ भाग। यह सिक्के हो सकते है, किन्तु इसमें खेत की कटी फसल, पशु या भेड़ें भी सम्मिलित थी।

झुण्ड एवं रेवड़ का पहलौठा बच्चा लाओ। [12]उस स्थान पर तुम अपने सभी लोगों, अपने बच्चों, सभी सेवकों और अपने नगर में रहने वाले सभी लेवीवंशियों के साथ इकट्ठे होओ। (ये लेवीवंशी अपने लिए भूमि का कोई भाग नहीं पाएंगे) यहोवा अपने परमेश्वर के साथ वहाँ आनन्द मनाओ। [13]सावधानी बरतो कि तुम अपनी होमबलियों को जहाँ देखो वहाँ न चढ़ा दो। [14]तुम्हारे परिवार समूहों में से किसी एक के क्षेत्र में यहोवा अपना विशेष स्थान चुनेगा। वहाँ अपनी होमबलि चढ़ाओ और तुम्हें बताए गए सभी अन्य काम वहीं करो।

[15]"जिस किसी जगह तुम रहो तुम नीलगाय या हिरन जैसे अच्छे जानवरों को मारकर खा सकते हो। तुम उतना माँस खा सकते हो जितना तुम चाहो, जितना यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे। कोई भी व्यक्ति इस माँस को खा सकता है, चाहे वह पवित्र हो या अपवित्र। [16]लेकिन तुम्हें खून नहीं खाना चाहिए। तुम्हें ख़ून को पानी की तरह जमीन पर बहा देना चाहिए।

[17]"कुछ ऐसी चीज़ें है जिन्हें तुम्हें उन जगहों पर नहीं खाना चाहिए जहाँ तुम रहते हो। वे चीज़ें ये हैं: परमेश्वर के हिस्से के तुम्हारे अन्न का कोई भाग, उसके हिस्से की नई दाखमधु और तेल का कोई भाग, तुम्हारे मवेशियों के झुण्ड या रेवड़ का पहलौठा बच्चा, परमेश्वर को वचन दी गई कोई भेंट, कोई स्वेच्छा भेंट या कोई भी परमेश्वर की अन्य भेंट। [18]तुम्हें उन भेंटों को केवल उसी स्थान पर खाना चाहिए जहाँ यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे साथ हो। अर्थात् यहोवा तुम्हारा परमेश्वर जिस स्थान को चुने। तुम्हें वहीं जाना चाहिए और अपने पुत्रों, पुत्रियों, सभी सेवकों और तुम्हारे नगर में रहने वाले लेवीवंशियों के साथ मिलकर खाना चाहिए। यहोवा अपने परमेश्वर के साथ वहाँ आनन्द मनाओ। जिन चीज़ों के लिए काम किया है उनका आनन्द लो। [19]ध्यान रखो कि इन भोजनों को लेवीवंशियों के साथ बाँटकर खाओ। यह तब तक करो जब तक अपने देश में रहो।

[20-21]"यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने यह वचन दिया है कि वह तुम्हारे देश की सीमा को और बढ़ाएगा। जब यहोवा ऐसा करेगा तो तुम उसके चुने हुए विशेष निवास से दूर रह सकते हो। यदि यह अत्यधिक दूर हो और तुम्हें माँस की भूख है तो तुम किसी भी प्रकार के माँस को, जो तुम्हारे पास है खा सकते हो। तुम यहोवा के दिये झुण्ड और रेवड़ में से किसी भी जानवर को मार सकते हो। यह वैसे ही करो जैसा करने का आदेश मैंने दिया है। यह माँस, तुम जब चाहो जहाँ भी रहो, खा सकते हो। [22]तुम इस माँस को वैसे ही खा सकते हो जैसे नीलगाय और हिरन का माँस खाते हो। कोई भी व्यक्ति यह कर सकता है चाहे वे लोग पवित्र हो या अपवित्र हो। [23]किन्तु निश्चय ही खून न खाओ। क्यों? क्योंकि ख़ून में जीवन है और तुम्हें वह माँस नहीं खाना चाहिए जिसमें अभी जीवन हो। [24]खून मत खाओ। तुम्हें खून को पानी की तरह जमीन पर डाल देना चाहिए। [25]तुम्हें वह सब कुछ करना चाहिए जिसे परमेश्वर उचित ठहराता है। इसलिए ख़ून मत खाओ। तब तुम्हारा और तुम्हारे वंशजों का भला होगा।

[26]"जिन चीज़ों को तुमने अर्पित किया है और जो तुम्हारी वचन दी गई भेंटें हैं उन्हें उस विशेष स्थान पर ले जाना जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर चुनेगा। [27]तुम्हें अपनी होमबलि वहीं चढ़ानी चाहिए। अपनी होमबलि का माँस और रक्त यहोवा अपने परमेश्वर की वेदी पर चढ़ाओ। तब तुम माँस खा सकते हो। [28]जो आदेश मैं दे रहा हूँ उनके पालन में सावधान रहो। जब तुम वह सब कुछ करते हो जो अच्छा है और ठीक है, जो यहोवा तुम्हारे परमेश्वर को प्रसन्न करता है तब हर चीज़ तुम्हारे लिए तथा तुम्हारे वंशजों के लिए सदा भला रहेगा।

[29]"जब तुम दूसरे राष्ट्रों के पास अपनी धरती को लेने जाओगे तो, यहोवा उन्हें हटने के लिए विवश करेगा तथा उन्हें नष्ट करेगा। तुम वहाँ जाओगे और उनसे भूमि लोगे। तुम उनकी भूमि पर रहोगे। [30]किन्तु ऐसा हो जाने के बाद सावधान रहो! वे राष्ट्र जिन देवताओं की पूजा करते हैं उन देवताओं के पास सहायता के लिए मत जाओ! यह सीखने की कोशिश न करो कि वे अपने देवताओं की पूजा कैसे करते हैं। वे जैसे पूजा करते हैं वैसे पूजा करने के बारे में न सोचो। [31]तुम यहोवा अपने परमेश्वर की वैसे उपासना नहीं करोगे जैसे वे अपने देवताओं की करते हैं। क्यों? क्योंकि वे अपने पूजा में सब तरह की बुरी चीज़ें करते हैं जिनसे यहोवा घृणा करता है। वे अपने देवताओं की बलि के लिए अपने बच्चों को भी जला देते हैं।

[32]"तुम्हें उन सभी कामों को करने के लिए सावधान रहना चाहिए जिनके लिए मैं आदेश देता हूँ। जो मैं तुमसे कह रहा हूँ उसमें न तो कुछ जोड़ो, न ही उसमें से कुछ कम करो।

झूठे नबियों का क्या किया जाए

13 "कोई नबी या स्वप्न फल ज्ञाता तुम्हारे पास आ सकता है। वह यह कह सकता है कि वह कोई दैवी चिन्ह या आश्चर्यकर्म दिखाएगा। [2]वह दैवी चिन्ह या आश्चर्यकर्म, जिसके बारे में उसने तुम्हें बताया है, वह सही हो सकता है। तब वह तुमसे कह सकता है कि तुम उन देवताओं का अनुसरण करो (जिन्हें तुम नहीं जानते।) वह तुमसे कह सकता है, 'आओ हम उन देवताओं की सेवा करें!' [3]उस व्यक्ति की बातों पर ध्यान मत दो। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा ले रहा है। वह यह जानना चाहता है कि तुम पूरे हृदय और आत्मा से उस से प्रेम करते हो अथवा नहीं। [4]तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर का अनुसरण करना चाहिए। तुम्हें उसका सम्मान करना चाहिए। यहोवा के आदेशों का पालन करो और वह करो जो वह कहता है। यहोवा की सेवा करो और उसे कभी न छोड़ो! [5]वह नबी या स्वप्न फल ज्ञाता मार दिया जाना चाहिए। क्यों? क्योंकि वह ही है जो तुमसे यहोवा तुम्हारे परमेश्वर की आज्ञा मानने से रोक रहा है। यहोवा एक ही है जो तुमको मिस्र से बाहर लाया। उसने तुमको वहाँ की दासता के जीवन से स्वतन्त्र किया। वह व्यक्ति यह कोशिश कर रहा है कि तुम यहोवा अपने परमेश्वर के आदेश के अनुसार जीवन मत बिताओ। इसलिए अपने लोगों से बुराई को दूर करने के लिए उस व्यक्ति को अवश्य मार डालना चाहिए।

[6]"कोई तुम्हारे निकट का व्यक्ति गुप्त रूप से दूसरे देवताओं की पूजा के लिए तुम्हें सहमत कर सकता है। यह तुम्हारा अपना भाई, पुत्र, पुत्री, तुम्हारी प्रिय पत्नी या तुम्हारा प्रिय दोस्त हो सकता है। वह व्यक्ति कह सकता है, 'आओ चलें, दूसरे देवताओं की सेवा करें।' (ये वैसे देवता हैं जिन्हें तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने कभी नहीं जाना। [7]वे उन लोगों के देवता हैं जो तुम्हारे चारों ओर अन्य देशों में रहते हैं, कुछ समीप और कुछ बहुत दूर।) [8]तुम्हें उस व्यक्ति के साथ सहमत नहीं होना चाहिए। उसकी बात मत सुनो। उस पर दया न दिखाओ। उसे छोड़ना नहीं। उसकी रक्षा मत करो। [9-10]तुम्हें उसे मार डालना चाहिए। तुम्हें उसे पत्थरों से मार डालना चाहिए! पत्थर उठाने वालों में तुम्हें पहला होना चाहिए और उसे मारना चाहिए। तब सभी लोगों को उसे मार देने के लिए उस पर पत्थर फेंकना चाहिए। क्यों? क्योंकि उस व्यक्ति ने तुम्हें यहोवा तुम्हारे परमेश्वर से दूर हटाने का प्रयास किया। यहोवा केवल एक है जो तुम्हें मिस्र से लाया, जहाँ तुम दास थे। [11]तब इस्राएल के सभी लोग सुनेंगे और भयभीत होंगे और वे तुम्हारे बीच और अधिक इस प्रकार के बुरे काम नहीं करेंगे।

नगर, जिन्हें नष्ट किया जाना चाहिए

[12]"यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुमको रहने के लिए नगर दिये हैं। कभी–कभी तुम नगरों में से किसी के बारे में बुरी खबर सुन सकते हो। तुम सुन सकते हो कि [13]तुम्हारे अपने राष्ट्रों में ही कुछ बुरे लोग अपने नगर के लोगों को बुरी बातों के लिए तैयार कर रहे हैं। वे अपने नगर के लोगों से कह सकते हैं, 'आओ चलें, दूसरे देवताओं की सेवा करें।' (ये ऐसे देवता होंगे जिन्हें तुमने पहले नहीं जाना होगा।) [14]यदि तुम ऐसी सूचना सुनो तो तुम्हें जहाँ तक हो सके यह जानने का प्रयत्न करना चाहिए कि यह सत्य है अथवा नहीं। यदि तुम्हें मालूम होता है कि यह सत्य है, यदि प्रमाणित कर सको कि सचमुच ऐसी भयंकर बात हुई, [15]तब तुम्हें उस नगर के लोगों को अवश्य दण्ड देना चाहिए। वे सभी जान से मार डाले जाने चाहिए और उनके सभी मवेशियों को भी मार डालो। तुम्हें उस नगर के लोगों को पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। [16]तब तुम्हें सभी कीमती चीज़ों को इकट्ठा करना चाहिए और उसे नगर के बीच ले जाना चाहिए और सब चीज़ों को नगर के साथ जला देना चाहिए। यह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिये होमबलि होगी। नगर को सदा के लिए राख का ढेर हो जाना चाहिए यह दुबारा नहीं बनाया जाना चाहिए। [17]उस नगर की हर एक चीज़ परमेश्वर को, नष्ट करने के लिए दी जानी चाहिए। इसलिए तुम्हें कोई चीज़ अपने लिए नहीं रखनी चाहिए। यदि तुम इस आदेश का पालन करते हो तो यहोवा तुम पर उतना अधिक क्रोधित होने से अपने को रोक लेगा। यहोवा तुम पर दया करेगा और तरस खायेगा। वह तुम्हारे राष्ट्र को वैसा बड़ा बनाएगा जैसा उसने तुम्हारे पूर्वजों को वचन दिया था। [18]यह तब होगा जब तुम यहोवा अपने परमेश्वर की बात सुनोगे अर्थात् यदि तुम उन आदेशों का पालन करोगे जिन्हें मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ। तुम्हें वही करना चाहिए जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उचित बताता है।

इस्राएली, यहोवा के विशेष लोग

14 "तुम यहोवा अपने परमेश्वर के बच्चे हो। यदि कोई मरे तो तुम्हें अपने को शोक में पड़ा दिखाने के लिए स्वयं को काटना नहीं चाहिए। तुम्हें अपने सिर के अगले भाग के बाल नहीं कटवाने चाहिए।* [2]क्यों? क्योंकि तुम अन्य लोगों से भिन्न हो। तुम यहोवा अपने परमेश्वर के विशेष लोग हो। उसने संसार के सभी लोगों में से, तुम्हें अपने विशेष लोगों के रूप में चुना है।

इस्राएलियों का भोजन, जिसे खाने की अनुमति थी

[3]"ऐसी कोई चीज़ न खाओ, यहोवा जिसे खाना बुरा कहता है। [4]तुम इन जानवरों को खा सकते हो: गाय, भेड़, बकरी, [5]हिरन, नीलगाय, मृग, जंगली भेड़, जंगली बकरी, चीतल और पहाड़ी भेड़। [6]तुम ऐसे किसी जानवर को खा सकते हो जिसके खुर दो भागों मे बंटे हों और जो जुगाली करते हों। [7]किन्तु ऊँटों, खरगोश या चहानी बिज्जू को न खाओ। ये जानवर जुगाली करते हैं किन्तु इनके खुर फटे नहीं होते। इसलिए ये जानवर तुम्हारे लिए शुद्ध भोजन नहीं हैं। [8]तुम्हें सूअर नहीं खाना चाहिए। उनके खुर फटे होते हैं, किन्तु वे जुगाली नहीं करते। इसलिए सूअर तुम्हारे लिए स्वच्छ भोजन नहीं है। सूअर का कोई माँस न खाओ और न ही मरे हुए सूअर को छुओ।

[9]तुम ऐसी कोई मछली खा सकते हो जिसके डैने और चोइटें हों। [10]किन्तु जल में रहने वाले किसी ऐसे प्राणी को न खाओ जिसके डैने और चोइटें न हों। ये तुम्हारे लिए शुद्ध भोजन नहीं हैं।

[11]"तुम किसी शुद्ध पक्षी को खा सकते हो। [12-18]किन्तु इन पक्षियों में से किसी को न खाओ: चील, किसी भी तरह के गिद्ध, बज्जर्द, किसी प्रकार का बाज, कौवे, तीतर, समुद्री बत्तख, किसी प्रकार का उल्लू, पेलिकन, कॉँरमारॅन्त सारस, किसी प्रकार का बगुला, नौवा या चमगादड़।

[19]"पंख वाले कीड़े तुम्हारे लिए शुद्ध भोजन नहीं हैं। तुम्हें उनको नहीं खाना चाहिए। [20]किन्तु तुम किसी शुद्ध पक्षी को खा सकते हो।

[21]"अपने आप मरे जानवर को न खाओ। तुम मरे जानवर को अपने नगर के विदेशी को दे सकते हो और वह उसे खा सकता है अथवा तुम मरे जानवर को विदेशी के हाथ बेच सकते हो। किन्तु तुम्हें मरे जानवर को स्वयं नहीं खाना चाहिए। क्यों? क्योंकि तुम यहोवा अपने परमेश्वर के हो। तुम उसके विशेष लोग हो।

"बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न पकाओ।

मन्दिर को दिया जानेवाला दशमांश

[22]"तुम्हें हर वर्ष अपने खेतों मे उगाई गई फसल का दसवाँ भाग निश्चयपूर्वक बचाना चाहिए। [23]तब तुम्हें उस स्थान पर जाना चाहिए जिसे यहोवा अपना विशेष निवास चुनता है। वहाँ यहोवा अपने परमेश्वर के साथ अपनी फसल का दशमांश, अन्न का दसवाँ भाग, तुम्हारा नया दाखमधु, तुम्हारा तेल, झुण्ड और रेवड़ में उत्पन्न पहला बच्चा, खाना चाहिए। तब तुम यहोवा अपने परमेश्वर का सदा सम्मान करना सीखोगे। [24]किन्तु वह स्थान इतना दूर हो सकता है कि तुम वहाँ तक की यात्रा न कर सको। यह सम्भव है कि यहोवा ने फसल का जो वरदान दिया है उसका दसवाँ भाग तुम वहाँ न पहुँचा सको। यदि ऐसा होता है तो यह करो: [25]अपनी फसल का वह भाग बेच दो। तब उस धन को लेकर यहोवा द्वारा चुने गए विशेष स्थान पर जाओ। [26]उस धन का उपयोग जो कुछ तुम चाहो उसके खरीदने में करो—गाय, भेड़, दाखमधु या अन्य स्वादिष्ट पेय या कोई अन्य चीज़ जो तुम चाहते हो। तब तुम्हें और तुम्हारे परिवार को खाना चाहिए और यहोवा अपने परमेश्वर के साथ वहाँ उस स्थान पर आनन्द मनाना चाहिए। [27]किन्तु अपने नगर में रहने वाले लेवीवंशियों की उपेक्षा न करो, क्योंकि उनके पास तुम्हारी तरह भूमि का हिस्सा नहीं हैं।

[28]"हर तीन वर्ष के अन्त में अपनी उस साल की फसल का दशमांश एक जगह इकट्ठा करो। इस भोजन को अपने नगर में उस स्थान पर जमा करो जहाँ दूसरे लोग उसका उपयोग कर सकें। [29]यह भोजन लेवीवंशियों के लिए है, क्योंकि उनके पास अपनी कोई भूमि नहीं है। यह भोजन तुम्हारे नगर में उन लोगों के लिये भी है जिन्हें इसकी आवश्यकता है—विदेशी, अनाथ बच्चे और विधवायें। यदि तुम यह करते हो तो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर सभी काम तुम जो कुछ करोगे उसके लिए आशीर्वाद देगा।

तुम्हें अपने ... कटवाने चाहिये जैसा मूसा के समय में किसी के मरने पर शोक प्रकट करने के लिए अपने को काट लेते थे या अपने सिर के बाल उतरवा लेते थे।

कर्ज को समाप्त करने के विशेष वर्ष

15 "हर सात वर्ष के अन्त में, तुम्हें ऋ ण को खत्म कर देना चाहिए। [2]ऋ ण को तुम्हें इस प्रकार खत्म करना चाहिए: हर एक व्यक्ति जिसने किसी इस्राएली को ऋ ण दिया है अपना ऋ ण खत्म कर दे। उसे अपने भाई (इस्राएली) से ऋ ण लौटाने को नहीं कहना चाहिए। क्यों? क्योंकि यहोवा ने कहा है कि उस वर्ष ऋ ण खत्म कर दिये जाते हैं। [3]तुम विदेशी से अपना ऋ ण वापस ले सकते हो। किन्तु उस ऋ ण को खत्म कर दोगे जो किसी दूसरे इस्राएली पर है। [4]किन्तु तुम्हारे बीच कोई गरीब व्यक्ति नहीं रहना चाहिए। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें सभी चीज़ों का वरदान उस देश में देगा जिसे वह तुम्हें रहने को दे रहा है। [5]यही होगा, यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन पूरी तरह करोगे। तुम्हें उस हर एक आदेश का पालन करने में सावधान रहना चाहिए जिसे आज मैंने तुम्हें दिया है। [6]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद देगा, जैसा कि उसने वचन दिया है और तुम्हारे पास बहुत से राष्ट्रों को ऋ ण देने के लिए पर्याप्त धन होगा। किन्तु तुम्हें किसी से ऋ ण लेने की आवश्यकता नहीं होगी। तुम बहुत से राष्ट्रों पर शासन करोगे। किन्तु उन राष्ट्रों में से कोई राष्ट्र तुम पर शासन नहीं करेगा।

[7]"जब तुम उस देश में रहोगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है तब तुम्हारे लोगों में कोई भी गरीब हो सकता है। तुम्हें स्वार्थी नहीं होना चाहिए। तुम्हें उस गरीब व्यक्ति को सहायता देने से इन्कार नहीं करना चाहिए। [8]तुम्हें उसका हाथ बँटाने की इच्छा रखनी चाहिए। तुम्हें उस व्यक्ति को जितने ऋ ण की आवश्यकता हो, देना चाहिए।

[9]"किसी को सहायता देने से इसलिए इन्कार न करो, क्योंकि ऋ ण को खत्म करने का सातवाँ वर्ष समीप है। इस प्रकार का बुरा विचार अपने मन में न आने दो। तुम्हें उस व्यक्ति के प्रति बुरे विचार नहीं रखने चाहिए जिसे सहायता की आवश्यकता है। तुम्हें उसकी सहायता करने से इन्कार नहीं करना चाहिए। यदि तुम उस गरीब व्यक्ति को कुछ नहीं देते तो वह यहोवा से तुम्हारे विरुद्ध शिकायत करेगा और यहोवा तुम्हें पाप करने का उत्तरदायी पाएगा।

[10]"गरीब को तुम जितना दे सको, दो और उसे देने का बुरा न मानो। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर इस अच्छे काम के लिए तुम्हें आशीष देगा। वह तुम्हारे सभी कामों और जो कुछ तुम करोगे उसमें तुम्हारी सहायता करेगा। [11]देश में सदा गरीब लोग भी होंगे। यही कारण है कि मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम अपने लोगों, जो लोग तुम्हारे देश में गरीब और सहायता चाहते हैं, उन को सहायता देने के लिए तैयार रहो।

सातवें वर्ष में दासों को स्वतन्त्र करने के नियम

[12]"यदि तुम्हारे लोगों में से कोई, हिब्रू स्त्री व पुरुष, तुम्हारे हाथ बेचा जाए तो उस व्यक्ति को तुम्हारी सेवा छ: वर्ष करनी चाहिए। तब सातवें वर्ष तुम्हें उसे अपने से स्वतन्त्र कर देना चाहिए। [13]किन्तु जब तुम अपने दास को स्वतन्त्र करो तो उसे बिना कुछ लिए मत जाने दो। [14]तुम्हें उस व्यक्ति को अपने रेवड़ों का एक बड़ा भाग, खलिहान से एक बड़ा भाग और दाखमधु से एक बड़ा भाग देना चाहिए। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें बहुत अच्छी चीज़ों की प्राप्ति का आशीर्वाद दिया है। उसी तरह तुम्हें भी अपने दास को बहुत सारी अच्छी चीज़ें देनी चाहिए। [15]तुम्हें याद रखना चाहिए कि तुम मिस्र में दास थे। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें मुक्त किया है। यही कारण है कि मैं तुमसे आज यह करने को कह रहा हूँ।

[16]"किन्तु तुम्हारे दासों में से कोई कह सकता है, 'मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।' वह ऐसा इसलिए कह सकता है कि वह तुमसे, तुम्हारे परिवार से प्रेम करता है और उसने तुम्हारे साथ अच्छा जीवन बिताया है। [17]इस सेवक को अपने द्वार से कान लगाने दो और एक सूए* का उपयोग उसके कान में छेद करने के लिए करो। तब वह सदा के लिए तुम्हारा दास हो जाएगा। तुम दासियों के लिए भी यही करो जो तुम्हारे यहाँ रहना चाहती हैं।

[18]"तुम अपने दास को मुक्त करते समय दु:ख का अनुभव मत करो। याद रखो, छ: वर्ष तक तुम्हारी सेवा, उससे आधी रकम पर उसने की जितनी मजदूरी पर रखे गए व्यक्ति को देनी पड़ती है। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम जो करोगे उसके लिए आशीष देगा।

पहलौठे जानवर के सम्बन्ध में नियम

[19]"तुम अपने झुण्ड या रेवड़ में सभी पहलौठे बच्चों को यहोवा का विशेष जानवर बना देना। उनमें से किसी

सूए एक औजार जो बड़ी सूई की तरह होता है और एक सिरे पर मूठी होती है।

जानवर का उपयोग तुम अपने काम के लिए न करो। इन भेड़ों में से किसी का ऊन न काटो। [20]हर वर्ष मवेशियों के झुण्ड या रेवड़ में पहलौठे जानवर को लेकर उस स्थान पर आओ जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर चुने। वहाँ तुम और तुम्हारे परिवार के लोग उन जानवरों को खायेंगे।

[21]"किन्तु यदि जानवर में कोई दोष हो, या लंगड़ा, अन्धा हो या इसमें कोई अन्य दोष हो, तो तुम्हें उसे यहोवा अपने परमेश्वर को भेंट नहीं चढ़ानी चाहिए। [22]किन्तु तुम उसका माँस वहाँ खा सकते हो जहाँ तुम रहते हो। इसे कोई व्यक्ति खा सकता है, चाहे वह पवित्र हो चाहे अपवित्र हो। नीलगाय या हिरन का माँस खाने पर वही नियम लागू होगा, जो इस माँस पर लागू होता है। [23]किन्तु तुम्हें जानवर का खून नहीं खाना चाहिए। तुम्हें खून को पानी की तरह जमीन पर बहा देना चाहिए।

फसह पर्व

16 "यहोवा अपने परमेश्वर का फसह पर्व आबीब* के महीने में मनाओ। क्यों? क्योंकि आबीब के महीने में तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें रात में मिस्र से बाहर ले आया था। [2]तुम्हें उस स्थान पर जाना चाहिए जिसे यहोवा अपना विशेष निवास बनाएगा। वहाँ तुम्हें एक गाय या बकरी को यहोवा अपने परमेश्वर के सम्मान में, फसह पर्व के लिए भेंट के रूप में चढ़ाना चाहिए। [3]इस भेंट के साथ खमीर वाली रोटी मत खाओ। तुम्हें सात दिन तक अखमीरी रोटी खानी चाहिए। इस रोटी को 'विपत्ति की रोटी' कहते हैं। यह तुम्हें मिस्र में जो विपत्तियाँ तुम पर पड़ी उसे याद दिलाने में सहायता करेंगे। याद करो कि कितनी शीघ्रता से तुम्हें वह देश छोड़ना पड़ा। तुम्हें उस दिन को तब तक याद रखना चाहिए जब तक तुम जीवित रहो। [4]सात दिन तक देश में किसी के घर में कहीं खमीर नहीं होनी चाहिए। जो माँस पहले दिन की शाम को भेंट में चढ़ाओ उसे सवेरा होने के पहले खा लेना चाहिए।

[5]"तुम्हें फसह पर्व के जानवरों की बलि उन नगरों में से किसी में नहीं चढ़ानी चाहिए जिन्हें यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुमको दिए हैं। [6]तुम्हें फसह पर्व के जानवर की बलि केवल उस स्थान पर चढ़ानी चाहिए जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर अपने लिये विशेष निवास के रूप में चुने। वहाँ तुम फसह पर्व के जानवर को जब सूर्य डूबे तब शाम को बलि चढ़ानी चाहिए। तुम इसे साल के उसी समय करोगे जिस समय तुम मिस्र से बाहर निकले थे। [7]और तुम्हें फसह पर्व का माँस यहोवा तुम्हारा परमेश्वर जिस स्थान को चुनेगा वहीं पकाओगे और खाओगे। तब सवेरे तुम्हें अपने खेमों में चले जाना चाहिए। [8]तुम्हें अखमीरी रोटी छः दिन तक खानी चाहिए। सातवें दिन तुम्हें कोई भी काम नहीं करना चाहिए। उस दिन यहोवा अपने परमेश्वर के लिए विशेष सभा में सभी एकत्रित होंगे।

सप्ताहों का पर्व (पिन्तेकुस्त)

[9]"जब तुम फसल काटना आरम्भ करो तब से तुम्हें सात हफ्ते गिनने चाहिए। [10]तब यहोवा अपने परमेश्वर के लिए सप्ताहों का पर्व करो। इसे एक स्वेच्छा बलि उसे लाकर करो। तुम्हें कितना देना है, इसका निश्चय यह सोचकर करो कि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें कितना आशीर्वाद दिया है। [11]उस स्थान पर जाओ जिसे यहोवा अपने विशेष निवास के रूप में चुनेगा। वहाँ तुम और तुम्हारे लोग, यहोवा अपने परमेश्वर के साथ आनन्द का समय बिताएंगे। अपने सभी लोगों, अपने पुत्रों, अपनी पुत्रियों और अपने सभी सेवकों को वहाँ ले जाओ और अपने नगर में रहने वाले लेवीवंशियों, विदेशियों, अनाथों और विधवाओं को भी साथ में ले जाओ। [12]यह मत भूलो, कि तुम मिस्र में दास थे। तुम्हें निश्चय करना चाहिए कि तुम इन नियमों का पालन करोगे।

खेमों का पर्व

[13]"जब तुम अपने खलिहान और दाखमधुशाला से सात दिन तक अपनी फ़सलें एकत्रित कर लो तब खेमों का पर्व करो। [14]तुम, तुम्हारे पुत्र, तुम्हारी पुत्रियाँ, तुम्हारे सभी सेवक तथा तुम्हारे नगर में रहने वाले लेवीवंशी, विदेशी, अनाथ बालक और विधवाऐं सभी इस दावत में आनन्द मनायें। [15]तुम्हें इस दावत को सात दिन तक उस विशेष स्थान पर मनाना चाहिए जिसे यहोवा चुनेगा। यह तुम यहोवा अपने परमेश्वर के सम्मान में करो। आनन्द मनाओ! क्योंकि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें तुम्हारी फसल के लिए तथा तुमने जो कुछ भी किया है उसके लिए आशीष दी है।

आबीब हिब्रू वर्ष का पहला महीना। बाद में इसे निसन कहा गया। इसमें आज के मार्च–अप्रैल शामिल थे।

[16]“तुम्हारे सभी लोग वर्ष में तीन बार यहोवा अपने परमेश्वर से मिलने के लिए उस विशेष स्थान पर आएंगे जिसे वह चुनेगा। यह अखमीरी रोटी के पर्व के समय, सप्ताहों के पर्व के समय तथा खेमों के पर्व के समय होगा। हर एक व्यक्ति जो यहोवा से मिलने जाएगा कोई भेंट लाएगा। [17]हर एक व्यक्ति उतना देगा जितना वह दे सकेगा। कितना देना है, उसका निश्चय वह यह सोचकर करेगा कि उसे यहोवा ने कितना दिया है।

लोगों के लिए न्यायाधीश और अधिकारी

[18]“यहोवा तुम्हारा परमेश्वर जिन नगरों को तुम्हें दे रहा है उनमें से हर एक नगर में तुम्हें अपने परिवार समूह के लिए न्यायाधीश और अधिकारी बनाना चाहिए। इन न्यायाधीशों और अधिकारियों को जनता के साथ सही और ठीक न्याय करना चाहिए। [19]तुम्हें ठीक न्याय को बदलना नहीं चाहिए। तुम्हें किसी के सम्बन्ध में अपने इरादे को बदलने के लिए धन नहीं लेना चाहिए। धन बुद्धिमान लोगों को अन्धा करता है और उसे बदलता है जो भला आदमी कहेगा। [20]तुम्हें हर समय निष्पक्ष तथा न्याय संगत होने का पूरा प्रयास करना चाहिए। तब तुम जीवित रहोगे और तुम उस देश को पाओगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है और तुम उसमें रहोगे।

परमेश्वर मूर्तियों से घृणा करता है

[21]“जब तुम यहोवा अपने परमेश्वर के लिए वेदी बनाओ तो तुम वेदी के सहारे कोई लकड़ी का स्तम्भ न बनाओ जो अशेरा देवी के सम्मान में बनाए जाते हैं। [22]और तुम्हें विशेष पत्थर झूठे देवताओं की पूजा के लिए नहीं खड़े करने चाहिए। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर इनसे घृणा करता है!

बलियों के लिए जानवर निर्दोष होने चाहिए

17 “तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर को कोई ऐसी गाय, भेड़, बलि में नहीं चढ़ानी चाहिए जिसमें कोई दोष या बुराई हो। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर इससे घृणा करता है!

मूर्ति पूजक को दण्ड

[2]“तुम उन नगरों में कोई बुरी बात होने की सूचना पा सकते हो जिन्हें यहोवा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। तुम यह सुन सकते हो कि तुम में से किसी स्त्री या पुरुष ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। तुम यह सुन सकते हो कि उन्होंने यहोवा से वाचा तोड़ी है [3]अर्थात् उन्होंने दूसरे देवताओं की पूजा की है। या यह हो सकता है कि उन्होंने सूर्य, चन्द्रमा या तारों की पूजा की हो। यह यहोवा के आदेश के विरुद्ध है जिसे मैंने तुम्हें दिया है। [4]यदि तुम ऐसी बुरी खबर सुनते हो तो तुम्हें उसकी जाँच सावधानी से करनी चाहिए। तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि क्या यह सत्य है कि यह भयंकर काम सचमुच इस्राएल में हो चुका है। यदि तुम इसे प्रमाणित कर सको कि यह सत्य है, [5]तब तुम्हें उस व्यक्ति को अवश्य दण्ड देना चाहिए जिसने यह बुरा काम किया है। तुम्हें उस पुरुष या स्त्री को नगर के द्वार के पास सार्वजनिक स्थान पर ले जाना चाहिए और उसे पत्थरों से मार डालना चाहिए। [6]किन्तु यदि एक ही गवाह यह कहता है कि उसने बुरा काम किया है तो उसे मृत्यु दण्ड नहीं दिया जाएगा। किन्तु यदि दो या तीन गवाह यह कहते हैं कि यह सत्य है तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। [7]गवाह को पहला पत्थर उस व्यक्ति को मारने के लिये फेंकना चाहिए। तब अन्य लोगों को उसकी मृत्यु पूरी करने के लिए पत्थर फेंकना चाहिए। इस प्रकार तुम्हें उस बुराई को अपने मध्य से दूर करना चाहिए।

जटिल मुकदमें

[8]“कभी ऐसी समस्या आ सकती है जो तुम्हारे न्यायालयों के लिए निर्णय देने में इतनी कठिन हो कि वे निर्णय ही न दे सकें। यह हत्या का मुकदमा या दो लोगों के बीच का विवाद हो सकता है अथवा यह झगड़ा हो सकता है जिसमें किसी को चोट आई हो। जब इन मुकदमों पर तुम्हारे नगरों में बहस होती है तो तुम्हारे न्यायाधीश सम्भव है, निर्णय न कर सकें कि ठीक क्या है? तब तुम्हें उस विशेष स्थान पर जाना चाहिए जो यहोवा तुम्हारे परमेश्वर द्वारा चुना गया हो। [9]तुम्हें लेवी परिवार समूह के याजकों और उस समय के न्यायाधीश के पास जाना चाहिए। वे लोग उस मुकदमें का फैसला करेंगे। [10]यहोवा के विशेष स्थान पर वे अपना निर्णय तुम्हें सुनाएंगे। जो भी वे कहें उसे तुम्हें करना चाहिए। [11]तुम्हें उनके फैसले

स्वीकार करने चाहिए और उनके निर्देश का ठीक–ठीक पालन करना चाहिए। तुम्हें उससे भिन्न कुछ भी नहीं करना चाहिए जो वे तुम्हें करने को कहते हैं।

[12]"तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर की सेवा करने वाले उस समय के याजक और न्यायाधीश की आज्ञा का पालन करने से इन्कार करने वाले किसी व्यक्ति को भी दण्ड देना चाहिए। उस व्यक्ति को मरना चाहिए। तुम्हें इस्राएल से इस बुरे व्यक्ति को हटाना चाहिए। [13]सभी लोग इस दण्ड के विषय में सुनेंगे और डरेंगे और वे इस कुकर्म को नहीं करेंगे।

राजा कैसे चुनें

[14]"तुम उस प्रदेश में जाओगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। तुम उस देश पर अधिकार करोगे और उसमें रहोगे। तब तुम कहोगे, 'हम लोग अपने ऊपर एक राजा वैसा ही प्रतिष्ठित करेंगे जैसा हमारे चारों ओर के राष्ट्रों में है।' [15]जब ऐसा हो तब तुम्हें यह पक्का निश्चय होना चाहिए कि तुमने उसे ही राजा चुना है जिसे यहोवा चुनता है। तुम्हारा राजा तुम्हीं लोगों में से होना चाहिए। तुम्हें विदेशी को अपना राजा नहीं बनाना चाहिए। [16]राजा को अत्यधिक घोड़े अपने लिए नहीं रखने चाहिए और उसे लोगों को अधिक घोड़े लाने के लिए मिस्र नहीं भेजना चाहिए। क्यों? क्योंकि तुमसे यहोवा ने कहा है, 'तुम्हें उस रास्ते पर कभी नहीं लौटना है।' [17]राजा को बहुत पत्नियाँ भी नहीं रखनी चाहिए। क्यों? क्योंकि यह काम उसे यहोवा से दूर हटायेगा और राजा को सोने, चाँदी से अपने को सम्पन्न नहीं बनाना चाहिए।

[18]"और जब राजा शासन करने लगे तो उसे एक पुस्तक में अपने लिए नियमों की नकल कर लेनी चाहिए। उसे याजकों और लेवीवंशियों की पुस्तकों से नकल करनी चाहिए। [19]राजा को उस पुस्तक को अपने साथ रखना चाहिए। उसे उस पुस्तक को जीवन भर पढ़ना चाहिए। क्योंकि तब राजा यहोवा अपने परमेश्वर का सम्मान करना सीखेगा और वह नियम के आदेशों का पूरा पालन करना सीखेगा। [20]तब राजा यह नहीं सोचेगा कि वह अपने लोगों में से किसी से भी अधिक अच्छा है। वह नियम के विरुद्ध नहीं जाएगा बल्कि इसका ठीक–ठीक पालन करेगा। तब वह राजा और उसके वंशज इस्राएल के राज्य पर लम्बे समय तक शासन करेंगे।

याजकों तथा लेवीवंशियों की सहायता

18 "लेवी का परिवार समूह इस्राएल में कोई भूमि का भाग नहीं पाएगा। वे लोग याजक के रूप में सेवा करेंगे। वे अपना जीवन यापन उस भेंट को खाकर करेंगे जो आग पर पकेगी और यहोवा को चढ़ाई जाएगी। लेवी के परिवार समूह के हिस्से में वही है। [2]वे लेवीवंशी लोग भूमि का कोई हिस्सा अन्य परिवार समूहों की तरह नहीं पाएंगे। लेवीवंशियों के हिस्से में स्वयं यहोवा है। यहोवा ने इसके लिए उनको वचन दिया है।

[3]"जब तुम कोई बैल, या भेड़ बलि के लिए मारो तो तुम्हें याजकों को ये भाग देने चाहिए: कंधा, दोनों गाल और पेट। [4]तुम्हें याजकों को अपना अन्न, अपनी नयी दाखमधु और अपनी पहली फ़सल का तेल देना चाहिए। तुम्हें लेवीवंशियों को अपनी भेड़ों का पहला कटा ऊन देना चाहिए। [5]क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे सभी परिवार समूहों की देखभाल करता था और उसने लेवी और उनके वंशजों को सदा के लिए याजक के रूप में सेवा करने के लिये चुना है।

[6]"लेवीवंशी* जो इस्राएल में तुम्हारे नगरों में से किसी में रहता है, अपना घर छोड़ सकता है और यहोवा के विशेष स्थान पर जा सकता है। [7]तब यह लेवीवंशी यहोवा अपने परमेश्वर के नाम पर सेवा कर सकता है। उसे परमेश्वर के विशेष स्थान में वैसे ही सेवा करनी चाहिए जैसे उसके भाई अन्य लेवीवंशी करते हैं। [8]वह लेवीवंशी, अपने परिवार को सामान्य रूप से मिलने वाले हिस्से के अतिरिक्त अन्य लेवीवंशियों के साथ बराबर का हिस्सेदार होगा।

इस्राएलियों को अन्य राष्ट्रों की नकल नहीं करनी चाहिए

[9]"जब तुम उस राष्ट्र में पहुँचो, जो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमको दे रहा है, तब उस राष्ट्र के लोग जो भयंकर काम वहाँ कर रहें हों उन्हें मत सीखो। [10]अपने पुत्रों और पुत्रियों की बलि अपनी वेदी पर आग में न दो। किसी ज्योतिषी से बात करके या किसी जादूगर, डायन या सयाने के पास जाकर यह न सीखो कि भविष्य

लेवीवंशी ये मन्दिर में याजकों की सहायता करते थे और प्रशासन के लिये कार्य करते थे।

में क्या होगा? [11]किसी भी व्यक्ति को किसी पर जादू–टोना चलाने का प्रयत्न न करने दो और तुम में से कोई व्यक्ति ओझा* या भूतसिद्धक* नहीं बनेगा। और कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति से बात करने का प्रयत्न न करेगा जो मर चुका है। [12]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उन लोगों से घृणा करता है जो ऐसा करते हैं। यही कारण है कि वह तुम्हारे सामने इन लोगों को देश छोड़ने को विवश करेगा। [13]तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए और उसके प्रति निष्ठावान होना चाहिए।

यहोवा का विशेष नबी :

[14]"तुम्हें उन राष्ट्रों के लोगों को बलपूर्वक अपने देश से हटा देना चाहिए। उन राष्ट्रों के लोग ज्योतिषियों और जादूगरों की बात मानते हैं। किन्तु यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें वैसा नहीं करने देगा। [15]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे पास अपना नबी भेजेगा। यह नबी तुम्हारे अपने ही लोगों में से आएगा। वह मेरी तरह ही होगा। तुम्हें इस नबी की बात माननी चाहिए। [16]यहोवा तुम्हारे पास इस नबी को भेजेगा क्योंकि तुमने ऐसा करने के लिए उससे कहा है। उस समय जब तुम होरेब (सीनै) पर्वत के चारों ओर इकट्ठे हुए थे, तुम यहोवा की आवाज और पहाड़ पर भीषण आग को देखकर भयभीत थे। इसलिए तुमने कहा था, 'हम लोग यहोवा अपने परमेश्वर की आवाज फिर न सुनें। हम लोग उस भीषण आग को फिर न देखें। हम मर जाएंगे!'

[17]"यहोवा ने मुझसे कहा, 'वे जो चाहते हैं, वह ठीक है। [18]मैं तुम्हारी तरह का एक नबी उनके लिए भेज दूँगा। यह नबी उन्हीं लोगों में से कोई एक होगा। मैं उसे वह सब बताऊँगा जो उसे कहना होगा और वह लोगों से वही कहेगा जो मेरा आदेश होगा। [19]यह नबी मेरे नाम पर बोलेगा और जब वह कुछ कहेगा तब यदि कोई व्यक्ति मेरे आदेशों को सुनने से इन्कार करेगा तो मैं उस व्यक्ति को दण्ड दूँगा।'

ओझा वह व्यक्ति जो मृत–आत्माओं से बातचीत करना चाहता है।

भूतसिद्धक वह व्यक्ति जो दुष्ट आत्माओं का उपयोग जादू के लिए करता है।

झूठे नबियों को कैसे जाना जाये

[20]"किन्तु कोई नबी कुछ ऐसा कह सकता है जिसे करने के लिए मैंने उसे नहीं कहा है और वह लोगों से कह सकता है कि वह मेरे स्थान पर बोल रहा है। यदि ऐसा होता है तो उस नबी को मार डालना चाहिए या कोई ऐसा नबी हो सकता है जो दूसरे देवताओं के नाम पर बोलता है। उस नबी को भी मार डालना चाहिए। [21]तुम सोच सकते हो, 'हम कैसे जान सकते हैं कि नबी का कथन, यहोवा का नहीं है?' [22]यदि कोई नबी कहता है कि वह यहोवा की ओर से कुछ कह रहा है, किन्तु उसका कथन सत्य घटित नहीं होता, तो तुम्हें जान लेना चाहिए कि यहोवा ने वैसा नहीं कहा। तुम समझ जाओगे कि यह नबी अपने ही विचार प्रकट कर रहा था। तुम्हें उससे डरने की आवश्यकता नहीं।

सुरक्षा के लिए तीन नगर

19 "यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमको वह देश दे रहा है जो दूसरे राष्ट्रों का है। यहोवा उन राष्ट्रों को नष्ट करेगा। तुम वहाँ रहोगे जहाँ वे लोग रहते हैं। तुम उनके नगर और घरों को लोगे। जब ऐसा हो, [2-3]तब तुम्हें भूमि को तीन भागों में बाँटना चाहिए। तब तुम्हें हर एक भाग में सभी लोगों के समीप पड़ने वाला नगर उस क्षेत्र में चुनना चाहिए और तुम्हें उन नगरों तक सड़कें बनानी चाहिए तब कोई भी व्यक्ति जो किसी दूसरे व्यक्ति को मारता है वहाँ भागकर जा सकता है।

[4]"जो व्यक्ति किसी को मारता है और सुरक्षा के लिए इन तीन नगरों में से कहीं भागकर पहुँचता है उस व्यक्ति के लिए नियम यह है: यह व्यक्ति वही हो जो संयोगवश किसी व्यक्ति को मार डाले। यह वही व्यक्ति हो जो मारे गए व्यक्ति से घृणा न करता हो। [5]एक उदाहरण है: कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के साथ जंगल में लकड़ी काटने जाता है। उस में से एक व्यक्ति लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ी को एक पेड़ पर चलाता है, किन्तु कुल्हाड़ी दस्ते से निकल जाती है। कुल्हाड़ी दूसरे व्यक्ति को लग जाती है और उसे मार डालती है। वह व्यक्ति, जिसने कुल्हाड़ी चलाई, उन नगरों में भाग सकता है और अपने को सुरक्षित कर सकता है। [6]किन्तु यदि नगर बहुत दूर होगा तो वह काफी तेज भाग नहीं सकेगा। मारे गए व्यक्ति

का कोई सम्बन्धी* उसका पीछा कर सकता है और नगर में उसके पहुँचने से पहले ही उसे पकड़ सकता है। सम्बन्धी बहुत क्रोधित हो सकता है और उस व्यक्ति की हत्या कर सकता है। किन्तु उस व्यक्ति को प्राण–दण्ड उचित नहीं है। वह उस व्यक्ति से घृणा नहीं करता था जो उसके हाथों मारा गया। [7]इसलिए मैं आदेश देता हूँ कि तीन विशेष नगरों को चुनो। यह नगर सबके लिये बन्द रहेंगे।

[8]"यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों को यह वचन दिया कि मैं तुम लोगों की सीमा का विस्तार करूँगा। वह तुम लोगों को सारा देश देगा जिसे देने का वचन उसने तुम्हारे पूर्वजों को दिया। [9]वह यह करेगा, यदि तुम उन आदेशों का पालन पूरी तरह करोगे जिन्हें मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ अर्थात् यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर से प्रेम करोगे और उसके मार्ग पर चलते रहोगे। तब यदि यहोवा तुम्हारे देश को बड़ा बनाता है तो तुम्हें तीन अन्य नगर सुरक्षा के लिए चुनने चाहिए। वे प्रथम तीन नगरों के साथ जोड़े जाने चाहिए। [10]तब निर्दोष लोग उस देश में नहीं मारे जाएंगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें अपना बनाने के लिये दे रहा है और तुम किसी भी मृत्यु के लिये अपराधी नहीं होगे।

[11]"किन्तु एक व्यक्ति किसी व्यक्ति से घृणा कर सकता है। वह व्यक्ति उस व्यक्ति को मारने के लिए प्रतीक्षा में छिपा रह सकता है जिसे वह घृणा करता है। वह उस व्यक्ति को मार सकता है और सुरक्षा के लिए चुने इन नगरों में भागकर पहुँच सकता है। [12]यदि ऐसा होता है तो उस व्यक्ति के नगर के बुजुर्ग किसी को उसे पकड़ने और सुरक्षा के नगर से उसे बाहर लाने के लिये भेज सकते हैं। नगर के मुखिया तथा वरिष्ठ व्यक्ति उसे उस सम्बन्धी को देंगे जिसका कर्तव्य उसको दण्ड देना है। हत्यारा अवश्य मारा जाना चाहिए। [13]उसके लिए तुम्हें दुःखी नहीं होना चाहिए। तुम्हें निर्दोष लोगों को मारने के अपराध से इस्राएल को स्वच्छ रखना चाहिए। तब सब कुछ तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा।

सीमा चिन्ह

[14]"तुम्हें अपने पड़ोसी के सीमा–चिन्हों को नहीं हटाना चाहिए। बीते समय में लोग यह सीमा–चिन्ह उस भूमि पर बनाते थे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें रहने के लिए देगा और जो तुम्हारी होगी।

गवाह

[15]"यदि किसी व्यक्ति पर नियम के खिलाफ कुछ करने का मुकदमा हो तो एक गवाह इसे प्रमाण करने के लिए काफी नहीं होगा कि वह दोषी है। उसने निश्चय ही बुरा किया है इसे प्रमाणित करने के लिए दो या तीन गवाह होने चाहिए।

[16]"कोई गवाह किसी व्यक्ति को झूठ बोलकर और यह कहकर कि उसने अपराध किया है उसे हानि पहुँचाने की कोशिश कर सकता है। [17]यदि ऐसा होता है तो आपस में वाद करने वाले व्यक्तियों को यहोवा के आवास पर जाना चाहिए और उनके मुकदमे का निर्णय याजकों एवं उस समय के मुख्य न्यायाधीशों द्वारा होना चाहिए। [18]न्यायाधीशों को सावधानी के साथ प्रश्न पूछने चाहिए। वे पता लगा सकते हैं कि गवाह ने दूसरे व्यक्ति के खिलाफ झूठ बोला है। यदि गवाह ने झूठ बोला है तो, [19]तुम्हें उसे दण्ड देना चाहिए। तुम्हें उसे वही हानि पहुँचानी चाहिए जो वह दूसरे व्यक्ति को पहुँचाना चाहता था। इस प्रकार तुम अपने बीच से कोई भी बुरी बात निकाल बाहर कर सकते हो। [20]दूसरे सभी लोग इसे सुनेंगे और भयभीत होंगे और कोई भी फिर वैसी बुरी बात नहीं करेगा।

[21]"तुम उस पर दया–दृष्टि न करना जिसे बुराई के लिए तुम दण्ड देते हो। जीवन के लिये जीवन, आँख के लिये आँख, दाँत के लिये दाँत, हाथ के लिये हाथ और पैर के लिये पैर लिया जाना चाहिए।

युद्ध के लिये नियम

20 "जब तुम अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध में जाओ, और अपनी सेना से अधिक घोड़े, रथ, व्यक्तियों को देखो, तो तुम्हें भयभीत नहीं होना चाहिए। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे साथ है और वही एक है जो तुम्हें मिस्र से बाहर निकाल लाया।

[2]"जब तुम युद्ध के निकट पहुँचो, तब याजक को सैनिकों के पास जाना चाहिए और उनसे बात करनी

मारे गये ... सम्बन्धी शाब्दिक "खून का बदला लेने वाला।" जब कोई व्यक्ति मारा जाता था तब उसके नज़दीकी सम्बन्धियों का यह कर्तव्य होता था कि उस मारने वाले व्यक्ति को वे दण्ड दें।

चाहिए। [3]याजक कहेगा, 'इस्राएल के लोगों, मेरी बात सुनो! आज तुम लोग अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध में जा रहे हो। अपना साहस न छोड़ो! परेशान न हो या घबराहट में न पड़ो! शत्रु से डरो नहीं! [4]क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर शत्रुओं के विरुद्ध लड़ने के लिये तुम्हारे साथ जा रहा है। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा!'

[5]"वे लेवीवंशी अधिकारी सैनिकों से यह कहेंगे, 'क्या यहाँ कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने अपना नया घर बना लिया है, किन्तु अब तक उसे अर्पित नहीं किया है? उस व्यक्ति को अपने घर लौट जाना चाहिए। वह युद्ध में मारा जा सकता है और तब दूसरा व्यक्ति उसके घर को अर्पित करेगा। [6]क्या कोई व्यक्ति यहाँ ऐसा है जिसने अंगूर के बाग लगाये हैं, किन्तु अभी तक उससे कोई अंगूर नहीं लिया है? उस व्यक्ति को घर लौट जाना चाहिए। यदि वह व्यक्ति युद्ध में मारा जाता है तो दूसरा व्यक्ति उसके बाग के फल का भोग करेगा। [7]क्या यहाँ कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके विवाह की बात पक्की हो चुकी है। उस व्यक्ति को घर लौट जाना चाहिए। यदि वह युद्ध में मारा जाता है तो दूसरा व्यक्ति उस स्त्री से विवाह करेगा जिसके साथ उसके विवाह की बात पक्की हो चुकी है।'

[8]"वे लेवीवंशी अधिकारी, लोगों से यह भी कहेंगे, 'क्या यहाँ कोई ऐसा व्यक्ति है जो साहस खो चुका है और भयभीत है। उसे घर लौट जाना चाहिए। तब वह दूसरे सैनिकों को भी साहस खोने में सहायक नहीं होगा।' [9]जब अधिकारी सैनिकों से बात करना समाप्त कर ले तब वे सैनिकों को युद्ध में ले जाने वाले नायकों को चुनें।

[10]"जब तुम नगर पर आक्रमण करने जाओ तो वहाँ के लोगों के सामने शान्ति का प्रस्ताव रखो। [11]यदि वे तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार करते हैं और अपने फाटक खोल देते हैं तब उस नगर में रहने वाले सभी लोग तुम्हारे दास हो जाएँगे और तुम्हारा काम करने के लिए विवश किये जाएँगे। [12]किन्तु यदि नगर शान्ति प्रस्ताव स्वीकार करने से इन्कार करता है और तुमसे लड़ता है तो तुम्हें नगर को घेर लेना चाहिए [13]और जब यहोवा तुम्हारा परमेश्वर नगर पर तुम्हारा अधिकार कराता है तब तुम्हें सभी पुरुषों को मार डालना चाहिए। [14]तुम अपने लिए स्त्रियाँ, बच्चे, पशु तथा नगर की हर एक चीज़ ले सकते हो। तुम इन सभी चीज़ों का उपयोग कर सकते हो। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने ये चीज़ें तुमको दी हैं। [15]जो नगर तुम्हारे प्रदेश में नही हैं और बहुत दूर हैं, उन सभी के साथ तुम ऐसा व्यवहार करोगे।

[16]"किन्तु जब तुम वह नगर उस प्रदेश में लेते हो जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है तब तुम्हें हर एक को मार डालना चाहिए। [17]तुम्हें हित्ती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी सभी लोगों को पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने, यह करने का तुम्हें आदेश दिया है। [18]क्यों? क्योंकि तब वे तुम्हें यहोवा तुम्हारे परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने की शिक्षा नहीं दे सकते। वे उन भयंकर बातों में से किसी की शिक्षा तुमको नहीं दे सकते जो वे अपने देवताओं की पूजा के समय करते हैं।

[19]"जब तुम किसी नगर के विरुद्ध युद्ध कर रहे होगे तो तुम लम्बे समय तक उसका घेरा डाले रह सकते हो। तुम्हें नगर के चारों ओर के फलदार पेड़ों को नहीं काटना चाहिए। तुम्हें इनसे फल खाना चाहिए किन्तु काटकर गिराना नहीं चाहिए। ये पेड़ शत्रु नहीं हैं अत: उनके विरुद्ध युद्ध मत छेड़ो! [20]किन्तु उन पेड़ों को काट सकते हो जिन्हें तुम जानते हो कि ये फलदार नहीं हैं। तुम इनका उपयोग उस नगर के विरुद्ध घेराबन्दी में कर सकते हो, जब तक कि उसका पतन न हो जाए।

यदि कोई व्यक्ति मारा हुआ पाया जाए

21 "उस देश में जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें रहने के लिए दे रहा है, कोई व्यक्ति मैदान में मरा हुआ पाया जा सकता है। किन्तु किसी को यह पता नहीं चल सकता कि उसे किसने मारा। [2]तब तुम्हारे मुखिया और न्यायाधीशों को मारे गए व्यक्ति के चारों ओर से नगरों की दूरी को नापना चाहिए। [3]जब तुम यह जान जाओ कि मरे व्यक्ति के समीपतम कौन सा नगर है तब उस नगर के मुखिया अपने झुण्डों में से एक गाय लेंगे। यह ऐसी गाय हो जिसने कभी बछड़े को जन्म न दिया हो। जिसका उपयोग कभी भी किसी काम करने में न किया गया हो। [4]उस नगर के मुखिया उस गाय को बहुत जल वाली घाटी में लाएंगे। यह ऐसी घाटी होनी चाहिए जिसे कभी जोता न गया हो और न उसमें पेड़ पौधे रोपे गये हों। तब मुखियाओं को उस घाटी में वहीं उस गाय की गर्दन तोड़ देनी चाहिए। [5]लेवीवंशी याजकों को

वहाँ जाना चाहिए। (यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने इन याजकों को अपनी सेवा के लिए और अपने नाम पर आशीर्वाद देने के लिए चुना है।) याजक यह निश्चित करेंगे कि झगड़े के विषय में कौन सच्चा है। [6]मारे गये व्यक्ति के समीपतम नगर के मुखिया अपने हाथों को उस गाय के ऊपर धोएंगे जिसकी गर्दन घाटी में तोड़ दी गई है। [7]ये मुखिया अवश्य कहेंगे, 'हमने इस व्यक्ति को नहीं मारा और हमने इसका मारा जाना नहीं देखा। [8]यहोवा, इस्राएल के लोगों को क्षमा कर, जिनका तूने उद्धार किया है। अपने लोगों में से किसी निर्दोष व्यक्ति को दोषी न ठहराने दे।' तब वे हत्या के लिये दोषी नहीं ठहराए जाएंगे। [9]इन मामलों में वह करना ही तुम्हारे लिये ठीक है। ऐसा करके तुम किसी निर्दोष की हत्या करने के दोषी नहीं रहोगे।

युद्ध में प्राप्त स्त्रियाँ

[10]"तुम अपने शत्रुओं से युद्ध करोगे और यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उन्हें तुमसे पराजित करायेगा। तब तुम शत्रुओं को बन्दी के रूप में लाओगे। [11]और तुम युद्ध में बन्दी किसी सुन्दर स्त्री को देख सकते हो। तुम उसे पाना चाह सकते हो और अपनी पत्नी के रूप में रखने की इच्छा कर सकते हो। [12]तुम्हें उसे अपने परिवार में अपने घर लाना चाहिए। उसे अपने बाल मुड़वाना चाहिए और अपने नाखून काटने चाहिए। [13]उसे अपने पहने हुए कपड़ों को उतारना चाहिए। उसे तुम्हारे घर में रहना चाहिए और एक महीने तक अपने माता–पिता के लिए रोना चाहिए। उसके बाद तुम उसके साथ यौन सम्बन्ध स्थापित कर सकते हो और उसके पति हो सकते हो। और वह तुम्हारी पत्नी बन जाएगी। [14]किन्तु यदि तुम उससे प्रसन्न नहीं हो तो तुम उसे जहाँ वह चाहे जाने दे सकते हो। किन्तु तुम उसे बेच नहीं सकते। तुम उसके प्रति दासी की तरह व्यवहार नहीं कर सकते। क्यों? क्योंकि तुम्हारा उसके साथ यौन सम्बन्ध था।

एक व्यक्ति की दो पत्नियों के बच्चे

[15]"एक व्यक्ति की दो पत्नियाँ हो सकती हैं और वह एक पत्नी से दूसरी पत्नी की अपेक्षा अधिक प्रेम कर सकता है। दोनों पत्नियों से उसके बच्चे हो सकते हैं और पहला बच्चा उस पत्नी का हो सकता है जिससे वह प्रेम न करता हो। [16]जब वह अपनी सम्पत्ति अपने बच्चों में बाँटेगा तो अधिक प्रिय पत्नी के बच्चे को वह विशेष वस्तु नहीं दे सकता जो पहलौठे* बच्चे की होती है। [17]उस व्यक्ति को तिरस्कृत पत्नी के बच्चे को ही पहलौठा बच्चा स्वीकार करना चाहिए। उस व्यक्ति को अपनी चीज़ों के दो भाग पहलौठा पुत्र को देना चाहिए। क्यों? क्योंकि वह पहलौठा बच्चा है।

आज्ञा न मानने वाले पुत्र

[18]"किसी व्यक्ति का ऐसा पुत्र हो सकता है जो हठी और आज्ञापालन न करने वाला हो। यह पुत्र अपने माता–पिता की आज्ञा नहीं मानेगा। माता–पिता उसे दण्ड देते हैं किन्तु पुत्र फिर भी उनकी कुछ नहीं सुनता। [19]उसके माता–पिता को उसे नगर की बैठक वाली जगह पर नगर के मुखियों के पास ले जाना चाहिए। [20]उन्हें नगर के मुखियों से कहना चाहिए: 'हमारा पुत्र हठी है और आज्ञा नहीं मानता। वह कोई काम नहीं करता जिसे हम करने के लिये कहते हैं। वह आवश्यकता से अधिक खाता और शराब पीता है।' [21]तब नगर के लोगों को उस पुत्र को पत्थरों से मार डालना चाहिए। ऐसा करके तुम अपने में से इस बुराई को खत्म करोगे। इस्राएल के सभी लोग इसे सुनेंगे और भयभीत होंगे।

अपराधी मारे और पेड़ पर लटकाये जाते हैं

[22]"कोई व्यक्ति ऐसे पाप करने का अपराधी हो सकता है जिसे मृत्यु का दण्ड दिया जाए। जब वह मार डाला जाए तब उसका शरीर पेड़ पर लटकाया जा सकता है। [23]जब ऐसा होता है तो उसका शरीर पूरी रात पेड़ पर नहीं रहना चाहिए। तुम्हें उसे उसी दिन निश्चय ही दफना देना चाहिए। क्यों? क्योंकि जो व्यक्ति पेड़ पर लटकाया जाता है वह परमेश्वर से अभिशाप पाया हुआ होता है। तुम्हें उस देश को अपवित्र नहीं करना चाहिए जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें रहने के लिए दे रहा है।

विभिन्न नियम

22 "यदि तुम देखो कि तुम्हारे पड़ोसी की गाय या भेड़ खुली है, तो तुम्हें इससे लापरवाह नहीं होना चाहिए। तुम्हें निश्चय ही इसे मालिक के पास

पहलौठा प्रथम उत्पन्न बच्चा। प्राचीन काल में पहलौठे बच्चे बहुत महत्वपूर्ण होते थे।

पहुँचा देना चाहिए। [2]यदि इसका मालिक तुम्हारे पास न रहता हो या तुम उसे नहीं जानते कि वह कौन है तो तुम उस गाय या भेड़ को अपने घर ले जा सकते हो और तुम इसे तब तक रख सकते हो जब तक मालिक इसे ढूँढता हुआ न आए। तब तुम्हें उसे उसको लौटा देना चाहिए। [3]तुम्हें यही तब भी करना चाहिए जब तुम्हें पड़ोसी का गधा मिले, उसके कपड़े मिलें या कोई चीज़ जो पड़ोसी खो देता है। तुम्हें अपने पड़ोसी की सहायता करनी चाहिए।

[4]"यदि तुम्हारे पड़ोसी का गधा या उसकी गाय सड़क पर पड़ी हो तो उससे आँख नहीं फेरनी चाहिए। तुम्हें उसे फिर उठाने में उसकी सहायता करनी चाहिए।

[5]"किसी स्त्री को किसी पुरुष के वस्त्र नहीं पहनने चाहिए और किसी पुरुष को किसी स्त्री के वस्त्र नहीं पहनने चाहिए। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उससे घृणा करता है जो ऐसा करता है।

[6]"किसी रास्ते से टहलते समय तुम पेड़ पर या ज़मीन पर चिड़ियों का घोंसला पा सकते हो। यदि मादा पक्षी अपने बच्चों के साथ बैठी हो या अपने अण्ड़ों पर बैठी हो तो तुम्हें मादा पक्षी को बच्चों के साथ नहीं पकड़ना चाहिए। [7]तुम बच्चों को अपने लिए ले सकते हो। किन्तु तुम्हें माँ को छोड़ देना चाहिए। यदि तुम इन नियमों का पालन करते हो तो तुम्हारे लिए सब कुछ अच्छा रहेगा और तुम लम्बे समय तक जीवित रहोगे।

[8]"जब तुम कोई नया घर बनाओ तो तुम्हें अपनी छत के चारों ओर दीवार खड़ी करनी चाहिए। तब तुम किसी व्यक्ति की मृत्यु के अपराधी नहीं होओगे यदि वह उस छत पर से गिरता है।

कुछ चीज़ें जिन्हें एक साथ नहीं रखा जाना चाहिए

[9]"तुम्हें अपने अंगूर के बाग मे अनाज के बीजों को नहीं बोना चाहिए। क्यों? क्योंकि बोये गए बीज और तुम्हारे बाग के अंगूर दोनों फसलें उपयोग में नहीं आ सकती।

[10]"तुम्हें बैल और गधे को एक साथ हल चलाने में नहीं जोतना चाहिए।

[11]"तुम्हें उस कपड़े को नहीं पहनना चाहिए जिसे ऊन और सूत से एक साथ बुना गया हो।

[12]"तुम्हे अपने पहने जाने वाले चोगे के चारों कोनों पर फुंदने* लगाने चाहिए।

विवाह के नियम

[13]"कोई व्यक्ति किसी लड़की से विवाह करे और उससे शारीरिक सम्बन्ध करे। तब वह निर्णय करता है कि वह उसे पसन्द नहीं है। [14]वह झूठ बोल सकता है और कह सकता है, 'मैंने उस स्त्री से विवाह किया, किन्तु जब हमने शारीरिक सम्बन्ध किया तो मुझे मालूम हुआ कि वह कुवाँरी नहीं है।' उसके विरुद्ध ऐसा कहने पर लोग उस स्त्री के सम्बन्ध में बुरा विचार रख सकते हैं। [15]यदि ऐसा होता है तो लड़की के माता–पिता को इस बात का प्रमाण नगर की बैठकवाली जगह पर नगर–प्रमुखों के सामने लाना चाहिए कि लड़की कुवाँरी थी। [16]लड़की के पिता को नगर प्रमुखों से कहना चाहिए, 'मैंने अपनी पुत्री को उस व्यक्ति की पत्नी होने के लिए दिया, किन्तु वह अब उसे नहीं चाहता। [17]इस व्यक्ति ने मेरी पुत्री के विरुद्ध झूठ बोला है। उसने कहा, 'मुझे इसका प्रमाण नहीं मिला कि तुम्हारी पुत्री कुवाँरी है।' किन्तु यहाँ यह प्रमाण है कि मेरी पुत्री कुवाँरी थी।' तब वे उस कपड़े* को नगर–प्रमुखों को दिखाएंगे। [18]तब वहाँ के नगर–प्रमुख उस व्यक्ति को पकड़ेंगे और उसे दण्ड देंगे। [19]वे उस पर चालीस चाँदी के सिक्के जुर्माना करेंगे। वे उस रूपये को लड़की के पिता को देंगे क्योंकि उसके पति ने एक इस्राएली लड़की को कलंकित किया है और लड़की उस व्यक्ति की पत्नी बनी रहेगी। वह अपनी पूरी जिन्दगी उसे तलाक नहीं दे सकता।

[20]"किन्तु जो बातें पति ने अपनी पत्नी के विषय में कहीं वे सत्य हो सकती है। पत्नी के माता–पिता के पास यह प्रमाण नहीं हो सकता कि लड़की कुवाँरी थी। यदि ऐसा होता है तो [21]नगर–प्रमुख उस लड़की को उसके पिता के द्वार पर लाएँगे। तब नगर–प्रमुख उसे पत्थर से

फुंदने धागों को एक साथ मिलाकर बने गोले जिसके एक सिरे पर धागे लटकते रहते हैं। इससे लोगों को परमेश्वर और उसके आदेशों का स्मरण कराने में सहायता मिलती है।

कपड़ा प्राय: स्त्री के साथ प्रथम शारीरिक सम्बन्ध के समय भीतर की झिल्ली के फटने से थोड़ा खून आता है। दुल्हन अपने विवाह की रात के बिछौने के कपड़े को यह प्रमाणित करने के लिए रखती थी कि वह विवाह के समय कुवाँरी थी।

मार डालेंगे। क्यों? क्योंकि उसने इस्राएल में लज्जाजनक बात की। उसने अपने पिता के घर में वेश्या जैसा व्यवहार किया है। तुम्हें अपने लोगों में से हर बुराई को दूर करना चाहिए।

व्यभिचार का पाप दण्डित होना चाहिए

[22]"यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे की पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध करता हुआ पाया जाता है तो दोनों शारीरिक सम्बन्ध करने वाले स्त्री–पुरुष को मारा जाना चाहिए। तुम्हें इस्राएल से यह बुराई दूर करनी चाहिए।

[23]"कोई व्यक्ति किसी उस कुवाँरी लड़की से मिल सकता है जिसका विवाह दूसरे से पक्का हो चुका है। वह उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध भी कर सकता है। यदि नगर में ऐसा होता है तो [24]तुम्हें उन दोनों को उस नगर के बाहर फाटक पर लाना चाहिए और तुम्हें उन दोनों को पत्थरों से मार डालना चाहिए। तुम्हें पुरुष को इसलिए मार देना चाहिए कि उसने दूसरे की पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया और तुम्हें लड़की को इसलिए मार डालना चाहिए कि वह नगर में थी और उसने सहायता के लिये पुकार नहीं की। तुम्हें अपने लोगों में से यह बुराई भी दूर करनी चाहिए।

[25]"किन्तु यदि कोई व्यक्ति मैदानों में, विवाह पक्की की हुई लड़की को पकड़ता है और उससे बलपूर्वक शारीरिक सम्बन्ध करता है तो पुरुष को ही मारना चाहिए। [26]तुम्हें लड़की के साथ कुछ भी नहीं करना चाहिए क्योंकि उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया जो उसे प्राण–दण्ड का भागी बनाता है। यह मामला वैसा ही है जैसा किसी व्यक्ति का निर्दोष व्यक्ति पर आक्रमण और उसकी हत्या करना। [27]उस व्यक्ति ने विवाह पक्की की हुई लड़की को मैदान में पकड़ा। लड़की ने सहायता के लिए पुकारा, किन्तु उसकी कोई सहायता करने वाला नहीं था।

[28]"कोई व्यक्ति किसी कुवाँरी लड़की जिसकी सगाई नहीं हुई है, को पकड़ सकता है और उसे अपने साथ बलपूर्वक शारीरिक सम्बन्ध करने को विवश कर सकता है। यदि लोग ऐसा होता देखते हैं तो [29]उसे लड़की के पिता को बीस औंस चाँदी देनी चाहिए और लड़की उसकी पत्नी हो जाएगी। क्यों? क्योंकि उसने उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध किया वह उसे पूरी जिन्दगी तलाक नहीं दे सकता।

[30]"किसी व्यक्ति को अपने पिता की पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध करके अपने पिता को कलंक नहीं लगाना चाहिए।

वे लोग जो उपासना में सम्मलित हो सकते हैं

23 "ये लोग इस्राएल के लोगों के साथ यहोवा की उपासना करने के लिये नहीं आ सकते: वह व्यक्ति जिसने अपने को बधिया करा लिया है, वह व्यक्ति जिसने अपना यौन अंग कटवा लिया है [2]या वह व्यक्ति जो अविवाहित माता–पिता की सन्तान हो। इस व्यक्ति के परिवार का कोई व्यक्ति दसवीं पीढ़ी तक भी यहोवा के लोगों में यहोवा की उपासना करने के लिये नहीं गिना जा सकता।

[3]"कोई अम्मोनी या मोआबी यहोवा के लोगों से सम्बन्धित नहीं हो सकता और दस पीढ़ियों तक उनका कोई वंशज भी यहोवा के लोगों का भाग यहोवा की उपासना करने के लिये नहीं बन सकता। [4]क्यों? क्योंकि अम्मोनी और मोआबी लोगों ने मिस्र से बाहर आने की यात्रा के समय तुम लोगों को रोटी और पानी देने से इन्कार किया था। वे यहोवा के लोगों के भाग इसलिए भी नहीं हो सकते क्योंकि उन्होंने बिलाम को तुम्हें अभिशाप देने के लिए नियुक्त किया था। (बिलाम अरम्नहरैम में पतोर नगर के बोर का पुत्र था।) [5]किन्तु यहोवा परमेश्वर ने बिलाम की एक न सुनी। यहोवा ने अभिशाप को तुम्हारे लिये वरदान में बदल दिया। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमसे प्रेम करता है। [6]तुम्हें अम्मोनी और मोआबी लोगों के साथ शान्ति रखने का प्रयत्न कभी नहीं करना चाहिए। जब तक तुम लोग रहो, उनसे मित्रता न रखो।

ये लोग जिन्हें इस्राएलियों को अपने में मिलाना चाहिए

[7]"तुम्हें एदोमी से घृणा नहीं करनी चाहिए। क्यों? क्योंकि वह तुम्हारा सम्बन्धी हैं। तुम्हें किसी मिस्री से घृणा नहीं करनी चाहिए। क्यों? क्योंकि उनके देश में तुम अजनबी थे। [8]एदोमी और मिस्री लोगों से उत्पन्न तीसरी पीढ़ी के बच्चे यहोवा के लोगों के भाग बन सकते हैं।

सेना के डेरे को स्वच्छ रखना

[9]"जब तुम्हारी सेना शत्रु के विरुद्ध जाए, तब तुम उन सभी चीज़ों से दूर रहो जो तुम्हें अपवित्र बनाती हैं। [10]यदि

कोई ऐसा व्यक्ति है जो इस कारण अपवित्र है कि उसे रात में स्वप्नदोष हो गया है तो उसे डेरे के बाहर चले जाना चाहिए। उसे डेरे से दूर रहना चाहिए [11]किन्तु जब शाम हो तब उस व्यक्ति को पानी से नहाना चाहिए और जब सूरज डूबे तो उसे डेरे में जाना चाहिए।

[12]"तुम्हें डेरे के बाहर शौच के लिए जगह बनानी चाहिए [13]और तुम्हें अपने हथियार के साथ खोदने के लिए एक खन्ती रखनी चाहिए। इसलिए जब तुम मलत्याग करो तब तुम एक गड्ढा खोदो और उसे ढक दो। [14]क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे डेरे में शत्रुओं को हराने में तुम्हारी सहायता करने के लिए तुम्हारे साथ है। इसलिए डेरा पवित्र रहना चाहिए। तब यहोवा तुम में कुछ भी घृणित नहीं देखेगाा और तुम से आँखें नहीं फेरेगा।

विभिन्न नियम

[15]"यदि कोई दास अपने मालिक के यहाँ से भागकर तुम्हारे पास आता है तो तुम्हें उस दास को उसके मालिक को नहीं लौटाना चाहिए। [16]यह दास तुम्हारे साथ जहाँ चाहे वहाँ रह सकता है। वह जिस भी नगर को चुने उसमें रह सकता है। तुम्हें उसे परेशान नहीं करना चाहिए।

[17]"कोई इस्राएली स्त्री या पुरुष को कभी देवदासी या देवदास* नहीं बनना चाहिए। [18]देवदास* या देवदासी का कमाया हुआ धन यहोवा तुम्हारे परमेश्वर के मन्दिर में नहीं लाया जाना चाहिए। कोई व्यक्ति दिये गए वचन के कारण यहोवा को दी जाने वाली चीज़ के लिए इस धन का उपयोग नहीं कर सकता। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर सभी मन्दिरों के देवदास–देवदासियों से घृणा करता है।

[19]"यदि तुम किसी इस्राएली को कुछ उधार दो तो तुम उस पर ब्याज न लो। तुम सिक्कों, भोजन या कोई ऐसी चीज जिस पर ब्याज लिया जा सके ब्याज न लो। [20]तुम विदेशी से ब्याज ले सकते हो। किन्तु तुम्हें दूसरे इस्राएली से ब्याज नहीं लेना चाहिए। यदि तुम इन नियमों का पालन करोगे तो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उस देश में, जहाँ तुम रहने जा रहे हो, जो कुछ तुम करोगे उसमें आशीष देगा।

[21]"जब तुम यहोवा अपने परमेश्वर को वचन दो, तो जो तुम देने को कहो उन सबको देने में ढीले न पड़ो। यदि तुम वचन दी गई चीज़ों को नहीं दोगे तो पाप करोगे। [22]यदि तुम वचन नहीं देते हो तो तुम पाप नहीं कर रहे हो। [23]किन्तु तुम्हें वह चीज़ें करनी चाहिए जिसे करने के लिए तुमने कहा है कि तुम करोगे। जब तुम स्वतन्त्रता से यहोवा अपने परमेश्वर को वचन दो तो, तुम्हें वचन दी गई बात पूरी करनी चाहिए!

[24]"यदि तुम दूसरे व्यक्ति के अंगूर के बाग से होकर जाते हो, तो तुम जितने चाहो उतने अंगूर खा सकते हो। किन्तु तुम कोई अंगूर अपनी टोकरी में नहीं रख सकते। [25]जब तुम दूसरे की पकी अन्न की फसल के खेत से होकर जा रहे हो तो तुम अपने हाथ से जितना उखाड़ा, खा सकते हो। किन्तु तुम हँसिये का उपयोग दूसरे के अन्न को काटने और लेने के लिये नहीं कर सकते।

24 "कोई व्यक्ति किसी स्त्री से विवाह करता है, और वह कुछ ऐसी गुप्त चीज़ उसके बारे में जान सकता है जिसे वह पसन्द नहीं करता। यदि वह व्यक्ति प्रसन्न नहीं है तो वह तलाक पत्रों को लिख सकता है और उन्हें स्त्री को दे सकता है। तब उसे अपने घर से उसको भेज देना चाहिए। [2]जब उसने उसका घर छोड़ दिया है तो वह दूसरे व्यक्ति के पास जाकर उसकी पत्नी हो सकती है। [3-4]किन्तु मान लो कि नया पति भी उसे पसन्द नहीं करता और उसे विदा कर देता है। यदि वह व्यक्ति उसे तलाक देता है तो पहला पति उसे पत्नी के रूप में नहीं रख सकता या यदि नया पति मर जाता है तो पहला पति उसे फिर पत्नी के रूप में नहीं रख सकता। वह अपवित्र हो चुकी है। यदि वह फिर उससे विवाह करता है तो वह ऐसा काम करेगा जिससे यहोवा घृणा करता है। तुम्हें उस देश में ऐसा नहीं करना चाहिए जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें रहने के लिए दे रहा है।

[5]"नवविवाहितों को सेना में नहीं भेजना चाहिए और उसे कोई अन्य विशेष काम भी नहीं देना चाहिए। क्योंकि एक वर्ष तक उसे घर पर रहने को स्वतन्त्र होना चाहिए और अपनी नयी पत्नी को सुखी बनाना चाहिए।

देवदासी या देवदास वे लोग जो असत्य देवों की पूजा कनान में करते थे, स्त्री–पुरुष दोनों को ऐसा याजक बनाते थे जो असत्य देवों की पूजा में शारीरिक सम्बन्ध करने के लिये अपने शरीर को अर्पित करते थे।

देवदास शाब्दिक "कुत्ता", इसका अर्थ सभंवत: ऐसा व्यक्ति था जिसे कोई व्यक्ति शारीरिक सम्बन्ध करने के लिए कुछ भुगतान करता था।

[6]"यदि किसी व्यक्ति को तुम कर्ज दो तो गिरवी* के रूप में उसकी आटा पीसने की चक्की का कोई पाट न रखो। क्यों? क्योंकि ऐसा करना उसे भोजन से वंचित करना होगा।

[7]"यदि कोई व्यक्ति अपने लोगो (इस्राएलियों) में से किसी का अपहरण करता हुआ पाया जाये और वह उसका उपयोग दास के रूप में करता हो या उसे बेचता हो तो वह अपहरण करने वाला अवश्य मारा जाना चाहिए। इस प्रकार तुम अपने बीच से इस बुराई को दूर करोगे।

[8] "यदि तुम्हें कुष्ठ जैसी बीमारी हो जाय तो तुम्हें लेवीवंशी याजकों की दी हुई सारी शिक्षा स्वीकार करने में सावधान रहना चाहिए। तुम्हें सावधानी से उन सब आदेशों का पालन करना चाहिए जिन्हें देने के लिये मैंने याजकों से कहा है। [9]यह याद रखो कि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने मरियम* के साथ क्या किया जब तुम मिस्र से बाहर निकलने की यात्रा पर थे।

[10]"जब तुम किसी व्यक्ति को किसी प्रकार का कर्ज दो तो उसके घर में गिरवी रखी गई चीज़ लेने के लिए मत जाओ। [11]तुम्हें बाहर ही खड़ा रहना चाहिए। तब वह व्यक्ति, जिसे तुमने कर्ज दिया है, तुम्हारे पास गिरवी रखी गई चीज़ लाएगा। [12]यदि वह गरीब है तो वह अपने कपड़े को दे दे, जिससे वह अपने को गर्म रख सकता है। तुम्हें उसकी गिरवी रखी गई चीज़ रात को नहीं रखनी चाहिये। [13]तुम्हें प्रत्येक शाम को उसकी गिरवी रखी गई चीज़ लौटा देनी चाहिए। तब वह अपने वस्त्रों में सो सकेगा। वह तुम्हारा आभारी होगा और यहोवा तुम्हारा परमेश्वर यह देखेगा कि तुमने यह अच्छा काम किया।

[14]"तुम्हें किसी मजदूरी पर रखे गए गरीब और जरूरतमन्द सेवक को धोखा नहीं देना चाहिए। इसका कोई महत्व नहीं कि वह तुम्हारा साथी इस्राएली है या वह कोई विदेशी है जो तुम्हारे नगरों में से किसी एक में रह रहा है। [15]सूरज डूबने से पहले प्रतिदिन उसकी मजदूरी दे दो। क्यों? क्योंकि वह गरीब है और उसी धन पर आश्रित है। यदि तुम उसका भुगतान नहीं करते तो वह यहोवा से तुम्हारे विरुद्ध शिकायत करेगा और तुम पाप करने के अपराधी होगे।

[16]"बच्चों द्वारा किये गए किसी अपराध के लिए पिता को मृत्यु दण्ड नहीं दिया जा सकता और बच्चे को पिता द्वारा किये गए अपराध के लिये मृत्यु दण्ड नहीं दिया जा सकता। किसी व्यक्ति को उसके स्वयं के अपराध के लिये ही मृत्यु दण्ड दिया जा सकता है।

[17]"तुम्हें यह अच्छी तरह से देख लेना चाहिए कि विदेशियों और अनाथों* के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए। तुम्हें विधवा से उसके वस्त्र कभी गिरवी में रखने के लिये नहीं लेने चाहिए। [18]तुम्हें सदा याद रखना चाहिए कि तुम मिस्र में दास थे। यह मत भूलो कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें वहाँ से बाहर लाया। यही कारण है कि मैं तुम्हें यह करने का आदेश देता हूँ।

[19]"तुम अपने खेत की फसल इकट्ठी करते रह सकते हो और तुम कोई पूली भूल से वहाँ छोड़ सकते हो। तुम्हें उसे लेने नहीं जाना चाहिए। यह विदेशियों, अनाथों और विधवाओं के लिए होगा। यदि तुम उनके लिये कुछ अन्न छोड़ते हो तो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें उन सभी कामों में आशीष देगा जो तुम करोगे। [20]जब तुम अपने जैतून के पेड़ों से फली झाड़ोगे तब तुम्हें शाखाओं की जाँच करने फिर नहीं जाना चाहिए। जो जैतून तुम उसमें छोड़ दोगे वह विदेशियों, अनाथों और विधवाओं के लिये होगा। [21]जब तुम अपने अंगूर के बागों से अंगूर इकट्ठा करो तब तुम्हें उन अंगूरों को लेने नहीं जाना चाहिए जिन्हें तुमने छोड़ दिया था। वे अंगूर विदेशियों, अनाथों और विधवाओं के लिये होंगे। [22]याद रखो कि तुम मिस्र में दास थे। यही कारण है कि मैं तुम्हें यह करने का आदेश दे रहा हूँ।

25

"यदि दो व्यक्तियों में झगड़ा हो तो उन्हें अदालत में जाना चाहिये। न्यायाधीश उनके मुकदमें का निर्णय करेंगे और बताऐंगे कि कौन व्यक्ति सच्चा है तथा कौन अपराधी। [2]यदि अपराधी व्यक्ति पीटे जाने योग्य है तो न्यायाधीश उसे मुँह के बल लेटाएगा। कोई व्यक्ति उसे न्यायाधीश की आँखों के सामने पीटेगा। वह व्यक्ति उतनी बार पीटा जाएगा जितनी बार के लिए उसका अपराध उपयुक्त होगा। [3]कोई व्यक्ति चालीस बार तक पीटा जा सकता है, किन्तु उससे अधिक नहीं।

गिरवी कोई चीज़ जिसे व्यक्ति इसलिए देता है कि वह अपना कर्ज लौटा देगा। यदि वह व्यक्ति अपना कर्ज नहीं लौटाता तो कर्ज देने वाला उस चीज़ को अपने पास रख सकता है।

मरियम देखें गिनती 12:1–15

अनाथ वे बच्चे जिनके माता–पिता मर चुके हों।

यदि वह उससे अधिक बार पीटा जाता है तो इससे यह पता चलेगा कि उस व्यक्ति का जीवन तुम्हारे लिये महत्वपूर्ण नहीं।

[4]“जब तुम अन्न को अलग करने के लिये पशुओं का उपयोग करो तब उन्हें खाने से रोकने के लिए उनके मुँह को न बांधो।

[5]“यदि दो भाई एक साथ रह रहे हों और उनमें एक पुत्रहीन मर जाए तो मृत भाई की पत्नी का विवाह परिवार के बाहर के किसी अजनबी के साथ नहीं होना चाहिए। उसके पति के भाई को उसके प्रति पति के भाई का कर्तव्य पूरा करना चाहिए। [6]तब जो पहलौठा पुत्र उससे उत्पन्न होगा वह व्यक्ति के मृत भाई का स्थान लेगा। तब मृत–भाई का नाम इस्राएल से बाहर नहीं किया जाएगा। [7]यदि वह व्यक्ति अपने भाई की पत्नी को ग्रहण करना नहीं चाहता, तब भाई की पत्नी को बैठकवाली जगह पर नगर–प्रमुखों के पास जाना चाहिए। उसके भाई की पत्नी को नगर प्रमुखों से कहना चाहिए, ‘मेरे पति का भाई इस्राएल में अपने भाई का नाम बनाए रखने से इन्कार करता है। वह मेरे प्रति अपने भाई के कर्तव्य को पूरा नहीं करेगा।’ [8]तब नगर–प्रमुखों को उस व्यक्ति को बुलाना और उससे बात करनी चाहिए। यदि वह व्यक्ति हठी है और कहता है, ‘मैं उसे नहीं ग्रहण करना चाहता।’ [9]तब उसके भाई की पत्नी नगर प्रमुखों के सामने उसके पास आए। वह उसके पैर से उसके जूते निकाल ले और उसके मुँह पर थूके। उसे कहना चाहिए, ‘यह उस व्यक्ति के साथ किया जाता है जो अपने भाई का परिवार नहीं बसाएगा।’ [10]तब उस भाई का परिवार, इस्राएल में, ‘उस व्यक्ति का परिवार कहा जाएगा जिसने अपने जूते उतार दिये।’

[11]“दो व्यक्ति परस्पर झगड़ा कर सकते हैं। उनमें एक की पत्नी अपने पति की सहायता करने आ सकती है। किन्तु उसे दूसरे व्यक्ति के गुप्त अंगों को नहीं पकड़ना चाहिये। [12]यदि वह ऐसा करती है तो उसके हाथ काट डालो, उसके लिये दुःखी मत होओ।

क्रय–विक्रय में ईमानदारी

[13]“लोगों को धोखा देने के लिये जाली बाट न रखो। उन बाटों का उपयोग न करो जो असली वजन से बहुत कम या बहुत ज्यादा हो। [14]अपने घर में उन मापों को न रखो जो सही माप से बहुत बड़े या बहुत छोटे हों। [15]तुम्हें उन बाटों और मापों का उपयोग करना चाहिए जो सही और ईमानदारी के परिचायक है। तुम उस देश में लम्बी आयु वाले होगे जिसे यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर तुमको दे रहा है। [16]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उनसे घृणा करता है जो जाली बाट और माप का उपयोग करके धोखा देते हैं। हाँ, वे उन सभी लोगों से घृणा करता है जो बेईमानी करते हैं।

अमालेक के लोगों को नष्ट कर देना चाहिए

[17]“याद रखो कि जब तुम मिस्र से आ रहे थे तब अमालेक के लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया। [18]अमालेक के लोगों ने परमेश्वर का सम्मान नहीं किया था। उन्होंने तुम पर तब आक्रमण किया जब तुम थके हुए और कमजोर थे। उन्होंने तुम्हारे उन सब लोगों को मार डाला जो पीछे चल रहे थे। [19]इसलिये तुम लोगों को अमालेक के लोगों की याद को संसार से मिटा देना चाहिए। यह तुम लोग तब करोगे जब उस देश में जाओगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। वहाँ वे तुम्हें तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं से छुटकारा दिलाएगा। किन्तु अमालेकियों को नष्ट करना मत भूलो!

प्रथम फसल के बारे में नियम

26 “तुम शीघ्र ही उस देश में प्रवेश करोगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें रहने के लिये दे रहा है। जब तुम वहाँ अपने घर बना लो [2]तब तुम्हें अपनी थोड़ी सी प्रथम फसल लेनी चाहिए और उसे एक टोकरी में रखना चाहिये। वह प्रथम फसल होगी जिसे तुम उस देश से पाओगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। थोड़ी प्रथम फ़सल वाली टोकरी को लो और उस स्थान पर जाओ जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर चुनेगा। [3]उस समय सेवा करने वाले याजक के पास तुम जाओगे। तुम्हें उससे कहना चाहिए, ‘आज मैं यहोवा अपने परमेश्वर के सामने यह घोषित करता हूँ कि हम उस देश में आ गए हैं जिसे यहोवा ने हम लोगों को देने के लिये हमारे पूर्वजों को वचन दिया था।’

[4]“तब याजक टोकरी को तुम्हारे हाथ से लेगा। वह इसे यहोवा तुम्हारे परमेश्वर की वेदी के सामने रखेगा। [5]तब तुम यहोवा अपने परमेश्वर के सामने यह कहोगे:

'मेरा पूर्वज घुमक्कड़ अरामी था।* वह मिस्र पहुँचा और वहाँ रहा। जब वह वहाँ गया तब उसके परिवार में बहुत कम लोग थे। किन्तु मिस्र में वह एक शक्तिशाली बहुत से व्यक्तियों वाला महान राष्ट बन गया। [6]मिस्रियों ने हम लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया। [7]तब हम लोगों ने यहोवा अपने पूर्वजों के परमेश्वर से प्रार्थना की और उसके बारे में शिकायत की। यहोवा ने हमारी सुनी उसने हम लोगों की परेशानियाँ, हमारे कठोर कार्य और कष्ट देखे। [8]तब यहोवा हम लोगों को अपनी प्रबल शक्ति और दृढ़ता से मिस्र से बाहर लाया। उसने महान चमत्कारों और आश्चर्यों का उपयोग किया। उसने भंयकर घटनाएँ घटित होने दीं। [9]इस प्रकार वह हम लोगों को इस स्थान पर लाया। उसने अच्छी चीज़ों से भरा–पूरा* देश हमें दिया। [10]यहोवा, अब मैं उस देश की प्रथम फ़सल तेरे पास लाया हूँ जिसे तूने हमें दिया है।'

"तब तुम्हें फ़सल को यहोवा अपने परमेश्वर के सामने रखना चाहिए और तुम्हें उसकी उपासना करनी चाहिए। [11]तब तुम उन सभी चीज़ों का आनन्द से उपभोग कर सकते हो जिसे यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें और तुम्हारे परिवार को दिया है। लेवीवंशी और वे विदेशी जो तुम्हारे बीच रहते हैं तुम्हारे साथ इन चीज़ों का आनन्द ले सकते हैं।

[12]"जब तुम सारा दशमांश* जो तीसरे वर्ष (दशमांश का वर्ष) तुम्हारी फ़सल का दिया जाना है, दे चुको तब तुम्हें लेवीवंशियों, विदेशियों, अनाथों और विधवाओं को इसे देना चाहिए। तब हर एक नगर में वे खा सकते हैं और सन्तुष्ट किये जा सकते हैं। [13]तुम यहोवा अपने परमेश्वर से कहोगे, 'मैंने अपने घर से अपनी फ़सल का पवित्र भाग दशमांश बाहर निकाल दिया है। मैंने इसे उन सभी लेवीवंशियों, विदेशियों, अनाथों और विधवाओं को दे दिया है। मैंने उन सभी आदेशों का पालन करने से इन्कार नहीं किया है। मैं उन्हें भूला नहीं हूँ। [14]मैंने यह भोजन तब नहीं किया जब मैं शोक मना रहा था। मैंने इस अन्न को तब अलग नहीं किया जब मैं अपवित्र था। मैंने इस अन्न में से कोई भाग मरे व्यक्ति के लिये नहीं दिया है। मैंने यहोवा, मेरे परमेश्वर, तेरी आज्ञाओं का पालन किया है। मैंने वह सब कुछ किया है जिसके लिये तूने आदेश दिया है। [15]तू अपने पवित्र आवास स्वर्ग से नीचे निगाह डाल और अपने लोगों, इस्राएलियों को आशीर्वाद दे और तू उस देश को आशीर्वाद दे जिसे तूने हम लोगों को वैसा ही दिया है जैसा तूने हमारे पूर्वजों को अच्छी चीज़ों से भरा–पूरा देश देने का वचन दिया था।'

यहोवा के आदेशों पर चलो

[16]"आज यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमको आदेश देता है कि तुम इन सभी विधियों और नियमों का पालन करो। अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा से इनका पालन करने के लिये सावधान रहो। [17]आज तुमने यह कहा है कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर है। तुम लोगों ने वचन दिया है तुम उसके मार्ग पर चलोगे, उसके उपदेशों को मानोगे, और उसके नियमों और आदेशों को मानोगे। तुमने कहा है कि तुम वह सब कुछ करोगे जिसे करने के लिये वह कहता है। [18]आज यहोवा ने तुम्हें अपने लोग चुन लिया और अपना मूल्यवान आश्रय प्रदान करने का वचन भी दिया है। यहोवा ने यह कहा है कि तुम्हें उसके सभी आदेशों का पालन करना चाहिए। [19]यहोवा तुम्हें उन सभी राष्ट्रों से महान बनाएगा जिन्हें उसने बनाया है। वह तुमको प्रशंसा, यश और गौरव देगा और तुम उसके विशेष लोग होगे, जैसा उसने वचन दिया है।"

नियम पत्थरों पर लिखे जाने चाहिए

27 मूसा ने इस्राएल के प्रमुखों के साथ लोगों को आदेश दिया। उसने कहा, "उन सभी आदेशों का पालन करो जिन्हें मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ। [2]जिस दिन तुम यरदन नदी पार करके उस देश में प्रवेश करो जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है उस दिन, विशाल शिलायें तैयार करो। इन शिलाओं को चूने के लेप से ढक दो। [3]तब इन नियमों की सारी बातें इन पत्थरों पर लिख दो। तुम्हें यह तब करना चाहिये जब तुम यरदन नदी के पार पहुँच जाओ। तब तुम उस देश में जा सकोगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें अच्छी चीज़ों से भरा–पूरा दे रहा है। यहोवा तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने इसे देकर अपने वचन को पूरा किया है।

मेरा पूर्वज ... अरामी था यहाँ ये इब्राहीम, इसहाक या सम्भवत: याकूब हो सकता है।

भरा–पूरा दूध तथा शहद बहता था।

दशमांश दसवाँ भाग।

[4]“यरदन नदी के पार जाने के बाद तुम्हें इन शिलाओं को एबाल पर्वत पर आज के मेरे आदेश के अनुसार स्थापित करना चाहिए। तुम्हें इन पत्थरों को चूने के लेप से ढक देना चाहिए। [5]वहाँ पर यहोवा अपने परमेश्वर की वेदी बनाने के लिये भी कुछ शिलाओं का उपयोग करो। पत्थरों को काटने के लिये लोहे के औजारों का उपयोग मत करो। [6]जब तुम यहोवा अपने परमेश्वर के लिये वेदी पर होमबलि चढ़ाओ। [7]और तुम्हें वहाँ मेलबलि के रूप में बलि देनी चाहिए और उन्हें खाना चाहिए। खाओ और यहोवा अपने परमेश्वर के साथ उल्लास का समय बिताओ। [8]तुम्हें इन सारे नियमों को अपनी स्थापित की गई शिलाओं पर साफ–साफ लिखवाना चाहिए।”

नियम के अभिशाप

[9]मूसा ने लेवीवंशी याजकों के साथ इस्राएल के सभी लोगों से बात की। उसने कहा, “इस्राएलियों, शान्त रहो और सुनो! आज तुम लोग, यहोवा अपने परमेश्वर के लोग हो गए हो। [10]इसलिए तुम्हें वह सब कुछ करना चाहिए जो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर कहता है। तुम्हें उसके उन आदेशों और नियमों का पालन करना चाहिए जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।”

[11]उसी दिन, मूसा ने लोगों से कहा, [12]“जब तुम यरदन नदी के पार जाओगे उसके बाद ये परिवार समूह गिरिज्जीम पर्वत पर खडे होकर लोगों को आशीर्वाद देंगे: शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, यूसुफ और बिन्यामीन। [13]और ये परिवार समूह एबाल पर्वत पर से अभिशाप पढ़ेंगे: रूबेन, गाद, आशेर, जबूलून, दान और नप्ताली।

[14]“और लेवीवंशी इस्राएल के सभी लोगों से तेज स्वर में कहेंगे: [15]वह व्यक्ति अभिशप्त है जो असत्य देवता बनाता है और उसे अपने गुप्त स्थान में रखता है। असत्य देवता केवल वे मूर्तियाँ हैं जिसे कोई कारीगर लकड़ी, पत्थर या धातु की बनाता है। यहोवा उन चीज़ों से घृणा करता हैं!

“तब सभी लोग उत्तर देंगे, ‘आमीन!’

[16]“लेवीवंशी कहेंगे: ‘वह व्यक्ति अभिशप्त है जो ऐसा कार्य करता है जिससे पता चलता है कि वह अपने माता–पिता का अपमान करता है!’

“इस्राएल के सभी लोग उत्तर देंगे, ‘आमीन!’

[17]“लेवीवंशी कहेंगे: ‘वह व्यक्ति अभिशप्त है जो अपने पड़ोसी के सीमा चिन्ह को हटाता है!’

“तब सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन!’

[18]“लेवीवंशी कहेंगे: ‘वह व्यक्ति अभिशप्त है जो अन्धे को कुमार्ग पर चलाता है!’

“तब सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन!’

[19]“लेवीवंशी कहेंगे: ‘वह व्यक्ति अभिशप्त है जो विदेशियों, अनाथों और विधवाओं के साथ न्याय नहीं करता!’

“तब सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन!’

[20]“लेवीवंशी कहेंगे: ‘वह व्यक्ति अभिशप्त है जो अपने पिता की पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखता है क्योंकि वह अपने पिता को नंगा सा करता है!’

“तब सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन!’

[21]“लेवीवंशी कहेंगे: ‘वह व्यक्ति अभिशप्त है जो किसी प्रकार के जानवर के साथ शारीरिक सम्पर्क करता है!’

“तब सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन!’

[22]“लेवीवंशी कहेंगे: ‘वह व्यक्ति अभिशप्त है जो अपनी माता या अपने पिता की पुत्री, अपनी बहन के साथ शारीरिक सम्पर्क करता है!’

“तब सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन!’

[23]“लेवीवंशी कहेंगे: ‘वह व्यक्ति अभिशप्त है जो अपनी सास के साथ शारीरिक सम्पर्क रखता है!’

“तब सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन!’

[24]“लेवीवंशी कहेंगे: ‘वह व्यक्ति अभिशप्त है जो दूसरे व्यक्ति की गुप्त रूप से हत्या करता है!’

“तब सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन!’

[25]“लेवीवंशी कहेंगे: ‘वह व्यक्ति अभिशप्त है जो निर्दोष की हत्या के लिये धन लेता है!’

“तब सभी कहेंगे, ‘आमीन!’

[26]“लेवीवंशी कहेंगे: ‘वह व्यक्ति अभिशप्त है जो इन नियमों का समर्थन नहीं करता और पालन करना स्वीकार नहीं करता!’

“तब सभी लोग कहेंगे, ‘आमीन!’”

आशीर्वाद

28 “यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर के इन आदेशों के पालन में सावधान रहोगे जिन्हें मैं आज तुम्हें बता रहा हूँ तो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें

पृथ्वी के सभी राष्ट्रों के ऊपर श्रेष्ठ करेगा। [2]यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन करोगे तो ये वरदान तुम्हारे पास आएंगे और तुम्हारे होंगे:

[3] "यहोवा, तुम्हारे नगरों और खेतों
को आशीष प्रदान करेगा।
[4] यहोवा तुम्हारे बच्चों को आशीर्वाद देगा।
वह तुम्हारी भूमि को अच्छी फसल का वरदान
देगा और वह तुम्हारे जानवरों को
बच्चे देने का वरदान देगा।
तुम्हारे पास बहुत से मवेशी और भेड़ें होंगी।
[5] यहोवा तुम्हें अच्छे अन्न की फसल और बहुत
अधिक भोजन पाने का आशीर्वाद देगा।
[6] यहोवा तुम्हें तुम्हारे आगमन
और प्रस्थान पर आशीर्वाद देगा।

[7]"यहोवा तुम्हें उन शत्रुओं पर विजयी बनाएगा जो तुम्हारे विरुद्ध होंगे। तुम्हारे शत्रु तुम्हारे विरुद्ध एक रास्ते से आएंगे किन्तु वे तुम्हारे सामने सात मार्गों में भाग खड़ें होंगे।

[8]"यहोवा तुम्हें भरे कृषि–भंडार का आशीर्वाद देगा। तुम जो कुछ करोगे वह उसके लिये आशीर्वाद देगा जिसे वह तुमको दे रहा है। [9]यहोवा तुम्हें अपने विशेष लोग बनाएगा। यहोवा ने तुम्हें यह वचन दिया है बशर्ते कि तुम यहोवा अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन करो और उनके मार्ग पर चलें। [10]तब पृथ्वी के सभी लोग देखेंगे कि तुम यहोवा के नाम से जाने जाते हो और वे तुमसे भयभीत होंगे।

[11]"और यहोवा तुम्हें बहुत सी अच्छी चीजें देगा। वह तुम्हें बहुत से बच्चे देगा। वह तुम्हें मवेशी और बहुत से बछड़े देगा। वह उस देश में तुम्हें बहुत अच्छी फसल देगा जिसे उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों को देने का वचन दिया था। [12]यहोवा अपने भण्डार खोल देगा जिनमें वह अपना कीमती वरदान रखता है तथा तुम्हारी भूमि के लिये ठीक समय पर वर्षा देगा। यहोवा जो कुछ भी तुम करोगे उसके लिए आशीर्वाद देगा और बहुत से राष्ट्रों को कर्ज देने के लिए तुम्हारे पास धन होगा। किन्तु तुम्हें उनसे कुछ उधार लेने की आवश्यकता नहीं होगी। [13]यहोवा तुम्हें सिर बनाएगा, पूँछ नहीं। तुम चोटी पर होगे, तलहटी पर नहीं। यह तब होगा जब तुम यहोवा अपने परमेश्वर के उन आदेशों पर ध्यान दोगे जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। [14]तुम्हें उन शिक्षाओं में से किसी की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। तुम्हें इनसे दाँयी या बाँयी ओर नहीं जाना चाहिए। तुम्हें उपासना के लिये अन्य देवताओं का अनुसरण नहीं करना चाहिए।

अभिशाप

[15]"किन्तु यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर द्वारा कही गई बातों पर ध्यान नहीं देते और आज मैं जिन आदेशों और नियमों को बता रहा हूँ , पालन नहीं करते तो ये सभी अभिशाप तुम पर आयेंगे:

[16] "यहोवा तुम्हारे नगरों और
गाँवों को अभिशाप देगा।
[17] यहोवा तुम्हारी टोकरियों व बर्तनों को
अभिशाप देगा और तुम्हें पर्याप्त
भोजन नहीं मिलेगा।
[18] तुम्हारे बच्चे अभिशप्त होंगे।
तुम्हारी भूमि की फसलें तुम्हारे मवेशियों के
बछड़े और तुम्हारी रेवड़ों के मेमनें
अभिशप्त होंगे।
[19] तुम्हारा आगमन
और प्रस्थान अभिशप्त होगा।

[20]"यदि तुम बुरे काम करोगे और अपने यहोवा से मुँह फेरोगे, तो तुम अभिशप्त होगें। तुम जो कुछ करोगे उसमें तुम्हें अव्यवस्था और फटकार का सामना करना होगा। वह यह तब तक करेगा जब तक तुम शीघ्रता से और पूरी तरह से नष्ट नहीं हो जाते। [21]यदि तुम यहोवा की आज्ञा नहीं मानते तो वह तुम्हें तब तक महामारी से पीड़ित करता रहेगा जब तक तुम उस देश में पूरी तरह नष्ट नहीं हो जाते जिसमें तुम रहने के लिये प्रवेश कर रहे हो। [22]यहोवा तुम्हें रोग से पीड़ित और दुर्बल होने का दण्ड देगा। तुम्हें ज्वर और सूजन होगी। यहोवा तुम्हारे पास भंयकर गर्मी भेजेगा और तुम्हारे यहाँ वर्षा नहीं होगी। तुम्हारी फसलें गर्मी या रोग* से नष्ट हो जाएगी। तुम पर ये आपत्तियाँ तब तक आएँगी जब तक तुम मर नहीं जाते! [23]आकाश में कोई बादल नहीं रहेगा और आकाश काँसा जैसा होगा। और तुम्हारे नीचें पृथ्वी लोहें की तरह होगी।

रोग यह "हरदा" रोग हो सकता है जिससे फसलों की बालें पीली पड़ जाती है और उनमें दाने पड़ना रूक जाता है।

[24]वर्षा के बदले यहोवा तुम्हारे पास आकाश से रेत और धूलि भेजेगा। यह तुम पर तब तक आयेगी जब तक तुम नष्ट नहीं हो जाते।

शत्रुओं से पराजित होने का अभिशाप

[25]"यहोवा तुम्हारे शत्रुओं द्वारा तुम्हें पराजित करायेगा। तुम अपने शत्रुओं के विरुद्ध एक रास्ते से जाओगे और उनके सामने से सात मार्ग से भागोगे। तुम्हारे ऊपर जो आपत्तियाँ आएँगी वे सारी पृथ्वी के लोगों को भयभीत करेंगी। [26]तुम्हारे शव सभी जंगली जानवरों और पक्षियों का भोजन बनेंगे। कोई व्यक्ति उन्हें डराकर तुम्हारी लाशों से भगाने वाला न होगा।

अन्य रोगों का अभिशाप

[27]"यदि तुम यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं करते तो वह तुम्हें वैसे फोड़े होने का दण्ड देगा जैसे फोड़े उसने मिस्रियों पर भेजा था। वह तुम्हें भयंकर फोड़ों और खुजली से पीड़ित करेगा। [28]यहोवा तुम्हें पागल बनाकर दण्ड देगा। वह तुम्हें अन्धा और कुण्ठित बनाएगा। [29]तुम्हें दिन के प्रकाश मे अन्धे की तरह अपना रास्ता टटोलना पड़ेगा। तुम जो कुछ करोगे उसमें तुम असफल रहोगे। लोग तुम पर बार–बार प्रहार करेंगे और तुम्हारी चीज़ें चुराएंगे। तुम्हें बचाने वाला वहाँ कोई भी न होगा।

चीज़ें खोने का अभिशाप

[30]"तुम्हारा विवाह किसी स्त्री के साथ पक्का हो सकता है, किन्तु दूसरा व्यक्ति उसके साथ सोयेगा। तुम कोई घर बना सकते हो, किन्तु तुम उसमें रहोगे नहीं। तुम अंगूर का बाग लगा सकते हो, किन्तु इससे कुछ भी इकट्ठा नहीं कर सकते। [31]तुम्हारी बैल तुम्हारी आँखों के सामने मारी जाएगी किन्तु तुम उसका कुछ भी माँस नहीं खा सकते। तुम्हारा गधा तुमसे बलपूर्वक छीन कर ले जाया जाएगा यह तुम्हें लौटाया नहीं जाएगा। तुम्हारी भेड़ें तुम्हारे शत्रुओं को दे दी जाएँगी। तुम्हारा रक्षक कोई व्यक्ति नहीं होगा।

[32]"तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ दूसरी जाति के लोगों को दे दी जाएँगी। तुम्हारी आँखे सारे दिन बच्चों को देखने के लिये टकटकी लगाए रहेंगी क्योंकि तुम बच्चों को देखना चाहोगे। किन्तु तुम प्रतीक्षा करते–करते कमजोर हो जाओगे, तुम असहाय हो जाओगे।

अन्य अभिशाप

[33]"वह राष्ट्र जिसे तुम नहीं जानते, तुम्हारे पसीने की कमाई की सारी फसल खाएगा। तुम सदैव परेशान रहोगे। तुम सदैव छिन्न–भिन्न होगे। [34]तुम्हारी आँखें वह देखेंगी जिससे तुम पागल हो जाओगे। [35]यहोवा तुम्हें दर्द वाले फोड़ों का दण्ड देगा। ये फोड़े तुम्हारे घुटनों और पैरों पर होंगे। वे तुम्हारे तलवे से लेकर सिर के ऊपर तक फैल जाएंगे और तुम्हारे ये फोड़े भरेंगे नहीं।

[36]"यहोवा तुम्हें और तुम्हारे राजा को ऐसे राष्ट्र में भेजेगा जिसे तुम नहीं जानते होगें। तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने उस राष्ट्र को कभी नहीं देखा होगा। वहाँ तुम लकड़ी और पत्थर के बने अन्य देवताओं को पूजोगे। [37]जिन देशों में यहोवा तुम्हें भेजेगा उन देशों के लोग तुम लोगों पर आई विपत्तियों को सुनकर स्तब्ध रह जाएंगे। वे तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे और तुम्हारी निन्दा करेंगे।

असफलता का अभिशाप

[38]"तुम अपने खेतों में बोने के लिये आवश्यकता से बहुत अधिक बीज ले जाओगे। किन्तु तुम्हारी उपज कम होगी। क्यों? क्योंकि टिड्डियाँ तुम्हारी फसलें खा जाएंगी। [39]तुम अंगूर के बाग लगाओगे और उनमें कड़ा परिश्रम करोगे। किन्तु तुम उनमें से अंगूर इकट्ठे नहीं करोगे और न ही उन से दाखमधु पीओगे। क्यों? क्योंकि उन्हें कीड़े खा जाएंगे। [40]तुम्हारी सारी भूमि में जैतून के पेड़ होंगे। किन्तु तुम उसके कुछ भी तेल का उपयोग नहीं कर सकोगे। क्यों? क्योंकि तुम्हारे जैतून के पेड़ अपने फलों को नष्ट होने के लिये गिरा देंगे। [41]तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ होंगी, किन्तु तुम उन्हें अपने पास नहीं रख सकोगे। क्यों? क्योंकि वे पकड़कर दूर ले जाए जाएंगे। [42]टिड्डियाँ तुम्हारे पेड़ों और खेतों की फसलों को नष्ट कर देंगी। [43]तुम्हारे बीच रहने वाले विदेशी अधिक से अधिक शक्ति बढ़ाते जाएँगे और तुममें जो भी तुम्हारी शक्ति है उसे खोते जाओगे। [44]विदेशियों के पास तुम्हें उधार देने योग्य धन होगा लेकिन तुम्हारे पास उन्हें उधार देने योग्य धन नहीं होगा। वे तुम्हारा वैसा ही नियन्त्रण करेंगे जैसा मस्तिष्क शरीर का करता है। तुम पूँछ के समान बन जाओगे।

अभिशाप इस्राएलियों को नष्ट करेंगे

[45]“ये सारे अभिशाप तुम पर पड़ेंगे। वे तुम्हारा पीछा तब तक करते रहेंगे और तुमको ग्रसित करते रहेंगे जब तक तुम नष्ट नहीं हो जाते। क्यों? क्योंकि तुमने यहोवा अपने परमेश्वर की कही हुई बातों की परवाह नहीं की। तुमने उसके उन आदेशों और नियमों का पालन नहीं किया जिसे उसने तुम्हें दिया। [46]ये अभिशाप लोगों को बताएंगे कि परमेश्वर ने तुम्हारे वंशजों के साथ सदैव न्याय किया है। ये अभिशाप संकेत और चेतावनी के रूप में तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को हमेशा याद रहेंगे।

[47]“यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें बहुत से वरदान दिये। किन्तु तुमने उसकी सेवा प्रसन्नता और उल्लास भरे हृदय से नहीं की। [48]इसलिए तुम अपने उन शत्रुओं की सेवा करोगे जिन्हें यहोवा, तुम्हारे विरुद्ध भेजेगा। तुम भूखे, प्यासे और नंगे रहोगे। तुम्हारे पास कुछ भी न होगा। यहोवा तुम्हारी गर्दन पर एक लोहे का जुवा तब तक रखेगा जब तक वह तुम्हें नष्ट नहीं कर देता।

शत्रु राष्ट्र का अभिशाप

[49]“यहोवा तुम्हारे विरुद्ध बहुत दूर से एक राष्ट्र को लाएगा। यह राष्ट्र पृथ्वी की दूसरी ओर से आएगा। यह राष्ट्र तुम्हारे ऊपर आकाश से उतरते उकाब की तरह शीघ्रता से आक्रमण करेगा। तुम इस राष्ट्र की भाषा नहीं समझोगे। [50]इस राष्ट्र के लोगों के चेहरे कठोर होंगे। वे बूढ़े लोगों की भी परवाह नहीं करेंगे। वे छोटे बच्चों पर भी दयालु नहीं होंगे। [51]वे तुम्हारे मवेशियों के बछड़े और तुम्हारी भूमि की फसल तब तक खायेंगे जब तक तुम नष्ट नहीं हो जाओगे। वे तुम्हारे लिये अन्न, नयी दाखमधु, तेल, तुम्हारे मवेशियों के बछड़े अथवा तुम्हारे रेवड़ों के मेमने नहीं छोड़ेंगे। वे यह तब तक करते रहेंगे जब तक तुम नष्ट नहीं हो जाओगे।

[52]“यह राष्ट्र तुम्हारे सभी नगरों को घेर लेगा। तुम अपने नगरों के चारों ओर ऊँची और दृढ़ दीवारों पर भरोसा रखते हो। किन्तु तुम्हारे देश में ये दीवारें सर्वत्र गिर जाएंगी। हाँ, वह राष्ट्र तुम्हारे उस देश के सभी नगरों पर आक्रमण करेगा जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। [53]जब तक तुम्हारा शत्रु तुम्हारे नगर का घेरा डाले रहेगा तब तक तुम्हारी बड़ी हानि होगी। तुम इतने भूखे होगें कि अपने बच्चों को भी खा जाओगे। तुम अपने पुत्र और पुत्रियों का माँस खाओगे जिन्हें यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें दिया है।

[54]“तुम्हारा बहुत विनम्र सज्जन पुरुष भी अपने बच्चों, भाईयों, अपनी प्रिय पत्नी तथा बचे हुये बच्चों के साथ बहुत क्रूरता का बर्ताव करेगा। [55]उसके पास कुछ भी खाने को नहीं होगा क्योंकि तुम्हारे नगरों के विरुद्ध आने वाले शत्रु इतनी अधिक हानि पहुँचा देंगे। इसलिए वह अपने बच्चों को खायेगा। किन्तु वह अपने परिवार के शेष लोगों को कुछ भी नहीं देगा!

[56]“तुम्हारे बीच सबसे अधिक विनम्र और कोमल स्त्री भी वही करेगी। ऐसी सम्पन्न और कोमल स्त्री भी जिसने कहीं जाने के लिये ज़मीन पर कभी पैर भी न रखा हो। वह अपने प्रिय पति या अपने पुत्र–पुत्रियों के साथ हिस्सा बँटाने से इन्कार करेगी। [57]वह अपने ही गर्भ की झिल्ली* को खायेगी और उस बच्चे को भी जिसे वह जन्म देगी। वह उन्हें गुप्त रूप से खायेगी। क्यों? क्योंकि वहाँ कोई भी भोजन नहीं बचा है। यह तब होगा जब तुम्हारा शत्रु तुम्हारे नगरों के विरुद्ध आयेगा और बहुत अधिक कष्ट पहुँचायेगा।

[58]“इस पुस्तक में जितने आदेश और नियम लिखे गए हैं उन सबका पालन तुम्हें करना चाहिए और तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर के आश्चर्य और आतंक उत्पन्न करने वाले नाम का सम्मान करना चाहिए। यदि तुम इनका पालन नहीं करते [59]तो यहोवा तुम्हें भयंकर आपत्ति में डालेगा और तुम्हारे वंशज बड़ी परेशानियाँ उठायेंगे और उन्हें भयंकर रोग होंगे जो लम्बे समय तक रहेंगे [60]और यहोवा मिस्र से वे सभी बीमारियाँ लाएगा जिनसे तुम डरते हो। ये बीमारियाँ तुम लोगों में रहेंगी। [61]यहोवा उन बीमारियों और परेशानियों को भी तुम्हारे बीच लाएगा जो इस व्यवस्था की किताब में नहीं लिखी गई हैं। वह यह तब तक करता रहेगा जब तक तुम नष्ट नहीं हो जाते। [62]तुम इतने अधिक हो सकते हो जितने आकाश में तारे हैं। किन्तु तुममें से कुछ ही बचे रहेंगे। तुम्हारे साथ यह क्यों होगा? क्योंकि तुमने यहोवा अपने परमेश्वर की बात नहीं मानी।

[63]“पहले यहोवा तुम्हारी भलाई करने और तुम्हारे राष्ट्र को बढ़ाने में प्रसन्न था। उसी तरह यहोवा तुम्हें नष्ट

गर्भ की झिल्ली गर्भ की झिल्ली और नाभि जो बच्चे के जन्म के समय बाहर आते हैं।

और बरबाद करने में प्रसन्न होगा। तुम उस देश से बाहर ले जाए जाओगे जिसे तुम अपना बनाने के लिये उसमें प्रवेश कर रहे हो। [64]यहोवा तुम्हें पृथ्वी के एक छोर से दूसरी छोर तक संसार के सभी लोगों मे बिखेर देगा। वहाँ तुम दूसरे लकड़ी और पत्थर के देवताओं को पूजोगे जिन्हें तुमने या तुम्हारे पूर्वजों ने कभी नहीं पूजा।

[65]"तुम्हें इन राष्ट्रों के बीच तनिक भी शान्ति नहीं मिलेगी। तुम्हें आराम की कोई जगह नहीं मिलेगी। यहोवा तुम्हारे मस्तिष्क को चिन्ताओं से भर देगा। तुम्हारी आँखें पथरा जाएंगी। तुम अपने को ऊखड़ा हुआ अनुभव करोगे। [66]तुम संकट में रहोगे। तुम दिन–रात भयभीत रहोगे। सदैव सन्देह में पड़े रहोगे। तुम अपने जीवन के बारे में कभी निश्चिन्त नहीं रहोगे। [67]सवेरे तुम कहोगे, 'अच्छा होता, यह शाम होती!' शाम को तुम कहोगे, 'अच्छा होता, यह सवेरा होता!' क्यों? क्योंकि उस भय के कारण जो तुम्हारे हृदय में होगा और उन आपत्तियों के कारण जो तुम देखोगे। [68]यहोवा तुम्हें जहाजों में मिस्र वापस भेजेगा। मैंने यह कहा कि तुम उस स्थान पर दुबारा कभी नहीं जाओगे। किन्तु यहोवा तुम्हें वहाँ भेजेगा। और वहाँ तुम अपने को अपने शत्रुओं के हाथ दास के रूप में बेचने की कोशिश करोगे, किन्तु कोई व्यक्ति तुम्हें खरीदेगा नहीं।"

मोआब में वाचा

29 ये बातें उस वाचा का अंग है जिस वाचा को यहोवा ने मोआब प्रदेश में इस्राएल के लोगों के साथ मूसा से करने को कहा। यहोवा ने इस वाचा को उस साक्षीपत्र से अतिरिक्त किया जिसे उसने इस्राएल के लोगों के साथ होरेब (सीनै) पर्वत पर किया था।

[2]मूसा ने सभी इस्राएली लोगों को इकट्ठा बुलाया। उसने उनसे कहा, "तुमने वह सब कुछ देखा जो यहोवा ने मिस्र देश में किया। तुमने वह सब भी देखा जो उसने फ़िरौन, फ़िरौन के प्रमुखों और उसके पूरे देश के साथ किया। [3]तुमने उन बड़ी मुसीबतों को देखा जो उसने उन्हें दीं। तुमने उसके उन चमत्कारों और बड़े आश्चर्यों को देखा जो उसने किये। [4]किन्तु आज भी तुम नहीं समझते कि क्या हुआ। यहोवा ने सचमुच तुमको नहीं समझाया जो तुमने देखा और सुना। [5]यहोवा तुम्हें चालीस वर्ष तक मरुभूमि से होकर ले जाता रहा और उस लम्बे समय के बीच तुम्हारे वस्त्र और जूते फटकर खत्म नहीं हुए। [6]तुम्हारे पास कुछ भी भोजन नहीं था। तुम्हारे पास कुछ भी दाखमधु या कोई अन्य पीने की चीज नहीं थी। किन्तु यहोवा ने तुम्हारी देखभाल की। उसने यह इसलिए किया कि तुम समझोगे कि वह यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर है।

[7]"जब तुम इस स्थान पर आए तब हेशबोन का राजा सीहोन और बाशान का राजा ओग हम लोगों के विरुद्ध लड़ने आए। किन्तु हम लोगों ने उन्हें हराया। [8]तब हम लोगों ने ये प्रदेश रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे लोगों को उनके कब्जे में दे दिया। [9]इसलिए, इस वाचा के आदेशों का पालन पूरी तरह करो। तब जो कुछ तुम करोगे उसमें सफल होगे।

[10]"आज तुम सभी यहोवा अपने परमेश्वर के सामने खड़े हो। तुम्हारे प्रमुख, तुम्हारे अधिकारी, तुम्हारे बुजुर्ग (प्रमुख) और सभी अन्य लोग यहाँ हैं। [11]तुम्हारी पत्नियाँ और बच्चे यहाँ है तथा वे विदेशी भी यहाँ हैं जो तुम्हारे बीच रहते हैं एवं तुम्हारी लकड़ियाँ काटते और पानी भरते हैं। [12]तुम सभी यहाँ यहोवा अपने परमेश्वर के साथ एक वाचा करने वाले हो। यहोवा तुम लोगों के साथ यह वाचा आज कर रहा है। [13]इस वाचा द्वारा यहोवा तुम्हें अपने विशेष लोग बना रहा है और वह स्वयं तुम्हारा परमेश्वर होगा। उसने यह तुमसे कहा है। उसने तुम्हारे पूर्वजों इब्राहीम, इसहाक और याकूब को यह वचन दिया था। [14]यहोवा अपना वचन देकर केवल तुम लोगों के साथ ही वाचा नहीं कर रहा है। [15]वह यह वाचा हम सभी के साथ कर रहा है जो यहाँ आज यहोवा अपने परमेश्वर के सामने खड़े हैं। किन्तु यह वाचा हमारे उन वंशजों के लिये भी है जो यहाँ आज हम लोगों के साथ नहीं हैं। [16]तुम्हें याद है कि हम मिस्र में कैसे रहे और तुम्हें याद है कि हमने उन देशों से होकर कैसे यात्रा की जो यहाँ तक आने वाले हमारे रास्ते पर थे।[17]तुमने उनकी घृणित चीजें अर्थात् लकड़ी, पत्थर, चाँदी, और सोने की बनी देवमूर्तियाँ देखीं। [18]निश्चय कर लो कि आज यहाँ हम लोगों में कोई ऐसा पुरुष, स्त्री, परिवार या परिवार समूह नहीं है जो यहोवा, अपने परमेश्वर के विपरीत जाता हो। कोई भी व्यक्ति उन राष्ट्रों के देवताओं की सेवा करने नहीं जाना चाहिए। जो लोग ऐसा करते हैं वे उस पौधे की तरह हैं जो कड़वा, जहरीला फल पैदा करता है।

[19]“कोई व्यक्ति इन अभिशापों को सुन सकता है और अपने को संतोष देता हुआ कह सकता है, ‘मैं जो चाहता हूँ करता रहूँगा। मेरा कुछ भी बुरा नहीं होगा।’ वह व्यक्ति अपने ऊपर ही आपत्ति नहीं बुलाएगा अपितु वह सबके ऊपर,अच्छे लोगों पर भी बुलाएगा।* [20–21]यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा नहीं करेगा। नहीं, यहोवा उस व्यक्ति पर क्रोधित होगा और बौखला उठेगा। इस पुस्तक में लिखे सभी अभिशाप उस पर पड़ेंगे। यहोवा उसे इस्राएल के सभी परिवार समूहों से निकाल बाहर करेगा। यहोवा उसको पूरी तरह नष्ट करेगा। सभी आपत्तियाँ जो इस पुस्तक में लिखी गई हैं, उस पर आयेंगी। वे सभी बातें उस वाचा का अंश है जो व्यवस्था की पुस्तक में लिखी गई हैं।

[22]“भविष्य में, तुम्हारे वंशज और बहुत दूर के देशों से आने वाले विदेशी लोग देखेंगे कि देश कैसे बरबाद हो गया है। वे उन लोगों को देखेंगे जिन्हें यहोवा उनमें लायेगा। [23]सारा देश जलते गन्धक और नमक से ढका हुआ बेकार हो जाएगा। भूमि में कुछ भी बोया हुआ नहीं रहेगा। कुछ भी, यहाँ तक कि खर–पतवार भी यहाँ नहीं उगेंगे। यह देश उन नगरों–सदोम, अमोरा, अदमा और सबोयीम, की तरह नष्ट कर दिया जाएगा। जिन्हें यहोवा, ने तब नष्ट किया था जब वह बहुत क्रोधित था।

[24]“सभी दूसरे राष्ट्र पूछेंगे, ‘यहोवा ने इस देश के साथ ऐसा क्यों किया? वह इतना क्रोधित क्यों हुआ?’ [25]उत्तर होगा: ‘यहोवा इसलिए क्रोधित हुआ कि इस्राएल के लोगों ने यहोवा, अपने पूर्वजों के परमेश्वर की वाचा तोड़ी। उन्होंने उस वाचा का पालन करना बन्द कर दिया जिसे यहोवा ने उनके साथ तब किया था जब वह उन्हें मिस्र देश से बाहर लाया था। [26]इस्राएल के लोगों ने ऐसे अन्य देवताओं की सेवा करनी आरम्भ की जिनकी पूजा का ज्ञान उन्हें पहले कभी नहीं था। यहोवा ने अपने लोगों से उन देवताओं की पूजा करना मना किया था।[27]यही कारण है कि यहोवा इस देश के लोगों के विरुद्ध बहुत क्रोधित हो गया। इसलिए उसने इस पुस्तक में लिखे गए सभी अभिशापों को इन पर लागू किया। [28]यहोवा उन पर बहुत क्रोधित हुआ और उन पर बौखला उठा। इसलिए उसने उनके देश से उन्हें बाहर किया। उसने उन्हें दूसरे देश में पहुँचाया जहाँ वे आज हैं।’

[29]“कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें यहोवा हमारे परमेश्वर ने गुप्त रखा है। उन बातों को केवल वह ही जानता है। किन्तु यहोवा ने हमें अपने नियमों की जानकारी दी है! वह व्यवस्था हमारे लिये और हमारे वंशजों के लिये है। हमें इसका पालन सदैव करना चाहिए!

इस्राएलियों की वापसी का वचन

30 “जो मैंने कहा है वह तुम पर घटित होगा। तुम आशीर्वाद से अच्छी चीज़ें पाओगे और अभिशाप से बुरी चीज़ें पाओगे। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दूसरे राष्ट्रों में भेजेगा। तब तुम इनके बारे में सोचोगे। [2]उस समय तुम और तुम्हारे वंशज यहोवा, अपने परमेश्वर के पास लौटेंगे। तुम पूरे हृदय और आत्मा से उन आदेशों का पालन करोगे जो आज हमने दिये हैं उनका पूरा पालन करोगे। [3]तब यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम पर दयालु होगा। यहोवा तुम्हें फिर स्वतन्त्र करेगा। वह उन राष्टों से तुम्हें लौटाएगा जहाँ उसने तुम्हें भेजा था। [4]चाहे तुम पृथ्वी के दूरतम स्थान पर भेज दिये गये हो, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर तुमको इकट्ठा करेगा और तुम्हें वहाँ से वापस लाएगा। [5]यहोवा तुम्हें उस देश में लाएगा जो तुम्हारे पूर्वजों का था और वह देश तुम्हारा होगा। यहोवा तुम्हारा भला करेगा और तुम्हारे पास उससे अधिक होगा, जितना तुम्हारे पूर्वजों के पास था और तुम्हारे राष्ट में उससे अधिक लोग होंगे जितने उनके पास कभी थे। [6]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर, तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को परिशुद्ध करेगा कि वे उसकी आज्ञा का पालन करना चाहेंगे।* तब तुम यहोवा को सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करोगे और तुम जीवित रहोगे!

[7]“और यहोवा तुम्हारा परमेश्वर इन अभिशापों को तुम्हारे उन शत्रुओं पर उतारेगा जो तुमसे घृणा करते हैं तथा तुम्हें परेशान करते हैं [8]और तुम फिर यहोवा की आज्ञा का पालन करोगे। तुम उन सभी आदेशों का पालन करोगे जिन्हें मैंने आज तुम्हें दिये है। [9]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें उन सब में सफल बनाएगा जो तुम करोगे। वह तुम्हें बहुत से बच्चों के लिये, तुम्हारे मवेशियों को बहुत बछड़े और तुम्हारे खेतों को अच्छी फ़सल होने का वरदान देगा। यहोवा तुम्हारे लिए भला होगा। यहोवा तुम्हारा

वह व्यक्ति ... बुलाएगा शाब्दिक “उसके द्वारा तृप्त और प्यासे दोनों नष्ट किये जाएंगे।”

यहोवा ... करना चाहेंगे शाब्दिक “तुम्हारे और तुम्हारी सन्तानों के हृदयों का खतना करेगा।”

भला करने में वैसा ही आनन्दित होगा जैसा आनन्दित वह तुम्हारे पूर्वजों का भला करने में होता था। [10]किन्तु तुम्हें वह सब कुछ करना चाहिए जो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमसे करने को कहता है। तुम्हें उसके आदेशों को मानना और व्यवस्था की इस पुस्तक में लिखे गए नियमों का पालन करना चाहिए। तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर की ओर अपने पूरे हृदय और आत्मा से हो जाना चाहिए। तब ये सभी अच्छी बातें तुम्हारे लिये होंगी।

जीवन या मरण

[11]"आज जो आदेश मैं तुम्हें दे रहा हूँ, वह तुम्हारे लिये बहुत कठिन नहीं है। यह तुम्हारी पहुँच के बाहर नहीं है। [12]यह आदेश स्वर्ग में नहीं है जिससे तुम्हें कहना पड़े, 'हम लोगों के लिये स्वर्ग में कौन जाएगा और उसे हम लोगों के पास लाएगा जिससे हम उसे सुन सकें और उसका अनुसरण कर सकें?' [13]यह आदेश समुद्र के दूसरे पार नहीं है जिससे तुम यह कहो कि 'हमारे लिये समुद्र कौन पार करेगा और इसे लाएगा जिससे हम इसे सुन सकें और कर सकें?' [14]नहीं, यहोवा का वचन तुम्हारे पास है। यह तुम्हारे मुँह और तुम्हारे हृदय में है जिससे तुम इसे कर सको।

[15]"मैंने आज तुम्हारे सम्मुख जीवन और मृत्यु, समृद्धि और विनाश रख दिया है। [16]मैं आज तुम्हें आदेश देता हूँ कि यहोवा अपने परमेश्वर से प्रेम करो, उसके मार्ग पर चलो और उसके आदेशों, विधियों और नियमों का पालन करो। तब तुम जीवित रहोगे और तुम्हारा राष्ट्र अधिक बड़ा होगा। और यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें उस देश में आशीर्वाद देगा जिसे अपना बनाने के लिए तुम वहाँ जा रहे हो। [17]किन्तु यदि तुम यहोवा से मुँह फेरते हो और उसकी अनसुनी करते हो तथा दूसरे देवताओं की सेवा और पूजा में बहकाये जाते हो [18]तब तुम नष्ट कर दिये जाओगे। मैं चेतावनी दे रहा हूँ, तुम यरदन नदी के पार के उस देश में लम्बे समय तक नहीं रहोगे जिसमें जाने के लिये तुम तैयार हो और जिसे तुम अपना बनाओगे।

[19]"आज मैं तुम्हें दो मार्ग को चुनने की छूट दे रहा हूँ। मैं धरती–आकाश को तुम्हारे चुनाव का साक्षी बना रहा हूँ। तुम जीवन को चुन सकते हो, या तुम मृत्यु को चुन सकते हो। जीवन का चुनना वरदान लाएगा और मृत्यु को चुनना अभिशाप। इसलिए जीवन को चुनो। तब तुम और तुम्हारे बच्चे जीवित रहेंगे। [20]तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर को प्रेम करना चाहिए और उसकी आज्ञा माननी चाहिए। उससे कभी विमुख न हो। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा जीवन है, और यहोवा तुम्हें उस देश में लम्बा जीवन देगा जिसे उसने तुम्हारे पूर्वजों इब्राहीम, इसहाक और याकूब को देने का वचन दिया था।"

यहोशू नया नेता होगा

31 तब मूसा आगे बढ़ा और इस्राएलियों से ये बात कही। [2]मूसा ने उनसे कहा, "अब मैं एक सौ बीस वर्ष का हूँ। मैं अब आगे तुम्हारा नेतृत्व नहीं कर सकता। यहोवा ने मुझसे कहा है: 'तुम यरदन नदी के पार नहीं जाओगे।' [3]यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे आगे चलेगा! वह इन राष्ट्रों को तुम्हारे लिए नष्ट करेगा। तुम उनका देश उससे छीन लोगे। यहोशू उस पार तुम लोगों के आगे चलेगा। यहोवा ने यह कहा है।

[4]"यहोवा इन राष्ट्रों के लोगों के साथ वही करेगा जो उसने एमोरियों के राजाओं सीहोन और ओग के साथ किया। उन राजाओ के देश के साथ उसने जो किया वही यहाँ करेगा। यहोवा ने उनके प्रदेशों को नष्ट किया! [5]और यहोवा तुम्हें उन राष्ट्रों को पराजित करने देगा और तुम उनके साथ वह सब करोगे जिसे करने के लिये मैंने कहा है। [6]दृढ़ और साहसी बनो। इन राष्ट्रों से डरो नहीं। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे साथ जा रहा है। वह तुम्हें न छोड़ेगा और न त्यागेगा।"

[7]तब मूसा ने यहोशू को बुलाया। जिस समय मूसा यहोशू से बातें कर रहा था उस समय इस्राएल के सभी लोग देख रहे थे। जब मूसा ने यहोशू से कहा, "दृढ़ और साहसी बनो। तुम इन लोगों को उस देश में ले जाओगे जिसे यहोवा ने इनके पूर्वजों को देने का वचन दिया था। तुम इस्राएल के लोगों की सहायता उस देश को लेने और अपना बनाने में करोगे। [8]यहोवा आगे चलेगा। वह स्वयं तुम्हारे साथ है। वह तुम्हें न सहायता देना बन्द करेगा, न ही तुम्हें छोड़ेगा। तुम न ही भयभीत न ही चिंतित हो!"

मूसा व्यवस्था लिखता है

[9]तब मूसा ने इन नियमों को लिखा और लेवी के वंशज याजकों को दे दिया। उनका काम यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को ले चलना था। मूसा ने इस्राएल के सभी

प्रमुखों को नियम दिए। [10]तब मूसा ने प्रमुखों को आदेश दिया। उसने कहा, "हर एक सात वर्ष बाद, स्वतन्त्रता के वर्ष में डेरों के पर्व में इन नियमों को पढ़ो। [11]उस समय इस्राएल के सभी लोग यहोवा, अपने परमेश्वर से मिलने के लिये उस विशेष स्थान पर आएंगे जिसे वे चुनेंगे। तब तुम लोगों में इन नियमों को ऐसे पढ़ना जिससे वे इसे सुन सकें। [12]सभी लोगों, पुरुषों, स्त्री, छोटे बच्चों और अपने नगरों में रहने वाले सभी विदेशियों को इकट्ठा करो। वे नियम को सुनेंगे, और वे यहोवा तुम्हारे परमेश्वर का आदर करना सीखेंगे और वे इस नियम व आदेशों के पालन में सावधान रहेंगे [13]और तब उनके वंशज जो नियम नहीं जानते, इसे सुनेंगे और वे यहोवा तुम्हारे परमेश्वर का सम्मान करना सीखेंगे। वे तब तक सम्मान करेंगे जब तक तुम उस देश में रहोगे जिसे तुम यरदन नदी के उस पार लेने के लिये तैयार हो।"

यहोवा मूसा और यहोशू को बुलाता है

[14]यहोवा ने मूसा से कहा, "अब तुम्हारे मरने का समय निकट है। यहोशू को लो और मिलापवाले तम्बू* में जाओ। मैं यहोशू को बताऊँगा कि वह क्या करे।" इसलिए मूसा और यहोशू मिलापवाले तम्बू में गए।

[15]यहोवा बादलों के एक स्तम्भ के रूप में प्रकट हुआ। बादल का स्तम्भ तम्बू के द्वार पर खड़ा था। [16]यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम शीघ्र ही मरोगे और जब तुम अपने पूर्वजों के साथ चले जाओगे तो ये लोग मुझ पर विश्वास करने वाले नहीं रह जायेंगे। वे उस वाचा को तोड़ देंगे जो मैंने इनके साथ की है। वे मुझे छोड़ देंगे और अन्य देवताओं की पूजा करना आरम्भ करेंगे, उन प्रदेशों के बनावटी देवताओं की जिनमें वे जायेंगे। [17]उस समय, मैं इन पर बहुत क्रोधित होऊँगा और इन्हें छोड़ दूँगा। मैं उनकी सहायता करना बन्द करूँगा और वे नष्ट हो जाएँगे। उनके साथ भयंकर घटनायें होंगी और वे विपत्ति में पड़ेंगे। तब वे कहेंगे, 'ये बुरी घटनायें हम लोगों के साथ इसलिए हो रही हैं कि हमारा परमेश्वर हमारे साथ नहीं है।' [18]तब मैं उनसे अपना मुँह छिपाऊँगा क्योंकि वे बुरा करेंगे और दूसरे देवताओं की पूजा करेंगे।

[19]"इसलिए इस गीत को लिखो और इस्राएली लोगों को सिखाओ। उन्हें इसे गाना सिखाओ। तब इस्राएल के लोगों के विरुद्ध मेरे लिये यह गीत साक्षी रहेगा। [20]मैं उन्हें उस देश में जो अच्छी चीज़ों से भरा–पूरा है तथा जिसे देने का वचन मैंने उनके पूर्वजों को दिया है, ले जाऊँगा और वे जो खाना चाहेंगे, सब पाएंगे। वे सम्पन्नता से भरा जीवन बिताएंगे। किन्तु तब वे दूसरे देवताओं की ओर जाएंगे और उनकी सेवा करेंगे, वे मुझसे मुँह फेर लेंगे तथा मेरी वाचा को तोड़ेंगे, [21]तब उन पर भयंकर आपत्तियाँ आएंगी और वे बड़ी मुसीबत में होंगे। उस समय उनके लोग इस गीत को तब भी जानेंगे और यह उन्हें बताएगा कि वे कितनी बड़ी गलती पर हैं। मैंने अभी तक उनको उस देश में नहीं पहुँचाया है जिसे उन्हें देने का वचन मैंने दिया है। किन्तु मैं पहले से ही जानता हूँ कि वे वहाँ क्या करने वाले हैं, क्योंकि मैं उनकी प्रकृति से परिचित हूँ।"

[22]इसलिए मूसा ने उसी दिन गीत लिखा और उसने गीत को इस्राएल के लोगों को सिखाया।

[23]तब यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू से बातें की। यहोवा ने कहा, "दृढ़ और साहसी बनो। तुम इस्राएल के लोगों को उस देश में ले चलोगे जिसे उन्हें देने का मैंने वचन दिया है और मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"

मूसा इस्राएल के लोगों को चेतावनी देता है

[24]मूसा ने ये सारे नियम एक पुस्तक में लिखे। जब उसने इसे पूरा कर लिया तब [25]उसने लेवीवंशियों को आदेश दिया (ये लोग यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक की देखभाल करते थे।) मूसा ने कहा, [26]"इस व्यवस्था की किताब को लो और यहोवा, अपने परमेश्वर के साक्षीपत्र के सन्दूक की बगल में रखो। तब यह वहाँ तुम्हारे विरुद्ध साक्षी होगी। [27]मैं जानता हूँ कि तुम बहुत अड़ियल हो। मैं जानता हूँ तुम मनमानी करना चाहते हो। ध्यान दो, आज जब मैं तुम्हारे साथ हूँ तब भी तुमने यहोवा की आज्ञा मानने से इन्कार किया है। मेरे मरने के बाद तुम यहोवा की आज्ञा मानने से और अधिक इन्कार करोगे। [28]अपने सभी परिवार समूहों के प्रमुखों और अधिकारियों को एक साथ बुलाओ। मैं उन्हें यह सब कुछ बताऊँगा और मैं पृथ्वी और आकाश को उनके विरुद्ध साक्षी होने के लिये बुलाऊँगा। [29]मैं जानता हूँ कि मेरी मृत्यु के बाद तुम लोग कुकर्म करोगे। तुम उस मार्ग से हट जाओगे जिस

मिलापवाले तम्बू पवित्र तम्बू जहाँ इस्राएली लोग परमेश्वर से मिलने गये थे।

पर चलने का आदेश मैंने दिया है। तब भविष्य में तुम पर आपत्तियाँ आएंगी। क्यों? क्योंकि तुम वह करना चाहते हो जिसे यहोवा बुरा बताता है। तुम उसे उन कामों को करने के कारण क्रोधित करोगे।"

[30]तब मूसा ने इस्राएल के सभी लोगों को यह गीत सुनाया। वह तब तक नहीं रुका जब तक उसने इसे पूरा न कर लिया:

मूसा का गीत

32 "हे गगन, सुन मैं बोलूँगा,
पृथ्वी मेरे मुख से सुने बात।

2 बरसेंगे वर्षा सम मेरे उपदेश, हिम–बिन्दु सम
बहेगी पृथ्वी पर वाणी मेरी, कोमल घासों पर
वर्षा की मन्द झड़ी सी, हरे पौधों पर वर्षा सी।

3 परमेश्वर का नाम सुनाएगी
मैं कहूँगा, कहो यहोवा महान है।

4 वह (यहोवा) हमारी चट्टान है–
उसके सभी कार्य पूर्ण हैं!
क्यों? क्योंकि उसके सभी मार्ग सत्य हैं!
वह विश्वसनीय निष्पाप परमेश्वर,
करता जो उचित और न्याय है।

5 तुम लोगों ने दुर्व्यवहार किया उससे अत: नहीं
उसके जन तुम सच्चे। आज्ञा भंजक बच्चों से
तुम हो, तुम एक दुष्ट और भ्रष्ट पीढ़ी हो।

6 चाहिए न वह व्यवहार तुम्हारा यहोवा को,
तुम मूर्ख और बुद्धिहीन जन हो।
यहोवा परम पिता तुम्हारा है, उसने तुमको
बनाया, उसने निज जन के
दृढ़ बनाया तुमको।

7 याद करो बीते हुए दिनों को
सोचो बीती पीढ़ियों के वर्षों को,
पूछो वृद्ध पिता से; वही कहेंगे
पूछो अपने प्रमुखों से; वही कहेंगे।

8 सर्वोच्च परमेश्वर ने राष्ट्रों को अपने देश दिए,
निश्चित यह किया कहाँ ये लोग रहेंगे, तब
अन्यों का देश दिया इस्राएल–जन को।

9 यहोवा की विरासत है उसके लोग;
याकूब (इस्राएल) यहोवा का अपना है

10 यहोवा ने याकूब (इस्राएल) को पाया मरू में,
सप्त, झंझा–स्वरित उजड़ मरुभूमि में
यहोवा ने याकूब को लिया अंक में, रक्षा की
उसकी, यहोवा ने रक्षा की, मानों वह
आँखों की पुतली हो।

11 यहोवा ने फैलाए पर, उठा लिया इस्राएलियों को,
उस उकाब–सा जो जागा हो अपनी
नीड़ में, और उड़ता हो अपने बच्चे के ऊपर,
उनको लाया यहोवा अपने पंखों पर।

12 अकेले यहोवा ले आया याकूब को,
कोई देवता विदेशी उसके पास न थे।

13 यहोवा ने चढ़ाया याकूब को पृथ्वी के ऊँचे
स्थानों पर, याकूब ने खेतों की फसलें खायीं,
यहोवा ने याकूब को पुष्ट किया चट्टानों के
मधु से; दिया तेल उसको वज्र–चट्टानों से,

14 मक्खन दिया झुण्डों से, दूध दिया रेवड़ों से
माँस दिया मेमनों का, मेढ़ों का और बाशान
जाति के बकरों का अच्छे–से–अच्छा गेहूँ,
लाल अंगूरी पीने को दी
अंगूरों की मादकता।

15 किन्तु यशूरुन* मोटा हो, सांड सा लात मारता,
वह बड़ा हुआ और भारी भी वह था।
अभिजात, सुपोषित छोड़ा उसने अपने कर्ता
यहोवा को अस्वीकार किया
अपने रक्षक शिला (परमेश्वर) को,

16 ईर्ष्यालु बनाया यहोवा को, अन्य देव पूजा कर!
उसके जन ने; क्रुद्ध किया परमेश्वर को
निज मूर्तियों से जो घृणित थीं परमेश्वर को,

17 बलि दी दानवों को जो सच्चे देव नहीं उन देवों
को बलि दी उसने जिसका उनको ज्ञान नहीं।
नये–नये थे देवता वे जिन्हें न पूजा
कभी तुम्हारे पूर्वजों ने,

18 तुमने छोड़ा अपने शैल यहोवा को
भुलाया तुमने अपने परमेश्वर को,
दी जिसने जिन्दगी।

19 यहोवा ने देखा यह, इन्कार किया जन को
अपना कहने से, क्रोधित किया उसे उसके
पुत्रों और पुत्रियों ने!

यशूरुन इस्राएल का दूसरा नाम।

20 तब यहोवा ने कहा, 'मैं इनसे मुँह मोड़ूँगा!
मैं देख सकूँगा–अन्त होगा क्या उनका।
क्यों? क्योंकि भ्रष्ट सभी उनकी पीढ़ियाँ हैं।
वे हैं ऐसी सन्तान जिन्हें विश्वास नहीं है!

21 मूर्तियों की पूजा करके उन्होंने मुझमें ईर्ष्या
उत्पन्न की वे मूर्तियाँ ईश्वर नहीं हैं।
तुच्छ मूर्तियों को पूज कर उन्होंने मुझे क्रुद्ध
किया है! अब मैं इस्राएल को बनाऊँगा ईर्ष्यालु।
मैं उन लोगों का उपयोग करूँगा,
जो गठित नहीं हुये हैं राष्ट्र में।
मैं करूँगा प्रयोग मूर्ख राष्ट्र का और लोगों से
उन पर क्रोध बरसाऊँगा।

22 क्रोध हमारा सुलगा चुका आग कहीं, मेरा क्रोध
जल रहा निम्नतम शेओल तक, मेरा क्रोध
नष्ट करता फसल सहित भूमि को, मेरा क्रोध
लगाता आग पर्वतों की जड़ों में!

23 मैं इस्राएलियों पर विपत्ति लाऊँगा,
मैं अपने बाण इन पर चलाऊँगा।

24 वे भूखे, क्षीण और दुर्बल होंगे, जल जायेंगे
जलती गर्मी में वे और होगा भंयकर विनाश
भेजूँगा मैं वन–पशुओं को भक्षण करने उनका
धूलि रेंगते विषधर भी उनके संग होंगे

25 तलवारें सड़कों पर उनको सन्तति मिटा देगी,
घर के भीतर रहेगा आतंक का राज्य, सैनिक
मारेंगे युवकों और कुमारियों को ये शिशुओं
और श्वेतकेशी वृद्धों को मारेंगे,

26 मैं कहूँगा, इस्राएलयों को दूर उड़ाऊँगा।
विस्मृत करवा दूँगा इस्राएलियों को लोगों से!

27 मुझे भय था कि, शत्रु कहेंगे उनके क्या
इस्राएल के शत्रु कह सकते हैं: समझ फेर से
हमने जीता है अपनी शक्ति से,
यहोवा ने किया नहीं इसको।'

28 इस्राएल के शत्रु मूर्ख राष्ट्र हैं
वे समझ न पाते कुछ भी।

29 यदि शत्रु समझदार होते तो इसे समझ पाते,
और देखते अपना अन्त भविष्य में

30 एक कैसे पीछा करता सहस्र को?
कैसे दो भगा देते दस सहस्र को?
यह तब होता जब शैल यहोवा देता उनको,
उनके शत्रुओं को, और परमेश्वर
उन्हें बेचता गुलामों सा ।

31 शैल शत्रुओं को नहीं हमारे शैल यहोवा सदृश
हमारे शत्रु स्वयं देख सकते इस सत्य को।

32 सदोम और अमोरा की दाखलताओं के समान
कड़वे हैं उनकें गुच्छे अंगूर के।
उनके अंगूर विषैले होते हैं उनके
अंगूरों के गुच्छे कड़ुवे होते।

33 उनकी दाखमधु साँपों के विष जैसी है
और क्रूर कालकूट अस्प* नाम का।

34 'मैं उस दण्ड से रक्षा करता हूँ–
अपने वस्तु भण्डार में बन्द हुआ!

35 केवल मैं हूँ देने वाला दण्ड मैं ही देता लोगों को
अपराधों का बदला, जब उनका पग फिसल
पड़ेगा अपराधों में, क्यों? क्योंकि विपत्ति समय
उनका समीप है और दण्ड समय
उनका दौड़ा आएगा।'

36 यहोवा न्याय करेगा अपने जन का।
वे उसके सेवक हैं, वह दयालु होगा।
वह उसके बल को मिटा देगा वह उन सभी
स्वतन्त्र और दासों को होता देखेगा असहाय।

37 पूछेगा वह तब, 'लोगों के देवता कहाँ हैं?
वह है चट्टान कहाँ, जिसकी शरण गए वे?

38 लोगों के ये देव, बलि की चर्बी खाते थे, और
पीते थे मदिरा, मदिरा की भेंट की।
अत: उठें ये देव, मदद करें तेरी करें
तुम्हारी ये रक्षा!

39 देखो, अब केवल मैं ही परमेश्वर हूँ।
नहीं अन्य कोई भी परमेश्वर मैं ही निश्चय
करता लोगों को जीवित रखूँ या मारूँ।
मैं लोगों को दे सकता हूँ चोट
और ठीक भी रख सकता हूँ।
और न बचा सकता कोई किसी को
मेरी शक्ति के बाहर।

40 आकाश को हाथ उठा मैं वचन देता हूँ।
यदि यह सत्य है कि मैं शाश्वत हूँ।
तो यह भी सत्य कि सब कुछ होगा यही!

अस्प एक प्रकार का विषैला साँप।

41 मैं तेज करूँगा अपनी बिजली की तलवार।
उपयोग करूँगा इसका मैं शत्रुओं को
दण्डित करने को।
मैं दूँगा वह दण्ड उन्हें जिसके वे पात्र हैं।
42 मेरे शत्रु मारे जाएंगे, बन्दी होंगे।
रंग जाएंगे बाण हमारे उनके रक्त से।
तलवार मेरी पार करेगी उनके सैनिक सिर को।'
43 "होगा हर्षित सब संसार परमेश्वर के लोगों से
क्यों? क्योंकि वह उनकी करता है सहायता
सेवकों के हत्यारों को वह दण्ड दिया करता है।
देगा वह दण्ड शत्रु को जिसके वे पात्र हैं।
और वह पवित्र करेगा अपने धरती जन को।"

मूसा लोगों को अपना गीत सिखाता है

44मूसा आया और इस्राएल के सभी लोगों को सुनने के लिये यह गीत पूरा गाया। नून का पुत्र यहोशू मूसा के साथ था। 45जब मूसा ने लोगों को यह उपदेश देना समाप्त किया 46तब उसने उनसे कहा, "तुम्हें निश्चय करना चाहिए कि तुम उन सभी आदेशों को याद रखोगे जिसे मैं आज तुम्हें बता रहा हूँ और तुम्हें अपने बच्चों को यह बताना चाहिए कि इन व्यवस्था के आदेशों का वे पूरी तरह पालन करें। 47यह मत समझो कि ये उपदेश महत्वपूर्ण नहीं हैं! ये तुम्हारा जीवन है! इन उपदेशों से तुम उस यरदन नदी के पार के देश में लम्बे समय तक रहोगे जिसे लेने के लिये तुम तैयार हो।"

मूसा नबो पर्वत पर

48यहोवा ने उसी दिन मूसा से बातें कीं। यहोवा ने कहा, 49"अबारीम पर्वत पर जाओ। यरीहो नगर से होकर मोआब प्रदेश में नबो पर्वत पर जाओ। तब तुम उस कनान प्रदेश को देख सकते हो जिसे मैं इस्राएल के लोगों को रहने के लिए दे रहा हूँ। 50तुम उस पर्वत पर मरोगे। तुम वैसे ही अपने उन लोगों से मिलोगे जो मर गए है जैसे तुम्हारा भाई हारून होर पर्वत पर मरा और अपने लोगों में मिला। 51क्यों? क्योंकि जब तुम सीन की मरुभूमि में कादेश के निकट मरीबा के जलाशयों के पास थे तब मेरे विरुद्ध पाप किया था और इस्राएल के लोगों ने उसे वहाँ देखा था। तुमने मेरा सम्मान नहीं किया और तुमने यह लोगों को नहीं दिखाया कि मैं पवित्र हूँ। 52इसलिए अब तुम अपने सामने उस देश को देख सकते हो किन्तु तुम उस देश में जा नहीं सकते जिसे मैं इस्राएल के लोगों को दे रहा हूँ।"

मूसा इस्राएल के लोगों को आशीर्वाद देता है

33 मरने के पहले परमेश्वर के व्यक्ति मूसा ने इस्राएल के लोगों को यह आशीर्वाद दिया। 2मूसा ने कहा:

"परमेश्वर सीनै से आया,
यहोवा सेईर पर प्रात: कालीन प्रकाश सा था।
वह पारान पर्वत से ज्योतित प्रकाश–सम था।
यहोवा दस सहस्त्र पवित्र लोगों
(स्वर्गदूतों) के साथ आया।
उसकी दांयी ओर बलिष्ठ सैनिक थे।
3 हाँ, यहोवा प्रेम करता है लोगों से
सभी पवित्र जन उसके हाथों में हैं और
चलते हैं वह उसके पदचिन्हों पर हर एक व्यक्ति
स्वीकारता उपदेश उसका!
4 मूसा ने दिये नियम हमें वे–
जो हैं याकूब के सभी लोगों के।
5 यशूरून ने राजा पाया जब लोग
और प्रमुख इकट्ठे थे।
यहोवा ही उसका राजा था!

रूबेन को आशीर्वाद

6 "रूबेन जीवित रहे, न मरे वह।
उसके परिवार समूह में जन अनेक हों!"

यहूदा को आशीर्वाद

7मूसा ने यहूदा के परिवार समूह के लिए ये बातें कहीं:

"यहोवा, सुने यहूदा के प्रमुख की जब वह मांगे
सहायता लाए उसे अपने जनों में
शक्तिशाली बनाए उसे, करे सहायता
उसकी शत्रु को हराने में!"

लेवी को आशीर्वाद

8मूसा ने लेवी के बारे में कहा:

"तेरा अनुयायी सच्चा लेवी धारण करता

ऊरीम–तुम्मीम,* मस्सा पर तूने लेवी की
परीक्षा की, तेरा विशेष व्यक्ति रखता उन्हें।
लड़ा तू था उसके लिये मरीबा के जलाशयों पर।

[9] लेवी ने बताया निज माता–पिता के विषय में :
मैं न करता उनकी परवाह, स्वीकार न किया
उसने अपने भाई को, या जाना ही अपने
बच्चों को; लेवीवंशियों ने पाला आदेश तेरा,
और निभायी वाचा तुझसे जो।

[10] वे सिखायेंगे याकूब को नियम तेरे।
और इस्राएल को व्यवस्था जो तेरे।
वे रखेंगे सुगन्धि सम्मुख तेरे सारी
होमबलि वेदी के ऊपर,

[11] यहोवा, लेवीवंशियों का जो कुछ हो, आशीर्वाद
दे उसे,जो कुछ करे वह स्वीकार करे उसको।
नष्ट करे उसको जो आक्रमण करे उन पर।"

बिन्यामीन को आशीर्वाद

[12]बिन्यामीन के विषय में मूसा ने कहा:
"यहोवा का प्यारा उसके साथ सुरक्षित होगा।
यहोवा अपने प्रिय की रक्षा करता सारे दिन,
और बिन्यामीन की भूमि पर यहोवा रहता।"

यूसुफ को आशीर्वाद

[13]मूसा ने यूसुफ के बारे में कहा:
"यहोवा दे आशीर्वाद उसके देश को स्वर्ग की
उत्तम वस्तुऐं जहाँ हों; वह सम्पत्ति वहाँ हो
जो धरती कर रही प्रतीक्षा।

[14] सूरज का दिया उत्तम फल उसका हो
महीनों की उत्तम फ़सलें उसकी हों।

[15] प्राचीन पर्वतों की उत्तम उपज उसकी हो–
शाश्वत पहाड़ियों की उत्तम चीज़ें भी।

[16] आशीर्वाद सहित धरती की उत्तम
भेंटे उसकी हों।
जलती झाड़ी का यहोवा उसका पक्षधर हो
यूसुफ के सिर पर वरदानों की वर्षा हो
यूसुफ के सिर के ऊपर भी जो सर्वाधिक
महत्वपूर्ण उसके भ्राताओं में।

[17] यूसुफ के झुण्ड का प्रथम सांड़ गौरव पाएगा।
इसकी सींगे सांड़ सी लम्बी होंगी।
यूसुफ का झुण्ड भगाएगा लोगों को।
पृथ्वी की अन्तिम छोर जहाँ तक जाती है।
हाँ, वे हैं दस सहस्त्र एप्रैम से हाँ वे हैं एक
सहस्त्र मनश्शे से।"

जबूलून को आशीर्वाद

[18]जबूलून के बारे में मूसा ने कहा:
"जबूलून, खुश होओ, जाओ जब बाहर,
और इस्साकार रहे तुम्हारे डेरों में।

[19] वे लोगों का आहवान करेंगे अपने गिरि पर,
वहाँ करेंगे भेंट सभी सच्ची बलि क्यों?
क्योंकि वे लोग सागर से निकालते हैं धन
और पाएंगे बालू में छिपा हुआ जो धन है।"

गाद को आशीर्वाद

[20]मूसा ने गाद के बारे में कहा:
"स्तुति करो परमेश्वर की जो बढ़ाता है गाद को!
गाद लेटा करता सिंह सदृश, वह उखाड़ता
भुजा, भंग करता खोपड़ियां।

[21] अपने लिए चुनता है वह, सबसे प्रमुख हिस्सा
और आता वह लोगों के प्रमुखों के संग करता
वह इस्राएल के संग जो यहोवा की इच्छा
होती है और यहोवा के लिए न्याय करता है।"

दान को आशीर्वाद

[22]दान के बारे में मूसा ने कहा:
"दान सिंह का बच्चा है
जो बाशान में उछला करता।"

नप्ताली को आशीर्वाद

[23]नप्ताली के बारे में मूसा ने कहा:
"नप्ताली , तुम लोगे बहुत सी अच्छी चीज़ों को,
यहोवा का आशीर्वाद तुम्हें पूरा है,
ले लो पश्चिम और दक्षिण प्रदेश।"

ऊरीम–तुम्मीम इसका प्रयोग याजकों द्वारा परमेश्वर के उत्तर को समझने के लिये किया जाता था।

आशेर को आशीर्वाद

[24]मूसा ने आशेर के बारे में कहा:

"आशेर को पुत्रों में सर्वाधिक है आशीर्वाद,
उसे निज भ्राताओं में प्रिय होने दो
और उसे अपने चरण तेल से धोने दो।
25 तुम्हारी अर्गलाएँ लोहे–काँसे होंगे
शक्ति तुम्हारी आजीवन रहेगी बनी।"

मूसा परमेश्वर की स्तुति करता है

26 "यशूरुन, परमेश्वर सम नहीं दूसरा कोई परमेश्वर
अपने गौरव में चलता है चढ़ बादल पर,
आसमान से होकर आता करने मदद तुम्हें।
27 शाश्वत परमेश्वर तुम्हारी शरण सुरक्षित है।
और तुम्हारे नीचे शाश्वत भुजाऐं हैं परमेश्वर
जो बल से दूर हटाता शत्रु तुम्हारे,
कहता है वह 'नष्ट करो शत्रु को!'
28 ऐसे इस्राएल रक्षित रहता है जो केवल
याकूब का जलस्रोत धरती में सुरिक्षत है।
अन्न और दाखमधु की सुभूमि में
हाँ उसका स्वर्ग वहाँ हिम–बिन्दु भेजता।
29 इस्राएलियों, तुम आशीषित हो यहोवा रक्षित राष्ट्र
तुम, न कोई तुम सम अन्य राष्ट्र।
यहोवा है तलवार विजय* तुम्हारी करने वाली।
तेरे शत्रु सभी तुझसे डरेगें, और तुम रौंद
दोगे उनके झूठे देवों की जगहों को।"

मूसा की मृत्यु

34 मूसा मोआब के निचले प्रदेश से नबो पर्वत पर गया जो यरीहो के पार पिसगा की चोटी पर था। यहोवा ने उसे गिलाद से दान तक का सारा प्रदेश दिखलाया। [2]यहोवा ने उसे सारा नप्ताली, जो एप्रैम और मनश्शे का था, दिखाया। उसने भूमध्य सागर तक यहूदा के प्रदेश को दिखाया। [3]यहोवा ने मूसा को खजूर के पेड़ों के नगर सोअर से यरीहो तक फैली घाटी और नेगेव दिखाया। [4]यहोवा ने मूसा से कहा, "यह वह देश है जिसे मैंने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब को वचन दिया था कि, 'मैं इस देश को तुम्हारे वंशजों को दूँगा।' मैंने तुम्हें इस देश को दिखाया। किन्तु तुम वहाँ जा नहीं सकते।"

[5]तब यहोवा का सेवक मूसा मोआब देश में वहीं मरा। यहोवा ने मूसा से कहा था कि ऐसा होगा। [6]यहोवा ने बेतपोर के पार मोआब प्रदेश की घाटी में मूसा को दफनाया। किन्तु आज भी कोई नहीं जानता कि मूसा की कब्र कहाँ है। [7]मूसा जब मरा वह एक सौ बीस वर्ष का था। उसकी आँखें कमजोर नहीं थीं। वह तब भी बलवान था। [8]इस्राएल के लोग मूसा के लिए मोआब के निचले प्रदेश में तीस दिन तक रोते चिल्लाते रहे। यह शोक मनाने का पूरा समय था।

यहोशू मूसा का स्थान लेता है

[9]तब नून का पुत्र यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से भरपूर था क्योंकि मूसा ने उस पर अपना हाथ रख दिया था। इस्राएल के लोगों ने यहोशू की बात मानी। उन्होंने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

[10]किन्तु उस समय के बाद, मूसा की तरह कोई नबी नहीं हुआ। यहोवा परमेश्वर मूसा को प्रत्यक्ष जानता था। [11]किसी दूसरे नबी ने वे सारे चमत्कार और आश्चर्य नहीं दिखाए जिन्हें दिखाने के लिये यहोवा परमेश्वर ने मूसा को मिस्र में भेजा था। वे चमत्कार और आश्चर्य, फ़िरौन, उसके सभी सेवकों और मिस्र के सभी लोगों को दिखाए गए थे। [12]किसी दूसरे नबी ने कभी उतने शक्तिशाली और आश्चर्यजनक चमत्कार नहीं किए जो मूसा ने किए और जिन्हें इस्राएल के सभी लोगों ने देखा।

विजय शाब्दिक "महामहिमता।"

यहोशू

परमेश्वर यहोशू को इस्राएल का नेतृत्व करने के लिये चुनता है

1 मूसा यहोवा का सेवक था। नून का पुत्र यहोशू मूसा का सहायक था। मूसा के मरने के बाद, यहोवा ने यहोशू से बातें कीं। यहोवा ने यहोशू से कहा, [2]"मेरा सेवक मूसा मर गया। अब ये लोग और तुम यरदन नदी के पार जाओ। तुम्हें उस देश में जाना चाहिए जिसे मैं इस्राएल के लोगों को अर्थात् तुम्हें दे रहा हूँ। [3]मैंने मूसा को यह वचन दिया था कि यह देश मैं तुम्हें दूँगा। इसलिए मैं तुम्हें वह हर एक प्रदेश दूँगा, जिस किसी स्थान पर भी तुम जाओगे। [4]हित्तियों का पूरा देश, मरुभूमि और लबानोन से लेकर बड़ी नदी तक (परात नदी तक) तुम्हारा होगा और यहाँ से पश्चिम में भूमध्यसागर तक (सूर्य के डूबने के स्थान तक) का प्रदेश तुम्हारी सीमा के भीतर होगा। [5]मैं मूसा के साथ था और मैं उसी तरह तुम्हारे साथ रहूँगा। तुम्हारे पूरे जीवन में, तुम्हें कोई भी व्यक्ति रोकने में समर्थ नहीं होगा। मैं तुम्हें छोड़ूँगा नहीं। मैं कभी तुमसे दूर नहीं होऊँगा।

[6]"यहोशू, तुम्हें दृढ़ और साहसी होना चाहिये! तुम्हें इन लोगों का अगुवा होना चाहिये जिससे वे अपना देश ले सकें। यह वही देश है जिसे मैंने उन्हें देने के लिये उनके पूर्वजों को वचन दिया था। [7]किन्तु तुम्हें एक दूसरी बात के विषय में भी दृढ़ और साहसी रहना होगा। तुम्हें उन आदेशों का पालन निश्चय के साथ करना चाहिए, जिन्हें मेरे सेवक मूसा ने तुम्हें दिया। यदि तुम उसकी शिक्षाओं का ठीक–ठीक पालन करोगे, तो तुम जो कुछ करोगे उसमें सफल होगे। [8]उस व्यवस्था की किताब में लिखी गई बातों को सदा याद रखो। तुम उस किताब का अध्ययन दिन–रात करो, तभी तुम उसमें लिखे गए आदेशों के पालन के विषय में विश्वस्त रह सकते हो। यदि तुम यह करोगे, तो तुम बुद्धिमान बनोगे और जो कुछ करोगे उसमें सफल होगे। [9]याद रखो, कि मैंने तुम्हें दृढ़ और साहसी बने रहने का आदेश दिया था। इसलिए कभी भयभीत न होओ, क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ सभी जगह रहेगा, जहाँ तुम जाओगे।"

[10]इसलिए यहोशू ने लोगों के प्रमुखों को आदेश दिया। उसने कहा, [11]"डेरे से होकर जाओ और लोगों को तैयार होने को कहो। लोगों से कहो, 'कुछ भोजन तैयार कर लें। अब से तीन दिन बाद, हम लोग यरदन नदी पार करेंगे। हम लोग जाएंगे और उस देश को लेंगे जिसे तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुमको दे रहा है।'"

[12]तब यहोशू ने रूबेन के परिवार समूह, गाद और मनश्शे के परिवार समूह के आधे लोगों से बातें कीं। यहोशू ने कहा, [13]"उसे याद रखो, जो परमेश्वर के सेवक मूसा ने तुमसे कहा था। उसने कहा था कि परमेश्वर, तुम्हारा यहोवा तुम्हें आराम के लिये स्थान देगा। परमेश्वर यह देश तुम्हें देगा। [14]अब परमेश्वर ने यरदन नदी के पूर्व में यह देश तुम्हें दिया है। तुम्हारी पत्नियाँ, तुम्हारे बच्चे और तुम्हारे जानवर इस प्रदेश में रह सकते हैं। किन्तु तुम्हारे योद्धा तुम्हारे भाइयों के साथ यरदन नदी को अवश्य पार करेंगे। तुम्हें युद्ध के लिये तैयार रहना चाहिए और अपना देश लेने में अपने भाइयों की सहायता करनी चाहिये। [15]यहोवा ने तुम्हें आराम करने की जगह दी है, और वह तुम्हारे भाइयों के लिये भी वैसा ही करेगा। किन्तु तुम्हें अपने भाइयों की सहायता तब तक करनी चाहिये जब तक वे उस देश को नहीं ले लेते जिसे परमेश्वर, उनका यहोवा उन्हें दे रहा है। तब तुम यरदन नदी के पूर्व अपने देश में लौट सकते हो। वही वह प्रदेश है जिसे यहोवा के सेवक मूसा ने तुम्हें दिया था।"

[16]तब लोगों ने यहोशू को उत्तर दिया, "जो भी करने के लिये तुम आदेश दोगे, हम लोग करेंगे! जिस स्थान पर भेजोगे, हम लोग जाएंगे! [17]हम लोगों ने पूरी तरह मूसा की आज्ञा मानी। उसी तरह हम लोग वह सब मानेंगे जो तुम कहोगे। हम लोग यहोवा से केवल एक बात

चाहते हैं। हम लोग परमेश्वर यहोवा से यही माँग करते हैं कि वह तुम्हारे साथ वैसा ही रहे जैसे वह मूसा के साथ रहा। [18]तब, यदि कोई व्यक्ति तुम्हारी आज्ञा मानने से इन्कार करता है या कोई व्यक्ति तुम्हारे विरुद्ध खड़ा होता है, वह मार डाला जाएगा। केवल दृढ़ और साहसी रहो!"

यरीहो में गुप्तचर

2 नून का पुत्र यहोशू और सभी लोगों ने शित्तीम* में डेरा डाला था। यहोशू ने दो गुप्तचरों* को भेजा। किसी दूसरे व्यक्ति को यह पता नहीं चला कि यहोशू ने इन लोगों को भेजा था। यहोशू ने इन लोगों से कहा, "जाओ और प्रदेश की जाँच करो, यरीहो नगर को सावधानी से देखो।"

इसलिए वे व्यक्ति यरीहो गए। वे एक वेश्या के घर गए और वहाँ ठहरे। इस स्त्री का नाम राहाब था।

[2]किसी ने यरीहो के राजा से कहा, "इस्राएल के कुछ व्यक्ति आज रात हमारी धरती पर गुप्तचरी करने आए हैं।"

[3]इसलिए यरीहो के राजा ने राहाब के यहाँ यह खबर भेजी: "उन व्यक्तियों को छिपाओ नहीं जो आकर तुम्हारे घर में ठहरे हैं। उन्हें बाहर लाओ। वे भेद लेने अपने देश में आए हैं।"

[4]स्त्री ने दोनों व्यक्तियों को छिपा रखा था। किन्तु स्त्री ने कहा, "वे दो व्यक्ति आए तो थे, किन्तु मैं नहीं जानती कि वे कहाँ से आए थे। [5]नगर द्वार बन्द होने के समय वे व्यक्ति शाम को चले गए। मैं नहीं जानती कि वे कहाँ गए। किन्तु यदि तुम जल्दी जाओगे, तो शायद तुम उन्हें पकड़ लोगे।" [6](राहाब ने वह सब कहा, लेकिन वास्तव में स्त्री ने उन्हें छत पर पहुँचा दिया था, और उन्हें उस चारे में छिपा दिया था, जिसका ढेर उसने ऊपर लगाया था।)

[7]इसलिए इस्राएल के दो आदमियों की खोज में राजा के व्यक्ति चले गए। राजा के व्यक्तियों द्वारा नगर छोड़ने के तुरन्त बाद नगर द्वार बन्द कर दिये गए। वे उन स्थानों पर गए जहाँ से लोग यरदन नदी को पार करते थे।

[8]दोनों व्यक्ति रात में सोने की तैयारी में थे। किन्तु स्त्री छत पर गई और उसने उनसे बात की। [9]राहाब ने कहा, "मैं जानती हूँ कि यह देश यहोवा ने तुम्हारे लोगों को दिया है। तुम हम लोगों को भयभीत करते हो। इस देश में रहने वाले सभी तुम लोगों से भयभीत हैं। [10]हम लोग डरे हुए हैं क्योंकि हम सुन चुके हैं कि यहोवा ने तुम लोगों की सहायता कैसे की है। हमने सुना है कि तुम मिस्र से बाहर आए तो यहोवा ने लाल सागर के पानी को सुखा दिया। हम लोगों ने यह भी सुना है कि तुम लोगों ने दो एमोरी राजाओं सीहोन और ओग के साथ क्या किया। हम लोगों ने सुना कि तुम लोगों ने यरदन नदी के पूर्व में रहने वाले उन दोनों राजाओं को कैसे नष्ट किया। [11]हम लोगों ने उन घटनाओं को सुना और बहुत अधिक डर गए और अब हम में से कोई व्यक्ति इतना साहसी नहीं कि तुम लोगों से लड़ सके। क्यों? क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर स्वर्ग और नीचे धरती पर शासन करता है [12]तो अब, मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे वचन दो। मैंने तुम्हारी सहायता की है और तुम पर दया की है। इसलिए यहोवा के सामने वचन दो कि तुम हमारे परिवार पर दया करोगे। कृपया मुझे कहो कि तुम ऐसा करोगे। [13]मुझसे तुम यह कहो कि तुम मेरे परिवार को जीवित रहने दोगे जिसमें मेरे पिता, माँ, भाई, बहनें, और उनके परिवार होंगे। तुम प्रतिज्ञा करो कि तुम हमें मृत्यु से बचाओगे।"

[14]उन व्यक्तियों ने उसे मान लिया। उन्होंने कहा, "हम तुम्हारे जीवन के लिये अपने जीवन की बाजी लगा देंगे। किसी व्यक्ति से न बताओ कि हम क्या कर रहे हैं। तब जब यहोवा हम लोगों को हमारा देश देगा, तब हम तुम पर दया करेंगे। तुम हम लोगों पर विश्वास कर सकते हो।"

[15]उस स्त्री का घर नगर की दीवार के भीतर बना था। यह दीवार का एक हिस्सा था। इसलिए स्त्री ने उनके खिड़की में से उतरने के लिये रस्सी का उपयोग किया। [16]तब स्त्री ने उनसे कहा, "पश्चिम की पहाड़ियों में जाओ, जिससे राजा के व्यक्ति तुम्हें अचानक न पकड़ें। वहाँ तीन दिन छिपे रहो। राजा के व्यक्ति जब लौट आएं तब तुम अपने रास्ते जा सकते हो।"

[17]व्यक्तियों ने उससे कहा, "हम लोगों ने तुमको वचन दिया है। किन्तु तुम्हें एक काम करना होगा, नहीं तो हम लोग अपने वचन के लिये उत्तरदायी नहीं होंगे। [18]तुम इस लाल रस्सी का उपयोग हम लोगों के बचकर भाग निकलने के लिये कर रही हो। हम लोग इस देश में लौटेंगे। उस समय तुम्हें इस रस्सी को अपनी खिड़की से अवश्य बांधना

शित्तिम यरदन नदी के पूर्व एक नगर।

गुप्तचर वे व्यक्ति जो शत्रु की शक्ति और कमजोरी का पता गुप्त रूप से लगाते हैं।

होगा। तुम्हें अपने पिता, अपनी माँ, अपने भाई, और अपने पूरे परिवार को अपने साथ इस घर में रखना होगा। [19]हम लोग हर एक व्यक्ति को सुरक्षित रखेंगे जो इस घर में होगा। यदि तुम्हारे घर के भीतर किसी को चोट पहुँचता है, तो उसके लिए हम लोग उत्तरदायी होंगे। यदि तुम्हारे घर से कोई व्यक्ति बाहर जाएगा, तो वह मार डाला जा सकता है। उस व्यक्ति के लिए हम उत्तरदायी नहीं होंगे। यह उसका अपना दोष होगा। [20]हम यह वादा तुम्हारे साथ कर रहे हैं। किन्तु यदि तुम किसी को बताओगी कि हम क्या कर रहे हैं, तो हम अपने इस वचन से स्वतन्त्र होंगे।"

[21]स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं इसे स्वीकार करती हूँ।" स्त्री ने नमस्कार किया और व्यक्तियों ने उसका घर छोड़ा। स्त्री ने खिड़की से लाल रस्सी बांधी।

[22]वे उसके घर को छोड़कर पहाड़ियों में चले गए। जहाँ वे तीन दिन रुके। राजा के व्यक्तियों ने पूरी सड़क पर उनकी खोज की। तीन दिन बाद राजा के व्यक्तियों ने खोज बन्द कर दी। वे उन्हें नहीं ढूँढ पाए, सो वे नगर में लौट आए। [23]तब दोनों व्यक्तियों ने यहोशू के पास लौटना आरम्भ किया। व्यक्तियों ने पहाड़ियाँ छोड़ी और नदी को पार किया। वे नून के पुत्र यहोशू के पास गए। उन्होंने जो कुछ पता लगाया था, यहोशू को बताया। [24]उन्होंने यहोशू से कहा, "यहोवा ने सचमुच सारा देश हम लोगों को दे दिया है। उस देश के सभी लोग हम लोगों से भयभीत हैं।"

यरदन नदी पर आश्चर्यकर्म

3 दूसरे दिन सवेरे यहोशू और इस्राएल के सभी लोग उठे और शित्तीम को उन्होंने छोड़ दिया। उन्होंने यरदन नदी तक यात्रा की। उन्होंने पार करने के पहले यरदन नदी पर डेरे लगाए। [2]तीन दिन बाद प्रमुख लोग डेरों के बीच से होकर निकले। [3]प्रमुखों ने लोगों को आदेश दिये। उन्होंने कहा, "तुम लोग याजक और लेवीवंशियों को अपने परमेश्वर यहोवा के साक्षीपत्र का सन्दूक ले जाते हुए देखोगे। उस समय तुम जहाँ हो, उसे छोड़ोगे और उनके पीछे चलोगे। [4]किन्तु उनके बहुत निकट न रहो। लगभग एक हजार गज दूर उनके पीछे रहो। तुमने पहले इस ओर की यात्रा कभी नहीं की है। इसलिए यदि तुम उनके पीछे चलोगे, तो तुम जानोगे कि तुम्हे कहाँ जाना है।"

[5]तब यहोशू ने लोगों से कहा, "अपने को पवित्र करो। कल यहोवा तुम लोगों का उपयोग चमत्कार दिखाने के लिये करेगा।"

[6]तब यहोशू ने याजकों से कहा, "साक्षीपत्र के सन्दूक को उठाओ और लोगों से पहले नदी के पार चलो।" इसलिए याजकों ने सन्दूक को उठाया और उसे लोगों के सामने ले गए।

[7]तब यहोवा ने यहोशू से कहा, "आज मैं इस्राएल के लोगों की दृष्टि में तुम्हें महान व्यक्ति बनाना आरम्भ करूँगा। तब लोग जानेंगे कि मैं तुम्हारे साथ वैसे ही हूँ जैसे मैं मूसा के साथ था। [8]याजक साक्षीपत्र का सन्दूक ले चलेंगे। याजकों से यह कहो, 'यरदन नदी के किनारे तक जाओ और ठीक इसके पहले कि तुम्हारा पैर पानी में पड़े रूक जाओ।'"

[9]तब यहोशू ने इस्राएल के लोगों से कहा, "आओ और अपने परमेश्वर यहोवा का आदेश सुनो। [10]यह इस बात का प्रमाण है कि साक्षात् परमेश्वर सचमुच तुम्हारे साथ है। यह इस बात का प्रमाण है कि वह तुम्हारे शत्रु कनान के लोगों हित्तियों, हिव्वियों, परिज्जियों, गिर्गाशियों, एमोरी लोगों तथा यबूसी लोगों को हराएगा और उन्हें उस देश को छोड़ने के लिए विवश करेगा। [11]प्रमाण यहाँ है। सारे संसार के स्वामी के साक्षीपत्र का सन्दूक उस समय तुम्हारे आगे चलेगा जब तुम यरदन नदी को पार करोगे। [12]अपने बीच से बारह व्यक्तियों को चुनो। इस्राएल के बारह परिवार समूहों में से हर एक से एक व्यक्ति चुनो। [13]याजक सारे संसार के स्वामी, यहोवा के सन्दूक को लेकर चलेंगे। वे उस सन्दूक को तुम्हारे सामने यरदन नदी में ले जाएंगे। जब वे पानी में घुसेंगे, तो यरदन के पानी का बहना रूक जायेगा। पानी रूक जाएगा और उस स्थान के पीछे बाँध की तरह खड़ा हो जाएगा।"

[14]याजक लोगों के सामने साक्षीपत्र का सन्दूक लेकर चले और लोगों ने यरदन नदी को पार करने के लिए डेरे को छोड़ दिया। [15](फसल पकने के समय यरदन नदी अपने तटों को डुबा देती है। अत: नदी पूरी तरह भरी हुई थी।) सन्दूक ले चलने वाले याजक नदी के किनारे पहुँचे। उन्होंने पानी में पाँव रखा। [16]और उस समय पानी का बहना बन्द हो गया। पानी उस स्थान के पीछे बांध की तरह खड़ा हो गया। नदी के चढ़ाव की ओर लम्बी दूरी तक पानी लगातार आदाम तक (सारतान के समीप एक

नगर) ऊँचा खड़ा होता चला गया। लोगों ने यरीहो के पास नदी को पार किया। [17]उस जगह की धरती सूख गई याजक यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को नदी के बीच ले जाकर रूक गये। जब इस्राएल के लोग यरदन नदी को सूखी धरती से होते हुए चल कर पार कर रहे थे, तब याजक वहाँ उनकी प्रतीक्षा में थे।

लोगों को स्मरण दिलाने के लिये शिलायें

4 जब सभी लोगों ने यरदन नदी को पार कर लिया तब यहोवा ने यहोशू से कहा, [2]"लोगों में से बारह व्यक्ति चुनों। हर एक परिवार समूह से एक व्यक्ति चुनों। [3]लोगों से कहो कि वे वहाँ नदी में देखे जहाँ याजक खड़े थे। उनसे वहाँ बारह शिलायें ढूँढ निकालने के लिए कहो। उन बारह शिलाओं को अपने साथ ले जाओ। उन बारह शिलाओं को उस स्थान पर रखो जहाँ तुम आज रात ठहरो।"

[4]इसलिए यहोशू ने हर एक परिवार समूह से एक व्यक्ति चुना। तब उसने बारह व्यक्तियों को एक साथ बुलाया। [5]यहोशू ने उनसे कहा, "नदी में वहाँ तक जाओ जहाँ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के पवित्र वाचा का सन्दूक है। तुममें से हर एक को एक शिला की खोज करनी चाहिये। इस्राएल के बारह परिवार समूहों में से हर एक के लिए एक शिला होगी। उस शिला को अपने कंधे पर लाओ। [6]ये शिलायें तुम्हारे बीच चिन्ह होंगी। भविष्य में तुम्हारे बच्चे यह पूछेंगे, 'इन शिलाओं का क्या महत्व है?' [7]बच्चों से कहो कि यहोवा ने यरदन नदी में पानी का बहना बन्द कर दिया था। जब यहोवा के साथ साक्षीपत्र के पवित्र सन्दूक ने नदी को पार किया तब पानी का बहना बन्द हो गया। ये शिलायें इस्राएल के लोगों को इस घटना की सदैव याद बनाये रखने में सहायता करेंगे।"

[8]इस प्रकार, इस्राएल के लोगों ने यहोशू की आज्ञा मानी। वे यरदन नदी के बीच से बारह शिलायें ले गए। इस्राएल के बारह परिवार समूहों में से हर एक के लिये एक शिला थी। उन्होंने यह वैसे ही किया जैसा यहोवा ने यहोशू को आदेश दिया। वे व्यक्ति शिलाओं को अपने साथ ले गए। तब उन्होंने उन शिलाओं को वहाँ रखा जहाँ उन्होंने अपने डेरे डाले। [9](यहोशू ने भी यहोवा के पवित्र सन्दूक को ले चलने वाले याजक जहाँ खड़े थे, वहीं यरदन नदी के बीच में बारह शिलाये डाले। वे शिलाये आज भी उस स्थान पर हैं।)

[10]यहोवा ने यहोशू को आदेश दिया था कि वह लोगों से कहे कि उन्हें क्या करना है। वे वही बातें थीं, जिन्हें अवश्य कहने के लिये मूसा ने यहोशू से कहा था। इसलिए पवित्र सन्दूक को ले चलने वाले याजक नदी के बीच में तब तक खड़े ही रहे, जब तक ये सभी काम पूरे न हो गए। लोगों ने शीघ्रता की और नदी को पार कर गए। [11]जब लोगों ने नदी को पार कर लिया, तब याजक यहोवा का सन्दूक लेकर लोगों के सामने आये।

[12]रूबेन के परिवार समूह, गादी तथा मनश्शे परिवार समूह के आधे लोगों ने, मूसा ने उन्हें जो करने को कहा था, किया। इन लोगों ने अन्य लोगों के सामने नदी को पार किया। ये लोग युद्ध के लिये तैयार थे। ये लोग इस्राएल के अन्य लोगों को उस देश को लेने में सहायता करने जा रहे थे, जिसे यहोवा ने उन्हें देने का वचन दिया था। [13]लगभग चालीस हजार सैनिक, जो युद्ध के लिये तैयार थे, यहोवा के सामने से गुजरे। वे यरीहो के मैदान की ओर बढ़ रहे थे।

[14]उस दिन यहोवा ने इस्राएल के सभी लोगों की दृष्टि में यहोशू को एक महान व्यक्ति बना दिया। उस समय से आगे लोग यहोशू का सम्मान करने लगे। वे यहोशू का सम्मान जीवन भर वैसे ही करने लगे जैसा मूसा का करते थे।

[15]जिस समय सन्दूक ले चलने वाले याजक अभी नदी में ही खड़े थे, यहोवा ने यहोशू से कहा, [16]"याजकों को नदी से बाहर आने का आदेश दो।"

[17]इसलिए यहोशू ने याजकों को आदेश दिया। उसने कहा, "यरदन नदी के बाहर आओ।"

[18]याजकों ने यहोशू की आज्ञा मानी। वे सन्दूक को अपने साथ लेकर बाहर आए। जब याजकों के पैर ने नदी के दूसरी ओर की भूमि को स्पर्श किया, तब नदी का जल फिर बहने लगा। पानी फिर तटों को वैसे ही डुबाने लगा जैसा इन लोगों द्वारा नदी पार करने के पहले था।

[19]लोगों ने यरदन नदी को पहले महीने के दसवें दिन पार किया। लोगों ने यरीहो के पूर्व गिलगाल में डेरा डाला। [20]लोग उन शिलाओं को अपने साथ ले चल रहे थे जिन्हें उन्होंने यरदन नदी से निकाला था और यहोशू ने उन शिलाओं को गिलगाल में स्थापित किया। [21]तब यहोशू ने लोगों से कहा, "भविष्य में तुम्हारे बच्चे अपने माता–पिता से पूछेंगे, 'इन शिलाओं का क्या महत्व है?' [22]तुम बच्चों

को बताओगे, 'ये शिलाएं हम लोगों को यह याद दिलाने में सहायता करती हैं कि इस्राएल के लोगों ने किस तरह सूखी भूमि पर से यरदन नदी को पार किया। [23]तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने नदी के जल का बहना रोक दिया। नदी तब तक सूखी रही जब तक लोगों ने नदी को पार नहीं कर लिया। यहोवा ने यरदन नदी पर लोगों के लिये वही किया, जो उन्होंने लोगों के लिये लाल सागर पर किया था। याद करो कि यहोवा ने लाल सागर पर पानी का बहना इसलिए रोका था कि लोग उसे पार कर सकें। [24]यहोवा ने यह इसलिए किया कि इस देश के सभी लोग जानें कि यहोवा महान शक्ति रखता है। जिससे लोग सदैव ही यहोवा तुम्हारे परमेश्वर से डरते रहें।'"

5 इस प्रकार, यहोवा ने यरदन नदी को तब तक सूखी रखा जब तक इस्राएल के लोगों ने उसे पार नहीं कर लिया। यरदन नदी के पश्चिम में रहने वाले एमोरी राजाओं और भूमध्य सागर के तट पर रहने वाले कनानी राजाओं ने इसके विषय में सुना और वे बहुत अधिक भयभीत हो गए। उसके बाद वे इस्राएल के लोगों के विरुद्ध युद्ध में खड़े रहने योग्य साहसी नहीं रह गए।

इस्राएलियों का खतना

[2]उस समय, यहोवा ने यहोशू से कहा, "वज्रप्रस्तर* के चाकू बनाओ और इस्राएल के लोगों का खतना फिर करो।"

[3]इसलिए यहोशू ने कठोर पत्थर के चाकू बनाए। तब उसने इस्राएल के लोगों का खतना गिबआत हाअरलोत* में किया।

[4-7]यही कारण है कि यहोशू ने उन सभी पुरुषों का खतना किया, जो इस्राएल के लोगों द्वारा मिस्र छोड़ने के बाद सेना में रहने की आयु के हो गए थे। मरुभूमि में रहते समय उन सैनिकों में से कई ने यहोवा की बात नहीं मानी थी। इसलिए यहोवा ने उन व्यक्तियों को अभिशाप दिया था कि वे "दूध और शहद की नदियों वाले देश" को नहीं देख पाएंगे। यहोवा ने हमारे पूर्वजों को वह देश देने का वचन दिया था, किन्तु इन व्यक्तियों के कारण लोगों को चालीस वर्ष तक मरुभूमि में भटकना पड़ा और इस प्रकार वे सब सैनिक समाप्त हो गए। वे सभी सैनिक नष्ट हो गए, और उनका स्थान उनके पुत्रों ने लिया। किन्तु मिस्र से होने वाली यात्रा में जितने बच्चे मरुभूमि में उत्पन्न हुए थे, उनमें से किसी का भी खतना नहीं हो सका था। इसलिए यहोशू ने उनका खतना किया। [8]यहोशू ने सभी पुरुषों का खतना पूरा किया। वे तब तक डेरे में रहे, जब तक स्वस्थ नहीं हुए।

कनान में पहला फसह पर्व

[9]उस समय यहोवा ने यहोशू से कहा, "जब तुम मिस्र में दास थे तब तुम लज्जित थे। किन्तु आज मैंने तुम्हारी वह लज्जा दूर कर दी है।" इसलिए यहोशू ने उस स्थान का नाम गिलगाल* रखा और वह स्थान आज भी गिलगाल कहा जाता है।

[10]जिस समय इस्राएल के लोग यरीहो के मैदान में गिलगाल के स्थान पर डेरा डाले थे, वे फसह पर्व मना रहे थे। यह महीने के चौदहवें दिन की सन्ध्या को था। [11]फसह पर्व के बाद, अगले दिन लोगों ने वह भोजन किया जो उस भूमि पर उगाया गया था। उन्होंने अखमीरी रोटी और भुने अन्न खाए। [12]उस दिन जब लोगों ने वह भोजन कर लिया, उसके बाद स्वर्ग से विशेष भोजन आना बन्द हो गया। उसके बाद, इस्राएल के लोगों ने स्वर्ग से विशेष भोजन न पाया। उसके बाद उन्होंने वही भोजन खाया जो कनान में पैदा किया गया था।

[13]जब यहोशू यरीहो के निकट था तब उसने ऊपर आँख उठायी और उसने अपने सामने एक व्यक्ति को देखा। उस व्यक्ति के हाथ में तलवार थी। यहोशू उस व्यक्ति के पास गया और उससे पूछा, "क्या तुम हमारे मित्रों में से कोई हो या हमारे शत्रुओं में से?"

[14]उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "मैं शत्रु नहीं हूँ। मैं यहोवा की सेना का एक सेनापति हूँ। मैं अभी-अभी तुम्हारे पास आया हूँ।"

तब यहोशू ने अपना सिर भूमि तक झुकाया। यह उसने सम्मान प्रकट करने के लिए किया। उसने पूछा, "क्या मेरे स्वामी का मुझ दास के लिए कोई आदेश है?"

वज्रप्रस्तर एक विशेष प्रकार का कठोर पत्थर जिसे प्रस्तर युग से ही मनुष्य अपने औजार बनाने के काम में लाता रहा।
गिबआत हाअरलोत इस नाम का अर्थ है "खलड़ियाँ नाम का टीला।"

गिलगाल यह शब्द उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "लुढ़कते चले जाना है।"

[15]यहोवा की सेना के सेनापति ने उत्तर दिया, "अपने जूते उतारो। जिस स्थान पर तुम खड़े हो वह स्थान पवित्र है।" इसलिए यहोशू ने उसकी आज्ञा मानी।

यरीहो पर कब्जा

6 यरीहो नगर के द्वार बन्द थे। उस नगर के लोग भयभीत थे क्योंकि इस्राएल के लोग निकट थे। कोई नगर में नहीं जा रहा था और कोई नगर से बाहर नहीं आ रहा था।

[2]तब यहोवा ने यहोशू से कहा, "देखो, मैंने यरीहो नगर को तुम्हारे अधिकार में दे दिया है। इसका राजा और इसके सारे सैनिक तुम्हारे अधीन हैं। [3]हर एक दिन अपनी सेना के साथ नगर के चारों ओर अपना बल प्रदर्शन करो। यह छः दिन तक करो। [4]बकरे के सींगों की बनी तुरहियों को लेकर सात याजकों को चलने दो। याजकों से कहो कि वे पवित्र सन्दूक के सामने चलें। सातवें दिन नगर के चारों ओर सात फेरे करो, याजकों से कहो कि वे चलते समय तुरही बजाएं। [5]याजक तुरहियों से प्रचन्ड ध्वनि करेंगे। जब तुम वह ध्वनि सुनो तो तुम सब लोगों से गर्जन आरम्भ करने को कहो। जब तुम ऐसा करोगे तो नगर की दीवारें गिर जाएंगी। तब तुम्हारे लोग सीधे नगर में जाएंगे।"

[6]इस प्रकार नून के पुत्र यहोशू ने याजकों को इकट्ठा किया। यहोशू ने उनसे कहा, "यहोवा के पवित्र सन्दूक को ले चलो और सात याजकों को तुरही ले चलने को कहो। उन याजकों को सन्दूक के सामने चलना चाहिए।"

[7]तब यहोशू ने लोगों को आदेश दिया, "जाओ! और नगर के चारों ओर बल परिक्रमा करो। अस्त्र-शस्त्र वाले सैनिक यहोवा के पवित्र सन्दूक के आगे चलें।"

[8]जब यहोशू ने लोगों से बोलना पूरा किया तो यहोवा के सामने सात याजकों ने चलना आरम्भ किया। वे सात तुरहियाँ लिए हुए थे। चलते समय वे तुरहियाँ बजा रहे थे। यहोवा के सन्दूक को लेकर चलने वाले याजक उनके पीछे चल रहे थे। [9]अस्त्र-शस्त्र धारी सैनिक याजकों के आगे चल रहे थे। पवित्र सन्दूक के पीछे चलने वाले लोग तुरही बजा रहे थे तथा कदम मिला रहे थे। [10]किन्तु यहोशू ने लोगों से कहा था कि युद्ध की ललकार न दें। उसने कहा, "ललकारो नहीं। उस दिन तक तुम कोई ललकार न दो, जिस दिन तक मैं न कहूँ। मेरे कहने के समय तुम ललकार सकते हो!"

[11]इसलिए यहोशू ने याजकों को यहोवा के पवित्र सन्दूक को नगर के चारों ओर ले जाने का आदेश दिया। तब वे अपने डेरे में लौट गए और रात भर वहीं ठहरे।

[12]दूसरे दिन, सवेरे यहोशू उठा। याजक फिर यहोवा के पवित्र सन्दूक को लेकर चले [13]और सातों याजक सात तुरहियाँ लेकर चले। वे यहोवा के पवित्र सन्दूक के सामने तुरहियाँ बजाते हुए कदम से कदम मिला रहे थे। उनके सामने अस्त्र-शस्त्र धारी सैनिक चल रहे थे। यहोवा के सन्दूक के पीछे चलने वाले सैनिक याजक तुरहियाँ बजाते हुए कदम मिला रहे थे।

[14]इसलिए दूसरे दिन, उन सब ने एक बार नगर के चारों ओर चक्कर लगाया और तब वे अपने डेरों मे लौट गए। उन्होंने लगातार छः दिन तक यह किया।

[15]सातवें दिन वे भोर में उठे और उन्होंने नगर के चारों ओर सात चक्कर लगाए। उन्होंने उसी प्रकार नगर का चक्कर लगाया जिस तरह वे उसके पहले लगा चुके थे, किन्तु उस दिन उन्होंने सात चक्कर लगाए। [16]सातवीं बार जब उन्होंने नगर का चक्कर लगाया तो याजकों ने अपनी तुरहियाँ बजाई। उस समय यहोशू ने आदेश दिया: "अब निनाद करो! यहोवा ने यह नगर तुम्हें दिया है! [17]नगर और इसमें की हर एक चीज़ यहोवा की हैं।* केवल वेश्या राहाब और उसके घर में रहने वाले लोग ही जीवित रहेंगे। ये मारे नहीं जाने चाहिए क्योंकि राहाब ने उन दो गुप्तचरों की सहायता की थी, जिन्हें हमने भेजा था। [18]यह भी याद रखो कि हमें इसके अतिरिक्त सभी चीज़ों को नष्ट करनी हैं। उन चीज़ों को मत लो। यदि तुम उन चीज़ों को लेते हो और अपने डेरों में लाते हो तो तुम स्वयं नष्ट हो जाओगे और तुम अपने सभी इस्राएली लोगों पर भी मुसीबत लाओगे [19]सभी चाँदी, सोने, काँसे तथा लोहे की बनी चीज़ें यहोवा की हैं। ये चीज़ें यहोवा के खजाने में ही रखी जानी चाहिए।"

[20]याजकों ने तुरहियाँ बजाई। लोगों ने तुरहियों की आवाज सुनी और ललकार लगानी आरम्भ की। दीवारें गिरीं और लोग सीधे नगर में दौड़ पड़े। इस प्रकार

हर एक चीज़ यहोवा की है इसका प्राय: यह अर्थ होता था कि ये चीज़ें मन्दिर के कोषागार में जमा होती थीं या नष्ट कर दी जाती थीं ताकि अन्य लोग उनका प्रयोग न करें।

इस्राएल के लोगों ने नगर को हराया। [21]लोगों ने नगर की हर एक चीज़ नष्ट की। उन्होंने वहाँ के हर एक जीवित प्राणी को नष्ट किया। उन्होंने युवक, वृद्ध, युवतियों, वृद्धाओं, भेड़ों और गधों को मार डाला।

[22]यहोशू ने उन व्यक्तियों से बातें की जिन्हें उसने प्रदेश के विषय में पता लगाने भेजा था। यहोशू ने कहा, "उस वेश्या के घर जाओ। उसे बाहर लाओ और उन लोगों को भी बाहर लाओ जो उसके साथ हैं। यह तुम इसलिए करो कि तुमने उसे वचन दिया है।"

[23]दोनों व्यक्ति घर में गए और राहाब को बाहर लाए। उन्होंने उसके पिता, माँ, भाईयों, उसके समूचे परिवार और उसके साथ के अन्य सभी को बाहर निकाला। उन्होंने इस्राएल के डेरे के बाहर इन सभी लोगों को सुरक्षित रखा।

[24]तब इस्राएल के लोगों ने सारे नगर को जला दिया। उन्होंने सोना, चाँदी, काँसा, और लोहे से बनी चीज़ों के अतिरिक्त सभी चीज़ों को जला दिया। ये चीज़ें यहोवा के ख़जाने के लिए बचा ली गई। [25]यहोशू ने राहाब, उसके परिवार और उसके साथ के व्यक्तियों को बचा लिया। यहोशू ने उन्हें जीवित रहने दिया क्योंकि राहाब ने उन लोगों की सहायता की थी, जिन्हें उसने यरीहो में जासूसी करने के लिए भेजा था। राहाब अब भी इस्राएल के लोगों में अपने वंशजों के रूप में रहती है।

[26]उस समय, यहोशू ने शपथ के साथ महत्वपूर्ण बातें कहीं उसने कहा:

"कोई व्यक्ति जो यरीहो नगर के
पुन:निर्माण का प्रयत्न करेगा
यहोवा की ओर से खतरे में पड़ेगा।
जो व्यक्ति नगर की नींव रखेगा, अपने
पहलौठे पुत्र को खोएगा।
जो व्यक्ति फाटक लगाएगा वह अपने सबसे
छोटे पुत्र को खोएगा।"

[27]यहोवा, यहोशू के साथ था और इस प्रकार यहोशू पूरे देश में प्रसिद्ध हो गया।

आकान का पाप

7 किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा की आज्ञा नहीं मानी। यहूदा परिवार समूह का एक व्यक्ति कर्म्मी का पुत्र और जब्दी का पौत्र जिसका नाम आकान था। आकान ने वे कुछ चीज़ें रख ली जिन्हें नष्ट करना था। इसलिए यहोवा इस्राएल के लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ।

[2]जब वे यरीहो को पराजित कर चुके तब यहोशू ने कुछ लोगों को ऐ भेजा। ऐ, बेतेल के पूर्व बेतावेन के पास था। यहोशू ने उनसे कहा, "ऐ जाओ और उस क्षेत्र की कमजोरियों को देखो।" इसलिए लोग उस देश में जासूसी करने गए।

[3]बाद में वे व्यक्ति यहोशू के पास लौटकर आए। उन्होंने कहा, "ऐ कमजोर क्षेत्र है। हम लोगों को उन्हें हराने के लिए अपने सभी लोगों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वहाँ लड़ने के लिए दो हजार या तीन हजार व्यक्तियों को भेजो। अपने सभी लोगों को उपयोग करने की आवश्यकता वहाँ नहीं है। वहाँ पर थोड़े ही व्यक्ति हम लोगों के विरुद्ध लड़ने वाले हैं।"

[4-5]इसलिए लगभग तीन हजार व्यक्ति ऐ गए। किन्तु ऐ के लोगों ने लगभग छत्तीस इस्राएल के व्यक्तियों को मार गिराया और इस्राएल के लोग भाग खड़े हुए। ऐ के लोगों ने नगर–द्वार से लगातार पत्थर की खदानों तक पीछा किया। इस प्रकार ऐ के लोगों ने उन्हें बुरी तरह पीटा।

जब इस्राएल के लोगों ने यह देखा तो वे बहुत भयभीत हो उठे और साहस छोड़ बैठे। [6]जब यहोशू ने इसके बारे में सुना तो उसने अपने वस्त्र फाड़ डाले। वह पवित्र सन्दूक के सामने जमीन पर लेट गया। यहोशू वहाँ शाम तक पड़ा रहा। इस्राएल के नेताओं ने भी यही किया। उन्होंने अपने सिरों पर धूलि डाली।

[7]तब यहोशू ने कहा, "यहोवा, मेरे स्वामी! तू हमारे लोगों को यरदन नदी के पार लाया। किन्तु तू हमें इतनी दूर क्यों लाया और तब एमोरी लोगों द्वारा हमें क्यों नष्ट होने देता है? हम लोग यरदन नदी के दूसरे तट पर ठहरे रहते और सन्तुष्ट रहते। [8]मेरे यहोवा, मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि अब ऐसा कुछ नहीं है जिसे मैं तुझसे कह सकूँ। इस्राएल ने शत्रुओं के सामने सर्मपण कर दिया है। [9]कनानी और इस देश के सभी लोग वह सुनेंगे जो हुआ, तब वे हम लोगों के विरुद्ध आएंगे और हम सभी को मार डालेंगे। तब तू अपने महान नाम की रक्षा के लिये क्या करेगा?"

[10]यहोवा ने यहोशू से कहा, "खड़े हो जाओ। तुम मुँह के बल क्यों गिरे हो? [11]इस्राएल के लोगों ने मेरे विरुद्ध पाप किया। उन्होंने मेरी उस वाचा को तोड़ा, जिसके

पालन का आदेश मैंने दिया था। उन्होंने वे कुछ चीज़ें लीं जिन्हें नष्ट करने का आदेश मैंने दिया है। उन्होंने मेरी चोरी की है। उन्होंने झूठी बात कही है। उन्होंने वे चीज़ें अपने पास रखी हैं। [12]यही कारण है कि इस्राएल की सेना युद्ध से मुँह मोड़ कर भाग खड़ी हुई। यह उनकी बुराई के कारण हुआ। उन्हें नष्ट कर देना चाहिए। मैं तुम्हारी सहायता नहीं करता रहूँगा। मैं तब तक तुम्हारे साथ नहीं रह सकूँगा जब तक तुम यह नहीं करते। तुम्हें उस हर चीज़ को नष्ट करना चाहिए, जिसे मैंने नष्ट करने का आदेश दिया है।

[13]"अब तुम जाओ और लोगों को पवित्र करो। लोगों से कहो, 'वे अपने को पवित्र करें। कल के लिये तैयार हो जाओ। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है कि कुछ लोगों ने वे चीज़ें अपने पास रखी हैं, जिन्हें मैंने नष्ट करने का आदेश दिया था। तुम तब तक अपने शत्रुओं को पराजित करने योग्य नहीं होओगे, जब तक तुम उन चीज़ों को फेंक नहीं देते।

[14]"'कल प्रातः तुम सभी को यहोवा के सामने खड़ा होना होगा। सभी परिवार समूह यहोवा के सामने पेश होंगे। यहोवा एक परिवार समूह को चुनेगा। तब केवल वही परिवार समूह यहोवा के सामने खड़ा होगा। तब उस परिवार समूह में से यहोवा एक वंश को चुनेगा। तब बस वही वंश यहोवा के सामने खड़ा होगा। तब यहोवा उस वंश के प्रत्येक परिवार की परख करेगा। तब यहोवा उस वंश में से एक परिवार को चुनेगा। तब वह परिवार अकेले यहोवा के सामने खड़ा होगा। तब यहोवा उस परिवार के हर पुरुष की जाँच करेगा। [15]वह व्यक्ति जो इन चीज़ों के साथ पाया जाएगा जिन्हें हमें नष्ट कर देना चाहिए था, पकड़ लिया जाएगा। तब वह व्यक्ति आग में झोंककर नष्ट कर दिया जाएगा और उसके साथ उसकी हर एक चीज़ नष्ट कर दी जाएगी। उस व्यक्ति ने यहोवा के उस वाचा को तोड़ा है। उसने इस्राएल के लोगों के प्रति बहुत ही बुरा काम किया है।'"

[16]अगली सुबह यहोशू इस्राएल के सभी लोगों को यहोवा के सामने ले गया। सारे परिवार समूह यहोवा के सामने खड़े हो गए। यहोवा ने यहूदा परिवार समूह को चुना। [17]तब सभी यहूदा परिवार समूह यहोवा के सामने खड़े हुए। यहोवा ने जेरह वंश को चुना। तब जेरह वंश के सभी लोग यहोवा के सामने खड़े हुए। इन में से जब्दी का परिवार चुना गया। [18]तब यहोशू ने इस परिवार के सभी पुरुषों को यहोवा के सामने आने को कहा। यहोवा ने कर्म्मी के पुत्र आकान को चुना। (कर्म्मी जब्दी का पुत्र था और जब्दी जेरह का पुत्र था।)

[19]तब यहोशू ने आकान से कहा, "पुत्र, तुम्हें अपनी प्रार्थना करनी चाहिए। इस्राएल के यहोवा परमेश्वर का सम्मान करना चाहिए और उससे तुम्हें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए। मुझे बताओ कि तुमने क्या किया? मुझसे कुछ छिपाने की कोशिश न करो!"

[20]आकान ने उत्तर दिया, "यह सत्य है! मैंने इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। मैंने जो किया है वह यह है: [21]हम लोगों ने यरीहो नगर को इसकी सभी चीज़ों के साथ अपने अधिकार में लिया। उन चीज़ों में मैंने शिनार का एक सुन्दर ओढ़ना और लगभग पाँच पौण्ड चाँदी और एक पौण्ड सोना देखा। मैं इन चीज़ों को अपने लिए रखने का बहुत इच्छुक था। इसलिए मैंने उनको लिया। तुम उन चीज़ों को मेरे तम्बू के नीचे जमीन में गड़ा हुआ पाओगे। चाँदी ओढ़ने के नीचे है।"

[22]इसलिए यहोशू ने कुछ व्यक्तियों को तम्बू में भेजा। वे दौड़कर पहुँचे और उन चीज़ों को तम्बू में छिपा पाया। चाँदी ओढ़ने के नीचे थी। [23]वे व्यक्ति उन चीज़ों को तम्बू से बाहर लाए। वे उन चीज़ों को यहोशू और इस्राएल के सभी लोगों के पास ले गए। उन्होंने उसे यहोवा के सामने जमीन पर ला पटका।

[24]तब यहोशू और सभी लोग जेरह के पुत्र आकान को आकोर की घाटी में ले गए। उन्होंने चाँदी, ओढ़ना, सोना, आकान के पुत्रियों–पुत्रों, उसके मवेशियों, उसके गधों, भेड़ों, तम्बू और उसकी सभी चीज़ों को भी लिया। इन सभी चीज़ों को वे आकान के साथ आकोर की घाटी में ले गए। [25]तब यहोशू ने कहा, "तुमने हमारे लिये ये सब मुसीबतें क्यों की? अब यहोवा तुम पर मुसीबत लाएगा!" तब सभी लोगों ने आकान और उसके परिवार पर तब तक पत्थर फेंके जब तक वे मर नहीं गए। उन्होंने उसके परिवार को भी मार डाला। तब लोगों ने उन्हें और उसकी सभी वस्तुओं को जला दिया। [26]आकान को जलाने के बाद उसके शरीर पर उन्होंनें कई शिलायें रखीं। वे शिलायें आज भी वहाँ हैं। इस तरह यहोवा ने आकान पर विपत्ति ढाई। यही कारण है कि वह स्थान आकोर घाटी कहा जाता है। इसके बाद, यहोवा लोगों से अप्रसन्न नहीं रहा।

ऐ नष्ट हुआ

8 तब यहोवा ने यहोशू से कहा, "डरो नहीं। साहस न छोड़ो। अपने सभी सैनिकों को ऐ ले जाओ। मैं ऐ के राजा को हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा। मैं उसकी प्रजा को, उसके नगर को और उसकी धरती को तुम्हें दे रहा हूँ। [2]तुम ऐ और उसके राजा के साथ वही करोगे, जो तुमने यरीहो और उसके राजा के साथ किया। केवल इस बार तुम नगर की सारी सम्पत्ति और पशु–धन लोगे और अपने पास रखोगे। फिर तुम अपने लोगों के साथ उसका बँटवारा करोगे। अब तुम अपने कुछ सैनिकों को नगर के पीछे छिपने का आदेश दो।"

[3]इसलिए यहोशू अपनी पूरी सेना को ऐ की ओर ले गया। तब यहोशू ने अपने सर्वोत्तम तीस हजार सैनिक चुने। उसने इन्हें रात को बाहर भेज दिया। [4]यहोशू ने उनको यह आदेश दिया: "मैं जो कह रहा हूँ, उसे सावधानी से सुनो। तुम्हें नगर के पीछे के क्षेत्र में छिपे रहना चाहिए। आक्रमण के समय की प्रतीक्षा करो। नगर से बहुत दूर न जाओ। सावधानी से देखते रहो और तैयार रहो। [5]मैं सैनिकों को अपने साथ नगर की ओर आक्रमण के लिये ले जाऊँगा। हम लोगों के विरुद्ध लड़ने के लिये नगर के लोग बाहर आएंगे। हम लोग मुड़ेंगे और पहले की तरह भाग खड़े होंगे। [6]वे लोग नगर से दूर तक हमारा पीछा करेंगे। वे लोग यह सोचेंगे कि हम लोग उनसे पहले की तरह भाग रहे हैं। इसलिए हम लोग भागेंगे वे तब तक हमारा पीछा करते रहेंगे, जब तक हम उन्हें नगर से बहुत दूर न ले जायेंगे। [7]तब तुम अपने छिपने के स्थान से आओगे और नगर पर अधिकार कर लोगे। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें जीतने की शक्ति देगा।

[8]"तुम्हें वही करना चाहिये, जो यहोवा कहता है। मुझ पर दृष्टि रखो। मैं तुम्हें आक्रमण का आदेश दूँगा। तुम जब नगर पर अधिकार कर लो तब उसे जला दो।"

[9]तब यहोशू ने उन सैनिकों को उनके छिपने की जगहों पर भेज दिया और प्रतीक्षा करने लगा। वे बेतेल और ऐ के बीच की एक जगह गए। यह जगह ऐ के पश्चिम में थी। यहोशू अपने लोगों के साथ रात भर वहीं रुका रहा।

[10]अगले सवेरे यहोशू ने सभी को इकट्ठा किया। तब यहोशू और इस्राएल के प्रमुख सैनिकों को ऐ ले गए। [11]यहोशू के सभी सैनिकों ने ऐ पर आक्रमण किया। वे नगर द्वार के सामने रुके। सेना ने अपना डेरा नगर के उत्तर में डाला। सेना और ऐ के बीच में एक घाटी थी।

[12]यहोशू ने लगभग पाँच हजार हजार सैनिकों को चुना। यहोशू ने इन्हें नगर के पश्चिम में छिपने के लिये उस जगह भेजा, जो बेतेल और ऐ के बीच में थी। [13]इस प्रकार यहोशू ने सैनिकों को युद्ध के लिये तैयार किया था। मुख्य डेरा नगर के उत्तर में था। दूसरे सैनिक पश्चिम में छिपे थे। उस रात यहोशू घाटी में उतरा।

[14]बाद मे, ऐ के राजा ने इस्राएल की सेना को देखा। राजा और उसके लोग उठे और जल्दी से इस्राएल की सेना से लड़ने के लिये आगे बढ़े। ऐ का राजा नगर के पूर्व यरदन घाटी की ओर बाहर गया। इसीलिए वह यह न जान सका कि नगर के पीछे सैनिक छिपे थे।

[15]यहोशू और इस्राएल के सभी सैनिकों ने ऐ की सेना द्वारा अपने को पीछे धकेलने दिया। यहोशू और उसके सैनिकों ने पूर्व में मरुभूमि की ओर दौड़ना आरम्भ किया। [16]नगर के लोगों ने शोर मचाना आरम्भ किया और उन्होंने यहोशू और उसके सैनिकों का पीछा करना आरम्भ किया। सभी लोगों ने नगर छोड़ दिया। [17] ऐ और बेतेल के सभी लोगों ने इस्राएल की सेना का पीछा किया। नगर खुला छोड़ दिया गया, कोई भी नगर की रक्षा के लिए नहीं रहा।

[18]यहोवा ने यहोशू से कहा, "अपने भाले को ऐ नगर की ओर किये रहो। मैं यह नगर तुमको दूँगा।" इसलिए यहोशू ने अपने भाले को ऐ नगर की ओर किया। [19]इस्राएल के छिपे सैनिकों ने इसे देखा। वे शीघ्रता से अपने छिपने के स्थानों से निकले और नगर की ओर तेजी से चल पड़े। वे नगर में घुस गए और उस पर अधिकार कर लिया। तब सैनिकों ने नगर को जलाने के लिये आग लगानी आरम्भ की।

[20]ऐ के लोगों ने मुड़कर देखा और अपने नगर को जलता पाया। उन्होंने धुआँ आकाश में उठते देखा। इसलिए उन्होंने अपना बल और साहस खो दिया। उन्होंने इस्राएल के लोगों का पीछा करना छोड़ा। इस्राएल के लोगों ने भागना बन्द किया। वे मुड़े और ऐ के लोगों से लड़ने चल पड़े। ऐ के लोगों के लिये भागने की कोई सुरक्षित जगह न थी। [21]यहोशू और उसके सैनिकों ने देखा कि उसकी सेना ने नगर पर अधिकार कर लिया है। उन्होंने नगर से धुआँ उठते देखा। इस समय ही उन्होंने भागना बन्द किया।

वे मुड़े और ऐ के सैनिकों से युद्ध करने के लिये दौड़ पड़े। [22]तब वे सैनिक जो छिपे थे, युद्ध में सहायता के लिये नगर से बाहर निकल आए। ऐ के सैनिकों के दोनों ओर इस्राएल के सैनिक थे, ऐ के सैनिक जाल में फँस गए थे। इस्राएल ने उन्हें पराजित किया। वे तब तक लड़ते रहे जब तक ऐ का कोई भी पुरुष जीवित न रहा, उनमें से कोई भाग न सका। [23]किन्तु ऐ का राजा जीवित छोड़ दिया गया। यहोशू के सैनिक उसे उसके पास लाए।

युद्ध का विवरण

[24]युद्ध के समय, इस्राएल की सेना ने ऐ के सैनिकों को मैदानों और मरुभूमि में धकेल दिया और इस प्रकार इस्राएल की सेना ने ऐ से सभी सैनिकों को मारने का काम मैदानों और मरुभूमि में पूरा किया। तब इस्राएल के सभी सैनिक ऐ को लौटे। तब उन्होंने उन लोगों को जो नगर में जीवित थे, मार डाला। [25]उस दिन ऐ के सभी लोग मारे गए। वहाँ बारह हजार स्त्री पुरुष थे। [26]यहोशू ने अपने भाले को, ऐ की ओर अपने लोगों को नगर नष्ट करने का संकेत को बनाये रखा और यहोशू ने संकेत देना तब तक नहीं बन्द किया जब तक नगर के सभी लोग नष्ट नहीं हो गए। [27]इस्राएल के लोगों ने जानवरों और नगर की चीज़ों को अपने पास रखा। यह वही बात थी जिसे करने को यहोवा ने यहोशू को आदेश देते समय,कहा था।

[28]तब यहोशू ने ऐ* नगर को जला दिया। वह नगर सूनी चट्टानों का ढेर बन गया। यह आज भी वैसा ही है। [29]यहोशू ने ऐ के राजा को एक पेड़ पर फाँसी देकर लटका दिया। उसने उसे शाम तक पेड़ पर लटके रहने दिया। सूरज ढले यहोशू ने राजा के शव को पेड़ से उतारने की आज्ञा दी। उन्होंने उसके शरीर को नगर द्वार पर फेंक दिया और उसके शरीर को कई शिलाओं से ढक दिया। शिलाओं का वह ढेर आज तक वहाँ है।

आशीर्वादों तथा अभिशापों का पढ़ा जाना

[30]तब यहोशू ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिए एक वेदी बनाई। उसने यह वेदी एबाल पर्वत पर बनायी। [31]यहोवा के सेवक मूसा ने इस्राएल के लोगों को बताया था कि वेदियाँ कैसे बनाई जायें। इसलिए यहोशू ने वेदी को वैसे ही बनाया जैसा मूसा के व्यवस्था की किताब में समझाया गया था। वेदी बिना कटे पत्थरों से बनी थी। उन पत्थरों पर कभी किसी औजार का उपयोग नहीं हुआ था। उन्होंने उस वेदी पर यहोवा को होमबलि और मेलबलि चढ़ाई।

[32]उस स्थान पर यहोशू ने मूसा के नियमों को पत्थरों पर लिखा। उसने यह इस्राएल के सभी लोगों के देखने के लिये किया। [33]अग्रज (नेता), अधिकारी, न्यायाधीश और इस्राएल के सभी लोग पवित्र सन्दूक के चारों ओर खड़े थे। वे उन लेवीवंशी याजकों के सामने खड़े थे, जो यहोवा के साक्षीपत्र के पवित्र सन्दूक को ले चलते थे। इस्राएली और गैर इस्राएली सभी लोग वहाँ खड़े थे। आधे लोग एबाल पर्वत के सामने खड़े थे और अन्य आधे लोग गिरिज्जीम पर्वत के सामने खड़े थे। यहोवा के सेवक मूसा ने उनसे ऐसा करने को कहा था। मूसा ने उनसे ऐसा करने को इस आशीर्वाद के लिए कहा था।

[34]तब यहोशू ने व्यवस्था के सब वचनों को पढ़ा। यहोशू ने आशीर्वाद और अभिशाप पढ़े। उसने सभी कुछ उस तरह पढ़ा, जिस तरह वह व्यवस्था की किताब में लिखा था। [35]इस्राएल के सभी लोग वहाँ इकट्ठे थे। सभी स्त्रियाँ, बच्चे और इस्राएल के लोगों के साथ रहने वाले सभी विदेशी वहाँ इकट्ठे थे और यहोशू ने मूसा द्वारा दिये गये हर एक आदेश को पढ़ा।

गिबोनियों द्वारा यहोशू को छला जाना

9 यरदन नदी के पश्चिम के हर एक राजा ने इन घटनाओं के विषय में सुना। ये हित्ती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी, यबूसी लोगों के राजा थे। वे पहाड़ी प्रदेशों और मैदानों में रहते थे। वे लबानोन तक भूमध्य सागर के तटों के साथ भी रहते थे। [2]वे सभी राजा इकट्ठे हुए। उन्होंने यहोशू और इस्राएल के लोगों के साथ युद्ध की योजना बनाई।

[3]गिबोन के लोगों ने उस ढंग के बारे में सुना, जिससे यहोशू ने यरीहो और ऐ को हराया था। [4]इसलिये उन्होंने इस्राएल के लोगों को धोखा देने का निश्चय किया। उनकी योजना यह थी: उन्होंने दाखमधु के उन चमड़े के पुराने पीपों को अपने जानवरों पर लादा। उन्होंने अपने जानवरों के ऊपर पुरानी बोरियाँ डालीं, जिससे वे ऐसे दिखाई पड़ें मानों वे बहुत दूर की यात्रा करके आये हों। [5]लोगों ने पुराने जूते पहन लिये। उन पुरुषों ने पुराने वस्त्र पहन

ऐ इस नगर के नाम का अर्थ "ध्वस्त" है।

लिये। पुरुषों ने कुछ बासी, सूखी, खराब रोटियाँ भी ले लीं। इस तरह वे पुरुष ऐसे लगते थे मानों उन्होंने बहुत दूर के देश से यात्रा की हो। [6] तब ये पुरुष इस्राएल के लोगों के डेरों के पास गए। यह डेरा गिलगाल के पास था।

वे पुरुष यहोशू के पास गए और उन्होंने उससे कहा, "हम लोग एक बहुत दूर के देश से आए हैं। हम लोग तुम्हारे साथ शान्ति की सन्धि करना चाहते हैं।"

[7]इस्राएल के लोगों ने इन हिव्वी लोगों से कहा, "संभव है तुम लोग हमें धोखा दे रहे हो। संभव है तुम हमारे करीब के ही रहने वाले हो। हम तब तक शान्ति की सन्धि नहीं कर सकते जब तक हम यह नहीं जान लेते कि तुम कहाँ से आए हो।"

[8]हिव्वी लोगों ने यहोशू से कहा, "हम आपके सेवक हैं।"

किन्तु यहोशू ने पूछा, "तुम कौन हो? तुम कहाँ से आए हो?"

[9]पुरुषों ने उत्तर दिया, "हम आपके सेवक हैं। हम एक बहुत दूर के देश से आए हैं। हम इसलिए आए कि हमने तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की महान शक्ति के विषय में सुना है। हम लोगों ने वह भी सुना है, जो उसने किया है। हम लोगों ने वह सब कुछ सुना है, जो उसने मिस्र में किया। [10]और हम लोगों ने यह भी सुना कि उसने यरदन नदी के पूर्व दो एमोरी लोगों के राजाओं को हराया। हेश्बोन के राजा सीहोन और अशतारोत के देश में बाशान के राजा ओग थे। [11]इसलिए हमारे अग्रज (नेताओं) और हमारे लोगों ने हमसे कहा, 'अपनी यात्रा के लिये काफी भोजन ले लो। जाओ और इस्राएल के लोगों से बातें करो। उनसे कहो, "हम आपके सेवक हैं। हम लोगों के साथ शान्ति की सन्धि करो।"'

[12]"हमारी रोटियाँ देखो! जब हम लोगों ने घर छोड़ा तब ये गरम और ताजी थीं। किन्तु अब आप देखते हैं कि ये सूखी और पुरानी हैं। [13]हम लोगों के मशकों को देखो! जब हम लोगों ने घर छोड़ा तो ये नयी और दाखमधु से भरी थीं। आप देख सकते हैं कि ये फटी और पुरानी हैं। हमारे कपड़ों और चप्पलों को देखो! आप देख सकते है कि लम्बी यात्रा ने हमारी चीज़ों को खराब कर दिया है।"

[14]इस्राएल के लोग जानना चाहते थे कि ये व्यक्ति क्या सच बोल रहे हैं। इसलिए उन्होंने रोटियों को चखा, किन्तु उन्होंने यहोवा से नहीं पूछा कि उन्हें क्या करना चाहिये। [15]यहोशू उनके साथ शान्ति–सन्धि करने के लिये तैयार हो गया। वह उनको जीवित छोड़ने को तैयार हो गया। इस्राएल के प्रमुखों ने यहोशू के वचन का समर्थन कर दिया।

[16]तीन दिन बाद, इस्राएल के लोगों को पता चला कि वे लोग उनके डेरे के बहुत करीब रहते हैं। [17]इसलिए इस्राएल के लोग वहाँ गये, जहाँ वे लोग रहते थे। तीसरे दिन, इस्राएल के लोग गिबोन, कपीरा, बेरोत और किर्यत्यारीम नगरों को आए। [18]किन्तु इस्राएल की सेना ने इन नगरों के विरुद्ध लड़ने का प्रयत्न नहीं किया। वे उन लोगों के साथ शान्ति–सन्धि कर चुके थे। उन्होंने उन लोगों के साथ इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के सामने प्रतिज्ञा की थी।

सभी लोग उन प्रमुखों के विरुद्ध शिकायत कर रहे थे, जिन्होंने सन्धि की थी। [19]किन्तु प्रमुखों ने उत्तर दिया, "हम लोगों ने प्रतिज्ञा की है। हम लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के सामने प्रतिज्ञा की है। हम उनके विरुद्ध अब लड़ नहीं सकते। [20]हम लोगों को केवल इतना ही करना चाहिये। हम उन्हें जीवित अवश्य रहने दें। हम उन्हें चोट नहीं पहुँचा सकते क्योंकि उनके साथ की गई प्रतिज्ञा को तोड़ने पर यहोवा का क्रोध हम लोगों के विरुद्ध होगा। [21]इसलिए इन्हें जीवित रहने दो। यह हमारे सेवक होंगे। वे हमारे लिये लकड़ियाँ काटेंगे और हम सबके लिए पानी लाएंगे।" इस प्रकार प्रमुखों ने इन लोगों के साथ की गई अपनी शान्ति–सन्धि को नहीं तोड़ा।

[22]यहोशू ने गिबोनी लोगों को बुलाया। उसने कहा, "तुम लोगों ने हमसे झूठ क्यों बोला? तुम्हारा प्रदेश हम लोगों के डेरे के पास था। किन्तु तुम लोगों ने कहा कि हम लोग बहुत दूर देश के हैं। [23]अब तुम्हारे लोगों को बहुत कष्ट होगा। तुम्हारे सभी लोग दास होंगे उन्हें परमेश्वर के निवास* के लिये लकड़ी काटनी और पानी लाना पड़ेगा।"

[24]गिबोनी लोगों ने उत्तर दिया, "हम लोगों ने आपसे झूठ बोला क्योंकि हम लोगों को डर था कि आप कहीं हमें मार न डालें। हम लोगों ने सुना कि परमेश्वर ने अपने सेवक मूसा को यह आदेश दिया था कि वे तुम्हें यह सारा प्रदेश दे दे और परमेश्वर ने तुमसे उस प्रदेश में रहने वाले सभी लोगों को मार डालने के लिये कहा। यही

परमेश्वर का निवास इसका अर्थ परमेश्वर का परिवार (इस्राएल) या पवित्र तम्बू या मन्दिर हो सकता है।

कारण है कि हम लोगों ने आपसे झूठ बोला। [25]अब हम आपके सेवक हैं। आप हमारा उपयोग जैसा ठीक समझें, कर सकते हैं।"

[26]इस प्रकार गिबोन के लोग दास हो गए। किन्तु यहोशू ने उनका जीवन बचाया। यहोशू ने इस्राएल के लोगों को उन्हें मारने नहीं दिया। [27]यहोशू ने गिबोन के लोगों को इस्राएल के लोगों का दास बनने दिया। वे इस्राएल के लोगों और यहोवा के चुने गए जिस किसी भी स्थान की वेदी के लिए लकड़ी काटते और पानी लाते थे। वे लोग अब तक दास हैं।

वह दिन जब सूर्य स्थिर रहा

10 इस समय अदोनीसेदेक यरूशलेम का राजा था। इस राजा ने सुना कि यहोशू ने ऐ को जीता है और इसे पूरी तरह नष्ट कर दिया है। राजा को यह पता चला कि यहोशू ने यरीहो और उसके राजा के साथ भी यही किया है। राजा को यह भी जानकारी मिली कि गिबोन ने इस्राएल के साथ, शान्ति–सन्धि कर ली है और वे लोग यरूशलेम के बहुत निकट रहते थे। [2]अत: अदोनीसेदेक और उसके लोग इन घटनाओं के कारण बहुत भयभीत थे। गिबोन ऐ की तरह छोटा नगर नहीं था। गिबोन एक शाही नगर जैसा बहुत बड़ा नगर* था। और नगर के सभी पुरुष अच्छे योद्धा थे। अत: राजा भयभीत था। [3]यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने हेब्रोन के राजा होहाम से बातें की। उसने यर्मूत के राजा पिराम, लाकीश के राजा यापी, एग्लोन के राजा दबीर से भी बातचीत की। यरूशलेम के राजा ने इन व्यक्तियों से प्रार्थना की, [4]"मेरे साथ आएं और गिबोन पर आक्रमण करने में मेरी सहायता करें। गिबोन ने यहोशू और इस्राएल के लोगों के साथ शान्ति–सन्धि कर ली है।"

[5]इस प्रकार पाँच एमोरी राजाओं ने सेनाओं को मिलाया। (ये पाँचों यरूशलेम के राजा, हेब्रोन के राजा, यर्मूत के राजा, लाकीश के राजा, और एग्लोन के राजा थे।) वे सेनायें गिबोन गई। सेनाओं ने नगर को घेर लिया और इसके विरुद्ध युद्ध करना आरम्भ किया।

[6]गिबोन नगर में रहने वाले लोगों ने गिलगाल के डेरे में यहोशू को खबर भेजी: "हम तुम्हारे सेवक हैं! हम लोगों को अकेले न छोड़ो। आओ और हमारी रक्षा करो! शीघ्रता करो! हमें बचाओ! पहाड़ी प्रदेशों के सभी एमोरी राजा अपनी सेनायें एक कर चुके हैं। वे हमारे विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं।"

[7]इसलिए यहोशू गिलगाल से अपनी पूरी सेना के साथ युद्ध के लिये चला। यहोशू के उत्तम योद्धा उसके साथ थे। [8]यहोवा ने यहोशू से कहा, "उन सेनाओं से डरो नहीं। मैं तुम्हें उनको पराजित करने दूँगा। उन सेनाओं में से कोई भी तुमको हराने में समर्थ नहीं होगा।"

[9]यहोशू और उसकी सेना रात भर गिबोन की ओर बढ़ती रही। शत्रु को पता नहीं था कि यहोशू आ रहा है। इसलिए जब उसने आक्रमण किया तो वे चौंक पड़े।

[10]यहोवा ने उन सेनाओं को, इस्राएल की सेनाओं द्वारा आक्रमण के समय, किंकर्तव्य–विमूढ़ कर दिया। इसलिये इस्राएलियों ने उन्हें हरा कर भारी विजय पायी। इस्राएलियों ने पीछा करके उन्हें गिबोन से खदेड़ दिया। उन्होंने बेथोरोन तक जाने वाली सड़क तक उनका पीछा किया। इस्राएल की सेना ने अजेका और मक्केदा तक के पूरे रास्ते में पुरुषों को मारा। [11]इस्राएल की सेना ने बेथोरोन अजेका को जाने वाली सड़क तक शत्रुओं का पीछा किया। जब वे शत्रु का पीछा कर रहे थे तो यहोवा ने भारी ओलों की वर्षा आकाश से की। बहुत से शत्रु इन भारी ओलों से मर गए। इन ओलों से उससे अधिक शत्रु मारे गए जितने इस्राएलियों ने अपनी तलवारों से मारे थे।

[12]उस दिन यहोवा ने इस्राएलियों द्वारा एमोरी लोगों को पराजित होने दिया और उस दिन यहोशू इस्राएल के सभी लोगों के सामने खड़ा हुआ और उसने यहोवा से कहा:

"हे सूर्य, गिबोन के आसमान में खड़े रह
और हट नहीं।
हे चन्द्र, तू अय्यालोन की घाटी के ऊपर
आसमान में खड़े रह और हट नहीं।"

[13]सूर्य स्थिर हो गया और चन्द्रमा ने भी तब तक चलना छोड़ दिया जब तक लोगों ने अपने शत्रुओं को पराजित नहीं कर दिया। यह सचमुच हुआ, यह कथा याशार की किताब में लिखी है। सूर्य आसमान के मध्य रुका। यह पूरे दिन वहाँ से नहीं हटा। [14]ऐसा उस दिन के पहले किसी भी समय कभी नहीं हुआ था और तब से अब तक कभी नहीं हुआ है। वही दिन था, जब यहोवा ने

बड़ा नगर दृढ़ और अच्छी प्रकार सुरक्षित नगर जो समीप के छोटे नगरों पर शासन करते थे।

मनुष्य की प्रार्थना मानी। वास्तव में यहोवा इस्राएलियों के लिये युद्ध कर रहा था!

[15]इसके बाद, यहोशू और उसकी सेना गिलगाल के डेरे में वापस हुई। [16]युद्ध के समय पाँचों राजा भाग गए। वे मक्केदा के निकट गुफा में छिप गए। [17]किन्तु किसी ने पाँचों राजाओं को गुफा में छिपे पाया। यहोशू को इस बारे में पता चला। [18]यहोशू ने कहा, "गुफा को जाने वाले द्वार को बड़ी शिलाओं से ढक दो। कुछ पुरुषों को गुफा की रखवाली के लिये वहाँ रखो। [19]किन्तु वहाँ स्वयं न रहो। शत्रु का पीछा करते रहो। उन पर पीछे से आक्रमण करते रहो। शत्रुओं को अपने नगर तक सुरक्षित न पहुँचने दो। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें उन पर विजय दी है।"

[20]इस प्रकार यहोशू और इस्राएल के लोगों ने शत्रु को मार डाला। किन्तु शत्रुओं में से जो कुछ अपने सुदृढ़ परकोटों से घिरे नगरों में पहुँच जाने में सफल हो गए और छिप गए। वे व्यक्ति नहीं मारे गए। [21]युद्ध के बाद, यहोशू के सैनिक मक्केदा में उनके पास आए। उस प्रदेश में किसी भी जाति के लोगों में से कोई भी इतना साहसी नहीं था कि वह लोगों के विरूद्ध कुछ कह सके।

[22]यहोशू ने कहा, "गुफा के द्वार को रोकने वाली शिलाओं को हटाओ। उन पाँचों राजाओं को मेरे पास लाओ।" [23]इसलिए यहोशू के लोग पाँचों राजाओं को गुफा से बाहर लाए। ये पाँचों यरूशलेम, हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश और एग्लोन के राजा थे। [24]अत: वे उन पाँचों राजाओं को यहोशू के पास लाए। यहोशू ने अपने सभी लोगों को वहाँ आने के लिये कहा। यहोशू ने सेना के अधिकारियों से कहा, "यहाँ आओ! इन राजाओं के गले पर अपने पैर रखो।" इसलिए यहोशू की सेना के अधिकारी निकट आए। उन्होंने राजाओं के गले पर अपने पैर रखे।

[25]तब यहोशू ने अपने सैनिकों से कहा, "दृढ़ और साहसी बनो! डरो नहीं! मैं दिखाऊँगा कि यहोवा उन शत्रुओं के साथ क्या करेगा, जिनसे तुम भविष्य में युद्ध करोगे।"

[26]तब यहोशू ने पाँचों राजाओं को मार डाला। उसने उनके शव पाँच पेड़ों पर लटकाया। यहोशू ने उन्हें सूरज ढलने तक वहीं लटकते छोड़े रखा। [27]सूरज ढले को यहोशू ने अपने लोगों से शवों को पेड़ों से उतारने को कहा। तब उन्होंने उन शवों को उस गुफा में फेंक दिया जिसमें वे छिपे थे। उन्होंने गुफा के द्वार को बड़ी शिलाओं से ढक दिया। जो आज तक वहाँ हैं।

[28]उस दिन यहोशू ने मक्केदा को हराया। यहोशू ने राजा और उस नगर के लोगों को मार डाला। वहाँ कोई व्यक्ति जीवित न छोड़ा गया। यहोशू ने मक्केदा के राजा के साथ भी वही किया जो उसने यरीहो के राजा के साथ किया था।

दक्षिणी नगरों का लिया जाना

[29]तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोगों ने मक्केदा से यात्रा की। वे लिब्ना गए और उस नगर पर आक्रमण किया। [30]यहोवा ने इस्राएल के लोगों को उस नगर और उसके राजा को पराजित करने दिया। इस्राएल के लोगों ने उस नगर के हर एक व्यक्ति को मार डाला। कोई व्यक्ति जीवित नहीं छोड़ा गया और लोगों ने राजा के साथ वही किया जो उन्होंने यरीहो के राजा के साथ किया था।

[31]तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोगों ने लिब्ना को छोड़ा और उन्होंने लाकीश तक की यात्रा की। यहोशू और उसकी सेना ने लिब्ना के चारों ओर डेरे डाले और तब उन्होंने नगर पर आक्रमण किया। [32]यहोवा ने इस्राएल के लोगों द्वारा लाकीश नगर को पराजित करने दिया। दूसरे दिन उन्होंने उस नगर को हराया। इस्राएल के लोगों ने इस नगर के हर एक व्यक्ति को मार डाला। यह वैसा ही था जैसा उसने लिब्ना में किया था। [33]इसी समय गेजेर का राजा होरोम लाकीश की सहायता करने आया। किन्तु यहोशू ने उसे और उसकी सेना को भी हराया। कोई व्यक्ति जीवित नहीं छोड़ा गया।

[34]तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोग लाकीश से एग्लोन गए। उन्होंने एग्लोन के चारों ओर डेरे डाले और उस पर आक्रमण किया। [35]उस दिन उन्होंने नगर पर अधिकार किया और नगर के सभी लोगों को मार डाला। यह वैसा ही किया जैसा उन्होंने लाकीश मे किया था।

[36]तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोगों ने एग्लोन से हेब्रोन की यात्रा की। उन्होंने हेब्रोन पर आक्रमण किया। [37]उन्होंने नगर तथा हेब्रोन के निकट के सभी छोटे उपनगरों पर अधिकार कर लिया। इस्राएल के लोगों ने नगर के हर एक व्यक्ति को मार डाला। वहाँ कोई भी जीवित नहीं छोड़ा गया। यह वैसा ही था जैसा उन्होंने एग्लोन में किया

था। उन्होंने नगर को नष्ट किया और उसके सभी व्यक्तियों को मार डाला।

[38]तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोग दबीर को गए और उस नगर पर आक्रमण किया। [39]उन्होंने उस नगर, उसके राजा और दबीर के निकट के सभी उपनगरों को जीता। उन्होंने उस नगर के सभी लोगों को मार डाला वहाँ कोई जीवित नहीं छोड़ा गया। इस्राएल के लोगों ने दबीर और उसके राजा के साथ वही किया जो उन्होंने हेब्रोन और उसके राजा के साथ किया था। यह वैसा ही था जैसा उन्होंने लिब्ना और उसके राजा के साथ किया था।

[40]इस प्रकार यहोशू ने पहाड़ी प्रदेश नेगेव पश्चिमी और पूर्वी पहाड़ियों और तराई के नगरों के राजाओं को हराया। इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यहोशू से सभी लोगों को मार डालने को कहा था। इसलिए यहोशू ने उन स्थानों पर किसी को जीवित नहीं छोड़ा।

[41]यहोशू ने कादेशबर्ने से अज्जा तक के सभी नगरों पर अधिकार कर लिया। उसने मिस्र में गोशेन की धरती से लेकर गिबोन तक के सभी नगरों पर कब्जा कर लिया। [42]यहोशू ने एक अभियान में उन नगरों और उनके राजाओं को जीत लिया। यहोशू ने यह इसलिए किया कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस्राएल के लिये लड़ रहा था। [43]तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोग गिलगाल के अपने डेरे में लौट आए।

उत्तरी नगरों को हराना

11 हासोर के राजा, याबीन ने जो कुछ हुआ उसके बारे में सुना। इसलिये उसने कई राजाओं की सेनाओं को एक साथ बुलाने का निर्णय लिया। याबीन ने मादोन के राजा योबाब, शिम्रोन के राजा, अक्षाप के राजा और [2]उत्तर के पहाड़ी एवं मरुभूमि प्रदेश के सभी राजाओं के पास सन्देश भेजा। याबीन ने किन्नेरेत* के राजा, नेगेव और पश्चिमी नीची पहाड़ियों के राजाओं को सन्देश भेजा। याबीन ने पश्चिम में नफोथ दोर के राजा को भी सन्देश भेजा। [3]याबीन ने पूर्व और पश्चिम के कनानी लोगों के राजाओं के पास सन्देश भेजा। उसने पहाड़ी प्रदेशों मे रहने वाले एमोरी, हित्तियों, परिज्जियों और यबूसियों के पास सन्देश भेजा। उसने मिस्पा क्षेत्र के हेर्मोन पहाड़ के नीचे रहने वाले हिव्वी लोगों को भी सन्देश भेजा। [4]इसलिये इन सभी राजाओं की सेनायें एक साथ आई। वहाँ अनेक योद्धा, घोड़े और रथ थे। वह अत्यन्त विशाल सेना थी, वह ऐसी दिखाई पड़ती थी मानों उसमें इतने सैनिक थे जितने समुद्र तट पर बालू के कण।

[5]ये सभी राजा छोटी नदी मेरोम के निकट इकट्ठे हुए। उन्होंने अपनी सेनाओं को एक डेरे में एकत्र किया। उन्होंने इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने की योजना बनाई।

[6]तब यहोवा ने यहोशू से कहा, "उस सेना से डरो नहीं। कल इसी समय, मैं तुम्हें उनको हराने दूँगा। तुम उन सभी को मार डालोगे। तुम घोड़ों की टांगे काट डालोगे और उनके सारे रथों को जला डालोगे।"

[7]यहोशू और उसकी पूरी सेना ने अचानक आक्रमण करके उन्हें चौंका दिया। उन्होंने मेरोम नदी पर शत्रु पर आक्रमण किया। [8]यहोवा ने इस्राएलियों को उन्हें हराने दिया। इस्राएल की सेना ने उनको हराया और उनका पूर्व में वृहत्तर सीदोन, मिस्रपोत–मैम और मिस्पा की घाटी तक पीछा किया। इस्राएल की सेना उनसे तब तक युद्ध करती रही जब तक शत्रुओं में से कोई भी व्यक्ति जीवित न बचा। [9]यहोशू ने वही किया जो यहोवा ने कहा था कि वह करेगा अर्थात् यहोशू ने उनके घोड़ों की टाँगे काटीं और उनके रथों को जलाया।

[10]तब यहोशू लौटा और हासोर नगर पर अधिकार किया। यहोशू ने हासोर के राजा को मार डाला। (हासोर उन सभी राज्यों में प्रमुख था जो इस्राएल के विरुद्ध लड़े थे।) [11]इस्राएल की सेना ने उस नगर के हर एक को मार डाला। उन्होंने सभी लोगों को पूरी तरह नष्ट कर दिया। वहाँ कुछ भी जीवित नहीं रहने दिया गया। तब उन्होंने नगर को जला दिया।

[12]यहोशू ने इन सभी नगरों पर अधिकार किया। उसने उनके सभी राजाओं को मार डाला। यहोशू ने इन नगरों की हर एक चीज़ को पूरी तरह नष्ट कर दिया। उसने यह यहोवा के सेवक मूसा ने जैसा आदेश दिया था वैसा ही किया। [13]किन्तु इस्राएल की सेना ने किसी भी ऐसे नगर को नहीं जलाया जो पहाड़ी पर बना था। उन्होंने पहाड़ी पर बने एकमात्र हासोर नगर को ही जलाया। यह वह नगर था, जिसे यहोशू ने जलाया। [14]इस्राएल के लोगों ने वे सभी चीज़ें अपने पास रखी, जो उन्हें उन नगरों में मिलीं। उन्होंने उन जानवरों को अपने पास रखा, जो उन्हें नगर में मिले। किन्तु उन्होंने वहाँ के सभी लोगों को मार डाला।

किन्नेरेत गलिली समुद्र के निकट का क्षेत्र।

उन्होंने किसी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा। [15]यहोवा ने बहुत पहले अपने सेवक मूसा को यह करने का आदेश दिया था। तब मूसा ने यहोशू को यह करने का आदेश दिया था। इस प्रकार यहोशू ने यहोवा की आज्ञा पूरी की। यहोशू ने वही सब किया, जो मूसा को यहोवा का आदेश था।

[16]इस प्रकार यहोशू ने इस पूरे देश के सभी लोगों को पराजित किया। पहाड़ी प्रदेश, नेगेव–क्षेत्र, सारा गोशेन क्षेत्र, पश्चिमी नीची पहाड़ियों का प्रदेश, यरदन घाटी, इस्राएल के पर्वत और उनके निकट की पहाड़ियों पर उसका अधिकार हो गया था। [17]यहोशू का अधिकार सेईर के निकट हालाक पर्वत से लेकर हेर्मोन पर्वत के नीचे लबानोन की घाटी में बालगाद तक के प्रदेश पर हो गया था। [18]यहोशू उन राजाओं से कई वर्ष लड़ा। [19]उस पूरे देश में केवल एक नगर ने शान्ति–सन्धि की। वह हिव्वी लोगों का नगर गिबोन था। सभी अन्य नगर युद्ध में पराजित हुए। [20]यहोवा चाहता था कि वे लोग सोचें कि वे शक्तिशाली थे। तब वे इस्राएल के विरुद्ध लड़ेंगे। इस प्रकार वे उन्हें बिना दया के नष्ट कर सकते थे। वह उन्हें उस तरह नष्ट कर सकता था, जिस तरह यहोवा ने मूसा को करने का आदेश दिया था।

[21]अनाकी लोग हेब्रोन, दबीर, अनाब और यहूदा और इस्राएल के क्षेत्रों के पहाड़ी प्रदेश में रहते थे। यहोशू इन अनाकी लोगों के विरुद्ध लड़ा। यहोशू ने इन लोगों और इनके नगरों को पूरी तरह नष्ट कर दिया। [22]वहाँ कोई भी अनाकी व्यक्ति इस्राएल में जीवित न छोड़ा गया। जो अनाकी लोग जीवित छोड़ दिये गये थे, वे अज्जा, गत और अशदोद में थे। [23]यहोशू ने पूरे इस्राएल प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस बात को यहोवा ने मूसा से बहुत पहले ही कह दिया। यहोवा ने वह देश इस्राएल को इसलिए दिया क्योंकि उसने इसके लिये वचन दिया था। तब यहोशू ने इस्राएल के परिवार समूहों में उस प्रदेश को बाँटा तब युद्ध बन्द हुआ और अन्तिम रूप में शान्ति स्थापित हो गई।

इस्राएल के द्वारा राजा हराये गये

12 इस्राएल के लोगों ने यरदन नदी के पूर्व की भूमि पर अधिकार कर लिया। उनके अधिकार में अब अर्नोन की संकरी घाटी से हेर्मोन पर्वत तक की भूमि और यरदन घाटी के पूर्व का सारा प्रदेश था। इस देश को लेने के लिये इस्राएल के लोगों ने जिन राजाओं को हराया उनकी सूची यह है:

[2]हेशबोन नगर में रहने वाला एमोरी लोगों का राजा सीहोन। वह अर्नोन की संकरी घाटी पर अरोएर से लेकर यब्बोक नदी तक के प्रदेश पर शासन करता था। उसका प्रदेश उस दर्रे के मध्य से आरम्भ होता था। अम्मोनी लोगों के साथ यह उनकी सीमा थी। सीहोन गिलाद के आधे प्रदेश पर शासन करता था। [3]वह गिलगाल से मृत सागर (खारा सागर) तक यरदन के पूर्व के प्रदेश पर भी शासन करता था और बेत्यशीमोत से दक्षिण पिसगा की पहाड़ियों तक शासन करता था।

[4]बाशान का राजा ओग रपाई लोगों में से था। ओग अशतारोत और एद्रेई में शासन कर रहा था। [5]ओग हेर्मोन पर्वत, सलका नगर और बाशान के सारे क्षेत्र पर शासन करता था। उसके प्रदेश की सीमा वहाँ तक जाती थी जहाँ गशूर और माका लोग रहते थे। ओग गिलाद के आधे भाग पर भी शासन करता था। इस प्रदेश की सीमा का अन्त हेशबोन के राजा सीहोन के प्रदेश पर होता था।

[6]यहोवा के सेवक मूसा और इस्राएल के लोगों ने इन सभी राजाओं को हराया और मूसा ने उस प्रदेश को रूबेन के परिवार समूह, गाद के परिवार समूह और मनश्शे के परिवार समूह के आधे लोगों को दिया। मूसा ने यह प्रदेश उनको अपने अधिकार में रखने को दिया।

[7]इस्राएल के लोगों ने उस प्रदेश के राजाओं को भी हराया, जो यरदन नदी के पश्चिम में था। यहोशू लोगों को इस प्रदेश में ले गया। यहोशू ने लोगों को यह प्रदेश दिया और इसे बारह परिवार समूहों में बाँटा। यह वह देश था जिसे उन्हें देने के लिये यहोवा ने वचन दिया था। यह प्रदेश लबानोन की घाटी में बालगात और सेईर के निकट हालाक पर्वत के बीच था। [8]इसमें पहाड़ी प्रदेश, पश्चिम का तराई प्रदेश, यरदन घाटी, पूर्वी पर्वत, मरुभूमि और नेगेव सम्मिलित थे। यह वह प्रदेश था जिसमें हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोग रहते थे। जिन लोगों को इस्राएल के लोगों ने हराया उनकी यह सूची है:

9	यरीहो का राजा	(एक राजा)
	ऐ का राजा (बेतेल के निकट)	(एक राजा)
10	यरूशलेम का राजा	(एक राजा)
	हेब्रोन का राजा	(एक राजा)

11	यर्मूत का राजा	(एक राजा)
	लाकीश का राजा	(एक राजा)
12	एग्लोन का राजा	(एक राजा)
	गेजेर का राजा	(एक राजा)
13	दबीर का राजा	(एक राजा)
	गेदेर का राजा	(एक राजा)
14	होर्मा का राजा	(एक राजा)
	अराद का राजा	(एक राजा)
15	लिब्ना का राजा	(एक राजा)
	अदुल्लाम का राजा	(एक राजा)
16	मक्केदा का राजा	(एक राजा)
	बेतेल का राजा	(एक राजा)
17	तप्पूह का राजा	(एक राजा)
	हेपेर का राजा	(एक राजा)
18	अपेक का राजा	(एक राजा)
	लश्शारोन का राजा	(एक राजा)
19	मादोन का राजा	(एक राजा)
	हासोर का राजा	(एक राजा)
20	शिम्रोन मरोन का राजा	(एक राजा)
	अक्षाप का राजा	(एक राजा)
21	तानाक का राजा	(एक राजा)
	मगिद्दो का राजा	(एक राजा)
22	केदेश का राजा	(एक राजा)
	कर्मेल मे योकनाम का राजा	(एक राजा)
23	दोर के पर्वतों मे दोर का राजा	(एक राजा)
	गिलगाल में गोयीम का राजा	(एक राजा)
24	तिर्सा का राजा	(एक राजा)

सब मिलाकर इकतीस राजा थे।

प्रदेश जो अभी तक नहीं लिये गये

13 जब यहोशू बहुत बूढ़ा हो गया तो यहोवा ने उससे कहा, "यहोशू तुम बूढ़े हो गए हो, लेकिन अभी तुम्हें बहुत सी भूमि पर अधिकार करना है। [2]तुमने अभी तक गशूर लोगों की भूमि और पलिश्तियों* की भूमि नहीं ली है। [3]तुमने मिस्र की सीमा पर शिहोर नदी से लेकर उत्तर में एक्रोन की सीमा तक का क्षेत्र नहीं लिया है। वह अभी तक कनानी लोगों का है। तुम्हें राजा, अशदोद अशकलोन, गत तथा एक्रोन पाँचों पलिश्ती के प्रमुखों को हराना है। तुम्हें उन अब्बी लोगों को हराना चाहिये। [4]जो कनानी प्रदेश के दक्षिण में रहते हैं। [5]तुमने अभी गबाली लोगों के क्षेत्र को नहीं हराया है और अभी बालगाद के पूर्व और हेर्मोन पर्वत के नीचे लबानोन का क्षेत्र भी है।

[6]"सिदोन के लोग लबानोन से मिस्रपोतमैम तक पहाड़ी प्रदेश में रह रहे हैं। किन्तु मैं इस्राएल के लोगों के लिये इन सभी को बलपूर्वक निकाल बाहर करूँगा। जब तुम इस्राएल के लोगों में भूमि बाटों, तो इस प्रदेश को निश्चय ही याद रखो। इसे वैसे ही करो जैसा मैंने कहा है। [7]अब, तुम भूमि को नौ परिवार समूह और मनश्शे के परिवार समूह के आधे में बाँटों।"

प्रदेशों का बटवारा

[8]मैंने मनश्शे के परिवार समूह के दूसरे आधे लोगों को पहले ही भूमि दे दी है। मैंने रूबेन के परिवार समूह तथा गाद के परिवार समूह को भी पहले ही भूमि दे दी है। यहोवा के सेवक मूसा ने यरदन नदी के पूर्व का प्रदेश उन्हें दिया। [9]मूसा ने जो भूमि यरदन नदी के पूर्व में उन्हें दी थी, वह यह है: इस भूमि के अन्तर्गत दीबोन से मेदबा तक का पूरा मैदान आता है। यह भूमि अर्नान संकरी घाटी पर अरोएर से आरम्भ होती है। यह भूमि घाटी के बीच नगर तक लगातार फैली है। [10]एमोरी लोगों का राजा सीहोन जिन नगरों पर शासन करता था, वे इस भूमि में थे। वह राजा हेशबोन नगर में शासन करता था। वह भूमि लगातार उस क्षेत्र तक थी जिसमें एमोरी लोग रहते थे। [11]गिलाद नगर भी उसी भूमि में था। गशूर और माका लोग जिस क्षेत्र में रहते थे वह उसी भूमि में था। सारा हेर्मोन पर्वत और सल्का तक सारा बाशान उस भूमि में था। [12]राजा ओग का सारा राज्य उसी भूमि में था। राजा ओग बाशान में शासन करता था। पहले वह आशतारोत और एद्रेई में शासन करता था। ओग रपाइ लोगों में से था। पहले ही मूसा ने उन लोगों को हराया था और उनका प्रदेश ले लिया था। [13]इस्राएल के लोग गशूर और माका लोगों को बलपूर्वक निकाल बाहर नहीं कर सके। वे लोग अब तक आज भी इस्राएल के लोगों के साथ रहते हैं।

[14]केवल लेवी का परिवार समूह ही ऐसा था जिसे कोई भूमि नहीं मिली। उसके बदले उन्हें वे सभी खाद्य भेंटें

पलिश्ती ये लोग भूमध्यसागर के दक्षिण–पूर्वी सागर तट के निकटवर्ती क्षेत्रों में रहा करते थे न कि आज जिस समूचे क्षेत्र को पलिश्तीन के नाम से जाना जाता है।

मिलीं जो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को भेंट के रूप में चढ़ाई जाती थीं। यहोवा ने लेवीवंशियों को इसका वचन दिया था।

[15]मूसा ने रूबेन के परिवार समूह से हर एक परिवार समूह को कुछ भूमि दी। यह भूमि है जिसे उन्होंने पाया: [16]अर्नोन की संकरी घाटी के निकट अरोएर से लेकर मेदबा नगर तक की भूमि। इसमें सारा मैदान और दर्रे के बीच का नगर सम्मिलित था। [17]यह भूमि हेशबोन तक लगातार थी। इस भूमि में मैदान के सभी नगर थे। ये नगर दीबोन, बामोतबाल, बेतबाल्मोन, [18] यहसा, कदेमोत, मेपात, [19]किर्यातैम, सिबमा और घाटी में पहाड़ी पर सेरेथशहर, [20]बेतपोर, पिसगा की पहाड़ियाँ और बेत्यशीमोत थे। [21]इस भूमि में मैदान के सभी नगर और एमोरी लोगों के राजा सीहोन ने जिस पर शासन किया था, वह क्षेत्र था। उस राजा ने हेशबोन, पर शासन किया था। किन्तु मूसा ने उसे तथा मिद्यानी लोगों को हराया था। वे लोग एवी, रेकेम, सूर, हूर और रेबा थे। (ये सभी प्रमुख सीहोन के साथ युद्ध में लड़े थे।) ये सभी प्रमुख उसी देश में रहते थे। [22]इस्राएल के लोगों ने बोर के पुत्र बिलाम को हराया। (बिलाम ने भविष्यवाणी के लिये जादू का उपयोग करने का प्रयत्न किया।) इस्राएल के लोगों ने युद्ध में अनेक लोगों को मारा। [23]जो प्रदेश रूबेन को दिया गया था, उसका अन्त यरदन नदी के किनारे पर होता था। इसलिये यह भूमि रूबेन के परिवार समूहों को दी गई, इसमें ये सभी नगर और सूची में लिखे सभी खेत सम्मिलित थे।

[24]यह वह भूमि है जिसे मूसा ने गाद के परिवार समूह को दी। मूसा ने यह भूमि प्रत्येक परिवार समूहों को दिया।

[25]याजेर का प्रदेश और गिलाद के सभी नगर। मूसा ने उन्हें अम्मोनी लोगों की भूमि का आधा भाग रब्बा के निकट अरोएर तक भी दिया था। [26]इस प्रदेश में हेशबोन से रामतमिस्पे और बेतोनीम के क्षेत्र सम्मिलित थे। इस प्रदेश में महनैम से दबीर तक के क्षेत्र सम्मिलित थे। [27]इसमें बेथारम की घाटी, बेत्रिम्रा, सुक्कोत और सापोन सम्मिलित थे। बाकी का वह सारा प्रदेश जिस पर हेशबोन के राजा सीहोन ने शासन किया था, इसमें सम्मिलित था। यह भूमि यरदन नदी के पूर्व की ओर है। यह भूमि लगातार गलील झील के अन्त तक फैली है। [28]यह सारा प्रदेश वह है जिसे मूसा ने गाद के परिवार समूह को दिया था। इस भूमि में ये सारे नगर थे जो सूची में हैं। मूसा ने वह भूमि हर एक परिवार समूह को दी।

[29]यह वह भूमि है जिसे मूसा ने मनश्शे परिवार समूह के आधे लोगों को दिया। मनश्शे के परिवार समूह के लोगों ने यह भूमि पाई:

[30]भूमि महनैम से आरम्भ हुई। इसमें वह पूरा बाशान अर्थात् जिस सारे प्रदेश पर बाशान का राजा ओग शासन करता था और बाशान में याइर के सभी नगर सम्मिलित थे। (सब मिलाकर साठ नगर थे।) [31]इस भूमि में आधा गिलाद, अश्तारोत और एद्रेई सम्मिलित थे। (गिलाद, अश्तारोत और एद्रेई वे नगर थे जिसमें ओग रहता था।) यह सारा प्रदेश मनश्शे के पुत्र माकीर के परिवार को दिये गए। इन आधे पुत्रों ने यह प्रदेश पाया।

[32]मूसा ने मोआब के मैदान में इन परिवार समूह को यह पूरी भूमि दी। यह यरीहो के पूर्व में यरदन नदी के पार थी। [33]किन्तु मूसा ने लेवी परिवार समूह को कोई भूमि नहीं दी। इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह वचन दिया कि वह स्वयं लेवी के परिवार समूह की भेंट के रूप में होगा।

14

याजक एलीआज़ार, नून के पुत्र यहोशू और इस्राएल के परिवार समूह के प्रमुखों ने निश्चय किया कि वे किस भूमि को किन लोगों को दें। [2]यहोवा ने वह ढंग मूसा को बहुत पहले बता दिया था, जिस ढंग से वह चाहता था कि लोग अपनी भूमि चुनें। साढ़े नौ परिवार समूह के लोगों ने कौन सी भूमि वे पाएंगे इसका निश्चय करने के लिये गोटे डालीं। [3]मूसा ने ढाई परिवार समूहों को उनकी भूमि उन्हें यरदन नदी के पूर्व में दे दी थी। किन्तु लेवी के परिवार समूह को अन्य लोगों की तरह कोई भी भूमि नहीं मिली। [4]बारह परिवार समूहों को अपनी निजी भूमि दी गई। यूसुफ के पुत्र दो परिवार समूहों–मनश्शे और एप्रैम में बँट गए थे और हर एक परिवार समूह ने कुछ भूमि प्राप्त की। किन्तु लेवी के परिवार समूह के लोगों को कोई भूमि नहीं दी गई। उनकों रहने के लिये कुछ नगर दिए गए थे और ये नगर प्रत्येक परिवार समूह की भूमि में थे। उन्हें जानवरों के लिए खेत भी दियें गये थे। [5]यहोवा ने मूसा को बता दिया था कि वह किस ढंग से इस्राएल के परिवार समूहों को भूमि दे। इस्राएल के लोगों ने उसी ढंग से भूमि को बाँटा, जिस ढंग से बाँटने के लिये यहोवा का आदेश था।

कालेब को उसका प्रदेश मिलता है

[6]एक दिन यहूदा परिवार समूह के लोग गिलगाल में यहोशू के पास गए। उन लोगों में कनजी यपुन्ने का पुत्र कालेब था। कालेब ने यहोशू से कहा, "कादेशबर्ने में यहोवा ने जो बातें कही थी। तुम्हें याद है। यहोवा अपने सेवक* मूसा से बातें कर रहा था। यहोवा तुम्हारे और हमारे बारे में बातें कर रहा था। [7] यहोवा के सेवक मूसा ने मुझे उस प्रदेश की जाँच के लिये भेजा जहाँ हम लोग जा रहे थे। उस समय मैं चालीस वर्ष का था। जब मैं लौटा तो मूसा को मैंने वह बताया, जो मैं उस प्रदेश के बारे में सोचता था। [8]किन्तु जो अन्य व्यक्ति मेरे साथ गए थे उन्होंने उनसे ऐसी बातें कीं जिससे लोग डर गए। किन्तु मैं ठीक–ठीक विश्वास कर रहा था, कि यहोवा हम लोगों को वह देश लेने देगा। [9]इसलिए मूसा ने वचन दिया, 'जिस देश में तुम गए थे वह तुम्हारा होगा। वह प्रदेश सदैव तुम्हारे बच्चों का रहेगा। मैं वह प्रदेश तुम्हें दूँगा, क्योंकि तुमने यहोवा मेरे परमेश्वर पर पूरा विश्वास किया है।'

[10]"अब, सोचो कि उस समय से यहोवा ने जैसा कहा था उसी प्रकार मुझे पैंतालीस वर्ष तक जीवित रखा है। उस समय हम सब मरुभूमि में भटकते रहे। अब, मैं पचासी वर्ष का हो गया हूँ। [11]मैं अब भी उतना ही शक्तिशाली हूँ जितना शक्तिशाली मैं उस समय था, जब मूसा ने मुझे भेजा था। मैं उन दिनों की तरह अब भी युद्ध करने को तैयार हूँ। [12]इसलिये वह पहाड़ी प्रदेश मुझको दे दो जिसे यहोवा ने बहुत पहले उस दिन मुझे देने का वचन दिया था। उस समय तुमको पता चला था कि वहाँ शक्तिशाली अनाकी लोग रहते हैं और नगर बहुत बड़े और अच्छी प्रकार सुरक्षित थे। किन्तु अब संभव है, यहोवा मेरे साथ है और मैं उस प्रदेश को वैसे ही ले सकूँ जैसा यहोवा ने कहा है।"

[13]यहोशू ने यपुन्ने के पुत्र कालेब को आशीर्वाद दिया। यहोशू ने हेब्रोन नगर को उसके अधिकार में दे दिया [14]और वह नगर अब भी कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब के परिवार का है। वह प्रदेश अब तक उसके लोगों का है क्योंकि, उसने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा मानी और उस पर पूर्ण विश्वास किया। [15]पहले इस नगर का नाम किर्यतर्बा था। नगर का नाम अनाकी लोगों के महानतम अर्बा नामक व्यक्ति के नाम पर रखा गया था।

इसके बाद, उस देश में शान्ति रही।

यहूदा के लिये प्रदेश

15 यहूदा को जो प्रदेश दिया गया वह हर एक परिवार समूह में बँटा। वह प्रदेश एदोम की सीमा तक और दक्षिण में सीन के सिरे पर सीन मरुभूमि तक लगातार फैला हुआ था। [2]यहूदा के प्रदेश की दक्षिणी सीमा मृत सागर के दक्षिणी छोर से आरम्भ होती थी। [3]यह सीमा बिच्छू दर्रा के दक्षिण तक जाती थी और सीन तक बढ़ी हुई थी। तब यह सीमा कादेशबर्ने के दक्षिण तक लगातार गई थी। यह सीमा हेब्रोन के परे अद्दार तक चलती चली गई थी। अद्दार से सीमा मुड़ी थी और कर्काआ तक गई थी। [4]यह सीमा मिस्र के अम्मोन से होती हुई मिस्र की नहर तक लगातार चल कर भूमध्य सागर तक पहुँचती थी। वह प्रदेश उनकी दक्षिणी सीमा थी।

[5]पूर्वी सीमा मृत सागर (खारा समुद्र) के तट से लेकर उस क्षेत्र तक थी, जहाँ यरदन नदी समुद्र में गिरती थी।

उत्तरी सीमा उस क्षेत्र से आरम्भ होती थी जहाँ यरदन नदी मृत सागर में गिरती थी। [6]तब उत्तरी सीमा बेथोग्ला से होती हुई और बेतराबा तक चली गई थी। यह सीमा लगातार बोहन की चट्टान तक गई थी। (बोहन रूबेन का पुत्र था।) [7]तब उत्तरी सीमा आकोर की घाटी से होकर दबीर तक गई थी। वहाँ सीमा उत्तर को मुड़ती थी और गिलगाल तक जाती थी। गिलगाल उस सड़क के पार है जो अदुम्मीम पर्वत से होकर जाती है। अर्थात् स्रोत के दक्षिण की ओर। यह सीमा एनशेमेश जलाशयों के साथ लगातार गई थी। एन रोगेल पर सीमा समाप्त थी। [8]तब यह सीमा यबूसी नगर की दक्षिण की ओर से बेन हिन्नोम घाटी से होकर गई थी। उस यबूसी नगर को यरूशलेम कहा जाता था। (उस स्थान पर सीमा हिन्नोम घाटी की उत्तरी छोर पर थी।) [9]उस स्थान से सीमा नेप्तोह के पानी के सोते के पास जाती थी। उसके बाद सीमा एप्रोन पर्वत के निकट के नगरों तक जाती थी। उस स्थान पर सीमा मुड़ती थी और बाला को जाती थी। (बाला को किर्यत्यारीम भी कहते हैं।) [10]बाला से सीमा पश्चिम को मुड़ी और सेईर के पहाड़ी प्रदेश को गई। यारीम पर्वत के उत्तर के छोर के साथ सीमा चलती रही (इसको

अपने सेवक शाब्दिक "परमेश्वर का व्यक्ति।"

कसालोन भी कहा जाता है) और बेतशमेश तक गई। वहाँ से सीमा तिम्ना के पार गई। [11]तब सिवाना के उत्तर में पहाड़ियों को गई। उस स्थान से सीमा शिक्करोन को मुड़ी और वाला पर्वत के पार गई। यह सीमा लगातार यब्नेल तक गई और भूमध्य सागर पर समाप्त हुई। [12]भूमध्य सागर यहूदा प्रदेश की पश्चिमी सीमा था। इस प्रकार, यहूदा का प्रदेश इन चारों सीमाओं के भीतर था। यहूदा का परिवार समूह इस प्रदेश में रहता था।

[13]यहोवा ने यहोशू को आदेश दिया था कि वह यपुन्ने के पुत्र कालेब को यहूदा की भूमि में से हिस्सा दे। इसलिए यहोशू ने कालेब को वह प्रदेश दिया जिसके लिये परमेश्वर ने आदेश दिया था। यहोशू ने उसे किर्यतर्बा का नगर दिया (जो हेब्रोन भी कहा जाता था)। (अर्बा अनाक का पिता था।) [14]कालेब ने तीन अनाक परिवारों को हेब्रोन, जहाँ वे रह रहे थे, छोड़ने को विवश किया। वे परिवार शेशै, अहीमन और तल्मै थे। वे अनाक के परिवार के थे। [15]कालेब दबीर में रहने वाले लोगों से लड़ा। (भूतकाल में दबीर भी किर्यत्सेपेर कहा जाता था)। [16]कालेब ने कहा, "कोई व्यक्ति जो किर्यत्सेपेर पर आक्रमण करेगा और उस नगर को हरायेगा, वही मेरी पुत्री अकसा से विवाह कर सकेगा। मैं उसे अपनी पुत्री को भेंट के रूप में दूँगा।"

[17]कालेब के भाई कनजी के पुत्र ओत्नीएल ने उस नगर को हराया। इसलिये कालेब ने अपनी पुत्री अकसा को उसे उसकी पत्नी होने के लिये प्रदान की। [18]ओत्नीएल ने अकसा से कहा कि वह अपने पिता से कुछ अधिक भूमि माँगे। अकसा अपने पिता के पास गई। जब वह अपने गधे से उतरी तो उसके पिता ने उससे पूछा, "तुम क्या चाहती हो?"

[19]अकसा ने उत्तर दिया, "मैं आपसे एक आशीर्वाद पाना चाहूँगी। मैं पानी वाली भूमि चाहती हूँ जो भूमि हमें आपने नेगेव में दी है, वह बहुत सूखी है, इसलिए मुझे ऐसी भूमि दें जिस में पानी के सोते हों।" इसलिए कालेब ने उसे भूमि के ऊपरी और निचले भाग में सोतों के साथ भूमि दी।

[20]यहूदा के परिवार समूह ने उस भूमि को पाया जिसे परमेश्वर ने उन्हें देने का वचन दिया था। हर एक परिवार समूह ने भूमि का भाग पाया। [21]यहूदा के परिवार समूह ने नेगेव के दक्षिणी भाग के सभी नगरों को पाया। ये नगर एदोम की सीमा के पास थे। यह उन नगरों की सूची है: कबसेल, एदेर, यागूर, [22]कीना, दीमोना, अदादा, [23]केदेश, हासोर, यित्नान, [24]जीप, तेलेम, बालोत, [25]हासोर्हदत्ता, करिय्योत–हेम्रोन (हासोर भी कहा जाता था।), [26]अमाम, शमा, मोलादा, [27]हसर्गद्दा, हेशमोन, बेत्पालेत, [28]हसर्शूआल, बेर्शेबा, बिज्योत्या, [29]बाला, इय्यीम, एसेम [30]एलतोलद, कसील, होर्मा, [31]सिकलग, मदमन्ना, सनसन्ना, [32]लबाओत, शिल्हीम, ऐन तथा रिम्मोन। सब मिलाकर उन्तीस नगर और उनके सभी खेत थे।

[33]यहूदा के परिवार समूह ने पश्चिमी पहाड़ियों की तलहटी में भी नगर पाए। उन नगरों की सूची यहाँ है: एशताओल, सोरा, अशना, [34]जानोह, एनगन्नीम, तप्पूह, एनाम, [35]यर्मूत, अदुल्लाम, सोको, अजेका, [36]शारैम, अदीतैम और गदेरा (गदेरोतैम भी कहा जाता था)। सब मिलाकर वहाँ चौदह नगर और उनके सारे खेत थे।

[37]यहूदा के परिवार को ये नगर भी दिये गये थे: सनान, हदाशा, मिगदलगाद, [38]दिलान, मिस्पे, योक्तेल, [39]लाकीश, बोस्कत, एग्लोन, [40]कब्बोन, लहमास, कितलीश, [41]गेदोरेत, बेतदागोन, नामा, और मक्केदा। सब मिलाकर वहाँ सोलह नगर और उनके सारे खेत थे।

[42]अन्य नगर जो यहूदा के लोग पाए वे ये थे: लिब्ना, ऐतेर, आशान, [43]यिप्ताह, अशना, नसीब, [44]कीला, अकजीब और मारेशा। सब मिलाकर ये नौ नगर और उनके सारे खेत थे।

[45]यहूदा के लोगों ने एक्रोन नगर और निकट के छोटे नगर तथा सारे खेत भी पाए। [46]उन्होंने एक्रोन के पश्चिम के क्षेत्र, सारे खेत और अशदोद के निकट के नगर भी पाए। [47]अशदोद की चारों ओर के क्षेत्र और वहाँ के छोटे नगर यहूदा प्रदेश के भाग थे। यहूदा के लोगों ने गाजा के चारों ओर के क्षेत्र, खेत और नगर प्राप्त किये। उनका प्रदेश मिस्र की सीमा पर बहने वाली नदी तक था और उनका प्रदेश भूमध्य सागर के तट के सहारे लगातार था।

[48]यहूदा के लोगों को पहाड़ी प्रदेश में भी नगर दिये गए। यहाँ उन नगरों की सूची है: शामीर, यत्तीर, सोको, [49]दन्ना, किर्यत्सन्ना (इसे दबीर भी कहते थे), [50]अनाब, एशतमो, आनीम, [51]गोशेन, होलोन और गीलो सब मिलाकर ग्यारह नगर और उनके खेत थे।

[52]यहूदा के लोगों को ये नगर भी दिये गये थे: अराब, दूमा, एशान, [53]यानीम, बेत्तप्पूह, अपेका, [54]हुमता, किर्यतर्बा

(हेब्रोन) और सीओर ये नौ नगर और इनके सारे खेत थे:

[55]यहूदा के लोगों को ये नगर भी दिये गये थे: माओन, कर्मेल, जीप, यूता, [56]यिज्रेल, योकदाम, जानोह, [57]कैन, गिबा और तिम्ना। ये सभी दस नगर और उनके सारे खेत थे।

[58]यहूदा के लोगों को ये नगर भी दिए गए थे। हलहूल, बेतसूर, गदोर, [59]मरात, बेतनोत और एलतकोन सभी छ: नगर और उनके सारे खेत थे।

[60]यहूदा के लोगों के दो नगर रब्बा और किर्यतबाल (इसे किर्यत्यारीम भी कहा जाता था) दिए गए थे।

[61]यहूदा के लोगों को मरुभूमि में नगर दिये गये थे। उन नगरों की सूची यह है। बेतराबा, मिद्दीन, सकाका, [62]निबशान, लवण नगर और एनगदी। सब मिलाकर छ: नगर और उनके सारे खेत थे।

[63]यहूदा की सेना यरूशलेम में रहने वाले यबूसी लोगों को बलपूर्वक बाहर करने में समर्थ नहीं हुई। इसलिए अब तक यबूसी लोग यरूशलेम में यहूदा लोगों के बीच रहते हैं।

एप्रैम तथा मनश्शे के लिये प्रदेश

16 यह वह प्रदेश है जिसे यूसुफ के परिवार ने पाया। यह प्रदेश यरदन नदी के निकट यरीहो से आरम्भ हुआ और यरीहो के पूर्वी जलाशयों तक पहुँचा। (यह ठीक यरीहो के पूर्व था) सीमा यरीहो से बेतेल के मरू पहाड़ी प्रदेश तक चली गई थी। [2]सीमा लगातार बेतेल (लूज) से लेकर अतारोत पर एरेकी सीमा तक चली गई थी। [3]तब सीमा पश्चिम में यपलेतियों लोगों की सीमा तक चली गई थी। यह सीमा लगातार निचले बेथोरोन तक चली गई थी। यह सीमा गेजेर तक गई और समुद्र तक चलती चली गई।

[4]इस प्रकार मनश्शे और एप्रैम ने अपना प्रदेश पाया। (मनश्शे और एप्रैम यूसुफ के पुत्र थे।)

[5]यह वह प्रदेश है जिसे एप्रैम के लोगों को दिया गया: उनकी पूर्वी सीमा ऊपरी बेथोरोन के निकट अत्रोतदार पर आरम्भ हुई थी। [6]और यह सीमा वहाँ से सागर तक जाती थी। सीमा पूर्व की ओर मिकमतात उनके उत्तर में था, तानतशीलो को मुड़ी और लगातार यानोह तक चली गई थी। [7]तब सीमा यानोह से अतारोत और नारा तक चली गई। यह सीमा लगातार चलती हुई यरीहो छूती है और यरदन नदी पर समाप्त हो जाती है। यह सीमा तप्पूह से काना खाड़ी के पश्चिम की ओर जाती है और सागर पर समाप्त हो जाती है। [8]यह सीमा तप्पूह से काना नदी के पश्चिम की ओर सागर पर समाप्त होती है। यह वह प्रदेश है जो एप्रैम के लोगों को दिया गया। उस परिवार समूह के हर एक परिवार ने इस भूमि का भाग पाया। [9]एप्रैम के बहुत से सीमा के नगर वस्तुत: मनश्शे की सीमा में थे किन्तु एप्रैम के लोगों ने उन नगरों और अपने खेतों को प्राप्त किया। [10]किन्तु एप्रैमी लोग कनानी लोगों को गेजेर नगर छोड़ने को विवश करने में समर्थ न हो सके। इसलिए कनानी लोग अब तक एप्रैमी लोगों के बीच रहते हैं।* किन्तु कनानी लोग एप्रैमी लोगों के दास हो गए थे।

17 तब मनश्शे के परिवार समूह को भूमि दी गई। मनश्शे यूसुफ का प्रथम पुत्र था। मनश्शे का प्रथम पुत्र माकीर था जो गिलाद का पिता* था। माकीर महान योद्धा था, अत: गिलाद और बाशान माकीर के परिवार को दिये गए। [2]मनश्शे के परिवार समूह के अन्य परिवारों को भी भूमि दी गई। वे परिवार अबीएज़ेर, हेलेक, अस्त्रीएल, शेकेम, हेपेर और शमीदा थे। ये सभी मनश्शे के अन्य पुत्र थे, जो यूसुफ का पुत्र था। इन व्यक्तियों के परिवारों ने कुछ भूमि प्राप्त की।

[3]सलोफाद हेपेर का पुत्र था। हेपेर गिलाद का पुत्र था। गिलाद माकीर का पुत्र था और माकीर मनश्शे का पुत्र था। किन्तु सलोफाद को कोई पुत्र न था। उसकी पाँच पुत्रियाँ थीं। पुत्रियों के नाम महला, नोआ, होग्ला, मिल्का और तिर्सा थे। [4]पुत्रियाँ याजक एलीआज़र, नून के पुत्र यहोशू और सभी प्रमुखों के पास गई। पुत्रियों ने कहा, "यहोवा ने मूसा से कहा कि वे हमें वैसे ही भूमि दें जैसे पुरुषों को दी जाती है।" इसलिए एलीआज़र ने, यहोवा का आदेश मानते हुए इन पुत्रियों को भी वैसे ही भूमि मिले, जैसे अन्य पुरुषों को मिली थी।

[5]इस प्रकार मनश्शे के परिवार के पास यरदन नदी के पश्चिम में भूमि के दस क्षेत्र थे और यरदन नदी के दूसरी ओर दो अन्य क्षेत्र गिलाद और बाशान थे। [6]मनश्शे की

कनानी लोग ... रहते हैं अर्थात् जब यहोशू सर्ग लिखा गया, कनानी लोग गेजेर में तब तक रहते थे।

गिलाद का पिता "या गिलाद क्षेत्र का प्रमुख।"

पौत्रियों को वैसे ही भूमि दी गई जैसे मनश्शे के अन्य पुरुष सन्तानों को दी गई थी। गिलाद प्रदेश मनश्शे के शेष परिवार को दिया गया।

[7]मनश्शे की भूमि आशेर और मिकमतात के क्षेत्र के बीच थी। यह शकेम के निकट है। इसकी सीमा दक्षिण में एनतप्पूह क्षेत्र तक जाती थी। [8]तप्पूह की भूमि मनश्शे की थी किन्तु तप्पूह नगर उसका नहीं था। तप्पूह नगर मनश्शे के प्रदेश की सीमा पर था और यह एप्रैम के पुत्रों का था। [9]मनश्शे की सीमा काना नाले के दक्षिण में था। मनश्शे के इस क्षेत्र के नगर एप्रैम के थे। मनश्शे की सीमा नदी के उत्तर में थी और यह पश्चिम में लगातार भूमध्य सागर तक चली गई थी। [10]दक्षिण की भूमि एप्रैम की थी और उत्तर की भूमि मनश्शे की थी। भूमध्य सागर पश्चिम सीमा बनाता था। यह सीमा उत्तर में आशेर के प्रदेश को छूती थी और पूर्व में इस्साकार के प्रदेश को।

[11]इस्साकार और आशेर के क्षेत्र के बेतशान और इसके छोटे नगर तथा यिबलाम और इसके छोटे नगर मनश्शे के थे। मनश्शे के अधिकार में दोर तथा इसके छोटे नगरों में रहने वाले लोग तथा एनदोर और इसके छोटे नगर भी थे। मनश्शे का अधिकार तानाक और उसके छोटे नगरों में रहने वाले लोगों, और नापेत के तीन नगरों पर भी था। [12]मनश्शे के लोग उन नगरों को नहीं हरा सके थे। इसलिए कनानी लोग वहाँ रहते रहे। [13]किन्तु इस्राएल के लोग शक्तिशाली हुए। जब ऐसा हुआ तो उन्होंने कनान के लोगों को काम करने के लिये विवश किया। किन्तु वे कनानी लोगों को उस भूमि को छोड़ने के लिए विवश न कर सके।

[14]यूसुफ के परिवार समूहों ने यहोशू से बातें की और कहा, "तुमने हमें भूमि का केवल एक क्षेत्र दिया। किन्तु हम बहुत से लोग हैं। तुमने हम लोगों को उस देश का एक भाग ही क्यों दिया जिसे यहोवा ने अपने लोगों को दिया?"

[15]और यहोशू ने उनको उत्तर दिया, "यदि तुम लोग संख्या में अधिक हो तो पहाड़ी प्रदेश के जंगलों में ऊपर चढ़ो और वहाँ अपने रहने के लिये स्थान बनाओ। यह प्रदेश परिज्जियों और रपाइ लोगों का है। यदि एप्रैम का पहाड़ी प्रदेश तुम लोगों की आवश्यकता से बहुत छोटा है तो उस भूमि को ले लो।"

[16]यूसुफ के लोगों ने कहा, "यह सत्य है कि एप्रैम का पहाड़ी प्रदेश हम लोगों के लिए पर्याप्त नहीं है किन्तु यह प्रदेश जहाँ कनानी लोग रहते हैं खतरनाक है। वे कुशल योद्धा हैं तथा उनके पास शक्तिशाली, अस्त्र–शस्त्र हैं, लोहे के रथ हैं, तथा वे बेतशान के उस क्षेत्र के सभी छोटे नगरों तथा यिज्रेल की घाटी में भी नियंत्रण रखते हैं।"

[17]तब यहोशू ने यूसुफ, एप्रैम और मनश्शे के लोगों को कहा, "किन्तु तुम लोगों की संख्या अत्याधिक है। और तुम लोग बड़ी शक्ति रखते हो। तुम लोगों को अधिक भूमि मिलनी चाहिए। [18]तुम लोगों को पहाड़ी प्रदेश लेना होगा। यह जंगल है, किन्तु तुम लोग पेड़ों को काट सकते हो और रहने योग्य अच्छा स्थान बना सकते हो। यह सारा तुम्हारा होगा। तुम लोग कनानी लोगों को उस प्रदेश को छोड़ने के लिए बलपूर्वक विवश करोगे। तुम लोग उन्हें उनके शक्तिशाली अस्त्र–शस्त्र और शक्ति के होते हुए भी पराजित करोगे।"

बचे हुये प्रदेश का विभाजन

18 इस्राएल के सभी लोग शीलो नामक स्थान पर इकट्ठा हुए। उस स्थान पर उन्होंने मिलापवाले तम्बू को खड़ा किया। इस्राएल के लोग उस प्रदेश पर शासन करते थे। उन्होंने उस प्रदेश के सभी शत्रुओं को हराया था। [2]किन्तु उस समय भी इस्राएल के सात परिवार समूह ऐसे थे, जिन्हें परमेश्वर के द्वारा वचन दिये जाने पर भी उन्हें दी गई भूमि नहीं मिली थी।

[3]इसलिए यहोशू ने इस्राएल के लोगों से कहा, "तुम लोग अपने प्रदेश लेने में इतनी देर प्रतीक्षा क्यों करते हो? यहोवा, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने यह प्रदेश तुम्हें दिया है। [4]इसलिए तुम्हारे प्रत्येक परिवार समूह को तीन व्यक्ति चुनने चाहिए। मैं उन व्यक्तियों को उन प्रदेशों की जाँच के लिए भेजूँगा। वे उस प्रदेश का विवरण तैयार करेंगे तब वे मेरे पास लौटेंगे। [5]वे देश को सात भागों में बाँटेंगे। यहूदा के लोग अपना प्रदेश दक्षिण में रखेंगे। यूसुफ के लोग अपना प्रदेश उत्तर में रखेंगे। [6]किन्तु तुम लोगों को विवरण तैयार करना चाहिए और प्रदेश को सात भागों मे बाँटना चाहिए। विवरण मेरे पास लाओ हम लोग अपने यहोवा परमेश्वर को यह निर्णय करने देंगे कि किस परिवार को कौन सा प्रदेश मिलेगा।* [7]किन्तु लेवीवंशी लोग इन प्रदेशों का कोई भी भाग नहीं पाएंगे। वे

हम लोग ... प्रदेश मिलेगा शाब्दिक "मैं यहोवा, अपने परमेश्वर के सामने शीलो में गोटें डालूंगा।"

याजक हैं और उनका कार्य यहोवा की सेवा करना है। गाद, रूबेन और मनश्शे के परिवार समूहों के आधे लोग पहले ही वचन के अनुसार दिया गया अपना प्रदेश पा चुके हैं। ये प्रदेश यरदन नदी के पूर्व में हैं। यहोवा के सेवक मूसा ने उस प्रदेश को उन्हें पहले ही दे दिया था।"

[8]इसलिए चुने गये व्यक्ति उस भूमि को देखने और उस का विवरण लिखने चले गये। यहोशू ने उनसे कहा, "जाओ, और उस प्रदेश की जाँच करो तथा उसके विवरण तैयार करो। तब मेरे पास लौटो। उस समय मैं यहोवा से कहूँगा कि जो देश तुम्हें मिलेगा उसे चुनने में वे मेरी सहायता करे।"

[9]इसलिए उन पुरुषों ने वह स्थान छोड़ा और उस देश में वे गए। उन्होंने देश की जाँच की और यहोशू के लिए विवरण तैयार किए। उन्होंने हर नगर की जाँच की और पाया कि प्रदेश के सात भाग हैं। उन्होंने अपने विवरणों को तैयार किया और यहोशू के पास आए। यहोशू तब भी शीलो के डेरे में था। [10]उस समय यहोशू ने यहोवा से सहायता माँगी। यहोशू ने हर एक परिवार समूह को देने के लिए एक प्रदेश चुना। यहोशू ने प्रदेश को बाँटा और हर एक परिवार समूह को उसके हिस्से का प्रदेश दिया।

बिन्यामीन के लिये प्रदेश

[11]बिन्यामीन के परिवार समूह को वह प्रदेश दिया गया जो यूसुफ और यहूदा के क्षेत्रों के बीच था। बिन्यामीन परिवार समूह के हर एक परिवार ने कुछ भूमि पाई। बिन्यामीन के लिए चुना गया प्रदेश यह था: [12]इसकी उत्तरी सीमा यरदन नदी से आरम्भ हुई। यह सीमा यरीहो के उत्तरी छोर से गई थी। तब यह सीमा पश्चिम के पहाड़ी प्रदेश में गई थी। यह सीमा लगातार बेतावेन के ठीक पूर्वी ढलान तक थी। [13]तब यह सीमा लूज (यानी बेतेल) के दक्षिणी ढलान तक गई। फिर यह सीमा अत्रोतद्दार तक नीचे गई। अत्रोतद्दार निचले बेथोरोन की दक्षिणी पहाड़ी के ढलान पर है। [14]बेथोरोन दक्षिण में एक पहाड़ी है। यहाँ सीमा इस पहाडी पर मुड़ी और उस पहाड़ी की पश्चिमी ओर के निकट से दक्षिण को गई थी। यह सीमा किर्यतबाल (किर्यत्यारीम) को गई। यह एक नगर है, जहाँ यहूदा के लोग रहते थे। यह पश्चिमी सीमा थी।

[15]दक्षिण की सीमा किर्यत्यारीम से आरम्भ हुई और नेप्तोह प्रपात को गई। [16]तब सीमा हिन्नोम की घाटी के निकट की पहाड़ी की तलहटी में उतरी। यह रपाईम घाटी का उत्तरी छोर था। यह सीमा यबूसी नगर के ठीक दक्षिण हिन्नोम घाटी में चलती चली गई। तब सीमा एनरोगेल तक चली गई। [17]वहाँ, सीमा उत्तर की ओर मुड़ी और एन शेमेश को गई। यह सीमा लगातार गलीलोत तक जाती है। (गलीलोत, पर्वतों में अदुम्मीम दर्रे के पास है।) यह सीमा उस बड़ी चट्टान तक गई जिसका नाम रूबेन के पुत्र, बोहन के लिए रखा गया था। [18]यह सीमा बेतअराबा के उत्तरी भाग तक लगातार चली गई। तब सीमा अराबा में नीचे उतरी। [19]तब यह सीमा बेथोग्ला के उत्तरी भाग को जाकर, लवण सागर के उत्तरी तट पर समाप्त हुई। यह वही स्थान है जहाँ यरदन नदी समुद्र में गिरती है। यह दक्षिणी सीमा थी।

[20]पूर्व की ओर यरदन की नदी सीमा थी। इस प्रकार यह भूमि थी जो बिन्यामीन के परिवार समूह को दी गई। ये चारों ओर की सीमाएँ थीं। [21]बिन्यामीन के हर एक परिवार समूह को, इस प्रकार, यह भूमि मिली। उनके अधिकार में ये नगर थे। यरीहो, बेथोग्ला, एमेक्कसीस, [22]बेतराबा, समारैम, बेतेल, [23]अव्वीम, पारा, ओप्रा, [24]कपरम्मोनी, ओप्नी और गेबा। ये बारह नगर, उस छोटे क्षेत्र में, उनके आसपास खेतों सहित थे।

[25]बिन्यामीन के परिवार समूह के पास गिबोन, रामाबेरोत, [26]मिस्पा, कपीरा, मोसा, [27]रेकेम, यिर्पेल, तरला, [28]सेला, एलेप, यबूस (यरूशलेम), गिबत और किर्येत नगर भी थे। ये चौदह नगर, उस छोटे क्षेत्र में उनके आसपास के खेतों के साथ थे। ये क्षेत्र बिन्यामीन के परिवार समूह ने पाया था।

शिमोन के लिये प्रदेश

19 यहोशू ने शिमोन के परिवार के हर एक परिवार समूह को उनकी भूमि दी। यह भूमि, जो उन्हें मिली, यहूदा के अधिकार–क्षेत्र के भीतर थी। [2]यह वह भूमि थी जो उन्हें मिली: बेर्शेबा(शेबा),मोलादा, [3]हसर्शूआल, बाला, एसेम, [4]एलतोलद, बतूल, होर्मा, [5]सिक्लग, बेत्मर्काबोत, हसर्शूसा, [6]बेतलबाओत और शारूहने। ये तेरह नगर और उनके सारे खेत शिमोन के थे।

[7]उनको ऐन, रिम्मोन, एतेर और आशान नगर भी मिले। ये चार नगर अपने सभी खेतों के साथ थे। [8]उन्होंने वे सारे खेत नगरों के साथ पाए जो बालत्बेर तक फैले थे।

(यह नेगव क्षेत्र में रामा ही है।) इस प्रकार यह वह प्रदेश था, जो शिमोनी लोगों के परिवार समूह को दिया गया। हर एक ने इस भूमि को प्राप्त किया। [9]शिमोनी लोगों की भूमि यहूदा के प्रदेश के भाग से ली गई थी। यहूदा के पास उन लोगों की आवश्यकता से अधिक भूमि थी। इसलिए शिमोनी लोगों को उनकी भूमि का भाग मिला।

जबूलूनी के लिए प्रदेश

[10]दूसरा परिवार समूह जिसे अपनी भूमि मिली वह जबूलून था। जबूलून के हर एक परिवार समूह ने दिये गए वचन के अनुसार भूमि पाई। जबूलून की सीमा सारीद तक जाती थी। [11]फिर वह पश्चिम में मरला से होती हुई गई और दब्बेशेत के क्षेत्र के निकट तक पहुँचती थी। तब यह सीमा संकरी घाटी से होते हुए योकनाम के क्षेत्र तक जाती थी। [12]तब यह सीमा पूर्व की ओर मुड़ी थी। यह सारीद से किसलोत्ताबोर के क्षेत्र तक पहुँचती थी। तब यह सीमा दाबरत और यापी तक चलती गई थी। [13]तब सीमा पूर्व में गथेपेर और इत्कासीन तक लगातार थी। यह सीमा रिम्मोन पर समाप्त हुई। तब सीमा मुड़ी और नेआ तक गई। [14]नेआ पर फिर सीमा मुड़ी और उत्तर की ओर गई। यह सीमा हन्नातोन तक पहुँची और लगातार यिप्तहेल की घाटी तक गई। [15]इस सीमा के भीतर कत्तात, नहलाल, शिम्रोन यिदला और बेतलेहेम नगर थे। सब मिलाकर ये बारह नगर अपने खेतों के साथ थे।

[16]अत: ये नगर और क्षेत्र हैं जो जबूलून को दिये गए। जबूलून के हर एक परिवार समूह ने इस भूमि को प्राप्त किया।

इस्साकार के लिये प्रदेश

[17]इस्साकार के परिवार समूह को चौथे हिस्से की भूमि दी गई। उस परिवार समूह में हर एक परिवार ने कुछ भूमि पाई। [18]उस परिवार समूह को जो भूमि दी गई थी वह यह है: यिज्रेल, कसुल्लोत, शूनेम [19]हपारैम, सीओन, अनाहरत, [20]रब्बीत, किश्योन, एबेस, [21]रेमेत, एनगन्नीम, एन हददा और बेतपस्सेस।

[22]उनके प्रदेश की सीमा ताबोर शहसूमा और बेतशेमेश को छूती थी। यह सीमा यरदन नदी पर समाप्त होती थी। सब मिलाकर सोलह नगर और उनके खेत थे। [23]ये नगर और कस्बे इस्साकार परिवार समूह को दिये गए प्रदेश के भाग थे। हर एक परिवार ने इस प्रदेश का भाग प्राप्त किया।

आशेर के लिये प्रदेश

[24]आशेर के परिवार समूह को पाँचवें भाग का प्रदेश दिया गया। इस परिवार समूह के प्रत्येक परिवार को कुछ भूमि मिली। [25]उस परिवार समूह को जो भूमि दी गई वह यह है: हेल्कत, हली, बेतेन, अक्षाप, [26]अलाम्मेल्लेक, अमाद और मिशाल।

पश्चिमी सीमा लगातार कर्म्मेल पर्वत और शीहोलिब्नात तक थी। [27]तब सीमा पूर्व की ओर मुड़ी। यह सीमा बेतदागोन तक गई। यह सीमा जबूलून और यिप्तहेल की घाटी को छू रही थी। तब यह सीमा बेतेमेक और नीएल के उत्तर को गई थी। यह सीमा काबूल* के उत्तर से गई थी। [28]तब यह सीमा एब्रोन, रहोब, हम्मोन और काना को गई थी। यह सीमा लगातार बड़े सीदोन क्षेत्र तक चली गई थी। [29]तब यह सीमा दक्षिण की ओर मुड़ी और रामा तक गई। यह सीमा लगातार शक्तिशाली नगर सोर तक गई थी। तब यह सीमा मुड़ती हुई होसा तक जाती थी। यह सीमा अकजीब, [30]उम्मा, अपेक और रहोब के क्षेत्र में सागर पर समाप्त होती थी।

सब मिलाकर वहाँ बाईस नगर और उनके खेत थे। [31]ये नगर व उनके खेत आशेर परिवार समूह को दिये गए प्रदेश के भाग थे। उस परिवार समूह में हर एक परिवार ने इस भूमि का कुछ भाग पाया।

नप्ताली के लिये प्रदेश

[32]नप्ताली के परिवार समूह को इस प्रदेश के छठे भाग की भूमि मिली। इस परिवार समूह के हर एक परिवार ने उस प्रदेश की कुछ भूमि पाई। [33]उनके प्रदेश की सीमा सानन्नीम के क्षेत्र में विशाल वृक्ष से आरम्भ हुई। यह हेलेप के निकट है। तब यह सीमा अदामीनेकेब और यब्नेल से होकर गई। यह सीमा लक्कूम पर समाप्त हुई। [34]तब यह सीमा पश्चिमी को अजनोत्ताबोर होकर गई। यह सीमा हुक्कोक पर समाप्त हुई। यह सीमा दक्षिण

काबूल यह काबूल नगर आज के अफगानिस्तान में स्थित काबुल से भिन्न था। यह उस युग में भूमध्य सागर के तट पर बसा एक ऐसा प्रमुख नगर था, जो बीस नगरों का जिला था।

को जबूलून क्षेत्र तक गई थी। यह सीमा पश्चिम में आशेर के क्षेत्र तक पहुँचती थी। यह सीमा पूर्व में यरदन नदी पर यहूदा को जाती थी। [35]इस सीमा के भीतर कुछ बहुत शक्तिशाली नगर थे। ये नगर सिद्दीम, सेर, हम्मत, रक्कत, किन्नेरेत, [36]अदामा, रामा, हासोर, [37]केदेश, एद्रेई, अन्हासेर, [38]यिरोन, मिगदलेल, होरेम, बेतनात और बेतशेमेश थे। सब मिलाकर वहाँ उन्नीस नगर और उनके खेत थे।

[39] ये नगर और उनकी चारों ओर के कस्बे उस प्रदेश में थे, जो नप्ताली के परिवार समूह को दिया गया था। उस परिवार समूह के हर एक परिवार ने इस भूमि का कुछ भाग पाया।

दान के लिये प्रदेश

[40]तब दान के परिवार समूह को भूमि दी गई। उस परिवार समूह के हर एक परिवार ने इस भूमि का कुछ भाग पाया। [41]उनको जो प्रदेश दिया गया वह यह है: सोरा, एशताओल, ईरशेमेश, [42]शालब्बीन, अय्यालोन, यितला, [43]एलोन, तिम्ना, एक्रोन, [44]एलतके, गिब्बतोन, बालात, [45]यहूद, बेनेबराक,गत्रिम्मोन, [46] मेयर्कोन, रक्कोन और यापो के निकट का क्षेत्र।

[47]किन्तु दान के लोगों को अपना प्रदेश लेने में परेशानी उठानी पड़ी। वहाँ शक्तिशाली शत्रु थे और दान के लोग उन्हें सरलता से पराजित नहीं कर सकते थे। इसलिए दान के लोग गए और लेशेम के विरुद्ध लड़े। उन्होंने लेशेम को पराजित किया तथा जो लोग वहाँ रहते थे, उन्हें मार डाला। इसलिए दान के लोग लेशेम नगर में रहे। उन्होंने उसका नाम बदल कर दान कर दिया क्योंकि यह नाम उनके परिवार समूह के पूर्वज का था। [48]ये सभी नगर और खेत उस प्रदेश में थे जो दान के परिवार समूह को दिया गया था। हर एक परिवार को इस भूमि का भाग मिला।

यहोशू के लिये प्रदेश

[49]इस प्रकार प्रमुखों ने प्रदेश का बँटवारा करना और विभिन्न परिवार समूहों को उन्हें देना पूरा किया। जब उन्होंने वह पूरा कर लिया तब इस्राएल के सब लोगों ने नून के पुत्र यहोशू को भी कुछ प्रदेश देने का निश्चय किया। ये वही प्रदेश थे जिन्हें उसको देने का वचन दिया गया था। [50]यहोवा ने आदेश दिया कि उसे यह प्रदेश मिले। इसलिए उन्होंने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में यहोशू को विम्नत्सेरह नगर दिया। यही वह नगर था, जिसके लिये यहोशू ने कहा था कि मैं उसे चाहता हूँ। इसलिए यहोशू ने उन नगर को अधिक दृढ़ बनाया और वह उसमें रहने लगा। [51]इस प्रकार ये सारे प्रदेश इस्राएल के विभिन्न परिवार समूह को दिये गए। प्रदेश का बँटवारा करने के लिये शिलो में याजक एलीआज़र, नून का पुत्र यहोशू और हर एक परिवार समूह के प्रमुख एकत्र हुए। वे यहोवा के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठे हुए थे। इस प्रकार उन्होंने प्रदेश का विभाजन पूरा कर लिया था।

सुरक्षा के नगर

20 तब यहोवा ने यहोशू से कहा: [2]"मैंने मूसा का उपयोग तुम लोगों को आदेश देने के लिये किया। मूसा ने तुम लोगों से सुरक्षा के विशेष नगर बनाने के लिये कहा था। सो सुरक्षा के लिए उन नगरों का चुनाव करो। [3]यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को मार डालता है, किन्तु ऐसा संयोगवश होता है और उसका इरादा उसे मार डालने का नहीं होता तो वह मृत व्यक्ति के उन सम्बन्धियों से जो बदला लेने के लिए उसे मार डालना चाहते हैं, आत्मरक्षा के लिए सुरक्षा नगर में शरण ले सकता है।

[4]"उस व्यक्ति को यह करना चाहिये। जब वह भागे और उन नगरों में से किसी एक में पहुँचे तो उसे नगर द्वार पर रूकना चाहिये। उसे नगर द्वार पर खड़ा रहना चाहिए और नगर प्रमुखों को बताना चाहिए कि क्या घटा है। तब नगर प्रमुख उसे नगर में प्रवेश करने दे सकते हैं। वे उसे अपने बीच रहने का स्थान देंगे। [5]किन्तु वह व्यक्ति जो उसका पीछा कर रहा है वह नगर तक उसका पीछा कर सकता है। यदि ऐसा होता है तो नगर प्रमुखों को उसे यूँ ही नहीं छोड़ देना चाहिए, बल्कि उन्हें उस व्यक्ति की रक्षा करनी चाहिए जो उनके पास सुरक्षा के लिये आया है। वे उस व्यक्ति की रक्षा इसलिए करेंगे कि उसने जिसे मार डाला है, उसे मार डालने का उसका इरादा नहीं था। यह संयोगवश हो गया। वह क्रोधित नहीं था और उस व्यक्ति को मारने का निश्चय नहीं किया था। यह कुछ ऐसा था, जो हो ही गया। [6]उस व्यक्ति को तब तक नगर में रहना चाहिये जब तक उस नगर के न्यायालय द्वारा उसके मुकदमे का निर्णय नहीं हो जाता और उसे तब तक उसी

नगर में रहना चाहिये जब तक महायाजक नहीं मर जाता। तब वह अपने घर उस नगर में लौट सकता है, जहाँ से वह भागता हुआ आया था।"

[7]इसलिए इस्राएल के लोगों ने "सुरक्षा नगर" नामक नगरों को चुना। वे नगर ये थे:

नप्ताली के पहाड़ी प्रदेश मे गलील के केदेश;
एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में शकेम;
किर्य्यतर्बा (हेब्रोन) जो यहूदा के
पहाड़ी प्रदेश में था।

[8] रूबेन के प्रदेश की मरुभूमि में,
यरीहो के निकट यरदन नदी के
पूर्व में बेसेर;
गाद के प्रदेश में गिलाद में रमोत;
मनश्शे के प्रदेश में बाशान में गोलान।

[9]कोई इस्राएली व्यक्ति या उनके बीच रहने वाला कोई भी विदेशी, यदि किसी को मार डालता है, किन्तु यह संयोगवश हो जाता है, तो वह उन सुरक्षा नगरों में से किसी एक में सुरक्षा के लिये भागकर जा सकता था। तब वह व्यक्ति वहाँ सुरक्षित हो सकता था और पीछा करने वाले किसी के द्वारा नहीं मारा जा सकता था। उस नगर में उस व्यक्ति के मुकदमे का निबटारा उस नगर के न्यायालय द्वारा होगा।

याजको तथा लेवीवंशियों के नगर

21 लेवीवंशी परिवार समूह के शासक बातें करने के लिये याजक एलीआज़र, नून के पुत्र यहोशू और इस्राएल के अन्य परिवार समूहों के शासकों के पास गए। [2]यह कनान प्रदेश मे शीलो नगर में हुआ। लेवी शासकों ने उनसे कहा, "यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। उसने आदेश दिया था कि तुम हम लोगों को रहने के लिये नगर दोगे और तुम हम लोगों को मैदान दोगे जिसमें हमारे जानवर चर सकेंगे।" [3]इसलिए लोगों ने यहोवा के इस आदेश को माना। उन्होंने लेवीवंशियों को ये नगर और क्षेत्र उनके पशुओं को दिये:

[4]कहात परिवार लेवी परिवार समूह से था। कहात परिवार के एक भाग को तेरह नगर दिये गये। ये नगर उस क्षेत्र में थे जो यहूदा, शिमोन और बिन्यामीन का हुआ करता था। ये नगर उन कहातियों को दिये गये थे जो याजक हारून के वंशज थे।

[5]कहात के दूसरे परिवार समूह को दस नगर दिये गए थे। ये दस नगर एप्रैम, दान और मनश्शे परिवार के आधे क्षेत्रों मे थे। [6]गेर्शोन समूह के लोगों को तेरह नगर दिये गये थे। ये नगर उस प्रदेश में थे जो इस्साकार, आशेर, नप्ताली और बाशान में मनश्शे के आधे परिवार के थे।

[7]मरारी समूह के लोगों को बारह नगर दिये गए। ये नगर उन क्षेत्रों में थे जो रूबेन, गाद और जबूलून के थे।

[8]इस प्रकार इस्राएल के लोगों ने लेवीवंशियों को ये नगर और उनके चारों ओर के खेत दिये। उन्होंने यह यहोवा द्वारा मूसा को दिये गए आदेश को पूरा करने के लिये किया।

[9]यहूदा और शिमोन के प्रदेश के नगरों के नाम ये थे। [10]नगर के चुनाव का प्रथम अवसर कहात परिवार समूह को दिया गया। (लेवीवंशी लोग) [11]उन्होंने उन्हें किर्यतर्बा हेब्रोन और इसके सब खेत दिये (यह हेब्रोन है जो एक व्यक्ति अरबा के नाम पर रखा गया है। अरबा अनाक का पिता था।) उन्हें वे खेत भी मिले जिनमें उनके जानवर उनके नगरों के समीप चर सकते थे। [12]किन्तु खेत और किर्यतर्बा नगर के चारों ओर के छोटे नगर यपुन्ने के पुत्र कालेब के थे। [13]इस प्रकार उन्होंने हेब्रोन नगर को हारून के परिवार के लोगों को दे दिया। (हेब्रोन सुरक्षा नगर था।) उन्होंने हारून के परिवार समूह को लिब्ना, [14]यत्तीर, एशतमो, [15]होलोन, दबीर, [16]ऐन, युत्ता और बेतशेमेश भी दिया। उन्होंने इन नगरों के चारों ओर के खेतों को भी दिया। इन दोनों समूहों को यहूदा और शिमोन द्वारा नौ नगर दिये गए थे।

[17]उन्होंने हारून के लोगों को वे नगर भी दिये जो बिन्यामीन परिवार समूह के थे। ये नगर गिबोन, गेबा, [18]अनातोत और अल्मोन थे। उन्होंने ये चार नगर और इनके चारों ओर के सब खेत दिये। [19]इस प्रकार ये नगर याजकों को दिये गये। (ये याजक, याजक हारून के वंशज थे।) सब मिलाकर तेरह नगर और उनके सब खेत उनके जानवरों के लिये थे।

[20]कहाती समूह के अन्य लोगों को ये नगर दिये गए। ये नगर एप्रैम परिवार समूह के थे: [21]शकेम नगर जो एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में था। (शकेम सुरक्षा नगर था।) उन्होंने गेजेर, [22]किबसैम, बेथोरोन भी उन्हें दिये। सब मिलाकर ये चार नगर और उनके सारे खेत उनके जानवरों के लिये थे।

[23]दान के परिवार समूह ने उन्हें एलतके, गिब्बतोन, [24]अय्यालोन और गत्रिम्मोन दिये। सब मिलाकर ये चार नगर और उनके सारे खेत उनके जानवरों के लिये थे।

[25]मनश्शे के आधे परिवार समूह ने उन्हें तानाक और गत्रिम्मोन दिये। उन्हें वे सारे खेत भी दिये गए जो इन दोनों नगरों के चारों ओर थे।

[26]इस प्रकार ये दस अधिक नगर और इन नगरों के चारों ओर की भूमि उनके जानवरों के लिये कहाती समूह को दी गई थी।

[27]लेवीवंशी परिवार समूह के गेर्शोनी समूह को ये नगर दिये गए थे।

मनश्शे परिवार समूह के आधे परिवार ने उन्हें बाशान में गोलान दिया। (गोलान एक सुरक्षा नगर था)। मनश्शे ने उन्हें बेशतरा भी दिया। इन दोनों नगरों के चारों ओर की भूमि भी उनके जानवरों के लिये गेर्शोनी समूह को दी गई।

[28]इस्साकार के परिवार समूह ने उन्हें किश्योन, दाबरत, [29]यरमूत और एनगन्नीम दिये। इस्साकार ने इन चारों नगरों के चारों ओर जो भूमि थी, उसे भी उन्हें उनके जानवरों के लिये दिया। [30]आशेर के परिवार समूह ने उन्हें मिशाल, अब्दोन,[31]हेल्कात और रहोब दिये। इन चारों नगरों के चारों ओर की भूमि भी उन्हें उनके जानवरों के लिये दी गई।

[32]नप्ताली के परिवार समूह ने उन्हें गलील में केदेश दिया। (केदेश एक सुरक्षा नगर था।) नप्ताली ने उन्हें हम्मोतदोर और कर्तान भी दिया। इन तीनों नगरों के चारों ओर की भूमि भी उनके जानवरों के लिये गेर्शोनी समूह को दी गई।

[33]सब मिलाकर गेर्शोनी समूह ने तेरह नगर और उनके चारों ओर की भूमि अपने जानवरों के लिये पाई।

[34]अन्य लेवीवंशी समूह मरारी समूह था। मरारी लोगों को यह नगर दिये गए:

जबूलून के परिवार समूह ने उन्हें योक्नाम, कर्त्ता, [35]दिम्ना और नहलाल दिये। इन नगरों के चारों ओर की भूमि भी उनके जानवरों के लिये मरारी परिवार समूह को दी गई।

[36]रूबेन के परिवार समूह ने उन्हें यरदन के पूर्व में बेसेर, यहसा, [37]केदमोत और मेपात नगर दिये। सारी भूमि, जो इन चारों नगरों के चारों ओर थी , मरारी लोगों को उनके जानवरों के लिये दी गई।

[38]गाद के परिवार समूह ने उन्हें गिलाद में रामोत नगर दिया। (रामोत सुरक्षा नगर था।) उन्होंने उन्हें महनैम, [39]हेश्बोन और याजेर भी दिया। गाद ने इन चारों नगरों के चारों ओर की सारी भूमि भी उनके जानवरों के लिये दी।

[40]सब मिलाकर लेवियों के आखिरी परिवार मरारी समूह को बारह नगर दिये गए।

[41]सब मिलाकर लेवी परिवार समूह ने अड़तालीस नगर पाए और प्रत्येक नगर के चारों ओर की भूमि उनके जानवरों के लिये मिली। ये नगर उस प्रदेश में थे, जिसका शासन इस्राएल के अन्य परिवार समूह के लोग करते थे। [42]हर एक नगर के साथ उनके चारों ओर ऐसी भूमि और खेत थे, जिन पर जानवर जीवन बिता सकते थे। यही बात हर नगर के साथ थी।

[43]इस प्रकार यहोवा ने इस्राएल के लोगों को जो वचन दिया था, उसे पूरा किया। उसने वह सारा प्रदेश दे दिया जिसे देने का उसने वचन दिया था। लोगों ने वह प्रदेश लिया और उसमें रहने लगे [44]और यहोवा ने उनके प्रदेश को चारों ओर से शान्ति प्राप्त करने दी। उनके किसी शत्रु ने उन्हें नहीं हराया। यहोवा ने इस्राएल के लोगों को हर एक शत्रु को पराजित करने दिया। [45]यहोवा ने इस्राएलियों को दिये गए अपने सभी वचनों को पूरा किया। कोई ऐसा वचन नहीं था, जो पूरा न हुआ हो। हर एक वचन पूरा हुआ।

तीन परिवार समूह घर लौटते हैं

22 तब यहोशू ने रूबेन, गाद और मनश्शे के परिवार समूह के सभी लोगों की एक सभा की। [2]यहोशू ने उनसे कहा, "तुमने मूसा के दिये सभी आदेशों का पालन किया है। मूसा यहोवा का सेवक था। और तुमने मेरे भी सभी आदेशों का पालन किया। [3]और इस पूरे समय में तुम लोगों ने इस्राएल के अन्य लोगों की सहायता की है। तुम लोग यहोवा के उन सभी आदेशों का पालन करने में सावधान रहे, जिन्हें तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया था। [4]तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने इस्राएल के लोगों को शान्ति देने का वचन दिया था। अत: अब यहोवा ने अपना वचन पूरा कर दिया है। इस समय तुम लोग अपने घर लौट सकते हो। तुम लोग, अपने उस प्रदेश में जा सकते हो जो तुम्हें दिया गया है। यह प्रदेश यरदन नदी के पूर्व में है। यह वही प्रदेश है जिसे यहोवा के

सेवक मूसा ने तुम्हें दिया। [5]किन्तु याद रखो कि जो व्यवस्था मूसा ने तुम्हें दिया है, उसका पालन होता रहे। तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करना और उसके आदेशों का पालन करना है। तुम्हें उसका अनुसरण करते रहना चाहिये, और पूरी आस्था के साथ उसकी सेवा करो।"

[6]तब यहोशू ने उनको आशीर्वाद दिया और वे विदा हुए। वे अपने घर लौट गए। [7]मूसा ने आधे मनश्शे परिवार समूह को बाशान प्रदेश दिया था। यहोशू ने दूसरे आधे मनश्शे परिवार समूह को यरदन नदी के पश्चिम में प्रदेश दिया। यहोशू ने उनको वहाँ अपने घर भेजा। यहोशू ने उन्हें आशीर्वाद दिया। [8]उसने कहा, "तुम बहुत सम्पन्न हो। तुम्हारे पास चाँदी, सोने और अन्य बहुमूल्य आभूषणों के साथ बहुत से जानवर हैं। तुम लोगों के पास अनेक सुन्दर वस्त्र हैं। तुमने अपने शत्रुओं से भी बहुत सी चीज़ें ली हैं। इन चीजों को तुम्हें आपस में बाँट लेना चाहिए। अब अपने अपने घर जाओ।"

[9]अत: रूबेन, गाद और मनश्शे के परिवार समूह के आधे लोगों ने इस्राएल के अन्य लोगों से विदा ली। वे कनान में शीलो में थे। उन्होंने उस स्थान को छोड़ा और वे गिलाद को लौटे। यह उनका अपना प्रदेश था। मूसा ने उनको यह प्रदेश दिया था, क्योंकि यहोवा ने उसे ऐसा करने का आदेश दिया था।

[10]रूबेन, गाद और मनश्शे के लोगों ने गोत्र नामक स्थान की यात्रा की। यह यरदन नदी के किनारे कनान प्रदेश में था। उस स्थान पर लोगों ने एक सुन्दर वेदी बनाई। [11]किन्तु इस्राएल के लोगों के अन्य समूहों ने,जो तब तक शीलो में थे, उस वेदी के विषय में सुना जो इन तीनों परिवार समूहों ने बनायी थीं। उन्होंने यह सुना कि यह वेदी कनान की सीमा पर गोत्र नामक स्थान पर थी। यह यरदन नदी के किनारे इस्राएल की ओर थी। [12]इस्राएल के सभी परिवार समूह इन तीनों परिवार समूहों पर बहुत क्रोधित हुए। वे एकत्र हुए और उन्होंने उनके विरुद्ध युद्ध करने का निश्चय किया।

[13]अत: इस्राएल के लोगों ने कुछ व्यक्तियों को रूबेन, गाद और मनश्शे के लोगों से बातें करने के लिये भेजा। इनका प्रमुख याजक एलीआज़र का पुत्र पीनहास था। [14]उन्होंने वहाँ के परिवार समूहों के दस प्रमुखों को भी भेजा। शीलो में ठहरे इस्राएल के परिवार समूहों में हर एक परिवार से एक व्यक्ति था।

[15]इस प्रकार ये ग्यारह व्यक्ति गिलाद गये। वे रूबेन, गाद और मनश्शे के लोगों से बातें करने गये। ग्यारह व्यक्तियों ने उनसे कहा: [16]"इस्राएल के सभी लोग तुमसे पूछते हैं: तूने इस्राएल के परमेश्वर के विरुद्ध यह क्यों किया? तुम यहोवा के विपरीत कैसे हो गये? तुम लोगों ने अपने लिये वेदी क्यों बनाई? तुम जानते हो कि यह परमेश्वर की शिक्षा के विरुद्ध है! [17]पोर नामक स्थान को याद करो।* हम लोग उस पाप के कारण अब भी कष्ट सहते हैं। इस बड़े पाप के लिये परमेश्वर ने इस्राएल के बहुत से लोगों को बुरी तरह बीमार कर दिया था और हम लोग अब भी उस बीमारी के कारण कष्ट सह रहे हैं। [18]और अब तुम वही कर रहे हो! तुम यहोवा के विरुद्ध जा रहे हो! क्या तुम यहोवा का अनुसरण करने से मना करोगे? यदि तुम जो कर रहे हो, बन्द नहीं करते तो यहोवा इस्राएल के हर एक व्यक्ति पर क्रोधित होगा।

[19]"यदि तुम्हारा प्रदेश उपासना के लिये उपयुक्त नहीं है तो हमारे प्रदेश में आओ। यहोवा का तम्बू हमारे प्रदेश में है। तुम हमारे कुछ प्रदेश ले सकते हो और उनमें रह सकते हो। किन्तु यहोवा के विरुद्ध मत होओ। अन्य वेदी मत बनाओ। हम लोगों के पास पहले से ही अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी मिलापवाले तम्बू में है।

[20]"जेरह के पुत्र आकान को याद करो। आकान अपने पाप के कारण मरा। उसने उन चीज़ों के सम्बन्ध में आदेश का पालन करने से इन्कार किया, जिन्हें नष्ट किया जाना था। उस एक व्यक्ति ने परमेश्वर के नियम को तोड़ा, किन्तु इस्राएल के सभी लोगों को दण्ड मिला। आकान अपने पाप के कारण मरा। किन्तु बहुत से अन्य लोग भी मरे।"

[21]रूबेन, गाद और मनश्शे के परिवार समूह के लोगों ने ग्यारह व्यक्तियों को उत्तर दिया। उन्होंने यह कहा, [22]"हमारा परमेश्वर यहोवा है! हम लोग फिर दुहराते हैं कि हमारा परमेश्वर यहोवा है* और परमेश्वर जानता है कि हम लोगों ने यह क्यों किया। हम लोग चाहते हैं कि तुम लोग भी यह जानो। तुम लोग उसका निर्णय कर सकते हो जो हम लोगों ने किया है। यदि तुम लोगों को

पोर ... याद करो देखें गिनती 25:1–18

हमारा ... परमेश्वर यहोवा है या "यहोवा सच्चा परमेश्वर है! यहोवा सच्चा परमेश्वर हैं!" शाब्दिक, "अल इलाहिम यहवा, अल इलाहिम यहवा।"

यह विश्वास है कि हम लोगों ने पाप किया है तो तुम लोग हमें अभी मार सकते हो। [23]यदि हम ने परमेश्वर के नियम को तोड़ा है तो हम कहेंगे कि यहोवा स्वयं हमें सजा दे। क्या तुम लोग यह सोचते हो कि हम लोगों ने इस वेदी को होमबलि चढ़ाने और अन्नबलि तथा मेलबलि चढ़ाने के लिये बनाया है? [24]नहीं! हम लोगों ने इसे इस उद्देश्य से नहीं बनाया है। हम लोगों ने ये वेदी क्यों बनाई है? हम लोगों को भय था कि भविष्य में तुम्हारे लोग हम लोगों को अपने राष्ट का एक भाग नहीं समझेंगे। तब तुम्हारे लोग यह कहेंगे, तुम लोग इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की उपासना नहीं कर सकते। [25]परमेश्वर ने हम लोगों को यरदन नदी की दूसरी ओर का प्रदेश दिया है। इसका अर्थ यह हुआ कि यरदन नदी को सीमा बनाया है। हमें डर है कि जब तुम्हारे बच्चे बड़े होकर इस प्रदेश पर शासन करेंगे तब वे हमें भूल जाएंगे, कि हम भी तुम्हारे लोग हैं। वे हम से कहेंगे, 'हे रूबेन और गाद के लोगों तुम इस्राएल के भाग नहीं हो!' तब तुम्हारे बच्चे हमारे बच्चों को यहोवा की उपासना करने से रोकेंगे। इसलिये तुम्हारे बच्चे हम लोगों के बच्चों को यहोवा की उपासना करने से रोक देंगे।

[26]"इसलिए हम लोगों ने इस वेदी को बनाया। किन्तु हम लोग यह योजना नहीं बना रहे हैं कि इस पर होमबलि चढ़ाएँगे और बलियाँ देंगे। [27]हम लोगों ने जिस सच्चे उद्देश्य के लिये वेदी बनाई थी, वह अपने लोगों को यह दिखाना मात्र था कि हम उस परमेश्वर की उपासना करते हैं जिसकी तुम लोग उपासना करते हो। यह वेदी तुम्हारे लिये, हम लोगों के लिये और भविष्य में हम लोगों के बच्चों के लिये इस बात का प्रमाण होगा कि हम लोग परमेश्वर की उपासना करते हैं। हम लोग यहोवा को अपनी बलियाँ, अन्नबलि और मेलबलि चढ़ाते हैं। हम चाहते थे कि तुम्हारे बच्चे बढें और जानें कि हम लोग भी तुम्हारी तरह इस्राएल के लोग है। [28]भविष्य में यदि ऐसा होता है कि तुम्हारे बच्चे कहें कि हम लोग इस्राएल से सम्बन्ध नहीं रखते तो हमारे बच्चे तब कह सकेंगे कि ध्यान दें! हमारे पूर्वजों ने, जो हम लोगों से पहले थे, एक वेदी बनाई थी। यह वेदी ठीक वैसी ही है जैसी पवित्र तम्बू के सामने यहोवा की वेदी है। हम लोग इस वेदी का उपयोग बलि देने के लिये नहीं करते–यह इस बात का संकेत करता है कि हम लोग इस्राएल के एक भाग हैं।'

[29]"सत्य तो यह है, कि हम लोग यहोवा के विरुद्ध नहीं होना चाहते। हम लोग अब उसका अनुसरण करना छोड़ना नहीं चाहते। हम लोग जानते हैं कि एक मात्र सच्ची वेदी वही है जो पवित्र तम्बू के सामने है। वह वेदी, हमारे परमेश्वर यहोवा की है।"

[30]याजक पीनहास और दस प्रमुखों ने रूबेन, गाद और मनश्शे के लोगों द्वारा कही गई यह बात सुनी। वे इस बात से सन्तुष्ट थे कि लोग सच बोल रहे थे। [31]इसलिए याजक एलीआज़र के बारे में पीनहास ने कहा, "अब हम लोग समझते हैं कि यहोवा हमारे साथ है और हम लोग जानते हैं कि तुम में से कोई भी उसके विपरीत नहीं गए हो। हम लोग प्रसन्न हैं कि इस्राएल के लोगों को यहोवा से दण्ड नहीं मिलेगा।"

[32]तब पीनहास और प्रमुखों ने उस स्थान को छोड़ा और वे अपने घर चले गए। उन्होंने रूबेन और गाद के लोगों को गिलाद प्रदेश में छोड़ा और कनान को लौट गये। वे लौटकर इस्राएल के लोगों के पास गये और जो कुछ हुआ था, उनसे कहा। [33]इस्राएल के लोग भी सन्तुष्ट हो गए। वे प्रसन्न थे और उन्होंने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। उन्होंने निर्णय लिया कि वे रूबेन, गाद और मनश्शे के लोगों के विरुद्ध जाकर नहीं लड़ेंगे। उन्होंने उन प्रदेशों को नष्ट न करने का निर्णय किया।

[34]और रूबेन और गाद के लोगों ने कहा, "यह वेदी सभी लोगों को यह बताती है कि हमें यह विश्वास है कि यहोवा परमेश्वर है और इसलिए उन्होंने वेदी का नाम 'प्रमाण' रखा।"

यहोशू लोगों को उत्साहित करता है

23 यहोवा ने इस्राएल को उसके चारों ओर के उनके शत्रुओं से शान्ति प्रदान की। यहोवा ने इस्राएल को सुरक्षित बनाया। वर्ष बीते और यहोशू बहुत बूढ़ा हो गया। [2]इस समय यहोशू ने इस्राएल के सभी प्रमुखों, शासकों और न्यायाधीशों की बैठक बुलाई। यहोशू ने कहा, "मैं बुहत बूढ़ा हो गया हूँ। [3]तुमने वह देखा जो यहोवा ने हमारे शत्रुओं के साथ किया। उसने यह हमारी सहायता के लिये किया। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे लिये युद्ध किया। [4]याद रखो मैंने तुम्हें यह कहा था कि तुम्हारे लोग उस प्रदेश को पा सकते हैं, जो यरदन नदी और पश्चिम के बड़े सागर के मध्य है। यह वही प्रदेश है

जिसे देने का वचन मैंने दिया था, किन्तु अब तक तुम उस प्रदेश का थोड़ा सा भाग ही ले पाए हो। [5]तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वहाँ के निवासियों को उस स्थान को छोड़ने के लिये विवश करेगा। तुम उस प्रदेश में प्रवेश करोगे और यहोवा वहाँ के निवासियों को उस प्रदेश को छोड़ने के लिए विवश करेगा। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुमको यह वचन दिया है।

[6]"तुम्हें उन सब बातों का पालन करने में सावधान रहना चाहिए जो यहोवा ने हमे आदेश दिया है। उस हर बात, का पालन करो जो मूसा के व्यवस्था की किताब में लिखा है। उस व्यवस्था के विपरीत न जाओ। [7]हम लोगों के बीच कुछ ऐसे लोग भी हैं जो इस्राएल के लोग नहीं हैं। वे लोग अपने देवताओं की पूजा करते हैं। उन लोगों के मित्र मत बनो। उन देवताओं की सेवा, पूजा न करो [8]तुम्हें सदैव अपने परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करना चाहिये। तुमने यह भूतकाल में किया है और तुम्हें यह करते रहना चाहिये।

[9]"यहोवा ने अनेक शक्तिशाली राष्टों को हराने में तुम्हारी सहायता की है। यहोवा ने उन लोगों को अपना देश छोड़ने को विवश किया है। कोई भी राष्ट्र तुमको हराने में समर्थ न हो सका। [10]यहोवा की सहायता से इस्राएल का एक व्यक्ति एक हजार व्यक्तियों को हरा सकता है। इसका कारण यह है कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे लिये युद्ध करता है। यहोवा ने यह करने का वचन दिया है। [11]इसलिए तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा की भक्ति करते रहना चाहिए। अपनी पूरी आत्मा से उससे प्रेम करो।

[12]"यहोवा के मार्ग से कभी दूर न जाओ। उन अन्य लोगों से मित्रता न करो जो अभी तक तुम्हारे बीच तो हैं किन्तु जो इस्राएल के अंग नहीं हैं। उनमें से किसी के साथ विवाह न करो। किन्तु यदि तुम इन लोगों के मित्र बनोगे, [13]तब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओं को हराने में तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। इस प्रकार ये लोग तुम्हारे लिये एक जाल बन जायेंगे। परन्तु वे तुम्हारी पीठ के लिए कोड़े और तुम्हारी आँख के लिए काँटा बन जायेंगे। और तुम इस अच्छे देश से विदा हो जाओगे। यह वही प्रदेश है जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, किन्तु यदि तुम इस आदेश को नहीं मानोगे तो तुम अच्छे देश को खो दोगे।

[14]"यह करीब–करीब मेरे मरने का समय है। तुम जानते हो और सचमुच विश्वास करते हो कि यहोवा ने तुम्हारे लिये बहुत बड़े काम किये हैं। तुम जानते हो कि वह अपने दिये वचनों में से किसी को पूरा करने में असफल नहीं रहा है। यहोवा ने उन सभी वचनों को पूरा किया है, जो उसने हमें दिये है। [15]वे सभी अच्छे वचन जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने हमको दिये हैं, पूरी तरह सच हुए हैं। किन्तु यहोवा, उसी तरह अन्य वचनों को भी सत्य बनाएगा। उसने चेतावनी दी है कि यदि तुम पाप करोगे तब तुम्हारे ऊपर विपत्तियाँ आएंगी। उसने चेतावनी दी है कि वह तुम्हें उस देश को छोड़ने के लिये विवश करेगा जिसे उसने तुमको दिया है। [16]यह घटित होगा, यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के साथ की गई वाचा का पालन करने से इन्कार करोगे। यदि तुम अन्य देवताओं के पास जाओगे और उनकी सेवा करोगे तो तुम इस देश को खो दोगे। यदि तुम ऐसा करोगे तो यहोवा तुम पर बहुत क्रोधित होगा। तब तुम इस अच्छे देश से शीघ्रता से चले जाओगे जिसे उसने तुमको दिया है।"

यहोशू अलविदा कहता है

24 तब इस्राएल के सभी परिवार समूह शकेम में इकट्ठे हुए। यहोशू ने उन सभी को वहाँ एक साथ बुलाया। तब यहोशू ने इस्राएल के प्रमुखों, शासकों और न्यायाधीशों को बुलाया। ये व्यक्ति परमेश्वर के सामने खड़े हुए।

[2]तब यहोशू ने सभी लोगों से बातें की। उसने कहा, "मैं वह कह रहा हूँ जो यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर तुमसे कह रहा है:

> बहुत समय पहले तुम्हारे पूर्वज परात नदी की दूसरी ओर रहते थे। मैं उन व्यक्तियों के विषय में बात कर रहा हूँ, जो इब्राहीम और नाहोर के पिता तेरह की तरह थे। उन दिनों तुम्हारे पूर्वज अन्य देवताओं की पूजा करते थे। [3]किन्तु मैं अर्थात् यहोवा, तुम्हारे पूर्वज इब्राहीम को नदी की दूसरी ओर के प्रदेश से बाहर लाया। मैं उसे कनान प्रदेश से होकर ले गया और उसे अनेक सन्तानें दीं। मैंने इब्राहीम को इसहाक नामक पुत्र दिया [4]और मैंने इसहाक को याकूब और एसाव नामक दो पुत्र दिये। मैंने सेईर पर्वत के चारों ओर के प्रदेश को एसाव को

दिया। किन्तु याकूब और उसकी सन्तानें वहाँ नहीं रहीं। वे मिस्र देश में रहने के लिए चले गए। [5]तब मैंने मूसा और हारून को मिस्र भेजा। मैं उनसे यह चाहता था कि मेरे लोगों को मिस्र से बाहर लाएँ। मैंने मिस्र के लोगों पर भयंकर विपत्तियाँ पड़ने दीं। तब मैं तुम्हारे लोगों को मिस्र से बाहर लाया। [6]इस प्रकार मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र के बाहर लाया। वे लाल सागर तक आए और मिस्र के लोग उनका पीछा कर रहे थे। उनके साथ रथ और घुड़सवार थे। [7]इसलिये लोगों ने मुझसे अर्थात् यहोवा से सहायता माँगी और मैंने मिस्र के लोगों पर बहुत बड़ी विपत्ति आने दी। मैंने अर्थात् यहोवा ने समूद्र में उन्हें डुबा दिया। तुम लोगों ने स्वयं देखा कि मैंने मिस्र की सेना के साथ क्या किया। उसके बाद तुम मरुभूमि में लम्बे समय तक रहे। [8]तब मैं तुम्हे एमोरी लोगों के प्रदेश में लाया। यह यरदन नदी के पूर्व में था। वे लोग तुम्हारे विरुद्ध लड़े, किन्तु मैंने तुम्हे उनको पराजित करने दिया। मैंने तुम्हें उन लोगों को नष्ट करने के लिए शक्ति दी। तब तुमने उस देश पर अधिकार किया। [9]तब सिप्पोर के पुत्र मोआब के राजा बालाक ने इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़ने की तैयारी की। राजा ने बोर के पुत्र बिलाम को बुलाया। उसने बिलाम से तुमको अभिशाप देने को कहा। [10]किन्तु मैंने अर्थात् तुम्हारे यहोवा ने बिलाम की एक न सुनी। इसलिए बिलाम ने तुम लोगों के लिये अच्छी चीज़ें होने की याचना की! उसने तुम्हें मुक्त भाव से आशीर्वाद दिये। इस प्रकार मैंने तुम्हें बालाक से बचाया।

[11]तब तुमने यरदन नदी के पार तक यात्रा की। तुम लोग यरीहो प्रदेश में आए। यरीहो नगर में रहने वाले लोग तुम्हारे विरुद्ध लड़े। एमोरी, परिज्जी, कनानी, हित्ती, गिर्गाशी, हिव्वी, और यबूसी लोग भी तुम्हारे विरुद्ध लड़े। किन्तु मैंने तुम्हें उन सबको हराने दिया। [12]जब तुम्हारी सेना आगे बढ़ी तो मैंने उनके आगे बर्रे भेजी। इन बर्रों के समूह ने लोगों को भागने के लिये विवश किया। इसलिये तुम लोगों नें अपनी तलवारों और धनुष का उपयोग किये बिना ही उन पर अधिकार कर लिया। [13]यह मैं, ही था, जिसने तुम्हें वह प्रदेश दिया! मैंने तुम्हें वह प्रदेश दिया जहाँ तुम्हें कोई काम नहीं करना पड़ा। मैंने तुम्हें नगर दिये जिन्हें तुम्हें बनाना नहीं पड़ा। अब तुम उस प्रदेश और उन नगरों में रहते हो। तुम्हारे पास अंगूर की बेलें और जैतून के बाग हैं, किन्तु उन बागों को तुम ने नहीं लगाया था।

[14]तब यहोशू ने लोगों से कहा, "अब तुम लोगों ने यहोवा का कथन सुन लिया है। इसलिये तुम्हें यहोवा का सम्मान करना चाहिए और उसकी सच्ची सेवा करनी चाहिए। उन असत्य देवताओं को फेंक दो जिन्हें तुम्हारे पूर्वज पूजते थे। यह सब कुछ बहुत समय पहले फरात नदी की दूसरी ओर, मिस्र में भी हुआ था। अब तुम्हें यहोवा की सेवा करनी चाहिये।

[15]"किन्तु संभव है कि तुम यहोवा की सेवा करना नहीं चाहते। तुम्हें स्वयं ही आज यह चुन लेना चाहिए। तुम्हें आज निश्चय कर लेना चाहिये कि तुम किसकी सेवा करोगे। तुम उन देवताओं की सेवा करोगे जिनकी सेवा तुम्हारे पूर्वज उस समय करते थे जब वे नदी की दूसरी ओर रहते थे? या तुम उन एमोरी लोगों के देवताओं की सेवा करना चाहते हो जो यहाँ रहते थे? किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं क्या करूँगा। जहाँ तक मेरी और मेरे परिवार की बात है, हम यहोवा की सेवा करेंगे!"

[16]तब लोगों ने उत्तर दिया, "नहीं, हम यहोवा का अनुसरण करना कभी नहीं छोड़ेंगे। नहीं, हम लोग कभी अन्य देवताओं की सेवा नहीं करेंगे! [17]हम जानते हैं कि वह परमेश्वर यहोवा था जो हमारे लोगों को मिस्र से लाया। हम लोग उस देश में दास थे। किन्तु यहोवा ने हम लोगों के लिये वहाँ बड़े-बड़े काम किये। वह उस देश से हम लोगों को बाहर लाया और उस समय तक हमारी रक्षा करता रहा जब तक हम लोगों ने अन्य देशों से होकर यात्रा की। [18]तब यहोवा ने उन एमोरी लोगों को हराने में हमारी सहायता की जो उस प्रदेश में रहते थे जिसमें आज हम रहते हैं। इसलिए हम लोग यहोवा की सेवा करते रहेंगे। क्यों? क्योंकि वह हमारा परमेश्वर है।"

[19]तब यहोशू ने कहा, "तुम यहोवा की पर्याप्त सेवा अच्छी तरह नहीं कर सकोगे। यहोवा, पवित्र परमेश्वर है और परमेश्वर अपने लोगों द्वारा अन्य देवताओं की पूजा से घृणा करता है। यदि तुम उस तरह परमेश्वर के विरुद्ध जाओगे तो परमेश्वर तुमको क्षमा नहीं करेगा। [20]तुम

यहोवा को छोड़ोगे और अन्य देवताओं की सेवा करोगे तब यहोवा तुम पर भंयकर विपत्तियाँ लायेगा। यहोवा तुमको नष्ट करेगा। यहोवा तुम्हारे लिये अच्छा रहा है, किन्तु यदि तुम उसके विरुद्ध चलते हो तो वह तुम्हें नष्ट कर देगा।"

[21]किन्तु लोगों ने यहोशू से कहा, "नहीं! हम यहोवा की सेवा करेंगे।"

[22]तब यहोशू ने कहा, "स्वयं अपने और अपने साथ के लोगों के चारों ओर देखो। क्या तुम जानते हो और स्वीकार करते हो कि तुमने यहोवा की सेवा करना चुना है? क्या तुम सब इसके गवाह हो?"

लोगों ने उत्तर दिया, "हाँ, यह सत्य है! हम लोग ध्यान रखेंगे कि हम लोगों ने यहोवा की सेवा करना चुना है।"

[23]तब यहोशू ने कहा, "इसलिए अपने बीच जो असत्य देवता रखते हो उन्हें फेंक दो। अपने पूरे हृदय से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो।"

[24]तब लोगों ने यहोशू से कहा, "हम लोग यहोवा, अपने परमेश्वर की सेवा करेंगे। हम लोग उसकी आज्ञा का पालन करेंगे।"

[25]इसलिये यहोशू ने लोगों के लिये उस दिन एक वाचा की। यहोशू ने इस वाचा को उन लोगों द्वारा पालन करने के लिये एक नियम बना दिया। यह शकेम नामक नगर में हुआ। [26]यहोशू ने इन बातों को परमेश्वर के व्यवस्था की किताब में लिखा। तब यहोशू एक बड़ी शिला लाया। यह शिला इस वाचा का प्रमाण थी। उसने उस शिला को यहोवा के पवित्र तम्बू के निकट बांज के पेड़ के नीचे रखा।

[27]तब यहोशू ने सभी लोगों से कहा, "यह शिला तुम्हें उसे याद दिलाने में सहायक होगी जो कुछ हम लोगों ने आज कहा है। यह शिला तब यहाँ थी जब परमेश्वर हम लोगों से बात कर रहा था। इसलिये यह शिला कुछ ऐसी रहेगी जो तुम्हें यह याद दिलाने में सहायता करेगी कि आज के दिन क्या हुआ था। यह शिला तुम्हारे प्रति एक साक्षी बनी रहेगी। यह तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के विपरीत जाने से रोकेगी।"

[28]तब यहोशू ने लोगों से अपने घरों को लौट जाने को कहा तो हर एक व्यक्ति अपने प्रदेश को लौट गया।

यहोशू की मृत्यु

[29]उसके बाद नून का पुत्र यहोशू मर गया। वह एक सौ दस वर्ष का था। [30]यहोशू अपनी भूमि तिम्नत्सेरह में दफनाया गया। यह गाश पर्वत के उत्तर में एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में था।

[31]इस्राएल के लोगों ने यहोशू के जीवन काल में यहोवा की सेवा की और यहोशू के मरने के बाद भी, लोग यहोवा की सेवा करते रहे। इस्राएल के लोग तब तक यहोवा की सेवा करते रहे जब तक उनके नेता जीवित रहे। ये वे नेता थे, जिन्होंने वह सब कुछ देखा था जो यहोवा ने इस्राएल के लिये किया था।

यूसुफ दफनाया गया

[32]जब इस्राएल के लोगों ने मिस्र छोड़ा तब वे यूसुफ के शरीर की हड्डियाँ अपने साथ लाए थे। इसलिए लोगों ने यूसुफ की हड्डियाँ शकेम में दफनाई। उन्होंने हड्डियों को उस प्रदेश के क्षेत्र में दफनाया जिसे याकूब ने शकेम के पिता हमोर के पुत्रों से खरीदा था। याकूब ने उस भूमि को चाँदी के सौ सिक्कों से खरीदा था। यह प्रदेश यूसुफ की सन्तानों का था।

[33]हारून का पुत्र एलीआज़ार मर गया। वह गिबा में दफनाया गया। गिबा एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में एक नगर था। वह नगर एलीआज़र के पुत्र पीनहास को दिया गया था।

न्यायियों

यहूदा के लोग कनानियों से युद्ध करते हैं

1 यहोशू मर गया। तब इस्राएल के लोगों ने यहोवा से प्रार्थना की। उन्होंने कहा, "हमारे परिवार समूह में से कौन प्रथम जाने वाला तथा कनानी लोगों से हम लोगों के लिये युद्ध करने वाला होगा?"

[2]यहोवा ने इस्राएली लोगों से कहा, "यहूदा का परिवार समूह जाएगा। मैं उनको इस प्रदेश को प्राप्त करने दूँगा।"

[3]यहूदा के लोगों ने शिमोन परिवार समूह के अपने भाइयों से सहायता मांगी। यहूदा के लोगों ने कहा, "भाइयों, यहोवा ने हम सभी को कुछ प्रदेश देने का वचन दिया है। यदि तुम लोग हम लोगों के प्रदेश के लिए युद्ध करने में हमारे साथ आओगे और सहायता करोगे तो हम लोग तुम्हारे प्रदेश के लिये तुम्हारे साथ जायेंगे और युद्ध करेंगे।" शिमोन के लोग यहूदा के अपने भाइयों के युद्ध में सहायता करने को तैयार हो गए।

[4]यहोवा ने यहूदा के लोगों को कनानियों और परिज्जी लोगों को हराने में सहायता की। यहूदा के लोगों ने बेजेक नगर में दस हजार व्यक्तियों को मार डाला। [5]बेजेक नगर में यहूदा के लोगों ने अदोनीबेजेक के शासक को पाया* और उससे युद्ध किया। यहूदा के लोगों ने कनानियों और परिज्जी लोगों को हराया।

[6]अदोनीबेजेक के शासक ने भाग निकलने का प्रयत्न किया। किन्तु यहूदा के लोगों ने उसका पीछा किया और उसे पकड़ लिया। जब उन्होंने उसे पकड़ा तब उन्होंने उसके हाथ और पैर के अंगूठों को काट डाला। [7]तब अदोनीबेजेक के शासक ने कहा, "मैंने सत्तर राजाओं के हाथ और पैर के अंगूठे काटे और उन राजाओं को वही भोजन करना पड़ा जो मेरी मेज से टुकड़ों में गिरा। अब यहोवा ने मुझे उसका बदला दिया है जो मैंने उन राजाओं के साथ किया था।" यहूदा के लोग बेजेक के शासक को यरूशलेम ले गए और वह वहीं मरा।

[8]यहूदा के लोग यरूशलेम के विरुद्ध लड़े और उस पर अधिकार कर लिया। यहूदा के लोगों ने यरूशलेम के लोगों को मारने के लिये तलवार का उपयोग किया। उन्होंने नगर को जला दिया। [9]उसके बाद यहूदा के लोग कुछ अन्य कनानी लोगों से युद्ध करने के लिए गए। वे कनानी पहाड़ी प्रदेशों, नेगेव और समुद्र के किनारे की पहाड़ियों में रहते थे।

[10]तब यहूदा के लोग उन कनानी लोगों के विरुद्ध लड़ने गए जो हेब्रोन नगर में रहते थे। (हेब्रोन को किर्यतर्बा कहा जाता था।) यहूदा के लोगों ने शेशै, अहीमन और तल्मै* कहे जाने वाले लोगों को हराया।

कालेब और उसकी पुत्री

[11]यहूदा के लोगों ने उस स्थान को छोड़ा। वे दबीर नगर, वहाँ के लोगों के विरुद्ध युद्ध करने गए। (दबीर को किर्यत्सेपेर कहा जाता था।) [12]यहूदा के लोगों द्वारा युद्ध आरम्भ करने के पहले कालेब ने लोगों से एक प्रतिज्ञा की। कालेब ने कहा, "मैं अपनी पुत्री अकसा को उस व्यक्ति को पत्नी के रूप में दूँगा जो किर्यत्सेपेर नगर पर आक्रमण करता है और उस पर अधिकार करता है।"

[13]कालेब का एक छोटा भाई था जिसका नाम कनज था। कनज का एक पुत्र ओत्नीएल नाम का था। (ओत्नीएल कालेब का भतीजा था।) ओत्नीएल ने किर्यत्सेपेर नगर को जीत लिया। इसलिए कालेब ने अपनी पुत्री अकसा को पत्नी के रूप में ओत्नीएल को दिया।

अदोनीबेजेक के शासक को पाया इसे व्यक्ति का नाम भी समझा जा सकता है।

शेशै, अहीमन, तल्मै ये तीनों व्यक्ति अनाक नामक व्यक्ति के पुत्र थे। वे दानव समझे जाते थे। देखें गिनती 13:22

[14]जब अकसा ओत्नीएल के पास आई तब ओत्नीएल ने उससे कहा* कि वह अपने पिता से कुछ भूमि मांगे। अकसा अपने पिता के पास गई। अत: वह अपने गधे से उतरी और कालेब ने पूछा, "क्या कठिनाई है?"

[15]अकसा ने कालेब को उत्तर दिया, "आप मुझे आशीर्वाद दें।* आपने मुझे नेगेव की सूखी मरुभूमि दी है। कृपया मुझे कुछ पानी के सोते वाली भूमि दें।" अत: कालेब ने उसे वह दिया जो वह चाहती थी। उसने उसे उस भूमि के ऊपर और नीचे के पानी के सोते दे दिये।

[16]केनी लोगों ने ताड़वृक्षों के नगर (यरीहो) को छोड़ा और यहूदा के लोगों के साथ गए। वे लोग यहूदा की मरुभूमि में वहाँ के लोगों के साथ रहने गए। यह नेगेव में अराद नगर के पास था। (केनी लोग मूसा के ससुर के परिवार से थे।)

[17]कुछ कनानी लोग सपत नगर में भी रहते थे। इसलिए यहूदा के लोग और शिमोन के परिवार समूह के लोगों ने उन कनानी लोगों पर आक्रमण किया। उन्होंने नगर को पूर्णत: नष्ट कर दिया। इसलिये उन्होंने नगर का नाम होर्मा* रखा।

[18]यहूदा के लोगों ने अज्जा के नगर और उसके चारों ओर के छोटे नगरों पर भी अधिकार किया। यहूदा के लोगों ने अशकलोन और एक्रोन नगरों और उनके चारों ओर के छोटे नगरों पर भी अधिकार किया।

[19]यहोवा उस समय यहूदा के लोगों के साथ था, जब वे युद्ध कर रहे थे। उन्होंने पहाड़ी प्रदेश की भूमि पर अधिकार किया। किन्तु यहूदा के लोग घाटियों की भूमि लेने में असफल रहे क्योंकि वहाँ के निवासियों के पास लोहे के रथ थे।

[20]मूसा ने कालेब को हेब्रोन के पास की भूमि देने का वचन दिया था। अत: वह भूमि कालेब के परिवार समूह को दी गई। कालेब के लोगों ने अनाक के तीन पुत्रों को वह स्थान छोड़ने को विवश किया।

बिन्यामीन लोग यरूशलेम में बसते हैं।

[21]बिन्यामीन परिवार के लोग यबूसी लोगों को यरूशलेम छोड़ने के लिये विवश न कर सके। उस समय से लेकर अब तक यबूसी लोग यरूशलेम में बिन्यामीन लोगों के साथ रहते आए हैं।

यूसुफ के लोग बेतेल पर अधिकार जमाते हैं

[22-23]यूसुफ के परिवार समूह के लोग भी बेतेल नगर के विरुद्ध लड़ने गए। (बेतेल, लूज कहा जाता था।) यहोवा यूसुफ के परिवार समूह के लोगों के साथ था। यूसुफ के परिवार के लोगों ने कुछ जासूसों को बेतेल नगर को भेजा। (इन व्यक्तियों ने बेतेल नगर को हराने के उपाय का पता लगाया।) [24]जब वे जासूस बेतेल नगर को देख रहे थे तब उन्होंने एक व्यक्ति को नगर से बाहर आते देखा। जासूसों ने उस व्यक्ति से कहा, "हम लोगों को नगर में जाने का गुप्त मार्ग बताओ। हम लोग नगर पर आक्रमण करेंगे। किन्तु यदि तुम हमारी सहायता करोगे तो हम तुम्हें चोट नहीं पहुँचायेंगे।"

[25]उस व्यक्ति ने जासूसों को नगर में जाने का गुप्त मार्ग बताया। यूसुफ के लोगों ने बेतेल के लोगों को मारने के लिये अपनी तलवार का उपयोग किया। किन्तु उन्होंने उस व्यक्ति को चोट नहीं पहुँचाई जिसने उन्हें सहायता दी थी और उन्होंने उसके परिवार के लोगों को चोट नहीं पहुँचाई। उस व्यक्ति और उसके परिवार को स्वतन्त्र जाने दिया गया। [26]वह व्यक्ति उस प्रदेश में गया जहाँ हित्ती लोग रहते थे और वहाँ उसने एक नगर बसाया। उसने उस नगर का नाम लूज रखा और वह आज भी वहाँ है।

अन्य परिवार समूह कनानियों से युद्ध करते हैं

[27] कनानी लोग बेतशान, तानाक, दोर, यिबलाम, मगिद्दो और उनके चारों ओर के छोटे नगरों में रहते थे। मनश्शे के परिवार समूह के लोग उन लोगों को उन नगरों को छोड़ने के लिये विवश नहीं कर सके थे। इसलिए कनानी लोग वहाँ टिके रहे। उन्होंने अपना घर छोड़ने से इन्कार कर दिया। [28]बाद में इस्राएल के लोग अधिक शक्तिशाली हुए और कनानी लोगों को दासों की तरह अपने लिए काम करने के लिये विवश किया। किन्तु इस्राएल के लोग सभी कनानी लोगों से उनका प्रदेश न छुड़वा सके। [29]यही बात एप्रैम के परिवार समूह के साथ हुई। कनानी लोग

ओत्नीएल ... कहा या "अकसा ने ओत्नीएल से कहा।"
आप ... आशीर्वाद दें या "कृपया मेरा सत्कार करें" या "मुझे जल की एक धारा दें।"
होर्मा इस नाम का अर्थ है, "पूर्णत: नष्ट करना।"

गेजेर में रहते थे और एप्रैम के लोग सभी कनानी लोगों से उनका देश न छुड़वा सके। इसलिए कनानी लोग एप्रैम के लोगों के साथ गेजेर में रहते चले आए।

[30]जबूलून के परिवार समूह के साथ भी यही बात हुई। कित्रोन और नहलोल नगरों मे कुछ कनानी लोग रहते थे। जबूलून के लोग उन लोगों से उनका देश न छुड़वा सके। वे कनानी लोग टिके रहे और जबूलून लोगों के साथ रहते चले आए। किन्तु जबूलून के लोगों ने उन लोगों को दासों की तरह काम करने को विवश किया।

[31]आशेर के परिवार समूह के साथ भी यही बात हुई। आशेर के लोग उन लोगों से अक्को, सीदोन, अहलाब, अकजीब, हेलबा, अपीक और रहोब नगरों को न छुड़वा सके। [32]आशेर के लोग कनानी लोगों से अपना देश न छुड़वा सके। इसलिए कनानी लोग आशेर के लोगों के साथ रहते चले आए।

[33]नप्ताली के परिवार समूह के साथ भी यही बात हुई। नप्ताली परिवार के लोग उन लोगों से बेतशेमेश और बेतनात नगरों को न छुड़वा सके। इसलिए नप्ताली के लोग उन नगरों में उन लोगों के साथ रहते चले आए। वे कनानी लोग नप्ताली लोगों के लिए दासों की तरह काम करते रहे।

[34]एमोरी लोगो ने दान के परिवार समूह के लोगों को पहाड़ी प्रदेश में रहने के लिये विवश कर दिया। दान के लोगों को पहाड़ियों में ठहरना पड़ा क्योंकि एमोरी लोग उन्हें घाटियों में उतर कर नहीं रहने देते थे। [35]एमोरी लोगों ने हेरेस पर्वत, अय्यलोन तथा शालबीम में ठहरने का निश्चय किया। बाद में, यूसुफ का परिवार समूह शक्तिशाली हो गया। तब उन्होंने एमोरी लोगों से दासों की तरह काम लिया। [36]एमोरी लोगों का प्रदेश बिच्छू दर्रे से सेला और सेला के परे पहाड़ी प्रदेश तक था।

बोकीम में यहोवा का दूत

2 यहोवा का दूत गिलगाल नगर से बोकीम नगर को गया। दूत ने यहोवा का एक सन्देश इस्राएल के लोगों को दिया। सन्देश यह था: "तुम मिस्र में दास थे। किन्तु मैंने तुम्हें स्वतन्त्र किया और मैं तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। मैं तुम्हें इस प्रदेश में लाया जिसे तुम्हारे पूर्वजों को देने के लिये मैंने प्रतिज्ञा की थी। मैंने कहा, मैं तुमसे अपना वाचा कभी नहीं तोड़ूँगा। [2]किन्तु इसके बदले में तुम्हें इस प्रदेश के निवासियों के साथ समझौता नहीं करना होगा। तुम्हें इन लोगों की वेदियाँ नष्ट करनी चाहिए। यह मैंने तुमसे कहा किन्तु तुम लोगों ने मेरी आज्ञा नहीं मानी। तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?

[3]"अब मैं तुमसे यह कहता हूँ, 'मैं इस प्रदेश से अब और लोगों को बाहर नहीं हटाऊँगा। ये लोग तुम्हारे लिये समस्या बनेंगे। वे तुम्हारे लिए बनाया गया जाल बनेंगे। उनके असत्य देवता तुम्हें फँसाने के लिए जाल बनेंगे।'"

[4]स्वर्गदूत इस्राएल के लोगों को यहोवा का सन्देश जब दे चुका, तब लोग जोर से रो पड़े। [5]इसलिए इस्राएल के लोगों ने उस स्थान को बोकीम* नाम दिया जहाँ वे रो पड़े थे। बोकीम में इस्राएल के लोगों ने यहोवा को भेंट चढ़ाई।

आज्ञा का उल्लंघन और पराजय

[6]तब यहोशू ने लोगों से कहा कि वे अपने घर लौट सकते हैं। इसलिए हर एक परिवार समूह अपनी भूमि का क्षेत्र लेने गया और उसमें रहे। [7]इस्राएल के लोगों ने तब तक यहोवा की सेवा की जब तक यहोशू जीवित रहा। उन बुर्ज़ुगों (नेताओं) के जीवन काल में भी वे यहोवा की सेवा करते रहे जो यहोशू के मरने के बाद भी जीवित रहे। इन वृद्ध लोगों ने इस्राएल के लोगों के लिए जो यहोवा ने महान कार्य किये थे, उन्हें देखा था। [8]नून का पुत्र यहोशू, जो यहोवा का सेवक था, एक सौ दस वर्ष की अवस्था में मरा। [9]अत: इस्राएल के लोगों ने यहोशू को दफनाया। यहोशू को भूमि के उस क्षेत्र में दफनाया गया जो उसे दिया गया था। वह भूमि तिम्नथेरेस में थी जो हेरेस के पहाड़ी क्षेत्र में गाश पर्वत के उत्तर में था।

[10]इसके बाद वह पूरी पीढ़ी मर गई तथा नयी पीढ़ी उत्पन्न हुई। यह नयी पीढ़ी यहोवा के विषय में न तो जानती थी और न ही उसे, यहोवा ने इस्राएल के लोगों के लिये क्या किया था, इसका ज्ञान था। [11]इसलिये इस्राएल के लोगों ने पाप किये और बाल* की मूर्तियों की सेवा की। यहोवा ने मनुष्यों को यह पाप करते देखा। [12]यहोवा इस्राएल के लोगों को मिस्र से बाहर लाया था और इन

बोकीम इस नाम का अर्थ "रोते लोग" है।

बाल कनानी लोग विश्वास करते थे कि यह असत्य देवता वर्षा और आँधी लाता है। वे यह भी विश्वास करते थे कि उसने भूमि को अच्छा उपज देने वाला बनाया था।

लोगों के पूर्वजों ने यहोवा की उपासना की थी। किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा का अनुसरण करना छोड़ दिया। इस्राएल के लोगों ने उन लोगों के असत्य देवताओं की पूजा करना आरम्भ की, जो उनके चारों ओर रहते थे। इस काम ने यहोवा को क्रोधित कर दिया। [13]इस्राएल के लोगों ने यहोवा का अनुसरण करना छोड़ दिया और बाल एवं अश्तोरेत* की पूजा करने लगे।

[14]यहोवा इस्राएल के लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ। इसलिए यहोवा ने शत्रुओं को इस्राएल के लोगों पर आक्रमण करने दिया और उनकी सम्पत्ति लेने दी। उनके चारों ओर रहने वाले शत्रुओं को यहोवा ने उन्हें पराजित करने दिया। इस्राएल के लोग अपनी रक्षा अपने शत्रुओं से नहीं कर सके। [15]जब इस्राएल के लोग युद्ध के लिये निकले तो वे पराजित हुए। वे पराजित हुए क्योंकि यहोवा उनके साथ नहीं था। यहोवा ने पहले से इस्राएल के लोगों को चेतावनी दी थी कि वे पराजित होंगे, यदि वे उन लोगों के देवताओं की सेवा करेंगे जो उनके चारों ओर रहते हैं। इस्राएल के लोगों की बहुत अधिक हानि हुई।

[16]तब यहोवा ने न्यायाधीश कहे जाने वाले प्रमुखों को चुना। इन प्रमुखों ने इस्राएल के लोगों को उन शत्रुओं से बचाया जिन्होंने इनकी सम्पत्ति ले ली थी। [17]किन्तु इस्राएल के लोगों ने अपने न्यायाधीशों की एक न सुनी। इस्राएल के लोग यहोवा के प्रति वफादार नहीं थे, वे अन्य देवताओं का अनुसरण कर रहे थे।* अतीतकाल में इस्राएल के लोगों के पूर्वज यहोवा के आदेशों का पालन करते थे किन्तु अब इस्राएल के लोग बदल गये थे और वे यहोवा की आज्ञा का पालन करना छोड़ चुके थे।

[18]इस्राएल के शत्रुओं ने कई बार लोगों के साथ बुरा किया। इसलिए इस्राएल के लोग सहायता के लिये चिल्लाते थे और हर बार यहोवा को लोगों के लिए दुःख होता था। हर बार वह शत्रुओं से लोगों की रक्षा के लिये एक न्यायाधीश भेजता था। इस प्रकार हर बार इस्राएल के लोग अपने शत्रुओं से बच जाते थे। [19]किन्तु जब हर एक न्यायाधीश मर गया, तब इस्राएल के लोगों ने फिर पाप किया और असत्य देवताओं की पूजा आरम्भ की। इस्राएल के लोग बहुत हठी थे, उन्होंने अपने पाप के व्यवहार को बदलने से इन्कार कर दिया।

[20]इस प्रकार यहोवा इस्राएल के लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ और उसने कहा, "इस राष्ट्र ने उस वाचा को तोड़ा है जिसे मैंने उनके पूर्वजों के साथ की थी। उन्होंने मेरी नहीं सुनी। [21]इसलिए मैं और अधिक राष्ट्रों को पराजित नहीं करूँगा, और न ही इस्राएल के लोगों का रास्ता साफ करुँगा। वे राष्ट्र उन दिनों भी उस प्रदेश में थे जब यहोशू मरा था और मैं उन राष्ट्रों को उस प्रदेश में रहने दूँगा। [22]मैं उन राष्ट्रों का उपयोग इस्राएल के लोगों की परीक्षा के लिये करूँगा। मैं यह देखूँगा कि इस्राएल के लोग अपने यहोवा का आदेश वैसे ही मानते हैं अथवा नहीं जैसे उनके पूर्वज मानते थे।" [23]बीते समय में, यहोवा ने उन राष्ट्रों को उन प्रदेशों में रहने दिया था। यहोवा ने शीघ्रता से उन राष्ट्रों को अपना देश छोड़ने नहीं दिया। उसने उन्हें हराने में यहोशू की सेना की सहायता नहीं की।

3

यहाँ उन राष्ट्रों के नाम हैं जिन्हें यहोवा ने बलपूर्वक अपना देश नहीं छुड़वाया। यहोवा इस्राएल के उन लोगों की परीक्षा लेना चाहता था, जो कनान प्रदेश को लेने के लिये होने वाले युद्धों में लड़े नहीं थे। यही कारण था कि उसने उन राष्ट्रों को उस प्रदेश में रहने दिया। [2](उस प्रदेश में यहोवा द्वारा उन राष्ट्रों को रहने देने का कारण केवल यह था कि इस्राएल के लोगों के उन वंशजों को शिक्षा दी जाय जो उन युद्धों में नहीं लड़े थे।) [3]पलिश्ती लोगों के पाँच शासक, सभी कनानी लोग, सीदोन के लोग और हिव्वी लोग जो लबानोन के पहाड़ों में बालहेर्मोन पर्वत से लेकर हमात तक रहते थे। [4]यहोवा ने उन राष्ट्रों को इस्राएल के लोगों की परीक्षा के लिये उस प्रदेश में रहने दिया। वह यह देखना चाहता था कि इस्राएल के लोग यहोवा के उन आदेशों का पालन करेंगे अथवा नहीं, जिन्हें उसने मूसा द्वारा उनके पूर्वजों को दिया था।

[5]इस्राएल के लोग कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोगों के साथ रहते थे। [6]इस्राएल के लोगों ने उन लोगों की पुत्रियों के साथ विवाह करना आरम्भ कर दिया। इस्राएल के लोगों ने अपनी पुत्रियों को उन लोगों के पुत्रों के साथ विवाह करने दिया और इस्राएल के लोगों ने उन लोगों के देवताओं की सेवा की।

अश्तोरेत कनानी लोग समझते थे कि यह असत्य देवी लोगों को बच्चे देने योग्य बनाती है। वह उनकी प्रेम की देवी थी।

यहोवा के ... रहे थे "दूसरे देवताओं के वेश्या की तरह व्यवहार कर रहे थे।"

पहला न्यायाधीश ओत्नीएल

[7]यहोवा ने देखा कि इस्राएल के लोग पाप कर रहे हैं। इस्राएल के लोग यहोवा अपने परमेश्वर को भूल गए और बाल की मूर्तियों एवं अशेरा* की मूर्तियों की सेवा करने लगे। [8]यहोवा इस्राएल के लोगों पर क्रोधित हुआ।यहोवा ने कुशन रिश्आतइम को जो मेसोपोटामिया* का राजा था, इस्राएल के लोगों को हराने और उन पर शासन करने दिया। इस्राएल के लोग उस राजा के शासन में आठ वर्ष तक रहे। [9]किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा को रोकर पुकारा। यहोवा ने एक व्यक्ति को उनकी रक्षा के लिए भेजा। उस व्यक्ति का नाम ओत्नीएल था। वह कनजी का पुत्र था। कनजी कालेब का छोटा भाई था। ओत्नीएल ने इस्राएल के लोगों को बचाया। [10]यहोवा की आत्मा ओत्नीएल पर उतरी और वह इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश हो गया। ओत्नीएल ने इस्राएल के लोगों का युद्ध में संचालन किया। यहोवा ने मेसोपोटामिया के राजा कूशत्रिशातैम को हराने में ओत्नीएल की सहायता की। [11]इस प्रकार वह प्रदेश चालीस वर्ष तक शान्त रहा, जब तक कनजी नामक व्यक्ति का पुत्र ओत्नीएल नहीं मरा।

न्यायाधीश एहूद

[12]यहोवा ने फिर इस्राएल के लोगों को पाप करते देखा। इसलिए यहोवा ने मोआब के राजा एग्लोन को इस्राएल के लोगों को हराने की शक्ति दी। [13]एग्लोन ने इस्राएल के लोगों पर आक्रमण करते समय अम्मोनियों और अमालेकियों को अपने साथ लिया। एग्लोन और उसकी सेना ने इस्राएल के लोगों को हराया और ताड़ के पेंड़ो वाले नगर (यरीहो) से उन्हें निकाल बाहर किया। [14]इस्राएल के लोग अट्ठारह वर्ष तक मोआब के राजा एग्लोन के शासन में रहे।

[15]तब लोगों ने यहोवा से प्रार्थना की और रोकर उसे पुकारा। यहोवा ने इस्राएल के लोगों की रक्षा के लिए एक व्यक्ति को भेजा। उस व्यक्ति का नाम एहूद था। एहूद वामहस्त व्यक्ति था। एहूद बिन्यामीन के परिवार समूह के गेरा नामक व्यक्ति का पुत्र था। इस्राएल के लोगों ने एहूद को मोआब के राजा एग्लोन के लिये कर के रूप में कुछ धन देने को भेजा। [16]एहूद ने अपने लिये एक तलवार बनाई। वह तलवार दोधारी थी और लगभग अट्ठारह इंच लम्बी थी। एहूद ने तलवार को अपनी दायीं जांघ से बांधा और अपने वस्त्रों में छिपा लिया।

[17]इस प्रकार एहूद मोआब के राजा एग्लोन के पास आया और उसे भेंट के रूप में धन दिया। (एग्लोन बहुत मोटा आदमी था।) [18]एग्लोन को धन देने के बाद एहूद ने उन व्यक्तियों को घर भेज दिया, जो धन लाए थे। [19]जब एग्लोन गिलगाल नगर की मूर्तियों के पास से वापस मुड़ा, तब एहूद ने एग्लोन से कहा, "राजा, मैं आपके लिए एक गुप्त सन्देश लाया हूँ।" राजा ने कहा, "चुप रहो।" तब उसने सभी नौकरों को कमरे से बाहर भेज दिया। [20]एहूद राजा एग्लोन के पास गया। एग्लोन एकदम अकेला अपने ग्रीष्म महल के ऊपरी कमरे में बैठा था। तब एहूद ने कहा, "मैं परमेश्वर के यहाँ से आपके लिये सन्देश लाया हूँ।" राजा अपने सिंहासन से उठा, वह एहूद के बहुत पास था। [21]ज्योंही राजा अपने सिंहासन से उठा,* एहूद ने अपने बांये हाथ को बढ़ाया और उस तलवार को निकाला जो उसकी दायीं जांघ में बंधी थी। तब एहूद ने तलवार को राजा के पेट में घुसेड़ दिया। [22]तलवार एग्लोन के पेट में इतनी भीतर गई कि उसकी मूठ भी उसमें समा गई। राजा की चर्बी ने पूरी तलवार को छिपा लिया। इसलिए एहूद ने तलवार को एग्लोन के अन्दर छोड़ दिया। [23]एहूद कमरे से बाहर गया और उसने अपने पीछे दरवाजों को ताला लगाकर बन्द कर दिया।

[24]एहूद के चले जाने के ठीक बाद नौकर आए। नौकरों ने कमरे के दरवाजों में ताला लगा पाया। इसलिए नौकरों ने कहा, "राजा आराम कक्ष में आराम कर रहे होंगे।" [25]इसलिए नौकरों ने लम्बे समय तक प्रतीक्षा की। अन्त में वे चिन्तित हुए। उन्होंने चाभी ली और दरवाजें खोले। जब नौकर घुसे तो उन्होंने राजा को फर्श पर मरा पड़ा देखा। [26]जब तक नौकर राजा की प्रतीक्षा करते रहे तब तक एहूद को भाग निकलने का समय मिल गया। एहूद मूर्तियों के पास से होकर सेइरे नामक स्थान की ओर गया। [27]एहूद सेइरे नामक स्थान पर पहुँचा। तब उसने एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र मे तुरही बजाई। इस्राएल के लोगों ने

अशेरा एक महत्वपूर्ण कनानी देवी। उस समय लोग उसे एल की पत्नी और बाल की प्रेमिका समझते थे।

मेसोपोटामिया उत्तरी सीरिया में टिगरिस व परात नदी के बीच एक प्रदेश।

ज्योंही राजा ... उठा पाठ का यह अंश प्राचीन यूनानी अनुवाद में है, किन्तु यह संयोगवश हिब्रू पाठ से छूट गया था।

तुरही की आवाज सुनी और वे पहाड़ियों से उतरे। एहूद उनका संचालक था। [28]एहूद ने इस्राएल के लोगों से कहा, "मेरे पीछे चलो। यहोवा ने मोआब के लोगों अर्थात् हमारे शत्रुओं को हराने में हमारी सहायता की है।"

इसलिए इस्राएल के लोगों ने एहूद का अनुसरण किया। वे एहूद का अनुसरण उन स्थानों पर अधिकार करने के लिए करते रहे जहाँ से यरदन नदी सरलता से पार की जा सकती थी। वे स्थान मोआब के प्रदेश तक पहुँचाते थे। इस्राएल के लोगों ने किसी को यरदन नदी के पार नहीं जाने दिया। [29]इस्राएल के लोगों ने मोआब के लगभग दस हजार बलवान और साहसी व्यक्तियों को मार डाला। एक भी मोआबी भागकर बच न सका। [30]इसलिए उस दिन मोआब के लोग बलपूर्वक इस्राएल के लोगों के शासन में रहने को विवश किये गए और वहाँ उस प्रदेश में अस्सी वर्ष तक शान्ति रही!

न्यायाधीश शमगर

[31]एहूद द्वारा इस्राएल के लोगों की रक्षा हो जाने के बाद एक अन्य व्यक्ति ने इस्राएल को बचाया। उस व्यक्ति का नाम शमगर था और वह अनात* नामक व्यक्ति का पुत्र था। शमगर ने चाबुक का उपयोग छः सौ पलिश्ती व्यक्तियों को मार डालने के लिये किया।

स्त्री न्यायाधीश दबोरा

4 एहूद के मरने के बाद यहोवा ने इस्राएली लोगों को फिर पाप करते देखा। [2]इसलिए यहोवा ने कनान प्रदेश के राजा याबीन को इस्राएली लोगों को पराजित करने दिया। याबीन हासोर नामक नगर में शासन करता था। राजा याबीन की सेना का सेनापति सीसरा नामक व्यक्ति था। सीसरा हरोशेत हाग्गोयीम नामक नगर में रहता था। [3]सीसरा के पास नौ सौ लोहे के रथ थे और वह बीस वर्ष तक इस्राएल के लोगों के प्रति बहुत क्रूर रहा। इस्राएल के लोगों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया गया। इसलिए उन्होंने यहोवा की प्रार्थना की और सहायता के लिए रोकर पुकार की।

[4]एक स्त्री नबी दबोरा नाम की थी। वह लप्पीदोत नामक व्यक्ति की पत्नी थी। वह उस समय इस्राएल की न्यायाधीश थी। [5]एक दिन दबोरा, ताड़ के पेड़ के नीचे बैठी थी जिसे "दबोरा का ताड़ वृक्ष" कहा जाता था। इस्राएल के लोग उसके पास यह पूछने के लिये आए कि सीसरा के विषय में क्या किया जाय। दबोरा का ताड़ वृक्ष एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में रामा और बेतेल नगरों के बीच था। [6]दबोरा ने बाराक नामक व्यक्ति के पास संदेश भेजा। उसने उसे उस से मिलने को कहा। बाराक अबीनोअम नामक व्यक्ति का पुत्र था। बाराक नप्ताली के क्षेत्र में केदेश नामक नगर में रहता था। दबोरा ने बाराक से कहा, "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर तुम्हें आदेश देता है, 'जाओ और नप्ताली एवं जबूलून के परिवार समूहों से दस हजार व्यक्तियों को इकट्ठा करो। [7]मैं याबीन की सेना के सेनापति सीसरा को तुम्हारे पास भेजूँगा। मैं सीसरा, उसके रथों और उसकी सेना को कीशोन नदी* पर पहुँचाऊँगा। मैं वहाँ सीसरा को हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा।'"

[8]तब बाराक ने दबोरा से कहा, "यदि तुम मेरे साथ चलोगी तो मैं जाऊँगा और यह करूँगा। किन्तु यदि तुम नहीं चलोगी तो मैं नहीं जाऊँगा।"

[9]दबोरा ने उत्तर दिया, "निश्चय ही, मैं तुम्हारे साथ चलूँगी। किन्तु तुम्हारी भावना के कारण जब सीसरा हराया जाएगा, तुम्हें सम्मान नहीं मिलेगा। यहोवा एक स्त्री द्वारा सीसरा को हराने देगा।"

इसलिए दबोरा बाराक के साथ केदेश नगर को गई। [10]केदेश नगर में बाराक ने जबूलून और नप्ताली के परिवार समूहों को एक साथ बुलाया। बाराक ने उन परिवार समूहों से, अपने साथ चलने के लिये दस हजार व्यक्तियों को इकट्ठा किया। दबोरा भी बाराक के साथ गई।

[11]वहाँ हेबेर नामक एक ऐसा व्यक्ति था जो केनी लोगों में से था। हेबेर अन्य केनी लोगों को छोड़ चुका था। (केनी लोग होबाब के वंशज थे। होबाब* मूसा का ससुर था।) हेबेर ने अपना घर सानन्नीम स्थान पर

अनात यह कनानी युद्ध की देवी का नाम है। यहाँ यह नाम शमगर के पिता का या उसकी माँ का हो सकता है या ये भी हो सकता है "महान योद्धा शमगर" या "अनात नगर का शमगर।"

कीशोन नदी यह नदी तबोर पर्वत से लगभग दस मील दूर बहती है।

होबाब मूसा का ससुर संभवत: 'दामाद'

बांज के पेड़ के समीप बनाया था। सानन्नीम केदेश नगर के पास है।

[12]तब सीसरा से यह कहा गया कि बाराक जो कि अबीनोअम का पुत्र है, ताबोर पर्वत तक पहुँच गया है। [13]इसलिए सीसरा ने अपने नौ सौ लोहे के रथों को इकट्ठा किया। सीसरा ने अपने सभी सैनिकों को भी साथ लिया। हरोशेत हाग्गोयीम नगर से उन्होंने कीशोन नदी तक यात्रा की।

[14]तब दबोरा ने बाराक से कहा, "आज के दिन ही यहोवा तुम्हें सीसरा को हराने में सहायता देगा। निश्चय ही, तुम जानते हो कि यहोवा ने पहले से ही तुम्हारे लिये रास्ता साफ कर रखा है।" इसलिए बाराक ने दस हजार सैनिकों को ताबोर पर्वत से उतारा। [15]बाराक और उसके सैनिकों ने सीसरा पर आक्रमण कर दिया। युद्ध के दौरान यहोवा ने सीसरा, उसकी सेना और रथों को अस्तव्यस्त कर दिया। उनकी व्यवस्था भंग हो गई। इसलिए बाराक और उसकी सेना ने सीसरा की सेना को हरा दिया। किन्तु सीसरा ने अपने रथ को छोड़ दिया तथा पैदल भाग खड़ा हुआ। [16]बाराक ने सीसरा की सेना से युद्ध जारी रखा। बाराक और उसके सैनिकों ने सीसरा के रथों और सेना का पीछा हरोशेत हाग्गोयीम तक लगातार किया। बाराक के सैनिकों ने सीसरा के सैनिकों को मारने के लिये अपनी तलवारों का उपयोग किया। सीसरा का कोई सैनिक जीवित न बचा।

[17]किन्तु सीसरा भाग गया। वह उस तम्बू के पास आया, जहाँ याएल नामक एक स्त्री रहती थी। याएल, हासोर नामक व्यक्ति की पत्नी थी। वह केनी लोगों में से एक था। हेबेर का परिवार हासोर के राजा याबीन से शान्ति–सन्धि किये हुये था। इसलिये सीसरा, याएल के तम्बू में भाग कर गया। [18]याएल ने सीसरा को आते देखा, अत: वह उससे मिलने बाहर गई। याएल ने सीसरा से कहा, "मेरे तम्बू मे आओ, मेरे स्वामी, आओ। डरो नहीं।" इसलिए सीसरा याएल के तम्बू में गया और उसने उसे एक कालीन से ढक दिया।

[19]सीसरा ने याएल से कहा, "मैं प्यासा हूँ। कृपया मुझे पीने को थोड़ा पानी दो।" इसलिए याएल ने एक मशक खोला, जिसमें उसने दूध रखा था और उसने पीने को दिया। तब उसने सीसरा को ढक दिया।

[20] तब सीसरा ने याएल से कहा, "तम्बू के द्वार पर जाओ। यदि कोई यहाँ से गुजरता है और पूछता है, 'क्या यहाँ कोई है?', तो तुम कहना–'नहीं'" [21]किन्तु हेबेर की पत्नी याएल ने एक तम्बू की खूँटी और हथौड़ा लिया। याएल चुपचाप सीसरा के पास गई। सीसरा बहुत थका था अत: वह सो रहा था। याएल ने तम्बू की खूँटी को सीसरा के सिर की एक ओर रखा और उस पर हथौड़े से चोट की। तम्बू की खूँटी सीसरा के सिर की एक ओर से होकर जमीन में धँस गई और इस तरह सीसरा मर गया।

[22]ठीक तुरन्त बाद बाराक सीसरा को खोजता हुआ याएल के तम्बू के पास आया। याएल बाराक से मिलने बाहर निकली और बोली, "अन्दर आओ और मैं उस व्यक्ति को दिखाऊँगी जिसे तुम ढूँढ रहे हो।" इसलिए बाराक याएल के साथ तम्बू में घुसा। बाराक ने वहाँ सीसरा को जमीन पर मरा पड़ा पाया, तम्बू की खूँटी उसके सिर की एक ओर से दूसरी ओर निकली हुई थी।

[23]उस दिन यहोवा ने कनान के राजा याबीन को इस्राएल के लोगों की सहायता से हराया। [24]इस प्रकार इस्राएल के लोग क्रमश: अधिक शक्तिशाली होते गए और उन्होंने कनान के राजा याबीन को हरा दिया। इस्राएल के लोगों ने कनान के राजा याबीन को अन्तिम रूप से हराया।

दबोरा का गीत

5 जिस दिन इस्राएल के लोगों ने सीसरा को हराया उस दिन दबोरा और अबीनोअम के पुत्र बाराक ने इस गीत को गाया:*

2 इस्राएल के लोगों ने अपने को
  युद्ध के लिये तैयार किया।*
लोग युद्ध में जाने के लिये स्वयं आए!
यहोवा को धन्य कहो!

3 राजाओं, सुनो।
  शासकों, ध्यान दो।

अध्याय 5 यह बहुत प्राचीन गीत है और इस गीत की कई पंक्तियों के अर्थ हिब्रू भाषा में समझ पाना कठिन है।

इस्राएल ... तैयार किया इसका अर्थ यह भी हो सकता है, "जन नायकों ने इस्राएल का नेतृत्व किया" अथवा "जब इस्राएल में लोग लम्बे बाल रखते थे।" या सैनिक अपने बालों को परमेश्वर को विशेष उपहार के रूप में अर्पित करते थे।

मैं गाऊँगी।
मैं स्वयं यहोवा के प्रति गाऊँगी।
मैं यहोवा, इस्राएल के लोगों के
परमेश्वर की स्तुति करूँगी।

4 हे यहोवा, अतीत में तू सेईर* देश से आया।
तू एदोम* प्रदेश से चलकर आया,
और धरती काँप उठी।
गगन ने वर्षा की।
मेघों ने जल गिराया।

5 पर्वत काँप उठे
यहोवा, सीनै पर्वत के परमेश्वर के सामने,
यहोवा, इस्राएल के लोगों के
परमेश्वर के सामने!

6 अनात का पुत्र शमगर* के समय में
याएल के समय में, मुख्य पथ सूने थे।
काफिले* और यात्री
गौण पथों से चलते थे।

7 कोई योद्धा नहीं था।
इस्राएल में कोई योद्धा नहीं था,
हे दबोरा, जब तक तुम न खड़ी हुई,
जब तक तुम इस्राएल की
माँ बन कर न खड़ी हुई।

8 परमेश्वर ने नये प्रमुखों को चुना
कि वे नगर–द्वार पर युद्ध करे।*
इस्राएल के चालीस हजार सैनिकों में–
कोई ढाल और भाला नहीं पा सका।

9 मेरा हृदय इस्राएल के सेनापतियों के साथ है।
ये सेनापति इस्राएल के
लोगों में से स्वयं आए!
यहोवा को धन्य कहो!

10 श्वेत गधों पर सवार होने वाले लोगों
तुम, जो कम्बल की काठी पर बैठते हो
और तुम जो राजपथ पर चलते हो, ध्यान दो!

11 घुंघरूओं की छमछम पर,
पशुओं को लिए पानी वाले कूपों पर,
वे यहोवा की विजय की कथाओं को कहते हैं,
इस्राएल में यहोवा और उसके
वीरों की विजय–कथा कहते हैं।
उस समय यहोवा के लोग
नगर–द्वारों पर लड़े और विजयी हुये!

12 दबोरा जागो, जागो!
जागो, जागो, गीत गाओ
जागो, बाराक!
जाओ, हे अबीनोअम के पुत्र
अपने शत्रुओं को पकड़ो!

13 उस समय, बचे लोग, सम्मानितों के पास आए।
यहोवा के लोग, मेरे पास
योद्धाओं के साथ आए।*

14 एप्रैम के कुछ लोग अमालेक के
पहाड़ी प्रदेश* में बसे।
ऐ बिन्यामीन, तुम्हारे बाद
वे लोग और तुम्हारे लोग आए।
माकीर* के परिवार समूह से
सेनापति आगे आए।
काँसे के दण्ड सहित नायक आए
जबूलून परिवार समूह से।

15 इस्साकर के नेता दबोरा के साथ थे।
इस्साकर का परिवार समूह
बाराक के प्रति सच्चा था।
वे व्यक्ति पैदल ही घाटी में भेजे गए।
रूबेन के सैनिक बड़बड़ाए, वे क्या करें।

सेईर एदोम प्रदेश का दूसरा नाम।

एदोम यह प्रदेश इस्राएल के दक्षिण–पूर्व में था।

शमगर न्यायाधीशों में से एक था। उसका जिक्र न्यायियों 3:31 पर है।

काफिले व्यापारियों के दल। प्राय: बहुत से व्यापारी अपने सामान को गधों या ऊँटों पर लादकर एक साथ यात्रा करते थे।

परमेश्वर ... युद्ध करे इन दो पंक्तियों का अर्थ बहुत अस्पष्ट है।

उस समय ... साथ आये या "उस समय जो लोग बचे थे सम्मानितों पर शासन करते थे। यहोवा के लोगों ने मेरे लिये योद्धाओं के साथ शासन किया।

अमालेक के पहाड़ी प्रदेश यह क्षेत्र उस प्रदेश का भाग था जिसमें एप्रैम का परिवार समूह बसा था। देखें न्यायियों 12:15

माकीर यह परिवार समूह मनश्शे की जाति–संघ का भाग था। यह उनका भाग था जो यरदन नदी के पूर्व बसे थे।

16 भेड़शाले के दीवार* से लगे
क्यों तुम सभी बैठे हो?
रूबेन के वीर सैनिकों ने युद्ध का
दृढ़ निश्चय किया।
किन्तु वे अपनी भेड़ों के लिए
संगीत को सुनते रहे घर बैठे।*

17 गिलाद के लोग* यरदन नदी के पार
अपने डेरों में पड़े रहे।
ऐ, दान के लोगों, जहाँ तक बात तुम्हारी है–
तुम जहाजों के साथ क्यों चिपके रहे?
आशेर के लोग सागर तट पर पड़े रहे।
उन्होंने अपने सुरक्षित बन्दरगाहों में डेरा डाला।

18 किन्तु जबूलून के लोगों ने और नप्ताली के
लोगों ने, मैदान के ऊँचे क्षेत्रों में युद्ध के
खतरे में जीवन को डाला।

19 राजा आए, वे लड़े, उस समय कनान का राजा,
तानक शहर में मगिद्दो के जलाशय पर लड़ा
किन्तु वे इस्राएल के लोगों की कोई
सम्पत्ति न ले जा सके!

20 गगन से नक्षत्रों ने युद्ध किया।
नक्षत्रों ने अपने पथ से, सीसरा से युद्ध किया।

21 कीशोन नदी, सीसरा के सैनिकों को
बहा ले गई, वह प्राचीन नदी–कीशोन नदी।
मेरी आत्मा, शक्ति से धावा बोलो!

22 उस समय अश्वों की टापों ने
भूमि पर हथौड़ा चलाया।
सीसरा के अश्व भागते गए, भागते गए।

23 यहोवा के दूत ने कहा,
"मेरोज नगर को अभिशाप दो।
इसके लोगों को भीषण अभिशाप दो!
योद्धाओं के साथ वे यहोवा की
सहायता करने नहीं आए।"

24 केनी हेबेर की पत्नी याएल सभी स्त्रियों में से
सबसे अधिक धन्य होगी।

25 सीसरा ने मांगा जल, किन्तु याएल ने दिया दूध,
शासक के लिये उपयुक्त कटोरे में,
वह उसे मलाई लाई।

26 याएल बाहर गई, लाई खूँटी तम्बू की।
उसके दायें कर में हथौड़ा आया श्रमिक काम
लाते जिसे और उसने सीसरा पर
चलाया हथौड़ा।
उसने किया चूर सिर उसका, उसने
उसके सिर को बेधा एक ओर से।

27 डूबा वह याएल के पैरों बीच।
वह मर गया।
वह पड़ गया वहीं।
डूबा वह उसके पैरों बीच।
वह मर गया जहाँ सीसरा डूबा।
वहीं वह गिरा, मर गया!

28 सीसरा की माँ, देखती खिड़की से और
पर्दो से झांकती हुई चीख उठी।
"सीसरा के रथ को विलम्ब क्यों आने में?
सीसरा के रथ के अश्वों के
हिनहिनाने में देर क्यों?"

29 सबसे चतुर उसकी सेविकायें उत्तर उसे देती,
हाँ सेविका उसे उत्तर देती:

30 "निश्चय ही उन्होंने विजय पाई है
निश्चय ही पराजितों की वस्तुएँ वे ले रहे हैं!
निश्चय ही वे बाँटते हैं आपस में वस्तुओं को!
एक लड़की या दो, दी जा रही
हर सैनिक को।
संभवत: सीसरा ले रहा है, कोई रंगा वस्त्र।
संभवत: एक कढ़े वस्त्र का टुकड़ा हो,
या विजेता सीसरा पहनने के लिए,
दे कढे किनारी युक्त वस्त्र।"

31 हे यहोवा! इस तरह तेरे,
सब शत्रु मर–मिट जायें।
किन्तु वे लोग सब जो प्यार करते हैं तुझको
ज्वलित–दीप्त सूर्य सम शक्तिशाली बने!

इस प्रकार उस प्रदेश में चालीस वर्ष तक शान्ति रही।

भेड़शाले के दीवार या सम्भवत: "शिविर समारोह" या "काठी के थैले।"

रूबेन के ... घर बैठे यह गीत इन लोगों पर व्यंग्य करने के लिये है क्योंकि इन्होंने सीसरा के विरूद्ध युद्ध में सहायता नहीं की।

गिलाद के लोग वे लोग थे जो यरदन नदी के पूर्व के प्रदेश में थे।

मिद्यानी इस्राएल के लोगों से युद्ध करते हैं

6 यहोवा ने फिर देखा कि इस्राएल के लोग पाप कर रहे हैं। इसलिए सात वर्ष तक यहोवा ने मिद्यानी लोगों को इस्राएल को पराजित करने दिया।

[2]मिद्यानी लोग बहुत शक्तिशाली थे तथा इस्राएल के लोगों के प्रति बहुत क्रूर थे। इसलिए इस्राएल के लोगों ने पहाड़ों में बहुत से छिपने के स्थान बनाए। उन्होंने अपना भोजन भी गुफाओं और कठिनाई से पता लगाए जा सकने वाले स्थानों में छिपाए। [3]उन्होंने यह किया, क्योंकि मिद्यानी और अमालेकी लोग पूर्व से सदा आते थे और उनकी फसलों को नष्ट करते थे। [4]वे लोग उस प्रदेश में डेरे डालते थे और उस फसल को नष्ट करते थे जो इस्राएल के लोग लगाते थे। अज्जा नगर के निकट तक के प्रदेश की इस्राएल के लोगों की फसल को वे लोग नष्ट करते थे। वे लोग इस्राएल के लोगों के खाने के लिये कुछ भी नही छोड़ते थे। वे उनके लिए भेड़, या पशु या गधे भी नहीं छोड़ते थे। [5]मिद्यानी लोग आए और उन्होंने उस प्रदेश में डेरा डाला। वे अपने साथ अपने परिवारों और जानवरों को भी लाए। वे इतने अधिक थे जितने टिड्डियों के दल। उन लोगों और उनके ऊँटों की संख्या इतनी अधिक थी कि उनको गिनना संभव नहीं था। ये सभी लोग उस प्रदेश में आए और उसे रौंद डाला। [6]इस्राएल के लोग मिद्यानी लोगों के कारण बहुत गरीब हो गए। इसलिए इस्राएल के लोगों ने यहोवा को सहायता के लिए रो कर पुकारा।

[7]मिद्यानियों* ने वे सभी बुरे काम किये। इसलिये इस्राएल के लोग यहोवा से सहायता के लिए रो कर चिल्लाये। [8]इसलिए यहोवा ने उनके पास एक नबी भेजा। नबी ने इस्राएल के लोगों से कहा, "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर यह कहा है कि, 'तुम लोग मिस्र देश में दास थे। मैंने तुम लोगों को स्वतन्त्र किया और मैं उस देश से तुम्हें बाहर लाया। [9]मैंने मिस्र के शक्तिशाली लोगों से तुम्हारी रक्षा की। तब कनान के लोगों ने तुमको कष्ट दिया। इसलिए मैंने फिर तुम्हारी रक्षा की। मैंने उन लोगों से उनका देश छुड़वाया और मैंने उनका देश तुम्हें दिया।' [10]तब मैंने तुमसे कहा, 'मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ। तुम लोग एमोरी लोगों के प्रदेश में रहोगे, किन्तु तुम्हें उनके असत्य देवताओं की पूजा नहीं करनी चाहिए।' परन्तु तुम लोगों ने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया।"

यहोवा का दूत गिदोन के पास आता है

[11]उस समय, यहोवा का दूत गिदोन नामक व्यक्ति के पास आया। यहोवा का दूत आया और ओप्रा नामक स्थान पर एक बांज के पेड़ के नीचे बैठा। यह बांज का पेड़ योआश नामक व्यक्ति का था। योआश अबीएजेरी लोगों में से एक था। योआश गिदोन का पिता था। गिदोन कुछ गेहूँ को दाखमधु निकालने के यंत्र* में कूट रहा था। यहोवा का दूत गिदोन के पास बैठा। गिदोन मिद्यानी लोगों से अपना गेहूँ छिपाने का प्रयत्न कर रहा था। [12]यहोवा का दूत गिदोन के सामने प्रकट हुआ और उससे कहा, "यहोवा तुम्हारे साथ है, तुम जैसे शक्तिशाली सैनिकों के साथ है।"

[13]तब गिदोन ने कहा, "महोदय, मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि यदि यहोवा हमारे साथ है तो हम लोगों को इतने कष्ट क्यों हैं? हम लोगों ने सुना है कि उसने हमारे पूर्वजों के लिए अद्‌भुत कार्य किये थे। हमारे पूर्वजों ने हम लोगों से कहा कि यहोवा हम लोगों को मिस्र से बाहर लाया। किन्तु अब यहोवा ने हम लोगों को छोड़ दिया है। यहोवा ने मिद्यानी लोगों को हम लोगों को हराने दिया।" [14]यहोवा गिदोन की ओर मुड़ा और उससे बोला, "अपनी शक्ति का प्रयोग करो। जाओ और मिद्यानी लोगों से इस्राएल के लोगों की रक्षा करो। क्या तुम यह नहीं समझते कि वह मैं यहोवा हूँ, जो तुम्हें भेज रहा हूँ?"

[15]किन्तु गिदोन ने उत्तर दिया और कहा, "महोदय, क्षमा करें, मैं इस्राएल की रक्षा कैसे कर सकता हूँ? मेरा परिवार मनश्शे के परिवार समूह में सबसे कमजोर है और मैं अपने परिवार मे सबसे छोटा हूँ।"

[16]यहोवा ने गिदोन को उत्तर दिया और कहा, "मैं निश्चय ही मिद्यानी लोगों को हराने में सहायता करने के लिये तुम्हारे साथ रहूँगा। यह ऐसा मालूम होगा कि तुम एक व्यक्ति के विरुद्ध लड़ रहे हो।"

मिद्यानियों मृत सागर की लम्बी पाण्डुलिपि पट्टी चार क्यू न्यायियों ए की प्राचीनतम हिब्रू पाण्डुलिपि के न्यायियों की पुस्तक में 7–10 की कविताएँ नहीं हैं।

दाखमधु निकालने के यंत्र अंगूर से रस निकालने का स्थान। कभी–कभी यह जमीन की एक बड़ी चट्टान में उथला छेद था।

[17]तब गिदोन ने यहोवा से कहा, "यदि तू मुझ से प्रसन्न है तो तू प्रमाण दे कि तू सचमुच यहोवा है। [18]कृपा करके तू यहाँ रुक। जब तक मैं लौट न आऊँ तब तक तू न जा। मुझें मेरी भेंट लाने दे और उसे तेरे सामने रखने दे।" अत: यहोवा ने कहा, "मैं तब तक प्रतीक्षा करुँगा जब तक तुम लौटते नहीं।"

[19]इसलिए गिदोन गया और उसने एक जवान बकरा खौलते पानी में पकाया। गिदोन ने लगभग एक एपा आटा भी लिया और अखमीरी रोटियाँ बनाई। तब गिदोन ने माँस को एक टोकरे में तथा पके माँस के शोरबे को एक बर्तन में लिया। गिदोन ने माँस, पके माँस के शोरबा और अखमीरी रोटियों को निकाला। गिदोन ने वह भोजन बांज के पेड़ के नीचे यहोवा को दिया।

[20]परमेश्वर के दूत ने गिदोन से कहा, "माँस और अखमीरी रोटियों को वहाँ चट्टान पर रखो। तब शोरबे को गिराओ।" गिदोन ने वैसा ही किया जैसा करने को कहा गया था।

[21]यहोवा के दूत ने अपने हाथ में एक छड़ी ले रखी थी। यहोवा के दूत ने माँस और रोटियों को छड़ी के सिरे से छुआ। तब चट्टान से आग जल उठी। गोश्त और रोटियाँ पूरी तरह जल गई। तब यहोवा का दूत अन्तर्ध्यान हो गया।

[22]तब गिदोन ने समझा कि वह यहोवा के दूत से बातें कर रहा था। इसलिए गिदोन चिल्ला उठा, "सर्वशक्तिमान यहोवा महान है। मैंने यहोवा के दूत को आमने–सामने देखा है।"

[23]किन्तु यहोवा ने गिदोन से कहा, "शान्त रहो।" डरो नहीं। तुम मरोगे नहीं।*

[24]इसलिए गिदोन ने यहोवा की उपासना के लिए उस स्थान पर एक वेदी बनाई। गिदोन ने उस वेदी का नाम "यहोवा शान्ति है" रखा। वह वेदी अब तक ओप्रा में खड़ी है। ओप्रा वहीं है जहाँ एजेरी लोग रहते हैं।

गिदोन बाल की वेदी को गिरा डालता है

[25]उसी रात यहोवा ने गिदोन से बाते कीं। यहोवा ने गिदोन से कहा, "अपने पिता के उस प्रौढ़ बैल को लो जो सात वर्ष का है। तुम्हारे पिता की असत्य देवता बाल की एक वेदी है। उस वेदी की बगल में एक लकड़ी का खम्भा भी है। खम्भा असत्य देवी अशेरा के सम्मान के लिए बनाया गया था। बैल का उपयोग बाल की वेदी को गिराने के लिये करो तथा अशेरा के खम्भे को काट दो। [26]तब यहोवा, अपने परमेश्वर के लिए उचित प्रकार की वेदी बनाओ। इस ऊँचे स्थान पर वह वेदी बनाओ। तब प्रौढ़ बैल को मारो और इस वेदी पर उसे जलाओ। अशेरा के खम्भे की लकड़ी का उपयोग अपनी भेंट को जलाने के लिए करो।"

[27]इसलिए गिदोन ने अपने दस नौकरों को लिया और वही किया जो यहोवा ने करने को कहा था। किन्तु गिदोन डर रहा था कि उसका परिवार और उस नगर के लोग देख सकते हैं कि वह क्या कर रहा है। गिदोन ने वही किया जो यहोवा ने उसे करने को कहा। किन्तु उसने यह रात में किया, दिन में नहीं।

[28]अगली सुबह नगर के लोग सोकर उठे और उन्होंने देखा कि बाल की वेदी नष्ट कर दी गई है। उन्होंने यह भी देखा कि अशेरा का खम्भा काट डाला गया है। अशेरा का खम्भा बाल की वेदी के ठीक पीछे गिरा पड़ा था। उन लोगों ने उस वेदी को भी देखा जिसे गिदोन ने बनाया था और उन्होंने उस वेदी पर बलि दिये गए बैल को भी देखा।

[29]नगर के लोगों ने एक दूसरे को देखा और कहा, "हमारी वेदी को किसने गिराया? हमारे अशेरा के खम्भे किसने काटे? इस नयी वेदी पर किसने इस बैल की बलि दी?" उन्होंने कई प्रश्न किये और यह पता लगाना चाहा कि वे काम किसने किये। किसी ने कहा, "योआश के पुत्र गिदोन ने यह काम किया।"

[30]इसलिए नगर के लोग योआश के पास आए। उन्होंने योआश से कहा, "तुम्हें अपने पुत्र को बाहर लाना चाहिए। उसने बाल की वेदी को गिराया है और उसने उस अशेरा के खम्भे को काटा है जो उस वेदी की बगल में था। इसलिए तुम्हारे पुत्र को मारा जाना चाहिए।"

[31]तब योआश ने उस भीड़ से कहा जो उसके चारों ओर खड़ी थी। योआश ने कहा, "क्या तुम बाल का पक्ष लेने जा रहे हो? क्या तुम बाल की रक्षा करने जा रहे हो? यदि कोई बाल का पक्ष लेता है तो उसे सवेरे मार दिए जाने दो। यदि बाल सचमुच देवता है तो उसे अपनी रक्षा स्वयं करने दो, यदि कोई उस वेदी को गिराता है।"

तुम मरोगे नहीं गिदोन ने सोचा कि वह मर जाएगा क्योंकि उसने यहोवा को प्रत्यक्ष देखा है।

[32]योआश ने कहा, "यदि गिदोन ने बाल की वेदी को गिराया तो बाल को उससे संघर्ष करने दो।" अत: उस दिन योआश ने गिदोन को एक नया नाम दिया। उसने उसे यरुब्बाल* कहा।

गिदोन मिद्यान के लोगों को हराता है

[33]मिद्यानी, अमालेकी एवं पूर्व के अन्य सभी लोग इस्राएल के लोगों के विरुद्ध युद्ध करने के लिये एक साथ मिले। वे लोग यरदन नदी के पार गए और उन्होंने यिज्रेल की घाटी* में डेरा डाला। [34]किन्तु गिदोन पर यहोवा का आत्मा उतरा और उसे बड़ी शक्ति प्रदान की। गिदोन ने अबीएजेरी लोगों को अपने साथ चलने के लिए तुरही बजाई। [35]गिदोन ने मनश्शे परिवार समूह के सभी लोगों के पास दूत भेजे। उन दूतों ने मनश्शे के लोगों से अपने हथियार निकालने और युद्ध के लिए तैयार होने को कहा। गिदोन ने आशेर, जबूलून और नप्ताली के परिवार समूहों को भी दूत भेजे। इसलिए वे परिवार समूह भी गिदोन से और उसके आदमियों से मिलने गए।

[36]तब गिदोन ने यहोवा से कहा, "तूने मुझसे कहा कि तू इस्राएल के लोगों की रक्षा करने में मेरी सहायता करेगा। मुझे प्रमाण दे। [37]मैं खलिहान* के फर्श पर एक भेड़ का ऊन रखता हूँ। यदि भेड़ के ऊन पर ओस की बूँदें होंगी, जबकि सारी भूमि सूखी है, तब मैं समझूँगा कि तू अपने कहने के अनुसार मेरा उपयोग इस्राएल की रक्षा करने में करेगा।"

[38]और यह ठीक वैसा ही हुआ। गिदोन अगली सुबह उठा और भेड़ के ऊन को निचोड़ा। वह भेड़ के ऊन से प्याला भर पानी निचोड़ सका।

[39]तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा, "मुझ पर क्रोधित न हो। मुझे केवल एक और प्रश्न करने दे। मुझे भेड़ के ऊन से एक बार और परीक्षण करने दे। इस समय भेड़ के ऊन को उस दशा में सूखा रहने दे जब इसके चारों ओर की भूमि ओस से भीगी हो।" [40]उस रात परमेश्वर ने वही किया। केवल भेड़ की ऊन ही सूखी थी, किन्तु चारों ओर की भूमि ओस से भीगी थी।

7 सवेरे प्रात:काल, यरुब्बाल (गिदोन) और उसके सभी लोगों ने अपने डेरे हरोद के झरने पर लगाए। मिद्यानी लोग गिदोन और उसके आदमियों के उत्तर में डेरा डाले थे। मिद्यानी लोग मोरे नामक पहाड़ी के नीचे घाटी में डेरा डाले पड़े थे।

[2]तब यहोवा ने गिदोन से कहा, "मैं तुम्हारे आदमियों की सहायता मिद्यानी लोगों को हराने के लिए करने जा रहा हूँ। किन्तु तुम्हारे पास इस काम के लिए आवश्यकता से अधिक व्यक्ति हैं। मैं नहीं चाहता कि इस्राएल के लोग मुझे भूल जायें और शेखी मारें कि उन्होंने स्वयं अपनी रक्षा की। [3]इसलिए अपने लोगों में घोषणा करो। उनसे कहो, 'जो कोई डर रहा हो, अपने घर लौट सकता है।'"

इस प्रकार गिदोन ने लोगों की परीक्षा ली।* बाईस हजार व्यक्तियों ने गिदोन को छोड़ा और वे अपने घर लौट गए। किन्तु दस हजार फिर भी डटे रहे।

[4]तब यहोवा ने गिदोन से कहा, "अब भी आवश्यकता से अधिक लोग हैं। इन लोगों को जल के पास ले जाओ और वहाँ मैं इनकी परीक्षा तुम्हारें लिये करूँगा। यदि मैं कहूँगा, 'यह व्यक्ति तुम्हारे साथ जायेगा' तो वह जायेगा। किन्तु यदि मैं कहूँगा, 'यह व्यक्ति तुम्हारें साथ नहीं जाएगा।' तो वह नहीं जाएगा।"

[5]इसलिए गिदोन लोगों को जल के पास ले गया। उस जल के पास यहोवा ने गिदोन से कहा, "इस प्रकार लोगों को अलग करो: जो व्यक्ति कुत्ते की तरह लपलप करके जल पीएंगे, वे एक वर्ग में होंगे। जो पीने के लिए झुकेंगे, दूसरे वर्ग में होंगे।"

[6]वहाँ तीन सौ व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंने जल मुँह तक लाने के लिए अपने हाथों का उपयोग किया और उसे कुत्ते की तरह लपलप करके पिया। बाकी लोग घुटनों के बल झुके और उन्होंने जल पीया।

यरुब्बाल यह नाम उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "बाल को संघर्ष करने दो" है। उसी क्रिया का अनुवाद पद 31 में "एक का पक्ष लो" और "रक्षा करो" है।

यिज्रेल की घाटी इस्साकर के परिवार समूह के क्षेत्र में यह घाटी स्थित थी। यह चौड़ी और उपजाऊ घाटी है। न्यायियों 5:19 में कथित मेगिद्दों और तानक नगरों सहित इसमें कई महत्वपूर्ण नगर थे।

खलिहान वह स्थान जहाँ लोग गेहूँ को उसके डंठल के अन्य भागों से अलग करने के लिये पीटते हैं।

इस प्रकार ... परीक्षा ली हिब्रू में, "वे गिलाद पर्वत छोड़ सकते हैं।"

[7]तब यहोवा ने गिदोन से कहा, "मैं तीन सौ व्यक्तियों का उपयोग करूँगा जिन्होंने कुत्ते की तरह लपलप करके जल पिया। मैं उन्हीं लोगों का उपयोग तुम्हारी रक्षा करने के लिए करूँगा और मैं तुम्हें मिद्यानी लोगों को परास्त करने दूँगा। अन्य लोगों को अपने घर लौट जाने दो।"

[8]इसलिए गिदोन ने इस्राएल के शेष व्यक्तियों को उनके घर भेज दिया। किन्तु गिदोन ने तीन सौ व्यक्तियों को अपने साथ रखा। उन तीन सौ आदमियों ने अन्य जाने वाले आदमियों के भोजन, सामग्री और तुरहियों को रख लिया। अभी मिद्यानी लोग, गिदोन के नीचे घाटी में डेरा डाले हुए थे। [9]रात को यहोवा ने गिदोन से बातें की। यहोवा ने उससे कहा, "उठो गिदोन, लोगों के डेरों में जाओ, क्योंकि मैं तुम्हें उन लोगों को हराने दूँगा। [10]किन्तु यदि तुम अकेले वहाँ जाने से डरते हो तो अपने नौकर फूरा को अपने साथ ले लो। [11]जब तुम मिद्यानी लोगों के डेरे के पास जाओ तो यह सुनो कि वे लोग क्या कह रहे हैं। जब तुम यह सुन लोगे कि वे क्या कह रहे हैं तब तुम उस डेरे पर आक्रमण करने से नहीं डरोगे।" इसलिए गिदोन और उसका नौकर फूरा दोनों शत्रु के डेरे की छोर पर पहुँचे। [12]मिद्यानी, अमालेकी तथा पूर्व के अन्य सभी लोग उस घाटी में डेरा डाले थे। वहाँ वे इतनी बड़ी संख्या में थे कि टिड्डी–दल से प्रतीत होते थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि उन लोगों के पास इतने ऊँट थे, जितने समुद्र के किनारे बालू के कण।

[13]जब गिदोन शत्रुओं के डेरे में पहुँचा, उसने एक व्यक्ति को बातें करते सुना। वह व्यक्ति अपने देखे हुए स्वप्न को उसे बता रहा था। वह व्यक्ति कह रहा था। "मैंने यह स्वप्न देखा कि मिद्यान के लोगों के डेरे में एक गोल रोटी चक्कर खाती हुई आई। उस रोटी ने डेरे पर इतनी कड़ी चोट की कि डेरा पलट गया और चौड़ा होकर गिर गया।"

[14]उस व्यक्ति का मित्र उस स्वप्न का अर्थ जानता था। उस व्यक्ति के मित्र ने कहा, "तुम्हारे स्वप्न का केवल एक ही अर्थ है। तुम्हारा स्वप्न योआश के पुत्र गिदोन की शक्ति के बारे में है। वह इस्राएल का है। इसका अभिप्राय यह है कि परमेश्वर मिद्यानी लोगों की सारी सेना को गिदोन द्वारा परास्त करायेगा।"

[15]जब गिदोन ने स्वप्न के बारे में सुना और उसका अर्थ समझा तो वह परमेश्वर के प्रति झुका। तब गिदोन इस्राएली लोगों के डेरे में लौट गया। गिदोन ने लोगों को बाहर बुलाया, "तैयार हो जाओ। यहोवा हम लोगों को मिद्यानी लोगों को हराने में सहायता करेगा।" [16]तब गिदोन ने तीन सौ व्यक्तियों को तीन दलों में बाँटा। गिदोन ने हर एक व्यक्ति को एक तुरही और एक खाली घड़ा दिया। हर एक घड़े में एक जलती मशाल थी। [17]तब गिदोन ने लोगों से कहा, "मुझे देखते रहो और जो मैं करूँ, वही करो। मेरे पीछे–पीछे शत्रु के डेरों की छोर तक चलो। जब मैं डेरे की छोर पर पहुँच जाऊँ, ठीक वही करो जो मैं करूँ। [18]तुम सभी डेरों को घेर लो। मैं और मेरे साथ के सभी लोग अपनी तुरही बजाएंगे। जब हम लोग तुरही बजाएंगे तो तुम लोग भी अपनी तुरही बजाना। तब इन शब्दों के साथ घोष करो: 'यहोवा के लिये, गिदोन के लिये।'"

[19]इस प्रकार गिदोन और उसके साथ के सौ व्यक्ति शत्रु के डेरों की छोर पर आए। वे शत्रु के डेरे में उनके पहरेदारों की बदली के ठीक बाद आए। यह आधी रात को हुआ। गिदोन और उसके व्यक्तियों ने तुरहियों को बजाया तथा अपने घड़ों को फोड़ा। [20]तब गिदोन के तीनों दलों ने अपनी तुरहियाँ बजाई और अपने घड़ों को फोड़ा। उसके लोग अपने बाँये हाथ में मशाल लिये और दाँये हाथ मे तुरहियाँ लिए हुए थे। जब वे लोग तुरहियाँ बजाते तो उद्घोष करते, "यहोवा के लिए तलवार, गिदोन के लिए तलवार।" [21]गिदोन का हर एक व्यक्ति डेरे के चारों ओर अपनी जगह पर खड़ा रहा। किन्तु डेरों के भीतर मिद्यानी लोग चिल्लाने और भागने लगे। [22]जब गिदोन के तीन सौ व्यक्तियों ने अपनी तुरहियों को बजाया तो यहोवा ने मिद्यानी लोगों को परस्पर एक दूसरे को तलवारों से मरवाया। शत्रु की सेना उस बेतशित्ता नगर को भागी जो सरेरा नगर की ओर है। वे लोग उस आबेलमहोला नगर की सीमा तक भागे जो तब्बात नगर के निकट है।

[23]तब नप्ताली, आशेर और मनश्शे के परिवारों के सैनिकों को मिद्यानी लोगों का पीछा करने को कहा गया। [24]गिदोन ने एप्रैम के सारे पहाड़ी क्षेत्र में दूत भेजे। दूतों ने कहा, "आगे आओ और मिद्यानी लोगों पर आक्रमण करो। बेतबारा तक नदी पर और यरदन नदी पर अधिकार करो। यह मिद्यानी लोगों के वहाँ पहुँचने से पहले करो।" इसलिए उन्होंने एप्रैम के परिवार समूह से सभी लोगों को बुलाया। उन्होंने बेतबारा तक नदी पर अधिकार किया।

[25]एप्रैम के लोगों ने मिद्यानी लोगों के दो प्रमुखों को पकड़ा। इन दोनों प्रमुखों का नाम ओरेब और जेब था। एप्रैम के लोगों ने ओरेब को ओरेब की चट्टान नामक स्थान पर मार डाला। उन्होंने जेब को जब दाखमधु के कुण्ड नामक स्थान पर मारा। एप्रैम के लोगों ने मिद्यानी लोगों का पीछा करना जारी रखा। किन्तु पहले उन्होंने ओरेब और जेब के सिरों को काटा और सिरों को गिदोन के पास ले गए। गिदोन यरदन नदी को पार करने वाले घाट पर था।

8 एप्रैम के लोग गिदोन से रुष्ठ थे। जब एप्रैम के लोग गिदोन से मिले, उन्होंने गिदोन से पूछा, "तुमने हम लोगों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? जब तुम मिद्यानी लोगों के विरुद्ध लड़ने गए तो हम लोगों को क्यों नहीं बुलाया?" एप्रैम के लोग गिदोन पर क्रोधित थे।

[2]किन्तु गिदोन ने एप्रैम के लोगों को उत्तर दिया, "मैंने उतनी अच्छी तरह युद्ध नहीं किया जितनी अच्छी तरह आप लोगों ने किया। क्या यह सत्य नहीं है कि फसल लेने के बाद तुम अपनी अंगूर की बेलों में जो अंगूर बिना तोड़े छोड़ देते हो। वह मेरे परिवार, अबीएजेर के लोगों की पूरी फसल से अधिक होते हैं। [3]इसी प्रकार इस बार भी तुम्हारी फसल अच्छी हुई है। यहोवा ने तुम लोगों को मिद्यानी लोगों के राजकुमारों ओरेब और जेब को पकड़ने दिया। मैं अपनी सफलता को तुम लोगों द्वारा किये गए काम से कैसे तुलना कर सकता हूँ?" जब एप्रैम के लोगों ने गिदोन का उत्तर सुना तो वे उतने क्रोधित न रहे, जितने वे थे।

गिदोन दो मिद्यानी राजाओं को पकड़ता है

[4]तब गिदोन और उसके तीन सौ व्यक्ति यरदन नदी पर आए और उसके दूसरे पार गए। किन्तु वे थके और भूखे* थे। [5]गिदोन ने सुक्कोत नगर के लोगों से कहा, "मेरे सैनिकों को कुछ खाने को दो। मेरे सैनिक बहुत थके हैं। हम लोग अभी तक जेबह और सल्मुन्ना का पीछा कर रहे हैं जो मिद्यानी लोगों के राजा हैं।"

[6]सुक्कोत नगर के प्रमुखों ने गिदोन से कहा, "हम तुम्हारे सैनिकों को कुछ खाने को क्यों दें? तुमने जेबह और सल्मुन्ना को अभी तक पकड़ा नहीं है।"

[7]तब गिदोन ने कहा, "तुम लोग हमें भोजन नहीं दोगे। यहोवा मुझे जेबह और सल्मुन्ना को पकड़ने में सहायता करेगा। उसके बाद मैं यहाँ लौटूँगा और मरुभूमि के काँटो एवं कंटीली झाड़ियों से तुम्हारी चमड़ी उधेड़ूँगा।"

[8]गिदोन ने सुक्कोत नगर को छोड़ा और पनूएल नगर को गया। गिदोन ने जैसे सुक्कोत के लोगों से भोजन माँगा था वैसे ही पनूएल के लोगों से भी भोजन माँगा। किन्तु पनूएल के लोगों ने उसे वही उत्तर दिया जो सुक्कोत के लोगों ने उत्तर दिया था।

[9]इसलिये गिदोन ने पनूएल के लोगों से कहा, "जब मैं विजय प्राप्त करुँगा तब मैं यहाँ आऊँगा और तुम्हारी इस मीनार को गिरा दूँगा।"

[10]जेबह, सल्मुन्ना और उसकी सेनाएं कर्कोर नगर में थीं। उसकी सेना में पन्द्रह हजार सैनिक थे। पूर्व के लोगों की सारी सेना के केवल ये ही सैनिक बचे थे। उस शक्तिशाली सेना के एक लाख बीस हजार वीर सैनिक पहले ही मारे जा चुके थे। [11]गिदोन और उसके सैनिकों ने खानाबदोशों के मार्ग को अपनाया। वह मार्ग नोबह और योग्बहा नगरों के पूर्व में है। गिदोन कर्कोर नगर में आया और उसने शत्रु पर धावा बोला। शत्रु की सेना को आक्रमण की उम्मीद नहीं थी। [12]मिद्यानी लोगों के राजा जेबह और सल्मुन्ना भाग गए। किन्तु गिदोन ने पीछा किया और उन राजाओं को पकड़ लिया। गिदोन और उसके लोगों ने शत्रु सेना को हरा दिया।

[13]तब योआश का पुत्र गिदोन युद्ध से लौटा। गिदोन और उसके सैनिक हेरेस दर्रा नामक दर्रे से होकर लौटे। [14]गिदोन ने सुक्कोत के एक युवक को पकड़ा। गिदोन ने युवक से कुछ प्रश्न पूछे। युवक ने कुछ नाम गिदोन के लिए लिखे। युवक ने सुक्कोत के प्रमुखों और अग्रजों के नाम लिखे। उसने सतहत्तर व्यक्तियों के नाम दिये।

[15]तब गिदोन सुक्कोत नगर में आया। उसने नगर के लोगों से कहा, "जेबह और सल्मुन्ना यहाँ हैं। तुमने मेरा मजाक यह कहकर उड़ाया, 'हम तुम्हारे थके सैनिकों के लिए भोजन क्यों दें। तुमने अभी तक जेबह और सल्मुन्ना को नहीं पकड़ा है।'" [16]गिदोन ने सुक्कोत नगर के अग्रजों को लिया और उन्हें दण्ड देने के लिए मरुभूमि

भूखे प्राचीनतम यूनानी अनुवाद के अनुसार हिब्रू पाठ में 'पीछा करते' हैं।

के काँटों और कंटीली झाड़ियों से पीटा। [17]गिदोन ने पनूएल नगर की मीनार को भी गिरा दिया। तब उसने उन लोगों को मार डाला जो उस नगर में रहते थे।

[18]अब गिदोन ने जेबह और सल्मुन्ना से कहा, "तुमने ताबोर पर्वत पर कुछ व्यक्तियों को मारा। वे व्यक्ति किस तरह के थे?" जेबह और सल्मुन्ना ने उत्तर दिया, "वे व्यक्ति तुम्हारी तरह थे। उनमें से हर एक राजकुमार के समान था।"

[19]गिदोन ने कहा, "वे व्यक्ति मेरे भाई और मेरी माँ के पुत्र थे। यहोवा के जीवन की शपथ, यदि तुम उन्हें नहीं मारते, तो अब मै भी तुम्हें नहीं मारता।"

[20]तब गिदोन येतेर की ओर मुड़ा। येतेर गिदोन का सबसे बड़ा पुत्र था। गिदोन ने उससे कहा, "इन राजाओं को मार डालो।" किन्तु येतेर एक लड़का ही था और डरता था। इसलिए उसने अपनी तलवार नहीं निकाली।

[21]तब जेबह और सल्मुन्ना ने गिदोन से कहा, "आगे बढ़ो और स्वयं हमें मारो। तुम पुरुष हो और यह काम करने के लिये पर्याप्त बलवान हो।" इसलिए गिदोन उठा और जेबह तथा सल्मुन्ना को मार डाला। तब गिदोन ने चाँद की तरह बनी सज्जा को उनके ऊँटों की गर्दन से उतार दिया।

गिदोन एपोद बनाता है

[22]इस्राएल के लोगों ने गिदोन से कहा, "तुमने हम लोगों को मिद्यानी लोगों से बचाया। इसलिए हम लोगों पर शासन करो। हम चाहते हैं कि तुम, तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे पौत्र हम लोगों पर शासन करें।"

[23]किन्तु गिदोन ने इस्राएल के लोगों से कहा, "यहोवा तुम्हारा शासक होगा न तो मैं तुम लोगों के ऊपर शासन करूँगा और न ही मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर शासन करेगा।"

[24]इस्राएल के लोगों ने जिन्हें हराया, उनमें कुछ इश्माएली लोग थे। इश्माएली लोग सोने की कान की बालियाँ पहनते थे। इसलिए गिदोन ने इस्राएल के लोगों से कहा, "मै चाहता हूँ कि तुम मेरे लिये यह काम करो। मैं तुम में से हर एक से यह चाहता हूँ कि तुम लोगों ने युद्ध में जो पाया उसमें से एक-एक कान की बाली हमें दो।"

[25]अत: इस्राएल के लोगों ने गिदोन से कहा, "जो तुम चाहते हो उसे हम प्रसन्नता से देंगे।" इसलिए उन्होंने भूमि पर एक अंगरखा बिछाया। हर एक व्यक्ति ने अंगरखे पर एक कान की बाली फेंकी। [26]जब वे बालियाँ इकट्ठी करके तौली गई तो वे लगभग तैंतालीस पौंड निकलीं। इस वजन का सम्बन्ध उन चीज़ों के वजन से नहीं है जिन्हें इस्राएल के लोगों ने गिदोन को अन्य भेंटों के रूप में दिया था। उन्होंने चाँद के आकार और आँसू की बूँद के आकार के आभूषण भी उसे दिये और उन्होंने उसे बैंगनी रंग के चोगे भी दिये। ये वे चीज़ें थीं, जिन्हें मिद्यानी लोगों के राजाओं ने पहना था। उन्होंने मिद्यानी लोगों के राजाओं के उँटो की जंजीरें भी उसे दीं।

[27] गिदोन ने सोने का उपयोग एपोद बनाने के लिये किया। उसने एपोद को अपने निवास के उस नगर में रखा जिसे ओप्रा कहा जाता था। इस्राएल के सभी लोग एपोद को पूजते थे। इस प्रकार इस्राएल के लोग यहोवा पर विश्वास करने वाले नहीं थे-वे एपोद की पूजा करते थे। वह एपोद एक जाल बन गया, जिसने गिदोन और उसके परिवार से पाप करवाया।

गिदोन की मृत्यु

[28]इस प्रकार मिद्यानी लोग इस्राएल के शासन में रहने के लिये मजबूर किये गये। मिद्यानी लोगों ने अब आगे कोई कष्ट नहीं दिया। इस प्रकार गिदोन के जीवन काल मे चालीस वर्षों तक पूरे देश में शान्ति रही।

[29]योआश का पुत्र यरुब्बाल (गिदोन) अपने घर रहने गया। [30]गिदोन के अपने सत्तर पुत्र थे। इसके इतने अधिक पुत्र थे क्योंकि उसकी अनेक पत्नियाँ थीं। [31]गिदोन की एक रखैल भी थी। जो शकेम नगर में रहती थी। उस रखैल से भी उसे एक पुत्र था। उसने उस पुत्र का नाम अबीमेलेक रखा।

[32]इस प्रकार योआश का पुत्र गिदोन पर्याप्त बूढ़ा होने पर मरा। गिदोन उस कब्र में दफनाया गया, जो उसके पिता योआश के अधिकार में थी। वह कब्र ओप्रा नगर में है जहाँ अबीएजेरी लोग रहते हैं। [33]ज्योंही गिदोन मरा त्योंही इस्राएल के लोग फिर परमेश्वर के प्रति विश्वास रखने वाले न रहे। वे बाल का अनुसरण करने लगे। उन्होंने बालबरीत* को अपना देवता बनाया। [34]इस्राएल के लोग यहोवा, अपने परमेश्वर को याद नहीं करते थे, यद्यपि उसने उन्हें उन सभी शत्रुओं से बचाया जो इस्राएल

बालबरीत इस देवता के नाम का अर्थ, "वाचा का यहोवा" है। इसे एलबरीत भी कहते हैं।

के लोगों के चारों ओर रहते थे। [35]इस्राएल के लोगों ने यरुब्बाल (गिदोन) के परिवार के प्रति कोई भक्ति नहीं दिखाई, यद्यपि उसने उनके लिये बहुत से अच्छे कार्य किये थे।

अबीमेलेक राजा बना

9 अबीमेलेक यरुब्बाल (गिदोन)का पुत्र था। अबीमेलेक अपने उन मामाओं के पास गया जो शकेम नगर में रहते थे। उसने अपने मामाओं और माँ के परिवार से कहा, [2]"शकेम नगर के प्रमुखों से यह प्रश्न पूछो: 'यरुब्बाल के सत्तर पुत्रों से आप लोगों का शासित होना अच्छा है या किसी एक ही व्यक्ति से शासित होना? याद रखो, मैं तुम्हारा सम्बन्धी हूँ।'"

[3]अबीमेलेक के मामाओं ने शकेम के प्रमुखों से बात की और उनसे वह प्रश्न किया। शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक का अनुसरण करने का निश्चय किया। प्रमुखों ने कहा, "आखिरकार वह हमारा भाई है।" [4]इसलिये शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक को सत्तर चाँदी के टुकड़े दिये। वह चाँदी बालबरीत देवता के मन्दिर की थी। अबीमेलेक ने चाँदी का उपयोग कुछ व्यक्तियों को काम पर लगाने के लिये किया। ये व्यक्ति खूँखार और बेकार थे। वे अबीमेलेक के पीछे, जहाँ कहीं वह गया, चलते रहे।

[5]अबीमेलेक ओप्रा नगर को गया। ओप्रा उसके पिता का निवास स्थान था। उस नगर में अबीमेलेक ने अपने सत्तर भाइयों की हत्या कर दी। वे सत्तर भाई अबीमेलेक के पिता यरुब्बाल के पुत्र थे। उसने सभी को एक पत्थर पर मारा* किन्तु यरुब्बाल का सबसे छोटा पुत्र अबीमेलेक से दूर छिप गया और भाग निकला। सबसे छोटे पुत्र का नाम योताम था।

[6]तब शकेम नगर के सभी प्रमुख और बेतमिल्लो* के महल के सदस्य एक साथ आए। वे सभी लोग उस पाषाण–स्तम्भ के निकट के बड़े पेड़ के पास इकट्ठे हुए जो शकेम नगर में था और उन्होंने अबीमेलेक को अपना राजा बनाया।

योताम की कथा

[7]योताम ने सुना कि शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक को राजा बना दिया है। जब उसने यह सुना तो वह गया और गरिज्जीम पर्वत* की चोटी पर खड़ा हुआ। योताम ने लोगों को यह कथा चिल्लाकर सुनाई।

शकेम के लोगों, मेरी बात सुनों और तब आपकी
बात परमेश्वर सुनेगा।
[8]एक दिन पेड़ों ने अपने ऊपर शासन करने
के लिए एक राजा चुनने का निर्णय किया। पेड़ों
ने जैतून के पेड़ से कहा, "तुम हमारे ऊपर
राजा बनो।"
[9]किन्तु जैतून के पेड़ ने कहा, "मनुष्य और ईश्वर
मेरी प्रशंसा मेरे तेल के लिये करते हैं। क्या मैं
जाकर केवल अन्य पेड़ों पर शासन करने के लिये
अपना तेल बनाना बन्द कर दूँ?"
[10]तब पेड़ों ने अंजीर के पेड़ से कहा, "आओ और
हमारे राजा बनो।"
[11]किन्तु अंजीर के पेड़ ने उत्तर दिया, "क्या मैं केवल
जाकर अन्य पेड़ों पर शासन करने के लिये अपने
मीठे और अच्छे फल पैदा करना बन्द कर दूँ?"
[12]तब पेड़ों ने अंगूर की बेल से कहा, "आओ और
हमारे राजा बनो।"
[13]किन्तु अंगूर की बेल ने उत्तर दिया, "मेरी दाखमधु
मनुष्य और ईश्वर दोनों को प्रसन्न करती है। क्या
मुझे केवल जाकर पेड़ों पर शासन करने के लिये
अपनी दाखमधु पैदा करना बन्द कर देना चाहिये।"
[14]अन्त में पेड़ों ने कंटीली झाड़ी से कहा, "आओ
और हमारे राजा बनो।"
[15]किन्तु कंटीली झाड़ी ने पेड़ों से कहा, "यदि तुम
सचमुच मुझे अपने ऊपर राजा बनाना चाहते हो तो
आओ और मेरी छाया में अपनी शरण बनाओ।
यदि तुम ऐसा करना नहीं चाहते तो इस कंटीली
झाड़ी से आग निकलने दो, और उस आग को
लबानोन के चीड़ के पेड़ों को भी जला देने दो।"

[16]यदि आप पूरी तरह उस समय ईमानदार थे जब आप लोगों ने अबीमेलेक को राजा बनाया, तो आप लोगों

एक पत्थर पर मारा एक ही समय पर मारा।

बेतमिल्लो यह देखने में शकेम नगर का एक किला था। यह नगर में ही एक किला हो सकता है या यह कहीं नगर के पास हो सकता है।

गरिज्जीम पर्वत यह पर्वत शकेम नगर के ठीक बगल में स्थित है।

को उससे प्रसन्न होना चाहिए। यदि आप लोगों ने यरुब्बाल और उसके परिवार के लोगों के साथ उचित व्यवहार किया है तो, यह बहुत अच्छा है। यदि आपने यरुब्बाल के साथ वही व्यवहार किया है जो आपको करना चाहिये तो यही अच्छा है। [17]किन्तु तनिक सोचें कि मेरे पिता ने आपके लिये क्या किया है? मेरे पिता आप लोगों के लिये लड़े। उन्होंने अपने जीवन को उस समय खतरे में डाला जब उन्होंने आप लोगों को मिद्यानी लोगों से बचाया। [18]किन्तु अब आप लोग मेरे पिता के परिवार के विरुद्ध हो गए हैं। आप लोगों ने मेरे पिता के सत्तर पुत्रों को एक पत्थर पर मारा है। आप लोगों ने अबीमेलेक को शकेम का राजा बनाया है। वह मेरे पिता की दासी का पुत्र है। आप लोगों ने अबीमेलेक को केवल इसलिए राजा बनाया है कि वह आपका सम्बन्धी है। [19]इसलिये यदि आज आप लोग पूरी तरह यरुब्बाल और उसके परिवार के प्रति ईमानदार रहे हैं, तब अबीमेलेक को अपना राजा मानकर आप प्रसन्न हो सकते हैं और वह भी आप लोगों से प्रसन्न हो सकता है। [20]किन्तु यदि आपने उचित नहीं किया है तो, अबीमेलेक शकेम नगर के सभी प्रमुखों और मिल्लो के महल को नष्ट कर डाले। शकेम नगर के प्रमुख भी अबीमेलेक को नष्ट कर डाले।"

[21]योताम यह सब कहने के बाद भाग खड़ा हुआ। वह भागकर बेर नगर में पहुँचा। योताम उस नगर में रहता था, क्योंकि वह अपने भाई अबीमेलेक से भयभीत था।

अबीमेलेक शकेम के विरुद्ध युद्ध करता है

[22]अबीमेलेक ने इस्राएल के लोगों पर तीन वर्ष तक शासन किया। [23-24]अबीमेलेक ने यरुब्बाल के सत्तर पुत्रों को मार डाला था। वे अबीमेलेक के अपने भाई थे। शकेम नगर के प्रमुखों ने उन पुत्रों को मारने में उसकी सहायता की थी। इसलिए परमेश्वर ने अबीमेलेक और शकेम के प्रमुखों के बीच झगड़ा उत्पन्न कराया और शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक को नुकसान पहुँचाने के लिये योजना बनाई।

[25]शकेम नगर के प्रमुख अबीमेलेक को अब पसन्द नहीं कर रहे थे। उन लोगों ने पहाड़ियों की चोटियों पर से जाने वालों पर आक्रमण करने और उनका सब कुछ लूटने के लिये आदमियों को रखा। अबीमेलेक ने उन आक्रमणों के बारे में पता लगाया।

[26]गाल नामक एक व्यक्ति और उसके भाई शकेम नगर को आए। गाल, एबेद नामक व्यक्ति का पुत्र था। शकेम के प्रमुखों ने गाल पर विश्वास और उसका अनुसरण करने का निश्चय किया।

[27]एक दिन शकेम के लोग अपने बागों में अगूंर तोड़ने गए। लोगों ने दाखमधु बनाने के लिये अगूंरों को निचोड़ा और तब उन्होंने अपने देवता के मन्दिर पर एक दावत दी। लोगों ने खाया और दाखमधु पी। तब अबीमेलेक को अभिशाप दिया।

[28]तब एबेद के पुत्र गाल ने कहा, "हम लोग शकेम के व्यक्ति हैं। हम अबीमेलेक की आज्ञा क्यों माने? वह अपने को क्या समझता है? यह ठीक है कि अबीमेलेक यरुब्बाल के पुत्रों में से एक है और अबीमेलेक ने जबूल* को अपना अधिकारी बनाया, यह ठीक है? हमें अबीमेलेक की आज्ञा नहीं माननी चाहिए। हमें हमोर के लोगों* की आज्ञा माननी चाहिए। (हमोर शकेम का पिता था।) [29]यदि आप मुझे इन लोगों का सेनापति बनाते हैं तो मैं अबीमेलेक से मुक्ति दिला दूँगा। मैं उससे कहूँगा, 'अपनी सेना को तैयार करो और युद्ध के लिये आओ।'"

[30]जबूल शकेम नगर का प्रशासक था। जबूल ने वह सब सुना जो एबेद के पुत्र गाल ने कहा और जबूल बहुत क्रोधित हुआ। [31]जबूल ने अबीमेलेक के पास अरुमा* नगर में दूतों को भेजा। सन्देश यह है: एबेद का पुत्र गाल और इस के भाई शकेम नगर में आए हैं और तुम्हारे लिये कठिनाई उत्पन्न कर रहे हैं। गाल पूरे नगर को तुम्हारे विरुद्ध कर रहा है। [32]इसलिए अब तुम्हें और तुम्हारे लोगों को रात में उठना चाहिये और नगर के बाहर खेतों मे छिपना चाहिए। [33]जब सवेरे सूरज निकले तो नगर पर

जबूल पद तीस में हम देखते हैं कि जबूल वह व्यक्ति था जिसे अबीमेलेक ने शकेम नगर का प्रशासक नियुक्त किया था। यही कारण है कि गाल यहाँ जबूल की आलोचना करता है।
हमोर के लोगों इस पदबन्ध का संकेत शकेम में जन्में नागरिकों की ओर है। हमोर उस व्यक्ति का पिता था जिसका नाम "उत्पत्ति 34" की एक कथा में शकेम है। शकेम नगर का नाम हमोर के पुत्र के नाम पर रखा हुआ, कहा गया है।
अरुमा हिब्रू में "तोर्मा" है। यह संभवत: वह "अरुमा" नगर है जहाँ अबीमेलेक राजा के रूप में रहता था। यह संभवत: शकेम से आठ मील दक्षिण में स्थित था।

आक्रमण कर दो। जब वे लोग लड़ने के लिये बाहर आएं तो तुम उनका जो कर सको, करो।

[34]इसलिए अबीमेलेक और सभी सैनिक रात को उठे और नगर को गए। वे सैनिक चार टुकड़ियों मे बँट गए। वे शकेम नगर के पास छिप गए। [35]एबेद का पुत्र गाल बाहर निकल कर शकेम नगर के फाटक के प्रवेश द्वार पर था। जब गाल वहाँ खड़ा था उसी समय अबीमेलेक और उसके सैनिक अपने छिपने के स्थानों से बाहर आए।

[36]गाल ने सैनिकों को देखा। गाल ने जबूल से कहा, "ध्यान दो, पर्वतों से लोग नीचे उतर रहे हैं।" किन्तु जबूल ने कहा, "तुम केवल पर्वतों की परछाइयाँ देख रहे हो। परछाइयाँ लोगों की तरह दिखाई दे रही हैं।"

[37]किन्तु गाल ने फिर कहा, "ध्यान दो प्रदेश की नाभि नामक स्थान से लोग बढ़ रहे हैं, और जादूगर के पेड़ से एक टुकड़ी आ रही है।"* [38]तब जबूल ने उससे कहा, "अब तुम्हारी वह बड़ी–बड़ी बातें कहाँ गई, जो तुम कहते थे, 'अबीमेलेक कौन होता है, जिसकी अधीनता में हम रहें?' क्या वे वही लोग नहीं हैं जिनका तुम मजाक उड़ाते थे? जाओ और उनसे लड़ो।"

[39]इसलिए गाल शकेम के प्रमुखों को अबीमेलेक से युद्ध करने के लिये ले गया। [40]अबीमेलेक और उसके सैनिकों ने गाल और उसके आदमियों का पीछा किया। गाल के लोग शकेम नगर के फाटक की ओर पीछे भागे। गाल के बहुत से लोग फाटक पर पहुँचने से पहले मार डाले गए।

[41]तब अबीमेलेक अरुमा नगर को लौट गया। जबूल ने गाल और उसके भाइयों को शकेम नगर छोड़ने को विवश किया। [42]अगले दिन शकेम के लोग अपने खेतों में काम करने को गए। अबीमेलेक ने उसके बारे में पता लगाया। [43]इसलिए अबीमेलेक ने अपने सैनिकों को तीन टुकड़ियों मे बाँटा। वह शकेम के लोगों पर अचानक आक्रमण करना चाहता था। इसलिये उसने अपने आदमियों को खेतों में छिपाया। जब उसने लोगों को नगर से बाहर आते देखा तो वह टूट पड़ा और उन पर आक्रमण कर दिया। [44]अबीमेलेक और उसके लोग शकेम नगर के फाटक के पास दौड़ कर आए। अन्य दो टुकड़ियाँ खेत में लोगों के पास दौड़कर गई और उन्हें मार डाला। [45]अबीमेलेक और उसके सैनिक शकेम नगर के साथ पूरे दिन लड़े। अबीमेलेक और उसके सैनिकों ने शकेम नगर पर अधिकार कर लिया और उस नगर के लोगों को मार डाला। तब अबीमेलेक ने उस नगर को ध्वस्त किया और उस ध्वंस पर नमक फेंकवा दिया।

[46]कुछ लोग शकेम की मीनार* के पास रहते थे। जब उस स्थान के लोगों ने सुना कि शकेम के साथ क्या हुआ है तब वे सबसे अधिक सुरक्षित उस कमरे* में इकट्ठे हो गए जो एलबरीत देवता का मन्दिर था। [47]अबीमेलेक ने सुना कि शकेम की मीनार के सभी प्रमुख एक साथ इकट्ठे हो गए हैं। [48]इसलिए अबीमेलेक और उसके सभी लोग सलमोन* पर्वत पर गए। अबीमेलेक ने एक कुल्हाड़ी ली और उसने कुछ शाखाएँ काटीं। उसने उन शाखाओं को अपने कंधों पर रखा। तब उसने अपने साथ के आदमियों से कहा "जल्दी करो, जो मैंने किया है, वही करो।" [49]इसलिए उन लोगों ने शाखाएँ काटीं और अबीमेलेक का अनुसरण किया। उन्होंने शाखाओं की ढेर एलबरीत देवता के मन्दिर के सबसे अधिक सुरक्षित कमरे के साथ लगाई। तब उन्होंने शाखाओं में आग लगा दी और कमरे में लोगों को जला दिया। इस प्रकार लगभग शकेम की मीनार के निवासी एक हजार स्त्री–पुरुष मर गए।

अबीमेलेक की मृत्य

[50]तब अबीमेलेक और उसके साथी तेबेस नगर को गए। अबीमेलेक और उसके साथियों ने तेबेस नगर पर अधिकार कर लिया। [51]किन्तु तेबेस नगर में एक दृढ़ मीनार थी। उस नगर के सभी स्त्री–पुरुष और उस नगर के प्रमुख उस मीनार के पास भागकर पहुँचे। जब नगर के लोग मीनार के भीतर घुस गए तो उन्होंने अपने पीछे मीनार का दरवाजा बन्द कर दिया। तब वे मीनार की छत पर चढ़ गए। [52]अबीमेलेक और उसके साथी मीनार के पास उस पर आक्रमण करने के लिये पहुँचे। अबीमेलेक मीनार की दीवार तक गया। वह मीनार को आग लगाना

प्रदेश की ... रही है शकेम के करीब की पहाड़ियाँ।

मीनार संभवत: यह शकेम के पास स्थान था, किन्तु वास्तव में नगर का भाग नहीं था।

सुरक्षित उस कमरे हिब्रू शब्द जिसका यहाँ प्रयोग हुआ है, अनिश्चित अर्थवाला है।

सलमोन संभवत यह उस एबल पर्वत का दूसरा नाम है जो शकेम के समीप है।

चाहता था। [53]जब अबीमेलेक द्वार पर खड़ा था, उसी समय एक स्त्री ने एक चक्की का पत्थर उसके सिर पर फेंका। चक्की के पाट ने अबीमेलेक की खोपड़ी को चूर–चूर कर डाला। [54]अबीमेलेक ने शीघ्रता से अपने उस नौकर से कहा जो उसके शस्त्र ले चल रहा था, "अपनी तलवार निकालो और मुझे मार डालो। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे मार डालो जिससे लोग यह न कहें, कि 'एक स्त्री ने अबीमेलेक को मार डाला।'" इसलिए नौकर ने अबीमेलेक में अपनी तलवार घुसेड़ दी और अबीमेलेक मर गया। [55]इस्राएल के लोगों ने देखा कि अबीमेलेक मर गया। इसलिए वे सभी अपने घरों को लौट गए।

[56]इस प्रकार परमेश्वर ने अबीमेलेक को उसके सभी किये पापों के लिये दण्ड दिया। अबीमेलेक ने अपने सत्तर भाइयों को मारकर अपने पिता के विरुद्ध पाप किया था। [57]परमेश्वर ने शकेम नगर के लोगों को भी उनके द्वारा किए गए पाप का दण्ड दिया। इस प्रकार योताम ने जो कहा, सत्य हुआ। (योताम यरुब्बाल का सबसे छोटा पुत्र था। यरुब्बाल गिदोन था।)

न्यायाधीश तोला

10 अबीमेलेक के मरने के बाद इस्राएल के लोगों की रक्षा के लिये परमेश्वर द्वारा दूसरा न्यायाधीश भेजा गया। उस व्यक्ति का नाम तोला था। तोला पुआ नामक व्यक्ति का पुत्र था। पुआ दोदो नामक व्यक्ति का पुत्र था। तोला इस्साकार के परिवार समूह का था। तोला शामीर नगर में रहता था। शामीर नगर एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में था। [2]तोला इस्राएल के लोगों के लिये तेईस वर्ष तक न्यायाधीश रहा। तब तोला मर गया और शामीर नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश याईर

[3]तोला के मरने के बाद, परमेश्वर द्वारा एक और न्यायाधीश भेजा गया। उस व्यक्ति का नाम याईर था। याईर गिलाद के क्षेत्र में रहता था। याईर इस्राएल के लोगों के लिये बाईस वर्ष तक न्यायाधीश रहा। [4]याईर के तीस पुत्र थे। वे तीस पुत्र तीस गधों पर सवार होते थे। वे तीस पुत्र गिलाद क्षेत्र के तीस नगरों की व्यवस्था करते थे। वे नगर "याईर के ग्राम" आज तक कहे जाते हैं। [5]याईर मरा और कामोन नगर मे दफनाया गया।

अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़ते हैं

[6]यहोवा ने इस्राएल के लोगों को फिर पाप करते हुए देखा। वे बाल एवं अश्तोरेत की मूर्तियों की पूजा करते थे। वे आराम, सीदोन, मोआब, अम्मोन और पलिश्तियों के देवताओं की पूजा करते थे। इस्राएल के लोगों ने यहोवा को छोड़ दिया और उसकी सेवा बन्द कर दी। [7]इसलिए यहोवा इस्राएल के लोगों पर क्रोधित हुआ। यहोवा ने पलिश्तियों और अम्मोनियों को उन्हें पराजित करने दिया। [8]उसी वर्ष उन लोगों ने इस्राएल के उन लोगों को नष्ट किया जो गिलाद क्षेत्र में यरदन नदी के पूर्व रहते थे। यह वही प्रदेश है जहाँ अम्मोनी लोग रह चुके थे। इस्राएल के वे लोग अट्ठारह वर्ष तक कष्ट भोगते रहे। [9]तब अम्मोनी लोग यरदन नदी के पार गए। वे लोग यहूदा, बिन्यामीन और एप्रैम लोगों के विरुद्ध लड़ने गए। अम्मोनी लोगों ने इस्राएल के लोगों पर अनेक विपत्तियाँ ढाईं।

[10]इसलिए इस्राएल के लोगों ने यहोवा को रोकर पुकारा, "हम लोगों ने, परमेश्वर, तेरे विरुद्ध पाप किया है। हम लोगों ने अपने परमेश्वर को छोड़ा और बाल की मूर्तियों की पूजा की।"

[11]यहोवा ने इस्राएल के लोगों को उत्तर दिया, "तुम लोगों ने मुझे तब रोकर पुकारा जब मिस्री, एमोरी, अम्मोनी तथा पलिश्ती लोगों ने तुम पर प्रहार किये। मैंने तुम्हें इन लोगों से बचाया। [12]तुम लोग तब चिल्लाए जब सीदोन के लोगों, अमालेकियों और मिद्यानियों ने तुम पर प्रहार किया। मैंने उन लोगों से भी तुम्हें बचाया। [13]किन्तु तुमने मुझको छोड़ा है। तुमने अन्य देवताओं की उपासना की है। इसलिए मैंने तुम्हें फिर बचाने से इन्कार किया है। [14]तुम उन देवताओं की पूजा करना पसन्द करते हो। इसलिए उनके पास सहायता के लिये पुकारने जाओ। विपत्ति में पड़ने पर उन देवताओं को रक्षा करने दो।"

[15]किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा से कहा, "हम लोगों ने पाप किया है। तू हम लोगों के साथ जो चाहता है, कर। किन्तु आज हमारी रक्षा कर।" [16]तब इस्राएल के लोगों ने अपने पास के विदेशी देवताओं को फेंक दिया। उन्होंने फिर से यहोवा की उपासना आरम्भ की। इसलिए जब यहोवा ने उन्हें कष्ट उठाते देखा, तब वह उनके लिए दुःखी हुआ।

यिप्तह प्रमुख चुना गया

[17]अम्मोनी लोग युद्ध करने के लिये एक साथ इकट्ठे हुए, उनका डेरा गिलाद क्षेत्र में था। इस्राएल के लोग एक साथ इकट्ठे हुए, उनका डेरा मिस्पा नगर में था। [18]गिलाद क्षेत्र में रहने वाले लोगों के प्रमुखों ने कहा, "अम्मोन के लोगों पर आक्रमण करने में जो व्यक्ति हमारा नेतृत्व करेगा, वही व्यक्ति, उन सभी लोगों का प्रमुख हो जाएगा जो गिलाद क्षेत्र में रहते हैं।"

11 यिप्तह गिलाद के परिवार समूह से था। वह एक शक्तिशाली योद्धा था। किन्तु यिप्तह एक वेश्या का पुत्र था। उसका पिता गिलाद नाम का व्यक्ति था। [2]गिलाद की पत्नी के अनेक पुत्र थे। जब वे पुत्र बड़े हुए तो उन्होंने यिप्तह को पसन्द नहीं किया। उन पुत्रों ने यिप्तह को अपने जन्म के नगर को छोड़ने के लिये विवश किया। उन्होंने उससे कहा, "तुम हमारे पिता की सम्पत्ति में से कुछ भी नहीं पा सकते। तुम दूसरी स्त्री के पुत्र हो।" [3]इसलिये यिप्तह अपने भाइयों के कारण दूर चला गया। वह तोब प्रदेश में रहता था। तोब प्रेदश में कुछ उपद्रवी लोग यिप्तह का अनुसरण करने लगे।

[4]कुछ समय बाद अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों से लड़े। [5]अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़ रहे थे। इसलिये गिलाद प्रदेश के अग्रज (प्रमुख) यिप्तह के पास आए। वे चाहते थे कि यिप्तह तोब प्रदेश को छोड़ दे और गिलाद प्रदेश में लौट आए।

[6]प्रमुखों ने यिप्तह से कहा, "आओ, हमारे प्रमुख बनों, जिससे हम लोग अम्मोनियों के साथ लड़ सकें।"

[7]किन्तु यिप्तह ने गिलाद प्रदेश के अग्रजों (प्रमुखों) से कहा, "क्या यह सत्य नहीं कि तुम लोग मुझसे घृणा करते हो? तुम लोगों ने मुझें अपने पिता का घर छोड़ने के लिये विवश किया। अत: जब तुम विपत्ति में हो तो मेरे पास क्यों आ रहे हो?"

[8]गिलाद प्रदेश के अग्रजों ने यिप्तह से कहा, "यही कारण है जिससे हम अब तुम्हारे पास आए हैं। कृपया हम लोगों के साथ आओ और अम्मोनी लोगों के विरुद्ध लड़ों। तुम उन सभी लोगों के सेनापति होगे जो गिलाद प्रदेश में रहते हैं।"

[9]तब यिप्तह ने गिलाद प्रदेश के अग्रजों से कहा, "यदि तुम लोग चाहते हो कि मैं गिलाद को लौटूँ और अम्मोनी लोगों के विरुद्ध लड़ूँ तो यह बहुत अच्छी बात है। किन्तु यदि यहोवा मुझे विजय पाने में सहायता करे तो मैं तुम्हारा नया प्रमुख बनूँगा।"

[10]गिलाद प्रदेश के अग्रजों ने यिप्तह से कहा, "हम लोग जो बातें कर रहे हैं, यहोवा वह सब सुन रहा है। हम लोग यह सब करने की प्रतिज्ञा कर रहे हैं जो तुम हमें करने को कह रहे हो।" [11]अत: यिप्तह गिलाद के अग्रजों के साथ गया। उन लोगों ने यिप्तह को अपना प्रमुख तथा सेनापति बनाया। यिप्तह ने मिस्पा नगर में यहोवा के सामने अपनी सभी बातें दुहरायी।

यिप्तह अम्मोनी राजा के पास सन्देश भेजता है

[12]यिप्तह ने अम्मोनी राजा के पास दूत भेजा। दूत ने राजा को यह सन्देश दिया: "अम्मोनी और इस्राएल के लोगों के बीच समस्या क्या है? तुम हमारे प्रदेश में लड़ने क्यों आए हो?"

[13]अम्मोनी लोगों के राजा ने यिप्तह के दूत से कहा, "हम लोग इस्राएल के लोगों से इसलिए लड़ रहे हैं क्योंकि इस्राएल के लोगों ने हमारी भूमि तब ले ली जब वे मिस्र से आए थे। उन्होंने हमारी भूमि अर्नोन नदी से यब्बोक नदी और वहाँ से यरदन नदी तक ले ली और अब इस्राएल के लोगों से कहो कि वे हमारी भूमि हमें शान्तिपूर्वक वापस दे दें।"

[14]अत: यिप्तह का दूत यह सन्देश यिप्तह के पास वापस ले गया।* तब यिप्तह ने अम्मोनी लोगों के राजा के पास फिर दूत भेजे। [15]वे यह सन्देश ले गए:

"यिप्तह यह कह रहा है। इस्राएल ने मोआब के लोगों या अम्मोन के लोगों की भूमि नहीं ली। [16]जब इस्राएल के लोग मिस्र देश से बाहर आए तो इस्राएल के लोग मरूभूमि में गए थे। इस्राएल के लोग लाल सागर को गए। तब वे उस स्थान पर गए जिसे कादेश कहा जाता है। [17]इस्राएल के लोगों ने एदोम प्रदेश के राजा के पास दूत भेजे थे। दूतों ने कृपा की याचना की थी। उन्होंने कहा था, 'इस्राएल के लोगों को अपने प्रदेश से गुजर जाने दो।' किन्तु एदोम के राजा ने अपने देश से हमें नहीं जाने दिया। हम लोगों ने वही सन्देश मोआब के राजा के

अत: यिप्तह ... गया यह वाक्य प्राचीन यूनानी अनुवाद से हैं। हिब्रू पाठ में यह वाक्य नहीं है।

पास भेजा। किन्तु मोआब के राजा ने भी अपने प्रदेश से होकर नहीं जाने दिया। इसलिए इस्राएल के लोग कादेश में ठहरे रहे।

[18]तब इस्राएल के लोग मरूभूमि में गए और एदोम प्रदेश तथा मोआब प्रदेश की छोरों के चारों ओर चक्कर काटते रहे। इस्राएल के लोगों ने मोआब प्रदेश के पूर्व की तरफ से यात्रा की। उन्होंने अपना डेरा अर्नोन नदी की दूसरी ओर डाला। उन्होंने मोआब की सीमा को पार नहीं किया। (अर्नोन नदी मोआब के प्रदेश की सीमा थी।)

[19]तब इस्राएल के लोगों ने एमोरी लोगों के राजा सीहोन के पास दूत भेजे। सीहोन हेश्बोन नगर का राजा था। दूतों ने सीहोन से माँग की, "इस्राएल के लोगों को अपने प्रदेश से गुजर जाने दो। हम लोग अपने प्रदेश में जाना चाहते हैं। [20]किन्तु एमोरी लोगों के राजा सीहोन ने इस्राएल के लोगों को अपनी सीमा पार नहीं करने दी। सीहोन ने अपने सभी लोगों को इकट्ठा किया और यहस पर अपना डेरा डाला। तब एमोरी लोग इस्राएल के लोगों के साथ लड़े। [21]किन्तु यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर ने, इस्राएल के लोगों की सहायता, सीहोन और उसकी सेना को हराने में, की। एमोरी लोगों की सारी भूमि इस्राएल के लोगों की सम्पत्ति बन गई। [22]इस प्रकार इस्राएल के लोगों ने एमोरी लोगों का सारा प्रदेश पाया। यह प्रदेश अर्नोन नदी से यब्बोक नदी तक था। यह प्रदेश मरूभूमि से यरदन नदी तक था।

[23]यह यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर था जिसने एमोरी लोगों को अपना देश छोड़ने के लिये बलपूर्वक विवश किया और यहोवा ने वह प्रदेश इस्राएल के लोगों को दिया। क्या तुम सोचते हो कि तुम इस्राएल के लोगों से यह छुड़वा दोगे? [24]निश्चय ही, तुम उस प्रदेश में रह सकते हो जिसे तुम्हारे देवता कमोश* ने तुम्हें दिया है। इसलिये हम लोग उस प्रदेश में रहेंगे, जिसे यहोवा, हमारे परमेश्वर ने हमें दिया है। [25]क्या तुम सिप्पोर नामक व्यक्ति के पुत्र बालाक* से अधिक अच्छे हो? वह मोआब प्रदेश का राजा था। क्या उसने इस्राएल के लोगों से बहस की? क्या वह सचमुच इस्राएल के लोगों से लड़ा? [26]इस्राएल के लोग हेश्बोन और उसके चारों ओर के नगरों में तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं। इस्राएल के लोग अरोएर नगर और उसके चारों ओर के नगर में तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं। इस्राएल के लोग अर्नोन नदी के किनारे के सभी नगरों में तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं। तुमने इस समय में, इन नगरों को वापस लेने का प्रयत्न क्यों नहीं किया? [27]इस्राएल के लोगों ने किसी के विरुद्ध कोई पाप नहीं किया है। किन्तु तुम इस्राएल के लोगों के विरुद्ध बहुत बड़ी बुराई कर रहे हो। यहोवा को, जो सच्चा न्यायाधीश है, निश्चय करने दो कि इस्राएल के लोग ठीक रास्ते पर हैं या अम्मोनी लोग।"

[28]अम्मोनी लोगों के राजा ने यिप्तह के इस सन्देश को अनसुना किया।

यिप्तह की प्रतिज्ञा

[29]तब यहोवा का आत्मा यिप्तह पर उतरा। यिप्तह गिलाद प्रदेश और मनश्शे के प्रदेश से गुजरा। वह गिलाद प्रदेश में मिस्पे नगर को गया। गिलाद प्रदेश के मिस्पे नगर को पार करता हुआ यिप्तह, अम्मोनी लोगों के प्रदेश में गया।

[30]यिप्तह ने यहोवा को वचन दिया। उसने कहा, "यदि तू एमोरी लोगों को मुझे हराने देता है। [31]तो मैं उस पहली चीज को तुझे भेंट करूँगा जो मेरी विजय से लौटने के समय मेरे घर से बाहर आएगी। मैं इसे यहोवा को होमबलि के रूप में दूँगा।"

[32]तब यिप्तह अम्मोनी लोगों के प्रदेश में गया। यिप्तह अम्मोनी लोगों से लड़ा। यहोवा ने अम्मोनी लोगों को हराने में उसकी सहायता की। [33]उसने उन्हें अरोएर नगर से मिन्नीत के क्षेत्र की छोर तक हराया। यिप्तह ने बीस नगरों पर अधिकार किया। उसने अम्मोनी लोगों से आबेलकरामीम नगर तक युद्ध किया। यह अम्मोनी लोगों के लिये बड़ी हार थी। अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों द्वारा हरा दिये गए।

कमोश मोआब प्रदेश का राष्ट्रीय देवता, यद्यपि मिल्कोम अम्मोनी लोगों का देवता था।

बालाक देखें गिनती 22–24 में बालाक की कथा।

[34]यिप्तह मिस्पा को लौटा और अपने घर गया। उसकी पुत्री उससे घर से बाहर मिलने आई। वह एक तम्बूरा बजा रही थी और नाच रही थी। वह उसकी एकलौती पुत्री थी। यिप्तह उसे बहुत प्यार करता था। यिप्तह के पास कोई अन्य पुत्री या पुत्र नहीं थे। [35]जब यिप्तह ने देखा कि पहली चीज़ उसकी पुत्री ही थी, जो उसके घर से बाहर आई तब उसने दु:ख को अभिव्यक्त करने के लिये अपने वस्त्र फाड़ डाले और यह कहा, "आह! मेरी बेटी तूने मुझे बरबाद कर दिया। तूने मुझे बहुत दु:खी कर दिया! मैंने यहोवा को वचन दिया था, मैं उसे वापस नहीं ले सकता।"

[36]तब उसकी पुत्री ने यिप्तह से कहा, "पिता, आपने यहोवा से प्रतिज्ञा की है। अत: वही करें जो आपने करने की प्रतिज्ञा की है। अन्त में यहोवा ने आपके शत्रुओं अम्मोनी लोगों को हराने में सहायता की।"

[37]तब उसकी पुत्री ने अपने पिता यिप्तह से कहा, "किन्तु मेरे लिये पहले एक काम करो। दो महीने तक मुझे अकेली रहने दो। मुझे पहाड़ों पर जाने दो। मैं विवाह नहीं करूँगी, मेरा कोई बच्चा नहीं होगा। अत: मुझे और मेरी सहेलियों को एक साथ रोने–चिल्लाने दो।"

[38]यिप्तह ने कहा, "जाओ और वैसा ही करो," यिप्तह ने उसे दो महीने के लिये भेज दिया। यिप्तह की पुत्री और उसकी सहेलियाँ पहाड़ों में रहे। वे उसके लिए रोये–चिल्लाये, क्योंकि वह न तो विवाह करेगी और न ही बच्चे उत्पन्न करेगी।

[39]दो महीने के बाद यिप्तह की पुत्री अपने पिता के पास लौटी। यिप्तह ने वही किया जो उसने यहोवा से प्रतिज्ञा की थी। यिप्तह की पुत्री का कभी किसी के साथ कोई शारीरिक सम्बन्ध नहीं रहा। इसलिए इस्राएल में यह रिवाज बन गया। [40]इस्राएल की स्त्रियाँ हर वर्ष गिलाद के यिप्तह की पुत्री को याद करती थीं। स्त्रियाँ यिप्तह की पुत्री के लिये हर एक वर्ष चार दिन तक रोती थीं।

यिप्तह और एप्रैम

12 एप्रैम के परिवार समूह के लोगों ने अपने सैनिकों को इकट्ठा किया। तब वे नदी पार करके सापोन नगर गए। उन्होंने यिप्तह से कहा, "तुमने अम्मोनी लोगों से लड़ने में सहायता के लिये हमें क्यों नहीं बुलाया? हम लोग तुमको और तुम्हारे घर को जला देंगे।"

[2]यिप्तह ने उन्हें उत्तर दिया, "अम्मोनी लोग हम लोगों के लिये अनेक समस्यायें उत्पन्न कर रहे थे। इसलिए मैं और हमारे लोग उनके विरुद्ध लड़े। मैंने तुम लोगों को बुलाया, किन्तु तुम लोग हम लोगों की सहायता करने नहीं आए। [3]मैंने देखा कि तुम लोग सहायता नहीं करोगे। इसलिए मैंने अपना जीवन खतरे में डाला। मैं अम्मोनी लोगों से लड़ने के लिये नदी के पार गया। यहोवा ने उन्हें हराने में मेरी सहायता की। अब आज तुम मेरे विरुद्ध लड़ने क्यों आए हो?"

[4]तब यिप्तह ने गिलाद के लोगों को एक साथ बुलाया। वे एप्रैम के परिवार समूह के लोगों के साथ लड़े। वे एप्रैम के लोगों के विरुद्ध इसलिए लड़े, क्योंकि उन लोगों ने गिलाद के लोगों का अपमान किया था। उन्होंने कहा था, "गिलाद के लोगों, तुम लोग एप्रैम के बचे हुए लोगों के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हो। तुम लोगों के पास अपना प्रदेश भी नहीं है। तुम लोगों का एक भाग एप्रैम में से है तथा दूसरा भाग मनश्शे में से है।" गिलाद के लोगों ने एप्रैम के लोगों को हराया।

[5]गिलाद के लोगों ने यरदन नदी के घाटों पर अधिकार कर लिया। वे घाट एप्रैम प्रदेश तक ले जाते थे। एप्रैम में से बचा हुआ जो कोई भी नदी पर आता, वह कहता, "मुझे पार करने दो" तो गिलाद के लोग उससे पूछते, "क्या तुम एप्रैम में से हो?" यदि वह "नहीं" कहता तो, [6]वे कहते, 'शिब्बोलेत शब्द का उच्चारण करो।'" एप्रैम के लोग उस शब्द का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते थे। वे उसे "सिब्बोलेत" शब्द उच्चारण करते थे। यदि एप्रैम में से बचा व्यक्ति "सिब्बोलेत" का उच्चारण करता तो गिलाद के लोग उसे घाट पर मार देते थे। इस प्रकार उस समय एप्रैम में से बयालीस हजार व्यक्ति मारे गए थे।

[7]यिप्तह इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश छ: वर्ष तक रहा। तब गिलाद का निवासी यिप्तह मर गया। उसे गिलाद में उसके अपने नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश इबसान

[8]यिप्तह के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश इबसान नामक व्यक्ति हुआ। इबसान बेतलेहेम नगर का निवासी था। [9]इबसान के तीस पुत्र और तीस पुत्रियाँ थीं। उसने अपनी पुत्रियों को उन लोगों के साथ विवाह करने दिया, जो उसके रिश्तेदार नहीं थे। वह ऐसी तीस स्त्रियों

को अपने पुत्रों की पत्नियों के रूप में लाया जो उसकी रिश्तेदार नहीं थीं। इबसान इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश सात वर्ष तक रहा। [10]तब इबसान मर गया। वह बेतलेहेम नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश एलोन

[11]इबसान के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश एलोन नामक व्यक्ति हुआ। एलोन जबूलून के परिवार समूह से था। वह इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश दस वर्ष तक रहा। [12]तब जबूलून के परिवार समूह का व्यक्ति एलोन मर गया। वह जबूलून के प्रदेश में अय्यालोन नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश अब्दोन

[13]एलोन के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश अब्दोन नामक व्यक्ति हुआ। अब्दोन हिल्लेल नामक व्यक्ति का पुत्र था। अब्दोन पिरातोन नगर का निवासी था। [14]अब्दोन के चालीस पुत्र और तीस पौत्र थे। वे सत्तर गधों पर सवार होते थे। अब्दोन इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश आठ वर्ष तक रहा। [15]तब हिल्लेल का पुत्र अब्दोन मर गया। वह पिरातोन नगर में दफनाया गया। पिरातोन एप्रैम प्रदेश में है। यह वह पहाड़ी प्रदेश है जहाँ अमालेकी लोग रहते हैं।

शिमशोन का जन्म

13 यहोवा ने इस्राएल के लोगों को फिर पाप करते हुए देखा। इसलिए यहोवा ने पलिश्ती लोगों को उन पर चालीस वर्ष तक शासन करने दिया।

[2]एक व्यक्ति सोरा नगर का निवासी था। उस व्यक्ति का नाम मानोह था। वह दान के परिवार समूह से था। मानोह की एक पत्नी थी। किन्तु वह कोई सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती थी। [3]यहोवा का दूत मानोह की पत्नी के सामने प्रकट हुआ और उसने कहा, "तुम सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती हो। किन्तु तुम गर्भवती होगी और तुम्हें एक पुत्र होगा। [4]तुम दाखमधु या कोई नशीली पीने की चीज न पीओ। किसी भी अशुद्ध जानवर को न खाओ। [5]क्यों? क्योंकि तुम सचमुच गर्भवती होगी और तुम्हें एक पुत्र होगा। वह विशेष रूप से परमेश्वर के प्रति एक विशेष रूप में समर्पित होगा। वह एक नाज़ीर* होगा। इसलिये तुम्हें उसके बाल कभी नहीं काटने चाहिये। वह पैदा होने से पहले परमेश्वर का व्यक्ति होगा। वह इस्राएल के लोगों को पलिश्ती लोगों की शक्ति से मुक्त करायेगा।"

[6]तब वह स्त्री अपने पति के पास गई और जो कुछ हुआ था, बताया। उसने कहा, "परमेश्वर के पास से एक व्यक्ति मेरे पास आया। वह परमेश्वर के दूत की तरह ज्ञात होता था। वह बहुत भयानक दिखाई पड़ता था और मैं डर गई थी। मैंने उससे यह नहीं पूछा कि, तुम कहाँ से आये हो। उसने मुझे अपना नाम नहीं बताया। [7]किन्तु उसने मुझसे कहा, 'तुम गर्भवती हो और तुम्हें एक पुत्र होगा। कोई दाखमधु या नशीली पीने की चीज़ मत पीओ। कोई ऐसा जानवर न खाओ जो अशुद्ध हो, क्योंकि वह लड़का विशेष रूप से परमेश्वर को समर्पित होगा। वह लड़का जन्म के पहले से लेकर मरने के दिन तक परमेश्वर का विशेष व्यक्ति होगा।'"

[8]तब मानोह ने यहोवा से प्रार्थना की, "हे यहोवा, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू परमेश्वर के व्यक्ति को हम लोगों के पास फिर भेज। हम चाहते हैं कि वह हमें सिखाए कि हम लोगों के यहाँ जन्म लेने वाले बच्चे के साथ हमें क्या करना चाहिए।"

[9]परमेश्वर ने मानोह की प्रार्थना सुनी। परमेश्वर का दूत फिर उस स्त्री के पास, तब आया जब वह खेत में बैठी थी। किन्तु उसका पति मानोह उसके साथ नहीं था। [10]इसलिये वह स्त्री अपने पति से यह कहने के लिये दौड़ी, "वह व्यक्ति लौटा है। पिछले दिन जो व्यक्ति मेरे पास आया था, वह यहाँ है।"

[11]मानोह उठा और अपनी पत्नी के पीछे चला। जब वह उस व्यक्ति के पास पहुँचा तो उसने कहा, "क्या तुम वही व्यक्ति हो जिसने मेरी पत्नी से बातें की थीं?" दूत ने कहा, "मैं ही हूँ।"

[12]अत: मानोह ने कहा, "मुझे आशा है कि जो तुम कहते हो वह होगा। यह बताओ कि वह लड़का कैसा जीवन बिताएगा? वह क्या करेगा?"

[13] यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, "तुम्हारी पत्नी को वह सब करना चाहिए, जो मैंने उसे करने को कहा है।

नाज़ीर ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर से एक विशेष वचन करता है। देखें गिनती 6:1–21

[14]उसे अंगूर की बेल पर उगी कोई चीज़ नहीं खानी चाहिए। उसे दाखमधु या कोई नशीली पीने की चीज़ नहीं पीनी चाहिए। उसे किसी ऐसे जानवर को नहीं खाना चाहिए जो अशुद्ध हो। उसे वह सब करना चाहिये, जो करने का आदेश मैंने उसे दिया है।"

[15]तब मानोह ने यहोवा के दूत से कहा, "हम यह चाहते हैं कि तुम थोड़ी देर और रुको। हम लोग तुम्हारे भोजन के लिये नया बकरा पकाना चाहते हैं।" [16]तब यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, "यदि तुम यहाँ से जाने से मुझे रोकोगे तो भी मैं तुम्हारा भोजन ग्रहण नहीं करूँगा। किन्तु यदि तुम कुछ तैयार करना चाहते हो तो यहोवा को होमबलि दो।" (मानोह ने नहीं समझा कि वह व्यक्ति सचमुच यहोवा का दूत था।)

[17]तब मानोह ने यहोवा के दूत से पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है? हम लोग इसलिये जानना चाहते हैं कि हम तुम्हारा सम्मान तब कर सकेंगे, जब वह सचमुच होगा जो तुम कह रहे हो।"

[18]यहोवा के दूत ने कहा, "तुम मेरा नाम क्यों पूछते हो? यह इतना आश्चर्यजनक है कि तुम विश्वास नहीं कर सकते।"* [19]तब मानोह ने चट्टान पर एक बकरे की बलि दी। उसने यहोवा तथा उस व्यक्ति को, कुछ अन्न भी भेंट के रूप में दिया, जो अद्भुत चीज़ें करता है। [20]मानोह और उसकी पत्नी उसे ध्यान से देख रहे थे, जो हो रहा था। जैसे ही लपटें वेदी से आकाश तक उठीं, वैसे ही यहोवा का दूत अग्नि में आकाश को चला गया। जब मानोह और उसकी पत्नी ने यह देखा तो वे धरती पर गिर गए। उन्होंने अपने सिर को धरती से लगाया। [21]मानोह अन्त में समझा कि वह व्यक्ति सचमुच यहोवा का दूत था। यहोवा का दूत फिर मानोह के सामने प्रकट नहीं हुआ। [22]मानोह ने कहा, "हम लोगों ने परमेश्वर को देखा है। निश्चय ही इस कारण से हम लोग मरेंगे।"

[23]लेकिन उसकी पत्नी ने उससे कहा, "यहोवा हम लोगों को मारना नहीं चाहता। यदि यहोवा हम लोगों को मारना चाहता तो वह हम लोगों की होमबलि और अन्नबलि स्वीकार न करता। उसने हम लोगों को वह सब न दिखाया होता, और वह हम लोगों से ये बातें न कहा होता।"

[24]अत: स्त्री को एक पुत्र हुआ। उसने उसका नाम शिमशोन रखा। शिमशोन बड़ा हुआ और यहोवा ने उसे आशीर्वाद दिया। [25]यहोवा का तेज शिमशोन में तभी कार्यशील हो गया जब वह महनेदान नगर में था। वह नगर सोरा और एशताओल नगरों के मध्य है।

शिमशोन का विवाह

14 शिमशोन तिम्ना नगर को गया। उसने वहाँ एक पलिश्ती युवती को देखा। [2]जब वह वापस लौटा तो उसने अपने माता–पिता से कहा, "मैंने एक पलिश्ती लड़की को तिम्ना में देखा है। मैं चाहता हूँ तुम उसे मेरे लिये लाओ। मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ।"

[3]उसके पिता और माता ने उत्तर दिया, "किन्तु इस्राएल के लोगों में से एक लड़की है जिससे तुम विवाह कर सकते हो। क्या तुम पलिश्ती लोगों में से एक लड़की से विवाह करोगे? उन लोगों का खतना भी नहीं होता।"

किन्तु शिमशोन ने कहा, "मेरे लिये वही लड़की लाओ। मैं उसे ही चाहता हूँ।" [4](शिमशोन के माता–पिता नहीं समझते थे कि यहोवा ऐसा ही होने देना चाहता है। यहोवा कोई रास्ता ढूँढ रहा था, जिससे वह पलिश्ती लोगों के विरुद्ध कुछ कर सके। उस समय पलिश्ती लोग इस्राएल के लोगों पर शासन कर रहे थे।)

[5]शिमशोन अपने माता–पिता के साथ तिम्ना नगर को गया। वे नगर के निकट अंगूर के खेतों तक गए। उस स्थान पर एक जवान सिंह गरज उठा और शिमशोन पर कूदा। [6]यहोवा की आत्मा बड़ी शक्ति से शिमशोन पर उतरी। उसने अपने खाली हाथों से ही सिंह को चीर डाला। यह उसके लिये सरल मालूम हुआ। यह वैसा सरल हुआ जैसा एक बकरी के बच्चे को चीरना। किन्तु शिमशोन ने अपने माता–पिता को नहीं बताया कि उसने क्या किया है।

[7]इसलिए शिमशोन नगर में गया और उसने पलिश्ती लड़की से बातें की। उसने उसे प्रसन्न किया। [8]कई दिन बाद शिमशोन उस पलिश्ती लड़की के साथ विवाह करने के लिये वापस आया। आते समय रास्ते में वह मरे सिंह को देखने गया। उसने मरे सिंह के शरीर में मधुमक्खियों का एक छत्ता पाया। उन्होंने कुछ शहद तैयार कर लिया था। [9]शिमशोन ने अपने हाथ से कुछ शहद निकाला। वह शहद चाटता हुआ रास्ते पर चल पड़ा। जब वह अपने

यह इतना ... कर सकते या "यह पेलेई है। जिसका अर्थ आश्चर्यजनक और अद्भुत है।" यह नाम यशा 9:6 में अद्भुत युक्ति करने वाले की तरह हैं।

माता–पिता के पास आया तो उसने उन्हें कुछ शहद दिया। उन्होंने भी उसे खाया किन्तु शिमशोन ने अपने माता–पिता को नहीं बताया कि उसने मरे सिंह के शरीर से शहद लिया है।

[10]शिमशोन का पिता पलिश्ती लड़की को देखने गया। दूल्हे के लिये यह रिवाज था कि उसे एक दावत देनी होती थी। इसलिए शिमशोन ने दावत दी। [11]जब लोगों ने देखा कि वह एक दावत दे रहा है तो उन्होंने उसके साथ तीस व्यक्ति भेजे।

[12]तब शिमशोन ने उन तीस व्यक्तियों से कहा, "मैं तुम्हें एक पहेली सुनाना चाहता हूँ। यह दावत सात दिन तक चलेगी। उस समय उत्तर ढूँढने की कोशिश करना। यदि तुम पहेली का उत्तर उस समय के अन्दर दे सके तो मैं तुम्हें तीस सूती कमीजें, तीस वस्त्रों के जोड़े दूँगा। [13]किन्तु यदि तुम इसका उत्तर न निकाल सके तो तुम्हें तीस सूती कमीजें और तीस जोड़े वस्त्र मुझे देने होंगे।" अत: तीस व्यक्तियों ने कहा, "पहले अपनी पहेली सुनाओ, हम इसे सुनना चाहते हैं।"

[14]शिमशोन ने यह पहेली सुनाई:

खाने वाले में से खाद्य वस्तु।
और शक्तिशाली में से मधुर वस्तु निकली।

अत: तीस व्यक्तियों ने तीन दिन तक इसका उत्तर ढूँढने का प्रयत्न किया, किन्तु वे कोई उत्तर न पा सके।

[15]चौथे दिन* वे व्यक्ति शिमशोन की पत्नी के पास आए। उन्होंने कहा, "क्या तुमने हमें गरीब बनाने के लिये यहाँ बुलाया है? तुम अपने पति को, हम लोगों को पहेली का उत्तर देने के लिये फुसलाओ। यदि तुम हम लोगों के लिये उत्तर नहीं निकालती तो हम लोग तुम्हें और तुम्हारे पिता के घर में रहने वाले सभी लोगों को जला देंगे।"

[16]इसलिए शिमशोन की पत्नी उसके पास गई और रोने–चिल्लाने लगी। उसने कहा, "तुम मुझसे घृणा करते हो। तुम मुझसे सच्चा प्रेम नहीं करते हो। तुमने मेरे लोगों को एक पहेली सुनाई है और तुम उसका उत्तर मुझे नहीं बता सकते।"

[17]शिमशोन की पत्नी दावत के शेष सात दिन तक रोती चिल्लाती रही। अत: अन्त में उसने सातवें दिन पहेली का उत्तर उसे दे दिया। उसने बता दिया क्योंकि वह उसे बराबर परेशान कर रही थी। तब वह अपने लोगों के बीच गई और उन्हें पहेली का उत्तर दे दिया।

[18]इस प्रकार दावत वाले सातवें दिन सूरज के डूबने से पहले पलिश्ती लोगों के पास पहेली का उत्तर था। वे शिमशोन के पास आए और उन्होंने कहा,

"शहद से मीठा क्या है?
सिंह से अधिक शक्तिशाली कौन है?"

तब शिमशोन ने उनसे कहा,

"यदि तुम ने मेरी गाय को न जोता होता तो,
मेरी पहेली का हल नहीं निकाल पाए होते!"

[19]शिमशोन बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा की आत्मा उसके ऊपर बड़ी शक्ति के साथ आई। वह आश्कलोन नगर को गया। उस नगर में उसने उनके तीस व्यक्तियों को मारा। तब उसने सारे वस्त्र और शवों से सारी सम्पत्ति ली। वह उन वस्त्रों को लेकर लौटा और उन व्यक्तियों को दिया, जिन्होंने पहेली का उत्तर दिया था। तब वह अपने पिता के घर लौटा। [20]शिमशोन अपनी पत्नी को नहीं ले गया। विवाह समारोह में उपस्थित सबसे अच्छे व्यक्ति ने उसे रख लिया।

शिमशोन पलिश्तियों के लिये विपत्ति उत्पन्न करता है

15 गेहूँ की फसल तैयार होने के समय शिमशोन अपनी पत्नी से मिलने गया। वह अपने साथ एक जवान बकरा ले गया। उसने कहा, "मैं अपनी पत्नी के कमरे में जा रहा हूँ।" किन्तु उसका पिता उसे अन्दर जाने देना नहीं चाहता था। [2]उसके पिता ने शिमशोन से कहा, "मैंने सोचा कि तुम सचमुच अपनी पत्नी से घृणा करते हो अत: विवाह में सम्मिलित सबसे अच्छे व्यक्ति को मैंने उसे पत्नी के रूप में दे दिया। उसकी छोटी बहन उससे अधिक सुन्दर है। उसकी छोटी बहन को ले लो।"

[3]किन्तु शिमशोन ने उससे कहा, "तुम पलिश्ती लोगों पर प्रहार करने का मेरे पास अब उचित कारण है। अब कोई मुझे दोषी नहीं बताएगा।"

[4]इसलिए शिमशोन बाहर निकला और तीन सौ लोमड़ियों को पकड़ा। उसने दो लोमड़ियों को एक बार एक साथ लिया और उनका जोड़ा बनाने के लिये उनकी पूँछ एक साथ बांध दी। तब उसने लोमड़ियों के हर जोड़ों की पूँछो के बीच एक–एक मशाल बाँधी। [5]शिमशोन ने लोमड़ियों

चौथे दिन यह ग्रीक अनुवाद में है। हिब्रू पाठ कहता है "सातवें दिन।"

की पूँछ के बीच के मशालों को जलाया। तब उसने पलिश्ती लोगों के खेतों में लोमड़ियों को छोड़ दिया। इस प्रकार उसने उनकी खड़ी फसलों और उनकी कटी ढेरों को जला दिया। उसने उनके अंगूर के खेतों और जैतून के पेड़ों को भी जला डाला।

[6]पलिश्ती लोगों ने पूछा, "यह किसने किया?" किसी ने उनसे कहा, "तिम्ना के व्यक्ति के दामाद शिमशोन ने यह किया है। उसने यह इसलिए किया कि उसके ससुर ने शिमशोन की पत्नी को उसके विवाह के समय उपस्थित सबसे अच्छे व्यक्ति को दे दी।" अत: पलिश्ती लोगों ने शिमशोन की पत्नी और उसके ससुर को जलाकर मार डाला।

[7]तब शिमशोन ने पलिश्ती के लोगों से कहा, "तुम लोगों ने यह बुरा किया अत: मैं तुम लोगों पर भी प्रहार करूँगा। मैं तब तक तुम लोगों पर विपत्ति ढाता रहूँगा जब तक मैं विपत्ति ढा सकूँगा।"

[8]तब शिमशोन ने पलिश्ती लोगों पर आक्रमण किया। उसने उनमें से बहुतों को मार डाला। तब वह गया और एक गुफा में ठहरा। वह गुफा 'एताम की चट्टान' नामक स्थान पर थी।

[9]तब पलिश्ती लोग यहूदा के प्रदेश में गये। वे लही नामक स्थान पर रुके। उनकी सेना ने वहाँ डेरा डाला और युद्ध के लिये तैयारी की। [10]यहूदा परिवार समूह के लोगों ने उनसे पूछा, "तुम पलिश्तियों, हम लोगों से युद्ध करने क्यों आए हो?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हम लोग शिमशोन को पकड़ने आए हैं। हम लोग उसे अपना बन्दी बनाना चाहते हैं। हम लोग उसे उसका बदला चुकाना चाहते हैं जो उसने हमारे लोगों के साथ किया है।"

[11]तब यहूदा के परिवार समूह के तीन हजार व्यक्ति शिमशोन के पास गये। वे एताम की चट्टान की गुफा में गए। उन्होंने उससे कहा, "तुमने हम लोगों के लिए क्या विपत्ती खड़ी कर दी है? क्या तुम्हें पता नहीं है कि पलिश्ती लोग वे लोग हैं जो हम पर शासन करते हैं?" शिमशोन ने उत्तर दिया, "उन्होंने मेरे साथ जो किया उसका मैंने केवल बदला दिया।"

[12]तब उन्होंने शिमशोन से कहा, "हम तुम्हें बन्दी बनाने आए हैं। हम लोग तुम्हें पलिश्ती लोगों को दे देंगे।"

शिमशोन ने यहूदा के लोगों से कहा, "प्रतिज्ञा करो कि तुम लोग स्वयं मुझ पर प्रहार नहीं करोगे।"

[13]तब यहूदा के व्यक्तियों ने कहा, "हम स्वीकार करते हैं। हम लोग केवल तुमको बांधेंगे और तुम्हें पलिश्ती लोगों को दे देंगे। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम तुमको जान से नहीं मारेंगे।" अत: उन्होंने शिमशोन को दो नयी रस्सियों से बांधा। वे उसे चट्टान की गुफा से बाहर ले गए।

[14]जब शिमशोन लही नामक स्थान पर पहुँचा तो पलिश्ती लोग उससे मिलने आए। वे प्रसन्नता से शोर मचा रहे थे। तब यहोवा की आत्मा बड़ी शक्ति से शिमशोन में आई। उसके ऊपर की रस्सियाँ ऐसी कमजोर हो गई जैसे मानो वे जल गई हों। रस्सियाँ उसके हाथों से ऐसे गिरीं मानों वे गल गई हो। [15]शिमशोन को उस गधे के जबड़े की हड्डी मिली जो मरा पड़ा था। उसने जबड़े की हड्डी ली और उससे एक हजार पलिश्ती लोगों को मार डाला।

[16]तब शिमशोन ने कहा,

एक गधे के जबड़े की हड्डी से
मैंने ढेर* किया है उनका–
एक बहुत ऊँचा ढेर।
एक गधे के जबड़े की हड्डी से
मैंने मार डाला है हजार व्यक्तियों को!

[17]जब शिमशोन ने बोलना समाप्त किया तब उसने जबड़े की हड्डी को फेंक दिया। इसलिए उस स्थान का नाम रामत लही* पड़ा।

[18] शिमशोन को बहुत प्यास लगी थी। इसलिए उसने यहोवा को पुकारा। उसने कहा, "मैं तेरा सेवक हूँ। तूने मुझे यह बड़ी विजय दी है। क्या अब मुझे प्यास से मरना पड़ेगा? क्या मुझे उनसे पकड़ा जाना होगा जिनका खतना नहीं हुआ है?"

[19]लही में भूमि के अन्दर एक गड्ढा है। परमेश्वर ने उस गड्ढे को फट जाने दिया और पानी बाहर आ गया। शिमशोन ने पानी पीया और अपने को स्वस्थ अनुभव किया। उसने फिर अपने को शक्तिशाली अनुभव किया। इसलिए उसने उस पानी के सोते का नाम एनहक्कोरे* रखा। यह अब तक आज भी लही नगर में है।

ढेर हिब्रू में "ढेर" शब्द "गधा" शब्द की तरह है।
रामत लही इस नाम का अर्थ "जबड़े की ऊँचाई" है।
एनहक्कोरे इसका अर्थ "उसका सोता जो पुकारता है।"

[20]इस प्रकार शिमशोन इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश बीस वर्ष तक रहा। वह पलिश्ती लोगों के समय में था।

शिमशोन अज्जा नगर को जाता है

16 एक दिन शिमशोन अज्जा नगर को गया। उसने वहाँ एक वेश्या को देखा। वह उसके साथ रात बिताने के लिये अन्दर गया। [2]किसी ने अज्जा के लोगों से कहा, "शिमशोन यहाँ आया है।" वे उसे जान से मार डालना चाहते थे। इसलिए उन्होंने नगर को घेर लिया। वे छिपे रहे और वे नगर–द्वार के पास छिप गये और सारी रात शिमशोन की प्रतीक्षा किया। वे पूरी रात एकदम चुप रहे। उन्होंने आपस में कहा, "जब सवेरा होगा, हम लोग शिमशोन को मार डालेंगे।"

[3]किन्तु शिमशोन वेश्या के साथ आधी रात तक ही रहा। शिमशोन आधी रात में उठा और नगर के फाटक के किवाड़ों को पकड़ लिया और उसने उन्हें खींच कर दीवार से अलग कर दिया। शिमशोन ने किवाड़ों, दो खड़ी चौखटों और अबेड़ों को जो किवाड़ को बन्द करती थी, पकड़ कर अलग उखाड़ लिया। तब शिमशोन ने उन्हें अपने कंधों पर लिया और उस पहाड़ी की चोटी पर ले गया जो हेब्रोन नगर के समीप है।

शिमशोन और दलीला

[4]इसके बाद शिमशोन दलीला नामक एक स्त्री से प्रेम करने लगा। वह सोरेक घाटी की थी।

[5]पलिश्ती लोगों के शासक दलीला के पास गए। उन्होंने कहा, "हम जानना चाहते हैं कि शिमशोन उतना अधिक शक्तिशाली कैसे है? उसे फुसलाने की कोशिश करो कि वह अपनी गुप्त बात बता दे। तब हम लोग जान जाएंगे कि उसे कैसे पकड़ें और उसे कैसे बांधें। तब हम लोग उस पर नियन्त्रण कर सकते हैं। यदि तुम ऐसा करोगी तो हम में से हर एक तुमको एक हजार एक सौ शेकेल* देगा।"

[6]अत: दलीला ने शिमशोन से कहा, "मुझे बताओ कि तुम इतने अधिक शक्तिशाली क्यों हो? तुम्हें कोई कैसे बांध सकता है और तुम्हें कैसे असहाय कर सकता है?"

[7]शिमशोन ने उत्तर दिया, "कोई व्यक्ति मुझे सात नयी धनुष की उन डोरियों से बांध सकता है जो अब तक सूखी न हो। यदि कोई ऐसा करेगा तो मैं अन्य आदमियों की तरह दुर्बल हो जाऊँगा।"

[8]तब पलिश्ती के शासक सात नयी धनुष की डोरियाँ दलीला के लिये लाए। वे डोरियाँ अब तक सूखी नहीं थीं। उसने शिमशोन को उससे बांध दिया। [9]कुछ व्यक्ति दूसरे कमरे में छिपे थे। दलीला ने शिमशोन से कहा, "शिमशोन पलिश्ती के लोग तुम्हें पकड़ने आ रहे हैं।" किन्तु शिमशोन ने धनुष–डोरियों को सरलता से तोड़ दिया। वे दीपक से जली ताँत की राख की तरह टूट गई। इस प्रकार पलिश्ती के लोग शिमशोन की शक्ति का राज न पा सके।

[10]तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुमने मुझे बेवकूफ बनाया है। तुमने मुझसे झूठ बोला है। कृपया मुझे सच–सच बताओ कि तुम्हें कोई कैसे बांध सकता है।"

[11]शिमशोन ने कहा, "कोई व्यक्ति मुझे नयी रस्सियों से बांध सकता है। वे मुझे उन रस्सियों से बांध सकते हैं जिनका उपयोग पहले न हुआ हो। यदि कोई ऐसा केरगा तो मैं इतना कमजोर हो जाऊँगा, जितना कोई अन्य व्यक्ति होता है।"

[12]इसलिये दलीला ने कुछ नयी रस्सियाँ ली और शिमशोन को बांध दिया। कुछ व्यक्ति अगले कमरे में छिपे थे। तब दलीला ने उसे आवाज दी, "शिमशोन, पलिश्ती लोग तुम्हें पकड़ने आ रहे हैं।" किन्तु उसने रस्सियों को सरलता से तोड़ दिया। उसने उन्हें धागे की तरह तोड़ डाला।

[13]तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुमने मुझे बेवकूफ बनाया है। तुमने मुझसे झूठ बोला है। अब तुम मुझे बताओ कि तुम्हें कोई कैसे बांध सकता है।"

उसने कहा, "यदि तुम उस करघे* का उपयोग करो। जो मेरे सिर के बालों के बटों को एक में बनाए और इसे एक काँटे से कस दे तो मैं इतना कमजोर हो जाऊँगा, जितना कोई अन्य व्यक्ति होता है।"

तब शिमशोन सोने चला गया। इसलिए दलीला ने करघे का उपयोग उसके सिर के बालों के सात बट बुनने के लिये किया।*

[14]तब दलीला ने जमीन में खेमे की खूँटी गाड़कर, करघे को उससे बांध दिया। फिर उसने शिमशोन को आवाज दी, "शिमशोन, पलिश्ती के लोग तुम्हें पकड़ने

एक हजार एक सौ शेकेल लगभग तेरह किलो चाँदी के बराबर होता है।

इसलिये ... किया यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है। यह हिब्रू पाठ में नहीं है।

जा रहे हैं।" शिमशोन ने खेमे की खूँटी करघा तथा ढरकी को उखाड़ दिया। [15]तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुम मुझसे कैसे कह सकते हो, 'मैं तुमसे प्रेम करता हूँ,' जबकि तुम मुझ पर विश्वास तक नहीं करते।* तुम अपना राज बताने से इन्कार करते हो। यह तीसरी बार तुमने मुझे बेवकूफ बनाया है। तुमने अपनी भीषण शक्ति का राज नहीं बताया है।" [16]वह शिमशोन को दिन पर दिन परेशान करती गई। उसके राज के बारे में उसके पूछने से वह इतना थक गया कि उसे लगा कि वह मरने जा रहा है। [17]इसलिये उसने दलीला को सब कुछ बता दिया। उसने कहा, "मैंने अपने बाल कभी कटवाये नहीं हैं। मैं जन्म के पहले विशेष रूप से परमेश्वर को समर्पित था। यदि कोई मेरे बालों को काट दे तो मेरी शक्ति चली जाएगी। मैं वैसा ही कमजोर हो जाऊँगा, जितना कोई अन्य व्यक्ति होता है।"

[18]दलीला ने देखा कि शिमशोन ने अपने हृदय की सारी बात कह दी है। उसने पलिश्ती के लोगों के शासकों के पास दूत भेजा। उसने कहा, "फिर वापस लौटो। शिमशोन ने सब कुछ कह दिया है।" अत: पलिश्ती लोगों के शासक दलीला के पास लौटे। वे वह धन साथ लाए जो उन्होंने उसे देने की प्रतिज्ञा की थी ।

[19]दलीला ने शिमशोन को उस समय सो जाने दिया, जब वह उसकी गोद में सिर रख कर लेटा था। तब उसने एक व्यक्ति को अन्दर बुलाया और शिमशोन के बालों की सात लटों को कटवा दिया। इस प्रकार उसने उसे शक्तिहीन बना दिया। शिमशोन की शक्ति ने उसे छोड़ दिया। [20]तब दलीला ने उसे आवाज दी। "शिमशोन पलिश्ती के लोग तुमको पकड़ने जा रहे हैं।" वह जाग पड़ा और सोचा, "मैं पहले की तरह भाग निकलूँ और अपने को स्वतन्त्र रखूँ।" किन्तु शिमशोन को यह नहीं मालूम था कि यहोवा ने उसे छोड़ दिया है।

[21]पलिश्ती के लोगों ने शिमशोन को पकड़ लिया। उन्होंने उसकी आँखे निकाल लीं और उसे अज्जा नगर को ले गए। तब उसे भागने से रोकने के लिए उसके पैरों में उन्होंने बेड़ियाँ डाल दीं। उन्होंने उसे बन्दीगृह में डाल दिया तथा उससे चक्की चलवायी। [22]किन्तु शिमशोन के बाल फिर बढ़ने आरम्भ हो गए।

[23]पलिश्ती लोगों के शासक उत्सव मनाने के लिए एक स्थान पर इकट्ठे हुए। वे अपने देवता दागोन* को एक बड़ी भेंट चढ़ाने जा रहे थे। उन्होंने कहा, "हम लोगों के देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को हराने में सहायता की है।"

[24]जब पलिश्ती लोगों ने शिमशोन को देखा तब उन्होंने अपने देवता की प्रशंसा की। उन्होंने कहा,

"इस व्यक्ति ने हमारे लोगों को नष्ट किया!
इस व्यक्ति ने हमारे अनेक लोगों को मारा!
किन्तु हमारे देवता ने हमारे शत्रु को
पकड़वाने में हमारी मदद की!"

[25]लोग उत्सव में खुशी मना रहे थे। इसलिए उन्होंने कहा, "शिमशोन को बाहर लाओ। हम उसका मजाक उड़ाना चाहते हैं।" इसलिए वे शिमशोन को बन्दीगृह से बाहर ले आए और उसका मजाक उड़ाया। उन्होंने शिमशोन को दागोन देवता के मन्दिर के स्तम्भों के बीच खड़ा किया। [26]एक नौकर शिमशोन का हाथ पकड़ा हुआ था। शिमशोन ने उससे कहा, "मुझें वहाँ रखो जहाँ मैं उन स्तम्भों को छू सकूँ, जो इस मन्दिर को ऊपर रोके हुए है। मैं उनका सहारा लेना चाहता हूँ।"

[27]मन्दिर में स्त्री–पुरूषों की अपार भीड़ थी। पलिश्ती लोगों के सभी शासक वहाँ थे। वहाँ लगभग तीन हजार स्त्री–पुरूष मन्दिर की छत पर थे। वे हँस रहे थे और शिमशोन का मजाक उड़ा रहे थे। [28]तब शिमशोन ने यहोवा से प्रार्थना की। उसने कहा, "सर्वशक्तिमान यहोवा, मुझे याद कर। परमेश्वर मुझे कृपाकर केवल एक बार और शक्ति दे। मुझे केवल एक यह काम करने दे कि पलिश्तियों को अपनी आँखों के निकालने का बदला चुका दूँ।" [29]तब शिमशोन ने मन्दिर के केन्द्र के दोनों स्तम्भों को पकड़ा। ये दोनों स्तम्भ पूरे मन्दिर को टिकाए हुए थे। उसने दोनों स्तम्भों के बीच में अपने को जमाया। एक स्तम्भ उसकी दांयी ओर तथा दूसरा उसकी बाँयी ओर था। [30]शिमशोन ने कहा, "इन पलिश्तयों के साथ मुझें मरने दे।" तब उसने अपनी पूरी शक्ति से स्तम्भों को ठेला और मन्दिर शासकों तथा इनमें आए लोगों पर गिर पड़ा। इस प्रकार शिमशोन ने अपने जीवन काल में

तुम ... करते "तुम्हारा हृदय मेरे साथ नहीं है।"

दागोन यह देवता कनानी लोगों का अन्न देवता था। संभवत: यह पलिश्ती लोगों के लिये सबसे महत्वपूर्ण देवता था।

जितने पलिश्ती लोगों को मारा, उससे कहीं अधिक लोगों को उसने तब मारा, जब वह मरा।

[31]शिमशोन के भाईयों और उसके पिता का पूरा परिवार उसके शरीर को लेने गए। वे उसे वापस लाए और उसे उसके पिता मानोह के कब्र में दफनाया। यह कब्र सोरा और एश्ताओल नगरों के बीच है। शिमशोन इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश बीस वर्ष तक रहा।

मीका की मूर्तियाँ

17 मीका नामक एक व्यक्ति था जो एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में रहता था। [2]मीका ने अपनी माँ से कहा, "क्या तुम्हें चाँदी के ग्यारह सौ सिक्के याद हैं जो तुमसे चुरा लिये गए थे। मैंने तुम्हें उसके बारे में शाप देते सुना। वह चाँदी मेरे पास हैं। मैंने उसे लिया है।" उसकी माँ ने कहा, "मेरे पुत्र, तुम्हें यहोवा आशीर्वाद दे।"

[3]मीका ने अपनी माँ को ग्यारह सौ सिक्के वापस दिये। तब उसने कहा, "मैं ये सिक्के यहोवा को एक विशेष भेंट के रूप में दूँगी। मैं यह चाँदी अपने पुत्र को दूँगी और वह एक मूर्ति बनाएगा और उसे चाँदी से ढक देगा। इसलिए पुत्र, अब यह चाँदी मैं तुम्हें लौटाती हूँ।"

[4]लेकिन मीका ने वह चाँदी अपनी माँ को लौटा दी। अत: उसने दो सौ शेकेल चाँदी लिये और एक सुनार को दे दिया। सुनार ने चाँदी का उपयोग चाँदी से ढकी एक मूर्ति बनाने में किया। मूर्ति मीका के घर में रखी गई। [5]मीका का एक मन्दिर मूर्तियों की पूजा के लिये था। उसने एक एपोद और कुछ घरेलू मूर्तियाँ बनाई। तब मीका ने अपने पुत्रों में से एक को अपना याजक चुना। [6](उस समय इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं था। इसलिए हर एक व्यक्ति वह करता था जो उसे ठीक जँचता था।)

[7]एक लेवीवंशी* युवक था। वह यहूदा प्रदेश में बेतलेहेम नगर का निवासी था। वह यहूदा के परिवार समूह में रह रहा था। [8]उस युवक ने यहूदा में बेतलेहेम को छोड़ दिया। वह रहने के लिये दूसरी जगह ढूँढ रहा था। जब वह यात्रा कर रहा था, वह मीका के घर आया। मीका का घर एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में था। [9]मीका ने उससे पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" युवक ने उत्तर दिया, "मैं उस बतेलेहम नगर का लेवीवंशी हूँ जो यहूदा प्रदेश में है। मैं रहने के लिये स्थान ढूँढ रहा हूँ।"

[10]तब मीका ने उससे कहा, "मेरे साथ रहो। मेरे पिता और मेरे याजक बनो। मैं हर वर्ष तुम्हें दस चाँदी के सिक्के दूँगा। मैं तुम्हें वस्त्र और भोजन भी दूँगा।" लेवीवंशी ने वह किया जो मीका ने कहा। [11]लेवीवंशी युवक मीका के साथ रहने को तैयार हो गया। युवक मीका के पुत्रों के जैसा हो गया। [12]मीका ने युवक को अपना याजक बनाया। इस प्रकार युवक याजक बन गया और मीका के घर में रहने लगा। [13]मीका ने कहा, "अब मैं समझता हूँ कि यहोवा मेरे प्रति अच्छा होगा। मैं यह इसलिए जानता हूँ कि मैंने लेवीवंशी के परिवार के एक व्यक्ति को याजक रखा है।"

दान लैश नगर पर अधिकार करता है

18 उस समय इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं था और उस समय दान का परिवार समूह, अपना कहे जाने योग्य रहने के लिये, भूमि की खोज में था। इस्राएल के अन्य परिवार समूहों ने पहले ही अपनी भूमि प्राप्त कर ली थी। किन्तु दान का परिवार समूह अभी अपनी भूमि नहीं पा सका था।

[2]इसलिए दान के परिवार समूह ने पाँच सैनिकों को कुछ भूमि खोजने के लिये भेजा। वे रहने के लिये अच्छा स्थान खोजने गए। वे पाँचों व्यक्ति जोरा और एश्ताओल नगरों के थे। वे इसलिए चुने गए थे कि वे दान के सभी परिवार समूह में से थे। उनसे कहा गया था, "जाओ और किसी भूमि की खोज करो।" पाँचों व्यक्ति एप्रैम प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में आए। वे मीका के घर आए और वहीं रात बिताई। [3]जब पाँचों व्यक्ति मीका के घर के समीप आए तो उन्होंने लेवीवंश के परिवार समूह के युवक की आवाज सुनी। उन्होंने उसकी आवाज पहचानी, इसीलिये वे मीका के घर ठहर गए। उन्होंने लेवीवंशी युवक से पूछा, "तुम्हें इस स्थान पर कौन लाया है? तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हारा यहाँ क्या काम है?"

[4]उसने उनसे कहा, "मीका ने मेरी नियुक्ति की है। मैं उसका याजक हूँ।"

[5]उन्होंने उससे कहा, "कृपया परमेश्वर से हम लोगों के लिये कुछ मांगो हम लोग कुछ जानना चाहते हैं। क्या हमारे रहने के लिये भूमि की खोज सफल होगी?"

लेवीवंशी लेवी के परिवार समूह का एक व्यक्ति। लेवीवंशी पवित्र तम्बू में और बाद में मन्दिर में याजकों के सहायक थे।

[6]याजक ने पाँचों व्यक्तियों से कहा, "शान्ति से जाओ। यहोवा तुम्हारा मार्ग–दर्शन करेगा।"

[7] इसलिये पाँचों व्यक्ति वहाँ से चले। वे लैश नगर को आए। उन्होंने देखा कि उस नगर के लोग सुरक्षित* रहते हैं। उन पर सीदोन के लोगों का शासन था। सीदोन भूमध्यसागर के तट पर एक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली नगर था। वे शान्ति और सुरक्षा के साथ रहते थे। लोगों केपास हर एक चीज़ बहुत अधिक थी और उन पर प्रहार करनेवाला पास में कोई शत्रु नहीं था और वे सीदोन नगर के लोगों से बहुत अधिक दूर रहते थे और अराम के लोगों से भी उनका कोई व्यापार नहीं था।*

[8]पाँचों व्यक्ति सोरा और एश्ताओल नगर को वापस लौटे। उनके सम्बन्धियों ने पूछा, "तुमने क्या पता लगाया?"

[9]पाँचों व्यक्तियों ने उत्तर दिया, "हम लोगों ने प्रदेश देखा है और वह बहुत अच्छा है। हमें उन पर आक्रमण करना चाहिये। प्रतीक्षा न करो। हम चलें और उस प्रदेश को ले लें। [10]जब तुम उस प्रेदश मे चलोगे तो देखोगे कि वहाँ पर बहुत अधिक भूमि है। वहाँ सब कुछ बहुत अधिक है। तुम यह भी पाओगे कि वहाँ के लोगों को आक्रमण की आशंका नहीं है। निश्चय ही परमेश्वर ने वह प्रदेश हमको दिया है।"

[11]इसलिए दान के परिवार समूह के छ: सौ व्यक्तियों ने सोरा और एश्ताओल के नगरों को छोड़ा। वे युद्ध के लिये तैयार थे। [12]लैश नगर की यात्रा करते समय वे यहूदा प्रदेश में किर्य्यत्यारीम नगर में रूके। उन्होंने वहाँ डेरा डाला। यही कारण है किर्य्यत्यारीम के पश्चिम का प्रदेश आज तक महनेदान* कहा जाता है। [13]उस स्थान से छ: सौ व्यक्तियों ने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश की यात्रा की। वे मीका के घर आए।

[14]तब उन पाँचों व्यक्तियों ने जिन्होंने लैश की खोज की थी, अपने भाइयों से कहा, "क्या तुम्हें मालूम है कि इन घरों में से एक में एपोद, अन्य घरेलू देवता, एक खुदाईवाली मूर्ति तथा एक ढाली गई मूर्ति है? अब तुम समझते हो कि तुम्हें क्या करना है। जाओ और उन्हें ले आओ।" [15]इसलिये वे मीका के घर रूके जहाँ लेवीवंशी युवक रहता था। उन्होंने युवक से पूछा कि वह प्रसन्न है। [16]दान के परिवार समूह के छ: सौ लोग फाटक के द्वार पर खड़े रहे। उनके पास सभी हथियार थे तथा वे युद्ध के लिये तैयार थे। [17–18]पाँचों गुप्तचर घर में गए। उन्होंने खुदाई वाली मूर्ति, एपोद, घरेलू मूर्तियों और ढाली गई मूर्ति को लिया। जब वे ऐसा कर रहे थे तब लेवीवंशी युवक याजक और युद्ध के लिये तैयार छ: सौ व्यक्ति फाटक के द्वार के साथ खड़े थे। लवीवंशी युवक याजक ने उनसे पूछा, "तुम क्या कर रहे हो?"

[19]पाँचों व्यक्तियों ने कहा, "चुप रहो, एक शब्द भी न बोलो। हम लोगों के साथ चलो। हमारे पिता और याजक बनो। तुम्हें स्वयं चुनना चाहिये कि तुम किसे अधिक अच्छा समझते हो? क्या यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है कि तुम एक व्यक्ति के याजक रहो? या उससे कहीं अधिक अच्छा यह है कि तुम इस्राएल के लोगों के एक पूरे परिवार समूह के याजक बनो?"

[20]इससे लेवीवंशी प्रसन्न हुआ। इसलिये उसने एपोद, घरेलू मूर्तियों तथा खुदाई वाली मूर्ति को लिया। वह दान के परिवार समूह के उन लोगों के साथ गया।

[21]तब दान परिवार समूह के छ: सौ व्यक्ति लेवीवंशी के साथ मुड़े और उन्होंने मीका के घर को छोड़ा। उन्होंने अपने छोटे बच्चों, जानवरों और अपनी सभी चीज़ों को अपने सामने रखा।

[22]दान के परिवार समूह के लोग उस स्थान से बुहत दूर गए और तब मीका के पास रहने वाले लोग चिल्लाने लगे। तब उन्होंने दान के लोगों का पीछा किया और उन्हें जा पकड़ा। [23]मीका के लोग दान के लोगों पर बरस पड़ रहे थे। दान के लोग मुड़े। उन्होंने मीका से कहा, "समस्या क्या है? तुम चिल्ला क्यों रहे हो?"

[24]मीका ने उत्तर दिया, "दान के तुम लोग, तुमने मेरी मूर्तियाँ ली है। मैंने उन मूर्तियों को अपने लिये बनाया है। तुमने हमारे याजक को भी ले लिया है। तुमने छोड़ा ही क्या है? तुम मुझे कैसे पूछ सकते हो, 'समस्या क्या है?'"

[25]दान के परिवार समूह के लोगों ने उत्तर दिया, "अच्छा होता, तुम हमसे बहस न करते। हममें से कुछ व्यक्ति गर्म स्वभाव के हैं। यदि तुम हम पर चिल्लाओगे तो वे गर्म स्वभाव वाले लोग तुम पर प्रहार कर सकते हैं। तुम और तुम्हारा परिवार मार डाला जा सकता है।"

सुरक्षित सीदोन लोगों की तरह "सुरक्षा।" "वे सीदोन के तौर–तरीके पर चलते थे।"

अराम ... था प्राचीन ग्रीक अनुवाद के अनुसार । हिब्रू पाठ में "वे कहीं के लोगों से व्यापार सम्बन्ध नहीं रखते थे।

महनेदान इस शब्द का अर्थ "दान का डेरा" है।

[26]तब दान के लोग मुड़े और अपने रास्ते पर आगे बढ़ गए। मीका जानता था कि वे लोग उसके लिये बहुत अधिक शक्तिशाली हैं। इसलिए वह घर लौट गया।

[27]इस प्रकार दान के लोगों ने वे मूर्तियाँ ले लीं जो मीका ने बनाई थी। उन्होंने मीका के साथ रहने वाले याजक को भी ले लिया। तब वे लैश पहुँचे। उन्होंने लैश में शान्तिपूर्वक रहने वाले लोगों पर आक्रमण किया। लैश के लोगों को आक्रमण की आशंका नहीं थी। दान के लोगों ने उन्हें अपनी तलवारों के घाट उतारा। तब उन्होंने नगर को जला डाला। [28]लैश में रहने वालों की रक्षा करने वाला कोई नहीं था। वे सीदोन के नगर से इतने अधिक दूर थे कि वे लोग इनकी सहायता नहीं कर सकते थे और लैश के लोग अराम के लोगों से कोई व्यवहारिक सम्बन्ध नहीं रखते थे। लैश नगर बेत्रहोब प्रदेश के अधिकार में एक घाटी में था। दान के लोगों ने उस स्थान पर एक नया नगर बसाया और वह नगर उनका निवास स्थान बना। [29]दान के लोगों ने लैश नगर का नया नाम रखा। उन्होंने उस नगर का नाम दान रखा। उन्होंने अपने पूर्वज दान के नाम पर नगर का नाम रखा। दान इस्राएल नामक व्यक्ति का पुत्र था। पुराने समय में इस नगर का नाम लैश था।

[30]दान के परिवार समूह के लोगों ने दान नगर में मूर्तियों की स्थापना की। उन्होंने गेर्शोम के पुत्र योनातान को अपना याजक बनाया। गेर्शोम मूसा* का पुत्र था। योनातान और उसके पुत्र दान के परिवार समूह के तब तक याजक रहे, जब तक इस्राएल के लोगों को बन्दी बना कर बाबेल नहीं ले जाया गया। [31]दान के लोगों ने उन मूर्तियों की पूजा की जिन्हें मीका ने बनाया था। वे उस पूरे समय उन मूर्तियों को पूजते रहे जब तक शिलो में परमेश्वर का स्थान रहा।

लेवीवंशी और उसकी रखैल

19 उन दिनों इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं था। एक लेवीवंशी व्यक्ति एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के बहुत दूर के क्षेत्र में रहता था। उस व्यक्ति ने एक स्त्री को अपनी दासी बना रखा था जो उसकी पत्नी की तरह थी। वह यहूदा प्रदेश के बेतलेहेम नगर की निवासी थी। [2]किन्तु उस दासी का लेवीवंशी के साथ वाद–विवाद हो गया था। उसने उसे छोड़ दिया और यहूदा प्रदेश के बेतलेहेम नगर में अपने पिता के घर चली गई। वह वहाँ चार महीने रही। [3]तब उसका पति उसके पास गया। वह उससे प्रेम से बात करना चाहता था, जिससे वह उसके पास लौट जाये। वह अपने साथ अपने नौकर और दो गधों को ले गया। लेवीवंशी व्यक्ति उस स्त्री के पिता के घर आया। उसके पिता ने लेवीवंशी व्यक्ति को देखा और उसका स्वागत करने के लिये प्रसन्नता से बाहर आया। [4]युवती के पिता ने उसे ठहरने के लिये आमन्त्रित किया। इसलिये लेवीवंशी तीन दिन ठहरा। उसने खाया, पिया और वह अपने ससुर के घर सोया।

[5]चौथे दिन बहुत सवेरे वह उठा। लेवीवंशी चल पड़ने की तैयारी कर रहा था। किन्तु युवती के पिता ने अपने दामाद से कहा, "पहले कुछ खाओ। जब तुम भोजन कर लो तो तुम जा सकते हो।" [6]इसलिये लेवीवंशी व्यक्ति और उसका ससुर एक साथ खाने और मदिरा पीने के लिये बैठे। उसके बाद युवती के पिता ने उस लेवीवंशी से कहा, "कृपया आज भी ठहरे। आराम करो और आनन्द मनाओ। दोपहर के बाद तक जाने के लिये प्रतीक्षा करो।" इस प्रकार दोनों व्यक्तियों ने एक साथ खाया। [7]जब लेवी पुरुष जाने को तैयार हुआ तो उसके ससुर ने उसे वहाँ रात भर रुकने का आग्रह किया।

[8]लेवी पुरुष पाँचवे दिन जाने के लिये सवेरे उठा। वह जाने को तैयार था कि उस जवान लड़की के पिता ने कहा, "पहले कुछ खा पी लो, फिर आराम करो और दोपहर तक रूक जाओ।" अत: दोनों ने फिर से एक साथ भोजन किया।

[9]तब लेवीवंशी व्यक्ति, उसकी रखैल और उसका नौकर चलने के लिये उठे। किन्तु युवती के पिता, उसके ससुर ने कहा, "लगभग अंधेरा हो गया है। दिन लगभग बीत चुका है। रात यहीं बिताओ और आनन्द मनाओ। कल बहुत सवेरे तुम उठ सकते हो और अपना रास्ता पकड़ सकते हो।" [10]किन्तु लेवीवंशी व्यक्ति एक और रात वहाँ ठहरना नहीं चाहता था। उसने अपने काठीवाले दो गधों और अपनी रखैल को लिया। वह यबूस नगर तक गया। (यबूस यरूशलेम का ही दूसरा नाम है।) [11]दिन लगभग छिप गया, वे यबूस नगर के पास थे। इसलिए नौकर ने अपने स्वामी लेवीवंशी से कहा, "हम लोग इस नगर में रूक जायें।

मूसा हिब्रू ग्रन्थ में यहाँ दो पाठ हैं–या तो "मूसा" या "मनश्शे"। मूसा स्वीकार करने योग्य पाठ ज्ञात होता है।

यह यबूसी लोगों का नगर है। हम लोग यहीं रात बितायें।"

[12]किन्तु उसके स्वामी लेवीवंशी ने कहा, "नहीं हम लोग अपरिचित नगर में नहीं जाएंगे। वे लोग इस्राएल के लोगों में से नहीं हैं। हम लोग गिबा* नगर तक जाएंगे।" [13]लेवीवंशी ने कहा, "आगे बढ़ो। हम लोग गिबा या रामा तक पहुँचने की कोशिश करें। हम उन नगरों में से किसी एक में रात बिता सकते हैं।"

[14]इसलिए लेवीवंशी और उसके साथ के लोग आगे बढ़े। जब वे गिबा नगर के पास आए तो सूरज डूब रहा था। गिबा बिन्यामीन के परिवार समूह के प्रदेश में है। [15]इसलिये वे गिबा में ठहरे। उन्होंने उस नगर में रात बिताने की योजना बनाई। वे नगर में मुख्य सार्वजनिक चौराहे में गए और वहाँ बैठ गए। किन्तु किसी ने उन्हें रात बिताने के लिये अपने घर आमन्त्रित नहीं किया। [16]उस सन्ध्या को एक बूढ़ा व्यक्ति अपने खेतों से नगर में आया। उसका घर एप्रैम प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में था। किन्तु अब वह गिबा नगर में रह रहा था। (गिबा के लोग बिन्यामीन के परिवार समूह के थे।) [17]बूढ़े व्यक्ति ने यात्रियों (लेवीवंशी व्यक्ति) को सार्वजनिक चौराहे पर देखा। बूढ़े व्यक्ति ने पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो? तुम कहाँ से आये हो?"

[18]लेवीवंशी व्यक्ति ने उत्तर दिया, "यहूदा प्रदेश के बेतलेहेम नगर से हम लोग यात्रा कर रहे हैं। हम अपने घर जा रहे हैं। हम एप्रैम प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र के दूर के भाग के निवासी हैं। मैं यहूदा प्रदेश में बेतलेहेम को गया था। अब मैं अपने घर* जा रहा हूँ। [19]हम लोगों के पास अपने गधों के लिये पुआल और भोजन है। हम लोगों के पास रोटी और दाखमधु है। हम लोगों में से कोई–मैं, युवती या मेरा नौकर, कुछ भी नहीं चाहता।"

[20]बूढ़े ने कहा, "तुम्हारा स्वागत है। तुम मेरे यहाँ ठहरो। तुम को आवश्यकता की सभी चीज़ें मैं दूँगा। तुम सार्वजनिक चौराहे में रात व्यतीत मत करो"। [21]तब वह बूढ़ा व्यक्ति लेवीवंशी व्यक्ति और उसके साथ के व्यक्तियों को अपने साथ अपने घर ले गया। बूढ़े व्यक्ति ने उसके गधों को खिलाया। उन्होंने अपने पैर धोए। तब उसने उन्हें कुछ खाने और कुछ दाखमधु पीने को दिया।

[22]जब लेवीवंशी व्यक्ति और उसके साथ के व्यक्ति आनन्द ले रहे थे, तभी उस नगर के कुछ लोगों ने उस घर को घेर लिया। वे बहुत बुरे व्यक्ति थे। वे जोर से दरवाजा पीटने लगे। वे उस बूढ़े व्यक्ति से, जिसका वह घर था, चिल्लाकर बोले, "उस व्यक्ति को अपने घर से बाहर करो। हम उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध करना चाहते हैं।"

[23]बूढ़ा व्यक्ति बाहर गया और उन दुष्ट लोगों से कहा, "भाइयों, नहीं, ऐसा बुरा काम न करो। वह व्यक्ति मेरे घर में अतिथि है।* यह भयंकर पाप न करो। [24]सुनो, यहाँ मेरी पुत्री है। उसने पहले कभी शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया है। मैं उसे और इस पुरुष की रखैल को तुम्हारे पास बाहर लाता हूँ। तुम उसका उपयोग जैसे चाहो कर सकते हो। किन्तु इस व्यक्ति के विरुद्ध ऐसा भंयकर पाप न करो।"

[25]किन्तु उन दुष्ट लोगों ने उस बूढ़े व्यक्ति की एक न सुनी। इसलिये लेवीवंशी व्यक्ति ने अपनी रखैल को उन दुष्ट व्यक्तियों के साथ बाहर कर दिया। उन दुष्ट व्यक्तियों ने पूरी रात उसके साथ कुकर्म किया और बुरी तरह गालियाँ दीं। तब सवेरे उसे जाने दिया। [26]सवेरे वह स्त्री वहाँ लौटी जहाँ उसका स्वामी ठहरा था। वह सामने दरवाजे पर गिर पड़ी। वह तब तक पड़ी रही जब तक पूरा दिन नहीं निकल आया।

[27]सवेरे लेवीवंशी व्यक्ति उठा और उसने घर का दरवाजा खोला। वह अपने रास्ते जाने के लिये बाहर निकला। किन्तु वहाँ उसकी रखैल पड़ी थी।* वह घर के रास्ते पर पड़ी थी। उसके हाथ दरवाजे की ड्योढी पर थे। [28]तब लेवीवंशी व्यक्ति ने उससे कहा, "उठो, हम लोग चलें।" किन्तु उसने उत्तर नहीं दिया। इसलिए उसने उसे अपने गधे पर रखा और घर गया। [29]जब लेवीवंशी व्यक्ति अपने घर आया तब उसने एक छुरी निकाली और अपनी रखैल को बारह टुकड़ों में काटा। तब उसने स्त्री के उन बारह भागों को उन सभी क्षेत्रों में भेजा जहाँ इस्राएल के लोग रहते थे। [30]जिसने यह देखा उन सबने कहा, "ऐसा कभी नहीं

गिबा गिबा यबूस से कुछ उत्तर में था।

घर प्राचीन ग्रीक अनुवाद के अनुसार। हिब्रू पाठ, "यहोवा का घर" है।

वह ... है इस समय यह रिवाज था कि यदि तुमने किसी को अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया है, तो तुम्हें उसकी रक्षा और देखभाल करनी पड़ती थी।

पड़ी थी वह मर गई थी।

हुआ था जब से इस्राएल के लोग मिस्र से आए, तब से अब तक ऐसा कभी नहीं हुआ। तय करो कि क्या करना है और हमें बताओ?

इस्राएल और बिन्यामीन के बीच युद्ध :

20 इस प्रकार इस्राएल के सभी लोग एक हो गए। वे मिस्पा नगर में यहोवा के सामने खड़े होने के लिये एक साथ आए। वे पूरे इस्राएल* देश से आए। गिलाद* प्रदेश के सभी इस्राएली लोग भी वहाँ थे। [2]इस्राएल के परिवार समूहों के सभी प्रमुख वहाँ थे। वे परमेश्वर के सारे लोगों की सभा में अपने–अपने स्थानों पर बैठे। उस स्थान पर तलवार के साथ चार लाख सैनिक थे। [3]बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने सुना कि इस्राएल के लोग मिस्पा नगर में पहुँचे हैं। इस्राएल के लोगों ने कहा, "यह बताओ कि यह पाप कैसे हुआ।"

[4]अत: जिस स्त्री की हत्या हुई थी उसके पति ने कहा, "मेरी रखैल और मैं बिन्यामीन के प्रदेश में गिबा नगर में पहुँचे। हम लोगों ने वहाँ रात बिताई। [5]किन्तु रात को गिबा नगर के प्रमुख उस घर पर आए जिसमें मैं ठहरा था। उन्होंने घर को घेर लिया और वे मुझे मार डालना चाहते थे। उन्होंने मेरी रखैल के साथ कुकर्म किया और वह मर गई। [6]इसलिए मैं अपनी रखैल को ले गया और उसके टुकड़े कर डाले। तब मैंने हर एक टुकड़ा इस्राएल के हर एक परिवार समूह को भेजा। मैंने बारह टुकड़े उन प्रदेशों के भेजे जिन्हें हमने पाया। मैंने यह इसलिए किया कि बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने इस्राएल के देश में यह क्रूर और भयंकर काम किया है। [7]अब, इस्राएल के सभी लोगों, आप बोलें। आप अपना निर्णय दें कि हमें क्या करना चाहिये?"

[8]तब सभी लोग उसी समय उठ खड़े हुए। उन्होंने आपस में कहा, "हम लोगों में से कोई घर नहीं लौटेगा। कोई नहीं, हम लोगों में से एक भी घर नहीं लौटेगा। [9]हम लोग गिबा नगर के साथ यह करेंगे। हम गोट डालेंगे।* जिससे परमेश्वर बताएगा कि हम लोग उन लोगों के साथ क्या करें। [10]हम लोग इस्राएल के सभी परिवारों के हर एक सौ में से दस व्यक्ति चुनेगें और हम लोग हर एक हजार में से सौ व्यक्ति चुनेंगे। हम लोग हर एक दस हजार में से हजार चुनेंगे। जिन लोगों को हम चुन लेंगे वे सेना के लिये आवश्यक सामग्री पाएंगे। तब सेना बिन्यामीन के प्रदेश में गिबा नगर को जाएगी। वह सेना उन लोगों से बदला चुकाएगी जिन्होंने इस्राएल के लोगों में यह भयंकर काम किया है।"

[11]इसलिये इस्राएल के सभी लोग गिबा नगर में एकत्रित हुए। वे उसके एक मत थे, जो वे कर रहे थे। [12]इस्राएल के परिवार समूह ने एक सन्देश के साथ लोगों को बिन्यामीन के परिवार समूह के पास भेजा। सन्देश यह था: "इस पाप के बारे में क्या कहना है जो तुम्हारे कुछ लोगों ने किया है? [13]उन गिबा के पापी मनुष्यों को हमारे पास भेजो। उन लोगों को हमें दो जिससे हम उन्हें जान से मार सकें। हम इस्राएल के लोगो में पाप को अवश्य दूर करेंगे।" किन्तु बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने अपने सम्बन्धी इस्राएल के लोगों के दूतों की एक न सुनी। [14]बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने अपने नगरों को छोड़ा और वे गिबा नगर में पहुँचे। वे गिबा में इस्राएल के अन्य परिवार समूह के विरुद्ध लड़ने गए। [15]बिन्यामीन परिवार समूह के लोगों ने छब्बीस हजार सैनिकों को इकट्ठा किया। वे सभी सैनिक युद्ध के लिये प्रशिक्षित थे। उनके साथ गिबा नगर के सात सौ प्रशिक्षित सैनिक भी थे। [16]उनके सात सौ ऐसे प्रशिक्षित व्यक्ति भी थे जो बाँया हाथ चलाने में दक्ष थे। उनमें से हर एक गुलेल का उपयोग दक्षता से कर सकता था। वे सब एक बाल पर भी पत्थर मार सकते थे और निशाना नहीं चूकता था। [17]इस्राएल के सारे परिवारों ने, बिन्यामीन को छोड़कर चार लाख योद्धाओं को इकट्ठा किया। उन चार लाख योद्धाओं के पास तलवारें थीं। उनमें हर एक प्रशिक्षित सैनिक था। [18]इस्राएल के लोग बेतेल नगर तक गए। बेतेल में उन्होंने परमेश्वर से पूछा, "कौन सा परिवार समूह बिन्यामीन के परिवार समूह पर प्रथम आक्रमण करेगा?" यहोवा ने उत्तर दिया, "यहूदा का परिवार समूह प्रथम जाएगा।"

[19]अगली सुबह इस्राएल के लोग उठे। उन्होंने गिबा के निकट डेरा डाला [20]तब इस्राएल की सेना बिन्यामीन की सेना से युद्ध के लिये निकल पड़ी। इस्राएल की सेना ने

पूरे इस्राएल "दान से बेर्शेबा तक।"

गिलाद गिलाद यरदन नदी के पूर्व का वह प्रदेश था जो इस्राएल के परिवार समूहों के अधिकार में था।

गोट डालना यह सिक्का उछालने या निर्णय के लिये पासा फेंकने जैसा है। देखें नीति.16:33

गिबा नगर में बिन्यामीन की सेना के विरुद्ध अपना मोर्चा लगाया। [21]तब बिन्यामीन की सेना गिबा नगर के बाहर निकली। उन्होंने उस दिन की लड़ाई में इस्राएल की सेना के बाईस हजार लोगों को मार डाला।

[22-23]इस्राएल के लोग यहोवा के सामने गए। वे शाम तक रोकर चिल्लाते रहे। उन्होंने यहोवा से पूछा, "क्या हमें बिन्यामीन के विरुद्ध लड़ने जाना चाहिए? वे लोग हमारे सम्बन्धी हैं। यहोवा ने उत्तर दिया, "जाओ और उनके विरुद्ध लड़ो। इस्राएल के लोगों ने एक दूसरे का साहस बढ़ाया। इसलिए वे पहले दिन की तरह फिर लड़ने गए।"

[24]तब इस्राएल की सेना बिन्यामीन की सेना के पास आई। यह युद्ध का दूसरा दिन था। [25]बिन्यामीन की सेना दूसरे दिन इस्राएल की सेना पर आक्रमण करने के लिये गिबा नगर से बाहर आई। इस समय बिन्यामीन की सेना ने इस्राएल की सेना के अन्य अट्ठारह हजार सैनिकों को मार डाला। इस्राएल की सेना के वे सभी प्रशिक्षित सैनिक थे।

[26]तब इस्राएल के सभी लोग बेतेल नगर तक गए। उस स्थान पर वे बैठे और यहोवा को रोकर पुकारा। उन्होंने पूरे दिन शाम तक कुछ नहीं खाया। वे होमबलि और मेल बलि भी यहोवा के लिए लाए। [27]इस्राएल के लोगों ने यहोवा से एक प्रश्न पूछा। (इन दिनों परमेश्वर का साक्षीपत्र का सन्दूक बेतेल में था। [28]पीनहास नामक एक याजक साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने सेवा करता था। पीनहास एलीआज़ार नामक व्यक्ति का पुत्र था। एलीआजार हारून का पुत्र था।) इस्राएल के लोगों ने पूछा, "क्या हमें बिन्यामीन के लोगों के विरुद्ध फिर लड़ने जाना चाहिए। वे लोग हमारे सम्बन्धी हैं या हम युद्ध करना बन्द कर दें?" यहोवा ने उत्तर दिया, "जाओ। कल मैं उन्हें हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा।" [29]तब इस्राएल की सेना ने गिबा नगर के चारों ओर अपने व्यक्तियों को छिपा दिया। [30]इस्राएल की सेना तीसरे दिन गिबा नगर के विरुद्ध लड़ने गई। उन्होंने जैसा पहले किया था वैसा ही लड़ने के लिये मोर्चा लगाया। [31]बिन्यामीन की सेना इस्राएल की सेना से युद्ध करने के लिये गिबा नगर के बाहर निकल आई। इस्राएल की सेना पीछे हटी और उसने बिन्यामीन की सेना को पीछा करने दिया। इस प्रकार बिन्यामीन की सेना को नगर को बहुत पीछे छोड़ देने के लिये धोखा दिया गया। बिन्यामीन की सेना ने इस्राएल की सेना के कुछ लोगों को वैसे ही मारना आरम्भ किया जैसे उन्होंने पहले मारा था। इस्राएल के लगभग तीस व्यक्ति मारे गए। उनमें से कुछ लोग मैदानों में मारे गए थे। उनमें से कुछ व्यक्ति सड़कों पर मारे गए थे। एक सड़क बेतेल को जा रही थी। दूसरी सड़क गिबा को जा रही थी। [32]बिन्यामीन के लोगों ने कहा, "हम पहले की तरह जीत रहे हैं।" उसी समय इस्राएल के लोग पीछे भाग रहे थे लेकिन यह एक चाल थी। वे बिन्यामीन के लोगों को उनके नगर से दूर सड़कों पर लाना चाहते थे। [33]इस्राएल की सेना के सभी लोग अपने स्थानों से हटे। वे बालतामार स्थान पर रूके। तब जो लोग गिबा नगर की ओर छिपे थे, वे अपने छिपने के स्थानों से गिबा के पश्चिम को दौड़ पड़े। [34]इस्राएल की सेना के पूरे प्रशिक्षित दस हजार सैनिकों ने गिबा नगर पर आक्रमण किया। युद्ध बड़ा भीषण था। किन्तु बिन्यामीन की सेना नहीं जानती थी कि उनके साथ कौन सी भंयकर घटना होने जा रही है?

[35] यहोवा ने इस्राएल की सेना का उपयोग किया और बिन्यामीन की सेना को पराजित किया। उस दिन इस्राएल की सेना ने बिन्यामीन के पच्चीस हजार एक सौ सैनिकों को मार डाला। वे सभी सैनिक युद्ध के लिये प्रशिक्षित थे। [36]इस प्रकार बिन्यामीन के लोगों ने देखा कि वे पराजित हो गए। इस्राएल की सेना पीछे हटी। वे पीछे हटे क्योंकि वे उस अचानक आक्रमण पर भरोसा कर रहे थे जिसके लिये वे गिबा के निकट व्यवस्था कर चुके थे। [37]जो व्यक्ति गिबा के चारों ओर छिपे थे वे गिबा नगर में टूट पड़े। वे फैल गए और उन्होंने अपनी तलवारों से नगर के हर एक को मार डाला। [38]इस्राएली सेना के दल और छिपकर घात लगाने वाले दल के बीच यह संकेत चिन्ह निश्चित किया गया था कि छिपकर घात लगाने वाला दल नगर से धुएँ का विशाल बादल उड़ाएगा।

[39-41]इसलिये युद्ध के समय इस्राएल की सेना पीछे मुड़ी और बिन्यामीन की सेना ने इस्राएल की सेना के सैनिकों को मारना आरम्भ किया। उन्होंने लगभग तीस सैनिक मारे। वे कह रहे थे, "हम वैसे जीत रहे हैं जैसे पहले युद्ध में जीत रहे थे।" किन्तु तभी धुएँ का विशाल बादल नगर से उठना आरम्भ हुआ। बिन्यामीन के सैनिक मुड़े और धुँए को देखा। पूरा नगर आग की लपटों में था। तब इस्राएल की सेना मुड़ी और लड़ने लगी। बिन्यामीन

के लोग डर गए थे। अब वे समझ गए थे कि उनके साथ कौन सी भंयकर घटना हो चुकी थी।

[42]इसलिये बिन्यामीन की सेना इस्राएल की सेना के सामने से भाग खड़ी हुई। वे रेगिस्तान की ओर भागे। लेकिन वे युद्ध से बच न सके। इस्राएल के लोग नगर से बाहर आए और उन्हें मार डाला। [43]इस्राएल के लोगों ने बिन्यामीन के लोगों को हराया। उन्होंने बिन्यामीन के लोगों का पीछा किया। उन्हें आराम नहीं करने दिया। उन्होंने उन्हें गिबा के पूर्व के क्षेत्र में हराया। [44]इस प्रकार अट्ठारह हजार वीर और शक्तिशाली बिन्यामीन की सेना के सैनिक मारे गए।

[45]बिन्यामीन की सेना मुड़ी और मरुभूमि की ओर भागी। वे रिम्मोन की चट्टान नामक स्थान पर भाग कर गए। किन्तु इस्राएल की सेना ने सड़क के सहारे बिन्यामीन की सेना के पाँच हजार सैनिकों को मार डाला। वे बिन्यामीन के लोगों का पीछा करते रहे। उन्होंने उनका पीछा गिदोम नामक स्थान तक किया। इस्राएल की सेना ने उस स्थान पर बिन्यामीन की सेना के दो हजार और सैनिकों को मार डाला।

[46]उस दिन बिन्यामीन की सेना के पच्चीस हजार सैनिक मारे गए। उन सभी व्यक्तियों के पास तलवारें थीं। बिन्यामीन के वे लोग वीर योद्धा थे। [47]किन्तु बिन्यामीन के छ: सौ व्यक्ति मुड़े और मरुभूमि में भाग गए। वे रिम्मोन की चट्टान नामक स्थान पर गए। वे वहाँ चार महीने तक ठहरे रहे। [48]इस्राएल के लोग बिन्यामीन के प्रदेश में लौटकर गए। जिन नगरों में वे पहुँचे, उन नगरों के आदमियों को उन्होंने मार डाला। उन्होंने सभी जानवरों को भी मार डाला। वे जो कुछ पा सकते थे, उसे नष्ट कर दिया। वे जिस नगर में गए, उसे जला डाला।

बिन्यामीन के लोगों के लिये पत्नियाँ प्राप्त करना

21 मिस्पा में इस्राएल के लोगों ने प्रतिज्ञा की। उनकी प्रतिज्ञा यह थी, "हम लोगों में से कोई अपनी पुत्री को बिन्यामीन के परिवार समूह के किसी व्यक्ति से विवाह नहीं करने देगा।"

[2]इस्राएल के लोग बेतेल नगर को गए। इस नगर में वे परमेश्वर के सामने शाम तक बैठे रहे। वे बैठे हुए रोते रहे। [3]उन्होंने परमेश्वर से कहा, "यहोवा, तू इस्राएल के लोगों का परमेश्वर है। ऐसी भयंकर बात हम लोगों के साथ कैसे हो गई है? इस्राएल के परिवार समूहों में से एक परिवार समूह क्यों कम हो जाय!"

[4]अगले दिन सवेरे इस्राएल के लोगों ने एक वेदी बनाई। उन्होंने उस वेदी पर परमेश्वर को होमबलि और मेलबलि चढ़ाई। [5]तब इस्राएल के लोगों ने कहा, "क्या इस्राएल का कोई ऐसा परिवार समूह है जो यहोवा के सामने हम लोगों के साथ मिलने नहीं आया है?" उन्होंने यह प्रश्न इसलिये पूछा कि उन्होंने एक गंभीर प्रतिज्ञा की थी। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई मिस्पा में अन्य परिवार समूहों के साथ नहीं आएगा, मार डाला जाएगा।

[6]इस्राएल के लोग अपने रिश्तेदारों, बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों के लिये, बहुत दु:खी थे। उन्होंने कहा, "आज इस्राएल के लोगों से एक परिवार समूह कट गया है। [7] हम लोगों ने यहोवा के सामने प्रतिज्ञा की थी कि हम अपनी पुत्रियों को बिन्यामीन परिवार के किसी व्यक्ति से विवाह नहीं करने देंगे। हम लोगों को कैसे विश्वास होगा कि बिन्यामीन परिवार समूह के लोगों को पत्नियाँ प्राप्त होंगी?"

[8]तब इस्राएल के लोगों ने पूछा, "इस्राएल के परिवार समूहों में से कौन मिस्पा में यहाँ नहीं आया है? हम लोग यहोवा के सामने एक साथ आए हैं। किन्तु एक परिवार समूह यहाँ नहीं है।" तब उन्हें पता लगा कि इस्राएल के अन्य लोगों के साथ यावेश गिलाद नगर का कोई व्यक्ति वहाँ नहीं था। [9]इस्राएल के लोगों ने यह जानने के लिये कि वहाँ कौन था और कौन नहीं था, हर एक को गिना। उन्होंने पाया कि यावेश गिलाद का कोई भी वहाँ नहीं था। [10]इसलिए इस्राएल के लोगों की परिषद ने बारह हजार सैनिकों को यावेश गिलाद नगर को भेजा। उन्होंने उन सैनिकों से कहा, "जाओ और यावेश गिलाद लोगों को अपनी तलवार के घाट उतार दो। [11]तुम्हें यह अवश्य करना होगा। यावेश गिलाद में हर एक पुरुष को मार डालो। उस स्त्री को भी मार डालो जो एक पुरुष के साथ रह चुकी हो। किन्तु उस स्त्री को न मारो जिसने किसी पुरुष के साथ कभी शारीरिक सम्बन्ध न किया हो।" सैनिकों ने यही किया। [12]उन बारह हजार सैनिकों ने यावेश गिलाद में चार सौ ऐसी स्त्रियों को पाया, जिन्होंने किसी पुरुष के साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया था। सैनिक उन स्त्रियों को शीलो नगर के डेरे पर ले आए। शीलो कनान प्रदेश में है।

[13]तब इस्राएल के लोगों ने बिन्यामीन के लोगों के पास एक सन्देश भेजा। उन्होंने बिन्यामीन के लोगों के साथ शान्ति–सन्धि करने का प्रस्ताव रखा। बिन्यामीन के लोग रिम्मोन की चट्टान नामक स्थान पर थे। [14]इसलिये बिन्यामीन के लोग उस समय इस्राएल के लोगों के पूरे परिवार के पास लौटे। इस्राएल के लोगों ने उन्हें उन याबेश गिलाद की स्त्रियों को दिया, जिन्हें उन्होंने मारा नहीं था। किन्तु बिन्यामीन के सभी लोगों के लिये पर्याप्त स्त्रियाँ नहीं थीं।

[15]इस्राएल के लोग बिन्यामीन के लोगों के लिये दुःखी हुए। उन्होंने उनके लिये इसलिए दुःख अनुभव किया क्योंकि यहोवा ने इस्राएल के परिवार समूहों को अलग कर दिया था। [16]इस्राएल के लोगों के अग्रजों ने कहा, "बिन्यामीन परिवार समूह की स्त्रियाँ मार डाली गई हैं। हम लोग बिन्यामीन के जो लोग जीवित हैं उनके लिये पत्नियाँ कहाँ पाएंगे। [17]बिन्यामीन के जो लोग अभी जीवित हैं, अपने परिवार को आगे बढ़ाने के लिये उन्हें बच्चें चाहियें। यह इसलिये करना होगा कि इस्राएल का एक परिवार समूह नष्ट न हो। [18]किन्तु हम लोग अपनी पुत्रियों को बिन्यामीन लोगों के साथ विवाह करने की स्वीकृति नहीं दे सकते। हम यह प्रतिज्ञा कर चुके हैं: 'कोई व्यक्ति जो बिन्यामीन के व्यक्ति को पत्नी देगा, अभिशप्त होगा।' [19]हम लोगों के सामने एक उपाय है। यह शीलो नगर में यहोवा के लिये उत्सव का समय है। यह उत्सव यहाँ हर वर्ष मनाया जाता है। (शीलो नगर बेतेल नगर के उत्तर में है और उस सड़क के पूर्व में है जो बेतेल से शकेन को जाती है। और यह लबोना नगर के दक्षिण में भी है।)

[20]इसलिये अग्रजों ने बिन्यामीन लोगों को अपना विचार बताया। उन्होंने कहा, "जाओ, और अंगूर के बेलो के खेतों में छिप जाओ। [21]उत्सव में उस समय की प्रतिक्षा करो जब शीलो की युवतियाँ नृत्य में भाग लेने आएं। तब अंगूर के खेतों में अपने छुपने के स्थान से बाहर निकल दौड़ो। तुममें से हर एक उस युवतियों को शीलो नगर से बिन्यामीन के प्रदेश में ले जाओ और उसके साथ विवाह करो। [22]उन युवतियों के पिता और भाई हम लोगों के पास आएंगे और शिकायत करेंगे। किन्तु हम लोग उन्हें इस प्रकार उत्तर देंगे: 'बिन्यामीन के लोगों पर कृपा करो। वे अपने लिए पत्नियाँ इसलिए नहीं पा रहे हैं कि वे लोग तुमसे लड़े और वे इस प्रकार से स्त्रियों को ले गए हैं, अत: तुमने अपनी परमेश्वर के सामने की गई प्रतिज्ञा नहीं तोड़ी। तुमने प्रतिज्ञा की थी कि तुम उन्हें स्त्रियाँ नहीं दोगे, तुमने बिन्यामिन के लोगों को स्त्रियों नहीं दी परन्तु उन्होंने तुमसे स्त्रियाँ ले ली। इसलिये तुमने प्रतिज्ञा भंग नहीं की।'"

[23]इसलिये बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने वही किया। जब युवतियाँ नाच रही थीं, तो हर एक व्यक्ति ने उनमें से एक–एक को पकड़ लिया। वे उन स्त्रियों को दूर ले गए और उनके साथ विवाह किया। वे उस प्रदेश में लौटे, जो उन्हें उत्तराधिकार में मिला था। बिन्यामीन के लोगों ने उस प्रदेश में फिर नगर बसाये और उन नगरों में रहने लगे।

[24]तब इस्राएल के लोग अपने घर लौटे। वे अपने प्रदेश और परिवार समूह को गए। [25]उन दिनों इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं था। हर एक व्यक्ति वही करता था, जिसे वह ठीक समझता था।

रूत

यहूदा में अकाल

1 बहुत समय पहले, जब न्यायाधीशों* का शासन था, तभी एक इतना बुरा समय आया कि लोगों के पास खाने के लिये पर्याप्त भोजन तक न रहा। एलीमेलेक नामक एक व्यक्ति ने तभी यहूदा के बेतलेहेम को छोड़ दिया। वह, अपनी पत्नी और दो पुत्रों के साथ मोआब के पहाड़ी प्रदेश में चला गया। [2]उस की पत्नी का नाम नाओमी था और उसके पुत्रों के नाम महलोन और किल्योन थे। ये लोग यहूदा के बेतलेहेम के एप्राती परिवार से थे। इस परिवार ने मोआब के पहाड़ी प्रदेश की यात्रा की और वहीं बस गये।

[3]बाद में, नाओमी का पति, एलीमेलेक मर गया। अत: केवल नाओमी और उसके दो पुत्र बचे रह गये। [4]उसके पुत्रों ने मोआब देश की स्त्रियों के साथ विवाह किया। एक की पत्नी का नाम ओर्पा और दूसरे की पत्नी का नाम रूत था। वे मोआब में लगभग दस वर्ष रहे, [5]फिर महलोन और किल्योन भी मर गये। अत: नाओमी अपने पति और पुत्रों के बिना अकेली हो गई।

नाओमी अपने घर जाती है

[6]जब नाओमी मोआब के पहाड़ी प्रदेश में रह रही थी तभी, उसने सुना कि यहोवा ने उसके लोगों की सहायता की है। उसने यहूदा में अपने लोगों को भोजन दिया है। इसलिए नाओमी ने मोआब के पहाड़ी प्रदेश को छोड़ने तथा अपने घर लौटने का निश्चय किया। उसकी पुत्र वधुओं ने भी उसके साथ जाने का निश्चय किया। [7]उन्होंने उस प्रदेश को छोड़ा जहाँ वे रहती थीं और यहूदा की ओर लौटना आरम्भ किया।

[8]तब नाओमी ने अपनी पुत्र वधुओं से कहा, "तुम दोनों को अपने घर अपनी माताओं के पास लौट जाना चाहिए। तुम मेरे तथा मेरे पुत्रों के प्रति बहुत दयालु रही हो। सो मैं प्रार्थना करती हूँ कि यहोवा तुम पर ऐसे ही दयालु हो। [9]मैं प्रार्थना करती हूँ कि यहोवा, पति और अच्छा घर पाने में तुम दोनों की सहायता करे।" नाओमी ने अपनी पुत्र वधुओं को प्यार किया और वे सभी रोने लगीं। [10]तब पुत्र वधुओं ने कहा, "किन्तु हम आप के साथ चलना चाहतें हैं और आपके लोगों में जाना चाहते हैं।"

[11]किन्तु नाओमी ने कहा, "नहीं, पुत्रियों, अपने घर लौट जाओ। तुम मेरे साथ किसलिए जाओगी? मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकती। मेरे पास अब कोई पुत्र नहीं जो तुम्हारा पति हो सके। [12]अपने घर लौट जाओ! मैं इतनी वृद्धा हूँ कि नया पति नहीं रख सकती। यहाँ तक कि यदि मैं पुन: विवाह करने की बात सोचूँ, तो भी मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकती। यदि मैं आज की रात ही गर्भवती हो जाऊँ और दो पुत्रों को उत्पन्न करूँ, तो भी इससे तुम्हें सहायता नहीं मिलेगी। [13]विवाह करने से पूर्व उनके युवक होने तक तुम्हें प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मैं तुमसे पति की प्रतीक्षा इतने लम्बें समय तक नहीं करवाऊँगी। इससे मुझे बहुत दु:ख होगा और मैं तो पहले से ही बहुत दु:खी हूँ। यहोवा ने मेरे साथ बहुत कुछ कर दिया है।"

[14]अत: स्त्रियाँ पुन: बहुत अधिक रोयीं। तब ओर्पा ने नाओमी का चुम्बन लिया और वह चली गई। किन्तु रूत ने उसे बाहों में भर लिया और वहाँ ठहर गई।

[15]नाओमी ने कहा, "देखो, तुम्हारी जेठानी अपने लोगों और अपने देवताओं में लौट गई। अत: तुम्हें भी वही करना चाहिए।"

[16]किन्तु रूत ने कहा, "अपने को छोड़ने के लिये मुझे विवश मत करो! अपने लोगों में लौटने के लिये मुझे विवश मत करो। मुझे अपने साथ चलने दो। जहाँ कहीं

न्यायाधीशों इस्राएल के लोगों की रक्षा के लिये परमेश्वर द्वारा भेंजे गये विशेष प्रमुख। इस्राएल में राजाओं के होने से पहले यह हुआ था।

तुम जाओगी, मैं जाऊँगी। जहाँ कहीं तुम सोओगी, मैं सोऊँगी। तुम्हारे लोग, मेरे लोग होंगे। तुम्हारा परमेश्वर, मेरा परमेश्वर होगा। [17]जहाँ तुम मरोगी, मैं भी वहीं मरूँगी और मैं वहीं दफनाई जाऊँगी। मैं यहोवा से याचना करती हूँ कि यदि मैं अपना वचन तोड़ूँ तो यहोवा मुझे दण्ड दे: केवल मृत्यु ही हम दोनों को अलग कर सकती है।"*

घर लौटना

[18]नाओमी ने देखा कि रूत की उसके साथ चलने की प्रबल इच्छा है। इसलिए नाओमी ने उसके साथ बहस करना बन्द कर दिया। [19]फिर नाओमी और रूत ने तब तक यात्रा की जब तक वे बेतलेहेम नहीं पहुँच गईं। जब दोनों स्त्रियाँ बेतलेहेम पहुँचीं तो सभी लोग बहुत उत्तेजित हुए। उन्होंने कहना आरम्भ किया, "क्या यह नाओमी है?"

[20]किन्तु नाओमी ने लोगों से कहा, "मुझे नाओमी* मत कहो, मुझे मारा* कहो। क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मेरे जीवन को बहुत दु:खी बना दिया है। [21]जब मैं गई थी, मेरे पास वे सभी चीज़ें थीं जिन्हें मैं चाहती थी। किन्तु अब, यहोवा मुझे खाली हाथ घर लाया है। यहोवा ने मुझे दु:खी बनाया है अत: मुझे 'प्रसन्न'* क्यों कहते हो? सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे बहुत अधिक कष्ट दिया है।"

[22]इस प्रकार नाओमी तथा उसकी पुत्रवधु रूत (मोआबी स्त्री) मोआब के पहाड़ी प्रदेश से लौटीं। ये दोनों स्त्रियाँ जौ की कटाई के समय* यहूदा के बेतलेहेम में आईं।

रूत का बोअज़ से मिलना

2 बेतलेहेम में एक धनी पुरुष रहता था। उसका नाम बोअज़ था। बोअज़ एलीमेलेक परिवार से नाओमी के निकट सम्बन्धियों में से एक था।

[2]एक दिन रूत ने (मोआबी स्त्री) नाओमी से कहा, "मैं सोचती हूँ कि मैं खेतों में जाऊँ। हो सकता है कि कोई ऐसा व्यक्ति मुझे मिले जो मुझ पर दया करके, मेरे लिए उस अन्न को इकट्ठा करने दे जिसे वह अपने खेत में छोड़ रहा हो।" [3]नाओमी ने कहा, "पुत्री, ठीक है, जाओ।"

अत: रूत खेतों में गई। वह फसल काटने वाले मजदूरों के पीछे चलती रही और उसने वह अन्न इकट्ठा किया जो छोड़ दिया गया था।* ऐसा हुआ कि उस खेत का एक भाग एलीमेलेक परिवार के व्यक्ति बोअज़ का था। [4]बाद में, बेतलेहेम से बोअज़ खेत में आया। बोअज़ ने अपने मज़दूरों का हालचाल पूछा। उसने कहा, "यहोवा तुम्हारे साथ हो!" मजदूरों ने उत्तर दिया, "यहोवा आपको आशीर्वाद दे!"

[5]तब बोअज़ ने अपने उस सेवक से बातें कीं, जो मजदूरों का निरीक्षक था। उसने पूछा, "वह लड़की किस की है?" [6]सेवक ने उत्तर दिया, "यह वही मोआबी स्त्री है जो मोआब के पहाड़ी प्रदेश से नाओमी के साथ आई है। [7]वह बहुत सवेरे आई और मुझसे उसने पूछा कि क्या मैं मजदूरों के पीछे चल सकती हूँ और भूमि पर गिरे अन्न को इकट्ठा कर सकती हूँ और यह तब से काम कर रही है। उसका घर वहाँ है।"*

[8]तब बोअज़ ने रूत से कहा, "बेटी, सुनो। तुम अपने लिये अन्न इकट्ठा करने के लिये मेरे खेत में रहो। तुम्हें किसी अन्य व्यक्ति के खेत में जाने की आवश्यकता नहीं है। मेरी दासियों के पीछे चलती रहो। [9]यह ध्यान में रखो कि वे किस खेत में जा रही है और उनका अनुसरण करो। मैंने युवकों को चेतावनी दे दी है कि वे तुम्हें परेशान न करें। जब तुम्हें प्यास लगे, तो उसी घड़े से पानी पीओ जिससे मेरे आदमी पीते हैं।"

[10]तब रूत प्रणाम करने नीचे धरती तक झुकी। उसने बोअज़ से कहा, "मुझे आश्चर्य है कि आपने मुझ पर ध्यान दिया! मैं एक अजनबी हूँ, किन्तु आपने मुझ पर बड़ी दया की।"

[11]बोअज़ ने उसे उत्तर दिया, "मैं उन सारी सहायताओं को जानता हूँ जो तुमने अपनी सास नाओमी को दी है। मैं

मैं ... अलग कर सकती है "यहोवा मेरा यह करे और इससे अधिक भी करे, जब तक मृत्यु हमें पृथक न करे!
नाओमी इस नाम का अर्थ "प्रसन्न," या "सुहावना" है।
मारा इस नाम का अर्थ "कटु" या "शोकपूर्ण" है।
प्रसन्न यह "नाओमी" नाम है।
कटाई के समय अर्थात् अप्रैल का अन्त और मई का प्रारंभ।

इकट्ठा किया जो छोड़ दिया गया था यह नियम था कि किसान को फसल काटने के समय कुछ अन्न खेत में छोड़ना चाहिए। यह अन्न इसलिये छोड़ा जाता था कि गरीब लोग भोजन के लिये कुछ पा सकें। देखें लैव्य. 19:9; 23:22
उसका घर वहाँ है या उसने उस निवास–स्थान पर केवल थोड़ी देर विश्राम किया।

जानता हूँ कि तुमने उसकी सहायता तब भी की थी जब तुम्हारा पति मर गया था और मैं जानता हूँ कि तुम अपने माता–पिता और अपने देश को छोड़कर इस देश में यहाँ आई हो। तुम इस देश के किसी भी व्यक्ति को नहीं जानती, फिर भी तुम यहाँ नाओमी के साथ आई। [12]यहोवा तुम्हें उन सभी अच्छे कामों के लिये फल देगा जो तुमने किये हैं। तुम्हें इस्राएल का परमेश्वर, यहोवा भरपूर करेगा। तुम उसके पास सुरक्षा के लिये आई हो* और वह तुम्हारी रक्षा करेगा।"

[13]तब रूत ने कहा, "आप मुझ पर बड़े दयालु हैं, महोदय। मैं तो केवल एक दासी हूँ। मैं आपके सेवकों में से भी किसी के बराबर नहीं हूँ। किन्तु आपने मुझसे दयापूर्ण बातें की हैं और मुझे सान्त्वना दी है।"

[14]दोपहर के भोजन के समय, बोअज़ ने रूत से कहा, "यहाँ आओ! हमारी रोटियों में से कुछ खाओ। इधर हमारे सिरके में अपनी रोटी डुबाओ।"

इस प्रकार रूत मजदूरों के साथ बैठ गई। बोअज़ ने उसे ढेर सारा भुना अनाज दिया। रूत ने भरपेट खाया और कुछ भोजन बच भी गया। [15]तब रूत उठी और काम करने लौट गई। तब बोअज़ ने अपने सेवकों से कहा, "रूत को अन्न की ढेरी के पास भी अन्न इकट्ठा करने दो। उसे रोको मत। [16]उसके काम को, उसके लिये कुछ दाने से भरी बालें गिराकर, हलका करो। उसे उस अन्न को इकट्ठा करने दो। उसे रूकने के लिये मत कहो।"

नाओमी बोअज़ के बारे में सुनती है

[17]रूत ने सन्ध्या तक खेत में काम किया। तब उसने भूसे से अन्न को अलग किया। लगभग आधा बुशल जौ निकला। [18]रूत उस अन्न को अपनी सास को यह दिखाने के लिये ले गई कि उसने कितना अन्न इकट्ठा किया है। उसने उसे वह भोजन भी दिया जो दोपहर के भोजन में से बच गया था।

[19]उसकी सास ने उससे पूछा, "यह अन्न तुमने कहाँ से इकट्ठा किया है? तुमने कहाँ काम किया? उस व्यक्ति को यहोवा का आशीर्वाद मिले, जिसने तुम पर ध्यान दिया।" तब रूत ने उसे बताया कि उसने किसके साथ काम किया था। उसने कहा, "जिस व्यक्ति के साथ मैंने काम किया था, उसका नाम बोअज़ है।" नाओमी ने अपनी पुत्रवधु से कहा, "यहोवा उसे आशीर्वाद दे। यहोवा सभी पर दया करता रहता है चाहे वे जीवित हों या मृत हों। [20]तब नाओमी ने अपनी पुत्रवधु से कहा, "बोअज़ हमारे सम्बन्धियों में से एक है। बोअज़ हमारे संरक्षकों* में से एक है।" [21]तब रूत ने कहा, "बोअज़ ने मुझे वापस आने और काम करने को भी कहा है। बोअज़ ने कहा है कि मैं सेवकों के साथ तब तक काम करती रहूँ जब तक फ़सल की कटाई पूरी नहीं हो जाती।"

[22]तब नाओमी ने अपनी पुत्रवधु रूत से कहा, "यह अच्छा है कि तुम उसकी दासियों के साथ काम करती रहो। यदि तुम किसी अन्य के खेत में काम करोगी तो कोई व्यक्ति तुम्हें कोई नुकसान पहुँचा सकता है।" [23]अत: रूत बोअज़ की दासियों के साथ काम करती रही। उसने तब तक अन्न इकट्ठा किया जब तक फसल की कटाई पूरी नहीं हुई। उसने वहाँ गेहूँ की कटाई के अन्त तक भी काम किया। रूत अपनी सास, नाओमी के साथ रहती रही।

खलिहान

3 तब रूत की सास, नाओमी ने उससे कहा, "मेरी पुत्री, संभव है कि मैं तेरे लिए एक अच्छा घर पा सकूँ। यह तेरे लिये अच्छा होगा। [2]बोअज़ उपयुक्त व्यक्ति हो सकता है। बोअज़ हमारा निकट का सम्बन्धी* है। तुमने उसकी दासियों के साथ काम किया है। आज रात वह खलिहान में काम कर रहा होगा। [3]जाओ, नहाओ और अच्छे वस्त्र पहनो। सुगन्ध द्रव्य लगाओं और खलिहान में जाओ। किन्तु बोअज़ के सामने तब तक न पड़ो जब तक वह रात्रि का भोजन न कर ले। [4]भोजन करने के बाद, वह आराम करने के लिये लेटेगा। देखती रहो जिससे तुम यह जान सको कि वह कहाँ लेटा है। वहाँ जाओ

तुम उसके ... आई हो "तुम रक्षा के लिये उसके पंखों के नीचे आई हो।"

संरक्षकों "कष्ट से मुक्ति देने वाला।" वह व्यक्ति जो मृत व्यक्ति के सम्बन्धियों की देखभाल और रक्षा करता है। यह कभी कभी अपने गरीब सम्बन्धी को वापस खरीदकर दासता से स्वतंत्र (कष्ट से मुक्ति) कराने वाला होता है।

निकट सम्बन्धी ऐसा निकट सम्बन्धी जो रूत के साथ विवाह कर सकता था, जिससे उसको सन्तान हो इस व्यक्ति को उस परिवार की देखभाल करनी पड़ती हैं किन्तु उसका परिवार और उसकी सम्पत्ति उसकी नहीं होती। वे सभी रूत के मृत पति के होंगे।

और उसके पैर के वस्त्र उघाड़ो।* तब बोअज़ के साथ सोओ। वह बताएगा कि तुम्हें विवाह के लिये क्या करना होगा।

[5]तब रूत ने उत्तर दिया, "आप जो करने को कहती हैं, मैं करूँगी।"

[6]इसलिये रूत खलिहान में गई। रूत ने वह सब किया जो उसकी सास ने उससे करने को कहा था। [7]खाने और पीने के बाद बोअज़ बहुत सन्तुष्ट था। बोअज़ अन्न के ढेर के पास लेटने गया। तब रूत बहुत धीरे से उसके पास गई और उसने उसके पैरों का वस्त्र उघाड़ दिया। रूत उसके पैरों के बगल में लेट गई। [8]करीब आधी रात को, बोअज़ ने नींद में अपनी करवट बदली और वह जाग पड़ा। वह बहुत चकित हुआ। उसके पैरों के समीप एक स्त्री लेटी थी। [9]बोअज़ ने पूछा, "तुम कौन हो?"

उसने कहा, "मैं तुम्हारी दासी रूत हूँ। अपनी चादर मेरे ऊपर ओढ़ा दो।* तुम मेरे रक्षक हो।"

[10]तब बोअज़ ने कहा, "युवती, यहोवा तुम्हें आशीर्वाद दे। तुमने मुझ पर विशेष कृपा की है। तुम्हारी यह कृपा मेरे प्रति उससे भी अधिक है जो तुमने आरम्भ में नाओमी के प्रति दिखाई थी। तुम विवाह के लिये किसी भी धनी या गरीब युवक की खोज कर सकती थी। किन्तु तुमने वैसा नहीं किया। [11]युवती, अब डरो नहीं। मैं वही करूँगा जो तुम चाहती हो। मेरे नगर के सभी लोग जानते हैं कि तुम एक अच्छी स्त्री हो। [12]और यह सत्य है, कि मैं तुम्हारे परिवार का निकट सम्बन्धी हूँ। किन्तु एक अन्य व्यक्ति है जो तुम्हारे परिवार का मुझसे भी अधिक निकट का सम्बन्धी है। [13]आज की रात यहीं ठहरो। प्रात: काल हम पता लगायेंगे कि क्या वह तुम्हारी सहायता करेगा।* यदि वह तुम्हें सहायता देने का निर्णय लेता है तो बहुत अच्छा होगा। यदि वह तुम्हारी सहायता करने से इन्कार करता है तो यहोवा के अस्तित्व को साक्षी करके, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुमसे विवाह करूँगा और एलीमेलेक की भूमि को तुम्हारे लिये खरीद कर लौटाऊँगा।* इसलिए सुबह तक यहीं लेटी रहो!"

[14]इसलिये रूत बोअज़ के पैर के पास सवेरे तक लेटी रही। वह अंधेरा रहते ही उठी, इससे पहले की इतना प्रकाश हो कि लोग एक दूसरे को पहचान सकें।

बोअज़ ने उससे कहा, "हम इसे गुप्त रखेंगे कि तुम पिछली रात मेरे पास आई थी।" [15]तब बोअज़ ने कहा, "अपनी ओढ़नी मेरे पास लाओ। अब, इसे खुला रखो।"

इसलिए रूत ने अपनी ओढ़नी को खुला रखा, और बोअज़ ने लगभग एक बुशल जौ उसकी सास नाओमी को उपहार में दिया। तब बोअज़ ने उसे रूत की ओढ़नी में बाँध दिया और उसे उसकी पीठ पर रख दिया। तब वह नगर को गया।

[16]रूत अपनी सास, नाओमी के घर गई। नाओमी द्वार पर आई और उसने पूछा, "बाहर कौन है?" रूत घर के भीतर गई और उसने नाओमी को हर बात जो बोअज़ ने की थी, बतायी। [17]उसने कहा, "बोअज़ ने यह जौ उपहार के रूप में तुम्हें दिया है। बोअज़ ने कहा कि आपके लिए उपहार लिये बिना, मुझे घर नहीं जाना चाहिए।"

[18]नाओमी ने कहा, "पुत्री, तब तक धैर्य रखो जब तक हम यह सुनें कि क्या हुआ। बोअज़ तब तक विश्राम नहीं करेगा जब तक वह उसे नहीं कर लेता जो उसे करना चाहिए। हम लोगों को दिन बीतने के पहले मालूम हो जायेगा कि क्या होगा।"

बोअज़ तथा अन्य सम्बन्धी

4 बोअज़ उस स्थान पर गया जहाँ नगर द्वार पर लोग इकट्ठे होते हैं। बोअज़ तब तक वहाँ बैठा जब तक वह निकट सम्बन्धी वहाँ से नहीं गुजरा जिसका जिक्र बोअज़ ने रूत से किया था। बोअज़ ने उसे बुलाया, "मित्र, आओ! यहाँ बैठो!"

[2]तब बोअज़ ने वहाँ गवाहों को इकट्ठा किया। बोअज़ ने नगर के दस अग्रजो (बुजुर्गो) को एकत्र किया। उसने कहा, "यहाँ बैठो!" इसलिये वे वहाँ बैठ गए। [3]तब बोअज़ ने उस निकट सम्बन्धी से बातें कीं। उसने कहा, "नाओमी मोआब के पहाड़ी प्रदेश से लौट आई है। वह उस भूमि को बेच रही है जो हमारे सम्बन्धी एलीमेलेक की है। [4]मैंने

पैर के वस्त्र उघाड़ों "उसके पैर को वस्त्रहीन करो।" हिब्रू भाषा में 'पैर' शब्द का अर्थ यौन अंग भी होता है। इससे यह पता चलता था कि रूत उस व्यक्ति से अपना रक्षक और मुक्तिदाता होने की याचना कर रही थी।

चादर ओढ़ा दो "अपने पंखों को मेरे ऊपर फैलाओ।" यह इस बात का सूचक है कि रूत सहायता और रक्षा चाहती थी। तुम मेरे रक्षक हो। देखें रूत 2:12

सहायता करेगा "मुक्ति दिलायेगा।"

खरीद कर लौटाऊँगा "मैं तुम्हें मुक्त करूँगा।"

तय किया है कि मैं इस विषय में यहाँ रहने वाले लोगों और अपने लोगों के अग्रजों के सामने तुमसे कहूँ। यदि तुम भूमि को खरीदकर वापस लेना चाहते हो तो खरीद लो! यदि तुम भूमि को ऋणमुक्त करना नहीं चाहते तो मुझे बताओ। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे बाद वह व्यक्ति मैं ही हूँ जो भूमि को ऋणमुक्त कर सकता है। यदि तुम भूमि को वापस नहीं खरीदते हो, तो मैं खरीदूँगा।"

[5]तब बोअज़ ने कहा, "यदि तुम भूमि नाओमी से खरीदोगे तो तुम्हें मृतक की पत्नी, मोआबी स्त्री रूत भी मिलेगी। जब रूत को बच्चा होगा तो वह भूमि उस बच्चे की होगी। इस प्रकार भूमि मृतक के परिवार में ही रहेगी।"

[6]निकट सम्बन्धी ने उत्तर दिया, "मैं भूमि को वापस खरीद नहीं सकता। यद्यपि यह भूमि मेरी होनी चाहिए थी किन्तु मैं इसे खरीद नहीं सकता। यदि मैं ऐसा करता हूँ, तो मुझे अपनी सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ सकता है। इसलिए तुम उस भूमि को खरीद सकते हो।" [7](इस्राएल में बहुत समय पहले जब कोई व्यक्ति किसी सम्पत्ति को खरीदता या ऋणमुक्त करता था, तो एक व्यक्ति अपने जूते को उतारता था, और दूसरे व्यक्ति को दे देता था। यह उनके खरीदने का प्रमाण था।) [8]सो उस निकट सम्बन्धी ने कहा, "भूमि खरीद लो।" तब उस निकट सम्बन्धी ने अपने एक जूते को उतारा और इसे बोअज़ को दे दिया।

[9]तब बोअज़ ने अग्रजों और सभी लोगों से कहा, "आज आप लोग मेरे गवाह हैं कि मैं नाओमी से वे सभी चीज़ें खरीद रहा हूँ जो एलीमेलेक, किल्योन और महलोन की हैं। [10]मैं रूत को भी अपनी पत्नी बनाने के लिये खरीद रहा हूँ। मैं यह इसलिए कर रहा हूँ कि मृतक की सम्पत्ति उसके परिवार के पास ही रहेगी। इस प्रकार मृतक का नाम उसके परिवार और उसकी भूमि से नहीं हटाया जायेगा। आप लोग आज इसके गवाह हैं।"

[11]इस प्रकार सभी लोग और अग्रज जो नगर द्वार के समीप थे, गवाह हुए। उन्होंने कहा:

यह स्त्री जो तुम्हारे घर जाएगी,
यहोवा उसे राहेल और लिआ जैसी करे
जिसने इस्राएल वंश को बनाया।
हम प्रार्थना करते हैं–तुम एप्राता* में
शक्तिशाली होओ!
तुम बेतलेहेम में प्रसिद्ध होओ!

[12] जैसे तामार ने यहूदा के पुत्र पेरेस* को
जन्म दिया और उसका परिवार महान बना।
उसी तरह यहोवा तुम्हें भी रूत से कई पुत्र दे
और तुम्हारा परिवार भी उसकी तरह महान हो।

[13]इस प्रकार बोअज़ ने रूत से विवाह किया। यहोवा ने रूत को गर्भवती होने दिया और रूत ने एक पुत्र को जन्म दिया। [14]नगर की स्त्रियों ने नाओमी से कहा,

उस यहोवा का आभार मानो जिसने
तुम्हें ऐसा पुत्र दिया।
यहोवा करे वह, इस्राएल में प्रसिद्ध हो।
[15] वह तुम्हें फिर देगा एक जीवन!
और बुढ़ापे में तुम्हारा वह रखेगा ध्यान।
तुम्हारी बहू के कारण घटना घटी है यह
गर्भ में धारण किया उसने यह
बच्चा तुम्हारे लिए।
प्यार वह करती है तुमसे
और वह उत्तम है तुम्हारे लिए
सात बेटों से अधिक।"

[16]नाओमी ने लड़के को लिया, उसे अपनी बाहों में उठा लिया, तथा उसका पालन–पोषण किया। [17]पड़ोसियों ने बच्चे का नाम रखा। उन स्त्रियों ने कहा, "अब नाओमी के पास एक पुत्र है!" पड़ोसियों ने उसका नाम ओबेद रखा। ओबेद यिशै का पिता था और यिशै, राजा दाऊद का पिता था।

रूत और बोअज़ का परिवार

[18]पेरेस के परिवार की वंशावली यह है:

हिस्रोन का पिता पेरेस था।
[19] एराम का पिता हिस्रोन था।
अम्मीनादाब का पिता एराम था।
[20] नहशोन का पिता अम्मीनादाब था।
सल्मोन का पिता नहशोन था।
[21] बोअज़ का पिता सल्मोन था।
ओबेद का पिता बोअज़ था।
[22] यिशै का पिता ओबेद था।
दाऊद का पिता यिशै था।

एप्राता बेतलेहेम का दूसरा नाम।

पेरेस बोअज़ के पूर्वजों में से एक।

1 शमूएल

एल्काना और उसका परिवार शीलो में आराधना करता है

1 एल्काना नामक एक व्यक्ति था। वह एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के रामातैमसोपीम का निवासी था। एल्काना सूप परिवार का था। एल्काना यरोहाम* का पुत्र था। यरोहाम एलीहू का पुत्र था। एलीहू तोहू का पुत्र था और तोहू सूप का पुत्र था, जो एप्रैम के परिवार समूह से था।

[2]एल्काना की दो पत्नियाँ थीं। एक का नाम हन्ना था और दूसरी का नाम पनिन्ना था। पनिन्ना के बच्चे थे, किन्तु हन्ना के कोई बच्चा नहीं था।

[3]एल्काना हर वर्ष अपने नगर रामातैमसोपीम को छोड़ देता था और शीलो नगर जाता था। एल्काना सर्वशक्तिमान यहोवा की उपासना शीलो में करता था और वहाँ यहोवा को बलि भेंट करता था। शीलो वह स्थान था, जहाँ होप्नी और पीनहास यहोवा के याजक के रूप में सेवा करते थे। होप्नी और पीनहास एली के पुत्र थे। [4]जब कभी एल्काना अपनी बलि भेंट करता था, वह भेंट का एक अंश अपनी पत्नी पनिन्ना को देता था। एल्काना भेंट का अंश पनिन्ना के बच्चों को भी देता था। [5]एल्काना भेंट का एक बराबर का अंश* हन्ना को भी सदा दिया करता था। एल्काना यह तब भी करता रहा जब यहोवा ने हन्ना को कोई सन्तान नहीं दी थी। एल्काना यह इसलिये करता था कि हन्ना उसकी वह पत्नी थी जिससे वह सच्चा प्रेम करता था।

पनिन्ना हन्ना को परेशान करती है

[6]पनिन्ना हन्ना को सदा खिन्नता और परेशानी का अनुभव कराती थी। पनिन्ना यह इसलिये करती थी क्योंकि हन्ना कोई बच्चा पैदा नहीं कर सकती थी। [7]हर वर्ष जब उनका परिवार शीलो में यहोवा के आराधनालय में जाता, पनिन्ना, हन्ना को परेशानी में डाल देती थी। एक दिन जब एल्काना बलि भेंट अर्पित कर रहा था। हन्ना परेशानी का अनुभव करने लगी और रोने लगी। हन्ना ने कुछ भी खाने से इन्कार कर दिया। [8]उसके पति एल्काना ने उससे कहा, "हन्ना, तुम रो क्यों रही हो? तुम खाना क्यों नहीं खाती? तुम दुःखी क्यों हो? मैं, तुम्हारा पति, तुम्हारा हूँ। तुम्हें सोचना चाहिए कि मैं तुम्हारे लिए तुम्हारे दस पुत्रों से अच्छा हूँ।"

हन्ना की प्रार्थना

[9]खाने और पीने के बाद हन्ना चुपचाप उठी और यहोवा से प्रार्थना करने गई। यहोवा के पवित्र आराधनालय के द्वार के निकट कुर्सी पर याजक एली बैठा था। [10]हन्ना बहुत दुःखी थी। वह बहुत रोई जब उसने यहोवा से प्रार्थना की। [11]उसने परमेश्वर से विशेष प्रतिज्ञा की। उसने कहा, "सर्वशक्तिमान यहोवा, देखो मैं कितनी अधिक दुःखी हूँ। मुझे याद रखो! मुझे भूलो नहीं। यदि तुम मुझे एक पुत्र दोगे तो मैं पूरे जीवन के लिये उसे तुमको अर्पित कर दूँगी। यह नाजीर पुत्र होगा: वह दाखमधु या तेज मदिरा नहीं पीएगा* और कोई उसके बाल नहीं काटेगा।"*

[12]हन्ना ने बहुत देर तक प्रार्थना की। जिस समय हन्ना प्रार्थना कर रही थी, एली ने उसका मुख देखा। [13]हन्नाअपने हृदय में प्रार्थना कर रही थी। उसके होंठ हिल रहे थे, किन्तु कोई आवाज नहीं निकल रही थी। [14]एली ने समझा

यरोहाम या "जेरहमील।"

बराबर का अंश "दूना अंश।"

वह दाखमधु ... पीएगा यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है और कुमरान से मिले दण्ड में लिपटे प्राचीन पत्रकों में से एक में है किन्तु यह मानक हिब्रू पाठ में नहीं है।

और कोई ... काटेगा वे लोग जो अपने बाल न काटने और दाखमधु न पीने की प्रतिज्ञा कर 5ते थे, नाजीर कहे जाते थे। देखें गिनती 6:5 ये लोग अपना जीवन परमेश्वर को सौंपते थे।

कि हन्ना दाखमधु से मत्त है। एली ने हन्ना से कहा, “तुम्हारे पास पीने को अत्याधिक था! अब समय है कि दाखमधु को दूर करो।”

[15]हन्ना ने उत्तर दिया, “मैंने दाखमधु या दाखरस नहीं पिया है। मैं बहुत अधिक परेशान हूँ। मैं यहोवा से प्रार्थना करके अपनी समस्याओं का निवेदन कर रही थी। [16]मत सोचो कि मैं बुरी स्त्री हूँ। मैं इतनी देर तक इसलिए प्रार्थना कर रही थी कि मुझे अनेक परेशानियाँ हैं और मैं बहुत दुःखी हूँ।”

[17]एली ने उत्तर दिया, “शान्तिपूर्वक जाओ। इस्राएल का परमेश्वर तुम्हें वह दे, जो तुमने मांगा है।”

[18]हन्ना ने कहा, “मुझे आशा है कि आप मुझसे प्रसन्न हैं।” तब हन्ना गई और उसने कुछ खाया। वह अब दुःखी नहीं थी।

[19]दूसरे दिन सवेरे एल्काना का परिवार उठा। उन्होंने परमेश्वर की उपासना की और वे अपने घर रामा को लौट गए।

शमूएल का जन्म

एल्काना ने अपनी पत्नी हन्ना के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया, यहोवा ने हन्ना की प्रार्थना को याद रखा। [20]हन्ना गर्भवती हुई और उसे एक पुत्र हुआ। हन्ना ने उसका नाम शमूएल* रखा। उसने कहा, “इसका नाम शमूएल है क्योंकि मैंने इसे यहोवा से माँगा है।”

[21]उस वर्ष एल्काना बलि–भेंट देने और परमेश्वर के सामने की गई प्रतिज्ञा को पूरा करने शीलो गया। वह अपने परिवार को अपने साथ ले गया। [22]किन्तु हन्ना नहीं गई। उसने एल्काना से कहा, “जब लड़का ठोस भोजन करने योग्य हो जायेगा, तब मैं इसे शीलो ले जाऊँगी। तब मैं उसे यहोवा को दूँगी। वह एक नाज़ीर बनेगा* और वह शीलो में रहेगा।”

[23]हन्ना के पति एल्काना ने उससे कहा, “वही करो जिसे तुम उत्तम समझती हो। तुम तब तक घर में रह सकती हो जब तक लड़का ठोस भोजन करने योग्य बड़ा नहीं हो जाता। यहोवा वही करे जो तुमने कहा है।” इसलिये हन्ना अपने बच्चे का पालन पोषण तब तक करने के लिये घर पर ही रह गई जब तक वह ठोस भोजन करने योग्य बड़ा नहीं हो जाता।

हन्ना शमूएल को शीलो में एली के पास ले जाती है

[24]जब लड़का ठोस भोजन करने योग्य बड़ा हो गया, तब हन्ना उसे शीलो में यहोवा के आराधनालय पर ले गई। हन्ना अपने साथ तीन वर्ष का एक बैल, बीस पौंड़ आटा और एक मशक दाखमधु भी ले गई।

[25]वे यहोवा के सामने गए। एल्काना ने यहोवा के लिए बलि के रूप में बैल को मारा जैसा वह प्राय: करता था* तब हन्ना लड़के को एली के पास ले आई। [26]हन्ना ने एली से कहा, “महोदय, क्षमा करें। मैं वही स्त्री हूँ जो यहोवा से प्रार्थना करते हुए आप के पास खड़ी थी। मैं वचन देती हूँ कि मैं सत्य कह रही हूँ। [27] मैंने इस बच्चे के लिये प्रार्थना की थी। यहोवा ने मुझे यह बच्चा दिया [28]और अब मैं इस बच्चे को यहोवा को दे रही हूँ। यह पूरे जीवन यहोवा का रहेगा।”

तब हन्ना ने बच्चे को वहीं छोड़ा* और यहोवा की उपासना की।

हन्ना धन्यवाद देती है

2 हन्ना ने कहा:

“यहोवा में, मेरा हृदय प्रसन्न है!
मैं अपने परमेश्वर में शक्तिमती*
अनुभव करती हूँ!
मैं अपनी विजय से पूर्ण प्रसन्न हूँ!
और अपने शत्रुओं की हँसी उड़ाई हूँ।

शमूएल इस नाम का अर्थ “उसका नाम परमेश्वर है। किन्तु हिब्रू में यदि आप एक वर्ण हटा दें तो यह “माँगना” शब्द की तरह या “शाऊल” नाम की तरह होगा। शमूएल में कई स्थान है जहाँ “शाऊल” नाम, शमूएल और माँगना में श्लेष के रूप में आया है।

वह एक नाजीर बनेगा यह हिब्रू का मानकपाठ नहीं है किन्तु यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है। और कुमरान से प्राप्त दण्ड में लिपटे प्राचीन हिब्रू पत्रकों में से एक में हैं।

वे यहोवा ... करता था यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद और कुमरान से प्राप्त दण्ड में लिपटे प्राचीन पत्रकों में से एक है। यह हिब्रू के मानक पाठ में नहीं है।

तब ... छोड़ा यह कुमरान से प्राप्त दण्ड में लिपटे प्राचीन हिब्रू पत्रकों में से एक में है। यह हिब्रू के मानक पाठ में नहीं है।

शक्तिमती “यहोवा की उपासना में मेरा सिंगा ऊँचा उठा है।” सिंगा शक्ति का प्रतीक है।

[2] यहोवा के सदृश कोई पवित्र परमेश्वर नहीं।
तेरे अतिरिक्त कोई परमेश्वर नहीं!
परमेश्वर के अतिरिक्त कोई
आश्रय शिला* नहीं।
[3] बन्द करो डींगों का हाँकना!
घमण्ड भरी बातें न करो!
क्यों? क्योंकि यहोवा परमेश्वर
सब कुछ जानता है,
परमेश्वर लोगों को राह दिखाता है
और उनका न्याय करता है।
[4] शक्तिशाली योद्धाओं के धनुष टूटते हैं!
और दुर्बल शक्तिशाली बनते हैं!
[5] जो लोग बीते समय में बहुत भोजन वाले थे,
उन्हें अब भोजन पाने के लिये
काम करना होगा।
किन्तु जो बीते समय में भूखे थे,
वे अब भोजन पाकर मोटे हो रहे हैं!
जो स्त्री बच्चा उत्पन्न नहीं कर सकती थी
अब सात बच्चों वाली है!
किन्तु जो बहुत बच्चों वाली थी, दु:खी है
क्योंकि उसके बच्चे चले गये।
[6] यहोवा लोगों को मृत्यु देता है,
और वह उन्हें जीवित रहने देता है।
यहोवा लोगों को मृत्युस्थल व अधोलोक को
पहुँचाता है, और पुन: वह उन्हें
जीवन देकर उठाता है।
[7] यहोवा लोगों को दीन बनाता है,
और यहोवा ही लोगों को धनी बनाता है।
यहोवा लोगों को नीचा करता है,
और वह लोगों को ऊँचा उठाता है।
[8] यहोवा कंगालों को धूलि से उठाता है।
यहोवा उनके दु:ख को दूर करता है।
यहोवा कंगालों को राजाओं के
साथ बिठाता है।
यहोवा कंगालों को प्रतिष्ठित
सिंहासन पर बिठाता है।
पूरा जगत अपनी नींव तक यहोवा का है!
यहोवा जगत को उन
खम्भों पर टिकाया है!
[9] यहोवा अपने पवित्र लोगों की रक्षा करता है।
वह उन्हें ठोकर खाकर गिरने से बचाता है।
किन्तु पापी लोग नष्ट किये जाएंगे।
वे घोर अंधेरे में गिरेंगे।
उनकी शक्ति उन्हें विजय प्राप्त करने में
सहायक नहीं होगी।
[10] यहोवा अपने शत्रुओं को नष्ट करता है।
सर्वोच्च परमेश्वर लोगों के विरुद्ध
गगन में गरजेगा।
यहोवा सारी पृथ्वी का न्याय करेगा।
यहोवा अपने राजा को शक्ति देगा।
वह अपने अभीषिक्त राजा को
शक्तिशाली बनायेगा।"

[11]एल्काना और उसका परिवार अपने घर रामा को गया। लड़का शीलो में रह गया और याजक एली के अधीन यहोवा की सेवा करता रहा।

एली के बुरे पुत्र

[12]एली के पुत्र बुरे व्यक्ति थे। वे यहोवा की परवाह नहीं करते थे। [13]वे इसकी परवाह नहीं करते थे कि याजकों से लोगों के प्रति कैसे व्यवहार की आशा की जाती है। याजकों को लोगों के लिये यह करना चाहिए: जब कभी कोई व्यक्ति बलि–भेंट लाये, तो याजक को एक बर्तन में माँस को उबालना चाहिये। याजक के सेवक को अपने हाथ में विशेष काँटा जिसके तीन नोंक हैं, लेकर आना चाहिए। [14]याजक के सेवक को काँटे को बर्तन या पतीले में डालना चाहिए। काँटें से जो कुछ बर्तन के बाहर लाये वह माँस याजक का होगा। यह याजकों द्वारा उन इस्राएलियों के लिये किया जाना चाहिये जो शीलो में बलि–भेंट करने आयें।

[15]किन्तु एली के पुत्रों ने यह नहीं किया। चर्बी को वेदी पर जलाये जाने के पहले ही उनके सेवक लोगों के पास बलि–भेंट करते जाते थे। याजक के सेवक कहा करते थे, "याजक को कुछ माँस भूनने के लिये दो। याजक तुमसे उबला हुआ माँस नहीं लेंगे।"

आश्रय शिला परमेश्वर के लिये एक नाम। यह बताता है कि वह किले या सुरक्षा के दृढ़ स्थान की तरह है।

[16]बलि–भेंट करने वाला व्यक्ति यह कह सकता था, "पहले चर्बी जलाओ,* तब तुम जो चाहो ले सकते हो।" यदि ऐसा होता तो याजक का सेवक उत्तर देता: "नहीं, मुझे अभी माँस दो, यदि तुम मुझे यह नहीं देते हो तो मैं इसे तुमसे ले ही लूँगा।"

[17]इस प्रकार, होप्नी और पीनहास यह दिखाते थे कि वे यहोवा को भेंट की गई बलि के प्रति श्रद्धा नहीं रखते थे। यह यहोवा के विरुद्ध बहुत बुरा पाप था!

[18]किन्तु शमूएल यहोवा की सेवा करता था। शमूएल सन का बना एक विशेष एपोद पहनता था। [19]हर वर्ष शमूएल की माँ एक छोटा चोंगा शमूएल के लिये बनाती थी। वह हर वर्ष जब अपने पति के साथ बलि–भेंट करने शीलो जाती थी तो वह छोटा चोंगा शमूएल के लिए ले जाती थी।

[20]एली, एल्काना और उसकी पत्नी को आशीर्वाद देता था। एली ने कहा, "यहोवा तुम्हें हन्ना द्वारा सन्तान देकर बदला दे। ये बच्चे उस लड़के का स्थान लेंगे जिसके लिये हन्ना ने प्रार्थना की थी और यहोवा को दिया था।"

तब एल्काना और हन्ना घर लौटे, और [21]यहोवा ने हन्ना पर दया की। उसके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ हुई और लड़का शमूएल यहोवा के पास बड़ा हुआ।

एली अपने पापी पुत्रों पर नियन्त्रण करने में असफल

[22]एली बहुत बूढ़ा था। वह बार–बार उन बुरे कामों के बारे में सुनता था जो उसके पुत्र शीलो में सभी इस्राएलियों के साथ कर रहे थे। एली ने यह भी सुना कि जो स्त्रियाँ मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करती थी, उनके साथ वे सोते थे।

[23]एली ने अपने पुत्रों से कहा, "तुमने जो कुछ बुरा किया है उसके बारे में लोगों ने यहाँ मुझे बताया है। तुम लोग ये बुरे काम क्यों करते हो? [24]पुत्रों, इन बुरे कामों को मत करो। यहोवा के लोग तुम्हारे विषय में बुरी बाते कह रहे हैं। [25]यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के विरुद्ध पाप करता है, तो परमेश्वर उसकी मध्यस्थता कर सकता है। किन्तु यदि कोई व्यक्ति यहोवा के ही विरुद्ध पाप करता है तो उस व्यक्ति की मध्यस्थता कौन कर सकता है?"

किन्तु एली के पुत्रों ने एली की बात सुनने से इन्कार कर दिया। इसलिए यहोवा ने एली के पुत्रों को मार डालने का निश्चय किया।

[26]बालक शमूएल बढ़ता रहा। उसने परमेश्वर और लोगों को प्रसन्न किया।

एली के परिवार के विषय में भंयकर भविष्यवाणी

[27]परमेश्वर का एक व्यक्ति एली के पास आया। उसने कहा, "यहोवा यह बात कहता है, 'तुम्हारे पूर्वज फ़िरौन के परिवार के गुलाम थे। किन्तु मैं तुम्हारे पूर्वजों के सामने उस समय प्रकट हुआ। [28]मैंने तुम्हारे परिवार समूह को इस्राएल के सभी परिवार समूहों में से चुना। मैंने तुम्हारे परिवार समूह को अपना याजक बनने के लिये चुना। मैंने उन्हें अपनी वेदी पर बलि–भेंट करने के लिये चुना। मैंने उन्हें सुगन्ध जलाने और एपोद पहनने के लिये चुना। मैंने तुम्हारे परिवार समूह को बलि–भेंट से वह माँस भी लेने दिया जो इस्राएल के लोग मुझको चढ़ाते हैं। [29]इसलिए तुम उन बलि–भेंटों और अन्नबलियों का सम्मान क्यों नहीं करते। तुम अपने पुत्रों को मुझसे अधिक सम्मान देते हो। तुम माँस के उस सर्वोत्तम भाग से मोटे हुए हो जिसे इस्राएल के लोग मेरे लिये लाते हैं।'

[30]"इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह वचन दिया था कि तुम्हारे पिता का परिवार ही सदा उसकी सेवा करेगा। किन्तु अब यहोवा यह कहता है, 'वैसा कभी नहीं होगा! मैं उन लोगों का सम्मान करूँगा जो मेरा सम्मान करेंगे। किन्तु उनका बुरा होगा जो मेरा सम्मान करने से इन्कार करते हैं। [31]वह समय आ रहा है जब मैं तुम्हारे सारे वंशजों को नष्ट कर दूँगा। तुम्हारे परिवार में कोई बूढ़ा होने के लिये नहीं बचेगा। [32]इस्राएल के लिये अच्छी चीजें होंगी, किन्तु तुम घर में बुरी घटनाऐं होती देखोगे। तुम्हारे परिवार में कोई भी बूढ़ा होने के लिये नहीं बचेगा। [33]केवल एक व्यक्ति को मैं अपनी वेदी पर याजक के रूप में सेवा के लिये बचाऊँगा। वह बहुत अधिक बुढ़ापे तक रहेगा। वह तब तक जीवित रहेगा जब तक उसकी आँखे और उसकी शक्ति बची रहेगी। तुम्हारे शेष वंशज तलवार के घाट उतारे जाएंगे। [34]मैं तुम्हें एक संकेत दूँगा जिससे यह ज्ञात होगा कि ये बातें सच होंगी। तुम्हारे दोनों

पहले चर्बी जलाओ चर्बी जानवर का वह भाग थी जो परमेश्वर का था। याजकों से आशा की जाती थी कि वे परमेश्वर की भेंट के रूप में उसे वेदी में जलायें।

पुत्र होप्नी और पीनहास एक ही दिन मरेंगे।[35]मैं अपने लिये एक विश्वसनीय याजक ठहराऊँगा। वह याजक मेरी बात मानेगा और जो मैं चाहता हूँ, करेगा। मैं इस याजक के परिवार को शक्तिशाली बनाऊँगा। वह सदा मेरे अभिषिक्त राजा के सामने सेवा करेगा। [36]तब सभी लोग जो तुम्हारे परिवार में बचे रहेंगे, आएंगे और इस याजक के आगे झुकेंगे। ये लोग थोड़े धन या रोटी के टुकड़े के लिए भीख मागेंगे। वे कहेंगे, "कृपया याजक का सेवा कार्य हमें दे दो जिससे हम भोजन पा सकें।" ' "

शमूएल को परमेश्वर का बुलावा

3 बालक शमूएल एली के अधीन यहोवा की सेवा करता रहा। उन दिनों, यहोवा प्राय: लोगों से सीधे बातें नहीं करता था। बहुत कम ही दर्शन हुआ करता था।

[2]एली की दृष्टि इतनी कमजोर थी कि वह लगभग अन्धा था। एक रात वह बिस्तर पर सोया हुआ था। [3]शमूएल यहोवा के पवित्र आराधनालय में बिस्तर पर सो रहा था। उस पवित्र आराधनालय में परमेश्वर का पवित्र सन्दूक था। यहोवा का दीपक अब भी जल रहा था। [4]यहोवा ने शमूएल को बुलाया। शमूएल ने उत्तर दिया, "मैं यहाँ उपस्थित हूँ।" [5]शमूएल को लगा कि उसे एली बुला रहा है। इसलिए शमूएल दौड़कर एली के पास गया। शमूएल ने एली से कहा, "मैं यहाँ हूँ। आपने मुझे बुलाया।"

किन्तु एली ने कहा, "मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। अपने बिस्तर में जाओ।"

शमूएल अपने बिस्तर पर लौट गया। [6]यहोवा ने फिर बुलाया, "शमूएल!" शमूएल फिर दौड़कर एली के पास गया। शमूएल ने कहा, "मैं यहाँ हूँ। आपने मुझे बुलाया।"

एली ने कहा, "मैंने तुम्हें नहीं बुलाया, अपने बिस्तर में जाओ।"

[7]शमूएल अभी तक यहोवा को नहीं जानता था। यहोवा ने अभी तक उससे सीधे बात नहीं की थी।

[8]यहोवा ने शमूएल को तीसरी बार बुलाया। शमूएल फिर उठा और एली के पास गया। शमूएल ने कहा, "मैं आ गया। आपने मुझे बुलाया।" तब एली ने समझा कि यहोवा लड़के को बुला रहा है। [9]एली ने शमूएल से कहा, "बिस्तर में जाओ। यदि वह तुम्हें फिर बुलाता है तो कहो, 'यहोवा बोल! मैं तेरा सेवक हूँ और सुन रहा हूँ।'"

सो शमूएल बिस्तर में चला गया। [10]यहोवा आया और वहाँ खड़ा हो गया। उसने पहले की तरह बुलाया। उसने कहा, "शमूएल, शमूएल!" शमूएल ने कहा, "बोल! मैं तेरा सेवक हूँ और सुन रहा हूँ।"

[11]यहोवा ने शमूएल से कहा, " मैं शीघ्र ही इस्राएल में कुछ करूँगा। जो लोग इसे सुनेंगे उनके कान झन्ना उठेंगे। [12]मैं वह सब कुछ करूँगा जो मैंने एली और उसके परिवार के विरुद्ध करने को कहा है। मैं आरम्भ से अन्त तक सब कुछ करूँगा। [13]मैंने एली से कहा है कि मैं उसके परिवार को सदा के लिये दण्ड दूँगा। मैं यह इसलिए करूँगा कि एली जानता है कि उसके पुत्रों ने परमेश्वर के विरुद्ध बुरा कहा है, और किया है, और एली उन पर नियन्त्रण करने में असफल रहा है। [14]यही कारण है कि मैंने एली के परिवार को शाप दिया है कि बलि-भेंट और अन्नबलि उनके पापों को दूर नहीं कर सकती।"

[15]शमूएल सवेरा होने तक बिस्तर में पड़ा रहा। वह तड़के उठा और उसने यहोवा के मन्दिर के द्वार को खोला। शमूएल अपने दर्शन की बात एली से कहने में डरता था। [16]किन्तु एली ने शमूएल से कहा, "मेरे पुत्र, शमूएल!"

शमूएल ने उत्तर दिया, "हाँ, महोदय।"

[17]एली ने पूछा, "यहोवा ने तुमसे क्या कहा? उसे मुझसे मत छिपाओ। परमेश्वर तुम्हें दण्ड देगा, यदि परमेश्वर ने जो सन्देश तुमको दिया है उसमें से कुछ भी छिपाओगे।" [18]इसलिए शमूएल ने एली को वह हर एक बात बताई। शमूएल ने एली से कुछ भी नहीं छिपाया।

एली ने कहा, "वह यहोवा है। उसे वैसा ही करने दो जैसा उसे अच्छा लगता है।"

[19]शमूएल बड़ा होता रहा और यहोवा उसके साथ रहा। यहोवा ने शमूएल के किसी सन्देश को असत्य नहीं होने दिया। [20]तब सारा इस्राएल, दान से लेकर बेर्शबा तक, समझ गया कि शमूएल यहोवा का सच्चा नबी है। [21]शीलो में यहोवा शमूएल के सामने प्रकट होता रहा। यहोवा ने शमूएल के आगे अपने आपको वचन* के द्वारा प्रकट किया।

वचन कभी-कभी यहोवा के वचन का अर्थ परमेश्वर का संदेश भी होता है। किन्तु कभी-कभी उसका अर्थ यह भी होता है कि यह परमेश्वर का एक विशेष प्रकार या रूप होता है जिसे वह उस समय काम में लाता है जब वह अपने नबियों के साथ बात करता है।

4 शमूएल के विषय में समाचार पूरे इस्राएल में फैल गया। एली बहुत बूढ़ा हो गया था। उसके पुत्र यहोवा के सामने बुरा काम करते रहे।*

पलिश्तियों ने इस्राएलियों को हराया

उस समय, पलिश्ती इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने के लिये तैयार हुए। इस्राएली पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ने गए। इस्राएलियों ने अपना डेरा एबेनेज़ेर में डाला। पलिश्तियों ने अपना डेरा अपेक में डाला। [2]पलिश्तियों ने इस्राएल पर आक्रमण करने की तैयारी की। युद्ध आरम्भ हो गया। पलिश्तियों ने इस्राएलियों को हरा दिया। पलिश्तियों ने इस्राएल की सेना के लगभग चार हजार सैनिकों को मार डाला। [3]इस्राएलियों के बाकी सैनिक अपने डेरे में लौट गए। इस्राएल के अग्रजों (प्रमुखों) ने पूछा, "यहोवा ने पलिश्तियों को हमें क्यों पराजित करने दिया? हम लोग शीलो से वाचा के सन्दूक को ले आयें। इस प्रकार, परमेश्वर हम लोगों के साथ युद्ध में जायेगा। वह हमें हमारे शत्रुओं से बचा देगा। "

[4]इसलिये लोगों ने व्यक्तियों को शीलो में भेजा। वे लोग सर्वशक्तिमान यहोवा के वाचा के सन्दूक को ले आए। सन्दूक के ऊपर करूब (स्वर्गदूत) हैं और वे उस आसन की तरह है जिस पर यहोवा बैठता है। एली के दोनों पुत्र, होप्नी और पीनहास सन्दूक के साथ आए।

[5]जब यहोवा के वाचा का सन्दूक डेरे के भीतर आया, तो इस्राएलियों ने प्रचण्ड उद्घोष किया। उस उद्घोष से धरती काँप उठी। [6]पलिश्तियों ने इस्राएलियों के उद्घोष को सुना। उन्होंने पूछा, "हिब्रू लोगों के डेरे में ऐसा उद्घोष क्यों हैं?"

तब पलिश्तियों को ज्ञात हुआ कि इस्राएल के डेरे में वाचा का सन्दूक आया है। [7]पलिश्ती डर गए। पलिश्तियों ने कहा, "परमेश्वर उनके डेरे में आ गया है! हम लोग मुसीबत में हैं। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। [8]हमें चिन्ता है! इन शक्तिशाली परमेश्वर से हमें कौन बचा सकता है? ये वही परमेश्वर है जिसने मिस्रियों को वे बीमारियाँ और महामारियाँ दी थी। [9]पलिश्तियों साहस करो! वीर पुरुषों की तरह लड़ो! बीते समय में हिब्रू लोग हमारे दास थे। इसलिए वीरों की तरह लड़ो नहीं तो तुम उनके दास हो जाओगे।"

[10]पलिश्ती वीरता से लड़े और उन्होंने इस्राएलियों को हरा दिया। हर एक इस्राएली योद्धा अपने डेरे में भाग गया। इस्राएल के लिये यह भयानक पराजय थी। तीस हजार इस्राएली सैनिक मारे गए। [11]पलिश्तियों ने उनसे परमेश्वर का पवित्र सन्दूक छीन लिया और उन्होंने एली के दोनों पुत्रों, होप्नी और पीनहास को मार डाला।

[12]उस दिन बिन्यामीन परिवार का एक व्यक्ति युद्ध से भागा। उसने अपने शोक को प्रकट करने के लिये अपने वस्त्रों को फाड़ डाला और अपने सिर पर धूलि डाल ली। [13]जब यह व्यक्ति शीलो पहुँचा तो एली अपनी कुर्सी पर नगर द्वार के पास बैठा था। उसे परमेश्वर के पवित्र सन्दूक के लिये चिंता थी, इसीलिए वह प्रतीक्षा में बैठा हुआ था। तभी बिन्यामीन परिवार समूह का वह व्यक्ति शीलो में आया और उसने दुःखभरी सूचना दी। नगर के सभी लोग जोर से रो पड़े। [14-15]एली अट्ठानवे वर्ष का बूढ़ा और अन्धा था, एली ने रोने की आवाज सुनी तो एली ने पूछा, "यह जोर का शोर क्या है?"

वह बिन्यामीन व्यक्ति एली के पास दौड़ कर गया और जो कुछ हुआ था उसे बताया। [16]बिन्यामीनी व्यक्ति ने कहा कि "मैं आज युद्ध से भाग आया हूँ!" एली ने पूछा, "पुत्र, क्या हुआ?"

[17]बिन्यामीनी व्यक्ति ने उत्तर दिया, "इस्राएली पलिश्तियों के मुकाबले भाग खड़े हुए हैं। इस्राएली सेना ने अनेक योद्धाओं को खो दिया है। तुम्हारे दोनों पुत्र मारे गए हैं और पलिश्ती परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को छीन ले गये हैं।"

[18]जब बिन्यामीनी व्यक्ति ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक की बात कही, तो एली द्वार के निकट अपनी कुर्सी से पीछे गिर पड़ा और उसकी गर्दन टूट गई। एली बूढ़ा और मोटा था, इसलिये वह वहीं मर गया। एली बीस वर्ष* तक इस्राएल का अगुवा रहा।

गौरव समाप्त हो गया

[19]एली की पुत्रवधू, पीनहास की पत्नी, उन दिनों गर्भवती थी। यह लगभग उसके बच्चे के उत्पन्न होने का समय था। उसने यह समाचार सुना कि परमेश्वर का पवित्र सन्दूक छीन लिया गया है। उसने यह भी सुना कि उसके

बीस वर्ष यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद और जोसेफस से है। मानक हिब्रू पाठ में चालीस वर्ष है।

ससुर एली की मृत्यु हो गई है और उसका पति पीनहास मारा गया है। ज्यों ही उसने यह समाचार सुना, उसको प्रसव–पीड़ा आरम्भ हो गई और उसने अपने बच्चे को जन्म देना आरम्भ किया। [20]उसके मरने से पहले जो स्त्रियाँ उसकी सहायता कर रही थीं उन्होंने कहा, "दु:खी मत हो! तुम्हें एक पुत्र उत्पन्न हुआ है।"

किन्तु एली की पुत्रवधू ने न तो उत्तर ही दिया, न ही उस पर ध्यान दिया। [21]एली की पुत्रवधू ने कहा, "इस्राएल का गौरव अस्त हो गया!"* इसलिये उसने बच्चे का नाम ईकाबोद* रखा और बस वह तभी मर गई। उसने अपने बच्चे का नाम ईकाबोद रखा क्योंकि परमेश्वर का पवित्र सन्दूक चला गया था और उसके ससुर एवं पति मर गए थे। [22]उसने कहा, "इस्राएल का गौरव अस्त हुआ।" उसने यह कहा, क्योंकि पलिश्ती परमेश्वर का सन्दूक ले गये।

पवित्र सन्दूक पलिश्तियों को परेशान करता है

5 पलिश्तियों ने परमेश्वर का पवित्र सन्दूक एबनेज़ेर से उसे अशदोद ले गए। [2]पलिश्ती परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को दागोन* के मन्दिर में ले गए। उन्होंने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को दागोन की मूर्ति के बगल में रखा। [3]अशदोदी के लोग अगली सुबह उठे। उन्होंने देखा कि दागोन मुँह के बल पड़ा है। दागोन यहोवा की सन्दूक के सामने गिरा पड़ा था। अशदोद के लोगों ने दागोन की मूर्ति को उसके पूर्व–स्थान पर रखा। [4]किन्तु अगली सुबह जब अशदोद के लोग उठे तो उन्होंने दागोन को फिर जमीन पर पाया। दागोन फिर यहोवा के पवित्र सन्दूक के सामने गिरा पड़ा था। दागोन के हाथ और पैर टूट गए थे और डेवढ़ी पर पड़े थे। केवल दागोन का शरीर एक खण्ड के रूप में था। [5]यही कारण है, कि आज भी दागोन के याजक या अशदोद में दागोन के मन्दिर में घुसने वाले अन्य व्यक्ति डेवढ़ी पर चलने से इन्कार करते हैं।

[6]यहोवा ने अशदोद के लोगों तथा उनके पड़ोसियों के जीवन को कष्टपूर्ण कर दिया। यहोवा ने उनको कठिनाईयों में डाला। उसने उनमें फोड़े उठाए। यहोवा ने उनके पास चूहे भेजे। चूहे उनके सभी जहाजों और भूमि पर दौड़ते थे। नगर में सभी लोग बहुत डर गए थे। [7]अशदोद के लोगों ने देखा कि क्या हो रहा है। उन्होंने कहा, "इस्राएल के परमेश्वर का सन्दूक यहाँ नहीं रह सकता! परमेश्वर हमें और हमारे देवता, दागोन को भी दण्ड दे रहा है।"

[8]अशदोद के लोगों ने पाँच पलिश्ती शासकों को एक साथ बुलाया। अशदोद के लोगों ने शासकों से पूछा, "हम लोग इस्राएल के परमेश्वर के पवित्र सन्दूक का क्या करें?"

शासकों ने उत्तर दिया, "इस्राएल के परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को गत नगर ले जाओ।" अत: पलिश्तियों ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को हटा दिया।

[9]किन्तु जब पलिश्तियों ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को गत को भेज दिया था, तब यहोवा ने उस नगर को दण्ड दिया। लोग बहुत भयभीत हो गए। परमेश्वर ने सभी बच्चों व बूढ़ों के लिये अनेक कष्ट उत्पन्न किये। परमेश्वर ने गत के लोगों के शरीर में फोड़े उत्पन्न किये। [10]इसलिए पलिश्तियों ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को एक्रोन भेज दिया। किन्तु जब परमेश्वर का पवित्र सन्दूक एक्रोन आया, एक्रोन के लोगों ने शिकायत की। उन्होंने कहा, "तुम लोग इस्राएल के परमेश्वर का सन्दूक हमारे नगर एक्रोन में क्यों ला रहे हो? क्या तुम लोग हमें और हमारे लोगों को मारना चाहते हो?" [11]एक्रोन के लोगों ने सभी पलिश्ती सेनापतियों को एक साथ बुलाया। एक्रोन के लोगों ने सेनापतियों से कहा, "इस्राएल के परमेश्वर के सन्दूक को, उसके पहले कि वह हमें और हमारे लोगों को मार डाले। इसके पहले के स्थान पर भेज दो!" एक्रोन के लोग बहुत भयभीत थे। परमेश्वर ने उस स्थान पर उनके जीवन को बहुत कष्टमय बना दिया। [12]बहुत से लोग मर गए और जो लोग नहीं मरे उनको फोड़े निकले। एक्रोन के लोगों ने जोर से रोकर स्वर्ग को पुकारा।

परमेश्वर का पवित्र सन्दूक अपने घर लौटाया गया

6 पलिश्तियों ने पवित्र सन्दूक को अपने देश में सात महीने रखा। [2]पलिश्तियों ने अपने याजक और जादूगरों को बुलाया। पलिश्तियों ने कहा, "हम यहोवा के सन्दूक का क्या करें? बताओ कि हम कैसे सन्दूक को वापस इसके घर भेजें?"

एली ... गया यह वाक्य प्राचीन ग्रीक अनुवाद में नहीं है।
ईकाबोद इस नाम का अर्थ "गौरवहीन" है।
दागोन कनानी लोग इस असत्य देवता की आराधना इस आशा से करते थे कि यह अच्छी फसल देगा। संभवत: यह पलिश्ती लोगों के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता था।

[3]याजकों और जादूगरों ने उत्तर दिया, "यदि तुम इस्राएल के परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को भेजते हो तो, इसे बिना किसी भेंट के न भेजो। तुम्हें इस्राएल के परमेश्वर को भेटें चढ़ानी चाहिये। जिससे इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पापों को दूर करेगा। तब तुम स्वस्थ हो जाओगे। तुम पवित्र हो जाओगे। तुम्हें यह इसलिये करना चाहिए जिससे कि परमेश्वर तुम लोगों को दण्ड देना बन्द करे।"*

[4]पलिश्तियों ने पूछा, "हम लोगों को कौन सी भेंट, अपने को क्षमा कराने के लिये इस्राएल के परमेश्वर को भेजनी चाहिये?"

याजकों और जादूगरों ने कहा, "यहाँ पाँच पलिश्ती प्रमुख हैं। हर एक नगर के लिये एक प्रमुख है। तुम सभी लोगों और तुम्हारे प्रमुखों की एक ही समस्या है। इसलिए तुम्हे पाँच सोने के ऐसे नमूने जो पाँच फोड़ों के रूप में दिखने वाले बनाने चाहिये और पाँच नमूने पाँच चूहों के रूप में दिखने वाले बनाने चाहिए। [5]इस प्रकार फोड़ों के नमूने बनाओ और चूहों के नमूने बनाओ जो देश को बरबाद कर रहे हैं। इस्राएल के परमेश्वर को इन सोने के नमूनों को भुगतान के रूप में दो। तब यह संभव है कि इस्राएल के परमेश्वर तुमको, तुम्हारे देवताओं को, और तुम्हारे देश को दण्ड देना रोक दे। [6]फ़िरौन और मिस्रियों की तरह हठी न बनो। परमेश्वर ने मिस्रियों को दण्ड दिया। यही कारण था कि मिस्रियों ने इस्राएलियों को मिस्र छोड़ने दिया।

[7]"तुम्हें एक नई बन्द गाड़ी बनानी चाहिए और दो गायें जिन्होंने अभी बछड़े दिये हो लानी चाहिए। ये गायें ऐसी होनी चाहियें जिन्होंने खेतों में काम न किया हो। गायों को बन्द गाड़ी में जोड़ो और बछड़ों को घर लौटा ले जाओ। बछड़ों को गौशाला में रखो। उन्हें अपनी माताओं के पीछे न जाने दो।* [8]यहोवा के पवित्र सन्दूक को बन्द गाड़ी में रखो। तुम्हें सोने के नमूनों को थैले में सन्दूक के बगल में रखना चाहिये। तुम्हारे पापों को क्षमा करने के लिये सोने के नमूने परमेश्वर के लिये तुम्हारी भेंट हैं। बन्द गाड़ी को सीधे इसके रास्ते पर भेजो। [9]बन्द गाड़ी को देखते रहो। यदि बन्द गाड़ी बेतशेमेश की ओर इस्राएल की भूमि में जाती है, तो यह संकेत है कि यहोवा ने हमें यह बड़ा रोग दिया है। किन्तु यदि गायें बेतशेमेश को नहीं जातीं, तो हम समझेंगे कि इस्राएल के परमेश्वर ने हमें दण्ड नहीं दिया है। हम समझ जायेंगे कि हमारी बीमारी स्वत: ही हो गई।"

[10]पलिश्तियों ने वही किया जो याजकों और जादूगरों ने कहा। पलिश्तियों ने वैसी दो गायें लीं जिन्होंने शीघ्र ही बछड़े दिये थे। पलिश्तियों ने गायों को बन्द गाड़ी से जोड़ दिया। पलिश्तियों ने बछड़ों को घर पर गौशाला में रखा [11]तब पलिश्तियों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को बन्द गाड़ी में रखा। [12]गायें सीधे बेतशेमेश को गईं। गायें लगातार रंभाती हुई सड़क पर टिकीं रहीं। गायें दायें या बायें नहीं मुड़ीं। पलिश्ती शासक गायों के पीछे बेतशेमेश की नगर सीमा तक गए।

[13]बेतशेमेश के लोग घाटी में अपनी गेहूँ की फसल काट रहे थे। उन्होंने निगाह उठाई और पवित्र सन्दूक को देखा। वे सन्दूक को फिर देखकर बहुत प्रसन्न हुए। वे उसे लेने के लिये दौड़े। [14-15] बन्द गाड़ी उस खेत में आई जो बेतशेमेश के यहोशू का था। इस खेत में बन्द गाड़ी एक विशाल चट्टान के सामने रूकी। बेतशेमेश के लोगों ने बन्द गाड़ी को काट दिया। तब उन्होंने गायों को मार डाला। उन्होंने गायों की बलि यहोवा को दी। लेवीवंशियों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को उतारा। उन्होंने उस थैले को भी उतारा जिसमें सोने के नमूने रखे थे। लेवीवंशियों ने यहोवा के सन्दूक और थैले को विशाल चट्टान पर रखा। उस दिन बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा को होमबलि चढ़ाई।

[16]पाँचों पलिश्ती शासकों ने बेतशेमेश के लोगों को यह सब करते देखा। तब वे पाँचों पलिश्ती शासक उसी दिन एक्रोन लौट गए।

[17]इस प्रकार, पलिश्तियों ने यहोवा को अपने पापों के लिये, अपने फोड़ों के सोने के नमूने भेंट के रूप में भेजे। उन्होंने हर एक पलिश्ती नगर के लिये फोड़े का एक सोने का नमूना भेजा। ये पलिश्ती नगर अशदोद , अज्जा, अश्कलोन, गत और एक्रोन थे। [18]पलिश्तियों ने चूहों

तुम्हें यह ... बन्द करें यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद से और कुमरान के दण्ड में लिपटे हिब्रू पत्रकों में से एक में है। "मानक हिब्रू में तब तुम समझोगे कि परमेश्वर ने तुम्हें दण्ड देना बन्द क्यों नहीं किया।"

उन्हें ... जाने दो पलिश्तियों ने सोचा कि यदि गायों ने अपने बछड़ों को खोजने की कोशिश नहीं की और बेतशेमेश को सीधे चली गई तो यह सिद्ध हो जायेगा कि परमेश्वर उन्हें ले जा रहा है। यह प्रकट करेगा कि परमेश्वर ने भेंट स्वीकार कर ली।

के सोने के नमूने भी भेजे। सोने के चूहे की संख्या उतनी ही थी जितनी संख्या पाँचों पलिश्ती शासकों के नगरों की थी। इन नगरों के चारों ओर चहारदीवारी थी और हर नगर के चारों ओर गाँव थे।

बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को एक चट्टान पर रखा। वह चट्टान अब भी बेतशेमेश के यहोशू के खेत में है। [19]किन्तु जिस समय बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को देखा उस समय वहाँ कोई याजक न था। इसलिये परमेश्वर ने बेतशेमेश के सत्तर व्यक्तियों को मार डाला। बेतशेमेश के लोग विलाप करने लगे क्योंकि यहोवा ने उन्हें इतना कठोर दण्ड दिया। [20]इसलिये बेतशेमेश के लोगों ने कहा, "याजक कहाँ है जो इस पवित्र सन्दूक की देखभाल कर सके? यहाँ से सन्दूक कहाँ जाएगा?"

[21]किर्यत्यारीम में एक याजक था। बेतशेमेश के लोगों ने किर्यत्यारीम के लोगों के पास दूत भेजे। दूतों ने कहा, "पलिश्तियों ने यहोवा का पवित्र सन्दूक लौटा दिया है। आओ और इसे अपने नगर में ले जाओ।"

7 किर्यत्यारीम के लोग आए और यहोवा के पवित्र सन्दूक को ले गए। वे यहोवा के सन्दूक को पहाड़ी पर अबीनादाब के घर ले गए। उन्होंने अबीनादाब के पुत्र एलीआज़ार को यहोवा के सन्दूक की रक्षा करने के लिये तैयार करने हेतु एक विशेष उपासना की। [2]सन्दूक किर्यत्यारीम में बुहत समय तक रखा रहा। यह वहाँ बीस वर्ष तक रहा।

यहोवा इस्राएलियों की रक्षा करता है:

इस्राएल के लोग फिर यहोवा का अनुसरण करने लगे। [3]शमूएल ने इस्राएल के लोगों से कहा, "यदि तुम सचमुच यहोवा के पास सच्चे हृदय से लौट रहे हो तो तुम्हें विदेशी देवताओं को फेंक देना चाहिये। तुम्हें अश्तोरेत* की मूर्तियों को फेंक देना चाहिए और तुम्हें पूरी तरह यहोवा को अपना समर्पण करना चाहिये! तुम्हें केवल यहोवा की ही सेवा करनी चाहिये। तब यहोवा तुम्हें पलिश्तियों से बचायेगा।"

[4]इसलिये इस्राएलियों ने अपने बाल* और अश्तोरेत की मूर्तियों को फेंक दिया। इस्राएली केवल यहोवा की सेवा करने लगे।

[5]शमूएल ने कहा, "सभी इस्राएली मिस्पा में इकट्ठे हों। मैं तुम्हारे लिये यहोवा से प्रार्थना करूँगा।"

[6]इस्राएली मिस्पा में एक साथ इकट्ठे हुए। वे जल लाये और यहोवा के सामने वह जल चढ़ाया। इस प्रकार उन्होंने उपवास का समय आरम्भ किया। उन्होंने उस दिन भोजन नहीं किया और उन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया। उन्होंने कहा, "हम लोगों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।" इस प्रकार शमूएल ने मिस्पा में इस्राएल के न्यायाधीश के रूप में काम किया।

[7] पलिश्तियों ने यह सुना कि इस्राएली मिस्पा में इकट्ठा हो रहे हैं। पलिश्ती शासक इस्राएलियों के विरुद्ध आक्रमण करने गये। इस्राएलियों ने सुना कि पलिश्ती आ रहे हैं, और वे डर गए। [8]इस्राएलियों ने शमूएल से कहा, "हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना हमारे लिये करना बन्द मत करो। यहोवा से माँगों कि वह पलिश्तियों से हमारी रक्षा करे!"

[9]शमूएल ने एक मेमना लिया। उसने यहोवा की होमबलि के रूप में मेमने को जलाया। शमूएल ने यहोवा से इस्राएल के लिये प्रार्थना की। यहोवा ने शमूएल की प्रार्थना का उत्तर दिया। [10]जिस समय शमूएल बलि जला रहा था, पलिश्ती इस्राएल से लड़ने आये। किन्तु यहोवा ने पलिश्तियों के समीप प्रचण्ड गर्जना उत्पन्न की। इसने पलिश्तियों को अस्त-व्यस्त कर दिया। गर्जना ने पलिश्तियों को भयभीत कर दिया और वे अस्त-व्यस्त हो गये। उनके प्रमुख उन पर नियन्त्रण न रख सके। इस प्रकार पलिश्तियों को इस्राएलियों ने युद्ध में पराजित कर दिया। [11]इस्राएल के लोग मिस्पा से बाहर दौड़े और पलिश्तियों का पीछा किया। उन्होंने लगातार बेत कर तक उनका पीछा किया। उन्होंने पूरे रास्ते पलिश्ती सैनिकों को मारा।

इस्राएल में शान्ति स्थापित हुई

[12]इसके बाद, शमूएल ने एक विशेष पत्थर स्थापित किया। उसने यह इसलिये किया कि लोग याद रखें कि

अश्तोरेत कनानी लोग विश्वास करते थे कि यह असत्य देवी लोगों को सन्तान देने योग्य बनायेगी। वह उनकी प्रेम-देवी थी।

बाल कनानी लोग विश्वास करते थे कि यह असत्य देवता आंधी-वर्षा लाता है। वे यह भी समझते थे कि यह भूमि को अच्छी फसल देने वाली बनाता है।

परमेश्वर ने क्या किया। शमूएल ने पत्थर को मिस्पा और शेन के बीच रखा। शमूएल ने पत्थर का नाम "सहायता का पत्थर"* रखा। शमूएल ने कहा, "यहोवा ने लगातार पूरे रास्ते इस स्थान तक हमारी सहायता की।"

[13]पलिश्ती पराजित हुए। वे इस्राएल देश में फिर नहीं घुसे। शमूएल के शेष जीवन में, यहोवा पलिश्तियों के विरुद्ध रहा। [14]पलिश्तियों ने इस्राएल के नगर ले लिये थे। पलिश्तियों ने एक्रोन से गत तक के क्षेत्र के नगरों को ले लिया था। किन्तु इस्राएलियों ने इन्हें जीतकर वापस ले लिया और इस्राएल ने इन नगरों के चारों ओर की भूमि को भी वापस ले लिया।

[15]शमूएल ने अपने पूरे जीवन भर इस्राएल का मार्ग दर्शन किया।

[16]शमूएल एक स्थान से दूसरे स्थान तक इस्राएल के लोगों का न्याय करता हुआ गया। हर वर्ष उसने देश के चारों ओर यात्रा की। वह गिलगाल, बेतेल और मिस्पा को गया। अत: उसने इन सभी स्थानों पर इस्राएली लोगों का न्याय और उन पर शासन किया। [17]किन्तु शमूएल का घर रामा में था। इसलिए शमूएल सदा रामा को लौट जाता था। शमूएल ने उसी नगर से इस्राएल का न्याय और शासन किया और शमूएल ने रामा में यहोवा के लिये एक वेदी बनाई।

इस्राएल एक राजा की माँग करता है

8 जब शमूएल बूढ़ा हो गया तो उसने अपने पुत्रों को इस्राएल के न्यायाधीश बनाया। [2]शमूएल के प्रथम पुत्र का नाम योएल रखा गया। उसके दूसरे पुत्र का नाम अबिय्याह रखा गया था। योएल और अबिय्याह बेर्शेबा में न्यायाधीश थे। [3]किन्तु शमूएल के पुत्र वैसे नहीं रहते थे जैसे वह रहता था। योएल और अबिय्याह घूस लेते थे। वे गुप्त रूप से धन लेते थे और न्यायालय में अपना निर्णय बदल देते थे। वे न्यायालय में लोगों को ठगते थे। [4]इसलिये इस्राएल के सभी अग्रज (प्रमुख) एक साथ इकट्ठे हुए। वे शमूएल से मिलने रामा गये। [5]अग्रजों (प्रमुखों) ने शमूएल से कहा, "तुम बूढ़े हो गए और तुम्हारे पुत्र ठीक से नहीं रहते। वे तुम्हारी तरह नहीं हैं। अब, तुम अन्य राष्ट्रों की तरह हम पर शासन करने के लिये एक राजा दो।"

[6]इस प्रकार, अग्रजों (प्रमुखों) ने अपने मार्ग दर्शन के लिये एक राजा माँगा। शमूएल ने सोचा कि यह विचार बुरा है। इसलिए शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। [7]यहोवा ने शमूएल से कहा, "वही करो जो लोग तुमसे करने को कहते हैं। उन्होंने तुमको अस्वीकार नहीं किया है। उन्होंने मुझे अस्वीकार किया है! वे मुझको अपना राजा बनाना नहीं चाहते! [8]वे वही कर रहे हैं जो सदा करते रहे। मैंने उनको मिस्र से बाहर निकाला। किन्तु उन्होंने मुझको छोड़ा, तथा अन्य देवताओं की पूजा की। वे तुम्हारे साथ भी वैसा ही कर रहे हैं। [9]इसलिए लोगों की सुनों और जो वे कहें, करो। किन्तु उन्हें चेतावनी दो। उन्हें बता दो कि राजा उनके साथ क्या करेगा। उनको बता दो कि एक राजा लोगों पर कैसे शासन करता है।"

[10]उन लोगों ने एक राजा के लिये माँग की। इसलिये शमूएल ने लोगों से वे सारी बातें कहीं जो यहोवा ने कही थी। [11]शमूएल ने कहा, "यदि तुम अपने ऊपर शासन करने वाला राजा रखते हो तो वह यह करेगा: वह तुम्हारे पुत्रों को ले लेगा। वह तुम्हारे पुत्रों को अपनी सेवा के लिये विवश करेगा। वह उन्हें सैनिक बनने के लिये विवश करेगा, उन्हें उसके रथों पर से लड़ना पड़ेगा और वे उसकी सेना के घुड़सवार होंगें। तुम्हारे पुत्र राजा के रथ के आगे दौड़ने वाले रक्षक बनेंगे। [12]राजा तुम्हारे पुत्रों को सैनिक बनने के लिये विवश करेगा। उनमें से कुछ हजार व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी होंगे और अन्य पचास व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी होंगे। राजा तुम्हारे पुत्रों में से कुछ को अपने खेत को जोतने और फसल काटने को विवश करेगा। वह तुम्हारे पुत्रों में से कुछ को अस्त्र-शस्त्र बनाने को विवश करेगा। वह उन्हें अपने रथ के लिये चीजें बनाने के लिये विवश करेगा।

[13]"राजा तुम्हारी पुत्रियों को लेगा। वह तुम्हारी पुत्रियों में से कुछ को अपने लिये सुगन्धद्रव्य चीजें बनाने को विवश करेगा और वह तुम्हारी पुत्रियों में से कुछ को रसोई बनाने और रोटी पकाने को विवश करेगा।

[14]"राजा तुम्हारे सर्वोत्तम खेत, अगूंर के बाग और जैतून के बागों को ले लेगा। वह उन चीजों को तुमसे ले लेगा और अपने अधिकारियों को देगा। [15]वह तुम्हारे अन्न और अगूंर का दसवाँ भाग ले लेगा। वह इन चीज़ों को अपने सेवकों और अधिकारियों को देगा। [16]यह राजा तुम्हारे दास-दासियों को ले लेगा। वह तुम्हारे सर्वोत्तम

सहायता का पत्थर या "एबेनेजेर।"

पशु और गधों को लेगा। वह उनका उपयोग अपने कामों के लिये करेगा [17]और वह तुम्हारी रेवड़ों का दसवाँ भाग लेगा।

"और तुम स्वयं इस राजा के दास हो जाओगे। [18]जब वह समय आयेगा तब तुम राजा को चुनने के कारण रोओगे। किन्तु उस समय यहोवा तुमको उत्तर नहीं देगा।"

[19]किन्तु लोगों ने शमूएल की एक न सुनी। उन्होंने कहा, "नहीं! हम लोग अपने ऊपर शासन करने के लिये एक राजा चाहते हैं। [20]तब हम वैसे ही हो जायेंगे जैसे अन्य राष्ट्र। हमारा राजा हम लोगों का मार्ग दर्शन करेगा। वह हम लोगों के साथ जायेगा और हमारे युद्धों को लड़ेगा।"

[21]शमूएल ने जब लोगों का सारा कहा हुआ सुना तब उसने यहोवा के सामने उनके कथनों को दुहराया। [22]यहोवा ने उत्तर दिया, "उनकी बात सुनों! उनको एक राजा दो।" तब शमूएल ने इस्राएल के लोगों से कहा, "ठीक है! तुम्हारा एक नया राजा होगा। अब, आप सभी लोग घर को जायें।"

शाऊल अपने पिता के गधों की तलाश करता है

9 कीश बिन्यामीन परिवार समूह का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था। कीश अबीएल का पुत्र था। अबीएल सरोर का पुत्र था। सरोर बकोरत का पुत्र था। बकोरत बिन्यामीन के एक व्यक्ति अपीह का पुत्र था। [2]कीश का एक पुत्र शाऊल नाम का था। शाऊल एक सुन्दर युवक था। वहाँ शाऊल से अधिक सुन्दर कोई न था। खड़ा होने पर शाऊल का सिर इस्राएल के किसी भी व्यक्ति से ऊँचा रहता था।

[3]एक दिन, कीश के गधे खो गए। इसलिए कीश ने अपने पुत्र शाऊल से कहा, "सेवकों में से एक को साथ लो और गधों की खोज में जाओ।" [4]शाऊल ने गधों की खोज आरम्भ की। शाऊल एप्रैम की पहाड़ियों में होकर घूमा। तब शाऊल शलीशा के चारों ओर के क्षेत्र में घूमा। किन्तु शाऊल और उसका सेवक, कीश के गधों को नहीं पा सके। इसलिए शाऊल और सेवक शालीम के चारों ओर के क्षेत्र में गये। किन्तु गधे वहाँ नहीं मिले। इसलिये शाऊल ने बिन्यामीन के प्रदेश में होकर यात्रा की। किन्तु वह और उसका सेवक गधों को तब भी न पा सके।

[5]अन्त में, शाऊल और उसका सेवक सूफ नामक नगर में आए। शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "चलो, हम लौटें। मेरे पिता गधों के बारे में सोचना बन्द कर देंगे और हम लोगों के बारे में चिन्तित होने लगेंगे।"

[6]किन्तु सेवक ने उत्तर दिया, "इस नगर में परमेश्वर का एक व्यक्ति है। लोग उसका सम्मान करते हैं। वह जो कहता है सत्य होता है। इसलिये हम इस नगर में चले। संभव है कि परमेश्वर का यह व्यक्ति हमें बताये कि इसके बाद हम लोग कहाँ जायें।"

[7]शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "हम नगर में चल सकते हैं। किन्तु हम लोग उस व्यक्ति को क्या दे सकते हैं? हम लोगों के थैले का भोजन समाप्त हो चुका है। हम लोगों के पास कोई भी भेंट परमेश्वर के व्यक्ति को देने के लिये नहीं है। हमारे पास उसे देने को क्या है?"

[8]सेवक ने शाऊल को फिर उत्तर दिया, "देखों, मेरे पास थोड़ा सा धन* है। हम परमेश्वर के व्यक्ति को यही दें। तब वह बतायेगा कि हम लोग कहाँ जायें।"

[9-11]शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "अच्छा सुझाव है! हम चलें!" वे नगर में वहाँ गए जहाँ परमेश्वर का व्यक्ति था।

शाऊल और उसका सेवक पहाड़ी पर चढ़ते हुए नगर को जा रहे थे। रास्ते में वे कुछ युवतियों से मिले। युवतियाँ बाहर से पानी लेने जा रही थी। शाऊल और उसके सेवक ने युवतियों से पूछा, "क्या भविष्यवक्ता यहाँ है?" (प्राचीन काल में इस्राएल के निवासी नबियों को "भविष्यवक्ता" कहते थे। इसलिये यदि वे परमेश्वर से कुछ माँगना चाहते थे तो वे कहते थे, "हम लोग भविष्यवक्ता के पास चलें।")

[12]युवतियों ने उत्तर दिया, "हाँ, भविष्यवक्ता यहीं है। वह ठीक इसी सड़क पर आगे है। वह आज ही नगर में आया है। कुछ लोग वहाँ एक साथ इसलिये इकट्ठे हो रहे हैं कि आराधनालय पर मेलबलि में भाग ले सकें। [13]आप लोग नगर में जाएँ, और आप उनसे मिल लेंगे। यदि आप लोग शीघ्रता करेंगे तो आप उनसे आराधनालय पर भोजन के लिये जाने के पहले मिल लेंगे। भविष्यवक्ता बलि-भेंट को आशीर्वाद देते हैं। इसलिये लोग तब वे तक भोजन करना आरम्भ नहीं करेंगे जब तक वे वहाँ न पहुँचे। इसलिये यदि आप लोग शीघ्रता करें, तो आप भविष्यवक्ता को पा सकते हैं।"

थोड़ा सा धन शाब्दिक 1/4 शकेल चाँदी। यह लगभग 1/10 औंस चाँदी थी।

[14]शाऊल और सेवक ने ऊपर पहाड़ी पर नगर की ओर बढ़ना आरम्भ किया। जैसे ही वे नगर में घुसे उन्होंने शमूएल को अपनी ओर आते देखा। शमूएल नगर के बाहर उपासना के स्थान पर जाने के लिये अभी आ ही रहा था।

[15]एक दिन पहले यहोवा ने शमूएल से कहा था, [16]"कल मैं इसी समय तुम्हारे पास एक व्यक्ति को भेजूँगा। वह बिन्यामीन के परिवार समूह का होगा। तुम्हें उसका अभिषेक कर देना चाहिये। तब वह हमारे लोग इस्राएलियों का नया प्रमुख होगा। यह व्यक्ति हमारे लोगों को पलिश्तियों से बचाएगा। मैंने अपने लोगों के कष्टों को देखा है। मैंने अपने लोगों का रोना सुना है।"

[17]शमूएल ने शाऊल को देखा और यहोवा ने उससे कहा, "यही वह व्यक्ति है जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा था। यह मेरे लोगों पर शासन करेगा।"

[18]शाऊल द्वार के पास शमूएल के निकट आया। शाऊल ने शमूएल से पूछा, "कृपया बतायें भविष्यवक्ता का घर कहाँ है।"

[19]शमूएल ने उत्तर दिया, "मैं ही भविष्यवक्ता हूँ। मेरे आगे उपासना के स्थान पर पहुँचो। तुम और तुम्हारा सेवक आज हमारे साथ भोजन करोगे। मैं कल सवेरे तुम्हें घर जाने दूँगा मैं तुम्हारे सभी प्रश्नों का उत्तर दूँगा। [20]उन गधों की चिन्ता न करो जिन्हें तुमने तीन दिन पहले खो दिया। वे मिल गये हैं। अब, तुम्हें सारा इस्राएल चाहता है। वे तुम्हें और तुम्हारे पिता के परिवार के सभी लोगों को चाहते हैं।"

[21]शाऊल ने उत्तर दिया, "किन्तु मैं बिन्यामीन परिवार समूह का एक सदस्य हूँ। यह इस्राएल में सबसे छोटा परिवार समूह है और मेरा परिवार बिन्यामीन परिवार समूह में सबसे छोटा है। आप क्यों कहते हैं कि इस्राएल मुझको चाहता है?"

[22]तब शमूएल, शाऊल और उसके सेवक को भोजन के क्षेत्र में ले गया। लगभग तीस व्यक्ति एक साथ भोजन के लिये और बलि-भेंट में भाग लेने के लिये आमन्त्रित थे। शमूएल ने शाऊल और उसके सेवक को मेज पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया। [23]शमूएल ने रसोइये से कहा, "वह माँस लाओ जो मैंने तुम्हें दिया था। यह वह भाग है जिसे मैंने तुमसे सुरक्षित रखने के लिये कहा था।"

[24]रसोइये ने जांघ* ली और शाऊल के सामने मेज पर रखी। शमूएल ने कहा, "यही वह माँस है जिसे मैंने तुम्हारे लिये सुरक्षित रखा था। यह खाओ क्योंकि यह इस विशेष समय के लिये तुम्हारे लिये सुरक्षित था।" इस प्रकार उस दिन शाऊल ने शमूएल के साथ भोजन किया।

[25]जब उन्होंने भोजन समाप्त कर लिया, वे आराधनालय से उतरे और नगर को लौटे। शमूएल ने छत पर शाऊल के लिये बिस्तर लगाया और शाऊल सो गया।

[26]अगली सुबह सवेरे, शमूएल ने शाऊल को छत पर जोर से पुकारा। शमूएल ने कहा, "उठो। मैं तुम्हें तुम्हारे रास्ते पर भेजूँगा।" शाऊल उठा, और शमूएल के साथ घर से बाहर चल पड़ा।

[27]शाऊल, उसका सेवक और शमूएल एक साथ नगर के सिरे पर चल रहे थे। शमूएल ने शाऊल से कहा, "अपने सेवक से हम लोगों से कुछ आगे चलने को कहो। मेरे पास तुम्हारे लिये परमेश्वर का एक सन्देश है।" इसलिये दास उनसे कुछ आगे चलने लगा।

शमूएल शाऊल का अभिषेक करता है

10 शमूएल ने विशेष तेल की एक कुप्पी ली। शमूएल ने तेल को शाऊल के सिर पर डाला। शमूएल ने शाऊल को चुम्बन किया और कहा, "यहोवा ने तुम्हारा अभिषेक अपने लोगों का प्रमुख बनाने के लिये किया है। तुम यहोवा के लोगों पर नियन्त्रण करोगे। तुम उन्हें उन शत्रुओं से बचाओगे जो उनको चारों ओर से घेरे हैं। यहोवा ने तुम्हारा अभिषेक (चुनाव) अपने लोगों का शासक होने के लिये किया है। एक चिन्ह प्रकट होगा जो प्रमाणित करेगा कि यह सत्य है।* [2]जब तुम मुझसे अलग होगे, तो तुम राहेल के कब्र के पास दो व्यक्तियों से, बिन्यामीन की धरती के सिवाने पर, सेलसह में मिलोगे। वे दोनों व्यक्ति तुमसे कहेंगे, 'जिन गधों की खोज तुम कर रहे थे उन्हें किसी व्यक्ति ने प्राप्त कर लिया है। तुम्हारे

जांघ कदाचित् यह बांयी जांघ थी जो महत्वपूर्ण अतिथियों के लिये सुरक्षित रखी जाती थी। दायीं जांघ उस याजक के लिये सुरक्षित थी जो जानवर की बलि भेंट करता था। याजक जानवर को मारने में और जानवर की चर्बी को वेदी पर परमेश्वर की भेंट के रूप में चढ़ाने में सहायता करता था।

तुम यहोवा ... सत्य है ये पक्तियाँ प्राचीन ग्रीक अनुवाद में हैं। वे हिब्रू पाठ में नहीं है।

पिता ने गधों के सम्बन्ध में चिन्ता करना छोड़ दिया है। अब उसे तुम्हारी चिन्ता है। वह कह रहा है: मैं अपने पुत्र के विषय में क्या करूँ?'"

[3]शमूएल ने कहा, "अब तुम तब तक चलते रहोगे जब तक तुम ताबोर में बांज के विशाल पेड़ तक पहुँच नहीं जाते। वहाँ तुमसे तीन व्यक्ति मिलेंगे। वे तीनों व्यक्ति बेतेल में परमेश्वर की उपासना के लिये यात्रा पर होंगे। एक व्यक्ति बकरियों के तीन बच्चों को लिये होगा। दूसरा व्यक्ति तीन रोटियाँ लिये हुए होगा और तीसरा व्यक्ति एक मशक दाखमधु लिये हुए होगा। [4]ये तीनों व्यक्ति कहेंगे, 'आपका स्वागत है।' वे तुम्हें दो रोटियाँ देंगे। तुम उनसे उन दो रोटियों को स्वीकार करोगे। [5]तब तुम गिबियथ-एलोहिम जाओगे। उस स्थान पर पलिश्तियों का एक किला है। जब तुम उस नगर में पहुँचोगे तो कई नबी निकल आयेंगे। ये नबी आराधनास्थल से नीचे उपासना के लिये आयेंगे। वे भविष्यवाणी* करेंगे। वे वीणा, खंजड़ी, और तम्बूरा बजा रहे होंगे। [6]तब तत्काल तुम पर यहोवा की आत्मा उतरेगी। तुम बदल जाओगे। तुम एक भिन्न ही पुरुष हो जाओगे। तुम इन भविष्यवक्ताओं के साथ भविष्यवाणी करने लगोगे। [7]इन बातों के घटित होने के बाद, तुम जो चाहोगे, करोगे। परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा।

[8]"मुझसे पहले गिलगाल जाओ। मैं तुम्हारे पास उस स्थान पर आऊँगा। तब मैं होमबलि और मेलबलि चढ़ाऊँगा। किन्तु तुम्हें सात दिन प्रतीक्षा करनी होगी। तब मैं आऊँगा और बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना है।"

शाऊल का नबी जैसा होना

[9]जैसे ही शाऊल शमूएल को छोड़ने के लिये मुड़ा, परमेश्वर ने शाऊल का जीवन बदल दिया। ये सभी घटनायें उस दिन घटीं। [10]शाऊल और उसका सेवक गिबियथ-एलोहिम गए। उस स्थान पर शाऊल नबियों के एक समूह से मिला। परमेश्वर की आत्मा शाऊल पर तीव्रता से उतरी और शाऊल ने नबियों के साथ भविष्यवाणी की। [11]जो लोग शाऊल को पहले से जानते थे उन्होंने नबियों के साथ उसे भविष्यवाणी करते देखा। वे लोग आपस में पूछ-ताछ करने लगे, "कीश के पुत्र को क्या हो गया है? क्या शाऊल नबियों में से एक है?"

[12]एक व्यक्ति ने जो गिबियथ-एलोहिम में रहता था, कहा, "हाँ! और ऐसा लगता है कि यह उनका मुखिया है।"* यही कारण है कि यह प्रसिद्ध कहावत बनी: "क्या शाऊल नबियों में से कोई एक है?"

शाऊल घर पहुँचता है

[13]अन्तत: उसने नबियों की तरह बोलना बन्द किया और एक उच्च स्थान पर चला गया।

[14]बाद में शाऊल के चाचा ने उससे और उसके सेवक से कहा, "तुम कहाँ गए थे?" उसने उत्तर दिया, "हम गधों को देखने गए थे और उनकी खोज में चले ही जा रहे थे, किन्तु वे कहीं नहीं मिले। इसलिए हम लोग शमूएल के पास गए।"

[15]यह सुनकर शाऊल के चाचा ने कहा, "कृपया तुम लोग मुझे बताओ कि शमूएल ने तुम दोनों से क्या कहा?"

[16]शाऊल ने अपने चाचा को उत्तर दिया, "उसने पूरी सच्चाई से बताया कि गधे मिल गये हैं।" और उसने राज्य के बारे में जो शमूएल से सुना था उसे नहीं बताया।

शमूएल, शाऊल को राजा घोषित करता है

[17]शमूएल ने इस्राएल के सभी लोगों से मिस्पा में यहोवा से मिलने के लिये एक साथ इकट्ठा होने को कहा। [18]शमूएल ने कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मैंने इस्राएल को मिस्र से बाहर निकाला। मैंने तुम्हें मिस्र की अधीनता से और उन अन्य राष्ट्रों से भी बचाया जो तुम्हें चोट पहुँचाना चाहते थे।' [19]किन्तु आज तुमने अपने परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया है। तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें तुम्हारे सभी कष्टों और समस्याओं से बचाता है। किन्तु तुमने कहा, 'नहीं हम अपने ऊपर शासन करने के लिये एक राजा चाहते हैं।' अब आओ और यहोवा के सामने अपने परिवारों और अपने परिवार समूहों में खड़े हो जाओ।"

भविष्यवाणी इसका अर्थ प्राय: "परमेश्वर के ओर से कहना है।" किन्तु यहाँ इसका अर्थ यह भी है कि परमेश्वर की आत्मा ने उस व्यक्ति पर नियन्त्रण किया और उसे गाने व नाचने का कारण बताया।

हाँ ... मुखिया है "और जो उनका पिता है" प्राय: वह व्यक्ति जो अन्य नबियों को शिक्षा देता और मार्गदर्शन करता था "पिता" कहा जाता था।

[20]शमूएल इस्राएल के सभी परिवार समूहों को निकट लाया। तब शमूएल ने नया राजा चुनना आरम्भ किया। प्रथम बिन्यामीन का परिवार समूह चुना गया। [21]शमूएल ने बिन्यामीन के परिवार समूह के हर एक परिवार को एक-एक करके आगे से निकलने को कहा। मत्री का परिवार चुना गया। तब शमूएल ने मत्री के परिवार के हर एक व्यक्ति को एक-एक करके उसके आगे से निकलने को कहा। इस प्रकार कीश का पुत्र शाऊल चुना गया। किन्तु जब लोगों ने शाऊल की खोज की, तो वे उसे पा नहीं सके। [22]तब उन्होंने यहोवा से पूछा, "क्या शाऊल अभी तक यहाँ नहीं आया है?"

यहोवा ने कहा, "शाऊल भेंट सामग्री के पीछे छिपा है।"

[23]लोग दौड़ पड़े और शाऊल को भेंट सामग्री के पीछे से ले आये। शाऊल लोगों के बीच खड़ा हुआ। शाऊल इतना लम्बा था कि सभी लोग बस उस के कंधे तक आ रहे थे।

[24]शमूएल ने सभी लोगों से कहा, "उस व्यक्ति को देखो जिसे यहोवा ने चुना है। लोगों में कोई व्यक्ति शाऊल के समान नहीं है।" तब लोगों ने नारा लगाया, "राजा दीर्घायु हो!"

[25]शमूएल ने राज्य के नियमों को लोगों को समझाया। उसने उन नियमों को एक पुस्तक में लिखा। उसने पुस्तक को यहोवा के सामने रखा। तब शमूएल ने लोगों को अपने-अपने घर जाने के लिये कहा।

[26]शाऊल भी गिबा में अपने घर चला गया। परमेश्वर ने वीर पुरुषों के हृदय का स्पर्श किया और ये वीर व्यक्ति शाऊल का अनुसरण करने लगे। [27] किन्तु कुछ उत्पातियों ने कहा, "यह व्यक्ति हम लोगों की रक्षा कैसे कर सकता है?" उन्होनें शाऊल की निन्दा की और उसे उपहार देने से इन्कार किया। किन्तु शाऊल ने कुछ नहीं कहा।

अम्मोनियों का राजा नाहाश

अम्मोनियों का राजा नाहाश गिलाद और याबेश के परिवार समूह को कष्ट दे रहा था। नाहाश ने उनके हर एक पुरुष की दायीं आँख निकलवा डाली थी। नाहाश किसी को उनकी सहायता नहीं करने देता था। अम्मोनियों के राजा नाहाश ने यरदन नदी के पूर्व रहने वाले हर एक इस्राएली पुरूष की दायीं आँख निकलवा ली थी। किन्तु सत्तर हजार इस्राएली पुरुष अम्मोनियों के यहाँ से भाग निकले और याबेश गिलाद में आ गये।*

11 लगभग एक महीने बाद अम्मोनी नाहाश और उसकी सेना ने याबेश गिलाद को घेर लिया। याबेश के सभी लोगों ने नाहाश से कहा, "यदि तुम हमारे साथ सन्धि करोगे तो हम तुम्हारी प्रजा बनेंगे।"

[2]किन्तु अम्मोनी नाहाश ने उत्तर दिया, "मैं तुम लोगों के साथ तब सन्धि करूँगा जब मैं हर एक व्यक्ति की दायीं आँख निकाल लूँगा। तब सारे इस्राएली लज्जित होंगे!"

[3]याबेश के प्रमुखों ने नाहाश से कहा, "हम लोग सात दिन का समय लेंगे। हम पूरे इस्राएल में दूत भेजेंगे। यदि कोई सहायता के लिये नहीं आएगा, तो हम लोग तुम्हारे पास आएंगे और अपने को समर्पित कर देंगे।"

शाऊल याबेश गिलाद की रक्षा करता है:

[4]सो वे दूत गिबा में आये जहाँ शाऊल रहता था। उन्होंने लोगों को समाचार दिया। लोग जोर से रो पड़े। [5]शाऊल अपनी बैलों के साथ खेतों में गया हुआ था। शाऊल खेत से लौटा और उसने लोगों का रोना सुना। शाऊल ने पूछा, "लोगों को क्या कष्ट है? वे रो क्यों रहे हैं?" तब लोगों ने याबेश के दूतों ने जो कहा था शाऊल को बताया। [6]शाऊल ने उनकी बातें सुनी। तब परमेश्वर का आत्मा शाऊल पर जल्दी से उतरा। शाऊल अत्यन्त क्रोधित हुआ। [7]शाऊल ने बैलों की जोड़ी ली और उसके टुकड़े कर डाले। तब उसने उन बैलों के टुकड़ों को उन दूतों को दिया। उसने दूतों को आदेश दिया कि वे इस्राएल के पूरे देश में उन टुकड़ों को ले जाये। उसने उनसे इस्राएल के लोगों को यह सन्देश देने को कहा, "आओ शाऊल और शमूएल का अनुसरण करो। यदि कोई व्यक्ति नहीं आता और उसकी सहायता नहीं करता तो उसके बैलों के साथ यही होगा।" यहोवा की ओर से लोगों में बड़ा भय छा गया। वे एक इकाई के रूप में एक साथ इकट्ठे हो गए। [8]शाऊल ने सभी पुरुषों को बेजेक में एक साथ इकट्ठा किया। वहाँ इस्राएल के तीन लाख पुरुष और यहूदा के तीस हजार पुरुष थे।

नाहाश ... गिलाद आ गए यह अंश मानक हिब्रू पाठ में नहीं है, किन्तु कुछ प्राचीन अनुवादों में है और कुमरान से प्राप्त दण्ड में लिपटे एक हिब्रू पत्रक में है।

[9]शाऊल और उसकी सेना ने याबेश के दूतों से कहा, "गिलाद में याबेश के लोगों से कहो कि कल दोपहर तक तुम लोगों की रक्षा हो जायेगी।" दूतों ने शाऊल का सन्देश याबेश के लोगों को दिया। याबेश के लोग बड़े प्रसन्न हुए। [10]तब याबेश के लोगों ने अम्मोनी नाहाश से कहा, "हम लोग कल तुम्हारे पास आएंगे। तब तुम हम लोगों के साथ जो चाहो कर सकते हो।"

[11]अगली सुबह शाऊल ने अपनी सेना को तीन टुकड़ियों में बाँटा। सूरज निकलते ही शाऊल और उसके सैनिक अम्मोनियों के डेरे में जा घुसे। जब वे उस सुबह रक्षकों को बदल रहे थे, शाऊल ने आक्रमण किया। शाऊल और उसके सैनिकों ने अम्मोनियों को दो पहर से पहले पराजित कर दिया। सभी अम्मोनी सैनिक विभिन्न दिशाओं में भागे –दो सैनिक भी एक साथ नहीं रहें। [12]तब लोगों ने शमूएल से कहा, "वे लोग कहाँ हैं जो कहते थे कि हम शाऊल को राजा के रूप में शासन करने देना नहीं चाहते? उन लोगों को लाओ! हम उन्हें मार डालेंगे!

[13]किन्तु शाऊल ने कहा, "नहीं! आज किसी को मत मारो! आज यहोवा ने इस्राएल की रक्षा की!"

[14]तब शमूएल ने लोगों से कहा, "आओ हम लोग गिलगाल चले। गिलगाल में हम शाऊल को फिर राजा बनायेंगे।"

[15]सो सभी लोग गिलगाल चले गये। वहाँ यहोवा के सामने लोगों ने शाऊल को राजा बनाया। उन्होंने यहोवा को मेलबलि दी। शाऊल और सभी इस्राएलियों ने खुशियाँ मनायी।

शमूएल का इस्राएलियों से बात करना

12 शमूएल ने सारे इस्राएलियों से कहा: "मैंने वह सब कुछ कर दिया है जो तुम लोग मुझ से चाहते थे। मैंने तुम लोगों के ऊपर एक राजा रखा है। [2]अब तुम्हारे मार्गदर्शन के लिये एक राजा है। मैं श्वेतकेशी बूढ़ा हूँ। मेरे पुत्र तुम्हारे साथ हैं। जब मैं एक छोटा बालक था तब से मैं तुम्हारा मार्ग दर्शक रहा हूँ। [3]मैं यहाँ हूँ। यदि मैंने कोई बुरा काम किया है तो तुम्हें उसके बारे में यहोवा से और उनके चुने हुए राजा से कहना चाहिये। क्या मैंने कभी किसी का बैल या गधा चुराया है? क्या मैंने किसी को कभी धोखा दिया है या हानि पहुँचाई है? क्या मैंने किसी का कुछ बुरा करने के लिये कभी किसी से धन या एक जोड़ा जूता भी लिया है? यदि मैंने इनमें से कोई बुरा काम किया है तो मैं उसको ठीक करूँगा।"

[4]इस्राएलियों ने उत्तर दिया, "नहीं! तुमने हम लोगों के लिये कभी बुरा नहीं किया। तुमने न हम लोगों को ठगा, न ही तुमने हम लोगों से कभी कुछ लिया।"

[5]शमूएल ने इस्राएलियों से कहा, "जो तुमने कहा, यहोवा उसका गवाह है। यहोवा का चुना राजा भी आज गवाह है। वे दोनों गवाह हैं कि तुमने मुझमें कोई दोष नहीं पाया।" लोगों ने कहा, "हाँ! यहोवा गवाह है।"

[6]तब शमूएल ने लोगों से कहा, "यहोवा गवाह है। उसने मूसा और हारून को चुना। वह तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर ले आया। [7]अब चुपचाप खड़े रहो अब मैं तुम्हें उन अच्छें कामों को बताऊँगा जो यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों और तुम्हारे लिये किये थे। [8]याकूब मिस्र गया। बाद में, मिस्रियों ने उसके वंशजों का जीवन कष्टमय बना दिया। इसलिए वे सहायता के लिये यहोवा के सामने रोये। यहोवा ने मूसा और हारून को भेजा। मूसा और हारून तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर निकाल ले आए और इस स्थान में रहने के लिये उनका मार्ग दर्शन किया।

[9]"किन्तु तुम्हारे पूर्वज, अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गये। इसलिए यहोवा ने उन्हें सीसरा का दास होने दिया। सीसरा, हासोर की सेना का सेनापति था। तब यहोवा ने उन्हें पलिश्तियों और मोआब के राजा का दास बनाया। वे सभी तुम्हारे पूर्वजों के विरुद्ध लड़े। [10]किन्तु तुम्हारे पूर्वज सहायता के लिये यहोवा के सामने गिड़गिड़ाए। उन्होंने कहा, 'हम लोगों ने पाप किया है। हम लोगों ने यहोवा को छोड़ा है और झूठे देवताओं बाल और अश्तोरेत की सेवा की है। किन्तु अब आप हमें हमारे शत्रुओं से बचायें, हम आपकी सेवा करेंगे।'

[11]"इसलिए यहोवा ने यरुब्बाल (गिदोन), बदान, बरक, यिप्तह और शमूएल को वहाँ भेजा। यहोवा ने तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं से तुम्हारी रक्षा की और तुम सुरक्षित रहे। [12]किन्तु तब तुमने अम्मोनियों के राजा नाहाश को अपने विरुद्ध लड़ने के लिये आते देखा। तुमने कहा, 'नहीं! हम अपने ऊपर शासन करने के लिये एक राजा चाहते हैं।' तुमने यही कहा, यद्यपि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा राजा पहले से ही था। [13]अब, तुम्हारा चुना राजा यहाँ है। यहोवा ने इस राजा को तुम्हारे ऊपर नियुक्त किया है। [14]परमेश्वर यहोवा तुम्हारी रक्षा करता रहेगा।

किन्तु परमेश्वर तुम्हारी रक्षा तभी करेगा जब तुम ये करोगे तुम्हें यहोवा का सम्मान और उसकी सेवा करनी चाहिए। तुम्हें उसके आदेशों के विरुद्ध लड़ना नहीं चाहिए और तुम्हें तथा तुम्हारे ऊपर शासन करने वाले राजा को, अपने परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करना चाहिये। यदि तुम इन्हें करते रहोगे तो परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा। [15]किन्तु यदि तुम यहोवा की आज्ञा पालन नहीं करते हो और उसके आदेशों के विरुद्ध लड़ते हो, तो वह तुम्हारे विरुद्ध होगा। यहोवा तुम्हें और तुम्हारे राजा को नष्ट कर देगा!

[16]"अब चुपचाप खड़े रहो और उस अद्भुत काम को देखो जिसे यहोवा तुम्हारी आँखों के सामने करेगा। [17]यह गेहूँ की फसल कटने का समय है।* मैं यहोवा से प्रार्थना करूँगा। मैं उन से बिजली की कड़क और वर्षा की याचना करूँगा। तब तुम समझोगे कि तुमने उस समय यहोवा के विरुद्ध बुरा किया था जब तुमने एक राजा की माँग की थी।"

[18]अत: शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। उसी दिन यहोवा ने बिजली की कड़क और वर्षा भेजी। इससे लोग यहोवा तथा शमूएल से बहुत डर गये। [19]सभी लोगों ने शमूएल से कहा, "अपने परमेश्वर यहोवा से तुम अपने सेवक, हम लोगों के लिये प्रार्थना करो। हम लोगों को मरने मत दो! हम लोगों ने बहुत पाप किये हैं और अब एक राजा के लिए माँग करके हम लोगों ने उन पापों को और बढ़ाया है।"

[20]शमूएल ने उत्तर दिया, "डरो नहीं। यह सत्य है! तुमने वे सब बुरे काम किये। किन्तु यहोवा का अनुसरण करना बन्द मत करो। अपने सच्चे हृदय से यहोवा की सेवा करो। [21]देवमूर्तियाँ मात्र मूर्तियाँ हैं, वे तुम्हारी सहायता नहीं करेंगी। इसलिए उनकी पूजा मत करो। देवमूर्तियाँ न तुम्हारी सहायता कर सकती है, न ही रक्षा कर सकती हैं। वे कुछ भी नहीं हैं!

[22]"किन्तु यहोवा अपने लोगों को छोड़ेगा नहीं। यहोवा तुम्हें अपने लोग बनाकर प्रसन्न हुआ था। अत:, अपने अच्छे नाम की रक्षा के लिए वह तुमको छोड़ेगा नहीं। [23]यदि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना बन्द कर देता हूँ तो यह मेरे लिए अपमानजनक होगा। यदि मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करना बन्द करता हूँ तो यह यहोवा के विरुद्ध पाप करना होगा। मैं तुम्हें वह शिक्षा दूँगा जो तुम्हारे लिये अच्छी व उचित है। [24]किन्तु तुम्हें भी यहोवा का सम्मान करते रहना चाहिये। तुम्हें पूरे हृदय से यहोवा की सेवा सच्चाई के साथ करनी चाहिये। उन अद्भुत कामों को याद रखो जिन्हें उसने तुम्हारे लिये किये। [25]किन्तु यदि तुम हठी हो, और बुरा करते हो तो परमेश्वर तुम्हें और तुम्हारे राजा को ऐसे झाड़ फेकेंगा जैसे झाड़ू से कूड़े को फेंका जाता है।"

शाऊल अपनी पहली गलती करता है

13 अब तक, शाऊल एक वर्ष तक राज्य कर चुका था और फिर जब शाऊल इस्राएल पर दो वर्ष शासन कर चुका, [2]उसने इस्राएल से तीन हजार व्यक्ति चुने। उनमें दो हजार वे व्यक्ति थे जो बेतेल के पहाड़ी प्रदेश के मिकमाश में उसके साथ ठहरे थे और एक हजार वे व्यक्ति थे जो बिन्यामीन के अंतर्गत गिबा में योनातान के साथ ठहरे थे। शाऊल ने सेना के अन्य सैनिकों को उनके अपने घर भेज दिया।

[3]योनातान ने गिबा में जाकर पलिश्तियों को उनके डेरे में हराया। पलिश्तियों ने इसके बारे में सुना। उन्होनें कहा, "हिब्रुओं ने विद्रोह किया है।" शाऊल ने कहा, "जो कुछ हुआ है उसे हिब्रू लोगों को सुनाओ।" अत: शाऊल ने लोगों से कहा कि वे पूरे इस्राएल देश में तुरही बजायें। [4]सभी इस्राएलियों ने वह समाचार सुना। उन्होंने कहा, "शाऊल ने पलिश्ती सेना प्रमुख को मार डाला है। अब पलिश्ती सचमुच इस्राएलियों से घृणा करते हैं!"

इस्राएली लोगों को शाऊल से जुड़ने के लिये गिलगाल में बुलाया गया। [5]पलिश्ती इस्राएल से लड़ने के लिए इकट्ठे हुए। पलिश्तियों के पास छ: हजार रथ और तीन हजार* घुड़सवार थे। वहाँ इतने अधिक पलिश्ती सैनिक थे जितने सागर तट पर बालू के कण। पलिश्तियों ने मिकमाश में डेरा डाला। (मिकमाश बेतावेन के पूर्व है।)

[6]इस्राएलियों ने देखा कि वे मुसीबत में हैं। उन्होंने अपने को जाल में फँसा अनुभव किया। वे गुफाओं और चट्टानों के अन्तरालों में छिपने के लिए भाग गये। वे चट्टानों, कुँओं और जमीन के अन्य गढ्ढों में छिप गये। [7]कुछ हिब्रू यरदन नदी पार कर गाद और गिलाद प्रदेश में भी

यह गेहूँ ... समय है यह वर्ष सूखा मौसम था और उस समय वर्षा नहीं हो रही थी।

तीन हजार हिब्रू पाठ में तीस हजार है।

भाग गए। शाऊल तब तक गिलगाल में था। उसकी सेना के सभी सैनिक भय से काँप रहे थे।

[8]शमूएल ने कहा कि वह शाऊल से गिलगाल में मिलेगा। शाऊल ने वहाँ सात दिन तक प्रतीक्षा की। किन्तु शमूएल तब भी गिलगाल नहीं पहुँचा था और सैनिक शाऊल को छोड़ने लगे। [9]इसलिए शाऊल ने कहा, "मेरे लिए होमबलि और मेलबलि लाओ।" तब शाऊल ने होमबलि चढ़ायी। [10]ज्योंही शाऊल ने बलि–भेंट चढ़ानी समाप्त की, शमूएल आ गया। शाऊल उससे मिलने गया।

[11]शमूएल ने पूछा, "यह तुमने क्या कर दिया?"

शाऊल ने उत्तर दिया, "मैंने सैनिकों को अपने को छोड़ते देखा और तुम तब तक यहाँ नहीं थे, और पलिश्ती मिकमाश में इकट्ठा हो रहे थे।" [12]मैंने अपने मन में सोचा, "पलिश्ती यहाँ गिलगाल में आकर मुझ पर आक्रमण करेंगे और मैंने अब तक यहोवा से हमारी सहायता करने के लिये याचना नहीं की है। अत: मैंने अपने को विवश किया और मैंने होमबलि चढ़ाई।"

[13]शमूएल ने कहा, "तुमने मूर्खता का काम किया! तुमने अपने परमेश्वर यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया। यदि तुमने परमेश्वर के आदेश का पालन किया होता तो परमेश्वर ने तुम्हारे परिवार को सदा के लिये इस्राएल पर शासन करने दिया होता। [14]किन्तु अब तुम्हारा राज्य आगे नहीं चलेगा। यहोवा ऐसे व्यक्ति की खोज में था जो उसकी आज्ञा का पालन करना चाहता हो। यहोवा ने उस व्यक्ति को पा लिया है और यहोवा उसे अपने लोगों का नया प्रमुख होने के लिये चुनेगा। तुमने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया इसलिए यहोवा नया प्रमुख चुनेगा।" [15]तब शमूएल उठा और उसने गिलगाल को छोड़ दिया।

मिकमाश का युद्ध

शाऊल और उसकी बची सेना ने गिलगाल को छोड़ दिया। वे बिन्यामीन में गिबा को गये। शाऊल ने उन व्यक्तियों को गिना जो अब तक उसके साथ थे। वहाँ लगभग छ: सौ पुरुष थे। [16] शाऊल, उसका पुत्र योनातान और सैनिक बिन्यामीन में गिबा को गए। पलिश्तियों ने मिकमाश में डेरा डाला था। [17]पलिश्तियों ने उस क्षेत्र में रहने वाले इस्राएलियों को दण्ड देने का निश्चय किया। अत: उनकी शक्तिशाली सेना ने आक्रमण करने के लिए अपना स्थान छोड़ दिया। पलिश्ती सेना तीन टुकड़ियों में बँटी थी। एक टुकड़ी उत्तर को ओप्रा को जाने वाली सड़क से शुआल के क्षेत्र में गई। [18]दूसरी टुकड़ी दक्षिण–पूर्व बेथोरोन को जाने वाली सड़क पर गई और तीसरी टुकड़ी पूर्व में सीमा तक जाने वाली सड़क से गई। यह सड़क सबोईम की घाटी में मरुभूमि की ओर खुलती थी।

[19]इस्राएली लोगों में से कोई भी लोहे की चीजें नहीं बना सकता था। उन दिनों इस्राएल में लोहार नहीं थे। पलिश्ती इस्राएलियों को लोहे की चीज़ें बनाना नहीं सिखाते थे क्योंकि पलिश्ती डरते थे कि इस्राएली कहीं लोहे की तलवारें और भाले न बनाने लग जायें। [20]केवल पलिश्ती ही लोहे के औजारों पर धार चढ़ा सकते थे। अत: यदि इस्राएली अपने हल की फली, कुदाली, कुल्हाड़ी या दँराती पर धार चढ़ाना चाहते तो उन्हें पलिश्तियों के पास जाना पड़ता था। [21]पलिश्ती लोहार एक तिहाई औंस चाँदी हल की फली और कुदाली पर धार चढ़ाने के लिये लेते थे और एक छटाई औंस चाँदी फावड़ी, कुल्हाड़ी और बैलों को चलाने की साँटी के लोहे के सिरे पर धार चढ़ाने के लिये लेते थे। [22]इसलिए युद्ध के दिन शाऊल के इस्राएली सैनिकों में से किसी के पास लोहे की तलवार या भाले नहीं थे। केवल शाऊल और उसके पुत्र योनातान के पास लोहे के शस्त्र थे।

[23]पलिश्ती सैनिकों की एक टुकड़ी मिकमाश के दर्रे की रक्षा कर रही थी।

योनातान पलिश्तियों पर आक्रमण करता है

14 उस दिन, शाऊल का पुत्र योनातान उस युवक से बात कर रहा था, जो उसके शस्त्रों को ले कर चलता था। योनातान ने कहा, "हम लोग घाटी की दूसरी ओर पलिश्तियों के डेरे पर चलें।" किन्तु योनातान ने अपने पिता को नहीं बताया।

[2]शाऊल एक अनार के पेड़ के नीचे पहाड़ी के सिरे* पर मिग्रोन में बैठा था। यह उस स्थान पर खलिहान के निकट था। शाऊल के साथ उस समय लगभग छ: सौ योद्धा थे। एक व्यक्ति का नाम अहिय्याह था। [3]एली शीलो में यहोवा का याजक रह चुका था। अब वह अहिय्याह याजक था। अहिय्याह अब एपोद पहनता था। अहिय्याह

पहाड़ी का सिरा या "गिबा" का सिरा।"

ईकाबोद के भाई अहीतूब का पुत्र था। ईकाबोद पीनहास का पुत्र था। पीनहास एली का पुत्र था।

[4]दर्रे के दोनों ओर एक विशाल चट्टान थी। योनातान ने पलिश्ती डेरे में उस दर्रे से जाने की योजना बनाई। विशाल चट्टान के एक तरफ बोसेस था और उस विशाल चट्टान के दूसरी तरफ सेने था। [5]एक विशाल चट्टान उत्तर की मिकमाश को देखती सी खड़ी थी। दूसरी विशाल चट्टान दक्षिण की तरफ गिबा की ओर देखती सी खड़ी थी।

[6]योनातान ने अपने उस युवक सहायक से कहा जो उस के शस्त्र को ले चलता था, "आओ, हम उन विदेशियों के डेरे में चले। संभव है यहोवा हम लोगों का उपयोग इन लोगों को पराजित करने में करे। यहोवा को कोई नहीं रोक सकता इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है कि हमारे पास बहुत से सैनिक हैं या थोड़े से सैनिक।"

[7]योनातान के शस्त्र वाहक युवक ने उससे कहा, "जैसा तुम सर्वोत्तम समझो करो। मैं सब तरह से तुम्हारे साथ हूँ।"

[8]योनातान ने कहा, "हम चलें! हम लोग घाटी को पार करेंगे और उन पलिश्ती रक्षकों तक जायेंगे। हम लोग उन्हें अपने को देखने देंगे। [9]यदि वे हमसे कहते हैं 'तुम वहीं रुको जब तक हम तुम्हारे पास आते हैं,' तो हम लोग वहीं ठहरेंगे, जहाँ हम होंगे। हम उनके पास नहीं जायेंगे। [10]किन्तु यदि पलिश्ती लोग यह कहते हैं, 'हमारे पास आओ' तो हम उनके पास तक चढ़ जायेंगे। क्यों? क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से एक संकेत होगा। उसका अर्थ यह होगा कि यहोवा हम लोगों को उन्हें हराने देगा।"

[11]इसलिये योनातान और उसके सहायक ने अपने को पलिश्ती द्वारा देखने दिया। पलिश्ती रक्षकों ने कहा, "देखो! हिब्रू उन गड्ढों से निकल कर आ रहे हैं जिनमें वे छिपे थे।" [12]किले के पलिश्ती योनातान और उसके सहायक के लिये चिल्लाये "हमारे पास आओ। हम तुम्हें अभी पाठ पढ़ाते हैं!" योनातान ने अपने सहायक से कहा, "पहाड़ी के ऊपर तक मेरा अनुसरण करो। यहोवा ने इस्राएल के लिये पलिश्तियों को दे दिया है!"

[13-14]इसलिये योनातान ने अपने हाथ और पैरों का उपयोग पहाड़ी पर चढ़ने के लिये किया। उसका सहायक ठीक उसके पीछे चढ़ा। योनातान और उसके सहायक ने उन पलिश्तियों को पराजित किया। पहले आक्रमण में उन्होंने लगभग आधे एकड़* क्षेत्र में बीस पलिश्तियों को मारा। योनातान उन लोगों से लड़ा जो सामने से आक्रमण कर रहे थे और योनातान का सहायक उसके पीछे से आया और उन व्यक्तियों को मारता चला गया जो अभी केवल घायल थे।

[15]सभी पलिश्ती सैनिक, रणक्षेत्र के सैनिक, डेरे के सैनिक और किले के सैनिक आतंकित हो गये। यहाँ तक की सर्वाधिक वीर योद्धा भी आतंकित हो गये। धरती हिलने लगी और पलिश्ती सैनिक भयानक ढंग से डर गये!

[16]शाऊल के रक्षकों ने बिन्यामीन देश में गिबा के पलिश्ती सैनिकों को विभिन्न दिशाओं में भागते देखा। [17]शाऊल ने अपने साथ की सेना से कहा, "सैनिकों को गिनो। मैं यह जानना चाहता हूँ कि डेरे को किसने छोड़ा।" उन्होंने सैनिकों को गिना। योनातान और उसका सहायक चले गये थे।

[18]शाऊल ने अहिय्याह से कहा, "परमेश्वर की पवित्र सन्दूक लाओ!" (उस समय परमेश्वर का पवित्र सन्दूक इस्राएलियों के साथ था।) [19]शाऊल याजक अहिय्याह से बातें कर रहा था। शाऊल परमेश्वर के मार्गदर्शन की प्रतीक्षा कर रहा था। किन्तु पलिश्ती डेरे में शोर और अव्यवस्था लगातार बढ़ती जा रही थी। शाऊल धैर्य खो रहा था। अन्त में शाऊल ने याजक अहिय्याह से कहा, "काफी हो चुका! अपने हाथ को नीचे करो और प्रार्थना करना बन्द करो!"

[20]शाऊल ने अपनी सेना इकट्ठी की और युद्ध में चला गया। पलिश्ती सैनिक सचमुच घबरा रहे थे! वे अपनी तलवारों से आपस में ही एक दूसरे से युद्ध कर रहे थे। [21]वहाँ हिब्रू भी थे जो इसके पूर्व पलिश्तियों की सेवा में थे और जो पलिश्ती डेरे में रुके थे। किन्तु अब उन हिब्रुओं ने शाऊल और योनातान के साथ के इस्राएलों का साथ दिया। [22]उन इस्राएलियों ने जो एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र में छिपे थे, पलिश्ती सैनिकों के भागने की बात सुनी। सो इन इस्राएलियों ने भी युद्ध में साथ दिया और पलिश्तियों का पीछा करना आरम्भ किया।

[23]इस प्रकार यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों की रक्षा की। युद्ध बेतावेन के परे पहुँच गया। सारी सेना शाऊल के साथ थी, उसके पास लगभग दस हजार पुरुष थे।

आधे एकड़ आधी जोत में।

एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के हर नगर में युद्ध का विस्तार हो गया था।*

शाऊल दूसरी गलती करता है

[24]किन्तु शाऊल ने उस दिन एक बड़ी गलती की।* इस्राएली भूखे और थके थे। यह इसलिए हुआ कि शाऊल ने लोगों को यह प्रतिज्ञा करने को विवश किया: शाऊल ने कहा, "यदि कोई व्यक्ति सन्ध्या होने से पहले भोजन करता है अथवा मेरे द्वारा शत्रु को पराजित करने के पहले भोजन करता है तो वह व्यक्ति दण्डित किया जाएगा!" इसलिए किसी भी इस्राएली सैनिक ने भोजन नहीं किया।

[25-26] युद्ध के कारण लोग जंगलों में चले गए। उन्होंने वहाँ भूमि पर पड़ा एक शहद का छत्ता देखा। इस्राएली उस स्थान पर आए जहाँ शहद का छत्ता था। लोग भूखे थे, किन्तु उन्होंने तनिक भी शहद नहीं पिया। वे उस प्रतिज्ञा को तोड़ने से भयभीत थे। [27]किन्तु योनातान उस प्रतिज्ञा के बारे में नहीं जानता था। योनातान ने यह नहीं सुना था कि उसके पिता ने उस प्रतिज्ञा को करने के लिये लोगों को विवश किया है। योनातान के हाथ में एक छड़ी थी। उसने शहद के छत्ते में उसके सिरे को धंसाया। उसने कुछ शहद निकाला और उसे चाटा और उसने अपने को स्वस्थ अनुभव किया।

[28]सैनिकों में से एक ने योनातान से कहा, "तुम्हारे पिता ने एक विशेष प्रतिज्ञा करने के लिये सैनिकों को विवश किया है। तुम्हारे पिता ने कहा है कि जो कोई आज खायेगा, दण्डित होगा। यही कारण है कि पुरूषों ने कुछ भी खाया नहीं। यही कारण है कि पुरुष कमजोर हैं।"

[29]योनातान ने कहा, "मेरे पिता ने लोगों के लिये परेशानी उत्पन्न की है! देखो इस जरा से शहद को चाटने से मैं कितना स्वस्थ अनुभव कर रहा हूँ! [30]बहुत अच्छा होता कि लोग वह भोजन करते जो उन्होनें आज शत्रुओं से लिया था। हम बहुत अधिक पलिश्तियों को मार सकते थे!"

[31]उस दिन इस्राएलियों ने पलिश्तियों को हराया। वे उनसे मिकमाश से अय्यालोन तक के पूरे मार्ग पर लड़े। क्योंकि लोग बहुत भूखे और थके हुए थे। [32]उन्होंने पलिश्तियों से भेड़ें, गायें और बछड़े लिये थे। उस समय इस्राएल के लोग इतने भूखे थे कि उन्होनें उन जानवरों को जमीन पर ही मारा और उन्हें खाया। जानवरों में तब तक खून था!

[33]एक व्यक्ति ने शाऊल से कहा, "देखो! लोग यहोवा के विरुद्ध पाप कर रहे हैं। वे ऐसा माँस खा रहे हैं जिसमें खून है!"

शाऊल ने कहा, "तुम लोगों ने पाप किया है! यहाँ एक विशाल पत्थर लुढ़काकर लाओ।" [34]तब शाऊल ने कहा, "लोगों के पास जाओ और कहो कि हर एक व्यक्ति अपना बैल और भेड़ें मेरे पास यहाँ लाये। तब लोगों को अपने बैल और भेड़ें यहाँ मारनी चाहिये। यहोवा के विरुद्ध पाप मत करो। वह माँस न खाओ जिसमें खून हो।" उस रात हर एक व्यक्ति अपने जानवरों को लाया और उन्हें वहाँ मारा। [35]तब शाऊल ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई। शाऊल ने यहोवा के लिये स्वयं वह वेदी बनानी आरम्भ की!

[36]शाऊल ने कहा, "हम लोग आज रात को पलिश्तियों का पीछा करें। हम लोग हर वस्तु ले लेंगे। हम उन सभी को मार डालेंगे।" सेना ने उत्तर दिया, "वैसे ही करो जैसे तुम ठीक समझते हो।" किन्तु याजक ने कहा, "हमें परमेश्वर से पूछने दो।"

[37]अत: शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, "क्या मुझे पलिश्तियों का पीछा करने जाना चाहिए? क्या तू हमें पलिश्तियों को हराने देगा?" किन्तु परमेश्वर ने शाऊल को उस दिन उत्तर नहीं दिया।

[38]इसलिए शाऊल ने कहा, "मेरे पास सभी प्रमुखों को लाओ। हम लोग मालूम करें कि आज किसने पाप किया है। [39]मैं इस्राएल की रक्षा करने वाले यहोवा की शपथ खा कर यह प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि मेरे अपने पुत्र योनातान ने भी पाप किया हो तो वह अवश्य मरेगा।" सेना में किसी ने भी कुछ नहीं कहा।

[40]तब शाऊल ने सभी इस्राएलियों से कहा, "तुम लोग इस ओर खड़े हो। मैं और मेरा पुत्र योनातान दूसरी ओर खड़े होगें।" सैनिकों ने उत्तर दिया, "महाराज! आप जैसा चाहें।"

एप्रैम ... गया था यह वाक्य प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है, किन्तु हिब्रू में नहीं।

किन्तु ... गलती की यह वाक्य प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है, किन्तु हिब्रू में नहीं।

[41]तब शाऊल ने प्रार्थना की, "इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, मैं तेरा सेवक हूँ आज तू मुझे उत्तर क्यों नहीं दे रहा है? यदि मैंने या मेरे पुत्र योनातान ने पाप किया है तो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा तू ऊरीम दे और यदि तेरे लोग इस्राएलियों ने पाप किया है तो तुम्मिम दें। शाऊल और योनातान धर लिए गए और लोग छूट गए। [42]शाऊल ने कहा, "उन्हें फिर से फेंको कि कौन पाप करनेवाला है मैं या मेरा पुत्र योनातान।" योनातान चुन लिया गया।

[43]शाऊल ने योनातान से कहा, "मुझे बताओ कि तुमने क्या किया है?" योनातान ने शाऊल से कहा, "मैंने अपनी छड़ी के सिरे से केवल थोड़ा सा शहद चाटा था। क्या मुझे वह करने के कारण मरना चाहिये?"

[44]शाऊल ने कहा, "यदि मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरा नहीं करता हूँ तो परमेश्वर मेरे लिये बहुत बुरा करे। योनातान को मरना चाहिये!"

[45]किन्तु सैनिकों ने शाऊल से कहा, "योनातान ने आज इस्राएल को बड़ी विजय तक पहुँचाया। क्या योनातान को मरना ही चाहिए? कभी नहीं! हम लोग परमेश्वर की शपथ खाकर वचन देते हैं कि योनातान का एक बाल भी बाँका नहीं होगा। परमेश्वर ने आज पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ने में योनातान की सहायता की है!" इस प्रकार लोगों ने योनातान को बचाया। उसे मृत्युदण्ड नहीं दिया गया।

[46]शाऊल ने पलिश्तियों का पीछा नहीं किया। पलिश्ती अपने स्थान को लौट गये।

शाऊल का इस्राएल के शत्रुओं से युद्ध

[47]शाऊल ने इस्राएल पर पूरा अधिकार जमा लिया और दिखा दिया कि वह राजा है। शाऊल इस्राएल के चारों ओर रहने वाले शत्रुओं से लड़ा। शाऊल, अम्मोनी, मोआबी, सोबा के राजा एदोम, और पलिश्तियों से लड़ा। जहाँ कहीं शाऊल गया, उसने इस्राएल के शत्रुओं को पराजित किया। [48]शाऊल बहुत वीर था। उसने अमालेकियों को हराया। शाऊल ने इस्राएल को उसके उन शत्रुओं से बचाया जो इस्राएल के लोगों से उनकी सम्पत्ति छीन लेना चाहते थे।

[49]शाऊल के पुत्र थे योनातान, यिशवी और मलकीश। शाऊल की बड़ी पुत्री का नाम मेरब था। शाऊल की छोटी पुत्री का नाम मीकल था। [50]शाऊल की पत्नी का नाम अहीनोअम था। अहीनोअम अहीमास की पुत्री थी। शाऊल की सेना के सेनापति का नाम अब्नेर था, जो नेर का पुत्र था। नेर शाऊल का चाचा था। [51]शाऊल का पिता कीश और अब्नेर का पिता नेर,अबीएल के पुत्र थे।

[52]शाऊल अपने जीवन भर वीर रहा और पलिश्तियों के विरुद्ध दृढ़ता से लड़ा। शाऊल जब भी कभी किसी व्यक्ति को ऐसा वीर देखता जो शक्तिशाली होता तो वह उसे ले लेता और उसे उन सैनिकों की टुकड़ी में रखता जो उसके समीप रहते और उसकी रक्षा करते थे।

शाऊल का अमालेकियों को नष्ट करना

15 शमूएल ने शाऊल से कहा, "यहोवा ने मुझे अपने इस्राएली लोगों पर राजा के रूप में तुम्हारा अभिषेक करने के लिये भेजा था। अब यहोवा का सन्देश सुनो। [2]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: 'जब इस्राएली मिस्र से बाहर आये तब अमालेकियों ने उन्हें कनान पहुँचाने से रोकने का प्रयत्न किया। मैंने देखा कि अमालेकियों ने उन्हें क्या किया। [3]अब जाओ और अमालेकियों से युद्ध करो। तुम्हें अमालेकियों और उनकी सभी चीज़ों को पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिये। कुछ भी जीवित न रहने दो, तुम्हें सभी पुरुषों और स्त्रियों को मार डालना चाहिये। तुम्हें सभी बच्चों और शिशुओं को मार डालना चाहिए। तुम्हें उनकी सभी गायों, भेड़ों, ऊँटों और गधों को मार डालना चाहिये।'"

[4]शाऊल ने तलाईम में सेना एकत्रित की। उसमें दो लाख पैदल सैनिक और दस हजार अन्य सैन्य पुरुष थे। इनमें यहूदा के लोग भी सम्मिलित थे। [5]तब शाऊल अमालेक नगर को गया और वहाँ उसने घाटी में उनकी प्रतीक्षा की। [6]शाऊल ने केनियों से कहा, "चले जाओ, अमालेकियों को छोड़ दो। तब मैं तुम लोगों को अमालेकियों के साथ नष्ट नहीं करूँगा। तुम लोगों ने इस्राएलियों के प्रति दया दिखाई थी जब वे मिस्र से आये थे।" इसलिए केनी लोगों ने अमालेकियों को छोड़ दिया।

[7]शाऊल ने अमालेकियों को हराया। उसने उनसे हवीला से मिस्र की सीमा शूर तक निरन्तर युद्ध किया। [8]शाऊल ने अगाग को जीवित पकड़ लिया। अगाग अमालेकियों का राजा था। अगाग की सेना के सभी व्यक्तियों को शाऊल ने मार डाला। [9]किन्तु शाऊल और इस्राएल के सैनिकों ने अगाग को जीवित रहने दिया। उन्होंने सर्वोत्तम भेड़ों, मोटी तगड़ी गायों और मेमनों को भी रख लिया।

उन्होंने रखने योग्य सभी चीज़ों को रख लिया और उन्होंने उन सभी चीज़ों को नष्ट कर दिया जो किसी काम की न थी।

शमूएल का शाऊल को उसके पाप के बारे में बताना

[10]शमूएल को यहोवा का सन्देश आया। [11]यहोवा ने कहा, "शाऊल ने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया है। इसलिए मुझे इसका अफसोस है कि मैंने उसे राजा बनाया। वह उन कामों को नहीं कर रहा है जिन्हें करने का आदेश मैं उसे देता हूँ।" शमूएल भड़क उठा और फिर उसने रात भर यहोवा की प्रार्थना की।

[12]शमूएल अगले सवेरे उठा और शाऊल से मिलने गया। किन्तु लोगों ने बताया, "शाऊल यहूदा में कर्मेल नामक नगर को गया है। शाऊल वहाँ अपने सम्मान में एक पत्थर की यादगार बनाने गया था। तब शाऊल ने कई स्थानों की यात्रा की और अन्त में गिलगाल को चला गया।"

इसलिये शमूएल वहाँ गया जहाँ शाऊल था। शाऊल ने अमालेकियों से ली गई चीज़ों का पहला भाग ही भेंट में चढ़ाया था।* शाऊल उन्हें होम बलि के रूप में यहोवा को भेंट चढ़ा रहा था। [13]शमूएल शाऊल के पास पहुँचा। शाऊल ने कहा, स्वागत, "यहोवा आपको आशीर्वाद दे! मैंने यहोवा के आदेशों का पालन किया है।" [14]किन्तु शमूएल ने कहा, "तो मैं ये आवाजें क्या सुन रहा हूँ? मैं भेड़ और पशुओं की आवाज क्यों सुन रहा हूँ?"

[15]शाऊल ने उत्तर दिया, "सैनिकों ने उन्हें अमालेकियों से लिया। सैनिकों ने सर्वोत्तम भेड़ों और पशुओं को तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को बलि के रूप में जलाने के लिए बचा लिया है। किन्तु हम लोगों ने अन्य सभी चीज़ों को नष्ट कर दिया है।"

[16]शमूएल ने शाऊल से कहा, "रुको! मुझे तुमसे वही कहने दो जिसे पिछली रात यहोवा ने मुझसे कहा है।" शाऊल ने उत्तर दिया, "मुझे बताओ।"

[17]शमूएल ने कहा, "बीते समय में,तुमने यही सोचा था कि तुम महत्वपूर्ण नहीं हो। किन्तु तब भी तुम इस्राएल के परिवार समूहों के प्रमुख बन गए। यहोवा ने तुम्हें इस्राएल का राजा चुना। [18]यहोवा ने तुम्हें एक विशेष सेवाकार्य के लिये भेजा। यहोवा ने कहा, 'जाओ और उन सभी बुरे अमालेकियों को नष्ट करो! उनसे तब तक लड़ते रहो जब तक वे नष्ट न हो जायें!' [19]किन्तु तुमने यहोवा की नहीं सुनी। तुम उन चीजों को रखना चाहते थे। इसलिये तुमने वह किया जिसे यहोवा ने बुरा कहा!"

[20]शाऊल ने कहा, "किन्तु मैंने तो यहोवा की आज्ञा का पालन किया। मैं वहाँ गया जहाँ यहोवा ने मुझे भेजा। मैंने सभी अमालेकियों को नष्ट किया। मैं केवल उनके राजा अगाग को वापस लाया। [21]सैनिकों ने सर्वोत्तम भेड़ें और पशु गिलगाल में तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को बलि देने के लिये चुने।"

[22]किन्तु शमूएल ने उत्तर दिया, "यहोवा को इन दो में से कौन अधिक प्रसन्न करता है: होमबलियाँ और बलियाँ या यहोवा की आज्ञा का पालन करना? यह अधिक अच्छा है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया जाय इसकी अपेक्षा कि उसे बलि–भेंट की जाये। यह अधिक अच्छा है कि परमेश्वर की बातें सुनी जाये इसकी अपेक्षा कि मेढों से चर्बी–भेंट की जाय। [23]आज्ञा के पालन से इन्कार करना जादूगरी करने के पाप जैसा है। हठी होना और मनमानी करना मूर्तियों की पूजा करने जैसा पाप है। तुमने यहोवा की आज्ञा मानने से इन्कार किया। इसी कारण यहोवा अब तुम्हें राजा के रूप में स्वीकार करने से इन्कार करता है।"

[24]तब शाऊल ने शमूएल से कहा, "मैंने पाप किया है। मैंने यहोवा के आदेशों को नहीं माना है और मैंने वह नहीं किया है जो तुमने करने को कहा। मैं लोगों से डरता था इसलिए मैंने वह किया जो उन्होंने कहा। [25]अब मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे पाप को क्षमा करो। मेरे साथ लौटो जिससे मैं यहोवा की उपासना कर सकूँ।"

[26]किन्तु शमूएल ने शाऊल से कहा, "मैं तुम्हारे साथ नहीं लौटूँगा। तुमने यहोवा के आदेश को नकारा है और अब यहोवा तुम्हें इस्राएल के राजा के रूप में नकार रहा है।"

[27]जब शमूएल उसे छोड़ने के लिये मुड़ा, शाऊल ने शमूएल के लबादे को पकड़ लिया। लबादा फट गया। [28]शमूएल ने शाऊल से कहा, "तुमने मेरे लबादे को फाड़ दिया। इसी प्रकार यहोवा ने आज इस्राएल के राज्य को तुमसे फाड़ दिया है। यहोवा ने राज्य तुम्हारे मित्रों में से एक को दे दिया है। वह व्यक्ति तुमसे अच्छा है। [29]यहोवा

शाऊल ने … चढ़ाया था यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है। यह हिब्रू मानक पाठ में नहीं है।

इस्राएल का परमेश्वर है। यहोवा शाश्वत है। यहोवा न तो झूठ बोलता है, न ही अपना मन बदलता है। यहोवा मनुष्य की तरह नहीं है जो अपने इरादे बदलते हैं।"

[30]शाऊल ने उत्तर दिया, "ठीक है, मैंने पाप किया! किन्तु कृपया मेरे साथ लौटो। इस्राएल के लोगों और प्रमुखों के सामने मुझे कुछ सम्मान दो। मेरे साथ लौटो जिससे मैं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की उपासना कर सकूँ।" [31]शमूएल शाऊल के साथ लौट गया और शाऊल ने यहोवा की उपासना की।

[32]शमूएल ने कहा, "अमालेकियों के राजा अगाग, को मेरे पास लाओ।" अगाग शमूएल के सामने आया। अगाग जंजीरों में बंधा था। अगाग ने सोचा, "निश्चय ही यह मुझे मारेगा नहीं।"

[33]किन्तु शमूएल ने अगाग से कहा, "तुम्हारी तलवारों ने बच्चों को उनकी माताओं से छीना। अत: अब तुम्हारी माँ का कोई बच्चा नहीं रहेगा।" और शमूएल ने गिलगाल में यहोवा के सामने अगाग के टुकड़े–टुकड़े कर डाले। [34]तब शमूएल वहाँ से चला और रामा पहुँचा और शाऊल अपने घर गिबा को गया।

[35]उसके बाद शमूएल ने अपने पूरे जीवन में शाऊल को नहीं देखा। शमूएल शाऊल के लिये बहुत दु:खी रहा और यहोवा को बड़ा दु:ख था कि उसने शाऊल को इस्राएल का राजा बनाया।

शमूएल का बेतलेहेम को जाना

16 यहोवा ने शमूएल से कहा, "तुम शाऊल के लिये कब तक दु:खी रहोगे? मैंने शाऊल को इस्राएल का राजा होना अस्वीकार कर दिया है! अपनी सींग* तेल से भरो और चल पड़ो। मैं तुम्हें यिशै नाम के एक व्यक्ति के पास भेज रहा हूँ। यिशै बेतलेहेम में रहता है। मैंने उसके पुत्रों में से एक को नया राजा चुना है।"

[2]किन्तु शमूएल ने कहा, "यदि मैं जाऊँ, तो शाऊल इस समाचार को सुनेगा। तब वह मुझे मार डालने का प्रयत्न करेगा।"

यहोवा ने कहा, "बेतलेहेम जाओ। एक बछड़ा अपने साथ ले जाओ। यह कहो, 'मैं यहोवा को बलि चढ़ाने आया हूँ।' [3]यिशै को बलि के समय आमंत्रित करो। तब मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना है। तुम्हें उस व्यक्ति का अभिषेक करना चाहिये जिसे मैं दिखाऊँ।"

[4]शमूएल ने वही किया जो यहोवा ने उसे करने को कहा था। शमूएल बेतलेहेम गया। बेतलेहेम के बुजुर्ग भय से काँप उठे। वे शमूएल से मिले और उन्होंने उससे पूछा, "क्या आप शान्तिपूर्वक आए हैं?"

[5]शमूएल ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं शान्तिपूर्वक आया हूँ। मैं यहोवा को बलि–भेंट करने आया हूँ। अपने को तैयार करो और मेरे साथ बलि–भेंट में आओ।" शमूएल ने यिशै और उसके पुत्रों को तैयार किया। तब शमूएल ने उन्हें आने और बलि–भेंट में भाग लेने के लिये आमन्त्रित किया।

[6]जब यिशै और उसके पुत्र आए, तो शमूएल ने एलीआब को देखा। शमूएल ने सोचा, "निश्चय ही यही वह व्यक्ति है जिसे यहोवा ने चुना है। [7]किन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, "एलीआब लम्बा और सुन्दर है किन्तु उसके बारे में मत सोचो। एलीआब लम्बा है किन्तु उसके बारे में मत सोचो। परमेश्वर उस चीज़ को नहीं देखता जिसे साधारण व्यक्ति देखते हैं। लोग व्यक्ति के बाहरी रूप को देखते हैं, किन्तु यहोवा व्यक्ति के हृदय को देखता है। एलीआब उचित व्यक्ति नहीं है।"

[8]तब यिशै ने अपने दूसरे पुत्र अबीनादाब को बुलाया। अबीनादाब शमूएल के पास से गुजरा। किन्तु शमूएल ने कहा, "नहीं, यह भी वह व्यक्ति नहीं है कि जिसे यहोवा ने चुना है।"

[9]तब यिशै ने शम्मा को शमूएल के पास से गुजरने को कहा। किन्तु शमूएल ने कहा, "नहीं, यहोवा ने इस व्यक्ति को भी नहीं चुना है।"

[10]यिशै ने अपने सात पुत्रों को शमूएल को दिखाया। किन्तु शमूएल ने यिशै को कहा, "यहोवा ने इन व्यक्तियों में से किसी को भी नहीं चुना है।"

[11]तब शमूएल ने यिशै से पूछा, "क्या तुम्हारे सभी पुत्र ये ही हैं?" यिशै ने उत्तर दिया,"नहीं, मेरा सबसे छोटा एक और पुत्र है, किन्तु वह भेड़ों की रखवाली कर रहा है।"

शमूएल ने कहा, "उसे बुलाओ। उसे यहाँ लाओ। हम लोग तब तक खाने नहीं बैठेंगे जब तक वह आ नहीं जाता।"

सींग एक खाली सींग जो किसी जानवर का होता था यह प्राय: एक बोतल की तरह काम में आता था।

[12]यिशै ने किसी को अपने सबसे छोटे पुत्र को लाने के लिये भेजा। यह पुत्र सुन्दर और सुनहरे बालों वाला* युवक था। यह बहुत सुन्दर था। यहोवा ने शमूएल से कहा, "उठो, इसका अभिषेक करो। यही है वह।"

[13]शमूएल ने तेल से भरा सींग उठाया और उस विशेष तेल को यिशै के सबसे छोटे पुत्र के सिर पर उसके भाईयों के सामने डाल दिया। उस दिन से यहोवा की आत्मा दाऊद पर तीव्रता से आती रही। तब शमूएल रामा को लौट गया।

दुष्टात्मा का शाऊल को परेशान करना

[14]यहोवा की आत्मा ने शाऊल को त्याग दिया। तब यहोवा ने शाऊल पर एक दुष्टात्मा* भेजी। उसने उसे बहुत परेशान किया।[15]सेवकों ने शाऊल से कहा, "परमेश्वर के द्वारा भेजी एक दुष्टात्मा तुमको परेशान कर रही है। [16]हम लोगों को आदेश दो कि हम लोग किसी की खोज करे जो वीणा बजायेगा। यदि दुष्टात्मा यहोवा के यहाँ से तुम्हारे ऊपर आई है तो जब वह व्यक्ति वीणा बजायेगा तब वह दुष्टआत्मा तुमको अकेला छोड़ देगी और तुम स्वस्थ अनुभव करोगे।"

[17]अत: शाऊल ने अपने सेवकों से कहा, "ऐसे व्यक्ति की खोज करो जो वीणा अच्छी बजाता है और उसे मेरे पास लाओ।"

[18]सेवकों में से एक ने कहा, "बेतलेहेम में रहने वाला यिशै नाम का एक व्यक्ति है। मैंने यिशै के पुत्र को देखा है। वह जानता है कि वीणा कैसे बजाई जाती है। वह एक वीर व्यक्ति भी है और अच्छी प्रकार लड़ता है। वह जागरूक है। वह सुन्दर है और यहोवा उसके साथ है।"

[19]इसलिये शाऊल ने यिशै के पास दूत भेजा। उन्होंने यिशै से वह कहा जो शाऊल ने कहा था। "तुम्हारा पुत्र दाऊद नाम का है। वह तुम्हारी भेड़ों की रखवाली करता है। उसे मेरे पास भेजो।"

[20]फिर यिशै ने शाऊल को भेंट करने के लिये कुछ चीज़ें तैयार की। यिशै ने एक गधा, कुछ रोटियाँ और एक मशक दाखमधु और एक बकरी का बच्चा लिया। यिशै ने वे चीज़ें दाऊद को दी, और उसे शाऊल के पास भेज दिया। [21]इस प्रकार दाऊद शाऊल के पास गया और उसके सामने खड़ा हुआ। शाऊल ने दाऊद से बहुत स्नेह किया। फिर दाऊद ने शाऊल को अपना शस्त्रवाहक बना लिया। [22]शाऊल ने यिशै के पास सूचना भेजी, "दाऊद को मेरे पास रहने और मेरी सेवा करने दो। वह मुझे बहुत पसन्द करता है।"

[23]जब कभी परमेश्वर की ओर से आत्मा शाऊल पर आती, तो दाऊद अपनी वीणा उठाता और उसे बजाने लगता। दुष्ट आत्मा शाऊल को छोड़ देती और वह स्वस्थ अनुभव करने लगता।

गोलियत का इस्राएल को चुनौती देना

17 पलिश्तियों ने अपनी सेना युद्ध के लिये इकट्ठी की। वे यहूदा स्थित सोको में युद्ध के लिए एकत्र हुए। उनका डेरा सोको और अजेका के बीच एपेसदम्मीम नामक नगर में था।

[2]शाऊल और इस्राएली सैनिक भी वहाँ एक साथ एकत्रित हुए। उनका डेरा एला की घाटी में था। शाऊल के सैनिक मोर्चा लगाये पलिश्तियों से युद्ध करने के लिये तैयार थे। [3]पलिश्ती एक पहाड़ी पर थे और इस्राएली दूसरी पर। घाटी इन दोनों पहाड़ियों के बीच में थी।

[4]पलिश्तियों में एक गोलियत नाम का अजेय योद्धा था। गोलियत गत का था। गोलियत लगभग नौ फीट ऊँचा था। गोलियत पलिश्ती डेरे से बाहर आया। [5]उसके सिर पर काँसे का टोप था। उसने पट्टीदार कवच का कोट पहन रखा था। यह कवच काँसे का बना था और इसका तौल लगभग एक सौ पच्चीस पौंड* था। [6]गोलियत ने अपने पैरों में काँसे के रक्षा कवच पहने थे। उसके पास काँसे का भाला था जो उसकी पीठ पर बंधा था। [7]गोलियत के भाले का फल जुलाहे की छड़ की तरह था। भाले की फल की तोल पन्द्रह पौंड थी। गोलियत का सहायक गोलियत की ढाल को लिये हुए उसके आगे-आगे चल रहा था।

सुनहरेबालों वाला अथवा "पीत-रक्त रंग का" हिब्रू शब्द का अर्थ "लाल" है।

दुष्टात्मा हिब्रू भाषा के जिस शब्द का अनुवाद 'दुष्टात्मा' किया जाता है कुछ सन्दर्भों में 'पाप-आत्मा' या 'पाप को प्रेरित करने वाली आत्मा' के बजाय इसका अर्थ 'कष्ट देने वाली आत्मा' या 'दण्ड देने वाली आत्मा' भी हो सकता है।

एक सौ पच्चीस पौंड शाब्दिक "पाँच हजार शेकेल।"

[8]गोलियत बाहर निकला और उसने इस्राएली सैनिकों को जोर से पुकार कर कहा, "तुम्हारे सभी सैनिक युद्ध के लिये मोर्चा क्यों लगाये हुए हैं? तुम शाऊल के सेवक हो। मैं एक पलिश्ती हूँ। इसलिये किसी एक व्यक्ति को चुनों और उसे मुझसे लड़ने को भेजो। [9]यदि वह व्यक्ति मुझे मार डालता है तो हम पलिश्ती तुम्हारे दास हो जाएंगे। किन्तु यदि मैं उसे जीत लूँ और तुम्हारे व्यक्ति को मार डालूँ तो तुम हमारे दास हो जाना। तब तुम हमारी सेवा करोगे!"

[10]पलिश्ती ने यह भी कहा, "आज मैं खड़ा हूँ और इस्राएल की सेना का मजाक उड़ा रहा हूँ! मुझे अपने में से एक के साथ लड़ने दो!"

[11]शाऊल और इस्राएली सैनिकों ने जो गोलियत कहा था, उसे सुना और वे बहुत भयभीत हो उठे।

दाऊद का युद्ध क्षेत्र को जाना

[12]दाऊद यिशै का पुत्र था। यिशै एप्राती परिवार के यहूदा बेतलेहेम से था। यिशै के आठ पुत्र थे। शाऊल के समय में यिशै एक बूढ़ा आदमी था। [13]यिशै के तीन बड़े पुत्र शाऊल के साथ युद्ध में गये थे। प्रथम पुत्र एलीआब था। दूसरा पुत्र अबीनादाब था और तीसरा पुत्र शम्मा था। [14]दाऊद सबसे छोटा पुत्र था। तीनों पुत्र शाऊल की सेना में थे। [15]किन्तु दाऊद कभी–कभी बेतलेहेम में अपने पिता की भेड़ों की रखवाली के लिये शाऊल के पास से चला जाता था।

[16]पलिश्ती गोलियत हर एक प्रात: एवं सन्ध्या को बाहर आता था और इस्राएल की सेना के सामने खड़ा हो जाता था। गोलियत ने चालीस दिन तक इस प्रकार इस्राएल का मजाक उड़ाया।

[17]एक दिन यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, "पके अन्न की टोकरी और इन दस रोटियों को डेरे में अपने भाईयों के पास ले जाओ। [18]पनीर की इन दस पिंडियों को भी एक हजार सैनिकों वाली अपने भाई की टुकड़ी के संचालक अधिकारी के लिये ले जाओ। देखो कि तुम्हारे भाई कैसे हैं। कुछ ऐसा लाओ जिससे मुझे पता चले कि तुम्हारे भाई ठीक–ठाक हैं। [19]तुम्हारे भाई शाऊल के साथ हैं और इस्राएल के सारे सैनिक एला घाटी में हैं। वे पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ रहे हैं।"

[20]सवेरे तड़के ही दाऊद, ने भेड़ों की रखवाली दूसरे गड़रिये को सौंपी। दाऊद ने भोजन लिया और वहाँ के लिए चल पड़ा जहाँ के लिये यिशै ने कहा था। दाऊद अपनी गाड़ी को डेरे में ले गया। उस समय सैनिक लड़ाई में अपने मोर्चे संभालने जा रहे थे जब दाऊद वहाँ पहुँचा। सैनिक अपना युद्ध उद्घोष करने लगे। [21]इस्राएली और पलिश्ती अपने पुरुषों को युद्ध में एक–दूसरे से भिड़ने के लिये इकट्ठा कर रहे थे।

[22]दाऊद ने भोजन और चीजों को उस व्यक्ति के पास छोड़ा जो सामग्री का वितरण करता था। दाऊद दौड़ कर उस स्थान पर पहुँचा जहाँ इस्राएली सैनिक थे। दाऊद ने अपने भाईयों के विषय में पूछा। [23]दाऊद ने अपने भाईयों के साथ बात करनी आरम्भ की।

उसी समय वह पलिश्ती वीर योद्धा जिसका नाम गोलियत था और जो गत का निवासी था, पलिश्ती सेना से बाहर आया। पहले की तरह गोलियत ने इस्राएल के विरुद्ध वही बातें चिल्लाकर कहीं। [24]इस्राएली सैनिकों ने गोलियत को देखा और वे भाग खड़े हुए। वे सभी उससे भयभीत थे।

[25]इस्राएली व्यक्तियों में से एक ने कहा, "अरे लोगों, तुममें से किसी ने उसे देखा है! उसे देखो! वह गोलियत आ रहा है जो बार–बार इस्राएल का मजाक उड़ाता है। जो कोई उस व्यक्ति को मार देगा, धनी हो जायेगा! राजा शाऊल उसे बहुत धन देगा। शाऊल अपनी पुत्री का विवाह भी उस व्यक्ति से कर देगा, जो गोलियत को मारेगा और शाऊल उस व्यक्ति के परिवार को इस्राएल में स्वतन्त्र कर देगा।"

[26]दाऊद ने समीप खड़े आदमी से पूछा, "उसने क्या कहा? इस पलिश्ती को मारने और इस्राएल के इस अपमान को दूर करने का पुरस्कार क्या है? अन्तत: यह गोलियत है ही क्या? यह बस एक विदेशी मात्र है। गोलियत एक पलिश्ती से अधिक कुछ नहीं। वह क्यों सोचता है कि वह साक्षात् परमेश्वर की सेना के विरुद्ध बोल सकता है?"

[27]इसलिए इस्राएलियों ने गोलियत को मारने के लिये पुरस्कार के बारे में बताया। [28]दाऊद के बड़े भाई एलीआब ने दाऊद को सैनिकों से बातें करते सुना। एलीआब दाऊद पर क्रोधित हुआ। एलीआब ने दाऊद से पूछा, "तुम यहाँ क्यों आये? मरुभूमि में उन थोड़ी सी भेड़ों को किस के पास छोड़कर आये हो? मैं जानता हूँ कि तुम यहाँ क्यों

आये हो! तुम वह करना नहीं चाहते जो तुमसे करने को कहा गया था। तुम केवल यहाँ युद्ध देखने के लिये आना चाहते थे!"

[29]दाऊद ने कहा, "ऐसा मैंने क्या किया है? मैंने कोई गलती नहीं की! मैं केवल बातें कर रहा था।" [30]दाऊद दूसरे लोगों की तरफ मुड़ा और उनसे वे ही प्रश्न किये। उन्होंने दाऊद को वे ही पहले जैसे उत्तर दिये।

[31]कुछ व्यक्तियों ने दाऊद को बातें करते सुना। उन्होंने दाऊद के बारे में शाऊल से कहा। शाऊल ने आदेश दिया कि वे दाऊद को उसके पास लाएं। [32]दाऊद ने शाऊल से कहा, "किसी व्यक्ति को उसके कारण हतोत्साहित मत होने दो। मैं आपका सेवक हूँ। मैं इस पलिश्ती से लड़ने जाऊँगा।"

[33]शाऊल ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जा सकते और इस पलिश्ती गोलियत से नहीं लड़ सकते। तुम सैनिक भी नहीं हो!* तुम अभी बच्चे हो और गोलियत जब बच्चा था, तभी से युद्धों में लड़ रहा है।"

[34]किन्तु दाऊद ने शाऊल से कहा, "मैं आपका सेवक हूँ और मैं अपने पिता की भेड़ों की रखवाली भी करता रहा हूँ। यदि कोई शेर या रीछ आता और झुंड से किसी भेड़ को उठा ले जाता। [35]तो मैं उसका पीछा करता था। मैं उस जंगली जानवर पर आक्रमण करता था और उसके मुँह से भेड़ को बचा लेता था और उससे युद्ध करता था तथा उसे मार डालता था। [36]मैंने एक शेर और एक रीछ को मार डाला है! मैं उस विदेशी गोलियत को वैसे ही मार डालूँगा। गोलियत मरेगा, क्योंकि उसने साक्षात परमेश्वर की सेना का मजाक उड़ाया है। [37]यहोवा ने मुझे शेर और रीछ से बचाया है। यहोवा इस पलिश्ती गोलियत से भी मेरी रक्षा करेगा।"

शाऊल ने दाऊद से कहा, "जाओ यहोवा तुम्हारे साथ हो।" [38]शाऊल ने अपने वस्त्र दाऊद को पहनाये। शाऊल ने एक काँसे का टोप दाऊद के सिर पर रखा और उसके शरीर पर कवच पहनाया। [39]दाऊद ने तलवार ली और चारों ओर चलने का प्रयत्न किया। इस प्रकार दाऊद ने शाऊल की वर्दी को पहनने का प्रयत्न किया। किन्तु दाऊद को उन भारी चीज़ों को पहनने का अभ्यास नहीं था। दाऊद ने शाऊल से कहा, "मैं इन चीज़ों के साथ नहीं लड़ सकता। मेरा अभ्यास इनके लिये नहीं है।" इसलिये दाऊद ने उन सब को उतार दिया। [40]दाऊद ने अपनी छड़ी अपने हाथों में ली। घाटी से दाऊद ने पाँच चिकने पत्थर चुने। उसने पाँचों पत्थरों को अपने गड़रिये वाले थैले में रखा। उसने अपना गोफन (गुलेल) अपने हाथों में लिया और वह पलिश्ती (गोलियत) से मिलने चल पड़ा।

दाऊद, गोलियत को मार डालता है

[41]पलिश्ती (गोलियत) धीरे–धीरे दाऊद के समीप और समीपतर होता गया। गोलियत का सहायक उसकी ढाल लेकर उसके आगे चल रहा था। [42]गोलियत ने दाऊद को देखा और हँसा। गोलियत ने देखा कि दाऊद सैनिक नहीं है। वह तो केवल सुनहरे बालों वाला युवक है। [43]गोलियत ने दाऊद से कहा, "यह छड़ी किस लिये है? क्या तुम कुत्ते की तरह मेरा पीछा करके मुझे भगाने आये हो?" तब गोलियत ने अपने देवताओं का नाम लेकर दाऊद के विरुद्ध अपशब्द कहे। [44]गोलियत ने दाऊद से कहा, "यहाँ आओ, मैं तुम्हारे शरीर को पक्षियों और पशुओं को खिला दूँगा!"

[45]दाऊद ने पलिश्ती (गोलियत) से कहा, "तुम मेरे पास तलवार, बर्छा और भाला चलाने आये हो। किन्तु मैं तुम्हारे पास इस्राएल की सेना के परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा के नाम पर आया हूँ। तुमने उसके विरुद्ध बुरी बातें कहीं हैं। [46]आज यहोवा तुमको मेरे द्वारा पराजित कराएगा। मैं तुमको मार डालूँगा। आज मैं तुम्हारा सिर काट डालूँगा और तुम्हारे शरीर को पक्षियों और जंगली जानवरों को खिला दूँगा। हम लोग अन्य पलिश्तियों के साथ भी यही करेंगे। तब सारा संसार जानेगा कि इस्राएल में परमेश्वर है! [47]यहाँ इकट्ठे सभी लोग जानेंगे कि लोगों की रक्षा के लिये यहोवा को तलवार और भाले की आवश्यकता नहीं। युद्ध यहोवा का है और यहोवा तुम सभी पलिश्तियों को हराने में हमारी सहायता करेगा।"

[48]पलिश्ती (गोलियत) दाऊद पर आक्रमण करने उसके पास आया। दाऊद गोलियत से भिड़ने के लिये तेजी से दौड़ा [49]दाऊद ने एक पत्थर अपने थैले से निकाला। उसने उसे अपने गोफन (गुलेल) पर चढ़ाया और उसे चला दिया। पत्थर गुलेल से उड़ा और उसने गोलियत के

तुम सैनिक ... हो या "तुम केवल लड़के हो।" हिब्रू में प्राय: "लड़का" शब्द का अर्थ "सेवक" है या सैनिक का "शस्त्रवाहक" है।

माथे पर चोट की। पत्थर उसके सिर में गहरा घुस गया और गोलियत मुँह के बल गिर पड़ा।

[50]इस प्रकार दाऊद ने एक गोफन और एक पत्थर से पलिश्ती को हरा दिया। उसने पलिश्ती पर चोट की और उसे मार डाला। दाऊद के पास कोई तलवार नहीं थी। [51]इसलिए दाऊद दौड़ा और पलिश्ती की बगल में खड़ा हो गया। दाऊद ने गोलियत की तलवार उसकी म्यान से निकाली और उससे गोलियत का सिर काट डाला और इस तरह दाऊद ने पलिश्ती को मार डाला।

जब अन्य पलिश्तियों ने देखा कि उनका वीर मारा गया तो वे मुड़े और भाग गए। [52]इस्राएल और यहूदा के सैनिकों ने जयघोष किया और पलिश्तियों का पीछा करने लगे। इस्राएलियों ने लगातार गत की सीमा और एक्रोन के द्वार तक पलिश्तियों का पीछा किया। उन्होंने अनेकों पलिश्ती मार गिराए। उनके शव शारैंम सड़क पर गत और एक्रोन तक लगातर बिछ गए। [53]पलिश्तियों का पीछा करने के बाद इस्राएली पलिश्तियों के डेरे में लौटे। इस्राएली उस डेरे से बहुत सी चीज़ें ले गये।

[54]दाऊद पलिश्ती का सिर यरूशलेम ले गया। दाऊद ने पलिश्तियों के शस्त्रों को अपने पास अपने डेरे में रखा।

शाऊल दाऊद से डरने लगता है।

[55]शाऊल ने दाऊद को गोलियत से लड़ने के लिये जाते देखा था। शाऊल ने सेनापति अब्नेर से बातें की, "अब्नेर, उस युवक का पिता कौन है?" अब्नेर ने उत्तर दिया, "महाराज, मैं शपथ खाकर कहता हूँ–मैं नहीं जानता।"

[56]राजा शाऊल ने कहा, "पता लगाओ कि उस युवक का पिता कौन है?"

[57]जब दाऊद गोलियत को मारने के बाद लौटा तो अब्नेर उसे शाऊल के पास लाया। दाऊद तब भी पलिश्ती का सिर हाथ में पकड़ा हुआ था।

[58]शाऊल ने पूछा, "युवक तुम्हारा पिता कौन है?"

दाऊद ने उत्तर दिया, "मैं आपके सेवक बेतलेहेम के यिशै का पुत्र हूँ।"

दाऊद और योनातान की घनिष्ट मित्रता

18 दाऊद ने जब शाऊल से बात पूरी कर ली तब योनातान दाऊद का बहुत अभिन्न मित्र बन गया। योनातान दाऊद से उतना ही प्रेम करने लगा जितना अपने से।

[2]शाऊल ने उस दिन के बाद से दाऊद को अपने पास रखा। शाऊल ने दाऊद को उसके घर पिता के पास नहीं जाने दिया।

[3]योनातान दाऊद से बहुत प्रेम करता था। योनातान ने दाऊद से एक सन्धि की। [4]योनातान ने जो अंगरखा पहना हुआ था उसे उतारा और दाऊद को दे दिया। योनातान ने अपनी सारी वर्दी भी दाऊद को दे दी। योनातान ने अपना धनुष, अपनी तलवार और अपनी पेटी भी दाऊद को दी।

शाऊल का दाऊद की सफलता पर ध्यान देना

[5]शाऊल ने दाऊद को विभिन्न युद्धों में लड़ने भेजा। दाऊद बहुत सफल रहा। तब शाऊल ने उसे सैनिकों के ऊपर रख दिया। इससे सभी प्रसन्न हुये, यहाँ तक कि शाऊल के सभी अधिकारी भी इससे प्रसन्न हुए। [6]दाऊद पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ने जाया करता था। युद्ध के बाद वह घर लौटता था। इस्राएल के सभी नगरों में स्त्रियाँ दाऊद के स्वागत में उससे मिलने आती थी। वे हँसती नाचतीं और ढोलक एवं सितार बजाती थीं। वे शाऊल के सामने ही ऐसा किया करती थीं! [7]स्त्रियाँ गाती थीं,

"शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा।
दाऊद ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा!"

[8]स्त्रियों के इस गीत ने शाऊल को खिन्न कर दिया, वह बहुत क्रोधित हो गया। शाऊल ने सोचा, "स्त्रियाँ कहती हैं कि दाऊद ने दसियों हजार शत्रु मारे हैं और वे कहती हैं कि मैंने केवल हजार शत्रु ही मारे।" [9]इसलिये उस समय से आगे शाऊल दाऊद पर निगाह रखने लगा।

शाऊल दाऊद से भयभीत हुआ

[10]अगले दिन, परमेश्वर के द्वारा भेजी एक दुष्टात्मा शाऊल पर बलपूर्वक हावी हो गई। शाऊल अपने घर में वहशी* हो गया। दाऊद ने पहले की तरह वीणा बजाई। [11]किन्तु शाऊल के हाथ में भाला था। शाऊल ने सोचा,

---

वहशी या "शाऊल ने भविष्यवाणी की" हिब्रू शब्द का अर्थ है कि उस व्यक्ति का नियन्त्रण अपने कहे और किये पर न रहा। प्राय: इसका अर्थ यह होता है कि परमेश्वर अन्य लोगों को विशेष संदेश देने के लिये उस व्यक्ति का उपयोग कर रहे है।

"मैं दाऊद को दीवार में टाँक दूँगा।" शाऊल ने दो बार भाला चलाया, किन्तु दाऊद बच गया।

[12]यहोवा दाऊद के साथ था और यहोवा ने शाऊल को त्याग दिया था। इसलिए शाऊल दाऊद से भयभीत था।[13]शाऊल ने दाऊद को अपने से दूर भेज दिया। शाऊल ने दाऊद को एक हजार सैनिकों का सेनापति बना दिया। दाऊद ने युद्ध में सैनिकों का नेतृत्व किया। [14]यहोवा दाऊद के साथ था। अत: दाऊद सर्वत्र सफल रहता था। [15]शाऊल ने देखा कि दाऊद को बहुत अधिक सफलता मिल रही है तो शाऊल दाऊद से और भी अधिक भयभीत रहने लगा। [16]किन्तु इस्राएल और यहूदा के सभी लोग दाऊद से प्रेम करते थे। वे उससे प्रेम इसलिये करते थे क्योंकि वह युद्ध में उनका संचालन करता था और उनके लिये लड़ता था।

शाऊल की अपनी बेटी से दाऊद के विवाह की योजना

[17]शाऊल दाऊद को मार डालना चाहता था। शाऊल ने दाऊद को धोखा देने का एक उपाय सोचा। शाऊल ने दाऊद से कहा, "यह मेरी सबसे बड़ी पुत्री मेरब है। मैं तुम्हें इससे विवाह करने दूँगा। तब तुम शक्तिशाली योद्धा हो जाओगे। तुम हमारे पुत्र के समान होओगे। तब तुम जाना और यहोवा के युद्धों को लड़ना।" यह एक चाल थी। शाऊल सचमुच अब यह सोच रहा था, "इस प्रकार दाऊद को मुझे मारना नहीं पड़ेगा। मैं पलिश्तियों से उसे अपने लिए मरवा दूँगा!"

[18]किन्तु दाऊद ने कहा, "मैं किसी महत्वपूर्ण परिवार से नहीं हूँ और मेरी हस्ती ही क्या है? मैं एक राजा की पुत्री के साथ विवाह नहीं कर सकता हूँ!"

[19]फिर जब शाऊल की पुत्री मेरब का दाऊद के साथ विवाह का समय आया तब शाऊल ने महोलाई अद्रीएल से उसका विवाह कर दिया।

[20]शाऊल की दूसरी पुत्री मीकल दाऊद से प्रेम करती थी। लोगों ने शाऊल से कहा कि मीकल दाऊद से प्रेम करती है। इससे शाऊल को प्रसन्नता हुई। [21]शाऊल ने सोचा, "मैं मीकल का उपयोग दाऊद को फँसाने के लिये करूँगा। मैं मीकल को दाऊद से विवाह करने दूँगा और तब मैं पलिश्तियों को इसे मार डालने दूँगा।" अत: शाऊल ने दाऊद से दूसरी बार कहा, "आज तुम मेरी पुत्री से विवाह कर सकते हो।"

[22]शाऊल ने अपने अधिकारियों को आदेश दिया। उसने उनसे कहा, "दाऊद से अकेले में बातें करो। कहो, 'देखो, राजा तुमको पसन्द करता है। उसके अधिकारी तुमको पसन्द करते हैं। तुम्हें उसकी पुत्री से विवाह कर लेना चाहिये।'"

[23]शाऊल के अधिकारियों ने वे बात दाऊद से कही। किन्तु दाऊद ने उत्तर दिया, "क्या तुम लोग समझते हो कि राजा का दामाद बनना सरल है? मेरे पास इतना धन नहीं कि राजा की पुत्री के लिये दे सकूँ। मैं तो एक साधारण गरीब व्यक्ति हूँ।"

[24]शाऊल के अधिकारियों ने शाऊल को वह सब बताया जो दाऊद ने कहा था। [25] शाऊल ने उनसे कहा, "दाऊद से यह कहो, 'दाऊद, राजा यह नहीं चाहता कि तुम उसकी पुत्री के लिये धन दो!* शाऊल अपने शत्रुओं से बदला लेना चाहता है। इसलिए विवाह करने के लिये कीमत के रूप में केवल सौ पलिश्तियों की खलडियाँ है।'" यह शाऊल की गुप्त योजना थी। शाऊल ने सोचा कि पलिश्ती इस प्रकार दाऊद को मार डालेंगे।

[26]शाऊल के अधिकारियों ने दाऊद से ये बातें कहीं। दाऊद राजा का दामाद बनना चाहता था, इसलिए उसने तुरन्त ही कुछ कर दिखाया। [27]दाऊद और उसके व्यक्ति पलिश्तियों से लड़ने गये। उन्होंने दो सौ* पलिश्ती मार डाले। दाऊद ने इनके खलड़ियों को लिया और शाऊल को दे दिये। दाऊद ने यह इसलिये किया क्योंकि वह राजा का दामाद बनना चाहता था। शाऊल ने दाऊद को अपनी पुत्री मीकल से विवाह करने दिया। [28]शाऊल ने देखा कि यहोवा दाऊद के साथ था। किन्तु शाऊल ने यह भी ध्यान में रखा कि उसकी पुत्री मीकल दाऊद को प्यार करती है। [29]इसलिये शाऊल दाऊद से और भी अधिक भयभीत हुआ। शाऊल उस पूरे समय दाऊद के विरुद्ध रहा।

[30]इस्राएलियों के विरुद्ध लड़ने के लिये पलिश्ती सेनापति बाहर निकलते रहे। किन्तु हर बार दाऊद ने उनको हराया। दाऊद शाऊल के सभी अधिकारियों में सबसे अधिक सफल था सो दाऊद प्रसिद्ध हो गया।

उसकी पुत्री के लिये धन बाइबल के समय में जब कोई व्यक्ति विवाह करता था तो वधू के पिता को कुछ अवश्य देता था।

दो सौ प्राचीन ग्रीक अनुवाद में सौ है।

योनातान का दाऊद की सहायता करना

19 शाऊल ने अपने पुत्र योनातान और अपने अधिकारियों से दाऊद को मार डालने के लिये कहा। किन्तु योनातान दाऊद को बहुत चाहता था। [2-3]योनातान ने दाऊद को सावधान किया, "सावधान रहो! शाऊल तुमको मार डालने के अवसर की तलाश में है। सवेरे मैदान में जाकर छिप जाओ। मैं अपने पिता के साथ मैदान में जाऊँगा। हम मैदान में वहाँ खड़े रहेंगे जहाँ तुम छिपे होगे। मैं तुम्हारे बारे में अपने पिता स बातें करूँगा। तब जो मुझे ज्ञात होगा मैं तुमको बताऊँगा।"

[4]योनातान ने अपने पिता शाऊल से बातें कीं। योनातान ने दाऊद के बारे में अच्छी बातें कहीं। योनातान ने कहा, "आप राजा हैं। दाऊद आपका सेवक है। दाऊद ने आपको कोई हानि नहीं पहुँचाई है। इसलिए उसके साथ कुछ बुरा न करें। दाऊद सदा आपके प्रति अच्छा रहा है। [5]दाऊद अपने जीवन पर खेला था जब उसने पलिश्ती (गोलियत) को मारा था। यहोवा ने सारे इस्राएल के लिये एक बड़ी विजय प्राप्त की थी। आपने उसे देखा और आप उस पर बड़े प्रसन्न थे। आप दाऊद को हानि क्यों पहुँचाना चाहते हैं? वह निरपराध है। उसे मार डालने का कोई कारण नहीं है!"

[6]शाऊल ने योनातान की बात सुनी। शाऊल ने प्रतिज्ञा की। शाऊल ने कहा, "यहोवा के अस्तित्व के अटल सत्य की तरह, दाऊद भी मारा नहीं जाएगा।"

[7]अत: योनातान ने दाऊद को बुलाया। तब उसने दाऊद से वह सब कहा जो कहा गया था। तब योनातान, दाऊद को शाऊल के पास लाया। इस प्रकार शाऊल के साथ दाऊद पहले की तरह हो गया।

शाऊल, दाऊद को मारने का फिर प्रयत्न करता है

[8]युद्ध फिर आरम्भ हुआ और दाऊद पलिश्तियों से युद्ध करने गया। उसने पलिश्तियों को हराया और वे उसके आगे भाग खड़े हुए। [9]किन्तु यहोवा द्वारा शाऊल पर भेजी दुष्टात्मा उतरी। शाऊल अपने घर में बैठा था। शाऊल के हाथ में उसका भाला था। दाऊद वीणा बजा रहा था। [10]शाऊल ने अपने भाले को दाऊद के शरीर पर चला कर उसे दीवार पर टाँक देने का प्रयत्न किया। दाऊद भाले के रास्ते से कूद कर बच निकला और भाला दीवार से टकरा कर रह गया। अत: उसी रात दाऊद वहाँ से भाग निकला।

[11]शाऊल ने लोगों को दाऊद के घर भेजा। लोगों ने दाऊद के घर पर निगरानी रखी। वे रात भर वहीं ठहरे। वे सवेरे दाऊद को मार डालने की प्रतीक्षा कर रहे थे। किन्तु उसकी पत्नी मीकल ने उसे सावधान कर दिया। उसने कहा, "तुम्हें आज की रात भाग निकलना चाहिये और अपने जीवन की रक्षा करनी चाहिए। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो कल मार दिये जाओगे।" [12]तब मीकल ने एक खिड़की से उसे नीचे उतार दिया। दाऊद बच गया और वहाँ से भाग निकला। [13]मीकल ने अपने पारिवारिक देवता की मूर्ति को लिया और उसे बिस्तर पर लिटा दिया। मीकल ने उस मूर्ति पर कपड़े डाल दिये। उसने उसके सिर पर बकरी के बाल भी लगा दिये।

[14]शाऊल ने दाऊद को बन्दी बनाने के लिये दूत भेजे। किन्तु मीकल ने कहा, "दाऊद बीमार है।"

[15]सो वे लोग वहाँ से चले गये और उन्होंने शाऊल से जाकर यह बता दिया, किन्तु उसने दूतों को दाऊद को देखने के लिये वापस भेजा। शाऊल ने इन लोगों से कहा, "दाऊद को मेरे पास लाओ। यदि आवश्यकता पड़े तो उसे अपने बिस्तर पर लेटे हुये ही उठा लाओ। मैं उसे मार डालूँगा।"

[16]सो दूत फिर दाऊद के घर गये। वे दाऊद को पकड़ने भीतर गये, किन्तु वहाँ उन्होंने देखा कि बिस्तर पर केवल एक मूर्ति थी। उन्होंने देखा कि उसके बाल तो बस बकरी के बाल थे।

[17]शाऊल ने मीकल से कहा, "तुमने मुझे इस प्रकार धोखा क्यों दिया? तुमने मेरे शत्रु को भाग जाने दिया। दाऊद भाग गया है! मीकल ने शाऊल को उत्तर दिया, "दाऊद ने मुझसे कहा था कि वह मुझे मार डालेगा यदि मैं भाग जाने में उसकी सहायता नहीं करूँगी।"

दाऊद का रामा के डेरों में जाना

[18]दाऊद बच निकला। दाऊद शमूएल के पास रामा में भागकर पहुँचा। दाऊद ने शमूएल से वह सब बताया जो शाऊल ने उसके साथ किया था। तब दाऊद और शमूएल उन डेरों में गये जहाँ भविष्यवक्ता रहते थे। दाऊद वहीं रुका।

[19]शाऊल को पता चला कि दाऊद रामा के निकट डेरों में था। [20]शाऊल ने दाऊद को बन्दी बनाने के लिये लोगों को भेजा। किन्तु जब वे डेरों में आए तो उस समय नबियों का एक समूह भविष्यवाणी कर रहा था। शमूएल समूह का मार्ग दर्शन करता हुआ वहाँ खड़ा था। परमेश्वर की आत्मा शाऊल के दूतों पर उतरी और वे भविष्यवाणी करने लगे।

[21]शाऊल ने इस बारे में सुना, अत: उसने वहाँ अन्य दूत भेजे। किन्तु वे भी भविष्यवाणी करने लगे। इसलिये शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे और वे भी भविष्यवाणी करने लगे। [22]अन्तत:, शाऊल स्वयं रामा पहुँचा। शाऊल सेकू में खलिहान के समीप एक बड़े कुँए के पास आया। शाऊल ने पूछा, "शमूएल और दाऊद कहाँ है?" लोगों ने उत्तर दिया, "रामा के निकट डेरे में।"

[23]तब शाऊल रामा के निकट डेरे में गया। परमेश्वर की आत्मा शाऊल पर भी उतरी और शाऊल ने भविष्यवाणी करनी आरम्भ की। शाऊल रामा के डेरे तक अधिकाधिक भविष्यवाणीयाँ लगातार करता गया। [24]तब शाऊल ने अपने वस्त्र उतारे। इस प्रकार शाऊल भी शमूएल के सामने भविष्यवाणी कर रहा था। शाऊल वहाँ सारे दिन और सारी रात नंगा लेटा रहा।

यही कारण है कि लोग कहते हैं, "क्या शाऊल नबियों में से कोई एक है?"

दाऊद और योनातान एक सन्धि करते हैं

20 दाऊद रामा के निकट के डेरे से भाग गया। दाऊद योनातान के पास पहुँचा और उससे पूछा, "मैंने कौन सी गलती की है? मेरा अपराध क्या है? तुम्हारा पिता मुझे मारने का प्रयत्न क्यों कर रहा है?"

[2]योनातान ने उत्तर दिया, "मेरे पिता तुमको मारने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं! मेरे पिता मुझसे पहले कहे बिना कुछ नहीं करते। यह महत्वपूर्ण नहीं कि वह बात बहुत महत्वपूर्ण हो या तुच्छ, मेरे पिता सदा मुझे बताते हैं। मेरे पिता मुझसे यह बताने से क्यों इन्कार करेंगे कि वे तुमको मार डालना चाहते हैं? नहीं, यह सत्य नहीं है!"

[3]किन्तु दाऊद ने उत्तर दिया, "तुम्हारे पिता अच्छी तरह जानते हैं कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ। तुम्हारे पिता ने अपने मन में यह सोचा है, 'योनातान को इस विषय में जानकारी नहीं होनी चाहिये। यदि वह जानेगा तो दाऊद से कह देगा।' किन्तु जैसे यहोवा का होना सत्य है और तुम जीवित हो, उसी प्रकार यह भी सत्य है कि मैं मृत्यु के बहुत निकट हूँ!"

[4]योनातान ने दाऊद से कहा, "मैं वह सब कुछ करूँगा जो तुम मुझसे करवाना चाहो।"

[5]तब दाऊद ने कहा, "देखो, कल नया चाँद का महोत्सव* है और मुझे राजा के साथ भोजन करना है। किन्तु मुझे सन्ध्या तक मैदान में छिपे रहने दो। [6]यदि तुम्हारे पिता को यह दिखाई दे कि मैं चला गया हूँ, तो उनसे कहो कि, 'दाऊद अपने घर बेतलेहेम जाना चाहता था। उसका परिवार इस मासिक बलि के लिए स्वयं ही दावत कर रहा है। दाऊद ने मुझसे पूछा कि मैं उसे बेतलेहेम जाने और उसके परिवार से उसे मिलने दूँ' [7]यदि तुम्हारे पिता कहते हैं, 'बहुत अच्छा हुआ,' तो मैं सुरक्षित हूँ। किन्तु यदि तुम्हारे पिता क्रोधित होते हैं तो समझो कि मेरा बुरा करना चाहते हैं। [8]योनातान मुझ पर दया करो। मैं तुम्हारा सेवक हूँ। तुमने यहोवा के सामने मेरे साथ सन्धि की है। यदि मैं अपराधी हूँ तो तुम स्वयं मुझे मार सकते हो! किन्तु मुझे अपने पिता के पास मत ले जाओ।"

[9]योनातान ने उत्तर दिया, "नहीं, कभी नहीं! यदि मैं जान जाऊँगा कि मेरे पिता तुम्हारा बुरा करना चाहते हैं तो तुम्हें सावधान कर दूँगा।"

[10]दाऊद ने कहा, "यदि तुम्हारे पिता तुम्हें कठोरता से उत्तर देते हैं तो उसके बारे में मुझे कौन बताएगा?"

[11]तब योनातान ने कहा, "आओ, हम लोग मैदान में चलें।" सो योनातान और दाऊद एक साथ मैदान में चले गए।

[12]योनातान ने दाऊद से कहा, "मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा के सामने यह प्रतिज्ञा करता हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं पता लगाऊँगा कि मेरे पिता तुम्हारे प्रति कैसा भाव रखते हैं। मैं पता लगाऊँगा कि वे तुम्हारे बारे में अच्छा भाव रखते हैं या नहीं। तब तीन दिन में, मैं तुम्हें मैदान में सूचना भेजूँगा। [13]यदि मेरे पिता तुम पर चोट करना चाहते हैं तो मैं तुम्हें जानकारी दूँगा। मैं तुमको यहाँ से सुरक्षित

नया चाँद का महोत्सव यहूदी महीने का पहला दिन। यह विश्राम और उपासना के लिये विशेष दिन था। लोग एक साथ मिलते थे और मेलबलि में हिस्सा लेते थे जैसा कि लैव्य. 7:16–21 में वर्णित है।

जाने दूँगा। यहोवा मुझे दण्ड दे यदि मैं ऐसा न करुँ। यहोवा तुम्हारे साथ रहे जैसे वह मेरे पिता के साथ रहा है। [14]जब तक मैं जीवित रहूँ मेरे ऊपर दया रखना और जब मैं मर जाऊँ तो [15]मेरे परिवार पर दया करना बन्द न करना। यहोवा तुम्हारे सभी शत्रुओं को पृथ्वी पर से नष्ट कर देगा। [16] यदि उस समय योनातान का परिवार दाऊद के परिवार से पृथक किया जाना ही हो, तो उसे हो जाने देना। दाऊद के शत्रुओं को यहोवा दण्ड दे।"

[17]तब योनातान ने दाऊद से कहा कि वह उसके प्रति प्रेम की प्रतिज्ञा को दुहराये। योनातान ने यह इसलिए किया क्योंकि वह दाऊद से उतना ही प्रेम करता था जितना अपने आप से।

[18]योनातान ने दाऊद से कहा, "कल नया चाँद का उत्सव है। तुम्हारा आसन खाली रहेगा। इसलिए मेरे पिता समझ जाएंगे कि तुम चले गये हो। [19]तीसरे दिन उसी स्थान पर जाओ जहाँ तुम इस परेशानी के प्रारम्भ होने के समय छिपे थे। उस पहाड़ी की बगल में प्रतीक्षा करो। [20]तीसरे दिन, मैं उस पहाड़ी पर ऐसे जाऊँगा जैसे मैं किसी लक्ष्य को बेध रहा हूँ। मैं कुछ बाणों को छोड़ूँगा। [21]तब मैं, बाणों का पता लगाने के लिये, अपने शस्त्रवाहक लड़के से जाने के लिये कहूँगा। यदि सब कुछ ठीक होगा तो मैं लड़के से कहूँगा, 'तुम बहुत दूर निकल गए हो! बाण मेरे करीब ही है। लौटो और उन्हें उठा लाओ।' यदि मैं ऐसा कहूँ तो तुम छिपने के स्थान से बाहर आ सकते हो। मैं वचन देता हूँ कि जैसे यहोवा शाश्वत है वैसे ही तुम सुरक्षित हो। कोई भी खतरा नहीं है। [22]किन्तु यदि खतरा होगा तो मैं लड़के से कहूँगा। 'बाण बहुत दूर है, जाओ और उन्हें लाओ।' यदि मैं ऐसा कहूँ तो तुम्हें चले जाना चाहिये। यहोवा तुम्हें दूर भेज रहा है। [23]तुम्हारे और मेरे बीच की इस सन्धि को याद रखो। यहोवा सदैव के लिये हमारा साक्षी है!"

[24] तब दाऊद मैदान में जा छिपा।

उत्सव में शाऊल के इरादे

नया चाँद के उत्सव का समय आया और राजा भोजन करने बैठा। [25]राजा दीवार के निकट वहीं बैठा जहाँ वह प्राय: बैठा करता था। योनातान शाऊल के दूसरी ओर सामने बैठा। अब्नेर शाऊल के बाद बैठा। किन्तु दाऊद का स्थान खाली था। [26]उस दिन शाऊल ने कुछ नहीं कहा। उसने सोचा, "सम्भव है दाऊद को कुछ हुआ हो और वह शुद्ध* न हो।"

[27]अगले दिन, महीने के दूसरे दिन, दाऊद का स्थान फिर खाली था। तब शाऊल ने अपने पुत्र योनातान से पूछा, "यिशै का पुत्र नया चाँद के उत्सव में कल या आज क्यों नहीं आया?"

[28]योनातान ने उत्तर दिया, "दाऊद ने मुझसे बेतलेहेम जाने देने के लिये कहा था। [29]उसने कहा था, 'मुझे जाने दो। मेरा परिवार बेतलेहेम में एक बलि-भेंट कर रहा है। मेरे भाई ने वहाँ रहने का आदेश दिया है। अब यदि मैं तुम्हारा मित्र हूँ तो मुझे जाने दो और भाईयों से मिलने दो।' यही कारण है कि दाऊद राजा की मेज पर नहीं आया है।"

[30]शाऊल योनातान पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने योनातान से कहा, "तुम उस एक दासी के पुत्र हो, जो आज्ञा पालन करने से इन्कार करती है और तुम ठीक उसी तरह के हो। मैं जानता हूँ कि तुम दाऊद के पक्ष में हो। तुम अपनी माँ और अपने लिये लज्जा का कारण हो। [31]जब तक यिशै का पुत्र जीवित रहेगा तब तक तुम कभी राजा नहीं बनोगे, न तुम्हारा राज्य होगा। अब दाऊद को हमारे पास लाओ। वह एक मरा व्यक्ति है!"

[32]योनातान ने अपने पिता से पूछा, "दाऊद को क्यों मार डाला जाना चाहिये? उसने क्या अपराध किया है?"

[33]किन्तु शाऊल ने अपना भाला योनातान पर चलाया और उसे मार डालने का प्रयन्त किया। अत: योनातान ने समझ लिया कि मेरा पिता दाऊद को निश्चित रूप से मार डालने का इच्छुक है। [34]योनातान क्रोधित हुआ और उसने मेज छोड़ दी। योनातान इतना घबरा गया और अपने पिता पर इतना क्रोधित हुआ कि उसने दावत के दूसरे दिन कुछ भी भोजन करना अस्वीकार कर दिया। योनातान इसलिये क्रोधित हुआ क्योंकि शाऊल ने उसे अपमानित किया था और शाऊल दाऊद को मार डालना चाहता था।

दाऊद और योनातान का विदा लेना

[35]अगली सुबह योनातान मैदान में गया। वह दाऊद से मिलने गया, जैसा उन्होंने तय किया था। योनातान एक

शुद्ध "स्वीकार्य" पवित्र या परमेश्वर की उपासना में काम आने योग्य। देखें लैव्य. 11:15 जिसमें शुद्ध और अशुद्ध चीज़ों के विषय में पुराने नियम के नियम दिये गये हैं।

शस्त्रवाहक लड़के को अपने साथ लाया। [36]योनातान ने लड़के से कहा, "दौड़ो, और जो बाण मैं चलाता हूँ, उन्हें लाओ।" लड़के ने दौड़ना आरम्भ किया और योनातान ने उसके सिर के ऊपर से बाण चलाए। [37]लड़का उस स्थान को दौड़ा, जहाँ बाण गिरा था। किन्तु योनातान ने पुकारा, "बाण बहुत दूर है!" [38]तब योनातान जोर से चिल्लाया "जल्दी करो! उन्हें लाओ! वहीं पर खड़े न रहो!" लड़के ने बाणों को उठाया और अपने स्वामी के पास वापस लाया। [39]लड़के को कुछ पता न चला कि हुआ क्या। केवल योनातान और दाऊद जान सके। [40]योनातान ने अपना धनुष बाण लड़के को दिया। तब योनातान ने लड़के से कहा, "नगर को लौट जाओ।"

[41]लड़का चल पड़ा, और दाऊद अपने उस छिपने के स्थान से बाहर आया जो पहाड़ी के दूसरी ओर था। दाऊद ने भूमि तक अपने सिर को झुकाकर योनातान के सामने प्रणाम किया। दाऊद तीन बार झुका। तब दाऊद और योनातान ने एक दूसरे का चुम्बन लिया। वे दोनों एक साथ रोये, किन्तु दाऊद योनातान से अधिक रोया।

[42]योनातान ने दाऊद से कहा, "शान्तिपूर्वक जाओ। हम लोगों ने यहोवा का नाम लेकर मित्र होने की प्रतिज्ञा की थी। हम लोगों ने कहा था कि यहोवा हम लोगों और हमारे वंशजों के बीच सदा साक्षी रहेगा।"

दाऊद का याजक अहीमेलेक से मिलने जाना

21 तब दाऊद चला गया और योनातान नगर को लौट गया। [2]दाऊद नोब नामक नगर में याजक अहीमेलेक से मिलने गया।

अहीमेलेक दाऊद से मिलने बाहर गया। अहीमेलेक भय से काँप रहा था। अहीमेलेक ने दाऊद से पूछा, "तुम अकेले क्यों हो? तुम्हारे साथ कोई व्यक्ति क्यों नहीं है?"

[3]दाऊद ने अहीमेलेक को उत्तर दिया, "राजा ने मुझको विशेष आदेश दिया है। उसने मुझसे कहा है, 'इस उद्देश्य को किसी को न जानने दो। कोई भी व्यक्ति उसे न जाने जिसे मैंने तुम्हें करने को कहा है।' मैंने अपने व्यक्तियों से कह दिया है कि वे कहाँ मिलें। [4]अब यह बताओ कि तुम्हारे पास भोजन के लिये क्या है? मुझे पाँच रोटियाँ या जो कुछ खाने को है, दो।"

[5]याजक ने दाऊद से कहा, "मेरे पास यहाँ सामान्य रोटियाँ नहीं हैं। किन्तु मेरे पास कुछ पवित्र रोटी* तो है। तुम्हारे अधिकारी उसे खा सकते हैं, यदि उन्होंने किसी स्त्री के साथ इन दिनों शारीरिक सम्बन्ध न किया हो।"*

[6]दाऊद ने याजक को उत्तर दिया, "हम लोग इन दिनों किसी स्त्री के साथ नहीं रहे हैं। हमारे व्यक्ति अपने शरीर को पवित्र रखते हैं जब कभी हम युद्ध करने जाते हैं, यहाँ तक कि सामान्य उद्देश्य के लिये जाने पर भी* और आज के लिए तो यह विशेष रूप से सच है क्योंकि हमारा काम अति विशिष्ट है।"

[7]वहाँ पवित्र रोटी के अतिरिक्त कोई रोटी नहीं थी। अत: याजक ने दाऊद को वही रोटी दी। यह वह रोटी थी जिसे याजक यहोवा के सामने पवित्र मेज पर रखते थे। वे हर एक दिन इस रोटी को हटा लेते थे और उसकी जगह ताजी रोटी रखते थे।

[8]उस दिन शाऊल के अधिकारियों में से एक वहाँ था। वह एदोमी दोएग था। दोएग को वहाँ यहोवा के सामने रखा गया था।* दोएग शाऊल के गड़ेरियों* का मुखिया था।

[9]दाऊद ने अहीमेलेक से पूछा, "क्या तुम्हारे पास यहाँ कोई भाला या तलवार है? राजा का कार्य बहुत जरूरी है। मुझे शीघ्रता से जाना है और मैं अपनी तलवार या अन्य कोई शस्त्र नहीं ला सका हूँ।"

पवित्र रोटी यह विशेष रोटी होती थी जो पवित्र तम्बू में रखी जाती थी। इसे "दर्शनी रोटी" या "उपस्थिति की रोटी" भी कहते हैं। इसे केवल याजक ही खा सकते थे। देखें लैव्य. 24:5–9

किसी स्त्री ... हो यह व्यक्ति को अशुद्ध करने वाला था और ऐसा व्यक्ति परमेश्वर को भेंट में चढ़ाकर पवित्र बनाई गई किसी सामग्री को नहीं खा सकता था। देखें लैव्य. 7:21; 15:1–33

हमारे व्यक्ति ... पर भी देखें 2शमू 11:11 और व्यवस्था. 23:9–14 के नियम।

दोएग ... गया था इसका अर्थ यह हो सकता है कि दोएग परमेश्वर के लिये विशेष प्रतिज्ञा के एक भाग के रूप में वहाँ था या किसी अन्य धार्मिक कारण से वहाँ था। या इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह वहाँ इसलिये रोका गया था कि उसने कोई अपराध किया था जैसे संयोगवश किसी को मार डालना।

गड़ेरिया या दूत।

[10]याजक ने उत्तर दिया, "एक मात्र तलवार जो यहाँ है वह पलिश्ती (गोलियत) की है। यह वही तलवार है जिसे तुमने उससे तब लिया था जब तुमने उसे एला की घाटी में मारा था। वह तलवार एक कपड़े में लिपटी हुई एपोद के पीछे रखी है। यदि तुम चाहो तो उसे ले सकते हो।"

दाऊद ने कहा, "इसे मुझे दो। गोलियत की तलवार के समान कोई तलवार नहीं है।"

दाऊद का गत को जाना

[11]उस दिन दाऊद शाऊल के यहाँ से भाग गया। दाऊद गत के राजा आकीश के पास गया। [12]आकीश के अधिकारियों को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कहा, "यह इस्राएल प्रदेश का राजा दाऊद है। यही वह व्यक्ति है जिसका गीत इस्राएली गाते हैं। वे नाचते हैं और यह गीत गाते है:

"शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा
दाऊद ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा!"

[13]दाऊद को ये बातें याद थीं। दाऊद गत के राजा आकीश से बहुत भयभीत था। [14]इसलिए दाऊद ने आकीश और उसके अधिकारियों के सामने अपने को विक्षिप्त दिखाने का बहाना किया। जब तक दाऊद उनके साथ रहा उसने विक्षिप्तों जैसा व्यवहार किया। वह द्वार के दरवाजों पर थूक देता था। वह अपने थूक को अपनी दाढ़ी पर गिरने देता था।

[15]आकीश ने अपने अधिकारियों से कहा, "इस व्यक्ति को देखो। यह तो विक्षिप्त है! तुम लोग इसे मेरे पास क्यों लाए हो?" [16]मेरे पास तो वैसे ही बहुत से विक्षिप्त हैं। मैं तुम लोगों से यह नहीं चाहता कि तुम इस व्यक्ति को मेरे घर पर विक्षिप्त जैसा काम करने को लाओ। इस व्यक्ति को मेरे घर में फिर न आने देना।"

दाऊद का विभिन्न स्थानों पर जाना

22 दाऊद ने गत को छोड़ दिया। दाऊद अदुल्लाम की गुफा* में भाग गया। दाऊद के भाईयों और सम्बन्धियों ने सुना कि दाऊद अदुल्लाम में था। वे दाऊद को देखने वहाँ गए। [2]बहुत से लोग दाऊद के साथ हो लिये। वे सभी लोग, जो किसी विपत्ति में थे या कर्ज में थे या असंतुष्ट थे, दाऊद के साथ हो लिए। दाऊद उनका मुखिया बन गया। दाऊद के पास लगभग चार सौ पुरुष थे।

[3]दाऊद ने अदुल्लाम को छोड़ दिया और वह मोआब मे स्थित मिस्पा को चला गया। दाऊद ने मोआब के राजा से कहा, "कृपया मेरे माता–पिता को आने दें और अपने पास तब तक रहने दें जब तक मैं यह न समझ सकूँ कि परमेश्वर मेरे साथ क्या करने जा रहा है।" [4]दाऊद ने अपने माता–पिता को मोआब के राजा के पास छोड़ा। दाऊद के माता–पिता मोआब के राजा के पास तब तक ठहरे जब तक दाऊद किले में रहा।

[5]किन्तु नबी गाद ने दाऊद से कहा, "गढ़ी में मत ठहरो। यहूदा प्रदेश में जाओ।" इसलिये दाऊद वहाँ से चल पड़ा और हेरेत के जंगल में गया।

शाऊल का अहीमेलेक के परिवार को नष्ट करना

[6]शाऊल ने सुना कि लोग दाऊद और उसके लोगों के बारे में जान गए हैं। शाऊल गिबा में पहाड़ी पर एक पेड़ के नीचे बैठा था। शाऊल के हाथ में उसका भाला था। शाऊल के सभी अधिकारी उसके चारों ओर खड़े थे। [7]शाऊल ने अपने उन अधिकारियों से कहा, जो उसके चारों ओर खड़े थे, "बिन्यामीन के लोगों सुनो! क्या तुम लोग समझते हो कि यिशै का पुत्र (दाऊद) तुम्हें खेत और अंगूरों के बाग देगा? क्या तुम समझते हो कि वह तुमको उन्नति देगा और तुम्हें एक हजार व्यक्तियों और एक सौ व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी बनाएगा। [8]तुम लोग मेरे विरुद्ध षड़यन्त्र रच रहे हो। तुमने गुप्त योजनायें बनाई हैं। तुम में से किसी ने भी मेरे पुत्र योनातान के बारे में नहीं बताया है। तुममें से किसी ने भी यह नहीं बताया है कि उसने यिशै के पुत्र के साथ क्या सन्धि की है। तुममें से कोई भी मेरी परवाह नहीं करता। तुममें से किसी ने यह नहीं बताया कि मेरे पुत्र योनातान ने दाऊद को उकसाया है। योनातान ने मेरे सेवक दाऊद से कहा कि वह छिप जाए और मुझ पर आक्रमण करे और यह वही है जो दाऊद अब कर रहा है।"

[9]एदोमी दोएग शाऊल के अधिकारियों के साथ खड़ा था। दोएग ने कहा, "मैंने यिशै के पुत्र दाऊद को नोब में देखा है। दाऊद अहितूब के पुत्र अहीमेलेक से मिलने आया। [10]अहीमेलेक ने यहोवा से दाऊद के लिये प्रार्थना की। अहीमेलेक ने दाऊद को भोजन भी दिया और

गुफा संभवत: "किला।"

अहीमेलेक ने दाऊद को पलिश्ती (गोलियत) की तलवार भी दी।"

[11]तब राजा शाऊल ने कुछ लोगों को आज्ञा दी कि वे याजक को उसके पास लेकर आएं। शाऊल ने उनसे अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक और उसके सभी सम्बन्धियों को लाने को कहा। अहीमेलेक के सम्बन्धी नोब में याजक थे। वे सभी राजा के पास आए। [12]शाऊल ने अहीमेलेक से कहा, "अहीतूब के पुत्र, अब सुन लो।" अहीमेलेक ने उत्तर दिया, "हाँ, महाराज।"

[13]शाऊल ने अहीमेलेक से कहा, "तुमने और यिशै के पुत्र (दाऊद) ने मेरे विरुद्ध गुप्त योजना क्यों बनाई? तुमने दाऊद को रोटी और तलवार दी! तुमने परमेश्वर से उसके लिये प्रार्थना की और अब सीधे, दाऊद मुझ पर आक्रमण करने की प्रतीक्षा कर रहा है!"

[14]अहीमेलेक ने उत्तर दिया, "दाऊद तुम्हारा बड़ा विश्वास पात्र है। तुम्हारे अधिकारियों में कोई उतना विश्वस्त नहीं है जितना दाऊद है। दाऊद तुम्हारा अपना दामाद है और दाऊद तुम्हारे अंगरक्षकों का नायक है। तुम्हारा अपना परिवार दाऊद का सम्मान करता है। [15]वह पहली बार नहीं था, कि मैंने दाऊद के लिये परमेश्वर से प्रार्थना की। ऐसी बात बिल्कुल नहीं है। मुझे या मेरे किसी सम्बन्धी को दोष मत लगाओ। हम तुम्हारे सेवक हैं। मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं है कि यह सब हो क्या रहा है?"

[16]किन्तु राजा ने कहा, "अहीमेलेक, तुम्हें और तुम्हारे सभी सम्बन्धियों को मरना है।" [17]तब राजा ने अपने बगल में खड़े रक्षकों से कहा, "जाओ और यहोवा के याजकों को मार डालो। यह इसलिए करो क्योंकि वे भी दाऊद के पक्ष में हैं। वे जानते थे कि दाऊद भागा है, किन्तु उन्होंने मुझे बताया नहीं।" किन्तु राजा के अधिकारियों ने यहोवा के याजकों को मारने से इन्कार कर दिया।

[18]अत: राजा ने दोएग को आदेश दिया। शाऊल ने कहा, "दोएग, तुम जाओ और याजकों को मार डालो।" इसलिए एदोमी दोएग गया और उसने याजकों को मार डाला। उस दिन दोएग ने पचासी, सन के एपोद धारण करने वालों को मार डाला।

[19]नोब याजकों का नगर था। दोएग ने नोब के सभी लोगों को मार डाला। दोएग ने अपनी तलवार का उपयोग किया और उसने सभी पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों और छोटे शिशुओं को भी मार डाला। दोएग ने उनकी गायों, खच्चरों और भेड़ों तक को मार डाला।

[20]किन्तु एब्यातार वहाँ से बच निकला। एब्यातार अहीमेलेक का पुत्र था। अहीमेलेक अहीतूब का पुत्र था। एब्यातार बच निकला और दाऊद से मिल गया। [21]एब्यातार ने दाऊद से कहा कि शाऊल ने यहोवा के याजकों को मार डाला है। [22]तब दाऊद ने एब्यातार से कहा, "मैंने एदोमी दोएग को उस दिन नोब में देखा था और मैं जानता था कि वह शाऊल से कहेगा। मैं तुम्हारे पिता के परिवार की मृत्यु के लिये उत्तरदायी हूँ। [23]जो व्यक्ति (शाऊल) तुमको मारना चाहता है वह मुझको भी मारना चाहता है। मेरे साथ ठहरो। डरो नहीं। तुम मेरे साथ सुरक्षित रहोगे।"

दाऊद कीला में

23 लोगों ने दाऊद से कहा, "देखो, पलिश्ती कीला के विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं। वे खलिहानों से अन्न लूट रहे हैं।"

[2]दाऊद ने यहोवा से पूछा, "क्या मैं जाऊँ और इन पलिश्तियों से लड़ूँ?" यहोवा ने दाऊद को उत्तर दिया, "जाओ और पलिश्तियों पर आक्रमण करो। कीला को बचाओ।"

[3]किन्तु दाऊद के लोगों ने उससे कहा, "देखो, हम यहाँ यहूदा में हैं और हम भयभीत हैं। तनिक सोचो तो सही कि हम तब कितने भयभीत होंगे जब वहाँ जाएंगे जहाँ पलिश्ती सेना है।"

[4]दाऊद ने फिर यहोवा से पूछा। यहोवा ने दाऊद को उत्तर दिया, "कीला को जाओ। मैं तुम्हारी सहायता पलिश्तियों को हराने में करूँगा।" [5]इसलिये दाऊद और उसके लोग कीला को गये। दाऊद के लोग पलिश्तियों से लड़े। दाऊद के लोगों ने पलिश्तियों को हराया और उनकी गायें ले लीं। इस प्रकार दाऊद ने कीला के लोगों को बचाया। [6](जब एब्यातार दाऊद के पास भाग कर गया था तब एब्यातार अपने साथ एक एपोद ले गया था।)

[7]लोगों ने शाऊल से कहा कि अब दाऊद कीला में है। शाऊल ने कहा, "परमेश्वर ने दाऊद को मुझे दे दिया है। दाऊद स्वयं जाल में फँस गया है। वह ऐसे नगर में गया है जिसके द्वार को बन्द करने के लिये दरवाजे और छड़ें हैं।" [8]शाऊल ने युद्ध के लिये अपनी सारी सेना को एक

साथ बुलाया। उन्होंने अपनी तैयारी कीला जाने और दाऊद तथा उसके लोगों पर आक्रमण के लिये की।

[9]दाऊद को पता लगा कि शाऊल उसके विरुद्ध योजना बना रहा है। दाऊद ने तब याजक एब्यातार से कहा, "एपोद लाओ।"

[10]दाऊद ने प्रार्थना की, "यहोवा इस्राएल के परमेश्वर, मैंने सुना है कि शाऊल कीला में आने और मेरे कारण इसे नष्ट करने की योजना बना रहा है। [11]क्या शाऊल कीला में आएगा? क्या कीला के लोग मुझे शाऊल को दे देंगे? यहोवा इस्राएल के परमेश्वर, मैं तेरा सेवक हूँ! कृपया मुझे बता!" यहोवा ने उत्तर दिया, "शाऊल आएगा।"

[12]दाऊद ने फिर पूछा, "क्या कीला के लोग मुझे और मेरे लोगों को शाऊल को दे देंगे।"

यहोवा ने उत्तर दिया, "वे ऐसा करेंगे।"

[13]इसलिये दाऊद और उसके लोगों ने कीला को छोड़ दिया। वहाँ लगभग छ: सौ पुरुष थे जो दाऊद के साथ गए। दाऊद और उसके लोग एक स्थान से दूसरे स्थान घूमते रहे। शाऊल को पता लग गया कि दाऊद कीला से बच निकला। इसलिए शाऊल उस नगर को नहीं गया।

शाऊल दाऊद का पीछा करता है

[14]दाऊद मरुभूमि में चला गया और वहाँ किलों* में ठहर गया। दाऊद जीप की मरुभूमि के पहाड़ी देश में भी गया। शाऊल प्रतिदिन दाऊद की खोज करता था, किन्तु यहोवा शाऊल को दाऊद को पकड़ने नहीं देता था।

[15]दाऊद जीप की मरुभूमि में होरेश में था। वह भयभीत था क्योंकि शाऊल उसे मारने आ रहा था। [16]किन्तु शाऊल का पुत्र योनातान होरेश में दाऊद से मिलने गया। योनातान ने परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास रखने में दाऊद की सहायता की। [17] योनातान ने दाऊद से कहा, "डरो नहीं। मेरे पिता शाऊल तुम्हें चोट नहीं पहुँचा सकते। तुम इस्राएल के राजा बनोगे। मैं तुम्हारे बाद दूसरे स्थान पर रहूँगा। मेरे पिता भी यह जानते हैं।"

[18]योनातान और दाऊद दोनों ने यहोवा के सामने सन्धि की। तब योनातान घर चला गया और दाऊद होरेश में टिका रहा।

जीप के लोग शाऊल को दाऊद के बारे में बताते हैं

[19]जीप के लोग गिबा में शाऊल के पास आए। उन्होंने शाऊल से कहा, "दाऊद हम लोगों के क्षेत्र में छिपा है। वह होरेश के किले में है। वह हकीला पहाड़ी पर यशीमोन के दक्षिण में है। [20]महाराज आप जब चाहें आएं। यह हम लोगों का कर्तव्य है कि हम आपको दाऊद को दें।"

[21]शाऊल ने उत्तर दिया, "यहोवा आप लोगों को मेरी सहायता के लिये आशीर्वाद दे। [22]जाओ और उसके बारे में और अधिक पता लगाओ। पता लगाओ कि दाऊद कहाँ ठहरा है। पता लगाओ कि दाऊद को वहाँ किसने देखा है। शाऊल ने सोचा, 'दाऊद चतुर है। वह मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहा है।' [23]छिपने के जिन स्थानों का उपयोग दाऊद कर रहा है, उन सभी को पता लगाओ और मेरे पास वापस लौटो तथा मुझे सब कुछ बताओ। तब मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। यदि दाऊद उस क्षेत्र में होगा तो मैं उसका पता लगाऊँगा। मैं उसका पता तब भी लगा लूँगा यदि मुझे यहूदा के सभी परिवारों की तलाशी लेनी पड़े।"

[24]तब जीपी निवासी जीप को लौट गए। शाऊल वहाँ बाद में गया।

दाऊद और उसके लोग माओन की मरुभूमि में थे। वे यशीमोन के दक्षिण में मरुभूमि क्षेत्र में थे। [25]शाऊल और उसके लोग दाऊद की खोज करने गये। किन्तु लोगों ने दाऊद को सावधान कर दिया। उन्होंने बताया कि शाऊल उसकी तलाश कर रहा है। दाऊद तब माओन की मरुभूमि में नीचे की ओर चट्टान पर गया। शाऊल ने सुना कि दाऊद माओन की मरुभूमि में गया है। इसलिये शाऊल उस स्थान पर दाऊद को पकड़ने गया।

[26]शाऊल पर्वत की एक ओर था। दाऊद और उसके लोग उसी पर्वत की दूसरी ओर थे। दाऊद शाऊल से दूर निकल जाने के लिये शीघ्रता कर रहा था। शाऊल और उसके सैनिक पर्वत के चारों ओर दाऊद और उसके लोगों को पकड़ने जा रहे थे।

[27]तभी शाऊल के पास एक दूत आया। दूत ने कहा, "शीघ्रता करो! पलिश्ती हम पर आक्रमण कर रहें हैं!"

[28]इसलिये शाऊल ने दाऊद का पीछा करना छोड़ दिया और पलिश्तियों से लड़ने निकल गया। यही कारण है कि लोग उस स्थान को "फिसलनी चट्टान"*कहते

किला कोई भवन या नगर जिसकी दीवारें सुरक्षा के लिये ऊँची और मजबूत हों।

फिसलनी चट्टान या "सेला-हम्महलकोत।"

हैं। [29]दाऊद ने माओन की मरुभूमि को छोड़ा और एनगदी के समीप के किले में गया।

दाऊद शाऊल को लज्जित करता है

24 जब शाऊल ने पलिश्तियों को पीछा करके भगा दिया तब लोगों ने शाऊल से कहा, "दाऊद एनगदी के पास के मरुभूमि क्षेत्र में है। "

[2]इसलिये शाऊल ने पूरे इस्राएल में से तीन हजार लोगों को चुना। शाऊल ने इन व्यक्तियों को साथ लिया और दाऊद तथा उसके लोगों की खोज आरम्भ की। उन्होंने "जंगली बकरियों की चट्टान" के समीप खोजा। [3]शाऊल सड़क के किनारे भेड़ों के बाड़े के समीप आया। वहाँ समीप ही एक गुफा थी। शाऊल स्वयं गुफा में शौच करने गया। दाऊद और उसके लोग बहुत पीछे उस गुफा में छिपे थे। [4]लोगों ने दाऊद से कहा, "आज वह दिन है जिसके विषय में यहोवा ने बातें की थीं। यहोवा ने तुमसे कहा था, 'मैं तुम्हारे शत्रु को तुम्हें दूँगा, तब तुम जो चाहो अपने शत्रु के साथ कर सकोगे।'"

तब दाऊद रेंगकर शाऊल के पास आया। दाऊद ने शाऊल के लबादे का एक कोना काट लिया। शाऊल ने दाऊद को नहीं देखा। [5]बाद में, दाऊद को शाऊल के लबादे के एक कोने के काटने का अफसोस हुआ। [6]दाऊद ने अपने लोगों से कहा, "यहोवा मुझे अपने स्वामी के साथ कुछ भी ऐसा करने से रोके। शाऊल यहोवा का चुना हुआ राजा है। मुझे शाऊल के विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहिए वह यहोवा का चुना हुआ राजा है।" [7]दाऊद ने ये बातें अपने लोगों को रोकने के लिये कहीं। दाऊद ने अपने लोगों को शाऊल पर आक्रमण करने नहीं दिया।

शाऊल ने गुफा छोड़ी और अपने मार्ग पर चल पड़ा। [8]दाऊद गुफा से निकला। दाऊद ने शाऊल को जोर से पुकारा, "मेरे प्रभु महाराज!"

शाऊल ने पीछे मुड़ कर देखा। दाऊद ने अपना सिर भूमि पर रखकर प्रणाम किया। [9]दाऊद ने शाऊल से कहा, "आप क्यों सुनते हैं जब लोग यह कहते हैं, 'दाऊद आप पर चोट करने की योजना बना रहा है?' [10]मैं आपको चोट पहुँचाना नहीं चाहता! आप इसे अपनी आँखों से देख सकते हैं! यहोवा ने आज आपको गुफा में मेरे हाथों में दे दिया था। किन्तु मैंने आपको मार डालने से इन्कार किया। मैंने आप पर दया की। मैंने कहा, 'मैं अपने स्वामी को चोट नहीं पहुँचाऊँगा। शाऊल यहोवा का चुना हुआ राजा है!' [11]मेरे हाथ में इस कपड़े के टुकड़े को देखें। मैंने आपके लबादे का टुकड़ा काट लिया। मैं आपको मार सकता था, किन्तु मैंने यह नहीं किया। अब मैं चाहता हूँ कि आप इसे समझें। मैं चाहता हूँ कि आप यह समझें कि मैं आपके विरुद्ध कोई योजना नहीं बना रहा हूँ। मैंने आपका कोई बुरा नहीं किया। किन्तु आप मेरा पीछा कर रहे हैं और मुझे मार डालना चाहते हैं। [12]यहोवा को न्याय करने दो। यहोवा आपको उस अन्याय के लिये दण्ड देगा जो आपने मेरे साथ किया। किन्तु मैं अपने आप आपसे युद्ध नहीं करूँगा। [13]पुरानी कहावत है: 'बुरी चीजें बुरे लोगों से आती हैं।'

"मैंने कुछ भी बुरा नहीं किया है! मैं बुरा व्यक्ति नहीं हूँ। अत: मैं आप पर चोट नहीं करूँगा। [14]आप किसका पीछा कर रहे हैं? इस्राएल का राजा किसके विरुद्ध लड़ने आ रहा है? आप ऐसे किसी का पीछा नहीं कर रहे हैं जो आपको चोट पहुँचाएगा। यह ऐसा ही है जैसे आप एक मृत कुत्ते या मच्छर का पीछा कर रहे हैं। [15]यहोवा को न्याय करने दो। उसको मेरे और अपने बीच निर्णय देने दो। यहोवा मेरा समर्थन करेगा और दिखायेगा कि मैं सच्चाई पर हूँ। यहोवा आपसे मेरी रक्षा करेगा।"

[16]दाऊद ने अपना यह कथन समाप्त किया और शाऊल ने पूछा, "मेरे पुत्र दाऊद, क्या यह तुम्हारी आवाज है?" तब शाऊल रोने लगा। शाऊल बहुत रोया। [17]शाऊल ने कहा, "तुम सही हो और मैं गलती पर हूँ। तुम हमारे प्रति अच्छे रहे। किन्तु मैं तुम्हारे प्रति बुरा रहा। [18]तुमने उन अच्छी बातों को बताया जिन्हें तुमने मेरे प्रति किया। यहोवा मुझे तुम्हारे पास लाया, किन्तु तुमने मुझे नहीं मार डाला। [19]यदि कोई अपने शत्रु को पकड़ता है तो वह उसे बच निकलने नहीं देता। वह अपने शत्रु के लिये अच्छे काम नहीं करता। यहोवा तुमको इसका पुरस्कार दे क्योंकि तुम आज मेरे प्रति अच्छे रहे। [20]मैं जानता हूँ कि तुम नये राजा होगे। तुम इस्राएल के राज्य पर शासन करोगे। [21]अब मुझसे एक प्रतिज्ञा करो। यहोवा का नाम लेकर यह प्रतिज्ञा करो कि तुम मेरे वंशजों को मारोगे नहीं। प्रतिज्ञा करो कि तुम मेरे पिता के परिवार से मेरा नाम मिटाओगे नहीं।"

[22]इसलिये दाऊद ने शाऊल से प्रतिज्ञा की। दाऊद ने प्रतिज्ञा की कि वह शाऊल के परिवार को नहीं मारेगा।

तब शाऊल लौट गया। दाऊद और उसके लोग किले में चले गये।

दाऊद और नाबाल

25 शमूएल मर गया। इस्राएल के सभी लोग इकट्ठे हुए और उन्होंने शमूएल की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। उन्होंने शमूएल को उसके घर रामा में दफनाया। तब दाऊद पारान की मरुभूमि में चला गया।

[2]एक व्यक्ति था जो माओन में रहता था। वह व्यक्ति बहुत सम्पन्न था। उसके पास तीन हजार भेड़ें और एक हजार बकरियाँ थीं। वह कर्मेल में अपने धंधे की देखभाल करता था। वह कर्मेल में अपनी भेड़ों की ऊन काटता था। [3]उस व्यक्ति का नाम नाबाल* था। उसकी पत्नी का नाम अबीगैल था। अबीगैल बुद्धिमती और सुन्दर स्त्री थी। किन्तु नाबाल क्रूर और नीच था। नाबाल कालेब के परिवार से था।

[4]दाऊद मरुभूमि में था और उसने सुना कि नाबाल अपनी भेड़ों की ऊन काट रहा है। [5]इसलिये दाऊद ने दस युवकों को नाबाल से बातें करने के लिये भेजा। दाऊद ने कहा, "कर्मेल जाओ। नाबाल से मिलो और उसको मेरी ओर से 'नमस्ते' कहो।' [6]दाऊद ने उन्हें नाबाल के लिये यह सन्देश दिया, "मुझे आशा है कि तुम और तुम्हारा परिवार सुखी है। मैं आशा करता हूँ कि जो कुछ तुम्हारा है, ठीक–ठाक है। [7]मैंने सुना है कि तुम अपनी भेड़ों से ऊन काट रहे हो। तुम्हारे गड़रिये कुछ समय तक हम लोगों के साथ रहे थे और हम लोगों ने उन्हें कोई कष्ट नहीं दिया। जब तक तुम्हारे गड़रिये कर्मेल में रहे हमने उनसे कुछ भी नहीं लिया। [8]अपने सेवकों से पूछो और वे बता देंगे कि यह सब सच है। कृपया मेरे युवकों पर दया करो। इस प्रसन्नता के अवसर पर हम तुम्हारे पास पहुँच रहे हैं। कृपया इन युवकों को तुम जो कुछ चाहो, दो। कृपया यह मेरे लिये, अपने मित्र* दाऊद के लिये करो।"

[9]दाऊद के व्यक्ति नाबाल के पास गए। उन्होंने दाऊद का सन्देश नाबाल को दिया। [10]किन्तु नाबाल उनके प्रति नीचता से पेश आया। नाबाल ने कहा, "दाऊद है कौन? यह यिशै का पुत्र कौन होता है? इन दिनों बहुत से दास हैं जो अपने स्वामियों के यहाँ से भाग गये हैं! [11]मेरे पास रोटी और पानी है और मेरे पास वह माँस भी है जिसे मैंने भेड़ों से ऊन काटने वाले सेवकों के लिये मारा है। किन्तु मैं उसे उन व्यक्तियों को नहीं दे सकता जिन्हें मैं जानता भी नहीं!"

[12]दाऊद के व्यक्ति लौट गये और नाबाल ने जो कुछ कहा था दाऊद को बता दिया। [13]तब दाऊद ने अपने लोगों से कहा, "अपनी तलवार उठाओ!" अत: दाऊद और उसके लोगों ने तलवारें कस ली। लगभग चार सौ व्यक्ति दाऊद के साथ गये और दो सौ व्यक्ति साज़ो सामान के साथ रुके रहे।

अबीगैल आपत्ति को टालती है

[14]नाबाल के सेवकों में से एक ने नाबाल की पत्नी अबीगैल से बातें कीं। सेवक ने कहा, "दाऊद ने मरुभूमि से अपने दूतों को हमारे स्वामी (नाबाल) के पास भेजा। किन्तु नाबाल दाऊद के दूतों के साथ नीचता से पेश आया। [15]ये लोग हम लोगों के प्रति बहुत अच्छे थे। हम लोग भेड़ों के साथ मैदानों में जाते थे। दाऊद के लोग हमारे साथ लगातार रहे और उन्होंने हमारे साथ कुछ भी बुरा नहीं किया। उन्होंने पूरे समय हमारा कुछ भी नहीं चुराया। [16]दाऊद के लोगों ने दिन रात हमारी रक्षा की। वे हम लोगों के लिये रक्षक चहारदीवारी की तरह थे, उन्होंने हमारी रक्षा तब की जब हम भेड़ों की रखवाली करते हुए उनके साथ थे। [17]अब इस विषय में सोचो और निर्णय करो कि तुम क्या कर सकती हो। नाबाल ने जो कुछ कहा वह मूर्खतापूर्ण था। हमारे स्वामी (नाबाल) और उनके सारे परिवार के लिये भयंकर आपत्ति आ रही है।"

[18]अबीगैल ने शीघ्रता की और दो सौ रोटियाँ, दाखमधु की दो भरी मशकें, पाँच पकी भेड़ें, लगभग एक बुशल पका अन्न, दो क्वाट मुनक्के और दो सौ सूखे अंजीर की टिकिया लीं। उसने उन्हें गधों पर लादा। [19]तब अबीगैल ने अपने सेवकों से कहा, "आगे चलते रहो मैं तुम्हारे पीछे आ रही हूँ।" किन्तु उसने अपने पति से कुछ न कहा।

[20]अबीगैल अपने गधे पर बैठी और पर्वत की दूसरी ओर पहुँची। वह दूसरी ओर से आते हुए दाऊद और उसके आदमियों से मिली।

[21]अबीगैल से मिलने के पहले दाऊद कह रहा था, "मैंने नाबाल की सम्पत्ति की रक्षा मरुभूमि में की। मैंने यह

नाबाल इस नाम का अर्थ "मूर्ख" है।
मित्र शाब्दिक "पुत्र।"

व्यवस्था की कि उसकी कोई भेड़ खोए नहीं। मैंने यह सब कुछ बिना लिये किया। मैंने उसके लिये अच्छा किया। किन्तु मेरे प्रति वह बुरा रहा। [22]परमेश्वर मुझे दण्डित करे यदि मैं नाबाल के परिवार के किसी व्यक्ति को कल सवेरे तक जीवित रहने दूँ।"

[23]किन्तु जब अबीगैल ने दाऊद को देखा वह शीघ्रता से अपने गधे पर से उतर पड़ी। वह दाऊद के सामने प्रणाम करने को झुकी। उसने अपना माथा धरती पर टिकाया। [24]अबीगैल दाऊद के चरणों पर पड़ गई। उसने कहा, "मान्यवर, कृपा कर मुझे कुछ कहने दें। जो मैं कहूँ उसे सुनें। जो कुछ हुआ उसके लिये मुझे दोष दें। [25]मैंने उन व्यक्तियों को नहीं देखा जिन्हें आपने भेजा। मान्यवर, उस नालायक आदमी (नाबाल) पर ध्यान न दें। वह ठीक वही है जैसा उसका नाम है। उसके नाम का अर्थ 'मूर्ख' है और वह सचमुच मूर्ख ही है। [26]यहोवा ने आपको निरपराध व्यक्तियों को मारने से रोका है। यहोवा शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसकी शपथ खाकर मैं आशा करती हूँ कि आपके शत्रु और जो आपको हानि पहुँचाना चाहते हैं, वे नाबाल की स्थिति में होंगे। [27]अब, मैं आपको यह भेंट लाई हूँ। कृपया इन चीज़ों को उन लोगों को दें जो आपका अनुसरण करते हैं। [28]अपराध करने के लिये मुझे क्षमा करें। मैं जानती हूँ कि यहोवा आपके परिवार को शक्तिशाली बनायेगा, आपके परिवार से अनेक राजा होंगे। यहोवा यह करेगा क्योंकि आप उसके लिये युद्ध लड़ते हैं। लोग तब आप में कभी बुराई नहीं पाएंगे जब तक आप जीवित रहेंगे। [29]यदि कोई व्यक्ति आपको मार डालने के लिये आपका पीछा करता है तो यहोवा आपका परमेश्वर आपके जीवन की रक्षा करेगा। किन्तु यहोवा आपके शत्रुओं के जीवन को ऐसे दूर फेंकेगा जैसे गुलेल से पत्थर फेंका जाता है।

[30]"यहोवा ने आपके लिये बहुत सी अच्छी चीजों को करने का वचन दिया है और यहोवा अपने सभी वचनों को पूरा करेगा। परमेश्वर आपको इस्राएल का शासक बनाएगा। [31]और आप इस जाल में नहीं फँसेंगें। आप बुरा काम करने के अपराधी नहीं होंगे। आप निरपराध लोगों को मारने का अपराध नहीं करेंगे। कृपया मुझे उस समय याद रखें जब यहोवा आपको सफलता प्रदान करे।"

[32]दाऊद ने अबीगैल को उत्तर दिया, "इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा की स्तुति करो। परमेश्वर ने तुम्हें मुझसे मिलने भेजा है। [33]तुम्हारे अच्छे निर्णय के लिये परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे। तुमने आज मुझे निरपराध लोगों को मारने से बचाया। [34]निश्चय ही, जैसे इस्राएल का परमेश्वर, यहोवा शाश्वत है, यदि तुम शीघ्रता से मुझसे मिलने न आई होती तो कल सवेरे तक नाबाल के परिवार का कोई भी पुरुष जीवित नहीं बच पाता।"

[35]तब दाऊद ने अबीगैल की भेंट को स्वीकार किया। दाऊद ने उससे कहा, "शान्ति से घर जाओ। मैंने तुम्हारी बातें सुनी हैं और मैं वही करूँगा जो तुमने करने को कहा है।"

नाबाल की मृत्यु

[36]अबीगैल नाबाल के पास लौटी। नाबाल घर में था। नाबाल एक राजा की तरह खा रहा था। नाबाल ने छक कर दाखमधु पी रखी थी और वह प्रसन्न था। इसलिये अबीगैल ने नाबाल को अगले सवेरे तक कुछ भी नहीं बताया। [37]अगली सुबह नाबाल का नशा उतरा। अत: उसकी पत्नी ने हर बात बता दी और नाबाल को दिल का दौरा पड़ गया। वह चट्टान की तरह कड़ा हो गया। [38]करीब दस दिन बाद यहोवा ने नाबाल को मर जाने दिया।

[39]दाऊद ने सुना कि नाबाल मर गया है। दाऊद ने कहा, "यहोवा की स्तुति करो! नाबाल ने मेरे विरुद्ध बुरी बातें कीं, किन्तु यहोवा ने मेरा समर्थन किया। यहोवा ने मुझे पाप करने से बचाया और यहोवा ने नाबाल को मर जाने दिया क्योंकि उसने अपराध किया था।" तब दाऊद ने अबीगैल को एक सन्देश भेजा। दाऊद ने उसे अपनी पत्नी होने के लिये कहा। [40]दाऊद के सेवक कर्मेल गए और अबीगैल से कहा, "दाऊद ने हम लोगों को तुम्हें लाने के लिये भेजा है। दाऊद चाहता है कि तुम उसकी पत्नी बनो।"

[41]अबीगैल ने धरती तक अपना माथा झुकाया। उसने कहा, "मैं आपकी दासी हूँ। मैं आपकी सेवा करने के लिये तैयार हूँ। मैं अपने स्वामी (दाऊद) के सेवकों के पैरों को धोने को तैयार हूँ।*"

मैं अपने ... हूँ यह दिखाता है कि अबीगैल नम्र थी और दासी की तरह रहने की इच्छा रखती थी।

[42]अबीगैल शीघ्रता से गधे पर बैठी और दाऊद के दूतों के साथ चल दी। अबीगैल अपने साथ पाँच दासियाँ ले गई। वह दाऊद की पत्नी बनी।

[43]दाऊद ने यिज्रेल की अहिनोअम से भी विवाह किया था। अहिनोअम और अबीगैल दोनों दाऊद की पत्नियाँ थी। [44]शाऊल की पुत्री मीकल भी दाऊद की पत्नी थी। किन्तु शाऊल ने उसे गल्लीम के निवासी लैश के पुत्र पलती को दे दिया था।

दाऊद और अबीशै शाऊल के डेरे में प्रवेश करते हैं

26 जीप के लोग शाऊल से मिलने गिबा गये। उन्होंने शाऊल से कहा, "दाऊद हकीला की पहाड़ी में छिपा है। यह पहाड़ी यशीमोन के उस पार है।"

[2]शाऊल जीप की मरुभूमि में गया। शाऊल ने पूरे इस्राएल से अपने द्वारा चुने गए तीन हजार सैनिकों को लिया। शाऊल और ये लोग जीप की मरुभूमि में दाऊद को खोज रहे थे। [3]शाऊल ने अपना डेरा हकीला की पहाड़ी पर डाला। डेरा सड़क के किनारे यशीमोन के पार था। दाऊद मरुभूमि में रह रहा था। दाऊद को पता लगा कि शाऊल ने उसका वहाँ पीछा किया है। [4]तब दाऊद ने अपने जासूसों को भेजा और दाऊद को पता लगा कि शाऊल हकीला आ गया है। [5]तब दाऊद उस स्थान पर गया जहाँ शाऊल ने अपना डेरा डाला था। दाऊद ने देखा कि शाऊल और अब्नेर वहाँ सो रहे थे। (नेर का पुत्र अब्नेर शाऊल की सेना का सेनापति था।) शाऊल डेरे के बीच सो रहा था। सारी सेना शाऊल के चारों ओर थी।

[6]दाऊद ने हित्ती अहीमेलेक और यरूयाह के पुत्र अबीशै से बातें की। (अबीशै योआब का भाई था।) उसने उनसे कहा, "मेरे साथ शाऊल के पास उसके डेरे में कौन चलेगा?" अबीशै ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

[7]रात हुई। दाऊद और अबीशै शाऊल के डेरे में गए। शाऊल डेरे के बीच में सोया हुआ था। उसका भाला उसके सिर के पास जमीन में गड़ा था। अब्नेर और दूसरे सैनिक शाऊल के चारों ओर सोए थे। [8]अबीशै ने दाऊद से कहा, "आज परमेश्वर ने तुम्हारे शत्रु को पराजित करने दिया है। मुझे शाऊल को उसके भाले से ही जमीन में टाँक देने दो। मैं इसे एक ही बार में कर दूँगा!"

[9]किन्तु दाऊद ने अबीशै से कहा, "शाऊल को न मारो! जो कोई यहोवा के चुने राजा को मारता है वह अवश्य दण्डित होता है! [10]यहोवा शाश्वत है, अत: वह शाऊल को स्वयं दण्ड देगा। संभव है शाऊल स्वाभाविक मृत्यु प्राप्त करे या संभव है शाऊल युद्ध में मारा जाये। [11]किन्तु मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा मुझे अपने चुने हुए राजा को मुझसे चोट न पहुँचवाये। अब पानी के घड़े और भाले को उठाओ जो शाऊल के सिर के पास है। तब हम लोग चलें।"

[12]इसलिये दाऊद ने भाले और पानी के घड़े को लिया जो शाऊल के सिर के पास थे। तब दाऊद और अबीशै ने शाऊल के डेरे को छोड़ दिया। किसी ने यह होते नहीं देखा। कोई व्यक्ति इसके बारे में न जान सका। कोई भी व्यक्ति जागा भी नहीं। शाऊल और उसके सैनिक सोते रहे क्योंकि यहोवा ने उन्हें गहरी नींद में डाल दिया था।

दाऊद शाऊल को फिर लज्जित करता है

[13]दाऊद दूसरी ओर पार निकल गया। शाऊल के डेरे से घाटी के पार दाऊद पर्वत की चोटी पर खड़ा था। दाऊद और शाऊल के डेरे बहुत दूरी पर थे। [14]दाऊद ने सेना को और नेर के पुत्र अब्नेर को जोर से पुकारा, "अब्नेर मुझे उत्तर दो!" अब्नेर ने पूछा, "तुम कौन हो? तुम राजा को क्यों बुला रहे हो?"

[15]दाऊद ने उत्तर दिया, "तुम पुरुष हो। क्यों क्या तुम नहीं हो? और तुम इस्राएल में किसी भी अन्य व्यक्ति से बेहतर हो। क्यों यह ठीक है? तब तुमने अपने स्वामी राजा की रक्षा क्यों नहीं की? एक साधारण व्यक्ति तुम्हारे डेरे में तुम्हारे स्वामी राजा को मारने आया। [16]तुमने भंयकर भूल की। यहोवा शाश्वत है! अत: तुम्हें और तुम्हारे सैनिकों को मर जाना चाहिये। क्यों? क्योंकि तुमने अपने स्वामी यहोवा के चुने राजा की रक्षा नहीं की। शाऊल के सिर के पास भाले और पानी के घड़े की खोज करो। वे कहाँ हैं?"

[17] शाऊल दाऊद की आवाज पहचानता था। शाऊल ने कहा, "मेरे पुत्र दाऊद, क्या यह तुम्हारी आवाज है?" दाऊद ने उत्तर दिया, "मेरे स्वामी और राजा, हाँ, यह मेरी आवाज है।" [18]दाऊद ने यह भी पूछा, "महाराज, आप मेरा पीछा क्यों कर रहे हैं? मैंने कौन सी गलती की है? मैं क्या करने का अपराधी हूँ ?[19]मेरे स्वामी और राजा,

मेरी बात सुनें! यदि यहोवा ने आपको मेरे विरुद्ध क्रोधित किया है तो उन्हें एक भेंट स्वीकार करने दें। किन्तु यदि लोगों ने मेरे विरुद्ध आपको क्रोधित किया है तो यहोवा द्वारा उनके लिए कुछ बुरी आपत्ति आने दें। लोगों ने मुझे इस देश को छोड़ने पर विवश किया, जिसे यहोवा ने मुझे दिया है। लोगों ने मुझसे कहा, 'जाओ विदेशियों के साथ रहो। जाओ अन्य देवताओं की पूजा करो।' [20]मुझे अब यहोवा की उपस्थिति से दूर न मरने दो। इस्राएल का राजा एक मच्छर की खोज में निकला है। आप उस व्यक्ति की तरह हैं जो पहाड़ों में तीतर का शिकार करने निकला हो।"*

[21]तब शाऊल ने कहा, "मैंने पाप किया है। मेरे पुत्र दाऊद लौट आओ। आज तुमने दिखा दिया कि मेरा जीवन तुम्हारे लिये महत्व रखता है। इसलिये मैं तुम्हें चोट पहुँचाने का प्रयत्न नहीं करूँगा। मैंने मूर्खतापूर्ण काम किया है। मैंने एक भंयकर भूल की है।"

[22]दाऊद ने उत्तर दिया, "राजा का भाला यह है। अपने किसी युवक को यहाँ आने दो और वह ले जाए। [23]यहोवा मनुष्यों के कर्म का फल देता है,यदि वह अच्छा करता है तो उसे पुरस्कार देता है, और वह उसे दण्ड देता है जो बुरा करता है। यहोवा ने आज मुझे आपको पराजित करने दिया, किन्तु मैं यहोवा के चुने हुए राजा पर चोट नहीं करूँगा। [24]आज मैंने आपको दिखा दिया कि आपका जीवन मेरे लिये महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार यहोवा दिखायेगा कि मेरा जीवन उसके लिये महत्वपूर्ण है। यहोवा मेरी रक्षा हर एक आपत्ति से करेगा।"

[25]शाऊल ने दाऊद से कहा, "मेरे पुत्र दाऊद, परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे। तुम महान कार्य करोगे और सफल होओगे।" दाऊद अपनी राह गया, और शाऊल घर लौट गया।

दाऊद पलिश्तियों के साथ रहता है:

27 किन्तु दाऊद ने अपने मन में सोचा, "शाऊल मुझे किसी दिन पकड़ लेगा। सर्वोत्तम बात मैं यही कर सकता हूँ कि पलिश्तियों के देश में बच निकलूँ। तब शाऊल मेरी खोज इस्राएल में बन्द कर देगा। इस प्रकार मैं शाऊल से बच निकलूँगा।"

[2]इसलिए दाऊद और उसके छ: सौ लोगों ने इस्राएल छोड़ दिया। वे माओक के पुत्र आकीश के पास गए। आकीश गत का राजा था। [3]दाऊद, उसके लोग और उनके परिवार आकीश के साथ गत में रहने लगे। दाऊद के साथ उसकी दो पत्नियाँ थीं। वे यिज्रेली की अहीनोअम और कर्मेल की अबीगैल थी। अबीगैल नाबाल की विधवा थी। [4]लोगों ने शाऊल से कहा कि दाऊद गत को भाग गया है और शाऊल ने उसकी खोज बन्द कर दी।

[5]दाऊद ने आकीश से कहा, "यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे अपने देश के नगरों में से एक में स्थान दे दें। मैं आपका केवल सेवक मात्र हूँ। मुझे वहाँ रहना चाहिये, आपके साथ यहाँ राजधानी नगर में नहीं।"

[6]उस दिन आकीश ने दाऊद को सिकलग नगर दिया और तब से सिकलग सदा यहूदा के राजाओं का रहा है। [7]दाऊद पलिश्तियों के साथ एक वर्ष और चार महीने रहा।

दाऊद का आकीश राजा को बहकाना

[8]दाऊद और उसके लोग अमालेकी तथा गशूर में रहने वाले लोगों के साथ युद्ध करने गये। दाऊद के लोगों ने उनको हराया और उनकी सम्पत्ति ले ली। लोग उस क्षेत्र में शूर के निकट तेलम से लेकर लगातार मिस्र तक रहते थे। [9]दाऊद उस क्षेत्र में लोगों से लड़ा। दाऊद ने किसी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा। दाऊद ने उनकी सभी भेड़ें, पशु, गधे, ऊँट और कपड़े लिये। तब वह इसे वापस आकीश के पास लाया।

[10]दाऊद ने यह कई बार किया। हर बार आकीश पूछता कि वह कहाँ लड़ा और उन चीज़ों को कहाँ से लाया। दाऊद ने कहा, "मैं यहूदा के दक्षिणी भाग में लड़ा।" या "मैं यरहमेलियों के दक्षिणी भाग में लड़ा या मैं केनियों के दक्षिणी भाग में लड़ा।"* [11]दाऊद गत में कभी जीवित स्त्री या पुरुष नहीं लाया। दाऊद ने सोचा, "यदि हम किसी व्यक्ति को जीवित रहने देते हैं तो वह

आप ... निकला हो जब लोग तीतर का शिकार पहाड़ों में करते थे तो वे उनका पीछा इतना करते थे कि पक्षी इतने थक जाते थे कि भाग न सकें। तब वे पक्षियों को मारते थे। शाऊल दाऊद का पीछा वैसे ही कर रहा था। यह श्लेष भी है। हिब्रू शब्द तीतर के लिये उस शब्द की तरह है जिसका अर्थ पद 14 में 'बुलाना' है।

मैं यहूदा ... में लड़ा ये सभी स्थान इस्राएल के हैं। दाऊद आकीश को यह विश्वास दिलाता था कि वह अपने ही लोगों इस्राएलियों के विरुद्ध लड़ रहा है।

आकीश से कह सकता है कि वस्तुत: मैंने क्या किया है।" दाऊद ने पूरे समय, जब तक पलिश्तियों के देश में रहा, यही किया। [12]आकीश ने दाऊद पर विश्वास करना आरम्भ कर दिया। आकीश ने अपने आप सोचा, "अब दाऊद के अपने लोग ही उससे घृणा करते हैं। इस्राएली दाऊद से बहुत अधिक घृणा करते हैं। अब दाऊद मेरी सेवा करता रहेगा।"

पलिश्ती युद्ध की तैयारी करते हैं:

28 बाद में पलिश्तियों ने अपनी सेना को इस्राएल के विरुद्ध लड़ने के लिये इकट्ठा किया। आकीश ने दाऊद से कहा, "क्या तुम समझते हो कि तुम्हें और तुम्हारे व्यक्तियों को इस्राएलियों के विरुद्ध मेरे साथ लड़ने जाना चाहिये?"

[2]दाऊद ने उत्तर दिया, "निश्चय ही! तब आप स्वयं ही देखें कि मैं क्या कर सकता हूँ!"

आकीश ने कहा, "बहुत अच्छा, मैं तुम्हें अपना अंगरक्षक बनाऊँगा। तुम सदा मेरी रक्षा करोगे।"

शाऊल और स्त्री एन्दोर में

[3]शमूएल मर गया था। सभी इस्राएलियों ने शमूएल की मृत्यु पर शोक मनाया था। उन्होंने शमूएल के निवास स्थान रामा में उसे दफनाया था। इसके पहले शाऊल ने ओझाओं और भाग्यफल बताने वालों को इस्राएल छोड़ने को विवश किया था।

[4]पलिश्तियों ने युद्ध की तैयारी की। वे शूनेम आए और उस स्थान पर उन्होंने अपना डेरा डाला। शाऊल ने सभी इस्राएलियों को इकट्ठा किया और अपना डेरा गिलबो में डाला। [5]शाऊल ने पलिश्ती सेना को देखा और वह भयभीत हो गया। उसका हृदय भय से धड़कने लगा। [6]शाऊल ने यहोवा से प्रार्थना की, किन्तु यहोवा ने उसे उत्तर नहीं दिया। परमेश्वर ने शाऊल से स्वप्न में बातें नहीं की। परमेश्वर ने उसे उत्तर देने के लिये ऊरीम का उपयोग भी नहीं किया और परमेश्वर ने शाऊल से बात करने के लिये भविष्यवक्ताओं का उपयोग नहीं किया। [7]अन्त में शाऊल ने अपने अधिकारियों से कहा, "मेरे लिये ऐसी स्त्री का पता लगाओ जो ओझा हो। तब मैं उससे पूछने जा सकता हूँ कि इस युद्ध में क्या होगा।"

उसके अधिकारियों ने उत्तर दिया, "एन्दोर में एक ओझा है।"

[8]शाऊल ने भिन्न प्रकार के वस्त्र पहने। शाऊल ने यह इसलिये किया कि कोई व्यक्ति यह न जान सके कि वह कौन है। रात को वह अपने दो व्यक्तियों के साथ उस स्त्री से मिलने गया। शाऊल ने उस स्त्री से कहा, "प्रेत के द्वारा मुझे मेरा भविष्य बताओ। उस व्यक्ति को बुलाओ जिसका मैं नाम लूँ।"

[9]किन्तु उस स्त्री ने शाऊल से कहा, "तुम जानते ही हो कि शाऊल ने क्या किया है! उसने ओझाओं और भाग्यफल बताने वालों को इस्राएल देश को छोड़ने को विवश किया है। तुम मुझे जाल में फँसाना और मार डालना चाहते हो।"

[10]शाऊल ने यहोवा का नाम लिया और उस स्त्री से प्रतिज्ञा की, "निश्चय ही यहोवा शाश्वत है, अत: तुमको यह करने के लिये दण्ड नहीं मिलेगा।"

[11]स्त्री ने पूछा, "तुम किसे चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहाँ बुलाऊँ?" शाऊल ने उत्तर दिया, "शमूएल को बुलाओ"

[12]और यह हुआ! स्त्री ने शमूएल को देखा और जोर से चीख उठी। उसने शाऊल से कहा, "तुमने मुझे धोखा दिया! तुम शाऊल हो!"

[13]राजा ने स्त्री से कहा, "तुम डरो नहीं! तुम क्या देख रही हो?" उस स्त्री ने कहा, "मैं एक आत्मा को जमीन* से निकल कर आती देख रही हूँ।"

[14]शाऊल ने पूछा, "वह कैसा दिखाई पड़ता है?" स्त्री ने उत्तर दिया, "वह लबादा पहने एक बूढ़े की तरह दिखाई पड़ता है।"

शाऊल ने समझ लिया कि वह शमूएल था। शाऊल ने प्रणाम किया। उसका माथा जमीन से जा लगा। [15]शमूएल ने शाऊल से कहा, "तुमने मुझे क्यों परेशान किया? तुमने मुझे ऊपर क्यों बुलाया?"

शाऊल ने उत्तर दिया, "मैं मुसीबत में हूँ! पलिश्ती मेरे विरुद्ध लड़ने आए हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया है। परमेश्वर अब मुझको उत्तर नहीं देगा। वह मुझे उत्तर देने के लिये नबी या स्वप्न का उपयोग नहीं करेगा। यही कारण है कि मैंने तुमको बुलाया। मैं चाहता हूँ कि तुम बताओ कि मैं क्या करूँ!"

जमीन या "मृत्यु का स्थान शेओल।"

[16]शमूएल ने कहा, "यहोवा ने तुमको छोड़ दिया। अब वह तुम्हारे पड़ोसी (दाऊद) के साथ है। इसलिये तुम मुझको तंग क्यों करते हो? [17]यहोवा ने वही किया जो उसने करने को कहा था। उसने मेरा उपयोग तुम्हें इन चीजों को बताने के लिये किया। यहोवा तुम से राज्य छीन रहा है और उसने वह तुम्हारा राज्य तुम्हारे पड़ोसियों को दे रहा है। वह पड़ोसी दाऊद है। [18]तुमने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने अमालेकियों को नष्ट नहीं किया और उन्हें नहीं दिखाया कि यहोवा उन पर कितना क्रोधित है। यही कारण है कि यहोवा ने तुम्हारे साथ आज यह किया है। [19] यहोवा तुम्हें और इस्राएल को, पलिश्तियों को देगा। यहोवा इस्राएल की सेना को पलिश्तियों से पराजित करायेगा और कल तुम और तुम्हारे पुत्र यहाँ मेरे साथ होंगे!"

[20]शाऊल तेजी से भूमि पर गिर पड़ा और वहाँ पड़ा रहा। शाऊल, शमूएल द्वारा कही गई बातों से डरा हुआ था। शाऊल बहुत कमजोर भी था क्योंकि उसने उस पूरे दिन रात भोजन नहीं किया था।

[21]स्त्री शाऊल के पास आई। उसने देखा कि शाऊल सचमुच भयभीत था। उसने कहा, "देखो, मैं आपकी दासी हूँ। मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है। मैंने अपने जीवन को ख़तरे में डाला और जो आपने कहा, किया। [22]अब कृपया मेरी सुनें। मुझे आपको कुछ भोजन देने दें। आपको अवश्य खाना चाहिये। तब आप में इतनी शक्ति आयेगी कि आप अपने रास्ते जा सकें।"

[23]लेकिन शाऊल ने इन्कार किया। उसने कहा, "मैं खाऊँगा नहीं।"

शाऊल के अधिकारियों ने उस स्त्री का साथ दिया और उससे खाने के लिये प्रार्थना की। शाऊल ने उनकी बात सुनीं। वह भूमि से उठा और बिस्तर पर बैठ गया। [24]उस स्त्री के घर में एक मोटा बछड़ा था। उसने शीघ्रता से बछड़े को मारा। उसने कुछ आटा लिया और उसे अपने हाथों से गूँदा। तब उसने बिना खमीर की कुछ रोटियाँ बनाई। [25]स्त्री ने भोजन शाऊल और उसके अधिकारियों के सामने रखा। शाऊल और उसके अधिकारियों ने खाया। तब वे उसी रात को उठे और चल पड़े।

"दाऊद हमारे साथ नहीं आ सकता है!"

29 पलिश्तियों ने अपने सभी सैनिकों को आपे में इकट्ठा किया। इस्राएलियों ने चश्मे के पास यिज्रेल में डेरा डाला। [2]पलिश्ती शासक अपनी सौ एवं हजार पुरुषों की टुकड़ियों के साथ कदम बढ़ा रहे थे। दाऊद और उसके लोग आकीश के साथ कदम बढ़ाते हुए चल रहे थे।

[3]पलिश्ती अधिकारियों ने पूछा, "ये हिब्रू यहाँ क्या कर रहे हैं?"

आकीश ने पलिश्ती अधिकारियों से कहा, "यह दाऊद है। दाऊद शाऊल के अधिकारियों में से एक था। दाऊद मेरे पास बहुत समय से है। मैं दाऊद में कोई दोष तब से नहीं देखता जब से इसने शाऊल को छोड़ा और मेरे पास आया।"

[4]किन्तु पलिश्ती अधिकारी आकीश पर क्रोधित हुए। उन्होंने कहा, "दाऊद को वापस भेजो! दाऊद को उस नगर में वापस जाना चाहिये जिसे तुमने उसको दिया है। वह हम लोगों के साथ युद्ध में नहीं जा सकता। यदि वह यहाँ है तो हम अपने डेरे में अपने एक शत्रु को रखे हुए हैं। वह हमारे अपने आदमियों को मार कर अपने राजा (शाऊल) को प्रसन्न करेगा। [5]दाऊद वही व्यक्ति है जिसके लिये इस गाने में इस्राएली गाते और नाचते हैं:

"शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा।
किन्तु दाऊद ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा!"

[6]इसलिये आकीश ने दाऊद को बुलाया। आकीश ने कहा, "यहोवा शाश्वत है, तुम हमारे भक्त हो। मैं प्रसन्न होता कि तुम मेरी सेना में सेवा करते। जिस दिन से तुम मेरे पास आए हो, मैंने तुममें कोई दोष नहीं पाया है। पलिश्ती शासक भी समझते हैं कि तुम अच्छे व्यक्ति हो* [7]शान्ति से लौट जाओ। पलिश्ती शासकों के विरुद्ध कुछ न करो।"

[8]दाऊद ने पूछा, "मैंने क्या गलती की है? तुमने मेरे भीतर जब से मैं तुम्हारे पास आया तब से आज तक कौन सी बुराई देखी? मेरे प्रभु, राजा के शत्रुओं के विरुद्ध तुम मुझे क्यों नहीं लड़ने देते?"

[9]आकीश ने उत्तर दिया, "मैं जानता हूँ कि मैं तुम्हें पसन्द करता हूँ। तुम परमेश्वर के यहाँ से स्वर्गदूत के

पलिश्ती … व्यक्ति हो पलिश्ती शासक दाऊद से प्रसन्न हैं, पलिश्ती सेना के अधिकारी ही उसके विरुद्ध हैं।

समान हो। किन्तु पलिश्ती अधिकारी अब भी कहते हैं, 'दाऊद हम लोगों के साथ युद्ध में नहीं जा सकता।' [10]सवेरे भोर होते ही तुम और तुम्हारे लोग वापस जायेंगे। उस नगर को लौट जाओ जिसे मैंने तुम्हें दिया है। उन पर ध्यान न दो जो बुरी बातें अधिकारी लोग तुम्हारे बारे में कहते हैं। अत: ज्योंही सूर्य निकले तुम चल पड़ो।"

[11]इसलिये दाऊद और उसके लोग सवेरे तड़के उठे। वे पलिश्तियों के देश में लौट गए और पलिश्ती यिज्रेल को गये।

अमालेकी सिकलग पर आक्रमण करते हैं

30 तीसरे दिन, दाऊद और उसके लोग सिकलग पहुँच गए। उन्होंने देखा कि अमालेकियों ने सिकलग पर आक्रमण कर रखा है। अमालेकियों ने नेगव क्षेत्र पर आक्रमण कर रखा था। उन्होंने सिकलग पर आक्रमण किया था और नगर को जला दिया था। [2]वे सिकलग की स्त्रियों को बन्दी बना कर ले गये थे। वे जवान और बूढ़े सभी लोगों को ले गए थे। उन्होंने किसी व्यक्ति को मारा नहीं। वे केवल उनको लेकर चले गए थे।

[3]दाऊद और उसके लोग सिकलग आए और उन्होंने नगर को जलते पाया। उनकी पत्नियाँ, पुत्र और पुत्रियाँ जा चुके थे। अमालेकी उन्हें ले गए थे। [4]दाऊद और उसकी सेना के अन्य लोग जोर से तब तक रोते रहे जब तक वे कमजोरी के कारण रोने के लायक नहीं रह गये। [5]अमालेकी दाऊद की दो पत्नियाँ यिज्रेल की अहीनोअम तथा कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगैल को ले गए थे।

[6]सेना के सभी लोग दु:खी और क्रोधित थे क्योंकि उनकी पुत्र-पुत्रियाँ बन्दी बना ली गई थीं। वे पुरुष दाऊद को पत्थरों से मार डालने की बात कर रहे थे। इससे दाऊद बहुत घबरा गया। किन्तु दाऊद ने अपने यहोवा परमेश्वर में शक्ति पाई। [7]दाऊद ने याजक एब्यातार से कहा, "एपोद लाओ।"

[8]तब दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की, "क्या मुझे उन लोगों का पीछा करना चाहिये जो हमारे परिवारों को ले गये हैं? क्या मैं उन्हें पकड़ लूँगा।"

यहोवा ने उत्तर दिया, "उनका पीछा करो। तुम उन्हें पकड़ लोगे। तुम अपने परिवारों को बचा लोगे।"

दाऊद और उसके व्यक्ति मिस्री दासों को पकड़ते हैं

[9]दाऊद ने अपने छ: सौ व्यक्तियों को साथ लिया और बसोर की घाटियों में गया। उनमें से कुछ लोग उसी स्थान पर ठहर गये। [10]लगभग दो सौ व्यक्ति ठहर गये क्योंकि वे अत्याधिक थके और कमजोर होने से जा नहीं सकते थे। इसलिये दाऊद और चार सौ व्यक्तियों ने अमालेकी का पीछा किया।

[11]दाऊद के व्यक्तियों ने एक मिस्री को खेत में देखा। वे मिस्री को दाऊद के पास ले गये। उन्होंने पीने के लिये थोड़ा पानी और खाने के लिये भोजन दिया। [12]उन्होंने मिस्री को अंजीर की टिकिया और सूखे अगूंर के दो गुच्छे दिये। भोजन के बाद वह कुछ स्वस्थ हुआ। उसने तीन दिन और तीन रात से न कुछ खाया था, न ही पानी पीया था।

[13]दाऊद ने मिस्री से पूछा, "तुम्हारा स्वामी कौन है? तुम कहाँ से आये हो?" मिस्री ने उत्तर दिया, "मैं मिस्री हूँ। मैं एक अमालेकी का दास हूँ। तीन दिन पहले मैं बीमार पड़ गया और मेरे स्वामी ने मुझे छोड़ दिया। [14]हम लोगों ने नेगव पर आक्रमण किया जहाँ करेती* रहते हैं। हम लोगों ने यहूदा प्रदेश पर आक्रमण किया और नेगव क्षेत्र पर भी जहाँ कालेब लोग रहते हैं। हम लोगों ने सिकलग को भी जलाया।"

[15]दाऊद ने मिस्री से पूछा, "क्या तुम उन लोगों के पास हमें पहुँचाओगे जो हमारे परिवारों को ले गए हैं?" मिस्री ने उत्तर दिया, "तुम परमेश्वर के सामने प्रतिज्ञा करो कि तुम मुझे न मारोगे, न ही मुझे मेरे स्वामी को दोगे। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं उनको पकड़वाने में तुम्हारी सहायता करूँगा।"

दाऊद अमालेकी को हराता है

[16] मिस्री ने दाऊद को अमालेकियों के यहाँ पहुँचाया। वे चारों ओर जमीन पर मदिरा पीते और भोजन करते हुए पड़े थे। वे पलिश्तियों और यहूदा के प्रदेश से जो बहुत सी चीजें लाए थे, उसी से उत्सव मना रहे थे। [17]दाऊद ने उन्हें हराया और उनको मार डाला। वे सूरज निकलने के अगले दिन की शाम तक लड़े। अमालेकियों में से चार सौ युवकों के अतिरिक्त जो ऊँटों पर चढ़कर भाग निकले, कोई बच न सका।

करेती या "क्रीट के लोग" ये संभवत: पलिश्ती थे।

[18]दाऊद को अपनी दोनों पत्नियाँ वापस मिल गई। दाऊद ने वे सभी चीज़ें वापस पाई जिन्हें अमालेकी ले आए थे। [19]कोई चीज नहीं खोई। उन्होंने सभी बच्चे और बूढ़ों को पा लिया। उन्होंने अपने सभी पुत्रों और पुत्रियों को प्राप्त किया। उन्हें अपनी कीमती चीज़ें भी मिल गई। उन्होंने अपनी हर एक चीज वापस पाई जो अमालेकी ले गए थे। दाऊद हर चीज़ लौटा लाया। [20]दाऊद ने सारी भेड़ें और पशु ले लिये। दाऊद के व्यक्तियों ने इन जानवरों को आगे चलाया। दाऊद के लोगो ने कहा, "ये दाऊद के पुरस्कार हैं।"

सभी लोगों का भाग बराबर होगा

[21]दाऊद वहाँ आया जहाँ दो सौ व्यक्ति बसोर की घाटियों में ठहरे थे। ये वे व्यक्ति थे जो अत्याधिक थके और कमजोर थे। अत: दाऊद के साथ नहीं जा सके थे। वे लोग दाऊद और उन सैनिकों का स्वागत: करने बाहर आये जो उसके साथ गये थे। बसोर की घाटियों में ठहरे व्यक्तियों ने दाऊद और उसकी सेना को बधाई दी जैसे ही वे निकट आए। [22]किन्तु जो टुकड़ी दाऊद के साथ गई थी उसमें कुछ बुरे और परेशानी उत्पन्न करने वाले व्यक्ति भी थे। उन परेशानी उत्पन्न करने वालों ने कहा, "ये दो सौ व्यक्ति हम लोगों के साथ नहीं गये। इसलिये जो चीजें हम लाये हैं उनमें से कुछ भी हम इन्हें नहीं देंगे। ये व्यक्ति केवल अपनी पत्नियाँ और बच्चों को ले सकते हैं।"

[23]दाऊद ने उत्तर दिया, "नहीं, मेरे भाईयों ऐसा मत करो! इस विषय में सोचो कि यहोवा ने हमें क्या दिया है! यहोवा ने हम लोगों को उस शत्रु को पराजित करने दिया है जिसने हम पर आक्रमण किया। [24]जो तुम कहते हो उसे कोई नहीं सुनेगा। उन व्यक्तियों का हिस्सा भी, जो वितरण सामग्री के साथ ठहरे, उतना ही होगा जितना उनका जो युद्ध में गए। सभी का हिस्सा एक समान होगा।" [25]दाऊद ने इसे इस्राएल के लिये आदेश और नियम बना दिया। यह नियम अब तक लागू है और चला आ रहा है।

[26]दाऊद सिकलग में आया। तब उसने उन चीज़ों में से, जो अमालेकियों से ली थीं, कुछ को अपने मित्रों यहूदा नगर के प्रमुखों के लिये भेजा। दाऊद ने कहा, "ये भेंटे आप लोगों के लिए उन चीज़ों में से है जिन्हें हम लोगों ने यहोवा के शत्रुओं से प्राप्त कीं।"

[27]दाऊद ने उन चीजों में से जो अमालेकियों से प्राप्त हुई थीं। कुछ को बेतेल के प्रमुखों, नेगेव के रामोत, यत्तीर, [28]अरोएर, सिपमोत, एश्तमो, [29]राकाल, यरहमेलियों और केनियों के नगरों, [30]होर्मा, बोराशान, अताक, [31]और हेब्रोन को भेजा। दाऊद ने उन चीज़ों में से कुछ को उन सभी स्थानों के प्रमुखों को भेजा जहाँ दाऊद और उसके लोग रहे थे।

शाऊल की मृत्यु

31 पलिश्ती इस्राएल के विरुद्ध लड़े, और इस्राएली पलिश्तियों के सामने से भाग खड़े हुए। बहुत से इस्राएली गिलबो पर्वत पर मारे गये। [2]पलिश्ती शाऊल और उसके पुत्रों से बड़ी वीरता से लड़े। पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्रों योनातान, अबीनादाब और मल्कीश को मार डाला।

[3]युद्ध शाऊल के विरुद्ध बहुत बुरा रहा। धनुर्धारियों ने शाऊल पर बाण बरसाये और शाऊल बुरी तरह घायल हो गया। [4]शाऊल ने अपने उस नौकर से, जो कवच ले कर चल रहा था, कहा, "अपनी तलवार निकालो और मुझे मार डालो। तब वे विदेशी मुझे चोट पहुँचाने और मेरा मजाक उड़ाने नहीं आएंगे।" किन्तु शाऊल के कवचवाहक ने ऐसा करना अस्वीकार कर दिया। शाऊल का सहायक बहुत भयभीत था।

इसलिये शाऊल ने अपनी तलवार ली और अपने को मार डाला। [5]कवचवाहक ने देखा कि शाऊल मर गया। इसलिये उसने भी अपनी तलवार से अपने को मार डाला। वह वहीं शाऊल के साथ मर गया। [6]इस प्रकार शाऊल, उसके तीन पुत्र और उसका कवचवाहक सभी एक साथ उस दिन मरे।

पलिश्ती शाऊल की मृत्यु से प्रसन्न हैं

[7]इस्राएलियों ने जो घाटी की दूसरी ओर रहते थे, देखा, कि इस्राएली सेना भाग रही थी। उन्होंने देखा कि शाऊल और उसके पुत्र मर गए हैं। इसलिये उन इस्राएलियों ने अपने नगर छोड़े और भाग निकले। तब पलिश्ती आए और उन्होंने उन नगरों को ले लिया।

[8]अगले दिन, पलिश्ती शवों से चीज़ें लेने आए। उन्होंने शाऊल और उसके तीनों पुत्रों को गिलबो पर्वत पर मरा पाया। [9]पलिश्तियों ने शाऊल का सिर काट लिया और

उसका कवच ले लिया। वे इस समाचार को पलिश्ती लोगों और अपनी देवमूर्तियों के पूजास्थल तक ले गये। [10]उन्होंने शाऊल के कवच को आश्तोरेत के पूजास्थल में रखा। पलिश्तियों ने शाऊल का शव बेतशान की दीवार पर लटका दिया।

[11]याबेश गिलाद के लोगों ने उन सभी कारनामों को सुना जो पलिश्तियों ने शाऊल के साथ किये। [12]इसलिये याबेश के सभी सैनिक बेतशान पहुँचे। वे सारी रात चलते रहे! तब उन्होंने शाऊल के शव को बेतशान की दीवार से उतारा। उन्होंने शाऊल के पुत्रों के शवों को भी उतारा। तब वे इन शवों को याबेश ले आए। वहाँ याबेश के लोगों ने शाऊल और उसके तीनों पुत्रों के शवों को जलाया। [13]तब इन लोगों ने शाऊल और उसके पुत्रों की अस्थियाँ लीं और याबेश में पेड़ के नीचे दफनायीं। तब याबेश के लोगों ने शोक मनाया। याबेश के लोगों ने सात दिन तक खाना नहीं खाया।

2 शमूएल

दाऊद को शाऊल की मृत्यु का पता चलता है

1 अमालेकियों को पराजित करने के बाद दाऊद सिकलग लौटा और वहाँ दो दिन ठहरा। यह शाऊल की मृत्यु के बाद हुआ। [2]तीसरे दिन एक युवक सिकलग आया। वह व्यक्ति उस डेरे से आया जहाँ शाऊल था। उस व्यक्ति के वस्त्र फटे थे और उसके सिर पर धूलि थी। वह व्यक्ति दाऊद के पास आया। उसने दाऊद के सामने मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया।

[3]दाऊद ने उस व्यक्ति से पूछा, "तुम कहाँ से आये हो?"

उस व्यक्ति ने दाऊद को उत्तर दिया, "मैं इस्राएलियों के डेरे से बच निकला हूँ।"

[4]दाऊद ने उस से कहा, "कृपया मुझे यह बताओ कि युद्ध किसने जीता?"

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "हमारे लोग युद्ध से भाग गए। युद्ध में अनेकों लोग गिरे और मर गये हैं। शाऊल और उसका पुत्र योनातन दोनों मर गये हैं।"

[5]दाऊद ने युवक से पूछा, "तुम कैसे जानते हो कि शाऊल और उसका पुत्र योनातन दोनों मर गए हैं?" [6]युवक ने दाऊद से कहा, "मैं गिलबो पर्वत पर था। वहाँ मैंने शाऊल को अपने भाले पर झुकते देखा। पलिश्ती रथ और घुडसवार उसके निकट से निकट आते जा रहे थे। [7]शाऊल पीछे मुड़ा और उसने मुझे देखा। उसने मुझे पुकारा। मैंने उत्तर दिया, मैं यहाँ हूँ। [8]तब शाऊल ने मुझसे पूछा, 'तुम कौन हो?' मैंने उत्तर दिया, 'मैं अमालेकी हूँ।' [9]शाऊल ने कहा, 'कृपया मुझे मार डालो। मैं बुरी तरह घायल हूँ और मैं पहले से ही लगभग मर चुका हूँ।' [10]इसलिये मैं रुका और उसे मार डाला। वह इतनी बुरी तरह घायल था कि मैं समझ गया कि वह जीवित नहीं रह सकता। तब मैंने उसके सिर से मुकुट और भुजा से बाजूबन्द उतारा और मेरे स्वामी, मैं मुकुट और बाजूबन्द यहाँ आपके लिये लाया हूँ।

[11]तब दाऊद ने अपने वस्त्रों को यह प्रकट करने के लिये फाड़ डाला कि वह बहुत शोक में डूबा है। दाऊद के साथ सभी लोगों ने यही किया। [12]वे बहुत दुःखी थे और रोये। उन्होंने शाम तक कुछ खाया नहीं। वे रोये क्योंकि शाऊल और उसका पुत्र योनातन मर गए थे। दाऊद और उसके लोग यहोवा से उन लोगों के लिये रोये जो मर गये थे, और वे इस्राएल के लिये रोये। वे इसलिये रोये कि शाऊल, उसका पुत्र योनातन और बहुत से इस्राएली युद्ध मे मारे गये थे।

दाऊद अमालेकी युवक को मार डालने का आदेश देता है

[13]दाऊद ने उस युवक से बातचीत की जिसने शाऊल की मृत्यु की सूचना दी। दाऊद ने पूछा, "तुम कहाँ के निवासी हो?"

युवक ने उत्तर दिया, "मैं एक विदेशी का पुत्र हूँ। मैं अमालेकी हूँ।"

[14]दाऊद ने युवक से पूछा, "तुम यहोवा के चुने राजा को मारने से भयभीत क्यों नहीं हुए?"

[15-16]तब दाऊद ने अमालेकी युवक से कहा, "तुम स्वयं अपनी मृत्यु के लिये जिम्मेदार हो। तुमने कहा कि तुमने यहोवा के चुने हुये राजा को मार डाला। इसलिये तुम्हारे स्वयं के शब्दों ने तुम्हें अपराधी सिद्ध किया है।" तब दाऊद ने अपने सेवक युवकों में से एक युवक को बुलाया और अमालेकी को मार डालने को कहा!" इस्राएली युवक ने अमालेकी को मार डाला।

शाऊल और योनातन के बारे में दाऊद का शोकगीत

[17]दाऊद ने शाऊल और उसकेपुत्र योनातन के बारे में एक शोकगीत गाया। [18]दाऊद ने अपने व्यक्तियों से इस गीत को यहूदा के लोगों को सिखाने को कहा,

"इस शोकगीत को "धनुष" कहा गया है। यह गीत याशार की पुस्तक* में लिखा है।

19 "ओह इस्राएल, तुम्हारा सौन्दर्य
तुम्हारे पहाड़ों में नष्ट हुआ।
ओह, कैसे शक्तिशाली पुरुष धराशायी हो गए!

20 इसे गत* में न कहो।
इसे अश्कलोन* की गलियों में घोषित न करो।
इससे पलिश्तियों के नगर प्रसन्न होंगे!
खतनारहित * उत्सव मनायेंगे।

21 गिलबो के पर्वत पर ओस और वर्षा न हो,
उन खेतों से आने वाली बलि—भेंटे न हों।
शक्तिशाली पुरुषों की ढाल वहाँ गन्दी हुई,
शाऊल की ढाल तेल से
चमकाई नहीं गई थी।*

22 योनातन के धनुष ने अपने हिस्से के
शत्रुओं को मारा, और शाऊल की तलवार
ने अपने हिस्से के शत्रुओं को मारा!
उन्होंने उन व्यक्तियों के खून को छिड़का
जो अब मर चुके हैं,
उन्होंने शक्तिशाली व्यक्तियों की चर्बी को
नष्ट किया है।

23 शाऊल और योनातन,
एक दूसरे से प्रेम करते थे।
वे एक दूसरे से सुखी रहे जब तक
वे जीवित रहे,
शाऊल—योनातन मृत्यु में भी साथ रहे!
वे उकाब से तेज भी जाते थे,
वे सिंह से अधिक शक्तिशाली थे।

24 इस्राएल की पुत्रियों, शाऊल के लिये रोओ!
शाऊल ने तुम्हें लाल पहनावे दिये,
शाऊल ने तुम्हारे वस्त्रों पर स्वर्ण
आभूषण सजाएं हैं।

25 शक्तिशाली पुरुष युद्ध में काम आए।
योनातन गिलबो पर्वत पर मरा।

26 मेरे भाई योनातन, मैं तुम्हारे लिये रोता हूँ!
मैंने तुम्हारी मित्रता का सुख इतना पाया,
तुम्हारा प्रेम मेरे प्रति उससे भी अधिक
गहरा था, जितना एक स्त्री का प्रेम होता है।

27 शक्तिशाली पुरूष युद्ध में काम आए,
युद्ध के शस्त्र चले गये हैं।"

दाऊद और उसके लोग हेब्रोन जाते हैं

2 बाद में दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। दाऊद ने कहा, "क्या मुझे यहूदा के किसी नगर में जाना चाहिये?"

यहोवा ने दाऊद से कहा, "जाओ।"

दाऊद ने पूछा, "मुझे, कहाँ जाना चाहिये?"

यहोवा ने उत्तर दिया,"हेब्रोन को।"

[2]इसलिये दाऊद वहाँ गया। उसकी दोनों पत्नियाँ उसके साथ गई। (वे यिज्रेली की अहीनोअम और कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगैल थीं।) [3]दाऊद अपने लोगों और उनके परिवारों को भी लाया। वे हेब्रोन तथा पास के नगर में बस गये।

दाऊद याबेश के लोगों को धन्यवाद देता है

[4]यहूदा के लोग हेब्रोन आये और उन्होंने दाऊद का अभिषेक यहूदा के राजा के रूप में किया। तब उन्होंने दाऊद से कहा, "याबेश गिलाद के लोग ही थे जिन्होंने शाऊल को दफनाया।"

[5]दाऊद ने याबेश गिलाद के लोगों के पास दूत भेजे। इन दूतों ने याबेश के लोगों को दाऊद का सन्देश दिया "यहोवा तुमको आशीर्वाद दें, क्योंकि तुम लोगों ने अपने स्वामी शाऊल के प्रति, उसकी दग्ध अस्थियों* को दफनाकर, दया दिखाई है। [6]यहोवा अब तुम्हारे प्रति दयालु और सच्चा रहेगा। मैं भी तुम्हारे प्रति दयालु रहूँगा क्योंकि तुम लोगों ने शाऊल की दग्ध अस्थियाँ दफनाई है। [7]अब शक्तिशाली और वीर बनो, तुम्हारे स्वामी शाऊल मर

याशार की पुस्तक प्राचीन अनुपलब्ध पुस्तक जिसमें इस्राएल के युद्ध वर्णित थे।

गत यह पलिश्तियों की प्राचीन राजधानी थी।

अश्कलोन पलिश्ती नगरों में से एक।

खतनारहितं वे व्यक्ति जिनका खतना न हुआ हो। इसका तात्पर्य पलिश्ती था, यहूदी नहीं।

शाऊल की ... नहीं थी या शाऊल की ढाल का अभिषेक तेल से नहीं हुआ था।

उसकी दग्ध अस्थियों शाऊल और योनातन दोनों के शव जलाये गये थे। देखें शमू. 31:12

चुके हैं और यहूदा के परिवार समूह ने अपने राजा के रूप में मेरा अभिषेक किया है।"

ईशबोशेत राजा होता है

[8]नेर का पुत्र अब्नेर शाऊल की सेना का सेनापति था अब्नेर शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को महनैम ले गया। [9]उस स्थान पर अब्नेर ने ईशबोशेत को गिलाद, आशेर, यिज्रेल, एप्रैम और बिन्यामीन का राजा बनाया। ईशबोशेत सारे इस्राएल का राजा बन गया।

[10]ईशबोशेत शाऊल का पुत्र था। ईशबोशेत चालीस वर्ष का था जब उसने इस्राएल पर शासन करना आरम्भ किया। उसने दो वर्ष तक शासन किया। किन्तु यहूदा का परिवार समूह दाऊद का अनुसरण करता था। [11]दाऊद हेब्रोन में यहूदा के परिवार समूह का राजा सात वर्ष छ: महीने तक रहा।

प्राणघातक मुकाबला

[12]नेर का पुत्र अब्नेर और शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के सेवकों ने महनैम को छोड़ा। वे गिबोन को गए। [13]सरूयाह का पुत्र योआब और दाऊद के सेवकगण भी गिबोन गए। वे अब्नेर और ईशबोशेत के सेवकों से, गिबोन के चश्में पर मिले। अब्नेर की टोली हौज के एक ओर बैठी थी। योआब की टोली हौज की दूसरी ओर बैठी थी।

[14] अब्नेर ने योआब से कहा, "हम लोग युवकों को खड़े होने दें और यहाँ एक मुकाबला हो जाने दो।"

योआब ने कहा, "हाँ, उनमें मुकाबला हो जाने दों।"

[15]तब युवक उठे। दोनों टोलियों ने मुकाबले के लिये अपने युवकों को गिना। दाऊद के सैनिकों में से बारह युवक चुने गये। [16]हर एक युवक ने अपने शत्रु के सिर को पकड़ा और अपनी तलवार अन्दर भोंक दी। अत: युवक एक ही साथ गिर पड़े। यही कारण है कि वह स्थान "तेज चाकुओं का खेत" कहा जाता है। यह स्थान गिबोन में है।

अब्नेर असाहेल को मार डालता है

[17]उस दिन मुकाबला भयंकर युद्ध में बदल गया। दाऊद के सेवकों ने अब्नेर और इस्राएलियों को हरा दिया। [18]सरूयाह के तीन पुत्र थे, योआब, अबीश और असाहेल। असाहेल तेज दौड़नेवाला था। वह जंगली हिरन की तरह तेज दौड़ता था। [19]असाहेल ने अब्नेर का पीछा किया। असाहेल सीधे अब्नेर की ओर दौड़ गया। [20]अब्नेर ने मुड़कर देखा और पूछा, "क्या तुम असाहेल हो?"

असाहेल ने कहा, "मैं हूँ।"

[21]अब्नेर असाहेल को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था। तब अब्नेर ने असाहेल से कहा, "मेरा पीछा करना छोड़ो अपनी दायीं या बाई ओर मुड़ो और युवकों में से किसी एक की कवच अपने लिये ले लो।" किन्तु असाहेल ने अब्नेर का पीछा करना छोड़ने से इन्कार कर दिया।

[22]अब्नेर ने असाहेल से फिर कहा,"मेरा पीछा करना छोड़ो। यदि तुम पीछा करना नहीं छोड़ते तो मैं तुमको मार डालूँगा। यदि मैं तुम्हें मार डालूँगा तो मैं फिर तुम्हारे भाई योआब का मुख नहीं देख सकूँगा।"

[23]किन्तु असाहेल ने अब्नेर का पीछा करना नहीं छोड़ा। इसलिये अब्नेर ने अपने भाले के पिछले भाग का उपयोग किया और असाहेल के पेट में उसे घुसेड़ दिया। भाला असाहेल के पेट में इतना गहरा धँसा कि वह उसकी पीठ से बाहर निकल आया। असाहेल वहीं तुरन्त मर गया।

योआब और अबीश अब्नेर का पीछा करते हैं

असाहेल का शरीर जमीन पर गिर पड़ा। लोग उस के पास दौड़कर गये, और रुक गए। [24]किन्तु योआब और अबीश* ने अब्नेर का पीछा करना जारी रखा।

जिस समय वे अम्मा पहाड़ी पर पहुँचे सूर्य डूब रहा था। (अम्मा पहाड़ी गीह के सामने गिबोन मरुभूमि के रास्ते पर थी।) [25]बिन्यामीन परिवार समूह के लोग अब्नेर के पास आए। वे सभी एक साथ पहाड़ी की चोटी पर खड़े हो गए।

[26]अब्नेर ने चिल्लाकर योआब को पुकारा। अब्नेर ने कहा, "क्या हमें लड़ जाना चाहिये और सदा के लिये एक दूसरे को मार डालना चाहिये? निश्चय ही तुम जानते हो कि इसका अन्त केवल शोक होगा। लोगों से कहो कि अपने ही भाईयों का पीछा करना बन्द करें।"

[27]तब योआब ने कहा, "यह तुमने जो कहा वह ठीक है। यहोवा शाश्वत है, यदि तुमने कुछ कहा नहीं होता तो लोग अपने भाइयों का पीछा सवेरे तक भी करते रहते।"

योआब और अबीश योआब और अबीश उस असाहेल के भाई थे, जिसे अब्नेर ने मार डाला। देखे वचन 18

[28]तब योआब ने एक तुरही बजाई और उसके लोगों ने इस्राएलियों का पीछा करना बन्द किया। उन्होंने और आगे इस्राएलियों से लड़ने का प्रयत्न नहीं किया।

[29]अब्नेर और उसके लोग यरदन घाटी से होकर रात भर चले। उन्होंने यरदन घाटी को पार किया। वे पूरे दिन चलते रहे और महनैम पहुँचे।

[30]योआब अब्नेर का पीछा करना बन्द करने के बाद अपनी सेना में वापस लौट गया। जब योआब ने लोगों को इकट्ठा किया, दाऊद के उन्नीस सेवक लापता थे। असाहेल भी लापता था। [31]किन्तु दाऊद के सेवकों ने बिन्यामीन परिवार समूह के तीन सौ साठ सदस्यों को, जो अब्नेर का अनुसरण कर रहे थे, मार डाला था। [32]दाऊद के सेवकों ने असाहेल को लिया और उसे बेतलेहेम में उसके पिता के कब्रिस्तान में दफनाया।

योआब और उसके व्यक्ति रात भर चलते रहे। जब वे हेब्रोन पहुँचे तो सूरज निकला।

इस्राएल और यहूदा के बीच युद्ध

3 शाऊल के परिवार और दाऊद के परिवार में लम्बे समय तक युद्ध चलता रहा।* दाऊद अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया। और शाऊल का परिवार कमजोर पर कमजोर होता गया।

दाऊद के छः पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए

[2]दाऊद के ये छः पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए थे। प्रथम पुत्र अम्नोन था। अम्नोन की माँ यिज्रेल की अहीनोअम थी। [3]दूसरा पुत्र किलाब था। किलाब की माँ कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगैल थी। तीसरा पुत्र अबशालोम था। अबशालोम की माँ गशूर के राजा तल्मै की पुत्री माका थी। [4]चौथा पुत्र अदोनिय्याह था। अदोनिय्याह की माँ हग्गीत थी। पाँचवा पुत्र शपत्याह था। शपत्याह की माँ अबीतल थी। [5]छठा पुत्र यित्राम था। यित्राम की माँ दाऊद की पत्नी एग्ला थी। दाऊद के ये छः पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए।

अब्नेर दाऊद से मिल जाने का निर्णय करता है

[6]जिस समय शाऊल परिवार तथा दाऊद परिवार में युद्ध चल रहा था, अब्नेर ने अपने को शाऊल की सेना में शक्तिशाली बना लिया। [7]शाऊल की दासी रिस्पा नाम की थी। रिस्पा अय्या की पुत्री थी। ईशबोशेत ने अब्नेर से कहा, "तुम मेरे पिता की दासी के साथ शारीरिक सम्बन्ध क्यों करते हो?"

[8]अब्नेर, ईशबोशेत ने जो कुछ कहा, उस से बहुत क्रोधित हुआ। अब्नेर ने कहा, "मैं शाऊल और उसके परिवार का भक्त रहा हूँ। मैंने तुम को दाऊद को नहीं दिया, मैंने तुमको उसे हराने नहीं दिया। मैं यहूदा के लिये काम करने वाला देशद्रोही नहीं हूँ।* किन्तु अब तुम कह रहे हो कि मैंने यह बुराई की। [9-10]मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब परमेश्वर ने जो कहा है वही होगा। यहोवा ने कहा कि वह शाऊल के परिवार के राज्य को ले लेगा और इसे दाऊद को देगा। यहोवा दाऊद को यहूदा और इस्राएल का राजा बनायेगा। वह दान से लेकर बेर्शेबा तक शासन करेगा। परमेश्वर मेरे साथ बुरा करे यदि मैं वैसा होने में सहायता नहीं करता।"

[11]ईशबोशेत अब्नेर से कुछ भी नहीं कह सका। ईशबोशेत उससे बहुत अधिक भयभीत था।

[12]अब्नेर ने दाऊद के पास दूत भेजे। अब्नेर ने कहा, "तुम इस देश पर शासन करो। मेरे साथ एक सन्धि करो और मैं तुमको पूरे इस्राएल के लोगों का शासक बनने में सहायता करूँगा।"

[13]दाऊद ने उत्तर दिया, "ठीक है! मैं तुम्हारे साथ सन्धि करूँगा। किन्तु तुमसे मैं केवल एक बात कहता हूँ कि जब तुम मुझसे मिलने आओ तब शाऊल की पुत्री मीकल को अवश्य लाना।"

दाऊद अपनी पत्नी मीकल को वापस पाता है

[14]दाऊद ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पास दूत भेजे। दाऊद ने कहा, "मेरी पत्नी मीकल को मुझे वापस करो। मैंने उसे पाने के लिये सौ पलिश्तियों को मारा था।"*

[15]तब ईशबोशेत ने उन लोगों से कहा कि वह लैश के पुत्र पलतीएल नामक व्यक्ति के पास से मीकल को ले

शाऊल के ... रहा यहूदा का परिवार समूह दाऊद का अनुसरण करता था। वे उन दूसरे परिवार समूहों के साथ युद्ध करते थे, जो शाऊल का अनुसरण करते थे।

मैं .... नहीं हूँ शाब्दिक "क्या मैं यहूदा के कुत्ते का सिर हूं?

मैंने .... मारा था शाब्दिक, "मैंने उसके लिये सौ पलिश्तियों के खलडियों में दिया था।"

आए। [16]मीकल का पति पलतीएल मीकल के साथ गया। वह बहूरीम नगर तक मीकल के पीछे-पीछे रोता हुआ गया। किन्तु अब्नेर ने पलतीएल से कहा, "घर लौट जाओ।" इसलिये पलतीएल घर लौट गया।

अब्नेर दाऊद की सहायता की प्रतिज्ञा करता है

[17]अब्नेर ने इस्राएल के प्रमुखों को यह सन्देश भेजा। उसने कहा, "आप लोग दाऊद को अपना राजा बनाने के इच्छुक थे। [18]अब इसे करें! यहोवा दाऊद के बारे में कह रहा था जब उसने कहा था, 'मैं अपने इस्राएली लोगों को पलिश्तियों और उनके अन्य सभी शत्रुओं से बचाऊँगा। मैं यह अपने सेवक दाऊद द्वारा करूँगा।'"

[19]अब्नेर ने ये बाते बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों से कही। अब्नेर ने जो कुछ कहा वह बिन्यामीन परिवार के लोगों तथा इस्राएल के सभी लोगों को अच्छा लगा। अत: अब्नेर ने हेब्रोन में दाऊद से वे सभी बातें बतायी, जिसे करने में इस्राएल के लोग तथा बिन्यामीन परिवार के लोग सहमत थे।

[20]जब अब्नेर दाऊद के पास हेब्रोन आया। वह अपने साथ बीस लोगों का लाया। दाऊद ने अब्नेर को और उसके साथ आए सभी लोगों को दावत दी। [21]अब्नेर ने दाऊद से कहा, "स्वामी, मेरे राजा, मैं जाऊँगा और सभी इस्राएलियों को आपके पास लाऊँगा। तब वे आपके साथ सन्धि करेंगे, और आप पूरे इस्राएल पर शासन करेंगे जैसा आप चाहते हैं।"

तब दाऊद ने अब्नेर को विदा किया और अब्नेर शान्तिपूर्वक गया।

अब्नेर की मृत्यु

[22]योआब और दाऊद के अधिकारी युद्ध से लौटकर आए। उनके पास बहुत कीमती सामान थे जो वे शत्रु से लाए थे। दाऊद ने अब्नेर को शान्तिपूर्वक जाने दिया था। इसलिए अब्नेर दाऊद के साथ हेब्रोन में नहीं था। [23]योआब और उसकी सारी सेना हेब्रोन पहुँची। सेना ने योआब से कहा कि, "नेर का पुत्र अब्नेर राजा दाऊद के पास आया था और दाऊद ने उसे शान्तिपूर्वक जाने दिया।"

[24]योआब राजा के पास आया और कहा, "यह आपने क्या किया? अब्नेर आपके पास आया और आपने उसे बिना चोट पहुँचाये जाने दिया। क्यों? [25]आप नेर के पुत्र अब्नेर को जानते हैं। वह आपके साथ चाल चलने आया। वह उन सभी बातों का पता करने आया था जो आप कर रहे हैं।"

[26]योआब ने दाऊद को छोड़ा और सीरा के कुँएं पर अब्नेर के पास दूत भेजे। दूत अब्नेर को वापस लाये। किन्तु दाऊद को इसका पता न चला। [27]जब अब्नेर हेब्रोन आया तो योआब, प्रवेशद्वार के एक किनारे उसे ले गया और तब योआब न अब्नेन के पेट में प्रहार किया और अब्नेर मर गया। पिछले दिनों में अब्नेर ने योआब केभाई असाहेल को मारा था। अत: अब योआब ने अब्नेर को मारा डाला।

दाऊद अब्नेर के लिये रोता है

[28]बाद मे दाऊद ने यह समाचार सुना। दाऊद ने कहा, "मैं और मेरा राज्य नेर के पुत्र अब्नेर की मृत्यु के लिये निरपराध है। यहोवा इसे जानता है। [29]योआब और उसका परिवार इसके लिये उत्तरदायी है और उसका पूरा परिवार इसके लिए दोषी है। मुझे आशंका है कि योआब के परिवार पर बहुत विपत्तियाँ आएंगी। मुझे यह आशा है कि उसके परिवार में सदा कोई न कोई जख्म से अथवा भयानक चर्मरोग से पीड़ित होगा, और कोई बैसाखी उपयोग में लाएगा, और कोई युद्ध में मारा जाएगा और कोई बिना भोजन रहेगा!"

[30]योआब और उसके भाई अबीशै ने अब्नेर को मार डाला क्योंकि अब्नेर ने उसके भाई असाहेल को गिबोन की लड़ाई में मारा था।

[31-32]दाऊद ने योआब के साथ के सभी व्यक्तियों से कहा, "अपने वस्त्रों को फाड़ो और शोक वस्त्रों पहनो। अब्नेर के लिये रोओ।" उन्होंने अब्नेर को हेब्रोन में दफनाया। दाऊद अंत्येष्टि में दाऊद अर्थी के पीछे गया। राजा दाऊद और सभी लोग अब्नेर की कब्र पर रोए। [33]दाऊद ने अब्नेर के लिये अपना शोक-गीत गाया:

"क्या अब्नेर को किसी मूर्ख की तरह मरता था?
[34] अब्नेर, तुम्हारे हाथ बंधे नहीं थे।
तुम्हारे पैर जंजीरों में कसे नहीं थे।
नहीं अब्नेर, तुम्हें दुष्टों ने मरा!"

तब सभी लोग फिर अब्नेर के लिये रोये। [35]सभी लोग दाऊद को दिन रहते भोजन करने के लिये प्रेरित करने आए। किन्तु दाऊद ने विशेष प्रतिज्ञा की। उसने कहा,

"परमेश्वर मुझे दण्ड दे और मेरे कष्टों को बढ़ाएं यदि मैं सूरज डूबने के पहले रोटी या कोई अन्य भोजन करुँ।" [36]जो कुछ हुआ सभी लोगों ने देखा और वे उन सभी कामों से सहमत हुए जो राजा दाऊद कर रहा था। [37]उस दिन यहूदा के लोगों और सभी इस्राएलियों ने समझ लिया कि राजा दाऊद वह व्यक्ति नहीं जिसने नेर के पुत्र अब्नेर को मारा।

[38]राजा दाऊद ने अपने सेवकों से कहा, "तुम लोग जानते हो कि आज इस्राएल में एक बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति मर गया है। [39]ये उसी दिन हुआ जिस दिन मेरा अभिषेक राजा के रूप में हुआ था किन्तु सरूयाह के पुत्र मुझसे अधिक उग्र हैं। यहोवा इन व्यक्तियों को अवश्य दण्ड दे।"

शाऊल के परिवार में परेशानियाँ आती हैं

4 शाऊल के पुत्र (ईशबोशेत) ने सुना कि अब्नेर की मृत्यु हेब्रोन में हो गई। ईशबोशेत और उसके सभी लोग बहुत अधिक भयभीत हो गये। [2]दो आदमी शाऊल के पुत्र (ईशबोशेत) को देखने गये। ये दोनों आदमी सेना के सेनापति थे। एक व्यक्ति का नाम बाना था और दूसरे का नाम रेकाब था। बाना और रेकाब बेरोत के रिम्मोन के पुत्र थे। (वे बिन्यामीन परिवार समूह के थे। बेरोत नगर बिन्यामीन परिवार समूह का था। [3]बेरोत के लोग गित्तैम को भाग गए और वे आज तक वहाँ रहते हैं।)

[4]शाऊल के पुत्र योनातन का एक पुत्र मपीबोशेत था जो लंगड़ा था। योनातन का पुत्र उस समय पाँच वर्ष का था, जब यह सूचना मिली थी कि शाऊल और योनातन यिज्रेल में मारे गए। इस पुत्र की धायी ने इस बच्चे को उठाया और वह भाग गई। किन्तु जब धायी ने भागने में जल्दी की तो योनातन का पुत्र उसकी बाँहों से गिर पड़ा। यही कारण था कि योनातन का पुत्र लंगड़ा हो गया था। इस पुत्र का नाम मपीबोशेत है।

[5]बेरोत के रिम्मोन के पुत्र रेकाब और बाना दोपहर को ईशबोशेत के महल में घुसे। ईशबोशेत गर्मी के कारण आराम कर रहा था। [6-7]रेकाब और बाना महल के बीच में इस प्रकार आये मानों वे कुछ गेहूँ लेने जा रहे हों। ईशबोशेत अपने बिस्तर में अपने शयनकक्ष में लेटा हुआ था। रेकाब और बाना ने आघात किया और ईशबोशेत को मार डाला। तब उन्होंने उसका सिर काटा और उसे अपने साथ ले गये। वे यरदन घाटी से होकर रात भर चलते रहे। [8]वे हेब्रोन पहुँचे, और उन्होंने ईशबोशेत का सिर दाऊद को दिया।

रेकाब और बाना ने राजा दाऊद से कहा, "यह आपके शत्रु शाऊल के पुत्र ईशबोशेत का सिर है। उसने आपको मारने का प्रयत्न किया। यहोवा ने शाऊल और उसके परिवार को आपके लिये आज दण्ड दिया है।"

[9]दाऊद ने रेकाब और उसके भाई बाना को उत्तर दिया, दाऊद ने कहा, "निश्चय ही, यहोवा शाश्वत है, उसने मुझे सभी आपत्तियों से बचाया है। [10]किन्तु एक व्यक्ति ने यह सोचा था कि वह मेरे लिये अच्छी खबर लायेगा। उसने मुझसे कहा, 'देखो! शाऊल मर गया।' उसने सोचा था कि मैं उसे इस खबर को लाने के कारण पुरस्कार दूँगा। किन्तु मैंने उस व्यक्ति को पकड़ा और सिकलग में मार डाला। [11]इसलिये मैं तुम लोगों को मारना चाहूँगा और तुमको धरती से हटाऊँगा क्योंकि दुष्ट व्यक्तियों ने एक अच्छे व्यक्ति को अपने घर के शयनकक्ष में बिस्तर पर आराम करते समय मार डाला।"

[12]दाऊद ने युवकों को आदेश दिया कि वे रेकाब और बाना को मार डालें। तब युवकों ने रेकाब और बाना के हाथ–पैर काट डाले और हेब्रोन के चश्मे के सहारे लटका कर मार डाला। तब उन्होंने ईशबोशेत के सिर को लिया और उसी स्थान पर उसे दफनाया जिस स्थान पर हेब्रोन में अब्नेर को दफनाया गया था।

इस्राएली दाऊद को राजा बनाते हैं

5 तब इस्राएल के सारे परिवार समूहों के लोग दाऊद के पास हेब्रोन में आए। उन्होंने दाऊद से कहा, "देखो हम सब एक परिवार* के हैं! [2]बीते समय में जब शाऊल हमारा राजा था तो वे आप ही थे जो इस्राएल के लिये युद्ध में हमारा नेतृत्व करते थे और आप इस्राएल को युद्धों से वापस लाये। यहोवा ने आपसे कहा, 'तुम मेरे लोग अर्थात् इस्राएलियों के गड़ेंरिया होगे। तुम इस्राएल के शासक होगे।'"

[3]इस्राएल के सभी प्रमुख, राजा दाऊद के पास, हेब्रोन में आए। राजा दाऊद ने यहोवा के सामने, हेब्रोन में, इन प्रमुखों के साथ एक सन्धि की। तब प्रमुखों ने इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया।

एक परिवार शाब्दिक "आपके रक्त –माँस।"

[4]दाऊद उस समय तीस वर्ष का था जब उसने शासन करना आरम्भ किया। उसने चालीस वर्ष शासन किया। [5]उसने हेब्रोन में यहूदा पर सात वर्ष, छ: महीने तक शासन किया और उसने, सारे इस्राएल और यहूदा पर यरूशलेम में तैंतीस वर्ष तक शासन किया।

दाऊद यरूशलेम नगर को जीतता है

[6]राजा और उसके लोग यरूशलेम में यबूसियों के विरुद्ध गए। यबूसी वे लोग थे जो उस प्रदेश में रहते थे। यबूसियों ने दाऊद से कहा, "तुम हमारे नगर में नहीं आ सकते।* यहाँ तक कि अन्धे और लंगडे भी तुमको रोक सकते हैं।" (वे ऐसा इसलिये कह रहे थे क्योंकि वे सोचते थे की दाऊद उनके नगर में प्रवेश करने की क्षमता नहीं रखता। [7]किन्तु दाऊद ने सिय्योन का किला ले लिया। यह किला दाऊद–नगर बना)

[8]उस दिन दाऊद ने अपने लोगों से कहा, "यदि तुम लोग यबूसियों को हराना चाहते हो तो जलसुरंग* से जाओ, और उन 'अन्धे तथा अपाहिज' शत्रुओं पर हमला करो।" यही कारण है कि लोग कहते हैं "अन्धे और विकलांग उपासना गृह में नहीं आ सकते।"

[9]दाऊद किले में रहता था और इसे "दाऊद का नगर" कहता था। दाऊद ने उस क्षेत्र को बनाया और मिल्लो* नाम दिया। उसने नगर के भीतर अन्य भवन भी बनाये। [10]दाऊद अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा उसके साथ था।

[11]सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूतों को भेजा। हीराम ने देवदारू के पेड़, बढ़ई और राजमिस्त्री लोगों को भी भेजा। उन्होंने दाऊद के लिये एक महल बनाया। [12]उस समय दाऊद जानता था कि यहोवा ने उसे सचमुच इस्राएल का राजा बनाया है, और दाऊद यह भी जानता था कि यहोवा ने उसके राज्य को परमेश्वर के लोगों, अर्थात् इस्राएलियों के लिये बहुत महत्वपूर्ण बनाया है।

[13]दाऊद हेब्रोन से यरूशलेम चला गया। यरूशलेम में दाऊद ने और अधिक दासियों तथा पत्नियों को प्राप्त किया। दाऊद के कुछ दूसरे बच्चे भी यरूशलेम में हुए। [14]यरूशलेम में उत्पन्न हुए दाऊद के पुत्रों के नाम ये हैं : शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान, [15]यिभार, एलोशू, नेपेग, यापी, [16]एलीशामा, एल्यादा तथा एलीपेलेत।

दाऊद पलिश्तयों के विरुद्ध युद्ध में जाता है

[17]पलिश्तयों ने यह सुना कि इस्राएलियों ने दाऊद का अभिषेक इस्राएल के राजा के रूप में किया है तब सभी पलिश्ती दाऊद को मार डालने के लिये उसकी खोज करने निकले। किन्तु दाऊद को यह सूचना मिल गई। वह एक किले में चला गया। [18]पलिश्ती आए और रपाईम की घाटी में उन्होंने अपना डेरा डाला।

[19]दाऊद ने बात करके यहोवा से पूछा, "क्या मुझे पलिश्तियों के विरुद्ध युद्ध में जाना चाहिये? क्या तू मुझे पलिश्तियों को हराने देगा?"

यहोवा ने दाऊद से कहा, "जाओं, क्योंकि मैं निश्चय ही, पलिश्तियों को हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा।"

[20]तब दाऊद बालपरासीम आया। वहाँ उसने पलिश्तियों को हराया। दाऊद ने कहा, "यहोवा ने मेरे सामने मेरे शत्रुओं की सेना को इस प्रकार दौड़ भगाया जैसे जल बांध को तोड़ कर बहता है।" यही कारण है कि दाऊद ने उस स्थान का नाम "बालपरासीम"* रखा। [21]पलिश्तियों ने बालपरासीम में अपनी देवमूर्तियों को पीछे छोड़ दिया। दाऊद और उसके लोगों ने उन देवमूर्तियों को वहाँ से हटा दिया।

[22]पलिश्ती फिर आये और रपाईम की घाटी में उन्होंने डेरा डाला।

[23]दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। इस समय यहोवा ने कहा, "वहाँ मत जाओ। उनके चारों ओर उनकी सेना के पीछे से जाओ। तूत वृक्षों के पास उन पर आक्रमण करो। [24]तूत वृक्षों की चोटी से तुम पलिश्तियों के सामरिक प्रमाण की ध्वनि को सुनोगे। तब तुम्हें शीघ्रता करनी

तुम ... नहीं आ सकते यरूशलेम का नगर पहाड़ी पर बसा था और नगर के चारों ओर ऊँची दीवार थी। अत: अधिकार करने में कठिनाई थी।

जल सुरंग वहाँ एक जल सुरंग थी जो भूमि में नीचे प्राचीन यरूशलेम नगर में जाती थी। दाऊद और उसके व्यक्तियों ने नगर में पहुंचने के लिये इस सुरंग का उपयोग किया।

मिल्लो संभवत: सर्वाधिक सुरक्षित दृढ़ स्थान जो सिम्मोन का प्राचीन किला था।

बालपरासीम हिब्रू में इस नाम का अर्थ है, "यहोवा तोड़ निकालता है।"

चाहिये, क्योंकि उस समय यहोवा जायेगा और तुम्हारे लिये पलिश्तियों को हरा देगा।"

[25]दाऊद ने वही किया जो करने के लिये यहोवा ने आदेश दिया था। उसने पलिश्तियों को हराया। उसने उनका पीछा लगातार गेबा से गेजेर तक किया।

परमेश्वर का पवित्र सन्दूक यरूशलेम लाया गया

6 दाऊद ने फिर इस्राएल के सभी चुने तीस हजार लोगों को इकट्ठा किया। [2]तब दाऊद और उसके सभी लोग यहूदा के बाले* में गये और परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को यहूदा के बाले से लेकर उसे यरूशलेम में ले आए। लोग पवित्र सन्दूक के पास यहोवा की उपासना करने के लिये जाते हैं। पवित्र सन्दूक यहोवा के सिंहासन की तरह है। पवित्र सन्दूक के ऊपर करूब की मूर्तियाँ है, और यहोवा इन स्वर्गदूतों पर राजा की तरह बैठता है। [3]उन्होनें परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को एक नई गाड़ी में रखा। वे गिबियाह में स्थित अबीनादाब के घर से पवित्र सन्दूक को ले जा रहे थे। उज्जा और अहह्यो नई गाड़ी चला रहे थे।

[4]जब वे गिबियाह में अबीनादाब के घर से पवित्र सन्दूक ले जा रहे थे, तब उज्जा परमेश्वर के पवित्र सन्दूक सहित गाड़ी में बैठा था। अहह्यो पवित्र सन्दूक वाली गाड़ी के आगे आगे चल कर संचालन कर रहा था। [5]दाऊद और सभी इस्राएली यहोवा के सामने पूरे उत्साह के साथ नाच और गा रहे थे। ये संगीत वाद्य सनौवर लकड़ी के बने थे। वे वीणा, सितार, ढोल झांझ, और मंजीरा बजा रहे थे। [6]जब दाऊद के लोग नकोन खलिहान में आये तो बैल लड़खड़ा पडे। परमेश्वर का पवित्र सन्दूक बन्द गाड़ी से गिरने लगा। उज्जा ने पवित्र सन्दूक को पकड़ लिया। [7]यहोवा उज्जा पर क्रोधित हुआ और उसे मार डाला।* उज्जा ने पवित्र सन्दूक को छूकर परमेश्वर के प्रति अश्रद्धा दिखाई। उज्जा वहाँ परमेश्वर के पवित्र सन्दूक के बगल में मरा। [8]दाऊद निराश हो गया क्योंकि यहोवा ने उज्जा को मार डाला था। दाऊद ने उस स्थान को "पेरेसुज्जा"* कहा।

[9]दाऊद उस दिन यहोवा से डर गया। दाऊद ने कहा, "अब मैं यहोवा का पवित्र सन्दूक यहाँ कैसे ला सकता हूँ?" [10]इसलिये दाऊद यहोवा के पवित्र सन्दूक को दाऊद नगर में नहीं ले जाना चाहता था। दाऊद ने पवित्र सन्दूक को गत से आये हुये ओबेद-एदोम* के घर में रखा। दाऊद पवित्र सन्दूक को सड़क से गत के ओबेद-एदोम के घर ले गया। [11]यहोवा का सन्दूक ओबेद-एदोम के घर में तीन महीने तक रहा। यहोवा ने ओबेद-एदोमऔर उसके सारे परिवार को आशीर्वाद दिया।

[12]लोगों ने दाऊद से कहा, "यहोवा ने ओबेद-एदोम के परिवार और उसकी सारी चीजों को आशीर्वाद दिया क्योंकि परमेश्वर का पवित्र सन्दूक वहाँ है।" इसलिये दाऊद गया और ओबेद-एदोम के घर से परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को दाऊद नगर से ले आया। दाऊद ने इसे प्रसन्नता से किया। [13]जब यहोवा के पवित्र सन्दूक को ले चलने वाले छः कदम चले तो वे रुक गये और दाऊद ने एक बैल तथा एक मोटे बछड़े की बलि भेंट की। [14]तब दाऊद ने यहोवा के सामने पूरे उत्साह के साथ नृत्य किया। दाऊद ने एपोद पहन रखा था।

[15]दाऊद और सभी इस्राएली यहोवा के पवित्र सन्दूक को नगर लाते समय उल्लास से उद्घोष करने और तुरही बजाने लगे। [16]शाऊल की पुत्री मीकल खिड़की से देख रही थी। जब यहोवा का पवित्र सन्दूक नगर में आया तो दाऊद यहोवा के सामने नाच–कूद कर रहा था। मीकल ने यह देखा और वह दाऊद पर गुस्सा हो गई। उसने सोचा कि वह अपने आप को मूर्ख सिद्ध कर रहा है।

[17]दाऊद ने पवित्र सन्दूक के लिये एक तम्बू लगाया। इस्राएलियों ने यहोवा के सन्दूक को तम्बू में उसकी जगह पर रखा। तब दाऊद ने होमबलि और मेलबलि यहोवा को चढ़ाई।

[18]जब दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाना पूरा किया तब उसने सर्वशक्तिमान यहोवा के नाम पर लोगों को आशीर्वाद दिया। [19]दाऊद ने रोटी, किशमिश का टुकड़ा, और खजूर की रोटी का हिस्सा इस्राएल के हर

यहुदा के बाला किर्यत्यारीम का अन्य नाम देखें 1 इति. 13:6

यहोवा ... मार डाला केवल लेविवंशी परमेश्वर की पवित्र सन्दूक या पवित्र तम्बू से कोई उपासना गृह–सामग्री ले जा सकते थे। उज्जा लेविवंशी नहीं था। देखें गिनती 1:50

पेरेसुज्जा इस नाम का हिब्रू में अर्थ है –"उज्जा को दण्ड।"

गत ... ओबेद-एदोम लेवि परिवार समूह का एक व्यक्ति जो यरूशलेम के समीप रहता था।

एक स्त्री–पुरुष को दिया। तब सभी लोग अपने घर गये।

मीकल दाऊद को डाँटती है

[20]दाऊद अपने घर में आशीर्वाद देने गया। किन्तु शाऊल की पुत्री मीकल उससे मिलने निकल आई। मीकल ने कहा, "आज इस्राएल के राजा ने अपना ही सम्मान नहीं किया। तुमने अपनी प्रजा की दासियों के सामने अपने वस्त्र उतार दिये। तुम उस मूर्ख की तरह थे जो बिना लज्जा के अपने वस्त्र उतारता है!"

[21]तब दाऊद ने मीकल से कहा, "यहोवा ने मुझे चुना है, न कि तुम्हारे पिता और उसके परिवार के किसी व्यक्ति ने। यहोवा ने मुझे इस्राएल के अपने लोगों का मार्ग दर्शक बनने के लिये चुना। यही कारण है कि मैं यहोवा के सामने उत्सव मनाऊँगा और नृत्य करूँगा। [22]संभव है, मैं तुम्हारी दृष्टि में अपना सम्मान खो दूँ। संभव है मैं तुम्हारी निगाह में ही कुछ गिर जाऊँ। किन्तु जिन लड़कियों के बारे में तुम बात करती हो वे मेरा सम्मान करती हैं।"

[23]शाऊल की पुत्री को कभी सन्तान न हुई। वह बिना सन्तान के मरी।

दाऊद एक उपासना गृह बनाना चाहता है

7 जब राजा दाऊद अपने नये घर गया। यहोवा ने उसके चारों ओर के शत्रुओं से उसे शान्ति दी। [2]राजा दाऊद ने नातान नबी से कहा, "देखो, मैं देवदारू की लकड़ी से बने महल में रह रहा हूँ। किन्तु परमेश्वर का पवित्र सन्दूक अब भी तम्बू में रखा हुआ है।"

[3]नातान ने राजा दाऊद से कहा, "जाओ, और जो कुछ तुम करना चाहते हो, करो। यहोवा तुम्हारे साथ होगा।"

[4]किन्तु उसी रात नातान को यहोवा का सन्देश मिला। [5]यहोवा ने कहा, "जाओ, और मेरे सेवक दाऊद से कहो, 'यहोवा यह कहता है: तुम वह व्यक्ति नहीं हो जो मेरे रहने के लिये एक गृह बनाये। [6]मैं उस समय गृह में नहीं रहता था जब मैं इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाया। नहीं, मैं उस समय से चारों ओर तम्बू में यात्रा करता रहा। मैंने तम्बू का उपयोग अपने घर के रूप में किया। [7]मैंने इस्राएल के किसी भी परिवार समूह से देवदारू की लकड़ी का सुन्दर घर अपने लिए बनाने के लिए नहीं कहा।'

[8]"तुम्हें मेरे सेवक दाऊद से यह कहना चाहिये: सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, 'मैं तुम्हें चरागाह से लाया। मैंने तुम्हें तब अपनाया जब तुम भेंड़े चरा रहे थे। मैंने तुमको अपने लोग इस्राएलियों का मार्ग दर्शक चुना। [9]मैं तुम्हारे साथ तुम जहाँ कहीं गए रहा । मैंने तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे लिये पराजित किया। मैं तुम्हें पृथ्वी महान व्यक्तियों में से एक बनाऊँगा [10–11]और मैं अपने लोग इस्राएलियों के लिये एक स्थान चुनूँगा। मैं इस्राएलियों को इस प्रकार जमाऊँगा कि वे अपनी भूमि पर रह सकें। तब वे फिर कभी हटाये नहीं जा सकेंगे। अतीत में मैंने अपने इस्राएल के लोगों को मार्गदर्शन के लिये न्यायाधीशों को भेजा था और पापी व्यक्तियों ने उन्हें परेशान किया। अब वैसा नहीं होगा। मैं तुम्हें तुम्हारे सभी शत्रुओं से शान्ति दूँगा। मैं तुमसे यह भी कहता हूँ कि मैं तुम्हारे परिवार को राजाओं का परिवार बनाऊँगा।*

[12]"'तुम्हारी उम्र समाप्त होगी और तुम अपने पूर्वजों के साथ दफनाये जाओगे। उस समय मैं तुम्हारे पुत्रों में से एक को राजा बनाऊँगा। [13]वह मेरे नाम पर मेरा एक गृह (मन्दिर) बनवायेगा। मैं उसके राज्य को सदा के लिये शक्तिशाली बनाऊँगा। [14]मैं उसका पिता बनूँगा और वह मेरा पुत्र होगा। जब वह पाप करेगा, मैं उसे दण्ड देने के लिये अन्य लोगों का उपयोग करूँगा। उसे दंडित करने के लिये वे मेरे सचेतक होंगे। [15]किन्तु मैं उससे प्रेम करना बन्द नहीं करूँगा। मैं उस पर कृपालु बना रहूँगा। मैंने अपने प्रेम और अपनी कृपा शाऊल से हटा ली। मैंने शाऊल को हटा दिया, जब मैं तुम्हारी ओर मुड़ा। मैं तुम्हारे परिवार के साथ वही नहीं करूँगा। [16]तुम्हारे राजाओ का परिवार सदा चलता रहेगा तुम उस पर निर्भर रह सकते हो तुम्हाला राज्य तुम्हारे लिये सदा चलता रहेगा। तुम्हारा सिहांसन (राज्य) सदैव बना रहेगा।'"

[17]नातान ने दाऊद को हर एक बात बताई। उसने दाऊद से हर एक बात कही जो उसने दर्शन में सुनी।

दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है

[18]तब राजा दाऊद भीतर गया और यहोवा के सामने बैठ गया। दाऊद ने कहा, "यहोवा, मेरे स्वामी,

---

तुम्हारे ... बनाऊँगा शाब्दिक "तुम्हारे लिये एक खानदान बनाऊँगा।

मैं तेरे लिये इतना महत्वपूर्ण क्यों हूँ? मेरा परिवार महत्वपूर्ण क्यों है? तूने मुझे महत्वपूर्ण क्यों बना दिया। [19]मैं तेरे सेवक के अतिरिक्त और कुछ नहीं हूँ, और तू मुझ पर इतना अधिक कृपालु रहा है। किन्तु तूने ये कृपायें मेरे भविष्य के परिवार के लिये भी करने को कहा है। यहोवा मेरे स्वामी, तू सदा लोगों के लिये ऐसी ही बातें नहीं कहता, क्या तू कहता है? [20]मैं तुझसे और अधिक, क्या कह सकता हूँ? यहोवा, मेरे स्वामी, तू जानता है कि मैं केवल तेरा सेवक हूँ। [21]तूने ये अद्भुत कार्य इसलिये किया है क्योंकि तूने कहा है कि तू इनको करेगा और क्योंकि यह कुछ ऐसा है जिसे तू करना चाहता है, और तूने निश्चय किया है कि मैं इन बड़े कार्यों को जानूँ। [22]हे यहोवा! मेरे स्वामी यही कारण है कि तू महान है! तेरे समान कोई नहीं है। तेरी तरह कोई देवता नहीं है। हम यह जानते हैं क्योंकि हम लोगों ने स्वयं यह सब सुना है। उन कार्यों के बारे में जो तूने किये।

[23]"तेरे इस्राएल के लोगों की तरह पृथ्वी पर कोई राष्ट्र नहीं है। ये विशेष लोग हैं। वे दास थे। किन्तु तूने उन्हें मिस्र से निकाला और उन्हें स्वतन्त्र किया। तूने उन्हें अपने लोग बनाया। तूने इस्राएलियों के लिये महान और अद्भुत काम किये। तूने अपने देश के लिये आश्चर्यजनक काम किये। [24]तूने इस्राएल के लोगों को सदा के लिये अपने लोग बनाया, और यहोवा तू उनका परमेश्वर हुआ।

[25]"यहोवा परमेश्वर, तूने अभी, मेरे बारे में बाते कीं। मैं तेरा सेवक हूँ। तूने मेरे परिवार के बारे में भी बातें की। अपने वचनों को सदा सत्य कर जो तूने करने की प्रतिज्ञा की है। मेरे परिवार को राजाओं का परिवार हमेशा के लिये बना। [26]तब तेरा नाम सदा सम्मानित रहेगा, और लोग कहेंगे, 'सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर इस्राएल पर शासन करता है और होने दे कि तेरे सेवक दाऊद का परिवार तेरे सामने सदा चलता रहे।'

[27]"सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर, तूने मुझे बहुत कुछ दिखाया है। तूने कहा, 'मैं तुम्हारे परिवार को महान बनाऊँगा।' यही कारण है कि मैं तेरे सेवक ने, तेरे प्रति यह प्रार्थना करने का निश्चय किया। [28]यहोवा मेरे स्वामी, तू परमेश्वर है और तेरे कथन सत्य होते है और तूने इस अपने सेवक के लिये, यह अच्छी चीज का वचन दिया है। [29]कृपया मेरे परिवार को आशीष दे। हे यहोवा! हे स्वामी! जिससे वह तेरे सम्मुख सदैव बना रहे। तूने ये ही वचन दिया था। अपने आशीर्वाद से मेरे परिवार को सदा के लिये आशीष दे।"

दाऊद अनेक युद्ध जीतता है

8 बाद में दाऊद ने पलिश्तियों को हराया। उसने उनकी राजधानी पर अधिकार कर लिया। [2]दाऊद ने मोआब के लोगों को भी हराया। उसने उन्हें भूमि पर लेटने को विवश किया। तब उसने एक रस्सी का उपयोग उन्हें नापने के लिये किया। जब दो व्यक्ति नाप लिये तब दाऊद ने उनको आदेश दिया कि वे मारे जायेंगे। किन्तु हर एक तीसरा व्यक्ति जीवित रहने दिया गया। मोआब के लोग दाऊद के सेवक बन गए। उन्होंने उसे राजस्व* दिया।

[3]रहोब का पुत्र हददेजेर, सोबा का राजा था। दाऊद ने हददेजेर को उस समय पराजित किया जब उसने महानद के पास के क्षेत्र पर अधिकार करने का प्रयत्न किया। [4]दाऊद ने हददेजेर से सत्रह सौ घुड़सवार सैनिक लिये। उसने बीस हजार पैदल सैनिक भी लिये। दाऊद ने एक सौ के अतिरिक्त, सभी रथ के अश्वों को लंगड़ा कर दिया। उसने इन सौ अश्व रथों को बचा लिया।

[5]दमिश्क से अरामी लोग सोबा के राजा हददेजेर की सहायता के लिये आए। किन्तु दाऊद ने उन बाईस हजार अरामियों को पराजित किया। [6]तब दाऊद ने दमिश्क के अराम में सेना की टुकड़ियाँ रखी। अरामी दाऊद के सेवक बन गए और राजस्व लाए। यहोवा ने दाऊद को, जहाँ कहीं वह गया विजय दी।

[7]दाऊद ने उन सोने की ढालों को लिया जो हददेजेर के सैनिकों की थीं। दाऊद ने इन ढालों को लिया और उनको यरूशलेम लाया। [8]दाऊद ने तांबे की बनी बहुत सी चीजें बेतह और बरौते से भी लीं। (बेतह और बरौते दोनों नगर हददेजेर के थे।)

[9]हमात के राजा तोई ने सुना कि दाऊद ने हददेजेर की पूरी सेना को पराजित कर दिया। [10]तब तोई ने अपने पुत्र योराम को दाऊद के पास भेजा। योराम ने दाऊद का अभिवादन किया और आशीर्वाद दिया क्योंकि दाऊद ने हददेजेर के विरुद्ध युद्ध किया और उसे पराजित किया था। (हददेजेर ने, तोई से, पहले युद्ध किये थे।) योराम चाँदी, सोने और ताँबे की बनी चीजें लाया। [11]दाऊद ने इन

राजस्व पराजित करने वाले राजा को लोग जो धन देते हैं।

चीजों को लिया और यहोवा को समर्पित* कर दिया। उसने उसे अन्य सोने–चाँदी के साथ रखा जिसे उसने पराजित राष्ट्रों से लेकर यहोवा को समर्पित किया था। [12]ये राष्ट्र अराम, मोआब, अम्मोन , पलिश्ती और अमालेक थे। दाऊद ने सोबा के राजा रेहोब के पुत्र हददेजेर को भी पराजित किया।

[13]दाऊद ने अट्ठारह हजार अरामियों को नमक की घाटी में पराजित किया। वह उस समय प्रसिद्ध था जब वह घर लौटा। [14]दाऊद ने एदोम में सेना की टुकड़ियाँ रखी। उसने इन सैनिकों की टुकड़ियों को एदोम के पूरे देश में रखा। एदोम के सभी लोग दाऊद के सेवक हो गए। जहाँ कहीं दाऊद गया यहोवा ने उसे विजय दी।

दाऊद का शासन

[15]दाऊद ने सारे इस्राएल पर शासन किया। दाऊद के निर्णय सभी लोगों के लिये महत्वपूर्ण और उचित होते थे। [16]सरूयाह का पुत्र योआब सेना का सेनापति था। अहीलूद का पुत्र इतिहासकार था। [17]अहीतूब का पुत्र सादोक और एब्यातर का पुत्र अहीमेलेक दोनों याजक थे। सरायाह सचिव था। [18]यहोयादा का पुत्र बनायाह करेतियों और पलेतियों * का शासक था, और दाऊद के पुत्र महत्वपूर्ण प्रमुख* थे।

दाऊद शाऊल के परिवार पर कृपालु है

9 दाऊद ने पूछा, "क्या शाऊल के परिवार में अब तक कोई बचा है? मैं योनातन के कारण उस व्यक्ति पर दया करना चाहता हूँ।"

[2]शाऊल के परिवार से एक सेवक सीबा नाम का था। दाऊद के सेवकों ने सीबा को दाऊद के पास बुलाया। राजा दाऊद ने पूछा, "क्या तुम सीबा हो?"

सीबा ने कहा, "हाँ मैं सीबा, आपका सेवक हूँ।"

[3]राजा ने पूछा, "क्या शाऊल के परिवार में कोई बचा है? मैं उस व्यक्ति पर परमेश्वर की कृपा दिखाना चाहता हूँ।"

सीबा ने राजा दाऊद से कहा, "योनातन का एक पुत्र अभी तक जीवित है? वह दोनों पैरों से लंगड़ा है।"

[4]राजा ने सीबा से कहा, "यह पुत्र कहाँ है?"

सीबा ने राजा से कहा, "वह लो-दोबार में अम्मीएल के पुत्र माकीर के घरन में है।"

[5]दाऊद ने अपने सेवकों को लो-दोबार के अम्मीएल के पुत्र माकीर के घर से योनातन के पुत्र को लाने को कहा। [6]योनातन का पुत्र मेपीबोशेत दाऊद के पास आया और अपना सिर भूमि तक झुकाया।

दाऊद ने कहा, "मेपीबोशेत।"

मेपीबोशेत ने कहा, मैं आपका सेवक हूँ।"

[7]दाऊद ने मेपीबोशेत से कहा, "डरो नहीं। मैं तुम्हारे प्रति दयालु रहूँगा। मैं यह तुम्हारे पिता योनातन के लिये करूँगा। मैं तुम्हारे पितामह शाऊल की सारी भूमि तुमको दूँगा, और तुम सदा मेरी मेज पर भोजन कर सकोगे।"

[8]मेपीबोशेत दाऊद के सामने फिर झुका। मेपीबोशेत ने कहा, "आप अपने सेवक पर बहुत कृपालु रहे हैं और मैं एक मृत कुत्ते से अधिक अच्छा नहीं हूँ।"

[9]तब राजा दाऊद ने शाऊल के सेवक सीबा को बुलाया। दाऊद ने सीबा से कहा, "मैंने शाऊल के परिवार और जो कुछ उसका है उसे तुम्हारे स्वामी के पौत्र (मेपीबोशेत) को दे दिया है। [10]तुम मेपीबोशेत के लिये भूमि पर खेती करोगे। तुम्हारे पुत्र और सेवक मेपीबोशेत के लिये यह करेंगे। तुम फसल काटोगे। तब तुम्हारे स्वामी का पौत्र (मेपीबोशेत) खाने के लिये भोजन पाएगा। किन्तु मेपीबोशेत तुम्हारे स्वामी का पौत्र मेरी मेज पर खाने का सदा अधिकारी होगा।"

सीबा के पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे। [11]सीबा ने राजा दाऊद से कहा, "मै आपका सेवक हूँ। मैं वह सब कुछ करूँगा, जो मेरे स्वामी, मेरे राजा आदेश देंगे।"

अत: मेपीबोशेत ने दाऊद की मेज पर राजा के पुत्रों में से एक की तरह भोजन किया। [12]मेपीबोशेत का एक छोटा पुत्र मीका नाम का था। सीबा परिवार के सभी लोग मेपीबोशेत के सेवक हो गए। [13]मेपीबोशेत दोनों पैरो से लंगड़ा था। मेपीबोशेत यरूशलेम में रहता था। हर एक दिन मेपीबोशेत राजा की मेज पर भोजन करता था।

हानून दाऊद के व्यक्तियों को लज्जित करता है

10 बाद में, अम्मोनियों का राजा नाहाश मरा। उसके बाद उसका पुत्र हानून राजा हुआ। [2]दाऊद ने कहा, "नाहाश मेरे प्रति कृपालु रहा। इसलिये मैं उसके

समर्पित विशेष उपयोग के लिये देना।
करेतियों और पलेतियों ये दाऊद के विशेष अंगरक्षक थे। एक प्राचीन अर्मेई अनुवाद में "धनुर्धर और पत्थर फेंक है।
प्रमुख शाब्दिक "याजक"।

पुत्र हानून के प्रति कृपालु रहूँगा।" इसलिये दाऊद ने हानून को उसके पिता की मृत्यु पर सांत्वना देने के लिये अपने अधिकारियों को भेजा। अत: दाऊद के सेवक अम्मोनियों के देश में गये। [3]किन्तु अम्मोनी प्रमुखों ने अपने स्वामी हानून से कहा, "क्या आप समझते हैं कि दाऊद कुछ व्यक्तियों को आपके पास सांत्वना देने के लिये भेजकर आपके पिता को सम्मान देने का प्रयत्न कर रहा है? नहीं! दाऊद ने इन व्यक्तियो को आपके नगर के बारे मे गुप्त रूप से जानने और समझने के लिये भेजा है। वे आपके विरुद्ध युद्ध की योजना बना रहे हैं।"

[4]इसलिये हानून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ा और उनकी आधी दाढ़ी कटवा दी। उसने उनके वस्त्रों को बीच से कमर के नीचे तक कटवा दिया। तब उसने उन्हें भेज दिया।

[5]जब लोगों ने दाऊद से कहा, तो उसने अपने अधिकारियों से मिलने के लिये दूतों को भेजा। उसने यह इसलिये किया क्योंकि ये लोग बहुत लज्जित थे। राजा दाऊद ने कहा, "जब तक तुम्हारी दाढ़ियाँ फिर से न बढ़े तब तक यरीहो में ठहरो। तब यरूशलेम लौट आओ।"

अम्मोनियों के विरुद्ध युद्ध

[6]अम्मोनियों ने समझ लिया कि वे दाऊद के शत्रु हो गये। इसलिये उन्होंने अरामी को बेत्रहोब और सोबा से पारिश्रमिक पर बुलाया। वहाँ बीस हजार अरामी पैदल-सैनिक आए थे। अम्मोनियों ने तोब से बारह हजार सैनिकों और माका के राजा को एक हजार सैनिकों के साथ पारिश्रमिक पर बुलाया।

[7]दाऊद ने इस विषय में सुना। इसलिये उसने योआब और शक्तिशाली व्यक्तियों की सारी सेना भेजी। [8]अम्मोनी बाहर निकले और युद्ध के लिये तैयार हुए। वे नगर द्वार पर खड़े हुए। योआब और रहोब के अरामी तथा तोब और माका के व्यक्ति स्वयं खुले मैदान में नहीं खड़े हुये।

[9]योआब ने देखा कि अम्मोनी उसके विरुद्ध सामने और पीछे दोनों ओर खड़े हैं। इसलिये उसने इस्राएलियों में से कुछ उत्तम योद्धाओं को चुना। योआब ने इन उत्तम सैनिकों को अरामियों के विरुद्ध लड़ने को तैयार किया। [10]तब योआब ने अन्य लोगों को अपने भाई अबीशै के नेतृत्व में अम्मोनी के विरुद्ध भेजा। [11]योआब ने अबीशै से कहा, "यदि अरामी हमसे अधिक शक्तिशाली हों तो तुम मेरी सहायता करना। यदि अम्मोनी तुमसे अधिक शक्तिशाली होगी तो मैं आकर तुम्हे सहायता दूँगा। [12]वीर बनो, और हम अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगर के लिये वीरता से युद्ध करेंगे। यहोवा वही करेगा जिसे वह ठीक मानता है।"

[13]तब योआब और उसके सैनिकों ने अरामियों पर आक्रमण किया। अरामी योआब और उसके सैनिकों के सामने भाग खड़े हुए। [14]अम्मोनियों ने देखा कि अरामी भाग रहे हैं, इसलिये वे अबीशै के सामने से भाग खड़े हुए और अपने नगर में लौट गए।

इस प्रकार योआब अम्मोनियों के साथ युद्ध से लौटा और यरूशलेम वापस आया।

अरामी फिर लड़ने का निश्चय करते हैं

[15]अरामियों ने देखा कि इस्राएलियों ने उन्हें हरा दिया। इसलिये वे एक विशाल सेना के रूप में इकट्ठे हुए। [16]हददेजेर ने परात नदी की दूसरी ओर रहने वाले अरामियों को लाने के लिये दूत भेजे। ये अरामी हेलाम पहुँचे। उनका संचालक शोबक था, जो हददेजेर की सेना का सेनापति था।

[17]दाऊद को इसका पता लगा। इसलिये उसने सारे इस्राएलियों को एक साथ इकट्ठा किया उन्होंने यरदन नदी को पार किया और वे हेलाम पहुँचे।

वहाँ अरामियों ने आक्रमण की तैयारी की और धावा बोल दिया। [18]किन्तु दाऊद ने अरामियों को पराजित किया और वे इस्राएलियों के सामने भाग खड़े हुए। दाऊद ने बहुत से अरामियों को मार डाला। सात सौ सारथी तथा चालीस हजार घुड़सवार दाऊद ने अरामी सेना के सेनापति शोबक को भी मार डाला।

[19]जो राजा, हददेजेर की सेवा कर रहे थे उन्होंने देखा कि इस्राएलियों ने उनको हरा दिया। इसलिये उन्होंने इस्राएलियों से सन्धि की और उनकी सेवा करने लगे। अरामी अम्मोनियों को फिर सहायता देने से भयभीत रहने लगे।

दाऊद बतशेबा से मिलता है

11 बसन्त में, जब राजा युद्ध पर निकलते हैं, दाऊद ने योआब, उसके अधिकारियों और सभी इस्राएलियों को अम्मोनियों को नष्ट करने के लिये

भेजा। योआब की सेना ने रब्बा (राजधानी) पर भी आक्रमण किया।

किन्तु दाऊद यरूशलेम में रुका। [2]शाम को वह अपने बिस्तर से उठा। वह राजमहल की छत पर चारों ओर घूमा। जब दाऊद छत पर था, उसने एक स्त्री को नहाते देखा। स्त्री बहुत सुन्दर थी। [3]इसलिये दाऊद ने अपने सेवकों को बुलाया और उनसे पूछा कि वह स्त्री कौन थी? एक सेवक ने उत्तर दिया, "वह स्त्री एलीआम की पुत्री बतशेबा है। वह हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी है।"

[4]दाऊद ने बतशेबा को अपने पास बुलाने के लिये दूत भेजे। जब वह दाऊद के पास आई तो उसने उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। उसने स्नान किया और वह अपने घर चली गई। [5]किन्तु बतशेबा गर्भवती हो गई। उसने दाऊद को सूचना भेजी। उसने उससे कहा, "मैं गर्भवती हूँ।"

दाऊद अपने पाप को छिपाना चाहता है

[6]दाऊद ने योआब को सन्देश भेजा, "हित्ती ऊरिय्याह को मेरे पास भेजो।"

इसलिये योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास भेजा। [7]ऊरिय्याह दाऊद के पास आया। दाऊद ने ऊरिय्याह से बात की। दाऊद ने ऊरिय्याह से पूछा कि योआब कैसा है, सैनिक कैसे हैं और युद्ध कैसे चल रहा है। [8]तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "घर जाओ और आराम करो।" *

ऊरिय्याह ने राजा का महल छोड़ा। राजा ने ऊरिय्याह को एक भेंट भी भेजी। [9]किन्तु ऊरिय्याह अपने घर नहीं गया। ऊरिय्याह राजा के महल के बाहर द्वार पर सोया। वह उसी प्रकार सोया जैसे राजा के अन्य सेवक सोये। [10]सेवकों ने दाऊद से कहा, "उरिय्याह अपने घर नहीं गया।"

तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "तुम लम्बी यात्रा से आए। तुम घर क्यों नहीं गए?"

[11]ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा, "पवित्र सन्दूक तथा इस्राएल और यहूदा के सैनिक डेरों में ठहरे हैं। मेरे स्वामी योआब और मेरे स्वामी (दाऊद) के सेवक बाहर मैदानों में खेमा डाले पड़े हैं। इसलिये यह अच्छा नहीं कि मैं घर जाऊँ, खाऊँ, पीऊँ, और अपनी पत्नी के साथ सोऊँ।"

[12]दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "आज यहीं ठहरो। कल मैं तुम्हें युद्ध में वापस भेजूँगा।"

ऊरिय्याह उस दिन यरूशलेम में ठहरा। वह अगली सुबह तक रुका। [13]तब दाऊद ने उसे आने और खाने के लिये बुलाया। ऊरिय्याह ने दाऊद के साथ पीया और खाया। दाऊद ने उरिय्याह को नशे में कर दिया। किन्तु ऊरिय्याह, फिर भी घर नहीं गया। उस शाम को ऊरिय्याह राजा के सेवकों के साथ राजा के द्वार के बाहर सोया।

दाऊद ऊरिय्याह की मृत्यु की योजना बनाता है

[14]अगले प्रात:काल, दाऊद ने योआब के लिये एक पत्र लिखा। दाऊद ने ऊरिय्याह को वह पत्र ले जाने को दिया। [15]पत्र में दाऊद ने लिखा: "ऊरिय्याह को अग्रिम पंक्ति में रखो जहाँ युद्ध भयंकर हो। तब उसे अकेले छोड़ दो और उसे युद्ध में मारे जाने दो।"

[16]योआब ने नगर के घेरे बन्दी के समय यह देखा कि सबसे अधिक वीर अम्मोनी योद्धा कहाँ है। उसने ऊरिय्याह को उस स्थान पर जाने के लिये चुना। [17]नगर (रब्बा) के आदमी योआब के विरुद्ध लड़ने को आये। दाऊद के कुछ सैनिक मारे गये। हित्ती ऊरिय्याह उन लोगों में से एक था।

[18]तब योआब ने दाऊद को युद्ध में जो हुआ, उसकी सूचना भेजी। [19]योआब ने दूत से कहा कि वह राजा दाऊद से कहे कि युद्ध में क्या हुआ। [20]"सम्भव है कि राजा क्रुद्ध हो। संभव है कि राजा पूछे, 'योआब की सेना नगर के पास लड़ने क्यों गई? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि लोग नगर के प्राचीर से भी बाण चला सकते हैं? [21]क्या तुम नहीं जानते कि यरूब्बेशेत के पुत्र अबीमेलेक को किसने मारा? वहाँ एक स्त्री नगर-दीवार पर थी जिसने अबीमेलेक के ऊपर चक्की का ऊपरी पाट फेंका। उस स्त्री ने उसे तेबेस में मारा डाला। तुम दीवार के निकट क्यों गये?' (यदि राजा दाऊद यह पूछता है) तो तुम्हें उत्तर देना चाहिये 'आपका सेवक हित्ती ऊरिय्याह भी मर गया।'"

[22]दूत गया और उसने दाऊद को वह सब बताया जो उसे योआब ने कहने को कहा था। [23]दूत ने दाऊद से कहा, "अम्मोन के लोग जीत रहे थे वे बाहर आये तथा उन्होंने खुले मैदान में हम पर आक्रमण किया। किन्तु हम लोग उनसे नगर-द्वार पर लड़े। [24]नगर दीवार के सैनिकों ने आपके सेवकों पर बाण चलाये। आपके कुछ सेवक मारे गए। आपका सेवक हित्ती ऊरिय्याह भी मारा गया।"

आराम करो शाब्दिक "अपना पैर धोओ।"

[25]दाऊद ने दूत से कहा, "तुम्हें योआब से यह कहना है: 'इस परिणाम से परेशान न हो। हर युद्ध में कुछ लोग मारे जाते हैं यह किसी को नहीं मालूम कि कौन मारा जायेगा। रब्बा नगर पर भीषण आक्रमण करो। तब तुम उस नगर को नष्ट करोगे।' योआब को इन शब्दों से प्रोत्साहित करो।"

दाऊद बतशेबा से विवाह करता है

[26]बतशेबा ने सुना कि उसका पति ऊरिय्याह मर गया। तब वह अपने पति के लिये रोई। [27]जब उसने शोक का समय पूरा कर लिया, तब दाऊद ने उसे अपने घर में लाने के लिये सेवकों को भेजा। वह दाऊद की पत्नी हो गई, और उसने दाऊद के लिये एक पुत्र उत्पन्न किया। दाऊद ने जो बुरा काम किया यहोवा ने उसे पसन्द नहीं किया।

नातान दाऊद से बात करता है

12 यहोवा ने नातान को दाऊद के पास भेजा। नातान दाऊद के पास गया। नातान ने कहा, "नगर में दो व्यक्ति थे। एक व्यक्ति धनी था। किन्तु दूसरा गरीब था। [2]धनी आदमी के पास बहुत अधिक भेड़ें और पशु थे। [3]किन्तु गरीब आदमी के पास, एक छोटे मादा मेमने के अतिरिक्त जिसे उसने खरीदा था, कुछ न था। गरीब आदमी उस मेमने को खिलाता था। यह मेमना उस गरीब आदमी के भोजन में से खाता था और उसके प्याले में से पानी पीता था। मेमना गरीब आदमी की छाती से लग कर सोता था। मेमना उस व्यक्ति की पुत्री के समान था।

[4]"तब एक यात्री धनी व्यक्ति से मिलने के लिये वहाँ आया। धनी व्यक्ति यात्री को भोजन देना चाहता था। किन्तु धनी व्यक्ति अपनी भेड़ या अपने पशुओं में से किसी को यात्री को खिलाने के लिये नहीं लेना चाहता था। उस धनी व्यक्ति ने उस गरीब से उसका मेमना ले लिया। धनी व्यक्ति ने उसके मेमने को मार डाला और अपने अतिथि के लिये उसे पकाया।"

[5]दाऊद धनी आदमी पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने नातान से कहा, "यहोवा शाश्वत है, निश्चय जिस व्यक्ति ने यह किया वह मरेगा। [6]उसे मेमने की चौगुनी कीमत चुकानी पड़ेगी क्योंकि उसने यह भयानक कार्य किया और उसमें दया नहीं थी।"

नातान, दाऊद को उसके पाप के बारे में बताता है

[7]तब नातान ने दाऊद से कहा, "तुम वो धनी पुरुष हो! यहोवा इस्राएल का परमेश्वर यह कहता है: 'मैंने तुम्हारा अभिषेक इस्राएल के राजा के रूप में किया। मैंने तुम्हे शाऊल से बचाया। [8]मैंने उसका परिवार और उसकी पत्नियाँ तुम्हें लेने दीं, और मैंने तुम्हें इस्राएल और यहूदा का राजा बनाया। जैसे वह पर्याप्त नहीं हो, मैंने तुम्हें अधिक से अधिक दिया। [9]फिर तुमने यहोवा के आदेश की उपेक्षा क्यों की? तुमने वह क्यों किया जिसे वह पाप कहता है। तुमने हित्ती ऊरिय्याह को तलवार से मारा और तुमने उसकी पत्नी को अपनी पत्नी बनाने के लिये लिया। हाँ, तुमने ऊरिय्याह को अम्मोनियों की तलवार से मार डाला। [10]इसलिये सदैव तुम्हारे परिवार में कुछ लोग ऐसे होगें जो तलवार से मारे जायेगें। तुमने ऊरिय्याह हित्ती की पत्नी ली। इस प्रकार तुमने यह प्रकट किया कि तुम मेरी परवाह नहीं करते।'

[11]"यही है जो यहोवा कहता है: 'मैं तुम्हारे विरुद्ध आपत्तियाँ ला रहा हूँ। यह आपत्ति तुम्हारे अपने परिवार से आएंगी। मैं तुम्हारी पत्नियों को ले लूँगा और उसे दूँगा जो तुम्हारे बहुत अधिक समीप है। यह व्यक्ति तुम्हारी पत्नियों के साथ सोएगा और इसे हर एक जानेगा। [12]तुम बतशेबा के साथ गुप्त रूप में सोये। किन्तु मैं यह करूँगा जिससे इस्राएल के सारे लोग इसे देख सकें।'"

[13]तब दाऊद ने नातान से कहा, "मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।"

नातान ने दाऊद से कहा, "यहोवा तुम्हें क्षमा कर देगा, यहाँ तक की इस पाप के लिये भी तुम मरोगे नहीं। [14]किन्तु इस पाप को जो तुमने किया है उससे यहोवा के शत्रुओ ने यहोवा का सम्मान करना छोड़ दिया है। अत: इस कारण जो तुम्हारा पुत्र उत्पन्न हुआ है, मर जाएगा।"

दाऊद और बतशेबा का बच्चा मर जाता है

[15]तब नातान अपने घर गया और यहोवा ने दाऊद और ऊरिय्याह की पत्नी से जो पुत्र उत्पन्न हुआ था उसे बहुत बीमार कर दिया। [16]दाऊद ने बच्चे के लिये परमेश्वर से प्रार्थना की। दाऊद ने खाना–पीना बन्द कर दिया। वह अपने घर में गया और उसमें ठहरा रहा। वह रातभर भूमि पर लेटा रहा।

[17]दाऊद के परिवार के प्रमुख आये और उन्होंने उसे भूमि से उठाने का प्रयत्न किया। किन्तु दाऊद ने उठना अस्वीकार किया। उसने इन प्रमुखों के साथ खाना खाने से भी इन्कार कर दिया।

[18]सातवें दिन बच्चा मर गया। दाऊद के सेवक दाऊद से यह कहने से डरते थे कि बच्चा मर गया। उन्होंने कहा, "देखो, हम लोगों ने दाऊद से उस समय बात करने का प्रयत्न किया जब बच्चा जीवित था। किन्तु उसने हम लोगों की बात सुनने से इन्कार कर दिया। यदि हम दाऊद से कहेंगे कि बच्चा मर गया तो हो सकता है वह अपने को कुछ हानि कर ले।"

[19]किन्तु दाऊद ने अपने सेवकों को कानाफूसी करते देखा। तब उसने समझ लिया कि बच्चा मर गया। इसलिये दाऊद ने अपने सेवकों से पूछा, "क्या बच्चा मर गया?"

सेवको ने उत्तर दिया, "हाँ वह मर गया।"

[20]दाऊद फर्श से उठा। वह नहाया। उसने अपने वस्त्र बदले और तैयार हुआ। तब वह यहोवा के गृह में उपासना करने गया। तब वह घर गया और कुछ खाने को माँगा। उसके सेवकों ने उसे कुछ खाना दिया और उसने खाया।

[21]दाऊद के नौकरों ने उससे कहा, "आप यह क्यों कर रहे हैं? जब बच्चा जीवित था तब आपने खाने से इन्कार किया। आप रोये। किन्तु जब बच्चा मर गया तब आप उठे और आपने भोजन किया।"

[22]दाऊद ने कहा, "जब बच्चा जीवित रहा, मैंने भोजन करना अस्वीकार किया, और मैं रोया क्योंकि मैंने सोचा, 'कौन जानता है, संभव है यहोवा मेरे लिये दुःखी हों और बच्चे को जीवित रहने दें।' [23]किन्तु अब बच्चा मर गया। इसलिये मैं अब खाने से क्यों इन्कार करुँ? क्या मैं बच्चे को फिर जीवित कर सकता हूँ? नहीं! किसी दिन मैं उसके पास जाऊँगा, किन्तु वह मेरे पास लौटकर नहीं आ सकता।"

सुलैमान उत्पन्न होता है

[24]तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को सान्त्वना दी। वह उसके साथ सोया और उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। बतशेबा फिर गर्भवती हुई। उसका दूसरा पुत्र हुआ। दाऊद ने उस लड़के का नाम सुलैमान रखा। यहोवा सुलैमान से प्रेम करता था। [25]यहोवा ने नबी नातान द्वारा सन्देश भेजा। नातान ने सुलैमान का नाम यदीद्याह* रखा। नातान ने यह यहोवा के लिये किया।

दाऊद रब्बा पर अधिकार करता है

[26]रब्बा नगर अम्मोनियों का राजधानी था। योआब रब्बा के विरुद्ध में लड़ा। उसने नगर को ले लिया। [27]योआब ने दाऊद के पास दूत भेजा और कहा, "मैंने रब्बा के विरुद्ध युद्ध किया है। मैंने जल के नगर को जीत लिया है। [28]अब अन्य लोगों को साथ लायें और इस नगर (रब्बा) पर आक्रमण करें। इस नगर पर अधिकार कर लो, इसके पहले की मैं इस पर अधिकार करूँ। यदि इस नगर पर मैं अधिकार करता हूँ तो उस नगर का नाम मेरे नाम पर होगा।"

[29]तब दाऊद ने सभी लोगों को इकट्ठा किया और रब्बा को गया। वह रब्बा के विरुद्ध लड़ा और नगर पर उसने अधिकार कर लिया। [30]दाऊद ने उनके राजा के सिर से मुकुट उतार दिया।* मुकुट सोने का था और वह तौल में लगभग पचहत्तर पौंड था। इस मुकुट में बहुमूल्य रत्न थे। उन्होंने मुकुट को दाऊद के सिर पर रखा। दाऊद नगर से बहुत सी कीमती चीजें ले गया।

[31]दाऊद रब्बा नगर से भी लोगों को बाहर लाया। दाऊद ने उन्हें आरे, लोहे की गैती और कुल्हाड़ियों से काम करवाया। उसने उन्हें ईंटों से निर्माण करने के लिये भी विवश किया। दाऊद ने वही व्यवहार सभी अम्मोनी नगरों के साथ किया। तब दाऊद और उसकी सारी सेना यरूशलेम लौट गई।

अम्नोन और तामार

13 दाऊद का एक पुत्र अबशालोम था। अबशालोम की बहन का नाम तामार था। तामार बहुत सुन्दर थी। दाऊद के अन्य पुत्रों में से एक पुत्र अम्नोन था [2]जो तामार से प्रेम करता था। तामार कुवाँरी थी। अम्नोन उसके साथ कुछ बुरा करन को नहीं सोचता था। लेकिन अम्नोन उस बहुत चाहता था। अम्नोन उस के बाहे मे इतना सोचन लगा कि वह बिमार हो गया।

यदीद्याह इस नाम का अर्थ "प्रभु का प्रिय" है।

दाऊद ... उतार दिया या "मिल्कम के सिर से" मिल्कम एक असत्य देवता था, जिसकी पूजा अम्मोनी लोग करते थे।

[3]अम्नोन का एक मित्र शिमा का पुत्र योनादाब था। (शिमा दाऊद का भाई था।) योनादाब बहुत चालाक आदमी था। [4]योनादाब ने अम्नोन से कहा, "हर दिन तुम दुबले–दुबले से दिखाई पड़ते हो! 'तुम राजा के पुत्र हो! तुम्हें खाने के लिये बहुत अधिक है, तो भी तुम अपना वजन क्यों खोते जा रहे हो? मुझे बताओ!"

अम्नोन ने योनादाब से कहा, "मैं तामार से प्रेम करता हूँ। किन्तु वह मेरे सौतेले भाई अबशालोम की बहन है।"

[5]योनादाब ने अम्नोन से कहा, "बिस्तर में लेट जाओ। ऐसा व्यवहार करो कि तुम बीमार हो। तब तुम्हारे पिता तुमको देखने आऐंगे। उनसे कहो, 'कृपया मेरी बहन तामार को आने दें और मुझे खाना देने दें। उसे मेरे सामने भोजन बनाने दें। तब मैं उसे देखूँगा और उसके हाथ से खाऊँगा।'"

[6]इसलिये अम्नोन बिस्तर में लेट गया, और ऐसा व्यवहार किया मानों वह बीमार हो। राजा दाऊद अम्नोन को देखने आया। अम्नोन ने राजा दाऊद से कहा, "कृपया मेरी बहन तामार को यहाँ आने दें। मेरे देखते हुए उसे मेरे लिये दो रोटी बनाने दें। तब मैं उसके हाथों से खा सकता हूँ।"

[7]दाऊद ने तामार के घर सन्देशवाहकों को भेजा। संदेशवाहकों ने तामार से कहा, "अपने भाई अम्नोन के घर जाओ और उसके लिये कुछ भोजन पकाओ।"

तामार अम्नोन के लिये भोजन बनाती है

[8]अत: तामार अपने भाई अम्नोन के घर गई। अम्नोन बिस्तर में था। तामार ने कुछ गूंधा आटा लिया और इसे अपने हाथों से एक साथ दबाया। उसने अम्नोन के देखते हुये कुछ रोटियाँ बनाई। तब उसने रोटियों को पकाया। [9]जब तामार ने रोटियाँ को पकाना पूरा किया तो उसने कढ़ाही में से रोटियों को अम्नोन के लिये निकाला। किन्तु अम्नोन ने खाना अस्वीकार किया।

अम्नोन ने अपने सेवकों से कहा, "तुम सभी लोग चले जाओ। मुझे अकला रहते दो!" इसलिये सभी सेवक अम्नोन के कमरे से बाहर चले गए।

[10]अम्नोन ने तामार से कहा, "भोजन भीतर वाले कमरे में ले चलो। तब मैं तुम्हारे हाथ से खाऊँगा।"

अम्नोन तामार के साथ कुकर्म करता है

तामार अपने भाई के पास भीतर वाले कमरे में गई। वह उन रोटियों को लाई जो उसने बनाए थे। [11]वह अम्नोन के पास गई जिससे वह उसके हाथों से खा सके। किन्तु अम्नोन ने तामार को पकड़ लिया। उसने उससे कहा, "बहन, आओ, और मेरे साथ सोओ।"

[12]तामार ने अम्नोन से कहा, "नहीं, भाई! मुझे मजबूर न करो! यह इस्राएल में कभी नहीं किया जा सकता। यह लज्जाजनक काम न करो। [13]मैं इस लज्जा से कभी उबर नहीं सकती! तुम उन मूर्ख इस्राएलियों की तरह मत बनों कृपया राजा से बात करो। वह तुम्हें मेरे साथ विवाह करने देगा।"

[14]किन्तु अम्नोन ने तामार की एक न सुनी। वह तामार से अधिक शक्तिशाली था। उसने उसे शारीरिक सम्बन्ध करने के लिये विवश किया। [15]उसके बाद अम्नोन तामार से घृणा करने लगा। अम्नोन ने उसके साथ उससे भी अधिक घृणा की जितना वह पहले प्रेम करता था। अम्नोन ने तामार से कहा, "उठो और चली जाओ!"

[16]तामार ने अम्नोन से कहा, "अब मुझे अपने से दूर कर, तुम पहले से भी बड़ा पाप करने जा रहे हो!"

किन्तु अम्नोन ने तामार की एक न सुनी। [17]अम्नोन ने अपने युवक सेवक से कहा, "इस लड़की को इस कमरे से अभी बाहर निकालो। उसके जाने पर दरवाजे में ताला लगा दो।"

[18] अत: अम्नोन का सेवक तामार को कमरे के बाहर ले गया और उसके जाने पर ताला लगा दिया।

तामार ने कई रंग* का लबादा पहन रखा था। राजा की कुवाँरी कन्यायें ऐसा ही लबादा पहनती थीं। [19]तामार ने राख ली और अपने सिर पर डाल लिया। उसने अपने बहुरंगे लबादे को फाड़ डाला। उसने अपना हाथ अपने सिर पर रख लिया और वह जोर से रोने लगी।

[20]तामार के भाई अबशालोम ने तामार से कहा, "तो क्या तुम्हारे भाई अम्नोन ने तुम्हारे साथ सोया। अम्नोन तुम्हारा भाई है। बहन, अब शान्त रहो। इससे तुम बहुत परेशान न हो।" अत: तामार ने कुछ भी नहीं कहा। वह अबशालोम के घर रहने चली गई *

[21]राजा दाऊद को इसकी सूचना मिली। वह बहुत क्रोधित हुआ। [22]अबशालोम अम्नोन से घृणा करता था। अबशालोम ने अच्छा या बुरा अम्नोन से कुछ नहीं कहा।

कई रंग या "पट्टीदार।"

वह ... गई या "तामार एक बरबाद स्त्री जो अपने भाई अबशालोम के घर रहती थी।"

वह अम्नोन से घृणा करता था क्योंकि अम्नोन ने उसकी बहन के साथ कुकर्म किया था।

अबशालोम का बदला

[23]दो वर्ष बाद कुछ व्यक्ति एप्रैम के पास बाल्हासोर में अबशालोम की भेड़ों का ऊन काटने आये। अबशालोम ने राजा के सभी पुत्रों को आने और देखने के लिये आमन्त्रित किया। [24]अबशालोम राजा के पास गया और उससे कहा, "मेरे पास कुछ व्यक्ति मेरी भेड़ों से ऊन काटने आ रहे हैं। कृपया अपने सेवकों के साथ आएँ और देखें।"

[25]राजा दाऊद ने अबशालोम से कहा, "पुत्र नहीं। हम सभी नहीं जाएँगे। इससे तुम्हें परेशानी होगी।" अबशालोम ने दाऊद से चलने की प्रार्थना की। दाऊद नहीं गया, किन्तु उसने आशीर्वाद दिया।

[26]अबशालोम ने कहा, "यदि आप जाना नहीं चाहते तो, कृपाकर मेरे भाई अम्नोन को मेरे साथ जाने दे।" राजा दाऊद ने अबशालोम से पूछा, "वह तुम्हारे साथ क्यों जाये?"

[27]अबशालोम दाऊद से प्रार्थना करता रहा। अन्त में दाऊद ने अम्नोन और सभी राजपुत्रों को अबशालोम के साथ जाने दिया।

अम्नोन की हत्या की गई

[28]तब अबशालोम ने अपने सेवकों को आदेश दिया। उसने उनसे कहा, "अम्नोन पर नजर रखो। जब वह नशे में धुत होगा तब मैं तुम्हें आदेश दूँगा अम्नोन को जान से मार डालो। सजा पाने से डरो नहीं। आखिकार, तुम मेरे आदेश का पालन करोगे। अब शक्तिशाली और वीर बनों।"

[29]अबशालोम के युवकों ने अबशालोम के आदेश के अनुसार अम्नोन को मार डाला। किन्तु दाऊद के अन्य पुत्र बच निकले। हर एक पुत्र अपने खच्चर पर बैठा और भाग गया।

दाऊद अम्नोन की मृत्यु की सूचना पाता है

[30]जब राजा के पुत्र मार्ग में थे, दाऊद को सूचना मिली। सूचना यह थी, "अबशालोम ने राजा के सभी पुत्रों को मार डाला है! कोई भी पुत्र बचा नहीं है।"

[31]राजा दाऊद ने अपने वस्त्र फाड़ डाले और धरती पर लेट गया। दाऊद के पास खड़े उसके सभी सेवकों ने भी अपने वस्त्र फाड़ डाले।

[32]किन्तु शिमा (दाऊद के भाई) के पुत्र योनादाब ने दाऊद से कहा, "ऐसा मत सोचो कि राजा के सभी युवक पुत्र मार डाले गए है। नहीं, यह केवल अम्नोन है जो मारा गया हैं। जब से अम्नोन ने उसकी बहन तामार के साथ कुकर्म किया था तभी से अबशालोम ने यह योजना बनाई थी। [33]मेरे स्वामी राजा यह न सोचें कि सभी राजपुत्र मारे गए हैं। केवल अम्नोन ही मारा गया।"

[34]अबशालोम भाग गया।

एक रक्षक नगर-प्राचीर पर खड़ा था। उसने पहाड़ी की दूसरी ओर से कई व्यक्तियों को आते देखा। [35]इसलिये योनादाब ने राजा दाऊद से कहा, "देखो, मैं बिल्कुल सही था। राजा के पुत्र आ रहें हैं।"

[36]जब योनादाब ने ये बातें कही तभी राजपुत्र आ गए। वे जोर-जोर से रो रहे थे। दाऊद और उसके सभी सेवक रोने लगे। वे सभी बहुत विलाप कर रहे थे। [37]दाऊद अपने पुत्र (अम्नोन) के लिये बहुत दिनों तक रोया।

अबशालोम गशूर को भाग गया*

अबशालोम गशूर के राजा अम्मीहूर के पुत्र तल्मै के पास भाग गया। [38]अबशालोम के गशूर भाग जाने के बाद, वह वहाँ तीन वर्ष तक ठहरा। [39]अम्नोन की मृत्यु के बाद दाऊद शान्त हो गया। लेकिन अभशालोम उसे बहुत याद आता था।

योआब एक बुद्धिमती स्त्री को दाऊद के पास भेजता है

14 सरूयाह का पुत्र योआब जानता था कि राजा दाऊद अबशालोम के बारे में सोच रहा है। [2]इसलिये योआब ने तकोआ का एक दूत वहाँ से एक बुद्धिमती स्त्री को लाने के लिये भेजा। योआब ने इस बुद्धिमती स्त्री से कहा, "कृपया बहुत अधिक शोकग्रस्त होने का दिखावा करो। शोक-वस्त्र पहन लो, तेल न लगाओ। वैसी स्त्री का व्यवहार करो जो किसी मृत के लिये कई दिन से रो रही है। [3]राजा के पास जाओ और

अबशालोम ... गया तल्मै, अबशालोम का पितामह था। देखे 2शमू. 3:3

जो मैं कहता हूँ, उन्हीं शब्दों का उपयोग करते हुए उनसे बातें करो।" तब योआब ने उस बुद्धिमती स्त्री को क्या कहना है, यह बता दिया।

[4]तब तकोआ की उस स्त्री ने राजा से बातें कीं। वह फर्श पर गिर पड़ी उसका ललाट फर्श पर जा टिका। वह झुकी और बोली, "राजा, मुझे सहायता दे!"

[5]राजा दाऊद ने उससे कहा, "तुम्हारी समस्या क्या है?"

उस स्त्री ने कहा, "मैं विधवा हूँ। मेरा पति मर चुका है। [6]मेरे दो पुत्र थे। ये दोनों पुत्र बाहर मैदानों में लड़े। उन्हें कोई रोकने वाला न था। एक पुत्र ने दूसरे पुत्र को मार डाला। [7]अब सारा परिवार मेरे विरुद्ध है। वे मुझसे कहते थे, 'उस पुत्र को लाओ जिसने अपने भाई को मार डाला। तब हम उसे मार डालेंगे, क्योंकि उसने अपने भाई को मार डाला था।' इस प्रकार उसके उत्तराधिकारी से छुटकारा मिल सकता है। मेरा पुत्र अग्नि की आखिरी चिनगारी की तरह होगा, और वह अन्तिम चिनगारी जलेगी और बुझ जाएगी। तब मेरे मृत पति का नाम और उसकी सम्पत्ति इस धरती से मिट जायेगी।"

[8]तब राजा ने स्त्री से कहा, "घर जाओ। मैं स्वयं तुम्हारा मामला निपटाऊँगा।"

[9]तकोआ की स्त्री ने राजा से कहा, "हे राजा मेरे स्वामी, दोष मुझ पर आने दें! किन्तु आप और आपका राज्य निर्दोष है।"

[10]राजा दाऊद ने कहा, "उस व्यक्ति को लाओ जो तुम्हें बुरा–भला कहता है। तब वह व्यक्ति तुम्हें फिर परेशान नहीं करेगा।"

[11]स्त्री ने कहा, "कृपया अपने यहोवा परमेश्वर के नाम पर शपथ लें कि आप इन लोगों को रोकेंगे। तब वे लोग जो हत्यारे को दण्ड देना चाहते हैं मेरे पुत्र को दण्ड नहीं देंगे।"

दाऊद ने कहा, "यहोवा शाश्वत है, तुम्हारे पुत्र को कोई व्यक्ति चोट नहीं पहुँचायेगा। तुम्हारे पुत्र का एक बाल भी बाँका नहीं होगा।"

[12]उस स्त्री ने कहा, "मेरे स्वामी, राजा कृपया मुझे आपसे कुछ कहने का अवसर दें।"

राजा ने कहा, "कहो"

[13]तब उस स्त्री ने कहा, "आपने परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध यह योजना क्यों बनाई है? हाँ, जब आप यह कहते हैं आप यह प्रकट करते हैं कि आप अपराधी हैं। क्यों? क्योंकि आप अपने पुत्र को वापस नहीं ला सके हैं जिसे आपने घर छोड़ने को विवश किया था। [14]यह सही है कि हम सभी किसी दिन मरेंगे। हम लोग उस पानी की तरह हैं जो भूमि पर फेंका गया है। कोई भी व्यक्ति भूमि से उस पानी को इकट्ठा नहीं कर सकता। किन्तु परमेश्वर माफ करता है। उसके पास उन लोगों के लिए एक योजना है जो अपना घर छोड़ने को विवश किये गए हैं–परमेश्वर उनको अपने से अलग नहीं करता। [15]मेरे प्रभु, राजा मैं यह बात कहने आपके पास आई। क्यों? क्योंकि लोगों ने मुझे भयभीत किया। मैंने अपने मन में कहा कि, 'मैं राजा से बात करूंगी। संभव है राजा मेरी सुनेंगे। [16]राजा मेरी सुनेंगे, और मेरी रक्षा उस व्यक्ति से करेंगे जो मुझे और मेरे पुत्र दोनों को मारना चाहते हैं और उन चीजों को प्राप्त करने से रोकना चाहते हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमें दी है।' [17]मैं जानती हूँ* कि मेरे राजा मेरे प्रभु के शब्द मुझे शान्ति देंगे क्योंकि आप परमेश्वर के दूत के समान होंगे। आप समझेंगे कि क्या अच्छा और क्या बुरा है। यहोवा आपका परमेश्वर, आपके साथ होगा।"

[18]राजा दाऊद ने उस स्त्री को उत्तर दिया, "तुम्हें उस प्रश्न का उत्तर देना चाहिये जिसे मैं तुमसे पूछूँगा"

उस स्त्री ने कहा, "मेरे प्रभु, राजा, कृपया अपना प्रश्न पूछें।"

[19]राजा ने कहा, "क्या योआब ने ये सारी बातें तुमसे कहने को कहा है?"

उस स्त्री ने जवाब दिया, मेरे प्रभु राजा, आपके जीवन की शपथ, आप सही हैं। आपके सेवक योआब ने ये बातें कहने के लिये कहा। [20]योआब ने यह इसलिये किया जिससे आप तथ्यों को दूसरी दृष्टि से देखेंगे। मेरे प्रभु आप परमेश्वर के दूत के समान बुद्धिमान हैं। आप सब कुछ जानते हैं जो पृथ्वी पर होता है।"

अबशालोम यरूशलेम लौटता है

[21]राजा ने योआब से कहा, "देखो, मैं वह करूँगा जिसके लिये मैंने वचन दिया है। अब कृपया युवक अबशालोम को वापस लाओ।"

जानती हूँ शाब्दिक "कहती हूँ।"

योआब ... देखेंगे शाब्दिक "जिससे तथ्य का बाहरी रुप बदल जाय।"

[22]योआब ने भूमि तक अपना माथा झुकाया। उसने राजा दाऊद के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा, "आज मैं समझता हूँ कि आप मुझ पर प्रसन्न हैं। मैं यह समझता हूँ क्योंकि आपने वही किया जो मेरी माँग थी।"

[23]तब योआब उठा और गशूर गया तथा अबशालोम को यरूशलेम लाया। [24]किन्तु राजा दाऊद ने कहा, "अबशालोम अपने घर को लौट सकता है। वह मुझसे मिलने नहीं आ सकता।" इसलिये अबशालोम अपने घर को लौट गया। अबशालोम राजा से मिलने नहीं जा सका।

[25]अबशालोम की अत्याधिक प्रशंसा उसके सुन्दर रूप के लिये थी। इस्राएल में कोई व्यक्ति इतना सुन्दर नहीं था जितना अबशालोम। अबशालोम के सिर से पैर तक कोई दोष नहीं था। [26]हर एक वर्ष के अन्त में अबशालोम अपने सिर के बाल काटता था और उसे तोलता था। बालों का तोल लगभग पाँच पौंड* था। [27]अबशालोम के तीन पुत्र थे और एक पुत्री। उस पुत्री का नाम तामार था। तामार एक सुन्दर स्त्री थी।

अबशालोम योआब को अपने से मिलने के लिये विवश करता है

[28]अबशालोम पूरे दो वर्ष तक, दाऊद से मिलने की स्वीकृति के बिना, यरूशलेम में रहा। [29]अबशालोम ने योआब के पास दूत भेजे। इन दूतों ने योआब से कहा कि तुम अबशालोम को राजा के पास भेजो। किन्तु योआब अबशालोम से मिलने नहीं आया। अबशालोम ने दूसरी बार सन्देश भेजा। किन्तु योआब ने फिर भी आना अस्वीकार किया।

[30]तब अबशालोम ने अपने सेवकों से कहा, "देखो, योआब का खेत मेरे खेत से लगा है। उसके खेत में जौ की फसल है। जाओ और जौ को जला दो।"

इसलिये अबशालोम के सेवक गए और योआब के खेत में आग लगानी आरम्भ की। [31]योआब उठा और अबशालोम के घर आया। योआब ने अबशालोम से कहा, "तुम्हारे सेवकों ने मेरा खेत को क्यों जलाया?"

[32]अबशालोम ने योआब से कहा, "मैंने तुमको सन्देश भेजा। मैंने तुमसे यहाँ आने को कहा। मैं तुम्हें राजा के पास भेजना चाहता था। मैं उससे पूछना चाहता था कि उसने गशूर से मुझे घर क्यों बुलाया। मैं उससे मिल नहीं सकता, अत: मेरे लिये गशूर में रहना कहीं अधिक अच्छा था। अब मुझे राजा से मिलने दो। यदि मैंने पाप किया है तो वह मुझे मार सकता है।"

अबशालोम दाऊद से मिलता है

[33]तब योआब राजा के पास आया और अबशालोम का कहा हुआ सुनाया। राजा ने अबशालोम को बुलाया। तब अबशालोम राजा के पास आया। अबशालोम ने राजा के सामने भूमि पर माथा टेक कर प्रणाम किया, और राजा ने अबशालोम का चुम्बन किया।

अबशालोम बहुत-से मित्र बनाता है

15 इसके बाद अबशालोम ने एक रथ और घोड़े अपने लिए लिये। जब वह रथ चलाता था तो अपने सामने पचास दौड़ते हुये व्यक्तियों को रखता था। [2]अबशालोम सवेरे उठ जाता और द्वार* के निकट खड़ा होता। यदि कोई व्यक्ति ऐसा होता जिसकी कोई समस्या होती और न्याय के लिये राजा दाऊद के पास आया होता तो अबशालोम उससे पूछता, "तुम किस नगर के हो?" वह व्यक्ति उत्तर देता, "मैं अमुक हूँ और इस्राएल के अमुक परिवार समूह का हूँ।" [3]तब अबशालोम उन व्यक्तियों से कहा करता, "देखो, जो तुम कह रहे हो वह शुभ और उचित है किन्तु राजा दाऊद तुम्हारी एक नहीं सुनेगा।"

[4]अबशालोम यह भी कहता, "काश! मैं चाहता हूँ कि कोई मुझे इस देश का न्यायाधीश बनाता। तब मैं उन व्यक्तियों में से हर एक की सहायता कर सकता जो न्याय के लिये समस्या लेकर आते।"

[5]जब कोई व्यक्ति अबशालोम के पास आता और उसके सामने प्रणाम करते को झुकता तो अबशालोम आगे बढ़ता और उस व्यक्ति से हाथ मिलाता। तब वह उस व्यक्ति का चुम्बन करता। [6]अबशालोम ऐसा उन सभी इस्राएलियों के साथ करता जो राजा दाऊद के पास न्याय के लिये आते। इस प्रकार अबशालोम ने इस्राएल के सभी लोगों का हृदय जीत लिया।

अबशालोम द्वारा दाऊद के राज्य को लेने की योजना

[7]चार वर्ष बाद अबशालोम ने राजा दाऊद से कहा, "कृपया मुझे अपनी विशेष प्रतिज्ञा को पूरी करने जाने दें

द्वार यह वह स्थान था जहाँ लोग अपने सब कार्य करने आते थे। इसी स्थान पर न्याय की अदालतें होती थी।

जिसे मैंने हेब्रोन में यहोवा के सामने की थी। [8]मैंने यह प्रतिज्ञा तब की थी जब मैं गशूर अराम में रहता था। मैंने कहा था, 'यदि यहोवा मुझे यरूशलेम लौटायेगा तो मैं यहोवा की सेवा करूँगा।'"

[9]राजा दाऊद ने कहा, "शान्तिपूर्वक जाओ।"

अबशालोम हेब्रोन गया। [10]किन्तु अबशालोम ने इस्राएल के सभी परिवार समूहो में जासूस भेजे। इन जासूसों ने लोगों से कहा, "जब तुम तुरही की आवाज सुनो, तो कहो कि 'अबशालोम हेब्रोन में राजा हो गया।'"

[11]अबशालोम ने दो सौ व्यक्तियों को अपने साथ चलने के लिये आमन्त्रित किया। वे व्यक्ति उसके साथ यरूशलेम से बाहर गए। किन्तु वे यह नहीं जानते थे कि उसकी योजना क्या है। [12]अहीतोपेल दाऊद के सलाहकारों में से एक था। अहीतोपेल गीलो नगर का निवासी था। जब अबशालोम बलि-भेंटों को चढ़ा रहा था, उसने अहीतोपेल को अपने गीलो नगर से आने के लिये कहा। अबशालोम की योजना ठीक-ठीक चल रही थी और अधिक से अधिक लोग उसका समर्थन करने लगे।

दाऊद को अबशालोम के योजना की सूचना

[13]एक व्यक्ति दाऊद को सूचना देने आया। उस व्यक्ति ने कहा, "इस्राएल के लोग अबशालोम का अनुसरण करना आरम्भ कर रहे हैं।"

[14]तब दाऊद ने यरूशलेम में रहने वाले अपने सभी सेवकों से कहा, "हम लोगों को बच निकलना चाहिये! यदि हम बच नहीं निकलते तो अबशालोम हम लोगों को निकलने नहीं देगा। अबशालोम द्वारा पकड़े जाने के पहले हम लोग शीघ्रता करें। नहीं तो वह हम सभी को नष्ट कर देगा और वह यरूशलेम के लोगों को मार डालेगा।"

[15]राजा के सेवकों ने राजा से कहा, "जो कुछ भी आप कहेंगे, हम लोग करेंगे।"

दाऊद और उसके आदमी बच निकलते हैं

[16]राजा दाऊद अपने घर के सभी लोगों के साथ बाहर निकल गया। राजा ने घर की देखभाल के लिये अपनी दस पत्नियों को वहाँ छोड़ा। [17]राजा अपने सभी लोगों को साथ लेकर बाहर निकला। वे नगर के अन्तिम मकान पर रुके। [18]उसके सभी सेवक राजा के पास से गुजरे, और सभी करेती, सभी पलेती और गती (गत से छ: सौ व्यक्ति) राजा के पास से गुजरे।

[19]राजा ने गत के इत्तै से कहा, "तुम लोग भी हमारे साथ क्यों जा रहे हो? लौट जाओ और नये राजा (अबशालोम) के साथ रहो। तुम विदेशी हो। यह तुम लोगों का स्वदेश नहीं है। [20]अभी कल ही तुम हमारे साथ जुडे। क्या मैं आज ही विभिन्न स्थानों पर जहाँ भी जा रहा हूँ, तुम्हें अपने साथ ले जाऊँ। नहीं! लौटो और अपने भाइयों को अपने साथ लो। मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारे प्रति दया और विश्वास दिखाया जाय।"

[21]किन्तु इत्तै ने राजा को उत्तर दिया, "यहोवा शाश्वत है, और जब तक आप जीवित हैं, मैं आपके साथ रहूँगा। मैं जीवन-मरण में आपके साथ रहूँगा।"

[22]दाऊद ने इत्तै से कहा, "आओ, हम लोग किद्रोन नाले को पार करें।"

अत: गत का इत्तै और उसके सभी लोग अपने बच्चों सहित किद्रोन नाले के पार गए। [23]सभी लोग जोर से रो रहे थे। राजा दाऊद ने किद्रोन नाले को पार किया। तब सभी लोग मरुभूमि की ओर बढ़े। [24]सादोक और उसके साथ के लेवीवंशी परमेश्वर के साक्षीपत्र के सन्दूक को ले चल रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को नीचे रखा। एब्यातार ने तब तक प्रार्थना* की जब तक सभी लोग यरूशलेम से बाहर नहीं निकल गए।

[25]राजा दाऊद ने सादोक से कहा, "परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को यरूशलेम लौटा ले जाओ। यदि यहोवा मुझ पर दयालु है तो वह मुझे वापस लौटाएगा, और यहोवा मुझे अपना पवित्र संदूक, और वह स्थान जहाँ वह रखा है, देखने देगा। [26]किन्तु यदि यहोवा कहता है कि वह मुझ पर प्रसन्न नहीं है तो वह मेरे विरुद्ध, जो कुछ भी चाहता है, कर सकता है।"

[27]राजा ने याजक सादोक से कहा, "तुम एक दुष्टा हो। शान्तिपूर्वक नगर को जाओ। अपने पुत्र अहीमास और एब्यातार के पुत्र योनातन को अपने साथ लो। [28]मैं उन स्थानों के निकट प्रतीक्षा करूँगा जहाँ से लोग मरुभूमि

प्रार्थना शाब्दिक "आगे बढ़े" इसका अर्थ "सुगन्धि जलाना", बलि-भेट करना, या इसका अर्थ यह हो सकता है कि एब्यातार तब तक पवित्र सन्दूक की बगल में खड़ा रहा जब तक सभी लोग वहाँ से नहीं निकले।

में जाते हैं। मैं वहाँ तब तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक तुमसे कोई सूचना नहीं मिलती।"

[29]इसलिये सादोक और एब्यातार परमेश्वर का पवित्र सन्दूक वापस यरूशलेम ले गए और वहीं ठहरे।

अहीतोपेल के विरुद्ध दाऊद की प्रार्थना

[30]दाऊद जैतूनों के पर्वत पर चढ़ा। वह रो रहा था। उसने अपना सिर ढक लिया और वह बिना जूते के गया। दाऊद के साथ के सभी व्यक्तियों ने भी अपना सिर ढक लिया। वे दाऊद के साथ रोते हुए गए।

[31]एक व्यक्ति ने दाऊद से कहा, "अहीतोपेल लोगों में से एक है जिसने अबशालोम के साथ योजना बनाई।" तब दाऊद ने प्रार्थना की, "हे यहोवा, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू अहीतोपेल की सलाह को विफल कर दे।" [32]दाऊद पर्वत की चोटी पर आया। यही वह स्थान था जहाँ वह प्राय: परमेश्वर से प्रार्थना करता था। उस समय एरेकी हूशै उसके पास आया। हूशै का अंगरखा फटा था और उसके सिर पर धूलि थी।*

[33]दाऊद ने हूशै से कहा, "यदि तुम मेरे साथ चलते हो तो तुम देख–रेख करने वाले अतिरिक्त व्यक्ति होगे। [34]किन्तु यदि तुम यरूशलेम को लौट जाते हो तो तुम अहीतोपेल की सलाह को व्यर्थ कर सकते हो। अबशालोम से कहो, 'महाराज, मैं आपका सेवक हूँ। मैंने आपके पिता की सेवा की, किन्तु अब मैं आपकी सेवा करूँगा।' [35]याजक सादोक और एब्यातार तुम्हारे साथ होंगे। तुम्हें वे सभी बातें उनसे कहनी चाहिए जिन्हें तुम राजमहल में सुनो। [36]सादोक का पुत्र अहीमास और एब्यातार का पुत्र योनातन उनके साथ होंगे। तुम उन्हें, हर बात जो सुनो, मुझसे कहने के लिये भेजोगे।"

[37]तब दाऊद का मित्र हूशै नगर में गया, और अबशालोम यरूशलेम आया।

सीबा दाऊद से मिलता है

16 दाऊद जैतून पर्वत की चोटी पर थोड़ी दूर चला। वहाँ मपीबोशेत का सेवक सीबा, दाऊद से मिला। सीबा के पास काठी सहित दो खच्चर थे। खच्चरो पर दो सौ रोटियाँ, सौ किशमिश के गुच्छे, सौ ग्रीष्मफल और दाखमधु से भरी एक मशक थी। [2]राजा दाऊद ने सीबा से कहा, "ये चीजें किसलिये हैं?"

सीबा ने उत्तर दिया, "खच्चर राजा के परिवार की सवारी के लिये है। रोटी और ग्रीष्म फल सेवकों को खाने के लिये हैं और यदि कोई व्यक्ति मरुभूमि में कमजोरी महसूस करे तो वह दाखमधु पी सकेगा।"

[3]राजा ने पूछा, "मपीबोशेत* कहाँ है?"

सीबाने राजा को उत्तर दिया, "मपीबोशेत यरूशलेम में ठहरा है क्योंकि वह सोचता है, 'आज इस्राएली मेरे पितामह का राज्य मुझे वापस दे देंगे।"

[4]तब राजा ने सीबा से कहा, "बहुत ठीक। जो कुछ मपीबोशेत का है उसे अब मैं तुम्हें देता हूँ।"

सीबा ने कहा, "मैं आपको प्रणाम करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि मैं आपको सदा प्रसन्न कर सकूँगा।"

शिमी दाऊद को शाप देता है

[5]दाऊद बहूरीम पहुँचा। शाऊल के परिवार का एक व्यक्ति बहूरीम से बाहर निकला। इस व्यक्ति का नाम शिमी था जो गेरा का पुत्र था। शिमी दाऊद को बुरा कहता हुआ बाहर आया, और वह बुरी–बुरी बातें बार–बार कहता रहा।

[6]शिमी ने दाऊद और उसके सेवकों पर पत्थर फेंकना आरम्भ किया। किन्तु लोग और सैनिक दाऊद के चारों ओर इकट्ठे हो गए–वे उसके चारों ओर थे। [7]शिमी ने दाऊद को शाप दिया। उसने कहा, "ओह हत्यारे!* भाग जाओ, निकल जाओ, निकल जाओ। [8]यहोवा तुम्हें दण्ड दे रहा है। क्यों? क्योंकि तुमने शाऊल के परिवार के व्यक्तियों को मार डाला। तुमने शाऊल के राजपद को चुराया। किन्तु अब यहोवा ने राज्य तुम्हारे पुत्र अबशालोम को दिया है। अब वे ही बुरी घटनायें तुम्हारे लिये घटित हो रही हैं। क्यों? क्योंकि तुम हत्यारे हो।"

[9]सरूयाह के पुत्र अबीशै ने राजा से कहा, "मेरे प्रभु, राजा! यह मृत कुत्ता आपको शाप क्यों दे रहा है? मुझें आगे जाने दें और शिमी का सिर काट लेने दें।"

[10]किन्तु राजा ने उत्तर दिया, "सरूयाह के पुत्रों। मैं क्या कर सकता हूँ? निश्चय ही शिमी मुझे शाप दे रहा है। किन्तु यहोवा ने उसे मुझे शाप देने को कहा।"

हूशै ... धूलि थी यह प्रकट करता था कि वह बहुत दुःखी है।

मपीबोशेत शाब्दिक "तुम्हारे स्वामी का पौत्र।"

ओह हत्यारे शाब्दिक "खूनी।"

[11]दाऊद ने अबीशै और अपने सभी सेवकों से यह भी कहा, "देखो मेरा अपना पुत्र ही (अबशालोम) मुझे मारने का प्रयत्न कर रहा है। यह व्यक्ति (शिमी), जो बिन्यामीन परिवार समूह का है, मुझको मार डालने का अधिक अधिकारी है। उसे अकेला छोड़ो। उसे मुझे बुरा-भला कहने दो। यहोवा ने उसे ऐसा करने को कहा हैं। [12]संभव है कि उन बुराइयों को जो मेरे साथ हो रही है, यहोवा देखे। तब संभव है कि यहोवा मुझे आज शिमी द्वारा कही गई हर एक बात के बदले, कुछ अच्छा दे।"

[13]इसलिये दाऊद और उसके अनुयायी अपने रास्तें पर नीचे सड़क से उतर गए। किन्तु शिमी दाऊद के पीछे लगा रहा। शिमी सड़क की दूसरी ओर चलने लगा। शिमी अपने रास्ते पर दाऊद को बुरा-भला कहता रहा। शिमी ने दाऊद पर पत्थर और धूलि भी फेंकी। [14]राजा दाऊद और उसके सभी लोग यरदन नदी पुहँचे। राजा और उसके लोग थकगए थे। अत: उन्होंने बहूरीम में विश्राम किया।

[15]अबशालोम, अहीतोपेल और इस्राएल के सभी लोग यरूशलेम आए। [16]दाऊद का एरेकी मित्र हूशै अबशालोम के पास आया। हूशै ने अबशालोम से कहा, "राजा दीर्घायु हो। राजा दीर्घायु हो!"

[17]अबशालोम ने पूछा, "तुम अपने मित्र दाऊद के विश्वासपात्र क्यों नहीं हो? तुमने अपने मित्र के साथ यरूशलेम को क्यों नहीं छोड़ा?"

[18]उन्होंने कहा, "मैं उस व्यक्ति का हूँ जिसे यहोवा चुनता है। इन लोगों ने और इस्राएल के लोगों ने आपको चुना। मैं आपके साथ रहूँगा। [19]बीते समय में मैंने आपके पिता की सेवा की। इसलिये, अब मैं दाऊद के पुत्र की सेवा करूँगा। मैं आपकी सेवा करूँगा।"

अबशालोम अहीतोपेल से सलाह लेता है

[20]अबशालोम ने अहीतोपेल से कहा, "कृपया हमें बताये कि क्या करना चाहिये।"

[21]अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, "तुम्हारे पिता ने अपनी कुछ रखैल को घर की देख-भाल के लिये छोड़ा है। जाओ, और उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध करो। तब सभी इस्राएली यह जानेंगे कि तुम्हारे पिता तुमसे घृणा करते हैं और तुम्हारे सभी लोग तुमको अधिक समर्थन देने के लिये उत्साहित होंगे।"

[22]तब उन लोगों ने अबशालोम के लिये महल की छत पर एक तम्बू डाला और अबशालोम ने अपने पिता की रखैलों के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। सभी इस्राएलियों ने इसे देखा। [23]उस समय अहीतोपेल की सलाह दाऊद और अबशालोम दोनों के लिये बहुत महत्वपूर्ण थी। यह उतनी ही महत्वपूर्ण थी जितनी मनुष्य के लिये परमेश्वर की बात।

अहीतोपेल दाऊद के बारे में सलाह देता है

17 अहीतोपेल ने अबशालोम से यह भी कहा, "मुझे अब बारह हजार सैनिक चुनने दो। तब मैं आज की रात दाऊद का पीछा करूँगा [2]मैं उसे तब पकड़ूँगा जब वह थका तथा कमजोर होगा। मैं उसे भयभीत करूँगा। और उसके सभी व्यक्ति उसे छोड़ भागेंगे। किन्तु मैं केवल राजा दाऊद को मारुंगा। [3]तब मैं सभी लोगों को तुम्हारे पास वापस लाऊँगा। यदि दाऊद मर गया तो शेष सब लोगों को शान्ति प्राप्त होगी।"

[4]यह योजना अबशालोम और इस्राएल के सभी प्रमुखों को पसन्द आई। [5]किन्तु अबशालोम ने कहा, "एरेकी हूशै को अब बुलाओ। मैं उससे भी सुनना चाहता हूँ कि वह क्या कहता है।"

हूशै अहीतोपेल की सलाह नष्ट करता है

[6]हूशै अबशालोम के पास आया। अबशालोम ने हूशै से कहा, "अहीतोपेल ने यह योजना बताई है। क्या हम लोग इस पर अमल करें? यदि नहीं तो हमें, अपनी बताओ।"

[7]हूशै ने अबशालोम से कहा, "इस समय अहीतोपेल की सलाह ठीक नहीं है।" [8]उसने आगे कहा, "तुम जानते हो कि तुम्हारे पिता और उनके आदमी शक्तिशाली हैं। वे उस रीछनी की तरह खुंखार हैं जिसके बच्चे छीन लिये गये हों। तुम्हारा पिता कुशल योद्धा है। वह सारी रात लोगों के साथ नहीं ठहरेगा। [9]वह पहले ही से संभवत: किसी गुफा या अन्य स्थान पर छिपा है। यदि तुम्हारा पिता तुम्हारे व्यक्तियों पर पहले आक्रमण करता है तो लोग इसकी सूचना पांएगे, और वे सोचेंगे, 'अबशालोम के समर्थक हार रहे हैं!' [10]तब वे लोग भी जो सिंह की तरह वीर हैं, भयभीत हो जाएँगे। क्यों? क्योंकि सभी इस्राएली जानते हैं कि तुम्हारा पिता शक्तिशाली योद्धा है और उसके आदमी वीर हैं।"

[11]"मेरा सुझाव यह है: तुम्हें दान से लेकर बेर्शेबा तक के सभी इस्राएलियों को इकट्ठा करना चाहिये। तब बड़ी संख्या में लोग समुद्र की रेत के कणों समान होंगे। तब तुम्हें स्वयं युद्ध में जाना चाहिये। [12]हम दाऊद को उस स्थान से, जहाँ वह छिपा है, पकड़ लेंगे। हम दाऊद पर उस प्रकार टूट पड़ेंगे जैसे ओस भूमि पर पड़ती है। हम लोग दाऊद और उसके सभी व्यक्तियों को मार डालेंगे। कोई व्यक्ति जीवित नहीं छोड़ा जायेगा। [13]यदि दाऊद किसी नगर में भागता है तो सभी इस्राएली उस नगर में रस्सियाँ लाएंगे और हम लोग उस नगर की दिवारों को घसीट लेगें। उस नगर का एक पत्थर भी नहीं छोड़ा जाएगा।"

[14]अबशालोम और इस्राएलियों ने कहा, "एरेकी हूशै की सलाह अहीतोपेल की सलाह से अच्छी है।" उन्होंने ऐसा कहा क्योंकि यह यहोवा की योजना थी। यहोवा नें अहीतोपेल की सलाह की व्यर्थ करने की योजना बनाई थी। इस प्रकार यहोवा अबशालोम को दण्ड दे सकता था।

हूशै दाऊद के पास चेतावनी भेजता है

[15]हूशै ने वे बातें याजक सादोक और एब्यातार से कहीं। हूशै ने उस योजना के बारे में उन्हें बताया जिसे अहीतोपेल ने अबशालोम और इस्राएल के प्रमुखों को सुझाया था। हूशै ने सादोक और एब्यातार को वह योजना भी बताई जिसे उसने सुझाया था। हूशै ने कहा, [16]"शीघ्र! दाऊद को सूचना भेजो। उससे कहो कि आज की रात वह उन स्थानों पर न रहे जहाँ से लोग मरुभूमि को पार करते हैं। अपितु यरदन नदी को तुरन्त पार कर ले। यदि वह नदी को पार कर लेता है तो राजा और उसके लोग नहीं पकड़े जायेंगे।"

[17]याजकों के पुत्र योनातन और अहीमास, एनरोगेल पर प्रतीक्षा कर रहे थे। वे नगर में जाते हुए दिखाई नहीं पड़ना चाहते थे, अत: एक गुलाम लड़की उनके पास आई। उसने उन्हें सन्देश दिया। तब योनातन और अहीमास गए और उन्होंने यह सन्देश राजा दाऊद को दिया।

[18]किन्तु एक लड़के ने योनातन और अहीमास को देखा। लड़का अबशालोम से कहने के लिये दौड़ा। योनातन और अहीमास तेजी से भाग निकले। वे बहारीम में एक व्यक्ति के घर पहुँचे। उस व्यक्ति के आँगन में एक कुँआ था। योनातन और अहीमास इस कुँए में उत्तर गये। [19]उस व्यक्ति की पत्नी ने उस पर एक चादर डाल दी। तब उसने पूरे कुँए को अन्न से ढक दिया। कुँआ अन्न की ढेर जैसा दिखता था, इसलिये कोई व्यक्ति यह नहीं जान सकता था कि योनातन और अहीमास वहाँ छिपे हैं। [20]अबशालोम के सेवक उस घर की स्त्री के पास आए। उन्होंने पूछा, "योनातन और अहीमास कहाँ है?"

उस स्त्री ने अबशालोम के सेवकों से कहा, "वे पहले ही नाले को पार कर गए हैं।"

अबशालोम के सेवक तब योनातन और अहीमास की खोज में चले गए। किन्तु वे उनको न पा सके। अत: अबशालोम के सेवक यरूशलेम लौट गए।

[21]जब अबशालोम के सेवक चले गए , योनातन और अहीमास कुँए से बाहर आए। वे गए और उन्होंने दाऊद से कहा, "शीघ्रता करें, नदी को पार कर जायँ। अहीतोपेल ने ये बातें आपके विरुद्ध कही हैं।"

[22]तब दाऊद और उसके सभी लोग यरदन नदी के पार चले गए। सूर्य निकलने के पहले दाऊद के सभी लोग यरदन नदी को पार कर चुके थे।

अहीतोपेल आत्महत्या करता है

[23]अहीतोपेल ने देखा कि इस्राएली उसकी सलाह नहीं मानते। अहीतोपेल ने अपने गधे पर काठी रखी। वह अपने नगर को घर चला गया। उसने अपने परिवार के लिये योजना बनाई। तब उसने अपने को फाँसी लगा ली। जब अहीतोपेल मर गया, लोगों ने उसे उसकी पिता की कब्र में दफना दिया।

अबशालोम यरदन नदी को पार करता है

[24]दाऊद महनैम पहुँचा।

अबशालोम और सभी इस्राएली जो उसके साथ थे, यरदन नदी को पार कर गए। [25]अबशालोम ने अमासा को सेना का सेनापति बनाया। अमासा ने योआब का स्थान लिया।* अमासा इस्राएली यित्रों का पुत्र था।

अमासा ... लिया योआब तब भी दाऊद का समर्थन करता था। योआब दाऊद की सेना सेनापतियों में से एक था जब दाऊद अबशालोम से भाग रहा था। देखें 2शमू. 18:2।

अमासा की माँ, सरूयाह की बहन और नाहाश की पुत्री, अबीगैल थी* (सरूयाह योआब की माँ थी।)

[26]अबशालोम और इस्राएलियों ने अपना डेरा गिलाद प्रदेश में डाला।

शोबी, माकीर, बर्जिल्लै

[27]दाऊद महनैम पहुँचा। शोबी, माकीर और बर्जिल्लै उस स्थान पर थे। (नाहाश का पुत्र शोबी अम्मोनी नगर रब्बा का था। अम्मीएल का पुत्र माकीर लो-दोबर का था, और बर्जिल्लै, रेगलीम, गिलाद का था।) [28–29]उन्होंने कहा, "मरुभूमि में लोग थके, भूखे और प्यासे हैं।" इसलिये वे दाऊद और उसके आदमियों के खाने के लिये बहुत–सी चीजें लाये। वे बिस्तर, कटोरे और मिट्टी के बर्तन ले आए। वे गेंहू, जौ आटा, भूने अन्न फलियाँ, तिल, सूखे बीज, शहद, मक्खन, भेड़ें और गाय के दूध का पनीर भी ले आए।

दाऊद युद्ध की तैयारी करता है

18 दाऊद ने अपने लोगों को गिना। उसने हजार सैनिकों और सौ सैनिकों का संचालन करने के लिये नायक चुने। [2]दाऊद ने लोगों को तीन टुकड़ियों में बाँटा, और तब दाऊद ने लोगों को आगे भेजा। योआब एक तिहाई सेना का नायक था। अबीशै सरूयाह का पुत्र, योआब का भाई सेना के दूसरे तिहाई भाग का नायक था, और गत का इत्तै अन्तिम तिहाई भाग का नायक था।

राजा दाऊद ने लोगों से कहा, "मैं भी तुम लोगों के साथ चलूँगा।"

[3]किन्तु लोगों ने कहा, "नहीं! आपको हमारे साथ नहीं जाना चाहिये। क्यों? क्योंकि यदि हम लोग युद्ध से भागे तो अबशालोम के सैनिक परवाह नहीं करेंगे। यदि हम आधे मार दिये जाए तो भी अबशालोम के सैनिक परवाह नहीं करेंगे। किन्तु आप हम लोगों के दस हजार के बराबर हैं। आपके लिये अच्छा है कि आप नगर में रहें। तब, यदि हमें मदद की आवश्यकता पड़े तो आप सहायता कर सकें।"

[4]राजा ने अपने लोगों से कहा, "मैं वहीं करूँगा जिसे आप लोग सर्वोत्तम समझते हैं।"

तब राजा द्वार की बगल में खड़ा रहा। सेना आगे बढ़ गई। वे सौ और हजार की टुकड़ियों में गए।

"युवक अबशालोम के साथ उदार रहो!"

[5]राजा ने योआब, अबीशै और इत्तै को आदेश दिया। उसने कहा, "मेरे लिये यह करो: युवक अबशालोम के प्रति उदार रहना!" सभी लोगों ने अबशालोम के बारे में नायको के लिये राजा का आदेश सुना।

दाऊद की सेना अबशालोम की सेना को हराती है

[6]दाऊद की सेना अबशालोम के इस्राएलियों के विरुद्ध रणभूमि में गई। उन्होंने एप्रैम के वन में युद्ध किया। [7]दाऊद की सेना ने इस्राएलियों को हरा दिया। उस दिन बीस हजार व्यक्ति मारे गए। [8]युद्ध पूरे देश में फैल गया। किन्तु उस दिन तलवार से मरने की अपेक्षा जंगल में व्यक्ति आधिक मरे।

[9]ऐसा हुआ कि अबशालोम दाऊद के सेवकों से मिला। अबशालोम बच भागने के लिये अपने खच्चर पर चढ़ा। खच्चर विशाल बांज के वृक्ष की शाखाओं के नीचे गया। शाखायें मोटी थीं और अबशालोम का सिर पेड़ में फँस गया। उसका खच्चर उसके नीचे से भाग निकला अत: अबशालोम भूमि के ऊपर लटका रहा।

[10]एक व्यक्ति ने यह होते देखा। उसने योआब से कहा, "मैंने अबशालोम को एक बांज के पेड़ में लटके देखा है।"

[11]योआब ने उस व्यक्ति से कहा, "तुमने उसे मार क्यों नहीं डाला, और उसे जमीन पर क्यों नहीं गिर जाने दिया? मैं तुम्हें एक पेटी और चाँदी के दस सिक्के देता।"

[12]उस व्यक्ति ने योआब से कहा, "मैं राजा के पुत्र को तब भी चोट पहुँचाने की कोशिश नहीं करता जहाँ तुम मुझे हजार चाँदी के सिक्कें देते। क्यों? क्योंकि हम लोगों ने तुमको, अबीशै और इत्तै को दिये गए राजा के आदेश को सुना। राजा ने कहा, 'सावधान रहो, युवक अबशालोम को चोट ने पहुँचे।' [13]यदि मैंने अबशालोम को मार दिया होता तो राजा स्वयं इसका पता लगा लेता और तुम मुझे सजा देते।"

[14]योआब ने कहा, "मै तुम्हारे साथ समय नष्ट नहीं करूँगा!"

अबशालोम अब भी बांज वृक्ष में लटका हुआ, जीवित था। योआब ने तीन भाले लिये। उसने भालों को

अमासा .... थी शाब्दिक यित्री ने सरूयाह की बहन और नाहाश की पुत्री अबीगैल के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया था।

अबशालोम पर फेंका। भाले अबशालोम के हृदय को बेधते हुये निकल गये। [15]योआब के साथ दस युवक थे जो उसे युद्ध में सहायता करते थे। वे दस व्यक्ति अबशालोम के चारों ओर आए और उसे मार डाला।

[16]योआब ने तुरही बजाई और अबशालोम के इस्राएली लोगों का पीछा करना बन्द करने को कहा। [17]तब योआब के व्यक्तियों ने अबशालोम का शव उठाया और उसे जंगल के एक विशाल गड्हे में फेंक दिया। उन्होंने विशाल गड्हा को बहुत से पत्थरों से भर दिया।

[18]जब अबशालोम जीवित था, उसने राजा की घाटी में एक स्तम्भ खड़ा किया था। अबशालोम ने कहा था, "मेरा कोई पुत्र मेरे नाम को चलाने वाला नहीं है।" इसलिये उसने स्तम्भ को अपना नाम दिया। वह स्तम्भ आज भी "अबशालोम का स्मृति–चिन्ह" कहा जाता है।

योआब दाऊद को सूचना देता है

[19]सादोक के पुत्र अहीमास ने योआब से कहा, "मुझे अब दौड़ जाने दो और राजा दाऊद को सूचना पहुँचाने दो। मैं उससे कहूँगा कि यहोवा ने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ से मुक्त कर दिया है।"

[20]योआब ने अहीमास को उत्तर दिया, "नहीं, आज तुम दाऊद को सूचना नहीं दोगे। तुम सूचना किसी अन्य समय पहुँचा सकते हो, किन्तु आज नहीं, क्यों? क्योंकि राजा का पुत्र मर गया है।"

[21]तब योआब ने एक कुशी व्यक्ति से कहा, "जाओ राजा से वह सब कहो जो तुमने देखा है।" कुशी ने योआब को प्रणाम किया।

तब कुशी दाऊद को सूचना देने दौड़ पड़ा।

[22]किन्तु सादोक के पुत्र अहीमास ने योआब से फिर प्रार्थना की, "जो कुछ भी हो, उसकी चिन्ता नहीं, कृपया मुझे भी कुशी के पीछे दौड़ जाने दें।"

योआब ने कहा, "बेटे! तुम सूचना क्यों ले जाना चाहते हो? तुम जो सूचना ले जाओगे उसका कोई पुरस्कार नहीं मिलेगा।"

[23]अहीमास ने उत्तर दिया, "चाहे जो हो, चिन्ता नहीं, मैं दौड़ जाऊँगा।"

योआब ने अहीमास से कहा, "दौड़ो।"

तब अहीमास यरदन की घाटी से होकर दौड़ा। वह कुशी को पीछे छोड़ गया।

दाऊद सूचना पाता है

[24]दाऊद दोनों दरवाजों के बीच बैठा था। पहरेदार द्वार की दीवारों के ऊपर छत पर गया। पहरेदार ने ध्यान से देखा और एक व्यक्ति को अकेले दौड़ते देखा। [25]पहरेदार ने दाऊद से कहने के लिये जोर से पुकारा।

राजा दाऊद ने कहा, "यदि व्यक्ति अकेला है तो वह सूचना ला रहा है।"

व्यक्ति नगर के निकट से निकट आता जा रहा था। [26]पहरेदार ने दूसरे व्यक्ति को दौड़ते देखा। पहरेदार ने द्वाररक्षक को बुलाया, "देखो! दूसरा व्यक्ति अकेले दौड़ रहा है।"

राजा ने कहा, "वह भी सूचना ला रहा है।"

[27]पहरेदार ने कहा, "मुझे लगता है कि पहला व्यक्ति सादोक का पुत्र अहीमास की तरह दौड़ रहा है।"

राजा ने कहा, "अहीमास अच्छा आदमी है। वह अच्छी सूचना ला रहा होगा।"

[28]अहीमास ने राजा को पुकार कर कहा। "सब कुछ बहुत अच्छा है!" अहीमास राजा के सामने प्रणाम करने झुका। उसका माथा भूमि के समीप था। अहीमास ने कहा, अपने यहोवा परमेश्वर की स्तुति करो! मेरे स्वामी राजा, यहोवा ने उन व्यक्तियों को हरा दिया है जो आपके विरुद्ध थे।"

[29]राजा ने पूछा, "क्या युवक अबशालोम कुशल से है?"

अहीमास ने उत्तर दिया, "जब योआब ने मुझे भेजा तब मैंने कुछ बड़ी उत्तेजना देखी। किन्तु मैं यह नहीं समझ सका कि वह क्या था?"

[30]तब राजा ने कहा, "यहाँ खड़े रहो, और प्रतीक्षा करो।" अहीमास हटकर खड़ा हो गया और प्रतिक्षा करने लगा।

[31]कुशी आया। उसने कहा, "मेरे स्वामी राजा के लिये सूचना। आज यहोवा ने उन लोगों को सजा दी है जो आपके विरुद्ध थे!"

[32]राजा ने कुशी से पूछा, "क्या युवक अबशालोम कुशल से है?"

कुशी ने उत्तर दिया, "मुझे आशा है कि आपके शत्रु और सभी लोग जो आपके विरुद्ध चोट करने आयेंगे, वे इस युवक (अबशालोम) की तरह सजा पायेंगे।"

[33]तब राजा ने समझ लिया कि अबशालोम मर गया है। राजा बहुत परेशान हो गया। वह नगर द्वार के ऊपर के कमरे में चला गया। वह वहाँ रोया। वह अपने कमरे में गया, और अपने रास्ते पर चलते उसने कहा, "ऐ मेरे पुत्र अबशालोम! मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये मर गया होता। ऐ अबशालोम, मेरे पुत्र, मेरे पुत्र!"

योआब दाऊद को फटकारता है

19 लोगों ने योआब को सूचना दी। उन्होंने योआब से कहा, "देखो, राजा अबशालोम के लिये रो रहा है और बहुत दुःखी है।"

[2]दाऊद की सेना ने उस दिन विजय पाई थी। किन्तु वह दिन सभी लोगों के लिये बहुत शोक का दिन हो गया। यह शोक का दिन था, क्योंकि लोगों ने सुना, "राजा अपने पुत्र के लिये बहुत दुःखी है।"

[3]लोग नगर में चुपचाप आए। वे उन लोगों की तरह थे जो युद्ध में पराजित हो गए हो और भाग आएं हों। [4]राजा ने अपना मुँह ढक लिया था। वह फूट-फूट कर रो रहा था, "मेरे पुत्र अबशालोम, ऐ अबशालोम। मेरे पुत्र, मेरे बेटे!"

[5]योआब राजा के महल में आया। योआब ने राजा से कहा, "आज तुम अपने सभी सेवकों के मुँह को भी लज्जा से ढके हो! आज तुम्हारे सेवकों ने तुम्हारा जीवन बचाया। उन्होंने तुम्हारे पुत्रों, पुत्रियों, पत्नियों, और दासियों के जीवन को बचाया। [6]तुम्हारे सेवक इसलिये लज्जित हैं कि तुम उनसे प्रेम करते हो जो तुमसे घृणा करते हैं और तुम उनसे घृणा करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं। आज तुमने यह स्पष्ट कर दिया है कि तुम्हारे अधिकारी और तुम्हारे लोग तुम्हारे लिये कुछ नहीं हैं। आज मैं समझता हूँ कि यदि अबशालोम जीवित रहता और हम सभी मार दिये गए होते तो तुम्हें बड़ी प्रसन्नता होती। [7]अब खड़े होओ तथा अपने सेवकों से बात करो और उनको प्रोत्साहित करो। मैं यहोवा की शपथ खाकर कहता हूँ कि यदि तुम यह करने बाहर नहीं निकलते तो आज की रात तुम्हारे साथ कोई व्यक्ति नहीं रह जायेगा। बचपन से आज तक तुम पर जितनी विपत्तियाँ आई हैं, उन सबसे यह विपत्ति और बदतर होगी।"

[8]तब राजा नगर-द्वार पर गया। सूचना फैली कि राजा नगर-द्वार पर है। इसलिये सभी लोग राजा को देखने आये।

दाऊद फिर राजा बनता है

सभी अबशालोम के समर्थक इस्राएली अपने घरो को भाग गए थे। [9]इस्राएली के सभी परिवार समूहों के लोग आपस में तर्क-वितर्क करने लगे। उन्होंने कहा, "राजा दाऊद ने हमें पलिश्तियों और हमारे अन्य शत्रुओं से बचाया। दाऊद अबशालोम के सामने भाग खड़ा हुआ। [10]हम लोगों ने अबशालोम को अपने ऊपर शासन करने के लिये चुना था। किन्तु अब वह युद्ध में मर चुका है। हम लोगों को दाऊद को फिर राजा बनाना चाहिये।"

[11]राजा दाऊद ने याजक सादोक और एब्यातार को सन्देश भेजा। दाऊद ने कहा, "यहूदा के प्रमुखों से बात करो। कहो, 'तुम लोग अन्तिम परिवार समूह क्यों हो जो राजा दाऊद को अपने राजमहल में वापस लाना चाहते हो? देखों, सभी इस्राएली राजा को महल में लाने के बारे में बातें कर रहे हैं। [12]तुम मेरे भाई हो, तुम मेरे परिवार हो। फिर भी तुम्हारा परिवार समूह राजा को वापस लाने में अन्तिम क्यों रहा?' [13]और अमासा से कहो, 'तुम मेरे परिवार के अंग हो। परमेश्वर मुझे दण्ड दे यदि मैं तुमको योआब के स्थान पर सेना का नायक बनाऊँ।'"

[14]दाऊद ने यहूदा के लोगों के दिल को प्रभावित किया, अत: वे एक व्यक्ति की तरह एकमत हो गए। यहूदा के लोगों ने राजा को सन्देश भेजा। उन्होंने कहा, "अपने सभी सेवकों के साथ वापस आओ!"

[15]तब राजा दाऊद यरदन नदी तक आया। यहूदा के लोग राजा से मिलने गिलगाल आए। वे इसलिये आए कि वे राजा को यरदन नदी के पार ले जाए।

शिमी दाऊद से क्षमा याचना करता है

[16]गेरा का पुत्र शिमी बिन्यामीन परिवार समूह का था। वह बहूरीम में रहता था। शिमी ने राजा दाऊद से मिलने की शीघ्रता की। शिमी यहूदा के लोगों के साथ आया। [17]शिमी के साथ बिन्यामीन परिवार के एक हजार लोग भी आए। शाऊल के परिवार का सेवक सीबा भी आया। सीबा अपने साथ अपने पन्द्रह पुत्रों और बीस सेवकों को लाया। ये सभी लोग राजा दाऊद से मिलने के लिये यरदन नदी पर शीघ्रता से पहुँचे।

[18]लोग यरदन नदी पार करके राजा के परिवार को यहूदा में वापस लाने के लिये गये। राजा ने जो चाहा, लोगों ने किया। जब राजा नदी पार कर रहा था, गेरा का

पुत्र शिमी उससे मिलने आया। शिमी राजा के सामने भूमि तक प्रणाम करने झुका। [19]शिमी ने राजा से कहा, "मेरे स्वामी, जो मैंने अपराध किये उन पर ध्यान न दे। मेरे स्वामी राजा, उन बुरे कामों को याद न करे जिन्हें मैंने तब किये जब आपने यरूशलेम को छोड़ा। [20]मैं जानता हूँ कि मैंने पाप किये हैं। मेरे स्वामी राजा, यही कारण है कि मैं यूसुफ के परिवार* का पहला व्यक्ति हूँ जो आज आपसे मिलने आया हूँ।"

[21]किन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै ने कहा, "हमें शिमी को अवश्य मार डालना चाहिये क्योंकि इसने यहोवा के चुने राजा के विरुद्ध बुरा होने की याचना की।"

[22]दाऊद ने कहा, "सरूयाह के पुत्रों, मैं तुम्हारे साथ क्या करूँ? आज तुम मेरे विरुद्ध हो। कोई व्यक्ति इस्राएल में मारा नहीं जाएगा। आज मैं जानता हूँ कि मैं इस्राएल का राजा हूँ।"

[23]तब राजा ने शिमी से कहा, "तुम मरोगे नहीं।" राजा ने शिमी को वचन दिया कि वह शिमी को स्वयं नहीं मारेगा।*

मपीबोशेत दाऊद से मिलने जाता है

[24]शाऊल का पौत्र* मपीबोशेत राजा दाऊद से मिलने आया। मपीबोशेत ने उस सारे समय तक अपने पैरों की चिन्ता नहीं की, अपनी मूँछों को कतरा नहीं या अपने वस्त्र नहीं धोए जब तक राजा यरूशलेम छोड़ने के बाद पुन: शान्ति के साथ वापिस नहीं आ गया। [25]मपीबोशेत यरूशलेम से राजा के पास मिलने आया। राजा ने मपीबोशेत से पूछा, "तुम मेरे साथ उस समय क्यों नहीं गए जब मैं यरूशलेम से भाग गया था?"

[26]मपीबोशेत ने उत्तर दिया, "हे राजा, मेरे स्वामी! मेरे सेवक (सीबा) ने मुझे मूर्ख बनाया। मैंने सीबा से कहा, 'मैं विकलांग हूँ। अत: गधे पर काठी लगाओ। तब मैं गधे पर बैठूंगा, और राजा के साथ जाऊँगा।* किन्तु मेरे सेवक ने मुझे धोखा दिया। [27]उसने मेरे बारे में आपसे बुरी बातें कहीं। किन्तु मेरे स्वामी, राजा परमेश्वर के यहाँ देवदूत के समान हैं। आप वही करें जो आप उचित समझते हैं। [28]आपने मेरे पितामह के सारे परिवार को मार दिया होता। किन्तु आपने यह नहीं किया। आपने मुझे उन लोगों के साथ रखा जो आपकी मेज पर खाते हैं। इसलिये मैं राजा से किसी बात के लिये शिकायत करने का अधिकार नहीं रखता।'"

[29]राजा ने मपीबोशेत से कहा, "अपनी समस्याओं के बारे में अधिक कुछ न कहो। मैं यह निर्णय करता हूँ! तुम और सीबा भूमि का बंटवारा कर सकते हो।"

[30]मपीबोशेत ने राजा से कहा, "सीबा को सारी भूमि ले लेने दें! क्यों? क्योंकि मेरे स्वामी राजा अपने महल में शान्तिपूर्वक लौट आये हैं।"

दाऊद बर्जिल्लै से अपने साथ यरूशलेम चलने को कहता है

[31]गिलाद का बर्जिल्लै रोगलीम से आया। वह राजा दाऊद के साथ यरदन नदी तक आया। वह राजा के साथ, यरदन नदी को उसे पार कराने के लिये गया। [32]बर्जिल्लै बहुत बूढ़ा आदमी था। वह अस्सी वर्ष का था। जब दाऊद महनैम में ठहरा था तब उसने उसको भोजन तथा अन्य चीजें दी थीं। बर्जिल्लै यह सब कर सकता था क्योंकि वह बहुत धनी व्यक्ति था। [33]दाऊद ने बर्जिल्लै से कहा, "नदी के पार मेरे साथ चलो। यदि तुम मेरे साथ यरूशलेम में रहोगे तो वहाँ मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा।"

[34]किन्तु बर्जिल्लै ने राजा से कहा, "क्या आप जानते हैं कि मैं कितना बूढ़ा हूँ? क्या आप समझते हैं कि मैं आपके साथ यरूशलेम को जा सकता हूँ? [35]मैं अस्सी वर्ष का हूँ। मैं इतना अधिक बूढ़ा हूँ कि मैं यह नहीं बता सकता कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है। मैं इतना अधिक बूढ़ा हूँ कि मैं जो खाता पीता हूँ उसका स्वाद नहीं ले सकता। मैं इतना बूढ़ा हूँ कि आदमियों और स्त्रियों के गाने की आवाज भी नहीं सुन सकता। आप मेरे साथ परेशान होना क्यों चाहते हैं? [36]मैं आपकी ओर से पुरस्कार नहीं चाहता। मैं

यूसुफ का परिवार संभवत: इसका अर्थ वे इस्राएली हैं जो अबशालोम के समर्थक थे। कई बार एप्रैम यूसुफ का पुत्र नाम उत्तरी इस्राएल के सभी परिवार समूहों के लिये प्रयुक्त हुआ है।

राजा ने ... मारेगा दाऊद ने शिमी को नहीं मारा किन्तु, कुछ वर्ष बाद दाऊद का पुत्र सुलैमान ने उसे वध करने का आदेश दिया। देखो 1राजा 2:44−46

पौत्र शाब्दिक, "पुत्र"।

मैने सीबा ... जाऊँगा संभवत: मपीबोशेत यह कह रहा था कि उसका सेवक गधा ले गया और मपीबोशेत को छोड़ गया। पढ़े 2शमु. 16:1−4

आपके साथ नजदीक के रास्ते से यरदन नदी को पार करूँगा। [37]किन्तु, कृपया मुझे वापस लौट जाने दें। तब मैं अपने नगर में मरूँगा और अपने माता–पिता की कब्र में दफनाया जाऊँगा। किन्तु यह किम्हाम आपका सेवक हो सकता है। मेरे प्रभु राजा उसे अपने साथ लौटने दें। जो आप चाहें, उसके साथ करें।"

[38]राजा ने उत्तर दिया, "किम्हान मेरे साथ लौटेगा। मैं तुम्हारे कारण उस पर दयालु रहूँगा। मैं तुम्हारे लिये कुछ भी कर सकता हूँ।"

दाऊद घर लौटता है

[39]राजा ने बर्जिल्लै का चुम्बन किया और उसे आशीर्वाद दिया। बर्जिल्लै घर लौट गया। और राजा तथा सभी लोग नदी के पार वापस गये।

[40]राजा यरदन नदी को पार करके गिलगाल गया। किम्हाम उसके साथ गया, यहूदा के सभी लोगों तथा आधे इस्राएल के लोगों ने दाऊद को नदी के पार पहुँचाया।

इस्राएली यहूदा के लोगों से तर्क–वितर्क करते हैं

[41]सभी इस्राएली राजा के पास आए। उन्होंने राजा से कहा, "हमारे भाई यहूदा के लोग, आपको चुरा ले गये और आपको और आपके परिवार को, आपके लोगों के साथ यरदन नदी के पार ले आए। क्यों?"

[42]यहूदा के सभी लोगों ने इस्राएलियों को उत्तर दिया, "क्योंकि राजा हमारा समीपी सम्बन्धी है। इस बात के लिये आप लोग हमसे क्रोधित क्यों हैं? हम लोगों ने राजा की कीमत पर भोजन नहीं किया है। राजा ने हम लोगों को कोई भेंट नहीं दी।"

[43]इस्राएलियों ने उत्तर दिया, "हम लोग दाऊद के राज्य के दस भाग हैं।* इसलिये हम लोगों का अधिकार दाऊद पर तुमसे अधिक है। किन्तु तुम लोगों ने हमारी उपेक्षा की। क्यों? वे हम लोग थे जिन्होंने सर्वप्रथम अपने राजा को वापस लाने की बात की।"

किन्तु यहूदा ने लोगों ने इस्राएलियों को बड़ा गन्दा उत्तर दिया। यहूदा के लोगों के शब्द इस्राएलियों के शब्दों से अधिक शत्रुतापूर्ण थे।

शेबा इस्राएलियों को दाऊद से अलग संचालित करता है

20 ऐसा हुआ कि बिक्री का पुत्र शेबा नाम का एक बुरा आदमी था। शेबा बिन्यामीन परिवार समूह का था। उसने तुरही बजाई और कहा,

"हम लोगों का कोई हिस्सा दाऊद में नहीं है।
यिशै के पुत्र का कोई अंश हममें नहीं है।
पूरे इस्राएली, हम लोग अपने डेरों में घर चले।"

[2]तब सभी इस्राएलियों ने दाऊद को छोड़ दिया, और बिक्री के पुत्र शेबा का अनुसरण किया। किन्तु यहूदा के लोग अपने राजा के साथ लगातार यरदन नदी से यरूशलेम तक बने रहे।

[3]दाऊद अपने घर यरूशलेम को आया। दाऊद ने अपनी पत्नियों में से दस को घर की देखभाल के लिये छोड़ा था। दाऊद ने इन स्त्रियों को एक विशेष घरमें रखा। लोगों ने इस घर की रक्षा की। स्त्रियाँ उस घर में तब तक रहीं जब तक वे मरी नहीं। दाऊद ने उन्हें भोजन दिया, किन्तु उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया। वे मरने के समय तक विधवा की तरह रहीं।

[4]राजा ने अमासा से कहा, "यहूदा के लोगों से कहो कि वे मुझसे तीन दिन के भीतर मिले, और तुम्हें भी यहाँ आना होगा और मेरे सामने खड़ा होना होगा।"

[5]तब अमासा यहूदा के लोगों को एक साथ बुलाने गया। किन्तु उसने, जितना समय राजा ने दिया था, उससे अधिक समय लिया।"

दाऊद अबीशै से शेबा को मारने को कहता है

[6]दाऊद ने अबीशै से कहा, "बिक्री का पुत्र शेबा हम लोगों के लिये उससे भी अधिक खतरनाक है जितना अबशालोम था। इसलिये मेरे सेवकों को लो और शेबा का पीछा करो। शेबा को प्राचीर वाले नगरो में पहुँचने से पहले इसे शीघ्रता से मरो। यदि शेबा प्राचीर वाले नगरो में पहुँच जायेगा तो वह हम लोगों से बच निकलेगा।"

[7]योआब के व्यक्ति करेती, पलेती और सैनिक यरूशलेम से बाहर गये। उन्होंने बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा किया।

हम लोग … है बिन्यामीन और यहूदा के दो परिवार समूह थे जो बाद में राज्य के बँटने पर यहूदा का राज्य बने। अन्य दस परिवार समूह इस्राएल राज्य में थे।

दाऊद … रखा दाऊद के पुत्र अबशालोम ने दाऊद की इन "रखैलों" को, जिनके साथ शारीरिक सम्बन्ध करके, भ्रष्ट कर दिया था। देखे 2शमू. 16:21–22

योआब अमासा को मार डालता है

[8]जब योआब और सेना गिबोन की विशाल चट्टान तक आई, अमासा उनसे मिलने आया। योआब अपने सैनिक पोशाक में था। योआब ने पेटी बांध रखी थी। उसकी तलवार उसकी म्यान में थी। योआब अमासा से मिलने आगे बढ़ा और उसकी तलवार म्यान से गिर पड़ी। योआब ने तलवार को उठा लिया और उसे अपने हाथ में रखा। [9]योआब ने अमासा से पूछा, "भाई, तुम हर तरह से कुशल तो हो?"

योआब ने चुम्बन करने के लिये अपने दायें हाथ से, अमासा को उसकी दाढ़ी से सहारे पकड़ा। [10]अमासा ने उस तलवार पर ध्यान नहीं दिया जो उसके हाथ में थी। योआब ने अमासा के पेट में तलवार घुसेड़ दी और उसकी आँते भूमि पर आ पड़ी। योआब को अमासा पर दुबारा चोट नहीं करनी पड़ी, वह पहले ही मर चुका था।

दाऊद के लोग शेबा की खोज में लगे रहे

तब योआब और उसका भाई अबीशै दोनों ने बिक्री के पुत्र शेबा की खोज जारी रखी। [11]योआब के युवकों में से एक व्यक्ति अमासा के शव के पास खड़ा रहा। इस युवक ने कहा, "हर एक व्यक्ति जो योआब और दाऊद का समर्थन करता है, उसे योआब का अनुसरण करना चाहिये। शेबा का पीछा करने में उसकी सहायता करो।"

[12]अमासा अपने ही खून में सड़क के बीच पड़ा रहा। सभी लोग शव को देखने रुकते थे। इसलिये युवक अमासा के शव को सड़क से ले गया और उसे मैदान में रख दिया। तब उनसे अमासा के शव पर एक कपड़ा डाल दिया। [13]जब अमासा का शव सड़क से हटा लिया गया, सभी लोगों ने योआब का अनुसरण किया। वे बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने योआब के साथ गए।

शेबा आबेल बेतमाका को बच निकलता है

[14]बिक्री का पुत्र शेबा सभी इस्राएल के परिवार समूहों से होता हुआ आबेल बेतमाका पहुँचा। सभी बेरी लोग भी एक साथ आए और उन्होंने शेबा का अनुसरण किया।

[15]योआब और उसके लोग आबेल और बेतमाका आए। योआब की सेना ने नगर को घेर लिया। उन्होंने नगर दीवार के सहारे मिट्टी के ढेर लगाए। ऐसा करने के बाद वे दीवार के ऊपर चढ़ सकते थे। तब योआब के सैनिकों ने दीवार से पत्थरों को तोड़ना प्रारम्भ किया। वे दीवार को गिरा देना चाहते थे।

[16]एक बुद्धिमती स्त्री नगर की ओर से चिल्लाई। उसने कहा, "मेरी सुनो! योआब को यहाँ बुलाओ। मैं उससे बात करना चाहती हूँ।"

[17]योआब उस स्त्री के पास बात करने गया। उस स्त्री ने पूछा, "क्या तुम योआब हो?"

योआब ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ।"

तब उस स्त्री ने योआब से कहा, "मैं जो कहूँ सुनो।"

योआब ने कहा, "मैं सुन रहा हूँ।"

[18]तब उस स्त्री ने कहा, "अतीत में लोग कहते थे, 'आबेल में सलाह माँगो तब समस्या सुलझ जाएगी।" [19]मैं इस्राएल के राजभक्त तथा शान्तिप्रिय लोगों में से एक हूँ। तुम इस्राएल के एक महत्वपूर्ण नगर को नष्ट कर रहे हो। तुम्हें, वह कोई भी चीज, जो यहोवा की है, नष्ट नहीं करनी चाहिये।"

[20]योआब ने कहा, "नहीं, मैं कुछ भी नष्ट नहीं करना चाहता!* [21]किन्तु एक व्यक्ति एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश का है। वह बिक्री का पुत्र शेबा है। वह राजा दाऊद के विरुद्ध हो गया है। यदि तुम उसे मेरे पास लाओ तो मैं नगर को शान्त छोड़ दूँगा।"

उस स्त्री ने कहा, "बहुत ठीक, उसका सिर दीवार के ऊपर से तुम्हारे लिये फैंक दिया जायेगा।"

[22]तब उस स्त्री ने बड़ी बुद्धिमानी से नगर के सभी लोगों से बातें कीं। लोगों ने बिक्री के पुत्र शेबा का सिर काट डाला। तब लोगों ने योआब के लिये शेबा का सिर नगर की दीवार पर से फेंक दिया।

इसलिये योआब ने तुरही बजाई और सेना ने नगर को छोड़ दिया। हर एक व्यक्ति अपने घर में गया, और योआब राजा के पास यरूशलेम लौटा।

दाऊद के सेवक लोग

[23]योआब इस्राएल की सारी सेना का नायक था। यहोयादा का पुत्र बनायाह, करेतियों और पलेतियों का संचालन करता था। [24]अदोराम उन लोगों का संचालन करता था जो कठिन श्रम करने के लिये विवश थे। अहिलूद का पुत्र

नहीं, मैं ... चाहता शाब्दिक "इससे दूर, बहुत दूर यह हो। मैं निगलना या नष्ट करना नहीं चाहता।"

यहोशापात इतिहासकार था। [25]शेवा सचिव था। सादोक और एब्यातार याजक थे। [26]और याईरी दाऊद का प्रमुख याजक था।

शाऊल का परिवार दण्डित हुआ

21 दाऊद के समय में भूखमरी का काल आया। इस बार भूखमरी तीन वर्ष तक रही। दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा ने उत्तर दिया, "इस भूखमरी का कारण शाऊल और उसका हत्यारा परिवार* हैं। इस समय भूखमरी आई क्योंकि शाऊल ने गिबोनियों को मार डाला।" [2](गिबोनी इस्राएली नहीं थे। वे ऐसे एमोरियों के समूह थे जो अभी तक जीवित छोड़ दिये गये थे। इस्राएलियों ने प्रतिज्ञा की थी कि वे गिबोनी पर चोट नहीं करेंगे।* किन्तु शाऊल को इस्राएल और यहूदा के प्रति गहरा लगाव था। इसलिये उसने गिबोनियों को मार ना चाहा।)

राजा दाऊद ने गिबोनी को एक साथ इकट्ठा किया। उसने उनसे बातें कीं। [3]दाऊद ने गिबोनी से कहा, "मैं आप लोगों के लिये क्या कर सकता हूँ? इस्राएल के पापों को धोने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ जिससे आप लोग यहोवा के लोगों को आशीर्वाद दे सकें?"

[4]गिबोनी ने दाऊद से कहा, "शाऊल और उसके परिवार के पास इतना सोना-चाँदी नहीं है कि वे उसके बदले उसे दे सकें जो उन्होंने काम किये। किन्तु हम लोगों के पास इस्राएल के किसी व्यक्ति को भी मारने का अधिकार नहीं है।"

दाऊद ने पूछा, "किन्तु मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ?"

[5]गिबोनी ने दाऊद से कहा, "शाऊल ने हमारे विरुद्ध योजनायें बनाई। उसने हमारे सभी लोगों को, जो इस्राएल में बचे हुए हैं, नष्ट करने का प्रयन्त किया। [6]शाऊल यहोवा का चुना हुआ राजा था। इसलिये उसके सात पुत्रों को हम लोगों के सामने लाया जाये। तब हम लोग उन्हें शाऊल के गिबा पर्वत पर यहोवा के सामने फाँसी चढ़ा देंगे।"

राजा दाऊद ने कहा, "मैं उन पुत्रों को तुम्हें दे दूँगा।" [7]किन्तु राजा ने योनातन के पुत्र मपीबोशेत की रक्षा की। योनातन शाऊल का पुत्र था। दाऊद ने यहोवा के नाम पर योनातन से प्रतिज्ञा की थी।* इसलिये राजा ने मपीबोशेत को उन्हें चोट नहीं पहुँचाने दिया। [8]किन्तु राजा ने अर्मोनी, और मपीबोशेत,* रिस्पा और शाऊल के पुत्रों को लिया (रिस्पा अय्या की पुत्री थी)। राजा ने रिस्पा के इन दो पुत्रों और शाऊल की पुत्री मीकल के पाँचों पुत्रों को लिया। महोल नगर का निवासी बर्जिल्लै का पुत्र अद्रीएल मेराब के सभी पाँच पुत्रों का पिता था। [9]दाऊद ने इन सात पुत्रों को गिबोनी को दे दिया। तब गिबोनी ने इन सातों पुत्रों को यहोवा के सामने गिबा पर्वत पर फाँसी दे दी। ये सातों पुत्र एक साथ मरे। वे फसल की कटाई के पहले दिन मार डाले गए। (जौ की कटाई आरम्भ होने जा रही थी।)

दाऊद और रिस्पा

[10]अय्या की पुत्री रिस्पा ने शोक के वस्त्र लिये और उसे चट्टान पर रख दिया। वह वस्त्र फसल की कटाई आरम्भ होने से लेकर जब तक वर्षा हुई चट्टान पर पड़ा रहा। दिन में रिस्पा अपने पुत्रों के शव को आकाश के पक्षियों द्वारा स्पर्श नहीं होने देती थी। रात को रिस्पा खेतों के जानवरों को अपने पुत्रों के शवों को छूने नहीं देती थी।

[11]लोगों ने दाऊद को बताया, जो कुछ शाऊल की दासी अय्या की पुत्री रिस्पा कर रही थी। [12]तब दाऊद ने शाऊल और योनातन की अस्थियाँ याबेश गिलाद के लोगों से लीं। (याबेश के लोगों ने इन अस्थियों को बेतशान के सार्वजनिक रास्ते से चुरा ली थी। यह सार्वजनिक रास्ता बेतशान में वहाँ है जहाँ पलिश्तियों ने शाऊल और योनातन के शवो को लटकाया था। पलिश्तियों ने इन शवों को शाऊल को गिलबो में मारने के बाद लटकाया था।)

[13]दाऊद, शाऊल और उसके पुत्र योनातन की अस्थियों को, गिलाद से लाया। तब लोगों ने शाऊल के सात पुत्रों के शवों को इकट्ठा किया जो फाँसी चढ़ा दिये गये थे। [14]उन्होंने शाऊल और उसके पुत्र योनातन की अस्थियों को

हत्यारा परिवार शाब्दिक "खूनी खानदान।"

इस्राएलियों ... नहीं करेंगे यह यहोशू के समय में हुआ था जब गिबोनी ने धोखा दिया था। पढ़े यहोशू 9:3-15

दाऊद ने ... की थी दाऊद और योनातन ने परस्पर प्रतिज्ञा की थी कि वे दूसरे के परिवार को हानि नहीं पहुँचायेंगे। पढ़े 1शमू. 20:12-23, 42

मपीबोशेत यह मपीबोशेत नाम का दूसरा व्यक्ति है, योनातन का पुत्र नहीं।

बिन्यामीन के जेला स्थान में दफनाया। लोगों ने शवों को शाऊल के पिता कीश की कब्र में दफनाया। लोगों ने वह सब किया जो राजा ने आदेश दिया। तब परमेश्वर ने देश के लिये की गई उनकी प्रार्थना सुनी।

पलिश्तियों के साथ युद्ध

[15]पलिश्तियों ने इस्राएलियों के विरुद्ध फिर युद्ध छेडा। दाऊद और उसके लोग पलिश्तियों से लड़ने गए। किन्तु दाऊद थक गया और कमजोर हो गया। [16]रपाई के वंश में से यिशबोबनोब एक था। यिशबोबनोब के भाले का वजन साढ़े सात पौंड था। यिशबोबनोब के पास एक नयी तलवार थी। उसने दाऊद को मार डालने की योजना बनाई। [17]किन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै ने उस पलिश्ती को मार डाला और दाऊद के जीवन को बचाया।

तब दाऊद के लोगों ने दाऊद से प्रतिज्ञा* की। उन्होंने उससे कहा, "तुम हम लोगों के साथ भविष्य में युद्ध करने नहीं जा सकते। यदि तुम फिर युद्ध में जाते हो और मार दिये जाते हो तो इस्राएल अपने सबसे बड़े मार्ग दर्शक को खो देगा।"*

[18]तत्पश्चात, गोब में पलिश्तियों के साथ दूसरा युद्ध हुआ। हूशाई सिब्बकै ने सप एक अन्य रपाईवंशी पुरुष को मार डाला।

[19]तब गोब में फिर पलिश्तियों से एक अन्य युद्ध छिड़ा। यारयोरगीम के पुत्र एलहनान ने, जो बेतलेहेम का था, गती गोल्यत* को मार डाला। गोलयत का भाला जुलाहे की छड़ के बराबर लम्बा था।

[20]गत में फिर युद्ध आरम्भ हुआ। वहाँ एक विशाल व्यक्ति था। उस व्यक्ति के हर एक हाथ में छः छः उंगलियाँ और हर एक पैर में छः-छः अंगूठे थे। सब मिलाकर उसकी चौबीस उंगलियाँ और अंगूठे थे। यह व्यक्ति भी एक रपाईवंशी था। [21]इस व्यक्ति ने इस्राएल को ललकारा। किन्तु योनातन ने इस व्यक्ति को मार डाला। (योनातन दाऊद के भाई शिमी का पुत्र था।)

[22]ये चारों व्यक्ति गत के रपाईवंशी थे। वे सभी दाऊद और उसके लोगों द्वारा मारे गए।

यहोवा की स्तुति के लिये दाऊद का गीत

22 यहोवा ने दाऊद को शाऊल तथा अन्य सभी शत्रुओं से बचाया था। दाऊद ने उस समय यह गीत गाया,

[2] यहोवा मेरी चट्टान,
मेरा गढ़,
मेरा शरण-स्थल है।
[3] मैं सहायता पाने को परमेश्वर तक दौड़ूँगा।
वह मेरी सुरक्षा-चट्टान है।
परमेश्वर मेरी ढाल है।
उसकी शक्ति मेरी रक्षक है।
यहोवा मेरी ऊँचा गढ़ है, और
मेरी सुरक्षा का स्थान है।
मेरा रक्षक कष्टों से मेरी रक्षा करता है।
[4] उन्होंने मेरा उपहास किया।
मैंने सहायता के लिये यहोवा को पुकारा,
यहोवा ने मुझे मेरे शत्रुओं से बचाया!
[5] मेरे शत्रु मुझे मारना चाहते थे।
मृत्यु-तरंगों ने मुझे लपेट लिया।
विपत्तियाँ बाढ़-सी आई,
उन्होंने मुझे भयभीत किया।
[6] कब्र की रस्सियाँ मेरे चारों ओर लिपटीं,
मैं मृत्यु के जाल में फँसा।
[7] मैं विपत्ति में था, किन्तु मैंने यहोवा को पुकारा।
हाँ, मैंने अपने परमेश्वर को पुकारा
वह अपने उपासना गृह में था,
उसने मेरी पुकार सुनी,
मेरी सहायता की पुकार उसके कानों में पड़ी।
[8] तब धरती में कम्पन हुआ, धरती डोल उठी,
आकाश के आधार स्तम्भ काँप उठे।
क्यों? क्योंकि यहोवा क्रोधित था।
[9] उसकी नाक से धुआँ निकला,
उसके मुख से जलती चिनगारियाँ छिटकी,
उससे दहकते अंगारे निकल पड़े।

प्रतिज्ञा परमेश्वर को विशेष वचन देना। प्राय: कोई व्यक्ति जब प्रतिज्ञा करता है, वह परमेश्वर को विशेष बलि-भेंट चढ़ाता है, जब वह कुछ समय तक कुछ विशेष कर चुकता है।

यदि ... खो देगा शाब्दिक "तुम इस्राएल के दीपक को बुझा दोगे।"

गती गोलियत 1इति. 20:5 में इस पलिश्ती को गोलियत का भाई लह्मी कहा गया है।

10 यहोवा ने आकाश को फाड़ कर
खोल डाला, और नीचे आया,
वह सघन काले मेघ पर खड़ा हुआ!
11 यहोवा करूब (स्वर्गदूत) पर बैठा, और उड़ा,
वह पवन के पंखों पर चढ़ कर उड़ गया।
12 यहोवा ने तम्बू-से काले मेघों को
अपने चारों ओर लपेट लिया,
उसने सघन मेघों से जल इकट्ठा किया।
13 उसका तेज इतना प्रखर था, मानो
बिजली की चमक वहीं से आई हो।
14 यहोवा गगन से गरजा!
परमेश्वर, अति उच्च, बोला।
15 यहोवा ने बाण से शत्रुओं को बिखराया,
यहोवा ने बिजली भेजी,
और लोग भय से भागे।
16 धरती की नींव का आवरण हट गया,
तब लोग सागर की गहराई देख सकते थे।
वे हटे, क्योंकि यहोवा ने बातें की,
उसकी अपनी नाक से तप्त वायु
निकलने के कारण।
17 यहोवा गगन से नीचे पहुँचा,
यहोवा ने मुझे पकड़ लिया,
उसने मुझे गहरे जल (विपत्ति) से
निकाल लिया।
18 उसने उन लोगों से बचाया,
जो घृणा करते थे, मुझसे
मेरे शत्रु मुझसे अधिक शक्तिशाली थे,
अत: उसने मेरी रक्षा की।
19 मैं विपत्ति में था, जब मेरे शत्रुओं का
मुझ पर आक्रमण हुआ,
किन्तु मेरे यहोवा ने मेरी सहायता की।
20 यहोवा मुझे सुरक्षा में ले आया,
उसने मेरी रक्षा की, क्योंकि
वह मुझसे प्रेम करता है।
21 यहोवा मुझे पुरस्कार देता है,
क्योंकि मैंने उचित किया।
यहोवा मुझे पुरस्कार देता है,
क्योंकि मेरे हाथ पाप रहित हैं।
22 क्यों? क्योंकि मैंने यहोवा के
नियमों का पालन किया।
मैंने अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया।
23 मैं सदा याद करता हूँ यहोवा का निर्णय,
मैं उसके नियमों को मानता हूँ।
24 यहोवा जानता है-मैं अपराधी नहीं हूँ,
मैं अपने को पापों से दूर रखता हूँ।
25 यही कारण है कि यहोवा मुझे पुरस्कार देता है,
मैं न्यायोचित रहता हूँ।
यहोवा देखता है, कि मैं स्वच्छ जीवन बिताता हूँ।
26 यदि कोई व्यक्ति तुझसे प्रेम करेगा तो तू,
अपनी प्रेमपूर्ण दया उस पर करोगा।
यदि कोई तेरे प्रति सच्चा है,
तब तू भी उसके प्रति सच्चा होगा!
27 यदि कोई तेरे लिये अच्छा जीवन बिताता है,
तब तू भी उसके लिये अच्छा बनेगा।
किन्तु यदि कोई व्यक्ति तेरे विरुद्ध होता है,
तब तू भी उसके विरुद्ध होगा।
28 तू विपत्ति में विन्रम लोगों को बचायेगा,
किन्तु तू घमण्डी को नीचा करेगा।
29 यहोवा तू मेरा दीपक है, यहोवा मेरे चारों
ओर के अंधेरे को प्रकाश में बदलता है।
30 तू सैनिकों के दल को हराने में,
मेरी सहायता करता है।*
परमेश्वर की शक्ति से मैं दीवार के
ऊपर चढ़ सकता हूँ।
31 परमेश्वर की शक्ति पूर्ण है।
यहोवा के वचन की जाँच हो चुकी है।
यहोवा रक्षा के लिये, अपने पास
भागने वाले हर व्यक्ति की ढाल है।
32 यहोवा के अतिरिक्त कोई अन्य परमेश्वर नहीं,
हमारे परमेश्वर के अतिरिक्त
अन्य कोई आश्रय-शिला नहीं।
33 परमेश्वर मेरा दृढ़ गढ़ है वह निर्दोषों की
शुद्ध आत्माओं की सहायता करता है।
34 यहोवा मेरे पैरों को हिरन के पैरों-सा तेज
बनाता है, वह उच्च स्थानों पर
मुझे दृढ़ करता है।

तू ... करता है शाब्दिक “सैनिकों के एक दल में दौड़ना।”

35 यहोवा मुझे युद्ध की शिक्षा देता है,
अत: मेरी भुजायें पीतल के धनुष को
चला सकती हैं।
36 तू ढाल की तरह, मेरी रक्षा करता है।
तेरी सहायता ने मुझे विजेता बनाया है।
37 तूने मेरा मार्ग विस्तृत किया है,
जिससे मेरे पैर फिसले नहीं।
38 मैंने अपने शत्रुओं का पीछा किया,
मैंने उन्हें नष्ट किया,
मैं तब तक नहीं लौटा,
जब तक शत्रु नष्ट न हुए।
39 मैंने अपने शत्रुओं को नष्ट किया है,
मैंने उन्हें पूरी तरह नष्ट किया है।
वे फिर उठ नहीं सकते,
हाँ मेरे शत्रु मेरे पैरों के तले गिरे।
40 परमेश्वर तूने मुझे युद्ध के लिये,
शक्तिशाली बनाया।
तूने मेरे शत्रुओं को हराया है।
41 तूने मेरे शुत्रओं को भगाया है, अत: मैं उन लोगों
को हरा सकता हूँ जो मुझसे घृणा करते हैं।
42 मेरे शत्रुओं ने सहायता चाही,
किन्तु उनका रक्षक कोई नहीं था।
उन्होंने यहोवा से सहायता माँगी,
लेकिन उसने उत्तर नहीं दिया।
43 मैं अपने शत्रुओं को कूटकर टुकड़े-टुकड़े
करता हूँ, वे भूमि पर धूलि से हो जाते हैं।
मैने उन्हें सड़क की कीचड़ की
तरह रौंद दिया।
44 तूने तब भी मुझे बचाया है, जब
मेरे लोगों ने मेरे विरुद्ध लड़ाई की।
तूने मुझे राष्ट्रों का शासक बनाये रखा,
वे लोग भी मेरी सेवा करेंगे,
जिन्हें मैं नहीं जानता।
45 अन्य देशों के लोग मेरी आज्ञा मानते हैं,
जैसे ही सुनते हैं, तो शीघ्र ही
मेरी आज्ञा स्वीकार करते हैं।
46 अन्य देशों के लोग भयभीत होंगे,
वे अपने छिपने के स्थानों से
भय से काँपते निकलेंगे।
47 यहवोा शाश्वत है, मेरी आश्रय
चट्टान* की स्तुति करो!
परमेश्वर महान है!
वह आश्रय-चट्टान है, जो मेरा रक्षक है।
48 वह परमेश्वर है, जो मेरे शत्रुओं को
मेरे लिये दण्ड देता है।
वह लोगों को मेरे अधीन करता है।
49 वह मुझे मेरे शत्रुओं से मुक्त करता है।
हाँ, तूने मुझे मेरे शत्रुओं से ऊपर उठाया।
तू मुझे, प्रहार करने के
इच्छुकों से बचाता है।
50 यहोवा, इसी कारण, हे यहोवा मैंने राष्ट्रों के
बीच में तुझ को धन्यवाद दिया,
यही कारण है कि मैं तेरे
नाम की महिमा गाता हूँ।
51 यहोवा अपने राजा की सहायता,
युद्ध में विजय पाने में करता है,
यहोवा अपने चुने हुये राजा से
प्रेम दया करता है।
वह दाऊद और उसकी
सन्तान पर सदा दयालु रहेगा।

दाऊद के अन्तिम शब्द

23 यिशै के पुत्र दाऊद के अन्तिम शब्द हैं,
दाऊद ने यह गीत गाया:
परमेश्वर द्वारा महान बना व्यक्ति कहता है,
वह याकूब के परमेश्वर द्वारा
चुना गया राजा है,
वह इस्राएल का मधुर गायक है।
2 यहोवा की आत्मा मेरे माध्मम से बोला।
उसके शब्द मेरी जीभ पर थे।
3 इस्राएल के परमेश्वर ने बातें कीं।
इस्राएल की आश्रय, चट्टान ने मुझसे कहा,
"वह व्यक्ति जो लोगों पर
न्यायपूर्ण शासन करता है,
वह व्यक्ति जो परमेश्वर को
सम्मान देकर शासन करता है।

चट्टान परमेश्वर का नाम। इससे ज्ञात होता है कि वह एक गढ़ या सुरक्षा के दृढ़ स्थान की तरह है।

4 वह उषाकाल के प्रकाश–सा होगा;
वह व्यक्ति मेघहीन प्रात: की तरह होगा,
वह व्यक्ति उस वर्षा के बाद की धूप सा होगा;
वर्षा जो भूमि में कोमल घासें उगाती हैं।"
5 परमेश्वर ने मेरे परिवार को
शक्तिशाली बनाया था।
परमेश्वर ने मेरे साथ सदैव के लिये
एक वाचा की,
परमेश्वर ने यह वाचा पक्की की,
और वह इसे नहीं तोड़ेगा,
यह वाचा मेरी मुक्ति है,
यह वाचा वह सब है, जो मैं चाहता हूँ।
सत्य ही, यहोवा मेरे परिवार को
शक्तिशाली बनने देगा।
6 किन्तु सभी बुरे व्यक्ति काँटो की तरह हैं।
लोग काँटो को धारण नहीं करते,
वे उन्हें दूर फेंक देते हैं।
7 यदि कोई व्यक्ति उन्हें छूता है,
तो वे उस भाले के दंड की तरह चुभते हैं
जो लकड़ी तथा लोहे ले बना हो।
वे लोग काँटो की तरह होंगे।
वे आग में फेंक दिये जाऐंगे, और
वे पूरी तरह भस्म हो जायेंगे।

तीन महायोद्धा

8दाऊद के सैनिकों के नाम ये हैं: तहकमोनी का रहने वाला योशेब्यश्शेबेत। योशेब्यश्शेबेत तीन महायोद्धाओं का नायक था। उसे एस्नी अदीनी भी कहा जाता था। योशेब्यश्शेबेत ने एक बार में आठ सौ व्यक्तियों को मारा था।

9दूसरा, अहोही, दोदै का पुत्र एलीआज़ार था। एलीआज़ार उन तीन वीरों में से एक था, जो दाऊद के साथ उस समय थे जब उन्होंने पलिश्तियों को चुनौती दी थी। पलिश्ती एक साथ युद्ध के लिये तब आये थे जब इस्राएली दूर चले गये थे। 10एलीआज़ार पलिश्तियों के साथ तब तक लड़ता रहा जब तक वह बहुत थक नहीं गया। किन्तु वह अपनी तलवार को दृढ़ता से पकड़े रहा और युद्ध करता रहा। उस दिन यहोवा ने इस्राएलियों को बड़ी विजय दी। लोग तब आए जब एलीआज़ार युद्ध जीत चुका था। किन्तु वे केवल बहुमूल्य चीजें शत्रुओं से लेने आए।

11उसके बाद हरार का रहने वाला आगे का पुत्र शम्मा था। पलिश्ती एक साथ लड़ने लेही में आये थे। उन्होंने मसूर के खेतों में युद्ध किया था। लोग पलिश्तियों के सामने भाग खड़े हुए थे। 12किन्तु शम्मा खेत के बीच खड़ा था। वह खेत के लिये लड़ा। उसने पलिश्तियों को मार डाला। उस समय यहोवा ने बड़ी विजय दी।

13एक बार जब दाऊद अदुल्लाम की गुफा में था तीस योद्धोओं* में से तीन दाऊद के पास आए। ये तीनों व्यक्ति अदुल्लाम की गुफा तक रेंगते हुये गुफा तक दाऊद के पास आए। पलिश्ती सेना ने अपना डेरा रपाईम की घाटी में डाला था।

14उस समय दाऊद किले में था। कुछ पलिश्ती सैनिक वहाँ बेतलेहेम में थे। 15दाऊद की बड़ी इच्छा थी कि उसे उस के नगर का पानी मिले जहाँ उसका घर था। दाऊद ने कहा, "ओह, मैं चाहता हूँ कि कोई व्यक्ति बेतलेहेम के नगर–द्वार के पास के कुँए का पानी मुझे दे!" दाऊद सचमुच यह चाहता नहीं था, वह बातें ही बना रहा था।

16किन्तु तीनों योद्धा* पलिश्ती सेना को चीरते हुए निकल गये। इन तीनों वीरों ने बेतलेहेम के नगर–द्वार के पास के कुँए से पानी निकाला। तब तीनों वीर दाऊद के पास पानी लेकर आए। किन्तु दाऊद ने पानी पीने से इन्कार कर किया। उसने यहोवा के सामने उसे भूमि पर डाल दिया। 17दाऊद ने कहा, "यहोवा, मैं इसे पी नहीं सकता। यह उन व्यक्तियों का खून पीने जैसा होगा जिन्होंने अपने जीवन को मेरे लिये खतरे में डाला।" यही कारण था कि दाऊद ने पानी पीना अस्वीकार किया। इन तीनों योद्धाओं ने उस प्रकार के अनेक कार्य किये।

अन्य बहादुर सैनिक

18सरूयाह का पुत्र, योआब का भाई अबीशै तीनों योद्धाओं का प्रमुख था। अबीशै ने अपने भाले का उपयोग तीन सौ शत्रुओं पर किया और उन्हें मार डाला। वह इतना ही प्रसिद्ध हुआ जितने तीन योद्धा। 19अबीशै ने शेष तीन

तीस योद्धाओं ये दाऊद के अत्याधिक वीर सैनिकों का समूह था।

तीनो योद्धा ये दाऊद की सेना के सर्वाधिक वीर योद्धा थे।

योद्धाओं से अधिक सम्मान पाया। वह उनका प्रमुख हो गया। किन्तु वह तीन योद्धाओं का सदस्य नहीं बना।

[20]यहोयादा का पुत्र बनायाह एक था। वह शक्तिशाली व्यक्ति का पुत्र था। वह कबसेल का निवासी था। बनायाह ने अनेक वीरता के काम किये। बनायाह ने मोआब के अरियल के दो पुत्रों को मार डाला। जब बर्फ गिर रही थी, बनायाह एक गड्ढे में नीचे गया और एक शेर को मार डाला। [21]बनायाह ने एक मिस्री को मारा जो शक्तिशाली योद्धा था। मिस्री के हाथ में एक भाला था। किन्तु बनायाह के हाथ में केवल एक लाठी थी। बनायाह ने मिस्री के हाथ के भाले को पकड़ लिया और उससे छीन लिया। तब बनायाह ने मिस्री के अपने भाले से ही मिस्री को मार डाला। [22]यहोयादा के पुत्र बनायाह ने उस प्रकार के अनेक काम किये। बनायाह तीन वीरों में प्रसिद्ध था। [23]बनायाह ने तीन योद्धाओं से भी अधिक सम्मान पाया, किन्तु वह तीन योद्धाओं का सदस्य नहीं हुआ। बनायाह को दाऊद ने अपने रक्षकों का प्रमुख बनाया।

तीस महायोद्धा

[24]तीस योद्धाओं में से एक योआब का भाई असाहेल था। तीस योद्धाओं के समूह में अन्य व्यक्ति ये थे: बेतलेहम के दोदो का पुत्र एल्हानन; [25]हेरोदी शम्मा, हेरोदी एलीका, [26]पेलेती, हेलेस; तकोई इक्केश का पुत्र ईरा; [27]अनातोती का अबीएज़ेर; हूशाई मबुन्ने; [28]अहोही, सल्मोन; नतोपाही महरै; [29]नतोपाही के बाना का पुत्र हेलेब; गिबा के बिन्यामीन परिवार समूह रीबै का पुत्र हुत्तै; [30]पिरातोनी, बनायाह; गाश के नालों का हिद्दै; [31]अराबा अबीअल्बोन; बहूरीमी अजमावेत; [32]शालबोनी एल्यहबा; याशेन के पुत्र योनातन; [33]हरारी शम्मा का पुत्र; अरारी शारार का पुत्र अहीआम; [34]माका का अहसबै का पुत्र एलीपेलेप्त; गीलोई अहीतोपेल का पुत्र एलीआम; [35]कर्म्मेली हेस्रो; अराबी पारै; [36]सोबाई के नातान का पुत्र यिगाल; गादी बानी; [37]अम्मोनी सेलेक, बेरोती का नहरै; (नहरै सरूयाह के पुत्र योआब का कवच ले जाता था); [38]येतेरी ईरा येतेरी गारेब; [39]और हित्ती ऊरिय्याह सब मिलाकर ये सैंतीस थे।

दाऊद अपनी सेना को गिनना चाहता है

24 यहोवा फिर इस्राएल के विरुद्ध क्रोधित हुआ। यहोवा ने दाऊद को इस्राएलियों के विरुद्ध कर दिया। दाऊद ने कहा, "जाओ, इस्राएल और यहूदा के लोगों को गिनो।"

[2]राजा दाऊद ने सेना के सेनापति योआब से कहा, "इस्राएल के सभी परिवार समूह में दान से बेर्शेबा तक जाओ, और लोगों को गिनो। तब मैं जान सकूँगा कि वहाँ कितने लोग हैं।"

[3]किन्तु योआब ने राजा से कहा, "यहोवा परमेश्वर आपको सौ गुणा लोग दे, और आपकी आँखे यह घटित होता हुआ देख सकें। किन्तु आप यह क्यों करना चाहते हैं?"

[4]राजा दाऊद ने दृढ़ता से योआब और सेना के नायको को लोगों की गणना करने का आदेश दिया। अत: योआब और सेना के नायक दाऊद के यहाँ से इस्राएल के लोगों को गिनने गए। [5]उन्होंने यरदन नदी को पार किया। उन्होंने अपना डेरा अरोएर में डाला। उनका डेरा नगर की दाँयी ओर था। (नगर गाद की घाटी के बीच में है। नगर याजेर जाने के रास्तें में भी है।)

[6]तब वे तहतीम्होदशी के प्रदेश और गिलाद को गये। वे दान्यान और सीदोन के चारों ओर गए। [7]वे सोर के किले को गये। वे हिब्बियों और कनानियों के सभी नगरों को गए। वे दक्षिणी यहूदा में बेर्शेबा को गए। [8]नौ महीने बीस दिन बाद वे पूरे प्रदेश का भ्रमण कर चुके थे। वे नौ महीने बीस दिन बाद यरूशलेम आए।

[9]योआब ने लोगों की सूची राजा को दी। इस्राएल में आठ लाख व्यक्ति थे जो तलवार चला सकते थे और यहूदा में पाँच लाख व्यक्ति थे।

यहोवा दाऊद को दण्ड देता है

[10]तब दाऊद गिनती करने के बाद लज्जित हुआ। दाऊद ने यहोवा से कहा, "मैंने यह कार्य कर के बहुत बड़ा पाप किया! यहोवा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरे पाप को क्षमा कर। मैंने बड़ी मूर्खता की है।"

[11]जब दाऊद प्रात:काल उठा, यहोवा का सन्देश गाद नबी को मिला जो कि दाऊद का दृष्टा था। [12]यहोवा ने गाद से कहा, "जाओ, और दाऊद से कहो, 'यहोवा जो कहता है वह यह है। मैं तुमको तीन विकल्प देता हूँ। उनमें से एक को चुनो जिसे मैं तुम्हारे लिये करूँ।'"

[13]गाद दाऊद के पास गया और उसने बात की। गाद ने दाऊद से कहा, "तीन में से एक को चुनो:

1 तुम्हारे लिये और तुम्हारे देश के लिये सात वर्ष की भूखमरी।
2 तुम्हारे शत्रु तुम्हारा पीछा तीन महीने तक करें।
3 तुम्हारे देश में तीन दिन तक बीमारी फैले।

इनके बारे में सोचो और निर्णय करो कि मैं इन में से यहोवा जिसने मुझे भेजा है, को कौन सी चीज बताऊँ।"

[14]दाऊद ने गाद से कहा, "मैं सचमुच विपत्ति में हूँ! किन्तु यहोवा बहुत कृपालु है। इसलिये यहोवा को हमें दण्ड देने दो! मुझे मनुष्यों से दंडित न होने दों।"

[15]इसलिये यहोवा ने इस्राएल में बीमारी भेजी। यह प्रात:काल आरम्भ हुई और रुकने के निर्धारित समय तक रही। दान से बेर्शेबा तक सत्तर हजार लोग मर गए। [16]स्वर्गदूत ने अपनी भुजा यरूशलेम की ओर उसे नष्ट करने के लिये उठाई। किन्तु जो बुरी बातें हुई उनके लिये यहोवा बहुत दु:खी हुआ। यहोवा ने उस स्वर्गदूत से कहा जिसने लोगों को नष्ट किया, "बहुत हो चुका! अपनी भुजा नीचे करो।" यहोवा का स्वर्गदूत यबूसी अरौना* के खलिहान के किनारे था।

दाऊद अरौना के खलिहान को खरीदता है

[17]दाऊद ने उस स्वर्गदूत को देखा जिसने लोगों को मारा। दाऊद ने यहोवा से बातें कीं। दाऊद ने कहा, "मैंने पाप किया है। मैंने गलती की है। किन्तु इन लोगों ने मेरा अनुसरण भेड़ की तरह किया। उन्होंने कोई गलती नहीं की। कृपया दण्ड मुझे और मेरे पिता के परिवार को दें।"

[18]उस दिन गाद दाऊद के पास आया। गाद ने दाऊद से कहा, "जाओ और एक वेदी यबूसी अरौना के खलिहान में यहोवा के लिये बनाओ।" [19]तब दाऊद ने वे काम किये जो गाद ने करने को कहा। दाऊद ने यहोवा के दिये आदेशों का पालन किया। दाऊद अरौना से मिलने गया। [20]जब अरौना ने निगाह उठाई, उसने राजा (दाऊद) और उसके सेवकों को अपने पास आते देखा। अरौना बाहर निकला और अपना माथा धरती पर टेकते हुए प्रणाम किया। [21]अरौना ने कहा, "मेरे स्वामी, राजा, मेरे पास क्यों आए हैं?"

दाऊद ने उत्तर दिया, "तुमसे खलिहान खरीदने। तब मैं यहोवा के लिये वेदी बना सकता हूँ। तब बीमारी रुक जायेगी।"

[22]अरौना ने दाऊद से कहा, "मेरे स्वामी राजा, आप कुछ भी बलि-भेंट के लिये ले सकते हैं। ये कुछ गायें होमबलि के लिये हैं अग्नि की लकड़ी के लिये दंवरी के औजार तथा बैलों का जूआ भी है। [23]हे राजा! मैं आपको हर एक चीज देता हूँ।" अरौना ने राजा से यह भी कहा, "यहोवा आपका परमेश्वर, आप पर प्रसन्न हो।"

[24]किन्तु राजा ने अरौना से कहा, "नहीं! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, मैं तुमसे भूमि को उसकी कीमत देकर खरीदूँगा। मैं यहोवा अपने परमेश्वर को कुछ भी ऐसी होमबलि नहीं चढ़ाऊँगा जिसका कोई मूल्य मैंने न दिया हो।"

इसलिये दाऊद ने खलिहान और गायों को चाँदी के पचास शेकेल से खरीदा। [25]तब दाऊद ने वहाँ यहोवा के लिये एक वेदी बनाई। दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाई।

यहोवा ने देश के लिये उसकी प्रार्थना स्वीकार की। यहोवा ने इस्राएल में बीमारी रोक दी।

अरौना इसकी वर्तनी "ओर्नन" भी है।

1 राजा

1 इस समय दाऊद बहुत अधिक बूढ़ा हो गया था। वह अपनी गरमाई खो चुका था। उसके सेवक उसे कम्बल ओढ़ाते थे किन्तु वह फिर भी ठंडा रहता था। [2]इसलिये उसके सेवकों ने उससे कहा, "हम आपकी देखभाल के लिये एक युवती की खोज करेंगे। वह आपके समीप लेटेगी और आपको गरम रखेगी।" [3]इसलिये राजा के सेवकों ने इस्राएल प्रदेश में चारों ओर एक युवती की खोज आरम्भ की। वे राजा को गरम रखने के लिये एक सुन्दर लड़की की खोज कर रहे थे। उन्हें अबीशग नाम की एक लड़की मिली। वह शूनेमिन नगर की थी। वे युवती को राजा के पास ले आए। [4]लड़की बहुत सुन्दर थी। उसने राजा की देख–रेख और सेवा की। किन्तु राजा दाऊद ने उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया।

[5-6]राजा दाऊद का पुत्र अदोनिय्याह बहुत घमण्डी हो गया। उसने घोषणा की, "मैं राजा बनूँगा।" अदोनिय्याह की माँ का नाम हग्गीत था। अदोनिय्याह राजा बनने का बहुत इच्छुक था। इसलिये वह अपने लिये एक रथ, घोड़े और आगे दौड़ने वाले पाँच सौ व्यक्तियों को लाया। राजा ने अपने पुत्र अदोनिय्याह को कभी सुधारा नहीं। दाऊद ने उससे कभी यह नहीं पूछा, "तुम ये कार्य क्यों कर रहे हो?" अदोनिय्याह वह पुत्र था जो अबशालोम के बाद उत्पन्न हुआ था। अदोनिय्याह एक बहुत सुन्दर व्यक्ति था।

[7]अदोनिय्याह ने सरुयाह के पुत्र योआब और याजक एब्यातार से बातें कीं। उन्होंने उसकी सहायता की। [8]किन्तु बहुत से लोग उन कामों को ठीक नहीं समझते थे जिन्हें अदोनिय्याह कर रहा था। वे नहीं समझते थे कि वह राजा होने के योग्य हो गया है। ये लोग याजक सादोक, यहोयादा का पुत्र बनायाह, नातान, नबी, शिमी, रेई और राजा दाऊद के विशेष रक्षक थे। इसलिये ये लोग अदोनिय्याह के साथ नहीं हुए।

[9]तब अदोनिय्याह ने कुछ जानवरों को मेलबलि के लिये मारा। उसने कुछ भेड़ों, कुछ गायों और कुछ मोटे बछड़ों को मारा। अदोनिय्याह ने एनरोगेल के पास जोहेलेत की चट्टान पर ये बलियाँ चढ़ाई। अदोनिय्याह ने इस विशेष उपासना में अपने साथ आने के लिये अनेक व्यक्तियों को आमन्त्रित किया। अदोनिय्याह ने अपने सभी भाईयों, (राजा के अन्य पुत्रों) तथा यहूदा के समस्त राज्य कर्मचारियों को आमन्त्रित किया [10]किन्तु अदोनिय्याह ने नातान नबी, या बनायाह या अपने पिता के विशेष रक्षक या अपने भाई सुलैमान को आमन्त्रित नहीं किया।

[11]जब नातान ने इसके बारे में सुना, वह सुलैमान की माँ बतशेबा के पास गया। नातान ने उससे पूछा, "क्या तुमने सुना है कि हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह क्या कर रहा है? उसने अपने को राजा बना लिया है और वास्तविक राजा दाऊद इसके बारे में कुछ नहीं जानता। [12]तुम्हारा जीवन और तुम्हारे पुत्र सुलैमान का जीवन खतरे में पड़ सकता है। किन्तु मैं तुम्हें बताऊँगा कि अपने को बचाने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए। [13]राजा दाऊद के पास जाओ और उससे कहो, 'मेरे राजा, आपने मुझे वचन दिया था कि आपके बाद मेरा पुत्र सुलैमान अगला राजा होगा। फिर, अदोनिय्याह राजा क्यों बन गया है?' [14]तब, जब तुम उससे बात कर ही रही होगी, मैं अन्दर आऊँगा। जब तुम चली जाओगी तब मैं जो कुछ घटित हुआ है उसके बारे में राजा को बताऊँगा। इससे यह प्रदर्शित होगा कि तुमने अदोनिय्याह के बारे में जो कुछ कहा है, वह सत्य है।"

[15]अत: बतशेबा राजा के सोने के कमरे में अन्दर उससे मिलने गई। राजा बहुत अधिक बूढ़ा था। शूनेमिन से आई लड़की अबीशग वहाँ उसकी देख–रेख कर रही थी। [16]बतशेबा राजा के सामने प्रणाम करने झुकी। राजा ने पूछा, "तुम क्या चाहती हो?"

[17]बतशेबा ने उत्तर दिया, "मेरे राजा, आपने अपने परमेश्वर, यहोवा का नाम लेकर मुझसे प्रतिज्ञा की थी। आपने कहा था, 'तुम्हारा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा। मेरे सिंहासन पर सुलैमान शासन करेगा।' [18]किन्तु अब अदोनिय्याह राजा हो गया है और आप इसे जानते भी नहीं। [19]अदोनिय्याह ने मेलबलि के लिये कई जानवरों को मार डाला है। उसने बहुत से बैलों, मोटे बछड़ों और भेड़ों को मारा है और उसने आपके सभी पुत्रों को आमन्त्रित किया है। उसने याजक एब्यातार और आपकी सेना के सेनापति योआब को भी आमन्त्रित किया है। किन्तु उसने आपके पुत्र सुलैमान को आमन्त्रित नहीं किया, जो आपकी सेवा करता है। [20]मेरे राजा, इस्राएल के सभी लोगों की आँखे आप पर लगी हैं। वे आपके इस निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि आपके बाद कौन राजा होगा। [21]जब आप मरेंगे तो आप अपने पूर्वजों के साथ दफनाये जायेंगे। उस समय लोग यहीं कहेंगे कि मैं और सुलैमान अपराधी हैं।"

[22]जब बतशेबा राजा से बातें कर रही थी, नातान नबी उससे मिलने आया। [23]सेवकों ने राजा से कहा, "नातान नबी आये हैं।" अत: नातान ने प्रवेश किया और राजा के पास गया। नातान राजा के सामने धरती तक झुका। [24]तब नातान ने कहा, "मेरे राजा, क्या आपने यह घोषणा कर दी है कि आपके बाद अदोनिय्याह नया राजा होगा? क्या आपने यह निर्णय कर लिया है कि आपके बाद अदोनिय्याह लोगों पर शासन करेगा। [25]आज उसने घाटी में विशेष मेलबलियाँ भेंट की हैं। उसने कई बैलों, मोटे बछड़ों और भेड़ों को मारा है और उसने आपके अन्य सभी पुत्रों, सेना के सेनापति और याजक एब्यातार को आमन्त्रित किया है। अब वे उनके साथ खा रहे हैं और पी रहे हैं और वे कह रहे हैं, 'राजा अदोनिय्याह दीर्घायु हो!' [26]किन्तु उसने मुझे या याजक सादोक, यहोयादा के पुत्र बनायाह या आपके पुत्र सुलैमान को आमन्त्रित नहीं किया। [27]क्या यह आपने किया है? हम आपकी सेवा और आपकी आज्ञा का पालन करते हैं। आपने हम लोगों से पहले ही क्यों नहीं कहा कि आपने उसे अपने बाद होने वाला राजा चुना है?"

[28]तब राजा दाऊद ने कहा, "बतशेबा से अन्दर आने को कहो!" अत: बतशेबा अन्दर राजा के सामने आई।

[29]तब राजा ने एक प्रतिज्ञा की: "यहोवा परमेश्वर ने मुझे हर एक खतरे से बचाया है और यहोवा परमेश्वर शाश्वत है। मैं तुम से प्रतिज्ञा करता हूँ। [30]मैं आज वह कार्य करूँगा जिसका वचन मैंने इसके पूर्व तुम्हें दिया था। मैंने यह प्रतिज्ञा यहोवा इस्राएल के परमेश्वर की शक्ति से की थी। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हारा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा और मेरे बाद सिंहासन पर मेरा स्थान वही लेगा। मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा।"

[31]तब बतशेबा राजा के सामने प्रणाम करने धरती तक झुकी। उसने कहा, "राजा दाऊद दीर्घायु हों!"

[32]तब राजा दाऊद ने कहा, "याजक सादोक, नातान नबी और यहोयादा के पुत्र बनायाह से यहाँ अन्दर आने को कहो।" अत: तीनों व्यक्ति राजा के सामने आये। [33]तब राजा ने उनसे कहा, "मेरे अधिकारियों को अपने साथ लो और मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निजी खच्चर पर बिठाओ। उसे गीहोन सोते पर ले जाओ। [34]उस स्थान पर याजक सादोक और नातान नबी, इस्राएल के राजा के रूप में उसका अभिषेक करें। तुम लोग तुरही बजाओगे और यह घोषणा करो, 'यह सुलैमान नया राजा है।' [35]तब इसके बाद उसके साथ यहाँ लौट आओ। सुलैमान मेरे सिंहासन पर बैठेगा और हमारे स्थान पर नया राजा होगा। मैंने सुलैमान को इस्राएल और यहूदा का शासक होने के लिये चुना है।"

[36]यहोयादा के पुत्र बनायाह ने राजा को उत्तर दिया, "आमीन! यहोवा परमेश्वर ने स्वंय यह कहा है! [37]मेरे स्वामी राजा, यहोवा ने हमेशा आपकी सहायता की है। यहोवा सुलैमान की भी सहायता करे और राजा सुलैमान आपसे भी बड़े राजा बनें।"

[38]अत: सादोक, नातान, बनायाह और राजा के अधिकारियों ने राजा दाऊद की आज्ञा का पालन किया। उन्होंने सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर पर चढ़ाया और उसके साथ गीहोन के सोते पर गये। [39]याजक सादोक ने पवित्र तम्बू से तेल लिया। सादोक ने, यह दिखाने के लिये कि सुलैमान राजा है, उसके सिर पर तेल डाला। उन्होंने तुरही बजाई और सभी लोगों ने उद्घोष किया, "राजा सुलैमान दीर्घायु हों!" [40]सभी लोग नगर में सुलैमान के पीछे आए। वे बीन बजा रहे थे और उल्लास के नारे लगा रहे थे। वे इतना उद्घोष कर रहे थे कि धरती काँप उठी।

[41]इस समय अदोनिय्याह और उसके साथ के सभी अतिथि अपना भोजन समाप्त कर रहे थे। उन्होंने तुरही

की आवाज सुनी। योआब ने पूछा, "यह शोर कैसा है? नगर में क्या हो रहा है?"

[42]जब योआब बोल ही रहा था, याजक एब्यातार का पुत्र योनातन वहाँ आया। अदोनिय्याह ने कहा, "यहाँ आओ! तुम अच्छे व्यक्ति* हो। अत: तुम मेरे लिये शुभ सूचना अवश्य लाये होगे।"

[43]किन्तु योनातन ने उत्तर दिया, "नहीं! यह तुम्हारे लिये शुभ सूचना नहीं है! हमारे राजा दाऊद ने सुलैमान को नया राजा बनाया है [44]और राजा दाऊद ने याजक सादोक, नातान नबी, यहोयादा के पुत्र बनायाह और राजा के सभी अधिकारियों को उसके साथ भेजा है। उन्होंने सुलैमान को राजा के निजी खच्चर पर बिठाया। [45]तब याजक सादोक और नातान नबी ने गीहोन सोते पर सुलैमान का अभिषेक किया और तब वे नगर में गये। लोगों ने उनका अनुसरण किया और अब नगर में लोग बहुत प्रसन्न हैं। यह शोर जो तुम सुनते हो, उसी का है। [46]सुलैमान अब राजा के सिंहासन पर बैठा है। [47]राजा के सभी सेवक राजा दाऊद से यह कहने आये हैं कि आपने यह अच्छा कार्य किया है। वे कह रहे हैं, 'राजा दाऊद, आप एक महान राजा हैं और अब हम प्रार्थना करते हैं कि आपका परमेश्वर , सुलैमान को भी महान राजा बनाएगा। आपका परमेश्वर सुलैमान को आपसे भी अधिक प्रसिद्ध राजा बनाए और उसे आप जितने महान राजा थे उससे भी अधिक महान राजा होने दे।' यहाँ तक कि राजा दाऊद भी वहाँ थे, और राजा दाऊद अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे। [48]राजा दाऊद ने कहा, 'इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो। यहोवा ने मेरे पुत्रों में से एक को मेरे सिंहासन पर बिठाया है और इसे मुझे देखने दिया है।'"

[49]तब अदोनिय्याह के सभी अतिथि डर गए और शीघ्रता से चले गए। [50]अदोनिय्याह भी सुलैमान से डर गया था। इसलिये वह वेदी तक गया और वेदी के सींगो को उसने पकड़ लिया।* [51]तब किसी ने सुलैमान से कहा, "अदोनिय्याह तुमसे बहुत भयभीत है। अदोनिय्याह वेदी के पास है। उसने वेदी के सीगों* को पकड़ रखा है और छोड़ने से इन्कार करता है। अदोनिय्याह कहता है, 'राजा सुलैमान से यह प्रतिज्ञा करने को कहो कि वह मुझे मारेगा नहीं।'"

[52]इसलिये सुलैमान ने उत्तर दिया, "यदि अदोनिय्याह यह प्रमाणित करता है कि वह एक अच्छा आदमी है तो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि उसके सिर का एक बाल भी बाँका नहीं होगा। किन्तु यदि वह कुछ बुरा करेगा तो मार दिया जायेगा।" [53]तब राजा सुलैमान ने कुछ व्यक्तियों को अदोनिय्याह को लाने के लिये भेजा। वे व्यक्ति अदोनिय्याह को सुलैमान के सामने ले आए। अदोनिय्याह राजा सुलैमान के सामने आया और झुककर प्रणाम किया। तब सुलैमान ने कहा, "घर जाओ।"

2

दाऊद के मरने का समय लगभग आ पहुँचा। इसलिये दाऊद ने सुलैमान से बातें कीं और उससे कहा, [2]"मेरे मरने का समय निकट आ गया है। जैसे हर एक व्यक्ति का आता है। लेकिन तुम एक शक्तिशाली पुरुष बन रहे हो। [3]उन सभी आदेशों का सावधानीपूर्वक पालन करो जिन्हें यहोवा परमेश्वर ने हमें दिया है। सावधानीपूर्वक उसके सभी नियमों का पालन करो, और वे कार्य करो जो उसने हमें कही है। सावधानी से उन नियमों का पालन करो जो मूसा की व्यवस्था की किताब में लिखी है। यदि तुम इन सभी का पालन करोगे तो तुम जो कुछ करोगे और जहाँ कहीं जाओगे, सफल होगे [4]और यदि तुम यहोवा की आज्ञा का पालन करते रहोगे तो यहोवा मेरे लिये की गई प्रतिज्ञाओं का पालन करेगा। मेरे लिये यहोवा ने जो प्रतिज्ञा की, वह यह है, 'तुम्हारे पुत्रों को मेरी आज्ञा का पालन करना चाहिये और उन्हें वैसे रहना चाहिये जैसा रहने के लिये मैं कहूँ। तुम्हारे पुत्रों को पूरे हृदय और आत्मा से मुझमें विश्वास रखना चाहिये। यदि तुम्हारे पुत्र यह करेंगे तो तुम्हारे परिवार का एक व्यक्ति सदा इस्राएल के लोगों का शासक होगा।'"

[5]दाऊद ने यह भी कहा, "तुम यह भी याद रखो कि सरुयाह के पुत्र योआब ने मेरे लिये क्या किया। उसने इस्राएल की सेना के दो सेनापतियों को मार डाला। उसने नेर के पुत्र अब्नेर और येतेर के पुत्र अमासा को मारा। तुम्हें याद होगा कि उसने उन्हें बदले की भावना से प्रेरित होकर शान्ति के समय इसलिये मारा क्योंकि उन्होंने दूसरों

अच्छे व्यक्ति "महत्वपूर्ण व्यक्ति" इस हिब्रू शब्द का अर्थ ऊँचे खानदान का व्यक्ति है।

वेदी के सींगों को पकड़ लिया यह प्रकट करता था कि वह दया की भीख माँग रहा है। यदि कोई व्यक्ति निरपराध होता था और वह पवित्र स्थान में भाग कर जाता था और वेदी के कोनों को पकड़ता था तब उस व्यक्ति को दण्ड नहीं मिलता था।

वेदी के सींगों वेदी के कोने सींग जैसे बने थे।

को युद्ध में मारा था। इन व्यक्तियों के रक्त का दाग उसकी तलवार की मूठ और उसके पहने हुए सैनिकों के जूतों पर लगा हुआ था। इसलिये मैं उसे अवश्य दण्ड दूँगा। [6]किन्तु अब राजा तुम हो। अत: तुम्हें उसे इस प्रकार दण्ड देना चाहिये जिसे तुम सबसे अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण समझो। किन्तु तुम्हें यह निश्चय कर लेना चाहिये कि वह मार डाला जाये। उसे बुढ़ापे की शान्तिपूर्ण मृत्यु न पाने दो!

[7]"गिलाद के, बर्जिल्लै के बच्चों पर दयालु रहो। उन्हें अपना मित्र होने दो और अपनी मेज पर भोजन करने दो। उन्होंने मेरी तब सहायता की, जब मैं तुम्हारे भाई अबशालोम से भाग खड़ा हुआ था।

[8]"और याद रखो गेरा का पुत्र शिमी तुम्हारे साथ यहाँ है। वह बहूरीम के बिन्यामीन परिवार समूह का है। याद रखो कि उसने, उस दिन मेरे विरुद्ध बहुत बुरी बातें की, जिस दिन मैं महनैम को भाग गया था। तब वह मुझसे मिलने यरदन नदी पर आया था। किन्तु मैंने यहोवा के सामने प्रतिज्ञा की थी, 'शिमी मैं तुम्हें नहीं मारूँगा।' [9]परन्तु शिमी को दण्ड दिये बिना न रहने दो। तुम बुद्धिमान व्यक्ति हो, तुम समझ जाओगे कि उसके साथ क्या करना चाहिये। किन्तु उसे बुढ़ापे की शान्तिपूर्ण मृत्यु न पाने दो।"

[10]तब दाऊद मर गया। वह दाऊद नगर में दफनाया गया। [11]दाऊद ने इस्राएल पर चालीस वर्ष तक शासन किया। उसने हब्रोन में सात वर्ष और यरूशलेम में तैंतीस वर्ष तक शासन किया। [12]अब सुलैमान अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर शासन करने लगा और इसमें कोई सन्देह नहीं था कि वह राजा है।* [13]इस समय हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह सुलैमान की माँ बतशेबा के पास गया। बतशेबा ने उससे पूछा, "क्या तुम शान्ति के भाव से आए हो?"

अदोनिय्याह ने उत्तर दिया, "हाँ! यह शान्तिपूर्ण आगमन है। [14]मुझे आपसे कुछ कहना है।" बतशेबा ने कहा, "तो कहो।" [15]अदोनिय्याह ने कहा, "तुम्हें याद है कि एक समय राज्य मेरा था। इस्राएल के सभी लोग समझते थे कि मैं उनका राजा हूँ। किन्तु स्थिति बदल गई। अब मेरा भाई राजा है। यहोवा ने उसे राजा होने के लिये चुना। [16]इसलिये मैं तुमसे एक चीज़ माँगता हूँ। कृपया इन्कार न करें।"

बतशेबा ने पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"

[17]अदोनिय्याह ने उत्तर दिया, "मैं जानता हूँ कि राजा सुलैमान वह सब कुछ करेंगे जो तुम कहोगी। अत: कृपया उनसे शूनेमिन स्त्री अबीशग को मुझे देने को कहो। मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ।"

[18]तब बतशेबा ने कहा, "ठीक है, मैं तुम्हारे लिये राजा से बात करूँगी।"

[19]अत: बतशेबा राजा सुलैमान के पास उससे बात करने गई। राजा सुलैमान ने उसे देखा और वह उससे मिलने के लिये खड़ा हुआ। तब वह उसके सामने प्रणाम करने झुका और सिंहासन पर बैठ गया। उसने सेवकों से, अपनी माँ के लिये दूसरा सिंहासन लाने को कहा। तब वह उसकी दायीं ओर बैठ गई।

[20]बतशेबा ने उससे कहा, "मैं तुमसे एक छोटी चीज़ माँगती हूँ। कृपया इन्कार न करना।" राजा ने उत्तर दिया, "माँ तुम जो चाहो, माँग सकती हो। मैं तुम्हें मना नहीं करूँगा।" [21]अत: बतशेबा ने कहा, "शूनेमिन स्त्री अबीशग को, अपने भाई अदोनिय्याह के साथ विवाह करने दो।"

[22]राजा सुलैमान ने अपनी माँ से कहा, "तुम अबीशग को उसे देने के लिये मुझसे क्यों कहती हो? तुम मुझसे यह क्यों नहीं कहती कि मैं उसे राजा भी बना दूँ क्योंकि वह मेरा बड़ा भाई है? याजक एब्यातार और योआब उसका समर्थन करेंगे।"

[23]तब सुलैमान ने यहोवा से एक प्रतिज्ञा की। उसने कहा, "मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मुझसे यह माँग करने के लिये मैं अदोनिय्याह से भुगतान कराऊँगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि उसे इसका मूल्य अपने जीवन से चुकाना पड़ेगा। [24]यहोवा ने मुझे इस्राएल का राजा होने दिया है। उसने वह सिंहासन मुझे दिया है जो मेरे पिता दाऊद का है। यहोवा ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है और राज्य मुझे और मेरे परिवार को दिया है। मैं शाश्वत परमेश्वर के सामने, प्रतिज्ञा करता हूँ कि अदोनिय्याह आज मरेगा!"

[25]राजा सुलैमान ने बनायाह को आदेश दिया। बनायाह बाहर गया और उसने अदोनिय्याह को मार डाला।

[26]तब राजा सुलैमान ने याजक एब्यातार से कहा, "मुझे तुमको मार डालना चाहिये, किन्तु मैं तुम्हें अपने घर अनातोत में लौट जाने देता हूँ। मैं तुम्हें अभी मारुँगा नहीं क्योंकि मेरे पिता दाऊद के साथ चलते समय तुमने पवित्र सन्दूक को ले चलने में सहायता की थी जब तुम

इसमें ... राजा है "उसका राज्य दृढ़ता से स्थापित हो गया।"

मेरे पिता दाऊद के साथ थे और मैं जानता हूँ कि उन सभी विपत्तियों के समय में मेरे पिता के समान तुमने भी हाथ बटाया।" [27]सुलैमान ने एब्यातार से कहा कि तुम याजक के रूप में यहोवा की सेवा करते नहीं रह सकते। यह सब वैसे ही हुआ, जैसा यहोवा ने होने के लिये कहा था। परमेश्वर ने याजक एली और उसके परिवार के बारे में शीलो में यह कहा था और एब्यातार एली के परिवार से था।

[28]योआब ने इस बारे में सुना और वह डर गया। उसने अदोनिय्याह का समर्थन किया था, किन्तु अबशालोम का नहीं। योआब यहोवा के तम्बू की ओर दौड़ा और वेदी के सींगो को पकड़ लिया। [29]किसी ने राजा सुलैमान से कहा कि योआब यहोवा के तम्बू में वेदी के पास है। इसलिये सुलैमान ने बनायाह को जाने और उसे मार डालने का आदेश दिया।

[30]बनायाह यहोवा के तम्बू में गया और योआब से कहा, "राजा कहते हैं, 'बाहर आओ!'"

किन्तु योआब ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं यहीं मरूँगा।"

अत: बनायाह राजा के पास वापस गया और उससे वही कहा जो योआब ने कहा था। [31]तब राजा ने बनायाह को आदेश दिया, "वैसा ही करो जैसा वह कहता है। उसे वहीं मार डालो। तब उसे दफना दो। तब हमारा परिवार और हम योआब के दोष से मुक्त होंगे। यह अपराध इसलिये हुआ कि योआब ने निरपराध लोगों को मारा था। [32]योआब ने दो व्यक्तियों को मार डाला था जो उससे बहुत अधिक अच्छे थे। ये नेर का पुत्र अब्नेर और येतेर का पुत्र अमासा थे। अब्नेर इस्राएल की सेना का सेनापति था और उस समय मेरे पिता दाऊद यह नहीं जानते थे कि योआब ने उन्हें मार डाला था। इसलिये यहोवा योआब को उन व्यक्तियों के लिये दण्ड देगा जिन्हें उसने मार डाला था। [33]वह उनकी मृत्यु के लिये अपराधी होगा और उसका परिवार भी सदा के लिये दोषी होगा। किन्तु परमेश्वर की ओर से दाऊद को, उसके वंशजों, उसके राज परिवार और सिंहासन को सदा के लिये शान्ति मिलेगी।"

[34]इसलिये यहोयादा के पुत्र बनायाह ने योआब को मार डाला। योआब मरुभूमि में अपने घर के पास दफनाया गया। [35]सुलैमान ने तब यहोयादा के पुत्र बनायाह को योआब के स्थान पर सेनापति बनाया। सुलैमान ने एब्यातार के स्थान पर सादोक को महायाजक बनाया। [36]इसके बाद राजा ने शिमी को बुलवाया। राजा ने उससे कहा, "यहाँ यरूशलेम में तुम अपने लिये एक घर बनाओ, उसी घर में रहो और नगर को मत छोड़ो। [37]यदि तुम नगर को छोड़ोगे और किद्रोन के नाले के पार जाओगे तो तुम मार डाले जाओगे और यह तुम्हारा दोष होगा।"

[38]अत: शिमी ने उत्तर दिया, "मेरे राजा, आपने जो कहा है, ठीक है। मैं आपके आदेश का पालन करूँगा।" अत: शिमी यरूशलेम में बहुत समय तक रहा। [39]किन्तु तीन वर्ष बाद शिमी के दो सेवक भाग गए। वे गत के राजा के पास पहुँचे। उसका नाम आकीश था जो माका का पुत्र था। शिमी ने सुना कि उसके सेवक गत में है। [40]इसलिये शिमी ने अपनी काठी अपने खच्चर पर रखी और गत में राजा आकीश के पास गया। वह अपने सेवकों को प्राप्त करने गया। उसने उन्हें ढूँढ लिया और अपने घर वापस लाया।

[41]किन्तु किसी ने सुलैमान से कहा, कि शिमी यरूशलेम से गत गया था और लौट आया है। [42]इसलिये सुलैमान ने उसे बुलवाया। सुलैमान ने कहा, "मैंने यहोवा के नाम पर तुमसे यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि तुम यरूशलेम छोड़ोगे, तो मारे जाओगे। मैंने चेतावनी दी थी कि यदि तुम अन्य कहीं जाओगे तो तुम्हारे मारे जाने का दोष तुम्हारा होगा और मैंने जो कुछ कहा था तुमने उसे स्वीकार किया था। तुमने कहा कि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे। [43]तुमने अपनी प्रतिज्ञा भंग क्यों की? तुमने मेरे आदेश का पालन क्यों नहीं किया? [44]तुम जानते हो कि तुमने मेरे पिता दाऊद के विरुद्ध बहुत से गलत काम किये, अब यहोवा उन गलत कामों के लिये तुम्हें दण्ड देगा। [45]किन्तु यहोवा मुझे आशीर्वाद देगा। वह दाऊद के सिंहासन की सदैव सुरक्षा करेगा।"

[46]तब राजा ने बनायाह को शिमी को मार डालने का आदेश दिया और उसने इसे पूरा किया। अब सुलैमान अपने राज्य पर पूर्ण नियन्त्रण कर चुका था।

राजा सुलैमान

3 सुलैमान ने मिस्र के राजा फ़िरौन की पुत्री के साथ विवाह करके उसके साथ सन्धि की। सुलैमान उसे दाऊद नगर को ले आया। इस समय अभी भी सुलैमान अपना महल तथा यहोवा का मन्दिर बनवा रहा था।

सुलैमान यरूशलेम की चहारदीवारी भी बनवा रहा था। [2]मन्दिर अभी तक पूरा नहीं हुआ था। इसलिये लोग अभी भी उच्चस्थानों पर जानवरों की बलि भेंट कर रहे थे।

[3]सुलैमान ने दिखाया कि वह यहोवा से प्रेम करता है। उसके अपने पिता दाऊद ने जो कुछ करने को कहा था, उसने उन सब का पालन किया किन्तु सुलैमान ने कुछ ऐसा भी किया जिसे करने के लिये दाऊद ने नहीं कहा था। सुलैमान अभी तक उच्चस्थानों का उपयोग बलिभेंट और सुगन्धि जलाने के लिये करता रहा।

[4]राजा सुलैमान बलिभेंट करने गिबोन गया। वह वहाँ इसलिये गया क्योंकि वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण उच्च स्थान था। सुलैमान ने एक हजार बलियाँ उस वेदी पर भेंट कीं। [5]जब सुलैमान गिबोन में था उसी रात को उसके पास स्वप्न में यहोवा आया। परमेश्वर ने कहा, "जो चाहते हो तुम माँगो, मैं उसे तुम्हें दूँगा।"

[6]सुलैमान ने उत्तर दिया, "तू अपने सेवक मेरे पिता दाऊद पर बहुत दयालु रहा। उसने तेरा अनुसरण किया। वह अच्छा था और सच्चाई से रहा और तूने उसके प्रति तब सबसे बड़ी कृपा की जब तूने उसके पुत्र को उसके सिंहासन पर शासन करने दिया। [7]यहोवा मेरा परमेश्वर, तूने मुझे अपने पिता के स्थान पर राजा होने दिया है। किन्तु मैं एक छोटे बालक के समान हूँ। मेरे पास, मुझे जो करना चाहिए उसे करने के लिये बुद्धि नहीं है। [8]तेरा सेवक, मैं यहाँ तेरे चुने लोगों, में हूँ। यहाँ बहुत से लोग हैं। वे इतने अधिक हैं कि गिने नहीं जा सकते। अत: शासक को उनके बीच अनेकों निर्णय लेने पड़ेंगे। [9]इसलिये मैं तुझसे माँगता हूँ कि तू मुझे बुद्धि दे जिससे मैं सच्चाई से लोगों पर शासन और उनका न्याय कर सकूँ। इससे मैं सही और गलत के अन्तर को जान सकूँगा। इस श्रेष्ठ बुद्धि के बिना इन महान लोगों पर शासन करना असंभव है।"

[10]यहोवा प्रसन्न हुआ कि सुलैमान ने उससे यह माँगा। [11]इसलिये परमेश्वर ने उससे कहा, "तुमने अपने लिये दीर्घायु नहीं माँगी। तुमने अपने लिये सम्पत्ति नहीं माँगी। तुमने अपने शत्रुओं की मृत्यु नहीं माँगी। [12]इसलिये मैं तुम्हें वही दूँगा जो तुमने माँगा। मैं तुम्हें बुद्धिमान और विवेकी बनाऊँगा। मैं तुम्हारी बुद्धि को इतना महान बनाऊँगा कि बीते समय में कभी तुम्हारे जैसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ है और भविष्य में तुम्हारे जैसा कभी कोई नहीं होगा [13]और तुम्हें पुरस्कृत करने के लिये मैं तुम्हें वे चीज़ें भी दूँगा जिन्हें तुमने नहीं माँगी। तुम्हारे पूरे जीवन में सम्पत्ति और प्रतिष्ठा बनी रहेगी। संसार में तुम्हारे जैसा महान राजा दूसरा कोई नहीं होगा। [14]मैं तुमसे चाहता हूँ कि तुम मेरा अनुसरण करो और मेरे नियमों एवं आदेशों का पालन करो। यह उसी प्रकार करो जिस प्रकार तुम्हारे पिता दाऊद ने किया। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें दीर्घायु भी करूँगा।"

[15]सुलैमान जाग गया। वह जान गया कि परमेश्वर ने उसके साथ स्वप्न में बातें की है। तब सुलैमान यरुशलेम गया और यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने खड़ा हुआ। सुलैमान ने एक होमबलि यहोवा को चढ़ाई और उसने यहोवा को मेलबलि दी। इसके बाद उसने उन सभी प्रमुखों और अधिकारियों को दावत दी जो शासन करने में उसकी सहायता करते थे।

[16]एक दिन दो स्त्रियाँ जो वेश्यायें थीं, सुलैमान के पास आई। वे राजा के सामने खड़ी हुई। [17]स्त्रियों में से एक ने कहा, "महाराज, यह स्त्री और मैं एक ही घर में रहते हैं। हम दोनों गर्भवती हुए और अपने बच्चों को जन्म देने ही वाले थे। मैंने अपने बच्चे को जन्म दिया जब यह वहाँ मेरे साथ थी। [18]तीन दिन बाद इस स्त्री ने भी अपने बच्चे को जन्म दिया। हम लोगों के साथ कोई अन्य व्यक्ति घर में नहीं था। केवल हम दोनों ही थे। [19]एक रात जब यह स्त्री अपने बच्चे के साथ सो रही थी, बच्चा मर गया। [20]अत: रात को जब मैं सोई थी, इसने मेरे पुत्र को मेरे बिस्तर से ले लिया। यह उसे अपने बिस्तर पर ले गई। तब इसने मरे बच्चे को मेरे बिस्तर पर डाल दिया। [21]अगली सुबह मैं जागी और अपने बच्चे को दूध पिलाने वाली थी। किन्तु मैंने देखा कि बच्चा मरा हुआ है। तब मैंने उसे अधिक निकट से देखा। मैंने देखा कि यह मेरा बच्चा नहीं है।"

[22]किन्तु दूसरी स्त्री ने कहा, "नहीं! जीवित बच्चा मेरा है। मरा बच्चा तुम्हारा है!"

किन्तु पहली स्त्री ने कहा, "नहीं! तुम गलत हो! मरा बच्चा तुम्हारा है और जीवित बच्चा मेरा है।" इस प्रकार दोनों स्त्रियों ने राजा के सामने बहस की।

[23]तब राजा सुलैमान ने कहा, "तुम दोनों कहती हो कि जीवित बच्चा हमारा अपना है और तुम में से हर एक कहती है कि मरा बच्चा दूसरी का है।"

[24]तब राजा सुलैमान ने अपने सेवक को तलवार लाने भेजा [25]और राजा सुलैमान ने कहा, "हम यही करेंगे। जीवित बच्चे के दो टुकड़े कर दो। हर एक स्त्री को आधा बच्चा दे दो।"

[26]दूसरी स्त्री ने कहा, "यह ठीक है। बच्चे को दो टुकड़ो में काट डालो। तब हम दोनों में से उसे कोई नहीं पाएगा।" किन्तु पहली स्त्री, जो सच्ची माँ थी, अपने बच्चे के लिये प्रेम से भरी थी। उसने राजा से कहा, "कृपया बच्चे को न मारें! इसे उसे ही दे दें।" [27]तब राजा सुलैमान ने कहा, "बच्चे को मत मारो! इसे, पहली स्त्री को दे दो। वही सच्ची माँ है।"

[28]इस्राएल के लोगों ने राजा सुलैमान के निर्णय को सुना। उन्होंने उसका बहुत आदर और सम्मान किया क्योंकि वह बुद्धिमान था। उन्होंने देखा कि ठीक न्याय करने में उसके पास परमेश्वर की बुद्धि थी।

4 राजा सुलैमान इस्राएल के सभी लोगों पर शासन करता था। [2]ये प्रमुख अधिकारियों के नाम हैं जो शासन करने में उसकी सहायता करते थे:

सादोक का पुत्र अजर्याह याजक था। [3]शीशा के पुत्र एलीहोरेप और अहिय्याह उस विवरण को लिखने का कार्य करते थे जो न्यायालय में होता था। अहीलूद का पुत्र यहोशापात, यहोशापात लोगों के इतिहास का विवरण लिखता था। [4]यहोयादा का पुत्र बनायाह सेनापति था, सादोक और एब्यातार याजक थे। [5]नातान का पुत्र अजर्याह जनपद– प्रशासकों का अधीक्षक था। नातान का पुत्र जाबूद याजक और राजा सुलैमान का एक सलाहकार था। [6]अहीशार राजा के घर की हर एक चीज़ का उत्तरदायी था। अब्दा का पुत्र अदोनीराम दासों का अधीक्षक था।

[7]इस्राएल बारह क्षेत्रों में बँटा था जिन्हें जनपद कहते थे। सुलैमान हर जनपद पर शासन करने के लिये प्रशासकों को चुनता था। इन प्रशासकों को आदेश था कि वे अपने जनपद से भोजन सामग्री इकट्ठा करें और उसे राजा और उसके परिवार को दें। हर वर्ष एक महीने की भोजन सामग्री राजा को देने का उत्तरदायित्व बारह प्रशासकों में से हर एक का था। [8]बारह प्रशासकों के नाम ये हैं:

बेन्हूर, एप्रैम के पर्वतीय प्रदेश का प्रशासक था। [9]बेन्देकेर, माकस, शाल्बीम, बेतशेमेश और एलोनबेथानान का प्रशासक था। [10]बेन्हेसेद, अरुब्बोत, सौको और हेपेर का प्रशासक था। [11]बेनबीनादाब, नपोत दोर का प्रशासक था। उसका विवाह सुलैमान की पुत्री तापत से हुआ था। [12]अहीलूद का पुत्र बाना, तानाक, मगिद्दो से लेकर और सारतान से लगे पूरे बेतशान का प्रशासक था। यह यिज्रेल के नीचे, बेतशान से लेकर आबेलमहोला तक योकमाम के पार था। [13]बेनगेबेर, रामोत गिलाद का प्रशासक था। वह गिलाद में मनश्शे के पुत्र याईर के सारे नगरों और गाँवों का भी प्रशासक था। वह बाशान में अर्गोब के जनपद का भी प्रशासक था। इस क्षेत्र में ऊँची चहारदीवारी वाले साठ नगर थे। इन नगरों के फाटकों में काँसे की छड़ें भी लगी थी। [14]इद्दो का पुत्र अहीनादाब, महनैम का प्रशासक था। [15]अहीमास, नप्ताली का प्रशासक था। उसका विवाह सुलैमान की पुत्री बासमत से हुआ था। [16]हूशै का पुत्र बाना, आशेर और आलोत का प्रशासक था। [17]पारूह का पुत्र यहोशापात, इस्साकार का प्रशासक था। [18]एला का पुत्र शिमी, बिन्यामीन का प्रशासक था। [19]ऊरी का पुत्र गेबेर गिलाद का प्रशासक था। गिलाद वह प्रदेश था जहाँ एमोरी लोगों का राजा सीहोन और बाशान का राजा ओग रहते थे। किन्तु केवल गेबेर ही उस जनपद का प्रशासक था।

[20]यहूदा और इस्राएल में बहुत बड़ी संख्या में लोग रहते थे। लोगों की संख्या समुद्र तट के बालू के कणों जितनी थी। लोग सुखमय जीवन बिताते थे: वे खाते पीते और आनन्दित रहते थे।

[21]सुलैमान परात नदी से लेकर पलिश्ती लोगों के प्रदेश तक सभी राज्यों पर शासन करता था। उसका राज्य मिस्र की सीमा तक फैला था। ये देश सुलैमान को भेंट भेजते थे और उसके पूरे जीवन तक उसकी आज्ञा का पालन करते रहे।*

[22-23]यह भोजन सामग्री है जिसकी आवश्यकता प्रतिदिन सुलैमान को स्वयं और उसकी मेज पर सभी भोजन करने वालों के लिये होती थी:

ये देश ... करते रहें यह प्रकट करता है कि इन देशों ने सुलैमान के साथ, उसकी बड़ी शक्ति के कारण शान्ति–सन्धि की थी।

डेढ़ सौ बुशल महीन आटा,
तीन सौ बुशल आटा,
अच्छा अन्न खाने वाली दस बैल,
मैदानों में पाले गये बीस बैल और
सौ भेड़ें,
तीन भिन्न प्रकार के हिरन और विशेष पक्षी भी।

[24]सुलैमान परात नदी के पश्चिम के सभी देशों पर शासन करता था। यह प्रदेश तिप्सह से अज्जा तक था और सुलैमान के राज्य के चारों ओर शान्ति थी। [25]सुलैमान के जीवन काल में इस्राएल और यहूदा के सभी लोग लगातार दान से लेकर बेर्शेबा तक शान्ति और सुरक्षा में रहते थे। लोग शान्तिपूर्वक अपने अंजीर के पेड़ों और अंगूर की बेलों के नीचे बैठते थे।

[26]सुलैमान के पास उसके रथों के लिये चार हजार घोड़ों* के रखने के स्थान और उसके पास बारह हजार घुड़सवार थे। [27]प्रत्येक महीने बारह जनपद शासकों में से एक सुलैमान को वे सब चीज़ें देता था जिसकी उसे आवश्यकता पड़ती थी। यह राजा के मेज पर खाने वाले हर एक व्यक्ति के लिये पर्याप्त होता था। [28]जनपद प्रशासक राजा को रथों के घोड़ों और सवारी के घोड़ों के लिये पर्याप्त चारा और जौ भी देते थे। हर एक व्यक्ति इस अन्न को निश्चित स्थान पर लाता था।

[29]परमेश्वर ने सुलैमान को उत्तम बुद्धि दी। सुलैमान अनेकों बातें समझ सकता था। उसकी बुद्धि कल्पना के परे तीव्र थी।* [30]सुलैमान की बुद्धि पूर्व के सभी व्यक्तियों की बुद्धि से अधिक तीव्र थी और उसकी बुद्धि मिस्र में रहने वाले सभी व्यक्तियों की बुद्धि से अधिक तीव्र थी। [31]वह पृथ्वी के किसी भी व्यक्ति से अधिक बुद्धिमान था। वह एज्रेही एतान से भी अधिक बुद्धिमान था। वह हेमान, कलकोल तथा दर्दा से अधिक बुद्धिमान था। ये माहोल के पुत्र थे। राजा सुलैमान इस्राएल और यहूदा के चारों ओर के सभी देशों में प्रसिद्ध हो गया। [32]अपने जीवन काल में राजा सुलैमान ने तीन हजार बुद्धिमत्तापूर्ण उपदेश लिखे।* उसने पन्द्रह सौ गीत भी लिखे।

[33]सुलैमान प्रकृति के बारे में भी बहुत कुछ जानता था। सुलैमान ने लबानोन के विशाल देवदारु वृक्षों से लेकर दीवारों में उगने वाली जूफा के विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों में से हर एक के विषय में शिक्षा दी। राजा सुलैमान ने जानवरों, पक्षियों और रेंगने वाले जन्तुओं और मछलियों की चर्चा की है। [34]सुलैमान की बुद्धिमत्तापूर्ण बातों को सुनने के लिये सभी राष्ट्रों से लोग आते थे। सभी राष्ट्रों के राजा अपने बुद्धिमान व्यक्तियों को राजा सुलैमान की बातों को सुनने के लिये भेजते थे।

सुलैमान मन्दिर बनाता है

5 हीराम सोर का राजा था। हीराम सदैव दाऊद का मित्र रहा। अत: जब हीराम को मालूम हुआ कि सुलैमान दाऊद के बाद नया राजा हुआ है तो उसने सुलैमान के पास अपने सेवक भेजे। [2]सुलैमान ने हीराम राजा से जो कहा, वह यह है: [3]"तुम्हें याद है कि मेरे पिता राजा दाऊद को अपने चारों ओर अनेक युद्ध लड़ने पड़े थे। अत: वह यहोवा अपने परमेश्वर का मन्दिर बनवाने में समर्थ न हो सका। राजा दाऊद तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक यहोवा ने उसके सभी शत्रुओं को उससे पराजित नहीं हो जाने दिया। [4]किन्तु अब यहोवा मेरे परमेश्वर ने मेरे देश के चारों ओर मुझे शान्ति दी है। अब मेरा कोई शत्रु नहीं है। मेरी प्रजा अब किसी खतरे में नहीं है।

[5]"यहोवा ने मेरे पिता दाऊद के साथ एक प्रतिज्ञा की थी। यहोवा ने कहा था, 'मैं तुम्हारे पुत्र को तुम्हारे बाद राजा बनाऊँगा और तुम्हारा पुत्र मेरा सम्मान करने के लिये एक मन्दिर बनाएगा।' अब मैंने, यहोवा अपने परमेश्वर का सम्मान करने के लिये वह मन्दिर बनाने की योजना बनाई है [6]और इसलिये मैं तुमसे सहायता माँगता हूँ। अपने व्यक्तियों को लबानोन भेजो। वहाँ वे मेरे लिये देवदारु के वृक्षों को काटेंगे। मेरे सेवक तुम्हारे सेवकों के साथ काम करेंगे। मैं वह कोई भी मजदूरी भुगतान करूँगा जो तुम अपने सेवकों के लिये तय करोगे। किन्तु मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है। मेरे बढ़ई* सीदोन के बढ़ईयों की तरह अच्छे नहीं हैं।"

चार हजार घोड़ों हिब्रू और लैटिन में चालीस हजार है। किन्तु देखें 2इति. 9:25

उसकी बुद्धि ... थी "उसकी बुद्धि इतनी व्यापक थी जितनी समुद्र तट के बालू।"

लिखे "कहे।"

बढ़ई वे लोग जो लकड़ी का काम करते हैं। प्राचीन काल में इसका अर्थ यह भी था कि वे पेड़ काटते हैं।

[7]जब हीराम ने, जो कुछ सुलैमान ने माँगा, वह सुना तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। राजा हीराम ने कहा, "आज मैं यहोवा को धन्यवाद देता हूँ कि उसने दाऊद को इस विशाल राष्ट्र का शासक एक बुद्धिमान पुत्र दिया है।" [8]तब हीराम ने सुलैमान को एक संदेश भेजा। संदेश यह था, "तुमने जो माँग की है, वह मैंने सुनी है। मैं तुमको सारे देवदारु के पेड़ और चीड़ के पेड़ दूँगा, जिन्हें तुम चाहते हो। [9]मेरे सेवक लबानोन से उन्हें समुद्र तक लाएंगे। तब मैं उन्हें एक साथ बाँध दूँगा और उन्हें समुद्र तट से उस स्थान की ओर बहा दूँगा जहाँ तुम चाहते हो। वहाँ मैं लट्ठों को अलग कर दूँगा और पेड़ों को तुम ले सकोगे।"

[10-11]सुलैमान ने हीराम को लगभग एक लाख बीस हजार बुशल* गेहूँ और लगभग एक लाख बीस हजार गैलन* शुद्ध जैतून का तेल प्रति वर्ष उसके परिवार के भोजन के लिये दिया।

[12]यहोवा ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सुलैमान को बुद्धि दी और सुलैमान और हीराम के मध्य शान्ति रही। इन दोनों राजाओं ने आपस में एक सन्धि की।

[13]राजा सुलैमान ने इस काम में सहायता के लिये इस्राएल के तीस हजार व्यक्तियों को विवश किया। [14]राजा सुलैमान ने अदोनीराम नामक एक व्यक्ति को उनके ऊपर अधिकारी बनाया। सुलैमान ने उन व्यक्तियों को तीन टुकड़ियों में बाँटा। हर एक टुकड़ी में दस हजार व्यक्ति थे। हर समूह एक महीने लबानोन में काम करता था और तब दो महीने के लिये अपने घर लौटता था। [15]सुलैमान ने अस्सी हजार व्यक्तियों को भी पहाड़ी प्रदेश में काम करने के लिये विवश किया। इन मनुष्यों का काम चट्टानों को काटना था और वहाँ सत्तर हजार व्यक्ति पत्थरों को ढोने वाले थे [16]और तीन हजार तीन सौ व्यक्ति थे जो काम करने वाले व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी थे। [17]राजा सुलैमान ने, मन्दिर की नींव के लिये विशाल और कीमती चट्टानों को काटने का आदेश दिया। ये पत्थर सावधानी से काटे गये। [18]तब सुलैमान के कारीगरों और हीराम के कारीगरों तथा गबाली के व्यक्तियों ने पत्थरों पर नक्काशी का काम किया। उन्होंने मन्दिर को बनाने के लिये पत्थरों और लट्ठों को तैयार किया।

एक लाख बीस हजार बुशल "20,000 कोर्स"
एक लाख बीस हजार गैलन "20,000 बथ" एक बथ लगभग 6 गैलन के बराबर होता है।

सुलैमान मन्दिर बनाता है

6 तब सुलैमान ने मन्दिर बनाना आरम्भ किया। यह इस्राएल के लोगों द्वारा मिस्र छोड़ने के चार सौ अस्सीवाँ वर्ष* बाद था। यह राजा सुलैमान के इस्राएल पर शासन के चौथे वर्ष में था। यह वर्ष के दूसरे महीने जिव के माह में था। [2]मन्दिर नब्बे फुट लम्बा, तीस फुट चौड़ा और पैंतालीस फुट ऊँचा था।

[3]मन्दिर का द्वार मण्डप तीस फुट लम्बा और पन्द्रह फुट चौड़ा था। यह द्वारमण्डप मन्दिर के ही मुख्य भाग के सामने तक फैला था। इसकी लम्बाई मन्दिर की चौड़ाई के बराबर थी। [4]मन्दिर में संकरी खिड़कियाँ थीं। ये खिड़कियाँ बाहर की ओर संकरी और भीतर की ओर चौड़ी थीं।

[5]तब सुलैमान ने मन्दिर के मुख्य भाग के चारों ओर कमरों की एक पंक्ति बनाई। ये कमरे एक दूसरे की छत पर बने थे। कमरों की यह पंक्ति तीन मंजिल ऊँची थी। [6]कमरे मन्दिर की दीवार से सटे थे किन्तु उनकी शहतीरें उसकी दीवार में नहीं घुसी थी। शिखर पर, मन्दिर की दीवार पतली हो गई थी। इसलिये उन कमरों की एक ओर की दीवार उसके नीचे की दीवार से पतली थी। नीचे की मंजिल के कमरे साढे सात फुट चौड़े थे। बीच की मंजिल के कमरे नौ फुट चौड़े थे। उसके ऊपर के कमरे दस-बारह फुट चौड़े थे। [7]कारीगरों ने दीवारों को बनाने के लिये बड़े पत्थरों का उपयोग किया। कारीगरों ने उसी स्थान पर पत्थरों को काटा जहाँ उन्होंने उन्हें जमीन से निकाला। इसलिये मन्दिर में हथौड़ी, कुल्हाड़ियों और अन्य किसी भी लोहे के औजार की खटपट नहीं हुई।

[8]नीचे के कमरों का प्रवेश द्वार मन्दिर के दक्षिण की ओर था। भीतर सीढ़ियाँ थीं जो दूसरे मंजिल के कमरों और तब तीसरे मंजिल के कमरों तक जाती थी।

[9]इस प्रकार सुलैमान ने मन्दिर बनाना पूरा किया। मन्दिर का हर एक भाग देवदारु के तख्तों से मढ़ा गया था। [10]सुलैमान ने मन्दिर के चारों ओर कमरों का बनाना भी पूरा किया। हर एक मंजिल साढ़े सात फुट ऊँची थी। उन कमरों की शहतीरें मन्दिर को छूती थीं।

[11]यहोवा ने सुलैमान से कहा, [12]"यदि तुम मेरे सभी नियमों और आदेशों का पालन करोगे तो मैं वह सब

चार सौ अस्सी वाँ वर्ष यह लगभग ई.पू. 960 था।

करूँगा जिसके लिये मैंने तुम्हारे पिता दाऊद से प्रतिज्ञा की थी [13]और मैं इस्राएल के लोगों को कभी छोड़ूँगा नहीं।"

मन्दिर का विस्तृत विवरण

[14]इस प्रकार सुलैमान ने मन्दिर का निर्माण पूरा किया। [15]मन्दिर के भीतर पत्थर की दीवारें, देवदारु के तख्तों से मढ़ी गई थीं। देवदारु के तख्ते फर्श से छत तक थे। पत्थर का फर्श चीड़ के तख्तों से ढका था। [16]उन्होंने मन्दिर के पिछले गहरे भाग में एक कमरा तीस फुट लम्बा बनाया। उन्होंने इस कमरे की दीवारों को देवदारु के तख्तों से मढ़ा। देवदारु के तख्ते फर्श से छत तक थे। यह कमरा सर्वाधिक पवित्र स्थान कहा जाता था। [17]सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने मन्दिर का मुख्य भाग था। यह कमरा साठ फुट लम्बा था।

[18]उन्होंने इस कमरे की दीवारों को देवदारु के तख्तों से मढ़ा, दीवार का कोई भी पत्थर नहीं देखा जा सकता था। उन्होंने फूलों और कद्दू के चित्र देवदारू के तख्तों में नक्काशी की। [19]सुलैमान ने मन्दिर के पीछे भीतर गहरे कमरे को तैयार किया। यह कमरा यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक के लिये था। [20]यह कमरा तीस फुट लम्बा तीस फुट चौड़ा और तीस फुट ऊँचा था।

[21]सुलैमान ने इस कमरे को शुद्ध सोने से मढ़ा। उसने इस कमरे के सामने एक सुगन्ध वेदी बनाई। उसने वेदी को सोने से मढ़ा और इसके चारों ओर सोने की जंजीरें लपेटीं। [22]सारा मन्दिर सोने से मढ़ा था और सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने वेदी सोने से मढ़ी गई थी।

[23]कारीगरों ने पंख सहित दो करूब (स्वर्गदूतों) की मूर्तियाँ बनाई। कारीगरों ने जैतून की लकड़ी से मूर्तियाँ बनाई। ये करूब (स्वर्गदूत) सर्वाधिक पवित्र स्थान में रखे गये। हर एक स्वर्गदूत पन्द्रह फुट ऊँचा था। [24-26]वे दोनों करूब (स्वर्गदूत) एक ही माप के थे और एक ही शैली में बने थे। हर एक करूब (स्वर्गदूत) के दो पंख थे। हर एक पंख साढ़े सात फुट लम्बा था।

एक पंख के सिरे से दूसरे पंख के सिरे तक पन्द्रह फुट था और हर एक करूब (स्वर्गदूत) पन्द्रह फुट ऊँचा था। [27]ये करूब (स्वर्गदूत) सर्वाधिक पवित्र स्थान में रखे गए थे। वे एक दूसरे की बगल में खड़े थे। उनके पंख एक दूसरे को कमरे के मध्य में छूते थे। अन्य दो पंख हर एक बगल की दीवार को छूते थे। [28]दोनों करूब (स्वर्गदूत) सोने से मढ़े गए थे।

[29]मुख्य कक्ष और भीतरी कक्ष के चारों ओर की दीवारों पर करूब (स्वर्गदूतों), ताड़ के वृक्षों और फूल के चित्र उकेरे गए थे। [30]दोनों कमरों की फर्श सोने से मढ़ी गई थीं।

[31]कारीगरों ने जैतून की लकड़ी के दो दरवाजे बनाये। उन्होंने उन दोनों दरवाजों को सर्वाधिक पवित्र स्थान के प्रवेश द्वार में लगाया। दरवाजों के चारों ओर की चौखट पाँच पहलदार बनी थी।* [32]उन्होंने दोनों दरवाजों को जैतून की लकड़ी का बनाया। कारीगरों ने दरवाजों पर करूब (स्वर्गदूतों), ताड़ के वृक्षों और फूलों के चित्रों को उकेरा। तब उन्होंने दरवाजों को सोने से मढ़ा।

[33]उन्होंने मुख्य कक्ष में प्रवेश के लिये भी दरवाजे बनाये। उन्होंने एक वर्गाकार दरवाजे की चौखट बनाने के लिये जैतून की लकड़ी का उपयोग किया। [34]तब उन्होंने दरवाजा बनाने के लिये चीड़ की लकड़ी का उपयोग किया। [35]वहाँ दो दरवाजे थे। हर एक दरवाजे के दो भाग थे, अत: दोनों दरवाजे मुड़कर बन्द होते थे। उन्होंने दरवाजों पर करूब (स्वर्गदूत) ताड़ के वृक्षों और फूलों के चित्रों को उकेरा। तब उन्होंने उन्हें सोने से मढ़ा।

[36]तब उन्होंने भीतरी आँगन बनाया। उन्होंने इस आँगन के चारों ओर दीवारें बनाई। हर एक दीवार कटे पत्थरों की तीन पंक्तियों और देवदारू की लकड़ी की एक पंक्ति से बनाई गई।

[37]उन्होंने वर्ष के दूसरे महीने जिब माह में मन्दिर का निर्माण आरम्भ किया। इस्राएल के लोगों पर सुलैमान के शासन के चौथे वर्ष में, यह हुआ। [38]मन्दिर का निर्माण वर्ष के आठवें महीने बूल माह में पूरा हुआ। लोगों पर सुलैमान के शासन के ग्यारहवें वर्ष में यह हुआ था। मन्दिर के निर्माण में सात वर्ष लगे। मन्दिर ठीक उसी प्रकार बना था जैसा उसे बनाने की योजना थी।

सुलैमान का महल

7 राजा सुलैमान ने अपने लिये एक महल भी बनवाया। सुलैमान के महल के निर्माण को पूरा करने में तेरह वर्ष लगे। [2]उसने उस इमारत को भी बनाया जिसे, "लबानोन

दरवाजों के ... बनी थी हम यहाँ अर्थ के सम्बन्ध में पूर्ण सन्तुष्ट नहीं है।

का वन" कहा जाता है। यह डेढ़ सौ फुट लम्बा, पचहत्तर फुट चौड़ा, और पैंतालीस फुट ऊँचा था। इसमें देवदारु के स्तम्भों की चार पंक्तियाँ थीं। हर एक पंक्ति के सिरे पर एक देवदारु का शीर्ष* था। [3]स्तम्भों की पंक्तियों के आर पार जाती हुई देवदारु की शहतीरें थी। उन्होंने देवदारु के तख्तों को छत के लिये इन शहतीरों पर रखा था। स्तम्भों के हर एक विभाग के लिये पन्द्रह शहतीरें थीं। सब मिलाकर पैंतालीस शहतीरें थीं। [4]बगल की हर एक दीवार में खिड़कियों की तीन पक्तियाँ थीं। खिड़कियाँ परस्पर आमने–सामने थीं। [5]हर एक के अन्त में तीन दरवाजें थे। सभी दरवाजों के द्वार और चौखटे वर्गाकार थीं।

[6]सुलैमान ने "स्तम्भों का प्रवेश द्वार मण्डप" भी बनाया। यह पच्हत्तर फुट लम्बा और पैंतालीस फुट चौड़ा था। प्रवेश द्वार मण्डप के साथ साथ स्तम्भों पर टिकी एक छत थी।

[7]सुलैमान ने एक सिंहासन कक्ष बनाया जहाँ वह लोगों का न्याय करता था। वह इसे "न्याय महाकक्ष" कहता था। कक्ष फर्श से लेकर छत तक देवदारु से मढ़ा था।

[8]जिस भवन में सुलैमान रहता था, वह न्याय महाकक्ष के पीछे दूसरे आँगन में था। यह महल वैसे ही बना था जैसा न्याय महाकक्ष बना था। उसने अपनी पत्नी जो मिस्र के राजा की पुत्री थी, के लिये भी वैसा ही महल बनाया।

[9]ये सभी इमारतें बहुमूल्य पत्थर के टुकड़ों से बनी थीं। ये पत्थर समुचित आकार में आरे से काटे गये थे। वे सामने और पीछे की ओर से कटे थे। ये बहुमूल्य पत्थर नींव से लेकर दीवार की ऊपरी तह तक लगे थे। आँगन के चारों ओर की दीवार भी बहुमूल्य पत्थर के टुकड़ों से बनी थी। [10]नींव विशाल बहुमूल्य पत्थरों से बनीं थीं। कुछ पत्थर पन्द्रह फुट लम्बे थे, और अन्य बारह फुट लम्बे थे। [11]उन पत्थरों के शीर्ष पर अन्य बहुमूल्य पत्थर और देवदारु की शहतीरें थीं। [12]महल के आँगन, मन्दिर के आँगन और मन्दिर के प्रवेश द्वार मण्डप के चारों ओर दीवारें थीं। वे दीवारें पत्थर की तीन पंक्तियों और देवदारु लकड़ी की एक पंक्ति से बनीं थी।

[13]राजा सुलैमान ने हीराम नामक व्यक्ति के पास सोर में संदेश भेजा। सुलैमान हीराम को यरूशलेम लाया। [14]हीराम की माँ नप्ताली परिवार समूह से इस्राएली थी। उसका मृत पिता सोर का था। हीराम काँसे* से चीज़ें बनाता था। वह बहुत कुशल और अनुभवी कारीगर था। अतः राजा सुलैमान ने उसे आने के लिये कहा और हीराम ने उसे स्वीकार किया। इसलिये राजा सुलैमान ने हीराम को काँसे के सभी कामों का अधीक्षक बनाया। हीराम ने काँसे से निर्मित सभी चीज़ों को बनाया। [15]हीराम ने काँसे के दो स्तम्भ बनाए। हर एक स्तम्भ सत्ताईस फुट लम्बा और अट्ठारह फुट गोलाई वाला था। स्तम्भ खोखले थे और धातु तीन इंच मोटी थी।

[16]हीराम ने दो काँसे के शीर्ष भी बनाए जो साढ़े सात फुट ऊँचे थे। हीराम ने इन शीर्षों को स्तम्भों के सिरों पर रखा। [17]तब उसने दोनों स्तम्भों के ऊपर के शीर्षों को ढकने के लिये जंजीरो के दो जाल बनाए। [18]तब उसने अलंकरण की दो पंक्तियाँ बनाई जो अनार की तरह दिखते थे। उन्होंने इन काँसे के अनारों को हर एक स्तम्भ के जालों में, स्तम्भों के सिरों के शीर्षों को ढकने के लिये रखा। [19]साढ़े सात फुट ऊँचे स्तम्भों के सिरों के शीर्ष फूल के आकार के बने थे। [20]शीर्ष स्तम्भों के सिरों पर थे। वे कटोरे के आकार के जाल के ऊपर थे। उस स्थान पर शीर्षों के चारों ओर पंक्तियों में बीस अनार थे। [21]हीराम ने इन दोनों काँसे के स्तम्भों को मन्दिर के प्रवेश द्वार पर खड़ा किया। द्वार के दक्षिण की ओर एक स्तम्भ तथा द्वार के उत्तर की ओर दूसरा स्तम्भ खड़ा किया गया। दक्षिण के स्तम्भ का नाम याकीन रखा गया। उत्तर के स्तम्भ का नाम बोआज रखा गया। [22]उन्होंने फूल के आकार के शीर्षों को स्तम्भों के ऊपर रखा। इस प्रकार दोनों स्तम्भों पर काम पूरा हुआ।

[23]तब हीराम ने काँसे का एक गोल हौज बनाया। उन्होंने इस हौज को "सागर" कहा। हौज लगभग पैंतालीस फुट गोलाई में था। यह आर–पार पन्द्रह फुट और साढ़े सात फुट गहरा था। [24]हौज के बाहरी सिरे पर एक बारी थी। इस बारी के नीचे काँसे के कद्दूओं की दो कतारें हौज को घेरे हुए थी। काँसे के कद्दू हौज के हिस्से के रूप में एक इकाई में बने थे। [25]हौज बारह काँसे के बैलों की पीठों पर टिका था। ये बारहों बैल तालाब से दूर बाहर को देख रहे थे। तीन उत्तर को, तीन पूर्व को, तीन

शीर्ष स्तम्भ के ऊपरी सिरे के ऊपर पत्थर या लकड़ी का अलंकृत मुकुट।

काँसे एक धातु। हिब्रू शब्द का अर्थ तांबा, काँसा या पीतल से हो सकता है।

दक्षिण को और तीन पश्चिम को देख रहे थे। [26]हौज की दीवारें चार इंच मोटी थीं। तालाब के चारों ओर की किनारी एक प्याले की किनारी या फूल की पंखुड़ियों की तरह थी। तालाब की क्षमता लगभग ग्यारह हजार गैलन थी।

[27]तब हीराम ने दस काँसे की गाड़ियाँ बनाई। हर एक छ: फुट लम्बी, छ: फुट चौड़ी और साढ़े चार फुट ऊँची थी। [28]गाड़ियाँ वर्गाकार तख्तों को चौखटों में मढ़कर बनायी गयी थी। [29]तख्तों और चौखटों पर काँसे के सिंह, बैल और करूब (स्वर्गदूत) थे। सिंह और बैलो के ऊपर और नीचे फूलों के आकार हथौड़े से काँसे में उभारे गए थे। [30]हर एक गाड़ी में चार काँसे के पहिये काँसे की धुरी के साथ थे। कोनों पर विशाल कटोरे के लिए काँसे के आधार बने थे। आधारों पर हथौड़े से फूलों के आकार काँसे में उभारे गए थे। [31]कटोरे के लिये ऊपरी सिरे पर एक ढाँचा बना था। यह कटोरों से ऊपर को अट्ठारह इंच ऊँचा था। कटोरे का खुला हुआ गोल भाग सत्ताईस इंच व्यास वाला था। ढाँचे पर काँसे में आकार उकेरे गए थे। ढाँचा चौकोर था, गोल नहीं। [32]ढाँचे के नीचे चार पहिये थे। पहिये सत्ताईस इंच व्यास वाले थे। पहिये के मध्य के धुरे गाड़ी के साथ एक इकाई के रूप में बने थे। [33]पहिये रथ के पहियों के समान थे। पहियों की हर एक चीज़–धुरे, परिधि, तीलियाँ और नाभि काँसे की बनी थी।

[34]हर एक गाड़ी के चारों कोनों पर चार आधार थे। वे गाड़ी के साथ एक इकाई के रूप में बने थे। [35]हर एक गाड़ी के ऊपरी सिरे के चारों ओर एक काँसे की पट्टी थी। यह गाड़ी के साथ एक इकाई में बनीं थी। [36]गाड़ी की बगल और ढाँचे पर करूब (स्वर्गदूतों), सिंहों और ताड़ के वृक्षों के चित्र काँसे में उकेरे गए थे। ये चित्र गाड़ियों पर सर्वत्र, जहाँ भी स्थान था, उकेरे गए थे और गाड़ी के चारों ओर के ढाँचे पर फूल उकेरे गए थे। [37]हीराम ने दस गाड़ियाँ बनाई और वे सभी एक सी थीं। हर एक गाड़ी काँसे की बनी थी। काँसे को गलाया गया था और साँचे में ढाला गया था। अत: सभी गाड़ियाँ एक ही आकार और एक ही रूप की थीं।

[38]हीराम ने दस कटोरे भी बनाये। एक–एक कटोरा दस गाड़ियों में से हर एक के लिये था। हर एक कटोरा छ: फुट व्यास वाला था और हर एक कटोरे में दो सौ तीस गैलन आ सकता था।

[39]हीराम ने पाँच गाड़ियों को मन्दिर के दक्षिण और अन्य पाँच गाड़ियों को मन्दिर के उत्तर में रखा। उसने विशाल तालाब को मन्दिर के दक्षिण पूर्व कोने में रखा। [40]हीराम ने बर्तन, छोटे बेल्चे, और छोटे कटोरे भी बनाए। हीराम ने उन सारी चीजों को बनाना पूरा किया जिन्हें राजा सुलैमान उससे बनवाना चाहता था। हीराम ने यहोवा के मन्दिर के लिये जो कुछ बनाया उसकी सूची यह है:

[41]दो स्तम्भ,
स्तम्भों के सिरों के लिये कटोरे के आकार के दो शीर्ष,
शीर्षों के चारों ओर लगाए जाने वाले दो जाल।
[42]दो जालों के लिये चार सौ अनार स्तम्भों के सिरों पर शीर्षों के दोनों कटोरों को ढकने के लिये हर एक जाल के वास्ते अनारों की दो पक्तियाँ थीं।
[43]वहाँ दस गाडियाँ थी, हर गाड़ी पर एक कटोरा था, [44]एक विशाल तालाब जो बारह बैलों पर टिका था, [45]बर्तन, छोटे बेल्चे, छोटे कटोरे, और यहोवा के मन्दिर के लिये सभी तश्तरियाँ।

हीराम ने वे सभी चीज़ें बनाई जिन्हें राजा सुलैमान चाहता था। वे सभी झलकाए हुए काँसे से बनी थीं। [46-47]सुलैमान ने उस काँसे को कभी नहीं तोला जिसका उपयोग इन चीज़ों को बनाने के लिये हुआ था। यह इतना अधिक था कि इसका तौलना सम्भव नहीं था इसलिये सारे काँसे के तौल का कुल योग कभी मालूम नहीं हुआ। राजा ने इन चीज़ों को सुक्कोत और सारतान के बीच यरदन नदी के समीप बनाने का आदेश दिया। उन्होंने इन चीज़ों को, काँसे को गलाकर और जमीन में बने साँचो में ढालकर, बनाया।

[48-50]सुलैमान ने यह भी आदेश दिया कि मन्दिर के लिये सोने की बुहत सी चीज़ें बनाई जायें। सुलैमान ने मन्दिर के लिये सोने से जो चीज़ें बनाई, वे ये हैं।

सुनहली वेदी,
सुनहली मेज (परमेश्वर को भेंट चढ़ाई गई विशेष रोटी इस मेज पर रखी जाती थी।)
शुद्ध सोने के दीपाधार (सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने ये पाँच दक्षिण की ओर, और पाँच उत्तर की ओर थे।)
सुनहले फूल, दीपक और चिमटे, प्याले,
दीपक को पूरे प्रकाश से जलता रखने के लिये औजार,

कटोरे,
कड़ाहियाँ,
कोयला ले चलने के लिये उपयोग में आने वाली
शुद्ध सोने की तश्तरियाँ और
मन्दिर के प्रवेश द्वार के दरवाजे।

[51]इस प्रकार सुलैमान ने, यहोवा के मन्दिर के लिये जो काम वह करना चाहता था, पूरा किया। तब सुलैमान ने वे सभी चीज़ें ली जिन्हें उसके पिता दाऊद ने इस उद्देश्य के लिये सुरक्षित रखी थीं। वह इन चीज़ों को मन्दिर में लाया। उसने चाँदी और सोना यहोवा के मन्दिर के कोषागारों में रखा।

मन्दिर में साक्षीपत्र का सन्दूक

8 तब राजा सुलैमान ने इस्राएल के सभी अग्रजों, परिवार समूहों के प्रमुखों तथा इस्राएल के परिवारों के प्रमुखों को एक साथ यरूशलेम में बुलाया। सुलैमान चाहता था कि वे साक्षीपत्र के सन्दूक को दाऊद नगर से मन्दिर में लायें। [2]इसलिये इस्राएल के सभी लोग राजा सुलैमान के साथ आये। यह एतानीम महीने में विशेष त्यौहार (आश्रयों का त्यौहार) के समय हुआ। (यह वर्ष का सातवाँ महीना था)।

[3]इस्राएल के सभी अग्रज उस स्थान पर आए। तब याजकों ने पवित्र सन्दूक उठाया। [4]वे पवित्र तम्बू और तम्बू में की सभी चीज़ों सहित यहोवा के पवित्र सन्दूक को ले आए। लेवीवंशियों ने याजकों की सहायता इन चीजों को ले चलने में की। [5]राजा सुलैमान और इस्राएल के सभी लोग साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने इकट्ठे हुए। उन्होंने अनेक बलि भेंट कीं। उन्होंने इतनी अधिक भेड़े और पशु मारे कि कोई व्यक्ति उन सभी को गिनने में समर्थ नहीं था।

[6]तब याजकों ने यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को उसके उचित स्थान पर रखा। यह मन्दिर के भीतर सर्वाधिक पवित्र स्थान में था। साक्षीपत्र का सन्दूक करूब (स्वर्गदूतों) के पंखों के नीचे रखा गया। [7]करूब (स्वर्गदूतों) के पंख पवित्र सन्दूक के ऊपर फैले थे। वे पवित्र सन्दूक और उसको ले चलने में सहायक बल्लियों को ढके थे। [8]ये सहायक बल्लियाँ बहुत लम्बी थीं। यदि कोई व्यक्ति पवित्र स्थान में सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने खड़ा हो, तो वह बल्लियों के सिरों को देख सकता था। किन्तु बाहर का कोई भी उन्हें नहीं देख सकता था। वे बल्लियाँ आज भी वहाँ अन्दर हैं। [9]पवित्र सन्दूक के भीतर केवल दो अभिलिखित शिलायें थीं। वे दो अभिलिखित शिलायें वही थीं, जिन्हें मूसा ने होरेब नामक स्थान पर पवित्र सन्दूक में रखा था। होरेब वह स्थान था जहाँ यहोवा ने इस्राएल के लोगों के साथ उनके मिस्र से बाहर आने के बाद वाचा की।

[10]याजकों ने सन्दूक को सर्वाधिक पवित्र स्थान में रखा। जब याजक पवित्र स्थान से बाहर आए तो बादल* यहोवा के मन्दिर में भर गया। [11]याजक अपना काम करते न रह सके क्योंकि मन्दिर यहोवा के प्रताप* से भर गया था। [12]तब सुलैमान ने कहा:

"यहोवा ने गगन में सूर्य को चमकाया,
किन्तु उसने काले बादलों में रहना पसन्द किया।
[13] मैंने तेरे लिए एक अद्भुत मन्दिर बनाया,
एक निवास, जिसमें तू सदैव रहेगा।"

[14]इस्राएल के सभी लोग वहाँ खड़े थे। इसलिये सुलैमान उनकी ओर मुड़ा और परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद देने को कहा।

[15]तब राजा सुलैमान ने यहोवा से एक लम्बी प्रार्थना की। जो उसने प्रार्थना की वह यह है:

"इस्राएल का यहोवा परमेश्वर महान है।
यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से जो कुछ कहा—
उन्हें उसने स्वयं पूरा किया है।
यहोवा ने मेरे पिता से कहा,
[16] 'मैं अपने लोगों इस्राएलियों को
मिस्र से बाहर लाया।
लेकिन मैंने अभी तक इस्राएल परिवार समूह
से किसी नगर को नहीं चुना है, कि मुझे
सम्मान देने के लिये मन्दिर—निर्माण करे।
और मैंने अपने लोग, इस्राएलियों का मार्ग
दर्शक कौन व्यक्ति हो, उसे नहीं चुना है।
किन्तु अब मैंने यरूशलेम को चुना है
जहाँ मैं सम्मानित होता रहूँगा।
किन्तु अब, दाऊद को मैंने चुना है।
मेरे इस्राएली लोगों पर शासन करने के लिये।'

बादल विशेष दृश्य जो यह संकेत करता था कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों के साथ है।

यहोवा के प्रताप लोगों के सामने प्रकट होते समय परमेश्वर के रूपों में से एक। यह तेज चमकीले प्रकाश की तरह था।

[17]“मेरे पिता दाऊद बहुत अधिक चाहते थे कि वे यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर के सम्मान के लिये मन्दिर बनाएं। [18]किन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, ‘मैं जानता हूँ कि तुम मेरे सम्मान के लिये मन्दिर बनाने की प्रबल इच्छा रखते हो और यह अच्छा है कि तुम मेरा मन्दिर बनाना चाहते हो। [19]किन्तु तुम वह व्यक्ति नहीं हो जिसे मैंने मन्दिर बनाने के लिये चुना है। तुम्हारा पुत्र मेरा मन्दिर बनाएगा।’

[20]“इस प्रकार यहोवा ने जो प्रतिज्ञा की थी उसे पूरी कर दी है। अब मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा हूँ। अब मैं यहोवा की प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएल के लोगों पर शासन कर रहा हूँ और मैंने इस्राएल के परमेश्वर के लिये मन्दिर बनाया है। [21]मैंने मन्दिर में एक स्थान पवित्र सन्दूक के लिये बनाया है। उस पवित्र सन्दूक में वह साक्षीपत्र है जो वाचा यहोवा ने हमारे पूर्वजों के साथ किया था। यहोवा ने वह वाचा तब की जब वह हमारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर ले आया था।”

[22]तब सुलैमान यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ। सभी लोग उसके सामने खड़े थे। राजा सुलैमान ने अपने हाथों को फैलाया और आकाश की ओर देखा। [23]उसने कहा: “हे यहोवा इस्राएल के परमेश्वर तेरे समान धरती पर या आकाश में कोई ईश्वर नहीं है। तूने अपने लोगों के साथ वाचा की क्योंकि तू उनसे प्रेम करता है और तूने अपनी वाचा को पूरा किया। तू उन लोगों के प्रति दयालु और स्नेहपूर्ण है जो तेरा अनुसरण करते हैं। [24]तूने अपने सेवक मेरे पिता दाऊद से, एक प्रतिज्ञा की थी और तूने वह पूरी की है। तूने वह प्रतिज्ञा स्वयं अपने मुँह से की थी और तूने अपनी महान शक्ति से उस प्रतिज्ञा को आज सत्य घटित होने दिया है। [25]अब,यहोवा इस्राएल का परमेश्वर, उन अन्य प्रतिज्ञाओं को पूरा कर जो तूने अपने सेवक,मेरे पिता दाऊद से की थीं। तूने कहा था, ‘दाऊद जैसा तुमने किया वैसे ही तुम्हारी सन्तानों को मेरी आज्ञा का पालन सावधानी से करना चाहिये। यदि वे ऐसा करेंगे तो सदा कोई न कोई तुम्हारे परिवार का व्यक्ति इस्राएल के लोगों पर शासन करेगा’ [26]और हे यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर, मैं फिर तुझसे माँगता हूँ कि तू कृपया मेरे पिता के साथ की गई प्रतिज्ञा को पूरी करता रहे।

[27]“किन्तु परमेश्वर, क्या तू सचमुच इस पृथ्वी पर हम लोगों के साथ रहेगा? तुझको सारा आकाश और स्वर्ग के उच्चतम स्थान भी धारण नहीं कर सकते। निश्चय ही यह मन्दिर भी, जिसे मैंने बनाया है, तुझको धारण नहीं कर सकता। [28]किन्तु तू मेरी प्रार्थना और मेरे निवेदन पर ध्यान दे। मैं तेरा सेवक हूँ और तू मेरा यहोवा परमेश्वर है। इस प्रार्थना को तू स्वीकार कर जिसे आज मैं तुझसे कर रहा हूँ। [29]बीते समय में तूने कहा था, ‘मेरा वहाँ सम्मान किया जायेगा।’ इसलिये कृपया इस मन्दिर की देख-रेख दिन-रात कर। उस प्रार्थना को तू स्वीकार कर, जिसे मैं तुझसे इस समय मन्दिर में कह रहा हूँ। [30]यहोवा, मैं और तेरे इस्राएल के लोग इस मन्दिर में आएंगे और प्रार्थना करेंगे। कृपया इन प्रार्थनाओं पर ध्यान दे। हम जानते हैं कि तू स्वर्ग में रहता है। हम तुझसे वहाँ से अपनी प्रार्थना सुनने और हमें क्षमा करने की याचना करते हैं।

[31]“यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध कोई अपराध करेगा तो वह यहाँ तेरी वेदी के पास लाया जायेगा। यदि वह व्यक्ति दोषी नहीं है तो वह एक शपथ लेगा। वह शपथ लेगा कि वह निर्दोष है। [32]उस समय तू स्वर्ग में सुन और उस व्यक्ति के साथ न्याय कर। यदि वह व्यक्ति अपराधी है तो कृपया हमें स्पष्ट कर कि वह अपराधी है और यदि व्यक्ति निरपराध है तो हमें स्पष्ट कर कि वह अपराधी नहीं है।

[33]“कभी-कभी तेरे इस्राएल के लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे और उनके शत्रु उन्हें पराजित करेंगे। तब लोग तेरे पास लौटेंगे और वे लोग इस मन्दिर में तेरी प्रार्थना करेंगे। [34]कृपया स्वर्ग से उनकी प्रार्थना को सुन। तब अपने इस्राएली लोगों के पापों को क्षमा कर और उनकी भूमि उन्हें फिर से प्राप्त करने दे। तूने यह भूमि उनके पूर्वजों को दी थी।

[35]“कभी-कभी वे तेरे विरुद्ध पाप करेंगे, और तू उनकी भूमि पर वर्षा होना बन्द कर देगा। तब वे इस स्थान की ओर मुँह करके प्रार्थना करेंगे और तेरे नाम की स्तुति करेंगे। तू उनको कष्ट सहने देगा और वे अपने पापों के लिये पश्चाताप करेंगे। [36]इसलिये कृपया स्वर्ग में उनकी प्रार्थना को सुन। तब हम लोगों को हमारे पापों के लिये क्षमा कर। लोगों को सच्चा जीवन बिताने की शिक्षा दे। हे यहोवा तब कृपया तू उस भूमि पर वर्षा कर जिसे तूने उन्हें दिया है।

[37]“भूमि बहुत अधिक सूख सकती है और उस पर कोई अन्न उग नहीं सकेगा या संभव है लोगों में महामारी

फैले। संभव है सारा पैदा हुआ अन्न कीड़ें मकोड़ों द्वारा नष्ट कर दिया जाय या तेरे लोग अपने कुछ नगरों में अपने शत्रुओं के आक्रमण के शिकार बने या तेरे अनेक लोग बीमार पड़ जायें। [38]जब इनमें से कुछ भी घटित हो, और एक भी व्यक्ति अपने पापों के लिये पश्चाताप करे, और अपने हाथों को इस मन्दिर की ओर प्रार्थना में फैलाये तो [39]कृपया उसकी प्रार्थना को सुन। उसकी प्रार्थना को सुन जब तू अपने निवास स्थान स्वर्ग में है। तब लोगों को क्षमा कर और उनकी सहायता कर। केवल तू यह जानता है कि लोगों के मन में सचमुच क्या है? अत: हर एक के साथ न्याय कर और उनके प्रति न्यायशील रह। [40]यह इसलिये कर कि तेरे लोग डरें और तेरा सम्मान तब तक सदैव करें जब तक वे इस भूमि पर रहें जिसे तूने हमारे पूर्वजों को दिया था।

[41–42]"अन्य स्थानों के लोग तेरी महानता और तेरी शक्ति के बारे में सुनेंगे। वे बहुत दूर से इस मन्दिर में प्रार्थना करने आएंगे। [43]कृपया अपने निवास स्थान, स्वर्ग से उनकी प्रार्थना सुन। कृपया तू वह सब कुछ प्रदान कर जिसे अन्य स्थानों के लोग तुझसे माँगे। तब वे लोग भी इस्राएली लोगों की तरह ही तुझसे डरेंगे और तेरा सम्मान करेंगे।

[44]"कभी–कभी तू अपने लोगों को अपने शत्रुओं के विरुद्ध जाने और उनसे युद्ध करने का आदेश देगा। तब तेरे लोग तेरे चुने हुए इस नगर और मेरे बनाये हुए मन्दिर की ओर अभिमुख होंगे। जिसे मैंने तेरे सम्मान में बनाया है और वे तेरी प्रार्थना करेंगे। [45]उस समय तू अपने निवास स्थान स्वर्ग से उनकी प्रार्थनाओं को सुन और उनकी सहायता कर।

[46]"तेरे लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे। मैं इसे इसलिये जानता हूँ क्योंकि हर एक व्यक्ति पाप करता है और तू अपने लोगों पर क्रोधित होगा। तू उनके शत्रुओं को उन्हें हराने देगा। उनके शत्रु उन्हें बन्दीं बनाएंगे और उन्हें किसी बहुत दूर के देश में ले जाएंगे। [47]उस दूर के देश में तेरे लोग समझेंगे कि क्या हो गया है। वे अपने पापों के लिये पश्चाताप करेंगे और तुझसे प्रार्थना करेंगे। वे कहेंगे, 'हमने पाप और अपराध किया है।' [48]वे उस दूर के देशमें रहेंगे। किन्तु यदि वे इस देश जिसे तूने उनके पूर्वजों को दिया और तेरे चुने नगर और इस मन्दिर जिसे मैंने तेरे सम्मान में बनाया है। उसकी ओर मुख करके तुझसे प्रार्थना करेंगे। [49]तो तू कृपया अपने निवास स्थान स्वर्ग से उनकी सुन। [50]अपने लोगों को सभी पापों के लिये क्षमा कर दे और तू अपने विरोध में हुए पाप के लिये उन्हें क्षमा कर उनके शत्रुओं को उनके प्रति दयालु बना। [51]याद रख कि वे तेरे लोग हैं, याद रख कि तू उन्हें मिस्र से बाहर लाया। यह वैसा ही था जैसा तूने जलती भट्‌टी से उन्हें पकड़ कर खींच लिया हो!

[52]"यहोवा परमेश्वर, कृपया मेरी प्रार्थना और अपने इस्राएली लोगों की प्रार्थना सुन। उनकी प्रार्थना, जब कभी वे तेरी सहायता के लिये करें, सुन। [53]तूने उन्हें पृथ्वी के सारे मनुष्यों में से अपना विशेष लोग होने के लिये चुना है। यहोवा तूने उसे हमारे लिये करने की प्रतिज्ञा की है। तूने हमारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाते समय यह प्रतिज्ञा अपने सेवक मूसा के माध्यम से की थी।"

[54]सुलैमान ने परमेश्वर से यह प्रार्थना की। वह वेदी के सामने अपने घुटनों के बल था। सुलैमान ने स्वर्ग की ओर भुजायें उठाकर प्रार्थना की। तब सुलैमान ने प्रार्थना पूरी की और वह उठ खड़ा हुआ। [55]तब उसने उच्च स्वर में इस्राएल के सभी लोगों को आशीर्वाद देने के लिये परमेश्वर से याचना की। सुलैमान ने कहा:

[56]"यहोवा की स्तुति करो! उसने प्रतिज्ञा की, कि वह अपने इस्राएल के लोगों को शान्ति देगा और उसने हमें शान्ति दी है! यहोवा ने अपने सेवक मूसा का उपयोग किया और इस्राएल के लोगों के लिये बहुत सी अच्छी प्रतिज्ञायें की और यहोवा ने उन हर एक प्रतिज्ञाओं को पूरा किया है। [57]मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा, हमारा परमेश्वर हम लोगों के साथ उसी तरह रहेगा जैसे वह हमारे पूर्वजों के साथ रहा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा हमें कभी नहीं त्यागेगा। [58]मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम उसकी ओर अभिमुख होगें और उसका अनुसरण करेंगे। तब हम लोग उसके सभी नियमों, निर्णयों और आदेशों का पालन करेंगे जिन्हें उसने हमारे पूर्वजों को दिया। [59]मैं आशा करता हूँ कि यहोवा हमारा परमेश्वर सदैव इस प्रार्थना को और जिन वस्तुओं की मैंने याचना की है, याद रखेगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा अपने सेवक राजा और अपने लोग इस्राएल के लिये ये सब कुछ करेगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह प्रतिदिन यह करेगा। [60]यदि यहोवा इन कामों को करेगा तो संसार के सभी व्यक्ति यह जानेंगे कि मात्र यहोवा ही सत्य परमेश्वर है। [61]ऐ लोगों,

तुम्हें यहोवा, हमारे परमेश्वर का भक्त और उसके प्रति सच्चा होना चाहिये। तुम्हें उसके सभी नियमों और आदेशों का अनुसरण और पालन करना चाहिये। तुम्हें इस समय की तरह, भविष्य में भी उसकी आज्ञा का पालन करते रहना चाहिये।"

[62]तब राजा सुलैमान और उसके साथ के इस्राएल के लोगों ने यहोवा को बलि–भेंट की। [63]सुलैमान ने बाईस हजार पशुओं और एक लाख बीस हजार भेड़ों को मारा। ये सहभागिता भेटों के लिये थीं। यही पद्धति थी जिससे राजा और इस्राएल के लोगों ने मन्दिर का समर्पण किया अर्थात् उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि उन्होंने मन्दिर को यहोवा को अर्पित किया।

[64]उसी दिन राजा सुलैमान ने मन्दिर के सामने का आँगन समर्पित किया। उसने होमबलि, अन्नबलि और मेलबलि के रूप में काम आये जानवरों की चर्बी की भेंटें चढ़ाई। राजा सुलैमान ने ये भेंटें आँगन में चढ़ाई। उसने यह इसलिये किया कि इन सारी भेंटो को धारण करने के लिये यहोवा के सामने की काँसे की वेदी अत्याधिक छोटी थी।

[65]इस प्रकार मन्दिर में राजा सुलैमान और इस्राएल के सारे लोगों ने पर्व* मनाया। सारा इस्राएल, उत्तर में हमात दर्रे से लेकर दक्षिण में मिस्र की सीमा तक, वहाँ था। वहाँ असंख्य लोग थे। उन्होंने खाते–पीते, सात दिन यहोवा के साथ मिलकर आनन्द मनाया। तब वे अगले सात दिनों तक वहाँ ठहरे। उन्होंने सब मिलाकर चौदह दिनों तक उत्सव मनाया। [66]अगले दिन सुलैमान ने लोगों से घर जाने को कहा। सभी लोगों ने राजा को धन्यवाद दिया, विदा ली और वे घर चले गये। वे प्रसन्न थे क्योंकि यहोवा ने अपने सेवक दाऊद के लिये और इस्राएल के लोगों के लिये बहुत सारी अच्छी चीज़ें की थीं।

परमेश्वर सुलैमान के पास पुन: आता है

9 इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर और अपने महल का बनाना पूरा किया। सुलैमान ने उन सभी को बनाया जिनका निर्माण वह करना चाहता था। [2]तब यहोवा सुलैमान के सामने पुन: वैसे ही प्रकट हुआ जैसे वह इसके पहले गिबोन में हुआ था। [3]यहोवा ने उससे कहा: "मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी। मैंने तुम्हारे निवेदन भी सुने जो तुम मुझसे करवाना चाहते हो। तुमने इस मन्दिर को बनाया और मैंने इसे एक पवित्र स्थान बनाया है। अत: यहाँ मेरा सदैव सम्मान होगा। मैं इस पर अपनी दृष्टि रखूँगा और इसके विषय में सदैव ध्यान रखूँगा। [4]तुम्हें मेरी सेवा वैसे ही करनी चाहिये जैसी तुम्हारे पिता दाऊद ने की। वह निष्पक्ष और निष्कपट था और तुम्हें मेरे नियमों और उन आदेशों का पालन करना चाहिये जिन्हें मैंने तुम्हें दिया है।

[5]"यदि तुम यह सब कुछ करते रहोगे तो मैं यह निश्चित देखूँगा कि इस्राएल का राजा सदैव तुम्हारे परिवार में से ही कोई हो। यही प्रतिज्ञा है जिसे मैंने तुम्हारे पिता दाऊद से की थी। मैंने उससे कहा था कि इस्राएल पर सदैव उसके वंशजों में से एक का शासन होगा।

[6–7]"किन्तु यदि तुम या तुम्हारी सन्तानें मेरा अनुसरण करना छोड़ते हो, मेरे दिये गए नियमों और आदेशों का पालन नहीं करते और तुम दूसरे देवता की सेवा और पूजा करते हो तो मैं इस्राएल को वह देश छोड़ने को विवश करुँगा जिसे मैंने उन्हें दिया है। इस्राएल अन्य लोगों के लिये उदाहरण होगा। अन्य लोग इस्राएल का मजाक उड़ाएंगे। मैंने मन्दिर को पवित्र किया है। यह वह स्थान है जहाँ लोग मेरा सम्मान करते हैं। किन्तु यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते तो इसे मैं नष्ट कर दूँगा। [8]यह मन्दिर नष्ट कर दिया जायेगा। हर एक व्यक्ति जो इसे देखेगा चकित होगा। वे पूछेंगे, 'यहोवा ने इस देश के प्रति और इस मन्दिर के लिये इतना भयंकर कदम क्यों उठाया?' [9]अन्य लोग उत्तर देंगे, 'यह इसलिये हुआ कि उन्होंने यहोवा अपने परमेश्वर को त्याग दिया। वह उनके पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाया था। किन्तु उन्होंने अन्य देवताओं का अनुसरण करने का निश्चय किया। उन्होंने उन देवताओं की सेवा और पूजा करनी आरम्भ की। यही कारण है कि यहोवा ने उनके लिये इतना भंयकर कार्य किया।'"

[10]यहोवा का मन्दिर और अपना महल बनाने में सुलैमान को बीस वर्ष लगे [11]और बीस वर्ष के बाद राजा सुलैमान ने सोर के राजा हीराम को गलील में बीस नगर दिये। सुलैमान ने राजा हीराम को वे नगर दिये क्योंकि हीराम ने मन्दिर और महल बनाने में सुलैमान की सहायता की। हीराम ने सुलैमान को उतने सारे देवदारु और चीड़ के वृक्ष तथा सोना दिया जितना उसने चाहा। [12]इसलिये हीराम

पर्व संभवत: "फसह का पर्व।"

ने सोर से इन नगरों को देखने के लिये यात्रा की, जिन्हें सुलैमान ने उसे दिये। जब हीराम ने उन नगरों को देखा तो वह प्रसन्न नहीं हुआ। [13]राजा हीराम ने कहा, "मेरे भाई जो नगर तुमने मुझे दिये हैं वे हैं ही क्या?" राजा हीराम ने उस प्रदेश का नाम कबूल* प्रदेश रखा और वह क्षेत्र आज भी कबूल कहा जाता है। [14]हीराम ने सुलैमान के पास लगभग नौ हजार पौंड सोना मन्दिर को बनाने में उपयोग करने के लिये भेजा था।

[15]राजा सुलैमान ने दासों को अपने मन्दिर और महल बनाने के लिये काम करने के लिये विवश किया। तब राजा सुलैमान ने इन दासों का उपयोग बहुत सी चीज़ों को बनाने में किया। उसने मिल्लो* बनाया। उसने यरूशलेम नगर के चारों ओर चहारदीवारी भी बनाई। तब उसने हासोर, मगिद्दो और गेजेर नगरों को पुन: बनाया।

[16]बीते समय में मिस्र का राजा गेजेर नगर के विरुद्ध लड़ा था और उसे जला दिया था। उसने उन कनानी लोगों को मार डाला जो वहाँ रहते थे। सुलैमान ने फिरौन की पुत्री से विवाह किया। इसलिये फ़िरौन ने उस नगर को सुलैमान के लिये विवाह की भेंट के रूप में दिया। [17]सुलैमान ने उस नगर को पुन: बनाया। सुलैमान ने निचले बथोरेन नगर को भी बनाया। [18]राजा सुलैमान ने जुदैन मरुभूमि में बालात और तामार नगरों को भी बनाया। [19]राजा सुलैमान ने वे नगर भी बनाये जहाँ वह अन्य और चीज़ों का भण्डार बना सकता था और उसने अपने रथों और घोड़ों के लिये भी स्थान बनाये। सुलैमान ने अन्य बहुत सी चीज़ें भी बनाई जिन्हें वह यरूशलेम, लबानोन और अपने शासित अन्य सभी स्थानों में चाहता था।

[20]देश में ऐसे लोग भी थे जो इस्राएली नहीं थे। वे लोग एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी थे। [21]इस्राएली उन लोगों को नष्ट नहीं कर सके थे। किन्तु सुलैमान ने उन्हें दास के रूप में अपने लिये काम करने को विवश किया। वे अभी तक दास हैं। [22]सुलैमान ने किसी इस्राएली को अपना दास होने के लिये विवश नहीं किया। इस्राएल के लोग सैनिक, राज्य कर्मचारी, अधिकारी, नायक और रथचालक थे।

[23]सुलैमान की योजनाओं के साढ़े पाँच सौ पर्यवेक्षक थे। वे उन व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी थे जो काम करते थे। [24]फ़िरौन की पुत्री दाऊद के नगर से वहाँ गई जहाँ सुलैमान ने उसके लिये विशाल महल बनाया। तब सुलैमान ने मिल्लों बनाया।

[25]हर वर्ष तीन बार सुलैमान होमबलि और मेलबलि वेदी पर चढ़ाता था। यह वही वेदी थी जिसे सुलैमान ने यहोवा के लिये बनाया था। राजा सुलैमान यहोवा के सामने सुगन्धि भी जलाता था। अत: मन्दिर के लिये आवश्यक चीज़ें दिया करता था।

[26]राजा सुलैमान ने एस्योन गेबेर में जहाज भी बनाये। यह नगर एदोम प्रदेश में लाल सागर के तट पर एलोत के पास था। [27]राजा हीराम के पास कुछ ऐसे व्यक्ति थे जो समुद्र के बारे में अच्छा ज्ञान रखते थे। वे व्यक्ति प्राय: जहाज से यात्रा करते थे। राजा हीराम ने उन व्यक्तियों को सुलैमान के नाविक बेड़े में सेवा करने और सुलैमान के व्यक्तियों के साथ काम करने के लिये भेजा। [28]सुलैमान के जहाज ओपोर को गए। वे जहाज एकतीस हजार पाँच सौ पौंड सोना आपोर से सुलैमान के लिये लेकर लौटे।

शीबा की रानी सुलैमान से मिलने आती है

10 शीबा की रानी ने सुलैमान के बारे में सुना। अत: वह कठिन प्रश्नों से उसकी परीक्षा लेने आई। [2]उसने सेवकों की विशाल संख्या के साथ यरूशलेम की यात्रा की। अनेक ऊँट मसाले, रत्न, और बहुत सा सोना ढो रहे थे। वह सुलैमान से मिली और उसने उन सब प्रश्नों को पूछा जिन्हें वह सोच सकती थी। [3]सुलैमान ने सभी प्रश्नों के उत्तर दिये। उसका कोई भी प्रश्न उसके उत्तर देने के लिये अत्याधिक कठिन नहीं था। [4]शीबा की रानी ने समझ लिया कि सुलैमान बहुत बुद्धिमान है। उसने उस सुन्दर महल को भी देखा जिसे उसने बनाया था। [5]रानी ने राजा की मेज पर भोजन भी देखा। उसने उसके अधिकारियों को एक साथ मिलते देखा। उसने महल के सेवकों और जिन अच्छे वस्त्रों को उन्होंने पहन रखा था, उन्हें भी देखा। उसने उसकी दावतों और मन्दिर में चढ़ाई गई भेंटों को देखा। उन सभी चीज़ों ने वास्तव में उसे चकित कर दिया। 'उसकी साँस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई!'

कबूल इस नाम का तात्पर्य हिब्रू के उस शब्द से है जिसका अर्थ "व्यर्थ" है।

मिल्लो मिल्लो संभवत: एक ऊँचा किया हुआ मिट्टी का चबूतरा था जो यरूशलेम में मन्दिर के दक्षिण पूर्व में था।

[6]इसलिये रानी ने राजा से कहा, "मैंने अपने देश में आपकी बुद्धिमानी और बहुत सी बातों के बारे में सुना जो आपने कीं। वे सभी बातें सत्य हैं! [7]मैं इन बातों में तब तक विश्वास नहीं करती थी जब तक मैं यहाँ नहीं आई और इन चीजों को अपनी आँखों से नहीं देखा। अब मैं देखती हूँ कि जितना मैंने सुन रखा था उससे भी अधिक यहाँ है। आपकी बुद्धिमत्ता और सम्पत्ति उससे बहुत अधिक है जितनी लोगों ने मुझको बतायी। [8]आपकी पत्नियाँ* और आपके अधिकारी बहुत भाग्यशाली हैं। वे प्रतिदिन आपकी सेवा कर सकते हैं और आपकी बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुन सकते हैं। [9]आपका यहोवा परमेश्वर स्तुति योग्य है! आपको इस्राएल का राजा बनाने में उसे प्रसन्नता हुई। यहोवा परमेश्वर इस्राएल से प्रेम करता है। इसलिये उसने आपको राजा बनाया। आप नियमों का अनुसरण करते हैं और लोगों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करते हैं।"

[10]तब शीबा की रानी ने राजा को लगभग नौ हजार पौंड सोना दिया। उसने उसे अनेक मसाले और रत्न भी दिये। जितनी मात्रा में शीबा की रानी ने राजा सुलैमान को मसाले उपहार में दिये, उतनी मात्रा में मसाले फिर कभी इस्राएल देश में नहीं आए। शीबा की रानी ने उससे अधिक मसाले सुलैमान को दिये जितने पहले कभी किसी ने इस्राएल को लाकर दिये थे।

[11]हीराम के जहाज ओपोर से सोना ले आए। वे जहाज बहुत अधिक लकड़ी* और रत्न भी लाए। [12]सुलैमान ने लकड़ी का उपयोग मन्दिर और महल को सम्भालने के लिये किया। उसने लकड़ी का उपयोग गायकों के लिये वीणा और बीन बनाने में भी किया। अन्य कोई भी व्यक्ति उस प्रकार की लकड़ी इस्राएल में कभी नहीं लाया, और किसी भी व्यक्ति ने तब से उस प्रकार की लकड़ी नहीं देखी।

[13]तब राजा सुलैमान ने शीबा की रानी को वे भेंटें दीं जो कोई राजा किसी अन्य देश के शासक को सदैव देता है। तब उसने उसे वह सब दिया जो कुछ भी उसने माँगा। इसके बाद रानी सेवकों सहित अपने देश को वापस लौट गई।

पत्नियाँ यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है। हिब्रू में "पुरुष" है।
लकड़ी यह विशेष प्रकार की लकड़ी थी जिसे "अल्मुग लकड़ी" कहा जाता है। कोई भी ठीकठीक नहीं जानता कि यह किस प्रकार की लकड़ी थी।

[14]राजा सुलैमान प्रति वर्ष लगभग उन्नासी हजार नौ सौ बीस पौंड सोना प्राप्त करता था।

[15]व्यापारिक जहाजों से सोना लाये जाने के अतिरिक्त उसने बणिक, व्यापारियों और अरब के राजाओं तथा देश के प्रशासकों से भी सोना प्राप्त किया।

[16]राजा सुलैमान ने दो सौ बड़ी ढालें सोने की परतों से बनाई। हर एक ढाल में लगभग पन्द्रह पौंड सोना लगा था। [17]उसने सोने की पट्टियों की तीन सौ छोटी ढालें भी बनाई। हर एक ढाल में लगभग चार पौंड सोना लगा था। राजा ने उन्हें उस भवन में रखा जिसे "लबानोन का वन" कहा जाता था।

[18]राजा सुलैमान ने एक विशाल हाथी दाँत का सिंहासन भी बनाया। उसने उसे शुद्ध सोने से मढ़ा। [19]सिंहासन पर पहुँचने के लिये उसमें छः पैड़ियाँ थीं। सिंहासन का पिछला भाग सिरे पर गोल था। कुर्सी के दोनों ओर हत्थे लगे थे और कुर्सी की बगल में दोनों हत्थों के नीचे सिंहों की तस्वीरें बनी थी। [20]छः पैड़ियों में से हर एक पर दो सिहं थे। हर एक के सिरे पर एक सिंह था। किसी भी अन्य राज्य में इस प्रकार का कुछ भी नहीं था। [21]सुलैमान के सभी प्याले और गिलास सोने के बने थे और "लबानोन का वन" नामक भवन में सभी अस्त्र–शस्त्र* शुद्ध सोने के बने थे। महल में कुछ भी चाँदी का नहीं बना था। सुलैमान के समय में सोना इतना अधिक था कि लोग चाँदी को महत्वपूर्ण नहीं समझते थे।

[22]राजा के पास बहुत से व्यापारिक जहाज भी थे जिन्हें वह अन्य देशों से वस्तुओं का व्यापार करने के लिये बाहर भेजता था। ये हीराम के जहाज थे। हर तीसरे वर्ष जहाज सोना, चाँदी, हाथी दाँत और पशु लाते थे।

[23]सुलैमान पृथ्वी पर महानतम राजा था। वह सभी राजाओं से अधिक धनवान और बुद्धिमान था। [24]सर्वत्र लोग राजा सुलैमान को देखना चाहते थे। वे परमेश्वर द्वारा दी गई उसकी बुद्धिमत्ता की बात सुनना चाहते थे। [25]प्रत्येक वर्ष लोग राजा का दर्शन करने आते थे और प्रत्येक व्यक्ति भेंट लाता था। वे सोने–चाँदी के बने बर्तन, कपड़े, अस्त्र–शस्त्र, मसाले, घोड़े और खच्चर लाते थे।

[26]अत: सुलैमान के पास अनेक रथ और घोड़े थे। उसके पास चौदह सौ रथ और बारह हजार घोड़े थे।

अस्त्र–शस्त्र हिब्रू शब्द का अर्थ "तश्तरियाँ", "औजार" या "अस्त्र–शस्त्र" हो सकता है।

सुलैमान ने इन रथों के लिये विशेष नगर बनाये। अत: रथ उन नगरों में रखे जाते थे। राजा सुलैमान ने रथों में से कुछ को अपने पास यरूशलेम में भी रखा। [27]राजा ने इस्राएल को बहुत सम्पन्न बना दिया। यरूशलेम नगर में चाँदी इतनी सामान्य थी जितनी चट्टानें, देवदारु की लकड़ी और पहाड़ों पर उगने वाले असंख्य अंजीर के पेड़ सामान्य थे। [28]सुलैमान ने मिस्र और कुए से घोड़े मँगाए। उसके व्यापारी उन्हें कुएँ से लाते थे और फिर उन्हें इस्राएल में लाते थे। [29]मिस्र के एक रथ का मूल्य लगभग पन्द्रह पौंड चाँदी था और एक घोड़े का मूल्य पौने चार पौंड चाँदी था। सुलैमान घोड़े और रथ हित्ती और अरामी राजाओं के हाथ बेचता था।

सुलैमान और उसकी बहुत सी पत्नियाँ

11 राजा सुलैमान स्त्रियों से प्रेम करता था। वह बहुत सी ऐसी स्त्रियों से प्रेम करता था जो इस्राएल राष्ट्र की नहीं थीं। इनमें फ़िरौन की पुत्री, हित्ती स्त्रियाँ, और मोआबी, अम्मोनी, एदोमी और सीदोनी स्त्रियाँ थीं। [2]बीतें समय में यहोवा ने इस्राएल के लोगों से कहा था, "तुम्हें अन्य राष्ट्रों की स्त्रियों से विवाह नहीं करना चाहिये। यदि तुम ऐसा करोगे तो वे लोग तुम्हें अपने देवताओं का अनुसरण करने के लिये बाध्य करेंगी।" किन्तु सुलैमान उन स्त्रियों के प्रेम पाश में पड़ा। [3]सुलैमान की सात सौ पत्नियाँ थीं। (ये सभी स्त्रियाँ अन्य राष्ट्रों के प्रमुखों की पुत्रियाँ थीं।) उसके पास तीन सौ दासियाँ भी थीं जो उसकी पत्नियों के समान थीं। उसकी पत्नियों ने उसे परमेश्वर से दूर हटाया। [4]जब सुलैमान बूढ़ा हुआ तो उसकी पत्नियाँ ने उससे अन्य देवताओं का अनुसरण कराया। सुलैमान ने उसी प्रकार पूरी तरह यहोवा का अनुसरण नहीं किया जिस प्रकार उसके पिता दाऊद ने किया था। [5]सुलैमान ने अशतोरेत की पूजा की। यह सीदोन के लोगों की देवी थी। सुलैमान मिल्कोम* की पूजा करता था। यह अम्मोनियों का घृणित देवता था। [6]इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के प्रति अपराध किया। सुलैमान ने यहोवा का अनुसरण पूरी तरह उस प्रकार नहीं किया जिस प्रकार उसके पिता दाऊद ने किया था।

[7]सुलैमान ने कमोश की पूजा के लिये स्थान बनाया। कमोश मोआबी लोगों की घृणास्पद देवमूर्ति थी। सुलैमान ने उसके उच्चस्थान को यरूशलेम से लगी पहाड़ी पर बनाया। सुलैमान ने उसी पहाड़ी पर मोलेक का उच्चस्थान भी बनाया। मोलेक अम्मोनी लोगों की घृणास्पद देवमूर्ति थी। [8]तब सुलैमान ने अन्य देशों की अपनी सभी पत्नियों के लिये वही किया। उसकी पत्नियाँ सुगन्धि जलाती थीं और अपने देवताओं को बलि–भेंट करती थीं।

[9]सुलैमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर का अनुसरण करने से दूर हट गया। अत: यहोवा, सुलैमान पर क्रोधित हुआ। यहोवा सुलैमान के पास दो बार आया जब वह छोटा था। [10]यहोवा ने सुलैमान से कहा कि तुम्हें अन्य देवताओं का अनुसरण नहीं करना चाहिये। किन्तु सुलैमान ने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया। [11]इसलिये यहोवा ने सुलैमान से कहा, "तुमने मेरे साथ की गई अपनी वाचा को तोड़ना पसन्द किया है। तुमने मेरे आदेशों का पालन नहीं किया है। अत: मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुमसे तुम्हारा राज्य छीन लूँगा। मैं इसे तुम्हारे सेवकों में से एक को दूँगा। [12]किन्तु मैं तुम्हारे पिता दाऊद से प्रेम करता था। इसलिये जब तक तुम जीवित हो तब तक मैं तुम्हारा राज्य नहीं लूँगा। मैं तब तक प्रतीक्षा करुँगा जब तक तुम्हारा पुत्र राजा नहीं बन जाता। तब मैं उससे इसे लूँगा। [13]तो भी मैं तुम्हारे पुत्र से सारा राज्य नहीं छीनूँगा। मैं उसे एक परिवार समूह पर शासन करने दूँगा। यह मैं दाऊद के लिये करूँगा। वह एक अच्छा सेवक था और यह मैं अपने चुने हुये नगर यरूशलेम के लिये भी करूँगा।"

सुलैमान के शत्रु

[14]उस समय यहोवा ने एदोमी हदद को सुलैमान का शत्रु बनाया। हदद एदोम के राजा के परिवार से था। [15]यह इस प्रकार घटित हुआ। कुछ समय पहले दाऊद ने एदोम को हराया था। योआब दाऊद की सेना का सेनापति था। योआब एदोम में मरे व्यक्तियों को दफनाने गया। तब योआब ने वहाँ जीवित सभी व्यक्तियों को मार डाला। [16]योआब और सारे इस्राएली एदोम में छ: महीने तक ठहरे। उस समय के बीच उन्होंने एदोम के सभी पुरुषों को मार डाला। [17]किन्तु उस समय हदद अभी एक किशोर ही था। अत: हदद मिस्र को भाग निकला। उसके पिता के कुछ सेवक उसके साथ गए। [18]उन्होंने मिद्यान को छोड़ा और वे परान को गए। वे मिस्र के राजा फ़िरौन के पास गये और उससे सहायता माँगी। फ़िरौन ने हदद को एक

मिल्कोम अम्मोनी लोगों का देवता।

घर और कुछ भूमि दी। फ़िरौन ने उसे सहायता भी दी और उसे खाने के लिये भोजन दिया।

[19]फ़िरौन ने हदद को बहुत पसन्द किया। फिरौन ने हदद को एक पत्नी दी, स्त्री फ़िरौन की साली थी। (फ़िरौन की पत्नी तहपनेस थी।) [20]अत: तहपनेस की बहन हदद से ब्याही गई। उनका एक पुत्र गनूबत नाम का हुआ। रानी तहपनेस ने गनूबत को अपने बच्चों के साथ फ़िरौन के महल में बड़ा होने दिया।

[21]मिस्र में हदद ने सुना कि दाऊद मर गया। उसने यह भी सुना कि सेनापति योआब मर गया। इसलिये हदद ने फ़िरौन से कहा, "मुझे अपने देश में अपने घर वापस लौट जाने दे।"

[22]किन्तु फ़िरौन ने उत्तर दिया, "मैंने तुम्हें सारी चीज़, जिनकी तुम्हें यहाँ आवश्यकता है, दी है! तुम अपने देश में वापस क्यों जाना चाहते हो?"

हदद ने उत्तर दिया, "कृपया मुझे घर लौटने दें।"

[23]यहोवा ने दूसरे व्यक्ति को भी सुलैमान के विरुद्ध शत्रु बनाया। यह व्यक्ति एल्यादा का पुत्र रजोन था। रजोन अपने स्वामी के यहाँ से भाग गया था। उसका स्वामी सोबा का राजा हददेजेर था। [24]दाऊद ने जब सोबा की सेना को हरा दिया तब उसके बाद रजोन ने कुछ व्यक्तियों को इकट्ठा किया और एक छोटी सेना का प्रमुख बन गया। रजोन दमिश्क गया और वहीं ठहरा। रजोन दमिश्क का राजा हो गया। [25]रजोन अराम पर शासन करता था। रजोन इस्राएल से घृणा करता था, इसलिये सुलैमान जब तक जीवित रहा वह पूरे समय इस्राएल का शत्रु बना रहा। रजोन और हदद ने इस्राएल के लिये बड़ी परेशानियाँ उत्पन्न कीं।

[26]नबात का पुत्र यारोबाम सुलैमान के सेवकों में से एक था। यारोबाम एप्रैम परिवार समूह से था। वह सरेदा नगर का था। यारोबाम की माँ का नाम सरूयाह था। उसका पिता मर चुका था। वह राजा के विरुद्ध हो गया।

[27]यारोबाम राजा के विरुद्ध क्यों हुआ? इसकी कहानी यह है: सुलैमान मिल्लो बना रहा था और अपने पिता दाऊद के नगर की दीवार को दृढ़ कर रहा था। [28]यारोबाम एक बलवान व्यक्ति था। सुलैमान ने देखा कि यह युवक एक अच्छा श्रमिक है। इसलिये सुलैमान ने उसे यूसुफ के परिवार समूह* के श्रमिकों का अधिकारी बना दिया। [29]एक दिन यारोबाम यरूशलेम के बाहर यात्रा कर रहा था। शीलो का अहिय्याह नबी उससे सड़क पर मिला। अहिय्याह एक नया अंगरखा पहने था। ये दोनों व्यक्ति देश में अकेले थे। [30]अहिय्याह ने अपना नया अंगरखा लिया और इसे बारह टुकड़ों में फाड़ डाला।

[31]तब अहिय्याह ने यारोबाम से कहा, "इस अंगरखा के दस टुकड़े तुम अपने लिये ले लो। यहोवा इस्राएल का परमेश्वर कहता है: 'मैं सुलैमान से राज्य को छीन लूँगा और मैं परिवार समूहों में से दस को, तुम्हे दूँगा [32]और मैं दाऊद के परिवार को केवल एक परिवार समूह पर शासन करने दूँगा। मैं उन्हें केवल इस समूह को लेने दूँगा। मैं यह अपने दाऊद और यरूशलेम के लिये ऐसा करने दूँगा। यरूशलेम वह नगर है जिसे मैंने सारे इस्राएल के परिवार समूह से चुना है। [33]मैं सुलैमान से राज्य ले लूँगा क्योंकि उसने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया। वह सीदोनी देवमूर्ती अश्तोरेत की पूजा करता है। वह अश्तोरेत, सीदोनी देवता, मोआबी देवता कमोश और अम्मोनी देवता मिल्कोम की पूजा करता है। सुलैमान ने सच्चे और अच्छे कामों को करना छोड़ दिया है। वह मेरे नियमों और आदेशों का पालन नहीं करता। वह उस प्रकार नहीं रहता जिस प्रकार उसका पिता दाऊद रहता था। [34]इसलिये मैं राज्य को सुलैमान के परिवार से ले लूँगा। किन्तु मैं सुलैमान को उसके शेष जीवन भर उनका शासक रहने दूँगा। यह मैं अपने सेवक दाऊद के लिये करूँगा। मैंने दाऊद को इसलिये चुना था कि वह मेरे सभी आदेशों व नियमों का पालन करता था। [35]किन्तु मैं उसके पुत्र से राज्य ले लूँगा और यारोबाम मैं तुम्हें दस परिवार समूह पर शासन करने दूँगा। [36]मैं सुलैमान के पुत्र को एक परिवार समूह पर शासन करते हुए रहने दूँगा। मैं इसे इसलिये करूँगा कि मेरे सेवक दाऊद का शासन यरूशलेम में मेरे सामने सदैव रहेगा। यरूशलेम वह नगर है जिसे मैंने अपना निजी नगर चुना है। [37]किन्तु मैं तुम्हें उन सभी पर शासन करने दूँगा जिसे तुम चाहते हो। तुम पूरे इस्राएल पर शासन करोगे। [38]मैं यह सब तुम्हारे लिये करूँगा। यदि तुम सच्चाई के साथ रहोगे और मेरे सारे आदेशों का पालन करोगे तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को राजाओं का

यूसुफ के परिवार समूह यूसुफ के पुत्र एप्रैम और मनश्शे के परिवार समूह के लोग।

परिवार वैसे ही बना दूँगा जैसे मैंने दाऊद को बनाया। मैं तुमको इस्राएल दूँगा। [39]मैं दाऊद की सन्तानों को उसका दण्ड दूँगा जो सुलैमान ने किया। किन्तु मैं सदैव के लिये उन्हें दण्ड नहीं दूँगा।'"

सुलैमान की मृत्यु

[40]सुलैमान ने यारोबाम को मार डालने का प्रयत्न किया। किन्तु यारोबाम मिस्र भाग गया। वह मिस्र के राजा शीशक के पास गया। यारोबाम वहाँ तब तक ठहरा जब तक सुलैमान मरा नहीं।

[41]सुलैमान ने अपने शासन काल में बहुत बड़े और बुद्धिमत्तापूर्ण काम किये। जिनका विवरण "सुलैमान के इतिहास–ग्रन्थ" में लिखा है। [42]सुलैमान ने यरूशलेम में पूरे इस्राएल पर चालीस वर्ष तक शासन किया। [43]तब सुलैमान मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया।* वह अपने पिता के दाऊद नगर में दफनाया गया, और उसका पुत्र रहूबियाम उसके स्थान पर राजा बना।

गृह युद्ध

12 [1-2]नबात का पुत्र यारोबाम तब भी मिस्र में था, जहाँ वह सुलैमान से भागकर पहुँचा था। जब उसने सुलैमान की मृत्यु की खबर सुनी तो वह एप्रैम की पहाड़ियों में अपने जेरदा नगर में वापस लौट आया।

राजा सुलैमान मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। उसके बाद उसका पुत्र रहूबियाम नया राजा बना। [3]इस्राएल के सभी लोग शकेम गए। वे रहूबियाम को राजा बनाने गये। रहूबियाम भी राजा बनने के लिये शकेम गया। लोगों ने रहूबियाम से कहा, [4]"तुम्हारे पिता ने हम लोगों को बहुत कठोर श्रम करने के लिये विवश किया। अब तुम इसे हम लोगों के लिये कुछ सरल करो। उस कठिन काम को बन्द करो जिसे करने के लिये तुम्हारे पिता ने हमें विवश किया था। तब हम तुम्हारी सेवा करेंगे।"

[5]रहूबियाम ने उत्तर दिया, "तीन दिन में मेरे पास वापस लौट कर आओ और मैं उत्तर दूँगा।" अत: लोग चले गये।

[6]कुछ अग्रज लोग थे जो सुलैमान के जीवित रहते उसके निर्णय करने में सहायता करते थे। इसलिये राजा रहूबियाम ने इन व्यक्तियों से पूछा कि उसे क्या करना चाहिये। उसने कहा, "आप लोग क्या सोचते हैं, मुझे इन लोगों को क्या उत्तर देना चाहिये?"

[7]अग्रजों ने उत्तर दिया, "यदि आज तुम उनके सेवक की तरह रहोगे तो वे सच्चाई से तुम्हारी सेवा करेंगे। यदि तुम दयालुता के साथ उनसे बातें करोगे तब वे तुम्हारी सदा सेवा करेंगे।"

[8]किन्तु रहूबियाम ने उनकी यह सलाह न मानी। उसने उन नवयुवकों से सलाह ली जो उसके मित्र थे। [9]रहूबियाम ने कहा, "लोग यह कहते हैं, 'हमें उससे सरल काम दो जो तुम्हारे पिता ने दिया था।' तुम क्या सोचते हो, मुझे लोगों को कैसे उत्तर देना चाहिये? मैं उनसे क्या कहूँ?"

[10]राजा के युवक मित्रों ने कहा, "वे लोग तुम्हारे पास आए और उन्होंने तुमसे कहा, 'तुम्हारे पिता ने हमें कठिन श्रम करने के लिये विवश किया। अब हम लोगों का काम सरल करें।' अत: तुम्हें डींग मारनी चाहिये और उनसे कहना चाहिये, 'मेरी छोटी उंगली मेरे पिता के पूरे शरीर से अधिक शक्तिशाली है। [11]मेरे पिता ने तुम्हें कठिन श्रम करने को विवश किया। किन्तु मैं उससे भी बहुत कठिन काम कराऊँगा! मेरे पिता ने तुमसे काम लेने के लिये कोड़ों का उपयोग किया था। मैं तुम्हें उन कोड़ो से पीटूँगा जिनमें धारदार लोहे के टुकड़े हैं, तुम्हें घायल करने के लिये!'"

[12]रहूबियाम ने लोगों से कहा था, "तीन दिन में मेरे पास वापस आओ।" इसलिये तीन दिन बाद इस्राएल के सभी लोग रहूबियाम के पास लौटे। [13]उस समय राजा रहूबियाम ने उनसे कठोर शब्द कहे। उसने अग्रजों की सलाह न मानी। [14]उसने वही किया जो उसके मित्रों ने उसे करने को कहा। रहूबियाम ने कहा, "मेरे पिता ने तुम्हें कठिन श्रम करने को विवश किया। अत: मैं तुम्हें और अधिक काम दूँगा। मेरे पिता ने तुमको कोड़े से पीटा। किन्तु मैं तुम्हें उन कोड़ों से पीटूँगा जिनमें तुम्हें घायल करने के लिये धारदार लोहे के टुकड़े हैं।" [15]अत: राजा ने वह नहीं किया जिसे लोग चाहते थे। यहोवा ने ऐसा होने दिया। यहोवा ने यह अपनी उस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिये किया जो उसने नाबात के पुत्र यारोबाम के साथ की थी। यहोवा ने अहिय्याह नबी का उपयोग यह प्रतिज्ञा करने के लिये किया था। अहिय्याह शीलो का था।

सुलैमान मरा ... दफनाया गया "अपने पूर्वजों के साथ सोया।"

[16]इस्राएल के सभी लोगों ने समझ लिया कि नये राजा ने उनकी बात अनसुनी कर दी है। इसलिये लोगों ने राजा से कहा, "क्या हम दाऊद के परिवार के अंग हैं? नहीं! क्या हमें यिशै की भूमि में से कुछ मिला है? नहीं! अत: इस्राएलियों हम अपने घर चलें। दाऊद के पुत्र को अपने लोगों पर शासन करने दो।" अत: इस्राएल के लोग अपने घर वापस गए। [17]किन्तु रहूबियाम फिर भी उन इस्राएलियों पर शासन करता रहा, जो यहूदा के नगरों में रहते थे।

[18]अदोराम नामक एक व्यक्ति सब श्रमिकों का अधिकारी था। राजा रहूबियाम ने अदोराम को लोगों से बात चीत करने के लिये भेजा। किन्तु इस्राएल के लोगों ने उस पर तब तक पत्थर बरसाये जब तक वह मर नहीं गया। तब राजा रहूबियाम अपने रथ तक दौड़ा और यरूशलेम को भाग निकला। [19]इस प्रकार इस्राएल ने दाऊद के परिवार से विद्रोह कर दिया और वे अब भी आज तक दाऊद के परिवार के विरुद्ध हैं।

[20]इस्राएल के सभी लोगों ने सुना कि यारोबाम वापस लौट आया है। इसलिये उन्होंने उसे एक सभा में आमन्त्रित किया और उसे पूरे इस्राएल का राजा बना दिया। केवल यहूदा का परिवार समूह ही एक मात्र परिवार समूह था जो दाऊद के परिवार का अनुसरण करता रहा।

[21]रहूबियाम यरूशलेम को वापस गया। उसने यहूदा के परिवार समूह और बिन्यामीन के परिवार समूह को इकट्ठा किया। यह एक लाख अस्सी हजार पुरुषों की सेना थी। रहूबियाम इस्राएल के लोगों के विरुद्ध युद्ध लड़ना चाहता था। वह अपने राज्य को वापस लेना चाहता था।

[22]किन्तु यहोवा ने परमेश्वर के एक व्यक्ति से बातें कीं। उसका नाम शमायाह था। परमेश्वर ने कहा, [23]"यहूदा के राजा, सुलैमान के पुत्र, रहूबियाम और यहूदा तथा बिन्यामीन के सभी लोगों से बात करो। [24]उनसे कहो, 'यहोवा कहता है कि तुम्हें अपने भाईयों इस्राएल के लोगों के विरुद्ध युद्ध में नहीं जाना चाहिये। तुम सबको घर लौट जाना चाहिये। मैंने इन सभी घटनाओं को घटित होने दिया है।'" अत: रहूबियाम की सेना के पुरुषों ने यहोवा का आदेश माना। वे, सभी अपने घर लौट गए।

[25]शकेम, एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में एक नगर था। यारोबाम ने शकेम को एक सुदृढ़ नगर बनाया और उसमें रहने लगा। इसके बाद वह पनूएल नगर को गया और उसे भी सुदृढ़ किया।

[26-27]यारोबाम ने अपने मन में सोचा, "यदि लोग यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर को जाते रहे तो वे दाऊद के परिवार द्वारा शासित होना चाहेंगे। लोग फिर यहूदा के राजा रहूबियाम का अनुसरण करना आरम्भ कर देंगे। तब वे मुझे मार डालेंगे।" [28]इसलिये राजा ने अपने सलाहकारों से पूछा कि उसे क्या करना चाहिये? उन्होंने उसे अपनी सलाह दीं। अत: यारोबाम ने दो सुनहले बछड़े बनाये। राजा यारोबाम ने लोगों से कहा, "तुम्हें उपासना करने यरूशलेम नहीं जाना चाहिये। इस्राएलियों, ये देवता हैं जो तुम्हें मिस्र से बाहर ले आए।"* [29]राजा यारोबाम ने एक सुनहले बछड़े को बेतेल* में रखा। उसने दूसरे सुनहले बछड़े को दान में रखा। [30]किन्तु यह बहुत बड़ा पाप था। इस्राएल के लोगों ने बेतेल और दान नगरों की यात्रा बछड़ों की पूजा करने के लिये की। किन्तु यह बहुत बड़ा पाप था।

[31]यारोबाम ने उच्च स्थानों, पर पूजागृह भी बनाए। उसने इस्राएल के विभिन्न परिवार समूहों से याजक भी चुने। (उसने केवल लेवी परिवार समूह से याजक नहीं चुने।) [32]और राजा यारोबाम ने एक नया पर्व आरम्भ किया। यह पर्व यहूदा के "फसहपर्व" की तरह था। किन्तु यह पर्व आठवें महीनें के पन्द्रहवें दिन था–पहले महीने के पन्द्रहवें दिन नहीं। उस समय राजा बेतेल नगर की वेदी पर बलि भेंट करता था और वह बलि उन बछड़ों को भेंट करता था जिन्हें उसने बनवाया था। राजा यारोबाम ने बेतेल में उन उच्चस्थानों के लिये याजक भी चुने, जिन्हें उसने बनाया था। [33]इसलिये राजा यारोबाम ने इस्राएलियों के लिये पर्व के लिये अपना ही समय चुना। यह आठवें महीने का पन्द्रहवाँ दिन था। उन दिनों वह उस वेदी पर बलि भेंट करता था और सुगन्धि जलाता था जिसे उसने बनाया था। यह बेतेल नगर में था।

परमेश्वर बेतेल के विरुद्ध घोषणा करता है

13 यहोवा ने यहूदा के निवासी परमेश्वर के एक व्यक्ति (नबी) को यहूदा से बेतेल नगर में जाने

मिस्र से बाहर ले आए यह ठीक वही कथन है जो हारून ने तब कहा जब उसने मरुभूमि में सुनहला बछड़ा बनाया। देखें निर्गमन 32:4

बेतेल दान, बेतेल इस्राएल के दक्षिण भाग में यहूदा के पास एक नगर था। दान इस्राएल के उत्तर में था।

का आदेश दिया। राजा यारोबाम उस समय सुगन्धि भेंट करता हुआ वेदी के पास खड़ा था जिस समय परमेश्वर का व्यक्ति (नबी) वहाँ पहुँचा। [2]यहोवा ने उस परमेश्वर के व्यक्ति को आदेश दिया था कि तुम वेदी के विरुद्ध बोलना। उसने कहा, "वेदी, यहोवा तुमसे कहता है: 'दाऊद के परिवार में एक पुत्र योशिय्याह नामक उत्पन्न होगा। ये याजक अब उच्च स्थानों पर पूजा कर रहे हैं। किन्तु वेदी, योशिय्याह उन याजकों को तुम पर रखेगा और वह उन्हें मार डालेगा। अब वे याजक तुम पर सुगन्धि जलाते हैं। किन्तु योशिय्याह तुम पर नर–अस्थियाँ जलायेगा। तब तुम्हारा उपयोग दुबारा नहीं हो सकेगा।'"

[3]परमेश्वर के व्यक्ति ने यह सब घटित होगा, इसका प्रमाण लोगों को दिया। उसने कहा, यहोवा ने जिसके विषय में मुझसे कहा है उसका प्रमाण यह है। यहोवा ने कहा, "यह वेदी दो टुकड़े हो जायेगी और इसकी राख जमीन पर गिर पड़ेगी।"

[4]राजा यारोबाम ने परमेश्वर के व्यक्ति से बेतेल में वेदी के प्रति दिया सन्देश सुना। उसने वेदी से हाथ खींच लिया और व्यक्ति की ओर संकेत किया। उसने कहा, "इस व्यक्ति को बन्दी बना लो!" किन्तु राजा ने जब यह कहा तो उसके हाथ को लकवा मार गया। वह उसे हिला नहीं सका। [5]वेदी के भी टुकड़े–टुकड़े हो गए। उसकी सारी राख जमीन पर गिर पड़ी। यह इसका प्रमाण था कि परमेश्वर के व्यक्ति ने जो कहा वह परमेश्वर की तरफ से था। [6]तब राजा यारोबाम ने परमेश्वर के व्यक्ति से कहा, "कृपया यहोवा अपने परमेश्वर से मेरे लिये प्रार्थना करें। यहोवा से याचना करें कि वह मेरी भुजा स्वस्थ कर दे।"

अत: "परमेश्वर के व्यक्ति" ने यहोवा से प्रार्थना की और राजा की भुजा स्वस्थ हो गई। यह वैसी ही हो गई जैसी पहले थी। [7]तब राजा ने परमेश्वर के व्यक्ति से कहा, "कृपया मेरे साथ घर चलें। आएं और मेरे साथ भोजन करें मैं आपको एक भेंट दूँगा।"

[8]किन्तु परमेश्वर के व्यक्ति ने राजा से कहा, "मैं आपके साथ घर नहीं जाऊँगा। यदि आप मुझे अपना आधा राज्य भी दें तो भी मैं नहीं जाऊँगा। मैं इस स्थान पर न कुछ खाऊँगा, न ही कुछ पीऊँगा। [9]यहोवा ने मुझे आदेश दिया है कि मैं कुछ न तो खाऊँ न ही पीऊँ। यहोवा ने यह भी आदेश दिया है कि मैं उस मार्ग से यात्रा न करूँ जिसका उपयोग मैंने यहाँ आते समय किया।" [10]इसलिये उसने भिन्न सड़क से यात्रा की। उसने उसी सड़क का उपयोग नहीं किया जिसका उपयोग उसने बेतेल को आते समय किया था।

[11]बेतेल नगर में एक वृद्ध नबी रहता था। उसके पुत्र आए और उन्होंने उसे बताया कि परमेश्वर के व्यक्ति ने बेतेल में क्या किया। उन्होंने अपने पिता से वह भी कहा जो परमेश्वर के व्यक्ति ने राजा यारोबाम से कहा था। [12]वृद्ध नबी ने कहा, "जब वह चला तो किस सड़क से गया?" अत: पुत्रों ने अपने पिता को वह सड़क दिखाई जिससे यहूदा से आने वाला परमेश्वर का व्यक्ति गया था। [13]वृद्ध नबी ने अपने पुत्रों से अपने गधे पर काठी रखने के लिये कहा। अत: उन्होंने काठी गधे पर डाली। तब नबी अपने गधे पर चल पड़ा।

[14]वृद्ध नबी परमेश्वर के व्यक्ति के पीछे गया। वृद्ध नबी ने परमेश्वर के व्यक्ति को एक बांजवृक्ष के नीचे बैठे देखा। वृद्ध नबी ने पूछा, "क्या आप वही परमेश्वर के व्यक्ति हैं जो यहूदा से आए हैं?"

परमेश्वर के व्यक्ति ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं ही हूँ।"

[15]इसलिये वृद्ध नबी ने कहा, "कृपया घर चलें और मेरे साथ भोजन करें।"

[16]किन्तु परमेश्वर के व्यक्ति ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे साथ घर नहीं जा सकता। मैं इस स्थान पर तुम्हारे साथ खा–पी भी नहीं सकता। [17]यहोवा ने मुझसे कहा, 'तुम उस स्थान पर कुछ खाना पीना नहीं और तुम्हें उसी सड़क से वापस लौटना भी नहीं है जिससे तुम वहाँ आए।'"

[18]तब वृद्ध नबी ने कहा, "किन्तु मैं भी तुम्हारी तरह नबी हूँ।" तब वृद्ध नबी ने एक झूठ बोला। उसने कहा, "यहोवा के यहाँ से एक स्वर्गदूत मेरे पास आया। स्वर्गदूत ने मुझसे तुम्हें अपने घर लाने और तुम्हें मेरे साथ भोजन पानी करने की स्वीकृति दी है।"

[19]इसलिये परमेश्वर का व्यक्ति वृद्ध नबी के घर गया और उसके साथ खाया–पीया। [20]जब वे मेज पर बैठे थे, यहोवा ने वृद्ध नबी से कहा।

[21]और वृद्ध नबी ने यहूदा के निवासी परमेश्वर के व्यक्ति के साथ बातचीत की। उसने कहा, "यहोवा ने कहा, कि तुमने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने वह नहीं किया जिसके लिये यहोवा का आदेश था।

[22]यहोवा ने आदेश दिया था कि तुम्हें इस स्थान पर कुछ भी खाना या पीना नहीं चाहिये। किन्तु तुम वापस लौटे और तुमने खाया पीया। इसलिये तुम्हारा शव तुम्हारे परिवार की कब्रगाह में नहीं दफनाया जाएगा।"

[23]परमेश्वर के व्यक्ति ने भोजन करना और पीना समाप्त किया। तब वृद्ध नबी ने उसके लिये गधे पर काठी कसी और वह चला गया। [24]घर की ओर यात्रा करते समय सड़क पर एक सिंह ने आक्रमण किया और परमेश्वर के व्यक्ति को मार डाला। नबी का शव सड़क पर पड़ा था। गधा और सिंह शव के पास खड़े थे। [25]कुछ अन्य व्यक्ति उस सड़क से यात्रा कर रहे थे। उन्होंने शव को देखा और शव के पास सिंह को खड़ा देखा। वे व्यक्ति उस नगर को आए जहाँ नबी रहता था और वहाँ वह बताया जो उन्होंने सड़क पर देखा था।

[26]वृद्ध नबी ने उस व्यक्ति को धोखा दिया था और उसे वापस ले गया था। उसने जो कुछ हुआ था वह सुना और उसने कहा, "वह परमेश्वर का व्यक्ति है जिसने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया। इसलिये यहोवा ने उसे मारने के लिये एक सिंह भेजा। यहोवा ने कहा कि उसे यह करना चाहिये।" [27]तब नबी ने अपने पुत्रों से कहा, "मेरे गधे पर काठी डालो। अत: उसके पुत्रों ने उसके गधे पर काठी डाली। [28]वृद्ध नबी गया और उसके शव को सड़क पर पड़ा पाया। गधा और सिंह तब भी उसके पास खड़े थे। सिंह ने शव को नहीं खाया था और गधे को चोट नहीं पहुँचाई थी। [29]वृद्ध नबी ने शव को अपने गधे पर रखा। वह शव को वापस ले गया जिससे उसके लिये रो सके और उसे दफना सके। [30]वृद्ध नबी ने उसे अपने परिवार की कब्रगाह में दफनाया। वृद्ध नबी उसके लिये रोया। वृद्ध नबी ने कहा, "ऐ मेरे भाई मैं तुम्हारे लिये दु:खी हूँ।" [31]इस प्रकार वृद्ध नबी ने शव को दफनाया। तब उसने अपने पुत्रों से कहा, "जब मैं मरुँ तो मुझे इसी कब्र में दफनाना। मेरी अस्थियों को उसकी अस्थियों के समीप रखना। [32]जो बातें यहोवा ने उसके द्वारा कहलवाई है वे निश्चित ही सत्य घटित होंगी। यहोवा ने उसका उपयोग बेतेल की वेदी और शोमरोन के अन्य नगरों में स्थित उच्च स्थानों के विरुद्ध बोलने के लिये किया।"

[33]राजा यारोबाम ने अपने को नहीं बदला। वह पाप कर्म करता रहा। वह विभिन्न परिवार समूहों से लोगों को याजक बनने के लिये चुनता रहा। वे याजक उच्च स्थानों पर सेवा करते थे। जो कोई याजक होना चाहता था याजक बन जाने दिया जाता था। [34]यही पाप था जो उसके राज्य की बरबादी और विनाश का कारण बना।

यारोबाम का पुत्र मर जाता है

14 उस समय यारोबाम का पुत्र अबिय्याह बहुत बीमार पड़ा। [2]यारोबाम ने अपनी पत्नी से कहा, "शीलो जाओ। जाओ और अहिय्याह नबी से मिलो। अहिय्याह वह व्यक्ति है जिसने कहा था कि मैं इस्राएल का राजा बनूँगा। अपने वस्त्र ऐसे पहनों कि कोई न समझे कि तुम मेरी पत्नी हो। [3]नबी को दस रोटियाँ, कुछ पुए और शहद का एक घड़ा दो। तब उससे पूछो कि हमारे पुत्र का क्या होगा। अहिय्याह नबी तुम्हें बतायेगा।"

[4]इसलिये राजा की पत्नी ने वह किया जो उसने कहा। वह शीलो गई। वह अहिय्याह नबी के घर गई। अहिय्याह बहुत बूढ़ा और अन्धा हो गया था। [5]किन्तु यहोवा ने उससे कहा, "यारोबाम की पत्नी तुमसे अपने पुत्र के बारे में पूछने के लिये आ रही है। वह बीमार है।" यहोवा ने अहिय्याह को बताया कि उसे क्या कहना चाहिये।

यारोबाम की पत्नी अहिय्याह के घर पहुँची। वह प्रयत्न कर रही थी कि लोग न जाने कि वह कौन है। [6]अहिय्याह ने उसके द्वार पर आने की आवाज सुनी। अत: अहिय्याह ने कहा, "यारोबाम की पत्नी, यहाँ आओ। तुम क्यों यह प्रयत्न कर रही हो कि लोग यह समझें कि तुम कोई अन्य हो? मेरे पास तुम्हारे लिये कुछ बुरी सूचनायें हैं। [7]वापस लौटो और यारोबाम से कहो कि यहोवा इस्राएल का परमेश्वर, जो कहता है, वह यह है। यहोवा कहता है, 'यारोबाम, इस्राएल के सभी लोगों में से मैंने तुम्हें चुना। मैंने तुम्हें अपने लोगों का शासक बनाया। [8]दाऊद के परिवार ने इस्राएल पर शासन किया किन्तु मैंने उनसे राज्य ले लिये और उसे तुमको दे दिया। किन्तु तुम मेरे सेवक दाऊद के समान नहीं हो। उसने मेरे आदेशों का सदा पालन किया। उसने पूरे हृदय से मेरा अनुसरण किया। उसने वे ही काम किये जिन्हें मैंने स्वीकार किया। [9]किन्तु तुमने बहुत से भीषण पाप किये हैं। तुम्हारे पाप उन सभी के पापों से अधिक हैं जिन्होंने तुमसे पहले शासन किया। तुमने मेरा अनुसरण करना बन्द कर दिया है। तुमने मूर्तियाँ और अन्य देवता बनाये। इसने मुझे बहुत क्रोधित किया। इससे मैं बहुत क्रुद्ध हुआ हूँ। [10]अत:

यारोबाम, मैं तुम्हारे परिवार पर विपत्ति लाऊँगा। मैं तुम्हारे परिवार के सभी पुरुषों को मार डालूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को पूरी तरह वैसे ही नष्ट कर डालूँगा जैसे आग उपलों को नष्ट करती है। [11]तुम्हारे परिवार का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खायेंगे और तुम्हारे परिवार का जो कोई व्यक्ति मैदान में मरेगा उसे पक्षी खायेंगे। यहोवा ने यह कहा है।'"

[12]तब अहिय्याह नबी यारोबाम की पत्नी से बात करता रहा। उसने कहा, "अब तुम घर जाओ। जैसे ही तुम अपने नगर में प्रवेश करोगी तुम्हारा पुत्र मरेगा। [13]सारा इस्राएल उसके लिये रोएगा और उसे दफनाएगा। मात्र तुम्हारा पुत्र ही यारोबाम के परिवार में ऐसा होगा जिसे दफनाया जाएगा। इसका कारण यह है कि यारोबाम के परिवार में केवल वही ऐसा व्यक्ति है जिसने यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर को प्रसन्न किया है। [14]यहोवा इस्राएल का एक नया राजा बनायेगा। वह नया राजा यारोबाम के परिवार को नष्ट करेगा। यह बहुत शीघ्र होगा। [15]तब यहोवा इस्राएल को चोट पहुँचायेगा। इस्राएल के लोग बहुत डर जायेंगे–वे जल की लम्बी घास की तरह काँपेंगे। यहोवा इस्राएलियों को इस अच्छे प्रदेश से उखाड़ देगा। यह वही भूमि है जिसे उसने उनके पूर्वजों को दिया था। वह उनको फरात नदी की दूसरी ओर बिखेर देगा। यह होगा, क्योंकि यहोवा लोगों पर क्रोधित है। लोगों ने उसको तब क्रोधित किया जब उन्होंने अशेरा की पूजा के लिये विशेष स्तम्भ खड़े किये। [16]यारोबाम ने पाप किया और तब यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से पाप करवाया। अत: यहोवा इस्राएल के लोगों को पराजित होने देगा।"

[17]यारोबाम की पत्नी तिरजा को लौट गई। ज्यों ही वह घर में घुसी, लड़का मर गया। [18]पूरे इस्राएल ने उसको दफनाया और उसके लिये वे रोये। यह ठीक वैसे ही हुआ जैसा यहोवा ने होने को कहा था। यहोवा ने अपने सेवक अहिय्याह नबी का उपयोग ये बातें कहने के लिये किया।

[19]राजा यारोबाम ने अन्य बहुत से काम किये। उसने युद्ध किये और लोगों पर शासन करता रहा। उसने जो कुछ किया वह सब "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा हुआ है। [20]यारोबाम ने बाईस वर्ष तक राजा के रूप में शासन किया। तब वह मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। उसका पुत्र नादाब उसके बाद नया राजा हुआ।

[21]उस समय जब सुलैमान का लड़का रहूबियाम यहूदा का राजा बना, वह इकतालीस वर्ष का था। रहूबियाम ने यरूशलेम नगर में सत्रह वर्ष तक शासन किया। यह वही नगर है जिसमें यहोवा ने सम्मानित होना चुना। उसने इस्राएल के अन्य सभी नगरों में से इस नगर को चुना। रहूबियाम की नामा नामक माँ अम्मोन की थी।

[22]यहूदा के लोगों ने भी पाप किये और उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। लोगों ने अपने ऊपर यहोवा को क्रोधित करने के लिये और अधिक बुरे काम किये। वे लोग अपने उन पूर्वजों से भी बुरे थे जो उनके पहले वहाँ रहते थे। [23]लोगों ने उच्च स्थान, पत्थर के स्मारक और पवित्र स्तम्भ बनाए। उन्होंने उन्हें हर एक ऊँचे पहाड़ पर एवं प्रत्येक पेड़ के नीचे बनाये।

[24]ऐसे भी लोग थे जिन्होंने अपने तन को शारीरिक सम्बन्धों के लिये बेचकर अन्य देवताओं की सेवा की।* इस प्रकार यहूदा के लोगों ने अनेक बुरे काम किये। जो लोग उस देश में उनसे पहले रहते थे उन्होंने भी वे ही पापपूर्ण काम किये थे और परमेश्वर ने उन लोगों से वह देश ले लिया था और इस्राएल के लोगों को दे दिया था।

[25]रहूबियाम के राज्य काल के पाँचवें वर्ष मिस्र का राजा शीशक यरूशलेम के विरुद्ध लड़ा। [26]शीशक ने यहोवा के मन्दिर और राजा के महल से खजाने ले लिये। उसने उन सुनहली ढालों को भी ले लिया जिन्हें दाऊद ने अराम के राजा हददजर के अधिकारियों से लिया था। दाऊद इन ढालों को यरूशलेम ले गया था। किन्तु शीशक ने सभी सुनहली ढालें ले लीं। [27]अत: राजा रहूबियाम ने उनके स्थान पर रखने के लिये अनेक ढालें बनवाई। किन्तु ये ढालें काँसे की थीं, सोने की नहीं। उसने ये ढालें उन पुरुषों को दीं जो महल के द्वारों की रक्षा करते थे। [28]जब कभी राजा यहोवा के मन्दिर को जाता था, द्वाररक्षक उसके साथ हर बार जाते थे। वे ढालें ले जाते थे। जब वे काम पूरा कर लेते थे तब वे रक्षक कक्ष में ढालों को लटका देते थे।

[29]राजा रहूबियाम ने जो कुछ किया वह सब, "यहूदा के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा हुआ है। [30]रहूबियाम और यारोबाम सदैव एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध करते रहे।

ऐसे ... सेवा की इस प्रकार के शारीरिक सम्बन्धो के पाप कनानी देवताओं की पूजा–पद्धति के अंग थे।

[31]रहूबियाम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। उसे उसके पूर्वजों के साथ दाऊद नगर में दफनाया गया। (उसकी माँ नामा, अम्मोन की थी।) रहूबियाम का पुत्र अबिय्याम उसके बाद नया राजा बना।

यहूदा का राजा अबिय्याम

15 नाबात का पुत्र यारोबाम इस्राएल पर शासन कर रहा था। यारोबाम के राज्यकाल के अट्ठारहवें वर्ष, अबिय्याम यहूदा का नया राजा बना। [2]अबिय्याम ने तीन वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ का नाम माका था। वह अबशालोम की पुत्री थी।

[3]उसने वे सभी पाप किये जो उसके पिता ने उसके पहले किये थे। अबिय्याम अपने पितामह दाऊद की तरह यहोवा, अपने परमेश्वर का भक्त नहीं था। [4]यहोवा दाऊद से प्रेम करता था। अत: उसी के लिये यहोवा ने अबिय्याम को यरूशलेम में राज्य दिया और यहोवा ने उसे एक पुत्र दिया। यहोवा ने यरूशलेम को सुरक्षित भी रहने दिया। यह उसने दाऊद के लिये किया। [5]दाऊद ने सदैव ही उचित काम किये जिन्हें यहोवा चाहता था। उसने सदैव यहोवा के आदेशों का पालन किया था। केवल एक बार दाऊद ने यहोवा का आदेश नहीं माना था जब दाऊद ने हित्ती ऊरिय्याह के विरुद्ध पाप किया था।

[6]रहूबियाम और यारोबाम हमेशा एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध लड़ते रहे। [7]जो कुछ अन्य काम अबिय्याम ने किये वह "यहूदा के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। उस सारे समय में जब अबिय्याम राजा था, यारोबाम और अबिय्याम के बीच युद्ध चलता रहा। [8]जब अबिय्याम मरा तो उसे दाऊद–नगर में दफनाया गया। अबिय्याम का पुत्र "आसा" उसके बाद नया राजा हुआ।

यहूदा का राजा आसा

[9]इस्राएल के ऊपर यारोबाम के राजा के रूप में शासन करने के बीसवें वर्ष में आसा यहूदा का राजा बना। [10]आसा ने यरूशलेम में इकतालीस वर्ष तक शासन किया। उसकी पितामही का नाम माका था और माका अबशालोम की पुत्री थी।

[11]आसा ने अपने पूर्वज दाऊद की तरह उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने उचित कहा। [12]उन दिनों ऐसे लोग थे जो अपने तन को शारीरिक सम्बन्ध के लिये बेचकर अन्य देवताओं की सेवा करते थे। आसा ने उन लोगों को देश छोड़ने के लिये विवश किया। आसा ने उन देव मूर्तियों को भी दूर किया जो उसके पूर्वजों ने बनाई थी। [13]आसा ने अपनी पितामही माका को रानी पद से हटा दिया। माका ने देवी अशेरा की उन भंयकर मूर्तियों में से एक को बनाया था। उसने इस भंयकर मूर्ति को काट डाला। उसने उसे किद्रोन की घाटी में जलाया। [14]आसा ने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया, किन्तु वह पूरे जीवन भर यहोवा का भक्त रहा। [15]आसा के पिता ने कुछ चीजें परमेश्वर को दी थीं। आसा ने भी परमेश्वर को कुछ भेंटे चढ़ाई थीं। उन्होंने, सोने चाँदी और अन्य चीजों की भेंटे दीं। आसा ने उन सभी चीजों को मन्दिर में जमा कर दिया।

[16]जब तक राजा आसा यहूदा का राजा था, वह सदैव इस्राएल के राजा बाशा के विरुद्ध युद्ध करता रहा। [17]बाशा यहूदा के विरुद्ध लड़ता रहा। बाशा लोगों को, आसा के देश यहूदा से आने अथवा जाने से रोकना चाहता था। अत: उसने रामा नगर को बहुत सुदृढ़ बना दिया। [18]अत: आसा ने यहोवा के मन्दिर और राजमहल के खजानों से सोना और चाँदी निकाला। उसने यह सोना–चाँदी अपने सेवकों को दिया और उन्हें अराम के राजा बेन्हदद के पास भेजा। बेन्हदद हेज्योन के पुत्र तब्रिम्मोन का पुत्र था। उसने दमिश्क नगर में शासन किया। [19]आसा ने यह सन्देश भेजा, "मेरे पिता और तुम्हारे पिता के मध्य एक शान्ति–सन्धि थी। अब मैं तुम्हारे और अपने बीच एक शान्ति–सन्धि करना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे पास सोना–चाँदी की भेंट भेज रहा हूँ। इस्राएल के राजा बाशा के साथ अपनी सन्धि तोड़ दो। तब बाशा मेरे देश को छोड़ देगा।"

[20]राजा बेन्हदद ने आसा के सन्देश को स्वीकार किया। अत: उसने इस्राएल के नगरों के विरुद्ध लड़ने के लिये अपनी सेना भेजी। बेन्हदद ने इय्योन, दान, आबेल्वेत्माका और गलीली झील के चारों ओर के नगरों को पराजित किया। उसने सारे नप्ताली क्षेत्र को हराया। [21]बाशा ने इन आक्रमणों के बारे में सुना। इसलिये उसने रामा को दृढ़ बनाना बन्द कर दिया। उसने उस नगर को छोड़ दिया और तिर्सा को लौट गया। [22]तब राजा आसा ने यहूदा के सभी लोगों को आदेश दिया कि हर एक व्यक्ति को सहायता देनी होगी। वे रामा को गए और उन्होंने उन पत्थरों और लकड़ियों को उठा लिया जिनका उपयोग

बाशा नगर को दृढ़ बनाने के लिये कर रहा था। वे उन चीजों को बिन्यामीन प्रदेश में गेबा और मिस्पा को ले गए। तब आसा ने उन दोनों नगरों को बहुत अधिक दृढ़ बनाया।

[23]आसा के बारे में अन्य बातें, व महान कार्य जो उसने किये और नगर जिन्हें उसने बनाया वह,"यहूदा के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। जब आसा बूढ़ा हुआ तो उसके पैर में एक रोग उत्पन्न हुआ। [24]आसा मरा और उसे उसके पूर्वज दाऊद के नगर में दफनाया गया। तब आसा का पुत्र यहोशापात उसके बाद नया राजा बना।

इस्राएल का राजा नादाब

[25]यहूदा पर आसा के राज्य काल के दूसरे वर्ष में यारोबाम का पुत्र नादाब इस्राएल का राजा हुआ। नादाब ने इस्राएल पर दो वर्ष तक शासन किया। [26]नादाब ने यहोवा के विरुद्ध बुरे काम किये। उसने वैसे ही पाप किये जैसे उसके पिता यारोबाम ने किये थे और यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से भी पाप कराये थे।

[27]बाशा अहिय्याह का पुत्र था। वे इस्साकार के परिवार समूह से थे। बाशा ने राजा नादाब को मार डालने की एक योजना बनाई। यह वह समय था जब नादाब और सारा इस्राएल गिब्बतोन नगर के विरुद्ध युद्ध में लड़ रहे थे। यह एक पलिश्ती नगर था। उस स्थान पर बाशा ने नादाब को मार डाला। [28]यह यहूदा पर आसा के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में हुआ और बाशा इस्राएल का अगला राजा बना।

इस्राएल का राजा बाशा

[29]जब बाशा नया राजा हुआ तो उसने यारोबाम के परिवार के हर एक व्यक्ति को मार डाला। बाशा ने यारोबाम के परिवार में किसी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा। यह वैसे ही हुआ जैसा होने के लिये यहोवा ने कहा था। यहोवा ने शीलो के अपने सेवक अहिय्याह द्वारा यह कहा था। [30]यह हुआ, क्योंकि यारोबाम ने अनेक पाप किये थे और यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से अनेक पाप कराये थे। यारोबाम ने यहोवा इस्राएल के परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर दिया था।

[31]नादाब ने जो अन्य काम किये वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा हुआ है। [32]पूरे समय, जब तक बाशा इस्राएल का शासक था, वह यहूदा के राजा आसा के विरुद्ध युद्ध में लड़ता रहा।

[33]अहिय्याह का पुत्र बाशा, यहूदा पर आसा के राज्य काल के तीसरे वर्ष में इस्राएल का राजा हुआ था। बाशा तिर्सा में चौबीस वर्ष तक राजा रहा। [34]किन्तु बाशा ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। उसने वे ही पाप किये जो उसके पूर्वज यारोबाम ने किये थे। यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से पाप कराये थे।

16 तब यहोवा ने हनान के पुत्र येहू से बातें की। यहोवा राजा बाशा के विरुद्ध बातें कह रहा था। [2]"मैंने तुमको एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बनाया। मैंने तुमको अपने इस्राएल के लोगों के ऊपर राजा बनाया। किन्तु तुमने यारोबाम का अनुसरण किया है। तुमने मेरे लोगों, इस्राएलियों से पाप कराया है। उन्होंने अपने पापों से मुझे क्रोधित किया है। [3]इसलिये बाशा, मैं तुझे और तुम्हारे परिवार को नष्ट करूँगा। मैं तुम्हारे साथ वही करूँगा जो मैंने नबात के पुत्र यारोबाम के परिवार के साथ किया। [4]तुम्हारे परिवार के लोग नगर की सड़कों पर मरेंगे और उनके शवों को कुत्तें खायेंगे। तुम्हारे परिवार के कुछ लोग मैदानों में मरेंगे और उनके शवों को पक्षी खायेंगे।"

[5]बाशा के विषय में अन्य बातें और जो महान कार्य उसने किये सभी "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। [6]बाशा मरा और तिर्सा में दफनाया गया। उसका पुत्र एला उसके बाद नया राजा बना।

[7]अत: यहोवा ने येहू नबी को एक सन्देश दिया। यह सन्देश बाशा और उसके परिवार के विरुद्ध था। बाशा ने यहोवा के विरुद्ध बुरे कर्म किये थे। इससे यहोवा अत्यन्त क्रोधित हुआ। बाशा ने वही किया जो यारोबाम के परिवार ने उससे पहले किया था। यहोवा इसलिये भी क्रोधित था कि बाशा ने यारोबाम के पूरे परिवार को मार डाला था।

इस्राएल का राजा एला

[8]यहूदा पर आसा के राज्य काल के छब्बीसवें वर्ष में एला राजा हुआ। एला बाशा का पुत्र था। उसने तिर्सा में दो वर्ष तक शासन किया।

[9]राजा एला के अधिकारियों में से जिम्री एक था। जिम्री एला के आधे रथों को आदेश देता था। किन्तु जिम्री

ने एला के विरुद्ध योजना बनाई। राजा एला तिर्सा में था। वह अर्सा के घर में दाखमधु पी रहा था और मत्त हो रहा था। अर्सा, तिर्सा के महल का अधिकारी था। [10]जिम्री उस घर में गया और उसने राजा एला को मार डाला। यहूदा पर आसा के राज्य काल के सत्ताईसवें वर्ष में यह हुआ। तब एला के बाद इस्राएल का नया राजा जिम्री हुआ।

इस्राएल का राजा जिम्री

[11]जब जिम्री राजा हुआ तो उसने बाशा के पूरे परिवार को मार डाला। उसने बाशा के परिवार में किसी व्यक्ति को जीवित नहीं रहने दिया। जिम्री ने बाशा के मित्रों को भी मार डाला। [12]इस प्रकार जिम्री ने बाशा के परिवार को नष्ट किया। यह वैसे ही हुआ जैसा यहोवा ने, येहू नबी का उपयोग बाशा के विरुद्ध कहने को कहा था। [13]यह, बाशा और उसके पुत्र एला के, सभी पापों के कारण हुआ। उन्होंने पाप किया था और इस्राएल के लोगों से पाप कराया था। यहोवा क्रोधित था क्योंकि उन्होंने बहुत सी देवमूर्तियाँ रखी थीं।

[14]"इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में ये अन्य सभी बातें लिखी हैं जो एला ने कीं।

[15]यहूदा पर आसा के राज्य काल के सत्ताईसवें वर्ष में जिम्री इस्राएल का राजा बना। जिम्री ने तिर्सा में सात दिन शासन किया। जो कुछ हुआ, यह है: इस्राएल की सेना गिब्बतोन के पलिश्तियों के समीप डेरा डाले पड़ी थी। वे युद्ध के लिये तैयार थे। [16]पड़ाव में स्थित लोगों ने सुना कि जिम्री ने राजा के विरुद्ध गुप्त षड़यन्त्र रचा है।उन्होंने सुना कि उसने राजा को मार डाला। इसलिये सारे इस्राएल ने डेरे में, उस दिन ओम्री को इस्राएल का राजा बनाया। ओम्री सेनापति था। [17]इसलिये ओम्री और सारे इस्राएल ने गिब्बतोन को छोड़ा और तिर्सा पर आक्रमण कर दिया। [18]जिम्री ने देखा कि नगर पर अधिकार कर लिया गया है। अत: वह महल के भीतर चला गया और उसने आग लगानी आरम्भ कर दी। उसने महल और अपने को जला दिया। [19]इस प्रकार जिम्री मरा क्योंकि उसने पाप किया था। जिम्री ने उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। उसने वैसे ही पाप किये जैसे यारोबाम ने किये थे और यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से पाप कराया था।

[20]"इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में जिम्री के गुप्त षड़यन्त्र और अन्य बातें लिखी हैं और जब जिम्री राजा एला के विरुद्ध हुआ, उस समय की घटनायें भी उसमें लिखी हैं।

इस्राएल का राजा ओम्री

[21]इस्राएली लोग दो दलों में बँट गये थे। आधे लोग गीनत के पुत्र तिब्नी का अनुसरण करते थे और उसे राजा बनाना चाहते थे। अन्य आधे लोग ओम्री के अनुयायी थे। [22]किन्तु ओम्री के अनुयायी गीनत के पुत्र तिब्नी के अनुयायियों से अधिक शक्तिशाली थे। अत: तिब्नी मारा गया और ओम्री राजा हुआ।

[23]यहूदा पर आसा के राज्यकाल के इकतीसवें वर्ष में ओम्री इस्राएल का राजा हुआ। ओम्री ने इस्राएल पर बारह वर्ष तक शासन किया। उन वर्षों में से छ: वर्षों तक उसने तिर्सा नगर में शासन किया। [24]किन्तु ओम्री ने शोमरोन की पहाड़ी को खरीद लिया। उसने इसे लगभग डेढ़ सौ पौंड चाँदी शमेर से खरीदा। ओम्री ने उस पहाड़ी पर एक नगर बसाया। उसने इसके स्वामी शमेर के नाम पर इस नगर का नाम शोमरोन रखा।

[25]ओम्री ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा घोषित किया था। ओम्री उन सभी राजाओं से बुरा था जो उसके पहले हो चुके थे। [26]उसने वे ही पाप किये जो नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे। यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से पाप कराया था। इसलिये उन्होंने यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर दिया था। यहोवा क्रोधित था, क्योंकि वे निरर्थक देवमूर्तियों की पूजा करते थे।

[27]"इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में ओम्री के विषय में अन्य बातें और उसके किये महान कार्य लिखे गए हैं। [28]ओम्री मरा और शोमरोन में दफनाया गया। उसका पुत्र अहाब उसके बाद नया राजा बना।

इस्राएल का राजा अहाब

[29]यहूदा पर आसा के राज्य काल के अड़तीसवें वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब इस्राएल का राजा बना। [30]अहाब ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था और अहाब उन सभी राजाओं से भी बुरा था जो उसके पहले हुए थे। [31]अहाब के लिये इतना ही काफी नहीं था कि वह वैसे ही पाप करे जैसे नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे।

अत: अहाब ने एतबाल की पुत्री ईजेबेल से विवाह किया। एतबाल सीदोन के लोगों का राजा था। तब अहाब ने बाल की सेवा और पूजा करनी आरम्भ की। [32]अहाब ने बाल की पूजा करने के लिये शोमरोन में पूजागृह बनाया। उसने पूजागृह में एक वेदी रखी।

[33]अहाब ने अशेरा की पूजा के लिये एक विशेष स्तम्भ भी खड़ा किया। अहाब ने यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर को क्रोधित करने वाले बहुत से काम, उन सभी राजाओं से अधिक किये, जो उसके पहले थे।

[34]अहाब के राज्य काल में बेतेल के हीएल ने यरीहो नगर को दुबारा बनाया। जिस समय हीएल ने नगर बनाने का काम आरम्भ किया, उसका बड़ा पुत्र अबीराम मर गया और जब हीएल ने नगर द्वार बनाये, उसका सबसे छोटा पुत्र सगूब मर गया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू से बातें करते हुए कहा था।*

एलिय्याह और अनावृष्टि का समय

17 एलिय्याह गिलाद में तिशबी नगर का एक नबी था। एलिय्याह ने राजा अहाब से कहा, "मैं यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर की सेवा करता हूँ। उसकी शक्ति के बल पर मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि अगले कुछ वर्षों में न तो ओस गिरेगी, और न ही वर्षा होगी। वर्षा तभी होगी जब मैं उसके होने का आदेश दूँगा।"

[2]तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, [3]"इस स्थान को छोड़ दो और पूर्व की ओर चले जाओ। करीत नाले के पास छिप जाओ। यह नाला यरदन नदी के पूर्व में है। [4]तुम नाले से पानी पी सकते हो। मैंने कौवों को आदेश दिया है कि वे तुमको उस स्थान पर भोजन पहुँचायेंगे।" [5]अत: एलिय्याह ने वही किया जो यहोवा ने करने को कहा। वह यरदन नदी के पूर्व करीत नाले के समीप रहने चला गया। [6]हर एक प्रात: और सन्ध्या को कौवे एलिय्याह के लिये भोजन लाते थे। एलिय्याह नाले से पानी पीता था।

[7]वर्षा नहीं हुई अत: कुछ समय उपरान्त नाला सूख गया। [8]तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, [9]"सीदोन में सारपत को जाओ। वहीं रहो। उस स्थान पर एक विधवा स्त्री रहती है। मैंने उसे तुम्हें भोजन देने का आदेश दिया है।"

[10]अत: एलिय्याह सारपत पहुँचा। वह नगर–द्वार पर पहुँचा और उसने एक स्त्री को देखा। उसका पति मर चुका था। वह स्त्री ईंधन के लिये लकड़ियाँ इकट्ठी कर रही थी। एलिय्याह ने उससे कहा, "क्या तुम एक प्याले में थोड़ा पानी दोगी जिसे मैं पी सकूँ?" [11]वह स्त्री उसके लिये पानी लाने जा रही थी, तो एलिय्याह ने कहा, "कृपया मेरे लिये एक रोटी का छोटा टुकड़ा भी लाओ।"

[12]उस स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर की शपथ खाकर कहती हूँ कि मेरे पास रोटी नहीं है। मेरे पास बर्तन में मुट्ठी भर आटा और पीपे में थोड़ा सा जैतून का तेल है। इस स्थान पर मैं ईंधन के लिये दो चार लकड़ियाँ इकट्ठी करने आई थी। मैं इसे लेकर घर लौटूँगी और अपना आखिरी भोजन पकाऊँगी। मैं और मेरा पुत्र दोनों इसे खायेंगे और तब भूख से मर जाएंगे।"

[13]एलिय्याह ने स्त्री से कहा, "परेशान मत हो। घर लौटो और जैसा तुमने कहा, अपना भोजन पकाओ। किन्तु तुम्हारे पास जो आटा है उसकी पहले एक छोटी रोटी बनाना। उस रोटी को मेरे पास लाना। तब अपने और अपने पुत्र के लिये पकाना। [14]इस्राएल का परमेश्वर, यहोवा कहता है, 'उस आटे का बर्तन कभी खाली नहीं होगा। पीपे में तेल सदैव रहेगा। ऐसा तब तक होता रहेगा जिस दिन तक यहोवा इस भूमि पर पानी नहीं बरसाता।'"

[15]अत: वह स्त्री अपने घर लौटी। उसने वही किया जो एलिय्याह ने उससे करने को कहा था। एलिय्याह, वह स्त्री और उसका पुत्र बहुत दिनों तक पर्याप्त भोजन पाते रहे। [16]आटे का बर्तन और तेल का पीपा दोनों कभी खाली नहीं हुआ। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने होने को कहा था। यहोवा ने एलिय्याह के द्वारा बातें की थीं।

[17]कुछ समय बाद उस स्त्री का लड़का बीमार पड़ा। वह अधिक, और अधिक बीमार होता गया। अन्त में लड़के ने साँस लेना बन्द कर दिया। [18]और उस स्त्री ने एलिय्याह से कहा, "तुम परमेश्वर के व्यक्ति हो। क्या तुम मुझे सहायता दे सकते हो? या क्या तुम मुझे सारे पापों को केवल याद कराने के लिये यहाँ आये हो? क्या तुम यहाँ मेरे पुत्र को केवल मरवाने आये थे?"

[19]एलिय्याह ने उससे कहा, "अपना पुत्र मुझे दो।" एलिय्याह ने उसके लड़के को उससे लिया और सीढ़ियों

जैसे यहोवा ने ... कहा था जिस समय यहोशू ने यरीहो को नष्ट किया उसने कहा था कि जो कोई इस नगर को दुबारा बनायेगा वह अपने जेठे और छोटे पुत्र से हाथ धोएगा।

से ऊपर ले गया। उसने उसे उस कमरे में बिछौने पर लिटाया जिसमें वह रुका हुआ था। [20]तब एलिय्याह ने प्रार्थना की, "हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, यह विधवा मुझे अपने घर में ठहरा रही है। क्या तू उसके साथ यह बुरा काम करेगा? क्या तू उसके पुत्र को मरने देगा?" [21]तब एलिय्याह लड़के के ऊपर तीन बार लेटा। एलिय्याह ने प्रार्थना की, "हे यहोवा, मेरे परमेश्वर! इस लड़के को पुनर्जीवित कर।"

[22]"यहोवा ने एलिय्याह की प्रार्थना स्वीकार की। लड़का पुन: साँस लेने लगा। वह जीवित हो गया। [23]एलिय्याह बच्चे को सीढ़ियों से नीचे ले गया। एलिय्याह ने उस लड़के को उसकी माँ को दिया और कहा, "देखो, तुम्हारा पुत्र जी उठा।"

[24]उस स्त्री ने उत्तर दिया, "अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम सच में परमेश्वर के यहाँ के व्यक्ति हो। मैं समझ गई हूँ कि सचमुच में यहोवा तुम्हारे माध्यम से बोलता है।"

एलिय्याह और बाल के नबी

18 अनावृष्टि के तीसरे वर्ष यहोवा ने एलिय्याह से कहा, "जाओ, और राजा अहाब से मिलो। मैं शीघ्र ही वर्षा भेजूँगा।" [2]अत: एलिय्याह अहाब के पास गया।

उस समय शोमरोन में भोजन नहीं रह गया था। [3]इसलिये राजा अहाब ने ओबद्याह से अपने पास आने को कहा। ओबद्याह राज महल का अधिकारी था। (ओबद्याह यहोवा का सच्चा अनुयायी था। [4]एक बार ईज़ेबेल यहोवा के सभी नबियों को जान से मार रही थी। इसलिये ओबद्याह ने सौ नबियों को लिया और उन्हें दो गुफाओं में छिपाया। ओबद्याह ने एक गुफा में पचास नबी और दूसरी गुफा में पचास नबी रखे। तब ओबद्याह उनके लिये पानी और भोजन लाया।) [5]राजा अहाब ने ओबद्याह से कहा, "मेरे साथ आओ। हम लोग इस प्रदेश के हर एक सोते और नाले की खोज करेंगे। हम लोग पता लगायेंगे कि क्या हम अपने घोड़ों और खच्चरों को जीवित रखने के लिये पर्याप्त घास कहीं पा सकते हैं। तब हमें अपना कोई जानवर खोना नहीं पड़ेगा।" [6]हर एक व्यक्ति ने देश का एक भाग चुना जहाँ वे पानी की खोज कर सकें। तब दोनों व्यक्ति पूरे देश में घूमें। अहाब एक दिशा में अकेले गया। ओबद्याह दूसरी दिशा में अकेले गया। [7]जब ओबद्याह यात्रा कर रहा था तो उस समय वह एलिय्याह से मिला। ओबद्याह ने जब उसे देखा एलिय्याह को पहचान लिया। ओबद्याह एलिय्याह के सामने प्रणाम करने झुका उसने कहा, "एलिय्याह! क्या स्वामी सचमुच आप है?"

[8]एलिय्याह ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं ही हूँ। जाओ और अपने स्वामी राजा से कहो कि मैं यहाँ हूँ।"

[9]तब ओबद्याह ने कहा, "यदि मैं अहाब से कहूँगा कि मैं जानता हूँ कि तुम कहाँ हो, तो वह मुझे मार डालेगा! मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है। तुम क्यों चाहते हो कि मैं मर जाऊँ? [10]यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर की सत्ता जैसे निश्चित है, वैसे ही यह निश्चित है, कि राजा तुम्हारी खोज कर रहा है। उसने हर एक देश में तुम्हारा पता लगाने के लिये आदमी भेज रखे हैं। यदि किसी देश के राजा ने यह कहा कि तुम उसके देश में नहीं हो, तो अहाब ने उसे यह शपथ खाने को विवश किया कि तुम उसके देश में नहीं हो। [11]अब तुम चाहते हो कि मैं जाऊँ और उससे कहूँ कि तुम यहाँ हो? [12]यदि मैं जाऊँ और राजा अहाब से कहूँ कि तुम यहाँ हो तो यहोवा तुम्हें किसी अन्य स्थान पर पहुँचा सकता है। राजा अहाब यहाँ आयेगा और वह तुम्हें नहीं पा सकेगा। तब वह मुझे मार डालेगा। मैंने यहोवा का अनुसरण तब से किया है जब मैं एक बालक था। [13]तुमने सुना है कि मैंने क्या किया था। ईज़ेबेल यहोवा के नबियों को मार रही थी और मैंने सौ नबियों को गुफाओं में छिपाया था। मैंने एक गुफा में पचास नबियों और दूसरी गुफा में पचास नबियों को रखा था। मैं उनके लिये अन्न–पानी लाया। [14]अब तुम चाहते हो कि मैं जाऊँ और राजा से कहूँ कि तुम यहाँ हो। राजा मुझे मार डालेगा।"

[15]एलिय्याह ने उत्तर दिया, "जितनी सर्वशक्तिमान यहोवा की सत्ता निश्चित है उतना ही निश्चित यह है कि मैं आज राजा के सामने खड़ा होऊँगा।"

[16]इसलिये ओबद्याह राजा अहाब के पास गया। उसने बताया कि एलिय्याह वहाँ है। राजा अहाब एलिय्याह से मिलने गया।

[17]जब अहाब ने एलिय्याह को देखा तो उसने पूछा, "क्या एलिय्याह तुम्हीं हो? तुम्हीं वह व्यक्ति हो जो इस्राएल पर विपत्ति लाते हो।"

[18]एलिय्याह ने उत्तर दिया, "मैंने इस्राएल पर विपत्ति नहीं ढाई। तुमने और तुम्हारे पिता के परिवार ने यह सारी

विपत्ति ढाई है। तुमने विपत्ति लानी तब आरम्भ की जब तुमने यहोवा के आदेशों का पालन करना बन्द कर दिया और असत्य देवताओं का अनुसरण आरम्भ किया। [19]अब सारे इस्राएलियों को कर्म्मेल पर्वत पर मुझसे मिलने को कहो। उस स्थान पर बाल के चार सौ पचास नबियों को भी लाओ और असत्य देवी अशेरा के चार सौ नबियों को लाओ। रानी* ईज़ेबेल उन नबियों का समर्थन करती है।"

[20]अत: अहाब ने सभी इस्राएलियों और उन नबियों को कर्म्मेल पर्वत पर बुलाया। [21]एलिय्याह सभी लोगों के पास आया। उसने कहा, "आप लोग कब निर्णय करेंगे कि आपको किसका अनुसरण करना है? यदि यहोवा सच्चा परमेश्वर है तो आप लोगों को उसका अनुयायी होना चाहिये। किन्तु यदि बाल सत्य परमेश्वर है तो तुम्हें उसका अनुयायी होना चाहिये।"

लोगों ने कुछ भी नहीं कहा। [22]अत: एलिय्याह ने कहा, "मैं यहाँ यहोवा का एकमात्र नबी हूँ। मैं अकेला हूँ। किन्तु यहाँ बाल के चार सौ पचास नबी हैं। [23]इसलिये दो बैल लाओ। बाल के नबी को एक बैल लेने दो। उन्हें उसे मारने दो और उसके टुकड़े करने दो और तब उन्हें, माँस को लकड़ी पर रखने दो। किन्तु वे आग लगाना आरम्भ न करें। तब मैं वही काम दूसरे बैल को लेकर करूँगा और मैं आग लगाना आरम्भ नहीं करूँगा। [24]बाल के नबी! बाल से प्रार्थना करेंगे और मैं यहोवा से प्रार्थना करुँगा। जो ईश्वर प्रार्थना को स्वीकार करे और अपनी लकड़ी को जलाना आरम्भ कर दे, वही सच्चा परमेश्वर है।"

सभी लोगों ने स्वीकार किया कि यह उचित विचार है।

[25]तब एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा, "तुम बड़ी संख्या में हो। अत: तुम लोग पहल करो। एक बैल को चुनो और उसे तैयार करो। किन्तु आग लगाना आरम्भ न करो।"

[26]अत: नबियों ने उस बैल को लिया जो उन्हें दिया गया। उन्होंने उसे तैयार किया। उन्होंने दोपहर तक बाल से प्रार्थना की। उन्होंने प्रार्थना की, "बाल, कृपया हमें उत्तर दे!" किन्तु कोई आवाज नहीं आई। किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। नबी उस वेदी के चारों ओर नाचते रहे जिसे उन्होंने बनाया था। किन्तु आग फिर भी नहीं लगी।

[27]दोपहर को एलिय्याह ने उनका मजाक उड़ाना आरम्भ किया। एलिय्याह ने कहा, "यदि बाल सचमुच देवता है तो कदाचित् तुम्हें और अधिक जोर से प्रार्थना करनी चाहिये! कदाचित् वह सोच रहा हो या कदाचित् वह बहुत व्यस्त हो, या कदाचित वह किसी यात्रा पर निकल गया हो। वह सोता रह सकता है। कदाचित् तुम लोग और अधिक जोर से प्रार्थना करो और जगाओ!" [28]उन्होनें और जोर से प्रार्थना की। उन्होंने अपने को तलवार और भालों से काटा–छेदा। (यह उनकी पूजा–पद्धति थी।) उन्होंने अपने को इतना काटा कि उनके ऊपर खून बहने लगा। [29]तीसरा पहर बीता किन्तु तब तक आग नहीं लगी। नबी उन्मत्त* रहे जब तक सन्ध्या की बलि–भेंट का समय नहीं आ पहुँचा। किन्तु तब तक भी बाल ने कोई उत्तर नहीं दिया। कोई अवाज नहीं आई। कोई नहीं सुन रहा था!

[30]तब एलिय्याह ने सभी लोगों से कहा, "अब मेरे पास आओ।" अत: सभी लोग एलिय्याह के चारों ओर इकट्ठे हो गए। यहोवा की वेदी उखाड़ दी गई थी। अत: एलिय्याह ने इसे जमाया। [31]एलिय्याह ने बारह पत्थर प्राप्त किए। हर एक बारह परिवार समूहों के लिये एक पत्थर था। इन बारह परिवारों के नाम याकूब के बारह पुत्रों के नाम पर थे। याकूब वह व्यक्ति था जिसे यहोवा ने इस्राएल नाम दिया था। [32]एलिय्याह ने उन पत्थरों का उपयोग यहोवा को सम्मान देने के लिये वेदी के निर्माण में किया। एलिय्याह ने वेदी के चारों ओर एक छोटी खाई खोदी। यह इतनी चौड़ी और इतनी गहरी थी कि इसमें लगभग सात गैलन पानी आ सके। [33]तब एलिय्याह ने वेदी पर लकड़ियाँ रखीं। उसने बैल को टुकड़ों में काटा। उसने टुकड़ों को लकड़ियों पर रखा। [34]तब एलिय्याह ने कहा, "चार घड़ों को पानी से भरो। पानी को माँस के टुकड़ों और लकड़ियों पर डालो।" तब एलिय्याह ने कहा, "यही फिर करो।" तब उसने कहा, "इसे तीसरी बार करो।" [35]पानी वेदी से बाहर बहा और उससे खाई भर गई।

[36]यह तीसरे पहर की बलि–भेंट का समय था। अत: एलिय्याह नबी वेदी के पास गया और प्रार्थना की, "हे यहोवा इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर! मैं तुझसे याचना करता हूँ कि तू प्रमाणित कर कि तू इस्राएल का परमेश्वर है और प्रमाणित कर कि मैं तेरा सेवक हूँ।

रानी वे नबी ईज़ेबेल के मेज पर भोजन करते हैं।

उन्मत्त "भविष्यवाणी" हिब्रू शब्द के इस रूप का अर्थ कभी "बेतहाशा काम में जुटना" या "अपने ऊपर नियन्त्रण न होना।" है।

इन लोगों के सामने यह प्रकट कर कि तूने यह सब करने का मुझे आदेश दिया है। [37]यहोवा मेरी प्रार्थना का उत्तर दे। इन लोगों के सामने प्रकट कर कि हे यहोवा तू वास्तव में परमेश्वर है। तब लोग समझेंगे कि तू उन्हें अपने पास वापस ला रहा है।"

[38]अत: यहोवा ने नीचे आग भेजी। आग ने बलि, लकड़ी, पत्थरों और वेदी के चारों ओर की भूमि को जला दिया। आग ने खाई का सारा पानी भी सूखा दिया। [39]सभी लोगों ने यह होते देखा। लोग भूमि पर प्रणाम करने झुके और कहने लगे, "यहोवा परमेश्वर है! यहोवा परमेश्वर है!"

[40]तब एलिय्याह ने कहा, "बाल के नबियों को पकड़ लो! उनमें से किसी को बच निकलने न दो!" अत: लोगों ने सभी नबियों को पकड़ा। तब एलिय्याह उन सभी को किशोन नाले तक ले गया। उस स्थान पर उसने सभी नबियों को मार डाला।

वर्षा पुन: होती है

[41]तब एलिय्याह ने राजा अहाब से कहा, "अब जाओ, खाओ, और पिओ। एक घनघोर वर्षा आ रही है।" [42]अत: राजा अहाब भोजन करने गया। उसी समय एलिय्याह कर्म्मेल पर्वत की चोटी पर चढ़ा। पर्वत की चोटी पर एलिय्याह प्रणाम करने झुका। उसने अपने सिर को अपने घुटनों के बीच में रखा। [43]तब एलिय्याह ने अपने सेवक से कहा, "समुद्र की ओर देखो।"

सेवक उस स्थान तक गया जहाँ से वह समुद्र को देख सके। तब सेवक लौट कर आया और उसने कहा, "मैंने कुछ नहीं देखा।" एलिय्याह ने उसे पुन: जाने और देखने को कहा। यह सात बार हुआ। [44]सातवीं बार सेवक लौट कर आया और उसने कहा, "मैंने एक छोटा बादल मनुष्य की मुट्ठी के बराबर देखा है। बादल समुद्र से आ रहा था।"

एलिय्याह ने सेवक से कहा, "राजा अहाब के पास जाओ और उससे कहो कि वह अपना रथ तैयार कर ले और अब घर वापस जाये। यदि वह अभी नहीं जायेगा तो वर्षा उसे रोक लेगी।"

[45]थोड़े समय के बाद आकाश काले मेघों से ढक गया। तेज हवायें चलने लगीं और घनघोर वर्षा होने लगी। अहाब अपने रथ में बैठा और यिज्रेल को वापस यात्रा करनी आरम्भ की। [46]एलिय्याह के अन्दर यहोवा की शक्ति आई। एलिय्याह ने अपने वस्त्रों को अपनी चारों ओर कसा, जिससे वह दौड़ सके। तब एलिय्याह यिज्रेल तक के पूरे मार्ग पर राजा अहाब से आगे दौड़ता रहा।

सीनै पर्वत पर एलिय्याह

19 राजा अहाब ने ईज़ेबेल को वे सभी बातें बताई जो एलिय्याह ने कीं। अहाब ने उसे बताया कि एलिय्याह ने कैसे सभी नबियों को एक ही तलवार से मौत के घाट उतारा। [2]इसलिये ईज़ेबेल ने एलिय्याह के पास एक दूत भेजा। ईज़ेबेल ने कहा, "मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि इस समय से पहले कल मैं तुमको वैसे ही मारूँगी जैसे तुमने नबियों को मारा। यदि मैं सफल नहीं होती तो देवता मुझे मार डालें।"

[3]जब एलिय्याह ने यह सुना तो वह डर गया। अत: वह अपनी जान बचाने के लिये भाग गया। वह अपने साथ अपने सेवक को ले गया। वे बेर्शेबा पहुँचे जो यहूदा में है। एलिय्याह ने अपने सेवक को बेर्शेबा में छोड़ा। [4]तब एलिय्याह पूरे दिन मरुभूमि में चला। एलिय्याह एक झाड़ी के नीचे बैठा। उसने मृत्यु की याचना की। एलिय्याह ने कहा, "यहोवा यह मेरे लिये बहुत है मुझे मरने दे। मैं अपने पूर्वजों से अधिक अच्छा नहीं हूँ।"

[5]तब एलिय्याह पेड़ के नीचे लेट गया और सो गया। एक स्वर्गदूत एलिय्याह के पास आया और उसने उसका स्पर्श किया। स्वर्गदूत ने कहा, "उठो, खाओ!" [6]एलिय्याह ने देखा कि उसके बहुत निकट कोयले पर पका एक पुआ और पानी भरा घड़ा है। एलिय्याह ने खाया–पीया। तब वह फिर सो गया।

[7]बाद में, यहोवा का स्वर्गदूत उसके पास फिर आया। स्वर्गदूत ने कहा, "उठो, खाओ!" यदि तुम ऐसा नहीं करते तो तुम इतने शक्तिशाली नहीं होगे, जिससे तुम लम्बी यात्रा कर सको।" [8]अत: एलिय्याह उठा। उसने खाया, पिया। भोजन ने उसे इतना शक्तिशाली बना दिया कि वह चालीस दिन और रात यात्रा कर सके। वह होरेब पर्वत तक गया जो परमेश्वर का पर्वत है। [9]वहाँ एलिय्याह एक गुफा में घुसा और सारी रात ठहरा।

तब यहोवा ने एलिय्याह से बातें कीं। यहोवा ने कहा, "एलिय्याह, तुम यहाँ क्यों आए हो?"

[10]एलिय्याह ने उत्तर दिया, "यहोवा सर्वशक्तिमान परमेश्वर, मैंने तेरी सेवा सदैव की है। मैंने तेरी सेवा सर्वोत्तम रूप में सदैव यथासम्भव की है। किन्तु इस्राएल के लोगों ने तेरे साथ की गई वाचा तोड़ी है। उन्होंने तेरी वेदियों को नष्ट किया है। उन्होंने तेरे नबियों को मार डाला है। मैं एकमात्र ऐसा नबी हूँ जो जीवित बचा हूँ और अब वे मुझे मार डालना चाहते हैं!" [11]तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, "जाओ, मेरे सामने पर्वत पर खड़े होओ। मैं तुम्हारे बगल से निकलूँगा।"* तब एक प्रचंड आँधी चली। आँधी ने पर्वतों को तोड़ गिराया। इसने यहोवा के सामने विशाल चट्टानों को तोड़ डाला। किन्तु वह आँधी यहोवा नहीं था। उस आँधी के बाद भूकम्प आया। किन्तु वह भूकम्प यहोवा नहीं था। [12]भूकम्प के बाद वहाँ अग्नि था। किन्तु वह आग यहोवा नहीं थी। आग के बाद वहाँ एक शान्त और मद्धिम स्वर सुनाई पड़ा।

[13]जब एलिय्याह ने वह स्वर सुना तो उसने अपने अंगरखे से अपना मुँह ढक लिया। तब वह गया और गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ। तब एक वाणी ने उससे कहा, "एलिय्याह, यहाँ तुम क्यों हो?"

[14]एलिय्याह ने उत्तर दिया, "यहोवा सर्वशक्तिमान परमेश्वर, मैंने सर्वोत्तम यथासम्भव तेरी सेवा की है। किन्तु इस्राएल के लोगों ने तेरे साथ की गई अपनी वाचा तोड़ी है। उन्होंने तेरी वेदियाँ नष्ट कीं। उन्होंने तेरे नबियों को मारा। मैं एकमात्र ऐसा नबी हूँ जो अभी तक जीवित है और अब वे मुझे मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं।"

[15]यहोवा ने कहा, "दमिश्क के चारों ओर की मरुभूमि को पहुँचाने वाली सड़क से वापस लौटो। दमिश्क में जाओ और हजाएल का अभिषेक अराम के राजा के रुप में करो। [16]तब निमशी के पुत्र येहू का अभिषेक इस्राएल के राजा के रूप में करो। उसके बाद आबेल महोला के शापात के पुत्र एलीशा का अभिषेक करो। वह तुम्हारे स्थान पर नबी बनेगा। [17]हजाएल अनेक बुरे लोगों को मार डालेगा। येहू किसी को भी मार डालेगा जो हजाएल की तलवार से बच निकलता है। [18]एलिय्याह! इस्राएल में तुम ही एक मात्र विश्वासपात्र व्यक्ति नहीं हो। वे पुरुष बहुत से लोगों को मार डालेंगे, किन्तु उसके बाद भी वहाँ इस्राएल में सात हजार लोग ऐसे होंगे जिन्होंने बाल को कभी प्रणाम नहीं किया। मैं उन सात हजार लोगों को जीवित रहने दूँगा, क्योंकि उन लोगों में से किसी ने कभी बाल की देवमूर्ति को चूमा तक नहीं।"

एलीशा एक नबी बनता है

[19]इसलिये एलिय्याह ने उस स्थान को छोड़ा और शापात के पुत्र एलीशा की खोज में निकला। एलीशा बारह एकड़ भूमि में हल चलाता था। एलीशा आखिरी एकड़ को जोत रहा था जब एलिय्याह वहाँ आया। एलिय्याह एलीशा के पास गया। तब एलिय्याह ने अपना अंगरखा* एलीशा को पहना दिया। [20]एलीशा ने तुरन्त अपनी बैलों को छोड़ा और एलिय्याह के पीछे दौड़ गया। एलिशा ने कहा, "मुझे अपनी माँ को चूमने दो और पिता से विदा लेने दो। फिर मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

एलिय्याह ने उत्तर दिया, "यह अच्छा है। जाओ, मैं तुम्हें रोकूँगा नहीं।"

[21]तब एलीशा ने अपने परिवार के साथ विशेष भोजन किया। एलीशा गया और अपनी बैलों को मार डाला। उसने हल की लकड़ी का उपयोग आग जलाने के लिये किया। तब उसने माँस को पकाया और लोगों में बाँट दिया। लोगों ने माँस खाया। तब एलीशा गया और उसने एलिय्याह का अनुसरण किया। एलीशा एलिय्याह का सहायक बना।

बेन्हदद और अहाब युद्ध में उतरते हैं

20 बेन्हदद अराम का राजा था। उसने अपनी सारी सेना इकट्ठी की। उसके साथ बत्तीस राजा थे। उनके पास घोड़े और रथ थे। उन्होंने शोमरोन पर आक्रमण किया और उसके विरुद्ध लड़े। [2]राजा ने नगर में इस्राएल के राजा अहाब के पास दूत भेजे। [3]सूचना यह थी, "बेन्हदद कहता है, 'तुम्हें अपना सोना–चाँदी मुझे देना पड़ेगा। तुम्हें अपनी पत्नियाँ और बच्चे भी मुझको देने होंगे।'"

जाओ ... निकलूँगा यह उस समय के समान है जिस समय परमेश्वर मूसा के सामने प्रकट हुआ था। देखे निर्गमन 33: 12–23

अंगरखा यह विशेष चोंगा था, जिससे यह पता चलता था कि एलिय्याह नबी है। एलीशा को इस अंगरखा को देना यह प्रकट करता था कि एलीशा एलिय्याह के स्थान पर नबी हो गया है।

[4]इस्राएल के राजा ने उत्तर दिया, "ऐ मेरे स्वामी राजा! मैं स्वीकार करता हूँ कि अब मैं आपके अधीन हूँ और जो कुछ मेरा है वह आपका है।"

[5]तब दूत अहाब के पास वापस आया। उन्होंने कहा, "बेन्हदद कहता है, 'मैंने पहले ही तुमसे कहा था कि तुम्हें सारा सोना चाँदी तथा अपनी स्त्रियों, बच्चों को मुझको देना पड़ेगा। [6]अब मैं अपने व्यक्तियों को भेजना चाहता हूँ जो महल में सर्वत्र और तुम्हारे आधीन शासन करने वाले और अधिकारियों के घरों में खोज करेंगे। मेरे व्यक्ति जो चाहेंगे लेंगे।'"

[7]अत: राजा अहाब ने अपने देश के सभी अग्रजों (प्रमुखों) की एक बैठक बुलाई। अहाब ने कहा, "देखो बेन्हदद विपत्ति लाना चाहता है। प्रथम तो उसने मुझसे यह माँग की है कि मैं उसे अपनी पत्नियाँ, अपने बच्चे और अपना सोना-चाँदी दे दूँ। मैंने उसे वे चीजें देनी स्वीकार कर ली और अब वह सब कुछ लेना चाहता है।"

[8]किन्तु अग्रजों (प्रमुखों) और सभी लोगों ने कहा, "उसका आदेश न मानो। वह न करो जिसे करने को वह कहता है।"

[9]इसलिये अहाब ने बेन्हदद को सन्देश भेजा। अहाब ने कहा, "मैं वह कर दूँगा जो तुमने पहले कहा था। किन्तु मैं तुम्हारे दूसरे आदेश का पालन नहीं कर सकता।"

राजा बेन्हदद के दूत सन्देश राजा तक ले गये। [10]तब वे बेन्हदद के अन्य सन्देश के साथ लौटे। सन्देश यह था, "मैं शोमरोन को पूरी तरह नष्ट करूँगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि उस नगर का कुछ भी नहीं बचेगा। उस नगर का इतना कुछ भी नहीं बचेगा कि वह हमारे व्यक्तियों के लिये नगर की यादगार* के रूप में अपने घर ले जाने को पर्याप्त हो। परमेश्वर मुझे नष्ट कर दे यदि मैं ऐसा न करुँ।"

[11]राजा अहाब ने उत्तर दिया, "बेन्हदद से कहो कि उस व्यक्ति को, जिसने अपना कवच धारण किया हो, उस व्यक्ति की तरह डींग नहीं हाँकनी चाहिये जो उसे उतारने के लिये लम्बा जीवन जीता है।"

[12]राजा बेन्हदद ने अपने अन्य प्रशासकों के साथ अपने तम्बू में मदिरा पान कर रहा था। उसी समय दूत आया और उसने राजा अहाब का सन्देश दिया। राजा बेन्हदद ने अपने व्यक्तियों को नगर पर आक्रमण करने के लिये तैयार होने को कहा। अत: सैनिक युद्ध के लिये अपना स्थान लेने बढ़े।

[13]इसी समय, एक नबी, राजा अहाब के पास पहुँचा। नबी ने कहा, "राजा अहाब यहोवा तुमसे कहता है, 'क्या तुम उस बड़ी सेना को देखते हो! मैं यहोवा, आज तुम्हें उस सेना को हराने दूँगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।'"

[14]अहाब ने कहा, "उन्हें पराजित करने के लिये तुम किसका उपयोग करोगे?"

नबी ने उत्तर दिया, "यहोवा कहता है, "सरकारी अधिकारियों के युवक सहायक।" तब राजा ने पूछा, "मुख्य सेना का सेनापतित्व कौन सम्भालेगा?"

नबी ने उत्तर दिया, "तुम सम्भालोगे।"

[15]अत: अहाब ने सरकारी अधिकारियों के युवक सहायकों को इकट्ठा किया। सब मिलाकर ये दो सौ बत्तीस युवक थे। तब राजा ने इस्राएल की सेना को एक साथ बुलाया। सारी संख्या सात हजार थी।

[16]दोपहर को, राजा बेन्हदद और उसके सहायक बत्तीस राजा अपने डेरे में मदिरा पान कर रहे थे और मद मत्त हो रहे थे। इसी समय राजा अहाब का आक्रमण आरम्भ हुआ। [17]युवक सहायकों ने प्रथम आक्रमण किया। बेन्हदद के व्यक्तियों ने उससे कहा कि सैनिक शोमरोन से बाहर निकल आये हैं। [18]अत: बेन्हदद ने कहा, "वे युद्ध करने के लिये आ रहे होंगे या वे शान्ति-सन्धि करने आ रहे होंगे। उन्हें जीवित पकड़ लो।"

[19]राजा अहाब के युवक आक्रमण की पहल कर रहे थे। इस्राएल की सेना उनके पीछे चल रही थी। [20]किन्तु इस्राएल के हर एक व्यक्ति ने उस पुरुष को मार डाला जो उसके विरुद्ध आया। अत: अराम के सैनिकों ने भागना आरम्भ किया। इस्राएल की सेना ने उनका पीछा किया। राजा बेन्हदद अपने रथों के एक घोड़े पर बैठकर भाग निकला। [21]राजा अहाब सेना को लेकर आगे बढ़ा और उसने अराम की सेना के सारे घोड़ों और रथों को ले लिया। इस प्रकार राजा अहाब ने अरामी सेना को भारी पराजय दी।

[22]तब नबी राजा अहाब के पास पहुँचा और कहा, "अराम का राजा बेन्हदद अगले बसन्त में तुमसे युद्ध करने के लिये फिर आयेगा। अत: तुम्हें अब घर लौट

यादगार देखे गये स्थान की याद दिलाने वाली चीज़ें। हिब्रू में "एक मुट्ठी धूलि" है।

जाना चाहिये और अपनी सेना को पहले से अधिक शक्तिशाली बनाना चाहिये और उसके विरुद्ध सुरक्षा की सुनियोजित योजना बनानी चाहिये।"

बेन्हदद पुन: आक्रमण करता है

[23]राजा बेन्हदद के अधिकारियों ने उससे कहा, "इस्राएल के देवता पर्वतीय देवता है। हम लोग पर्वतीय क्षेत्र में लड़े थे। इसलिये इस्राएल के लोग विजयी हुए। अत: हम लोग उनसे समतल मैदान में युद्ध करें। तब हम विजय पाएंगे। [24]तुम्हें यही करना चाहिए। बत्तीस राजाओं को सेना का सेनापतित्व करने को अनुमति न दो। सेनापतियों को ही अपनी सेना का संचालन करने दो।

[25]"अब तुम वैसी ही सेना बनाओ जो नष्ट हुई सेना की तरह हो। उसी सेना की तरह घोड़े और रथ इकट्ठे करो। तब हम लोग इस्राएलियों से समतल मैदान में युद्ध करें। तब हम विजय प्राप्त करेंगे।" बेन्हदद ने उनकी सलाह मान ली। उसने वही किया जो उन्होंने कहा।

[26]अत: बसन्त में बेन्हदद ने अराम के लोगों को इकट्ठा किया। वह इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने अपेक गया।

[27]इस्राएलियों ने भी युद्ध की तैयारी की। इस्राएल के लोग अराम की सेना से लड़ने गये। उन्होंने अपने डेरे अराम के डेरे के सामने डाले। शत्रु की तुलना में इस्राएली बकरियों के दो छोटे झुण्डों के समान दिखाई पड़ते थे किन्तु अराम की सेना सारे क्षेत्र को ढकी थी।

[28]परमेश्वर का एक व्यक्ति इस सन्देश के साथ इस्राएल के राजा के पास आया: "यहोवा ने कहा है, 'अराम के लोगों ने कहा है कि मैं अर्थात् यहोवा पर्वतों का परमेश्वर हूँ। वे समझते हैं कि घाटियों का परमेश्वर मैं नहीं हूँ। इसलिए मैं तुम्हें इस विशाल सेना को पराजित करने दूँगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा सर्वत्र हूँ।'"

[29]सेनायें सात दिन तक एक दूसरे के आमने सामने डेरा डाले रहीं। सातवें दिन युद्ध आरम्भ हुआ। इस्राएलियों ने एक दिन में अराम के एक लाख सैनिकों को मार डाला। [30]बचे हुए सैनिक अपेक नगर को भाग गए। नगर प्राचीर उन सत्ताईस हजार सैनिकों पर गिर पड़ी। बेन्हदद भी नगर को भाग गया। वह एक कमरे में छिप गया। [31]उसके सेवकों ने उससे कहा, "हम लोगों ने सुना है कि इस्राएल कुल के राजा लोग दयालु हैं। हम लोग मोटे वस्त्र पहने और सिर पर रस्सी डाले।* तब हम लोग इस्राएल के राजा के पास चलें। सभंव है, वह हमें जीवित रहने दे।"

[32]उन्होंने मोटे वस्त्र पहने और रस्सी सिर पर डाली। वे इस्राएल के राजा के पास आए। उन्होंने कहा, "तुम्हारा सेवक बेन्हदद कहता है, 'कृपया मुझे जीवित रहने दें।'"

अहाब ने उत्तर दिया, "क्या वह अभी तक जीवित है? वह मेरा भाई है।"*

[33]बेन्हदद के व्यक्ति राजा अहाब से ऐसा कुछ कहलवाना चाहते थे, जिससे यह पता चले कि वह बेन्हदद को नहीं मारेगा। जब अहाब ने बेन्हदद को भाई कहा तो सलाहकारों ने तुरन्त कहा, "हाँ! बेन्हदद आपका भाई है।"

अहाब ने कहा, "उसे मेरे पास लाओ।" अत: बेन्हदद राजा अहाब के पास आया। राजा अहाब ने अपने साथ उसे अपने रथ में बैठने को कहा।

[34]बेन्हदद ने उससे कहा, "अहाब मैं उन नगरों को तुम्हें दे दूँगा जिन्हें मेरे पिता ने तुम्हारे पिता से ले लिये थे और तुम दमिश्क में वैसे ही दुकाने रख सकते हो जैसे मेरे पिता ने शोमरोन में रखी थीं।"

अहाब ने उत्तर दिया, "यदि तुम इसे स्वीकार करते हो तो मैं तुम्हें जाने के लिये स्वतन्त्र करता हूँ।" अत: दोनों राजाओं ने एक शान्ति–सन्धि की। तब राजा अहाब ने बेन्हदद को जाने के लिये स्वतन्त्र कर दिया।

एक नबी अहाब के विरुद्ध भविष्यवाणी करता है

[35]नबियों में से एक ने दूसरे नबी से कहा, "मुझ पर चोट करो!" उसने उससे यह करने के लिये कहा क्योंकि यहोवा ने ऐसा आदेश दिया था। किन्तु दूसरे नबी ने उस पर चोट करने से इन्कार कर दिया। [36]इसलिये पहले नबी ने कहा, "तुमने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया। अत: जब तुम इस स्थान को छोड़ोगे, एक सिंह तुम्हें मार डालेगा।" दूसरे नबी ने उस स्थान को छोड़ा और उसे एक सिंह ने मार डाला।

[37]प्रथम नबी दूसरे व्यक्ति के पास गया और कहा, "मुझ पर चोट करो।" उस व्यक्ति ने उस पर चोट की।

हम लोग ... रस्सी डालें यह इस बात को प्रकट करता था कि वे अधीनता स्वीकार करते हैं और आत्मसर्मपण चाहते हैं।

भाई है शान्ति–सन्धि करने वाले लोग प्राय: एक दूसरे को भाई कहते थे। वे मानों एक परिवार के हो।

नबी को चोट आई। [38]अत: नबी ने अपने चेहरे पर एक वस्त्र लपेट लिया। इस प्रकार कोई यह नहीं समझ सकता था कि वह कौन है। वह नबी गया और उसने सड़क के किनारे राजा की प्रतीक्षा आरम्भ की। [39]राजा उधर से निकला और नबी ने उससे कहा, "मैं युद्ध में लड़ने गया था। हमारे व्यक्तियों में से मेरे पास शत्रु सैनिक को लाया। उस व्यक्ति ने कहा, 'इस व्यक्ति की पहरेदारी करो। यदि यह भाग गया तो इसके स्थान पर तुम्हें अपना जीवन देना होगा या तुम्हें पचहत्तर पौंड चाँदी जुर्माने में देनी होगी।' [40]किन्तु मैं अन्य कामों में व्यस्त हो गया। अत: वह व्यक्ति भाग निकला।"

इस्राएल के राजा ने कहा, "तुमने कहा है कि तुम सैनिक को भाग जाने देने के अपराधी हो। अत: तुमको उत्तर मालूम है। तुम्हें वही करना चाहिये जिसे करने को उस व्यक्ति ने कहा है।"

[41]तब नबी ने अपने मुख से कपड़े को हटाया। इस्राएल के राजा ने देखा और यह जान लिया कि वह नबियों में से एक है। [42]तब नबी ने राजा से कहा, "यहोवा तुमसे यह कहता है, 'तुमने उस व्यक्ति को स्वतन्त्र किया जिसे मैंने मर जाने को कहा। अत: उसका स्थान तुम लोगे, तुम मर जाओगे और तुम्हारे लोग दुश्मनों का स्थान लेंगे, तुम्हारे लोग मरेंगे।'"

[43]तब राजा अपने घर शोमरोन लौट गया। वह बहुत परेशान और घबराया हुआ था।

नाबोत के अंगूर का बाग

21 राजा अहाब का महल शोमरोन में था। महल के पास एक अंगूरों का बाग था। यिज्रेल नाबोत नामक व्यक्ति इस फलों के बाग का स्वामी था। [2]एक दिन अहाब ने नाबोत से कहा, "अपना यह फलों का बाग मुझे दे दो। मैं इसे सब्जियों का बाग बनाना चाहता हूँ। तुम्हारा बाग मेरे महल के पास है। मैं इसके बदले तुम्हें इससे अच्छा अंगूर का बाग दूँगा या, यदि तुम पसन्द करोगे तो इसका मूल्य मैं सिक्कों में चुकाऊँगा।"

[3]नाबोत ने उत्तर दिया, "मैं अपनी भूमि तुम्हें कभी नहीं दूँगा। यह भूमि मेरे परिवार की है।"

[4]अत: अहाब अपने घर गया। वह नाबोत पर क्रोधित और बिगड़ा हुआ था। उसने उस बात को पसन्द नहीं किया जो यिज्रेल के व्यक्ति ने कही थी। (नाबोत ने कहा था, "मैं अपने परिवार की भूमि तुम्हें नहीं दूँगा।") अहाब अपने बिस्तर पर लेट गया। उसने अपना मुख मोड़ लिया और खाने से इन्कार कर दिया।

[5]अहाब की पत्नी ईज़ेबेल उसके पास गई। ईज़ेबेल ने उससे कहा, "तुम घबराये क्यों हो? तुमने खाने से इन्कार क्यों किया है?"

[6]अहाब ने उत्तर दिया, "मैंने यिज्रेल के नाबोत से उसकी भूमि माँगी। मैंने उससे कहा कि मैं उसकी पूरी कीमत चुकाऊँगा, या, यदि वह चाहेगा तो मैं उसे दूसरा बाग दूँगा। किन्तु नाबोत ने अपना बाग देने से इन्कार कर दिया।"

[7]ईज़ेबेल ने उत्तर दिया, "किन्तु तुम तो पूरे इस्राएल के राजा हो अपने बिस्तर से उठो। कुछ भोजन करो, तुम अपने को स्वस्थ अनुभव करोगे। मैं नाबोत का बाग तुम्हारे लिये ले लूँगी।"

[8]तब ईजेबेल ने कुछ पत्र लिखे। उसने पत्रों पर अहाब के हस्ताक्षर बनाये। उसने अहाब की मुहर पत्रों को बन्द करने के लिये उन पर लगाई। तब उसने उन्हें अग्रजों (प्रमुखों) और विशेष व्यक्तियों के पास भेजे जो उसी नगर में रहते थे जिसमें नाबोत रहता था। [9]पत्र में यह लिखा था:

यह घोषणा करो कि एक ऐसा दिन होगा जिस दिन लोग कुछ भी भोजन नहीं करेंगे। तब नगर के सभी लोगों की एक साथ एक बैठक बुलाओ। बैठक में हम नाबोत के बारे में बात करेंगे। [10]किसी ऐसे व्यक्ति का पता करो जो नाबोत के विषय में झूठ बोले। वे लोग यह कहें कि उन्होंने सुना कि नाबोत ने राजा और परमेश्वर के विरुद्ध कुछ बातें कहीं। तब नाबोत को नगर के बाहर ले जाओ और उसे पत्थरों से मार डालो।

[11]अत: यिज्रेल के अग्रजों (प्रमुखों) और विशेष व्यक्तियों ने उस आदेश का पालन किया। [12]प्रमुखों ने घोषणा की कि एक दिन ऐसा होगा जब सभी व्यक्ति कुछ भी भोजन नहीं करेंगे। उस दिन उन्होंने सभी लोगों की बैठक एक साथ बुलाई। उन्होंने नाबोत को विशेष स्थान पर लोगों के सामने रखा।

[13]तब दो व्यक्तियों ने लोगों से कहा कि उन्होंने नाबोत को परमेश्वर और राजा के विरुद्ध बातें करते सुना है। अत: लोग नाबोत को नगर के बाहर ले गए। तब उन्होंने उसे पत्थरों से मार डाला। [14]तब प्रमुखों ने एक सन्देश

ईज़ेबेल को भेजा। सन्देश था: "नाबोत पत्थरों से मार डाला गया।"

[15]जब ईज़ेबेल ने यह सुना तो उसने अहाब से कहा, "नाबोत मर गया। अब तुम जा सकते हो और उस बाग को ले सकते हो जिसे तुम चाहते थे।" [16]अत: अहाब अंगूरों के बाग में गया और उसे अपना बना लिया।

[17]इस समय यहोवा ने एलिय्याह से बातें की। (एलिय्याह तिशबी का नबी था।) [18]यहोवा ने कहा, "राजा अहाब के पास शोमरोन को जाओ। अहाब नाबोत के अगूंरों के बाग में होगा। वह वहाँ पर उस बाग को अपना बनाने के लिये होगा। [19]अहाब से कहो, मैं यहोवा उससे कहता हूँ, 'अहाब! तुमने नाबोत नामक व्यक्ति को मार डाला है। अब तुम उसकी भूमि ले रहे हो। अत: मैं तुमसे कहता हूँ, तुम भी उसी स्थान पर मरोगे जिस स्थान पर नाबोत मरा। जिन कुत्तों ने नाबोत के खून को चाटा, वे ही तुम्हारा खून उस स्थान पर चाटेंगे।'"

[20]अत: एलिय्याह अहाब के पास गया। अहाब ने एलिय्याह को देखा और कहा, "तुमने मुझे फिर पा लिया है। तुम सदा मेरे विरुद्ध हो।"

एलिय्याह ने उत्तर दिया, "हाँ, मैंने तुम्हें पुन: पा लिया है। तुमने सदा अपने जीवन का उपयोग यहोवा के विरुद्ध पाप करने में किया। [21]अत: यहोवा तुमसे कहता है, 'मैं तुम्हें नष्ट कर दूँगा। [22]मैं तुम्हें और तुम्हारे परिवार के हर एक पुरुष सदस्य को मार डालूँगा। तुम्हारे परिवार की वही दशा होगी जो दशा नाबोत के पुत्र यारोबाम के परिवार की हुई और तुम्हारा परिवार बाशा के परिवार की तरह होगा। ये दोनों पूरी तरह नष्ट कर दिये गये थे। मैं तुम्हारे साथ यही करूँगा क्योंकि तुमने मुझे क्रोधित किया है। तुमने इस्राएल के लोगों से पाप कराया है' [23]और यहोवा यह भी कहता है, 'तुम्हारी पत्नी ईजेबेल का शव यिज्रेल नगर में कुत्ते खायेंगे। [24]तुम्हारे परिवार के किसी भी सदस्य को जो नगर में मरेगा, कुत्ते खायेंगे। जो व्यक्ति मैदानो में मरेगा वह पक्षियों द्वारा खाया जाएगा।'"

[25]कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जिसने उतने बुरे काम या पाप किये हों जितने अहाब ने किये। उसकी पत्नी ईज़ेबेल ने उससे ये काम कराये। [26]अहाब ने बहुत बुरा पाप किया और उसने उन काष्ठ के कुंदों (देव–मूर्तियों) को पूजा। यह वही काम था जिसे एमोरी लोग करते थे और यहोवा ने उनसे प्रदेश छीन लिया था और इस्राएल के लोगों को दे दिया था।

[27]एलिय्याह के कथन के पूरा होने पर अहाब बहुत दु:खी हुआ। उसने अपने वस्त्रों को यह दिखाने के लिये फाड़ डाला कि उसे दु:ख है। तब उसने शोक के विशेष वस्त्र पहन लिये। अहाब ने खाने से इन्कार कर दिया। वह उन्हीं विशेष वस्त्रों को पहने हुए सोया। अहाब बहुत दु:खी और उदास था।

[28]यहोवा ने एलिय्याह नबी से कहा, [29]"मैं देखता हूँ कि अहाब मेरे सामने विनम्र हो गया है। अत: उसके जीवन काल में मैं उस पर विपत्ति नहीं आने दूँगा। मैं तब तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक उसका पुत्र राजा नहीं बन जाता। तब मैं अहाब के परिवार पर विपत्ति आने दूँगा।"

मीकायाह अहाब को चेतावनी देता है

22 अगले दो वर्षों के भीतर इस्राएल और अराम के बीच शान्ति रही। [2]तब तीसरे वर्ष यहूदा का राजा यहोशापात इस्राएल के राजा अहाब से मिलने गया।

[3]इस समय अहाब ने अपने अधिकारियों से पूछा, "तुम जानते हो कि अराम के राजा ने गिलाद में रामोत को हम से ले लिया था। हम लोगों ने रामोत वापस लेने का कुछ भी प्रयत्न क्यों नहीं किया? यह हम लोगों का नगर होना चाहिये।"

[4]इसलिये अहाब ने यहोशापात से पूछा, "क्या आप हमारे साथ होंगे और रामोत में अराम की सेना के विरुद्ध युद्ध करेंगे?"

यहोशापात ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं तुम्हारा साथ दूँगा। मेरे सैनिक और मेरे घोड़े तुम्हारी सेना के साथ मिलने के लिये तैयार हैं। [5]किन्तु पहले हम लोगों को यहोवा से सलाह ले लेनी चाहिये।"

[6]अत: अहाब ने नबियों की एक बैठक बुलाई। उस समय लगभग चार सौ नबी थे। अहाब ने नबियों से पूछा, "क्या मैं जाऊँ और रामोत में अराम की सेना के विरुद्ध युद्ध करुँ? या मैं किसी अन्य अवसर की प्रतीक्षा करुँ?" नबियों ने उत्तर दिया, "तुम्हें अभी युद्ध करना चाहिये। यहोवा तुम्हें विजय पाने देगा।"

[7]किन्तु यहोशापात ने कहा, "क्या यहाँ यहोवा के नबियों में से कोई अन्य नबी है? यदि कोई है तो हमें उससे पूछना चाहिये कि परमेश्वर क्या कहता है।"

[8]राजा अहाब ने उत्तर दिया, "एक अन्य नबी है। वह यिम्ला का पुत्र मीकायाह है। किन्तु उससे मैं घृणा करता हूँ। जब कभी वह यहोवा का माध्यम बनता है तब वह मेरे लिये कुछ भी अच्छा नहीं कहता। वह सदैव वही कहता है जिसे मैं पसन्द नहीं करता।"

यहोशापात ने कहा, "राजा अहाब, तुम्हें ये बातें नहीं कहनी चाहिये!"

[9]अत: राजा अहाब ने अपने अधिकारियों में से एक से जाने और मीकायाह को खोज निकालने को कहा।

[10]उस समय दोनों राजा अपना राजसी पोशाक पहने थे। वे सिंहासन पर बैठे थे। यह शोमरोन के द्वार के पास खुले स्थान पर था। सभी नबी उनके सामने खड़े थे। नबी भविष्यवाणी कर रहे थे।

[11]नबियों में से एक सिदकिय्याह नामक व्यक्ति था। वह कनाना का पुत्र था। सिदकिय्याह ने कुछ लोहे की सींगे* बनाई। तब उसने अहाब से कहा, "यहोवा कहता है, 'तुम लोहे की इन सींगों का उपयोग अराम की सेना के विरुद्ध लड़ने में करोगे। तुम उन्हें हराओगे और उन्हें नष्ट करोगे।'" [12]सभी अन्य नबियों ने उसका समर्थन किया जो कुछ सिदकिय्याह ने कहा। नबियों ने कहा, "तुम्हारी सेना अभी कूच करे। उन्हें रामोत में अराम की सेना के साथ युद्ध करना चाहिये। तुम युद्ध जीतोगे। यहोवा तुम्हें विजय पाने देगा।"

[13]जब यह हो रहा था तभी अधिकारी मीकायाह को खोजने गया। अधिकारी ने मीकायाह को खोज निकाला और उससे कहा, "सभी अन्य नबियों ने कहा है कि राजा को सफलता मिलेगी। अत: मैं यह कहता हूँ कि यही कहना तुम्हारे लिये सर्वाधिक अनुकूल होगा।"

[14]किन्तु मीकायाह ने उत्तर दिया, "नहीं! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि यहोवा की शक्ति से वही कहूँगा जो कहने के लिये यहोवा कहेगा!"

[15]तब मीकायाह राजा अहाब के सामने खड़ा हुआ। राजा ने उससे पूछा, "मीकायाह, क्या मुझे और राजा यहोशापात को अपनी सेनायें एक कर लेनी चाहिये? और क्या हमें अराम की सेना से रामोत में युद्ध करने के लिये अभी कुछ करना चाहिये या नहीं?"

मीकायाह ने उत्तर दिया, "हाँ! तुम्हें जाना चाहिये और उनसे अभी युद्ध करना चाहिये। यहोवा तुम्हें विजय देगा।"

[16]किन्तु अहाब ने पूछा, "तुम यहोवा की शक्ति से नहीं बता रहे हो। तुम अपनी निजी बात कह रहे हो। अत: मुझसे सत्य कहो। कितनी बार मुझे तुमसे कहना पड़ेगा? मुझसे वह कहो जो यहोवा कहता है।"

[17]अत: मीकायाह ने उत्तर दिया, "मैं जो कुछ होगा, देख सकता हूँ। इस्राएल की सेना पहाड़ियों में बिखर जायेगी। वे उन भेड़ों की तरह होंगी जिनका कोई भी संचालक न हो। यही यहोवा कहता है, 'इन व्यक्तियों का दिशा निर्देशक कोई नहीं है। उन्हें घर जाना चाहिये और युद्ध नहीं करना चाहिये।'"

[18]तब अहाब ने यहोशापात से कहा, "देख लो! मैंने तुम्हें बताया था! यह नबी मेरे बारे में कभी कोई अच्छी बात नहीं कहता। यह सदा वही बात कहता है जिसे मैं सुनना नहीं चाहता।"

[19]किन्तु मीकायाह यहोवा का माध्यम बना कहता ही रहा। उसने कहा, "सुनो! ये वे शब्द हैं जिन्हें यहोवा ने कहा है। मैंने यहोवा को स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठे देखा। उसके दूत उसके समीप खड़े थे। [20]यहोवा ने कहा, 'क्या तुममें से कोई राजा अहाब को चकमा दे सकता है? मैं उसे रामोत में अराम की सेना के विरुद्ध युद्ध करने के लिये जाने देना चाहता हूँ। तब वह मारा जाएगा।' स्वर्गदूतों को क्या करना चाहिये, इस पर वे सहमत न हो सके। [21]तब एक स्वर्गदूत यहोवा के पास गया और उसने कहा, 'मैं उसे चकमा दूँगा!' [22]यहोवा ने पूछा, 'तुम राजा अहाब को चकमा कैसे दोगे?' स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, 'मैं अहाब के सभी नबियों को भ्रमित कर दूँगा। मैं नबियों को अहाब से झूठ बोलने के लिये कहूँगा। नबियों के सन्देश झूठे होंगे।' अत: यहोवा ने कहा, 'बहुत अच्छा! जाओ और राजा अहाब को चकमा दो। तुम सफल होगे।'"

[23]मीकायाह ने अपनी कथा पूरी की। तब उसने कहा, "अत: यहाँ यह सब हुआ। यहोवा ने तुम्हारे नबियों से तुम्हें झूठ बुलवा दिया है। यहोवा ने स्वयं निर्णय लिया है कि तुम पर बड़ी भारी विपत्ति लाए।"

[24]तब सिदकिय्याह नबी मीकायाह के पास गया। सिदकिय्याह ने मीकायाह के मुँह पर मारा। सिदकिय्याह ने कहा, "क्या तुम सचमुच विश्वास करते हो कि यहोवा की शक्ति ने मुझे छोड़ दिया है और वह तुम्हारे माध्यम से बात कर रहा है।"

लोहे की सींगे ये बड़ी शक्ति का प्रतीक थीं।

[25]मीकायाह ने उत्तर दिया, "शीघ्र ही विपत्ति आएगी। उस समय तुम भागोगे और एक छोटे कमरे में छिपोगे और तब तुम समझोगे कि मैं सत्य कह रहा हूँ।"

[26]तब राजा अहाब ने अपने अधिकारियों में से एक को मीकायाह को बन्दी बनाने का आदेश दिया। राजा अहाब ने कहा, "इसे बन्दी बना लो और इसे नगर के प्रसाशक आमोन और राजकुमार योआश के पास ले जाओ। [27]उनसे कहो कि मीकायाह को बन्दीगृह में डाल दे। उसे खाने को केवल रोटी और पानी दो। उसे वहाँ तब तक रखो जब तक मैं युद्ध से घर न आ जाऊँ।"

[28]मीकायाह ने जोर से कहा, "आप सभी लोग सुने जो मैं कहता हूँ। राजा अहाब, यदि तुम युद्ध से घर जीवित लौट आओगे, तो समझना कि यहोवा ने मेरे मुँह से अपना वचन नहीं कहा था।।"

[29]तब राजा अहाब और राजा यहोशापात रामोत में अराम की सेना से युद्ध करने गए। यह गिलाद नामक क्षेत्र में था। [30]अहाब ने यहोशापात से कहा, "हम युद्ध की तैयारी करेंगे। मैं ऐसे वस्त्र पहनूँगा जो मुझे ऐसा रूप देंगे कि मैं ऐसा लगूँगा कि मैं राजा नहीं हूँ। किन्तु तुम अपने विशेष वस्त्र पहनो जिससे तुम ऐसे लगों कि तुम राजा हो।" इस प्रकार इस्राएल के राजा ने युद्ध का आरम्भ उस व्यक्ति की तरह वस्त्र पहनकर किया जो राजा न हो।

[31]अराम के राजा के पास बत्तीस रथ–सेनापति थे। उस राजा ने इन बत्तीस रथ सेनापतियों को आदेश दिया कि वे इस्राएल के राजा को खोज निकाले। अराम के राजा ने सेनापतियों से कहा कि उन्हें राजा को अवश्य मार डालना चाहिये। [32]अत: युद्ध के बीच इन सेनापतियों ने राजा यहोशापात को देखा। सेनापतियों ने समझा कि वही इस्राएल का राजा है। अत: वे उसे मारने गए। यहोशापात ने चिल्लाना आरम्भ किया। [33]सेनापतियों ने समझ लिया कि वह राजा अहाब नहीं है। अत: उन्होंने उसे नहीं मारा। [34]किन्तु एक सैनिक ने हवा में बाण छोड़ा, वह किसी विशेष व्यक्ति को अपना लक्ष्य नहीं बना रहा था। किन्तु उसका बाण इस्राएल के राजा अहाब को जा लगा। बाण ने राजा को उस छोटी जगह में बेधा, जो शरीर का भाग उसके कवच से ढका नहीं था। अत: राजा अहाब ने अपने सारथी से कहा, "मुझे एक बाण ने बेध दिया है! इस क्षेत्र से रथ को बाहर ले चलो। हमें युद्ध से दूर निकल जाना चाहिये।"

[35]सेनायें युद्ध में लड़ती रहीं। राजा अहाब अपने रथ में ठहरा रहा। वह रथ के सहारे एक ओर झुका हुआ था। वह अराम की सेना को देख रहा था। उसका खून नीचे बहता रहा और उसने रथ के तले को ढक लिया। बाद में, शाम को राजा मर गया। [36]सन्ध्या के समय इस्राएल की सेना के सभी पुरुषों को अपने नगर और प्रदेश वापस लौटने का आदेश दिया गया।

[37]अत: राजा अहाब इस प्रकार मरा। कुछ व्यक्ति उसके शव को शोमरोन ले आए। उन्होंने उसे वहीं दफना दिया। [38]लोगों ने अहाब के रथ को शोमरोन में जल के कुंड में धोया। राजा अहाब के खून को रथ से, कुत्तों ने चाटा और वेश्याओं ने पानी का उपयोग नहाने के लिये किया। ये बातें वैसे ही हुई जैसा यहोवा ने होने को कहा था।

[39]अपने राज्यकाल में अहाब ने जो कुछ किया वह "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। उसी पुस्तक में राजा ने अपने महल को अधिक सुन्दर बनाने के लिये जिस हाथी–दाँत का उपयोग किया था, उसके बारे में कहा गया है और उस पुस्तक में उन नगरों के बारे में भी लिखा गया है जिसे उसने बनाया था। [40]अहाब मरा, और अपने पूर्वजों के पास दफना दिया गया। उसका पुत्र अहज्याह राजा बना।

यहूदा का राजा यहोशापात

[41]इस्राएल के राजा अहाब के राज्यकाल के चौथे वर्ष यहोशापात यहूदा का राजा हुआ। यहोशापात आसा का पुत्र था। [42]यहोशापात जब राजा हुआ तब वह पैंतीस वर्ष का था। यहोशापात ने यरूशलेम में पच्चीस वर्ष तक राज्य किया। यहोशापात की माँ का नाम अजूबा था। अजूबा शिल्ही की पुत्री थी। [43]यहोशापात अच्छा व्यक्ति था। उसने अपने पूर्व अपने पिता के जैसे ही काम किये। वह उन सबका पालन करता था जो यहोवा चाहता था। किन्तु यहोशापात ने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। लोगों ने उन स्थानों पर बलि–भेंट करना और सुगन्धि जलाना जारी रखा।

[44]यहोशापात ने इस्राएल के राजा के साथ एक शान्ति–सन्धि की। [45]यहोशापात बहुत वीर था और उसने कई युद्ध लड़े। जो कुछ उसने किया वह, "यहूदा

के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। [46]यहोशापात ने उन स्त्री पुरुषों को, जो शारीरिक सम्बन्ध के लिये अपने शरीर को बेचते थे, पूजास्थानों को छोड़ने के लिये विवश किया। उन व्यक्तियों ने उन पूजास्थानों पर तब सेवा की थी जब उसका पिता आसा राजा था।

[47]इस समय के बीच एदोम देश का कोई राजा न था। वह देश एक प्रशासक द्वारा शासित होता था। प्रशासक यहूदा के राजा द्वारा चुना जाता था।

यहोशापात का समुद्री बेड़ा

[48]राजा यहोशापात ने ऐसे जहाज बनाए जो महासागर में चल सकते थे। यहोशापात ने ओपीर प्रदेश में जहाजों को भेजा। वह चाहता था कि जहाज सोना लाएँ। किन्तु जहाज एश्योनगेबेर में नष्ट हो गए। जहाज कभी सोना प्राप्त करने में सफल न हो सके। [49]इस्राएल का राजा अहज्याह यहोशापात को सहायता देने गया। अहज्याह ने यहोशापात से कहा था कि वह कुछ ऐसे व्यक्तियों को उनके लिये प्राप्त करेगा जो जहाजी काम में कुशल हों। किन्तु यहोशापात ने अहज्याह के व्यक्तियों को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।

[50]यहोशापात मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। वह दाऊद नगर में अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। तब उसका पुत्र यहोराम राजा बना।

इस्राएल का राजा अहज्याह

[51]अहज्याह अहाब का पुत्र था। वह राजा यहोशापात के यहूदा पर राज्यकाल के सत्रहवें वर्ष में राजा बना। अहज्याह ने शोमरोन में दो वर्ष तक राज्य किया। [52]अहज्याह ने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। उसने वे ही पाप किये जो उसके पिता अहाब उसकी माँ ईज़ेबेल और नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे। ये सभी शासक इस्राएल के लोगों को और अधिक पाप की ओर ले गए। [53]अहज्याह ने अपने से पूर्व अपने पिता के समान असत्य देवता बाल की पूजा और सेवा की। अत: अहज्याह ने यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर को बहुत अधिक क्रोधित किया। यहोवा अहज्याह पर वैसा ही क्रोधित हुआ जैसा उसके पहले वह उसके पिता पर क्रोधित हुआ था।

2 राजा

अहज्याह के लिये सन्देश

1 अहाब के मरने के बाद मोआब इस्राएल के शासन से स्वतन्त्र हो गया।

[2]एक दिन अहज्याह शोमरोन में अपने घर की छत पर था। अहज्याह अपने घर की छत के लकड़ी के छज्जे से गिर गया। वह बुरी तरह घायल हो गया। अहज्याह ने सन्देशवाहकों को बुलाया और उनसे कहा, “एक्रोन के देवता बालजबूब के याजकों के पास जाओ। उनसे पूछो कि क्या मैं अपनी चोटों से स्वस्थ हो सकूँगा।”

[3]किन्तु यहोवा के दूत ने तिशबी एलिय्याह से कहा, “राजा अहज्याह ने शोमरोन से कुछ सन्देशवाहक भेजे हैं। जाओ और इन लोगों से मिलो। उनसे यह कहो, ‘इस्राएल में परमेश्वर है! तो भी तुम लोग एक्रोन के देवता बालजबूब से प्रश्न करने क्यों जा रहे हो? [4]राजा अहज्याह से ये बातें कहो: तुमने बालजबूब से प्रश्न करने के लिये सन्देशवाहक भेजे। क्योंकि तुमने यह किया, इस कारण यहोवा कहता है: तुम अपने बिस्तर से उठ नहीं पाओगे। तुम मरोगे!’” तब एलिय्याह चल पड़ा और उसने अहज्याह के सेवकों से यही शब्द कहे।

[5]सन्देशवाहक अहज्याह के पास लौट आए। अहज्याह ने सन्देशवाहकों से पूछा, “तुम लोग इतने शीघ्र क्यों लौटे?”

[6]सन्देशवाहकों ने अहज्याह से कहा, “एक व्यक्ति हमसे मिलने आया। उसने हम लोगों से उस राजा के पास वापस जाने को कहा जिसने हमें भेजा था और उससे यहोवा ने जो कहा, वह कहने को कहा, ‘इस्राएल में एक परमेश्वर है! तो तुमने एक्रोन के देवता बालजबूब से प्रश्न करने के लिये सन्देशवाहकों को क्यों भेजा। क्योंकि तुमने यह किया है इस कारण तुम अपने बिस्तर से नहीं उठोगे। तुम मरोगे!’”

[7]अहज्याह ने सन्देशवाहकों से पूछा, “जो व्यक्ति तुमसे मिला और जिसने तुमसे ऐसा कहा वह कैसा दिखाई पड़ता था?”

[8]सन्देशवाहकों ने अहज्याह से कहा, “वह व्यक्ति एक रोयेंदार अंगरखा पहने था और अपनी कमर में एक चमड़े की पेटी बांधे था।”

तब अहज्याह ने कहा, “यह तिशबी एलिय्याह है!”

अहज्याह द्वारा भेजे गए सेनापतियों को आग नष्ट करती है

[9]अहज्याह ने एक सेनापति और पचास पुरुषों को एलिय्याह के पास भेजा। सेनापति एलिय्याह के पास गया। उस समय एलिय्याह एक पहाड़ी की चोटी पर बैठा था। सेनापति ने एलिय्याह से कहा, “परमेश्वर के जन राजा का आदेश है, ‘नीचे आओ।’”

[10]एलिय्याह ने पचास सैनिकों के सेनापति को उत्तर दिया, “यदि मैं परमेश्वर का जन हूँ तो स्वर्ग से आग गिर पड़े और तुमको एवं पचास सैनिकों को नष्ट कर दे!”

अत: स्वर्ग से आग गिर पड़ी और उसने सेनापति एवं उसके पचास व्यक्तियों को नष्ट कर दिया।

[11]अहज्याह ने अन्य सेनापति और पचास सैनिकों को भेजा। सेनापति ने एलिय्याह से कहा, “परमेश्वर के जन, राजा का आदेश है ‘शीघ्र नीचे आओ!’”

[12]एलिय्याह ने सेनापति और उसके पचास सैनिकों से कहा, “यदि मैं परमेश्वर का जन हूँ तो स्वर्ग से आग गिर पड़े और वह तुमको और तुम्हारे पचास सैनिकों को नष्ट कर दे!” परमेश्वर की आग स्वर्ग से गिर पड़ी और सेनापति एवं पचास सैनिकों को नष्ट कर दिया।

[13]अहज्याह ने तीसरे सेनापति को पचास सैनिकों के साथ भेजा। पचास सैनिकों का सेनापति एलिय्याह के पास आया। सेनापति ने अपने घुटनों के बल झुककर उसको प्रणाम किया। सेनापति ने उससे यह कहते हुए प्रार्थना की, “परमेश्वर के जन मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, कृपया मेरे जीवन और अपने इन पचास सेवकों के

जीवन को अपनी दृष्टि में मूल्यवान मानें! [14]स्वर्ग से आग गिर पड़ी और प्रथम दो सेनापतियों और उनके पचास सैनिकों को उसने नष्ट कर दिया। किन्तु अब कृपा करें और हमें जीवित रहने दें!"

[15]यहोवा के दूत ने एलिय्याह से कहा, "सेनापति के साथ जाओ। उससे डरो नहीं।"

अत: एलिय्याह सेनापति के साथ राजा अहज्याह को देखने गया।

[16]एलिय्याह ने अहज्याह से कहा, "इस्राएल में परमेश्वर है ही, तो भी तुमने सन्देशवाहकों को एक्रोन के देवता बालजबूब से प्रश्न करने के लिये क्यों भेजा? क्योंकि तुमने यह किया है, इस कारण तुम अपने बिस्तर से नहीं उठोगे। तुम मरोगे!"

यहोराम, अहज्याह का स्थान लेता है

[17]अहज्याह वैसे ही मरा जैसा यहोवा ने एलिय्याह के द्वारा कहा था। अहज्याह का कोई पुत्र नहीं था। अत: अहज्याह के बाद यहोराम नया राजा हुआ। यहोराम ने यहूदा के राजा यहोशापात के पुत्र यहोराम के राज्यकाल के दूसरे वर्ष शासन करना आरम्भ किया।

[18]अहज्याह ने जो अन्य कार्य किये वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गये हैं।

एलिय्याह को अपने पास लेने की यहोवा की योजना

2 यह लगभग वह समय था जब यहोवा ने एक तूफान के द्वारा एलिय्याह को स्वर्ग में बुला लिया। एलिय्याह एलीशा के साथ गिलगाल गया।

[2]एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "कृपया यहीं रुको, क्योंकि यहोवा ने मुझे बेतेल जाने को कहा है।"

किन्तु एलीशा ने कहा, "जैसा कि यहोवा की सत्ता शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसको साक्षी कर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपका साथ नहीं छोड़ूँगा।" इसलिये दोनों लोग बेतेल तक गये।

[3]बेतेल के नबियों का समूह* एलीशा के पास आया और उसने एलीशा से कहा, "क्या तुम जानते हो कि आज तुम्हारे स्वामी को यहोवा तुमसे अलग करके ले जाएगा?"

एलीशा ने कहा, "हाँ, मैं यह जानता हूँ। इस विषय में बातें न करो।"

[4]एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "कृपया यहीं ठहरो क्योंकि यहोवा ने मुझे यरीहो जाने को कहा है।"

किन्तु एलीशा ने कहा, "जैसा कि यहोवा की सत्ता शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसको साक्षी करके मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपका साथ नहीं छोड़ूँगा!" इसलिये दोनों लोग यरीहो गए।

[5]यरीहो के नबियों का समूह एलीशा के पास आया और उन्होंने उससे कहा, "क्या तुमको मालूम है कि यहोवा आज तुम्हारे स्वामी को तुमसे दूर ले जाएगा।"

एलीशा ने कहा, "हाँ, मैं इसे जानता हूँ। इस विषय में बातें न करो।"

[6]एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "कृपया यहीं ठहरो क्योंकि यहोवा ने मुझे यरदन नदी तक जाने को कहा है।"

एलीशा ने उत्तर दिया, "जैसा कि यहोवा की सत्ता शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसको साक्षी करके प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपका साथ नहीं छोड़ूँगा!" अत: दोनों व्यक्ति चलते चले गए।

[7]नबियों के समूह में से पचास व्यक्तियों ने उनका अनुसरण किया। एलिय्याह और एलीशा यरदन नदी पर रुक गए। पचास व्यक्ति एलिय्याह और एलीशा से बहुत दूर खड़े रहे। [8]एलिय्याह ने अपना अंगरखा उतारा, उसे तह किया और उससे पानी पर चोट की। पानी दायीं और बांयी ओर को फट गया। एलिय्याह और एलीशा ने सूखी भूमि पर चलकर नदी को पार किया।

[9]जब उन्होंने नदी को पार कर लिया तब एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "इससे पहले कि परमेश्वर मुझे तुमसे दूर ले जाए, तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ।"

एलीशा ने कहा, "मैं आपके आत्मा का दुगना अपने ऊपर चाहता हूँ।"

[10]एलिय्याह ने कहा, "तुमने कठिन चीज माँगी है। यदि तुम मुझे उस समय देखोगे जब मुझे ले जाया जाएगा तो वही होगा। किन्तु यदि तुम मुझे नहीं देख पाओगे तो वह नहीं होगा।"

परमेश्वर एलिय्याह को स्वर्ग में ले जाता है

[11]एलिय्याह और एलीशा एक साथ बातें करते हुए टहल रहे थे। अचानक कुछ घोड़े और एक रथ आया

नबियों का समूह "नबियों के पुत्र" ये लोग नबी और नबी बनने के लिये अध्ययन में लगे थे।

और उन्होंने एलिय्याह को एलीशा से अलग कर दिया। घोड़े और रथ आग के समान थे। तब एलिय्याह एक बवंडर में स्वर्ग को चला गया।

[12]एलीशा ने इसे देखा और जोर से पुकारा, "मेरे पिता! मेरे पिता! इस्राएल के रथ और उसके अश्वारोही सैनिक!*

एलीशा ने एलिय्याह को फिर कभी नहीं देखा। एलीशा ने अपने वस्त्रों को मुट्ठी में भरा, और अपना शोक प्रकट करने के लिये, उन्हें फाड़ डाला। [13]एलिय्याह का अंगरखा भूमि पर गिर पड़ा था अत: एलीशा ने उसे उठा लिया। एलीशा ने पानी पर चोट की और कहा, "एलिय्याह का परमेश्वर यहोवा, कहाँ है?"

[14]जैसे ही एलीशा ने पानी पर चोट की, पानी दांयी और बांयी ओर को फट गया और एलीशा ने नदी पार की।

नबी एलिय्याह की माँग करते हैं

[15]जब यरीहो के नबियों के समूह ने एलीशा को देखा, उन्होंने कहा, "एलिय्याह की आत्मा अब एलीशा पर है।" वे एलीशा से मिलने आए। वे एलीशा के सामने नीचे भूमि तक प्रणाम करने झुके। [16]उन्होंने उससे कहा, "देखो, हम अच्छे खासे पचास व्यक्ति हैं। कृपया इनको जाने दो और अपने स्वामी की खोज करने दो। सम्भव है यहोवा की शक्ति ने एलिय्याह को ऊपर ले लिया हो और उसे किसी पर्वत या घाटी में गिरा दिया हो!"

किन्तु एलीशा ने उत्तर दिया, "नहीं, एलिय्याह की खोज के लिये आदमियों को मत भेजो।"

[17]नबियों के समूह ने एलीशा से इतनी अधिक प्रार्थना की, कि वह उलझन में पड़ गया। तब एलीशा ने कहा, "ठीक है, एलिय्याह की खोज में आदमियों को भेज दो।"

नबियों के समूह ने पचास आदमियों को एलिय्याह की खोज के लिये भेजा। उन्होंने तीन दिन तक खोज की किन्तु वे एलिय्याह को न पा सके। [18]अत: वे लोग यरीहो गए जहाँ एलीशा ठहरा था। उन्होंने उससे कहा कि वे एलिय्याह को नहीं पा सके। एलीशा ने उनसे कहा, "मैंने तुम्हें जाने को मना किया था।"

एलीशा पानी को शुद्ध करता है

[19]नगर के निवासियों ने एलीशा से कहा, "महोदय, आप अनुभव कर सकते हैं कि यह नगर सुन्दर स्थान में हैं। किन्तु यहाँ पानी बुरा है। यही कारण है कि भूमि में फसल की उपज नहीं होती।"

[20]एलीशा ने कहा, "मेरे पास एक नया कटोरा लाओ और उसमें नमक रखो।"

लोग कटोरे को एलीशा के पास ले आए। [21]तब एलीशा उस स्थान पर गया जहाँ पानी भूमि से निकल रहा था। एलीशा ने नमक को पानी में फेंक दिया। उसने कहा, "यहोवा कहता है, 'मैं इस पानी को शुद्ध करता हूँ। अब, मैं इस पानी से किसी को मरने न दूँगा, और न ही भूमि को अच्छी फसल देने से रोकूँगा।'"

[22]पानी शुद्ध हो गया और पानी अब तक भी शुद्ध है। यह वैसा ही हुआ जैसा एलीशा ने कहा था।

कुछ लड़के एलीशा का मजाक उड़ाते हैं

[23]उस नगर से एलीशा बेतेल गया। एलीशा नगर की ओर पहाड़ी पर चल रहा था जब कुछ लड़के नगर से नीचे आ रहे थे। वह एलीशा का मजाक उड़ाने लगे और उन्होंने कहा, "हे गन्जे, तू ऊपर चढ़ जा! हे गन्जे तू ऊपर चढ़ जा!"

[24]एलीशा ने मुड़ कर उन्हें देखा। उसने यहोवा से बिनती की कि उन के साथ बुरा हो। उसी समय जंगल से दो रीछों ने आ कर उन लड़कों पर हमला किया, वहाँ बयालीस लड़के रीछों द्वारा फाड़ दिये गये।

[25]वहाँ से एलीशा बेतेल होता हुआ कर्म्मेल पर्वत पर गया, उस के बाद वह शोमरोन पहुँचा।

यहोराम इस्राएल का राजा बना

3 अहाब का पुत्र यहोराम इस्राएल में शोमरोन का राजा बना। यहोशापात के अट्ठारहवें वर्ष में यहोराम ने राज्य करना आरम्भ किया। यहोराम बारह वर्ष तक यहूदा का राजा रहा। [2]यहोराम ने वह सब किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है। परन्तु यहोराम अपने माता पिता की तरह न था क्योंकि उस ने उस स्तम्भ को दूर कर दिया जो उसके पिता ने बाल की पूजा के लिये बनवाई थी। [3]परन्तु वह नबात के पुत्र यारोबाम के ऐसे

इस्राएल के ... सैनिक इसका अर्थ संभवत: "परमेश्वर और उसकी स्वर्गीय सेना (स्वर्गदूत) हैं।"

पापों को, जैसे उस ने इस्राएल से भी कराये, करता रहा और उन से न फिरा।

मोआब इस्राएल से अलग होता है

[4]मेशा मोआब का राजा था। उसके पास बहुत बकरियाँ थी। मेशा ने एक लाख मेमनें और एक लाख भेढ़ों का ऊन इस्राएल के राजा को भेंट किया। [5]किन्तु जब अहाब मरा तब मोआब इस्राएल के राजा के शासन से स्वतन्त्र हो गया।

[6]तब राजा यहोराम शोमरोन के बाहर निकला और उसने इस्राएल के सभी पुरुषों को इकट्ठा किया। [7]यहोराम ने यहूदा के राजा यहोशापात के पास सन्देशवाहक भेजे। यहोराम ने कहा, "मोआब का राजा मेरे शासन से स्वतन्त्र हो गया है। क्या तुम मोआब के विरुद्ध युद्ध करने मेरे साथ चलोगे?"

यहोशापात ने कहा, "हाँ, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। हम दोनों एक सेना की तरह मिल जायेंगे। मेरे लोग तुम्हारे लोगों जैसे होंगे। मेरे घोड़े तुम्हारे घोड़ों जैसे होंगे।"

एलीशा से तीन राजा सलाह माँगते हैं

[8]यहोशापात ने यहोराम से पूछा, "हमें किस रास्ते से चलना चाहिए?"

यहोराम ने उत्तर दिया, "हमें एदोम की मरुभूमि से होकर जाना चाहिए।"

[9]इसलिये इस्राएल का राजा यहूदा और एदोम के राजाओं के साथ गया। वे लगभग सात दिन तक चारों ओर घूमते रहे। सेना व उनके पशुओं के लिये पर्याप्त पानी नहीं था। [10]अन्त में इस्राएल के राजा (यहोराम) ने कहा, "ओह, यहोवा ने सत्य ही हम तीनों राजाओं को एक साथ इसलिये बुलाया कि मोआबी हम लोगों को पराजित करें!"

[11]किन्तु यहोशापात ने कहा, "निश्चय ही यहोवा के नबियों में से एक यहाँ है। हम लोग नबी से पूछे कि यहोवा हमें क्या करने के लिये कहता है।"

इस्राएल के राजा के सेवकों में से एक ने कहा, "शापात का पुत्र एलीशा यहाँ है। एलीशा, एलिय्याह का सेवक* था।"

[12]यहोशापात ने कहा, "यहोवा की वाणी एलीशा के पास है।"

अत: इस्राएल का राजा (यहोराम), यहोशापात और एदोम के राजा एलीशा से मिलने गए।

[13]एलीशा ने इस्राएल के राजा (यहोराम) से कहा, "तुम मुझ से क्या चाहते हो? अपने पिता और अपनी माता के नबियों के पास जाओ।"

इस्राएल के राजा ने एलीशा से कहा, "नहीं, हम लोग तुमसे मिलने आए हैं, क्योंकि यहोवा ने हम तीन राजाओं को इसलिये एक साथ यहाँ बुलाया है कि मोआबी हम लोगों को हराए। हम तुम्हारी सहायता चाहते हैं।"

[14]एलीशा ने कहा, "मैं यहूदा के राजा यहोशापात का सम्मान करता हूँ और मैं सर्वशक्तिमान यहोवा की सेवा करता हूँ। उसकी सत्ता निश्चय ही शाश्वत है, मैं यहाँ केवल राजा यहोशापात के कारण आया हूँ। अत: मै सत्य कहता हूँ: मैं न तो तुम पर दृष्टि डालता और न तुम्हारी परवाह करता, यदि यहूदा का राजा यहोशापात यहाँ न होता।" [15]किन्तु अब एक ऐसे व्यक्ति को मेरे पास लाओ जो वीणा बजाता हो।"

जब उस व्यक्ति ने वीणा बजाई तो यहोवा की शक्ति* एलीशा पर उतरी। [16]तब एलीशा ने कहा, "यहोवा यह कहता है: घाटी में गड्ढे खोदो। [17] यहोवा यही कहता है: तुम हवा का अनुभव नहीं करोगे, तुम वर्षा भी नहीं देखोगे। किन्तु वह घाटी जल से भर जायेगी। तुम, तुम्हारी गायें तथा अन्य जानवरों को पानी पीने को मिलेगा। [18]यहोवा के लिये यह करना सरल है। वह तुम्हें मोआबियों को भी पराजित करने देगा। [19]तुम हर एक सुदृढ़ नगर और हर एक अच्छे नगर पर आक्रमण करोगे। तुम हर एक अच्छे पेड़ को काट डालोगे। तुम सभी पानी के सोतों को रोक दोगे। तुम हरे खेत, उन पत्थरों से नष्ट करोगे जिन्हें तुम उन पर फेंकोगे।"

[20]सवेरे प्रात:कालीन बलि के समय, एदोम से सड़क पर होकर पानी बहने लगा और घाटी भर गई।

[21]मोआब के लोगों ने सुना कि राजा लोग उनके विरुद्ध लड़ने आए हैं। इसलिये मोआब के लोगों ने कवच धारण करने के उम्र के सभी पुरुषों को इकट्ठा किया। उन लोगों ने युद्ध के लिये तैयार होकर सीमा पर प्रतीक्षा की। [22]मोआब के लोग भी बहुत सवेरे उठे। उगता हुआ सूरज घाटी में जल पर चमक रहा था और मोआब के लोगों को वह खून की तरह दिखायी दे रहा था। [23]मोआब

एलिय्याह का सेवक शाब्दिक, "एलीशा, एलिय्याह का हाथ धुलाता था।"

शक्ति शाब्दिक, "हाथ।"

के लोगों ने कहा, "खून को ध्यान से देखो! राजाओं ने अवश्य ही एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध किया होगा। उन्होंने एक दूसरे को अवश्य नष्ट कर दिया होगा। हम चलें और उनके शवों से कीमती चीज़ें ले लें।"

[24]मोआबी लोग इस्राएली डेरे तक आए। किन्तु इस्राएली बाहर निकले और उन्होंने मोआबी सेना पर आक्रमण कर दिया। मोआबी लोग इस्राएलियों के सामने से भाग खड़े हुए। इस्राएली मोआबियों से युद्ध करने उनके प्रदेश में घुस आए। [25]इस्राएलियों ने नगरों को पराजित किया। उन्होंने मोआब के हर एक अच्छे खेत में अपने पत्थर फेंके।* उन्होंने सभी पानी के सोतों को रोक दिया और उन्होंने सभी अच्छे पेड़ों को काट डाला। इस्राएली लगातार कीर्हरेशेत तक लड़ते गए। सैनिकों ने कीर्हरेशेत का भी घेरा डाला और उस पर भी आक्रमण किया!

[26]मोआब के राजा ने देखा कि युद्ध उसके लिये अत्याधिक प्रबल है। इसलिये उसने तलवारधारी सात सौ पुरुषों को एदोम के राजा का वध करने के लिये सीधे सेना भेद के लिये भेज दिया। किन्तु वे एदोम के राजा तक सेना भेद नहीं कर पाए। [27]तब मोआब के राजा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को लिया जो उसके बाद राजा होता। नगर के चारों ओर की दीवार पर मोआब के राजा ने अपने पुत्र की भेंट होमबलि के रूप में दी। इससे इस्राएल के लोग बहुत घबराये। इसलिये इस्राएल के लोगों ने मोआब के राजा को छोड़ा और अपने देश को लौट गए।

एक नबी की विधवा एलीशा से सहायता माँगती है

4 नबियों के समूह में से एक व्यक्ति की पत्नी थी। यह व्यक्ति मर गया। उसकी पत्नी ने एलीशा के सामने अपना दुखड़ा रोया, "मेरा पति तुम्हारे सेवक के समान था। अब मेरा पति मर गया है। तुम जानते हो कि वह यहोवा का सम्मान करता था। किन्तु उस पर एक व्यक्ति का कर्ज था और अब वह व्यक्ति मेरे दो लड़कों को अपना दास बनाने के लिये लेने आ रहा है।"

[2]एलीशा ने पूछा, "मैं तुम्हारी सहायता कैसे कर सकता हूँ? मुझे बताओ कि तुम्हारे घर में क्या है?"

उस स्त्री ने कहा, "मेरे घर में कुछ नहीं। मेरे पास केवल जैतून के तेल का एक घड़ा है।"

[3]तब एलीशा ने कहा, "जाओ और अपने सब पड़ोसियों से कटोरे उधार लो। वे खाली होने चाहिये। बहुत से कटोरे उधार लो। तब अपने घर जाओ और दरवाजे बन्द कर लो। केवल तुम और तुम्हारे पुत्र घर में रहेंगे। तब इन सब कटोरों में तेल डालो और उन कटोरों को भरो और एक अलग स्थान पर रखो।"

[5]अत: वह स्त्री एलीशा के यहाँ से चली गई, अपने घर पहुँची और दरवाजे बन्द कर लिए। केवल वह और उसके पुत्र घर में थे। उसके पुत्र कटोरे उसके पास लाए और उसने तेल डाला। [6]उसने बहुत से कटोरे भरे। अन्त में उसने अपने पुत्र से कहा, "मेरे पास दूसरा कटोरा लाओ।"

किन्तु सभी प्याले भर चुके थे। पुत्रों में से एक ने उस स्त्री से कहा, "अब कोई कटोरा नहीं रह गया है।" उस समय घड़े का तेल खत्म हो चुका था।

[7]तब वह स्त्री आई और उसने परमेश्वर के जन (एलीशा) से यह घटना बताई! एलीशा ने उससे कहा, "जाओ, तेल को बेच दो और अपना कर्ज लौटा दो। जब तुम तेल को बेच चुकोगी और अपना कर्ज लौटा चुकोगी तब तुम्हारा और तुम्हारे पुत्रों का गुजारा बची रकम से होगा।"

शूनेम में एक स्त्री एलीशा को कमरा देती है

[8]एक दिन एलीशा शूनेम को गया। शूनेम में एक महत्वपूर्ण स्त्री रहती थी। इस स्त्री ने एलीशा से कहा कि वह ठहरे और उसके घर भोजन करे। इसलिये जब भी एलीशा उस स्थान से होकर जाता था तब भोजन करने के लिये वहाँ रूकता था।

[9]उस स्त्री ने अपने पति से कहा, "देखो मैं समझती हूँ कि एलीशा परमेश्वर का जन है। वह सदा हमारे घर होकर जाता है। [10]कृपया हम लोग एक कमरा एलीशा के लिये छत पर बनाएं। इस कमरे में हम एक बिछौना लगा दें। उसमें हम लोग एक मेज, एक कुर्सी और एक दीपाधार रख दें। तब जब वह हमारे यहाँ आए तो वह इस कमरे को अपने रहने के लिये रख सकता है।"

[11]एक दिन एलीशा उस स्त्री के घर आया। वह उस कमरे में गया और वहाँ आराम किया। [12]एलीशा ने अपने सेवक गेहजी से कहा, "शूनेमिन स्त्री को बुलाओ।"

अपने पत्थर फेंके संभवत: ये वे पत्थर थे जिन्हें युद्ध में सैनिक अपनी गुलेलों से फेकतें थे।

सेवक ने शूनेमिन स्त्री को बुलाया और वह उसके सामने आ खड़ी हुई। [13]एलीशा ने अपने सेवक से कहा–अब इस स्त्री से कहो, "देखो हम लोगों की देखभाल के लिये तुमने यथासम्भव अच्छा किया है। हम लोग तुम्हारे लिये क्या करें? क्या तुम चाहती हो कि हम लोग तुम्हारे लिये राजा या सेना के सेनापति से बात करें?"

उस स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं यहाँ बहुत अच्छी तरह अपने लोगों में रह रही हूँ।"

[14]एलीशा ने गेहजी से कहा, "हम उसके लिए क्या कर सकते हैं?"

गेहजी ने कहा, "मैं जानता हूँ कि उसका पुत्र नहीं है और उसका पति बूढ़ा है।"

[15]तब एलीशा ने कहा, "उसे बुलाओ।"

अत: गेहजी ने उस स्त्री को बुलाया। वह आई और उसके दरवाजे के पास खड़ी हो गई। [16]एलीशा ने स्त्री से कहा, "अगले बसन्त में इस समय तुम अपने पुत्र को गले से लगा रही होगी।"

उस स्त्री ने कहा, "नहीं महोदय! परमेश्वर के जन, मुझसे झूठ न बोलो।"

शूनेम की स्त्री को पुत्र होता है

[17]किन्तु वह स्त्री गर्भवती हुई। उसने अगले बसन्त में एक पुत्र को जन्म दिया, जैसा एलीशा ने कहा था। [18]लड़का बड़ा हुआ। एक दिन वह लड़का खेतों में अपने पिता और फसल काटते हुए पुरुषों को देखने गया। [19]लड़के ने अपने पिता से कहा, "ओह, मेरा सिर! मेरा सिर फटा जा रहा है!"

पिता ने अपने सेवक से कहा, "इसे इसकी माँ के पास ले जाओ!"

[20]सेवक उस लड़के को उसकी माँ के पास ले गया। लड़का दोपहर तक अपनी माँ की गोद में बैठा। तब वह मर गया।

माँ एलीशा से मिलने जाती है

[21]उस स्त्री ने लड़के को परमेश्वर के जन (एलीशा) के बिछौने पर लिटा दिया। तब उसने दरवाजा बन्द किया और बाहर चली गई। [22]उसने अपने पति को बुलाया और कहा, "कृपया मेरे पास सेवकों में से एक तथा गधों में से एक को भेजें। तब मैं परमेश्वर के जन (एलीशा) से मिलने शीघ्रता से जाऊँगी और लौट आऊँगी।"

[23]उस स्त्री के पति ने कहा, "तुम आज परमेश्वर के जन (एलीशा) के पास क्यों जाना चाहती हो? यह नवचन्द्र* या सब्त का दिन नहीं है।"

उसने कहा, "परेशान मत होओ। सब कुछ ठीक होगा।"

[24]तब उसने एक गधे पर काठी रखी और अपने सेवक से कहा, "आओ चलें और शीघ्रता करें। धीरे तभी चलो जब मैं कहूँ।"

[25]वह स्त्री परमेश्वर के जन (एलीशा) से मिलने कर्म्मेल पर्वत पर गई।

परमेश्वर के जन (एलीशा) ने शूनेमिन स्त्री को दूर से आते देखा। एलीशा ने अपने सेवक गेहजी से कहा, "देखो, वह शूनेमिन स्त्री है! [26]कृपया अब दौड़ कर उससे मिलो। उससे पूछो, 'क्या बुरा घटित हुआ है? क्या तुम कुशल से हो? क्या तुम्हारा पति कुशल से है? क्या बच्चा ठीक है?'"

गेहजी ने उस शूनेमिन स्त्री से यही पूछा। उसने उत्तर दिया, "सब कुशल है।"

[27]किन्तु शूनेमिन स्त्री पर्वत पर चढ़कर परमेश्वर के जन (एलीशा) के पास पहुँची। वह प्रणाम करने झुकी और उसने एलीशा के पाँव पकड़ लिए। गेहजी शूनेमिन स्त्री को दूर खींच लेने के लिए निकट आया। किन्तु परमेश्वर के जन (एलीशा) ने गेहजी से कहा, "उसे अकेला छोड़ दो! वह बहुत परेशान है और यहोवा ने इसके बारे में मुझसे नहीं कहा। यहोवा ने यह खबर मुझसे छिपाई।"

[28]तब शूनेमिन स्त्री ने कहा, "महोदय, मैंने आपसे पुत्र नहीं माँगा था। मैंने आपसे कहा था, 'आप मुझे मूर्ख न बनाएं!'"

[29]तब एलीशा ने गेहजी से कहा, "जाने के लिये तैयार हो जाओ। मेरी टहलने की छड़ी ले लो और जाओ। किसी से बात करने के लिए न रुको। यदि तुम किसी व्यक्ति से मिलो तो उसे नमस्कार भी न कहो। यदि कोई व्यक्ति नमस्कार करे तो तुम उसका उत्तर भी न दो। मेरी टहलने की छड़ी को बच्चे के चेहरे पर रखो।"

नवचन्द्र हिब्रू महीने का यह प्रथम दिन था। परमेश्वर की उपासना के लिये इस दिन विशेष बैठकें होती थीं।

[30]किन्तु बच्चे की माँ ने कहा, "जैसा कि यहोवा शाश्वत है और आप जीवित हैं मैं इसको साक्षी कर प्रतिज्ञा करती हूँ कि मैं आपके बिना यहाँ से नहीं जाऊँगी।"

अत: एलीशा उठा और शूनेमिन स्त्री के साथ चल पड़ा।

[31]गेहजी शूनेमिन स्त्री के घर, एलीशा और शूनेमिन से पहले पहुँचा। गेहजी ने टहलने की छड़ी को बच्चे के चेहरे पर रखा। किन्तु बच्चे ने न कोई बात की और न ही कोई ऐसा संकेत दिया जिससे यह लगे कि उसने कुछ सुना है। तब गेहजी एलीशा से मिलने लौटा। गेहजी ने एलीशा से कहा, "बच्चा नहीं जागा!"

शूनेमिन स्त्री का पुत्र पुनःजीवित होता है

[32]एलीशा घर मे आया और बच्चा अपने बिछौने पर मरा पड़ा था। [33]एलीशा कमरे में आया और उसने दरवाजा बन्द कर लिया। अब एलीशा और वह बच्चा कमरे में अकेले थे। तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की। [34]एलीशा बिछौने पर गया और बच्चे पर लेटा। एलीशा ने अपना मुख बच्चे के मुख पर रखा। एलीशा ने अपनी आँखे बच्चे की आँखों पर रखी। एलीशा ने अपने हाथों को बच्चे के हाथों पर रखा। एलीशा ने अपने को बच्चे के ऊपर फैलाया। तब बच्चे का शरीर गर्म हो गया।

[35]एलीशा कमरे के बाहर आया और घर में चारों ओर घूमा। तब वह कमरे में लौटा और बच्चे के ऊपर लेट गया। तब बच्चा सात बार छींका और उसने आँखें खोलीं।

[36]एलीशा ने गेहजी को बुलाया और कहा, "शूनेमिन स्त्री को बुलाओ!"

गेहजी ने शूनेमिन स्त्री को बुलाया और वह एलीशा के पास आई। एलीशा ने कहा, "अपने पुत्र को उठा लो।"

[37]तब शूनेमिन स्त्री कमरे में गई और एलीशा के चरणों पर झुकी। तब उसने अपने पुत्र को उठाया और वह बाहर गई।

एलीशा और जहरीला शोरवा

[38]एलीशा फिर गिलगाल आ गया। उस समय देश में भुखमरी का समय था। नबियों का समूह एलीशा के सामने बैठा था। एलीशा ने अपने सेवक से कहा, "बड़े बर्तन को आग पर रखो और नबियों के समूह के लिए कुछ शोरवा बनाओ।

[39]एक व्यक्ति खेतों में साग सब्जी इकट्ठा करने गया। उसे एक जंगली बेल मिली। उसने कुछ जंगली लौकियाँ इस बेल से तोड़ी और उनसे अपने लबादे की जेब को भर लिया। तब वह आया और उसने जंगली लौकियों को बर्तन में डाल दिया। किन्तु नबियों का समूह नहीं जानता था कि वे कैसी लौकियाँ हैं?

[40]तब उन्होंने कुछ शोरवा व्यक्तियों को खाने के लिये दिया। किन्तु जब उन्होंने शोरवे को खाना आरम्भ किया, तो उन्होंने एलीशा से चिल्लाकर कहा, "परमेश्वर के जन (नबी)! बर्तन में जहर है!" वे उस बर्तन से कुछ नहीं खा सके क्योंकि भोजन खाना खतरे से रहित नहीं था।

[41]किन्तु एलीशा ने कहा, "कुछ आटा लाओ।" वे एलीशा के पास आटा ले आए और उसने उसे बर्तन में डाल दिया। तब एलीशा ने कहा, "शोरवे को लोगों के लिये डालो जिससे वे खा सकें।"

तब शोरवे में कोई दोष नहीं था!

एलीशा नबियों के समूह को भोजन कराता है

[42]एक व्यक्ति बालशालीशा से आया और पहली फसल से परमेश्वर के जन (एलीशा) के लिये रोटी लाया। यह व्यक्ति बीस जौ की रोटियाँ और नया अन्न अपनी बोरी में लाया। तब एलीशा ने कहा, "यह भोजन लोगों को दो, जिसे वे खा सकें।"

[43]एलीशा के सेवक ने कहा, "आपने क्या कहा? यहाँ तो सौ व्यक्ति हैं। उन सभी व्यक्तियों को यह भोजन मैं कैसे दे सकता हूँ?"

किन्तु एलीशा ने कहा, "लोगों को खाने के लिए भोजन दो। यहोवा कहता है, 'वे भोजन कर लेंगे और भोजन बच भी जायेगा।'"

[44]तब एलीशा के सेवक ने नबियों के समूह के सामने भोजन परोसा। नबियों के समूह के खाने के लिये भोजन पर्याप्त हुआ और उनके पास भोजन बचा भी रहा। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

नामान की समस्या

5 नामान अराम के राजा की सेना का सेनापति था। नामान अपने राजा के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण था। नामान इसलिये अत्याधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि यहोवा ने उसका उपयोग अराम को विजय दिलाने के

लिए किया था। नामान एक महान और शक्तिशाली व्यक्ति था, किन्तु वह विकट चर्मरोग से पीड़ित था।

[2]अरामी सेना ने कई सेना की टुकड़ियों को इस्राएल में लड़ने भेजा। सैनिकों ने बहुत से लोगों को अपना दास बना लिया। एक बार उन्होंने एक छोटी लड़की को इस्राएल देश से लिया। यह छोटी लड़की नामान की पत्नी की सेविका हो गई। [3]इस लड़की ने नामान की पत्नी से कहा, "मैं चाहती हूँ कि मेरे स्वामी (नामान) उस नबी (एलीशा) से मिलें जो शोमरोन में रहता है। वह नबी नामान के विकट चर्मरोग को ठीक कर सकता है।"

[4]नामान अपने स्वामी (अराम के राजा) के पास गया। नामान ने अराम के राजा को वह बात बताई जो इस्राएली लड़की ने कही थी।

[5]तब अराम के राजा ने कहा, "अभी जाओ और मैं एक पत्र इस्राएल के राजा के नाम भेजूँगा।"

अत: नामान इस्राएल गया। नामान अपने साथ कुछ भेंट ले गया। नामान साढ़े सात सौ पौंड चाँदी, छ: हजार स्वर्ण मुद्राएं, और दस बार बदलने के वस्त्र ले गया। [6]नामान इस्राएल के राजा के लिये अराम के राजा का पत्र भी ले गया। पत्र में यह लिखा था... "यह पत्र यह जानकारी देने के लिये है कि मैं अपने सेवक नामान को तुम्हारे यहाँ भेज रहा हूँ। उसके विकट चर्मरोग को ठीक करो।"

[7]जब इस्राएल का राजा उस पत्र को पढ़ चुका तो उसने अपनी चिन्ता और परेशानी को प्रकट करने के लिये अपने वस्त्र फाड़ डाले। इस्राएल के राजा ने कहा, "क्या मैं परमेश्वर हूँ? नहीं! जीवन और मृत्यु पर मेरा कोई अधिकार नहीं। तब अराम के राजा ने मेरे पास विकट चर्मरोग के रोगी को स्वस्थ करने के लिये क्यों भेजा? इसे जरा सोचों और तुम देखोगे कि यह एक चाल है। अराम का राजा युद्ध आरम्भ करना चाहता है।"

[8]परमेश्वर के जन (एलीशा) ने सुना कि इस्राएल का राजा परेशान है और उसने अपने वस्त्र फाड़ डाले हैं। एलीशा ने अपना सन्देश राजा के पास भेजा: "तुमने अपने वस्त्र क्यों फाड़े? नामान को मेरे पास आने दो। तब वह समझेगा कि इस्राएल में कोई नबी भी है।"

[9]अत: नामान अपने घोड़ों और रथों के साथ एलीशा के घर आया और द्वार के बाहर खड़ा रहा। [10]एलीशा ने एक सन्देशवाहक को नामान के पास भेजा। सन्देशवाहक ने कहा, "जाओ, और यरदन नदी में सात बार नहाओ। तब तुम्हारा चर्मरोग स्वस्थ हो जाएगा और तुम पवित्र तथा शुद्ध हो जाओगे।"

[11]नामान क्रोधित हुआ और वहाँ से चल पड़ा। उसने कहा, "मैंने समझा था कि कम से कम एलीशा बाहर आएगा, मेरे सामने खड़ा होगा और यहोवा, अपने परमेश्वर के नाम कुछ कहेगा। मैं समझ रहा था कि वह मेरे शरीर पर अपना हाथ फेरेगा और कुष्ठ को ठीक कर देगा। [12]दमिश्क की नदियाँ अबाना और पर्पर इस्राएल के सभी जलाशयों से अच्छी हैं! मैं दमिश्क की उन नदियों में क्यों नहीं नहाऊँ और पवित्र हो जाऊँ?" इसलिये नामान वापस चला गया। वह क्रोधित था।

[13]किन्तु नामान के सेवक उसके पास गए और उससे बातें कीं। उन्होंने कहा, "पिता* यदि नबी ने आपसे कोई महान काम करने को कहा होता तो आप उसे जरुर करते। अत: आपको उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिये यदि वह कुछ सरल काम करने को भी कहता है और उसने कहा, 'नहाओ और तुम पवित्र और शुद्ध हो जाओगे।'"

[14]इसलिये नामान ने वह काम किया जो परमेश्वर के जन (एलीशा) ने कहा, नामान नीचे उतरा और उसने सात बार यरदन नदी में स्नान किया और नामान पवित्र और शुद्ध हो गया। नामान की त्वचा बच्चे की त्वचा की तरह कोमल हो गई।

[15]नामान और उसका सारा समूह परमेश्वर के जन (एलीशा) के पास आया। वह एलीशा के सामने खड़ा हुआ और उससे कहा, "देखिये, अब मैं समझता हूँ कि इस्राएल के अतिरिक्त पृथ्वी पर कहीं परमेश्वर नहीं है! अब कृपया मेरी भेंट स्वीकार करें!"

[16]किन्तु एलीशा ने कहा, "मैं यहोवा की सेवा करता हूँ। यहोवा की सत्ता शाश्वत है, उसकी साक्षी मान कर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं कोई भेंट नहीं लूँगा।"

नामान ने बहुत प्रयत्न किया कि एलीशा भेंट ले किन्तु एलीशा ने इन्कार कर दिया। [17]तब नामान ने कहा, "यदि आप इस भेंट को स्वीकार नहीं करते तो कम से कम आप मेरे लिये इतना करें। मुझे इस्राएल की इतनी पर्याप्त

पिता दास प्राय: अपने स्वामियों को पिता कहते थे और स्वामी अपने दासों को 'बच्चे' कहते थे।

धूलि लेने दें जिससे मेरे दो खच्चरों पर रखे टोकरे भर जाये।* क्यों? क्योंकि मैं फिर कभी होमबलि या बलि किसी अन्य देवता को नहीं चढ़ाऊँगा। मैं केवल यहोवा को ही बलि भेंट करूँगा। [18]और अब मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा मुझे इस बात के लिये क्षमा करेगा कि भविष्य में मेरा स्वामी (अराम का राजा) असत्य देवता की पूजा करने के लिये, रिम्मोन के मन्दिर में जाएगा। राजा सहारे के लिये मुझ पर झुकना चाहेगा, अत: मुझे रिम्मोन के मन्दिर में झुकना पड़ेगा। अब मैं यहोवा से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे क्षमा करे जब वैसा हो।"

[19]तब एलीशा ने नामान से कहा, "शान्तिपूर्वक जाओ।"

अत: नामान ने एलीशा को छोड़ा और कुछ दूर गया। [20]किन्तु परमेश्वर के जन एलीशा का सेवक गेहजी बोला, "देखिये, मेरे स्वामी (एलीशा) ने अरामी नामान को, उसकी लाई हुई भेंट को स्वीकार किये बिना ही जाने दिया है। यहोवा शाश्वत है, इसको साक्षी मान कर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि नामान के पीछे दौड़ूँगा और उससे कुछ लाऊँगा!" [21]अत: गेहजी नामान की ओर दौड़ा।

नामान ने अपने पीछे किसी को दौड़कर आते देखा। वह गेहजी से मिलने को अपने रथ से उतर पड़ा। नामान ने पूछा, "सब कुशल तो है?"

[22]गेहजी ने कहा, "हाँ, सब कुशल है। मेरे स्वामी एलीशा ने मुझे भेजा है। उसने कहा, 'देखो, एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के नबियों के समूह से दो युवक नबी मेरे पास आये हैं। कृपया उन्हें पच्हत्तर पौंड चाँदी और दो बार बदलने के वस्त्र दे दो।'"

[23]नामान ने कहा, "कृपया डेढ़ सौ पौंड ले लो!" नामान ने गेहजी को चाँदी लेने के लिये मनाया। नामान ने डेढ़ सौ पौंड चाँदी को दो बोरियों में रखा और दो बार बदलने के वस्त्र लिये। तब नामान ने इन चीज़ों को अपने सेवकों में से दो को दिया। सेवक उन चीज़ों को गेहजी के लिये लेकर आए। [24]जब गेहजी पहाड़ी तक आया तो उसने उन चीज़ों को सेवकों से ले लिया। गेहजी ने सेवकों को लौटा दिया और वे लौट गए। तब गेहजी ने उन चीज़ों को घर में छिपा दिया।

[25]गेहजी आया और अपने स्वामी एलीशा के सामने खड़ा हुआ। एलीशा ने गेहजी से पूछा, "गेहजी, तुम कहाँ गए थे?"

गेहजी ने कहा, "मैं कहीं भी नहीं गया था।"

[26]एलीशा ने गेहजी से कहा, "यह सच नहीं है! मेरा हृदय तुम्हारे साथ था जब नामान अपने रथ से तुमसे मिलने को मुड़ा। यह समय पैसा, कपड़े, जैतून, अंगूर, भेड़, गायें या सेवक–सेविकायें लेने का नहीं है। [27] अब तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को नामान की बीमारी लग जाएगी। तुम्हें सदैव विकट चर्मरोग रहेगा!"

जब गेहजी एलीशा से विदा हुआ तो गेहजी की त्वचा बर्फ की तरह सफेद हो गई थी। गेहजी को कुष्ठ हो गया था।

एलीशा और लौह फलक

6 नबियों के समूह ने एलीशा से कहा, "हम लोग वहाँ उस स्थान पर रह रहे हैं। किन्तु वह हम लोगों के लिये बहुत छोटा है। [2] हम लोग यरदन नदी को चलें और कुछ लकड़ियाँ काटें। हम में से प्रत्येक एक लट्ठा लेगा और हम लोग अपने लिये रहने का एक स्थान वहाँ बनायें।"

एलीशा ने कहा, "बहुत अच्छा, जाओ और करो।"

उनमें से एक व्यक्ति ने कहा, "कृपया हमारे साथ चलें।"

एलीशा ने कहा, "बहुत अच्छा, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

[4]अत: एलीशा नबियों के समूह के साथ गया। जब वे यरदन नदी पर पहुँचे तो उन्होंने कुछ पेड़ काटने आरम्भ किये। [5]किन्तु जब एक व्यक्ति एक पेड़ को काट रहा था तो कुल्हाड़ी का लौह फलक कुल्हाड़ी से निकल गया और पानी में गिर पड़ा। तब वह व्यक्ति चिल्लाया, "हे स्वामी! मैंने वह कुल्हाड़ी उधार ली थी!"

[6]परमेश्वर के जन (एलीशा) ने कहा, "वह कहाँ गिरी?"

उस व्यक्ति ने एलीशा को वह स्थान दिखाया जहाँ लौह फलक गिरा था। तब एलीशा ने एक डंडी काटी और उस डंडी को पानी में फैंक दिया। उस डंडी ने लौह फलक को तैरा दिया। [7]एलीशा ने कहा, "लौह फलक को पकड़ लो।" तब वह व्यक्ति आगे बढ़ा और उसने लौह फलक को ले लिया।

खच्चरों ... जाये कदाचित नामान ने यह सोचा कि इस्राएल की भूमि पवित्र है अत: वह इसका कुछ अंश ले जाएगा जिससे उसे अपने देश में यहोवा की उपासना में सहायता मिलेगी।

अराम का राजा इस्राएल के राजा को फँसाने का प्रयत्न करता है

[8]अराम का राजा इस्राएल के विरुद्ध युद्ध कर रहा था। उसने सेना के अधिकारियों के साथ परिषद बैठक बुलाई। उसने आदेश दिया, "इस स्थान पर छिप जाओ और इस्राएलियों पर तब आक्रमण करो जब यहाँ से होकर निकलें।"

[9]किन्तु परमेश्वर के जन (एलीशा) ने इस्राएल के राजा को एक संदेश भेजा। एलीशा ने कहा, "सावधान रहो! उस स्थान से होकर मत जाओ। वहाँ अरामी सैनिक छिपे हैं!"

[10] इस्राएल के राजा ने उस स्थान पर जिसके विषय में परमेश्वर के जन (एलीशा) ने चेतावनी दी थी, अपने व्यक्तियों को संदेश भेजा और इस्राएल के राजा ने बहुत से पुरुषों को बचा लिया।*

[11]अराम का राजा इससे बहुत घबराया। अराम के राजा ने अपने सैनिक अधिकारियों को बुलाया, और उनसे पूछा, "मुझे बताओ कि इस्राएल के राजा के लिये जासूसी कौन कर रहा है।"

[12]अराम के राजा के सैनिक अधिकारियों में से एक ने कहा, "मेरे प्रभु और राजा, हम में से कोई भी जासूस नहीं है! एलीशा, इस्राएल का नबी इस्राएल के राजा को अनेक गुप्त सूचनाएं दे सकता है, यहाँ तक कि आप जो अपने बिस्तर में कहेंगे, उसकी भी!"

[13]अराम के राजा ने कहा, "एलीशा का पता लगाओ और मैं उसे पकड़ने के लिये आदमियों को भेजूँगा।"

सेवकों ने अराम के राजा से कहा, "एलीशा दोतान में है!"

[14]तब अराम के राजा ने घोड़े, रथ और विशाल सेना को दोतान को भेजा। वे रात को पहुँचे और उन्होंने नगर को घेर लिया। [15]एलीशा के सेवक उस सुबह को जल्दी उठे। एक सेवक बाहर गया और उसने एक सेना को घोड़ों और रथों के साथ नगर के चारों ओर देखा।

एलीशा के सेवक ने एलीशा से कहा, "ओह, मेरे स्वामी हम क्या कर सकते हैं?"

[16]एलीशा ने कहा, "डरो नहीं! वह सेना जो हमारे लिये युद्ध करती है, उस सेना से बड़ी है जो अराम के लिये युद्ध करती है!"

[17]तब एलीशा ने प्रार्थना की और कहा, "यहोवा, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरे सेवक की आँखें खोल जिससे वह देख सके।"

यहोवा ने युवक की आँखे खोलीं और सेवक ने देखा कि पूरा पर्वत अग्नि के घोड़ों और रथों से ढका पड़ा था। वे सभी एलीशा के चारों ओर थे!

[18]ये आग के घोड़े और रथ एलीशा के पास आए। एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की और कहा, "मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू इन लोगों को अन्धा कर दे।"

तब यहोवा ने अरामी सेना को अन्धा कर दिया, जैसे एलीशा ने प्रार्थना की थी। [19]एलीशा ने अरामी सेना से कहा, "यह उचित मार्ग नहीं है। यह उपयुक्त नगर नहीं है। मेरे पीछे आओ। मैं उस व्यक्ति के पास तुम्हें ले जाऊँगा जिसकी खोज तुम कर रहे हो।" तब एलीशा अरामी सेना को शोमरोन ले गया।

[20]जब वे शोमरोन पहुँचे तो एलीशा ने कहा, "यहोवा, इन लोगों की आँखे खोल दे जिससे ये देख सकें।"

तब यहोवा ने उनकी आँखें खोल दीं और अरामी सेना ने देखा कि वह शोमरोन नगर में थे। [21]इस्राएल के राजा ने अरामी सेना को देखा। इस्राएल के राजा ने एलीशा से पूछा, "मेरे पिता, क्या मैं इन्हें मार डालूँ? क्या मैं इन्हें मार डालूँ?"

[22]एलीशा ने उत्तर दिया, "नहीं, इन्हें मारो मत। तुम उन लोगों को नहीं मारते जिन्हें तुम युद्ध में अपनी तलवार और धनुष–बाण के बल से पकड़ते हो। अरामी सेना को कुछ रोटी–पानी दो। उन्हें खाने–पीने दो। तब इन्हें अपने स्वामी के पास लौट जाने दो।"

[23]इस्राएल के राजा ने अरामी सेना के लिये बहुत सा भोजन तैयार कराया। अरामी सेना ने खाया–पीया। तब इस्राएल के राजा ने अरामी सेना को उनके घर वापस भेज दिया। अरामी सेना अपने स्वामी के पास घर लौट गई। अरामी लोगों ने इसके बाद इस्राएल पर आक्रमण करने के लिये फिर कोई सेना नहीं भेजी।

भयंकर भुखमरी शोमरोन को कष्ट देती है

[24]जब यह सब हो गया तो अराम के राजा बेन्हदद ने अपनी सारी सेना इकट्ठा की और वह शोमरोन नगर पर घेरा डालने और उस पर आक्रमण करने गया। [25]सैनिकों ने लोगों को नगर में भोजन सामग्री भी नहीं लाने दी।

बहुत से ... लिया शाब्दिक, "एक या दो नहीं।"

इसलिये शोमरोन में भयंकर भूखमरी का समय आ गया। यह शोमरोन में इतना भयंकर था कि एक गधे का सिर चाँदी के अस्सी सिक्कों में बिकने लगा और कबूतर की एक पिन्ट बीट की कीमत पाँच चाँदी के सिक्के थे।

[26]इस्राएल का राजा नगर की प्राचीर पर घूम रहा था। एक स्त्री ने चिल्लाकर उसे पुकारा। उस स्त्री ने कहा, "मेरे प्रभु और राजा, कृपया मेरी सहायता करें!"

[27]इस्राएल के राजा ने कहा, "यदि यहोवा तुम्हारी सहायता नहीं करता तो मैं कैसे तुमको सहायता दे सकता हूँ? मेरे पास तुमको देने को कुछ भी नहीं है। खलिहानों से कोई अन्न नहीं आया, या दाखमधु के कारखाने से कोई दाखमधु नहीं आई।" [28]तब इस्राएल के राजा ने उस स्त्री से पूछा, "तुम्हारी परेशानी क्या है?" स्त्री ने जवाब दिया, "इस स्त्री ने मुझसे कहा, 'अपने पुत्र को मुझे दो जिससे हम उसे मार डाले और उसे आज खा ले। तब हम अपने पुत्र को कल खायेंगे।' [29]अत: हम ने अपने पुत्र को पकाया और खाया। तब दूसरे दिन मैंने इस स्त्री से कहा, 'अपने पुत्र को दो जिससे हम उसे मार सकें और खा सकें।' किन्तु उसने अपने पुत्र को छिपा दिया है।"

[30]जब राजा ने उस स्त्री की बातें सुनीं तो उसने अपने वस्त्रों को अपनी परेशानी व्यक्त करने के लिये फाड़ डाला। जब राजा प्राचीर से होकर चला तो लोगों ने देखा कि वह अपने पहनावे के नीचे मोटे वस्त्र पहने था जिससे पता चलता था कि वह बहुत दु:खी और परेशान है।

[31]राजा ने कहा, "परमेश्वर मुझे दण्डित करे यदि शापात के पुत्र एलीशा का सिर इस दिन के अन्त तक भी उसके धड़ पर रह जाये।"

[32]राजा ने एलीशा के पास एक सन्देशवाहक भेजा। एलीशा अपने घर में बैठा था और अग्रज (प्रमुख) उसके साथ बैठे थे। सन्देशवाहक के आने के पहले एलीशा ने प्रमुखों से कहा, "देखो, वह हत्यारे का पुत्र (इस्राएल का राजा) लोगों को मेरा सिर काटने को भेज रहा है। जब सन्देशवाहक आये तो दरवाजा बन्द कर लेना। दरवाजे को बन्द रखो और उसे घुसने मत दो। मैं उसके पीछे उसके स्वामी के आने वाले कदमों की आवाज सुन रहा हूँ!"

[33]जिस समय एलीशा अग्रजों (प्रमुखों) से बातें कर ही रहा था, सन्देशवाहक उसके पास आया। सन्देश यह था: "यह विपत्ति यहोवा की ओर से आई है! मैं यहोवा की प्रतीक्षा आगे और क्यों करूँ?"

7 एलीशा ने कहा, "यहोवा की ओर से सन्देश सुनो! यहोवा कहता है: 'लगभग इसी समय कल बहुत सी भोजन सामग्री हो जाएगी और यह फिर सस्ती भी हो जाएगी। शोमरोन के फाटक के साथ के बाजार में लोग एक डलिया* अच्छा आटा या दो डलिया जौ एक शेकेल में खरीद सकेंगे।'"

[2]तब उस अधिकारी ने जो राजा का विश्वासपात्र था, परमेश्वर के जन (एलीशा) से बातें कीं। अधिकारी ने कहा, "यदि यहोवा आकाश में खिड़कियाँ भी बना दे तो भी यह नहीं होगा!"

एलीशा ने कहा, "इसे तुम अपनी आँखों से देखोगे। किन्तु उस भोजन में से तुम कुछ भी नहीं खाओगे।"

कुष्ठ रोगी, अरामी डेरे को खाली पाते हैं

[3]नगर के द्वार के पास चार व्यक्ति कुष्ठरोग से पीड़ित थे। उन्होंने आपस में बातें की, "हम यहाँ मरने की प्रतीक्षा करते हुए क्यों बैठे हैं? [4]शोमरोन में कुछ भी खाने के लिये नहीं है। यदि हम लोग नगर के भीतर जाएंगे तो वहाँ हम भी मर जाएंगे। इसलिये हम लोग अरामी डेरे की ओर चलें। यदि वे हमें जीवित रहने देते हैं तो हम जीवित रहेंगे। यदि वे हमें मार डालते हैं तो मर जायेंगे।"

[5]इसलिये उस शाम को चारों कुष्ठ रोगी अरामी डेरे को गए। वे अरामी डेरे की छोर तक पहुँचे। वहाँ लोग थे ही नहीं। [6]यहोवा ने अरामी सेना को, रथों, घोड़ों और विशाल सेना का उद्घोष सुनाया था। अत: अरामी सैनिकों ने आपस में बातें कीं, "इस्राएल के राजा ने हित्ती राजाओं और मिस्रियों को हम लोगों के विरुद्ध किराये पर बुलाया है!"

[7]अरामी सैनिक उस सन्ध्या के आरम्भ में ही भाग गए। वे सब कुछ अपने पीछे छोड़ गए। उन्होंने अपने डेरे, घोड़े, गधे छोड़े और अपना जीवन बचाने को भाग खड़े हुए।

कुष्ठ रोगी अरामी डेरे में

[8]जब ये कुष्ठ रोगी उस स्थान पर आए जहाँ से अरामी डेरा आरम्भ होता था, वे एक डेरे में गए। उन्होंने खाया और मदिरा पान किया। तब चारों कुष्ठ रोगी उस डेरे से चाँदी, सोना और वस्त्र ले गए। उन्होंने चाँदी, सोना

डलिया शाब्दिक, "पूली।"

और वस्त्रों को छिपा दिया। तब वे लौटे और दूसरे डेरे में गए। उस डेरे से भी वे चीजें ले आए। वे बाहर गए और इन चीज़ों को छिपा दिया। [9]तब इन कुष्ठ रोगियों ने आपस में बातें कीं, "हम लोग बुरा कर रहे हैं। आज हम लोगों के पास शुभ सूचना है। किन्तु हम लोग चुप हैं। यदि हम लोग सूरज के निकलने तक प्रतीक्षा करेंगे तो हम लोगों को दण्ड मिलेगा। अब हम चलें और उन लोगों को शुभ सूचना दें जो राजा के महल में रहते हैं।"

कुष्ठ रोगी शुभ सूचना देते हैं

[10]अत: ये कुष्ठ रोगी नगर के द्वारपाल के पास गए। कुष्ठ रोगियों ने द्वारपालों से कहा, "हम अरामी डेरे में गए थे। किन्तु हम लोगों ने किसी व्यक्ति को वहाँ नहीं पाया। वहाँ कोई भी नहीं था। घोड़े और गधे तब भी बंधे थे और डेरे वैसे के वैसे लगे थे। किन्तु सभी लोग चले गए थे।"

[11]तब नगर के द्वारपाल जोर से चीखे और राजमहल के व्यक्तियों को यह बात बताई। [12]रात का समय था, किन्तु राजा अपने पलंग से उठा। राजा ने अपने अधिकारियों से कहा, "मैं तुम लोगों को बताऊँगा कि अरामी सैनिक हमारे साथ क्या कर रहे हैं। वे जानते हैं कि हम भूखे हैं। वे खेतों में छिपने के लिये, डेरों को खाली कर गए हैं। वे यह सोच रहे हैं, 'जब इस्राएली नगर के बाहर आएंगे, तब हम उन्हें जीवित पकड़ लेंगे और तब हम नगर में प्रवेश करेंगे।'"

[13]राजा के अधिकारियों में से एक ने कहा, "कुछ व्यक्तियों को नगर में अभी तक बचे पाँच घोड़ों को लेने दें। निश्चय ही ये घोड़े भी शीघ्र ही ठीक वैसे ही मर जाएंगे, जैसे इस्राएल के वे सभी लोग जो अभी तक बचे रह गए हैं, मरेंगे। इन व्यक्तियों को यह देखने को भेजा जाय कि क्या घटित हुआ है।"

[14]इसलिये लोगों ने घोड़ों के साथ दो रथ लिये। राजा ने इन लोगों को अरामी सेना के पीछे लगाया। राजा ने उनसे कहा, "जाओ और पता लगाओ कि क्या घटना घटी।"

[15]वे व्यक्ति अरामी सेना के पीछे यरदन नदी तक गए। पूरी सड़क पर वस्त्र और अस्त्र–शस्त्र फैले हुये थे। अरामी लोगों ने जल्दी में भागते समय उन चीज़ों को फेंक दिया था। सन्देशवाहक शोमरोन को लौटे और राजा को बताया।

[16]तब लोग अरामी डेरे की ओर टूट पड़े, और वहाँ से उन्होंने कीमती चीज़ें ले लीं। हर एक के लिये वहाँ अत्याधिक था। अत: वही हुआ जो यहोवा ने कहा था। कोई भी व्यक्ति एक डलिया अच्छा आटा या दो डलिया जौ केवल एक शेकेल में खरीद सकता था।

[17]राजा ने अपने व्यक्तिगत सहायक अधिकारी को द्वार की रक्षा के लिये चुना। किन्तु लोग शत्रु के डेरे से भोजन पाने के लिये दौड़ पड़े। लोगों ने अधिकारी को धक्का देकर गिरा दिया और उसे रौंदते हुए निकल गए और वह मर गया। अत: वे सभी बातें वैसी ही ठीक घटित हुई जैसा परमेश्वर के जन (एलीशा) ने तब कहा था जब राजा एलीशा के घर आया था। [18]एलीशा ने कहा था, "कोई भी व्यक्ति शोमरोन के नगरद्वार के बाजार में एक शेकेल में एक डलिया अच्छा आटा या दो डलिया जौ खरीद सकेगा।" [19]किन्तु परमेश्वर के जन को उस अधिकारी ने उत्तर दिया था, "यदि यहोवा स्वर्ग में खिड़कियाँ भी बना दे, तो भी वैसा नहीं हो सकेगा" और एलीशा ने उस अधिकारी से कहा था, "तुम ऐसा अपनी आँखों से देखोगे। किन्तु तुम उस भोजन का कुछ भी नहीं खा पाओगे।" [20]अधिकारी के साथ ठीक वैसा ही घटित हुआ। लोगों ने नगरद्वार पर उसे धक्का दे गिरा दिया, उसे रौंद डाला और वह मर गया।

राजा और शूनेमिन स्त्री

8 एलीशा ने उस स्त्री से बातें की जिसके पुत्र को उसने जीवित किया था। एलीशा ने कहा, "तुम्हें और तुम्हारे परिवार को किसी अन्य देश में चले जाना चाहिये। क्यों? क्योंकि यहोवा ने निश्चय किया है कि यहाँ भुखमरी का समय आएगा। इस देश में यह भूखमरी का समय सात वर्ष का होगा।"

[2]अत: उस स्त्री ने वही किया जो परमेश्वर के जन ने कहा। वह अपने परिवार के साथ सात वर्ष पलिश्तियों के देश में रहने चली गई। [3]जब सात वर्ष पूरे हो गए तो वह स्त्री पलिश्तियों के देश से लौट आई।

वह स्त्री राजा से बातें करने गई। वह चाहती थी कि वह उसके घर और उसकी भूमि को उसे लौटाने में उसकी सहायता करे।

[4]राजा परमेश्वर के जन (एलीशा) के सेवक गेहजी से बातें कर रहा था। राजा ने गेहजी से पूछा, "कृपया

वे सभी महान कार्य हमें बतायें जिन्हें एलीशा ने किए हैं।"

[5]गेहजी राजा को एलीशा के बारे में एक मृत व्यक्ति को जीवित करने की बात बता रहा था। उसी समय वह स्त्री राजा के पास गई जिसके पुत्र को एलीशा ने जिलाया था। वह चाहती थी कि वह अपने घर और अपनी भूमि को वापस दिलाने में उससे सहायता माँगे। गेहजी ने कहा, "मेरे प्रभु राजा, यह वही स्त्री है और यह वही पुत्र है जिसे एलीशा ने जिलाया था।"

[6]राजा ने पूछा कि वह क्या चाहती है। उस स्त्री ने अपनी इच्छा बताई।

तब राजा ने एक अधिकारी को उस स्त्री की सहायता के लिये चुना। राजा ने कहा, "इस स्त्री को वह सब कुछ दो जो इसका है और इसकी भूमि की सारी फसलें जब से इसने देश छोड़ा तब से अब तक की, इसे दो।"

बेन्हदद हजाएल को एलीशा के पास भेजता है

[7]एलीशा दमिश्क गया। अराम का राजा बेन्हदद बीमार था। किसी व्यक्ति ने बेन्हदद से कहा, "परमेश्वर का जन यहाँ आया है।"

[8]तब राजा बेन्हदद ने हजाएल से कहा, "भेंट साथ में लो और परमेश्वर के जन से मिलने जाओ। उसको कहो कि वे यहोवा से पूछे कि क्या मैं अपनी बीमारी से स्वस्थ हो सकता हूँ।"

[9]इसलिये हजाएल एलीशा से मिलने गया। हजाएल अपने साथ भेंट लाया। वह दमिश्क से हर प्रकार की अच्छी चीजें लाया। इन सबको लाने के लिये चालीस ऊँटों की आवश्यकता पड़ी। हजाएल एलीशा के पास गया। हजाएल ने कहा, "तुम्हारे अनुयायी* अराम के राजा बेन्हदद ने मुझे आपके पास भेजा है। वह पूछता है कि क्या मैं अपनी बीमारी से स्वस्थ होऊँगा।"

[10]तब एलीशा ने हजाएल से कहा, "जाओ और बेन्हदद से कहो, 'तुम जीवित रहोगे।'* किन्तु यहोवा ने सचमुच मुझसे यह कहा है, 'वह निश्चय ही मरेगा।'"

एलीशा हजाएल के बारे में भविष्यवाणी करता है

[11]एलीशा हजाएल को तब तक देखता रहा जब तक हजाएल संकोच का अनुभव नहीं करने लगा। तब परमेश्वर का जन चीख पड़ा। [12]हजाएल ने कहा, "महोदय, आप चीख क्यों रहे हैं?"

एलीशा ने उत्तर दिया, "मैं चीख रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम इस्राएलियों के लिये क्या कुछ बुरा करोगे। तुम उनके दृढ़ नगरों को जलाओगे। तुम उनके युवकों को तलवार के घाट उतारोगे। तुम उनके बच्चों को मार डालोगे। तुम उनकी गर्भवती स्त्रियों के गर्भ को चीर निकालोगे।"

[13]हजाएल ने कहा, "मैं कोई शक्तिशाली व्यक्ति नहीं हूँ! मैं इन बड़े कामों को नहीं कर सकता!"

एलीशा ने उत्तर दिया, "यहोवा ने मुझे बताया है कि तुम अराम के राजा होगे।"

[14]तब हजाएल एलीशा के यहाँ से चला गया और अपने राजा के पास गया। बेन्हदद ने हजाएल से पूछा, "एलीशा ने तुमसे क्या कहा?"

हजाएल ने उत्तर दिया, "एलीशा ने मुझसे कहा कि तुम जीवित रहोगे।"

हजाएल बेन्हदद की हत्या करता है

[15]किन्तु अगले दिन हजाएल ने एक मोटा कपड़ा लिया और इसे पानी से गीला कर लिया। तब उसने मोटे कपड़े को बेन्हदद के मुँह पर डाल कर उसकी साँस रोक दी। बेन्हदद मर गया। अत: हजाएल नया राजा बना।

यहोराम अपना शासन आरम्भ करता है

[16]यहोशापात का पुत्र यहोराम यहूदा का राजा था। यहोराम ने अहाब के पुत्र योराम के इस्राएल के राज्यकाल के पाँचवें वर्ष में शासन आरम्भ किया। [17]यहोराम बत्तीस वर्ष का था, जब उसने शासन करना आरम्भ किया। उसने यरूशलेम में आठ वर्ष शासन किया। [18]किन्तु यहोराम इस्राएल के राजाओं की तरह रहा और उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यहोराम अहाब के परिवार के लोगों की तरह रहता था। यहोराम इस तरह रहा क्योंकि उसकी पत्नी अहाब की पुत्री थी। [19]किन्तु यहोवा ने उसे नष्ट नहीं किया क्योंकि उसने अपने

अनुयायी शाब्दिक, "पुत्र।"

तुम ... रहोगे या सम्भवत: तुम जीवित नहीं रहोगे।

सेवक दाऊद से प्रतिज्ञा की थी कि उसके परिवार का कोई न कोई सदैव राजा होगा।

[20]यहोराम के समय में एदोम यहूदा के शासन से स्वतन्त्र हो गया। एदोम के लोगों ने अपने लिये एक राजा चुन लिया।

[21]तब यहोराम और उसके सभी रथ साईर को गए। एदोमी सेना ने उन्हें घेर लिया। यहोराम और उसके अधिकारियों ने उन पर आक्रमण किया और बच निकले। यहोराम के सभी सैनिक भाग निकले और घर पहुँचे। [22]इस प्रकार एदोमी यहूदा के शासन से स्वतन्त्र हो गए और वे आज तक यहूदा के शासन से स्वतन्त्र हैं।

उसी समय लिब्ना भी यहूदा के शासन से स्वतन्त्र हो गया।

[23]यहोराम ने जो कुछ किया वह सब "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखा है।

[24]यहोराम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दाऊद नगर में दफनाया गया। यहोराम का पुत्र अहज्याह नया राजा हुआ।

अहज्याह अपना शासन आरम्भ करता है

[25]यहोराम का पुत्र अहज्याह, अहाब के पुत्र इस्राएल के राजा योराम के राज्यकाल के बारहवें वर्ष में यहूदा का राजा हुआ। [26]शासन आरम्भ करने के समय अहज्याह बाईस वर्ष का था। उसने यरूशलेम में एक वर्ष शासन किया। उसकी माँ का नाम अतल्याह था। वह इस्राएल के राजा ओम्री की पुत्री थी। [27]अहज्याह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। अहज्याह ने अहाब के परिवार के लोगों की तरह बहुत से बुरे काम किये। अहज्याह उस प्रकार रहता था क्योंकि उसकी पत्नी अहाब के परिवार से थी।

योराम हजाएल के विरुद्ध युद्ध में घायल हो जाता है

[28]योराम अहाब के परिवार से था। अहज्याह योराम के साथ अराम के राजा हजाएल से गिलाद के रामोत में युद्ध करने गया। अरामियों नें योराम को घायल कर दिया। राजा योराम इस्राएल को वापस इसलिये लौट गया कि उस स्थान पर लगे घावों से वह स्वस्थ हो जाय। योराम यिज्रेल के क्षेत्र में गया। यहूदा के राजा यहोराम का पुत्र अहज्याह योराम को देखने यिज्रेल गया।

एलीशा एक युवा नबी को येहू का अभिषेक करने को कहता है

9 एलीशा नबी ने नबियों के समूह में से एक को बुलाया। एलीशा ने इस व्यक्ति से कहा, "तैयार हो जाओ और अपने हाथ में तेल की इस छोटी बोतल को ले लो। गिलाद के रामोत को जाओ। [2]जब तुम वहाँ पहुँचो तो निमशी के पौत्र अर्थात् यहोशापात के पुत्र येहू से मिलो। तब अन्दर जाओ और उसके भाईयों में से उसे उठाओ। उसे किसी भीतरी कमरे में ले जाओ। [3]तेल की छोटी बोतल ले जाओ और येहू के सिर पर उस तेल को डालो। यह कहो, 'यहोवा कहता है: मैंने तुम्हारा अभिषेक इस्राएल का नया राजा होने के लिये किया है।' तब दरवाजा खोलो और भाग चलो। वहाँ प्रतीक्षा न करो!"

[4]अत: यह युवा नबी गिलाद के रामोत गया। [5]जब युवक पहुँचा, उसने सेना के सेनापतियों को बैठे देखा। युवक ने कहा, "सेनापति, मैं आपके लिये एक सन्देश लाया हूँ।"

येहू ने कहा, "हम सभी यहाँ है। हम लोगों में से किसके लिये सन्देश है?"

युवक ने कहा, "सेनापति, सन्देश आपके लिये है।"

[6]येहू उठा और घर में गया। तब युवा नबी ने उस तेल को येहू के सिर पर डाल दिया। युवा नबी ने येहू से कहा, "इस्राएल का परमेश्वर, यहोवा कहता है, 'मैं यहोवा के लोगों, इस्राएलियों पर नया राजा होने के लिये तुम्हारा अभिषेक करता हूँ। [7] तुम्हें अपने राजा अहाब के परिवार को नष्ट कर देना चाहिये। इस प्रकार मैं ईज़ेबेल को, अपने सेवकों, नबियों तथा यहोवा के उन सभी सेवकों की मृत्यु के लिये जिनकी हत्या कर दी गई है, दण्डित करूँगा। [8]इस प्रकार अहाब का सारा परिवार मर जाएगा। मै अहाब के परिवार के किसी लड़के को जीवित नहीं रहने दूँगा। इसका कोई महत्व नहीं होगा कि वह लड़का दास है या इस्राएल का स्वतन्त्र व्यक्ति है। [9]मैं अहाब के परिवार को, नबात के पुत्र यारोबाम या अहिय्याह के पुत्र बाशा के परिवार जैसा कर दूँगा। [10]यिज्रेल के क्षेत्र में ईज़ेबेल को कुत्ते खायेंगे। ईज़ेबेल को दफनाया नहीं जाएगा।'"

तब युवक नबी ने दरवाजा खोला और भाग गया।

सेवक येहू को राजा घोषित करते हैं

[11]येहू अपने राजा के अधिकारियों के पास लौटा। अधिकारियों में से एक ने येहू से कहा, "क्या सब कुशल तो है? यह पागल आदमी तुम्हारे पास क्यों आया था?"

येहू ने सेवकों को उत्तर दिया, "तुम उस व्यक्ति को और जो पागलपन की बातें वह करता है, जानते हो।"

[12]अधिकारियों ने कहा, "नहीं! हमें सच्ची बात बताओ। वह क्या कहता है?" येहू ने अधिकारियों को वह बताया जो युवक नबी ने कहा था। येहू ने कहा, "उसने कहा 'यहोवा यह कहता है: मैंने इस्राएल का नया राजा होने के लिये तुम्हारा अभिषेक किया है।'"

[13]तब हर एक अधिकारी ने शीघ्रता से अपने लबादे उतारे और येहू के सामने पैड़ियों पर उन्हें रखा। तब उन्होंने तुरही बजाई और यह घोषणा की, "येहू राजा है!"

येहू यिज्रैल जाता है

[14]इसलिये येहू ने, जो निमशी का पौत्र और यहोशापात का पुत्र था योराम के विरुद्ध योजनायें बनाई।

उस समय योराम और इस्राएली, अराम के राजा हजाएल से, गिलाद के रामोत की रक्षा का प्रयत्न कर रहे थे। [15]किन्तु राजा योराम को अरामियों द्वारा किये गये घाव से स्वस्थ होने के लिये इस्राएल आना पड़ा था। अरामियों ने योराम को तब घायल किया था जब उसने अराम के राजा हजाएल के विरुद्ध युद्ध किया था।

अत: येहू ने अधिकारियों से कहा, "यदि तुम लोग स्वीकार करते हो कि मैं नया राजा हूँ तो नगर से किसी व्यक्ति को यिज्रैल में सूचना देने के लिये बचकर निकलने न दो।"

[16]योराम यिज्रैल में आराम कर रहा था। अत: येहू रथ में सवार हुआ और यिज्रैल गया। यहूदा का राजा अहज्याह भी योराम को देखने यिज्रैल आया था।

[17]एक रक्षक यिज्रैल में रक्षक स्तम्भ पर खड़ा था। उसने येहू के विशाल दल को आते देखा। उसने कहा, "मैं लोगों के एक विशाल दल को देख रहा हूँ!"

योराम ने कहा, "किसी को उनसे मिलने घोड़े पर भेजो। इस व्यक्ति से यह कहने के लिये कहो, "क्या आप शान्ति की इच्छा से आए हैं?"

[18]अत: एक व्यक्ति येहू से मिलने के लिये घोड़े पर सवार होकर गया। घुड़सवार ने कहा, "राजा योराम पूछते हैं, 'क्या आप शान्ति की इच्छा से आए हैं?'"

येहू ने कहा, "तुम्हें शान्ति से कुछ लेना–देना नहीं। आओ और मेरे पीछे चलो।"

रक्षक ने योराम से कहा, "उस दल के पास सन्देशवाहक गया, किन्तु वह लौटकर अब तक नहीं आया।"

[19]तब योराम ने एक दूसरे व्यक्ति को घोड़े पर भेजा। वह व्यक्ति येहू के दल के पास आया और उसने कहा, "राजा योराम कहते हैं, 'शान्ति।'"*

येहू ने उत्तर दिया, "तुम्हें शान्ति से कुछ भी लेना–देना नहीं! आओ और मेरे पीछे चलो।"

[20]रक्षक ने योराम से कहा, "दूसरा व्यक्ति उस दल के पास गया, किन्तु वह अभी तक लौटकर नहीं आया। रथचालक रथ को निमशी के पौत्र येहू की तरह चला रहा है। वह पागलों जैसा चला रहा है।"

[21]योराम ने कहा, "मेरे रथ को तैयार करो!"

इसलिये सेवक ने योराम के रथ को तैयार किया। इस्राएल का राजा योराम तथा यहूदा का राजा अहज्याह निकल गए। हर एक राजा अपने–अपने रथ से येहू से मिलने गए। वे येहू से यिज्रैली नाबोत की भूमि के पास मिले।

[22]योराम ने येहू को देखा और उससे पूछा, "येहू क्या तुम शान्ति के इरादे से आए हो?"

येहू ने उत्तर दिया, "जब तक तुम्हारी माँ ईज़ेबेल वेश्यावृत्ति और जादूटोना करती रहेगी तब तक शान्ति नहीं हो सकेगी।"

[23]योराम ने भाग निकलने के लिये अपने घोड़ों की बाग मोड़ी। योराम ने अहज्याह से कहा, "अहज्याह! यह एक चाल है।"

[24]किन्तु येहू ने अपनी पूरी शक्ति से अपने धनुष को खींचा और योराम की पीठ में* बाण चला दिया। बाण योराम के हृदय को बेधता हुआ पार हो गया। योराम अपने रथ में मर गया।

[25]येहू ने अपने सारथी बिदकर से कहा, "योराम के शव को उठाओ और यिज्रेली नाबोत के खेत में फेंक दो। याद करो, जब हम और तुम योराम के पिता अहाब के साथ चले थे। तब यहोवा ने कहा था कि इसके साथ ऐसा

शान्ति "स्वागत" कहने की एक पद्धति।
पीठ में शाब्दिक, "दोनों बांहों के बीच।"

ही होगा। [26]यहोवा ने कहा था, 'कल मैंने नाबोत और उसके पुत्रों का खून देखा था। अत: मैं अहाब को इसी खेत में दण्ड दूँगा।' यहोवा ने ऐसा कहा था। अत: जैसा यहोवा ने आदेश दिया है–योराम के शव को खेत में फेंक दो!"

[27]यहूदा के राजा अहज्याह ने यह देखा, अत: वह भाग निकला। वह बारी के भवन के रास्ते से होकर भागा। येहू ने उसका पीछा किया। येहू ने कहा, "अहज्याह को भी उसके रथ में मार डालो।"

अत: येहू के लोगों ने यिबलाम के पास गूर को जाने वाली सड़क पर अहज्याह पर प्रहार किया। अहज्याह मगिद्दो तक भागा, किन्तु वहाँ वह मर गया। [28]अहज्याह के सेवक अहज्याह के शव को रथ में यरूशलेम ले गए। उन्होंने अहज्याह को, उसकी कब्र में, उसके पूर्वजों के साथ दाऊद नगर में दफनाया।

[29]अहज्याह, इस्राएल पर योराम के राज्यकाल के ग्यारहवें वर्ष में यहूदा का राजा बना था।

ईज़ेबेल की भयंकर मृत्यु

[30]येहू यिज्रैल गया और ईज़ेबेल को यह सूचना मिली। उसने अपनी सज्जा की और अपने केशों को बाँधा। तब वह खिड़की के सहारे खड़ी हुई और बाहर को देखने लगी। [31]येहू ने नगर में प्रवेश किया। ईज़ेबेल ने कहा, "नमस्कार ओ जिम्री!* तुमने ठीक उसकी ही तरह अपने स्वामी को मार डाला!"

[32]येहू ने ऊपर खिड़की की ओर देखा। उसने कहा, "मेरी तरफ कौन है? कौन?"

दो या तीन खोजो* ने खिड़की से येहू को देखा, येहू ने उनसे कहा, "ईज़ेबेल को नीचे फेंको!"

तब खोजों ने ईज़ेबेल को नीचे फेंक दिया। ईज़ेबेल का कुछ रक्त दीवार और घोड़ों पर छिटक गया। घोड़ों ने ईज़ेबेल के शरीर को कुचल डाला। [34]येहू महल में घुसा और उसने खाया और दाखमधु पिया। तब उसने कहा, "अब इस अभिशापित स्त्री के बारे में यह करो। उसे दफना दो क्योंकि वह एक राजा की पुत्री है।"

[35]कुछ लोग ईज़ेबेल को दफनाने गए। किन्तु वे उसके शव को न पा सके। वे केवल उसकी खोपड़ी, उसके पैर और उसके हाथों की हथेलियाँ पा सके। [36]इसलिये वे लोग लौटे और उन्होंने येहू से कहा। तब येहू ने कहा, "यहोवा ने अपने सेवक तिशबी एलिय्याह से यह सन्देश देने को कहा था। एलिय्याह ने कहा था: 'यिज्रैल के क्षेत्र में ईज़ेबेल के शव को कुत्ते खायेंगे। [37]ईज़ेबेल का शव यिज्रैल के क्षेत्र में खेत के गोबर की तरह होगा। लोग ईज़ेबेल के शव को पहचान नहीं पाएंगे।'"

येहू शोमरोन के प्रमुखों को लिखता है

10 अहाब के सत्तर पुत्र शोमरोन में थे। येहू ने पत्र लिखे और उन्हें शोमरोन में यिज्रैल के शासकों और प्रमुखों को भेजा। उसने उन लोगों को भी पत्र भेजे जो अहाब के पुत्रों के अभिभावक थे। पत्र में येहू ने लिखा, [2-3]"ज्योंही तुम इस पत्र को पाओ तुम अपने स्वामी के पुत्रों में से सर्वाधिक योग्य और उत्तम व्यक्ति को चुनो। तुम्हारे पास रथ और घोड़े हैं और तुम एक दृढ़ नगर में रह रहे हो। तुम्हारे पास अस्त्र –शस्त्र भी हैं। जिस पुत्र को चुनो उसे उसके पिता के सिंहासन पर बिठाओ। तब अपने स्वामी के परिवार के लिये युद्ध करो।"

[4]किन्तु यिज्रैल के शासक और प्रमुख बहुत भयभीत थे। उन्होंने कहा, "दोनो राजा (योराम और अहज्याह) येहू को रोक नहीं सके। अत: हम भी उसे रोक नहीं सकते!"

[5]अहाब के महल का प्रबन्धक, नगर प्रशासक, प्रमुख वरिष्ठ–जन और अहाब के बच्चों के अभिभावकों ने येहू के पास एक सन्देश भेजा! "हम आपके सेवक हैं। हम वह सब करेंगे जो आप कहेंगे। हम किसी व्यक्ति को राजा नहीं बनाएंगे। वही करें जो आप ठीक समझते हैं।"

शोमरोन के प्रमुख अहाब के बच्चों को मार डालते हैं

[6]तब येहू ने एक दूसरा पत्र इन प्रमुखों को लिखा। येहू ने कहा, "यदि तुम मेरा समर्थन करते हो और मेरा आदेश मानते हो तो अहाब के पुत्रों का सिर काट डालो और लगभग इसी समय कल यिज्रैल में मेरे पास उन्हें ले आओ।"

अहाब के सत्तर पुत्र थे। वे नगर के उन प्रमुखों के पास थे जो उनकी सहायता करते थे। [7]जब नगर के प्रमुखों ने

जिम्री जिम्री वह व्यक्ति था जिसने कोई वर्ष पहले एला और बाशा के परिवार को मार डाला था।

खोजो वे व्यक्ति जो अपनी जननेन्द्रिय को कटवा डालते हैं। राजा के महत्वपूर्ण अधिकारी प्राय: खोजा होते थे।

पत्र प्राप्त किया तब उन्होंने राजा के पुत्रों को लिया और सभी सत्तर पुत्रों को मार डाला। तब प्रमुखों ने राजपुत्रों के सिर टोकरियों में रखे। उन्होंने टोकरियों को यिज्रैल में येहू के पास भेज दिया। [8]सन्देशवाहक येहू के पास आए और उससे कहा, "वे राजपुत्रों का सिर लेकर आए हैं।"

तब येहू ने कहा, "नगर–द्वार पर, प्रात:काल तक उन सिरों की दो ढेरें बना कर रखो।"

[9]सुबह को येहू बाहर निकला और लोगों के सामने खड़ा हुआ। उसने लोगों से कहा, "तुम लोग निरपराध लोग हो। देखो, मैंने अपने स्वामी के विरुद्ध योजनाएं बनाई। मैंने उसे मार डाला। किन्तु अहाब के इन सब पुत्रों को किसने मारा? तुमने उन्हें मारा! [10]तुम्हें समझना चाहिये कि यहोवा जो कुछ कहता है वह घटित होगा और यहोवा ने एलिय्याह का उपयोग अहाब के परिवार के लिये इन बातों को कहने के लिये किया था। अब यहोवा ने वह कर दिया जिसके लिये उसने कहा था कि "मैं करूँगा।"

[11]इस प्रकार येहू ने यिज्रैल में रहने वाले अहाब के पूरे परिवार को मार डाला। येहू ने सभी महत्वपूर्ण व्यक्तियों, जिगरी दोस्तों और याजकों को मार डाला। उसने अहाब के एक भी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा।

येहू अहज्याह के सम्बन्धियों को मार डालता है

[12]येहू यिज्रैल से चला और शोमरोन पहुँचा। रास्ते मे येहू "गड़रियों का डेरा" नामक स्थान पर रुका। जहाँ गड़रिये अपनी भेड़ों का ऊन कतरते थे। [13]येहू यहूदा के राजा अहज्याह के सम्बन्धियों से मिला। येहू ने उनसे पूछा, "तुम कौन हो?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हम लोग यहूदा के राजा अहज्याह के सम्बन्धी है। हम लोग यहाँ राजा के बच्चों और राजमाता के बच्चों से मिलने आए हैं।"

[14]तब येहू ने अपने लोगों से कहा, "इन्हें जीवित पकड़ लो।"

येहू के लोगों ने अहज्याह के सम्बन्धियों को जीवित पकड़ लिया। वे बयालीस लोग थे। येहू ने उन्हें बेथ–एकद के पास कुँए पर मार डाला। येहू ने किसी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा।

येहू यहोनादाब से मिलता है

[15]येहू जब उस स्थान से चला तो रेकाब के पुत्र यहोनादाब से मिला। येहोनादाब येहू से मिलने आ रहा था। येहू ने यहोनादाब का स्वागत किया और उससे पूछा, "क्या तुम मेरे उतने ही विश्वसनीय मित्र हो जितना मैं तुम्हारा हूँ।"

यहोनादाब ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं तुम्हारा विश्वासपात्र मित्र हूँ।"

येहू ने कहा, "यदि तुम हो तो, तुम अपना हाथ मुझे दो।"

तब येहू बाहर झुका और उसने यहोनादाब को अपने रथ में खींच लिया।

[16]येहू ने कहा, "मेरे साथ आओ। तुम देखोगे कि यहोवा के लिये मेरी भावनायें कितनी प्रबल हैं।"

इस प्रकार यहोनादाब येहू के रथ में बैठा। [17]येहू शोमरोन में आया और अहाब के उस सारे परिवार को मार डाला जो अभी तक शोमरोन में जीवित था। येहू ने उन सभी को मार डाला। येहू ने वही काम किये जिन्हें यहोवा ने एलिय्याह से कहा था।

येहू बाल के उपासकों को बुलाता है

[18]तब येहू ने सभी लोगों को एक साथ इकट्ठा किया। येहू ने उनसे कहा, "अहाब ने बाल की सेवा नहीं के बराबर की। किन्तु येहू बाल की बहुत अधिक सेवा करेगा। [19]अब बाल के सभी याजकों और नबियों को एक साथ बुलाओ और उन सभी लोगों को एक साथ बुलाओ जो बाल की उपासना करते हैं। किसी व्यक्ति को इस सभा में अनुपस्थित न रहने दो। मैं बाल को बहुत बड़ी बलि चढ़ाने जा रहा हूँ। मैं उस किसी भी व्यक्ति को मार डालूँगा जो इसमें उपस्थित नहीं होगा!"

किन्तु येहू उनके साथ चाल चल रहा था। येहू बाल के पूजकों को नष्ट कर देना चाहता था। [20]येहू ने कहा, "बाल के लिये एक धर्मसभा करो" और याजकों ने धर्मसभा की घोषणा कर दी। [21]तब येहू ने पूरे इस्राएल देश में सन्देश भेजा। बाल के सभी उपासक आए। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो घर पर रह गया हो। बाल के उपासक बाल के मन्दिर* में आए। मन्दिर लोगों से भर गया।

मन्दिर यहाँ इसका अर्थ वह इमारत है जिसमें लोग बाल की पूजा करने जाते थे।

[22]येहू ने लबादे रखने वाले व्यक्ति से कहा, "बाल के सभी उपासकों के लिये लबादे लाओ।" अत: वह व्यक्ति बाल पूजकों के लिये लबादे लाया।

[23]तब येहू और रेकाब का पुत्र यहोनादाब बाल के मन्दिर के अन्दर गये। येहू ने बाल के उपासकों से कहा, "अपने चारों ओर देख लो और यह निश्चय कर लो कि तुम्हारे साथ कोई यहोवा का सेवक तो नहीं है। यह निश्चय कर लो कि केवल बालपूजक लोग ही हैं।" [24]बाल–पूजक बाल के मन्दिर में बलि और होमबलि चढ़ाने गए।

किन्तु बाहर येहू ने अस्सी व्यक्तियों को प्रतीक्षा में तैयार रखा था। येहू ने कहा, "किसी व्यक्ति को बचकर निकलने न दो। यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को बच निकलने देगा तो उसका भुगतान उसे अपने जीवन से करना होगा।"

[25]येहू ने ज्योंही बलि और होमबलि चढ़ाना पूरा किया त्योंही उसने रक्षकों और सेनापतियों से कहा, "अन्दर जाओ और बाल–पूजकों को मार डालो! पूजागृह से किसी जीवित व्यक्ति को बाहर न आने दो!"

अत: सेनापतियों ने पतली तलवारों का उपयोग किया और बाल पूजकों को मार डाला। रक्षकों और सेनापतियों ने बाल पूजकों के शवों को बाहर फेंक दिया। तब रक्षक और सेनापति बाल के पूजागृह के भीतरी कमरे* में गए। वे बाल के पूजागृह के स्मृति–पाषाणों* को बाहर ले आए और पूजागृह को जला दिया। [27]तब उन्होंने बाल के स्मृति–पाषाण को नष्ट–भ्रष्ट कर दिया। उन्होंने बाल के पूजागृह को भी ध्वस्त कर दिया। उन्होंने बाल के पूजागृह को एक शौचालय में बदल दिया। आज भी उसका उपयोग शौचालय के लिये होता है।

[28]इस प्रकार येहू ने इस्राएल में बाल–पूजा को समाप्त कर दिया। [29]किन्तु येहू, नबात के पुत्र यारोबाम के उन पापों से पूरी तरह अपने को दूर न रख सका, जिन्होंने इस्राएल से पाप कराया था। येहू ने दान और बेतेल में सोने के बछड़ों को नष्ट नहीं किया।

इस्राएल पर येहू का शासन

[30]यहोवा ने येहू से कहा, "तुमने बहुत अच्छा किया है। तुमने वह काम किया है जिसे मैंने अच्छा बताया है। तुमने अहाब के परिवार को उस तरह नष्ट किया है जैसा तुमसे मैं उसको नष्ट कराना चाहता था। इसलिये तुम्हारे वंशज इस्राएल पर चार पीढ़ी तक शासन करेंगे।" [31]किन्तु येहू पूरे हृदय से यहोवा के नियमों का पालन करने में सावधान नहीं था। येहू ने यारोबाम के उन पापों को करना बन्द नहीं किया जिन्होंने इस्राएल से पाप कराए थे।

हजाएल इस्राएल को पराजित करता है

[32]उस समय यहोवा ने इस्राएल के हिस्सों को अलग करना आरम्भ किया। अराम के राजा हजाएल ने इस्राएलियों को इस्राएल की हर एक सीमा पर हराया। [33]हजाएल ने यरदन नदी के पूर्व के गिलाद प्रदेश को, गाद, रूबेन और मनश्शे के परिवार समूह के प्रदेशों सहित जीत लिया। हजाएल ने अरोएर से लेकर अर्नोन घाटी के सहारे गिलाद और बाशान तक की सारी भूमि जीत ली।

येहू की मृत्यु

[34]वे सभी बड़े कार्य, जो येहू ने किये, "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए हैं। [35]येहू मरा और उसे उसके पूर्वजों के साथ दफना दिया गया। लोगों ने येहू को शोमरोन में दफनाया। उसके बाद येहू का पुत्र यहोआहाज इस्राएल का नया राजा हुआ। [36]येहू ने शोमरोन में इस्राएल पर अट्ठाईस वर्ष तक शासन किया।

अतल्याह यहूदा के सभी राजपुत्रों को नष्ट कर देती है

11 अहज्याह की माँ अतल्याह ने देखा कि उसका पुत्र मर गया। तब वह उठी और उसने राजा के पूरे परिवार को मार डाला।

[2]यहोशेबा राजा योराम की पुत्री और अहज्याह की बहन थी। योआश राजा के पुत्रों में से एक था। यहोशेबा ने योआश को तब छिपा लिया जब अन्य बच्चे मारे जा रहे थे। यहोशेबा ने योआश को छिपा दिया। उसने योआश और उसकी धायी को अपने सोने के कमरे में छिपा दिया। इस प्रकार यहोशेबा और धायी ने योआश को अतल्याह से छिपा लिया। इस प्रकार योआश मारा नहीं गया।

भीतरी कमरा शाब्दिक, "बाल के मन्दिर का नगर।"

स्मृति पाषाण वे पत्थर जो किसी विशेष घटना आदि को याद दिलाने के लिये लोग स्थापित करते थे। प्राचीन इस्राएल में लोग प्राय: असत्य देवताओं की पूजा के लिये पत्थर की स्थापना विशेष स्थान के रूप में करते थे।

[3]तब योआश और यहोशेबा यहोवा के मन्दिर में जा छिपे। योआश वहाँ छः वर्ष तक छिपा रहा और अतल्याह ने यहूदा प्रदेश पर शासन किया।

[4]सातवें वर्ष प्रमुख याजक यहोयादा ने करीतों के सेनापतियों और रक्षकों* को बुलाया और वे आए। यहोयादा ने यहोवा के मन्दिर में उन्हें एक साथ बिठाया। तब यहोयादा ने उनके साथ एक वाचा की। मन्दिर में यहोयादा ने उन्हें प्रतिज्ञा करने को विवश किया। तब उसने राजा के पुत्र (योआश) को उन्हें दिखाया।

[5]तब यहोयादा ने उनको आदेश दिया। उसने कहा, "तुम्हें यह करना होगा। प्रत्येक सब्त–दिवस के आरम्भ होने पर तुम लोगों केएक तिहाई को यहाँ आना चाहिये। तुम लोगों को राजा की रक्षा उसके घर में करनी होगी। [6]दूसरे एक तिहाई को सूर–द्वार पर रहना होगा और बचे एक तिहाई को रक्षकों के पीछे, द्वार पर रहना होगा। इस प्रकार तुम लोग योआश की रक्षा में दीवार की तरह रहोगे [7]प्रत्येक सब्त–दिवस के अन्त में तुम लोगों के दो तिहाई यहोवा के मन्दिर की रक्षा करते हुए राजा योआश की रक्षा करेंगे। [8]जब कभी वह कहीं जाय तुम्हें राजा योआश के साथ ही रहना चाहिये। पूरे दल को उसे घेरे रखना चाहिये। प्रत्येक रक्षक को अपने अस्त्र–शस्त्र अपने हाथ में रखना चाहिये और तुम लोगों को उस किसी भी व्यक्ति को मार डालना चाहिये जो तुम्हारे अत्याधिक करीब पहुँचे।"

[9]सेनापतियों ने याजक यहोयादा के दिये गए सभी आदेशों का पालन किया। हर एक सेनापति ने अपने सैनिकों को लिया। एक दल को राजा की रक्षा शनिवार को करनी थी और अन्य दलों को सप्ताह के अन्य दिनों में राजा की रक्षा करनी थी। वे सभी पुरुष याजक यहोयादा के पास गए [10]और याजक ने सेनापतियों को भाले और ढाले दीं। ये वे भाले और ढाले थीं जिन्हें दाऊद ने यहोवा के मन्दिर में रखा था। [11]ये रक्षक अपने हाथों में अपने शस्त्र लिये मन्दिर के दायें कोने से लेकर बायें कोने तक खड़े थे। वे वेदी और मन्दिर के चारों ओर और जब राजा मन्दिर में जाता तो उसके चारों ओर खड़े होते थे। [12]ये व्यक्ति योआश को बाहर ले आए। उन्होंने योआश के सिर पर मुकुट पहनाया और परमेश्वर तथा राजा के बीच की वाचा को उसे दिया।* तब उन्होंने उसका अभिषेक किया और उसे नया राजा बनाया। उन्होंने तालियाँ बजाई और उद्घोष किया, "राजा दीर्घायु हों!"

[13]रानी अतल्याह ने रक्षकों और लोगों का यह उद्घोष सुना। इसलिये वह यहोवा के मन्दिर में लोगों के पास गई। [14]अतल्याह ने उस स्तम्भ के सहारे राजा को देखा जहाँ राजा प्रायः खड़े होते थे। उसने प्रमुखों और लोगों को राजा के लिये तुरही बजाते हुये भी देखा। उसने देखा कि सभी लोग बहुत प्रसन्न थे। उसने तुरही को बजते हुए सुना और उसने अपने वस्त्र यह प्रकट करने के लिये फाड़ डाले कि उसे बड़ी घबराहट है। तब अतल्याह चिल्ला उठी, "षडयन्त्र! षडयन्त्र!"

[15]याजक यहोयादा ने सैनिकों की व्यवस्था के अधिकारी सेनापतियों को आदेश दिया। यहोयादा ने उनसे कहा, "अतल्याह को मन्दिर के क्षेत्र से बाहर ले जाओ। उसके किसी भी साथ देने वाले को मार डालो। किन्तु उन्हें यहोवा के मन्दिर में मत मारो।"

[16]जैसे ही वह महल के 'अश्व–द्वार' से गई सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और मार डाला । सैनिकों ने अतल्याह को वहीं मार डाला।

[17]तब यहोयादा ने यहोवा, राजा और लोगों के बीच एक सन्धि कराई। इस वाचा से यह पता चलता था कि राजा और लोग यहोवा के अपने ही हैं। यहोयादा ने राजा और लोगों के बीच भी एक वाचा कराई। इस वाचा से यह पता चलता था कि राजा लोगों के लिये कार्य करेगा और इससे यह पता चलता था कि लोग राजा का आदेश मानेंगे और उसका अनुसरण करेंगे।

[18]तब सभी लोग असत्य देवता बाल के पूजागृह को गए। लोगों ने बाल की मूर्ति और उसकी वेदियों को नष्ट कर दिया। उन्होंने उनके बहुत से टुकड़े कर डाले। लोगों ने बाल के याजक मत्तन को भी वेदी के सामने मार डाला।

तब याजक यहोयादा ने कुछ लोगों को यहोवा के मन्दिर की व्यवस्था के लिये रखा। [19]याजकों, विशेष रक्षकों और सेनापतियों के अनुरक्षण में राजा यहोवा के मन्दिर से राजमहल तक गया और अन्य सभी लोग उनके पीछे–पीछे गए। वे राजा के महल के द्वार तक गए। तब

रक्षकों शाब्दिक, "दौड़ लगाने वाले" या "सन्देशवाहक।"

वाचा ... दिया संभवतः परमेश्वर की सेवा करने के लिए यह राजा की प्रतिज्ञा थीं। देखें पद 17 और 1शमू.10:25

राजा योआश राजसिंहासन पर बैठा। [20]सभी लोग प्रसन्न थे। नगर शान्त था। रानी अतल्याह, राजा के महल के पास तलवार के घाट उतार दी गई थी।

[21]जब योआश* राजा हुआ, वह सात वर्ष का था।

योआश अपना शासन आरम्भ करता है

12 योआश ने इस्राएल में येहू के राज्यकाल के सातवें वर्ष में शासन करना आरम्भ किया। योआश ने चालीस वर्ष तक यरूशलेम में शासन किया। योआश की माँ सिब्या बर्शेबा की थी। [2]योआश ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा कहा था। योआश ने पूरे जीवन यहोवा की आज्ञा का पालन किया। उसने वे कार्य किये जिनकी शिक्षा याजक यहोयादा ने उसे दी थी। [3]किन्तु उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। लोग तब तक भी उन पूजा के स्थानों पर बलि भेंट करते तथा सुगन्धि जलाते थे।

योआश ने मन्दिर की मरम्मत का आदेश दिया

[4-5]योआश ने याजकों से कहा, "यहोवा के मन्दिर में बहुत धन है। लोगों ने मन्दिर में चीज़ें दी हैं। लोगों ने गणना के समय मन्दिर का कर दिया है और लोगों ने धन इसलिये दिया है कि वे स्वत: ही देना चाहते थे। याजकों, आप लोग उस धन को ले लें और यहोवा के मन्दिर की मरम्मत करवा दें। हर एक याजक उस धन का इसमें उपयोग करे जो उसे उन लोगों से मिलता है जिनकी वे सेवा करते हैं। उसे उस धन का उपयोग यहोवा के मन्दिर की टूट–फूट की मरम्मत में करना चाहिये।"

[6]किन्तु याजकों ने मरम्मत नहीं की। योआश के राज्यकाल के तेईसवें वर्ष में भी याजकों ने तब तक मन्दिर की मरम्मत नहीं की थी। [7]इसलिये योआश ने याजक यहोयादा और अन्य याजकों को बुलाया। योआश ने यहोयादा और अन्य याजकों से पूछा, "आपने मन्दिर की मरम्मत क्यों नहीं की? आप उन लोगों से धन लेना बन्द करें जिनकी आप सेवा करते हैं। उस धन को उपयोग में लाना बन्द करें। उस धन का उपयोग मन्दिर की मरम्मत में होना चाहिये।"

[8]याजकों ने लोगों से धन न लेना स्वीकार किया। किन्तु उन्होंने मन्दिर की मरम्मत न करने का भी निश्चय किया। [9]इसलिये याजक यहोयादा ने एक सन्दूक लिया और उसके ऊपरी भाग में एक छेद कर दिया। तब यहोयादा ने सन्दूक को वेदी के दक्षिण की ओर रख दिया। यह सन्दूक उस दरवाजे के पास था जिससे लोग यहोवा के मन्दिर में आते थे। कुछ याजक मन्दिर के द्वार–पथ की रक्षा करते थे। वे याजक उस धन को, जिसे लोग यहोवा को देते थे, ले लेते थे और उस सन्दूक में डाल देते थे।

[10]जब लोग मन्दिर को जाते थे तब वे उस सन्दूक में सिक्के डालते थे। जब भी राजा का सचिव और महायाजक यह जानते कि सन्दूक में बहुत धन है तो वे आते और सन्दूक से धन को निकाल लेते। वे धन को थैलों में रखते और उसे गिन लेते थे। [11]तब वे उन मजदूरों का भुगतान करते जो यहोवा के मन्दिर में काम करते थे। वे यहोवा के मन्दिर में काम करने वाले बढ़ईयों और अन्य कारीगरों का भुगतान करते थे। [12]वे धन का उपयोग पत्थर के कामगारों और पत्थर तराशों का भुगतान करने में करते थे और वे उस धन का उपयोग लकड़ी, कटे पत्थर, और यहोवा के मन्दिर की मरम्मत के लिये अन्य चीजों को खरीदने में करते थे।

[13-14]लोगों ने यहोवा के मन्दिर के लिये धन दिया। किन्तु याजक उस धन का उपयोग चाँदी के बर्तन, बत्ती–झाड़नी, चिलमची, तुरही या कोई भी सोने–चाँदी के तश्तरियों को बनाने में नहीं कर सके। वह धन मजदूरों का भुगतान करने में लगा और उन मजदूरों ने यहोवा के मन्दिर की मरम्मत की। [15]किसी ने सारे धन का हिसाब नहीं किया या किसी कार्यकर्ता को यह बताने के लिये विवश नहीं किया गया कि धन क्या हुआ? क्यों? क्योंकि उन कार्यकर्ताओं पर विश्वास किया जा सकता था।

[16]लोगों ने उस समय धन दिया जब उन्होंने दोषबलि या पापबलि चढ़ाई। किन्तु उस धन का उपयोग मजदूर के भुगतान के लिये नहीं किया गया। वह धन याजकों का था।

योआश हजाएल से यरूशलेम की रक्षा करता है

[17]हजाएल अराम का राजा था। हजाएल गत नगर के विरुद्ध युद्ध करने गया। हजाएल ने गत को हराया। तब उसने यरूशलेम के विरुद्ध युद्ध करने जाने की योजना बनाई।

[18]यहोशापात, यहोराम और अहज्याह यहूदा के राजा रह चुके थे। वे योआश के पूर्वज थे। उन्होंने यहोवा को

योआश या, "यहोआहाश" योआश नाम का लम्बा रूप।

बहुत सी चीज़ें भेंट की थीं। वे चीज़ें मन्दिर में रखी थी। योआश ने भी बहुत सी चीज़ें यहोवा को भेंट की थी। योआश ने उन सभी विशेष चीज़ों और मन्दिर और अपने महल में रखे हुये सारे सोने को लिया। तब योआश ने उन सभी कीमती चीज़ों को अराम के राजा हजाएल के पास भेजा। इसी से हजाएल ने अपनी सेना को यरूशलेम से हटा लिया।

योआश की मृत्यु

[19]योआश ने जो बड़े कार्य किये वे सभी "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए है।

[20]योआश के अधिकारियों ने उसके विरुद्ध योजना बनाई। उन्होंने योआश को सिल्ला तक जाने वाली सड़क पर स्थित मिल्लो के घर पर मार डाला। [21]शिमात का पुत्र योजाकार और शोमेर का पुत्र यहोजाबाद योआश के अधिकारी थे। उन व्यक्तियों ने योआश को मार डाला। लोगों ने दाऊद नगर में योआश को उसके पूर्वजों के साथ दफनाया। योआश का पुत्र अमस्याह उसके बाद नया राजा बना।

यहोआहाज अपना शासन आरम्भ करता है

13 येहू का पुत्र यहोआहाज शोमरोन में इस्राएल का राजा बना। यह अहज्याह के पुत्र योआश के यहूदा में राज्यकाल के तेईसवें वर्ष में हुआ। यहोआहाज ने सत्रह वर्ष तक राज्य किया।

[2]यहोआहाज ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यहोआहाज ने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों का अनुसरण किया जिसने इस्राएल से पाप कराया। यहोआहाज ने उन कामों को करना बन्द नहीं किया। [3]तब यहोवा इस्राएल पर बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने इस्राएल को अराम के राजा हजाएल और हजाएल के पुत्र बेन्हदद के अधीन कर दिया।

यहोवा ने इस्राएल के लोगों पर कृपा की

[4]तब यहोआहाज ने यहोवा से सहायता के लिये प्रार्थना की और यहोवा ने उसकी प्रार्थना सुनी। यहोवा ने इस्राएल के लोगों के कष्टों और अराम के राजा के उत्पीड़न को देखा था। [5]इसलिये यहोवा ने एक व्यक्ति को इस्राएल की रक्षा के लिये भेजा। इस्राएली अरामियों से स्वतन्त्र हो गए। अतः इस्राएली, पहले की तरह अपने घर लौट गए।

[6]किन्तु इस्राएलियों ने फिर भी, उस यारोबाम के परिवार के पापों को करना बन्द नहीं किया। यारोबाम ने इस्राएल से पाप करवाया, और इस्राएली निरन्तर पाप कर्म करते रहे। उन्होंने अशेरा के स्तम्भों* को भी शोमरोन में रखा।

[7]अराम के राजा ने यहोआहाज की सेना को पराजित किया। अराम के राजा ने सेना के अधिकांश लोगों को नष्ट कर दिया। उसने केवल पचास घुड़सवार, दस रथ, और दस हजार पैदल सैनिक छोड़े। यहोआहाज के सैनिक दायं* चलाते समय हवा से उड़ाये गए भूसे की तरह थे।

[8]सभी बड़े कार्य जो यहोआहज ने किये "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। [9]यहोआहाज़ मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों ने यहोआहाज को शोमरोन में दफनाया। यहोआहाज का पुत्र यहोआश उसके बाद नया राजा हुआ।

इस्राएल पर यहोआश का शासन

[10]यहोआहाज का पुत्र यहोआश शोमरोन में इस्राएल का राजा हुआ। यह योआश के यहूदा में राज्यकाल के सैंतीसवें वर्ष में हुआ। यहोआश ने इस्राएल पर सोलह वर्ष तक राज्य किया। [11]इस्राएल के राजा यहोआश ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। उसने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों को बन्द नहीं किया जिसने इस्राएल से पाप कराये। यहोआश उन पापों को करता रहा। [12]सभी बड़े कार्य जो यहोआश ने किये और यहूदा के राजा अहज्याह के विरुद्ध उसने जो युद्ध किया वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" के पुस्तक में लिखे हैं। [13]यहोआश मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। यारोबाम नया राजा बना और यहोआश के राज सिंहासन पर बैठा। यहोआश शोमरोन में इस्राएल के राजाओं के साथ दफनाया गया।

अशेरा के स्तम्भ कनानी लोगों की पुज्या अशेरा देवी के सम्मान के लिये स्तम्भ का उपयोग होता था।

दायं दाने को भूसे से अलग करने के लिये उसे पैरों से कुचलना या पीटना।

यहोआश एलीशा से भेंट करता है

[14]एलीशा बीमार पड़ा। बाद में एलीशा बीमारी से मर गया। इस्राएल का राजा यहोआश एलीशा से मिलने गया। यहोआश एलीशा के लिये रोया। यहोआश ने कहा, "मेरे पिता! मेरे पिता! क्या यह इस्राएल के रथों और घोड़ों के लिये समय है?"*

[15]एलीशा ने यहोआश से कहा, "एक धनुष और कुछ बाण लो।"

यहोआश ने एक धनुष और कुछ बाण लिये। [16]तब एलीशा ने इस्राएल के राजा से कहा, "अपना हाथ धनुष पर रखो।" यहोआश ने अपना हाथ धनुष पर रखा। तब एलीशा ने अपने हाथ राजा के हाथ पर रखे। [17]एलीशा ने कहा, "पूर्व की खिड़की खोलो।" यहोआश ने खिड़की खोली। तब एलीशा ने कहा, "बाण चलाओ।"

यहोआश ने बाण चला दिया। तब एलीशा ने कहा, "वह यहोवा के विजय का बाण है! यह अराम पर विजय का बाण है। तुम अरामियों को अपेक में हराओगे और तुम उनको नष्ट कर दोगे।"

[18]एलीशा ने कहा, "बाण लो।" योआश ने बाण लिये। तब एलीशा ने इस्राएल के राजा से कहा, "भूमि पर प्रहार करो।"

योआश ने भूमि पर तीन बार प्रहार किया। तब वह रुक गया। [19]परमेश्वर का जन (एलीशा) योआश पर क्रोधित हुआ। एलीशा ने कहा, "तुम्हें पाँच या छ: बार धरती पर प्रहार करना चाहिये था। तब तुम अराम को उसे नष्ट करने तक हराते! किन्तु अब तुम अराम को केवल तीन बार हराओगे!"

एलीशा की कब्र पर एक अद्भुत बात होती है

[20] एलीशा मरा और लोगों ने उसे दफनाया।

एक बार बसन्त में मोआबी सैनिकों का एक दल इस्राएल आया। वे युद्ध में सामग्री लेने आए। [21]कुछ इस्राएली एक मरे व्यक्ति को दफना रहे थे और उन्होंने सैनिकों के उस दल को देखा। इस्राएलियों ने जल्दी में शव को एलीशा की कब्र में फेंका और वे भाग खड़े हुए। ज्योंही उस मरे व्यक्ति ने एलीशा की हड्डियों का स्पर्श किया, मरा व्यक्ति जीवित हो उठा और अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

योआश इस्राएल के नगर वापस जीतता है

[22]यहोआहाज के पूरे शासन काल में अराम के राजा हजाएल ने इस्राएल को परेशान किया। [23]किन्तु यहोवा इस्राएलियों पर दयालु था। यहोवा को दया आई और वह इस्राएलियों की ओर हुआ। क्यों? क्योंकि इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ अपनी वाचा के कारण, यहोवा इस्राएलियों को अभी नष्ट करने के लिये तैयार नहीं था। उसने अभी तक उन्हें अपने से दूर नहीं फेंका था।

[24]अराम का राजा हजाएल मरा और उसके बाद बेन्हदद नया राजा बना। [25]मरने के पहले हजाएल ने योआश के पिता यहोआहाज से युद्ध में कुछ नगर लिये थे। किन्तु अब यहोआहाज ने हजाएल के पुत्र बेन्हदद से वे नगर वापस ले लिये। योआश ने बेन्हदद को तीन बार हराया और इस्राएल के नगरों को वापस लिया।

अमस्याह यहूदा में अपना शासन आरम्भ करता है

14 यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह इस्राएल के राजा यहोआहाज के पुत्र योआश के शासन काल के दूसरे वर्ष में राजा हुआ। [2]अमस्याह ने जब शासन करना आरम्भ किया, वह पच्चीस वर्ष का था। अमस्याह ने उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य किया। अमस्याह की माँ यरूशलेम की निवासी यहोअद्दीन थी। [3]अमस्याह ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा बताया था। किन्तु उसने अपने पूर्वज दाऊद की तरह परमेश्वर का अनुसरण पूरी तरह से नहीं किया। अमस्याह ने वे सारे काम किये जो उसके पिता योआश ने किये थे। उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। लोग उन पूजा के स्थानों पर तब तक बलि देते और सुगन्धि जलाते थे।

[5]जिस समय अमस्याह का राज्य पर दृढ़ नियन्त्रण था, उसने उन अधिकारियों को मार डाला जिन्होंने उसके पिता को मारा था। [6]किन्तु उसने हत्यारों के बच्चों को, "मूसा के व्यवस्था" की किताब में लिखे नियमों के कारण नहीं मारा। यहोवा ने अपना यह आदेश मूसा के व्यवस्था में दिया था: "माता–पिता बच्चों द्वारा कुछ किये जाने के कारण मारे नहीं जा सकते और बच्चे अपने माता–पिता द्वारा कुछ किये जाने के कारण मारे नहीं जा सकते। कोई व्यक्ति केवल अपने ही किये बुरे कार्य के लिये मारा जा सकता है।"*

रथों ... समय है इसकी तात्पर्य यह है कि यह समय परमेश्वर के आने और तुमको ले जाने का है (मृत्यु)। देखें 1राजा 2:12

मारा ... सकता है देखें व्यवस्था. 24:16

[7]अमस्याह ने नमक घाटी में दस हजार एदोमियों को मार डाला। युद्ध में अमस्याह ने सेला को जीता और उसका नाम योक्तेल रखा। वह स्थान आज भी योक्तेल कहा जाता है।

अमस्याह योआश के विरुद्ध युद्ध छेड़ना चाहता है

[8]अमस्याह ने इस्राएल के राजा येहू के पुत्र यहोआहाज के पुत्र योआश के पास सन्देशवाहक भेजा। अमस्याह के सन्देश में कहा गया, "आओ, हम परस्पर युद्ध करें। आमने सामने होकर एक दूसरे का मुकाबला करें।"

[9]इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह को उत्तर भेजा। योआश ने कहा, "लबानोन की एक कटीली झाड़ी ने लबानोन के देवदारु पेड़ के पास एक सन्देश भेजा। सन्देश यह था, 'अपनी पुत्री, मेरे पुत्र के साथ विवाह के लिये दो।' किन्तु लबानोन का एक जंगली जानवर उधर से निकला और कटीली झाड़ी को कुचल गया। [10]यह सत्य है कि तुमने एदोम को हराया है। किन्तु तुम एदोम पर विजय के कारण घमण्डी हो गए हो। अपनी प्रसिद्धि का आनन्द उठाओ तथा घर पर रहो। अपने लिये परेशानियाँ मत मोल लो। यदि तुम ऐसा करोगे तुम गिर जाओगे और तुम्हारे साथ यहूदा भी गिरेगा!"

[11]किन्तु अमस्याह ने योआश की चेतावनी अनसुनी कर दी। अत: इस्राएल का राजा योआश यहूदा के राजा अमस्याह के विरुद्ध उसके ही नगर बेतशेमेश में लड़ने गया। [12]इस्राएल ने यहूदा को पराजित किया। यहूदा का हर एक आदमी घर भाग गया। [13]बेतशेमेश में इस्राएल के राजा योआश ने अहज्याह के पौत्र व योआश के पुत्र यहूदा के राजा अमस्याह को बन्दी बना लिया। योआश अमस्याह को यरूशलेम ले गया। योआश ने एप्रैम द्वार से कोने के फाटक तक लगभग छ: सौ फुट यरूशलेम की दीवार को गिरवाया। [14]तब योआश ने सारा सोना–चाँदी और जो भी बर्तन यहोवा के मन्दिर और राजमहल के खजाने में थे, उन सब को लूट लिया। योआश ने कुछ लोगों को बन्दी बना लिया। तब वह शोमरोन को वापस लौट गया।

[15]जो सभी बड़े कार्य योआश ने किये, साथ ही साथ यहूदा के राजा अमस्याह के साथ वह कैसे लड़ा, "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए हैं। [16]योआश मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। योआश शोमरोन में इस्राएल के राजाओं के साथ दफनाया गया। योआश का पुत्र यारोबाम उसके बाद नया राजा हुआ।

अमस्याह की मृत्यु

[17]यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह इस्राएल के राजा यहोआहाज के पुत्र योआश की मृत्यु के बाद पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहा। [18]अमस्याह ने जो बड़े काम किये वे "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए हैं। [19]लोगों ने यरूशलेम में अमस्याह के विरुद्ध एक योजना बनाई। अमस्याह लाकीश को भाग निकला। किन्तु लोगों ने अमस्याह के विरुद्ध, लाकीश को अपने आदमी भेजे और उन लोगों ने लाकीश में अमस्याह को मार डाला। [20]लोग घोड़ों पर अमस्याह के शव को वापस ले आए। अमस्याह दाऊद नगर में अपने पूर्वजों के साथ यरूशलेम में दफनाया गया।

अजर्याह यहूदा पर अपना शासन आरम्भ करता है

[21]तब यहूदा के सभी लोगों ने अजर्याह को नया राजा बनाया। अजर्याह सोलह वर्ष का था। [22]इस प्रकार अमस्याह मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। तब अजर्याह ने एलत को फिर बनाया और इसे यहूदा को वापस दे दिया।

यारोबाम द्वितीय इस्राएल पर शासन आरम्भ करता है

[23]इस्राएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम ने शोमरोन में यहूदा के राजा योआश के पुत्र अमस्याह के राज्यकाल के पन्द्रहवें वर्ष में शासन करना आरम्भ किया। यारोबाम ने इकतालीस वर्ष तक शासन किया। [24]यारोबाम ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यारोबाम ने उस नबात के पुत्र यारोबाम के पापों को करना बन्द नहीं किया, जिसने इस्राएल को पाप करने के लिये विवश किया। [25]यारोबाम ने इस्राएल की उस भूमि को जो सिवाना हमात से अराबा सागर (मृत सागर) तक जाती थी, वापस लिया। यह वैसा ही हुआ जैसा इस्राएल के यहोवा ने अपने सेवक गथेपेर के नबी, अमित्तै के पुत्र योना से कहा था। [26]यहोवा ने देखा कि सभी इस्राएली, चाहे वे स्वतन्त्र हों या दास, बहुत सी परेशानियों में हैं। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं बचा था जो इस्राएल की सहायता कर सकता। [27]यहोवा

ने यह नहीं कहा था कि वह संसार से इस्राएल का नाम उठा लेगा। इसलिये यहोवा ने योआश के पुत्र यारोबाम का उपयोग इस्राएल के लोगों की रक्षा के लिये किया।

[28]यारोबाम ने जो बड़े काम किये वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। उसमें इस्राएल के लिये दमिश्क और हमात को यारोबाम द्वारा वापस जीत लेने की कथा सम्मिलित है। (पहले ये नगर यहूदा के अधिपत्य में थे।) [29]यारोबाम मरा और इस्राएल के राजाओं, अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। यारोबाम का पुत्र जकर्याह उसके बाद नया राजा हुआ।

यहूदा पर अजर्याह का शासन

15 यहूदा के राजा अमस्याह का पुत्र अजर्याह इस्राएल के राजा यारोबाम के राज्यकाल के सत्ताईसवें, वर्ष में राजा बना। [2]शासन करना आरम्भ करने के समय अजर्याह सोलह वर्ष का था। उसने यरूशलेम में बावन वर्ष तक शासन किया। अजर्याह की माँ यरूशलेम की यकोल्याह नाम की थी। [3]अजर्याह ने ठीक अपने पिता अमस्याह की तरह वे काम किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा बताया था। अजर्याह ने उन सभी कामों का अनुसरण किया जिन्हें उसके पिता अमस्याह ने किये थे। [4]किन्तु उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। इन पूजा के स्थानों पर लोग अब भी बलि भेंट करते तथा सुगन्धि जलाते थे।

[5]यहोवा ने राजा अजर्याह को हानिकारक कुष्ठरोग का रोगी बना दिया। वह मरने के दिन तक इसी रोग से पीड़ित रहा। अजर्याह एक अलग महल में रहता था। राजा का पुत्र योताम राज महल की देखभाल और जनता का न्याय करता था।

[6]अजर्याह ने जो बड़े काम किये वे, "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। [7]अजर्याह मरा और अपने पूर्वजों के साथ दाऊद के नगर में दफनाया गया। अजर्याह का पुत्र योताम उसके बाद नया राजा हुआ।

इस्राएल पर जकर्याह का अल्पकालीन शासन

[8]यारोबाम के पुत्र जकर्याह ने इस्राएल में शोमरोन पर छः महीने तक शासन किया। यह यहूदा के राजा अजर्याह के राज्यकाल के अड़तीसवें वर्ष में हुआ। [9]जकर्याह ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। उसने वे ही काम किये जो उसके पूर्वजों ने किये थे। उसने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों को करना बन्द नहीं किया जिसने इस्राएल को पाप करने के लिये विवश किया।

[10]याबेश के पुत्र शल्लूम ने जकर्याह के विरुद्ध षड़यन्त्र रचा। शल्लूम ने जकर्याह को इब्लैम में मार डाला। उसके बाद शल्लूम नया राजा बना। [11]जकर्याह ने जो अन्य कार्य किये वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। [12]इस प्रकार यहोवा का कथन सत्य सिद्ध हुआ। यहोवा ने येहू से कहा था कि उसके वंशजों की चार पीढ़ियाँ इस्राएल का राजा बनेंगी।

शल्लूम का इस्राएल पर अल्पकालीन शासन

[13]याबेश का पुत्र शल्लूम यहूदा के राजा उज्जिय्याह के राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष में इस्राएल का राजा बना। शल्लूम ने शोमरोन में एक महीने तक शासन किया।

[14]गादी का मनहेम तिर्सा से शोमरोन आ पहुँचा। मनहेम ने याबेश के पुत्र शल्लूम को मार डाला। तब उसके बाद मनहेम नया राजा हुआ।

[15]शल्लूम ने जकर्याह के विरुद्ध षड़यन्त्र करने सहित जो कार्य किये, वे सभी "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए हैं।

इस्राएल पर मनहेम का शासन

[16]शल्लूम के मरने के बाद मनहेम ने तिप्सह और तिर्सा तक फैले हुये चारों ओर के क्षेत्रों को हरा दिया। लोगों ने उसके लिये नगर द्वार को खोलना मना कर दिया। इसलिये मनहेम ने उनको पराजित किया और नगर की सभी गर्भवतियों के गर्भ को चीर गिराया।

[17]गादी का पुत्र मनहेम यहूदा के राजा जकर्याह के राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष में इस्राएल का राजा हुआ। मनहेम ने शोमरोन में दस वर्ष शासन किया। [18]मनहेम ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। मनहेम ने नबात के पुत्र यारोबाम केपापों को करना बन्द नहीं किया, जिसने इस्राएल को पाप करने के लिये विवश किया।

[19]अश्शूर का राजा पूल इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने आया। मनहेम ने पूल को पचहत्तर हजार पौंड चाँदी दी। उसने यह इसलिये किया कि पूल मनहेम को बल प्रदान करेगा और जिससे राज्य पर उसका अधिकार सुदृढ़ हो जाये। [20]मनहेम ने सभी धनी और शक्तिशाली लोगों से

करों का भुगतान करवा कर धन एकत्रित किया। मनहेम ने हर व्यक्ति पर पचास शेकेल कर लगाया। तब मनहेम ने अश्शूर के राजा को धन दिया। अत: अश्शूर का राजा चला गया और इस्राएल में नहीं ठहरा।

[21]मनहेम ने जो बड़े कार्य किये वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। [22]मनहेम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। मनहेम का पुत्र पकह्याह उसके बाद नया राजा हुआ।

इस्राएल पर पकह्याह का शासन

[23]मनहेम का पुत्र पकह्याह यहूदा के राजा अजर्याह के राज्यकाल के पचासवें वर्ष में शोमरोन में इस्राएल का राजा हुआ। पकह्याह ने दो वर्ष तक राज्य किया। [24]पकह्याह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। पकह्याह ने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों का करना बन्द नहीं किया जिसने इस्राएल को पाप करने के लिये विवश किया था।

[25]पकह्याह की सेना का सेनापति रमल्याह का पुत्र पेकह था। पेकह ने पकह्याह को मार डाला। उसने उसे शोमरोन में राजा के महल में मारा। पेकह ने जब पकह्याह को मारा, उसके साथ गिलाद के पचास पुरुष थे। तब पेकह उसके बाद नया राजा हुआ।

[26] पकह्याह ने जो बड़े काम किये वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं।

इस्राएल पर पेकह का शासन

[27]रमल्याह के पुत्र पेकह ने यहूदा के राजा अजर्याह के राज्यकाल के बावनवें वर्ष में, इस्राएल पर शासन करना आरम्भ किया। पेकह ने बीस वर्ष तक शासन किया। [28]पेकह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। पेकह ने इस्राएल को पाप करने के लिये विवश करने वाले नबात के पुत्र यारोबाम के पाप कर्मों को करना बन्द नहीं किया।

[29]अश्शूर का राजा तिग्लत्पिलेसेर इस्राएल के विरुद्ध लड़ने आया। यह वही समय था जब पेकह इस्राएल का राजा था। तिग्लत्पिलेसेर ने इय्योन, अबेल्बेत्माका, यानोह, केदेश, हासोर, गिलाद गालील और नप्ताली के सारे क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। तिग्लत्पिलेसेर इन स्थानों से लोगों को बन्दी बनाकर अश्शूर ले गया।

[30]एला का पुत्र होशे ने रमल्याह के पुत्र पेकह के विरुद्ध षड़यन्त्र किया। होशे ने पेकह को मार डाला। तब होशे पेकह के बाद नया राजा बना। यह यहूदा के राजा उजिय्याह के पुत्र योताम के राज्यकाल के बीसवें वर्ष में हुआ।

[31]पेकह ने जो सारे बड़े काम किये वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखें हैं।

यहूदा पर योताम शासन करता है

[32]उजिय्याह का पुत्र योताम यहूदा का राजा बना। यह इस्राएल के राजा रमल्याह के पुत्र पेकह के राज्यकाल के दूसरे वर्ष में हुआ। [33]योताम जब राजा बना, वह पच्चीस वर्ष का था। योताम ने यरूशलेम में सोलह वर्ष तक शासन किया। योताम की माँ सादोक की पुत्री यरुशा थी। [34]योताम ने वे काम, जिन्हें यहोवा ने ठीक बताया था, ठीक अपने पिता उजिय्याह की तरह किये। [35]किन्तु उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। लोग उन पूजा स्थानों पर तब भी बलि चढ़ाते और सुगन्धि जलाते थे। योताम ने यहोवा के मन्दिर* का ऊपरी द्वार बनवाया। सभी बड़े काम जो योताम ने किये वे "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं।

[37]उस समय यहोवा ने अराम के राजा रसीन और रमल्याह के पुत्र पेकह को यहूदा के विरुद्ध लड़ने भेजा। [38]योताम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। योताम अपने पूर्वज दाऊद के नगर में दफनाया गया। योताम का पुत्र आहाज उसके बाद नया राजा हुआ।

आहाज यहूदा का राजा बनता है

16 योताम का पुत्र आहाज इस्राएल के राजा रमल्याह के पुत्र पेकह के राज्यकाल के सत्रहवें वर्ष में यहूदा का राजा बना। [2]आहाज जब राजा बना वह बीस वर्ष का था। आहाज ने यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य किया। आहाज ने वे काम नहीं किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा बताया था। उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन अपने पूर्वज दाऊद की तरह नहीं किया। [3]आहाज इस्राएल के राजाओं की तरह रहा। उसने अपने पुत्र तक की बलि

मन्दिर परमेश्वर की पूजा के लिये एक विशेष इमारत। परमेश्वर ने यहूदियों को आदेश दिया था कि वे उसकी उपासना यरूशलेम के मन्दिर में करें।

आग में दी।* उसने उन राष्ट्रों के घोर पापों की नकल की जिन्हें यहोवा ने देश छोड़ने को विवश तब किया था जब इस्राएली आए थे। [4]आहाज ने उच्च स्थानों, पहाड़ियों और हर एक हरे पेड़ के नीचे बलि चढ़ाई और सुगन्धि जलाई।

[5]अराम के राजा रसीन और इस्राएल के राजा रमल्याह का पुत्र पेकह, दोनों यरूशलेम के विरुद्ध लड़ने आए। रसीन और पेकह ने आहाज को घेर लिया किन्तु वे उसे हरा नहीं सके। [6]उस समय अराम के राजा ने अराम के लिये एलत को वापस ले लिया। रसीन ने एलत में रहने वाले सभी यहूदा के निवासियों को जबरदस्ती निकाला। अरामी लोग एलत में बस गए और वे आज भी वहाँ रहते हैं।

[7]अहाज ने अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर के पास सन्देशवाहक भेजे। सन्देश यह था: "मैं आपका सेवक हूँ। मैं आपके पुत्र समान हूँ। आएँ, और मुझे अराम के राजा और इस्राएल के राजा से बचायें। वे मुझसे युद्ध करने आए हैं!" [8]आहाज ने यहोवा के मन्दिर और राजमहल के खजाने में जो सोना और चाँदी था उसे भी ले लिया। तब आहाज ने अश्शूर के राजा को भेंट भेजी। [9]अश्शूर के राजा ने उसकी बात मान ली। अश्शूर का राजा दमिश्क के विरुद्ध लड़ने गया। राजा ने उस नगर पर अधिकार कर लिया और लोगों को दमिश्क से बन्दी बनाकर फिर ले गया। उसने रसीन को भी मार डाला।

[10]राजा आहाज अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर से मिलने दमिश्क गया। आहाज ने दमिश्क में वेदी को देखा। राजा आहाज ने इस वेदी का एक नमूना तथा उसकी व्यापक रूपरेखा, याजक ऊरिय्याह को भेजी। [11]तब याजक ऊरिय्याह ने राजा आहाज द्वारा दमिश्क से भेजे गए नमूने के समान ही एक वेदी बनाई। याजक ऊरिय्याह ने इस प्रकार की वेदी राजा आहाज के दमिश्क से लौटने के पहले बनाई।

[12]जब राजा दमिश्क से लौटा तो उसने वेदी को देखा। उसने वेदी पर भेंट चढ़ाई। [13]वेदी पर आहाज ने होमबलि और अन्नबलि चढ़ाई। उसने अपनी पेय भेंट डाली और अपनी मेलबलि के खून को इस वेदी पर छिड़का।

[14]आहाज ने उस काँसे की वेदी को जो यहोवा के सामने थी मन्दिर के सामने के स्थान से हटाया। यह काँसे की वेदी आहाज की वेदी और यहोवा के मन्दिर के बीच थी। आहाज ने काँसे की वेदी को अपने वेदी के उत्तर की ओर रखा। [15]आहाज ने याजक ऊरिय्याह को आदेश दिया। उसने कहा, "विशाल वेदी का उपयोग सवेरे की होमबलियों को जलाने के लिये, सन्ध्या की अन्नबलि के लिये और इस देश के सभी लोगों की पेय भेंट के लिये करो। होमबलि और बलियों का सारा खून विशाल वेदी पर छिड़को। किन्तु मैं काँसे की वेदी का उपयोग परमेश्वर से प्रश्न पूछने के लिये करूँगा।" [16]याजक ऊरिय्याह ने वह सब किया जिसे करने के लिये राजा आहाज ने आदेश दिये।

[17]वहाँ पर काँसे के कवच वाली गाड़ियाँ और याजकों के हाथ धोने के लिये चिलमचियाँ थी। तब राजा आहाज ने मन्दिर में प्रयुक्त काँसे की गाड़ियों को काट डाला और उनसे तख्ते निकाल लिये। उसने गाड़ियों में से चिलमचियों को ले लिया। उसने विशाल टंकी को भी काँसे के उन बैलों से हटा लिया जो उसके नीचे खड़ी थीं। उसने विशाल टंकी को एक पत्थर के चबूतरे पर रखा। [18]कारीगरों ने सब्त की सभा के लिये मन्दिर के अन्दर एक ढका स्थान बनाया था। आहाज ने सब्त के लिये ढके स्थान को हटा लिया। आहाज ने राजा के लिये बाहरी द्वार को भी हटा दिया। आहाज ने ये सभी चीजें यहोवा के मन्दिर से लीं। यह सब उसने अश्शूर के राजा को प्रसन्न करने के लिये किया।

[19]आहाज ने जो बड़े काम किये वे "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे है। [20]आहाज मरा और अपने पूर्वजों के साथ दाऊद नगर में दफनाया गया। आहाज का पुत्र हिजकिय्याह उसके बाद नया राजा हुआ।

होशे इस्राएल पर शासन करना आरम्भ करता है

17 एला का पुत्र होशे ने शोमरोन में इस्राएल पर शासन करना आरम्भ किया। यह यहूदा के राजा आहाज के राज्यकाल के बारहवें वर्ष में हुआ। होशे ने नौ वर्ष तक शासन किया। [2]होशे ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। किन्तु होशे इस्राएल का उतना बुरा राजा नहीं था जितने वे राजा थे जिन्होंने उसके पहले शासन किया था।

[3]अश्शूर का राजा शल्मनेसेर होशे के विरुद्ध युद्ध करने आया। शल्मनेसेर ने होशे को हराया और होशे

उसने ... दी शाब्दिक, "अपने पुत्र को आग से होकर निकाला।"

शल्मनेसेर का सेवक बन गया। होशे शल्मनेसेर को अधीनस्थ कर* देने लगा।

[4]किन्तु बाद में अश्शूर के राजा को पता चला कि होशे ने उसके विरुद्ध षडयन्त्र रचा है। होशे ने मिस्र के राजा के पास सहायता माँगने के लिये राजदूत भेजे। मिस्र के राजा का नाम "सो" था। उस वर्ष होशे ने अश्शूर के राजा को अधीनस्थ कर उसी प्रकार नहीं भेजा जैसे वह हर वर्ष भेजता था। अत: अश्शूर के राजा ने होशे को बन्दी बनाया और उसे जेल में डाल दिया।

[5]तब अश्शूर के राजा ने इस्राएल के विभिन्न प्रदेशों पर आक्रमण किया। वह शोमरोन पहुँचा। वह शोमरोन के विरुद्ध तीन वर्ष तक लड़ा। [6]अश्शूर के राजा ने, इस्राएल पर होशे के राज्यकाल के नवें वर्ष में, शोमरोन पर अधिकार जमाया। अश्शूर का राजा इस्राएलियों को बन्दी के रूप में अश्शूर को ले गया। उसने उन्हें हलह, हाबोर नदी के तट पर गोजान और मादियों के नगरों में बसाया।

[7] ये घटनायें घटी क्योंकि इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किये थे। यहोवा इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाया। यहोवा ने उन्हें राजा फ़िरौन के चंगुल से बाहर निकाला। किन्तु इस्राएलियों ने अन्य देवताओं को पूजना आरम्भ किया था। [8]इस्राएली वही सब करने लगे थे जो दूसरे राष्ट्र करते थे। यहोवा ने उन लोगों को अपना देश छोड़ने को विवश किया था जब इस्राएली आए थे। इस्राएलियों ने भी राजाओं से शासित होना पसन्द किया, परमेश्वर से शासित होना नहीं। [9]इस्राएलियों ने गुप्त रूप से अपने यहोवा परमेश्वर के विरुद्ध काम किया। जिसे उन्हें नहीं करना चाहिये था।

इस्राएलियों ने अपने सबसे छोटे नगर से लेकर सबसे बड़े नगर तक, अपने सभी नगरों में उच्च स्थान बनाये। [10]इस्राएलियों ने प्रत्येक ऊँची पहाड़ी पर हरे पेड़ के नीचे स्मृति पत्थर* तथा अशेरा स्तम्भ लगाये [11]इस्राएलियों ने पूजा के उन सभी स्थानों पर सुगन्धि जलाई। उन्होंने ये सभी कार्य उन राष्ट्रों की तरह किया जिन्हें यहोवा ने उनके सामने देश छोड़ने को विवश किया था। इस्राएलियों ने वे काम किये जिन्होंने यहोवा को क्रोधित किया। [12]उन्होंने देवमूर्तियों की सेवा की, और यहोवा ने इस्राएलियों से कहा था, "तुम्हें यह नहीं करना चाहिये।"

[13]यहोवा ने हर एक नबी और हर एक दृष्टा का उपयोग इस्राएल और यहूदा को चेतावनी देने के लिये किया। यहोवा ने कहा, "तुम बुरे कामों से दूर हटो! मेरे आदेशों और नियमों का पालन करो। उन सभी नियमों का पालन करो जिन्हें मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिये हैं। मैंने अपने सेवक नबियों का उपयोग यह नियम तुम्हें देने के लिये किया।"

[14]लेकिन लोगों ने एक न सुनी। वे अपने पूर्वजों की तरह बड़े हठी रहे। उनके पूर्वज यहोवा, अपने परमेश्वर में विश्वास नहीं रखते थे। [15]लोगों ने, अपने पूर्वजों द्वारा यहोवा के साथ की गई वाचा और यहोवा के नियमों को मानने से इन्कार किया। उन्होंने यहोवा की चेतावनियों को सुनने से इन्कार किया। उन्होंने निकम्मे देवमूर्तियों का अनुसरण किया और स्वयं निकम्में बन गये। उन्होंने अपने चारों ओर के राष्ट्रों का अनुसरण किया। ये राष्ट्र वह करते थे जिसे न करने की चेतावनी इस्राएल के लोगों को यहोवा ने दी थी।

[16]लोगों ने यहोवा, अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन करना बन्द कर दिया। उन्होंने बछड़ों की दो सोने की मूर्तियाँ बनाई। उन्होंने अशेरा स्तम्भ बनाये। उन्होंने आकाश के सभी नक्षत्रों की पूजा की और बाल की सेवा की। [17]उन्होंने अपने पुत्र–पुत्रियों की बलि आग में दी। उन्होंने जादू और प्रेत विद्या का उपयोग भविष्य को जानने के लिये किया। उन्होंने वह करने के लिये अपने को बेचा, जिसे यहोवा ने बताया था कि वह उसे क्रोधित करने वाली बुराई है। [18]इसलिये यहोवा इस्राएल पर बहुत क्रोधित हुआ और उन्हें अपनी निगाह से दूर ले गया। यहूदा के परिवार समूह के अतिरिक्त कोई इस्राएली बचा न रहा!

यहूदा के लोग भी अपराधी हैं

[19]किन्तु यहूदा के लोगों ने भी यहोवा, अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन नहीं किया। यहूदा के लोग भी इस्राएल के लोगों की तरह ही रहते थे।

अधीनस्थ कर वह धन जो विदेशी राजा या राष्ट्र को रक्षित रहने के लिये दिया जाता है।

स्मृति पत्थर आम जनता को कुछ विशेष बातों को याद दिलाने के लिये ये पत्थर लगाये जाते थे। पुराने इस्राएल में लोग अक्सर विशेष स्थानों पर झूठे परमेश्वर की पूजा करने के लिये भी पत्थर लगाते थे ।

[20]यहोवा ने इस्राएल के सभी लोगों को अस्वीकार किया। उसने उन पर बहुत विपत्तियाँ ढाई। उसने लोगों को उन्हें नष्ट करने दिया और अन्त में उसने उन्हें उठा फेंका और अपनी दृष्टि से ओझल कर दिया। [21]यहोवा ने दाऊद के परिवार से इस्राएल को अलग कर डाला और इस्राएलियों ने नबात के पुत्र यारोबाम को अपना राजा बनाया। यारोबाम ने इस्राएलियों को यहोवा का अनुसरण करने से दूर कर दिया। यारोबाम ने इस्राएलियों से एक भीषण पाप कराया। [22]इस प्रकार इस्राएलियों ने उन सभी पापों का अनुसरण किया जिन्हें यारोबाम ने किया। उन्होंने इन पापों का करना तब तक बन्द नहीं किया [23]जब तक यहोवा ने इस्राएलियों को अपनी दृष्टि से दूर नहीं हटाया और यहोवा ने कहा कि यह होगा। लोगों को बताने के लिए कि यह होगा, उसने अपने नबियों को भेजा। इसलिए इस्राएली अपने देश से बाहर अश्शूर पहुँचाये गए और वे आज तक वहीं हैं।

शोमरोनी लोगों का आरम्भ

[24]अश्शूर का राजा इस्राएलियों को शोमरोन से ले गया। अश्शूर का राजा बाबेल, कूता, अब्वाहमात और सपवैम से लोगों को लाया। उसने उन लोगों को शोमरोन में बसा दिया। उन लोगो ने शोमरोन पर अधिकार किया और उसके चारों ओर के नगरों में रहने लगे। [25]जब ये लोग शोमरोन में रहने लगे तो इन्होंने यहोवा का सम्मान नहीं किया। इसलिये यहोवा ने सिंहों को इन पर आक्रमण के लिये भेजा। इन सिंहों ने उनके कुछ लोगों को मार डाला। [26]कुछ लोगों ने यह बात अश्शूर के राजा से कही। "वे लोग जिन्हें आप ले गए और शोमरोन के नगरों में बसाया, उस देश के देवता के नियमों को नहीं जानते। इसलिये उस देवता ने उन लोगों पर आक्रमण करने के लिये सिंह भेजे। सिहों ने उन लोगों को मार डाला क्योंकि वे लोग उस देश के देवता के नियमों को नहीं जानते थे।"

[27]इसलिए अश्शूर के राजा ने यह आदेश दिया: "तुमने कुछ याजकों को शोमरोन से लिया था। मैंने जिन याजकों को बन्दी बनाया था उनमें से एक को शोमरोन को वापस भेज दो। उस याजक को जाने और वहाँ रहने दो। तब वह याजक लोगों को उस देश के देवता के नियम सिखा सकता है।"

[28]इसलिये अश्शूरियों द्वारा शोमरोन से लाये हुए याजकों में से एक बेतेल में रहने आया। उस याजक ने लोगों को सिखाया कि उन्हें यहोवा का सम्मान कैसे करना चाहिये।

[29]किन्तु उन सभी राष्ट्रों ने अपने निजी देवता बनाए और उन्हें शोमरोन के लोगों द्वारा बनाए गए उच्च स्थानों पर पूजास्थलों में रखा। उन राष्ट्रों ने यही किया, जहाँ कहीं भी वे बसे। [30]बाबेल के लोगो ने असत्य देवता सुक्कोतबनोत को बनाया। कूत के लोगों ने असत्य देवता नेर्गल को बनाया। हमात के लोगों ने असत्य देवता अशीमा को बनाया। [31]अव्वी लोगों ने असत्य देवता निभज और तर्त्ताक बनाए और सपवमी लोगों ने झूठे देवताओं अद्रम्मेलेक और अनम्मेलेक के सम्मान के लिये अपने बच्चों को आग में जलाया।

[32]किन्तु उन लोगों ने यहोवा की भी उपासना की। उन्होंने अपने लोगों में से उच्च स्थानों के लिये याजक चुने। ये याजक उन पूजा के स्थानों पर लोगों के लिये बलि चढ़ाते थे। [33]वे यहोवा का सम्मान करते थे, किन्तु वे अपने देवताओं की भी सेवा करते थे। वे लोग अपने देवता की वैसी ही सेवा करते थे जैसी वे उन देशों में करते थे जहाँ से वे लाए गए थे।

[34]आज भी वे लोग वैसे ही रहते हैं जैसे वे भूतकाल में रहते थे। वे यहोवा का सम्मान नहीं करते थे। वे इस्राएलियों के आदेशों और नियमों का पालन नहीं करते थे। वे उन नियमों या आदेशों का पालन नहीं करते थे जिन्हें यहोवा ने याकूब (इस्राएल) की सन्तानों को दिया था। [35]यहोवा ने इस्राएल के लोगों के साथ एक वाचा की थी। यहोवा ने उन्हें आदेश दिया, "तुम्हें अन्य देवताओं का सम्मान नहीं करना चाहिये। तुम्हें उनकी पूजा या सेवा नहीं करनी चाहिये या उन्हें बलि भेंट नहीं करनी चाहिये। [36]किन्तु तुम्हें यहोवा का अनुसरण करना चाहिये। यहोवा वही परमेश्वर है जो तुम्हें मिस्र से बाहर ले आया। यहोवा ने अपनी महान शक्ति का उपयोग तुम्हें बचाने के लिये किया। तुम्हें यहोवा की ही उपासना करनी चाहिये और उसी को बलि भेंट करनी चाहिये। [37]तुम्हें उसके उन नियमों, विधियों, उपदेशों और आदेशों का पालन करना चाहिये जिन्हें उसने तुम्हारे लिये लिखा। तुम्हें इनका पालन सदैव करना चाहिये। तुम्हें अन्य देवताओं का सम्मान नहीं करना चाहिये। [38]तुम्हें उस वाचा को नहीं भूलना चाहिये, जो मैंने तुम्हारे साथ किया। तुम्हें अन्य देवताओं

का आदर नहीं करना चाहिये। [39]नहीं! तुम्हें केवल यहोवा, अपने परमेश्वर का ही सम्मान करना चाहिये। तब वह तुम्हें तुम्हारे सभी शत्रुओं से बचाएगा।"

[40] किन्तु इस्राएलियों ने इसे नहीं सुना। वे वही करते रहे जो पहले करते चले आ रहे थे। [41]इसलिये अब तो वे अन्य राष्ट्र यहोवा का सम्मान करते हैं, किन्तु वे अपनी देवमूर्तियों की भी सेवा करते हैं। उनके पुत्र–पौत्र वही करते हैं, जो उनके पूर्वज करते थे। वे आज तक वही काम करते हैं।

हिजकिय्याह यहूदा पर अपना शासन करना आरम्भ करता है

18 आहाज का पुत्र हिजकिय्याह यहूदा का राजा था। हिजकिय्याह ने इस्राएल के राजा एला के पुत्र होशे के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में शासन करना आरम्भ किया। [2]हिजकिय्याह ने जब शासन करना आरम्भ किया, वह पच्चीस वर्ष का था। हिजकिय्याह ने यरूशलेम में उनतीस वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ जकर्याह की पुत्री अबी थी।

[3]हिजकिय्याह ने ठीक अपने पूर्वज दाऊद की तरह वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा बताया था। [4]हिजकिय्याह ने उच्चस्थानों को नष्ट किया। उसने स्मृति पत्थरों और अशेरा स्तम्भों को खंडित कर दिया। उन दिनों इस्राएल के लोग मूसा द्वारा बनाए गए काँसे के साँप के लिये सुगन्धि जलाते थे। इस काँसे के साँप का नाम "नहुशतान"* था।

हिजकिय्याह ने इस काँसे के साँप के टुकड़े कर डाले क्योंकि लोग उस साँप की पूजा कर रहे थे।

[5]हिजकिय्याह यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर में विश्वास रखता था। यहूदा के राजाओं में से उसके पहले या उसके बाद हिजकिय्याह के समान कोई व्यक्ति नहीं था। [6]हिजकिय्याह यहोवा का बहुत भक्त था। उसने यहोवा का अनुसरण करना नहीं छोड़ा। उसने उन आदेशों का पालन किया जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिये थे। [7]यहोवा हिजकिय्याह के साथ था। हिजकिय्याह ने जो कुछ किया, उसमें वह सफल रहा।

हिजकिय्याह ने अश्शूर के राजा से अपने को स्वतन्त्र कर लिया। हिजकिय्याह ने अश्शूर के राजा की सेवा करना बन्द कर दिया। [8]हिजकिय्याह ने लगातार गाज्जा तक और उसके चारों ओर के पलिश्तियों को पराजित किया। उसने सभी छोटे से लेकर बड़े पलिश्ती नगरों को पराजित किया।

अश्शूरी शोमरोन पर अधिकार करते हैं

[9]अश्शूर का राजा शल्मनेसेर शोमरोन के विरुद्ध युद्ध करने गया। उसकी सेना ने नगर को घेर लिया। यह हिजकिय्याह के यहूदा पर राज्यकाल के चौथे वर्ष में हुआ। (यह इस्राएल के राजा एला के पुत्र होशे का भी सातवाँ वर्ष था।) [10]तीन वर्ष बाद शल्मनेसेर ने शोमरोन पर अधिकार कर लिया। उसने शोमरोन को यहूदा के राजा हिजकिय्याह के राज्यकाल के छठे वर्ष में शोमरोन को ले लिया। (यह इस्राएल के राजा होशे के राज्यकाल का नवाँ वर्ष भी था।) [11]अश्शूर का राजा इस्राएलियों को बन्दी के रूप में अश्शूर ले गया। उसने उन्हें हलह हाबोर पर (गोजान नदी) और मादियों के नगरों में बसाया। [12]यह हुआ, क्योंकि इस्राएलियों ने यहोवा, अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। उन्होंने यहोवा की वाचा को तोड़ा। उन्होंने उन सभी नियमों को नहीं माना जिनके लिये यहोवा के सेवक मूसा ने आदेश दिये थे। इस्राएल के लोगों ने यहोवा की वाचा की अनसुनी की या उन कामों को नहीं किया जिन्हें करने की शिक्षा उसमें दी गई थी।

अश्शूर यहूदा को लेने को तैयार होता है

[13]हिजकिय्याह के राज्यकाल के चौदहवें वर्ष अश्शूर का राजा सन्हेरीब यहूदा के सभी सुदृढ़ नगरों के विरुद्ध युद्ध छेड़ने गया। सन्हेरीब ने उन सभी नगरों को पराजित किया। [14]तब यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने अश्शूर के राजा को लाकीश में एक सन्देश भेजा। हिजकिय्याह ने कहा, "मैंने बुरा किया है। मुझे शान्ति से रहने दो। तब मैं तुम्हें वह भुगतान करूँगा जो कुछ तुम चाहोगे।"

तब अश्शूर के राजा ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह से ग्यारह टन चाँदी और एक टन सोना से अधिक मांगा। [15]हिजकिय्याह ने सारी चाँदी जो यहोवा के मन्दिर और राजा के खजानों में थी, वह सब दे दी। [16]उस समय हिजकिय्याह ने उस सोने को उतार लिया जो यहोवा के मन्दिर के दरवाजों और चौखटों पर मढ़ा गया था। राजा

नहुशतान यह हिब्रू उन शब्दों की तरह था जिसका अर्थ "काँसा" और "साँप" था।

हिजकिय्याह ने इन दरवाजों और चौखटों पर सोना मढ़वाया था। हिजकिय्याह ने यह सोना अश्शूर के राजा को दिया।

अश्शूर का राजा अपने लोगों को यरूशलेम भेजता है

[17]अश्शूर के राजा ने अपने तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण सेनापतियों को एक विशाल सेना के साथ यरूशलेम में राजा हिजकिय्याह के पास भेजा। वे लोग लाकीश से चले और यरूशलेम को गये। वे ऊपरी स्रोत के पास छोटी नहर के निकट खड़े हुए। (ऊपरी स्रोत धोबी क्षेत्र तक ले जाने वाली सड़क पर है।) [18]इन लोगों ने राजा को बुलाया। हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम (एल्याकीम राजमहल का अधीक्षक था।) शेब्ना (शास्त्री) और आसाप का पुत्र योआह (अभिलेखपाल) उनसे मिलने आए।

[19]सेनापतियों में से एक ने उनसे कहा, "हिजकिय्याह से कहो कि महान सम्राट अश्शूर का सम्राट यह कहता है: किस पर तुम भरोसा करते हो? [20]तुमने केवल अर्थहीन शब्द कहे है। तुम कहते हो, "मेरे पास उपयुक्त सलाह और शक्ति युद्ध में मदद के लिये है।" किन्तु तुम किस पर विश्वास करते हो जो तुम मेरे शासन से स्वतन्त्र हो गए हो? [21]तुम टूटे बेंत की छड़ी का सहारा ले रहे हो। यह छड़ी मिस्र है। यदि कोई व्यक्ति इस छड़ी का सहारा लेगा तो यह टूटेगी और उसके हाथ को बेधती हुई उसे घायल करेगी! मिस्र का राजा उन सभी लोगों के लिये वैसा ही है, जो उस पर भरोसा करते हैं। [22]हो सकता है, तुम कहो, "हम यहोवा, अपने परमेश्वर पर विश्वास करते हैं।" किन्तु मैं जानता हूँ कि हिजकिय्याह ने यहोवा के उच्च स्थानों और वेदियों को हटा दिया और यहूदा और यरूशलेम से कहा, "तुम्हें केवल यरूशलेम में वेदी के सामने उपासना करनी चाहिये।"

[23]अब अश्शूर के राजा, हमारे स्वामी से यह वाचा करो। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं दो हजार घोड़े दूँगा, यदि आप उन पर चढ़ने वाले घुड़सवारों को प्राप्त कर सकेंगे। [24]मेरे स्वामी के अधिकारियों में से सबसे निचले स्तर के अधिकारी को भी तुम हरा नहीं सकते! तुमने रथ और घुड़सवार सैनिक पाने के लिये मिस्र पर विश्वास किया है। [25]मैं यहोवा के बिना यरूशलेम को नष्ट करने नहीं आया हूँ। यहोवा ने मुझसे कहा है, "इस देश के विरुद्ध जाओ और इसे नष्ट करो!"

[26]तब हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम, शेब्ना और योआह ने सेनापति से कहा, "कृपया हमसे अरामी में बातें करें। हम उस भाषा को समझते हैं। यहूदा की भाषा में हम लोगों से बातें न करें क्योंकि दीवार पर के लोग हम लोगों की बातें सुन सकते हैं!"

[27] किन्तु रबशाके ने उनसे कहा, "मेरे स्वामी ने मुझे केवल तुमसे और तुम्हारे राजा से बातें करने के लिये नहीं भेजा है। मैं उन अन्य लोगों के लिये भी कह रहा हूँ जो दीवार पर बैठते हैं। वे अपना मल और मूत्र तुम्हारे साथ खायेंगे–पीयेंगे"*

[28]तब सेनापति हिब्रू भाषा में जोर से चिल्लाया, "महान सम्राट, अश्शूर के सम्राट का यह सन्देश सुनो। [29]सम्राट कहता है, 'हिजकिय्याह को, अपने को मूर्ख मत बनाने दो! वह तुम्हें मेरी शक्ति से बचा नहीं सकता।' [30]हिजकिय्याह के यहोवा के प्रति तुम आस्थावान न होना, हिजकिय्याह कहता है, 'हमें यहोवा बचा लेगा! अश्शूर का सम्राट इस नगर को पराजित नहीं कर सकता है' [31]किन्तु हिजकिय्याह की एक न सुनो।

"अश्शूर का सम्राट यह कहता है: 'मेरे साथ सन्धि करो और मुझसे मिलो। तब तुम हर एक अपनी अंगूर की बेलों और अपने अंजीर के पेड़ों से खा सकते हो तथा अपने कुँए से पानी पी सकते हो। [32]यह तुम तब तक कर सकते हो जब तक मैं न आऊँ और तुम्हारे देश जैसे देश में तुम्हें ले न जाऊँ। यह अन्न और नयी दाखमधु, यह रोटी और अंगूर भरे खेत और जैतून एवं मधु का देश है। तब तुम जीवित रहोगे, मरोगे नहीं। किन्तु हिजकिय्याह की एक न सुनो! वह तुम्हारे इरादों को बदलना चाहता है। वह कह रहा है, 'यहोवा हमें बचा लेगा।' [33]क्या अन्य राष्ट्रों के देवताओं ने अश्शूर के सम्राट से अपने देश को बचाया? नहीं। [34]हमात और अर्पाद के देवता कहाँ हैं? सपवैम, हेना और इव्वा के देवता कहाँ है? क्या वे मुझसे शोमरोन को बचा सके? नहीं! [35]क्या किसी अन्य देश में कोई देवता अपनी भूमि को मुझसे बचा सका? नहीं! क्या यहोवा मुझसे यरूशलेम को बचा लेगा? नहीं!"

वे ... पीयेंगे अश्शूर की सेना ने यरूशलेम का घेरा डालने और नगर में अन्न–पानी न आने देने की योजना बनाई थी। वह समझ रहा था कि लोग इतने भूखे होंगे कि अपना मल मूत्र खायेंगे–पीयेंगे।

[36] किन्तु लोग चुप रहे। उन्होंने एक शब्द भी सेनापति को नहीं कहा क्योंकि राजा हिजकिय्याह ने उन्हें ऐसा आदेश दे रखा था। उसने कहा था, "उससे कुछ न कहो।"

[37]हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम (एल्याकीम राजमहल का अधीक्षक था।) शेब्ना (शास्त्री) और आसाप का पुत्र योआह (अभिलेखपाल) हिजकिय्याह के पास लौटे। उन्होंने हिजकिय्याह से वह सब कहा जो अश्शूर के सेनापति ने कहा था।

हिजकिय्याह यशायाह नबी के पास अपने अधिकारियों को भेजता है

19 राजा हिजकिय्याह ने वह सब सुना और यह दिखाने के लिये कि वह बहुत दुःखी है और घबराया हुआ है, अपने वस्त्रों को फाड़ डाला और मोटे वस्त्र पहन लिये। तब वह यहोवा के मन्दिर में गया।

[2]हिजकिय्याह ने एल्याकीम (एल्याकीम राजमहल का अधीक्षक था।) शेब्ना (शास्त्री) और याजकों के अग्रजों को आमोस के पुत्र यशायाह नबी के पास भेजा। उन्होंने मोटे वस्त्र पहने जिससे पता चलता था कि वे परेशान और दुःखी हैं। [3]उन्होंने यशायाह से कहा, "हिजकिय्याह यह कहता है, 'यह हमारे लिये संकट, दण्ड और अपमान का दिन है। यह बच्चों को जन्म देने जैसा समय है, किन्तु उन्हें जन्म देने के लिये कोई शक्ति नहीं है। [4]सेनापति के स्वामी अश्शूर के राजा ने जीवित परमेश्वर के विषय में निन्दा करने के लिये उसे भेजा है। यह हो सकता है कि यहोवा, आपका परमेश्वर उन सभी बातों को सुन ले। यह हो सकता है कि यहोवा यह प्रमाणित कर दे कि शत्रु गलती पर है! इसलिये उन लोगों के लिये प्रार्थना करें जो अभी तक जीवित बचे हैं।'"

[5]राजा हिजकिय्याह के अधिकारी यशायाह के पास गए। [6] यशायाह ने उनसे कहा, "अपने स्वामी हिजकिय्याह को यह सन्देश दो: 'यहोवा कहता है: उन बातों से डरो नहीं जिन्हें अश्शूर के राजा के अधिकारियों ने मेरी मजाक उड़ाते हुए कही है। [7]मैं शीघ्र ही उसके मन में ऐसी भावना पैदा करूँगा जिससे वह एक अफवाह सुनकर अपने देश वापस जाने को विवश होगा और मैं उसे उसके देश में एक तलवार के घाट उतरवा दूँगा।'"

हिजकिय्याह को अश्शूर के राजा की पुनः चेतावनी

[8]सेनापति ने सुना कि अश्शूर का राजा लाकीश से चल पड़ा है। अतः सेनापति गया और यह पाया कि उसका सम्राट लिब्ना के विरुद्ध युद्ध कर रहा है।

[9]अश्शूर के राजा ने एक अफवाह कूश के राजा तिर्हाका के बारे में सुनी। अफवाह यह थी: "तिर्हाका तुम्हारे विरुद्ध लड़ने आया है।"

अतः अश्शूर के राजा ने हिजकिय्याह के पास फिर सन्देशवाहक भेजे। अश्शूर के राजा ने इन सन्देशवाहकों को यह सन्देश दिया। उसने इसमें यह कहा: [10]"यहूदा के राजा हिजकिय्याह से यह कहो: "जिस परमेश्वर में तुम विश्वास रखते हो उसे तुम अपने को मूर्ख बनाने मत दो। वह कहता है, 'अश्शूर का राजा यरूशलेम को पराजित नहीं करेगा।' [11]तुमने उन घटनाओं को सुना है जो अश्शूर के राजाओं ने अन्य सभी देशों में घटित की है। हमने उन्हें पूरी तरह से नष्ट किया। क्या तुम बच पाओगे? नहीं। [12]उन राष्ट्रों के देवता अपने लोगों की रक्षा नहीं कर सके। मेरे पूर्वजों ने उन सभी को नष्ट किया। उन्होंने गोजान, हारान, रेसेप और तलस्सार में एदेन के लोगों को नष्ट किया। [13]हमात का राजा कहाँ है? अर्पाद का राजा? सपवैम नगर का राजा? हेना और इव्वा का राजा? ये सभी समाप्त हो गये हैं!"

हिजकिय्याह यहोवा से प्रार्थना करता है

[14]हिजकिय्याह ने सन्देशवाहकों से पत्र प्राप्त किये और उन्हें पढ़ा। तब हिजकिय्याह यहोवा के मन्दिर तक गया और यहोवा के सामने पत्रों को रखा। [15]हिजकिय्याह ने यहोवा के सामने प्रार्थना की और कहा, "यहोवा इस्राएल का परमेश्वर! तू करूब (स्वर्गदूतों) पर सम्राट की तरह बैठता है। तू ही केवल सारी पृथ्वी के राज्यों का परमेश्वर है। तूने पृथ्वी और आकाश को बनाया। [16]यहोवा मेरी प्रार्थना सुन। यहोवा अपनी आँखे खोल और इस पत्र को देख। उन शब्दों को सुन जिन्हें सन्हेरीब ने शाश्वत परमेश्वर का अपमान करने को भेजा है। [17]यहोवा, यह सत्य है। अश्शूर के राजाओं ने इन सभी राष्ट्रों को नष्ट किया। [18]उन्होंने राष्ट्रों के देवताओं को आग में फेंक दिया। किन्तु वे सच्चे देवता नहीं थे। वे केवल लकड़ी और पत्थर की मूर्ति थे जिन्हें मनुष्यों ने बना रखा था। यही कारण था कि

अश्शूर के राजा उन्हें नष्ट कर सके। [19]अत: यहोवा, हमारा परमेश्वर, अब तो अश्शूर के राजा से बचा। तब पृथ्वी के सारे राज्य समझेंगे कि यहोवा, तू ही केवल परमेश्वर है।"

[20]आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह को यह सन्देश भेजा। उसने कहा, "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर यह कहता है, 'तुमने मुझसे अश्शूर के राजा सन्हेरीब के विरुद्ध प्रार्थना की है। मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली है।'

[21]"सन्हेरीब के बारे में यहोवा का सन्देश यह है:

'सिय्योन की कुमारी पुत्री (यरूशलेम)
तुम्हें तुच्छ समझती है,
वह तुम्हारा मजाक उड़ाती है!
यरूशलेम की पुत्री तुम्हारे पीठ के पीछे
सिर झटकती है।

[22] तुमने किसका अपमान किया?
किसका मजाक उड़ाया?
किसके विरुद्ध तुमने बातें की?
तुमने ऐसे काम किये मानों
तुम उससे बढ़कर हो।
तुम इस्राएल के परम पावन के विरुद्ध रहे!

[23] तुमने अपने सन्देशवाहकों को यहोवा का
अपमान करने को भेजा।
तुमने कहा, "मैं अपने अनेक रथों सहित
ऊँचे पर्वतों तक आया।
मैं लबानोन में भीतर तक आया।
मैंने लबानोन के उच्चतम देवदारु के पेड़ों,
और लबानोन के उत्तम चीड़ के
पेड़ों को काटा।
मैं लबानोन के उच्चतम और
सघनतम वन में घुसा।

[24] मैंने कुएँ और नये स्थानों का पानी पीया।
मैंने मिस्र की नदियों को सुखाया
और उस देश को रौंदा।"

[25] किन्तु क्या तुमने नहीं सुना?
'मैंने (परमेश्वर) बहुत पहले
यह योजना बनाई थी,
प्राचीनकाल से ही मैंने ये योजना बना दी थी,
और अब मैं उसे ही पूरी होने दे रहा हूँ।
मैंने तुम्हें दृढ़ नगरों को चट्टानों की
ढेर बनाने दिया।

[26] नगर में रहने वाले व्यक्ति
कोई शक्ति नहीं रखते।
ये लोग भयभीत और
अस्त–व्यस्त कर दिये गए।
लोग खेतों के जंगली पौधों की तरह हो गए,
वे जो बढ़ने के पहले ही मर जाती है,
घर के मुंडेर की घास बन गए।

[27] तुम उठो और मेरे सामने बैठो,
मैं जानता हूँ कि तुम कब युद्ध करने जाते
हो और कब घर आते हो,
मैं जानता हूँ कि तुम अपने को
कब मेरे विरुद्ध करते हो।

[28] तुम मेरे विरुद्ध गए मैंने तुम्हारे गर्वीले
अपमान के शब्द सुने।
इसलिये मैं अपना अंकुश तुम्हारी
नाक में डालूँगा।
और मैं अपनी लगाम तुम्हारे मुँह में डालूँगा।
तब मैं तुम्हें पीछे लौटाऊँगा और उस
मार्ग लौटाऊँगा जिससे तुम आए थे।

हिजकिय्याह को यहोवा का सन्देश

[29]"'मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, इसका संकेत यह होगा: इस वर्ष तुम वही अन्न खाओगे जो अपने आप उगेगा। अगले वर्ष तुम वह अन्न खाओगे जो उस बीज से उत्पन्न होगा। किन्तु तीसरे वर्ष तुम बीज बोओगे और अपनी बोयी फसल काटोगे। तुम अंगूर की बेले खेतों में लगाओगे और उनसे अगूंर खाओगे [30]और यहूदा के परिवार के जो लोग बच गए हैं वे फिर फूले फलेगें ठीक वैसे ही जैसे पौधा अपनी जड़े मजबूत कर लेने पर ही फल देता है [31]क्यों? क्योंकि कुछ लोग जीवित बचे रहेंगे। वे यरूशलेम के बाहर चले जायेंगे। जो लोग बच गये हैं वे सिय्योन पर्वत से बाहर जाएंगे। यहोवा की तीव्र भावना* यह करेगी।'

[32]"अश्शूर के सम्राट के विषय में यहोवा ऐसा कहता है:

तीव्र भावना उत्साह: हिब्रू शब्द का अर्थ तीव्र भाव, उत्साह, ईर्ष्या और प्रेम है।

वह इस नगर में नहीं आएगा।
वह इस नगर में एक भी बाण नहीं चलाएगा।
वह इस नगर के विरुद्ध ढाल के साथ नहीं आएगा।
वह इस नगर पर आक्रमण के मिट्टी के
टीले नहीं बनाएगा।
33 वह उसी रास्ते लौटेगा जिससे आया।
वह इस नगर में नहीं आएगा।
यह यहोवा कहता है!
34 मैं इस नगर की रक्षा करूँगा और बचा लूँगा।
मैं इस नगर को बचाऊँगा।
मैं यह अपने लिये और अपने सेवक
दाऊद के लिये करूँगा।'"

अश्शूरी सेना नष्ट हो गई

35उस रात यहोवा का दूत अश्शूरी डेरे में गया और एक लाख पचासी हजार लोगों को मार डाला। सुबह को जब लोग उठे तो उन्होंने सारे शव देखे।

36 अत: अश्शूर का राजा सन्हेरीब पीछे हटा और नीनवे वापस पहुँचा, तथा वहीं रूक गया। 37एक दिन सन्हेरीब निस्रोक के मन्दिर में अपने देवता की पूजा कर रहा था। उसके पुत्रों अद्रेम्मेलेक और सरेसेर ने उसे तलवार से मार डाला। तब अद्रेम्मेलेक और सरेसेर अरारात* प्रदेश में भाग निकले और सन्हेरीब का पुत्र एसर्हद्दोन उसके बाद नया राजा हुआ।

हिजकिय्याह बीमार पड़ा और मरने को हुआ

20 उस समय हिजकिय्याह बीमार पड़ा और लगभग मर ही गया। आमोस का पुत्र यशायाह (नबी) हिजकिय्याह से मिला। यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, "यहोवा कहता है, 'अपने परिवार के लोगों को तुम अपना अन्तिम निर्देश दो। तुम जीवित नहीं रहोगे।'"

2हिजकिय्याह ने अपना मुँह दीवार* की ओर कर लिया। उसने यहोवा से प्रार्थना की और कहा, 3"यहोवा याद रख कि मैंने पूरे हृदय के साथ सच्चाई से तेरी सेवा की है। मैंने वह किया है जिसे तूने अच्छा बताया है।" तब हिजकिय्याह फूट फूट कर रो पड़ा।

अरारात उरर्तु नामक प्राचीन पूर्वी तुर्की का प्रदेश।
दीवार सम्भवत: यह दीवार मन्दिर के सामने थी।

4बीच के आँगन को यशायाह के छोड़ने के पहले यहोवा का सन्देश उसे मिला। यहोवा ने कहा, 5"लौटो और मेरे लोगों के अगुवा हिजकिय्याह से कहो, 'यहोवा तुम्हारे पूर्वज दाऊद का परमेश्वर यह कहता है, "मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली है और मैंने तुम्हारे आँसू देखे हैं। इसलिये मैं तुम्हें स्वस्थ करूँगा। तीसरे दिन तुम यहोवा के मन्दिर में जाओगे 6और मैं तुम्हारे जीवन के पन्द्रह वर्ष बढ़ा दूँगा। मैं अश्शूर के सम्राट की शक्ति से तुम्हें और इस नगर को बचाऊँगा। मैं इस नगर की रक्षा करूँगा। मैं अपने लिये और अपने सेवक दाऊद को जो वचन दिया था, उसके लिये यह करूँगा।" ' "

7तब यशायाह ने कहा, "अंजीर का एक मिश्रण* बनाओ और इसे घाव के स्थान पर लगाओ।"

इसलिये उन्होंने अंजीर का मिश्रण लिया और हिजकिय्याह के घाव के स्थान पर लगाया। तब हिजकिय्याह स्वस्थ हो गया।

हिजकिय्याह के स्वस्थ होने के संकेत

8हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, "इसका संकेत क्या होगा कि यहोवा मुझे स्वस्थ करेगा और मैं यहोवा के मन्दिर में तीसरे दिन जाऊँगा?"

9यशायाह ने कहा, "तुम क्या चाहते हो? क्या छाया दस पैड़ी आगे जाये या दस पैड़ी पीछे जाये?* यही यहोवा का तुम्हारे लिये संकेत है जो यह प्रकट करेगा कि जो यहोवा ने कहा है, उसे वह करेगा।"

10हिजकिय्याह ने उत्तर दिया, "छाया के लिये दस पैड़ियाँ उतर जाना सरल है। नहीं, छाया को दस पैड़ी पीछे हटने दो।"

11तब यशायाह ने यहोवा से प्रार्थना की और यहोवा ने छाया को दस पैड़ियाँ पीछे चलाया। वह उन पैड़ियों पर लौटी जिन पर यह पहले थी।

अंजीर का एक मिश्रण इसका उपयोग दवा की तरह होता था।
क्या ... जाये इसका तात्पर्य एक बाहर की विषेश इमारत की पौड़ियाँ हो सकती हैं जिन्हें हिजकिय्याह धूपघड़ी की तरह इस्तेमाल करता था। जब धूप पैड़ियों पर पड़ती थी तो उससे पता चलता था कि समय क्या हुआ है।

हिजकिय्याह और बाबेल के व्यक्ति

[12]उन दिनों बलदान का पुत्र बरोदक बलदान बाबेल का राजा था। उसने पत्रों के साथ एक भेंट हिजकिय्याह को भेजी। बरोदक–बलदान ने यह इसलिये किया क्योंकि उसने सुना कि हिजकिय्याह बीमार हो गया है। [13]हिजकिय्याह ने बाबेल के लोगों का स्वागत किया और अपने महल की सभी कीमती चीज़ों को उन्हें दिखाया। उसने उन्हें चाँदी, सोना, मसाले, कीमती इत्र, अस्त्र–शस्त्र और अपने खजाने की हर एक चीज दिखायी। हिजकिय्याह के पूरे महल और राज्य में ऐसा कुछ नहीं था जिसे उसने उन्हें न दिखाया हो।

[14]तब यशायाह नबी राजा हिजकिय्याह के पास आया और उससे पूछा, "ये लोग क्या कहते थे? वे कहाँ से आये थे?"

हिजकिय्याह ने कहा, "वे बहुत दूर के देश बाबेल से आए थे।"

[15]यशायाह ने पूछा, "उन्होंने तुम्हारे महल में क्या देखा है?"

हिजकिय्याह ने उत्तर दिया, "उन्होंने मेरे महल की सभी चीजें देखी हैं। मेरे खजानों में ऐसा कुछ नहीं है जिसे मैंने उन्हें न दिखाया हो।"

[16]तब यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, "यहोवा के यहाँ से इस सन्देश को सुनो। [17]वह समय आ रहा है जब तुम्हारे महल की सभी चीज़ें और वे सभी चीज़ें जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने आज तक सुरक्षित रखा है, बाबेल ले जाई जाएंगी। कुछ भी नहीं बचेगा। यहोवा यह कहता है। [18]बाबेल तुम्हारे पुत्रों को ले लेंगे और तुम्हारे पुत्र बाबेल के राजा के महल में खोजे बनेंगे।"

[19]तब हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, "यहोवा के यहाँ से यह सन्देश अच्छा है।"

हिजकिय्याह ने यह भी कहा, "यह बहुत अच्छा है यदि मेरे जीवनकाल में सच्ची शान्ति रहे।"

[20]हिजकिय्याह ने जो बड़े काम किये, जिनमें जलकुण्ड पर किये गये काम और नगर में पानी लाने के लिये नहर बनाने के काम सम्मिलित हैं "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गये हैं। [21]हिजकिय्याह मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया और हिजकिय्याह का पुत्र मनश्शे उसके बाद नया राजा हुआ।

मनश्शे अपना कुशासन यहूदा पर आरम्भ करता है

21 मनश्शे जब शासन करने लगा तब वह बारह वर्ष का था। उसने पचपन वर्ष तक यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ का नाम हेप्सीबा था।

[2]मनश्शे ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। मनश्शे वे भयंकर काम करता था जो अन्य राष्ट्र करते थे। (और यहोवा ने उन राष्ट्रों को अपना देश छोड़ने पर विवश किया था जब इस्राएली आए थे।) [3]मनश्शे ने फिर उन उच्च स्थानों को बनाया जिन्हें उसके पिता हिजकिय्याह ने नष्ट किया था। मनश्शे ने भी ठीक इस्राएल के राजा अहाब की तरह बाल की वेदी बनाई और अशेरा स्तम्भ बनाया। मनश्शे ने आकाश में तारों की सेवा और पूजा आरम्भ की। [4]मनश्शे ने यहोवा के मन्दिर में असत्य देवताओं की पूजा की वेदियाँ बनाई। (यह वही स्थान है जिसके बारे में यहोवा बातें कर रहा था जब उसने कहा था, "मैं अपना नाम यरूशलेम में रखूँगा।)" [5]मनश्शे ने यहोवा के मन्दिर के दो आँगनों में आकाश के नक्षत्रों के लिये वेदियाँ बनाई। [6]मनश्शे ने अपने पुत्र की बलि दी और उसे वेदी पर जलाया। मनश्शे ने भविष्य जानने के प्रयत्न में कई तरीकों का उपयोग किया। वह ओझाओं और भूत सिद्धियों से मिला।

मनश्शे अधिक से अधिक वह करता गया जिसे यहोवा ने बुरा कहा था। इसने यहोवा को क्रोधित किया। [7]मनश्शे ने अशेरा की एक खुदी हुई मूर्ति बनाई। उसने इस मूर्ति को मन्दिर में रखा। यहोवा ने दाऊद और दाऊद के पुत्र सुलैमान से इस मन्दिर के बारे में कहा था: "मैंने यरूशलेम को पूरे इस्राएल के नगरों में से चुना है। मैं अपना नाम यरूशलेम के मन्दिर में सदैव के लिये रखूँगा। [8]मैं इस्राएल के लोगों से वह भूमि जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दी थी, छोड़ने के लिये नहीं कहूँगा। मैं लोगों को उनके देश में रहने दूँगा, यदि वे उन सब चीज़ों का पालन करेंगे जिनका आदेश मैंने दिया है और जो उपदेश मेरे सेवक मूसा ने उनको दिये हैं।" [9]किन्तु लोगों ने परमेश्वर की एक न सुनी। इस्राएलियों के आने के पहले कनान में रहने वाले सभी राष्ट्र जितना बुरा करते थे मनश्शे ने उससे भी अधिक बुरा किया और यहोवा ने उन राष्ट्रों को नष्ट कर दिया था जब इस्राएल के लोग अपनी भूमि लेने आए थे।

[10]यहोवा ने अपने सेवक, नबियों का उपयोग यह कहने के लिये किया: [11]"यहूदा के राजा मनश्शे ने इन

घृणित कामों को किया है और अपने से पहले की गई एमोरियों की बुराई से भी बड़ी बुराई की है। मनश्शे ने अपने देवमूर्तियों के कारण यहूदा से भी पाप कराया है। [12]इसलिये इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'देखो! मैं यरूशलेम और यहूदा पर इतनी विपत्तियाँ ढाऊँगा कि यदि कोई व्यक्ति इनके बारे में सुनेगा तो उसका हृदय बैठ जायेगा।* [13]मैं यरूशलेम तक शोमरोन की माप पंक्ति* और अहाब के परिवार की साहुल* को फैलाऊँगा। कोई व्यक्ति तश्तरी को पोछता है और तब वह उसे उलट कर रख देता है। मैं यरूशलेम के ऊपर भी ऐसा ही करूँगा। [14]वहाँ मेरे कुछ व्यक्ति फिर भी बचे रह जायेंगे। किन्तु मैं उन व्यक्तियों को छोड़ दूँगा। मैं उन्हें उनके शत्रुओं को दे दूँगा। उनके शत्रु उन्हें बन्दी बनायेंगे, वे उन कीमती चीज़ों की तरह होंगे जिन्हें सैनिक युद्ध में प्राप्त करते हैं। [15]क्यों? क्योंकि हमारे लोगों ने वे काम किये जिन्हें मैंने बुरा बताया। उन्होंने मुझे उस दिन से क्रोधित किया है जिस दिन से उनके पूर्वज मिस्र से बाहर आए [16]और मनश्शे ने अनेक निरपराध लोगों को मारा। उसने यरूशलेम को एक सिरे से दूसरे सिरे तक खून से भर दिया और वे सारे पाप उन पापों के अतिरिक्त है जिसे उसने यहूदा से कराया। मनश्शे ने यहूदा से वह कराया जिसे यहोवा ने बुरा बताया था।'"

[17]उन पापों सहित और भी जो कार्य मनश्शे ने किये, वह सभी "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे है। [18]मनश्शे मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। मनश्शे अपने घर के बाग में दफनाया गया। इस बाग का नाम उज्जर का बाग था। मनश्शे का पुत्र आमोन उसके बाद नया राजा हुआ।

हृदय बैठ जायेगा शाब्दिक उसके कान लाल हो उठेंगे।

माप पंक्ति कारीगर वजन सहित एक डोरी का उपयोग पत्थर की दीवार के सिरे पर दीवार की सीध को देखने के लिए करते हैं। डोरी से बाहर पड़ने वाले भाग को काट दिया जाता है और फेंक दिया जाता है। यह परमेश्वर द्वारा शोमरोन और अहाब के राजाओं के परिवार को काट फेंकने जैसा था।

साहुल वजन, जिसका उपयोग डोरी से लटकाकर माप रेखा को सीधा रखने में किया जाता है।

आमोन का अल्पकालीन शासन

[19]आमोन ने जब शासन करना आरम्भ किया तो वह बाईस वर्ष का था। उसने यरूशलेम में दो वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ का नाम मशुल्लेमेत था, जो योत्बा के हारूस की पुत्री थी।

[20]आमोन ने ठीक अपने पिता मनश्शे की तरह के काम किये, जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। [21]आमोन ठीक अपने पिता की तरह रहता था। आमोन उन्हीं देवमूर्तियों की पूजा और सेवा करता था जिनकी उसका पिता करता था। [22]आमोन ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा को त्याग दिया और उस तरह नहीं रहा जैसा यहोवा चाहता था।

[23]आमोन के सेवकों ने उसके विरुद्ध षड़यन्त्र रचा और उसे उसके महल में मार डाला। [24]साधारण जनता ने उन सभी अधिकारियों को मार डाला जिन्होंने आमोन के विरुद्ध षडयन्त्र रचा था। तब लोगों ने आमोन के पुत्र योशिय्याह को उसके बाद नया राजा बनाया।

[25]जो अन्य काम आमोन ने किये वे "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। [26]आमोन उज्जर के बाग में अपनी कब्र में दफनाया गया। आमोन का पुत्र योशिय्याह नया राजा बना।

योशिय्याह यहूदा पर अपना शासन आरम्भ करता है

22 योशिय्याह ने जब शासन आरम्भ किया तो वह आठ वर्ष का था। उसने इकतीस वर्ष तक यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ बोस्कत के अदाया की पुत्री यदीदा थी। [2]योशिय्याह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा बताया था। योशिय्याह ने परमेश्वर का अनुसरण अपने पूर्वज दाऊद की तरह किया। योशिय्याह ने परमेश्वर की शिक्षाओं को माना, और उसने ठीक वैसा ही किया जैसा परमेश्वर चाहता था।

योशिय्याह मन्दिर की मरम्मत के लिये आदेश देता है

[3]योशिय्याह ने अपने राज्यकाल के अट्ठारहवें वर्ष में अपने मन्त्री, मशुल्लाम के पौत्र व असल्याह के पुत्र शापान को यहोवा के मन्दिर में भेजा। [4]योशिय्याह ने कहा, "महयाजक हिलकिय्याह के पास जाओ। उससे कहो कि उसे वह धन लेना चाहिये जिसे लोग यहोवा के मन्दिर में लाये हैं। द्वारपालों ने उस धन को लोगों से

इकट्ठा किया था। [5]याजकों को यह धन उन कारीगरों को देने में उपयोग करनी चाहिये जो यहोवा के मन्दिर की मरम्मत करते हैं। याजकों को इस धन को उन लोगों को देना चाहिये जो यहोवा के मन्दिर की देखभाल करते हैं। [6]बढ़ई, पत्थर की दीवार बनाने वाले मिस्त्री और पत्थर तराश के लिये धन का उपयोग करो। मन्दिर में लगाने के लिये इमारती लकड़ी और कटे पत्थर के खरीदने में धन का उपयोग करो। [7]उस धन को न गिनों जिसे तुम मजदूरों को दो। उन मजदूरों पर विश्वास किया जा सकता है।"

व्यवस्था की पुस्तक मन्दिर में मिली

[8]महायाजक हिलकिय्याह ने शास्त्री शापान से कहा, "देखो! मुझे व्यवस्था की पुस्तक यहोवा के मन्दिर में मिली है।" हिलकिय्याह ने इस पुस्तक को शापान को दिया और शापान ने इसे पढ़ा।

[9]शास्त्री शापान, राजा योशिय्याह के पास आया और उसे बताया जो हुआ था। शापान ने कहा, "तुम्हारे सेवकों ने मन्दिर से मिले धन को लिया और उसे उन कारीगरों को दिया जो यहोवा के मन्दिर की देख–रेख कर रहे थे।" [10]तब शास्त्री शापान ने राजा से कहा, "याजक हिलकिय्याह ने मुझे यह पुस्तक भी दी है।" तब शापान ने राजा को पुस्तक पढ़ कर सुनाई।

[11]जब राजा ने व्यवस्था की पुस्तक के शब्दों को सुना, उसने अपना दुःख और परेशानी प्रकट करने के लिये अपने वस्त्रों को फाड़ डाला। [12]तब राजा ने याजक हिलकिय्याह, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकायाह के पुत्र अकबोर, शास्त्री शापान और राजसेवक असाया को आदेश दिया। [13]राजा योशिय्याह ने कहा,"जाओ, और यहोवा से पूछो कि हमें क्या करना चाहिये। यहोवा से मेरे लिये, लोगों के लिये और पूरे यहूदा के लिये याचना करो। इस मिली हुई पुस्तक के शब्दों के बारे में पूछो। यहोवा हम लोगों पर क्रोधित है। क्यों? क्योंकि हमारे पूर्वजों ने इस पुस्तक की शिक्षा को नहीं माना। उन्होंने हम लोगों के लिये लिखी सब बातों को नहीं किया।"

योशिय्याह और नबिया हुल्दा

[14]अत: याजक हिलकिय्याह, अहीकाम, अकबोर, शापान और असाया, नबिया हुल्दा के पास गए। हुल्दा हर्हस के पौत्र व तिकवा के पुत्र शल्लूम की पत्नी थी। वह याजक के वस्त्रों की देखभाल करता था। हुल्दा यरूशलेम में द्वितीय खण्ड में रह रही थी। वे गए और उन्होंने हुल्दा से बातें कीं।

[15]तब हुल्दा ने उनसे कहा, "यहोवा इस्राएल का परमेश्वर कहता है: उस व्यक्ति से कहो जिसने तुम्हें मेरे पास भेजा है: [16]'यहोवा यह कहता है: मैं इस स्थान पर विपत्ति ला रहा हूँ और उन मनुष्यों पर भी जो यहाँ रहते हैं। ये वे विपत्तियाँ हैं जिन्हें उस पुस्तक में लिखा गया है जिसे यहूदा के राजा ने पढ़ी है। [17]यहूदा के लोगों ने मुझे त्याग दिया है और अन्य देवताओं के लिये सुगन्धि जलाई है। उन्होंने मुझे बहुत क्रोधित किया है। उन्होंने बहुत सी देवमूर्तियाँ बनाई। यही कारण है कि मैं इस स्थान के विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करूँगा। मेरा क्रोध उस अग्नि की तरह होगा जो बुझाई न जा सकेगी।'

[18–19]"यहूदा के राजा योशिय्याह ने तुम्हें यहोवा से सलाह लेने को भेजा है। योशिय्याह से यह कहो: 'यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर ने जो कहा उसे तुमने सुना। तुमने वह सुना जो मैंने इस स्थान और इस स्थान पर रहने वाले लोगों के बारे में कहा। तुम्हारा हृदय कोमल है और जब तुमने यह सुना तो तुम्हें दुःख हुआ। मैंने कहा कि भयंकर घटनायें इस स्थान (यरूशलेम) के साथ घटित होंगी। और तुमने अपने दुःख को प्रकट करने के लिये अपने वस्त्रों को फाड़ डाला और तुम रोने लगे। यही कारण है कि मैंने तुम्हारी बात सुनी।' यहोवा यह कहता है, [20]'मैं तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के साथ ले आऊँगा। तुम मरोगे और अपनी कब्र में शान्तिपूर्वक जाओगे। अत: तुम्हारी आँखे उन विपत्तियों को नहीं देखेंगी जिन्हें मैं इस स्थान (यरूशलेम) पर ढाने जा रहा हूँ।'"

तब याजक हिलकिय्याह, अहीकाम, अकबोर, शापान और असाया ने राजा से यह सब कहा।

लोग नियम को सुनते हैं

23 राजा योशिय्याह ने यहूदा और इस्राएल के सभी प्रमुखों से आने और उससे मिलने के लिये कहा। [2]तब राजा यहोवा के मन्दिर गया। सभी यहूदा के लोग और यरूशलेम में रहने वाले लोग उसके साथ गए। याजक, नबी, और सभी व्यक्ति, सबसे अधिक महत्वपूर्ण से सबसे कम महत्व के सभी उसके साथ गए।

तब उसने "साक्षीपत्र की पुस्तक" पढ़ी। यह वही "नियम की पुस्तक" थी जो यहोवा के मन्दिर में मिली थी। योशिय्याह ने उस पुस्तक को इस प्रकार पढ़ा कि सभी लोग उसे सुन सकें।

[3]राजा स्तम्भ के पास खड़ा हुआ और उसने यहोवा के साथ वाचा की। उसने यहोवा का अनुसरण करना, उसकी आज्ञा, वाचा और नियमों का पालन करना स्वीकार किया। उसने पूरी आत्मा और हृदय से यह करना स्वीकार किया। उसने उस पुस्तक में लिखी वाचा को मानना स्वीकार किया। सभी लोग यह प्रकट करने के लिये खड़े हुए कि वे राजा की वाचा का समर्थन करते हैं।

[4]तब राजा ने महायाजक हिलकिय्याह, अन्य याजकों और द्वारपालों को बाल, अशेरा और आकाश के नक्षत्रों के सम्मान के लिये बनी सभी चीज़ों को यहोवा के मन्दिर के बाहर लाने का आदेश दिया। तब योशिय्याह ने उन सभी को यरूशलेम के बाहर किद्रोन के खेतों में जला दिया। तब राख को वे बेतेल ले गए।

[5]यहूदा के राजाओं ने कुछ सामान्य व्यक्तियों को याजकों के रूप में सेवा के लिये चुना था। ये लोग हारून के परिवार से नहीं थे! वे बनावटी याजक यहूदा के सभी नगरों और यरूशलेम के चारों ओर के नगरों में उच्च स्थानों पर सुगन्धि जला रहे थे। वे बाल, सूर्य, चन्द्र, राशियों (नक्षत्रों के समूह) और आकाश के सभी नक्षत्रों के सम्मान में सुगन्धि जला रहे थे। किन्तु योशिय्याह ने उन बनावटी याजकों को रोक दिया।

[6]योशिय्याह ने अशेरा स्तम्भ को यहोवा के मन्दिर से हटाया। वह अशेरा स्तम्भ को नगर के बाहर किद्रोन घाटी को ले गया और उसे वहीं जला दिया। तब उसने जले खण्डों को कूटा तथा उस राख को साधारण लोगों की कब्रों पर बिखेरा।*

[7]तब राजा योशिय्याह ने यहोवा के मन्दिर में बने पुरुषगामियों* के कोठों को गिरवा दिया। स्त्रियाँ भी उन घरों का उपयोग करती थीं और असत्य देवी अशेरा के सम्मान के लिये डेरे के आच्छादन बनाती थीं।

[8-9]उस समय याजक बलि यरूशलेम को नहीं लाते थे और उसे मन्दिर की वेदी पर नहीं चढ़ाते थे। याजक सारे यहूदा के नगरों में रहते थे और वे उन नगरों में उच्च स्थानों पर सुगन्धि जलाते तथा बलि भेंट करते थे। वे उच्च स्थान गेबा से लेकर बेर्शेबा तक हर जगह थे। याजक अपनी अखमीरी रोटी उन नगरों में साधारण लोगों के साथ खाते थे, किन्तु यरूशलेम के मन्दिर में बने याजकों के लिये विशेष स्थान पर नहीं। परन्तु राजा योशिय्याह ने उन उच्च स्थानों को भ्रष्ट (नष्ट) कर डाला और याजकों को यरूशलेम ले गया। योशिय्याह ने उन उच्च स्थानों को भी नष्ट किया था जो यहोशू–द्वार के पास बायीं ओर थे। (यहोशू नगर का प्रशासक था।)

[10]तोपेत "हिन्नोम के पुत्र की घाटी" में एक स्थान था जहाँ लोग अपने बच्चों को मारते थे और असत्य देवता मोलेक के सम्मान में उन्हें वेदी पर जलाते थे।* योशिय्याह ने उस स्थान को इतना भ्रष्ट (नष्ट) कर डाला कि लोग उस स्थान का फिर प्रयोग न कर सकें। [11]बीते समय में यहूदा के राजाओं ने यहोवा के मन्दिर के द्वार के पास कुछ घोड़े और रथ* रख छोड़े थे। यह नतन्मेलेख नामक महत्वपूर्ण अधिकारी के कमरे के पास था। घोड़े और रथ सूर्य देव के सम्मान के लिये थे। योशिय्याह ने घोड़ों को हटाया और रथ को जला दिया।

[12]बीते समय में यहूदा के राजाओं ने अहाब की इमारत की छत पर वेदियाँ बना रखी थी। राजा मनश्शे ने भी यहोवा के मन्दिर के दो आँगनों मे वेदियाँ बना रखी थीं। योशिय्याह ने उन वेदियों को तोड़ डाला और उनके टूटे टुकड़ों को किद्रोन की घाटी में फेंक दिया।

[13]बीते समय में राजा सुलैमान ने यरूशलेम के निकट विध्वंसक पहाड़ी पर कुछ उच्च स्थान बनाए थे। उच्च स्थान उस पहाड़ी की दक्षिण की ओर थे। राजा सुलैमान ने पूजा के उन स्थानों में से एक को, सीदोन के लोग जिस भयंकर चीज अश्तोरेत की पूजा करते थे, उसके सम्मान के लिये बनाया था। सुलैमान ने मोआब लोगों द्वारा पूजित भयंकर चीज़ कमोश के सम्मान के लिये भी एक वेदी बनाई थी और राजा सुलैमान ने अम्मोन लोगों द्वारा पूजित

तब … बिखेरा यह इस बात को प्रकट करने की प्रबल पद्धति थी कि अशेरा–स्तम्भ का उपयोग फिर नहीं हो सकता।

पुरुषगामी वे पुरुष जो अपना शरीर यौन सम्बन्ध के पाप के लिये बेचते थे।

मोलेक … जलाते थे शाब्दिक, "लोग अपने पुत्र या पुत्री को आग से होकर मोलेक तक पहुँचाते थे।"

घोड़े और रथ लोग यह समझते थे कि सूर्य एक देवता है जो अपने रथ (सूर्य) को प्रतिदिन नभ के पार ले जाता है।

भयंकर चीज मिल्कोम के सम्मान के लिये एक उच्च स्थान बनाया था। किन्तु राजा योशिय्याह ने उन सभी पूजा स्थानों को भ्रष्ट (नष्ट) कर दिया। [14]राजा योशिय्याह ने सभी स्मृति पत्थरों और अशेरा स्तम्भों को तोड़ डाला। तब उसने उस स्थानों के ऊपर मृतकों की हड्डियाँ बिखेरीं।*

[15]योशिय्याह ने बेतेल की वेदी और उच्च स्थानों को भी तोड़ डाला। नबात के पुत्र यारोबाम ने इस वेदी को बनाया था। यारोबाम ने इस्राएल से पाप कराया था।* योशिय्याह ने उच्च स्थानों और वेदी दोनों को तोड़ डाला। योशिय्याह ने वेदी के पत्थर के टुकड़े कर दिये। तब उसने उन्हें कूट कर धूलि बना दिया और उसने अशेरा स्तम्भ को जला दिया। [16]योशिय्याह ने चारों ओर नजर दौड़ाई और पहाड़ पर कब्रों को देखा। उसने व्यक्तियों को भेजा और वे उन कब्रों से हड्डियाँ ले आए। तब उसने वेदी पर उन हड्डियों को जलाया। इस प्रकार योशिय्याह ने वेदी को भ्रष्ट (नष्ट) कर दिया। यह उसी प्रकार हुआ जैसा यहोवा के सन्देश को परमेश्वर के जन ने घोषित किया था।* परमेश्वर के जन ने इसकी घोषणा तब की थी जब यारोबाम वेदी की बगल में खड़ा था।

तब योशिय्याह ने चारों ओर निगाह दौड़ाई और परमेश्वर के जन की कब्र देखी।

[17]योशिय्याह ने कहा, "जिस स्मारक को मैं देख रहा हूँ, वह क्या है?"

नगर केलोगों ने उससे कहा, "यह परमेश्वर के उस जन की कब्र है जो यहूदा से आया था। इस परमेश्वर के जन ने वह सब बताया था जो आपने बेतेल में वेदी के साथ किया। उसने ये बातें बहुत पहले बताई थीं।"

[18]योशिय्याह ने कहा, "परमेश्वर के जन को अकेला छोड़ दो। उसकी हड्डियों को मत हटाओ।" अत: उन्होंने हडिड्याँ छोड़ दी, और साथ ही शोमरोन से आये परमेश्वर के जन की हड्डियाँ भी छोड़ दी।

[19]योशिय्याह ने शोमरोन नगर के सभी उच्च स्थानों के पूजागृह को भी नष्ट कर दिया। इस्राएल के राजाओं ने उन पूजागृहों को बनाया था और उसने यहोवा को बहुत क्रोधित किया था। योशिय्याह ने उन पूजागृहों को वैसे ही नष्ट किया जैसे उसने बेतेल के पूजा के स्थानों को नष्ट किया।

[20]योशिय्याह ने शोमरोन में रहने वाले उच्च स्थानों के सभी पुरोहितों को मार डाला। उसने उन्हीं वेदियों पर पुरोहितों का वध किया। उसने मनुष्यों की हड्डियाँ वेदियों पर जलाई। इस प्रकार उसने पूजा के उन स्थानों को भ्रष्ट किया। तब वह यरूशलेम लौट गया।

यहूदा के लोग फसह पर्व मनाते हैं

[21]तब राजा योशिय्याह ने सभी लोगों को आदेश दिया। उसने कहा, "यहोवा, अपने परमेश्वर का फसह पर्व मनाओ। इसे उसी प्रकार मनाओ जैसा "साक्षीपत्र की पुस्तक" में लिखा है।"

[22]लोगों ने इस प्रकार फसह पर्व तब से नहीं मनाया था जब से इस्राएल पर न्यायाधीश शासन करते थे। इस्राएल के किसी राजा या यहूदा के किसी भी राजा ने कभी फसह पर्व का इतना बड़ा उत्सव नहीं मनाया था। [23]उन लोगों ने यहोवा के लिये यह फसह पर्व योशिय्याह के राज्यकाल के अट्ठारहवें वर्ष में यरूशलेम में मनाया।

[24]योशिय्याह ने ओझाओं, भूतसिद्धकों, गृह-देवताओं, देवमूर्तियों और यहूदा तथा इस्राएल में जिन डरावनी चीजों की पूजा होती थी, सबको नष्ट कर दिया। योशिय्याह ने यह यहोवा के मन्दिर में याजक हिलकिय्याह को मिली पुस्तक में लिखे नियमों का पालन करने के लिये किया।

[25]इसके पहले योशिय्याह के समान कभी कोई राजा नहीं हुआ था। योशिय्याह यहोवा की ओर अपने पूरे हृदय, अपनी पूरी आत्मा और अपनी पूरी शक्ति से गया। योशिय्याह की तरह किसी राजा ने मूसा के सभी नियमों का अनुसरण नहीं किया था और उस समय से योशिय्याह की तरह का कोई अन्य राजा कभी नहीं हुआ।

[26]किन्तु यहोवा ने यहूदा के लोगों पर क्रोध करना छोड़ा नहीं। यहोवा अब भी उन पर सारे कामों के लिये क्रोधित था जिन्हें मनश्शे ने किया था। [27]यहोवा ने कहा, "मैंने इस्राएलियों को उनका देश छोड़ने को विवश किया। मैं यहूदा के साथ वैसा ही करूँगा मैं यहूदा को अपनी आँखों से ओझल करूँगा। मैं यरूशलेम को अस्वीकार करूँगा। हाँ, मैंने उस नगर को चुना, और यह वही स्थान

तब ... बिखेरीं यही तरीका था कि उसने उन स्थानों को इस प्रकार भ्रष्ट (नष्ट) कर दिया जिससे वे पूजा के स्थान के रूप में प्रयोग में न आ सके।

यारोबाम ... कराया था देखें 1राजा 12:26-30

घोषित किया था देखें 1राजा 13:1-3

है जिसके बारे में मैं (यरूशलेम के बारे में) बातें कर रहा था जब मैंने यह कहा था, 'मेरा नाम वहाँ रहेगा।' किन्तु मैं वहाँ के मन्दिर को नष्ट करूँगा। "

28 योशिय्याह ने जो अन्य काम किये वे "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं।

योशिय्याह की मृत्यु

29योशिय्याह के समय मिस्र का राजा फिरौन नको अश्शूर के राजा के विरुद्ध युद्ध करने परात नदी को गया। राजा योशिय्याह नको से मिलने मगिद्दो गया। फ़िरौन नको ने योशिय्याह को देख लिया और तब उसे मार डाला। 30योशिय्याह के अधिकारियों ने उसके शरीर को एक रथ में रखा और उसे मगिद्दो से यरूशलेम ले गये। उन्होंने योशिय्याह को उसकी अपनी कब्र में दफनाया।

तब साधारण लोगों ने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज को लिया और उसका राज्याभिषेक कर दिया। उन्होंने यहोआहाज को नया राजा बनाया।

यहोआहाज यहूदा का नया राजा बनता है

31यहोआहाज तेईस वर्ष का था, जब वह राजा बना। उसने यरूशलेम में तीन महीने शासन किया। उसकी माँ लिब्ना के यिर्मयाह की पुत्री हमूतल थी। 32यहोआहाज ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यहोआहाज ने वे ही सब काम किये जिन्हें उसके पूर्वजों ने किये थे।

33फ़िरौन नको ने यहोआहाज को हमात प्रदेश में रिबला में कैद में रखा। अत: यहोआहाज यरूशलेम में शासन नहीं कर सका। फ़िरौन नको ने यहूदा को सात हजार पाँच सौ पौंड चाँदी और पचहत्तर पौंड सोना देने को विवश किया।

34फ़िरौन नको ने योशिय्याह के पुत्र एल्याकीम को नया राजा बनाया। एल्याकीम ने अपने पिता योशिय्याह का स्थान लिया। फ़िरौन-नको ने एल्याकीम का नाम बदलकर यहोयाकीम कर दिया और फ़िरौन-नको यहोआहाज को मिस्र ले गया। यहोआहाज मिस्र में मरा। 35यहोयाकीम ने फ़िरौन को सोना और चाँदी दिया। किन्तु यहोयाकीम ने साधारण जनता से कर वसूले और उस धन का उपयोग फ़िरौन-नको को देने में किया। अत: हर व्यक्ति ने चाँदी और सोने का अपने हिस्से का भुगतान किया और राजा यहोयाकीम ने फिरौन को वह धन दिया।

36यहोयाकीम जब राजा हुआ तो वह पच्चीस वर्ष का था। उसने ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य किया। उसकी माँ रुमा के अदायाह की पुत्री जबीदा थी। 37यहोयाकीम ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यहोयाकीम ने वे ही सब काम किये जो उसके पूर्वजों ने किये थे।

राजा नबूकदनेस्सर यहूदा आता है

24 यहोयाकीम के समय में बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर यहूदा देश में आया। यहोयाकीम ने नबूकदनेस्सर की सेवा तीन वर्ष तक की। तब यहोयाकीम नबूकदनेस्सर के विरुद्ध हो गया और उसके शासन से स्वतन्त्र हो गया। 2यहोवा ने कसदियों, अरामियों, मोआबियों और अम्मोनियों के दलों को यहोयाकीम के विरुद्ध लड़ने के लिये भेजा। यहोवा ने उन दलों को यहूदा को नष्ट करने के लिये भेजा। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। यहोवा ने अपने सेवक नबियों का उपयोग वह कहने के लिये किया था।

3यहोवा ने उन घटनाओं को यहूदा के साथ घटित होने का आदेश दिया। इस प्रकार वह उन्हें अपनी दृष्टि से दूर करेगा। उसने यह उन पापों के कारण किया जो मनश्शे ने किये। 4यहोवा ने यह इसलिये किया कि मनश्शे ने बहुत से निरपराध व्यक्तियों को मार डाला। मनश्शे ने उनके खून से यरूशलेम को भर दिया था और यहोवा उन पापों को क्षमा नहीं कर सकता था।

5यहोयाकीम ने जो अन्य काम किये वे "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। यहोयाकीम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। यहोयाकीम का पुत्र यहोयाकीन उसके बाद नया राजा हुआ।

7 मिस्र का राजा मिस्र से और अधिक बाहर नहीं निकल सका, क्योंकि बाबेल के राजा ने मिस्र के नाले से परात नदी तक सारे देश पर जिस पर मिस्र के राजा का आधिपत्य था, अधिकार कर लिया था।

नबूकदनेस्सर यरूशलेम पर अधिकार करता है

8यहोयाकीन जब शासन करने लगा तब वह अट्ठारह वर्ष का था। उसने यरूशलेम में तीन महीने तक शासन किया। उसकी माँ यरूशलेम के एलनातान की पुत्री नहुश्ता थी। 9यहोयाकीन ने उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने

बुरा बताया था। उसने वे ही सब काम किये जो उसके पिता ने किये थे।

[10]उस समय बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के अधिकारी यरूशलेम आए और उसे घेर लिया। [11]तब बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर नगर में आया। [12]यहूदा का राजा यहोयाकीन बाबेल के राजा से मिलने बाहर आया। यहोयाकीन की माँ, उसके अधिकारी, प्रमुख और अन्य अधिकारी भी उसके साथ गये। तब बाबेल के राजा ने यहोयाकीन को बन्दी बना लिया। यह नबूकदनेस्सर के शासनकाल का आठवाँ वर्ष था।

[13]नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम से यहोवा के मन्दिर का सारा खजाना और राजमहल का सारा खजाना ले लिया। नबूकदनेस्सर ने उन सभी स्वर्ण–पात्रों को टुकड़ों में काट डाला जिन्हें इस्राएल के राजा सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर में रखा था। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

[14]नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के सभी लोगों को बन्दी बनाया। उसने सभी प्रमुखों और अन्य धनी लोगों को बन्दी बना लिया। उसने दस हजार लोगों को पकड़ा और उन्हें बन्दी बनाया। नबूकदनेस्सर ने सभी कुशल मजदूरों और कारीगरों को ले लिया। कोई व्यक्ति, साधारण लोगों में सबसे गरीब के अतिरिक्त, नहीं छोड़ा गया। [15]नबूकदनेस्सर , यहोयाकीन को बन्दी के रूप में बाबेल ले गया। नबूकदनेस्सर राजा की माँ, उसकी पत्नियों, अधिकारी और देश के प्रमुख लोगों को भी ले गया। नबूकदनेस्सर उन्हें यरूशलेम से बाबेल बन्दी के रुप में ले गया। [16]बाबेल का राजा सारे सात हजार सैनिक और एक हजार कुशल मजदूर और कारीगर भी ले गया। ये सभी व्यक्ति प्रशिक्षित सैनिक थे और युद्ध में लड़ सकते थे। बाबेल का राजा उन्हें बन्दी के रूप में बाबेल ले गया।

राजा सिदकिय्याह

[17]बाबेल के राजा ने मत्तन्याह को नया राजा बनाया। मत्तन्याह यहोयाकीन का चाचा था। बाबेल के राजा ने मत्तन्याह का नाम बदलकर सिदकिय्याह रख दिया। [18]सिदकिय्याह ने जब शासन करना आरम्भ किया तो वह इक्कीस वर्ष का था। उसने ग्यारह वर्ष यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ लिब्ना के यिर्मयाह की पुत्री हमूतल थी। सिदकिय्याह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। सिदकिय्याह ने वे ही सारे काम किये जो यहोयाकीम ने किये थे। [20]यहोवा यरूशलेम और यहूदा पर इतना क्रोधित हुआ कि उसने उन्हें दूर फेंक दिया।

नबूकदनेस्सर, द्वारा सिदकिय्याह के शासन की समाप्ति

सिदकिय्याह ने बाबेल के राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और उसकी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया।

25

अत: बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर अपनी सारी सेना के साथ यरूशलेम के विरुद्ध युद्ध करने आया। सिदकिय्याह के राज्य के नौवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन यह घटित हुआ। नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के चारों ओर डेरा डाला। उसने यह कार्य यरूशलेम के लोगों को बाहर से भीतर, और भीतर से बाहर आने जाने से रोकने के लिये किया। तब उन्होंने यरूशलेम के चारों ओर मिट्टी की दीवार खड़ी की। [2]नबूकदनेस्सर की सेना यरूशलेम के चारों ओर सिदकिय्याह के यहूदा में शासनकाल के ग्यारहवें वर्ष तक बनी रही। [3]नगर में भुखमरी की स्थिति बद से बदतर होती जा रही थी। चौथे महीने के नौवें दिन साधारण लोगों के लिये कुछ भी भोजन नहीं रह गया था।

[4]नबूकदनेस्सर की सेना ने नगर प्राचीर में एक छेद बनाया। उस रात को राजा सिदकिय्याह और उसके सारे सैनिक भाग गए। वे राजा के बाग के सहारे दो दीवारों के द्वार से बच निकले। बाबेल की सेना नगर के चारों ओर थी। किन्तु सिदकिय्याह और उसकी सेना मरुभूमि की ओर की सड़क पर भाग निकले। [5]बाबेल की सेना ने सिदकिय्याह का पीछा किया और उसे यरीहो के पास पकड़ लिया। सिदकिय्याह की सारी सेना भाग गई और उसे अकेला छोड़ दिया।

[6]बाबेल सिदकिय्याह को रिबला में बाबेल के राजा के पास ले गये। बाबेल के राजा ने सिदकिय्याह को दण्ड देने का निर्णय किया। [7]उन्होंने सिदकिय्याह के सामने उसके पुत्रों को मार डाला। तब उन्होंने सिदकिय्याह की आँखे निकाल लीं। उन्होंने उसे जंजीर में जकड़ा और उसे बाबेल ले गए।

यरूशलेम नष्ट कर दिया गया

[8]नबूकदनेस्सर के बाबेल के शासनकाल के उन्नीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के सातवें दिन नबूजरदान यरूशलेम आया। नबूकदनेस्सर के अंगरक्षकों का नायक नबूजरदान था। [9]नबूजरदान ने यहोवा का मन्दिर और राजमहल जला डाला। नबूजरदान ने यरूशलेम के सभी घरों को भी जला डाला। उसने बड़ी से बड़ी इमारतों को भी नष्ट किया। [10]तब नबूजरदान के साथ जो बाबेल की सेना थी उसने यरूशलेम के चारों ओर की दीवारों को गिरा दिया [11]और नबूजरदान ने उन सभी लोगों को पकड़ा जो तब तक नगर में बचे रह गए थे। नबूजरदान ने सभी लोगों को बन्दी बना लिया और उन्हें भी जिन्होंने आत्मसमपर्ण करने की कोशिश की। [12]नबूजरदान ने केवल साधारण व्यक्तियों में सबसे गरीब लोगों को वहाँ रहने दिया। उसने उन गरीब लोगों को वहाँ अंगूर और अन्य फसलों की देखभाल के लिये रहने दिया।

[13]बाबेल के सैनिकों ने यहोवा के मन्दिर के काँसे की वस्तुओं के टुकड़े कर डाले। उन्होंने काँसे के स्तम्भों, काँसे की गाड़ी को और काँसे के विशाल सरोवर के भी टुकड़े कर डाले, तब बाबेल के सैनिक उन काँसे के टुकड़ों को बाबेल ले गए। [14]कसदियों ने बर्तन, बेलचे, दीप–झारु* चम्मच और काँसे के बर्तन जो यहोवा के मन्दिर में काम आती थी, को भी ले लिया। [15]नबूजरदान ने सभी कढ़ाहियों और प्यालों को ले लिया। उसने जो सोने के बने थे उन्हें सोने के लिये और जो चाँदी के बने थे उन्हें चाँदी के लिये लिया। [16-17]जो चीज़ें उसने लीं उनकी सूची यह है:

दो काँसे के स्तम्भ, एक हौज और वह गाड़ी जिसे सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के लिये बनाया था। इन चीजों में लगा काँसा इतना भारी था कि उसे तोला नहीं जा सकता था। हर एक स्तम्भ लगभग सत्ताईस फुट ऊँचा था। स्तम्भों के शीर्ष* काँसे के बने थे। हर एक शीर्ष साढ़े चार फुट ऊँचा था। हर एक शीर्ष पर जाल और अनार का नमूना बना था। इसका सब कुछ काँसे का बना था। दोनों स्तम्भों पर एक ही प्रकार की आकृतियाँ थीं।

बन्दी बनाए गए यहूदा के लोग

[18]तब नबूजरदान ने मन्दिर से
महायाजक सरायाह,
द्वितीय याजक सपन्याह
और तीन द्वार रक्षकों को लिया।
[19]नगर में नबूजरदान ने
एक अधिकारी को लिया। वह सेना का सेनापति था।

नबूजरदान ने राजा के पाँच सलाहकारों को भी लिया जो नगर में पाए गए
और उसने सेनापति के सचिव को लिया। सेनापति का सचिव वह व्यक्ति था जो साधारण लोगों की गणना करता था और उनमें से कुछ को सैनिक के रूप में चुनता था।

नबूजरदान ने साठ अन्य लोगों को भी लिया जो नगर में पाए गए।

[20-21]तब नबूजरदान इन सभी लोगों को रिबला में बाबेल के राजा के पास ले गया। बाबेल के राजा ने हमात देश के रिबला में इन्हें मार डाला। इस प्रकार यहूदा के लोगों को कैदी बनाकर उन्हें, उनके देश से निर्वासित किया गया।

नबूकदनेस्सर गदल्याह को यहूदा का शासक बनाता है

[22]बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा देश में कुछ लोगों को छोड़ा। उसने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को यहूदा के उन लोगों का शासक बनाया। अहीकाम शापान का पुत्र था।

[23]जब सेना के सभी सेनापतियों और आदमियों ने सुना कि बाबेल के राजा ने गदल्याह को शासक बनाया है तो वे गदल्याह के पास मिस्पा में आए। ये सेना के सेनापति नतन्याह का पुत्र इश्माएल, कारेहू का पुत्र योहानान, नतोपाई तन्हूमेत का पुत्र सरायाह तथा माकाई का पुत्र याजन्याह थे। [24]तब गदल्याह ने इन सेना के सेनापतियों और उनके आदमियों को वचन दिया। गदल्याह ने उनसे कहा, "बाबेल के अधिकारियों से डरो नहीं। इस देश में

दीप झारु वे छोटे प्याले के समान दीप को बुझाने के लिये थे।
शीर्ष लकड़ी या पत्थर के अलंकृत टोपियाँ जो स्तम्भों के सिरे पर रखी जाती है।

रहो और बाबेल के राजा की सेवा करो। तब तुम्हारे साथ सब कुछ ठीक रहेगा।"

[25]किन्तु सातवें महीने राजा के परिवार का एलीशामा का पौत्र व नतन्याह का पुत्र इश्माएल दस पुरुषों के साथ आया और गदल्याह को मार डाला। इश्माएल और उसके दस आदमियों ने मिस्पा में गदल्याह के साथ जो यहूदी और कसदी थे, उन्हें भी मार डाला। [26]तब सभी लोग सबसे कम महत्वपूर्ण और सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा सेना के नायक मिस्र को भाग गए। वे इसलिये भागे कि वे कसदियों से भयभीत थे।

[27]बाद में राजा एवील्मरोदक यहूदा का राजा बना। उसने यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकलने दिया। यह यहूदा के राजा यहोयाकीन के बन्दी बनाये जाने के सैंतीसवें वर्ष में हुआ। यह एवील्मरोदक के शासन आरम्भ करने के बारहवें महीने के सत्ताईसवें दिन हुआ। [28]एवीलमेरादक ने यहोयाकीन से दयापूर्वक बातें कीं। एवील्मरोदक ने यहोयाकीन को बाबेल में रहने वाले उसके सभी साथी राजाओं से अधिक उच्च स्थान प्रदान किया। [29]एवील्मरोदक ने यहोयाकीन के बन्दीगृह के वस्त्रों को पहनना बन्द करवाया। यहोयाकीन ने एवील्मरोदक के साथ एक ही मेज पर खाना खाया। उसने अपने शेष जीवन में हर एक दिन ऐसा ही किया। [30]इस प्रकार राजा एवील्मरोदक ने यहोयाकीन को जीवन पर्यन्त नियमित रूप से प्रतिदिन का भोजन प्रदान किया।

1 इतिहास

आदम से नूह तक पारिवारिक इतिहास

1 [1-3]आदम, शेत, एनोश, केनान, महललेल, येरेद, हनोक, मतूशेलह, लेमेक, नूह। *

[4]नूह के पुत्र शेम, हाम और येपेत थे।

येपेत के वंशज

[5]येपेत के पुत्र गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास थे।

[6]गोमेर के पुत्र अशकनज, दीपत और तोगर्मा थे।

[7]यावान के पुत्र एलीशा, तर्शीश, कित्ती और रोदानी थे।

हाम के वंशज

[8]हाम के पुत्र कूश (मिस्रम), पूत और कनान थे।

[9]कूश के पुत्र सबा, हबीला, सबाता, रामा और सब्तका थे। रामा के पुत्र शबा और ददान थे।

[10]कूश का वंशज निम्रोद संसार में सर्वाधिक शक्तिशाली वीर योद्धा हुआ।

[11]मिस्र लूदी, अनामी, लहावी, नप्तही, [12]पत्रूसी, कसलूही और कप्तोरी का पिता था। (पलिश्ती के लोग कसलूही के वंशज थे।)

[13]कनान सीदोन का पिता था। सीदोन उसका प्रथम पुत्र था। कनान, हित्तियों, [14]यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी, [15]हिव्वी, अर्की, सीनी, [16]अर्वदी, समारी और हमाती के लोगों का भी पिता था।

शेम के वंशज

[17]शेम के पुत्र एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद और अराम थे। अराम के पुत्र ऊस, हूल, गेतेर और मेशेक थे।

[18]अर्पक्षद शेलह का पिता था। शेलह एबेर का पिता था।

[19]एबेर के दो पुत्र थे। एक पुत्र का नाम पेलेग * था, क्योंकि पृथ्वी के मनुष्य उसके जीवनकाल में कई भाषाओं में बटे थे। पेलेग के भाई का नाम योक्तान था। ([20]योक्तान से पैदा हुये अल्मोदाद, शुलेप, हसर्मावेत, येरह, [21]हदोराम, ऊजाल, दिक्ला, [22]एबाल, अबीमाएल, शबा, [23]ओपीर, हवीला, और योबाब, ये सब योक्तान की सन्तान थे।)

इब्राहीम का परिवार

शेम के वंशज

[24]शेम, अर्पक्षद, शेलह, [25]एबेर, पेलेग, रू, [26]सरूग, नाहोर, तेरह [27]और अब्राम (अब्राम को इब्राहीम भी कहा जाता है।)

[28]इब्राहीम केपुत्र इसहाक और इश्माएल थे। [29]ये इसके वंशज हैं:

हाजिरा के वंशज

इश्माएल का प्रथम पुत्र नबायोत था। इश्माएल के अन्य पुत्र केदार, अदवेल, मिबसाम, [30]मिश्मा, दूमा, मस्सा, हदद, तेमा, [31]यतूर, नापीश और केदमा थे। वे इश्माएल के पुत्र थे।

कतूरा के वंशज

[32]कतूरा इब्राहीम की रखैल थी। उसने जिम्रान, योक्षान, मदान, मिद्यान, यिशबाक और शूह को जन्म दिया।

योक्षान के पुत्र शबा और ददान थे।

[33]मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीदा और एलदा थे।

ये सभी कतूरा के पुत्र थे।

आदम ... नूह नामों की इस तालिका में एक व्यक्ति और उसके वंशजों के नाम हैं।

पेलेग इस नाम का अर्थ “बँटवारा” है।

सारा के वंशज

[34]इब्राहीम इसहाक का पिता था। इसहाक के पुत्र एसाव और इस्राएल थे।

[35]एसाव के पुत्र एलीपज, रूएल, यूश, यालाम और कोरह थे।

[36]एलीपज के पुत्र तेमान, ओमार, सपी, गाताम और कनज थे। एलीपज और तिम्ना का पुत्र अमालेक नाम का था।

[37]रूएल के पुत्र नहत, जेरह, शम्मा और मिज्जा थे।

सेईर के एदोमी

[38]सेईर के पुत्र लोतान, शोबाल, सिबोन, अना, दीशोन, एसेर और दीशान थे।

[39]लोतान के पुत्र होरी और होमाम थे। लोतान की एक बहन तिम्ना नाम की थी।

[40]शोबाल के पुत्र अल्यान, मानहत, एबाल, शपी और ओनाम थे।

सिबोन के पुत्र अय्या और अना थे।

[41]अना का पुत्र दीशोन था।

दीशोन के पुत्र हम्रान, एशबान, यित्रान और करान थे।

[42]एसेर के पुत्र बिल्हान, ज़ावान और याकान थे।

दीशोन के पुत्र ऊस और अरान थे।

एदोम के राजा

[43]इस्राएल में राजाओं के होने के बहुत पहले एदोम में राजा थे। एदोम के राजाओं के नाम ये हैं:

उनके नाम थे: बोर का पुत्र बेला। बेला के नगर का नाम दिन्हाबा था।

[44]जब बेला मरा, तब जेरह का पुत्र योबाब नया राजा बना। योबाब बोस्रा का था।

[45]जब योबाब मरा, हूशाम नया राजा हुआ। हूशाम तेमनी लोगों के देश का था।

[46]जब हूशाम मरा, बदद का पुत्र हदद नया राजा बना। हदद ने मिद्यानियों को मोआब देश में हराया। हदद के नगर का नाम अवीत था।

[47]जब हदद मरा, सम्ला नया राजा हुआ। सम्ला मस्रेकाई का था।

[48]जब सम्ला मरा, शाऊल नया राजा बना। शाऊल महानद के किनारे के रहोबोत का था।

[49]जब शाऊल मरा, अकबोर का पुत्र बाल्हानान नया राजा हुआ।

[50]जब बाल्हानान मरा, हदद नया राजा बना। हदद के नगर का नाम पाई था। हदद की पत्नी का नाम महेतबेल था। महेतबेल मत्रेद की पुत्री थी। मत्रेद, मेज़ाहाब की पुत्री थी। [51]तब हदद मरा।

एदोम के प्रमुख तिम्ना, अल्या, यतेत, [52]ओहोलीबामा, एला, पीनोन, [53]कनज, तेमान, मिबसार, [54]मग्दीएल और ईराम थे। यह एदोम के प्रमुखों की एक सूची है।

इस्राएल के पुत्र

2 इस्राएल के पुत्र रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, जबूलून, [2]दान, यूसुफ, बिन्यामीन, नप्ताली, गाद और आशेर थे।

यहूदा के वंशज

[3]यहूदा के पुत्र एर, ओनान और शेला थे। बतशू * उनकी माँ थी। बतशू कनान की स्त्री थी। यहोवा ने देखा कि यहूदा का प्रथम पुत्र एर बुरा है। यही कारण था कि यहोवा ने उसे मार डाला। [4]यहूदा की पुत्रवधू तामार ने पेरेस और जेरह * को जन्म दिया। इस प्रकार यहूदा के पाँच पुत्र थे।

[5]पेरेस के पुत्र हेस्रोन और हामूल थे।

[6]जेरह के पाँच पुत्र थे। वे: जिम्री, एतान, हेमान, कलकोल और दारा थे।

[7]जिम्री का पुत्र कर्मी था। कर्मी का पुत्र आकार * था। आकार वह व्यक्ति था जिसने युद्ध में मिली चीज़ें रख ली थीं। उससे आशा थी कि वह उन सभी चीजों को परमेश्वर को देगा।

[8]एतान का पुत्र अजर्याह था।

[9]हेस्रोन के पुत्र यरह्मेल राम और कलूबै थे।

बतशू इस नाम का अर्थ "शुआ की पुत्री" है। देखें उत्पत्ति 38:2

यहूदा ... जेरह यहूदा ने अपनी पुत्रवधू तामार के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया और उसे गर्भवती किया। देखें उत्पत्ति 38:12–30

आकार "आकान" देखें यहोशू 7:11

राम के वंशज

[10]राम अम्मीनादाब का पिता था और अम्मीनादाब नहशोन का पिता था। नहशोन यहूदा के लोगों का प्रमुख था।* [11]नहशोन सल्मा का पिता था। सल्मा बोअज़ का पिता था। [12]बोअज़ ओबेद का पिता था। ओबेद यिशै का पिता था। [13]यिशै एलीआब का पिता था। एलीआब यिशै का प्रथम पुत्र था। यिशै का दूसरा पुत्र अबीनादाब था। उसका तीसरा पुत्र शिमा था। [14]नतनेल यिशै का चौथा पुत्र था। यिशै का पाँचवाँ पुत्र रद्दै था। [15]ओसेम यिशै का छठा पुत्र था और दाऊद उसका सातवाँ पुत्र था। [16]उनकी बहनें सरूयाह और अबीगैल थीं। सरूयाह के तीन पुत्र अबीशै, योआब और असाहेल थे। [17]अबीगैल अमासा की माँ थी। अमासा का पिता येतेर था। येतेर इश्माएली लोगों में से था।

कालेब के वंशज

[18]कालेब हेस्रोन का पुत्र था। कालेब की पत्नी अजूबा से सन्तानें हुई। अजूबा यरीओत * की पुत्री थी। अजूबा के पुत्र येशेर शोबाब, और अर्दोन थे। [19]जब अजूबा मरी, कालेब ने एप्रात से विवाह किया। कालेब और एप्रात का एक पुत्र था। उन्होंने उसका नाम हूर रखा। [20]हूर ऊरी का पिता था। ऊरी बसलेल का पिता था।

[21]बाद में, जब हेस्रोन साठ वर्ष का हो गया, उसने माकीर की पुत्री से विवाह किया। माकीर गिलाद का पिता था। हेस्रोन ने माकीर की पुत्री के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया और उसने सगूब को जन्म दिया। [22]सगूब याईर का पिता था। याईर के पास गिलाद देश में तेईस नगर थे। [23]किन्तु गशूर और अराम ने याईर के गाँवों को ले लिया। उनके बीच कनत और इसके चारों ओर के छोटे नगर थे। सब मिलाकर साठ छोटे नगर थे। ये सभी नगर गिलाद के पिता माकीर, के पुत्रों के थे।

[24]हेस्रोन, एप्राता के कालेब नगर में मरा। जब वह मर गया, उसकी पत्नी अबिय्याह ने उसके पुत्र को जन्म दिया। पुत्र का नाम अशहूर था। अशहूर तको का पित ा था।

यरह्मेल की वंशज

[25]यरह्मेल हेस्रोन का प्रथम पुत्र था। यरह्मेल के पुत्र राम, बूना, ओरेन, ओसेम, और अहिय्याह थे। राम यरह्मेल का प्रथम पुत्र था। [26]यरह्मेल की दूसरी पत्नी अतारा थी। अतारा ओनाम की माँ थी।

[27]यरह्मेल के प्रथम पुत्र, राम के पुत्र मास, यामीन और एकेर थे।

[28]ओनाम के पुत्र शम्मै और यादा थे। शम्मै के पुत्र नादाब और अबीशूर थे।

[29]अबीशूर की पत्नी का नाम अबीहैल था। उनके दो पुत्र थे। उनके नाम अहबान और मोलीद थे।

[30]नादाब के पुत्र सेलेद और अप्पैम थे। सेलेद बिना सन्तान मरा।

[31]अप्पैम का पुत्र यिशी था। यिशी का पुत्र शेशान था। शेशान का पुत्र अहलै था।

[32]यादा शम्मै का भाई था। यादा के पुत्र येतेर और योनातान थे। येतेर बिना सन्तान मरा।

[33]योनातान के पुत्र पेलेत और जाजा थे। यह यरह्मेल की सन्तानों की सूची थी।

[34]शेशान के पुत्र नहीं थे। उसे केवल पुत्रियाँ थीं। शेशान के पास यर्हा नामक एक मिस्री सेवक था। [35]शेशान ने अपनी पुत्री का विवाह यर्हा के साथ होने दिया। उनका एक पुत्र था। उसका नाम अत्तै था।

[36]अत्तै, नातान का पिता था। नातान जाबाद का पिता था। [37]जाबाद एपलाल का पिता था। एपलाल ओबेद का पिता था। [38]ओबेद येहू का पिता था। येहू अजर्याह का पिता था। [39]अजर्याह हेलैस का पिता था। हेलैस एलासा का पिता था। [40]एलासा सिस्मै का पिता था। सिस्मै शल्लूम का पिता था। [41]शल्लूम यकम्याह का पिता था और यकम्याह एलीशामा का पिता था।

कालेब का परिवार

[42]कालेब यरह्मेल का भाई था। कालेब के कुछ पुत्र थे। उसका पहला पुत्र मेशा था। मेशा जीप का पिता था। मारेशा हेब्रोन का पिता था।

[43]हेब्रोन के पुत्र कोरह, तप्पूह, रेकेम और शेमा थे। [44]शेमा, रहम का पिता था। रहम योर्काम का पिता था। [45]शम्मै का पुत्र माओन था। माओन बेत्सूर का पिता था। रेकेम शम्मै का पिता था।

नहशोन ... था नहशोन यहूदा के परिवार समूह का उस समय प्रमुख था जब इस्राएल के लोग मिस्र से बाहर आए थे। देखें गिनती 1:7; 2:3; 7:12

कालेब ... यरीओत या "कालेब की सन्तानें उसकी पत्नी अजूबा और यरीओत से हुई।"

[46]कालेब की रखैल का नाम एपा था। एपा हारान, मोसा और गाजेज़ की माँ थी। हारान, गाजेज़ का पिता था।

[47]याहदै के पुत्र रेगेम, योताम, गेशान, पेलेत, एपा और शाप थे।

[48]माका, कालेब की दूसरी रखैल थी। माका, शेबेर और तिर्हाना की माँ थी। [49]माका, शाप और शबा की भी माँ थी। शाप, मदमन्ना का पिता था। शबा, मकबेना और गिबा का पिता था। कालेब की पुत्री अकसा थी।

[50]यह कालेब वंशजों की सूची है: हूर कालेब का प्रथम पुत्र था। वह एप्राता से पैदा हुआ था। हूर के पुत्र शोबाल जो किर्यत्यारीम का संस्थापक * था, [51]सल्मा, जो बेतलेहेम का संस्थापक था और हारेप बेतगादेर का संस्थापक था।

[52]शोबाल किर्यत्यारीम का संस्थापक था। यह शोबाल के वंशजों की सूची है: हारोए, मनुहोत के आधे लोग: [53]और किर्यत्यारीम के परिवार समूह। ये यित्री, पूती, शूमाती और मिश्राई लोग हैं। सोराई और एश्ताओली लोग मिश्राई लोगों से निकले।

[54]यह सल्मा के वंशजों की सूची है: बेतलेहेम के लोग, नतोपाई, अत्रोत, बेत्योआब, मानहत के आधे लोग, सोरी लोग, [55]और उन शास्त्रियों * के परिवार जो याबेस, तिराती, शिमाती और सूकाती में रहते थे। ये शास्त्री, वे कनानी लोग हैं जो हम्मत से आए। हम्मत बेतरेकाब का संस्थापक था।

दाऊद के पुत्र

3 दाऊद के कुछ पुत्र हेब्रोन नगर में पैदा हुए थे। दाऊद के पुत्रों की यह सूची है:

दाऊद का प्रथम पुत्र अम्मोन था। अम्मोन की माँ अहीनोअम थी। वह यिज्रेली नगर की थी।

दूसरा पुत्र दानिय्येल था। उसकी माँ अबीगैल–कर्मेल (यहूदा में) की थी।

[2]तीसरा पुत्र अबशालोम था। उसकी माँ तल्मै की पुत्री माका थी। तल्मै गशूर का राजा था।

चौथा पुत्र ओदानिय्याह था। उसकी माँ हग्गीत थी। [3]पाँचवाँ पुत्र शपत्याह था। उसकी माँ अबीतल थी।

छठा पुत्र यित्राम था। उसकी माँ दाऊद की पत्नी एग्ला थी। [4]हेब्रोन में दाऊद के ये छ: पुत्र पैदा हुए थे। दाऊद ने वहाँ सात वर्ष छ: महीनें शासन किया।

दाऊद, यरूशलेम में तैंतीस वर्ष राजा रहा। [5]दाऊद के यरूशलेम में पैदा हुए पुत्र ये हैं:

चार बच्चे बतशेबा से पैदा हुए। बतशेबा अम्मीएल की पुत्री थी, शिमा, शोबाब, नातान और सुलैमान। [6-8]अन्य नौ बच्चे ये थे: यिभार , एलीशामा, एलीपेलेत, नेगाह, नेपेग, यापी, एलीशामा, एल्यादा और एलीपेलेत। [9]वे सभी दाऊद के पुत्र थे। दाऊद के अन्य पुत्र रखैलों से थे। तामार दाऊद की पुत्री * थी ।

दाऊद के समय के बाद के यहूदा के राजा

[10]सुलैमान का पुत्र रहबाम था और रहबाम का पुत्र अबिय्याह था। अबिय्याह का पुत्र आसा था। आसा का पुत्र यहोशापात था। [11]यहोशापात का पुत्र योराम था। योराम का पुत्र अहज्याह था। अहज्याह का पुत्र योआश था। [12]योआश का पुत्र अमस्याह था। अमस्याह का पुत्र अजर्याह था। अजर्याह का पुत्र योताम था। [13]योताम का पुत्र आहाज़ था। आहाज का पुत्र हिजकिय्याह था। हिजकिय्याह का पुत्र मनश्शे था। [14]मनश्शे का पुत्र आमोन था। आमोन का पुत्र योशिय्याह था।

[15]योशिय्याह के पुत्रों की सूची यह है: प्रथम पुत्र योहानान था। दूसरा पुत्र यहोयाकीम था। तीसरा पुत्र सिदकिय्याह था। चौथा पुत्र शल्लूम था।

[16]यहोयाकीम के पुत्र यकोन्याह, और उसका पुत्र सिदकिय्याह * थे।

संस्थापक "पिता" वह व्यक्ति जिसने नगर बसाना आरम्भ किया।

शास्त्रियों वे व्यक्ति जो लिखते और पुस्तकों और पत्रों की नकल करते थे। वे लोग उन्हें लिखने में इतना अधिक समय लगाते थे कि वे प्राय: इसके विशेषज्ञ हो जाते थे कि उन धर्मग्रन्थों (लिखित सामग्री) का अर्थ क्या है।

दाऊद की पुत्री "उनकी बहन।"

यहोयाकीम. .. पुत्र सिदकिय्याह इसकी व्याख्या दो प्रकार से की जा सकती है। (1) यह सिदकिय्याह यहोयाकीम का पुत्र और यकोन्याह का भाई था। (2) यह सिदकिय्याह यकोन्याह का पुत्र था और यहोयाकीम का पौत्र था।

बाबुल द्वारा यहूदा को पराजित करने के बाद दाऊद का वंश-क्रम

[17]यकोन्याह के बाबुल में बन्दी होने के बाद यकोन्याह के पुत्रों की यह सूची है। उसकी सन्तानें ये थीं: शालतीएल, [18]मल्कीराम, पदायाह, शेनस्सर, यकम्याह, होशामा, और नदब्याह

[19]पदायाह के पुत्र जरुब्बाबेल और शिमी थे। जरुब्बाबेल के पुत्र मशुल्लाम और हनन्याह थे। शलोमीत उनकी बहन थी। [20]जरुब्बाबेल के अन्य पाँच पुत्र भी थे। उनके नाम हशूबा, ओहेल, बेरेक्याह, हसद्याह, और यूशमेसेद था।

[21]हनन्याह का पुत्र पलत्याह था और पलत्याह का पुत्र यशायाह था। यशायाह का पुत्र रपायाह था और रपायाह का पुत्र अर्नान था। अर्नान का पुत्र ओबद्याह था और ओबद्याह का पुत्र शकन्याह था।

[22]यह सूची तकन्याह के वंशजों शमायाह की है: शमायाह के छ: पुत्र थे, शमायाह, हत्तूश और यिगाल, बारीह, नार्याह और शपात।

[23]नार्याह के तीन पुत्र थे। वे एल्योएनै, हिजकिय्याह और अज्रीकाम थे।

[24]एल्योएनै के सात पुत्र थे। वे होदव्याह, एल्याशीब, पलायाह, अक्कूब, योहानान, दलायाह और अनानी थे।

यहूदा के अन्य परिवार समूह

4 यह यहूदा के पुत्रों की सूची है: वे पेरेस, हेस्रोन, कर्मी, हूर और शोबाल थे।

[2]शोबाल का पुत्र रायाह था। रायाह, यहत का पिता था। यहत, अहूमै और लहद का पिता था। सोराई लोग अहूमै और लहद के वंशज हैं।

[3]एताम के पुत्र यिज्रेल, यिश्मा, और यिद्बाश थे और उनकी एक बहन हस्सलेलपोनी नाम की थी।

[4]पनूएल गदोर का पिता था और एजेर रूशा का पिता था। हूर के ये पुत्र थे: हूर एप्राता का प्रथम पुत्र था और एप्राता बेतलेहेम का संस्थापक था।

[5]तको का पिता अशहूर था। तको की दो पत्नियाँ थीं। उनका नाम हेबा और नारा था। [6]नारा के अहुज्जाम, हेपेर, तेमनी और हाहश्तारी पुत्र थे। ये अशहूर से नारा के पुत्र थे। [7]हेला के पुत्र सेरेत, यिसहर और एत्नान और कोस थे। [8]कोस आनूब और सोबेबा का पिता था। कोस, अहर्हेल परिवार समूह का भी पिता था। अहर्हेल हारून का पुत्र था।

[9]याबेस बहुत अच्छा व्यक्ति था। वह अपने भाईयों से अधिक अच्छा था। उसकी माँ ने कहा, "मैंने उसका नाम याबेस* रखा है क्योंकि मैं उस समय बड़ी पीड़ा में थी जब मैंने इसे जन्म दिया।" [10]याबेस ने इस्राएल के परमेश्वर से प्रार्थना की। याबेस ने कहा, "मैं चाहता हूँ कि तू मुझे सचमुच आशीर्वाद दे। मैं चाहता हूँ कि तू मुझे अधिक भूमि दे। मेरे समीप रहे और किसी को मुझे चोट न पहुँचाने दे। तब मुझे कोई कष्ट नहीं होगा" और परमेश्वर ने याबेस को वह दिया, जो उसने माँगा।

[11]कलूब शूहा का भाई था। कलूब महीर का पिता था। महीर एशतोन का पिता था। [12]एशतोन, बेतरामा, पासेह और तहिन्ना का पिता था। तहिन्ना ईर्नाहाश * का पिता था। वे लोग रेका से थे।

[13]कनज के पुत्र ओत्नीएल और सरायाह थे। ओत्नीएल के पुत्र हतत और मोनोतै थे। [14]मोनोतै ओप्रा का पिता था और सरायाह योआब का पिता था। योआब गेहराशीम* का संस्थापक था। वे लोग इस नाम का उपयोग करते थे क्योंकि वे कुशल कारीगर थे।

[15]कालेब यपुन्ने का पुत्र था। कालेब के पुत्र इरु, एला, और नाम थे। एला का पुत्र कनज था।

[16]यहल्लेल के पुत्र जीप, जीपा, तीरया और असरेलथे।

[17-18]एज्रा के पुत्र येतेर, मेरेद, एपेर और यालोन थे। मेरेद, मिर्य्याम, शम्मै और यिशबह का पिता था। यिशबह, एशतमो का पिता था। मेरेद की एक पत्नी मिस्र की थी। उसके पुत्र येरेद, हेबेर , और यकूतीएल थे। येरेद गदोर का पिता था। हेबेर सोको का पिता था और यकूतीएल जानोह का पिता था। ये बित्या के पुत्र थे। बित्या फ़िरौन की पुत्री थी। वह मिस्र के मेरेद की पत्नी थी।

[19]मेरेद की पत्नी नहम की बहन थी। मेरेद की पत्नी यहूदा* की थी। मेरेद की पत्नी के पुत्र कीला

याबेस यह नाम हिब्रू के उस शब्द की तरह है जिसका अर्थ "पीड़ा" होता है।

तहिन्ना ईर्नाहाश "तहिन्ना ईर्नाहाश नगर का संस्थापक था।" इर का अर्थ "नगर" है।

गेहराशीम इस नाम का अर्थ "कुशल कारीगरों की घाटी" भी है।

मेरेद ... यहूदा यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद से है।

और एशतमो के पिता थे। कीला गेरेमी लोगों में से था और एशतमो माकाई लोगों में से था। [20]शिमोन के पुत्र अम्नोन, रिन्ना बेन्हानान और तोलोन थे। यिशी के पुत्र जोहेत और बेनजोहेत थे।

[21-22]शेला यहूदा का पुत्र था। शेला के पुत्र एर, लादा, योकीम, कोर्जबा के लोग, योआश, और साराप थे। एर लेका का पिता था। लादा मारेशा और बेतअशबे के सन कारीगरों के परिवार समूह का पिता था। योआश और साराप ने मोआबी स्त्रियों से विवाह किया। तब वे बेतलेहेम को लौट गए। * उस परिवार के विषय में लिखित सामग्री बहुत प्राचीन है। [23]शेला के वे पुत्र ऐसे कारीगर थे जो मिट्टी से चीज़ें बनाते थे। वे नताईम और गदेरा में रहते थे। वे उन नगरों में रहते थे और राजा के लिये काम करते थे।

शिमोन की सन्तानें

[24]शिमोन के पुत्र, नमूएल, यामीन, यारीब, जेरह और शाऊल थे। [25]शाऊल का पुत्र शल्लूम था। शल्लूम का पुत्र मिबसाम था। मिबसाम का पुत्र मिश्मा था।

[26]मिश्मा का पुत्र हम्मूएल था। हम्मूएल का पुत्र जक्कूर था। जक्कूर का पुत्र शिमी था। [27]शिमी के सोलह पुत्र और छः पुत्रियाँ थीं। किन्तु शिमी के भाईयों के अधिक बच्चे नहीं थे। शिमी के भाईयों के बड़े परिवार नहीं थे। उनके परिवार उतने बड़े नहीं थे जितने बड़े यहूदा के अन्य परिवार समूह थे।

[28]शिमी के बच्चे बेर्शबा, मोलादा, हसर्शूआल, [29]बिल्हा, एसेम, तोलाद, [30]बतूएल, होर्मा, सिकलग, [31]बेत मर्काबोत, हसर्सूसीम, बेतबिरी, और शारैम में रहते थे। वे उन नगरों में तब तक रहे जब तक दाऊद राजा नहीं हुआ। [32]इन नगरों के समीप के पाँच गाँव एताम, ऐन, रिम्मोन, तोकेन और आशान थे। [33]अन्य गाँव जैसे बाल बहुत दूर थे। यहीं वे रहते थे और उन्होंने अपने परिवार का इतिहास भी लिखा।

[34-38]यह सूची उन लोगों की है जो अपने परिवार समूह के प्रमुख थे। वे मशोबाब, यम्लेक, योशा (अमस्याह का पुत्र), योएल, योशिब्याह का पुत्र येहू, सरायाह का पुत्र योशिब्याह, असीएल का पुत्र सरायाह, एल्योएनै, याकोबा, यशोहायाह, असायाह, अदीएल, यसीमीएल, बनायाह, और जीजा (शिपी का पुत्र) थे। शिपी अल्लोन का पुत्र था और अल्लोन यदायाह का पुत्र था। यदायाह शिम्री का पुत्र था और शिम्री शमायाह का पुत्र था।

इन पुरुषों के ये परिवार बहुत विस्तृत हुए। [39]वे गदोर नगर के बाहर, घाटी के पूर्व के क्षेत्र में गए। वे अपनी भेड़ों और पशुओं के लिए मैदान खोजने के लिये उस स्थान पर गए। [40]उन्हें बहुत घासवाले अच्छे मैदान मिलें। उन्होंने वहाँ बहुत अधिक अच्छी भूमि पाई। प्रदेश शान्तिपूर्ण और शान्त था। अतीत में यहाँ हाम के वंशज रहते थे। [41]यह तब हुआ जब हिजकिय्याह यहूदा का राजा था। वे लोग गदोर पहुँचे और हमीत लोगों से लड़े। उन्होंने हमीत लोगों के डेरों को नष्ट कर दिया। वे लोग मूनी लोगों से भी लड़े जो वहाँ रहते थे। इन लोगों ने सभी मूनी लोगों को नष्ट कर डाला। आज भी इन स्थानों में कोई मूनी नहीं है। इसलिए उन लोगों ने वहाँ रहना आरम्भ किया। वे वहाँ रहने लगे, क्योंकि उनकी भेड़ों के लिये उस भूमि पर घास थी।

[42]पाँच सौ शिमोनी लोग शिमोनी के पर्वतीय क्षेत्र में गए। यिशी के पुत्रों ने उन लोगों का मार्ग दर्शन किया। वे पुत्र पलत्याह, नार्याह, रपायाह और उज्जीएल थे। शिमोनी लोग उस स्थान पर रहने वाले लोगों से लड़े। [43]वहाँ अभी थोड़े से केवल अमेलेकी लोग रहते थे और इन शिमोनी लोगों ने इन्हें मार डाला। उस समय से अब तक वे शिमोनी लोग सेईद में रह रहे हैं।

रूबेन के वंशज

5 [1-3]रूबेन इस्राएल का प्रथम पुत्र था। रूबेन को सबसे बड़े पुत्र होने की विशेष सुविधायें प्राप्त होनी चाहिए थी। किन्तु रूबेन ने अपने पिता की पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। इसलिये वे सुविधाएं यूसुफ के पुत्रों को मिली। परिवार के इतिहास में रूबेन का नाम प्रथम पुत्र के रूप में लिखित नहीं है। यहूदा अपने भाईयों से अधिक बलवान हो गया, अत: उसके परिवार से प्रमुख आए। किन्तु यूसुफ के परिवार ने वे अन्य सुविधायें पाई, जो सबसे बड़े पुत्र को मिलती थी। रूबेन के पुत्र हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्मी थे।

[4]योएल के वंशजों के नाम ये हैं: शमायाह योएल का पुत्र था। गोग शमायाह का पुत्र था। शिमी गोग का

मोआबी स्त्रियों ... लौट गये या "उन्होंने मोआब और जशुबिलेहम में शासन किया।"

पुत्र था। [5]मीका शिमी का पुत्र था। रायाह मीका का पुत्र था। बाल रायाह का पुत्र था। [6]बेरा बाल का पुत्र था। अश्शूर के राजा तिलगत पिलनेसेर ने बेरा को अपना घर छोड़ने को विवश किया। इस प्रकार बेरा राजा का बन्दी बना। बेरा रूबेन के परिवार समूह का प्रमुख था।

[7]योएल के भाइयों और उसके सारे परिवार समूहों को वैसे ही लिखा जा रहा है जैसे वे परिवार के इतिहास में हैं: यीएल प्रथम पुत्र था, तब जकर्याह [8]और बेला। बेला अजाज का पुत्र था। अजाज शेमा का पुत्र था। शेमा योएल का पुत्र था। वे अरोएर से लगातार नबो और बाल्मोन तक के क्षेत्र में रहते थे। [9]बेला के लोग पूर्व में परात नदी के पास, मरुभूमि के किनारे तक रहते थे। वे उस स्थान पर रहते थे क्योंकि गिलाद प्रदेश में उनके पास बहुत से बैल थे। [10]जब शाऊल राजा था, बेला के लोगों ने हग्री लोगों के विरुद्ध युद्ध किया। बेला के लोग उन खेमों में रहे जो हग्री लोगों के थे। वे उन खेमों में रहे और गिलाद के पूर्व के सारे क्षेत्र से होकर यात्रा करते रहे।

गाद के वंशज

[11]गाद के परिवार समूह के लोग रूबेन के परिवार समूह के पास रहते थे। गादी लोग बाशान के क्षेत्र में लगातार सल्का नगर तक रहते थे। [12]बाशान में योएल प्रथम प्रमुख था। शापाम दूसरा प्रमुख था। तब यानै प्रमुख हुआ।* [13]परिवार के सात भाई ये थे मीकाएल, मशुल्लाम, शेबा, योरै, याकान, जी और एबेर। [14]वे लोग अबीहैल के वंशज थे। अबीहैल हूरी का पुत्र था। हूरी योराह का पुत्र था। योराह गिलाद का पुत्र था। गिलाद मीकाएल का पुत्र था। मीकाएल यशीशै का पुत्र था। यशीशै यहदो का पुत्र था। यहदो बूज का पुत्र था। [15]अही अब्दीएल का पुत्र था। अब्दीएल गूनी का पुत्र था। अही उनके परिवार का प्रमुख था। [16]गाद के परिवार समूह के लोग गिलाद क्षेत्र में रहते थे। वे बाशान क्षेत्र में बाशान के चारों ओर के छोटे नगरों में और शारोन क्षेत्र के चारागाहों में उसकी सीमाओं तक निवास करते थे।

[17]योनातन और यारोबाम के समय में, इन सभी लोगों के नाम गाद के परिवार इतिहास में लिखे थे। योनातन यहूदा का राजा था और यारोबाम इस्राएल का राजा था।

युद्ध में निपुण कुछ सैनिक

[18]मनश्शे के परिवार के आधे तथा रूबेन और गाद के परिवार समूहों से चौवालीस हजार सात सौ साठ वीर योद्धा युद्ध के लिये तैयार थे। वे युद्ध में निपुण थे। वे ढाल–तलवार धारण करते थे। वे धनुष–बाण में भी कुशल थे। [19]उन्होंने हग्री और यतूर, नापीश और नोदाब लोगों के विरुद्ध युद्ध आरम्भ किया। [20]मनश्शे, रूबेन और गाद परिवार समूह के उन लोगों ने युद्ध में परमेश्वर से प्रार्थना की। उन्होंने परमेश्वर से सहायता मांगी क्योंकि वे उस पर विश्वास करते थे। अत: परमेश्वर ने उनकी सहायता की। परमेश्वर ने उन्हें हग्री लोगों को पराजित करने दिया और उन लोगों ने अन्य लोगों को हराया जो हग्री के लोगों के साथ थे। [21]उन्होंने उन जानवरों को लिया जो हग्री लोगों के थे। उन्होंने पचास हजार ऊँट, ढ़ाई लाख भेड़ें, दो हजार गधे और एक लाख लोग लिये। [22]बहुत से हग्री लोग मारे गये क्योंकि परमेश्वर ने रूबेन के लोगों को युद्ध जीतने में सहायता की। तब मनश्शे, रूबेन और गाद के परिवार समूह के लोग हग्री लोगों की भूमि पर रहने लगे। वे वहाँ तब तक रहते रहे जब तक बाबुल की सेना इस्राएल के लोगों को नहीं ले गई और जब तक बाबुल में उन्हें बन्दी नहीं बनाया गया।

[23]मनश्शे के परिवार समूह के आधे लोग बाशान के क्षेत्र के लगातार बाल्हेर्मोन, सनीर और हेर्मोन पर्वत तक रहते थे। वे एक विशाल जन समूह वाले लोग बन गये।

[24]मनश्शे के परिवार समूह के आधे के प्रमुख ये थे: एपेर, यिशी, एलीएल, अज्रीएल, यिर्मयाह, होदब्याह और यहदीएल। वे सभी शक्तिशाली और वीर पुरुष थे। वे प्रसिद्ध पुरुष थे और वे अपने परिवार के प्रमुख थे। [25]किन्तु उन प्रमुखों ने उस परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया, जिसकी उपासना उनके पूर्वजों ने की थी। उन्होंने वहाँ रहने वाले उन व्यक्तियों के असत्य देवताओं की पूजा करनी आरम्भ की जिन्हें परमेश्वर ने नष्ट किया।

[26]इस्राएल के परमेश्वर ने पूल को युद्ध में जाने का इच्छुक बनाया। पूल अश्शूर का राजा था। उसका नाम तिलगत्पिलनेसेर भी था। वह मनश्शे, रूबेन और गाद के परिवार समूहों के विरुद्ध लड़ा। उसने उनको अपना घर छोड़ने को विवश किया और उन्हें बन्दी बनाया। पूल उन्हें हलह, हाबोर, हारा और गोजान

तब ... हुआ या "तब वहाँ यानै था और शापाम, बाशान में था।"

नदी के पास लाया। इस्राएल के वे परिवार समूह उन स्थानों में उस समय से अब तक रह रहे हैं।

लेवी के वंशज

6 लेवी के पुत्र गेर्शोन, कहात और मरारी थे। [2]कहात के पुत्र अम्राम, यिसहार, हेब्रोन, और उज्जीएल थे। [3]अम्राम के बच्चे हारून, मूसा और मरियम थे।

हारून के पुत्र नादाब, अबीहू, एलीआजार और ईतामार थे। [4]एलीआजार, पीनहास का पिता था। पीनहास, अबीशू का पिता था। [5]अबीशू, बुक्की का पिता था। बुक्की, उज्जी का पिता था। [6]उज्जी, जरह्याह का पिता था। जरह्याह, मरायोत का पिता था। [7]मरायोत, अमर्याह का पिता था। अमर्याह, अहीतूब का पिता था। [8]अहीतूब, सादोक का पिता था। सादोक, अहीमास का पिता था। [9]अहीमास, अजर्याह का पिता था। अजर्याह, योहानान का पिता था। [10]योहानान, अजर्याह का पिता था। (अजर्याह वह व्यक्ति था जिसने यरूशलेम में सुलैमान द्वारा बनाये गये मन्दिर में याजक केरूप में सेवा की।) [11]अजर्याह, अमर्याह का पिता था। अमर्याह, अहीतूब का पिता था। [12]अहीतूब, सादोक का पिता था। सादोक, शल्लूम का पिता था। [13]शल्लूम, हिलकिय्याह का पिता था। हिलकिय्याह, अजर्याह का पिता था। [14]अजर्याह, सरायाह का पिता था। सरायाह, यहोसादाक का पिता था।

[15]यहोसादाक तब अपना घर छोड़ने के लिये विवश किया गया जब यहोवा ने यहूदा और यरूशलेम को दूर भेज दिया। वे लोग दूसरे देश में बन्दी बनाए गए थे। यहोवा ने नबूकदनेस्सर को यहूदा और यरूशलेम के लोगों को बन्दी बनाने दिया।

लेवी के अन्य वंशज

[16]लेवी के पुत्र गेर्शोन, कहात, और मरारी थे। [17]गेर्शोन के पुत्रों के नाम लिब्नी और शिमी थे। [18]कहात के पुत्र यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल थे। [19]मरारी के पुत्र महली और मूशी थे। लेवी के परिवार समूहों के परिवारों की यह सूची है। इनकी सूची उनके पिताओं के नाम को प्रथम रखकर यह है।

[20]गेर्शोन के वंशज ये थे: लिब्नी, गेर्शोन का पुत्र था। यहत, लिब्नी का पुत्र था। जिम्मा, यहत का पुत्र था। [21]योआह, जिम्मा का पुत्र था। इद्दो, योआह का पुत्र था। जेरह, इद्दो का पुत्र था। यातरै जेरह का पुत्र था।

[22]ये कहात के वंशज थे: अम्मीनादाब, कहात का पुत्र था। कोरह, अम्मीनादाब का पुत्र था। अस्सीर, कोरह का पुत्र था। [23]एल्काना, अस्सीर का पुत्र था। एब्यासाप, एल्काना का पुत्र था। अस्सीर, एब्यासाप का पुत्र था। [24]तहत, अस्सीर का पुत्र था। ऊरीएल, तहत का पुत्र था। उज्जिय्याह, ऊरीएल का पुत्र था। शाऊल, उज्जिय्याह का पुत्र था।

[25]एल्काना के पुत्र अमासै और अहीमोत थे। [26]सोपै, एल्काना का पुत्र था। नहत, सोपै का पुत्र था। [27]एलीआब, नहत का पुत्र था। यरोहाम, एलीआब का पुत्र था। एल्काना, यरोहाम का पुत्र था। शमूएल एल्काना का पुत्र था।

[28]शमूएल के पुत्रों में सबसे बड़ा योएल और दूसरा अबिय्याह था।

[29]मरारी के ये पुत्र थे: महली, मरारी का पुत्र था। लिब्नी, महली का पुत्र था। शिमी, लिब्नी का पुत्र था। उज्जा, शिमी का पुत्र था। [30]शिमी, उज्जा का पुत्र था। हग्गिय्याह, शिमा का पुत्र था। असायाह, हग्गिय्याह का पुत्र था।

मन्दिर के गायक

[31]ये वे लोग हैं जिन्हें दाऊद ने यहोवा के भवन के तम्बू में साक्षीपत्र के सन्दूक रखे जाने के बाद संगीत के प्रबन्ध के लिये चुना। [32]ये व्यक्ति पवित्र तम्बू पर गाकर सेवा करते थे। पवित्र तम्बू को मिलाप वाला तम्बू भी कहते हैं और इन लोगों ने तब तक सेवा की जब तक सुलैमान ने यरूशलेम में यहोवा का मन्दिर नहीं बनाया। उन्होंने अपने काम के लिए दिये गए नियमों का अनुसरण करते हुए सेवा की।

[33]ये नाम उन व्यक्तियों और उनके पुत्रों के हैं जिन्होंने संगीत के द्वारा सेवा की:

कहाती लोगों के वंशज थे: गायक हेमान। हेमान, योएल का पुत्र था। योएल, शमूएल का पुत्र था। [34]शमूएल, एल्काना का पुत्र था। एल्काना, यरोहाम का पुत्र था। यरोहाम एलीएल का पुत्र था। एलीएल तोह का पुत्र था। [35]तोह, सूप का पुत्र था। सूप, एल्काना का पुत्र था। एल्काना, महत का पुत्र था। महत, अमासै का पुत्र था। [36]अमासै, एल्काना का पुत्र था। एल्काना,

योएल का पुत्र था। योएल, अजर्याह का पुत्र था। अजर्याह, सपन्याह का पुत्र था। [37]सपन्याह, तहत का पुत्र था। तहत, अस्सीर का पुत्र था। अस्सीर, एब्यासाप का पुत्र था। एब्यासाप, कोरह का पुत्र था। [38]कोरह, यिसहार का पुत्र था। यिसहार, कहात का पुत्र था। कहात, लेवी का पुत्र था। लेवी, इस्राएल का पुत्र था।

[39]हेमान का सम्बन्धी असाप था। असाप ने हेमान के दाहिनी ओर खड़े होकर सेवा की। असाप बेरेक्याह का पुत्र था। बेरेक्याह शिमा का पुत्र था। [40]शिमा मीकाएल का पुत्र था। मीकाएल बासेयाह का पुत्र था। बासेयाह मल्किय्याह का पुत्र था। [41]मल्किय्याह एत्नी का पुत्र था। एत्नी जेरह का पुत्र था। जेरह अदायाह का पुत्र था। [42]अदायाह एतान का पुत्र था। एतान जिम्मा का पुत्र था। जिम्मा शिमी का पुत्र था। [43]शिमी यहत का पुत्र था। यहत गेर्शोन का पुत्र था। गेर्शोन लेवी का पुत्र था।

[44]मरारी के वंशज हेमान और असाप के सम्बन्धी थे। वे हेमान के बांये पक्ष के गायक समूह थे। एताव कीशी का पुत्र था। कीशी अब्दी का पुत्र था। अब्दी मल्लूक का पुत्र था। [45]मल्लूक हशब्याह का पुत्र था। हशब्याह अमस्याह का पुत्र था। अमस्याह हिलकिय्याह का पुत्र था। [46]हिलकिय्याह अमसी का पुत्र था। अमसी बानी का पुत्र था। बानी शेमेर का पुत्र था। [47]शेमेर महली का पुत्र था। महली मूशी का पुत्र था। मूशी मरारी का पुत्र था। मरारी लेवी का पुत्र था।

[48]हेमान और असाप के भाई लेवी के परिवार समूह से थे। लेवी के परिवार समूह के लोग "लेवीवंशी" भी कहे जाते थे। लेवीय पवित्र तम्बू में काम करने के लिये चुने जाते थे। पवित्र तम्बू परमेश्वर का घर था। [49]किन्तु केवल हारून के वंशजों को होमबलि की वेदी और सुगन्धि की वेदी पर सुगन्धि जलाने की अनुमति थी। हारून के वंशज परमेश्वर के घर में सर्वाधिक पवित्र तम्बू में सारा काम करते थे। वे इस्राएल के लोगों को शुद्ध करने के लिये उत्सव भी मनाते थे।* वे उन सब नियमों और विधियों का अनुसरण करते थे जिनके लिये मूसा ने आदेश दिया था। मूसा परमेश्वर का सेवक था।

हारून के वंशज

[50]हारून के पुत्र ये थे: एलीआज़र हारून का पुत्र था। पीनहास एलीआज़र का पुत्र था। अबीशू पीनहास का पुत्र था। बुक्की अबीशू का पुत्र था। उज्जी बुक्की का पुत्र था। [51]बुक्की अबीशू का पुत्र था। उज्जी बुक्की का पुत्र था। जरह्याह उज्जी का पुत्र था। [52]मरायोत जरह्याह का पुत्र था। अमर्याह मरायोत का पुत्र था। अहीतूब अमर्याह का पुत्र था। [53]सादोक अहीतूब का पुत्र था। अहीमास सादोक का पुत्र था।

लेवीवंशी परिवारों के लिये घर

[54]ये वे स्थान हैं जहाँ हारून के वंशज रहे। वे उस भूमि पर जो उन्हें दी गई थी, अपने डेरों में रहते थे। कहाती परिवार ने उस भूमि का पहला भाग पाया जो लेवीवंश को दी गई थी। [55]उन्हें हेब्रोन नगर और उसके चारों ओर के खेत दिये गये थे। यह यहूदा क्षेत्र में था। [56]किन्तु नगर के दूर के खेत और नगर के समीप के गाँव, यपुन्ने के पुत्र कालेब को दिये गये थे। [57]हारून के वंशजों को हेब्रोन नगर दिया गया था। हेब्रोन एक सुरक्षा नगर था। उन्हें लिब्ना, यत्तीर, एशतमो, [58]हीलेन, दबीर, [59]आशान, जुत्ता, और बेतशेमेश नगर भी दिये गए। उन्होंने उन सभी नगरों और उनके चारों ओर के खेत प्राप्त किये। [60]बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों को गिबोन, गेबा अल्लेमेत, और अनातोत नगर दिये गए। उन्होंने उन सभी नगरों और उनके चारों ओर के खेतों को प्राप्त किया। कहाती परिवार को तेरह नगर दिये गए।

[61]शेष कहात के वंशजों ने मनश्शे परिवार समूह के आधे से दस नगर प्राप्त किये।

[62]गेर्शोम के वंशजों के परिवार समूह ने तेरह नगर प्राप्त किये। उन्होंने उन नगरों को इस्साकार, आशेर, नप्ताली और बाशान क्षेत्र में रहने वाले मनश्शे के एक भाग से प्राप्त किये।

[63]मरारी के वंशजों के परिवार समूह ने बारह नगर प्राप्त किये। उन्होंने उन नगरों को रूबेन, गाद, और जबूलून के परिवार समूहों से प्राप्त किया। उन्होंने नगरों को गोटे डालकर प्राप्त किया।

[64]इस प्रकार इस्राएली लोगों ने उन नगरों और खेतों को लेवीवंशी लोगों को दिया। [65]वे सभी नगर, यहूदा, शिमोन और बिन्यामीन के परिवार समूहों से

शुद्ध करने ... थे या "प्रायश्चित" करना। हिब्रू शब्द का अर्थ "व्यक्ति के पापों को ढकना या हटाना" था।

मिले। उन्होंने गोटें डालकर यह निश्चय किया कि कौन सा नगर लेवी का कौन सा परिवार प्राप्त करेगा।

[66]एप्रैम के परिवार समूह ने कुछ कहाती परिवारों को कुछ नगर दिये। वे नगर गोटें डालकर चुने गए। [67]उन्हें शकेम नगर दिया गया। शकेम सुरक्षा नगर है। उन्हें गेजेर [68]योकमान, बेथोरोन, [69]अय्यालोन, और गत्रिम्मोन भी प्राप्त किये। उन्होंने उन नगरों के साथ के खेत भी पाये। वे नगर एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में थे [70]और इस्राएली लोगों ने, मनश्शे परिवार समूह के आधे से, आनेर और बिलाम नगरों को कहाती परिवारों को दिया। उन कहाती परिवारों ने उन नगरों के साथ खेतों को भी प्राप्त किया।

अन्य लेवीवंशी परिवारों ने घर प्राप्त किये

[71]गेर्शोमी परिवारों ने मनश्शे परिवार समूह के आधे से, बाशान और अश्तारोत क्षेत्रों में गोलान के नगरों को प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेत भी पाए।

[72-73]गेर्शोमी परिवार ने केदेश, दाबरात, रामोत और आनेम नगरों को आशेर परिवार समूह से प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेतों को भी प्राप्त किया।

[74-75]गेर्शोमी परिवार ने माशाल, अब्दोन, हूकोक और रहोब के नगरों को आशेर परिवार समूह से प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेतों को भी प्राप्त किया।

[76]गेर्शोमी परिवार ने गालील में केदेश, हम्मोन और किर्यतैम नगरों को भी नप्ताली के परिवार समूह से प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेतों को भी प्राप्त किया।

[77]लेवीवंशी लोगों में से शेष मरारी परिवार के हैं। उन्होंने जेक्रयम, कर्ता, शिम्मोन और ताबोर नगरों को जबूलून परिवार समूह से प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेत भी प्राप्त किये।

[78-79]मरारी परिवार ने मरुभूमि में बेसेर के नगरों, यहसा, कदेमोत, और मेपाता को भी रूबेन के परिवार समूह से प्राप्त किया। रूबेन का परिवार समूह यरदन नदी के पूर्व की ओर यरीहो नगर के पूर्व में रहता था। इन मरारी परिवारों ने नगर के पास के खेत भी पाये।

[80-81]मरारी परिवारों ने गिलाद में रामोत, महनैम, हेशोबोन और याज़ेर नगरों को गाद के परिवार समूह से प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेत भी प्राप्त किये।

इस्साकार के वंशज

7 इस्साकार के चार पुत्र थे। उनके नाम तोला, पूआ, याशूब, और शिम्रोन था।

[2]तोला के पुत्र उज्जी, रपायाह, यरीएल, यहमै, यिबसाम और शमूएल थे। वे सभी अपने परिवारों के प्रमुख थे। वे व्यक्ति और उनके वंशज बलवान योद्धा थे। उनके परिवार बढ़ते रहे और जब दाऊद राजा हुआ, तब वहाँ बाईस हजार छः सौ व्यक्ति युद्ध के लिये तैयार थे।

[3]उज्जी का पुत्र यिज्रह्याह था। यिज्रह्याह के पुत्र मीकाएल, ओबद्याह, योएल, यिश्शिय्याह थे। वे सभी पाँचों अपने परिवारों के प्रमुख थे। [4]उनके परिवार का इतिहास यह बताता है कि उनके पास छत्तीस हजार योद्धा युद्ध के लिये तैयार थे। उनका बड़ा परिवार था क्योंकि उनकी बहुत सी स्त्रियाँ और बच्चे थे।

[5]परिवार इतिहास यह बताता है कि इस्साकार के सभी परिवार समूहों में सत्तासी हजार शक्तिशाली सैनिक थे।

बिन्यामीन के वंशज

[6]बिन्यामीन के तीन पुत्र थे। उनके नाम बेला, बेकेर, और यदीएल थे।

[7]बेला के पाँच पुत्र थे। उनके नाम एसबोन, उज्जी, उज्जीएल, यरीमोत, और ईरी थे। वे अपने परिवारों के प्रमुख थे। उनका परिवार इतिहास बताता है कि उनके पास बाईस हजार चौंतीस सैनिक थे।

[8]बेकेर के पुत्र जमीरा, योआश, एलीएजेर, एल्योएनै, ओम्री, यरेमोत, अबिय्याह, अनातोत और आलेमेत थे। वे सभी बेकेर के बच्चे थे। [9]उनका परिवार इतिहास बताता है कि परिवार प्रमुख कौन थे और उनका परिवार इतिहास यह भी बताता है कि उनके बीस हजार दो सौ सैनिक थे।

[10]यदीएल का पुत्र बिल्हान था। बिल्हान के पुत्र यूश, बिन्यामीन, एहूद, कनाना, जेतान, तर्शीश और अहीशहर थे। [11]यदीएल के सभी पुत्र अपने परिवार के प्रमुख थे। उनके सत्तरह हजार दो सौ सैनिक युद्ध के लिये तैयार थे।

[12]शुप्पीम और हुप्पीम ईर के वंशज थे। हूशी अहेर का पुत्र था।

नप्ताली के वंशज

[13]नप्ताली के पुत्र एहसीएल, गूनी, येसेर और शल्लूम थे और ये बिल्हा के वंशज हैं।

[14]ये मनश्शे के वंशज हैं।

मनश्शे का अस्रीएल नामक पुत्र था जो उसकी अरामी रखैल (दासी) से था। उनका माकीर भी था। माकीर गिलाद का पिता था। * [15]माकीर ने हुप्पीम और शुप्पीम लोगों की एक स्त्री से विवाह किया। माका की दूसरी पत्नी का नाम सलोफाद था। सलोफाद की केवल पुत्रियाँ थी। माकीर की बहन का नाम भी माका था।

[16]माकीर की पत्नी माका को एक पुत्र हुआ। माका ने अपने पुत्र का नाम पेरेश रखा। पेरेश के भाई का नाम शेरेश था। शेरेश के पुत्र ऊलाम ओर राकेम थे।

[17]ऊलाम का पुत्र बदान था।

ये गिलाद के वंशज थे। गिलाद माकीर का पुत्र था। माकीर मनश्शे का पुत्र था। [18]माकीर की बहन हम्मोलेकेत * के पुत्र ईशहोद, अबीएजेर, और महला थे।

[19]शमीदा के पुत्र अह्यान, शेकेम, लिखी और अनीआम थे।

एप्रैम के वंशज

[20]एप्रैम के वंशजों के ये नाम थे। एप्रैम का पुत्र शूतेलह था। शूतेलह का पुत्र बेरेद था। बेरेद का पुत्र तहत था। तहत का पुत्र एलादा था। [21]एलादा का पुत्र तहत था। तहत का पुत्र जाबाद था। जाबाद का पुत्र शूतेलह था।

कुछ व्यक्तियों ने जो गत नगर में बड़े हुए थे, येजेर और एलाद को मार डाला। यह इसलिये हुआ कि येजेर और एलाद उन लोगों की गायें और भेड़ें चुराने गत गए थे। [22]एप्रैम येजेर और एलाद का पिता था। वह कई दिनों तक रोता रहा क्योंकि येजेर और एलाद मर गए थे। एप्रैम का परिवार उसे सांत्वना देने आया। [23]तब एप्रैम ने अपनी पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। एप्रैम की पत्नी गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। एप्रैम ने अपने नये पुत्र का नाम बरीआ * रखा क्योंकि उसके परिवार के साथ कुछ बुरा हुआ था। [24]एप्रैम की पुत्री शेरा थी। शेरा ने निम्न बेथोरान तथा उच्च बेथोरान और निम्न उज्जेनशेरा एवं उच्च उज्जेनशेरा बसाया।

[25]रेपा एप्रैम का पुत्र था। रेशेप रेपा का पुत्र था। तेलह रेशेप का पुत्र था। तहन तेलह का पुत्र था। [26]लादान तहन का पुत्र था। अम्मीहूद लादान का पुत्र था। एलीशामा अम्मीहूद का पुत्र था। [27]नून एलीशामा का पुत्र था। यहोशू नून का पुत्र था।

[28]ये वे नगर और प्रदेश हैं जहाँ एप्रैम के वंशज रहते थे। बेतेल और इसके पास के गाँव पूर्व में नारान, गेजेर और पश्चिम में इसके निकट के गाँव, तथा शेकेम तथा अज्जा के रास्ते तक के निकटवर्ती गाँव। [29]मनश्शे की भूमि से लगी सीमा पर बेतशान, तानाक, मगिदो नगर तथा दोर और उनके पास के छोटे नगर थे। यूसुफ के वंशज इन नगरों में रहते थे। यूसुफ इस्राएल का पुत्र था।

आशेर के वंशज

[30]आशेर के पुत्र यिम्ना, यिश्वा, यिश्वी, और बरीआ थे। उनकी बहन का नाम सेरह था।

[31]बरीआ के हेबेर और मल्कीएल थे। मल्कीएल बिर्जोत का पिता था।

[32]हेबेर यपलेत, शोमेर, होताम, और उनकी बहन शूआ का पिता था।

[33]यपलेत के पुत्र पासक, बिम्हाल और अश्वात थे। ये यपलेत के बच्चे थे।

[34]शेमेर के पुत्र अही, रोहगा, यहुब्बा और अराम थे।

[35]शेमेर के भाई का नाम हेलेम था। हेलेम के पुत्र सोपह, यिम्ना, शेलेश और आमाल थे।

[36]सोपह के पुत्र सूह, हर्नेपेर, शूआल, वेरी, इम्रा, [37]बेसेर, होद, शम्मा, शिलसा, यित्रान और बेरा थे।

[38]येतेर के पुत्र यपुन्ने, पिस्पा और अरा थे।

[39]उल्ला के पुत्र आरह, हन्नीएल, और रिस्या थे।

[40]ये सभी व्यक्ति आशेर के वंशज थे। वे अपने परिवारों के प्रमुख थे। वे उत्तम पुरुष थे। वे योद्धा और महान प्रमुख थे। उनका पारिवारिक इतिहास बताता है कि छब्बीस हजार सैनिक युद्ध के लिये तैयार थे।

राजा शाऊल का परिवार इतिहास

8 बिन्यामीन बेला का पिता था। बेला बिन्यामीन का प्रथम पुत्र था। अशबेल बिन्यामीन का दूसरा पुत्र

माकीर गिलाद का पिता था या "माकीर गिलाद को बसाने वाला था।"

हम्मोलेकेत या "शासक स्त्री" या "रानी।"

बरीआ यह उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "बुरा या विपत्ति" है।

था। अहरह बिन्यामीन का तीसरा पुत्र था। [2]नोहा बिन्यामीन का चौथा पुत्र था और रापा बिन्यामीन का पाँचवाँ पु त्र था।

[3-5]बेला के पुत्र अद्दार, गेरा, अबीहूद, अबीशू, नामान, अहोह, गेरा, शपूपान और हूराम थे।

[6-7]एहूद के वंशज ये थे। ये गेबा में अपने परिवारों के प्रमुख थे। वे अपना घर छोड़ने और मानहत में रहने को विवश किये गए थे। एहूद के वंशज नामान, अहिय्याह, और गेरा थे। गेरा ने उन्हें घर छोड़ने को विवश किया। गेरा उज्जा और अहीलूद का पिता था।

[8]शहरैम ने अपनी पत्नियों हशीम और बारा को मोआब में तलाक दिया। जब उसने यह किया, उसके कुछ बच्चे अन्य पत्नी से उत्पन्न हुए। [9-10]शहरैम के योआब, मेशा, मल्काम, यूस, सोक्या, और मिर्मा उसकी पत्नी होदेश से हुए। वे अपने परिवारों के प्रमुख थे। [11]शहरैम और हशीम के दो पुत्र अबीतूब और एल्पाल थे।

[12-13]एल्पाल के पुत्र एबेर, मिशाम, शेमेर, बरीआ और शेमा थे। शेमेर ने ओनो और लोद नगर तथा लोद के चारों ओर छोटे नगरों को बनाया। बरीआ और शेमा अय्यालोन में रहने वाले परिवारों के प्रमुख थे। उन पुत्रों ने गत में रहने वालों को उसे छोड़ने को विवश किया।

[14]बरीआ के पुत्र शासक और यरमोत, [15]जबद्याह, अराद, एदेर, [16]मीकाएल, यिस्पा और योहा थे। [17]एल्पाल के पुत्र जबद्याह, मशुल्लाम, हिजकी, हेबर, [18]यिशमरै, यिजलीआ और योबाब थे।

[19]शिमी के पुत्र याकीम, जिक्री, ज़ब्दी, [20]एलीएनै, सिल्लतै, एलीएल, [21]अदायाह, बरायाह और शिम्रात थे।

[22]शाशक के पुत्र यिशपान, यबेर, एलीएल, [23]अब्दोन, जिक्री, हानान, [24]हनन्याह, एलाम, अन्तोतिय्याह, [25]यिपदयाह और पनूएल थे।

[26]यरोहाम के पुत्र शमशरै, शहर्याह, अतल्याह, [27]योरेश्याह, एलिय्याह, और जिक्री थे।

[28]ये सभी व्यक्ति अपने परिवारों के प्रमुख थे। वे अपने परिवार के इतिहास में प्रमुख के रूप में अंकित थे। वे यरूशलेम में रहते थे।

[29]येयील गिबोन का पिता था। वह गिबोन नगर में रहता था। येयील की पत्नी का नाम माका था। [30]येयील का सबसे बड़ा पुत्र अब्दोन था। अन्य पुत्र शूर, कीश, बाल, नेर, नादाब, [31]गदोर, अह्यो, जेकेर, और मिकोत* थे। [32]मिकोत शिमा का पिता था। ये पुत्र भी यरूशलेम में अपने सम्बन्धियों के निकट रहते थे।

[33]नेर, कीश का पिता था। कीश शाऊल का पिता था और शाऊल योनातान, मलकीश, अबीनादाब और एशबाल का पिता था। [34]योनातान का पुत्र मरीब्बाल था। मरीब्बाल मीका का पिता था।

[35]मीका के पुत्र पीतोन, मेलेक, तारे और आहाज थे।

[36]आहाज यहोअद्दा का पिता था। यहोअद्दा आलेमेत, अजमावेत और जिम्री का पिता था। जिम्री मोसा का पिता था। [37]मोसा बिना का पिता था। रापा बिना का पुत्र था। एलासा रापा का पुत्र था और आसेल एलासा का पुत्र था।

[38]आसेल के छः पुत्र थे। उनके नाम अज्रीकाम, बोकरू, यिश्माएल, शार्याह, ओबद्याह और हानान थे। ये सभी पुत्र आसेल की सन्तान थे।

[39]आसेल का भाई एशेक था। एशेक के कुछ पुत्र थे। एशेक के ये पुत्र थे: ऊलाम एशेक का सबसे बड़ा पुत्र था। यूशा एशेक का दूसरा पुत्र था। एलीपेलेत एशेक का तीसरा पुत्र था। [40]ऊलाम के पुत्र बलवान योद्धा और धनुष–बाण के प्रयोग में कुशल थे। उनके बहुत से पुत्र और पौत्र थे। सब मिलाकर डेढ़ सौ पुत्र और पौत्र थे। ये सभी व्यक्ति बिन्यामीन के वंशज थे

9 इस्राएल के लोगों के नाम उनके परिवार के इतिहास में अंकित थे। वे परिवार इतिहास इस्राएल के राजाओं के इतिहास में रखे गए थे।

यरूशलेम के लोग

यहूदा के लोग बन्दी बनाए गए थे और बाबेल को जाने को विवश किये गये थे। वे उस स्थान पर इसलिये ले जाए गए, क्योंकि वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं थे। [2]सबसे पहले लौट कर आने वाले और अपने नगरों और अपने प्रदेश में रहने वाले लोगों में कुछ इस्राएली, याजक, लेवीवंशी और मन्दिर में सेवा करने वाले सेवक थे।

[3]यरूशलेम मे रहने वाले यहूदा, बिन्यामीन, एप्रैमी और मनश्शे के परिवार समूह के लोग ये हैं:

[4]ऊतै अम्मीहूद का पुत्र था। अम्मीहूद ओम्री का पुत्र था। ओम्री इम्री का पुत्र था। इम्री बानी का पुत्र था। बानी पेरेस का वंशज था। पेरेस यहूदा का पुत्र था।

[5]शिलोई लोग जो यरूशलेम में रहते थे, ये थे: असायाह, सबसे बड़ा पुत्र था और असायाह के पुत्र थे।

मिकोत यह नाम हिब्रू पाठ में नहीं है।

[6]जेरह लोग, जो यरूशलेम में रहते थे, ये थे: यूएल और उसके सम्बन्धी, वे सब मिलाकर छ: सौ नब्बे थे।

[7]बिन्यामीन के परिवार समूह से जो लोग यरूशलेम में थे, वे ये हैं: सल्लू मशुल्लाम का पुत्र था। मशुल्लाम होदव्याह का पुत्र था। होदव्याह हस्सनूआ का पुत्र था। [8]यिब्निय्याह यरोहाम का पुत्र था। एला उज्जी का पुत्र था। उज्जी मिक्री का पुत्र था। मशुल्लाम शपत्याह का पुत्र था। शपत्याह रूएल का पुत्र था। रूएल यिब्निय्याह का पुत्र था। [9]बिन्यामीन का परिवार इतिहास बताता है कि यरूशलेम में उनके नौ सौ छप्पन व्यक्ति रहते थे। वे सभी व्यक्ति अपने परिवारों के प्रमुख थे।

[10]ये वे याजक हैं जो यरूशलेम में रहते थे: यदायाह, यहोयारीब, याकीन और अजर्याह! [11]अजर्याह हिलकिय्याह का पुत्र था। हिलकिय्याह मशुल्लाम का पुत्र था। मशुल्लाम सादोक का पुत्र था। सादोक मरायोत का पुत्र था। मरायोत अहीतूब परमेश्वर के मन्दिर के लिये विशेष उत्तरदायी अधिकारी था। [12]वहाँ यरोहाम का पुत्र अदायाह भी था। यरोहाम पशहूर का पुत्र था। पशहूर मल्कियाह का पुत्र था और वहाँ अदोएल का पुत्र मासै था। अदोएल जहजेश का पुत्र था। जेरा मशुल्लाम का पुत्र था। मशुल्लाम मशिल्लीत का पुत्र था। मशिल्लीत इम्मेर का पुत्र था।

[13]वहाँ एक हजार सात सौ साठ याजक थे। वे अपने परिवारों के प्रमुख थे। वे परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करने के कार्य के लिये उत्तरदायी थे।

[14]लेवी के परिवार समूह से जो लोग यरूशलेम में रहते थे, वे ये हैं: हश्शूब का पुत्र शमायाह। हश्शूब अज्रीकाम का पुत्र था। अज्रीकाम हशव्याह का पुत्र था। हशव्याह मरारी का वंशज था। [15]यरूशलेम में बकबक्कर, हेरेश, गालाल और मत्तन्याह भी रहे थे। मत्तन्याह मीका का पुत्र था। मीका जिक्री का पुत्र था। जिक्री आसाप का पुत्र था। [16]ओबद्याह शमायाह का पुत्र था। शमायाह गालाल का पुत्र था। गालाल यदूतून का पुत्र था और आसा का पुत्र बेरेक्याह यरूशलेम में रहता था। आसा एल्काना का पुत्र था। एल्काना तोपा लोगों के पास एक छोटे नगर में रहता था।

[17]ये वे द्वारपाल हैं जो यरूशलेम में रहते थे: शल्लूम, अक्कूब, तल्मोन, अहीमान और उनके सम्बन्धी। शल्लूम उनका प्रमुख था। [18]अब ये व्यक्ति पूर्व की ओर राजा के द्वार के ठीक बाद में खड़े रहते हैं। वे द्वारपाल लेवी परिवार समूह से थे। [19]शल्लूम कोरे का पुत्र था। कोरे एब्यासाप का पुत्र था। एब्यासाप कोरह का पुत्र था। शल्लूम और उसके भाई द्वारपाल थे। वे कोरे परिवार से थे। उन्हें पवित्र तम्बू केद्वार की रक्षा करने का कार्य करना था। वे इसे वैसे ही करते थे जैसे इनके पूर्वजों ने इनके पहले किया था। उनके पूर्वजों का यह कार्य था कि वे पवित्र तम्बू के द्वार की रक्षा करें। [20]अतीत में, पीनहास द्वारपालों का निरीक्षक था। पीनहास एलीआज़र का पुत्र था। यहोवा पीनहास के साथ था। [21]जकर्याह पवित्र तम्बू के द्वार का द्वारपाल था।

[22]सब मिलाकर दो सौ बारह व्यक्ति पवित्र तम्बू के द्वार की रक्षा के लिये चुने गए थे। उनके नाम उनके परिवार इतिहास में उनके छोटे नगरों में लिखे हुए थे। दाऊद और शमूएल नबी ने उन लोगों को चुना, क्योंकि उन पर विश्वास किया जा सकता था। [23]द्वारपालों और उनके वंशजों का उत्तरदायित्व यहोवा के मन्दिर, पवित्र तम्बू की रक्षा करना था। [24]वहाँ चारों तरफ द्वार थे: पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण। [25]द्वारपालों के सम्बन्धियों को, जो छोटे नगर में रहते थे, समय–समय पर आकर उनको सहायता करनी पड़ती थी। वे आते थे और हर बार सात दिन तक द्वारपालों की सहायता करते थे।

[26]द्वारपालों के चार प्रमुख द्वारपाल वहाँ थे। वे लेवीवंशी पुरुष थे। उनका कर्तव्य परमेश्वर के मन्दिर के कमरों और खजाने की देखभाल करना था। [27]वे रात भर परमेश्वर के मन्दिर की रक्षा में खड़े रहते थे और परमेश्वर के मन्दिर को प्रतिदिन प्रात: खोलने का उनका काम था।

[28]कुछ द्वारपालों का काम मन्दिर की सेवा में काम आने वाली तश्तरियों की देखभाल करना था। वे इन तश्तरियों को तब गिनते थे जब वे भीतर लाई जाती थीं वे इन तश्तरियों को तब भी गिनते थे जब वे बाहर जाती थीं। [29]अन्य द्वारपाल सज्जा–सामग्री और उन विशेष तश्तरियों की देखभाल के लिये चुने जाते थे। वे आटे, दाखमधु, तेल, सुगन्धि और विशेष तेल की भी देखभाल करते थे। [30]किन्तु केवल याजक ही विशेष तेल को मिश्रित करने का काम करते थे।

[31]एक मतित्याह नामक लेवीवंशी था जिसका काम भेंट में उपयोग के लिये रोटी पकाना था। मतित्याह शल्लूम का सबसे बड़ा पुत्र था। शल्लूम कोरह परिवार का था। [32]द्वारपालों में से कुछ जो कोरह परिवार के थे, प्रत्येक

सब्त को मेज पर रखी जाने वाली रोटी को तैयार करने का काम करते थे।

[33]वे लेवीवंशी जो गायक थे और अपने परिवारों के प्रमुख थे, मन्दिर के कमरों में ठहरते थे। उन्हें अन्य काम नहीं करने पड़ते थे क्योंकि वे मन्दिर में दिन–रात काम के लिये उत्तरदायी थे।

[34]ये सभी लेवीवंशी अपने परिवारों के प्रमुख थे। वे अपने परिवार के इतिहास में प्रमुख के रूप में अंकित थे। वे यरूशलेम में रहते थे।

राजा शाऊल का परिवार इतिहास

[35]यीएल गिबोन का पिता था। यीएल गिबोन नगर में रहता था। यीएल की पत्नी का नाम माका था। [36]यीएल का सबसे बड़ा पुत्र अब्दोन था। अन्य पुत्र सूर, कीश, बाल, नेर, नादाब, [37]गदोर, अह्यो, जकर्याह और मिल्कोत थे। [38]मिल्कोत शिमाम का पिता था। यीएल का परिवार अपने सम्बन्धियों के साथ यरूशलेम में रहता था।

[39]नेर कीश का पिता था। कीश शाऊल का पिता था और शाऊल योनातान, मल्कीश, अबीनादाब, और एशबाल का पिता था। [40]योनातान का पुत्र मरीब्बाल था। मरीब्बाल मीका का पिता था।

[41]मीका के पुत्र पीतोन, मेलेक, तहरे, और अहाज थे। [42]अहाज जदा का पिता था। जदा यारा का पिता था* यारा आलेमेत, अजमावेत और जिम्री का पिता था। जिम्री मोसा का पिता था। [43]मोसा बिना का पुत्र था। रपायाह बिना का पुत्र था। एलासा रपायाह का पुत्र था और आसेल एलासा का पुत्र था।

[44]आसेल के छ: पुत्र थे। उनके नाम थे: अज्रीकाम, बोकरू, यिश्माएल, शार्याह, ओबद्याह, और हनान। वे आसेल के बच्चे थे।

राजा शाऊल की मृत्यु

10 पलिश्ती लोग इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़े। इस्राएल के लोग पलिश्तियों के सामने भाग खड़े हुए। बहुत से इस्राएली लोग गिलबो पर्वत पर मारे गए। [2]पलिश्ती लोग शाऊल और उसके पुत्रों का पीछा लगातार करते रहे। उन्होंने उनको पकड़ लिया और उन्हें मार डाला। पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्रों योनातान, अबीनादाब और मल्कीशू को मार डाला। [3]शाऊल के चारों ओर युद्ध घमासान हो गया। धनुर्धारियों ने शाऊल पर अपने बाण छोड़े और उसे घायल कर दिया।

[4]तब शाऊल ने अपने कवच वाहक से कहा, “अपनी तलवार बाहर खींचो और इसका उपयोग मुझे मारने में करो। तब वे खतनारहित जब आएंगे तो न मुझे चोट पहुँचायेंगे न ही मेरी हँसी उड़ायेंगे।”

किन्तु शाऊल का कवच वाहक भयभीत था। उसने शाऊल को मारना अस्वीकार किया। तब शाऊल ने अपनी तलवार का उपयोग स्वयं को मारने के लिये किया। वह अपनी तलवार की नोक पर गिरा। [5]कवच वाहक ने देखा कि शाऊल मर गया। तब उसने स्वयं को भी मार डाला। वह अपनी तलवार की नोक पर गिरा और मर गया। [6]इस प्रकार शाऊल और उसके तीन पुत्र मर गए। शाऊल का सारा परिवार एक साथ मर गया।

[7]घाटी में रहने वाले इस्राएल के सभी लोगों ने देखा कि उनकी अपनी सेना भाग गई। उन्होंने देखा कि शाऊल और उसके पुत्र मर गए। इसलिये उन्होंने अपने नगर छोड़े और भाग गए। तब पलिश्ती उन नगरों में आए जिन्हें इस्राएलियों ने छोड़ दिया था और पलिश्ती उन नगरों में रहने लगे।

[8]अगले दिन, पलिश्ती लोग शवों की बहुमूल्य वस्तुएँ लेने आए। उन्होंने शाऊल के शव और उसके पुत्रों के शवों को गिबोन पर्वत पर पाया। [9]पलिश्तियों ने शाऊल के शव से चीज़ें उतारीं। उन्होंने शाऊल का सिर और कवच लिया। उन्होंने अपने पूरे देश में अपने असत्य देवताओं और लोगों को सूचना देने के लिये दूत भेजे। [10]पलिश्तियों ने शाऊल के कवच को अपने असत्य देवता के मन्दिर में रखा। उन्होंने शाऊल के सिर को दागोन के मन्दिर में लटकाया।

[11]याबेश गिलाद नगर में रहने वाले सब लोगों ने वह हर एक बात सुनी जो पलिश्ती लोगों ने शाऊल के साथ की थी। [12]याबेश के सभी वीर पुरुष शाऊल और उसके पुत्रों का शव लेने गए। वे उन्हें याबेश में वापस ले आए। उन वीर पुरुषों ने शाऊल और उसके पुत्रों की अस्थियों को, याबेश में एक विशाल पेड़ के नीचे दफनाया। तब उन्होंने अपना दु:ख प्रकट किया और सात दिन तक उपवास रखा।

अहाज जदा ... था हिब्रू में केवल “अहाज यारा का पिता था।”

[13]शाऊल इसलिये मरा कि वह यहोवा के प्रति विश्वासपात्र नहीं था। शाऊल ने यहोवा के आदेशों का पालन नहीं किया। शाऊल एक माध्यम * के पास गया और [14]यहोवा को छोड़कर उससे सलाह माँगी। यही कारण है कि यहोवा ने उसे मार डाला और यिशै के पुत्र दाऊद को राज्य दिया।

दाऊद इस्राएल का राजा होता है

11 इस्राएल के सभी लोग हेब्रोन नगर में दाऊद के पास आए। उन्होंने दाऊद से कहा, "हम तुम्हारे ही रक्त–माँस हैं। * [2]अतीत में, तुमने युद्ध में हमारा संचालन किया। तुमने हमारा तब भी संचालन किया जब शाऊल राजा था। हे दाऊद, यहोवा ने तुझ से कहा, 'तुम मेरे लोगों अर्थात् इस्राएल के लोगों के गड़रिया हो। तुम मेरे लोगों के ऊपर शासक होगे।'"

[3]इस्राएल के सभी प्रमुख दाऊद के पास हेब्रोन नगर में आए। दाऊद ने हेब्रोन में उन प्रमुखों के साथ यहोवा के सामने एक वाचा की। प्रमुखों ने दाऊद का अभिषेक किया। इस प्रकार उसे इस्राएल का राजा बनाया गया। यहोवा ने वचन दिया था कि यह होगा। यहोवा ने शमूएल का उपयोग यह वचन देने के लिये किया था।

दाऊद यरूशलेम पर अधिकार करता है

[4]दाऊद और इस्राएल के सभी लोग यरूशलेम नगर को गए। यरूशलेम उन दिनों यबूस कहा जाता था। उस नगर में रहने वाले लोग यबूसी कहे जाते थे। [5]उस नगर के निवासियों ने दाऊद से कहा, "तुम हमारे नगर के भीतर प्रवेश नहीं कर सकते।" किन्तु दाऊद ने उन लोगों को पराजित कर दिया। दाऊद ने सिय्योन के किले पर अधिकार कर लिया। यह स्थान "दाऊद नगर" बना।

[6]दाऊद ने कहा, "वह व्यक्ति जो यबूसी लोगों पर आक्रमण का संचालन करेगा, मेरी पूरी सेना का सेनापति होगा।' 'अत: योआब ने आक्रमण का संचालन किया। योआब सरूयाह का पुत्र था। योआब सेना का सेनापति हो गया।

[7]तब दाऊद ने किले में अपना महल बनाया। यही कारण है उसका नाम दाऊद नगर पड़ा। [8]दाऊद ने किले के चारों ओर नगर बसाया। उसने इसे मिल्लो * से नगर के चारों ओर की दीवार तक बसाया। योआब ने नगर के अन्य भागों की मरम्मत की। [9]दाऊद महान बनता गया। सर्वशक्तिमान यहोवा उसके साथ था।

दाऊद के विशिष्ठ वीर

[10]दाऊद के विशिष्ठ वीरों के ऊपर के प्रमुखों की यह सूची है: ये वीर दाऊद के साथ उसके राज्य में बहुत शक्तिशाली बन गये। उन्होंने और इस्राएल के सभी लोगों ने दाऊद की सहायता की और उसे राजा बनाया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा परमेश्वर ने वचन दिया था।

[11]यह दाऊद के विशिष्ठ वीरों की सूची है: यशोबाम हक्मोनी लोगों में से था। यशोबाम रथ अधिकारियों * का प्रमुख था। यशोबाम ने अपने भाले का उपयोग तीन सौ व्यक्तियों से युद्ध करने के लिये किया। उसने एक ही बार में उन तीन सौ व्यक्तियों को मार डाला।

[12]एलीआज़ार दाऊद के विशिष्ठ वीरों में दूसरा था। एलीआज़ार दोदो का पुत्र था। दोदो अहोही से था। एलीआज़ार तीन वीरों में से एक था। [13]एलीआज़ार पसदम्मीम में दाऊद के साथ था। पलिश्ती लोग उस स्थान पर युद्ध करने आये। उस स्थान पर एक जौ से भरा खेत था। वही स्थान, जहाँ इस्राएली लोग पलिश्ती लोगों से भागे थे। [14]किन्तु वे तीन वीर उस खेत के बीच रुक गए थे और पलिश्तियों से लड़े तथा उन्हें हरा डाला था और इस प्रकार यहोवा ने इस्राएलियों को बड़ी विजय दी थी।

[15]एक बार, दाऊद अदुल्लाम गुफा के पास था और पलिश्ती सेना नीचे रपाईम की घाटी में थी। तीस वीरों में से तीन वीर उस गुफा तक, लगातार रेंगते हुए दाऊद के पास पहुँचे।

[16]अन्य अवसर पर, दाऊद किले में था, और पलिश्ती सेना का एक समूह बेतलेहेम में था। [17]दाऊद प्यासा था। अत: उसने कहा, "मैं चाहता हूँ कि मुझे

माध्यम भूतसिद्धि करने वाला कोई व्यक्ति जो अपने ऊपर किसी आत्मा का अधिकार होने देता है और उसे भविष्य में होने वाली घटनाओं को कहने देता है। देखें 1शमू. 28:7–19

हम ... माँस हैं वे दाऊद के निकट सम्बन्धी हैं, यह कहने की एक शैली।

मिल्लो संभवत: मिल्लों यरूशलेम में मन्दिर क्षेत्र के दक्षिण–पूर्व मिट्टी का एक ऊँचा किया गया चबूतरा था।

रथ अधिकारियों या इसका अर्थ "तीस" या तीन हो सकता है। देखें 2शमू. 23:8

कोई थोड़ा पानी बेतलेहेम में नगर द्वार के पास के कुएँ से दें।" * दाऊद सचमुच यह नहीं चाहता था। वह केवल बात कर रहा था।

[18]तब तीन वीरों ने पलिश्ती सेना के बीच से युद्ध करते हुए अपना रास्ता बनाया और नगर-द्वार के निकट बेतलेहेम के कुएँ से पानी लिया। तीनों वीर दाऊद के पास पानी ले गए। किन्तु दाऊद ने पानी पीने से इन्कार कर दिया। उसने पानी को यहोवा के नाम पर अर्पण कर, उण्डेल दिया। [19]दाऊद ने कहा, "परमेश्वर, मैं इस पानी को नहीं पी सकता। इन व्यक्तियों ने मेरे लिये इस पानी को लाने में अपने जीवन को खतरे में डाला। अत: यदि मैं इस पानी को पीता हूँ तो यह उनका खून पीने के समान होगा।" इसलिये दाऊद ने उस जल को पीने से इन्कार किया। तीनों वीरों ने उस तरह के बहुत से वीरता के काम किये।

अन्य वीर योद्धा

[20]योआब का भाई, अबीशै, तीन वीरों का प्रमुख था। वह अपने भाले से तीन सौ व्यक्तियों से लड़ा और उन्हें मार डाला। अबीशै तीन वीरों की तरह प्रसिद्ध हो गया। [21]अबीशै तीस वीरों से अधिक प्रसिद्ध था। वह उनका प्रमुख हो गया, यद्यपि वह तीन प्रमुख वीरों में से नहीं था।

[22]यहोयादा का पुत्र बनायाह, कबजेल का एक वीर योद्धा था। बनायाह ने बड़े पराक्रम किये। उसने मोआब देश के दो सर्वोत्तम व्यक्तियों को मार डाला। वह जमीन के अन्दर एक माँद में घुसा और वहाँ एक शेर को भी मार डाला। वह उस दिन हुआ जब बर्फ गिर रही थी। [23]बनायाह ने मिस्र के एक व्यक्ति को मार डाला। वह व्यक्ति लगभग पाँच हाथ ऊँचा था। उस मिस्र के पुरुष के पास एक बहुत बड़ा और भारी भाला था। यह बुनकर के करघे के विशाल डण्डे के समान था और बनायाह के पास केवल एक लाठी थी। किन्तु बनायाह ने मिस्री से भाला छीन लिया। बनायाह ने मिस्री के अपने भाले का उपयोग किया और उसे मार डाला। [24]ये कार्य थे जिन्हें योहयादा के पुत्र बनायाह ने किये। बनायाह तीन वीरों की तरह प्रसिद्ध हुआ। [25]बनायाह तीस वीरों में सबसे अधिक प्रसिद्ध था, किन्तु वह तीन प्रमुख वीरों में सम्मिलित नहीं किया गया। दाऊद ने बनायाह को अपने अंगरक्षकों का प्रमुख चुना।

तीस वीर

[26]बलिष्ठ वीर (तीस वीर) ये थे: असाहेल, योआब का भाई, एल्हानान, दोदो का पुत्र एल्हानान बेतलेहेम नगर का था; [27]हरोरी लोगों में से शम्मोत; पलोनी लोगों में से हेलेस; [28]इक्केश का पुत्र, ईरा, ईरा तकोई नगर का था; अनातोत नगर का अबीएजेर; [29]होसाती लोगों में से सिब्बके; अहोही से ईलै; [30]नतोपाई लोगों में से महरै; बाना का पुत्र हेलेद, हेलेद नतोपाई लोगों में से था; [31]रीबै का पुत्र इतै, इतै बिन्यामीन के गिबा नगर से था; पिरातोनी लोगों में से बनायाह; [32]गाश घाटियों से हूरै; अराबा लोगों में से अबीएल; [33]बहूरीमी लोगों में से अजमावेत; शल्बोनी लोगों में से एल्यहबा; [34]हाशेम के पुत्र गीजोई हाशेम लोगों में से था; शागे का पुत्र योनातान, योनातान हरारी लोगों में से था; [35]सकार का पुत्र अहीआम, अहीआम हरारी लोगों में से था; ऊर का पुत्र एलीपाल; [36]मेकराई लोगों में से हेपेर; पलोनी लोगों में से अहिय्याह; [37]कर्मेली लोगों में से हेस्रो, एज्बै का पुत्र नारै; [38]नातान का भाई योएल; हग्री का पुत्र मिभार; [39]अम्मोनी लोगों में से सेलेक; बेरोती नहरै, (नहरै योआब का कवचवाहक था। योआब सरूयाह का पुत्र था।); [40]येतेरी लोगों में से ईरा; इथ्री लोगों में से गारेब; [41]हित्ती लोगों में से ऊरिय्याह; अहलै का पुत्र जाबाद; [42]शीजा का पुत्र अदीना, शीजा रूबेन के परिवार समूह से था। (अदीना रूबेन के परिवार समूह का प्रमुख था। परन्तु वह भी अपने साथ के तीस वीरों में से एक था।); [43]माका का पुत्र हानान; मेतेनी लोगों में से योशापात; [44]अशतारोती लोगों में से उज्जिय्याह; होताम के पुत्र शामा और यीएल, होताम अरोएरी लोगों में से था; [45]शिम्री का पुत्र यदीएल; तीसी लोगों से योहा, योहा यदीएल का भाई था; [46]महवीमी लोगों में से एलीएल; एलनाम के पुत्र यरीबै और योशव्याह; मोआबी लोगों में से यित्मा; [47]मसोबाई लोगों में से एलीएल; ओबेद; और यासीएल।

वे वीर पुरुष जो दाऊद के साथ हुए

12 यह उन पुरुषों की सूची है जो दाऊद के पास आए। जब दाऊद सिकलग नगर में था। दाऊद तब भी कीश के पुत्र शाऊल से अपने को छिपा रहा था। इन पुरुषों ने दाऊद को युद्ध में सहायता दी थी। [2]ये व्यक्ति अपने दायें या बायें हाथ से धनुष से बाण द्वारा बेध सकते थे। अपनी गुलेल से दांये या बांये हाथ से पत्थर फेंक

बेतलेहेम में ... से दें यह दाऊद का निवास स्थान था। यही कारण था कि दाऊद ने उस कुँए से पानी पीने की बात सोची।

सकते थे। वे बिन्यामीन परिवार समूह के शाऊल के सम्बन्धी थे। उनके नाम ये थे:

[3]उनका प्रमुख अहीएजेर और योआज (अहीएजेर और योआज शमाआ के पुत्र थे। शमाआ गिबावासी लोगों में से था।); यजीएल और पेलेत (यजीएल और पेलेत अजमावेत के पुत्र थे।); अनातोती नगर के बराका और येहू। [4]गिबोनी नगर का यिशमायाह, (यिशमायाह तीनों वीरों के साथ एक वीर था और वह तीन वीरों का प्रमुख भी था।); गदेरा लोगों में से यिर्मयाह, यहजीएल, योहानान और योजाबाद; [5]एलूजै, यरीमोत बाल्याह, और शमर्याह; हारूपी से शपत्याह; [6]कोरह परिवार समूह से एल्काना, यिशिय्याह, अजरेल, योएजेर और याशोबाम सभी; [7]गदोर नगर से यरोहाम के पुत्र योएला और जबद्याह।

गादी लोग

[8]गाद के परिवार समूह का एक भाग मरुभूमि में दाऊद से उसके किले में आ मिला। वे युद्ध के लिये प्रशिक्षित सैनिक थे। वे भाले और ढाल के उपयोग में कुशल थे। वे सिंह की तरह भयानक दिखते थे और वे हिरन की तरह पहाड़ों में दौड़ सकते थे।

[9]गाद के परिवार समूह की सेना का प्रमुख एजेर था। ओबद्याह अधिकार में दूसरा था। एलीआब अधिकार में तीसरा था। [10]मिश्मन्ना अधिकार में चौथा था। यिर्मयाह अधिकार में पाँचवाँ था। [11]अत्तै अधिकार में छठा था। एलीएल अधिकार में सातवाँ था। [12]योहानान अधिकार में आठवाँ था। एलजाबाद अधिकार में नवाँ था। [13]यिर्मयाह अधिकार में दसवाँ था। मकबन्नै अधिकार में ग्यारहवाँ था।

[14]वे लोग गादी सेना के प्रमुख थे। उस समूह का सबसे कमजोर सैनिक भी शत्रु के सौ सैनिकों से युद्ध कर सकता था। उस समूह का सर्वाधिक बलिष्ठ सैनिक शत्रु के एक हजार सैनिकों से युद्ध कर सकता था। [15]गाद के परिवार समूह के वे सैनिक थे जो वर्ष के पहले महीने में यरदन के उस पार गए। यह वर्ष का वह समय था, जब यरदन नदी में बाढ़ आयी थी। उन्होंने घाटियों में रहने वाले सभी लोगों का पीछा करके भगाया। उन्होंने उन लोगों को पूर्व और पश्चिम में पीछा करके भगाया।

अन्य योद्धा दाऊद के साथ आते हैं

[16]बिन्यामीन और यहूदा के परिवार समूह के अन्य लोग भी दाऊद के पास किले में आए। [17]दाऊद उनसे मिलने बाहर निकला। दाऊद ने उनसे कहा, "यदि तुम लोग शान्ति के साथ मेरी सहायता करने आए हो तो, मैं तुम लोगों का स्वागत करता हूँ। मेरे साथ रहो। किन्तु यदि तुम मेरे विरुद्ध जासूसी करने आए हो, जबकि मैंने तुम्हारा कुछ भी बुरा नहीं किया है, तो हमारे पूर्वजो का परमेश्वर देखेगा कि तुमने क्या किया और दण्ड देगा।"

[18] अमासै तीस वीरों का प्रमुख था। अमासै पर आत्मा उत्तरी। अमासै ने कहा,

"दाऊद, हम तुम्हारे हैं!
यिशै–पुत्र, हम तुम्हारे साथ हैं!
शान्ति, शान्ति हो तुम्हारे साथ!
शान्ति उन लोगों को
जो तुम्हारी सहायता करे।
क्यों? क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर,
तुम्हारा सहायता करता है!"

तब दाऊद ने इन लोगों का स्वागत किया। उसने अपनी सेना में उन्हें प्रमुख बनाया।

[19]मनश्शे के परिवार समूह के कुछ लोग भी दाऊद के साथ हो गये। वे दाऊद के साथ तब हुए जब वह पलिश्तियों के साथ शाऊल से युद्ध करने गया। किन्तु दाऊद और उसके लोगों ने वास्तव में पलिश्तियों की सहायता नहीं की। पलिश्तियों के प्रमुख दाऊद के विषय में सहायक के रूप में बातें करते रहे, किन्तु तब उन्होंने उसे भेज देने का निर्णय लिया। उन शासकों ने कहा, "यदि दाऊद अपने स्वामी शाऊल के पास जाएगा, तो हमारे सिर काट डाले जाएंगे!" [20]ये मनश्शे के लोग थे जो दाऊद के साथ उस समय मिले जब वह सिकलग: अदना, योजाबाद, यदीएल, मीकाएल, योजाबाद, एलीहू और सिल्लतै नगरों को गया। वे सभी मनश्शे के परिवार समूह के सेनाध्यक्ष थे। [21]वे दाऊद की सहायता बुरे लोगों से युद्ध करने में करते थे। वे बुरे लोग पूरे देश में घूमते थे और लोगों की चीजें चुराते थे। मनश्शे के ये सभी वीर योद्धा थे। वे दाऊद की सेना में प्रमुख हुए।

[22]दाऊद की सहायता के लिये प्रतिदिन अधिकाधिक व्यक्ति आते रहे। इस प्रकार दाऊद के पास विशाल और शक्तिशाली सेना हो गई।

हेब्रोन में अन्य लोग दाऊद के साथ आते हैं

[23]हेब्रोन नगर में जो लोग दाऊद के पास आए, उनकी संख्या यह है। ये व्यक्ति युद्ध के लिये तैयार थे। वे शाऊल के राज्य को, दाऊद को देने आए। यही वह बात थी जिसे यहोवा ने कहा था कि होगा। यह उसकी संख्या है:

[24]यहूदा के परिवार समूह से छ: हजार आठ सौ व्यक्ति युद्ध के लिये तैयार थे। वे भाले और ढाल रखते थे।

[25]शिमोन के परिवार समूह से सात हजार एक सौ व्यक्ति थे। वे युद्ध के लिये तैयार वीर सैनिक थे।

[26]लेवी के परिवार समूह से चार हजार छ: सौ पुरुष थे। [27]यहोयादा उस समूह में था। वह हारून के परिवार से प्रमुख था। यहोयादा के साथ तीन हजार सात सौ पुरुष थे। [28]सादोक भी उस समूह में था। वह वीर युवा सैनिक था। वह अपने परिवार से बाईस अधिकारियों के साथ आया।

[29]बिन्यामीन के परिवार समूह से तीन हजार पुरुष थे। वे शाऊल के सम्बन्धी थे। उस समय तक उनके अधिकांश व्यक्ति शाऊल परिवार के भक्त रहे।

[30]एप्रैम के परिवार समूह से बीस हजार आठ सौ पुरुष थे। वे वीर योद्धा थे। वे अपने परिवार के प्रसिद्ध पुरुष थे।

[31]मनश्शे के आधे परिवार समूह से अट्ठारह हजार पुरुष थे। उनको नाम लेकर आने को बुलाया गया और दाऊद को राजा बनाने को कहा गया।

[32]इस्साकार के परिवार से दो सौ बुद्धिमान प्रमुख थे। वे इस्राएल के लिए उचित समय पर ठीक काम करना जानते थे। उनके सम्बन्धी उनके साथ थे और उनके आदेश के पालक थे।

[33]जबूलून के परिवार समूह से पचास हजार पुरुष थे। वे प्रशिक्षित सैनिक थे। वे हर प्रकार के अस्त्र–शस्त्र से युद्ध के लिये तैयार थे। वे दाऊद के बहुत भक्त थे।

[34]नप्ताली के परिवार समूह से एक हजार अधिकारी थे। उनके साथ सैंतीस हजार व्यक्ति थे। वे व्यक्ति भाले और ढाल लेकर चलते थे।

[35]दान के परिवार समूह से युद्ध के लिये तैयार अट्ठाइस हजार छ: सौ पुरुष थे।

[36]आशेर के परिवार समूह से युद्ध के लिये तैयार चालीस हजार प्रशिक्षित सैनिक थे।

[37]यरदन नदी के पूर्व से रूबेन, गादी और मनश्शे के आधे परिवारों से एक लाख बीस हजार पुरुष थे। उन लोगों के पास हर प्रकार के अस्त्र–शस्त्र थे।

[38]वे सभी पुरुष वीर योद्धा थे। वे हेब्रोन नगर से दाऊद को सारे इस्राएल का राजा बनाने की पूरी सलाह करके आए थे। इस्राएल के अन्य लोगों ने भी सलाह की कि दाऊद राजा होगा। [39]उन लोगों ने दाऊद के साथ हेब्रोन में तीन दिन बिताए। उन्होंने खाया और पिया, क्योंकि उनके सम्बन्धियों ने उनके लिये भोजन बनाया था। [40]जहाँ इस्साकार, जबूलून, और नप्ताली के समूह रहते थे, उस क्षेत्र से भी उनके पड़ोसी गधे, ऊँट, खच्चर, और गायों पर भोजन लेकर आये। वे बहुत सा आटा, अंजीर–पूड़े, रेशिन, दाखमधु, तेल, गाय–बैल और भेड़ें लाए। इस्राएल में लोग बहुत खुश थे।

साक्षीपत्र के सन्दूक को वापस लाना

13 दाऊद ने अपनी सेना के सभी अधिकारियों से बात की। [2]तब दाऊद ने इस्राएल के सभी लोगों को एक साथ बुलाया। उसने उनसे कहा: "यदि तुम लोग इसे अच्छा विचार समझते हो और यदि यह वही है जिसे यहोवा चाहता है, तो हम लोग अपने भाईयों को इस्राएल के सभी क्षेत्रों में सन्देश भेजें। हम लोग उन याजकों और लेवीवंशियों को भी सन्देश भेजें जो हम लोगों के भाईयों के साथ नगरों और उनके निकट के खेतों में रहते हैं। सन्देश में उनसे आने और हमारा साथ देने को कहा जाये। [3]हम लोग साक्षीपत्र के सन्दूक को यरूशलेम में अपने पास वापस लायें। हम लोगों ने साक्षीपत्र के सन्दूक की देखभाल शाऊल के शासनकाल में नहीं की।" [4]अत: इस्राएल के सभी लोगों ने दाऊद की सलाह स्वीकार की। उन सभी ने यही विचार किया कि यही करना ठीक है।

[5]अत: दाऊद ने मिस्र की शीहोर नदी से हमात के प्रवेश द्वार तक के सभी इस्राएल के लोगों को इकट्ठा किया। वे किर्यत्यारीम नगर से साक्षीपत्र के सन्दूक को वापस ले जाने के लिये एक साथ आये। [6]दाऊद और इस्राएल के सभी लोग उसके साथ यहूदा के बाला को गये। (बाला किर्यत्यारीम का दूसरा नाम है।) वे वहाँ साक्षीपत्र के सन्दूक को लाने के लिये गए। वह साक्षीपत्र का सन्दूक यहोवा परमेश्वर का सन्दूक है। वह करूब (स्वर्गदूत) के ऊपर बैठता है। यही सन्दूक है जो यहोवा के नाम से पुकारी जाती है।

[7]लोगों ने साक्षीपत्र के सन्दूक को अबीनादाब के घर से हटाया। उन्होंने उसे एक नयी गाड़ी में रखा। उज्जा और अह्यो गाड़ी को चला रहे थे।

[8]दाऊद और इस्राएल के सभी लोग परमेश्वर के सम्मुख उत्सव मना रहे थे। वे परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे तथा गीत गा रहे थे। वे वीणा तम्बूरा, ढोल, मंजीरा और तुरही बजा रहे थे।

[9]वे कीदोन की खलिहान में आए। गाड़ी खींचने वाले बैलों को ठोकर लगी और साक्षीपत्र का सन्दूक लगभग गिर गया। उज्जा ने सन्दूक को पकड़ने के लिये अपने हाथ आगे बढ़ाये। [10]यहोवा उज्जा पर बहुत अधिक क्रोधित हुआ। यहोवा ने उज्जा को मार डाला क्योंकि उसने सन्दूक को छू लिया। इस तरह उज्जा परमेश्वर के सामने वहाँ मरा। [11]परमेश्वर ने अपना क्रोध उज्जा पर दिखाया और इससे दाऊद क्रोधित हुआ। उस समय से अब तक वह स्थान "पेरेसुज्जा" * कहा जाता है।

[12]उस दिन दाऊद परमेश्वर से डर गया। दाऊद ने कहा, "मैं साक्षीपत्र के सन्दूक को यहाँ अपने पास नहीं ला सकता।" [13]इसलिये दाऊद साक्षीपत्र के सन्दूक को अपने साथ दाऊद नगर में नहीं ले गया। उसने साक्षीपत्र के सन्दूक को ओबेदेदोम के घर पर छोड़ा। ओबेदेदोम गत नगर से था। [14]साक्षीपत्र का सन्दूक ओबेदेदोम के परिवार में उसके घर में तीन महीने रहा। यहोवा ने ओबेदेदोम के परिवार और उसके यहाँ जो कुछ था, को आशीर्वाद दिया।

दाऊद का राज्य–विस्तार

14 हीराम सोर नगर का राजा था। हीराम ने दाऊद को सन्देश वाहक भेजा। हीराम ने देवदारु के लट्ठे, संगतराश और बढई भी दाऊद के पास भेजे। हीराम ने उन्हें दाऊद के लिये एक महल बनाने के लिये भेजा। [2]तब दाऊद समझ सका कि यहोवा ने उसे सच ही इस्राएल का राजा बनाया है। यहोवा ने दाऊद के राज्य को बहुत विस्तृत और शक्तिशाली बनाया। परमेश्वर ने यह इसलिये किया कि वह दाऊद और इस्राएल के लोगों से प्रेम करता था।

[3]दाऊद ने यरूशलेम में बहुत सी स्त्रियों के साथ विवाह किया और उसके बहुत से पुत्र और पुत्रियाँ हुईं। [4]यरूशलेम में उत्पन्न हुई दाऊद की संतानों के नाम ये हैं: शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान, [5]यिभार, एलीशू, एलपेलेत, [6]नोगह, नेपेग, यापी, [7]एलीशामा, बेल्यादा, और एलीपेलेद।

दाऊद पलिश्तियों को पराजित करता है

[8]पलिश्ती लोगों ने सुना कि दाऊद का अभिषेक इस्राएल के राजा के रूप में हुआ है। अतः, सभी पलिश्ती लोग दाऊद की खोज में गए। दाऊद ने इसके बारे में सुना। तब वह पलिश्ती लोगों से लड़ने गया। [9]पलिश्तियों ने रपाईम की घाटी में रहने वाले लोगों पर आक्रमण किया और उनकी चीजें चुराई। [10]दाऊद ने परमेश्वर से पूछा, "क्या मुझे जाना चाहिये और पलिश्ती लोगों से युद्ध करना चाहिये? क्या तू मुझे उनको परास्त करने देगा?"

यहोवा ने दाऊद को उत्तर दिया, "जाओ। मैं तुम्हें पलिश्ती लोगों को हराने दूँगा।"

[11]तब दाऊद और उसके लोग बालपरासीम नगर तक गए। वहाँ दाऊद और उसके लोगों ने पलिश्ती लोगों को हराया। दाऊद ने कहा, "टूटे बाँध से पानी फूट पड़ता है। उसी प्रकार, परमेश्वर मेरे शत्रुओं पर फूट पड़ा है! परमेश्वर ने यह मेरे माध्यम से किया है।" यही कारण है कि उस स्थान का नाम "बालपरासीम *है।" [12]पलिश्ती लोगों ने अपनी मूर्तियों को बालपरासीम में छोड़ दिया। दाऊद ने उन मूर्तियों को जला देने का आदेश दिया।

पलिश्ती लोगों पर अन्य विजय

[13]पलिश्तियों ने रपाईम घाटी में रहने वाले लोगों पर फिर आक्रमण किया। [14]दाऊद ने फिर परमेश्वर से प्रार्थना की। परमेश्वर ने दाऊद की प्रार्थना का उत्तर दिया। परमेश्वर ने कहा, "दाऊद, जब तुम आक्रमण करो तो पलिश्ती लोगों के पीछे पहाड़ी पर मत जाओ। इसके बदले, उनके चारों ओर जाओ। वहाँ छिपो, जहाँ मोखा के पेड़ हैं। [15]एक प्रहरी को पेड़ की चोटी पर चढ़ने को कहो। जैसे ही वह पेड़ों की चोटी से उनकी चढाई करने की आवाज को सुनेगा, उसी समय पलिश्तियों पर आक्रमण करो। मैं (परमेश्वर) तुम्हारे सामने आऊँगा और पलिश्ती सेना को हराऊँगा!" [16]दाऊद ने वही किया जो परमेश्वर ने करने को कहा। इसलिये दाऊद और उसकी सेना ने पलिश्ती सेना को हराया। उन्होंने पलिश्ती सैनिकों को लगातार

पेरेसुज्जा इसका अर्थ "उज्जा पर फट पड़ना" है।

बाल परासीम इस नाम का अर्थ, "ईश्वर फट पड़ता है।"

गिबोन नगर से गेजर नगर तक मारा। [17]इस प्रकार दाऊद सभी देशों में प्रसिद्ध हो गया। यहोवा ने सभी राष्ट्रों के हृदय में उसका डर बैठा दिया।

साक्षीपत्र का सन्दूक यरूशलेम में

15 दाऊद ने दाऊद नगर में अपने लिये महल बनवाया। तब उसने साक्षीपत्र के सन्दूक के लिए एक स्थान बनाया। उसने इसके लिये एक तम्बू डाला। [2]तब दाऊद ने कहा, "केवल लेवीवंशियों को साक्षीपत्र का सन्दूक ले चलने की स्वीकृति है। यहोवा ने उन्हें साक्षीपत्र का सन्दूक ले चलने और उसकी सदैव सेवा के लिये चुना है।"

[3]दाऊद ने इस्राएल के सभी लोगों को यरूशलेम में एक साथ मिलने के लिये बुलाया जब तक लेवीवंशी साक्षीपत्र के सन्दूक को उस स्थान पर लेकर आये जो उसने उसके लिये बनाया था। [4]दाऊद ने हारून के वंशजों और लेवीवंशियों को एक साथ बुलाया। [5]कहात परिवार समूह से एक सौ बीस व्यक्ति थे। ऊरीएल उनका प्रमुख था। [6]मरारी के परिवार समूह से दो सौ बीस लोग थे। असायाह उनका प्रमुख था। [7]गेर्शोमियों के परिवार समूह के एक सौ तीस लोग थे। योएल उनका प्रमुख था। [8]एलीसापान के परिवार समूह के दो सौ लोग थे। शमायाह उनका प्रमुख था। [9]हेब्रोन के परिवार समूह के अस्सी लोग थे। एलीएल उनका प्रमुख था। [10]उज्जीएल के परिवार समूह के एक सौ बारह लोग थे। अम्मीनादाब उनका प्रमुख था।

याजकों और लेवीवंशियों से दाऊद बातें करता है

[11]तब दाऊद ने सादोक और एब्यातार याजकों से कहा कि वे उसके पास आएं। दाऊद ने ऊरीएल, असायाह, योएल, शमायाह और अम्मीनादाब लेवीवंशियों को भी अपने पास बुलाया। [12]दाऊद ने उनसे कहा, "तुम लोग लेवी परिवार समूह के प्रमुख हो। तुम्हें अपने और अन्य लेवीवंशियों को पवित्र बनाना चाहिये। तब साक्षीपत्र के सन्दूक को उस स्थान पर लाओ, जिसे मैंने उसके लिये बनाया है। [13]पिछली बार हम लोगों ने यहोवा परमेश्वर से नहीं पूछा कि साक्षीपत्र के सन्दूक को हम कैसे ले चलें। लेवीवंशियों, तुम इसे नहीं ले चले, यही कारण था कि यहोवा ने हमें दण्ड दिया।"

[14]तब याजक और लेवीवंशियों ने अपने को पवित्र किया जिससे वे इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के सन्दूक को लेकर चल सकें। [15]लेवीवंशियों ने विशेष डंडों का उपयोग, अपने कन्धों पर साक्षीपत्र के सन्दूक को ले चलने के लिये किया जैसा मूसा का आदेश था। वे सन्दूक को उस प्रकार ले चले जैसा यहोवा ने कहा था।

गायक

[16]दाऊद ने लेवीवंशियों को उनके गायक भाईयों को लाने के लिये कहा। गायकों को अपनी वीणा, तम्बूरा और मँजीरा लाना था तथा प्रसन्नता के गीत गाना था।

[17]तब लेवीवंशियों ने हेमान और उसके भाईयों आसाप और एतान को बुलाया। हेमान योएल का पुत्र था। आसाप बेरेक्याह का पुत्र था। एतान कूशायाह का पुत्र था। ये व्यक्ति मरारी परिवार समूह के थे। [18]वहाँ लेवीवंशियों का दूसरा समूह भी था। वे जकर्याह, याजीएल, शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एलीआब, बनायाह, मासेयाह, मत्तित्याह, एलीपलेह, मिकनेयाह, ओबेदेदोम और पीएल थे। ये लोग लेवीवंश के रक्षक थे।

[19]गायक हेमान, आसाप और एतान काँसे का मँजीरा बजा रहे थे। [20]जकर्याह, अजीएल, शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एलीआब, मासेयाह और बनायाह अलामोत * वीणा बजा रहे थे। [21]मत्तित्याह, एलीपलेह, मिकनेयाह, ओबेदेदोम, यीएल और अजज्याह शेमिनिथ * तम्बूरा बजा रहे थे। यह उनका सदैव का काम था। [22]लेवीवंशी प्रमुख कनन्याह गायन का प्रबन्धक था। कनन्याह को यह काम मिला था क्योंकि वह गाने में बहुत अधिक कुशल था।

[23]बेरेक्याह और एल्काना साक्षीपत्र के सन्दूक के रक्षकों में से दो थे। [24]याजक शबन्याह, योशापात, नतनेल, अमासै, जकर्याह, बनायाह और एलीएजेर का काम साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने चलते समय तुरही बजाना था। ओबेदेदोम और यहिय्याह साक्षीपत्र के सन्दूक के लिये अन्य रक्षक थे।

[25]दाऊद, इस्राएल के अग्रज (प्रमुख) और सेनापति साक्षीपत्र के सन्दूक को लेने गए। वे उसे ओबेदेदोम

अलामोत इस शब्द का ठीक अर्थ हम नहीं जानते। किन्तु संभवत: इसका अर्थ उच्च खिंचे तार था।

शेमिनिथ इस शब्द का ठीक अर्थ हम नहीं जानते। किन्तु संभवत: उसका अर्थ "निम्न खिंचे तार" था।

के घर से बाहर लाए। हर एक बहुत प्रसन्न था। [26]परमेश्वर ने उन लेवीवंशियों की सहायता की जो यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को लेकर चल रहे थे। उन्होंने सात बैलों और सात मेढ़ों की बलि दी। [27]सभी लेवीवंशी जो साक्षीपत्र के सन्दूक लेकर चल रहे थे, उत्तम सन के चोगे पहने थे। गायन का प्रबन्धक कनन्याह और सभी गायक उत्तम सन के चोगे पहने थे और दाऊद भी उत्तम सन का बना एपोद पहने था।

[28]इस प्रकार इस्राएल के सारे लोग यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को ले आए। उन्होंने उद्घोष किया, उन्होंने मेढ़े की सिंगी और तुरही बजाई और उन्होंने मँजीरे, वीणा और तम्बूरे बजाए।

[29]जब साक्षीपत्र का सन्दूक दाऊद नगर में पहुँचा, मीकल ने खिड़की से देखा। मीकल शाऊल की पुत्री थी। उसने राजा दाऊद को चारों ओर नाचते और बजाते देखा। उसने अपने हृदय में दाऊद के प्रति सम्मान को खो दिया उसने सोचा कि वह मूर्ख बन रहा है।

16 लेवीवंशी साक्षीपत्र का सन्दूक ले आए और उसे उस तम्बू में रखा जिसे दाऊद ने इसके लिये खड़ी कर रखी थी। तब उन्होंने परमेश्वर को होमबलि और मेलबलि चढ़ाई। [2]जब दाऊद होमबलि और मेलबलि देना पूरा कर चुका तब उसने लोगों को आशीर्वाद देने के लिये यहोवा का नाम लिया। [3]तब उसने हर एक इस्राएली स्त्री–पुरुष को एक–एक रोटी, खजूर और किशमिश दिया।

[4]तब दाऊद ने साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने सेवा के लिये कुछ लेवीवंशियों को चुना। उन लेवीवंशियों को इस्राएलियों के यहोवा परमेश्वर के लिये उत्सवों को मनाने, आभार व्यक्त करने और स्तुति करने का काम सौंपा गया। [5]आसाप, प्रथम समूह का प्रमुख था। आसाप का समूह सारंगी बजाता था। जकर्याह दूसरे समूह का प्रमुख था। अन्य लेवीवंशी ये थे: यीएल, शमीरामोत, यहीएल, मत्तित्याह, एलीआब बनायाह, ओबेदेदोम और यीएल। ये व्यक्ति वीणा और तम्बूरा बजाते थे। [6]बनायाह और यहजीएल ऐसे याजक थे जो साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने सदैव तुरही बजाते थे। [7]यह वही समय था जब दाऊद ने पहली बार आसाप और उसके भाइयों को यहोवा की स्तुति करने का काम दिया।

दाऊद का आभार गीत

[8] यहोवा की स्तुति करो
उसका नाम लो
लोगों में उन महान कार्यों का वर्णन करो–
जिन्हें यहोवा ने किया है।
[9] यहोवा के गीत गाओ,
यहोवा की स्तुतियाँ गाओ।
उसके सभी अद्‌भुत कामों का गुणगान करो।
[10] यहोवा के पवित्र नाम पर गर्व करो
सभी लोग जो यहोवा की सहायता पर
भरोसा करते हैं, प्रसन्न हो!
[11] यहोवा पर और उसकी शक्ति पर भरोसा करो।
सदैव सहायता के लिये उसके पास जाओ।
[12] उन अद्‌भुत कार्यों को याद करो
जो यहोवा ने किये हैं।
उसके निर्णयों को याद रखो
और शक्तिपूर्ण कार्यों को जो उसने किये।
[13] इस्राएल की सन्तानें यहोवा के सेवक हैं।
याकूब के वंशज, यहोवा द्वारा चुने लोग हैं।
[14] यहोवा हमारा परमेश्वर है,
उसकी शक्ति चारों तरफ है।
[15] उसकी वाचा को सदैव याद रखो,
उसने अपने आदेश–
सहस्र पीढ़ियों के लिये दिये हैं।
[16] यह वाचा है जिसे यहोवा ने
इब्राहीम के साथ किया था।
यह प्रतिज्ञा है जो यहोवा ने
इसहाक के साथ की।
[17] यहोवा ने इसे याकूब के लोगों के
लिये नियम बनाया।
यह वाचा इस्राएल के साथ है–
जो सदैव बनी रहेगी।
[18] यहोवा ने इस्राएल से कहा था:
"मैं कनान देश तुझे दूँगा।
यह प्रतिज्ञा का प्रदेश तुम्हारा होगा।"
[19] परमेश्वर के लोग संख्या में थोड़े थे।
वे उस देश में अजनबी थे।
[20] वे एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र को गए।
वे एक राज्य से दूसरे राज्य को गए।

21 किन्तु यहोवा ने किसी को
उन्हें चोट पहुँचाने न दी।
यहवा ने राजाओं को चेतावनी दी
कि वे उन्हें चोट न पहुँचायें।

22 यहोवा ने उन राजाओं से कहा,
"मेरे चुने लोगों को चोट न पहुँचाओ।
मेरे नबियों को चोट न पहुँचाओ।"

23 यहोवा के लिये पूरी धरती पर गुणगान करो,
प्रतिदिन तुम्हें, यहोवा द्वारा हमारी रक्षा
के शुभ समाचार बताना चाहिए।

24 यहोवा के प्रताप को सभी राष्ट्रों से कहो।
यहोवा के अद्भुत कार्यों को
सभी लोगों से कहो।

25 यहोवा महान है,
यहोवा की स्तुति होनी चाहिये।
यहोवा अन्य देवताओं से–
अधिक भय योग्य है।

26 क्यों? क्योंकि उन लोगों के सभी
देवता मात्र मूर्तियाँ हैं।
किन्तु यहोवा ने आकाश को बनाया।

27 यहोवा प्रतापी और सम्मानित है।
यहोवा एक तेज़ चमकती
ज्योति की तरह है।

28 परिवार और लोग,
यहोवा के प्रताप और शक्ति की
स्तुति करते हैं।

29 यहोवा के प्रताप की स्तुति करो।
उसके नाम को सम्मान दो।
यहोवा को अपनी भेंटें चढ़ाओ,
यहोवा और उसके पवित्र
सौन्दर्य की उपासना करो।

30 यहोवा के सामने भय से
सारी धरती काँपनी चाहिये।
किन्तु उसने धरती को दृढ़ किया,
अत: संसार हिलेगा नहीं।

31 धरती आकाश को आनन्द में झूमने दो।
चारों ओर लोगों को कहने दो,
"यहोवा शासन करता है।"

32 सागर और इसमें की सभी चीज़ों
को चिल्लाने दो!
खेतों और उनमें की हर एक चीज़ को
अपना आनन्द व्यक्त करने दो।

33 यहोवा के सामने वन के वृक्ष आनन्द से गायेंगे।
क्यों? क्योंकि यहोवा आ रहा है।
वह संसार का न्याय करने आ रहा है।

34 अहा! यहोवा को धन्यवाद दो, वह अच्छा है।
यहोवा का प्रेम सदा बना रहता है।

35 यहोवा से कहो,
"हे परमेश्वर, हमारे रक्षक, हमारी रक्षा कर।
हम लोगों को एक साथ इकट्ठा करो,
और हमें अन्य राष्ट्रों से बचाओ।
और तब हम तुम्हारे पवित्र नाम की
स्तुति कर सकते हैं।
तब हम तेरी स्तुति अपने गीतों
से कर सकते हैं।"

36 इस्राएल के यहोवा परमेश्वर की सदा स्तुति
होती रहे जैसे कि सदैव
उसकी प्रशंसा होती रही है।

सभी लोगों ने कहा, "आमीन!" उन्होंने यहोवा की स्तुति की।

37 तब दाऊद ने आसाप और उसके भाईयों को वहाँ यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने छोड़ा। दाऊद ने उन्हें उसके सामने प्रतिदिन सेवा करने के लिये छोड़ा। 38 दाऊद ने आसाप और उसके भाईयों के साथ सेवा करने के लिये ओबेदेदोम और अन्य अड़सठ लेवीवंशियों को छोड़ा। ओबेदेदोम और यदूतून रक्षक थे। ओबेदेदोम यदूतून का पुत्र था।

39 दाऊद ने याजक सादोक और अन्य याजकों को जो गिबोन में उच्च स्थान पर यहोवा के तम्बू के सामने उसके साथ सेवा करते थे, छोड़ा। 40 हर सुबह–शाम सादोक तथा अन्य याजक होमबलि की वेदी पर होमबलि चढ़ाते थे। वे यह यहोवा के व्यवस्था में लिखे गए उन नियमों का पालन करने के लिये करते थे जिन्हें यहोवा ने इस्राएल को दिया था। 41 हेमान और यदूतून तथा सभी अन्य लेवीवंशी यहोवा का स्तुतिगान करने के लिये नाम लेकर चुने गये थे क्योंकि यहोवा का प्रेम सदैव बना रहता है! 42 हेमान और यदूतून उनके साथ थे। उनका काम तुरही और

मँजीरा बजाना था। वे अन्य संगीत वाद्य बजाने का काम भी करते थे, जब परमेश्वर की स्तुति के गीत गाये जाते थे। यदूतून का पुत्र द्वार की रखवाली करता था।

[43]उत्सव मनाने के बाद, सभी लोग चले गए। हर एक व्यक्ति अपने–अपने घर चला गया और दाऊद भी अपने परिवार को आशीर्वाद देकर अपने घर गया।

परमेश्वर ने दाऊद को वचन दिया

17 दाऊद ने अपने घर चले जाने के बाद नातान नबी से कहा, "देखो, मैं देवदारू से बने घर में रह रहा हूँ, किन्तु यहोवा का साक्षीपत्र का सन्दूक तम्बू में रखा है। मैं परमेश्वर के लिये एक मन्दिर बनाना चाहता हूँ।"

[2]नातान ने दाऊद को उत्तर दिया, "तुम जो कुछ करना चाहते हो, कर सकते हो। परमेश्वर तुम्हारे साथ है।"

[3]किन्तु परमेश्वर का सन्देश उस रात नातान को मिला। [4]परमेश्वर ने कहा, "जाओ और मेरे सेवक दाऊद से यह कहो: यहोवा यह कहता है, 'दाऊद, तुम मेरे रहने के लिये गृह नहीं बनाओगे। [5-6]जब से मैं इस्राएल को मिस्र से बाहर लाया तब से अब तक, मैं गृह में नहीं रहा हूँ। मैं एक तम्बू में चारों ओर घूमता रहा हूँ। मैंने इस्राएल के लोगों का विशेष प्रमुख बनने के लिये लोगों को चुना। वे प्रमुख मेरे लोगों के लिये गड़रिये के समान थे। जिस समय मैं इस्राएल में विभिन्न स्थानों पर चारों ओर घूम रहा था, उस समय मैंने किसी प्रमुख से यह नहीं कहा: तुमने मेरे लिये देवदारू वृक्ष का गृह क्यों नहीं बनाया है?'

[7]"अब, तुम मेरे सेवक दाऊद से कहो: सर्वशक्तिमान यहोवा तुमसे कहता है, 'मैंने तुमको मैदानों से और भेड़ों की देखभाल करने से हटाया। मैंने तुमको अपने इस्राएली लोगों का शासक बनाया। [8]तुम जहाँ गए, मैं तुम्हारे साथ रहा। मैं तुम्हारे आगे–आगे चला और मैंने तुम्हारे शत्रुओं को मारा। अब मैं तुम्हें पृथ्वी पर सर्वाधिक प्रसिद्ध व्यक्तियों में से एक बना रहा हूँ। [9]मैं यह स्थान अपने इस्राएल के लोगों को दे रहा हूँ। वे वहाँ अपने वृक्ष लगायेंगे और वे उन वृक्षों के नीचे शान्ति के साथ बैठेंगे। वे अब आगे और परेशान नहीं किये जाएंगे। बुरे लोग उन्हें वैसे चोट नहीं पहुँचाऐंगे जैसा उन्होंने पहले पहुँचाया था। [10]वे बुरी बातें हुई, किन्तु मैंने अपने इस्राएली लोगों की रक्षा के लिये प्रमुख चुने और मैं तुम्हारे सभी शत्रुओं को भी हराऊँगा।

"'मैं तुमसे कहता हूँ कि यहोवा तुम्हारे लिए एक घराना बनाएगा।* [11]जब तुम मरोगे और अपने पूर्वजों से जा मिलोगे, तब तुम्हारे निज पुत्र को नया राजा होने दूँगा। नया राजा तुम्हारे पुत्रों में से एक होगा और मैं राज्य को शक्तिशाली बनाऊँगा। [12]तुम्हारा पुत्र मेरे लिये एक गृह बनाएगा। मैं तुम्हारे पुत्र के परिवार को सदा के लिये शासक बनाऊँगा। [13]मैं उसका पिता बनूँगा और वह मेरा पुत्र होगा। शाऊल तुम्हारे पहले राजा था और मैंने शाऊल से अपनी सहायता हटा ली किन्तु मैं तुम्हारे पुत्र से प्रेम करना कभी कम नहीं करूँगा। [14]मैं उसे सदा के लिये अपने घर और राज्य का संरक्षक बनाऊँगा। उसका शासन सदैव चलता रहेगा!'"

[15]नातान ने अपने इस दर्शन और परमेश्वर ने जो सभी बातें कही थीं उनके विषय में दाऊद से कहा।

दाऊद की प्रार्थना

[16]तब दाऊद पवित्र तम्बू में गया और यहोवा के सामने बैठा। दाऊद ने कहा, "यहोवा परमेश्वर, तूने मेरे लिए और मेरे परिवार के लिये इतना अधिक किया है और मैं नहीं समझता कि क्यों? [17]उन बातों के अतिरिक्त, तू मुझे बता कि भविष्य में मेरे परिवार पर क्या घटित होगा। तूने मेरे प्रति एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति जैसा व्यवहार किया है। [18]मैं और अधिक क्या कह सकता हूँ? तूने मेरे लिये इतना अधिक किया है और मैं केवल तेरा सेवक हूँ। यह तू जानता है। [19]यहोवा, तूने यह अद्‌भुत कार्य मेरे लिये किया है और यह तूने किया क्योंकि तू करना चाहता था। [20]यहोवा, तेरे समान और कोई नहीं है। तेरे अतिरिक्त कोई परमेश्वर नहीं है। हम लोगों ने कभी किसी देवता को ऐसे अद्‌भुत कार्य करते नहीं सुना है! [21]क्या इस्राएल के समान अन्य कोई राष्ट्र है? नहीं! इस्राएल ही पृथ्वी पर एकमात्र राष्ट्र है जिसके लिये तूने यह अद्‌भुत कार्य किया। तूने हमें मिस्र से बाहर निकाला और हमें स्वतन्त्र किया। तूने अपने को प्रसिद्ध किया। तू अपने लोगों के सामने आया और अन्य लोगों को हमारे लिये भूमि छोड़ने को विवश किया। [22]तूने इस्राएल

मैं ... बनाएगा इसका अर्थ कोई यथार्थ घर से सम्बन्ध नहीं रखना। इसका अर्थ है कि यहोवा दाऊद के परिवार से अनेक वर्षों तक व्यक्ति को राजा बनाता रहेगा।

को सदा के लिये अपना बनाया और यहोवा तू उसका परमेश्वर हुआ!

[23]"यहोवा, तूने यह प्रतिज्ञा मुझसे और मेरे परिवार से की है। अब से तू सदा के लिये इस प्रतिज्ञा को बनाये रख। वह कर जो तूने करने को कहा! [24]अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर। जिससे लोग तेरे नाम का सम्मान सदा के लिये कर सकें। लोग कहेंगे, 'सर्वशक्तिशाली यहोवा इस्राएल का परमेश्वर है!' मैं तेरा सेवक हूँ! कृपया मेरे परिवार को शक्तिशाली होने दे और वह तेरी सेवा सदा करता रहे।

[25]"मेरे परमेश्वर, तूने मुझसे (अपने सेवक) कहा, कि तू मेरे परिवार को एक राजपरिवार बनायेगा। इसीलिए मैं तेरे सामने इतना निडर हो रहा हूँ, इसीलिए मैं तुझसे ये सब चीजें करने के लिये कह रहा हूँ। [26]यहोवा, तू परमेश्वर है और परमेश्वर तूने इन अच्छी चीज़ों की प्रतिज्ञा मेरे लिए की है। [27]यहोवा, तू मेरे परिवार को आशीष देने में इतना अधिक दयालु रहा है। तूने प्रतिज्ञा की, कि मेरा परिवार तेरी सेवा सदैव करता रहेगा। यहोवा तूने मेरे परिवार को आशीष दी है, अत: मेरा परिवार सदा आशीष पाएगा!"

दाऊद विभिन्न राष्ट्रों को जीत लेता है

18 बाद में दाऊद ने पलिश्ती लोगों पर आक्रमण किया। उसने उन्हें हराया। उसने गत नगर और उसके चारों ओर के नगरों को पलिश्ती लोगों से जीत लिया।

[2]तब दाऊद ने मोआब देश को हराया। मोआबी लोग दाऊद के सेवक बन गए। वे दाऊद के पास भेंटें लाए।

[3]दाऊद हदरेजेर की सेना के विरुद्ध भी लड़ा। हदरेजेर सोबा का राजा था। दाऊद उस सेना के विरुद्ध लड़ा। दाऊद लगातार हमात नगर तक उस सेना से लड़ा। दाऊद ने यह इसलिये किया कि हदरेजेर ने अपने राज्य को लगातार परात नदी तक फैलाना चाहा। [4]दाऊद ने हदरेजेर के एक हजार रथ, सात हजार सारथी और बीस हजार सैनिक लिये। दाऊद ने हदरेजेर के अधिकांश घोड़ों को अंग–भंग कर दिया जो रथ खींचते थे। किन्तु दाऊद ने सौ रथों को खींचने के लिये पर्याप्त घोड़े बचा लिये।

[5]दमिश्क नगर से अरामी लोग हदरेजेर की सहायता करने के लिये आए। हदरेजेर सोबा का राजा था। किन्तु दाऊद ने बाईस हजार अरामी सैनिकों को पराजित किया और मार डाला। [6]तब दाऊद ने दमिश्क नगर में किले बनवाए। अरामी लोग दाऊद के सेवक बन गए और उसके पास भेंटें लेकर आये। अत: यहोवा ने दाऊद को, जहाँ कहीं वह गया, विजय दी।

[7]दाऊद ने हदरेजेर के सेनापतियों से सोने की ढालें लीं और उन्हें यरूशलेम ले आया। [8]दाऊद ने तिभत और कून नगरों से अत्याधिक काँसा प्राप्त किया। वे नगर हदरेजेर के थे। बाद में, सुलैमान ने इस काँसे का उपयोग काँसे की होदे, काँसे के स्तम्भ और वे अन्य चीजें बनाने में किया जो मन्दिर के लिये काँसे से बनी थी।

[9]तोऊ हमात नगर का राजा था। हदरेजेर सोबा का राजा था। तोऊ ने सुना कि दाऊद ने हदरेजेर की सारी सेना को पराजित कर दिया। [10]अत: तोऊ ने अपने पुत्र हदोराम को राजा दाऊद के पास शान्ति की याचना करने और आशीर्वाद पाने के लिये भेजा। उसने यह किया क्योंकि दाऊद ने हदरेजेर के विरुद्ध युद्ध किया था और उसे हराया था। पहले हदरेजेर ने तोऊ से युद्ध किया था। हदोराम ने दाऊद को हर एक प्रकार की सोने, चाँदी और काँसे से बनी चीज़ें दीं। [11]राजा दाऊद ने उन चीज़ों को पवित्र बनाया और यहोवा को दिया। दाऊद ने ऐसा उस सारे चाँदी, सोने के साथ किया जिसे उसने एदोमी, मोआबी, अम्मोनी पलिश्ती और अमालेकी लोगों से प्राप्त किय ा था।

[12]सरुयाह के पुत्र अबीशै ने नमक की घाटी में अट्ठारह हजार एदोमी लोगों को मारा। [13]अबीशै ने एदोम में किले बनाए और सभी एदोमी लोग दाऊद के सेवक हो गए। दाऊद जहाँ कही भी गया, यहोवा ने उसे विजय दी।

दाऊद के महत्वपूर्ण अधिकारी

[14]दाऊद पूरे इस्राएल का राजा था। उसने वही किया जो सबके लिये उचित और न्यायपूर्ण था। [15]सरूयाह का पुत्र योआब, दाऊद की सेना का सेनापति था। अहीलूद के पुत्र यहोशापात ने उन कामों के विषय में लिखा जो दाऊद ने किये। [16]सादोक और अबीमेलेक याजक थे। सादोक अहीतूब का पुत्र था और अबीमेलेक एब्यातार का पुत्र था। शबशा शास्त्री था। [17]बनायाह करेतियों और पलेती* लोगों के मार्गदर्शन का उत्तरदायी था बनायाह यहोयादा का पुत्र था और दाऊद के पुत्र विशेष अधिकारी थे। वे राजा दाऊद के साथ सेवारत थे।

करेती और पलेती ये लोग राजा के अंगरक्षक थे।

अम्मोनी दाऊद के लोगों को लज्जित करते हैं

19 नाहाश अम्मोनी लोगों का राजा था। नाहाश मरा, और उसका पुत्र नया राजा बना। [2]तब दाऊद ने कहा, "नाहाश मेरे प्रति दयालु था, इसलिए मैं नाहाश के पुत्र हानून के प्रति दयालु रहूँगा।" अत: दाऊद ने अपने दूतों को उसके पिता की मृत्यु पर सांत्वना देने भेजे। दाऊद के दूत हानून को सान्तवा देने अम्मोन देश को गए।

[3]किन्तु अम्मोनी प्रमुखों ने हानून से कहा, "मूर्ख मत बनो। दाऊद ने सच्चे भाव से तुम्हें सांत्वना देने के लिये या तुम्हारे मृत पिता को सम्मान देने के लिये नहीं भेजा है! नहीं, दाऊद ने अपने सेवकों को तुम्हारी और तुम्हारे देश की जासूसी करने को भेजा है। दाऊद वस्तुत: तुम्हारे देश को नष्ट करना चाहता है!" [4]इसलिये हानून ने दाऊद के सेवकों को बन्दी बनाया और उनकी दाढ़ी मुड़वा दी।* हानून ने कमर तक उनके वस्त्रों की छोर को कटवा दिया। तब उसने उन्हें विदा कर दिया।

[5]दाऊद के व्यक्ति इतने लज्जित हुए कि वे घर को नहीं जा सकते थे। कुछ लोग दाऊद के पास गए और बताया कि उसके व्यक्तियों के साथ कैसा बर्ताव हुआ। इसलिये राजा दाऊद ने अपने लोगों के पास यह सूचना भेजा: "तुम लोग यरीहो नगर में तब तक रहो जब तक फिर दाढ़ी न उग आए। तब तुम घर वापस आ सकते हो।"

[6]अम्मोनी लोगों ने देखा कि उन्होंने अपने आपको दाऊद का घृणित शत्रु बना दिया है। तब हानून और अम्मोनी लोगों ने पचहत्तर हजार पौंड चाँदी, रथ और सारथियों को मेसोपोटामियाँ से खरीदने में लगाया। उन्होंने अराम में अरम्माका और सोबा नगरों से भी रथ और सारथी प्राप्त किये। [7]अम्मोनी लोगों ने बत्तीस हजार रथ खरीदे। उन्होंने माका के राजा को और उसकी सेना को भी आने और सहायता करने के लिये भुगतान किया। माका का राजा और उसके लोग आए और उन्होंने मेदबा नगर के पास अपना डेरा डाला। अम्मोनी लोग स्वयं अपने नगरों से बाहर आए और युद्ध के लिये तैयार हो गये।

[8]दाऊद ने सुना कि अम्मोनी लोग युद्ध के लिये तैयार हो रहे हैं। इसलिये उसने योआब और इस्राएल की पूरी सेना को अम्मोनी लोगों से युद्ध करने के लिये भेजा। [9]अम्मोनी लोग बाहर निकले तथा युद्ध के लिये तैयार हो गए। वे नगर द्वार के पास थे। जो राजा सहायता के लिये आए थे, वे स्वयं खुले मैदान में खड़े थे।

[10]योआब ने देखा कि उसके विरुद्ध लड़ने वाली सेना के दो मोर्चे थे। एक मोर्चा उसके सामने था और दूसरा उसके पीछे था। इसलिये योआब ने इस्राएल के कुछ सर्वोत्तम योद्धाओं को चुना। उसने उन्हें अराम की सेना से लड़ने के लिये भेजा। [11]योआब ने इस्राएल की शेष सेना को अबीशै के सेनापतित्व में रखा। अबीशै योआब का भाई था। वे सैनिक अम्मोनी सेना के विरुद्ध लड़ने गये। [12]योआब ने अबीशै से कहा, "यदि अरामी सेना मेरे लिये अत्याधिक शक्तिशाली पड़े तो तुम्हें मेरी सहायता करनी होगी। किन्तु यदि अम्मोनी सेना तुम्हारे लिये अत्याधिक शक्तिशाली प्रामाणित होगी तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। [13]हम अपने लोगों तथा अपने परमेश्वर के नगरों के लिये युद्ध करते समय वीर और दृढ़ बनें। यहोवा वह करे जिसे वह उचित मानता है।"

[14]योआब और उसके साथ की सेना ने अराम की सेना पर आक्रमण किया। अराम की सेना योआब और उसकी सेना के सामने से भाग खड़ी हुई। [15]अम्मोनी सेना ने देखा कि अराम की सेना भाग रही है अत: वे भी भाग खड़े हुए। वे अबीशै और उसकी सेना के सामने से भाग खड़े हुए। अम्मोनी अपने नगरों को चले गये, और योआब यरूशलेम को लौट गया।

[16]अराम के प्रमुखों ने देखा कि इस्राएल ने उन्हें पराजित कर दिया। इसलिये उन्होंने परात नदी के पूर्व रहने वाले अरामी लोगों से सहायता के लिए दूत भेजे। शोपक हदरेजेर की अराम की सेना का सेनापति था। शोपक ने उन अन्य अरामी सैनिकों का भी संचालन किया।

[17]दाऊद ने सुना कि अराम के लोग युद्ध के लिये इकट्ठा हो रहे हैं। इसलिये दाऊद ने इस्राएल के सभी सैनिकों को इकट्ठा किया। दाऊद उन्हें यरदन नदी के पार ले गया। वे अरामी लोगों के ठीक आमने–सामने आ गए। दाऊद ने अपनी सेना को आक्रमण के लिये तैयार किया और अरामियों पर आक्रमण कर दिया। [18]अरामी इस्राएलियों के सामने से भाग खड़े हुए। दाऊद और उसकी सेना ने सात हजार सारथी और चालीस हजार

दाढ़ी मुड़वा दी इस्राएली के लिये अपनी दाढ़ी कटवाना मूसा के नियम के विरुद्ध था।

अरामी सैनिकों को मार डाला। दाऊद और उसकी सेना ने अरामी सेना के सेनापति शोपक को भी मार डाला।

[19]जब हदरेजेर के अधिकारियों ने देखा कि इस्राएल ने उनको हरा दिया तो उन्होंने दाऊद से सन्धि कर ली। वे दाऊद के सेवक बन गए। इस प्रकार अरामियों ने अम्मोनी लोगों को फिर सहायता करने से इन्कार कर दिया।

योआब अम्मोनियों को नष्ट करता है

20 बसन्त में,* योआब इस्राएल की सेना को युद्ध के लिये ले गया। यह वही समय था जब राजा युद्ध के लिये यात्रा करते थे, किन्तु दाऊद यरूशलेम में रहा। इस्राएल की सेना अम्मोन देश को गई थी। उसने उसे नष्ट कर दिया। तब वे रब्बा नगर को गये। सेना ने लोगों को अन्दर आने और बाहर जाने से रोकने के लिये नगर के चारों ओर डेरा डाला। योआब और उसकी सेना ने रब्बा नगर के विरुद्ध तब तक युद्ध किया जब तक उसे नष्ट नहीं कर डाला।

[2]दाऊद ने उनके राजा * का मुकुट उतार लिया। वह सोने का मुकुट तोल में लगभग पचहत्तर पौंड था। मुकुट में बहुमूल्य रत्न जड़े थे। मुकुट दाऊद के सिर पर रखा गया। तब दाऊद ने रब्बा नगर से बहुत सी मूल्यवान वस्तुएँ प्राप्त कीं। [3]दाऊद रब्बा के लोगों को साथ लाया और उन्हें आरों, लोहे की गैंती और कुल्हाड़ियों से काम करने को विवश किया। दाऊद ने अम्मोनी लोगों के सभी नगरों के साथ यही बर्ताव किया। तब दाऊद और सारी सेना यरूशलेम को वापस लौट गई।

पलिश्ती के दैत्य मारे जाते हैं

[4]बाद में इस्राएल के लोगों का युद्ध गेजेर नगर में पलिश्तियों के साथ हुआ। उस समय हूशा के सिब्बकै ने सिप्पै को मार डाला। सिप्पै दैत्यों के पुत्रों में से एक था। इस प्रकार पलिश्ती के लोग इस्राएलियों के दास के समान हो गए।

[5]अन्य अवसर पर, इस्राएल के लोगों का युद्ध फिर पलिश्तियों के विरुद्ध हुआ। याईर के पुत्र एल्हानान ने लहमी को मार डाला। लहमी गोल्यत का भाई था। गोल्यत गत नगर का था। लहमी का भाला बहुत लम्बा और भारी था। यह करघे के लम्बे हत्थे की तरह था।

[6]बाद में, इस्राएलियों ने गत नगर के पास पलिश्तियों के साथ दूसरा युद्ध किया। इस नगर में एक बहुत लम्बा व्यक्ति था। उसके हाथ और पैर की चौबीस उँगलियाँ थीं। उस व्यक्ति के हर हाथ में छ: उँगलियाँ और हर पैर की भी छ: उँगलियाँ थीं। वह दैत्य का पुत्र भी था। [7]इसलिये जब उसने इस्राएल का मज़ाक उड़ाया तो योनातान ने उसे मार डाला। योनातान शिमा का पुत्र था। शिमा दाऊद का भाई था।

[8]वे पलिश्ती लोग गत नगर के दैत्यों के पुत्र थे। दाऊद और उसके सेवकों ने उन दैत्यों को मार डाला।

इस्राएलियों को गिनकर दाऊद पाप करता है

21 शैतान इस्राएल के लोगों के विरुद्ध था। उसने दाऊद को इस्राएल के लोगों को गिनने का प्रोत्साहन दिया। [2]इसलिये दाऊद ने योआब और लोगों के प्रमुखों से कहा, "जाओ और इस्राएल के सभी लोगों की गणना करो। बर्शेबा नगर से लेकर लगातार दान नगर तक देश के हर व्यक्ति को गिनो। तब मुझे बताओ, इससे मैं जान सकूँगा कि यहाँ कितने लोग हैं।"

[3]किन्तु योआब ने उत्तर दिया, "यहोवा अपने राष्ट्र को सौ गुना विशाल बनाए। महामहिम इस्राएल के सभी लोग तेरे सेवक हैं। मेरे स्वामी यहोवा और राजा, आप यह कार्य क्यों करना चाहते हैं? आप इस्राएल के सभी लोगों को पाप करने का अपराधी बनाएंगे!"

[4]किन्तु राजा दाऊद हठ पकड़े था। योआब को वह करना पड़ा जो राजा ने कहा। इसलिये योआब गया और पूरे इस्राएल देश में गणना करता हुआ घूमता रहा। तब योआब यरूशलेम लौटा [5]और दाऊद को बताया कि कितने आदमी थे। इस्राएल में ग्यारह लाख पुरुष थे और तलवार का उपयोग कर सकते थे और तलवार का उपयोग करने वाले चार लाख सत्तर हजार पुरुष यहूदा में थे। [6]योआब ने लेवी और बिन्यामीन के परिवार समूह की गणना नहीं की। योआब ने उन परिवार समूहों की गणना नहीं की क्योंकि वह राजा दाऊद के आदेशों को पसन्द नहीं करता था। [7]परमेश्वर की दृष्टि में दाऊद ने यह बुरा काम किया था इसलिये परमेश्वर ने इस्राएल को दण्ड दिया।

बसन्त में हिब्रू में "वर्ष के लौटने पर" है।

उनके राजा या "मिल्काम" अम्मोनी लोगों का परमेश्वर।

परमेश्वर इस्राएल को दण्ड देता है

[8]तब दाऊद ने परमेश्वर से कहा, "मैंने एक बहुत मूर्खतापूर्ण काम किया है। मैंने इस्राएल के लोगों की गणना करके बुरा पाप किया है। अब, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू इस सेवक के पापों को क्षमा कर दे।"

[9-10]गाद दाऊद का दृष्टा था। यहोवा ने गाद से कहा, "जाओ और दाऊद से कहो: 'यहोवा जो कहता है वह यह है: मैं तुमको तीन विकल्प दे रहा हूँ। तुम्हें उसमें से एक चुनना है और तब मैं तुम्हें उस प्रकार दण्डित करूँगा जिसे तुम चुन लोगे।'"

[11-12]तब गाद दाऊद के पास गया। गाद ने दाऊद से कहा, "यहोवा कहता है, 'दाऊद, जो दण्ड चाहते हो उसे चुनो: पर्याप्त अन्न के बिना तीन वर्ष या तुम्हारा पीछा करने वाले तलवार का उपयोग करते हुए शत्रुओं से तीन महीने तक भागना या यहोवा से तीन दिन का दण्ड। पूरे देश में भंयकर महामारी फैलेगी और यहोवा का दूत लोगों को नष्ट करता हुआ पूरे देश में जाएगा।' परमेश्वर ने मुझे भेजा है। अब, तुम्हें निर्णय करना है कि उसको कौन सा उत्तर दूँ।"

[13]दाऊद ने गाद से कहा, "मैं विपत्ति में हूँ! मैं नहीं चाहता कि कोई व्यक्ति मेरे दण्ड का निश्चय करे। यहोवा बहुत दयालु है, अत: यहोवा को ही निर्णय करने दो कि मुझे कैसे दण्ड दे।"

[14]अत: यहोवा ने इस्राएल में भयंकर महामारी भेजी, और सत्तर हजार लोग मर गए। [15]परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत को यरूशलेम को नष्ट करने के लिये भेजा। किन्तु जब स्वर्गदूत ने यरूशलेम को नष्ट करना आरम्भ किया तो यहोवा ने देखा और उसे दु:ख हुआ। इसलिये यहोवा ने इस्राएल को नष्ट न करने का निर्णय किया। यहोवा ने उस दूत से, जो नष्ट कर रहा था कहा, "रूक जाओ! यही पर्याप्त है!" यहोवा का दूत उस समय यबूसी * ओर्नान की खलिहान के पास खड़ा था।

[16]दाऊद ने नज़र उठाई और यहोवा के दूत को आकाश में देखा। स्वर्गदूत ने यरूशलेम पर अपनी तलवार खींच रखी थी। तब दाऊद और अग्रजों (प्रमुखों) ने अपने सिर को धरती पर टेक कर प्रणाम किया। दाऊद और अग्रज (प्रमुख) अपने दु:ख को प्रकट करने के लिये विशेष वस्त्र पहने थे। [17]दाऊद ने परमेश्वर से कहा, "वह मैं हूँ जिसने पाप किया है! मैंने लोगों की गणना के लिये आदेश दिया था! मैं गलती पर था! इस्राएल के लोगों ने कुछ भी गलत नहीं किया। यहोवा मेरे परमेश्वर, मुझे और मेरे परिवार को दण्ड दे किन्तु उस भयंकर महामारी को रोक दे जो तेरे लोगों को मार रही है!"

[18]तब यहोवा के दूत ने गाद से बात की। उसने कहा, "दाऊद से कहो कि वह यहोवा की उपासना के लिये एक वेदी बनाए। दाऊद को इसे यबूसी ओर्नान की खलिहान के पास बनाना चाहिये।" [19]गाद ने ये बातें दाऊद को बताई और दाऊद ओर्नान के खलिहान के पास गया।

[20]ओर्नान गेहूँ दांय रहा था। * ओर्नान मुड़ा और उसने स्वर्गदूत को देखा। ओर्नान के चारों पुत्र छिपने के लिये भाग गये। [21]दाऊद ओर्नान के पास गया। ओर्नान ने खलिहान छोड़ी। वह दाऊद तक पहुँचा और उसके सामने अपना माथा ज़मीन पर टेक कर प्रणाम किया।

[22]दाऊद ने ओर्नान से कहा, "तुम अपना खलिहान मुझे बेच दो। मैं तुमको पूरी कीमत दूँगा। तब मैं यहोवा की उपासना के लिये एक वेदी बनाने के लिये इसका उपयोग कर सकता हूँ। तब भंयकर महामारी रुक जायेगी।"

[23]ओर्नान ने दाऊद से कहा, "इस खलिहान को ले लें! आप मेरे प्रभु और राजा हैं। आप जो चाहें, करें। ध्यान रखें, मैं भी होमबलि के लिये पशु दूँगा। मैं आपको लकड़ी के पर्दे वाले तख्ते दूँगा जिसे आप वेदी पर आग के लिये जला सकते हैं और मैं अन्नबलि के लिये गेहूँ दूँगा। मैं यह सब आपको दूँगा!"

[24]किन्तु राजा दाऊद ने ओर्नान को उत्तर दिया, "नहीं, मैं तुम्हें पूरी कीमत दूँगा। मैं कोई तुम्हारी वह चीज़ नहीं लूँगा जिसे मैं यहोवा को दूँगा। मैं वह कोई भेंट नहीं चढ़ाऊँगा जिसका मुझे कोई मूल्य न देना पड़े।"

[25]इसलिये दाऊद ने उस स्थान के लिए ओर्नान को पन्द्रह पौंड सोना दिया। [26]दाऊद ने वहाँ यहोवा की उपासना के लिए एक वेदी बनाई। दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाई। दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा ने स्वर्ग से आग भेजकर दाऊद को उत्तर दिया। आग होमबलि की वेदी पर उतरी। [27]तब यहोवा ने स्वर्गदूत

यबूसी वे व्यक्ति जो इस्राएलियों द्वारा नगर पर अधिकार करने के पहले वहाँ रहते थे। "यबूस" यरूशलेम का प्राचीन नाम था।

दांय ... था अन्न को भूसे से अलग करने के लिये उसे पीटना या कुचलना।

को आदेश दिया कि वह अपनी तलवार को वापस म्यान में रख ले।

[28]दाऊद ने देखा कि यहोवा ने उसे ओर्नान की खलिहान पर उत्तर दे दिया है, अत: दाऊद ने यहोवा को बलि भेंट की। [29](पवित्र तम्बू और होमबलि की वेदी उच्च स्थान पर गिबोन नगर में थी। मूसा ने पवित्र तम्बू को तब बनाया था जब इस्राएल के लोग मरुभूमि में थे। [30]दाऊद पवित्र तम्बू में परमेश्वर से बातें करने नहीं जा सकता था, क्योंकि वह भयभीत था। दाऊद यहोवा के दूत और उसकी तलवार से भयभीत था।)

22 दाऊद ने कहा, "यहोवा परमेश्वर का मन्दिर और इस्राएल के लोगों के लिये भेंटों को जलाने की वेदी यहाँ बनेगी।"

दाऊद मन्दिर के लिये योजना बनाता है

[2]दाऊद ने आदेश दिया कि इस्राएल में रहने वाले सभी विदेशी एक साथ इकट्ठे हों। विदेशियों के उस समूह में से दाऊद ने संगतराशों को चुना। उनका काम परमेश्वर के मन्दिर के लिये पत्थरों को काट कर तैयार करना था। [3]दाऊद ने द्वार के पल्लों के लिये कीलें तथा चूलें बनाने के लिये लोहा प्राप्त किया। दाऊद ने उतना काँसा भी प्राप्त किया जो तौला न जा सके [4]और दाऊद ने इतने अधिक देवदारु के लट्ठे इकट्ठे किये जो गिने न जा सकें। सीदोन और सोर के लोग बहुत से देवदारु के लट्ठे लाए।

[5]दाऊद ने कहा, "हमें यहोवा के लिये एक विशाल मन्दिर बनाना चाहिए। किन्तु मेरा पुत्र सुलैमान बालक है और वह उन सब चीज़ों को नहीं सीख सका है जो उसे जानना चाहिये। यहोवा का मन्दिर बहुत विशाल होना चाहिये। इसे अपनी विशालता और सुन्दरता के लिये सभी राष्ट्रों में प्रसिद्ध होना चाहिये। यही कारण है कि मैं यहोवा का मन्दिर बनाने की योजना बनाऊँगा।" इसलिये दाऊद ने मरने से पहले मन्दिर बनाने के लिये बहुत सी योजनायें बनाई।

[6]तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को बुलाया। दाऊद ने सुलैमान से इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के लिये मन्दिर बनाने को कहा। [7]दाऊद ने सुलैमान से कहा, "मेरे पुत्र, मैं अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के लिये एक मन्दिर बनाना चाहता था। [8]किन्तु यहोवा ने मुझसे कहा, 'दाऊद तुमने बहुत से युद्ध किये हैं और बहुत से लोगों को मारा है इसलिये तुम मेरे नाम के लिये मन्दिर नहीं बना सकते [9]किन्तु तुम्हारा एक पुत्र है जो शान्ति प्रिय है। मैं तुम्हारे पुत्र को शान्ति प्रदान करूँगा। उसके चारों ओर के शत्रु उसे परेशान नहीं करेंगे। उसका नाम सुलैमान * है और मैं इस्राएल को उस समय सुख शान्ति दूँगा जिस समय सुलैमान राजा रहेगा। [10]सुलैमान मेरे नाम का एक मन्दिर बनायेगा। सुलैमान मेरा पुत्र और मैं उसका पिता रहूँगा और मैं सुलैमान के राज्य को शक्तिशाली बनाऊँगा और उसके परिवार का कोई सदस्य सदा इस्राएल पर राज्य करेगा।'"

[11]दाऊद ने यह भी कहा, "पुत्र, अब यहोवा तुम्हारे साथ रहे। तुम सफल बनो और जैसा यहोवा ने कहा है, अपने यहोवा परमेश्वर का मन्दिर बनाओ। [12]यहोवा तुम्हें इस्राएल का राजा बनाएगा। यहोवा तुम्हें बुद्धि और समझ दे जिससे तुम लोगों का मार्गदर्शन कर सको और अपने यहोवा परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कर सको [13]और तुम्हें सफलता तब मिलेगी जब तुम उन नियमों और व्यवस्था के पालन में सावधान रहोगे जो यहोवा ने मूसा को इस्राएल के लिये दी थी। तुम शक्तिशाली और वीर बनो। डरो नहीं।

[14]"सुलैमान, मैंने यहोवा के मन्दिर की योजना बनाने में बड़ा परिश्रम किया है। मैंने तीन हजार सात सौ पचास टन सोना दिया है और मैंने लगभग सैंतीस हजार पाँच सौ टन चाँदी दी है। मैंने काँसा और लोहा इतना अधिक दिया है कि वह तौला नहीं जा सकता और मैंने लकड़ी एवं पत्थर दिये हैं। सुलैमान, तुम उसे और अधिक कर सकते हो। [15]तुम्हारे पास बहुत से संगतराश और बढ़ई हैं। तुम्हारे पास हर एक प्रकार के काम करने वाले कुशल व्यक्ति हैं। [16]वे सोना, चाँदी, काँसा, और लोहे का काम करने में कुशल हैं। तुम्हारे पास इतने अधिक कुशल व्यक्ति हैं कि वे गिने नहीं जा सकते। अब काम आरम्भ करो और यहोवा तुम्हारे साथ है।"

[17]तब दाऊद ने इस्राएल के सभी प्रमुखों को अपने पुत्र सुलैमान की सहायता करने का आदेश दिया। [18]दाऊद ने उन प्रमुखों से कहा, "यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे साथ है। उसने तुम्हें शान्ति का समय दिया है। यहोवा ने हम लोगों के चारों ओर रहने वाले

सुलैमान यह नाम हिब्रू में "शान्ति" अर्थ रखने वाले शब्द की तरह है।

लोगों को पराजित करने में सहायता की है। अब यहोवा और उसके लोगों ने इस भूमि पर पूरा अधिकार किया है। [19]अब तुम अपने हृदय और आत्मा को अपने यहोवा परमेश्वर को समर्पित कर दो और वह जो कहे, करो। यहोवा परमेश्वर का पवित्र स्थान बनाओ। यहोवा के नाम के लिये मन्दिर बनाओ। तब साक्षीपत्र का सन्दूक तथा अन्य सभी पवित्र चीज़ें मन्दिर में लाओ।"

मन्दिर में लेवीवंशियों द्वारा सेवा की योजना

23 दाऊद बूढ़ा हो गया, इसलिये उसने अपने पुत्र सुलैमान को इस्राएल का नया राजा बनाया। [2]दाऊद ने इस्राएल के सभी प्रमुखों को इकट्ठा किया। उसने याजकों और लेवीवंशियों को भी इकट्ठा किया। [3]दाऊद ने तीस वर्ष और उससे ऊपर की उम्र के लेवीवंशियों को गिना। सब मिलाकर अड़तीस हजार लेवीवंशी थे। [4]दाऊद ने कहा, "चौबीस हजार लेवीवंशी यहोवा के मन्दिर के निर्माण कार्य की देखभाल करेंगे। छ: हजार लेवीवंशी सिपाही और न्यायाधीश होंगे। [5]चार हजार लेवीवंशी द्वारपाल होंगे और चार हजार लेवीवंशी संगीतज्ञ होंगे। मैंने उनके लिये विशेष वाद्य बनाए हैं। वे उन वाद्यों का उपयोग यहोवा की स्तुति के लिए करेंगे।"

[6]दाऊद ने लेवीवंशियों को तीन वर्गों में बाँट दिया। वे लेवी के तीन पुत्रों गेर्शोन, कहात और मरारी के परिवार समूह थे।

गेर्शोन के परिवार समूह

[7]गेर्शोन के परिवार समूह से लादान और शिमी थे। [8]लादान के तीन पुत्र थे। उसका सबसे बड़ा पुत्र यहीएल था। उसके अन्य पुत्र जेताम और योएल थे। [9]शिमी के पुत्र शलोमीत, हजीएल और हारान थे। ये तीनों पुत्र लादान के परिवारों के प्रमुख थे।

[10]शिमी के चार पुत्र थे। वे यहत, जीना, यूश और बरीआ थे। [11]यहत सबसे बड़ा और जीजा दूसरा पुत्र था। किन्तु यूश और बरीआ के बहुत से पुत्र नहीं थे। इसलिए यूश और बरीआ एक परिवार के रूप में गिने जाते थे।

कहात का परिवार समूह

[12]कहात के चार पुत्र थे। वे अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल थे। [13]अम्राम के पुत्र हारून और मूसा थे। हारून अति विशेष होने के लिये चुना गया था। हारून और उसके वंशज सदा–सदा के लिये विशेष होने को चुने गए थे। वे यहोवा की सेवा के लिये पवित्र चीज़े बनाने के लिये चुने गए थे। हारून और उसके वंशज यहोवा के सामने सुगन्धि जलाने के लिये चुने गए थे। वे यहोवा की सेवा याजक के रूप में करने के लिये चुने गए थे। वे यहोवा के नाम का उपयोग करने और लोगों को आशीर्वाद देने के लिये सदा के लिये चुने गए थे।

[14]मूसा परमेश्वर का व्यक्ति था। मूसा के पुत्र, लेवी के परिवार समूह के भाग थे। [15]मूसा के पुत्र गेर्शोम और एलीएजेर थे। [16]गेर्शोम का बड़ा पुत्र शबूएल था। [17]एलीएजेर का बड़ा पुत्र रहब्याह था। एलीएजेर के और कोई पुत्र नहीं थे। किन्तु रहब्याह के बहुत से पुत्र थे।

[18]यिसहार का सबसे बड़ा पुत्र शलोमीत था।

[19]हेब्रोन का सबसे बड़ा पुत्र यरीय्याह था। हेब्रोन का दूसरा पुत्र अमर्याह था। यहजीएल तीसरा पुत्र था और यकमाम चौथा पुत्र था।

[20]उज्जीएल का सबसे बड़ा पुत्र मीका था और यिशिय्याह उसका दूसरा पुत्र था।

मरारी का परिवार समूह

[21]मरारी के पुत्र महली और मूशी थे। महली के पुत्र एलीआज़र और कीश थे। [22]एलीआज़र बिना पुत्रों के मरा। उसकी केवल पुत्रियाँ थीं। एलीआज़र की पुत्रियों ने अपने सम्बन्धियों से विवाह किया। उनके सम्बन्धी कीश के पुत्र थे। [23]मूशी केपुत्र महली, एदेर और यरेमोत थे। सब मिला कर तीन पुत्र थे।

लेवीवंशियों के काम

[24]लेवी के वंशज ये थे। वे अपने परिवार के अनुसार सूची में अंकित थे। वे परिवारों के प्रमुख थे। हर एक व्यक्ति का नाम सूची में अंकित था। जो सूची में अंकित थे, वे बीस वर्ष के या उससे ऊपर के थे। वे यहोवा के मन्दिर में सेवा करते थे।

[25]दाऊद ने कहा था, "इस्राएल के यहोवा परमेश्वर ने अपने लोगों को शान्ति दी है। यहोवा यरूशलेम में सदैव रहने के लिये आ गया है। [26]इसलिये लेवीवंशियों को पवित्र तम्बू या इसकी सेवा में काम आने वाली किसी चीज़ को भविष्य में ढोने की आवश्यकता नहीं है।"

[27]दाऊद के अन्तिम निर्देश इस्राएल के लोगों के लिये, लेवी के परिवार समूह के वंशजों को गिनना था। उन्होंने लेवीवंशियों के बीस वर्ष और उससे ऊपर के व्यक्तियों को गिना।

[28]लेवीवंशियों का काम हारून के वंशजों को यहोवा के मन्दिर में सेवा कार्य करने में सहायता करना था। लेवीवंशी मन्दिर के आँगन और बगल के कमरों की भी देखभाल करते थे। उनका काम सभी पवित्र चीज़ों को शुद्ध करने का था। उनका काम यह भी था कि परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करें। [29]मन्दिर में विशेष रोटी को मेज पर रखने का उत्तरदायित्व उनका ही था। वे आटा, अन्नबलि और अखमीरी रोटी के लिये भी उत्तरदायी थे। वे पकाने की कढ़ाईयों और मिश्रित भेंटों के लिए भी उत्तरदायी थे। वे सारा नाप तौल का काम करते थे। [30]लेवीवंशी हर एक प्रात: खड़े होते थे और यहोवा का धन्यवाद और स्तुति करते थे। वे इसे हर सन्ध्या को भी करते थे। [31]लेवीवंशी यहोवा को सभी होमबलियाँ विश्राम के विशेष दिनों, नवचन्द्र उत्सवों और सभी अन्य विशेष पर्व के दिनों पर तैयार करते थे। वे यहोवा के सामने प्रतिदिन सेवा करते थे। कितने लेवीवंशी हर बार सेवा करेंगे इसके लिये विशेष नियम थे। [32]अत: लेवीवंशी वे सब काम करते थे जिनकी आशा उनसे की जाती थी। वे पवित्र तम्बू की देखभाल करते थे। वे पवित्र स्थान की देखभाल करते थे और वे अपने सम्बन्धियों हारून के वंशज याजकों को सहायता देते थे। लेवीवंशी यहोवा के मन्दिर में सेवा करके याजकों की सेवा करते थे।

याजकों के समूह

24 हारून के पुत्रों के ये समूह थे: हारून के पुत्र नादाब, अबीहू, एलीआजर और ईतामार थे। [2]किन्तु नादाब और अबीहू अपने पिता की मृत्यु के पहले ही मर गये और नादाब और अबीहू के कोई पुत्र नहीं था इसलिये एलीआजर और ईतामार ने याजक के रूप में कार्य किया। [3]दाऊद ने एलीआजर और ईतामार के परिवार समूह को दो भिन्न समूहों में बाँटा। दाऊद ने यह इसलिये किया कि ये समूह उनको दिये गए कर्तव्यों को पूरा कर सकें। दाऊद ने यह सादोक और अहीमेलेक की सहायता से किया। सादोक एलीआज़र का वंशज था और अहीमेलेक ईतामार का वंशज था। [4]एलीआज़र के परिवार समूह के प्रमुख ईतामार के परिवार समूह के प्रमुखों से अधिक थे। एलीआजर के परिवार समूह के सोलह प्रमुख थे और ईतामार के परिवार समूह से आठ प्रमुख थे। [5]हर एक परिवार से पुरुष चुने गए थे। वे गोट डालकर चुने गए थे। कुछ व्यक्ति पवित्र स्थान के अधिकारी चुने गए थे और अन्य व्यक्ति याजक के रूप में सेवा के लिये चुने गए थे। ये सभी व्यक्ति एलीआजर और ईतामार के परिवार से चुने गए थे।

[6]शमायाह सचिव* था। वह नतनेल का पुत्र था। शमायाह लेवी परिवार समूह से था। शमायाह ने उन वंशजों के नाम लिखे। उसने उन नामों को राजा दाऊद और इन प्रमुखों के सामने लिखा। याजक सादोक, अहीमेलेक तथा याजक और लेवीवंशियों के परिवारों के प्रमुख। अहीमेलेक एब्यातार का पुत्र था। हर एक बार वे गोट डालकर एक व्यक्ति चुनते थे और शमायाह उस व्यक्ति का नाम लिख लेता था। इस प्रकार उन्होंने एलीआजर और ईतामार के परिवारों में काम को बाँटा।

[7] पहला समूह यहोयारीब का था।
दूसरा समूह यदायाह का था।
[8] तीसरा समूह हारीम का था।
चौथा समूह सोरीम का था।
[9] पाँचवाँ समूह मल्किय्याह का था।
छठा समूह मिय्यामीन का था।
[10] सातवाँ समूह हक्कोस का था।
आठवाँ समूह अबिय्याह का था।
[11] नवाँ समूह येशू का था।
दसवाँ समूह शकन्याह का था।
[12] ग्यारहवाँ समूह एल्याशीब का था।
बारहवाँ समूह याकीम का था।
[13] तेरहवाँ समूह हुप्पा का था।
चौदहवाँ समूह येसेबाब का था।
[14] पन्द्रहवाँ समूह बिल्गा का था।
सोलहवाँ समूह इम्मेर का था।
[15] सत्रहवाँ समूह हेजीर का था।
अट्ठारहवाँ समूह हप्पित्सेस का था।
[16] उन्नीसवाँ समूह पतह्याह का था।
बीसवाँ समूह यहेजकेल का था।

सचिव वह व्यक्ति जो पुस्तकें और पत्र लिखता और उसकी प्रतिलिपि करता था।

[17] इक्कीसवाँ समूह याकीन का था।
बाईसवाँ समूह गामूल का था।
[18] तेईसवाँ समूह दलायाह का था।
चौबीसवाँ समूह माज्याह का था।

[19]यहोवा के मन्दिर में सेवा करने के लिये ये समूह चुने गये थे। वे मन्दिर में सेवा के लिये हारून के नियमों को मानते थे। इस्राएल के यहोवा परमेश्वर ने इन नियमों को हारून को दिया था।

अन्य लेवीवंशी

[20]ये नाम शेष लेवी के वंशजों के हैं:
अम्राम के वंशजों से शूबाएल।
शूबाएल के वंशजों से: येहदयाह।
[21] रहब्याह से: यिश्शिय्याह (यिश्शिय्याह सबसे बड़ा पुत्र था।)
[22] इसहारी परिवार समूह से: शलोमोत।
शलोमोत के परिवार से: यहत।
[23] हेब्रोन का सबसे बड़ा पुत्र यरिय्याह था।
अमर्याह हेब्रोन का दूसरा पुत्र था।
यहजीएल तीसरा पुत्र था,
और यकमाम चौथा पुत्र
[24] उज्जीएल का पुत्र मीका था।
मीका का पुत्र शामीर था।
[25] यिश्शिय्याह मीका का भाई था। यिश्शिय्याह का पुत्र जकर्याह था।
[26] मरारी के वंशज महली, मूशी और उसका पुत्र याजिय्याह थे।
[27] मरारी के पुत्र याजिय्याह के पुत्र शोहम और जक्कू नाम के थे।
[28] महली का पुत्र एलीआजर था
किन्तु एलीआजर का कोई पुत्र न था।
[29] कीश का पुत्र यरह्मेल था।
[30] मूशी के पुत्र महली, एदेर और यरीमोत थे।

वे लेवीवंश परिवारों के प्रमुख हैं। वे अपने परिवारों की सूची में हैं। [31]वे विशेष कामों के लिये चुने गए थे। वे अपने सम्बन्धी याजकों की तरह गोट डालते थे। याजक हारून के वंशज थे। उन्होंने राजा दाऊद, सादोक, अहीमेलेक और याजकों तथा लेवी के परिवारों के प्रमुखों के सामने गोटें डालीं। जब उनके काम चुने गये पुराने और नये परिवारों के एक सा व्यवहार हुआ।

संगीत समूह

25 दाऊद और सेनापतियों ने आसाप के पुत्रों को विशेष सेवा के लिये अलग किया। आसाप के पुत्र हेमान और यदूतून थे। उनका विशेष काम परमेश्वर के सन्देश की भविष्यवाणी सारंगी, वीणा, मंजीरे का उपयोग करके करना था। यहाँ उन पुरुषों की सूची है जिन्होंने इस प्रकार सेवा की।

[2]आसाप के परिवार से: जक्कूर, योसेप, नतन्याह और अशरेला थे। राजा दाऊद ने आसाप को भविष्यवाणी के लिये चुना और आसाप ने अपने पुत्रों का नेतृत्व किया।

[3]यदूतून परिवार से: गदल्याह, सरी, यशायाह, शिमी, हसब्याह और मत्तित्याह। ये छः थे। यदूतून ने अपने पुत्रों का नेतृत्व किया। यदूतून ने सारंगी का उपयोग भविष्यवाणी करने और यहोवा को धन्यवाद देने और उसकी स्तुति के लिये किया।

[4]हेमान के पुत्र जो सेवा करते थे बुक्किय्याह, मत्तन्याह, लज्जीएल, शबूएल, और यरीमोत, हनन्याह, हनानी, एलीआता, गिद्दलती और रोममतीएजेर, योशबकाशा, मल्लोती, होतीर और महजीओत थे। [5]ये सभी व्यक्ति हेमान के पुत्र थे। हेमान दाऊद का दृष्टा था। परमेश्वर ने हेमान को शक्तिशाली बनाने का वचन दिया। इसलिए हेमान के कई पुत्र थे। परमेश्वर ने हेमान को चौदह पुत्र और तीन पुत्रियाँ दीं। [6]हेमान ने अपने सभी पुत्रों का यहोवा के मन्दिर में गाने में नेतृत्व किया। उन पुत्रों ने मन्जीरे, वीणा और तम्बूरे का उपयोग किया। उनका परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करने का वही तरीका था। राजा दाऊद ने उन व्यक्तियों को चुना था। [7]वे व्यक्ति और लेवी के परिवार समूह के उनके सम्बन्धी गायन में प्रशिक्षित थे। दो सौ अट्ठासी व्यक्तियों ने यहोवा की प्रशंसा के गीत गाना सीखा। [8]हर एक व्यक्ति जिस भिन्न कार्य को करेगा, उसके चुनाव के लिए वे गोट डालते थे। हर एक व्यक्ति के साथ समान व्यवहार होता था। बूढ़े और जवान के साथ समान व्यवहार था और गुरु के साथ वही व्यवहार था जो शिष्य के साथ।

[9]पहले, आसाप (यूसुफ) के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए थे।

दूसरे, गदल्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[10]तीसरे, जक्कूर के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[11]चौथे, यिस्री के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[12]पाँचवें, नतन्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[13]छठे, बुक्किय्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[14]सातवें, यसरेला के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[15]आठवें, यशायाह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[16]नवें, मत्तन्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[17]दसवें, शिमी के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[18]ग्यारहवें, अजरेल के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[19]बारहवें, हशब्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[20]तेरहवें, शूबाएल के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[21]चौदहवें, मत्तिय्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[22]पन्द्रहवें, यरेमोत के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[23]सोलहवें, हनन्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[24]सत्रहवें, योशबकाशा के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[25]अट्ठारहवें, हनानी के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[26]उन्नीसवें, मल्लोती के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[27]बीसवें, इलिय्याता के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[28]इक्कीसवें, होतीर के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[29]बाईसवें, गिद्दलती के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[30]तेईसवें, महजीओत के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

[31]चौबीसवें, रोममतीएजेर के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह व्यक्ति चुने गए।

द्वारपाल

26 द्वारपालों के समूह:

कोरह परिवार से ये द्वारपाल हैं। मशेलेम्याह और उसके पुत्र। (मशेलेम्याह कोरह का पुत्र था। वह आसाप परिवार समूह से था।) [2]मशेलेम्याह के पुत्र थे। जकर्याह सबसे बड़ा पुत्र था। यदीएल दूसरा पुत्र था। जबद्याह तीसरा पुत्र था। यतीएल चौथा पुत्र था। [3]एलाम पाँचवाँ पुत्र था। यहोहानान छठाँ पुत्र था और एल्यहोएनै सातवाँ पुत्र था।

[4]ओबेदेदोम और उसके पुत्र। ओबेदेदोम का सबसे बड़ा पुत्र शमायाह था। यहोजाबाद उसका दूसरा पुत्र था। योआह उसका तीसरा पुत्र था। साकार उसका चौथा पुत्र था। नतनेल उसका पाँचवाँ पुत्र था। [5]अम्मीएल उसका छठाँ पुत्र था। इस्साकार उसका सातवाँ पुत्र था और पुल्लतै उसका आठवाँ पुत्र था। परमेश्वर ने सचमुच ओबेदेदोम * को वरदान दिया। [6]ओबेदेदोम का पुत्र शमायाह था। शमायाह के भी पुत्र थे। शमायाह के पुत्र अपने पिता के परिवार में प्रमुख थे क्योंकि वे वीर योद्धा थे। [7]शमायाह के पुत्र ओती, रपाएल, ओबेद, एलजाबाद, एलीहू और समक्याह थे। एलजाबाद के सम्बन्धी कुशल कारीगर थे। [8]वे सभी लोग ओबेदेदोम के वंशज थे। वे पुरुष और उनके पुत्र तथा उनके सम्बन्धी शक्तिशाली लोग थे। वे अच्छे रक्षक थे। ओबेदेदोम के बासठ वंशज थे।

[9]मशेलेम्याह के पुत्र और सम्बन्धी शक्तिशाली लोग थे। सब मिलाकर अट्ठारह पुत्र और सम्बन्धी थे।

ओबेदेदोम परमेश्वर ने ओबेदेदोम को वरदान दिया था जब साक्षीपत्र का सन्दूक उसके घर पर ठहरा था।

[10]मरारी के परिवार से ये द्वारपाल थे उनमें एक होसा था। शिम्री प्रथम पुत्र चुना गया था। शिम्री वास्तव में सबसे बड़ा नहीं था, किन्तु उसके पिता ने उसे पहलौठा पुत्र चुन लिया था। [11]हिल्किय्याह उसका दूसरा पुत्र था। तबल्याह उसका तीसरा पुत्र था और जकर्याह उसका चौथा पुत्र था। सब मिलाकर होसा के तेरह पुत्र और सम्बन्धी थे।

[12]ये द्वारपालों के समूह के प्रमुख थे। द्वारपालों का यहोवा के मन्दिर में सेवा करने का विशेष ढंग था, जैसा कि उनके सम्बन्धी करते थे। [13]हर एक परिवार को एक द्वार रक्षा करने के लिये दिया गया था। एक परिवार के लिये द्वार चुनने को गोट डाली जाती थी। बुढ़े और जवानों के साथ एक समान बर्ताव किया जाता था।

[14]शेलेम्याह पूर्वी द्वार की रक्षा के लिये चुना गया था। तब शेलेम्याह के पुत्र जकर्याह के लिये गोट डाली गई। जकर्याह एक बुद्धिमान सलाहकार था। जकर्याह उत्तरी द्वार के लिये चुना गया। [15]ओबेदेदोम दक्षिण द्वार के लिये चुना गया और ओबेदेदोम के पुत्र उस गृह की रक्षा के लिये चुने गए जिसमें कीमती चीज़ें रखी जाती थीं। [16]शुप्पीम और होसा पश्चिमी द्वार और ऊपरी सड़क पर शल्लेकेत द्वार के लिये चुने गए।

द्वारपाल एक दूसरे की बगल में खड़े होते थे। [17]पूर्वी द्वार पर लेवीवंशी रक्षक हर दिन खड़े होते थे। उत्तरी द्वार पर हर दिन चार लेवीवंशी रक्षक खड़े होते थे। दक्षिणी द्वार पर चार लेवीवंशी रक्षक खड़े होते थे और दो लेवीवंशी रक्षक उस गृह की रक्षा करते थे जिसमें कीमती चीज़ें रखी जाती थीं। [18]चार रक्षक पश्चिमी न्यायगृह पर थे और दो रक्षक न्यायगृह तक की सड़क पर थे।

[19]ये द्वारपालों के समूह थे। वे द्वारपाल कोरह और मरारी के परिवार में से थे।

कोषाध्यक्ष और अन्य अधिकारी

[20]अहिय्याह लेवी के परिवार समूह से था। अहिय्याह परमेश्वर के मन्दिर की मूल्यवान चीज़ों की देखभाल का उत्तरदायी था। अहिय्याह उन स्थानों की रक्षा के लिये भी उत्तरदायी था जहाँ पवित्र वस्तुएँ रखी जाती थी।

[21]लादान गेर्शोन परिवार से था। यहोएल लादान परिवार समूह के प्रमुखों में से एक था। [22]यहोएला के पुत्र जेताम और जेताम का भाई योएल थे। वे यहोवा के मन्दिर में बहुमूल्य चीज़ों के लिये उत्तरदायी थे।

[23]अन्य प्रमुख अम्राम, यिसहार, हेब्रोन ओर उज्जीएल के परिवार समूह से चुने गए थे। [24]शबूएल यहोवा के मन्दिर में मूल्यवान चीज़ों की रक्षा का उत्तरदायी प्रमुख था। शबूएल गेर्शेम का पुत्र था। गेर्शोम मूसा का पुत्र था। [25]ये शबूएल के सम्बन्धी थे: एलीआजर से उसके सम्बन्धी थे: एलीआजर का पुत्र रहब्याह, रहब्याह का पुत्र यशायाह, यशायाह का पुत्र योराम, योराम का पुत्र जिक्री और जिक्री का पुत्र शलोमोत। [26]शलोमोत और उसके सम्बन्धी उन सब चीज़ों के लिये उत्तरदायी थे जिसे दाऊद ने मन्दिर के लिये इकट्ठा किया था। सेना के अधिकारियों ने भी मन्दिर के लिये चीज़ें दीं। [27]उन्होंने युद्धों में ली गयी चीजों में से कुछ चीज़ें दीं। उन्होंने यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये वे चीज़ें दीं। [28]शलोमोत और उसके सम्बन्धी दृष्टा शमूएल, कीश के पुत्र शाऊल, नेर के पुत्र अब्नेर; सरूयाह के पुत्र योआब द्वारा दी गई पवित्र वस्तुओं की भी रक्षा करते थे। शलोमोत और उसके सम्बन्धी लोगों द्वारा, यहोवा को दी गई सभी पवित्र चीज़ों की रक्षा करते थे।

[29]कनन्याह यिसहार परिवार का था। कनन्याह और उसके पुत्र मन्दिर के बाहर का काम करते थे। वे इस्राएल के विभिन्न स्थानों पर सिपाही और न्यायाधीश का कार्य करते थे। [30]हशव्याह हेब्रोन परिवार से था। हशव्याह और उसके सम्बन्धी यरदन नदी के पश्चिम में इस्राएल के राजा दाऊद के कामों और यहोवा के सभी कामों के लिये उत्तरदायी थे। हशव्याह के समूह में एक हजार सात सौ शक्तिशाली व्यक्ति थे। [31]हेब्रोन का परिवार समूह इस बात पर प्रकाश डालता है कि यरिय्याह उनका प्रमुख था। जब दाऊद चालीस वर्ष तक राजा रह चुका, तो उसने अपने लोगों को परिवार के इतिहासों से शक्तिशाली और कुशल व्यक्तियों की खोज का आदेश दिया। उनमें से कुछ हेब्रोन परिवार में मिले जो गिलाद के याजेर नगर में रहते थे। [32]यरिय्याह के पास दो हजार सात सौ सम्बन्धी थे जो शक्तिशाली लोग थे और परिवारों के प्रमुख थे। दाऊद ने उन दो हजार सात सौ सम्बन्धियों को रूबेन, गाद और आधे मनश्शे के परिवार के संचालन और यहोवा एवं राजा के कार्य का उत्तरदायित्व सौंपा।

सेना के समूह

27 यह उन इस्राएली लोगों की सूची है जो राजा की सेना में सेवा करते थे। हर एक समूह

हर वर्ष एक महीने अपने काम पर रहता था। उसमें परिवारों के शासक, नायक, सेनाध्यक्ष और सिपाही लोग थे जो राजा की सेवा करते थे। हरएक सेना के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

[2]याशोबाम पहले महीने के पहले समूह का अधीक्षक था। याशोबाम जब्दीएल का पुत्र था। याशोबाम के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे। [3]याशोबाम पेरेस के वंशजों में से एक था। याशोबाम पहले महीने के लिये सभी सैनिक अधिकारियों का प्रमुख था।

[4]दोदै दूसरे महीने के लिये सेना समूह का अधीक्षक था। वह अहोही से था। दोदै के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

[5]तीसरा सेनापति बनायाह था। बनायाह तीसरे महीने का सेनापति था। बनायाह यहोयादा का पुत्र था। यहोयादा प्रमुख याजक था। बनायाह के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे। [6]यह वही बनायाह था जो तीस वीरों में से एक वीर सैनिक था। बनायाह उन व्यक्तियों का संचालन करता था। बनायाह का पुत्र अम्मीजाबाद बनायाह के समूह का अधीक्षक था।

[7]चौथा सेनापति असाहेल था। असाहेल चौथे महीने का सेनापति था। असाहेल योआब का भाई था। बाद में, असाहेल के पुत्र जबद्याह ने उसका स्थान सेनापति के रूप में लिया। असाहेल के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

[8]पाँचवाँ सेनापति शम्हूत था, शम्हूत पाँचवें महीने का सेनापति था। शम्हूत यिज्राही के परिवार से था। शम्हूत के समूह में चौबीस हजार व्यक्ति थे।

[9]छठाँ सेनापति ईरा था। ईरा छठें महीने का सेनापति था। ईरा इक्केश का पुत्र था। इक्केश तकोई नगर से था। ईरा के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

[10]सातवाँ सेनापति हेलेस था। हेलेस सातवें महीने का सेनापति था। वह पेलोनी लोगों से था और एप्रैम का वंशज था। हेलेस के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

[11]सिब्बकै आठवाँ सेनापति था। सिब्बकै आठवें महीने का सेनापति था। सिब्बकै हूश से था। सिब्बकै जेरह परिवार का था। सिब्बकै के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

[12]नवाँ सेनापति अबीएजेर था। अबीएजेर नवें महीने का सेनापति था। अबीएजेर अनातोत नगर से था। अबीएजेर बिन्यामीन के परिवार समूह का था। अबीएजेर के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

[13]दसवाँ सेनापति महरै था। महरै दसवें महीने का सेनापति था। महरै नतोप से था। वह जेरह परिवार का था। महरै के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

[14]ग्यारहवाँ सेनापति बनायाह था। बनायाह ग्यारहवें महीने का सेनापति था। बनायाह पिरातोन से था। बनायाह एप्रैम के परिवार समूह का था। बनायाह के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

[15]बारहवाँ सेनापति हेल्दै था। हेल्दै बारहवें महीने का सेनापति था। हेल्दै, नतोपा, नतोप से था। हल्दै ओत्नीएल के परिवार का था। हल्दै के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

परिवार समूह के प्रमुख

[16]इस्राएल के परिवार समूहों के प्रमुख ये थे:

रूबेन: जिक्री का पुत्र एलीआजर।
शिमोन: माका का पुत्र शपत्याह।
[17] लेवी: शमूएल का पुत्र हशव्याह।
हारून: सादोक।
[18] यहूदा: एलीहू (एलीहू दाऊद के भाईयों में से एक था।)
इस्साकार: मीकाएल का पुत्र ओम्री।
[19] जबूलून: ओबद्याह का पुत्र यिशमायाह,
नप्ताली: अज्रीएल का पुत्र यरीमोत।
[20] एप्रैम: अजज्याह का पुत्र होशे।
पश्चिमी मनश्शे: फ़दायाह का पुत्र योएल।
[21] पूर्वी मनश्शे: जकर्याह का पुत्र इद्दो।
बिन्यामीन: अब्नेर का पुत्र यासीएल।
[22] दान: यारोहाम का पुत्र अजरेल।

वे इस्राएल के परिवार समूह के प्रमुख थे।

दाऊद इस्राएलियों की गणना करता है

[23]दाऊद ने इस्राएल के लोगों की गणना का निश्चय किया। वहाँ बहुत अधिक लोग थे क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को आसमान के तारों के बराबर बनाने की प्रतिज्ञा की थी। अत: दाऊद ने बीस वर्ष और उससे ऊपर के पुरुषों की गणना की। [24]सरूयाह के पुत्र योआब ने लोगों को गिनना आरम्भ किया। किन्तु उसने गणना

को पूरा नहीं किया। परमेश्वर इस्राएल के लोगों पर क्रोधित हो गया। यही कारण है कि लोगों की संख्या "राजा दाऊद के इतिहास" की पुस्तक में नहीं लिखी गई।

राजा के प्रशासक

[25]यह उन व्यक्तियों की सूची है जो राजा की सम्पत्ति के लिये उत्तरदायी थे:

अदीएल का पुत्र अजमावेत राजा के भण्डारों का अधीक्षक था।
उज्जिय्याह का पुत्र यहोनातान छोटे नगरों के भण्डारों, गाँव, खेतों और मीनारों का अधीक्षक था।
[26] कलूब का पुत्र एज्री कृषि–मजदूरों का अधीक्षक था।
[27] शिमी अंगूर के खेतों का अधीक्षक था। शिमी रामा नगर का था।
जब्दी अंगूर के खेतों से आने वाली दाखमधु की देखभाल और भंडारण करने का अधीक्षक था। जब्दी शापाम का था।
[28] बाल्हानान पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश में जैतून और देवदार वृक्षों का अधीक्षक था। बाल्हानान गदेर का था।
योआश जैतून के तेल के भंडारण का अधीक्षक था।
[29] शित्रै शारोन क्षेत्र में पशुओं का अधीक्षक था। शित्रै शारोन क्षेत्र का था।
अदलै का पुत्र शापात घाटियों में पशुओं का अधीक्षक था।
[30] ओबील ऊँटों का अधीक्षक था। ओबील इश्माएली था।
येहदयाह गधों का अधीक्षक था। येहदयाह एक मेरोनोतवासी था।
[31] याजीज भेड़ों का अधीक्षक था। याजीज हग्री लोगों में से था।

ये सभी व्यक्ति वे प्रमुख थे जो दाऊद की सम्पत्ति की देखभाल करते थे।

[32]योनातान एक बुद्धिमान सलाहकार और शास्त्री था। योनातान दाऊद का चाचा था। हक्मोन का पुत्र एहीएल राजा के पुत्रों की देखभाल करता था। [33]अहीतोपेल राजा का सलाहकार था। हूशै राजा का मित्र था। हूशै एरेकी लोगों में से था। [34]बाद में यहोयादा और एब्यातार ने राजा के सलाहकार के रूप में अहीतोपेल का स्थान लिया। यहोयादा बनायाह का पुत्र था। योआब राजा की सेना का सेनापति था

दाऊद मन्दिर की योजना बनाता है।

28 दाऊद ने इस्राएल के सभी प्रमुखों को इकट्ठा किया। उसने सभी प्रमुखों को यरूशलेम आने का आदेश दिया। दाऊद ने परिवार समूहों के प्रमुखों, राजा की सेवा करने वाली सेना की टुकड़ियों के सेनापतियों, सेनाध्यक्षों राजा और उनके पुत्रों के जानवरों तथा सम्पत्ति की देखभाल करने वाले अधिकारियों, राजा के महत्वपूर्ण अधिकारियों, शक्तिशाली वीरों और सभी वीर योद्धाओं को बुलाया।

[2]राजा दाऊद खड़ा हुआ और कहा, "मेरे भाईयों और मेरे लोगों, मेरी बात सुनों। मैं अपने हृदय से यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को रखने के लिये एक स्थान बनाना चाहता हूँ। मैं एक ऐसा स्थान बनाना चाहता हूँ जो परमेश्वर का पद पीठ * बन सके और मैंने परमेश्वर के लिये एक मन्दिर बनाने की योजना बनाई। [3]किन्तु परमेश्वर ने मुझसे कहा, 'नहीं दाऊद, तुम्हें मेरे नाम पर मन्दिर नहीं बनाना चाहिये। तुम्हें यह नहीं करना चाहिये क्योंकि तुम एक योद्धा हो और तुमने बहुत से व्यक्तियों को मारा है।'

[4]"यहोवा इस्राएल के परमेश्वर ने इस्राएल के परि वार समूहों का नेतृत्व करने के लिये यहूदा के परिवार समूह को चुना। तब उस परिवार समूह में से, यहोवा ने मेरे पिता के परिवार को चुना और उस परिवार से परमेश्वर ने मुझे सदा के लिये इस्राएल का राजा चुना। परमेश्वर मुझे इस्राएल का राजा बनाना चाहता था। [5]यहोवा ने मुझे बहुत से पुत्र दिये हैं और उन सारे पुत्रों में से, सुलैमान को यहोवा ने इस्राएल का नया राजा चुना। परन्तु इस्राएल सचमुच यहोवा का राज्य है। [6]यहोवा ने मुझसे कहा, 'दाऊद, तुम्हारा पुत्र सुलैमान मेरा मन्दिर और इसके चारों ओर का क्षेत्र बनाएगा। क्यों? क्योंकि मैंने सुलैमान को

पदपीठ प्राय: यह कुर्सी के सामने एक छोटा पद–पीठ था, यहाँ इसका अर्थ मन्दिर है। यह ऐसा है मानों परमेश्वर राजा है और अपनी कुर्सी पर बैठा है और उसका पैर उस भवन पर है जिसे दाऊद बनाना चाहता था।

अपना पुत्र चुना है और मैं उसका पिता रहूँगा। * [7]अब सुलैमान मेरे नियमों और आदेशों का पालन कर रहा है। यदि वह मेरे नियमों का पालन करता रहता है तो मैं सुलैमान के राज्य को सदा के लिये शक्तिशाली बना दूँगा!'

[8]दाऊद ने कहा, "अब, इस्राएल और परमेश्वर के सामने मैं तुमसे ये बाते कहता हूँ: यहोवा अपने परमेश्वर के सभी आदेशों को मानने में सावधान रहो! तब तुम इस अच्छे देश को अपने पास रख सकते हो और तुम सदा के लिए इसे अपने वंशजों को दे सकते हो।

[9]"और मेरे पुत्र सुलैमान, तुम, अपने पिता के परमेश्वर को जानते हो। शुद्ध हृदय से परमेश्वर की सेवा करो। परमेश्वर की सेवा करने में अपने हृदय (मस्तिष्क) में प्रसन्न रहो। क्यों? क्योंकि यहोवा जानता है कि हर एक के हृदय (मस्तिष्क) में क्या है। हर बात जो सोचते हो, यहोवा जानता है। यदि तुम यहोवा के पास सहायता के लिये जाओगे, तो तुम्हें वह मिलेगी। किन्तु यदि उसको छोड़ते हो, तो वह तुमको सदा के लिये छोड़ देगा। [10]सुलैमान, तुम्हें यह समझना चाहिए कि यहोवा ने तुमको अपना पवित्र स्थान मन्दिर बनाने के लिये चुना है। शक्तिशाली बनो और कार्य को पूरा करो।"

[11]तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर बनाने के लिये योजनाएँ दीं। वे योजनाएँ मन्दिर के चारों ओर प्रवेश–कक्ष बनाने, इसके भवन, इसके भंडार–कक्ष, इसके ऊपरी कक्ष, इसके भीतरी कक्ष और दयापीठ * के स्थान के लिये थी। [12]दाऊद ने मन्दिर के सभी भागों के लिये योजनाएँ बनाई थी। दाऊद ने उन योजनाओं को सुलैमान को दिया। दाऊद ने यहोवा के मन्दिर के चारों ओर के आँगन और इसके चारों ओर के कक्षों की योजनाएँ दी। दाऊद ने मन्दिर के भंडारकक्षों और उन भंडारकक्षों की योजनाएँ दी जहाँ वे उन पवित्र चीज़ों को रखते थे जो मन्दिर में काम आती थीं। [13]दाऊद ने सुलैमान को, याजकों और लेवीवंशियों के समूहों के बारे में बताया। दाऊद ने सुलैमान को यहोवा के मन्दिर में सेवा करने के काम के बारे में और मन्दिर में काम आने वाली वस्तुओं के बारे में बताया। [14]दाऊद ने सुलैमान को बताया कि मन्दिर में काम आने वाली चीज़ों को बनाने में कितना सोना और चाँदी लगेगा। [15]सोने के दीपकों और दीपाधारों की योजनाएँ थी और चाँदी के दीपकों और दीपाधारों की योजनाएँ थी। दाऊद ने बताया कि हर एक दीपाधार और उसके दीपक के लिये कितनी सोने या चाँदी का उपयोग किया जाये। विभिन्न दीपाधार, जहाँ आवश्यकता थी, उपयोग में आने वाले थे। [16]दाऊद ने बताया कि पवित्र रोटी के लिये काम में आने वाली हर एक मेज के लिये कितना सोना काम में आएगा। दाऊद ने बताया कि चाँदी की मेज़ों के लिये कितनी चाँदी काम में आएगी। [17]दाऊद ने बताया कि कितना शुद्ध सोना, काँटे, छिड़काव की चिलमची और घड़े बनाने में लगेगा। दाऊद ने बताया कि हर एक तश्तरी बनाने में कितना सोना लगेगा और हर एक चाँदी की तश्तरी में कितनी चाँदी लगेगी। [18]दाऊद ने बताया कि सुगन्धि की वेदी के लिये कितना शुद्ध सोना लगेगा। दाऊद ने सुलैमान को परमेश्वर का रथ, यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर अपने पँखों को फैलाये करूब (स्वर्गदूत) के साथ दयापीठ की योजना भी दी। करूब (स्वर्गदूत) सोने के बने थे।

[19]दाऊद ने कहा, "ये सभी योजनाएं मुझे यहोवा से मिले निर्देशों के अनुसार बने हैं। यहोवा ने योजनाओं की हर एक चीज़ समझने में मुझे सहायता दी।"

[20]दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से यह भी कहा, "दृढ़ और वीर बनो और इस काम को पूरा करो। डरो नहीं, क्योंकि यहोवा, मेरा परमेश्वर तुम्हारे साथ है। वह तुम्हारी सहायता तब तक करेगा जब तक तुम्हारा यह काम पूरा नहीं हो जाता। वह तुमको छोड़ेगा नहीं। तुम यहोवा का मन्दिर बनाओगे। [21]परमेश्वर के मन्दिर का सभी काम करने के लिये याजकों और लेवीवंशियों के समूह तैयार हैं। सभी कामों में तुम्हें सहायता देने के लिये कुशल कारीगर तैयार है जो भी तुम आदेश दोगे उसका पालन अधिकारी और सभी लोग करेंगे।"

मन्दिर बनाने के लिये भेंट

29 राजा दाऊद ने वहाँ एक साथ इकट्ठे इस्राएल के सभी लोगों से कहा, "परमेश्वर ने मेरे पुत्र सुलैमान को चुना। सुलैमान बालक है और वह उन सब बातों को नहीं जानता जिनकी आवश्यकता

मैंने ... रहूँगा यह व्यक्त करता है कि परमेश्वर सुलैमान को राजा बना रहा था। देखें भजन 2:7

दयापीठ साक्षीपत्र के सन्दूक का भाग। हिब्रू शब्द का अर्थ "ढक्कन" आच्छादन और "प्रायश्चित्त–स्थान" हो सकता है।

उसे इस काम को करने के लिये है। किन्तु काम बहुत महत्वपूर्ण है। यह भवन लोगों के लिये नहीं है अपितु यहोवा परमेश्वर के लिये है। [2]मैंने पूरी शक्ति से अपने परमेश्वर के मन्दिर को बनाने की योजना पर काम किया है। मैंने सोने से बनने वाली चीज़ों के लिये सोना दिया है। मैंने चाँदी से बनने वाली चीज़ों के लिये चाँदी दी है। मैंने काँसे से बनने वाली चीज़ों के लिये काँसा दिया है। मैंने लोहे से बनने वाली चीज़ों के लिये लोहा दिया है। मैंने लकड़ी से बनने वाली चीज़ों के लिये लकड़ी दी है। मैंने नीलमणि,* रत्नजटित* फलकों* के लिये विभिन्न रंगों के सभी प्रकार के बहुमूल्य रत्न और श्वेत संगमरमर भी दिये हैं। मैंने यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये ये चीज़ें अधिक और बहुत अधिक संख्या में दी हैं। [3]मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर के लिये सोने और चाँदी की एक विशेष भेंट दे रहा हूँ। मैं यह इसलिये कर रहा हूँ कि मैं सचमुच अपने परमेश्वर के मन्दिर को बनाना चाहता हूँ। मैं इस पवित्र मन्दिर को बनाने के लिये इन सब चीज़ों को दे रहा हूँ। [4]मैंने ओपीर से एक सौ टन शुद्ध सोना दिया है। मैंने दो सौ साठ टन शुद्ध चाँदी दी है। चाँदी मन्दिर के भवनों की दीवारों के ऊपर मढ़ने के लिये है। [5]मैंने सोना और चाँदी उन सब चीजों के लिये दी हैं जो सोने और चाँदी की बनी होती हैं। मैंने सोना और चाँदी दिया है जिनसे कुशल कारीगर मन्दिर के लिये सभी विभिन्न प्रकार की चीज़ें बना सकेंगे। अब इस्राएल के लोगों, आप लोगों में से कितने आज यहोवा के लिये अपने को अर्पित करने के लिये तैयार हैं?"

[6]परिवारों के प्रमुख, इस्राएल के परिवार समूहों के प्रमुख, सेनाध्यक्ष, राजा के काम करने के लिये उत्तरदायी अधिकारी, सभी तैयार थे और उन्होंने बहुमूल्य चीज़ें दीं। [7]ये वे चीज़ें हैं जो उन्होंने परमेश्वर के गृह के लिये दीं: एक सौ नब्बे टन सोना, तीन सौ पचहत्तर टन चाँदी, छ:सौ पचहत्तर टन काँसा; तीन हजार सात सौ पचास टन लोहा; [8]जिन लोगों के पास कीमती रत्न थे उन्होंने यहोवा के मन्दिर के लिये दिये। यहीएल कीमती रत्नों का रक्षक बना। यहीएल गेर्शोन के परिवार में से था। [9]लोग बहुत प्रसन्न थे क्योंकि उनके प्रमुख उतना अधिक देने में प्रसन्न थे। प्रमुख स्वतन्त्रता पूर्वक खुले दिल से देने में प्रसन्न थे। राजा दाऊद भी बहुत प्रसन्न था।

दाऊद की सुन्दर प्रार्थना

[10]तब दाऊद ने उन लोगों के सामने, जो वहाँ एक साथ इकट्ठे थे, यहोवा की प्रशंसा की। दाऊद ने कहा:

"यहोवा इस्राएल का परमेश्वर, हमारा पिता,
सदा–सदा के लिये तेरी स्तुति हो!
[11] महानता, शक्ति, यश, विजय
और प्रतिष्ठा तेरी है!
क्यों? क्योंकि हर एक चीज़ धरती और
आसमान की तेरी ही है!
हे यहोवा! राज्य तेरा है;
तू हर एक के ऊपर शासक है।
[12] सम्पत्ति और प्रतिष्ठा तुझसे आती है।
तेरा शासन हर एक पर है।
तू शक्ति और बल अपने हाथ में रखता है!
तेरे हाथ में शक्ति है कि तू किसी को–
महान और शक्तिशाली बनाता है!
[13] अब, हमारे परमेश्वर हम तुझको
धन्यवाद देते हैं,
और हम तेरे यशस्वी नाम की स्तुति करते हैं!
[14] ये सभी चीजें मुझसे और मेरे
लोगों से नहीं आई हैं!
ये सभी चीज़ें तुझ से आई
और हमने तुझको वे चीज़ें दीं
जो तुझसे आई हैं ।
[15] हम अजनबी और यात्रियों के समान हैं!
हमारे सारे पूर्वज भी अजनबी हैं,
और यात्री रहे।
इस धरती पर हमारा समय जाती हुई छाया सा
है और हम इसे नहीं पकड़ सकते,
[16] हे यहोवा हमारा परमेश्वर, हमने ये सभी
चीज़ें तेरा मन्दिर बनाने के लिये इकट्ठी की हैं।
हम लोग तेरा मन्दिर तेरे नाम के सम्मान के
लिये बनायेंगे
किन्तु ये सभी चीज़ें तुझसे आई हैं
हर चीज़ तेरी है।

नीलमणि एक अर्द्ध बहुमूल्य पत्थर कई नीली या भूरी नगों के साथ।

रत्नजटित शाब्दिक लेप में रत्नों को जड़ना।

फलक वह आधार जिस पर रत्न जड़े जाते है।

[17] मेरे परमेश्वर, मैं यह भी जानता हूँ
तू लोगों के हृदयों की जाँच करता है,
और तू प्रसन्न होता है,
यदि लोग अच्छे काम करते हैं
मैं सच्चे हृदय से ये सभी चीज़े
देने में प्रसन्न था।
अब मैंने तेरे लोगों को वहाँ इकट्ठा देखा
जो ये चीज़ें तुझको देने में प्रसन्न हैं।
[18] हे यहोवा, तू परमेश्वर है
हमारे पूर्वज इब्राहीम, इसहाक और
इस्राएल का।
कृपया तू लोगों की सहायता सही योजना बनाने
में कर उन्हें तेरे प्रति विश्वास योग्य
और सच्चा होने में कर।
[19] और मेरे पुत्र सुलैमान को तेरे प्रति
सच्चा होने में सहायता दे तेरे
विधियों, नियमों और आदेशों को सर्वदा
पालन करने में उसकी सहायता कर।
उन कामों को करने में सुलैमान की
सहायता कर और उस महल को बनाने
में उसकी सहायता कर
जिसकी योजना मैंने बनाई है।"

[20]तब दाऊद ने वहाँ एक साथ इकट्ठे सभी समूहों के लोगों से कहा, "अब यहोवा, अपने परमेश्वर की स्तुति करो।" अत: सब ने यहोवा परमेश्वर, उस परमेश्वर को जिसकी उपासना उनके पूर्वजों ने की, स्तुति की। उन्होंने यहोवा तथा राजा को सम्मान देने के लिये धरती पर माथा टेक कर प्रणाम किया।

सुलैमान राजा होता है

[21]अगले दिन लोगों ने यहोवा को बलि भेंट दी। उन्होंने यहोवा को होमबलि दी। उन्होंने एक हजार बैल, एक हजार मेढ़ें एक हजार मेमनें भेंट में दिये और उन्होनें पेय-भेंट भी दी। इस्राएल के लोगों के लिये वहाँ अनेकानेक बलिदान किये गये। [22]उस दिन लोगों ने खाया और पिया और यहोवा वहाँ उनके साथ था। वे बहुत प्रसन्न थे और उन्होंने दाऊद के पुत्र सुलैमान को दूसरी बार राजा बनाया। * उन्होंने सुलैमान का अभिषेक राजा के रूप में किया और उन्होंने सादोक का अभिषेक याजक बनाने के लिये किया। उन्होंने यह उस स्थान पर किया जहाँ यहोवा था।

[23]तब सुलैमान राजा के रूप में यहोवा के सिहांसन पर बैठा। सुलैमान ने अपने पिता का स्थान लिया। सुलैमान बहुत सफल रहा। इस्राएल के सभी लोग सुलैमान का आदेश मानते थे। [24]सभी प्रमुख, सैनिक और राजा दाऊद के सभी पुत्रों ने सुलैमान को राजा के रूप में स्वीकार किया और उसकी आज्ञा का पालन किया। [25]यहोवा ने सुलैमान को बहुत महान बनाया। इस्राएल के सभी लोग जानते थे कि यहोवा सुलैमान को महान बना रहा है। यहोवा ने सुलैमान को वह सम्मान दिया जो एक राजा को मिलना चाहिये। सुलैमान के पहले इस्राएल के किसी राजा को यह सम्मान नहीं मिला।

दाऊद की मृत्यु

[26-27]यिशै का पुत्र दाऊद पूरे इस्राएल पर चालीस वर्ष तक राजा रहा। दाऊद हेब्रोन नगर में सात वर्ष तक राजा रहा। तब दाऊद यरूशलेम में तैंतीस वर्ष तक राजा रहा। [28]दाऊद तब मरा जब वह बूढ़ा था। दाऊद ने एक अच्छा लम्बा जीवन बिताया था। दाऊद के पास बहुत सम्पत्ति और प्रतिष्ठा थी और दाऊद का पुत्र सुलैमान उसके बाद राजा बना।

[29]वे कार्य, जो आरम्भ से लेकर अन्त तक दाऊद ने किये, सभी शमूएल दृष्टा की रचनाओं में और नातान नबी की रचनाओं में तथा गाद दृष्टा की रचनाओं में लिखे हैं। [30]वे रचनायें इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद ने जो काम किये, उन सब की सूचना देती हैं। वे दाऊद की शक्ति और उसके साथ जो घटा, उसके विषय में भी बताती हैं और वे इस्राएल और उसके चारों ओर के राज्यों में जो हुआ, उसके बारे में बताती हैं।

और ... राजा बनाया सुलैमान राजा होने के लिये पहली बार तब चुना गया, जब उसके सौतेला भाई अदोनिय्याह ने अपने को राजा बनाने का प्रयत्न किया। देखें 1राजा 1:5-39

2 इतिहास

सुलैमान बुद्धि की याचना करता है

1 सुलैमान एक बहुत शक्तिशाली राजा बन गया क्योंकि यहोवा उसका परमेश्वर, उसके साथ था। यहोवा ने सुलैमान को अत्यधिक महान बनाया।

[2]सुलैमान ने इस्राएल के सभी लोगों से बातें की। उसने सेना के शतपतियों, सहस्त्रपतियों, न्यायाधीशों, सारे इस्राएल के सभी प्रमुखों तथा परिवारों के प्रमुखों से बातें की। [3]तब सुलैमान और सभी लोग उसके साथ इकट्ठे हुए और उस उच्चस्थान को गये जो गिबोन नगर में था। परमेश्वर का मिलाप का तम्बू वहाँ था। यहोवा के सेवक मूसा ने उसे तब बनाया था जब वह और इस्राएल के लोग मरुभूमि में थे। [4]दाऊद परमेश्वर के साक्षीपत्र के सन्दूक को किर्यत्यारीम से यरुशलेम तक लाया था। दाऊद ने यरुशलेम में इसको रखने के लिये एक स्थान बनाया था। दाऊद ने यरुशलेम में साक्षीपत्र के सन्दूक के लिए एक तम्बू लगा दिया था। [5]बसलेल ने एक काँसे की वेदी बनाई थी। बसलेल ऊरी का पुत्र था। वह काँसे की वेदी गिबोन में पवित्र तम्बू के सामने थी। इसलिए सुलैमान और वे लोग यहोवा से राय लेने गिबोन गए। [6]मिलाप के तम्बू में यहोवा के सामने काँसे की वेदी तक सुलैमान गया। सुलैमान ने एक हजार होमबलि वेदी पर चढ़ाई।

[7]उस रात परमेश्वर सुलैमान के पास आया। परमेश्वर ने कहा, "सुलैमान, मुझसे तुम वह माँगों जो कुछ तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें दूँ।"

[8]सुलैमान ने परमेश्वर से कहा, "तू मेरे पिता दाऊद के प्रति बहुत कृपालु रहा है। तूने मुझे, मेरे पिता के स्थान पर नया राजा होने के लिये चुना है। [9]यहोवा परमेश्वर, अब, तूने जो वचन मेरे पिता को दिया है उसे बने रहने दे। तूने मुझे ऐसी प्रजा का शासक बनाया, जो पृथ्वी के रेतकणों की तरह असंख्य है! [10]अब तू मुझे बुद्धि और ज्ञान दे। तब मैं इन लोगों को सही राह पर ले चल सकूँगा। कोई भी तेरी सहायता के बिना इन पर शासन नहीं कर सकता!"

[11]परमेश्वर ने सुलैमान से कहा, "तुम्हारी भावनायें बिल्कुल ठीक हैं। तुमने धन या सम्पत्ति या सम्मान नहीं माँगा है। तुमने यह भी नहीं माँगा है कि तुम्हारे शत्रु मर जायें। तुमने लम्बी उम्र भी नहीं माँगी है। किन्तु तुमने अपने लिये बुद्धि और ज्ञान माँगा है। जिससे तुम मेरी प्रजा के सम्बन्ध में बुद्धिमता से निर्णय ले सको, जिसका मैंने तुमको राजा बनाया है। [12]इसलिये मैं तुम्हें बुद्धि और ज्ञान दूँगा। मैं तुम्हें धन, वैभव और सम्मान भी दूँगा। तुम्हारे पहले होने वाले राजाओं के पास इतना धन और इतना सम्मान कभी नहीं था और तुम्हारे बाद होने वाले राजाओं के पास भी इतना धन और सम्मान नहीं होगा।"

[13]इस प्रकार, सुलैमान आराधना के स्थान गिबोन को गया। तब सुलैमान ने उस मिलापवाले तम्बू को छोड़ा और यरूशलेम लौट गया और इस्राएल पर राज्य करने लगा।

सुलैमान धन-संग्रह और अपनी सेना खड़ी करता है

[14]सुलैमान ने घोड़े और रथ अपनी सेना के लिये एकत्रित करना आरम्भ किया। सुलैमान के पास एक हजार चार सौ रथ और बारह हजार घुड़सवार थे। सुलैमान ने उनको रथ नगरों में रखा। सुलैमान ने यरुशलेम में भी उनमें से कुछ को रखा, अर्थात वहाँ जहाँ राजा का निवास था। [15]सुलैमान ने यरुशलेम में बहुत सा चाँदी और सोना इकट्ठा किया। उसने इतना अधिक चाँदी और सोना इकट्ठा किया कि वह चट्टानों सा सामान्य हो गया। सुलैमान ने देवदार की बहुत सी लकड़ी इकट्ठी की। उसने देवदार की इतनी अधिक लकड़ी इकट्ठी की, कि वह पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश के गूलर के वृक्ष समान सामान्य हो गयी। [16]सुलैमान ने मिस्र और कुए (या कोये देश से)

से घोड़े मँगाए। राजा के व्यापारियों ने घोड़े कोये में खरीदे। [17]सुलैमान के व्यापारियों ने मिस्र से एक रथ चाँदी के छ: सौ शेकेल में और घोड़ा चाँदी के एक सौ पचास शेकेल में खरीदा। तब व्यापारियों ने घोड़ों और रथों को हित्ती लोगों के राजाओं तथा अराम के राजाओं के हाथ बेच दिया।

सुलैमान मन्दिर बनाने की योजना बनाता है

2 सुलैमान ने यहोवा के नाम की प्रतिष्ठा के लिये एक मन्दिर और अपने लिये एक राजमहल बनाने का निश्चय किया। [2]सुलैमान ने चीज़े लाने के लिए सत्तर हजार व्यक्तियों को चुना और पहाड़ी प्रदेश में पत्थर खोदने के लिये अस्सी हजार व्यक्तियों को चुना और उसने तीन हजार छ: सौ व्यक्ति मज़दूरों की निगरानी के लिये चुने।

[3]तब सुलैमान ने हूराम को संदेश भेजा। हूराम सोर नगर का राजा था। सुलैमान ने संदेश दिया था, "मुझे वैसे ही सहायता दो जैसे तुमने मेरे पिता दाऊद को सहायता दी थी। तुमने देवदार के पेड़ों से उनको लकड़ी भेजी थी जिससे वे अपने रहने के लिए महल बना सके थे। [4]मैं अपने यहोवा परमेश्वर के नाम का सम्मान करने के लिये एक मन्दिर बनाऊँगा। मैं यह मन्दिर यहोवा को अर्पित करुँगा जिसमे हमारे लोग उसकी उपासना कर सकेंगे। मैं उसको इस कार्य के लिये अर्पित करूँगा कि उसमे इस्राएली जाति के स्थायी धर्मप्रथा के अनुसार हमारे यहोवा परमेश्वर के पवित्र विश्राम दिवसों और नवचन्द्र तथा निर्धारित पर्वो पर सवेरे और शाम सुगन्धित धूप द्रव्य जलाये जायें, भेंट की रोटियाँ अर्पित की जायें और अग्निबलि चढ़ायी जाये।

[5]"जो मन्दिर मैं बनाऊँगा वह महान होगा, क्योंकि हमारा परमेश्वर सभी देवताओं से बड़ा है। [6]किन्तु कोई भी व्यक्ति सही अर्थ में हमारे परमेश्वर के लिये भवन नहीं बना सकता। स्वर्ग हाँ, उच्चतम स्वर्ग भी परमेश्वर को अपने भीतर नहीं रख सकता! मैं परमेश्वर के लिये मन्दिर नहीं बना सकता। मैं केवल एक स्थान परमेश्वर के सामने सुगन्धि जलाने के लिये बना सकता हूँ।

[7]"अब, मेरे पास सोना, चाँदी, काँसा और लोहे के काम करने में एक कुशल व्यक्ति को भेजो। उस व्यक्ति को इसका ज्ञान होना चाहिए कि बैंगनी, लाल, और नीले कपड़ों का उपयोग कैसे किया जाता है। उस व्यक्ति को यहाँ यहूदा और यरूशलेम में मेरे कुशल कारीगरों के साथ नक्काशी करनी होगी। मेरे पिता दाऊद ने इन कुशल कारीगरों को चुना था। [8]मेरे पास लबानोन देश से देवदार, चीड़ और चन्दन और सनोवर की लकड़ियाँ भी भेजो। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे सेवक लबानोन से पेड़ों को काटने में अनुभवी हैं। मेरे सेवक तुम्हारे सेवकों की सहायता करेंगे। [9]क्योंकि मुझे प्रचुर मात्रा में इमारती लकड़ी चाहिये। जो मन्दिर मैं बनवाने जा रहा हूँ वह विशाल और अद्भुत होगा। [10]मैंने एक लाख पच्चीस हजार बुशल गेहूँ भोजन के लिये, एक लाख पच्चीस हजार बुशल जौ, एक लाख पन्द्रह हजार गैलन दाखमधु और एक लाख पन्द्रह हजार गैलन तेल तुम्हारे उन सेवकों के लिये दिया है जो इमारती लकड़ी के लिए पेड़ों को काटते हैं।"

[11]तब सोर के राजा हूराम ने सुलैमान को उत्तर दिया। उसने सुलैमान को एक पत्र भेजा। पत्र में यह कहा गया था: "सुलैमान, यहोवा अपने लोगों से प्रेम करता है। यही कारण है कि उसने तुमको उनका राजा चुना।" [12]हूराम ने यह भी कहा, "इस्राएल के यहोवा, परमेश्वर की प्रशंसा करो! उसने धरती और आकाश बनाया। उसने राजा दाऊद को बुद्धिमान पुत्र दिया। सुलैमान, तुम्हें बुद्धि और समझ है। तुम एक मन्दिर यहोवा के लिये बना रहे हो। तुम अपने लिए भी एक राजमहल बना रहे हो। [13]मैं तुम्हारे पास एक कुशल कारीगर भेजूँगा। उसे विभिन्न प्रकार की बहुत सी कलाओं की जानकारी है। उसका नाम हूराम–अबी है। [14]उसकी माँ दान के परिवार समूह की थी और उसका पिता सोर नगर का था। हूराम–अबी सोना, चाँदी, काँसा, लोहा, पत्थर और लकड़ी के काम में कुशल है। हूराम–अबी बैंगनी, नीले, तथा लाल कपड़ों और बहुमूल्य मलमल को काम में लाने में भी कुशल है और हूराम–अबी नक्काशी के काम में भी कुशल है। हर किसी योजना को, जिसे तुम दिखाओगे, समझने में वह कुशल है। वह तुम्हारे कुशल कारीगरों की सहायता करेगा और वह तुम्हारे पिता राजा दाऊद के कुशल कारीगरों की सहायता करेगा।

[15]"तुमने गेहूँ, जौ, तेल और दाखमधु भेजने का जो वचन दिया था, कृपया उसे मेरे सेवकों के पास भेज दो [16]और हम लोग लबानोन देश से लकड़ी काटेंगे। हम लोग उतनी लकड़ी काटेंगे जितनी तुम्हें आवश्यकता है। हम लोग समुद्र में लकड़ी के लट्ठों के बेड़े का उपयोग

जापा नगर तक लकड़ी पहुँचाने के लिये करेंगे। तब तुम लकड़ी को यरूशलेम ले जा सकते हो।"

[17]तब सुलैमान ने इस्राएल में रहने वाले सभी बाहरी लोगों को गिनवाया। यह उस समय के बाद हुआ जब दाऊद ने लोगों को गिना था। दाऊद, सुलैमान का पिता था। उन्हें एक लाख तिरपन हजार बाहरी लोग देश में मिले। [18]सुलैमान ने सत्तर हजार बाहरी लोगों को चीज़ें ढोने के लिये चुना। सुलैमान ने अस्सी हजार बाहरी लोगों को पर्वतों में पत्थर काटने के लिए चुना और सुलैमान ने तीन हजार छ: सौ बाहरी लोगों को काम पर लगाये रखने के लिए निरीक्षक रखा।

सुलैमान मन्दिर बनाता है

3 सुलैमान ने यहोवा का मन्दिर मोरिय्याह पर्वत पर यरूशलेम में बनाना आरम्भ किया। पर्वत मोरिय्याह वह स्थान है जहाँ यहोवा ने सुलैमान के पिता दाऊद को दर्शन दिया था। सुलैमान ने उसी स्थान पर मन्दिर बनाया जिसे दाऊद तैयार कर चुका था। यह स्थान उस खलिहान में था जो ओर्नान का था। ओर्नान यबूसी लोगों में से एक था। [2]सुलैमान ने इस्राएल में अपने शासन के चौथे वर्ष के दूसरे महीने में मन्दिर बनाना आरम्भ किया।

[3]सुलैमान ने परमेश्वर के मन्दिर की नींव के निर्माण के लिये जिस माप का उपयोग किया, वह यह है: नींव साठ हाथ लम्बी और बीस हाथ चौड़ी थी। सुलैमान ने प्राचीन हाथ की माप का ही उपयोग तब किया जब उसने मन्दिर को नापा। [4]मन्दिर के सामने का द्वार मण्डप बीस हाथ लम्बा और बीस हाथ ऊँचा था। सुलैमान ने द्वार मण्डप के भीतरी भाग को शुद्ध सोने से मढवाया [5]सुलैमान ने बड़े कमरों की दीवार पर सनोवर लकड़ी की बनी चौकोर सिल्लियाँ रखीं। तब उसने सनोवर की सिल्लियों को शुद्ध सोने से मढ़ा और उसने शुद्ध सोने पर खजूर के चित्र और जंजीरें बनाईं। [6]सुलैमान ने मन्दिर की सुन्दरता के लिये उसमें बहुमूल्य रत्न लगाए। जिस सोने का उपयोग सुलैमान ने किया वह पर्वैम* से आया था। [7]सुलैमान ने मन्दिर के भीतरी भवन को सोने से मढ़ दिया। सुलैमान ने छत की कड़ियाँ, चौखटों, दीवारों और दरवाजों पर सोना मढ़वाया। सुलैमान ने दीवारों पर करूब (स्वर्गदूतों) को खुदवाया।

[8]तब सुलैमान ने सर्वाधिक पवित्र स्थान बनाया। सर्वाधिक पवित्र स्थान बीस हाथ लम्बा और बीस हाथ चौड़ा था। यह उतना ही चौड़ा था जितना पूरा मन्दिर था। सुलैमान ने सर्वाधिक पवित्र स्थान की दीवारों पर सोना मढ़वाया। सोने का वजन लगभग बीस हजार चार सौ किलोग्राम था। [9]सोने की कीलों का वजन पाँच सौ पच्हत्तर ग्राम था सुलैमान ने ऊपरी कमरों को सोने से मढ़ दिया। [10]सुलैमान ने दो करूब (स्वर्गदूत) सर्वाधिक पवित्र स्थान पर रखने के लिये बनाये। कारीगरों ने करूब स्वर्गदूतों को सोने से मढ़ दिया। [11]करूब (स्वर्गदूतों) का हर एक पँख पाँच हाथ लम्बा था। पंखों की पूरी लम्बाई बीस हाथ थी। पहले करूब (स्वर्गदूत) का एक पंख कमरे की एक ओर की दीवार को छूता था। दूसरा पंख दूसरे करूब (स्वर्गदूत) के पंख को छूता था। [12]दूसरे करूब (स्वर्गदूत) का दूसरा पंख कमरे की दूसरी ओर की दूसरी दीवार को छूता था। [13]करूब (स्वर्गदूत) के पंख सब मिलाकर बीस हाथ फैले थे। करूब (स्वर्गदूत) भीतर पवित्र स्थान की ओर देखते हुए खड़े थे।

[14]उसने नीले, बैंगनी, लाल और कीमती कपड़ों तथा बहुमूल्य सूती वस्त्रों से मध्यवर्ती पर्दे को बनवाया। परदे पर करुबों के चित्र काढ़ दिए।

[15]सुलैमान ने मन्दिर के सामने दो स्तम्भ खड़े किये। स्तम्भ पैंतिस हाथ ऊँचे थे। दोनों स्तम्भों का शीर्ष भाग दो पाँच हाथ लम्बा था। [16]सुलैमान ने जंजीरों के हार बनाए। उसने जंजीरों को स्तम्भों के शीर्ष पर रखा। सुलैमान ने सौ अनार बनाए और उन्हें जंजीरों से लटकाया। [17]तब सुलैमान ने मन्दिर के सामने स्तम्भ खड़े किये। एक स्तम्भ दायीं ओर था। दूसरा स्तम्भ बाँयी ओर खड़ा था। सुलैमान ने दायीं ओर के स्तम्भ का नाम "याकीन" और सुलैमान ने बाँयी ओर के स्तम्भ का नाम "बोअज़" रखा।

मन्दिर की सज्जा

4 सुलैमान ने वेदी बनाने के लिये काँसे का उपयोग किया। वह काँसे की वेदी बीस हाथ लम्बी, बीस हाथ चौड़ी और दस हाथ ऊँची थी। [2]तब सुलैमान ने पिघले काँसे का उपयोग एक विशाल हौज बनाने के लिये किया। विशाल हौज गोल था और एक सिरे से

पर्वैम यह वह स्थान था जहाँ बहुत सोना निकाला जाता था। सम्भवत: यह ओपीर देश में था।

दूसरे सिरे तक इसकी नाप दस हाथ थी और यह पाँच हाथ ऊँचा और दस हाथ घेरे वाला था। [3]विशाल काँसे के तालाब के सिरे के नीचे और चारों ओर तीस हाथ की बैलों की आकृतियाँ ढाली गई थी। जब तालाब बनाया गया तब उस पर दो पंक्तियों में बैल बनाए गए। [4]वह विशाल काँसे का तालाब बारह बैलों की विशाल प्रतिमा पर स्थित था। तीन बैल उत्तर की ओर देखते थे। तीन बैल पश्चिम की ओर देखते थे। तीन बैल दक्षिण की ओर देखते थे। तीन बैल पूर्व की ओर देखते थे। विशाल काँसे का तालाब इन बैलों के ऊपर था। सभी बैल अपने पिछले भागों को एक दूसरे के साथ तथा केन्द्र के साथ मिलाए हुए खड़े थे। [5]विशाल काँसे का तालाब आठ सेंटीमीटर मोटा था। विशाल तालाब का सिरा एक प्याले के सिरे की तरह था। सिरा खिली हुई लिली की तरह था। इसमें छियासठ हजार लीटर आ सकता था।

[6]सुलैमान ने दस चिलमचियाँ बनाईं। उसने विशाल काँसे के तालाब की दायीं ओर पाँच चिलमचियाँ रखीं और सुलैमान ने काँसे के विशाल तालाब की बाँयी ओर पाँच चिलमचियाँ रखीं। इन दस चिलमचियों का उपयोग होमबलि के लिए चढ़ाई जाने वाली चीज़ों को धोने के लिये होना था। किन्तु विशाल तालाब का उपयोग बलि चढ़ाने के पहले याजकों के नहाने के लिये होना था।

[7]सुलैमान ने निर्देश के अनुसार सोने के दस दीपाधार बनाए और उनको मन्दिर में रख दिया: पाँच दाहिनी ओर और पाँच बाँयी ओर। [8]सुलैमान ने दस मेज़ें बनाई और उन्हें मन्दिर में रखा। मन्दिर में पाँच मेज़े दायीं थीं और पाँच मेज़ें बाँयी। सुलैमान ने सौ चिलमचियाँ बनाने के लिये सोने का उपयोग किया। [9]सुलैमान ने एक याजकों का आँगन, महाप्रांगन, और उसके लिए द्वार बनाए। उसने आँगन में खुलने वाले दरवाज़ों को मढ़ने के लिए काँसे का उपयोग किया। [10]तब उसने विशाल काँसे के तालाब को मन्दिर के दक्षिण पूर्व की ओर दायीं ओर रखा।

[11]हूराम ने बर्तन, बेल्चे और कटोरों को बनाया। तब हूराम ने परमेश्वर के मन्दिर में सुलैमान के लिये अपने काम खतम किये। [12]हूराम ने दोनों स्तम्भों और दोनों स्तम्भों के शीर्षभाग के विशाल दोनों कटोरों को बनाया था। हूराम ने दोनों स्तम्भों के शीर्ष भाग के विशाल दोनों कटोरों को ढकने के लिये सज्जाओं के जाल भी बनाए थे। [13]हूराम चार सौ अनार दोनों सज्जा जालों के लिये बनाए। हर एक जाल के लिए अनारों की दो पक्तियाँ थीं। दोनों स्तम्भों के शीर्षभाग पर के विशाल कटोरे जाल से ढके थे। [14]हूराम ने आधार दण्ड और उनके ऊपर के प्यालों को भी बनाया। [15]हूराम ने एक विशाल काँसे का तालाब और तालाब के नीचे बारह बैल बनाए। [16]हूराम ने बर्तन, बेल्चे, काँटे और सभी चीज़ें राजा सुलैमान के यहोवा के मन्दिर के लिये बनाई। ये चीज़ें कलई चढ़े काँसे की बनी थीं। [17]राजा सुलैमान ने पहले इन चीज़ों को मिट्टी के साँचे में ढाला। ये साँचे सुक्कोत और सरेदा नगरों के बीच यरदन घाटी में बने थे। [18]सुलैमान ने ये इतनी अधिक मात्रा में बनाई कि किसी व्यक्ति ने उपयोग में लाए गए काँसे को तोलने का प्रयत्न नहीं किया।

[19]सुलैमान ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये भी चीज़ें बनाई। सुलैमान ने सुनहली वेदी बनाई। उसने वे मेज़ें बनाई जिन पर उपस्थिति की रोटियाँ रखी जाती थीं। [20]सुलैमान ने दीपाधार और उनके दीपक शुद्ध सोने के बनाए। बनी हुई योजना के अनुसार दीपकों को पवित्र स्थान के सामने भीतर जलना था। [21]सुलैमान ने फूलों, दीपकों और चिमटे को बनाने के लिए शुद्ध सोने का उपयोग किया। [22]सुलैमान ने सलाईयाँ, प्याले, कढ़ाईयाँ और धूपदान बनाने के लिये शुद्ध सोने का उपयोग किया। सुलैमान ने मन्दिर के दरवाजों, सर्वाधिक पवित्र स्थान और मुख्य विशाल कक्ष के भीतरी दरवाजों को बनाने के लिये शुद्ध सोने का उपयोग किया।

5 तब सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के लिए किये गए सभी काम पूरे कर लिए। सुलैमान उन सभी चीज़ों को लाया जो उसके पिता दाऊद ने मन्दिर के लिये दी थी। सुलैमान सोने चाँदी की बनी हुई वस्तुएँ तथा और सभी सामान लाया। सुलैमान ने उन सभी चीज़ों को परमेश्वर के मन्दिर के कोषागार में रखा।

पवित्र सन्दूक मन्दिर में पहुँचाया गया

[2]सुलैमान ने इस्राएल के सभी अग्रजों, परिवार समूहों के प्रमुखों और इस्राएल में परिवार प्रमुखों को इकट्ठा किया। उसने सभी को यरुशलेम में इकट्ठा किया। सुलैमान ने यह इसलिये किया कि लेवीवंशी साक्षीपत्र के सन्दूक को दाऊद के नगर से ला सकें। दाऊद का नगर सिय्योन है। [3]राजा सुलैमान से इस्राएल के सभी लोग सातवें महीने के पर्व के अवसर पर एक साथ मिले।

[4]जब इस्राएल के सभी अग्रज आ गए तब लेवीवंशियों ने साक्षीपत्र के सन्दूक को उठाया। [5]तब याजक और लेवीवंशी साक्षीपत्र के सन्दूक को मन्दिर में ले गए। याजक और लेवीवंशी मिलापवाले तम्बू तथा इसमें जो पवित्र चीज़ें थीं उन्हें भी यरूशलेम ले आए।

[6]राजा सुलैमान और इस्राएल के सभी लोग साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने मिले। राजा सुलैमान और इस्राएल के सभी लोगों ने भेड़ों और बैलों की बलि चढ़ाई। वहाँ इतने अधिक मेढ़े व बैल थे कि कोई व्यक्ति उन्हें गिन नहीं सकता था। [7]तब याजकों ने यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को उस स्थान पर रखा, जो इसके लिये तैयार किया गया था। वह सर्वाधिक पवित्र स्थान मन्दिर के भीतर था। साक्षीपत्र के सन्दूक को करुब (स्वर्गदूत) के पंखों के नीचे रखा गया। [8]साक्षीपत्र के सन्दूक के स्थान के ऊपर करूबों के पंख फैले हुये थे, करूब (स्वर्गदूत) साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर खड़े थे। बल्लियाँ सन्दूक को ले जाने में प्रयोग होती थी। [9]बल्लियाँ इतनी लम्बी थीं कि सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने से उनके सिरे देखे जा सकें। किन्तु कोई व्यक्ति मन्दिर के बाहर से बल्लियों को नहीं देख सकता था। बल्लियाँ, अब तक आज भी वहाँ हैं। [10]साक्षीपत्र के सन्दूक में दो शिलाओं के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था। मूसा ने दोनों शिलाओं को होरेब पर्वत पर साक्षीपत्र के सन्दूक में रखा था। होरेब वह स्थान था जहाँ यहोवा ने इस्राएल के लोगों के साथ वाचा की थी। यह उसके बाद हुआ जब इस्राएल के लोग मिस्र से चले आए।

[11]तब वे सभी याजक पवित्र स्थान से बाहर आए। सभी वर्ग के याजकों ने अपने को पवित्र कर लिया था [12]और सभी लेवीवंशी गायक वेदी के पूर्वी ओर खड़े थे। सभी आसाप , हेमान और यदूतून के गायक समूह वहाँ थे और उनके पुत्र तथा उनके सम्बन्धी भी वहाँ थे। वे लेवीवंशी गायक सफेद बहुमूल्य मलमल के वस्त्र पहने हुए थे। वे झाँझ, वीणा और सांरगी लिये थे। उन लेवीवंशी गायकों के साथ वहाँ एक सौ बीस याजक थे। वे एक सौ बीस याजक तुरही बजा रहे थे। [13]जो तुरही बजा रहे थे और गा रहे थे, वे एक व्यक्ति की तरह थे। जब वे यहोवा की स्तुति करते थे और उसे धन्यवाद देते थे तब वे एक ही ध्वनि करते थे। तुरही, झाँझ तथा अन्य वाद्य यन्त्रों पर वे तीव्र घोष करते थे, उन्होंने यहोवा की स्तुति में यह गीत गाया

"यहोवा की स्तुति करो क्योंकि वह भला है। उसका प्रेम शाश्वत है।"

तब यहोवा का मन्दिर मेघ से भर उठा। [14]मेघ के कारण याजक सेवा कर न सके, इसका कारण था–यहोवा की महिमा मन्दिर में भर गई थी।

6 तब सुलैमान ने कहा, "यहोवा ने कहा कि वह काले घने बादल में रहेगा। [2]हे यहोवा, मैंने एक भवन तेरे रहने के लिये बनाया है। यह एक भव्य भवन है। यह तेरे सर्वदा रहने का स्थान है!"

सुलैमान का भाषण

[3]राजा सुलैमान मुड़ा और उसने अपने सामने खड़े सभी इस्राएल के लोगों को आशीर्वाद दिया। [4]सुलैमान ने कहा, "इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा की प्रशंसा करो! यहोवा ने वह कर दिया है जो करने का वचन उसने तब दिया था जब उसने मेरे पिता दाऊद से बातें की थी। परमेश्वर यहोवा ने यह कहा था: [5]'जब से मैं अपने लोगों को मिस्र से बाहर लाया तब से अब तक मैंने इस्राएल के किसी परिवार समूह से कोई नगर नहीं चुना है, जहाँ मेरे नाम का एक भवन बने। मैंने अपने निज लोगों इस्राएलियों पर शासन करने के लिए भी किसी व्यक्ति को नहीं चुना है। [6]किन्तु अब मैंने यरुशलेम को अपने नाम के लिये चुना है और मैंने दाऊद को अपने इस्राएली लोगों का नेतृत्व करने के लिये चुना है।'

[7]"मेरे पिता दाऊद की यह इच्छा थी कि वह इस्राएली राष्ट्र के यहोवा परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए एक मन्दिर बनवाये। [8]किन्तु यहोवा ने मेरे पिता से कहा, 'दाऊद, जब तुमने मेरे नाम पर मन्दिर बनाने की इच्छा की तब तुमने ठीक ही किया। [9]किन्तु तुम मन्दिर बना नहीं सकते। किन्तु तुम्हारा अपना पुत्र मेरे नाम पर मन्दिर बनाएगा।' [10]अब, यहोवा ने वह कर दिया है जो उसने करने को कहा था। मैं अपने पिता के स्थान पर नया राजा हूँ। दाऊद मेरे पिता थे। अब मैं इस्राएल का राजा हूँ। यहोवा ने यही करने का वचन दिया था। मैंने इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के नाम पर मन्दिर बनवाया है। [11]मैंने साक्षीपत्र के सन्दूक को मन्दिर में रखा है। साक्षीपत्र का सन्दूक वहाँ है जहाँ यहोवा के साथ की गई वाचा रखी जाती है। यहोवा ने यह वाचा इस्राएल के लोगों के साथ की।"

सुलैमान की प्रार्थना

[12]सुलैमान यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ। वह उन इस्राएल के लोगों के सामने खड़ा हुआ जो वहाँ इकट्ठे हुए थे। तब सुलैमान ने अपने हाथों और अपनी भुजाओं को फैलाया। [13]सुलैमान ने एक काँसे का मंच पाँच हाथ लम्बा, पाँच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊँचा बनाया था और इसे बाहरी आँगन के बीच में रखा था। तब वह मंच पर खड़ा हुआ और इस्राएल के जो लोग वहाँ इकट्ठे हुए थे उनकी उपस्थिति में घुटने टेके। सुलैमान ने आकाश की ओर हाथ फैलाया। [14]सुलैमान ने कहा:

"हे इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा, तेरे समान कोई भी परमेश्वर न तो स्वर्ग में है, न ही धरती पर है। तू प्रेम करने और दयालु बने रहने की वाचा का पालन करता है। तू अपने उन सेवकों के साथ वाचा का पालन करता है जो पूरे हृदय की सच्चाई से रहते हैं और तेरी आज्ञा का पालन करते हैं। [15]तूने अपने सेवक दाऊद को दिये गए वचन को पूरा किया। दाऊद मेरा पिता था। तूने अपने मुख से वचन दिया था, और आज तूने अपने हाथों से इस वचन को पूरा किया है। [16]अब, हे यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर! तू अपने सेवक दाऊद को दिये गये वचन को बनाये रख। तूने यह वचन दिया था: तूने कहा था, 'दाऊद, तुम अपने परिवार से, मेरे सामने इस्राएल के सिंहासन पर बैठने के लिए, एक व्यक्ति को पाने में कभी असफल नहीं होगे। यही होगा यदि तुम्हारे पुत्र उन सभी बातों में सावधान रहेंगे जिन्हें वे करेंगे। उन्हें मेरे नियमों का पालन वैसे ही करना चाहिए जैसा तुमने मेरे नियमों का पालन किया है।' [17]अब, हे यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर अपने वचन को पूरा होने दे। तूने यह वचन अपने सेवक दाऊद को दिया था।

[18]"हे परमेश्वर, हम जानते हैं कि तू यथार्थ में, लोगों के साथ धरती पर नहीं रहेगा। स्वर्ग, सर्वोच्च स्वर्ग भी तुझको अपने भीतर रखने की क्षमता नहीं रखता और हम जानते हैं कि यह मन्दिर जिसे मैंने बनाया है तुझको अपने भीतर नहीं रख सकता। [19]किन्तु हे यहोवा, परमेश्वर तू हमारी प्रार्थना और कृपा याचना पर ध्यान दे। हे यहोवा, मेरे परमेश्वर! तेरे लिये की गई मेरी पुकार तू सुन। मैं तुझसे जो प्रार्थना कर रहा हूँ, सुन। मैं तेरा सेवक हूँ। [20]मैं प्रार्थना करता हूँ कि तेरी आँखे मन्दिर को देखने के लिये दिन रात खुली रहें। तूने कहा था कि तू इस स्थान पर अपना नाम अंकित करेगा। मन्दिर को देखता हुआ जब मैं तुझसे प्रार्थना कर रहा हूँ तो तू मेरी प्रार्थना सुन। [21]मेरी प्रार्थनाएँ सुन और तेरे इस्राएल के लोग जो प्रार्थना कर रहे हैं, उन्हें भी सुन। जब हम तेरे मन्दिर को देखते हुए प्रार्थना कर रहे हैं तो तू हमारी प्रार्थनाएँ सुन। तू स्वर्ग में जहाँ रहता है वहीं से सुन और जब तू हमारी प्रार्थनाएँ सुने तो तू हमे क्षमा कर।

[22]"कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ कुछ बुरा करने का दोषी हो सकता है। जब ऐसा होगा तो दोषी व्यक्ति को, यह सिद्ध करने के लिए कि वह निरपराध है, तेरा नाम लेना पड़ेगा। जब वह तेरी वेदी के सामने शपथ लेने मन्दिर में आए तो [23]स्वर्ग से सुन। तू अपने सेवकों का फैसला कर और उसे कार्यान्वित कर। दोषी को दण्ड दे और उसे उतना कष्ट होने दे जितना कष्ट उसने दूसरे को दिया हो। यह प्रमाणित कर कि जिस व्यक्ति ने ठीक कार्य किया है, वह निरपराध है।

[24]"तेरे इस्राएलियों को किसी भी शत्रुओं से पराजित होना पड़ सकता है, क्योंकि तेरे लोगों ने तेरे विरुद्ध पाप किया है तब यदि इस्राएल के लोग तेरे पास लौटें और तेरे नाम पर पाप स्वीकारें और इस मन्दिर में तुझसे प्रार्थना और याचना करें [25]तो स्वर्ग से सुन और अपने लोगों, इस्राएल के पापों को क्षमा कर। उन्हें उस देश में लौटा जिसे तूने उन्हें और उनके पूर्वजों को दिया था।

[26]"आसमान कभी ऐसे बन्द हो सकता है कि वर्षा न हो। वह तब होगा जब इस्राएल के लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे और यदि इस्राएल के लोगों को इसका पश्चाताप होगा और मन्दिर को देखते हुए प्रार्थना करेंगे, तेरे नाम पर पाप स्वीकार करेंगे और वे पाप करना छोड़ देंगे क्योंकि तू उन्हें दण्ड देता है। [27]तो स्वर्ग से तू उनकी सुन। तू उनकी सुन और उनके पापों को क्षमा कर। इस्राएल के लोग तेरे सेवक हैं। तब उन्हें सही मार्ग का उपदेश दे जिस पर वे चलें। तू अपनी भूमि पर वर्षा भेज। वही देश तूने अपने लोगों को दिया था।

[28]"देश में कोई अकाल या महामारी, या फसलों को बीमारी, या फफूँदी, या टिड्डी, या टिड्डे हो जाये या यदि इस्राएल के लोगों के नगरों में उनके शत्रु घेरा डाल दें, या यदि इस्राएल में किसी प्रकार की बीमारी हो [29]और तब तेरे लोग अर्थात इस्राएल का कोई व्यक्ति प्रार्थना या याचना करे तथा हर एक व्यक्ति अपनी आपत्ति और

पीड़ा को जानता रहे एवं यदि वह व्यक्ति इस मन्दिर को देखते हुए अपने हाथ और अपनी भुजायें उठाए [30]तो तू उनकी स्वर्ग से सुन। स्वर्ग वही है जहाँ तू है। सुन और क्षमा कर। हर एक व्यक्ति को वह दे जो उसे मिलना चाहिये क्योंकि तू जानता है कि हर एक व्यक्ति के हृदय में क्या है। केवल तू ही जानता है कि व्यक्ति के हृदय में क्या है। [31]तब लोग तुझसे डरेंगे और तेरी आज्ञा मानेंगे जब तक वे उस देश में रहेंगे जिसे तूने हमारे पूर्वजों को दिया था।

[32]"कोई ऐसा अजनबी हो सकता है जो इस्राएल के लोगों में से न हो, किन्तु वह उस देश से आया हो जो बहुत दूर हो और वह अजनबी तेरी प्रतिष्ठा, तेरी असीम शक्ति और तेरी दण्ड देने की क्षमता के कारण आया हो। जब वह व्यक्ति आए और इस मन्दिर को देखता हुआ प्रार्थना करे [33]तब स्वर्ग से जहाँ तू रहता है, सुन और तू उसकी प्रार्थना का उत्तर दे। तब सारे संसार के राष्ट्र तेरा नाम जानेंगे और तेरा आदर वैसे करेंगे जैसे तेरे लोग अर्थात इस्राएली करते हैं और संसार के सभी लोग जानेंगे कि जिस मन्दिर को मैंने बनवाया है वह तेरे नाम से जाना जाता है।

[34]"जब तू अपने लोगों को किसी स्थान पर उनके शत्रुओं के साथ लड़ने के लिये भेजे और वे इस नगर की ओर देखकर प्रार्थना करें, जिसे तूने चुना है तथा इस मन्दिर की ओर देखें जिसे मैंने तेरे नाम पर बनाया है। [35]तो उनकी प्रार्थना स्वर्ग से सुन। उनकी सहायता कर।

[36]"लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे–कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो पाप न करता हो और तू उन पर क्रोधित होगा। तू किसी शत्रु को उन्हें हराने देगा और उनसे पकड़े जाने देगा तथा बहुत दूर या निकट के देश में जाने पर मजबूर किये जाने देगा। [37]किन्तु जब वे अपना विचार बदलेंगे और वे याचना करेंगे जबकि वे बन्दी बनाये जाने वाले देश में ही हैं। वे कहेंगे, 'हम लोगों ने पाप किया है, हम लोगों ने बुरा किया है तथा हम लोगों ने दुष्टता की है।' [38]तब वे उस देश में जहाँ वे बन्दी हैं, अपने पूरे हृदय व आत्मा से तेरे पास लौटेंगे और इस देश की ओर जो तूने उनके पूर्वजों को दिया है, इस नगर की ओर जिसको तूने चुना है, और इस मन्दिर की ओर जो मैंने तेरे नाम की महिमा के लिए निर्मित किया है, उसकी ओर मुख करके प्रार्थना करेंगे। [39]जब ऐसा हो तो तू स्वर्ग से उनकी सुन। स्वर्ग तेरा आवास है। उनकी प्रार्थना और याचना को स्वीकार कर और उनकी सहायता कर और अपने उन लोगों को क्षमा कर दे जिन्होंने तेरे विरुद्ध पाप किया है। [40]अब, मेरे परमेश्वर, मैं तुझसे माँगता हूँ, तू अपने आँख और कान खोल ले। तू हम लोगों की, जो प्रार्थना इस स्थान पर कर रहे हैं उसे सुन और उस पर ध्यान दे।

[41] "अब, हे यहोवा परमेश्वर उठ
और अपने विशेष स्थान पर आ,
जहाँ साक्षीपत्र का सन्दूक,
तेरी शक्ति प्रदर्शित करता है।
अपने याजकों को मुक्ति धारण करने दे।
हे यहोवा, परमेश्वर! अपने पवित्र लोगों को
अपनी अच्छाई में प्रसन्न होने दे।
[42] हे यहोवा, परमेश्वर अपने अभिषिक्त
राजा को स्वीकार कर।
अपने सेवक दाऊद की
स्वामी भक्ति को याद रख!"

मन्दिर यहोवा को अर्पित

7 जब सुलैमान ने प्रार्थना पूरी की तो आकाश से आग उतरी और उसने होमबलि और बलियों को जलाया। यहोवा के तेज ने मन्दिर को भर दिया। [2]याजक यहोवा के मन्दिर में नहीं जा सकते थे क्योंकि यहोवा के तेज ने उसे भर दिया था। [3]इस्राएल के सभी लोगों ने आकाश से आग को उतरते देखा। इस्राएल के लोगों ने मन्दिर पर भी यहोवा के तेज को देखा। उन्होंने अपने चेहरे को चबूतरे की फर्श तक झुकाया। उन्होंने यहोवा की उपासना की तथा उसे धन्यवाद दिया। उन्होंने गाया,

"यहोवा भला है,
और उसकी दया सदा रहती है।"*

[4]तब राजा सुलैमान और इस्राएल के सभी लोगों ने बलि यहोवा के सामने चढ़ाई। [5]राजा सुलैमान ने बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ें भेंट कीं। राजा और सभी लोगों ने परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र बनाया। इसका उपयोग केवल परमेश्वर की उपासना के लिये होता था। [6]याजक अपना कार्य करने के लिये तैयार खड़े थे। लेवीवंशी भी यहोवा के संगीत के उपकरणों के

यहोवा भला ... रहती है देखें भजन. 136

साथ खड़े थे। ये उपकरण राजा दाऊद द्वारा यहोवा को धन्यवाद देने के लिये बनाए गए थे। याजक और लेवीवंशी कह रहे थे, "यहोवा का प्रेम सदैव रहता है!" जब लेवीवंशियों के दूसरी ओर याजक खड़े हुए तो याजकों ने अपनी तुरहियाँ बजाई और इस्राएल के सभी लोग खड़े थे।

[7]सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के सामने वाले आँगन के मध्य भाग को भी पवित्र किया। यह वही स्थान है जहाँ सुलैमान ने होमबलि और मेलबलि की चर्बी चढ़ाई। सुलैमान ने आँगन का मध्य भाग काम में लिया क्योंकि काँसे की वेदी पर जिसे सुलैमान ने बनाई थी, सारी होमबलि, अन्नबलि और चर्बी नहीं आ सकती थी वैसी भेंटें बहुत अधिक थीं।

[8]सुलैमान और इस्राएल के सभी लोगों ने सात दिनों तक दावतों का उत्सव मनाया। सुलैमान के साथ लोगों का एक बहुत बड़ा समूह था। वे लोग उत्तर दिशा के हमथ नगर के प्रवेश द्वार तथा दक्षिण के मिस्र के झरने जैसे सुदूर क्षेत्रों से आये थे। [9]आठवें दिन उन्होंने एक धर्मसभा की क्योंकि वे सात दिन उत्सव मना चुके थे। उन्होंने वेदी को पवित्र किया और इसका उपयोग केवल यहोवा की उपासना के लिये होना था और उन्होंने सात दिन दावत का उत्सव मनाया। [10]सातवें महीने के तेईसवें दिन सुलैमान ने लोगों को वापस उनके घर भेज दिया। लोग बड़े प्रसन्न थे और उनका हृदय आनन्द से भरा था क्योंकि यहोवा दाऊद, सुलैमान और अपने इस्राएल के लोगों के प्रति बहुत भला था।

यहोवा सुलैमान के पास आता है

[11]सुलैमान ने यहोवा का मन्दिर और राजमहल को पूरा कर लिया। सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर और अपने आवास में जो कुछ करने की योजना बनाई थी उसमें उसे सफलता मिली। [12]तब यहोवा सुलैमान के पास रात को आया। यहोवा ने उससे कहा, "सुलैमान, मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है और मैंने इस स्थान को अपने लिए बलि के गृह के रूप में चुना है। [13]जब मैं आकाश को बन्द करता हूँ तो वर्षा नहीं होती या मैं टिड्डियों को आदेश देता हूँ कि वे देश को नष्ट करें या अपने लोगों में बीमारी भेजता हूँ, [14]और मेरे नाम से पुकारे जाने वाले लोग यदि विनम्र होते तथा प्रार्थना करते हैं, और मुझे ढूढ़ते हैं और अपने बुरे रास्तों से दूर हट जाते हैं तो मैं स्वर्ग से उनकी सुनूँगा और मैं उनके पाप को क्षमा करूँगा और उनके देश को अच्छा कर दूँगा। [15]अब, मेरी आँखे खुली हैं और मेरे कान इस स्थान पर की गई प्रार्थनाओं पर ध्यान देंगे। [16]मैंने इस मन्दिर को चुना है और मैंने इसे पवित्र किया है जिससे मेरा नाम यहाँ सदैव रहे। हाँ, मेरी आँखे और मेरा हृदय इस मन्दिर में सदा रहेगा।

[17]"अब सुलैमान, यदि तुम मेरे सामने वैसे ही रहोगे जैसे तुम्हारा पिता दाऊद रहा, यदि तुम उन सभी का पालन करोगे जिनके लिए मैंने आदेश दिया है और यदि तुम मेरे विधियों और नियमों का पालन करोगे। [18]तब मैं तुम्हें शक्तिशाली राजा बनाऊँगा और तुम्हारा राज्य विस्तृत होगा। यही वाचा है जो मैंने तुम्हारे पिता दाऊद से की है। मैंने उससे कहा था, 'दाऊद, तुम अपने परिवार में एक ऐसा व्यक्ति सदा पाओगे जो इस्राएल में राजा होगा।'

[19]"किन्तु यदि तुम मेरे नियमों और आदेशों को नहीं मानोगे जिन्हें मैंने दिया है और तुम अन्य देवताओं की पूजा और सेवा करोगे, [20]तब मैं इस्राएल के लोगों को अपने उस देश से बाहर करूँगा जिसे मैंने उन्हें दिया है। मैं इस मन्दिर को अपनी आँखों से दूर कर दूँगा। जिसे मैंने अपने नाम के लिये पवित्र बनाया है। मैं इस मन्दिर को ऐसा कुछ बनाऊँगा कि सभी राष्ट्र इसकी बुराई करेंगे। [21]हर एक व्यक्ति जो इस प्रतिष्ठित मन्दिर के पास से गुजरेगा, आश्चर्य करेगा। वे कहेंगे, 'यहोवा ने ऐसा भयंकर काम इस देश और इस मन्दिर के साथ क्यों किया?' [22]तब लोग उत्तर देंगे, 'क्योंकि इस्राएल के लोगों ने यहोवा, परमेश्वर जिसकी आज्ञा का पालन उनके पूर्वज करते थे, उसकी आज्ञा पालन करने से इन्कार कर दिया। वह ही परमेश्वर है जो उन्हें मिस्र देश के बाहर ले आया। किन्तु इस्राएल के लोगों ने अन्य देवताओं को अपनाया। उन्होंने मूर्ति रूप में देवताओं की पूजा और सेवा की। यही कारण है कि यहोवा ने इस्राएल के लोगों पर इतना सब भयंकर घटित कराया है।'"

सुलैमान के बसाए नगर

8 यहोवा के मन्दिर को बनाने और अपना महल बनाने में सुलैमान को बीस वर्ष लगे। [2]तब सुलैमान ने पुन: उन नगरों को बनाया जो हूराम ने उसको दिये और सुलैमान ने इस्राएल के कुछ लोगों को उन नगरों

में रहने की आज्ञा दे दी। [3]इसके बाद सुलैमान सोबा के हमात को गया और उस पर अधिकार कर लिया। [4]सुलैमान ने मरुभूमि में तदमोर नगर बनाया। उसने चीज़ों के संग्रह के लिए हमात में सभी नगर बनाए। [5]सुलैमान ने उच्च बेथोरोन और निम्न बेथोरोन के नगरों को पुन: बनाया। उसने उन नगरों को शक्तिशाली गढ़ बनाया। वे नगर मजबूत दीवारों, फाटकों और फाटकों में छड़ों वाले थे। [6]सुलैमान ने बालात नगर को फिर बनाया और अन्य नगरों को भी जहाँ उसने चीजों का संग्रह किया। उसने सभी नगरों को बनाया जहाँ रथ रखे गए थे तथा जहाँ सभी नगरों में घुड़सवार रहते थे। सुलैमान ने यरूशलेम, लबानोन और उन सभी देशों में जहाँ वह राजा था, जो चाहा बनाया।

[7-8]जहाँ इस्राएल के लोग रह रहे थे वहाँ बहुत से अजनबी बचे रह गए थे। वे हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोग थे। सुलैमान ने उन अजनबियों को दास–मजदूर होने के लिये विवश किया। वे लोग इस्राएल के लोगों में से नहीं थे। वे लोग उनके वंशज थे जो देश में बचे रह गये थे और तब तक इस्राएल के लोगों द्वारा नष्ट नहीं किये गए थे। यह अब तक चल रहा है। [9]सुलैमान ने इस्राएल के किसी भी व्यक्ति को दास मजदूर बनने को विवश नहीं किया। इस्राएल के लोग सुलैमान के योद्धा थे। वे सुलैमान की सेना के सेनापति और अधिकारी थे। वे सुलैमान के रथों के सेनापति और सारथियों के सेनापति थे [10]और इस्राएल के कुछ लोग सुलैमान के महत्वपूर्ण अधिकारियों के प्रमुख थे। ऐसे लोगों का निरीक्षण करने वाले ढाई सौ प्रमुख थे।

[11]सुलैमान दाऊद के नगर से फिरौन की पुत्री को उस महल में लाया जिसे उसने उसके लिये बनाया था। सुलैमान ने कहा, "मेरी पत्नी राजा दाऊद के महल में नहीं रह सकती क्योंकि जिन स्थानों पर साक्षीपत्र का सन्दूक रहा हो, वे स्थान पवित्र हैं।"

[12]तब सुलैमान ने यहोवा को होमबलि यहोवा की वेदी पर चढ़ायी। सुलैमान ने उस वेदी को मन्दिर के द्वार मण्डप के सामने बनाया। [13]सुलैमान ने हर एक दिन मूसा के आदेश के अनुसार बलि चढ़ाई। यह बलि सब्त के दिन नवचन्द्र उत्सव को और तीन वार्षिक पर्वों को दी जानी थीं। ये तीन वार्षिक पर्व अख़मीरी रोटी का पर्व सप्ताहों का पर्व और आश्रय का पर्व थे। [14]सुलैमान ने अपने पिता दाऊद के निर्देशों का पालन किया। सुलैमान ने याजकों के वर्ग उनकी सेवा के लिये चुने। सुलैमान ने लेवीवंशियों को भी उनके कार्य के लिये चुना। लेवीवंशियों को स्तुति में पहल करनी होती थी और उन्हें मन्दिर की सेवाओं में जो कुछ नित्य किया जाना होता था उनमें याजकों की सहायता करना था और सुलैमान ने द्वारपालों को चुना जिनके समूहों को हर द्वार पर सेवा करनी थी। इस पद्धति का निर्देश परमेश्वर के व्यक्ति दाऊद ने दिया था। [15]इस्राएल के लोगों ने सुलैमान द्वारा याजकों और लेवीवंशियों को दिये गए निर्देशों को न बदला, न ही उनका उल्लघंन किया। उन्होंने किसी भी निर्देश में वैसे भी परिवर्तन नहीं किये जैसे वे बहुमूल्य चीजों को रखने में करते थे।

[16]सुलैमान के सभी कार्य पूरे हो गए। यहोवा के मन्दिर के आरम्भ होने से उसके पूरे होने के दिन तक योजना ठीक बनी थी। इस प्रकार यहोवा का मन्दिर पूरा हुआ।

[17]तब सुलैमान एस्योनगेबेर और एलोत नगरों को गया। वे नगर एदोम प्रदेश में लाल सागर के निकट थे। [18]हूराम ने सुलैमान को जहाज भेजे। हूराम के अपने आदमी जहाजों को चला रहे थे। हुराम के व्यक्ति समुद्र में जहाज चलाने में कुशल थे। हूराम के व्यक्ति सुलैमान के सेवकों के साथ ओपीर* गए और सत्रह टन सोना लेकर राजा सुलैमान के पास लौटे।

शीबा की रानी सुलैमान के यहाँ आती है

9 शीबा की रानी ने सुलैमान का यश सुना। वह यरूशलेम में कठिन प्रश्नों से सुलैमान की परीक्षा लेने आई। शीबा की रानी अपने साथ एक बड़ा समूह लेकर आई थी। उसके पास ऊँट थे जिन पर मसाले, बहुत अधिक सोना और बहुमूल्य रत्न लदे थे। वह सुलैमान के पास आई और उसने सुलैमान से बातें कीं। उसे सुलैमान से अनेक प्रश्न पूछने थे। [2]सुलैमान ने उसके सभी प्रश्नों के उत्तर दिये। सुलैमान के लिए व्याख्या करने या उत्तर देने के लिये कुछ भी अति कठिन नहीं था। [3]शीबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धि और उसके बनाए घर को देखा। [4]उसने सुलैमान के मेज के भोजन को देखा और उसके बहुत से महत्वपूर्ण अधिकारियों को देखा। उसने देखा कि उसके सेवक कैसे कार्य कर रहे हैं और उन्होंने कैसे वस्त्र

ओपीर एक स्थान जहाँ बहुत सोना था। आज कोई व्यक्ति नहीं जानता कि ओपीर ठीक कहाँ स्थित था।

पहन रखे हैं उसने देखा कि उसके दाखमधु पिलाने वाले सेवक कैसे कार्य कर रहें हैं और उन्होंने कैसे वस्त्र पहने हैं उसने होमबलियों को देखा जिन्हें सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर में चढ़ाया था। जब शीबा की रानी ने इन सभी चीजों को देखा तो वह चकित रह गई! [5]तब उसने राजा सुलैमान से कहा, "मैंने अपने देश में तुम्हारे महान कार्यो और तुम्हारी बुद्धिमत्ता के बारे में जो कहानी सुनी है, वह सच है। [6]मुझे इन कहानियों पर तब तक विश्वास नहीं था जब तक मैं आई नहीं और अपनी आँखों से देखा नहीं। ओह! तुम्हारी बुद्धिमत्ता का आधा भी मुझसे नहीं कहा गया है। तुम उन सुनी कहानियों में कहे गए रूप से बड़े हो! [7]तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे अधिकारी बहुत भाग्यशाली हैं! वे तुम्हारे ज्ञान की बातें तुम्हारी सेवा करते हुए सुन सकते हैं! [8]तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की प्रशंसा हो! वह तुम पर प्रसन्न है और उसने तुम्हें अपने सिंहासन पर, परमेश्वर यहोवा के लिये, राजा बनने के लिये बैठाया है। तुम्हारा परमेश्वर इस्राएल से प्रेम करता है और इस्राएल की सहायता सदैव करता रहेगा। यही कारण है कि यहोवा ने उचित और ठीक–ठीक सब करने के लिये तुम्हें इस्राएल का राजा बनाया है।"

[9]तब शीबा की रानी ने राजा सुलैमान को साढ़े चार टन सोना, बहुत से मसाले और बहुमूल्य रत्न दिये। किसी ने इतने अच्छे मसाले राजा सुलैमान को नहीं दिये जितने अच्छे रानी शीबा ने दिये।

[10]हूराम के नौकर और सुलैमान के नौकर ओपीर से सोना ले आए। वे चन्दन की लकड़ी और बहुमूल्य रत्न भी लाए। [11]राजा सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर एवं महल की सीढ़ियों के लिये चन्दन की लकड़ी का उपयोग किया। सुलैमान ने चन्दन की लकड़ी का उपयोग गायकों के लिये वीणा और तम्बूरा बनाने के लिये भी किया। यहूदा देश में चन्दन की लकड़ी से बनी उन जैसी सुन्दर चीजें किसी ने कभी देखी नहीं थीं।

[12]जो कुछ भी शीबा देश की रानी ने राजा सुलैमान से माँगा, वह उसने दिया। जो उसने दिया, वह उससे अधिक था जो वह राजा सुलैमान के लिए लाई थी। तत्तपश्चात् वह अपने सेवक सेविकाओं के साथ विदा हुई। वह अपने देश लौट गई।

सुलैमान की प्रचुर सम्पत्ति

[13]एक वर्ष में सुलैमान ने जितना सोना पाया, उसका वजन पच्चीस टन था। [14]व्यापारी और सौदागर सुलैमान के पास और अधिक सोना लाए। अरब के सभी राजा और प्रदेशों के शासक भी सुलैमान के लिये सोना चाँदी लाए। [15]राजा सुलैमान ने सोने के पत्तर की दो सौ ढालें बनाई। लगभग 3.3 किलोग्राम पिटा सोना हर एक ढाल के बनाने में उपयोग में आया था। [16]सुलैमान ने तीन सौ छोटी ढालें भी सोने के पत्तर की बनाई। लगभग 1.65किलोग्राम सोना हर एक ढाल के बनाने में उपयोग में आया था। राजा सुलैमान ने सोने की ढालों को लबानोन के वन–महल में रखा।

[17]राजा सुलैमान ने एक विशाल सिंहासन बनाने के लिये हाथी–दाँत का उपयोग किया। उसने सिंहासन को शुद्ध सोने से मढ़ा। [18]सिंहासन पर चढ़ने की छ: सीढ़ियाँ थीं और इसका एक पद–पीठ था। वह सोने का बना था। सिंहासन में दोनों ओर भुजाओं को आराम देने के लिए बाजू लगे थे। हर एक बाजू से लगी एक–एक सिंह की मूर्ति खड़ी थी। [19]वहाँ छ: सीढ़ियों से लगे बगल में बारह सिंहों की मूर्तियाँ खड़ी थीं। हर सीढ़ी की हर ओर एक सिंह था। इस प्रकार का सिंहासन किसी दूसरे राज्य में नहीं बना था। [20]राजा सुलैमान के सभी पीने के प्याले सोने के बने थे। लबानोन वन–महल की सभी प्रतिदिन की चीज़ें शुद्ध सोने की बनी थीं। सुलैमान के समय में चाँदी मूल्यवान नहीं समझी जाती थी। [21]राजा सुलैमान के पास जहाज थे जो तर्शीश* को जाते थे। हूराम के आदमी सुलैमान के जहाजों को चलाते थे। हर तीसरे वर्ष जहाज तर्शीश से सोना, चाँदी, हाथी–दाँत, बन्दर और मोर लेकर सुलैमान के पास लौटते थे।

[22]राजा सुलैमान धन और बुद्धि दोनों में संसार के किसी भी राजा से बड़ा हो गया। [23]संसार के सारे राजा उसको देखने और उसके बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णयों को सुनने के लिये आए। परमेश्वर ने सुलैमान को वह बुद्धि दी। [24]हर वर्ष वे राजा सुलैमान को भेंट लाते थे। वे चाँदी सोने की चीजें, वस्त्र, कवच, मसाले, घोड़े और खच्चर लाते थे।

तर्शीश इस्राएल से बहुत दूर, संभवत: स्पेन, का एक नगर। तर्शीश अपने उन विशाल जहाजों के लिये प्रसिद्ध था जो भूमध्यसागर में चलते थे।

[25]सुलैमान के पास चार हजार घोड़ों और रथों को रखने के लिये अस्तबल थे। उसके पास बारह हजार सारथी थे। सुलैमान उन्हें रथों के लिये विशेष नगरों में रखता था और यरूशलेम में अपने पास रखता था। [26]सुलैमान फरात नदी से लगातार पलिश्ती लोगों के देश तक और मिस्र की सीमा तक के राजाओं का सम्राट था। [27]राजा सुलैमान ने चाँदी को पत्थर जैसा सस्ता बना दिया और देवदार लकड़ी को पहाड़ी प्रदेश में गूलर के पेड़ों जैसा सामान्य। [28]लोग सुलैमान के लिये मिस्र और अन्य सभी देशों से घोड़े लाते थे।

सुलैमान की मृत्यु

[29]आरम्भ से लेकर अन्त तक सुलैमान ने और जो कुछ किया वह नातान नबी के लेखों, शीलो के अहिय्याह की भविष्यवाणियों और इद्दो के दर्शनों में है। इद्दो ने यारोबाम के बारे में लिखा। यारोबाम नबात का पुत्र था। [30]सुलैमान यरुशलेम में पूरे इस्राएल का राजा चालीस वर्ष तक रहा। [31]तब सुलैमान अपने पूर्वजों के साथ विश्राम करने गया। लोगों ने उसे उसके पिता दाऊद के नगर में दफनाया। सुलैमान का पुत्र रहूबियाम सुलैमान की जगह नया राजा हुआ।

रहूबियाम मूर्खतापूर्ण काम करता है

10 रहूबियाम शकेम नगर को गया क्योंकि इस्राएल के सभी लोग उसे राजा बनाने के लिये वहीं गए। [2]यारोबाम मिस्र में था क्योंकि वह राजा सुलैमान के यहाँ से भाग गया था। यारोबाम नबात का पुत्र था। यारोबाम ने सुना कि रहूबियाम नया राजा होने जा रहा है। इसलिये यारोबाम मिस्र से लौट आया। [3]इस्राएल के लोगों ने यारोबाम को अपने साथ रहने के लिये बुलाया। तब यारोबाम तथा इस्राएल के सभी लोग रहूबियाम के यहाँ गए। उन्होंने उससे कहा, “रहूबियाम, [4]तुम्हारे पिता ने हम लोगों के जीवन को कष्टकर बनाया। यह भारी वजन ले चलने के समान था। उस वजन को हल्का करो तो हम तुम्हारी सेवा करेंगे।”

[5]रहूबियाम ने उनसे कहा, “तीन दिन बाद लौटकर मेरे पास आओ।” इसलिए लोग चले गए।

[6]तब राजा रहूबियाम ने उन बुजुर्ग लोगों से बातें कीं जिन्होंने पहले उसके पिता की सेवा की थी। रहूबियाम ने उनसे कहा, “आप इन लोगों से क्या कहने के लिये सलाह देते हैं?”

[7]बुजुर्गों ने रहूबियाम से कहा, “यदि तुम उन लोगों के प्रति दयालु हो और उन्हें प्रसन्न करते हो तथा उनसे अच्छी बातें कहते हो तो वे तुम्हारी सेवा सदैव करेंगे।”

[8]किन्तु रहूबियाम ने बुजुर्गों की दी सलाह को स्वीकार नहीं किया। रहूबियाम ने उन युवकों से बात की जो उसके साथ युवा हुए थे और उसकी सेवा कर रहे थे। [9]रहूबियाम ने उनसे कहा, “तुम लोग क्या सलाह देते हो जिसे मैं उन लोगों से कहूँ? उन्होंने मुझसे अपने काम को हल्का करने को कहा है और वे चाहते हैं कि मैं अपने पिता द्वारा उन पर डाले गए वजन को कुछ कम करूँ।”

[10]तब उन युवकों ने जो रहूबियाम के साथ युवा हुए थे, उससे कहा, “जिन लोगों ने तुमसे बातें की उनसे तुम यह कहो। लोगों ने तुमसे कहा, ‘तुम्हारे पिता ने हमारे जीवन को कष्टकर बनाया था। यह भारी वजन ले चलने के समान था। किन्तु हम चाहते हैं कि तुम हम लोगों के वजन को कुछ हल्का करो।’ किन्तु रहूबियाम, तुम्हें यही उन लोगों से कहना चाहिए। उनसे कहो, ‘मेरी छोटी उँगली भी मेरे पिता की कमर से मोटी होगी! [11]मेरे पिता ने तुम पर भारी बोझ लादा। किन्तु मैं उस बोझ को बढ़ाऊँगा। मेरे पिता ने तुमको कोड़े लगाने का दण्ड दिया था। मैं ऐसे कोड़े लगाने का दण्ड दूँगा जिसकी छोर पर तेज धातु के टुकड़े हैं।’”

[12]राजा रहूबियाम ने कहा था: “तीसरे दिन लौटकर आना।” अत: तीसरे दिन यारोबाम और सब इस्राएली जनता राजा रहूबियाम के पास आए। [13]तब राजा रहूबियाम ने उनसे नीचता से बात की। राजा रहूबियाम ने बुजुर्ग लोगों की सलाह न मानी। [14]राजा रहूबियाम ने लोगों से वैसे ही बात की जैसे युवकों ने सलाह दी थी। उसने कहा, “मेरे पिता ने तुम्हारे बोझ को भारी किया था, किन्तु मैं उसे और अधिक भारी करूँगा। मेरे पिता ने तुम पर कोड़े लगाने का दण्ड दिया था, किन्तु मैं ऐसे कोड़े लगाने का दण्ड दूँगा जिनकी छोर में तेज धातु के टुकड़े होंगे।” [15]इस प्रकार राजा रहूबियाम ने लोगों की एक न सुनी। उसने लोगों की एक न सुनी क्योंकि यह परिवर्तन परमेश्वर के यहाँ से आया। परमेश्वर ने ऐसा होने दिया। यह इसलिए हुआ कि यहोवा अपने उस वचन को सत्य प्रमाणित कर सके जो उन्होंने अहिय्याह के द्वारा यारोबाम को कहा था।

अहिय्याह शीलो लोगों में से था और यारोबाम नबात का पुत्र था।

[16]इस्राएल के लोगों ने देखा कि राजा रहूबियाम उनकी एक नहीं सुनता। उन्होंने राजा से कहा, "क्या हम दाऊद के परिवार के अंग हैं? नहीं! क्या हमें यिशै की कोई भूमि मिलनी है? नहीं! इसलिये ऐ इस्राएलियों, हम लोग अपने शिविर में चलें। दाऊद की सन्तान को उसके अपने लोगों पर शासन करने दें!" तब इस्राएल के सभी लोग अपने शिविरों में लौट गए। [17]किन्तु इस्राएल के कुछ ऐसे लोग थे जो यहूदा नगर में रहते थे और रहूबियाम उनका राजा था।

[18]हदोराम काम करने के लिये विवश किये जाने वाले लोगों का अधीक्षक था। रहूबियाम ने उसे इस्राएल के लोगों के पास भेजा। किन्तु इस्राएल के लोगों ने हदोराम पर पत्थर फेंके और उसे मार डाला। तब रहूबियाम भागा और अपने रथ में कूद पड़ा तथा बच निकला। वह भागकर यरूशलेम गया। [19]उस समय से लेकर अब तक इस्राएली दाऊद के परिवार के विरुद्ध हो गए हैं।

11 जब रहूबियाम यरुशलेम आया, उसने एक लाख अस्सी हजार सर्वोत्तम योद्धाओं को इकट्ठा किया। उसने इन योद्धाओं को यहूदा और बिन्यामीन के परिवार समूहों से इकट्ठा किया। उसने इन्हें इस्राएल के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार किया जिससे वह राज्य को रहूबियाम को वापस लौटा सके। [2]किन्तु यहोवा का सन्देश शमायाह के पास आया। शमायाह परमेश्वर का व्यक्ति था। यहोवा ने कहा, [3]"शमायाह यहूदा के राजा, सुलैमान के पुत्र रहूबियाम से बातें करो और यहूदा तथा बिन्यामीन में रहने वाले सभी इस्राएल के लोगों से बातें करो। [4]उनसे कहो, यहोवा यह कहता है: 'तुम्हें अपने भाईयों के विरुद्ध नहीं लड़ना चाहिये! हर एक व्यक्ति अपने घर लौट जाये। मैंने ही ऐसा होने दिया है।' इसलिये राजा रहूबियाम और उसकी सेना ने यहोवा का सन्देश माना और वे लौट गए। उन्होंने यारोबाम पर आक्रमण नहीं किया।

रहूबियाम यहूदा को शक्तिशाली बनाता है

[5]रहूबियाम यरुशलेम में रहने लगा। उसने आक्रमण के विरुद्ध रक्षा के लिये यहूदा में सुदृढ़ नगर बनाए। [6]उसने बेतलेहेम, एताम, तकोआ, [7]बेत्सूर, सोको, अदुल्लाम, [8]गत, मारेशा, जीप, [9]अदोरैम, लाकीश, अजेका, [10]सोरा, अय्यालोन, और हेब्रोन नगरों की मरम्मत कराई। यहूदा और बिन्यामीन में ये नगर दृढ़ बनाए गए। [11]जब रहूबियाम ने उन नगरों को दृढ़ बना लिया तो उनमें सेनापति रखे। उसने उन नगरों में भोजन, तेल और दाखमधु की पूर्ति की व्यवस्था की। [12]रहूबियाम ने ढाल और भाले भी हर एक नगर में रखे और उन्हें बहुत शक्तिशाली बनाया। रहूबियाम ने यहूदा और बिन्यामीन के लोगों को अपने अधिकार में रखा।

[13]पूरे इस्राएल के याजक और लेवीवंशी रहूबियाम से सहमत थे और वे उसके साथ हो गए। [14]लेवीवंशियों ने अपनी घास वाली भूमि और अपने खेत छोड़ दिए और वे यहूदा तथा यरूशलेम आ गए। लेवीवंशियों ने यह इसलिए किया कि यारोबाम और उसके पुत्रों ने उन्हें यहोवा के याजक के रूप में सेवा कराने से इन्कार कर दिया। [15]यारोबाम ने अपने ही याजकों को वहाँ उच्च स्थानों पर सेवा करने के लिये नियुक्त किया जहाँ उसने बकरे और बछड़े की उन मूर्तियों को स्थापित की जिन्हें उसने बनाया था। [16]जब लेवीवंशियों ने इस्राएल को छोड़ दिया तब इस्राएल के परिवार समूह के वे लोग जो इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के प्रति विश्वास योग्य थे, यरूशलेम में यहोवा, अपने पूर्वजों के परमेश्वर को बलि चढ़ाने आए। [17]उन लोगों ने यहूदा के राज्य को शक्तिशाली बनाया और उन्होंने सुलैमान के पुत्र रहूबियाम को तीन वर्ष तक समर्थन दिया। वे ऐसा करते रहे क्योंकि इस समय के बीच वे वैसे रहते रहे जैसे दाऊद और सुलैमान रहे थे।

रहूबियाम का परिवार

[18]रहूबियाम ने महलत से विवाह किया। उसका पिता यरीमोत था। उसकी माँ अबीहैल थी। यरीमोत दाऊद का पुत्र था। अबीहैल एलीआब की पुत्री थी और एलीआब यिशै का पुत्र था। [19]महलत से रहूबियाम के ये पुत्र उत्पन्न हुए: यूश, शमर्याह और जाहम। [20]तब रहूबियाम ने माका से विवाह किया। माका अबशलोम की पोती* थी और माका से रहूबियाम के ये बच्चे हुए: अबिय्याह, अत्ते, जीजा और शलोमीत। [21]रहूबियाम माका से सभी अन्य पत्नियों और दासियों* से अधिक प्रेम करता था।

पोती शाब्दिक "पुत्री।"

दासियों या "रखैल" वे दासियाँ जो व्यक्तियों के लिये पत्नियों के समान थीं।

माका अबशलोम की पोती थी। रहूबियाम की अट्ठारह पत्नियाँ और साठ रखैल थीं। रहूबियाम अट्ठाईस पुत्रों और साठ पुत्रियों का पिता था।

[22]रहूबियाम ने अपने भाईयों में अबिय्याह को प्रमुख चुना। रहूबियाम ने यह इसलिये किया कि उसने अबिय्याह को राजा बनाने की योजना बनाई। [23]रहूबियाम ने बुद्धिमानी से काम किया और उसने अपने लड़कों को यहूदा और बिन्यामीन के पूरे देश में हर एक शक्तिशाली नगर में फैला दिया और रहूबियाम ने अपने पुत्रों को बहुत अधिक पुत्रियाँ भेजीं। उसने अपने पुत्रों के लिये पत्नियों की खोज की।

मिस्री राजा शीशक का यरूशलेम पर आक्रमण

12 रहूबियाम एक शक्तिशाली राजा हो गया। उसने अपने राज्य को भी शक्तिशाली बनाया। तब रहूबियाम और यहूदा के सभी लोगों ने यहोवा के नियम का पालन करने से इन्कार कर दिया। [2]रहूबियाम के राज्यकाल के पाँचवें वर्ष शीशक ने यरूशलेम पर आक्रमण किया। शीशक मिस्र का राजा था। यह इसलिये हुआ कि रहूबियाम और यहूदा के लोग यहोवा के प्रति निष्ठावान नहीं थे। [3]शीशक के पास बारह हजार रथ, साठ हजार अश्वारोही, और एक सेना थी जिसे कोई गिन नहीं सकता था। शीशक की सेना में लूबी, सुक्कियी और कूशी सैनिक थे। [4]शीशक ने यहूदा के शक्तिशाली नगरों को पराजित कर दिया। तब शीशक अपनी सेना को यरूशलेम लाया।

[5]तब शमायाह नबी रहूबियाम और यहूदा के प्रमुखों के पास आया। यहूदा के वे प्रमुख यरूशलेम में इकट्ठे हुए थे क्योंकि वे सभी शीशक से भयभीत थे। शमायाह ने रहूबियाम और यहूदा के प्रमुखों से कहा, "यहोवा जो कहता है वह यह है: 'रहूबियाम, तुम और यहूदा के लोगों ने मुझे छोड़ दिया है और मेरे नियम का पालन करने से इन्कार कर दिया है। इसलिए मैं तुमको अपनी सहायता के बिना शीशक का सामना करने को छोड़ूँगा।'"

[6]तब यहूदा के प्रमुखों और राजा रहूबियाम ने ग्लानि का अनुभव करते हुये अपने को विनम्र किया और कहा कि, "यहोवा न्यायी है।"

[7]यहोवा ने देखा कि राजा और यहूदा के प्रमुखों ने अपने आप को विनम्र बनाया है। तब यहोवा का सन्देश शमायाह के पास आया। यहोवा ने शमायाह से कहा, "राजा और लोगों ने अपने को विनम्र किया है, इसलिये मैं उन्हें नष्ट नहीं करुँगा अपितु मैं उन्हें शीघ्र ही बचाऊँगा। मैं शीशक का उपयोग यरूशलेम पर अपना क्रोध उतारने के लिये नहीं करुँगा। [8]किन्तु यरुशलेम के लोग शीशक के सेवक हो जाएंगे। यह इसलिये होगा कि वे सीख सकें कि मेरी सेवा करना दूसरे राष्ट्रों के राजाओं की सेवा करने से भिन्न है।"

[9]शीशक ने यरुशलेम पर आक्रमण किया और यहोवा के मन्दिर में जो खजाना था, ले गया। शीशक मिस्र का राजा था और उसने उस खजाने को भी ले लिया जो राजा के महल में था। शीशक ने हर एक चीज ली और उनके खजानों को ले गया। उसने सोने की ढ़ालों को भी लिया जिन्हें सुलैमान ने बनाया था। [10]राजा रहूबियाम ने सोने की ढालों के स्थान पर काँसे की ढालें बनाई। रहूबियाम ने उन सेनापतियों को जो राजमहल के द्वारों की रक्षा के उत्तरदायी थे, काँसे की ढालें दीं। [11]जब राजा यहोवा के मन्दिर में जाता था तो रक्षक काँसे की ढालें बाहर निकालते थे। उसके बाद वे काँसे की ढालों को रक्षक-गृह में वापस रखते थे।

[12]जब रहूबियाम ने अपने को विनम्र कर लिया तो यहोवा ने अपने क्रोध को उससे दूर कर लिया। इसलिये यहोवा ने रहूबियाम को पूरी तरह नष्ट नहीं किया। यहूदा में कुछ अच्छाई बची थी।

[13]राजा रहूबियाम ने यरूशलेम में अपने को शक्तिशाली राजा बना लिया। वह उस समय इकतालीस वर्ष का था, जब राजा बना। रहूबियाम यरूशलेम में सत्रह वर्ष तक राजा रहा। यरूशलेम वह नगर है जिसे यहोवा ने इस्राएल के सारे परिवार समूह में से चुना। यहोवा ने यरुशलेम में अपने को प्रतिष्ठित करना चुना। रहूबियाम की माँ नामा थी। नामा अम्मोन देश की थी। [14]रहूबियाम ने बुरी चीजें इसलिये कीं क्योंकि उसने अपने हृदय से यहोवा की आज्ञा पालन करने का निश्चय नहीं किया।

[15]जब रहूबियाम राजा हुआ, अपने शासन के आरम्भ से अन्त तक, उसने जो कुछ किया वह शमायाह और इद्दो के लेखों में लिखा गया है। शमायाह एक नबी था और इद्दो दृष्टा। वे लोग परिवार इतिहास लिखते थे और रहूबियाम तथा यारोबाम जब तक शासन करते रहे उनके बीच सदा युद्ध चलता रहा। [16]रहूबियाम ने अपने पूर्वजों के साथ

विश्राम किया। रहूबियाम को दाऊद के नगर में दफनाया गया। रहूबियाम का पुत्र अबिय्याह नया राजा हुआ।

यहूदा का राजा अबिय्याह

13 जब राजा यारोबाम इस्राएल के राजा के रूप में अट्ठारहवें वर्ष में था अबिय्याह यहूदा का नया राजा बना। [2]अबिय्याह यरूशलेम में तीन वर्ष तक राजा रहा। अबिय्याह की माँ मीकायाह थी। मीकायाह, ऊरीएल की पुत्री थी। ऊरीएल गिबा नगर का था और वहाँ अबिय्याह और यारोबाम के बीच युद्ध चल रहा था। [3]अबिय्याह की सेना में चार लाख वीर सैनिक थे। यारोबाम ने अबिय्याह के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयारी की। उसके पास आठ लाख वीर सैनिक थे।

[4]तब अबिय्याह एप्रैम के पर्वतीय प्रदेश में समारैम पर्वत पर खड़ा हुआ। अबिय्याह ने कहा, "यारोबाम और सारे इस्राएली मेरी बात सुनों! [5]तुम लोगों को जानना चाहिए कि यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर ने दाऊद और उसकी सन्तानों को इस्राएल का राजा होने का अधिकार सदैव के लिये दिया है। यहोवा ने दाऊद को यह अधिकार नमकवाली वाचा के साथ दिया। [6]किन्तु यारोबाम अपने स्वामी के विरुद्ध हो गया! यारोबाम जो नबात का पुत्र था, दाऊद के पुत्र सुलैमान के अधिकारियों में से एक था। [7]तब निकम्मे, बुरे व्यक्ति यारोबाम के मित्र हो गए तथा यारोबाम और वे बुरे व्यक्ति सुलैमान के पुत्र रहूबियाम के विरुद्ध हो गये। रहूबियाम युवक था और उसे अनुभव नहीं था। इसलिये रहूबियाम यारोबाम और उसके बुरे मित्रों को रोक न सका।

[8]"तुम लोगों ने परमेश्वर के राज्य, जो दाऊद के पुत्रों द्वारा शासित है, हराने की योजना बनाई है। तुम लोगों की संख्या बहुत है और यारोबाम का तुम्हारे लिये बनाया गया सोने का बछड़ा तुम्हारा ईश्वर है! [9]तुम लोगों ने हारून के वंशज यहोवा के याजकों और लेवीवंशियों को निकाल बाहर किया है। तुमने पृथ्वी के अन्य देशों के समान अपने याजकों को चुना है। तब तो कोई भी व्यक्ति जो एक युवा बैल और सात मेंढ़े लाये, उन 'झूठे ईश्वरों' की सेवा करने वाला याजक बन सकता है।

[10]"किन्तु जहाँ तक हमारी बात है यहोवा हमारा परमेश्वर है। हम यहूदा के निवासी लोगों ने यहोवा की आज्ञा पालन से इन्कार किया नहीं है! हम लोगों ने उसको छोड़ा नहीं है! जो याजक यहोवा की सेवा करते हैं, वे हारून की सन्तान हैं और लेवीवंशी यहोवा की सेवा करने में याजकों की सहायता करते हैं। [11]वे होमबलि चढ़ाते हैं और धूप की सुगन्धि यहोवा को हर सुबह–शाम जलाते हैं। वे मन्दिर में विशेष मेज पर रोटियाँ पंक्तियों में रखते भी हैं और वे सोने के दीपाधार पर रखे हुए दीपकों की देखभाल करते हैं ताकि हर संध्या को वह प्रकाश के साथ चले। हम लोग यहोवा, अपने परमेश्वर की सेवा सावधानी के साथ करते हैं। किन्तु तुम लोगों ने उसको छोड़ दिया है। [12]स्वयं परमेश्वर हम लोगों के साथ है। वह हमारा शासक है और उसके याजक हमारे साथ हैं। परमेश्वर के याजक अपनी तुरही तुम्हें जगाने और तुम्हें उसके पास आने को उत्साहित करने के लिये फूँकते हैं! ऐ इस्राएल के लोगों, अपने पूर्वजों के यहोवा, परमेश्वर के विरुद्ध मत लड़ो! क्योंकि तुम सफल नहीं होगे!"

[13]किन्तु यारोबाम ने सैनिकों की एक टुकड़ी को चुपके–चुपके गुप्त रूप से अबिय्याह की सेना के पीछे भेजा। यारोबाम की सेना अबिय्याह की सेना के सामने थी। यारोबाम की सेना के गुप्त सैनिक अबिय्याह की सेना के पीछे थे। [14]जब अबिय्याह की सेना के यहूदा के सैनिकों ने चारों ओर देखा तो उन्होंने यारोबाम की सेना को आगे और पीछे से आक्रमण करते पाया। यहूदा के लोगों ने यहोवा को जोर से पुकारा और याजकों ने तुरहियाँ बजाई। [15]तब अबिय्याह की सेना के लोगों ने उद्घोष किया। जब यहूदा के लोगों ने उद्घोष किया तो परमेश्वर ने यारोबाम की सेना को हरा दिया। इस्राएल की सारी यारोबाम की सेना अबिय्याह की यहूदा की सेना द्वारा हरा दी गई। [16]इस्राएल के लोग यहूदा के लोगों के सामने भाग खड़े हुए। परमेश्वर ने यहूदा की सेना द्वारा इस्राएल की सेना को हरवा दिया। [17]अबिय्याह की सेना ने इस्राएल की सेना को बुरी तरह हराया और इस्राएल के पाँच लाख उत्तम योद्धा मारे गए। [18]इस प्रकार उस समय इस्राएल के लोग पराजित और यहूदा के लोग विजयी हुए। यहूदा की सेना विजयी हुई क्योंकि वह अपने पूर्वजों के परमेश्वर, यहोवा पर आश्रित रही।

[19]अबिय्याह की सेना ने यारोबाम की सेना का पीछा किया। अबिय्याह की सेना ने यारोबाम से बेतेल, यशाना तथा एप्रोन नगरों को ले लिया। उन्होंने उन नगरों और उनके आस पास के छोटे गावों पर अधिकार कर लिया।

[20]यारोबाम पर्याप्त शक्तिशाली फिर कभी नहीं हुआ जब तक अबिय्याह जीवित रहा। यहोवा ने यारोबाम को मार डाला। [21]किन्तु अबिय्याह शक्तिशाली हो गया। उसने चौदह स्त्रियों से विवाह किया और वह बाईस पुत्रों तथा सोलह पुत्रियों का पिता था। [22]अन्य जो कुछ अबिय्याह ने किया, वह इद्दो नबी की पुस्तकों में लिखा है।

14 अबिय्याह ने अपने पूर्वजों के साथ विश्राम लिया। लोगों ने उसे दाऊद के नगर में दफनाया। तब अबिय्याह का पुत्र आसा अबिय्याह के स्थान पर नया राजा हुआ। आसा के समय में देश में दस वर्ष शान्ति रही।

यहूदा का राजा आसा

[2]आसा ने यहोवा परमेश्वर के सामने अच्छे और ठीक काम किये। [3]आसा ने उन विचित्र वेदियों को हटा दिया जिनका उपयोग मूर्तियों की पूजा के लिये होता था। आसा ने उच्च स्थानों को हटा दिया और पवित्र पत्थरों* को नष्ट कर दिया और आसा ने अशेरा स्तम्भों को तोड़ डाला। [4]आसा ने यहूदा के लोगों को पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर का अनुसरण करने का आदेश दिया। वह वही परमेश्वर है जिसका अनुसरण उनके पूर्वजों ने किया था और आसा ने लोगों को यहोवा के नियमों और आदेशों को पालन करने का आदेश दिया। [5]आसा ने उच्च स्थानों को और सुगन्धि की वेदियों को यहूदा के सभी नगरों से हटाया। इस प्रकार जब आसा राजा था, राज्य शान्त रहा। [6]आसा ने यहूदा में शान्ति के समय शक्तिशाली नगर बनाए। आसा इन दिनों युद्ध से मुक्त रहा क्योंकि यहोवा ने उसे शान्ति दी।

[7]आसा ने यहूदा के लोगों से कहा, "हम लोग इन नगरों को बनाएं और इनके चारों ओर चारदीवारी बनाएं। हम गुम्बद, द्वार और द्वारों में छड़ें लगायें। जब तक हम लोग देश में हैं, यह करें। यह देश हमारा है क्योंकि हम लोगों ने अपने यहोवा परमेश्वर का अनुसरण किया है। उसने हम लोगों को सब ओर से शान्ति दी है।" इसलिये उन्होंने यह सब बनाया और वे सफल हुए।

[8]आसा के पास यहूदा के परिवार समूह से तीन लाख और बिन्यामीन के परिवार समूह से दो लाख अस्सी हजार सेना थी। यहूदा के लोग बड़ी ढालें और भाले ले चलते थे। बिन्यामीन के लोग छोटी ढालें और धनुष से चलने वाले बाण ले चलते थे। वे सभी बलवान और साहसी योद्धा थे।

[9]तब जेरह आसा की सेना के विरुद्ध आया। जेरह कूश का था। जेरह की सेना में एक लाख व्यक्ति और तीन सौ रथ थे। जेरह की सेना मारेशा नगर तक गई। [10]आसा जेरह के विरुद्ध लड़ने के लिये गया। आसा की सेना मारेशा के निकट सापता घाटी में युद्ध के लिये तैयार हुई।

[11]आसा ने यहोवा परमेश्वर को पुकारा और कहा, "यहोवा, केवल तू ही बलवान लोगों के विरुद्ध कमजोर लोगों की सहायता कर सकता है! हे मेरे यहोवा परमेश्वर हमारी सहायता कर! हम तुझ पर आश्रित हैं। हम तेरे नाम पर इस विशाल सेना से युद्ध करते हैं। हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है! अपने विरुद्ध किसी को जीतने न दे!"

[12]तब यहोवा ने यहूदा की ओर से आसा की सेना का उपयोग कूश की सेना को पराजित करने के लिये किया और कूश की सेना भाग खड़ी हुई। [13]आसा की सेना ने कूश की सेना का पीछा लगातार गरार नगर तक किया। इतने अधिक कूश के लोग मारे गए कि वे युद्ध करने योग्य एक सेना के रूप में फिर इकट्ठे न हो सके। वे यहोवा और उसकी सेना के द्वारा कुचल दिये गये। आसा और उसकी सेना ने शत्रु से अनेक बहुमूल्य चीज़ें ले ली। [14]आसा और उसकी सेना ने गरार के निकट के सभी नगरों को हराया। उन नगरों में रहने वाले लोग यहोवा से डरते थे। उन नगरों में असंख्य बहुमूल्य चीज़ें थीं। आसा की सेना उन नगरों से इन बहुमूल्य चीज़ों को साथ ले आई। [15]आसा की सेना ने उन डेरों पर भी आक्रमण किया जिनमें गड़रिये रहते थे। वे अनेक भेड़ें और ऊँट ले आए। तब आसा की सेना यरूशलेम लौट गई।

आसा के परिवर्तन

15 परमेश्वर का आत्मा अजर्याह पर उतरा। अजर्याह ओदेद का पुत्र था। [2]अजर्याह आसा से मिलने गया। अजर्याह ने कहा, "आसा तथा यहूदा और बिन्यामीन के सभी लोगों मेरी सुनो! यहोवा तुम्हारे साथ तब है जब तुम उसके साथ हो। यदि तुम यहोवा को खोजोगे तो तुम उसे पाओगे। किन्तु यदि तुम उसे छोड़ोगे तो वह तुम्हें छोड़ देगा। [3]बहुत समय तक इस्राएल

पवित्र पत्थरों कनानी लोग इन पत्थरों का उपयोग अपने असत्य देवताओं की पूजा के लिये करते थे।

सच्चे परमेश्वर के बिना था और वे शिक्षक याजक और नियम के बिना थे। [4]किन्तु जब इस्राएल के लोग कष्ट में पड़े तो वे फिर इस्राएल के यहोवा परमेश्वर की ओर लौटे। उन्होंने यहोवा की खोज की और उसको उन्होंने पाया। [5]उन विपत्ति के दिनों में कोई व्यक्ति सुरक्षित यात्रा नहीं कर सकता था। सभी राष्ट्र बहुत अधिक उपद्रव ग्रस्त थे। [6]एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को और एक नगर दूसरे नगर को नष्ट करता था। यह इसलिए हो रहा था कि परमेश्वर हर प्रकार की विपत्तियों से उनको परेशान कर रहा था। [7]किन्तु आसा, तुम तथा यहूदा और बिन्यामीन के लोगों, शक्तिशाली बनो। कमजोर न पड़ो, ढीले न पड़ो क्योंकि तुम्हें अपने अच्छे काम का पुरस्कार मिलेगा!"

[8]आसा ने जब इन बातों और ओदेद नबी के सन्देश को सुना तो वह बहुत उत्साहित हुआ। तब उसने सारे यहूदा और बिन्यामीन देश से घृणित मूर्तियों को हटा दिया और उसने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में अपने अधिकार में लाए गए नगरों में मूर्तियों को हटाया और उसने यहोवा की उस वेदी की मरम्मत की जो यहोवा के मन्दिर के द्वार मण्डप के सामने थी।

[9]तब आसा ने यहूदा और बिन्यामीन के सभी लोगों को इकट्ठा किया। उसने एप्रैम, मनश्शे और शिमोन परिवारों को भी इकट्ठा किया जो इस्राएल देश से यहूदा–देश में रहने के लिये आ गए थे। उनकी बहुत बड़ी संख्या यहूदा में आई क्योंकि उन्होंने देखा कि आसा का यहोवा परमेश्वर, आसा के साथ है।

[10]आसा के शासन के पन्द्रहवें वर्ष के तीसरे महीने में आसा और वे लोग यरुशलेम में इकट्ठे हुए। उस समय उन्होंने यहोवा को सात सौ बैलों और सात हजार भेड़ों और बकरों की बलि दी। आसा की सेना ने उन जानवरों और अन्य बहुमूल्य चीजों को अपने शत्रुओं से लिया था। [12]तब उन्होंने पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर की सेवा पूरे हृदय और पूरी आत्मा से करने की वाचा की। [13]कोई व्यक्ति जो यहोवा परमेश्वर की सेवा से इन्कार करता था, मार दिया जाता था। इस बात का कोई महत्व नहीं था कि वह व्यक्ति महत्त्वपूर्ण या साधारण है अथवा पुरुष या स्त्री है। [14]तब आसा और लोगों ने यहोवा की शपथ* ली। उन्होंने उच्च स्वर में उद्घोष किया। उन्होंने तुरही और मेढ़ों के सींगे बजाए। [15]यहूदा से सभी लोग प्रसन्न थे क्योंकि उन्होंने पूरे हृदय से शपथ ली थी। उन्होंने पूरे हृदय से यहोवा का अनुसरण किया तथा यहोवा की खोज की और उसे पाया। इसलिये यहोवा ने उनके पूरे देश में शान्ति दी।

[16]राजा आसा ने अपनी माँ माका को राजमाता के पद से हटा दिया। आसा ने यह इसलिए किया क्योंकि माका ने एक भंयकर अशेरा–स्तम्भ बनाया था। आसा ने इस स्तम्भ को काट दिया और इसे छोटे–छोटे टुकड़ों में ध्वस्त कर दिया। तब उसने उन छोटे टुकड़ों को किद्रोन घाटी में जला दिया। [17]उच्च स्थानों को यहूदा से नहीं हटाया गया, किन्तु आसा का हृदय जीवन भर यहोवा के प्रति श्रद्धालु रहा।

[18]आसा ने उन पवित्र भेंटों को रखा जिन्हें उसने और उसके पिता ने यहोवा के मन्दिर में दिये थे। वे चीजें चाँदी और सोने की बनीं थीं। [19]आसा के शासन के पैंतीस वर्ष तक कोई युद्ध नहीं हुआ।

आसा के अन्तिम वर्ष

16 आसा के राज्यकाल के छत्तीसवें वर्ष* बाशा ने यहूदा देश पर आक्रमण किया। बाशा इस्राएल का राजा था। वह रामा नगर में गया और इसे एक किले के रूप में बनाया। बाशा ने रामा नगर का उपयोग यहूदा के राजा आसा के पास जाने और उसके पास से लोगों को आने से रोकने के लिये किया।

[2]आसाने यहोवा के मन्दिर के कोषागार में रखे हुए चाँदी और सोने को लिया और उसने राजमहल से चाँदी सोना लिया। तब आसा ने बेन्हदद को सन्देश भेजा। बेन्हदद अराम का राजा था और दमिश्क नगर में रहता था। आसा का सन्देश था: [3]"बेन्हदद, मेरे और अपने बीच एक सन्धि होने दो। इस सन्धि को वैसे ही होने दो जैसा वह हमारे पिता और तुम्हारे पिता के बीच की गई थी। ध्यान दो, मैं तुम्हारे पास चाँदी सोना भेज रहा हूँ। अब तुम इस्राएल के राजा बाशा के साथ की गई सन्धि को तोड़ दो जिससे वह मुझे मुक्त छोड़ देगा और मुझे परेशान करना बन्द कर देगा।"

[4]बेन्हदद ने आसा की बात मान ली। बेन्हदद ने अपनी सेना के सेनापतियों को इस्राएल के नगरों पर आक्रमण करने के लिये भेजा। इन सेनापतियों ने इय्योन, दान और

शपथ एक दृढ़ प्रतिज्ञा।

राज्यकाल के छत्तीसवें वर्ष लगभग ई.पू. 879

आबेल्मैम नगरों पर आक्रमण किया। उन्होंने नप्ताली देश में उन सभी नगरों पर आक्रमण किया जहाँ खजाने रखे थे। [5]बाशा ने इस्राएल के नगरों पर आक्रमण की बात सुनी। इसलिए उसने रामा में किला बनाने का काम रोक दिया और अपना काम छोड़ दिया। [6]तब राजा आसा ने यहूदा के सभी लोगों को इकट्ठा किया। वे रामा नगर को गये और लकड़ी तथा पत्थर उठा लाए जिनका उपयोग बाशा ने किला बनाने के लिये किया था। आसा और यहूदा के लोगों ने पत्थरों और लकड़ी का उपयोग गेवा और मिस्पा नगरों को अधिक मजबूत बनाने के लिये किया।

[7]उस समय दृष्टा हनानी यहूदा के राजा आसा के पास आया। हनानी ने उससे कहा, "आसा, तुम सहायता के लिये अराम के राजा पर आश्रित हुए, अपने यहोवा परमेश्वर पर नहीं। तुम्हें यहोवा पर आश्रित रहना चाहिए था। तुम यहोवा पर सहायता के लिए आश्रित नहीं रहे अत: अराम के राजा की सेना तुमसे भाग निकली। [8]कूश और लूबी अति विशाल और शक्तिशाली सेना रखते थे। उनके पास अनेक रथ और सारथी थे। किन्तु आसा, तुम उस विशाल शक्तिशाली सेना को हराने में सहायता के लिये यहोवा पर आश्रित हुए और यहोवा ने तुम्हें उनको हराने दिया। [9]यहोवा की आँखे सारी पृथ्वी पर उन लोगों को देखती फिरती है जो उसके प्रति श्रद्धालु हैं जिससे वह उन लोगों को शक्तिशाली बना सके। आसा, तुमने मूर्खतापूर्ण काम किया। इसलिये अब से लेकर आगे तक तुमसे युद्ध होंगे।"

[10]आसा हनानी पर उस बात से क्रोधित हुआ जो उसने कहा। आसा इतना क्रोध से पागल हो उठा कि उसने हनानी को बन्दीगृह में डाल दिया। आसा उस समय कुछ लोगों के साथ नीचता और कठोरता का व्यवहार करता था।

[11]आसा ने जो कुछ आरम्भ से अन्त तक किया। वह इस्राएल और "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखा है। [12]आसा का पैर उसके राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष* में रोगग्रस्त हो गया। उसका रोग बहुत बुरा था किन्तु उसने यहोवा से सहायता नहीं चाही। आसा ने वैद्यों से सहायता चाही। [13]आसा अपने राज्यकाल के इकतालीसवें वर्ष में मरा और इस प्रकार आसा ने अपने पूर्वजों के साथ विश्राम किया। [14]लोगों ने आसा को उसकी अपनी कब्र में दफनाया जिसे उसने स्वयं दाऊद के नगर में बनाया था। लोगों ने उसे एक अन्तिम शैया पर रखा जिस पर सुगन्धित द्रव्य और विभिन्न प्रकार के मिले इत्र रखे थे। लोगों ने आसा का सम्मान करने के लिये आग की महाज्वाला की।*

यहूदा का राजा यहोशापात

17 आसा के स्थान पर यहोशापात यहूदा का नया राजा हुआ। यहोशापात आसा का पुत्र था। यहोशापात ने यहूदा को शक्तिशाली बनाया जिससे वे इस्राएल के विरुद्ध लड़ सकते थे। [2]उसने यहूदा के उन सभी नगरों में सेना की टुकड़ियाँ रखीं जो किले बना दिये गए थे। यहोशापात ने यहूदा और एप्रैम के उन नगरों में किले बनाए जिन्हें उसके पिता ने अपने अधिकार में किया था।

[3]यहोवा यहोशापात के साथ था क्योंकि उसने वे अच्छे काम किये जिन्हें उसके पूर्वज दाऊद ने किया था। यहोशापात ने बाल की मूर्तियों का अनुसरण नहीं किया। [4]यहोशापात ने उस परमेश्वर को खोजा जिसका अनुसरण उसके पूर्वज करते थे। उसने परमेश्वर के आदेशों का पालन किया। वह उस तरह नहीं रहा जैसा इस्राएल के अन्य लोग रहते थे। [5]यहोवा ने यहोशापात को यहूदा का शक्तिशाली राजा बनाया। यहूदा के सभी लोग यहोशापात को भेंट लाए। इस प्रकार यहोशापात के पास बहुत सी सम्पत्ति और सम्मान दोनों थे। [6]यहोशापात का हृदय यहोवा के मार्ग पर चलने में आनन्दित था। उसने उच्च स्थानों और अशेरा के स्तम्भों को यहूदा देश से बाहर किया।

[7]यहोशापात ने अपने प्रमुखों को यहूदा के नगरों में उपदेश देने के लिये भेजा। यह यहोशापात के राज्यकाल के तीसरे वर्ष हुआ। वे प्रमुख बेन्हैल, ओबद्याह, जकर्याह, नतनेल और मीकायाह थे। [8]यहोशापात ने इन प्रमुखों के साथ लेवीवंशियों को भी भेजा। ये लेवीवंशी शमायाह, नतन्याह, असाहेल,

---

राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष लगभग ई.पू. 875

लोगों ने ... महाज्वाला की सम्भवत: इसका तात्पर्य है कि आसा के सम्मान में लोगों ने सुगन्धित द्रव्य जलाए, किन्तु इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उन्होंने उसके शरीर को जलाया।

शमीरामोत, यहोनातान, अदोनिय्याह और तोबिय्याह थे। यहोशापात ने याजक एलीशामा और यहोराम को भेजा। [9]उन प्रमुखों, लेवीवंशियों और याजकों ने यहूदा में लोगों को शिक्षा दी। उनके पास "यहोवा के नियमों की पुस्तक" थी। वे यहूदा के सभी नगरों में गये और लोगों को उन्होंने शिक्षा दी।

[10]यहूदा के आसपास के नगर यहोवा से डरते थे। यही कारण था कि उन्होनें यहोशापात के विरुद्ध युद्ध नहीं छेड़ा। [11]कुछ पलिश्ती लोग यहोशापात के पास भेंट लाए। वे यहोशापात के पास चाँदी भी लाए क्योंकि वे जानते थे कि वह बहुत शक्तिशाली राजा है। कुछ अरब के लोग यहोशापात के पास रेवड़े लाये। वे उसके पास सात हजार सात सौ भेड़ें और सात हजार सात सौ बकरियाँ लाए।

[12]यहोशापात अधिक से अधिक शक्तिशाली होता गया। उसने किले और भण्डार नगर यहूदा देश में बनाये। [13]उसने बहुत सी सामग्री भण्डार नगरों में रखी और यहोशापात ने यरुशलेम में प्रशिक्षित सैनिक रखे। [14]उन सैनिकों की अपने परिवार समूह में गिनती थी। यरुशलेम के उन सैनिकों की सूची ये है:

यहूदा के परिवार समूह से ये सेनाध्यक्ष थे: अदना तीन लाख सैनिकों का सेनाध्यक्ष था। [15]यहोहानान दो लाख अस्सी हजार सैनिकों का सेनाध्यक्ष था। [16]अमस्याह दो लाख सैनिकों का सेनाध्यक्ष था। अमस्याह जिक्री का पुत्र था। अमस्याह अपने को यहोवा की सेवा में अर्पित करने में प्रसन्न था।

[17]बिन्यामीन के परिवार समूह से ये सेनाध्यक्ष थे: एल्यादा के पास दो लाख सैनिक थे जो धनुष, बाण और ढाल का उपयोग करते थे। एल्यादा एक साहसी सैनिक था। [18]यहोजाबाद के पास एक लाख अस्सी हजार व्यक्ति युद्ध के लिये तैयार थे। [19]वे सभी सैनिक यहोशापात की सेवा करते थे। राजा ने पूरे यहूदा देश के किलों में अन्य व्यक्तियों को भी रखा था।

मीकायाह राजा अहाब को चेतावनी देता है

18 यहोशापात के पास सम्पत्ति और सम्मान था। उसने राजा अहाब के साथ विवाह द्वारा एक सन्धि की।* [2]कुछ वर्ष बाद, यहोशापात शोमरोन नगर में अहाब से मिलने गया। अहाब ने बहुत सी भेड़ों और पशुओं की बलि यहोशापात और उसके साथ के आदमियों के लिये चढ़ाई। अहाब ने यहोशापात को गिलाद के रामोत नगर पर आक्रमण के लिये प्रोत्साहित किया। [3]अहाब ने यहोशापात से कहा, "क्या तुम मेरे साथ गिलाद के रामोत पर आक्रमण करने चलोगे?" अहाब इस्राएल का और यहोशापात यहूदा का राजा था। यहोशापात ने अहाब को उत्तर दिया, "मैं तुम्हारी तरह हूँ और हमारे लोग तुम्हारे लोगों की तरह हैं। हम युद्ध में तुम्हारा साथ देंगे।" [4]यहोशापात ने अहाब से यह कहा, "आओ, पहले हम यहोवा से सन्देश प्राप्त करें।"

[5]इसलिए अहाब ने चार सौ नबियों को इकट्ठा किया। अहाब ने उनसे कहा, "क्या हमें गिलाद के रामोत नगर के विरुद्ध युद्ध में जाना चाहिये या नहीं?" नबियों ने अहाब को उत्तर दिया, "जाओ, क्योंकि यहोवा गिलाद के रामोत को तुम्हें पराजित करने देगा।"

[6]किन्तु यहोशापात ने कहा, "क्या कोई यहाँ यहोवा का नबी है? हम लोग नबियों में से एक के द्वारा यहोवा से पूछना चाहते हैं।"

[7]तब राजा अहाब ने यहोशापात से कहा, "यहाँ पर अभी एक व्यक्ति है। हम उसके माध्यम से यहोवा से पूछ सकते हैं। किन्तु मैं इस व्यक्ति से घृणा करता हूँ क्योंकि इसने कभी मेरे बारे में यहोवा से कोई अच्छा सन्देश नहीं दिया। इसने सदैव बुरा ही सन्देश मेरे लिये दिया है। इस आदमी का नाम मीकायाह है। यह यिम्ला का पुत्र है।" किन्तु यहोशापात ने कहा, "अहाब, तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये!"

[8]तब इस्राएल के राजा अहाब ने अपने अधिकारियों में से एक को बुलाया और कहा, "शीघ्रता करो, यिम्ला के पुत्र मीकायाह को यहाँ लाओ!"

[9]इस्राएल के राजा अहाब और यहूदा के राजा यहोशापात ने अपने राजसी वस्त्र पहन रखे थे। वे अपने सिंहासनों पर खलिहान में शोमरोन नगर के सम्मुख द्वार के निकट बैठे थे। वे चार सौ नबी अपना सन्देश दोनों राजाओं के सामने दे रहे थे। [10]सिदकिय्याह कनाना नामक व्यक्ति का पुत्र था। सिदकिय्याह ने लोहे की कुछ सींगे बनाईं। सिदकिय्याह ने कहा, "यही है जो यहोवा कहता है: 'तुम लोग लोहे की सींगों का उपयोग तब तक अश्शूर के लोगों में घोंपने के लिये करोगे जब तक वे नष्ट न हो जायें।'"

यहोशापात के … सन्धि की यहोशापात के पुत्र यहोराम ने अहाब की पुत्री अतल्याह से विवाह किया। देखें 2इति. 21:6

[11]सभी नबियों ने वही बात कही। उन्होंने कहा, "गिलाद के रामोत नगर को जाओ। तुम लोग सफल होंगे और जीतोगे। यहोवा राजा और अश्शूर के लोगों को हराने देगा।"

[12]जो दूत मीकायाह को लाने गया था उसने उससे कहा, "मीकायाह, सुनो, सभी नबी एक ही बात कह रहे हैं। वे कह रहे हैं कि राजा को सफलता मिलेगी। इसलिये वही कहो जो वे कह रहे हैं। तुम भी अच्छी बात कहो।"

[13]किन्तु मीकायाह ने उत्तर दिया, "यह वैसे ही सत्य है जैसा कि यहोवा शाश्वत है अत: मैं वही कहूँगा जो मेरा परमेश्वर कहता है।"

[14]तब मीकायाह राजा अहाब के पास आया। राजा ने उससे कहा, "मीकायाह, क्या हमें युद्ध करने के लिये गिलाद के रामोत नगर को जाना चाहिये या नहीं?" मीकायाह ने कहा, "जाओ और आक्रमण करो। यहोवा तुम्हें उन लोगों को हराने देगा।"

[15]राजा अहाब ने मीकायाह से कहा, "कई बार मैंने तुमसे प्रतिज्ञा करवायी थी कि तुम यहोवा के नाम पर मुझे केवल सत्य बताओ!"

[16]तब मीकायाह ने कहा, "मैंने इस्राएल के सभी लोगों को पहाड़ों पर बिखरे हुए देखा। वे गड़रिये के बिना भेड़ की तरह थे। यहोवा ने कहा, 'उनका कोई नेता नहीं है। हर एक व्यक्ति को सुरक्षित घर लौटने दो।'"

[17]इस्राएल के राजा अहाब ने यहोशापात से कहा, "मैंने कहा था कि मीकायाह मेरे लिए यहोवा से अच्छा सन्देश नहीं पाएगा। वह मेरे लिए केवल बुरे सन्देश रखता है!"

[18]मीकायाह ने कहा, "यहोवा के सन्देश को सुनो: मैंने यहोवा को अपने सिंहासन पर बैठे देखा। स्वर्ग की पूरी सेना उसके चारों ओर खड़ी थी।* कुछ उसके दाहिनी ओर और कुछ उसके बाँयीं ओर। [19]यहोवा ने कहा, 'इस्राएल के राजा अहाब को कौन धोखा देगा? जिससे वह गिलाद के रामोत के नगर पर आक्रमण करे और वह वहाँ मार दिया जाये?' यहोवा के चारों ओर खड़े विभिन्न लोगों ने विभिन्न उत्तर दिये। [20]तब एक आत्मा आई और वह यहोवा के सामने खड़ी हुई। उस आत्मा ने कहा, 'मैं अहाब को धोखा दूँगी।' यहोवा ने आत्मा से पूछा, 'कैसे?' [21]उस आत्मा ने उत्तर दिया, 'मैं बाहर जाऊँगी और अहाब के नबियों के मुँह में झूठ बोलने वाली आत्मा बनूँगी' और यहोवा ने कहा, 'तुम्हें अहाब को धोखा देने में सफलता मिलेगी। इसलिये जाओ और इसे करो।'

[22]"अहाब, अब ध्यान दो, यहोवा ने तुम्हारे नबियों' के मुँह में झूठ बोलने बाली आत्मा प्रवेश कराई है। यहोवा ने कहा है कि तुम्हारे साथ बुरा घटेगा।"

[23]तब सिदकिय्याह मीकायाह के पास गया और उसके मुँह पर मारा। कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने कहा, "मीकायाह, यहोवा की आत्मा मुझे त्याग कर तुझसे वार्तालाप करने कैसे आई?" [24]मीकायाह ने उत्तर दिया, "सिदकिय्याह, तुम उस दिन इसे जानोगे जब तुम एक भीतरी घर में छिपने जाओगे!"

[25]तब राजा अहाब ने कहा, "मीकायाह को लो और इसे नगर के प्रशासक आमोन और राजा के पुत्र योआश के पास भेज दो। [26]आमोन और योआश से कहो, 'राजा यह कहते हैं: मीकायाह को बन्दीगृह में डाल दो। उसे रोटी और पानी के अतिरिक्त तब तक कुछ खाने को न दो जब तक मैं युद्ध से न लौटूँ।'"

[27]मीकायाह ने उत्तर दिया, "अहाब, यदि तुम युद्ध से सुरक्षित लौट आते हो तो यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा है। तुम सभी लोग सुनों और मेरे वचन को याद रखो!"

अहाब गिलाद के रामोत में मारा गया

[28]इसलिये इस्राएल के राजा अहाब और यहूदा के राजा यहोशापात ने गिलाद के रामोत नगर पर आक्रमण किया। [29] इस्राएल के राजा अहाब ने यहोशापात से कहा, "मैं युद्ध में जाने के पहले अपना रूप बदल लूँगा। किन्तु तुम अपने राजवस्त्र ही पहनो।" इसलिये इस्राएल के राजा अहाब ने अपना रुप बदल लिया और दोनों राजा युद्ध में गए।

[30]अराम के राजा ने अपने रथों के रथपतियों को आदेश दिया। उसने उनसे कहा, "चाहे जितना बड़ा या छोटा कोई व्यक्ति हो उससे युद्ध न करो। किन्तु केवल इस्राएल के राजा अहाब से युद्ध करो।" [31]जब रथपतियों ने यहोशापात को देखा उन्होंने सोचा, "वही इस्राएल का राजा अहाब है!" वे यहोशापात पर आक्रमण करने के लिये उसकी ओर मुड़े। किन्तु यहोशापात ने उद्घोष किया और यहोवा ने उसकी सहायता की। परमेश्वर ने रथपतियों

स्वर्ग की ... खड़ी थी हिब्रू पाठ है। स्वर्गों के सभी समूह उनके दायीं और बांयी ओर खड़े थे।

को यहोशापात के सामने से दूर मुड़ जाने दिया। [32]जब उन्होंने समझा कि यहोशापात इस्राएल का राजा नहीं है उन्होंने उसका पीछा करना छोड़ दिया।

[33]किन्तु एक सैनिक से बिना किसी लक्ष्य बेध के धनुष से बाण छूट गया। उस बाण ने इस्राएल के राजा अहाब को बेध दिया। इसने, अहाब के कवच के खुले भाग में बेधा। अहाब ने अपने रथ के सारथी से कहा, "पीछे मुड़ो और मुझे युद्ध से बाहर ले चलो। मैं घायल हो गया हूँ!" [34]उस दिन युद्ध अधिक बुरी तरह लड़ा गया। अहाब ने अपने रथ में अरामियों का सामना करते हुए शाम तक अपने को संभाले रखा। तब अहाब सूर्य डूबने पर मर गया।

19 यहूदा का राजा यहोशापात सुरक्षित यरूशलेम अपने घर लौटा। [2]दृष्टा येहू यहोशापात से मिलने गया। येहू के पिता का नाम हनानी था। येहू ने राजा यहोशापात से कहा, "तुम बुरे आदमियों की सहायता क्यों करते हो? तुम उन लोगों से क्यों प्रेम करते हो जो यहोवा से घृणा करते हैं? यही कारण है कि यहोवा तुम पर क्रोधित है। [3]किन्तु तुम्हारे जीवन में कुछ अच्छी बातें हैं। तुमने अशेरा–स्तम्भों को इस देश से बाहर किया और तुमने हृदय से परमेश्वर का अनुसरण करने का निश्चय किया।"

यहोशापात न्यायाधीशों को चुनता है

[4]यहोशापात यरूशलेम में रहता था। वह एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में बेर्शेबा नगर के लोगों के साथ एक होने के लिये फिर वहाँ गया। यहोशापात ने उन लोगों को उस यहोवा परमेश्वर के पास लौटाया जिसका अनुसरण उनके पूर्वज करते थे। [5]यहोशापात ने यहूदा में न्यायधीश चुने। उसने यहूदा के हर किले में रहने के लिये न्यायाधीश चुने। [6]यहोशापात ने इन न्यायाधीशों से कहा, "जो कुछ तुम करो उसमें सावधान रहो क्योंकि तुम, लोगों के लिये न्याय नहीं कर रहे हो अपितु यहोवा के लिये कर रहे हो। जब तुम निर्णय करोगे तब यहोवा तुम्हारे साथ होगा। [7]तुम में से हर एक को अब यहोवा से डरना चाहिए। जो करो उसमें सावधान रहो क्योंकि हमारा यहोवा परमेश्वर न्यायी है। वह किसी व्यक्ति को अन्य व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण मानकर व्यवहार नहीं करता। वह अपने निर्णय को बदलने के लिये धन नहीं लेता।"

[8]और यहोशापात ने यरूशलेम में, लेवीवंशियों, याजकों और इस्राएल के परिवार प्रमुखों को न्यायाधीश चुना। उन लोगों को यहोवा के नियमों का उपयोग यरूशलेम के लोगों की समस्याओं को निपटाने के लिये करना था। [9]यहोशापात ने उनको आदेश दिये। यहोशापात ने कहा, "तुम्हें अपने पूरे हृदय से विश्वसनीय काम करना चाहिए। तुम्हें यहोवा से अवश्य डरना चाहिए। [10]तुम्हारे पास हत्या, नियम, आदेश, शासन या किसी अन्य नियमों के मामले आ सकते हैं। ये सभी मामले नगरों में रहने वाले तुम्हारे भाईयों के यहाँ से आएंगे। इन सभी मामलों में लोगों को इस बात की चेतावनी दो कि वे लोग यहोवा के विरुद्ध पाप न करें। यदि तुम विश्वास योग्यता के साथ यहोवा की सेवा नहीं करते तो तुम यहोवा के क्रोध को अपने ऊपर और अपने भाईयों के ऊपर लाने का कारण बनोगे। यह करो, तब तुम अपराधी नहीं होगे। [11]अमर्याह मार्गदर्शक याजक है। वह यहोवा के सम्बन्ध की सभी बातों में तुम्हारे ऊपर रहेगा और राजा सम्बन्धी सभी विषयों में जबद्याह तुम्हारे ऊपर होगा। जबद्याह के पिता का नाम इश्माएल है। जबद्याह यहूदा के परिवार समूह में प्रमुख है। लेवीवंशी शास्त्रियों के रूप में भी तुम्हारी सेवा करेंगे। जो कुछ करो उसमें साहस रखो। यहोवा उन लोगों के साथ हो, जो वही करते हैं जो ठीक है।"

यहोशापात युद्ध का सामना करता है

20 कुछ समय पश्चात मोआबी, अम्मोनी और कुछ मूनी* लोग यहोशापात के साथ युद्ध आरम्भ करने आए। [2]कुछ लोग आए और उन्होंने यहोशापात से कहा, "तुम्हारे विरुद्ध एदोम से एक विशाल सेना आ रही है। वे मृत सागर की दूसरी ओर से आ रहे हैं। वे हसासोन्तामार में पहले से ही है। (हसासोन्तामार को एनगदी भी कहा जाता है)" [3]यहोशापात डर गया और उसने यहोवा से यह पूछने का निश्चय किया कि मैं क्या करुँ? उसने यहूदा में हर एक के लिये उपवास का समय घोषित किया। [4]यहूदा के लोग एक साथ यहोवा से सहायता माँगने आए। वे यहूदा के सभी नगरों से यहोवा की सहायता माँगने आए।

मूनी कुछ प्राचीन ग्रीक अनुवादों में मूनी है। हिब्रू में मूनी, अम्मोनी है।

[5]यहोशापात यहोवा के मन्दिर में नये आँगन के सामने था। वह यरुशलेम और यहूदा से आए लोगों की सभा में खड़ा हुआ। [6]उसने कहा,

"हे हमारे पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर, तू स्वर्ग में परमेश्वर है! तू सभी राष्ट्रों में सभी राज्यों पर शासन करता है! तू प्रभुता और शक्ति रखता है! कोई व्यक्ति तेरे विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकता! [7]तू हमारा परमेश्वर है। तूने इस प्रदेश में रहने वालों को इसे छोड़ने को विवश किया। यह तूने अपने इस्राएली लोगों के सामने किया। तूने यह भूमि इब्राहीम के वंशजों को सदैव के लिये दे दी। इब्राहीम तेरा मित्र था। [8]इब्राहीम के वंशज इस देश में रहते थे और उन्होंने एक मन्दिर तेरे नाम पर बनाया।" [9]उन्होंने कहा, "यदि हम लोगों पर आपत्ति आएगी जैसे तलवार, दण्ड, रोग या अकाल तो हम इस मन्दिर के सामने और तेरे सामने खड़े होंगे। इस मन्दिर पर तेरा नाम है। जब हम लोगों पर विपत्ति आएगी तो हम लोग तुझको पुकारेंगे। तब तू हमारी सुनेगा और हमारी रक्षा करेगा।

[10]"किन्तु इस समय यहाँ अम्मोन, मोआब और सेईर पर्वत के लोग चढ़ आए हैं! तूने इस्राएल के लोगों को उस समय उनकी भूमि में नहीं जाने दिया जब इस्राएल के लोग मिस्र से आए। इसलिए इस्राएल के लोग मुड़ गए थे और उन लोगों ने उनको नष्ट नहीं किया था। [11]किन्तु देख कि वे लोग हमें उन्हें नष्ट न करने का किस प्रकार का पुरस्कार दे रहे हैं। वे हमें तेरी भूमि से बाहर होने के लिए विवश करने आए हैं। यह भूमि तूने हमें दी है। [12]हमारे परमेश्वर, उन लोगों को दण्ड दे! हम लोग उस विशाल सेना के विरुद्ध कोई शक्ति नहीं रखते जो हमारे विरुद्ध आ रही है! हम नहीं जानते कि क्या करें! यही कारण है कि हम तुझसे सहायता की आशा करते हैं।"

[13]यहूदा के सभी लोग यहोवा के सामने अपने शिशुओं, पत्नियों और बच्चों के साथ खड़े थे। [14]तब यहोवा की आत्मा यहजीएल पर उतरी। यहजीएल जकर्याह का पुत्र था। जकर्याह बनायाह का पुत्र था बनायाह यीएल का पुत्र था और यीएल मत्तन्याह का पुत्र था। यहजीएल एक लेवीवंशी था और आसाप का वंशज था। [15]उस सभा के बीच यहजीएल ने कहा, "राजा यहोशापात तथा यहूदा और यरुशलेम में रहने वाले लोगों, मेरी सुनो! यहोवा तुमसे यह कहता है: 'इस विशाल सेना से न तो डरो, न ही परेशान होओ क्योंकि यह तुम्हारा युद्ध नहीं है। यह परमेश्वर का युद्ध है! [16]कल तुम वहाँ जाओ और उन लोगों से लड़ो। वे सीस के दर्रे से होकर आएँगे। तुम लोग उन्हें घाटी के अन्त में यरूएल मरुभूमि की दूसरी ओर पाओगे। [17]इस युद्ध में तुम्हें लड़ना नहीं पड़ेगा। अपने स्थानों पर दृढ़ता से खड़े रहो। तुम देखोगे कि यहोवा ने तुम्हें बचा लिया। यहूदा और यरूशलेम के लोगों, डरो नहीं! परेशान मत हो! यहोवा तुम्हारे साथ है अत: कल उन लोगों के विरुद्ध जाओ।'"

[18]यहोशापात अति नम्रता से झुका। उसका सिर भूमि को छू रहा था और यहूदा तथा यरूशलेम में रहने वाले सभी लोग यहोवा के सामने गिर गए और उन सभी ने यहोवा की उपासना की। [19]कहाती परिवार समूह के लेवीवंशी और कहाती लोग, इस्राएल के यहोवा परमेश्वर की स्तुति के लिये खड़े हुए। उन्होंने अत्यन्त उच्च स्वर में स्तुति की।

[20]यहोशापात की सेना तकोआ मरुभूमि में बहुत सवेरे गई। जब वे बढ़ना आरम्भ कर रहे थे, यहोशापात खड़ा हुआ और उसने कहा, "यहूदा और यरुशलेम के लोगों, मेरी सुनों। अपने यहोवा परमेश्वर में विश्वास रखो और तब तुम शक्ति के साथ खड़े रहोगे। यहोवा के नबियों में विश्वास रखो। तुम लोग सफल होगे!" [21]यहोशापात ने लोगों का सुझाव सुना। तब उसने यहोवा के लिये गायक चुने। वे गायक यहोवा की स्तुति के लिये चुने गए थे क्योंकि वह पवित्र और अद्भुत है। वे सेना के सामने कदम मिलाते हुए बढ़े और उन्होंने यहोवा की स्तुति की। इन गायकों ने गाया, "परमेश्वर को धन्यवाद दो क्योंकि उसका प्रेम सदैव रहता है!"* [22]ज्योंही उन लोगों ने गाना गाकर यहोवा की स्तुति आरम्भ की, यहोवा ने अज्ञात गुप्त आक्रमण अम्मोन, मोआब और सेईर पर्वत के लोगों पर कराया। ये वे लोग थे जो यहूदा पर आक्रमण करने आए थे। वे लोग पिट गए। [23]अम्मोनी और मोआबी लोगों ने सेईर पर्वत से आये लोगों के विरुद्ध युद्ध आरम्भ किया। अम्मोनी और मोआबी लोगों ने सेईर पर्वत से आए लोगों को मार डाला और नष्ट कर दिया। जब वे सेईर के लोगों को मार चुके तो उन्होंने एक दूसरे को मार डाला।

[24]यहूदा के लोग मरुभूमि में सामना करने के बिन्दु पर आए। उन्होंने शत्रु की विशाल सेना को देखा। किन्तु उन्होंने केवल शवों को भूमि पर पड़े देखा।

परमेश्वर को ... रहता है देखें भजन. 136

कोई व्यक्ति बचा न था। [25]यहोशापात और उसकी सेना शवों से बहुमूल्य चीजें लेने आई। उन्हें बहुत से जानवर, धन, वस्त्र और कीमती चीजें मिलीं। यहोशापात और उसकी सेना ने उन्हें अपने लिये ले लिया। चीज़ें उससे अधिक थीं जितना यहोशापात और उसकी सेना ले जा सकती थी। उनको शवों से कीमती चीज़ें इकट्ठी करने में तीन दिन लगे, क्योंकि वे बहुत अधिक थीं। [26]चौथे दिन यहोशापात और उसकी सेना बराका* की घाटी में मिले। उन्होंने उस स्थान पर यहोवा की स्तुति की। यही कारण है कि उस स्थान का नाम आज तक "बराका की घाटी" है।

[27]तब यहोशापात यहूदा और यरूशलेम के लोगों को यरुशलेम लौटा कर ले गया। यहोवा ने उन्हें अत्यन्त प्रसन्न किया क्योंकि उनके शत्रु पराजित हो गये थे। [28]वे यरुशलेम में वीणा सितार और तुरहियों के साथ आये और यहोवा के मन्दिर में गए।

[29]सभी देशों के सारे राज्य यहोवा से भयभीत थे क्योंकि उन्होंने सुना कि यहोवा इस्राएल के शत्रुओं से लड़ा। [30]यही कारण है कि यहोशापात के राज्य में शान्ति रही। यहोशापात के परमेश्वर ने उसे चारों ओर से शान्ति दी।

यहोशापात के शासन का अन्त

[31]यहोशापात ने यहूदा देश पर शासन किया। यहोशापात ने जब शासन आरम्भ किया तो वह पैंतीस वर्ष का था। उसने पच्चीस वर्ष यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ का नाम अजूबा था। अजूबा शिल्ही की पुत्री थी। [32]यहोशापात सच्चे मार्ग पर अपने पिता आसा की तरह रहा। यहोशापात, आसा के मार्ग का अनुसरण करने से मुड़ा नहीं। यहोशापात ने यहोवा की दृष्टि में उचित किया। [33]किन्तु उच्च स्थान नहीं हटाये गये और लोगों ने अपना हृदय उस परमेश्वर का अनुसरण करने में नहीं लगाया जिसका अनुसरण उनके पूर्वज करते थे।

[34]यहोशापात ने आरम्भ से अन्त तक जो कुछ किया वह येहू की रचनाओं में लिखा है। येहू के पिता का नाम हनानी था। ये बातें "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखी हुई हैं।

[35]कुछ समय पश्चात यहूदा के राजा यहोशापात ने इस्राएल के राजा अहज्याह के साथ सन्धि की। अहज्याह ने बुरा किया। [36]यहोशापात ने अहज्याह का साथ तर्शीश* नगर में जहाज जाने देने में दिया। उन्होंने जहाजों को एस्योन गेबेर नगर में बनाया। [37]तब एलीआजर ने यहोशापात के विरुद्ध कहा। एलीआजर के पिता का नाम दोदावाह था। एलीआजर मारेशा नगर का था। उसने कहा, "यहोशापात, तुम अहज्याह के साथ मिल गये हो, यही कारण है कि यहोवा तुम्हारे कार्य को नष्ट करेगा।" जहाज टूट गए, अत: यहोशापात और अहज्याह उन्हें तर्शीश नगर को न भेज सके।

21 तब यहोशापात मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। उसे दाऊद के नगर में दफनाया गया। यहोराम यहोशापात के स्थान पर नया राजा हुआ। यहोराम यहोशापात का पुत्र था। [2]यहोराम के भाई अजर्याह, यहीएल, जकर्याह, अजर्याह, मीकाएल और शपत्याह थे। वे लोग यहोशापात के पुत्र थे। यहोशापात यहूदा का राजा था। [3]यहोशापात ने अपने पुत्रों को चाँदी, सोना और कीमती चीजें भेंट में दीं। उसने उन्हें यहूदा में शक्तिशाली किले भी दिये। किन्तु यहोशापात ने राज्य यहोराम को दिया क्योंकि यहोराम सबसे बड़ा पुत्र था।

यहूदा का राजा यहोराम

[4]यहोराम ने अपने पिता का राज्य प्राप्त किया और अपने को शक्तिशाली बनाया। तब उसने तलवार का उपयोग अपने सभी भाईयों को मारने के लिये किया। उसने इस्राएल के कुछ प्रमुखों को भी मार डाला। [5]यहोराम ने जब शासन आरम्भ किया तो वह बत्तीस वर्ष का था। उसने यरुशलेम में आठ वर्ष तक शासन किया। [6]वह उसी तरह रहा जैसे इस्राएल के राजा रहते थे। वह उसी प्रकार रहा जिस प्रकार अहाब का परिवार रहता था। यह इसलिये हुआ कि यहोराम ने अहाब की पुत्री से विवाह किया और यहोराम ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया। [7]किन्तु यहोवा दाऊद के परिवार को नष्ट नहीं करना चाहता था क्योंकि उसने दाऊद के साथ वाचा की थी। यहोवा ने वचन दिया था कि दाऊद और उसकी सन्तान का एक वंश सदैव चलता रहेगा।

बराका हिब्रू शब्द का अर्थ 'स्तुति का फल' है।

तर्शीश इस्राएल से बहुत दूर का नगर, सम्भवत: यह स्पेन में था। तर्शीश अपने उन बड़े जहाजों के लिये विख्यात था जो भूमध्य सागर में चलते थे।

[8]यहोराम के समय में, एदोम यहूदा के अधिकार क्षेत्र से बाहर निकल गया। एदोम के लोगों ने अपना राजा चुन लिया। [9]इसलिये यहोराम अपने सभी सेनापतियों और रथों के साथ एदोम गया। एदोमी सेना ने यहोराम और उसके रथ के रथपतियों को घेर लिया। किन्तु यहोराम ने रात में युद्ध करके अपने निकलने का रास्ता ढूँढ लिया। [10]उस समय से अब तक एदोम का देश यहूदा के विरुद्ध विद्रोही रहा है। लिब्ना नगर के लोग भी यहोराम के विरुद्ध हो गए। यह इसलिए हुआ कि यहोराम ने पूर्वजों के, यहोवा परमेश्वर को छोड़ दिया। [11]यहोराम ने उच्च स्थान भी यहूदा के पहाड़ियों पर बनाए। यहोराम ने यरूशलेम के लोगों को, परमेश्वर जो चाहता है उसे करने से मना किया वह यहूदा के लोगों को यहोवा से दूर ले गया।

[12]एलिय्याह नबी से यहोराम को एक सन्देश मिला। सन्देश में यह कहा गया था: "यह वह है जो परमेश्वर यहोवा कहता है। यही वह परमेश्वर है जिसका अनुसरण तुम्हारा पूर्वज दाऊद करता था। यहोवा कहता है, 'यहोराम, तुम उस प्रकार नहीं रहे जिस प्रकार तुम्हारा पिता यहोशापात रहा। तुम उस प्रकार नहीं रहे जिस प्रकार यहूदा का राजा आसा रहा। [13]किन्तु तुम उस प्रकार रहे जिस प्रकार इस्राएल के राजा रहे। तुमने यहूदा और यरुशलेम के लोगों को वह काम करने से रोका है जो यहोवा चाहता है। यही अहाब और उसके परिवार ने किया। वे यहोवा के प्रति विश्वासयोग्य न रहे। तुमने अपने भाईयों को मार डाला। तुम्हारे भाई तुमसे अच्छे थे। [14]अत: अब यहोवा शीघ्र ही तुम्हारे लोगों को बहुत अधिक दण्ड देगा। यहोवा तुम्हारे बच्चों, पत्नियों और तुम्हारी सारी सम्पत्ति को दण्ड देगा। [15]तुम्हें आँतों की भंयकर बीमारी होगी। यह प्रतिदिन अधिक बिगड़ती जायेगी। तब तुम्हारी भंयकर बीमारी के कारण तुम्हारी आँतें बाहर निकल आएंगी।'"

[16]यहोवा ने पलिश्तियों और कूशी लोगों के पास रहने वाले अरब लोगों को यहोराम से रूष्ट किया। [17]उन लोगों ने यहूदा देश पर आक्रमण कर दिया। वे राजमहल की सारी सम्पत्ति और यहोराम के पुत्रों और पत्नियों को ले गए। केवल यहोराम का सबसे छोटा पुत्र छोड़ दिया गया। यहोराम के सबसे छोटे पुत्र का नाम यहोआहाज था।

[18]उन चीज़ों के होने के बाद यहोवा ने यहोराम की आँतों में ऐसा रोग उत्पन्न किया जिसका उपचार न हो सका। [19]तब यहोराम की आँतें, दो वर्ष बाद, उसकी बीमारी के कारण, बाहर आ गई। वह बहुत बुरी पीड़ा में मरा। यहोराम के सम्मान में लोगों ने आग की महाज्वाला नहीं जलाई जैसा उन्होंने उसके पिता के लिये किया था। [20]यहोराम उस समय बत्तीस वर्ष का था जब वह राजा हुआ था। उसने यरुशलेम में आठ वर्ष शासन किया। जब यहोराम मरा तो कोई व्यक्ति दु:खी नहीं हुआ। लोगों ने यहोराम को दाऊद के नगर में दफनाया किन्तु उन कब्रों में नहीं जहाँ राजा दफनाये जाते हैं।

यहूदा का राजा अहज्याह

22 यरूशलेम के लोगों ने अहज्याह को यहोराम के स्थान पर नया राजा होने के लिये चुना। अहज्याह यहोराम का सबसे छोटा पुत्र था। अरब लोगों के साथ जो लोग यहोराम के डेरों पर आक्रमण करने आए थे उन्होंने यहोराम के अन्य पुत्रों को मार डाला था। अत: यहूदा में अहज्याह ने शासन करना आरम्भ किया। [2]अहज्याह ने जब शासन करना आरम्भ किया तब वह बाईस वर्ष का था।* अहज्याह ने यरुशलेम में एक वर्ष शासन किया। उसकी माँ का नाम अतल्याह था। अतल्याह के पिता का नाम ओम्री था। [3]अहज्याह भी वैसे ही रहा जैसे अहाब का परिवार रहता था। वह उस प्रकार रहा क्योंकि उसकी माँ ने उसे गलत काम करने के लिये प्रोत्साहित किया। [4]अहज्याह ने यहोवा की दृष्टि में बुरे काम किये। यही अहाब के परिवार ने किया था। अहाब के परिवार ने अहज्याह को उसके पिता के मरने के बाद सलाह दी। उन्होंने अहज्याह को बुरी सलाह दी। उस बुरी सलाह ने उसे मृत्यु तक पहुँचा दिया।। [5]अहज्याह ने उसी सलाह का अनुसरण किया जो अहाब के परिवार ने उसे दी। अहज्याह राजा योराम के साथ अराम के राजा हज़ाएल के विरुद्ध गिलाद के रामोत नगर में गया। योराम के पिता का नाम अहाब था जो इस्राएल का राजा था। किन्तु अर्मिया के लोगों ने योराम को युद्ध में घायल कर दिया। [6]योराम लौटकर यिज्रेल नगर को स्वस्थ होने के लिये गया। वह तब घायल हुआ था जब वह अराम के राजा हजाएल के विरुद्ध रामोत में युद्ध कर रहा था।

अहज्याह ... वर्ष का था कुछ प्राचीन प्रतियों में है 'बयालिस वर्ष का' 2राजा 8:26 में यह लिखा है कि अहज्याह बाईस वर्ष का था जब उसने शासन करना आरम्भ किया।

तब अहज्याह योराम से मिलने यिज्रेल नगर को गया। अहज्याह के पिता का नाम यहोराम था। वह यहूदा का राजा था। योराम के पिता का नाम अहाब था। योराम यिज्रेल नगर में था क्योंकि वह घायल था।

[7]परमेश्वर ने अहज्याह की मृत्यु तब करवा दी जब वह योराम से मिलने गया। अहज्याह पहुँचा और योराम के साथ येहू से मिलने गया। येहू के पिता का नाम निमशी था। यहोवा ने येहू को अहाब के परिवार को नष्ट करने के लिये चुना। [8]येहू अहाब के परिवार को दण्ड दे रहा था। येहू ने यहूदा के प्रमुखों और अहज्याह के उन सम्बन्धियों का पता लगाया जो अहज्याह की सेवा करते थे। येहू ने यहूदा के उन प्रमुखों और अहज्याह के सम्बन्धियों को मार डाला। [9]तब येहू अहज्याह की खोज में था। येहू के लोगों ने उसे उस समय पकड़ लिया जब वह शोमरोन नगर में छिपने का प्रयत्न कर रहा था। वे अहज्याह को येहू के पास लाए। उन्होंने अहज्याह को मार दिया और उसे दफना दिया। उन्होंने कहा, "अहज्याह यहोशापात का वंशज है। यहोशापात ने पूरे हृदय से यहोवा का अनुसरण किया था।" अहज्याह के परिवार में वह शक्ति नहीं थी कि यहूदा के राज्य को अखण्ड रख सके।

रानी अतल्याह

[10]अतल्याह अहज्याह की माँ थी। जब उसने देखा कि उसका पुत्र मर गया तो उसने यहूदा में राजा के सभी पुत्रों को मार डाला। [11]किन्तु यहोशावत ने अहज्याह के पुत्र योआश को लिया और उसे छिपा दिया। यहोशावत ने योआश और उसकी धाय को अपने शयनकक्ष के भीतर रखा। यहोशावत राजा यहोराम की पुत्री थी। वह यहोयादा की पत्नी भी थी। यहोयादा एक याजक था और यहोशावत अहज्याह की बहन थी। अतल्याह ने योआश को नहीं मारा क्योंकि यहोशावत ने उसे छिपा दिया था। [12]योआश याजक के साथ परमेश्वर के मन्दिर में छः वर्ष तक छिपा रहा। उस काल में अतल्याह ने रानी के रूप में देश पर शासन किया।

23 छः वर्ष, बाद यहोयादा ने अपनी शक्ति दिखाई। उसने नायकों के साथ सन्धि की। वे नायक: यरोहाम का पुत्र अजर्याह यहोहानान का पुत्र इश्माएल, ओबेद का पुत्र अजर्याह, अदायाह का पुत्र मासेयाह और जिक्री का पुत्र एलीशापात थे। [2]वे यहूदा के चारों ओर गए और यहूदा के सभी नगरों से उन्होंने लेवीवंशियों को इकट्ठा किया। उन्होंने इस्राएल के परिवारों के प्रमुखों को भी इकट्ठा किया। तब वे यरूशलेम गए। [3]सभी लोगों ने एक साथ मिलकर राजा के साथ परमेश्वर के मन्दिर में एक सन्धि की।

यहोयादा ने इन लोगों से कहा, "राजा का पुत्र शासन करेगा। यही वह वचन है जो यहोवा ने दाऊद के वंशजों को दिया था। [4]अब, तुम्हें यह अवश्य करना चाहिए: याजकों और लेवीयों सब्त के दिन तुममें से जो काम पर जाते हैं उनका एक तिहाई द्वार की रक्षा करेगा। [5]तुम्हारा एक तिहाई राजमहल पर रहेगा और तुम्हारा एक तिहाई प्रारम्भिक फाटक पर रहेगा। किन्तु अन्य सभी लोग यहोवा के मन्दिर के आँगन में रहेंगे। [6]किसी भी व्यक्ति को यहोवा के मन्दिर में न आने दो। केवल सेवा करने वाले याजकों और लेवीवंशियों को पवित्र होने के कारण, यहोवा के मन्दिर में आने की स्वीकृति है। किन्तु अन्य लोग वह कार्य करेंगे जो यहोवा ने दे रखा है। [7]लेवीवंशी राजा के साथ रहेंगे। हर एक व्यक्ति अपनी तलवार अपने साथ रखेगा। यदि कोई व्यक्ति मन्दिर में प्रवेश करने की कोशिश करता है तो उस व्यक्ति को मार डालो। तुम्हें राजा के साथ रहना है, वह जहाँ कहीं भी जाये।"

[8]लेवीवंशी और यहूदा के सभी लोगों ने याजक यहोयादा ने जो आदेश दिया, उसका पालन किया। याजक यहोयादा ने याजकों के समूह में से किसी को छूट न दी। इस प्रकार हर एक नायक और उसके सभी लोग सब्त के दिन उनके साथ अन्दर आए जो सब्त के दिन बाहर गए थे। [9]याजक यहोयादा ने वे भाले तथा बड़ी और छोटी ढालें अधिकारियों को दीं जो राजा दाऊद की थीं। वे हथियार परमेश्वर के मन्दिर में रखे थे। [10]तब यहोयादा ने लोगों को बताया कि उन्हें कहाँ खड़ा होना है। हर एक व्यक्ति अपने हथियार अपने हाथ में लिये था। पुरुष मन्दिर की दाँयी ओर से बाँयी ओर तक लगातार खड़े थे। वे वेदी, मन्दिर और राजा के निकट खड़े थे। [11]वे राजा के पुत्र को बाहर लाए और उसे मुकुट पहना दिया। उन्होंने उसे व्यवस्था के पुस्तक की एक प्रति दी।* तब उन्होंने योआश को राजा बनाया।

उन्होंने उसे ... प्रति दी हिब्रू में पाठ हैं "उन्होंने उसे प्रमाण पत्र दिया।" यहाँ शब्द का अर्थ उन नियमों की प्रति है जिनका पालन राजा को करना था। देखें व्यवस्था. 17:18

यहोयादा और उसके पुत्रों ने योआश का अभिषेक किया। उन्होंने कहा, "राजा दीर्घायु हो!"

[12]अतल्याह ने मन्दिर की ओर दौड़ते हुए और राजा की प्रशंसा करते हुए लोगों का शोर सुना। वह यहोवा के मन्दिर पर लोगों के पास आई। [13]उसने नजर दौड़ाई और राजा को देखा। राजा राज स्तम्भ के साथ सामने वाले द्वार पर खड़ा था। अधिकारी और लोग जो तुरही बजाते थे, राजा के पास थे। देश के लोग प्रसन्न थे और तुरही बजा रहे थे। गायक संगीत वाद्यों को बजा रहे थे। गायक प्रशंसा के गायन में लोगों का नेतृत्व कर रहे थे। तब अतल्याह ने अपने वस्त्रों को फाड़ डाला,* और उसने कहा, "षड़यन्त्र! षड़यन्त्र!"

[14]याजक यहोयादा सेना के नायकों को बाहर लाया। उसने उनसे कहा, "अतल्याह को, सेना से, बाहर ले आओ। अपनी तलवार का उपयोग उस व्यक्ति को मार डालने के लिये करो जो उसके साथ जाता है।" तब याजक ने सैनिकों को चेतावनी दी, "अतल्याह को यहोवा के मन्दिर में मत मारो।" [15]तब उन लोगों ने अतल्याह को वश में कर लिया जब वह राजमहल के अश्व द्वार पर आई। तब उन्होंने उसी स्थान पर उसे मार डाला।

[16]तब यहोयादा ने राजा और सभी लोगों के साथ एक सन्धि की। सभी ने स्वीकार किया कि वे यहोवा के लोग रहेंगे। [17]सभी लोग बाल की मूर्ति के मन्दिर में गए और उसे उखाड़ डाला। उन्होंने बाल के मन्दिर की वेदियों और मूर्तियों को तोड़ डाला। उन्होंने बाल की वेदी के सामने बाल के याजक मत्तान को मार डाला।

[18]तब यहोयादा ने यहोवा के मन्दिर के लिये उत्तरदायी याजकों को चुना। वे याजक लेवीवंशी थे और दाऊद ने उन्हें यहोवा के मन्दिर के प्रति उत्तरदायी होने का कार्य सौंपा था। उन याजकों को होमबलि मूसा के आदेश के अनुसार यहोवा को चढ़ानी थी। वे अति प्रसन्नता से दाऊद के आदेश के अनुसार गाते हुए बलि चढ़ाते थे। [19]यहोयादा ने यहोवा के मन्दिर के द्वार पर द्वारपाल रखे जिससे कोई व्यक्ति जो किसी दृष्टि से शुद्ध नहीं था मन्दिर में नहीं जा सकता था। [20]यहोयादा ने सेना के नायकों, प्रमुखों, लोगों के प्रशासकों और देश के सभी लोगों को अपने साथ लिया। तब यहोयादा ने राजा को यहोवा के मन्दिर से बाहर निकाला और वे ऊपरी द्वार से राजमहल में गए। उस स्थान पर उन्होंने राजा को गद्दी पर बिठाया। [21]यहूदा के सभी लोग बहुत प्रसन्न थे और यरूशलेम नगर में शान्ति रही क्योंकि अतल्याह तलवार से मार दी गई थी।

योआश फिर मन्दिर बनाता है

24 योआश जब राजा बना सात वर्ष का था। उसने यरूशलेम में चालीस वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ का नाम सिब्या था। सिब्या बेर्शेबा नगर की थी। [2]योआश यहोवा के सामने तब तक ठीक काम करता रहा जब तक याजक यहोयादा जीवित रहा। [3]यहोयादा ने योआश के लिये दो पत्नियाँ चुनीं। योआश के पुत्र और पुत्रियाँ थीं।

[4]तब कुछ समय बाद, योआश ने यहोवा का मन्दिर दुबारा बनाने का निश्चय किया। [5]योआश ने याजकों और लेवीवंशियों को एक साथ बुलाया। उसने उनसे कहा, "यहूदा के नगरों में जाओ और उस धन को इकट्ठा करो जिसका भुगतान इस्राएल के लोग हर वर्ष करते हैं। उस धन का उपयोग परमेश्वर के मन्दिर को दुबारा बनाने में करो। शीघ्रता करो और इसे पूरा कर लो।" किन्तु लेवीवंशियों ने शीघ्रता नहीं की।

[6]इसलिये राजा योआश ने प्रमुख याजक यहोयादा को बुलाया। राजा ने कहा, "यहोयादा, तुमने लेवीवंशियों को यहूदा और यरूशलेम से कर का धन लाने को प्रेरित क्यों नहीं किया? यहोवा के सेवक मूसा और इस्राएल के लोगों ने पवित्र तम्बू के लिये इस कर के धन का उपयोग किया था।"

[7]बीते काल में अतल्याह के पुत्र, परमेश्वर के मन्दिर में बलपूर्वक घुस गए थे। उन्होंने यहोवा के मन्दिर की पवित्र चीज़ों का उपयोग अपने बाल देवताओं की पूजा के लिये किया था। अतल्याह एक दुष्ट स्त्री थी।

[8]राजा योआश ने एक सन्दूक बनाने और उसे यहोवा के मन्दिर के द्वार के बाहर रखने का आदेश दिया। [9]तब लेवीवंशियों ने यहूदा और यरूशलेम में यह घोषणा की। उन्होंने लोगों से कर का धन यहोवा के लिये लाने को कहा। यहोवा के सेवक मूसा ने इस्राएल के लोगों से मरुभूमि में रहते समय जो कर के रूप में धन माँगा था उतना ही यह धन है। [10]सभी प्रमुख और सभी लोग प्रसन्न

वस्त्र को फाड़ डाला यह दिखाने की पद्धति कि वह बहुत घबरा गई थी।

थे। वे धन लेकर आए और उन्होंने उसे सन्दूक में डाला। वे तब तक देते रहे जब तक सन्दूक भर नहीं गया। [11]तब लेवीवंशियों को राजा के अधिकारियों के सामने सन्दूक ले जानी पड़ी। उन्होंने देखा कि सन्दूक धन से भर गया है। राजा के सचिव और प्रमुख याजक के अधिकारी आए और उन्होंने धन को सन्दूक से निकाला। तब वे सन्दूक को अपनी जगह पर फिर वापस ले गए। उन्होंने यह बार–बार किया और बहुत धन बटोरा। [12]तब राजा योआश और यहोयादा ने वह धन उन लोगों को दिया जो यहोवा के मन्दिर को बनाने का कार्य कर रहे थे और यहोवा के मन्दिर बनाने में कार्य करने वालों ने यहोवा के मन्दिर को दुबारा बनाने के लिये कुशल बढ़ई और लकड़ी पर खुदाई का काम करने वालों को मजदूरी पर रखा। उन्होंने यहोवा के मन्दिर को दुबारा बनाने के लिये कांसे और लोहे का काम करने की जानकारी रखने वालों को भी मजदूरी पर रखा।

[13]काम की निगरानी रखने वाले व्यक्ति विश्वसनीय थे। यहोवा के मन्दिर को दुबारा बनाने का काम सफल हुआ। उन्होंने परमेश्वर के मन्दिर को जैसा वह पहले था, वैसा ही बनाया और पहले से अधिक मजबूत बनाया। [14]जब कारीगरों ने काम पूरा कर लिया तो वे उस धन को जो बचा था, राजा योआश और यहोयादा के पास ले आए। उसका उपयोग उन्होंने यहोवा के मन्दिर के लिये चीजें बनाने के लिये किया। वे चीज़ें मन्दिर के सेवाकार्य में और होमबलि चढ़ाने में काम आती थीं। उन्होंने सोने और चाँदी के कटोरे और अन्य वस्तुएँ बनाई। याजकों ने यहोवा के मन्दिर में हर एक संध्या को होमबलि तब तक चढ़ाई जब तक यहोयादा जीवित रहा।

[15]यहोयादा बूढ़ा हुआ। उसने बहुत लम्बी उम्र बिताई तब वह मरा। यहोयादा जब मरा, वह एक सौ तीस वर्ष का था। [16]लोगों ने यहोयादा को दाऊद के नगर में वहाँ दफनाया जहाँ राजा दफनाए जाते हैं। लोगों ने यहोयादा को वहाँ दफनाया क्योंकि अपने जीवन में उसने परमेश्वर और परमेश्वर के मन्दिर के लिये इस्राएल में बहुत अच्छे कार्य किये।

[17]यहोयादा के मरने के बाद यहूदा के प्रमुख आए और वे राजा योआश के सामने झुके। राजा ने इन प्रमुखों की सुनी। [18]राजा और प्रमुखों ने उस यहोवा, परमेश्वर के मन्दिर को अस्वीकार कर दिया जिसका अनुसरण उनके पूर्वज करते थे। उन्होंने अशेरा–स्तम्भ और अन्य मूर्तियों की पूजा आरम्भ की। परमेश्वर यहूदा और यरूशलेम के लोगों पर क्रोधित हुआ क्योंकि राजा और वे प्रमुख अपराधी थे। [19]परमेश्वर ने लोगों के पास नबियों को उन्हें यहोवा की ओर लौटाने के लिये भेजा। नबियों ने लोगों को चेतावनी दी। किन्तु लोगों ने सुनने से इन्कार कर दिया।

[20]परमेश्वर की आत्मा जकर्याह पर उतरी। जकर्याह का पिता याजक यहोयादा था। जकर्याह लोगों के सामने खड़ा हुआ और उसने कहा, "जो यहोवा कहता है वह यह है: 'तुम लोग यहोवा का आदेश पालन करने से क्यों इन्कार करते हो? तुम सफल नहीं होगे। तुमने यहोवा को छोड़ा है। इसलिये यहोवा ने भी तुम्हें छोड़ दिया है!'"

[21]लेकिन लोगों ने जकर्याह के विरुद्ध योजना बनाई। राजा ने जकर्याह को मार डालने का आदेश दिया, अत: उन्होंने उस पर तब तक पत्थर मारे जब तक वह मर नहीं गया। लोगों ने यह मन्दिर के आँगन में किया। [22]राजा योआश ने अपने ऊपर यहोयादा की दयालुता को भी याद नहीं रखा। यहोयादा जकर्याह का पिता था। किन्तु योआश ने यहोयादा के पुत्र जकर्याह को मार डाला। मरने के पहले जकर्याह ने कहा, "यहोवा उस पर ध्यान दे जो तुम कर रहे हो और तुम्हें दण्ड दे!"

[23]वर्ष के अन्त में अराम की सेना योआश के विरुद्ध आई। उन्होंने यहूदा और यरुशलेम पर आक्रमण किया और लोगों के सभी प्रमुखों को मार डाला। उन्होंने सारी कीमती चीजें दमिश्क के राजा के पास भेज दीं। [24]अराम की सेना बहुत कम समूहों में आई थी किन्तु यहोवा ने उसे यहूदा की बहुत बड़ी सेना को हराने दिया। यहोवा ने यह इसलिये किया कि यहूदा के लोगों ने यहोवा परमेश्वर को छोड़ दिया जिसका अनुसरण उनके पूर्वज करते थे। इस प्रकार योआश को दण्ड मिला। [25]जब अराम के लोगों ने योआश को छोड़ा, वह बुरी तरह घायल था। योआश के अपने सेवकों ने उसके विरुद्ध योजना बनाई। उन्होंने ऐसा इसलिये किया कि योआश ने याजक यहोयादा के पुत्र जकर्याह को मार डाला था। सेवकों ने योआश को उसकी अपनी शैया पर ही मार डाला। योआश के मरने के बाद लोगों ने उसे दाऊद के नगर में दफनाया। किन्तु लोगों ने उसे उस स्थान पर नहीं दफनाया जहाँ राजा दफनाये जाते हैं।

[26]जिन सेवकों ने योआश के विरुद्ध योजना बनाई, वे ये हैं जाबाद और यहोजाबाद। जाबाद की माँ का नाम शिमात था। शिमात अम्मोन की थी। यहोजाबाद की माँ का नाम शिम्रित था। शिम्रित मोआब की थी। [27]योआश के पुत्रों की कथा, उसके विरुद्ध बड़ी भविष्यवाणियाँ और उसने फिर परमेश्वर का मन्दिर कैसे बनाया, "राजाओं के व्याख्या" नामक पुस्तक में लिखा है। उसके बाद अमस्याह नया राजा हुआ। अमस्याह योआश का पुत्र था।

यहूदा का राजा अमस्याह

25 अमस्याह राजा बनने के समय पच्चीस वर्ष का था। उसने यरूशलेम में उन्तीस वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ का नाम यहोअद्दान था। यहोअद्दान यरूशलेम की थी। [2]अमस्याह ने वही किया जो यहोवा उससे करवाना चाहता था। किन्तु उसने उन्हें पूरे हृदय से नहीं किया। [3]अमस्याह के हाथ में राज्यसत्ता सुदृढ़ हो गयी। तब उसने उन अधिकारियों को मार डाला जिन्होंने उसके पिता राजा को मारा था। [4]किन्तु अमस्याह ने उन अधिकारियों के बच्चों को नहीं मारा। क्यों? क्योंकि उसने मूसा के पुस्तक में लिखे नियमों को माना। यहोवा ने आदेश दिया था, "पिताओं को अपने पुत्रों के पाप के लिये नहीं मारना चाहिए। बच्चों को अपने पिता के पापों के लिये नहीं मरना चाहिए। हर एक व्यक्ति को अपने स्वयं के पाप के लिये मरना चाहिए।"

[5]अमस्याह ने यहूदा के लोगों को इकट्ठा किया। उसने उनके परिवारों का वर्ग बनाया और उन वर्गों के अधिकारी सेनाध्यक्ष और नायक नियुक्त किये। वे प्रमुख यहूदा और बिन्यामीन के सभी सैनिकों के अधिकारी हुए। सभी लोग जो सैनिक होने के लिये चुने गए, बीस वर्ष के या उससे अधिक के थे। वे सब तीन लाख प्रशिक्षित सैनिक भाले और ढाल के साथ लड़ने वाले थे। [6]अमस्याह ने एक लाख सैनिकों को इस्राएल से किराये पर लिया। उसने पौने चार टन चाँदी का भुगतान उन सैनिकों को किराये पर लेने के लिये किया। [7]किन्तु परमेश्वर का एक व्यक्ति अमस्याह के पास आया। परमेश्वर के व्यक्ति ने कहा, "राजा, अपने साथ इस्राएल की सेना को न जाने दो। परमेश्वर इस्राएल के साथ नहीं है। परमेश्वर एप्रैम के लोगों के साथ नहीं है। [8]सम्भव है तुम अपने को शक्तिशाली बनाओ और युद्ध की तैयारी करो, किन्तु परमेश्वर तुम्हें जिता या हरा सकता है। [9]अमस्याह ने परमेश्वर के व्यक्ति से कहा, "किन्तु हमारे धन का क्या होगा जो मैंने पहले ही इस्राएल की सेना को दे दिया है?" परमेश्वर के व्यक्ति ने उत्तर दिया, "यहोवा के पास बहुत अधिक है। वह उससे भी अधिक तुमको दे सकता है!"

[10]इसलिए अमस्याह ने इस्राएल की सेना को वापस घर एप्रैम को भेज दिया। वे लोग राजा और यहूदा के लोगों के विरुद्ध बहुत क्रोधित हुए। वे बहुत अधिक क्रोधित होकर अपने घर लौटे।

[11]तब अमस्याह बहुत साहसी हो गया और वह अपनी सेना को एदोम देश में नमक की घाटी में ले गया। उस स्थान पर अमस्याह की सेना ने सेईर के दस हजार सैनिकों को मार डाला। [12]यहूदा की सेना ने सेईर से दस हजार आदमी पकड़े। वे उन लोगों को सेईर से एक ऊँची चट्टान की चोटी पर ले गए। वे लोग तब तक जीवित थे। तब यहूदा की सेना ने उन व्यक्तियों को उस ऊँची चट्टान की चोटी से नीचे फेंक दिया और उनके शरीर नीचे की चट्टानों पर चूर चूर हो गए।

[13]किन्तु उसी समय इस्राएली सेना यहूदा के कुछ नगरों पर आक्रमण कर रही थी। वे शोमरोन से बेथोरोन नगर तक के नगरों पर आक्रमण कर रहे थे। उन्होंने तीन हजार लोगों को मार डाला और वे बहुत सी कीमती चीज़ें ले गए। उस सेना के लोग इसलिये क्रोधित थे क्योंकि अमस्याह ने उन्हें युद्ध में अपने साथ सम्मिलित नहीं होने दिया।

[14]अमस्याह एदोमी लोगों को हराने के बाद घर लौटा। वह सेइर के लोगों की उन देवमूर्तियों को लाया जिनकी वे पूजा करते थे। अमस्याह ने उन देवमूर्तियों को पूजना आरम्भ किया। उसने उन देवताओं को प्रणाम किया और उनको सुगन्धि भेंट की। [15]यहोवा अमस्याह पर बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने अमस्याह के पास एक नबी भेजा। नबी ने कहा, "अमस्याह, तुमने उन देवताओं की क्यों पूजा की जिन्हें वे लोग पूजते थे? वे देवता तो अपने लोगों की भी तुमसे रक्षा न कर सके!"

[16]जब नबी ने यह बोला, अमस्याह ने नबी से कहा, "हम लोगों ने तुम्हें कभी राजा का सलाहकार नहीं बनाया! चुप रहो! यदि तुम चुप नहीं रहे तो मार डाले जाओगे।" नबी चुप हो गया, किन्तु उसने तब कहा, "परमेश्वर ने सचमुच तुमको नष्ट करने का निश्चय कर लिया है।

क्योंकि तुम वे बुरी बातें करते हो और मेरी सलाह नहीं सुनते।"

[17]यहूदा के राजा अमस्याह ने अपने सलाहकार के साथ सलाह की। तब उसने योआश के पास सन्देश भेजा। अमस्याह ने योआश से कहा, "हम लोग आमने–सामने मिलें।" योआश यहोआहाज का पुत्र था। यहोआहाज येहू का पुत्र था। येहू इस्राएल का राजा था।

[18]तब योआश ने अपना उत्तर अमस्याह को भेजा। योआश इस्राएल का राजा था और अमस्याह यहूदा का राजा था। योआश ने यह कथा सुनाई: "लबानोन की एक छोटी कंटीली झाड़ी ने लबानोन के एक विशाल देवदारु के वृक्ष को सन्देश भेजा। छोटी कंटीली झाड़ी ने कहा, 'अपनी पुत्री का विवाह मेरे पुत्र के साथ कर दो,' किन्तु एक जंगली जानवर निकला और उसने कंटीली झाड़ी को कुचला और उसे नष्ट कर दिया। [19]तुम कहते हो, 'मैंने एदोम को हराया है!' तुम्हें उसका घंमड है और उसकी डींग हाँकते हो। किन्तु तुम्हें घर में घुसे रहना चाहिए। तुम्हें खतरा मोल लेने की आवश्यकता नहीं है। यदि तुम मुझसे युद्ध करोगे तो तुम और यहूदा नष्ट हो जाएंगे।"

[20]किन्तु अमस्याह ने सुनने से इन्कार कर दिया। यह परमेश्वर की ओर से हुआ। परमेश्वर ने यहूदा को इस्राएल द्वारा हराने की योजना बनाई क्योंकि यहूदा के लोग उन देवताओं का अनुसरण कर रहे थे जिनका अनुसरण एदोम के लोग करते थे। [21]इसलिये इस्राएल का राजा योआश बेतशेमेश नगर में यहूदा के राजा अमस्याह से आमने–सामने मिला। बेतशेमेश यहूदा में है। [22]इस्राएल ने यहूदा को हराया। यहूदा का हर एक व्यक्ति अपने घरों को भाग गया। [23]योआश ने अमस्याह को बेतशेमेश में पकड़ा और उसे यरूशलेम ले गया। अमस्याह के पिता का नाम योआश था। योआश के पिता का नाम यहोआहाज था। योआश ने छ: सौ फुट लम्बी यरूशलेम की उस दीवार को जो एप्रैम फाटक से कोने के फाटक तक थी, गिरा दिया। [24]तब योआश ने परमेश्वर के मन्दिर का सोना, चाँदी तथा कई अन्य सामान ले लिया। ओबेदेदोम मन्दिर में उन चीजों की सुरक्षा का उत्तरदायी था। किन्तु योआश ने उन सभी चीजों को ले लिया। योआश ने राजमहल से भी कीमती चीज़ों को लिया। तब योआश ने कुछ व्यक्तियों को बन्दी बनाया और शोमरोन लौट गया।

[25]अमस्याह योआश के मरने के बाद पन्द्रह वर्ष जीवित रहा। अमस्याह का पिता यहूदा का राजा योआश था। [26]अमस्याह ने आरम्भ से अन्त तक अन्य जो कुछ किया वह सब "इस्राएल और यहूदा के राजा के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। [27]जब अमस्याह ने यहोवा की आज्ञा का पालन करना छोड़ दिया, यरूशलेम के लोगों ने उसके विरुद्ध एक योजना बनाई। वह लाकीश नगर को भाग गया। किन्तु लोगों ने लाकीश में व्यक्तियों को भेजा और उन्होंने अमस्याह को वहाँ मार डाला। [28]तब वे अमस्याह के शव को घोड़ों पर ले गए और उसे उसके पूर्वजों के साथ यहूदा में दफनाया।

यहूदा का राजा उज्जिय्याह

26 तब यहूदा के लोगों ने अमस्याह के स्थान पर नया राजा होने के लिये उज्जिय्याह को चुना। अमस्याह उज्जिय्याह का पिता था। जब यह हुआ तो उज्जिय्याह सोलह वर्ष का था। [2]उज्जिय्याह ने एलोत नगर को दुबारा बनाया और इसे यहूदा को लौटा दिया। उज्जिय्याह ने यह अमस्याह के मर जाने और पूर्वजों के साथ उसके दफनाए जाने के बाद किया।

[3]उज्जिय्याह जब राजा हुआ तो वह सोलह वर्ष का था। उसने यरुशलेम में बावन वर्ष तक राज्य किया। उसकी माँ का नाम यकील्याह था। यकील्याह यरूशलेम की थी। [4]उज्जिय्याह ने वह किया जो यहोवा उससे करवाना चाहता था। उसने यहोवा का अनुसरण वैसे ही किया जैसे उसके पिता अमस्याह ने किया था। [5]उज्जिय्याह ने परमेश्वर का अनुसरण जकर्याह के जीवन–काल में किया। जकर्याह ने उज्जिय्याह को शिक्षा दी कि परमेश्वर का सम्मान और उसकी आज्ञा का पालन कैसे किया जाता है। जब उज्जिय्याह यहोवा की आज्ञा का पालन कर रहा था तब परमेश्वर ने उसे सफलता दिलाई।

[6]उज्जिय्याह ने पलिश्ती लोगों के विरुद्ध एक युद्ध किया। उसने गत, यब्ने, और अशदोद नगर की दीवारों को गिरा दिया। उज्जियाह ने अश्दोद नगर के पास और पलिश्ती लोगों के बीच अन्य स्थानों में नगर बसाये। [7]परमेश्वर ने उज्जिय्याह की सहायता पलिश्तियों के गूर्बाल नगर में रहने वाले अरबों और मूनियों के साथ युद्ध करने में की। [8]अम्मोनी उज्जिय्याह को राज्य कर देते थे। उज्जिय्याह का नाम मिस्र की सीमा तक प्रसिद्ध

हो गया। वह प्रसिद्ध था क्योंकि वह बहुत शक्तिशाली था।

[9]उज्जिय्याह ने यरूशलेम में कोने के फाटक, घाटी के फाटक और दीवार के मुड़ने के स्थानों पर मीनारें बनवाईं। उज्जिय्याह ने उन मीनारों को दृढ़ बनाया। [10]उज्जिय्याह ने मीनारों को मरुभूमि में बनाया। उसने बहुत से कुँए भी खुदवाए। उसके पास पहाड़ी और मैदानी प्रदेशों में बहुत से पशु थे। उज्जिय्याह के पास पर्वतों में और जहाँ अच्छी उपज होती थी, उस भूमि में किसान थे। वह ऐसे व्यक्तियों को भी रखे हुए था जो उन खेतों की रखवाली करते थे जिनमें अँगूर होते थे। उसे कृषि से प्रेम था।

[11]उज्जिय्याह के पास प्रशिक्षित सैनिकों की एक सेना थी। वे सैनिक सचिव यीएल और अधिकारी मासेयाह द्वारा वर्गों में बँटे थे। हनन्याह उनका प्रमुख था। यीएल और मासेयाह ने उन सैनिकों को गिना और उन्हें वर्गों में रखा। हनन्याय राजा के अधिकारियों में से एक था। [12]सैनिकों के ऊपर दो हजार छ: सौ प्रमुख थे। [13]वे परिवार प्रमुख तीन लाख सात हजार पाँच सौ पुरुषों की उस सेना के अधिपति थे जो बड़ी शक्ति से लड़ती थी। वे सैनिक राजा को शत्रुओं के विरुद्ध सहायता करते थे। [14]उज्जिय्याह ने सेना को ढाल, भाले, टोप, कवच, धनुष और गुलेलों के लिये पत्थर दिये थे। [15]यरूशलेम में उज्जियायाह ने जो यन्त्र बनाए वह बुद्धिमानों के अविष्कार थे। वे यन्त्र मीनारों तथा कोने की दीवारों पर रखे गए थे। ये यन्त्र बाण और बड़े पत्थर फेंकते थे। उज्जिय्याह प्रसिद्ध हो गया। लोग उसका नाम दूर–दूर के देशों में जानते थे। उसके पास बड़ी सहायता थी और वह शक्तिशाली राजा हो गया।

[16]किन्तु जब उजिय्याह शक्तिशाली हो गया, उसके घमण्ड ने उसे नष्ट किया। वह यहोवा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहा। वह यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि जलाने की वेदी पर गया। [17]याजक अजर्याह और यहोवा के अस्सी साहसी याजक सेवक उज्जिय्याह के पीछे मन्दिर में गए। [18]उन्होंने उज्जिय्याह से कहा कि तुम गलती कर रहे हो। उन्होंने उससे कहा, "उजिय्याह, यहोवा के लिये सुगन्धि जलाना तुम्हारा काम नहीं है। यह करना तुम्हारे लिये ठीक नहीं है। याजक और हारून के वंशज ही केवल यहोवा के लिये सुगन्धि जलाते हैं। इन याजकों को सुगन्धि जलाने की पवित्र सेवा के लिये प्रशिक्षण दिया गया है। सर्वाधिक पवित्र स्थान से बाहर निकल जाओ। तुम विश्वासयोग्य नहीं रहे हो। यहोवा परमेश्वर तुमको इसके लिये सम्मान नहीं देगा!"

[19]किन्तु उज्जिय्याह क्रोधित हुआ। उसके हाथ में सुगन्धि जलाने के लिये एक कटोरा था। जिस समय उज्जिय्याह याजकों पर बहुत क्रोधित था, उसी समय उसके माथे पर कुष्ठ हो गया। यह याजकों के सामने यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि जलाने के वेदी के पास हुआ। [20]प्रमुख याजक अजर्याह और सभी याजकों ने उज्जिय्याह को देखा। वे उसके ललाट पर कुष्ठ देख सकते थे। याजकों ने शीघ्रता से उज्जियाह को मन्दिर से बाहर जाने को विवश किया। उज्जिय्याह ने स्वयं शीघ्रता की, क्योंकि यहोवा ने उसे दण्ड दे दिया था। [21]राजा उज्जिय्याह मृत्यु पर्यन्त कोढ़ी था। वह यहोवा के मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकता था। उज्जिय्याह के पुत्र योताम ने राजमहल को व्यवस्थित रखा और लोगों का प्रशासक बना।

[22]उज्जिय्याह ने आरम्भ से लेकर अन्त तक जो कुछ किया वह यशायाह नबी द्वारा लिखा गया। यशायाह का पिता आमोस था। [23]उज्जिय्याह मरा और अपने पूर्वजों के पास दफनाया गया। उज्जिय्याह को राजाओं के कब्रिस्तान के पास मैदान में दफनाया गया। क्यों? क्योंकि लोगों ने कहा, "उज्जिय्याह को कोढ़ है।" योताम उज्जिय्याह के स्थान पर नया राजा हुआ। योताम उज्जिय्याह का पुत्र था।

यहूदा का राजा योताम

27 योताम पच्चीस वर्ष का था जब वह राजा हुआ। उसने सोलह वर्ष तक यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ का नाम यरूशा था। यरूशा सादोक की पुत्री थी। [2]योताम ने वह किया, जो यहोवा उससे करवाना चाहता था। उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन वैसे ही किया जैसे उसके पिता उज्जिय्याह ने किया था। किन्तु योताम यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि जलाने के लिये उसी प्रकार नहीं घुसा जैसे उसका पिता घुसा था। किन्तु लोगों ने पाप करना जारी रखा। [3]योताम ने यहोवा के मन्दिर के ऊपरी द्वार को दुबारा बनाया। उसने ओपेल नामक स्थान में दीवार पर बहुत से निर्माण कार्य किये। [4]योताम ने यहूदा के पहाड़ी प्रदेश में भी नगर बनाए। योताम ने मीनार और किले जंगलों में बनाए। [5]योताम अम्मोनी लोगों के राजा और उसके सेना के विरुद्ध लड़ा

और उन्हें हराया। इसलिये हर वर्ष तीन वर्ष तक अम्मोनी लोग योताम को पौने चार टन चाँदी, बासठ हजार बुशल गेहूँ और बासठ बुशल जौ देते रहे।

[6]योताम शक्तिशाली हो गया क्योंकि उसने विश्वासपूर्वक यहोवा, अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। [7]योताम ने अन्य जो कुछ भी किया तथा उसके सभी युद्ध "यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए हैं। [8]योताम जब राजा हुआ था, पच्चीस वर्ष का था। उसने यरूशलेम पर सोलह वर्ष शासन किया। [9]तब योताम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों ने उसे दाऊद के नगर में दफनाया। योताम के स्थान पर आहाज राजा हुआ। आहाज योताम का पुत्र था।

यहूदा का राजा आहाज

28 आहाज बीस वर्ष का था, जब वह राजा हुआ। उसने यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य किया। आहाज अपने पूर्वज दाऊद की तरह सच्चाई से नहीं रहा। आहाज ने वह नहीं किया जो कुछ यहोवा चाहता था कि वह करे। [2]आहाज ने इस्राएली राजाओं के बुरे उदाहरणों का अनुसरण किया। उसने बाल–देवता की पूजा के लिये मूर्तियों को बनाने के लिये साँचे का उपयोग किया। [3]आहाज ने हिन्नोम की घाटी* में सुगन्धि जलाई। उसने अपने पुत्रों को आग में जलाकर बलि भेंट की। उसने वे सब भयंकर पाप किये जिसे उस प्रदेश में रहने वाले व्यक्तियों ने किया था। यहोवा ने उन व्यक्तियों को बाहर जाने को विवश किया था जब इस्राएल के लोग उस भूमि में आए थे। [4]आहाज ने बलि भेंट की और सुगन्धि को उच्चस्थानों अर्थात् पहाड़ियों और हर एक हरे पेड़ के नीचे जलाया।

[5-6]आहाज ने पाप किया, इसलिये यहोवा, उसके परमेश्वर ने अराम के राजा को उसे पराजित करने दिया। अराम के राजा और उसकी सेना ने आहाज को हराया और यहूदा के अनेक लोगों को बन्दी बनाया। अराम का राजा उन बन्दियों को दमिश्क नगर को ले गया। यहोवा ने इस्राएल के राजा पेकह को भी आहाज को पराजित करने दिया। पेकह के पिता का नाम रमल्याह था। पेकह और उसकी सेना ने एक दिन में यहूदा के एक लाख बीस हजार वीर सैनिकों को मार डाला। पेकह ने यहूदा के उन लोगों को इसलिये हराया कि उन्होंने उस यहोवा, परमेश्वर की आज्ञा मानना अस्वीकार कर दिया जिसकी आज्ञा उनके पूर्वज मानते थे। [7]जिक्री एप्रैमी का एक वीर सैनिक था। जिक्री ने राजा आहाज के पुत्र मासेयाह और राजमहल के संरक्षक अधिकारी अज्रीकाम और एलकाना को मार डाला। एलकाना राजा के ठीक बाद द्वितीय शक्ति था।

[8]इस्राएल की सेना ने यहूदा में रहने वाले दो लाख अपने निकट सम्बन्धियों को पकड़ा। उन्होंने स्त्रियों, बच्चे और यहूदा से बहुत कीमती चीज़ें लीं। इस्राएली उन बन्दियों और उन चीजों को शोमरोन नगर को ले आए। [9]किन्तु वहाँ यहोवा का एक नबी था। इस नबी का नाम ओदेद था। ओदेद इस्राएल की इस सेना से मिला जो शोमरोन लौट आई। ओदेद ने इस्राएल की सेना से कहा, "यहोवा, परमेश्वर ने जिसकी आज्ञा तुम्हारे पूर्वजों ने मानी, तुम्हें यहूदा के लोगों को हराने दिया क्योंकि वह उन पर क्रोधित था। तुम लोगों ने यहूदा के लोगों को बहुत नीच ढंग से मारा और दण्डित किया। अब परमेश्वर तुम पर क्रोधित है। [10]तुम यहूदा और यरूशलेम के लोगों को दास की तरह रखने की योजना बना रहे हो। तुम लोगों ने भी यहोवा, अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। [11]अब मेरी सुनो। अपने जिन भाई बहनों को तुम लोगों ने बन्दी बनाया है उन्हें वापस कर दो। यह करो क्योंकि यहोवा का भयंकर क्रोध तुम्हारे विरुद्ध है।"

[12]तब एप्रैम के कुछ प्रमुखों ने इस्राएल के सैनिकों को युद्ध से लौटकर घर आते देखा। वे प्रमुख इस्राएल के सैनिकों से मिले और उन्हें चेतावनी दी। वे प्रमुख योहानान का पुत्र अजर्याह, मशिल्लेमोत का पुत्र बेरेक्याह, शल्लूम का पुत्र यहिजकिय्याह और हदलै का पुत्र अमासा थे। [13]उन प्रमुखों ने इस्राएली सैनिकों से कहा, "यहूदा के बन्दियों को यहाँ मत लाओ। यदि तुम यह करते हो तो यह हम लोगों को यहोवा के विरुद्ध बुरा पाप करायेगा। वह हमारे पाप और अपराध को और अधिक बुरा करेगा तथा यहोवा हम लोगों के विरुद्ध बहुत क्रोधित होगा!" [14]इसलिए सैनिकों ने बन्दियों और कीमती चीजों को उन प्रमुखों और इस्राएल के लोगों को दे दिया। [15]पहले गिनाए

बेन हिन्नोम की घाटी बेन हिन्नोम की घाटी यरूशलेम के दक्षिण में थी। इस घाटी में बहुत से शिशु और छोटे बच्चें असत्य देवताओं को बलि चढ़ा दिये जाते थे।

गए प्रमुख (अजर्याह, बेरेक्याह, यहिजकिय्याह और अमास) खड़े हुए और उन्होंने बन्दियों की सहायता की। इन चारों व्यक्तियों ने उन वस्त्रों को लिया जो इस्राएली सेना ने लिये थे और इसे उन लोगों को दिया जो नंगे थे। उन प्रमुखों ने उन लोगों को जूते भी दिये। उन्होंने यहूदा के बन्दियों को कुछ खाने और पीने को दिया। उन्होंने उन लोगों को तेल मला। तब एप्रैम के प्रमुखों ने कमजोर बन्दियों को खच्चरों पर चढ़ाया और उन्हें उनके घर यरीहो में उनके परिवारों के पास ले गये। यरीहो का नाम ताड़ के पेड़ का नगर था। तब वे चारों प्रमुख अपने घर शोमरोन को लौट गए।

[16–17]उसी समय, एदोम के लोग फिर आए और उन्होंने यहूदा के लोगों को हराया। एदोमियों ने लोगों को बन्दी बनाया और उन्हें बन्दी के रूप में ले गए। इसलिये राजा आहाज ने अश्शूर के राजा से सहायता माँगी। [18]पलिश्ती लोगों ने भी पहाड़ी के नगरों और दक्षिण यहूदा पर आक्रमण किया। पलिश्ती लोगों ने बेतशेमेश, अय्यालोन, गदेरोत, सोको, तिम्ना और गिमजो नामक नगरों पर अधिकार कर लिया। उन्होंने उन नगरों के पास के गाँवों पर भी अधिकार कर लिया। तब उन नगरों में पलिश्ती रहने लगे। [19]यहोवा ने यहूदा को कष्ट दिया क्योंकि यहूदा के राजा आहाज ने यहूदा के लोगों को पाप करने के लिये प्रोत्साहित किया। वह यहोवा के प्रति बहुत अधिक अविश्वास योग्य था। [20]अश्शूर का राजा तिलगतपिलनेसेर आया और आहाज को सहायता देने के स्थान पर उसने कष्ट दिया। [21]आहाज ने कुछ कीमती चीजें यहोवा के मन्दिर, राजमहल और राजकुमार भवन से इकट्ठा कीं। आहाज ने वे चीजें अश्शूर के राजा को दीं। किन्तु उसने आहाज को सहायता नहीं दी।

[22]आहाज की परेशानियों के समय में उसने और अधिक बुरे पाप किये और यहोवा का और अधिक अविश्वास योग्य बन गया। [23]उसने दमिश्क के लोगों द्वारा पूजे जाने वाले देवताओं को बलिभेंट की। दमिश्क के लोगों ने आहाज को पराजित किया था। इसलिए उसने मन ही मन सोचा था, "अराम के लोगों के देवताओं की पूजा ने उन्हें सहायता दी। यदि मैं उन देवताओं को बलिभेंट करूँ तो संभव है, वे मेरी भी सहायता करें।" आहाज ने उन देवताओं की पूजा की। इस प्रकार उसने पाप किया और उसने इस्राएल के लोगों को पाप करने वाला बनाया।

[24]आहाज ने यहोवा के मन्दिर से चीज़ें इकट्ठी कीं और उनके टुकड़े कर दिये। तब उसने यहोवा के मन्दिर का द्वार बन्द कर दिया। उसने वेदियाँ बनाई और यरूशलेम में सड़क के हर मोड़ पर उन्हें रखा। [25]आहाज ने यहूदा के हर नगर में अन्य देवताओं की पूजा के लिये उच्च स्थान सुगन्धि जलाने के लिये बनाए। आहाज ने यहोवा, परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर दिया जिसकी आज्ञा का पालन उसके पूर्वज करते थे।

[26]आहाज ने आरम्भ से अन्त तक जो कुछ अन्य किया वह "यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। [27]आहाज मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों ने आहाज को यरूशलेम नगर में दफनाया। किन्तु उन्होंने आहाज को उसी कब्रिस्तान में नहीं दफनाया जहाँ इस्राएल के राजा दफनाये गए थे। आहाज के स्थान पर हिजकिय्याह नया राजा बना। हिजकिय्याह आहाज का पुत्र था।

यहूदा का राजा हिजकिय्याह

29 हिजकिय्याह जब पच्चीस वर्ष का था, राजा हुआ। उसने उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ का नाम अबिय्याह था। अबिय्याह जकर्याह की पुत्री थी। [2]हिजकिय्याह ने वही किया जो यहोवा चाहता था कि वह करे। उसने अपने पूर्वज दाऊद की तरह, जो उचित था, वही किया।

[3]हिजकिय्याह ने यहोवा के मन्दिर के दरवाजों को जोड़ा और उन्हें मजबूत किया। हिजकिय्याह ने मन्दिर को फिर खोला। उसने राजा होने के बाद, वर्ष के पहले महीने में यह किया। [4–5]हिजकिय्याह ने याजकों और लेवीवंशियों को एक बैठक में एक साथ बिठाया। वह मन्दिर के पूर्व की दिशा में खुले आँगन में उनके साथ बैठक में शामिल हुआ। हिजकिय्याह ने उनसे कहा, "मेरी सुनों, लेवीवंशियों! पवित्र सेवा के लिये अपने को तैयार करो। यहोवा, परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र सेवा के लिये तैयार करो। वह परमेश्वर है जिसकी आज्ञा का पालन तुम्हारे पूर्वजों ने किया। मन्दिर से उन चीज़ों को बाहर करो जो वहाँ के लिये नहीं हैं। वे चीजें मन्दिर को शुद्ध नहीं बनाती। [6]हमारे पूर्वजों ने यहोवा को छोड़ा और यहोवा के भवन से मुख मोड़ लिया। [7]उन्होंने मन्दिर के स्वागत–कक्ष के दरवाजे को बन्द कर दिया और दीपकों

को बुझा दिया। उन्होंने सुगन्धि का जलाना और इस्राएल के परमेश्वर को पवित्र स्थान में होमबलि भेंट करना बन्द कर दिया। [8]इसलिये, यहोवा यहूदा और यरूशलेम के लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने उन्हें दण्ड दिया। अन्य लोग भयभीत हुए और दुःखी हुए जब उन्होंने देखा कि यहोवा ने यहूदा और यरूशलेम के लोगों के साथ क्या किया। अन्य लोगों ने यहूदा के लोगों के लिये लज्जा और घृणा से अपने सिर झुका लिये। तुम जानते हो कि यह सब सच है। तुम अपनी आँखों से इसे देख सकते हो। [9]यही कारण है कि हमारे पूर्वज युद्ध में मारे गये। हमारे पुत्र, पुत्रियाँ और पत्नियाँ बन्दी बनाई गई। [10]इसलिये मैं हिजकिय्याह ने यह निश्चय किया है कि मैं यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर के साथ एक वाचा करुँ। तब वह हम लोगों पर आगे क्रोधित नहीं होगा। [11]इसलिए मेरे पुत्रों तुम लोग सुस्त न हो या और अधिक समय नष्ट न करो। यहोवा ने तुम लोगों को अपनी सेवा के लिये चुना है। तुम्हें उसकी सेवा करनी चाहिए और उसके लिये सुगन्धि जलानी चाहिए।"

[12-14]उन लेवीवंशियों की यह सूची है जो वहाँ थे और जिन्होंने कार्य आरम्भ किया। कहाती परिवार के अमासै का पुत्र महत और अजर्याह का पुत्र योएल थे। मरारीत परिवार के अब्दी का पुत्र कीश और यहल्लेलेल का पुत्र अजर्याह थे। गेर्शोनी परिवार से जिम्मा का पुत्र योआह और योआह का पुत्र एदेन थे। एलीसापान के वंशजों में से शिम्री और यूएल थे। आसाप के वंशजों में जकर्याह और मत्तन्याह थे। हेमान के वंशजों में से यहूएल और शिमी थे। यदूतून के वंशजों में से शमायाह और उज्जीएल थे। [15]तब इन लेवीवंशियों ने अपने भाइयों को इकट्ठा किया और मन्दिर में पवित्र सेवा करने के लिये अपने को तैयार किया। उन्होंने राजा के उन आदेशों का पालन किया जो यहोवा के पास से आये थे। वे यहोवा के मन्दिर में उसे स्वच्छ करने गए। [16]याजक यहोवा के मन्दिर के भीतरी भाग में उसे स्वच्छ करने गए। उन्होंने सभी अशुद्ध चीज़ों को बाहर निकाला जिन्हें उन्होंने मन्दिर में पाया। वे अशुद्ध चीज़ों को यहोवा के मन्दिर के आँगन में ले आए। तब लेवीवंशी अशुद्ध चीजों को किद्रोन की घाटी में ले गए। [17]पहले महीने के पहले दिन लेवीवंशी अपने को पवित्र सेवा के लिये तैयार करने लगे। महीने के आठवें दिन लेवीवंशी यहोवा के मन्दिर के द्वार–मण्डप में आए। आठ दिन और, वे यहोवा के मन्दिर को पवित्र उपयोग के लिये स्वच्छ करते रहे। उन्होंने पहले महीने के सोलहवें दिन यह काम पूरा किया।

[18]तब वे राजा हिजकिय्याह के पास गए। उन्होंने उससे कहा, "राजा हिजकिय्याह, हम लोगों ने यहोवा के पूरे मन्दिर और भेंट जलाने के लिये वेदी को स्वच्छ कर दिया। हम लोगों ने रोटी को पक्तियों में रखने की मेज और उस के लिये उपयोग में आने वाली सभी चीज़ों को स्वच्छ कर दिया। [19]उन दिनों जब आहाज राजा था उसने परमेश्वर के प्रति विरोध किया। उसने बहुत सी चीज़ें फेंक दी थीं। जो मन्दिर में थीं। किन्तु हम लोगों ने फिर उन चीज़ों को रख दिया है और उन्हें पवित्र कार्य के लिये तैयार कर दिया है। वे अब यहोवा की वेदी के सामने हैं।"

[20]राजा हिजकिय्याह ने नगर अधिकारियों को इकट्ठा किया और अगली सुबह वह यहोवा के मन्दिर गया। [21]वे सात बैल, सात मेढ़े, सात मेमने और सात छोटे बकरे लाए। वे जानवर यहूदा के राज्य की पापबलि, पवित्र स्थान को शुद्ध करने और यहूदा के लोगों के लिये थे। राजा हिजकिय्याह ने उन याजकों को जो हारून के वंशज थे, आदेश दिया कि वे उन जानवरों को यहोवा की वेदी पर चढ़ाऐं। [22]इसलिये याजकों ने बैलों को मार डाला और उनका खून रख लिया। तब उन्होंने बैलों का खून वेदी पर छिड़का। तब याजकों ने मेढ़ों को मारा और वेदी पर मेढ़ों का खून छिड़का। तब याजकों ने मेमनों को मारा और उनका खून वेदी पर छिड़का। [23-24]तब याजक बकरों को राजा और एक साथ इकट्ठे लोगों के सामने लाए। बकरे पापबलि थे। याजकों ने अपने हाथ बकरों पर रखे और उन्हें मारा। याजकों ने बकरों के खून से वेदी पर पापबलि चढ़ाई। उन्होंने यह इसलिये किया कि यहोवा इस्राएल के लोगों को क्षमा कर देगा। राजा ने कहा कि होमबलि और पापबलि इस्राएल के सभी लोगों के लिये होंगी।

[25]राजा हिजकिय्याह ने लेवीवंशियों को यहोवा के मन्दिर में मंजीरों, तम्बूरों और वीणा के साथ रखा जैसा दाऊद, राजा का दृष्टा गाद और नातान नबी ने आदेश दिया था। यह आदेश नबियों द्वारा यहोवा के यहाँ से आया था। [26]इस प्रकार लेवीवंशी, दाऊद के गीत के वाद्यों के साथ और याजक अपनी तुरहियों के साथ खड़े हुए। [27]तब हिजकिय्याह ने होमबलि की बलि वेदी पर चढ़ाने

के लिये आदेश दिया। जब होमबलि देना आरम्भ हुआ, यहोवा के लिये गायन भी आरम्भ हुआ। तुरहियाँ बजाई गई और इस्राएल के राजा दाऊद के वाद्ययन्त्र बजे। [28]सारी सभा ने दण्डवत किया, गायकों ने गाया और तुरही वादकों ने अपनी तुरहियाँ तब तक बजाई जब तक होमबलि का चढ़ाया जाना पूरा नहीं हुआ।

[29]बलिदानों के पूरे होने के बाद राजा हिजकिय्याह और उसके साथ के सभी लोग झुके और उन्होनें उपासना की। [30]राजा हिजकिय्याह और उसके अधिकारियों ने लेवीवंशियों को यहोवा की स्तुति का आदेश दिया। उन्होंने उन गीतों को गाया जिन्हें दाऊद और दृष्टा आसाप ने लिखा था। उन्होंने यहोवा की स्तुति की और प्रसन्न हुए। वे सभी झुके और उन्होंने यहोवा की उपासना की। [31]हिजकिय्याह ने कहा, "यहूदा के लोगों, अब तुम लोग स्वयं को यहोवा को अर्पित कर चुके हो। निकट आओ, बलि और धन्यवाद की भेंट यहोवा के मन्दिर में लाओ।" तब लोग बलि और धन्यवाद की भेंट लाये। कोई व्यक्ति, जो चाहता था, वह होमबलि भी लाया। [32]सभा द्वारा मन्दिर में लाई गई होमबलि ये हैं: सत्तर बैल, सौ मेढ़े और दो सौ मेमने। ये सभी जानवर यहोवा को होमबलि के रुप में बलि किये गये। [33]यहोवा के लिये पवित्र भेटें छ: सौ बैल और तीन हजार भेंड़–बकरे थे। [34]किन्तु वहाँ पर्याप्त याजक नहीं थे जो होमबलि के लिये जानवरों की खाल उतार सकें और सभी जानवरों को काट सकें। इसलिये उनके सम्बन्धी लेवीवंशियों ने उनकी सहायता तब तक की जब तक काम पूरा न हुआ और जब तक दूसरे याजक अपने को पवित्र सेवा के लिये तैयार न कर सके। लेवीवंशी यहोवा की सेवा के लिये अपने को तैयार करने में अधिक दृढ़ थे। वे याजकों की अपेक्षा अधिक दृढ़ थे। [35]वहाँ अनेक होमबिल, मेलबलि की चर्बी और पेय भेंट चढ़ीं। इस प्रकार यहोवा के मन्दिर में सेवा फिर आरम्भ हुई। [36]हिजकिय्याह और सभी लोग उन चीजों के लिये प्रसन्न थे जिन्हें यहोवा ने अपने लोगों के लिये बनाई और वे प्रसन्न थे कि उन्होंने उन्हें इतनी शीघ्रता से किया!

हिजकिय्याह फसहपर्व मनाता है

30 हिजकिय्याह ने इस्राएल और यहूदा के सभी लोगों को सन्देश भेजा। उसने एप्रैम और मनश्शे के लोगों को भी पत्र लिखा। हिजकिय्याह ने उन सभी लोगों को यरुशलेम में यहोवा के मन्दिर में आने के लिये निमन्त्रित किया जिससे वे सभी फसहपर्व यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर के लिये मना सकें। [2]हिजकिय्याह ने सभी अधिकारियों और यरूशलेम की सभा से यह सलाह की कि फसह पर्व दूसरे महीने में मनाया जाय। [3]वे फसह पर्व को नियमित समय से न मना सके। क्यों? क्योंकि याजक पर्याप्त संख्या में पवित्र सेवा के लिये अपने को तैयार न कर सके और दूसरा कारण यह था कि लोग यरूशलेम में इकट्ठे नहीं हो सके थे। [4]इस सुझाव ने राजा हिजकिय्याह और पूरी सभा को सन्तुष्ट किया। [5]इसलिये उन्होंने इस्राएल में बेर्शेबा नगर से लेकर लगातार दान नगर तक हर एक स्थान पर घोषणा की। उन्होंने लोगों से कहा कि वे यरूशलेम में यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर के लिये फसह पर्व मनाने आऐं। इस्राएल के बहुत बड़े समूह ने बहुत समय से फसह पर्व उस प्रकार नहीं मनाया था, जिस प्रकार मूसा के नियमों ने इसे मनाने को कहा था। [6]इसलिये दूत राजा का पत्र पूरे इस्राएल और यहूदा में ले गए। उन पत्रों में यह लिखा था:

इस्राएल की सन्तानों, इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल (याकूब), जिस यहोवा, परमेश्वर की आज्ञा मानते थे उसके पास लौटो। तब यहोवा तुम लोगों के पास वापस आयेगा जो अश्शूर के राजा से बच गए हैं और अभी तक जीवित हैं। [7]अपने पिता और भाइयों की तरह न बनो। यहोवा उनका परमेश्वर था, किन्तु वे उसके विरुद्ध हो गए। इसलिये यहोवा ने उनके प्रति लोगों के हृदय में घृणा पैदा की और उनके बारे में बुरा कहलवाया। तुम स्वयं अपनी आँखों से देख सकते हो कि यह सत्य है। [8]अपने पूर्वजों की तरह हठी न बनो। अपितु सच्चे हृदय से यहोवा की आज्ञा मानो। सर्वाधिक पवित्र स्थान पर आओ। यहोवा ने सर्वाधिक पवित्र स्थान को सदैव के लिये पवित्र बनाया है। अपने यहोवा, परमेश्वर की सेवा करो। तब यहोवा का डरावना क्रोध तुम पर से हट जाएगा। [9]यदि तुम लौटोगे और यहोवा की आज्ञा मानोगे तब तुम्हारे सम्बन्धी और बच्चे उन लोगों की कृपा पाएंगे जिन्होंने उन्हें बन्दी बनाया है और तुम्हारे सम्बन्धी और बच्चे इस देश में लौटेंगे। यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर कृपालु है। यदि तुम उसके पास लौटोगे तो वह तुमसे दूर नहीं जायेगा।

[10]दूत एप्रैम और मनश्शे के क्षेत्रों के सभी नगरों में गए। वे लगातार पूरे जबूलून देश में गए। किन्तु लोगों ने दूतों की हँसी उड़ाई और उनका मजाक उड़ाया। [11]किन्तु आशेर, मनश्शे और जबूलून देश के कुछ लोग विनम्र हुए और यरूशलेम गए। [12] यहूदा में परमेश्वर की शक्ति ने लोगों को संगठित किया ताकि वे राजा हिजकिय्याह और उसके अधिकारियों की आज्ञा का पालन करें। इस तरह उन्होंने यहोवा के आज्ञा का पालन किया।

[13]बहुत से लोग एक साथ यरूशलेम, दूसरे महीने में अखमीरी रोटी का उत्सव मनाने आए। यह बहुत बड़ी भीड़ थी। [14]उन लोगों ने यरूशलेम में असत्य देवताओं की वेदियों को हटा दिया। उन्होंने असत्य देवताओं के लिये सुगन्धि भेंट की वेदियों को भी हटा दिया। उन्होंने उन वेदियों को किद्रोन की घाटी में फेंक दिया। [15]तब उन्होंने फसह पर्व के मेमने को दूसरे महीने के चौदहवें दिन मारा। याजक और लेवीवंशी लज्जित हुए। उन्होंने अपने को पवित्र सेवा के लिये तैयार किया। याजक और लेवीवंशी होमबलि यहोवा के मन्दिर में ले आए। [16]मन्दिर में अपने लिए निर्धारित स्थान पर वे वैसे ही बैठे जैसा परमेश्वर के व्यक्ति मूसा के नियम में कहा गया था। लेवीवंशियों ने याजकों को खून दिया। तब याजकों ने खून को वेदी पर छिड़का। [17]उस समूह में बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने अपने को पवित्र सेवा के लिये तैयार नहीं किया था अत: वे फसह पर्व के मेमने को मारने की स्वीकृति नहीं पा सके। यही कारण था कि लेवीवंशी उन सभी लोगों के लिए फसह पर्व के मेमने को मारने के उत्तरदायी थे जो शुद्ध नहीं थे। लेवीवंशी ने हर एक मेमने को यहोवा के लिये पवित्र बनाया।

[18-19]एप्रैम, मनश्शे, इस्साकार और जबूलून के बहुत से लोग फसह पर्व उत्सव के लिये अपने को ठीक प्रकार से तैयार नहीं किया था। उन्होंने फसह पर्व मूसा के नियम के अनुसार ठीक ढंग से नहीं मनाया। किन्तु हिजकिय्याह ने उन लोगों के लिए प्रार्थना की। इसलिये हिजकिय्याह ने यह प्रार्थना की, "यहोवा, परमेश्वर तू अच्छा है। ये लोग तेरी उपासना ठीक ढंग से करना चाहते थे, किन्तु वे अपने को नियम के अनुसार शुद्ध न कर सके, कृपया उन लोगों को क्षमा कर। तू परमेश्वर है जिसकी आज्ञा का पालन हमारे पूर्वजों ने किया। यदि किसी ने सर्वाधिक पवित्र स्थान के नियम के अनुसार अपने को शुद्ध न किया तो भी क्षमा कर।" [20]यहोवा ने राजा हिजकिय्याह की प्रार्थना सुनी। यहोवा ने लोगों को क्षमा कर दिया। [21]इस्राएल की सन्तानों ने यरूशलेम में अखमीरी रोटी का उत्सव सात दिन तक मनाया। वे बहुत प्रसन्न थे। लेवीवंशी और याजकों ने अपनी पूरी शक्ति से हर एक दिन यहोवा की स्तुति की। [22]राजा हिजकिय्याह ने उन सभी लेवीवंशियों को उत्साहित किया जो अच्छी तरह समझ गये थे कि यहोवा की सेवा कैसे की जाती है। लोगों ने सात दिन तक पर्व मनाया और मेलबलि चढ़ाई। उन्होंने अपने पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर को धन्यवाद दिया और उसकी स्तुति की।

[23]सभी लोग सात दिन और ठहरने को सहमत हो गए। वे फसहपर्व मनाते समय सात दिन तक बड़े प्रसन्न रहे। [24]यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने उस सभा को एक हजार बैल तथा सात हजार भेड़ें मारने और खाने के लिये दिये। प्रमुखों ने सभा को एक हजार बैल और दस हजार भेड़ें दीं। बहुत से याजकों ने पवित्र सेवा के लिये अपने को तैयार किया। [25]यहूदा की पूरी सभा, याजक, लेवीवंशी, इस्राएल से आने वाली पूरी सभा और वे यात्री जो इस्राएल से आए थे तथा यहूदा पहुँच गए थे, सभी लोग अत्यन्त प्रसन्न थे। [26]इस प्रकार यरूशलेम में बहुत आनन्द था। इस पर्व के समान कोई भी पर्व इस्राएल के राजा, दाऊद के पुत्र सुलैमान के समय के बाद से नहीं हुआ था। [27]याजक और लेवीवंशी खड़े हुए और यहोवा से लोगों को आशीर्वाद देने को कहा। परमेश्वर ने उनकी सुनी। उनकी प्रार्थना स्वर्ग में यहोवा के पवित्र निवास तक पहुँची।

राजा हिजकिय्याह सुधार करता है

31 फसह पर्व का उत्सव पूरा हुआ। इस्राएल के जो लोग फसह पर्व के लिये यरूशलेम में थे, वे यहूदा के नगरों को चले गए। तब उन्होंने पत्थर की उन मूर्तियों को ध्वस्त किया जो उन नगरों में थी। उन पत्थर की मूर्तियों का पूजन असत्य देवताओं के रूप में होता था। उन लोगों ने अशेरा के स्तम्भो को भी काट डाला और उन्होंने उन उच्चस्थानों और वेदियों को भी तोड़ डाला जो बिन्यामीन और यहूदा के पूरे देशों में थे। लोगों ने एप्रैम और मनश्शे के क्षेत्र में भी वही किया। लोगों ने यह तब तक किया जब तक उन्होंने असत्य देवताओं

की पूजा की सभी चीज़ों को नष्ट नहीं कर दिया। तब सभी इस्राएली अपने नगरों को घर लौट गए।

[2]राजा हिजकिय्याह ने फिर याजकों और लेवीवंशियों को समूहों में बाँटा और प्रत्येक समूह को अपना विशेष कार्य करना होता था। अत: राजा हिजकिय्याह ने उन समूहों को अपना कार्य फिर से आरम्भ करने को कहा। अत: याजकों और लेवीवंशियों का फिर से होमबलि और मेलबलि चढ़ाने का काम था। उन का काम मन्दिर में सेवा करना, गाना और यहोवा के भवन के द्वार पर परमेश्वर की स्तुति करना था। [3]हिजकिय्याह ने अपने पशुओं में से कुछ को होमबलि के लिये दिया। ये पशु प्रतिदिन प्रात: और सन्ध्या को होमबलि के लिये प्रयोग में आते थे। ये पशु सब्त के दिनों में और नवचन्द्र के समय और अन्य विशेष उत्सवों पर दी जाती थीं। यह वैसे ही किया जाता था जैसा यहोवा के व्यवस्था में लिखा है। [4]हिजकिय्याह ने यरूशलेम में रहने वाले लोगों को आदेश दिया कि जो हिस्सा याजकों और लेवीवंशियों का है वह उन्हें दें। तभी याजक और लेवीवंशी पूरे समय अपने को यहोवा के नियम के अनुसार दे सकते हैं। [5]देश के चारों ओर के लोगों ने इस आदेश के बारे में सुना। अत: इस्राएल के लोगों ने अपने अन्न, अंगूर, तेल, शहद और जो कुछ भी वे अपने खेतों में उगाते थे उन सभी फसलों का पहला भाग दिया। वे स्वेच्छा से इन सभी चीजों का दसवाँ भाग लाए। [6]इस्राएल और यहूदा के लोग जो यहूदा के नगरों में रहते थे, अपने पशुओं और भेड़ों का दसवाँ भाग भी लाए। वे उन चीज़ों का दसवाँ भाग भी लाए जो उस विशेष स्थान में रखी जाती थी जो केवल यहोवा के लिये था। वे उन सभी चीज़ों को अपने यहोवा, परमेश्वर के लिये ले कर आए। उन्होंने उन सभी चीज़ों को ढेरों में रखा।

[7]लोगों ने तीसरे महीने (मई/जून) में अपनी चीज़ों के संग्रह को लाना आरम्भ किया और उन्होंने संग्रह का लाना सातवें महीने (सित्मबर/अक्टूबर) में पूरा किया। [8]जब हिजकिय्याह और प्रमुख आए तो उन्होंने संग्रह की गई चीजों के ढेरों को देखा। उन्होंने यहोवा की स्तुति की और इस्राएल के लोगों अर्थात् यहोवा के लोगों की प्रशंसा की।

[9]तब हिजकिय्याह ने याजकों और लेवीवंशियों से ढेरों के सम्बन्ध में पूछा। [10]सादोक परिवार के मुख्य याजक अजर्याह ने हिजकिय्याह से कहा, "क्योंकि लोगों ने भेंटों को यहोवा के मन्दिर में लाना आरम्भ कर दिया है अत: हम लोगों के पास खाने के लिये बहुत अधिक है। हम लोगों ने पेट भर खाया और अभी तक हम लोगों के पास बहुत बचा है! यहोवा ने अपने लोगों को सच में आशीष दी है। इसलिये हम लोगों के पास यह सब बचा है।"

[11]तब हिजकिय्याह ने याजकों को आदेश दिया कि वे यहोवा के मन्दिर में भण्डार गृह तैयार रखें। अत: यह किया गया। [12]तब याजक भेंटे दशमांश और अन्य वस्तुएं लाए जो केवल यहोवा को दी जानी थीं। वे सभी संग्रह की गई चीजें मन्दिर के भण्डारगृहों में रख दी गई। लेवीवंशी कोनन्याह सभी संग्रह की गई चीजों का अधीक्षक था। शिमी उन चीज़ों का उपाधीक्षक था। शिमी कोनन्याह का भाई था। [13]कोनन्याह और उसका भाई इन व्यक्तियों के निरीक्षक थे: अहीएल, अजज्याह, नहत, असाहेल, यरीमेत, योजाबाद, एलीएल, यिस्मक्याह, महत और बनायाह। राजा हिजकिय्याह और यहोवा के मन्दिर का अधीक्षक अधिकारी अजर्याह ने उन व्यक्तियों को चुना। [14]कोरे उन भेंटों का अधीक्षक था जिन्हें लोग स्वेच्छा से यहोवा को चढ़ाते थे। वह उन संग्रहों को देने का उत्तरदायी था जो यहोवा को चढ़ाये जाते थे और वह उन उपहारों को वितरित करने का उत्तरदायी था जो यहोवा के लिये पवित्र बनाई जाती थीं। कोरे पूर्वी द्वार का द्वारपाल था। उसके पिता का नाम यिम्ना था जो लेवीवंशी था। [15]एदेन, मिन्यामीन, येशू, शमायाह, अमर्याह और शकन्याह कोरे की सहायता करते थे। वे लोग ईमानदारी से उन नगरों में सेवा करते थे जहाँ याजक रहते थे। वे संग्रह की गई चीजों को हर एक याजकों के समूह में उनके सम्बन्धियों को देते थे। वे वही चीजें, अधिक या कम महत्व के हर व्यक्ति को देते थे। [16]ये लोग संग्रह की हुई चीज़ों को तीन वर्ष के लड़के और उससे अधिक उम्र के उन लड़कों को भी देते थे जिनका नाम लेवीवंश के इतिहास में होता था। इन सभी पुरुषों को यहोवा के मन्दिर में अपनी नित्य सेवाओं को करने के लिये जाना होता था जिनको करना उनका उत्तरदायित्व था। लेवीवंशियों के हर एक समूह का अपना उत्तरदायित्व था। [17]याजकों को संग्रह का उनका हिस्सा दिया जाता था। यह परिवार के क्रम से वैसे ही किया जाता था जैसे वे अपने परिवार इतिहास में लिखे रहते थे। बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के लेवीवंशियों

को संग्रह का उनका हिस्सा दिया जाता था। यह उनके उत्तरदायित्व और वर्ग के अनुसार किया जाता था। [18]लेवीवंशियों के बच्चे, पत्नियाँ, पुत्र तथा पुत्रियाँ भी संग्रह का अपना हिस्सा पाते थे। यह उन सभी लेवीवंशियों के लिये किया जाता था जो परिवार के इतिहास में अंकित थे। यह इसलिये हुआ कि लेवीवंशी अपने को पवित्र और सेवा के लिये तैयार रखने में दृढ़ विश्वास रखते थे। [19]याजक हारून के कुछ वंशजों के पास कुछ कृषि योग्य खेत नगर के समीप वहाँ थे जहाँ लेवीवंशी रहते थे और हारून के वंशजों में से कुछ नगरों में भी रहते थे। उन नगरों में से हर एक में हारून के इन वंशजों को संग्रह का हिस्सा देने के लिये व्यक्ति नामांकन द्वारा चुने जाते थे। पुरुष तथा वे सभी जिनका नाम लेवीवंश के इतिहास में था सभी संग्रह का हिस्सा पाते थे।

[20]इस प्रकार राजा हिजकिय्याह ने पूरे यहूदा में वे सब अच्छे कार्य किये। उसने वही किया जो यहोवा, उसके परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा, ठीक और विश्वास योग्य था। [21]उसने जो भी कार्य परमेश्वर के मन्दिर की सेवा में, नियमों व आज्ञाओं का पालन करने में और अपने परमेश्वर का अनुसरण करने में किये उसमें उसे सफलता मिली। हिजकिय्याह ने ये सभी कार्य अपने पूरे हृदय से किया।

अराम का राजा हिजकिय्याह को परेशान करने का प्रयत्न करता है

32 हिजकिय्याह ने ये सब कार्य जो विश्वासपूर्वक पूरे किये। अश्शूर का राजा सन्हेरीब यहूदा देश पर आक्रमण करने आया। सन्हेरीब और उसकी सेना ने किले के बाहर डेरा डाला। उसने यह इसलिये किया कि वह नगरों को जीतने की योजना बना सके। सन्हेरीब इन नगरों को अपने लिये जीतना चाहता था। [2]हिजकिय्याह जानता था कि वह यरूशलेम, इस पर आक्रमण करने आया है। [3]तब हिजकिय्याह ने अपने अधिकारियों और सेना के अधिकारियों से सलाह ली। वे एकमत हो गए कि नगर के बाहर के सोतों का पानी रोक दिया जाये। उन अधिकारियों और सेना के अधिकारियों ने हिजकिय्याह की सहायता की। [4]बहुत से लोग एक साथ आए और उन्होंने सभी सोतों और नालों को जो देश के बीच से होकर बहते थे, रोक दिया। उन्होंने कहा, "अश्शूर के राजा को यहाँ आने पर पर्याप्त पानी नहीं मिलेगा!" [5]हिजकिय्याह ने यरूशलेम को पहले से अधिक मजबूत बनाया। यह उसने इस प्रकार किया: उसने दीवार के टूटे भागों को फिर बनवाया। उसने दीवारों पर मीनारें बनाई। उसने पहली दीवार के बाहर दूसरी दीवार बनाई। उसने फिर पुराने यरूशलेम के पूर्व की ओर के स्थानों को मजबूत किया। उसने अनेकों हथियार और ढालें बनवाई। [6-7]हिजकिय्याह ने युद्ध के अधिकारियों को लोगों का अधीक्षक होने के लिये चुना। वह इन अधिकारियों से नगर द्वार के बाहर खुले स्थान में मिला। हिजकिय्याह ने उन अधिकारियों से सलाह की और उन्हें उत्साहित किया। उसने कहा, "दृढ़ और साहसी बनो। अश्शूर के राजा या उसके साथ की विशाल सेना से मत डरना, न ही उससे परेशान होना। अश्शूर के राजा के पास जो शक्ति है उससे भी बड़ी शक्ति हम लोगों के साथ है! [8]अश्शूर के राजा के पास केवल व्यक्ति हैं। किन्तु हम लोगों के साथ यहोवा, अपना परमेश्वर है। हमारा परमेश्वर हमारी सहायता करेगा। वह हमारा युद्ध स्वयं लड़ेगा।" इस प्रकार यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने लोगों को उत्साहित किया और उन्हें पहले से अधिक शक्तिशाली होने का अनुभव कराया।

[9]अश्शूर के राजा सन्हेरीब और उसकी सारी सेना लाकीश नगर के पास डेरा डाले पड़ी थी। ताकि वे इसे हरा सकें तब अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यरूशलेम में यहूदा के राजा हिजकिय्याह के पास और यहूदा के सभी लोगों के पास अपने सेवक भेजे। सन्हेरीब के सेवक हिजकिय्याह और यरूशलेम के सभी लोगों के लिये एक सन्देश ले गए। [10]उन्होंने कहा, "अश्शूर का राजा सन्हेरीब यह कहता है: 'तुम किसमें विश्वास करते हो जो तुम्हें यरूशलेम में युद्ध की स्थिति में ठहरना सिखाता है?[11]हिजकिय्याह तुम्हें मूर्ख बना रहा है। तुम्हें यरूशलेम में ठहरे रखने के लिये धोखा दिया जा रहा है। इस प्रकार तुम भूख-प्यास से मर जाओगे। हिजकिय्याह तुमसे कहता है, "यहोवा, हमारा परमेश्वर हमें अश्शूर के राजा से बचायेगा।" [12]हिजकिय्याह ने स्वयं यहोवा के उच्चस्थानों और वेदियों को हटाया है। उसने यहूदा और इस्राएल के तुम लोगों से कहा कि तुम लोगों को केवल एक वेदी पर उपासना करनी और सुगन्धि चढ़ानी चाहिए। [13]निश्चय ही, तुम जानते हो कि मेरे पूर्वजों और मैंने अन्य देशों के लोगों के साथ क्या किया है? अन्य देशों के देवता अपने

लोगों को नहीं बचा सके। वे देवता मुझे उनके लोगों को नष्ट करने से न रोक सके। [14]मेरे पूर्वजों ने उन देशों को नष्ट किया। कोई भी ऐसा देवता नहीं जो मुझसे अपने लोगों को नष्ट होने से बचा ले। फिर भी तुम सोचते हो कि तुम्हारा देवता तुम्हें मुझसे बचा लेगा? [15]हिजकिय्याह को तुम्हें मूर्ख बनाने और धोखा देने मत दो। उस पर विश्वास न करो क्योंकि किसी राष्ट्र या राज्य का कोई देवता कभी हमसे या हमारे पूर्वजों से अपने लोगों को बचाने में समर्थ नहीं हुआ है। इसलिये यह मत सोचो कि तुम्हारा देवता मुझे तुमको नष्ट करने से रोक लेगा।'"

[16]अश्शूर के राजा के सेवकों ने इससे भी बुरी बातें यहोवा परमेश्वर तथा परमेश्वर के सेवक हिजकिय्याह के विरुद्ध कहीं। [17]अश्शूर के राजा ने ऐसे पत्र भी लिखे जो इस्राएल के यहोवा परमेश्वर का अपमान करते थे। अश्शूर के राजा ने उन पत्रों में जो कुछ लिखा था वह यह है: "अन्य राज्यों के देवता मुझसे नष्ट होने से अपने लोगों को न बचा सके। उसी प्रकार हिजकिय्याह का परमेश्वर अपने लोगों को मेरे द्वारा नष्ट किये जाने से नहीं रोक सकता।" [18]तब अश्शूर के राजा के सेवक यरूशलेम के उन लोगों पर जोर से चिल्लाये जो नगर की दीवार पर थे। उन सेवकों ने उस समय हिब्रू भाषा का प्रयोग किया जब वे दीवार पर के लोगों के प्रति चिल्लाये। अश्शूर के राजा के उन सेवकों ने यह सब इसलिये किया कि यरूशलेम के लोग डर जायें। उन्होंने वे बातें इसलिये कहीं कि यरूशलेम नगर पर अधिकार कर सकें। [19]उन सेवकों ने उन देवताओं के विरुद्ध बुरी बातें कहीं जिनकी पूजा संसार के लोग करते थे। वे देवता सिर्फ ऐसी चीजें हैं जिन्हें मनुष्यों ने अपने हाथ से बनाया है। इस प्रकार उन सेवकों ने वे ही बुरी बातें यरूशलेम के परमेश्वर के विरुद्ध कहीं।

[20]राजा हिजकिय्याह और आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने इस समस्या के बारे में प्रार्थना की। उन्होंने जोर से स्वर्ग को पुकारा। [21]तब यहोवा ने अश्शूर के राजा के खेमे में एक स्वर्गदूत को भेजा। उस स्वर्गदूत ने अश्शूर की सेना के सब अधिकारियों, प्रमुखों और सैनिकों को मार डाला। इसलिये अश्शूर का राजा अपने देश में अपने घर लौट गया और उसके लोग उसकी वजह से बहुत लज्जित हुए। वह अपने देवता के मन्दिर में गया और उसी के पुत्रों में से किसी ने उसे वहीं तलवार से मार डाला। [22]इस प्रकार यहोवा ने हिजकिय्याह और यरूशलेम के लोगों को अश्शूर के राजा सन्हेरीब और सभी अन्य लोगों से बचाया। यहोवा ने हिजकिय्याह और यरूशलेम के लोगों की देखभाल की। [23]बहुत से लोग यरूशलेम में यहोवा के लिये भेंट लाए। वे यहूदा के राजा हिजकिय्याह के पास बहुमूल्य चीजें ले आए। उस समय के बाद सभी राष्ट्रों ने हिजकिय्याह को सम्मान दिया।

[24]उन दिनों हिजकिय्याह बहुत बीमार पड़ा और मृत्यु के निकट था। उसने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा हिजकिय्याह से बोला और उसे एक चिन्ह दिया।* [25]किन्तु हिजकिय्याह का हृदय घमण्ड से भर गया इसलिये उसने परमेश्वर की कृपा के लिये परमेश्वर को धन्यवाद नहीं किया। यही कारण था कि परमेश्वर हिजकिय्याह और यरूशलेम तथा यहूदा के लोगों पर क्रोधित हुआ। [26]किन्तु हिजकिय्याह और यरूशलेम में रहने वाले लोगों ने अपने हृदय तथा जीवन को बदल दिया। वे विनम्र हो गये और घमण्ड करना छोड़ दिया। इसलिये जब तक हिजकिय्याह जीवित रहा यहोवा का क्रोध उस पर नहीं उतरा।

[27]हिजकिय्याह को बहुत धन और सम्मान प्राप्त था। उसने चाँदी, सोने, कीमती रत्न, मसालें, ढालें और सभी प्रकार की चीज़ों के रखने के लिये स्थान बनाए। [28]हिजकिय्याह के पास लोगों द्वारा भेजे गये अन्न, नया दाखमधु और तेल के लिये भंडारण भवन थे। उसके पास पशुओं के लिये पशुशालायें और भेंड़ों के लिये भेड़शालायें थीं। [29]हिजकिय्याह ने बहुत से नगर भी बनाये और उसे अनेक पशुओं के झुंड और भेड़ों के रेवड़ें मिलीं। परमेश्वर ने हिजकिय्याह को बहुत अधिक धन दिया। [30]यह हिजकिय्याह ही था जिसने यरूशलेम में गिहोन सोते की ऊपरी जल धाराओं के उदगमों को रोका और उन जल धाराओं को दाऊद नगर के ठीक पश्चिम को बहाया और हिजकिय्याह उन सबमें सफल रहा जो कुछ उसने किया।

[31]किसी समय बाबुल के प्रमुखों ने हिजकिय्याह के पास दूत भेजे। उन दूतों ने एक विचित्र दृश्य के विषय में पूछा जो राष्ट्रों में प्रकट हुआ था। जब वे आए तो परमेश्वर ने हिजकिय्याह को अकेले छोड़

यहोवा ... चिन्ह दिया देखें यशा. 38:1–8 हिजकिय्याह के विषय की कहानी और कैसे यहोवा ने हिजकिय्याह को पन्द्रह वर्ष और जीवित रहने दिया।

दिया जिससे कि वह अपनी जाँच कर सके और वह सब कुछ जान सके जो हिजकिय्याह के हृदय में था।*

[32]हिजकिय्याह का शेष इतिहास और कैसे उसने यहोवा को प्रेम किया, का विवरण आमोस के पुत्र यशायाह नबी के दर्शन ग्रन्थ और "यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में मिलता है। [33]हिजकिय्याह मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों ने हिजकिय्याह को उस पहाड़ी पर दफनाया जहाँ दाऊद के पुत्रों की कब्रें हैं। जब वह मरा तो यहूदा के सभी लोगों ने तथा यरूशलेम के रहने वालों ने हिजकिय्याह को सम्मान दिया। हिजकिय्याह के स्थान पर मनश्शे नया राजा हुआ। मनश्शे हिजकिय्याह का पुत्र था।

यहूदा का राजा मनश्शे

33 मनश्शे जब यहूदा का राजा हुआ वह बारह वर्ष का था। वह यरूशलेम में पचपन वर्ष तक राजा रहा। [2]मनश्शे ने वे सब कार्य किये जिन्हें यहोवा ने गलत कहा था। उसने अन्य राष्ट्रों के भयंकर और पापपूर्ण तरीकों का अनुसरण किया। यहोवा ने उन राष्ट्रों को इस्राएल के लोगों के सामने बाहर निकल जाने के लिये विवश किया था। [3]मनश्शे ने फिर उन उच्च स्थानों को बनाया जिन्हें उसके पिता हिजकिय्याह ने तोड़ गिराया था। मनश्शे ने बाल देवताओं की वेदियाँ बनाई और अशेरा–स्तम्भ खड़े किये। वह नक्षत्र–समूह को प्रणाम करता था तथा उन्हें पूजता था। [4]मनश्शे ने यहोवा के मन्दिर में असत्य देवताओं के लिये वेदियाँ बनाई। यहोवा ने मन्दिर के बारे में कहा था, "मेरा नाम यरूशलेम में सदैव रहेगा।" [5]मनश्शे ने सभी नक्षत्र–समूहों के लिये यहोवा के मन्दिर के दोनों आँगनों में वेदियाँ बनाई। [6]मनश्शे ने अपने बच्चों को भी बलि के लिये हिन्नोम की घाटी* में जलाया। मनश्शे ने शान्तिपाठ, दैवीकरण और भविष्य कथन के रूप में जादू का उपयोग किया। उसने ओझाओं और भूत सिद्धि करने वालों के साथ बातें कीं। मनश्शे ने यहोवा की दृष्टि में बहुत पाप किया। मनश्शे के पापों ने यहोवा को क्रोधित किया। [7]उसने एक देवता की मूर्ति बनाई और उसे परमेश्वर के मन्दिर में रखा। परमेश्वर ने दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान से मन्दिर के बारे में कहा था, "मैं इस भवन तथा यरूशलेम में अपना नाम सदा के लिये अंकित करता हूँ। मैंने यरूशलेम को इस्राएल के सभी परिवार समूहों में से चुना। [8]मैं फिर इस्राएलियों को उस भूमि से बाहर नहीं करुँगा जिसे मैंने उनके पूर्वजों को देने के लिये चुना। किन्तु उन्हें उन नियमों का पालन करना चाहिए जिनका आदेश मैंने दिया है। इस्राएल के लोगों को उन सभी विधियों, नियमों और आदेशों का पालन करना चाहिए जिन्हें मैंने मूसा को उन्हें देने के लिये दिया।"

[9]मनश्शे ने यहूदा के लोगों और यरूशलेम में रहने वाले लोगों को पाप करने के लिये उत्साहित किया। उसने उन राष्ट्रों से भी बड़ा पाप किया जिन्हें यहोवा ने नष्ट किया था और जो इस्राएलियों से पहले उस प्रदेश में थे!

[10]यहोवा ने मनश्शे और उसके लोगों से बातचीत की। किन्तु उन्होंने सुनने से इन्कार कर दिया। [11]इसलिये यहोवा ने यहूदा पर आक्रमण करने के लिये अश्शूर के राजा के सेनापतियों को वहाँ पहुँचाया। इन सेनापतियों ने मनश्शे को पकड़ लिया और उसे बन्दी बना लिया। उन्होंने उसको बेड़ियाँ पहना दीं और उसके हाथों में पीतल की जंजीरे डालीं। उन्होंने मनश्शे को बन्दी बनाया और उसे बाबुल देश ले गए।

[12]मनश्शे को कष्ट हुआ। उस समय उसने यहोवा अपने परमेश्वर से याचना की। मनश्शे ने स्वयं को अपने पूर्वजों के परमेश्वर के सामने विनम्र बनाया। [13]मनश्शे ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर से सहायता की याचना की। यहोवा ने मनश्शे की याचना सुनी और उसे उस पर दया आई। यहोवा ने उसे यरूशलेम अपने सिंहासन पर लौटने दिया। तब मनश्शे ने समझा कि यहोवा सच्चा परमेश्वर है।

[14]जब यह सब हुआ तो मनश्शे ने दाऊद नगर के लिये बाहरी दीवार बनाई। बाहरी दीवार गिहोन सोते के पश्चिम की ओर घाटी (किद्रोन) में मछली द्वार के साथ थी। मनश्शे ने इस दीवार को ओपेल पहाड़ी के चारों ओर बना दिया। उसने दीवार को बहुत ऊँचा बनाया। तब उसने अधिकारियों को यहूदा के सभी किलों में रखा। [15]मनश्शे ने विचित्र देवमूर्तियों को हटाया। उसने यहोवा

हिजकिय्याह के हृदय में देखें 2राजा 20:12–19

हिन्नोम की घाटी बेन हिन्नोम की घाटी बाद में "गहन्ना" कहलाती थी। यह घाटी यरूशलेम के पश्चिम व दक्षिण में थी। इस घाटी में बहुत से शिशु और लड़के असत्य देवताओं को बलि चढ़ाये जाते थे।

के मन्दिर से देवमूर्ति को बाहर किया। उसने उन सभी वेदियों को हटाया जिन्हें उसने मन्दिर की पहाड़ी पर और यरूशलेम में बनाया था। मनश्शे ने उन सभी वेदियों को यरूशलेम नगर से बाहर फेंका। [16]तब उसने यहोवा की वेदी स्थापित की और मेलबलि तथा धन्यवाद भेंट इस पर चढ़ाई। मनश्शे ने यहूदा के सभी लोगों को इस्राएल के यहोवा परमेश्वर की सेवा करने का आदेश दिया। [17]लोगों ने उच्च स्थानों पर बलि देना जारी रखा, किन्तु उनकी भेंटे केवल यहोवा उनके परमेश्वर के लिये थीं।

[18]मनश्शे ने जो कुछ अन्य किया और उसकी परमेश्वर से प्रार्थनाऐं और उन दृष्टाओं के कथन जिन्होंने इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के नाम पर उससे बातें की थी, वे सभी इस्राएल के राजा नामक पुस्तक में लिखी हैं। [19]मनश्शे ने कैसे प्रार्थना की और परमेश्वर ने वह कैसे सुनी और उस पर दया की, यह "दृष्टाओं की पुस्तक" में लिखा है। मनश्शे के सभी पाप और बुराईयाँ जो उसने स्वयं को विनम्र करने से पूर्व कीं और वे स्थान जहाँ उसने उच्च स्थान बनाए और अशेरा–स्तम्भ खड़े किये, "दृष्टाओं की पुस्तक" में लिखे हैं। [20]अन्त में मनश्शे मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफना दिया गया। लोगों ने मनश्शे को उसके अपने राजभवन में दफनाया। मनश्शे के स्थान पर आमोन नया राजा हुआ। आमोन मनश्शे का पुत्र था।

यहूदा का राजा आमोन

[21]आमोन जब यहूदा का राजा हुआ, बाईस वर्ष का था। वह दो वर्ष तक यरूशलेम का राजा रहा। [22]आमोन ने यहोवा के सामने बुरे काम किये। यहोवा उससे जो कराना चाहता था उन्हें उसने ठीक अपने पिता मनश्शे की तरह नहीं किया। आमोन ने सभी खुदी हुई मूर्तियों तथा अपने पिता मनश्शे की बनाई मूर्तियों को बलि चढ़ाई। आमोन ने उन मूर्तियों की पूजा की। [23]आमोन ने स्वयं को अपने पिता मनश्शे की तरह यहोवा के सामने विनम्र नहीं बनाया। किन्तु आमोन अधिक से अधिक पाप करता गया। [24]आमोन के सेवकों ने उसके विरुद्ध योजना बनाई। उन्होंने आमोन को उसके घर में मार डाला। [25]किन्तु यहूदा के लोगों ने उन सभी सेवकों को मार डाला जिन्होंने राजा आमोन के विरुद्ध योजना बनाई थी। तब लोगों ने योशिय्याह को नया राजा चुना। योशिय्याह आमोन का पुत्र था।

यहूदा का राजा योशिय्याह

34 योशिय्याह जब राजा बना, आठ वर्ष का था। वह यरूशलेम में इकतीस वर्ष तक राजा रहा। [2]योशिय्याह ने वही किया जो उचित था। उसने वही किया जो यहोवा उससे करावाना चाहता था। उसने अपने पूर्वज दाऊद की तरह अच्छे काम किये। योशिय्याह उचित काम करने से नहीं हटा। [3]जब योशिय्याह आठ वर्ष तक राजा रह चुका तो वह अपने पूर्वज दाऊद के अनुसार परमेश्वर का अनुसरण करने लगा। योशिय्याह बच्चा ही था जब उसने परमेश्वर की आज्ञा माननी आरम्भ की। जब योशिय्याह राजा के रूप में बारह वर्ष का हुआ, उसने उच्च स्थानों, अशेरा–स्तम्भों पर खुदी मूर्तियों और यहूदा और यरूशलेम में ढली मूर्तियों को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। [4]लोगों ने बाल देवताओं की वेदियाँ तोड़ दीं। उन्होंने यह योशिय्याह के सामने किया। तब योशिय्याह ने सुगन्धि के लिये बनी उन वेदियों को नष्ट कर डाला जो लोगों से भी बहुत ऊँची उठी थीं। उसने खुदी मूर्तियों तथा ढली मूर्तियों को तोड़ डाला। उसने उन मूर्तियों को पीटकर चूर्ण बना दिया। तब योशिय्याह ने उस चूर्ण को उन लोगों की कब्रों पर डाला जो बाल देवताओं को बलि चढ़ाते थे। [5]योशिय्याह ने उन याजकों की हड्डियों तक को जलाया जिन्होंने अपनी वेदियों पर बाल–देवताओं की सेवा की थी। इस प्रकार योशिय्याह ने मूर्तियों और मूर्ति पूजा को यहूदा और यरूशलेम से नष्ट किया। [6]योशिय्याह ने यही काम मनश्शे, एप्रैम, शिमोन और नप्ताली तक के राज्यों के नगरों में किया। उसने वही उन सब नगरों के पास के खंडहरों के साथ किया। [7]योशिय्याह ने वेदियों और अशेरा–स्तम्भों को तोड़ दिया। उसने मूर्तियों को पीटकर चूर्ण बना दिया। उसने पूरे इस्राएल देश में उन सुगन्धि–वेदियों को काट डाला जो बाल की पूजा में काम आती थीं। तब योशिय्याह यरूशलेम लौट गया।

[8]जब योशिय्याह यहूदा के राजा के रूप में अपने अट्ठारहवें वर्ष में था, उसने शापान, मासेयाह और योआह को अपने यहोवा परमेश्वर के मन्दिर की मरम्मत करने के लिये भेजा। शापान के पिता का नाम असल्याह था। मासेयाह नगर प्रमुख था और योआह के पिता का नाम योआहाज था। योआह वह व्यक्ति था जिसने जो कुछ हुआ उसे लिखा। (वह लेखक था)। योशिय्याह ने मन्दिर को स्थापित करने का आदेश दिया जिससे वह यहूदा

और मन्दिर दोनों को स्वच्छ रख सके। [9]वे लोग महा याजक हिल्किय्याह के पास आए। उन्होंने वह धन उसे दिया जो लोगों ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये दिया था। लेवीवंशी द्वारपालों ने यह धन मनश्शे, एप्रैम और बचे सभी इस्राएलियों से इकट्ठा किया। उन्होंने यह धन सारे यहूदा, बिन्यामीन और यरूशलेम में रहने वाले सभी लोगों से भी इकट्ठा किया। [10]तब लेवीवंशियों ने उन व्यक्तियों को यह धन दिया जो यहोवा के मन्दिर के काम की देख–रेख कर रहे थे और निरीक्षकों ने उन मज़दूरों को यह धन दिया जो यहोवा के मन्दिर को फिर बना कर स्थापित कर रहे थे। [11]उन्होंने बढ़ईयों और राजगीरों को पहले से कटी बड़ी चट्टानों को खरीदने के लिये और लकड़ी खरीदने के लिये धन दिया। लकड़ी का उपयोग भवनों को फिर से बनाने और भवन के शहतीरों के लिये किया गया। भूतकाल में यहूदा के राजा मन्दिरों की देखभाल नहीं करते थे। वे भवन पुराने और खंडहर हो गए थे। [12-13]लोगों ने विश्वासपूर्वक काम किया। उनके निरीक्षक यहत और ओबद्याह थे। यहत और ओबद्याह लेवीवंशी थे और वे मरारी के वंशज थे। अन्य निरीक्षक जकर्याह और मशुल्लाम थे। वे कहात के वंशज थे। जो लेवीवंशी संगीत–वाद्य बजाने में कुशल थे, वे भी चीजों को ढोने वाले तथा अन्य मज़दूरों का निरीक्षण करते थे। कुछ लेवीवंशी सचिव, अधिकारी और द्वारपाल का काम करते थे।

व्यवस्था की पुस्तक मिली

[14]लेवीवंशियों ने उस धन को निकाला जो यहोवा के मन्दिर में था। उस समय याजक हिल्किय्याह ने यहोवा के व्यवस्था की वह पुस्तक प्राप्त की जो मूसा द्वारा दी गई थी। [15]हिल्किय्याह ने सचिव शापान से कहा, "मैंने यहोवा के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है!" हिल्किय्याह ने शापान को पुस्तक दी। [16]शापान उस पुस्तक को राजा योशिय्याह के पास लाया। शापान ने राजा को सूचना दी, "तुम्हारे सेवक हर काम कर रहे हैं जो तुमने करने को कहा है। [17]उन्होंने यहोवा के मन्दिर से धन को निकाला और उसे निरीक्षकों एवं मज़दूरों को दे रहे हैं।" [18]तब शापान ने राजा योशिय्याह से कहा, "याजक हिल्किय्याह ने मुझे एक पुस्तक दी है।" तब शापान ने पुस्तक से पढ़ा। जब वह पढ़ रहा था, तब वह राजा के सामने था। [19]जब राजा योशिय्याह ने नियमों को पढ़े जाते हुए सुना, उसने अपने वस्त्र फाड़ लिये। [20]तब राजा ने हिल्किय्याह शापान के पुत्र अहीकाम, मीका के पुत्र अब्दोन, सचिव शापान और सेवक असायाह को आदेश दिया। [21]राजा ने कहा, "जाओ, मेरे लिये तथा इस्राएल और यहूदा में जो लोग बचे हैं उनके लिये यहोवा से याचना करो। जो पुस्तक मिली है उसके कथनों के बारे में पूछो। यहोवा हम लोगों पर बहुत क्रोधित है क्योंकि हमारे पूर्वजों ने यहोवा के कथनों का पालन नहीं किया। उन्होंने वे सब काम नहीं किये जो यह पुस्तक करने को कहती है!"

[22]हिल्किय्याह और राजा के सेवक नबिया हुल्दा के पास गए, हुल्दा शल्लूम की पत्नी थी। शल्लूम तोखत का पुत्र था। तोखत हस्रा का पुत्र था। हस्रा राजा के वस्त्रों की देखरेख करता था। हुल्दा यरूशलेम के नये भाग में रहती थी। हिल्किय्याह और राजा के सेवकों ने हुल्दा को सब कुछ बताया जो हो चुका था। [23]हुल्दा ने उनसे कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जो कहता है वह यह है: राजा योशिय्याह से कहो: [24]यहोवा जो कहता है वह यह है, 'मैं इस स्थान और यहाँ के निवासियों पर विपत्ति डालूँगा। मैं सभी भंयकर विपत्तियों को जो यहूदा के राजा के सामने पढ़ी पुस्तक में लिखी गई हैं, लाऊँगा। [25]मैं यह इसलिये करूँगा कि लोगों ने मुझे छोड़ा और अन्य देवताओं के लिये सुगन्धि जलाई। उन लोगों ने मुझे क्रोधित किया क्योंकि उन्होंने सभी बुरी बातें की हैं। इसलिये मैं अपना क्रोध इस स्थान पर उतारूँगा। मेरा क्रोध तप्त अग्निज्वाला की तरह बुझाया नहीं जा सकता!'

[26]"किन्तु यहूदा के राजा योशिय्याह से कहो। उसने यहोवा से पूछने के लिये तुम्हें भेजा। इस्राएल का यहोवा परमेश्वर, 'जिन कथनों को तुमने कुछ समय पहले सुना है, उनके विषय में कहता है: [27]योशिय्याह तुमने पश्चाताप किया और तुमने अपने को विनम्र किया और अपने वस्त्रों को फाड़ा, तथा तुम मेरे सामने चिल्लाए। अत: क्योंकि तुम्हारा हृदय कोमल है। [28]मैं तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के पास ले जाऊँगा। तुम अपनी कब्र में शान्तिपूर्वक जाओगे। तुम्हें उन विपत्तियों में से कोई भी नहीं देखनी पड़ेंगी जिन्हें मैं इस स्थान और यहाँ रहने वाले लोगों पर लाऊँगा।'" हिल्किय्याह और राजा के सेवक योशिय्याह के पास यह सन्देश लेकर लौटे। [29]राजा योशिय्याह ने यहूदा और यरूशलेम के सभी अग्रजों को अपने पास आने और

मिलने के लिये बुलाया। [30]राजा, यहोवा के मन्दिर में गया। यहूदा के सभी लोग, यरूशलेम में रहने वाले लोग, याजक, लेवीवंशी और सभी साधारण व असाधारण लोग योशिय्याह के साथ थे। योशिय्याह ने उन सबके सामने साक्षी की पुस्तक के कथन पढ़े। वह पुस्तक यहोवा के मन्दिर में मिली थी। [31]तब राजा अपने स्थान पर खड़ा हुआ। उसने यहोवा के साथ वाचा की। उसने यहोवा का अनुसरण करने की और यहोवा के आदेशों, विधियों और नियमों का पालन करने की वाचा की। योशिय्याह पूरे हृदय और आत्मा से आज्ञा पालन करने को सहमत हुआ। वह पुस्तक में लिखे वाचा के कथनों का पालन करने को सहमत हुआ। [32]तब योशिय्याह ने यरूशलेम और बिन्यामीन के सभी लोगों से वाचा को स्वीकार करने की प्रतिज्ञा कराई। यरूशलेम में लोगों ने परमेश्वर की वाचा का पालन किया, उस परमेश्वर की वाचा का जिसकी आज्ञा का पालन उनके पूर्वजों ने किया था। [33]योशिय्याह ने उन सभी स्थानों से मूर्तियों को फेंक दिया जो स्थान इस्राएल के लोगों के थे। यहोवा उन मूर्तियों से घृणा करता है। योशिय्याह ने इस्राएल के हर एक व्यक्ति को अपने यहोवा परमेश्वर की सेवा में पहुँचाया। जब तक योशिय्याह जीवित रहा, लोगों ने पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना बन्द नहीं किया।

योशिय्याह फसह पर्व मनाता है

35 यरूशलेम में राजा योशिय्याह ने यहोवा के लिये फसह पर्व मनाया। पहले महीने के चौदहवें दिन फसह पर्व का मेमना मारा गया। [2]योशिय्याह ने अपना अपना कार्य पूरा करने के लिये याजकों को चुना। उसने याजकों को उत्साहित किया, जब वे यहोवा के मन्दिर में सेवा कर रहे थे। [3]योशिय्याह ने उन लेवीवंशियों से बातें की जो इस्राएल के लोगों को उपदेश देते थे तथा जो यहोवा की सेवा के लिये पवित्र बनाए गए थे। उसने उन लेवीवंशियों से कहा: "पवित्र सन्दूक को उस मन्दिर में रखो जिसे सुलैमान ने बनाया। सुलैमान दाऊद का पुत्र था। दाऊद इस्राएल का राजा था। पवित्र सन्दूक को अपने कंधों पर फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर मत ले जाओ। अब अपने यहोवा परमेश्वर की सेवा करो। परमेश्वर के लोगों अर्थात् इस्राएल के लोगों की सेवा करो। [4]अपने को, अपने परिवार समूहों के क्रम में, मन्दिर की सेवा के लिये तैयार करो। उन कार्यों को करो जिन्हें राजा दाऊद और उसके पुत्र राजा सुलैमान ने तुम्हें करने के लिये दिया था। [5]पवित्र स्थान में लेवीवंशियों के समूह के साथ खड़े हो। लोगों के हर एक भिन्न परिवार समूह के साथ ऐसा ही करो, इस प्रकार तुम उनकी सहायता कर सकते हो। [6]फसह पर्व के मेमनों को मारो और यहोवा के प्रति अपने को पवित्र करो। मेमनों को अपने भाई इस्राएलियों के लिये तैयार करो। सब कुछ वैसे ही करो जैसा करने का आदेश यहोवा ने दिया है। यहोवा ने उन सभी आदेशों को हमें मूसा द्वारा दिया था।"

[7]योशिय्याह ने इस्राएल के लोगों को तीस हजार भेड़–बकरियाँ फसह पर्व की बलि के लिये दीं। उसने लोगों को तीन हजार पशु भी दिये। ये सभी जानवर राजा योशिय्याह के अपने जानवरों में से थे। [8]योशिय्याह के अधिकारियों ने भी, स्वेच्छा से लोगों को याजकों और लेवीवंशियों को फसह पर्व में उपयोग करने के लिये जानवर और चीजें दीं। प्रमुख याजक हिल्किय्याह, जकर्याह और यहीएल मन्दिर के उत्तरदायी अधिकारी थे। उन्होंने याजकों को दो हजार छ: सौ मेमने और बकरे और तीन सौ बैल फसह पर्व बलि के लिये दिये। [9]कोनन्याह ने भी शमायाह, नतनेल, तथा उसके भाईयों के साथ और हसब्याह, यीएल तथा योजाबाद ने पाँच सौ भेड़ें–बकरियाँ, पाँच सौ बैल फसह पर्व बलि के लिये लेवीवंशियों को दिये। वे लोग लेवीवंशियों के प्रमुख थे।

[10]जब हर एक चीज फसह पर्व की सेवा आरम्भ करने के लिये तैयार हो गई, तो याजक और लेवीवंशी स्थानों पर गए। यह वही हुआ जो राजा का आदेश था। [11]फसह पर्व के मेमने मारे गए। तब लेवीवंशियों ने जानवरों के चमड़े उतारे और याजकों को खून दिया। याजकों ने खून को वेदी पर छिड़का। [12]तब उन्होंने जानवरों को विभिन्न परिवार समूहों की होमबलि में उपयोग के लिये दिया। यह इसलिये किया गया कि होमबलि उस प्रकार दी जा सके जिस प्रकार मूसा के नियमों ने सिखाया था। [13]लेवीवंशियों ने फसह पर्व फसह पर्व की बलियों को आग पर इस प्रकार भूना जैसा उन्हें आदेश दिया गया था और उन्होंने पवित्र भेंटों को हंडिया, देग और कढ़ाहियों में पकाया। तब उन्होंने लोगों को शीघ्रता से माँस दिया। [14]जब यह पूरा हुआ तब लेवीवंशियों को अपने लिये और उन याजकों के लिये माँस मिला जो हारून के

वंशज थे। उन याजकों को काम करते हुए अंधेरा होने तक काम में बहुत अधिक लगाए रखा गया। उन्होंने होमबलि और बलिदानों की चर्बी को जलाते हुए कड़ा परिश्रम किया। [15]आसाप के परिवार के लेवीवंशी गायक उन स्थानों पर पहुँचे जिन्हें राजा दाऊद ने उनके खड़े होने के लिये चुना था। वे: आसाप , हेमान और राजा का नबी यदूतून थे। हर एक द्वार पर द्वारपाल अपना स्थान नहीं छोड़ सकते थे क्योंकि उनके लेवीवंशी भाईयों ने हर एक चीज उनके फसह पर्व के लिये तैयार कर दी थी।

[16]इस प्रकार उस दिन सब कुछ यहोवा की उपासना के लिये वैसे ही किया गया था जैसा राजा योशिय्याह ने आदेश दिया। फसह पर्व का त्यौहार मनाया गया और होमबलि यहोवा की वेदी पर चढ़ाई गई। [17]इस्राएल के जो लोग वहाँ थे उन्होंने फसह पर्व मनाया और अखमीरी रोटी का पर्व सात दिन तक मनाया। [18]शमूएल नबी जब जीवित था तब से फसह पर्व इस प्रकार नहीं मनाया गया था। इस्राएल के किसी राजा ने कभी इस प्रकार फसह पर्व नहीं मनाया था। राजा योशिय्याह, याजक, लेवीवंशी और इस्राएल और यहूदा के लोगों ने, यरूशलेम में सभी लोगों के साथ, फसह पर्व को बहुत ही विशेष रुप में मनाया। [19]यह फसह पर्व योशिय्याह के राज्यकाल के अट्ठारहवें वर्ष मनाया गया।

योशिय्याह की मृत्यु

[20]योशिय्याह जब मन्दिर के लिये उन अच्छे कामों को कर चुका, उस समय राजा नको परात नदी पर स्थित कर्कमीश नगर के विरुद्ध युद्ध करने के लिये सेना लेकर आया। नको मिस्र का राजा था। राजा योशिय्याह नको के विरुद्ध लड़ने बाहर निकला। [21]किन्तु नको ने योशिय्याह के पास दूत भेजे। उन्होंने कहा, "राजा योशिय्याह, यह युद्ध तुम्हारे लिये समस्या नहीं है। मैं तुम्हारे विरुद्ध लड़ने नहीं आया हूँ। मैं अपने शत्रुओं से लड़ने आया हूँ। परमेश्वर ने मुझे शीघ्रता करने को कहा है। परमेश्वर मेरी ओर है अत: मुझे परेशान न करो। यदि तुम हमारे विरुद्ध लड़ोगे, परमेश्वर तुम्हें नष्ट कर देगा!" [22]किन्तु योशिय्याह हटा नहीं। उसने नको से युद्ध करने का निश्चय किया, इसलिये उसने अपना वेश बदला और युद्ध करने गया। योशिय्याह ने उसे सुनने से इन्कार कर दिया जो नको ने परमेश्वर के आदेश के बारे में कहा। योशिय्याह मगिद्दो के मैदान में युद्ध करने गया। [23]जिस समय योशिय्याह युद्ध में था, वह बाणों से बेध दिया गया। उसने अपने सेवकों से कहा, "मुझे निकाल ले चलो। मैं बुरी तरह घायल हूँ!"

[24]अत: सेवकों ने योशिय्याह को रथ से बाहर निकाला, और उसे दूसरे रथ में बैठाया जिसे वह अपने साथ युद्ध में लाया था। तब वे योशिय्याह को यरूशलेम ले गए। राजा योशिय्याह यरूशलेम में मरा। योशिय्याह को वहाँ दफनाया गया जहाँ उसके पूर्वज दफनाये गए थे। यहूदा और यरूशलेम के सभी लोग योशिय्याह के मरने पर बहुत दु:खी थे। [25]यिर्मयाह ने योशिय्याह के लिये कुछ बहुत अधिक करुण गीत* लिखे। आज भी सभी स्त्री–पुरुष गायक उन "करुण गीतों" को गाते हैं। यह ऐसा हुआ जिसे इस्राएल के लोग सदा करते रहे अर्थात योशिय्याह के करुण गीत गाते रहे। वे गीत "करुण गीतों" के संग्रह में लिखे हैं।

[26-27]अन्य जो कुछ योशिय्याह ने अपने राज्यकाल में, शासन के आरम्भ से अन्त तक किया, वह यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा गया है। वह पुस्तक यहोवा के प्रति उसकी भक्ति और उसने यहोवा के नियमों का पालन कैसे किया, बताती है।

यहूदा का राजा यहोआहाज

36 यहूदा के लोगों ने यरूशलेम में नया राजा होने के लिये यहोआहाज को चुना। यहोआहाज योशिय्याह का पुत्र था। [2]यहोआहाज जब यहूदा का राजा हुआ, वह तेईस वर्ष का था। वह यरूशलेम में तीन महीने राजा रहा। [3]तब मिस्र के राजा नको ने यहोआहाज को बन्दी बना लिया। नको ने यहूदा के लोगों को पौने चार टन चाँदी और पचहत्तर पौंड सोना दण्डराशि देने को विवश किया। [4]नको ने यहोआहाज के भाई को यहूदा और यरूशलेम का नया राजा होने के लिये चुना। यहोआहाज के भाई का नाम एल्याकीम था। तब नको ने एल्याकीम को एक नया नाम दिया। उसने उसका नाम यहोयाकीम रखा किन्तु नको यहोआहाज को मिस्र ले गया।

योशिय्याह ... करुण गीत दूसरा शब्द यिर्मयाह के शोक–गीत है। देखें यिर्म. 22:10

यहूदा का राजा यहोयाकीम

[5]यहोयाकीम उस समय पच्चीस वर्ष का था जब वह यहूदा का नया राजा हुआ। वह ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम में राजा रहा। यहोयाकीम ने वह नहीं किया जिसे यहोवा चाहता था कि वह करे। उसने अपने यहोवा परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया।

[6]बाबेल से नबूकदनेस्सर ने यहूदा पर आक्रमण किया। उसने यहोयाकीम को बन्दी बनाया और उसे काँसे की जंजीरों में डाला। तब नबूकदनेस्सर राजा यहोयाकीम को बाबेल ले गया। [7]नबूकदनेस्सर यहोवा के मन्दिर से कुछ चीजें ले गया। वह उन चीज़ों को बाबेल ले गया और अपने घर अर्थात राजमहल में रखा। [8]यहोयाकीम ने जो अन्य काम किये, जो भंयकर पाप उसने किये तथा हर एक काम जिसे करने का वह अपराधी था, ये सब "यहूदा और इस्राएल के राजाओं का इतिहास" नाम पुस्तक में लिखे हैं।

यहोयाकीन, यहोयाकीम के स्थान पर नया राजा हुआ। यहोयाकीन, यहोयाकीम का पुत्र था।

यहूदा का राजा यहोयाकीन

[9]यहोयाकीन जब यहूदा का राजा हुआ, अट्ठारह वर्ष का था। वह यरूशलेम में तीन महीने दस दिन राजा रहा। उसने वे काम नहीं किये जिसे यहोवा चाहता था कि वह करे। यहोयाकीन ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया। [10]बसन्त में राजा नबूकदनेस्सर ने कुछ सेवकों को यहोयाकीन को पकड़ने को भेजा। वे यहोयाकीन और यहोवा के मन्दिर से कुछ कीमती खजाने बाबेल ले गए। नबूकदनेस्सर ने सिदकिय्याह को यहूदा और यरूशलेम का नया राजा होने के लिये चुना। सिदकिय्याह यहोयाकीन का सम्बन्धी था।

यहूदा का राजा सिदकिय्याह

[11]सिदकिय्याह जब यहूदा का राजा बना, इक्कीस वर्ष का था। वह यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राजा रहा। [12]सिदकिय्याह ने वह नहीं किया जिसे उसका यहोवा परमेश्वर चाहता था कि वह करे। सिदकिय्याह ने अपने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। यिर्मयाह नबी ने यहोवा की ओर से सन्देश दिये किन्तु उसने अपने को विनम्र नहीं बनाया और यिर्मयाह नबी ने जो कहा उसका पालन नहीं किया।

यरूशलेम ध्वस्त हुआ

[13]सिदकिय्याह ने नबूकदनेस्सर के विरुद्ध विद्रोह किया। कुछ समय पहले नबूकदनेस्सर ने सिदकिय्याह से प्रतिज्ञा कराई थी कि वह नबूकदनेस्सर का विश्वासपात्र रहेगा। सिदकिय्याह ने परमेश्वर का नाम लिया और नबूकदनेस्सर के प्रति विश्वासपात्र बने रहने की प्रतिज्ञा की। किन्तु सिदकिय्याह बहुत अड़ियल था और उसने अपना जीवन बदलने, इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के पास लौटने तथा उसकी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया। [14]याजकों के सभी प्रमुखों और यहूदा के लोगों के प्रमुखों ने अधिक पाप किये और यहोवा के बहुत अधिक अविश्वसनीय हो गए। उन्होंने अन्य राष्ट्रों के बुरे उदाहरणों की नकल की। उन प्रमुखों ने यहोवा के मन्दिर को ध्वस्त कर दिया। यहोवा ने मन्दिर को यरूशलेम में पवित्र बनाया था। [15]उनके पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर ने अपने लोगों को चेतावनी देने के लिये बार बार सन्देशवाहक को भेजा। यहोवा ने यह इसलिये किया कि उसे उन पर करुणा थी और मन्दिर के लिये दु:ख था। यहोवा उनको या अपने मन्दिर को नष्ट नहीं करना चाहता था। [16]किन्तु परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के संदेशवाहकों (नबियों) का मजाक उड़ाया। उन्होंने परमेश्वर के संदेशवाहकों (नबियों) की अनसुनी कर दी। उन्होंने परमेश्वर के संदेश से घृणा की। अन्त में परमेश्वर और अधिक अपना क्रोध न रोक सका। परमेश्वर अपने लोगों पर क्रोधित हुआ और उसे रोकने के लिये कुछ भी नहीं था जिसे किया जा सके। [17]इसलिये परमेश्वर बाबेल के राजा को यहूदा के लोगों पर आक्रमण करने के लिये लाया। बाबेल के राजा ने युवकों को मन्दिर में होने पर भी मार डाला। उसने यहूदा और यरूशलेम के लोगों पर दया नहीं की। बाबेल के राजा ने युवा और वृद्ध सभी लोगों को मारा। परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर को यहूदा और यरूशलेम के लोगों को दण्ड देने दिया। [18]नबूकदनेस्सर परमेश्वर के मन्दिर की सभी चीज़ें बाबेल ले गया। उसने परमेश्वर के मन्दिर, राजा तथा राजा के अधिकारियों की सभी कीमती चीज़ें ले लीं। [19]नबूकदनेस्सर और उसकी सेना ने मन्दिर को आग लगा दी। उन्होंने यरूशलेम की चहारदीवारी गिरा दी और राजा तथा उसके अधिकारियों के सभी घरों को जला दिया। उन्होंने यरूशलेम से हर एक कीमती चीज़

ली या उसे नष्ट कर दिया। [20]नबूकदनेस्सर इसके बाद भी जीवित बचे लोगों को, बाबुल ले गया और उन्हें दास होने को विवश किया। वे लोग बाबेल में दास की तरह तब तक रहे जब तक फारस के सम्राट ने बाबेल के राज्य को पराजित नहीं किया। [21]इस प्रकार यहोवा ने, इस्राएल के लोगों को जो कुछ यिर्मयाह नबी से कहलवाया, वह सब ठीक घटित हुआ। यहोवा ने यिर्मयाह द्वारा कहा था: "यह स्थान सत्तर वर्ष तक सूना उजाड़ देश रहेगा।* यह सब्त विश्राम* की क्षतिपूर्ति के रूप में होगा जिसे लोग नहीं करते।"

[22]यह तब पहले वर्ष हुआ जब फारस का राजा कुस्रू शासन कर रहा था। यहोवा ने यिर्मयाह नबी के माध्यम से जो वचन दिये वे सत्य घटित हुए। यहोवा ने कूस्रू के हृदय को कोमल बनाया जिससे उसने आदेश लिखा और अपने राज्य में हर एक स्थान पर भेजा: [23]फारस का राजा कूस्रू यही कहता है: स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा ने मुझे पूरी पृथ्वी का राजा बनाया है। उसने मुझे एक मन्दिर यरूशलेम में अपने लिये बनाने का उत्तरदायित्व दिया है। अब तुम सभी, जो परमेश्वर के लोग हो, यरूशलेम जाने के लिये स्वतन्त्र हो। यहोवा परमेश्वर तुम्हारे साथ हो।

यह स्थान ... रहेगा देखे यिर्म. 25:11; 29:10

सब्त विश्राम नियम कहता था कि हर सातवें वर्ष भूमि में खेती नहीं करनी चाहिए। देखें लैव्य. 25:1–7

एज्रा

कुस्रू बन्दियों की वापसी में सहायता करता है

1 कुस्रू के फारस पर राज्य करने के प्रथम वर्ष* यहोवा ने कुस्रू को एक घोषणा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कुस्रू ने उस घोषणा को लिखवाया और अपने राज्य में हर एक स्थान पर पढ़वाया। यह इसलिये हुआ ताकि यहोवा का वह सन्देश जो यिर्मयाह* द्वारा कहा गया था, सच्चा हो सके। घोषणा यह है:

[2]"फारस के राजा कुस्रू का सन्देश:

स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, ने पृथ्वी के सारे राज्य मुझको दिये हैं और यहोवा ने मुझे यहूदा देश के यरूशलेम में उसका एक मन्दिर बनाने के लिए चुना। [3]यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर है, वह परमेश्वर जो यरूशलेम में है। यदि परमेश्वर के व्यक्तियों में कोई भी व्यक्ति तुम्हारे बीच रह रहा है तो मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर उसे आशीर्वाद दे। तुम्हें उसे यहूदा देश के यरूशलेम में जाने देना चाहिये। तुम्हें यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये उन्हें जाने देना चाहिये [4]और इसलिये किसी भी उस स्थान में जहाँ इस्राएल के लोग बचे* हो उस स्थान के लोगों को उन बचे हुओं की सहायता करनी चाहिये। उन लोगों को चाँदी, सोना, गाय और अन्य चीज़े दो। यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर के लिये उन्हें भेंट दो।"

[5]अत: यहूदा और बिन्यामीन के परिवार समूहों के प्रमुखों ने यरूशलेम जाने की तैयारी की। वे यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये यरूशलेम जा रहे थे। परमेश्वर ने जिन लोगों को प्रोत्साहित किया था वे भी यरूशलेम जाने को तैयार हो गए। [6]उनके सभी पड़ोसियों ने उन्हें बहुत सी भेंट दी। उन्होंने उन्हें चाँदी, सोना, पशु और अन्य कीमती चीज़ें दी। उनके पड़ोसियों ने उन्हें वे सभी चीज़ें स्वेच्छापूर्वक दीं। [7]राजा कुस्रू भी उन चीजों को लाया जो यहोवा के मन्दिर की थीं। नबूकदनेस्सर उन चीज़ों को यरूशलेम से लूट लाया था। नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को अपने उस मन्दिर में रखा, जिसमें वह अपने असत्य देवताओं को रखता था। [8]फारस के राजा कुस्रू ने अपने उस व्यक्ति से जो उसके धन की देख रेख करता था, इन चीज़ों को बाहर लाने के लिये कहा। उस व्यक्ति का नाम मिथ्रूदात था। अत: मिथ्रूदात उन चीज़ों को यहूदा के प्रमुख शेशबस्सर* के पास लेकर आया।

[9]जिन चीज़ों को मिथ्रूदात यहोवा के मन्दिर से लाया था वे ये थीं:

सोने के पात्र	30
चाँदी के पात्र	1,000
चाकू और कड़ाहियाँ	29
[10] सोने के कटोरे	30
सोने के कटोरों जैसे चाँदी के कटोरे,	410
तथा एक हजार अन्य प्रकार के पात्र	1,000

[11]सब मिलाकर वहाँ सोने चाँदी की बनी पाँच हजार चार सौ चीज़ें थीं। शेशबस्सर इन सभी चीज़ों को अपने साथ उस समय लाया जब बन्दियों ने बाबेल छोड़ा और यरूशलेम को वापस लौट गये।

प्रथम वर्ष अर्थात् ई. पू. 538

यहोवा का ... यिर्मयाह देखे यिर्म. 25:12–14

लोग बचे वे लोग जो किसी आपत्ति से बच गए। यहाँ उन यहूदी लोगों से तात्पर्य है जो शत्रुओं द्वारा यहूदा और इस्राएल के नष्ट किये जाने पर बच गए थे।

शेशबस्सर संभवत: यही जरूब्बाबेल नाम का व्यक्ति है। इस नाम का अर्थ "बाबेल में अजनबी" या "उसने बाबेल छोड़ा" संभवत: शेशबस्सर (जरूब्बाबेल) अरामी भाषा का नाम है।

छूटकर वापस आने वाले बन्दियों की सूची

2 ये राज्य के वे व्यक्ति हैं जो बन्धुवाई से लौट कर आये। बीते समय में बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर उन लोगों को बन्दी के रूप में बाबेल लाया था। ये लोग यरूशलेम और यहूदा को वापस आए। हर एक व्यक्ति यहूदा में अपने-अपने नगर को वापस गया। [2]ये वे लोग हैं जो जरूब्बाबेल के साथ वापस आए: येशू, नहेम्याह, सरायाह, रेलायाह, मौर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै, रहूम, और बाना। यह इस्राएल के उन लोगों के नाम और उनकी संख्या है जो वापस लौटे:

3	परोश के वंशज	2,172
4	शपत्याह के वंशज	372
5	आरह के वंशज	775
6	येशू और योआब के परिवार के पहत्मोआब के वंशज	2,812
7	एलाम के वंशज	1,254
8	जत्तू के वंशज	945
9	जक्कै के वंशज	760
10	बानी के वंशज	642
11	बेबै के वंशज	623
12	अजगाद के वंशज	1,222
13	अदोनीकाम के वंशज	666
14	बिगवै के वंशज	2,056
15	आदीन के वंशज	454
16	आतेर के वंशज (हिजकिय्याह के पारिवारिक पीढ़ी से)	98
17	बेसै के वंशज	323
18	योरा के वंशज	112
19	हाशूम के वंशज	223
20	गिब्बार के वंशज	95
21	बेतलेहेम नगर के लोग	123
22	नतोपा के नगर से	56
23	अनातोत नगर से	128
24	अज्मावेत के नगर से	42
25	किर्यतारीम, कपीरा और बेरोत नगरों से	743
26	रामा और गेबा नगर से	621
27	मिकमास नगर से	122
28	बेतेल और ऐ नगर से	223
29	नबो नगर से	52
30	मग्बीस नगर से	156
31	एलाम नामक अन्य नगर से	1,254
32	हारीम नगर से	320
33	लोद, हादीद और ओनो नगरों से	725
34	यरीहो नगर से	345
35	सना नगर से	3,630

[36]याजकों के नाम और उनकी संख्या की सूची यह है:

	यदायाह के वंशज (येशू की पारिवारिक पीढ़ी से)	973
37	इम्मेर के वंशज	1,052
38	पशहूर के वंशज	1,247
39	हारीम के वंशज	1,017

[40]लेवीवंशी कहे जाने वाले लेवी के परिवार की संख्या यह है:

येशू, और कदमिएल (होदग्याह की पारिवारिक पीढ़ी से) 74

[41]गायकों की संख्या यह है:

आसाप के वंशज 128

[42]मन्दिर के द्वारपालों की संख्या यह है :

शल्लूम, आतेर, तल्मोन, अक्कूब, हतीता और शोबै के वंशज 139

[43]मन्दिर के विशेष सेवक ये हैं:

ये सीहा, हसूपा, और तब्बाओत के वंशज हैं।

44 केरोस, सीअहा, पादोन,
45 लबाना, हागाब, अक्कूब
46 हागाब, शल्मै, हानान,
47 गिद्दल, गहर, रायाह,
48 रसीन, नकोदा, गज्जाम,
49 उज्जा, पासेह, बेसै,
50 अस्ना, मूनीम, नपीसीम।
51 बकबूक, हकूपा, हर्हूर,
52 बसलूत, महीदा, हर्शा,
53 बर्कोस, सीसरा, तेमह,
54 नसीह और हतीपा।

[55]ये सुलैमान के सेवकों के वंशज हैं:

सोतै, हस्सोपेरेत और परूदा की सन्तानें।

56 याला, दर्कोन, गिद्देल,
57 शपत्याह, हत्तील, पोकरेतसबायीम।

[58] मन्दिर के सेवक और सुलैमान के
सेवकों के कुल वंशज 392

[59]कुछ लोग इन नगरों से यरूशलेम आये: तेल्मेलह, तेलहर्शा, करूब, अद्दान और इम्मेर। किन्तु ये लोग यह प्रमाणित नहीं कर सके कि उनके परिवार इस्राएल के परिवार से हैं।

[60]उनके नाम और उनकी संख्या यह है:
दलायाह, तोबिय्याह और
नकोदा के वंशज 652

[61]यह याजकों के परिवारों के नाम हैं:
हबायाह, हक्कोस और बर्जिल्लै के वंशज (एक व्यक्ति जिसने गिलादी के बर्जिल्लै की पुत्री से विवाह किया था और बर्जिल्लै के पारिवारिक नाम से ही जाना जाता था।)

[62]इन लोगों ने अपने पारिवारिक इतिहासों की खोज की, किन्तु उसे पा न सके। उनके नाम याजकों की सूची में नहीं सम्मिलित किये गये थे। वे यह प्रमाणित नहीं कर सके कि उनके पूर्वज याजक थे। इसी कारण वे याजक नहीं हो सकते थे। [63]प्रशासक ने इन लोगों को आदेश दिया कि ये लोग कोई भी पवित्र भोजन न करें। वे तब तक इस पवित्र भोजन से नहीं खा सकते जब तक एक याजक जो ऊरीम और तुम्मीम का उपयोग करके यहोवा से न पूछे कि क्या किया जाये।

[64-65]सब मिलाकर बयालीस हजार तीन सौ साठ लोग उन समूहों में थे जो वापस लौट आए। इसमें उनके सात हजार तीन सौ सैंतीस सेवक, सेविकाओं की गणना नहीं है और उनके साथ दो सौ गायक और गायिकाएं भी थीं। [66-67]उनके पास सात सौ छत्तीस घोड़े, दो सौ पैंतालीस खच्चर, चार सौ पैंतीस ऊँट और छ: हजार सात सौ बीस गधे थे।

[68]वह समूह यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर को पहुँचा। तब परिवार के प्रमुखों ने यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये अपनी भेंटें दीं। उन्होंने जो मन्दिर नष्ट हो गया था उसी के स्थान पर नया मन्दिर बनाना चाहा। [69]उन लोगों ने उतना दिया जितना वे दे सकते थे। ये वे चीज़ें हैं जिन्हें उन्होंने मन्दिर बनाने के लिये दिया: लगभग पाँच सौ किलो सोना, तीन टन चाँदी, और याजकों के पहनने वाले सौ चोगे।

[70]इस प्रकार याजक, लेवीवंशी और कुछ अन्य लोग यरूशलेम और उसके चारों ओर के क्षेत्र में बस गये। इस समूह में मन्दिर के गायक, द्वारपाल और मन्दिर के सेवक सम्मिलित थे। इस्राएल के अन्य लोग अपने निजी निवास स्थानों में बस गये।

वेदी का फिर से बनना

3 अत, सातवें महीने से इस्राएल के लोग अपने अपने नगरों में लौट गये। उस समय, सभी लोग यरूशलेम में एक साथ इकट्ठे हुए। वे सभी एक इकाई के रूप में संगठित थे। [2]तब योसादाक के पुत्र येशू और उसके साथ याजकों तथा शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल और उसके साथ के लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर की वेदी बनाई। उन लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर के लिये वेदी इसलिए बनाई ताकि वे इस पर बलि चढ़ा सकें। उन्होंने उसे ठीक मूसा के नियमों के अनुसार बनाया। मूसा परमेश्वर का विशेष सेवक था।

[3]वे लोग अपने आस पास के रहने वाले अन्य लोगों से डरे हुए थे। किन्तु यह भय उन्हें रोक न सका और उन्होंने वेदी की पुरानी नींव पर ही वेदी बनाई और उस पर यहोवा को होमबलि दी। उन्होंने वे बलियाँ सवेरे और शाम को दीं। [4]तब उन्होंने आश्रयों का पर्व ठीक वैसे ही मनाया जैसा मूसा के नियम में कहा गया है। उन्होंने उत्सव के प्रत्येक दिन के लिये उचित संख्या में होमबलि दी। [5]उसके बाद, उन्होंने लगातार चलने वाली प्रत्येक दिन की होमबलि नया चाँद, और सभी अन्य उत्सव व विश्राम के दिनों की भेंटे चढ़ानी आरम्भ की जैसा कि यहोवा द्वारा आदेश दिया गया था। लोग अन्य उन भेंटों को भी चढ़ाने लगे जिन्हें वे यहोवा को चढ़ाना चाहते थे। [6]अत: सातवें महीने के पहले दिन इस्राएल के इन लोगों ने यहोवा को फिर भेंट चढ़ाना आरम्भ किया। यह तब भी किया गया जबकि मन्दिर की नींव अभी फिर से नहीं बनी थी।

मन्दिर का पुन: निर्माण

[7]तब उन लोगों ने जो बन्धुवाई से छूट कर आये थे, संगतराशों और बढ़ईयों को धन दिया और उन लोगों ने उन्हें भोजन, दाखमधु और जैतून का तेल दिया। उन्होंने इन चीज़ों का उपयोग सोर और सीदोन के लोगों को लबानोन से देवदार के लट्ठों को लाने के लिये भुगतान

करने में किया। वे लोग चाहते थे कि जापा नगर के समुद्री तट पर लट्ठों को जहाजों द्वारा ले आएँ। जैसा कि सुलैमान ने किया था जब उसने पहले मन्दिर को बनाया था। फारस के राजा कुस्रू ने यह करने के लिये उन्हें स्वीकृति दे दी।

[8]अत: यरूशलेम में मन्दिर पर उनके पहुँचने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और योसादाक के पुत्र येशू ने काम करना आरम्भ किया। उनके भाईयों, याजकों, लेवीवंशियों और प्रत्येक व्यक्ति जो बन्धुवाई से यरूशलेम लौटे थे, सब ने उनके साथ काम करना आरम्भ किया। उन्होंने यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये उन लेवीवंशियों को प्रमुख चुना जो बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के थे। [9]ये वे लोग थे जो मन्दिर के बनने की देखरेख कर रहे थे, येशू के पुत्र और उसके भाई, कदमीएल और उसके पुत्र (यहूदा के वंशज थे) हेनादाद के पुत्र और उनके बन्धु लेवीवंशी। [10]कारीगरों ने यहोवा के मन्दिर की नींव डालनी पूरी कर दी। जब नींव पड़ गई तब याजकों ने अपने विशेष वस्त्र पहने। तब उन्होंने अपनी तुरही ली और आसाप के पुत्रों ने अपने झाँझों को लिया। उन्होंने यहोवा की स्तुति के लिये अपने अपने स्थान ले लिये। यह उसी तरह किया गया जिस तरह करने के लिये भूतकाल में इस्राएल के राजा दाऊद ने आदेश दिया था। [11]यहोवा ने जो कुछ किया, उन्होंने, उसके लिये उसकी प्रशंसा करते हुए तथा धन्यवाद देते हुए, यह गीत गाया *"वह अच्छा है, उसका इस्राएल के लिए प्रेम शाश्वत है।"** और तब सभी लोग खुश हुए। उन्होंने बहुत जोर से उद्घोष और यहोवा की स्तुति की। क्यों? क्योंकि मन्दिर की नींव पूरी हो चुकी थी।

[12]किन्तु बुजुर्ग याजकों में से बहुत से, लेवीवंशी और परिवार प्रमुख रो पड़े। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने प्रथम मन्दिर को देखा था, और वे यह याद कर रहे थे कि वह कितना सुन्दर था। वे रो पड़े जब उन्होंने नये मन्दिर को देखा। वे रो रहे थे जब बहुत से अन्य लोग प्रसन्न थे और शोर मचा रहे थे। [13]उद्घोष बहुत दूर तक सुना जा सकता था। उन सभी लोगों ने इतना शोर मचाया कि कोई व्यक्ति प्रसन्नता के उद्घोष और रोने में अन्तर नहीं कर सकता था।

वह अच्छा ... शाश्वत है संभवत: इसका अर्थ यह है कि उन्होंने उस भजन को गाया जिसे हम भजन 111–118 और भजन 136 के रूप में जानते हैं।

मन्दिर के पुन: निर्माण के विरुद्ध शत्रु

4 [1-2]उस क्षेत्र में रहने वाले बहुत से लोग यहूदा और बिन्यामीन के लोगों के विरूद्ध थे। उन शत्रुओं ने सुना कि वे लोग जो बन्धुवाई से आये हैं वे, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये एक मन्दिर बना रहे हैं। इसलिये वे शत्रु जरुब्बाबेल तथा परिवार प्रमुखों के पास आए और उन्होंने कहा, "मन्दिर बनाने में हमें तुमको सहायता करने दो। हम लोग वही हैं जो तुम हो, हम तुम्हारे परमेश्वर से सहायता माँगते हैं। हम लोगों ने तुम्हारे परमेश्वर को तब से बलि चढ़ाई है जब से अश्शूर का राजा एसर्हद्दोन हम लोगों को यहाँ लाया।"

[3]किन्तु जरुब्बाबेल, येशू और इस्राएल के अन्य परिवार प्रमुखों ने उत्तर दिया, "नहीं, तुम जैसे लोग हमारे परमेश्वर के लिये मन्दिर बनाने में हमें सहायता नहीं कर सकते। केवल हम लोग ही यहोवा के लिए मन्दिर बना सकते हैं। वह इस्राएल का परमेश्वर है। फारस के राजा कुस्रू ने जो करने का आदेश दिया है, वह यही है।"

[4]इससे वे लोग क्रोधित हो उठे। अत: उन लोगों ने यहूदियों को परेशान करना आरम्भ किया। उन्होंने उनको हतोत्साह और मन्दिर को बनाने से रोकने का प्रयत्न किया। [5]उन शत्रुओं ने सरकारी अधिकारियों को यहूदा के लोगों के विरूद्ध काम करने के लिए खरीद लिया। उन अधिकारियों ने यहूदियों द्वारा मन्दिर को बनाने की योजना को रोकने के लिए लगातार काम किया। यह उस दौरान तब तक लगातार चलता रहा जब तक कुस्रू फारस का राजा रहा और बाद में जब तक दारा फारस का राजा नहीं हो गया।

[6]उन शत्रुओं ने यहूदियों को रोकने के लिये प्रयत्न करते हुए फ़ारस के राजा को पत्र भी लिखा। उन्होंने यह पत्र तब लिखा था जब क्षयर्ष* फारस का राजा बना।

क्षयर्ष फ़ारस का राजा, लगभग ई. पू. 485–465

यरूशलेम के पुन: निर्माण के विरुद्ध शत्रु

[7]बाद में, जब अर्तक्षत्र* फारस का नया राजा हुआ, इन लोगों में से कुछ ने यहूदियों के विरूद्ध शिकायत करते हुए एक और पत्र लिखा। जिन लोगों ने वह पत्र लिखा, वे ये थे: बिशलाम, मिथदात, ताबेल और उसके दल के अन्य लोग। उन्होंने पत्र राजा अर्तक्षत्र को अरामी में अरामी लिपि का उपयोग करते हुए लिखा। [8]*तब शासनाधिकारी रहूम और सचिव शिलशै ने यरूशलेम के लोगों के विरूद्ध पत्र लिखा। उन्होंने राजा अर्तक्षत्र को पत्र लिखा। उन्होंने जो लिखा वह यह था:

[9]शासनाधिकारी रहूम, सचिव शिमशै, तथा तर्पली, अफ़ारसी, एरेकी, बाबेली और शूशनी के एलामी लोगों के न्यायाधीश और महत्वपूर्ण अधिकारियों की ओर से, [10]तथा वे अन्य लोग जिन्हें महान और शक्तिशाली ओस्नप्पर ने शोमरोन के नगरों एवं परात नदी के पश्चिमी प्रदेश के अन्य स्थानों पर बसाया था।

[11]यह उस पत्र की प्रतिलिपि है जिसे उन लोगों ने अर्तक्षत्र को भेजा था।

राजा अर्तक्षत्र को,

परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र में रहने वाले आप के सेवकों की ओर से है।

[12]राजा अर्तक्षत्र हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि जिन यहूदियों को आपने–अपने पास से भेजा है, वे यहाँ आ गये हैं। वे यहूदी उस नगर को फिर से बनाना चाहते हैं। यरूशलेम एक बुरा नगर है। उस नगर के लोगों ने अन्य राजाओं के विरूद्ध सदैव विद्रोह किया है। अब वे यहूदी परकोटे की नींवों को पक्का कर रहे हैं और दीवारें खड़ी कर रहे हैं।*

[13]राजा अर्तक्षत्र आपको यह भी जान लेना चाहिये कि यदि यरूशलेम और इसके परकोटे फिर बन गए तो यरूशलेम के लोग कर देना बन्द कर देंगे। वे आपका सम्मान करने के लिये धन भेजना बन्द कर देंगे। वे सेवा कर देना भी रोक देंगे और राजा को उस सारे धन से हाथ धोना पड़ेगा।

[14]हम लोग राजा के प्रति उत्तरदायी हैं। हम लोग यह सब घटित होना नहीं देखना चाहते। यही कारण है कि हम लोग यह पत्र राजा को सूचना के लिये भेज रहे हैं।

[15]राजा अर्तक्षत्र हम चाहते हैं कि आप उन राजाओं के लेखों का पता लगायें जिन्होंने आपके पहले शासन किये। आप उन लेखों में देखेंगे कि यरूशलेम ने सदैव अन्य राजाओं के प्रति विद्रोह किया। इसने अन्य राजाओं और राष्ट्रों के लिये बहुत कठिनाईयाँ उत्पन्न की है। प्राचीन काल से इस नगर में बहुत से विद्रोह का आरम्भ हुआ है! यही कारण है कि यरूशलेम नष्ट हुआ था!

[16]राजा अर्तक्षत्र हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि यदि यह नगर और इसके परकोटे फिर से बन गई तो फरात नदी के पश्चिम के क्षेत्र आप के हाथ से निकल जाएँगे।

[17]तब अर्तक्षत्र ने यह उत्तर भेजा:

शासनाधिकारी रहूम और सचिव शिमशै और उन के सभी साथियों को जो शोमरोन और परात नदी के अन्य पश्चिमी प्रदेश में रहते हैं, को अपना उत्तर भेजा।

अभिवादन,

[18]तुम लोगों ने जो हमारे पास पत्र भेजा उसका अनुवाद हुआ और मुझे सुनाया गया। [19]मैंने आदेश दिया कि मेरे पहले के राजाओं के लेखों की खोज की जाये। लेख पढ़े गये और हम लोगों को ज्ञात हुआ कि यरूशलेम द्वारा राजाओं के विरूद्ध विद्रोह करने का एक लम्बा इतिहास है। यरूशलेम ऐसा स्थान रहा है जहाँ प्राय: विद्रोह और क्रान्तियाँ होती रही हैं। [20]यरूशलेम और फरात नदी के पश्चिम के पूरे क्षेत्र पर शक्तिशाली राजा राज्य करते रहे हैं। राज्य कर और राजा के सम्मान के लिये धन और विविध प्रकार के कर उन राजाओं को दिये गए हैं।

अर्तक्षत्र फ़ारस का राजा लगभग ई. पू. 465– 424यह क्षयर्ष का पुत्र था।

पद्य 4:8 यहाँ मूल भाषा हिब्रू से अरामी भाषा हो गई है।

अब ... रहे हैं यह नगर को सुरक्षित रखने का तरीका था, किन्तु ये लोग राजा को यह विचार करने वाला बनाना चाहते थे कि यहूदी उसके विरूद्ध विद्रोह करने की तैयारी कर रहे हैं।

[21]अब तुम्हें उन लोगों को काम बन्द करने के लिये एक आदेश देना चाहिए। यह आदेश यरूशलेम के पुन: निर्माण को रोकने के लिये तब तक है, जब तक कि मैं वैसा करने की आज्ञा न दूँ। [22]इस आज्ञा की उपेक्षा न हो, इसके लिये सावधान रहना। हमें यरूशलेम के निर्माण कार्य को जारी नहीं रहने देना चाहिए। यदि काम चलता रहा तो मुझे यरूशलेम से आगे कुछ भी धन नहीं मिलेगा।

[23]सो उस पत्र की प्रतिलिपि, जिसे राजा अर्तक्षत्र ने भेजा रहूम, सचिव शिमशै और उनके साथ के लोगों को पढ़कर सुनाई गई। तब वे लोग बड़ी तेज़ी से यरूशलेम में यहूदियों के पास गए। उन्होंने यहूदियों को निर्माण कार्य बन्द करने को विवश कर दिया।

मन्दिर का कार्य रुका

[24]इस प्रकार यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर का काम रुक गया। फारस के राजा दारा के शासनकाल के दूसरे वर्ष तक यह कार्य नहीं चला।

5 तब हाग्गै* नबी और इद्दो के पुत्र जकर्याह* ने इस्राएल के परमेश्वर के नाम पर भविष्यवाणी करनी आरम्भ की। उन्होंने यहूदा और यरूशलेम में यहूदियों को प्रोत्साहित किया। [2]अत: शालतीएल का पुत्र जरुब्बाबेल और योसादाक का पुत्र येशू ने फिर यरूशलेम में मन्दिर का निर्माण करना आरम्भ कर दिया। सभी परमेश्वर के नबी उनके साथ थे और कार्य में सहायता कर रहे थे। [3]उस समय फरात नदी के पश्चिम के क्षेत्र का राज्यपाल तत्तनै था। तत्तनै, शतर्बोजनै और उनके साथ के लोग जरुब्बाबेल और येशू तथा निर्माण करने वालों के पास गए। तत्तनै और उसके साथ के लोगों ने जरूब्बाबेल और उसके साथ के लोगों से पूछा, "तुम्हें इस मन्दिर को फिर से बनाने और इस की छत का काम पूरा करने का आदेश किसने दिया?" [4]उन्होंने जरुब्बाबेल से यह भी पूछा, "जो लोग इस इमारत को बनाने का काम कर रहे है उनके नाम क्या हैं?"

[5]किन्तु परमेश्वर यहूदी प्रमुखों पर दृष्टि रख रहा था। निर्माण करने वालों को तब तक काम नहीं रोकना पड़ा जब तक उसका विवरण राजा दारा को न भेज दिया गया। वे तब तक काम करते रहे जब तक राजा दारा ने अपना उत्तर वापस नहीं भेजा।

[6]फ़रात के पश्चिम के क्षेत्रों के शासनाधिकारी तत्तनै, शतर्बोजनै और उनके साथ के महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने राजा दारा के पास पत्र भेजा। [7]यह उस पत्र की प्रतिलिपि है:

राजा दारा को अभिवादन

[8]राजा दारा, आपको ज्ञात होना चाहिए कि हम लोग यहूदा प्रदेश में गए। हम लोग महान परमेश्वर के मन्दिर को गए। यहूदा के लोग उस मन्दिर को बड़े पत्थरों से बना रहे हैं। वे दीवारों में लकड़ी की बड़ी–बड़ी शहतीरें डाल रहे हैं। काम बड़ी सावधानी से किया जा रहा है, और यहूदा के लोग बहुत परिश्रम कर रहे हैं। वे बड़ी तेज़ी से निर्माण कार्य कर रहे हैं और यह शीघ्र ही पूरा हो जाएगा।

[9]हम लोगों ने उनके प्रमुखों से कुछ प्रश्न उनके निर्माण कार्य के बारे में पूछा हम लोगों ने उनसे पूछा, "तुम्हें इस मन्दिर को फिर से बनाने और इस की छत का काम पूरा करने की स्वीकृति किसने दी है?" [10]हम लोगों ने उनके नाम भी पूछे। हम लोगों ने उन लोगों के प्रमुखों के नाम लिखना चाहा जिससे आप जान सकें कि वे कौन लोग हैं। [11]उन्होंने हमें यह उत्तर दिया:

"हम लोग स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर के सेवक हैं। हम लोग उसी मन्दिर को बना रहे हैं जिसे बहुत वर्ष पहले इस्राएल के एक महान राजा ने बनाया और पूरा किया था। [12]किन्तु हमारे पूर्वजों ने स्वर्ग के परमेश्वर को क्रोधित किया। इसलिये परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर को दिया। नबूकदनेस्सर ने इस मन्दिर को नष्ट किया और उसने लोगों को बन्दी के रूप में बाबेल जाने को विवश किया। [13]किन्तु बाबेल पर कुस्रू के राजा होने के प्रथम वर्ष में राजा कुस्रू ने परमेश्वर के मन्दिर को फिर से बनाने के लिए विशेष आदेश दिया। [14]कुस्रू ने बाबेल में अपने असत्य देवता के मन्दिर से उन सोने चाँदी की चीजों को निकाला जो भूतकाल में परमेश्वर के मन्दिर से लूट कर ले जाई गई थीं। नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को यरूशलेम के मन्दिर से लूटा और उन्हें

हाग्गै देखें हाग्गै 1:1

इद्दो ... जकर्याह देखें जकर्याह 1:1

बाबेल में अपने असत्य देवताओं के मन्दिर में ले आया। तब राजा कुस्रू ने उन सोने चाँदी की चीजों को शेशबस्सर (जरुब्बाबेल) को दे दिया। कुस्रू ने शेशबस्सर को प्रशासक चुना था।

[15]कुस्रू ने तब शेशबस्सर (जरुब्बाबेल) से कहा था, "इन सोने चाँदी की चीज़ों को लो और उन्हें यरूशलेम के मन्दिर में वापस रखो। उसी स्थान पर परमेश्वर के मन्दिर को बनाओ जहाँ वह पहले था।" [16]अत: शेशबस्सर (जरुब्बाबेल) आया और उसने यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर की नींव का काम पूरा किया। उस दिन से आज तक मन्दिर के निर्माण का काम चलता आ रहा है। किन्तु यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है।"

[17]अब यदि राजा चाहते हैं तो कृपया वे राजाओं के लेखों को खोजें। यह देखने के लिए खोज करें कि क्या राजा कुस्रू द्वारा यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर को फिर से बनाने का दिया गया आदेश सत्य है और तब, महामहिम, कृपया आप हम लोगों को पत्र भेजें जिससे हम जान सकें कि आपने इस विषय में क्या करने का निर्णय लिया है।

दारा का आदेश

6 अत: राजा दारा ने अपने पूर्व के राजाओं के लेखों की जाँच करने का आदेश दिया। वे लेख बाबेल में वहीं रखे थे जहाँ खज़ाना रखा गया था। [2]अहमत्ता के किले में एक दण्ड में लिपटा गोल पत्रक मिला। एकवतन मादे प्रान्त में है। उस दण्ड में लिपटे गोल पत्रक पर जो लिखा था, वह यह है:

सरकारी टिप्पणी: [3]कुस्रू के राजा होने के प्रथम वर्ष में कुस्रू ने यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर के लिये एक आदेश दिया। आदेश यह था:

परमेश्वर का मन्दिर फिर से बनने दो। यह बलि भेंट करने का स्थान होगा। इसकी नींव को बनने दो। मन्दिर साठ हाथ ऊँचा और साठ हाथ चौड़ा होना चाहिए। [4]इसके परकोटे में विशाल पत्थरों की तीन कतारें और विशाल लकड़ी के शहतीरों की एक कतार होनी चाहिए। मन्दिर को बनाने का व्यय राजा के खज़ाने से किया जाना चाहिये। [5]साथ ही साथ, परमेश्वर के मन्दिर की सोने और चाँदी की चीज़ें उनके स्थान पर वापस रखी जानी चाहिए। नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को यरूशलेम के मन्दिर से लिया था और उन्हें बाबेल लाया था। वे परमेश्वर के मन्दिर में वापस रख दिये जाने चाहियें।

[6]इसलिये अब, मैं दारा, फरात नदी के पश्चिम के प्रदेशों के शासनाधिकारी तत्तनै और शतर्बोजनै और उस प्रान्त के रहने वाले सभी अधिकारियों, तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम लोग यरूशलेम से दूर रहो। [7]श्रमिकों को परेशान न करो। परमेश्वर के उस मन्दिर के काम को बन्द करने का प्रयत्न मत करो। यहूदी प्रशासक और यहूदी प्रमुखों को इन्हें फिर से बनाने दो। उन्हें परमेश्वर के मन्दिर को उसी स्थान पर फिर से बनाने दो जहाँ यह पहले था।

[8]अब मैं यह आदेश देता हूँ, तुम्हें परमेश्वर के मन्दिर को बनाने वाले यहूदी प्रमुखों के लिये यह करना चाहिये: इमारत की लागत का भुगतान राजा के खज़ाने से होना चाहिये। यह धन फ़रात नदी के पश्चिम के क्षेत्र के प्रान्तों से इकट्ठा किये गये राज्य कर से आयेगा। ये काम शीघ्रता से करो, जिससे काम रूके नहीं। [9]उन लोगों को वह सब दो जिसकी उन्हें आवश्यकता हो। यदि उन्हें स्वर्ग के परमेश्वर को बलि के लिये युवा बैलों, मेढ़ों या मेमनों की जरूरत पड़े तो उन्हें वह सब कुछ दो। यदि यरूशलेम के याजक गेहूँ, नमक, दाखमधु और तेल माँगे तो बिना भूल चूक के प्रतिदिन ये चीज़ें उन्हें दो। [10]उन चीज़ों को यहूदी याजकों को दो जिससे वे ऐसी बलि भेंट करें कि जिससे स्वर्ग का परमेश्वर प्रसन्न हो। उन चीज़ों को दो जिससे याजक मेरे और मेरे पुत्रों के लिये प्रार्थना करें।

[11]मैं यह आदेश भी देता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति इस आदेश को बदलता है तो उस व्यक्ति के मकान से एक लकड़ी की कड़ी निकाल लेनी चाहिए और उस लकड़ी की कड़ी को उस व्यक्ति की शरीर पर धँसा देना चाहिये और उसके घर को तब तक नष्ट किया जाना चाहिये जब तक कि वह पत्थरों का ढेर न बन जाये।

[12]परमेश्वर यरूशलेम पर अपना नाम अंकित करे और मुझे आशा है कि परमेश्वर किसी भी उस

राजा या व्यक्ति को पराजित करेगा जो इस आदेश को बदलने का प्रयत्न करता है। यदि कोई यरूशलेम में इस मन्दिर को नष्ट करना चाहता है तो मुझे आशा है कि परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा।

मैं (दारा) ने, यह आदेश दिया है। इस आदेश का पालन शीघ्र और पूर्ण रूप से होना चाहिए!

मन्दिर का पूर्ण और समर्पित होना

[13]अत: फ़रात नदी के पश्चिम क्षेत्र के प्रशासक तत्तनै, शतर्बोजनै और उसके साथ के लोगों ने राजा दारा के आदेश का पालन किया। उन लोगों ने आज्ञा का पालन शीघ्र और पूर्ण रूप से किया। [14]अत: यहूदी अग्रजों (प्रमुखों) ने निर्माण कार्य जारी रखा और वे सफल हुए क्योंकि हाग्गै नबी और इद्दो के पुत्र जकर्याह ने उन्हें प्रोत्साहित किया। उन लोगों ने मन्दिर का निर्माण कार्य पूरा कर लिया। यह इस्राएल के परमेश्वर के आदेश का पालन करने के लिये किया गया। यह फारस के राजाओं, कुस्रू, दारा और अर्तक्षत्र ने जो आदेश दिये थे उनका पालन करने के लिये किया गया। [15]मन्दिर का निर्माण अदर महीने के तीसरे दिन पूरा हुआ।* यह राजा दारा के शासन के छठें वर्ष में हुआ।*

[16]तब इस्राएल के लोगों ने अत्यन्त उल्लास के साथ परमेश्वर के मन्दिर का समर्पण उत्सव मनाया। याजक, लेवीवंशी, और बन्धुवाई से वापस आए अन्य सभी लोग इस उत्सव में सम्मिलित हुये।

[17]उन्होंने परमेश्वर के मन्दिर को इस प्रकार समर्पित किया: उन्होंने एक सौ बैल, दो सौ मेढ़े और चार सौ मेमने भेंट किये और उन्होंने पूरे इस्राएल के लिये पाप भेंट के रूप में बारह बकरे भेंट किये अर्थात् इस्राएल के बारह परिवार समूह में से हर एक के लिए एक बकरा भेंट किया। [18]तब उन्होंने यरूशलेम में मन्दिर में सेवा करने के लिये याजकों और लेवीवंशियों के समूह बनाये। यह सब उन्होंने उसी प्रकार किया जिस प्रकार मूसा की पुस्तक में बताया गया है।

फसह पर्व

[19]*पहले महीने के चौदहवें दिन उन यहूदियों ने फसह पर्व मनाया जो बन्धुवाई से वापस लौटे थे। [20]याजकों और लेवीवंशियों ने अपने को शुद्ध किया। उन सभी ने फसह पर्व मनाने के लिये अपने को स्वच्छ और तैयार किया। लेवीवंशियों ने बन्धुवाई से लौटने वाले सभी यहूदियों के लिये फसह पर्व के मेमने को मारा। उन्होंने यह अपने लिये और अपने याजक बंधुओं के लिये किया। [21]इसलिये बन्धुवाई से लौटे इस्राएल के सभी लोगों ने फसह पर्व का भोजन किया। अन्य लोगों ने स्नान किया और अपने आपको उन अशुद्ध चीज़ों से अलग हट कर शुद्ध किया जो उस प्रदेश में रहने वाले लोगों की थीं। उन शुद्ध लोगों ने भी फसह पर्व के भोजन में हिस्सा लिया। उन लोगों ने यह इसलिये किया, कि वे यहोवा इस्राएल के परमेश्वर के पास सहायता के लिये जा सकें। [22]उन्होंने अखमीरी रोटी का उत्सव सात दिन तक बहुत अधिक प्रसन्नता से मनाया। यहोवा ने उन्हें बहुत प्रसन्न किया क्योंकि उसने अश्शूर के राजा* के व्यवहार को बदल दिया था। अत: अश्शूर के राजा ने परमेश्वर के मन्दिर को बनाने में उनकी सहायता की थी।

एज्रा यरूशलेम आता है

7 फारस के राजा अर्तक्षत्र के शासनकाल में इन सब बातों के हो जाने के बाद* एज्रा बाबेल से यरूशलेम आया। एज्रा सरायाह का पुत्र था। सरायाह अजर्याह का पुत्र था। अजर्याह हिल्किय्याह का पुत्र था। [2]हिल्किय्याह शल्लूम का पुत्र था। शल्लूम सादोक का पुत्र था। सादोक अहीतूब का पुत्र था। [3]अहीतूब अमर्याह का पुत्र था। अमर्याह अजर्याह का पुत्र था। अजर्याह मरायोत का पुत्र था। [4]मरायोत जरह्याह का पुत्र था। जरह्याह उज्जी का पुत्र था। उज्जी बुक्की का पुत्र था। [5]बुक्की अबीशू का

मन्दिर ... पूरा हुआ यह दिन मार्च के महिने में था। कुछ प्राचीन लेखक इसे "अदर का 23वां दिन" कहते हैं।

यह ... हुआ अर्थात् ई.पू. 515

19 पद्य यहाँ मूल पद्य अरामिक भाषा में है यहाँ से आगे अब फिर हिब्रू भाषा हो गई है।

अश्शूर के राजा सम्भवत: इसका अर्थ फारस का राजा दारा है।

इन सब ... बाद एज्रा के अध्याय 6और अध्याय 7के बीच 58वर्ष के समय का अन्तर है। एस्तेर की पुस्तक की घटनाएँ इन दोनों अध्यायों के समय के बीच की हैं।

पुत्र था। अबीशू पीनहास का पुत्र था। पीनहास एलीआज़र का पुत्र था। एलीआज़र महायाजक हारून का पुत्र था।

[6]एज्रा बाबेल से यरूशलेम आया। एज्रा एक शिक्षक था। वह मूसा के नियमों को अच्छी तरह जानता था। मूसा का नियम यहोवा इस्राएल के परमेश्वर द्वारा दिया गया था। राजा अर्तक्षत्र ने एज्रा को वह हर चीज़ दी जिसे उसने माँगा क्योंकि यहोवा परमेश्वर एज्रा के साथ था। [7]इस्राएल के बहुत से लोग एज्रा के साथ आए। वे याजक लेवीवंशी, गायक, द्वारपाल और मन्दिर के सेवक थे। इस्राएल के वे लोग अर्तक्षत्र के शासनकाल के सातवें वर्ष यरूशलेम आए। [8]एज्रा यरूशलेम में राजा अर्तक्षत्र के राज्यकाल के सातवें वर्ष के पाँचवें महीने* में आया। [9]एज्रा और उसके समूह ने बाबेल को पहले महीने के पहले दिन छोड़ा। वह पाँचवें महीने के पहले दिन यरूशलेम पहुँचा। यहोवा परमेश्वर एज्रा के साथ था। [10]एज्रा ने अपना पूरा समय और ध्यान यहोवा के नियमों को पढ़ने और उनके पालन करने में दिया। एज्रा इस्राएल के लोगों को यहोवा के नियमों और आदेशों की शिक्षा देना चाहता था और वह इस्राएल में लोगों को उन नियमों का अनुसरण करने में सहायता देना चाहता था।

राजा अर्तक्षत्र का एज्रा को पत्र

[11]एज्रा एक याजक और शिक्षक था। इस्राएल को यहोवा द्वारा दिये गए आदेशों और नियमों के बारे में वह पर्याप्त ज्ञान रखता था। यह उस पत्र की प्रतिलिपि है जिसे राजा अर्तक्षत्र ने उपदेशक एज्रा को दिया था।

[12]*राजा अर्तक्षत्र की ओर से,

याजक एज्रा को जो स्वर्ग के परमेश्वर के नियमों का शिक्षक है:

अभिवादन! [13]मैं यह आदेश देता हूँ: कोई व्यक्ति, याजक या इस्राएल का लेवीवंशी जो मेरे राज्य में रहता है और एज्रा के साथ यरूशलेम जाना चाहता है, जा सकता है।

[14]एज्रा, मैं और मेरे सात सलाहकार तुम्हें भेजते हैं। तुम्हें यहूदा और यरूशलेम को जाना चाहिये। यह देखो कि तुम्हारे लोग तुम्हारे परमेश्वर के नियमों का पालन कैसे कर रहे हैं। तुम्हारे पास वह नियम है।

[15]मैं और मेरे सलाहकार इस्राएल के परमेश्वर को सोना–चाँदी दे रहे हैं। परमेश्वर का निवास यरूशलेम में है। तुम्हें यह सोना चाँदी अपने साथ ले जाना चाहिये। [16]तुम्हें बाबेल के सभी प्रान्तों से होकर जाना चाहिये। अपने लोगों, याजकों और लेवीवंशियों से भी भेंटें इकट्ठी करो। ये भेंटें उनके यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर के लिये है।

[17]इस धन का उपयोग बैल, मेढ़े और नर मेमने खरीदने में करो। उन बलियों के साथ जो अन्न भेंट और पेय भेंट चढ़ाई जानी है, उन्हें खरीदो। तब उन्हें यरूशलेम में अपने परमेश्वर के मन्दिर की वेदी पर बलि चढ़ाओ। [18]उसके बाद तुम और अन्य यहूदी बचे हुये सोने चाँदी को जैसे भी चाहो, खर्च कर सकते हो। इसका उपयोग वैसे ही करो जो तुम्हारे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला हो। [19]उन सभी चीज़ों को यरूशलेम के परमेश्वर के पास ले जाओ। वे चीज़ें तुम्हारे परमेश्वर के मन्दिर में उपासना के लिये हैं। [20]तुम कोई भी अन्य चीज़ें ले सकते हो जिन्हें तुम अपने परमेश्वर के मन्दिर के लिये आवश्यक समझते हो। राजा के खज़ाने के धन का उपयोग जो कुछ तुम चाहते हो उसके खरीदने के लिये कर सकते हो।

[21]अब मैं, राजा अर्तक्षत्र यह आदेश देता हूँ: मैं उन सभी लोगों को जो फरात नदी के पश्चिमी क्षेत्र में राजा के कोषपाल हैं, आदेश देता हूँ कि वे एज्रा को जो कुछ भी वह माँगे दें। एज्रा स्वर्ग के परमेश्वर के नियमों का शिक्षक और याजक है। इस आदेश का शीघ्र और पूर्ण रूप से पालन करो। [22]एज्रा को इतना तक दे दो : पौने चार टन चाँदी, छ: सौ बुशल गेहूँ, छ: सौ गैलन दाखमधु, छ: सौ गैलन जैतून का तेल और उतना नमक जितना एज्रा चाहे। [23]स्वर्ग का परमेश्वर, एज्रा को जिस चीज़ को पाने के लिये आदेश दे उसे तुम्हें शीघ्र और पूर्ण रूप से एज्रा को देना चाहिये। स्वर्ग के परमेश्वर के मन्दिर के लिये ये सब चीज़ें करो। हम नहीं चाहते कि परमेश्वर मेरे राज्य या मेरे पुत्रों पर क्रोधित हो।

पाँचवें महीने यह लगभग जुलाई ई. पू. 458 था।

पद्य 12 से इस पुस्तक का मूल पाठ हिब्रू से अरामी भाषा में हो गया है।

[24]मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों को ज्ञात हो कि याजकों, लेवियों, गायकों, द्वारपालों और परमेश्वर के मन्दिर के अन्य कर्मचारियों तथा सेवकों को किसी भी प्रकार का कर देने के लिये बाध्य करना, नियम के विरोध है। [25]एज्रा मैं तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर द्वारा प्राप्त बुद्धि के उपयोग तथा सरकारी और धार्मिक न्यायाधीशों को चुनने का अधिकार देता हूँ। ये लोग फरात नदी के पश्चिम में रहने वाले सभी लोगों के लिये न्यायाधीश होंगे। वे उन सभी लोगों का न्याय करेंगे जो तुम्हारे परमेश्वर के नियमों को जानते हैं। यदि कोई व्यक्ति उन नियमों को नहीं जानता तो वे न्यायाधीश उसे उन नियमों को बताएंगे। [26]यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो जो तुम्हारे परमेश्वर के नियमों या राजा के नियमों का पालन नहीं करता हो, तो उसे अवश्य दण्डित किया जाना चाहिये। अपराध के अनुसार उसे मृत्यु दण्ड, देश निकाला, उसकी सम्पत्ति को जब्त करना या बन्दीगृह में डालने का दण्ड दिया जाना चाहिए।

एज्रा परमेश्वर की स्तुति करता है

[27]* हमारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा
की स्तुति करो।
उस ने राजा के मन में ये विचार डाला कि
वह यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर का
सम्मान करे।
[28] यहोवा ने राजा, उसके सलाहकारों और बड़े
अधिकारियों के सामने मुझ पर
अपना सच्चा प्रेम प्रकट किया।
यहोवा मेरा परमेश्वर मेरे साथ था,
अत: मैं साहसी रहा और
मैंने इस्राएल के प्रमुखों को अपने साथ
यरूशलेम जाने के लिये इकट्ठा किया।

एज्रा के साथ लौटने वाले परिवार प्रमुखों की सूची

8 यह बाबेल से यरूशलेम लौटने वाले परिवार प्रमुखों और अन्य लोगों की सूची है जो मेरे (एज्रा) के साथ लौटे। हम लोग राजा अर्तक्षत्र के शासनकाल में यरूशलेम लौटे। यह नामों की सूची है: [2]पीनहास के वंशजों में से गेर्शोम था; ईतामार के वंशजों में से दानिय्येल था; दाऊद के वंशजों में से हत्तूस था; [3]शकन्याह के वंशजों में से परोश, जकर्याह के वंशज तथा डेढ़ सौ अन्य लोग; [4]पहत्मोआब के वंशजों में से जरह्याह का पुत्र एल्यहोएनै और अन्य दो सौ लोग; [5]जत्तु के वंशजों में से यहजीएल का पुत्र शकन्याह और तीन सौ अन्य लोग; [6]आदीन के वंशजों में से योनातान का पुत्र एबेद, और पचास अन्य लोग; [7]एलाम के वंशजों में से अतल्याह का पुत्र यशायाह और सत्तर अन्य लोग; [8]शपत्याह के वंशजों में से मीकाएल का पुत्र जबद्याह और अस्सी अन्य लोग; [9]योआब के वंशजों में से यहीएल का पुत्र ओबद्याह और दो सौ अट्ठारह अन्य व्यक्ति; [10]शलोमित के वंशजों में से योसिप्याह का पुत्र शलोमित और एक सौ साठ अन्य लोग; [11]बेबै के वंशजों में से बेबै का पुत्र जकर्याह और अट्ठाईस अन्य व्यक्ति; [12]अजगाद के वंशजों में से हक्कातान का पुत्र योहानान, और एक सौ दस अन्य लोग; [13]अदोनीकाम के अंतिम वंशजों में से एलीपेलेत, यीएल, समायाह और साठ अन्य व्यक्ति थे; [14]बिगवै के वंशजों में से ऊत्तै, जब्बूद और सत्तर अन्य लोग।

यरूशलेम को वापसी

[15]मैंने (एज्रा) उन सभी लोगों को अहवा की ओर बहने वाली नदी के पास एक साथ इकट्ठा होने को बुलाया। हम लोगों ने वहाँ तीन दिन तक डेरा डाला। मुझे यह पता लगा कि उस समूह में याजक थे, किन्तु कोई लेवीवंशी नहीं था। [16]सो मैंने इन प्रमुखों को बुलाया: एलीएजेर, अरीएल, शमायाह, एलनातान, यारीब, एलनातान, नातान, जकर्याह और मशुल्लाम और मैंने योयारीब और एलनातान* (ये लोग शिक्षक थे) को बुलाया। [17]मैंने उन व्यक्तियों को इद्दो के पास भेजा। इद्दो कासिप्या नगर का प्रमुख है। मैंने उन व्यक्ति को बताया कि वे इद्दो और उसके सम्बन्धियों से क्या कहें। उसके सम्बन्धी कासिप्या में मन्दिर के सेवक हैं। मैंने उन लोगों को इद्दो के पास भेजा जिससे इद्दो परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करने के लिये हमारे पास सेवकों को भेजे। [18]क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ था, इद्दो के सम्बन्धियों ने इन लोगों को हमारे

पद 27 इस पुस्तक का मूल पाठ अरामी भाषा से हिब्रू भाषा में हो गया है।

एलनातान यहाँ एक ही नाम के तीन व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है।

पास भेजा: महली के वंशजों में से शेरेब्याह नामक बुद्धिमान व्यक्ति। महली लेवी के पुत्रों में से एक था। लेवी इस्राएल के पुत्रों में से एक था। उन्होंने हमारे पास शेरेब्याह के पुत्रों और बन्धुओं को भेजा। ये सब मिलाकर उस परिवार से ये अट्ठारह व्यक्ति थे। [19]उन्होंने मरारी के वंशजों में से हशब्याह और यशायाह को भी उनके बन्धुओं और उनके पुत्रों के साथ भेजा। उस परिवार से कुल मिलाकर बीस व्यक्ति थे। [20]उन्होंने मन्दिर के दो सौ बीस सेवक भी भेजे। उनके पूर्वज वे लोग थे जिन्हें दाऊद और बड़े अधिकारियों ने लेवीवंशियों की सहायता के लिये चुना था। उन सबके नाम सूची में लिखे हुए थे।

[21]वहाँ अहवा नदी के पास, मैंने (एज्रा) घोषणा की कि हमें उपवास रखना चाहिये। हमें अपने को परमेश्वर के सामने विनम्र बनाने के लिये उपवास रखना चाहिये। हम लोग परमेश्वर से अपने लिए, अपने बच्चों के लिये, और जो चीज़ें हमारी थीं, उनके साथ सुरक्षित यात्रा के लिये प्रार्थना करना चाहते थे। [22]राजा अर्तक्षत्र से, अपनी यात्रा के समय अपनी सुरक्षा के लिये सैनिक और घुड़सवारों को माँगने में मैं लज्जित था। सड़क पर शत्रु थे। मेरी लज्जा का कारण यह था कि हमने राजा से कह रखा था कि, "हमारा परमेश्वर उस हर व्यक्ति के साथ है जो उस पर विश्वास करता है और परमेश्वर उस हर एक व्यक्ति पर क्रोधित होता है जो उससे मुँह फेर लेता है।" [23]इसलिये हम लोगों ने अपनी यात्रा के बारे में उपवास रखा और परमेश्वर से प्रार्थना की। उसने हम लोगों की प्रार्थना सुनी।

[24]तब मैंने याजकों में से बारह को नियुक्त किया जो प्रमुख थे। मैंने शेरेब्याह, हशब्याह और उनके दस भाईयों को चुना। [25]मैंने चाँदी, सोना और अन्य चीज़ों को तौला जो हमारे परमेश्वर के मन्दिर के लिये दी गई थीं। मैंने इन चीज़ों को उन बारह याजकों को दिया जिन्हें मैंने नियुक्त किया था। राजा अर्तक्षत्र, उसके सलाहकार, उसके बड़े अधिकारियों और बाबेल में रहने वाले सभी इस्राएलियों ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये उन चीजों को दिया। [26]मैंने इन सभी चीज़ों को तौला। वहाँ चाँदी पच्चीस टन थी। वहाँ चाँदी के पात्र व अन्य वस्तुएं थी। जिन का भार पौने चार किलोग्राम था। वहाँ सोना पौने चार टन था। [27]और मैंने उन्हें बीस सोने के कटोरे दिये। कटोरों का वज़न लगभग उन्नीस पौंड था और मैंने उन्हें झलकाये गये सुन्दर काँसे के दो पात्र दिए जो सोने के बराबर ही कीमती थे। [28]तब मैंने उन बारह याजकों से कहा: "तुम और ये चीज़ें यहोवा के लिये पवित्र हैं। लोगों ने यह चाँदी और सोना यहोवा तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर को दिया। [29]इसलिये इनकी रक्षा सावधानी से करो। तुम इसके लिए तब तक उत्तरदायी हो जब तक तुम इसे यरूशलेम में मन्दिर के प्रमुखों को नहीं दे देते। तुम इन्हें प्रमुख लेवीवंशियों को और इस्राएल के परिवार प्रमुखों को दोगे। वे उन चीजों को तौलेंगे और यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर के कोठरियों में रखेंगे।"

[30]सो उन याजकों और लेवियों ने उस चाँदी, सोने और उन विशेष वस्तुओं को ग्रहण किया जिन्हें एज्रा ने तौला था और उन्हें यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर में ये वस्तुएं ले जाने के लिये कहा गया था।

[31]पहले महीने के बारहवें दिन हम लोगों ने अहवा नदी को छोड़ा और हम यरूशलेम की ओर चल पड़े। परमेश्वर हम लोगों के साथ था और उसने हमारी रक्षा शत्रुओं और डाकुओं से पूरे मार्ग भर की। [32]तब हम यरूशलेम आ पहुँचे। हमने वहाँ तीन दिन आराम किया। [33]चौथे दिन हम परमेश्वर के मन्दिर को गए और चाँदी, सोना और विशेष चीज़ों को तौला। हमने याजक ऊरीयाह के पुत्र मरेमोत को वे चीज़ें दीं। पीनहास का पुत्र एलीआजर मरेमोत के साथ था और लेवीवंशी येशू का पुत्र योजाबाद और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह भी उनके साथ थे। [34]हमने हर एक चीज़ गिनी और उन्हें तौला। तब हमने उस समय कुल वज़न लिखा।

[35]तब उन यहूदी लोगों ने जो बन्धुवाई से आये थे, इस्राएल के परमेश्वर को होमबलि दी। उन्होंने बारह बैल पूरे इस्राएल के लिए छियानबे मेढ़े, सतहत्तर मेमने और बारह बकरे पाप भेंट के लिये चढ़ाये। यह सब यहोवा के लिये होमबलि थी।

[36]तब उन लोगों ने राजा अर्तक्षत्र का पत्र, राजकीय अधिपतियों और फरात के पश्चिम के क्षेत्र के प्रशासकों को दिया। तब उन्होंने इस्राएल के लोगों और मन्दिर को अपना समर्थन दिया।

विदेशी लोगों से विवाह के विषय में एज्रा की प्रार्थना

9 जब हम लोग यह सब कर चुके तब इस्राएल के प्रमुख मेरे पास आए। उन्होंने कहा, "एज्रा इस्राएल

के लोगों और याजकों तथा लेवीवंशियों ने अपने चारों ओर रहने वाले लोगों से अपने को अलग नहीं रखा है। इस्राएल के लोग कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों, यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्र के लोगों और एमोरियों द्वारा की जाने वाली बहुत सी बुरी बातों से प्रभावित हुए हैं [2]इस्राएल के लोगों ने अपने चारों ओर रहने वाले अन्य जाति के लोगों से विवाह किया है। इस्राएल के लोग विशेष माने जाते हैं। किन्तु अब वे अपने चारों ओर रहने वाले अन्य लोगों से मिलकर दोगले हो गये हैं। इस्राएल के लोगों के प्रमुखों और बड़े अधिकारियों ने इस विषय में बुरे उदाहरण रखे हैं।" [3]जब मैंने इस विषय में सुना, मैंने अपना लबादा और अंगरखा यह दिखाने के लिये फाड़ डाला कि मैं बहुत परेशान हूँ। मैंने अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोंच डाले। मैं दु:खी और अस्त व्यस्त बैठ गया। [4]तब हर एक व्यक्ति जो इस्राएल के परमेश्वर के नियमों का आदर करता था, भय से काँप उठा। वे डर गए क्योंकि जो इस्राएल के लोग बन्धुवाई से लौटे, वे परमेश्वर के भक्त नहीं थे। मुझे धक्का लगा और मैं घबरा गया। मैं वहाँ सन्ध्या की बलि भेंट के समय तक बैठा रहा और वे लोग मेरे चारों ओर इकट्ठे रहे।

[5]तब, जब सन्ध्या की बलि भेंट का समय हुआ, मैं उठा। मैं बहुत लज्जित था। मेरा लबादा और अंगरखा दोनों फटे थे और मैंने घुटनों के बल बैठकर यहोवा अपने परमेश्वर की ओर हाथ फैलाये। [6]तब मैंने यह प्रार्थना की: हे मेरे परमेश्वर, मैं इतना लज्जित और संकोच में हूँ कि तेरी ओर मेरी आँखे नहीं उठतीं, हे मेरे परमेश्वर! मैं लाज्जित हूँ क्योंकि हमारे पाप हमारे सिर से ऊपर चले गये हैं। हमारे अपराधों की ढेरी इतनी ऊँची हो गई है कि वह आकाश तक पहुँच चुकी है। [7]हमारे पूर्वजों के समय से अब तक हम लोगों ने बहुत अधिक पाप किये हैं। हम लोगों ने पाप किये, इसलिये हम, हमारे राजा और हमारे याजक दण्डित हुए। हम लोग विदेशी राजाओं द्वारा तलवार से और बन्दीखाने में ठूंसे जाने तक दण्डित हुए हैं। वे राजा हमारा धन ले गए और हमें लज्जित किया। यह स्थिति आज भी वैसी ही है।

[8]किन्तु अन्त में अब तू हम पर कृपालु हुआ है। तूने हम लोगों में से कुछ को बन्धुवाई से निकल आने दिया है और इस पवित्र स्थान में बसने दिया है। यहोवा, तूने हमें नया जीवन दिया है और हमारी दासता से मुक्त किया है। [9]हाँ, हम दास थे, किन्तु तू हमें सदैव के लिए दास नहीं रहने देना चाहता था। तू हम पर कृपालु था। तूने फारस के राजाओं को हम पर कृपालु बनाया। तेरा मन्दिर ध्वस्त हो गया था। किन्तु तूने हमें नया जीवन दिया जिससे हम तेरे मन्दिर को फिर बना सकते हैं और नये की तरह पक्का कर सकते हैं। परमेश्वर, तूने हमें यरूशलेम और यहूदा की रक्षा के लिये परकोटे बनाने में सहायता की।

[10]हमारे परमेश्वर, अब हम तुझसे क्या कह सकते हैं? हम लोगों ने तेरी आज्ञा का पालन करना फिर छोड़ दिया है। [11]हमारे परमेश्वर, तूने अपने सेवकों अर्थात् नबियों का उपयोग किया और उन आदेशों को हमें दिया। तूने कहा था: "जिस देश में तुम रहने जा रहे हो और जिसे अपना बनाने जा रहे हो, वह भ्रष्ट देश है। यह उन बहुत बुरे कामों से भ्रष्ट हुआ है जिन्हें वहाँ रहने वालों ने किया है। उन लोगों ने इस देश में हर स्थान पर बहुत अधिक बुरे काम किये हैं। उन्होंने इस देश को अपने पापों से गंदा कर दिया है। [12]अत: इस्राएल के लोगों, अपने बच्चों को उनके बच्चों से विवाह मत करने दो। उनके साथ सम्बन्ध न रखो! और उनकी वस्तुओ की लालसा न करो! मेरे आदेशों का पालन करो जिससे तुम शक्तिशाली होगे और इस देश की अच्छी चीजों का भोग करोगे। तब तुम इस देश को अपना बनाये रखोगे और अपने बच्चों को दोगे।"

[13]जो बुरी घटनायें हमारे साथ घटीं वे हमारी अपनी गलतियों से घटीं। हम लोगों ने पाप के काम किये हैं और हम लोग बहुत अपराधी हैं। किन्तु हमारे परमेश्वर, तूने हमें उससे बहुत कम दण्ड दिया है जितना हमे मिलना चाहिये। हम लोगों ने बड़े भयानक काम किये हैं और हम लोगों को इससे अधिक दण्ड मिलना चाहिये। ऐसा होते हुए भी तूने हमारे लोगों में से कुछ को बन्धुवाई से मुक्त हो जाने दिया है। [14]अत: हम जानते हैं कि हमें तेरे आदेशों को तोड़ना नहीं चाहिये। हमें उन लोगों के साथ विवाह नहीं करना चाहिए। वे लोग बहुत बुरे काम करते हैं। परमेश्वर यदि हम लोग उन बुरे लोगों के साथ विवाह करते रहे तो हम जानते हैं कि तू हमें नष्ट कर देगा। तब इस्राएल के लोगों में से कोई भी जीवित नहीं बच पाएगा।

[15]यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, तू अच्छा है! और तू अब भी हम में से कुछ को जीवित रहने देगा। हाँ, हम अपराधी हैं! और अपने अपराध के कारण हम में किसी को भी तेरे सामने खड़े होने नहीं दिया जाना चाहिये।

लोग अपना पाप स्वीकार करते हैं

10 एज्रा प्रार्थना कर रहा था और पापों को स्वीकार कर रहा था। वह परमेश्वर के मन्दिर के सामने रो रहा था और झुक कर प्रणाम कर रहा था। जिस समय एज्रा यह कर रहा था उस समय इस्राएल के लोगों का एक बड़ा समूह स्त्री पुरुष और बच्चे उसके चारों ओर इकट्ठे हो गए। वे लोग भी जोर-जोर से रो रहे थे। [2]तब यहीएल के पुत्र शकन्याह ने जो एलाम के वंशजों में से था, एज्रा से बातें कीं। शकन्याह ने कहा, "हम लोग अपने परमेश्वर के भक्त नहीं रहे। हम लोगों ने अपने चारों ओर रहने वाले दूसरी जाति के लोगों के साथ विवाह किया। किन्तु यद्यपि हम यह कर चुके हैं तो भी इस्राएल के लिये आशा है। [3]अब हम अपने परमेश्वर के सामने उन सभी स्त्रियों और उनके बच्चों को वापस भेजने की वाचा करें। हम लोग यह एज्रा की सलाह मानने के लिए और उन लोगों की सलाह मानने के लिये करेंगे जो परमेश्वर के नियमों का सम्मान करते हैं। हम परमेश्वर के नियमों का पालन करेंगे। [4]एज्रा खड़े होओ, यह तुम्हारा उत्तरदायित्व है, किन्तु हम तुम्हारा समर्थन करेंगे। अत: साहसी बनो और इसे करो।"

[5]अत: एज्रा उठ खड़ा हुआ। उसने प्रमुख याजक, लेवीवंशियों और इस्राएल के सभी लोगों से जो कुछ उसने कहा, उसे करने की, प्रतिज्ञा कराई। [6]तब एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने से दूर हट गया। एज्रा एल्याशीब के पुत्र योहानान के कमरे में गया। जब तक एज्रा वहाँ रहा उसने भोजन नहीं किया और न ही पानी पीया। उसने यह किया क्योंकि वह तब भी बहुत दु:खी था। वह इस्राएल के उन लोगों के लिये दु:खी था जो यरूशलेम को वापस आए थे। [7]तब उसने एक सन्देश यहूदा और यरूशलेम में हर एक स्थान पर भेजा। सन्देश में बन्धुवाई से वापस लौटे सभी यहूदी लोगों को यरूशलेम में एक साथ इकट्ठा होने को कहा। [8]कोई भी व्यक्ति जो तीन दिन के भीतर यरूशलेम नहीं आएगा, उसे अपनी सारी धन सम्पत्ति दे देनी होगी। बड़े अधिकारियों और अग्रजों (प्रमुखों) ने यह निर्णय लिया और वह व्यक्ति उस व्यक्ति समूह का सदस्य नहीं रह जायेगा जिनके मध्य वह रहता होगा।

[9]अत: तीन दिन के भीतर यहूदा और बिन्यामीन के परिवार के सभी पुरूष यरूशलेम में इकट्ठे हुए और नवें महीने के बीसवें दिन सभी लोग मन्दिर के आँगन में आ गये। वे सभी इस सभा के विचारणीय विषय के कारण तथा भारी वर्षा से बहुत परेशान थे। [10]तब याजक एज्रा खड़ा हुआ और उसने उन लोगों से कहा, "तुम लोग परमेश्वर के प्रति विश्वासी नहीं रहे। तुमने विदेशी स्त्रियों के साथ विवाह किया है। तुमने वैसा करके इस्राएल को और अधिक अपराधी बनाया है। [11]अब तुम लोगों को यहोवा के सामने स्वीकार करना होगा कि तुमने पाप किया है। यहोवा तुम लोगों के पूर्वजों का परमेश्वर है। तुम्हें यहोवा के आदेश का पालन करना चाहिए। अपने चारों ओर रहने वाले लोगों तथा अपनी विदेशी पत्नियों से अपने को अलग करो।"

[12]तब पूरे समूह ने जो एक साथ इकट्ठा था, एज्रा को उत्तर दिया। उन्होंने ऊँची आवाज़ में कहा: "एज्रा तुम बिल्कुल ठीक कहते हो! हमें वह करना चाहिये जो तुम कहते हो। [13]किन्तु यहाँ बहुत से लोग हैं और यह वर्षा का समय है सो हम लोग बाहर खड़े नहीं रह सकते। यह समस्या एक या दो दिन में हल नहीं होगी क्योंकि हम लोगों ने बुरी तरह पाप किये हैं। [14]पूरे समूह के सभा की ओर से हमारे प्रमुखों को निर्णय करने दो। तब निश्चित समय पर हमारे नगरों का हर एक व्यक्ति जिसने किसी विदेशी स्त्री से विवाह किया है, यरूशलेम आए। उन्हें अपने अग्रजों (प्रमुखों) और नगरों के न्यायाधीशों के साथ यहाँ आने दिया जाये। तब हमारा परमेश्वर हम पर क्रोधित होना छोड़ देगा।"

[15]केवल थोड़े से व्यक्ति इस योजना के विरूद्ध थे। ये व्यक्ति थे असाहेल का पुत्र योनातान और तिकवा का पुत्र यहजयाह थे। लेवीवंशी मशुल्लाम और शब्बतै भी इस योजना के विरूद्ध थे।

[16]अत: इस्राएल के वे लोग, जो यरूशलेम में वापस आए थे, उस योजना को स्वीकार करने को सहमत हो गए। याजक एज्रा ने परिवार के प्रमुख पुरुषों को चुना। उसने हर एक परिवार समूह से एक व्यक्ति को चुना। हर एक व्यक्ति नाम लेकर चुना गया। दसवें महीने के प्रथम दिन जो लोग चुने गए थे हर एक मामले की जाँच के लिये बैठे। [17]पहले महीने के पहले दिन तक उन्होंने उन सभी व्यक्तियों पर विचार करना पूरा कर लिया जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था।

विदेशी स्त्रियों से विवाह करने वालों की सूची

[18]याजकों के वंशजों में ये नाम हैं जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया: योसादाक के पुत्र येशू के वंशजों, और येशू के भाईयों में से ये व्यक्ति : मासेयाह, एलीआज़र, यारीब और गदल्याह। [19]इन सभी ने अपनी–अपनी पत्नियों से सम्बन्ध–विच्छेद करना स्वीकार किया और तब हर एक ने अपने रेवड़ से एक–एक मेढ़ा अपराध भेंट के रूप में चढ़ाया। उन्होंने ऐसे अपने–अपने अपराधों के कारण किया।

[20]इम्मेर के वंशजों में से ये व्यक्ति: हनानी और जबद्याह।

[21]हारीम के वंशजों में से ये व्यक्ति थे: मासेयाह, एलीयाह, शमायाह, यहीएल और उज्जियाह।

[22]पशहूर के वंशजों में से ये व्यक्ति थे: एल्योएनै, मासेयाह, इशमाएल, नतनेल, योजाबाद और एलासा।

[23]लेवीवंशियों में से इन व्यक्तियों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया: योजाबाद, शिमी, केलायाह (इसे कलीता भी कहा जाता है)। पतह्याह, यहूदा और एलीआज़र।

[24]गायकों में केवल यह व्यक्ति है, जिसने विदेशी स्त्री से विवाह किया:

एल्याशीब द्वारपालों में से ये लोग हैं जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया: शल्लूम, तेलेम और ऊरी।

[25]इस्राएल के लोगों में से ये लोग हैं जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया:

परोश के वंशजों से ये व्यक्ति: रम्याह, यिज्जियाह, मल्कियाह, मियामीन, एलीआज़र, मल्कियाह और बनायाह।

[26]एलाम के वंशजों में से ये व्यक्ति : मत्तन्याह, जकर्याह, यहीएल, अब्दी, यरेमोत और एलियाह।

[27]जत्तू के वंशजों में से ये व्यक्ति एल्योएनै, एल्याशीब, मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद और अजीज़ा।

[28]बेबै के वंशजों में से ये व्यक्ति: यहोहानान, हनन्याह, जब्बै, और अतलै।

[29]बानी के वंशजों में से ये व्यक्ति: मशुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, याशूब, शाल और यरामोत।

[30]पहतमोआब के वंशजों में से ये व्यक्ति: अदना, कलाल, बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई और मनश्शे।

[31]हारीम के वंशजो में से ये व्यक्ति: एलिआज़र, यिश्शियाह, मल्कियाह, शमायाह, शिमोन, [32]बिन्यामीन, मल्लूक और शमर्याह।

[33]हाशूम के वंशजों में से ये व्यक्ति: मत्तनै, मत्तत्ता, जाबाद, एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी।

[34]बानी के वंशजों में से ये व्यक्ति: मादै, अम्राम, ऊएल; [35]बनायाह, बेदयाह, कलूही; [36]बन्याह, मरेमोत, एल्याशीब; [37]मत्तन्याह, मत्तनै, यासू;

[38]बिन्नूई के वंशजों में से ये व्यक्ति: शिमी [39]शेलेम्याह, नातान, अदायाह; [40]मक्नदबै, शाशै, शारै; [41]अजरेल, शेलेम्याह, शेमर्याह; [42]शल्लूम, अमर्याह, और योसेफ।

[43]नबो के वंशजों में से ये व्यक्ति : यीएल, मत्तित्याह, जाबाद, जबीना, यद्दो, योएल और बनायाह।

[44]इन सभी लोगों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था और इनमें से कुछ के इन पत्नियों से बच्चे भी थे।

नहेमायाह

नहेमायाह की विनती

1 ये हकल्याह के पुत्र नहेमायाह के वचन हैं: मैं, नहेमायाह, किसलवे नाम के महीने में शूशन नाम की राजधानी नगरी में था। यह वह समय था जब अर्तक्षत्र नाम के राजा के राज का बीसवाँ वर्ष* चल रहा था। [2]मैं जब अभी शूशन में ही था तो हनानी नाम का मेरा एक भाई और कुछ अन्य लोग यहूदा से वहाँ आये। मैंने उनसे वहाँ रह रहे यहूदियों के बारे में पूछा। ये वे लोग थे जो बंधुआपन से बच निकले थे और अभी तक यहूदा में रह रहे थे। मैंने उनसे यरूशलेम नगरी के बारे में भी पूछा था।

[3]हनानी और उसके साथ के लोगों ने बताया, "हे नहेमायाह, वे यहूदी जो बंधुआपन से बच निकले थे और जो यहूदा में रह रहे हैं, गहन विपत्ति में पड़े हैं। उन लोगों के सामने बहुत सी समस्याएँ हैं और वे बड़े लज्जित हो रहे हैं। क्यों? क्योंकि यरूशलेम का नगर–परकोटा ढह गया है और उसके प्रवेश द्वार आग से जल कर राख हो गये हैं।"

[4]मैंने जब यरूशलेम के लोगों और नगर परकोटे के बारे में वे बातें सुनीं तो मैं बहुत व्याकुल हो उठा। मैं बैठ गया और चिल्ला उठा। मैं बहुत व्याकुल था। बहुत दिन तक मैं स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए उपवास करता रहा। [5]इसके बाद मैंने यह प्रार्थना की:

हे यहोवा, हे स्वर्ग के परमेश्वर, तू महान है तथा तू शक्तिशाली परमेश्वर है। तू ऐसा परमेश्वर है जो उन लोगों के साथ अपने प्रेम की वाचा का पालन करता है जो तुझसे प्रेम करते हैं और तेरे आदेशों पर चलते हैं।

[6]अपनी आँखे और अपने कान खोल। कृपा करके तेरे सामने तेरा सेवक रात दिन जो प्रार्थना कर रहा है, उस पर कान दे। मैं तेरे सेवक, इस्राएल के लोगों के लिये विनती कर रहा हूँ। मैं उन पापों को स्वीकार करता हूँ जिन्हें हम इस्राएल के लोगों ने तेरे विरूद्ध किये हैं। मैंने तेरे विरुद्ध जो पाप किये हैं, उन्हें मैं स्वीकार कर रहा हूँ तथा मेरे पिता के परिवार के दूसरे लोगों ने तेरे विरुद्ध जो पाप किये हैं, मैं उन्हें भी स्वीकार करता हूँ। [7]हम इस्राएल के लोग तेरे लिये बहुत बुरे रहे हैं।

हमने तेरे उन आदेशों, अध्यादेशों तथा विधान का पालन नहीं किया है जिन्हें तूने अपने सेवक मूसा को दिया था।

[8]तूने अपने सेवक मूसा को जो शिक्षा दी थी, कृपा करके उसे याद कर। तूने उससे कहा था, "यदि इस्राएल के लोगों ने अपना विश्वास नहीं बनाये रखा तो मैं तुम्हें तितर–बितर करके दूसरे देशों में फैला दूँगा। [9]किन्तु यदि इस्राएल के लोग मेरी ओर लौटे और मेरे आदेशों पर चले तो मैं ऐसा करूँगा: मैं तुम्हारे उन लोगों को, जिन्हें अपने घरों को छोड़कर धरती के दूसरे छोरों तक भागने को विवश कर दिया गया था, वहाँ से मैं उन्हें इकट्ठा करके उस स्थान पर वापस ले आऊँगा जिस स्थान को अपनी प्रजा के लिये मैंने चुना है।"

[10]इस्राएल के लोग तेरे सेवक हैं और वे तेरे ही लोग हैं। तू अपनी महाशक्ति का उपयोग करके उन लोगों को बचा कर सुरक्षित स्थान पर ले आया है। [11]इसलिए हे यहोवा, कृपा करके अब मेरी विनती सुन। मैं तेरा सेवक हूँ और कृपा करके अपने सेवकों की विनती पर कान दे जो तेरे नाम को मान देना चाहते हैं। कृपा करके आज मुझे सहारा दे। जब मैं राजा से सहायता माँगू तब तू मेरी सहायता कर। मुझे सफल बना। मुझे सहायता दे ताकि मैं

किसलवे ... बीसवें वर्ष दिसंबर लगभग ई. पू. 444 वर्ष यह समय रहा होगा।

राजा के लिए प्रसन्नतादायक बना रहूँ। मैं राजा को दाखमधु सेवक* हूँ।

राजा अर्तक्षत्र का नहेमायाह को यरूशलेम भेजना

2 राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष के नीसान नाम के महीने* में राजा के लिये थोड़ी दाखमधु लाई गयी। मैंने उस दाखमधु को लिया और राजा को दे दिया। मैं जब पहले राजा के साथ था तो दुःखी नहीं हुआ था किन्तु अब मैं उदास था। [2]इस पर राजा ने मुझसे पूछा, "क्या तू बीमार है? तू उदास क्यों दिखाई दे रहा है? मेरा विचार है तेरा मन दुःख से भरा है।"

इससे मैं बहुत अधिक डर गया। [3]किन्तु यद्यपि मैं डर गया था किन्तु फिर भी मैंने राजा से कहा, "राजा जीवित रहें! मैं इसलिए उदास हूँ कि वह नगर जिसमें मेरे पूर्वज दफनाये गये थे उजाड़ पड़ा है तथा उस नगर के प्रवेश द्वार आग से भस्म हो गये हैं।"

[4]फिर राजा ने मुझसे कहा, "इसके लिये तू मुझसे क्या करवाना चाहता है?"

इससे पहले कि मैं उत्तर देता, मैंने स्वर्ग के परमेश्वर से विनती की। [5]फिर मैंने राजा को उत्तर देते हुए कहा, "यदि यह राजा को भाये और यदि मैं राजा के प्रति सच्चा रहा हूँ तो यहूदा के नगर यरूशलेम में मुझे भेज दिया जाये जहाँ मेरे पूर्वज दफ़नाये हुए हैं। मैं वहाँ जाकर उस नगर को फिर से बसाना चाहता हूँ।"

[6]रानी राजा के बराबर बैठी हुई थी, सो राजा और रानी ने मुझसे पुछा, "तेरी इस यात्रा में कितने दिन लगेंगे? यहाँ तू कब तक लौट आयेगा?"

राजा मुझे भेजने के लिए राजी हो गया। सो मैंने उसे एक निश्चित समय दे दिया। [7]मैंने राजा से यह भी कहा, "यदि राजा को मेरे लिए कुछ करने में प्रसन्नता हो तो मुझे यह माँगने की अनुमति दी जाये। कृपा करके परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों को दिखाने के लिये कुछ पत्र दिये जायें। ये पत्र मुझे इसलिए चाहिए ताकि वे राज्यपाल यहूदा जाते हुए मुझे अपने–अपने इलाकों से सुरक्षापूर्वक निकलने दें। [8]मुझे द्वारों, दीवारों, मन्दिरों के चारों ओर के प्राचीरों और अपने घर के लिये लकड़ी की भी आवश्यकता है। इसलिए मुझे आपसे आसाप के नाम भी एक पत्र चाहिए. आसाप आपके जंगलात का हाकिम है।"

सो राजा ने मुझे पत्र और वह हर वस्तु दे दी जो मैंने मांगी थी। क्योंकि परमेश्वर मेरे प्रति दयालु था इसलिए राजा ने यह सब कर दिया था।

[9]इस तरह मैं परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों के पास गया और उन्हें राजा के द्वारा दिये गये पत्र दिखाये। राजा ने सेना के अधिकारी और घुड़सवार सैनिक भी मेरे साथ कर दिये थे। [10]सम्बल्लत और तोबियाह नाम के दो व्यक्तियों ने मेरे कामों के बारे में सुना। वे यह सुनकर बहुत बेचैन और क्रोधित हुए कि कोई इस्राएल के लोगों की मदद के लिये आया है। सम्बल्लत होरोन का निवासी था और तोबियाह अम्मोनी का अधिकारी था।

नहेमायाह द्वारा यरूशलेम के परकोटे का निरीक्षण

[11-12]मैं यरूशलेम जा पहुँचा और वहाँ तीन दिन तक ठहरा और फिर कुछ लोगों को साथ लेकर मैं रात को बाहर निकल पड़ा। परमेश्वर ने यरूशलेम के लिये कुछ करने की जो बात मेरे मन में बसा दी थी उसके बारे में मैंने किसी को कुछ भी नहीं बताया था। उस घोड़े के सिवा, जिस पर मैं सवार था, मेरे साथ और कोई घोड़े नहीं थे। [13]अभी जब अंधेरा ही था तो मैं तराई द्वार से होकर गुज़रा। अजगर के कुएँ की तरफ़ मैंने अपना घोड़ा मोड़ दिया तथा मैं उस द्वार पर भी घोड़े को ले गया, जो कूड़ा फाटक की ओर खुलता था। मैं यरूशलेम के उस परकोटे का निरीक्षण कर रहा था जो टूटकर ढह चुका था। मैं उन द्वारों को भी देख रहा था जो जल कर राख हो चुके थे। [14]इसके बाद मैं सोते के फाटक की ओर अपने घोड़े को ले गया और फिर राजसरोवर के पास जा निकला। किन्तु जब मैं निकट पहुँचा तो मैंने देखा कि वहाँ मेरे घोड़े के निकलने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है। [15]इसलिए अन्धेरे में ही मैं परकोटे का निरीक्षण करते हुए घाटी की ओर ऊपर निकल गया और अन्त में मैं लौट पड़ा और तराई के फाटक से होता हुआ भीतर आ गया। [16]उन अधिकारियों और इस्राएल के महत्त्वपूर्ण लोगों को यह पता नहीं चला कि मैं कहाँ गया था। वे यह नहीं जान

दाखमधु सेवक यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण काम हुआ करता था! वह व्यक्ति राजा के बहुत निकट माना जाता था। वह राजा की मदिरा को चख कर यह प्रमाणित करता था कि उसमें विष तो नहीं मिला हैं।

निसान के महिने अर्थात् मार्च–अप्रेल ईसापूर्व 443

पाये कि मैं क्या कर रहा था। मैंने यहूदियों, याजकों, राजा के परिवार, हाकिमों अथवा जिन लोगों को वहाँ काम करना था, अभी कुछ भी नहीं बताया था।

[17]इसके बाद मैंने उन सभी लोगों से कहा, "यहाँ हम जिन विपत्तियों में पड़े हैं, तुम उन्हें देख सकते हो। यरूशलेम खण्डहरों का ढेर बना हुआ है तथा इसके द्वार आग से जल चुके हैं। आओ, हम यरूशलेम के परकोटे का फिर से निर्माण करें। इससे हमें भविष्य में फिर कभी लज्जित नहीं रहना पड़ेगा।"

[18]मैंने उन लोगों को यह भी कहा कि मुझ पर परमेश्वर की कृपा है। राजा ने मुझसे जो कुछ कहा था, उन्हें मैंने वे बातें भी बतायी। इस पर उन लोगों ने उत्तर देते हुए कहा, "आओ, अब हम काम करना शुरु करें!" सो उन्होंने उस उत्तम कार्य को करना आरम्भ कर दिया। [19]किन्तु होरोन के सम्बल्लत अम्मोनी के अधिकारी तोबियाह और अरब के गेशेम ने जब यह सुना कि फिर से निर्माण कर रहे हैं तो उन्होंने बहुत भद्दे ढंग से हमारा मजाक उड़ाया और हमारा अपमान किया। वे बोले, "यह तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम राजा के विरोध में हो रहे हो?"

[20]किन्तु मैंने तो उन लोगों से बस इतना ही कहा: "हमें सफल होने में स्वर्ग का परमेश्वर हमारी सहायता करेगा। हम परमेश्वर के सेवक हैं और हम इस नगर का फिर से निर्माण करेंगे। इस काम में तुम हमारी मदद नहीं कर सकते। यहाँ यरूशलेम में तुम्हारा कोई भी पूर्वज पहले कभी भी नहीं रहा। इस धरती का कोई भी भाग तुम्हारा नहीं है। इस स्थान में बने रहने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है!"

परकोटा बनाने वाले

3 वहाँ के महायाजक का नाम था एल्याशीब। एल्याशीब और उसके साथी (याजक) निर्माण का काम करने के लिये गये और उन्होंने भेड़ द्वार का निर्माण किया। उन्होंने प्रार्थनाएँ की और यहोवा के लिये उस द्वार को पवित्र बनाया। उन्होंने द्वार के दरवाजों को दीवार में लगाया। उन याजकों ने यरूशलेम के परकोटे पर काम करते हुए हम्मेआ के गुम्बद तथा हननेल के गुम्बद तक उसका निर्माण किया। उन्होंने प्रार्थनाएँ कीं और यहोवा के लिये अपने कार्य को पवित्र बनाया।

[2]याजकों के द्वारा बनाएँ गए परकोटे से आगे के परकोटे को यरीहों केलोगों ने बनाया और फिर यरीहो के लोगों द्वारा बनाये गये परकोटे के आगे के परकोटे का निर्माण इम्री के पुत्र जक्कूर ने किया।

[3]फिर हस्सना के पुत्रों ने मछली दरवाजे का निर्माण किया। उन्होंने वहाँ यथास्थान कड़ियाँ बैठायीं। उस भवन में उन्होंने दरवाजे लगाये और फिर दरवाजों पर ताले लगाये और मेखें जड़ीं।

[4]उरियाह के पुत्र मरेमोत ने परकोटे के आगे के भाग की मरम्मत की (उरियाह हक्कोस का पुत्र था)।

मशूल्लाम, जो बेरेक्याह का पुत्र था, उसने परकोटे के उससे आगे के भाग की मरम्मत की। (बेरेक्याह मशेजबेल का पुत्र था)।

बाना के पुत्र सादोक ने इससे आगे की दीवार को मज़बूत किया।

[5]दीवार के आगे का भाग तकोई लोगों द्वारा सुदृढ़ किया गया किन्तु तकोई के मुखियाओं ने अपने स्वामी नहेमायाह की देख रेख में काम करने से मना कर दिया।

[6]पुराने दरवाज़े की मरम्मत का काम योयादा और मशूल्लाम ने किया। योयादा पासेह का पुत्र था और मशूल्लाम बसोदयाह का पुत्र था। उन्होंने कड़ियों को यथास्थान बैठाया। उन्होंने कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाई और फिर दरवाज़े पर ताले लगाये तथा मेखें जड़ीं।

[7]इसके आगे के परकोटे की दीवार की मरम्मत गिबोनी लोगों और मिस्पा के रहने वालों ने बनाई। गिबोन की ओर से मलत्याह और मेरोनोती की ओर से यादोन ने काम किया। गिबोन और मेरोनोती वे प्रदेश है जिनका शासन इफ्रात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों द्वारा किया जाता था।

[8]परकोटे की दीवार के अगले भाग की मरम्मत हर्हयाह के पुत्र उजीएल ने की। उजीएल सुनार हुआ करता था। हनन्याह सुगन्ध बनाने का काम करता था। इन लोगों ने यरूशलेम के परकोटे की चौड़ी दीवार तक मरम्मत करके उसका निर्माण किया।

[9]इससे आगे की दीवार की मरम्मत हूर के पुत्र रपायाह ने की। रपायाह आधे यरूशलेम का प्रशासक था।

[10]परकोटे की दीवार का दूसरा हिस्सा हरुपम के पुत्र यदायाह ने बनाया। यदायाह ने अपने घर के ठीक बाद की दीवार की मरम्मत की। इसके बाद के हिस्से

की मरम्मत का काम हशब्नयाह के पुत्र हत्तूश ने किया। [11]हारीम के पुत्र मल्कियाह तथा पहत्मोआब के पुत्र हश्शूब ने परकोटे के अगले एक दूसरे हिस्से की मरम्मत की। इन ही लोगों ने भट्टों की मीनार की मरम्मत भी की।

[12]शल्लूम जो हल्लोहेश का पुत्र था, उसने परकोटे की दीवार के अगले हिस्से को बनाया। इस काम में उसकी पुत्रियों ने भी उसकी मदद की। शल्लूम यरूशलेम के दूसरे आधे हिस्से का राज्यपाल था।

[13]हानून नाम के एक व्यक्ति तथा जानोह नगर के निवासियों ने तराई फाटक की मरम्मत की। उन ही लोगों ने तराई फाटक का निर्माण किया। उन्होंने कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाई और फिर दरवाजों पर ताले लगाये तथा मेखें जड़ीं। उन्होंने पाँच सौ गज लम्बी परकोटे की दीवार की मरम्मत की। उन्होंने कुरड़ी–दरवाजे तक इस दीवार का निर्माण किया।

[14]रेकाब के पुत्र मल्कियाह ने कुरड़ी–दरवाज़े की मरम्मत की। मल्कियाह बेथक्केरेम ज़िले का हाकिम था। उसने दरवाजों की मरम्मत की, कब्जों पर जोड़ियाँ चड़ाई और फिर दरवाज़ों पर ताले लगवा कर मेखें जड़ीं।

[15]कोल्होज़े के पुत्र शल्लूम ने स्रोत द्वार की मरम्मत की। शल्लूम मिस्पा कस्बे का राज्यपाल था उसने उस दरवाजें को लगवाया और उसके ऊपर एक छत डलवाई। कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाई और फिर दरवाज़ों पर ताले लगवाकर मेखें जड़ीं। शल्लूम ने शेलह के तालाब की दीवार की मरम्मत भी करवाई। यह तालाब राजा के बगीचे के पास ही था। दाऊद की नगरी को उतरने वाली सीढ़ियों तक समूची दीवार की भी उसने मरम्मत करवाई।

[16]अजबूक के पुत्र नहेमायाह ने अगले हिस्से की मरम्मत करवाई। यह नहेमायाह बेतसूर नाम के ज़िले के आधे हिस्से का राज्यपाल था। उसने उस स्थान तक भी मरम्मत करवाई जो दाऊद के कब्रिस्तान के सामने पड़ता था। आदमियों के बनाये हुए तालाब तक, तथा वीरों के निवास नामक स्थान तक भी उसने मरम्मत का यह कार्य करवाया।

[17]लेवीवंश परिवार सूह के लोगों ने परकोटे के अगले हिस्से की मरम्मत की। लेवीवंश के इन लोगों ने बानी के पुत्र रहूम की देखरेख में काम किया। अगले हिस्से की मरम्मत हशब्याह ने की। हशब्याह कीला नाम कस्बे के आधे भाग का प्रशासक था। उसने अपने ज़िले की ओर से मरम्मत का यह काम करवाया।

[18]अगले हिस्से की मरम्मत उन के भाइयों ने की। उन्होंने हेनादाद के पुत्र बव्वै की अधीनता में काम किया। बव्वै कीला कस्बे के आधे हिस्से का प्रशासक था।

[19]इससे अगले हिस्से की मरम्मत का काम येशु के पुत्र एज़ेर ने किया। एज़ेर मिस्पा का राज्यपाल था। उसने शस्त्रागार से लेकर परकोटे की दीवार के कोने तक मरम्मत का काम किया। [20]इसके बाद बारुक के पुत्र जब्बै ने उससे अगले हिस्से की मरम्मत की। उसने उस कोने से लेकर एल्याशीब के घर के द्वार तक दीवार के इस हिस्से की बड़ी मेहनत से मरम्मत की। एल्याशीब महायाजक था। [21]उरियाह के पुत्र मरेमोत ने एल्याशीब के घर के दरवाज़े से लेकर उसके घर के अंत तक परकोटे के अगले हिस्से की मरम्मत की। उरियाह, हक्कोस का पुत्र था। [22]इसके बाद की दीवार के हिस्से की मरम्मत का काम उन याजकों द्वारा किया गया जो उस इलाके में रहते थे।

[23]फिर बिन्यामीन और हश्शूब ने अपने घरों के आगे के नगर परकोटे के हिस्सों की मरम्मत की। उसके घर के बाद की दीवार अनन्याह के पोते और मासेयाह के पुत्र अजर्याह ने बनवाई।

[24]फिर हेनादाद के पुत्र बिन्नूई ने अजर्याह के घर से लेकर दीवार के मोड़ और फिर कोने तक के हिस्से की मरम्मत की।

[25]इसके बाद ऊज़ै के पुत्र पालाल ने परकोटे के उस मोड़ से लेकर बुर्ज तक की दीवार की मरम्मत के लिये काम किया। यह मीनार राजा के ऊपरी भवन पर थी। यह राजा के पहरेदारों के आँगन के पास ही था। पालाल के बाद परोश के पुत्र पदायाह ने इस काम को अपने हाथों में लिया।

[26]मन्दिर के जो सेवकओपेल पहाड़ी पर रहा करते थे उन्होंने परकोटे के अगले हिस्से की जल–द्वार के पूर्वी ओर तथा उसके निकट के गुम्बद तक की मरम्मत का काम किया।

[27]विशाल गुम्बद से लेकर ओपेल की पहाड़ी से लगी दीवार तक के समूचे भाग की मरम्मत का काम तकोई के लोगों ने पूरा किया।

[28]अश्व–द्वार के ऊपरी हिस्से की मरम्मत का काम याजकों ने किया। हर याजक ने अपने घर के आगे की दीवार की मरम्मत की। [29]इम्मेर के पुत्र सादोक ने अपने

घर के सामने के हिस्से की मरम्मत की। फिर उससे अगले हिस्से की मरम्मत का काम शकन्याह के पुत्र समयाह ने पूरा किया समयाह पूर्वी फाटक का द्वारपाल था।

[30]दीवार के बचे हुए हिस्से की मरम्मत का काम शेलेम्याह के पुत्र हनन्याह और सालाप के पुत्र हानून ने पूरा किया (हानून सालाप का छठाँ पुत्र था)

बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम ने अपने घर के आगे की दीवार की मरम्मत की। [31]फिर मल्कियाह ने मन्दिर के सेवकों के घरों और व्यापारियों के घरों तक की दीवार की मरम्मत की। यानी निरीक्षण द्वार के सामने से दीवार के कोने के ऊपरी कक्ष तक के हिस्से की मरम्मत मल्कियाह ने की। [32]मल्कियाह एक सुनार हुआ करता था। कोने के ऊपरी कमरे से लेकर भेड़–द्वार तक की बीच की दीवार का समूचा हिस्सा सुनारों और व्यापारियों ने ठीक किया।

सम्बल्लत और तोबियाह

4 जब सम्बल्लत ने सुना कि हम लोग यरूशलेम के नगर परकोटे का पुन: निर्माण कर रहे हैं, तो वह बहुत क्रोधित और व्याकुल हो उठा। वह यहूदियों की हँसी उड़ाने लगा। [2]सम्बल्लत ने अपने मित्रों और सेना से शोमरोन में इस विषय को लेकर बातचीत की। उसने कहा, “ये शक्तिहीन यहूदी क्या कर रहे हैं? उनका विचार क्या है? क्या वे अपनी बलियाँ चढ़ा पायेंगे? शायद वे ऐसा सोचते हैं कि वे एक दिन में ही इस निर्माण कार्य को पूरा कर लेंगे। धूल मिट्टी के इस ढेर में से वे पत्थरों को उठा कर फिर से नया जीवन नहीं दे पायेंगे। ये तो अब राख और मिट्टी के ढेर बन चुके हैं!”

[3] अम्मोन का निवासी तोबियाह सम्बल्लत के साथ था। तोबियाह बोला, “ये यहूदी जो निर्माण कर रहे उसके बारे में ये क्या सोचते हैं? यदि कोई छोटी सी लोमड़ी भी उस दीवार पर चढ़ जाये तो उनकी वह पत्थरों की दीवार ढह जायेगी!”

[4]तब नहेमायाह ने परमेश्वर से प्रार्थना की और वह बोला, “हे हमारे परमेश्वर, हमारी विनती सुन। वे लोग हमसे घृणा करते हैं। सम्बल्लत और तोबियाह हमारा अपमान कर रहे हैं। इन बुरी बातों को तू उन ही के साथ घटा दे। उन्हें उन व्यक्तियों के समान लज्जित कर जिन्हें बन्दी के रूप में ले जाया जा रहा हो। [5]उनके उस अपराध को दूर मत कर अथवा उनके उन पापों को क्षमा मत कर जिन्हें उन्होंने तेरे देखते किया है। उन्होंने परकोटे को बनाने वालों का अपमान किया है तथा उनकी हिम्मत तोड़ी है।”

[6]हमने यरूशलेम के परकोटे का पुन: निर्माण किया है। हमने नगर के चारों ओर दीवार बनाई है। किन्तु उसे जितनी ऊँची होनी चाहिये थी, वह उससे आधी ही रह गयी है। हम यह इसलिए कर पाये कि हमारे लोगों ने अपने समूचे मन से इस कार्य को किया।

[7]किन्तु सम्बल्लत, तोबियाह, अरब के लोगों, अम्मोन के निवासियों और अशदोद के रहने वाले लोगों को उस समय बहुत क्रोध आया। जब उन्होंने यह सुना कि यरूशलेम के परकोटे पर लोग निरन्तर काम कर रहे हैं। उन्होंने सुना था कि लोग उस दीवार की दरारों को भर रहे हैं। [8]सो वे सभी लोग आपस में एकत्र हुए और उन्होंने यरूशलेम के विरुद्ध योजनाएँ बनाई। उन्होंने यरूशलेम के विरुद्ध गड़बड़ी पैदा करने का षड़यन्त्र रचा। उन्होंने यह योजना भी बनाई कि नगर के ऊपर चढ़ाई करके युद्ध किया जाये। [9]किन्तु हमने अपने परमेश्वर से विनती की और नगर परकोटे की दीवारों पर हमने पहरेदार बैठा दिये ताकि वे वहाँ दिन–रात रखवाली करें जिससे हम उन लोगों का मुकाबला करने के लिए तुरन्त तैयार रहें।

[10]उधर उसी समय यहूदा के लोगों ने कहा, “कारीगर लोग थकते जा रहे हैं। वहाँ बहुत सी धूल–मिट्टी और कूड़ा करकट पड़ा है। सो हम अब परकोटे पर निर्माण कार्य करते नहीं रह सकते [11]और हमारे शत्रु कह रहे हैं, ‘इससे पहले कि यहूदियों को इसका पता चले अथवा वे हमें देख लें, हम ठीक उनके बीच पहुँच जायेंगे। हम उन्हें मार डालेगें जिससे उनका काम रुक जायेगा।’”

[12]इसके बाद हमारे शत्रुओं के बीच रह रहे यहूदी हमारे पास आये और उन्होंने हमसे दस बार यह कहा, “हमारे चारों तरफ़ हमारे शत्रु हैं, हम जिधर भी मुड़ें, हर कहीं हमारे शत्रु फैले हैं।”

[13]सो मैंने परकोटे की दीवार के साथ–साथ जो स्थान सबसे नीचे पड़ते थे, उनके पीछे कुछ लोगों को नियुक्त कर दिया तथा मैंने दीवार में जो नाके पड़ते थे, उन पर भी लोगों को लगा दिये। मैंने समूची दीवारों को उनकी तलवारों, भालों और धनुष बाणों के साथ वहाँ लगा दिया। [14]मैंने सारी स्थिति का जायजा लिया और फिर खड़े

होकर महत्त्वपूर्ण परिवारों, हाकिमों तथा दूसरे लोगों से कहा, "हमारे शत्रुओं से डरो मत। हमारे स्वामी को याद रखो। यहोवा महान है और शक्तिशाली है! तुम्हें अपने भाइयों, अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों के लिए यह लड़ाई लड़नी ही है! तुम्हें अपनी पत्नियों और अपने घरों के लिए युद्ध करना ही होगा!"

[15]इसके बाद हमारे शत्रुओं के कान में यह भनक पड़ गयी कि हमें उनकी योजनाओं का पता चल चुका है। वे जान गये कि परमेश्वर ने उनकी योजनाओं पर पानी फेर दिया। इसलिए हम सभी नगर परकोटे की दीवार पर काम करने को वापस लौट गये। प्रत्येक व्यक्ति फिर अपने स्थान पर वापस चला गया और अपने हिस्से का काम करने लगा। [16]उस दिन के बाद से मेरे आधे लोग परकोटे पर काम करने लगे और मेरे आधे लोग भालों, ढालों, तीरों और कवचों से सुसज्जित होकर पहरा देते रहे। यहूदा के उन लोगों के पीछे जो नगर परकोटे की दीवार का निर्माण कर रहे थे, सेना के अधिकारी खड़े रहते थे। [17]सामान ढोनेवाले मजदूर एक हाथ से काम करते तो उनके दूसरे हाथ में हथियार रखते थे। [18]हर कारीगर की बगल में, जब वह काम करता हुआ होता, तलवार बंधी रहती थी। लोगों को सावधान करने के लिये बिगुल बजाने वाला व्यक्ति मेरे पास ही रहता। [19]फिर प्रमुख परिवारों, हाकिमों और शेष दूसरे लोगों को सम्बोधित करते हुए मैंने कहा, "यह बहुत बड़ा काम है। हम परकोटे के सहारे-सहारे फैले हुए हैं। हम एक दूसरे से दूर पड़ गये हैं। [20]सो यदि तुम बिगुल की आवाज़ सुनो, तो उस निर्धारित स्थान पर भाग आना। वहीं हम सब इकट्ठे होंगे और हमारे लिये परमेश्वर युद्ध करेगा!"

[21]इस प्रकार हम यरूशलेम की उस दीवार पर काम करते रहे और हमारे आधे लोगों ने भाले थामे रखे। हम सुबह की पहली किरण से लेकर रात में तारे छिटकने तक काम किया करते थे।

[22]उस अवसर पर लोगों से मैंने यह भी कहा था: "रात के समय हर व्यक्ति और उसका सेवक यरूशलेम के भीतर ही ठहरे ताकि रात के समय में वे पहरेदार रहें और दिन के समय कारीगर।" [23]इस प्रकार हममें से कोई भी कभी अपने कपड़े नहीं उतारता था न मैं, न मेरे साथी, न मेरे लोग और न पहरेदार! हर समय हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने दाहिने हाथ में हथियार तैयार रखा करता था।

नहेमायाह द्वारा गरीबों की सहायता

5 बहुत से गरीब लोग अपने यहूदी भाइयों के विरुद्ध शिकायत करने लगे थे। [2]उनमें से कुछ कहा करते थे, "हमारे बहुत से बच्चे हैं। यदि हमें खाना खाना है और जीवित रहना है तो हमें थोड़ा अनाज तो मिलना ही चाहिए!"

[3]दूसरे लोगों का कहना है, "इस समय अकाल पड़ रहा है। हमें अपने खेत और घर गिरवी रखने पड़ रहे हैं ताकि हमें थोड़ा अनाज मिल सके।"

[4]कुछ लोग यह भी कह रहे थे, "हमें अपने खेतों और अँगूर के बगीचों पर राजा का कर चुकाना पड़ता है किन्तु हम कर चुका नहीं पाते हैं इसलिए हमें कर चुकाने के वास्ते धन उधार लेना पड़ता है। [5]उन धनवान लोगों की तरफ़ देखो! हम भी वैसे ही अच्छे हैं जैसे वे हमारे पुत्र भी वैसे ही अच्छे हैं, जैसे उनके पुत्र। किन्तु हमें अपने पुत्र-पुत्री दासों के रूप में बेचने पड़ रहे हैं। हममें से कुछ को तो दासों के रूप में अपनी पुत्रियों को बेचना भी पड़ा है! ऐसा कुछ भी तो नहीं है जिसे हम कर सकें! हम अपने खेतों और अँगूर के बगीचों को खो चुके हैं! अब दूसरे लोग उनके मालिक हैं!"

[6]जब मैंने उनकी ये शिकायतें सुनीं तो मुझे बहुत क्रोध आया। [7]मैंने स्वयं को शांत किया और फिर धनी परिवारों और हाकिमों के पास जा पहुँचा। मैंने उनसे कहा, "तुम अपने ही लोगों को उस धन पर ब्याज चुकाने के लिये विवश कर रहे हो जिसे तुम उन्हें उधार देते हो! निश्चय ही तुम्हें ऐसा बन्द कर देना चाहिए!" फिर मैंने लोगों की एक सभा बुलाई [8]और फिर मैंने उन लोगों से कहा, "दूसरे देशों में हमारे यहूदी भाइयों को दासों के रूप में बेचा जाता था। उन्हें वापस खरीदने और स्वतन्त्र कराने के लिए हमसे जो बन पड़ा, हमने किया और अब तुम उन्हें फिर दासों के रूप में बेच रहे हो और हमें फिर उन्हें वापस लेना पड़ेगा!"

इस प्रकार वे धनी लोग और वे हाकिम चुप्पी साधे रहे। कहने को उनके पास कुछ नहीं था। [9]सो मैं बोलता चला गया। मैंने कहा, "तुम लोग जो कुछ कर रहे हो, वह उचित नहीं है! तुम यह जानते हो कि तुम्हें परमेश्वर से डरना चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए। तुम्हें ऐसे लज्जापूर्ण कार्य नहीं करने चाहिए जैसे दूसरे लोग करते हैं! [10]मेरे लोग, मेरे भाई और स्वयं मैं भी लोगों को

धन और अनाज़ उधार पर देते हैं। किन्तु आओ हम उन कर्जो पर ब्याज चुकाने के लिये उन्हें विवश करना बन्द कर दें! [11]इसी समय तुम्हें उन के खेत, अँगूर के बगीचें, जैतून के बाग और उनके घर उन्हें वापस लौटा देने चाहिए और वह ब्याज भी तुम्हें उन्हें लौटा देना चाहिए जो तुमने उनसे वसूल किया है। तुमने उधार पर उन्हें जो धन, जो अनाज़, जो नया दाखमधु और जो तेल दिया है, उस पर एक प्रतिशत ब्याज वसूल किया है!

[12]इस पर धनी लोगों और हाकिमों ने कहा, "हम यह उन्हें लौटा देंगे और उनसे हम कुछ भी अधिक नहीं माँगेंगे। हे नहेमायाह, तू जैसा कहता है, हम वैसा ही करेंगे।"

इसके बाद मैंने याजकों को बुलाया। मैंने धनी लोगों और हाकिमों से यह प्रतिज्ञा करवाई कि जैसा उन्होंने कहा है, वे वैसा ही करेंगे। [13]इसके बाद मैंने अपने कपड़ों की सलवटें फाड़ते हुए कहा, "हर उस व्यक्ति के साथ, जो अपने वचन को नहीं निभायेगा, परमेश्वर तद्नुकूल करेगा। परमेश्वर उन्हें उनके घरों से उखाड़ देगा और उन्होंने जिन भी वस्तुओं के लिये काम किया हैं वे सभी उनके हाथ से जाती रहेंगी! वह व्यक्ति अपना सब कुछ खो बैठेगा!"

मैंने जब इन बातों का कहना समाप्त किया तो सभी लोग इनसे सहमत हो गये। वे सभी बोले, "आमीन!" और फिर उन्होंने यहोवा की प्रशंसा की और इस प्रकार जैसा उन्होंने वचन दिया था, वैसा ही किया

[14]और फिर यहूदा की धरती पर अपने राज्यपाल काल के दौरान न तो मैंने और न मेरे भाइयों ने उस भोजन को ग्रहण किया जो राज्यपाल के लिये न्यायपूर्ण नहीं था। मैंने अपने भोजन को खरीदने के वास्ते कर चुकाने के लिए कभी किसी पर दबाव नहीं डाला। राजा अर्तक्षत्र केशासन काल के बीसवें साल से बत्तीसवें साल तक मैं वहाँ का राज्यपाल रहा। मैं बारह साल तक यहूदा का राज्यपाल रहा। [15]किन्तु मुझ से पहले के राज्यपालों ने लोगों के जीवन को दूभर बना दिया था। वे राज्यपाल लोगों पर लगभग एक पौंड चाँदी चालीस शकेल देने के लिए दबाव डाला करते थे। उन लोगों पर वे खाना और दाखमधु देने के लिये भी दबाव डालते थे। उन राज्यपालों के नीचे के हाकिम भी लोगों पर हुकूमत चलाते थे और जीवन को और अधिक दूभर बनाते रहते थे। किन्तु मैं क्योंकि परमेश्वर का आदर करता था, और उससे डरता था, इसलिए मैंने कभी वैसे काम नहीं किये। [16]नगर परकोटे की दीवार को बनाने में मैंने कड़ी मेहनत की थी। वहाँ दीवार पर काम करने के लिए मेरे सभी लोग आ जुटे थे!

[17]मैं, अपने भोजन की चौकी पर नियमित रूप से हाकिमों समेत एक सौ पचास यहूदियों को खाने पर बुलाया करता था। मैं चारों ओर के देशों के लोगों को भी भोजन देता था जो मेरे पास आया करते थे। [18]मेरे साथ मेरी मेज़ पर खाना खाने वाले लोगों के लिये इतना खाना सुनिश्चित किया गया था: एक बैल, छः तगड़ी भेड़ें और अलग–अलग तरीके के पक्षी। इसके अलावा हर दसों दिन मेरी मेज़ पर हर प्रकार का दाखमधु लाया जाता था। फिर भी मैंने कभी ऐसे भोजन की मांग नहीं की, जो राज्यपाल के लिए अनुमोदित नहीं था। मैंने अपने भोजन का दाम चुकाने के लिये कर चुकाने के वास्ते, उन लोगों पर कभी दबाव नहीं डाला। मैं यह जानता था कि वे लोग जिस काम को कर रहे हैं वह बहुत कठिन है। [19]हे परमेश्वर, उन लोगों के लिये मैंने जो अच्छा किया है, तू उसे याद रख।

अधिक समस्याएँ

6 इसके बाद सम्बल्लत, तोबियाह, अरब के रहने वाले गेशेम तथा हमारे दूसरे शत्रुओं ने यह सुना कि मैं परकोटे की दीवार का निर्माण करा चुका हूँ। हम उस दीवार में दरवाजे बना चुके थे किन्तु तब तक दरवाजों पर जोड़ियाँ नहीं चढ़ाई गई थीं। [2]सो सम्बल्लत और गेशेम ने मेरे पास यह सन्देश भिजवाया: "नहेमायाह, तुम आकर हमसे मिलो। हम ओनो के मैदान में कैफरीम नाम के कस्बे में मिल सकते हैं।" किन्तु उनकी योजना तो मुझे हानि पहुँचाने की थी।

[3]सो मैंने उनके पास इस उत्तर के साथ सन्देश भेज दिया: "मैं यहाँ महत्त्वपूर्ण काम में लगा हूँ। सो मैं नीचे तुम्हारे पास नहीं आ सकता। मैं सिर्फ इसलिए काम बन्द नहीं करना चाहूँगा कि तुम्हारे पास आकर तुमसे मिल सकूँ।"

[4]सम्बल्लत और गेमेश ने मेरे पास चार बार वैसे ही सन्देश भेजे और हर बार मैंने भी उन्हें वही उत्तर भिजवा दिया। [5]फिर पाँचवी बार सम्बल्लत ने उसी सन्देश के

साथ अपने सहायक को मेरे पास भेजा। उसके हाथ में एक पत्र था जिस पर मुहर नहीं लगी थी। [6]उस पत्र में लिखा था: "चारों तरफ एक अफवाह फैली हुई है। हर कहीं लोग उसी बात की चर्चा कर रहे हैं और गेमेश का कहना है कि वह सत्य है। लोगों का कहना है कि तू और यहूदी, राजा से बगावत की योजना बना रहे हो और इसी लिए तू यरूशलेम के नगर परकोटे का निर्माण कर रहे हो। लोगों का यह भी कहना है कि तू ही यहूदियों का नया राजा बनेगा।

[7]"और यह अफ़वाह भी है कि तूने यरूशलेम में अपने विषय में यह घोषणा करने के लिए भविष्यवक्ता भी चुन लिये हैं: 'यहूदा में एक राजा है!'

"नहेमायाह! अब मैं तुझे चेतावनी देता हूँ। राजा अर्तक्षत्र इस विषय की सुनवाई करेगा सो हमारे पास आ और हमसे मिल कर इस बारे में बातचीत कर।"

[8]सो मैंने सम्बल्लत के पास यह उत्तर भिजवा दिया: "तुम जैसा कह रहे हो वैसा कुछ नहीं हो रहा है। यह सब बातें तुम्हारी अपनी खोपड़ी की उपज हैं।"

[9]हमारे शत्रु बस हमें डराने का जतन कर रहे थे। वे अपने मन में सोच रहे थे, "यहूदी लोग डर जायेंगे और काम को चलता रखने के लिये बहुत निर्बल पड़ जायेंगे और फिर परकोटे की दीवार पूरी नहीं हो पायेगी।"

किन्तु मैंने अपने मन में यह विनती की, "परमेश्वर मुझे मजबूत बना।"

[10]मैं एक दिन दलायाह के पुत्र शमायाह के घर गया। दलायाह महेतबेल का पुत्र था। शमायाह को अपने घर में ही रुकना पड़ता था। शमायाह ने कहा,

"नहेमायाह आओ हम परमेश्वर के
मन्दिर के भीतर मिले।
आओ चले भीतर हम मन्दिर के और
बन्द द्वारों को कर लें आओ,
वैसा करें हम
क्यों? क्योंकि लोग है आ रहे मारने को तुझको।
वे आ रहे हैं आज रात मार
डालने को तुझको।"

[11]किन्तु मैंने शमायाह से कहा, "क्या मेरे जैसे किसी व्यक्ति को भाग जाना चाहिए? तुम तो जानते ही हो कि मेरे जैसे व्यक्ति को अपने प्राण बचाने के लिये मन्दिर में नहीं भाग जाना चाहिए। सो मैं वहाँ नहीं जाऊँगा!"

[12]मैं जानता था कि शमायाह को परमेश्वर ने नहीं भेजा है। मैं जानता था कि मेरे विरुद्ध वह इस लिये ऐसी झूठी भविष्यवाणियाँ कर रहा है कि तोबियाह और सम्बल्लत ने उसे वैसा करने के लिए धन दिया है। [13]शमायाह को मुझे तंग करने और डराने के लिये भाड़े पर रखा गया था। वे यह चाहते थे कि डर कर छिपने के लिये मन्दिर में भाग कर मैं पाप करू ताकि मेरे शत्रुओं के पास मुझे लज्जित करने और बदनाम करने का कोई आधार हो।

[14]हे परमेश्वर! तोबियाह और सम्बल्लत को याद रख। उन बुरे कामों को याद रख जो उन्होंने किये हैं। उस नबिया नोअद्याह तथा उन नबियों को याद रख जो मुझे भयभीत करने का जतन करते रहे हैं।

परकोटा पूरा हो गया

[15]इस प्रकार एलूल* नाम के महीने की पच्चीसवीं तारीख को यरूशलेम का परकोटा बनकर तैयार हो गया। परकोटे की दीवार को बनकर पूरा होने में बावन दिन लगे। [16]फिर हमारे सभी शत्रुओं ने सुना कि हमने परकोटा बनाकर तैयार कर लिया है। हमारे आस-पास के सभी देशों ने देखा कि निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। इससे उनकी हिम्मत टूट गयी क्योंकि वे जानते थे कि हमने यह कार्य हमारे परमेश्वर की सहायता से पूरा किया है।

[17]इसके अतिरिक्त उन दिनों जब वह दीवार बन कर पूरी हो चुकी थी तो यहूदा के धनी लोग तोबियाह को पत्र लिख-लिख कर पत्र भेजने लगे, तोबियाह उनके पत्रों का उत्तर दिया करता। [18]वे इन पत्रों को इसलिए भेजा करते थे कि यहूदा के बहुत से लोगों ने उसके प्रति वफादार बने रहने की कसम उठाई हुई थी। इसका कारण यह था कि वह आरह के पुत्र शकन्याह का दामाद था तथा तोबियाह के पुत्र यहोहानान ने मशुल्लाम की पुत्री से विवाह किया था। मशुल्लाम बेरेक्याह का पुत्र था, [19]तथा अतीतकाल में उन लोगों ने तोबियाह को एक विशेष वचन भी दे रखा था। सो वे लोग मुझसे कहते रहते थे कि तोबियाह कितना अच्छा है और उधर वे, जो काम मैं किया करता था, उनके बारे में तोबियाह को सूचना देते रहते थे। तोबियाह मुझे डराने के लिये पत्र भेजता रहता था।

एलूल यह समय लगभग 443 ई.पू. अगस्त-सितंबर है।

7 इस प्रकार हमने दीवार बनाने का काम पूरा किया। फिर हमने द्वार पर दरवाज़े लगाये। फिर हमने उस द्वार के पहरेदारों, मन्दिर के गायकों तथा लेवियों को चुना जो मन्दिर में गीत गाते और याजकों की मदद करते थे। [2]इसके बाद मैंने अपने भाई हनानी को यरूशलेम का हाकिम नियुक्त कर दिया। मैंने हनन्याह नाम के एक और व्यक्ति को चुना और उसे किलेदार नियुक्त कर दिया। मैंने हनानी को इसलिए चुना था कि वह बहुत ईमानदार व्यक्ति था तथा वह परमेश्वर से आम लोगों से कहीं अधिक डरता था। [3]तब मैंने हनानी और हनन्याह से कहा, "तुम्हें हर दिन यरूशलेम का द्वार खोलने से पहले घंटों सूर्य चढ़ जाने के बाद तक इंतजार करते रहना चाहिए और सूर्य छुपने से पहले ही तुम्हें दरवाजें बन्द करके उन पर ताला लगा देना चाहिए। यरूशलेम में रहने वाले लोगों में से तुम्हें कुछ और लोग चुनने चाहिए और उन्हें नगर की रक्षा करने के लिए विशेष स्थानों पर नियुक्त करो तथा कुछ लोगों को उनके घरों के पास ही पहरे पर लगा दो।"

लौटे हुए बन्दियों की सूची

[4]अब देखो, वह एक बहुत बड़ा नगर था जहाँ पर्याप्त स्थान था। किन्तु उसमें लोग बहुत कम थे तथा मकान अभी तक फिर से नहीं बनाये गये थे। [5]इसलिए मेरे परमेश्वर ने मेरे मन में एक बात पैदा की कि मैं सभी लोगों की एक सभा बुलाऊँ सो मैंने सभी महत्त्वपूर्ण लोगों को, हाकिमों को तथा सर्वसाधारण को एक साथ बुलाया। मैंने यह काम इसलिए किया था कि मैं उन सभी परिवारों की एक सूची तैयार कर सकूँ। मुझे ऐसे लोगों की पारिवारिक सूचियाँ मिलीं जो दासता से सबसे पहले छूटने वालों में से थे। वहाँ जो लिखा हुआ मुझे मिला, वह इस प्रकार है।

[6]ये इस क्षेत्र के वे लोग हैं जो दासत्व से मुक्त होकर लौटे (बाबेल का राजा, नबूकदनेस्सर इन लोगों को बन्दी बनाकर ले गया था। ये लोग यरूशलेम और यहूदा को लौटे। हर व्यक्ति अपने-अपने नगर में चला गया। [7]ये लोग जरुब्बाबेल, येशू, नहेमायाह, अजर्याह, राम्याह, नहमानी, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पेरेत, बिग्वै, नहूम और बाना के साथ लौटे थे।)

इस्राएल के लोगों की सूची:

8	पॅरोश के वंशज	2,172
9	सपत्याह के वंशज	372
10	आरह के वंशज	652
11	पहत्मोआब के वंशज (येशू और योआब के परिवार के संतानें):	2,818
12	एलाम के वंशज	1,254
13	जत्तू के वंशज	845
14	जक्कै के वंशज	760
15	बिन्नूई के वंशज	648
16	बेबै के वंशज	628
17	अजगाद की संतानें	2,322
18	अदोनीकाम के वंशज	667
19	बिग्वै के वंशज	2,067
20	आदीन के वंशज	655
21	आतेर के वंशज (हिजीकयाह के परिवार से):	98
22	हाशम के वंशज	328
23	बेसै के वंशज	324
24	हारीप के वंशज	112
25	गिबोन के वंशज	95
26	बेतलेहेम और नतोपा नगरों के लोग	188
27	अनातोत नगर के लोग	128
28	बेतजमावत नगर के लोग	42
29	किर्यत्यारीम, कपीर तथा बेरोत नगरों के लोग	743
30	रामा और गेबा नगरों के लोग	621
31	मिकपास नगर के लोग	122
32	बेतेल और ऐ नगर के लोग	123
33	नबो नाम के दूसरे नगर के लोग	52
34	एलाम नाम के दूसरे नगर के लोग	1,254
35	हरीम नाम के नगर के लोग	320
36	यरीहो नगर के लोग	345
37	लोद, हादीद और ओनो नाम के नगरों के लोग	721
38	सना नाम के नगर के लोग	3,930

[39]याजकों की सूची:

	यदायाह के वंशज (येशू के परिवार से):	973
40	इम्मेर के वंशज	1,052

[41] पशहूर के वंशज 1,247
[42] हारीम के वंशज 117
[43]लेवी परिवार समूह के लोगों की सूची:
येशू के वंशज (कदमीएल के द्वारा होदवा के परिवार से) 74
[44]गायकों की सूची:
आसाप के वंशज 148
[45]द्वारपालों की सूची:
शल्लूम, आतेर, तल्मोन, अक्कूब, हतीता और शोबै के वंशज 138
[46]मन्दिर के सेवकों की सूची:
सीहा, हसूपा और तब्बाओत की सन्तानें,
[47] केरोस, सीआ और पादोन की सन्तानें,
[48] लबाना, हगाबा और शल्मै के वंशज,
[49] हानान, गिद्देल, गहर के वंशज,
[50] राया, रसीन और नकोदा की संतानें,
[51] गज्जाम, उज्जा और पासेह के वंशज,
[52] बेसै, मूनीम, नपूशस के वंशज,
[53] बकबूक, हकूपा, हर्हूर के वंशज,
[54] बसलीत, महीदा और हर्षा के वंशज,
[55] बर्कोस, सीसरा और तेमेह की संन्ताने,
[56] नसीह और हतीपा के वंशज,
[57]सुलैमान के सेवकों के वंशज:
सोतै, सोपेरेत और परीदा के वंशज
[58] याला दर्कोन और गिद्देल के वंशज,
[59] शपत्याह, हत्तील, पोकेरेत-सवायीम और आमोन की संतानें,
[60] मन्दिर के सभी सेवक और सुलैमान के सेवकों के वंशज थे। 392

[61]यह उन लोगों की एक सूची है जो तेलमेलह, तेलहर्षा, करुब अद्दोन तथा इम्मेर नाम के नगरों से यरूशलेम आये थे। किन्तु ये लोग यह प्रमाणित नहीं कर सके कि उनके परिवार वास्तव में इस्राएल के लोगों से सम्बन्धित थे:
[62] दलायाह, तोबियाह और नेकोदा के वंशज थे। 642

[63]यह एक उनकी सूची है जो याजक थे। ये वे लोग थे जो यह प्रमाणित नहीं कर सके थे कि उनके पूर्वज वास्तव में इस्राएल के लोगों के वंशज थे।
होबायाह, हक्कोस और बर्जिल्लै के वंशज (बर्जिलै वह व्यक्ति था जिस ने गिलाद निवासी बर्जिल्लै की एक पुत्री से विवाह किया था। इसीलिए उसे यह नाम दिया गया था।)

[64]जिन लोगों ने अपने परिवारों के ऐतिहासिक दस्तावेजों को खोजा और वे उन्हें पा नहीं सके, उनका नाम याजकों की इस सूची में नहीं जोड़ा जा सका। वे शुद्ध नहीं थे सो याजक नहीं बन सकते थे। [65]सो राज्यपाल ने उन्हें एक आदेश दिया जिसके तहत वे किसी भी अति पवित्र भोजन को नहीं खा सकते थे। उस भोजन में से वे उस समय तक कुछ भी नहीं खा सकते थे जब तक ऊरीम और तुम्मीम का उपयोग करने वाला महायाजक इस बारे में परमेश्वर की अनुमति न ले ले।

[66-67]उस समूचे समूह में लोगों की संख्या 42,360 थी और उनके पास 7337 दास और दासियाँ थीं, उनके पास 245 गायक और गायिकाएँ थीं। [68-69]उनके पास 736 घोड़े थे, 245 खच्चर, 435 ऊँट तथा 6,720 गधे थे।

[70]परिवार के कुछ मुखियाओं ने उस काम को बढ़ावा देने के लिए धन दिया था। राज्यपाल के द्वारा निर्माण-कोष में उन्नीस पौंड सोना दिया गया था। उसने याजकों के लिये पचास कटोरे और पाँच सौ तीस जोड़ी कपड़े भी दिये थे। [71]परिवार के मुखियाओं ने तीन सौ पचहत्तर पौंड सोना उस काम को बढ़ावा देने के लिये निर्माण कोष में दिया और दो हजार दो सौ मीना चाँदी उनके द्वारा भी दी गयी। [72]दूसरे लोगों ने कुल मिला कर बीस हजार दर्कमोन सोना उस काम को बढ़ावा देने के लिए निर्माण कोष को दिया। उन्होंने दो हजार मीना चाँदी और याजकों के लिए सढ़सठ जोड़े कपड़े भी दिये।

[73]इस प्रकार याजक लेवी परिवार समूह के लोग, गायक और मन्दिर के सेवक अपने-अपने नगरों में बस गये और इस्राएल के दूसरे लोग भी अपने-अपने नगरों में रहने लगे और फिर साल के सातवें महीने तक इस्राएल के सभी लोग अपने-अपने नगरों में बस गये।

एज्रा द्वारा व्यवस्था-विधान का पढ़ा जाना

8 फिर साल के सातवें महीने में इस्राएल के सभी लोग आपस में इकट्ठे हुए। वे सभी एक थे और इस प्रकार एकमत थे जैसे मानो वे कोई एक व्यक्ति हो।

जलद्वार के सामने के खुले चौक में वे आपस में मिले। एज्रा नाम के शिक्षक से उन सभी लोगों ने मूसा की व्यवस्था के विधान की पुस्तक को लाने के लिये कहा। यह वही व्यवस्था का विधान है जिसे इस्राएल के लोगों को यहोवा ने दिया था। [2]सो याजक एज्रा परस्पर इकट्ठे हुए। उन लोगों के सामने व्यवस्था के विधान की पुस्तक को ले आया। उस दिन महीने की पहली तारीख़ थी और वह महीना वर्ष का सातवाँ महीना था। उस सभा में पुरुष थे, स्त्रियाँ थीं, और वे सभी थे जो बातों को सुन और समझ सकते थे। [3]एज्रा ने भोर के तड़के से लेकर दोपहर तक ऊँची आवाज में इस व्यवस्था के विधान की पुस्तक से पाठ किया। उस समय एज्रा का मुख उस खुले चौक की तरफ था जो जल–द्वार के सामने पड़ता था। उसने सभी पुरुषों, स्त्रियों और उन सभी लोगों के लिये उसे पढ़ा जो सुन–समझ सकते थे। सभी लोगों ने व्यवस्था के विधान की पुस्तक को सावधानी के साथ सुना और उस पर ध्यान दिया।

[4]एज्रा लकड़ी के उस ऊँचे मंच पर खड़ा था जिसे इस विशेष अवसर के लिये ही बनाया गया था। एज्रा के दाहिनी ओर मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह, हिल्कियाह और मासेयाह खड़े थे और एज्रा के बार्यी ओर पदायाह, मीशाएल, मल्कियाह, हाशूम, हश्बद्दाना, जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए थे।

[5]फिर एज्रा ने उस पुस्तक को खोला। एज्रा सभी लोगों को दिखायी दे रहा था क्योंकि वह सब लोगों से ऊपर एक ऊँचे मंच पर खड़ा था। एज्रा ने व्यवस्था के विधान की पुस्तक को जैसे ही खोला, सभी लोग खड़े हो गये । [6]एज्रा ने महान परमेश्वर यहोवा की स्तुति की और सभी लोगों ने अपने हाथ ऊपर उठाते हुए एक स्वर में कहा, "आमीन! आमीन!" और फिर सभी लोगों ने अपने सिर नीचे झुका दिये और धरती पर दण्डवत करते हुए यहोवा की उपासना की।

[7]लेवीवंश परिवार समूह के इन लोगों ने वहाँ खड़े हुए सभी लोगों को व्यवस्था के विधान की शिक्षा दी। लेवीवंश के उन लोगों के नाम थे: येशू, बानी, शेरेब्याह, यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदियाह, मासेयाह, कलिता, अजर्याह, योजबाद, हानान, और पलायाह। [8]लेवीवंश के इन लोगों ने परमेश्वर की व्यवस्था के विधान की पुस्तक का पाठ किया। उन्होंने उसकी ऐसी व्याख्या की कि लोग उसे समझ सकें। उसका अभिप्राय: क्या है, इसे खोल कर उन्होंने समझाया। उन्होंने यह इसलिए किया ताकि जो पढ़ा जा रहा है, लोग उसे समझ सकें।

[9]इसके बाद राज्यपाल नहेमायाह याजक तथा शिक्षक एज्रा तथा लेवीवंश के लोग जो लोगों को शिक्षा दे रहे थे, बोले। उन्होंने कहा, "आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का विशेष दिन है दुःखी मत होवो, विलाप मत करो।" उन्होंने ऐसा इसलिये कहा था कि लोग व्यवस्था के विधान में परमेश्वर का सन्देश सुनते हुए रोने लगे थे।

[10]नहेमायाह ने कहा, "जाओ, और जाकर उत्तम भोजन और शर्बत का आनन्द लो। और थोड़ा खाना और शर्बत उन लोगों को भी दो जो कोई खाना नहीं बनाते हैं। आज यहोवा का विशेष दिन है। दुःखी मत रहो! क्यों? क्योंकि परमेश्वर का आनन्द तुम्हें सुदृढ़ बनायेगा।"

[11]लेवीवंश परिवार के लोगों ने लोगों को शांत होने में मदद की। उन्होंने कहा, "चुप हो जाओ, शांत रहो, यह एक विशेष दिन है। दुःखी मत रहो।"

[12]इसके बाद सभी लोग उस विशेष भोजन को खाने के लिये चले गये। अपने खाने पीने की वस्तुओं, को उन्होंने आपस में बाँटा। वे बहुत प्रसन्न थे और इस तरह उन्होंने उस विशेष दिन को मनाया और आखिरकार उन्होंने यहोवा की उन शिक्षाओं को समझ लिया जिन्हें उनको समझाने का शिक्षक जतन किया करते थे।

[13]फिर महीने की दूसरी तारीख को सभी परिवारों के मुखिया, एज्रा, याजकों और लेवी वंशियो, से मिलने गये और व्यवस्था के विधान के वचनों को समझने के लिए सभी लोग शिक्षक एज्रा को घेर कर खड़े हो गये।

[14–15]उन्होंने समझ कर यह पाया कि व्यवस्था के विधान में यह आदेश दिया गया है कि साल के सातवें महीने में इस्राएल के लोगों को एक विशेष पवित्र पर्व मनाने के लिये यरूशलेम जाना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे अस्थायी झोपड़ियाँ बनाकर वहाँ रहें। लोगों को यह आदेश यहोवा ने मूसा के द्वारा दिया था। लोगों से यह अपेक्षा की गयी थी कि वे इसकी घोषणा करें। लोगों को चाहिए था कि वे अपने नगरों और यरूशलेम से गुजरते हुए इन बातों की घोषणा करें: "पहाड़ी प्रदेश में जाओ और वहाँ से तरह तरह के जैतून के पेड़ों की टहनियाँ ले कर आओ। हिना (मेंहदी), खजूर और छायादार सघन वृक्षों की शाखाएँ लाओ, फिर उन टहनियों से अस्थायी

आवास बनाओ। वैसा ही करो जैसा व्यवस्था का विधान बनाता है।"

[16]सो लोग बाहर गये और उन–उन पेड़ों की टहनियाँ ले आये और फिर उन टहनियों से उन्होंने अपने लिये अस्थायी झोपड़ियाँ बना लीं। अपने घर की छतों पर और अपने–अपने आँगनों में उन्होंने झोपड़ियाँ डाल लीं। उन्होंने मन्दिर के आँगन जल–द्वार के निकट के खुले चौक और एप्रैम द्वार के निकट झोपड़ियाँ बना लीं। [17]इस्राएल के लोगों की उस समूची टोली ने जो बंधुआपन से छूट कर आयी थी, आवास बना लिये और वे अपनी बनाई झोंपड़ियों में रहने लगे। नून के पुत्र यहोशू के समय से लेकर उस दिन तक इस्राएल के लोगों ने झोंपड़ियों के त्यौहार को कभी इस तरह नहीं मनाया था। हर व्यक्ति आनन्द मग्न था!

[18]उस पर्व के हर दिन एज्रा उन लोगों के लिये व्यवस्था के विधान की पुस्तक में से पाठ करता रहा। उस पर्व के पहले दिन से अंतिम दिन तक एज्रा उन लोगों को व्यवस्था का विधान पढ़ कर सुनाता रहा। इस्राएल के लोगों ने सात दिनों तक उस पर्व को मनाया। फिर व्यवस्था के विधान के अनुसार आठवें दिन लोग एक विशेष सभा के लिए परस्पर एकत्र हुए।

इस्राएल के लोगों द्वारा अपने पापों का अंगीकार

9 फिर उसी महीने की चौबीसवीं तारीख को एक दिन के उपवास के लिये इस्राएल के लोग परस्पर एकत्र हुए। उन्होंने यह दिखाने के लिये कि वे दुःखी और बेचैन हैं, उन्होंने शोक वस्त्र धारण किये, अपने अपने सिरों पर राख डाली। [2]वे लोग जो सच्चे इस्राएली थे, उन्होंने बाहर के लोगों से अपने आपको अलग कर दिया। इस्राएली लोगों ने मन्दिर में खड़े होकर अपने और अपने पूर्वजों के पापों को स्वीकार किया। [3]वे लोग वहाँ लगभग तीन घण्टे खड़े रहे और उन्होंने अपने यहोवा परमेश्वर की व्यवस्था के विधान की पुस्तक का पाठ किया और फिर तीन घण्टे और अपने यहोवा परमेश्वर की उपासना करते हुए उन्होंने स्वयं को नीचे झुका लिया तथा अपने पापों को स्वीकार किया।

[4]फिर लेवीवंशी येशू, बानी, कदमीएल, शबन्याह, बुन्नी, शेरेब्याह, बानी और कनानी सीढ़ियों पर खड़े हो गये और उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा को ऊँचे स्वर में पुकारा। [5]इसके बाद लेवीवंशी येशू, कदमीएल, बानी, हशबन्याह, शेरेब्याह, होदियाह शबन्याह और पतहयाह ने फिर कहा। वे बोले: "खड़े हो जाओ और अपने यहोवा परमेश्वर की स्तुति करो!"

परमेश्वर सदा से जावित था!
 और सदा ही जीवित रहेगा!
लोगों को चाहिये कि स्तुति करें
 तेरे महिमावान नाम की!
सभी आशीषों से और सारे गुण–गानों से
 नाम ऊपर उठे तेरा!

[6] तू तो परमेश्वर है!
 यहोवा, बस तू ही परमेश्वर है!
आकाश को तूने बनाया है!
 सर्वोच्च आकाशों की रचना की तूने,
 और जो कुछ है उनमें सब तेरा बनाया है!
धरती की रचना की तूने ही,
 और जो कुछ धरती पर है!
सागर को,
 और जो कुछ है सागर में!
तूने बनाया है हर किसी वस्तु को
जीवन तू देता है!
 सितारे सारे आकाश के, झुकते हैं सामने तेरे
 और उपासना करते हैं तेरी!

[7] यहोवा परमेश्वर तू ही है,
 अब्राम को तुने चुना था।
राह उसको तूने दिखाई थी, बाबेल के
 उर से निकल जाने की
तूने ही बदला था उसका नाम और
 उसे दिया नाम इब्राहीम का।

[8] तूने यह देखा था कि वह सच्चा और
 निष्ठावान था तेरे प्रति।
 कर लिया तूने साथ उसके वाचा एक
उसे देने को धरती कनान की वचन दिया तूने
 धरती, जो हुआ करती थी हित्तियों की
 और एमोरीयों की।
धरती, जो हुआ करती थी
 परिज्जियों, यबूसियों और गिर्गाशियों की!
किन्तु वचन दिया तूने उस धरती को देने का
 इब्राहीम की संतानों को

और अपना वचन वह पूरा किया तूने
क्यों? क्योंकि तू उत्तम है।

9 यहोवा देखा था तड़पते हुए तूने
हमारे पूर्वजों को मिस्र में।
पुकारते सहायता को लाल सागर के तट पर
तूने उनको सुना था!

10 फ़िरौन को तूने दिखाये थे चमत्कार।
तूने हाकिमों को उसके और
उसके लोगों को दिखाये थे अद्भुत कर्म।
तुझको यह ज्ञान था कि सोचा करते थे मिस्री
कि वे उत्तम हैं हमारे पूर्वजों से।
किन्तु प्रमाणित कर दिया तूने कि
तू कितना महान है!
और है उसकी याद बनी हुई
उनको आज तक भी!

11 सामने उनके लाल सागर को
विभक्त किया था तूने,
और वे पार हो गये थे
सूखी धरती पर चलते हुए!
मिस्र के सैनिक पीछा कर रहे थे उनका।
किन्तु डुबो दिया तूने था शत्रु को सागर में।
और वे डूब गये सागर में जैसे डूब जाता है
पानी में पत्थर।

12 मीनार जैसे बादल से दिन में
उन्हें राह तूने दिखाई
और अग्नि के खंभे का प्रयोग कर रात में
उनको तूने दिखाई राह।
मार्ग को तूने उनके इस प्रकार कर दिया ज्योर्तिमय
और दिखा दिया उनको कि कहाँ उन्हें जाना है।

13 फिर तू उतरा सीनै पहाड़ पर और
आकाश से तूने था उनको सम्बोधित किया।
उत्तम विधान दे दिया तूने उन्हें
सच्ची शिक्षा को था तूने दिया उनको।
व्यवस्था का विधान उन्हें तूने दिया
और तूने दिये आदेश उनको बहुत उत्तम!

14 तूने बताया उन्हें सब्त यानी अपने
विश्राम के विशेष दिन के विषय में।
तूने अपने सेवक मूसा के द्वारा
उनको आदेश दिये।
व्यवस्था का विधान दिया
और दी शिक्षाएँ।

15 जब उनको भूख लगी,
बरसा दिया भोजन था तूने आकाश से।
जब उन्हें प्यास लगी,
चट्टान से प्रकट किया तूने था जल को
और कहा तूने था उनसे
'आओ, ले लो इस प्रदेश को।'
तूने वचन दिया उन को
उठाकर हाथ यह प्रदेश देने का उनको!

16 किन्तु वे पूर्वज हमारे,
हो गये अभिमानी;
वे हो गये हठी थे।
कर दिया उन्होंने मना आज्ञाएँ मानने से तेरी।

17 कर दिया उन्होंने मना सुनने से।
वे भूले उन अचरज भरी बातों को
जो तूने उनके साथ की थी।
वे हो गये जिद्दी!
विद्रोह उन्होंने किया,
और बना लिया
अपना एक नेता जो
उन्हें लौटा कर ले जाये।
फिर उनकी उसी दासता में
किन्तु तू तो है दयावान परमेश्वर!
तू है दयालू और करुणापूर्ण तू है।
धैर्यवान है तू और प्रेम से भरा है तू!
इसलिये तूने था त्यागा नहीं उनको।

18 चाहे उन्होंने बना लिया सोने का बछड़ा
और कहा,
'बछड़ा अब देव है तुम्हारा'
इसी ने निकाला था तुम्हें मिस्र से बाहर
किन्तु उन्हें तूने त्यागा नहीं।'

19 तू बहुत ही दयालु है!
इसलिये तूने उन्हें मरुस्थल में त्यागा नहीं।
दूर उनसे हटाया नहीं दिन में
तूने बादल के खम्भें को
मार्ग तू दिखाता रहा उनको।
और रात में तूने था दूर किया नहीं
उनसे अग्नि के पुंज को !

प्रकाशित तू करता रहा रास्ते को उनके।
और तू दिखाता रहा कहाँ उन्हें जाना है!

20 निज उत्तम चेतना, तूने दी उनको
ताकि तू विवेकी बनाये उन्हें।
खाने को देता रहा, तू उनको 'मन्ना'
और प्यास को उनकी तू देता रहा पानी!

21 तूने रखा उनका ध्यान चालीस बरसों तक
मरुस्थल में।
उन्हें मिली हर वस्तु जिसकी उनको दरकार थी।
वस्त्र उनके फटे तक नहीं पैरों में उनके कभी
नहीं आई सूजन कभी किसी पीड़ा में।

22 यहोवा तूने दिये उनको राज्य,
और उनको दी जातियाँ
और दूर–सुदूर के स्थान थे उनको दिये
जहाँ बसते थे कुछ ही लोग
धरती उन्हें मिल गयी सीहोन की
सीहोन जो हशबोन का राजा था
धरती उन्हें मिल गयी ओग की
ओग जो बाशान का राजा था।

23 वंशज दिये तूने अनन्त उन्हें
जितने अम्बर में तारे हैं।
ले आया उनको तू उस धरती पर।
जिसके लिये उन के पूर्वजों को
तूने आदेश दिया था कि वे वहाँ जाएँ
और अधिकार करें उस पर।

24 धरती वह उन वंशजों ने ले ली।
वहाँ रह रहे कनानियों को उन्होंने हरा दिया।
पराजित कराया तूने उनसे उन लोगों को।
साथ उन प्रदेशों के और उन लोगों के
वे जैसा चाहे वैसा करें ऐसा था तूने करा दिया।

25 शक्तिशाली नगरों को उन्होंने हरा दिया।
कब्जा किया उपजाँऊ धरती पर उन्होंने।
उत्तम वस्तुओं से भरे हुए ले लिये उन्होंने घर;
खुदे हुए कुँओं को ले लिया उन्होंने।
ले लिए उन्होंने थे बगीचे अँगूर के।
जैतून के पेड़ और फलों के पेड़
भर पेट खाया वे करते थे सो वे हो गये मोटे।
तेरी दी सभी अद्भुत वस्तुओं का
आनन्द वे लेते थे।

26 और फिर उन्होंने मुँह फेर लिया तुझसे था।
तेरी शिक्षाओं को उन्होंने फेंक दिया दूर
तेरे नबियों को मार डाला उन्होंने था।
ऐसे नबियों को जो सचेत करते थे लोगों को।
जो जतन करते लोगों को मोड़ने का तेरी ओर।
किन्तु हमारे पूर्वजों ने भयानक
कार्य किये तेरे साथ।

27 सो तूने उन्हें पड़ने दिया उनके
शत्रुओं के हाथों में।
शत्रु ने बहुतेरे कष्ट दिये उनको
जब उन पर विपदा पड़ी
हमारे पूर्वजों ने थी दुहाई दी तेरी।
और स्वर्ग में तूने था सुन लिया उनको।
तू बहुत ही दयालु है
भेज दिया तूने था लोगों को
उनकी रक्षा के लिये।
और उन लोगों ने छुड़ा कर बचा लिया
उनको शत्रुओं से उनके।

28 किन्तु, जैसे ही चैन उन्हें मिलता था,
वैसे ही वे बुरे काम करने लग जाते बार बार।
सो शत्रुओं के हाथों उन्हें सौंप दिया तूने
ताकि वे करें उन पर राज।
फिर तेरी दुहाई उन्होंने दी
और स्वर्ग में तूने सुनी उनकी।
और सहायता उनकी की।
तू कितना दयालु है!
होता रहा ऐसा ही अनेकों बार!

29 तूने चेताया उन्हें।
फिर से लौट आने को तेरे विधान में
किन्तु वे थे बहुत अभिमानी।
उन्होंने नकार दिया तेरे आदेश को।
यदि चलता है कोई व्यक्ति नियमों पर तेरे
तो सचमुच जीएगा वह
किन्तु हमारे पूर्वजों ने तो तोड़ा था
तेरे नियमों को।
वे थे हठीले!
मुख फेर, पीठ दी थी उन्होंने तुझे!
तेरी सुनने से ही उन्होंने था मना किया।

30 तू था बहुत सहनशील, साथ हमारे पूर्वजों के,

तूने उन्हें करने दिया बर्ताव बुरा
अपने साथ बरसों तक।
सजग किया तूने उन्हें अपनी आत्मा से।
उनको देने चेतावनी भेजा था नबियों को तूने।
किन्तु हमारे पूर्वजों ने तो उनकी सुनी ही नहीं।
इसलिए तूने था दूसरे देशों के लोगों को
सौंप दिया उनको।

31 किन्तु तू कितना दयालु है!
तूने किया था नहीं पूरी तरह नष्ट उन्हें।
तूने तजा नहीं उनको था।
हे परमेश्वर! तू ऐसा दयालु
और करुणापूर्ण ऐसा है!

32 परमेश्वर हमारा है, महान परमेश्वर!
तू एक वीर है ऐसा जिससे भय लगता है
और शक्तिशाली है जो निर्भर करने योग्य तू है।
पालता है तू निज वचन को!
यातनाएँ बहुत तेरी भोग हम चुके हैं।
और दुःख हमारे हैं, महत्त्वपूर्ण तेरे लिये।
साथ में हमारे राजाओं के और
मुखियाओं के घटी थीं बातें बुरी।
याजकों के साथ में हमारे
और साथ में नबियों के और हमारे सभी लोगों
के साथ घटी थीं बातें बुरी।
अश्शूर के राजा से लेकर आज तक
वे घटी थीं बातें भयानक!

33 किन्तु हे परमेश्वर!
जो कुछ भी घटना है साथ
हमारे घटी उसके प्रति न्यायपूर्ण तू रहा।
तू तो अच्छा ही रहा, बुरे तो हम रहे।

34 हमारे राजाओं ने मुखियाओं, याजकों ने
और पूर्वजों ने नहीं पाला तेरी शिक्षाओं को!
उन्होंने नहीं दिया कान तेरे आदेशों,
तेरी चेतावनियाँ उन्होंने सुनी ही नहीं।

35 यहाँ तक कि जब पूर्वज हमारे
अपने राज्य में रहते थे,
उन्होंने नहीं सेवा की तेरी!
छोड़ा उन्होंने नहीं बुरे कर्मो का करना।
जो कुछ भी उत्तम वस्तु उनको तूने दी थी,
उनका रस वे रहे लेते।
आनन्द उस धरती का लेते रहे जो थी
सम्पन्न बहुत।
और स्थान बहुत सा था उनके पास!
किन्तु उन्होंने नहीं छोड़ी निज बुरी राह।

36 और अब हम बने दास हैं;
हम दास है उस धरती पर,
जिसको दिया तूने था हमारे पूर्वजों को।
तूने यह धरती थी उनको दी,
कि भोगे वे उसका फल और आनन्द लें
उन सभी चीज़ों का जो यहाँ उगती हैं ।

37 इस धरती की फसल है भरपूर
किन्तु पाप किये हमने सो हमारी उपज
जाती है पास उन राजाओं के
जिनको तूने बिठाया है सिर पर हमारे।
हम पर और पशुओं पर हमारे
वे राजा राज करते हैं
वे चाहते हैं जैसा भी वैसा ही करते हैं।
हम हैं बहुत कष्ट में।

38 सो, सोचकर इन सभी बातों के बारे में
हम करते हैं वाचा एक;
जो न बदला जायेगा कभी भी।
और इस वाचा की लिखतम हम लिखते हैं
और इस वाचा पर अंकित करते हैं अपना नाम
हाकिम हमारे, लेवी के वंशज
और वे करते हैं हस्ताक्षर
लगा कर के उस पर मुहर।

10 मुहर लगी वाचा पर निम्न लिखित नाम लिखे थे: हकल्याह का पुत्र राज्यपाल नहेमायाह। सिदकिय्याह, [2]सरायाह, अजर्याह, यिर्मयाह, [3]पशहूर, अमर्याह, मल्किय्याह, [4]हत्तूश, शबन्याह, मल्लूक, [5]हारीम, मरेमोत, ओबद्याह, [6]दानिय्येल, गिन्नतोन, बारुक, [7]मशूल्लाम, अबिय्याह, मिय्यामीन, [8]माज्याह, बिलगै और शमायाह। ये उन याजकों के नाम हैं जिन्होंने मुहर लगी वाचा पर अपने नाम अंकित किये।

[9]ये उन लेवीवंशियों के नाम हैं जिन्होंने मुहर लगी वाचा पर अपने नाम अंकित किये: आजन्याह का पुत्र येशू, हेनादाद का वंशज बिन्नई और कदमिएल [10]और उनके भाइयों के नाम ये थे: शबन्याह, होदियाह, कलीता,

पलायाह, हानान, [11]मीका, रहोब, हशब्याह [12]जक्कूर, शेरेब्याह, शकन्याह, [13]होदियाह, बानी और बनीन।

[14]ये नाम उन मुखियाओं के हैं जिन्होंने उस मुहर लगी वाचा पर अपने नाम अंकित किये: परोश, पहत–मोआब, एलाम, जत्तू बानी, [15]बुन्नी, अजगाद, बेबै, [16]अदोनिय्याह, बिग्वै, आदीन, [17]आतेर, हिजकिय्याह, अज्जूर, [18]होदियाह, हाशूम, बेसै, [19]हारीफ़, अनातोत, नोबै, [20]मगपिआश, मशूल्लाम, हेजीर, [21]मेशजबेल, सादोक, यद्दू, [22]पलत्याह, हानान, अनायाह, [23]होशे, हनन्याह, हश्शूब, [24]हल्लोहेश, पिलहा, शोबेक, [25]रहूम, हशब्ना, माशेयाह, [26]अहियाह, हानान, आनान, [27]मल्लूक, हारीम, और बाना।

[28–29]सो अब ये सभी लोग जिनके नाम ऊपर दिये गये हैं परमेश्वर के सामने यह विशेष प्रतिज्ञा लेतें हैं। यदि ये अपने वचन का पालन न करें तो उन के साथ बुरी बातें घटें! ये सभी लोग परमेश्वर के विधान का पालन करने की प्रतिज्ञा लेते हैं। परमेश्वर का यह विधान हमें परमेश्वर के सेवक मूसा द्वारा दिया गया था। ये सभी लोग सभी आदेशों, सभी नियमों और हमारे यहोवा परमेश्वर के उपदेशों का सावधानीपूर्वक पालन करने की प्रतिज्ञा लेते हैं। बाकी ये लोग भी प्रतिज्ञा लेते हैं: याजक लेवीवंशी, द्वारपाल, गायक, यहोवा के भवन के सेवक, तथा वे सभी लोग जिन्होंने आस–पास रहने वाले लोगों से, परमेश्वर के नियमों का पालन करने के लिए, अपने आपको अलग कर लिया था। उन लोगों की पत्नियाँ, पुत्र–पुत्रियाँ और हर वह व्यक्ति जो सुन समझ सकता था, अपने भाई बंधुओं, अपने मुखिया के साथ इस प्रतिज्ञा को अपनाने में सम्मिलित होते हैं कि परमेश्वर के सेवक मूसा के द्वारा दिये गये विधान का वे पालन करेंगे। यदि न करें तो उन पर विपत्तियाँ पड़े। वे सावधानी के साथ अपने स्वामी परमेश्वर के आदेशों, अध्यादेशों और निर्णयों का पालन करेंगे।

[30]“हम प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने आस–पास रहने वाले लोगों के साथ अपनी पुत्रियों का ब्याह नहीं करेगें और हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि उनकी लड़कियों के साथ अपने लड़कों को नहीं ब्याहेंगे।

[31]“हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सब्त के दिन काम नहीं करेंगे और यदि हमारे आस–पास रहने वाले लोग सब्त के दिन बेचने को अनाज या दूसरी वस्तुएँ लायेंगे तो विश्राम के उस विशेष दिन या किसी भी अन्य विशेष के दिन, उन वस्तुओं को नहीं खरीदेंगे। हर सातवें बरस हम न तो अपनी धरती को जोतेंगे और न बोएंगे, तथा हर सातवें वर्ष चक्र में हम दूसरे लोगों को दिये गये हर कर्ज को माफ़ कर देंगे।

[32]“परमेश्वर के भवन का ध्यान रखने के लिये उसके आदेशों पर चलने के उत्तरदायित्व को हम ग्रहण करेंगे। हम हर साल एक तिहाई शेकेल हमारे परमेश्वर के सम्मान में भवन की सेवा, उपासना को बढ़ावा देने के लिये दिया करेंगे। [33]इस धन से उस विशेष रोटी का खर्च चला करेगा जिसे याजक मन्दिर की वेदी पर अर्पित करता है। इस धन से ही अन्नबलि और होमबलि का खर्च उठाया जायेगा। सब्त नये चाँद के त्यौहार तथा दूसरी सभाओं पर इसी धन से खर्चा होगा। उन पवित्र चढ़ावों और पापबलियों पर खर्च भी इस धन से ही किया जायेगा जिनसे इस्राएल के लोग शुद्ध बनते हैं। इस धन से ही हर उस काम का खर्च चलेगा जो हमारे परमेश्वर के मन्दिर के लिए आवश्यक है।

[34]“हम यानी याजक, लेवीवंशी तथा लोगों ने मिल कर यह निश्चित करने के लिए पासे फैंके कि हमारे प्रत्येक परिवार को हर वर्ष एक निश्चित समय हमारे परमेश्वर के मन्दिर में लकड़ी का उपहार कब लाना है। वह लकड़ी जिसे हमारे परमेश्वर यहोवा की वेदी पर जलाया जाता है। हमें इस काम को अवश्य करना चाहिये क्योंकि यह हमारी व्यवस्था के विधान में लिखा है।

[35]“हम अपने फलों के हर पेड़ और अपनी फसल के पहले फलों को लाने का उत्तरदायित्व भी ग्रहण करते हैं। हर वर्ष यहोवा के मन्दिर में हम उस फल को लाकर अर्पित किया करेंगे।

[36]“क्योंकि व्यवस्था के विधान में यह भी लिखा है इसलिए हम इसे भी किया करेंगे: हम अपने पहलौठे पुत्र, पहलौठे गाय के बच्चे, भेड़ों और बकरियों के पहले छौनो को लेकर परमेश्वर के मन्दिर में आया करेंगे। उन याजकों के पास हम इन सब को ले जाया करेंगे जो वहाँ मन्दिर में सेवा आराधना करते हैं।

[37]“हम परमेश्वर के मन्दिर के भण्डार में याजकों के पास ये वस्तुएँ भी लाया करेंगे: पहला पिसा खाना, पहली अन्न–बलियाँ, हमारे सभी पेड़ों के पहले फल, हमारी नयी दाखमधु और तेल का पहला भाग। हम लेवीवंशियों के लिये अपनी उपज का दसवाँ हिस्सा भी दिया करेंगे

क्योंकि प्रत्येक नगर में जहाँ हम काम करते हैं, लेवी वंशी हमसे ये वस्तुएँ लिया करते हैं।

[38]“लेवीवंशी जब उपज का यह भाग एकत्र करें तो हारुन के परिवार का एक याजक उनके साथ अवश्य होना चाहिये, और फिर इन सब वस्तुओं के दसवें हिस्से को वहाँ से लेकर लेवीवंशियों को चाहिये कि वे उन्हें हमारे परमेश्वर के मन्दिर में ले आयें और उन्हें मन्दिर के खजाने की कोठियारों में रख दें। [39]इस्राएल के लोगों और लेवीवंशियों को चाहिये कि वे अपने उपहारों को कोठियारों में ले आयें। उपहार के अन्न, नयी दाखमधु और तेल को उन्हें वहाँ ले आना चाहिये। मन्दिर में काम आने वाली सभी वस्तुएँ उन कोठियारों में रखी जाती हैं और अपने कार्य पर नियुक्त याजक, गायक और द्वारपालों के कमरे भी वही थे।

“हम सभी प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अपने परमेश्वर के मन्दिर की देख–रेख किया करेंगे!”

यरूशलेम में नये लोगों का प्रवेश

11 देखो अब इस्राएल के लोगों के मुखिया यरूशलेम में बस गए। इस्राएल के दूसरे लोगों को यह निश्चित करना था कि नगर में और कौन लोग बसेंगे। इसलिए उन्होंने पासे फेंके जिसके अनुसार हर दस व्यक्तियों में से एक को यरूशलेम के पवित्र नगर में रहना था और दूसरे नौ व्यक्तियों को अपने–अपने मूल नगरों में बसना था। [2]यरूशलेम में रहने के लिए कुछ लोगों ने स्वयं अपने आप को प्रस्तुत किया। अपने आप को स्वयं प्रस्तुत करने के लिए दूसरे व्यक्तियों ने उन्हें धन्यवाद देते हुए आशीर्वाद दिये।

[3]ये प्रांतों के वे मुखिया हैं जो यरूशलेम में बस गये। (कुछ इस्राएल के निवासी कुछ याजक लेवीवंशी मन्दिर के सेवक और सुलैमान के उन सेवकों के वंशज अलग–अलग नगरों में अपनी निजी धरती पर यहूदा में रहा करते थे, [4]तथा यहूदा और बिन्यामीन परिवारों के दूसरे लोग यरूशलेम में ही रह रहे थे।)

यहूदा के वे वंशज जो यरूशलेम में बस गये थे, वे ये हैं: उज्जियाह का पुत्र अतायाह (उज्जियाह जकर्याह का पुत्र था, जकर्याह अमर्याह का पुत्र था, और अमर्याह, शपत्याह का पुत्र था। शपत्याह महललेल का पुत्र था और महललेल पेरेस का वंशज था)। [5]मासेयाह बारुक का पुत्र था (और बारुक कोल–होजे का पुत्र था। कोल होजे हजायाह का पुत्र था। हजायाह योयारीब के पुत्र अदायाह का पुत्र था। योयारीब का पिता जकर्याह था जो शिलोई का वंशज था)। [6]पेरेस के जो वंशज यरूशलेम में रह रहे थे, उनकी संख्या थी चार सौ अड़सठ। वे सभी लोग शूरवीर थे।

[7]बिन्यामीन के जो वंशज यरूशलेम में आयें वे ये थे: सल्लू जो योएद के पुत्र मशूल्लाम का पूत्र था (मशूल्लाम योएद का पुत्र था। योएद पदायाह का पुत्र था और पदायाह कोलायाह का पुत्र था। कोलायाह इतीएह के पुत्र मासेयाह का पुत्र था और इतीएह का पिता यशायाह था)। [8]जिन लोगों ने यशायाह का अनुसरण किया वे थे गब्बै और सल्लै। इनके साथ नौ सौ अटठाईस पुरुष थे। [9]जिक्री का पुत्र योएल इनका प्रधान था और हस्सनूआ का पुत्र यहूदा यरूशलेम नगर का उपप्रधान था।

[10]यरूशलेम में जो याजक बस गए, वे हैं: योयारीब का पुत्र यदायाह और याकीन, [11]तथा सरायाह जो हिलकियाह का पुत्र था। (हिल्किय्याह सादोक के पुत्र मशुल्लाम का पुत्र था और सादोक अहीतूब के पुत्र मरायोत का पुत्र। अहीतूब परमेश्वर के भवन की देखभाल करने वाला था)। [12]उनके भाइयों के आठ सौ बाइस पुरुष, जो भवन के लिये काम किया करते थे। तथा यरोहाम का पुत्र अदायाह। (यरोहाम, जो अस्सी के पुत्र पलल्याह का पुत्र था। अस्सी के पिता का नाम जकर्याह और दादा का नाम पशहूर था। पशहूर जो मल्किय्याह का पुत्र था) [13]अदायाह और उसके साथियों की संख्या दो सौ बयालीस थी। ये लोग अपने–अपने परिवारों के मुखिया थे। अमशै जो अज़रेल का पुत्र था। (अज़रेल अहजै का पुत्र था। अहजै का पिता मशिल्लेमोत था। जो इम्मेर का पुत्र था), [14]अमशै और उसके साथी वीर योद्धा थे। वे संख्या में एक सौ चौबीस थे। हग्गदोलीन का पुत्र जब्दिएल उनका अधिकारी हुआ करता था।

[15]ये वे लेवीवंशी हैं, जो यरूशलेम में जा बसे थे: शमायाह जो हश्शूब का पुत्र था (हश्शूब अज्रीकाम का पुत्र और हशब्याह का पोता था। हशब्याह बुन्नी का पुत्र था)। [16]शब्बत और योजाबाद (ये दो व्यक्ति लेवीवंशियों के मुखिया थे। परमेश्वर के भवन के बाहरी कामों के ये अधिकारी थे)। [17]मत्तन्याह, (मत्तन्याह मीका का पुत्र था और मीका जब्दी का, तथा जब्दी आसाप का। आसाप

गायक मण्डली का निर्देशक था। आसाप स्तुति गीत और प्रार्थनाओं के गायन में लोगों की अगुवाई किया करता था बकबुकियाह (बकबुकियाह अपने भाइयों के ऊपर दूसरे दर्जे का अधिकारी था)। और शम्मू का पुत्र अब्दा (शम्मू यदूतून का पोता और गालाल का पुत्र था)। [18]इस प्रकार दो सौ चौरासी लेवीवंशी यरूशलेम के पवित्र नगर में जा बसे थे।

[19]जो द्वारपाल यरूशलेम चले गये थे, उनके नाम ये थे: अक्कूब, तलमोन, और उनके साथी। ये लोग नगर–द्वारों पर नजर रखते हुए उनकी रखवाली किया करते थे। ये संख्या में एक सौ बहत्तर थे।

[20]इस्राएल के दूसरे लोग, अन्य याजक और लेवीवंशी यहूदा के सभी नगरों में रहने लगे। हर कोई व्यक्ति उस धरती पर रहा करता था जो उनके पूर्वजों की थी। [21]मन्दिर में सेवा आराधना करने वाले लोग ओपेल की पहाड़ी पर बस गये। सीहा और गिश्पा मन्दिर के उन सेवकों के मुखिया थे।

[22]यरूशलेम में लेवीवंशियों के ऊपर उज्जी को अधिकारी बनाया गया। उज्जी बानी का पुत्र था। (बानी, मीका का पड़पोता, मत्तन्याह का पोता, और हशब्याह का पुत्र था)। उज्जी आसाप का वंशज था। आसाप के वंशज वे गायक थे जिन पर परमेश्वर के मन्दिर की सेवा का भार था। [23]ये गायक राजा की आज्ञाओं का पालन किया करते थे। राजा की आज्ञाएँ इन गायकों को बताती थीं कि उन्हें प्रतिदिन क्या करना है। [24]वह व्यक्ति जो राजा को लोगों से सम्बन्धित मामलों में सलाह दिया करता था वह था पतहियाह (पतहियाह जेरह के वंशज मशेजबेल का पुत्र था और जेरह यहूदा का पुत्र था)।

[25]यहूदा के लोग इन कस्बों में बस गये: किर्यतर्बा और उसके आस–पास के छोटे–छोटे गाँव, दिबोन और उसके आसपास के छोटे–छोटे गाँव यकब्सेल और उसके आसपास के छोटे–छोटे गाँव [26]तथा येशू, मोलादा, बेतपेलेत, [27]हसर्यूआल बेरशेबा तथा उस के आसपास के छोटे–छोटे गाँव [28]और सिकलग, मकोना और उसके आसपास के छोटे गाँव। [29]एन्निम्मोन, सोरा, यर्मूत, [30]जानोह और अदुल्लाम तथा उसके आसपास के छोटे छोटे गाँव। लाकीश और उसके आसपास के खेतो, अजेका और उसके आसपास के छोटे–छोटे गाँव। इस प्रकार बरशेबा से लेकर हिन्नौम की तराई तक के इलाके में यहूदा के लोग रहने लगे।

[31]जिन स्थानों में बिन्यामीन के वंशज रहने लगे थे, वे ये थे: गेबा मिकमश, अय्या, बेतेल, ओर उसके आस–पास के छोटे –छोटे गाँव, [32]अनातोत, नोब, अनन्याह [33]हासोर रामा, गित्तैम, [34]हादीद, सबोईम, नबल्लत, [35]लोद, ओनो तथा कारीगरों की तराई। [36]लेवीवंशियों के कुछ समुदाय जो यहूदा में रहा करते थे बिन्यामीन की धरती पर बस गये थे।

याजक और लेवीवंशी

12 जो याजक और लेवीवंशी यहूदा की धरती पर लौट कर वापस आये थे, वे ये थे। वे शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल तथा येशू के साथ लौटे थे, उनकेनामों की सूची यह है: सरायाह, यिर्मयाह, एज्रा, [2]अमर्याह, मल्लूक, हत्तूश, [3]शकन्याह, रहूम, मरेमोत, [4]इद्दो, गिन्तोई, अबियाह, [5]मिय्यामीन, माद्याह, बिल्गा, [6]शमायाह, योआरीब, यदायाह, [7]सल्लू, आमोक, हिल्किय्याह और यदायाह। ये लोग याजकों और उनके सम्बन्धियों के मुखिया थे। येशू के दिनों में ये ही उनके मुखिया हुआ करते थे।

[8]लेवीवंशी लोग ये थे: येशु बिन्नुई, कदमिएल, शेरेब्याह, यहूदा और मत्तन्याह भी। मत्तन्याह के सम्बन्धियों समेत ये लोग परमेश्वर के स्तुति गीतों के अधिकारी थे। [9]बकबुकियाह और उन्नो, इन लेवीवंशियों के सम्बन्धी थे। ये दोनों सेवा आराधना के अवसरों पर उनके सामने खड़े रहा करते थे। [10]येशू योयाकीम का पिता था और योयाकीम एल्याशीब का पिता था और एल्याशीब के योयादा नाम का पुत्र पैदा हुआ। [11]फिर योयादा से योनातान और योनातान से यहूदा पैदा हुआ।

[12]योयाकीम के दिनों में ये पुरुष याजकों के परिवारों के मुखिया हुआ करते थे:

शरायाह के घराने का मुखिया मरायाह था
यिर्मयाह के घराने का मुखिया हनन्याह था।
[13] मश्शूलाम एज्रा के घराने का मुखिया था
अर्मयाह के घराने का
मुखिया था यहोहानान।
[14] योनातान मल्लूक के घराने का मुखिया था
योसेप शबन्याह के घराने का मुखिया था।
[15] अदना हारीम के घराने का मुखिया था।

हेलैक मेरेमोत के घराने का मुखिया था।
16 जकर्याह इद्दो के घराने का मुखिया था।
मशुल्लाम गिन्नतोन के घराने का मुखिया था।
17 जिक्री अबियाह के घराने का मुखिया था।
पिलतै मिन्यामीन और
मोअद्याह के घराने का मुखिया था।
18 शम्मू बिल्गा के घराने का शम्मू
बिल्गा के घराने का मुखिया था।
यहोनातान शामायह के घराने का मुखिया था।
19 मत्तैन योयारीब के घराने का मुखिया था।
उज्जी, यदायाह के घराने का मुखिया था।
20 कल्लै सल्लै के घराने का मुखिया था।
एबेर आमोक के घराने का मुखिया था।
21 हशब्याह हिल्किय्याह के घराने का मुखिया था
और नतनेल यदायाह के घराने का मुखिया था।

22फारस के राजा दारा के शासन काल में लेवी परिवारों के मुखियाओं और याजक घरानों के मुखियाओं के नाम एल्याशीब, योयादा, योहानान तथा यहूदा के दिनों में लिखे गये। 23लेवी परिवार के वंशजों के बीच जो परिवार के मुखिया थे, उनके नाम एल्याशीब के पुत्र योहानाम तक इतिहास की पुस्तक में लिखे गये।

24लेवियों के मुखियाओं के नाम ये थे: हशब्याह, शेरेब्याह, कदमिएल का पुत्र येशू उसके साथी। उनके भाई परमेश्वर को आदर देने के लिए स्तुतिगान के वास्ते उनके सामने खड़ा रहा करते थे। वे आमने–सामने इस तरह खड़े होते थे कि एक गायक समूह दूसरे गायक समूह के उत्तर में गीत गाता था। परमेश्वर के भक्त दाऊद की ऐसी ही आज्ञा थी।

25जो द्वारपाल द्वारों के पास के कोठियारों पर पहरा देते थे, वे ये थे: मत्तन्याह, बकबुकियाह, ओबाद्याह, मशुल्लाम, तलमोन और अक्कूब। 26ये द्वारपाल योयाकीम के दिनों में सेवा कार्य किया करते थे। योयाकीम योसादाक के पुत्र येशू का पुत्र था। इन द्वारपालों ने ही राज्यपाल नहेमायाह और याजक और विद्वान एज्रा के दिनों में सेवा कार्य किया था।

यरूशलेम के परकोटे का समर्पित किया जाना

27लोगों ने यरूशलेम की दीवार का समर्पण किया। उन्होंने सभी लेवियों को यरूशलेम में बुलाया। सो लेवी जिस किसी नगर में भी रह रहे थे, वहाँ से वे आये। यरूशलेम की दीवार के समर्पण को मनाने के लिए वे यरूशलेम आये। परमेश्वर को धन्यवाद देने और स्तुतिगीत गाने के लिए लेवीवंशी वहाँ आये। उन्होंने अपनी झाँझ, सारंगी और वीणाएँ बजाई।

28-29इसके अतिरिक्त जितने भी और गायक थे, वे भी यरूशलेम आये। वे गायक यरूशलेम के आसपास के नगरों से आये थे। वे नतोपातियों के गावों से, बेत–गिलगाल से, गेबा से और अजमाबेत के नगरों से आये थे। गायको, ने यरूशलेम के इर्द–गिर्द अपने लिए छोटी–छोटी बस्तियाँ बना रखी थीं।

30इस प्रकार याजकों और लेवियों ने एक समारोह के द्वारा अपने अपने को शुद्ध किया। फिर एक समारोह के द्वारा उन्होंने लोगों, द्वारों और यरूशलेम के परकोटे को भी शुद्ध किया।

31फिर मैंने यहूदा के मुखियाओं से कहा कि वे ऊपर जा कर परकोटे के शिखर पर खड़े हो जायें। मैंने परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिये दो बड़ी गायक–मण्डलियों का चुनाव भी किया। इनमें से एक गायक मण्डली को कुरडी–द्वार की ओर दाहिनी तरफ परकोटे के शिखर पर जाना आरम्भ था। 32होशायाह, और यहूदा के आधे मुखिया उन गायकों के पीछे हो लिये। 33अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम, 34यहूदा, बिन्यामीन, शमायाह, और यिर्मयाह भी उनके पीछे हो लिये थे। 35तुरही लिये कुछ याजक भी दीवार पर उनका अनुसरण करते हुए गये। जकर्याह भी उनके पीछे–पीछे था। (जकर्याह योहानान का पुत्र था। योहानान शमायाह का पुत्र था। शमायाह मत्तन्याह का पुत्र था। मत्तन्याह मीकायाह का पुत्र था। मीकायाह जक्कूर का पुत्र था और जक्कूर आसाप का पुत्र था।) 36वहाँ जकरिया के भाई शमायाह, अज़रेल, मिल्लै, गिल्लै, माऐ, नतनेल, यहूदा, और हनानी भी मौजूद थे। उनके पास परमेश्वर के पुरुष, दाऊद के बनाये हुए बाजे थे। परकोटे की दीवार को समर्पित करने के लिए जो लोग वहाँ थे, उनके समूह की अगुवाई, विद्वान एज्रा ने की। 37और वे स्रोत–द्वार पर चले गये। फिर वे सामने की सीढ़ियों से होते हुए दाऊद के नगर पैदल ही गये। फिर वे नगर परकोटे के शिखर पर जा पहुँचे और इस तरह दाऊद के घर पर से होते हुए वे पूर्वी जल द्वार पर पहुँच गए।

[38]गायकों की दूसरी मण्डली बांई ओर दूसरी दिशा में चल पड़ी। वे जब परकोटे के शिखर की ओर जा रहे थे, मैं उनके पीछे हो लिया। आधे लोग भी उनके पीछे हो लिये। भट्ठों के मीनारों को पीछे छोड़ते हुए वे चौड़े परकोटे पर चले गये। [39]इसके बाद वे इन द्वारों पर गये–एप्रैम द्वार, पुराना दरवाजा और मछली फाटक और फिर वे हननेल और हम्मेआ के बुर्जो पर गये। वे भेड़ द्वार तक जा पहुँचे और पहरेदारों के द्वार पर जा कर रुक गये। [40]फिर गायकों की वे दोनों मण्डलियाँ परमेश्वर के मन्दिर में अपने–अपने स्थानों को चली गयीं और मैं अपने स्थान पर खड़ा हो गया तथा आधे हाकिम मन्दिर में अपने–अपने स्थानों पर जा खड़े हुए। [41]फिर इसके बाद अपने–अपने स्थानों पर जो याजक जा खड़े हुए थे, उनके नाम हैं–एल्याकिम, मासेमाह, मिन्यामीन, मीकायाह, एल्योएनै, जकर्याह और हनन्याह। उन याजकों ने अपनी–अपनी तुरहियाँ भी ले रखी थीं। [42]इसके बाद ये याजक भी मन्दिर में अपने–अपने स्थानों पर आ खड़े हुए: मासेयाह, शमायाह, एलियाजर, उज्जी, यहोहानाम, मल्कियाह, एलाम और एजेर।

फिर दोनो, गायक मण्डलियों ने यिज्रहियाह की अगुवाई में गाना आरम्भ किया। [43]सो उस विशेष दिन, याजकों ने बहुत सी बलियाँ चढ़ाई। हर कोई बहुत प्रसन्न था। परमेश्वर ने हर किसी को आनन्दित किया था। यहाँ तक कि स्त्रियाँ और बच्चे तक बहुत उल्लसित और प्रसन्न थे। दूर दराज के लोग भी यरूशलेम से आते हुए आनन्दपूर्ण शोर को सुन सकते थे।

[44]उस दिन मुखियाओं ने कोठियारों के अधिकारियों की नियुक्ति की। ये कोठियार उन उपहार को रखने के लिए थे जिन्हें लोग अपने पहले फलों और अपनी फसल और आय के दसवें हिस्से के रुप में लाया करते थे। व्यवस्था के विधान के अनुसार लोगों को नगर के चारों ओर के खेतों और बगीचों से उपज का एक हिस्सा, याजकों और लेवियों के लिये लाना चाहिये। यहूदा के लोग जो याजक और लेवी सेवा कार्य करते थे उनके लिए ऐसा करने में प्रसन्नता का अनुभव करते थे। [45]याजकों और लेवियों ने अपने परमेश्वर के लिये अपना कर्तव्य पालन किया था। उन्होंने वे समारोह किये थे जिनसे लोग पवित्र हुए। गायकों और द्वारपालों ने भी अपने हिस्से का काम किया। दाऊद और उस के पुत्र सुलैमान ने जो भी आज्ञाएँ दी थीं, उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया था। [46](बहुत दिनों पहले दाऊद और आसाप के दिनों में वह धन्यवाद के गीतों और परमेश्वर की स्तुतियों तथा गायकों के मुखिया हुआ करते थे।)

[47]सो जरुब्बबेल और नहेमायाह के दिनों में गायकों और द्वारपालों के रखरखाव के लिये इस्राएल के सभी लोग प्रतिदिन दान दिया करते थे। दूसरे लेवियों के लिए भी वे विशेष दान दिया करते थे और फिर लेवी उस में से हारुन के वंशजों याजकों के लिये विशेष योगदान दिया करते थे।

नहेमायाह के अंतिम आदेश

13 उस दिन मूसा की पुस्तक का ऊँचे स्वर में पाठ किया गया ताकि सभी लोग उसे सुन लें। मूसा की पुस्तक में उन्हें यह नियम लिखा हुआ मिला: किसी भी अम्मोनी व्यक्ति को और किसी भी मोआबी व्यक्ति को परमेश्वर की सभाओं में सम्मिलित न होने दिया जाये। [2]यह नियम इस लिये लिखा गया था कि वे इस्राएल के लोगों को भोजन या जल नहीं दिया करते थे, तथा वे इस्राएल के लोगों को शाप देने के लिए बालाम को धन दिया[17] करते थे। किन्तु हमारे परमेश्वर ने उस शाप को हमारे लिए वरदान में बदल दिया [3]सो इस्राएल के लोगों ने इस नियम को सुन कर इसका पालन किया और पराये लोगों के वंशजों को इस्राएल से अलग कर दिया।

[4-5]किन्तु ऐसा होने से पहले एल्याशीब ने तोबियाह को मंदिर में एक बड़ी सी कोठरी दे दी। एल्याशीब परमेश्वर के मन्दिर के भण्डार घरों का अधिकारी याजक था, तथा एल्याशीब तोबियाह का घनिष्ठ मित्र भी था। पहले उस कोठरी का प्रयोग भेंट में चढ़ाये गये अन्न, सुगन्ध और मन्दिर के बर्तनों तथा अन्य वस्तुओं के रखने के लिये किया जाता था। उस कोठरी में लेवियों, गायकों और द्वारपालों के लिये अन्न के दसवें भाग, नयी दाखमधु और तेल भी रखा करते थे। याजकों को दिये गये उपहार भी उस कोठरी में रखे जाते थे। किन्तु एल्याशीब ने उस कोठरी को तोबियाह को दे दिया था।

[6]जिस समय यह सब कुछ हुआ था, उस समय मैं यरूशलेम में नहीं था। मैं बाबेल के राजा के पास वापस गया हुआ था। जब बाबेल के राजा अर्तक्षत्र के शासन का बत्तीसवाँ साल था, तब मैं बाबेल गया था। बाद में मैंने

राजा से यरूशलेम वापस लौट जाने की अनुमति माँगी [7]और इस तरह मैं वापस यरूशलेम लौट आया। यरूशलेम में एल्याशीब के इस दुखद करतब के बारे में मैंने सुना कि एल्याशीब ने हमारे परमेश्वर के मन्दिर के दालान की एक कोठरी तोबियाह को दे दी है। [8]एल्याशीब ने जो किया था, उससे मैं बहुत क्रोधित था। सो मैंने तोबियाह की वस्तुएँ उस कोठरी से बाहर निकाल फेंकी। [9]उन कोठरियों को स्वच्छ और पवित्र बनाने के लिये मैंने आदेश दिये और फिर उन कोठरियों में मैंने मंदिर के पात्र तथा अन्य वस्तुएँ भेंट में चढ़ाया हुआ अन्न और सुगन्धित द्रव्य फिर से वापस रखवा दिये।

[10]मैंने यह भी सुना कि लोगों ने लेवियों को उनका हिस्सा नहीं दिया है जिससे लेवीवंशी और गायक अपने खेतों में काम करने के लिये वापस चले गये हैं। [11]सो मैंने उन अधिकारियों से कहा कि वे गलत है। मैंने उन से पूछा, "तुमने परमेश्वर के मन्दिर की देखभाल क्यों नहीं की?" मैंने सभी लेवी वंशियों को इकट्ठा किया और मन्दिर में उनके स्थानों और उनके कामों पर वापस लौट आने को कहा। [12]इसके बाद यहूदा का हर कोई व्यक्ति उनके दसवें हिस्से का अन्न, नयी दाखमधु और तेल मन्दिर में लाने लगा। उन वस्तुओं को भण्डार गृहों में रख दिया जाता था।

[13]मैंने इन पुरुषों को भण्डार गृहों का कोठियारी नियुक्त किया: याजक, शेलेम्याह, विद्वान सादोक तथा पादायाह नाम का एक लेवी। साथ ही मैंने पत्तन्याह के पोते और जक्कूर के पुत्र हानान को उनका सहायक नियुक्त कर दिया। मैं जानता था कि उन व्यक्तियों का विश्वास किया जा सकता था। अपने से सम्बन्धित लोगों को सामान देना, उनका काम था।

[14]हे परमेश्वर, मेरे किये कामों के लिये तू मुझे याद रख और अपने परमेश्वर के मन्दिर तथा उसके सेवा कार्यो के लिये विश्वास के साथ मैंने जो कुछ किया है, उस सब कुछ को तू मत भुलाना।

[15]उन्हीं दिनों यहूदा में मैंने देखा कि लोग सब्त के दिन भी काम करते हैं। मैंने देखा कि लोग दाखमधु बनाने के लिए अँगूरों का रस निकाल रहे है। मैंने लोगों को अनाज लाते और उसे गधों पर लादते देखा। मैंने लोगों को नगर में अँगूर, अंजीर तथा हर तरह की वस्तुएँ ले कर आते हुए देखा। वे इन सब वस्तुओं को सब्त के दिन यरूशलेम में ला रहे थे। सो इसके लिए मैंने उन्हें चेतावनी दी। मैंने उनसे कह दिया कि उन्हें सब्त के दिन खाने की वस्तुएँ कदापि नहीं बेचनी चाहिए।

[16]यरूशलेम में कुछ सीरी नगर के लोग भी रहा करते थे। वे लोग मछली और दूसरी तरह की अन्य वस्तुएँ यरूशलेम में लाया करते और उन्हें सब्त के दिन बेचा करते और यहूदी उन वस्तुओं के खरीदा करते थे। [17]मैंने यहूदा के महत्त्वपूर्ण लोगों से कहा, कि वे ठीक नहीं कर रहे हैं। उन महत्त्वपूर्ण लोगों से मैंने कहा, "तुम यह बहुत बुरा काम कर रहे हो। तुम सब्त के दिन को भ्रष्ट कर रहे हो। तुम सब्त के दिन को एक आम दिन जैसा बनाये डाल रहे हो। [18]तुम्हें यह ज्ञान है कि तुम्हारे पूर्वजों ने ऐसे ही काम किये थे। इसीलिए हमारे परमेश्वर ने हम पर और हमारे नगर पर विपत्तियाँ भेजी थीं और विनाश ढाया था। अब तुम लोग तो वैसे काम और भी अधिक कर रहे हो, जिससे इस्राएल पर वैसी ही बुरी बातें और अधिक घटेंगी क्योंकि तुम सब्त के दिन को बर्बाद कर रहे हो और इसे ऐसा बनाये डाल रहे हो जैसे यह कोई महत्त्वपूर्ण दिन ही नहीं है।"

[19]सो हर शुक्रवार की शाम को साँझ होने से पहले ही मैंने यह किया कि द्वारपालों को आज्ञा देकर यरूशलेम के द्वार बंद करवा कर उन पर ताले डलवा दिये। मैंने यह आज्ञा भी दे दी कि जब तक सब्त का दिन पूरा न हो जाये द्वार न खोले जायें। कुछ अपने ही लोग मैंने द्वारों पर नियुक्त कर दिये। उन लोगों को यह आदेश दे दिया गया था कि सब्त के दिन यरूशलेम में कोई भी माल असबाव न आने पाये इसे वे सुनिश्चित कर लें।

[20]एक आध बार तो व्यापारियों और सौदागरों को यरूशलेम से बाहर ही रात गुजारनी पड़ी। [21]किन्तु मैंने उन व्यापारियों और सौदागरों को चेतावनी दे दी। मैंने उनसे कहा, "परकोटे की दीवार के आगे न ठहरा करो और यदि तुम फिर ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें बन्दी बना लूँगा।" सो उस दिन के बाद से सब्त के दिन अपना सामान बेचने के लिए वे फिर कभी नहीं आये।

[22]फिर मैंने लेवीवंशियों को आदेश दिया कि वे स्वयं को पवित्र करें। ऐसा कर चुकने के बाद ही उन्हें द्वारों के पहरे पर जाना था। यह इसलिये किया गया कि सब्त के दिन को एक पवित्र दिन के रुप में रखा गया है, इसे सुनिश्चित कर लिया जाये।

हे परमेश्वर! इन कामों को करने के लिए तू मुझे याद रख। मेरे प्रति दयालु हो और मुझ पर अपना महान प्रेम प्रकट कर!

[23]उन्हीं दिनों मैंने यह भी देखा कि कुछ यहूदी पुरुषों ने आशदोद, अम्मोन और मोआब प्रदेशों की स्त्रियों से विवाह किया हुआ है, [24]और उन विवाहों से उत्पन्न हुए आधे बच्चे तो यहूदी भाषा को बोलना तक नहीं जानते हैं। वे बच्चे अश्दौद, अम्मोन और मोआब की बोली बोलते थे। [25]सो मैंने उन लोगों से कहा कि वे गलती पर हैं। उन पर परमेश्वर का कहर बरसा हो। कुछ लोगों पर तो मैं चोट ही कर बैठा और मैंने उनके बाल उखाड़ लिये। परमेश्वर के नाम पर एक प्रतिज्ञा करने के लिए मैंने उन पर दबाव डाला। मैंने उनसे कहा, "उन पराये लोगों के पुत्रों के साथ तुम्हें अपनी पुत्रियों को ब्याह नहीं करना है और उन पराये लोगों की पुत्रियों को भी तुम्हें अपने पुत्रों से ब्याह नहीं करने देना है। उन लोगों की पुत्रियों के साथ तुम्हें ब्याह नहीं करना है। [26]तुम जानते हो कि सुलैमान से इसी प्रकार के विवाहों ने पाप करवाया था। तुम जानते हो कि किसी भी राष्ट्र में सुलैमान जैसा महान कोई राजा नहीं हुआ। सुलैमान को परमेश्वर प्रेम करता था और परमेश्वर ने ही सुलैमान को समूचे इस्राएल का राजा बनाया था। किन्तु इतना होने पर भी विजातीय पत्नियों के कारण सुलैमान तक को पाप करने पड़े [27]और अब क्या, हम तुम्हारी सुनें और वैसा ही भयानक पाप करें और विजाति औरतों के साथ विवाह करके अपने परमेश्वर के प्रति सच्चे नहीं रहे।"

[28]योयादा का एक पुत्र होरोन के सम्बल्लत का दामाद था। योयादा महायाजक एल्याशीब का पुत्र था। सो मैंने योयादा के उस पुत्र पर दबाव डाला कि वह मेरे पास से भाग जाये। [29]हे मेरे परमेश्वर! उन्हें याद रख क्योंकि उन्होंने याजकपन को भ्रष्ट किया था। उन्होंने याजकपन को ऐसा बना दिया था जैसे उसका कोई महत्व ही न हो। तूने याजकों और लेवियों के साथ जो वाचा की थी, उन्होंने उसका पालन नहीं किया।

[30]सो मैंने हर किसी बाहरी वस्तु से याजकों और लेवियों को पवित्र एवं स्वच्छ बना दिया है तथा मैंने प्रत्येक पुरुष को उसके अपने कर्तव्य और दायित्व भी सौंपे हैं। [31]मैंने लकड़ी के उपहारों और एक निश्चित समय पर पहले फलों को लाने सम्बन्धी योजनाएँ भी बना दी हैं।

हे मेरे परमेश्वर! इन अच्छे कामों के लिये तू मुझे याद रख।

एस्तेर

महारानी वशती द्वारा राजा की आज्ञा का उल्लंघन

1 यह उन दिनों की बात है जब क्षयर्ष नाम का राजा राज्य किया करता था। भारत से लेकर कूश के एक सौ सत्ताईस प्रांतों पर उसका राज्य था। [2]महाराजा क्षयर्ष, शूशन नाम की नगरी, जो राजधानी हुआ करती थी, में अपने सिंहासन से शासन चलाया करता था।

[3]अपने शासन के तीसरे वर्ष क्षयर्ष ने अपने अधिकारियों और मुखियाओं को एक भोज दिया। फारस और मादै के सेना नायक और दूसरे महत्वपूर्ण मुखिया उस भोज में मौजूद थे। [4]यह भोज एक सौ अस्सी दिन तक चला। इस समय के दौरान महाराजा क्षयर्ष अपने राज्य के विपुल वैभव का लगातार प्रदर्शन करता रहा। वह हर किसी को अपने महल की सम्पत्ति और उसका भव्य सौन्दर्य दिखाता रहा। [5]उसके बाद जब एक सौ अस्सी दिन का यह भोज समाप्त हुआ तो, महाराजा क्षयर्ष ने एक और भोज दिया जो सात दिन तक चला। इस भोज का आयोजन महल के भीतरी बगीचे में किया गया था। भोज में शूशन राजधानी नगरी के सभी लोगों को बुलाया गया था। इनमें महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण और जिनका कोई भी महत्व नहीं था, ऐसे साधारण लोग भी बुलाये गये थे। [6]उसके भीतरी बगीचे में सफेद और नीले रंग के कपड़े, कमरे के चारों ओर लगे थे। उन कपड़ों को सफेद सूत और बैंगनी रंग की डोरियों से चाँदी के छल्लो और संगमरमर के खम्भों पर टाँका गया था। वहाँ सोने और चाँदी की चौकियाँ थीं। ये चौकियाँ लाल और सफेद रंग की ऐसी स्फटिक की भूमितल में जड़ी हुई थीं जिसमें संगमरमर, प्रकेलास, सीप और दूसरे मूल्यवान पत्थर जड़े थे। [7]सोने के प्यालों में दाखमधु परोसा गया था। हर प्याला एक दूसरे से अलग था। वहाँ राजा का दाखमधु पर्याप्त मात्रा में था। कारण यह था कि वह राजा बहुत उदार था। [8]महाराजा ने अपने सेवकों को आज्ञा दे रखी थी कि हर किसी मेहमान को, जितना दाखमधु वह चाहे, उतनी दिया जाये और दाखमधु परोसने वालों ने राजा के आदेश का पालन किया था।

[9]राजा के महल में ही महारानी वशती ने भी स्त्रियों को एक भोज दिया।

[10-11]भोज के सातवें दिन महाराजा क्षयर्ष दाखमधु पीने के कारण मग्न था। उसने उन सात खोजों को आज्ञा दी जो उसकी सेवा किया करते थे। इन खोजों के नाम थे: महूमान, बिजता, हबौना, बिगता, अबगता, जेतेर और कर्कस। उन सातों खोजों को महाराजा ने आज्ञा दी कि वे राजमुकुट धारण किये हुए महारानी वशती को उसके पास ले आयें। उसे इसलिए आना था कि वह मुखियाओं और महत्वपूर्ण लोगों को अपनी सुन्दरता दिखा सके। वह सचमुच बहुत सुन्दर थी।

[12]किन्तु उन सेवकों ने जब राजा के आदेश की बात महारानी वशती से कही तो उसने वहाँ जाने से मना कर दिया। इस पर वह राजा बहुत क्रोधित हुआ। [13-14]यह एक परम्परा थी कि राजा को नियमों और दण्ड के बारे में विद्वानों की सलाह लेनी होती थी। सो महाराजा क्षयर्ष ने नियम को समझने वाले बुद्धिमान पुरुषों से बातचीत की। ये ज्ञानी पुरुष महाराजा के बहुत निकट थे। इनके नाम थे: कर्शना, शेतार, अदमाता, तर्शीश, मेरेस, मर्सना और ममूकान। ये सातों फारस और मादै के बहुत महत्वपूर्ण अधिकारी हुआ करते थे। इनके पास राजा से मिलने का विशेष अधिकार था। राज्य में ये अत्यन्त उच्च अधिकारी थे। [15]राजा ने उन लोगों से पूछा, "महारानी वशती के साथ क्या किया जाये? इस बारे में नियम क्या कहता है? उसने महाराजा क्षयर्ष की उस आज्ञा को मानने से मना कर दिया जिसे खोजे उसके पास ले गये थे।"

[16]इस पर अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में महाराजा से ममूकान ने कहा, "महारानी वशती ने अपराध किया

है। महारानी ने महाराजा के साथ–साथ सभी मुखियाओं और महाराजा क्षयर्ष के सभी प्रदेशों के लोगों के विरुद्ध अपराध किया है। [17]मैं ऐसा इसलिये कहता हूँ कि दूसरी स्त्रियाँ जो महारानी वशती ने किया है, उसे जब सुनेंगी तो वे अपने पतियों की आज्ञा मानना बंद कर देंगी। वे अपने पतियों से कहेंगी, 'महाराजा क्षयर्ष ने महारानी वशती को अपने पास लाने की आज्ञा दी थी किन्तु उसने आने से मना कर दिया।'"

[18]"आज फारस और मादै के मुखियाओं की पत्नियों ने, रानी ने जो किया था, सुन लिया है और देखो अब वे स्त्रियाँ भी जो कुछ महारानी ने किया है, उससे प्रभावित होंगी। वे स्त्रियाँ राजाओं के महत्वपूर्ण मुखियाओं के साथ वैसा ही करेंगी और इस तरह बहुत अधिक अनादर और क्रोध फैल जायेगा।

[19]"सो यदि महाराजा को अच्छा लगे तो एक सुझाव यह है: महाराजा को एक राज–आज्ञा देनी चाहिए और उसे फारस तथा मादै के नियम में लिख दिया जाना चाहिए फारस और मादै का नियम बदला तो जा नहीं सकता है। राजा की आज्ञा यह होनी चाहिये कि महाराजा क्षयर्ष के सामने वशती अब कभी न आये। साथ ही महाराजा को रानी का पद भी किसी ऐसी स्त्री को दे देना चाहिए जो उससे उत्तम हो। [20]फिर जब राजा की यह आज्ञा उसके विशाल राज्य के सभी भागों में घोषित की जायेगी तो सभी स्त्रियाँ अपने पतियों का आदर करने लगेंगी। महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण और साधारण से साधारण सभी स्त्रियाँ अपने पतियों का आदर करने लगेंगी।"

[21]इस सुझाव से महाराजा और उसके बड़े–बड़े अधिकारी सभी प्रसन्न हुए। सो महाराजा क्षयर्ष ने वैसा ही किया जैसा ममूकान ने सुझाया था। [22]महाराजा क्षयर्ष ने अपने राज्य के सभी भागों में पत्र भिजवा दिये। हर प्रांत में जो पत्र भेजा गया, वह उसी प्रांत की भाषा में लिखा गया था। हर जाति में उसने वह पत्र भिजवा दिया। यह पत्र उनकी अपनी भाषा में ही लिखे गये थे। जन सामान्य की भाषा में उन पत्रों में घोषित किया गया था कि अपने–अपने परिवार का हर व्यक्ति शासक है।

एस्तेर महारानी बनायी गयी

2 आगे चलकर महाराजा क्षयर्ष का क्रोध शांत हुआ सो उसे वशती और वशती के कार्य याद आने लगे। वशती के बारे में उसने जो आदेश दिया था, वह भी उसे याद आया। [2]इसके बाद राजा के निजी सेवकों ने उसे एक सुझाव दी। उन्होंने कहा, "राजा के लिए सुंदर कुँवारी कन्याओं की खोज करो। [3]राजा को अपने राज्य के हर प्रांत में एक मुखिया का चुनाव करना चाहिए। फिर उन मुखियाओं को चाहिए कि वे हर कुँवारी कन्या को शूशन के राजधानी नगर में लेकर आयें। उन कन्याओं को राजा की स्त्रियों के समूह में रखा जाये। वे हेगे की देख–रेख में रखी जायेंगी। हेगे महाराजा का खोजा था, वह स्त्रियों का प्रबंधक था। फिर उन्हें सौन्दर्य प्रसाधन दिये जायें। [4]फिर वह लड़की जो राजा को भाये, वशती के स्थान पर राजा की नई महारानी बना दी जाये।" राजा को यह सुझाव बहुत अच्छा लगा। सो उसने इसे स्वीकार कर लिया।

[5]अब देखो, बिन्यामीन परिवार समूह का मोर्दकै नाम का एक यहूदी वहाँ रहा करता था। जो शूशन राजधानी नगर का निवासी था। मोर्दकै याईर का पुत्र था और याईर शिमी का पुत्र था और शिमी कीश का पुत्र था। शूशन राजधानी नगर में रहता था। [6]उस को यरूशलेम से बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर बंदी बना कर ले गया था। वह यहूदा के राजा यकोन्याह के साथ उस दल में था जिसे बंदी बना लिया गया था। [7]मोर्दकै के हदस्सा नाम की एक रिश्ते में बहन थी। वह अनाथ थी। न उसके बाप था, न माँ। सो मोर्दकै उसका ध्यान रखता था। मोर्दकै ने उसके माँ–बाप के मरने के बाद उसे अपनी बेटी के रूप में गोद ले लिया था। हदस्सा का नाम एस्तेर भी था। एस्तेर का मुख और उसकी शरीर रचना बहुत सुंदर थी।

[8]जब राजा का आदेश सुनाया गया तो शूशन के राजधानी नगर में बहुत सी लड़कियों को लाया गया और उन्हें हेगे की देखभाल में रख दिया गया। एस्तेर इन्हीं लड़कियों में से एक थी। एस्तेर को राजा के महल में ले जाकर हेगे की देखभाल में रख दिया गया। हेगे राजा के रनवास का अधिकारी था। [9]हेगे को एस्तेर बहुत अच्छी लगी। वह उसकी कृपा पात्र बन गयी। सो हेगे ने एस्तेर को शीघ्र ही सौन्दर्य उपचार दिये और उसे विशेष भोजन प्रदान किया। हेगे ने राजा के महल से सात दासियाँ चुनीं और उन्हें एस्तेर को दे दिया। और इसके बाद हेगे ने एस्तेर और उसकी सातों दासियों को जहाँ राजघराने की स्त्रियाँ रहा करती थी, वहाँ एक उत्तम स्थान में भेज दिया। [10]एस्तेर ने यह बात किसी को नहीं बताई कि वह

एक यहूदी है। क्योंकि मोर्दकै ने उसे मना कर दिया था, इसलिए उसने अपने परिवार की पृष्ठभूमि के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया। [11]मोर्दकै जहाँ रनवास की स्त्रियाँ रहा करती थीं, वहाँ आसपास और आगे पीछे घूमा करता था। वह यह पता लगाना चाहता था कि एस्तेर कैसी है और उसके साथ क्या कुछ घट रहा है? इसीलिये वह ऐसा करता था।

[12]इससे पहले कि राजा क्षयर्ष के पास ले जाने के लिये किसी लड़की की बारी आती, उसे यह सब करना पड़ता था। बारह महीने तक उसे सौन्दर्य उपचार करना पड़ता था यानी छ: महीने तक उसे गंधरस का तेल लगाया जाता और छ: महीने तक सुगंधित द्रव्य और तरह–तरह की प्रसाधन सामग्रियों का उपयोग करना होता था। [13]राजा के पास जाने के लिये उन्हें यह सब करना होता था। रनवास से जो कुछ वह चाहती, उसे दिया जाता। [14]शाम के समय वह लड़की राजा के महल में जाती और प्रात:काल रनवास के किसी दूसरे क्षेत्र में वह लौट आती। फिर उसे शाशगज नाम के व्यक्ति की देखरेख में रख दिया जाता। शाशगज राजा का खोजा था जो राजा की रखैलों का अधिकारी था। यदि राजा उससे प्रसन्न न होता, तो वह लड़की फिर कभी राजा के पास न जाती। और यदि राजा उससे प्रसन्न होता तो उसे राजा नाम लेकर वापस बुलाता।

[15]जब एस्तेर की राजा के पास जाने बारी आई तो उसने कुछ नहीं पूछा। उसने राजा के खोजे, हेगे से, जो रनवास का अधिकारी था, बस यह चाहा कि वह उसे बता दे कि वह अपने साथ क्या ले जाये? एस्तेर वह लड़की थी जिसे मोर्दकै ने गोद ले लिया था और जो उसके चाचा अबीहैल की पुत्री थी। एस्तेर को जो भी देखता, उसे पंसद करता था। [16]सो एस्तेर को महाराजा क्षयर्ष के महल में ले जाया गया। यह उस समय हुआ जब उसके राज्यकाल के सातवें वर्ष का तेबेत नाम का दसवाँ महीना चल रहा था।

[17]राजा ने एस्तेर को किसी भी और लड़की से अधिक प्रेम किया और वह उसकी कृपा पायी। किसी भी दूसरी लड़की से अधिक, राजा को वह भा गयी। सो राजा क्षयर्ष ने एस्तेर के सिर पर मुकुट पहना कर वशती के स्थान पर नयी महारानी बना लिया। [18]एस्तेर के लिए राजा ने एक बहुत बड़ी भोज दी। यह भोज उसके महत्वपूर्ण व्यक्तियों और मुखियाओं के लिये थी। उसने सभी प्रांतों में छुट्टी की घोषणा कर दी। उसने लोगों को उपहार भिजवायें क्योंकि वह बहुत उदार था।

मोर्दकै को एक बुरी योजना का पता चला

[19]मोर्दकै उस समय राजद्वार के निकट ही बैठा था, जब दूसरी बार लड़कियों को इकट्ठा किया गया था। [20]एस्तेर ने अभी भी इस रहस्य को छुपाया हुआ था कि वह एक यहूदी थी। अपने परिवार की पृष्ठभूमि के बारे में उसने किसी को कुछ नहीं बताया था, क्योंकि मोर्दकै ने उसे ऐसा करने से रोक दिया था। वह मोर्दकै की आज्ञा का अब भी वैसे ही पालन करती थी, जैसे वह तब किया करती थी, जब वह मोर्दकै की देख–रेख में थी।

[21]उसी समय जब मोर्दकै राजद्वार के निकट बैठा करता था, यह घटना घटी: बिकतान और तेरेश जो राजा के द्वार रक्षक अधिकारी थे, राजा से अप्रसन्न हो गये थे। उन्होंने राजा क्षयर्ष की हत्या का षड़यन्त्र रचना शुरु कर दिया। [22]किन्तु मोर्दकै को उस षड़यन्त्र का पता चल गया और उसने उसे महारानी एस्तेर को बता दिया। फिर महारानी एस्तेर ने उसे राजा से कह दिया। उसने राजा को यह भी बता दिया कि मोर्दकै ही वह व्यक्ति है, जिसने इस षड़यन्त्र का पता चलाया है। [23]इसके बाद उस सूचना की जाँच की गयी और यह पता चला कि मोर्दकै की सूचना सही थी और उन दो पहरेदारों को जिन्होंने राजा को मार डालने का षड़यन्त्र बनाया था, एक खम्भे पर लटका दिया गया। राजा के सामने ही ये सभी बातें राजा के इतिहास की पुस्तक में लिख दी गयीं।

यहूदियों के विनाश के लिये हामान की योजना

3 इन बातों के घटने के बाद महाराजा क्षयर्ष ने हामान का सम्मान किया। हामान अगागी हम्मदाता नाम के व्यक्ति का पुत्र था। महाराजा ने हामान की पदोन्नति कर दी और उसे दूसरे मुखियाओं से अधिक बड़ा, महत्वपूर्ण और आदर का पद दे दिया। [2]राजा के द्वार पर महाराजा के सभी मुखिया हामान के आगे झुक कर उसे आदर देने लगे। वे महाराजा की आज्ञा के अनुसार ही ऐसा किया करते थे। किन्तु मोर्दकै ने हामान के आगे झुकने अथवा उसे आदर देने को मना कर दिया। [3]इस पर राजा के द्वार के अधिकारियों ने मोर्दकै से पूछा, “तुम हामान के आगे

झुकने की अब महाराजा की आज्ञा का पालन क्यों नहीं करते?"

[4]राजा के वे अधिकारी प्रतिदिन मोर्दकै से ऐसा कहते रहे। किन्तु वह हामान के आगे झुकने के आदेश को मानने से इन्कार करता रहा। सो उन अधिकारियों ने हामान से इसके बारे में बता दिया। वे ये देखना चाहते थे कि हामान मोर्दकै का क्या करता है? मोर्दकै ने उन अधिकारियों को बता दिया था कि वह एक यहूदी था। [5]हामान ने जब यह देखा कि मोर्दकै ने उसके आगे झुकने और उसे आदर देने को मना कर दिया है तो उसे बहुत क्रोध आया। [6]हामान को यह पता तो चल ही चुका था कि मोर्दकै एक यहूदी है। किन्तु वह मोर्दकै की हत्या मात्र से संतुष्ट होने वाला नहीं था। हामान तो यह भी चाहता था कि वह कोई एक ऐसा रास्ता ढूंढ़ निकाले जिससे क्षयर्ष के समूचे राज्य के उन सभी यहूदियों को मार डाले जो मोर्दकै के लोग हैं।

[7]महाराजा क्षयर्ष के राज्य के बारहवें वर्ष में नीसान नाम के पहले महीनें में विशेष दिन और विशेष महीने चुनने के लिये हामान ने पासे फेंके और इस तरह अदार नाम का बारहवाँ महीना चुन लिया गया। (उन दिनों लाटरी निकालने के ये पासे, "पुर" कहलाया करते थे।) [8]फिर हामान महाराजा क्षयर्ष के पास आया और उससे बोला, "हे महाराजा क्षयर्ष तुम्हारे राज्य के हर प्रान्त में लोगों के बीच एक विशेष समूह के लोग फैले हुए हैं। ये लोग अपने आप को दूसरे लोगों से अलग रखते हैं। इन लोगों के रीतिरिवाज भी दूसरे लोगों से अलग हैं और ये लोग राजा के नियमों का पालन भी नहीं करते हैं। ऐसे लोगों को अपने राज्य में रखने की अनुमति देना महाराज के लिये अच्छा नहीं है।

[9]"यदि महाराज को अच्छा लगे तो मेरे पास एक सुझाव है: उन लोगों को नष्ट कर डालने के लिये आज्ञा दी जाये। इसके लिये मैं महाराज के कोष में दस हजार चाँदी के सिक्के जमा कर दूँगा। यह धन उन लोगों को भुगतान के लिये होगा जो इस काम को करेंगे।"

[10]इस प्रकार महाराजा ने राजकीय अंगूठी अपनी अंगुली से निकाली और उसे हामान को सौंप दिया। हामान अगागी हम्मदाता का पुत्र था। वह यहूदियों का शत्रु था। [11]इसके बाद महाराजा ने हामान से कहा, "यह धन अपने पास रखो और उन लोगों के साथ जो चाहते हो, करो।"

[12]फिर उस पहले महीने के तेरहवें दिन महाराजा के सचिवों को बुलाया गया। उन्होंने हामान के सभी आदेशों को हर प्रांत की लिपि और विभिन्न लोगों की भाषा में अलग–अलग लिख दिया। साथ ही उन्होंने उन आदेशों को प्रत्येक कबीले के लोगों की भाषा में भी लिख दिया। उन्होंने राजा के मुखियाओं, विभिन्न प्रांतों के राज्यपालों, अलग अलग कबीलों के मुखियाओं के नाम पत्र लिख दिये। ये पत्र उन्होंने स्वयं महाराजा क्षयर्ष की ओर से लिखे थे और आदेशों को स्वयं महाराजा की अपनी अंगूठी से अंकित किया गया था।

[13]संदेशवाहक राजा के विभिन्न प्रांतों में उन पत्रों को ले गये। इन पत्रों में सभी यहूदियों के सम्पूर्ण विनाश, हत्या, और बर्बादी के राज्यादेश थे। इसका आशा था कि युवा, वृद्ध, स्त्रियाँ और नन्हें बच्चे तक समाप्त कर दिये जायें। आज्ञा यह थी कि सभी यहूदियों को बस एक ही दिन मौत के घाट उतार दिया जाये। वह दिन था अदार नाम के बारहवें महीने की तेरहवीं तारीख़ को था और यह आदेश भी दिया गया था कि यहूदियों के पास जो कुछ भी हो, उसे ले लिया जाये।

[14]इन पत्रों की प्रतियाँ उस आदेश के साथ एक नियम के रूप में दी जानी थीं। हर प्रांत में इसे एक नियम बनाया जाना था। राज्य में बसी प्रत्येक जाति के लोगों में इसकी घोषणा की जानी थी, ताकि वे सभी लोग उस दिन के लिये तैयार रहें। [15]महाराजा की आज्ञा से संदेश वाहक तुरन्त चल दिये। राजधानी नगरी शूशन में यह आज्ञा दे दी गयी। महाराजा और हामान तो दाखमधु पीने के लिए बैठ गये किन्तु शूशन नगर में घबराहट फैल गयी।

सहायता के लिये एस्तेर से मोर्दकै की विनती

4 मोर्दकै ने, जो कुछ हो रहा था, उसके बारे में सब कुछ सुना। जब उसने यहूदियों के विरुद्ध राजा की आज्ञा सुनी तो अपने कपड़े फाड़ लिये। उसने शोक वस्त्र धारण कर लिये और अपने सिर पर राख डाल ली। वह ऊँचे स्वर में विलाप करते हुए नगर में निकल पड़ा। [2]किन्तु मोर्दकै बस राजा के द्वार तक ही जा सका क्योंकि शोक वस्त्रों को पहन कर द्वार के भीतर जाने की आज्ञा किसी को भी नहीं थी। [3]हर किसी प्रांत में जहाँ कहीं भी राजा का यह आदेश पहुँचा, यहूदियों में रोना–धोना और शोक फैल गया। उन्होंने खाना छोड़ दिया और वे ऊँचे

स्वर में विलाप करने लगे। बहुत से यहूदी शोक वस्त्रों को धारण किये हुए और अपने सिरों पर राख डाले हुए धरती पर पड़े थे।

[4]एस्तेर की दासियों और खोजों ने एस्तेर के पास जाकर उसे मोर्दकै के बारे में बताया। इससे महारानी एस्तेर बहुत दुःखी और व्याकुल हो उठी। उसने मोर्दकै के पास शोक वस्त्रों के बजाय दूसरे कपड़े पहनने को भेजे। किन्तु उसने वे वस्त्र स्वीकार नहीं किये। [5]इसके बाद एस्तेर ने हताक को अपने पास बुलाया। हताक एक ऐसा खोजा था जिसे राजा ने उसकी सेवा के लिये नियुक्त किया था। एस्तेर ने उसे यह पता लगाने का आदेश दिया कि मोर्दकै को क्या व्याकुल बनाये हुए है और क्यों? [6]सो हताक नगर के उस खुले मैदान में गया जहाँ राजद्वार के आगे मोर्दकै मौजूद था। [7]वहाँ मोर्दकै ने हताक से, जो कुछ हुआ था, सब कह डाला। उसने हताक को यह भी बताया कि हामान ने यहूदियों की हत्या के लिये राजा के कोष में कितना धन जमा कराने का वादा किया है। [8]मोर्दकै ने हताक को यहूदियों की हत्या के लिये राजा के आदेश पत्र की एक प्रति भी दी। वह आदेश पत्र शूशन नगर में हर कहीं भेजा गया था। मोर्दकै यह चाहता था कि वह उस पत्र को एस्तेर को दिखा दे और हर बात उसे पूरी तरह बता दे और उसने उससे यह भी कहा कि वह एस्तेर को राजा के पास जाकर मोर्दकै और उसके अपने लोगों के लिये दया की याचना करने को प्रेरित करे।

[9]हताक एस्तेर के पास लौट आया और उसने एस्तेर से मोर्दकै ने जो कुछ कहने को कहा था, सब बता दिया।

[10]फिर एस्तेर ने मोर्दकै को हताक से यह कहला भेजा: [11]"मोर्दकै, राजा के सभी मुखिया और राजा के प्रांतों के सभी लोग यह जानते हैं कि किसी भी पुरुष अथवा स्त्री के लिए राजा का बस यही एक नियम है कि राजा के पास बिना बुलाये जो भी जाता है, उसे प्राण दण्ड दिया जाता है। इस नियम का पालन बस एक ही स्थिति में उस समय नहीं किया जाता था जब राजा अपने सोने के राजदण्ड को उस व्यक्ति की ओर बढ़ा देता था। यदि राजा ऐसा कर देता तो उस व्यक्ति के प्राण बच जाते थे किन्तु मुझे तीस दिन हो गये हैं और राजा से मिलने के लिये मुझे नहीं बुलाया गया है।"

[12-13]इसके बाद एस्तेर का सन्देश मोर्दकै के पास पहुँचा दिया गया। उस सन्देश को पा कर मोर्दकै ने उसे वापस उत्तर भेजा: "एस्तेर, ऐसा मत सोच कि तू बस राजा के महल में रहती है इसीलिए बच निकलने वाली एकमात्र यहूदी होगी। [14]यदि अभी तू चुप रहती है तो यहूदियों के लिए सहायता और मुक्ति तो कहीं और से आ ही जायेगी किन्तु तू और तेरे पिता का परिवार सभी मार डाले जायेंगे और कौन जानता है कि तू किसी ऐसे ही समय के लिये महारानी बनाई गयी हो, जैसा समय यह है।"

[15-16]इस पर एस्तेर ने मोर्दकै को अपना यह उत्तर भिजवाया: "मोर्दकै, जाओ और जाकर सभी यहूदियों को शूशन नगर में इकट्ठा करो और मेरे लिये उपवास रखो। तीन दिन और तीन रात तक न कुछ खाओ और न कुछ पिओ। तेरी तरह मैं भी उपवास रखूँगी और साथ ही मेरी दासियाँ भी उपवास रखेंगी। हमारे उपवास रखने के बाद मैं राजा के पास जाऊँगी। मैं जानती हूँ कि यदि राजा मुझे न बुलाए तो उसके पास जाना नियम के विरुद्ध है किन्तु चाहे मैं मर ही क्यों न जाऊँ, मेरी हत्या ही क्यों न कर दी जाये, जैसे भी बन पड़ेगा, ऐसा करूँगी।"

[17]इस प्रकार मोर्दकै वहाँ से चला गया और एस्तेर ने उससे जैसा करने को कहा था उसने सब कुछ वैसा ही किया।

एस्तेर की राजा से विनती

5 तीसरे दिन एस्तेर ने अपने विशेष वस्त्र पहने और राज महल के भीतरी भाग में जा खड़ी हुई। यह स्थान राजा की बैठक के सामने था। राजा दरबार में अपने सिंहासन पर बैठा था। राजा उसी ओर मुँह किये बैठा था जहाँ से लोग सिंहासन के कक्ष की ओर प्रवेश करते थे। [2]राजा ने महारानी एस्तेर को वहाँ दरबार में खड़े देखा। उसे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसकी ओर अपने हाथ में थामें हुए सोने के राजदण्ड को आगे बढ़ा दिया। इस प्रकार एस्तेर ने उस कमरे में प्रवेश किया और वह राजा के पास चली गयी और उसने राजा के सोने के राजदण्ड के सिर को छू दिया।

[3]इसके बाद राजा ने उससे पूछा, "महारानी एस्तेर, तुम बेचैन क्यों हो? तुम मुझसे क्या चाहती हो? तुम जो चाहो मैं तुम्हें वही दूँगा। यहाँ तक कि अपना आधा राज्य तक, मैं तुम्हें दे दूँगा।"

[4]एस्तेर ने कहा, "मैंने आपके और हामान के लिये एक भोज का आयोजन किया है। क्या आप और हामान आज मेरे यहाँ भोज में पधारेंगे?"

[5]इस पर राजा ने कहा, "हामान को तुरंत बुलाया जाये ताकि एस्तेर जो चाहती है, हम उसे पूरा कर सकें।"

महाराजा और हामान एस्तेर ने उनके लिये जो भोज आयोजित की थी, उसमें आ गये। [6]जब वे दाखमधु पी रहे थे तभी महाराजा ने एस्तेर से फिर पूछा, "एस्तेर, कहो अब तुम क्या माँगना चाहती हो? कुछ भी माँग लो, मैं तुम्हें वही दे दूँगा। कहो तो वह क्या है जिसकी तुम्हें इच्छा है? तुम्हारी जो भी इच्छा होगी, वही मैं तुम्हें दूँगा। अपने राज्य का आधा भाग तक।"

[7]एस्तेर ने कहा, "मैं यह माँगना चाहती हूँ। [8]यदि मुझे महाराज अनुमति दें और यदि जो मैं चाहूँ, वह मुझे देने से महाराज प्रसन्न हों तो मेरी इच्छा यह है कि महाराज और हामान कल मेरे यहाँ आयें। कल मैं महाराजा और हामान के लिये एक और भोज देना चाहती हूँ और उसी समय में यह बताऊँगी कि वास्तव में मैं क्या चाहती हूँ।"

मोर्दकै पर हामान का क्रोध

[9]उस दिन हामान राजमहल से अत्यधिक प्रसन्नचित्त हो कर विदा हुआ। किन्तु जब उसने राजा के द्वार पर मोर्दकै को देखा तो उसे मोर्दकै पर बहुत क्रोध आया। हामान मोर्दकै को देखते ही क्रोध से पागल हो उठा क्योंकि जब हामान वहाँ से गुजरा तो मोर्दकै ने उसके प्रति कोई आदर भाव नहीं दिखाया। मोर्दकै को हामान का कोई भय नहीं था, और इसी से हामान क्रोधित हो उठा था। [10] किन्तु हामान ने अपने क्रोध पर काबू किया और घर चला गया। इसके बाद हामान ने अपने मित्रों और अपनी पत्नी जेरेश को एक साथ बुला भेजा। [11]वह अपने मित्रों के आगे अपने धन और अनेक पुत्रों के बारे में डींग मारते हुए यह बताने लगा कि राजा उसका किस प्रकार से सम्मान करता है। वह बढ़ा चढ़ा कर यह भी बताने लगा कि दूसरे सभी हाकिमों से राजा ने किस प्रकार उसे और अधिक ऊँचे पद पर पदोन्नति दी है। [12]"इतना ही नहीं" हामान ने यह भी बताया। "एक मात्र मैं ही ऐसा व्यक्ति हूँ जिसे महारानी एस्तेर ने अपने भोज में राजा के साथ बुलाया था और महारानी ने मुझे कल फिर राजा के साथ बुला भेजा था। [13]किन्तु मुझे इन सब बातों से सचमुच कोई प्रसन्नता नहीं है। वास्तव में मैं उस समय तक प्रसन्न नहीं हो सकता जब तक राजा के द्वार पर मैं उस यहूदी मोर्दकै को बैठे हुए देखता हूँ।"

[14]इस पर हामान की पत्नी जेरेश और उसके मित्रों ने उसे एक सुझाव दिया। वे बोले, "किसी से कह कर पचहत्तर फुट ऊँचा फाँसी देने का एक खम्भा बनवाओ! जिस पर उसे लटकाया जाये! फिर प्रात:काल राजा से कहो कि वह मोर्दकै को उस पर लटका दे। फिर राजा के साथ तुम भोज पर जाना और आनन्द से रहना।"

हामान को यह सुझाव अच्छा लगा। सो उसने फाँसी का खम्भा बनवाने के लिए किसी को आदेश दे दिया।

मोर्दकै का सम्मान

6 उस रात राजा सो नहीं पाया। सो उसने अपने एक दास से इतिहास की पुस्तक लाकर अपने सामने उसे पढ़ने को कहा। (राजाओं के इतिहास की पुस्तक में वह सब कुछ अंकित रहता हैं जो एक राजा के शासनकाल के दौरान घटित होता है।) [2]सो उस दास ने राजा के लिए वह पुस्तक पढ़ी। उसने महाराजा क्षयर्ष को मार डालने के षड़यन्त्र के बारे में पढ़ा। बिगताना और तेरेश के षड़यन्त्रों का पता मोर्दकै को चला था। ये दोनों ही व्यक्ति द्वार की रक्षा करने वाले राजा के हाकिम थे। उन्होंने राजा की हत्या की योजना बनाई थी किन्तु मोर्दकै को इस योजना का पता चल गया था और उसने उसके बारे में किसी को बता दिया था।

[3]इस पर महाराजा ने प्रश्न किया, "इस बात के लिए मोर्दकै को कौन सा आदर और कौन सी उत्तम वस्तुएं प्रदान की गयी थीं?"

उन दासों ने राजा को उत्तर दिया, "मोर्दकै के लिये कुछ नहीं किया गया था।"

[4]उसी समय राजा के महल के बाहरी आँगन में हामान ने प्रवेश किया। वह, हामान ने फाँसी का जो खम्भा बनावाया था, उस पर मोर्दकै को लटकवाने के लिये राजा से कहने को आया था। राजा ने उसकी आहट सुन कर पूछा, "अभी अभी आँगन में कौन आया है?"

[5]राजा के सेवकों ने उत्तर दिया, "आँगन में हामान खड़ा हुआ है।"

सो राजा ने कहा, "उसे भीतर ले आओ।"

[6]हामान जब भीतर आया तो राजा ने उससे एक प्रश्न पूछा, "हामान, राजा यदि किसी को आदर देना चाहे तो उस व्यक्ति के लिए राजा को क्या करना चाहिए?"

हामान ने अपने मन में सोचा, "ऐसा कौन हो सकता है जिसे राजा मुझसे अधिक आदर देना चाहता होगा? राजा निश्चय ही मुझे आदर देने के लिये ही बात कर रहा होगा।"

[7]सो हामान ने उत्तर देते हुए राजा से कहा, "राजा जिसे आदर देना चाहता है, उस व्यक्ति के साथ वह ऐसा करे: [8]राजा ने जो वस्त्र स्वयं पहना हो, उसी विशेष वस्त्र को तू अपने सेवकों से मंगवा लिया जाये और उस घोड़े को भी मंगवा लिया जाये जिस पर राजा ने स्वयं सवारी की हो। फिर सेवकों के द्वारा उस घोड़े के सिर पर राजा का विशेष चिन्ह अंकित कराया जाये। [9]इसके बाद राजा के किसी अत्यन्त महत्वपूर्ण मुखिया को उस वस्त्र और घोड़े का अधिकारी नियुक्त किया जाये। फिर वह अधिकारी उस व्यक्ति को, जिसे राजा सम्मानित करना चाहता है, उस वस्त्र को पहनाये और फिर इसके बाद वह अधिकारी उस घोड़े के आगे–आगे चलता हुआ उसे नगर की गलियों के बीच से गुजारे। वह अपनी अगुवाई में घोड़े को ले जाते हुए यह घोषणा करता जाये, 'यह उस व्यक्ति के लिये किया गया है, राजा जिसे आदर देना चाहता है।'"

[10]राजा ने हामान को आदेश दिया, "तुम तत्काल चले जाओ तथा वस्त्र और घोड़ा लेकर यहूदी मोर्दकै के लिए वैसा ही करो, जैसा तुमने सुझाव दिया है। मोर्दकै राजद्वार के पास बैठा है। जो कुछ तुमने सुझाया है, सब कुछ वैसा ही करना।"

[11]सो हामान ने वस्त्र और घोड़ा लिया और वस्त्र मोर्दकै को पहना कर घोड़े पर चढ़ा कर नगर की गलियों से होते हुए घोड़े के आगे आगे चल दिया। मोर्दकै के आगे आगे चलता हुआ हामान घोषणा कर रहा था, "यह सब उस व्यक्ति के लिये किया गया है, जिसे राजा आदर देना चाहता है!"

[12]इसके बाद मोर्दकै फिर राजद्वार पर चला गया किन्तु हामान तुरन्त अपने घर की ओर चल दिया। उसने अपना सिर छुपाया हुआ था क्योंकि वह परेशान और लज्जित था। [13]इसके बाद हामान ने अपनी पत्नी जेरेश और अपने सभी मित्रों से, जो कुछ घटा था, सब कुछ कह सुनाया। हामान की पत्नी और उसके सलाहकारों ने उससे कहा, "यदि मोर्दकै यहूदी है, तो तुम जीत नहीं सकते। तुम्हारा पतन शुरु हो चुका है। तुम निश्चय ही नष्ट हो जाओगे!"

[14]अभी वे लोग हामान से बात कर रही रहे थे कि राजा के खोजे हामान के घर पर आये और तत्काल ही हामान को एस्तेर के भोज में बुला ले गये।

हामान को प्राण–दण्ड

7 फिर राजा और हामान महारानी एस्तेर के साथ भोजन करने के लिये चले गये। [2]इसके बाद जब वे दूसरे दिन के भोज में दाखमधु पी रहे थे तो राजा ने एस्तेर से फिर एक प्रश्न किया, "महारानी एस्तेर, तुम मुझ से क्या माँगना चाहती हो? जो कुछ तुम मांगोगी, पाओगी। बताओ तुम्हें क्या चाहिए? मैं तुम्हें कुछ भी दे सकता हूँ। यहाँ तक कि मेरा आधा राज्य भी।"

[3]इस पर महारानी एस्तेर ने जवाब दिया, "हे महाराज! यदि मैं तुम्हें भाती तुम्हारी कृपा पात्र हूँ और यदि यह तुम्हें अच्छा लगता हो तो कृपा करके मुझे जीने दीजिये और मैं तुमसे यह चाहती हूँ कि मेरे लोगों को भी जीने दीजिये! बस मैं यही माँगती हूँ। [4]ऐसा मैं इसलिये चाहती हूँ कि मुझे और मेरे लोगों को विनाश, हत्या और पूरी तरह से नष्ट कर डालने के लिए बेच डाला गया है। यदि हमें दासों के रूप में बेचा जाता, तो मैं कुछ नहीं कहती क्योंकि वह कोई इतनी बड़ी समस्या नहीं होती जिसके लिये राजा को कष्ट दिया जाता।"

[5]इस पर महाराजा क्षयर्ष ने महारानी एस्तेर से पूछा, "तुम्हारे साथ ऐसा किसने किया? कहाँ है वह व्यक्ति जिसने तुम्हारे लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करने की हिम्मत की?"

[6]एस्तेर ने कहा, "हमारा विरोधी और हमारा शत्रु यह दुष्ट हामान ही है।"

तब हामान राजा और रानी के सामने आतंकित हो उठा। [7]राजा बहुत क्रोधित था। वह खड़ा हुआ। उसने अपना दाखमधु वहीं छोड़ दिया और बाहर बगीचे में चला गया। किन्तु हामान, रानी एस्तेर से अपने प्राणों की भीख माँगने के लिए भीतर ही ठहरा रहा। हामान यह जानता था कि राजा ने उसके प्राण लेने का निश्चय कर लिया है। इसलिये वह अपने प्राणों की भीख माँगता रहा। [8]राजा जैसे ही बगीचे से भोज के कमरे की ओर वापस

आ रहा था, तो वह क्या देखता है कि जिस बिछौने पर एस्तेर लेटी है, उस पर हामान झुका हुआ है। राजा ने क्रोध भरे स्वर में कहा, "अरे, क्या तू महल में मेरे रहते हुए ही महारानी पर आक्रमण करेगा?"

जैसे ही राजा के मुख से ये शब्द निकले, राजा के सेवकों ने भीतर आ कर हामान का मुँह ढंक दिया। [9]राजा के एक खोजे सेवक ने जिसका नाम हर्बोना था, कहा, "हामान के घर के पास पचहत्तर फुट लम्बा फाँसी देने का एक खम्भा बनाया गया है। हामान ने यह खम्भा मोर्दकै को फाँसी पर चढ़ाने के लिये बनाया था। मोर्दकै वही व्यक्ति है जिसने तुम्हारी हत्या के षड़यन्त्र को बताकर तुम्हारी सहायता की थी।"

राजा बोला, "उस खम्भे पर हामान को लटका दिया जाये!"

[10] सो उन्होंने उसी खम्भे पर जिसे उसने मोर्दकै के लिए बनाया था हामान को लटका दिया। इसके बाद राजा ने क्रोध करना छोड़ दिया।

यहूदियों की मदद के लिये राजा का आदेश

8 उसी दिन महाराजा क्षयर्ष ने यहूदियों के शत्रु हामान के पास जो कुछ था, वह सब महारानी एस्तेर को दे दिया। एस्तेर ने राजा को बता दिया कि मोर्दकै रिश्ते में उसका भाई लगता है। इसके बाद मोर्दकै राजा से मिलने आया। [2]राजा ने हामान से अपनी जो अँगूठी वापस ले ली थी, उसे अपनी अँगुली से निकाल कर मोर्दकै को दे दिया। इसके बाद एस्तेर ने मोर्दकै को हामान की सारी सम्पत्ति का अधिकारी नियुक्त कर दिया।

[3]तब एस्तेर ने राजा से फिर कहा और वह राजा के पैरों में गिर कर रोने लगी। उसने राजा से प्रार्थना की कि वह अगागी हामान की उस बुरी योजना को समाप्त कर दे जिसे हामान ने यहूदियों के नाश के लिए सोचा था।

[4]इस पर राजा ने अपने सोने के राजदण्ड को एस्तेर की ओर आगे बढ़ाया। एस्तेर उठी और राजा के आगे खड़ी हो गयी। [5]फिर एस्तेर ने कहा, "महाराज, यदि तुम मुझे पसंद करते हो और यह तुम्हें अच्छा लगता है तो कृपा करके मेरे लिए यह कर दीजिये। यदि आपको यह किया जाना ठीक लगे तो इसे पूरा कर दीजिये। यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो कृपा करके एक आदेश पत्र लिखिये, जो उस आदेश पत्र को रद्द कर दे जिसे हामान ने भेजा था। अगागी हामान ने राजा के सभी प्रांतों में बसे यहूदियों को नष्ट करने की एक योजना सोची थी और उस योजना को क्रियान्वित करने के लिए उसने आज्ञा पत्र भिजवा दिये थे। [6]मैं महाराज से यह प्रार्थना इसलिए कर रही हूँ कि मैं अपने लोगों के साथ उस भयानक काण्ड को घटते देखना सहन नहीं कर पाऊँगी। मैं अपने परिवार की हत्या को देखना सहन नहीं कर पाऊँगी।"

[7]महाराजा क्षयर्ष ने महारानी एस्तेर और यहूदी मोर्दकै को उत्तर देते हुए जो कहा था, वह यह है, "हामान, क्योंकि यहूदियों के विरोध में था, इसलिए उसकी सम्पत्ति मैंने एस्तेर को दे दी तथा मेरे सिपाहियों ने उसे फाँसी देने के खम्भे पर लटका दिया। [8]अब राजा की ओर से एक और दूसरा आज्ञा पत्र लिखा जाये। इसे तुम्हें यहूदियों की सहायता के लिए जो सबसे अच्छा लगे वैसा ही लिखो। फिर राजा की विशेष अँगूठी से उस आज्ञा पर मुहर लगा दो। राजा की ओर से लिखा गया और राजा की अँगूठी से जिस पर मुहर दी गयी हो, ऐसा कोई भी राजकीय पत्र रद्द नहीं किया जा सकता।"

[9]राजा के सचिवों को तत्काल बुलाया गया। सीवान नाम के तीसरे महीने की तेईसवीं तारीख को वह आदेश पत्र लिखा गया। यहूदियों के लिये मोर्दकै के सभी आदेशों को सचिवों ने लिखकर यहूदियों, मुखियाओं, राज्यपालों और एक सौ सत्ताईस प्रांतों के अधिकारियों के पास पहुँचा दिया। ये प्रांत भारत से लेकर कूश तक फैले हुए थे। ये आदेश पत्र हर प्रांत की लिपि और भाषा में लिखे गये थे और हर देश के लोगों की भाषा में उसका अनुवाद किया गया था। यहूदियों के लिये ये आदेश उन की अपनी भाषा और उनकी अपनी लिपि में लिखे गये थे। [10]मोर्दकै ने ये आदेश महाराजा क्षयर्ष की ओर से लिखे थे और फिर उन पत्रों पर उसने राजा की अँगूठी से मुहर लगा दी थी। फिर उन पत्रों को उसने तीव्र घुड़सवार सन्देश वाहकों के द्वारा भिजवा दिया। ये सन्देश वाहक उन घोड़ों पर सवार थे जिन्हें विशेष राजा के लिए पाला–पोसा गया था।

[11]उन पत्रों पर राजा के ये आदेश लिखे थे:

यहूदियों को हर नगर में आपस में एक जुट होकर अपनी रक्षा करने का अधिकार है। उन्हें अधिकार है कि वे किसी भी प्रांत और समूह के लोगों की ऐसी किसी भी सेना को छिन्न–भिन्न कर दें, मार डालें अथवा पूरी तरह

नष्ट कर दें जो उन पर, उनकी स्त्रियों पर, और उनके बच्चों पर आक्रमण कर रही हो। यहूदियों को अधिकार है कि वे अपने शत्रुओं की सम्पत्ति को ले लें और उसे नष्ट कर डालें।

12जब यहूदियों के लिये ऐसा किया जायेगा, उसके लिये उदार नाम के बारहवें महीने की तेरहवीं तारीख का दिन निश्चित किया गया। महाराजा क्षयर्ष के अपने सभी प्रांतों में यहूदियों को ऐसा करने की अनुमति दे दी गयी। 13इस पत्र की एक प्रति राजा के आदेश के साथ हर प्रांत को बाहर भेजी जानी थी। यह एक नियम बन गया। हर प्रांत में इसने नियम का रुप ले लिया। राज्य में रहने वाली प्रत्येक जाति के लोगों के बीच इसका प्रचार किया गया। उन्होंने ऐसा इसलिये किया जिससे उस विशेष दिन के लिये यहूदी तैयार हो जायें जब यहूदियों को अपने शत्रुओं से बदला लेने की अनुमति दे दी जाएगी। 14राजा के घोड़ों पर सवार संदेश वाहक जल्दी से बाहर निकल गये। उन्हें राजा ने आज्ञा दी थी कि जल्दी करें। वह आज्ञा शूशन की राजधानी नगरी में भी लगा दी गयी।

15फिर मोर्दकै राजा के पास से चला गया। मोर्दकै ने राजा से प्राप्त वस्त्र धारण किये हुए थे। उसके कपड़े नीले और सफेद रंग के थे। उसने एक लम्बा सोने का मुकुट पहन रखा था। बढ़िया सूत का बना हुआ बैंगनी रंग का चोगा भी उसके पास था। शूशन की राजधानी नगरी में विशेष समारोह हो रहा था। लोग बहुत खुश थे। 16यहूदियों के लिये तो यह विशेष प्रसन्नता का दिन था। यह आनन्द, प्रसन्नता और बड़े सम्मान का दिन था।

17जहाँ कहीं भी किसी प्रांत या किसी भी नगर में राजा का वह आदेश पत्र पहुँचा, यहूदियों में आनन्द और प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। यहूदी भोज दे रहे थे और उत्सव मना रहे थे और दूसरे बहुत से सामान्य लोग यहूदी बन गये। क्योंकि वे यहूदियों से बहुत डरा करते थे, इसीलिए उन्होंने ऐसा किया।

यहूदियों की विजय

9 लोगों को अदार नाम के बारहवें महीने की तेरह तारीख को राजा की आज्ञा को पूरा करना था। यह वही दिन था जिस दिन यहूदियों के विरोधियों को उन्हें पराजित करने की आशा थी। किन्तु अब तो स्थिति बदल चुकी थी। अब तो यहूदी अपने उन शत्रुओं से अधिक प्रबल थे जो उन्हें घृणा किया करते थे। 2महाराजा क्षयर्ष के सभी प्रांतों के नगरों में यहूदी परस्पर एकत्र हुए। यहूदी आपस में इसलिए एकजुट हो गये कि जो लोग उन्हें नष्ट करना चाहते हैं, उन पर आक्रमण करने के लिये वे पर्याप्त सशस्त्र हो जायें। इस प्रकार उनके विरोध में कोई भी अधिक शक्तिशाली नहीं रहा। लोग यहूदियों से डरने लगे। 3प्रांतों के सभी हाकिम, मुखिया, राज्यपाल और राजा के प्रबन्ध अधिकारी यहूदियों की सहायता करने लगे। वे सभी अधिकारी यहूदियों की सहायता इसलिए किया करते थे कि वे मोर्दकै से डरते थे। 4राजा के महल में मोर्दकै एक अति महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गया। सभी प्रांतों में हर कोई उसका नाम जानता था और जानता था कि वह कितना महत्वपूर्ण है। सो मोर्दकै अधिक शक्तिशाली होता चला गया।

5यहूदियों ने अपने सभी शत्रुओं को पराजित कर दिया। अपने शत्रुओं को मारने और नष्ट करने के लिए वे तलवारों का प्रयोग किया करते थे। जो लोग यहूदियों से घृणा किया करते थे, उनके साथ यहूदी जैसा चाहते, वैसा व्यवहार करते। 6शूशन की राजधानी नगरी में यहूदियों ने पाँच सौ लोगों को मार कर नष्ट कर दिया। 7यहूदियों ने जिन लोगों की हत्या की थी उनमें ये लोग भी शामिल थे: पर्शन्दाता, दल्पोन, अस्पाता, 8पोराता, अदल्या, अरीदाता, 9पर्मशता, अरीसै, अरीदै और वैजाता। 10ये दस लोग हामान के पुत्र थे। हम्मदाता का पुत्र हामान यहूदियों का बैरी था। यहूदियों ने उन सभी पुरूषों को मार तो दिया किन्तु उन्होंने उनकी सम्पत्ति नहीं ली।

11जब राजा ने शूशन की राजधानी नगरी में मारे गये पाँच सौ व्यक्तियों के बारे में सुना तो 12उसने महारानी एस्तेर से कहा, "शूशन नगर में यहूदियों ने पाँच सौ व्यक्तियों को मार डाला है तथा उन्होंने शूशन में हामान के दस पुत्रों की भी हत्या कर दी है। कौन जाने राजा के अन्य प्रांतों में क्या हो रहा है? अब मुझे बताओ तुम और क्या कराना चाहती हो? जो कहो मैं उसे पूरा कर दूँगा।"

13एस्तेर ने कहा, "यदि ऐसा करने के लिये महाराज प्रसन्न हैं तो यहूदियों को यह करने की अनुमति दी जाये: शूशन में कल भी यहूदियों को राजा की आज्ञा पूरी करने दी जाये, और हामान के दसों पुत्रों को फाँसी के खम्भे पर लटका दिया जाये।"

[14]सो राजा ने यह आदेश दे दिया कि शूशन में कल भी राजा का यह आदेश लागू रहे और उन्होंने हामान के दसों पुत्रों को फाँसी पर लटका दिया। [15]आदार महीने की चौदहवीं तारीख को शूशन में यहूदी एकत्रित हुए। फिर उन्होंने वहाँ तीन सौ पुरुषों को मौत के घाट उतार दिया किन्तु उन्होंने उन तीन सौ लोगों की सम्पत्ति को नहीं लिया।

[16]उसी अवसर पर राजा के अन्य प्रांतों में रहने वाले यहूदी भी परस्पर एकत्र हुए। वे इसलिए एकत्र हुए कि अपना बचाव करने के लिये वे पर्याप्त बलशाली हो जायें और इस तरह उन्होंने अपने शत्रुओं से छुटकारा पा लिया। यहूदियों ने अपने पचहत्तर हजार शत्रुओं को मौत के घाट उतार दिया। किन्तु उन्होंने जिन शत्रुओं की हत्या की थी, उनकी किसी भी वस्तु को ग्रहण नहीं किया। [17]यह अदार नाम के महीने की तेरहवीं तारीख को हुआ और फिर चौदहवीं तारीख़ को यहूदियों ने विश्राम किया। यहूदियों ने उस दिन को एक खुशी भरे छुट्टी के दिन के रूप में बना दिया।

पूरीम का त्यौहार

[18]आदार महीने की तेरहवीं तारीख़ को शूशन में यहूदी परस्पर एकत्र हुए। फिर पन्द्रहवीं तारीख़ को उन्होंने विश्राम किया। उन्होंने पन्द्रहवीं तारीख़ को फिर एक खुशी भरी छुट्टी का दिन बना दिया। [19]इसी कारण उस ग्राम्य प्रदेश के छोटे छोटे गाँवों में रहने वाले यहूदियों ने चौदहवीं तारीख़ को खुशियों भरी छुट्टी के रूप में रखा। उस दिन उन्होंने आपस में एक दूसरे को भोज दिये।

[20]जो कुछ घटा था, उसकी हर बात को मोर्दकै ने लिख लिया और फिर उसे महाराजा क्षयर्ष के सभी प्रांतों में बसे यहूदियों को एक पत्र के रूप में भेज दिया। दूर–पास सब कहीं उसने पत्र भेजें। [21]मोर्दकै ने यहूदियों को यह बताने के लिए ऐसा किया कि वे हर साल अदार महीने की चौदहवीं और पन्द्रहवीं तारीख़ को पूरीम का उत्सव मनाया करें। [22]यहूदियों को इन दिनों को पर्व के रुप में इसलिए मनाना था कि उन्हीं दिनों यहूदियों ने अपने शत्रुओं से छुटकारा पाया था। उन्हें उस महीने को इसलिए भी मनाना था कि यही वह महीना था जब उनका दुःख उनके आनन्द में बदल गया था। वही यह महीना था जब उनका रोना–धोना एक उत्सव के दिन के रूप में बदल गया था। मोर्दकै ने सभी यहूदियों को पत्र लिखा। उसने उन लोगों से कहा कि वे उन दिनों को उत्सव के रुप में मनाएं। यह समय एक ऐसा समय हो जब लोग आपस में एक दूसरे को उत्तम भोजन अर्पित करें तथा गरीब लोगों को उपहार दें।

[23]इस प्रकार मोर्दकै ने यहूदियों को जो लिखा था, वे उसे मानने को तैयार हो गये। वे इस बात पर सहमत हो गये कि उन्होंने जिस उत्सव का आरम्भ किया है, वे उसे मनाते रहेंगे।

[24]हम्मदाता अगागी का पुत्र हामान यहूदियों का शत्रु था। उसने यहूदियों के विनाश के लिए एक षड़यन्त्र रचा था। हामान ने यहूदियों को नष्ट और बर्बाद कर डालने के लिए कोई एक दिन निश्चित करने के वास्ते पासा भी फेंका था। उन दिनों इस पासे को "पुर" कहा जाता था। इसीलिए इस उत्सव का नाम "पूरीम" रखा गया। [25]किन्तु एस्तेर राजा के पास गयी और उसने उससे बातचीत की। इसीलिये राजा ने नये आदेश जारी कर दिये। यहूदियों के विरुद्ध हामान ने जो षड़यन्त्र रचा था, उसे रोकने के लिये राजा ने अपने आदेश पत्र जारी किये। राजा ने उन ही बुरी बातों को हामान और उसके परिवार के साथ घटा दिया। उन आदेशों में कहा गया था कि हामान और उसके पुत्रों को फाँसी पर लटका दिया जाये।

[26–27]इसलिये ये दिन "पूरीम" कहलाये। "पूरीम" नाम 'पुर' शब्द से बना है (जिसका अर्थ है लाटरी) और इसलिए यहूदियों ने हर वर्ष इन दो दिनों को उत्सव के रुप में मनाने की शुरुआत करने का निश्चय किया। उन्होंने यह इसलिए किया ताकि अपने साथ होते हुए जो बातें उन्होंने देखी थी, उन्हें याद रखने में उनको मदद मिले। यहूदियों और उन दूसरे सभी लोगों को, जो यहूदियों में आ मिले थे, हर साल इन दो दिनों को ठीक उसी रीति और उसी समय मनाना था जिसका निर्देश मोर्दकै ने अपने आदेश–पत्र में किया था। [28]ये दो दिन हर पीढ़ी को और हर परिवार को याद रखने चाहिए और मनाये जाना चाहिए। इन्हें हर प्रांत और हर नगर में निश्चयपूर्वक मनाया जाना चाहिए। यहूदियों को इन्हें मनाना कभी नहीं छोड़ना चाहिए। यहूदियों के वंशजों को चाहिए कि वे पूरीम के इन दो दिनों को मनाना सदा याद रखें।

[29]पूरीम के बारे में सुनिश्चित करने के लिये महारानी एस्तेर और यहूदी मोर्दकै ने यह दूसरा पत्र लिखा। एस्तेर अबीहैल की पुत्री थी। वह पत्र सच्चा था, इसे प्रमाणित करने के लिये उन्होंने इसे राजा के सम्पूर्ण अधिकार के साथ लिखा। [30]सो महाराजा क्षयर्ष के राज्य के एक सौ सत्ताईस प्रांतों में सभी यहूदियों के पास मोर्दकै ने पत्र भिजवाये। मोर्दकै ने शांति और सत्य का एक सन्देश लिखा। [31]मोर्दकै ने पूरीम के उत्सव को शुरु करने के बारे में लिखा। इन दिनों को उनके निश्चित समय पर ही मनाया जाना था। यहूदी मोर्दकै और महारानी एस्तेर ने इन दो दिन के उत्सव को अपने लिये और अपनी संतानों के लिए निर्धारित किया। उन्होंने ये दो दिन निश्चित किये ताकि यहूदी उपवास और विलाप करें। [32]एस्तेर के पत्र ने पूरीम के विषय में इन नियमों की स्थापना की और पूरीम के इन नियमों को पुस्तकों में लिख दिया गया।

मोर्दकै का सम्मान

10 महाराजा क्षयर्ष ने लोगों पर कर लगाये। राज्य के सभी लोगों, यहाँ तक कि सागर तट के सुदूर नगरों को भी कर चुकाने पड़ते थे। [2]राजा क्षयर्ष ने जो महान कार्य अपनी शक्ति और सामर्थ्य से किये थे वे "मादै और फारस के राजाओं की इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। उन 'इतिहास की पुस्तकों' में मोर्दकै ने जो कुछ किया था, वह सब कुछ भी लिखा है। राजा ने मोर्दकै को एक महान व्यक्ति बना दिया। [3]महाराजा क्षयर्ष के यहाँ यहूदी मोर्दकै महत्व की दृष्टि से दूसरे स्थान पर था। मोर्दकै यहूदियों में अत्यन्त महत्वपूर्ण पुरुष था। तथा उसके साथी यहूदी उसका बहुत आदर करते थे। वे मोर्दकै का आदर इसलिए करते थे कि उसने अपने लोगों के भले के लिए काम किया था। मोर्दकै सभी यहूदियों के कल्याण की बातें किया करता था।

अय्यूब

अय्यूब एक उत्तम व्यक्ति

1 ऊज नाम के प्रदेश में एक व्यक्ति रहा करता था। उसका नाम अय्यूब था। अय्यूब एक बहुत अच्छा और विश्वासी व्यक्ति था। अय्यूब परमेश्वर की उपासना किया करता था और अय्यूब बुरी बातों से दूर रहा करता था। [2]उसके सात पुत्र और तीन पुत्रियाँ थीं। [3]अय्यूब सात हजार भेड़ों, तीन हजार ऊँटो, एक हजार बैलों और पाँच सौ गधियों का स्वामी था। उसके पास बहुत से सेवक थे। अय्यूब पूर्व का सबसे अधिक धनवान व्यक्ति था।

[4]अय्यूब के पुत्र बारी–बारी से अपने घरों में एक दूसरे को खाने पर बुलाया करते थे और वे अपनी बहनों को भी वहाँ बुलाते थे। [5]अय्यूब के बच्चे जब जेवनार दे चुकते तो अय्यूब बड़े तड़के उठता और अपने हर बच्चे की ओर से होमबलि अर्पित करता। वह सोचता, "हो सकता है, मेरे बच्चे अपनी जेवनार में परमेश्वर के विरुद्ध भूल से कोई पाप कर बैठे हों।" अय्यूब इसलिये सदा ऐसा किया करता था ताकि उसके बच्चों को उनके पापों के लिये क्षमा मिल जाये।

[6]फिर स्वर्गदूतों का यहोवा से मिलने का दिन आया और यहाँ तक कि शैतान भी उन स्वर्गदूतों के साथ था। [7]यहोवा ने शैतान से कहा, "तू कहाँ रहा?"

शैतान ने उत्तर देते हुए यहोवा से कहा, "मैं धरती पर इधर उधर घूम रहा था।"

[8]इस पर यहोवा ने शैतान से कहा, "क्या तूने मेरे सेवक अय्यूब को देखा? पृथ्वी पर उसके जैसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है। अय्यूब एक खरा और विश्वासी व्यक्ति है। वह परमेश्वर की उपासना करता है। और बुरी बातों से सदा दूर रहता है।"

[9]शैतान ने उत्तर दिया, "निश्चय ही! किन्तु अय्यूब परमेश्वर का एक विशेष कारण से उपासना करता है! [10]तू सदा उसकी, उसके घराने की और जो कुछ उसके पास है, उसकी रक्षा करता है। जो कुछ वह करता है, तू उसमें उसे सफल बनाता है। हाँ, तूने उसे आशीर्वाद दिया है। वह इतना धनवान है कि उसके मवेशी और उसका रेवड़ सारे देश में हैं। [11]किन्तु जो कुछ उसके पास है, उस सब कुछ को यदि तू नष्ट कर दे तो मैं तुझे विश्वास दिलाता हूँ कि वह तेरे मुँह पर ही तेरे विरुद्ध बोलने लगेगा।"

[12]यहोवा ने शैतान से कहा, "अच्छा, अय्यूब के पास जो कुछ है, उसके साथ, जैसा तू चाहता है, कर किन्तु उसके शरीर को चोट न पहुँचाना"

इसके बाद शैतान यहोवा के पास से चला गया।

अय्यूब का सब कुछ जाता रहा

[13]एक दिन, अय्यूब के पुत्र और पुत्रियाँ अपने सबसे बड़े भाई के घर खाना खा रहे थे और दाखमधु पी रहे थे। [14]तभी अय्यूब के पास एक सन्देशवाहक आया और बोला, "बैल हल जोत रहे थे और पास ही गधे घास चर रहे थे [15]कि शबा* के लोगों ने हम पर धावा बोल दिया और तेरे पशुओं को ले गये! मुझे छोड़ सभी दासों को शबा के लोगों ने मार डाला। आपको यह समाचार देने के लिये मैं बच कर भाग निकला हूँ!"

[16]अभी वह सन्देशवाहक कुछ कह ही रहा था कि अय्यूब के पास दूसरा सन्देशवाहक आया। दूसरे सन्देशवाहक ने कहा, "आकाश से बिजली गिरी और आपकी भेड़ें और दास जलकर राख हो गये हैं। आपको समाचार देने के लिये केवल मैं ही बच निकल पाया हूँ!"

[17]अभी वह सन्देशवाहक अपनी बात कह ही रहा था कि एक और सन्देशवाहक आ गया। इस तीसरे

शबा मरुप्रदेश के लोगों का एक समूह। वे लोगों पर आक्रमण करके उनकी धन सम्पत्ति लूट लिया करते थे।

सन्देशवाहक ने कहा, "कसदी के लोगों ने तीन टोलियाँ भेजी थीं जिन्होंने हम पर हमला बोल दिया और ऊँटो को छीन ले गये और उन्होंने सेवकों को मार डाला। आपको समाचार देने के लिये केवल मैं ही बच निकल पाया हूँ!"

[18]यह तीसरा दूत अभी बोल ही रहा था कि एक और सन्देशवाहक आगया। इस चौथे सन्देशवाहक ने कहा, "आपके पुत्र और पुत्रियाँ सबसे बड़े भाई के घर खा रहे थे और दाखमधु पी रहे थे। [19]तभी रेगिस्तान से अचानक एक तेज आँधी उठी और उसने मकान को उड़ा कर ढहा दिया। मकान आपके पुत्र और पुत्रियों के ऊपर आ पड़ा और वे मर गये। आपको समाचार देने के लिये केवल मैं ही बच निकल पाया हूँ!"

[20]अय्यूब ने जब यह सुना तो उसने अपने कपड़े फाड़ डाले और यह दर्शाने के लिये कि वह दुःखी और व्याकुल है, उसने अपना सिर मुँड़ा लिया। अय्यूब ने तब धरती पर गिरकर परमेश्वर को दण्डवत किया। [21]उसने कहा: "मेरा जब इस संसार के बीच जन्म हुआ था,

मैं तब नंगा था,मेरे पास तब कुछ भी नहीं था।
जब मैं मरूँगा और यह संसार तजूँगा,
मैं नंगा होऊँगा और मेरे पास में कुछ नहीं होगा।
यहोवा ही देता है और यहोवा ही ले लेता,
यहोवा के नाम की प्रशंसा करो!"

[22]जो कुछ घटित हुआ था, उस सब कुछ के कारण न तो अय्यूब ने कोई पाप किया और न ही उसने परमेश्वर को दोष दिया।

शैतान द्वारा अय्यूब को फिर दुःख देना

2 फिर एक दिन, यहोवा से मिलने के लिये स्वर्गदूत आये। शैतान भी उनके साथ था। शैतान यहोवा से मिलने आया था। [2]यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहाँ रहा?"

शैतान ने उत्तर देते हुए यहोवा से कहा, "मैं धरती पर इधर उधर घूमता रहा हूँ।" [3]इस पर यहोवा ने शैतान से पूछा, "क्या तू मेरे सेवक अय्यूब पर ध्यान देता रहा है? उसके जैसा विश्वासी धरती पर कोई नहीं है। सचमुच वह अच्छा और वह बहुत विश्वासी व्यक्ति है। वह परमेश्वर की उपासना करता है, बुरी बातों से दूर रहता है। वह अब भी आस्थावान है। यद्यपि तूने मुझे प्रेरित किया था कि मैं अकारण ही उसे नष्ट कर दूँ।"

[4]शैतान ने उत्तर दिया, "खाल के बदले खाल! एक व्यक्ति जीवित रहने के लिये, जो कुछ उसके पास है, सब कुछ दे डालता है। [5]सो यदि तू अपनी शक्ति का प्रयोग उसके शरीर को हानि पहुँचाने में करे तो तेरे मुँह पर ही वह तुझे कोसने लगेगा!"

[6]सो यहोवा ने शैतान से कहा, "अच्छा, मैंने अय्यूब को तुझे सौंपा, किन्तु तुझे उसे मार डालने की छूट नहीं है।"

[7]इसके बाद शैतान यहोवा के पास से चला गया और उसने अय्यूब को बड़े दुःखदायी फोड़े दे दिये। ये दुःखदायी फोड़े उसके पाँव के तलवे से लेकर उसके सिर के ऊपर तक शरीर में फैल गये थे। [8]सो अय्यूब कूड़े की ढेरी के पास बैठ गया। उसके पास एक ठीकरा था, जिससे वह अपने फोड़ों को खुजलाया करता था। [9]अय्यूब की पत्नी ने उससे कहा, "क्या परमेश्वर में अब भी तेरा विश्वास है? तू परमेश्वर को कोस कर मर क्यों नहीं जाता!"

[10]अय्यूब ने उत्तर देते हुए अपनी पत्नी से कहा, "तू तो एक मूर्ख स्त्री की तरह बातें करती है! देख, परमेश्वर जब उत्तम वस्तुएं देता है, हम उन्हें स्वीकार कर लेते हैं। सो हमें दुःख को भी अपनाना चाहिये और शिकायत नहीं करनी चाहिए।" इस समूचे दुःख में भी अय्यूब ने कोई पाप नहीं किया। परमेश्वर के विरोध में वह कुछ नहीं बोला।

अय्यूब के तीन मित्रों का उससे मिलने आना

[11]अय्यूब के तीन मित्र थे: तेमानी का एलीपज, शूही का बिलदद और नामाती का सोपर। इन तीनों मित्रों ने अय्यूब के साथ जो बुरी घटनाएँ घटी थीं, उन सब के बारे में सुना। ये तीनों मित्र अपना–अपना घर छोड़कर आपस में एक दूसरे से मिले। उन्होंने निश्चय किया कि वे अय्यूब के पास जा कर उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करें और उसे ढाढस बँधायें। [12]किन्तु इन तीनों मित्रों ने जब दूर से अय्यूब को देखा तो वे निश्चय नहीं कर पाये कि वह अय्यूब है क्योंकि वह एकदम अलग दिखाई दे रहा था। वे दहाड़ मार कर रोने लगे। उन्होंने अपने कपड़े फाड़ डाले। अपने दुःख और अपनी बेचैनी को दर्शाने के लिये उन्होंने हवा में धूल उड़ाते हुए अपने अपने सिरों पर मिट्टी डाली। [13]फिर वे तीनों मित्र अय्यूब के साथ सात दिन और सात रात तक भूमि पर बैठे रहे। अय्यूब से किसी ने एक शब्द तक नहीं कहा क्योंकि वे देख रहे थे कि अय्यूब भयानक पीड़ा में था।

अय्यूब का उस दिन को कोसना जब वह जन्मा था

3 तब अय्यूब ने अपना मुँह खोला और उस दिन को कोसने लगा जब वह पैदा हुआ था। [2-3]उसने कहा:

"काश! जिस दिन मैं पैदा हुआ था, मिट जाये।
काश! वह रात कभी न आई होती जब उन्होंने
कहा था कि 'एक लड़का पैदा हुआ है!'
4 काश! वह दिन अंधकारमय होता,
काश! परमेश्वर उस दिन को भूल जाता,
काश! उस दिन प्रकाश न चमका होता।
5 काश! वह दिन अंधकारपूर्ण बना रहता
जितना कि मृत्यु है।
काश! बादल उस दिन को घेरे रहते।
काश! जिस दिन मैं पैदा हुआ काले बादल
प्रकाश को डरा कर भगा सकते।
6 उस रात को गहरा अंधकार जकड़ ले,
उस रात की गिनती न हो।
उस रात को किसी महीने में सम्मिलित न करो।
7 वह रात कुछ भी उत्पन्न न करे।
कोई भी आनन्द ध्वनि उस रात को सुनाई न दे।
8 जादूगरों को शाप देने दो, उस दिन को वे
शापित करें जिस दिन मैं पैदा हुआ।
वे व्यक्ति हमेशा लिब्यातान (सागर का दैत्य)
को जगाना चाहते हैं।
9 उस दिन को भोर का तारा काला पड़ जाये।
वह रात सुबह के प्रकाश के लिये तरसे और
वह प्रकाश कभी न आये।
वह सूर्य की पहली किरण न देख सके।
10 क्यों? क्योंकि उस रात ने
मुझे पैदा होने से न रोका।
उस रात ने मुझे ये कष्ट झेलने से न रोका।
11 मैं क्यों न मर गया जब मैं पैदा हुआ था?
जन्म के समय ही मैं क्यों न मर गया?
12 क्यों मेरी माँ ने गोद में रखा? क्यों मेरी माँ की
छातियों ने मुझे दूध पिलाया।
13 अगर मैं तभी मर गया होता जब मैं पैदा हुआ था
तो अब मैं शान्ति से होता।
काश! मैं सोता रहता और विश्राम पाता।
14 राजाओं और बुद्धिमान व्यक्तियों के साथ
जो पृथ्वी पर पहले थे।
उन लोगों ने अपने लिये स्थान बनायें,
जो अब नष्ट हो कर मिट चुके है।
15 काश! मैं उन शासकों के साथ गाड़ा जाता
जिन्होंने सोने-चाँदी से अपने घर भरे थे।
16 क्यों नहीं मैं ऐसा बालक हुआ जो जन्म लेते ही
मर गया हो।
काश! मैं एक ऐसा शिशु होता जिसने
दिन के प्रकाश को नहीं देखा।
17 दुष्ट जन दुःख देना तब छोड़ते हैं जब वे
कब्र में होते हैं और थके जन
कब्र में विश्राम पाते हैं।
18 यहाँ तक कि बंदी भी सुख से कब्र में रहते है।
वहाँ वे अपने पहरेदारों की आवाज नहीं सुनते हैं।
19 हर तरह के लोग कब्र में रहते हैं चाहे वे
महत्वपूर्ण हो या साधारण।
वहाँ दास अपने स्वामी से छुटकारा पाता है।
20 कोई दुःखी व्यक्ति और अधिक
यातनाएँ भोगता जीवित क्यों रहें?
ऐसे व्यक्ति को जिस का मन कड़वाहट से भरा
रहता है क्यों जीवन दिया जाता है?
21 ऐसा व्यक्ति मरना चाहता है
लेकिन उसे मौत नहीं आती हैं।
ऐसा दुःखी व्यक्ति मृत्यु पाने को उसी प्रकार
तरसता है जैसे कोई छिपे खजाने के लिये।
22 ऐसे व्यक्ति कब्र पाकर प्रसन्न होते हैं
और आनन्द मनाते हैं।
23 परमेश्वर उनके भविष्य को रहस्यपूर्ण बनाये
रखता है और उनकी सुरक्षा के लिये उनके
चारों ओर दीवार खड़ी करता है।
24 मैं भोजन के समय प्रसन्न होने के बजाय दुःखी
आहें भरता हूँ।
मेरा विलाप जलधारा की भाँति
बाहर फूट पड़ता है।
25 मैं जिस डरावनी बात से डरता रहा कि कहीं
वहीं मेरे साथ न घट जाये,
वही मेरे साथ घट गई।
और जिस बात से मैं सबसे अधिक डरा,
वही मेरे साथ हो गई।

26 न ही मैं शान्त हो सकता हूँ,
न ही मैं विश्राम कर सकता हूँ।
मैं बहुत ही विपदा में हूँ।"

एलीपज का कथन

4 1-2 फिर तेमान के एलीपज ने उत्तर दिया: "यदि कोई व्यक्ति तुझसे कुछ कहना चाहे तो क्या उससे तू बेचैन होगा? मुझे कहना ही होगा!

3 "हे अय्यूब, तूने बहुत से लोगों को शिक्षा दी और
दुर्बल हाथों को तूने शक्ति दी।
4 जो लोग लड़खड़ा रहे थे तेरे शब्दों ने उन्हें
ढाढ़स बंधाया था।
तूने निर्बल पैरों को अपने
प्रोत्साहन से सबल किया।
5 किन्तु अब तुझ पर विपत्ति का पहाड़ टूट
पड़ा है और तेरा साहस टूट गया है।
विपदा की मार तुझ पर पड़ी और तू
व्याकुल हो उठा।
6 तू परमेश्वर की उपासना करता है,
सो उस पर भरोसा रख।
तू एक भला व्यक्ति है सो इसी को तू अपनी
आशा बना ले।
7 अय्यूब, इस बात को ध्यान में रख कि कोई भी
सज्जन कभी नहीं नष्ट किये गये।
निर्दोष कभी भी नष्ट नहीं किया गया है।
8 मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो कष्टों को
बढ़ाते हैं और जो जीवन को कठिन करते हैं।
किन्तु वे सदा ही दण्ड भोगते हैं।
9 परमेश्वर का दण्ड उन लोगों को मार डालता है,
और उसका क्रोध उन्हें नष्ट करता है।
10 दुर्जन सिंह की तरह गुर्राते और दहाड़ते हैं,
किन्तु परमेश्वर उन दुर्जनों को चुप कराता है।
परमेश्वर उनके दाँत तोड़ देता है।
11 बुरे लोग उन सिंहों के समान होते हैं जिन के
पास शिकार के लिये कुछ भी नहीं होता।
वे मर जाते हैं और उनके बच्चे इधर-उधर
बिखर जाते हैं, और वे मिट जाते हैं।
12 मेरे पास एक सन्देश चुपचाप पहुँचाया गया,
और मेरे कानों में उसकी भनक पड़ी।
13 जिस तरह रात का बुरा स्वप्न नींद उड़ा देता है,
ठीक उसी प्रकार मेरे साथ में हुआ है।
14 मैं भयभीत हुआ और काँपने लगा।
मेरी सब हड्डियाँ हिल गई।
15 मेरे सामने से एक आत्मा जैसी गुजरी जिससे
मेरे शरीर में रोंगटे खड़े हो गये।
16 वह आत्मा चुपचाप ठहर गया किन्तु मैं नहीं
जान सका कि वह क्या था।
मेरी आँखों के सामने एक आकृति खड़ी थी,
और वहाँ सन्नाटा सा छाया था।
फिर मैंने एक बहुत ही शान्त ध्वनि सुनी।
17 'मनुष्य परमेश्वर से अधिक उचित नहीं हो सकता।
अपने रचयिता से मनुष्य अधिक
पवित्र नहीं हो सकता।
18 परमेश्वर अपने स्वर्गीय सेवकों
तक पर भरोसा नहीं कर सकता।
परमेश्वर को अपने दूतों
तक में दोष मिल जातें हैं।
19 सो मनुष्य तो और भी अधिक गया गुजरा है।
मनुष्य तो कच्चे मिट्टी के घरौंदों में रहते हैं।
इन मिट्टी के घरौंदों की
नींव धूल में रखी गई हैं।
इन लोगों को उससे भी अधिक आसानी से
मसल कर मार दिया जाता है, जिस तरह
भुनगों को मसल कर मारा जाता है।
20 लोग भोर से सांझ के बीच में मर जाते हैं किन्तु
उन पर ध्यान तक कोई नहीं देता है।
वे मर जाते हैं और सदा के लिये चले जाते हैं।
21 उनके तम्बूओं की रस्सियाँ उखाड़ दी जाती हैं,
और ये लोग विवेक के बिना मर जाते हैं।'

5 "अय्यूब, यदि तू चाहे तो पुकार कर देख ले
किन्तु तुझे कोई भी उत्तर नहीं देगा।
तू किसी भी स्वर्गदूत की ओर
मुड़ नहीं सकता है।
2 मूर्ख का क्रोध उसी को नष्ट कर देगा।
मूर्ख की तीव्र भावनायें
उसी को नष्ट कर डालेंगी।
3 मैंने एक मूर्ख को देखा जो सोचता था कि

वह सुरक्षित है।
किन्तु वह एकाएक मर गया।
4 ऐसे मूर्ख व्यक्ति की सन्तानों की कोई भी
सहायता न कर सका।
न्यायालय में उनको बचाने वाला कोई न था।
5 उस की फसल को भूखे लोग खा गये।
यहाँ तक कि वे भूखे लोग काँटों की झाड़ियों
के बीच उगे अन्न कण को भी उठा ले गये।
जो कुछ भी उसके पास था उसे लालची लोग
उठा ले गये।
6 बुरा समय मिट्टी से नहीं निकलता है,
न ही विपदा मैदानों में उगती है।
7 मनुष्य का जन्म दुःख भोगने के लिए हुआ है।
यह उतना ही सत्य है जितना सत्य है कि
आग से चिंगारी ऊपर उठती है।
8 किन्तु अय्यूब, यदि तुम्हारी जगह मैं होता तो
मैं परमेश्वर के पास जाकर अपना दुखड़ा
कह डालता।
9 लोग उन अद्भुत भरी बातों को जिन्हें
परमेश्वर करता है, नहीं समझते हैं।
ऐसे उन अद्भुत कर्मो का जिसे परमेश्वर
करता है, कोई अन्त नहीं है।
10 परमेश्वर धरती पर वर्षा को भेजता है,
और वही खेतों में पानी पहुँचाया करता है।
11 परमेश्वर विनम्र लोगों को ऊपर उठाता है,
और दुःखी जन को अति प्रसन्न बनाता है।
12 परमेश्वर चालाक व दुष्ट लोगों के
कुचक्र को रोक देता है।
इसलिये उनको सफलता नहीं मिला करती।
13 परमेश्वर चतुर को उसी की चतुराई भरी
योजना में पकड़ता है।
इसलिए उनके चतुराई भरी योजनाएं
सफल नहीं होती।
14 वे चालाक लोग दिन के प्रकाश में भी ठोकरें
खाते फिरते हैं।
यहाँ तक कि दोपहर में भी वे रास्ते का अनुभव
रात के जैसे करते हैं।
15 परमेश्वर दीन व्यक्ति को मृत्यु से बचाता है
और उन्हें शक्तिशाली चतुर
लोगों की शक्ति से बचाता है।
16 इसलिए दीन व्यक्ति को भरोसा है।
परमेश्वर बुरे लोगों को नष्ट करेगा
जो खरे नहीं हैं।
17 वह मनुष्य भाग्यवान है, जिसका परमेश्वर सुधार
करता है इसलिए जब सर्वशक्तिशाली परमेश्वर
तुम्हें दण्ड दे रहा तो तुम
अपना दुःखड़ा मत रोओ।
18 परमेश्वर उन घावों पर पट्टी बान्धता है
जिन्हें उसने दिया है।
वह चोट पहुँचाता है किन्तु उसके ही हाथ
चंगा भी करते हैं।
19 वह तुझे छ: विपत्तियों से बचायेगा।
हाँ! सातों विपत्तियों में तुझे कोई हानि न होगी।
20 अकाल के समय परमेश्वर तुझे मृत्यु से बचायेगा
और परमेश्वर युद्ध में तेरी मृत्यु से रक्षा करेगा।
21 जब लोग अपने कठोर शब्दों से
तेरे लिये बुरी बात बोलेंगे,
तब परमेश्वर तेरी रक्षा करेगा।
विनाश के समय तुझे डरने की
आवश्यकता नहीं होगी।
22 विनाश और भुखमरी पर तू हँसेगा और
तू जंगली जानवरों से कभी भयभीत न होगा।
23 तेरी वाचा परमेश्वर के साथ है
यहाँ तक कि मैदानों की चट्टाने भी तेरी
वाचा में भाग लेती है।
जंगली पशु भी तेरे साथ शान्ति रखते हैं।
24 तू शान्ति से रहेगा क्योंकि तेरा तम्बू सुरक्षित है।
तू अपनी सम्पत्ति को सम्भालेगा और उसमें से
कुछ भी खोया हुआ नहीं पायेगा।
25 तेरी बहुत सन्तानें होंगी और वे इतनी होंगी
जितनी घास की पत्तियाँ पृथ्वी पर हैं।
26 तू उस पके गेहूँ जैसा होगा जो कटनी के
समय तक पकता रहता है।
हाँ, तू पूरी वृद्ध आयु तक जीवित रहेगा।
27 अय्यूब, हमने ये बातें पढ़ी हैं और
हम जानते हैं कि ये सच्ची है।
अत: अय्यूब सुन और तू इन्हें स्वयं
अपने आप जान।”

6

[1-2] फिर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा,
"यदि मेरी पीड़ा को तौला जा सके और
सभी वेदनाओं को तराजू में रख दिया जाये,
तभी तुम मेरी व्यथा को समझ सकोगे।
3 मेरी व्यथा समुद्र की समूची रेत से भी
अधिक भारी होंगी।
इसलिये मेरे शब्द मूखर्तापूर्ण लगते हैं।
4 सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बाण मुझ में बिधेहैं
और मेरा प्राण उन बाणों के विष को
पिया करता है।
परमेश्वर के वे भयानक शस्त्र मेरे विरुद्ध एक
साथ रखी हुई हैं।
5 तेरे शब्द कहने के लिये आसान हैं जब
कुछ भी बुरा नहीं घटित हुआ है।
यहाँ तक कि बनैला गधा भी नहीं रेंकता यदि
उसके पास घास खाने को रहे और कोई भी
गाय तब तक नहीं रम्भाती जब तक उस के
पास चरने के लिये चारा है।
6 भोजन बिना नमक के बेस्वाद होता है और
अण्डे की सफेदी में स्वाद नहीं आता है।
7 इस भोजन को छूने से मैं इन्कार करता हूँ।
इस प्रकार का भोजन मुझे तंग कर डालता है।
मेरे लिये तुम्हारे शब्द ठीक उसी प्रकार के हैं।
8 काश! मुझे वह मिल पाता जो मैंने माँगा है।
काश! परमेश्वर मुझे दे देता जिसकी
मुझे कामना है।
9 काश! परमेश्वर मुझे कुचल डालता और
मुझे आगे बढ़ कर मार डालता।
10 यदि वह मुझे मारता है तो एक बात का चैन
मुझे रहेगा, अपनी अनन्तत:
पीड़ा में भी मुझे
एक बात की प्रसन्नता रहेगा कि मैंने कभी भी
अपने पवित्र के आदेशों पर चलने से
इन्कार नहीं किया।
11 मेरी शक्ति क्षीण हो चुकी है अत:
जीते रहने की आशा मुझे नहीं है।
मुझ को पता नहीं कि अंत में मेरे साथ क्या
होगा? इसलिये धीरज धरने का
मेरे पास कोई कारण नहीं है।
12 मैं चट्टान की भाँति सुदृढ़ नहीं हूँ।
न ही मेरा शरीर काँसे से रचा गया है।
13 अब तो मुझमें इतनी भी शक्ति नहीं कि
मैं स्वयं को बचा लूँ।
क्यों? क्योंकि मुझ से सफलता छीन ली गई है।
14 क्योंकि वह जो अपने मित्रों के प्रति निष्ठा
दिखाने से इन्कार करता है।
वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर
का भी अपमान करता है।
15 किन्तु मेरे बन्धुओं, तुम
विश्वासयोग्य नहीं रहे।
मैं तुम पर निर्भर नहीं रह सकता हूँ।
तुम ऐसी जलधाराओं के सामान हो जो कभी
बहती है और कभी नहीं बहती है।
तुम ऐसी जलधाराओं के समान हो
जो उफनती रहती है।
16 जब वे बर्फ से और पिघलते हुए
हिम सा रूँध जाती है।
17 और जब मौसम गर्म और सूखा होता है तब
पानी बहना बन्द हो जाता है,
और जलधाराऐं सूख जाती हैं।
18 व्यापारियों के दल मरुभूमि में अपनी राहों से
भटक जाते हैं और वे लुप्त हो जाते हैं।
19 तेमा के व्यापारी दल जल को खोजते रहे
और शबा के यात्री आशा के साथ देखते रहे।
20 वे आश्वत थे कि उन्हे जल मिलेगा
किन्तु उन्हें निराशा मिली।
21 अब तुम उन जलधाराओं के समान हो।
तुम मेरी यातानाओं को देखते हो और भयभीत हो।
22 क्या मैंने तुमसे सहायता माँगी? नहीं।
किन्तु तुमने मुझे अपनी सम्मति
स्वतंत्रता पूर्वक दी।
23 क्या मैंने तुमसे कहा कि शत्रुओं से मुझे बचा
लो और क्रूर व्यक्तियों से मेरी रक्षा करो।
24 अत: अब मुझे शिक्षा दो और
मैं शान्त हो जाऊँगा।
मुझे दिखा दो कि मैंने क्या बुरा किया है।
25 सच्चे शब्द सशक्त होते हैं किन्तु तुम्हारे तर्क
कुछ भी नहीं सिद्ध करते।

26 क्या तुम मेरी आलोचना करने की योजनाऐं
बनाते हो? क्या तुम इससे भी अधिक
निराशापूर्ण शब्द बोलोगे?
27 यहाँ तक कि तुम जुऐ में उन बच्चों की
वस्तुओं को छीनना चाहते हो, जिनके पिता नहीं हैं।
तुम तो अपने निज मित्र को भी बेच डालोगे।
28 किन्तु अब मेरे मुख को पढ़ो।
मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूँगा।
29 अत:, अपने मन को अब परिवर्तित करो।
अन्यायी मत बनो, फिर से जरा सोचो कि
मैंने कोई बुरा काम नहीं किया है।
30 मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ।
मुझको भले और बुरे लोगों की पहचान है।"

7 अय्यूब ने कहा,
"मनुष्य को धरती पर कठिन संघर्ष करना पड़ता है।
उसका जीवन भाड़े के श्रमिक के
जीवन जैसा होता है।
2 मनुष्य उस भाड़े के श्रमिक जैसा है
जो तपते हुए दिन में मेहनत करने के बाद
शीतल छाया चाहता है और मजदूरी
मिलने के दिन की बाट जोहता रहता है।
3 महीने दर महीने बेचैनी के गुजर गये हैं और
पीड़ा भरी रात दर रात मुझे दे दी गई है।
4 जब मैं लेटता हूँ, मैं सोचा करता हूँ कि अभी
और कितनी देर है मेरे उठने का?
यह रात घसीटती चली जा रही है।
मैं छटपटाता और करवट बदलता हूँ,
जब तक सूरज नहीं निकल आता।
5 मेरा शरीर कीड़ों और धूल से ढका हुआ है।
मेरी त्वचा चिटक गई है और इसमें रिसते हुऐ
फोड़े भर गये हैं।
6 मेरे दिन जुलाहे की फिरकी से भी अधिक तीव्र
गति से बीत रहें हैं।
मेरे जीवन का अन्त बिना किसी
आशा के हो रहा है।
7 हे परमेश्वर, याद रख, मेरा जीवन
एक फूँक मात्र है।
अब मेरी आँखे कुछ भी अच्छा नहीं देखेंगी।
8 अभी तू मुझको देख रहा है किन्तु फिर तू
मुझको नहीं देख पायेगा।
तू मुझको ढूंढेगा किन्तु तब तक
मैं जा चुका होऊँगा।
9 एक बादल छुप जाता है और लुप्त हो जाता है।
इसी प्रकार एक व्यक्ति जो मर जाता है और
कब्र में गाड़ दिया जाता है,
वह फिर वापस नहीं आता है।
10 वह अपने पुराने घर को वापस
कभी भी नहीं लौटेगा।
उसका घर उसको फिर कभी भी नहीं जानेगा।
11 अत: मैं चुप नहीं रहूँगा। मैं सब कह डालूँगा।
मेरी आत्मा दुखित है और मेरा मन कटुता से
भरा है, अत: मैं अपना दुखड़ा रोऊँगा।
12 हे परमेश्वर, तू मेरी रखवाली क्यों करता है?
क्या मैं समुद्र हूँ, अथवा समुद्र का कोई दैत्य?
13 जब मुझ को लगता है कि मेरी खाट मुझे
शान्ति देगी और मेरा पलंग
मुझे विश्राम व चैन देगा।
14 हे परमेश्वर, तभी तू मुझे स्वप्न में डराता है,
और तू दर्शन से मुझे घबरा देता है।
15 इसलिए जीवित रहने से अच्छा
मुझे मर जाना ज्यादा पसन्द है।
16 मैं अपने जीवन से घृणा करता हूँ।
मेरी आशा टूट चुकी है।
मैं सदैव जीवित रहना नहीं चाहता।
मुझे अकेला छोड़ दे।
मेरा जीवन व्यर्थ है।
17 हे परमेश्वर, मनुष्य तेरे लिये
क्यों इतना महत्वपूर्ण है?
क्यों तुझे उसका आदर करना चाहिये?
क्यों मनुष्य पर तुझे इतना ध्यान देना चाहिये?
18 हर प्रात: क्यों तू मनुष्य के पास आता है और
हर क्षण तू क्यों उसे परखा करता है?
19 हे परमेश्वर, तू मुझसे कभी भी दृष्टि नहीं
फेरता है और मुझे एक क्षण के लिये भी
अकेला नहीं छोड़ता है।
20 हे परमेश्वर, तू लोगों पर दृष्टि रखता है।
यदि मैंने पाप किया, तब मैं क्या कर सकता हूँ?

तूने मुझको क्यों निशाना बनाया है?
क्या मैं तेरे लिये कोई समस्या बना हूँ?
21 क्यों तू मेरी गलतियों को क्षमा नहीं करता और
मेरे पापों को क्यों तू माफ नहीं करता है?
मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा और
कब्र में चला जाऊँगा।
जब तू मुझे ढूँढेगा किन्तु तब तक
मैं जा चुका होऊँगा।"

8

इस के बाद शूह प्रदेश के बिलदद ने उत्तर देते हुए कहा,
2 "तू कब तक ऐसी बातें करता रहेगा?
तेरे शब्द तेज आँधी की तरह बह रहे हैं।
3 परमेश्वर सदा निष्पक्ष है।
न्यायपूर्ण बातों को सर्वशक्तिशाली परमेश्वर
कभी नहीं बदलता है।
4 अत: यदि तेरी सन्तानों ने परमेश्वर के विरुद्ध
पाप किया है तो,
उसने उन्हें दण्डित किया है।
अपने पापों के लिये उन्हें भुगतना पड़ा है।
5 किन्तु अब अय्यूब, परमेश्वर की ओर
दृष्टि कर और सर्वशक्तिमान परमेश्वर से
उस की दया पाने के लिये विनती कर।
6 यदि तू पवित्र है, और उत्तम है तो वह शीघ्र
आकर तुझे सहारा और तुझे तेरा परिवार
और वस्तुऐं तुझे लौटायेगा।
7 जो कुछ भी तूने खोया वह तुझे छोटी सी
बात लगेगी।
क्यों? क्योंकि तेरा भविष्य बड़ा ही सफल होगा।
8 उन वृद्ध लोगों से पूछ और पता कर कि
उनके पूर्वजों ने क्या सीखा था।
9 क्योंकि ऐसा लगता है जैसे हम तो बस कल ही
पैदा हुए हैं, हम कुछ नहीं जानते।
परछाई की भाँति हमारी आयु पृथ्वी पर
बहुत छोटी है।
10 हो सकता है कि वृद्ध लोग तुझे कुछ
सिखा सकें।
हो सकता है जो उन्होंने सीखा है वे तुझे
सिखा सकें।"
11 बिलदद ने कहा, "क्या सूखी भूमि में भोजपत्र
का वृक्ष बढ़ कर लम्बा हो सकता है?
नरकुल बिना जल के बढ़ सकता है?
12 नहीं, यदि पानी सूख जाता है
तो वे भी मुरझा जायेंगे।
उन्हें काटे जाने के योग्य काट कर काम में
लाने को वे बहुत छोटे रह जायेंगे।
13 वह व्यक्ति जो परमेश्वर को भूल जाता है,
नर कुल की भाँति होता है।
वह व्यक्ति जो परमेश्वर को भूल जाता है
कभी आशावान नहीं होगा।
14 उस व्यक्ति का विश्वास बहुत दुर्बल होता है।
वह व्यक्ति मकड़ी के जाले के सहारे रहता है।
15 यदि कोई व्यक्ति मकड़ी के जाले को पकड़ता है
किन्तु वह जाला उस को सहारा नहीं देगा।
16 वह व्यक्ति उस पौधे के समान है जिसके पास
पानी और सूर्य का प्रकाश बहुतायात से है।
उसकी शाखाऐं बगीचे में हर तरफ फैलती हैं।
17 वह पत्थर के टीले के चारों ओर अपनी जड़े
फैलाता है और चट्टान में उगने के लिये
कोई स्थान ढूँढता है।
18 किन्तु जब वह पौधा अपने स्थान से उखाड़
दिया जाता है, तो कोई नहीं जान पाता कि
वह कभी वहाँ था।
19 किन्तु वह पौधा प्रसन्न था, अब दूसरे पौधे
वहाँ उगेंगे, जहाँ कभी वह पौधा था।
20 किन्तु परमेश्वर किसी भी निर्दोष
व्यक्ति को नहीं त्यागेगा और
वह बुरेव्यक्ति को सहारा नहीं देगा।
21 परमेश्वर अभी भी तेरे मुख को हँसी से भर
देगा और तेरे ओठों को खुशी से चहकायेगा।
22 और परमेश्वर तेरे शत्रुओं को लज्जित करेगा
और वह तेरे शत्रुओं के घरों को नष्ट कर देगा।"

9

फिर अय्यूब ने उत्तर दिया:
2 "हाँ, मैं जानता हूँ कि तू सत्य कहता है किन्तु
मनुष्य परमेश्वर के सामने निर्दोष
कैसे हो सकता है?

3 मनुष्य परमेश्वर से तर्क नहीं कर सकता।
परमेश्वर मनुष्य से हजारों प्रश्न पूछ सकता है
और कोई उनमें से एक का भी
उत्तर नहीं दे सकता है।
4 परमेश्वर का विवेक गहन है,
उसकी शक्ति महान है।
ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो परमेश्वर से
झगड़े और हानि न उठाये।
5 जब परमेश्वर क्रोधित होता है, वह पर्वतों को
हटा देता है और वे जान तक नहीं पाते।
6 परमेश्वर पृथ्वी को कँपाने के लिये
भूकम्प भेजता है।
परमेश्वर पृथ्वी की नींव को हिला देता है।
7 परमेश्वर सूर्य को आज्ञा दे सकता है और उसे
उगने से रोक सकता हैं।
वह तारों को बन्द कर सकता है
ताकि वे न चमकें।
8 केवल परमेश्वर ने आकाशों की रचना की।
वह सागर की लहरों पर विचरण कर सकता है।
9 परमेश्वर ने सप्तर्षी, मृगशिरा और कचपचिया
तारों को बनाया है।
उसने उन ग्रहों को बनाया जो दक्षिण का
आकाश पार करते हैं।
10 परमेश्वर ऐसे अद्‌भुत कर्म करता है
जिन्हें मनुष्य नहीं समझ सकता।
परमेश्वर के महान आश्चर्यकर्मों का
कोई अन्त नहीं है।
11 परमेश्वर जब मेरे पास से निकलता है,
मै उसे देख नहीं पाता हूँ।
परमेश्वर जब मेरी बगल से निकल जाता है।
मै उसकी महानता को समझ नहीं पाता।
12 यदि परमेश्वर छीनने लगता है तो कोई भी उसे
रोक नहीं सकता।
कोई भी उस से कह नहीं सकता कि
'तू क्या कर रहा है?'
13 परमेश्वर अपने क्रोध को नहीं रोकेगा।
यहाँ तक कि राहाब दानव (सागर का दैत्य)
के सहायक भी परमेश्वर से डरते हैं।

14 अत: परमेश्वर से मैं तर्क नहीं कर सकता।
मैं नहीं जानता कि उससे क्या कहा जाये।
15 मैं यद्यपि निर्दोष हूँ किन्तु मैं परमेश्वर को
एक उत्तर नहीं दे सकता।
मैं बस अपने न्यायकर्ता (परमेश्वर) से
दया की याचना कर सकता हूँ।
16 यदि मैं उसे पुकारुँ और वह उत्तर दे, तब भी
मुझे विश्वास नहीं होगा कि
वह सचमुच मेरी सुनता है।
17 परमेश्वर मुझे कुचलने के लिये तूफान भेजेगा
और वह मुझे अकारण ही
और अधिक घावों को देगा।
18 परमेश्वर मुझे फिर सांस नहीं लेने देगा।
वह मुझे और अधिक यातना देगा।
19 मैं परमेश्वर को पराजित नहीं कर सकता।
परमेश्वर शक्तिशाली है।
मैं परमेश्वर को न्यायालय में नहीं ले जा सकता
और उसे अपने प्रति मैं निष्पक्ष नहीं बना सकता।
परमेश्वर को न्यायालय में आने के लिये कौन
विवश कर सकता है?
20 मैं निर्दोष हूँ किन्तु मेरा भयभीत मुख
मुझे अपराधी कहेगा।
अत: यद्यपि मैं निरपराधी हूँ किन्तु मेरा मुख
मुझे अपराधी घोषित करता है।
21 मैं पाप रहित हूँ किन्तु मुझे अपनी ही
परवाह नहीं है।
मैं स्वयं अपने ही जीवन से घृणा करता हूँ।
22 मैं स्वयं से कहता हूँ हर किसी के साथ
एक सा ही घटित होता है।
निरपराध लोग भी वैसे ही मरते हैं
जैसे अपराधी मरते हैं।
परमेश्वर उन सबके जीवन का अन्त करता है।
23 जब कोई भयंकर बात घटती है और कोई
निर्दोष व्यक्ति मारा जाता है तो
क्या परमेश्वर उस के दु:ख पर हँसता है?
24 जब धरती दुष्ट जन को दी जाती है तो क्या
मुखिया को परमेश्वर अंधा कर देता है?
यदि यह परमेश्वर ने नहीं किया तो फिर
किसने किया है?

25 किसी तेज धावक से तेज मेरे दिन भाग रहे हैं।
मेरे दिन उड़ कर बीत रहे हैं और उनमें कोई
प्रसन्नता नहीं है।
26 वेग से मेरे दिन बीत रहे हैं जैसे श्री–पत्र की
नाव बही चली जाती है, मेरे दिन टूट पड़ते है
ऐसे जैसे उकाब अपने शिकार पर टूट पड़ता हो!
27 यदि मैं कहूँ कि मैं अपना दुखड़ा रोऊँगा,
अपना दु:ख भूल जाऊँगा और उदासी
छोड़कर हँसने लगूँगा।
28 इससे वास्तव में कोई भी परिवर्तन नहीं होता है।
पीड़ा मुझे अभी भी भयभीत करती है।
29 मुझे तो पहले से ही अपराधी ठहराया
जा चुका है, सो मैं क्यों जतन करता रहूँ?
मैं तो कहता हूँ 'भूल जाओ इसे।'
30 चाहे मैं अपने आपको हिम से धो लूँ और यहाँ
तक की अपने हाथ साबुन से साफ कर लूँ!
31 फिर भी परमेश्वर मुझे घिनौने गर्त में धकेल
देगा जहाँ मेरे वस्त्र तक मुझसे घृणा करेंगे।
32 परमेश्वर, मुझ जैसा मनुष्य नहीं है।
इसलिए उस को मैं उत्तर नहीं दे सकता।
हम दोनों न्यायालय में एक दूसरे से
मिल नहीं सकते।
33 काश! कोई बिचौलिया होता जो दोनों तरफ की
बातें सुनता।
काश! कोई ऐसा होता जो हम दोनों का
न्याय निष्पक्ष रूप से करता।
34 काश! कोई जो परमेश्वर से उस की दण्ड की
छड़ी को ले।
तब परमेश्वर मुझे और अधिक
भयभीत नहीं करेगा।
35 तब मैं बिना डरे परमेश्वर से वह सब कह
सकूँगा, जो मैं कहना चाहता हूँ।

10 किन्तु हाय, अब मैं वैसा नहीं कर सकता।
मुझ को स्वयं अपने जीवन से घृणा हैं अत:
मैं मुक्त भाव से अपना दुखड़ा रोऊँगा।
मेरे मन में कड़वाहट भरी है अत: मैं अब बोलूँगा।
2 मैं परमेश्वर से कहूँगा 'मुझ पर दोष मत लगा।।
मुझे बता दे, मैंने तेरा क्या बुरा किया?
मेरे विरुद्ध तेरे पास क्या है?
3 हे परमेश्वर, क्या तू मुझे चोट पहुँचा कर
प्रसन्न होता है? ऐसा लगता है जैसे तुझे
अपनी सृष्टि की चिंता नहीं है।
और शायद तू दुष्टों के कुचक्रों का
पक्ष लेता है।
4 हे परमेश्वर, क्या तेरी आँखें मनुष्य समान है?
क्या तू वस्तुओं को ऐसे ही देखता है,
जैसे मनुष्य की आँखे देखा करती हैं।
5 तेरी आयु हम मनुष्यों जैसे छोटी नहीं है।
तेरे वर्ष कम नहीं हैं जैसे मनुष्य के कम होते हैं।
6 तू मेरी गलतियों को ढूढ़ता है,
और मेरे पापों को खोजता है।
7 तू जानता है कि मै निरपराध हूँ।
किन्तु मुझे कोई भी तेरी शक्ति से बचा नहीं सकता।
8 परमेश्वर, तूने मुझ को रचा और तेरे हाथों ने
मेरी देह को सँवारा,
किन्तु अब तू ही मुझ से विमुख हुआ और
मुझे नष्ट कर रहा है।
9 हे परमेश्वर, याद कर कि तूने
मुझे मिट्टी से मढ़ा, किन्तु अब तू ही
मुझे फिर से मिट्टी में मिलायेगा।
10 तू दूध के समान मुझ को उडेंलता है, दूध की
तरह तू मुझे उबालता है और
तू मुझे दूध से पनीर में बदलता है।
11 तूने मुझे हड्डियों और माँस पेशियों से बुना
और फिर तूने मुझ पर माँस
और त्वचा चढ़ा दी।
12 तूने मुझे जीवन का दान दिया और
मेरे प्रति दयालु रहा।
तूने मेरा ध्यान रखा और तूने
मेरे प्राणों की रखवाली की।
13 किन्तु यह वह है जिसे तूने अपने मन में छिपाये
रखा और मैं जानता हूँ, यह वह है
जिसकी तूने अपने मन में गुप्त रूप से
योजना बनाई।
हाँ, यह मैं जानता हूँ, यह वह है
जो तेरे मन में था।
14 यदि मैंने पाप किया तो तू मुझे देखता था।
सो मेरे बुरे काम का दण्ड तू दे सकता था।

15 जब मैं पाप करता हूँ तो मैं अपराधी होता हूँ
और यह मेरे लिये बहुत ही बुरा होगा।
किन्तु मैं यदि निरपराध भी हूँ तो भी अपना
सिर नहीं उठा पाता क्योंकि
मैं लज्जा और पीड़ा से भरा हुआ हूँ।
16 यदि मुझ को कोई सफलता मिल जाये और मैं
अभिमानी हो जाऊँ, तो तू मेरा पीछा वैसे
करेगा जैसे सिंह के पीछे
कोई शिकारी पड़ता है।
और फिर तू मेरे विरुद्ध अपनी शक्ति दिखायेगा।
17 तू मेरे विरुद्ध सदैव किसी न किसी को
नया साक्षी बनाता है।
तेरा क्रोध मेरे विरुद्ध और अधिक भड़केगा
तथा मेरे विरुद्ध तू नई नई शत्रु सेना लायेगा।
18 सो हे परमेश्वर, तूने मुझको क्यों जन्म दिया?
इससे पहले की कोई मुझे देखता
काश! मैं मर गया होता।
19 काश! मैं जीवित न रहता।
काश! माता के गर्भ से सीधे ही
कब्र में उतारा जाता।
20 मेरा जीवन लगभग समाप्त हो चुका है सो मुझे
अकेला छोड़ दो।
मेरा थोड़ा सा समय जो बचा है उसे मुझे
चैन से जी लेने दो।
21 इससे पहले कि मैं वहाँ चला जाऊँ जहाँ से
कभी कोई वापस नहीं आता हैं।
जहाँ अंधकार है और मृत्यु का स्थान है।
22 जो थोड़ा समय मेरा बचा है उसे मुझ को जी
लेने दो, इससे पहले कि मैं वहाँ चला जाऊँ
जिस स्थान को कोई नहीं देख पाता अर्थात्
अंधकार, विप्लव, और गड़बड़ी का स्थान।
उस स्थान में यहाँ तक कि प्रकाश भी
अंधकारपूर्ण होता है।'"

सोपर का अय्यूब से कथन

11 इस पर नामात नामक प्रदेश के सोपर ने अय्यूब को उत्तर देते हुये कहा,

2 "इस शब्दों के प्रवाह का उत्तर देना चाहिये।
क्या यह सब कहना अय्यूब को
निर्दोष ठहराता है? नहीं!
3 अय्यूब, क्या तुम सोचते हो कि हमारे पास
तुम्हारे लिये उत्तर नहीं है?
क्या तुम सोचते हो कि जब तुम परमेश्वर पर
हंसते हो तो कोई तुम्हें चेतावनी नहीं देगा।
4 अय्यूब, तुम परमेश्वर से कहते रहे कि,
'मेरा विश्वास सत्य है और तू देख सकता है
कि मैं निष्कलंक हूँ!'
5 अय्यूब, मेरी ये इच्छा है कि परमेश्वर तुझे
उत्तर दे, यह बताते हुए कि तू दोषपूर्ण है!
6 काश! परमेश्वर तुझे बुद्धि के छिपे रहस्य बताता
और वह सचमुच तुझे उनको बतायेगा!
हर कहानी के दो पक्ष होते हैं, अय्यूब, मेरी सुन
परमेश्वर तुझे कम दण्डित कर रहा है,
अपेक्षाकृत जितना उसे सचमुच
तुझे दण्डित करना चाहिये।
7 अय्यूब, क्या तुम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के
रहस्यपूर्ण सत्य समझ सकते हो?
क्या तुम उसके विवेक की सीमा मर्यादा
समझ सकते हो?
8 उसकी सीमायें आकाश से ऊँची हैं,
इसलिये तुम नहीं समझ सकते हो!
सीमायें नर्क की गहराईयों से गहरी है,
सो तू उनको समझ नहीं सकता है!
9 वे सीमायें धरती से व्यापक हैं,
और सागर से विस्तृत हैं।
10 यदि परमेश्वर तुझे बंदी बनाये और तुझको
न्यायालय में ले जाये, तो कोई भी व्यक्ति
उसे रोक नहीं सकता है।
11 परमेश्वर सचमुच जानता है कि
कौन पाखण्डी है।
परमेश्वर जब बुराई को देखता है,
तो उसे याद रखता है।
12 किन्तु कोई मूढ जन कभी बुद्धिमान नहीं होगा,
जैसे बनैला गधा कभी मनुष्य को
जन्म नहीं दे सकता है।
13 सो अय्यूब, तुझको अपना मन तैयार करना
चाहिये, परमेश्वर की सेवा करने के लिये।
तुझे अपने निज हाथों को प्रार्थना करने को

ऊपर उठाना चाहिये।
14 वह पाप जो तेरे हाथों में बसा है,
उसको तू दूर कर।
अपने तम्बू में बुराई को मत रहने दे।
15 तभी तू निश्चय ही बिना किसी लज्जा के आँख
ऊपर उठा कर परमेश्वर को देख सकता है।
तू दृढता से खड़ा रहेगा और नहीं डरेगा।
16 अय्यूब, तब तू अपनी विपदा को भूल पायेगा।
तू अपने दुखड़ो को बस उस पानी सा याद
करेगा जो तेरे पास से बह कर चला गया।
17 तेरा जीवन दोपहर के सूरज से भी
अधिक उज्जवल होगा।
जीवन की अँधेरी घड़ियाँ ऐसे चमकेगी
जैसे सुबह का सूरज।
18 अय्यूब, तू सुरक्षित अनुभव करेगा
क्योंकि वहाँ आशा होगी।
परमेश्वर तेरी रखवाली करेगा और
तुझे आराम देगा।
19 चैन से तू सोयेगा, कोई तुझे नहीं डरायेगा
और बहुत से लोग तुझ से सहायता माँगेंगे!
20 किन्तु जब बुरे लोग आसरा ढूढेंगे
तब उनको नहीं मिलेगा।
उनके पास कोई आस नहीं होगी।
वे अपनी विपत्तियों से बच कर
निकल नहीं पायेंगे।
मृत्यु ही उनकी आशा मात्र होगी।”

सोपर को अय्यूब का उत्तर

12 फिर अय्यूब ने सोपर को उत्तर दिया:

2 “नि:सन्देह तुम सोचते हो कि मात्र तुम ही लोग
बुद्धिमान हो, तुम सोचते हो कि
जब तुम मरोगे तो विवेक मर जायेगा
तुम्हारे साथ।
3 किन्तु तुम्हारे जितनी मेरी बुद्धि भी उत्तम है,
मैं तुम से कुछ घट कर नहीं हूँ।
ऐसी बातों को जैसी तुम कहते हो,
हर कोई जानता है।
4 अब मेरे मित्र मेरी हँसी उड़ाते हैं, वह कहते है:
‘हाँ, वह परमेश्वर से विनती किया करता था,
और वह उसे उत्तर देता था।
इसलिए यह सब बुरी बातें
उसके साथ घटित हो रही है।’
यद्यपि मैं दोषरहित और खरा हूँ,
लेकिन वे मेरी हँसी उड़ाते हैं।
5 ऐसे लोग जिन पर विपदा नहीं पड़ी,
विपदा ग्रस्तलोगों की हँसी किया करते हैं।
ऐसे लोग गिरते हुये व्यक्ति को
धक्का दिया करते हैं।
6 डाकुओं के डेरे निश्चिंत रहते हैं, ऐसे लोग
जो परमेश्वर को रुष्ट करते हैं,
शांति से रहते हैं।
स्वयं अपने बल को वह अपना
परमेश्वर मानते हैं।
7 चाहे तू पशु से पूछ कर देख, वे तुझे सिखा देंगे,
अथवा हवा के पक्षियों से पूछ वे तुझे बता देंगे।
8 अथवा तू धरती से पूछ ले वह तुझको सिखा
देगी या सागर की मछलियों को
अपना ज्ञान तुझे बताने दे।
9 हर कोई जानता है कि परमेश्वर ने इन सब
वस्तुओं को रचा है।
10 हर जीवित पशु और हर एक प्राणी जो साँस
लेता है, परमेश्वर की शक्ति के आधीन है।
11 जैसे जीभ भोजन का स्वाद चखती है,
वैसी ही कानों को शब्दों को परखना भाता है।
12 हम कहते है, “ऐसे ही बुढ़ों के पास विवेक
रहता है, और लम्बी आयु समझ बूझ देती है।”
13 विवेक और सामर्थ्य परमेश्वर के साथ रहते है,
सम्मत्ति और सूझ-बूझ उसी की ही होती है।
14 यदि परमेश्वर किसी वस्तु को ढा गिराये तो,
फिर लोग उसे नहीं बना सकते।
यदि परमेश्वर किसी व्यक्ति को बन्दी बनाये,
तो लोग उसे मुक्त नहीं कर सकते।
15 यदि परमेश्वर वर्षा को रोके तो
धरती सूख जायेगी।
यदि परमेश्वर वर्षा को छूट दे दे, तो वह धरती
पर बाढ़ ले आयेगी।

16 परमेश्वर समर्थ है और वह सदा
विजयी होता है।
वह व्यक्ति जो छलता है और वह व्यक्ति
जो छला जाता है दोनो परमेश्वर के हैं।
17 परमेश्वर मन्त्रियों को बुद्धि से वंचित कर देता है,
और वह प्रमुखों को ऐसा बना देता है कि
वे मूर्ख जनों जैसा व्यवहार करने लगते हैं।
18 राजा बन्दियों पर जंजीर डालते हैं किन्तु उन्हें
परमेश्वर खोल देता है।
फिर परमेश्वर उन राजाओं पर एक
कमरबन्द बांध देता है।
19 परमेश्वर याजको को बन्दी बना कर, पद से
हटाता है और, तुच्छ बना कर ले जाता है।
वह बलि और शक्तिशाली लोगों को
शक्तिहीन कर देता है।
20 परमेश्वर विश्वासपात्र सलाह
देनेवाले को चुप करा देता है।
वह वृद्ध लोगों का विवेक छीन लेता है।
21 परमेश्वर महत्वर्पूण हाकिमों पर
घृणा उंडेल देता है।
वह शासकों की शक्ति छीन लिया करता है।
22 परमेश्वर गहन अंधकार से रहस्यपूर्ण
सत्य को प्रगट करता है।
ऐसे स्थानों में जहाँ मृत्यु सा अंधेरा है
वह प्रकाश भेजता है।
23 परमेश्वर राष्ट्रों को विशाल और शक्तिशाली
होने देता है, और फिर उनको वह
नष्ट कर डालता है।
वह राष्ट्रों को विकसित कर विशाल बनने देता
है, फिर उनके लोगों को वह
तितर-बितर कर देता है
24 परमेश्वर धरती के प्रमुखों को मूर्ख बना देता है,
और उन्हें नासमझ बना देता है।
वह उनको मरुभूमि में जहाँ कोई राह नहीं
भटकने को भेज देता है।
25 वे प्रमुख अंधकार के बीच टटोलते हैं,
कोई भी प्रकाश उनके पास नहीं होता है।
परमेश्वर उनको ऐसे चलाता है,
जैसे पी कर धुत्त हुये लोग चलते हैं।'

13 अय्यूब ने कहा: "मेरी आँखों ने यह सब पहले देखा है और पहले ही मैं सुन चुका हूँ जो कुछ तुम कहा करते हो। इस सब की समझ बूझ मुझे है।[2]मैं भी उतना ही जानता हूँ जितना तू जानता है, मैं तुझ से कम नहीं हूँ। [3]किन्तु मुझे इच्छा नहीं है कि मैं तुझ से तर्क करुँ, मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर से बोलना चाहता हूँ। अपने संकट के बारे में, मैं परमेश्वर से तर्क करना चाहता हूँ। [4]किन्तु तुम तीनो लोग अपने अज्ञान को मिथ्या विचारों से ढकना चाहते हो। तुम वो बेकार के चिकित्सक हो जो किसी को अच्छा नहीं कर सकता। [5]मेरी यह कामना है कि तुम पूरी तरह चुप हो जाओ, यह तुम्हारे लिये बुद्धिमत्ता की बात होगी जिसको तुम कर सकते हो!

6 "अब, मेरी युक्ति सुनो! सुनो जब
मैं अपनी सफाई दूँ।
7 क्या तुम परमेश्वर के हेतु झूठ बोलोगे?
क्या यह तुमको सचमुच विश्वास है कि ये
तुम्हारे झूठ परमेश्वर
तुम से बुलवाना चाहता है?
8 क्या तुम मेरे विरुद्ध परमेश्वर का पक्ष लोगे?
क्या तुम न्यायालय में परमेश्वर को
बचाने जा रहे हो?
9 यदि परमेश्वर ने तुमको अति निकटता से जाँच
लिया तो क्या वह कुछ भी अच्छी बात पायेगा?
क्या तुम सोचते हो कि तुम परमेश्वर को छल
पाओगे, ठीक उसी तरह
जैसे तुम लोगों को छलते हो?
10 यदि तुम न्यायालय में छिपे छिपे किसी का
पक्ष लोगे तो परमेश्वर निश्चय ही
तुम को लताड़ेगा।
11 उसका भव्य तेज तुमको डरायेगा
और तुम भयभीत हो जाओगे।
12 तुम सोचते हो कि तुम चतुराई भरी और
बुद्धिमत्तापूर्ण बातें करते हो,
किन्तु तम्हारे कथन राख जैसे व्यर्थ हैं।
तुम्हारी युक्तियाँ माटी सी दुर्बल हैं।
13 चुप रहो और मुझको कह लेने दो।
फिर जो भी होना है मेरे साथ हो जाने दो।
14 मैं स्वयं को संकट में डाल रहा हूँ और मैं
स्वयं अपना जीवन अपने हाथों में ले रहा हूँ।

15 चाहे परमेश्वर मुझे मार दे।
मुझे कुछ आशा नहीं है, तो भी मैं अपना
मुकदमा उसके सामने लड़ूँगा।
16 किन्तु सम्भव है कि परमेश्वर मुझे बचा ले,
क्योंकि मैं उसके सामने निडर हूँ।
कोई भी बुरा व्यक्ति परमेश्वर से आमने सामने
मिलने का साहस नहीं कर सकता।
17 उसे ध्यान से सुन जिसे मैं कहता हूँ,
उस पर कान दे जिसकी व्याख्या मैं करता हूँ।
18 अब मैं अपना बचाव करने को तैयार हूँ।
यह मुझे पता है कि मुझ को
निर्दोष सिद्ध किया जायेगा।
19 कोई भी व्यक्ति यह प्रमाणित नहीं
कर सकता कि मैं गलत हूँ।
यदि कोई व्यक्ति यह सिद्ध कर दे तो
मैं चुप हो जाऊँगा और प्राण दे दूँगा।
20 हे परमेश्वर, तू मुझे दो बाते दे दे, फिर
मैं तुझ से नहीं छिपूँगा।
21 मुझे दण्ड देना और डराना छोड़ दे,
अपने आतंको से मुझे छोड़ दे।
22 फिर तू मुझे पुकार और मै तुझे उत्तर दूँगा,
अथवा मुझको बोलने दे और तू मुझको उत्तर दे।
23 कितने पाप मैने किये हैं?
कौन सा अपराध मुझसे बन पड़ा?
मुझे मेरे पाप और अपराध दिखा।
24 हे परमेश्वर, तू मुझसे क्यों बचता है और मेरे
साथ शत्रु जैसा व्यवहार क्यों करता है?
25 क्या तू मुझको डरायेगा? मैं (अय्यूब) एक
पत्ता हूँ जिसको पवन उड़ाती है।
एक सूखे तिनके पर तू प्रहार कर रहा है।
26 हे परमेश्वर, तू मेरे विरोध में
कड़वी बात बोलता है।
तू मुझे ऐसे पापों के लिये दु:ख देता है जो
मैंने लड़कपन में किये थे।
27 मेरे पैरों में तूने काठ डाल दिया है, तू मेरे हर
कदम पर आँख गड़ाये रखता है।
मेरे कदमों की तूने सीमायें बाँध दी हैं।
28 मैं सड़ी वस्तु सा क्षीण होता जाता हूँ
कीड़ें से खाये हुये कपड़े के टुकड़े जैसा।"

14 अय्यूब ने कहा, "हम सभी मानव हैं हमारा
जीवन छोटा और दु:खमय है!
2 मनुष्य का जीवन एक फूल के समान है जो
शीघ्र उगता है और फिर समाप्त हो जाता है।
मनुष्य का जीवन है जैसे कोई छाया जो थोड़ी
देर टिकती है और बनी नहीं रहती।
3 हे परमेश्वर,क्या तू मेरे जैसे मनुष्यपर ध्यान देगा?
क्या तू मेरा न्याय करने मुझे सामने लायेगा?
4 किसी ऐसी वस्तु से जो स्वयं अस्वच्छ है
स्वच्छ वस्तु कौन पा सकता है? कोई नही।
5 मनुष्य का जीवन सीमित है।
मनुष्य के महीनों की संख्या
परमेश्वर ने निश्चित कर दी है।
तूने मनुष्य के लिये जो सीमा बांधी है,
उसे कोई भी नहीं बदल सकता।
6 सो परमेश्वर, तू हम पर आँख रखना छोड़ दे।
हम लोगों को अकेला छोड़ दे।
हमें अपने कठिन जीवन का मजा लेने दे,
जब तक हमारा समय नहीं समाप्त हो जाता।
7 किन्तु यदि वृक्ष को काट गिराया जाये
तो भी आशा उसे रहती हैं कि
वह फिर से पनप सकता है, क्योंकि
उसमें नई नई शाखाऐं निकलती रहेंगी।
8 चाहे उस की जड़े धरती में पुरानी क्यों न हो
जायें और उसका तना चाहे
मिट्टी में गल जाये।
9 किन्तु जल की गंध मात्र से ही वह नई बढ़त
देता है और एक पौधे की तरह उससे
शाखाऐं फूटती हैं।
10 किन्तु जब बलशाली मनुष्य मर जाता है उसकी
सारी शक्ति खत्म हो जाती है।
जब मनुष्य मरता है वह चला जाता है।
11 जैसे सागर के तट से जल शीघ्र लौट कर खो
जाता है और जल नदी का उतरता है,
और नदी सूख जाती है।
12 उसी तरह जब कोई व्यक्ति मर जाता है
वह नीचे लेट जाता है और वह महा निद्रा से
फिर खड़ा नहीं होता।
वैसे ही वह व्यक्ति जो प्राण त्यागता है कभी

खड़ा नहीं होता अथवा चिर निद्रा नहीं त्यागता
जब तक आकाश विलुप्त नहीं होंगे।

13 काश! तू मुझे मेरी कब्र में मुझे छुपा लेता
जब तक तेरा क्रोध न बीत जाता।
फिर कोई समय मेरे लिये नियुक्त करके तू
मुझे याद करता।

14 यदि कोई मनुष्य मर जाये तो
क्या जीवन कभी पायेगा?
मैं तब तक बाट जोहूँगा, जब तक मेरा कर्तव्य
पूरा नहीं हो जाता और जब तक
मैं मुक्त न हो जाऊँ।

15 हे परमेश्वर, तू मुझे बुलायेगा और
मैं तुझे उत्तर दूँगा।
तूने मुझे रचा है, सो तू मुझे चाहेगा।

16 फिर तू मेरे हर चरण का जिसे मैं उठाता हूँ,
ध्यान रखेगा और फिर तू मेरे उन पापों पर
आँख रखेगा, जिसे मैंने किये हैं।

17 काश! मेरे पाप दूर हो जाएँ।
किसी थैले में उन्हें बन्द कर दिया जाये और
फिर तू मेरे पापों को ढक दे।

18 जैसे पर्वत गिरा करता है और नष्ट हो जाता है
और कोई चट्टान अपना स्थान छोड़ देती है।

19 जल पत्थरों के ऊपर से बहता है और
उन को घिस डालता है तथा धरती की
मिट्टी को जल बहाकर ले जाती है।
हे परमेश्वर, उसी तरह व्यक्ति की आशा को
तू बहा ले जाता है।

20 तू एक बार व्यक्ति को हराता है और
वह समाप्त हो जाता है।
तू मृत्यु के रूप सा उस का मुख बिगाड़ देता है,
और सदा सदा के लिये कहीं भेज देता है।

21 यदि उसके पुत्र कभी सम्मान पाते हैं तो
उसे कभी उसका पता नहीं चल पाता।
यदि उस के पुत्र कभी अपमान भोगतें हैं,
जो वह उसे कभी देख नहीं पाता हैं।

22 वह मनुष्य अपने शरीर में पीड़ा भोगता है और
वह केवल अपने लिये ऊँचे पुकारता है।"

15 इस पर तेमान नगर के निवासी एलीपज ने अय्यूब को उत्तर देते हुए कहा:

2 "अय्यूब, यदि तू सचमुच बुद्धिमान होता तो
रोते शब्दों से तू उत्तर न देता।
क्या तू सोचता है कि कोई विवेकी पुरुष
पूर्व की लू की तरह उत्तर देता है?

3 क्या तू सोचता है कि कोई बुद्धिमान पुरुष
व्यर्थ के शब्दों से और उन भाषणों से
तर्क करेगा जिनका कोई लाभ नहीं?

4 अय्यूब, यदि तू मनमानी करता है तो कोई भी
व्यक्ति परमेश्वर की न तो आदर करेगा,
न ही उससे प्रार्थना करेगा।

5 तू जिन बातों को कहता है वह तेरा पाप
साफ साफ दिखाती हैं।
अय्यूब, तू चतुराई भरे शब्दों का प्रयोग करके
अपने पाप को छिपाने का प्रयत्न कर रहा है।

6 तू उचित नहीं यह प्रमाणित करने की
मुझे आवश्यकता नहीं है।
क्योंकि तू स्वयं अपने मुख से जो बातें कहता है,
वह दिखाती हैं कि तू बुरा है और तेरे ओंठ
स्वयं तेरे विरुद्ध बोलते हैं।

7 अय्यूब, क्या तू सोचता है कि जन्म लेने वाला
पहला व्यक्ति तू ही है और पहाड़ों कि
रचना से भी पहले तेरा जन्म हुआ।

8 क्या तूने परमेश्वर की रहस्यपूर्ण
योजनाऐं सुनी थी?
क्या तू सोचा करता है कि एक मात्र
तू ही बुद्धिमान है?

9 अय्यूब, तू हम से अधिक कुछ नहीं जानता है।
वे सभी बातें हम समझते हैं,
जिनकी तुझको समझ है।

10 वे लोग जिनके बाल सफेद हैं और वृद्ध पुरुष हैं
वे हमसे सहमत रहते हैं।
हाँ, तेरे पिता से भी वृद्ध लोग हमारे पक्ष में हैं।

11 परमेश्वर तुझको सुख देने का प्रयत्न करता है,
किन्तु यह तेरे लिये पर्याप्त नहीं है।
परमेश्वर का सुसन्देश बड़ी नम्रता के साथ
हमने तुझे सुनाया।

12 अय्यूब, क्यों तेरा हृदय तुझे खींच ले जाता है?
तू क्रोध में क्यों हम पर आँखें तरेरता है?
13 जब तू इन क्रोध भरे वचनों को कहता है,
तो तू परमेश्वर के विरुद्ध होता है।
14 सचमुच कोई मनुष्य पवित्र नहीं हो सकता।
मनुष्य स्त्री से पैदा हुआ है,
और धरती पर रहता है,
अत: वह उचित नहीं हो सकता।
15 यहाँ तक कि परमेश्वर अपने दूतों
तक का विश्वास नहीं करता है।
यहाँ तक कि स्वर्ग जहाँ स्वर्गदूत रहते हैं
पवित्र नहीं हैं।
16 मनुष्य तो और अधिक पापी है।
वह मनुष्य मलिन और घिनौना है।
वह बुराई को जल की तरह गटकता है।
17 अय्यूब, मेरी बात तू सुन और मैं उसकी
व्याख्या तुझसे करूँगा।
मैं तुझे बताऊँगा, जो मैं जानता हूँ।
18 मैं तुझको वे बातें बताऊँगा, जिन्हें विवेकी
पुरुषों ने मुझ को बताया है और
विवेकी पुरुषों को उनके पूर्वजों ने बताई थी।
उन विवेकी पुरुषों ने कुछ भी मुझसे नहीं छिपाया।
19 केवल उनके पूर्वजों को ही देश दिया गया था।
उनके देश में कोई परदेशी नहीं था।
20 दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा झेलेगा और क्रूर
जन उन सभी वर्षों में जो उसके लिये
निश्चित किये गये हैं, दु:ख उठाता रहेगा।
21 उसके कानों में भयंकर ध्वनियाँ होगी।
जब वह सोचेगा कि वह सुरक्षित है
तभी उसके शत्रु उस पर हमला करेंगे।
22 दुष्ट जन बहुत अधिक निराश रहता है और
उसके लिये कोई आशा नहीं है,
कि वह अंधकार से बच निकल पाये।
कहीं एक ऐसी तलवार है जो उसको मार
डालने की प्रतिज्ञा कर रही है।
23 वह इधर उधर भटकता हुआ फिरता है किन्तु
उसकी देह गिद्धों का भोजन बनेगी।
उसको यह पता है कि उसकी मृत्यु
बहुत निकट है।
24 चिंता और यातनाऐं उसे डरपोक बनाती है
और ये बातें उस पर ऐसे वार करती हैं,
जैसे कोई राजा उसके नष्ट कर
डालने को तत्पर हो।
25 क्यों? क्योंकि दुष्ट जन परमेश्वर की आज्ञा
मानने से इन्कार करता है, वह परमेश्वर को
घूसा दिखाता है और सर्वशक्तिमान परमेश्वर
को पराजित करने का प्रयास करता है।
26 वह दुष्ट जन बहुत हठी है।
वह परमेश्वर पर एक मोटी मजबूत ढाल से
वार करना चाहता है।
27 दुष्ट जन के मुख पर चर्बी चढ़ी रहती है।
उस की कमर माँस भर जाने से मोटी हो जाती है।
28 किन्तु वह उजड़े हुये नगरों में रहेगा।
वह ऐसे घरों में रहेगा जहाँ कोई नहीं रहता है।
जो घर कमजोर हैं और जो शीघ्र ही
खण्डहर बन जायेंगे।
29 दुष्ट जन अधिक समय तक धनी नहीं रहेगा
उसकी सम्पत्तियाँ नहीं बढ़ती रहेंगी।
30 दुष्ट जन अन्धेरे से नहीं बच पायेगा।
वह उस वृक्ष सा होगा जिसकी शाखाऐं
आग से झुलस गई हैं।
परमेश्वर की फूँक दुष्टों को उड़ा देगी।
31 दुष्ट जन व्यर्थ वस्तुओं के भरोसे रह कर
अपने को मूर्ख न बनाये क्योंकि
उसे कुछ नहीं प्राप्त होगा।
32 दुष्ट जन अपनी आयु के पूरा होने से पहले ही
बुढ़ा हो जायेगा और सूख जायेगा।
वह एक सूखी हुई डाली सा हो जायेगा
जो फिर कभी भी हरी नहीं होगी।
33 दुष्ट जन उस अंगूर की बेल सा होता है जिस
के फल पकने से पहले ही झड़ जाते हैं।
ऐसा व्यक्ति जैतून के पेड़ सा होता है,
जिसके फूल झड़ जाते हैं।
34 क्यों? क्योंकि परमेश्वर विहीन लोग
खाली हाथ रहेंगे।
ऐसे लोग जिनको पैसों से प्यार है,
घूस लेते हैं।
उन के घर आग से नष्ट हो जायेंगे।

35 वे पीड़ा का कुचक्र रचते हैं और
बुरे काम करते हैं।
वे लोगों को छलने के ढंगों की योजना बनाते हैं।"

16 इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:

2 "मैंने पहले ही ये बातें सुनी हैं।
तुम तीनों मुझे दु:ख देते हो, चैन नहीं।
3 तुम्हारी व्यर्थ की लम्बी बातें कभी
समाप्त नहीं होती।
तुम क्यों तर्क करते ही रहते हो?
4 जैसे तुम कहते हो वैसी बातें तो मैं भी कर
सकता हूँ, यदि तुम्हें मेरे दु:ख झेलने पड़ते।
तुम्हारे विरोध में बुद्धिमता की बातें मैं भी बना
सकता हूँ और अपना सिर
तुम पर नचा सकता हूँ।
5 किन्तु मैं अपने वचनों से तुम्हारा
साहस बढ़ा सकता हूँ और
तुम्हारे लिये आशा बन्धा सकता हूँ।
6 किन्तु जो कुछ मैं कहता हूँ उससे
मेरा दु:ख दूर नहीं हो सकता।
किन्तु यदि मैं कुछ भी न कहूँ
तो भी मुझे चैन नहीं पड़ता।
7 सचमुच हे परमेश्वर तूने मेरी शक्ति को
हर लिया है।
तूने मेरे सारे घराने को नष्ट कर दिया है।
8 तूने मुझे बांध दिया और हर कोई
मुझे देख सकता है।
मेरी देह दुर्बल है, मैं भयानक दिखता हूँ और
लोग ऐसा सोचते हैं
जिस का तात्पर्य है कि मैं अपराधी हूँ।
9 परमेश्वर मुझ पर प्रहार करता है।
वह मुझ पर कुपित है और वह मेरी देह को
फाड़ कर अलग कर देता है,
तथा परमेश्वर मेरे ऊपर दाँत पीसता है।
मुझे शत्रु घृणा भरी दृष्टि से घूरते हैं।
10 लोग मेरी हँसी करते हैं।
वे सभी भीड़ बना कर मुझे घेरने को और
मेरे मुँह पर थप्पड़ मारने को सहमत हैं।
11 परमेश्वर ने मुझे दुष्ट लोगों के
हाथ में अर्पित कर दिया है।
उसने मुझे पापी लोगों के द्वारा दु:ख दिया है।
12 मेरे साथ सब कुछ भला चंगा था
किन्तु तभी परमेश्वर ने मुझे कुचल दिया।
हाँ, उसने मुझे पकड़ लिया गर्दन से और
मेरे चिथड़े चिथड़े कर डाले।
परमेश्वर ने मुझको निशाना बना लिया।
13 परमेश्वर के तीरंदाज मेरे चारों तरफ हैं।
वह मेरे गुर्दों को बाणों से बेधता है।
वह दया नहीं दिखाता है।
वह मेरे पित्त को धरती पर बिखेरता है।
14 परमेश्वर मुझ पर बार बार वार करता है।
वह मुझ पर ऐसे झपटता है जैसे
कोई सैनिक युद्ध में झपटता है।
15 मैं बहुत ही दु:खी हूँ इसलिये मैं टाट के
वस्त्र पहनता हूँ।
यहाँ मिट्टी और राख में मैं बैठा रहता हूँ
और सोचा करता हूँ कि मैं पराजित हूँ।
16 मेरा मुख रोते-बिलखते लाल हुआ।
मेरी आँखों के नीचे काले घेरे हैं।
17 मैंने किसी के साथ कभी भी क्रूरता नहीं की।
किन्तु ये बुरी बातें मेरे साथ घटित हुई।
मेरी प्रार्थनाऐं सही और सच्चे हैं।
18 हे पृथ्वी, तू कभी उन अत्याचारों को मत
छिपाना जो मेरे साथ किये गये हैं।
मेरी न्याय की विनती को
तू कभी रुकने मत देना।
19 अब तक भी सम्भव है कि वहाँ आकाश में
कोई तो मेरे पक्ष में हो।
कोई ऊपर है जो मुझे दोषरहित सिद्ध करेगा।
20 मेरे मित्र मेरे विरोधी हो गये हैं किन्तु परमेश्वर
के लिये मेरी आँखें आँसू बहाती हैं।
21 मुझे कोई ऐसा व्यक्ति चाहिये जो परमेश्वर से
मेरा मुकदमा लड़े।
एक ऐसा व्यक्ति जो ऐसे तर्क करे
जैसे निज मित्र के लिये करता हो।
22 कुछ ही वर्ष बाद मैं वहाँ चला जाऊँगा जहाँ से
फिर मैं कभी वापस न आऊँगा (मृत्यु)।

17 "मेरा मन टूट चुका है।
मेरा मन निराश है।
मेरा प्राण लगभग जा चुका है।
कब्र मेरी बाट जोह रही है।
2 लोग मुझे घेरते हैं और मुझ पर हँसते हैं।
जब लोग मुझे सताते हैं और
मेरा अपमान करते हैं, मैं उन्हें देखता हूँ।
3 "परमेश्वर, मेरे निरपराध होने का शपथ-पत्र
मेरा स्वीकार कर ।
मेरी निर्दोषता की साक्षी देने के लिये
कोई तैयार नहीं होगा।
4 मेरे मित्रों का मन तूने मूँदा अत:
वे मुझे कुछ नहीं समझते हैं।
कृपा कर उन को मत जीतने दे।
5 लोगों की कहावत को तू जानता है।
मनुष्य जो ईनाम पाने को मित्र के विषय में
गलत सूचना देते हैं,
उन के बच्चे अन्धे हो जाया करते हैं।
6 परमेश्वर ने मेरा नाम हर किसी के लिये
अपशब्द बनाया है
और लोग मेरे मुँह पर थूका करते हैं।
7 मेरी आँख लगभग अन्धी हो चुकी है क्योंकि मैं
बहुत दु:खी और बहुत पीड़ा में हूँ।
मेरी देह एक छाया की भाँति दुर्बल हो चुकी है।
8 मेरी इस दुर्दशा से सज्जन बहुत व्याकुल हैं।
निरपराधी लोग भी उन लोगों से परेशान हैं
जिनको परमेश्वर की चिन्ता नहीं हैं।
9 किन्तु सज्जन नेकी का जीवन जीते रहेंगे।
निरपराधी लोग शक्तिशाली हो जायेंगे।
10 किन्तु तुम सभी आओ और फिर मुझ को दिखाने
का यत्न करो कि सब दोष मेरा है।
तम में से कोई भी विवेकी नहीं।
11 मेरा जीवन यूँ ही बीत रहा है।
मेरी योजनाऐं टूटगई हैं और आशा चली गई है।
12 किन्तु मेरे मित्र रात को दिन सोचा करते हैं।
जब अन्धेरा होता है, वे लोग कहा करते हैं
'प्रकाश पास ही है।'
13 यदि मैं आशा करूँ कि अन्धकारपूर्ण
कब्र मेरा घर और बिस्तर होगा।
14 यदि मैं कब्र से कहूँ 'तू मेरा पिता है'
और कीड़े से 'तू मेरी माता है अथवा
तू मेरी बहन है।'
15 किन्तु यदि वह मेरी एकमात्र आशा है तब तो
कोई आशा मुझे नहीं हैं और कोई भी व्यक्ति
मेरे लिये कोई आशा नहीं देख सकता है।
16 क्या मेरी आशा भी मेरे साथ
मृत्यु के द्वार तक जायेगी?
क्या मैं और मेरी आशा
एक साथ धूल में मिलेंगे?"

अय्यूब को बिल्दद का उत्तर

18 फिर शूही प्रदेश के बिल्दद ने उत्तर देते हुए कहा:
2 "अय्यूब, इस तरह की बातें करना तू कबछोड़ेगा?
तुझे चुप होना चाहिये और फिर सुनना चाहिये।
तब हम बातें कर सकते हैं।
3 तू क्यों यह सोचता हैं कि हम
उतने मूर्ख हैं जितनी मूर्ख गायें।
4 अय्यूब, तू अपने क्रोध से अपनी ही
हानि कर रहा है।
क्या लोग धरती बस तेरे लिये छोड़ दे?
क्या तू यह सोचता है कि बस तुझे तृप्त करने
को परमेश्वर धरती को हिला देगा?
5 हाँ, बुरे जन का प्रकाश बुझेगा और
उसकी आग जलना छोड़ेगी।
6 उस के तम्बू का प्रकाश काला पड़ जायेगा और
जो दीपक उसके पास है वह बुझ जायेगा।
7 उस मनुष्य के कदम फिर कभी
मजबूत और तेज नहीं होंगे।
किन्तु वह धीरे चलेगा और दुर्बल हो जायेगा।
अपने ही कुचक्रों से उसका पतन होगा।
8 उसके अपने ही कदम उसे एक
जाल के फन्दे में गिरा देंगे।
वह चल कर जाल में जायेगा और फंस जायेगा।
9 कोई जाल उसकी एड़ी को पकड़ लेगा।
एक जाल उस को कसकर जकड़ लेगा।
10 एक रस्सा उसके लिये धरती में छिपा होगा।
कोई जाल राह में उसकी प्रतिक्षा में है।

11 उसके तरफ आतंक उसकी टोह में हैं।
उसके हर कदम का भय पीछा करता रहेगा।
12 भयानक विपत्तियाँ उसके लिये भूखी हैं।
जब वह गिरेगा, विनाश और विध्वंस
उस के लिये तत्पर रहेंगे।
13 महाव्याधि उसके चर्म के भागों को निगल जायेगी।
वह उसकी बाहों और उसकी
टाँगों को सड़ा देगी।
14 अपने घर की सुरक्षा से दुर्जन को दूर किया
जायेगा और आतंक के राजा से मिलाने के
लिये उसको चलाकर ले जाया जायेगा।
15 उसके घर में कुछ भी न बचेगा क्योंकि
उसके समूचे घर में धधकती हुई
गन्धक बिखेरी जायेगी।
16 नीचे गई जड़ें उसकी सूख जायेंगी और
उसके ऊपर की शाखाएं मुरझा जायेंगी।
17 धरती के लोग उसको याद नहीं करेंगे।
बस अब कोई भी उसको याद नहीं करेगा।
18 प्रकाश से उसको हटा दिया जायेगा और
वह अंधकार में ढकेला जायेगा।
वे उसको दुनियां से दूर भगा देंगे।
19 उसकी कोई सन्तान नहीं होगी अथवा
उसके लोगों के कोई वंशज नहीं होंगे।
उसके घर में कोई भी जीवित नहीं बचेगा।
20 पश्चिम के लोग सहमें रह जायेंगे जब वे सुनेंगे
कि उस दुर्जन के साथ क्या घटी।
लोग पूर्व के आतंकित हो सुन्न रह जायेंगे।
21 सचमुच दुर्जन के घर के साथ ऐसा ही घटेगा।
ऐसा ही घटेगा उस व्यक्ति क साथ
जो परमेश्वर की परवाह नहीं करते।"

अय्यूब का उत्तर

19 तब अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:

2 "कब तक तुम मुझे सताते रहोगे
और शब्दों से मुझको तोड़ते रहोगे?
3 अब देखों, तुमने दसियों बार
मुझे अपमानित किया है।
मुझ पर वार करते तुम्हें शर्म नहीं आती है।
4 यदि मैंने पाप किया तो यह मेरी समस्या है।
यह तुम्हें हानि नहीं पहुँचाता।
5 तुम बस यह चाहते हो कि तुम मुझसे उत्तम दिखो।
तुम कहते हो कि मेरे कष्ट मुझ को
दोषी प्रमाणित करते हैं।
6 किन्तु वह तो परमेश्वर है जिसने मेरे साथ बुरा
किया है और जिसने मेरे चारों तरफ
अपना फंदा फैलाया है।
7 मैं पुकारा करता हूँ 'मेरे संग बुरा किया है।'
लेकिन मुझे कोई उत्तर नहीं मिलता है।
चाहे मैं न्याय की पुकार पुकारा करुँ
मेरी कोई नहीं सुनता है।
8 मेरा मार्ग परमेश्वर ने रोका है,
इसलिये उसको मैं पार नहीं कर सकता।
उसने अंधकार में मेरा मार्ग छुपा दिया है।
9 मेरा सम्मान परमेश्वर ने छीना है।
उसने मेरे सिर से मुकुट छीन लिया है।
10 जब तक मेरा प्राण नहीं निकल जाता, परमेश्वर
मुझ को करवट दर करवट पटकियाँ देता है।
वह मेरी आशा को ऐसे उखाड़ता है
जैसे कोई जड़ से वृक्ष को उखाड़ दे।
11 मेरे विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध भड़क रहा है।
वह मुझे अपना शत्रु कहता है।
12 परमेश्वर अपनी सेना मुझ पर प्रहार
करने को भेजता है।
वे मेरे चारों और बुर्जियाँ बनाते हैं।
मेरे तम्बू के चारों ओर वे आक्रमण करने के
लिये छावनी बनाते हैं।
13 मेरे बन्धुओं को परमेश्वर ने बैरी बनाया।
अपने मित्रों के लिये मैं पराया हो गया।
14 मेरे सम्बन्धियों ने मुझको त्याग दिया।
मेरे मित्रों ने मुझको भुला दिया।
15 मेरे घर के अतिथि और मेरी
दासियाँ मुझे ऐसे दिखते हैं मानों
मैं अन्जाना या परदेशी हूँ।
16 मैं अपने दास को बुलाता हूँ पर
वह मेरी नहीं सुनता है।
यहाँ तक कि यदि मैं सहायता माँगू तो
मेरा दास मुझको उत्तर नहीं देता।

17 मेरी ही पत्नी मेरे श्वास की गंध से घृणा करती है।
मेरे अपनी ही भाई मुझ से घृणा करते हैं।
18 छोटे बच्चे तक मेरी हँसी उड़ाते है।
जब मैं उनके पास जाता हूँ तो
वे मेरे विरुद्ध बातें करते हैं।
19 मेरे अपने मित्र मुझ से घृणा करते हैं।
यहाँ तक कि ऐसे लोग जो मेरे प्रिय हैं,
मेरे विरोधी बन गये हैं।
20 मैं इतना दुर्बल हूँ कि मेरी खाल मेरी
हड्डियों पर लटक गई।
अब मुझ में कुछ भी प्राण नहीं बचा है।
21 हे मेरे मित्रों मुझ पर दया करो,
दया करो मुझ पर क्योंकि
परमेश्वर का हाथ मुझ को छू गया है।
22 क्यों मुझे तुम भी सताते हो जैसे मुझको
परमेश्वर ने सताया है?
क्यों मुझ को तुम दुःख देते और कभी
तृप्त नहीं होते हो?
23 मेरी यह कामना है, कि जो मैं कहता हूँ उसे
कोई याद रखे और किसी पुस्तक में लिखे।
मेरी यह कामना है, कि काश! मेरे शब्द
किसी गोल पत्रक पर लिखी जाती।
24 मेरी यह कामना है काश!
मैं जिन बातों को कहता
उन्हें किसी लोहे की टाँकी से
सीसे पर लिखा जाता,
अथवा उनको चट्टान पर खोद दिया जाता,
ताकि वे सदा के लिय अमर हो जाती।
25 मुझको यह पता है कि कोई एक ऐसा है,
जो मुझको बचाता है।
मैं जानता हूँ अंत में वह धरती पर खड़ा होगा
और मुझे बचायेगा।
26 यहाँ तक कि मेरी चमड़ी नष्ट हो जाये, किन्तु
काश, मैं अपने जीते जी
परमेश्वर को देख सकूँ।
27 अपने लिये मैं परमेश्वर को
स्वयं देखना चाहता हूँ।
मैं चाहता हूँ कि स्वयं उसको अपनी आँखों से
देखूँ न कि किसी दूसरे की आँखों से।
मेरा मन मुझ में ही उतावला हो रहा है।
28 सम्भव है तुम कहो, 'हम अय्यूब को तंग करेंगे।
उस पर दोष मढ़ने का हम को
कोई कारण मिल जायेगा।'
29 किन्तु तुम्हें स्वयं तलवार से डरना चाहिये
क्योंकि पापी के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध
दण्ड लायेगा।
तुम्हें दण्ड देने को परमेश्वर तलवार काम में
लायेगा तभी तुम समझोगे कि
वहाँ न्याय का एक समय है।"

20 इस पर नामात प्रदेश के सोपर ने उत्तर दिया:

2 "अय्यूब, तेरे विचार विकल हैं, सो मैं तुझे
निश्चय ही उत्तर दूँगा।
मुझे निश्चय ही जल्दी करनी चाहिये
तुझको बताने को कि मैं क्या सोच रहा हूँ।
3 तेरे सुधार भरे उत्तर हमारा अपमान करते हैं।
किन्तु मैं विवेकी हूँ और जानता हूँ कि
तुझे कैसे उत्तर दिया जाना चाहिये।
4–5 इसे तू तब से जानता है जब बहुत पहले
आदम को धरती पर भेजा गया था,
दुष्ट जन का आनन्द बहुत दिनों
नहीं टिकता हैं।
ऐसा व्यक्ति जिसे परमेश्वर की चिन्ता नहीं है
वह थोड़े समय के लिये आनन्दित होता है।
6 चाहे दुष्ट व्यक्ति का अभिमान नभ छू जाये,
और उसका सिर बादलों को छू जाये,
7 किन्तु वह सदा के लिये नष्ट हो जायेगा जैसे
स्वयं उसका देहमल नष्ट होगा।
वे लोग जो उसको जानते हैं कहेंगे,
'वह कहाँ है?'
8 वह ऐसे विलुप्त होगा जैसे स्वप्न शीघ्र ही
कहीं उड़ जाता है।
फिर कभी कोई उसको देख नहीं सकेगा, वह
नष्ट हो जायेगा, उसे रात के स्वप्न की
तरह हाँक दिया जायेगा।
9 वे व्यक्ति जिन्होंने उसे देखा था फिर
कभी नहीं देखेंगे।

उसका परिवार फिर कभी उसको
नहीं देख पायेगा।
10 जो कुछ भी उसने (दुष्ट) गरीबों से लिया था
उसकी संताने चुकायेंगी।
उनको अपने ही हाथों से अपना धन
लौटाना होगा।
11 जब वह जवान था, उसकी काया मजबूत थी,
किन्तु वह शीघ्र ही मिट्टी हो जायेगी।
12 दुष्ट के मुख को दुष्टता बड़ी मीठी लगती है,
वह उसको अपनी जीभ के नीचे छुपा लेगा।
13 बुरा व्यक्ति उस बुराई को थामे हुये रहेगा,
उसका दूर हो जाना उसको कभी नहीं भायेगा,
सो वह उसे अपने मुँह में ही थामे रहेगा।
14 किन्तु उसके पेट में उसका भोजन
जहर बन जायेगा,
वह उसके भीतर ऐसे बन जायेगा
जैसे किसी नाग के विष सा कड़वा जहर।
15 दुष्ट सम्पत्तियों को निगल जाता है किन्तु वह
उन्हें बाहर ही उगलेगा।
परमेश्वर दुष्ट के पेट से उनको उगलवायेगा।
16 दुष्ट जन साँपों के विष को चूस लेगा
किन्तु साँपों के विषैले दाँत उसे मार डालेंगे।
17 फिर दुष्ट जन देखने का आनन्द नहीं लेंगे ऐसी
उन नदियों का जो शहद
और मलाई लिये बहा करती हैं।
18 दुष्ट को उसका लाभ वापस
करने को दबाया जायेगा।
उसको उन वस्तुओं का आनन्द नहीं लेने दिया
जायेगा जिनके लिये उसने परिश्रम किया है।
19 क्योंकि उस दुष्ट जन ने दीन जन से उचित
व्यवहार नहीं किया।
उसने उनकी परवाह नहीं की और उसने
उनकी वस्तुऐं छीन ली थी,
जो घर किसी और ने बनाये थे
उसने वे हथियाये थे।
20 दुष्ट जन कभी भी तृप्त नहीं होता है,
उसका धन उसको नहीं बचा सकता है।
21 जब वह खाता है तो कुछ नहीं छोड़ता है,
सो उसकी सफलता बनी नहीं रहेगी।
22 जब दुष्ट जन के पास भरपूर होगा
तभी दु:खों का पहाड़ उस पर टूटेगा।
23 दुष्ट जन वह सब कुछ खा चुकेगा
जिसे वह खाना चाहता है।
परमेश्वर अपना धधकता क्रोध उस पर डालेगा।
उस दुष्ट व्यक्ति पर परमेश्वर
दण्ड बरसायेगा।
24 सम्भव है कि वह दुष्ट लोहे की तलवार से
बच निकले, किन्तु कहीं से काँसे का बाण
उसको मार गिरायेगा।
25 वह काँसे का बाण उसके शरीर के आर पार
होगा और उसकी पीठ भेद कर
निकल जायेगा।
उस बाण की चमचमाती हुई नोंक उसके जिगर
को भेद जायेगी और वह भय से
आतंकित हो जायेगा।
26 उसके सब खजाने नष्ट हो जायेंगे, एक ऐसी
आग जिसे किसी ने नहीं जलाया उसको नष्ट
करेगी, वह आग उनको जो उसके घर में
बचे हैं नष्ट कर डालेगी।
27 स्वर्ग प्रमाणित करेगा कि वह दुष्ट अपराधी है,
यह गवाही धरती उसके विरुद्ध देगी।
28 जो कुछ भी उसके घर में है, वह परमेश्वर
के क्रोध की बाढ़ में बह जायेगा।
29 यह वही है जिसे परमेश्वर दुष्टों के साथ करने
की योजना रचता है।
यह वही है जैसा परमेश्वर उन्हें देने
की योजना रचता है।"

अय्यूब का उत्तर

21 इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:

2 "तू कान दे उस पर जो मैं कहता हूँ, तेरे सुनने
को तू चैन बनने दे जो तू मुझे देता है।
3 जब मैं बोलता हूँ तो तू धीरज रख,
फिर जब मैं बोल चुकूँ तब तू मेरी
हँसी उड़ा सकता है।
4 मेरी शिकायत लोगों के विरुद्ध नहीं हैं, मैं क्यों
सहनशील हूँ इसका एक कारण नहीं है।

5 तू मुझ को देख और तू स्तंभित हो जा, अपना हाथ अपने मुख पर रख और
मुझे देख और स्तब्ध हो।
6 जब मैं सोचता हूँ उन सब को जो कुछ मेरे साथ घटा तो मुझको डर लगता है
और मेरी देह थर थर काँपती है।
7 क्यों बुरे लोगों की उम्र लम्बी होती है?
क्यों वे वृद्ध और सफल होते हैं?
8 बुरे लोग अपनी संतानों को अपने साथ बढ़ते हुए देखते हैं।
बुरे लोग अपनी नाती–पोतों को देखने को जीवित रहा करते हैं।
9 उनके घर सुरक्षित रहते हैं और वे नहीं डरतेहैं।
परमेश्वर दुष्टों को सजा देने के लिये अपना दण्ड काम में नहीं लाता है।
10 उनके सांड कभी भी बिना जोड़ा बांधे नहीं रहे, उनकी गायों के बछेरे होते हैं और
उनके गर्भ कभी नहीं गिरते हैं।
11 बुरे लोग बच्चों को बाहर खेलने भेजते हैं मेमनों के जैसे, उनके बच्चे नाचते हैं चारों ओर।
12 वीणा और बाँसुरी के स्वर पर
वे गाते और नाचते हैं।
13 बुरे लोग अपने जीवन भर सफलता का आनन्द लेते हैं।
फिर बिना दुःख भोगे वे मर जाते हैं
और अपनी कब्रों के बीच चले जाते हैं।
14 किन्तु बुरे लोग परमेश्वर से कहा करते हैं,
'हमें अकेला छोड़ दे।
और इसकी हमें परवाह नहीं कि
तू हमसे कैसा जीवन जीना चाहता है।'
15 दुष्ट लोग कहा करते हैं,
'सर्वशक्तिमान परमेश्वर कौन है?
हमको उसकी सेवा की जरुरत नहीं है।
उसकी प्रार्थना करने का कोई लाभ नहीं।'
16 दुष्ट जन सोचते है कि उनको अपने ही कारण सफलताऐं मिलती हैं, किन्तु मैं उनके विचारों को नहीं अपना सकता हूँ।
17 किन्तु क्या प्राय: ऐसा होता है कि दुष्ट जन का प्रकाश बुझ जाया करता है?
कितनी बार दुष्टों को दुःख घेरा करते हैं?
क्या परमेश्वर उनसे कुपित हुआ करता है,
और उन्हें दण्ड देता है?
18 क्या परमेश्वर दुष्ट लोगों को ऐसे उड़ाता है जैसे हवा तिनके को उड़ाती है और
तेज हवायें अन्न का भूसा उड़ा देती हैं?
19 किन्तु तू कहता है: 'परमेश्वर एक बच्चे को उसके पिता के पापों का दण्ड देता है।'
नहीं, परमेश्वर को चाहिये कि
बुरे जन को दण्डित करें।
तब वह बुरा व्यक्ति जानेगा कि उसे उसके निज पापों के लिये दण्ड मिल रहा है।
20 तू पापी को उसके अपने दण्ड को दिखा दे, तब वह सर्वशक्तिशाली परमेश्वर के कोप का अनुभव करेगा।
21 जब बुरे व्यक्ति की आयु के महीने समाप्त हो जाते हैं और वह मर जाता है;
वह उस परिवार की परवाह नहीं करता
जिसे वह पीछे छोड़ जाता है।
22 कोई व्यक्ति परमेश्वर को ज्ञान नहीं दे सकता,
वह ऊँचे पदों के जनों का भी न्याय करता है।
23 एक पूरे और सफल जीवन के जीने के बाद एक व्यक्ति मरता है, उसने एक सुरक्षित और सुखी जीवन जिया है।
24 उसकी काया को भरपूर भोजन मिला था
अब तक उस की हड्ड़ियाँ स्वस्थ थीं।
25 किन्तु कोई एक और व्यक्ति कठिन जीवन के बाद दुःख भरे मन से मरता है,
उसने जीवन का कभी कोई रस नहीं चखा।
26 ये दोनो व्यक्ति एक साथ माटी में गड़े सोते हैं,
कीड़े दोनों को एक जैसे ढक लेंगे।
27 किन्तु मैं जानता हूँ कि तू क्या सोच रहा है,
और मुझको पता है कि तरे पास
मेरा बुरा करने को कुचक्र है।
28 मेरे लिये तू यह कहा करता है कि 'अब कहाँ है उस महाव्यक्ति का घर?
कहाँ है वह घर जिसमें वह दुष्ट रहता था?'
29 किन्तु तूने कभी बटोहियों से नहीं पूछा और
उनकी कहानियों को नहीं माना।

30 कि उस दिन जब परमेश्वर कुपित हो कर
दण्ड देता है दुष्ट जन सदा बच जाता है।
31 ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो उसके मुख पर ही
उसके कर्मों की बुराई करे, उसके बुरे कर्मों
का दण्ड कोई व्यक्ति उसे नहीं देता।
32 जब कोई दुष्ट व्यक्ति कब्र में ले जाया जाता है,
तो उसके कब्र के पास एक
पहरेदार खड़ा रहता है।
33 उस दुष्ट जन के लिये उस
घाटी की मिट्टी मधुर होगी,
उसकी शव-यात्रा में हजारों लोग होंगे।
34 सो अपने कोरे शब्दों से तू मुझे चैन नहीं दे
सकता, तेरे उत्तर केवल झूठे हैं।"

एलीपज का उत्तर

22 फिर तेमान नगर के एलीपज ने उत्तर देते हुए कहा:

2 "परमेश्वर को कोई भी व्यक्ति सहारा नहीं दे
सकता, यहाँ तक की वह भी जो बहुत
बुद्धिमान व्यक्ति हो
परमेश्वर के लिये हितकर नहीं हो सकता।
3 यदि तूने वही किया जो उचित था तो इससे
सर्वशक्तिमान परमेश्वर को आनन्द नहीं
मिलेगा, और यदि तू सदा खरा रहा तो
इससे उसको कुछ नहीं मिलेगा।
4 अय्यूब, तुझको परमेश्वर क्यों दण्ड देता है
और क्यों तुझ पर दोष लगाता है?
क्या इसलिए कि तू उसका सम्मान नहीं करता?
5 नहीं, ये इसलिए की तूने बहुत से पाप किये हैं,
अय्यूब, तेरे पाप नहीं रुकते हैं।
6 अय्यूब, सम्भव है कि तूने अपने किसी भाई को
कुछ धन दिया हो, और उसको दबाया हो
कि वह कुछ गिरवी रख दे ताकि ये
प्रमाणित हो सके कि वह तेरा धन वापस करेगा।
सम्भव है किसी दीन के कर्जे के बदले तूने
कपड़े गिरवी रख लिये हों,
सम्भव है तूने वह व्यर्थ ही किया हो।
7 तूने थके-मांदे लोगों को जल नहीं दिया,
तूने भूखों के लिये भोजन नहीं दिया।
8 अय्यूब, यद्यपि तू शक्तिशाली और धनी था,
तूने उन लोगों को सहारा नहीं दिया।
तू बड़ा जमींदार और सामर्थी पुरुष था,
9 किन्तु तूने विधवाओं को बिना
कुछ दिये लौटा दिया।
अय्यूब, तूने अनाथ बच्चों को लूट लिया और
उनसे बुरा व्यवहार किया।
10 इसलिए तेरे चारों तरफ जाल बिछे हुए हैं और
तुझ को अचानक आती विपत्तियाँ डराती हैं।
11 इसलिए इतना अंधकार है कि तुझे सूझ पड़ता है
और इसलिए बाढ़ का पानी तुझे निगल रहा है।
12 परमेश्वर आकाश के उच्चतम भाग में रहता है,
वह सर्वोच्च तारों के नीचे देखता है,
तू देख सकता है कि तारे कितने ऊँचे हैं।
13 किन्तु अय्यूब, तू तो कहा करता है कि परमेश्वर
कुछ नहीं जानता, काले बादलों से कैसे
परमेश्वर हमें जाँच सकता है?
14 घने बादल उसे छुपा लेते हैं, इसलिये जब वह
आकाश के उच्चतम भाग में विचरता है
तो हमें ऊपर आकाश से देख नहीं सकता।
15 अय्यूब, तू उस ही पुरानी राह पर जिन पर
दुष्ट लोग चला करते हैं, चल रहा है।
16 अपनी मृत्यु के समय से पहले ही
दुष्ट लोग उठा लिये गये,
बाढ़ उनको बहा कर ले गयी थी।
17 ये वही लोग है जो परमेश्वर से कहते हैं कि
हमें अकेला छोड़ दो, सर्वशक्तिमान परमेश्वर
हमारा कुछ नहीं कर सकता है।
18 किन्तु परमेश्वर ने उन लोगों को सफल बनाया है
और उन्हें धनवान बना दिया।
किन्तु मैं वह ढंग से जिससे दुष्ट सोचते हैं,
अपना नहीं सकता हूँ।
19 सज्जन जब बुरे लोगों का नाश देखते हैं,
तो वे प्रसन्न होते है।
पापरहित लोग दुष्टों पर हँसते है,
और कहा करते हैं,
20 हमारे शत्रु सचमुच नष्ट हो गये!
आग उनके धन को जला देती है।

21 अय्यूब, अब स्वयं को तू परमेश्वर को अर्पित
कर दे, तब तू शांति पायेगा।
यदि तू ऐसा करे तो तू धन्य और
सफल हो जायेगा।
22 उसकी सीख अपना ले, और उसके
शब्द निज मन में सुरक्षित रख।
23 अय्यूब, यदि तू फिर सर्वशक्तिमान परमेश्वर के
पास आये तो फिर से पहले जैसा हो जायेगा।
तुझको अपने घर से पाप को
बहुत दूर करना चाहिए।
24 तुझको चाहिये कि तू निज सोना धूल में
और निज ओपीर का कुन्दन नदी में
चट्टानों पर फेंक दे।
25 तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर तेरे लिये सोना
और चाँदी बन जायेगा।
26 तब तू अति प्रसन्न होगा और
तुझे सुख मिलेगा।
परमेश्वर के सामने तू बिना
किसी शर्म के सिर उठा सकेगा।
27 जब तू उसकी विनती करेगा तो वह तेरी सुना
करेगा, जो प्रतिज्ञा तूने उससे की थी,
तू उसे पूरा कर सकेगा।
28 जो कुछ तू करेगा उसमें तुझे सफलता मिलेगी,
तेरे मार्ग पर प्रकाश चमकेगा।
29 परमेश्वर अहंकारी जन को लज्जित करेगा,
किन्तु परमेश्वर नम्र व्यक्ति की रक्षा करेगा।
30 परमेश्वर जो मनुष्य भोला नहीं है उसकी भी
रक्षा करेगा, तेरे हाथों की स्वच्छता से
उसको उद्धार मिलेगा।"

23

फिर अय्यूब ने उत्तर देते हुये कहा:

2 "मै आज भी बुरी तरह शिकायत करता हूँ कि
परमेश्वर मुझे कड़ा दण्ड दे रहा है,
इसलिये मैं शिकायत करता रहता हूँ।
3 काश! मैं यह जान पाता कि उसे कहाँ खोजूँ!
काश! मैं जान पाता की परमेश्वर के
पास कैसे जाऊँ!
4 मैं अपनी कथा परमेश्वर को सुनाता,
मेरा मुँह युक्तियों से भरा होता
यह दर्शाने को कि मैं निर्दोष हूँ।
5 मैं यह जानना चाहता हूँ कि परमेश्वर
कैसे मेरे तर्को का उत्तर देता है,
तब मैं परमेश्वर के उत्तर समझ पाता।
6 क्या परमेश्वर अपनी महाशक्ति के साथ मेरे
विरुद्ध होता? नहीं! वह मेरी सुनेगा।
7 मैं एक नेक व्यक्ति हूँ।
परमेश्वर मुझे अपनी कहानी को कहने देगा,
तब मेरा न्यायकर्ता परमेश्वर मुझे मुक्त कर देगा।
8 किन्तु यदि मैं पूरब को जाऊँ तो परमेश्वर
वहाँ नहीं है और यदि मैं पश्चिम को जाऊँ,
तो भी परमेश्वर मुझे नहीं दिखता है।
9 परमेश्वर जब उत्तर में क्रियाशील रहता है तो
मैं उसे देख नहीं पाता हूँ।
जब परमेश्वर दक्षिण को मुड़ता है,
तो भी वह मुझको नहीं दिखता है।
10 किन्तु परमेश्वर मेरे हर चरण को देखता है,
जिसको मैं उठाता हूँ।
जब वह मेरी परीक्षा ले चुकेगा तो वह देखेगा
कि मुझमें कुछ भी बुरा नहीं है,
वह देखेगा कि मैं खरे सोने सा हूँ।
11 परमेश्वर जिस को चाहता है मैं सदा उस पर
चला हूँ, मैं कभी भी परमेश्वर की राह पर
चलने से नहीं मुड़ा।
12 मैं सदा वही बात करता हूँ जिनकी आशा
परमेश्वर देता है।
मैंने अपने मुख के भोजन से अधिक परमेश्वर
के मुख के शब्दों से प्रेम किया है।
13 किन्तु परमेश्वर कभी नहीं बदलता।
कोई भी व्यक्ति उसके विरुद्ध
खड़ा नहीं रह सकता है।
परमेश्वर जो भी चाहता है, करता है।
14 परमेश्वर ने जो भी योजना मेरे विरोध में बना
ली है वही करेगा, उसके पास
मेरे लिये और भी बहुत सारी योजनायें है।
15 मैं इसलिये डरता हूँ, जब इन सब
बातों के बारे में सोचता हूँ।
इसलिये परमेश्वर मुझको भयभीत करता है।

16 परमेश्वर मेरे हृदय को दुर्बल करता है और
मेरी हिम्मत टूटती है।
सर्वशक्तिमान परमेश्वर मुझको
भयभीत करता है।
17 यद्यपि मेरा मुख सघन अंधकार ढकता है तो
भी अंधकार मुझे चुप नहीं कर सकता है।

24 "सर्वशक्तिमान परमेश्वर क्यों नहीं न्याय करने के लिये समय नियुक्त करता है? लोग जो परमेश्वर को मानते हैं उन्हें क्यों न्याय के समय की व्यर्थ बाट जोहनी पड़ती है?"

2 "लोग अपनी सम्पत्ति के चिन्हों को, जो उसकी
सीमा बताते हैं, सरकाते रहते हैं ताकि
अपने पड़ोसी की थोड़ी और धरती हड़प लें!
लोग पशु को चुरा लेते हैं और उन्हें अन्य
चारागाहों में हाँक ले जाते हैं।
3 अनाथ बच्चों के गधे को वे चुरा ले जाते हैं।
विधवा की गाय वे खोल ले जाते है।
जब तक की वह उनका कर्ज नहीं चुकाती है।
4 वे दीन जन को मजबूर करते है कि वह छोड़
कर दूर हट जाने को विवश हो जाता है,
इन दुष्टों से स्वयं को छिपाने को।
5 वे दीन जन उन जंगली गदहों जैसे हैं जो
मरुभूमि में अपना चारा खोजा करते हैं।
गरीबों और उनके बच्चों को मरुभूमि
भोजन दिया करता है।
6 गरीब लोग भूसा और चारा साथ साथ
ऐसे उन खेतों से पाते हैं जिनके
वे अब स्वामी नहीं रहे।
दुष्टों के अंगूरों के बगीचों से बचे फल
वे बीना करते हैं।
7 दीन जन को बिना कपड़ों के रातें बितानी होंगी,
सर्दी में उनके पास अपने ऊपर ओढ़ने को
कुछ नहीं होगा।
8 वे वर्षा से पहाड़ों में भीगें हैं, उन्हें बड़ी चट्टानों
से सटे हुये रहना होगा, क्योंकि उनके पास
कुछ नहीं जो उन्हें मौसम से बचा ले।
9 बुरे लोग माता से वह बच्चा जिसका
पिता नहीं है छीन लेते हैं।
गरीब का बच्चा लिया करते हैं, उसके बच्चे
को, कर्ज के बदले में वे बन्धुवा बना लेते हैं।
10 गरीब लोगों के पास वस्त्र नहीं होते हैं,
सो वे काम करते हुये नंगे रहा करते हैं।
दुष्टों के गट्ठर का भार वे ढोते है,
किन्तु फिर भी वे भूखे रहते हैं।
11 गरीब लोग जैतून का तेल पेर कर निकालते हैं।
वे कुंडो में अंगूर रौंदते हैं
फिर भी वे प्यासे रहते हैं।
12 मरते हुये लोग जो आहें भरते हैं।
वे नगर में सुनाई देती हैं।
सताये हुये लोग सहारे को पुकारते हैं,
किन्तु परमेश्वर नहीं सुनता है।
13 कुछ ऐसे लोग हैं जो प्रकाश के विरुद्ध होते हैं।
वे नहीं जानना चाहते हैं कि परमेश्वर उनसे
क्या करवाना चाहता है।
परमेश्वर की राह पर वे नहीं चलते हैं।
14 हत्यारा तड़के जाग जाया करता है गरीबों
और जरुरत मंद लोगों की हत्या करता है,
और रात में चोर बन जाता है।
15 वह व्यक्ति जो व्यभिचार करता है,
रात आने की बाट जोहा करता है,
वह सोचता है उस कोई नहीं देखेगा और
वह अपना मुख ढक लेता है।
16 दुष्ट जन जब रात में अंधेरा होता है,
तो सेंध लगा कर घर में घुसते हैं।
किन्तु दिन में वे अपने ही घरों में छुपे रहते हैं,
वे प्रकाश से बचते हैं।
17 उन दुष्ट लोगों का अंधकार सुबह सा होता हैं,
वे आतंक व अंधेरे के मित्र होते है।
18 दुष्ट जन ऐसे बहा दिये जाते हैं,
जैसे झाग बाढ़ के पानी पर।
वह धरती अभिशिप्त है जिसके वे मालिक हैं,
इसलिये वे अंगूर के बगीचों में
अंगूर बीनने नहीं जाते हैं।
19 जैसे गर्म व सूखा मौसम पिघलती बर्फ के
जल को सोख लेता है,
वैसे ही दुष्ट लोग कब्र द्वारा निगले जायेंगे।

20 दुष्ट मरने के बाद उसकी माँ तक उसे भूल जायेगी, दुष्ट की देह को कीड़े खा जायेंगे।
उसको थोड़ा भी नहीं याद रखा जायेगा,
दुष्ट जन गिरे हुये पेड़ से नष्ट किये जायेंगे।
21 ऐसी स्त्री को जिसके बच्चे नहीं हो सकते, दुष्ट जन उन्हें सताया करते हैं,
वे उस स्त्री को दु:ख देते हैं,
वे किसी विधवा के प्रति दया नहीं दिखाते हैं।
22 बुरे लोग अपनी शक्ति का उपयोग बलशाली को नष्ट करने के लिये करते है।
बुरे लोग शक्तिशाली हो जायेंगे,
किन्तु अपने ही जीवन का उन्हें भरोसा नहीं होगा कि वे अधिक दिन जी पायेंगे।
23 सम्भव है थोड़े समय के लिये परमेश्वर शक्तिशाली को सुरक्षित रहने दे,
किन्तु परमेश्वर सदा उन पर आँख रखता है।
24 दुष्ट जन थोड़े से समय के लिये सफलता पा जाते हैं किन्तु फिर वे नष्ट हो जाते हैं।
दूसरे लोगों की तरह वे भी समेट लिये जाते हैं।
अन्न की कटी हुई बाल के समान
वे गिर जाते हैं।
25 यदि ये बातें सत्य नहीं हैं तो कौन प्रमाणित कर सकता है कि मैने झूठ कहा है?
कौन दिखा सकता है कि
मेरे शब्द प्रलय मात्र हैं?"

बिल्दद का अय्यूब को उत्तर

25 फिर शूह प्रदेश के निवासी बिल्दद ने उत्तर देते हुये कहा:
2 "परमेश्वर शासक है और हर व्यक्ति को चाहिये की परमेश्वर से डरे और उसका मान करे।
परमेश्वर अपने स्वर्ग के राज्य में शांति रखता है।
3 कोई उसकी सेनाओं को गिन नहीं सकता है,
परमेश्वर का प्रकाश सब पर चमकता है।
4 किन्तु सचमुच परमेश्वर के आगे कोई व्यक्ति उचित नहीं ठहर सकता है।
कोई व्यक्ति जो स्त्री से उत्पन्न हुआ सचमुच निर्दोष नहीं हो सकता है।
5 परमेश्वर की आँखों के सामने चाँद तक चमकीला नहीं है।
परमेश्वर की आँखों के सामने तारे निर्मल नहीं हैं।
6 मनुष्य तो बहुत कम भले है।
मनुष्य तो बस गिंडार है एक ऐसा कीड़ा जो बेकार का होता है।"

अय्यूब का बिल्दद को उत्तर:

26 तब अय्यूब ने कहा:
2 "हे बिल्दद, सोपर और एलीपज़
जो लोग दुर्बल हैं तुम सचमुच उनको सहारा दे सकते हो।
अरे हाँ! तुमने दुर्बल बाँहों को फिर से शक्तिशाली बनाया है।
3 हाँ, तुमने निर्बुद्धि को अद्भुत सम्मत्ति दी है।
कैसा महाज्ञान तुमने दिखाया है!
4 इन बातों को कहने में किसने तुम्हारी सहायता की?
किसकी आत्मा ने तुम को प्रेरणा दी?
5 जो लोग मर गये है उनकी आत्मायें धरती के नीचे जल में भय से प्रकंपित हैं।
6 मृत्यु का स्थान परमेश्वर की आँखों के सामने खुला है, परमेश्वर के आगे विनाश का स्थान ढका नहीं है।
7 उत्तर के नभ को परमेश्वर फैलाता है।
परमेश्वर ने व्योम के रिक्त पर अधर में धरती लटकायी है।
8 परमेश्वर बादलों को जल से भरता है,
किन्तु जल के प्रभार से परमेश्वर बादलों को फटने नहीं देता है।
9 परमेश्वर पूरे चन्द्रमा को ढकता है, परमेश्वर चाँद पर निज बादल फैलाता है और उसको ढक देता है।
10 परमेश्वर क्षितिज को रचता है प्रकाश और अन्धकार की सीमा रेखा के रूप में समुद्र पर।
11 जब परमेश्वर डाँटता है तो वे नीवें जिन पर आकाश टिका है भय से काँपने लगती हैं।

12 परमेश्वर की शक्ति सागर को शांत करदेती है।
परमेश्वर की बुद्धि ने राहब (सागर के दैत्य) को नष्ट किया।
13 परमेश्वर का श्वास नभ को साफ कर देता है।
परमेश्वर के हाथ ने उस साँप को मार दिया जिसमें भाग जाने का यत्न किया था।
14 ये तो परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों की थोड़ी सी बातें हैं।
बस हम थोड़ा सा परमेश्वर के हल्की-ध्वनि भरे स्वर को सुनते हैं।
किन्तु सचमुच कोई व्यक्ति परमेश्वर के शक्ति के गर्जन को नहीं समझ सकता है।"

27 फिर अय्यूब ने आगे कहा:

2 "सचमुच परमेश्वर जीता है और यह जितना सत्य है कि परमेश्वर जीता है सचमुच वह वैसै ही मेरे प्रति अन्यायपूर्ण रहा है।
हाँ! सर्वशक्तिशाली परमेश्वर ने मेरे जीवन मे कड़वाहट भरी है।
3 किन्तु जब तक मुझ में प्राण है और परमेश्वर का साँस मेरी नाक में है।
4 तब तक मेरे होंठ बुरी बातें नहीं बोलेंगे,
और मेरी जीभ कभी झूठ नहीं बोलेगी।
5 मैं कभी नहीं मानूँगा कि तुम लोग सही हो!
जब तक मैं मरूँगा उस दिन तक कहता रहूँगा कि मैं निर्दोष हूँ!
6 मैं अपनी धार्मिकता को दृढता से थामें रहूँगा।
मैं कभी उचित कर्म करना न छोड़ूँगा।
मेरी चेतना मुझे तंग नहीं करेगी जब तक मैं जीता हूँ।
7 मेरे शत्रुओं को दुष्ट जैसा बनने दे, और उन्हें दण्डित होने दे जैसे दुष्ट जन दण्डित होते हैं।
8 ऐसे उस व्यक्ति के लिये मरते समय कोई आशा नहीं है जो परमेश्वर की परवाह नहीं करता है।
जब परमेश्वर उसके प्राण लेगा तब तक उसके लिये कोई आशा नहीं है।
9 जब वह बुरा व्यक्ति दुःखी पड़ेगा और उसको पुकारेगा, परमेश्वर नहीं सुनेगा।
10 उसको चाहिये था कि वह उस आनन्द को चाहे जिसे केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर देता है।
उसको चाहिए की वह हर समय परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा।
11 मैं तुमको परमेश्वर की शक्ति सिखाऊँगा।
मैं सर्वशक्तिशाली परमेश्वर की योजनायें नहीं छिपाऊँगा।
12 स्वयं तूने निज आँखों से परमेश्वर की शक्ति देखी है, सो क्यों तू व्यर्थ बातें बनाता है?
13 दुष्ट लोगों के लिये परमेश्वर ने ऐसी योजना बनाई है, दुष्ट लोगों को सर्वशक्तिशाली परमेश्वर से ऐसा ही मिलेगा।
14 दुष्ट की चाहे कितनी ही संताने हों, किन्तु उसकी संताने युद्ध में मारी जायेंगी।
दुष्ट की संताने कभी भरपेट खाना नहीं पायेंगी।
15 और यदि दुष्ट की संताने उसकी मृत्यु के बाद भी जीवित रहें तो महामारी उनको मार डालेंगी!
उनके पुत्रों की विधवायें उनके लिये दुःखी नहीं होंगी।
16 दुष्ट जन चाहे चाँदी के ढेर इकट्ठा करे,
इतने विशाल ढेर जितनी धूल होती है,
मिट्टी के ढेरों जैसे वस्त्र हों उसके पास
17 जिन वस्त्रों को दुष्ट जन जुटाता रहा
उन वस्त्रों को सज्जन पहनेगा,
दुष्ट की चाँदी निर्दोषों में बँटेगी।
18 दुष्ट का बनाया हुआ घर अधिक दिनों नहीं टिकता है,
वह मकड़ी के जाले सा अथवा किसी चौकीदार के छप्पर जैसा अस्थिर होता है।
19 दुष्ट जन अपनी निज दौलत के साथ अपने बिस्तर पर सोने जाता है,
किन्तु एक ऐसा दिन आयेगा जब वह फिर बिस्तर में वैसे ही नहीं जा पायेगा।
जब वह आँख खोलेगा तो उसकी सम्पत्ति जा चुकेगी।
20 दुःख अचानक आई हुई बाढ़ सा उसको झपट लेंगे,
उसको रातों रात तूफान उड़ा ले जायेगा।

21 पुरवाई पवन उसको दूर उड़ा देगी, तूफान उसको बुहार कर उसके घर के बाहर करेगा।
22 दुष्ट जन तुफान की शक्ति से बाहर निकलने का जतन करेगा
किन्तु तूफान उस पर बिना दया किये हुये चपेट मारेगा।
23 जब दुष्ट जन भागेगा, लोग उस पर तालियाँ बजायेंगे, दुष्ट जन जब निकल भागेगा।
अपने घर से तो लोग उस पर सीटियाँ बजायेंगे।

28 "वहाँ चाँदी की खान है जहाँ लोग चाँदी पाते है, वहाँ ऐसे स्थान है जहाँ लोग सोना पिघला कर के उसे शुद्ध करते हैं।
2 लोग धरती से खोद कर लोहा निकालते हैं,
और चट्टानों से पिघला कर ताँबा निकालते हैं।
3 लोग गुफाओं में प्रकाश को लाते हैं वे गुफाओं की गहराई में खोजा करते हैं,
गहरे अन्धेरे में वे खनिज की चट्टानें खोजते हैं।
4 जहाँ लोग रहते है उससे बहुत दूर लोग गहरे गढ़े खोदा करते हैं,
कभी किसी और ने इन गढ़ों को नहीं छुआ।
जब व्यक्ति गहन गर्तो में रस्से से लटकता है,
तो वह दूसरों से बहुत दूर होता है।
5 भोजन धरती की सतह से मिला करता है,
किन्तु धरती के भीतर वह बढ़त जाया करता है जैसे आग वस्तुओं को बदल देती है।
6 धरती के भीतर चट्टानों के नीचे नीलम मिल जाते हैं,
और धरती के नीचे मिट्टी अपने आप में सोना रखती है।
7 जंगल के पक्षी धरती के नीचे की राहें नहीं जानते हैं न ही कोई बाज यह मार्ग देखता है।
8 इस राह पर हिंसक पशु नहीं चले,
कभी सिंह इस राह पर नहीं विचरे।
9 मजदूर कठिन चट्टानों को खोदते हैं और पहाड़ों को वे खोद कर जड़ से साफ कर देते हैं।
10 काम करने वाले सुरंगे काटते हैं,
वे चट्टान के खजाने को चट्टानों के भीतर देख लिया करते हैं।
11 काम करने वाले बाँध बाँधा करते हैं कि पानी कहीं ऊपर से होकर न बह जाये।
वे छुपी हुई वस्तुओं को ऊपर प्रकाश में लाते हैं।
12 किन्तु कोई व्यक्ति विवेक कहाँ पा सकता है?
और हम कहाँ जा सकते हैं समझ पाने को?
13 ज्ञान कहाँ रहता है लोग नहीं जानते हैं,
लोग जो धरती पर रहते हैं,
उनमें विवेक नहीं रहता है।
14 सागर की गहराई कहती है,
'मुझ में विवेक नहीं।'
और समुद्र कहता है, 'यहाँ मुझ में ज्ञान नहीं है।'
15 विवेक को अति मूल्यवान सोना भी मोल नहीं ले सकता है, विवेक का मूल्य चाँदी से नहीं गिना जा सकता है।
16 विवेक ओपीर देश के सोने से अथवा मूल्यवान स्फटिक से अथवा नीलमणियों से नहीं खरीदा जा सकता है।
17 विवेक सोने और स्फटिक से अधिक मूल्यवान है,
कोई व्यक्ति अति मूल्यवान सुवर्ण जड़ित रत्नों से विवेक नहीं खरीद सकता है।
18 विवेक मूंगे और सूर्यकांत मणि से अति मूल्यवान है।
विवेक मानक मणियों से अधिक महंगा है।
19 जितना उत्तम विवेक है कूश देश का पद्मराग भी उतना उत्तम नहीं है।
विवेक को तुम कुन्दन से मोल नहीं ले सकते हो।
20 तो फिर हम कहाँ विवेक को पाने जायें?
हम कहाँ समझ सीखने जायें?
21 विवेक धरती के हर व्यक्ति से छुपा हुआ है।
यहाँ तक की ऊँचे आकाश के पक्षी भी विवेक को नहीं देख पाते हैं।
22 मृत्यु और विनाश कहा करते हैं कि हमने तो बस विवेक की बाते सुनी हैं।
23 किन्तु बस परमेश्वर विवेक तक पहुँचने की राह को जानता है।
परमेश्वर जानता है विवेक कहाँ रहता है।

24 परमेश्वर विवेक को जानता है क्योंकि वह
धरती के आखिरी छोर तक देखा करता है।
परमेश्वर हर उस वस्तु को जो आकाश के
नीचे है देखा करता है।
25 जब परमेश्वर ने पवन को उसकी शक्ति प्रदान
की और यह निश्चित किया कि
समुद्रों को कितना बड़ा बनाना है।
26 और जब परमेश्वर ने निश्चय किया कि
उसे कहाँ वर्षा को भेजना है,
और बवण्डरों को कहाँ की यात्रा करनी है।
27 तब परमेश्वर ने विवेक को देखा था, और
उसको यह देखने के लिये परखा था कि
विवेक का कितना मूल्य है,
तब परमेश्वर ने विवेक का समर्थन किया था।
28 और लोगों से परमेश्वर ने कहा था कि
'यहोवा का भय मानो और उसको आदर दो।'
बुराईयों से मुख मोड़ना ही विवेक है,
यही समझदारी है।"

अय्यूब अपनी बात जारी रखता है

29 अपनी बात को जारी रखते हुये अय्यूब ने कहा:

2 "काश! मेरा जीवन वैसा ही होता
जैसा गुजरे महीनों में था।
जब परमेश्वर मेरी रखवाली करता था,
और मेरा ध्यान रखता था।
3 मैं ऐसे उस समय की इच्छा करता हूँ
जब परमेश्वर का प्रकाश
मेरे शीश पर चमक रहा था।
मुझ को प्रकाश दिखाने को उस समय
जब मैं अन्धेरे से हो कर चला करता था।
4 ऐसे उन दिनों की मैं इच्छा करता हूँ,
जब मेरा जीवन सफल था,
और परमेश्वर मेरा निकट मित्र था।
वे ऐसे दिन थे जब परमेश्वर ने
मेरे घर को आशीष दी थी।
5 ऐसे समय की मैं इच्छा करता हूँ,
जब सर्वशक्तिशाली परमेश्वर अभी तक
मेरे साथ में था और मेरे पास मेरे बच्चे थे।
6 ऐसा तब था जब मेरा जीवन बहुत अच्छा था,
ऐसा लगा करता था कि दूध-दही की नदियाँ
बहा करती थी,
और मेरे हेतू चट्टाने जैतून के तेल की
नदियाँ उँडेल रही हैं।
7 ये वे दिन थे जब मैं नगर-द्वार और
खुले स्थानों में जाता था,
और नगर नेताओं के साथ बैठता था।
8 वहाँ सभी लोग मेरा मान किया करते थे।
युवा पुरुष जब मुझे देखते थे
तो मेरी राह से हट जाया करते थे।
और वृद्ध पुरुष मेरे प्रति सम्मान
दर्शाने के लिये उठ खड़े होते थे।
9 जब लोगों के मुखिया मुझे देख लेते थे,
तो बोलना बन्द किया करते थे।
10 यहाँ तक की अत्यन्त महत्वपूर्ण नेता भी अपना
स्वर नीचा कर लेते थे,
जब मैं उनके निकट जाया करता था।
हाँ! ऐसा लगा करता था कि उनकी जिह्वायें
उनके तालू से चिपकी हों।
11 जिस किसी ने भी मुझको बोलते सुना,
मेरे विषय में अच्छी बात कही,
जिस किसी ने भी मुझको देखा था,
मेरी प्रशंसा की थी।
12 क्यों? क्योंकि जब किसी दीन ने सहायता के
लिये पुकारा, मैंने सहायता की।
उस बच्चे को मैने सहारा दिया जिसके माँ
बाप नहीं और जिसका कोई भी नहीं
ध्यान रखने को।
13 मुझको मरते हुये व्यक्ति की आशीष मिली,
मैंने उन विधवाओं को जो जरुरत में थी,
मैंने सहारा दिया और उनको खुश किया।
14 मेरा वस्त्र खरा जीवन था,
निष्पक्षता मेरे चोगे और मेरी पगड़ी सी थी।
15 मैं अंधो के लिये आँखे बन गया और
मैं उनके पैर बना जिनके पैर नहीं थे।
16 दीन लोगों के लिये मैं पिता के तुल्य था,
मैं पक्ष लिया करता था ऐसे अनजानों का
जो विपत्ति में पड़े थे।

17 मैं दुष्ट लोगों की शक्ति नष्ट करता था।
निर्दोष लोगों को मैं दुष्टों से छुड़ाता था।
18 मैं सोचा करता था कि सदा जीऊँगा ओर बहुत
दिनों बाद फिर अपने ही घर में प्राण त्यागूँगा।
19 मैं एक ऐसा स्वस्थ वृक्ष बनूँगा जिसकी जड़े
सदा जल में रहती हों और
जिसकी शाखायें सदा ओस से भीगी रहती हों।
20 मेरी शान सदा ही नई बनी रहेगी,
मैं सदा वैसा ही बलवान रहूँगा जैसे,
मेरे हाथ में एक नया धनुष।
21 पहले, लोग मेरी बात सुना करते थे, और
वे जब मेरी सम्मत्ति की प्रतिक्षा किया करतेथे,
तो चुप रहा करते थे।
22 मेरे बोल चुकने के बाद,
उन लोगों के पास जो मेरी बात सुनते थे,
कुछ भी बोलने को नहीं होता था।
मेरे शब्द धीरे-धीरे उनके कानों में
वर्षा की तरह पड़ा करते थे।
23 लोग जैसे वर्षा की बाट जोहते हैं वैसे ही
वे मेरे बोलने की बाट जोहा करते थे।
मेरे शब्दों को वे पी जाया करते थे,
जैसे मेरे शब्द बसन्त में वर्षा हों।
24 जब मैं दया करने को उन पर मुस्कराता था,
तो उन्हें इसका यकीन नहीं होता था।
फिर मेरा प्रसन्न मुख दुःखी
जन को सुख देता था।
25 मैंने उत्तरदायित्व लिया और लोगों के लिये
निर्णय किये, मैं नेता बन गया।
मैने उनकी सेना के दलों के बीच राजा
जैसा जीवन जिया।
मैं ऐसा व्यक्ति था जो उन लोगों को
चैन देता था जो बहुत ही दुःखी है।

30 "अब, आयु में छोटे लोग मेरा मजाक बनाते हैं।
उन युवा पुरुषों के पिता बिलकुल ही निकम्मेंथे।
जिनको मैं उन कुत्तों तक की सहायता नहीं
करने देता था जो भेड़ों के रखवाले हैं।
2 उन युवा पुरुषों के पिता मुझे सहारा देने की
कोई शक्ति नहीं रखते हैं,
वे बूढ़े हो चुके हैं और थके हुये हैं।
3 वे व्यक्ति मुर्दे जैसे हैं क्योंकि खाने को
उनके पास कुछ नहीं है और वे भूखे हैं,
सो वे मरुभूमि के सूखे कन्द खाना चाहते हैं।
4 वे लोग मरुभूमि में खारे पौधों को उखाड़ते हैं
और वे पीले फूल वाले पीलू के पेड़ों की
जड़ों को खाते हैं।
5 वे लोग, दूसरे लोगों से भगाये गये हैं लोग जैसे
चोर पर पुकारते हैं उन पर पुकारते हैं।
6 ऐसे वे बूढ़े लोग सूखी हुई नदी के तलों में
चट्टानों के सहारे और धरती के
बिलों में रहने को विवश हैं।
7 वे झाड़ियों के भीतर रेंकते हैं।
कंटीली झाड़ियों के नीचे वे
आपस में एकत्र होते हैं।
8 वे बेकार के लोगों का दल है,
जिनके नाम तक नहीं हैं।
उनको अपना गाँव छोड़ने
को मजबूर किया गया है।
9 अब ऐसे उन लोगो के पुत्र मेरी हँसी उड़ाने को
मेरे विषय में गीत गाते हैं।
मेरा नाम उनके लिये अपशब्द सा बन गया है।
10 वे युवक मुझसे घृणा करते हैं।
वे मुझसे दूर खड़े रहते हैं और सोचते हैं कि
वे मुझसे उत्तम हैं।
यहाँ तक कि वे मेरे मुँह पर थूकते हैं।
11 परमेश्वर ने मेरे धनुष से उसकी डोर छीन
ली है और मुझे दुर्बल किया है।
वे युवक अपने आप नहीं रुकते हैं बल्कि क्रोधित
होते हुये मुझ पर मेरे विरोध में हो जाते हैं।
12 वे युवक मेरी दाहिनी ओर मुझ पर प्रहार करते हैं।
वे मुझे मिट्टी में गिराते हैं वे ढलुआ चबूतरे
बनाते हैं मेरे विरोध में मुझ पर प्रहार करके
मुझे नष्ट करने को।
13 वे युवक मेरी राह पर निगरानी रखते हैं कि
मै बच निकल कर भागने न पाऊँ।
वे मुझे नष्ट करने में सफल हो जाते हैं।
उन के विरोध में मेरी सहायता करने को
मेरे साथ कोई नहीं है।

14 वे मुझ पर ऐसे वार करते हैं,
जैसे वे दिवार में सूराख निकाल रहें हो।
एक के बाद एक आती लहर के समान वे
मुझ पर झपट कर धावा करते हैं।
15 मुझको भय जकड़ लेता है।
जैसे हवा वस्तुओं को उड़ा ले जाती है,
वैसी ही वे युवक मेरा आदर उड़ा देते हैं।
जैसे मेघ अदृश्य हो जाता है,
वैसे ही मेरी सुरक्षा अदृश्य हो जाती है।
16 अब मेरा जीवन बीतने को है और
मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा।
मुझको संकट के दिनों ने दबोच लिया है।
17 मेरी सब हड्डियाँ रात को दुखती हैं,
पीड़ा मुझको चबाना नहीं छोड़ती है।
18 मेरे गिरेबान को परमेश्वर
बड़े बल से पकड़ता है,
वह मेरे कपड़ों का रूप बिगाड़ देता है।
19 परमेश्वर मुझे कीच में धकेलता है और
मैं मिट्टी व राख सा बनता हूँ।
20 हे परमेश्वर, मैं सहारा पाने को
तुझको पुकारता हूँ,
किन्तु तू उत्तर नहीं देता है।
मैं खड़ा होता हूँ और प्रार्थना करता हूँ,
किन्तु तू मुझ पर ध्यान नहीं देता।
21 हे परमेश्वर, तू मेरे लिये निर्दयी हो गया है,
तू मुझे हानि पहुँचाने को अपनी
शक्ति का प्रयोग करता है।
22 हे परमेश्वर, तू मुझे तीव्र आँधी
द्वारा उड़ा देता है।
तूफान के बीच में तू मुझको थपेडे खिलाता है।
23 मैं जानता हूँ तू मुझे मेरी मृत्यु की ओर ले जा
रहा है जहाँ अन्त में हर किसी को जाना है।
24 किन्तु निश्चय ही कोई मरे हुये को, और उसे
जो सहायता के लिये पुकारता है,
उसको नहीं मारता।
25 हे परमेश्वर, तू तो यह जानता है कि
मैं उनके लिये रोया जो संकट में पड़े हैं।
तू तो यह जानता है कि मेरा मन गरीब
लोगों के लिये बहुत दु:खी रहता था।
26 किन्तु जब मैं भला चाहता था,
तो बुरा हो जाता था।
मैं प्रकाश ढूँढता था और अंधेरा छा जाता था।
27 मैं भीतर से फट गया हूँ और यह ऐसा है कि
कभी नहीं रुकता मेरे आगे संकट का समय है।
28 मैं सदा ही व्याकुल रहता हूँ।
मुझको चैन नहीं मिल पाता है।
मैं सभा के बीच में खड़ा होता हूँ,
और सहारे को गुहारता हूँ।
29 मैं जंगली कुत्तों के जैसा बन गया हूँ,
मेरे मित्र बस केवल शतुर्मुर्ग ही हैं।
30 मेरी त्वचा काली पड़ गई है।
मेरा तन बुखार से तप रहा है।
31 मेरी वीणा करुण गीत गाने को सधी है और
मेरी बांसुरी से दु:ख के रोने जैसे स्वर
निकलते हैं।

31 "मैंने अपनी आँखो के साथ एक सन्धि की है
कि वे किसी लड़की पर वासनापूर्ण
दृष्टि न डालें।
2 सर्वशक्तिमान परमेश्वर लोगों के साथ
कैसा करता है?
वह कैसे अपने ऊँचे स्वर्ग के घर से उनके
कर्मो का प्रतिफल देता है?
3 दुष्ट लोगों के लिये परमेश्वर
संकट और विनाश भेजता है,
और जो बुरा करते हैं,
उनके लिये विध्वंस भेजता है।
4 मैं जो कुछ भी करता हूँ परमेश्वर जानता है
और मेरे हर कदम को वह देखता है।
5 यदि मैंने झूठा जीवन जिया हो या
झूठ बोल कर लोगों को मूर्ख बनाया हो,
6 तो वह मुझको खरी तराजू से तौले,
तब परमेश्वर जान लेगा कि मैं निरपराध हूँ।
7 यदि मैं खरे मार्ग से हटा होऊँ, यदि मेरी आँखे
मेरे मन को बुरे की ओर ले गई हो
अथवा मेरे हाथ पाप से गंदे हैं।
8 तो मेरी उपजाई फसल अन्य लोग खा जाये
और वे मेरी फसलों को उखाड़ कर ले जायें।

9 यदि मैं स्त्रियों के लिये कामुक रहा होऊँ, अथवा
यदि मैं अपने पड़ोसी के द्वार को
उसकी पत्नी के साथ व्यभिचार करने के
लिये ताकता रहा होऊँ,
10 तो मेरी पत्नी दूसरों का भोजन तैयार करे
और उसके साथ पराये लोग सोंये।
11 क्यों? क्योंकि यौन पाप लज्जापूर्ण होता है?
यह ऐसा पाप है जो निश्चय ही
दण्डित होना चाहिये।
12 व्यभिचार उस पाप के समान है,
जो जलाती और नष्ट कर डालती है।
मेरे पास जो कुछ भी है व्यभिचार का पाप
उसको जला डालेगा।
13 यदि मैं अपने दास-दासियों के सामने
उस समय निष्पक्ष नहीं रहा,
जब उनको मुझसे कोई शिकायत रहीं।
14 तो जब मुझे परमेश्वर के सामने जाना होगा,
तो मैं क्या करूँगा? जब वह मुझ को मेरे
कर्मो की सफाई माँगने बुलायेगा
तो मैं परमेश्वर को क्या उत्तर दूँगा?
15 परमेश्वर ने मुझको मेरी माता के गर्भ में बनाया,
और मेरे दासों को भी उसने माता के गर्भ में हीं
बनाया, उसने हम दोनो ही को
अपनी-अपनी माता के भीतर ही रूप दिया है।
16 मैंने कभी भी दीन जन की
सहायता को मना नहीं किया।
मैंने विधवाओं को सहारे
बिना नहीं रहने दिया।
17 मैं स्वार्थी नहीं रहा।
मैंने अपने भोजन के साथ
अनाथ बच्चों को भूखा नहीं रहने दिया।
18 ऐसे बच्चों के लिये जिनके पिता नहीं हैं,
मैं पिता के जैसा रहा हूँ।
मैंने जीवन भर विधवाओं का ध्यान रखा है।
19 जब मैने किसी को इसलिये कष्ट भोगते पाया
कि उसके पास वस्त्र नहीं हैं,
अथवा मैने किसी दीन को बिना कोट के पाया।
20 तो मैं सदा उन लोगों को वस्त्र देता रहा,
मैंने उन्हें गर्म रखने को मैने स्वयं अपनी
भेड़ों के ऊन का उपयोग किया,
तो वे मुझे अपने समूचे मन से
आशीष दिया करते थे।
21 यदि कोई मैने अनाथ को छलने का जतन
अदालत में किया हो
यह जानकर की मैं जीतूँ,
22 तो मेरा हाथ मेरे कंधे के
जोड़ से ऊतर जाये और
मेरा हाथ कंधे पर से गिर जाये।
23 किन्तु मैने तो कोई वैसा बुरा काम नहीं किया।
क्यो? क्योंकि मैं परमेश्वर के
दण्ड से डरता रहा था।
24 मैंने कभी अपने धन का भरोसा न किया,
और मैंने कभी नहीं शुद्ध सोने से कहा कि
'तू मेरी आशा है!'
25 मैंने कभी अपनी धनिकता का गर्व नहीं किया
अथवा जो मैंने सम्पत्ति कमाई थी,
उसके प्रति मैं आनन्दित हुआ।
26 मैंने कभी चमकते सूरज की पूजा नहीं की
अथवा मैंने सुन्दर चाँद की पूजा नहीं की।
27 मैंने कभी इतनी मूर्खता नहीं की कि
सूरज और चाँद को पूजूँ।
28 यदि मैने इनमें से कुछ किया तो वो मेरा
पाप हो और मुझे उसका दण्ड मिले।
क्योंकि मैं उन बातों को करते हुये सर्वशक्तिशाली
परमेश्वर का अविश्वासी हो जाता।
29 जब मेरे शत्रु नष्ट हुये तो मैं प्रसन्न नहीं हुआ,
जब मेरे शत्रुओं पर विपत्ति पड़ी तो,
मैं उन पर नहीं हँसा।
30 मैंने अपने मुख को अपने शत्रु से बुरे शब्द
बोल कर पाप नहीं करने दिया
और नहीं चाहा कि उन्हें मृत्यु आ जाये।
31 मेरे घर के सभी लोग जानते हैं कि मैंने सदा
अनजानों को खाना दिया।
32 मैंने सदा अनजानों को अपने घर में बुलाया,
ताकि उनको रात में गलियों में सोना न पड़े।
33 दूसरे लोग अपने पाप को
छुपाने का जतन करते हैं,
किन्तु मैंने अपना दोष कभी नहीं छुपाया।

34 क्यों? क्योंकि लोग कहा करते हैं कि
मैं उससे कभी नहीं डरा।
मैं कभी चुप न रहा और मैंने कभी बाहर जाने
से मना नहीं किया क्योंकि उन लोगों से जो
मेरे प्रति बैर रखते हैं कभी नहीं डरा।

35 ओह! काश कोई होता जो मेरी सुनता!
मुझे अपनी बात समझाने दो।
काश! शक्तिशाली परमेश्वर मुझे उत्तर देता।
काश! वह उन बातों को लिखता जो मैंने गलत
किया था उसकी दृष्टि में।

36 क्योंकि निश्चय ही मैं वह लिखावट अपने
निज कन्धों पर रख लूँगा और
मैं उसे मुकुट की तरह सिर पर रख लूँगा।

37 मैंने जो कुछ भी किया है,
मैं उसे परमेश्वर को समझाऊँगा।
मैं परमेश्वर के पास अपना सिर ऊँचा उठाये
हुये जाऊँगा, जैसे मैं कोई मुखिया होऊँ।

38 यदि जिस खेत पर मैं खेती करता हूँ
उसको मैंने चुराया हो और
उसको उसके स्वामी से लिया हो जिससे
वह धरती अपने ही आँसुओं से गीली हो।

39 और यदि मैंने कभी बिना मजदूरों को मजदूरी
दिये हुये, खेत की उपज को खाया हो
और मजदूरों को हताश किया हो,

40 हाँ! यदि इनमें से कोई भी बुरा काम मैंने किया हो,
तो गेहूँ के स्थान पर काँटे और जौ के बजाये
खर-पतवार खेतों में उग आयें।"
अय्यूब के शब्द समाप्त हुये!

एलीहू का कथन

32 फिर अय्यूब के तीनों मित्रों ने अय्यूब को उत्तर देने का प्रयत्न करना छोड़ दिया। क्योंकि अय्यूब निश्चय के साथ यह मानता था कि वह स्वयं सचमुच दोष रहित हैं। 2वहाँ एलीहू नाम का एक व्यक्ति भी था। एलीहू बारकेल का पुत्र था। बारकेल बुज़ नाम के एक व्यक्ति के वंशज था। एलीहू राम के परिवार से था। एलीहू को अय्यूब पर बहुत क्रोध आया क्योंकि अय्यूब कह रहा था कि वह स्वयं नेक है और वह परमेश्वर पर दोष लगा रहा था। 3एलीहू अय्यूब के तीनों मित्रों से भी नाराज़ था क्योंकि वे तीनों ही अय्यूब के प्रश्नों का युक्ति संगत उत्तर नहीं दे पाये थे और अय्यूब को ही दोषी बता रहे थे। इससे तो फिर ऐसा लगा कि जैसे परमेश्वर ही दोषी था। 4वहाँ जो लोग थे उनमें एलीहू सबसे छोटा था इसलिए वह तब तक बाट जोहता रहा जब तक हर कोई अपनी अपनी बात पूरी नहीं कर चुका। तब उसने सोचा कि अब वह बोलना शुरु कर सकता हैं। 5एलीहू ने जब यह देखा कि अय्यूब के तीनों मित्रों के पास कहने को और कुछ नहीं है तो उसे बहुत क्रोध आया।

6सो एलीहू ने अपनी बात कहना शुरु किया। वह बोला:

"मैं छोटा हूँ और तुम लोग मुझसे बड़े हो,
मैं इसलिये तुमको वह बताने में डरता था
जो मैं सोचता हूँ।

7 मैंने मन में सोचा कि बड़े को पहले बोलना
चाहिये, और जो आयु में बड़े है
उनको अपने ज्ञान को बाँटना चाहिये।

8 किन्तु व्यक्ति में परमेश्वर की आत्मा बुद्धि देती है
और सर्वशक्तिशाली परमेश्वर का
प्राण व्यक्ति को ज्ञान देता है।

9 आयु में बड़े व्यक्ति ही नहीं ज्ञानी होते है।
क्या बस बड़ी उम्र के लोग ही
यह जानते हैं कि उचित क्या है?

10 सो इसलिये मैं एलीहू जो कुछ मैं जानता हूँ।
तुम मेरी बात सुनों मैं तुम को बताता हूँ कि
मैं क्या सोचता हूँ।

11 जब तक तुम लोग बोलते रहे, मैंने धैर्य से प्रतिज्ञा
की, मैंने तुम्हारे तर्क सुने जिनको
तुमने व्यक्त किया था,
जो तुम ने चुन चुन कर अय्यबू से कहे।

12 जब तुम मार्मिक शब्दों से जतन कर रहे थे
अय्यूब को उत्तर देने का तो
मैं ध्यान से सुनता रहा।
किन्तु तुम तीनों ही यह प्रमाणित नहीं
कर पाये कि अय्यूब बुरा है।
तुममें से किसी ने भी अय्यूब के
तर्कों का उत्तर नहीं दिया।

13 तुम तीनों ही लोगों को यही नहीं कहना चाहिये
था कि तुमने ज्ञान को प्राप्त कर लिया है।

लोग नहीं, परमेश्वर निश्चय ही अय्यूब के
तर्कों का उत्तर देगा।

14 किन्तु अय्यूब मेरे विरोध में नहीं बोल रहा था,
इसलिये मैं उन तर्कों का प्रयोग नहीं करुँगा
जिसका प्रयोग तुम तीनों ने किया था।

15 अय्यूब, तेरे तीनो ही मित्र असमंजस में पड़ें हैं,
उनके पास कुछ भी और कहने को नहीं है,
उनके पास और अधिक उत्तर नहीं हैं।

16 ये तीनों लोग यहाँ चुप खड़े हैं और
उनके पास उत्तर नहीं है।
सो क्या अभी भी मुझको प्रतिक्षा करनी होगी?

17 नहीं! मैं भी निज उत्तर दूँगा।
मैं भी बताऊँगा तुम को कि मैं क्या सोचता हूँ।

18 क्योंकि मेरे पास सहने को बहुत है मेरे भीतर
जो आत्मा है, वह मुझको
बोलने को विवश करती है।

19 मैं अपने भीतर ऐसी दाखमधु सा हूँ,
जो शीघ्र ही बाहर उफन जाने को है।
मैं उस नयी दाखमधु मशक जैसा हूँ
जो शीघ्र ही फटने को है।

20 सो निश्चय ही मुझे बोलना चाहिये,
तभी मुझे अच्छा लगेगा।
अपना मुख मुझे खोलना चाहिये और मुझे
अय्यूब की शिकायतों का उत्तर देना चाहिये।

21 इस बहस में मैं किसी भी व्यक्ति का पक्ष नहीं
लूँगा और मैं किसी का खुशामद नहीं करुँगा।

22 मैं नहीं जानता हूँ कि कैसे
किसी व्यक्ति की खुशामद की जाती है।
यदि मैं किसी व्यक्ति की खुशामद करना जानता
तो शीघ्र ही परमेश्वर मुझको दण्ड देता।

33 "किन्तु अय्यूब अब, मेरा सन्देश सुन।
उन बातों पर ध्यान दे जिनको मैं कहता हूँ।

2 मैं अपनी बात शीघ्र ही कहनेवाला हूँ,
मैं अपनी बात कहने को लगभग तैयार हूँ।

3 मन मेरा सच्चा है सो मैं सच्चा शब्द बोलूँगा।
उन बातों के बारे में जिनको मैं जानता हूँ
मैं सत्य कहूँगा।

4 परमेश्वर की आत्मा ने मुझको बनाया है, मुझे
सर्वशक्तिशाली परमेश्वर से जीवन मिलता है।

5 अय्यूब, सुन और मुझे उत्तर दे
यदि तू सोचता है कि तू दे सकता है।
अपने उत्तरों को तैयार रख ताकि
तू मुझसे तर्क कर सके।

6 परमेश्वर के सम्मुख हम दोनों एक जैसे हैं,
और हम दोनों को ही उसने मिट्टी से बनाया है।

7 अय्यूब, तू मुझ से मत डर।
मैं तेरे साथ कठोर नहीं होऊँगा।

8 किन्तु अय्यूब, मैंने सुना है कि
तू यह कहा करता हैं,

9 तूने कहा था, कि मैं अय्यूब, दोषी नहीं हूँ,
मैंने पाप नहीं किया, अथवा
मैं कुछ भी अनुचित नहीं करता हूँ,
मैं अपराधी नहीं हूँ।

10 यद्यपि मैंने कुछ भी अनुचित नहीं किया, तो
भी परमेश्वर ने कुछ खोट मुझ में पाया है।
परमेश्वर सोचता है कि मैं अय्यूब,उसका शत्रु हूँ।

11 इसलिये परमेश्वर मेरे पैरों में काठ डालता है,
मैं जो कुछ भी करता हूँ वह देखता रहता है।

12 किन्तु अय्यूब, मैं तुझको निश्चय के साथ
बताता हूँ कि तू इस विषय में अनुचित है।
क्यों? क्योंकि परमेश्वर किसी भी
व्यक्ति से अधिक जानता है।

13 अय्यूब, तू क्यों शिकायत करता है और क्यों
परमेश्वर से बहस करता है?
तू क्यों शिकायत करता है कि परमेश्वर
तुझे हर उस बात के विषय में
जो वह करता है स्पष्ट क्यों नहीं बताता है?

14 किन्तु परमेश्वर निश्चय ही हर उस बात को
जिसको वह करता है स्पष्ट कर देता है।
परमेश्वर अलग अलग रीति से बोलता है
किन्तु लोग उसको समझ नहीं पाते हैं।

15-16 सम्भव है कि परमेश्वर स्वप्न में लोगों के
कान में बोलता हो, अथवा किसी दिव्यदर्शन में
रात को जब वे गहरी नींद में हों।
जब परमेश्वर की चेतावनियाँ सुनते है
तो बहुत डर जाते हैं।

17 परमेश्वर लोगों को बुरी बातों को करने से
रोकने को सावधान करता है,
और उन्हें अहंकारी बनने से रोकने को।
18 परमेश्वर लोगों को मृत्यु के देश में जाने से
बचाने के लिये सावधान करता है।
परमेश्वर मनुष्य को नाश से बचाने के लिये
ऐसा करता है।
19 अथवा कोई व्यक्ति परमेश्वर की वाणी तब
सुन सकता है जब वह बिस्तर में पड़ा हों
और परमेश्वर के दण्ड से दु:ख भोगता हो।
परमेश्वर पीड़ा से उस व्यक्ति को
सावधान करता है।
वह व्यक्ति इतनी गहन पीड़ा में होता है,
कि उसकी हड्डियाँ दु:खती है।
20 फिर ऐसा व्यक्ति कुछ खा नहीं पाता,
उस व्यक्ति को पीड़ा होती है इतनी अधिक की
उसको सर्वोत्तम भोजन भी नहीं भाता।
21 उसके शरीर का क्षय तब तक होता जाता है
जब तक वह कंकाल मात्र नहीं हो जाता, और
उसकी सब हड्डियाँ दिखने नहीं लग जातीं!
22 ऐसा व्यक्ति मृत्यु के देश के निकट होता है,
और उसका जीवन मृत्यु के निकट होता है।
किन्तु हो सकता है कि कोई स्वर्गदूत हो जो
उसके उत्तम चरित्र की साक्षी दे।
23 परमेश्वर के पास हजारों ही स्वर्गदूत हैं।
फिर वह स्वर्गदूत उस व्यक्ति के
अच्छे काम बतायेगा।
24 वह स्वर्गदूत उस व्यक्ति पर दयालू होगा,
वह दूत परमश्वर से कहेगा:
इस व्यक्ति की मृत्यु के देश से रक्षा हो!
इसका मूल्य चुकाने को एक राह
मुझ को मिल गयी है।
25 फिर व्यक्ति की देह जवान और सुदृढ़ हो जायेगी।
वह व्यक्ति वैसा ही हो जायेगा जैसा वह तब था,
जब वह जवान था।
26 वह व्यक्ति परमेश्वर की स्तुति करेगा और
परमेश्वर उसकी स्तुति का उत्तर देगा।
वह फिर परमेश्वर को वैसा ही पायेगा
जैसे वह उसकी उपासना करता है,
और वह अति प्रसन्न होगा।
क्योंकि परमेश्वर उसे निरपराध घोषित कर के
पहले जैसा जीवन कर देगा।
27 फिर वह व्यक्ति लोगों के सामने स्वीकार करेगा।
वह कहेगा: 'मैंने पाप किये थे,
भले को बुरा मैंने किया था,
किन्तु मुझे इससे क्या मिला!
28 परमेश्वर ने मृत्यु के देश में गिरने से मेरी
आत्मा को बचाया।
मैं और अधिक जीऊँगा और
फिर से जीवन का रस लूँगा।'
29 परमेश्वर व्यक्ति के साथ
ऐसा बार-बार करता है,
30 उसको सावधान करने को और उसकी आत्मा
को मृत्यु के देश से बचाने को।
ऐसा व्यक्ति फिर जीवन का रस लेता है।
31 अय्यूब, ध्यान दे मुझ पर, तू बात मेरी सुन,
तू चुप रह और मुझे कहने दे।
32 अय्यूब, यदि तेरे पास कुछ कहने को है
तो मुझको उसको सुनने दे।
आगे बढ़ और बता, क्योंकि
मैं तुझे निर्दोष देखना चाहता हूँ।
33 अय्यूब, यदि तूझे कुछ नहीं कहना है तो
तू मेरी बात सुन।
चुप रह, मैं तुझको बुद्धिमान बनना सिखाऊँगा।"

34

फिर एलीहू ने बात को जारी रखते हुये कहा:

2 "अरे ओ विवेकी पुरुषों तुम ध्यान से सुनो
जो बातें मैं कहता हूँ।
अरे ओ चतुर लोगों, मुझ पर ध्यान दो।
3 कान उन सब को परखता है
जिनको वह सुनता है,
ऐसे ही जीभ जिस खाने को छूती है,
उसका स्वाद पता करती है।
4 सो आओ इस परिस्थिति को परखें
और स्वयं निर्णय करें की उचित क्या है।
हम साथ साथ सीखेंगें की क्या खरा है।

5 अय्यूब ने कहा: 'मैं निर्दोष हूँ,
किन्तु परमेश्वर मेरे लिये निष्पक्ष नहीं है।
6 मैं अच्छा हूँ लेकिन लोग सोचते हैं कि
मैं बुरा हूँ।
वे सोचते हैं कि मैं एक झूठा हूँ और चाहे
मैं निर्दोष भी होऊँ फिर भी
मेरा घाव नहीं भर सकता।'
7 अय्यूब के जैसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसका
मुख परमेश्वर की निन्दा से भरा रहता है।
8 अय्यूब बुरे लोगों का साथी है और
अय्यूब को बुरे लोगों की संगत भाती है।
9 क्योंकि अय्यूब कहता है 'यदि कोई व्यक्ति
परमेश्वर की आज्ञा मानने का जतन करता है
तो इससे उस व्यक्ति का कुछ भी भला न होगा।
10 अरे ओं लोगों जो समझ सकते हो, तो मेरी बात
सुनो, परमेश्वर कभी भी बुरा नहीं करता है।
सर्वशक्तिशाली परमेश्वर
कभी भी बुरा नहीं करेगा।
11 परमेश्वर व्यक्ति को उसके किये
कर्मों का फल देगा।
वह लोगों को जो मिलना चाहिये देगा।
12 यह सत्य है परमेश्वर कभी बुरा नहीं करता है।
सर्वशक्तिशाली परमेश्वर सदा निष्पक्ष रहेगा।
13 परमेश्वर सर्वशक्तिशाली है, धरती का अधिकारी,
उसे किसी व्यक्ति ने नहीं बनाया।
किसी भी व्यक्ति ने उसे इस समूचे
जगत का उत्तरदायित्व नहीं दिया।
14 यदि परमेश्वर निश्चय कर लेता कि लोगों से
आत्मा और प्राण ले ले,
15 तो धरती के सभी व्यक्ति मर जाते, फिर सभी
लोग मिट्टी बन जाते।
16 यदि तुम लोग विवेकी हो तो तुम उसे सुनोगे
जिसे मैं कहता हूँ।
17 कोई ऐसा व्यक्ति जो न्याय से घृणा रखता है
शासक नहीं बन सकता।
अय्यूब, तू क्या सोचता है,
क्या तू उस उत्तम और सुदृढ़
परमेश्वर को दोषी ठहरा सकता है?
18 केवल परमेश्वर ऐसा है जो राजाओं से कहा
करता है कि 'तुम बेकार के हो।'
परमेश्वर मुखियों से कहा करता है कि
'तुम दुष्ट हो।'
19 परमेश्वर प्रमुखों से अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा
अधिक प्रेम नहीं करता,
और परमेश्वर धनिकों की अपेक्षा गरीबों से
अधिक प्रेम नहीं करता है।
क्योंकि सभी परमेश्वर ने रचा है।
20 सम्भव है रात में कोई व्यक्ति मर जाये,
परमेश्वर बहुत शीघ्र ही लोगों को रोगी
करता है और वे प्राण त्याग देते हैं।
परमेश्वर बिना किसी जतन के शक्तिशाली
लोगों को उठा ले जाता है, और कोई भी
व्यक्ति उन लोगों को मदद नहीं दे सकता है।
21 व्यक्ति जो करता है परमेश्वर उसे देखता है।
व्यक्ति जो भी चरण उठाता है
परमेश्वर उसे जानता है।
22 कोई जगह अंधेरे से भरी हुई नहीं है, और
कोई जगह ऐसी नहीं है जहाँ इतना अंधेरा
हो कि कोई भी दुष्ट व्यक्ति अपने को
परमेश्वर से छिपा पाये।
23 किसी व्यक्ति के लिये यह उचित नहीं है कि
वह परमेश्वर से न्यायालय में
मिलने का समय निश्चित करे।
24 परमेश्वर को प्रश्नों के पूछने की आवश्यकता
नहीं, किन्तु परमेश्वर बलशालियों को
नष्ट करेगा और
उनके स्थान पर किसी और को बैठायेगा।
25 सो परमेश्वर जानता है कि लोग क्या करते हैं।
इसलिये परमेश्वर रात में दुष्टों को हरायेगा,
और उन्हें नष्ट कर देगा।
26 परमेश्वर बुरे लोगों को उनके बुरे कर्मों के
कारण नष्ट कर देगा और बुरे व्यक्ति के
दण्ड को वह सब को देखने देगा।
27 क्योंकि बुरे व्यक्ति ने परमेश्वर की आज्ञा मानना
छोड़ दिया और वे बुरे व्यक्ति परवाह नहीं
करते हैं उन कामों को करने की
जिनको परमेश्वर चाहता है।

28 उन बुरे लोगों ने गरीबों को दु:ख दिया और
उनको विवश किया परमेश्वर को
सहायता हेतू पुकारने को।
गरीब सहायता के लिये पुकारता है,
तो परमेश्वर उसकी सुनता है।
29 किन्तु यदि परमेश्वर ने गरीब की सहायता न
करने का निर्णय लिया तो कोई व्यक्ति
परमेश्वर को दोषी नहीं ठहरा सकता है।
यदि परमेश्वर उनसे मुख मोड़ता है तो
कोई भी उस को नहीं पा सकता है।
परमेश्वर जातियों और समूची मानवता पर
शासन करता है।
30 तो फिर एक ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर के
विरुद्ध है और लोगों को छलता है, तो
परमेश्वर उसे राजा बनने नहीं दे सकता है।
31 सम्भव है कि कोई परमेश्वर से कहे कि
मैं अपराधी हूँ और फिर मैं पाप नहीं करूँगा।
32 हे परमेश्वर, तू मुझे वे बातें सिखा जो
मैं नहीं जानता हूँ।
यदि मैंने कुछ बुरा किया तो फिर,
मैं उसको नहीं करूँगा।
33 किन्तु अय्यूब,जब तू बदलने को मना करता है,
तो क्या परमेश्वर तुझे वैसा प्रतिफल दे,
जैसा प्रतिफल तू चाहता है?
यह तेरा निर्णय है यह मेरा नहीं है।
तू ही बता कि तू क्या सोचता है?
34 कोई भी व्यक्ति जिसमें विवेक है और जो
समझता है वह मेरे साथ सहमत होगा।
कोई भी विवेकी जन जो मेरी सुनता, वह कहेगा,
35 अय्यूब, अबोध व्यक्ति के जैसी बातें करता है,
जो बाते अय्यूब करता है उनमें कोई तथ्य नहीं।
36 मेरी यह इच्छा है कि अय्यूब को परखने को
और भी अधिक कष्ट दिये जाये।
क्यों? क्योंकि अय्यूब हमें ऐसा उत्तर देता है,
जैसा कोई दुष्ट जन उत्तर देता हो।
37 अय्यूब पाप पर पाप किए जाता है और
उस पर उसने बगावत की।
तुम्हारे ही सामने वह परमेश्वर को बहुत
बहुत बोल कर कलंकित करता रहता है!"

35 एलीहू कहता चला गया। वह बोला:

2 "अय्यूब, यह तेरे लिये कहना उचित नहीं की
'मैं अय्यूब, परमेश्वर के विरुद्ध न्याय पर है।'
3 अय्यूब, तू परमेश्वर से पूछता है कि हे परमेश्वर,
मेरा पाप तुझे कैसे हानि पहुँचाता है?
और यदि मैं पाप न करुँ तो कौन सी उत्तम
वस्तु मुझ को मिल जाती है?
4 अय्यूब, मैं (एलीहू) तुझको और तेरे मित्रों को
जो यहाँ तेरे साथ हैं उत्तर देना चाहता हूँ।
5 अय्यूब! उपर देख आकाश में दृष्टि उठा कि
बादल तुझसे अधिक ऊँचें हैं।
6 अय्यूब, यदि तू पाप करें तो परमेश्वर
का कुछ नहीं बिगड़ता, और
यदि तेरे पाप बहुत हो जायें तो उससे परमेश्वर
का कुछ नहीं होता।
7 अय्यूब, यदि तू भला है तो इससे परमेश्वर का
भला नहीं होता,
तुझसे परमेश्वर को कुछ नहीं मिलता।
8 अय्यूब, तेरे पाप स्वयं तुझ जैसे मनुष्य को हानि
पहुँचाते हैं, तेरे अच्छे कर्म बस
तेरे जैसे मनुष्य का ही भला करते हैं।
9 लोगों के साथ जब अन्याय होता है और बुरा
व्यवहार किया जाता है, तो वे मदद को
पुकारते हैं, वे बड़े बड़ों की सहायता
पाने को दुहाई देते हैं।
10 किन्तु वे परमेश्वर से सहायता नहीं माँगते।
वे नहीं कहते हैं कि, 'परमेश्वर
जिसने हम को रचा है वह कहाँ हैं?
परमेश्वर जो हताश जन को आशा दिया
करता है वह कहाँ है?'
11 वे ये नहीं कहा करते कि, 'परमेश्वर
जिसने पशु पक्षियों से अधिक बुद्धिमान
मनुष्य को बनाया है वह कहाँ है?'
12 किन्तु बुरे लोग अभिमानी होते है,
इसलिये यदि वे परमेश्वर की सहायता पाने
को दुहाई दें तो उन्हें उत्तर नहीं मिलता है।
13 यह सच है कि परमेश्वर उनकी
व्यर्थ की दुहाई को नहीं सुनेगा।

सर्वशक्तिशाली परमेश्वर उन पर
ध्यान नहीं देगा।
14 अय्यूब, इसी तरह परमेश्वर तेरी नहीं सुनेगा,
जब तू यह कहता है कि
वह तुझको दिखाई नहीं देता और
तू उससे मिलने के अवसर की प्रतिज्ञा में है,
और यह प्रमाणित करने की तू निर्दोष है।
15 अय्यूब, तू सोचता है कि परमेश्वर दुष्टों को
दण्ड नहीं देता है और परमेश्वर पाप पर
ध्यान नहीं देता है।
16 इसलिये अय्यूब निज व्यर्थ बातें
करता रहता है।
अय्यूब ऐसा व्यवहार कर रहा है कि
जैसे वह महत्वपूर्ण है।
किन्तु यह देखना कितना सरल है कि अय्यूब
नहीं जानता कि वह क्या कह रहा है।"

36 एलीहू ने बात जारी रखते हुए कहा:
2 "अय्यूब, मेरे साथ थोड़ी देर और धीरज रख।
मैं तुझको दिखाऊँगा की परमेश्वर के पक्ष में
अभी कहने को और है।
3 मैं अपने ज्ञान को सबसे बाटूँगा।
मुझको परमेश्वर ने रचा है।
मैं जो कुछ भी जानता हूँ मैं उस का प्रयोग
तुझको यह दिखाने के लिये करूँगा कि
परमेश्वर निष्पक्ष है।
4 अय्यूब, तू यह निश्चय जान कि जो कुछ मैं
कहता हूँ, वह सब सत्य है।
मैं बहुत विवेकी हूँ और मैं तेरे साथ हूँ।
5 परमेश्वर शक्तिशाली है किन्तु वह
लोगों से घृणा नहीं करता है।
परमेश्वर सामर्थी है और विवेकपूर्ण है।
6 परमेश्वर दुष्ट लोगों को जीने नहीं देगा और
परमेश्वर सदा दीन लोगों के
साथ खरा व्यवहार करता है।
7 वे लोग जो उचित व्यवहार करते हैं,
परमेश्वर उनका ध्यान रखता है।
वह राजाओं के साथ उन्हें सिंहासन देता है
और वे सदा आदर पाते हैं।
8 किन्तु यदि लोग दण्ड पाते हों और
बेड़ियों में जकड़े हों।
यदि वे पीड़ा भुगत रहे हों और संकट में हों।
9 तो परमेश्वर उनको बतायेगा कि
उन्होंने कौन सा बुरा काम किया है।
परमेश्वर उन को बतायेगा कि
उन्होंने पाप किये हैं और वे अहंकारी रहे थे।
10 परमेश्वर उनको उसकी चेतावनी
सुनने को विवश करेगा।
वह उन्हें पाप करने को
रोकने का आदेश देगा।
11 यदि वे लोग परमेश्वर की सुनेंगे और
उसका अनुसरण करेंगे तो परमेश्वर
उनको सफल बनायेगा।
12 किन्तु यदि वे लोग परमेश्वर की आज्ञा नकारेंगे
तो वे मृत्यु के जगत में चले जायेंगे,
वे अपने अज्ञान के कारण मर जायेंगे।
13 ऐसे लोग जिनको परवाह परमेश्वर की
वे सदा कड़वाहट से भरे रहे है।
यहाँ तक कि जब परमेश्वर उनको दण्ड देता हैं,
वे परमेश्वर से सहारा पाने को
विनती नहीं करते।
14 ऐसे लोग जब जवान होंगे तभी मर जायेंगे।
वे अभी भ्रष्ट लोगों के साथ शर्म से मरेंगे।
15 किन्तु परमेश्वर दुःख पाते लोगों को
विपत्तियों से बचायेगा।
परमेश्वर लोगों को जगाने के लिए विपदाएं
भेजता है ताकि लोग उसकी सुने।
16 अय्यूब, परमेश्वर तुझको तेरी विपत्तियों से दूर
करके तुझे सहारा देना चाहता है।
परमेश्वर तुझे एक विस्तृत सुरक्षित स्थान देना
चाहता है और तेरी मेज पर
भरपूर खाना रखना चाहता है।
17 किन्तु अब अय्यूब, तुझे वैसा ही दण्ड
मिल रहा है,
जैसा दण्ड मिला करता है दुष्टों को,
तुझको परमेश्वर का निर्णय
और खरा न्याय जकड़े हुए है।

18 अय्यूब, तू अपनी नकेल धन दौलत के हाथ में
न दे कि वह तुझसे बुरा काम करवाये।
अधिक धन के लालच से तू मूर्ख मत बन।
19 तू ये जान ले कि अब न तो तेरा समूचा धन
तेरी सहायता कर सकता है और न ही
शक्तिशाली व्यक्ति तेरी सहायता कर सकते हैं।
20 तू रात के आने की इच्छा मत कर जब लोग
रात में छिप जाने का प्रयास करते हैं।
वे सोचते हैं कि वे परमेश्वर से छिप सकते हैं।
21 अय्यूब, बुरा काम करने से तू सावधान रह।
तुझ पर विपत्तियाँ भेजी गई हैं ताकि
तू पाप को ग्रहण न करे।
22 देख, परमेश्वर की शक्ति उसे महान बनाती है।
परमेश्वर सभी से महानतम शिक्षक है।
23 परमेश्वर को क्या करना है,
कोई भी व्यक्ति सको बता नहीं सकता।
कोई भी उससे नहीं कह सकता कि
परमेश्वर तूने बुरा किया है।
24 परमेश्वर के कर्मों की प्रशंसा करना
तू मत भूल।
लोगों ने गीत गाकर परमेश्वर के
कामों की प्रशंसा की है।
25 परमेश्वर के कर्म को हर कोई व्यक्ति
देख सकता है।
दूर देशों के लोग उन कर्मों को देख सकते हैं।
26 यह सच है कि परमेश्वर महान है।
उस की महिमा को हम नहीं समझ सकते हैं।
परमेश्वर के वर्षो की संख्या को
कोई गिन नहीं सकता।
27 परमेश्वर जल को धरती से उपर उठाता है
और उसे वर्षा के रूप में बदल देता है।
28 परमेश्वर बादलों से जल बरसाता है,
और भरपूर वर्षा लोगों पर गिरती हैं।
29 कोई भी व्यक्ति नहीं समझ सकता कि परमेश्वर
कैसे बादलों को बिखराता है, और
कैसे बिजलियाँ आकाश में कड़कती हैं।
30 देख, परमेश्वर कैसे अपनी बिजली को आकाश
में चारों ओर बिखेरता है और
कैसे सागर के गहरे भाग को ढक देता है।
31 परमेश्वर राष्ट्रों को नियंत्रण में रखने और उन्हें
भरपूर भोजन देने के लिये इन बादलों का
उपयोग करता है।
32 परमेश्वर अपने हाथों से बिजली को पकड़
लेता है और जहाँ वह चाहता है,
वहाँ बिजली को गिरने का आदेश देता है।
33 गर्जन, तूफान के आने की चेतावनी देता है।
यहाँ तक की पशु भी जानते हैं कि
तूफान आ रहा है।

37 "हे अय्यूब, जब इन बातों के विषय में
मैं सोचता हूँ,
मेरा हृदय बहुत जोर से धड़कता है।
2 हर कोई सुनों, परमेश्वर की वाणी बादल की
गर्जन जैसी सुनाई देती हैं।
सुनों गरजती हुई ध्वनि को जो परमेश्वर के
मुख से आ रही है।
3 परमेश्वर अपनी बिजली को सारे आकाश से
होकर चमकने को भेजता है।
वह सारी धरती के ऊपर चमका करती है।
4 बिजली के कौंधने के बाद परमेश्वर की गर्जन
भरी वाणी सुनी जा सकती है।
परमेश्वर अपनी अद्भुत
वाणी के साथ गरजता है।
जब बिजली कौंधती है तब परमेश्वर की
वाणी गरजती है।
5 परमेश्वर की गरजती हुई वाणी अद्भुत है।
वह ऐसे बड़े कर्म करता है,
जिन्हें हम समझ नहीं पाते हैं।
6 परमेश्वर हिम से कहता है 'तुम धरती पर
गिरो' और परमेश्वर वर्षा से कहता है
'तुम धरती पर जोर से बरसो।'
7 परमेश्वर ऐसा इसलिये करता है कि सभी व्यक्ति
जिनको उसने बनाया है जान जाये कि
वह क्या कर सकता है।
वह उसका प्रमाण है।
8 पशु अपने खोहों में भाग जाते हैं,
और वहाँ ठहरे रहते हैं।

9 दक्षिण से तूफान आते हैं,
और उत्तर से सर्दी आया करती है।
10 परमेश्वर का श्वास बर्फ को रचता है,
और सागरों को जमा देता है।
11 परमेश्वर बादलों को जल से भरा करता है,
और बिजली को बादल के द्वारा बिखेरता है।
12 परमेश्वर बादलों को आने देता है कि वह उड़ कर सब कहीं धरती के ऊपर छा जाये और फिर बादल वहीं करते हैं जिसे करने का आदेश परमेश्वर ने उन्हें दिया है।
13 परमेश्वर बाढ़ लाकर लोगों को दण्ड देने अथवा धरती को जल देकर अपना प्रेम दर्शाने के लिये बादलों को भेजता है।
14 अय्यूब, तू क्षण भर के लिये रुक और सुन।
रुक जा और सोच
उन अद्भुत कार्यो के बारे में
जिन्हें परमेश्वर किया करता हैं।
15 अय्यूब, क्या तू जानता है कि परमेश्वर बादलों पर कैसे काबू रखता है?
क्या तू जानता है कि परमेश्वर अपनी बिजली को क्यों चमकाता है?
16 क्या तू यह जानता है कि आकाश में बादल कैसे लटके रहते हैं।
ये एक उदारहण मात्र हैं।
परमेश्वर का ज्ञान सम्पूर्ण है और
ये बादल परमेश्वर की अद्भुत कृति हैं।
17 किन्तु अय्यूब, तुम ये बातें नहीं जानते।
तुम बस इतना जानते है कि तुमको पसीना आता है और तेरे वस्त्र तुझ से चिपके रहते हैं,
और सब कुछ शान्त व स्थिर रहता है,
जब दक्षिण से गर्म हवा आती है।
18 अय्यूब, क्या तू परमेश्वर की मदद आकाश को फैलाने में और उसे झलकाये गये दर्पण की तरह चमकाने में कर सकता है?
19 अय्यूब, हमें बता कि हम
परमेश्वर से क्या कहें।
हम उससे कुछ भी कहने को सोच नहीं पाते
क्योंकि हम पर्याप्त कुछ भी नहीं जानते।
20 क्या परमेश्वर से यह कह दिया जाये कि
मैं उस के विरोध में बोलना चाहता हूँ।
यह वैसे ही होगा
जैसे अपना विनाश माँगना।
21 देख, कोई भी व्यक्ति चमकते हुए
सूर्य को नहीं देख सकता।
जब हवा बादलों को उड़ा देती है उस के बाद
वह बहुत उजला और चमचमाता हुआ होता है।
22 और परमेश्वर भी उसके समान है।
परमेश्वर की सुनहरी महिमा चमकती है।
परमेश्वर अद्भुत महिमा के साथ
उत्तर से आता है।
23 सर्वशक्तिमान परमेश्वर सचमुच महान है,
हम परमेश्वर को नहीं जान सकते
परमेश्वर सदा ही लोगों के साथ न्याय,
और निष्पक्षता के साथ व्यवहार करता हैं।
24 इसलिए लोग परमेश्वर का आदर करते हैं,
किन्तु परमेश्वर उन अभिमानी लोगों को आदर नहीं देता है जो स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं"।

38 फिर यहोवा ने तूफान में से अय्यूब को उत्तर दिया। परमेश्वर ने कहा:
2 "यह कौन व्यक्ति है जो
मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा है?"
3 अय्यूब, तुम पुरुष की भाँति सुदृढ बनों।
जो प्रश्न मैं पूछूँ उस का उत्तर देने को
तैयार हो जाओ।
4 अय्यूब, बताओ तुम कहाँ थे,
जब मैंने पृथ्वी की रचना की थी?
यदि तू इतना समझदार है तो मुझे उत्तर दे।
5 अय्यूब, इस संसार का विस्तार
किसने निश्चित किया था?
किसने संसार को नापने के फीते से नापा?
6 इस पृथ्वी की नींव किस पर रखी गई है?
किसने पृथ्वी की नींव के रूप में
सर्वाधिक महत्वपूर्ण पत्थर को रखा है?
7 जब ऐसा किया था तब भोर के
तारों ने मिलकर गाया
और स्वर्गदूत ने प्रसन्न होकर
जयजयकार किया।

8 अय्यूब, जब सागर धरती के
गर्भ से फूट पड़ा था,
तो किसने उसे रोकने के लिये
द्वार को बन्द किया था।
9 उस समय मैंने बादलों से समुद्र को ढक दिया
और अन्धकार में सागर को लपेट दिया था
(जैसे बालक को चादर में लपेटा जाता है।)
10 सागर की सीमाऐं मैंने निश्चित की थीं और
उसे ताले लगे द्वारों के पीछे रख दिया था।
11 मैंने सागर से कहा 'तू यहाँ तक आ सकता है
किन्तु और अधिक आगे नहीं।
तेरी अभिमानी लहरें यहाँ पर रुक जायेंगी।'
12 अय्यूब, क्या तूने कभी अपनी जीवन में भोर
को आज्ञा दी है उग आने और
दिन को आरम्भ करने की?
13 अय्यूब, क्या तूने कभी प्रात: के प्रकाश को
धरती पर छा जाने को कहा है और
क्या कभी उससे दुष्टों के छिपने के स्थान को
छोड़ने के लिये विवश करने को कहा है?
14 प्रात: का प्रकाश पहाड़ों व घाटियों को देखने
लायक बना देता है।
जब दिन का प्रकाश धरती पर आता है तो उन
वस्तुओं के रूप वस्त्र की सलवटों की
तरह उभर कर आते हैं।
वे स्थान रूप को नम मिट्टी की तरह
जो दबोई गई मुहर की ग्रहण करते हैं।
15 दुष्ट लोगों को दिन का प्रकाश अच्छा नहीं
लगता क्योंकि जब वह चमचमाता है,
तब वह उनको बुरे काम करने से रोकता है।
16 अय्यूब, बता क्या तू कभी सागर के गहरे तल
में गया है जहाँ से सागर शुरु होता है?
क्या तू कभी सागर के तल पर चला है?
17 अय्यूब, क्या तूने कभी उस फाटकों को देखा है,
जो मृत्यु लोक को ले जाते हैं?
क्या तूने कभी उस फाटकों को देखा जो उस
मृत्यु के अन्धेरे स्थान को ले जाते हैं?
18 अय्यूब, तू जानता है कि
यह धरती कितनी बड़ी है?
यदि तू ये सब कुछ जानता है,
तो तू मुझको बता दे।
19 अय्यूब, प्रकाश कहाँ से आता है?
और अन्धकार कहाँ से आता है?
20 अय्यूब, क्या तू प्रकाश और अन्धकार को ऐसी
जगह ले जा सकता है जहाँ से वे आये है?
जहाँ वे रहते हैं वहाँ पर जाने का मार्ग
क्या तू जानता है?
21 अय्यूब, मुझे निश्चय है कि तुझे सारी बातें मालूम
हैं क्योंकि तू बहुत ही बूढ़ा और बुद्धिमान है।
जब वस्तुऐं रची गई थी तब तू वहाँ था।
22 अय्यूब, क्या तू कभी उन कोठियारों में गया हैं
जहाँ मैं हिम और ओलों को रखा करता हूँ?
23 मैं हिम और ओलों को विपदा के काल और
युद्ध लड़ाई के समय के लिये बचाये रखता हूँ।
24 अय्यूब, क्या तू कभी ऐसी जगह गया है,
जहाँ से सूरज उगता है और जहाँ से पुरवाई
सारी धरती पर छा जाने के लिये आती है?
25 अय्यूब, भारी वर्षा के लिये आकाश में
किसने नहर खोदी है,
और किसने भीषण तूफान का मार्ग बनाया है?
26 अय्यूब, किसने वहाँ भी जल बरसाया,
जहाँ कोई भी नहीं रहता है?
27 वह वर्षा उस खाली भूमि के बहुतायत से जल
देता है और घास उगनी शुरु हो जाती है।
28 अय्यूब, क्या वर्षा का कोई पिता है?
ओस की बूँदे कहाँ से आती हैं?
29 अय्यूब, हिम की माता कौन है?
आकाश से पाले को कौन उत्पन्न करता है?
30 पानी जमकर चट्टान सा कठोर बन जाता है,
और सागर की ऊपरी सतह जम जाया करती है।
31 अय्यूब, सप्तर्षि तारों को क्या तू बाँध सकता है?
क्या तू मृगशिरा का बन्धन खोल सकता है?
32 अय्यूब, क्या तू तारा समूहों को
उचित समय पर उगा सकता है,
अथवा क्या तू भालू तारा समूह की
उसके बच्चों के साथ अगुवाई कर सकता है?
33 अय्यूब क्या तू उन नियमों को जानता है,
जो नभ का शासन करते हैं?

क्या तू उन नियमों को धरती पर
लागू कर सकता है?

34 अय्यूब, क्या तू पुकार कर
मेघों को आदेश दे सकता है,
कि वे तुझको भारी वर्षा के साथ घेर ले।

35 अय्यूब बता, क्या तू बिजली को
जहाँ चाहता वहाँ भेज सकता है?
और क्या तेरे निकट आकर बिजली कहेगी
'अय्यूब, हम यहाँ है बता तू क्या चाहता है?'

36 मनुष्य के मन में विवेक को कौन रखता हैं,
और बुद्धि को कौन समझदारी दिया करता है?

37 अय्यूब, कौन इतना बलवान है जो बादलों को
गिन ले और उनको वर्षा बरसाने से रोक दे?

38 वर्षा धूल को कीचड़ बना देती है और मिट्टी
के लौंदे आपस में चिपक जाते हैं।

39 अय्यूब, क्या तू सिंहनी का भोजन पा सकता है?
क्या तू भूखे युवा सिंह का पेट भर सकता है?

40 वे अपनी खोहों में पड़े रहते हैं अथवा
झाड़ियों में छिप कर अपने शिकार पर
हमला करने के लिये बैठते हैं।

41 अय्यूब, कौवे के बच्चे परमेश्वर की दुहाई देते है,
और भोजन को पाये बिना वे इधर उधर घूमतें
रहते हैं तब उन्हें भोजन कौन देता है?

39 "अय्यूब, क्या तू जानता है कि पहाड़ी
बकरी कब ब्याती हैं?
क्या तूने कभी देखा जब हिरणी ब्याती है?

2 अय्यूब, क्या तू जानता है पहाड़ी बकरियाँ
और माता हरिणियाँ कितने महीने
अपने बच्चे को गर्भ में रखती हैं?
क्या तुझे पता है कि उनका ब्याने का
उचित समय क्या है?

3 वे लेट जाती हैं और बच्चों को जन्म देती हैं,
तब उनकी पीड़ा समाप्त हो जाती है।

4 पहाड़ी बकरियों और हरिणी माँ के बच्चे खेतों में
हृष्ट पृष्ट हो जाते हैं।
फिर वे अपनी माँ को छोड़ देते हैं,
और फिर लौट कर वापस नहीं आते।

5 अय्यूब, जंगली गधों को कौन आजाद
छोड़ देता है?
किसने उसके रस्से खोले और उनको
बन्धन मुक्त किया?

6 यह मैं (यहोवा) हूँ जिसने बनैले गधे को
घर के रूप में मरुभूमि दिया।
मैंने उनको रहने के लिये रेही धरती दी।

7 बनैला गधा शोर भरे नगरों के पास नहीं जाता है
और कोई भी व्यक्ति उसे काम
करवाने के लिये नहीं साधता है।

8 बनैले गधे पहाड़ों में घूमते हैं और वे
वहीं घास चरा करते हैं।
वे वहीं पर हरी घास चरने को ढूँढते रहते हैं।

9 अय्यूब, बता, क्या कोई जंगली सांड़
तेरी सेवा के लिये राजी होगा?
क्या वह तेरे खलिहान में रात को रुकेगा?

10 अय्यूब, क्या तू जंगली सांड़ को रस्से से बाँध
कर अपना खेत जुता सकता है?
क्या घाटी में तेरे लिये वह पटेला करेगा?

11 अय्यूब, क्या तू किसी जंगली सांड़ के
भरोसे रह सकता है?
क्या तू उस की शक्ति से अपनी सेवा
लेने की अपेक्षा रखता है?

12 क्या तू उसके भरोसे है कि वह तेरा अनाज
इकट्ठा तेरे और उसे तेरे
खलिहान में ले जाये?

13 शुतुरमुर्ग जब प्रसन्न होता है वह अपने पंख
फड़फड़ाता है किन्तु शुतुरमुर्ग उड़ नहीं सकता।
उस के पर और पंख सारस के जैसे नहीं होते।

14 शुतुरमुर्ग धरती पर अण्डे देती है,
और वे रेत में सेये जाते हैं।

15 किन्तु शुतुरमुर्ग भूल जाता है कि कोई उस के
अण्डों पर से चल कर
उन्हें कुचल सकता है, अथवा कोई
बनैला पशु उनको तोड़ सकता है।

16 शुतुरमुर्ग अपने ही बच्चों पर निर्दयता दिखाता है
जैसे वे उसके बच्चे नहीं है।
यदि उसके बच्चे मर भी जाये तो भी
उसको उसकी चिन्ता नहीं है।

17 ऐसा क्यों? क्योंकि मैंने (परमेश्वर) उस
शुतुरमुर्ग को विवेक नहीं दिया था।
शुतुरमुर्ग मूर्ख होता है, मैंने ही उसे ऐसा बनाया है।
18 किन्तु जब शुतुरमुर्ग दौड़ने को उठती है तब
वह घोड़े और उसके सवार पर हँसती है,
क्योंकि वह घोड़े से अधिक
तेज भाग सकती है।
19 अय्यूब, बता क्या तूने घोड़े को बल दिया और
क्या तूने ही घोड़े की गर्दन पर
अयाल जमाया है?
20 अय्यूब, बता जैसे टिड्डी कूद जाती है
क्या तूने वैसा घोड़े को कुदाया है?
घोड़ा घोर स्वर में हिनहिनाता है
और लोग डर जाते हैं।
21 घोड़ा प्रसन्न है कि वह बहुत बलशाली है और
अपने खुर से वह धरती को खोदा करता है।
युद्ध में जाता हुआ घोड़ा तेज दौड़ता है।
22 घोड़ा डर की हँसी उड़ाता है क्योंकि
वह कभी नहीं डरता ।
घोड़ा कभी भी युद्ध से मुख नहीं मोड़ता है।
23 घोड़े की बगल में तरकस थिरका करते हैं।
उसके सवार के भाले और हथियार धूप में
चमचमाया करते हैं।
24 घोड़ा बहुत उत्तेजित है, मैदान पर वह तीव्र
गति से दौड़ता है।
घोड़ा जब बिगुल की आवाज सुनता है
तब वह शान्त खड़ा नहीं रह सकता।
25 जब बिगुल की ध्वनि होती है घोड़ा कहा करता है
'अहा!' वह बहुत ही दूर से युद्ध को
सूँघ लेता है।
वह सेना के नायकों के घोष भरे आदेश और
युद्ध के अन्य सभी शब्द सुन लेता है।
26 अय्यूब, क्या तूने बाज को सिखाया अपने पंखो
को फैलाना और दक्षिण की ओर उड़ जाना?
27 अय्यूब, क्या तू उकाब को उड़ने की और
ऊँचे पहाड़ों में अपना घोंसला बनाने की
आज्ञा देता है?
28 उकाब चट्टान पर रहा करता है।
उसका किला चट्टान हुआ करती है।
29 उकाब किले से अपने शिकार पर दृष्टि रखता है।
वह बहुत दूर से अपने शिकार को देख लेता है।
30 उकाब के बच्चे लहू चाटा करते हैं और वे मरी
हुई लाशों के पास इकट्ठे होते हैं।"

40

यहोवा ने अय्यूब से कहा:

2 "अय्यूब तूने सर्वशक्तिमान परमेश्वर से तर्क किया।
तूने बुरे काम करने का मुझे दोषी ठहराया।
अब तू मुझको उत्तर दे।"
3 इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए
परमेश्वर से कहा:
4 "मैं तो कुछ कहने के लिये बहुत ही तुच्छ हूँ।
मैं तुझसे क्या कह सकता हूँ?
मैं तुझे कोई उत्तर नहीं दे सकता।
मैं अपना हाथ अपने मुख पर रख लूँगा।
5 मैंने एक बार कहा किन्तु अब मैं उत्तर नहीं दूँगा।
फिर मैंने दोबारा कहा किन्तु अब
और कुछ नहीं बोलूँगा।"
6 इस के बाद यहोवा ने आँधी में बोलते हुए
अय्यूब से कहा।
7 अय्यूब, तू पुरुष की तरह खड़ा हो,
मैं तुझ से कुछ प्रश्न पूछूँगा और
तू उन प्रश्नों का उत्तर मुझे देगा।
8 अय्यूब क्या तू सोचता है कि मैं न्यायपूर्ण नहीं हूँ?
क्या तू मुझे बुरा काम करने का दोषी मानता है
ताकि तू यह दिखा सके कि तू उचित है?
9 अय्यूब, बता क्या मेरे शस्त्र इतने शक्तिशाली हैं
जितने कि मेरे शस्त्र हैं?
क्या तू अपनी वाणी को उतना ऊँचा गरजा
सकता है जितनी मेरी वाणी है?
10 यदि तू वैसा कर सकता है तो तू स्वयं को
आदर और महिमा दे तथा महिमा और
उज्वलता को उसी प्रकार धारण कर
जैसे कोई वस्त्र धारण करता है।
11 अय्यूब, यदि तू मेरे समान है,
तो अभिमानी लोगों से घृणा कर।
अय्यूब, तू उन अहंकारी लोगों पर अपना क्रोध
बरसा और उन्हें तू विनम्र बना दे।

12 हाँ, अय्यूब, उन अहंकारी लोगों को देख
और तू उन्हें विनम्र बना दे।
उन दुष्टों को तू कुचल दे जहाँ भी वे खड़े हों।
13 तू सभी अभिमानियों को मिट्टी में गाड़ दे और
उनकी देहों पर कफन लपेट कर
तू उनको उनकी कब्रों में रख दे।
14 अय्यूब, यदि तू इन सब बातों को कर सकता है
तो मैं यह तेरे सामने स्वीकार करूँगा कि
तू स्वयं को बचा सकता है।
15 अय्यूब, देख तू, उस जलगज को मैंने (परमेश्वर)
ने बनाया है और मैंने ही तुझे बनाया है।
जलगज उसी प्रकार घास खाती है,
जैसे गाय घास खाती है।
16 जलगज के शरीर में बहुत शक्तिहोती है।
उसके पेट की माँसपेशियाँ बहुत
शक्तिशाली होती हैं।
17 जलगज की पूँछ दृढ़ता से ऐसी रहती है जैसा
देवदार का वृक्ष खड़ा रहता है।
उसके पैर की माँसपेशियाँ बहुत सुदृढ़ होती हैं।
18 जल गज की हड्डियाँ काँसे की
भाँति सुदृढ होती हैं,
और पाँव उसके लोहे की छड़ों जैसे।
19 जल गज पहला पशु है जिसे मैंने (परमेश्वर)
बनाया है किन्तु मैं उस को हरा सकता हूँ।
20 जल गज जो भोजन करता है उसे उसको
वे पहाड़ देते हैं जहाँ बनैले पशु विचरते हैं।
21 जल गज कमल के पौधे के नीचे पड़ा रहता है
और कीचड़ में सरकण्ड़ों की
आड़ में छिपा रहता है।
22 कमल के पौधे जलगज को
अपनी छाया में छिपाते है।
वह बाँस के पेड़ों के तले रहता हैं,
जो नदी के पास उगा करते है।
23 यदि नदी में बाढ़ आ जाये तो भी
जल गज भागता नहीं है।
यदि यरदन नदी भी उसके मुख पर थपेड़े मारे
तो भी वह डरता नहीं है।
24 जल गज की आँखों को कोई नहीं फोड़ सकता
हैऔर उसे कोई भी जाल में नहीं फँसा सकता।

41 "अय्यूब, बता, क्या तू लिब्यातान (सागर के दैत्य) को किसी मछली के काँटे से पकड़ सकता है?

2 अय्यूब, क्या तू लिब्यातान की
नाक में नकेल डाल सकता है?
अथवा उसके जबड़ों में काँटा
फंसा सकता है?
3 अय्यूब, क्या लिब्यातान आजाद होने के
लिये तुझसे विनती करेगा?
क्या वह तुझसे मधुर बातें करेगा?
4 अय्यूब, क्या लिब्यातान तुझसे सन्धि करेगा
और सदा तेरी सेवा का तुझे वचन देगा?
5 अय्यूब, क्या तू लिब्यातान से वैसे ही खेलेगा
जैसे तू किसी चिड़ियाँ से खेलता है?
क्या तू उसे रस्से से बांधेगा जिससे
तेरी दासियाँ उससे खेल सकें?
6 अय्यूब, क्या मछुवारे लिब्यातान को
तुझसे खरीदने का प्रयास करेंगे?
क्या वे उसको काटेंगे और
उन्हें व्यापारियों के हाथ बेच सकेंगे?
7 अय्यूब, क्या तू लिब्यातान की खाल में
और माथे पर भाले फेंक सकता है?
8 अय्यूब, लिब्यातान पर यदि तू हाथ डाले
तो जो भयंकर युद्ध होगा,
तू कभी भी भूल नहीं पायेगा और फिर
तू उससे कभी युद्ध न करेगा।
9 और यदि तू सोचता है कि तू लिब्यातान को
हरा देगा तो इस बात को तू भूल जा।
क्योंकि इसकी कोई आशा नहीं है।
तू तो बस उसे देखने भर से ही डर जायेगा।
10 कोई भी इतना वीर नहीं है,
जो लिब्यातान को जगा कर भड़काये।
तो फिर अय्यूब बता, मेरे विरोध में
कौन टिक सकता है?
11 मुझ को (परमेश्वर को) किसी भी व्यक्ति
कुछ नहीं देना है।
सारे आकाश के नीचे जो कुछ भी है,
वह सब कुछ मेरा ही है।
12 अय्यूब, मैं तुझको लिब्यातान के पैरों के

विषय में बताऊँगा।
मैं उसकी शक्ति और उस के रूप की
शोभा के बारे में बताऊँगा।

13 कोई भी व्यक्ति उसकी खाल को भेद नहीं सकता।
उसकी खाल दुहरा कवच के समान हैं।

14 लिब्यातान को कोई भी व्यक्ति मुख खोलने
के लिये विवश नहीं कर सकता है।
उसके जबड़े के दाँत सभी को
भयभीत करते हैं।

15 लिब्यातान की पीठ पर ढालों की
पंक्तियाँ होती हैं,
जो आपस में कड़ी छाप से जुड़े होते हैं।

16 ये ढ़ाले आपस में इतनी सटी होती हैं कि
हवा तक उनमें प्रवेश नहीं कर पाती है।

17 ये ढाले एक दूसरे से जुड़ी होती हैं।
वे इतनी मजबूती से एक दूसरे से जुडी हुई है
कि कोई भी उनको उखाड़ कर
अलग नहीं कर सकता।

18 लिब्यातान जब छींका करता है तो ऐसा
लगता है जैसे बिजली सी कौंध गई हो।
आँखे उसकी ऐसी चमकती है
जैसे कोई तीव्र प्रकाश हो।

19 उसके मुख से जलती हुई मशालें निकलती हैं,
और उससे आग की चिंगारियाँ बिखरती हैं।

20 लिब्यातान के नथुनों से धुआँ
ऐसा निकलता है,
जैसे उबलती हुई हाँडी से भाप निकलता हो।

21 लिब्यातान की फूँक से कोपले सुलग उठते हैं
और उसके मुख से डर कर दूर
भाग जाया करते हैं।

22 लिब्यातान की शक्ति उसके गर्दन में रहती है,
और लोग उससे डर कर दूर भाग जाया करते हैं।

23 उसकी खाल में कही भी कोमल जगह नहीं हैं।
वह धातु की तरह कठोर हैं।

24 लिब्यातान का हृदय चट्टान की
तरह होता है, उसको भय नहीं है।
वह चक्की के नीचे के पाट सा सुदृढ़ है।

25 लिब्यातान जागता है,
बली लोग डर जाते हैं।
लिब्यातान जब पूँछ फटकारता है,
तो वो लोग भाग जाते हैं।

26 लिब्यातान पर जैसे ही भाले, तीर और
तलवार पड़ते है वे उछल कर दूर हो जाते है।

27 लोहे की मोटी छड़े वह तिनसे सा और काँसे
को सड़ी लकड़ी सा तोड़ देता है।

28 बाण लिब्यातान को नहीं भगा पाते हैं, उस
पर फेंकी गई चट्टाने सूखे तिनके की भाँति हैं।

29 लिब्यातान पर जब मुगदर पड़ता है तो उसे
ऐसा लगता है मानों वह कोई तिनका हो।
जब लोग उस पर भाले फेंकते हैं,
तब वह हँसा करता है।

30 लिब्यातान की देह के नीचे की खाल टूटे
हुऐ बर्तन के कठोर व पैने टुकड़े सा है।
वह जब चलता है तो कीचड़ में ऐसे छोड़ता है
मानों खलिहान में पाटा लगाया गया हो।

31 लिब्यातान पानी को यूँ मथता है,
मानों कोई हँड़ियाँ उबलती हो।
वह ऐसे बुलबुले बनाता है मानों पात्र में
उबलता हुआ तेल हो।

32 लिब्यातान जब सागर में तैरता है तो अपने
पीछे वह सफेद झागों जैसी राह छोड़ता है,
जैसे कोई श्वेत बालों की विशाल पूँछ हो।

33 लिब्यातान सा कोई और जन्तु
धरती पर नहीं है।
वह ऐसा पशु है जिसे निर्भय बनाया गया।

34 वह अत्याधिक गर्वीले पशुओं तक को
घृणा से देखता है।
सभी जंगली पशुओं का वह राजा हैं।”
मैने (यहोवा) लिब्यातान को बनाया है।

अय्यूब का यहोवा को उत्तर

42 इस पर अय्यूब ने यहोवा को उत्तर देते हुए कहा:

2 “यहोवा, मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ
कर सकता है।
तू योजनाऐं बना सकता है और तेरी योजनाओं
को कोई भी नहीं बदल सकता
और न ही उसको रोका जा सकता है।

3 यहोवा, तूने यह प्रश्न पूछा कि 'यह अबोध व्यक्ति कौन है?
जो ये मूर्खतापूर्ण बातें कह रहा है?'
यहोवा, मैंने उन चीज़ों के बारे में बातें की जिन्हें मैं समझता नहीं था।
यहोवा, मैंने उन चीज़ों के बारे में बातें की जो मेरे समझ पाने के लिये बहुत अचरज भरी थी।

4 यहोवा, तूने मुझसे कहा 'हे अय्यूब सुन और मैं बोलूँगा।
मैं तुझसे प्रश्न पूछूँ गा और तू मुझे उत्तर देगा।'

5 यहोवा, बीते हुए काल में मैंने तेरे बारे में सुना था
किन्तु स्वयं अपनी आँखों से मैंने तुझे देख लिया है।

6 अत: अब मैं स्वयं अपने लिये लज्जित हूँ।
यहोवा मुझे खेद है धूल और राख में बैठ कर
मैं अपने हृदय और जीवन को बदलने की प्रतिज्ञा करता हूँ।"

यहोवा का अय्यूब की सम्पत्ति को लौटाना

[7]यहोवा जब अय्यूब से अपनी बात कर चुका तो यहोवा ने तेमान के निवासी एलीपज से कहा: "मैं तुझसे और तेरे दो मित्रों से क्रोधित हूँ क्योंकि तूने मेरे बारे में उचित बातें नहीं कही थीं। किन्तु अय्यूब ने मेरे बारे में उचित बातें कहीं थीं। अय्यूब मेरा दास है। [8]इसलिये अब एलीपज तुम सात बैल और सात भेड़ें लेकर मेरे दास अय्यूब के पास जाओ और अपने लिये होमबलि के रुप में उनकी भेंट चढ़ाओं। मेरा सेवक अय्यूब तुम्हारे लिए प्रार्थना करेगा। तब निश्चय ही मैं उसकी प्रार्थना का उत्तर दूँगा। फिर मैं तुम्हें वैसा दण्ड नहीं दूँगा जैसा दण्ड दिया जाना चाहिये था क्योंकि तुम बहुत मूर्ख थे। मेरे बारे मैं तुमने उचित बातें नहीं कहीं जबकि मेरे सेवक अय्यूब ने मेरे बारे में उचित बातें कही थीं।"

[9]सो तेमान नगर के निवासी एलीपज़ और शूह गाँव के बिल्दद तथा नामात गाँव के निवासी सोपर ने यहोवा की आज्ञा का पालन किया। इस पर यहोवा ने अय्यूब की प्रार्थना सुन ली।

[10]इस प्रकार जब अय्यूब अपने मित्रों के लिये प्रार्थना कर चुका तो यहोवा ने अय्यूब की फिर से सफलता प्रदान की। परमेश्वर ने जितना उसके पास पहले था, उससे भी दुगुना उसे दे दिया। [11]अय्यूब के सभी भाई और बहनें अय्यूब के घर वापस आ गये और हर कोई जो अय्यूब को पहले जानता था, उसके घर आया। अय्यूब के साथ उन सब ने एक बड़ी दावत में खाना खाया। क्योंकि यहोवा ने अय्यूब को बहुत कष्ट दिये थे, इसलिये उन्होंने अय्यूब को सान्त्वना दी। हर किसी व्यक्ति ने अय्यूब को चाँदी का एक सिक्का और सोने की एक अंगूठी भेंट में दीं।

[12]यहोवा ने अय्यूब के जीवन के पहले भाग से भी अधिक उसके जीवन के पिछले भाग को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। अय्यूब के पास चौदह हजार भेड़ें छ: हजार ऊँट, दो हजार बैल तथा एक हजार गधियाँ हो गयीं। [13]अय्यूब के सात पुत्र और तीन पुत्रियाँ भी हो गयीं। [14]अय्यूब ने अपनी सबसे बड़ी पुत्री का नाम रखा यमीमा। दूसरी पुत्री का नाम रखा कसीआ। और तीसरी का नाम रखा केरेन्हप्पूक। [15]सारे प्रदेश में अय्यूब की पुत्रियाँ सबसे सुन्दर स्त्रियाँ थीं। अय्यूब ने अपने पुत्रों को साथ अपनी सम्पत्ति का एक भाग अपनी पुत्रियोँ को भी उत्तराधिकार में दिया।

[16]इसके बाद अय्यूब एक सौ चालीस साल तक और जीवित रहा। वह अपने बच्चों, अपने पोतों, अपने पर पोतों और पर पोतों की भी संतानों यानी चार पीढ़ियों को देखने के लिए जीवित रहा। [17]जब अय्यूब की मृत्यु हुई, उस समय वह बहुत बूढ़ा था। उसे बहुत अच्छा और लम्बा जीवन प्राप्त हुआ था।

भजन संहिता

पहिला भाग

भजन 1

1 सचमुच वह जन धन्य होगा
यदि वह दुष्टों की सलाह को न मानें,
और यदि वह किसी पापी का सा
जीवन न जीए और
यदि वह उन लोगों की संगति न करे
जो परमेश्वर की राह पर नहीं चलते।

2 वह नेक मनुष्य है जो यहोवा के
उपदेशों से प्रीति रखता है।
वह तो रात दिन उन उपदेशों का
मनन करता है।

3 इससे वह मनुष्य उस वृक्ष जैसा सुदृढ़
बनता है जिसको जलधार के
किनारे रोपा गया है।
वह उस वृक्ष समान है,
जो उचित समय में फलता और
जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं।
वह जो भी करता है सफल ही होता है।

4 किन्तु दुष्ट जन ऐसे नहीं होते।
दुष्ट जन उस भूसे के समान होते हैं
जिन्हें पवन का झोका उड़ा ले जाता है।

5 इसलिए दुष्ट जन न्याय का
सामना नहीं कर पायेंगे।
सज्जनों की सभा में वे दोषी ठहरेंगे और
उन पापियों को छोड़ा नहीं जायेगा।

6 ऐसा भला क्यों होगा?
क्योंकि यहोवा सज्जनों की रक्षा करता है
और वह दुर्जनों का विनाश करता है।

भजन 2

1 दूसरे देशों के लोग क्यों इतनी हुल्लड़ मचाते
हैं और लोग व्यर्थ ही क्यों षड़यन्त्र रचते हैं?

2 ऐसे देशों के राजा और नेता यहोवा
और उसके चुने हुए राजा के विरुद्ध
होने को आपस में एक हो जाते हैं।

3 वे नेता कहते हैं, "आओ परमेश्वर से
और उस राजा से जिसको उसने चुना है,
हम सब विद्रोह करें।
आओ उनके बन्धनों को
हम उतार फेंके।"

4 किन्तु मेरा स्वामी, स्वर्ग का राजा,
उन लोगों पर हँसता है।

5–6 परमेश्वर क्रोधित है
और वह उन से कहता है,
"मैंने इस पुरुष को राजा बनने
के लिये चुना है।
वह सिय्योन पर्वत पर राज्य करेगा।
सिय्योन मेरा विशेष पर्वत है।"
यही उन नेताओं को भयभीत करता है।

7 अब मैं यहोवा की वाचा के
बारे में तुझे बताता हूँ।
यहोवा ने मुझसे कहा था,
"आज मैं तेरा पिता बनता हूँ और
तू आज मेरा पुत्र बन गया है।

8 यदि तू मुझसे माँगे, तो
इन देशों को मैं तुझे दे दूँगा और
इस धरती के सभी जन तेरे हो जायेंगे।

9 तेरे पास उन देशों को नष्ट करने की वैसी ही
शक्ति होगी जैसे किसी मिट्टी के पात्र
को कोई लौह दण्ड से चूर चूर कर दे।"

10 इसलिए, हे राजाओं, तुम बुद्धिमान बनो।
हे शासकों, तुम इस पाठ को सीखो।

11 तुम अति भय से यहोवा की आज्ञा मानों।

12 स्वयं को परमेश्वर के पुत्र का
विश्वासपात्र दिखाओ।

यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो
वह क्रोधित होगा और तुम्हें नष्ट कर देगा।
जो लोग यहोवा में आस्था रखते हैं
वे आनन्दित रहते हैं,
किन्तु अन्य लोगों को सावधान रहना चाहिए।
यहोवा अपना क्रोध बस दिखाने ही वाला है।

भजन 3

दाऊद का उस समय का गीत जब वह अपने पुत्र अबशालोम से दूर भागा था।

1 हे यहोवा, मेरे कितने ही शत्रु मेरे
विरुद्ध खड़े हो गये हैं।
2 कितने ही मेरी चर्चाएं करते हैं,
कितने ही मेरे विषय में कह रहे कि
परमेश्वर इसकी रक्षा नहीं करेगा।
3 किन्तु यहोवा, तू मेरी ढाल है।
तू ही मेरी महिमा है।
हे यहोवा, तू ही मेरा सिर ऊँचा करता है।
4 मैं यहोवा को ऊँचे स्वर में पुकारुँगा।
वह अपने पवित्र पर्वत से मुझे उत्तर देगा।
5 मैं आराम करने को लेट सकता हूँ।
मैं जानता हूँ कि मैं जाग जाऊँगा,
क्योंकि यहोवा मुझको बचाता
और मेरी रक्षा करता है।
6 चाहे मैं सैनिकों के बीच घिर जाऊँ किन्तु
उन शत्रुओं से भयभीत नहीं होऊँगा।
7 हे यहोवा, जाग!
मेरे परमेश्वर आ, मेरी रक्षा कर!
तू बहुत शक्तिशाली है।
यदि मेरे दुष्ट शत्रुओं के मुख पर
तू प्रहार करे, तो
उनके सभी दाँतों को तो उखाड़ डालेगा।
8 यहोवा अपने लोगों की रक्षा कर सकता है।
हे यहोवा, तेरे लोगों पर तेरी आशीष रहे।

भजन 4

तारवाद्यों वाले संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक गीत।

1 मेरे उत्तम परमेश्वर, जब मैं तुझे पुकारुँ,
मुझे उत्तर दे।
मेरी विनती को सुन और मुझ पर कृपा कर।
जब कभी विपत्तियाँ मुझको घेरें
तू मुझ को छुड़ा ले।
2 अरे लोगों, कब तक तुम मेरे बारे में
अपशब्द कहोगे?
तुम लोग मेरे बारे में कहने के लिये
नये झूठ ढूँढते रहते हो।
उन झूठों को कहने से तुम लोग
प्रीति रखते हो।
3 तुम जानते हो कि अपने नेक
जनों की यहोवा सुनता है।
जब भी मैं यहोवा को पुकारता हूँ,
वह मेरी पुकार को सुनता है।
4 यदि कोई वस्तु तुझे झमेले में डाले,
तू क्रोध कर सकता है,
किन्तु पाप कभी मत करना।
जब तू अपने बिस्तर में जाये तो
सोने से पहले उन बातों पर
विचार कर और चुप रह।
5 समुचित बलियाँ परमेश्वर को अर्पित कर
और तू यहोवा पर भरोसा बनाये रख।
6 बहुत से लोग कहते हैं,
"परमेश्वर की नेकी हमें कौन दिखायेगा?
हे यहोवा, अपने प्रकाशमान मुख का
प्रकाश मुझ पर चमका।"
7 हे यहोवा, तूने मुझे बहुत प्रसन्न बना दिया।
कटनी के समय भरपूर फसल और
दाखमधु पाकर जब हम आनन्द और
उल्लास मनाते हैं उससे भी कहीं
अधिक प्रसन्न मैं अब हूँ।
8 मैं बिस्तर में जाता हूँ और शांति से सोता हूँ।
क्योंकि यहोवा, तू ही मुझको
सुरक्षित सोने को लिटाता है।

भजन 5

बाँसुरी वादकों के निर्देशक के लिये दाऊद का गीत।

1 हे यहोवा, मेरे शब्द सुन और
तू उसकी सुधि ले जिसको तुझसे
कहने का मैं यत्न कर रहा हूँ।

2 मेरे राजा, मेरे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन।
3 हे यहोवा, हर सुबह तुझको, मैं अपनी भेंटे
अर्पित करता हूँ। तू ही मेरा सहायक है।
मेरी दृष्टि तुझ पर लगी है और तू ही
मेरी प्रार्थनाएँ हर सुबह सुनता है।
4 हे यहोवा, तुझ को बुरे लोगों की
निकटता नहीं भाती है।
तू नहीं चाहता कि तेरे मन्दिर में
कोई भी पापी जन आये।
5 तेरे निकट अविश्वासी नहीं आ सकते।
ऐसे मनुष्यों को तूने दूर भेज दिया जो
सदा ही बुरे कर्म करते रहते हैं।
6 जो झूठ बोलते हैं उन्हें तू नष्ट करता है।
यहोवा ऐसे मनुष्यों से घृणा करता है,
जो दूसरों को हानि पहुँचाने
का षड़यन्त्र रचते हैं।
7 किन्तु हे यहोवा, तेरी महा करुणा से
मैं तेरे मन्दिर में आऊँगा।
हे यहोवा, मुझ को तेरा डर है,
मैं सम्मान तुझे देता हूँ।
इसलिए मैं तेरे मन्दिर की ओर
झुककर तुझे दण्डवत करुँगा।
8 हे यहोवा, तू मुझको अपनी
नेकी का मार्ग दिखा।
तू अपनी राह को मेरे सामने सीधी कर
क्योंकि मैं शत्रुओं से घिरा हुआ हूँ।
9 वे लोग सत्य नहीं बोलते। वे झूठे हैं,
जो सत्य को तोड़ते मरोड़ते रहते हैं।
उनके मुख खुली कब्र के समान हैं।
वे औरों से उत्तम चिकनी-चुपड़ी
बातें करते किन्तु वे उन्हें
बस जाल में फँसाना चाहते हैं।
10 हे परमेश्वर, उन्हें दण्ड दे।
उनके अपने ही जालों में उनको उलझने दे।
ये लोग तेरे विरुद्ध हो गये हैं, उन्हें उनके
अपने ही बहुत से पापों का दण्ड दे।
11 किन्तु जो परमेश्वर के आस्थावान होते हैं,
वे सभी प्रसन्न हों और वे
सदा सर्वदा को आनन्दित रहें।
हे परमेश्वर, तू उनकी रक्षा कर
और उन्हें तू शक्ति दे जो जन
तेरे नाम से प्रीति रखते हैं।
12 हे यहोवा, तू निश्चय ही धर्मी को
वरदान देता है।
अपनी कृपा से तू उनको एक
बड़ी ढाल बन कर फिर ढक लेता है।

भजन 6

शौमिनिथ शैली के तारवाद्यों के निर्देशक के लिये दाऊद का एक गीत।

1 हे यहोवा, तू मुझ पर क्रोधित होकर
मेरा सुधार मत कर।
मुझ पर कुपित मत हो
और मुझे दण्ड मत दे।
2 हे यहोवा, मुझ पर दया कर।
मैं रोगी और दुर्बल हूँ।
मेरे रोगों को हर ले।
मेरी हड्डियाँ काँप-काँप उठती हैं।
3 मेरी समूची देह थर-थर काँप रही है।
हे यहोवा, मेरा भारी दुःख तू कब तक रखेगा।
4 हे यहोवा, मुझ को फिर से बलवान कर।
तू महा दयावान है मेरी रक्षा कर।
5 मरे हुए लोग तुझे अपनी कब्रों के
बीच याद नहीं करते हैं।
मृत्यु के देश में वे तेरी प्रशंसा नहीं करते हैं।
अत: मुझको चँगा कर।
6 हे यहोवा, सारी रात मैं
तुझको पुकारता रहता हूँ।
मेरा बिछौना मेरे आँसुओं से भीग गया है।
मेरे बिछौने से आँसु टपक रहे हैं।
तेरे लिये रोते हुए मैं क्षीण हो गया हूँ।
7 मेरे शत्रुओं ने मुझे बहुतेरे दुःख दिये।
इसने मुझे शोकाकुल और बहुत
दुःखी कर डाला और अब मेरी
आँखें रोने बिलखने से थकी हारी, दुर्बल हैं।
8 अरे ओ दुर्जनों, तुम मुझ से दूर हटो।
क्योंकि यहोवा ने मुझे रोते हुए सुन लिया है।
9 मेरी विनती यहोवा के कान तक पहुँच
चुकी है और मेरी प्रार्थनाओं को
यहोवा ने सुनकर उत्तर दे दिया है।

10 मेरे सभी शत्रु व्याकुल और आशाहीन होंगे।
कुछ अचानक ही घटित होगा
और वे सभी लज्जित होंगे।
वे मुझको छोड़ कर लौट जायेंगे।

भजन 7

दाऊद का एक भाव गीत: जिसे उसने यहोवा के लिये गाया। यह भाव गीत बिन्यामीन परिवार समूह के कीश के पुत्र शाऊल के विषय मे है।

1 हे मेरे यहोवा परमेश्वर,
मुझे तुझ पर भरोसा है।
उन व्यक्तियों से तू मेरी रक्षा कर,
जो मेरे पीछे पड़े हैं। मुझको तू बचा ले।
2 यदि तू मुझे नहीं बचाता तो मेरी दशा
उस निरीह पशु की सी होगी,
जिसे किसी सिंह ने पकड़ लिया है।
वह मुझे घसीट कर दूर ले जायेगा,
कोई भी व्यक्ति मुझे नहीं बचा पायेगा।
3 हे मेरे यहोवा परमेश्वर,
कोई पाप करने का मैं दोषी नहीं हूँ।
मैंने तो कोई भी पाप नहीं किया।
4 मैंने अपने मित्रों के साथ बुरा नहीं किया
और अपने मित्र के शत्रुओं की भी
मैंने सहायता नहीं किया।
5 किन्तु एक शत्रु मेरे पीछे पड़ा हुआ है।
वह मेरी हत्या करना चाहता है।
वह शत्रु चाहता है कि मेरे जीवन को
धरती पर रौंद डाले और मेरी
आत्मा को धूल में मिला दे।
6 यहोवा उठ, तू अपना क्रोध प्रकट कर।
मेरा शत्रु क्रोधित है, सो खड़ा हो जा
और उसके विरुद्ध युद्ध कर।
खड़ा हो जा और निष्पक्षता की माँग कर।
7 हे यहोवा, लोगों का न्याय कर।
अपने चारों ओर राष्ट्रों को एकत्र कर
और लोगों का न्याय कर।
8 हे यहोवा, न्याय कर मेरा,
और सिद्ध कर कि मैं न्याय संगत हूँ।
ये प्रमाणित कर दे कि मैं निर्दोष हूँ।
9 दुर्जन को दण्ड दे और
सज्जन की सहायता कर।
हे परमेश्वर, तू उत्तम है। तू अन्तर्यामी है।
तू तो लोगों के हृदय में झाँक सकता है।
10 जिन के मन सच्चे हैं, परमेश्वर
उन व्यक्तियों की सहायता करता है।
इसलिए वह मेरी भी सहायता करेगा।
11 परमेश्वर उत्तम न्यायकर्ता है।
वह कभी भी अपना क्रोध प्रकट कर देगा।
12 परमेश्वर जब कोई निर्णय ले लेता है,
तो फिर वह अपना मन नहीं बदलता है।
13 उसमें लोगों को दण्डित करने की क्षमता है।
उसने मृत्यु के सब सामान साथ रखे हैं।
14 कुछ ऐसे लोग होते हैं जो
सदा कुकर्मों की योजना बनाते रहते हैं।
ऐसे ही लोग गुप्त षड़यन्त्र रचते हैं,
और मिथ्या बोलते हैं।
15 वे दूसरे लोगों को जाल में फँसाने
और हानि पहुँचाने का यत्न करते हैं।
किन्तु अपने ही जाल में फँस कर
वे हानि उठायेंगे।
16 वे अपने कर्मों का उचित दण्ड पायेंगे।
वे अन्य लोगों के साथ क्रूर रहे।
किन्तु जैसा उन्हें चाहिए वैसा ही फल पायेंगे।
17 मैं यहोवा का यश गाता हूँ,
क्योंकि वह उत्तम है।
मैं यहोवा के सर्वोच्च नाम की स्तुति करता हूँ।

भजन 8

गित्तीथ की संगत पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1 हे यहोवा, मेरे स्वामी,
तेरा नाम सारी धरती पर अति अद्भुत है।
तेरा नाम स्वर्ग में हर कहीं
तुझे प्रशंसा देता है।
2 बालकों और छोटे शिशुओं के मुख से,
तेरे प्रशंसा के गीत उच्चरित होते हैं।
तू अपने शत्रुओं को चुप
करवाने के लिये ऐसा करता है।

3 हे यहोवा, जब मेरी दृष्टि गगन पर पड़ती है,
जिसको तूने अपने हाथों से रचा है
और जब मैं चाँद तारों को देखता हूँ जो तेरी
रचना है, तो मैं अचरज से भर उठता हूँ।
4 लोग तेरे लिये क्यों इतने महत्त्वपूर्ण हो गये?
तू उनको याद भी किस लिये करता है?
मनुष्य का पुत्र तेरे लिये क्यों महत्त्वपूर्ण है?
क्यों तू उन पर ध्यान तक देता है?
5 किन्तु तेरे लिये मनुष्य महत्त्वपूर्ण है!
तूने मनुष्य को ईश्वर का प्रतिरुप बनाया है,
और उनके सिर पर महिमा और
सम्मान का मुकुट रखा है।
6 तूने अपनी सृष्टि का जो कुछ भी तूने रचा
लोगों को उसका अधिकारी बनाया।
7 मनुष्य भेड़ों पर, पशु धन पर और
जंगल के सभी हिंसक
जन्तुओं पर शासन करता है।
8 वह आकाश में पक्षियों पर और सागर में
तैरते जलचरों पर शासन करता है।
9 हे यहोवा, हमारे स्वामी,
सारी धरती पर तेरा नाम अति अद्भुत है।

भजन 9

अलामौथ बैन राग पर आधारित दाऊद का पद: संगीत निर्देशक के लिये।

1 मैं अपने सम्पूर्ण मन से यहोवा की
स्तुति करता हूँ।
हे यहोवा, तूने जो अद्भुत कर्म किये हैं,
मैं उन सब का वर्णन करुँगा।
2 तूने ही मुझे इतना आनन्दित बनाया है।
हे परम परमेश्वर,
मैं तेरे नाम के प्रशंसा गीत गाता हूँ।
3 जब मेरे शत्रु मुझसे पलट कर
मेरे विमुख होते हैं, तब परमेश्वर
उनका पतन करता और वे नष्ट हो जाते हैं।
4 तू सच्चा न्यायकर्ता है।
तू अपने सिंहासन पर न्यायकर्ता के
रुप में विराजा।
तूने मेरे अभियोग की सुनवाई की
और मेरा न्याय किया।
5 हे यहोवा, तूने उन शत्रुओं को कठोर झिड़की दी
और हे यहोवा, तूने उन दुष्टों को नष्ट किया।
उनके नाम तूने जीवितों की सूची से
सदा सर्वदा के लिये मिटा दिये।
6 शत्रु नष्ट हो गया है!
हे यहोवा, तूने उनके नगर मिटा दिये हैं!
उनके भवन अब खण्डहर मात्र रह गये हैं।
उन बुरे व्यक्तियों की हमें याद
तक दिलाने को कुछ भी नहीं बचा है।
7 किन्तु यहोवा, तेरा शासन अविनाशी है।
यहोवा ने अपने राज्य को शक्तिशाली बनाया।
उसने जग में न्याय लाने के लिये यह किया।
8 यहोवा धरती के सब मनुष्यों का
निष्पक्ष होकर न्याय करता है।
यहोवा सभी जातियों का
पक्षपात रहित न्याय करता है।
9 यहोवा दलितों और शोषितों का
शरणस्थल है।
विपदा के समय वह एक सुदृढ़ गढ़ है।
10 जो तुझ पर भरोसा रखते,
तेरा नाम जानते हैं।
हे यहोवा, यदि कोई जन तेरे द्वार पर आ
जाये तो बिना सहायता पाये कोई नहीं लौटता।
11 अरे ओ सिय्योन के निवासियों,
यहोवा के गीत गाओ जो
सिय्योन में विराजता है।
सभी जातियों को उन बातों के विषय
में बताओ जो बड़ी बातें यहोवा ने की हैं।
12 जो लोग यहोवा से न्याय माँगने गये,
उसने उनकी सुधि ली।
जिन दीनों ने उसे सहायता के लिये पुकारा,
उनको यहोवा ने कभी भी नहीं बिसारा।
13 यहोवा की स्तुति मैंने गायी है:
"हे यहोवा, मुझ पर दया कर।
देख, किस प्रकार मेरे शत्रु
मुझे दु:ख देते हैं।
'मृत्यु के द्वार' से तू मुझको बचा ले।
14 जिससे यहोवा यरुशलेम के फाटक पर
मैं तेरी स्तुति गीत गा सकूँ।
मैं अति प्रसन्न होऊँगा क्योंकि

तूने मुझको बचा लिया।"

15 अन्य जातियों ने गड्ढे खोदे ताकि
लोग उनमें गिर जायें किन्तु वे अपने ही
खोदे गड्ढे में स्वयं समा जायेंगे।
दुष्ट जन ने जाल छिपा छिपा कर बिछाया,
ताकि वे उसमें दूसरे लोगों को फँसा ले।
किन्तु उनमें उनके ही पाँव फँस गये।

16 यहोवा ने जो न्याय किया वह उससे
जाना गया कि जो बुरे कर्म करते हैं।
वे अपने ही हाथों के किये हुए
कामों से जाल में फँस गये।

17 वे दुर्जन होते हैं, जो परमेश्वर को भूलते हैं।
ऐसे मनुष्य मृत्यु के देश को जायेंगे।

18 कभी-कभी लगता है जैसे परमेश्वर दुखियों
को पीड़ा में भूल जाता है।
यह ऐसा लगता जैसे दीन जन आशाहीन हैं।
किन्तु परमेश्वर दीनों को
सदा-सर्वदा के लिये कभी नहीं भूलता।

19 हे यहोवा, उठ और राष्ट्रों का न्याय कर।
कहीं वे न सोच बैठें वे प्रबल शक्तिशाली हैं।

20 लोगों को पाठ सिखा दे,
ताकि वे जान जायें कि वे बस मानव मात्र हैं।

भजन 10

1 हे यहोवा, तू इतनी दूर क्यों खड़ा रहता है?
कि संकट में पड़े लोग तुझे नहीं देख पाते।

2 अहंकारी दुष्ट जन दुर्बल को दु:ख देते हैं।
वे अपने षड़यन्त्रों को रचते रहते हैं।

3 दुष्ट जन उन वस्तुओं पर गर्व करते हैं,
जिनकी उन्हें अभिलाषा है और लालची
जन परमेश्वर को कोसते हैं।
इस प्रकार दुष्ट दर्शाते हैं कि वे
यहोवा से घृणा करते हैं।

4 दुष्ट जन इतने अभिमानी होते हैं कि
वे परमेश्वर का अनुसरण नहीं कर सकते।
वे बुरी-बुरी योजनाएँ रचते हैं।
वे ऐसे कर्म करते हैं, जैसे परमेश्वर का
कोई अस्तित्व ही नहीं।

5 दुष्ट जन सदा ही कुटिल कर्म करते हैं।
वे परमेश्वर की विवेकपूर्ण व्यवस्था और
शिक्षाओं पर ध्यान नहीं देते।
हे परमेश्वर, तेरे सभी शत्रु
तेरे उपदेशों की उपेक्षा करते हैं।

6 वे सोचते हैं, जैसे कोई बुरी बात
उनके साथ नहीं घटेगी।
वे कहा करते हैं, "हम मौज से रहेंगे
और कभी भी दण्डित नहीं होंगे।"

7 ऐसे दुष्ट का मुख सदा शाप देता रहता है।
वे दूसरे जनों की निन्दा करते हैं और काम
में लाने को सदैव बुरी-बुरी
योजनाएँ रचते रहते हैं।

8 ऐसे लोग गुप्त स्थानों में छिपे रहते हैं,
और लोगों को फँसाने की प्रतीक्षा करते हैं।
वे लोगों को हानि पहुँचाने के लिये
छिपे रहते हैं और निरपराधी
लोगों की हत्या करते हैं।

9 दुष्ट जन सिंह के समान होते हैं जो
उन पशुओं को पकड़ने की घात में रहते हैं।
जिन्हें वे खा जायेंगे।
दुष्ट जन दीन जनों पर प्रहार करते हैं।
उनके बनाये गये जाल में
असहाय दीन फँस जाते हैं।

10 दुष्ट जन बार-बार दीन पर घात करता
और उन्हें दु:ख देता है।

11 अत: दीन जन सोचने लगते हैं,
"परमेश्वर ने हमको भुला ही दिया है!
हमसे तो परमेश्वर सदा-सदा के
लिये दूर हो गया है।
जो कुछ भी हमारे साथ घट रहा,
उससे परमेश्वर ने दृष्टि फिरा ली है!"

12 हे यहोवा, उठ और कुछ तो कर!
हे परमेश्वर, ऐसे दुष्ट जनों को दण्ड दे!
और इन दीन दुखियों को मत बिसरा!

13 दुष्ट जन क्यों परमेश्वर के विरुद्ध होते हैं?
क्योंकि वे सोचते हैं कि परमेश्वर
उन्हें कभी नहीं दण्डित करेगा।

14 हे यहोवा, तू निश्चय ही उन बातों को
देखता है, जो क्रूर और बुरी हैं।
जिनको दुर्जन किया करते हैं।
इन बातों को देख और कुछ तो कर!

दु:खों से घिरे लोग सहायता माँगने तेरे
पास आते हैं।
हे यहोवा, केवल तू ही अनाथ बच्चों का
सहायक है, अत: उन की रक्षा कर!
15 हे यहोवा, दुष्ट जनों को तू नष्ट कर दे।
16 तू उन्हें अपनी धरती से ढकेल बाहर कर!
17 हे यहोवा, दीन दु:खी लोग जो चाहते हैं
वह तूने सुन ली।
उनकी प्रार्थनाएँ सुन और उन्हें पूरा कर
जिनको वे माँगते हैं!
18 हे यहोवा, अनाथ बच्चों की तू रक्षा कर।
दु:खी जनों को और अधिक दु:ख
मत पाने दे।
दुष्ट जनों को तू इतना भयभीत कर दे
कि वे यहाँ न टिक पायें।

भजन 11

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का पद।

1 मैं यहोवा पर भरोसा करता हूँ।
फिर तू मुझसे क्यों कहता है कि
मैं भाग कर कहीं जाऊँ?
तू कहता है मुझसे कि, "पक्षी की भाँति
अपने पहाड़ पर उड़ जा!"
2 दुष्ट जन शिकारी के समान हैं।
वे अन्धकार में छिपते हैं।
वे धनुष की डोर को पीछे खींचते हैं।
वे अपने बाणों को साधते हैं और वे अच्छे,
नेक लोगों के हृदय में सीधे बाण छोड़ते हैं।
3 क्या होगा यदि वे समाज की
नींव को उखाड़ फेंके?
फिर तो ये अच्छे लोग कर ही क्या पायेंगे?
4 यहोवा अपने विशाल
पवित्र मन्दिर में विराजा है।
यहोवा स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठता है।
यहोवा सब कुछ देखता है,
जो भी घटित होता है।
यहोवा की आँखें लोगों की सज्जनता
व दुर्जनता को परखने में लगी रहती हैं।
5 यहोवा भले व बुरे लोगों को परखता है,
और वह उन लोगों से घृणा करता है,
जो हिंसा से प्रीति रखते हैं।
6 वह गर्म कोयले और जलती हुई गन्धक को
वर्षा की भाँति उन बुरे लोगों पर गिरायेगा।
उन बुरे लोगों के भाग में बस
झुलसाती पवन आयेगी
7 किन्तु यहोवा, तू उत्तम है।
तुझे उत्तम जन भाते हैं।
उत्तम मनुष्य यहोवा के साथ रहेंगे और
उसके मुख का दर्शन पायेंगे।

भजन 12

शौमिनिथ की संगत पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1 हे यहोवा, मेरी रक्षा कर!
खरे जन सभी चले गये हैं।
मनुष्यों की धरती में अब कोई भी
सच्चा भक्त नहीं बचा है।
2 लोग अपने ही साथियों से झूठ बोलते हैं।
हर कोई अपने पड़ोसियों की झूठ
बोलकर चापलूसी किया करता है।
3 यहोवा उन ओंठों को सी दे
जो झूठ बोलते हैं।
हे यहोवा, उन जीभों को काट
जो अपने ही विषय में डींग हाँकते हैं।
4 ऐसे जन सोचते है, "हमारी झूठें हमें बड़ा
व्यक्ति बनायेंगी।
कोई भी व्यक्ति हमारी जीभ के कारण
हमें जीत नहीं पायेगा।"
5 किन्तु यहोवा कहता है: "बुरे मनुष्यों ने
दीन दुर्बलों से वस्तुएँ चुरा ली हैं।
उन्होंने असहाय दीन जन से
उनकी वस्तुएँ ले ली।
किन्तु अब मैं उन हारे थके
लोगों की रक्षा खड़ा होकर करुँगा।"
6 यहोवा के वचन सत्य हैं और इतने शुद्ध
जैसे आग में पिघलाई हुई श्वेत चाँदी।
वे वचन उस चाँदी की तरह शुद्ध हैं,
जिसे पिघला पिघला कर सात बार
शुद्ध बनाया गया है।

7 हे यहोवा, असहाय जन की सुधि ले।
उनकी रक्षा अब और सदा सर्वदा कर!
8 ये दुर्जन अकड़े और बने ठने घूमते हैं।
किन्तु वे ऐसे होते हैं जैसे कोई नकली
आभूषण धारण करता है।
जो देखने में मूल्यवान लगते हैं,
किन्तु वास्तव में बहुत ही सस्ते होते हैं।

भजन 13

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1 हे यहोवा, तू कब तक मुझ को भूला रहेगा?
क्या तू मुझे सदा सदा के लिये बिसरा देगा?
कब तक तू मुझको नहीं स्वीकारेगा?
2 तू मुझे भूल गया यह कब तक मैं सोचूँ?
अपने हृदय में कब तक यह दुःख भोगूँ?
कब तक मेरे शत्रु मुझे जीतते रहेंगे?
3 हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, मेरी सुधि ले!
और तू मेरे प्रश्न का उत्तर दे!
मुझको उत्तर दे नहीं तो मैं मर जाऊँगा!
4 कदाचित् तब मेरे शत्रु यों कहने लगें,
"मैंने उसे पीट दिया!"
मेरे शत्रु प्रसन्न होंगे कि मेरा अंत हो गया है।
5 हे यहोवा, मैंने तेरी करुणा पर
सहायता पाने के लिये भरोसा रखा।
तूने मुझे बचा लिया और मुझको सुखी किया!
6 मैं यहोवा के लिये प्रसन्नता के गीत गाता हूँ,
क्योंकि उसने मेरे लिये बहुत सी
अच्छी बातें की हैं।

भजन 14

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का पद।

1 मूर्ख अपने मनमें कहता है, "परमेश्वर नहीं है।"
मूर्ख जन तो ऐसे कार्य करते हैं जो भ्रष्ट
और घृणित होते हैं।
उनमें से कोई भी भले काम नहीं करता है।
2 यहोवा आकाश से नीचे लोगों को देखता है,
कि कोई विवेकी जन उसे मिल जाये।
विवेकी मनुष्य परमेश्वर की ओर
सहायता पाने के लिये मुड़ता है।
3 किन्तु परमेश्वर से मुड़ कर
सभी दूर हो गये हैं।
आपस में मिल कर सभी लोग पापी हो गये हैं।
कोई भी जन अच्छे कर्म नहीं कर रहा है!
4 मेरे लोगों को दुष्टों ने नष्ट कर दिया है।
वे दुर्जन परमेश्वर को नहीं जानते हैं।
दुष्टों के पास खाने के लिये भरपूर भोजन है।
ये जन यहोवा की उपासना नहीं करते।
5–6 ये दुष्ट मनुष्य निर्धन की सम्मति सुनना नहीं
चाहते। ऐसा क्यों है? क्योंकि दीन जन तो
परमेश्वर पर निर्भर है।
किन्तु दुष्ट लोगों पर भय छा गया है।
क्यों? क्योंकि परमेश्वर
खरे लोगों के साथ है।
7 सिय्योन पर कौन जो इस्राएल को बचाता है?
वह तो यहोवा है, जो इस्राएल की
रक्षा करता है!
यहोवा के लोगों को दूर ले जाया गया
और उन्हें बलपूर्वक बन्दी बनाया गया।
किन्तु यहोवा अपने भक्तों को वापस
छुड़ा लायेगा।
तब याकूब (इस्राएल) अति प्रसन्न होगा।

भजन 15

दाऊद का एक पद।

1 हे यहोवा, तेरे पवित्र तम्बू में
कौन रह सकता है?
तेरे पवित्र पर्वत पर कौन रह सकता है?
2 केवल वह व्यक्ति जो खरा जीवन जीता है,
और जो उत्तम कर्मों को करता है,
और जो हृदय से सत्य बोलता है।
वही तेरे पर्वत पर रह सकता है।
3 ऐसा व्यक्ति औरों के विषय में कभी
बुरा नहीं बोलता है।
ऐसा व्यक्ति अपने पड़ोसियों का
बुरा नहीं करता।
वह अपने घराने की निन्दा नहीं करता है।
4 वह उन लोगों का आदर नहीं करता
जो परमेश्वर से घृणा रखते हैं।
और वह उन सभी का सम्मान करता है,

जो यहोवा के सेवक हैं।
ऐसा मनुष्य यदि कोई वचन देता है तो
वह उस वचन को पूरा भी करता है,
जो उसने दिया था।

5 वह मनुष्य यदि किसी को धन उधार देता है
तो वह उस पर ब्याज नहीं लेता,
और वह मनुष्य किसी निरपराध जन को
हानि पहुँचाने के लिये घूस नहीं लेता।
यदि कोई मनुष्य उस खरे जन सा
जीवन जीता है तो वह मनुष्य
परमेश्वर के निकट सदा सर्वदा रहेगा।

भजन 16

दाऊद का एक प्रगीत।

1 हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर,
क्योंकि मैं तुझ पर निर्भर हूँ।

2 मेरा यहोवा से निवेदन है,
"यहोवा, तू मेरा स्वामी है।
मेरे पास जो कुछ उत्तम है
वह सब तुझसे ही है।"

3 यहोवा अपने लोगों की धरती पर
अद्भुत काम करता है।
यहोवा यह दिखाता है कि वह
सचमुच उनसे प्रेम करता है।

4 किन्तु जो अन्य देवताओं के पीछे
उन की पूजा के लिये भागते हैं,
वे दुःख उठायेंगे।
उन मूर्तियों को जो रक्त अर्पित किया गया,
उनकी उन बलियों में मैं भाग नहीं लूँगा।
मैं उन मूर्तियों का नाम तक न लूँगा।

5 नहीं, बस मेरा भाग यहोवा में है।
बस यहोवा से ही मेरा अंश और
मेरा पात्र आता है।
हे यहोवा, मुझे सहारा दे और मेरा भाग दे।

6 मेरा भाग अति अद्भुत है।
मेरा क्षय अति सुन्दर है।

7 मैं यहोवा के गुण गाता हूँ क्योंकि
उसने मुझे ज्ञान दिया।
मेरे अन्तर्मन से रात में शिक्षाएं
निकल कर आती हैं।

8 मैं यहोवा को सदैव अपने
सम्मुख रखता हूँ,
और मैं उसका दक्षिण पक्ष
कभी नहीं छोड़ूँगा।

9 इसी से मेरा मन और मेरी आत्मा
अति आनन्दित होगी
और मेरी देह तक सुरक्षित रहेगी।

10 क्योंकि, यहोवा, तू मेरा प्राण कभी भी
मृत्यु के लोक में न तजेगा।
तू कभी भी अपने भक्त लोगों का
क्षय होता नहीं देखेगा।

11 तू मुझे जीवन की नेक राह दिखायेगा।
हे यहोवा, तेरा साथ भर
मुझे पूर्ण प्रसन्नता देगा।
तेरे दाहिनी ओर होना सदा
सर्वदा को आनन्द देगा।

भजन 17

दाऊद का प्रार्थना गीत।

1 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना न्याय के निमित्त सुन।
मैं तुझे ऊँचे स्वर से पुकार रहा हूँ।
मैं अपनी बात ईमानदारी से कह रहा हूँ।
सो कृपा करके मेरी प्रार्थना सुने।

2 यहोवा तू ही मेरा उचित न्याय करेगा।
तू ही सत्य को देख सकता है।

3 मेरा मन परखने को तूने उसके
बीच गहरा झाँक लिया है।
तू मेरे संग रात भर रहा तूने मुझे जाँचा,
और तुझे मुझ में कोई खोट न मिला।
मैंने कोई बुरी योजना नहीं रची थी।

4 तेरे आदेशों को पालने में
मैंने कठिन यत्न किया जितना कि
कोई मनुष्य कर सकता है।

5 मैं तेरी राहों पर चलता रहा हूँ।
मेरे पाँव तेरे जीवन की रीति से नहीं डिगे।

6 हे परमेश्वर, मैंने हर किसी अवसर पर
तुझको पुकारा है और तूने मुझे उत्तर दिया है।
सो अब भी तू मेरी सुन।

7 हे परमेश्वर, तू अपने भक्तों की
सहायता करता है।

उनकी जो तेरे दाहिने रहते हैं।
तू अपने एक भक्त की यह प्रार्थना सुन।
8 मेरी रक्षा तू निज आँख की पुतली समान कर।
मुझको अपने पंखों के छाया तले तू छुपा ले।
9 हे यहोवा, मेरी रक्षा उन दुष्ट जनों से कर
जो मुझे नष्ट करने का यत्न कर रहे हैं।
वे मुझे घेरे हैं और मुझे हानि
पहुँचाने को प्रयत्नशील हैं।
10 दुष्ट जन अभिमान के
कारण परमेश्वर की
बात पर कान नहीं लगाते हैं।
ये अपनी ही ढींग हाँकते रहते हैं।
11 वे लोग मेरे पीछे पड़े हुए हैं,
और मैं अब उनके बीच में घिर गया हूँ।
वे मुझ पर वार करने को तैयार खड़े हैं।
12 वे दुष्ट जन ऐसे हैं जैसे कोई सिंह घात
में अन्य पशु को मारने को बैठा हो।
वे सिंह की तरह झपटने को छिपे रहते है
13 हे यहोवा, उठ! शत्रु के पास जा,
और उन्हें अस्त्र शस्त्र डालने को विवश कर।
निज तलवार उठा और इन
दुष्ट जनों से मेरी रक्षा कर।
14 हे यहोवा, जो व्यक्ति सजीव हैं उनकी धरती से
दुष्टों को अपनी शक्ति से दूर कर।
हे यहोवा, बहुतेरे तेरे पास शरण माँगने आते हैं।
तू उनको बहुतायत से भोजन दे।
उनकी संतानों को परिपूर्ण कर दे।
उनके पास निज बच्चों को देने के
लिये बहुतायत से धन हो।
15 मेरी विनय न्याय के लिये है।
सो मैं यहोवा के मुख का दर्शन करुँगा।
हे यहोवा, तेरा दर्शन करते ही,
मैं पूरी तरह सन्तुष्ट हो जाऊँगा।

भजन 18

यहोवा के दास दाऊद का एक पद: संगीत निर्देशक के लिये। दाऊद ने यह पद उस अवसर पर गाया था जब यहोवा ने शाऊल तथा अन्य शत्रुओं से उसकी रक्षा की थी।

1 उसने कहा, "यहोवा मेरी शक्ति है,
मैं तुझ पर अपनी करुणा दिखाऊँगा!
2 यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़,
मेरा शरणस्थल है।"
मेरा परमेश्वर मेरी चट्टान है।
मैं तेरी शरण मे आया हूँ।
उसकी शक्ति मुझको बचाती है।
यहोवा ऊँचे पहाड़ों पर मेरा शरणस्थल है।
3 यहोवा को जो स्तुति के योग्य है,
मैं पुकारुँगा और मैं अपने
शत्रुओं से बचाया जाऊँगा।
4 मेरे शत्रुओं ने मुझे मारने का यत्न किया।
मैं चारों ओर मृत्यु की रस्सियों से घिरा हूँ!
मुझ को अधर्म की बाढ़ ने भयभीत कर दिया।
5 मेरे चारों ओर पाताल की रस्सियाँ थी।
और मुझ पर मृत्यु के फँदे थे।
6 मैं घिरा हुआ था और यहोवा को
सहायता के लिये पुकारा।
मैंने अपने परमेश्वर को पुकारा।
परमेश्वर पवित्र निज मन्दिर में विराजा।
उसने मेरी पुकार सुनी और सहायता की।
7 तब पृथ्वी हिल गई और काँप उठी;
और पहाड़ों की नींव कंपित हो कर हिल गई
क्योंकि यहोवा अति क्रोधित हुआ था!
8 परमेश्वर के नथनों से धुँआ निकल पड़ा।
परमेश्वर के मुख से ज्वालायें फूट निकली,
और उससे चिंगारियाँ छिटकी।।
9 यहोवा स्वर्ग को चीर कर नीचे उतरा!
सघन काले मेघ उसके पाँव तले थे।
10 उसने उड़ते करुब स्वर्गदूतों पर सवारी की
वायु पर सवार हो वह ऊँचे उड़ चला।
11 यहोवा ने स्वयं को अँधेरे में छिपा लिया,
उसको अम्बर का चँदोबा घिरा था।
वह गरजते बादलों के सघन
घटा–टोप में छिपा हुआ था।
12 फिर, परमेश्वर का तेज बादल
चीर कर निकला।
बरसा और बिजलियाँ कौंधी।
13 यहोवा का उद्घोष नाद अम्बर में गूँजा!
परम परमेश्वर ने निज वाणी को
सुनने दिया!
फिर ओले बरसे और बिजलियाँ कौंध उठी।

14 यहोवा ने बाण छोड़े और शत्रु बिखर गये।
उसके अनेक तड़ित बज्रों ने
उनको पराजित किया।
15 हे यहोवा, तूने गर्जना की
और मुख से आँधी प्रवाहित की।
जल पीछे हट कर दबा
और समुद्र का जल अतल दिखने लगा,
और धरती की नींव तक उधड़ी।
16 यहोवा ऊपर अम्बर से नीचे उतरा
और मेरी रक्षा की।
मुझको मेरे कष्टों से उबार लिया।
17 मेरे शत्रु मुझसे कहीं अधिक सशक्त थे।
वे मुझसे कहीं अधिक बलशाली थे,
और मुझसे बैर रखते थे।
सो परमेश्वर ने मेरी रक्षा की।
18 जब मैं विपत्ति में था,
मेरे शत्रुओं ने मुझ पर प्रहार किया
किन्तु तब यहोवा ने मुझ को संभाला!
19 यहोवा को मुझसे प्रेम था,
सो उसने मुझे बचाया
और मुझे सुरक्षित ठौर पर ले गया।
20 मैं अबोध हूँ, सो यहोवा मुझे बचायेगा।
मैंने कुछ बुरा नहीं किया।
वह मेरे लिये उत्तम चीजें करेगा।
21 क्योंकि मैंने यहोवा की आज्ञा पालन किया!
अपने परमेश्वर यहोवा के प्रति
मैंने कोई भी बुरा काम नहीं किया।
22 मैं तो यहोवा के व्यवस्था विधानों को
और आदेशों को हमेशा ध्यान में रखता हूँ!
23 स्वयं को मैं उसके सामने पवित्र रखता हूँ
और अबोध बना रहता हूँ।
24 क्योंकि मैं अबोध हूँ!
इसलिये मुझे मेरा पुरस्कार देगा!
जैसा परमेश्वर देखता है कि
मैंने कोई बुरा नहीं किया,
अत: वह मेरे लिये उत्तम चीजें करेगा।
25 हे यहोवा, तू विश्वसनीय लोगों के साथ
विश्वसनीय और खरे लोगों के साथ
तू खरा है।
26 हे यहोवा शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध
दिखाता है, और टेढ़ों के साथ
तू तिर्छा बनता है।
किन्तु, तू नीच और कुटिल
जनों से भी चतुर है।
27 हे यहोवा, तू नम्र जनों के लिये सहाय है,
किन्तु जिनमें अहंकार भरा है
उन मनुष्यों को तू बड़ा नहीं बनने देता।
28 हे यहोवा, तू मेरा जलता दीप है।
हे मेरे परमेश्वर तू मेरे अधंकार को
ज्योति में बदलता है!
29 हे यहोवा, तेरी सहायता से,
मैं सैनिकों के साथ दौड़ सकता हूँ।
तेरी ही सहायता से, मैं शत्रुओं के
प्राचीर लाँघ सकता हूँ।
30 परमेश्वर के विधान पवित्र और उत्तम हैं
और यहोवा के शब्द सत्यपूर्ण होते हैं।
वह उसको बचाता है जो उसके भरोसे हैं।
31 यहोवा को छोड़ बस और कौन परमेश्वर है?
मात्र हमारे परमेश्वर के और कौन चट्टान है?
32 मुझको परमेश्वर शक्ति देता है।
मेरे जीवन को वह पवित्र बनाता है।
33 परमेश्वर मेरे चरणों को हिरण की सी
तीव्र गति देता है।
वह मुझे स्थिर बनाता और
मुझे चट्टानी शिखरों से गिरने से बचाता है।
34 हे यहोवा, मुझको सिखा कि
युद्ध मैं कैसे लड़ूँ?
वह मेरी भुजाओं को शक्ति देता है
जिससे मैं काँसे के धनुष की डोरी खींच सकूँ।
35 हे परमेश्वर, अपनी ढाल से मेरी रक्षा कर।
तू मुझको अपनी दाहिनी भुजा से अपनी
महान शक्ति प्रदान करके सहारा दे।
36 हे परमेश्वर, तू मेरे पाँवों को और
टखनों को दृढ़ बना ताकि
मैं तेजी से बिना लड़खड़ाहट के बढ़ चलूँ।
37 फिर अपने शत्रुओं का पीछा करूँ,
और उन्हें पकड़ सकूँ।
उनमें से एक को भी नहीं बच पाने दूँगा।
38 मैं अपने शत्रुओं को पराजित करुँगा।
उनमें से एक भी फिर खड़ा नहीं होगा।

मेरे सभी शत्रु मेरे पाँवों पर गिरेंगे।

39 हे परमेश्वर, तूने मुझे युद्ध में शक्ति दी, और
मेरे सब शत्रुओं को मेरे सामने झुका दिया।

40 तूने मेरे शत्रुओं की पीठ मेरी ओर फेर दी,
ताकि मैं उनको काट डालूँ
जो मुझ से द्वेष रखते हैं!

41 जब मेरे बैरियों ने सहायता को पुकारा,
उन्हें सहायता देने आगे कोई नहीं आया।
यहाँ तक की उन्होंने यहोवा तक को पुकारा,
किन्तु यहोवा से उनको उत्तर न मिला।

42 मैं अपने शत्रुओं को कूट कूट कर
धूल में मिला दूँगा,
जिसे पवन उड़ा देती है।
मैंने उनको कुचल दिया
और मिट्टी में मिला दिया।

43 मुझे उनसे बचा ले जो मुझसे युद्ध करते हैं।
मुझे उन जातियों का मुखिया बना दे,
जिनको मैं जानता तक नहीं हूँ ताकि
वे मेरी सेवा करेंगे।

44 फिर वे लोग मेरी सुनेंगे और
मेरे आदेशों को पालेंगे,
अन्य राष्ट्रों के जन मुझसे डरेंगे।

45 वे विदेशी लोग मेरे सामने झुकेंगे
क्योंकि वे मुझसे भयभीत होंगे।
वे भय से काँपते हुए अपने छिपे स्थानों
से बाहर निकल आयेंगे।

46 यहोवा सजीव है!
मैं अपनी चट्टान के यश गीत गाता हूँ।
मेरा महान परमेश्वर मेरी रक्षा करता है।

47 धन्य है, मेरा पलटा लेने वाला
परमेश्वर जिसने देश-देश के
लोगों को मेरे बस में कर दिया है।

48 यहोवा, तूने मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया है।
तूने मेरी सहायता की ताकि
मैं उन लोगों को हरा सकूँ
जो मेरे विरुद्ध खड़े हुए।
तूने मुझे कठोर व्यक्तियों से बचाया है।

49 हे यहोवा, इसी कारण मैं देशों के
बीच तेरी स्तुति करता हूँ।
इसी कारण मैं तेरे नाम का भजन गाता हूँ।

50 यहोवा अपने राजा की सहायता बहुत से
युद्धों को जीतने में करता है!
वह अपना सच्चा प्रेम,
अपने चुने हुए राजा पर दिखाता है।
वह दाऊद और उसके वंशजों के लिये
सदा विश्वास योग्य रहेगा!

भजन 19

संगीत निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1 अम्बर परमेश्वर की महिमा बखानतें हैं,
और आकाश परमेश्वर की
उत्तम रचनाओं का प्रदर्शन करते हैं।

2 हर नया दिन उसकी नयी कथा कहता है,
और हर रात परमेश्वर की नयी नयी
शक्तियों को प्रकट करता है।

3 न तो कोई बोली है, और न तो कोई भाषा,
जहाँ उसका शब्द नहीं सुनाई पड़ता।

4 उसकी "वाणी" भूमण्डल में व्यापती है और
उसके "शब्द" धरती के
छोर तक पहुँचते हैं।
उनमें उसने सूर्य के लिये एक
घर सा तैयार किया है।

5 सूर्य प्रफुल्ल हुए दुल्हे सा अपने
शयनकक्ष से निकलता है।
सूर्य अपनी राह पर आकाश को पार
करने निकल पड़ता है,
जैसे कोई खिलाड़ी अपनी दौड़
पूरी करने को तत्पर हो।

6 अम्बर के एक छोर से सूर्य चल पड़ता है
और उस पार पहुँचने को,
वह सारी राह दौड़ता ही रहता है।
ऐसी कोई वस्तु नहीं जो अपने को
उसकी गर्मी से छुपा ले।
यहोवा के उपदेश भी ऐसे ही होते है।

7 यहोवा की शिक्षायें सम्पूर्ण होती हैं,
ये भक्त जन को शक्ति देती हैं।
यहोवा की वाचा पर
भरोसा किया जा सकता है।
जिनके पास बुद्धि नहीं है
यह उन्हें सुबुद्धि देता है।

8 यहोवा के नियम न्यायपूर्ण होते हैं,
वे लोगों को प्रसन्नता से भर देते हैं।
यहोवा के आदेश उत्तम हैं,
वे मनुष्यों को
जीने की नयी राह दिखाते हैं।
9 यहोवा की आराधना प्रकाश जैसी होती है,
यह तो सदा सर्वदा ज्योतिमय रहेगी।
यहोवा के न्याय निष्पक्ष होते हैं,
वे पूरी तरह न्यायपूर्ण होते हैं।
10 यहोवा के उपदेश उत्तम स्वर्ण और
कुन्दन से भी बढ़ कर मनोहर है।
वे उत्तम शहद से भी अधिक मधुर हैं,
जो सीधे शहद के छत्ते से टपक आता है।
11 हे यहोवा, तेरे उपदेश तेरे सेवक को
आगाह करते है,
और जो उनका पालन करते हैं
उन्हें तो वरदान मिलते हैं।
12 हे यहोवा, अपने सभी दोषों को
कोई नहीं देख पाता है।
इसलिए तू मुझे उन पापों से बचा
जो एकांत में छुप कर किये जाते हैं।
13 हे यहोवा, मुझे उन पापों को करने से बचा
जिन्हें मैं करना चाहता हूँ।
उन पापों को मुझ पर शासन न करने दे।
यदि तू मुझे बचाये तो मैं पवित्र
और अपने पापों से मुक्त हो सकता हूँ।
14 मुझको आशा है कि,
मेरे वचन और चिंतन तुझको प्रसन्न करेंगे।
हे यहोवा, तू मेरी चट्टान,
और मेरा बचाने वाला है!

भजन 20

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1 तेरी पुकार का यहोवा उत्तर दे,
और जब तू विपत्ति में हो तो
याकूब का परमेश्वर तेरे नाम को बढ़ायें।
2 परमेश्वर अपने पवित्रस्थान से
तेरी सहायता करे।
वह तुझको सिय्योन से सहारा देवे।
3 परमेश्वर तेरी सब भेंटों को याद रखे,
और तेरे सब बलिदानों को स्वीकार करें।
4 परमेश्वर तुझे उन सभी वस्तुओं को
देवे जिन्हें तू सचमुच चाहे।
वह तेरी सभी योजनाएँ पूरी करें।
5 परमेश्वर जब तेरी सहायता करे हम
अति प्रसन्न हों
और हम परमेश्वर की बड़ाई के गीत गायें।
जो कुछ भी तुम माँगों यहोवा तुम्हें उसे दे।
6 मैं अब जानता हूँ कि यहोवा सहायता करता है
अपने उस राजा की जिसको उसने चुना।
परमेश्वर तो अपने पवित्र स्वर्ग में विराजा है
और उसने अपने चुने हुए
राजा को, उत्तर दिया
उस राजा की रक्षा करने के लिये परमेश्वर
अपनी महाशक्ति को प्रयोग में लाता है।
7 कुछ को भरोसा अपने रथों पर है,
और कुछ को निज सैनिकों पर भरोसा है
किन्तु हम तो अपने यहोवा
परमेश्वर को स्मरण करते हैं।
8 किन्तु वे लोग तो पराजित और युद्ध में मारे गये
किन्तु हम जीते और हम विजयी रहे।
9 ऐसा कैसा हुआ?
क्योंकि यहोवा ने अपने चुने हुए
राजा की रक्षा की
उसने परमेश्वर को पुकारा था
और परमेश्वर ने उसकी सुनी।

भजन 21

संगीत निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1 हे यहोवा, तेरी महिमा राजा को प्रसन्न करती है,
जब तू उसे बचाता है।
वह अति आनन्दित होता है।
2 तूने राजा को वे सब वस्तुएँ दी जो उसने चाहा,
राजा ने जो भी पाने की विनती की
हे यहोवा, तूने मन वांछित उसे दे दिया।
3 हे यहोवा, सचमुच तूने बहुत
आशीष राजा को दी।
उसके सिर पर तूने स्वर्ण मुकुट रख दिया।
4 उसने तुझ से जीवन की याचना की
और तूने उसे यह दे दिया।

परमेश्वर, तूने सदा सर्वदा के लिये
राजा को अमर जीवन दिया।

5 तूने रक्षा की तो राजा को महा वैभव मिला।
तूने उसे आदर और प्रशंसा दी।

6 हे परमेश्वर, सचमुच तूने राजा को
सदा सर्वदा के लिये, आशीर्वाद दिये।
जब राजा को तेरा दर्शन मिलता है,
तो वह अति प्रसन्न होता है।

7 राजा को सचमुच यहोवा पर भरोसा है,
सो परम परमेश्वर उसे निराश नहीं करेगा।

8 हे परमेश्वर! तू दिखा देगा अपने सभी
शत्रुओं को कि तू सुदृढ़ शक्तिवान है।
जो तुझ से घृणा करते हैं
तेरी शक्ति उन्हें पराजित करेगी।

9 हे यहोवा, जब तू राजा के साथ होता है
तो वह उस भभकते भाड़ सा बन जाता है,
जो सब कुछ भस्म करता है।
उसकी क्रोधाग्नि अपने
सभी बैरियों को भस्म कर देती है।

10 परमेश्वर के बैरियों के वंश नष्ट हो जायेंगे,
धरती के ऊपर से वह सब मिटेंगे।

11 ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि यहोवा, तेरे विरुद्ध
उन लोगों ने षड़यन्त्र रचा था।
उन्होंने बुरा करने को योजनाएँ रची थी,
किन्तु वे उसमें सफल नहीं हुए।

12 किन्तु यहोवा तूने ऐसे लोगों को
अपने अधीन किया,
तूने उन्हें एक साथ रस्से से बाँध दिया,
और रस्सियों का फँदा उनके गलों में डाला।
तूने उन्हें उनके मुँह के बल दासों सा गिराया।

13 यहोवा के और उसकी शक्ति के गुण गाओ
आओ हम गायें और उसके गीतों को बजायें
जो उसकी गरिमा से जुड़े हुए हैं।

भजन 22

प्रभात की हरिणी नामक राग पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक भजन।

1 हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर!
तूने मुझे क्यों त्याग दिया है?
मुझे बचाने के लिये तू क्यों बहुत दूर है?
मेरी सहायता की पुकार को
सुनने के लिये तू बहुत दूर है।

2 हे मेरे परमेश्वर, मैंने तुझे दिन में पुकारा
किन्तु तूने उत्तर नहीं दिया,
और मैं रात भर तुझे पुकारता रहा।

3 हे परमेश्वर, तू पवित्र है।
तू राजा के जैसे विराजमान है।
इस्राएल की स्तुतियाँ तेरा सिंहासन हैं।

4 हमारे पूर्वजों ने तुझ पर विश्वास किया।
हाँ! हे परमेश्वर, वे तेरे भरोसे थे!
और तूने उनको बचाया।

5 हे परमेश्वर, हमारे पूर्वजों ने तुझे सहायता
को पुकारा और वे अपने
शत्रुओं से बच निकले।
उन्होंने तुझ पर विश्वास किया
और वे निराश नहीं हुए।

6 तो क्या मैं सचमुच ही कोई कीड़ा हूँ,
जो लोग मुझसे लज्जित हुआ करते हैं
और मुझसे घृणा करते हैं?

7 जो भी मुझे देखता है मेरी हँसी उड़ाता है,
वे अपना सिर हिलाते
और अपने होंठ बिचकाते हैं।

8 वे मुझसे कहते हैं कि, "अपनी रक्षा के लिये
तू यहोवा को पुकार ही सकता है।
वह तुझ को बचा लेगा।
यदि तू उसको इतना भाता है तो
निश्चय ही वह तुझ को बचा लेगा।"

9 हे परमेश्वर, सच तो यह है कि केवल
तू ही है जिसके भरोसे मैं हूँ।
तूने मुझे उस दिन से ही सम्भाला है,
जब से मेरा जन्म हुआ।
तूने मुझे आश्वस्त किया और चैन दिया,
जब मैं अभी अपनी माता का दूध पीता था।

10 ठीक उसी दिन से जब से मैं जन्मा हूँ,
तू मेरा परमेश्वर रहा है।
जैसे ही मैं अपनी माता की कोख से
बाहर आया था,
मुझे तेरी देखभाल में रख दिया गया था।

11 सो हे, परमेश्वर! मुझको मत बिसरा,
संकट निकट है, और कोई भी व्यक्ति

मेरी सहायता को नहीं है।

12 मैं उन लोगों से घिरा हूँ, जो शक्तिशाली
साँड़ों जैसे मुझे घेरे हुए हैं।

13 वे उन सिंहो जैसे हैं, जो किसी जन्तु को
चीर रहे हों और दहाड़ते हो
और उनके मुख विकराल खुले हुए हो।

14 मेरी शक्ति धरती पर बिखरे
जल सी लुप्त हो गई।
मेरी हड्डियाँ अलग हो गई हैं।
मेरा साहस खत्म हो चुका है।

15 मेरा मुख सूखे ठीकर सा है।
मेरी जीभ मेरे अपने ही तालू से चिपक रही है।
तूने मुझे मृत्यु की धूल में मिला दिया है।

16 मैं चारों तरफ कुत्तों से घिरा हूँ,
दुष्ट जनों के उस समूह ने मुझे फँसाया है।
उन्होंने मेरे हाथों और पैरों को
सिंह के समान भेदा है।

17 मुझको अपनी हड्डियाँ दिखाई देती हैं।
ये लोग मुझे घूर रहे हैं।
ये मुझको हानि पहुँचाने को ताकते रहते हैं।

18 वे मेरे कपड़े आपस में बाँट रहे हैं।
मेरे वस्त्रों के लिये वे पासे फेंक रहे हैं।

19 हे यहोवा, तू मुझको मत त्याग।
तू मेरा बल है, मेरी सहायता कर।
अब तू देर मत लगा।

20 हे यहोवा, मेरे प्राण तलवार से बचा ले।
उन कुत्तों से तू मेरे मूल्यवान
जीवन की रक्षा कर।

21 मुझे सिंह के मुँह से बचा ले और
साँड़ के सींगो से मेरी रक्षा कर।

22 हे यहोवा, मैं अपने भाइयों में तेरा प्रचार करूँगा।
मैं तेरी प्रशंसा तेरे भक्तों की
सभा के बीच करूँगा।

23 ओ यहोवा के उपासकों,
यहोवा की प्रशंसा करो।
इस्राएल के वंशजों यहोवा का आदर करो।
ओ इस्राएल के सभी लोगों,
यहोवा का भय मानों और आदर करो।

24 क्योंकि यहोवा ऐसे मनुष्यों की
सहायता करता है
जो विपत्ति में होते हैं।
यहोवा उन से घृणा नहीं करता है।
यदि लोग सहायता के लिये यहोवा को पुकारे
तो वह स्वयं को उन से न छिपायेगा।

25 हे यहोवा, मेरा स्तुति गान महासभा के
बीच तुझसे ही आता है।
उन सबके सामने जो तेरी उपासना करते हैं।
मैं उन बातों को पूरा करुँगा
जिनको करने की मैंने प्रतिज्ञा की है।

26 दीन जन भोजन पायेंगे और सन्तुष्ट होंगे।
तुम लोग जो उसे खोजते हुए आते हो
उसकी स्तुति करो।
मन तुम्हारे सदा सदा को
आनन्द से भर जायें।

27 काश सभी दूर देशों के लोग यहोवा को
याद करें और उसकी ओर लौट आयें।
काश विदेशों के सब लोग
यहोवा की आराधना करें।

28 क्योंकि यहोवा राजा है।
वह प्रत्येक राष्ट्र पर शासन करता है।

29 लोग असहाय घास के तिनकों की
भाँति धरती पर बिछे हुए हैं।
हम सभी अपना भोजन खायेंगे और
हम सभी कब्रों में लेट जायेंगे।
हम स्वयं को मरने से नहीं रोक सकते हैं।
हम सभी भूमि में गाड़ दिये जायेंगे।
हममें से हर किसी को यहोवा के
सामने दण्डवत करना चाहिए।

30 और भविष्य में हमारे वंशज
यहोवा की सेवा करेंगे।
लोग सदा सर्वदा उस के बारे में बखानेंगे।

31 वे लोग आयेंगे और परमेश्वर की
भलाई का प्रचार करेंगे
जिनका अभी जन्म ही नहीं हुआ।

भजन 23

दाऊद का एक पद।

1 यहोवा मेरा गडेरिया है।
जो कुछ भी मुझको अपेक्षित होगा,
सदा मेरे पास रहेगा।

2 हरी भरी चरागाहों में मुझे सुख से वह रखता है।
वह मुझको शांत झीलों पर ले जाता है।
3 वह अपने नाम के निमित्त
मेरी आत्मा को नयी शक्ति देता है।
वह मुझको अगुवाई करता है
कि वह सचमुच उत्तम है।
4 मैं मृत्यु की अंधेरी घाटी से
गुजरते भी नहीं डरुँगा,
क्योंकि यहोवा तू मेरे साथ है।
तेरी छड़ी, तेरा दण्ड मुझको सुख देते हैं।
5 हे यहोवा, तूने मेरे शत्रुओं के समक्ष
मेरी खाने की मेज सजाई है।
तूने मेरे शीश पर तेल उँडेला है।
मेरा कटोरा भरा है और छलक रहा है।
6 नेकी और करुणा मेरे शेष जीवन
तक मेरे साथ रहेंगी।
मैं यहोवा के मन्दिर में
बहुत बहुत समय तक बैठा रहूँगा।।

भजन 24

दाऊद का एक पद।

1 यह धरती और उस पर की
सब वस्तुएँ यहोवा की है।
यह जगत और इसके सब व्यक्ति उसी के हैं।
2 यहोवा ने इस धरती को जल पर रचा है।
उसने इसको जल–धारों पर बनाया।
3 यहोवा के पर्वत पर कौन जा सकता है?
कौन यहोवा के पवित्र मन्दिर में खड़ा हो
सकता और आराधना कर सकता है?
4 ऐसा जन जिसने पाप नहीं किया है,
ऐसा जन जिसका मन पवित्र है,
ऐसा जन जिसने मेरे नाम का प्रयोग झूठ को
सत्य प्रतीत करने में न किया हो,
और ऐसा जन जिसने न झूठ बोला
और न ही झूठे वचन दिए हैं।
बस ऐसे व्यक्ति ही वहाँ आराधना कर सकते हैं।
5 सज्जन तो चाहते हैं यहोवा सब का भला करे।
वे सज्जन परमेश्वर से जो उनका उद्धारक है,
नेक चाहते हैं।
6 वे सज्जन परमेश्वर के
अनुसरण का जतन करते हैं।
वे याकूब के परमेश्वर के पास
सहायता पाने जाते हैं।
7 फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो!
सनातन द्वारों, खुल जाओ!
प्रतापी राजा भीतर आएगा।
8 यह प्रतापी राजा कौन है?
यहोवा ही वह राजा है, वही सबल सैनिक है,
यहोवा ही वह राजा है, वही युद्धनायक है।
9 फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो!
सनातन द्वारों, खुल जाओ!
प्रतापी राजा भीतर आएगा।
10 वह प्रतापी राजा कौन है?
यहोवा सर्वशक्तिमान ही वह राजा है।
वह प्रतापी राजा वही है।

भजन 25

दाऊद को समर्पित।

1 हे यहोवा, मैं स्वयं को तुझे समर्पित करता हूँ।
2 मेरे परमेश्वर, मेरा विश्वास तुझ पर है।
मैं तुझसे निराश नहीं होऊँगा।
मेरे शत्रु मेरी हँसी नहीं उड़ा पायेंगे।
3 ऐसा व्यक्ति, जो तुझमें विश्वास रखता है,
वह निराश नहीं होगा।
किन्तु विश्वासघाती निराश होंगे और,
वे कभी भी कुछ नहीं प्राप्त करेंगे।
4 हे यहोवा, मेरी सहायता कर कि
मैं तेरी राहों को सीखूँ।
तू अपने मार्गों की मुझको शिक्षा दे।
5 अपनी सच्ची राह तू मुझको दिखा
और उसका उपदेश मुझे दे।
तू मेरा परमेश्वर मेरा उद्धारकर्ता है।
मुझको हर दिन तेरा भरोसा है।
6 हे यहोवा, मुझ पर अपनी दया रख और
उस ममता को मुझ पर प्रकट कर,
जिसे तू हरदम रखता है।
7 अपने युवाकाल में जो पाप और
कुकर्म मैंने किए, उनको याद मत रख।
हे यहोवा, अपने निज नाम निमित्त,
मुझको अपनी करुणा से याद कर।

8 यहोवा सचमुच उत्तम है, वह पापियों को
जीवन का नेक राह सिखाता है।
9 वह दीनजनों को अपनी
राहों की शिक्षा देता है।
बिना पक्षपात के वह उनको मार्ग दर्शाता है।
10 यहोवा की राहें उन लोगों के लिए क्षमापूर्ण
और सत्य है, जो उसके वाचा और
प्रतिज्ञाओं का अनुसरण करते हैं।
11 हे यहोवा, मैंने बहुतेरे पाप किये हैं, किन्तु तूने
अपनी दया प्रकट करने को,
मेरे हर पाप को क्षमा कर दिया।
12 यदि कोई व्यक्ति यहोवा का
अनुसरण करना चाहे,
तो उसे परमेश्वर जीवन का
उत्तम राह दिखाएगा।
13 वह व्यक्ति उत्तम वस्तुओं का सुख भोगेगा,
और उस व्यक्ति की सन्ताने उस धरती की
जिसे परमेश्वर ने वचन दिया था
स्थायी रहेंगे।
14 यहोवा अपने भक्तों पर अपने भेद खोलता है।
वह अपने निज भक्तों को
अपने वाचा की शिक्षा देता है।
15 मेरी आँखें सहायता पाने को
यहोवा पर सदा टिकी रहती हैं।
मुझे मेरी विपत्ति से वह सदा छुड़ाता है।
16 हे यहोवा, मैं पीड़ित और अकेला हूँ।
मेरी ओर मुड़ और मुझ पर दया दिखा।
17 मेरी विपत्तियों से मुझको मुक्त कर।
मेरी समस्या सुलझाने की सहायता कर।
18 हे यहोवा, मुझे परख और
मेरी विपत्तियों पर दृष्टि डाल।
मुझको जो पाप मैंने किए हैं,
उन सभी के लिए क्षमा कर।
19 जो भी मेरे शत्रु हैं, सभी को देख ले।
मेरे शत्रु मुझसे बैर रखते हैं,
और मुझ को दुःख पहुँचाना चाहते हैं।
20 हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर
और मुझको बचा ले।
मैं तेरा भरोसा रखता हूँ।
सो मुझे निराश मत कर।
21 हे परमेश्वर, तू सचमुच उत्तम है।
मुझको तेरा भरोसा है, सो मेरी रक्षा कर।
22 हे परमेश्वर, इस्राएल के जनों की
उनके सभी शत्रुओं से रक्षा कर।

भजन 26

दाऊद को समर्पित।

1 हे यहोवा, मेरा न्याय कर, प्रमाणित कर कि
मैंने पवित्र जीवन बिताया है।
मैंने यहोवा पर कभी विश्वास करना नहीं छोड़ा।
2 हे यहोवा, मुझे परख और मेरी जाँच कर,
मेरे हृदय में और बुद्धि को निकटता से देख।
3 मैं तेरे प्रेम को सदा ही देखता हूँ,
मैं तेरे सत्य के सहारे जिया करता हूँ।
4 मैं उन व्यर्थ लोगों में से नहीं हूँ।
5 उन पापी टोलियों से मुझको घृणा है,
मैं उन धूर्तों के टोलों में
सम्मिलित नहीं होता हूँ।
6 हे यहोवा, मैं हाथ धोकर तेरी वेदी पर आता हूँ।
7 हे यहोवा, मैं तेरे प्रशंसा गीत गाता हूँ,
और जो आश्चर्य कर्म तूने किये हैं,
उनके विषय में मैं गीत गाता हूँ।
8 हे यहोवा, मुझको तेरा मन्दिर प्रिय है।
मैं तेरे पवित्र तम्बू से प्रेम करता हूँ।
9 हे यहोवा, तू मुझे उन पापियों के
दल में मत मिला, जब तू उन हत्यारों का
प्राण लेगा तब मुझे मत मार।
10 वे लोग सम्भव है, छलने लग जाये।
सम्भव है, वे लोग बुरे काम
करने को रिश्वत ले लें।
11 लेकिन मैं निश्चल हूँ, सो हे परमेश्वर,
मुझ पर दयालु हो और मेरी रक्षा कर।
12 मैं नेक जीवन जीता रहा हूँ।
मैं तेरे प्रशंसा गीत, हे यहोवा, जब भी तेरी भक्त
मण्डली साथ मिली, गाता रहा हूँ।

भजन 27

दाऊद को समर्पित।

1 हे यहोवा, तू मेरी ज्योति और
मेरा उद्धारकर्ता है।

मुझे तो किसी से भी नहीं डरना चाहिए!
यहोवा मेरे जीवन के लिए सुरक्षित स्थान है।
सो मैं किसी भी व्यक्ति से नहीं डरुँगा।
2 सम्भव है, दुष्ट जन मुझ पर चढ़ाई करें।
सम्भव है, वे मेरे शरीर को नष्ट
करने का यत्न करे।
सम्भव है मेरे शत्रु मुझे नष्ट करने को
मुझ पर आक्रमण का यत्न करें।
3 पर चाहे पूरी सेना मुझको घेर ले,
मैं नही डरुँगा।
चाहे युद्धक्षेत्र में मुझ पर लोग प्रहार करे,
मैं नहीं डरुँगा।
क्योंकि मैं यहोवा पर भरोसा करता हूँ।
4 मैं यहोवा से केवल एक वर माँगना चाहता हूँ,
"मैं अपने जीवन भर यहोवा के
मन्दिर में बैठा रहूँ,
ताकि मैं यहोवा की सुन्दरता को देखूँ,
और उसके मन्दिर में ध्यान करुँ।"
5 जब कभी कोई विपत्ति मुझे घेरेगी,
यहोवा मेरी रक्षा करेगा।
वह मुझे अपने तम्बू में छिपा लेगा।
वह मुझे अपने सुरक्षित स्थान
पर ऊपर उठा लेगा।
6 मुझे मेरे शत्रुओं ने घेर रखा है।
किन्तु अब उन्हें पराजित करने में
यहोवा मेरा सहायक होगा।
मैं उसके तम्बू में फिर भेंट चढ़ाऊँगा।
जय जयकार करके बलियाँ अर्पित करुँगा।
मैं यहोवा की अभिवंदना में गीतों को
गाऊँगा और बजाऊँगा।
7 हे यहोवा, मेरी पुकार सुन, मुझको उत्तर दे।
मुझ पर दयालु रह।
8 हे यहोवा, मैं चाहता हूँ अपने हृदय से
तुझसे बात करुँ।
हे यहोवा, मैं तुझसे बात करने
तेरे सामने आया हूँ।
9 हे यहोवा, अपना मुख अपने सेवक से मत मोड़।
मेरी सहायता कर! मुझे तू मत ठुकरा!
मेरा त्याग मत कर!
मेरे परमेश्वर, तू मेरा उद्धारकर्ता है।
10 मेरी माता और मेरे पिता ने मुझको त्याग दिया,
पर यहोवा ने मुझे स्वीकारा
और अपना बना लिया।
11 हे यहोवा, मेरे शत्रुओं के कारण,
मुझे अपना मार्ग सिखा।
मुझे अच्छे कामों की शिक्षा दे।
12 मुझ पर मेरे शत्रुओं ने आक्रमण किया है।
उन्होंने मेरे लिए झूठ बोले हैं।
वे मुझे हानि पहुँचाने के लिए झूठ बोले।
13 मुझे भरोसा है कि मरने से पहले मैं सचमुच
यहोवा की धार्मिकता देखूँगा।
14 यहोवा से सहायता की बाट जोहते रहो!
साहसी और सुदृढ़ बने रहो और
यहोवा की सहायता की प्रतीक्षा करते रहो।

भजन 28

1 हे यहोवा, तू मेरी चट्टान है,
मैं तुझको सहायता पाने को पुकार रहा हूँ।
मेरी प्रार्थनाओं से अपने कान मत मूँद,
यदि तू मेरी सहायता की पुकार का
उत्तर नहीं देगा, तो लोग मुझे कब्र में
मरा हुआ जैसा समझेंगे।
2 हे यहोवा, तेरे पवित्र तम्बू की ओर
मैं अपने हाथ उठाकर प्रार्थना करता हूँ।
जब मैं तुझे पुकारुँ, तू मेरी सुन और
तू मुझ पर अपनी करुणा दिखा।
3 हे यहोवा, मुझे उन बुरे व्यक्तियों कि तरह
मत सोच जो बुरे काम करते हैं।
जो अपने पड़ोसियों से
"सलाम" (शांति) करते हैं,
किन्तु अपने हृदय में अपने पड़ोसियों के
बारे में कुचक्र सोचते हैं।
4 हे यहोवा, वे व्यक्ति अन्य लोगों का
बुरा करते हैं।
सो तू उनके साथ बुरी घटनाएँ घटा।
उन दुर्जनों को तू वैसे दण्ड दे
जैसे उन्हें देना चाहिए।
5 दुर्जन उन उत्तम बातों को
जो यहोवा करता नहीं समझते।
वे परमेश्वर के उत्तम कर्मों को नहीं देखते।

वे उसकी भलाई को नहीं समझते।
वे तो केवल किसी का नाश करने का
यत्न करते हैं।

6 यहोवा की स्तुति करो! उसने मुझ पर
करुणा करने की विनती सुनी।

7 यहोवा मेरी शक्ति है, वह मेरी ढाल है।
मुझे उसका भरोसा था।
उसने मेरी सहायता की।
मैं अति प्रसन्न हूँ,
और उसके प्रशंसा के गीत गाता हूँ।

8 यहोवा अपने चुने राजा की रक्षा करता है।
वह उसे हर पल बचाता है।
यहोवा ही उसका बल है।

9 हे परमेश्वर, अपने लोगों की रक्षा कर।
जो तेरे हैं उनको आशीष दे।
उनको मार्ग दिखा और सदा सर्वदा
उनका उत्थान कर।

भजन 29

दाऊद का एक गीत।

1 परमेश्वर के पुत्रों, यहोवा की स्तुति करो!
उसकी महिमा और शक्ति के प्रशंसा गीत गाओ।

2 यहोवा की प्रशंसा करो
और उसके नाम को आदर प्रकट करो।
विशेष वस्त्र पहनकर उसकी आराधना करो।

3 समुद्र के ऊपर यहोवा की
वाणी निज गरजती है।
परमेश्वर की वाणी महासागर के ऊपर
मेघ के गरजन की तरह गरजता है।

4 यहोवा की वाणी उसकी शक्ति को दिखाती है।
उसकी ध्वनि उसके महिमा को
प्रकट करती है।

5 यहोवा की वाणी देवदार वृक्षों को तोड़ कर
चकनाचूर कर देता है।
यहोवा लबानोन के विशाल देवदार
वृक्षों को तोड़ देता है।

6 यहोवा लबानोन के पहाड़ों को कँपा देता है।
वे नाचते बछड़े की तरह दिखने लगता है।
हेर्मोन का पहाड़ काँप उठता है और
उछलती जवान बकरी की तरह दिखता है।

7 यहोवा की वाणी बिजली की
कौंधो से टकराती है।

8 यहोवा की वाणी मरुस्थलों को कँपा देती है।
यहोवा के स्वर से कादेश का
मरुस्थल काँप उठता है।

9 यहोवा की वाणी से हरिण भयभीत होते हैं।
यहोवा दुर्गम वनों को नष्ट कर देता है।
किन्तु उसके मन्दिर में लोग
उसकी प्रशंसा के गीत गाते हैं।

10 जलप्रलय के समय यहोवा राजा था।
वह सदा के लिये राजा रहेगा।

11 यहोवा अपने भक्तों की रक्षा सदा करे,
और अपने जनों को शांति का आशीष दे।

भजन 30

मन्दिर के समर्पण के लिए दाऊद का एक पद।

1 हे यहोवा, तूने मेरी विपत्तियों से
मेरा उद्धार किया है।
तूने मेरे शत्रुओं को मुझको हराने
और मेरी हँसी उड़ाने नहीं दी।
सो मैं तेरे प्रति आदर प्रकट करुँगा।

2 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैंने तुझसे प्रार्थना की।
तूने मुझको चँगा कर दिया।

3 कब्र से तूने मेरा उद्धार किया,
और मुझे जीने दिया।
मुझे मुर्दों के साथ मुर्दों के गर्त में
पड़े हुए नहीं रहना पड़ा।

4 परमेश्वर के भक्तों, यहोवा की स्तुति करो!
उसके शुभ नाम की प्रशंसा करो।

5 यहोवा क्रोधित हुआ, सो निर्णय हुआ "मृत्यु।"
किन्तु उसने अपना प्रेम प्रकट किया और
मुझे "जीवन" दिया।
मैं रात को रोते बिलखाते सोया।
अगली सुबह मैं गाता हुआ प्रसन्न था।

6 मैं अब यह कह सकता हूँ, और
मैं जानता हूँ यह निश्चय सत्य है,
"मैं कभी नहीं हारुँगा!"

7 हे यहोवा, तू मुझ पर दयालु हुआ और मुझे फिर
अपने पवित्र पर्वत पर खड़े होने दिया।
तूने थोड़े समय के लिए अपना मुख मुझसे फेरा

और मैं बहुत घबरा गया।
8 हे परमेश्वर, मैं तेरी ओर लौटा और विनती की।
मैंने मुझ पर दया दिखाने की विनती की।
9 मैंने कहा, "परमेश्वर क्या यह अच्छा है कि
मैं मर जाऊँ और कब्र के भीतर
नीचे चला जाऊँ?
मरे हुए जन तो मिट्टी में लेटे रहते हैं,
वे तेरे नेक की स्तुति
जो सदा सदा बनी रहती है नहीं करते।
10 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन
और मुझ पर करुणा कर!
हे यहोवा, मेरी सहायता कर!"
11 मैंने प्रार्थना की और तूने सहायता की!
तूने मेरे रोने को नृत्य में बदल दिया।
मेरे शोक वस्त्र को तूने उतार फेंका,
और मुझे आनन्द में सराबोर कर दिया।
12 हे यहोवा, मैं तेरा सदा यशगान करुँगा।
मैं ऐसा करुँगा जिससे कभी नीरवता न व्यापे।
तेरी प्रशंसा सदा कोई गाता रहेगा।

भजन 31

संगीत निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1 हे यहोवा, मैं तेरे भरोसे हूँ, मुझे निराश मत कर।
मुझ पर कृपालु हो और मेरी रक्षा कर।
2 हे यहोवा, मेरी सुन, और तू शीघ्र आकर
मुझको बचा ले।
मेरी चट्टान बन जा, मेरा सुरक्षा बन।
मेरा गढ़ बन जा, मेरी रक्षा कर!
3 हे परमेश्वर, तू मेरी चट्टान है,
सो अपने निज नाम हेतु मुझको राह दिखा
और मेरी अगुवाई कर।
4 मेरे लिए मेरे शत्रुओं ने जाल फैलाया है।
उनके फँदे से तू मुझको बचा ले,
क्योंकि तू मेरा सुरक्षास्थल है।
5 हे परमेश्वर यहोवा,
मैं तो तुझ पर भरोसा कर सकता हूँ।
मैं मेरा जीवन तेरे हाथ में सौंपता हूँ।
मेरी रक्षा कर!
6 जो मिथ्या देवों को पूजते रहते हैं,
उन लोगों से मुझे घृणा है।
मैं तो बस यहोवा में विश्वास रखता हूँ।
7 हे यहोवा, तेरी करुणा मुझको अति
आनन्दित करती है।
तूने मेरे दुःखों को देख लिया और
तू मेरे पीड़ाओं के विषय में जानता है।
8 तू मेरे शत्रुओं को मुझ पर भारी पड़ने नहीं देगा।
तू मुझे उनके फँदों से छुडाएगा।
9 हे यहोवा, मुझ पर अनेक संकट हैं।
सो मुझ पर कृपा कर।
मैं इतना व्याकुल हूँ कि मेरी आँखें दुःख रही हैं।
मेरे गला और पेट पीड़ित हो रहे हैं।
10 मेरा जीवन का अंत दुःख में हो रहा है।
मेरे वर्ष आहों में बीतते जाते हैं।
मेरी वेदनाएँ मेरी शक्ति को निचोड़ रही हैं।
मेरा बल मेरा साथ छोड़ता जा रहा है।
11 मेरे शत्रु मुझसे घृणा रखते हैं।
मेरे पड़ोसी मेरे बैरी बने हैं।
मेरे सभी सम्बन्धी मुझे राह में देख कर
मुझसे डर जाते हैं और
मुझसे वे सब कतराते हैं।
12 मुझको लोग पूरी तरह से भूल चुके हैं।
मैं तो किसी खोये औजार सा हो गया हूँ।
13 मैं उन भयंकर बातों को सुनता हूँ
जो लोग मेरे विषय में करते हैं।
वे सभी लोग मेरे विरुद्ध हो गए हैं।
वे मुझे मार डालने की योजनाएँ रचते हैं।
14 हे यहोवा, मेरा भरोसा तुझ पर है।
तू मेरा परमेश्वर है।
15 मेरा जीवन तेरे हाथों में है।
मेरे शत्रुओं से मुझको बचा ले।
उन लोगों से मेरी रक्षा कर,
जो मेरे पीछे पड़े हैं।
16 कृपा करके अपने दास को अपना ले।
मुझ पर दया कर और मेरी रक्षा कर!
17 हे यहोवा, मैंने तेरी विनती की।
इसलिए मैं निराश नहीं होऊँगा।
बुरे मनुष्य तो निराश हो जाएँगे।
और वे कब्र में नीरव चले जाएँगे।
18 दुर्जन डींग हाँकते हैं
और सज्जनों के विषय में झूठ बोलते हैं।

वे दुर्जन बहुत ही अभिमानी होते हैं।
किन्तु उनके होंठ जो झूठ बोलते रहते हैं,
शब्द हीन होंगे।

19 हे परमेश्वर, तूने अपने भक्तों के लिए बहुत सी
अद्‌भुत वस्तुएँ छिपा कर रखी हैं।
तू सबके सामने ऐसे मनुष्यों के लिए
जो तेरे विश्वासी हैं, भले काम करता है।

20 दुर्जन सज्जनों को हानि पहुँचाने के
लिए जुट जाते हैं।
वे दुर्जन लड़ाई भड़काने का
जतन करते हैं।
किन्तु तू सज्जनों को उनसे छिपा लेता है,
और उन्हें बचा लेता है।
तू सज्जनों की रक्षा अपनी शरण में करता है।

21 यहोवा कि स्तुति करो! जब नगर को
शत्रुओं ने घेर रखा था,
तब उसने अपना सच्चा प्रेम अद्‌भुत
रीति से दिखाया।

22 मैं भयभीत था, और मैंने कहा था,
"मैं तो ऐसे स्थान पर हूँ
जहाँ मुझे परमेश्वर नहीं देख सकता है।"
किन्तु हे परमेश्वर, मैंने तूझसे विनती की,
और तूने मेरी सहायता की पुकार सुन ली।

23 परमेश्वर के भक्तों,
तुम को यहोवा से प्रेम करना चाहिए!
यहोवा उन लोगों को जो उसके प्रति
सच्चे हैं, रक्षा करता है।
किन्तु यहोवा उनको जो अपनी
ताकत की ढोल पीटते हैं।
उनको वह वैसा दण्ड देता है,
जैसा दण्ड उनको मिलना चाहिए।

24 अरे ओ मनुष्यों जो यहोवा की सहायता की
प्रतीक्षा करते हो, सुदृढ़ और साहसी बनो!

भजन 32

दाऊद का एक प्रगीत।

1 धन्य है वह जन जिसके पाप क्षमा हुए।
धन्य है वह जन जिसके पाप धुल गए।

2 धन्य है वह जन जिसे यहोवा दोषी न कहे,
धन्य है वह जन जो अपने गुप्त
पापों को छिपाने का जतन न करे।

3 हे परमेश्वर, मैंने तुझसे बार बार विनती की,
किन्तु अपने छिपे पाप तुझको नहीं बताए।
जितनी बार मैंने तेरी विनती की,
मैं तो और अधिक दुर्बल होता चला गया।

4 हे परमेश्वर, तूने मेरा जीवन दिन रात
कठिन से कठिनतर बना दिया।
मैं उस धरती सा सूख गया हूँ
जो ग्रीष्म ताप से सूख गई है।

5 किन्तु फिर मैंने यहोवा के समक्ष
अपने सभी पापों को मानने का
निश्चय कर लिया है।
हे यहोवा, मैंने तुझे अपने पाप बता दिये।
मैंने अपना कोई अपराध तुझसे नहीं छुपाया।
और तूने मुझे मेरे पापों के लिए क्षमा कर दिया!

6 इसलिए, परमेश्वर, तेरे भक्तों को
तेरी विनती करनी चाहिए।
यहाँ तक कि जब विपत्ति जल प्रलय सी उमड़े
तब भी तेरे भक्तों को
तेरी विनती करनी चाहिए।

7 हे परमेश्वर, तू मेरा रक्षास्थल है।
तू मुझको मेरी विपत्तियों से उबारता है।
तू मुझे अपनी ओट में लेकर
विपत्तियों से बचाता है।
सो इसलिए मैं, जैस तूने रक्षा की है,
उन्हीं बातों के गीत गाया करता हूँ।

8 यहोवा कहता है, "मैं तुझे जैसे चलना चाहिए
सिखाऊँगा और तुझे वह राह दिखाऊँगा।
मैं तेरी रक्षा करुँगा और मैं तेरा अगुवा बनूँगा।

9 सो तू घोड़े या गधे सा बुद्धिहीन मत बन।
उन पशुओं को तो मुखरी
और लगाम से चलाया जाता है।
यदि तू उनको लगाम या रास नहीं लगाएगा, तो
वे पशु निकट नहीं आयेंगे।"

10 दुर्जनों को बहुत सी पीड़ाएँ घेरेंगी।
किन्तु उन लोगों को जिन्हें
यहोवा पर भरोसा है,
यहोवा का सच्चा प्रेम ढक लेगा।

11 सज्जन तो यहोवा में सदा मगन
और आनन्दित रहते हैं।

अरे ओ लोगों, तुम सब पवित्र मन के
साथ आनन्द मनाओ।

भजन 33

1 हे सज्जन लोगों, यहोवा में आनन्द मनाओ!
सज्जनो सत पुरुषों, उसकी स्तुति करो!
2 वीणा बजाओ और उसकी स्तुति करो!
यहोवा के लिए दस तार वाले सांरगी बजाओ।
3 अब उसके लिये नया गीत गाओ।
खुशी की धुन सुन्दरता से बजाओ!
4 परमेश्वर का वचन सत्य है।
जो भी वह करता है उसका
तुम भरोसा कर सकते हो।
5 नेकी और निष्पक्षता परमेश्वर को भाती है।
यहोवा ने अपने निज करुणा से
इस धरती को भर दिया है।
6 यहोवा ने आदेश दिया
और सृष्टि तुरंत अस्तित्व में आई।
परमेश्वर के श्वास ने धरती पर हर वस्तु रचा।
7 परमेश्वर ने सागर में एक ही
स्थान पर जल समेटा।
वह सागर को अपने स्थान पर रखता है।
8 धरती के हर मनुष्य को यहोवा का
आदर करना और डरना चाहिए।
इस विश्व में जो भी मनुष्य बसे हैं,
उनको चाहिए की वे उससे डरें।
9 क्योंकि परमेश्वर को केवल
बात भर कहनी है,
और वह बात तुरंत घट जाती है।
यदि वह किसी को रुकने का आदेश दे,
तो वह तुरंत थम जाती है।
10 परमेश्वर चाहे तो सभी सुझाव व्यर्थ करे।
वह किसी भी जन के सब कुचक्रों को
व्यर्थ कर सकता है।
11 किन्तु यहोवा के उपदेश सदा ही खरे होते हैं।
उसकी योजनाएँ पीढी दर पीढी खरी होती हैं।
12 धन्य हैं वे मनुष्य जिनका परमेश्वर यहोवा है।
परमेश्वर ने उन्हें अपने ही
मनुष्य होने को चुना है।
13 यहोवा स्वर्ग से नीचे देखता रहता है।
वह सभी लोगों को देखता रहता है।
14 वह ऊपर ऊँचे पर संस्थापित आसन से
धरती पर रहने वाले
सब मनुष्यों को देखता रहता है।
15 परमेश्वर ने हर किसी का मन रचा है।
सो कोई क्या सोच रहा है वह समझता है।
16 राजा की रक्षा उसके महाबल से नहीं होती है,
और कोई सैनिक अपने निज
शक्ति से सुरक्षित नहीं रहता।
17 युद्ध में सचमुच अश्वबल विजय नहीं देता।
सचमुच तुम उनकी शक्ति से बच नहीं सकते।
18 जो जन यहोवा का अनुसरण करते हैं,
उन्हें यहोवा देखता है और रखवाली करता है।
जो मनुष्य उसकी आराधना करते हैं,
उनको उसका महान प्रेम बचाता है।
19 परमेश्वर उन लोगों को मृत्यु से बचाता है।
वे जब भूखे होते तब वह उन्हें शक्ति देता है।
20 इसलिए हम यहोवा की बाट जोहेंगे।
वह हमारी सहायता और हमारी ढाल है।
21 परमेश्वर मुझको आनन्दित करता है।
मुझे सचमुच उसके पवित्र नाम पर भरोसा है।
22 हे यहोवा, हम सचमुच तेरी आराधना करते हैं!
सो तू हम पर अपना महान प्रेम दिखा।

भजन 34

जब दाऊद ने अबीमेलेक के सामने पागलपन का आचरण किया। जिससे अबीमेलेक उसे भगा दे, इस प्रकारदाऊद उसे छोड़कर चला गया। उसी अवसर का दाऊद काएक पद।

1 मैं यहोवा को सदा धन्य कहूँगा।
मेरे होठों पर सदा उसकी स्तुति रहती है।
2 हे नम्र लोगों, सुनो और प्रसन्न होओ।
मेरी आत्मा यहोवा पर गर्व करती है।
3 मेरे साथ यहोवा की गरिमा का गुणगान करो।
आओ, हम उसके नाम का अभिनन्दन करें।
4 मैं परमेश्वर के पास सहायता माँगने गया।
उसने मेरी सुनी।
उसने मुझे उन सभी बातों से बचाया
जिनसे मैं डरता हूँ।

5 परमेश्वर की शरण में जाओ।
तुम स्वीकारे जाओगे।
तुम लज्जा मत करो।
6 इस दीन जन ने यहोवा को
सहायता के लिए पुकारा,
और यहोवा ने मेरी सुन ली।
और उसने सब विपत्तियों से मेरी रक्षा की।
7 यहोवा का दूत उसके भक्त जनों के
चारों ओर डेरा डाले रहता है।
और यहोवा का दूत
उन लोगों की रक्षा करता है।
8 चखो और समझो कि यहोवा कितना भला है।
वह व्यक्ति जो यहोवा के भरोसे है
सचमुच प्रसन्न रहेगा।
9 यहोवा के पवित्र जन को
उसकी आराधना करनी चाहिए।
यहोवा के भक्तों के लिए कोई अन्य
सुरक्षित स्थान नहीं है।
10 आज जो बलवान हैं दुर्बल और भूखे हो जाएंगे।
किन्तु जो परमेश्वर के शरण आते हैं
वे लोग हर उत्तम वस्तु पाएंगे।
11 हे बालकों, मेरी सुनो,
और मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि
यहोवा की सेवा कैसे करें।
12 यदि कोई व्यक्ति जीवन से प्रेम करता है,
और अच्छा और दीर्घायु जीवन चाहता है,
13 तो उस व्यक्ति को बुरा नहीं बोलना चाहिए,
उस व्यक्ति को झूठ नहीं बोलना चाहिए।
14 बुरे काम मत करो।
नेक काम करते रहो।
शांति के कार्य करो।
शांति के प्रयासों में जुटे रहो
जब तक उसे पा न लो।
15 यहोवा सज्जनों की रक्षा करता है।
उनकी प्रार्थनाओं पर वह कान देता है।
16 किन्तु यहोवा, जो बुरे काम करते हैं,
ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध होता है।
वह उनको पूरी तरह नष्ट करता है।
17 यहोवा से विनती करो, वह तुम्हारी सुनेगा।
वह तुम्हें तुम्हारी सब विपत्तियों से बचा लेगा।
18 लोगों को विपत्तियाँ आ सकती है
और वे अभिमानी होना छोड़ते हैं।
यहोवा उन लोगों के निकट रहता है।
जिनके टूटे मन हैं उनको वह बचा लेगा।
19 सम्भव है सज्जन भी विपत्तियों में घिर जाए।
किन्तु यहोवा उन सज्जनों की
उनकी हर समस्या से रक्षा करेगा।
20 यहोवा उनकी सब हड्डियों की रक्षा करेगा।
उनकी एक भी हड्डी नहीं टूटेगी।
21 किन्तु दुष्ट की दुष्टता उनको ले डूबेगी।
सज्जन के विरोधी नष्ट हो जायेंगे।
22 यहोवा अपने हर दास की आत्मा बचाता है।
जो लोग उस पर निर्भर रहते हैं,
वह उन लोगों को नष्ट नहीं होने देगा।

भजन 35

दाऊद को समर्पित।

1 हे यहोवा, मेरे मुकद्दमों को लड़।
मेरे युद्धों को लड़!
2 हे यहोवा, कवच और ढाल धारण कर,
खड़ा हो और मेरी रक्षा कर।
3 बरछी और भाला उठा, और
जो मेरे पीछे पड़े हैं उनसे युद्ध कर।
हे यहोवा, मेरी आत्मा से कह,
"मैं तेरा उद्धार करुँगा।"
4 कुछ लोग मुझे मारने पीछे पड़े हैं।
उन्हें निराश और लज्जित कर।
उनको मोड़ दे और उन्हें भगा दे।
मुझे क्षति पहुँचाने का कुचक्र जो
रच रहे हैं उन्हें असमंजस में डाल दे।
5 तू उनको ऐसा भूसे सा बना दे,
जिसको पवन उड़ा ले जाती है।
उनके साथ ऐसा होने दे कि,
उनके पीछे यहोवा के दूत पड़ें।
6 हे यहोवा, उनकी राह अन्धेरे
और फिसलनी हो जाए।
यहोवा का दूत उनके पीछे पड़े।
7 मैंने तो कुछ भी बुरा नहीं किया है।
किन्तु वे मनुष्य मुझे
बिना किसी कारण के, फँसाना चाहते हैं।

वे मुझे फँसाना चाहते हैं।

8 सो, हे यहोवा, ऐसे लोगों को उनके
अपने ही जाल में गिरने दे।
उनको अपने ही फंदो में पड़ने दे,
और कोई अज्ञात खतरा उन पर पड़ने दे।

9 फिर तो यहोवा मैं तुझ में आनन्द मनाऊँगा।
यहोवा के संरक्षण में मैं प्रसन्न होऊँगा।

10 मैं अपने सम्पूर्ण मन से कहूँगा,
हे "यहोवा, तेरे समान कोई नहीं है।
तू सबलों से दुर्बलों को बचाता है।
जो जन शक्तिशाली होते हैं,
उनसे तू वस्तुओं को छीन लेता है
और दीन और असहाय लोगों को देता है।"

11 एक झूठा साक्षी दल मुझको दुःख देने को
कुचक्र रच रहा है।
ये लोग मुझसे अनेक प्रश्न पूछेंगे।
मैं नहीं जानता कि वे क्या बात कर रहे हैं।

12 मैंने तो बस भलाई ही भलाई की है।
किन्तु वे मुझसे बुराई करेंगे।
हे यहोवा, मुझे वह उत्तम फल दे
जो मुझे मिलना चाहिए।

13 उन पर जब दुःख पड़ा, उनके लिए
मैं दुःखी हुआ।
मैंने भोजन को त्याग कर
अपना दुःख व्यक्त किया।
जो मैंने उनके लिए प्रार्थना की,
क्या मुझे यही मिलना चाहिए?

14 उन लोगों के लिए मैंने शोक वस्त्र धारण किये।
मैंने उन लोगों के साथ मित्र वरन भाई
जैसा व्यवहार किया।
मैं उस रोते मनुष्य सा दुःखी हुआ,
जिसकी माता मर गई हो।
ऐसे लोगों से शोक प्रकट करने के लिए
मैंने काले वस्त्र पहन लिए।
मैं दुःख में डूबा और सिर झुका कर चला।

15 पर जब मुझसे कोई एक चूक हो गई,
उन लोगों ने मेरी हँसी उड़ाई।
वे लोग सचमुच मेरे मित्र नहीं थे।
मैं उन लोगों को जानता तक नहीं।
उन्होंने मुझको घेर लिया और
मुझ पर प्रहार किया।

16 उन्होंने मुझको गालियाँ दीं और हँसी उड़ायी।
अपने दाँत पीसकर उन लोगों ने दर्शाया
कि वे मुझ पर क्रुद्ध हैं।

17 मेरे स्वामी, तू कब तक
यह सब बुरा होते हुए देखेगा?
ये लोग मुझे नाश करने का प्रयत्न कर रहे हैं।
हे यहोवा, मेरे प्राण बचा ले।
मेरे प्रिय जीवन की रक्षा कर।
वे सिंह जैसे बन गए हैं।

18 हे यहोवा, मैं महासभा में तेरी स्तुति करुँगा।
मैं बलशाली लोगों के संग रहते
तेरा यश बखानूँगा।

19 मेरे मिथ्यावादी शत्रु हँसते नहीं रहेंगे।
सचमुच मेरे शत्रु अपनी छुपी
योजनाओं के लिए दण्ड पाएँगे।

20 मेरे शत्रु सचमुच शांति की
योजनाएँ नहीं रचते हैं।
वे इस देश के शांतिप्रिय लोगों के विरोध में
छिपे छिपे बुरा करने का कुचक्र रच रहे हैं।

21 मेरे शत्रु मेरे लिए बुरी बातें कह रहे हैं।
वे झूठ बोलते हुए कह रहे हैं, "अहा!
हम सब जानते हैं तुम क्या कर रहे हो!"

22 हे यहोवा, तू सचमुच देखता है कि
क्या कुछ घट रहा है।
सो तू छुपा मत रह, मुझको मत छोड़।

23 हे यहोवा, जाग! उठ खड़ा हो जा!
मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी लड़ाई लड़,
और मेरा न्याय कर।

24 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, अपनी निष्पक्षता से
मेरा न्याय कर, तू उन लोगों को
मुझ पर हँसने मत दे।

25 उन लोगों को ऐसे मत कहने दे, "अहा!
हमें जो चाहिए था उसे पा लिया!"
हे यहोवा, उन्हें मत कहने दे,
"हमने उसको नष्ट कर दिया।"

26 मैं आशा करता हूँ कि मेरे शत्रु
निराश और लज्जित होंगे।
वे जन प्रसन्न थे
जब मेरे साथ बुरी बातें घट रही थीं।

वे सोचा करते कि वे मुझसे श्रेष्ठ हैं!
सो ऐसे लोगों को लाज में डूबने दे।

27 कुछ लोग मेरा नेक चाहते हैं।
मैं आशा करता हूँ कि वे बहुत आनन्दित होंगे!
वे हमेशा कहते हैं, "यहोवा महान है!
वह अपने सेवक की अच्छाई चाहता है।"

28 सो, हे यहोवा, मैं लोगों को
तेरी अच्छाई बताऊँगा।
हर दिन, मैं तेरी स्तुति करुँगा।

भजन 36

संगीत निर्देशक के लिए यहोवा के दास दाऊद का एक पद।

1 बुरा व्यक्ति बहुत बुरा करता है जब
वह स्वयं से कहता है, "मैं परमेश्वर का
आदर नहीं करता और न ही डरता हूँ।"

2 वह मनुष्य स्वयं से झूठ बोलता है।
वह मनुष्य स्वयं अपने खोट को नहीं देखता।
इसलिए वह क्षमा नहीं माँगता।

3 उसके वचन बस व्यर्थ और झूठे होते हैं।
वह विवेकी नहीं होता
और न ही अच्छे काम सीखता है।

4 रात को वह अपने बिस्तर में कुचक्र रचता है।
वह जाग कर कोई भी अच्छा काम
नहीं करता।
वह कुकर्म को छोड़ना नहीं चाहता।

5 हे यहोवा, तेरा सच्चा प्रेम
आकाश से भी ऊँचा है।
हे यहोवा, तेरी सच्चाई मेघों से भी ऊँची है।

6 हे यहोवा, तेरी धार्मिकता सर्वोच्च
पर्वत से भी ऊँची है।
तेरी शोभा गहरे सागर से गहरी है।
हे यहोवा, तू मनुष्यों और पशुओं का रक्षक है।

7 तेरी करुणा से अधिक मूल्यवान
कुछ भी नहीं हैं।
मनुष्य और दूत तेरे शरणागत हैं।

8 हे यहोवा, तेरे मन्दिर की उत्तम बातों से
वे नयी शक्ति पाते हैं।
तू उन्हें अपने अद्भुत नदी के
जल को पीने देता है।

9 हे यहोवा, तुझसे जीवन का झरना फूटता है!
तेरी ज्योति ही हमें प्रकाश दिखाती है।

10 हे यहोवा, जो तुझे सच्चाई से जानते हैं,
उनसे प्रेम करता रह।
उन लोगों पर तू अपनी निज नेकी
बरसा जो तेरे प्रति सच्चे हैं।

11 हे यहोवा, तू मुझे अभिमानियों के
जाल में मत फँसने दे।
दुष्ट जन मुझको कभी न पकड़ पायें।

12 उनके कब्रों के पत्थरो पर यह लिख दे:
"दुष्ट लोग यहाँ पर गिरे हैं।
वे कुचले गए।
वे फिर कभी खड़े नहीं हो पायेंगे।"

भजन 37

दाऊद को समर्पित।

1 दुर्जनों से मत घबरा, जो बुरा करते हैं
ऐसे मनुष्यों से ईर्ष्या मत रख।

2 दुर्जन मनुष्य घास और हरे पौधों की तरह
शीघ्र पीले पड़ जाते हैं और मर जाते हैं।

3 यदि तू यहोवा पर भरोसा रखेगा
और भले काम करेगा तो तू जीवित रहेगा
और उन वस्तुओं का भोग करेगा
जो धरती देती है।

4 यहोवा की सेवा में आनन्द लेता रह,
और यहोवा तुझे तेरा मन चाहा देगा।

5 यहोवा के भरोसे रह।
उसका विश्वास कर।
वह वैसा करेगा जैसे करना चाहिए।

6 दोपहर के सूर्य सा, यहोवा तेरी नेकी
और खरेपन को चमकाए।

7 यहोवा पर भरोसा रख और
उसके सहारे की बाट जोह।
तू दुष्टों की सफलता देखकर घबराया मत कर।
तू दुष्टों की दुष्ट योजनाओं को
सफल होते देख कर मत घबरा।

8 तू क्रोध मत कर! तू उन्मादी मत बन! उतना
मत घबरा जा कि तू बुरे काम करना चाहे।

9 क्योंकि बुरे लोगों को तो नष्ट किया जायेगा।
किन्तु वे लोग जो यहोवा पर भरोसे हैं,

उस धरती को पायेंगे जिसे
देने का परमेश्वर ने वचन दिया।

10 थोड़े ही समय बाद कोई दुर्जन नहीं बचेगा।
ढूँढने से भी तुमको कोई दुष्ट नहीं मिलेगा!

11 नम्र लोग वह धरती पाएंगे जिसे
परमेश्वर ने देने का वचन दिया है।
वे शांति का आनन्द लेंगे।

12 दुष्ट लोग सज्जनों के लिये कुचक्र रचते हैं।
दुष्ट जन सज्जनों के ऊपर दाँत
पीसकर दिखाते हैं कि वे क्रोधित हैं।

13 किन्तु हमारा स्वामी उन दुर्जनों पर हँसता है।
वह उन बातों को देखता है
जो उन पर पड़ने को है।

14 दुर्जन तो अपनी तलवारें उठाते हैं
और धनुष साधते हैं।
वे दीनों, असहायों को मारना चाहते हैं।
वे सच्चे, सज्जनों को मारना चाहते हैं।

15 किन्तु उनके धनुष चूर चूर हो जायेंगे।
और उनकी तलवारें उनके
अपने ही हृदयों में उतरेंगी।

16 थोड़े से भले लोग, दुर्जनों की
भीड़ से भी उत्तम है।

17 क्योंकि दुर्जनों को तो नष्ट किया जायेगा।
किन्तु भले लोगों का यहोवा ध्यान रखता है।

18 शुद्ध सज्जनों को यहोवा
उनके जीवन भर बचाता है।
उनका प्रतिफल सदा बना रहेगा।

19 जब संकट होगा, सज्जन नष्ट नहीं होंगे।
जब अकाल पड़ेगा,
सज्जनों के पास खाने को भरपूर होगा।

20 किन्तु बुरे लोग यहोवा के शत्रु हुआ करते हैं।
सो उन बुरे जनों को नष्ट किया जाएगा,
उनकी घाटियाँ सूख जाएंगी और जल जाएंगी।
उनको तो पूरी तरह से मिटा दिया जायेगा।

21 दुष्ट तो तुरंत ही धन उधार माँग लेता है,
और उसको फिर कभी नहीं चुकाता।
किन्तु एक सज्जन औरों को
प्रसन्नता से देता रहता है।

22 यदि कोई सज्जन किसी को आशीर्वाद दे,
तो वे मनुष्य उस धरती को जिसे
परमेश्वर ने देने का वचन दिया है, पाएंगे।
किन्तु यदि वह शाप दे मनुष्यों को
तो वे मनुष्य नाश हो जाएंगे।

23 यहोवा, सैनिक की सावधानी से
चलने में सहायता करता है।
और वह उसको पतन से बचाता है।

24 सैनिक यदि दौड़ कर शत्रु पर प्रहार करें,
तो उसके हाथ को यहोवा सहारा देता है,
और उसको गिरने से बचाता है।

25 मैं युवक हुआ करता था पर अब मैं बूढ़ा हूँ।
मैंने कभी यहोवा को सज्जनों को
असहाय छोड़ते नहीं देखा।
मैंने कभी सज्जनों की संतानों को
भीख माँगते नहीं देखा।

26 सज्जन सदा मुक्त भाव से दान देता है।
सज्जनों के बालक वरदान हुआ करते हैं।

27 यदि तू कुकर्मों से अपना मुख मोड़े,
और यदि तू अच्छे कामों को करता रहे,
तो फिर तू सदा सर्वदा जीवित रहेगा।

28 यहोवा खरेपन से प्रेम करता है, वह अपने
निज भक्तों को असहाय नहीं छोड़ता।
यहोवा अपने निज भक्तों की
सदा रक्षा करता है,
और वह दुष्ट जन को नष्ट कर देता है।

29 सज्जन उस धरती को पायेंगे जिसे देने का
परमेश्वर ने वचन दिया है,
वे उस में सदा सर्वदा निवास करेंगे।

30 भला मनुष्य तो खरी सलाह देता है।
उसका न्याय सबके लिये निष्पक्ष होता है।

31 सज्जन के हृदय (मन) में
यहोवा के उपदेश बसे हैं।
वह सीधे मार्ग पर चलना नहीं छोड़ता।

32 किन्तु दुर्जन सज्जन को दुःख
पहुँचाने का रास्ता ढूँढता रहता है,
और दुर्जन सज्जन को मारने का यत्न करते हैं।

33 किन्तु यहोवा दुर्जनों को मुक्त नहीं छोड़ेगा।
वह सज्जन को अपराधी नहीं ठहरने देगा।

34 यहोवा की सहायता की बाट जोहते रहो।
यहोवा का अनुसरण करते रहो।
दुर्जन नष्ट होंगे।

यहोवा तुझको महत्त्वपूर्ण बनायेगा।
तू वह धरती पाएगा जिसे देने का
यहोवा ने वचन दिया है।

35 मैंने दुष्ट को बलशाली देखा है।
मैंने उसे मजबूत और स्वस्थ वृक्ष
की तरह शक्तिशाली देखा।

36 किन्तु वे फिर मिट गए।
मेरे ढूँढने पर उनका पता तक नहीं मिला।

37 सच्चे और खरे बनो,
क्योंकि इसी से शांति मिलती है।

38 किन्तु जो लोग व्यवस्था नियम तोड़ते हैं
नष्ट किये जायेंगे।

39 यहोवा नेक मनुष्यों की रक्षा करता है।
सज्जनों पर जब विपत्ति पड़ती है
तब यहोवा उनकी शक्ति बन जाता है।

40 यहोवा नेक जनों को सहारा देता है,
और उनकी रक्षा करता है।
सज्जन यहोवा की शरण में आते हैं
और यहोवा उनको दुर्जनों से बचा लेता है।

भजन 38

1 हे यहोवा, क्रोध में मेरी आलोचना मत कर।
मुझको अनुशासित करते समय
मुझ पर क्रोधित मत हो।

2 हे यहोवा, तूने मुझे चोट दिया है।
तेरे बाण मुझमें गहरे उतरे हैं।

3 तूने मुझे दण्डित किया
और मेरी सम्पूर्ण काया दुःख रही है,
मैंने पाप किये और तूने मुझे दण्ड दिया।
इसलिए मेरी हड्डी दुःख रही है।

4 मैं बुरे काम करने का अपराधी हूँ,
और वह अपराध एक बड़े बोझे सा
मेरे कन्धे पर चढ़ा है।

5 मैं बना रहा मूर्ख, अब मेरे घाव दुर्गन्धिपूर्ण
रिसते हैं और वे सड़ रहे हैं।

6 मैं झुका और दबा हुआ हूँ।
मैं सारे दिन उदास रहता हूँ।

7 मुझको ज्वर चढ़ा है, और समूचे शरीर में
वेदना भर गई है।

8 मैं पूरी तरह से दुर्बल हो गया हूँ।
मैं कष्ट में हूँ इसलिए
मैं कराहता और विलाप करता हूँ।

9 हे यहोवा, तूने मेरा कराहना सुन लिया।
मेरी आहें तो तुझसे छुपी नहीं।

10 मुझको ताप चढ़ा है।
मेरी शक्ति निचुड़ गयी है।
मेरी आँखों की ज्योति लगभग जाती रही।

11 क्योंकि मैं रोगी हूँ, इसलिए मेरे मित्र
और मेरे पड़ोसी मुझसे मिलने नहीं आते।
मेरे परिवार के लोग तो मेरे
पास तक नहीं फटकते।

12 मेरे शत्रु मेरी निन्दा करते हैं।
वे झूठी बातों और प्रतिवादों को फैलाते रहते हैं।
मेरे ही विषय में वे हरदम
बात चीत करते रहते हैं।

13 किन्तु मैं बहरा बना कुछ नहीं सुनता हूँ।
मैं गूँगा हो गया, जो कुछ नहीं बोल सकता।

14 मैं उस व्यक्ति सा बना हूँ,
जो कुछ नहीं सुन सकता कि लोग
उसके विषय क्या कह रहे हैं।
और मैं यह तर्क नहीं दे सकता और सिद्ध
नहीं कर सकता की मेरे शत्रु अपराधी हैं।

15 सो, हे यहोवा, मुझे तू ही बचा सकता है।
मेरे परमेश्वर और मेरे स्वामी
मेरे शत्रुओं को तू ही सत्य बता दे।

16 यदि मैं कुछ भी न कहूँ, तो
मेरे शत्रु मुझ पर हँसेंगे।
मुझे खिन्न देखकर वे कहने लगेंगे कि
मैं अपने कुकर्मों का फल भोग रहा हूँ।

17 मैं जानता हूँ कि मैं अपने
कुकर्मों के लिए पापी हूँ।
मैं अपनी पीड़ा को भूल नहीं सकता हूँ।

18 हे यहोवा, मैंने तुझको अपने कुकर्म बता दिये।
मैं अपने पापों के लिए दुःखी हूँ।

19 मेरे शत्रु जीवित और पूर्ण स्वस्थ हैं।
उन्होंने बहुत-बहुत झूठी बातें बोली हैं।

20 मेरे शत्रु मेरे साथ बुरा व्यवहार करते हैं,
जबकि मैंने उनके लिये भला ही किया है।
मैं बस भला करने का जतन करता रहा,
किन्तु वे सब लोग मेरे विरुद्ध हो गये हैं।

21 हे यहोवा, मुझको मत बिसरा!
मेरे परमेश्वर, मुझसे तू दूर मत रह!
22 देर मत कर, आ और मेरी सुधि ले!
हे मेरे परमेश्वर, मुझको तू बचा ले!

भजन 39

संगीत निर्देशक को यदूतून के लिये दाऊद का एक पद।

1 मैंने कहा, "जब तक ये दुष्ट मेरे सामने रहेंगे,
तब तक मैं अपने कथन के प्रति सचेत रहूँगा।
मैं अपने वाणी को पाप से दूर रखूँगा।
और मैं अपने मुँह को बंद कर लूँगा।"
2 सो इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा।
मैंने भला भी नहीं कहा!
किन्तु मैं बहुत परेशान हुआ।
3 मैं बहुत क्रोधित था।
इस विषय में मैं जितना सोचता चला गया,
उतना ही मेरा क्रोध बढ़ता चला गया।
सो मैंने अपना मुख तनिक नहीं खोला।
4 हे यहोवा, मुझको बता कि मेरे साथ
क्या कुछ घटित होने वाला है?
मुझे बता, मैं कब तक जीवित रहूँगा?
मुझको जानने दे सचमुच
मेरा जीवन कितना छोटा है।
5 हे यहोवा, तूने मुझको
बस एक क्षणिक जीवन दिया।
तेरे लिये मेरा जीवन कुछ भी नहीं है।
हर किसी का जीवन एक बादल सा है।
कोई भी सदा नहीं जीता!
6 वह जीवन जिसको हम लोग जीते हैं,
वह झूठी छाया भर होता है।
जीवन की सारी भाग दौड़ निरर्थक होती है।
हम तो बस व्यर्थ ही चिन्ताएँ पालते हैं।
धन दौलत वस्तुएँ हम जोड़ते रहते हैं,
किन्तु नहीं जानते उन्हें कौन भोगेगा।
7 सो, मेरे यहोवा, मैं क्या आशा रखूँ?
तू ही बस मेरी आशा है!
8 हे यहोवा, जो कुकर्म मैंने किये हैं,
उनसे तू ही मुझको बचाएगा।
तू मेरे संग किसी को भी किसी
अविवेकी जन के संग
जैसा व्यवहार नहीं करने देगा।
9 मैं अपना मुँह नहीं खोलूँगा।
मैं कुछ भी नहीं कहूँगा।
यहोवा तूने वैसे किया
जैसे करना चाहिए था।
10 किन्तु परमेश्वर, मुझको दण्ड देना छोड़ दे।
यदि तूने मुझको दण्ड देना नहीं छोड़ा,
तो तू मेरा नाश करेगा!
11 हे यहोवा, तू लोगों को
उनके कुकमों का दण्ड देता है।
और इस प्रकार जीवन की खरी राह
लोगों को सिखाता है।
हमारी काया जीर्ण शीर्ण हो जाती है।
ऐसे उस कपड़े सी जिसे कीड़ा लगा हो।
हमारा जीवन एक छोटे बादल
जैसे देखते देखते विलीन हो जाती है।
12 हे यहोवा, मेरी विनती सुन!
मेरे उन शब्दों को सुन जो
मैं तुझसे पुकार कर कहता हूँ।
मेरे आँसुओं को देख।
मैं बस राहगीर हूँ, तुझको साथ लिये
इस जीवन के मार्ग से गुजरता हूँ।
इस जीवन मार्ग पर मैं अपने पूर्वजों की
तरह कुछ समय मात्र टिकता हूँ।
13 हे यहोवा, मुझको अकेला छोड़ दे, मरने से
पहले मुझे आनन्दित होने दे,
थोड़े से समय बाद मैं जा चुका होऊँगा।

भजन 40

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद पुकारा मैंने यहोवा को।

1 यहोवा को मैंने पुकारा। उसने मेरी सुनी।
उसने मेरे रुदन को सुन लिया।
2 यहोवा ने मुझे विनाश के गर्त से उबारा।
उसने मुझे दलदली गर्त से उठाया,
और उसने मुझे चट्टान पर बैठाया।
उसने ही मेरे कदमों को टिकाया।
3 यहोवा ने मेरे मुँह में एक नया गीत बसाया।
परमेश्वर का एक स्तुति गीत।
बहुतेरे लोग देखेंगे जो मेरे साथ घटा है।

और फिर परमेश्वर की आराधना करेंगे।
वे यहोवा का विश्वास करेंगे।
4 यदि कोई जन यहोवा के भरोसे रहता है,
तो वह मनुष्य सचमुच प्रसन्न होगा।
और यदि कोई जन मूर्तियों और मिथ्या
देवों की शरण में नहीं जायेगा,
तो वह मनुष्य सचमुच प्रसन्न होगा।
5 हमारे परमेश्वर यहोवा,
तूने बहुतेरे अद्भुत कर्म किये हैं!
हमारे लिये तेरे पास अद्भुत योजनाएँ हैं।
कोई मनुष्य नहीं जो उसे गिन सके!
मैं तेरे किये हुए कामों को बार बार बखानूँगा।
6 हे यहोवा, तूने मुझको यह समझाया है:
तू सचमुच कोई अन्नबलि और पशुबलि
नहीं चाहता था।
कोई होमबलि और पापबलि तुझे नहीं चाहिए।
7 सो मैंने कहा, "देख मैं आ रहा हूँ!
पुस्तक में मेरे विषय में यही लिखा है।"
8 हे मेरे परमेश्वर, मैं वही करना चाहता हूँ
जो तू चाहता है।
मैंने मन में तेरी शिक्षाओं को बसा लिया।
9 महासभा के मध्य मैं तेरी
धार्मिकता का सुसन्देश सुनाऊँगा।
यहोवा तू जानता है कि मैं अपने
मुँह को बंद नहीं रखूँगा।
10 हे यहोवा, मैं तेरे भले कर्मों को बखानूँगा।
उन भले कर्मों को मैं रहस्य बनाकर
मन में नहीं छिपाए रखूँगा।
हे यहोवा, मैं लोगों को रक्षा के लिए तुझ पर
आश्रित होने को कहूँगा।
मैं महासभा में तेरी करुणा और
तेरी सत्यता नहीं छिपाऊँगा।
11 इसलिए हे यहोवा, तू अपनी दया
मुझसे मत छिपा!
तू अपनी करुणा और सच्चाई से मेरी रक्षा कर।
12 मुझको दुष्ट लोगों ने घेर लिया,
वे इतने अधिक हैं कि गिने नहीं जाते।
मुझे मेरे पापों ने घेर लिया है,
और मैं उनसे बच कर भाग नहीं पाता हूँ।
मेरे पाप मेरे सिर के बालों से अधिक हैं।
मेरा साहस मुझसे खो चुका है।
13 हे यहोवा, मेरी ओर दौड़ और मेरी रक्षा कर!
आ, देर मत कर, मुझे बचा ले!
14 वे दुष्ट मनुष्य मुझे मारने का जतन करते हैं।
हे यहोवा, उन्हें लज्जित कर और उनको
निराश कर दे।
वे मनुष्य मुझे दुःख पहुँचाना चाहते हैं।
तू उन्हें अपमानित होकर भागने दे!
15 वे दुष्ट जन मेरी हँसी उड़ाते हैं।
उन्हें इतना लज्जित कर कि वे बोल तक न पायें!
16 किन्तु वे मनुष्य जो तुझे खोजते हैं, आनन्दित हो।
वे मनुष्य सदा यह कहते रहें,
"यहोवा के गुण गाओ!"
उन लोगों को तुझ ही से रक्षित होना भाता है।
17 हे मेरे स्वामी, मैं तो बस दीन,असहाय व्यक्ति हूँ।
मेरी रक्षा कर, तू मुझको बचा ले।
हे मेरे परमेश्वर, अब अधिक देर मत कर!

भजन 41

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1 दीन का सहायक बहुत पायेगा।
ऐसे मनुष्य पर जब विपत्ति आती है,
तब यहोवा उस को बचा लेगा।
2 यहोवा उस जन की रक्षा करेगा
और उसका जीवन बचायेगा।
वह मनुष्य धरती पर बहुत वरदान पायेगा।
परमेश्वर उसके शत्रुओं द्वारा
उसका नाश नहीं होने देगा।
3 जब मनुष्य रोगी होगा और बिस्तर में पड़ा होगा,
उसे यहोवा शक्ति देगा।
वह मनुष्य बिस्तर में चाहे रोगी पड़ा हो।
किन्तु यहोवा उसको चँगा कर देगा!
4 मैंने कहा, "यहोवा, मुझ पर दया कर।
मैंने तेरे विरुद्ध पाप किये हैं,
किन्तु मुझे और अच्छा कर।"
5 मेरे शत्रु मेरे लिये अपशब्द कह रहे हैं,
वे कह रहे हैं, "यह कब मरेगा
और कब भुला दिया जायेगा?"
6 कुछ लोग मेरे पास मिलने आते हैं।
पर वे नहीं कहते जो सचमुच सोच रहे हैं।

वे लोग मेरे विषय में कुछ पता लगाने आते
और जब वे लौटते अफवाह फैलाते।
7 मेरे शत्रु छिपे छिपे मेरी निन्दायें कर रहे हैं।
वे मेरे विरुद्ध कुचक्र रच रहे हैं।
8 वे कहा करते हैं,
"उसने कोई बुरा कर्म किया है,
इसी से उसको कोई बुरा रोग लगा है।
मुझको आशा है वह कभी स्वस्थ नहीं होगा।
9 मेरा परम मित्र मेरे संग खाता था।
उस पर मुझको भरोसा था।
किन्तु अब मेरा परम मित्र भी
मेरे विरुद्ध हो गया है।
10 सो हे यहोवा, मुझ पर कृपा कर
और मुझ पर कृपालु हो।
मुझको खड़ा कर कि मैं प्रतिशोध ले लूँ।
11 हे यहोवा, यदि तू मेरे शत्रुओं को
बुरा नहीं करने देगा,
तो मैं समझूँगा कि तूने मुझे अपना लिया है।
12 मैं निर्दोष था और तूने मेरी सहायता की।
तूने मुझे खड़ा किया और
मुझे तेरी सेवा करने दिया।
13 इस्राएल का परमेश्वर, यहोवा धन्य है!
वह सदा था, और वह सदा रहेगा।
आमीन, आमीन!

दूसरा भाग

भजन 42

संगीत निर्देशक के लिये कोरह परिवार का एक भक्ति गीत।

1 जैसे एक हिरण शीतल सरिता का जल पीने को
प्यासा है। वैसे ही, हे परमेश्वर,
मेरा प्राण तेरे लिये प्यासा है।
2 मेरा प्राण जीवित परमेश्वर का प्यासा है।
मैं उससे मिलने के लिये कब आ सकता हूँ?
3 रात दिन मेरे आँसू ही मेरा खाना और पीना है!
हर समय मेरे शत्रु कहते हैं,
"तेरा परमेश्वर कहाँ है?"
4 सो मुझे इन सब बातों को याद करने दे।
मुझे अपना हृदय बाहर उँडेलने दे।
मुझे याद है मैं परमेश्वर के मन्दिर में चला
और भीड़ की अगुवाई करता था।
मुझे याद है वह लोगों के साथ आनन्द भरे
प्रशंसा गीत गाना और वह उत्सव मनाना।
5 मैं इतना दुःखी क्यों हूँ?
मैं इतना व्याकुल क्यों हूँ?
मुझे परमेश्वर के सहारे की
बाट जोहनी चाहिए।
मुझे अब भी उसकी स्तुति
का अवसर मिलेगा।
वह मुझे बचाएगा!
6 हे मेरे परमेश्वर, मैं अति दुःखी हूँ।
इसलिए मैंने तुझे यरदन की घाटी में,
हेर्मोन के पहाड़ी पर और
मिसगार के पर्वत पर से पुकारा।
7 जैसे सागर से लहरे उठ उठ कर आती हैं।
मैं सागर तंरगों का कोलाहल करता
शब्द सुनता हूँ,
वैसे ही मुझको विपत्तियाँ बारम्बार घेरी रहीं।
हे यहोवा, तेरी लहरों ने मुझको दबोच रखा है।
तेरी तरंगों ने मुझको ढाप लिया है!
8 यदि हर दिन यहोवा सच्चा प्रेम दिखाएगा।
फिर तो मैं रात में उसका गीत गा पाऊँगा।
मैं अपने सजीव परमेश्वर की
प्रार्थना कर सकूँगा।
9 मैं अपने परमेश्वर, अपनी चट्टान से
बातें करता हूँ।
मैं कहा करता हूँ,
"हे यहोवा, तूने मुझको क्यों बिसरा दिया?
हे यहोवा, तूने मुझको यह क्यों नहीं दिखाया कि
मैं अपने शत्रुओं से बच कैसे निकलूँ?"
10 मेरे शत्रुओं ने मुझे मारने का जतन किया।
वे मुझ पर निज घृणा दिखाते हैं जब
वे कहते हैं, "तेरा परमेश्वर कहाँ है?"
11 मैं इतना दुःखी क्यों हूँ?
मैं क्यों इतना व्याकुल हूँ?
मुझे परमेश्वर के सहारे की बाट जोहनी चाहिए।
मुझे अब भी उसकी
स्तुति करने का अवसर मिलेगा।
वह मुझे बचाएगा!

भजन 43

1 हे परमेश्वर, एक मनुष्य है
जो तेरी अनुसरण नहीं करता।
वह मनुष्य दुष्ट है और झूठ बोलता है।
हे परमेश्वर, मेरा मुकदमा लड़
और यह निर्णय कर कि कौन सत्य है।
मुझे उस मनुष्य से बचा ले।

2 हे परमेश्वर, तू ही मेरा शरणस्थल है!
मुझको तूने क्यों बिसरा दिया?
तूने मुझको यह क्यों नहीं दिखाया कि
मै अपने शत्रुओं से कैसे बच निकलूँ?

3 हे परमेश्वर, तू अपनी ज्योति और अपने
सत्य को मुझ पर प्रकाशित होने दे।
मुझको तेरी ज्योति और सत्य राह दिखायेंगे।
वे मुझे तेरे पवित्र पर्वत और
अपने घर को ले चलेंगे।

4 मैं तो परमेश्वर की वेदी के पास जाऊँगा।
परमेश्वर मैं तेरे पास आऊँगा।
वह मुझे आनन्दित करता है।
हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर,
मैं वीणा पर तेरी स्तुति करुँगा।

5 मैं इतना दुःखी क्यों हूँ?
मैं क्यों इतना व्याकुल हूँ?
मुझे परमेश्वर के सहारे की बाट जोहनी चाहिए।
मुझे अब भी उसकी स्तुति का अवसर मिलेगा।
वह मुझे बचाएगा!

भजन 44

संगीत निर्देशक के लिए कोरह परिवार का एक भक्ति गीत।

1 हे परमेश्वर, हमने तेरे विषय में सुना है।
हमारे पूर्वजों ने उनके दिनों में जो काम
तूने किये थे उनके बारे में हमें बताया।
उन्होंने पुरातन काल में जो
तूने किये हैं, उन्हें हमें बताया।

2 हे परमेश्वर, तूने यह धरती अपनी महाशक्ति से
पराए लोगों से ली और हमको दिया।
उन विदेशी लोगों को तूने कुचल दिया,
और उनको यह धरती छोड़
देने का दबाव डाला।

3 हमारे पूर्वजों ने यह धरती अपने
तलवारों के बल नहीं ली थी।
अपने भुजदण्डों के बल पर विजयी नहीं हुए।
यह इसलिए हुआ था
क्योंकि तू हमारे पूर्वजों के साथ था।
हे परमेश्वर, तेरी महान शक्ति ने
हमारे पूर्वजों की रक्षा की।
क्योंकि तू उनसे प्रेम किया करता था!

4 हे मेरे परमेश्वर, तू मेरा राजा है।
तेरे आदेशों से याकूब के
लोगों को विजय मिली।

5 हे मेरे परमेश्वर, तेरी सहायता से,
हमने तेरा नाम लेकर अपने
शत्रुओं को धकेल दिया और
हमने अपने शत्रु को कुचल दिया

6 मुझे अपने धनुष और बाणों पर भरोसा नहीं।
मेरी तलवार मुझे बचा नहीं सकती।

7 हे परमेश्वर, तूने ही हमें मिस्र से बचाया।
तूने हमारे शत्रुओं को लज्जित किया।

8 हर दिन हम परमेश्वर के गुण गाएंगे!
हम तेरे नाम की स्तुति सदा करेंगे!

9 किन्तु, हे यहोवा, तूने हमें क्यों बिसरा दिया?
तूने हमको गहन लज्जा में डाला।
हमारे साथ तू युद्ध में नहीं आया।

10 तूने हमें हमारे शत्रुओं को पीछे धकेलने दिया।
हमारे शत्रु हमारे धन वैभव छीन ले गये।

11 तूने हमें उस भेड़ की तरह छोड़ा जो
भोजन के समान खाने को होती है।
तूने हमें राष्ट्रों के बीच बिखराया।

12 हे परमेश्वर, तूने अपने जनों को यूँ ही बेच दिया,
और उनके मूल्य पर भाव ताव भी नहीं किया।

13 तूने हमें हमारे पड़ोसियों में हँसी का पात्र बनाया।
हमारे पड़ोसी हमारा उपहास करते हैं,
और हमारी मजाक बनाते हैं।

14 लोग हमारी भी कथा उपहास
कथाओं में कहते हैं।
यहाँ तक कि वे लोग जिनका
अपना कोई राष्ट्र नहीं है,
अपना सिर हिला कर हमारा
उपहास करते हैं।

15 मैं लज्जा में डूबा हूँ।
मैं सारे दिन भर निज लज्जा देखता रहता हूँ।
16 मेरे शत्रु ने मुझे लज्जित किया है।
मेरी हँसी उड़ाते हुए मेरा शत्रु,
अपना प्रतिशोध चाहता है।
17 हे परमेश्वर, हमने तुझको बिसराया नहीं।
फिर भी तू हमारे साथ ऐसा करता है।
हमने जब अपने वाचा पर तेरे साथ
हस्ताक्षर की थी, झूठ नहीं बोला था!
18 हे परमेश्वर, हमने तो तुझसे मुख नहीं मोड़ा।
और न ही तेरा अनुसरण करना छोड़ा है।
19 किन्तु, हे यहोवा, तूने हमें इस स्थान पर ऐसे
ठूँस दिया है जहाँ गीदड़ रहते हैं।
तूने हमें इस स्थान में जो मृत्यु की
तरह अंधेरा है मूँद दिया है।
20 क्या हम अपने परमेश्वर का नाम भूले?
क्या हम विदेशी देवों के आगे झुके? नहीं!
21 निश्चय ही, परमेश्वर इन बातों को जानता है।
वह तो हमारे गहरे रहस्य तक जानता है।
22 हे परमेश्वर, हम तेरे लिये
प्रतिदिन मारे जा रहे हैं!
हम उन भेड़ों जैसे बने हैं
जो वध के लिये ले जायी जा रहीं हैं।
23 मेरे स्वामी, उठ! नींद में क्यों पड़े हो?
उठो! हमें सदा के लिए मत त्याग!
24 हे परमेश्वर, तू हमसे क्यों छिपता है?
क्या तू हमारे दुःख और
वेदनाओं को भूल गया है?
25 हमको धूल में पटक दिया गया है।
हम औंधे मुँह धरती पर पड़े हुए हैं।
26 हे परमेश्वर, उठ और हमको बचा ले!
अपने नित्य प्रेम के कारण हमारी रक्षा कर!

भजन 45

संगीत निर्देशक के लिए शोकन्नीभ की संगत पर कोरह परिवार का एक कलात्मक प्रेम प्रगीत।

1 सुन्दर शब्द मेरे मन में भर जाते हैं,
जब मैं राजा के लिये बातें लिखता हूँ।
मेरे जीभ पर शब्द ऐसे आने लगते हैं
जैसे वे किसी कुशल लेखक की
लेखनी से निकल रहे हैं।
2 तू किसी भी और से सुन्दर है!
तू अति उत्तम वक्ता है।
सो तुझे परमेश्वर आशीष देगा!
3 तू तलवार धारण कर।
तू महिमित वस्त्र धारण कर।
4 तू अद्‌भुत दिखता है!
जा, धर्म और न्याय का युद्ध जीत।
अद्‌भुत कर्म करने के लिये शक्तिपूर्ण
दाहिनी भुजा का प्रयोग कर।
5 तेरे तीर तत्पर हैं।
तू बहुतेरों को पराजित करेगा।
तू अपने शत्रुओं पर शासन करेगा।
6 हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन अमर है!
तेरा धर्म राजदण्ड है।
7 तू नेकी से प्यार और बैर से द्वेष करता है।
सो परमेश्वर तेरे परमेश्वर ने
तेरे साथियों के ऊपर तुझे राजा चुना है।
8 तेरे वस्त्र महक रहे हैं जैसे गंध रस, अगर
और तेज पात से मधुर गंध आ रही हो।
हाथी दाँत जड़ित राज महलों से
तुझे आनन्दित करने को मधुर
संगीत की झँकारे बिखरती हैं।
9 तेरी महिलायें राजाओं की कन्याएँ हैं।
तेरी महारानी ओपीर के सोने से बने
मुकुट पहने तेरे दाहिनी ओर विराजती हैं।
10 हे राजपुत्री, मेरी बात को सुन।
ध्यानपूर्वक सुन, तब तू मेरी बात को समझेगी।
तू अपने निज लोगों और अपने
पिता के घराने को भूल जा।
11 राजा तेरे सौन्दर्य पर मोहित है।
यह तेरा नया स्वामी होगा।
तुझको इसका सम्मान करना है।
12 सूर नगर के लोग तेरे लिये उपहार लायेंगे।
और धनी मानी तुझसे मिलना चाहेंगे।
13 वह राजकन्या उस मूल्यवान रत्न सी है जिसे
सुन्दर मूल्यवान सुवर्ण में जड़ा गया हो।
14 उसे रमणीय वस्त्र धारण किये लाया गया है।
उसकी सखियों को भी जो
उसके पीछे हैं राजा के सामने लाया गया।

15 वे यहाँ उल्लास में आयी हैं।
वे आनन्द में मगन होकर
राजमहल में प्रवेश करेंगी।
16 राजा, तेरे बाद तेरे पुत्र शासक होंगे।
तू उन्हें समूचे धरती का राजा बनाएगा।
17 मैं तेरे नाम का प्रचार युग युग तक करुँगा।
तू प्रसिद्ध होगा,
तेरे यश गीतों को लोग सदा सर्वदा गाते रहेंगे!

भजन 46

अलामोथ की संगत पर संगीत निर्देशक के लिये कोरह परिवार का एक पद।

1 परमेश्वर हमारे पराक्रम का भण्डार है।
संकट के समय हम उससे शरण पा सकते हैं।
2 इसलिए जब धरती काँपती है और
जब पर्वत समुद्र में गिरने लगता है,
हमको भय नहीं लगता।
3 हम नहीं डरते जब सागर उफनते
और काले हो जाते हैं,
और धरती और पर्वत काँपने लगते हैं।
4 वहाँ एक नदी है, जो परम परमेश्वर के
नगरी को अपनी धाराओं से
प्रसन्नता से भर देती है।
5 उस नगर में परमेश्वर है, इसी से
उसका कभी पतन नहीं होगा।
परमेश्वर उसकी सहायता भोर से
पहले ही करेगा।
6 यहोवा के गरजते ही, राष्ट्र भय से काँप उठेंगे।
उनकी राजधानियों का पतन हो जाता है
और धरती चरमरा उठती हैं।
7 सर्वशक्तिमान यहोवा हमारे साथ है।
याकूब का परमेश्वर हमारा शरणस्थल है।
8 आओ उन शक्तिपूर्ण कर्मों को देखो
जिन्हें यहोवा करता है।
वे काम ही धरती पर यहोवा को
प्रसिद्ध करते हैं।
9 यहोवा धरती पर कहीं भी हो रहे
युद्धों को रोक सकता है।
वे सैनिक के धनुषों को तोड़ सकता है,
और उनके भालों को चकनाचूर कर सकता है,
रथों को वह जलाकर भस्म कर सकता है।
10 परमेश्वर कहता है, "शांत बनो और जानो कि
मैं ही परमेश्वर हूँ!
राष्ट्रों के बीच मेरी प्रशंसा होगी।
धरती पर मेरी महिमा फैल जायेगी!"
11 यहोवा सर्वशक्तिमान हमारे साथ है।
याकूब का परमेश्वर हमारा शरणस्थल है।

भजन 47

संगीत निर्देशक के लिए कोरह परिवार का एक भक्ति गीत।

1 हे सभी लोगों, तालियाँ बजाओ,
और आनन्द में भर कर परमेश्वर का
जय जयकार करो!
2 महिमा महिम यहोवा भय और
विस्मय से भरा है।
सारी धरती का वही सम्राट है।
3 उसने आदेश दिया और हमने राष्ट्रों को
पराजित किया और उन्हें जीत लिया।
4 हमारी धरती उसने हमारे लिये चुनी है।
उसने याकूब के लिये अद्भुत धरती चुनी।
याकूब वह व्यक्ति है जिसे उसने प्रेम किया।
5 यहोवा परमेश्वर तुरही की ध्वनि और
युद्ध की नरसिंगे के स्वर के साथ
ऊपर उठता है।
6 परमेश्वर के गुणगान करते
हुए गुण गाओ।
हमारे राजा के प्रशंसा गीत गाओ।
और उसके यशगीत गाओ।
7 परमेश्वर सारी धरती का राजा है।
उसके प्रशंसा गीत गाओ।
8 परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन
पर विराजता है।
परमेश्वर सभी राष्ट्रों पर
शासन करता है।
9 राष्ट्रों के नेता, इब्राहीम के परमेश्वर के
लोगों के साथ मिलते हैं।
सभी राष्ट्रों के नेता, परमेश्वर के हैं।
परमेश्वर उन सब के ऊपर है।

भजन 48

एक भक्ति गीत: कोरह परिवार का एक पद।

1 यहोवा महान है।
वह परमेश्वर के नगर,
उसके पवित्र नगर में प्रशंसनीय है।
2 परमेश्वर का पवित्र नगर एक सुन्दर नगर है।
धरती पर वह नगर सर्वाधिक प्रसन्न है।
सिय्योन पर्वत सबसे अधिक ऊँचा
और सर्वाधिक पवित्र है।
यह नगर महा सम्राट का है।
3 उस नगर के महलों में परमेश्वर को
सुरक्षास्थल कहा जाता है।
4 एकबार कुछ राजा आपस में आ मिले और
उन्होंने इस नगर पर आक्रमण
करने का कुचक्र रचा।
सभी साथ मिलकर चढ़ाई के लिये आगे बढ़े।
5 राजा को देखकर वे सभी चकित हुए।
उनमें भगदड़ मची और वे सभी भाग गए।
6 उन्हें भय ने दबोचा, वे भय से काँप उठे!
7 प्रचण्ड पूर्वी पवन ने उनके जलयानों
को चकनाचूर कर दिया।
8 हाँ, हमने उन राजाओं की कहानी सुनी है
और हमने तो इसको सर्वशक्तिमान
यहोवा के नगर में हमारे परमेश्वर के
नगर में घटते हुए भी देखा।
यहोवा उस नगर को सुदृढ़ बनाएगा।
9 हे परमेश्वर, हम तेरे मन्दिर में
तेरी प्रेमपूर्ण करुणा पर मनन करते हैं।
10 हे परमेश्वर, तू प्रसिद्ध है, लोग धरती पर
हर कहीं तेरी स्तुति करते हैं।
हर मनुष्य जानता है कि तू कितना भला है।
11 हे परमेश्वर, तेरे उचित न्याय के कारण
सिय्योन पर्वत हर्षित है।
और यहूदा की नगरियाँ आनन्द मना रही हैं।
12 सिय्योन की परिक्रमा करो।
नगरी के दर्शन करो।
तुम बुर्जो (मीनारों) को गिनो।
13 ऊँचे प्राचीरों को देखो।
सिय्योन के महलों को सराहो,
तभी तुम आने वाली पीढ़ी से
इसका बखान कर सकोगे।
14 सचमुच हमारा परमेश्वर
सदा सर्वदा परमेश्वर रहेगा।
वह हमको सदा ही राह दिखाएगा।
उसका कभी भी अंत नहीं होगा।

भजन 49

कोरह की संतानो का संगीत निर्देशक के लिए एक पद।

1 विभिन्न देशों के निवासियों, यह सुनो।
धरती के वासियों यह सुनो।
2 सुनो अरे दीन जनो, अरे धनिकों सुनो।
3 मैं तुम्हें ज्ञान और विवेक की बातें बताता हूँ।
4 मैंने कथाएँ सुनी है, मैं अब वे कथाएँ
तुमको निज वीणा पर सुनाऊँगा।
5 ऐसा कोई कारण नहीं
जो मैं किसी भी विनाश से डर जाऊँ।
यदि लोग मुझे घेरे और फँदा फैलाये,
मुझे डरने का कोई कारण नहीं।
6 वे लोग मूर्ख हैं जिन्हें अपने निज बल
और अपने धन पर भरोसा है।
7 तुझे कोई मनुष्य मित्र नहीं बचा सकता।
जो घटा है उसे तू परमेश्वर को
देकर बदलवा नहीं सकता।
8 किसी मनुष्य के पास इतना धन नहीं होगा कि
जिससे वह स्वयं अपना निज
जीवन मोल ले सके।
9 किसी मनुष्य के पास इतना धन नहीं हो सकता
कि वह अपना शरीर कब्र में
सड़ने से बचा सके।
10 देखो, बुद्धिमान जन, बुद्धिहीन जन और
जड़मति जन एक जैसे मर जाते हैं,
और उनका सारा धन दूसरों के
हाथ में चला जाता है।
11 कब्र सदा सर्वदा के लिए हर
किसी का घर बनेगा,
इसका कोई अर्थ नहीं कि वे
कितनी धरती के स्वामी रहे थे।
12 धनी पुरुष मूर्ख जनों से भिन्न नहीं होते।
सभी लोग पशुओं कि तरह मर जाते हैं।
13 लोगों कि वास्तविक मूर्खता यह होती है कि

वे अपनी भूख को निर्णायक बनाते हैं,
कि उनको क्या करना चाहिए।

14 सभी लोग भेड़ जैसे हैं।
कब्र उनके लिये बाडा बन जायेगी।
मृत्यु उनका चरवाहा बनेगी।
उनकी काया क्षीण हो जायेंगी और
वे कब्र में सड़ गल जायेंगे।

15 किन्तु परमेश्वर मेरा मूल्य चुकाएगा
और मेरा जीवन कब्र की शक्ति से बचाएगा।
वह मुझको बचाएगा।

16 धनवानों से मत डरो कि वे धनी हैं।
लोगों से उनके वैभवपूर्ण
घरों को देखकर मत डरना।

17 वे लोग जब मरेंगे कुछ भी साथ न ले जाएंगे।
उन सुन्दर वस्तुओं में से
कुछ भी न ले जा पाएंगे।

18 लोगों को चाहिए कि वे जब तक जीवित रहें
परमेश्वर की स्तुति करें।
जब परमेश्वर उनके संग भलाई करे,
तो लोगों को उसकी स्तुति करनी चाहिए।

19 मनुष्यों के लिए एक ऐसा समय आएगा
जब वे अपने पूर्वजों के संग मिल जायेंगे।
फिर वे कभी दिन का प्रकाश नहीं देख पाएंगे।

20 धनी पुरुष मूर्ख जनों से भिन्न नहीं होते।
सभी लोग पशु समान मरते हैं।

भजन 50

आसाप के भक्ति गीतों में से एक पद।

1 ईश्वरों के परमेश्वर यहोवा ने कहा है।
पूर्व से पश्चिम तक धरती के
सब मनुष्यों को उसने बुलाया।

2 सिय्योन से परमेश्वर की सुन्दरता
प्रकाशित हो रही है।

3 हमारा परमेश्वर आ रहा है,
और वह चुप नहीं रहेगा।
उसके सामने जलती ज्वाला है,
उसको एक बड़ा तूफान घेरे हुए है।

4 हमारा परमेश्वर आकाश और धरती को
पुकार कर अपने निज लोगों को
न्याय करने बुलाता है।

5 "मेरे अनुयायियों, मेरे पास जुटों।
मेरे उपासकों आओ हमने आपस में
एक वाचा किया है।"

6 परमेश्वर न्यायाधीश है आकाश
उसकी धार्मिकता को घोषित करता है।

7 परमेश्वर कहता है, "सुनों मेरे भक्तों!
इस्राएल के लोगों, मैं तुम्हारे विरुद्ध साक्षी दूँगा।
मैं परमेश्वर हूँ, तुम्हारा परमेश्वर।

8 मुझको तुम्हारी बलियों से शिकायत नहीं।
इस्राएल के लोगों, तुम सदा होमबलियाँ
मुझे चढ़ाते रहो।
तुम मुझे हर दिन अर्पित करो।

9 मैं तेरे घर से कोई बैल नहीं लूँगा।
मैं तेरे पशु गृहों से बकरें नहीं लूँगा।

10 मुझे तुम्हारे उन पशुओं कि आवश्यकता नहीं।
मैं ही तो वन के सभी पशुओं का स्वामी हूँ।
हजारों पहाड़ों पर जो पशु विचरते हैं,
उन सब का मैं स्वामी हूँ।

11 जिन पक्षियों का बसेरा उच्चतम पहाड़ पर है,
उन सब को मैं जानता हूँ।
अचलों पर जो भी सचल है वे सब मेरे ही हैं।

12 मैं भूखा नहीं हूँ! यदि मैं भूखा होता, तो भी
तुमसे मुझे भोजन नहीं माँगना पड़ता।
मैं जगत का स्वामी हूँ और उसका भी हर वस्तु
जो इस जगत में है।

13 मैं बैलों का माँस खाया नहीं करता हूँ।
बकरों का रक्त नहीं पीता।"

14 सचमुच जिस बलि की परमेश्वर को अपेक्षा है,
वह तुम्हारी स्तुति है।
तुम्हारी मनौतियाँ उसकी सेवा की हैं।
सो परमेश्वर को निज
धन्यवाद की भेंटें चढ़ाओ।
उस सर्वोच्च से जो मनौतियाँ
की हैं उसे पूरा करो।

15 "इस्राएल के लोगों, जब तुम पर विपदा पड़े,
मेरी प्रार्थना करो! मैं तुम्हें सहारा दूँगा।
तब तुम मेरा मान कर सकोगे।"

16 दुष्ट लोगों से परमेश्वर कहता है,
"तुम मेरी व्यवस्था की बातें करते हो,
तुम मेरे वाचा की भी बातें करते हो।

17 फिर जब मैं तुमको सुधारता हूँ, तब भला
तुम मुझसे बैर क्यों रखते हो।
तुम उन बातों कि उपेक्षा क्यों करते हो
जिन्हें मैं तुम्हें बताता हूँ?
18 तुम चोर को देखकर उससे मिलने के लिए
दौड़ जाते हो,
तुम उनके साथ बिस्तर ामें कूद पड़ते हो
जो व्यभिचार कर रहे हैं।
19 तुम बुरे वचन और झूठ बोलते हो।
20 तुम दूसरे लोगों कि यहाँ तक कि
अपने भाइयों की निन्दा करते हो।
21 तुम बुरे कर्म करते हो, और तुम सोचते हो
मुझे चुप रहना चाहिए।
तुम कुछ नहीं कहते हो और सोचते हो कि
मुझे चुप रहना चाहिए।
देखो, मैं चुप नहीं रहूँगा, तुझे स्पष्ट कर दूँगा।
तेरे ही मुख पर तेरे दोष बताऊँगा।
22 तुम लोग परमेश्वर को भूल गये हो।
इसके पहले कि मैं तुम्हें चीर दूँ,
अच्छी तरह समझ लो।
जब वैसा होगा कोई भी व्यक्ति
तुम्हें बचा नहीं पाएगा
23 यदि कोई व्यक्ति मेरी स्तुति और धन्यवादों की
बलि चढ़ाये, तो वह सचमुच
मेरा मान करेगा।
यदि कोई व्यक्ति अपना जीवन बदल डाले
तो उसे मैं परमेश्वर की शक्ति दिखाऊँगा
जो बचाती है।"

भजन 51

संगीत निर्देशक के लिए दाऊद का एक पद: यह पद उस समय का है जब बतशेबा के साथ दाऊद द्वारा पाप करने के बाद नातान नबी दाऊद के पास गया था।

1 हे परमेश्वर, अपनी विशाल प्रेमपूर्ण
अपनी करुणा से मुझ पर दया कर।
मेरे सभी पापों को तू मिटा दे।
2 हे परमेश्वर, मेरे अपराध मुझसे दूर कर।
मेरे पाप धो डाल, और फिर से
तू मुझको स्वच्छ बना दे।
3 मैं जानता हूँ, जो पाप मैंने किये हैं।
मैं अपने पापों को सदा अपने सामने देखता हूँ।
4 हे परमेश्वर, मैंने वही काम किये
जिनको तूने बुरा कहा।
तू वही है, जिसके विरुद्ध मैंने पाप किये।
मैं स्वीकार करता हूँ इन बातों को,
ताकि लोग जान जाये कि मैं पापी हूँ
और तू न्यायपूर्ण है,
तथा तेरे निर्णय निष्पक्ष होते हैं।
5 मैं पाप से जन्मा, मेरी माता ने
मुझको पाप से गर्भ में धारण किया।
6 हे परमेश्वर, तू चाहता है, हम विश्वासी बनें।
और मैं निर्भय हो जाऊँ।
इसलिए तू मुझको सच्चे विवेक से
रहस्यों की शिक्षा दे।
7 तू मुझे विधि विधान के साथ, जूफा के
पौधे का प्रयोग कर के पवित्र कर।
तब तक मुझे तू धो, जब तक मैं
हिम से अधिक उज्जवल न हो जाऊँ।
8 मुझे प्रसन्न बना दे।
बता दे मुझे कि कैसे प्रसन्न बनूँ?
मेरी वे हड्डियाँ जो तूने तोड़ी,
फिर आनन्द से भर जायें।
9 मेरे पापों को मत देख।
उन सबको धो डाल।
10 परमेश्वर, तू मेरा मन पवित्र कर दे।
मेरी आत्मा को फिर सुदृढ़ कर दे।
11 अपनी पवित्र आत्मा को मुझसे मत दूर हटा,
और मुझसे मत छीन।
12 वह उल्लास जो तुझसे आता है, मुझमें भर जायें।
मेरा चित्त अडिग और तत्पर कर सुरक्षित होने
को और तेरा आदेश मानने को।
13 मैं पापियों को तेरी जीवन विधि सिखाऊँगा,
जिससे वे लौट कर तेरे पास आयेंगे।
14 हे परमेश्वर, तू मुझे हत्या का दोषी
कभी मत बनने दें।
मेरे परमेश्वर, मेरे उद्धारकर्ता,
मुझे गाने दे कि तू कितना उत्तम है?
15 हे मेरे स्वामी, मुझे मेरा मुँह खोलने दे कि
मैं तेरे प्रशंसा का गीत गाऊँ।

16 जो बलियाँ तुझे नहीं भाती सो
मुझे चढ़ानी नहीं है।
वे बलियाँ तुझे वाँछित तक नहीं हैं।
17 हे परमेश्वर, मेरी टूटी आत्मा ही
तेरे लिए मेरी बलि है।
हे परमेश्वर, तू एक कुचले
और टूटे हृदय से कभी
मुख नहीं मोड़ेगा।
18 हे परमेश्वर, सिय्योन के प्रति
दयालु होकर, उत्तम बन।
तू यरुशलेम के नगर के
परकोटे का निर्माण कर।
19 तू उत्तम बलियों का और सम्पूर्ण
होमबलियों का आनन्द लेगा।
लोग फिर से तेरी वेदी पर
बैलों की बलियाँ चढ़ायेंगे।

भजन 52

संगीत निर्देशक के लिये उस समय का एक भक्ति गीत जब एदोमी दोएग ने शाऊल के पास आकर कहा था, दाऊद अबीमेलेक के घर में है।

1 अरे ओ, बड़े व्यक्ति! तू क्यों शेखी बघारता है
जिन बुरे कामों को तू करता है?
तू परमेश्वर का अपमान करता है।
तू बुरे काम करने को दिन भर
षड़यन्त्र रचता है।
2 तू मूढ़ता भरी कुचक्र रचता रहता है।
तेरी जीभ वैसी ही भयानक है,
जैसा तेज उस्तरा होता है।
क्यों? क्योंकि तेरी जीभ झूठ बोलती रहती है!
3 तुझको नेकी से अधिक बदी भाती है।
तुझको झूठ का बोलना,
सत्य के बोलने से अधिक भाता है।
4 तुझको और तेरी झूठी जीभ को,
लोगों का हानि पहुँचाना अच्छा लगता है।
5 तुझे परमेश्वर सदा के लिए नष्ट कर देगा!
वह तुझ पर झपटेगा और तुझे
पकड़कर घर से बाहर करेगा।
वह तुझे मारेगा और तेरा
कोई भी वंशज नहीं रहेगा।
6 सज्जन इसे देखेंगे और परमेश्वर से डरना
और उसका आदर करना सीखेंगे।
वे तुझपर, जो घटा उस पर हँसेंगे और कहेंगे,
7 "देखो उस व्यक्ति के साथ क्या हुआ
जो यहोवा पर निर्भर नहीं था।
उस व्यक्ति ने सोचा कि उसका धन
और झूठ इसकी रक्षा करेंगे।"
8 किन्तु मैं परमेश्वर के मन्दिर में एक
हरे जैतून के वृक्ष सा हूँ।
परमेश्वर की करुणा का मुझको
सदा-सदा के लिए भरोसा है।
9 हे परमेश्वर, मैं उन कामों के लिए
जिनको तूने किया, स्तुति करता हूँ।
मैं तेरे अन्य भक्तों के साथ,
तेरे भले नाम पर भरोसा करुँगा!

भजन 53

महलत राग पर संगीत निर्देशक के लिए दाऊद का एक भक्ति गीत।

1 बस एक मूर्ख ही ऐसे सोचता है कि
परमेश्वर नहीं होता।
ऐसे मनुष्य भ्रष्ट, दुष्ट, द्वेषपूर्ण होते हैं।
वे कोई अच्छा काम नहीं करते।
2 सचमुच, आकाश में एक ऐसा परमेश्वर है
जो हमें देखता और झाँकता रहता है।
यह देखने को कि क्या यहाँ पर
कोई विवेकपूर्ण व्यक्ति और विवेकपूर्ण
जन परमेश्वर को खोजते रहते हैं?
3 किन्तु सभी लोग परमेश्वर से भटके हैं।
हर व्यक्ति बुरा है।
कोई भी व्यक्ति कोई अच्छा कर्म
नहीं करता, एक भी नहीं।
4 परमेश्वर कहता है, "निश्चय ही,
वे दुष्ट सत्य को जानते हैं।
किन्तु वे मेरी प्रार्थना नहीं करते।
वे दुष्ट लोग मेरे भक्तों को ऐसे नष्ट
करने को तत्पर हैं,
जैसे वे निज खाना खाने को तत्पर रहते हैं।"
5 किन्तु वे दुष्ट लोग इतने भयभीत होंगे,
जितने वे दुष्ट लोग पहले

कभी भयभीत नहीं हुए!
इसलिए परमेश्वर ने इस्राएल के
उन दुष्ट शत्रु लोगों को त्यागा है।
परमेश्वर के भक्त उनको हरायेंगे और परमेश्वर
उन दुष्टों की हड्डियों को बिखेर देगा।

6 इस्राएल को, सिय्योन में
कौन विजयी बनायेगा?
हाँ, परमेश्वर उनकी विजय को
पाने में सहायता करेगा।
परमेश्वर अपने लोगों को बन्धुआई से
वापस लायेगा, याकूब आनन्द मनायेगा।
इस्राएल अति प्रसन्न होगा।

भजन 54

तार वाले वाद्यों पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का समय का एक भक्ति गीत जब जीपियों में जाकर शाऊल से कहा था, हम सोचते हैं दाऊद हमारे लोगों के बीच छिपा है।

1 हे परमेश्वर, तू अपनी निज शक्ति को
प्रयोग कर के काम में ले और
मुझे मुक्त करने को बचा ले।

2 हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन।
मैं जो कहता हूँ सुन।

3 अजनबी लोग मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए और
बलशाली लोग मुझे मारने का
जतन कर रहे हैं।
हे परमेश्वर, ऐसे ये लोग
तेरे विषय में सोचते भी नहीं।

4 देखो, मेरा परमेश्वर मेरी सहायता करेगा।
मेरा स्वामी मुझको सहारा देगा।

5 मेरा परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देगा,
जो मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं।
परमेश्वर मेरे प्रति सच्चा सिद्ध होगा,
और वह उन लोगों को नष्ट कर देगा।

6 हे परमेश्वर, मैं स्वेच्छा से
तुझे बलियाँ अर्पित करुँगा।
हे परमेश्वर, मैं तेरे नेक
भजन की प्रशंसा करुँगा।

7 किन्तु, मैं यह तुझसे विनय करता हूँ,
कि मुझको तू मेरे दुःखों से बचा ले।
तू मुझको मेरे शत्रुओं को हारा हुआ दिखा दे।

भजन 55

वाद्यों की संगीत पर संगीत निर्देशक के लिए दाऊद का एक भक्ति गीत।

1 हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन।
कृपा करके मुझसे तू दूर मत हो।

2 हे परमेश्वर, कृपा करके मेरी सुन
और मुझे उत्तर दे।
तू मुझको अपनी व्यथा तुझसे कहने दे।

3 मेरे शत्रु ने मुझसे दुर्वचन बोले हैं।
दुष्ट जनों ने मुझ पर चीखा।
मेरे शत्रु क्रोध कर मुझ पर टूट पड़े हैं।
वे मुझे नाश करने विपत्ति ढाते हैं।

4 मेरा मन भीतर से चूर-चूर हो रहा है, और
मुझको मृत्यु से बहुत डर लग रहा है।

5 मैं बहुत डरा हुआ हूँ।
मैं थरथर काँप रहा हूँ।
मैं भयभीत हूँ।

6 ओह, यदि कपोत के समान मेरे पंख होते,
यदि मैं पंख पाता तो दूर
कोई चैन पाने के स्थान को उड़ जाता।

7 मैं उड़कर दूर निर्जन में जाता।

8 मैं दूर चला जाऊँगा और इस विपत्ति की
आँधी से बचकर दूर भाग जाऊँगा।

9 हे मेरे स्वामी, इस नगर में हिँसा और बहुत दंगे
और उनके झूठों को रोक
जो मुझको दिख रही है।

10 इस नगर में, हर कहीं मुझे
रात-दिन विपत्ति घेरे है।
इस नगर में भयंकर घटनायें घट रही हैं।

11 गलियों में बहुत अधिक अपराध फैला है।
हर कहीं लोग झूठ बोल बोल कर छलते हैं।

12 यदि यह मेरा शत्रु होता और
मुझे नीचा दिखाता तो मैं इसे सह लेता।
यदि ये मेरे शत्रु होते, और मुझ पर वार करते
तो मैं छिप सकता था।

13 ओ! मेरे साथी, मेरे सहचर, मेरे मित्र, यह किन्तु
तू है और तू ही मुझे कष्ट पहुँचाता है।

14 हमने आपस में राज की बातें बाँटी थी।
हमने परमेश्वर के मन्दिर में
साथ-साथ उपासना की।

15 काश मेरे शत्रु अपने समय से
पहले ही मर जायें।
काश उन्हें जीवित ही गाड़ दिया जायें,
क्योंकि वे अपने घरों में ऐसे भयानक
कुचक्र रचा करते हैं।
16 मैं तो सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारुँगा।
यहोवा उसका उत्तर मुझे देगा।
17 मैं तो अपने दुःख को परमेश्वर से प्रातः,
दोपहर और रात में कहूँगा।
वह मेरी सुनेगा!
18 मैंने कितने ही युद्धों में लड़ायी लड़ी है।
किन्तु परमेश्वर मेरे साथ है,
और हर युद्ध से मुझे सुरक्षित लौटायेगा।
19 वह शाश्वत सम्राट परमेश्वर मेरी सुनेगा
और उन्हें नीचा दिखायेगा।
20 मेरे शत्रु अपने जीवन को नहीं बदलेंगे।
वे परमेश्वर से नहीं डरते, और न ही
उसका आदर करते।
21 मेरे शत्रु अपने ही मित्रों पर वार करते।
वे उन बातों को नहीं करते,
जिनके करने को वे सहमत हो गये थे।
22 मेरे शत्रु सचमुच मीठा बोलते हैं,
और सुशांति की बातें करते रहते हैं।
किन्तु वास्तव में, वे युद्ध का कुचक्र रचते हैं।
उनके शब्द काट करते छुरी की सी
और फिसलन भरे हैं जैसे तेल होता है।
23 अपनी चिंताये तुम यहोवा को सौंप दो।
फिर वह तुम्हारी रखवाली करेगा।
यहोवा सज्जन को कभी हारने नहीं देगा।
24 इससे पहले कि उनकी आधी आयु बीते।
हे परमेश्वर, उन हत्यारों को और
उन झूठों को कब्रों में भेज!
जहाँ तक मेरा है,
मैं तो तुझ पर ही भरोसा रखूँगा।

भजन 56

संगीत निर्देशक के लिये सुदूर बाँझ वृक्ष का कपोत नामक धुन पर दाऊद का उस समय का एक प्रगीत जब नगर में उसे पलिश्तियों ने पकड़ लिया था।

1 हे परमेश्वर, मुझ पर करुणा कर
क्योंकि लोगों ने मुझ पर वार किया है।
वे रात दिन मेरा पीछा कर रहे हैं,
और मेरे साथ झगड़ा कर रहे हैं।
2 मेरे शत्रु सारे दिन मुझ पर वार करते रहे।
वहाँ पर डटे हुए अनगिनत योद्धा हैं।
3 जब भी डरता हूँ,
तो मैं तेरा ही भरोसा करता हूँ।
4 मैं परमेश्वर के भरोसे हूँ,
सो मैं भयभीत नहीं हूँ।
लोग मुझको हानि नहीं पहुँचा सकते!
मैं परमेश्वर के वचनों के लिए
उसकी प्रशंसा करता हूँ जो उसने मुझे दिये।
5 मेरे शत्रु सदा मेरे शब्दों को
तोड़ते मरोड़ते रहते हैं।
मेरे विरुद्ध वे सदा कुचक्र रचते रहते हैं।
6 वे आपस में मिलकर और लुक छिपकर
मेरी हर बात की टोह लेते हैं।
मेरे प्राण हरने की कोई राह सोचते हैं।
7 हे परमेश्वर, उन्हें बचकर निकलने मत दे।
उनके बुरे कामों का दण्ड उन्हें दे।
8 तू यह जानता है कि मैं बहुत व्याकुल हूँ।
तू यह जानता है कि
मैंने तुझे कितना पुकारा है?
तूने निश्चय ही मेरे सब आँसुओं का
लेखा जोखा रखा हुआ है।
9 सो अब मैं तुझे सहायता पाने को पुकारुँगा।
मेरे शत्रुओं को तू पराजित कर दे।
मैं यह जानता हूँ कि तू यह कर सकता है।
क्योंकि तू परमेश्वर है!
10 मैं परमेश्वर का गुण
उसके वचनों के लिए गाता हूँ।
मैं परमेश्वर के गुणों को उसके उस
वचन के लिये गाता हूँ
जो उसने मुझे दिया है।
11 मुझको परमेश्वर पर भरोसा है,
इसलिए मैं नहीं डरता हूँ।
लोग मेरा बुरा नहीं कर सकते!
12 हे परमेश्वर, मैंने जो तेरी मन्नतें मानी है,
मैं उनको पूरा करुँगा।
मैं तुझको धन्यवाद की भेंट चढ़ाऊँगा।

13 क्योंकि तूने मुझको मृत्यु से बचाया है।
तूने मुझको हार से बचाया है।
सो मैं परमेश्वर की आराधना करुँगा,
जिसे केवल जीवित व्यक्ति देख सकते हैं।

भजन 57

संगीत निर्देशक के लिये 'नाश मत कर' नामक धुन पर उस समय का दाऊद का एक भक्ति गीत जब वह शाऊल से भाग कर गुफा में जा छिपा था।

1 हे परमेश्वर, मुझ पर करुणा कर।
मुझ पर दयालु हो क्योंकि
मेरे मन की आस्था तुझमें है।
मैं तेरे पास तेरी ओट पाने को आया हूँ।
जब तक संकट दूर न हो।
2 हे परमेश्वर, मैं सहायता पाने के
लिये विनती करता हूँ।
परमेश्वर मेरी पूरी तरह ध्यान रखता है!
3 वह मेरी सहायता स्वर्ग से करता है,
और वह मुझको बचा लेता है।
जो लोग मुझको सताया करते हैं,
वह उनको हराता है।
परमेश्वर मुझ पर निज सच्चा प्रेम दर्शाता है।
4 मेरे शत्रुओं ने मुझे चारों ओर से घेर लिया है।
मेरे प्राण संकट में हैं।
वे ऐसे हैं, जैसे नरभक्षी सिंह और उनके
तेज दाँत भालों और तीरों से और
उनकी जीभ तेज तलवार की सी है।
5 हे परमेश्वर, तू महान है।
तेरी महिमा धरती पर छायी है,
जो आकाश से ऊँची है।
6 मेरे शत्रुओं ने मेरे लिए जाल फैलाया है।
मुझको फँसाने का वे जतन कर रहे हैं।
उन्होंने मेरे लिए गहरा गड्ढा खोदा है, कि
मैं उसमें गिर जाऊँ।
7 किन्तु परमेश्वर मेरी रक्षा करेगा।
मेरा भरोसा है, कि वह
मेरे साहस को बनाये रखेगा।
मैं उसके यश गाथा को गाया करुँगा।
8 मेरे मन खड़े हो! ओ सितारों और वीणाओं!
बजना प्रारम्भ करो।
आओ, हम मिलकर प्रभात को जगायें।
9 हे मेरे स्वामी, हर किसी के लिए,
मैं तेरा यश गाता हूँ।
मैं तेरी यश गाथा हर किसी राष्ट्र को सुनाता हूँ।
10 तेरा सच्चा प्रेम अम्बर के
सर्वोच्च मेघों से भी ऊँचा है!
11 परमेश्वर महान है, आकाश से ऊँची,
उसकी महिमा धरती पर छा जाये।

भजन 58

'नाश मत कर' धुन पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक भक्ति गीत।

1 न्यायाधीशों, तुम पक्षपात रहित नहीं रहे।
तुम लोगों का न्याय निज निर्णयों में
निष्पक्ष नहीं करते हो।
2 नहीं, तुम तो केवल बुरी बातें ही सोचते हो।
इस देश में तुम हिंसापूर्ण अपराध करते हो।
3 वे दुष्ट लोग जैसे ही पैदा होते हैं,
बुरे कामों को करने लग जाते हैं।
वे पैदा होते ही झूठ बोलने लग जाते हैं।
4 वे उस भयानक साँप और नाग जैसे होते हैं,
जो सुन नहीं सकता।
वे दुष्ट जन भी अपने कान सत्य से मूंद लेते हैं।
5 बुरे लोग वैसे ही होते हैं जैसे सपेरों के
गीतों को या उनके संगीतों को
काला नाग नहीं सुन सकता।
6 हे यहोवा! वे लोग ऐसे होते हैं जैसे सिंह।
इसलिए हे यहोवा, उनके दाँत तोड़।
7 जैसे बहता जल विलुप्त हो जाता है,
वैसे ही वे लोग लुप्त हो जायें।
और जैसे राह की उगी दूब कुचल जाती है,
वैसे वे भी कुचल जायें।
8 वे घोंघे के समान हो जो चलने में गल जाते।
वे उस शिशु से हो जो मरा ही पैदा हुआ,
जिसने दिन का प्रकाश कभी नहीं देखा।
9 वे उस बाड़ के काँटों कि तरह शीघ्र ही नष्ट हो,
जो आग पर चढ़ी हाँड़ी
गर्माने के लिए शीघ्र जल जाते हैं।
10 जब सज्जन उन लोगों को दण्ड पाते देखता है
जिन्होंने उसके साथ बुरा किया है,

वह हर्षित होता है।
वह अपना पाँव उन दुष्टों के खून में धोयेगा।
11 जब ऐसा होता है, तो लोग कहने लगते है,
"सज्जनों को उनका फल निश्चय मिलता है।
सचमुच परमेश्वर जगत का न्यायकर्ता है!"

भजन 59

संगीत निर्देशक के लिये 'नाश मत कर' धुन पर दाऊद का उस समय का एक भक्ति गीत जब शाऊल ने लोगों को दाऊद के घर पर निगरानी रखते हुए उसे मार डालने की जुगत करने के लिये भेजा था।

1 हे परमेश्वर, तू मुझको मेरे शत्रुओं से बचा ले।
मेरी सहायता उनसे विजयी बनने में कर
जो मेरे विरुद्ध में युद्ध करने आये हैं।
2 ऐसे उन लोगों से, तू मुझको बचा ले।
तू उन हत्यारों से मुझको बचा ले
जो बुरे कामों को करते रहते हैं।
3 देख! मेरी घात में बलवान लोग हैं।
वे मुझे मार डालने की बाट जोह रहे हैं।
इसलिए नहीं कि मैंने कोई पाप किया
अथवा मुझसे कोई अपराध बन पड़ा है।
4 वे मेरे पीछे पड़े हैं, किन्तु
मैंने कोई भी बुरा काम नहीं किया है।
हे यहोवा, आ! तू स्वयं अपने आप देख ले!
5 हे परमेश्वर! इस्राएल के परमेश्वर!
तू सर्वशक्तिशाली है।
तू उठ और उन लोगों को दण्डित कर।
उन विश्वासघातियों
उन दुर्जनों पर किंचित भी दया मत दिखा।
6 वे दुर्जन साँझ के होते ही नगर में घुस आते हैं।
वे लोग गुर्राते कुत्तों से
नगर के बीच में घूमते रहते है।
7 तू उनकी धमकियों और अपमानों को सुन।
वे ऐसी क्रूर बातें कहा करते हैं।
वे इस बात की चिंता तक नहीं करते कि
उनकी कौन सुनता है।
8 हे यहोवा, तू उनका उपहास करके
उन सभी लोगों को मजाक बना दे।
9 हे परमेश्वर, तू मेरी शक्ति है।
मैं तेरी बाट जोह रहा हूँ।
हे परमेश्वर, तू ऊँचे पहाड़ों पर
मेरा सुरक्षा स्थान है।
10 परमेश्वर मुझसे प्रेम करता है,
और वह जीतने में मेरा सहाय होगा।
वह मेरे शत्रुओं को पराजित करने में
मेरी सहायता करेगा।
11 हे परमेश्वर, बस उनको मत मार डाल।
नहीं तो सम्भव है मेरे लोग भूल जायें।
हे मेरे स्वामी और संरक्षक, तू अपनी शक्ति से
उनको बिखेर दे और हरा दे।
12 वे बुरे लोग कोसते और झूठ बोलते रहते हैं।
उन बुरी बातों का दण्ड उनको दे,
जो उन्होंने कही हैं।
उनको अपने अभिमान में फँसने दे।
13 तू अपने क्रोध से उनको नष्ट कर।
उन्हें पूरी तरह नष्ट कर! लोग तभी जानेंगे कि
परमेश्वर, याकूब के लोगों का और
वह सारे संसार का राजा है!
14 फिर यदि वे लोग शाम को इधर उधर घूमते
गुर्राते कुत्तों से नगर में आवें,
15 तो वे खाने को कोई वस्तु ढूँढते फिरेंगे,
और खाने को कुछ भी नहीं पायेंगे और न ही
सोने का कोई ठौर पायेंगे।
16 किन्तु मैं तेरी प्रशंसा के गीत गाऊँगा।
हर सुबह मैं तेरे प्रेम में आनन्दित होऊँगा।
क्यों? क्योंकि तू पर्वतों के ऊपर
मेरा शरणस्थल है।
मैं तेरे पास आ सकता हूँ,
जब मुझे विपत्तियाँ घेरेंगी।
17 मैं अपने गीतों को तेरी प्रशंसा में गाऊँगा
क्योंकि पर्वतों के उपर तू मेरा शरणस्थल है।
तू परमेश्वर है, जो मुझको प्रेम करता है!

भजन 60

संगीत निर्देशक के लिये 'वाचा की कुमुदिनी धुन पर उस समय का दाऊद का एक उपदेश गीत जब दाऊद ने अर महरैन और अरमसोबा से युद्ध किया तथा जब योआब लौटा और उसने नमक की घाटी में बारह हजार स्वामी सैनिकों को मार डाला।

1 हे परमेश्वर, तूने हमको बिसरा दिया।

तूने हमको विनष्ट कर दिया।
तू हम पर कुपित हुआ।
तू कृपा करके वापस आ।
2 तूने धरती कँपाई और उसे फाड़ दिया।
हमारा जगत बिखर रहा कृपया तू इसे जोड़।
3 तूने अपने लोगों को बहुत यातनाएँ दी है।
हम दाखमधु पिये जन जैसे लड़खड़ा रहे
और गिर रहे हैं।
4 तूने उन लोगों को ऐसे चिताया,
जो तुझको पूजते हैं।
वे अब अपने शत्रु से बच निकल सकते हैं।
5 तू अपने महाशक्ति का प्रयोग करके
हमको बचा ले!
मेरी प्रार्थना का उत्तर दे और उस
जन को बचा जो तुझको प्यारा है!
6 परमेश्वर ने अपने मन्दिर में कहा:
"मेरी विजय होगी और
मैं विजय पर हर्षित होऊँगा।
मैं इस धरती को अपने लोगों के बीच बाँटूंगा।
मैं शकेम और सुक्कोत
घाटी का बँटवारा करुँगा।
7 गिलाद और मनश्शे मेरे बनेंगे।
एप्रैम मेरे सिर का कवच बनेगा।
यहूदा मेरा राजदण्ड बनेगा।
8 मैं मोआब को ऐसा बनाऊँगा,
जैसा कोई मेरे चरण धोने का पात्र।
एदोम एक दास सा जो मेरी जूतियाँ उठाता है।
मैं पलिश्ती लोगों को पराजित करुँगा
और विजय का उद्घोष करूँगा।"
9 कौन मुझे उसके विरुद्ध युद्ध करने को
सुरक्षित दृढ़ नगर में ले जायेगा?
मुझे कौन एदोम तक ले जायेगा?
10 हे परमेश्वर, बस तू ही यह करने में
मेरी सहायता कर सकता है।
किन्तु तूने तो हमको बिसरा दिया!
परमेश्वर हमारे साथ में नहीं जायेगा!
और वह हमारी सेना के साथ नहीं जायेगा।
11 हे परमेश्वर, तू ही हमको इस संकट की
भूमि से उबार सकता है!
मनुष्य हमारी रक्षा नहीं कर सकते!
12 किन्तु हमें परमेश्वर ही
ही मजबूत बना सकता है।
परमेश्वर हमारे शत्रुओं को
पराजित कर सकता है!

भजन 61

तार के वाद्यों के संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1 हे परमेश्वर, मेरा प्रार्थना गीत सुन।
मेरी विनती सुन।
2 जहाँ भी मैं कितनी ही निर्बलता में होऊँ,
मैं सहायता पाने को तुझको पुकारुँगा!
जब मेरा मन भारी हो और बहुत दु:खी हो,
तू मुझको बहुत ऊँचे
सुरक्षित स्थान पर ले चल।
3 तू ही मेरा शरणस्थल है!
तू ही मेरा सुदृढ़ गढ़ है,
जो मुझे मेरे शत्रुओं से बचाता है।
4 तेरे डेरे में, मैं सदा सदा के लिए निवास करुँगा।
मैं वहाँ छिपूँगा जहाँ तू मुझे बचा सके।
5 हे परमेश्वर, तूने मेरी वह मन्नत सुनी है,
जिसे तुझ पर चढ़ाऊँगा, किन्तु तेरे भक्तों के
पास हर वस्तु उन्हें तुझसे ही मिली है।
6 राजा को लम्बी आयु दे।
उसको चिरकाल तक जीने दे!
7 उसको सदा परमेश्वर के साथ में बना रहने
दे! तू उसकी रक्षा निज सच्चे प्रेम से कर।
8 मैं तेरे नाम का गुण सदा गाऊँगा।
उन बातों को करुँगा जिनके करने का
वचन मैंने दिया है।

भजन 62

'यदूतून' राग पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1 मैं धीरज के साथ अपने उद्धार के लिए
यहोवा का बाट जोहता हूँ।
2 परमेश्वर मेरा गढ़ है।
परमेश्वर मुझको बचाता है।
ऊँचे पर्वत पर, परमेश्वर मेरा सुरक्षा स्थान है।
मुझको महा सेनायें भी

पराजित नहीं कर सकतीं।

3 तू मुझ पर कब तक वार करता रहेगा?
मैं एक झुकी दीवार सा हो गया हूँ,
और एक बाड़े सा जो गिरने ही वाला है।

4 वे लोग मेरे नाश का कुचक्र रच रहें हैं।
मेरे विषय में वे झूठी बातें बनाते हैं।
लोगों के बीच में, वे मेरी बड़ाई करते,
किन्तु वे मुझको लुके-छिपे कोसते हैं।

5 मैं यहोवा की बाट धीरज के साथ जोहता हूँ।
बस परमेश्वर ही अपने
उद्धार के लिए मेरी आशा है।

6 परमेश्वर मेरा गढ़ है।
परमेश्वर मुझको बचाता है।
ऊँचे पर्वत में परमेश्वर
मेरा सुरक्षा स्थान है।

7 महिमा और विजय,
मुझे परमेश्वर से मिलती है।
वह मेरा सुदृढ़ गढ़ है।
परमेश्वर मेरा सुरक्षा स्थल है।

8 लोगों, परमेश्वर पर हर घड़ी भरोसा रखो!
अपनी सब समस्यायें परमेश्वर से कहो।
परमेश्वर हमारा सुरक्षा स्थल है।

9 सचमुच लोग कोई मदद नहीं कर सकते।
सचमुच तुम उनके भरोसे
सहायता पाने को नहीं रह सकते!
परमेश्वर की तुलना में वे हवा के
झोंके के समान हैं।

10 तुम बल पर भरोसा मत रखो कि
तुम शक्ति के साथ वस्तुओं को छीन लोगे।
मत सोचो तुम्हें चोरी करने से कोई लाभ होगा।
और यदि धनवान भी हो जाये तो
कभी दौलत पर भरोसा मत करो, कि वह
तुमको बचा लेगी।

11 एक बात ऐसी है जो परमेश्वर कहता है,
जिसके भरोसे तुम सचमुच रह सकते हो:
'शक्ति परमेश्वर से आती है!'

12 मेरे स्वामी, तेरा प्रेम सच्चा है।
तू किसी जन को उसके उन कामों का प्रतिफल
अथवा दण्ड देता है।
जिन्हें वह करता है।

भजन 63

दाऊद का उस समय का एक पद जब वह यहूदा की मरुभूमि में था।

1 हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है।
वैसे कितना मैं तुझको चाहता हूँ।
जैसे उस प्यासी क्षीण धरती जिस पर जल न हो
वैसे मेरी देह और मन तेरे लिए प्यासा है।

2 हाँ, तेरे मन्दिर में मैंने तेरे दर्शन किये।
तेरी शक्ति और तेरी महिमा देख ली है।

3 तेरी भक्ति जीवन से बढ़कर उत्तम है।
मेरे होंठ तेरी बड़ाई करते हैं।

4 हाँ, मैं निज जीवन में तेरे गुण गाऊँगा।
मैं हाथ उपर उठाकर तेरे नाम पर
तेरी प्रार्थना करुँगा।

5 मैं तृप्त होऊँगा मानों मैंने उत्तम
पदार्थ खा लिए हों।
मेरे होंठ तेरे गुण सदैव गायेंगे।

6 मैं आधी रात में बिस्तर पर लेटा हुआ
तुझको याद करुँगा।

7 सचमुच तूने मेरी सहायता की है!
मैं प्रसन्न हूँ कि तूने मुझको बचाया है!

8 मेरा मन तुझमें समता है।
तू मेरा हाथ थामे हुए रहता है।

9 कुछ लोग मुझे मारने का जतन कर रहे हैं।
किन्तु उनको नष्ट कर दिया जायेगा।
वे अपनी कब्रों में समा जायेंगे।

10 उनको तलवारों से मार दिया जायेगा।
उनके शवों को जंगली कुत्ते खायेंगे।

11 किन्तु राजा तो अपने
परमेश्वर के साथ प्रसन्न होगा।
वे लोग जो उसके
आज्ञा मानने के वचन बद्ध हैं,
उसकी स्तुति करेंगे।
क्योंकि उसने सभी झूठों को पराजित किया।

भजन 64

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1 हे परमेश्वर, मेरी सुन।
मैं अपने शत्रुओं से भयभीत हूँ।
मैं अपने जीवन के लिए डरा हुआ हूँ।

2 तू मुझको मेरे शत्रुओं के गहरे
षड़यन्त्रों से बचा ले।
मुझको तू उन दुष्ट लोगों से छिपा ले।
3 मेरे विषय में उन्होंने बहुत बुरा झूठ बोला है।
उनकी जीभे तेज तलवार सी और
उनके कटुशब्द बाणों से हैं।
4 वे छिप जाते हैं, और अपने बाणों का प्रहार
सरल सच्चे जन पर फिर करते हैं।
इसके पहले कि उसको पता चले,
वह घायल हो जाता है।
5 वे उसको हराने को बुरे काम करते हैं।
वे झूठ बोलते और अपने जाल फैलाते हैं।
और वे सुनिश्चित हैं कि
उन्हें कोई नहीं पकड़ेगा।
6 लोग बहुत कुटिल हो सकते हैं।
वे लोग क्या सोच रहे हैं?
इसका समझ पाना कठिन है।
7 किन्तु परमेश्वर निज "बाण" मार सकता है!
और इसके पहले कि उनको पता चले,
वे दुष्ट लोग घायल हो जाते हैं।
8 दुष्ट जन दुसरों के साथ
बुरा करने की योजना बनाते हैं।
किन्तु परमेश्वर उनके कुचक्रों को
चौपट कर सकता है।
वह उन बुरी बातों कों स्वयं
उनके उपर घटा देता है।
फिर हर कोई जो उन्हें देखता
अचरज से भरकर अपना सिर हिलाता है।
9 जो परमेश्वर ने किया है, लोग उन बातों को
देखेंगे और वे उन बातों का वर्णन दूसरो
से करेंगे, फिर तो हर कोई परमेश्वर के
विषय में और अधिक जानेगा।
वे उसका आदर करना
और डरना सीखेंगे।
10 सज्जनों को चाहिए कि
वे यहोवा में प्रसन्न हो।
वे उस पर भरोसा रखे।
अरे! ओ सज्जनों! तुम सभी
यहोवा के गुण गाओ।

भजन 65

1 हे सिय्योन के परमेश्वर,
मैं तेरी स्तुति करता हूँ।
मैंने जो मन्नत मानी, तुझपर चढ़ाता हूँ।
2 मैं तेरे उन कामों का बखान करता हूँ,
जो तूने किये हैं।
हमारी प्रार्थनायें तू सुनता रहता हैं।
तू हर किसी व्यक्ति की प्रार्थनायें
सुनता है, जो तेरी शरण में आता है।
3 जब हमारे पाप हम पर भारी पड़ते हैं,
हमसे सहन नहीं हो पाते, तो तू हमारे
उन पापों को हर कर ले जाता है।
4 हे परमेश्वर, तूने अपने भक्त चुने हैं।
तूने हमको चुना है कि हम तेरे मन्दिर में आयें
और तेरी उपासना करें।
हम तेरे मन्दिर में बहुत प्रसन्न हैं।
सभी अद्भुत वस्तुएं हमारे पास है।
5 हे परमेश्वर, तू हमारी रक्षा करता है।
सज्जन तेरी प्रार्थना करते,
और तू उनकी विनतियों का उत्तर देता है।
उनके लिए तू अचरज भरे काम करता है।
सारे संसार के लोग तेरे भरोसे हैं।
6 परमेश्वर ने अपनी महाशक्ति का प्रयोग
किया और पर्वत रच डाले।
उसकी शक्ति हम अपने चारों तरफ देखते हैं।
7 परमेश्वर ने उफनते हुए सागर शांत किया।
परमेश्वर ने जगत के सभी असंख्य
लोगों को बनाया है।
8 जिन अद्भुत बातों को परमेश्वर करता है,
उनसे धरती का हर व्यक्ति डरता है।
परमेश्वर तू ही हर कहीं
सूर्य को उगाता और छिपाता है।
लोग तेरा गुणगान करते हैं।
9 पृथ्वी की सारी रखवाली तू करता है।
तू ही इसे सींचता और तू ही इससे
बहुत सारी वस्तुएं उपजाता है।
हे परमेश्वर, नदियों को पानी से तू ही भरता है।
तू ही फसलों की बढ़वार करता है।
तू यह इस विधि से करता है।

10 तू जुते हुए खेतों पर वर्षा कराता है।
तू खेतों को जल से सराबोर कर देता,
और धरती को वर्षा से नरम बनाता है,
और तू फिर पौधों की बढ़वार करता है।
11 तू नये साल का आरम्भ
उत्तम फसलों से करता है।
तू भरपूर फसलों से गाड़ियाँ भर देता है।
12 वन और पर्वत दूब घास से ढक जाते हैं।
13 भेड़ों से चरागाहें भर गयी।
फसलों से घाटियाँ भरपूर हो रही हैं।
हर कोई गा रहा और आनन्द में
ऊँचा पुकार रहा है।

भजन 66

1 हे धरती की हर वस्तु,
आनन्द के साथ परमेश्वर की जय बोलो।
2 उसके महिमामय नाम की स्तुति करों!
उसका आदर उसके स्तुति गीतों से करों!
3 उसके अति अद्भुत कामों से
परमेश्वर को बखानों!
हे परमेश्वर, तेरी शक्ति बहुत बड़ी है।
तेरे शत्रु झुक जाते और वे तुझसे डरते हैं।
4 जगत के सभी लोग तेरी उपासना करें और
तेरे नाम का हर कोई गुण गायें।
5 तुम उनको देखो जो आश्चर्यपूर्ण
काम परमेश्वर ने किये!
वे वस्तुएँ हमको अचरज से भर देती है।
6 परमेश्वर ने धरती सूखी होने को सागर को
विवश किया और उसके आनन्दित
जन पैदल महानद को पार कर गये।
7 परमेश्वर अपनी महाशक्ति से
इस संसार का शासन करता है।
परमेश्वर हर कहीं लोगों पर दृष्टि रखता है।
कोई भी व्यक्ति उसके विरुद्ध नहीं हो सकता।
8 लोगों, हमारे परमेश्वर का गुणगान
तुम ऊँचे स्वर में करो।
9 परमेश्वर ने हमको यह जीवन दिया है।
वह हमारी रक्षा करता है।
10 परमेश्वर ने हमारी परीक्षा ली है।
परमेश्वर ने हमें वैसे ही परखा,
जैसे लोग आग में डालकर चाँदी परखते हैं।
11 हे परमेश्वर, तूने हमें फँदों में फँसने दिया।
तूने हम पर भारी बोझ लाद दिया।
12 तूने हमें शत्रुओं से पैरों तले रौंदवाया।
तूने हमको आग और पानी में से घसीटा।
किन्तु तू फिर भी हमें
सुरक्षित स्थान पर ले आया।
13-14 इसलिए मैं तेरे मन्दिर में
बलियाँ चढ़ाने लाऊँगा।
जब मैं विपत्ति में था, मैंने तेरी शरण माँगी
और मैंने तेरी बहुतेरी मन्नत मानी।
अब उन सब वस्तुओं को
जिनकी मैंने मन्नत मानी, अर्पित करता हूँ।
15 तुझको पापबलि अर्पित कर रहा हूँ,
और मेढ़ों के साथ सुगन्ध अर्पित करता हूँ।
तुझको बैलों और बकरों की बलि
अर्पित करता हूँ।
16 ओ सभी लोगों, परमेश्वर के आराधकों।
आओ, मैं तुम्हें बताऊँगा कि परमेश्वर ने
मेरे लिए क्या किया है।
17 मैंने उसकी विनती की।
मैंने उसका गुणगान किया।
18 मेरा मन पवित्र था,
मेरे स्वामी ने मेरी बात सुनी।
19 परमेश्वर ने मेरी सुनी।
परमेश्वर ने मेरी विनती सुन ली।
20 परमेश्वर के गुण गाओ।
परमेश्वर ने मुझसे मुँह नहीं मोड़ा।
उसने मेरी प्रार्थना को सुन लिया।
परमेश्वर ने निज करुणा मुझपर दर्शायी।

भजन 67

तार वाद्यों के संगीत निर्देशक के लिए एक स्तुति गीत।

1 हे परमेश्वर, मुझ पर करुणा कर,
और मुझे आशीष दे।
कृपा कर के, हमको स्वीकार कर।
2 हे परमेश्वर, धरती पर हर व्यक्ति
तेरे विषय में जाने।
हर राष्ट्र यह जान जाये कि लोगों की
तू कैसे रक्षा करता है।

3 हे परमेश्वर, लोग तेरे गुण गायें!
सभी लोग तेरी प्रशंसा करें।
4 सभी राष्ट्र आनन्द मनावें और आनन्दित हो!
क्योंकि तू लोगों का न्याय निष्पक्ष करता।
और हर राष्ट्र पर तेरा शासन है।
5 हे परमेश्वर, लोग तेरे गुण गायें!
सभी लोग तेरी प्रशंसा करें।
6 हे परमेश्वर, हे हमारे परमेश्वर,
हमको आशीष दे।
हमारी धरती हमको भरपूर फसल दें।
7 हे परमेश्वर, हमको आशीष दे।
पृथ्वी के सभी लोग परमेश्वर से डरे,
उसका आदर करे।

भजन 68

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक स्तुति गीत।

1 हे परमेश्वर, उठ,
अपने शत्रु को तितर बितर कर।
उसके सभी शत्रु उसके पास से भाग जायें।
2 जैसे वायु से उड़ाया हुआ धुँआ बिखर जाता है,
वैसे ही तेरे शत्रु बिखर जायें।
जैसे अग्नि में मोम पिघल जाता है,
वैसे ही तेरे शत्रुओं का नाश हो जाये।
3 परमेश्वर के साथ सज्जन सुखी होते हैं,
और सज्जन सुखद पल बिताते।
सज्जन अपने आप आनन्द मनाते
और स्वयं अति प्रसन्न रहते हैं।
4 परमेश्वर के गीत गाओ।
उसके नाम का गुणगान करों।
परमेश्वर के निमित्त राह तैयार करों।
निज रथ पर सवार होकर,
वह मरुभूमि पार करता।
याह के नाम का गुण गाओ!
5 परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर में, पिता के
समान अनाथों का और
विधवाओं का ध्यान रखता है।
6 जिसका कोई घर नहीं होता,
ऐसे अकेले जन को परमेश्वर घर देता है।
निज भक्तों को परमेश्वर बंधन मुक्त करता है।
वे अति प्रसन्न रहते हैं।
किन्तु जो परमेश्वर के विरुद्ध होते,
उनको तपती हुयी धरती पर रहना होगा।
7 हे परमेश्वर, तूने निज
भक्तों को मिस्र से निकाला,
और मरुभूमि से पैदल ही पार निकाला।
8 इस्राएल का परमेश्वर जब सिय्योन पर्वत
पर आया था, धरती काँप उठी थी,
और आकाश पिघला था।
9 हे परमेश्वर, वर्षा को तूने भेजा था,
और पुरानी तथा दुर्बल पड़ी धरती को
तूने फिर सशक्त किया।
10 उसी धरती पर तेरे पशु वापस आ गये।
हे परमेश्वर, वहाँ के दीन लोगों को
तूने उत्तम वस्तुएँ दी।
11 परमेश्वर ने आदेश दिया
और बहुत जन सुसन्देश को सुनाने गये:
12 "बलशाली राजाओं की सेनाएं
इधर-उधर भाग गयी!
युद्ध से जिन वस्तुओं को सैनिक लातें हैं,
उनको घर पर रुकी स्त्रियाँ बाँट लेंगी।
जो लोग घर में रुके हैं,
वे उस धन को बाँट लेंगे।
13 वे चाँदी से मढ़े हुए कबूतर के पंख पायेंगे।
वे सोने से चमकते हुए पंखों को पायेंगे।"
14 परमेश्वर ने जब सल्मूल पर्वत पर
शत्रु राजाओं को बिखेरा, तो वे ऐसे
छितराये जैसे हिम गिरता है।
15 बाशान पर्वत महान पर्वत है,
जिसकी चोटियाँ बहुत सी हैं।
16 बाशान पर्वत, तुम क्यों सिय्योन पर्वत
को छोटा समझते हो?
परमेश्वर उससे प्रेम करता है।
परमेश्वर ने उसे वहाँ सदा
रहने के लिए चुना है।
17 यहोवा पवित्र पर्वत सिय्योन पर आ रहा है।
और उसके पीछे उसके लाखों ही रथ हैं
18 वह ऊँचे पर चढ़ गया।
उसने बंदियों कि अगुवाई की;
उसने मनुष्यों से यहाँ तक कि
अपने विरोधियों से भी भेंटे ली।

यहोवा परमेश्वर वहाँ रहने गया।

19 यहोवा के गुण गाओ! वह प्रति दिन हमारी,
हमारे संग भार उठाने में सहायता करता है।
परमेश्वर हमारी रक्षा करता है!

20 वह हमारा परमेश्वर है।
वह वही परमेश्वर है जो हमको बचाता है।
हमारा यहोवा परमेश्वर मृत्यु से
हमारी रक्षा करता है।

21 परमेश्वर दिखा देगा कि अपने शत्रुओं को
उसने हरा दिया है।
ऐसे उन व्यक्तियों को जो
उसके विरुद्ध लड़े, वह दण्ड देगा।

22 मेरे स्वामी ने कहा, "मैं बाशान से
शत्रु को वापस लाऊँगा,
मैं शत्रु को समुद्र की गहराई से वापस लाऊँगा,

23 ताकि तुम उनके रक्त में विचर सको,
तुम्हारे कुत्ते उनका रक्त चाट जायें।"

24 लोग देखते हैं, परमेश्वर को विजय
अभियान की अगुवाई करते हुए।
लोग मेरे पवित्र परमेश्वर,
मेरे राजा को विजय अभियान का
अगुवाई करते देखते हैं।

25 आगे-आगे गायकों की मण्डली चलती है,
पीछे-पीछे वादकों की मण्डली आ रही हैं,
और बीच में कुमारियाँ तम्बूरें बजा रही है।

26 परमेश्वर की प्रशंसा महासभा के बीच करो!
इस्राएल के लोगों, तुम यहोवा के गुण गाओ!

27 छोटा बिन्यामीन उनकी अगुवायी कर रहा है।
यहूदा का बड़ा परिवार वहाँ है।
जबूलून तथा नपताली के नेता वहाँ पर हैं।

28 हे परमेश्वर, हमें निज शक्ति दिखा।
हमें वह निज शक्ति दिखा
जिसका उपयोग तूने हमारे लिए
बीते हुए काल में किया था।

29 राजा लोग, यरुशलेम में तेरे मन्दिर के
लिए निज सम्पत्ति लायेंगे।

30 उन "पशुओं" से काम वांछित कराने के लिये
निज छड़ी का प्रयोग कर।
उन जातियों के "बैलों" और "गायों" को
आज्ञा मानने वालें बना।
तूने जिन राष्ट्रों को युद्ध में हराया।
अब तू उनसे चाँदी मंगवा ले।

31 तू उनसे मिस्र से धन मँगवा ले।
हे परमेश्वर, तू अपने
धन कूश से मँगवा ले।

32 धरती के राजाओं, परमेश्वर के लिए गाओं!
हमारे स्वामी के लिए तुम यशगान गाओ!

33 परमेश्वर के लिये गाओ!
वह रथ पर चढ़कर
सनातन आकाशों से निकलता है।
तुम उसके शक्तिशाली स्वर को सुनों!

34 इस्राएल का परमेश्वर, तुम्हारे
किसी भी देवों से अधिक बलशाली है।
वह जो निज भक्तों को सुदृढ़ बनाता।

35 परमेश्वर अपने मन्दिर में अद्भुत है।
इस्राएल का परमेश्वर भक्तों को
शक्ति और सामर्थ्य देता है।
परमेश्वर के गुण गाओ!

भजन 69

'कुमुदिनी' नामक धुन पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक भजन।

1 हे परमेश्वर, मुझको मेरी सब विपत्तियों से
बचा! मेरे मुँह तक पानी चढ़ आया है।

2 कुछ भी नहीं है जिस पर मैं खड़ा हो जाऊँ।
मैं दलदल के बीच नीचे
धँसता ही चला जा रहा हूँ।
मैं नीचे धंस रहा हूँ।
मैं अगाध जल में हूँ और मेरे चारों
तरफ लहरें पछाड़ खा रही है।
बस, मैं डूबने को हूँ।

3 सहायता को पुकारते
मैं दुर्बल होता जा रहा हूँ।
मेरा गला दुःख रहा है।
मैं बाट जोह रहा हूँ
तुझसे सहायता पाने और देखते-देखते
मेरी आँखें दुःख रही है।

4 मेरे शत्रु! मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं।
वे मुझसे व्यर्थ बैर रखते हैं।
वे मेरे विनाश की जुगत बहुत करते हैं।

मेरे शत्रु मेरे विषय में झूठी बातें बनाते हैं।
उन्होंने मुझको झूठे ही चोर बताया।
और उन वस्तुओं की भरपायी करने को मुझे
विवश किया, जिनको
मैंने चुराया नहीं था।

5 हे परमेश्वर, तू तो जानता है कि
मैंने कुछ अनुचित नहीं किया।
मैं अपने पाप तुझसे नहीं छिपा सकता।

6 हे मेरे स्वामी, हे सर्वशक्तिमान यहोवा,
तू अपने भक्तों को मेरे कारण
लज्जित मत होने दें।
हे इस्राएल के परमेश्वर,
ऐसे उन लोगों को मेरे लिए असमंजस में
मत डाल जो तेरी उपासना करते हैं।

7 मेरा मुख लाज से झुक गया।
यह लाज मैं तेरे लिए ढोता हूँ।

8 मेरे ही भाई, मेरे साथ यूँ ही बर्ताव करते हैं।
जैसे बर्ताव किसी अजनबी से करते हों।
मेरे ही सहोदर, मुझे पराया समझते है।

9 तेरे मन्दिर के प्रति मेरी तीव्र लगन ही
मुझे जलाये डाल रही है।
वे जो तेरा उपहास करते हैं
वह मुझ पर आन पडा है।

10 मैं तो पुकारता हूँ और उपवास करता हूँ,
इसलिए वे मेरी हँसी उड़ाते हैं।

11 मैं निज शोक दर्शाने के लिए
मोटे वस्त्रों को पहनता हूँ,
और लोग मेरा मजाक उड़ाते हैं।

12 वे जनता के बीच मेरी चर्चायें करते,
और पियक्कड़ मेरे गीत रचा करते हैं।

13 हे यहोवा, जहाँ तक मेरी बात है,
मेरी तुझसे यह विनती है कि मैं चाहता हूँ:
तू मुझे अपना ले!
हे परमेश्वर, मैं चाहता हूँ कि तू मुझको
प्रेम भरा उत्तर दे।
मैं जानता हूँ कि मैं तुझ पर
सुरक्षा का भरोसा कर सकता हूँ।

14 मुझको दलदल से उबार ले।
मुझको दलदल के बीच मत डूबने दे।
मुझको मेरे बैरी लोगों से तू बचा ले।
तू मुझको इस गहरे पानी से बचा ले।

15 बाढ की लहरों को मुझे डुबाने न दे।
गहराई को मुझे निगलने न दे।
कब्र को मेरे ऊपर अपना
मुँह बन्द न करने दे।

16 हे यहोवा, तेरी करुणा खरी है।
तू मुझको निज सम्पूर्ण प्रेम से उत्तर दे।
मेरी सहायता के लिए अपनी सम्पूर्ण
कृपा के साथ मेरी ओर मुख कर!

17 अपने दास से मत मुख मोड़।
मैं संकट में पड़ा हूँ! मुझको शीघ्र सहारा दे।

18 आ, मेरे प्राण बचा ले।
तू मुझको मेरे शत्रुओं से छुड़ा ले।

19 तू मेरा निरादर जानता है।
तू जानता है कि मेरे शत्रुओं ने
मुझे लज्जित किया है।
उन्हें मेरे संग ऐसा करते तूने देखा है।

20 निन्दा ने मुझको चकनाचूर कर दिया है!
बस निन्दा के कारण मैं मरने पर हूँ।
मैं सहानुभूति की बाट जोहता रहा,
मैं सान्त्वना की बाट जोहता रहा,
किन्तु मुझको तो कोई भी नहीं मिला।

21 उन्होंने मुझे विष दिया, भोजन नहीं दिया।
सिरका मुझे दे दिया, दाखमधु नहीं दिया।

22 उनकी मेज खानों से भरी है
वे इतना विशाल सहभागिता भोज कर रहे हैं।
मैं आशा करता हूँ कि वे खाना उन्हें नष्ट करें।

23 वे अंधे हो जायें
और उनकी कमर झुक कर दोहरी हो जाये।

24 ऐसे लगे कि उन पर तेरा भरपूर
क्रोध टूट पड़ा है।

25 उनके घरों को तू खाली बना दे।
वहाँ कोई जीवित न रहे।

26 उनको दण्ड दे, और वे दूर भाग जायें।
फिर उनके पास, उनकी बातों के विषय में
उनके दर्द और घाव हो।

27 उनके बुरे कर्मों का उनको दण्ड दे,
जो उन्होंने किये हैं।
उनको मत दिखला
कि तू और कितना भला हो सकता है।

28 जीवन की पुस्तक से उनके नाम मिटा दे।
सज्जनों के नामों के साथ तू उनके नाम
उस पुस्तक में मत लिख।
29 मैं दुःखी हूँ और दर्द में हूँ।
हे परमेश्वर, मुझको उबार ले।
मेरी रक्षा कर!
30 मैं परमेश्वर के नाम का गुण गीतों में गाऊँगा।
मैं उसका यश धन्यवाद के गीतों से गाऊँगा।
31 परमेश्वर इससे प्रसन्न हो जायेगा।
ऐसा करना एक बैल की बलि या पूरे पशु
की ही बलि चढ़ाने से अधिक उत्तम है।
32 अरे दीन जनों, तुम परमेश्वर की
आराधना करने आये हो। अरे दीन लोगों!
इन बातों को जानकर तुम प्रसन्न हो जाओगे।
33 यहोवा, दीनों और असहायों की सुना करता है।
यहोवा उन्हें अब भी चाहता है,
जो लोग बंधन में पड़े हैं।
34 हे स्वर्ग और हे धरती,
हे सागर और इसके बीच जो भी समाया है।
परमेश्वर की स्तुति करो!
35 यहोवा सिय्योन की रक्षा करेगा!
यहोवा यहूदा के नगर का फिर निर्माण करेगा।
वे लोग जो इस धरती के स्वामी हैं,
फिर वहाँ रहेंगे!
36 उसके सेवकों की संताने उस धरती को पायेगी।
और ऐसे वे लोग निवास करेंगे
जिन्हें उसका नाम प्यारा है।

भजन 70

लोगों को याद दिलाने के लिये संगीत निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1 हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर!
हे परमेश्वर, जल्दी कर
और मुझको सहारा दे!
2 लोग मुझे मार डालने का जतन कर रहे हैं।
उन्हें निराश और अपमानित कर दे!
ऐसा चाहते हैं कि लोग मेरा बुरा कर डाले।
उनका पतन ऐसा हो जाये कि वे लज्जित हो।
3 लोगों ने मुझको हँसी ठट्टों में उड़ाया।
मैं उनकी पराजय की आस करता हूँ
और इस बात की कि उन्हें लज्जा अनुभव हो।
4 मुझको यह आस है कि ऐसे वे सभी लोग
जो तेरी आराधना करते हैं,
वह अति प्रसन्न हों।
वे सभी लोग तेरी सहायता की आस रहते हैं
वे तेरी सदा स्तुति करते रहें।
5 हे परमेश्वर, मैं दीन और असहाय हूँ।
जल्दी कर! आ, और मुझको सहारा दे!
हे परमेश्वर, तू ही बस ऐसा है जो
मुझको बचा सकता है,अधिक देर मत कर!

भजन 71

1 हे यहोवा, मुझको तेरा भरोसा है,
इसलिए मैं कभी निराश नहीं होऊँगा।
2 अपनी नेकी से तू मुझको बचायेगा।
तू मुझको छुड़ा लेगा।
मेरी सुन।
मेरा उद्धार कर।
3 तू मेरा गढ़ बन।
सुरक्षा के लिए ऐसा गढ़
जिसमें मैं दौड़ जाऊँ।
मेरी सुरक्षा के लिए तू आदेश दे,
क्योंकि तू ही तो मेरी चट्टान है;
मेरा शरणस्थल है।
4 मेरे परमेश्वर, तू मुझको दुष्ट जनों से बचा ले।
तू मुझको क्रूरों कुटिल जनों से छुड़ा ले।
5 मेरे स्वामी, तू मेरी आशा है।
मैं अपने बचपन से ही तेरे भरोसे हूँ।
6 जब मैं अपनी माता के गर्भ में था,
तभी से तेरे भरोसे था। जिस दिन से
जिस दिन से मैंने जन्म धारण किया,
मैं तेरे भरोसे हूँ।
मैं तेरी प्रार्थना सदा करता रहा हूँ।
7 मैं दूसरे लोगों के लिए एक उदाहरण रहा हूँ।
क्योंकि तू मेरा शक्ति स्रोत रहा है।
8 उन अद्भुत कर्मो को सदा गाता रहा हूँ,
जिनको तू करता है।
9 केवल इस कारण की मैं बूढ़ा हो गया हूँ
मुझे निकाल कर मत फेंक।
मैं कमजोर हो गया हूँ मुझे मत छोड़।

10 सचमुच, मेरे शत्रुओं ने मेरे विरुद्ध
कुचक्र रच डाले हैं।
सचमुच वे सब इकटठे हो गये हैं,
और उनकी योजना मुझको मार डालने की है।
11 मेरे शत्रु कहते हैं, "परमेश्वर ने
उसको त्याग दिया है।
जा, उसको पकड़ ला!
कोई भी व्यक्ति उसे सहायता न देगा।"
12 हे परमेश्वर, तू मुझको मत बिसरा!
हे परमेश्वर, जल्दी कर!
मुझको सहारा दे!
13 मेरे शत्रुओं को तू पूरी तरह से पराजित कर दे!
तू उनका नाश कर दे!
मुझे कष्ट देने का वे यत्न कर रहे हैं।
वे लज्जा अनुभव करें और अपमान भोगें।
14 फिर मैं तो तेरे ही भरोसे, सदा रहूँगा।
और तेरे गुण मैं अधिक और अधिक गाऊँगा।
15 सभी लोगों से, मैं तेरा बखान करुँगा कि
तू कितना उत्तम है।
उस समय की बातें मैं उनको बताऊँगा,
जब तूने ऐसे मुझको एक नहीं
अनगिनित अवसर पर बचाया था।
16 हे यहोवा, मेरे स्वामी।
मैं तेरी महानता का वर्णन करुँगा।
बस केवल मैं तेरी और तेरी ही
अच्छाई की चर्चा करुँगा।
17 हे परमेश्वर, तूने मुझको बचपन से ही शिक्षा दी।
मैं आज तक बखानता रहा हूँ,
उन अद्भुत कर्मो को जिनको तू करता है!
18 मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे केश श्वेत है।
किन्तु मैं जानता हूँ कि तू मुझको नहीं तजेगा।
हर नयी पीढ़ी से, मैं तेरी शक्ति का
और तेरी महानता का वर्णन करुँगा।
19 हे परमेश्वर, तेरी धार्मिकता
आकाशों से ऊँची है।
हे परमेश्वर, तेरे समान अन्य कोई नहीं।
तूने अदभुत आश्चर्यपूर्ण काम किये हैं।
20 तूने मुझे बुरे समय और कष्ट देखने दिये।
किन्तु तूने ही मुझे उन सब से बचा लिया
और जीवित रखा है।
इसका कोई अर्थ नहीं, मैं कितना ही गहरा डूबा
तूने मुझको मेरे संकटों से उबार लिया।
21 तू ऐसे काम करने की मुझको सहायता दे
जो पहले से भी बड़े हो।
मुझको सुख चैन देता रह।
22 वीणा के संग, मैं तेरे गुण गाऊँगा।
हे मेरे परमेश्वर, मैं यह गाऊँगा कि
तुझ पर भरोसा रखा जा सकता है।
मैं उसके लिए गीत अपनी सितार पर
बजाया करुँगा जो
इस्राएल का पवित्र यहोवा है।
23 मेरे प्राणों की तूने रक्षा की है।
मेरा मन मगन होगा
और अपने होंठों से, मैं प्रशंसा का गीत गाऊँगा।
24 मेरी जीभ हर घड़ी तेरी
धार्मिकता के गीत गाया करेगी।
ऐसे वे लोग जो मुझको मारना चाहते हैं,
वे पराजित हो जायेंगे और अपमानित होंगे।

भजन 72

दाऊद के लिये।

1 हे परमेश्वर, राजा की सहायता कर ताकि
वह भी तेरी तरह से विवेकपूर्ण न्याय करे।
राजपुत्र की सहायता कर ताकि
वह तेरी धार्मिकता जान सके।
2 राजा की सहायता कर कि तेरे भक्तों का
वह निष्पक्ष न्याय करें।
सहायता कर उसकी कि वह दीन जनों के
साथ उचित व्यवहार करे।
3 धरती पर हर कहीं शांति और न्याय रहे।
4 राजा, निर्धन लोगों के प्रति न्यायपूर्ण रहे।
वह असहाय लोगों की सहायता करे।
वे लोग दण्डित हो जो उनको सताते हो।
5 मेरी यह कामना है कि जब तक सूर्य आकाश
में चमकता है, और चन्द्रमा आकाश में है।
लोग राजा का भय मानें।
मेरी आशा है कि लोग उसका भय सदा मानेंगे।
6 राजा की सहायता, धरती पर पड़ने वाली
बरसात बनने में कर।
उसकी सहायता कर कि वह खेतों में

पडने वाली बौछार बने।

7 जब तक वह राजा है, भलाई फूले-फले।
जब तक चन्द्रमा है, शांति बनी रहे।

8 उसका राज्य सागर से सागर तक तथा परात
नदी से लेकर सुदूर धरती तक फैल जाये।

9 मरुभूमि के लोग उसके आगे झुके।
और उसके सब शत्रु उसके आगे औंधे मुँह
गिरे हुए धरती पर झुकें।

10 तर्शीश का राजा और दूर देशों के राजा
उसके लिए उपहार लायें।
शेबा के राजा और सबा के राजा
उसको उपहार दे।

11 सभी राजा हमारे राजा के आगे झुके।
सभी राष्ट्र उसकी सेवा करते रहें।

12 हमारा राजा असहायों का सहायक है।
हमारा राजा दीनों और
असहाय लोगों को सहारा देता है।

13 दीन, असहाय जन उसके सहारे हैं।
यह राजा उनको जीवित रखता है।

14 यह राजा उनको उन लोगों से बचाता है,
जो क्रूर हैं और जो उनको दुःख देना चाहते हैं।
राजा के लिये उन दीनों का
जीवन बहुत महत्त्वपूर्ण है।

15 राजा दीर्घायु हो! और शेबा से सोना प्राप्त करें।
राजा के लिए सदा प्रार्थना करते रहो,
और तुम हर दिन उसको आशीष दो।

16 खेत भरपूर फसल दे।
पहाड़ियाँ फसलों से ढक जायें।
ये खेत लबानोन के खेतों से उपजाऊँ हो जायें।
नगर लोगों की भीड़ से भर जाये,
जैसे खेत घनी घास से भर जाते हैं।

17 राजा का यश सदा बना रहे।
लोग उसके नाम का स्मरण तब तक करते रहें,
जब तक सूर्य चमकता है।
उसके कारण सारी प्रजा धन्य हो जाये
और वे सभी उसको आशीष दे।

18 यहोवा परमेश्वर के गुण गाओं,
जो इस्राएल का परमेश्वर है!
वही परमेश्वर
ऐसे आश्चर्यकर्म कर सकता है।

19 उसके महिमामय नाम की प्रशंसा सदा करो!
उसकी महिमा समस्त संसार में भर जाये!
आमीन और आमीन!

20 यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएं समाप्त हुई।

तीसरा भाग

भजन 73

आसाप का स्तुति गीत।

1 सचमुच, इस्राएल के प्रति परमेश्वर भला है।
परमेश्वर उन लोगों के लिए भला होता है
जिनके हृदय स्वच्छ है।

2 मैं तो लगभग फिसल गया था
और पाप करने लगा।

3 जब मैंने देखा कि पापी सफल हो रहे हैं
और शांति से रह रहे हैं, तो
उन अभिमानी लोगों से मुझको जलन हुयी।

4 वे लोग स्वस्थ हैं उन्हें जीवन के लिए
संघर्ष नहीं करना पड़ता है।

5 वे अभिमानी लोग पीड़ायें नहीं उठाते है।
जैसे हमलोग दुःख झेलते हैं, वैसे उनको
औरों की तरह यातनाएँ नहीं होती।

6 इसलिए वे अहंकार से भरे रहते हैं।
और वे घृणा से भरे हुए रहते हैं।
ये वैसा ही साफ दिखता है, जैसे रत्न और वे
सुन्दर वस्त्र जिनको वे पहने हैं।

7 वे लोग ऐसे है कि यदि कोई वस्तु देखते हैं
और उनको पसन्द आ जाती है,
तो उसे बढ़कर झपट लेते हैं।
वे वैस ही करते हैं, जैसे उन्हें भाता है।

8 वे दूसरों के बारें में क्रूर बातें
और बुरी बुरी बातें कहते है।
वे अहंकारी और हठी है।
वे दूसरे लोगों से लाभ उठाने का
रास्ता बनाते है।

9 अभिमानी मनुष्य सोचते हैं वे देवता हैं!
वे अपने आप को धरती का शासक समझते हैं।

10 यहाँ तक कि परमेश्वर के जन,
उन दुष्टों की ओर मुड़ते और जैसा
वे कहते है, वैसा विश्वास कर लेते हैं।

11 वे दुष्ट जन कहते हैं, "हमारे उन कर्मो को
परमेश्वर नहीं जानता!
जिनकों हम कर रहे हैं!"
12 वे मनुष्य अभिमान और कुटिल हैं,
किन्तु वे निरन्तर धनी और अधिक
धनी होते जा रहे हैं।
13 सो मैं अपना मन पवित्र क्यों बनाता रहूँ?
अपने हाथों को सदा निर्मल क्यों करता रहूँ?
14 हे परमेश्वर, मैं सारे ही दिन
दु:ख भोगा करता हूँ।
तू हर सुबह मुझको दण्ड देता है।
15 हे परमेश्वर, मैं ये बातें दूसरो को
बताना चाहता था।
किन्तु मैं जानता था और
मैं ऐसे ही तेरे भक्तों के विरुद्ध हो जाता था।
16 इन बातों को समझने का, मैंने जतन किया
किन्तु इनका समझना
मेरे लिए बहुत कठिन था,
17 जब तक मैं तेरे मन्दिर में नहीं गया।
मैं परमेश्वर के मन्दिर में गया
और तब मैं समझा।
18 हे परमेश्वर, सचमुच तूने उन
लोगों को भयंकर परिस्थिति में रखा है।
उनका गिर जाना बहुत ही सरल है।
उनका नष्ट हो जाना बहुत ही सरल है।
19 सहसा उन पर विपत्ति पड़ सकती है,
और वे अहंकारी जन नष्ट हो जाते हैं।
उनके साथ भयंकर घटनाएँ घट सकती हैं,
और फिर उनका अंत हो जाता है।
20 हे यहोवा, वे मनुष्य ऐसे होंगे जैसे स्वप्न
जिसको हम जागते ही भूल जाते हैं।
तू ऐसे लोगों को हमारे स्वप्न के भयानक
जन्तु की तरह अदृश्य कर दे।
21–22 मैं अज्ञान था।
मैंने धनिकों और दुष्ट लोगों पर विचारा,
और मैं व्याकुल हो गया।
हे परमेश्वर, मैं तुझ पर क्रोधित हुआ!
मैं निर्बुद्धि जानवर सा व्यवहार किया।
23 वह सब कुछ मेरे पास है,
जिसकी मुझे अपेक्षा है।
मैं तेरे साथ हरदम हूँ।
हे परमेश्वर, तू मेरा हाथ थामें है।
24 हे परमेश्वर, तू मुझे मार्ग दिखलाता,
और मुझे सम्मति देता है।
अंत में तू अपनी महिमा में
मेरा नेतृत्व करेगा।
25 हे परमेश्वर, स्वर्ग में बस तू ही मेरा है,
और धरती पर मुझे क्या चाहिए,
जब तू मेरे साथ है?
26 चाहे मेरा मन टूट जाये और मेरी काया नष्ट हो
जाये किन्तु वह चट्टान मेरे पास है,
जिसे मैं प्रेम करता हूँ।
परमेश्वर मेरे पास सदा है!
27 हे परमेश्वर, जो लोग तुझको त्यागते हैं,
वे नष्ट हो जाते है।
जिनका विश्वास तुझमें नहीं तू
उन लोगों को नष्ट कर देगा।
28 किन्तु, मैं परमेश्वर के निकट आया।
मेरे साथ परमेश्वर भला है,
मैंने अपना सुरक्षास्थान अपने
स्वामी यहोवा को बनाया है।
हे परमेश्वर, मैं उन सभी बातों का
बखान करूँगा जिनको तूने किया है।

भजन 74

आसाप का एक प्रगीत।

1 हे परमेश्वर, क्या तूने हमें
सदा के लिये बिसराया है?
क्योंकि तू अभी तक अपने निज
जनों से क्रोधित है?
2 उन लोगों को स्मरण कर जिनको तूने
बहुत पहले मोल लिया था।
हमको तूने बचा लिया था।
हम तेरे अपने हैं।
याद कर तेरा निवास सिय्योन के पहाड़ पर था।
3 हे परमेश्वर, आ और इन अति प्राचीन
खण्डहरों से हो कर चल।
तू उस पवित्र स्थान पर लौट कर आजा
जिसको शत्रु ने नष्ट कर दिया है।
4 मन्दिर में शत्रुओं ने विजय उद्घोष किया।

उन्होंने मन्दिर में निज झंडों को यह प्रकट
करने के लिये गाड़ दिया है कि
उन्होंने युद्ध जीता है।
5 शत्रुओं के सैनिक ऐसे लग रहे थे,
जैसे कोई खुरपी खरपतवार पर चलाती हो।
6 हे परमेश्वर, इन शत्रु सैनिकों ने निज
कुल्हाडे और फरसों का प्रयोग किया,
और तेरे मन्दिर की नक्काशी फाड़ फेंकी।
7 परमेश्वर इन सैनिकों ने तेरा
पवित्र स्थान जला दिया।
तेरे मन्दिर को धूल में मिला दिया,
जो तेरे नाम को मान देने हेतु बनाया गया था।
8 उस शत्रु ने हमको पूरी तरह
नष्ट करने की ठान ली थी।
सो उन्होंने देश के
हर पवित्र स्थल को फूँक दिया।
9 कोई संकेत हम देख नहीं पाये।
कोई भी नबी बच नहीं पाया था।
कोई भी जानता नहीं था क्या किया जाये।
10 हे परमेश्वर, ये शत्रु
कब तक हमारी हँसी उड़ायेंगे?
क्या तू इन शत्रुओं को तेरे नाम का अपमान
सदा सर्वदा करने देगा?
11 हे परमेश्वर, तूने इतना कठिन दण्ड
हमकों क्यों दिया?
तूने अपनी महाशक्ति का प्रयोग किया
और हमें पूरी तरह नष्ट किया!
12 हे परमेश्वर, बहुत दिनों से
तू ही हमारा शासक रहा।
इस देश में तूने अनेक युद्ध जीतने में
हमारी सहायता की।
13 हे परमेश्वर, तूने अपनी महाशक्ति से
लाल सागर के दो भाग कर दिये।
14 तूने विशालकाय समुद्री
दानवों को पराजित किया!
तूने लिव्यातान के सिर कुचल दिये,
और उसके शरीर को जंगली पशुओं
को खाने के लिये छोड़ दिया।
15 तूने नदी, झरने रचे, फोड़कर जल बहाया।
तूने उफनती हुई नदियों को सुखा दिया।
16 हे परमेश्वर, तू दिन का शासक है,
और रात का भी शासक तू ही है।
तूने ही चाँद और सूरज को बनाया।
17 तू धरती पर सब की सीमाएँ बाँधता है।
तूने ही गर्मी और सर्दी को बनाया।
18 हे परमेश्वर, इन बातों को याद कर।
और याद कर की शत्रु ने
तेरा अपमान किया है।
वे मूर्ख लोग तेरे नाम से बैर रखते हैं!
19 हे परमेश्वर, उन जंगली पशुओं को
निज कपोत मत लेने दे!
अपने दीन जनों को तू सदा मत बिसरा।
20 हमने जो आपस में वाचा की है
उसको याद कर, इस देश में हर
किसी अँधेरे स्थान पर हिंसा है।
21 हे परमेश्वर, तेरे भक्तों के साथ
अत्याचार किये गये,
अब उनको और अधिक मत सताया जाने दे।
तेरे असहाय दीन जन, तेरे गुण गाते है।
22 हे परमेश्वर, उठ और प्रतिकार कर!
स्मरण कर की उन मूर्ख लोगों ने सदा ही
तेरा अपमान किया है।
23 वे बुरी बातें मत भूल जिन्हें तेरे शत्रुओं ने
प्रतिदिन तेरे लिये कही।
भूल मत कि वे किस तरह तेरे से
युद्ध करते समय गुर्राये।

भजन 75

'नष्ट मत कर' नामक धुन पर संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक स्तुति गीत।

1 हे परमेश्वर, हम तेरी प्रशंसा करते हैं!
हम तेरे नाम का गुणगान करते हैं!
तू समीप है और लोग तेरे उन अद्‌भुत कर्मों का
जिनको तू करता है, बखान करते हैं।
2 परमेश्वर कहता है, "मैंने न्याय का
समय चुन लिया,
मैं निष्पक्ष होकर के न्याय करुँगा।
3 धरती और धरती की हर वस्तु
डगमगा सकती है और
गिरने को तैयार हो सकती है,

किन्तु मैं ही उसे स्थिर रखता हूँ।"
4-5 "कुछ लोग बहुत ही अभिमानी होते हैं,
वे सोचते रहते है कि
वे बहुत शक्तिशाली और महत्त्वपूर्ण है।
लेकिन उन लोगों को बता दो, 'डींग मत हाँकों!'
'इतने अभिमानी मत बने रह!'"
6 इस धरती पर सचमुच, कोई भी
मनुष्य नीच को महान नहीं बना सकता।
7 परमेश्वर न्याय करता है।
परमेश्वर इसका निर्णय करता है कि
कौन व्यक्ति महान होगा।
परमेश्वर ही किसी व्यक्ति को
महत्त्वपूर्ण पद पर बिठाता है।
और किसी दूसरे को नीची दशा में पहुँचाता है।
8 परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देने को तत्पर है।
परमेश्वर के पास विष मिला हुआ मधु पात्र है।
परमेश्वर इस दाखमधु (दण्ड) को उण्डेलता है
और दुष्ट जन उसे अंतिम बूँद तक पीते हैं।
9 मैं लोगों से इन बातों का सदा बखान करुँगा।
मैं इस्राएल के परमेश्वर के गुण गाऊँगा।
10 मैं दुष्ट लोगों की शक्ति को छीन लूँगा,
और मैं सज्जनों को शक्ति दूँगा।

भजन 76

तार वाद्यों के संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक प्रगीत।

1 यहूदा के लोग परमेश्वर को जानते हैं।
इस्राएल जानता है कि सचमुच
परमेश्वर का नाम बड़ा है।
2 परमेश्वर का मन्दिर शालेम में स्थित है।
परमेश्वर का घर सिय्योन के पर्वत पर है।
3 उस जगह पर परमेश्वर ने धनुष-बाण,
ढाल, तलवारे और युद्ध के
दूसरे शस्त्रों को तोड़ दिया।
4 हे परमेश्वर, जब तू उन पर्वतों से लौटता है,
जहाँ तूने अपने शत्रुओं को हरा दिया था,
तू महिमा से मण्डित रहता है।
5 उन सैनिकों ने सोचा की वे बलशाली है।
किन्तु वे अब रणक्षेत्रों में मरे पड़े हैं।
उनके शव जो कुछ भी उनके साथ था,
उस सब कुछ के रहित पड़े हैं।
उन बलशाली सैनिकों में कोई ऐसा नहीं था,
जो आप स्वयं का रक्षा कर पाता।
6 याकूब का परमेश्वर उन सैनिकों पर गरजा
और वह सेना रथों और
अश्वों सहित गिरकर मर गयी।
7 हे परमेश्वर, तू भय विस्मयपूर्ण है!
जब तू कुपित होता है तेरे सामने
कोई व्यक्ति टिक नहीं सकता।
8-9 न्यायकर्ता के रुप में यहोवा ने खड़े होकर
अपना निर्णय सुना दिया।
परमेश्वर ने धरती के नम्र लोगों को बचाया।
स्वर्ग से उसने अपना निर्णय दिया और
सम्पूर्ण धरती शब्द रहित और भयभीत हो गई।
10 हे परमेश्वर, जब तू दुष्टों को दण्ड देता है।
लोग तेरा गुण गाते हैं।
तू अपना क्रोध प्रकट करता है और
शेष बचे लोग बलशाली हो जाते हैं।
11 लोग परमेश्वर की मन्नतें मानेंगे और वे उन
वस्तुओं को जिनकी मन्नतें उन्होंने मानीं हैं,
यहोवा को अर्पण करेंगे।
लोग हर किसी स्थान से
उस परमेश्वर को उपहार लायेंगे।
12 परमेश्वर बड़े बड़े सम्राटों को हराता है।
धरती के सभी शासकों उसका भय मानों।

भजन 77

यदूतून राग पर संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक पद।

1 मैं सहायता पाने के लिये परमेश्वर को पुकारुँगा।
हे परमेश्वर, मैं तेरी विनती करता हूँ,
तू मेरी सुन ले!
2 हे मेरे स्वामी, मुझ पर जब दुःख पड़ता है,
मैं तेरी शरण में आता हूँ।
मैं सारी रात तुझ तक पहुँचने में जुझा हूँ।
मेरा मन चैन पाने को नहीं माना।
3 मैं परमेश्वर का मनन करता हूँ, और
मैं जतन करता रहता हूँ कि मैं उससे बात करुँ
और बता दूँ कि मुझे कैसा लग रहा है।

किन्तु हाय मैं ऐसा नहीं कर पाता।
4 तू मुझे सोने नहीं देगा।
मैंने जतन किया है कि मैं कुछ कह डालूँ,
किन्तु मैं बहुत घबराया था।
5 मैं अतीत की बातें सोचते रहा।
बहुत दिनों पहले जो बातें घटित हुई थी
उनके विषय में मैं सोचता ही रहा।
6 रात में, मैं निज गीतों के विषय में सोचता हूँ।
मैं अपने आप से बातें करता हूँ,
और मैं समझने का यत्न करता हूँ।
7 मुझको यह हैरानी है, "क्या हमारे स्वामी ने
हमे सदा के लिये त्यागा है?
क्या वह हमको फिर नहीं चाहेगा?
8 क्या परमेश्वर का प्रेम सदा को जाता रहा?
क्या वह हमसे फिर कभी बात करेगा?
9 क्या परमेश्वर भूल गया है कि दया
क्या होती है?
क्या उसकी करुणा क्रोध में बदल गयी है?"
10 फिर यह सोचा करता हूँ, "वह बात जो मुझे
खाये डाल रही है:
'क्या परम परमेश्वर अपना
निज शक्ति खो बैठा है?'"
11 याद करो वे शक्ति भरे काम
जिनको यहोवा ने किये।
हे परमेश्वर, जो काम तूने बहुत समय
पहले किये मुझको याद है।
12 मैंने उन सभी कामों को
जिनको तूने किये है मनन किया।
जिन कामों को तूने किया मैंने सोचा है।
13 हे परमेश्वर, तेरी राहें पवित्र हैं।
हे परमेश्वर, कोई भी महान नहीं है,
जैसा तू महान है।
14 तू ही वह परमेश्वर है
जिसने अद्‌भुत कार्य किये।
तू ने लोगों को अपनी निज महाशक्ति दर्शायी।
15 तूने निज शक्ति का प्रयोग किया
और भक्तों को बचा लिया।
तूने याकूब और यूसुफ की संताने बचा ली।
16 हे परमेश्वर, तुझे सागर ने देखा
और वह डर गया।
गहरा समुद्र भय से थर थर काँप उठा।
17 सघन मेघों से उनका जल छूट पड़ा था।
ऊँचे मेघों से तीव्र गर्जन लोगों ने सुना।
फिर उन बादलों से बिजली के
तेरे बाण सारे बादलों में कौंध गये।
18 कौंधती बिजली में झँझावान ने तालियाँ
बजायी जगत चमक-चमक उठा।
धरती हिल उठी और थर थर काँप उठी।
19 हे परमेश्वर, तू गहरे समुद्र में ही पैदल चला।
तूने चलकर ही सागर पार किया।
किन्तु तूने कोई पद चिन्ह नहीं छोड़ा।
20 तूने मूसा और हारुन का
उपयोग निज भक्तों की अगुवाई
भेड़ों के झुण्ड की तरह करने में किया।

भजन 78

आसाप का एक प्रगीत।

1 मेरे भक्तों, तुम मेरे उपदेशों को सुनो।
उन बातों पर कान दो जिन्हें मैं बताता हूँ।
2 मैं तुम्हें यह कथा सुनाऊँगा।
मैं तुम्हें पुरानी कथा सुनाऊँगा।
3 हमने यह कहानी सुनी है,
और इसे भली भाँति जानते हैं।
यह कहानी हमारे पूर्वजों ने कही।
4 इस कहानी को हम नहीं भूलेंगे।
हमारे लोग इस कथा को
अगली पीढ़ी को सुनाते रहेंगे।
हम सभी यहोवा के गुण गायेंगे।
हम उन का अद्‌भुत कर्मों का
जिनको उसने किया है बखान करेंगे।
5 यहोवा ने याकूब से वाचा किया।
परमेश्वर ने इस्राएल को
व्यवस्था का विधान दिया,
और परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को आदेश दिया।
उसने हमारे पूर्वजों को व्यवस्था का विधान
अपने संतानों को सिखाने को कहा।
6 इस तरह लोग व्यवस्था के विधान को जानेंगे।
यहाँ तक कि अन्तिम पीढ़ी तक इसे जानेगी।
नयी पीढ़ी जन्म लेगी और
पल भर में बढ़ कर बड़े होंगे,

और फिर वे इस कहानी को
अपनी संतानों को सुनायेंगे।

7 अत: वे सभी लोग यहोवा पर भरोसा करेंगे।
वे उन शक्तिपूर्ण कामों को नहीं भूलेंगे
जिनको परमेश्वर ने किया था।
वे ध्यान से रखवाली करेंगे और
परमेश्वर के आदेशों का अनुसरण करेंगे।

8 अत: लोग अपनी संतानों को
परमेश्वर के आदेशों को सिखायेंगे, तो
फिर वे संतानें उनके पूर्वजों जैसे नहीं होंगे।
उनके पूर्वजों ने परमेश्वर से अपना मुख
मोड़ा और उसका अनुसरण
करने से इन्कार किया,
वे लोग हठी थे।
वे परमेश्वर के आत्मा के भक्त नहीं थे।

9 एप्रैम के लोग शस्त्र धारी थे,
किन्तु वे युद्ध से पीठ दिखा गये।

10 उन्होंने जो यहोवा से वाचा किया था
पाला नहीं।
वे परमेश्वर के सीखों को मानने से मुकर गये।

11 एप्रैम के वे लोग उन बड़ी बातों को भूल गए
जिन्हें परमेश्वर ने किया था।
वे उन अद्भुत बातों को भूल गए जिन्हें
उसने उन्हें दिखायी थी।

12 परमेश्वर ने उनके पूर्वजों को मिस्र के
सोअन में निज महाशक्ति दिखायी।

13 परमेश्वर ने लाल सागर को चीर कर
लोगों को पार उतार दिया।
पानी पक्की दीवार सा दोनों ओर खड़ा रहा।

14 हर दिन उन लोगों को परमेश्वर ने
महा बादल के साथ अगुवाई की।
हर रात परमेश्वर ने आग के
लाट के प्रकाश से राह दिखाया।

15 परमेश्वर ने मरुस्थल में चट्टान को
फाड़ कर गहरे धरती के नीचे से जल दिया।

16 परमेश्वर चट्टान से जलधारा
वैसे लाया जैसे कोई नदी हो!

17 किन्तु लोग परमेश्वर के
विरोध में पाप करते रहे।
वे मरुस्थल तक में,
परम परमेश्वर के विरुद्ध हो गए।

18 फिर उन लोगों ने परमेश्वर को
परखने का निश्चय किया।
उन्होंने बस अपनी भूख मिटाने के लिये
परमेश्वर से भोजन माँगा।

19 परमेश्वर के विरुद्ध वे बतियाने लगे,
वे कहने लगे, "क्या मरुभूमि में
परमेश्वर हमें खाने को दे सकता है?

20 परमेश्वर ने चट्टान पर चोट की
और जल का एक रेला बाहर फूट पड़ा।
निश्चय ही वह हमको कुछ रोटी
और माँस दे सकता है।"

21 यहोवा ने सुन लिया जो लोगों ने कहा था।
याकूब से परमेश्वर बहुत ही कुपित था।
इस्राएल से परमेश्वर बहुत ही कुपित था।

22 क्यों? क्योंकि लोगों ने उस पर
भरोसा नहीं रखा था,
उन्हें भरोसा नहीं था, कि
परमेश्वर उन्हें बचा सकता है।

23-24 किन्तु तब भी परमेश्वर ने उन पर
बादल को उघाड़ दिया,
उनके खाने के लिये नीचे मन्ना बरसा दिया।
यह ठीक वैसे ही हुआ जैसे अम्बर के द्वार
खुल जाये और आकाश के कोठे से
बाहर अन्न उँडेला हो।

25 लोगों ने वह स्वर्गदूत का भोजन खाया।
उन लोगों को तृप्त करने के लिये
परमेश्वर ने भरपूर भोजन भेजा।

26-27 फिर परमेश्वर ने पूर्व से तीव्र पवन चलाया
और उन पर बटेरे वर्षा जैसे गिरने लगे।
तिमान की दिशा से परमेश्वर की महाशक्ति ने
एक आँधी उठायी और नीला आकाश काला
हो गया क्योंकि वहाँ अनगिनत पक्षी छाए थे।

28 वे पक्षी ठीक डेरे के बीच में गिरे थे।
वे पक्षी उन लोगों के डेरों के
चारों तरफ गिरे थे।

29 उनके पास खाने को भरपूर हो गया,
किन्तु उनकी भूख ने उनसे पाप करवाये।

30 उन्होंने अपनी भूख पर लगाम नहीं लगायी।
सो उन्होंने उन पक्षियों को बिना ही

रक्त निकाले, बटेरो को खा लिया।

31 सो उन लोगों पर परमेश्वर अति कुपित हुआ
और उनमें से बहुतों को मार दिया।
उसने बलशाली युवकों को
मृत्यु का ग्रास बना दिया।

32 फिर भी लोग पाप करते रहे!
वे उन अद्भुत कर्मों के भरोसे नहीं रहे,
जिनको परमेश्वर कर सकता है।

33 सो परमेश्वर ने उनके व्यर्थ जीवन को
किसी विनाश से अंत किया।

34 जब कभी परमेश्वर ने उनमें से किसी को मारा।
वे बाकि परमेश्वर की ओर लौटने लगे।
वे दौड़कर परमेश्वर की ओर लौट गये।

35 वे लोग याद करेंगे कि परमेश्वर
उनकी चट्टान रहा था।
वे याद करेंगे की परम परमेश्वर ने
उनकी रक्षा की।

36 वैसे तो उन्होंने कहा था कि वे
उससे प्रेम रखते हैं।
उन्होंने झूठ बोला था।
ऐसा कहने में वे सच्चे नहीं थे।

37 वे सचमुच मन से परमेश्वर
के साथ नहीं थे।
वे वाचा के लिये सच्चे नहीं थे।

38 किन्तु परमेश्वर करुणापूर्ण था।
उसने उन्हें उनके पापों के लिये क्षमा किया,
और उसने उनका विनाश नहीं किया।
परमेश्वर ने अनेकों अवसर पर
अपना क्रोध रोका।
परमेश्वर ने अपने को
अति कुपित होने नहीं दिया।

39 परमेश्वर को याद रहा कि वे मात्र मनुष्य हैं।
मनुष्य केवल हवा जैसे है
जो बह कर चली जाती है और लौटती नहीं।

40 हाय, उन लोगों ने मरुभूमि में
परमेश्वर को कष्ट दिया!
उन्होंने उसको बहुत दुःखी किया था!

41 परमेश्वर के धैर्य को उन लोगों ने फिर परखा,
सचमुच इस्राएल के उस पवित्र को
उन्होंने कष्ट दिया।

42 वे लोग परमेश्वर की शक्ति को भूल गये।
वे लोग भूल गये कि परमेश्वर ने उनको
कितनी ही बार शत्रुओं से बचाया।

43 वे लोग मिस्र की अद्भुत बातों को और
सोअन के क्षेत्रों के चमत्कारों को भूल गये।

44 उनकी नदियों को परमेश्वर ने
खून में बदल दिया था!
जिनका जल मिस्र के लोग पी नहीं सकते थे।

45 परमेश्वर ने भिड़ों के झुण्ड भेजे थे
जिन्होंने मिस्र के लोगों को डसा।
परमेश्वर ने उन मेढकों को भेजा
जिन्होंने मिस्रियों के जीवन को उजाड़ दिया।

46 परमेश्वर ने उनके फसलों को
टिड्डों को दे डाला।
उनके दूसरे पौधे टिड्डियों को दे दिये।

47 परमेश्वर ने मिस्रियों के अंगूर के बाग
ओलों से नष्ट किये, और पाला गिरा कर के
उनके वृक्ष नष्ट कर दिये।

48 परमेश्वर ने उनके पशु ओलों से मार दिये
और बिजलियाँ गिरा कर पशु धन नष्ट किये।

49 परमेश्वर ने मिस्र के लोगों को
अपना प्रचण्ड क्रोध दिखाया।
उनके विरोध में उसने अपने विनाश के दूत भेजे।

50 परमेश्वर ने क्रोध प्रकट करने के लिये
एक राह पायी।
उनमें से किसी को जीवित रहने नहीं दिया।
हिंसक महामारी से उसने सारे ही
पशुओं को मर जाने दिया।

51 परमेश्वर ने मिस्र के हर पहले
पुत्र को मार डाला।
हाम के घराने के हर पहले पुत्र को
उसने मार डाला।

52 फिर उसने इस्राएल की
चरवाहे के समान अगुवाई की।
परमेश्वर ने अपने लोगों को ऐसे राह दिखाई
जैसे जंगल में भेड़ों कि अगुवाई की है।

53 वह अपने निज लोगों को
सुरक्षा के साथ ले चला।
परमेश्वर के भक्तों को किसी से डर नहीं था।
परमेश्वर ने उनके शत्रुओं को

लाल सागर में डुबाया।

54 परमेश्वर अपने निज भक्तों को
अपनी पवित्र धरती पर ले आया।
उसने उन्हें उस पर्वत पर लाया
जिसे उसने अपनी ही शक्ति से पाया।

55 परमेश्वर ने दूसरी जातियों को
वह भूमि छोड़ने को विवश किया।
परमेश्वर ने प्रत्येक घराने को
उनका भाग उस भूमि में दिया।
इस तरह इस्राएल के घराने
अपने ही घरों में बस गये।

56 इतना होने पर भी इस्राएल के लोगों ने
परम परमेश्वर को परखा और
उसको बहुत दुःखी किया।
वे लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का
पालन नहीं करते थे।

57 इस्राएल के लोग परमेश्वर से
भटक कर विमुख हो गये थे।
वे उसके विरोध में ऐसे ही थे,
जैसे उनके पूर्वज थे।
वे इतने बुरे थे जैसे मुड़ा धनुष।

58 इस्राएल के लोगों ने ऊँचे पूजा स्थल बनाये
और परमेश्वर को कुपित किया।
उन्होंने देवताओं की मूर्तियाँ बनाई
और परमेश्वर को ईर्ष्यालु बनाया।

59 परमेश्वर ने यह सुना और बहुत कुपित हुआ।
उसने इस्राएल को पूरी तरह नकारा!

60 परमेश्वर ने शिलोह के
पवित्र तम्बू को त्याग दिया।
यह वही तम्बू था जहाँ परमेश्वर
लोगों के बीच में रहता था।

61 फिर परमेश्वर ने उसके निज लोगों को
दूसरी जातियों को बंदी बनाने दिया।
परमेश्वर के "सुन्दर रत्न" को
शत्रुओं ने छीन लिया।

62 परमेश्वर ने अपने ही लोगों (इस्राएली) पर
निज क्रोध प्रकट किया।
उसने उनको युद्ध में मार दिया।

63 उनके युवक जलकर राख हुए,
और वे कन्याएँ जो विवाह योग्य थीं,
उनके विवाह गीत नहीं गाये गए।

64 याजक मार डाले गए,
किन्तु उनकी विधवाएँ उनके लिए नहीं रोई।

65 अंत में, हमारा स्वामी उठ बैठा जैसे
कोई नींद से जागकर उठ बैठता हो।
या कोई योद्धा दाखमधु के
नशे से होश में आया हो।

66 फिर तो परमेश्वर ने अपने शत्रुओं को
मारकर भगा दिया
और उन्हें पराजित किया।
परमेश्वर ने अपने शत्रुओं को हरा दिया
और सदा के लिये अपमानित किया।

67 किन्तु परमेश्वर ने
यूसुफ के घराने को त्याग दिया।
परमेश्वर ने इब्राहीम परिवार को नहीं चुना।

68 परमेश्वर ने यहूदा के गोत्र को नहीं चुना
और परमेश्वर ने सिय्योन के
पहाड़ को चुना जो उसको प्रिय है।

69 उस ऊँचे पर्वत पर परमेश्वर ने
अपना पवित्र मन्दिर बनाया।
जैसे धरती अडिग है वैसे ही परमेश्वर ने
निज पवित्र मन्दिर को सदा बने रहने दिया।

70 परमेश्वर ने दाऊद को अपना विशेष
सेवक बनाने में चुना।
दाऊद तो भेड़ों कि देखभाल करता था,
किन्तु परमेश्वर उसे उस काम से ले आया।

71 परमेश्वर दाऊद को भेड़ों को
रखवाली से ले आया और उसने उसे
अपने लोगों कि रखवाली का काम सौंपा,
याकूब के लोग, यानी इस्राएल के लोग
जो परमेश्वर की सम्पती थे।

72 और फिर पवित्र मन से दाऊद ने इस्राएल के
लोगों की अगुवाई की।
उसने उन्हें पूरे विवेक से राह दिखाई।

भजन 79

आसाप का एक स्तुति गीत।

1 हे परमेश्वर, कुछ लोग
तेरे भक्तों के साथ लड़ने आये हैं।
उन लोगों ने तेरे पवित्र मन्दिर को ध्वस्त किया,

और यरुशलेम को
उन्होंने खण्डहर बना दिया।
2 तेरे भक्तों के शवों को उन्होंने गिद्धों को
खाने के लिये डाल दिया।
तेरे अनुयायिओं के शव उन्होंने
पशुओं के खाने के लिये डाल दिया।
3 हे परमेश्वर, शत्रुओं ने तेरे भक्तों को
तब तक मार जब तक उनका रक्त
पानी सा नहीं फैल गया।
उनके शव दफनाने को कोई भी नहीं बचा।
4 हमारे पड़ोसी देशों ने हमें अपमानित किया है।
हमारे आस पास के लोग सभी हँसते हैं,
और हमारी हँसी उड़ाते हैं।
5 हे परमेश्वर, क्या तू सदा के
लिये हम पर कुपित रहेगा?
क्या तेरे तीव्र भाव अग्नि के
समान धधकते रहेंगे?
6 हे परमेश्वर, अपने क्रोध को
उन राष्ट्रों के विरोध में
जो तुझको नहीं पहचानते मोड़,
अपने क्रोध को उन राष्ट्रों
के विरोध में मोड़ जो
तेरे नाम की आराधना नहीं करते।
7 क्योंकि उन राष्ट्रों ने याकूब को नाश किया।
उन्होंने याकूब के देश को नाश किया।
8 हे परमेश्वर, तू हमारे पूर्वजों के पापों के
लिये कृपा करके हमको दण्ड मत दे।
जल्दी कर, तू हम पर निज करुणा दर्शा!
हम को तेरी बहुत उपेक्षा है!
9 हमारे परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता,
हमको सहारा दे!
अपने ही नाम की महिमा के लिये
हमारी सहायता कर! हमको बचा ले!
निज नाम के गौरव निमित्त हमारे पाप मिटा।
10 दूसरी जाति के लोगों को तू यह मत कहने दे,
"तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है?
क्या वह तुझको सहारा नहीं दे सकता है?"
हे परमेश्वर, उन लोगों को दण्ड दे ताकि
उस दण्ड को हम भी देख सकें।
उन लोगों को तेरे भक्तों को मारने का दण्ड दे।
11 बंदी गृह में पड़े हुओं कि
कृपया तू कराह सुन ले!
हे परमेश्वर, तू निज महाशक्ति प्रयोग में ला
और उन लोगों को बचा ले जिनको
मरने के लिये ही चुना गया है।
12 हे परमेश्वर, हम जिन लोगों से घिरे हैं,
उनको उन अत्यचारों का दण्ड सात गुणा दे।
हे परमेश्वर, उन लोगों को इतनी बार दण्ड दे
जितनी बार वे तेरा अपमान किये है।
13 हम तो तेरे भक्त हैं।
हम तेरे रेवड़ की भेड़ हैं।
हम तेरा गुणगान सदा करेंगे।
हे परमेश्वर अंत काल तक तेरा गुण गायेंगे।

भजन 80

वाचा की कुमुदिनी धुन पर संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक स्तुति गीत।

1 हे इस्राएल के चरवाहे, तू मेरी सुन ले।
तूने यूसुफ के भेड़ों (लोगों)की अगुवाई की।
तू राजा सा करुब पर विराजता है।
हमको निज दर्शन दे।
2 हे इस्राएल के चरवाहे, एप्रैम, बिन्यामीन
और मनश्शे के सामने तू अपनी महिमा दिखा,
और हमको बचा ले।
3 हे परमेश्वर, हमको स्वीकार कर।
हमको स्वीकार कर और हमारी रक्षा कर!
4 सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा ,
क्या तू सदा के लिये हम पर कुपित रहेगा?
हमारी प्रार्थनाओं को तू कब सुनेगा?
5 अपने भक्तों को तूने बस खाने को आँसू दिये है।
तूने अपने भक्तों को पीने के लिये
आँसुओं से लबालब प्याले दिये।
6 तूने हमें हमारे पड़ोसियों के लिये कोई ऐसी
वस्तु बनने दिया जिस पर वे झगड़ा करे।
हमारे शत्रु हमारी हँसी उड़ाते हैं।
7 हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर,
फिर हमको स्वीकार कर।
हमको स्वीकार कर और हमारी रक्षा कर।
8 प्राचीन काल में, तूने हमें एक अति
महत्त्वपूर्ण पौधे सा समझा।

तू अपनी दाखलता मिस्र से बाहर लाया।
तूने दूसरे लोगों को यह धरती छोड़ने को
विवश किया और यहाँ तूने
अपनी निज दाखलता रोप दी।

9 तूने दाखलता रोपने को धरती को तैयार किया,
उसकी जड़ों को पक्की करने के लिये
तूने सहारा दिया और फिर शीघ्र ही
दाखलता धरती पर हर कहीं फैल गई।

10 उसने पहाड़ ढक लिया।
यहाँ तक कि उसके पत्तों ने विशाल
देवदार वृक्ष को भी ढक लिया।

11 इसकी दाखलताएँ भूमध्य सागर तक फैल गई।
इसकी जड़ परात नदी तक फैल गई।

12 हे परमेश्वर, तूने वे दीवारें क्यों गिरा दी,
जो तेरी दाखलता की रक्षा करती थी।
अब वह हर कोई जो वहाँ से गुजरता है,
वहाँ से अंगूर को तोड़ लेते हैं।

13 बनैले सुअर आते हैं, और तेरी
दाखलता को रौंदते हुए गुजर जाते हैं।
जंगली पशु आते हैं, और उसकी
पत्तियाँ चर जाते हैं।

14 सर्वशक्तिमान परमेश्वर, वापस आ।
अपनी दाखलता पर स्वर्ग से नीचे देख,
और इसकी रक्षा कर।

15 हे परमेश्वर, अपनी उस दाखलता को देख
जिसको तूने स्वयं निज हाथों से रोपा था।
इस बच्चे पौधे को देख जिसे तूने बढ़ाया।

16 तेरी दाखलता को सूखे हुए
उपलों सा आग में जलाया गया।
तू इससे क्रोधित था और तूने उजाड़ दिया।

17 हे परमेश्वर, तू अपना हाथ उस पुत्र पर रख
जो तेरे दाहिनी ओर खड़ा है।
उस पुत्र पर हाथ रख जिसे तूने उठाया।

18 फिर वह कभी तुझको नहीं त्यागेगा।
तू उसको जीवित रख, और वह
तेरे नाम की आराधना करेगा।

19 सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर,
हमारे पास लौट आ हमको अपना ले,
और हमारी रक्षा कर।

भजन 81

गित्तीथ क संगत पर संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक पद।

1 परमेश्वर जो हमारी शक्ति है आनन्द के साथ
तुम उसके गीत गाओ,
तुम उसका जो इस्राएल का परमेश्वर है,
जय जयकार जोर से बोलो।

2 संगीत आरम्भ करो।
तम्बूरे बजाओ।
वीणा सारंगी से मधुर धुन निकालो।

3 नये चाँद के समय में तुम नरसिंगा फूँको।
पूर्णमासी के अवसर पर तुम नरसिंगा फूँको।
यह वह काल है
जब हमारे विश्राम के दिन शुरु होते हैं।

4 इस्राएल के लोगों के लिये ऐसा ही नियम है।
यह आदेश परमेश्वर ने याकूब को दिये है।

5 परमेश्वर ने यह वाचा यूसुफ के साथ
तब किया था जब परमेश्वर
उसे मिस्र से दूर ले गया।
मिस्र में हमने वह भाषा सुनी थी जिसे
हम लोग समझ नहीं पाये थे।

6 परमेश्वर कहता है, "तुम्हारे कन्धों का
बोझ मैंने ले लिया है।
मजदूर की टोकरी मैं उतार फेंकने देता हूँ।

7 जब तुम विपत्ति में थे तुमने सहायता को पुकारा
और मैंने तुम्हें छुड़ाया।
मैं तूफानी बादलों में छिपा हुआ था और
मैंने तुमको उत्तर दिया।
मैंने तुम्हें मरिबा के जल के पास परखा।

8 अरे मेरे लोगों, तुम मेरी बात सुनों।
और मैं तुमको अपना वाचा दूँगा।
इस्राएल, तू मुझ पर अवश्य कान दे!

9 तू किसी मिथ्या देव जिनको
विदेशी लोग पूजते हैं, पूजा मत कर।

10 मैं, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूँ।
मैं वही परमेश्वर जो तुम्हें
मिस्र से बाहर लाया था।
हे इस्राएल, तू अपना मुख खोल,
मैं तुझको निवाला दूँगा।

11 किन्तु मेरे लोगों ने मेरी नहीं सुनी।
इस्राएल ने मेरी आज्ञा नहीं मानी।
12 इसलिए मैंने उन्हें वैसा ही करने दिया,
जैसा वे करना चाहते थे।
इस्राएल ने वो सब किया जो उन्हें भाता था।
13 भला होता मेरे लोग मेरी बात सुनते,
और काश! इस्राएल वैसा ही जीवन जीता
जैसा मैं उससे चाहता था।
14 तब मैं फिर इस्राएल के शत्रुओं को हरा देता।
मैं उन लोगों को दण्ड देता जो
इस्राएल को दुःख देते।
15 यहोवा के शत्रु डर से थर थर काँपते हैं।
वे सदा सर्वदा को दण्डित होंगे।
16 परमेश्वर निज भक्तों को उत्तम गेहूँ देगा।
चट्टान उन्हें शहद तब तक देगी
जब तक तृप्त नहीं होंगे।"

भजन 82

आसाप का एक स्तुति गीत।

1 परमेश्वर देवों की सभा के बीच विराजता है।
उन देवों की सभा का परमेश्वर न्यायाधीश है।
2 परमेश्वर कहता है, "कब तक तुम लोग
अन्यायपूर्ण न्याय करोगे?
कब तक तुम लोग दुराचारी लोगों को यूँ ही बिना
दण्ड दिए छोड़ते रहोगे?
3 अनाथों और दीन लोगों की रक्षा कर।
जिन्हें उचित व्यवहार नहीं मिलता तू
उनके अधिकारों कि रक्षा कर।
4 दीन और असहाय जन की रक्षा कर।
दुष्टों के चंगुल से उनको बचा ले।
5 इस्राएल के लोग नहीं जानते
क्या कुछ घट रहा है।
वे समझते नहीं!
वे जानते नहीं वे क्या कर रहे हैं।
उनका जगत उनके चारों ओर गिर रहा है।"
6 मैंने (परमेश्वर) कहा, "तुम लोग ईश्वर हो,
तुम परम परमेश्वर के पुत्र हो।
7 किन्तु तुम भी वैसे ही मर जाओगे
जैसे निश्चय ही सब लोग मर जाते हैं।
तुम वैसे मरोगे जैसे अन्य नेता मर जाते हैं।"
8 हे परमेश्वर, खड़ा हो!
तू न्यायाधीश बन जा!
हे परमेश्वर, तू सारे ही राष्ट्रों का नेता बन जा!

भजन 83

आसाप का एक स्तुति गीत।

1 हे परमेश्वर, तू मौन मत रह!
अपने कानों को बंद मत कर!
हे परमेश्वर, कृपा करके कुछ बोल।
2 हे परमेश्वर, तेरे शत्रु तेरे विरोध में
कुचक्र रच रहे हैं।
तेरे शत्रु शीघ्र ही वार करेंगे।
3 वे तेरे भक्तों के विरुद्ध षड़यन्त्र रचते हैं।
तेरे शत्रु उन लोगों के विरोध में
जो तुझको प्यारे हैं योजनाएँ बना रहे हैं।
4 वे शत्रु कह रहे हैं, "आओ, हम उन लोगों
को पूरी तरह मिटा डाले,
फिर कोई भी व्यक्ति 'इस्राएल' का
नाम याद नहीं करेगा।"
5 हे परमेश्वर, वे सभी लोग तेरे विरोध में और
तेरे उस वाचा के विरोध में
जो तूने हमसे किया है।
युद्ध करने के लिये एक जुट हो गए।
6 ये शत्रु हमसे युद्ध करने के लिये
एक जुट हुए हैं: एदोमी, इश्माएली, मोआबी
और हाजिरा की संताने, गबाली और
7 अम्मोनी, अमालेकी और पलिश्ती के लोग,
और सूर के निवासी लोग।
ये सभी लोग हमसे युद्ध करने जुट आये।
8 यहाँ तक कि अश्शूरी भी उन लोगों से मिल गये।
उन्होंने लूत के वंशजों को
अति बलशाली बनाया।
9 हे परमेश्वर, तू शत्रु वैसे हरा
जैसे तूने मिद्यानी लोगों, सिसरा,
याबीन को किशोन नदी के पास हराया।
10 तूने उन्हें एन्दोर में हराया।
उनकी लाशें धरती पर पड़ी सड़ती रहीं।
11 हे परमेश्वर, तू शत्रुओं के सेनापति को
वैसे पराजित कर जैसे तूने ओरेब और
जायेब के साथ किया था, कर

जैसे तूने जेबह और सलमुन्ना के साथ किया।
12 हे परमेश्वर, वे लोग हमको धरती
छोड़ने के लिये दबाना चाहते थे!
13 उन लोगों को तू उखड़े हुए पौधा सा बना
जिसको पवन उड़ा ले जाता है।
उन लोगों को ऐसे बिखेर दे
जैसे भूसे को आँधी बिखेर देती है।
14 शत्रु को ऐसे नष्ट कर जैसे वन को
आग नष्ट कर देती है, और जंगली
आग पहाड़ों को जला डालती है।
15 हे परमेश्वर, उन लोगों का पीछा कर भगा दे,
जैसे आँधी से धूल उड़ जाती है।
उनको कँपा और फूँक में उड़ा दे
जैसे चक्रवात करता है।
16 हे परमेश्वर, उनको ऐसा पाठ पढ़ा दे, कि
उनको अहसास हो जाये कि
वे सचमुच दुर्बल हैं।
तभी वे तेरे काम को पूजना चाहेंगे!
17 हे परमेश्वर, उन लोगों को भयभीत कर दे
और सदा के लिये
अपमानित करके उन्हें नष्ट कर दे।
18 वे लोग तभी जानेंगे कि तू परमेश्वर है।
तभी वे जानेंगे तेरा नाम यहोवा है।
तभी वे जानेंगे तू ही सारे
जगत का परम परमेश्वर है!

भजन 84

मित्तिथ की संगत पर संगीत निर्देशक के लिये कोरह वंशियों का एक स्तुति गीत।

1 सर्वशक्तिमान यहोवा, सचमुच तेरा
मन्दिर कितना मनोहर है।
2 हे यहोवा, मैं तेरे मन्दिर में रहना चाहता हूँ।
मैं तेरी बाट जोहते थक गया हूँ!
मेरा अंग अंग जीवित
यहोवा के संग होना चाहता है।
3 सर्वशक्तिमान यहोवा, मेरे राजा, मेरे परमेश्वर,
गौरेया और शूपाबेनी तक के
अपने घोंसले होते हैं।
ये पक्षी तेरी वेदी के पास घोंसले बनाते हैं
और उन्हीं घोंसलों में उनके बच्चे होते हैं।
4 जो लोग तेरे मन्दिर में रहते हैं,
अति प्रसन्न रहते हैं।
वे तो सदा ही तेरा गुण गाते हैं।
5 वे लोग अपने हृदय में गीतों के साथ जो
तेरे मन्दिर में आते हैं, बहुत आनन्दित हैं।
6 वे प्रसन्न लोग बाका घाटी जिसे परमेश्वर ने
झरने सा बनाया है गुजरते हैं।
गर्मी की गिरती हुई वर्षा की बूँदे
जल के सरोवर बनाती है।
7 लोग नगर नगर होते हुए सिय्योन पर्वत की
यात्रा करते हैं जहाँ वे
अपने परमेश्वर से मिलेंगे।
8 सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर,
मेरी प्रार्थना सुन!
याकूब के परमेश्वर तू मेरी सुन ले।
9 हे परमेश्वर, हमारे संरक्षक की रक्षा कर।
अपने चुने हुए राजा पर दयालु हो।
10 हे परमेश्वर, कहीं और हजार दिन ठहरने से
तेरे मन्दिर में एक दिन ठहरना उत्तम है।
दुष्ट लोगों के बीच वास करने से,
अपने परमेश्वर के मन्दिर के
द्वार के पास खड़ा रहूँ यही उत्तम है।
11 यहोवा हमारा संरक्षक
और हमारा तेजस्वी राजा है।
परमेश्वर हमें करुणा और
महिमा के साथ आशीर्वाद देता है।
जो लोग यहोवा का अनुसरण करते हैं
और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं,
उनको वह हर उत्तम वस्तु देता है।
12 सर्वशक्तिमान यहोवा, जो लोग तेरे भरोसे हैं
वे सचमुच प्रसन्न हैं!

भजन 85

संगीत निर्देशक के लिये कोरह वंशियों का एक स्तुति गीत।

1 हे यहोवा, तू अपने देश पर कृपालु हो।
विदेश में याकूब के लोग कैदी बने हैं।
उन बंदियों को छुड़ाकर उनके देश में वापस ला।
2 हे यहोवा, अपने भक्तों के पापों को क्षमा कर।
तू उनके पाप मिटा दे।

3 हे यहोवा, कुपित होना त्याग।
आवेश से उन्मत मत हो।
4 हमारे परमेश्वर, हमारे संरक्षक,
हम पर तू कुपित होना छोड़ दे
और फिर हमको स्वीकार कर ले।
5 क्या तू सदा के लिये हमसे कुपित रहेगा?
6 कृपा करके हमको फिर जिला दे!
अपने भक्तों को तू प्रसन्न कर दे।
7 हे यहोवा, तू हमें दिखा दे कि
तू हमसे प्रेम करता है।
हमारी रक्षा कर।
8 जो परमेश्वर ने कहा, मैंने उस पर कान दिया।
यहोवा ने कहा कि उसके भक्तों के लिये
वहाँ शांति होगी।
यदि वे अपने जीवन की मूर्खता की
राह पर नहीं लौटेंगे तो
वे शांति को पायेंगे।
9 परमेश्वर शीघ्र अपने अनुयायियों को बचाएगा।
अपने स्वदेश में हम शीघ्र ही
आदर के साथ वास करेंगे।
10 परमेश्वर का सच्चा प्रेम
उनके अनुयायियों को मिलेगा।
नेकी और शांति चुम्बन के साथ
उनका स्वागत करेंगी।
11 धरती पर बसे लोग परमेश्वर पर
विश्वास करेंगे, और स्वर्ग का परमेश्वर
उनके लिये भला होगा।
12 यहोवा हमें बहुत सी उत्तम वस्तुएँ देगा।
धरती अनेक उत्तम फल उपजायेगी।
13 परमेश्वर के आगे आगे नेकी चलेगी,
और वह उसके लिये राह बनायेगी।

भजन 86

दाऊद की प्रार्थना।

1 मैं एक दीन, असहाय जन हूँ।
हे यहोवा, तू कृपा करके मेरी सुन ले,
और तू मेरी विनती का उत्तर दे।
2 हे यहोवा, मैं तेरा भक्त हूँ।
कृपा करके मुझको बचा ले।
मैं तेरा दास हूँ।
तू मेरा परमेश्वर है।
मुझको तेरा भरोसा है, सो मेरी रक्षा कर।
3 मेरे स्वामी, मुझ पर दया कर।
मैं सारे दिन तेरी विनती करता रहा हूँ।
4 हे स्वामी, मैं अपना जीवन तेरे हाथ सौंपता हूँ।
मुझको तू सुखी बना मैं तेरा दास हूँ।
5 हे स्वामी, तू दयालु और खरा है।
तू सचमुच अपने उन भक्तों को प्रेम करता है,
जो सहारा पाने को तुझको पुकारते हैं।
6 हे यहोवा, मेरी विनती सुन।
मैं दया के लिये
जो प्रार्थना करता हूँ, उस पर तू कान दे।
7 हे यहोवा, अपने संकट की घड़ी में
मैं तेरी विनती कर रहा हूँ।
मैं जानता हूँ तू मुझको उत्तर देगा।
8 हे परमेश्वर, तेरे समान कोई नहीं।
जैसे काम तूने किये हैं वैसा काम
कोई भी नहीं कर सकता।
9 हे स्वामी, तूने ही सब लोगों को रचा है।
मेरी कामना यह है कि वे सभी लोग आयें
और तेरी आराधना करें!
वे सभी तेरे नाम का आदर करें!
10 हे परमेश्वर, तू महान है!
तू अद्भुत कर्म करता है!
बस तू ही परमेश्वर है!
11 हे यहोवा, अपनी राहों की शिक्षा मुझको दे,।
मैं जीऊँगा और तेरे सत्य पर चलूँगा।
मेरी सहायता कर।
मेरे जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण यही है,
कि मैं तेरे नाम की उपासना करुँ।
12 हे परमेश्वर, मेरे स्वामी, मैं सम्पूर्ण मन से
तेरे गुण गाता हूँ।
मैं तेरे नाम का आदर सदा सर्वदा करुँगा।
13 हे परमेश्वर, तू मुझसे कितना
अधिक प्रेम करता है।
तूने मुझे मृत्यु के गर्त से बचाया।
14 हे परमेश्वर, मुझ पर अभिमानी
वार कर रहे हैं।
क्रूर जनों का दल मुझे मार डालने
का यत्न कर रहे हैं,

और वे मनुष्य तेरा आदर नहीं करते हैं।

15 हे स्वामी, तू दयालु और कृपापूर्ण परमेश्वर है।
तू धैर्यपूर्ण, विश्वासी और प्रेम से भरा हुआ है।

16 हे परमेश्वर, दिखा दे कि तू मेरी सुनता है,
और मुझ पर कृपालु बन। मैं तेरा दास हूँ।
तू मुझको शक्ति दे।
मैं तेरा सेवक हूँ, मेरी रक्षा कर।

17 हे परमेश्वर, कुछ ऐसा कर जिससे
यह प्रमाणित हो कि तू मेरी सहायता करेगा।
फिर इससे मेरे शत्रु निराश हो जायेंगे।
क्योंकि यहोवा इससे यह प्रकट होगा तेरी
दया मुझ पर है और तूने मुझे सहारा दिया।

भजन 87

कोरह वंशियों का एक स्तुति गीत।

1 परमेश्वर ने यरुशलेम के पवित्र
पहाड़ियों पर अपना मन्दिर बनाया।

2 यहोवा को इस्राएल के किसी भी स्थान से
सिय्योन के द्वार अधिक भाते हैं।

3 हे परमेश्वर के नगर,
तेरे विषय में लोग अद्भुत बातें बताते है।

4 परमेश्वर अपने लोगों की सूची रखता है।
परमेश्वर के कुछ भक्त मिस्र
और बाबेल में रहते है।
कुछ लोग पलिश्ती,
सोर और कूश तक में रहते हैं।

5 परमेश्वर हर एक जन को जो
सिय्योन में पैदा हुए जानता है।
इस नगर को परम परमेश्वर
ने बनाया है।

6 परमेश्वर अपने भक्तों कि सूची रखता है।
परमेश्वर जानता है कौन कहाँ पैदा हुआ।

7 परमेश्वर के भक्त उत्सवों को
मनाने यरुशलेम जाते हैं।
परमेश्वर के भक्त गाते, नाचते
और अति प्रसन्न रहते हैं।
वे कहा करते हैं, "सभी उत्तम
वस्तुएं यरुशलेम से आई।"

भजन 88

कोरह वंशियों के ओर से संगीत निर्देशक के लिये यातना पूर्ण व्याधि के विषय में एज्रा वंशी हेमान का एक कलापूर्ण स्तुति गीत।

1 हे परमेश्वर यहोवा, तू मेरा उद्धारकर्ता है।
मैं तेरी रात दिन विनती करता रहा हूँ।

2 कृपा करके मेरी प्रार्थनाओं पर ध्यान दे।
मुझ पर दया करने को मेरी प्रार्थनाएँ सुन।

3 मैं अपनी पीड़ाओं से तंग आ चुका हूँ।
बस मैं जल्दी ही मर जाऊँगा।

4 लोग मेरे साथ मुर्दे सा व्यवहार करने लगे हैं।
उस व्यक्ति की तरह
जो जीवित रहने के लिये अति बलहीन हैं।

5 मेरे लिये मरे व्यक्तियों में ढूँढ़।
मैं उस मुर्दे सा हूँ जो कब्र में लेटा है, और
लोग उसके बारे में सबकुछ ही भूल गए।

6 हे यहोवा, तूने मुझे धरती के नीचे
कब्र में सुला दिया।
तूने मुझे उस अँधेरी जगह में रख दिया।

7 हे परमेश्वर, तुझे मुझ पर क्रोध था,
और तूने मुझे दण्डित किया।

8 मुझको मेरे मित्रों ने त्याग दिया है।
वे मुझसे बचते फिरते हैं जैसा मैं कोई
ऐसा व्यक्ति हूँ जिसको कोई भी
छूना नहीं चाहता।
घर के ही भीतर बंदी बन गया हूँ।
मैं बाहर तो जा ही नहीं सकता।

9 मेरे दुःखों के लिये रोते रोते
मेरी आँखे सूज गई हैं।
हे यहोवा, मैं तुझसे निरतंर प्रार्थना करता हूँ।
तेरी ओर मैं अपने हाथ फैला रहा हूँ।

10 हे यहोवा, क्या तू अद्भुत कर्म केवल
मृतकों के लिये करता है?
क्या भूत (मृत आत्माएँ) जी उठा करते हैं
और तेरी स्तुति करते हैं? नहीं।

11 मरे हुए लोग अपनी कब्रों के बीच
तेरे प्रेम की बातें नहीं कर सकते।
मरे हुए व्यक्ति मृत्युलोक के भीतर
तेरी भक्ति की बातें नहीं कर सकते।

12 अंधकार में सोये हुए मरे व्यक्ति उन
अद्भुत बातों को जिनको तू करता है,
नहीं देख सकते हैं।
मरे हुए व्यक्ति भूले बिसरों के जगत में
तेरे खरेपन की बातें नहीं कर सकते।
13 हे यहोवा, मेरी विनती है, मुझको सहारा दे!
हर अलख सुबह मैं तेरी प्रार्थना करता हूँ।
14 हे यहोवा, क्या तूने मुझको त्याग दिया?
तूने मुझ पर कान देना क्यों छोड़ दिया?
15 मैं दुर्बल और रोगी रहा हूँ।
मैंने बचपन से ही तेरे क्रोध को भोगा है।
मेरा सहारा कोई भी नहीं रहा।
16 हे यहोवा, तू मुझ पर क्रोधित है और
तेरा दण्ड मुझको मार रहा है।
17 मुझे ऐसा लगता है, जैसे पीड़ा
और यातनाएँ सदा मेरे संग रहती हैं।
मै अपनी पीड़ाओं और
यातनाओं में डूबा जा रहा हूँ।
18 हे यहोवा, तूने मेरे मित्रों और प्रिय लोगों को
मुझे छोड़ चले जाने को विवश कर दिया।
मेरे संग बस केवल अंधकार रहता है।

भजन 89

एज्रा वंश के एतान का एक भक्ति प्रगीत।

1 मैं यहोवा, की करुणा के गीत सदा गाऊँगा।
मैं उसके भक्ति के गीत सदा
अनन्त काल तक गाता रहूँगा।
2 हे यहोवा, मुझे सचमुच विश्वास है,
तेरा प्रेम अमर है।
तेरी भक्ति फैले हुए अम्बर
से भी विस्तृत है।
3 परमेश्वर ने कहा था, "मैंने अपने चुने हुए
राजा के साथ एक वाचा किया है।
अपने सेवक दाऊद को मैंने वचन दिया है।
4 दाऊद तेरा वंश को मैं सतत् अमर बनाऊँगा।
मैं तेरे राज्य को सदा सर्वदा के लिये
अटल बनाऊँगा।"
5 हे यहोवा, तेरे उन अद्भुत
कर्मों की अम्बर स्तुति करते हैं।
स्वर्गदूतों की सभा तेरी निष्ठा के गीत गाते हैं।
6 स्वर्ग में कोई व्यक्ति यहोवा का
विरोध नहीं कर सकता।
कोई भी देवता यहोवा के समान नहीं।
7 परमेश्वर पवित्र लोगों के साथ एकत्रित होता है।
वे स्वर्गदूत उसके चारो ओर रहते हैं।
वे उसका भय और आदर करते हैं।
वे उसके सम्मान में खड़े होते हैं।
8 सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा,
जितना तू समर्थ है कोई नहीं है।
तेरे भरोसे हम पूरी तरह रह सकते हैं।
9 तू गरजते समुद्र पर शासन करता है।
तू उसकी कुपित तरंगों को शांत करता है।
10 हे परमेश्वर, तूने ही राहाब को हराया था।
तूने अपने महाशक्ति से अपने शत्रु बिखरा दिये।
11 हे परमेश्वर, जो कुछ भी स्वर्ग और
धरती पर जन्मी है तेरी ही है।
तूने ही जगत और जगत में की
हर वस्तु रची है।
12 तूने ही सब कुछ उत्तर दक्षिण रचा है।
ताबोर और हर्मोन पर्वत तेरे गुण गाते हैं।
13 हे परमेश्वर, तू समर्थ है।
तेरी शक्ति महान है।
तेरी ही विजय है।
14 तेरा राज्य सत्य और न्याय पर आधारित है।
प्रेम और भक्ति तेरे सिंहासन के सैनिक हैं।
15 हे परमेश्वर, तेरे भक्त सचमुच प्रसन्न है।
वे तेरी करुणा के प्रकाश में जीवित रहते हैं।
16 तेरा नाम उनको सदा प्रसन्न करता है।
वे तेरे खरेपन की प्रशंसा करते हैं।
17 तू उनकी अद्भुत शक्ति है।
उनको तुमसे बल मिलता है।
18 हे यहोवा, तू हमारा रक्षक है।
इस्राएल का वह पवित्र हमारा राजा है।
19 इसलिए तूने निज सच्चे भक्तों को दर्शन दिये
और कहा, "फिर मैंने लोगों के बीच से एक
युवक को चुना, और मैंने उस युवक को
महत्त्वपूर्ण बना दिया, और मैंने
उस युवक को बलशाली बना दिया।
20 मैंने निज सेवक दाऊद को पा लिया,
और मैंने उसका अभिषेक अपने

निज विशेष तेल से किया।

21 मैंने निज दाहिने हाथ से दाऊद को सहारा दिया,
और मैंने उसे अपने शक्ति से बलवान बनाया।

22 शत्रु चुने हुए राजा को नहीं हरा सका।
दुष्ट जन उसको पराजित नहीं कर सके।

23 मैंने उसके शत्रुओं को समाप्त कर दिया।
जो लोग चुने हुए राजा से बैर रखते थे,
मैंने उन्हें हरा दिया।

24 मैं अपने चुने हुए राजा को सदा प्रेम करुँगा
और उसे समर्थन दूँगा।
मैं उसे सदा ही शक्तिशाली बनाऊँगा।

25 मैं अपने चुने हुए राजा को सागर का
अधिकारी नियुक्त करुँगा।
नदियों पर उसका ही नियन्त्रण होगा।

26 वह मुझसे कहेगा, 'तू मेरा पिता है।
तू मेरा परमेश्वर, मेरी चट्टान
मेरा उद्धारकर्ता है।'

27 मैं उसको अपना पहलौठा पुत्र बनाऊँगा।
वह धरती पर महानतम राजा बनेगा।

28 मेरा प्रेम चुने हुए राजा की
सदा सर्वदा रक्षा करेगा।
मेरी वाचा उसके साथ कभी नहीं मिटेगी।

29 उसका वंश सदा अमर बना रहेगा।
उसका राज्य जब तक स्वर्ग टिका है,
तब तक टिका रहेगा।

30 यदि उसके वंशजों ने मेरी
व्यवस्था का पालन छोड़ दिया है
और यदि उन्होंने मेरे आदेशों को
मानना छोड़ दिया है,
तो मैं उन्हें दण्ड दूँगा।

31 यदि मेरे चुने हुए राजा के वंशजों ने
मेरे विधान को तोड़ा और यदि
मेरे आदेशो की उपेक्षा की,

32 तो मैं उन्हें दण्ड दूंगा, जो बहुत बड़ा होगा।

33 किन्तु मैं उन लोगों से अपना निज
प्रेम दूर नहीं करुँगा।
मैं सदा ही उनके प्रति सच्चा रहूँगा।

34 जो वाचा मेरी दाऊद के साथ है,
मैं उसको नहीं तोड़ूँगा।
मैं अपनी वाचा को नहीं बदलूँगा।

35 अपनी पवित्रता को साक्षी कर
मैंने दाऊद से एक विशेष प्रतिज्ञा की थी,
सो मैं दाऊद से झूठ नहीं बोलूँगा!

36 दाऊद का वंश सदा बना रहेगा,
जब तक सूर्य अटल है
उसका राज्य भी अटल रहेगा।

37 यह सदा चन्द्रमा के समान चलता रहेगा।
आकाश साक्षी है कि यह वाचा सच्ची है।
इस प्रमाण पर भरोसा कर सकता है।"

38 किन्तु हे परमेश्वर, तू अपने चुने हुए
राजा पर क्रोधित हो गया।
तूने उसे एक दम अकेला छोड़ दिया।

39 तूने अपनी वाचा को रद्द कर दिया।
तूने राजा का मुकुट धूल में फेंक दिया।

40 तूने राजा के नगर का परकोटा ध्वस्त कर दिया,
तूने उसके सभी दुर्गों को तहस नहस कर दिया।

41 राजा के पड़ोसी उस पर हँस रहे हैं,
और वे लोग जो पास से गुजरते हैं,
उसकी वस्तुओं को चुरा ले जाते हैं।

42 तूने राजा के शत्रुओं को प्रसन्न किया।
तूने उसके शत्रुओं को युद्ध में जिता दिया।

43 हे परमेश्वर, तूने उन्हें स्वयं को
बचाने का सहारा दिया,
तूने अपने राजा की
युद्ध को जीतने में सहायता नहीं की।

44 तूने उसे जीतने नहीं दिया, उसका पवित्र
सिंहासन तूने धरती पर पटक दिया।

45 तूने उसके जीवन को कम कर दिया,
और उसे लज्जित किया।

46 हे यहोवा, तू हमसे क्या सदा छिपा रहेगा?
क्या तेरा क्रोध सदा आग सा धधकेगा?

47 याद कर मेरा जीवन कितना छोटा है।
तूने ही हमें छोटा जीवन जीने
और फिर मर जाने को रचा है।

48 ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो सदा जीवित रहेगा
और कभी मरेगा नहीं।
कब्र से कोई व्यक्ति बच नहीं पाया।

49 हे परमेश्वर, वह प्रेम कहाँ है जो
तूने अतीत में दिखाया था?
तूने दाऊद को वचन दिया था कि

तू उसके वंश पर सदा अनुग्रह करेगा।

50–51 हे स्वामी, कृपा करके याद कर कि लोगों ने
तेरे सेवकों को कैसे अपमानित किया।
हे यहोवा, मुझको सारे अपमान सुनने पड़े हैं।
तेरे चुने हुए राजा को उन्होंने अपमानित किया।

52 यहोवा, सदा ही धन्य है!
आमीन, आमीन!

चौथा भाग

भजन 90

परमेश्वर के भक्त मूसा की प्रार्थना।

1 हे स्वामी, तू अनादि काल से
हमारा घर (सुरक्षास्थल) रहा है।

2 हे परमेश्वर, तू पर्वतों से पहले,
धरती से पहले था, कि इस जगत के
पहले ही परमेश्वर था।
तू सर्वदा ही परमेश्वर रहेगा।

3 तू ही इस जगत में लोगों को लाता है।
फिर से तू ही उनको धूल में बदल देता है।

4 तेरे लिये हजार वर्ष बीते हुए कल
जैसे है, व पिछली रात जैसे हैं।

5 तू हमारा जीवन सपने जैसा बुहार देता है
और सुबह होते ही हम चले जाते है।
हम ऐसे घास जैसे है,

6 जो सुबह उगती है और वह शाम को
सूख कर मुरझा जाती है।

7 हे परमेश्वर, जब तू कुपित होता है
हम नष्ट हो जाते हैं।
हम तेरे प्रकोप से घबरा गये हैं।

8 तू हमारे सब पापों को जानता है।
हे परमेश्वर, तू हमारे हर छिपे
पाप को देखा करता है।

9 तेरा क्रोध हमारे जीवन को खत्म कर सकता है।
हमारे प्राण फुसफुसाहट की तरह
विलीन हो जाते है।

10 हम सत्तर साल तक जीवित रह सकते हैं।
यदि हम शक्तिशाली हैं तो अस्सी साल।
हमारा जीवन परिश्रम और पीड़ा से भरा है।
अचानक हमारा जीवन समाप्त हो जाता है!
हम उड़कर कहीं दूर चले जाते हैं।

11 हे परमेश्वर, सचमुच कोई भी व्यक्ति तेरे
क्रोध की पूरी शक्ति नहीं जानता।
किन्तु हे परमेश्वर, हमारा भय और सम्मान
तेरे लिये उतना ही महान है, जितना क्रोध।

12 तू हमको सिखा दे कि हम सचमुच
यह जाने कि हमारा जीवन कितना छोटा है।
ताकि हम बुद्धिमान बन सकें।

13 हे यहोवा, तू सदा हमारे पास लौट आ।
अपने सेवकों पर दया कर।

14 प्रति दिन सुबह हमें अपने प्रेम से परिपूर्ण कर,
आओ हम प्रसन्न हो और
अपने जीवन का रस लें।

15 तूने हमारे जीवनों में हमें बहुत पीड़ा
और यातना दी है, अब हमें प्रसन्न कर दे।

16 तेरे दासों को उन अद्‌भुत बातों को देखने दे
जिनको तू उनके लिये कर सकता है,
और अपनी सन्तानों को अपनी महिमा दिखा।

17 हमारे परमेश्वर, हमारे स्वामी,
हम पर कृपालु हो।
जो कुछ हम करते हैं तू उसमें सफलता दे।

भजन 91

1 तुम परम परमेश्वर की शरण में
छिपने के लिये जा सकते हो।
तुम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शरण में
संरक्षण पाने को जा सकते हो।

2 मैं यहोवा से विनती करता हूँ,
"तू मेरा सुरक्षा स्थल है मेरा गढ़
हे परमेश्वर, मैं तेरे भरोसे हूँ।"

3 परमेश्वर तुझको सभी छिपे खतरों से बचाएगा।
परमेश्वर तुझको सब
भयानक व्याधियों से बचाएगा।

4 तुम परमेश्वर की शरण में संरक्षण
पाने को जा सकते हो।
और वह तुम्हारी ऐसे रक्षा करेगा जैसे
एक पक्षी अपने पंख फैला कर
अपने बच्चों कि रक्षा करता है।
परमेश्वर तुम्हारे लिये ढाल और दीवार सा
तुम्हारी रक्षा करेगा।

5 रात में तुमको किसी का भय नहीं होगा,

और शत्रु के बाणों से
तू दिन में भयभीत नहीं होगा।

6 तुझको अंधेरे में आने वाले रोगों और
उस भयानक रोग से जो दोपहर में आता है
भय नहीं होगा।

7 तू हजार शत्रुओं को पराजित कर देगा।
तेरा स्वयं दाहिना हाथ दस हजार
शत्रुओं को हरायेगा।
और तेरे शत्रु तुझको छू तक नहीं पायेंगे।

8 जरा देख, और तुझको दिखाई देगा कि
वे कुटिल व्यक्ति दण्डित हो चुके हैं।

9 क्यों? क्योंकि तू यहोवा के भरोसे है।
तूने परम परमेश्वर को
अपना शरणस्थल बनाया है।

10 तेरे साथ कोई भी बुरी बात नहीं घटेगी।
कोई भी रोग तेरे घर में नहीं होगा।

11 क्योंकि परमेश्वर स्वर्गदूतों को
तेरी रक्षा करने का आदेश देगा।
तू जहाँ भी जाएगा वे तेरी रक्षा करेंगे।

12 परमेश्वर के दूत तुझको
अपने हाथों पर ऊपर उठायेंगे।
ताकि तेरा पैर चट्टान से न टकराए।

13 तुझमें वह शक्ति होगी जिससे तू सिंहों को
पछाडेगा और विष नागों को कुचल देगा।

14 यहोवा कहता है, "यदि कोई जन मुझ में
भरोसा रखता है तो मैं उसकी रक्षा करुँगा।
मैं उन भक्तों को जो मेरे नाम की
आराधना करते हैं, संरक्षण दूँगा।"

15 मेरे भक्त मुझको सहारा पाने को पुकारेंगे
और मैं उनकी सुनूँगा।
वे जब कष्ट में होंगे मैं उनके साथ रहूँगा।
मैं उनका उद्धार करुँगा और उन्हें आदर दूँगा।

16 मैं अपने अनुयायियों को एक लम्बी आयु दूँगा
और मैं उनकी रक्षा करुँगा।

भजन 92

सब्त के दिन के लिये एक स्तुति गीत।

1 यहोवा का गुण गाना उत्तम है।
हे परम परमेश्वर, तेरे नाम का
गुणगान उत्तम है।

2 भोर में तेरे प्रेम के गीत गाना और रात में
तेरे भक्ति के गीत गाना उत्तम है।

3 हे परमेश्वर, तेरे लिये वीणा, दस तार वाद्य
और सांरगी पर संगीत बजाना उत्तम है।

4 हे यहोवा, तू सचमुच हमको अपने किये
कर्मों से आनन्दित करता है।
हम आनन्द से भर कर उन गीतों को गाते हैं,
जो कार्य तूने किये हैं।

5 हे यहोवा, तूने महान कार्य किये, तेरे विचार
हमारे लिये समझ पाने में गंभीर हैं।

6 तेरी तुलना में मनुष्य पशुओं जैसे हैं।
हम तो मूर्ख जैसे कुछ भी नहीं समझ पाते।

7 दुष्ट जन घास की तरह जीते और मरते हैं।
वे जो भी कुछ व्यर्थ कार्य करते हैं,
उन्हें सदा सर्वदा के लिये मिटाया जायेगा।

8 किन्तु हे यहोवा, अनन्त काल तक
तेरा आदर रहेगा।

9 हे यहोवा, तेरे सभी शत्रु मिटा दिये जायेंगे।
वे सभी व्यक्ति जो बुरा काम करते हैं,
नष्ट किये जायेंगे।

10 किन्तु तू मुझको बलशाली बनाएगा।
मैं शक्तिशाली मेढ़े सा बन जाऊँगा
जिसे कड़े सींग होते हैं।
तूने मुझे विशेष काम के लिए चुना है।
तूने मुझ पर अपना तेल ऊँडेला है
जो शीतलता देता है।

11 मैं अपने चारों ओर शत्रु देख रहा हूँ।
वे ऐसे हैं जैसे विशालकाय सांड़
मुझ पर प्रहार करने को तत्पर है।
वे जो मेरे विषय में बाते करते हैं
उनको मैं सुनता हूँ।

12-13 सज्जन लोग तो लबानोन के विशाल
देवदार वृक्ष की तरह है जो
यहोवा के मन्दिर में रोपे गए हैं।
सज्जन लोग बढ़ते हुऐ ताड़ के पेड़ की तरह हैं,
जो यहोवा के मन्दिर के आँगन में
फलवन्त हो रहे हैं।

14 वे जब तक बूढ़े होंगे तब तक वे फल देते रहेंगे।
वे हरे भरे स्वस्थ वृक्षों जैसे होंगे।

15 वे हर किसी को यह दिखाने के लिये

वहाँ है कि यहोवा उत्तम है।
वह मेरी चट्टान है!
वह कभी बुरा नहीं करता।

भजन 93

1 यहोवा राजा है।
वह सामर्थ्य और महिमा का वस्त्र पहने है।
वह तैयार है, सो संसार स्थिर है।
वह नहीं टलेगा।
2 हे परमेश्वर, तेरा साम्राज्य
अनादि काल से टिका हुआ है।
तू सदा जीवित है।
3 हे यहोवा, नदियों का गर्जन बहुत तीव्र है।
पछाड़ खाती लहरों का शब्द घनघोर है।
4 समुद्र की पछाड़ खाती लहरे गरजती हैं,
और वे शक्तिशाली हैं।
किन्तु ऊपर वाला यहोवा
अधिक शक्तिशाली है।
5 हे यहोवा, तेरा विधान सदा बना रहेगा।
तेरा पवित्र मन्दिर चिरस्थायी होगा।

भजन 94

1 हे यहोवा, तू ही एक परमेश्वर है
जो लोगों को दण्ड देता है।
तू ही एक परमेश्वर है जो आता है
और लोगों के लिये दण्ड लाता है।
2 तू ही समूची धरती का न्यायकर्ता है।
तू अभिमानी को वह दण्ड देता है
जो उसे मिलना चाहिए।
3 हे यहोवा, दुष्ट जन कब तक मजे मारते रहेंगे?
उन बुरे कर्मों की जो उन्होंने किये हैं।
4 वे अपराधी कब तक डींग मारते रहेंगे
उन बुरे कर्मो को जो उन्होंने किये हैं।
5 हे यहोवा, वे लोग तेरे भक्तों को दुःख देते हैं।
वे तेरे भक्तों को सताया करते हैं।
6 वे दुष्ट लोग विधवाओं और उन अतिथियों की
जो उनके देश में ठहरे हैं, हत्या करते हैं।
वे उन अनाथ बालकों की जिनके
माता पिता नहीं हैं हत्या करते हैं।
7 वे कहा करते हैं, यहोवा उनको बुरे काम
करते हुए देख नहीं सकता।
और कहते हैं, इस्राएल का परमेश्वर
उन बातों को नहीं समझता है, जो घट रही हैं।
8 अरे ओ दुष्ट जनों तुम बुद्धिहीन हो।
तुम कब अपना पाठ सीखोगे?
अरे ओ दुर्जनों तुम कितने मूर्ख हो!
तुम्हें समझने का जतन करना चाहिए।
9 परमेश्वर ने हमारे कान बनाएँ हैं,
और निश्चय ही उसके भी कान होंगे।
सो वह उन बातों को सुन सकता है,
जो घटित हो रहीं हैं।
परमेश्वर ने हमारी आँखें बनाई हैं,
सो निश्चय ही उसके भी आँख होंगे।
सो वह उन बातों को देख सकता है,
जो घटित हो रही है।
10 परमेश्वर उन लोगों को अनुशासित करेगा।
परमेश्वर उन लोगों को उन सभी बातों
की शिक्षा देगा जो उन्हें करनी चाहिए।
11 सो जिन बातों को लोग सोच रहे हैं,
परमेश्वर जानता है,
और परमेश्वर यह जानता है कि
लोग हवा की झोंके हैं।
12 वह मनुष्य जिसको यहोवा सुधारता,
अति प्रसन्न होगा।
परमेश्वर उस व्यक्ति को
खरी राह सिखायेगा।
13 हे परमेश्वर, जब उस जन पर दुःख आयेंगे
तब तू उस जन को शांत होने में सहायक होगा।
तू उसको शांत रहने में सहायता देगा
जब तक दुष्ट लोग कब्र में
नहीं रख दिये जायेंगे।
14 यहोवा निज भक्तों को कभी नहीं त्यागेगा।
वह बिन सहारे उसे रहने नहीं देगा।
15 न्याय लौटेगा और अपने साथ निष्पक्षता
लायेगा, और फिर लोग सच्चे होंगे
और खरे बनेंगे।
16 मुझको दुष्टों के विरुद्ध युद्ध करने में
किसी व्यक्ति ने सहारा नहीं दिया।
कुकर्मियों के विरुद्ध युद्ध करने में
किसी ने मेरा साथ नहीं दिया।

17 यदि यहोवा मेरा सहायक नहीं होता,
तो मुझे शब्द हीन (चुपचुप) होना पड़ता।
18 मुझको पता है मैं गिरने को था,
किन्तु यहोवा ने भक्तों को सहारा दिया।
19 मैं बहुत चिंतित और व्याकुल था,
किन्तु यहोवा तूने मुझको चैन दिया
और मुझको आनन्दित किया।
20 हे यहोवा, तू कुटिल न्यायाधीशों
की सहायता नहीं करता।
वे बुरे न्यायाधीश नियम का उपयोग
लोगों का जीवन कठिन बनाने में करते हैं।
21 वे न्यायाधीश सज्जनों पर प्रहार करते हैं।
वे कहते हैं कि निर्दोष जन अपराधी हैं।
और वे उनको मार डालते हैं।
22 किन्तु यहोवा ऊँचे पर्वत पर मेरा सुरक्षास्थल है,
परमेश्वर मेरी चट्टान
और मेरा शरणस्थल है।
23 परमेश्वर उन न्यायाधीशों को
उनके बुरे कामों का दण्ड देगा।
परमेश्वर उनको नष्ट कर देगा।
क्योंकि उन्होंने पाप किया है।
हमारा परमेश्वर यहोवा उन दुष्ट
न्यायाधीशों को नष्ट कर देगा।

भजन 95

1 आओ हम यहोवा के गुण गाएं!
आओ हम उस चट्टान का जय जयकार करें
जो हमारी रक्षा करता है।
2 आओ हम यहोवा के लिये धन्यवाद के गीत गाएं।
आओ हम उसके प्रशंसा के गीत
आनन्दपूर्वक गायें।
3 क्यों? क्योंकि यहोवा महान परमेश्वर है।
वह महान राजा सभी अन्य
"देवताओं" पर शासन करता है।
4 गहरी गुफाएँ और ऊँचे पर्वत यहोवा के हैं।
5 सागर उसका है, उसने उसे बनाया है।
परमेश्वर ने स्वयं अपने हाथों से
सूखी धरती को बनाया है।
6 आओ, हम उसको प्रणाम करें और
उसकी उपासना करें।
आओ हम परमेश्वर के गुण गाये
जिसने हमें बनाया है।
7 वह हमारा परमेश्वर और हम उसके भक्त हैं।
यदि हम उसकी सुने
तो हम आज उसकी भेड़ हैं।
8 परमेश्वर कहता है, "तुम जैसे मरिबा
और मरुस्थल के मस्सा में कठोर थे
वैसे कठोर मत बनो।
9 तेरे पूर्वजों ने मुझको परखा था।
उन्होंने मुझे परखा, पर तब उन्होंने देखा कि
मैं क्या कर सकता हूँ।
10 मैं उन लोगों के साथ चालीस वर्ष
तक धीरज बनाये रखा।
मैं यह भी जानता था कि वे सच्चे नहीं हैं।
उन लोगों ने मेरी सीख पर चलने से नकारा।
11 सो मैं क्रोधित हुआ और मैंने प्रतिज्ञा की
वे मेरे विशाल कि धरती पर
कभी प्रवेश नहीं कर पायेंगे।"

भजन 96

1 उन नये कामों के लिये
जिन्हें यहोवा ने किया है नया गीत गाओ।
अरे ओ समूचे जगत यहोवा के लिये गीत गा।
2 यहोवा के लिये गाओ!
उसके नाम को धन्य कहो!
उसके सुसमाचार को सुनाओ!
उन अद्भुत बातों का बखान करो
जिन्हें परमेश्वर ने किया है।
3 अन्य लोगों को बताओ कि
परमेश्वर सचमुच ही अद्भुत है।
सब कहीं के लोगों में उन अद्भुत बातों का
जिन्हें परमेश्वर करता है बखान करो।
4 यहोवा महान है और प्रशंसा योग्य है।
वह किसी भी अधिक "देवताओं" से
डरने योग्य है।
5 अन्य जातियों के सभी "देवता"
केवल मूर्तियाँ हैं,
किन्तु यहोवा ने आकाशों को बनाया।
6 उसके सम्मुख सुन्दर महिमा दीप्त है।
परमेश्वर के पवित्र मन्दिर

सामर्थ्य और सौन्दर्य हैं।

7 अरे! ओ वंशों, और हे जातियों
यहोवा के लिये महिमा और
प्रशंसा के गीत गाओ।

8 यहोवा के नाम के गुणगान करो।
अपनी भेंटे उठाओ और मन्दिर में जाओ।

9 यहोवा का उसके भव्य, मन्दिर में उपासना करो।
अरे ओ पृथ्वी के मनुष्यों,
यहोवा की उपासना करो।

10 राष्ट्रों को बता दो कि यहोवा राजा है!
सो इससे जगत का नाश नहीं होगा।
यहोवा मनुष्यों पर न्याय से शासन करेगा।

11 अरे आकाश, प्रसन्न हो!
हे धरती, आनन्द मना!
हे सागर, और उसमें कि
सब वस्तुओं आनन्द से ललकारो।

12 अरे ओ खेतों और उसमें उगने वाली
हर वस्तु आनन्दित हो जाओ!
हे वन के वृक्षो गाओ और आनन्द मनाओ!

13 आनन्दित हो जाओ क्योंकि यहोवा आ रहा है,
यहोवा जगत का शासन (न्याय)
करने आ रहा है, वह खरेपन से न्याय करेगा।

भजन 97

1 यहोवा शासन करता है, और धरती प्रसन्न हैं।
और सभी दूर के देश प्रसन्न हैं।

2 यहोवा को काले गहरे बादल घेरे हुए हैं।
नेकी और न्याय उसके राज्य को दृढ़ किये हैं।

3 यहोवा के सामने आग चला करती है,
और वह उसके बैरियों का नाश करती है।

4 उसकी बिजली गगन में कौंधा करती है।
लोग उसे देखते हैं और भयभीत रहते हैं।

5 यहोवा के सामने पहाड़ ऐसे पिघल जाते हैं,
जैसे मोम पिघल जाता है।
वे धरती के स्वामी के सामने पिघल जाते हैं।

6 अम्बर उसकी नेकी का बखान करते हैं।
हर कोई परमेश्वर की महिमा देख ले।

7 लोग उनके मूर्तियों का पूजा करते हैं।
वे अपने “देवताओं” की डींग हाँकते हैं।
लेकिन वे लोग लज्जित होंगे।
उनके “देवता” यहोवा के सामने झुकेंगे
और उपासना करेंगे।

8 हे सिय्योन, सुन और प्रसन हो!
यहूदा के नगरों, प्रसन्न हो!
क्यों? क्योंकि यहोवा
विवेकपूर्ण न्याय करता है।

9 हे सर्वोच्च यहोवा, सचमुच तू ही
धरती पर शासन करता है।
तू दूसरे “देवताओं” से अधिक उत्तम है।

10 जो लोग यहोवा से प्रेम रखते हैं,
वे पाप से घृणा करते हैं।
इसलिए परमेश्वर अपने
अनुयायियों की रक्षा करता है।
परमेश्वर अपने अनुयायियों को दुष्ट
लोगों से बचाता है।

11 ज्योति और आनन्द सज्जनों पर चमकते हैं।

12 हे सज्जनों परमेश्वर में प्रसन्न रहो!
उसके पवित्र नाम का आदर करते रहो!

भजन 98

एक स्तुति गीत।

1 यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ,
क्योंकि उसने नयी और
अद्भुत बातों को किया है।

2 उसकी पवित्र दाहिनी भुजा
उसके लिये फिर विजय लाई।

3 यहोवा ने राष्ट्रों के सामने अपनी
वह शक्ति प्रकटायी है जो रक्षा करती है।
यहोवा ने उनको अपनी धार्मिकता दिखाई है।

4 परमेश्वर के भक्तों ने परमेश्वर का
अनुराग याद किया, जो उसने
इस्राएल के लोगों से दिखाये थे।
सुदूर देशो के लोगों ने हमारे
परमेश्वर की महाशक्ति देखी।

5 हे धरती के हर व्यक्ति, प्रसन्नता से
यहोवा का जय जयकार कर।
स्तुति गीत गाना शीघ्र आरम्भ करो।

6 हे वीणाओं, यहोवा की स्तुति करो!
हे वीणा, के मधुर संगीत उसके गुण गाओ!

7 बाँसुरी बजाओ और नरसिंगों को फूँको।

आनन्द से यहोवा, हमारे
राजा का जय जयकार करो।
8 हे सागर और धरती, और उनमें की सब वस्तुओं
ऊँचे स्वर में गाओ।
9 हे नदियों, ताली बजाओ!
हे पर्वतो, अब सब साथ मिलकर गाओ!
10 तुम यहोवा के सामने गाओ,
क्योंकि वह जगत का शासन (न्याय)
करने जा रहा है,
वह जगत का न्याय नेकी और सच्चाई से करेगा।

भजन 99

1 यहोवा राजा है।
सो हे राष्ट्र, भय से काँप उठो।
परमेश्वर राजा के रुप में
करुब दूतों पर विराजता है।
सो हे विश्‍व भय से काँप उठो।
2 यहोवा सिय्योन में महान है।
सारे मनुष्यों का वही महान राजा है।
3 सभी मनुष्य तेरे नाम का गुण गाएं।
परमेश्वर का नाम भय विस्मय है।
परमेश्वर पवित्र है।
4 शक्तिशाली राजा को न्याय भाता है।
परमेश्वर तूने ही नेकी बनाया है।
तू ही याकूब (इस्राएल) के लिये
खरापन और नेकी लाया।
5 यहोवा हमारे परमेश्वर का गुणगान करो,
और उसके पवित्र चरण चौकी की
आराधना करो।
6 मूसा और हारुन परमेश्वर के याजक थे।
शमूएल परमेश्वर का नाम लेकर
प्रार्थना करने वाला था।
उन्होंने यहोवा से विनती की और
यहोवा ने उनको उसका उत्तर दिया।
7 परमेश्वर ने ऊँचे उठे बादल में से बातें कीं।
उन्होंने उसके आदेशों को माना।
परमेश्वर ने उनको
व्यवस्था का विधान दिया।
8 हमारे परमेश्वर यहोवा,
तूने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया।
तूने उन्हें यह दर्शाया कि तू क्षमा करने वाला
परमेश्वर है, और तू लोगों को उनके बुरे
कर्मों के लिये दण्ड देता है।
9 हमारे परमेश्वर यहोवा के गुण गाओ।
उसके पवित्र पर्वत की ओर झुककर
उसकी उपासना करो।
हमारा परमेश्वर यहोवा सचमुच पवित्र है।

भजन 100

धन्यवाद का एक गीत।

1 हे धरती, तुम यहोवा के लिये गाओ।
2 आनन्दित रहो जब तुम यहोवा की सेवा करो।
प्रसन्न गीतों के साथ यहोवा के सामने आओ।
3 तुम जान लो कि यह यहोवा ही परमेश्वर है।
उसने हमें रचा है और हम उसके भक्त हैं।
हम उसकी भेड़ हैं।
4 धन्यवाद के गीत संग लिये
यहोवा के नगर में आओ, गुणगान के गीत
संग लिये यहोवा के मन्दिर में आओ।
उसका आदर करो और नाम धन्य करो।
5 यहोवा उत्तम है।
उसका प्रेम सदा सर्वदा है।
हम उस पर सदा सर्वदा के लिये
भरोसा कर सकते हैं!

भजन 101

दाऊद का एक गीत।

1 मैं प्रेम और खरेपन के गीत गाऊँगा।
यहोवा मैं तेरे लिये गाऊँगा।
2 मैं पूरी सावधानी से शुद्ध जीवन जीऊँगा।
मैं अपने घर में शुद्ध जीवन जीऊँगा।
हे यहोवा तू मेरे पास कब आयेगा?
3 मैं कोई भी प्रतिमा सामने नहीं रखूँगा।
जो लोग इस प्रकार तेरे विमुख होते हैं,
मुझे उनसे घृणा है।
मैं कभी भी ऐसा नहीं करुँगा।
4 मैं सच्चा रहूँगा।
मैं बुरे काम नहीं करुँगा।
5 यदि कोई व्यक्ति छिपे छिपे
अपने पड़ोसी के लिये दुर्वचन कहे,

मैं उस व्यक्ति को ऐसा करने से रोकूँगा।
मैं लोगों को अभिमानी बनने नहीं दूँगा
और मैं उन्हें सोचने नहीं दूँगा,
कि वे दूसरे लोगों से उत्तम हैं।

6 मैं सारे ही देश में उन लोगों पर दृष्टि रखूँगा।
जिन पर भरोसा किया जा सकता और
मैं केवल उन्हीं लोगों को
अपने लिये काम करने दूँगा।
बस केवल ऐसे लोग मेरे
सेवक हो सकते जो शुद्ध जीवन जीते हैं।

7 मैं अपने घर में ऐसे लोगों को रहने नहीं दूँगा
जो झूठ बोलते हैं।
मैं झूठों को अपने पास भी फटकने नहीं दूँगा।

8 मैं उन दुष्टों को सदा ही नष्ट करुँगा,
जो इस देश में रहते है।
मैं उन दुष्ट लोगों को विवश करुँगा,
कि वे यहोवा के नगर को छोड़े।

भजन 102

एक पीड़ित व्यक्ति की उस समय की प्रार्थना। जब वह अपने को टूटा हुआ अनुभव करता है और अपनी वेदनाओं कष्ट यहोवा से कह डालना चाहता है।

1 यहोवा मेरी प्रार्थना सुन!
तू मेरी सहायता के लिये मेरी पुकार सुन।

2 यहोवा जब मैं विपत्ति में होऊँ
मुझ से मुख मत मोड़।
जब मैं सहायता पाने को पुकारुँ
तू मेरी सुन ले, मुझे शीघ्र उत्तर दे।

3 मेरा जीवन वैसे बीत रहा जैसा उड़ जाता धुँआ।
मेरा जीवन ऐसे है जैसे धीरे धीरे बुझती आग।

4 मेरी शक्ति क्षीण हो चुकी है।
मैं वैसा ही हूँ जैसा सूखी मुरझाती घास।
अपनी वेदनाओं में मुझे भूख नहीं लगती।

5 निज दुःख के कारण मेरा भार घट रहा है।

6 मैं अकेला हूँ जैसे कोई एकान्त
निर्जन में उल्लू रहता हो।
मैं अकेला हूँ जैसै कोई पुराने
खण्डर भवनों में उल्लू रहता हो।

7 मैं सो नहीं पाता।
मैं उस अकेले पक्षी सा हो गया हूँ,
जो छत पर हो।

8 मेरे शत्रु सदा मेरा अपमान करते है, और
लोग मेरा नाम लेकर मेरी हँसी उड़ाते हैं।

9 मेरा गहरा दुःख बस मेरा भोजन है।
मेरे पेयों में मेरे आँसू गिर रहे हैं।

10 क्यों? क्योंकि यहोवा तू मुझसे रुठ गया है।
तूने ही मुझे ऊपर उठाया था,
और तूने ही मुझको फेंक दिया।

11 मेरे जीवन का लगभग अंत हो चुका है।
वैसे ही जैसे शाम को
लम्बी छायाएँ खो जाती है।
मैं वैसा ही हूँ जैसे सूखी और मुरझाती घास।

12 किन्तु हे यहोवा, तू तो सदा ही अमर रहेगा।
तेरा नाम सदा और सर्वदा बना ही रहेगा।

13 तेरा उत्थान होगा और तू सिय्योन को चैन देगा।
वह समय आ रहा है,
जब तू सिय्योन पर कृपालु होगा।

14 तेरे भक्त, उसके (यरुशलेम के)
पत्थरों से प्रेम करते हैं।
वह नगर उनको भाता है।

15 लोग यहोवा के नाम कि आराधना करेंगे।
हे परमेश्वर, धरती के सभी राजा
तेरा आदर करेंगे।

16 क्यों? क्योंकि यहोवा फिर से
सिय्योन को बनायेगा।
लोग फिर उसके (यरुशलेम के)
वैभव को देखेंगे।

17 जिन लोगों को उसने जीवित छोड़ा है,
परमेश्वर उनकी प्रार्थनाएँ सुनेगा।
परमेश्वर उनकी विनतियों का उत्तर देगा।

18 उन बातों को लिखो ताकि भविष्य के पीढ़ी पढ़े।
और वे लोग आने वाले समय में
यहोवा के गुण गायेंगे।

19 यहोवा अपने ऊँचे पवित्र स्थान से नीचे झाँकेगा
यहोवा स्वर्ग से नीचे धरती पर झाँकेगा।

20 वह बंदी की प्रार्थनाएँ सुनेगा।
वह उन व्यक्तियों को मुक्त करेगा
जिनको मृत्युदण्ड दिया गया।

21 फिर सिय्योन में लोग यहोवा का बखान करेंगे।
यरुशलेम में लोग यहोवा का गुण गायेंगे।

22 ऐसा तब होगा जब यहोवा लोगों को
फिर एकत्र करेगा, ऐसा तब होगा
जब राज्य यहोवा की सेवा करेंगे।
23 मेरी शक्ति ने मुझको बिसार दिया है।
यहोवा ने मेरा जीवन घटा दिया है।
24 इसलिए मैंने कहा, "मेरा प्राण छोटी
उम्र में मत हरा।
हे परमेश्वर, तू सदा और सर्वदा अमर रहेगा।
25 बहुत समय पहले तूने संसार रचा!
तूने स्वयं अपने हाथों से आकाश रचा।
26 यह जगत और आकाश नष्ट हो जायेंगे,
किन्तु तू सदा ही जीवित रहेगा!
वे वस्त्रों के समान जीर्ण हो जायेंगे।
वस्त्रों के समान ही तू उन्हें बदलेगा।
वे सभी बदल दिये जायेंगे।
27 हे परमेश्वर, किन्तु तू कभी नहीं बदलता;
तू सदा के लिये अमर रहेगा।
28 आज हम तेरे दास है,
हमारी संतान भविष्य में यही रहेंगी और
उनके संताने यहीं तेरी उपासना करेंगी।"

भजन 103

दाऊद का एक गीत।

1 हे मेरी आत्मा, तू यहोवा का गुण गा!
हे मेरी अंग–प्रत्यंग,
उसके पवित्र नाम की प्रशंसा कर।
2 हे मेरी आत्मा, यहोवा को धन्य कह
और मत भूल की वह सचमुच कृपालु है!
3 उन सब पापों के लिये परमेश्वर
हमको क्षमा करता है जिनको हम करते हैं।
हमारी सब व्याधि को वह ठीक करता है।
4 परमेश्वर हमारे प्राण को कब्र से बचाता है,
और वह हमे प्रेम और करुणा देता है।
5 परमेश्वर हमें भरपूर उत्तम वस्तुएँ देता है।
वह हमें फिर उकाब सा युवा करता है।
6 यहोवा खरा है।
परमेश्वर उन लोगों को न्याय देता है,
जिन पर दूसरे लोगों ने अत्याचार किये।
7 परमेश्वर ने मूसा को
व्यवस्था का विधान सिखाया।
परमेश्वर जो शक्तिशाली काम करता है,
वह इस्राएलियों के लिये प्रकट किये।
8 यहोवा करुणापूर्ण और दयालु है।
परमेश्वर सहनशील और प्रेम से भरा है।
9 यहोवा सदैव ही आलोचना नहीं करता।
यहोवा हम पर सदा को कुपित नहीं रहता है।
10 हम ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किये,
किन्तु परमेश्वर हमें दण्ड नहीं देता
जो हमें मिलना चाहिए।
11 अपने भक्तों पर परमेश्वर का प्रेम
वैसे महान है जैसे धरती पर है
ऊँचा उठा आकाश।
12 परमेश्वर ने हमारे पापों को हमसे
इतनी ही दूर हटाया जितनी
पूरब कि दूरी पश्चिम से है।
13 अपने भक्तों पर यहोवा वैसे ही दयालु है,
जैसे पिता अपने पुत्रों पर दया करता है।
14 परमेश्वर हमारा सब कुछ जानता है।
परमेश्वर जानता है कि हम मिट्टी से बने हैं।
15 परमेश्वर जानता है कि
हमारा जीवन छोटा सा है।
वह जानता है हमारा जीवन घास जैसा है।
16 परमेश्वर जानता है कि हम
एक तुच्छ बनफूल से हैं।
वह फूल जल्दी ही उगता है।
फिर गर्म हवा चलती है
और वह फूल मुरझाता है।
और फिर शीघ्र ही तुम देख नहीं पाते
कि वह फूल कैसे स्थान पर उग रहा था।
17 किन्तु यहोवा का प्रेम सदा बना रहता है।
परमेश्वर सदा–सर्वदा
निज भक्तों से प्रेम करता है।
परमेश्वर की दया उसके बच्चों से
बच्चों तक बनी रहती है।
18 परमेश्वर ऐसे उन लोगों पर दयालु है,
जो उसकी वाचा को मानते हैं।
परमेश्वर ऐसे उन लोगों पर दयालु है
जो उसके आदेशों का पालन करते हैं।
19 परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग में संस्थापित है।
हर वस्तु पर उसका ही शासन है।

20 हे स्वर्गदूत, यहोवा के गुण गाओ।
हे स्वर्गदूतों, तुम वह शक्तिशाली सैनिक हो
जो परमेश्वर के आदेशों पर चलते हो।
परमेश्वर की आज्ञाएँ सुनते और पालते हो।
21 हे सब उसके सैनिकों, यहोवा के गुण गाओ,
तुम उसके सेवक हो।
तुम वही करते हो जो परमेश्वर चाहता है।
22 हर कहीं हर वस्तु यहोवा ने रची है।
परमेश्वर का शासन हर कहीं वस्तु पर है।
सो हे समूची सृष्टि, यहोवा को तू धन्य कह।
ओ मेरे मन यहोवा की प्रशंसा कर।

भजन 104

1 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह!
हे यहोवा, हे मेरे परमेश्वर, तू है अतिमहान!
तूने महिमा और आदर के वस्त्र पहने हैं।
2 तू प्रकाश से मण्डित है जैसे
कोई व्यक्ति चोंगा पहने।
तूने व्योम जैसे फैलाये चंदोबा हो।
3 हे परमेश्वर, तूने उनके ऊपर
अपना घर बनाया,
गहरे बदलों को तू अपना रथ बनाता है,
और पवन के पंखों पर चढ़ कर
आकाश पार करता है।
4 हे परमेश्वर, तूने निज दूतों को वैसा बनाया
जैसा पवन होता है।
तूने निज दासों को अग्नि के समान बनाया।
5 हे परमेश्वर, तूने ही धरती का
उसकी नीवों पर निर्माण किया।
इसलिए उसका नाश कभी नहीं होगा।
6 तूने जल की चादर से धरती को ढका।
जल ने पहाड़ों को ढक लिया।
7 तूने आदेश दिया और जल दूर हट गया।
हे परमेश्वर, तू जल पर गरजा
और जल दूर भागा।
8 पर्वतों से नीचे घाटियों में जल बहने लगा,
और फिर उन सभी स्थानों पर जल बहा
जो उसके लिये तूने रचा था।
9 तूने सागरों की सीमाएँ बाँध दी और
जल फिर कभी धरती को ढकने नहीं जाएगा।

10 हे परमेश्वर, तूने ही जल बहाया।
सोतों से नदियों से नीचे पहाड़ी
नदियों से पानी बह चला।
11 सभी वन्य पशुओं को धाराएँ जल देती हैं,
जिनमें जंगली गधे तक
आकर के प्यास बुझाते हैं।
12 वन के परिंदे तालाबों के किनारे
रहने को आते हैं
और पास खड़े पेड़ों की
डालियों में गाते हैं।
13 परमेश्वर पहाड़ों के ऊपर नीचे वर्षा भेजता है।
परमेश्वर ने जो कुछ रचा है,
धरती को वह सब देता है जो उसे चाहिए।
14 परमेश्वर, पशुओं को खाने के लिये
घास उपजाई, हम श्रम करते हैं
और वह हमें पौधे देता है।
ये पौधे वह भोजन है जिसे
हम धरती से पाते हैं।
15 परमेश्वर, हमें दाखमधु देता है,
जो हमको प्रसन्न करती है।
हमारा चर्म नर्म रखने को तू हमें तेल देता है।
हमें पुष्ट करने को वह हमें खाना देता है।
16 लबानोन के जो विशाल वृक्ष हैं
वह परमेश्वर के हैं।
उन विशाल वृक्षों हेतु उनकी
बढ़वार को बहुत जल रहता है।
17 पक्षी उन वृक्षों पर निज घोंसले बनाते।
सनोवर के वृक्षों पर सारस का बसेरा है।
18 बनैले बकरों के घर ऊँचे पहाड़ में बने हैं।
बिच्छुओं के छिपने के स्थान बड़ी चट्टान है।
19 हे परमेश्वर, तूने हमें चाँद दिया जिससे
हम जान पायें कि छुट्टियाँ कब है।
सूरज सदा जानता है कि
उसको कहाँ छिपना है।
20 तूने अंधेरा बनाया जिससे रात हो जाये और
देखो रात में बनैले पशु बाहर आ जाते
और इधर-उधर घूमते हैं।
21 वे झपटते सिंह जब दहाड़ते हैं तब ऐसा लगता
जैसे वे यहोवा को पुकारते हों,
जिसे माँगने से वह उनको आहार देता।

22 और पौ फटने पर जीवजन्तु वापस
घरों को लौटते और आराम करते हैं।
23 फिर लोग अपना काम करने को
बाहर निकलते हैं।
साँझ तक वे काम में लगे रहते हैं।
24 हे यहोवा, तूने अचरज भरे बहुतेरे काम किये।
धरती तेरी वस्तुओं से भरी पड़ी है।
तू जो कुछ करता है,
उसमें निज विवेक दर्शाता है।
25 यह सागर देखो!
यह कितना विशाल है!
बहुतेरे वस्तुएँ सागर में रहती हैं!
उनमें कुछ विशाल है और कुछ छोटी हैं!
सागर में जो जीवजन्तु रहते हैं,
वे अगणित असंख्य हैं।
26 सागर के ऊपर जलयान तैरते हैं,
और सागर के भीतर महामत्स्य
जो सागर के जीव को तूने रचा था,
क्रीड़ा करता है।
27 यहोवा, यह सब कुछ तुझपर निर्भर है।
हे परमेश्वर, उन सभी जीवों को खाना
तू उचित समय पर देता है।
28 हे परमेश्वर, खाना जिसे वे खाते है,
वह तू सभी जीवों को देता है।
तू अच्छे खाने से भरे अपने हाथ खोलता है,
और वे तृप्त हो जाने तक खाते हैं।
29 फिर जब तू उनसे मुख मोड़ लेता
तब वे भयभीत हो जाते हैं।
उनकी आत्मा उनको छोड़ चली जाती है।
वे दुर्बल हो जाते और मर जाते हैं
और उनकी देह फिर धूल हो जाती है।
30 हे यहोवा, निज आत्मा का अंश तू उन्हें दे।
और वह फिर से स्वस्थ हो जायेंगे।
तू फिर धरती को नयी सी बना दे।
31 यहोवा की महिमा सदा सदा बनी रहे!
यहोवा अपनी सृष्टि से सदा आनन्दित रहे!
32 यहोवा कि दृष्टि से यह धरती काँप उठेगी।
पर्वतों से धुआँ उठने लग जायेगा।
33 मैं जीवन भर यहोवा के लिये गाऊँगा।
मैं जब तक जीता हूँ यहोवा के गुण गाता रहूँगा।
34 मुझको यह आज्ञा है कि जो कुछ
मैंने कहा है वह उसे प्रसन्न करेगा।
मैं तो यहोवा के संग में प्रसन्न हूँ!
35 धरती से पाप का लोप हो जाये और
दुष्ट लोग सदा के लिये मिट जाये।
ओ मेरे मन यहोवा कि प्रशंसा कर।
यहोवा के गुणगान कर!

भजन 105

1 यहोवा का धन्यवाद करो!
तुम उसके नाम कि उपासना करो।
लोगों से उनका बखान करो जिन
अद्भुत कामों को वह किया करता है।
2 यहोवा के लिये तुम गाओ।
तुम उसके प्रशंसा गीत गाओ।
उन सभी आश्चर्यपूर्ण बातों का
वर्णन करो जिनको वह करता है।
3 यहोवा के पवित्र नाम पर गर्व करो।
ओ सभी लोगों जो यहोवा के
उपासक हो, तुम प्रसन्न हो जाओ।
4 सामर्थ्य पाने को तुम यहोवा के पास जाओ।
सहारा पाने को सदा उसके पास जाओ।
5 उन अद्भुत बातों को स्मरण करो जिनको
यहोवा करता है।
उसके आश्चर्य कर्म और उसके
विवेकपूर्ण निर्णयों को याद रखो।
6 तुम परमेश्वर के सेवक इब्राहीम के वंशज हो।
तुम याकूब के संतान हो,
वह व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने चुना था।
7 यहोवा ही हमारा परमेश्वर है।
सारे संसार पर यहोवा का शासन है।
8 परमेश्वर की वाचा सदा याद रखो।
हजार पीढ़ियों तक उसके आदेश याद रखो।
9 इब्राहीम के साथ परमेश्वर ने वाचा बाँधा था!
परमेश्वर ने इसहाक को वचन दिया था।
10 परमेश्वर ने याकूब (इस्राएल) को
व्यवस्था विधान दिया।
परमेश्वर ने इस्राएल के साथ वाचा किया।
यह सदा सर्वदा बना रहेगा।
11 परमेश्वर ने कहा था,

"कनान की भूमि मैं तुमको दूँगा।
वह धरती तुम्हारी हो जायेगी।"

12 परमेश्वर ने वह वचन दिया था,
जब इब्राहीम का परिवार छोटा था और
वे बस यात्री थे जब कनान में रह रहे थे।

13 वे राष्ट्र से राष्ट्र में, एक राज्य से
दूसरे राज्य में घूमते रहे।

14 किन्तु परमेश्वर ने उस घराने को
दूसरे लोगों से हानि नहीं पहुँचने दी।
परमेश्वर ने राजाओं को सावधान किया कि
वे उनको हानि न पहुँचाये।

15 परमेश्वर ने कहा था,
"मेरे चुने हुए लोगों को
तुम हानि मत पहुँचाओ।
तुम मेरे कोई नबियों का बुरा मत करो।"

16 परमेश्वर ने उस देश में अकाल भेजा।
और लोगों के पास खाने को
पर्याप्त खाना नहीं रहा।

17 किन्तु परमेश्वर ने एक व्यक्ति को उनके
आगे जाने को भेजा जिसका नाम यूसुफ था।
यूसुफ को एक दास के समान बेचा गया था।

18 उन्होंने यूसुफ के पाँव में रस्सी बाँधी।
उन्होंने उसकी गर्दन में एक
लोहे का कड़ा डाल दिया।

19 यूसुफ को तब तक बंदी बनाये रखा
जब तक वे बातें जो उसने कहीं थी
सचमुच घट न गयी।
यहोवा ने सुसन्देश से प्रमाणित कर दिया
कि यूसुफ उचित था।

20 मिस्र के राजा ने इस तरह आज्ञा दी कि
यूसुफ के बंधनों से मुक्त कर दिया जाये।
उस राष्ट्र के नेता ने कारागार से
उसको मुक्त कर दिया।

21 यूसुफ को अपने घर बार का
अधिकारी बना दिया।
यूसुफ राज्य में हर वस्तु का ध्यान रखने लगा।

22 यूसुफ अन्य प्रमुखों को निर्देश दिया करता था।
यूसुफ ने वृद्ध लोगों को शिक्षा दी।

23 फिर जब इस्राएल मिस्र में आया।
याकूब हाम के देश में रहने लगा।

24 याकूब के वंशज बहुत से हो गये।
वे मिस्र के लोगों से अधिक
बलशाली बन गये।

25 इसलिए मिस्री लोग याकूब के
घराने से घृणा करने लगे।
मिस्र के लोग अपने दासों के
विरुद्ध कुचक्र रचने लगे।

26 इसलिए परमेश्वर ने निज दास मूसा
और हारुन जो नबी चुना हुआ था, भेजा।

27 परमेश्वर ने हाम के देश में मूसा
और हारुन से अनेक आश्चर्य कर्म कराये।

28 परमेश्वर ने गहन अधंकार भेजा था,
किन्तु मिस्रियों ने उनकी नहीं सुनी थी।

29 सो फिर परमेश्वर ने पानी को खून में बदल दिया,
और उनकी सब मछलियाँ मर गयी।

30 और फिर बाद में मिस्रियों का देश
मेढ़कों से भर गया।
यहाँ तक की मेढ़क राजा के
शयन कक्ष तक भरे।

31 परमेश्वर ने आज्ञा दी मक्खियाँ और पिस्सू आये।
वे हर कहीं फैल गये।

32 परमेश्वर ने वर्षा को ओलों में बदल दिया।
मिस्रियों के देश में हर कहीं आग
और बिजली गिरने लगी।

33 परमेश्वर ने मिस्रियों की अंगूर की बाड़ी
और अंजीर के पेड़ नष्ट कर दिये।
परमेश्वर ने उनके देश के हर
पेड़ को तहस नहस किया।

34 परमेश्वर ने आज्ञा दी और
टिड्डी दल आ गये।
टिड्डे आ गये और उनकी संख्या अनगिनत थी।

35 टिड्डी दल और टिड्डे उस
देश के सभी पौधे चट कर गये।
उन्होंने धरती पर जो भी फसलें
खड़ी थी, सभी को खा डाली।

36 फिर परमेश्वर ने मिस्रियों के
पहलौठी सन्तान को मार डाला।
परमेश्वर ने उनके सबसे बड़े पुत्रों को मारा।

37 फिर परमेश्वर निज भक्तों
को मिस्र से निकाल लाया।

वे अपने साथ सोना और चाँदी ले आये।
परमेश्वर का कोई भी भक्त
गिरा नहीं, न ही लड़खड़ाया।
38 परमेश्वर के लोगों को जाते हुए
देख कर मिस्र आनन्दित था,
क्योंकि परमेश्वर के लोगों
से वे डरे हुए थे।
39 परमेश्वर ने कम्बल जैसा एक मेघ फैलाया।
रात में निज भक्तों को प्रकाश देने के
लिये परमेश्वर ने अपने आग के
स्तम्भ को काम में लाया।
40 लोगों ने खाने की माँग की और परमेश्वर
उनके लिये बटेरों को ले आया।
परमेश्वर ने आकाश से
उनको भरपूर भोजन दिया।
41 परमेश्वर ने चट्टान को फाड़ा
और जल उछलता हुआ बाहर फूट पड़ा।
उस मरुभूमि के बीच एक नदी बहने लगी।
42 परमेश्वर ने अपना पवित्र वचन याद किया।
परमेश्वर ने वह वचन याद किया जो
उसने अपने दास इब्राहीम को दिया था।
43 परमेश्वर अपने विशेष को
मिस्र से बाहर निकाल लाया।
लोग प्रसन्न गीत गाते हुए और
खुशियाँ मनाते हुए बाहर आ गये!
44 फिर परमेश्वर ने निज भक्तों को
वह देश दिया जहाँ और लोग रह रहे थे।
परमेश्वर के भक्तों ने वे सभी वस्तु पा ली
जिनके लिये औरों ने श्रम किया था।
45 परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि
लोग उसकी व्यवस्था माने।
परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि
वे उसकी शिक्षाओं पर चलें।
यहोवा के गुण गाओ!

भजन 106

1 यहोवा की प्रशंसा करो!
यहोवा का धन्यवाद करो
क्योंकि वह उत्तम है!
परमेश्वर का प्रेम सदा ही रहता है!
2 सचमुच यहोवा कितना महान है,
इसका बखान कोई व्यक्ति कर नहीं सकता।
परमेश्वर की पूरी प्रशंसा कोई नहीं कर सकता।
3 जो लोग परमेश्वर का आदेश पालते हैं,
वे प्रसन्न रहते हैं।
वे व्यक्ति हर समय उत्तम कर्म करते हैं।
4 यहोवा, जब तू निज भक्तों पर कृपा करे।
मुझको याद कर।
मुझको भी उद्धार करने को याद कर।
5 यहोवा, मुझको भी उन भली बातों में
हिस्सा बँटाने दे जिन को तू अपने
लोगों के लिये करता है।
तू अपने भक्तों के साथ मुझको भी
प्रसन्न होने दे।
तुझ पर तेरे भक्तों के साथ
मुझको भी गर्व करने दे।
6 हमने वैसे ही पाप किये हैं
जैसे हमारे पूर्वजों ने किये।
हम अधर्मी हैं, हमने बुरे काम किये है!
7 हे यहोवा, मिस्र में हमारे पूर्वजों ने
आश्चर्य कर्मों से कुछ भी नहीं सीखा।
उन्होंने तेरे प्रेम को और तेरी करुणा
को याद नहीं रखा।
हमारे पूर्वज वहाँ लाल सागर के
किनारे तेरे विरुद्ध हुए।
8 किन्तु परमेश्वर ने निज नाम के हेतु
हमारे पूर्वजों को बचाया था।
परमेश्वर ने अपनी महान शक्ति
दिखाने को उनको बचाया था।
9 परमेश्वर ने आदेश दिया
और लाल सागर सूखा।
परमेश्वर हमारे पूर्वजों को उस
गहरे समुद्र से इतनी सूखी धरती से
निकाल ले आया जैसे मरुभूमि हो।
10 परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को
उनके शत्रुओं से बचाया!
परमेश्वर उनको उनके शत्रुओं से
बचा कर निकाल लाया।
11 और फिर उनके शत्रुओं को
उसी सागर के बीच ढाँप कर डुबा दिया।

उनका एक भी शत्रु बच
निकल नहीं पाया।
12 फिर हमारे पूर्वजों ने परमेश्वर पर
विश्वास किया।
उन्होंने उसके गुण गाये।
13 किन्तु हमारे पूर्वज उन बातों को
शीघ्र भूले जो परमेश्वर ने की थी।
उन्होंने परमेश्वर की सम्मति पर
कान नहीं दिया।
14 हमारे पूर्वजों को जंगल में भूख लगी थी।
उस मरुभूमि में उन्होंने
परमेश्वर को परखा।
15 किन्तु हमारे पूर्वजों ने जो कुछ भी माँगा
परमेश्वर ने उनको दिया।
किन्तु परमेश्वर ने उनको एक
महामारी भी दे दी थी।
16 लोग मूसा से डाह रखने लगे
और हारुन से वे डाह रखने लगे जो
यहोवा का पवित्र याजक था।
17 सो परमेश्वर ने उन ईर्ष्यालु
लोगों को दण्ड दिया।
धरती फट गयी और दातान को निगला
और फिर धरती बन्द हो गयी।
उसने अविराम के समुह को निगल लिया।
18 फिर आग ने उन लोगों की भीड़ को भस्म किया।
उन दुष्ट लोगों को आग ने जला दिया।
19 उन लोगों ने होरब के पहाड़ पर
सोने का एक बछड़ा बनाया और
वे उस मूर्ति की पूजा करने लगे!
20 उन लोगों ने अपने महिमावान
परमेश्वर को एक बहुत जो घास
खाने वाले बछड़े का था उससे बेच दिया!
21 हमारे पूर्वज परमेश्वर को भूले
जिसने उन्हें बचाया था।
वे परमेश्वर के विषय में भुले
जिसने मिस्र में आश्चर्य कर्म किये थे।
22 परमेश्वर ने हाम के देश में
आश्चर्य कर्म किये थे।
परमेश्वर ने लाल सागर के पास
भय विस्मय भरे काम किये थे।
23 परमेश्वर उन लोगों को नष्ट करना चाहता था,
किन्तु परमेश्वर के चुने
दास मूसा ने उनको रोक दिया।
परमेश्वर बहुत कुपित था किन्तु
मूसा आड़े आया कि परमेश्वर
उन लोगों का कहीं नाश न करे।
24 फिर उन लोगों ने उस अद्भुत देश
कनान में जाने से मना कर दिया।
लोगों को विश्वास नहीं था कि परमेश्वर
उन लोगों को हराने में सहायता करेगा
जो उस देश में रह रहे थे।
25 अपने तम्बूओं में वे शिकायत करते रहे!
हमारे पूर्वजों ने परमेश्वर की
बात मानने से नकारा।
26 सो परमेश्वर ने शपथ खाई कि
वे मरुभूमि में मर जायेंगे।
27 परमेश्वर ने कसम खाई कि उनकी
सन्तानों को अन्य लोगों को हराने देगा।
परमेश्वर ने कसम उठाई कि वह
हमारे पूर्वजों को देशों में छितरायेगा।
28 फिर परमेश्वर के लोग 'बालपोर' में 'बाल' के
पूजने में सम्मिलित हो गये।
परमेश्वर के लोग वह माँस खाने लगे जिस
को निर्जीव देवताओं पर चढ़ाया गया था।
29 परमेश्वर अपने जनों पर अति कुपित हुआ।
और परमेश्वर ने उनको अति दुर्बल कर दिया।
30 किन्तु पीनहास ने विनती की और
परमेश्वर ने उस व्याधि को रोका
31 किन्तु परमेश्वर जानता था कि
पीनहास ने अति उत्तम कर्म किया है।
और परमेश्वर उसे सदा सदा याद रखेगा।
32 मरीबा में लोग भड़क उठे
और उन्होंने मूसा से बुरा काम कराया।
33 उन लोगों ने मूसा को अति व्याकुल किया।
सो मूसा बिना ही विचारे बोल उठा।
34 यहोवा ने लोगों से कहा कि कनान में
रह रहे अन्य लोगों को वे नष्ट करें।
किन्तु इस्राएली लोगों ने
परमेश्वर की नहीं मानी।
35 इस्राएल के लोग अन्य लोगों से

हिल मिल गये, और वे भी वैसे
काम करने लगे जैसे अन्य
लोग किया करते थे।

36 वे अन्य लोग परमेश्वर के
जनों के लिये फँदा बन गये।
परमेश्वर के लोग उन देवों को पूजने लगे
जिनकी वे अन्य लोग पूजा किया करते थे।

37 यहाँ तक कि परमेश्वर के जन
अपने ही बालकों की हत्या करने लगे।
और वे उन बच्चों को उन दानवों की
प्रतिमा को अर्पित करने लगे।

38 परमेश्वर के लोगों ने अबोध
भोले जनों की हत्या की।
उन्होंने अपने ही बच्चों को मार डाला
और उन झूठे देवों को उन्हें अर्पित किया।

39 इस तरह परमेश्वर के जन उन पापों
से अशुद्ध हुए जो अन्य लोगों के थे।
वे लोग अपने परमेश्वर के
अविश्वासपात्र हुए।
और वे लोग वैसे काम करने लगे
जैसे अन्य लोग करते थे।

40 परमेश्वर अपने उन लोगों पर कुपित हुआ।
परमेश्वर उनसे तंग आ चुका था!

41 फिर परमेश्वर ने अपने उन लोगों को
अन्य जातियों को दे दिया।
परमेश्वर ने उन पर उनके
शत्रुओं का शासन करा दिया।

42 परमेश्वर के जनों के शत्रुओं ने
उन पर अधिकार किया और
उनका जीना बहुत कठिन कर दिया।

43 परमेश्वर ने निज भक्तों को बहुत
बार बचाया, किन्तु उन्होंने
परमेश्वर से मुख मोड़ लिया।
और वे ऐसी बातें करने लगे जिन्हें
वे करना चाहते थे।
परमेश्वर के लोगों ने बहुत बहुत बुरी बातें की।

44 किन्तु जब कभी परमेश्वर के जनों पर
विपद पड़ी उन्होंने सदा ही सहायता
पाने को परमेश्वर को पुकारा।
परमेश्वर ने हर बार उनकी प्रार्थनाएँ सुनी।

45 परमेश्वर ने सदा अपनी वाचा को याद रखा।
परमेश्वर ने अपने महा प्रेम से
उनको सदा ही सुख चैन दिया।

46 परमेश्वर के भक्तों को उन अन्य
लोगों ने बंदी बना लिया, किन्तु परमेश्वर
ने उनके मन में उनके लिये दया उपजाई।

47 यहोवा हमारे परमेश्वर, ने हमारी रक्षा की।
परमेश्वर उन अन्य देशों से हमको
एकत्र करके ले आया,
ताकि हम उसके पवित्र नाम का
गुण गान कर सके;
ताकि हम उसके प्रशंसा गीत गा सकें।

48 इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को धन्य कहो।
परमेश्वर सदा ही जीवित रहता आया है।
वह सदा ही जीवित रहेगा।
और सब जन बोले, "आमीन।"
यहोवा के गुण गाओ।

पाँचवाँ भाग

भजन 107

1 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह उत्तम है।
उसका प्रेम अमर है।

2 हर कोई ऐसा व्यक्ति जिसे
यहोवा ने बचाया है, इन राष्ट्रों को कहे।
हर कोई ऐसा व्यक्ति जिसे यहोवा ने
अपने शत्रुओं से छुड़ाया उसके गुण गाओ।

3 यहोवा ने निज भक्तों को बहुत से अलग
अलग देशों से इकट्ठा किया है।
उसने उन्हें पूर्व और पश्चिम से, उत्तर
और दक्षिण से जुटाया है।

4 कुछ लोग निर्जन मरुभूमि में भटकते रहे।
वे लोग ऐसे एक नगर की खोज में थे
जहाँ वे रह सकें।
किन्तु उन्हें कोई ऐसा नगर नहीं मिला।

5 वे लोग भूखे थे और प्यासे थे
और वे दुर्बल होते जा रहे थे।

6 ऐसे उस संकट में सहारा पाने को
उन्होंने यहोवा को पुकारा।
यहोवा ने उन सभी लोगों को उनके
संकट से बचा लिया।

7 परमेश्वर उन्हें सीधा उन नगरों में
ले गया जहाँ वे बसेंगे।
8 परमेश्वर का धन्यवाद करो उसके
प्रेम के लिये और उन अद्भुत कर्मों के लिये
जिन्हें वह अपने लोगों के लिये करता है।
9 प्यासी आत्मा को परमेश्वर सन्तुष्ट करता है।
परमेश्वर उत्तम वस्तुओं से भूखी
आत्मा का पेट भरता है।
10 परमेश्वर के कुछ भक्त बन्दी बने
ऐसे बन्दीगृह में, वे तालों में बंद थे,
जिसमें घना अंधकार था।
11 क्यों? क्योंकि उन लोगों ने उन बातों के
विरुद्ध लड़ाईयाँ की थी जो परमेश्वर ने
कहीं थी, परम परमेश्वर की
सम्मति को उन्होंने सुनने से नकारा था।
12 परमेश्वर ने उनके कर्मों के लिये जो
उन्होंने किये थे उन लोगों के
जीवन को कठिन बनाया।
उन्होंने ठोकर खाई और वे गिर पड़े,
और उन्हें सहारा देने कोई भी नहीं मिला।
13 वे व्यक्ति संकट में थे,
इसलिए सहारा पाने को यहोवा को पुकारा।
यहोवा ने उनके संकटों से उनकी रक्षा की।
14 परमेश्वर ने उनको उनके
अंधेरे कारागारों से उबार लिया।
परमेश्वर ने वे रस्से काटे जिनसे
उनको बाँधा गया था।
15 यहोवा का धन्यवाद करो।
उसके प्रेम के लिये
और उन अद्भुत कामों के लिये जिन्हें
वह लोगों के लिये करता है
उसका धन्यवाद करो।
16 परमेश्वर हमारे शत्रुओं को हराने में
हमें सहायता देता है।
उनके काँसें के द्वारों को परमेश्वर
तोड़ गिरा सकता है।
परमेश्वर उनके द्वारों पर लगी लोहे
कि आगलें छिन्न-भिन्न कर सकता है।
17 कुछ लोग अपने अपराधों और
अपने पापों से जड़मति बने।
18 उन लोगों ने खाना छोड़ दिया
और वे मरे हुए से हो गये।
19 वे संकट में थे सो उन्होंने सहायता
पाने को यहोवा को पुकारा।
यहोवा ने उन्हें उनके
संकटों से बचा लिया।
20 परमेश्वर ने आदेश दिया
और लोगों को चँगा किया।
इस प्रकार वे व्यक्ति कब्रों से बचाये गये।
21 उसके प्रेम के लिये यहोवा का धन्यवाद करो
उसके वे अद्भुत कामों के लिये
उसका धन्यवाद करो जिन्हें
वह लोगों के लिये करता है।
22 यहोवा को धन्यवाद देने बलि अर्पित करो,
सभी कामों को जो उसने किये हैं।
यहोवा ने जिनको किया है,
उन बातों को आनन्द के साथ बखानो।
23 कुछ लोग अपने काम करने को
अपनी नावों से समुद्र पार कर गये।
24 उन लोगों ने ऐसी बातों को देखा है
जिनको यहोवा कर सकता है।
उन्होंने उन अद्भुत बातों को देखा है
जिन्हें यहोवा ने सागर पर किया है।
25 परमेश्वर ने आदेश दिया,
फिर एक तीव्र पवन तभी चलने लगी।
बड़ी से बड़ी लहरे आकार लेने लगी।
26 लहरे इतनी ऊपर उठीं जितना आकाश हो
तूफान इतना भयानक था
कि लोग भयभीत हो गये।
27 लोग लड़खड़ा रहे थे, गिरे जा रहे थे
जैसे नशे में धुत्त हो।
खिवैया उनकी बुद्धि जैसे व्यर्थ हो गयी हो।
28 वे संकट में थे सो उन्होंने सहायता
पाने को यहोवा को पुकारा।
तब यहोवा ने उनको संकटों से बचा लिया।
29 परमेश्वर ने तूफान को रोका
और लहरें शांत हो गयी।
30 खिवैया प्रसन्न थे कि सागर शांत हुआ था।।
परमेश्वर उनको उसी सुरक्षित स्थान
पर ले गया जहाँ वे जाना चाहते थे।

31 यहोवा का धन्यवाद करो उसके प्रेम के लिये
धन्यवाद करो उन अद्‌भुत कामों के लिये
जिन्हें वह लोगों के लिये करता है।
32 महासभा के बीच उसका गुणगान करो।
जब बुजुर्ग नेता आपस में मिलते हों
उसकी प्रशंसा करों।
33 परमेश्वर ने नदियाँ मरुभूमि में बदल दीं।
परमेश्वर ने झरनों के प्रवाह को रोका।
34 परमेश्वर ने उपजाऊँ भूमि को व्यर्थ की रेही
भूमि में बदल दिया।
क्यों? क्योंकि वहाँ बसे दुष्ट लोगों ने
बुरे कर्म किये थे।
35 और परमेश्वर ने मरुभूमि को
झीलों की धरती में बदला।
उसने सूखी धरती से जल के स्रोत बहा दिये।
36 परमेश्वर भूखे जनों को उस अच्छी
धरती पर ले गया और उन लोगों ने
अपने रहने को वहाँ एक नगर बसाया।
37 फिर उन लोगों ने अपने खेतों में
बीजों को रोप दिया।
उन्होंने बगीचों में अंगूर रोप दिये,
और उन्होंने एक उत्तम फसल पा ली।
38 परमेश्वर ने उन लोगों को आशीर्वाद दिया।
उनके परिवार फलने फूलने लगे।
उनके पास बहुत सारे पशु हुए।
39 उनके परिवार विनाश और संकट के कारण
छोटे थे और वे दुर्बल थे।
40 परमेश्वर ने उनके प्रमुखों को कुचला
और अपमानित किया था।
परमेश्वर ने उनको पथहीन मरुभूमि में भटकाया।
41 किन्तु परमेश्वर ने तभी उन दीन लोगों को
उनकी याचना से बचा कर निकाल लिया।
अब तो उनके घराने बड़े हैं,
उतने बड़े जितनी भेड़ों के झुण्ड।
42 भले लोग इसको देखते हैं
और आनन्दित होते हैं,
किन्तु कुटिल इसको देखते हैं
और नहीं जानते कि वे क्या कहें।
43 यदि कोई व्यक्ति विवेकी है तो
वह इन बातों को याद रखेगा।
यदि कोई व्यक्ति विवेकी है तो वह समझेगा
कि सचमुच परमेश्वर का प्रेम कैसा है।

भजन 108

दाऊद का एक स्तुति गीत।

1 हे परमेश्वर, मैं तैयार हूँ।
मैं तेरे स्तुति गीतों को गाने
बजाने को तैयार हूँ।
2 हे वीणाओं, और हे सारंगियों!
आओ हम सूरज को जगाये।
3 हे यहोवा, हम तेरे यश को राष्ट्रों के बीच गायेंगे
और दूसरे लोगों के बीच तेरी स्तुति करेंगे।
4 हे परमेश्वर, तेरा प्रेम आकाश से बढ़कर
ऊँचा है, तेरा सच्चा प्रेम ऊँचा,
सबसे ऊँचे बादलों से बड़कर है।
5 हे परमेश्वर, आकाशों से ऊपर उठ!
ताकि सारा जगत तेरी महिमा का दर्शन करे।
6 हे परमेश्वर, निज प्रियों को बचाने ऐसा कर
मेरी विनती का उत्तर दे, और हमको बचाने को
निज महाशक्ति का प्रयोग कर।
7 यहोवा अपने मन्दिर से बोला
और उसने कहा, "मैं युद्ध जीतूँगा।
मैं अपने भक्तों को शोकेम प्रदान करुँगा।
मैं उनको सुक्कोत की घाटी दूँगा।
8 गिलाद और मनश्शे मेरे हो जायेंगे।
एप्रैम मेरा शिरबाण होगा और
यहूदा मेरा राजदण्ड बनेगा।
9 मोआब मेरा चरण धोने का पात्र बनेगा।
एदोम वह दास होगा जो मेरा पादूका लेकर
चलेगा, मैं पलिश्तियों को पराजित करके
विजय का जयघोष करुँगा।"
10 मुझे शत्रु के दुर्ग में कौन ले जायेगा?
एदोम को हराने कौन मेरी सहायता करेगा?
11 हे परमेश्वर, क्या यह सत्य है कि
तूने हमें बिसारा है?
और तू हमारी सेना के साथ नहीं चलेगा!
12 हे परमेश्वर, कृपा कर, हमारे शत्रु को
हराने में हमको सहायता दे!
मनुष्य तो हमको सहारा नहीं दे सकते।
13 बस केवल परमेश्वर हमको

सुदृढ़ कर सकता है।
बस केवल परमेश्वर हमारे
शत्रुओं को पराजित कर सकता है!

भजन 109

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक स्तुति गीत।

1 हे परमेश्वर, मेरी विनती कि
ओर से अपने कान तू मत मूँद!
2 दुष्ट जन मेरे विषय में झूठी बातें कर रहे हैं।
वे दुष्ट लोग ऐसा कह रहें जो सच नहीं है।
3 लोग मेरे विषय में घिनौनी बातें कह रहे हैं।
लोग मुझ पर व्यर्थ ही बात कर रहे हैं।
4 मैंने उन्हें प्रेम किया, वे मुझसे बैर करते हैं।
इसलिए, परमेश्वर अब मैं तुझ से
प्रार्थना कर रहा हूँ।
5 मैंने उन व्यक्तियों के साथ भला किया था।
किन्तु वे मेरे लिये बुरा कर रहे हैं।
मैंने उन्हें प्रेम किया, किन्तु
वे मुझसे बैर रखते हैं।
6 मेरे उस शत्रु ने जो बुरे काम किये हैं
उसको दण्ड दे।
ऐसा कोई व्यक्ति ढूँढ
जो प्रमाणित करे कि वह सही नहीं है।
7 न्यायाधीश न्याय करे कि शत्रु ने मेरा बुरा
किया है, और मेरे शत्रु जो भी कहे
वह अपराधी है और उसकी बातें
उसके ही लिये बिगड़ जायें।
8 मेरे शत्रु को शीघ्र मर जाने दे।
मेरे शत्रु का काम किसी और को लेने दे।
9 मेरे शत्रु की सन्तानों को अनाथ कर दे
और उसकी पत्नी को तू विधवा कर दे।
10 उनका घर उनसे छुट जायें
और वे भिखारी हो जायें।
11 जो कुछ मेरे शत्रु का हो उसका
लेनदार छीन कर ले जायें।
उसके मेहनत का फल अनजाने
लोग लूट कर ले जायें।
12 मेरी यही कामना है, मेरे शत्रु पर
कोई दया न दिखाये,
और उसके सन्तानों पर कोई भी
व्यक्ति दया नहीं दिखलाये।
13 पूरी तरह नष्ट कर दे मेरे शत्रु को।
आने वाली पीढ़ी को हर किसी वस्तु से
उसका नाम मिटने दे।
14 मेरी कामना यह है कि मेरे शत्रु के पिता और
माता के पापों को यहोवा सदा ही याद रखे।
15 यहोवा सदा ही उन पापों को याद रखे
और मुझे आशा है कि वह मेरे शत्रु की
याद मिटाने को लोगों को विवश करेगा।
16 क्यों? क्योंकि उस दुष्ट ने कोई भी
अच्छा कर्म कभी भी नहीं किया।
उसने किसी को कभी भी प्रेम नहीं किया।
उसने दीनों असहायों का जीना
कठिन कर दिया।
17 उस दुष्ट लोगों को शाप देना भाता था।
सो वही शाप उस पर लौट कर गिर जाये।
उस बुरे व्यक्ति ने कभी आशीष न दी कि
लोगों के लिये कोई भी अच्छी बात घटे।
सो उसके साथ कोई भी भली बात मत होने दे।
18 वह शाप को वस्त्रों सा ओढ़ लें।
शाप ही उसके लिये पानी बन जाये
वह जिसको पीता रहे।
शाप ही उसके शरीर पर तेल बनें।
19 शाप ही उस दुष्ट जन का वस्त्र बने
जिनको वह लपेटे, और शाप ही
उसके लिये कमर बन्द बने।
20 मुझको यह आशा है कि यहोवा मेरे शत्रु के
साथ इन सभी बातों को करेगा।
मुझको यह आशा है कि यहोवा इन
सभी बातों को उनके साथ करेगा जो
मेरी हत्या का जतन कर रहे है।
21 यहोवा तू मेरा स्वामी है।
सो मेरे संग वैसा बर्ताव कर जिससे
तेरे नाम का यश बढ़े।
तेरी करुणा महान है, सो मेरी रक्षा कर।
22 मैं बस एक दीन, असहाय जन हूँ।
मैं सचमुच दु:खी हूँ । मेरा मन टूट चुका है।
23 मुझे ऐसा लग रहा
जैसे मेरा जीवन साँझ के समय की
लम्बी छाया की भाँति बीत चुका है।

मुझे ऐसा लग रहा जैसे किसी
खटमल को किसी ने बाहर किया।
24 क्योंकि मैं भूखा हूँ इसलिए मेरे
घुटने दुर्बल हो गये हैं।
मेरा भार घटता ही जा रहा है,
और मैं सूखता जा रहा हूँ।
25 बुरे लोग मुझको अपमानित करते।
वे मुझको घूरते और अपना सिर मटकाते हैं।।
26 यहोवा मेरा परमेश्वर, मुझको सहारा दे!
अपना सच्चा प्रेम दिखा और मुझको बचा ले!
27 फिर वे लोग जान जायेंगे कि तूने ही
मुझे बचाया है।
उनको पता चल जायेगा कि वह तेरी शक्ति थी
जिसने मुझको सहारा दिया।
28 वे लोग मुझे शाप देते रहे।
किन्तु यहोवा मुझको आशीर्वाद दे सकता है।
उन्होंने मुझ पर वार किया, सो उनको हरा दे।
तब मैं, तेरा दास, प्रसन्न हो जाऊँगा।
29 मेरे शत्रुओं को अपमानित कर!
वे अपने लाज से ऐसे ढक जायें
जैसे परिधान का आवरण ढक लेता।
30 मैं यहोवा का धन्यवाद करता हूँ।
बहुत लोगों के सामने मैं उसके गुण गाता हूँ।
31 क्यों? क्योंकि यहोवा असहाय
लोगों का साथ देता है।
परमेश्वर उनको दूसरे लोगों से बचाता है,
जो प्राणदण्ड दिलवाकर
उनके प्राण हरने का यत्न करते हैं।

भजन 110

दाऊद का एक स्तुति गीत।

1 यहोवा ने मेरे स्वामी से कहा,
"तू मेरे दाहिने बैठ जा, जब तक कि मैं
तेरे शत्रुओं को तेरे पाँव की चौकी नहीं कर दूँ।"
2 तेरे राज्य के विकास में यहोवा सहारा देगा।
तेरे राज्य का आरम्भ सिय्योन पर होगा,
और उसका विकास तब तक होता रहेगा,
जब तक तू अपने शत्रुओं पर उनके
अपने ही देश में राज करेगा।
3 तेरे पराक्रम के दिन तेरी प्रजा के
लोग स्वेच्छा वलि बनेंगे।
तेरे जवान पवित्रता से सुशोभित भोर के गर्भ
से जन्मी ओस के समान तेरे पास है।
4 यहोवा ने एक वचन दिया, और यहोवा
अपना मन नहीं बदलेगा।
"तू नित्य याजक है।
किन्तु हारुन के परिवार समूह से नहीं।
तेरी याजकी भिन्न है।
तू मेल्कीसेदेक के समूह की
रीति का याजक है।"
5 मेरे स्वामी, तूने उस दिन
अपना क्रोध प्रकट किया था।
अपने महाशक्ति को काम में लिया था
और दूसरे राजाओं को तूने हरा दिया था।
6 परमेश्वर राष्ट्रों का न्याय करेगा।
परमेश्वर ने उस महान धरती पर
शत्रुओं को हरा दिया।
उनकी मृत देहों से धरती फट गयी थी।
7 राह के झरने से जल पी के ही राजा अपना
सिर उठायेगा और सचमुच बलशाली होगा!

भजन 111

1 यहोवा के गुण गाओ!
यहोवा का अपने सम्पूर्ण मन से ऐसी
उस सभा में धन्यवाद करता हूँ
जहाँ सज्जन मिला करते हैं।
2 यहोवा ऐसे कर्म करता है,
जो आश्चर्यपूर्ण होते हैं।
लोग हर उत्तम वस्तु चाहते हैं।,
वही जो परमेश्वर से आती है।
3 परमेश्वर ऐसे कर्म करता है जो सचमुच
महिमावान और आश्चर्यपूर्ण होते हैं।
उसका खरापन सदा–सदा बना रहता है।
4 परमेश्वर अद्भुत कर्म करता है ताकि
हम याद रखें कि यहोवा करुणापूर्ण
और दया से भरा है।
5 परमेश्वर निज भक्तों को भोजन देता है।
परमेश्वर अपनी वाचा को याद रखता है।
6 परमेश्वर के महान कार्य उसके प्रजा को

यह दिखाया कि वह
उनकी भूमि उन्हें दे रहा है।
7 परमेश्वर जो कुछ करता है वह उत्तम
और पक्षपात रहित है।
उसके सभी आदेश पूरे विश्वास योग्य हैं।
8 परमेश्वर के आदेश सदा ही बने रहेंगे।
परमेश्वर के उन आदेशों को देने के
प्रयोजन सच्चे थे और वे पवित्र थे।
9 परमेश्वर निज भक्तों को बचाता है।
परमेश्वर ने अपनी वाचा को
सदा अटल रहने को रचा है, परमेश्वर का नाम
आश्चर्यपूर्ण है और वह पवित्र है।
10 विवेक भय और यहोवा के
आदर से उपजता है।
वे लोग बुद्धिमान होते हैं जो
यहोवा का आदर करते हैं।
यहोवा की स्तुति सदा सदा गायी जायेगी।

भजन 112

1 यहोवा की प्रशंसा करो!
ऐसा व्यक्ति जो यहोवा से डरता है।
और उसका आदर करता है।
वह अति प्रसन्न रहेगा।
परमेश्वर के आदेश ऐसे व्यक्ति को भाते हैं।
2 धरती पर ऐसे व्यक्ति की संतानें महान होंगी।
अच्छे व्यक्तियों कि संतानें सचमुच धन्य होंगी।
3 ऐसे व्यक्ति का घराना बहुत धनवान होगा
और उसकी धार्मिकता सदा सदा बनी रहेगी।
4 सज्जनों के लिये परमेश्वर ऐसा होता है
जैसे अंधेरे में चमकता प्रकाश हो।
परमेश्वर खरा है, और करुणापूर्ण है
और दया से भरा है।
5 मनुष्य को अच्छा है कि वह
दयालु और उदार हो।
मनुष्य को यह उत्तम है कि वह
अपने व्यापार में खरा रहे।
6 ऐसा व्यक्ति का पतन कभी नहीं होगा।
एक अच्छे व्यक्ति को सदा याद किया जायेगा।
7 सज्जन को विपद से डरने की जरुरत नहीं।
ऐसा व्यक्ति यहोवा के भरोसे है
और आश्वस्त रहता है।
8 ऐसा व्यक्ति आश्वस्त रहता है।
वह भयभीत नहीं होगा।
वह अपने शत्रुओं को हरा देगा।
9 ऐसा व्यक्ति दीन जनों को मुक्त दान देता है।
उसके पुण्य कर्म जिन्हें वह करता रहता है
वह सदा सदा बने रहेंगे।
10 कुटिल जन उसको देखेंगे और कुपित होंगे।
वे क्रोध में अपने दाँतों को पीसेंगे
और फिर लुप्त हो जायेंगे।
दुष्ट लोग उसको कभी नहीं पायेंगे जिसे
वह सब से अधिक पाना चाहते हैं।

भजन 113

1 हे यहोवा के सेवकों यहोवा की स्तुति करो!
उसका गुणगान करो!
यहोवा के नाम की प्रशंसा करो।
2 यहोवा का नाम आज और
सदा सदा के लिये और अधिक धन्य हो।
यह मेरी कामना है।
3 मेरी यह कामना है, यहोवा के नाम का गुण
पूरब से जहाँ सूरज उगता है,
पश्चिम तक उस स्थान में
जहाँ सूरज डूबता है गाया जाये।
4 यहोवा सभी राष्ट्रों से महान है।
उसकी महिमा आकाशों तक उठती है।
5 हमारे परमेश्वर के समान
कोई भी व्यक्ति नहीं है।
परमेश्वर ऊँचे अम्बर में विराजता है।
6 ताकि परमेश्वर अम्बर और
नीचे धरती को देख पाये।
7 परमेश्वर दीनों को धूल से उठाता है।
परमेश्वर भिखारियों को कूड़े के
घूरे से उठाता है।
8 परमेश्वर उन्हें महत्त्वपूर्ण बनाता है।
परमेश्वर उन लोगों को
महत्त्वपूर्ण मुखिया बनाता है।
9 चाहे कोई निपूती बाँझ स्त्री हो, परमेश्वर
उसे बच्चे दे देगा और उसको प्रसन्न करेगा।
यहोवा का गुणगान करो!

भजन 114

1 इस्राएल ने मिस्र छोड़ा। याकूब (इस्राएल) ने
उस अनजान देश को छोड़ा।
2 उस समय यहूदा परमेश्वर का विशेष व्यक्ति
बना, इस्राएल उसका राज्य बन गया।
3 इसे लाल सागर देखा, वह भाग खड़ा हुआ।
यरदन नदी उलट कर बह चली।
4 पर्वत मेढ़े के समान नाच उठे!
पहाड़ियाँ मेमनों जैसी नाची।
5 हे लाल सागर, तू क्यों भाग उठा?
हे यरदन नदी, तू क्यों उलटी बही?
6 पर्वतों, क्यों तुम मेढ़े के जैसे नाचे?
और पहाड़ियों, तुम क्यों मेमनों जैसी नाची?
7 याकूब के परमेश्वर, स्वामी
यहोवा के सामने धरती काँप उठी।
8 परमेश्वर ने ही चट्टानों को चीर के
जल को बाहर बहाया।
परमेश्वर ने पक्की चट्टान से
जल का झरना बहाया था।

भजन 115

1 यहोवा! हमको कोई गौरव ग्रहण
नहीं करना चाहिये।
गौरव तो तेरा है।
तेरे प्रेम और निष्ठा के कारण गौरव तेरा है।
2 राष्ट्रों को क्यों अचरज हो कि
हमारा परमेश्वर कहाँ है?
3 परमेश्वर स्वर्ग में है।
जो कुछ वह चाहता है वही करता रहता है।
4 उन जातियों के "देवता" बस केवल पुतले हैं
जो सोने चाँदी के बने है।
वह बस केवल पुतले हैं
जो किसी मानव ने बनाये।
5 उन पुतलों के मुख है, पर वे बोल नहीं पाते।
उनकी आँखे हैं, पर वे देख नहीं पाते।
6 उनके कान हैं, पर वे सुन नहीं सकते।
उनके पास नाक है, किन्तु वे सूँघ नहीं पाते।
7 उनके हाथ हैं, पर वे किसी वस्तु को छू नहीं
सकते, उनके पास पैर हैं,
पर वे चल नहीं सकते।
उनके कंठो से स्वर फूटते नहीं हैं।
8 जो व्यक्ति इस पुतले को रखते और
उनमें विश्वास रखते हैं बिल्कुल
इन पुतलों से बन जायेंगे!
9 ओ इस्राएल के लोगों, यहोवा में भरोसा रखो!
यहोवा इस्राएल को सहायता देता है
और उसकी रक्षा करता है।
10 ओ हारुन के घराने, यहोवा में भरोसा रखो!
हारुन के घराने को यहोवा सहारा देता है,
और उसकी रक्षा करता है।
11 यहोवा की अनुयायिओं, यहोवा में भरोसा रखो!
यहोवा सहारा देता है और अपने
अनुयायिओं की रक्षा करता है।
12 यहोवा हमें याद रखता है।
यहोवा हमें वरदान देगा,
यहोवा इस्राएल को धन्य करेगा।
यहोवा हारुन के घराने को धन्य करेगा।
13 यहोवा अपने अनुयायिओं को,
बड़ों को और छोटों को धन्य करेगा।
14 मुझे आशा है यहोवा तुम्हारी बढ़ोतरी करेगा
और मुझे आशा है, वह तुम्हारी
संतानों को भी अधिकाधिक देगा।
15 यहोवा तुझको वरदान दिया करता है!
यहोवा ने ही स्वर्ग और धरती बनाये हैं!
16 स्वर्ग यहोवा का है।
किन्तु धरती उसने मनुष्यों को दे दिया।
17 मरे हुए लोग यहोवा का गुण नहीं गाते।
कब्र में पड़े लोग यहोवा का गुणगान नहीं करते।
18 किन्तु हम यहोवा का धन्यवाद करते हैं,
और हम उसका धन्यवाद सदा सदा करेंगे!
यहोवा के गुण गाओ!

भजन 116

1 जब यहोवा मेरी प्रार्थनाएँ सुनता है
यह मुझे भाता है।
2 जब मैं सहायता पाने उसको पुकारता हूँ
वह मेरी सुनता है; यह मुझे भाता है।
3 मैं लगभग मर चुका था।
मेरे चारों तरफ मौत के रस्से बंध चुके थे।
कब्र मुझको निगल रही थी।

मैं भयभीत था और मैं चिंतित था।
4 तब मैंने यहोवा के नाम को पुकारा, मैंने कहा,
"यहोवा, मुझको बचा ले।"
5 यहोवा खरा है और दयापूर्ण है।
परमेश्वर करुणापूर्ण है।
6 यहोवा असहाय लोगों की सुध लेता है।
मैं असहाय था और यहोवा ने मुझे बचाया।
7 हे मेरे प्राण, शांत रह।
यहोवा तेरी सुधि रखता है।
8 हे परमेश्वर, तूने मेरा प्राण मृत्यु से बचाये।
मेरे आँसुओं को तूने रोका और
गिरने से मुझको तूने थाम लिया।
9 जीवितों की धरती में मैं यहोवा की
सेवा करता रहूँगा।
10 यहाँ तक मैंने विश्वास बनाये रखा जब
मैंने कह दिया था, "मैं बर्बाद हो गया!"
11 मैंने यहाँ तक विश्वास सम्भाले रखा जब कि
मैं भयभीत था और मैंने कहा,
"सभी लोग झूठे हैं!"
12 मैं भला यहोवा को क्या अर्पित कर सकता हूँ?
मेरे पास जो कुछ है वह सब
यहोवा का दिया है!
13 मैं उसे पेय भेंट दूँगा क्योंकि
उसने मुझे बचाया है।
मैं यहोवा के नाम को पुकारूँगा।
14 जो कुछ मन्नतें मैंने मागी हैं वे सभी मैं
यहोवा को अर्पित करूँगा, और
उसके सभी भक्तों के सामने अब जाऊँगा।
15 किसी एक की भी मृत्यु जो
यहोवा का अनुयायी है,
यहोवा के लिये अति महत्त्वपूर्ण है।
हे यहोवा, मैं तो तेरा एक सेवक हूँ!
16 मैं तेरा सेवक हूँ।
मैं तेरी किसी एक दासी का सन्तान हूँ।
यहोवा, तूने ही मुझको
मेरे बंधनों से मुक्त किया!
17 मैं तुझको धन्यवाद बलि अर्पित करूँगा।
मैं यहोवा के नाम को पुकारूँगा।
18 मैं यहोवा को जो कुछ भी मन्नतें मानी है
वे सभी अर्पित करूँगा, और
उसके सभी भक्तों के सामने अब जाऊँगा।
19 मैं मन्दिर में जाऊँगा जो यरुशलेम में है।
यहोवा के गुण गाओ!

भजन 117

1 अरे ओ सब राष्ट्रों यहोवा कि प्रशंसा करो।
अरे ओ सब लोगों यहोवा के गुण गाओ।
2 परमेश्वर हमें बहुत प्रेम करता है!
परमेश्वर हमारे प्रति सदा सदा सच्चा रहेगा!
यहोवा के गुण गाओ!

भजन 118

1 यहोवा का मान करो क्योंकि वह परमेश्वर है।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही अटल रहता है!
2 इस्राएल यह कहता है, "उसका सच्चा
प्रेम सदा ही अटल रहता है!"
3 याजक ऐसा कहते हैं,
"उसका सच्चा प्रेम सदा ही अटल रहता है!"
4 तुम लोग जो यहोवा की उपासना करते हो,
कहा करते हो, "उसका सच्चा प्रेम
सदा ही अटल रहता है!"
5 मैं संकट में था सो सहारा पाने को
मैंने यहोवा को पुकारा।
यहोवा ने मुझको उत्तर दिया और
यहोवा ने मुझको मुक्त किया।
6 यहोवा मेरे साथ है सो मैं कभी नहीं डरुँगा।
लोग मुझको हानि पहुँचाने
कुछ नहीं कर सकते।
7 यहोवा मेरा सहायक है।
मैं अपने शत्रुओं को पराजित देखूँगा।
8 मनुष्यों पर भरोसा रखने से
यहोवा पर भरोसा रखना उत्तम है।
9 अपने मुखियाओं पर भरोसा रखने से
यहोवा पर भरोसा रखना उत्तम है।
10 मुझको अनेक शत्रुओं ने घेर लिया है।
यहोवा की शक्ति से मैंने
अपने बैरियों को हरा दिया।
11 शत्रुओं ने मुझको फिर घेर लिया।
यहोवा की शक्ति से मैंने उनको हराया।
12 शत्रुओं ने मुझे मधु मक्खियों के झुण्ड सा घेरा।

किन्तु, वे एक शीघ्र जलती हुई
झाड़ी के समान नष्ट हुआ।
यहोवा की शक्ति से मैंने उनको हराया।
13 मेरे शत्रुओं ने मुझ पर प्रहार किया और
मुझे लगभग बर्बाद कर दिया
किन्तु यहोवा ने मुझको सहारा दिया।
14 यहोवा मेरी शक्ति और मेरा विजय गीत है।
यहोवा मेरी रक्षा करता है।
15 सज्जनों के घर में जो विजय
पर्व मन रहा
तुम उसको सुन सकते हो।
देखो, यहोवा ने अपनी
महाशक्ति फिर दिखाई है।
16 यहोवा की भुजाये विजय में उठी हुई हैं।
देखो यहोवा न अपनी
महाशक्ति फिर से दिखाई।
17 मैं जीवित रहूँगा, मैं मरुँगा नहीं,
और जो कर्म यहोवा ने किये हैं,
मैं उनका बखान करुँगा।
18 यहोवा ने मुझे दण्ड दिया
किन्तु मरने नहीं दिया।
19 हे पुण्य के द्वारों तुम मेरे लिये खुल जाओ
ताकि मैं भीतर आ पाऊँ
और यहोवा की आराधना करुँ।
20 वे यहोवा के द्वार है। बस केवल
सज्जन ही उन द्वारों से होकर जा सकते हैं।
21 हे यहोवा, मेरी विनती का उत्तर
देने के लिये तेरा धन्यवाद।
मेरी रक्षा के लिये मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ।
22 जिसको राज मिस्त्रियों ने नकार दिया था
वही पत्थर कोने का पत्थर बन गया।
23 यहोवा ने इसे घटित किया
और हम तो सोचते हैं यह अद्भुत है!
24 यहोवा ने आज के दिन को बनाया है।
आओ हम हर्ष का अनुभव करें
और आज आनन्दित हो जाये!
25 लोग बोले, "यहोवा के गुण गाओ!
यहोवा ने हमारी रक्षा की है!
26 उस सब का स्वागत करो जो
यहोवा के नाम में आ रहे हैं।"
याजकों ने उत्तर दिया, "यहोवा के घर में
हम तुम्हारा स्वागत करते हैं!
27 यहोवा परमेश्वर है,
और वह हमें अपनाता है।
बलि के लिये मेमने को बाँधों और
वेदी के कंगूरों पर मेमने को ले जाओ।"
28 हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है,
और मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ।
मैं तेरे गुण गाता हूँ!
29 यहोवा की प्रशंसा करो क्योंकि वह उत्तम है।
उसकी सत्य करुणा सदा सदा बनी रहती है।

भजन 119

1 जो लोग पवित्र जीवन जीते हैं,
वे प्रसन्न रहते हैं।
ऐसे लोग यहोवा का शिक्षाओं पर चलते हैं।
2 लोग जो यहोवा की विधान पर चलते हैं,
वे प्रसन्न रहते हैं।
अपने समग्र मन से वे यहोवा की मानते हैं।
3 वे लोग बुरे काम नहीं करते।
वे यहोवा की आज्ञा मानते हैं।
4 हे यहोवा, तूने हमें अपने आदेश दिये,
और तूने कहा कि हम उन आदेशों का
पूरी तरह पालन करें।
5 हे यहोवा, यदि मैं सदा तेरे नियमों पर चलूँ,
6 जब मैं तेरे आदेशों को विचारुँगा तो
मुझे कभी भी लज्जित नहीं होना होगा।
7 जब मैं तेरे खरेपन और तेरी
नेकी को विचारता हूँ तब सचमुच
तुझको मान दे सकता हूँ।
8 हे यहोवा, मैं तेरे आदेशों का पालन करुँगा।
सो कृपा करके मुझको मत बिसरा!
9 एक युवा व्यक्ति कैसे अपना जीवन पवित्र
रख पाये? तेरे निर्देशों पर चलने से।
10 मैं अपने पूर्ण मन से परमेश्वर कि
सेवा का जतन करता हूँ।
परमेश्वर, तेरे आदेशों पर
चलने में मेरी सहायता कर।
11 मैं बड़े ध्यान से तेरे आदेशों का
मनन किया करता हूँ।

क्यों ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप पर न चलूँ।

12 हे यहोवा, तेरा धन्यवाद!
तू अपने विधानों की शिक्षा मुझको दे।

13 तेरे सभी निर्णय जो विवेकपूर्ण हैं।
मैं उनका बखान करुँगा।

14 तेरे नियमों पर मनन करना,
मुझको अन्य किसी भी
वस्तु से अधिक भाता है।

15 मैं तेरे नियमों की चर्चा करता हूँ, और
मैं तेरे समान जीवन जीता हूँ।

16 मैं तेरे नियमों में आनन्द लेता हूँ।
मैं तेरे वचनों को नहीं भूलूँगा।

17 तेरे दास को योग्यता दे और
मैं तेरे नियमों पर चलूँगा।

18 हे यहोवा, मेरी आँख खोल दे और
मैं तेरी शिक्षाओं के भीतर देखूँगा।
मैं उन अद्‌भुत बातों का
अध्ययन करुँगा जिन्हें तूने किया है।

19 मैं इस धरती पर एक अनजाना परदेशी हूँ।
हे यहोवा, अपनी शिक्षाओं को मुझसे मत छिपा।

20 मैं हर समय तेरे निर्णयों का
पाठ करना चाहता हूँ।

21 हे यहोवा, तू अहंकारी जन की
आलोचना करता है।
उन अहंकारी लोगों पर बुरी बातें घटित होंगी।
वे तेरे आदेशों पर चलना नकारते हैं।

22 मुझे लज्जित मत होने दे,
और मुझको असमंजस में मत डाल।
मैंने तेरी वाचा का पालन किया है।

23 यहाँ तक कि प्रमुखों ने भी मेरे लिये
बुरी बातें की हैं।
किन्तु मैं तो तेरा दास हूँ।
मैं तेरे विधान का पाठ किया करता हूँ।

24 तेरी वाचा मेरा सर्वोत्तम मित्र है।
यह मुझको अच्छी सलाह दिया करता है।

25 मैं शीघ्र मर जाऊँगा।
हे यहोवा, तू आदेश दे और मुझे जीने दे।

26 मैंने तुझे अपने जीवन के बारे में बताया है,
तूने मुझे उत्तर दिया है।
अब तू मुझको अपना विधान सिखा।

27 हे यहोवा, मेरी सहायता कर ताकि
मैं तेरी व्यवस्था का विधान समझूँ।
मुझे उन अद्‌भुत कर्मों का चिंतन करने दे
जिन्हें तूने किया है।

28 मैं दुःखी और थका हूँ।
मुझको आदेश दे और अपने वचन के अनुसार
मुझको तू फिर सुदृढ़ बना दे।

29 हे यहोवा, मुझे कोई झूठ मत जीने दे।
अपनी शिक्षाओं से मुझे राह दिखा दे।

30 हे यहोवा, मैंने चुना है कि तेरे
प्रति निष्ठावान रहूँ।
मैं तेरे विवेकपूर्ण निर्णयों का सावधानी से
पाठ किया करता हूँ।

31 हे यहोवा, तेरी वाचा के संग मेरी लगन लगी है।
तू मुझको निराश मत कर।

32 मैं तेरे आदेशों का पालन प्रसन्नता के
संग किया करुँगा।
हे यहोवा, तेरे आदेश मुझे अति प्रसन्न करते हैं।

33 हे यहोवा, तू मुझे अपनी व्यवस्था सिखा
तब मैं उनका अनुसरण करुँगा।

34 मुझको सहारा दे कि मैं उनको समझूँ
और मैं तेरी शिक्षाओं का पालन करुँगा।
मैं पूरी तरह उनका पालन करुँगा।

35 हे यहोवा, तू मुझको अपने
आदेशों की राह पर ले चल।
मुझे सचमुच तेरे आदेशों से प्रेम है।
मेरा भला कर और मुझे जीने दे।

36 मेरी सहायता कर कि मैं
तेरे वाचा का मनन करुँ,
बजाय उसके कि यह सोचता रहूँ
कि कैसे धनवान बनूँ।

37 हे यहोवा, मुझे अद्‌भुत वस्तुओं
पाने को कठिन जतन मत करने दे।

38 हे यहोवा, मैं तेरा दास हूँ।
सो उन बातों को कर जिनका वचन तूने दिये है।
तूने उन लोगों को जो पूर्वज हैं
उन बातों को वचन दिया था।

39 हे यहोवा, जिस लाज से मुझको
भय उसको तू दूर कर दे।
तेरे विवेकपूर्ण निर्णय अच्छे होते हैं।

40 देख मुझको तेरे आदेशों से प्रेम है।
मेरा भला कर और मुझे जीने दे।
41 हे यहोवा, तू सच्चा निज प्रेम मुझ पर प्रकट कर।
मेरी रक्षा वैसे ही कर जैसे तूने वचन दिया।
42 तब मेरे पास एक उत्तर होगा।
उनके लिये जो लोग मेरा अपमान करते हैं।
हे यहोवा, मैं सचमुच तेरी उन बातों के
भरोसे हूँ जिनको तू कहता है।
43 तू अपनी शिक्षाएँ जो भरोसे योग्य है,
मुझसे मत छीन।
हे यहोवा, तेरे विवेकपूर्ण निर्णयों का
मुझे भरोसा है।
44 हे यहोवा, मैं तेरी शिक्षाओं का पालन
सदा और सदा के लिये करुँगा।
45 सो मैं सुरक्षित जीवन जीऊँगा। क्यों?
मैं तेरी व्यवस्था को पालने का
कठिन जतन करता हूँ।
46 यहोवा के वाचा की चर्चा मैं
राजाओं के साथ करुँगा और वे
मुझे संकट में कभी न डालेंगे।
47 हे यहोवा, मुझे तेरी व्यवस्थाओं का
मनन भाता है।
तेरी व्यवस्थाओं से मुझको प्रेम है।
48 हे यहोवा, मैं तेरी व्यवस्थाओं के गुण गाता हूँ,
वे मुझे प्यारी हैं और मैं उनका पाठ करुँगा।
49 हे यहोवा, अपना वचन याद कर
जो तूने मुझको दिया।
वही वचन मुझको आज्ञा दिया करता है।
50 मैं संकट में पड़ा था, और तूने मुझे चैन दिया।
तेरे वचनो ने फिर से मुझे जीने दिया।
51 लोग जो स्वयं को मुझसे उत्तम सोचते हैं,
निरन्तर मेरा अपमान कर रहे हैं।
किन्तु हे यहोवा मैंने तेरी शिक्षाओं पर
चलना नहीं छोड़ा।
52 मैं सदा तेरे विवेकपूर्ण निर्णयों का
ध्यान करता हूँ।
हे यहोवा तेरे विवेकपूर्ण निर्णय से मुझे चैन है।
53 जब मैं ऐसे दुष्ट लोगों को देखता हूँ,
जिन्होंने तेरी शिक्षाओं पर चलना छोड़ा है,
तो मुझे क्रोध आता है।
54 तेरी व्यवस्थायें मुझे ऐसी लगती है,
जैसे मेरे घर के गीत।
55 हे यहोवा, रात में मैं तेरे नाम का ध्यान
और तेरी शिक्षाएँ याद रखता हूँ।
56 इसलिए यह होता है कि मैं सावधानी से
तेरे आदेशों को पालता हूँ।
57 हे यहोवा, मैंने तेरे उपदेशों पर
चलना निश्चित किया यह मेरा कर्तव्य है।
58 हे यहोवा, मैं पूरी तरह से तुझ पर निर्भर हूँ,
जैसा वचन तूने दिया मुझ पर दयालु हो।
59 मैंने ध्यान से अपनी राह पर मनन किया और
मैं तेरी वाचा पर चलने को लौट आया।
60 मैंने बिना देर लगाये तेरे आदेशों पर
चलने कि शीघ्रता की।
61 बुरे लोगों के एक दल ने मेरे
विषय में बुरी बातें कहीं।
किन्तु यहोवा मैं तेरी शिक्षाओं को भूला नहीं।
62 तेरे सत निर्णयों का तुझे धन्यवाद देने
मैं आधी रात के बीच उठ बैठता हूँ।
63 जो कोई व्यक्ति तेरी उपासना करता
मैं उसका मित्र हूँ।
जो कोई व्यक्ति तेरे आदेशों पर चलता है,
मैं उसका मित्र हूँ।
64 हे यहोवा, यह धरती तेरी
सत्य करुणा से भरी हुई है।
मुझको तू अपने विधान की शिक्षा दे।
65 हे यहोवा, तूने अपने दास पर भलाईयाँ की है।
तूने ठीक वैसा ही किया जैसा
तूने करने का वचन दिया था।
66 हे यहोवा, मुझे ज्ञान दे कि
मैं विवेकपूर्ण निर्णय लूँ,
तेरे आदशों पर मुझको भरोसा है।
67 संकट में पड़ने से पहले,
मैंने बहुत से बुरे काम किये थे।
किन्तु अब, सावधानी के साथ मैं तेरे
आदेशों पर चलता हूँ।
68 हे परमेश्वर, तू खरा है,
और तू खरे काम करता है,
तू अपनी विधान की शिक्षा मुझको दे।
69 कुछ लोग जो सोचते हैं कि वे मुझ से उत्तम हैं,

मेरे विषय में बुरी बातें बनाते हैं।
किन्तु यहोवा मैं अपने पूर्ण मन के साथ
तेरे आदेशों को निरन्तर पालता हूँ।

70 वे लोग महा मूर्ख हैं। किन्तु मैं
तेरी शिक्षाओं को पढ़ने में रस लेता हूँ।

71 मेरे लिये संकट अच्छा बन गया था।
मैंने तेरी शिक्षाओं को सीख लिया।

72 हे यहोवा, तेरी शिक्षाएँ मेरे लिए भली है।
तेरी शिक्षाएँ हजार चाँदी के टुकड़ों
और सोने के टुकड़ों से उत्तम हैं।

73 हे यहोवा, तूने मुझे रचा है और निज हाथों से
तू मुझे सहारा देता है।
अपने आदेशों को पढ़ने समझने में
तू मेरी सहायता कर।

74 हे यहोवा, तेरे भक्त मुझे आदर देते हैं
और वे प्रसन्न हैं क्योंकि मुझे उन
सभी बातों का भरोसा है जिन्हें तू कहता है।

75 हे यहोवा, मैं यह जानता हूँ कि
तेरे निर्णय खरे हुआ करते हैं।
यह मेरे लिये उचित था कि तू
मुझको दण्ड दे।

76 अब, अपने सत्य प्रेम से तू मुझ को चैन दे।
तेरी शिक्षाएँ मुझे सचमुच भाती हैं।

77 हे यहोवा, तू मुझे सुख चैन दे और जीवन दे।
मैं तेरी शिक्षाओं में सचमुच आनन्दित हूँ।

78 उन लोगों को जो सोचा करते है कि वे
मुझसे उत्तम हैं, उनको निराश कर दे।
क्योंकि उन्होंने मेरे विषय में झूठी बातें कही है।
हे यहोवा, मैं तेरे आदेशों का पाठ किया करुँगा।

79 अपने भक्तों को मेरे पास लौट आने दे।
ऐसे उन लोगों को मेरे पास लौट आने दे,
जिनको तेरी वाचा का ज्ञान है।

80 हे यहोवा, तू मुझको पूरी तरह
अपने आदेशों को पालने दे ताकि
मैं कभी लज्जित न होऊँ।

81 मैं तेरी प्रतिज्ञा में मरने को तत्पर हूँ कि
तू मुझको बचायेगा।
किन्तु यहोवा, मुझको उसका भरोसा है,
जो तू कहा करता था।

82 जिन बातों का तूने वचन दिया था,
मैं उनकी बाँट जोहता रहता हूँ।
किन्तु मेरी आँखे थकने लगी है।
हे यहोवा, मुझे कब तू आराम देगा?

83 यहाँ तक जब मैं कूड़े के ढेर पर
दाखमधु की सूखी मशक सा हूँ, तब भी
मैं तेरे विधान को नहीं भूलूँगा।

84 मैं कब तक जीऊँगा? हे यहोवा, कब दण्ड देगा
तू ऐसे उन लोगों को जो
मुझ पर अत्याचार किया करते हैं?

85 कुछ अहंकारी लोग ने अपनी झूठों से
मुझ पर प्रहार किया था।
यह तेरी शिक्षाओं के विरुद्ध है।

86 हे यहोवा, सब लोग तेरी शिक्षाओं के
भरोसे रह सकते हैं।
झूठे लोग मुझको सता रहे है।
मेरी सहायता कर!

87 उन झूठे लोगों ने मुझको
लगभग नष्ट कर दिया है।
किन्तु मैंने तेरे आदेशों को नहीं छोड़ा।

88 हे यहोवा, अपनी सत्य करुणा को
मुझ पर प्रकट कर।
तू मुझको जीवन दे
मैं तो वही करुँगा जो कुछ तू कहता है।

89 हे यहोवा, तेरे वचन सदा अचल रहते हैं।
स्वर्ग में तेरे वचन सदा अटल रहते हैं।

90 सदा सर्वदा के लिये तू ही सच्चा है।
हे यहोवा, तूने धरती रची,
और यह अब तक टिकी है।

91 तेरे आदेश से ही अब तक सभी वस्तु स्थिर हैं,
क्योंकि वे सभी वस्तुएँ तेरे दास हैं।

92 यदि तेरी शिक्षाएँ मेरी मित्र जैसी नहीं होती,
तो मेरे संकट मुझे नष्ट कर डालते।

93 हे यहोवा, तेरे आदेशों को मैं कभी नहीं भूलूँगा।
क्योंकि वे ही मुझे जीवित रखते हैं।

94 हे यहोवा, मैं तो तेरा हूँ, मेरी रक्षा कर।
क्यों? क्योंकि तेरे आदेशों पर चलने का
मैं कठिन जतन करता हूँ।

95 दुष्ट जन मेरे विनाश का यतन किया करते हैं,
किन्तु तेरी वाचा ने मुझे बुद्धिमान बनाया।

96 सब कुछ की सीमा है,

तेरी व्यवस्था की सीमा नहीं।

97 आ हा, यहोवा तेरी शिक्षाओं से मुझे प्रेम है।
हर घड़ी मैं उनका ही बखान किया करता हूँ।

98 हे यहोवा, तेरे आदेशों ने मुझे मेरे
शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान बनाया।
तेरा विधान सदा मेरे साथ रहता है।

99 मैं अपने सब शिक्षाओं से अधिक बुद्धिमान हूँ
क्योंकि मैं तेरी वाचा का पाठ किया करता हूँ।

100 मैं बुजुर्ग प्रमुखों से भी अधिक समझता हूँ।
क्योंकि मैं तेरे आदेशों को पालता हूँ।

101 हे यहोवा, तू मुझे राह में हर कदम
बुरे मार्ग से बचाता है, ताकि जो तू
मुझे बताता है वह मैं कर सकूँ।

102 यहोवा, तू मेरा शिक्षक है।
सो मैं तेरे विधान पर चलना नहीं छोड़ूँगा।

103 तेरे वचन मेरे मुख के भीतर शहद
से भी अधिक मीठे हैं।

104 तेरी शिक्षाएँ मुझे बुद्धिमान बनाती है।
सो मैं झूठी शिक्षाओं से घृणा करता हूँ।

105 हे यहोवा, तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक
और मार्ग के लिये उजियाला है।

106 तेरे नियम उत्तम हैं।
मैं उन पर चलने का वचन देता हूँ,
और मैं अपने वचन का पालन करुँगा।

107 हे यहोवा, बहुत समय तक मैंने
दु:ख झेले हैं, कृपया मुझे अपना आदेश दे
और तू मुझे फिर से जीवित रहने दे!

108 हे यहोवा, मेरी विनती को तू स्वीकार कर,
और मुझ को अपनी विधान कि शिक्षा दे।

109 मेरा जीवन सदा जोखिम से भरा हुआ है।
किन्तु यहोवा मैं तेरे उपदेश भूला नहीं हूँ।

110 दुष्ट जन मुझको फँसाने का यत्न करते हैं
किन्तु तेरे आदेशों को
मैंने कभी नहीं नकारा है।

111 हे यहोवा, मैं सदा तेरी वाचा का पालन करुँगा।
यह मुझे अति प्रसन्न किया करता है।

112 मैं सदा तेरे विधान पर चलने का
अति कठोर यत्न करुँगा।

113 हे यहोवा, मुझको ऐसे उन लोगों से घृणा है,
जो पूरी तरह से तेरे प्रति सच्चे नहीं हैं।
मुझको तो तेरी शिक्षाएँ भाती हैं।

114 मुझको ओट दे और मेरी रक्षा कर। हे यहोवा,
मुझको उस हर बात का सहारा है
जिसको तू कहता है।

115 हे यहोवा, दुष्ट मनुष्यों को मेरे पास मत आने दे।
मैं अपने परमेश्वर के
आदेशों का पालन करुँगा।

116 हे यहोवा, मुझको ऐसे ही सहारा दे
जैसे तूने वचन दिया, और मैं जीवित रहूँगा।
मुझको तुझमें विश्वास है,
मुझको निराश मत कर।

117 हे यहोवा, मुझको सहारा दे कि मेरा उद्धार हो।
मैं सदा तेरी आदेशों का पाठ किया करुँगा।

118 हे यहोवा, तू हर ऐसे व्यक्ति से
विमुख हो जाता है,
जो तेरे नियम तोड़ता है।
क्यों? क्योंकि उन लोगों ने झूठ बोले जब
वे तेरे अनुसरण करने को सहमत हुए।

119 हे यहोवा, तू इस धरती पर दुष्टों के साथ
ऐसा बर्ताव करता है जैसे वे कूड़ा हो।
सो मैं तेरी वाचा से सदा प्रेम करुँगा।

120 हे यहोवा, मैं तुझ से भयभीत हूँ, मैं डरता हूँ,
और तेरे विधान का आदर करता हूँ।

121 मैंने वे बातें की हैं जो खरी और भली हैं।
हे यहोवा, तू मुझको ऐसे उन लोगों को मत सौंप
जो मुझको हानि पहुँचाना चाहते हैं।

122 मुझे वचन दे कि तू मुझे सहारा देगा।
मैं तेरा दास हूँ।
हे यहोवा, उन अहंकारी लोगों को
मुझको हानि मत पहुँचाने दे।

123 हे यहोवा, तूने मेरे उद्धार का एक
उत्तम वचन दिया था, किन्तु अपने उद्धार को
मेरी आँख तेरी राह देखते हुए थकी गई।

124 तू अपना सच्चा प्रेम मुझ पर प्रकट कर।
मैं तेरा दास हूँ।
तू मुझे अपने विधान की शिक्षा दे।

125 मैं तेरा दास हूँ।
अपनी वाचा को पढ़ने समझने में
तू मेरी सहायता कर।

126 हे यहोवा, यही समय है तेरे लिये कि

तू कुछ कर डाले।
लोगों ने तेरे विधान को तोड़ा है।
127 हे यहोवा, उत्तम सुवर्ण से भी अधिक
मुझे तेरे आदेश भाते हैं।
128 तेरे सब आदेशों का बहुत सावधानी से
मैं पालन करता हूँ।
मैं झूठे उपदेशों से घृणा करता हूँ।
129 हे यहोवा, तेरी वाचा बहुत अद्भुत है।
इसलिए मैं उसका अनुसरण करता हूँ।
130 कब शुरु करेंगे लोग तेरा वचन समझना?
यह एक ऐसे प्रकाश सा है जो उन्हें जीवन
की खरी राह दिखाया करता है।
तेरा वचन मूर्ख तक को बुद्धिमान बनाता है।
131 हे यहोवा, मैं सचमुच तेरे आदेशों का
पाठ करना चाहता हूँ।
मैं उस व्यक्ति जैसा हूँ जिस की साँस उखड़ी
हो और जो बड़ी तीव्रता से बाट जोह रहो हो।
132 हे परमेश्वर, मेरी ओर दृष्टि कर
और मुझ पर दयालु हो।
तू उन जनों के लिये ऐसे उचित काम कर
जो तेरे नाम से प्रेम किया करते हैं?
133 तेरे वचन के अनुसार मेरी अगुवाई कर,
मुझे कोई हानी न होने दे।
134 हे यहोवा, मुझको उन लोगों से बचा ले
जो मुझको दुःख देते हैं।
और मैं तेरे आदेशों का पालन करुँगा।
135 हे यहोवा, अपने दास को तू अपना ले
और अपना विधान तू मुझे सिखा।
136 रो-रो कर आँसुओं की एक नदी
मैं बहा चुका हूँ।
क्योंकि लोग तेरी शिक्षाओं का
पालन नहीं करते हैं।
137 हे यहोवा, तू भला है और तेरे नियम खरे हैं।
138 वे नियम उत्तम है जो तूने हमें वाचा में दिये।
हम सचमुच तेरे विधान के
भरोसे रह सकते हैं।
139 मेरी तीव्र भावनाएँ मुझे शीघ्र ही नष्ट कर देंगी।
मैं बहुत बेचैन हूँ, क्योंकि मेरे शत्रुओं ने
तेरे आदेशों को भुला दिया।
140 हे यहोवा, हमारे पास प्रमाण है,
कि हम तेरे वचन के भरोसे रह सकते हैं,
और मुझे इससे प्रेम है।
141 मैं एक तुच्छ व्यक्ति हूँ
और लोग मेरा आदर नहीं करते हैं।
किन्तु मैं तेरे आदेशों को भूलता नहीं हूँ।
142 हे यहोवा, तेरी धार्मिकता अनन्त है।
तेरे उपदेशों के भरोसे में रहा जा सकता है।
143 मैं संकट में था, और कठिन समय में था।
किन्तु तेरे आदेश मेरे लिये मित्र से थे।
144 तेरी वाचा नित्य ही उत्तम है।
अपनी वाचा को समझने में
मेरी सहायता कर ताकि मैं जी सकूँ।
145 सम्पूर्ण मन से यहोवा मैं तुझको पुकारता हूँ,
मुझको उत्तर दे।
मैं तेरे आदेशों का पालन करता हूँ।
146 हे यहोवा, मेरी तुझसे विनती है।
मुझको बचा ले!
मैं तेरी वाचा का पालन करुँगा।
147 यहोवा, मैं तेरी प्रार्थना करने को
भोर के तड़के उठा करता हूँ।
मुझको उन बातों पर भरोसा है,
जिनको तू कहता है।
148 देर रात तक तेरे वचनों का
मनन करते हुए बैठा रहता हूँ।
149 हे यहोवा, तू अपने पूर्ण प्रेम से मुझ पर कान दे।
तू वैसा ही कर जिसे तू ठीक कहता है,
और मेरा जीवन बनाये रख।
150 लोग मेरे विरुद्ध कुचक्र रच रहे हैं।
हे यहोवा, ऐसे ये लोग
तेरी शिक्षाओं पर चला नहीं करते हैं।
151 हे यहोवा, तू मेरे पास है।
तेरे आदेशों पर विश्वास किया जा सकता है।
152 तेरी वाचा से बहुत दिनों पहले ही
मैं जान गया था कि तेरी शिक्षाएँ
सदा ही अटल रहेंगी।
153 हे यहोवा,
मेरी यातना देख और मुझको बचा ले,
मैं तेरे उपदेशों को भूला नहीं हूँ।

154 हे यहोवा, मेरे लिये मेरी लड़ाई लड़
और मेरी रक्षा कर।
मुझको वैसे जीने दे जैसे तूने वचन दिया।
155 दुष्ट विजयी नहीं होंगे।
क्यों? क्योंकि वे तेरे विधान
पर नहीं चलते हैं।
156 हे यहोवा, तू बहुत दयालु है।
तू वैसा ही कर जिसे तू अच्छा कहे,
और मेरा जीवन बनाये रख।
157 मेरे बहुत से शत्रु हैं जो मुझे हानि
पहुँचाने का जतन करते;
किन्तु मैंने तेरी वाचा का
अनुसरण नहीं छोड़ा।
158 मैं उन कृतघ्नों को देख रहा हूँ।
हे यहोवा, तेरे वचन का पालन वे नहीं करते।
मुझको उनसे घृणा है।
159 देख, तेरे आदेशों का पालन करने का
मैं कठिन जतन करता हूँ।
हे यहोवा, तेरे सम्पूर्ण प्रेम से
मेरा जीवन बनाये रख।
160 हे यहोवा, सनातन काल से
तेरे सभी वचन विश्वास योग्य रहे हैं।
तेरा उत्तम विधान सदा ही अमर रहेगा।
161 शक्तिशाली नेता मुझ पर व्यर्थ ही वार करते हैं,
किन्तु मैं डरता हूँ और तेरे विधान का बस
मैं आदर करता हूँ।
162 हे यहोवा, तेरे वचन मुझ को
वैसे आनन्दित करते हैं,
जैसा वह व्यक्ति आनन्दित होता है, जिसे
अभी-अभी कोई महाकोश मिल गया हो।
163 मुझे झूठ से बैर है! मैं उससे घृणा करता हूँ!
हे यहोवा, मैं तेरी शिक्षाओं से प्रेम करता हूँ।
164 मैं दिन में सात बार तेरे उत्तम
विधान के कारण तेरी स्तुति करता हूँ।
165 वे व्यक्ति सच्ची शांति पायेंगे,
जिन्हें तेरी शिक्षाएँ भाती हैं।
उसको कुछ भी गिरा नहीं पायेगा।
166 हे यहोवा, मैं तेरी प्रतीक्षा में हूँ कि
तू मेरा उद्धार करे।
मैंने तेरे आदेशों का पालन किया है।
167 मैं तेरी वाचा पर चलता रहा हूँ।
हे यहोवा, मुझको तेरे विधान से गहन प्रेम है।
168 मैंने तेरी वाचा का और तेरे आदेशों
का पालन किया है।
हे यहोवा, तू सब कुछ जानता है
जो मैंने किया है।
169 हे यहोवा, सुन तू मेरा प्रसन्न गीत है।
मुझे बुद्धिमान बना जैसा तूने वचन दिया है।
170 हे यहोवा, मेरी विनती सुन।
तूने जैसा वचन दिया मेरा उद्धार कर।
171 मेरे अन्दर से स्तुति गीत फूट पड़े क्योंकि
तूने मुझको अपना विधान सिखाया है।
172 मुझको सहायता दे कि
मैं तेरे वचनों के अनुसार कार्य कर सकूँ,
और मुझे तू अपना गीत गाने दे।
हे यहोवा, तेरे सभी नियम उत्तम हैं।
173 तू मेरे पास आ, और मुझको सहारा दे क्योंकि
मैंने तेरे आदेशों पर चलना चुन लिया है।
174 हे यहोवा, मैं यह चाहता हूँ कि तू मेरा उद्धार करे,
तेरी शिक्षाएँ मुझे प्रसन्न करती है।
175 हे यहोवा, मेरा जीवन बना रहे
और मैं तेरी स्तुति करुँ।
अपने विधान से तू मुझे सहारा मिलने दे।
176 एक भटकी हुई भेड़ सा,
मैं इधर-उधर भटका हूँ।
हे यहोवा, मुझे ढूँढते आ।
मैं तेरा दास हूँ,
और मैं तेरे आदेशों को भूला नहीं हूँ।

भजन 120

मन्दिर का आरोहण गीत।

1 मैं संकट में पड़ा था, सहारा पाने के लिए
मैंने यहोवा को पुकारा
और उसने मुझे बचा लिया।
2 हे यहोवा, मुझे तू उन ऐसे लोगों से बचा ले
जिन्होंने मेरे विषय में झूठ बोला है।
3 अरे ओ झूठों, क्या तुम यह जानते हो कि
परमेश्वर तुमको कैसे दण्ड देगा?
4 तुम्हें दण्ड देने के लिए परमेश्वर
योद्धा के नुकीले तीर और धधकते हुए

अंगारे काम में लाएगा।
5 झूठों, तुम्हारे निकट रहना ऐसा है,
जैसे की मेशेक के देश में रहना।
यह रहना ऐसा है जैसे केवार के
खेतों में रहना है।
6 जो शांति के बैरी है ऐसे लोगों के संग
मैं बहुत दिन रहा हूँ।
7 मैंने यह कहा था मुझे शांति चाहिए
क्यों वे लोग युद्ध को चाहते हैं।

भजन 121

मन्दिर का आरोहण गीत।

1 मैं ऊपर पर्वतों को देखता हूँ।
किन्तु सचमुच मेरी सहायता कहाँ से आएगी?
2 मुझको तो सहारा यहोवा से मिलेगा
जो स्वर्ग और धरती का बनाने वाला है।
3 परमेश्वर तुझको गिरने नहीं देगा।
तेरा बचानेवाला कभी भी नहीं सोएगा।
4 इस्राएल का रक्षक कभी भी ऊँघता नहीं है।
यहोवा कभी सोता नहीं है।
5 यहोवा तेरा रक्षक है।
यहोवा अपनी महाशक्ति से तुझको बचाता है।
6 दिन के समय सूरज
तुझे हानि नहीं पहुँचा सकता।
रात में चाँद तेरी हानि नहीं कर सकता।
7 यहोवा तुझे हर संकट से बचाएगा।
यहोवा तेरी आत्मा की रक्षा करेगा।
8 आते और जाते हुए यहोवा तेरी रक्षा करेगा।
यहोवा तेरी सदा सर्वदा रक्षा करेगा!

भजन 122

दाऊद का एक आरोहणगीत।

1 जब लोगों ने मुझसे कहा,
"आओ, यहोवा के मन्दिर में चलें
तब मैं बहुत प्रसन्न हुआ।"
2 यहाँ हम यरुशलेम के द्वारों पर खड़े हैं।
3 यह नया यरुशलेम है।
जिसको एक संगठित नगर के रुप
में बनाया गया।
4 ये परिवार समूह थे जो
परमेश्वर के वहाँ पर जाते हैं।
इस्राएल के लोग वहाँ पर यहोवा का
गुणगान करने जाते हैं।
वे वह परिवार समूह थे
जो यहोवा से सम्बन्धित थे।
5 यही वह स्थान है जहाँ दाऊद के घराने के
राजाओं ने अपने सिंहासन स्थापित किये।
उन्होंने अपना सिंहासन लोगों का
न्याय करने के लिये स्थापित किया।
6 तुम यरुशलेम में शांति हेतू विनती करो।
"ऐसे लोग जो तुझसे प्रेम रखते हैं,
वहाँ शांति पावें यह मेरी कामना है।
तुम्हारे परकोटों के भीतर शांति का वास है।
यह मेरी कामना है। तुम्हारे विशाल भवनों
में सुरक्षा बनी रहे यह मेरी कामना है।"
7 मैं प्रार्थना करता हूँ अपने पड़ोसियों के
और अन्य इस्राएलवासियों के लिए
वहाँ शांति का वास हो।
8 हे यहोवा, हमारे परमेश्वर के मन्दिर के भले हेतू
मैं प्रार्थना करता हूँ,
कि इस नगर में भली बाते घटित हों।

भजन 123

आरोहण गीत।

1 हे परमेश्वर, मैं ऊपर आँख
उठाकर तेरी प्रार्थना करता हूँ।
तू स्वर्ग में राजा के रूप में विराजता है।
2 दास अपने स्वामियों के ऊपर
उन वस्तुओं के लिए निर्भर रहा करते हैं।
जिसकी उनको आवश्यकता है।
दासियाँ अपनी स्वामिनियों के
ऊपर निर्भर रहा करती हैं।
3 इसी तरह हमको यहोवा का,
हमारे परमेश्वर का भरोसा है।
ताकि वह हम पर दया दिखाए,
हम परमेश्वर की बाट जोहते हैं।
4 हे यहोवा, हम पर कृपालु है।
दयालु हो क्योंकि बहुत दिनों से
हमारा अपमान होता रहा है।

5 अहंकारी लोग बहुत दिनों से
हमें अपमानित कर चुके हैं।
ऐसे लोग सोचा करते हैं कि वे
दूसरे लोगों से उत्तम हैं।

भजन 124

दाऊद का एक मन्दिर का आरोहण गीत।

1 यदि बीते दिनों में यहोवा हमारे साथ नहीं
होता तो हमारे साथ क्या घट गया होता?
इस्राएल तू मुझको उत्तर दे?
2 यदि बीते दिनों में यहोवा हमारे साथ नहीं
होता तो हमारे साथ क्या घट गया होता?
जब हम पर लोगों ने हमला किया था
तब हमारे साथ क्या बीतती।
3 जब कभी हमारे शत्रु ने हम पर क्रोध किया,
तब वे हमें जीवित ही निगल लिये होते।
4 तब हमारे शत्रुओं की सेनाएँ बाढ़ सी
हमको बहाती हुई उस नदी के
जैसी हो जाती जो हमें डूबा रहीं हो।
5 तब वे अभिमानी लोग उस जल जैसे हो
जाते जो हमको डुबाता हुआ हमारे
मुँह तक चढ़ रहा हो।
6 यहोवा के गुण गाओ।
यहोवा ने हमारे शत्रुओं को हमको पकड़ने
नहीं दिया और न ही मारने दिया।
7 हम जाल में फँसे उस पक्षी के जैसे थे
जो फिर बच निकला हो।
जाल छिन्न भिन्न हुआ और हम बच निकले।
8 हमारी सहायता यहोवा से आयी थी।
यहोवा ने स्वर्ग और धरती को बनाय है।

भजन 125

आरोहण गीत।

1 जो लोग यहोवा के भरोसे रहते हैं,
वे सिय्योन पर्वत के जैसे होंगे।
उनको कभी कोई भी डिगा नहीं पाएगा।
वे सदा ही अटल रहेंगे।
2 यहोवा ने निज भक्तों को वैसे ही
अपनी ओट में लिया है,
जैसे यरुशलेम चारों ओर पहाड़ों से घिरा है।
यहोवा सदा और सर्वदा निज
भक्तों की रक्षा करेगा।
3 बुरे लोग सदा धरती पर भलों के ऊपर
शासन नहीं करेंगे,
यदि बुरे लोग ऐसा करने लग जायें तो
संभव है सज्जन भी बुरे काम करने लगें।
4 हे यहोवा, तू भले लोगों के संग,
जिनके मन पवित्र हैं तू भला हो।
5 हे यहोवा, दुर्जनों को दण्ड दे, जिन लोगों ने
तेरा अनुसरण छोड़ा तू उनको दण्ड दे।
इस्राएल में शांति हो।

भजन 126

आरोहण गीत।

1 जब यहोवा हमें पुन: मुक्त करेगा तो
यह ऐसा होगा जैसे कोई सपना हो!
2 हम हँस रहे होंगे और खुशी के गीत गा रहे होंगे!
तब अन्य राष्ट्र के लोग कहेंगे,
"यहोवा ने इनके लिए महान कार्य किये है।"
3 दूसरे देशों के लोग ये बातें करेंगे इस्राएल के
लोगों के लिए यहोवा ने एक
अद्भुत काम किया है।
अगर यहोवा ने हमारे लिए वह
अद्भुत काम किया तो हम प्रसन्न होंगे।
4 हे यहोवा, हमें तू स्वतंत्र कर दे, अब तू हमें
मरुस्थल के जल से भरे हुए
जलधारा जैसा बना दे।
5 जब हमने बीज बोये, हम रो रहे थे, किन्तु
कटनी के समय हम खुशी के गीत गायेंगे!
6 हम बीज लेकर रोते हुए खेतों में गये।
सो आनन्द मनाने आओ क्योंकि
हम उपज के लिए हुए आ रहे हैं।

भजन 127

सुलैमान का मन्दिर का आरोहण गीत।

1 यदि घर का निर्माता स्वयं यहोवा नहीं है,
तो घर को बनाने वाला व्यर्थ समय खोता है।
यदि नगर का रखवाला स्वयं यहोवा नहीं है,
तो रखवाले व्यर्थ समय खोते हैं।

2 यदि सुबह उठ कर तुम
देर रात गए तक काम करो।
इसलिए कि तुम्हें बस खाने के लिए कमाना है,
तो तुम व्यर्थ समय खोते हो।
परमेश्वर अपने भक्तों का उनके सोते
तक में ध्यान रखता है।
3 बच्चे यहोवा का उपहार है,
वे माता के शरीर से मिलने वाले फल हैं।
4 जवान के पुत्र ऐसे होते हैं,
जैसे योद्धा के तरकस के बाण।
5 जो व्यक्ति बाण रुपी पुत्रों से तरकस को
भरता है वह अति प्रसन्न होगा।
6 वह मनुष्य कभी हारेगा नहीं।
उसके पुत्र उसकी शत्रुओं से
सार्वजनिक स्थानों पर उसकी रक्षा करेंगे।

भजन 128

आरोहण गीत।

1 यहोवा के सभी भक्त आनन्दित रहते हैं।
वे लोग परमेश्वर जैसा चाहता, वैसा गाते हैं।
2 तूने जिनके लिये काम किया है,
उन वस्तुओं का तू आनन्द लेगा।
उन ऐसी वस्तुओं को कोई भी व्यक्ति
तुझसे नहीं छिनेगा।
तू प्रसन्न रहेगा और तेरे साथ
भली बातें घटेंगी।
3 घर पर तेरी घरवाली अंगूर की
बेल सी फलवती होगी।
मेज के चारों तरफ तेरी संतानें ऐसी होंगी,
जैसे जैतून के वे पेड़ जिन्हें तूने रोपा है।
4 इस प्रकार यहोवा अपने
अनुयायिओं को सचमुच आशीष देगा।
5 यहोवा सिय्योन से तुझ को आशीर्वाद दे
यह मेरी कामना है।
जीवन भर यरुशलेम में तुझको
वरदानों का आनन्द मिले।
6 तू अपने नाती पोतों को देखने के लिये
जीता रहे यह मेरी कामना है।
इस्राएल में शांति रहे।

भजन 129

मन्दिर का आरोहण गीत।

1 पूरे जीवन भर मेरे अनेक शत्रु रहे हैं।
इस्राएल हमें उन शत्रुओं के बारे में बता।
2 सारे जीवन भर मेरे अनेक शत्रु रहे हैं।
किन्तु वे कभी नहीं जीते।
3 उन्होंने मुझे तब तक पीटा जब तक
मेरी पीठ पर गहरे घाव नहीं बने।
मेरे बड़े–बड़े और गहरे घाव हो गए थे।
4 किन्तु भले यहोवा ने रस्से काट दिये
और मुझको उन दुष्टों से मुक्त किया।
5 जो सिय्योन से बैर रखते थे,
वे लोग पराजित हुए।
उन्होंने लड़ना छोड़ दिया और कहीं भाग गये।
6 वे लोग ऐसे थे, जैसे किसी घर की छत पर
की घास जो उगने से पहले ही मुरझा जाती है।
7 उस घास से कोई श्रमिक
अपनी मुट्ठी तक नहीं भर पाता और
वह पूली भर अनाज भी पर्याप्त नहीं होती।
8 ऐसे उन दुष्टों के पास से जो लोग गुजरते हैं।
वे नहीं कहेंगे, "यहोवा तेरा भला करे।"
लोग उनका स्वागत नहीं करेंगे
और हम भी नहीं कहेंगे,
"तुम्हें यहोवा के नाम पर आशीष देते हैं।"

भजन 130

आरोहण गीत।

1 हे यहोवा, मैं गहन कष्ट में हूँ
सो सहारा पाने को
मैं तुम्हें पुकारता हूँ।
2 मेरे स्वामी, तू मेरी सुन ले।
मेरी सहायता की पुकार पर कान दे।
3 हे यहोवा, यदि तू लोगों को उनके
सभी पापों का सचमुच दण्ड दे तो फिर
कोई भी बच नहीं पायेगा।
4 हे यहोवा, निज भक्तों को क्षमा कर।
फिर तेरी अराधना करने को वहाँ लोग होंगे।
5 मैं यहोवा की बाट जोह रहा हूँ कि
वह मुझको सहायता दे।
मेरी आत्मा उसकी प्रतीक्षा में है।

यहोवा जो कहता है उस पर मेरा भरोसा है।
6 मैं अपने स्वामी की बाट जोहता हूँ।
मैं उस रक्षक सा हूँ जो उषा के आने की
प्रतीक्षा में लगा रहता है।
7 इस्राएल, यहोवा पर विश्वास कर।
केवल यहोवा के साथ सच्चा प्रेम मिलता है।
यहोवा हमारी बार-बार रक्षा किया करता है।
यहोवा इस्राएल को उनके सारे
पापों के लिए क्षमा करेगा।

भजन 131

आरोहण गीत।

1 हे यहोवा, मैं अभिमानी नहीं हूँ।
मैं महत्वपूर्ण होने का जतन नहीं करता हूँ।
मैं वो काम करने का जतन नहीं करता हूँ।
जो मेरे लिये बहुत कठिन हैं।
ऐसी उन बातों की मुझे चिंता नहीं है।
2 मैं निश्चल हूँ, मेरी आत्मा शांत है।
3 मेरी आत्मा शांत और अचल है, जैसे कोई शिशु
अपनी माता की गोद में तृप्त होता है।
4 इस्राएल, यहोवा पर भरोसा रखो।
उसका भरोसा रखो,
अब और सदा सदा ही उसका भरोसा रखो!

भजन 132

मन्दिर का आरोहण गीत।

1 हे यहोवा, जैसे दाऊद ने यातनाएँ भोगी थी,
उसको याद कर।
2 किन्तु दाऊद ने यहोवा की एक मन्नत मानी थी।
दाऊद ने इस्राएल के पराक्रमी
परमेश्वर की एक मन्नत मानी थी।
3-4 दाऊद ने कहा था:
"मैं अपने घर में तब तक न जाऊँगा,
अपने बिस्तर पर न ही लेटूँगा, न ही सोऊँगा।
अपनी आँखों को मैं विश्राम तक न दूँगा।
5 इसमें से मैं कोई बात भी नहीं करूँगा जब
तक मैं यहोवा के लिए एक
भवन न प्राप्त कर लूँ।
मैं इस्राएल के शक्तिशाली परमेश्वर के लिए
एक मन्दिर पा कर रहूँगा!"
6 एप्राता में हमने इसके विषय में सुना,
हमें किरीयथ योरीम के वन में
वाचा की सन्दूक मिली थी।
7 आओ, पवित्र तम्बू में चलो।
आओ, हम उस चौकी पर आराधना करें,
जहाँ पर परमेश्वर अपने चरण रखता है।
8 हे यहोवा, तू अपनी विश्राम की
जगह से उठ बैठ,
तू और तेरी सामर्थ्यवान सन्दूक उठ बैठ।
9 हे यहोवा, तेरे याजक धार्मिकता
धारण किये रहते हैं।
तेरे जन बहुत प्रसन्न रहते हैं।
10 तू अपने चुने हुये राजा को अपने
सेवक दाऊद के भले के लिए नकार मत।
11 यहोवा ने दाऊद को एक वचन दिया है कि
दाऊद के प्रति वह सच्चा रहेगा।
यहोवा ने वचन दिया है कि दाऊद के
वंश से राजा आयेंगे।
12 यहोवा ने कहा था, "यदि तेरी संतानें
मेरी वाचा पर और मैंने उन्हें
जो शिक्षाएं सिखाई उन पर चलेंगे तो फिर
तेरे परिवार का कोई न
कोई सदा ही राजा रहेगा।"
13 अपने मन्दिर की जगह के लिए
यहोवा ने सिय्योन को चुना था।
यह वह जगह है जिसे वह
अपने भवन के लिये चाहता था।
14 यहोवा ने कहा था, "यह मेरा स्थान
सदा सदा के लिये होगा।
मैंने इसे चुना है ऐसा स्थान बनने को
जहाँ पर मैं रहूँगा।
15 भरपूर भोजन से मैं इस नगर को आशीर्वाद दूँगा,
यहाँ तक कि दीनों के पास
खाने को भर पूर होगा।
16 याजकों को मैं उद्धार का वस्त्र पहनाऊँगा,
और यहाँ मेरे भक्त बहुत प्रसन्न रहेंगे।
17 इस स्थान पर मैं दाऊद को सुदृढ करुँगा।
मैं अपने चुने राजा को एक दीपक दूँगा।
18 मैं दाऊद के शत्रुओं को लज्जा से ढक दूँगा
और दाऊद का राज्य बढाऊँगा।"

भजन 133

दाऊद का आरोहण गीत।

1 परमेश्वर के भक्त मिल जुलकर शांति से रहे।
यह सचमुच भला है, और सुखदायी है।
2 यह वैसा सुगंधित तेल जैसा होता है
जिसे हारून के सिर पर उँडला गया है।
यह, हारून की दाढ़ी से नीचे जो बह रहा हो
उस तेल सा होता है।
यह, उस तेल जैसा है जो हारुन के विशेष
वस्त्रों पर ढुलक बह रहा।
3 यह वैसा है जैसे धुंध भरी ओस
हेर्मोन की पहाड़ी से आती हुई।
सिय्योन के पहाड पर उतर रही हो।
4 यहोवा ने अपने आशीर्वाद सिय्योन के
पहाड़ पर ही दिये थे।
यहोवा ने अमर जीवन की
आशीष दी थी।

भजन 134

आरोहण का गीत।

1 ओ, उसके सब सेवकों,
यहोवा का गुण गान करो।
सेवकों सारी रात मन्दिर में तुमने सेवा की।
2 सेवकों, अपने हाथ उठाओ और
यहोवा को धन्य कहो।
3 और सिय्योन से यहोवा तुम्हें धन्य कहे।
यहोवा ने स्वर्ग और धरती रचे हैं।

भजन 135

1 यहोवा की प्रशंसा करो।
यहोवा के सेवकों यहोवा के नाम का
गुणगान करो।
2 तुम लोग यहोवा के मन्दिर में खड़े हो।
उसके नाम की प्रशंसा करो।
तुम लोग मन्दिर के आँगन में खडे हो।
उसके नाम के गुण गाओ।
3 यहोवा की प्रशंसा करो क्योंकि वह खरा है।
उसके नाम के गुण गाओ क्योंकि वह मधुर है।
4 यहोवा ने याकूब को चुना था।
इस्राएल परमेश्वर का है।
5 मैं जानता हूँ, यहोवा महान है।
अन्य भी देवों से हमारा स्वामी महान है।
6 यहोवा जो कुछ वह चाहता है स्वर्ग में,
और धरती पर, समुद्र में अथवा गहरे
महासागरों में, करता है।
7 परमेश्वर धरती पर सब
कहीं मेघों को रचता है।
परमेश्वर बिजली और वर्षा को रचता है।
परमेश्वर हवा को रचता है।
8 परमेश्वर मिस्र में मनुष्यों और पशुओं के
सभी पहलौठों को नष्ट किया था।
9 परमेश्वर ने मिस्र में बहुत से अद्भुत और
अचरज भरे काम किये थे।
उसने फिरौन और उसके सब कर्मचारियों के
बीच चिन्ह और अदभुत कार्य दिखाये।
10 परमेश्वर ने बहुत से देशों को हराया।
परमेश्वर ने बलशाली राजा मारे।
11 उसने एमोरियों के राजा सीहोन को
पराजित किया।
परमेश्वर ने बाशान के राजा ओग को हराया।
परमेश्वर ने कनान की सारी प्रजा को हराया।
12 परमेश्वर ने उनकी धरती इस्राएल को दे दी।
परमेश्वर ने अपने भक्तों को धरती दी।
13 हे यहोवा, तू सदा के लिये प्रसिद्ध होगा।
हे यहोवा, लोग तुझे सदा सर्वदा याद करते रहेंगे।
14 यहोवा ने राष्ट्रों को दण्ड दिया किन्तु यहोवा
अपने निज सेवकों पर दयालु रहा।
15 दूसरे लोगों के देवता बस सोना और
चाँदी के देवता थे।
उनके देवता मात्र लोगों द्वारा बनाये पुतले थे।
16 पुतलों के मुँह हैं, पर बोल नहीं सकते।
पुतलों की आँख हैं, पर देख नहीं सकते।
17 पुतलों के कान हैं, पर उन्हें सुनाई नहीं देता।
पुतलों के नाक हैं, पर वे सूंघ नहीं सकते।
18 वे लोग जिन्होंने इन पुतलों को बनाया,
उन पुतलों के समान हो जायेंगे।
क्यों? क्योंकि वे लोग मानते हैं कि
वे पुतले उनकी रक्षा करेंगे।
19 इस्राएल की संतानों, यहोवा को धन्य कहो!
हारून की संतानों, यहोवा को धन्य कहो!

20 लेवी की संतानों, यहोवा को धन्य कहो!
यहोवा के अनुयायियों,
यहोवा को धन्य कहो!
21 सिय्योन का यहोवा धन्य है।
यरूशलेम में जिसका घर है
यहोवा का गुणगान करो।

भजन 136

1 यहोवा की प्रशंसा करो, क्योंकि वह उत्तम है।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
2 ईश्वरों के परमेश्वर की प्रशंसा करो!
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
3 प्रभुओं के प्रभु की प्रशंसा करो।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
4 परमेश्वर के गुण गाओ।
बस वही एक है जो अद्‌भुत कर्म करता है।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
5 परमेश्वर के गुण गाओ जिसने
अपनी बुद्धि से आकाश को रचा है।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
6 परमेश्वर ने सागर के बीच में
सूखी धरती को स्थापित किया।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
7 परमेश्वर ने महान ज्योतियाँ रची।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
8 परमेश्वर ने सूर्य को दिन पर
शासन करने के लिये बनाया।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
9 परमेश्वर ने चाँद तारों को बनाया कि
वे रात पर शासन करें।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
10 परमेश्वर ने मिस्र में मनुष्यों और
पशुओं के पहलौठों को मारा।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
11 परमेश्वर इस्राएल को मिस्र से बाहर ले आया।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
12 परमेश्वर ने अपना सामर्थ्य और
अपनी महाशक्ति को प्रकटाया।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
13 परमेश्वर ने लाल सागर को दो भागों में फाड़ा।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
14 परमेश्वर ने इस्राएल को सागर के
बीच से पार उतारा।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
15 परमेश्वर ने फ़िरौन और उसकी सेना को
लाल सागर में डूबा दिया।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
16 परमेश्वर ने अपने निज भक्तों को
मरुस्थल में राह दिखाई।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
17 परमेश्वर ने बलशाली राजा हराए।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
18 परमेश्वर ने सुदृढ़ राजाओं को मारा।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
19 परमेश्वर ने एमोरियों के राजा सीहोन को मारा।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
20 परमेश्वर ने बाशान के राजा ओग को मारा।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
21 परमेश्वर ने इस्राएल को उसकी धरती दे दी।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
22 परमेश्वर ने उस धरती को इस्राएल को
उपहार के रूप में दिया।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
23 परमेश्वर ने हमको याद रखा,
जब हम पराजित थे।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
24 परमेश्वर ने हमको हमारे शत्रुओं से बचाया था।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
25 परमेश्वर हर एक को खाने को देता है।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।
26 स्वर्ग के परमेश्वर का गुण गाओ।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

भजन 137

1 बाबुल की नदियों के किनारे बैठकर
हम सिय्योन को याद करके रो पड़े।
2 हमने पास खड़े बेंत के पेड़ों पर
निज वीणाएँ टाँगी।
3 बाबुल में जिन लोगों ने हमें बन्दी बनाया था,
उन्होंने हमसे गाने को कहा।

उन्होंने हमसे प्रसन्नता के गीत गाने को कहा।
उन्होंने हमसे सिय्योन के गीत गाने को कहा।
4 किन्तु हम यहोवा के गीतों को
किसी दूसरे देश में कैसे गा सकते हैं!
5 हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे कभी भूलूँ।
तो मेरी कामना है कि मैं फिर कभी
कोई गीत न बजा पाऊँ।
6 हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे कभी भूलूँ।
तो मेरी कामना है कि मैं फिर कभी
कोई गीत न गा पाऊँ।
मैं तुझको कभी नहीं भूलूँगा।
7 हे यहोवा, याद कर एदोमियों ने
उस दिन जो किया था।
जब यरूशलेम पराजित हुआ था,
वे चीख कर बोले थे, इसे चीर डालो और
नींव तक इसे विध्वस्त करो।
8 अरी ओ बाबुल, तुझे उजाड़ दिया जायेगा।
उस व्यक्ति को धन्य कहो,
जो तुझे वह दण्ड देगा,जो तुझे मिलना चाहिए।
उस व्यक्ति को धन्य कहो जो तुझे
वह क्लेश देगा जो तूने हमको दिये।
9 उस व्यक्ति को धन्य कहो जो तेरे बच्चों को
चट्टान पर झपट कर पछाड़ेगा।

भजन 138

दाऊद का एक पद।

1 हे परमेश्वर, मैं अपने पूर्ण मन से
तेरे गीत गाता हूँ।
मैं सभी देवों के सामने मैं तेरे पद गाऊँगा।
2 हे परमेश्वर, मैं तेरे पवित्र मन्दिर की
ओर दण्डवत करुँगा।
मैं तेरे नाम, तेरा सत्य प्रेम,
और तेरी भक्ति बखानूँगा।
तू अपने वचन की शक्ति के लिये प्रसिद्ध है।
अब तो उसे तूने और भी महान बना दिया।
3 हे परमेश्वर, मैंने तुझे सहायता
पाने को पुकारा।
तूने मुझे उत्तर दिया!
तूने मुझे बल दिया।
4 हे यहोवा, मेरी यह इच्छा है कि धरती के
सभी राजा तेरा गुण गायें।
जो बातें तूने कहीं हैं उन्होंने सुनीं हैं।
5 मैं तो यह चाहता हूँ, कि वे सभी राजा यहोवा
की महान महिमा का गान करें।
6 परमेश्वर महान है, किन्तु वह दीन
जन का ध्यान रखता है।
परमेश्वर को अहंकारी लोगों के कामों का
पता है किन्तु वह उनसे दूर रहता है।
7 हे परमेश्वर, यदि मैं संकट में पड़ूँ
तो मुझको जीवित रख।
यदि मेरे शत्रु मुझ पर कभी क्रोध करे तो
उन से मुझे बचा ले।
8 हे यहोवा, वे वस्तुएँ जिनको मुझे देने का
वचन दिया है मुझे दे।
हे यहोवा, तेरा सच्चा प्रेम सदा ही
बना रहता है।
हे यहोवा, तूने हमको रचा है
सो तू हमको मत बिसरा।

भजन 139

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का स्तुति गीत।

1 हे यहोवा, तूने मुझे परखा है।
मेरे बारे में तू सब कुछ जानता है।
2 तू जानता है कि मैं कब बैठता
और कब खड़ा होता हूँ।
तू दूर रहते हुए भी मेरी मन की
बात जानता है।
3 हे यहोवा, तुझको ज्ञान है कि मैं कहाँ जाता
और कब लेटता हूँ।
मैं जो कुछ करता हूँ सब को तू जानता है।
4 हे यहोवा, इसे पहले की शब्द
मेरे मुख से निकले
तुझको पता होता है कि
मैं क्या कहना चाहता हूँ।
5 हे यहोवा, तू मेरे चारों ओर छाया है।
मेरे आगे और पीछे भी, तू अपना निज हाथ
मेरे ऊपर हौले से रखता है।
6 मुझे अचरज है उन बातों पर जिनको
तू जानता है।
जिनका मेरे लिये समझना बहुत कठिन है।

7 हर जगह जहाँ भी मैं जाता हूँ,
वहाँ तेरी आत्मा रची है।
हे यहोवा, मैं तुझसे बचकर नहीं जा सकता।
8 हे यहोवा, यदि मैं आकाश पर जाऊँ
वहाँ पर तू ही है।
यदि मैं मृत्यु के देश पाताल में जाऊँ
वहाँ पर भी तू है।
9 हे यहोवा, यदि मैं पूर्व में जहाँ सूर्य निकलता है
जाऊँ वहाँ पर भी तू है।
10 वहाँ तक भी तेरा दायाँ हाथ पहुँचाता है।
और हाथ पकड़ कर मुझको ले चलता है।
11 हे यहोवा, सम्भव है, मैं तुझसे छिपने का
जतन करुँ और कहने लगूँ,
"दिन रात में बदल गया है तो निश्चय ही अंधकार
मुझको ढक लेगा।"
12 किन्तु यहोवा अन्धेरा भी तेरे लिये
अंधकार नहीं है।
तेरे लिये रात भी दिन जैसी उजली है।
13 हे यहोवा, तूने मेरी समूची देह को बनाया।
तू मेरे विषय में सबकुछ जानता था
जब मैं अभी माता की कोख ही में था।
14 हे यहोवा, तुझको उन सभी अचरज भरे
कामों के लिये मेरा धन्यवाद, और
मैं सचमुच जानता हूँ कि तू
जो कुछ करता है वह आश्चर्यपूर्ण है।
15 मेरे विषय में तू सब कुछ जानता है।
जब मैं अपनी माता की कोख में छिपा था,
जब मेरी देह रूप ले रही थी
तभी तूने मेरी हड्डियों को देखा।
16 हे यहोवा, तूने मेरी देह को मेरी माता के
गर्भ में विकसते देखा।
ये सभी बातें तेरी पुस्तक में लिखीं हैं।
हर दिन तूने मुझ पर दृष्टी की।
एक दिन भी तुझसे नहीं छूटा।
17 हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिये
कितने महत्त्वपूर्ण हैं।
तेरा ज्ञान अपरंपार है।
18 तू जो कुछ जानता है, उन सब को यदि
मैं गिन सकूँ तो वे सभी धरती के रेत के
कणों से अधिक होंगे।
किन्तु यदि मैं उनको गिन पाऊँ तो भी
मैं तेरे साथ में रहूँगा।
19 हे परमेश्वर, दुर्जन को नष्ट कर।
उन हत्यारों को मुझसे दूर रख।
20 वे बुरे लोग तेरे लिये बुरी बातें कहते हैं।
वे तेरे नाम की निन्दा करते हैं।
21 हे यहोवा, मुझको उन लोगों से घृणा है।
जो तुझ से घृणा करते हैं मुझको उन लोगों
से बैर है जो तुझसे मुड़ जाते हैं।
22 मुझको उनसे पूरी तरह घृणा है!
तेरे शत्रु मेरे भी शत्रु हैं।
23 हे यहोवा, मुझ पर दृष्टि कर
और मेरा मन जान ले।
मुझ को परख ले और मेरा इरादा जान ले।
24 मुझ पर दृष्टि कर और देख कि
मेरे विचार बुरे नहीं है।
तू मुझको उस पथ पर ले चल
जो सदा बना रहता है।

भजन 140

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद की एक स्तुति।

1 हे यहोवा, दुष्ट लोगों से मेरी रक्षा कर।
मुझको क्रूर लोगों से बचा ले।
2 वे लोग बुरा करने को कुचक्र रचते हैं।
वे लोग सदा ही लड़ने लग जाते हैं।
3 उन लोगों की जीभें विष भरे नागों सी हैं।
जैसे उनकी जीभों के नीचे सर्प विष हो।
4 हे यहोवा, तू मुझको दुष्ट लोगों से बचा ले।
मुझको क्रूर लोगों से बचा ले।
वे लोग मेरे पीछे पड़े हैं और दुःख
पहुँचाने का जतन कर रहे हैं।
5 उन अहंकारी लोगों ने मेरे लिये जाल बिछाया।
मुझको फँसाने को उन्होंने जाल फैलाया है।
मेरी राह में उन्होंने फँदा फैलाया है।
6 हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है।
हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन।
7 हे यहोवा, तू मेरा बलशाली स्वामी है।
तू मेरा उद्धारकर्ता है।
तू मेरा सिर का कवच जैसा है।
जो मेरा सिर युद्ध में बचाता है।

8 हे यहोवा, वे लोग दुष्ट हैं।
उन की मनोकामना पूरी मत होने दे।
उनकी योजनाओं को परवान मत चढने दे।
9 हे यहोवा, मेरे बैरियों को विजयी मत होने दे।
वे बुरे लोग कुचक्र रच रहे हैं।
उनके कुचक्रों को तू उन्ही पर चला दे।
10 उन के सिर पर धधकते अंगारों को ऊँडेल दे।
मेरे शत्रुओं को आग में धकेल दे।
उनको गड्ढ़े (कब्रों) में फेंक दे।
वे उससे कभी बाहर न निकल पाये।
11 हे यहोवा, उन मिथ्यावादियों को तू जीने मत दे।
बुरे लोगों के साथ बुरी बातें घटा दे।
12 मैं जानता हूँ यहोवा कंगालों का न्याय
खराई से करेगा।
परमेश्वर असहायों की सहायता करेगा।
13 हे यहोवा, भले लोग तेरे नाम की स्तुति करेंगे।
भले लोग तेरी अराधना करेंगे।

भजन 141

दाऊद का एक स्तुति पद।

1 हे यहोवा, मैं तुझको सहायता
पाने के लिये पुकारता हूँ।
जब मैं विनती करुँ तब तू मेरी सुन ले।
जल्दी कर और मुझको सहारा दे।
2 हे यहोवा, मेरी विनती तेरे लिये जलती धूप के
उपहार सी हो मेरी विनती तेरे लिये दी गयी
साँझ कि बलि सी हो।
3 हे यहोवा, मेरी वाणी पर मेरा काबू हो।
अपनी वाणी पर मैं ध्यान रख सकूँ,
इसमें मेरा सहायक हो।
4 मुझको बुरी बात मत करने दे।
मुझको रोके रह बुरों की संगती से
उनके सरस भोजन से और बुरे कामों से।
मुझे भाग मत लेने दे ऐसे उन कामों में
जिन को करने में बुरे लोग रख लेते हैं।
5 सज्जन मेरा सुधार कर सकता है।
तेरे भक्त जन मेरे दोष कहे,
यह मेरे लिये भला होगा।
मैं दुर्जनों कि प्रशंसा ग्रहण नहीं करूँगा।
क्यों? क्योंकि मैं सदा प्रार्थना किया करता हूँ।
उन कुकर्मो के विरुद्ध
जिनको बुरे लोग किया करते हैं।
6 उनके राजाओं को दण्डित होने दे
और तब लोग जान जायेंगे कि
मैंने सत्य कहा था।
7 लोग खेत को खोद कर जोता करते हैं और
मिट्टी को इधर-उधर बिखेर देते हैं।
उन दुष्टों कि हड्डियाँ इसी तरह
कब्रों में इधर-उधर बिखरेंगी।
8 हे यहोवा, मेरे स्वामी, सहारा पाने को
मेरी दृष्टि तुझ पर लगी है।
मुझको तेरा भरोसा है।
कृपा कर मुझको मत मरने दे।
9 मुझको दुष्टों के फँदों में मत पड़ने दे।
उन दुष्टों के द्वारा मुझ को मत बंध जाने दे।
10 वे दुष्ट स्वयं अपने जालों में फँस जायें
जब मैं बचकर निकल जाऊँ।
बिना हानि उठाये।

भजन 142

दाऊद का एक कला गीत।

1 मैं सहायता पाने के लिये यहोवा को पुकारुँगा।
मैं यहोवा से प्रार्थना करुँगा।
2 मैं यहोवा के सामने अपना दु:ख रोऊँगा।
मैं यहोवा से अपनी कठिनाईयाँ कहूँगा।
3 मेरे शत्रुओं ने मेरे लिये जाल बिछाया है।
मेरी आशा छूट रही है किन्तु यहोवा जानता है।
कि मेरे साथ क्या घट रहा है।
4 मैं चारों ओर देखता हूँ और कोई अपना मित्र
मुझको दिख नहीं रहा
मेरे पास जाने को कोई जगह नहीं है।
कोई व्यक्ति मुझको बचाने का
जतन नहीं करता है।
5 इसलिये मैंने यहोवा को सहारा
पाने को पुकारा है।
हे यहोवा, तू मेरी ओट है।
हे यहोवा, तू ही मुझे जिलाये रख सकता है।
6 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन।
मुझे तेरी बहुत अपेक्षा है।
तू मुझको ऐसे लोगों से बचा ले

जो मेरे लिये मेरे पीछे पड़े हैं।
7 मुझको सहारा दे कि इस जाल से बच भागूँ।
फिर यहोवा, मैं तेरे नाम का गुणगान करुँगा।
मै वचन देता हूँ।
भले लोग आपस में मिलेंगे और
तेरा गुणगान करेंगे
क्योंकि तूने मेरी रक्षा की है।

भजन 143

दाऊद का एक स्तुति गीत।

1 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन।
मेरी विनती को सुन और फिर
तू मेरी प्रार्थना का उत्तर दे।
मुझको दिखा दे कि तू सचमुच
भला और खरा है।
2 तू मुझ अपने दास पर मुकदमा मत चला।
क्योंकि कोई भी जीवित व्यक्ति
तेरे सामने नेक नहीं ठहर सकता।
3 किन्तु मेरे शत्रु मेरे पीछे पड़े हैं।
उन्होंने मेरा जीवन चकनाचूर कर
धूल में मिलाया।
वे मुझे अंधेरी कब्र में ढकेल रहे हैं।
उन व्यक्तियों की तरह
जो बहुत पहले मर चुके हैं।
4 मैं निराश हो रहा हूँ।
मेरा साहस छूट रहा है।
5 किन्तु मुझे वे बातें याद हैं,
जो बहुत पहले घटी थी।
हे यहोवा, मैं उन अनेक अद्भुत
कामों का बखान कर रहा हूँ।
जिनको तूने किया था।
6 हे यहोवा, मैं अपना हाथ उठाकर के
तेरी विनती करता हूँ।
मैं तेरी सहायता कि बाट जोह रहा हूँ
जैसे सूखी वर्षा कि बाट जोहती है।
7 हे यहोवा, मुझे शीघ्र उत्तर दे।
मेरा साहस छूट गया; मुझसे मुख मत मोड़।
मुझको मरने मत दे और वैसा मत होने दे,
जैसा कोई मरा व्यक्ति कब्र में लेटा हो।
8 हे यहोवा, इस भोर के फूटते ही
मुझे अपना सच्चा प्रेम दिखा।
मैं तेरे भरोसे हूँ।
मुझको वे बाते दिखा जिनको
मुझे करना चाहिये।
9 हे यहोवा, मेरे शत्रुओं से रक्षा पाने को
मैं तेरे शरण में आता हूँ।
तू मुझको बचा ले।
10 दिखा मुझे जो तू मुझसे करवाना चाहता है।
तू मेरा परमेश्वर है।
11 हे यहोवा, मुझे जीवित रहने दे,
ताकि लोग तेरे नाम का गुण गायें।
मुझे दिखा कि सचमुच तू भला है,
और मुझे मेरे शत्रुओं से बचा ले।
12 हे यहोवा, मुझ पर अपना प्रेम प्रकट कर।
और उन शत्रुओं को हरा दे,
जो मेरी हत्या का यत्न कर रहे हैं।
क्योंकि मैं तेरा सेवक हूँ।

भजन 144

दाऊद को समर्पित।

1 यहोवा मेरी चट्टान है।
यहोवा को धन्य कहो!
यहोवा मुझको लड़ाई के लिये
प्रशिक्षित करता है।
यहोवा मुझको युद्ध के लिये प्रशिक्षित करता है।
2 यहोवा मुझसे प्रेम रखता है और
मेरी रक्षा करता है।
यहोवा पर्वत के ऊपर, मेरा ऊँचा
सुरक्षा स्थान है।
यहोवा मुझको बचा लाता है।
यहोवा मेरी ढाल है।
मैं उसके भरोसे हूँ।
यहोवा मेरे लोगों का शासन करने में
मेरा सहायक है।
3 हे यहोवा, तेरे लिये लोग क्यों महत्त्वपूर्ण बने हैं?
तू हम पर क्यों ध्यान देता है?
4 मनुष्य का जीवन एक फूँक के समान होता है।
मनुष्य का जीवन ढलती हुई छाया सा होता है।
5 हे यहोवा, तू अम्बर को चीर कर नीचे उतर आ।
तू पर्वतो को छू ले कि उनसे धुँआ उठने लगे।

6 हे यहोवा, बिजलियाँ भेज दे और
मेरे शत्रुओ को कही दूर भगा दे।
अपने बाणों को चला और उन्हें विवश कर
कि वे कहीं भाग जायें।
7 हे यहोवा, अम्बर से नीचे उतर आ और
मुझ को उबार ले।
इन, शत्रुओं के सागर में मुझे मत डूबने दे।
मुझको इन परायों से बचा ले।
8 ये शत्रु झूठे हैं।
ये बात ऐसी बनाते हैं जो सच
नहीं होती है।
9 हे यहोवा, मैं नया गीत गाऊँगा तेरे उन
अद्भुत कर्मो का तू जिन्हें करता है।
मैं तेरा यश दस तार वाली वीणा पर गाऊँगा।
10 हे यहोवा, राजाओं की सहायता
उनके युद्ध जीतने में करता है।
यहोवा ने अपने सेवक दाऊद को
उसके शत्रुओं के तलवारों से बचाया।
11 मुझको इन परदेशियों से बचा ले।
ये शत्रु झूठे हैं, ये बातें बनाते हैं
जो सच नहीं होती।
12 यह मेरी कामना है: पुत्र जवान हो कर
विशाल पेड़ों जैसे मजबूत हों।
और मेरी यह कामना है हमारी पुत्रियाँ
महल की सुन्दर सजावटों सी हों।
13 यह मेरी कामना है कि हमारे खेत
हर प्रकार की फसलों से भरपूर रहें।
यह मेरी कामना है कि हमारी
भेड़े चारागाहों
में हजारों हजार मेमनें जनती रहें।
14 मेरी यह कामना है कि हमारे
पशुओं के बहुत से बच्चे हों।
यह मेरी कामना है कि हम पर
आक्रमण करने कोई शत्रु नहीं आए।
यह मेरी कामना है कभी हम युद्ध को नहीं आएं।
और मेरी यह कामना है कि हमारी गलियों
में भय की चीखें नहीं उठें।
15 जब ऐसा होगा लोग अति प्रसन्न होंगे।
जिनका परमेश्वर यहोवा है,
वे लोग अति प्रसन्न रहते हैं।

भजन 145

दाऊद की एक प्रार्थना।

1 हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे राजा,
मैं तेरा गुण गाता हूँ!
मैं सदा–सदा तेरे नाम को धन्य कहता हूँ।
2 मैं हर दिन तुझको सराहता हूँ।
मैं तेरे नाम की सदा–सदा प्रशंसा करता हूँ।
3 यहोवा महान है।
लोग उसका बहुत गुणगान करते हैं।
वे अनगिनत महाकार्य जिनको वह करता है
हम उनको नहीं गिन सकते।
4 हे यहोवा, लोग उन बातों की गरिमा बखानेंगे
जिनको तू सदा और सर्वदा करता है।
दूसरे लोग, लोगों से उन अद्भुत कर्मो का
बखान करेंगे जिनको तू करता है।
5 तेरे लोग अचरज भरे गौरव और
महिमा को बखानेंगे।
मैं तेरे आश्चर्यपूर्ण कर्मों को बखानूँगा।
6 हे यहोवा, लोग उन अचरज भरी बातों को
कहा करेंगे जिनको तू करता है।
मैं उन महान कर्मो को बखानूँगा
जिनको तू करता है।
7 लोग उन भली बातों के विषय में कहेंगे
जिनको तू करता है।
लोग तेरी धार्मिकता का गान किया करेंगे।
8 यहोवा दयालु है और करुणापूर्ण है।
यहोवा तू धैर्य और प्रेम से पूर्ण है।
9 यहोवा सब के लिये भला है।
परमेश्वर जो कुछ भी करता है
उसी में निज करुणा प्रकट करता है।
10 हे यहोवा, तेरे कर्मो से
तुझे प्रशंसा मिलती है।
तुझको तेरे भक्त धन्य कहा करते हैं।
11 वे लोग तेरे महिमामय राज्य का
बखान किया करते हैं।
तेरी महानता को वे बताया करते हैं।
12 ताकि अन्य लोग उन महान बातों को
जाने जिनको तू करता है।
वे लोग तेरे महिमामय राज्य का
मनन किया करते हैं।

13 हे यहोवा, तेरा राज्य सदा–सदा बना रहेगा।
तू सर्वदा शासन करेगा।
14 यहोवा गिरे हुए लोगों को ऊपर उठाता है।
यहोवा विपदा में पड़े लोगों को सहारा देता है।
15 हे यहोवा, सभी प्राणी तेरी
ओर खाना पाने को देखते हैं।
तू उनको ठीक समय पर
उनका भोजन दिया करता है।
16 हे यहोवा, तू निज मुट्ठी खोलता है, और
तू सभी प्राणियों को वह हर एक वस्तु
जिसकी उन्हें आवश्यकता देता है।
17 यहोवा जो भी करता है, अच्छा ही करता है।
यहोवा जो भी करता, उसमें निज
सच्चा प्रेम प्रकट करता है।
18 जो लोग यहोवा की उपासना करते हैं,
यहोवा उनके निकट रहता है।
सचमुच जो उसकी उपासना करते हैं,
यहोवा हर उस व्यक्ति के निकट रहता है।
19 यहोवा के भक्त जो
उससे करवाना चाहते हैं,
वह उन बातों को करता है।
यहोवा अपने भक्तों की सुनता है।
वह उनकी प्रार्थनाओ का
उत्तर देता है और उनकी रक्षा करता है।
20 जिसका भी यहोवा से प्रेम है,
यहोवा हर उस व्यक्ति को बचाता है,
किन्तु यहोवा दुष्ट को नष्ट करता है।
21 मैं यहोवा के गुण गाऊँगा!
मेरी यह इच्छा है कि हर कोई उसके पवित्र
नाम के गुण सदा और सर्वदा गाये।

भजन 146

1 यहोवा का गुण गान कर!
मेरे मन, यहोवा की प्रशंसा कर।
2 मैं अपने जीवन भर यहोवा के गुण गाऊँगा।
मैं अपने जीवन भर उसके लिये
यश गीत गाऊँगा।
3 अपने प्रमुखों के भरोसे मत रहो।
सहायता पाने को व्यक्ति के भरोसे मत रहो,
क्योंकि तुमको व्यक्ति बचा नहीं सकता है।
4 लोग मर जाते हैं और गाड़ दिये जाते है।
फिर उनकी सहायता देने की
सभी योजनाएँ यूँ ही चली जाती है।
5 जो लोग, याकूब के परमेश्वर से अति
सहायता माँगते, वे अति प्रसन्न रहते हैं।
वे लोग अपने परमेश्वर यहोवा के
भरोसे रहा करते हैं।
6 यहोवा ने स्वर्ग और धरती को बनाया है।
यहोवा ने सागर और उसमें की
हर वस्तु बनाई है।
यहोवा उनकी सदा रक्षा करेगा।
7 जिन्हें दु:ख दिया गया, यहोवा ऐसे लोगों के संग
उचित बात करता है।
यहोवा भूखे लोगों को भोजन देता है।
यहोवा बन्दी लोगों को छुड़ा दिया करता है।
8 यहोवा के प्रताप से अंधे फिर
देखने लग जाते हैं।
यहोवा उन लोगों को सहारा देता
जो विपदा में पड़े हैं।
यहोवा सज्जन लोगों से प्रेम करता है।
9 यहोवा उन परदेशियों की रक्षा
किया करता है जो हमारे देश में बसे हैं।
यहोवा अनाथों और विधवाओं का
ध्यान रखता है किन्तु
यहोवा दुर्जनों के कुचक्र को नष्ट करता हैं।
10 यहोवा सदा राज करता रहे!
सिय्योन तुम्हारा परमेश्वर
पर सदा राज करता रहे!
यहोवा का गुणगान करो!

भजन 147

1 यहोवा की प्रशंसा करो क्योंकि वह उत्तम है।
हमारे परमेश्वर के प्रशंसा गीत गाओ।
उसका गुणगान भला और सुखदायी है।
2 यहोवा ने यरुशलेम को बनाया है।
परमेश्वर इस्राएली लोगों को वापस छुड़ाकर ले
आया जिन्हें बंदी बनाया गया था।
3 परमेश्वर उनके टूटे मनों को चँगा किया करता
और उनके घावों पर पट्टी बांधता है।
4 परमेश्वर सितारों को गिनता है और

हर एक तारे का नाम जानता है।

5 हमारा स्वामी अति महान है।
वह बहुत ही शक्तिशाली है।
वे सीमाहीन बातें है जिनको वह जानता है।

6 यहोवा दीन जन को सहारा देता है।
किन्तु वह दुष्ट को लज्जित किया करता है।

7 यहोवा को धन्यवाद करो।
हमारे परमेश्वर का गुणगान वीणा के संग करो।

8 परमेश्वर मेघों से अम्बर को भरता है।
परमेश्वर धरती के लिये वर्षा कराता है।
परमेश्वर पहाड़ों पर घास उगाता है।

9 परमेश्वर पशुओं को चारा देता है,
छोटी चिड़ियों को चुग्गा देता है।

10 उनको युद्ध के घोड़े और
शक्तिशाली सैनिक नहीं भाते हैं।

11 यहोवा उन लोगों से प्रसन्न रहता है।
जो उसकी आराधना करते हैं।
यहोवा प्रसन्न हैं, ऐसे उन लोगों से
जिनकी आस्था उसके सच्चे प्रेम में है।

12 हे यरूशलेम, यहोवा के गुण गाओ!
सिय्योन, अपने परमेश्वर की प्रशंसा करो!

13 हे यरूशलेम, तेरे फाटको को
परमेश्वर सुदृढ़ करता है।
तेरे नगर के लोगों को
परमेश्वर आशीष देता है।

14 परमेश्वर तेरे देश में शांति को लाया है।
सो युद्ध में शत्रुओं ने तेरा अन्न नहीं लूटा।
तेरे पास खाने को बहुत अन्न है।

15 परमेश्वर धरती को आदेश देता है,
और वह तत्काल पालन करती है।

16 परमेश्वर पाला गिराता जब तक धरातल
वैसा श्वेत नहीं होता जाता
जैसा उजला ऊन होता है।
परमेश्वर तुषार की वर्षा करता है,
जो हवा के साथ धूल सी उड़ती है।

17 परमेश्वर हिम शिलाएँ गगन से गिराता है।
कोई व्यक्ति उस शीत को सह नहीं पाता है।

18 फिर परमेश्वर दूसरी आज्ञा देता है,
और गर्म हवाएँ फिर बहने लग जाती हैं।
बर्फ पिघलने लगती,
और जल बहने लग जाता है।

19 परमेश्वर ने निज आदेश याकूब को
(इस्राएल को) दिये थे।
परमेश्वर ने इस्राएल को निज विधि का
विधान और नियमों को दिया।

20 यहोवा ने किसी अन्य राष्ट्र के
हेतु ऐसा नहीं किया।
परमेश्वर ने अपने नियमों को,
किसी अन्य जाति को नहीं सिखाया।
यहोवा का यश गाओ।

भजन 148

1 यहोवा के गुण गाओ!
स्वर्ग के स्वर्गदूतों, यहोवा की प्रशंसा
स्वर्ग से करो!

2 हे सभी स्वर्गदूतों, यहोवा का यश गाओ!
ग्रहों और नक्षत्रों, उसका गुण गान करो!

3 सूर्य और चाँद, तुम यहोवा के गुण गाओ!
अम्बर के तारों और ज्योतियों,
उसकी प्रशंसा करो!

4 यहोवा के गुण सर्वोच्च अम्बर में गाओ।
हे जल आकाश के ऊपर, उसका यशगान कर!

5 यहोवा के नाम का बखान करो।
क्यों? क्योंकि परमेश्वर ने आदेश दिया,
और हम सब उसके रचे थे।

6 परमेश्वर ने इन सबको बनाया कि
सदा-सदा बने रहें।
परमेश्वर ने विधान के विधि को बनाया,
जिसका अंत नहीं होगा।

7 ओ हर वस्तु, धरती की यहोवा का
गुण गान करो!
ओ विशालकाय जल जन्तुओं, सागर के
यहोवा के गुण गाओ।

8 परमेश्वर ने अग्नि और ओले को बनाया,
बर्फ और धुआँ तथा सभी
तूफानी पवन उसने रचे।

9 परमेश्वर ने पर्वतों और पहाड़ों को बनाया,
फलदार पेड़ और देवदार के वृक्ष
उसी ने रचे हैं।

10 परमेश्वर ने सारे बनैले पशु और
सब मवेशी रचे हैं।
रेंगने वाले जीव और पक्षियों को उसने बनाया।
11 परमेश्वर ने राजा और राष्ट्रों की
रचना धरती पर की।
परमेश्वर ने प्रमुखों और न्यायधीशों को बनाया।
12 परमेश्वर ने युवक और युवतियों को बनाया।
परमेश्वर ने बूढ़ों और बच्चों को रचा है।
13 यहोवा के नाम का गुण गाओ!
सदा उसके नाम का आदर करो!
हर वस्तु, ओ धरती और व्योम,
उसका गुणगान करो!
14 परमेश्वर अपने भक्तों को दृढ़ करेगा।
लोग परमेश्वर के भक्तों की प्रशंसा करेंगे।
लोग इस्राएल के गुण गायेंगे।
वे लोग है जिनके लिये
परमेश्वर युद्ध करता है।
यहोवा की प्रशंसा करो।

भजन 149

1 यहोवा के गुण गाओ।
उन नयी बातों के विषय में एक नया गीत गाओ
जिनको यहोवा ने किया है।
उसके भक्तों की मण्डली में
उसका गुण गान करो।
2 परमेश्वर ने इस्राएल को बनाया।
यहोवा के संग इस्राएल हर्ष मनाए।
सिय्योन के लोग अपने राजा के संग में
आनन्द मनाएँ।
3 वे लोग परमेश्वर का यशगान नाचते बजाते
अपने तम्बुरों, वीणाओ से करें।
4 यहोवा निज भक्तों से प्रसन्न है।
परमेश्वर ने एक अद्‌भुत कर्म
अपने विनीत जन के लिये किया।
उसने उनका उद्धार किया।
5 परमेश्वर के भक्तों, तुम निज विजय मनाओं!
यहाँ तक कि बिस्तर पर जाने के बाद भी
तुम आनन्दित रहो।
6 लोग परमेश्वर का जयजयकार करें और
लोग निज तलवारें अपने हाथों में धारण करें।
7 वे अपने शत्रुओं को दण्ड देने जायें।
और दूसरे लोगों को वे दण्ड देने को जायें,
8 परमेश्वर के भक्त उन शासकों और
उन प्रमुखों को जंजीरो से बांधे।
9 परमेश्वर के भक्त अपने शत्रुओं को
उसी तरह दण्ड देंगे,
जैसा परमेश्वर ने उनको आदेश दिया।
परमेश्वर के भक्तो यहोवा का आदरपूर्ण
गुणगान करो।

भजन 150

1 यहोवा की प्रशंसा करो!
परमेश्वर के मन्दिर में उसका गुणगान करो!
उसकी जो शक्ति स्वर्ग में है,
उसके यशगीत गाओ!
2 उन बड़े कामों के लिये परमेश्वर की
प्रशंसा करो, जिनको वह करता है!
उसकी गरिमा समूची के लिये
उसका गुणगान करो!
3 तुरही फूँकते और नरसिंगे बजाते हुए
उसकी स्तुति करो!
उसका गुणगान वीणा
और सारंगी बजाते हुए करो!
4 परमेश्वर की स्तुति तम्बुरों
और नृत्य से करो!
उसका यश उन पर जो तार से बजाते हैं
और बांसुरी बजाते हुए गाओ!
5 तुम परमेश्वर का यश झंकारते
झाँझे बजाते हुए गाओ!
उसकी प्रशंसा करो!
6 हे जीवों! यहोवा की स्तुति करो!
यहोवा की प्रशंसा करो!

नीतिवचन

1 दाऊद के पुत्र और इस्राएल के राजा सुलैमान के नीतिवचन।

यह शब्द इसलिये लिखे गये हैं,

[2]ताकि मनुष्य बुद्धि को पाये, अनुशासन को ग्रहण करे, जिनसे समझ भरी बातों का ज्ञान हो, [3]ताकि मनुष्य विवेकशील, अनुशासित जीवन पाये, और धर्म-पूर्ण, न्याय-पूर्ण, पक्षपातरहित कार्य करे, [4]सरल सीधे जन को विवेक और ज्ञान तथा युवकों को अच्छे बुरे का भेद सिखा (बता) पायें। [5]बुद्धिमान उन्हें सुन कर निज ज्ञान बढ़ावें और समझदार व्यक्ति दिशा निर्देश पायें, [6]ताकि मनुष्य नीतिवचन, ज्ञानी के दृष्टाँतो को और पहेली भरी बातों को समझ सकें।

[7]यहोवा का भय मानना ज्ञान का आदि है किन्तु मूर्ख जन तो बुद्धि और अनुशासन को तुच्छ मानते हैं।

विवेकपूर्ण बनो

चेतावनी: प्रलोभन से बचो

[8]हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर ध्यान दे और अपनी माता की नसीहत को मत भूल। [9] वे तेरा सिर सजाने को मुकुट और शोभायमान करने तेरे गले का हार बनेंगे।

चेतावनी: बुरी संगत से बचो

[10]हे मेरे पुत्र, यदि पापी तुझे बहलाने फुसलाने आयें उनकी कभी मत मानना। [11]और यदि वे कहें, "आजा हमारे साथ! आ, हम किसी के घात में बैठे! आ निर्दोष पर छिपकर वार करें! [12]आ, हम उन्हें जीवित ही सारे का सारा निगल जायें वैसे ही जैसे कब्र निगलती हैं। जैसे नीचे पाताल में कहीं फिसलता चला जाता है। [13]हम सभी बहुमूल्य वस्तुयें पा जायेंगे और अपने इस लूट से घर भर लेंगे। [14]अपने भाग्य का पासा हमारे साथ फेंक, हम एक ही बटुवे के सहभागी होंगे!"

[15]हे मेरे पुत्र, तू उनकी राहों पर मत चल, तू अपने पैर उन पर रखने से रोक। [16]क्योंकि उनके पैर पाप करने को शीघ्र बढ़ते, वे लहू बहाने को अति गतिशील हैं।

[17]कितना व्यर्थ है, जाल का फैलाना जबकि सभी पक्षी तुझे पूरी तरह देखते हैं। [18]जो किसी का खून बहाने प्रतीक्षा में बैठे हैं वे अपने आप उस जाल में फँस जायेंगे! [19]जो ऐसे बुरे लाभ के पीछे पड़े रहते हैं उन सब ही का यही अंत होता है। उन सब के प्राण हर ले जाता है; जो इस बुरे लाभ को अपनाता है।

चेतावनी: बुद्धिहीन मत बनो

[20]बुद्धि! तो मार्ग में ऊँचे चढ़ पुकारती है, चौराहों पर अपनी आवाज़ उठाती है। [21] शोर भरी गलियों के मनुक्कड़ पर पुकारती है, नगर के फाटक पर निज भाषण देती है:

[22]"अरे भोले लोगों! तुम कब तक अपना मोह सरल राहों से रखोगे? उपहास करनेवालों, तुम कब तक उपहासों में आनन्द लोगे? अरे मूर्खो, तुम कब तक ज्ञान से घृणा करोगे? [23]यदि मेरी फटकार तुम पर प्रभावी होती तो मैं तुम पर अपना हृदय उंडेल देती और तुम्हें अपने सभी विचार जना देती।

[24]"किन्तु क्योंकि तुमने तो मुझको नकार दिया जब मैंने तुम्हें पुकारा, और किसी ने ध्यान न दिया,जब मैंने अपना हाथ बढ़ाया था। [25]तुमने मेरी सब सम्मत्तियाँ उपेक्षित कीं और मेरी फटकार कभी नहीं स्वीकारीं! [26]इसलिए, बदले में, मैं तेरे नाश पर हसूँगी। मैं उपहास करूँगी जब तेरा विनाश तुझे घेरेगा!

[27]जब विनाश तुझे वैसे ही घेरेगा जैसे भीषण बबूले सा बवण्ड़र घेरता है, जब विनाश जकडेगा, और जब विनाश तथा संकट तुझे डुबो देंगे।

[28]"तब, वे मुझको पुकारेंगे किन्तु मैं कोई भी उत्तर नहीं दूँगी। वे मुझे ढूँढते फिरेंगे किन्तु नहीं पायेंगे। [29]क्योंकि

वे सदा ज्ञान से घृणा करते रहे, और उन्होंनें कभी नहीं चाहा कि वे यहोवा से डरें। [30]क्योंकि वे, मेरा उपदेश कभी नहीं धारण करेंगे, और मेरी ताड़ना का तिरस्कार करेंगे। [31]वे अपनी करनी का फल अवश्य भोगेंगे, वे अपनी योजनाओं के कुफल से अघायेंगे!

[32]"सीधों की मनमानी उन्हें ले डूबेगी, मूर्खो का आत्म सुख उन्हें नष्ट कर देगा। [33]किन्तु जो मेरी सुनेगा वह सुरक्षित रहेगा, वह बिना किसी हानि के भय से रहित वह सदा चैन से रहेगा।"

बुद्धि के नैतिक लाभ

2 हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे बोध वचनों को ग्रहण करे और मेरे आदेश मन में संचित करे, [2]और तू बुद्धि की बातों पर कान लगाये, मन अपना समझदारी में लगाते हुए [3]और यदि तू अन्तर्दृष्टि के हेतु पुकारे, और तू समझबूझ के निमित्त चिल्लाये, [4]यदि तू इसे ऐसे ढूँढे जैसे कोई मूल्यवान चाँदी को ढूँढता है, और तू इसे ऐसे ढूँढ, जैसे कोई छिपे हुए कोष को ढूँढता है [5]तब तू यहोवा के भय को समझेगा और परमेश्वर का ज्ञान पायेगा।

[6]क्योंकि यहोवा ही बुद्धि देता है और उसके मुख से ही ज्ञान और समझदारी की बाते फूटता है। [7]उसके भंडार में खरी बुद्धि उनके लिये रहती जो खरे हैं, और उनके लिये जिनका चाल चलन विवेकपूर्ण रहता है। वह जैसे एक ढाल है। [8]न्याय के मार्ग की रखवाली करता है और अपने भक्तों की वह राह संवारता है।

[9]तभी तू समझेगा की नेक क्या है, न्यायपूर्ण क्या है, और पक्षपात रहित क्या है, यानी हर भली राह। [10]बुद्धि तेरे मन में प्रवेश करेगी और ज्ञान तेरी आत्मा को भाने लगेगा।

[11]तुझको अच्छे–बुरे का बोध बचायेगा, समझ बूझ भरी बुद्धि तेरी रखवाली करेगी, [12]बुद्धि तुझे कुटिलों की राह से बचायेगी, बुद्धि तुझे ऐसे उन लोगों से बचाएगी जो बुरी बात बोलते हैं। [13]अंधेरी गलियों में आगे बढ़ जाने को वे सरल–सीधी राहों को तजते रहते हैं। [14]वे बुरे काम करने में सदा आनन्द मनाते हैं, वे पापपूर्ण कर्मो में सदा मग्न रहते हैं। [15]उन लोगों पर विश्वास नहीं कर सकते। वे झूठे है और छल करने वाले है। किन्तु तेरी बुद्धि और समझ तुझे इन बातों से बचायेगी। [16]यह बुद्धि तुझको वेश्या और उसकी फुसलाती हुई मधुर वाणी से बचायेगी। [17]जिसने अपने यौवन का साथी त्याग दिया जिससे वाचा कि उपेक्षा परमेश्वर के समक्ष किया था। [18]क्योंकि उसका निवास मृत्यु के गर्त में गिराता है और उसकी राहें नरक में ले जाती हैं। [19]जो भी निकट जाता है कभी नहीं लौट पाता और उसे जीवन की राहें कभी नहीं मिलती! [20]अत: तू तो भले लोगों के मार्ग पर चलेगा और तू सदा नेक राह पर बना रहेगा। [21]क्योंकि खरे लोग ही धरती पर बसे रहेंगे और जो विवेकपूर्ण हैं वे ही टिक पायेंगे। [22]किन्तु जो दुष्ट है वे तो उस देश से काट दिये जायेगें।

उत्तम जीवन से संपन्नता

3 हे मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा मत भूल, बल्कि तू मेरे आदेश अपने हृदय में बसा ले। [2]क्योंकि इनसे तेरी आयु वर्षों वर्ष बढ़ेगी और ये तुझको सम्पन्न कर देगें।

[3]प्रेम, विश्वसनीयता कभी तुझको छोड़ न जाये, तू इनका हार अपने गले में डाल, इन्हें अपने मन के पटल पर लिख ले। [4]फिर तू परमेश्वर और मनुज की दृष्टि में उनकी कृपा और यश पायेगा।

यहोवा में विश्वास रख

[5]अपने पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रख! तू अपनी समझ पर भरोसा मत रख। [6]उसको तू अपने सब कामों में याद रख। वहीं तेरी सब राहों को सीधी करेगा। [7]अपनी ही आँखों में तू बुद्धिमान मत बन, यहोवा से ड़रता रह और पाप से दूर रह। [8]इससे तेरा शरीर पूर्ण स्वस्थ रहेगा और तेरी अस्थियाँ पुष्ट हो जायेंगी।

यहोवा को अर्पित कर

[9]अपनी सम्पत्ति से, और अपनी उपज के पहले फलों से यहोवा का मान कर। [10]तेरे भण्डार ऊपर तक भर जायेंगे, और तेरे मधुपात्र नये दाखमधु से उफनते रहेंगे।

यहोवा का दण्ड स्वीकार ले

[11]हे मेरे पुत्र, यहोवा के अनुशासन का तिरस्कार मत कर, उसकी फटकार का बुरा कभी मत मान। [12]क्यों? क्योंकि यहोवा केवल उन्हीं को डाँटता है जिनसे वह प्यार करता है। वैसे ही जैसे पिता उस पुत्र को डाँटे जो उसको अति प्रिय है।

विवेक का महत्व

[13]धन्य है वह मनुष्य, जो बुद्धि पाता है। वह मनुष्य धन्य है जो समझ प्राप्त करें। [14]बुद्धि, मूल्यवान चाँदी से अधिक लाभदायक है, और वह सोने से उत्तम प्रतिदान देती है! [15]बुद्धि मणि माणिक से अधिक मूल्यवान है। उसकी तुलना कभी किसी उस वस्तु से नहीं हो सकती है जिसे तू चाह सके!

[16]बुद्धि के दाहिने हाथ में सुदीर्घ जीवन है, उसके बायें हाथ में सम्पत्ति और सम्मान है। [17]उसके मार्ग मनोहर हैं और उसके सभी पथ शांति के रहते हैं। [18]बुद्धि उनके लिये जीवन वृक्ष है जो इसे अपनाते हैं, वे सदा धन्य रहेंगे जो दृढता से बुद्धि को थामे रहते हैं!

[19]यहोवा ने धरती की नींव बुद्धि से धरी, उसने समझ से आकाश को स्थिर किया। [20]उसके ही ज्ञान से गहरे सोते फूट पड़े और बादल ओस कण बरसाते हैं।

[21]हे मेरे पुत्र, तू अपनी दृष्टि से भले बुरे का भेद और बुद्धि के विवेक को ओझल मत होने दे। [22]वे तो तेरे लिये जीवन बन जायेंगे, और तेरा कंठ को सजाने एक आभूषण। [23]तब तू सुरक्षित बना निज मार्ग विचरेगा और तेरा पैर कभी ठोकर नहीं खायेगा। [24]तुझको सोने पर कभी भय नहीं व्यापेगा और सो जाने पर तेरी नींद मधुर होगी। [25]आकस्मिक नाश से तू कभी मत डर, या उस विनाश से जो दुष्टों पर आ पड़ता है। [26]क्योंकि तेरा विश्वास यहोवा बन जायेगा और वह ही तेरे पैर को फंदे में फँसने से बचायेगा।

[27]जब तक ऐसा करना तेरी शक्ति में हो अच्छे को उनसे बचा कर मत रख जो जन अच्छा फल पाने योग्य है। [28]जब अपने पड़ोसी को देने तेरे पास रखा हो तो उससे ऐसा मत कह कि “बाद में आना कल तुझे दूँगा।”

[29]तेरा पड़ोसी विश्वास से तेरे पास रहता हो तो उसके विरुद्ध उसको हानि पहुँचाने के लिये कोई षड़यंत्र मत रच।

[30]बिना किसी कारण के किसी को मत कोस, जबकि उस जन ने तुझे क्षति नहीं पहुँचाई है।

[31]किसी बुरे जन से तू द्वेष मत रख और उसकी सी चाल मत चल। तू अपनी चल। [32]क्यों? क्योंकि यहोवा कुटिल जन से घृणा करता है और सच्चरित्र जन को अपनाता है।

[33]दुष्ट के घर पर यहोवा का शाप रहता है, वह नेक के घर को आर्शीवाद देता है।

[34]वह गर्वीले उच्छृंखल की हंसी उड़ाता है किन्तु दीन जन पर वह कृपा करता है।

[35]विवेकी जन तो आदर पायेंगे, किन्तु वह मूर्खो को, लज्जित ही करेगा।

विवेक का महत्व

4 हे मेरे पुत्रों, एक पिता की शिक्षा को सुनों उस पर ध्यान दो और तुम समझ बूझ पा लो! [2]मैं तुम्हें गहन–गम्भीर ज्ञान देता हूँ। मेरी इस शिक्षा का त्याग तुम मत करना।

[3]जब मैं अपने पिता के घर एक बालक था और माता का अति कोमल एक मात्र शिशु था, [4]मुझे सिखाते हुये उसने कहा था– मेरे वचन अपने पूर्ण मन से थामे रह। मेरे आदेश पाल तो तू जीवित रहेगा। [5]तू बुद्धि प्राप्त कर और समझ बूझ प्राप्त कर! मेरे वचन मत भूल और उनसे मत ड़िग। [6]बुद्धि मत त्याग वह तेरी रक्षा करेगी, उससे प्रेम कर वह तेरा ध्यान रखेगी।

[7]बुद्धि का आरम्भ ये है: तू बुद्धि प्राप्त कर,चाहे सब कुछ दे कर भी तू उसे प्राप्त कर! तू समझबूझ प्राप्त कर। [8]तू उसे महत्व दे, वह तुझे ऊँचा उठायेगी, उसे तू गले लगा ले वह तेरा मान बढायेगी। [9]वह तेरे सिर पर शोभा की माला धरेगी और वह तुझे एक वैभव का मुकुट देगी।

[10]सुन, हे मेरे पुत्र। जो कुछ मैं कहता हूँ तू उसे ग्रहण कर! तू अनगिनत सालों साल जीवित रहेगा। [11]मैं तुझे बुद्धि के मार्ग की राह दिखाता हूँ, और सरल पथों पर अगुवाई करता हूँ। [12]जब तू आगे बढेगा तेरे चरण बाधा नहीं पायेंगे, और जब तू दौड़ेगा ठोकर नहीं खायेगा। [13]शिक्षा को थामे रह, उसे तू मत छोड़। इसकी रखवाली कर। यही तेरा जीवन है।

[14]तू दुष्टों के पथ पर चरण मत रख या पापी जनों की राह पर मत चल। [15]तू इससे बचता रह, इसपर कदम मत बढ़ा। इससे तू मुड़ जा। तू अपनी राह चल। [16]वे बुरे काम किये बिना सो नहीं पाते। वे नींद खो बैठते हैं जब तक किसी को नहीं गिराते। [17]वे तो बस सदा नीचता की रोटी खाते हैं और हिंसा का दाखमधु पीते हैं।

[18]किन्तु धर्मी का पथ वैसा होता है जैसी प्रात: किरण होती है। जो दिन की परिपूर्णता तक अपने प्रकाश में बढ़ती ही चली जाती है। [19]किन्तु पापी का मार्ग सघन,

अन्धकार जैसा होता है। वे नहीं जान पाते कि किससे टकराते हैं।

[20]हे मेरे पुत्र, जो कुछ मैं कहता हूँ उस पर तू ध्यान दे। मेरे वचनों को तू कान लगा कर सुन। [21]उन्हें अपनी दृष्टि से ओझल मत होने दे। अपने हृदय पर तू उन्हें धरे रह। [22]क्योंकि जो उन्हें पाते हैं उनके लिये वे जीवन बन जाते हैं और वे एक पुरुष की सम्पूर्ण काया का स्वास्थ्य बनते हैं।

[23]सबसे बडी बात यह है कि तू अपने विचारों के बारे में सावधान रह।

क्योंकि तेरे विचार जीवन को नियंत्रण में रखते हैं।

[24]तू अपने मुख से कुटिलता को दूर रख। तू अपने होठों से भ्रष्ट बात दूर रख। [25]तेरी आँखों के आगे सदा सीधा मार्ग रहे और तेरी चकचकी आगे ही लगी रहें। [26]अपने पैरों के लिये तू सीधा मार्ग बना। बस तू उन राहों पर चल जो निश्चित सुरक्षित हैं। [27]दाहिने को अथवा बायें को मत डिग। तू अपने चरणों को बुराई से रोके रह।

पराई स्त्री से बचे रह

5 हे मेरे पुत्र, तू मेरी बुद्धिमता की बातों पर ध्यान दे। मेरे अर्न्तदृष्टि के वचन को लगन से सुन। [2]जिससे तेरा भले बुरे का बोध बना रहे और तेरे होठों पर ज्ञान संरक्षित रहे। [3]क्योंकि व्यभिचारिणी के होंठ मधु टपकाते हैं और उसकी वाणी तेल सी फिसलन भरी है। [4]किन्तु परिणाम में यह जहर सी कड़ुवी और दुधारी तलवार सी तेज धार है! [5]उसके पैर मृत्यु के गर्त कि तरफ बढ़ते हैं और वे सीधे कब्र तक ले जाते हैं! [6]वह कभी भी जीवन के मार्ग की नहीं सोचती! उसकी रोहें खोटी हैं! किन्तु, हाय, उसे ज्ञात नहीं!

व्यभिचार विनाश का मूल है

[7]अब मेरे पुत्रों, तुम मेरी बात सुनों। जो कुछ भी मैं कहता हूँ, उससे मुँह मत मोड़ो। [8]तुम ऐसी राह चलों, जो उससे सुदूर हो। उसके घर–द्वार के पास तक मत जाना। [9]नहीं तो तुम अपनी उत्तम शक्ति को दूसरों के हाथों में दे बैठोगे और अपने जीवन वर्ष किसी ऐसे को जो क्रूर है। [10]ऐसा न हो, तुम्हारे धन पर अजनबी मौज करें। तुम्हारा परिश्रम औरों का घर भरे। [11]जब तेरा माँस और काया चूक जायेंगे तब तुम अपने जीवन के आखिरी छोर पर रोते बिलखाते यूँ ही रह जाओगे। [12]और तुम कहोगे, "हाय! अनुशासन से मैंने क्यों बैर किया? क्यों मेरा मन सुधार की उपेक्षा करता रहा? [13]मैंने अपने शिक्षकों की बात नहीं मानी अथवा मैंने अपने प्रशिक्षकों पर ध्यान नहीं दिया। [14]मैं सारी मण्डली के सामने, महानाश के किनारे पर आ गया हूँ।"

अपनी पत्नी के संग आनन्द मना

[15-16]तू अपने जल–कुंड से ही पानी पिया कर और तू अपने ही कुँए से स्वच्छ जल पिया कर। तू ही कह, क्या तेरे जलस्रोत राहों में इधर उधर फैल जायें? और तेरी जलधारा चौराहों पर फैंले? [17]ये तो बस तेरी हो, एकमात्र तेरी ही। उनमे कभी किसी अजनबी का भाग न हो। [18]तेरा स्रोत धन्य रहे और अपने जवानी की पत्नी के साथ ही तू आनन्दित रह। का रसपान [19]तेरी वह पत्नी, प्रियतमा, प्राणप्रिया, मनमोहक हिरणी सी तुझे सदा तृप्त करे। उसके माँसल उरोज और उसका प्रेम पाश तुझको बाँधे रहे। [20]हे मेरे पुत्र, कोई व्यभिचारिणी तुझको क्यों बान्ध पाये? और किसी दूसरे की पत्नी को तू क्यों गले लगाये?

[21]यहोवा तेरी राहें पूरी तरह देखता है और वह तेरी सभी राहें परखता रहता है। [22]दुष्ट के बुरे कर्म उसको बान्ध लेते हैं। उसका ही पाप जाल उसको फँसा लेता है। [23]वह बिना अनुशासन के मर जाता है। उसके ये बड़े दोष उसको भटकाते हैं।

कोई चूक मत कर

6 हे मेरे पुत्र, बिना समझे बूझे यदि किसी की जमानत दी है अथवा किसी के लिये वचनबद्ध हुआ है, [2]यदि तू अपने ही कथन के जाल में फँस गया है, तू अपने मुख के ही शब्दों के पिंजरे में बन्द हो गया है [3]तो मेरे पुत्र, क्योंकि तू औरों के हाथों में पड़ गया है, तू स्वंय को बचाने को ऐसा कर: तू उसके निकट जा और विनम्रता से अपने पड़ोसो से अनुनय विनम्र कर। [4]निरन्तर जागता रह, आँखों में नींद न हो और तेरी पलकों में झपकी तक न आये। [5]स्वंय को चंचल हिरण शिकारी के हाथ से और किसी पक्षी सा उसके जाल से छुड़ा ले।

आलसी मत बनों

[6]अरे ओ आलसी, चींटी के पास जा। उसकी कार्य विधि देख और उससे सीख ले। [7]उसका न तो कोई नायक है, न ही कोई निरीक्षक न ही कोई शासक है। [8]फिर भी वह ग्रीष्म में भोजन बटोरती है और कटनी के समय खाना जुटाती है।

[9]अरे ओ दीर्घ सूत्री, कब तक तुम यहाँ पड़े ही रहोगे? अपनी निद्रा से तुम कब जाग उठोगे? [10]तुम कहते रहोगे–"थोड़ा सा और सो लूँ, एक झपकी ले लूँ, थोड़ा सुस्ताने को हाथों पर हाथ रख लूँ।" [11]और बस तुझको दरिद्रता एक बटमार सी आ घेरेगी और अभाव शस्त्रधारी सा घेर लेगा।

दुष्ट जन

[12]नीच और दुष्ट वह होता है जो बुरी बातें बोलता हुआ फिरता रहता है। [13]जो आँखों द्वारा इशारा करता है और अपने पैरों से संकेत देता है और अपनी उगंलियो से इशारे करता है। [14]जो अपने मन में षड़यन्त्र रचता है और जो सदा अनबन उपजाता रहता है। [15]अत: उस पर अचानक महानाश गिरेगा और तत्काल वह नष्ट हो जायेगा। उस के पास बचने का उपाय भी नहीं होगा।

वे सात* बातें जिन्हें यहोवा घृणा करता है

[16]ये हैं छ: बातें वे जिनसे यहोवा घृणा रखता और ये ही सात बातें जिनसे है उसको बैर :

[17] गर्वीली आँखें, झूठ से भरी वाणी,
वे हाथ जो अबोध के हत्यारे हैं।

[18] ऐसा हृदय जो कुचक्र भरी योजनाएँ रचता रहता है,
ऐसे पैर जो पाप के मार्ग पर तुरन्त दौड़ पड़ते हैं।

[19] वह झूठा गवाह, जो निरन्तर झूठ उगलता है और
ऐसा व्यक्ति जो भाईयों के बीच फूट डाले।

दुराचार के विरुद्ध चेतावनी

[20]हे मेरे पुत्र, अपने पिता की आज्ञा का पालन कर और अपनी माता की सीख को कभी मत त्याग। [21]अपने हृदय पर उनको सदैव बाँध रह और उन्हें अपने गले का हार बना ले। [22]जब तू आगे बढ़ेगा, वे राह दिखायेंगे। जब तू सो जायेगा, वे तेरी रखवाली करेंगे और जब तू जागेगा, वे तुझसे बातें करेंगे।

[23]क्योंकि ये आज्ञाएँ दीपक हैं और यह शिक्षा एक ज्योति है। अनुशासन के सुधार तो जीवन का मार्ग है। [24]जो तुझे चरित्रहीन स्त्री से और भटकी हुई कुलटा की फुसलाती बातों से बचाते हैं। [25]तू अपने मन को उसकी सुन्दरता पर कभी वासना सक्त मत होने दे और उसकी आँखों का जादू मत चढ़ने दे। [26]क्योंकि वह वेश्या तो तुझको रोटी–रोटी का मुहताज कर देगी किन्तु वह कुलटा तो तेरा जीवन ही हर लेगी!

[27]क्या यह सम्भव है कि कोई किसी के गोद में आग रख दे और उसके वस्त्र फिर भी जरा भी न जलें? [28]दहकते अंगारों पर क्या कोई जन अपने पैरों को बिना झुलसाये हुए चल सकता है? [29]वह मनुष्य ऐसा ही है जो किसी अन्य की पत्नी से समागम करता है। ऐसी पर स्त्री के जो भी कोई छूएगा, वह बिना दण्ड पाये नहीं रह पायेगा।

[30-31]यदि कोई चोर कभी भूखों मरता हो, यदि यह भूख को मिटाने के लिये चोरी करे तो लोग उस से घृणा नहीं करेंगे। फिर भी यदि वह पकड़ा जाये तो उसे सात गुणा* भरना पड़ता है चाहे उससे उसके घर का समूचा धन चुक जाये।

[32]किन्तु जो पर स्त्री से समागम करता है उसके पास तो विवेक का अभाव है। ऐसा जो करता है वह स्वयं को मिटाता है। [33]प्रहार और अपमान उसका भाग्य है। उसका कलंक कभी नहीं धुल पायेगा। [34]ईर्ष्या किसी पति का क्रोध जगाती है और जब वह इसका बदला लेगा तब वह उस पर दया नहीं करेगा। [35]वह कोई क्षति पूर्ति स्वीकार नहीं करेगा और कोई उसे कितना ही बड़ा प्रलोभन दे, उसे वह स्वीकारे बिना ठुकरायेगा!

सात 'नीति वचन' में अथवा और भी कहीं, जहाँ 'सात' संख्या का प्रयोग किया गया है वहाँ इसका अर्थ कोई निश्चित संख्या नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है बहुत अधिक और इसी तरह जहाँ कहा गया है। "सात नहीं बल्कि आठ" वहाँ उसका अर्थ है अधिक से भी और अधिक।

सात गुणा यहाँ सात गुणा से अभिप्राय है बहुत अधिक या कई कई बार।

विवेक दुराचार से बचाता है

7 हे मेरे पुत्र, मेरे वचनों को पाल और अपने मन में मेरे आदेश संचित कर। [2]मेरे आदेशों का पालन करता रहा तो तू जीवन पायेगा। तू मेरे उपदेशों को अपनी आँखों की पुतली सरीखा सम्भाल कर रख। [3]उनको अपनी उंगलियों पर बाँध ले, तू अपने हृदय पटल पर उनको लिख ले। [4]बुद्धि से कह– "तू मेरी बहन है" और तू समझ बूझ को अपनी कुटुम्बी जन कह। [5]वे ही तुझको उस कुलटा से और स्वेच्छाचारिणी पत्नी के लुभावनें वचनों से बचायेंगे।

[6]एक दिन मैंने अपने घर की खिड़की के झरोखे से झाँका, [7]सरल युवकों के बीच एक ऐसा नवयुवक देखा जिसको भले–बुरे की पहचान नहीं थी। [8]वह उसी गली से होकर, उसी कुलटा के नुक्कड़ के पास से जा रहा था। वह उसके ही घर की तरफ बढ़ता जा रहा था। [9]सूरज शाम के धुंधलके में डूबता था, रात के अन्धेरे की तहें जमती जाती थी। [10]तभी कोई कामिनी उससे मिलने के लिये निकल कर बाहर आई। वह वेश्या के वेश में सजी हुई थी। उसकी इच्छाओ में कपट छुपा था। [11]वह वाचाल और निरंकुश थी। उसके पैर कभी घर में नहीं टिकते थे। [12]वह कभी–कभी गलियों में, कभी चौराहों पर, और हर किसी नुक्कड़ पर घात लगाती थी। [13]उसने उसे रोक लिया और उसे पकड़ा। उसने उसे निर्लज्ज मुख से चूम लिया, फिर उससे बोली, [14]"आज मुझे मैत्री भेंट अर्पित करनी थी। मैंने अपनी मन्नत पूरी कर ली है। मैंने जो प्रतिज्ञा की थी, दे दिया है। उसका कुछ भाग मैं घर ले जा रही हूँ। अब मेरे पास बहुतेरे खाने के लिये है! [15]इसलिये मैं तुझसे मिलने बाहर आई। मैं तुझे खोजती रही और तुझको पा लिया। [16]मैंने मिस्र के मलमल की रंगों भरी चादर से सेज सजाई है। [17]मैंने अपनी सेज को गंधरस, दालचीनी और अगर गंध से सुगन्धित किया है। [18]तू मेरे पास आ जा। भोर की किरण चूर हुए, प्रेम की दाखमधु पीते रहे। आ, हम परस्पर प्रेम से भोग करें। [19]मेरे पति घर पर नहीं है। वह दूर यात्रा पर गया है। [20]वह अपनी थैली धन से भर कर ले गया है और पूर्णमासी तक घर पर नहीं होगा।"

[21]उसने उसे लुभावने शब्दों से मोह लिया। उसको मीठी मधुर वाणी से फुसला लिया। [22]वह तुरन्त उसके पीछे ऐसे हो लिया जैसे कोई बैल वध के लिये खिंचा चला जाये। जैसे कोई निरा मूर्ख जाल में पैर धरे। [23]जब तक एक तीर उसका हृदय नहीं बेधेगा तब तक वह उस पक्षी सा जाल पर बिना यह जाने टूट पडेगा कि जाल उसके प्राण हर लेगा।

[24] सो मेरे पुत्रों, अब मेरी बात सुनो और जो कुछ मैं कहता हूँ उस पर ध्यान धरो। [25] अपना मन कुलटा की राहों में मत खिंचने दो अथवा उसे उसके मार्गो पर मत भटकने दो। [26] कितने ही शिकार उसने मार गिरायें है। उसने जिनको मारा उनका जमघट बहुत बड़ा है। [27]उस का घर वह राजमार्ग है जो कब्र को जाता है और नीचे मृत्यु की कालकोठरी में उतरता है!

सुबुद्धि की पुकार

8 क्या सुबुद्धि तुझको पुकारती नहीं है?
क्या समझबूझ ऊँची आवाज नहीं देती?
[2] वह राह के किनारे ऊँचे स्थानों पर
खड़ी रहती है जहाँ मार्ग मिलते हैं।
[3] वह नगर को जाने वाले द्वारों के सहारे
उपर सिंह द्वार के ऊपर पुकार कर कहती है,
[4] "हे लोगों, मैं तुमको पुकारती हूँ,
मैं सारी मानव जाति हेतु आवाज़ उठाती हूँ।
[5] अरे भोले लोगों! दूर दृष्टि प्राप्त करो,
तुम, जो मूर्ख बने हो, समझ बूझ अपनाओ।
[6] सुनो! क्योंकि मेरे पास कहने को उत्तम बातें है,
अपना मुख खोलती हूँ, जो कहने को उचित है।
[7] मेरे मुख से तो वही निकलता है जो सत्य है,
क्योंकि मेरे होंठों को दुष्टता से घृणा है।
[8] मेरे मुख के सभी शब्द न्यायापूर्ण होते है
कोई भी कुटिल, अथवा भ्रान्त नहीं है ।
[9] विचारशील जन के लिए वे सब साफ़ साफ़ है
और ज्ञानी जन के लिए वे सब दोष रहित है।
[10] चाँदी नहीं बल्कि तू मेरी शिक्षा ग्रहण कर
उत्तम स्वर्ण नहीं बल्कि तू ज्ञान ले।
[11] सुबुद्धि, रत्नों,मणि माणिकों से अधिक मूल्यवान है।
तेरी ऐसी मनचाही कोई वस्तु
जिससे उसकी तुलना हो।"
[12] "मैं सुबुद्धि, विवेक के संग रहती हूँ
मैं ज्ञान रखती हूँ, और भले–बुरे का
भेद जानती हूँ।

13 यहोवा का डरना, पाप से घृणा करना है।
गर्व और अहंकार, कुटिल व्यवहार और
पतनोन्मुख बातों से मैं घृणा करती हूँ ।
14 मेरे परामर्श और न्याय उचित होते हैं।
मेरे पास समझ–बूझ और सामर्थ्य है।
15 मेरे ही सहारे राजा राज्य करते हैं,
और शासक नियम रचते है, जो न्याय पूर्ण है।
16 मेरी ही सहायता से धरती के सब
महानुभाव शासक राज चलाते है।
17 जो मुझसे प्रेम करते हैं, मैं भी उन्हें प्रेम करती हूँ,
मुझे जो खोजते हैं, मुझको पा लेते हैं।
18 सम्पत्तियाँ और आदर मेरे साथ हैं।
मैं खरी सम्पत्ति और यश देती हूँ।
19 मेरा फल स्वर्ण से उत्तम है।
मैं जो उपजाती हूँ, वह शुद्ध चाँदी से अधिक है।
20 मैं न्याय के मार्ग के सहारे
नेकी की राह पर चलती रहती हूँ।
21 मुझसे जो प्रेम करते उन्हें मैं धन देती हूँ,
और उनके भण्डार भर देती हूँ।
22 यहोवा ने मुझे अपनी रचना के प्रथम
अपने पुरातन कर्मो से पहले ही रचा है
23 मेरी रचना सनातन काल से हुई।
आदि से, जगत की रचना के पहले से हुई।
24 जब सागर नहीं थे, जब जल से लबालब
सोते नहीं थे, मुझे जन्म दिया गया।
25 मुझे पर्वतों–पहाड़ियों की स्थापना से
पहले ही जन्म दिया गया।
26 धरती की रचना, या उसके खेत
अथवा जब धरती के, धूल कण रचे गये।
27 मेरा अस्तित्व उससे भी पहले वहाँ था।
जब उसने आकाश का वितान ताना था
और उसने सागर के दूसरे छोर पर
क्षितिज को रेखांकित किया था।
28 उसने जब आकाश में सघन मेघ टिकाये थे ,
और गहन सागर के स्रोत निर्धारित किये,
29 उसने समुद्र की सीमा बांधी थी
जिससे जल उसकी आज्ञा कभी न लाँघे,
धरती की नीवों का सूत्रपात उसने किया,
30 तब मैं उसके साथ कुशल शिल्पी सी थी।
मैं दिन–प्रतिदिन आनन्द से परिपूर्ण
होती चली गयी।
उसके सामने सदा आनन्द मनाती ।
31 उसकी पूरी दुनिया से मैं आनन्दित थी।
मेरी खुशी समूची मानवता थी।
32 तो अब, मेरे पुत्रों, मेरी बात सुनो।
वो धन्य है! जो जन मेरी राह पर चलते है।
33 मेरे उपदेश सुनो और बुद्धिमान बनो ।
इनकी उपेक्षा मत करो।
34 वही जन धन्य है, जो मेरी बात सुनता
और रोज मेरे द्वारों पर दृष्टि लगाये रहता एंव
मेरी ड्योढ़ी पर बाट जोहता रहता है।
35 क्योंकि जो मुझको पा लेता वही जीवन पाता
और वह यहोवा का अनुग्रह पाता है।
36 किन्तु जो मुझको, पाने में चूकता,
वह तो अपनी ही हानि करता है।
मुझसे जो भी जन सतत बैर रखते हैं,
वे जन तो मृत्यु के प्यारे बन जाते है!"

सुबुद्धि और दुर्बुद्धि

9 सुबुद्धि ने अपना घर बनाया है। उसने अपने सात खम्भे गढ़े हैं। [2]उसने अपना भोजन तैयार किया और मिश्रित किया अपना दाखमधु अपनी खाने की मेज पर सजा ली है। [3]और अपनी दासियों को नगर के सर्वोच्च स्थानों से बुलाने को भेजा है। [4]"जो भी भोले भाले है, यहाँ पर पधारे।" जो विवेकी नहीं, वह उनसे यह कहती है, [5]"आओ, मेरा भोजन करो, और मिश्रित किया हुआ मेरा दाखमधु पिओ। [6]तुम अपनी दुर्बुद्धि के मार्ग को छोड़ दो, तो जीवित रहोगे। तुम समझ–बूझ के मार्ग पर आगे बढ़ो।"

[7]जो कोई उपहास करने वाले को, सुधारता है, अपमान को बुलाता है, और जो किसी नीच को समझाने डांटे वह गाली खाता हैं। [8]हँसी उड़ानेवाले को तुम कभी मत डाँटों, नहीं तो वह तुमसे ही घृणा करने लगेगा। किन्तु यदि तुम किसी विवेकी को डाँटो, तो वह तुमसे प्रेम ही करेगा। [9]बुद्धिमान को प्रबोधो, वह अधिक बुद्धिमान होगा, किसी धर्मी को सिखाओ, वह अपनी ज्ञान वृद्धि करेगा।

[10]यहोवा का आदर करना सुबुद्धि को हासिल करना का पहिला कदम है, यहोवा का ज्ञान प्राप्त करना समझ बूझ

को पाने का पहले कदम है। [11]क्योंकि मेरे द्वारा ही तेरी आयु बढ़ेगी, तेरे दिन बढ़ेंगे, और तेरे जीवन में वर्ष जुड़ते जायेंगे। [12]"यदि तू बुद्धिमान है, सदबुद्धि तुझे प्रतिफल देगी। यदि तू उच्छृंखल है, तो अकेला कष्ट पायेगा।

[13]दुर्बुद्धि ऐसी स्त्री है जो बाते बनाती और अनुशासन नहीं मानती। उसके पास ज्ञान नहीं है। [14]अपने घर के दरवाजे पर वह बैठी रहती है, नगर के सर्वोच्च बिंदु पर वह आसन जमाती है। [15]वहाँ से जो गुज़रते वह उनसे पुकार कहती, जो सीधे–सीधे अपनी ही राह पर जा रहे; [16]"अरे निर्बुद्धियों! तुम चले आओ भीतर" वह उनसे यह कहती है जिनके पास भले बुरे का बोध नहीं है, [17]"चोरी का पानी तो, मीठा–मीठा होता है, छिप कर खाया भोजन, बहुत स्वाद देता है।"

[18]किन्तु वे यह नहीं जानते कि वहाँ मृतकों का वास होता है और उसके मेहमान कब्र में समाये हैं!

सुलैमान की सूक्तियाँ

10 एक बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को आनन्द देता है किन्तु एक मूर्ख पुत्र, माता का दुःख होता है।

[2]बुराई से कमाये हुए धन के कोष सदा व्यर्थ रहते हैं! जबकि धार्मिकता मौत से छुड़ाती है।

[3]किसी नेक जन को यहोवा भूखा नहीं रहने देगा, किन्तु दुष्ट की लालसा पर पानी फेर देता है।

[4]सुस्त हाथ मनुष्य को दरिद्र कर देते हैं, किन्तु परिश्रमी हाथ सम्पत्ति लाते हैं।

[5]गर्मियों में जो उपज को बटोर रखता है, वही पुत्र बुद्धिमान है; किन्तु जो कटनी के समय में सोता है वह पुत्र शर्मनाक होता है।

[6]धर्मी जनों के सिर आशीषों का मुकुट होता किन्तु दुष्ट के मुख से हिंसा ऊफन पड़ती।

[7]धर्मी का वरदान स्मरण मात्र बन जाय; किन्तु दुष्ट का नाम दुर्गन्ध देगा।

[8]वह आज्ञा मानेगा जिसका मन विवेकशील है, जबकि बकवासी मूर्ख नष्ट हो जायेगा।

[9]विवेकशील व्यक्ति सुरक्षित रहता है, किन्तु टेढ़ी चाल वाले का भण्डा फूटेगा।

[10]जो बुरे इरादे से आंख से इशारा करे, उसको तो उससे दुःख ही मिलेगा। और बकवासी मूर्ख नष्ट हो जायेगा।

[11]धर्मी का मुख तो जीवन का स्रोत होता है, किन्तु दुष्ट के मुख से हिंसा ऊफन पड़ती है।

[12]दुष्ट के मुख से घृणा भेद–भावों को उत्तेजित करती है जबकि प्रेम सब दोषों को ढक लेता है।

[13] बुद्धि का निवास सदा समझदार होठों पर होता है, किन्तु जिसमें भले बुरे का बोध नहीं होता, उसके पीठ पर डंडा होता है।

[14]बुद्धिमान लोग, ज्ञान का संचय करते रहते, किन्तु मूर्ख की वाणी विपत्ति को बुलाती है ।

[15]धनिक का धन, उनका मज़बूत किला होता, दीन की दीनता पर उसका विनाश है।

[16]नेक की कमाई, उन्हें जीवन देती है, किन्तु दुष्ट की आय दण्ड दिलवाती।

[17]ऐसे अनुशासन से जो जन सीखता है, जीवन के मार्ग की राह वह दिखाता है। किन्तु जो सुधार की उपेक्षा करता है ऐसा मनुष्य तो भटकाया करता है।

[18]जो मनुष्य बैर पर परदा डाले रखता है, वह मिथ्यावादी है और वह जो निन्दा फैलाता है, मूढ़ है।

[19]अधिक बोलने से, कभी पाप नहीं दूर होता किन्तु जो अपनी जुबान को लगाम देता है, वही बुद्धिमान है।

[20]धर्मी की वाणी विशुद्ध चाँदी है, किन्तु दुष्ट के हृदय का कोई नहीं मोल।

[21]धर्मी के मुख से अनेक का भला होता, किन्तु मूर्ख समझ के अभाव में मिट जाते।

[22]यहोवा के वरदान से जो धन मिलता है, उसके साथ वह कोई दुःख नहीं जोड़ता।

[23]बुरे आचार में मूढ़ को सुख मिलता, किन्तु एक समझदार विवेक में सुख लेता है।

[24]जिससे मूढ़ भयभीत होता, वही उस पर आ पड़ेगी, धर्मी की कामना तो पूरी की जायेगी।

[25]आंधी जब गुजरती है, दुष्ट उड़ जाते हैं, किन्तु धर्मी जन तो, निरन्तर टिके रहते हैं।

[26]काम पर जो किसी आलसी को भेजता है, वह बन जाता है जैसे अम्ल सिरका दांतों को खटाता है, और धुंआ आँखों को तड़पाता दुःख देता है।

[27]यहोवा का भय आयु का आयाम बढ़ाता है, किन्तु दुष्ट की आयु तो घटती ही रहती है।

[28]धर्मी का भविष्य आनन्द–उल्लास है। किन्तु दुष्ट की आशा तो व्यर्थ रह जाती है।

[29]धर्मी जन के लिये यहोवा का मार्ग शरण स्थल है किन्तु जो दुराचारी है, उनका यह विनाश है।

[30]धर्मी जन को कभी उखाड़ा न जायेगा, किन्तु दुष्ट धरती पर टिक नहीं पायेगा।

[31]धर्मी के मुख से बुद्धि प्रवाहित होती है, किन्तु कुटिल जीभ को तो काट फेंका जायेगा।

[32]धर्मी के अधर जो उचित है जानते हैं, किन्तु दुष्ट का मुख बस कुटिल बातें बोलता।

11 यहोवा छल के तराजू से घृणा करता है, किन्तु उसका आनन्द सही नाप–तौल है।

[2]अभिमान के संग ही अपमान आता है, किन्तु नम्रता के साथ विवेक आता है।

[3]नेकों की नेकी उनकी अगुवाई करती है, किन्तु दुष्टों को दुष्टता ही ले डूबेगी।

[4]कोप के दिन धन व्यर्थ रहता, काम नहीं आता है; किन्तु तब नेकी लोगों को मृत्यु से बचाती है।

[5]नेकी निर्दोषों के हेतु मार्ग सरल–सीधा बनाती है, किन्तु दुष्ट जन को उसकी अपनी ही दुष्टता धूलें चटा देती।

[6]नेकी सज्जनों को छुड़वाती है, किन्तु विश्वासहीन बुरी इच्छाओं के जाल में फँस जाते है।

[7]जब दुष्ट मरता है, उसकी आशा मर जाती है। अपनी शक्ति से जो कुछ अपेक्षा उसे थी, व्यर्थ चली जाती है।

[8]धर्मी जन तो विपत्ति से छुटकारा पा लेता है, जबकि उसके बदले वह दुष्ट पर आ पड़ती है।

[9]भक्तिहीन की वाणी अपने पड़ौसी को ले डूबती है, किन्तु ज्ञान द्वारा धर्मी जन तो बच निकलता है।

[10]धर्मी का विकास नगर को आनन्दित करता जबकि दुष्ट का नाश हर्ष–नाद उपजाता।

[11]सच्चे जन की आशीष नगर को ऊँचा उठा देती किन्तु दुष्टों की बातें नीचे गिरा देती हैं।

[12]ऐसा जन जिसके पास विवेक नहीं होता, वह अपने पड़ोसी का अपमान करता है, किन्तु समझदार व्यक्ति चुप चाप रहता है।

[13]जो चतुरायी करता फिरता है, वह भेद प्रकट करता है, किन्तु विश्वासी जन भेद को छिपाता है।

[14]जहाँ मार्ग दर्शन नहीं वहाँ राष्ट्र पतित होता, किन्तु बहुत सलाहकार विजय को सुनिश्चित करते हैं।

[15] जो अनजाने का जामिन बनता है, वह निश्चय ही पीड़ा उठायेगा, किन्तु अपने हाथों को बंधक बनाने से जो मना कर देता है, वह सुरक्षित रहता है।

[16]दयालु स्त्री तो आदर पाती है जबकि क्रूर जन का लाभ केवल धन है।

[17]दयालु मनुष्य स्वयं अपना भला करता है, जबकि दया हीन स्वयं पर विपत्ति लाता है।

[18]दुष्ट जन कपट भरी रोजी कमाता है, किन्तु जो नेकी को बोता रहता है, उसको तो सुनिश्चित प्रतिफल का पाना है।

[19]सच्चा धर्मी जन जीवन पाता है, किन्तु जो बुराई को साधता रहता वह तो बस अपनी मृत्यु को पहुँचता है।

[20]कुटिल जनों से, यहोवा घृणा करता है किन्तु वह उनसे प्रसन्न होता है जिनके मार्ग सर्वदा सीधे होते है।

[21]यह जानो निश्चित है, दुष्ट जन कभी दंड से नहीं बचेगा। किन्तु जो नेक है वे छूट जायेंगे।

[22]जो भले बुरे में भेद नहीं करती, उस स्त्री की सुन्दरता ऐसी है जैसे किसी सुअर की थुथनी में सोने की नथ।

[23]नेक की इच्छा का भलाई में अंत होता है, किन्तु दुष्ट की आशा रोष में फैलती है।

[24]जो उदार मुक्त भाव से दान देता है, उसका लाभ तो सतत बढ़ता ही जाता है, किन्तु जो अनुचित रूप से सहेज रखते, उनका तो अंत बस दरिद्रता होता ।

[25]उदार जन तो सदा, फूलेगा फलेगा और जो दूसरों की प्यास बुझायेगा उसकी तो प्यास अपने आप ही बुझेगी।

[26]अन्न का जमाखोर लोगों की गाली खाता, किन्तु जो उसे बेचने को राजी होता है उसके सिर वरदान का मुकुट से सजता है।

[27]जो भलाई पाने को जतन करता है वही यश पाता है किन्तु जो बुराई के पीछे पड़ा रहता उसके तो हाथ बस बुराई ही लगती है।

[28]जो कोई निज धन का भरोसा करता है, झड़ जायेगा वह निर्जीव सूखे पत्ते सा; किन्तु धर्मी जन नयी हरी कोपल सा हरा–भरा ही रहेगा।

[29]जो अपने घराने पर विपत्ति लायेगा, दान में उसे वायु मिलेगा और मूर्ख, बुद्धिमान का दास बनकर रहेगा।

[30]धर्मी का कर्म–फल "जीवन का वृक्ष" है, और जो जन मनों को जीत लेता है, वही बुद्धिमान है।

[31]यदि इस धरती पर धर्मी जन अपना उचित

प्रतिफल पाते हैं, तो फिर पापी और परमेश्वर विहीन लोग कितना अपने कुकर्मो का फल यहाँ पायेंगे।

12 जो शिक्षा और अनुशासन से प्रेम करता है, वह तो ज्ञान से प्रेम यूँ ही करता है। किन्तु जो सुधार से घृणा करता है, वह तो निरा मूर्ख है।

[2]सज्जन मनुष्य यहोवा की कृपा पाता है, किन्तु छल छंदी को यहोवा दण्ड देता है।

[3]दुष्टता, किसी जन को स्थिर नहीं कर सकती किन्तु धर्मी जन कभी उखड़ नहीं पाता है।

[4]एक उत्तम पत्नी के साथ पति खुश और गर्वीला होता है। किन्तु वह पत्नी जो अपने पति को लजाती है वह उसको शरीर की बीमारी जैसे होती है।

[5]धर्मी की योजनाएँ न्याय संगत होती हैं जबकि दुष्ट की सलाह कपटपूर्ण रहती है।

[6]दुष्ट के शब्द घात में झपटने की रहते है। किन्तु सज्जन की वाणी उनको बचाती है।

[7]जो खोटे होते हैं उखाड़ फेंके जाते हैं, किन्तु खरे जन का घराना टिका रहता है।

[8]व्यक्ति अपनी भली समझ के अनुसार प्रशंसा पाता है, किन्तु ऐसे जन जिनके मन कुपथ गामी हों घृणा के पात्र होते हैं।

[9]सामान्य जन बनकर परिश्रम करना उत्तम है इसके की भूखे रहकर महत्वपूर्ण जन सा स्वांग भरना।

[10]धर्मी अपने पशु तक की जरूरतों का ध्यान रखता है, किन्तु दुष्ट के सर्वाधिक दया भरे काम भी कठोर क्रूर रहते हैं।

[11]जो अपने खेत में काम करता है उसके पास खाने की बहुतायत होंगी; किन्तु पीछे भागता रहता जो ना समझ के उसके पास विवेक का अभाव रहता है।

[12]दुष्ट जन पापियों की लूट को चाहते हैं, किन्तु धर्मी जन की जड़ हरी रहती है।

[13]पापी मनुष्य को पाप उसका अपना ही शब्द–जाल में फँसा लेता है। किन्तु खरा व्यक्ति विपत्ति से बच निकलता।

[14]अपनी वाणी के सुफल से व्यक्ति श्रेष्ठ वस्तुओ से भर जाता है। निश्चय यह उतना ही जितना अपने हाथों का काम करके उसको सफलता देता है।

[15]मूर्ख को अपना मार्ग ठीक जान पड़ता है, किन्तु बुद्धिमान व्यक्ति सन्मति सुनता है।

[16]मूर्ख जन अपनी झुंझलाहट झटपट दिखाता है किन्तु बुद्धिमान अपमान की उपेक्षा करता है।

[17]सत्यपूर्ण साक्षी खरी गवाही देता है, किन्तु झूठा साक्षी झूठी बातें बनाता है।

[18]अविचारित वाणी तलवार सी छेदती, किन्तु विवेकी की वाणी घावों को भरती है।

[19]सत्यपूर्ण वाणी सदा सदा टिकी रहती है, किन्तु झूठी जीभ बस क्षण भर को टिकती है।

[20]उनके मनों में छल–कपट भरा रहता है, जो कुचक्र भरी योजना रचा करते है। किन्तु जो शान्ति को बढ़ावा देते हैं, आनन्द पाते है।

[21]धर्मी जन पर कभी विपत्ति नहीं गिरेगी, किन्तु दुष्टों को तो विपत्तियाँ घेरेंगी।

[22]ऐसे होठों को यहोवा घृणा करता है जो झूठ बोलते हैं किन्तु उन लोगों से जो सत्य से पूर्ण है, वह प्रसन्न रहता है।

[23]ज्ञानी अधिक बोलता नहीं है, चुप रहता है किन्तु मूर्ख अधिक बोल बोलकर अपने अज्ञान को दर्शाता है।

[24]परिश्रमी हाथ तो शासन करेंगे, किन्तु आलस्य का परिणाम बेगार होगा।

[25]चिंतापूर्ण मन व्यक्ति को दबोच लेता है; किन्तु भले वचन उसे हर्ष से भर देते हैं।

[26]धर्मी मनुष्य मित्रता में सतर्क रहता है, किन्तु दुष्टों की चाल उन्हीं को भटकाती है।

[27]आलसी मनुष्य निज शिकार ढूँढ नहीं पाता किन्तु परिश्रमी जो कुछ उसके पास है, उसे आदर देता है।

[28]नेकी के मार्ग में जीवन रहता है, और उस राह के किनारे अमरता बसती है।

13 समझदार पुत्र निज पिता की शिक्षा पर कान देता, किन्तु उच्छृंखल झिड़की पर भी ध्यान नहीं देता। [2]सज्जन अपनी वाणी के सुफल का आनन्द लेता हैं किन्तु दुर्जन तो सदा हिंसा चाहता है।

[3]जो अपनी वाणी के प्रति चौकस रहता है, वह अपने जीवन की रक्षा करता है। पर जो गाल बजाता रहता है, अपने विनाश को प्राप्त करता है।

[4]आलसी मनोरथ पालता है पर कुछ नहीं पाता, किन्तु परिश्रमी की जितनी भी इच्छा है, पूर्ण हो जाती है।

[5]धर्मी उससे घृणा करता है, जो झूठ है जबकि दुष्ट लज्जा और अपमान लाते हैं।

[6]सच्चरित्र जन की रक्षक नेकी है जबकि बदी पापी को, उलट फेंक देती है।

[7]एक व्यक्ति जो धनिक का दिखावा करता है; किन्तु उसके पास कुछ भी नहीं होता है। और एक अन्य जो दरिद्र का सा आचरण करता किन्तु उसके पास बहुत धन होता है।

[8]धनवान को अपना जीवन बचाने उसका धन फिरौती में लगाना पड़गा किन्तु दीन जन ऐसे किसी धमकी के भय से मुक्त है।

[9]धर्मी का तेज बहुत चमचमाता किन्तु दुष्ट का दीया* बुझा दिया जाता है।

[10]अहंकार केवल झगड़ों को पनपाता है किन्तु जो सम्मति की बात मानते है, उनमें ही विवेक पाया जाता है।

[11]बेइमानी का धन यूँ ही धूल हो जाता है किन्तु जो बूँद-बूँद करके धन संचित करता है, उसका धन बढ़ता है।

[12]आशा हीनता मन को उदास करती है, किन्तु कामना की पूर्ति प्रसन्नता होती है।

[13] जो जन शिक्षा का अनादर करता है, उसको इसका मूल्य चुकाना पड़ेगा। किन्तु जो शिक्षा का आदर करता है, वह तो इसका प्रतिफल पाता है।

[14]विवेक की शिक्षा जीवन का उद्गम स्रोत है, वह लोगों को मौत के फंदे से बचाती है।

[15]अच्छी भली समझ बूझ कृपा दृष्टि अर्जित करती, पर विश्वास हीन का जीवन कठिन होता है।

[16]हर एक विवेकी ज्ञानपूर्वक काम करता, किन्तु एक मूर्ख निज मूर्खता प्रकट करता है।

[17]कुटिल सन्देशवाहक विपत्ति में पड़ता है, किन्तु विश्वसनीय दूत शांति देता है।

[18] ऐसा मनुष्य जो शिक्षा की उपेक्षा करता है, उसपर लज्जा और दरिद्रता आ पड़ती है, किन्तु जो शिक्षा पर कान देता है, वह आदर पाता है।

[19]किसी इच्छा का पूरा हो जाना मन को मधुर लगता है किन्तु दोष का त्याग, मूर्खो को नहीं भाता है।

[20]बुद्धिमान की संगति, व्यक्ति को बुद्धिमान बनाता है। किन्तु मूर्खो का साथी नाश हो जाता है।

[21]दुर्भाग्य पापियों का पीछा करता रहता है किन्तु नेक प्रतिफल में खुशहाली पाते है।

[22]सज्जन अपने नाती-पोतों को धन सम्पति छोड़ता है जबकि पापी का धन धर्मियों के निमित्त संचित होता रहता है।

[23]दीन जन का खेत भरपूर फसल देता है, किन्तु अन्याय उसे बुहार ले जाता है।

[24]जो अपने पुत्र को कभी नहीं दण्डित करता, वह अपने पुत्र से प्रेम नहीं रखता है। किन्तु जो प्रेम करता निज पुत्र से, वह तो उसे यत्न से अनुशासित करता है।

[25]धर्मी जन, मन से खाते और पूर्ण तृप्त होते है किन्तु दुष्ट का पेट तो कभी नहीं भरता है।

14 बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है किन्तु मूर्ख स्त्री अपने ही हाथों से अपना घर उजाड़ देती है।

[2]जिसकी राह सीधी-सच्ची हो, आदर के साथ वह यहोवा से डरता है, किन्तु वह जिसकी राह कुटिल है, यहोवा से घृणा करता है।

[3]मूर्ख की बातें उसकी पीठ पर ड़ँडे पड़वाती है। किन्तु बुद्धिमान की वाणी रक्षा करती है।

[4]जहां बैल नहीं होते, खलिहान खाली रहते है, बैल के बल पर ही भरपूर फसल होती है।

[5]एक सच्चा साक्षी कभी नहीं छलता है किन्तु झूठा गवाह, झूठ उगलता रहता है ।

[6]उच्छृंखल बुद्धि को खोजता रहता है फिर भी नहीं पाता है; किन्तु भले-बुरे का बोध जिसको रहता है, उसके पास ज्ञान सहज में ही आता है।

[7]मूर्ख की संगत से दूरी बनाये रख, क्योंकि उसकी वाणी में तू ज्ञान नहीं पायेगा।

[8]ज्ञानी जनों का ज्ञान इसी में है, कि वे अपनी राहों का चिंतन करें, मूर्खता मूर्ख की छल में बसती है।

[9]पाप के विचारों पर मूर्ख लोग हँसते है, किन्तु सज्जनों में सद्भाव बना रहता है।

[10]हर मन अपनी निजी पीड़ा को जानता है, और उसका दु:ख कोई नहीं बांट पाता है।

[11]दुष्ट के भवन को ढहा दिया जायेगा, किन्तु सज्जन का डेरा फूलेगा फलेगा।

[12]ऐसी भी राह होती है जो मनुष्य को उचित जान पड़ती है; किन्तु परिणाम में वह मृत्यु को ले जाती।

दुष्ट का दीया यह एक हिब्रू मुहावरा है जिसका अर्थ है अकाल मृत्यु। देखें निर्गमन 20:12

[13]हँसते हुए भी मन रोता रह सकता है, और आनन्द दु:ख में बदल सकता है।

[14]विश्वासहीन को, अपने कुमार्गो का फल भुगतना पड़ेगा; और सज्जन सुमार्गो का प्रतिफल पायेगा।

[15]सरल जन सब कुछ का विश्वास कर लेता है। किन्तु विवेकी जन सोच-समझकर पैर रखता है।

[16]बुद्धिमान मनुष्य यहोवा से डरता है और पाप से दूर रहता है। किन्तु मूर्ख मनुष्य बिना विचार किये उतावला होता है- वह सावधान नहीं रहता।

[17]ऐसा मनुष्य जिसे शीघ्र क्रोध आता है, वह मूर्खतापूर्ण काम कर जाता है और वह मनुष्य जो छल-छंदी होता है वह तो घृणा सब ही की पाता है।

[18]सीधे जनों को बस मूढ़ता मिल पाती किन्तु बुद्धिमान के सिर ज्ञान का मुकुट होता है।

[19]दुर्जन सज्जनों के सामने सिर झुकायेंगे, और दुष्ट सज्जन के द्वार माथा नवायेंगे।

[20]गरीब को उसके पड़ोसी भी दूर रखते हैं; किन्तु धनी जन के मित्र बहुत होते हैं।

[21]जो अपने पड़ोसी को तुच्छ मानता है वह पाप करता है किन्तु जो गरीबों पर दया करता है वह जन धन्य है।

[22]ऐसे मनुष्य जो षड़यन्त्र रचते है क्या भटक नहीं जाते? किन्तु जो भली योजनाएँ रचते हैं, वे जन तो प्रेम और विश्वास पाते हैं।

[23]परिश्रम के सभी काम लाभ देते है, किन्तु कोरी बकवाद बस हानि पहुँचाती है।

[24]विवेकी को प्रतिफल में धन मिलता है पर मूर्खो की मूर्खता मूढ़ता देती है।

[25]एक सच्चा साक्षी अनेक जीवन बचाता है , पर झूठा गवाह, कपट पूर्ण होता है।

[26]ऐसा मनुष्य जो यहोवा से डरता है, उसके पास, एक संरक्षित गढ़ी होती है। और वहीं उसके बच्चों को शरण मिलती है।

[27]यहोवा का भय जीवन स्रोत होता है, वह व्यक्ति को मौत के फंदे से बचाता है।

[28]विस्तृत विशाल प्रजा राजा की महिमा हैं, किन्तु प्रजा बिना राजा नष्ट हो जाता है।

[29]धैर्यपूर्ण व्यक्ति बहुत समझ बूझ रखता है, किन्तु ऐसा व्यक्ति जिसे जल्दी से क्रोध आये वह तो अपनी ही मूर्खता दिखाता है।

[30]शान्त मन शरीर को जीवन देता है किन्तु ईर्ष्या हड्डियों तक को सड़ा देती है।

[31]जो गरीब को सताता है, वह तो सबके सृजनहार का अपमान करता है। किन्तु वह जो भी कोई गरीब पर दयालु रहता है, वह परमेश्वर का आदर करता है।

[32]जब दुष्ट जन पर विपदा पड़ती है तब वह हार जाते है किन्तु धर्मी जन तो मृत्यु में भी विजय हासिल करते है।

[33] बुद्धिमान के मन में बुद्धि का निवास होता है, और मूर्खो के बीच भी वह निज को जनाती है।

[34]नेकी से राष्ट्र का उत्थान होता है; किन्तु पाप हर जाति का कलंक होता है।

[35]विवेकी सेवक, राजा की प्रसन्नता है, किन्तु वह सेवक जो मूर्ख होता है वह उसका क्रोध जगाता है।

15 कोमल उत्तर से क्रोध शांत होता है किन्तु कठोर वचन क्रोध को भड़काता है।

[2]बुद्धिमान की वाणी ज्ञान की प्रशंसा करती है, किन्तु मूर्ख का मुख मूर्खता उगलता है।

[3]यहोवा की आँख हर कहीं लगी हुयी है। वह भले और बुरे को देखती रहती है।

[4]जो वाणी मन के घाव भर देती है, जीवन-वृक्ष होती है; किन्तु कपटपूर्ण वाणी मन को कुचल देती है।

[5]मूर्ख अपने पिता की प्रताड़ना कातिरस्कार करता है, किन्तु जो कान सुधार पर देता है बुद्धिमानी दिखाता है।

[6]धर्मो के घर का कोना भरा पूरा रहता है दुष्ट की कमाई उस पर कलेश लाती है ।

[7]बुद्धिमान की वाणी ज्ञान फैलाती है, किन्तु मूर्खो का मन ऐसा नहीं करता है।

[8]यहोवा दुष्ट के चढ़ावे से घृणा करता है किन्तु उसको सज्जन की प्रार्थना ही प्रसन्न कर देती है।

[9]दुष्टों की राहों से यहोवा घृणा करता है। किन्तु जो नेकी की राह पर चलते हैं, उनसे वह प्रेम करता है।

[10]उसकी प्रतीक्षा में कठोर दण्ड रहता है जो पथ-भ्रष्ट हो जाता, और जो सुधार से घृणा करता है, वह निश्चय मर जाता है।

[11]जबकि यहोवा के समक्ष मृत्यु और विनाश के रहस्य खुले पड़े है। सो निश्चित रूप से वह जानता है कि लोगों के दिलों में क्या हो रहा है।

[12]उपहास करने वाला सुधार नहीं अपनाता है। वह विवेकी से परामर्श नहीं लेता।

[13]मन की प्रसन्नता मुख को चमकाती, किन्तु मन का दर्द आत्मा को कुचल देता है।

[14]जिस मन को भले बुरे का बोध होता है वह तो ज्ञान की खोज में रहता है किन्तु मूर्ख का मन, मूढ़ता पर लगता है।

[15]कुछ गरीब सदा के लिये दुःखी रहते है, किन्तु प्रफुल्लित चित उत्सव मनाता रहता है।

[16]बेचैनी के साथ प्रचुर धन उत्तम नहीं, यहोवा का भय मानते रहने से थोड़ा भी धन उत्तम है।

[17]घृणा के साथ अधिक भोजन से, प्रेम के साथ थोड़ा भोजन उत्तम है।

[18]क्रोधी जन मतभेद भड़काता रहता है, जबकि सहनशील जन झगड़े को शांत करता।

[19]आलसी की राह कांटों से रूधी रहती, जबकि सज्जन का मार्ग राजमार्ग होता है।

[20]विवेकी पुत्र निज पिता को आनन्दित करता है, किन्तु मूर्ख व्यक्ति निज माता से घृणा करता।

[21]भले–बुरे का ज्ञान जिसको नहीं होता है ऐसे मनुष्य को तो मूढ़ता सुख देती है, किन्तु समझदार व्यक्ति सीधी राह चलता है ।

[22]बिना परामर्श के योजनायें विफल होती है। किन्तु वे अनेक सलाहकारों से सफल होती है।

[23]मनुष्य उचित उत्तर देने से आनन्दित होता है। यथोचित समय का वचन कितना उत्तम होता है।

[24]विवेकी जन को जीवन–मार्ग ऊँचे से ऊँचा ले जाता है,जिससे वह मृत्यु के गर्त में नीचे गिरने से बचा रहे।

[25]यहोवा अभिमानी के घर को छिन्न–भिन्न करता है; किन्तु वह विवश विधवा के घर की सीमा बनाये रखता।

[26]दुष्टों के विचारों से यहोवा को घृणा है, पर सज्जनों के विचार उसको सदा भाते हैं।

[27]लालची मनुष्य अपने घराने पर विपदा लाता है किन्तु वही जीवित रहता है जो जन घूस से घृणा भाव रखता है।

[28]धर्मी जन का मन तौल कर बोलता है किन्तु दुष्ट का मुख, बुरी बात उगलता है।

[29]यहोवा दुष्टों से दूर रहता है, अति दूर; किन्तु वह धर्मी की प्रार्थना सुनता है।

[30] आनन्द भरी मन को हर्षाती, अच्छा समाचार हड्डियों तक हर्ष पहुँचाता है।

[31]जो जीवनदायी डाँट सुनता है, वही बुद्धिमान जनों के बीच चैन से रहेगा।

[32]ऐसा मनुष्य जो प्रताड़ना की उपेक्षा करता, वह तो विपत्ति को स्वयं अपने आप पर बुलाता है; किन्तु जो ध्यान देता है सुधार पर, समझ–बूझ पाता है।

[33] यहोवा का भय लोगों को ज्ञान सिखाता है। आदर प्राप्त करने से पहले नम्रता आती है।

16 मनुष्य तो निज योजना को रचता है, किन्तु उन्हें यहोवा ही कार्य रूप देता है।

[2]मनुष्य को अपनी राहें पाप रहित लगती है किन्तु यहोवा उसकी नियत को परखता है।

[3]जो कुछ तू यहोवा को समर्पित करता है तेरी सारी योजनाएँ सफल होंगी।

[4]यहोवा ने अपने उद्देश्य से हर किसी वस्तु को रचा है यहाँ तक कि दुष्ट को भी नाश के दिन के लिये ।

[5]जिनके मन में अंहकार भरा हुआ है, उनसे यहोवा घृणा करता है। इसे तू सुनिश्चित जान, कि वे बिना दण्ड पाये नहीं बचेगें।

[6]खरा प्रेम और विश्वास शुद्ध बनाती है, यहोवा का आदर करने से तू बुराई से बचेगा।

[7]यहोवा को जब मनुष्य की राहें भाती हैं, वह उसके शत्रुओं को भी साथ शांति से रहने को मित्र बना देता।

[8]अन्याय से मिले अधिक की अपेक्षा, नेकी के साथ थोड़ा मिला ही उत्तम है।

[9]मन में मनुष्य निज राहें रचता है, किन्तु प्रभु उसके चरणों को सुनिश्चित करता है ।

[10]राजा जो बोलता नियम बन जाता है उसे चाहिए वह न्याय से नहीं चूके।

[11]खरे तराजू और माप यहोवा से मिलते है, उसी ने ये सब थैली के बट्टे रचे हैं। ताकि कोई किसी को छले नहीं।

[12]विवेकी राजा, बुरे कर्मो से घृणा करता है क्योंकि नेकी पर ही सिंहासन टिकता है।

[13]राजाओं को न्याय पूर्ण वाणी भाती है, जो जन सत्य बोलता है, वह उसे ही मान देता है।

[14]राजा का कोप मृत्यु का दूत होता है किन्तु ज्ञानी जन से ही वह शांत होगा।

[15]राजा जब आनन्दित होता है तब सब का जीवन उत्तम होता है, अगर राजा तुझ से खुश है तो वह वासंती के वर्षा सी है।

[16]विवेक सोने से अधिक उत्तम है, और समझ बूझ पाना चाँदी से उत्तम है।

[17]सज्जनों का राजमार्ग बदी से दूर रहता है। जो अपने राह की चौकसी करता है, वह अपने जीवन की रखवाली करता है।

[18]नाश आने से पहले अहंकार आ जाता और पतन से पहले चेतना हठी हो जाती।

[19]धनी और स्वाभिमानी लोगों के साथ सम्पत्ति बाँट लेने से, दीन और गरीब लोगों के साथ रहने उत्तम है।

[20]जो भी सुधार संस्कार पर ध्यान देगा फूलेगा–फलेगा; और जिसका भरोसा यहोवा पर है वही धन्य है।

[21]बुद्धिशील मन वाले समझदार कहलाते, और ज्ञान को मधुर शब्दों से बढ़ावा मिलता है।

[22]जिनके पास समझ बूझ है, उनके लिए समझ बूझ जीवन स्रोत होती है, किन्तु मूर्खो की मूढ़ता उनको दण्ड दिलवाती।

[23]बुद्धिमान का हृदय उसकी वाणी को अनुशासित करता है, और उसके होंठ शिक्षा को बढ़ावा देते है।

[24]मीठी वाणी छत्ते के शहद सी होती है, एक नयी चेतना भीतर तक भर देती है।

[25]मार्ग ऐसा भी होता जो उचित जान पड़ता है, किन्तु परिणाम में वह मृत्यु को जाता है।

[26]काम करने वाले की भूख भरी इच्छाएँ उससे काम करवाती रहती हैं। यह भूख ही उस को आगे धकेलती है।

[27]बुरा मनुष्य षड़यन्त्र रचता है, और उसकी वाणी ऐसी होती है जैसी झुलसाती आग।

[28]उत्पाती मनुष्य मतभेद भड़काता है, और बेपैर बातें निकट मित्रों को फोड देती है।

[29]अपने पड़ोसी को वह हिंसक फँसा लेता है और कुमार्ग पर उसे खींच ले जाता है।

[30]जब भी मनुष्य आँखों से इशारा करके मुस्कुराता है, वह गलत और बुरी योजनाऐं रचता रहता है।

[31]श्वेत केश महिमा मुकुट होते है जो धर्मी जीवन से प्राप्त होते है।

[32]धीर जन किसी योद्धा से भी उत्तम हैं, और जो क्रोध पर नियन्त्रण रखता है, वह ऐसे मनुष्य से उत्तम होता है जो पूरे नगर को जीत लेता है।

[33]पासा तो झोली में फेंक दिया जाता है, किन्तु उसका हर निर्णय यहोवा ही करता है।

17 झंझट झमेलों भरे घर की दावत से चैन और शांति का सूखा रोटी का टुकड़ा उत्तम है।

[2]बुद्धिमान दास एक ऐसे पुत्र पर शासन करेगा जो घर के लिए लज्जाजनक होता है। बुद्धिमान दास वह पुत्र के जैसा ही उत्तराधिकार पानें मे सहभागी होगा।

[3]जैसे चाँदी और सोने को परखने शोधने कुठाली और आग की भट्टी होती है वैसे ही यहोवा हृदय को परखता शोधता है।

[4]दुष्ट जन, दुष्ट की वाणी को सुनता है, मिथ्यावादी बैर भरी वाणी पर ध्यान देता।

[5]ऐसा मनुष्य जो गरीब की हंसी उडाता, उसके सृजनहार से वह घृणा दिखाता है। वह दुःख में खुश होता है।

[6]नाती–पोते वृद्ध जन का मुकुट होते हैं, और माता–पिता उनके बच्चों का मान हैं।

[7]मूर्ख को जैसे अधिक बोलना नहीं सजता है वैसे ही गरिमापूर्ण व्यक्ति को झूठ बोलना नहीं सजता।

[8]घूँस देने वाले की घूँस महामंत्र जैसे लगती है, जिससे वह जहाँ भी जायेगा, सफल ही हो जायेगा।

[9]वह जो बुरी बात पर पर्दा डाल देता है, उघाड़ता नहीं है, प्रेम को बढ़ाता है। किन्तु जो बात को उघाड़ता ही रहता है, गहरे दोस्तों में फूट डाल देता है।

[10]विवेकी को धमकाना उतना ही प्रभावित करता है जितना मूर्ख को सौ–सौ कोड़े भी नहीं करते।

[11]दुष्ट जन तो बस सदा विद्रोह करता रहता, उसके लिये दया हीन अधिकारी भेजा जायेगा।

[12]अपनी मूर्खता में चूर किसी मूर्ख से मिलने से अच्छा है, उस रीछनी से मिलना जिससे उसके बच्चों को छीन लिया गया हो।

[13]भलाई के बदले में यदि कोई बुराई करे तो उसके घर को बुराई नहीं छोड़ेगी।

[14]झगड़ा शुरू करना ऐसा है जैसे बांध का टूटना है, सो, इसके पहले कि तकरार शुरू हो जाय बात खत्म करो।

[15]यहोवा इन दोनों ही बातों से घृणा करता है, दोषी को छोड़ना, और निर्दोष को दण्ड देना।

[16]मूर्ख के हाथों में धन का क्या प्रयोजन! क्योंकि, उसको चाह नहीं कि बुद्धि को मोल ले।

[17]मित्र तो सदा–सर्वदा प्रेम करता है बुरे दिनों को काम आने का बंधु बन जाता है।

[18]विवेक हीन जन ही शपथ से हाथ बंधा लेता और अपने पड़ोसी का ऋण ओढ़ लेता है।

[19] जिसको लड़ाई–झगड़ा भाता है, वह तो केवल पाप से प्रेम करता है और जो डींग हांकता रहता है वह तो अपना ही नाश बुलाता है।

[20]कुटिल हृदय जन कभी फूलता फलता नहीं है और जिस की वाणी छल से भरी हुई है, विपद में गिरता है।

[21]मूर्ख पुत्र पिता के लिए पीड़ा लाता है, मूर्ख के पिता कभी आनन्द नहीं होता।

[22]प्रसन्न चित्त रहना सबसे बड़ी दवा है, किन्तु बुझा मन हड्डियों को सुखा देता है।

[23]दुष्ट जन, उसके मार्ग से न्याय को डिगाने एकांत में घूंस लेता है।

[24]बुद्धिमान जन बुद्धि को सामने रखता है, किन्तु मूर्ख की आँखें धरती के छोरों तक भटकती हैं।

[25]मूर्ख पुत्र पिता को तीव्र व्यथा देता है, और माँ के प्रति जिसने उसको जन्म दिया, कड़ुवाहट भर देता।

[26]किसी निर्दोष को दण्ड देना उचित नहीं, ईमानदार नेता को पीटना उचित नहीं है।

[27]ज्ञानी जन शब्दों को तोल कर बोलता है, समझ–बूझ वाला जन स्थित प्रज्ञ होता है।

[28]मूर्ख भी जब तक नहीं बोलता शोभता है। और यदि निज वाणी रोके रखे तो ज्ञानी जाना जाता है।

18 मित्रता रहित व्यक्ति अपने स्वार्थ साधता है। वह समझदारी की बातें नकार देता है।

[2]मूर्ख सुख वह शेखचिल्ली बनने में लेता है। सोचता नहीं है कभी वे पूर्ण होंगी या नहीं। सुख उसे समझदारी की बातें नहीं देती।

[3]दुष्टता के साथ–साथ घृणा भी आती है और निन्दा के साथ अपमान।

[4]बुद्धिमान के शब्द गहरे जल से होते है, वे बुद्धि के स्रोत से उछलते हुए आते हैं।

[5]दुष्ट जन का पक्ष लेना और निर्दोष को न्याय से वंचित रखना उचित नहीं होता।

[6]मूर्ख की वाणी झंझटों को जन्म देती है और उसका मुख झगड़ों को न्योता देता है।

[7]मूर्ख का मुख उसका काम को बिगाड़ देता है और उसके अपने ही होठों के जाल में उसका प्राण फँस जाता है।

[8]लोग हमेशा कानाफूसी करना चाहते है, यह उत्तम भोजन के समान है जो पेट के भीतर उतरता चला जाता है।

[9]जो अपना काम मंद गति से करता है, वह उसका भाई है, जो विनाश करता है ।

[10]यहोवा का नाम एकगढ़ सुदृढ़ है। उस ओर धर्मी बढ़ जाते है और सुरक्षित रहते है।

[11]धनिक समझते है कि उनका धन उन्हें बचा लेगा– वह समझते है कि वह एक सुरक्षित किला है।

[12]पतन से पहले मन अहंकारी बन जाता, किन्तु सम्मान से पूर्व विनम्रता आती है।

[13]बात को बिना सुने ही, जो उत्तर में बोल पड़ता है, वह उसकी मूर्खता और उसका अपयश है।

[14]मनुष्य का मन उसे व्याधि में थामें रखता किन्तु टूटे मन को भला कोई कैसे थामे।

[15]बुद्धिमान का मन ज्ञान को प्राप्त करता है। बुद्धिमान के कान इसे खोज लेते हैं।

[16]उपहार देने वाले का मार्ग उपहार खोलता है और उसे महापुरुषों के सामने पहुँचा देता।

[17]पहले जो बोलता है ठीक ही लगता है किन्तु बस तब तक ही जब तक दूसरा उससे प्रश्न नहीं करता है।

[18]यदि दो शक्तिशाली आपस में झगड़ते हों, उत्तम हैं कि उनके झगड़े को पासे फेंक कर निपटाना।

[19]किसी दृढ़ नगर को जीत लेने से भी रूठे हुए बन्धु को मनाना कठिन है, और आपसी झगड़े होते ऐसे जैसे गढ़ी के मुंदे द्वार होते है।

[20]मनुष्य का पेट उसके मुख के फल से ही भरता है , उसके होठों की खेती का प्रतिफल उसे मिला है।

[21]वाणी जीवन, मृत्यु की शक्ति रखती है, और जो वाणी से प्रेम रखते है, वे उसका फल खाते हैं।

[22]जिसको पत्नी मिली है, वह उत्तम पदार्थ पाया है। उसको यहोवा का अनुग्रह मिलता है।

[23]गरीब जन तो दया की मांग करता है, किन्तु धनी जन तो कठोर उत्तर देता है।

[24]कुछ मित्र ऐसे होते हैं जिनका साथ मन को भाता है किन्तु अपना घनिष्ठ मित्र भाई से भी उत्तम हो सकता है।

19 वह गरीब श्रेष्ठ है, जो निष्कलंक रहता; न कि वह मूर्ख जिसकी कुटिलतापूर्ण वाणी है।

[2]ज्ञान रहित उत्साह रखना अच्छा नहीं है इससे उतावली में गलती हो जाती है।

[3]मनुष्य अपनी ही मुर्खता से अपना जीवन बिगाड़ लेता है, किन्तु वह यहोवा को दोषी ठहराता है।

[4]धन से बहुत सारे मित्र बन जाते हैं, किन्तु गरीब जन को उसका मित्र भी छोड़ जाता है।

[5]झूठा गवाह बिना दण्ड पाये नहीं बचेगा और जो झूठ उगलता रहता है, छूटने नहीं पायेगा।

[6]उसके बहुत से मित्र बन जाना चाहते हैं, जो उपहार देता रहता है।

[7]निर्धन के सभी सम्बन्धी उससे कतराते हैं। उसके मित्र उससे कितना बचते फिरते हैं, यद्यपि वह उन्हें अनुनय–विनय से मनाता रहता है किन्तु वे उसे कहीं मिलते ही नहीं हैं।

[8]जो ज्ञान पाता है वह अपने ही प्राण से प्रीति रखता, वह जो समझ बूझ बढ़ाता रहता है फलता और फूलता है।

[9]झूठा गवाह दण्ड पाये बिना नहीं बचेगा, और वह, जो झूठ उगलता रहता है ध्वस्त हो जायेगा।

[10]मूर्ख धनी नहीं बनना चाहिये। वह ऐसे होगा जैसे कोई दास युवराजाओं पर राज करें।

[11]अगर मनुष्य बुद्धिमान हो उसकी बुद्धि उसे धीरज देती है। जब वह उन लोगों को क्षमा करता है जो उसके विरुद्ध हो, तो अच्छा लगता है।

[12]राजा का क्रोध सिंह की दहाड़ सा है, किन्तु उसकी कृपा घास पर की ओस की बूंद सी होती।

[13]मूर्ख पुत्र विनाश का बाढ़ होता है; अपने पिता के लिए और पत्नी के नित्य झगड़े हर दम का टपका है।

[14]भवन और धन दौलत माँ बाप से दान में मिल जाते; किन्तु बुद्धिमान पत्नी यहोवा से मिलती है।

[15]आलस्य गहन घोर निद्रा देता है किन्तु वह आलसी भूखा मरता है।

[16]ऐसा मनुष्य जो निर्देशों पर चलता वह अपने जीवन की रखवाली करता है। किन्तु जो सदुपदेशों उपेक्षा करता है वह मृत्यु अपनाता है।

[17]गरीब पर कृपा दिखाना यहोवा को उधार देना है, यहोवा उसे, उसके इस कर्म का प्रतिफल देगा।

[18]तू अपने पुत्र को अनुशासित कर और उस दण्ड दे, जब वह अनुचित हो। बस यही आशा है। यदि तू ऐसा करने को मना करे, तब तो तू उसके विनाश में उसका सहायक बनता है।

[19]यदि किसी मनुष्य को तुरंत क्रोध आयेगा, उसको इसका मूल्य चुकाना होगा। यदि तू उसकी रक्षा करता है, तो कितनी ही बार तुझे उसको बचाना होगा।

[20]सुमति पर ध्यान दे और सुधार को अपना ले तू जिससे अंत में तू बुद्धिमान बन जाये।

[21]मनुष्य अपने मन में क्या–क्या! करने की सोचता है किन्तु यहोवा का उद्देश्य पूरा होता है।

[22]लोग चाहते है व्यक्ति विश्वास योग्य और सच्चा हो, इसलिए गरीबी में विश्वासयोग्य बनकर रहना अच्छा है। ऐसा व्यक्ति बनने से जिस पर कोई विश्वास न करे।

[23]यहोवा का भय सच्चे जीवन की राह दिखाता, इससे व्यक्ति शांति पाता है और कष्ट से बचता है।

[24]आलसी का हाथ चाहे थाली में रखा हो किन्तु वह उसको मुँह तक नहीं ला सकता।

[25]उच्छृंखल को पीट, जिससे सरल जन बुद्धि पाये बुद्धिमान को डाँट, वह और ज्ञान पायेगा।

[26]ऐसा पुत्र जो निन्दनीय कर्म करता है घर का अपमान होता है, वह ऐसा होता है जैसे पुत्र कोई निज पिता से छीने और घर से असहाय माँ को निकाल बाहर करे।

[27]मेरे पुत्र यदि तू अनुशासन पर ध्यान देना छोड़ देगा, तो तू ज्ञान के वचनों से भटक जायेगा।

[28]भ्रष्ट गवाह न्याय की हँसी उड़ाता है, और दुष्ट का मुख पाप को निगल जाता।

[29]उच्छृंखल दण्ड पायेगा, और मूर्ख जन की पीठ कोड़े खायेगी।

20 मदिरा और यवसुरा लोगों को काबू में नहीं रहने देते । वह मजाक उडवाती है और झगड़े करवाती है। वह मदमस्त हो जाते है और बुद्धिहीन कार्य करते है।

[2]राजा का सिंह की दहाड़ सा कोप होता है, जो उसे कुपित करता प्राण से हाथ धोता है।

[3]झगड़ों से दूर रहना मनुष्य का आदर है; किन्तु मूर्ख जन तो सदा झगड़े को तत्पर रहते।

[4]ऋतु आने पर अदूरदर्शी आलसी हल नहीं डालता है सो कटनी के समय वह ताकता रह जाता है और कुछ भी नहीं पाता है।

[5]जन के मन प्रयोजन, गहन जल से छिपे होते किन्तु समझदार व्यक्ति उन्हें बाहर खींच लाता है।

[6]लोग अपनी विश्वास योग्यता का बहुत ढोल पीटते है, किन्तु विश्वसनीय जन किसको मिल पाता है?

[7]धर्मी जन निष्कलंक जीवन जीता है उसके बाद आने वाली संताने धन्य हैं।

[8]जब राजा न्याय को सिंहासन पर विराजता अपनी दृष्टि मात्र से बुराई को फटक छांटता है।

[9]कौन कह सकता है? "मैंने अपना हृदय पवित्र रखा है, मैं विशुद्ध, और पाप रहित हूँ"

[10]इन दोनों से, खोटे बाटों और खोटी नापों से यहोवा घृणा करता है।

[11]बालक भी अपने कर्मो से जाना जाता है, कि उसका चालचलन शुद्ध है, या नही।

[12]यहोवा ने कान बनाये हैं कि हम सुनें! यहोवा ने आँखें बनाई हैं कि हम देखे! यहोवा ने इन दोनों को इसलिये हमारे लिए बनाया।

[13]निद्रा से प्रेम मत कर दरिद्र हो जायेगा; तू जागता रह तेरे पास भरपूर भोजन होगा।

[14]ग्राहक खरीदते समय कहता है "अच्छा नहीं, बहुत महंगा!" किन्तु जब वहाँ से वह दूर चला जाता है अपनी खरीद की शेखी बघारता है।

[15]सोना बहुत है और मणि माणिक बहुत सारे है, किन्तु ऐसे अधर जो बातें ज्ञान की बताते दुर्लभ रत्न होतें है।

[16]जो किसी अजनबी के ऋण की जमानत देता है वह अपने वस्त्र तक गंवा बैठता है।

[17]छल से कमाई रोटी मीठी लगती है पर अंत में उसका मुंह कंकड़ों से भर जाता।

[18]योजनाएं बनाने से पहले तू उत्तम सलाह पा लिया कर। यदि युद्ध करना हो तो उत्तम लोगों से आगुवा लें।

[19]बकवादी विश्वास को धोखा देता है सो, उस व्यक्ति से बच जो बहुत बोलता हो।

[20]कोई मनुष्य यदि निज पिता को अथवा निज माता को कोसे, उसका दीया बुझ जायेगा और गहन अंधकार हो जायेगा।

[21]यदि तेरी सम्पत्ति तुझे आसानी से मिल गई हो तो वह तुझे अधिक मूल्यवान नहीं लगेगा।

[22]इस बुराई का बदला मैं तुझसे लूँगा। ऐसा तू मत कह; यहोवा की बाट जोह तुझे वही मुक्त करेगा।

[23]यहोवा खोटे–झूठे बाटों से घृणा करता है और उसको खोटे नाप नहीं भाते हैं।

[24]यहोवा निर्णय करता है कि हर एक मनुष्य के साथ क्या घड़ना चाहिये। कोई मनुष्य कैसा समझ सकता है कि उसके जीवन में क्या घड़ने वाला है।

[25]यहोवा को कुछ अर्पण करने की प्रतिज्ञा से पूर्व ही विचार ले; भली भांति विचार ले। सम्भव है यदि तू बाद में ऐसा सोचे, 'अच्छा होता मैं वह मन्नत न मानता।'

[26]विवेकी राजा यह निर्णय करता है कि कौन बुरा जन है। और वह राजा उस जन को दण्ड देगा।

[27]यहोवा का दीपकजन की आत्मा को जाँच लेता, और उसके अन्तरात्मा स्वरूप को खोज लेता है।

[28]राजा को सत्य और निष्ठा सुरक्षित रखते, किन्तु उसका सिंहासन करुणा पर टिकता है ।

[29]युवकों की महिमा उनके बल से होती है और वृद्धों का गौरव उनके पके बाल हैं।

[30]यदि हमे दण्ड दिया जाय तो हम बुरा करना छोड देते है। दर्द मनुष्य का परिवर्तन कर सकता है।

21 राजाओं का मन यहोवा के हाथ होता, जहाँ भी वह चाहता उसको मोड़ देता है वैसे ही जैसे कोई कृषक पानी खेत का।

[2]सबको अपनी–अपनी राहें उत्तम लगती हैं किन्तु यहोवा तो मन को तौलता है।

[3]तेरा उस कर्म का करना जो उचित और नेक है यहोवा को अधिक चढ़ावा चढ़ाने से ग्राह्य है ।

[4]गर्वीली आँखें और दर्पीला मन पाप हैं ये दुष्ट की दुष्टता को प्रकाश में लाते हैं।

[5]परिश्रमी की योजनाएँ लाभ देती हैं यह वैसे ही निश्चित है जैसे उतावली से दरिद्रता आती है।

[6]झूठ बोल–बोल कर कमाई धन दौलत भाप सी अस्थिर है, और वह घातक फंदा बन जाती है।

[7]दुष्ट की हिंसा उन्हें खींच ले डूबेगी क्योंकि वे उचित कर्म करना नहीं चाहते।

[8]अपराधी का मार्ग कुटिलता-पूर्ण होता है किन्तु जो सज्जन हैं उसकी राह सीधी होती है।

[9]झगड़ालू पत्नी के संग घर में निवास से, छत के किसी कोने पर रहना अच्छा है।

[10]दुष्ट जन सदा पाप करने को इच्छुक रहता, उसका पड़ोसी उससे दया नहीं पाता।

[11]जब उच्छृंखल दण्ड पाता है तब सरल जन को बुद्धि मिल जाती है; किन्तु बुद्धिमान तो सुधारे जाने पर ही ज्ञान को पाता है।

[12]न्यायपूर्ण परमेश्वर दुष्ट के घर पर आँख रखता है, और दुष्ट जन का वह नाश कर देता है।

[13]यदि किसी गरीब की, करुण पुकार पर कोई मनुष्य निज कान बंद करता है, तो वह जब पुकारेगा उसकी पुकार भी नहीं सुनी जायेगी।

[14]गुप्त रुप से दिया गया उपहार क्रोध को शांत करता, और छिपा कर दी गई घूंस भंयकर क्रोध शांत करती है।

[15]न्याय जब पूर्ण होता धर्मी को सुख होता, किन्तु कुकर्मियों को महा भय होता है।

[16]जो मनुष्य समझ-बूझ के पथ से भटक जाता है, वह विश्राम करने के लिए मृतकों का साथी बनता है।

[17]जो सुख भोगों से प्रेम करता रहता वह दरिद्र हो जायेगा, और जो मदिरा का प्रेमी है, तेल का कभी धनी नहीं होगा।

[18]दुर्जन को उन सभी बुरी बातों का फल भुगतना ही पडेगा, जो सज्जन के विरुद्ध करते हैं। बेईमान लोगों को उनके किये का फल भुगतना पड़ेगा जो इमानदार लोगों के विरुद्ध करते है।

[19]चिड़चिड़ी झगड़ालू पत्नी के संग रहने से निर्जन बंजर में रहना उत्तम है।

[20]विवेकी के घर में मन चीते भोजन और प्रचुर तेल केभंडार भरे होते है किन्तु मूर्ख व्यक्ति जो उसके पास होता है, सब चट कर जाता है।

[21]जो जन नेकी और प्रेम का पालन करता है, वह जीवन, सम्पन्नता और समादर को प्राप्त करता है।

[22]बुद्धिमान जन को कुछ भी कठिन नहीं है। वह ऐसे नगर पर भी चढ़ायी कर सकता है जिसकी रखवाली शूरवीर करते हो, वह उस परकोटे को ध्वस्त कर सकता है जिसके प्रति वे अपनी सुरक्षा को विश्वस्त थे।

[23]वह जो निज मुख को और अपनी जीभ को वश में रखता वह अपने आपको विपत्ति से बचाता है।

[24]ऐसे मनुष्य अहंकारी होता, जो निज को औरों से श्रेष्ठ समझता है, उस का नाम ही "अभिमानी" होता है। अपने ही कर्मो से वह दिखा देता है कि वह दुष्ट होता है।

[25]आलसी पुरूष के लिये उसकी ही लालसाएँ उसके मरण का कारण बन जाती है क्योंकि उसके हाथ कर्म को नहीं अपनाते।

[26]दिन भर वह चाहता ही रहता यह उसको और मिले, और किन्तु धर्मी जन तो बिना हाथ खींचे देता ही रहता है।

[27]दुष्ट का चढ़ावा यूं ही घृणापूर्ण होता है फिर कितना बुरा होगा जब वह उसे बुरे भाव से चढ़ावे?

[28]झूठे गवाह का नाश हो जायेगा; और जो उसकी झूठी बातों को सुनेगा वह भी उस ही के संग सदा सर्वदा के लिए नष्ट हो जायेगा।

[29]सज्जन तो निज कर्मो पर विचार करता है किन्तु दुर्जन का मुख अकड़ कर दिखाता है।

[30]यदि यहोवा न चाहें तो, न ही कोई बुद्धि और न ही कोई अर्न्तदृष्टि, न ही कोई योजना पूरी हो सकती है।

[31]युद्ध के दिन को घोड़ा तैयार किया है, किन्तु विजय तो बस यहोवा पर निर्भर है।

22 अच्छा नाम अपार धन पाने से योग्य है। चाँदी, सोने से, प्रशंसा का पात्र होना अधिक उत्तम है।

[2]धनिकों में निर्धनों में यह एक समता है, यहोवा ही इन सब ही का सिरजन हार है।

[3]कुशल जन जब किसी विपत्ति को देखता है, उससे बचने के लिए इधर उधर हो जाता किन्तु मूर्ख उसी राह पर बढ़ता ही जाता है। और वह इसके लिए दु:ख ही उठाता है।

[4]जब व्यक्ति विनम्र होता है यहोवा का भय धन दौलत, आदर और जीवन उपजता है।

[5]कुटिल की राहें काँटो से भरी होती है और वहाँ पर फंदे फैले होते हैं; किन्तु जो निज आत्मा की रक्षा करता है वह तो उनसे दूर ही रहता है।

[6] बच्चे को यहोवा की राह पर चलाओ वह बुढ़ापे में भी उस से भटकेगा नहीं।

[7]धनी दरिद्रों पर शासन करते हैं। उधार लेने वाला, देने वालें का दास होता है।

[8]ऐसा मनुष्य जो दुष्टता के बीज बोता वह तो संकट की फसल काटेगा; और उसकी क्रोध की लाठी नष्ट हो जायेगी।

[9]उदार मन का मनुष्य स्वयं ही धन्य होगा, क्योंकि वह गरीब जन के साथ बाँट कर खाता है।

[10]निन्दक को दूर कर तो कलह दूर होगा। इससे झगड़े और अपमान मिट जाते है।

[11]वह जो पवित्र मन को प्रेम करता है और जिसकी वाणी मनोहर होती है उसका तो राजा भी मित्र बन जाता है।

[12]यहोवा सदा ज्ञान का ध्यान रखता है; किन्तु वह विश्वासघाती के वचन विफल करता।

[13]काम नहीं करने के बहाने बनाता हुआ आलसी कहता है, "बाहर बैठा है सिंह" या "गलियों में मुझे मार डाला जायेगा।"

[14]व्यभिचार का पाप ऐसा होता है जैसे हो कोई जाल। यहोवा उससे बहुत कुपित होगा जो भी इस जाल में गिरेगा।

[15]बच्चे शैतानी करते रहते हैं किन्तु अनुशासन की छड़ी ही उनको दूर कर देती।

[16]ऐसा मनुष्य जो अपना धन बढ़ाने गरीब को दबाता है; और वह, जो धनी को उपहार देता, दोनों ही ऐसे जन निर्धन हो जाते हैं।

तीस विवेकपूर्ण कहावतें

[17]बुद्धिमान की कहावतें सुनों और ध्यान दो। उस पर ध्यान लगाओं जो मैं सिखाता हूँ। [18]तू यदि उनको अपने मन में बसा ले तो बहुत अच्छा होगा; तू उन्हें हरदम निज होठों पर तैयार रख। [19]मैं तुझे आज उपदेश देता हूँ ताकि तेरा यहोवा पर विश्वास पैदा हो। [20]ये तीस शिक्षाएं मैंने तेरे लिए रची, ये वचन सन्मति के और ज्ञान के है। [21]वे बातें जो महत्वपूर्ण होती, ये सत्य वचन तुझको सिखायेगें ताकि तू उसको उचित उत्तर दे सके, जिसने तुझे भेजा है।

–1–

[22] तू गरीब का शोषण मत कर। इसलिए कि वे बस दरिद्र हैं; और अभावग्रस्त को कचहरी में मत खींच। [23] क्योंकि परमेश्वर उनकी सुनवाई करेगा और जिन्होंने उन्हें लूटा है वह उन्हें लूट लेगा।

–2–

[24]तू क्रोधी स्वभाव के मनुष्यों के साथ कभी मित्रता मत कर और उसके साथ, अपने को मत जोड़ जिसको शीघ्र क्रोध आ जाता है। [25]नहीं तो तू भी उसकी राह चलेगा और अपने को जाल में फँसा बैठेगा।

–3–

[26]तू ज़मानत किसी के ऋण की देकर अपने हाथ मत कटा। [27]यदि उसे चुकाने में तेरे साधन चुकेंगे तो नीचे का बिस्तर तक तुझसे छिन जायेगा।

–4–

[28]तेरी धरती की सम्पत्ति जिसकी सीमाएँ तेरे पूर्वजों ने निर्धारित कीं उस सीमा रेखा को कभी भी मत हिला।

–5–

[29]यदि कोई व्यक्ति अपने कार्य में कुशल है, तो वह राजा की सेवा के योग्य है। ऐसे व्यक्तियों के लिये जिनका कुछ महत्व नहीं उसको कभी काम नहीं करना पड़ेगा।

–6–

23 जब तू किसी अधिकारी के साथ भोजन पर बैठे तो इसका ध्यान रख, कि कौन तेरे सामने है। [2]यदि तू पेटू है तो खाने पर नियन्त्रण रख। [3]उसके पकवानों की लालसा मत कर क्योंकि वह भोजन तो कपटपूर्ण होता है।

–7–

[4]धनवान बनने का काम कर करके निज को मता थका। तू संयम दिखाने को, बुद्धि अपना ले। [5]ये धन सम्पत्तियाँ देखते ही देखते लुप्त हो जायेंगी निश्चय ही अपने पंखों को फैलाकर वे गरूड़ के समान आकाश में उड़ जायेंगी।

–8–

[6]ऐसे मनुष्य का जो सूम भोजन होता है तू मत कर; तू उसके पकवानों को मत ललचा। [7]क्योंकि वह ऐसा मनुष्य है जो मन में हरदम उसके मूल्य का हिसाब लगाता रहता है; तुझसे तो वह कहता–"तुम खाओ और पियो" किन्तु वह मन से तेरे साथ नहीं है। [8]जो कुछ थोड़ा बहुत तू उसका खा चुका है, तुझको तो वह भी उलटना पड़ेगा और वे तेरे कहे हुएआदर पूर्ण वचन व्यर्थ चले जायेंगे।

–9–

[9] तू मूर्ख के साथ बातचीत मत कर, क्योंकि वह तेरे विवेकपूर्ण वचनों से घृणा ही करेगा।

–10–

[10]पुरानी सम्पत्ति की सीमा जो चली आ रही हो, उसको कभी मत हड़प। ऐसी जमीन को जो किसी अनाथ की हो। [11]क्योंकि उनका संरक्षक सामर्थ्यवान है, तेरे विरुद्ध उनका मुकदमा वह लड़ेगा।

–11–

[12]तू अपना मन सीख की बातों में लगा। तू ज्ञानपूर्ण वचनों पर कान दे।

–12–

[13]तू किसी बच्चे को अनुशासित करने से कभी मत रूक यदि तू कभी उसे छड़ी से दण्ड देगा तो वह इससे कभी नहीं मरेगा।

[14]तू छड़ी से पीट उसे और उसका जीवन नरक से बचा ले।

–13–

[15]हे मेरे पुत्र, यदि तेरा मन विवेकपूर्ण रहता है तो मेरा मन भी आनन्दपूर्ण रहेगा। [16]और तेरे होंठ जब जो उचित बोलते हैं, उससे मेरा अर्न्तमन खिल उठता है।

–14–

[17]तू अपने मन को पापपूर्ण व्यक्तियों से ईर्ष्या मत करने दे, किन्तु तू यहोवा से डरने का जितना प्रयत्न कर सके, कर।

[18]एक आशा है, जो सदा बनी रहती है और वह आशा कभी नहीं मरती।

–15–

[19]मेरे पुत्र, सुन! और विवेकी बनजा और अपनी मन को नेकी की राह पर चला। [20]तू उनके साथ मत रह जो बहुत पियक्कड़ हैं, अथवा ऐसे, जो ठूंस–ठूंस माँस खाते हैं। [21]क्योंकि ये पियक्कड़ और ये पेटू दरिद्र हो जायेंगे, और यह उनकी खुमारी, उन्हें चिथड़े पहनायेगी।

–16–

[22]अपनो पिता की सुन जिसने तुझे जीवन दिया है, अपनी माता का निरादर मत कर जब वह वृद्ध हो जाये।

[23]वह वस्तु सत्य है, तू इसको किसी भी मोल पर खरीद ले। ऐसे ही विवेक, अनुशासन और समझ भी प्राप्त कर; तू इनकों कभी भी किसी मोल पर मत बेच।

[24]नेक जन का पिता महा आनन्दित रहता और जिसका पुत्र विवेक पूर्ण होता है वह तो उसमें ही हर्षित रहता है।

[25]सो तेरी माता और तेरे पिता को आनन्द प्राप्त हो और जिसने तुझ को जन्म दिया, उसको हर्ष मिलता ही रहे।

–17–

[26]मेरे पुत्र, मुझमें मन लगा और तेरी आँखें मुझ पर टिकी रहें। मुझे आदर्श मान। [27]क्योंकि एक वेश्या गहन गर्त होती है। और मन मौजी पत्नी एक संकरा कुँआ। [28]वह घात में रहती जैसे कोई डाकू और वह लोगों में विश्वास हीनों की संख्या बढ़ाती है।

–18–

[29-30]कौन विपत्ति में है? कौन दुःख में पड़ा है? कौन झगड़ें–टंटों में? किसकी शिकायतें है? कौन व्यर्थ चकना चूर? किसकी आँखे लाल है? वे जो निरन्तर दाखमधु पीते रहते हैं और जिसमे मिश्रित मधु की ललक होती है!

[31]जब दाखमधु लाल हो, और प्यालें में झिलमिलाती हो और धीरे–धीरे डाली जा रही हो, उसको ललचायी आँखों से मत देखो। [32]सर्प के समान वह डसती, अन्त में जहर भर देती है जैसे नाग भर देता है।

[33]तेरी आँखों में विचित्र दृष्य तैरने लगेगें, तेरा मन उल्टी–सीधी बातों में उलझेगा। [34]तू ऐसा हो जायेगा, जैसे उफनते सागर पर सो रहा हो और जैसे मस्तूल की शिखर लेटा हो। [35]तू कहेगा, "उन्होंने मुझे मारा पर मुझे तो लगा ही नहीं। उन्होंने मुझे पीटा, पर मुझ को पता ही नहीं। मुझ से आता नहीं मुझे उठा दो और मुझे पीने को और दो।"

–19–

24 दुष्ट जन से तू कभी मत होड़कर। उनकी संगत की तू चाहत मत कर। [2]क्योंकि उनके मन हिंसा की योजनाएँ रचते और उनके होंठ दुःख देने की बातें करते है।

–20–

[3]बुद्धि से घर का निर्माण हो जाता है, और समझ–बूझ से ही वह स्थिर रहता है। [4]ज्ञान के द्वारा उसके कक्ष अद्‌भुत और सुन्दर खजानों से भर जाते हैं।

–21–

[5]बुद्धिमान जन में महाशक्ति होती है और ज्ञानी पुरुष शक्ति को बढ़ाता है। [6]युद्ध लड़ने के लिए परामर्श चाहिए और विजय पाने को बहुत से सलाहकार।

–22–

[7]मूर्ख बुद्धि को नहीं समझता। लोग जब महत्वपूर्ण बातों कि चर्चा करते है तो मूर्ख समझ नहीं पाता।

–23–

[8]षड़यन्त्रकारी वही कहलाता है, जो बुरी योजनाएँ बनाता रहता है। [9]मूर्ख की योजनायें पाप बन जाती है और निन्दक जन को लोग छोड़ जाते है।

–24–

[10]यदि तू विपत्ति में हिम्मत छोड़ बैठेगा, तो तेरी शक्ति कितनी थोड़ी सी है।

–25–

[11]यदि किसी की हत्या का कोई षड़यन्त्र रचे तो उसको बचाने का तुझे यत्न करना चाहिए। [12]तू ऐसा नहीं कह सकता, "मुझे इससे क्या लेना।" यहोवा जानता है सब कुछ और यह भी वह जानता है कि काम किसलिए तू काम करता है? यहोवा तुझ को देखता रहता है। तेरे भीतर की जानता है और वह तुझ को यहोवा तेरे कर्मो का प्रतिदान देगा।

–26–

[13]हे मेरे पुत्र, तू शहद खाया कर क्योंकि यह उत्तम है। यह तुझे मीठा लगेगा।

[14]इसी तरह यह भी तू जान ले कि आत्मा को तेरी बुद्धि मीठी लगेगी, यदि तू इसे प्राप्त करे तो उसमें निहित है तेरी भविष्य की आशा और वह तेरी आशा कभी भंग नहीं होगी।

–27–

[15]धर्मी मनुष्य के घर के विरोध में लुटेरे के समान घात में मत बैठ और उसके निवास पर मत छापा मार। [16]क्योंकि एक नेक चाहे सात बार गिरे, फिर भी उठ बैठेगा। किन्तु दुष्ट जन विपत्ति में डूब जाता है।

–28–

[17]शत्रु के पतन पर आनन्द मत कर। जब उसे ठोकर लगे, तो अपना मन प्रसन्न मत होने दे। [18]यदि तू ऐसा करेगा, तो यहोवा देखेगा और वह यहोवा की आँखों में आ जायेगा एंव वह तुझसे प्रसन्न नही रहेगा। फिर सम्भव है कि वह तेरे उस शत्रु की ही सहायता करे।

–29–

[19]तू दुर्जनों के साथ कभी ईर्ष्या मत रख, कही तुझे उनके संग विवाद न करना पड़ जाये। [20]क्योंकि दुष्ट जन का कोई भविष्य नहीं है। दुष्ट जन का दीप बुझा दिया जायेगा।

–30–

[21]हे मेरे पुत्र, यहोवा का भय मान और विद्रोहियों के साथ कभी मत मिल। [22]क्योंकि वे दोनों अचानक नाश ढाह देंगे उन पर; और कौन जानता है कितनी भयानक विपत्तियाँ वे भेज दें ।

कुछ अन्य सुक्तियाँ

[23]ये सुक्तियाँ भी बुद्धिमान जनों की है:
न्याय में पक्षपात करना उचित नहीं है।

[24]ऐसा जन जो अपराधी से कहता है, "तू निरपराध है" लोग उसे कोसेंगे और जातियाँ त्याग देंगी। [25]किन्तु जो अपराधी को दण्ड देंगे, सभी जन उनसे हर्षित रहेगे और उनपर आर्शीवाद की वर्षा होगी।

[26]निर्मल उत्तर से मन प्रसन्न होता है, जैसे अधरों पर चुम्बन अंकित कर दे।

[27]पहले बाहर खेतों का काम पूरा कर लो इसके बाद में तुम अपना घर बनाओ।

[28]अपने पड़ोसी के विरुद्ध बिना किसी कारण साक्षी मत दो। अथवा तुम अपनी वाणी का किसी को छलने में मत प्रयोग करो।

[29]मत कहे ऐसा, "उसके साथ मैं भी ठीक वैसा ही करूँगा, मेरे साथ जैसा उसने किया है; मैं उसके साथ जैसे को तैसा करूँगा।"

[30]मैं आलसी के खेत से होते हुए गुजरा जो अंगूर के बाग के निकट था जो किसी ऐसे मनुष्य का था, जिसको उचित–अनुचित का बोध नहीं था। [31]कंटीली झाड़ियाँ निकल आयीं थी हर कहीं खरपतवार से खेत ढक गया था। और बाड़ पत्थर की खंडहर हो रही थी। [32]जो कुछ मैंने देखा, उस पर मन लगा कर सोचने लगा। जो कुछ मैंने देखा, उससे मुझको एक सीख मिली। [33]जरा एक झपकी, और थोड़ी सी नींद, थोड़ा सा सुस्ताना, धर कर

हाथों पर हाथ। (दरिद्रता को बुलाना है)[34]वह तुझ पर टूट पड़ेगी जैसे कोई लुटेरा टूट पड़ता है, और अभाव तुझ पर टूट पड़ेगा जैसे कोई शस्त्र धारी टूट पड़ता है।

सुलैमान की कुछ और सूक्तियाँ

25 सुलैमान की ये कुछ अन्य सूक्तियाँ है जिनका प्रतिलेख यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लोगों ने तैयार किया था:

[2]किसी विषय–वस्तु को रहस्यपूर्ण रखने में परमेश्वर की गरिमा है किन्तु किसी बात को ढूँढ निकालने में राजा की महिमा है।

[3]जैसे ऊपर अन्तहीन आकाश है और नीचे अटल धरती है, वैसे ही राजाओं के मन होते हैं जिनके ओर–छोर का कोई अता पता नहीं। उसकी थाह लेना कठिन है।

[4]जैसे चाँदी से खोट का दूर करना, सुनार को उपयोगी होता है,

[5]वैसी ही, राजा के सामने से दुष्ट को दूर करना नेकी उसके सिहांसन को अटल करता है।

[6]राजा के सामने अपने बड़ाई मत बखानो और महापुरुषों के बीच स्थान मत चाहो। [7]उत्तम वह है जो तुझसे कहे, “आ यहाँ, आ जा” अपेक्षा इसके कि कुलीन जन के समक्ष वह तेरा निरादर करे।

[8]तू किसी को जल्दी में कचहरी में मत घसीट। क्योंकि अंत में वह लज्जित करें तो तू क्या कहेगा?

[9]यदि तू अपने पड़ोंसी के संग में किसी बात पर विवाद करे, तो किसी जन का विश्वास जो तुझमें निहित है, उसको तू मत तोड़। [10]ऐसा न हो जाये कहीं तेरी जो सुनता हो, लज्जित तुझे ही करे। और तू ऐसे अपयश का भागी बने जिसका अंत न हो।

[11]अवसर पर बोला वचन होता है ऐसा जैसे हों चाँदी में स्वर्णिम सेब जड़े हुए।

[12]जो कान बुद्धिमान की झिड़की सुनता है, वह उसके कान के लिए सोने की बाली या कुन्दन की आभूषण बन जाता है।

[13]एक विश्वास योग्य दूत, जो उसे भेजते हैं उनके लिये कटनी के समय की शीतल बयार सा होता है हृदय में निज स्वामियों के वह स्फूर्ति भर देता है।

[14]वह मनुष्य वर्षा रहित पवन और रीतें मेघों सा होता है, जो बड़ी–बड़ी कोरी बातें देने की बनाता है; किन्तु नहीं देता है।

[15]धैर्यपूर्ण बातों से राजा तक मनाये जाते और नम्र वाणी हड्डी तक तोड़ सकती हैं।

[16]यद्यपि शहद बहुत उत्तम है, पर तू बहुत अधिक मत खा और यदि तू अधिक खायेगा, तो उल्टी आ जायेगी और रोगी हो जायेगा।

[17]वैसे ही तू पड़ोसी के घर में बार–बार पैर मत रख। अधिक आना जाना निरादर करता है।

[18]वह मनुष्य, जो झूठी साक्षी अपने साथी के विरोध में देता है वह तो है हथौडा सा अथवा तलवार सा या तीखे बाण सा। [19]विपत्ति के काल में भरोसा विश्वास–घाती पर होता है ऐसा जैसे दु:ख देता दाँत अथवा लँगड़ाता पैर।

[20]जो कोई उसके सामने खुशी के गीत गाता है जिसका मन भारी है। वह उसको वैसा लगता है जैसे जोड़े में कोई कपड़े उतार लेता अथवा कोई फोड़े के सफफ पर सिरका उंडेला हो।

[21]यदि तेरा शत्रु भी कभी भूखा हो, उसके खाने के लिए, तू भोजन दे दे, और यदि वह प्यासा हो, तू उसके लिए पानी पीने को दे दे। [22]यदि तू ऐसा करेगा वह लज्जित होगा, वह लज्जा उसके चिंतन में अंगारों सी धधकेगी, और यहोवा तुझे उसका प्रतिफल देगा।

[23]उत्तर का पवन जैसे वर्षा लाता है वैसे ही धूर्त–वाणी क्रोध उपजाती है।

[24]झगड़ालू पत्नी के साथ घर में रहने से छत के किसी कोने पर रहना उत्तम है।

[25]किसी दूर देश से आई कोई अच्छी खबर ऐसी लगती है जैसे थके मादे प्यासे को शीतल जल।

[26]गाद भरे झरने अथवा किसी दूषित कुँए सा होता वह धर्मी पुरुष जो किसी दुष्ट के आगे झुक जाता है।

[27]जैसे बहुत अधिक शहद खाना अच्छा नहीं वैसे अपना मान बढ़ाने का यत्न करना अच्छा नहीं है।

[28]ऐसा जन जिसको स्वयं पर नियन्त्रण नहीं, वह उस नगर जैसा है, जिसका परकोटा ढह कर बिखर गया हो।

मूर्खों के सम्बन्ध में विवेकपूर्ण सूक्तियाँ

26 जैसे असंभव है बर्फ का गर्मी में पड़ना और जैसे वांछित नहीं है कटनी के वक्त पर वर्षा का आना वैसे ही मूर्ख को मान देना अर्थहीन है।

[2]यदि तूने किसी का कुछ भी बिगाड़ा नहीं और तुझको वह शाप दे, तो वह शाप व्यर्थ ही रहेगा। उसका शाप पूर्ण वचन तेरे ऊपर से यूँ उड़ निकल जायेगा जैसे चंचल चिड़िया जो टिककर नहीं बैठती।

[3]घोड़े को चाबुक सधाना पड़ता है। और खच्चर को लगाम से। ऐसे ही तुम मूर्ख को डंडे से सधाओ।

[4]मूर्ख को उत्तर मत दो नहीं तो तुम भी स्वयं मूर्ख से दिखोगे। [5]मूर्ख की मूर्खता का तुम उचित उत्तर दो, नहीं तो वह अपनी ही आँखों में बुद्धिमान बन बैठेगा।

[6]मूर्ख के हाथों सन्देशा भेजना वैसा ही होता है जैसे अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना, या विपत्ति को बुलाना।

[7]बिना समझी युक्ति किसी मूर्ख के मुख पर ऐसी लगती है, जैसे किसी लंगड़े की लटकती मरी टाँग।

[8]मूर्ख को मान देना वैसा ही होता है जैसे कोई गुलेल में पत्थर रखना।

[9]मूर्ख के मुख में सूक्ति ऐसे होती है जैसे शराबी के हाथ में काँटेदार झाड़ी हो।

[10]किसी मूर्ख को या किसी अनजाने व्यक्ति को काम पर लगााना खतरनाक हो सकता है। तुम नहीं जानते कि किसे दुःख पहुँचेगा।

[11]जैसे कोई कुत्ता कुछ खा करके बीमार हो जाता है और उल्टी करके फिर उसको खाता है वैसे ही मूर्ख अपनी मूर्खता बार बार दोहराता है।

[12]वह मनुष्य जो अपने को बुद्धिमान मानता है, किन्तु होता नहीं है वह तो किसी मूर्ख से भी बुरा होता है।

आलसियों से सम्बन्धित सूक्तियाँ

[13]आलसी करता रहता है, काम नहीं करने के बहाने कभी वह कहता है सड़क पर सिंह है।

[14]जैसे अपनी चूल पर चलता रहता किवाड़। वैसे ही आलसी बिस्तर पर अपने ही करवटें बदलता है।

[15]आलसी अपना हाथ थाली में डालता है किन्तु उसका आलस, उसके अपने ही मुँह तक उसे भोजन नहीं लाने देता।

[16]आलसी मनुष्य, निज को मानता महाबुद्धिमान! सातों ज्ञानी पुरुषों से भी बुद्धिमान।

[17]ऐसे पथिक जो दूसरों के झगड़े में टांग अड़ाता है जैसे कुत्ते पर काबू पाने के लिए कोई उसके कान पकड़े।

[18-19]उस उन्मादी सा जो मशाल उछालता है या मनुष्य जो घातक तीर फेकता है वैसे ही वह भी होता है जो अपने पड़ोसी छलता है और कहता है– मैं तो बस यूँ ही मजाक कर रहा था।

[20]जैसे इन्धन बिना आग बुझ जाती है वैसे ही कानाफूसी बिना झगड़े मिट जाते हैं।

[21]कोयला अंगारों को और आग की लपट को लकड़ी जैसे भड़काती है, वैसे ही झगड़ालू झगड़ो को भड़काता।

[22]जन प्रवाद भोजन से स्वादिष्ट लगते हैं। वे मनुष्य के भीतर उतरते चले जाते हैं।

[23]दुष्ट मन वाले की चिकनी चुपड़ी बातें होती है ऐसी, जैसे माटी के बर्तन पर चिपके चांदी के वर्क। [24]द्वेषपूर्ण व्यक्ति अपने मधुर वाणि में द्वेष को ढकता हैं। किन्तु अपने हृदय में वह छल को पालता है। [25]उसकी मोहक वाणी से उसका भरोसा मत कर, क्योंकि उसके मन में सात घृणित बातें भरी हैं। [26]छल से किसी का दुर्भाव चाहे छुप जाय किन्तु उसकी दुष्टता सभा के बीच उघड़ेगी।

[27]यदि कोई गढ़ा खोदता है किसी के लिये तो वह स्वयं ही उसमें गिरेगा; यदि कोई व्यक्ति कोई पत्थर लुढ़काता है तो वह लुढ़क कर उसी पर पड़ेगा।

[28]ऐसा व्यक्ति जो झूठ बोलता है, उनसे घृणा करता है जिनको हानि पहुँचाता और चापलूस स्वयं का नाश करता।

27 कल के विषय में कोई बड़ा बोल मत बोलो। कौन जानता है कल क्या कुछ घटने को है।

[2]अपने ही मुँह से अपनी बड़ाई मत करों दूसरों को तुम्हारी प्रशंसा करने दो।

[3]कठिन है पत्थर ढोना, और ढोना रेत का, किन्तु इन दोनों से कहीं अधिक कठिन है मूर्ख के द्वारा उपजाया गया कष्ट।

[4]क्रोध निर्दय और दर्दम्य होता है। वह नाश कर देती है। किन्तु ईर्ष्या बहुत ही बुरी है।

[5]छिपे हुए प्रेम से, खुली घुड़की उत्तम है।

[6]हो सकता है मित्र कभी दुःखी करें, किन्तु ये उसका लक्ष्य नहीं है। इससे शत्रु भिन्न है। वह चाहे तुम पर दया करे किन्तु वह तुम्हें हानि पहुँचाना चाहता है।

[7]पेट भर जाने पर शहद भी नहीं भाता किन्तु भूख में तो हर चीज भाती है।

[8]अपना घर छोड़कर भटकता मनुष्य ऐसा, जैसे कोई चिड़िया भटकी निज घोंसले से।

[9]इत्र और सुगंधित धूप मन को आनन्द से भरते है और मित्र की सच्ची सम्मति से मन उल्लास से भर जाता है।

[10]अपने मित्र को मत भूलों न ही अपने पिता के मित्र को। और विपत्ती में सहायता के लिये दूर अपने भाई के घर मत जाओं। दूर के भाई से पास का पड़ोसी अच्छा है।

[11]हे मेरे पुत्र, तू बुद्धिमान बन जा और मेरा मन आनन्द से भर दे। ताकि मेरे साथ जो घृणा से व्यवहार करे, मैं उसको उत्तर दे सकूँ।

[12]विपत्ति को आते देखकर बुद्धिमान जन दूर हट जाते हैं, किन्तु मूर्खजन बिना राह बदले चलते रहते हैं और फंस जाते है।

[13]जो किसी पराये पुरुष का जमानत भरता है उसे अपने वस्त्र भी खोना पड़ेगा।

[14]ऊँचे स्वर में 'सुप्रभात' कह कर के अलख सवेरे अपने पड़ोसी को जगया मत कर। वह एक शाप के रूप में झेलेगा आर्शीवाद में नहीं।

[15]झगड़ालू पत्नी होती है ऐसी जैसी दुर्दिन की निरन्तर वर्षा।

[16]रोकना उसको होता है वैसा ही जैसे कोई रोके पवन को और पकड़े मुट्ठी में तेल को।

[17]जैसे धार धरता है लोहे से लोहा, वैसी ही जन एक दूसरे की सीख से सुधरते है।

[18]जो कोई अंजीर का पेड़ सिंचता है, वह उसका फल खाता है। वैसे ही जो निज स्वामी की सेवा करता, वह आदर पा लेता है।

[19]जैसे जल मुखड़े को प्रतिबिम्बित करता है, वैसे ही हृदय मनुष्य को प्रतिबिम्बित करता है।

[20]मृत्यु और महानाश कभी तृप्त नहीं होते और मनुष्य की आँखें भी तृप्त नहीं होती।

[21] चांदी और सोने को भट्ठी-कुठाली में परख लिया जाता है। वैसे ही मनुष्य उस प्रशंसा से परखा जाता है जो वह पाता है।

[22]तू किसी मूर्ख को चूने में पीस-चाहे जितना महीन करे और उसे पीस कर अनाज सा बना देवे उसका चूर्ण किन्तु उसकी मूर्खता को, कभी भी उससे तू दूर न कर पायेगा।

[23]अपने रेवड़ की हालत तू निश्चित जानता है। अपने रेवड़ की ध्यान से देखभाल कर। [24]क्योंकि धन दौलत तो टिकाऊ नहीं होते हैं। यह राजमुकुट पीढ़ी-पीढ़ी तक बना नहीं रहता है।

[25]जब चारा कट जाता है, तो नई घास उग आती हे। वह घास पहाड़ियों पर से फिर इकट्ठी कर ली जाती है।

[26]तब तब ये मेमनें ही तुझे वस्त्र देंगे और ये बकरियाँ खेतों की खरीद का मूल्य बनेगीं। [27]तेरे परिवार को, तेरे दास दासियों को और तेरे अपने लिए भरपूर बकरी का दूध होगा।

28 दुष्ट के मन में सदा भय समाया रहता है और इसी कारण वह भागता फिरता है। किन्तु धर्मी जन सदा निर्भय रहता है वैसे हो जैसे सिंह निर्भय रहता है।

[2]देश में जब अराजकता उभर आती है बहुत से शासक बन बैठते है। किन्तु जो समझता है और ज्ञानी होता है, ऐसा मनुष्य ही व्यवस्था स्थिर करता है।

[3] वह राजा जो गरीब को दबाता है, वह वर्षा की बाढ़ सा होता है जो फसल नहीं छोड़ती।

[4]व्यवस्था के विधान को जो त्याग देते है, दुष्टों की प्रशंसा करते, किन्तु जो व्यवस्था के विधान को पालते उनका विरोध करते।

[5]दुष्ट जन न्याय को नहीं समझते है। किन्तु जो यहोवा की खोज में रहते है, उसे पूरी तरह जानते है।

[6]वह निर्धन उत्तम है जिसकी राह खरी है। न कि वह धनी पुरुष जो टेढ़ी चाल चलता है।

[7]जो व्यवस्था के विधानों का पालन करता है, वही है विवेकी पुत्र; किन्तु जो व्यर्थ के पेटुओं को बनाता साथी, वह पिता का निरादर करता है।

[8]वह जो मोटा ब्याज वसूल कर निज धन बढ़ाता है, वह तो यह धन जोड़ता है किसी ऐसे दयालु के लिए जो गरीबों पर दया करता है।

[9]यदि व्यवस्था के विधान पर कोई कान नहीं देता तो उसको विनतियाँ भी घृणा के योग्य होगी।

[10]वह तो अपने ही जाल में फंस जायेगा जो सीधे लोगों को बुरे मार्ग पर भटकाता है। किन्तु दोषरहित लोग उत्तम आशीष पायेगा।

[11]धनी पुरुष निज आँखों में बुद्धिमान हो सकता है किन्तु वह गरीब जन जो बुद्धिमान होता है सत्य को देखता।

[12]सज्जन जब जीतते है, तो सब प्रसन्न होते है। किन्तु जब दुष्ट को शक्ति मिल जाती है तो लोग छिप–छिप कर फिरते है।

[13]जो निज पापों पर पर्दा डालता है, वह तो कभी नहीं फूलता–फलता है किन्तु जो निज दोषों को स्वीकार करता और त्यागता है, वह दया पाता है।

[14]धन्य है, वह पुरुष जो यहोवा से सदा डरता है, किन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता है, विपत्ति में गिरता है।

[15]दुष्ट लोग असहाय जन पर शासन करते हैं। ऐसे जैसे दहाड़ता हुआ सिंह अथवा झपटता हुआ रीछ।

[16]एक क्रूर शासक में न्याय को कमी होती है। किन्तु जो बुरे मार्ग से आये हुए धन से घृणा करता है, दीर्घ आयु भोगता है।

[17]किसी व्यक्ति को दूसरे की हत्या का दोषी ठहराया हो तो उस व्यक्ति को शांति नहीं मिलेगी। उसे सहायता मत कर।

[18]यदि कोई व्यक्ति निष्कलंक हो तो वह सुरक्षित है। यदि वह बुरा व्यक्ति हो तो वह अपना सामर्थ खो बैठेगा।

[19]जो अपनी धरती जोतता–बोता है और परिश्रम करता है, उसके पास सदा भर पूर खाने को होगा। किन्तु जो सदा सपनों में खोया रहता है, सदा दरिद्र रहेगा।

[20]परमेश्वर निज भक्त पर आशीष बरसाता है, किन्तु वह मनुष्य जो सदा धन पाने को लालायित रहता है, बिना दण्ड के नहीं बचेगा।

[21]किसी धनवान व्यक्ति का पक्षपात करना अच्छा नहीं होता तो भी कुछ न्यायाधीश कभी कर जाते पक्षपात मात्र छोटे से रोटी के ग्रास के लिए।

[22]सूम सदा धन पाने को लालायित रहता है और नहीं जानता कि उसकी ताक में दरिद्रता है।

[23]वह जो किसी जन को सुधारने को डांटता है, वह आधिक प्रेम पाता है, अपेक्षा उसके जो चापलूसी करता है।

[24]कुछ लोग होते है जो अपने पिता और माता से चुराते है। वह कहते है, “यह बुरा नहीं है।” यह उस बुरा व्यक्ति जैसा है जो घर के भीतर आकर सभी वस्तुओं को तोड़ फोड़ कर देते हैं।

[25]लालची मनुष्य तो मतभेद भड़काता, किन्तु वह मनुष्य जिसका भरोसा यहोवा पर है फूलेगा–फलेगा।

[26]मूर्ख को अपने पर बहुत भरोसा होता है। किन्तु जो ज्ञान की राह पर चलता है, सुरक्षित रहता है।

[27]जो गरीबों को दान देता रहता है उसको किसी बात का अभाव नहीं रहता। किन्तु जो उनसे आँख मूँद लेता है, वह शाप पाता है।

[28]जब कोई दुष्ट शक्ति पा जाता है तो सज्जन छिप जाने को दूर चले जाते है। किन्तु जब दुष्ट जन का विनाश होता है तो सज्जनों को वृद्धि प्रकट होने लगती है।

29 जो घुड़कियाँ खाकर भी अकड़ा रहता है, वह अचानक नष्ट हो जायेगा। उसका उपाय तक नहीं बचेगा।

[2]जब धर्मी जन का विकास होता है, तो लोग आनन्द मनाते है। जब दुष्ट शासक बन जाता है तो लोग कराहते है।

[3]ऐसा जन जो विवेक से प्रेम रखता है, पिता को आनन्द पहुँचाता है। किन्तु जो वेश्याओं की संगत करता है, अपना धन खो देता है।

[4]न्याय से राजा देश को स्थिरता देता है। किन्तु राजा लालची होता तो लोग उसे घूँस देते है अपना काम करवाने के लिये। तब देश दुर्बल हो जाता है।

[5]जो अपने साथी की चापलूसी करता है वह अपने पैरों के लिए जाल पसारता है।

[6]पापी स्वयं अपने जाल में फंसता है। किन्तु एक धर्मी गाता और प्रसन्न होता है।

[7]सज्जन चाहते है कि गरीबों को न्याय मिले किन्तु दुष्टों को उनकी तनिक चिन्ता नहीं होती।

[8]जो ऐसा सोचतें है कि हम दूसरों से उत्तम है, वे विपत्ति उपजाते और सारे नगर को अस्त–व्यस्त कर देते है। किन्तु जो जन बुद्धिमान होते है, शांति को स्थापित करते है।

[9]बुद्धिमान जन यदि मूर्ख के साथ में वाद–विवाद सुलझाना चाहता है, तब मूर्ख कुतर्क करता और उल्टी–सीधी बातें करता जिससे दोनों के बीच सन्धि नहीं हो पाती।

[10]खून के प्यासे लोग, सच्चे लोगों से घृणा करते है। और वे उन्हें मार डालना चाहते है।

[11]मूर्ख मनुष्य को तो बहुत शीघ्र क्रोध आता है। किन्तु बुद्धिमान धीरज धरके अपने पर नियंत्रण रखता है।

[12]यदि एक शासक झूठी बातों को महत्व देता है तो उसके अधिकारी सब भ्रष्ट हो जाते है।

[13]एक हिसाब से गरीब और जो व्यक्ति को लूटता है, वह समान है। यहोवा ने ही दोनों को बनाया है।

[14]यदि कोई राजा गरीबों पर न्यायपूर्ण रहता है तो उसका शासन सुदीर्घ काल बना रहेगा।

[15]दण्ड और डाँट से सुबुद्धि मिलती है किन्तु यदि माता–पिता मनचाहा करने को खुला छोड़ दे, तो वह निज माता का लज्जा बनेगा।

[16]दुष्ट के राज्य में पाप, पनप जाते है किन्तु अन्तिम विजय तो सज्जन की होती है।

[17]पुत्र को दण्डित कर जब वह अनुचित करे, फिर तो तुझे उस पर सदा ही गर्व रहेगा। वह तेरी लज्जा का कारण कभी नहीं होगा।

[18]यदि कोई देश परमेश्वर की राह पर नहीं चलता तो उस देश में शांति नहीं होगी। वह देश जो परमेश्वर की व्यवस्था पर चलता, आनन्दित रहेगा।

[19]केवल शब्द मात्र से दास नहीं सुधरता है। चाहें वह तेरे बात को समझ ले, किन्तु उसका पालन नहीं करेगा।

[20]यदि कोई बिना विचारे हुए बोलता है तो उसके लिए कोई आशा नहीं। अधिक आशा होती है एक मूर्ख के लिये अपेक्षा उस जन के जो विचारे बिना बोले।

[21]यदि तू अपने दास को सदा वह देगा जो भी वह चाहे, तो अंत में–वह तेरा एक उत्तम दास नहीं रहेगा।

[22]क्रोधी मनुष्य मतभेद भड़काता है, और ऐसा जन जिसको क्रोध आता हो, बहुत से पापों का अपराधी बनता है।

[23]मनुष्य को अहंकार नीचा दिखाता है, किन्तु वह व्यक्ति जिसका हृदय विनम्र होता आदर पाता है।

[24]जो चोर का संग पकड़ता है वह अपने से शत्रुता करता है; क्योंकि न्यायालय में जब उस पर सच उगलने को ज़ोर पड़ता है तो वह कुछ भी कहने से बहुत डरा रहता है।

[25]भय मनुष्य के लिये फँदा प्रमाणित होता है, किन्तु जिसकी आस्था यहोवा पर रहती है, सुरक्षित रहता है।

[26]बहुत लोग राजा के मित्र होना चाहते हैं, किन्तु वह यहोवा ही है जो जन का सच्चा न्याय करता।

[27]सज्जन घृणा करते हैं ऐसे उन लोगों से जो सच्चे नहीं होते; और दुष्ट सच्चे लोगों से घृणा रखते हैं।

याके के पुत्र आगूर की सूक्तियाँ

30 ये सूक्ति आगूर की हैं, जो याके का पुत्र था यह पुरुष ईतीएल और उक्काल से:* कहता है

[2]मैं महाबुद्धिहीन हूँ। मुझमें मनुष्य की समझदारी बिल्कुल नहीं है।

[3]मैंने बुद्धि नहीं पायी और मेरे पास उस पवित्र का ज्ञान नहीं है।

[4]स्वर्ग से कोई नहीं आया और वहाँ के रहस्य ला सका पवन को मुट्ठी में कोई नहीं बाँध सका। कोई नहीं बाँध सका पानी को कपड़े में और कोई नहीं जान सका धरती का छोर। और यदि कोई इन बातों को कर सका है, तो मुझसे कहो, उसका नाम और नाम उसके पुत्र का मुझको बता, यदि तू उसको जानता हो।

[5]वचन परमेश्वर का दोष रहित होता है, जो उसकी शरण जाते वह उनकी ढाल होता। [6]तू उसके वचनों में कुछ घट–बढ़ मत कर। नहीं तो वह तुझे डांटे फटकारेगा और झूठा ठहराएगा।

[7]हे यहोवा, मैं तुझसे दो बातें माँगता हूँ: जब तक मैं जीऊँ, तू मुझको देता रह। [8]तू मुझसे मिथ्या को, व्यर्थ को दूर रख। मुझे दरिद्र मत कर और न ही मुझको धनी बना। मुझको बस प्रतिदिन खाने को देता रह। [9]कहीं ऐसा न हो जाये बहुत कुछ पा कर के मैं तुझको त्याग दूँ; और कहने लगूँ 'कौन परमेश्वर है?' और यदि निर्धन बनूँ और चोरी करूँ, और इस प्रकार मैं अपने परमेश्वर के नाम को लजाऊँ।

[10]तू स्वामी से सेवक की निन्दा मत कर नहीं तो तुझको, वह अभिशाप देगा और तुझे उसकी भरपाई करनी होगी।

[11]ऐसे भी होते हैं जो अपने पिता को कोसते है, और अपनी माता को धन्य नहीं कहते हैं।

[12]होते हैं ऐसे भी, जो अपनी आँखों में तो पवित्र बने रहते किन्तु अपवित्रता से अपनी नहीं धुले होते हैं।

[13]ऐसे भी होते हैं जिनकी आँखें सदा तनी ही रहती, और जिनकी आँखों में घृणा भरी रहती है।

ईतीएल और उक्काल से इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: कहा इस व्यक्ति ने, "मैं बहुत दुर्बल हूँ। किन्तु सफल में होऊँगा।

[14]ऐसे भी होते हैं जिनके दांत कटार हैं और जिनके जबड़ों में खंजर जड़े रहते हैं जिससे वे इस धरती के गरीबों को हड़प जायें, और जो मानवों में से अभावग्रस्त है उनको वे निगल लें।

[15]जोंक की दो पुत्र होती हैं वे सदा चिल्लाती रहती, "देओ, देओ।" तीन वस्तु ऐसी हैं जो तृप्त कभी न होती और चार ऐसी जो कभी बस नहीं कहती। [16]कब्र, बांझ–कोख और धरती जो जल से कभी तृप्त नहीं, और वह अग्नि जो कभी 'बस' नहीं कहती।

[17]जो आँख अपने ही पिता पर हँसती है, और माँ की बात मानने से घृणा करती है, घाठी के कौवे उसे नोंच लेंगे और उसको गिद्ध खा जायेंगे।

[18]तीन बातें ऐसी हैं जो मुझे अति विचित्र लगती, और चौथी ऐसी जिसे मैं समझ नहीं पाता। [19]आकाश में उड़ते हुए गरुड़ का मार्ग, और लीक नाग की जो चट्टान पर चला; और महासागर पर चलते जहाज़ की राह और उस पुरुष का मार्ग जो किसी कामिनी के प्रेमपाश में बंधा हो।

[20]चरित्र हीन स्त्री की ऐसी गति होती है, वह खाती रहती और अपना मुख पोंछ लेती, और कहा करती है, मैंने तो कुछ भी बुरा नहीं किया।

[21]तीन बातें ऐसी हैं जिनसे धरा काँपती है और एक चौथी है जिसे वह सह नहीं कर पाती। [22]दास जो बन जाता राजा, मूर्ख जो सम्पन्न,[23]ब्याह किसी ऐसी से जिससे प्रेम नहीं हो; और ऐसी दासी जो स्वामिनी का स्थान ले ले। [24]चार जीव धरती के, जो यद्यपि बहुत क्षुद्र हैं किन्तु उनमें अत्याधिक विवेक भरा हुआ है। [25]चीटियाँ जिनमें शक्ति नहीं होती है फिर भी वे गर्मी में अपना खाना बटोरती हैं; [26]बिज्जू दुर्बल प्राणी हैं फिर भी वे खड़ी चट्टानों में घर बनाते; [27]टिड्डियों का कोई भी राजा नहीं होता है फिर भी वे पंक्ति बांध साथ आगे बढ़ती हैं। [28]और वह छिपकली जो बस केवल हाथ से ही पकड़ी जा सकती है, फिर भी वह राजा के महलों में पायी जाती। [29]तीन प्राणी ऐसे हैं जो लगते महत्वपूर्ण जब वे चलते हैं, दरअसल वे चार हैं: [30]एक सिंह, जो सभी पशुओं में शक्तिशाली होता है, जो कभी किसी से नहीं डरता; [31]गर्वीली चाल से चलता हुआ मुर्गा और एक बकरा और वह राजा जो अपनी सेना के मध्य है।

[32]तूने यदि कभी कोई आचरण किया मूर्खता का, और अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बना हो अथवा तूने कभी रचा हो कुचक्र कोई तो तू अपना मुँह अपने हाथों से ढक ले।

[33]जैसे मथने से दूध निकलता है मक्खन और नाक मरोड़ने से लहू निकल आता है वैसे ही जगाना क्रोध का होता है झगड़ों का भड़काना।

राजा लमुएल की सूक्तियाँ

31 ये सूक्तियाँ राजा लमूएल की, जिन्हें उसे उसकी माता ने सिखाया था।

[2]तू मेरा पुत्र है वह पुत्र जो मुझ को प्यारा है। जिसके पाने को मैंने मन्नत मानी थी। [3]तू व्यर्थ अपनी शक्ति स्त्रियों पर मत व्यय करो स्त्री ही राजाओं का विनाश करती हैं। इसलिए तू उन पर अपना क्षय मत कर। [4]हे लमूएल! राजा को मधुपान शोभा नहीं देता, और न ही यह कि शासक को यवसुरा ललचाये। [5]नहीं तो, वे मदिरा का बहुत अधिक पान करके, विधान की व्यवस्था को भूल जायेगें और वे सारे दीन दलितों के अधिकारों को छीन लेंगे। [6]वे जो मिटे जा रहे हैं उन्हें यवसुरा, मदिरा उनको दे जिन पर दारूण दुःख पड़ा हो। [7]उनको पीने दे और भूलने दे उन्हें उनके अभावों को। उनका वह दारुण दुःख उन्हें नहीं याद रहे।

[8]तू बोल उनके लिये जो कभी भी अपने लिये बोल नहीं पाते हैं; और उन सब के, अधिकारों के लिये बोल जो अभागे हैं। [9]तू डट करके खड़ा रह उन बातों के हेतू जिनको तू जानता हैं कि वे उचित, न्यायपूर्ण, और बिना पक्ष–पात के सबका न्याय कर। तू गरीब जन के अधिकारों की रक्षा कर और उन लोगों के जिनको तेरी अपेक्षा हो।

आदर्श पत्नी

[10] गुणवंती पत्नी कौन पा सकता है?
वह जो मणि–माणिको से कही अधिक मूल्यवान।
[11] जिसका पति उसका विश्वास कर सकता है।
वह तो कभी भी गरीब नहीं होगा।
[12] सद्पत्नी पति के संग उत्तम व्यवहार करती।
अपने जीवन भर वह उसके लिए
कभी विपत्ति नहीं उपजाती।

13 वह सदा ऊनी और सूती
कपड़े बनाने में व्यस्त रहती।
14 वह जलयान जो दूर देश से आता है वह हर
कहीं से घर पर भोज्य वस्तु लाती।
15 तड़के उठकर वह भोजन पकाती है।
अपने परिवार का और दासियों का भाग
उनको देती है।
16 वह देखकर एंव परख कर खेत मोल लेती है
जोड़े धन से वह दाख की बारी लगाती है।
17 वह बड़ा श्रम करती है।
वह अपने सभी काम करने को समर्थ है।
18 जब भी वह अपनी बनायी वस्तु बेचती है,
तो लाभ ही कमाती है।
वह देर रात तक काम करती है।
19 वह सूत कातती और निज वस्तु बुनती है।
20 वह सदा ही दीनदुखी को दान देती है,
और अभाव ग्रस्त जन की सहायता करती।
21 जब शीत पड़ती तो वह अपने परिवार हेतु
चिंतित नहीं होती है।
क्योंकि उसने सभी को उत्तम
गरम वस्त्र दे रख है।
22 वह चादर बनाती है और गद्दी पर फैलाती है।
वह सन से बने कपड़े पहनती है।
23 लोग उसके पति का आदर करते हैं
वह स्थान पाता है नगर प्रमुखों के बीच।
24 वह अति उत्तम व्यापारी बनती है।
वह वस्त्रों और कमरबंदों को बनाकर के
उन्हें व्यापारी लोगों को बेचती है।
25 वह शक्तिशाली है, और लोग
उसको मान देते हैं।
26 जब वह बोलती है, वह विवेकपूर्ण रहती है।
उसकी जीभ पर उत्तम शिक्षायें सदा रहती है।
27 वह कभी भी आलस नहीं करती है
और अपने घर बार का ध्यान रखती है।
28 उसके बच्चे खड़े होते और उसे आदर देते है।
उसका पति उसकी प्रशंसा करता है।
29 उसका पति कहता है,
"बहुत सी स्त्रियाँ होती हैं।
किन्तु उन सब में तू ही सर्वोत्तम अच्छी पत्नी है।"
30 मिथ्या आकर्षण और सुन्दरता दो पल की है,
किन्तु वह स्त्री जिसे यहोवा का भय है,
प्रशंसा पायेगी।
31 उसे वह प्रतिफल मिलना चाहिए जिसके वह
योग्य है, और जो काम उसने किये हैं,
उनके लिए चाहिए कि सारे लोग के
बीच में उसकी प्रशंसा करें।

सभोपदेशक

1 ये उपदेशक के शब्द हैं। उपदेशक दाऊद का पुत्र था और यरुशलेम का राजा था।

[2]उपदेशक का कहना हैं कि हर वस्तु अर्थहीन है और अकारथ है!* मतलब यह कि हर बात व्यर्थ हैं! [3]इस जीवन में लोग जो कड़ी मेहनत करते हैं, उससे उन्हें सचमुच क्या कोई लाभ होता हैं? नहीं!

वस्तुएँ अपरिवर्तनशील हैं

[4]एक पीढ़ी आती है और दूसरी चली जाती है किन्तु संसार सदा यूँ ही बना रहता हैं। [5]सूरज उगता है और फिर ढल जाता है और फिर सूरज शीघ्र ही उसी स्थान से उदय होने की शीघ्रता करता है।

[6]वायु दक्षिण दिशा की ओर बहती है और वायु उत्तर की ओर बहने लगती है। वायु एक चक्र में घूमती रहती है और फिर वायु जहाँ से चली थी वापस वहीं बहने लगती है।

[7]सभी नदियाँ एक ही स्थान की ओर बार बार बहा करती है। वे सभी समुद्र से आ मिलती हैं, किन्तु फिर भी समुद्र कभी नहीं भरता।

[8]शब्द वस्तुओं का पूरा पूरा वर्णन नहीं कर सकते। लेकिन लोग अपने विचार को व्यक्त नहीं कर पाते, सदा बोलते ही रहते हैं। शब्द हमारे कानों में बार बार पड़ते हैं किन्तु उनसे हमारे कान कभी भी भरते नहीं है। हमारी आँखे भी, जो कुछ वे देखती है, उससे कभी अघाती नहीं हैं।

कुछ भी नया नहीं है

[9]प्रारम्भ से ही वस्तुएँ जैसी थी वैसी ही बनी हुई हैं। सब कुछ वैसे ही होता रहेगा, जैसे सदा से होता आ रहा है। इस जीवन में कुछ भी नया नहीं है।

[10]कोई व्यक्ति कह सकता है, "देखों, यह बात नई है!" किन्तु वह बात तो सदा से हो रही थी। वह तो हमसे भी पहले से हो रही थी!

[11]वे बातें जो बहुत पहले घट चुकी हैं, उन्हें लोग याद नहीं करते और आगे भी लोग उन बातों को याद नहीं करेंगे जो अब घट रही हैं और उसके बाद भी अन्य लोग उन बातों को याद नही रखेंगे जिन्हें उनके पहले के लोगों ने किया था।

क्या बुद्धि से आनन्द मिलता है?

[12]मैं, जो कि एक उपदेशक हूँ, यरुशलेम में इस्राएल का राजा हुआ करता था। और आज भी हूँ। [13]मैंने निश्चय किया कि मैं इस जीवन में जो कुछ होता है उसे जानने के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए उसका अध्ययन करूँ। मैंने जाना कि परमेश्वर ने हमें करने के लिये जो यह काम दिया हैं वह बहुत कठिन है। [14]इस पृथ्वी पर की सभी वस्तुओं पर मैंने दृष्टि डाली और देखा कि यह सब कुछ व्यर्थ है। यह वैसा ही है जैसे वायु को पकड़ना।* [15]तुम उन बातों को बदल नहीं सकते। यदि कोई बात टेढ़ी है तो तुम उसे सीधी नहीं कर सकते और यदि किसी वस्तु का अभाव है तो तुम यह नहीं कह सकते कि वह वस्तु वहाँ हैं।

[16]मैंने अपने आप से कहा, "मैं बहुत बुद्धिमान हूँ। मुझ से पहले यरुशलेम में जिन राजाओं ने राज्य किया है, मैं उन सब से अधिक बुद्धिमान हूँ। मैं जानता हूँ कि वास्तव में बुद्धि और ज्ञान क्या हैं!"

अर्थहीन ... अकारथ है मूल में जो हिब्रू शब्द है उसका अर्थ है भाप या साँस या कोई ऐसी वस्तु जिसका कोई उपयोग नहीं है। जो खाली है, गलत है या समय की बर्बादी हैं।

यह वैसा ही है जैसे वायु को पकड़ना इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: "यह मन को बहुत दु:खी करने वाला है।" दु:खी करने वाला, इस शब्द का अर्थ भावत्मक ललक भी हो सकता है। यहाँ 'मन' शब्द का अर्थ 'वायु' भी सम्भव है।

[17]मैंने यह जानने का निश्चय किया कि मूर्खतापूर्ण चिन्तन से विवेक और ज्ञान किस प्रकार श्रेष्ठ हैं। किन्तु मुझे ज्ञात हुआ कि विवेकी बनने का प्रयास वैसा ही है जैसे वायु को पकड़ने का प्रयत्न। [18]क्योंकि अधिक ज्ञान के साथ हताशा भी उपजती है। वह व्यक्ति जो अधिक ज्ञान प्राप्त करता है वह अधिक दुःख भी प्राप्त करता है।

क्या "मनो–विनोद" से सच्चा आनन्द मिलता है?

2 मैंने अपने मन में कहा, "मुझे मनो विनोद करना चाहिए। मुझे हर वस्तु का जितना रस मैं ले सकूँ, उतना लेना चाहिए।" किन्तु मैंने जाना कि यह भी व्यर्थ है। [2]हर समय हँसते रहना भी मूर्खता है। मनो विनोद से मेरा कोई भला नहीं हो सका।

[3]सो मैंने निश्चय किया कि मैं अपनी देह को दाखमधु से भर लूँ यद्यपि मेरा मस्तिष्क मुझे अभी ज्ञान की राह दिखा रहा था। मैंने यह मूर्खता पूर्ण आचरण किया, क्योंकि मैं आनन्द का कोई मार्ग ढूँढना चाहता था। मैं चाहता था कि लोगों के लिये अपने जीवन के थोड़े से दिनों में क्या करना उत्तम है, इसे खोज लूँ।

क्या कड़ी मेहनत से सच्चा आनन्द मिलता है?

[4]फिर मैंने बड़े बड़े काम करने शुरु किये। मैंने अपने लिए भवन बनवाएँ और अँगूर के बाग लगवाए। [5]मैंने बगीचे लगवाए और बाग बनवाए। मैंने सभी तरह के फलों के पेड़ लगवाये। [6]मैंने अपने लिए पानी के तालाब बनवाए और फिर इन तालाबों के पानी को मैं अपने बढ़ते पेड़ों को सींचने के काम में लाने लगा। [7]मैंने दास और दासियाँ खरीदीं और फिर मेरे घर में उत्पन्न हुए दास भी थे। मैं बड़ी बड़ी वस्तुओं का स्वामी बन गया। मेरे पास झुँड के झुँड पशु और भेड़ों के रेवड़ थे। यरूशलेम में किसी भी व्यक्ति के पास जितनी वस्तुएँ थीं, मेरे पास उससे भी अधिक वस्तुएँ थीं।

[8]मैंने अपने लिए चाँदी सोना भी जमा किया। मैंने राजाओं और उनके देशों से भी खजाने एकत्र किये। मेरे पास बहुत सी वेशयाएं थीं।

[9]मैं बहुत धनवान और प्रसिद्ध हो गया। मुझसे पहले यरुशलेम में जो भी कोई रहता था, मैं उससे अधिक महान था। मेरी बुद्धि सदा मेरी सहायता किया करती थी। [10]मेरी आँखों ने जो कुछ देखा और चाहा उसे मैंने प्राप्त किया। मैं जो कुछ करता, मेरा मन सदा उससे प्रसन्न रहा करता और यह प्रसन्नता मेरे कठिन परिश्रम का प्रतिफल थीं।

[11]किन्तु मैंने जो कुछ किया था जब उस पर दृष्टि डाली और अपने किये कठिन परिश्रम के बारे में विचार किया तो मुझे लगा यह सब समय की बर्बादी थी! यह ऐसा ही था जैसा वायु को पकड़ना। इस जीवन में हम जो कुछ श्रम करते हैं उस सबकुछ का उचित परिणाम हमें नहीं मिलता।

हो सकता है इसका उत्तर बुद्धि हो

[12]जितना एक राजा कर सकता है, उससे अधिक कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता। तुम जो भी कुछ करना चाह सकते हो, वह सबकुछ कोई राजा अब तक कर भी चुका होगा। मेरी समझ में आ गया कि एक राजा तक जिन कामों को करता है, वे सब भी व्यर्थ हैं। सो मैंने फिर बुद्धिमान बनने, मूर्ख बनने और सनकीपन के कामों को करने के बारे में सोचना आरम्भ किया। [13]मैंने देखा कि बुद्धि मूर्खता से उसी प्रकार उत्तम है जिस प्रकार अँधेरे से प्रकाश उत्तम होता हैं। [14]यह वैसे ही है जैसे: एक बुद्धिमान व्यक्ति, वह कहाँ जा रहा है, उसे देखने के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग, अपनी आँखों की तरह करता हैं। किन्तु एक मूर्ख व्यक्ति उस व्यक्ति के समान है जो अंधेरे में चल रहा है। किन्तु मैंने यह भी देखा कि मूर्ख और बुद्धिमान दोनों का अंत एक ही प्रकार से होता है। दोनों ही अंत में मृत्यु को प्राप्त करते हैं। [15]अपने मन में मैंने सोचा, "किसी मूर्ख व्यक्ति के साथ जो घटता है वह मेरे साथ भी घटेगा सो इतना बुद्धिमान बनने के लिये इतना कठिन परिश्रम मैंने क्यों किया?" अपने आपसे मैंने कहा, "बुद्धिमान बनना भी बेकार है।"[16]बुद्धिमान व्यक्ति और मूर्ख व्यक्ति दोनों ही मर जायेंगे और लोग सदा के लिये न तो बुद्धिमान व्यक्ति को याद रखेंगे और न ही किसी मूर्ख व्यक्ति को। उन्होंने जो कुछ किया था, लोग उसे आगे चल कर भुला देंगे। इस प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति और मूर्ख व्यक्ति वास्तव में एक जैसे ही हैं।

क्या सच्चा आनन्द जीवन में है?

[17]इसके कारण मुझे जीवन से घृणा हो गई। इस विचार से मैं बहुत दुःखी हुआ कि इस जीवन में जो कुछ है सब

व्यर्थ हैं। बिल्कुल वैसा ही जैसे वायु को पकड़ने की कोशिश करना।

[18]मैंने जो कठिन परिश्रम किया था, उससे घृणा करना आरम्भ कर दिया। मैंने देखा कि वे लोग जो मेरे बाद जीवित रहेंगे उन वस्तुओं को ले लेंगे जिनके लिए मैंने कठोर परिश्रम किया था। मैं अपनी उन वस्तुओं को अपने साथ नहीं ले जा सकूँगा। [19]जिन वस्तुओं के लिये मैंने मन लगाकर कठिन परिश्रम किया था उन सभी वस्तुओं पर किसी दूसरे ही व्यक्ति का नियन्त्रण होगा और मैं तो यह भी नहीं जानता कि वह व्यक्ति बुद्धिमान होगा या मूर्ख। पर यह सब भी तो अर्थहीन ही हैं।

[20]इसलिए मैंने जो भी कठिन परिश्रम किया था, उस सब के विषय में मैं बहुत दुःखी हुआ। [21]एक व्यक्ति अपनी बुद्धि, अपने ज्ञान और अपनी चतुराई का प्रयोग करते हुए कठिन परिश्रम कर सकता है। किन्तु वह व्यक्ति तो मर जायेगा और जिन वस्तुओं के लिये उस व्यक्ति ने कठिन परिश्रम किया था, वे किसी दूसरे ही व्यक्ति को मिल जायेंगी। उन व्यक्तियों ने उन वस्तुओं के लिये कोई काम तो नहीं किया था, किन्तु उन्हें वह सभी कुछ हाल हो जायेगा। इससे मुझे बहुत दुःख होता हैं। यह न्यायपूर्ण तो नहीं हैं। यह तो विवेकपूर्ण नहीं है।

[22]अपने जीवन में सारे परिश्रम और संघर्ष के बाद आखिर एक मनुष्य को वास्तव में क्या मिलता है? [23]अपने सारे जीवन वह कठिन परिश्रम करता रहा किन्तु पीड़ा और निराशा के अतिरिक्त उसके हाथ कुछ भी नहीं लगा। रात के समय भी मनुष्य का मन विश्राम नहीं पाता। यह सब भी अर्थहीन ही हैं।

[24–25]जीवन का जितना आनन्द मैंने लिया है क्या कोई भी ऐसा व्यक्ति और है जिसने मुझसे अधिक जीवन का आनन्द लेने का प्रयास किया हो? नहीं! मुझे जो ज्ञान हुआ है वह यह है: कोई व्यक्ति जो अच्छे से अच्छा कर सकता हैं वह है खाना, पीना और उस कर्म का आनन्द लेना जो उसे करना चाहिये। मैंने यह भी समझा है कि यह सब कुछ परमेश्वर से ही प्राप्त होता हैं। [26]यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को प्रसन्न करता है तो परमेश्वर उसे बुद्धि, ज्ञान और आनन्द प्रदान करता है। किन्तु वह व्यक्ति जो उसे अप्रसन्न करता है, वह तो बस वस्तुओं के संचय और उन्हें ढोने का ही काम करता रहेगा। परमेश्वर बुरे व्यक्तियों से लेकर अच्छे व्यक्तियों को देता रहता है। इस प्रकार यह समग्र कर्म व्यर्थ हैं। यह वैसा ही है जैसे वायु को पकड़ने का प्रयत्न करना।

एक समय है...

3 हर बात का एक उचित समय होता हैं। और इस धरती पर हर बात एक उचित समय पर ही घटित होगी।

[2] जन्म लेने का एक उचित समय निश्चित है,
और मृत्यु का भी।
एक समय होता है पेड़ों के रोपने का,
और उनको उखाड़ने का।

[3] घात करने का होता है एक समय,
और एक समय होता है उसके उपचार का।
एक समय होता है जब ढहा दिया जाता,
और एक समय होता है करने का निर्माण।

[4] एक समय होता है रोने–विलपने का,
और एक समय होता है करने का अट्टहास।
एक समय होता है होने का दुःख मग्न,
और एक समय होता है उल्लास भरे नाच का।

[5] एक समय होता है जब हटाए जाते हैं पत्थर ,
और एक समय होता है उनके एकत्र करने का।
एक समय होता है बाध आलिंगन में
किसी के स्वागत का,
और एक समय होता है, जब स्वागत उन्हीं का
किया नहीं जाता है।

[6] एक समय होता है जब होती है किसी की खोज,
और आता है एक समय जब खोज रूक जाती है।
एक समय होता हैं वस्तुओं के रखने का,
और एक समय होता है दूर फेंकने का चीजों को।

[7] होता है एक समय वस्त्रों को फाड़ने का,
फिर एक समय होता जब उन्हें सिया जाता है।
एक समय होता है साधने का चुप्पी,
और होता है एक समय फिर बोल उठने का।

[8] एक समय होता है प्यार को करने का,
और एक समय होता जब घृणा करी जाती हैं।
एक समय होता है करने का लड़ाई,
और होता है एक समय मेल का मिलाप का।

परमेश्वर अपने संसार का नियन्त्रण करता है

[9]क्या किसी व्यक्ति को अपने कठिन परिश्रम से वास्तव में कुछ मिल पाता है? नहीं। क्योंकि जो होना है वह तो होगा ही। [10]मैंने वह कठिन परिश्रम देखा है जिसे परमेश्वर ने हमें करने के लिये दिया है। [11]अपने संसार के बारे में सोचने के लिये परमेश्वर ने हमें क्षमता प्रदान की है। परन्तु परमेश्वर जो करता है, उन बातों को पूरी तरह से हम कभी नहीं समझ सकते। फिर भी परमेश्वर हर बात, उचित और उपयुक्त समय पर करता है।

[12]मैंने देखा है कि लोगों के लिये सबसे उत्तम बात यह है कि वे प्रयत्न करते रहें और जब तक जीवित रहें आनन्द करते रहें। [13]परमेश्वर चाहता है कि हर व्यक्ति खाये पीये और अपने कर्म का आनन्द लेता रहे। ये बातें परमेश्वर की ओर से प्राप्त उपहार हैं।

[14]मैं जानता हूँ कि परमेश्वर जो कुछ भी घटित करता है वह सदा घटेगा ही। लोग परमेश्वर के काम में कुछ भी वृद्धि नहीं कर सकते और इसी तरह लोग परमेश्वर के काम में से कुछ घटी भी नहीं कर सकते हैं। परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया कि लोग उसका आदर करें। [15]जो अब हो रहा है पहले भी हो चुका हैं। जो कुछ भविष्य में होगा वह पहले भी हुआ था। परमेश्वर घटनाओं को बार बार घटित करता है।

[16]इस जीवन में मैंने ये बातें भी देखी हैं। मैंने देखा है कि न्यायालय जहाँ न्याय और अच्छाई होनी चाहिये, वहाँ आज बुराई भर गई है। [17]इसलिए मैंने अपने मन से कहा, "हर बात के लिये परमेश्वर ने एक समय निश्चित किया है। मनुष्य जो कुछ करते हैं उसका न्याय करने के लिये भी परमेश्वर ने एक समय निश्चित किया है। परमेश्वर अच्छे लोगों और बुरे लोगों का न्याय करेगा।"

क्या मनुष्य पशुओं जैसे ही हैं?

[18]लोग एक दूसरे के प्रति जो कुछ करते हैं उनके बारे में मैंने सोचा और अपने आप से कहा, "परमेश्वर चाहता है कि लोग अपने आपको उस रुप में देखें जिस रूप में वे पशुओं को देखतें हैं।" [19]क्या एक व्यक्ति एक पशु से उत्तम है? नहीं। क्यों? क्योंकि हर वस्तु नाकारा हैं। मृत्यु जैसे पशुओं को आती है उसी प्रकार मनुष्यों को भी। मनुष्य और पशु एक ही श्वास लेते हैं। क्या एक मरा हुआ पशु एक मरे हुए मनुष्य से भिन्न होता है? [20]मनुष्यों और पशुओं की देहों का अंत एक ही प्रकार से होता है। वे मिट्टी से पैदा होते हैं और अंत में वे मिट्टी में ही समा जाते हैं। [21]कौन जानता है कि मनुष्य की आत्मा का क्या होता है? क्या कोई जानता है कि एक मनुष्य की आत्मा परमेश्वर के पास जाती है जबकि एक पशु की आत्मा नीचे उतरकर धरती में जा समाती है?

[22]सो मैंने यह देखा कि मनुष्य जो सबसे अच्छी बात कर सकता है वह यह है कि वह अपने कर्म में आनन्द लेता रहे। बस उसके पास यही है। किसी व्यक्ति को भविष्य की चिन्ता भी नहीं करनी चाहिये। क्योंकि भविष्य में क्या होगा उसे देखने में कोई भी उसकी सहायता नहीं कर सकता।

क्या मर जाना श्रेष्ठ है?

4 मैंने फिर यह भी देखा है कि कुछ लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। मैंने उनके आँसू देखे हैं और फिर यह भी देखा है कि उन दुःखी लोगों को ढाढ़स बँधाने वाला भी कोई नहीं हैं। मैंने देखा है कि कठोर लोगों के पास समूची शक्ति है और ये लोग जिन लोगों को क्षति पहुँचाते हैं उन्हें ढाढ़स बँधाने वाला भी कोई नहीं हैं। [2]मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि ये बातें उन व्यक्तियों के लिये ज्यादा अच्छे हैं जो मर चुके है बजाये उनके लिये जो अभी तक जी रहे हैं। [3]उन लोगों के लिये तो ये बातें और भी अच्छे है जो जन्म लेते ही मर गए! क्यों? क्योंकि, उन्होंने इस संसार में जो बुराइयाँ हो रही हैं, उन्हें देखा ही नहीं।

इतना कठिन परिश्रम क्यों?

[4]फिर मैंने सोचा, "लोग इतनी कड़ी मेहनत क्यों करते हैं?" मैंने देखा है कि लोग सफल होने और दूसरे लोगों से और अधिक ऊँचा होने के प्रयत्न में लगे रहते हैं। ऐसा इसलिये होता है कि लोग ईर्ष्यालु हैं। वे नहीं चाहते कि जितना उनके पास है, दूसरे के पास उससे अधिक हो। यह सब अर्थहीन है। यह वैसा ही है जैसे वायु को पकड़ना।

[5]कुछ लोग कहा करते है कि हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहना और कुछ नहीं करना मूर्खता है। यदि तुम काम नहीं करोगे तो भूखों मर जाओगे। [6]जो कुछ मुट्ठी भर तुम्हारे पास है उसमें संतुष्ट रहना अच्छा है बजाय इसके

कि अधिकाधिक पाने की ललक में जूझते हुए वायु के पीछे दौड़ा जाता रहे।

[7]फिर मैंने एक और बात देखी, जिसका कोई अर्थ नहीं है: [8]एक व्यक्ति परिवार विहीन हो सकता है। हो सकता है उसके कोई पुत्र और यहाँ तक कि कोई भाई भी न हो किन्तु वह व्यक्ति कठिन से कठिन परिश्रम करने में लगा रहता है और जो कुछ उसके पास होता है, उससे कभी संतुष्ट नहीं होता। सो मैं भी इतनी कड़ी मेहनत क्यों करता हूँ? मैं स्वयं अपने जीवन का आनन्द क्यों नहीं लेता हूँ? अब देखो यह भी एक दु:ख भरी और व्यर्थ का बात हैं।

मित्रों और परिवार से शक्ति मिलती है

[9]एक व्यक्ति से दो व्यक्ति उत्तम होते हैं। जब दो व्यक्ति मिलकर साथ साथ काम करते है तो जिस काम को वे करते हैं, उस काम से उन्हें अधिक लाभ मिलता है।

[10]यदि एक व्यक्ति गिर जाये तो दूसरा व्यक्ति उसकी मदद कर सकता है। किन्तु किसी व्यक्ति के लिये अकेला रहना अच्छा नहीं है क्योंकि जब वह गिरता है तो उसकी सहायता के लिए वहां कोई और नहीं होता।

[11]यदि दो व्यक्ति एक साथ सोते हैं तो उनमें गरमाहट रहती है किन्तु अकेला सोता हुआ व्यक्ति कभी गर्म नहीं हो सकता।

[12]अकेले व्यक्ति को शत्रु हरा सकता हैं किन्तु वही शत्रु दो व्यक्तियों को नहीं हरा सकता और तीन व्यक्तियों की शक्ति तो और भी अधिक होती है। वे एक ऐसे रस्से के समान होते है, जिसकी तीन लटें आपस में गुंथी हुई होती है, जिसे तोड़ पाना बहुत कठिन है।

लोग, राजनीति और प्रसिद्धि

[13]एक गरीब किन्तु बुद्धिमान युवा नेता, एक वृद्ध किन्तु मूर्ख राजा से अच्छा है। वह वृद्ध राजा चेतावनियों पर कान नहीं देता। [14]हो सकता है वह युवा शासक उस राज्य में गरीबी में पैदा हुआ हो और हो सकता है वह कारागर से छूटकर देश पर शासन करने के लिये आया हो। [15]किन्तु इस जीवन में मैंने लोगों को देखा है और मैं यह जानता हूँ कि लोग उस दूसरे युवानेता का ही अनुसरण करते हैं और वही नया राजा बन जाता है। [16]बहुत से लोग इस युवक के पीछे हो लेते हैं। किन्तु आगे चलकर वे लोग भी उसे पसन्द नहीं करते इसलिये यह सब भी व्यर्थ हैं। यह वैसा ही है जैसा कि वायु को पकड़ने का प्रयत्न करना।

मनौती मानने में सावधानी

5 जब परमेश्वर की उपासना के लिये जाओ तो बहुत अधिक सावधान रहो। अज्ञानियों के समान बलियां चढ़ाने की अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा मानना अधिक उत्तम है। अज्ञानी लोग प्राय: बुरे काम किया करते हैं और उसे जानते तक नहीं है। [2]परमेश्वर के मन्नत मानते समय सावधान रहो। परमेश्वर से जो कुछ कहो उन बातों के लिये सावधान रहो। भावना के आवेश में, जल्दी में कुछ मत कहो। परमेश्वर स्वर्ग में है और तुम धरती पर हो। इसलिये तुम्हें परमेश्वर से बहुत थोड़ा बोलने की आवश्यकता हैं। यह कहावत सच्ची है:

[3] अति चिंता से बुरे स्वप्न आया करते हैं।
और अधिक बोलने से मूर्खता उपजती है।

[4]यदि तुम परमेश्वर से कोई मनौती माँगते हो तो उसे पूरा करो। जिस बात की तुमने मनौती मानी है उसे पूरा करने में देर मत करो। परमेश्वर मूर्ख व्यक्तियों से प्रसन्न नहीं रहता। तुमने परमेश्वर को जो कुछ अर्पित करने का वचन दिया है उसे अर्पित करो। [5]यह अच्छा है कि तुम कोई मनौती मानो ही नहीं बजाय इसके कि कोई मनौती मानो और उसे पूरा न कर पाओ। [6]इसलिए अपने शब्दों को तुम स्वयं को पाप में मत ढकेलने दो। याजक से ऐसा मत बोलो कि, "जो कुछ मैंने कहा था उसका यह अर्थ नहीं है!" यदि तुम ऐसा करोगे तो परमेश्वर तुम्हारे शब्दों से रूष्ट होकर जिन वस्तुओं के लिये तुमने कर्म किया है, उन सबको नष्ट कर देगा। [7]अपने बेकार के सपनों और डींग मारने से विपत्तियों में मत पड़ो। तुम्हें परमेश्वर का सम्मान करना चाहिये।

प्रत्येक अधिकारी के ऊपर एक अधिकारी है

[8]कुछ देशों में तुम ऐसे दीन–हीन लोगों को देखोगे जिन्हें कड़ी मेहनत करने को विवश किया जाता है। तुम देख सकते हो कि निर्धन लोगों के साथ यह व्यवहार उचित नहीं है। यह गरीब लोगों के अधिकारों के विरुद्ध है। किन्तु आश्चर्य मत करो। जो अधिकारी उन व्यक्तियों को कार्य करने के लिये विवश करता है, और वे दोनों

अधिकारी किसी अन्य अधिकारी द्वारा विवश किये जाते है। [9]इतना होने पर भी किसी खेती योग्य भूमि पर एक राजा का होना देश के लिए लाभदायक हैं।

धन से प्रसन्नता खरीदी नहीं जा सकती

[10]वह व्यक्ति जो धन को प्रेम करता है वह उस धन से जो उसके पास है कभी संतुष्ट नहीं होता। वह व्यक्ति जो धन को प्रेम करता है, जब अधिक से अधिक धन प्राप्त कर लेता है तब भी उसका मन नहीं भरता। सो यह भी व्यर्थ है।

[11]किसी व्यक्ति के पास जितना अधिक धन होगा उसे खर्च करने के लिये उसके पास उतने ही अधिक मित्र होंगे। सो उस धनी मनुष्य को वास्तव में प्राप्त कुछ नहीं होता है। वह अपने धन को बस देखता भर रह सकता है।

[12]एक ऐसा व्यक्ति जो सारे दिन कड़ी मेहनत करता है, अपने घर लौटने पर चैन के साथ सोता है। यह महत्व नहीं रखता है कि उसके पास खाने को कम है या अधिक है। एक धनी व्यक्ति अपने धन की चिंताओं में डूबा रहता है और सो तक नहीं पाता।

[13]बहुत बड़े दुःख की बात है एक जिसे मैंने इस जीवन में घटते देखा हैं। देखो एक व्यक्ति भविष्य के लिये अपना धन बचाकर रखता है। [14]और फिर कोई बुरी बात घट जाती है और उसका सब कुछ जाता रहता है और व्यक्ति के पास अपने पुत्र को देने के लिये कुछ भी नहीं रहता।

हम खाली हाथ आते है और खाली हाथ चले जाते हैं

[15]एक व्यक्ति संसार में अपनी मां के गर्भ से खाली हाथ आता हैं और जब उस व्यक्ति की मृत्यु होती है तो वह बिना कुछ अपने साथ लिए सब यहीं छोड़ चला जाता हैं। वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये वह कठिन परिश्रम करता है। किन्तु जब वह मरता है तो अपने साथ कुछ नहीं ले जा पाता। [16]यह बड़े दुःख की बात हैं। यह संसार उसे उसी प्रकार छोड़ना होता है जिस प्रकार वह आया था। इसलिए "हवा को पकड़ने की कोशिश" करने से किसी व्यक्ति के हाथ क्या लगता है? [17]उसे यदि कुछ मिलता है तो वह है दुःख और शोक से भरे हुए दिन। सो आखिरकार वह हताश, रोगी और चिड़चिड़ा हो जाता है!

अपने जीवन के कर्म का रस लो

[18]मैंने तो यह देखा है कि मनुष्य जो कर सकता है उसमें सबसे उत्तम यह है—एक व्यक्ति को चाहिये कि वह खाए-पीए और जिस काम को वह इस धरती पर अपने छोटे से जीवन के दौरान करता है उसका आनन्द ले। परमेश्वर ने ये थोड़े से दिन दिए हैं और बस यही तो उसके पास है।

[19]यदि परमेश्वर किसी को धन, सम्पत्ति, और उन वस्तुओं का आनन्द लेने की शक्ति देता है तो उस व्यक्ति को उनका आनन्द लेना चाहिए। उस व्यक्ति को जो कुछ उसके पास है उसे स्वीकार करना चाहिए और अपने काम को जो परमेश्वर की ओर से एक उपहार है उसका रस लेना चाहिए। [20]सो ऐसा व्यक्ति कभी यह सोचता ही नहीं कि जीवन कितना छोटा सा है। क्योंकि परमेश्वर उस व्यक्ति को उन कामों में ही लगाये रखता है, जिन कामों के करने में उस व्यक्ति की रूचि होती है।

धन से प्रसन्नता नहीं मिलती

6 मैंने जीवन में एक और बात देखी है जो ठीक नहीं हैं। यह समझना बहुत कठिन है कि [2]परमेश्वर किसी व्यक्ति को बहुत सा धन देता है, सम्पत्तियाँ देता है और आदर देता है। उस व्यक्ति के पास उसकी आवश्यकता की वस्तु होती है और जो कुछ भी वह चाह सकता है वह भी होता है। किन्तु परमेश्वर उस व्यक्ति को उन वस्तुओं का भोग नहीं करने देता। तभी कोई अजनबी आता है और उन सभी वस्तुओं को छीन लेता है। यह एक बहुत बुरी और व्यर्थ बात है।

[3]कोई व्यक्ति बहुत दिनों तक जीता है और हो सकता है उसके सौ बच्चे हो जाये। किन्तु यदि वह व्यक्ति उन अच्छी वस्तुओं से सन्तुष्ट नहीं होता और यदि उसकी मृत्यु के बाद कोई उसे याद नहीं करता तो मैं कहता हूँ कि [4]उस व्यक्ति से तो वह बच्चा ही अच्छा है जो जन्म लेते ही मर जाता हैं। उस बच्चे को कोई नाम नहीं दिया जाता और तत्काल ही उसे एक अँधेरी कब्र में दफना दिया जाता है। [5]उस बच्चे ने कभी सूरज तो देखा ही नहीं। उस बच्चे ने कभी कुछ नहीं जाना किन्तु उस व्यक्ति की किस्मत जिसने परमेश्वर की दी हुई वस्तुओं का कभी आनन्द नहीं लिया, उस बच्चे को अधिक चैन मिलता है। [6]वह व्यक्ति चाहे दो हजार वर्ष जिए किन्तु वह जीवन का

आनन्द नहीं उठाता तो वह बच्चा जो मरा ही पैदा हुआ हो, उस एक जैसे अंत अर्थात् मृत्यु को आसानी से पाता है।

[7]एक व्यक्ति निरन्तर काम करता ही रहता है क्यों? क्योंकि उसे अपनी इच्छाएं पूरी करनी है। किन्तु वह सन्तुष्ट तो कभी नहीं होता। [8]इस प्रकार से एक बुद्धिमान व्यक्ति भी एक मूर्ख मनुष्य से किसी प्रकार उत्तम नहीं है। ऐसे दीन हीन मनुष्य होने का भी क्या फायदा हो सकता। [9]वे वस्तुएँ जो तुम्हारे पास है, उनमें सन्तोष करना अच्छा है बजाय इसके कि और लगन लगी रहे। सदा अधिक की कामना करते रहना निरर्थक है। यह वैसे ही है जैसे वायु को पकड़ने का प्रयत्न करना।

[10–11]जो कुछ घट रहा है उसकी योजना बहुत पहले बन चुकी होती है। एक व्यक्ति बस वैसा ही होता है जैसा होने के लिए उसे बनाया गया है। हर कोई जानता है कि लोग कैसे होते हैं। सो इस विषय में परमेश्वर से तर्क करना बेकार हैं क्योंकि परमेश्वर किसी भी व्यक्ति से अधिक शक्तिशाली है।

[12]कौन जानता है कि इस धरती पर मनुष्य के छोटे से जीवन में उसके लिए सबसे अच्छा क्या है? उसका जीवन तो छाया के समान ढल जाता है। बाद में क्या होगा कोई नहीं बता सकता।

सूक्ति संग्रह

7 सुयश, अच्छी सुगन्ध से उत्तम है।
वह दिन जन्म के दिन से सदा उत्तम है
जब व्यक्ति मरता है।
उत्तम है वह दिन व्यक्ति जब मरता हैं।
2 उत्सव में जाने से जाना गर्मी में, सदा
उत्तम हुआ करता है।
क्योंकि सभी लोगों की मृत्यु तो निश्चित हैं।
हर जीवित व्यक्ति को सोचना चाहिए इसे।
3 हंसी के ठहाके से शोक उत्तम है।
क्योंकि जब हमारें मुख पर उदासी का वास
होता है, तो हमारे हृदय शुद्ध होते है।।
4 विवेकी मनुष्य तो सोचता है मृत्यु की
किन्तु मूर्ख जन तो बस सोचते रहते हैं
कि गुजरे समय अच्छा।
5 विवेकी से निन्दित होना उत्तम होता है,
अपेक्षाकृत इसके कि मूर्ख से प्रशंसित हो।
6 मूर्ख का ठहाका तो बेकार होता है।
यह वैसे ही होता है
जैसे कोई काँटो को नीचे जलाकर पात्र तपाये।
7 लोगों को सताकर लिया हुआ धन विवेकी को भी
मूर्ख बना देता है, और घूस में मिला धन
उसकी मति को हर लेता है।
8 बात को शुरु करने से अच्छा
उसका अन्त करना है।
उत्तम है नम्रता और धैर्य धीरज के खोने
और अंहकार से।
9 क्रोध में जल्दी से मत आओ
क्योंकि क्रोध में आना मूर्खता है।
10 मत कहो,
"बीते दिनों में जीवन अच्छा क्यों था?"
विवेकी हमें यह प्रश्न पूछनें को
प्ररित नही करता है।
विवेकी हमें प्रेरित नहीं करता है पूछने यह प्रश्न।

[11]जैसे उत्तराधिकार में सम्पत्ति का प्राप्त करना अच्छा है वैसे ही बुद्धि को पाना भी उत्तम है। जीवन के लिए यह लाभदायक है। [12]धन के समान बुद्धि भी रक्षा करती है। बुद्धि के ज्ञान का लाभ यह है कि यह विवेकी जन को जीवित रखता है।

[13]परमेश्वर की रचना को देखो। देखो तुम एक बात भी बदल नहीं सकते। चाहे तुम यही क्यों न सोचो कि वह गलत है। [14]जब जीवन उत्तम है तो उसका रस लो किन्तु जब जीवन कठिन है तो याद रखो कि परमेश्वर हमें कठिन समय देता है और अच्छा समय भी देता है और कल क्या होगा यह तो कोई भी नहीं जानता।

लोग सचमुच अच्छे नहीं हो सकते

[15]अपने छोटे से जीवन में मैंने सब कुछ देखा है। मैंने देखा है अच्छे लोग जवानी में ही मर जाते हैं। मैंने देखा है कि बुरे लोग लम्बी आयु तक जीते रहते हैं। [16–17]सो अपने को हलकान क्यों करते हो? न तो बहुत अधिक धर्मी बनो और न ही बुद्धिमान अन्यथा तुम्हें ऐसी बातें देखने को मिलेगी जो तुम्हें आघात पहुँचाएगी न तो बहुत अधिक दुष्ट बनो और न ही मूर्ख अन्यथा समय से पहले ही तुम मर जाओगे।

[18]थोड़ा यह बनों और थोड़ा वह।[6]यहाँ तक कि परमेश्वर के अनुयायी भी कुछ अच्छा करेंगे तो बुरा भी। [19-20]निश्चय ही इस धरती पर कोई ऐसा अच्छा व्यक्ति नहीं है जो सदा अच्छा ही अच्छा करता है और बुरा कभी नहीं करता।

बुद्धि व्यक्ति को शक्ति देती है। किसी नगर के दस मूर्ख मुखियाओं से एक साधारण बुद्धिमान पुरुष अधिक शक्तिशाली होता है।

[21]लोग जो बातें कहते रहते हैं उन सब पर कान मत दो। हो सकता है तुम अपने सेवक को ही तुम्हारे विषय में बुरी बातें कहते सुनो [22]और तुम जानते हो कि तुमने भी अनेक अवसरों पर दूसरों के बारे में बुरी बातें कही हैं।

[23]इन सब बातों के बारे में मैंने अपनी बुद्धि और विचारों का प्रयोग किया है। मैंने सच्चे अर्थ में बुद्धिमान बनना चाहा है। किन्तु यह तो असम्भव था। [24]मैं समझ नहीं पाता कि बातें वैसी क्यों है जैसी वे हैं। किसी के लिये भी यह समझना बहुत मुश्किल है। [25]मैंने अध्ययन किया और सच्ची बुद्धि को पाने के लिये बहुत कठिन प्रयत्न किया। मैंने हर वस्तु का कोई हेतु ढूँढने का प्रयास किया किन्तु मैंने जाना क्या? मैंने जाना कि बुरा होना बेवकूफी है और मूर्ख व्यक्ति का सा आचरण करना पागलपन हैं।

[26]मैंने यह भी पाया कि कुछ स्त्रियाँ एक फन्दे के समान खतरनाक होती हैं। उनके हृदय जाल के जैसे होते हैं और उनकी बाहें जंजीरों की तरह होती हैं। इन स्त्रियों की पकड़ में आना मौत की पकड़ में आने से भी बुरा हैं। वे लोग जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, ऐसी स्त्रियों से बच निकलते हैं किन्तु वे लोग जो परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं उनके द्वारा फाँस लिये जाते हैं।

[27-28]गुरू का कहना है, "इन सभी बातों को एक साथ इकट्ठी करके मैंने सामने रखा, यह देखने के लिये कि मैं क्या उत्तर पा सकता हूँ? उत्तरों की खोज में तो मैं आज तक हूँ। किन्तु मैंने इतना तो पा ही लिया है कि हजारों में कोई एक अच्छा पुरुष तो मुझे मिला भी किन्तु अच्छी स्त्री तो कोई एक भी नहीं मिली।

[29]"एक बात और जो मुझे पता चली है। परमेश्वर ने तो लोगों को नेक ही बनाया था किन्तु लोगों ने बुराई के अनेकों रास्ते ढूँढ लिये।"

बुद्धि और शक्ति

8 वस्तुओं को जिस प्रकार एक बुद्धिमान व्यक्ति समझ सकता है और उनकी व्याख्या कर सकता है, वैसे कोई भी नहीं कर सकता। उसकी बुद्धि उसे प्रसन्न रखती है। बुद्धि एक दुःखी मुख को प्रसन्न मुख में बदल देती है।

[2]मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हें सदा ही राजा की आज्ञा माननी चाहिये। ऐसा इसलिए करो क्योंकि तुमने परमेश्वर को वचन दिया था। [3]राजा के आगे जल्दी मत करो। उसके सामने से हट जाओ। यदि हालात प्रतिकूल हो तो उसके ईर्द–गिर्द मत रहो क्योंकि वह तो वही करेगा जो उसे अच्छा लगेगा। [4]आज्ञाएँ देने का राजा को अधिकार हैं, कोई नहीं पूछ सकता कि वह क्या कर रहा है। [5]यदि राजाज्ञा का पालन करता है तो वह सुरक्षित रहेगा। किन्तु एक बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा करने का उचित समय जानता है और वह यह भी जानता है कि समुचित बात कब करनी चाहिए।

[6]उचित कार्य करने का किसी व्यक्ति के लिए एक ठीक समय होता है और एक ठीक प्रकार। प्रत्येक व्यक्ति को एक अवसर लेना चाहिये और उसे निश्चित करना चाहिए कि उसे क्या करना है? और फिर अनेक विपत्तियों के होने पर भी उसे वह करना चाहिये। [7]आगे चलकर क्या होगा, यह निश्चित नहीं होने पर भी उसे वह करना चाहिये। क्योंकि भविष्य में क्या होगा यह तो उसे कोई बता ही नहीं सकता।

[8]आत्मा को इस देह को छोड़कर जाने से कोई नहीं रोके रख सकता है। अपनी मृत्यु को रोक दें, ऐसी शक्ति तो किसी भी व्यक्ति में नहीं है। जब युद्ध चल रहा हो तो किसी भी सैनिक को यह स्वतन्त्रता नहीं है कि वह जहाँ चाहे वहाँ चला जाये। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति पाप करता है तो वह पाप उस व्यक्ति को स्वतंन्त्र नहीं रहने देता।

[9]मैंने ये सब बातें देखी हैं। इस जगत में जो कुछ घटता है उन बातों के बारे में मैंने बड़ी तीव्रता से सोचा है और मैंने देखा है कि लोग दूसरे व्यक्तियों पर शासन करने की शक्ति पाने के लिये सदा संघर्ष करते रहते हैं और लोगों को कष्ट पहुँचाते रहते हैं।

[10]मैंने उन बुरे व्यक्तियों के बहुत सजे धजे और विशाल शव–यात्रायें देखी हैं जो पवित्र स्थानों में आया जाया करते थे। शव–यात्राओं की क्रियाओं के बाद लोग जब घर लौटते हैं तो वे जो बुरा व्यक्ति मर चुका है उसके बारे में

अच्छी अच्छी बातें कहा करते हैं और ऐसा उसी नगर में हुआ करता है जहाँ उस बुरे व्यक्ति ने बहुत बहुत से बुरे काम किये हैं। यह अर्थहीन हैं।

न्याय प्रतिदान और दण्ड

[11]कभी कभी लोगों ने जो बुरे काम किये है, उनके लिये उन्हें तुरतं दण्ड नहीं मिलता। उन पर दण्ड धीरे धीरे पड़ता है और इसके कारण दूसरे लोग भी बुरे कर्म करना चाहने लगते हैं।

[12]कोई पापी चाहे सैकड़ों पाप करे और चाहे उसकी आयु कितनी ही लम्बी हो किन्तु मैं यह जानता हूँ कि तो भी परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना और उसका सम्मान करना उत्तम है। [13]बुरे लोग परमेश्वर का सम्मान नहीं करते। सो ऐसे लोग वास्तव में अच्छी वस्तुओं को प्राप्त नहीं करते। वे बुरे लोग अधिक समय तक जीवित नहीं रहेंगे। उनके जीवन डूबते सूरज में लम्बी से लम्बी होती जाती छायाओं के समान बड़े नहीं होंगे।

[14]इस धरती पर एक बात और होती है जो मुझे न्याय संगत नहीं लगती। बुरे लोगों के साथ बुरी बातें घटनी चाहियें और अच्छे लोगों के साथ अच्छी बातें। किन्तु कभी कभी अच्छे लोगों के साथ बुरी बातें घटती है और बुरे लोगों के साथ अच्छी बातें। यह तो न्याय नहीं है। [15]सो मैंने निश्चय किया कि जीवन का आनन्द लेना अधिक महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि इस जीवन में एक व्यक्ति जो सबसे अच्छी बात कर सकता है वह है खाना, पीना और जीवन का रस लेना। इससे कम से कम व्यक्ति को इस धरती पर उसके जीवन के दौरान परमेश्वर ने करने के लिये जो कठिन काम दिया है उसका आनन्द लेने में सहायता मिलेगी।

[16]इस जीवन में लोग जो कुछ करते हैं उसका मैंने बड़े ध्यान के साथ अध्ययन किया है। मैंने देखा हैं कि लोग कितने व्यस्त हैं। वे प्राय: बिना सोए रात दिन काम में लगे रहते हैं। [17]परमेश्वर जो करता है उन बहुत सी बातों को भी मैंने देखा है कि इस धरती पर परमेश्वर जो कुछ करता है, लोग उसे समझ नहीं सकते। उसे समझने के लिये मनुष्य बार बार प्रयत्न करता है। किन्तु फिर भी समझ नहीं पाता। यदि कोई बुद्धिमान व्यक्ति भी यह कहे कि वह परमेश्वर के कामों को समझता है तो यह भी सत्य नहीं है। उन सब बातों को तो कोई भी व्यक्ति समझ ही नहीं सकता।

क्या मृत्यु उचित है?

9 मैंने इन सभी बातों के बारे में बड़े ध्यान से सोचा है और देखा है कि अच्छे और बुद्धिमान लोगों के साथ जो घटित होता है और वे जो काम करते हैं उनका नियन्त्रण परमेश्वर करता है। लोग नहीं जानते कि उन्हें प्रेम मिलेगा या घृणा और लोग नहीं जानते हैं कि कल क्या होने वाला हैं।

[2]किन्तु, एक बात ऐसी है जो हम सब के साथ घटती है–हम सभी मरते हैं! मृत्यु अच्छे लोगों को भी आती है और बुरे लोगों को भी। पवित्र लोगों को भी मृत्यु आती है और जो पवित्र नहीं है, वे भी मरते हैं। लोग जो बलियाँ चढ़ाते हैं, वे भी मरते हैं, और वे भी जो बलियाँ नहीं चढ़ाते हैं। धर्मी जन भी वैसे ही मरता है, जैसे एक पापी। वह व्यक्ति जो परमेश्वर को विशेष वचन देता है, वह भी वैसे ही मरता है जैसे वह व्यक्ति जो उन वचनों को देने से घबराता है।

[3]इस जीवन में जो भी कुछ घटित होता है उसमें सबसे बुरी बात यह है कि सभी लोगों को अंत एक ही तरह से होता है। साथ ही यह भी बहुत बुरी बात है कि लोग जीवन भर सदा ही बुरे और मूर्खतापूर्ण विचारों में पड़े रहते हैं और अन्त में मर जाते हैं। [4]हर उस व्यक्ति के लिये जो अभी जीवित है, एक आशा बची है। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि वह कौन है? यह कहावत सच्ची है:

"किसी मरे हुए सिंह से एक जीवित कुता अच्छा है।"

[5]जीवित लोग जानते हैं कि उन्हें मरना है। किन्तु मरे हुए तो कुछ भी नहीं जानते। मरे हुओं को कोई और प्रतिदान नहीं मिलता। लोग उन्हें जल्दी ही भूल जाते हैं। [6]किसी व्यक्ति के मर जाने के बाद उसका प्रेम, घृणा और ईर्ष्या सब समाप्त हो जाते हैं। मरा हुआ व्यक्ति संसार में जो कुछ हो रहा है, उसमें कभी हिस्सा नहीं बँटाता।

जीवन का आनन्द लो जबकि तुम ले सकते हो

[7]सो अब तुम जाओ और अपना खाना खाओ और उसका आनन्द लो। अपना दाखमधु पिओ और खुश रहो। यदि तुम ये बातें करते हो तो ये बाते परमेश्वर से समर्थित है। [8]उत्तम वस्त्र पहनो और सुन्दर दिखो। [9]जिस पत्नी को तुम प्रेम करते हो उसके साथ जीवन का भोग करो। अपने छोटे से जीवन के प्रत्येक दिन का आनन्द लो। [10]हर समय करने के लिये तुम्हारे पास काम है। इसे तुम जितनी

उत्तमता से कर सकते हो करो। कब्र में तो कोई काम होगा ही नहीं। वहाँ न तो चिन्तन होगा, न ज्ञान और न विवेक और मृत्यु के उस स्थान को हम सभी तो जा रहे हैं।

सौभाग्य? दुर्भाग्य? हम कर क्या सकते हैं?

[11]मैंने इस जीवन में कुछ और बातें भी देखी हैं जो न्याय संगत नहीं हैं। सबसे अधिक तेज दौड़ने वाला सदा ही दौड़ में नहीं जीतता, शक्तिशाली सेना ही युद्ध में सदा नहीं जीतती। सबसे अधिक बुद्धिमान व्यक्ति ही सदा अर्जित किये को नहीं खाता। सबसे अधिक चुस्त व्यक्ति ही सदा धन दौलत हासिल नहीं करता है और एक पढ़ा लिखा व्यक्ति ही सदा वैसी प्रशंसा प्राप्त नहीं करता जैसी प्रशंसा के वह योग्य है। जब समय आता हैं तो हर किसी के साथ बुरी बातें घट जाती हैं!

[12]कोई भी व्यक्ति यह नहीं जानता है कि इसके बाद उसके साथ क्या होने वाला है। वह जाल में फँसी उस मछली के समान होता है जो यह नहीं जानती कि आगे क्या होगा। वह उस जाल में फँसी चिड़िया के समान होता है जो यह नहीं जानती कि क्या होने वाला है? इसी प्रकार एक व्यक्ति उन बुरी बातों में फाँस लिया जाता है जो उसके साथ घटती हैं।

विवेक की शक्ति

[13]इस जीवन में मैंने एक व्यक्ति को एक विवेकपूर्ण कार्य करते देखा है और मुझे यह बहुत महत्वपूर्ण लगा है। [14]एक छोटा सा नगर हुआ करता था। उसमें थोड़े से लोग रहा करते थे। एक बहुत बड़े राजा ने उसके विरुद्ध युद्ध किया और नगर के चारों ओर अपनी सेना लगा दी। [15]उसी नगर में एक बुद्धिमान पुरुष रहता था। वह बहुत निर्धन था। किन्तु उसने उस नगर को बचाने के लिये अपनी बुद्धि का उपयोग किया। जब नगर की विपत्ति टल गयी और सब कुछ समाप्त हो गया तो लोगों ने उस गरीब व्यक्ति को भुला दिया। [16]किन्तु मेरा कहना है कि बल से बुद्धि श्रेष्ठ है। यद्यपि लोग उस गरीब व्यक्ति की बुद्धि के बारे में भूल गये और जो कुछ उसने कहा था, उस पर भी उन लोगों ने कान देना बन्द कर दिया। किन्तु मेरा तो अभी भी यही विश्वास है कि बुद्धि ही श्रेष्ठ होतीहै।

[17]धीरे से बोले गये, विवेकी के थोड़े से शब्द
अधिक उत्तम होते है, अपेक्षाकृत
उन ऐसे शब्दों को
जिन्हें मूर्ख शासक ऊँची आवाज में बोलता है।
[18] बुद्धि, उन भोलों से और ऐसी तलवारों से उत्तम है
जो युद्ध में काम आते हैं।
बुद्धिहीन व्यक्ति, बहुत सी
उत्तम बातें नष्ट कर सकता है।

10 कुछ मरी हुई मक्खियाँ सर्वोत्तम सुगंध तक को दुर्गंधित कर सकती हैं। इसी प्रकार छोटी सी मूर्खता से समूची बुद्धि और प्रतिष्ठा नष्ट हो सकती है।

[2]बुद्धिमान के विचार उसे उचित मार्ग पर ले चलाते हैं। किन्तु मूर्ख के विचार उसे बुरे रास्ते पर ले जाते हैं। [3]मूर्ख जब रास्ते में चलता हुआ होता है तो उसके चलने मात्र से उसकी मूर्खता व्यक्त होती हैं। जिससे हर व्यक्ति देख लेता है कि वह मूर्ख हैं।

[4]तुम्हारा अधिकारी तुमसे रुष्ट है, बस इसी कारण से अपना काम कभी मत छोड़ो। यदि तुम शांत और सहायक बने रहो तो तुम बड़ी से बड़ी गलतियों को सुधार सकते हो।

[5]और देखो यह बात कुछ अलग ही है जिसे मैंने इस जीवन में देखा है। यह बात न्यायोचित भी नहीं है। यह वैसी भूल है जैसी शासक किया करते हैं। [6]मूर्ख व्यक्तियों को महत्वपूर्ण पद दे दिये जाते हैं और सम्पन्न व्यक्ति ऐसे कामों को प्राप्त करते है जिनका कोई महत्व नहीं होता। [7]मैंने ऐसे व्यक्ति देखे हैं जिन्हें दास होना चाहिए था। किन्तु वह घोड़ों पर चढ़े रहते हैं। जबकि वे व्यक्ति जिन्हें शासक होना चाहिये था, दासों के समान उनके आगे पीछे घूमते रहते हैं।

हर काम के अपने खतरे हैं

[8]वह व्यक्ति जो कोई गढ़ा खोदता है उसमें गिर भी सकता है। वह व्यक्ति जो किसी दीवार को गिराता है, उसे साँप डस भी सकता हैं। [9]एक व्यक्ति जो बड़े–बड़े पत्थरों को धकेलता है, उनसे चोट भी खा सकता है और वह व्यक्ति जो पेड़ों को काटता है, उसके लिए यह खतरा भी बना रहता है कि पेड़ उसके उपर ही न गिर जायें।

[10]किन्तु बुद्धि के कारण हर काम आसान हो जाता है। भोंटे, बेधार चाकू से काटना बहुत कठिन होता हैं किन्तु यदि वह अपना चाकू पैना कर ले तो काम आसान हो जाता है। बुद्धि इसी प्रकार की है।

[11]कोई व्यक्ति यह जानता है कि सांपों को वश में कैसे किया जाता है किन्तु जब वह व्यक्ति आस पास नहीं है और साँप किसी को काट लेता है तो वह बुद्धि बेकार हो जाती है। बुद्धि इसी प्रकार की है।

[12] बुद्धिमान के शब्द प्रशंसा दिलाते हैं।
किन्तु मूर्ख के शब्दों से विनाश होता है।

[13]एक मूर्ख व्यक्ति मूर्खतापूर्ण बातें कहकर ही शुरुआत करता है। और अंत में वह पागलपन से भरी हुई स्वयं को ही हानि पहुँचाने वाली बातें कहता है। [14]एक मूर्ख व्यक्ति हर समय जो उसे करना होता है, उसी की बातें करता रहता है। किन्तु भविष्य में क्या होगा यह तो कोई नहीं जानता। भविष्य में क्या होने जा रहा है, यह तो कोई बता ही नहीं सकता।

[15] मूर्ख इतना चतुर नहीं कि
अपने घर का मार्ग पा जाये।
इसलिए उसको तो जीवन भर
कठोर काम करना है।

कर्म का मूल्य

[16]किसी देश के लिये यह बहुत बुरा है कि उसका राजा किसी बच्चे जैसा हो और किसी देश के लिये यह बहुत बुरा है कि उसके अधिकारी अपना सारा समय खाने में ही गुजारते हों। [17]किन्तु किसी देश के लिये यह बहुत अच्छा है कि उसका राजा किसी उत्तम वंश का हो। किसी देश के लिये यह बहुत उत्तम है कि उसके अधिकारी अपने खाने और पीने पर नियन्त्रण रखते हैं। वे अधिकारी बलशाली होने के लिये खाते पीते हैं न कि मतवाले हो जाने के लिये।

[18] यदि कोई व्यक्ति काम करने में बहुत सुस्त है,
तो उसका घर टपकना शुरु कर देगा और
उसके घर की छत गिरने लगेगी।

[19]लोग भोजन का आनन्द लेते हैं और दाखमधु जीवन को और अधिक खुशियों से भर देती हैं। किन्तु धन के चक्कर में सभी पड़े रहते हैं।

निन्दा पूर्ण बातें

[20]राजा के विषय में बुरी बातें मत करो। उसके बारे में बुरी बातें सोचो तक मत। सम्पन्न व्यक्तियों के विषय में भी बुरी बातें मत करो। चाहे तुम अपने घर में अकेले ही क्यों न हो। क्योंकि हो सकता है कि कोई एक छोटी सी चिड़ियाँ उड़कर तुमने जो कुछ कहा है, वह हर बात उन्हें बता दे।

निर्भीक होकर भविष्य का सामना करो

11 तुम जहाँ भी जाओ, वहाँ उत्तम कार्य करो। थोड़े समय बाद तुम्हारे उत्तम कार्य वापस लौट कर तुम्हारे पास आएंगे।

[2]जो कुछ तुम्हारे पास है उसका कुछ भाग सात आठ लोगों को दे दो। तुम जान ही नहीं सकते कि इस धरती पर कब क्या बुरा घट जाएं?

[3]कुछ बातें ऐसी हैं जिनके बारे में तुम निश्चित हो सकते हो। जैसे बादल वर्षा से भरे है तो वे धरती पर पानी बरसाएंगे ही। यदि कोई पेड़ गिरता है चाहे दाहिनी तरफ गिरे, चाहे बायीं तरफ गिरता है। वह वहीं पड़ा रहेगा जहाँ वह गिरा है।

[4]किन्तु कुछ बातें ऐसी होती हैं जिनके बारे में तुम निश्चित नहीं हो सकते। फिर भी तुम्हें एक अवसर तो लेना ही चाहिए। जैसे यदि कोई व्यक्ति पूरी तरह से उत्तम मौसम का इंतजार करता रहता है तो वह अपने बीज बो ही नहीं सकता है और इसी तरह कोई व्यक्ति इस बात से डरता रहता है कि हर बादल बरसेगा ही तो वह अपनी फसल कभी नहीं काट सकेगा।

[5]हवा का रूख कहाँ होगा तुम नहीं जान सकते। तुम नहीं जानते कि मां के गर्भ में बच्चा प्राण कैसे पाता है? इसी प्रकार तुम यह भी नहीं जान सकते कि परमेश्वर क्या करेगा? सबकुछ को घटित करने वाला तो वही है।

[6]इसलिए सुबह होते ही रूपाई शुरु कर दो और दिन ढले तक काम मत रोको। क्योंकि तुम नहीं जानते कि कौन सी बात तुम्हें धनवान बना देगी। हो सकता है तुम जो कुछ करो सब में सफल हो।

[7]जीवित रहना उत्तम है। सूर्य का प्रकाश देखना अच्छा है। [8]तुम्हें अपने जीवन के हर दिन का आनन्द उठाना चाहिये! तुम चाहे कितनी ही लम्बी आयु पाओ। पर याद रखना कि तुम्हें मरना है और तुम जितने समय तक जिए हो उससे कहीं अधिक समय तक तुम्हें मृत रहना है और मर जाने के बाद तो तुम कुछ कर नहीं सकते।

युवावस्था में ही परमेश्वर की सेवा करो

[9]सो हे युवको! जब तक तुम जवान हो, आनन्द मनाओ। प्रसन्न रहो! और जो तुम्हारा मन चाहे, वही करो। जो तुम्हारी इच्छा हो वह करो। किन्तु याद रखों तुम्हारे प्रत्येक कार्य के लिए परमेश्वर तुम्हारा न्याय करेगा। [10]क्रोध को स्वयं पर काबू मत पाने दो और अपने शरीर को भी कष्ट मत दो। तुम अधिक समय तक जवान नहीं बने रहोगे।

बुढ़ापे की समस्याएँ

12 बचपन से ही अपने बनाने वाले का स्मरण करो। इससे पहले कि बुढ़ापे के बुरे दिन तुम्हें आ घेरें। पहले इसके कि तुम्हें यह कहना पड़े कि "हाय, मैं जीवन का रस नहीं ले सका।"

[2]बचपन से ही अफने बनाने वाले का समरण कर। जब तुम बुढ़े होंगे तो सूर्य चन्द्रमा और सितारों की रोशनी तुम्हें अंधेरी लगेंगीं। तुम्हारा जीवन विपत्तियों से भर जाएगा। ये विपत्तियाँ उन बादलों की तरह ही होंगीं जो आकाश में वर्षा करते हैं और फिर कभी नहीं छँटते।

[3]उस समय तुम्हारी बलशाली भुजाएं निर्बल हो जायेंगी। तुम्हारे सुदृढ़ पैर कमजोर हो जायेंगे और तुम अपना खाना तक चबा नहीं सकोगे। आँखों से साफ दिखाई तक नहीं देगा। [4]तुम बहरे हो जाओगे। बाजार का शोर भी तुम सुन नहीं पाओगे। चलती चक्की भी तुम्हें बहुत शांत दिखाई देगी। तुम बड़ी मुश्किल से लोगों को गाते सुन पाओगे। तुम्हें अच्छी नींद तो आएगी ही नहीं। जिससे चिड़ियाँ की चहचहाहट भोर के तड़के ही तुम्हें जगा देगी।

[5]चढ़ाई वाले स्थानों से तुम डरने लगोगे। रास्तें की हर छोटी से छोटी वस्तु से तुम डरने लगोगे कि तुम कहीं उस पर लड़खड़ा न जाओ। तुम्हारे बाल बादाम के फूलों के जैसे सफेद हो जायेंगे। तुम जब चलोगे तो उस प्रकार घिसटते चलोगे जैसे कोई टिड्डा हो। तुम इतने बूढ़े हो जाओगे कि तुम्हारी भूख जाती रहेगी। फिर तुम्हें अपने नए घर यानि कब्र में नित्य निवास के लिये जाना होगा और तुम्हारी मुर्दनी में शामिल लोगों की भीड़ से गलियाँ भर जायेगीं।

मृत्यु

[6] अभी जब तू युवा है, अपने बनानेवालें को याद रख।
इसके पहले कि चांदी की जीवन डोर टूट
जाये और सोने का पात्र टूटकर बिखर जाये।
इसके पहले कि तेरा जीवन बेकार हो जाये
जैसे किसी कुएँ पर पात्र टूट पड़ा हो।
इसके पहले कि तेरा जीवन बेकार हो जाये
ऐसे, जैसे टूटा पत्थर जो किसी को ढ़कता है
और उसी में टूटकर गिर जाता है।

[7] तेरी देह मिट्टी से उपजी है और जब मृत्यु होगा
तो तेरी वह देह वापस मिट्टी हो जायेगी।
किन्तु यह प्राण तेरा परमेश्वर से आया है और
जब तू मरेगा, तेरा यह प्राण वापस
परमेश्वर के पास जायेगा।

[8]सब कुछ बेकार है, उपदेशक कहता है कि सबकुछ व्यर्थ है!

निष्कर्ष

[9]उपदेशक बहुत बुद्धिमान था। वह लोगों को शिक्षा देने में अपनी बुद्धि का प्रयोग किया करता था। उपदेशक ने बड़ी सावधानी के साथ अध्ययन किया और अनेक सूक्तियों को व्यवस्थित किया। [10]उपदेशक ने उचित शब्दों के वचन के लिये कठिन परिश्रम किया और उसने उन शिक्षाओं को लिखा जो सच्ची है और जिन पर भरोसा किया जा सकता है।

[11]विवेकी पुरुषों के वचन उन नुकीली छड़ियों के जैसे होते हैं जिनका उपयोग पशुओं को उचित मार्ग पर चलाने के लिये किया जाता हैं। ये उपदेशक उन मज़बूत खूंटों के समान होते हैं जो कभी टूटते नहीं। जीवन का उचित मार्ग दिखाने के लिये तुम इन उपदेशकों पर विश्वास कर सकते हो। वे सभी विवेक पूर्ण शिक्षायें उसी गड़रिये (परमेश्वर) से आतीं हैं। [12]सो पुत्र! एक चेतावनी और लोग तो सदा पुस्तकें लिखते ही रहते हैं। बहुत ज्यादा अध्ययन तुझे बहुत थका देगा।

[13-14]इस सबकुछ को सुन लेने के बाद अब एक अन्तिम बात यह बतानी है कि परमेश्वर का आदर करो और उसके आदेशों पर चलो क्योंकि यह नियम हर व्यक्ति पर लागू होता है। क्योंकि लोग जो करते हैं, उसे यहाँ तक कि उनकी छिपी से छिपी बातों को भी परमेश्वर जानता है। वह उनकी सभी अच्छी बातों और बुरी बातों के विषय में जानता है। मनुष्य जो कुछ भी करते हैं उस प्रत्येक कर्म का वह न्याय करेगा।

श्रेष्ठगीत

1 सुलैमान का श्रेष्ठगीत।

प्रेमिका का अपने प्रेमी के प्रति

2 तू मुझ को अपने मुख के चुम्बनों से ढक ले।
क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से भी उत्तम है।
3 तेरा नाम मूल्यवान इत्र से उत्तम है,
और तेरी गंध अद्भुत है।
इसलिए कुमारियाँ तुझ से प्रेम करती हैं।
4 हे मेरे राजा तू मुझे अपने संग ले ले!
और हम कहीं दूर भाग चलें!
राजा मुझे अपने कमरे में ले गया।

पुरुष के प्रति यरूशलेम की स्त्रियाँ

हम तुझ में आनन्दित और मगन रहेंगे।
हम तेरी बड़ाई करते हैं।
क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है।
इसलिए कुमारियाँ तुझ से प्रेम करती है।

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

5 हे यरुशलेम की पुत्रियों,
मैं काली हूँ किन्तु सुन्दर हूँ।
मैं तैमान और सलमा के तम्बूओं के
जैसे काली हूँ।
6 मुझे मत घूर कि मैं कितनी साँवली हूँ।
सूरज ने मुझे कितना काला कर दिया है।
मेरे भाई मुझ से क्रोधित थे।
इसलिए दाख के बगीचों की रखवाली करायी।
इसलिए मैं अपना ध्यान नहीं रख सकी।

स्त्री का वचन पुरुष के प्रति

7 मैं तुझे अपनी पूरी आत्मा से प्रेम करती हूँ!
मेरे प्रिये मुझे बता;
तू अपनी भेड़ों को कहाँ चराता है?
दोपहर में उन्हें कहाँ बिठाया करता है?
मुझे ऐसी एक लड़की के पास नहीं होना
जो घूंघट काढ़ती है,
जब वह तेरे मित्रों की भेड़ों के पास होती है!

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

8 तू निश्चय ही जानती है कि स्त्रियों में
तू ही सुन्दर है!
जा, पीछे पीछे चली जा, जहाँ भेड़ें और
बकरी के बच्चे जाते हैं।
निज गड़रियों के तम्बूओं के पास चरा।
9 मेरी प्रिये, मेरे लिए तू उस घोड़ी से भी बहुत
अधिक उत्तेजक है जो उन घोड़ों के बीच
फिरौन के रथ को खींचा करते हैं।
वे घोड़े मुख के किनारे से
गर्दन तक सुन्दर सुसज्जित हैं।
10–11 तेरे लिये हम ने सोने के आभूषण बनाए हैं।
जिनमें चाँदी के दाने लगें हैं।
तेरे सुन्दर कपोल कितने अलंकृत हैं।
तेरी सुन्दर गर्दन मनकों से सजी हैं।

स्त्री का वचन

12 मेरे इत्र की सुगन्ध, गद्दी पर बैठे
राजा तक फैलती है।
13 मेरा प्रियतम रस गन्ध के कुप्पे सा है।
वह मेरे वक्षों के बीच सारी रात सोयेगा।
14 मेरा प्रिय मेरे लिये मेंहदी के फूलों के गुच्छों
जैसा है जो एनगदी के अंगूर के
बगीचे में फलता है।

पुरुष का वचन

15 मेरी प्रिये, तुम रमणीय हो!
ओह, तुम कितनी सुन्दर हो!
तेरी आँखे कपोतों की सी सुन्दर हैं।

स्त्री का वचन

16 हे मेरे प्रियतम, तू कितना सुन्दर है!
हाँ, तू मनमोहक है!
हमारी सेज कितनी रमणीय है!
17 कड़ियाँ जो हमारे घर को थामें हुए हैं
वह देवदारु की हैं।
कड़ियाँ जो हमारी छत को थामा हुआ है,
सनोवर की लकड़ी का है।

2 मैं शारोन के केसर के पाटल सी हूँ।
मैं घाटियों की कुमुदिनी हूँ।

पुरुष का वचन

2 हे मेरी प्रिये, अन्य युवतियों के बीच तुम
वैसी ही हो मानों काँटों के बीच कुमुदिनी हो!

स्त्री का वचन

3 मेरे प्रिय, अन्य युवकों के बीच तुम ऐसे लगते
हो जैसे जंगल के पेड़ों में कोई सेब का पेड़!

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

मुझे अपने प्रियतम की छाया में बैठना
अच्छा लगता है;
उसका फल मुझे खाने में अति मीठा लगता है।
4 मेरा प्रिय मुझको मधुशाला में ले आया;
मेरा प्रेम उसका संकल्प था।
5 मैं प्रेम की रोगी हूँ अत: मुनक्का मुझे खिलाओ
और सेबों से मुझे ताजा करो।
6 मेरे सिर के नीचे प्रियतम का बाँया हाथ है, और
उसका दाँया हाथ मेरा आलिंगन करता है।
7 यरूशलेम की कुमारियों, कुरंगों और जंगली
हिरणियों को साक्षी मान कर मुझ को वचन दो,
प्रेम को मत जगाओ, प्रेम को मत उकसाओ,
जब तक मैं तैयार न हो जाऊँ।

स्त्री ने फिर कहा

8 मैं अपने प्रियतम की आवाज सुनती हूँ।
यह पहाड़ों से उछलती हुई और
पहाड़ियों से कूदती हुई आती है।
9 मेरा प्रियतम सुन्दर कुरंग अथवा हरिण जैसा है।
देखो वह हमारी दीवार के उस पार खड़ा है,
वह झंझरी से देखते हुए खिड़कियों को
ताक रहा है।
10 मेरा प्रियतम बोला और उसने मुझसे कहा,
"उठो, मेरी प्रिये, हे मेरी सुन्दरी,
आओ कहीं दूर चलें!
11 देखो, शीत ऋतु बीत गई है,
वर्षा समाप्त हो गई और चली गई है।
12 धरती पर फूल खिलें हुए हैं।
चिड़ियों के गाने का समय आ गया है!
धरती पर कपोत की ध्वनि गुंजित है।
13 अंजीर के पेड़ों पर अंजीर पकने लगे हैं।
अंगूर की बेलें फूल रही हैं और
उनकी भीनी गन्ध फैल रही है।
मेरे प्रिय उठ, हे मेरे सुन्दर,
आओ कहीं दूर चलें!"
14 हे मेरे कपोत, जो ऊँचे चट्टानों के
गुफाओं में और पहाड़ों में छिपे हो,
मुझे अपना मुख दिखा,
मुझे अपनी ध्वनि सुना क्योंकि
तेरी ध्वनि मधुर और तेरा मुख सुन्दर है!"

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

15 जो छोटी लोमड़ियाँ दाख के बगीचों को
बिगाड़ती हैं, हमारे लिये उनको पकड़ो!
हमारे अंगूर के बगीचे अब फूल रहे हैं।
16 मेरा प्रिय मेरा है और मैं उसकी हूँ!
मेरा प्रिय अपनी भेड़ बकरियों को
कुमुदिनियों के बीच चराता है,
17 जब तक दिन नहीं ढलता है और छाया लम्बी
नहीं हो जाती है।
लौट आ, मेरे प्रिय, कुरंग सा बन
अथवा हरिण सा बेतेर के पहाड़ों पर!

स्त्री का वचन

3 हर रात अपनी सेज पर मैं अपने मन में
उसे ढूँढती हूँ।
जो पुरुष मेरा प्रिय है, मैंने उसे ढूँढा है,
किन्तु मैंने उसे नहीं पाया!
2 अब मैं उठूँगी!
मैं नगर के चारों गलियों, बाजारों में जाऊँगी।
मैं उसे ढूढूँगी जिसको मैं प्रेम करती हूँ।
मैंने वह पुरुष ढूँढा पर वह मुझे नहीं मिला!
3 मुझे नगर के पहरेदार मिले।
मैंने उनसे पूछा, "क्या तूने उस पुरुष को देखा
जिसे मैं प्यार करती हूँ?"
4 पहरेदारों से मैं अभी थोड़ी ही दूर गई कि
मुझको मेरा प्रियतम मिल गया!
मैंने उसे पकड़ लिया और
तब तक जाने नहीं दिया जब तक
मैं उसे अपनी माता के घर में न ले आई
अर्थात् उस स्त्री के कक्ष में
जिसने मुझे गर्भ में धरा था।

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

5 यरूशलेम की कुमारियों, कुरंगों और जंगली
हिरणियों को साक्षी मान कर
मुझको वचन दो, प्रेम को मत जगाओ,
प्रेम को मत उकसाओ,
जब तक मैं तैयार न हो जाऊँ।

वह और उसकी दुल्हिन

6 यह कुमारी कौन है जो मरुभूमि से लोगों की
इस बड़ी भीड़ के साथ आ रही है?
धूल उनके पीछे से यूँ उठ रही है
मानों कोई धुएँ का बादल हो।
जो धूआँ जलते हुए गन्ध रस, धूप
और अन्य गंध मसाले से निकल रही हो।
7 सुलैमान की पालकी को देखो!
उसकी यात्रा की पालकी को साठ
सैनिक घेरे हुए हैं।
इस्राएल के शक्तिशाली सैनिक!
8 वे सभी सैनिक तलवारों से सुसज्जित हैं
जो युद्ध में निपुण हैं;
हर व्यक्ति की बगल में तलवार लटकती है,
जो रात के भयानक खतरों के लिये तत्पर हैं!
9 राजा सुलैमान ने यात्रा हेतु अपने लिये
एक पालकी बनवाई है, जिसे लबानोन की
लकड़ी से बनाया गया है।
10 उसने यात्रा की पालकी के बल्लों को चाँदी से
बनाया और उसकी टेक सोने से बनायी गई।
पालकी की गद्दी को उसने बैंगनी वस्त्र से ढँका
और यह यरूशलेम की पुत्रियों के
द्वारा प्रेम से बुना गया था।
11 सिय्योन के पुत्रियों, बाहर आ कर राजा
सुलैमान को उसके मुकुट के साथ देखो
जो उसको उसकी माता ने उस दिन पहनाया था
जब वह ब्याहा गया था,
उस दिन वह बहुत प्रसन्न था!

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

4 मेरी प्रिये, तुम अति सुन्दर हो!
तुम सुन्दर हो!
घूँघट की ओट में तेरी आँखें
कपोत की आँखों जैसी सरल हैं।
तेरे केश लम्बे और लहराते हुए हैं
जैसे बकरी के बच्चे गिलाद के पहाड़ के
ऊपर से नाचते उतरते हों।
2 तेरे दाँत उन भेड़ों जैसे सफेद हैं जो अभी अभी
नहाकर के निकली हों।
वे सभी जुड़वा बच्चों को जन्म दिया करती हैं;
और उनके बच्चे नहीं मरे हैं।
3 तेरा अधर लाल रेशम के धागे सा है।
तेरा मुख सुन्दर है।
अनार के दो फाँकों की जैसी तेरे घूंघट के
नीचे तेरी कनपटियाँ हैं।
4 तेरी गर्दन लम्बी और पतली है जो खास सजावट
के लिये दाऊद की मीनार जैसी की गई।
उस की दीवारों पर हजारों छोटी छोटी
ढाल लटकती हैं।
हर एक ढाल किसी वीर योद्धा का है।
5 तेरे दो स्तन जुड़वा बाल मृग जैसे हैं,

जैसे जुड़वा कुरंग कुमुदों के बीच चरता हो।
6 मैं गंधरस के पहाड़ पर जाऊँगा और उस पहाड़ी
पर जो लोबान की है,
जब दिन अपनी अन्तिम साँस लेता है
और उसकी छाया बहुत लम्बी हो कर
छिप जाती है।
7 मेरी प्रिये, तू पूरी की पूरी सुन्दर हो।
तुझ पर कहीं कोई धब्बा नहीं है!
8 ओ मेरी दुल्हिन, लबानोन से आ,
मेरे साथ आजा।
लबानोन से मेरे साथ आजा,
अमाना की चोटी से, शनीर की ऊँचाई से,
सिंह की गुफाओं से और
चीतों के पहाड़ों से आ!
9 हे मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन,
तुम मुझे उत्तेजित करती हो।
आँखों की चितवन मात्र से और अपने कंठहार
के बस एक ही रत्न से तुमने
मेरा मन मोह लिया है।
10 मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन,
तेरा प्रेम कितना सुन्दर है!
तेरा प्रेम दाखमधु से अधिक उत्तम है;
तेरी इत्र की सुगन्ध किसी भी सुगन्ध से उत्तम है!
11 मेरी दुल्हिन, तेरे अधरों से मधु टपकता है।
तेरी वाणी में शहद और दूध की खुशबू है।
तेरे वस्त्रों की गंध इत्र जैसी मोहक है।
12 मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन, तुम ऐसी हो
जैसे किसी उपवन पर ताला लगा हो।
तुम ऐसी हो जैसे कोई रोका हुआ सोता हो
या बन्द किया झरना हो।
13 तेरे अंग उस उपवन जैसे हैं जो अनार
और मोहक फलों से भरा हो,
जिसमें मेहंदी और जटामासी के फूल भरे हों;
14 जिसमें जटामासी का, केसर, अगर
और दालचीनी का इत्र भरा हो।
जिसमें देवदार के गंधरस और अगर व उत्तम
सुगन्धित द्रव्य साथ में भरे हों।
15 तू उपवन का सोता है जिस का स्वच्छ जल
नीचे लबानोन की पहाड़ी से बहता है।

स्त्री का वचन

16 जागो, हे उत्तर की हवा!
आ, तू दक्षिण पवन! मेरे उपवन पर बह।
जिससे इस की मीठी, गन्ध चारों
ओर फैल जाये।
मेरा प्रिय मेरे उपवन में प्रवेश करे और
वह इसका मधुर फल खाये।

पुरुष का वचन

5 मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन,
मैंने अपने उपवन में अपनी सुगंध सामग्री के
साथ प्रवेश किया।
मैंने अपना रसगंध एकत्र किया है।
मैं अपना मधु छत्ता समेत खा चुका।
मैं अपना दाखमधु और अपना दूध पी चुका।

स्त्रियों का वचन प्रेमियों के प्रति

हे मित्रों, खाओ, हाँ प्रेमियों, पियो!
प्रेम के दाखमधु से मस्त हो जाओ!

स्त्री का वचन

2 मैं सोती हूँ किन्तु मेरा हृदय जागता है।
मैं अपने हृदय-धन को द्वार पर
दस्तक देते हुए सुनती हूँ।
"मेरे लिये द्वार खोलो मेरी संगिनी, ओ मेरी प्रिये!
मेरी कबूतरी, ओ मेरी निर्मल!
मेरे सिर पर ओस पड़ी है
मेरे केश रात की नमी से भीगें हैं।
3 मैंने निज वस्त्र उतार दिया है।
मैं इसे फिर से नहीं पहनना चाहती हूँ।
मैं अपने पाँव धो चुकी हूँ, फिर से
मैं इसे मैला नहीं करना चाहती हूँ।"
4 मेरे प्रियतम ने कपाट की झिरी में हाथ डाल
दिया, मुझे उसके लिये खेद है।
5 मैं अपने प्रियतम के लिये द्वार
खोलने को उठ जाती हूँ।
रसगंध मेरे हाथों से और सुगंधित रस गंध मेरी
उंगलियों से ताले के हत्थे पर टपकता है।

6 अपने प्रियतम के लिये मैंने द्वार खोल दिया,
किन्तु मेरा प्रियतम तब तक जा चुका था!
जब वह चला गया तो जैसे
मेरा प्राण निकल गया।
मैं उसे ढूँढती फिरी किन्तु मैंने उसे नहीं पाया;
मैं उसे पुकारती फिरी किन्तु उसने
मुझे उत्तर नहीं दिया!
7 नगर के पहरुओं ने मुझे पाया।
उन्होंने मुझे मारा और मुझे क्षति पहुँचायी।
नगर के परकोटे के पहरुओं ने मुझसे
मेरा दुपट्टा छीन लिया।
8 यरुशलेम की पुत्रियों, मेरी तुमसे विनती है कि
यदि तुम मेरे प्रियतम को पा जाओ तो उसको
बता देना कि मैं उसके प्रेम की भूखी हूँ।

यरुशलेम की पुत्रियों का उसको उत्तर

9 क्या तेरा प्रिय, औरों के प्रियों से उत्तम है?
स्त्रियों में तू सुन्दरतम स्त्री है।
क्या तेरा प्रिय, औरों से उत्तम है?
क्य इसलिये तू हम से ऐसा वचन चाहती है?

यरुशलेम की पुत्रियों को उसका उत्तर

10 मेरा प्रियतम गौरवर्ण और तेजस्वी है।
वह दसियों हजार पुरुषों में सर्वोत्तम है।
11 उसका माथा शुद्ध सोने सा, उसके घुँघराले केश
कौवे से काले अति सुन्दर हैं।
12 ऐसी उसकी आँखे है जैसे
जल धार के किनारे कबूतर बैठे हों।
उसकी आँखें दूध में नहाये कबूतर जैसी हैं।
उसकी आँखें ऐसी हैं जैसे रत्न जड़े हों।
13 गाल उसके मसालों की क्यारी जैसे लगते हैं,
जैसे कोई फूलों की क्यारी जिससे
सुगंध फैल रही हो।
उसके होंठ कुमुद से हैं
जिनसे रसगंध टपका करता है।
14 उसकी भुजायें सोने की छड़ जैसी है
जिनमें रत्न जड़े हों।
उसकी देह ऐसी है जिसमें नीलम जड़े हों।
15 उसकी जाँघे संगमरमर के खम्बों जैसी है
जिनको उत्तम स्वर्ण पर बैठाया गया हो।
उसका ऊँचा कद लबानोन के देवदार जैसा है
जो देवदार वृक्षों में उत्तम है!
16 हाँ, यरुशलेम की पुत्रियों,
मेरा प्रियतम बहुत ही
अधिक कामनीय है,
सबसे मधुरतम उसका मुख है।
ऐसा है मेरा प्रियतम, मेरा मित्र।

यरुशलेम की पुत्रियों का उससे कथन

6 स्त्रियों में सुन्दरतम स्त्री, बता तेरा प्रियतम
कहाँ चला गया?
किस राह से तेरा प्रियतम चला गया है?
हमें बता ताकि हम तेरे साथ उसको ढूँढ सके।

यरुशलेम की पुत्रियों को उसका उत्तर

2 मेरा प्रिय अपने उपवन में चला गया,
सुगंधित क्यारियों में, उपवन में अपनी भेड़
चराने को और कुमुदिनियाँ एकत्र करने को।
3 मैं हूँ अपने प्रियतम की और
वह मेरा प्रियतम है।
वह कुमुदिनियों के बीच चराया करता है।

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

4 मेरी प्रिय, तू तिर्सा सी सुन्दर है,
तू यरुशलेम सी मनोहर है,
तू इतनी अद्‌भुत है
जैसे कोई दिवारों से घिरा नगर हो।
5 मेरे ऊपर से तू आँखें हटा ले!
तेरे नयन मुझको उत्तेजित करते हैं!
तेरे केश लम्बे हैं और वे ऐसे लहराते हैं
जैसे गिलाद की पहाड़ी से बकरियों का झुण्ड
उछलता हुआ उतरता आता हो।
6 तेरे दाँत ऐसे सफेद हैं
जैस मेढ़े जो अभी अभी नहा कर निकली हों।
वे सभी जुड़वा बच्चों को जन्म दिया करती हैं
और उनमें से किसी का भी बच्चा नहीं मरा है।
7 घूँघट के नीचे तेरी कनपटियाँ ऐसी हैं
जैसे अनार की दो फाँके हों।

8 वहाँ साठ रानियाँ,
अस्सी सेविकायें और नयी असंख्य कुमारियाँ हैं।
9 किन्तु मेरी कबूतरी, मेरी निर्मल, उनमें एक मात्र है।
जिस माँ ने उसे जन्म दिया
वह उस माँ की प्रिय है।
कुमारियों ने उसे देखा और उसे सराहा।
हाँ, रानियों और सेविकाओं ने भी उसको देखकर
उसकी प्रशंसा की थी।

स्त्रियों द्वारा उसकी प्रशंसा

10 वह कुमारियाँ कौन है?
वह भोर सी चमकती है।
वह चाँद सी सुन्दर है,
वह इतनी भव्य है जितना सूर्य,
वह ऐसी अद्भुत है जैसे आकाश में सेना।

स्त्री का वचन

11 मैं गिरीदार पेड़ों के बगीचे में घाटी की
बहार को देखने को उतर गयी,
यह देखने कि अंगूर की बेले कितनी बड़ी हैं
और अनार की कलियाँ खिली हैं कि नहीं।
12 इससे पहले कि मैं यह जान पाती, मेरे मन ने
मुझको राजा के व्यक्तियों के
रथ में पहुँचा दिया।

यरुशलेम की पुत्रियों को उसको बुलावा

13 वापस आ, वापस आ, ओ शुलेम्मिन!
वापस आ, वापस आ,
ताकि हम तुझे देख सके।
क्यों ऐसे शुलेम्मिन को घूरती हो
जैसे वह महनैम के नृत्य की नर्तकी हो?

पुरुष द्वारा स्त्री सौन्दर्य का वर्णन

7 हे राजपुत्र की पुत्री, सचमुच तेरे पैर
इन जूतियों के भीतर सुन्दर हैं।
तेरी जंघाएँ ऐसी गोल हैं जैसे किसी
कलाकार के ढाले हुए आभूषण हों।
2 तेरी नाभि ऐसी गोल है जैसे कोई कटोरा,
इसमें तू दाखमधु भर जाने दे।
तेरा पेट ऐसा है जैसे गेंहूँ की ढेरी जिसकी
सीमाएं घिरी हों कुमुदिनी की पंक्तियों से।
3 तेरे उरोज ऐसे हैं जैसे किसी जवान कुरंगी के
दो जुड़वा हिरण हो।
4 तेरी गर्दन ऐसी है जैसे किसी
हाथी दाँत की मीनार हो।
तेरे नयन ऐसे हैं जैसे हेशबोन के वे कुण्ड
जो बत्रब्बीम के फाटक के पास है।
तेरी नाक ऐसी लम्बी है जैसे लबानोन की
मीनार जो दमिश्क की ओर मुख किये है।
5 तेरा सिर ऐसा है जैसे कर्मेल का पर्वत,
और तेरे सिर के बाल रेशम के जैसे हैं।
तेरे लम्बे सुन्दर केश किसी राजा तक को
वशीभूत कर लेते हैं!
6 तू कितनी सुन्दर और मनमोहक है, ओ मेरी प्रिय!
तू मुझे कितना आनन्द देती है!
7 तू खजूर के पेड़ सी लम्बी है।
तेरे उरोज ऐसे हैं जैसे खजूर के गुच्छे।
8 मैं खजूर के पेड़ पर चढूँगा,
मैं इसकी शाखाओं को पकड़ूँगा,
तू अपने उरोजों को अंगूर के
गुच्छों सा बनने दे।
तेरी श्वास की गंध सेब की सुवास सी है।
9 तेरा मुख उत्तम दाखमधु सा हो,
जो धीरे से मेरे प्रणय के लिये नीचे
उतरती हो, जो धीरे से निद्रा में अलसित
लोगों के होंठो तक बहती हो।

स्त्री के वचन पुरुष के प्रति

10 मैं अपने प्रियतम की हूँ और वह मुझे चाहता है।
11 आ, मेरे प्रियतम, आ!
हम खेतों में निकल चलें,
हम गाँवों में रात बिताये।
12 हम बहुत शीघ्र उठें और
अंगूर के बागों में निकल जायें।
आ, हम वहाँ देखें क्या अंगूर की
बेलों पर कलियाँ खिल रही हैं।
आ, हम देखें क्या बहारें खिल गयी हैं और
क्या अनार की कलियाँ चटक रही हैं।

वहीं पर मैं अपना प्रेम तुझे अर्पण करुँगी।
13 प्रणय के वृक्ष निज मधुर सुगंध दिया करते हैं,
और हमारे द्वारों पर सभी सुन्दर फूल,
वर्तमान, नये और पुराने–मैंने तेरे हेतु,
सब बचा रखें हैं, मेरी प्रिय!

8 काश, तुम मेरे शिशु भाई होते, मेरी माता की छाती का दूध पीते हुए! यदि मैं तुझसे वहीं बाहर मिल जाती तो तुम्हारा चुम्बन मैं ले लेती, और कोई व्यक्ति मेरी निन्दा नहीं कर पाता! 2 मैं तुम्हारी अगुवाई करती और तुम्हें मैं अपनी माँ के भवन में ले आती, उस माता के कक्ष में जिसने मुझे शिक्षा दी। मैं तुम्हें अपने अनार की सुगंधित दाखमधु देती, उसका रस तुम्हें पीने को देती।

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

3 मेरे सिर के नीचे मेरे प्रियतम का बाँया हाथ है
और उसका दाँया हाथ मेरा आलिंगन करता है।
4 यरुशलेम की कुमारियों, मुझ को वचन दो,
प्रेम को मत जगाओ,
प्रेम को मत उकसाओ,
जब तक मैं तैयार न हो जाऊँ।

यरुशलेम की पुत्रियों का वचन

5 कौन है यह स्त्री अपने प्रियतम पर झुकी हुई
जो मरुभूमि से आ रही है?

स्त्री का वचन पुरुष के प्रति

मैंने तुम्हें सेब के पेड़ तले जगाया था,
जहाँ तेरी माता ने तुझे गर्भ में धरा और
यही वह स्थान था जहाँ तेरा जन्म हुआ।
6 अपने हृदय पर तू मुद्रा सा धर।
जैसी मुद्रा तेरी बाँह पर है।
क्योंकि प्रेम भी उतना ही सबल है
जितनी मृत्यु सबल है।
भावना इतनी तीव्र है जितनी कब्र होती है।
इसकी धदक धधकती हुई लपटों सी होती है!
7 प्रेम की आग को जल नहीं बुझा सकता।
प्रेम को बाढ़ बहा नहीं सकती।
यदि कोई व्यक्ति प्रेम को घर का सब दे डाले
तो भी उसकी कोई नहीं निन्दा करेगा!

उसके भाईयों का वचन

8 हमारी एक छोटी बहन है,
जिसके उरोज अभी फूटे नहीं।
हमको क्या करना चाहिए
जिस दिन उसकी सगाई हो?
9 यदि वह नगर का परकोटा हो तो हम उसको
चाँदी की सजावट से मढ़ देंगे।
यदि वह नगर हो तो हम उसको मूल्यवान
देवदारु काठ से जड़ देंगे।

उसका अपने भाईयों को उत्तर

10 मैं परकोट हूँ और मेरे उरोज गुम्बद जैसे हैं।
सो मैं उसके लिये शांति का दाता हूँ!

पुरुष का वचन

11 बाल्हामोन में सुलैमान का अंगूर का उपवन था।
उसने अपने बाग को रखवाली के लिए दे दिया।
हर रखवाला उसके फलों के बदले में चाँदी के
एक हजार शेकेल लाता था।
12 किन्तु सुलैमान, मेरा अपना
अंगूर का बाग मेरे लिये है।
हे सुलैमान, मेरे चाँदी के एक हजार शेकेल
सब तू ही रख ले, और ये
दो सौ शेकेल उन लोगों के लिये हैं
जो खेतों में फलों की रखवाली करते हैं!

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

13 तू जो बागों में रहती है,
तेरी ध्वनि मित्र जन सुन रहे हैं।
तू मुझे भी उसको सुनने दे!

स्त्री का वचन पुरुष के प्रति

14 ओ मेरे प्रियतम, तू अब जल्दी कर।
सुगंधित द्रव्यों के पहाड़ों पर
तू अब चिकारे या युवा मृग सा बन जा!

यशायाह

1 यह आमोस के पुत्र यशायाह का दर्शन है। यहूदा और यरूशलेम में जो घटने वाला था, उसे परमेश्वर ने यशायाह को दिखाया। यशायाह ने इन बातों को उज्जिय्याह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह के समय में देखा था। ये यहूदा के राजा थे।

अपने लोगों के विरुद्ध परमेश्वर का शिकायत

[2]स्वर्ग और धरती, तुम यहोवा की वाणी सुनो! यहोवा कहता है,

"मैंने अपने बच्चों का विकास किया।
मैंने उन्हें बढ़ाने में अपनी
सन्तानों की सहायता की।
किन्तु मेरी सन्तानों ने मुझ से विद्रोह किया।
[3] बैल अपने स्वामी को जानता है और गधा उस
जगह को जानता है जहाँ उसका स्वामी
उसको चारा देता है।
किन्तु इस्राएल के लोग मुझे नहीं पहचानते।
वे मेरे अपने हैं किन्तु मुझे नहीं समझते हैं।"

[4]इस्राएल देश पाप से भर गया है। यह पाप एक ऐसे भारी बोझ के समान है जिसे लोगों को उठाना ही है। वे लोग बुरे और दुष्ट बच्चों के समान हैं। उन्होंने यहोवा को त्याग दिया। उन्होंने इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) का अपमान किया। उन्होंने उसे छोड़ दिया और उसके साथ अजनबी जैसा व्यवहार किया।

[5]परमेश्वर कहता है, "मैं तुम लोगों को दण्ड क्यों देता रहूँ? मैंने तुम्हें दण्ड दिया किन्तु तुम नहीं बदले। तुम मेरे विरुद्ध विद्रोह करते ही रहे। अब हर सिर और हर हृदय रोगी है। [6]तुम्हारे पैर के तलुओं से लेकर सिर के ऊपरी भाग तक तुम्हारे शरीर का हर अंग घावों से भरा है। उनमें चोटें लगी हैं और फूटे हुए फोड़े हैं। तुमने अपने फोड़ों की कोई परवाह नहीं की। तुम्हारे घाव न तो साफ किये हीं गये है और न ही उन्हें ढका गया है।

[7]"तुम्हारी धरती बर्बाद हो गयी है। तुम्हारे नगर आग से जल गये हैं। तुम्हारी धरती तुम्हारे शत्रुओं ने हथिया ली है। तुम्हारी भूमि ऐसे उजाड़ दी गयी है कि जैसे शत्रुओं के द्वारा उजाड़ा गया कोई प्रदेश हो। [8]सिय्योन की पुत्री (यरूशलेम) अब अँगूर के बगीचे में किसी छोड़ दी गयी झोपड़ी जैसी हो गयी है। यह एक ऐसी पुरानी झोपड़ी जैसी दिखती है जिसे ककड़ी के खेत में वीरान छोड़ दिया गया हो। यह उस नगरी के समान है जिसे शत्रुओं द्वारा हरा दिया गया हो।" [9]यह सत्य है किन्तु फिर भी सर्वशक्तिशाली यहोवा ने कुछ लोगों को वहाँ जीवित रहने के लिये छोड़ दिया था। सदोम और अमोरा नगरों के समान हमारा पूरी तरह विनाश नहीं किया गया था।

परमेश्वर सच्ची सेवा चाहता है

[10]हे सदोम के मुखियाओं, यहोवा के सन्देश को सुनो! हे अमोरा के लोगों, परमेश्वर के उपदेशों पर ध्यान दो। [11]परमेश्वर कहता है, "मुझे यें सभी बलियाँ नहीं चाहिये। मैं तुम्हारे भेड़ों और पशुओं की चर्बी की पर्याप्त होमबलियाँ ले चुका हूँ। बैलों, मेमनों, बकरों के खून से मैं प्रसन्न नहीं हूँ।

[12]"तुम लोग जब मुझसे मिलने आते हो तो मेरे आँगन की हर वस्तु रौंद डालते हो। ऐसा करने के लिए तुमसे किसने कहा है?

[13]"बेकार की बलियाँ तुम मुझे मत चढ़ाते रहो। जो सुगंधित सामग्री तुम मुझे अर्पित करते हो, मुझे उससे घृणा है। नये चाँद की दावतें, विश्राम और सब्त मुझ से सहन नहीं हो पाते। अपनी पवित्र सभाओं के बीच जो बुरे कर्म तुम करते हो, मुझे उनसे घृणा है। [14]तुम्हारी मासिक बैठकों और सभाओं से मुझे अपने सम्पूर्ण मन से घृणा है।

ये सभाएँ मेरे लिये एक भारी भरकम बोझ सी बन गयी है और इन बोझों को उठाते उठाते अब मैं थक चुका हूँ।

[15]"तुम लोग हाथ उठाकर मेरी प्रार्थना करोगे किन्तु मैं तुम्हारी ओर देखूँगा तक नहीं। तुम लोग अधिकाधिक प्रार्थना करोगे, किन्तु मैं तुम्हारी सुनने तक को मना कर दूँगा क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से सने हैं।

[16]"अपने को धो कर पवित्र करो। तुम जो बुरे कर्म करते हो, उनका करना बन्द करो। मैं उन बुरी बातों को देखना नहीं चाहता। बुरे कामों को छोड़ो। [17]अच्छे काम करना सीखो। दूसरे लोगों के साथ न्याय करो। जो लोग दूसरों को सताते हैं, उन्हें दण्ड दो। अनाथ बच्चों के अधिकारों के लिए संघर्ष करो। जिन स्त्रियों के पति मर गये हैं, उन्हें न्याय दिलाने के लिए उनकी पैरवी करो।"

[18]यहोवा कहता है, "आओ, हम इन बातों पर विचार करें। तुम्हारे पाप यद्यपि रक्त रंजित हैं, किन्तु उन्हें धोया जा सकता है। जिससे तुम बर्फ के समान उज्वल हो जाओगे। तुम्हारे पाप लाल सुर्ख हैं। किन्तु वे सन के समान श्वेत हो सकते हो।

[19]"यदि तुम मेरी कही बातों पर ध्यान देते हो, तो तुम इस धरती की अच्छी वस्तुएँ प्राप्त करोगे। [20]किन्तु यदि तुम सुनने से मना करते हो तुम मेरे विरुद्ध होते हो, और तुम्हारे शत्रु तुम्हें नष्ट कर डालेंगे।" यहोवा ने ये बातें स्वयं ही कहीं थीं।

यरूशलेम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं है

[21]परमेश्वर कहता है, "यरूशलेम की ओर देखो। यरूशलेम एक ऐसी नगरी थी जो मुझमें विश्वास रखती थी और मेरा अनुसरण करती थी। वह वेश्या की जैसी किस कारण बन गई? अब वह मेरा अनुसरण नहीं करती। यरूशलेम को न्याय से परिपूर्ण होना चाहिये। यरूशलेम के निवासियों को, जैसे परमेश्वर चाहता है, वैसे ही जीना चाहिये। किन्तु अब तो वहाँ हत्यारे रहते हैं।

[22]"तुम्हारी नेकी चाँदी के समान है। किन्तु अब तुम्हारी चाँदी खोटी हो गयी है। तुम्हारी दाखमधु में पानी मिला दिया गया है। सो अब यह कमजोर पड़ गयी है। [23]तुम्हारे शासक विद्रोही है और चोरों के साथी हैं। तुम्हारे सभी शासक घूस लेना चाहते हैं। गलत काम करने के लिए वे घूस का धन ले लेते हैं। तुम्हारे सभी शासक लोगों को ठगने के लिये मेहनताना लेते हैं। तुम्हारे शासक अनाथ बच्चों को सहारा देने का यत्न नहीं करते। तुम्हारे शासक अनाथ बच्चों को सहारा देने का जतन नहीं करते। तुम्हारे शासक उन स्त्रियों की आवश्यकताओं पर कान नहीं देते जिनके पति मर चुके हैं।"

[24]इन सब बातों के कारण, स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा इस्राएल का सर्वशक्तिमान कहता है, "हे मेरे बैरियो मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। तुम मुझे अब और अधिक नहीं सता पाओगे। [25]जैसे लोग चाँदी को साफ़ करने के लिए खार मिले पानी का प्रयोग करते हैं, वैसे ही मैं तुम्हारे सभी खोट दूर करुँगा। सभी निरर्थक वस्तुओं को तुमसे ले लूँगा। [26]जैसे न्यायकर्ता तुम्हारे पास प्रारम्भ में थे अब वैसे ही न्यायकर्ता मैं फिर से वापस लाऊँगा। जैसे सलाहकार बहुत पहले तुम्हारे पास हुआ करते थे, वैसे ही सलाहकार तुम्हारे पास फिर होंगे। तुम तब फिर 'नेक और विश्वासी नगरी' कहलाओगी।"

[27]परमेश्वर नेक है और वह उचित करता है। इसलिये वह सिय्योन की रक्षा करेगा और वह उन लोगों को बचायेगा जो उसकी ओर वापस मुड़ आयेंगे। [28]किन्तु सभी अपराधियों और पापियों का नाश कर दिया जायेगा। (ये वे लोग हैं जो यहोवा का अनुसरण नहीं करते हैं।)

[29]भविष्य में, तुम लोग उन बांजवृक्षों के पेड़ों के लिए और उन विशेष उद्यानों के लिए, जिन्हें पूजने के लिए तुमने चुना था, लज्जित होंगे। [30]यह इसलिए घटित होगा क्योंकि तुम लोग ऐसे बांजवृक्ष के पेड़ों जैसे हो जाओगे जिनकी पत्तियाँ मुरझा रही हो। तुम एक ऐसे बगीचे के समान हो जाओगे जो पानी के बिना मर रहा होगा। [31]बलशाली लोग सूखी लकड़ी के छोटे–छोटे टुकड़ों जैसे हो जायेंगे और वे लोग जो काम करेंगे, वे ऐसी चिंगारियों के समान होंगे जिनसे आग लग जाती है। वे बलशाली लोग और उनके काम जलने लगेंगे और कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जो उस आग को रोक सकेगा।

2 आमोस के पुत्र यशायाह ने यहूदा और यरूशलेम के बारे में यह सन्देश देखा।

[2]यहोवा का मन्दिर पर्वत पर है। भविष्य में, उस पर्वत को अन्य सभी पर्वतों में सबसे ऊँचा बनाया जायेगा। उस पर्वत को सभी पहाड़ियों से ऊँचा बनाया जायेगा। सभी देशों के लोग वहाँ जाया करेंगे। [3]बहुत से लोग वहाँ जाया करेंगे। वे कहा करेंगे, "हमे यहोवा के पर्वत पर जाना चाहिये। हमें याकूब के परमेश्वर के मन्दिर में जाना

चाहिये। तभी परमेश्वर हमें अपनी जीवन विधि की शिक्षा देगा और हम उसका अनुसरण करेंगे।"

सिय्योन पर्वत पर यरूशलेम में, परमेश्वर यहोवा के उपदेशों का सन्देश का आरम्भ होगा और वहाँ से वह समूचे संसार में फैलेगा। [4]तब परमेश्वर सभी देशों का न्यायी होगा। परमेश्वर बहुत से लोगों के लिये विवादों का निपटारा कर देगा और वे लोग लड़ाई के लिए अपने हथियारों का प्रयोग करना बन्द कर देंगे। अपनी तलवारों से वे हल के फाले बनायेंगे तथा वे अपने भालों को पौधों को काटने की दँराती के रुप में काम में लायेंगे। लोग दूसरे लोगों के विरुद्ध लड़ना बन्द कर देंगे। लोग युद्ध के लिये फिर कभी प्रशिक्षित नहीं होंगे।

[5]हे याकूब के परिवार, तू यहोवा का अनुसरण कर। [6]हे यहोवा! तूने अपने लोगों का त्याग कर दिया है। तेरे लोग पूर्व के बुरे विचारों से भर गये हैं। तेरे लोग पलिश्तियों के समान भविष्य बताने का यत्न करने लगे हैं। तेरे लोगों ने पूरी तरह से उन विचित्र विचारों को स्वीकार कर लिया है। [7]तेरे लोगों की धरती दूसरे देशों के सोने चाँदी से भर गयी है। वहाँ अनगिनत खजाने हैं। तेरे लोगों की धरती घोड़ों से भरपूर हैं। वहाँ बहुत सारे रथ भी हैं। [8]उनकी धरती पर मूर्तियाँ भरी पड़ी हैं, लोग जिनकी पूजा करते हैं। लोगों ने ही इन मूर्तियों को बनाया है और वे ही उन की पूजा करते हैं। [9]लोग बुरे से बुरे हो गये हैं। लोग बहुत नीच हो गये है। हे परमेश्वर, निश्चय ही तू उन्हें क्षमा नहीं करेगा, क्या तू ऐसा करेगा?

परमेश्वर के शत्रु भयभीत होंगे

[10]जा, कहीं किसी गड्ढ़े में या किसी चट्टान के पीछे छुप जा! तू परमेश्वर से डर और उसकी महान शक्ति के सामने से ओझल हो जा!

[11]अहंकारी लोग अहंकार करना छोड़ देंगे। अहंकारी लोग धरती पर लाज से सिर नीचे झुका लेंगे। उस समय केवल यहोवा ही ऊँचे स्थान पर विराजमान होगा।

[12]यहोवा ने एक विशेष दिन की योजना बनायी है। उस दिन, यहोवा अहंकारियों और बड़े बोलने वाले लोगों को दण्ड देगा। तब उन अहंकारी लोगों को साधारण बना दिया जायेगा। [13]वे अहंकारी लोग लबानोन के लम्बे देवदार वृक्षों के समान है। वे बासान के बांजवृक्षों जैसे हैं किन्तु परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देगा। [14]वे अहंकारी लोग ऊँची पहाड़ियों जैसे लम्बे और पहाड़ों जैसे ऊँचे हैं। [15]वे अहंकारी लोग ऐसे हैं जैसे लम्बी मीनारें और ऊँचा तथा मजबूत नगर परकोटा हो। किन्तु परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देगा। [16]वे अहंकारी लोग तर्शीश के विशाल जहाजों के समान है। इन जहाज़ों में महत्वपूर्ण वस्तुएँ भरी हैं। किन्तु परमेश्वर उन अहंकारी लोगों को दण्ड देगा।

[17]उस समय, लोग अहंकार करना छोड़ देंगे। वे लोग जो अब अहंकारी हैं, धरती पर नीचे झुका दिए जायेंगे। फिर उस समय केवल यहोवा ही ऊँचे विराजमान होगा। [18]सभी मूर्तियाँ झूठे देवता समाप्त हो जायेंगी। [19]लोग चट्टानों, गुफाओं और धरती के भीतर जा छिपेंगे। वे यहोवा और उसकी महान शक्ति से डर जायेंगे। ऐसा उस समय होगा जब यहोवा धरती को हिलाने के लिए खड़ा होगा।

[20]उस समय, लोग अपनी सोने चाँदी की मूर्तियों को दूर फेंक देंगे। (इन मूर्तियों को लोगों ने इसलिये बनाया था कि लोग उनको पूज सकें।) लोग उन मूर्तियों को धरती के उन बिलों में फेंक देंगे जहाँ चमगादड़ और छछूंदर रहते हैं। [21]फिर लोग चट्टानों की गुफाओं मे छुप जायेंगे। वे यहोवा और उसकी महान शक्ति से डरकर ऐसा करेंगे। ऐसा उस समय घटित होगा जब यहोवा धरती को हिलाने के लिये खड़ा होगा।

इस्राएल को परमेश्वर का विश्वास करना चाहिये

[22]ओ इस्राएल के लोगों तुम्हें अपनी रक्षा के लिये अन्य लोगों पर निर्भर रहना छोड़ देना चाहिये। वे तो मनुष्य मात्र है और मनुष्य मर जाता है। इसलिये, तुझे यह नहीं सोचना चाहिये कि वे परमेश्वर के समान शक्तिशाली है।

3 ये बातें मैं तुझे बता रहा हूँ, तू समझ ले। सर्वशक्तिशाली यहोवा स्वामी, उन सभी वस्तुओं को छीन लेगा जिन पर यहूदा और यरूशलेम निर्भर रहते हैं। परमेश्वर समूचा भोजन और जल भी छीन लेगा। [2]परमेश्वर सभी नायकों और महायोद्धाओं को छीन लेगा। सभी न्यायाधीशों, भविष्यवक्ताओं, ज्योतिषियों और बुजुर्गो को परमेश्वर छीन लेगा। [3]परमेश्वर सेना नायकों और प्रशासनिक नेताओं को छीन लेगा। परमेश्वर सलाहकारों और उन बुद्धिमान को छीन लेगा जो जादू करते हैं और भविष्य बताने का प्रयत्न करते हैं।

[4]परमेश्वर कहता है, "मैं जवान बच्चों को उनका नेता बना दूँगा। बच्चें उन पर राज करेंगे। [5]हर व्यक्ति आपस में एक दूसरे के विरुद्ध हो जायेगा। नवयुवक बड़े बूढ़ों का आदर नहीं करेंगे। साधारण लोग महत्वपूर्ण लोगों को आदर नहीं देंगे।"

[6]उस समय, अपने ही परिवार से कोई व्यक्ति अपने ही किसी भाई को पकड़ लेगा। वह व्यक्ति अपने भाई से कहेगा, "क्योंकि तेरे पास एक वस्त्र है, सो तू हमारा नेता होगा। इन सभी खण्डहरों का तू नेता बन जा।"

[7]किन्तु वह भाई खड़ा हो कर कहेगा, "मैं तुम्हें सहारा नहीं दे सकता। मेरे घर पर्याप्त भोजन और वस्त्र नहीं हैं। तू मुझे अपना मुखिया नहीं बनायेगा।"

[8]ऐसा इसलिये होगा क्योंकि यरूशलेम ने ठोकर खायी और उसने बुरा किया। यहूदा का पतन हो गया और उसने परमेश्वर का अनुसरण करना त्याग दिया। वे जो कहते हैं और जो करते हैं वह यहोवा के विरुद्ध है। उन्होंने यहोवा की महिमा के प्रति विद्रोह किया।

[9]लोगों के चेहरों पर जो भाव हैं उनसे साफ़ दिखाई देता है कि वे बुरे कर्म करने के अपराधी हैं। किन्तु वे इन अपराधों को छुपाते नहीं है, बल्कि उन पर गर्व करते हुए अपने पापों की डोंडी पीटते हैं। वे ढीठ हैं। वे सदोम नगरी के लोगों के जैसे हैं। उन्हें इस बात की परवाह नहीं हैं कि उनके पापों को कौन देख रहा है। यह उनके लिये बहुत बुरा होगा। अपने ऊपर इतनी बड़ी विपत्ति उन्होनें स्वयं बुलाई है।

[10]अच्छे लोगों को बता दो कि उनके साथ अच्छी बातें घटेंगी। जो अच्छे कर्म वे करते हैं, उनका सुफल वे पायेंगे। [11]किन्तु बुरे लोगों के लिए यह बहुत बुरा होगा। उन पर बड़ी विपत्ति टूट पड़ेगी। जो बुरे काम उन्होंने किये हैं, उन सब के लिये उन्हें दण्ड दिया जायेगा। [12]मेरे लोगों को बच्चे निर्दयतापूर्वक सताएँगे। उन पर स्त्रियाँ राज करेंगी। हे मेरे लोगों, तुम्हारे अगुआ तुम्हें बुरे रास्ते पर ले जायेंगे। सही मार्ग से वे तुम्हें भटका देंगे।

अपने लोगों के बारे मे परमेश्वर का निर्णय

[13]यहोवा अपने लोगों के विरोध में मुकदमा लड़ने के लिए खड़ा होगा। वह अपने लोगों का न्याय करने के लिए खड़ा होगा। [14]बुजुर्गो और अगुवाओं ने जो काम किये हैं यहोवा उनके विरुद्ध अभियोग चलाएगा। यहोवा कहता है, "तुम लोगों ने अँगूर के बागों को (यहूदा को) जला डाला है। तुमने गरीब लोगों की वस्तुएँ ले लीं और वे वस्तुएँ अभी भी तुम्हारे घरों में हैं। [15]मेरे लोगों को सताने का अधिकार तुम्हें किसने दिया? गरीब लोगों को मुँह के बल धूल में धकेलने का अधिकार तुम्हें किसने दिया?" मेरे स्वामी, सर्वशक्तिशाली यहोवा ने यें बातें कहीं थीं।

[16]यहोवा कहता है, "सिय्योन की स्त्रियाँ बहुत घमण्डी हो गयी हैं। वे सिर उठाये हुए और ऐसा आचरण करते हुए, जैसे वे दूसरे लोगों से उत्तम हों, इधर–उधर घूमती रहती हैं। वे स्त्रियाँ अपनी आँखें मटकाती रहती हैं तथा अपने पैरों की पाजेब झंकारती हुई इधर उधर ठुमकती फिरती हैं।"

[17]सिय्योन की ऐसी स्त्रियों के सिरों पर मेरा स्वामी फोड़े निकालेगा। यहोवा उन स्त्रियों को गंजा कर देगा। [18]उस समय, यहोवा उनसे वे सब वस्तुएँ छीन लेगा जिन पर उन्हें नाज़ था: पैरों के सुन्दर पाजेब, सूरज और चाँद जैसे दिखने वाले कंठहार, [19]बुन्दे, कंगन तथा ओढ़नी, [20]माथापट्टी, पैर की झाँझर, कमरबंद, इत्र की शीशियाँ और ताबीज़ जिन्हें वे अपने कण्ठहारों में धारण करती थीं। [21]मुहरदार अंगूठियाँ, नाक की बालियाँ, [22]उत्तम वस्त्र, टोपियाँ, चादरें, बटुए, [23]दर्पण, मलमल के कपड़े, पगड़ीदार टोपियाँ और लम्बे दुशाले।

[24]वे स्त्रियाँ जिनके पास इस समय सुगंधित इत्र हैं, उस समय उनकी वह सुगंध फफूंद और सड़ाहट से भर जायेगी। अब वे तगड़ियाँ पहनती है। किन्तु उस समय पहनने को बस उनके पास रस्से होंगे। इस समय वे सुशोभित जूड़े बाँधती है। किन्तु उस समय उनके सिर मुड़वा दिये जायेंगे। उनके एक बाल तक नहीं होगा। आज उनके पास सुन्दर पोशाकें हैं। किन्तु उस समय उनके पास केवल शोक वस्त्र होंगे। जिनके मुख आज खूबसूरत हैं उस समय वे शर्मनाक होंगे।

[25]उस समय, तेरे योद्धा युद्धों में मार दिये जायेंगे। तेरे बहादुर युद्ध में मारे जायेंगे। [26]नगर द्वार के निकट सभा स्थलों में रोना बिलखना और दुःख ही फैला होगा। यरूशलेम उस स्त्री के समान हर वस्तु से वंचित हो जायेगी जिसका सब कुछ चोर और लुटेरे लूट गये हों। वह धरती पर बैठेगी और बिलखेगी।

4 उस समय, सात सात स्त्रियाँ एक पुरूष को दबोच लेंगी और उससे कहेंगी, "अपने खाने के लिये हम, अपनी रोटियों का जुगाड़ स्वयं कर लेंगी, अपने पहनने के लिए कपड़े हम स्वयं बनायेंगी। बस तू हमसे विवाह कर ले! ये सब काम हमारे लिए हम खुद ही कर लेंगी। बस तू हमें अपना नाम दे। कृपा कर के हमारी शर्म पर पर्दा डाल दे।"

[2]उस समय, यहोवा का पौधा (यहूदा) बहुत सुन्दर और बहुत विशाल होगा। वे लोग, जो उस समय इस्राएल में रह रहे होंगे उन वस्तुओं पर बहुत गर्व करेंगे जिन्हें उनकी धरती उपजाती है। [3]उस समय वे लोग जो अभी भी सिय्योन और यरूशलेम में रह रहे होंगे, पवित्र लोग कहलाएँगे। यह उन सभी लोगों के साथ घटेगा जिनका एक विशेष सूची में नाम अंकित है। यह सूची उन लोगों की होगी जिन्हें जीवित रहने की अनुमति दे दी जायेगी।

[4]यहोवा सिय्योन की स्त्रियों की अशुद्धता को धो देगा। यहोवा यरूशलेम से खून को धो कर बहा देगा। यहोवा न्याय की चेतना का प्रयोग करेगा और बिना किसी पक्षपात के निर्णय लेगा। वह दाहक चेतना का प्रयोग करेगा और हर वस्तु को शुद्ध (उत्तम) कर देगा।

[5]उस समय, परमेश्वर यह प्रमाणित करेगा कि वह अपने लोगों के साथ है। दिन के समय, वह धुएँ के एक बादल की रचना करेगा और रात के समय एक चमचमाती लपट युक्त अग्नि। सिय्योन पर्वत पर, लोगों की हर सभा के ऊपर, उसके हर भवन के ऊपर आकाश में यें संकेत प्रकट होंगे। सुरक्षा के लिये हर व्यक्ति के ऊपर मण्डप का एक आवरण छा जायेगा। [6]मण्डप का यह आवरण एक सुरक्षा स्थल होगा। यह आवरण लोगों को सूरज की गर्मी से बचाएगा। मण्डप का यह आवरण सब प्रकार की बाढ़ों और वर्षा से बचने का एक सुरक्षित स्थान होगा।

इस्राएल परमेश्वर का विशेष उपवन

5 अब मैं अपने मित्र (परमेश्वर) के लिए गीत गाऊँगा। अपने अंगूर के बगीचे (इस्राएल के लोग) के विषय में यह मेरे मित्र का गीत है।

मेरे मित्र का बहुत उपजाऊँ पहाड़ी पर
एक अंगूर का बगीचा है।
[2] मेरे मित्र ने धरती खोदी और कंकड़ पत्थर हटा
कर उसे साफ किया और
वहाँ पर अंगूर की उत्तम बेलें रोप दी।
फिर खेत के बीच में उसने अंगूर के रस
निकालने को कुंड बनाये।
मित्र को आशा थी कि वहाँ उत्तम अंगूर होंगे
किन्तु वहाँ जो अंगूर लगे थे वे बुरे थे।
[3] सो परमेश्वर ने कहा:
"हे यरूशलेम के लोगों,
और ओ यहूदा के वासियों, मेरे और
मेरे अंगूर के बाग के बारे में निर्णय करो।
[4] मैं और क्या अपने अंगूर के
बाग के लिये कर सकता था?
मैंने वह सब किया जो कुछ भी मैं कर सकता था।
मुझे उत्तम अंगूरों के लगने की आशा थी
किन्तु वहाँ अंगूर बुरे ही लगे।
यह ऐसा क्यों हुआ?

[5]अब मैं तुझको बताऊँगा कि अपने अंगूर के बगीचे के लिये मैं क्या कुछ करुँगा:

वह कंटीली झाड़ी जो खेत की रक्षा करती है
मैं उखाड़ दूँगा, और उन झाड़ियों को
आग में जला दूँगा।
पत्थर का परकोटा तोड़ कर गिरा दूँगा।
बगीचे को रौंद दिया जायेगा।
[6] अंगूर के बगीचे को मैं खाली खेत में बदल दूँगा।
कोई भी पौधे की रखवाली नहीं करेगा।
उस खेत में कोई भी व्यक्ति काम नहीं करेगा।
वहाँ केवल काँटे और खरपतवार उगा करेंगे।
मैं बादलों को आदेश दूँगा कि वे वहाँ न बरसें।"

[7]सर्वशक्तिशाली यहोवा का अँगूर का बगीचा इस्राएल का राष्ट्र है और अंगूर की बेलें जिन्हें यहोवा प्रेम करता है, यहूदा के लोग है।

यहोवा ने न्याय की आशा की थी,
किन्तु वहाँ हत्या बस रही।
यहोवा ने निष्पक्षता की आशा की,
किन्तु वहाँ बस सहायता माँगने वालों का
रोना रहा जिनके साथ बुरा किया गया था।

[8]बुरा हो उनका जो मकान दर मकान लेते ही चले जाते हैं और एक खेत के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा खेत तब तक घेरते ही चले जाते हैं जब तक किसी

और के लिए कुछ भी जगह नहीं बच रहती। ऐसे लोगों को इस प्रदेश में अकेले ही रहना पड़ेगा। [9]सर्वशक्तिशाली यहोवा को मैंने मुझसे यह कहते हुए सुना है, "अब देखो वहाँ बहुत सारे भवन हैं किन्तु मैं तुमसे शपथपूर्वक कहता हूँ कि वे सभी भवन नष्ट कर दिये जायेंगे। अभी वहाँ बड़े–बड़े भव्य भवन हैं किन्तु वे भवन उजड़ जायेंगे। [10]उस समय, दस एकड़ की अँगूरों की उपज से थोडी सी दाखमधु तैयार होगी। और कई बोरी बीजों से थोड़ा सा अनाज पैदा हो पायेगा।"

[11]तुम्हें धिक्कार है, तुम लोग अलख सुबह उठते हो और अब सुरा पीने की ताक में रहते हो। रात को देर तक जागते हुए दाखमधु पी कर धुत होते हो। [12]तुम लोग दाखमधु, वीणा, ढोल, बाँसुरी और ऐसे ही दूसरे बाजों के साथ दावतें उड़ाते रहते हो और तुम उन बातों पर दृष्टि नहीं डालते जिन्हें यहोवा ने किया है। यहोवा के हाथों ने अनेकानेक वस्तुएँ बनायी है किन्तु तुम उन वस्तुओं पर ध्यान ही नहीं देते। सो यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा।

[13]यहोवा कहता है, "मेरे लोगों को बंदी बना कर कहीं दूर ले जाया जायेगा। क्योंकि सचमुच वे मुझे नहीं जानते। इस्राएल के कुछ निवासी, आज बहुत महत्वपूर्ण है और अपने आराम भरे जीवन से प्रसन्न हैं, किन्तु वे सभी बड़े लोग बहुत मूर्ख हो जाएँगे और इस्राएल के आम लोग बहुत प्यासे हो जायेंगे। [14]फिर उनकी मृत्यु हो जायेगी और शियोल, (मृत्यु का प्रदेश), अधिक से अधिक लोगों को निगल जाएगा। मृत्यु का वह प्रदेश अपना असीम मुख पसारेगा और वे सभी महत्वपूर्ण और साधारण लोग और हुल्लड़ मचाते वे सभी खुशियाँ मनाते लोग शियोल मे धस जायेंगे।"

[15]उन लोगों को नीचा दिखाया जायेगा। वे बड़े लोग अपना सिर नीचे लटकाये धरती की ओर देखेंगे। [16]सर्वशक्तिशाली यहोवा न्याय के साथ निर्णय देगा, और लोग जान लेंगे कि वह महान है। पवित्र परमेश्वर उन बातों को करेगा जो उचित हैं, और लोग उसे आदर देंगे। [17]इस्राएल के लोगों से परमेश्वर उनका अपना देश छुड़वा देगा। धरती वीरान हो जायेगी। भेड़ें जहाँ चाहेगी, चली जायेंगी। वह धरती जो कभी धनवान लोगों की थी, उस पर भेड़ें घूमा करेंगी।

[18]उन लोगों का बुरा हो, वे अपने अपराध और अपने पापों को अपने पीछे ऐसे ढो रहे हैं जैसे लोग रस्सों से छकड़े खींचते हैं। [19]वे लोग कहा करते हैं, "काश! परमेश्वर, जो उसकी योजना है, उसे जल्दी ही पूरा कर दे। ताकि हम जान जायें कि क्या घटने वाला है। हम तो यह चाहते हैं कि परमेश्वर की योजनाएँ जल्दी ही घटित हो जायें ताकि हम यह जान लें कि उसकी योजना क्या है।"

[20]उन लोगों का बुरा हो जो कहा करते कि अच्छी बातें बुरी हैं, और बुरी बातें अच्छी हैं। वे लोग सोचा करते हैं कि प्रकाश अन्धेरा हैं, और अन्धेरा प्रकाश हैं। उन लोगों का विचार हैं कि कड़वा, मीठा है और मीठा, कड़वा है। [21]बुरा हो उन अभिमानियों का जो स्वयं को बहुत चतुर मानते हैं। वे सोचा करते हैं कि वे बहुत बुद्धिमान है। [22]बुरा हो उनका जो दाखमधु पीने के लिए जाने माने जाते हैं। दाखमधु के मिश्रण में जिन्हें कुशलता हासिल है। [23]और यदि तुम उन लोगों को रिश्वत दे दो तो वे एक अपराधी को भी छोड़ देंगे। किन्तु वे अच्छे व्यक्ति का भी निष्पक्षता से न्याय नहीं होने देते। [24]ऐसे लोगों के साथ बुरी बातें घटेंगी। उनके वंशज पूरी तरह वैसे ही नष्ट हो जायेंगे जैसे घास फूस आग में जला दिये जाते हैं। उनके वंशज उस कंद मूल की तरह नष्ट हो जायेंगे जो मर कर धूल बन जाता है। उनके वंशज ऐसे नष्ट कर दिये जायेंगे जैसे आग फूलों को जला डालती है और उसकी राख हवा में उड़ जाती है।

ऐसे लोगों ने सर्वशक्तिशाली यहोवा के उपदेशों का पालन करने से इन्कार कर दिया है। उन लोगों ने इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) के कथन से बैर किया है। [25]इसलिए यहोवा अपने लोगों से बहुत अधिक कुपित हुआ है। यहोवा ने अपना हाथ उठाया और उन्हें दण्ड दिया। यहाँ तक कि पर्वत भी भयभीत हो उठे थे। गलियों में कूड़े की तरह लाशें बिछी पड़ी थी। किन्तु यहोवा अभी भी कुपित है। उसका हाथ लोगों को दण्ड देने के लिए अभी भी उठा हुआ है।

इस्राएल को दण्ड देने के लिए परमेश्वर सेनाएँ लायेगा

[26]देखो! परमेश्वर दूर देश के लोगों को संकेत दे रहा है। परमेश्वर एक झण्डा उठा रहा है, और उन लोगों को बुलाने के लिये सीटी बजा रहा है। किसी दूर देश से शत्रु आ रहा है। वह शत्रु शीघ्र ही देश में घुस आयेगा। वे बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। [27]शत्रु कभी थका नहीं करता

अथवा कभी नीचे नहीं गिरता। शत्रु कभी न तो ऊँघता है और न ही सोता है। उनके हथियारों के कमर बंद सदा कसे रहते हैं। उनके जूतों के तस्में कभी टूटते नहीं हैं। [28]शत्रु के बाण पैने हैं। उनके सभी धनुष बाण छोड़ने के लिये तैयार हैं। उनके घोड़ों के खुर चट्टानों जैसे कठोर हैं। उनके रथों के पीछे धूल के बादल उठा करते हैं।

[29]शत्रु गरजता है, और उनका गर्जन सिंह की दहाड़ के जैसा है। वह इतना तीव्र है जितना जवान सिंह का गर्जन। शत्रु जिनके विरुद्ध युद्ध कर रहा है उनके ऊपर गुर्राता है और उन पर झपट पड़ता है। वह उन्हें वहाँ से घसीट ले जाता है और वहाँ उन्हें बचाने वाला कोई नहीं होता। किन्तु उनके बच पाने की कोई वजह नहीं। [30]सो, उस दिन वह 'सिंह' समुद्र की तरंगों के समान दहाड़े मारेगा और बंदी बनाये गये लोग धरती ताकते रह जायेंगे, और फिर वहाँ बस अन्धेरा और दु:ख ही रह जाएगा। इस घने बादल में समूचा प्रकाश अंधेरे में बदल जाएगा।

यशायाह को नबी बनने के लिये परमेश्वर का बुलावा

6 जिस वर्ष राजा उज्जिय्याह की मृत्यु हुई, मैंने अपने अद्‌भुत स्वामी के दर्शन किये। (वह एक बहुत ऊँचे सिंहासन पर विराजमान था। उसके लम्बे चोगे से मन्दिर भर गया था। [2]यहोवा के चारों ओर साराप स्वर्गदूत खड़े थे। हर साराप (स्वर्गदूत) के छ: छ: पंख थे। इनमें से दो पंखों का प्रयोग वे अपने मुखों को ढकने के लिए किया करते थे तथा दो पंखों का प्रयोग अपने पैरों को ढकने के लिये करते थे और दो पंखों को वे उड़ने के काम में लाते थे। [3]हर स्वर्गदूत दूसरे स्वर्गदूत से पुकार–पुकार कर कह रहे थे, "पवित्र, पवित्र, पवित्र, सर्वशक्तिशाली यहोवा परम पवित्र है! यहोवा की महिमा* सारी धरती पर फैली है।" स्वर्गदूतों की वाणी के स्वर बहुत ऊँचे थे। [4]स्वर्गदूतों की आवाज़ से द्वार की चौखटें हिल उठीं और फिर मन्दिर धुएँ* से भरने लगा।

[5]मैं बहुत डर गया था। मैंने कहा, "अरे, नहीं! मैं तो नष्ट हो जाऊँगा। मैं उतना शुद्ध नहीं हूँ कि परमेश्वर से बातें करूँ और मैं ऐसे लोगों के बीच रहता हूँ जो उतने शुद्ध नहीं है कि परमेश्वर से बातें कर सकें। किन्तु फिर भी मैंने उस राजा, सर्वशक्तिमान यहोवा, के दर्शन कर लिये है।"

[6]वहाँ वेदी पर आग जल रही थी। उन साराप (स्वर्गदूतों) में से एक ने उस आग में से चिमटे से एक दहकता हुआ कोयला उठा लिया और [7]उस दहकते हुए कोयले से मेरे मुख को छूआ दिया। फिर उस साराप (स्वर्गदूत) ने कहा! "देख! क्योंकि इस दहकते कोयले ने तेरे होठों को छू लिया हैं, सो तूने जो बुरे काम किये है, वे अब तुझ में से समाप्त हो गये हैं। अब तेरे पाप धो दिये गये हैं।"

[8]इसके बाद मैंने अपने यहोवा की आवाज सुनी। यहोवा ने कहा, "मैं किसे भेज सकता हूँ? हमारे लिए कौन जायेगा?"

सो मैंने कहा, "मैं यहाँ हूँ। मुझे भेज!"

[9]फिर यहोवा बोला, "जा और लोगों से कह: 'ध्यान से सुनो, किन्तु समझो मत! निकट से देखो, किन्तु बूझो मत!' [10]लोगों को उलझन में डाल दे। लोगों की जो बातें वे सुनें और देखें, वे समझ न सके। यदि तू ऐसा नहीं करेगा तो लोग उन बातों को जिन्हें वे अपने कानों से सुनते हैं सचमुच समझ जायेंगे। हो सकता है लोग अपने–अपने मन में सचमुच समझ जायें। यदि उन्होंने ऐसा किया तो सम्भव है लोग मेरी ओर मुड़े और चंगे हो जायें (क्षमा पा जायें।)!"

[11]मैंने फिर पूछा, "स्वामी, मैं ऐसा कब तक करता रहूँ?"

यहोवा ने उत्तर दिया, "तू तब तक ऐसा करता रह, जब तक नगर उजड़ न जायें ओर लोग नष्ट न हो जायें। तू तब तक ऐसा करता रह जब तक सभी घर खाली न हो जायें। ऐसा तब तक करता रह जब तक धरती नष्ट होकर उजड़ न जायें।"

[12]यहोवा लोगों को दूर चले जाने पर विवश करेगा। इस देश में बड़े–बड़े क्षेत्र उजड़ जायेंगे। [13]उस प्रदेश में दस प्रतिशत लोग फिर भी बचे रह जायेंगे किन्तु उनको भी फिर से नष्ट कर दिया जायेगा क्योंकि ये लोग बांजवृक्ष के उस पेड़ के समान होंगे जिसके काट दिये जाने के बाद भी उसका तना बचा रह जाता है और ये (बचे हुए लोग) उसी तने के समान होंगे जो फिर से फुटाव ले लेता है।

यहोवा की महिमा परमेश्वर सन्देशवाहक के रूप में इन स्वर्गदूतों का उपयोग करता है।

फिर मन्दिर धुएँ यह दिखाता है कि परमेश्वर मन्दिर के भीतर था। निर्गमन 40–35

आराम पर विपत्ति

7 आहाज, योताम का पुत्र था। योताम उज्जिय्याह का पुत्र था। उन्हीं दिनों रसीन आराम का राजा हुआ करता था और इस्राएल पर रमल्याह के पुत्र पेकह राजा था। जिन दिनों यहूदा पर आहाज शासन कर रहा था, रसीन और पेकह युद्ध के लिये यरूशलेम पर चढ़ बैठे। किन्तु वे इस नगर को हरा नहीं सके।

[2]दाऊद के घराने को एक सन्देश मिला। सन्देश के अनुसार, "आराम और इस्राएल की सेनाओं में परस्पर सन्धि हो गयी है। वे दोनों सेनाएँ आपस में एक हो गयी हैं।"

राजा आहाज ने जब यह समाचार सुना तो वह और उसकी प्रजा बहुत भयभीत हुए। वे आँधी में हिलते हुए वन के वृक्षों के समान भय से काँपने लगे।

[3]तभी यशायाह से यहोवा ने कहा, "तुझे और तेरे पुत्र शार्याशूब को आहाज के पास जाकर बात करनी चाहिये। तू उस स्थान पर आ, जहाँ ऊपर के तालाब में पानी गिरा करता है। यह उस गली में है जो धोबी–घाट की तरफ जाती है।

[4]"आहाज से जाकर कहना, 'सावधान रह किन्तु साथ ही शांत भी रह। डर मत। उन दोनों व्यक्तियों रसीन और रमल्याह के पुत्रों से मत डर। वे दो व्यक्ति तो जली हुई लकड़ियों के समान हैं। पहले वे दहका करते थे किन्तु अब वे, बस धुआं मात्र रह गये हैं। रसीन, आराम और रमल्याह का पुत्र कुपित हैं। [5]आराम, एप्रैम के प्रदेशों और रमल्याह के पुत्र ने तुम्हारे विरुद्ध योजनाएँ बना रखी हैं। उन्होंने कहा: [6]हमें यहूदा पर चढ़ाई करनी चाहिये। हम अपने लिये उसे बाँट लेंगे। हम ताबेल के पुत्र को यहूदा का नया राजा बनायेंगे।'"

[7]मेरे स्वामी यहोवा का कहना है, "उनकी योजना सफल नहीं होगी। वह कभी पूरी नहीं होंगी। [8]जब तक दमिश्क का राजा रसीन है, तब तक यह नहीं घटेगी। इस्राएल अब एक राष्ट्र है किन्तु पैंसठ वर्ष के भीतर यह एक राष्ट्र नहीं रहेगा। [9]जब तक इस्राएल की राजधानी शोमरोन है और जब तक शोमरोन का राजा रमल्याह का पुत्र है तब तक उनकी योजनाएँ सफल नहीं होंगी। यदि इस सन्देश पर तू विश्वास नहीं करेगा तो लोग तुझ पर विश्वास नहीं करेंगे।"

इम्मानुएल–परमेश्वर हमारे साथ है

[10]यहोवा ने आहाज से अपनी बात जारी रखते हुए कहा, [11]यहोवा बोला, "ये बातें सच्ची हैं, इसे स्वयं प्रमाणित करने के लिए कोई संकेत माँग ले। तू जैसा भी चाहे वैसा संकेत माँग सकता है। वह संकेत चाहे गहरे मृत्यु के प्रदेश से हो और चाहे आकाशों से भी ऊँचे किसी स्थान से।"

[12]किन्तु आहाज़ ने कहा, "प्रमाण के रूप में मैं कोई संकेत नहीं मागूँगा। मैं यहोवा की परीक्षा नहीं लूँगा।"

[13]तब यशायाह ने कहा, "हे, दाऊद के वंशजो, सावधान हो कर सुनो! तुम लोगों के धैर्य की परीक्षा लेते हो। क्या यह तुम्हारे लिए काफी नहीं है जो, अब तुम मेरे परमेश्वर के धैर्य की परीक्षा ले रहे हो? [14]किन्तु, मेरा स्वामी परमेश्वर तुम्हें एक संकेत दिखायेगा:

देखो, एक कुवाँरी गर्भवती होगी और
वह एक पुत्र को जन्म देगी।
वह इस पुत्र का नाम इम्मानुएल रखेगी।
[15] इम्मानुएल दही और शहद खायेगा।
वह इसी तरह रहेगा जब तक वह यह नहीं
सीख जाता उत्तम को चुनना
और बुरे को नकारना।
[16] किन्तु जब तक वह भले का चुनना और
बुरे का त्यागना जानेगा एप्रैम और अराम
की धरती उजाड़ हो जायेगी।

"आज तुम उन दो राजाओं से डर रहे हो। [17]किन्तु तुम्हें यहोवा से डरना चाहिये। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम पर विपत्ति का समय लाने वाला है। वे विपत्तियाँ तुम्हारे लोगों पर और तुम्हारे पिता के परिवार के लोगों पर आयेंगी। विपत्ति का यह समय उन सभी बातों में अधिक बुरा होगा जो जब से एप्रैम (इस्राएल) यहूदा से अलग हुआ है, तब से अब तक घटी है। इसके लिये परमेश्वर क्या करेगा? परमेश्वर अश्शूर के राजा को तुम से लड़ाने के लिये लायेगा।

[18]"उस समय, यहोवा 'मक्खियों'* को बुलायेगा। फिलहाल वे मक्खियाँ मिस्र की जलधाराओं के निकट हैं। और यहोवा 'मधुमक्खियों' को बुलायेगा। (फिलहाल वें मधुमक्खियाँ अश्शूर देश में रहती हैं।) ये शत्रु तुम्हारे देश में आयेंगे। [19]ये शत्रु चट्टानी क्षेत्रों में, रेगिस्तान में

मक्खियों अर्थात् मिस्र की सेनाएँ।

जल धाराओं के निकट झाड़ियों के आस–पास और पानी पीने की जगहों के इर्द–गिर्द अपने डेरे डालेंगे। [20]यहोवा यहूदा को दण्ड देने के लिये अश्शूर का प्रयोग करेगा। अश्शूर को भाड़े पर लेकर किसी उस्तरे की तरह काम में लाया जायेगा। यह ऐसा होगा जैसे यहोवा यहूदा के सिर और टाँगों के बालों का मुंडन कर रहा हो। यह ऐसा होगा जैसे यहोवा यहूदा की दाढ़ी मूंड रहा हो।

[21]"उस समय, एक व्यक्ति बस एक जवान गाय और दो भेंड़े ही जीवित रख पायेगा। [22]वे सब इतना दूध देंगी जो उस व्यक्ति को दही खाने के लिए पर्याप्त होगा। उस देश में बाकी बचा हर व्यक्ति दही और शहद ही खाया करेगा। [23]आज इस धरती पर हर खेत में एक हज़ार अँगूर की बेलें है। अँगूर के हर बगीचे की कीमत एक हज़ार चाँदी के सिक्कों के बराबर हैं। किन्तु इन खेतों में खरपतवार और काँटे भर जायेंगे। [24]यह धरती जंगली हो जाएगी और उसका इस्तेमाल एक शिकारगाह के रूप में ही हो सकेगा। [25]एक समय था जब इन पहाड़ियों पर लोग काम किया करते थे और अनाज उपजाया करते थे। किन्तु उस समय लोग वहाँ नहीं जाया करेंगे। वह धरती खरपतवारों और काँटों से भर जायेगी। उन स्थानों पर बस भेड़ें और मवेशी ही घूमा करेंगे।"

अश्शूर शीघ्र ही आयेगा

8 यहोवा ने मुझसे कहा, "लिखने के लिये मिटटी की बड़ी सी तख्ती ले और उस पर सुए से यह लिख:

'महेर्शालाल्हाशबज' (अर्थात् 'यहाँ जल्दी ही लूटमार और चोरियाँ होंगी।')

[2]मैंने कुछ ऐसे लोग एकत्र किये जिन पर साक्षी होने के लिये विश्वास किया जा सकता था। ये लोग थे नबी ऊरिय्याह और जकर्याह जो जेबेरेक्याह का पुत्र था। उन लोगों ने मुझे इन बातों को लिखते हुए देखा था। [3]फिर मैं उस नबिया के पास गया। मेरे उसके साथ साथ रहने के बाद, वह गर्भवती हो गयी और उसका एक पुत्र हुआ। तब यहोवा ने मुझसे कहा, "तू लड़के का नाम महेर्शालाल्हशबज रख। [4]क्योंकि इससे पहले कि बच्चा 'माँ' और 'पिता' कहना सीखेगा, उससे पहले ही परमेश्वर दमिश्क और शोमरोन की समूची धनसम्पत्ति को छीन लेगा और उन वस्तुओं को अश्शूर के राजा को दे देगा।"

[5]यहोवा ने मुझ से फिर कहा। [6]मेरे स्वामी ने कहा, "ये लोग शीलोह* की नहर के धीरे–धीरे बहते पानी को लेने से मना करते हैं। ये लोग रसीन और रमल्याह के पुत्र (पिकाह) के साथ प्रसन्न रहते हैं। [7]किन्तु इसलिये मैं, यहोवा, अश्शूर के राजा और उसकी समूची शक्ति को तुम्हारे विरोध में लेकर आऊँगा। वे परात नदी की भयंकर बाढ़ की तरह आयेंगे। यह ऐसा होगा जैसे किनारों को तोड़ती डुबोती नदी उफ़न पड़ती है। [8]जो पानी उस नदी से उफन कर निकलेगा, वह यहूदा में भर जायेगा और यहूदा को प्राय: डुबो डालेगा।

"इम्मानूएल, यह बाढ़ तब तक फैलती चली जायेगी जब तक वह तुम्हारे समूचे देश को ही न डुबो डाले।"

यहोवा अपने सेवकों की रक्षा करता है

[9] हे जातियों, तुम सभी
युद्ध के लिये तैयार रहो!
तुम को पराजित किया जायेगा।
अरे, सुदूर के देशों, सुनों, तुम सभी
युद्ध के लिये तैयार रहो!
तुमको पराजित किया जायेगा।
[10] अपने युद्ध की योजनाएँ रचो!
तुम्हारी योजनाएँ पराजित हो जायेंगी।
तुम अपनी सेना को आदेश दो!
तुम्हारे वे आदेश व्यर्थ हो जायेंगे।
क्यों? क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है।

यशायाह को चेतावनी

[11]यहोवा ने अपनी महान शक्ति के साथ मुझ से कहा। यहोवा ने मुझे चेतावनी दी कि मैं इन अन्य लोगों के समान न बनूँ। यहोवा ने कहा, [12]"हर कोई कह रहा है कि वे दूसरे लोग उसके विरुद्ध षड़यन्त्र रच रहे हैं। तुम्हें उन बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिये। जिन बातों से वे डरते हैं, तुम्हें उन बातों से नहीं डरना चाहिये। तुम्हें उनके प्रति निर्भय रहना चाहिए!"

[13]तुम्हें बस सर्वशक्तिमान यहोवा से ही डरना चाहिये। तुम्हें बस उसी का आदर करना चाहिये। तुम्हें उसी से

शिलोह यरूशलेम का एक तालाब। नये 'धर्म–नियम' में इसी तालाब को 'शिलोह' नाम दिया गया है।

डरना चाहिये। [14]यदि तुम यहोवा के प्रति आदर रखोगे और उसे पवित्र मानोगे तो वह तुम्हारे लिये एक सुरक्षित स्थान होगा। किन्तु तुम उसका आदर नहीं करते। इसलिए परमेश्वर एक ऐसी चट्टान हो गया है जिसके उपर तुम लोग गिरोगे। वह एक ऐसी चट्टान हो गया है जिस पर इस्राएल के दो परिवार ठोकर खायेंगे। यरूशलेम के सभी लोगों को फँसाने के लिये वह एक फँदा बन गया है। [15](इस चट्टान पर बहुत से लोग गिरेंगे। वे गिरेंगे ओर चकनाचूर हो जायेंगे। वे जाल में पड़ेंगे और पकड़ें जायेंगे।)

[16]यशायाह ने कहा, "एक वाचा कर और उस पर मुहर लगा दे। भविष्य के लिये, मेरे उपदेशों की रक्षा कर। मेरे अनुयायियों के देखते हुए ही ऐसा कर। [17]वह वाचा यह है:

मैं सहायता पाने के लिये यहोवा की प्रतीक्षा करुँगा।
यहोवा याकूब के घराने से लज्जित है।
वह उनको देखना तक नहीं चाहता है।
किन्तु मैं यहोवा की प्रतिक्षा करुँगा।
वह हमारी रक्षा करेगा।

[18]"मैं और मेरे बच्चे इस्राएल के लोगों के लिये संकेत और प्रमाण हैं। हम उस सर्वशक्तिमान यहोवा के द्वारा भेजे गये हैं, जो सिय्योन पर्वत पर रहता है।"

[19]कुछ लोग कहा करते हैं, "भविष्य बतानेवालों और जादूगरों से पूछो, क्या करना है?" (ये भविष्य बताने वाले और जादूगर फुस-फुसाकर बोलते हैं। ये लोगों पर यह प्रभाव डालने के लिये कि उनके पास अन्तर्दृष्टि हैं, वे चुपचाप बातें करते हैं।) किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ कि लोगों को अपने परमेश्वर से सहायता माँगनी चाहिये! वे भविष्य बताने वाले और जादूगर मरे हुए लोगों से पूछ कर बताते हैं कि क्या करना चाहिये? किन्तु भला जीवित लोग मरे हुओं से कोई बात क्यों पूछें।

[20]तुम्हें शिक्षाओं और वाचा के अनुसार चलना चाहिये। यदि तुम इन आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे तो हो सकता है तुम ग़लत आज्ञाओं का पालन करने लगो। (ये गलत आज्ञाएँ वे हैं जो जादूगरों और भविष्य बताने वालों के द्वारा मिलती है। ये आज्ञाएँ बेकार हैं। उन आज्ञाओं पर चल कर तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।)

[21]यदि तुम उन गलत आज्ञाओं पर चलोगे, तो तुम्हारे देश पर विपत्ति आयेगी और भूखमरी फैलेगी। लोग भूखे मरेंगे। फिर वे क्रोधित होंगे और अपने राजा और अपने देवताओं के विरुद्ध बाते कहेंगे। इसके बाद वे सहायता के लिये परमेश्वर की ओर निहारेंगे। [22]यदि अपने देश में वे चारों तरफ़ देखेंगे तो उन्हें चारों ओर विपत्ति और चिन्ता जनक अन्धेरा ही दिखाई देगा। लोगों का वह अंधकारमय दु:ख उन्हें देश छोड़ने पर विवश करेगा और वे लोग जो उस अन्धेरे में फँसे होंगे, अपने आपको उससे मुक्त नहीं करा पायेंगे।

एक नया दिन आने को है

9 पहले लोग सोचा करते थे कि जबूलून और नप्ताली की धरती महत्वपूर्ण नहीं है। किन्तु बाद में परमेश्वर उस धरती को महान बनायेगा। समुद्र के पास की धरती पर, यरदन नदी के पार और गालील में गैर यहूदी लोग रहते हैं।

[2]यद्यपि आज ये लोग अन्धकार में निवास करते हैं, किन्तु इन्हें महान प्रकाश का दर्शन होगा। ये लोग एक ऐसे अन्धेरे स्थान में रहते हैं जो मृत्यु के देश के समान है। किन्तु वह "अद्‌भुत ज्योति" उन पर प्रकाशित होगा।

[3]हे परमेश्वर! तू इस जाति की बढ़ौतरी कर। तू लोगों को खुशहाल बना। ये लोग तुझे अपनी प्रसन्नता दर्शायेंगे। यह प्रसन्नता वैसी ही होगी जैसी कटनी के समय पर होती है। यह प्रसन्नता वैसी ही होगी जैसी युद्ध में जीतने के बाद लोग जब विजय की वस्तुओं को आपस में बाँटते हैं, तब उन्हें होती है। [4]ऐसा क्यों होगा? क्योंकि तुम पर से भारी बोझ उतर जायेगा। लोगों की पीठों पर रखे हुए भारी बल्लों को तुम उतरवा दोगे। तुम उस दण्ड को छीन लोगे जिससे शत्रु तुम्हारे लोगों को दण्ड दिया करता है। यह वैसा समय होगा जैसा वह समय था जब तुमने मिद्यानियों को हराया था।

[5]हर वह कदम जो युद्ध में आगे बढ़ा, नष्ट कर दिया जायेगा। हर वह वर्दी जिस पर लहू के धब्बे लगे हुए हैं, नष्ट कर दी जायेगी। ये वस्तुएँ आग में झोंक दी जायेंगी। [6]यह सब कुछ तब घटेगा जब उस विशेष बच्चे का जन्म होगा। परमेश्वर हमें एक पुत्र प्रदान करेगा। यह पुत्र लोगों की अगुवाई के लिये उत्तरदायी होगा। उसका नाम होगा: "अद्‌भुत, उपदेशक, सामर्थी परमेश्वर, पिता-चिर अमर और शांति का राजकुमार।" [7]उसके राज्य में शक्ति और शांति का निवास होगा। दाऊद के वंशज, उस राजा के

राज्य का निरन्तर विकास होता रहेगा। वह राजा नेकी और निष्पक्ष न्याय का अपने राज्य के शासन में सदा–सदा उपयोग करता रहेगा।

वह सर्वशक्तिशाल यहोवा अपनी प्रजा से गहरा प्रेम रखता है और उसका यह गहरा प्रेम ही उससे ऐसे काम करवाता है।

परमेश्वर इस्राएल को दण्ड देगा

[8]याकूब (इस्राएल) के लोगों के विरुद्ध मेरे यहोवा ने एक आज्ञा दी। इस्राएल के विरुद्ध दी गयी उस आज्ञा का पालन होगा। [9]तब एप्रैम के हर व्यक्ति को और यहाँ तक कि शोमरोन के मुखियाओं तक को यह पता चल जायेगा कि परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया था।

आज वे लोग बहुत अभिमानी और बड़बोला हैं। वे लोग कहा करते हैं, [10]"हो सकता है ये ईंटें गिर जायें किन्तु हम इसका और अधिक मजबूत पत्थरों से निर्माण लेंगे। सम्भव है ये छोटे–छोटे पेड़ काट गिराये जायें। किन्तु हम वहाँ नये पेड़ खड़े कर देंगे और ये नये पेड़ विशाल तथा मजबूत पेड़ होंगे।"

[11]सो यहोवा लोगों को इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने के लिए उकसाएगा। यहोवा रसीन के शत्रुओं को उनके विरोध ले आयेगा। [12]यहोवा पूर्व से आराम के लोगों को और पश्चिम से पलिश्तियों को लायेगा। वे शत्रु अपनी सेना से इस्राएल को हरा देंगे। किन्तु परमेश्वर इस्राएल से तब भी कुपित रहेगा। यहोवा तब भी लोगों को दण्ड देने को तत्पर रहेगा।

[13]परमेश्वर यद्यपि लोगों को दण्ड देगा, किन्तु वे फिर भी पाप करना नहीं छोड़ेंगे। वे परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ेंगे। वे सर्वशक्तिमान यहोवा का अनुसरण नहीं करेंगे। [14]सो यहोवा इस्राएल का सिर और पूँछ काट देगा। एक ही दिन में यहोवा उसकी शाखा और उसके तने को ले लेगा। [15](यहाँ सिर का अर्थ है अग्रज तथा महत्वपूर्ण अगुवा लोग और पूँछ से अभिप्राय है ऐसे नबी जो झूठ बोला करते हैं।)

[16]वे लोग जो लोगों की अगुवाई करते हैं, उन्हें बुरे मार्ग पर ले जाते हैं। सो ऐसे लोग जो उनके पीछे चलते हैं, नष्ट कर दिये जायेंगे। [17]ये सभी लोग दुष्ट हैं। इसलिये यहोवा इन युवकों से प्रसन्न नहीं है। यहोवा उनकी विधवाओं और उनके अनाथ बच्चों पर दया नहीं करेगा। क्यों? क्योंकि ये सभी लोग दुष्ट हैं। ये लोग ऐसे काम करते हैं जो परमेश्वर के विरुद्ध हैं। यें लोग झूठ बोलते हैं। सो परमेश्वर इन लोगों के प्रति कुपित बना रहेगा और उन्हें दण्ड देता रहेगा।

[18]बुराई एक छोटी सी आग है, आग पहले घास फूस और काँटों को जलाती है, फिर वह बड़ी–बड़ी झाड़ियों और जंगल को जलाने लगती है और अंत में जाकर वह व्यापक आग का रूप ले लेती है और हर वस्तु धुआँ बन कर ऊपर उड़ जाती है।

[19]सर्वशक्तिमान यहोवा कुपित है। इसलिए यह प्रदेश भस्म हो जायेगा। उस आग में सभी लोग भस्म हो जायेंगें। कोई व्यक्ति अपने भाई तक को बचाने का जतन नहीं करेगा। [20]तब उनके आस पास, जो भी कुछ होगा, वे उसे जब दाहिनी ओर से लेंगे, या बाईं ओर से लेंगे, भूखे ही रहेंगे। फिर वे लोग आपस में अपने ही परिवार के लोगों को खाने लगेंगे। [21](अर्थात् मनश्शे, एप्रैम के विरुद्ध लड़ेगा और एप्रैम मनश्शे के विरुद्ध लड़ाई करेगा और फिर दोनों ही यहूदा के विरुद्ध हो जायेंगे।)

यहोवा इस्राएल से अभी भी कुपित है। यहोवा उसके लोगों को दण्ड देने के लिये अभी भी तत्पर है।

10 उन नियम बनाने वालों को देखो जो अन्यायपूर्ण नियम बना कर लिखते हैं। ऐसे नियम बनाने वाले ऐसे नियम बना कर लिखते हैं जिससे लोगों का जीवन दूभर होता है। [2]वे नियम बनाने वाले गरीब लोगों के प्रति सच्चे नहीं हैं। वे गरीबों के अधिकार छीनते हैं। वे लोगों को विधवाओं और अनाथों के यहाँ चोरी करने की अनुमति देते हैं।

[3]अरे ओ, नियम को बनाने वालों, जब तुम्हें, जो काम तुमने किये हैं, उनका हिसाब देना होगा तब तुम क्या करोगे? सुदूर देश से तुम्हारा विनाश आ रहा है। सहायता के लिये तुम किस के पास दौड़ोगे? तुम्हारा धन और तुम्हारी सम्पत्ति तुम्हारी रक्षा नहीं कर पायेंगे। [4]तुम्हें एक बंदी के समान नीचे झुकना ही होगा। तुम मुर्दे के समान धरती में गिर कर दण्डवत प्रणाम करोगे किन्तु उससे तुम्हें कोई सहायता नहीं मिलेगी। परमेश्वर तब भी कुपित रहेगा। परमेश्वर तुम्हें दण्ड देने के लिए तब भी तत्पर रहेगा।

[5]परमेश्वर कहेगा, "मैं एक छड़ी के रुप में अश्शूर का प्रयोग करूँगा। मैं क्रोध में भर कर इस्राएल को दण्ड देने के लिए अश्शूर का प्रयोग करूँगा। [6]ऐसे लोगों के

विरुद्ध, जो पाप कर्म करते हैं युद्ध करने के लिये मैं अश्शूर को भेजूँगा। मैं उन लोगों से कुपित हूँ और उन लोगों से युद्ध करने के लिये मैं अश्शूर को आदेश दूँगा। अश्शूर उन लोगों को हरा देगा और फिर उनसे उनकी कीमती वस्तुएँ छीन लेगा। अश्शूर के लिए इस्राएल गलियों में पड़ी उस धूल जैसा होगा जिसे वह अपने पैरों तले रौंदेगा।

[7]"किन्तु अश्शूर यह नहीं समझता है कि मैं उसका प्रयोग करुँगा। वह यह नहीं सोचता कि वह मेरा एक साधन है। अश्शूर तो बस दूसरे लोगों को नष्ट करना चाहता है। अश्शूर की तो मात्र यह योजना है कि वह बहुत सी जातियों को नष्ट कर दे। [8]अश्शूर अपने मन में कहता है, 'मेरे सभी व्यक्ति राजाओं के समान हैं। [9]कलनो नगरी कर्कमीश के जैसी है और हमात नगर अर्पद नगर के जैसा है। शोमरोन की नगरी दमिश्क नगर के जैसी है। [10]मैंने इन सभी बुरे राज्यों को पराजित कर दिया है और अब इन पर मेरा अधिकार है। जिन मूर्तियों की वे लोग पूजा करते हैं, वे यरूशलेम और शोमरोन की मूर्तियों से अधिक हैं। [11]मैंने शोमरोन और उसकी मूर्तियों को पराजित कर दिया। मैं यरूशलेम और उसकी मूर्तियों को भी जिन्हें उसके लोगों ने बनाया है पराजित कर दूँगा।'"

[12]मेरा स्वामी जब यरूशलेम और सिय्योन पर्वत के लिये, जो उसकी योजना है, उसकी बातों को करना समाप्त कर देगा, तो यहोवा अश्शूर को दण्ड देगा। अश्शूर का राजा बहुत अभिमानी हैं। उसके अभिमान ने उससे बहुत से बुरे काम करवाये हैं। सो परमेश्वर उसे दण्ड देगा।

[13]अश्शूर का राजा कहा करता है, "मैं बहुत बुद्धिमान हूँ। मैंने स्वयं अपनी बुद्धि और शक्ति से अनेक महान कार्य किये हैं। मैंने बहुत सी जातियों को हराया है। मैंने उनका धन छीन लिया है और उनके लोगों को दास बना लिया है। मैं एक बहुत शक्तिशाली व्यक्ति हूँ। [14]मैंने स्वयं अपने हाथों से उन सब लोगों की धन दौलत ऐसे ले ली है जैसे कोई व्यक्ति चिड़ियाँ के घोंसले से अण्डे उठा लेता है। चिड़ियाँ जो प्राय: अपने घोंसले और अण्डों को छोड़ जाती है और उस घोंसले की रखवाली करने के लिये कोई भी नहीं रह जाता। वहाँ अपने पंखों और अपनी चोंच से शोर मचाने और लड़ाई करने के लिये कोई पक्षी नहीं होता। इसीलिए लोग अण्डों को उठा लेते हैं। इसी प्रकार धरती के सभी लोगों को उठा ले जाने से रोकने के लिए कोई भी व्यक्ति वहाँ नहीं था।"

शोमरोन की शक्ति पर परमेश्वर का नियंत्रण

[15]कुल्हाड़ा उस व्यक्ति से अच्छा नहीं होता, जो कुल्हाडें को चलाता है। कोई आरा उस व्यक्ति से अच्छा नहीं होता, जो उस आरे से काटता है। किन्तु अश्शूर का विचार है कि वह परमेश्वर से भी अधिक महत्वपूर्ण और बलशाली है। उसका यह विचार ऐसा ही है जैसे किसी छड़ी का यह सोचना कि वह उस व्यक्ति से अधिक बली और महत्वपूर्ण है जो उसे उठाता है और किसी को दण्ड देने के लिए उसका प्रयोग करता है।

[16]अश्शूर का विचार है कि वह महान है किन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा अश्शूर को दुर्बल कर डालने वाली महामारी भेजेगा और अश्शूर अपने धन और अपनी शक्ति को वैसे ही खो बैठेगा जैसे कोई बीमार व्यक्ति अपनी शक्ति गवाँ बैठता है। फिर अश्शूर का वैभव नष्ट हो जायेगा। यह उस अग्नि के समान होगा जो उस समय तक जलती रहती है जब तक सब कुछ समाप्त नहीं हो जाता। [17]इस्राएल का प्रकाश (परमेश्वर) एक अग्नि के समान होगा। वह पवित्रतम लपट के जैसा प्रकाशमान होगा। वह उस अग्नि के समान होगा जो खरपतवार और काँटों को तत्काल जला डालती है [18]और फिर बढ़कर बड़े बड़े पेड़ों और अँगूर के बगीचों को जला देती है और अंत में सब कुछ नष्ट हो जाता है यहाँ तक कि लोग भी। ऐसा उस समय होगा जब परमेश्वर अश्शूर को नष्ट करेगा। अश्शूर सड़ते–गलते लट्ठे के जैसा हो जायेगा। [19]जंगल में हो सकता है थोड़े से पेड़ खड़े रह जायें। पर वे इतने थोड़े से होंगे कि उन्हें कोई बच्चा तक गिन सकेगा।

[20]उस समय, वे लोग जो इस्राएल में जीवित बचेंगे, यानी याकूब के वंश के ये लोग उस व्यक्ति पर निर्भर नहीं करते रहेंगे जो उन्हें मारता पीटता है। वे सचमुच उस यहोवा पर निर्भर करना सीख जायेंगे जो इस्राएल का पवित्र (परमेश्वर) है। [21]याकूब के वंश के वे बाकी बचे लोग शक्तिशाली परमेश्वर का फिर अनुसरण करने लगेंगे।

[22]तुम्हारे व्यक्ति असंख्य है। वे सागर के रेत कणों के समान है; किन्तु उनमें से कुछ ही यहोवा की ओर फिर वापस मुड़ आने के लिये बचे रहेंगे। वे लोग परमेश्वर

की ओर मुड़ेंगे किन्तु उससे पहले तुम्हारे देश का विनाश हो जायेगा। परमेश्वर ने घोषणा कर दी है कि वह उस धरती का विनाश करेगा और उसके बाद उस धरती पर नेकी का आगमन इस प्रकार होगा जैसे कोई भरपूर नदी बहती है। [23]मेरा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा, इस प्रदेश को निश्चय ही नष्ट करेगा।

[24]मेरा स्वामी सर्वशक्तिशाली यहोवा कहता है, "हे! सिय्योन में रहने वाले मेरे लोगों, अश्शूर से मत डरो! वह भविष्य में तुम्हें अपनी छड़ी से इस तरह पीटेगा जैसे पहले मिस्र ने तुम्हें पीटा था। यह ऐसा होगा जैसे मानो तुम्हें हानि पहुँचाने के लिये अश्शूर किसी लाठी का प्रयोग कर रहा हो। [25]किन्तु थोड़े ही समय बाद मेरा क्रोध शांत हो जायेगा, मुझे संतोष हो जायेगा कि अश्शूर ने तुम्हें काफी दण्ड दे दिया है।"

[26]इसके बाद सर्वशक्तिमान यहोवा अश्शूर को कोडों से मारेगा। जैसा पहले यहोवा ने जब ओरेब की चट्टान पर मिद्यानियों को पराजित किया था, तब हुआ था। वैसा ही उस समय होगा जब यहोवा अश्शूर पर आक्रमण करेगा। पहले यहोवा ने मिस्र को दण्ड दिया था। उसने सागर के ऊपर छड़ी उठायी थी* और मिस्र से अपने लोगों को ले गया था। यहोवा जब अश्शूर से अपने लोगों की रक्षा करेगा, तब भी ऐसा ही होगा।

[27]अश्शूर तुम पर विपत्तियाँ लायेगा। वे विपत्तियाँ ऐसे बोझों के समान होंगी, जिन्हें तुम्हें अपने ऊपर एक जुए के रूप में उठाना ही होगा। किन्तु फिर तुम्हारी गर्दन पर से उस जुए को उतार फेंका जायेगा। वह जुआ तुम्हारी शक्ति (परमेश्वर) द्वारा तोड़ दिया जायेगा।

इस्राएल पर अश्शूर की सेना का आक्रमण

[28]'अय्यात'* के निकट सेनाओं का प्रवेश होगा। मिग्रोन यानी 'खलिहानो' को सेनाएँ रौंद डालेंगी। सेनाएँ इसके खाने की सामग्री को 'कोठियारों' (मिकमाश) में रख देंगी। [29]'पार करने के स्थान' (माबरा) से सेनाएँ नदी पार करेंगी। वे सेनाएँ जेबा में रात बिताएंगी। रामा डर जायेगा। शाऊल के गिबा के लोग निकल भागेंगे।

[30]हे गल्लीम की पुत्री चिल्ला! हे लैशा सुन! हे, अनातोत मुझे उत्तर दे! [31]मदमेना के लोग भाग रहे हैं। गेबीम के लोग छिपे हुए हैं। [32]आज सेना नोब में टिकेगी और यरूशलेम के पर्वत सिय्योन पर चढ़ाई करने की तैयारी करेंगी।

[33]देखो! हमारा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा विशाल वृक्ष (अश्शूर) को काट गिरायेगा। यहोवा अपनी महान शक्ति से ऐसा करेगा। बड़े और महत्वपूर्ण लोग काट गिराये जायेंगे। वे महत्वहीन हो जायेंगे। [34]यहोवा अपने कुल्हाड़े से वन को काट डालेगा और लबानोन के विशाल वृक्ष (मुखिया लोग) गिर पड़ेंगे।

शांति का राजा आ रहा है

11 यिशै के तने (वंश) से एक छोटा अंकुर (पुत्र) फूटना शुरु होगा। यह अब शाखा यिशै के मूल से फूटेगी। [2]उस पुत्र में यहोवा की आत्मा होगी। वह आत्मा विवेक, समझबूझ, मार्ग दर्शन और शक्ति की आत्मा होगी। वह आत्मा इस पुत्र को यहोवा को समझने और उसका आदर करने में सहायता देगी। [3]यह पुत्र यहोवा का आदर करेगा और इससे वह प्रसन्न होगा।

यह पुत्र वस्तुएँ जैसी दिखाई दे रही होगी, उसके अनुसार लोगों का न्याय नहीं करेगा। वह सुनी, सुनाई के आधार पर ही न्याय नहीं करेगा। [4-5]वह गरीब लोगों का न्याय ईमानदारी और सच्चाई के साथ करेगा। धरती के दीन जनों के लिये जो कुछ करने का निर्णय वह लेगा, उसमें वह पक्षपात रहित होगा। यदि वह यह निर्णय करता है कि लोगों पर मार पड़े तो वह आदेश देगा और उन लोगों पर मार पड़ेगी। यदि वह निर्णय करता है कि उन लोगों की मृत्यु होनी चाहिये तो वह आदेश देगा और उन दुष्टों को मौत के घाट उतार दिया जाएगा। नेकी और सच्चाई इस पुत्र को शक्ति प्रदान करेंगी। उसके लिए नेकी और सच्चाई एक ऐसे कमर बंद के समान होंगे जिसे वह अपनी कमर के चारों ओर लपेटता हैं।

[6]उसके समय में, भेड़ और भेड़िये शांति से साथ–साथ रहेंगे, सिंह और बकरी के बच्चों के साथ शांति से पड़े रहेंगे। बछड़े, सिंह और बैल आपस में शांति के साथ रहेंगे। एक छोटा सा बच्चा उनकी अगुवाई करेगा। [7]गायें और रीछनियां शांति से साथ–साथ अपना खाना खाएंगी। उनके बच्चे साथ–साथ बैठा करेंगे और आपस में एक दूसरे को हानि नहीं पहुँचायेंगे। सिंह गायों के समान घास चरेंगे

उसने ... उठायी थी निर्गमन 14:1–15:21
अय्यात अर्थात् खंड़हर।

[8]और यहाँ तक कि साँप भी लोगों को हानि नहीं पहुँचायेंगे। काले नाग के बिल के पास एक बच्चा तक खेल सकेगा। कोई भी बच्चा विषधर नाग के बिल में हाथ डाल सकेगा।

[9]ये सब बातें दिखाती हैं कि वहाँ सब कहीं शांति होगी। कोई व्यक्ति किसी दूसरे को हानि नहीं पहुँचायेगा। मेरे पवित्र पर्वत के लोग वस्तुओं को नष्ट नहीं करना चाहेंगे। क्यों? क्योंकि लोग यहोवा को सचमुच जान लेंगे। वे उसके ज्ञान से ऐसे परिपूर्ण होंगे जैसे सागर जल से परिपूर्ण होता है।

[10]उस समय यिशै के परिवार में एक विशेष व्यक्ति होगा। यह व्यक्ति एक ध्वजा के समान होगा। यह 'ध्वजा' दर्शायेगी कि समस्त राष्ट्रों को उसके आसपास इकट्ठा हो जाना चाहिये। ये राष्ट्र उससे पूछा करेंगे कि उन्हें क्या करना चाहिये? और वह स्थान, जहाँ वह होगा, भव्यता से भर जायेगा।

[11]ऐसे अवसर पर, मेरा स्वामी परमेश्वर फिर आयेगा और उसके जो लोग बच गये थे उन्हें वह ले जायेगा। यह दूसरा अवसर होगा जब परमेश्वर ने वैसा किया। (ये परमेश्वर के ऐसे लोग है जो अश्शूर, उत्तरी मिस्र, दक्षिणी मिस्र, कूश, एलाम, बाबुल, हमात तथा समस्त संसार के ऐसे ही सुदूर देशों में छूट गये हैं।)

[12]परमेश्वर सब लोगों के लिये संकेत के रूप में झंडा उठायेगा। इस्राएल और यहूदा के लोग अपने–अपने देशों को छोड़ने के लिये विवश किये गये थे। वे लोग धरती पर दूर–दूर फैल गये थे किन्तु परमेश्वर उन्हें परस्पर एकत्र करेगा।

[13]उस समय एप्रैम (इस्राएल) यहूदा से जलन नहीं रखेगा। यहूदा का कोई शत्रु नहीं बचेगा। यहूदा एप्रैम के लिये कोई कष्ट पैदा नहीं करेगा। [14]बल्कि एप्रैम और यहूदा पलिश्तियों पर आक्रमण करेंगे। ये दोनों देश उड़ते हुए उन पक्षियों के समान होंगे जो किसी छोटे से जानवर को पकड़ने के लिए झपट्टा मारते हैं। एक साथ मिल कर वे दोनों पूर्व की धन दौलत को लूट लेंगे। एप्रैम और यहूदा एदोम, मोआब और अम्मोनी के लोगों पर नियन्त्रण कर लेंगे।

[15]यहोवा कुपित होगा और जैसे उसने मिस्र के सागर को दो भागों में बाँट दिया था, उसी प्रकार परात नदी पर वह अपना हाथ उठायेगा और उस पर प्रहार करेगा। जिससे वह नदी सात छोटी धाराओं में बट जायेगी। ये छोटी जल धाराएँ गहरी नहीं होंगी। लोग अपने जूते पहने हुए ही पैदल चल कर उन्हें पार कर लेंगे। [16]परमेश्वर के वे लोग जो वहाँ छूट गये थे अश्शूर को छोड़ देने के लिए रास्ता पा जायेंगे। यह वैसा ही होगा, जैसा उस समय हुआ था, जब परमेश्वर लोगों को मिस्र से बाहर निकाल कर लाया था।

परमेश्वर का स्तुति गीत

12 उस समय तुम कहोगे:
"हे यहोवा, मैं तेरे गुण गाता हूँ!
तू मुझ से कुपित रहा है
किन्तु अब मुझ पर क्रोध मत कर!
तू मुझ पर अपना प्रेम दिखा।"

2 परमेश्वर मेरी रक्षा करता है।
मुझे उसका भरोसा है।
मुझे कोई भय नहीं है।
वह मेरी रक्षा करता है।
यहोवा याह मेरी शक्ति है।
वह मुझको बचाता है,
और मैं उसका स्तुति गीत गाता हूँ।

3 तू अपना जल मुक्ति के झरने से ग्रहण कर।
तभी तू प्रसन्न होगा।

4 फिर तू कहेगा,
"यहोवा की स्तुति करो!
उसके नाम की तुम उपासना किया करो!
उसने जो कार्य किये हैं उसका
लोगों से बखान करो।
तुम उनको बताओ कि वह कितना महान है!"

5 तुम यहोवा के स्तुति गीत गाओ!
क्यों? क्योंकि उसने महान कार्य किये हैं!
इस शुभ समाचार को जो परमेश्वर का है,
सारी दुनियाँ में फैलाओ ताकि सभी लोग
ये बातें जान जायें।

6 हे सिय्योन के लोगों,
इन सब बातों का तुम उद्घोष करो!
वह इस्राएल का पवित्र (शक्तिशाली) ढंग से
तुम्हारे साथ है।
इसलिए तुम प्रसन्न हो जाओ!

बाबुल को परमेश्वर का सन्देश

13 आमोस के पुत्र यशायाह को परमेश्वर ने बाबुल के बारे में यह शोक सन्देश प्रकट किया।

[2]परमेश्वर ने कहा:

"पर्वत पर ध्वजा उठाओ जिस
पर्वत पर कुछ नहीं है।
उन लोगों को पुकारो।
सिपाहियों, अपने हाथ
संकेत के रुप में हिलाओ
उन लोगों से कहो कि वे उन द्वार से
प्रवेश करे जो बड़े लोगों के हैं।"

[3]परमेश्वर ने कहा:

"मैंने लोगों से उन पुरुषों को अलग किया है,
और मैं स्वयं उन को आदेश दूँगा।
मैं क्रोधित हूँ।
मैंने अपने उत्तम पुरुषों को लोगों को
दण्ड देने के लिये एकत्र किये हैं।
मुझको इन प्रसन्न लोगों पर गर्व है!

[4] पहाड़ में एक तीव्र शोर हुआ है।
तुम उस शोर को सुनो!
ये शोर ऐसा लगता है
जैसे बहुत ढेर सारे लोगों का।
बहुत सारे देशों के लोग आकर इकट्ठे हुए हैं।
सर्वशक्तिमान यहोवा अपनी सेना को
एक साथ बुला रहा है।

[5] यहोवा और यह सेना किसी दूर के देश से आते हैं।
ये लोग क्षितिज के पार से
क्रोध प्रकट करने आ रहे हैं।
यहोवा इस सेना का उपयोग ऐसे करेगा
जैसे कोई किसी शस्त्र का उपयोग करता है।
यह सेना सारे देश को नष्ट कर देगी।

[6]यहोवा का न्याय का विशेष दिन आने को है। इसलिये रोओ! और स्वयं अपने लिये दु:खी होओ! समय आ रहा है जब शत्रु तुम्हारी सम्पत्ति चुरा लेगा। सर्वशक्तिमान परमेश्वर वैसा करवाएगा। [7]लोग अपना साहस छोड़ बैठेंगे और भय लोगों को दुर्बल बना देगा। [8]हर कोई भयभीत होगा। डर से लोगों के ऐसे दुखने लगेंगे जैसे किसी बच्चे को जन्म देने वाली माँ का पेट दुखने लगता है। उनके मुँह लाल हो जायेंगे, जैसे कोई आग हो। लोग अचरज में पड़ जायेंगे क्योंकि उनके सभी पड़ोसियों के मुखों पर भी भय दिखाई देगा।

बाबुल के विरुद्ध परमेश्वर का न्याय

[9]देखो यहोवा का विशेष दिन आने को है। वह एक भयानक दिन होगा। परमेश्वर बहुत अधिक क्रोध करके इस देश का विनाश कर देगा। वह पापियों को विवश करेगा कि वे उस देश को छोड़ दें। [10]आकाश काले पड़ जायेंगे; सूरज, चाँद और तारे नहीं चमकेंगे।

[11]परमेश्वर कहता है, "मैं इस दुनिया पर बुरी-बुरी बातें घटित करुँगा। मैं दुष्टों को उनकी दुष्टता का दण्ड दूँगा। मैं अभिमानियों के अभिमान को मिटा दूँगा। ऐसे लोग जो दूसरे के प्रति नीच हैं, मैं उनके बड़े बोल को समाप्त कर दूँगा। [12]वहाँ बस थोड़े से लोग ही बचेंगे। जैसे सोने का मिलना दुर्लभ होता है, वैसे ही वहाँ लोगों का मिलना दुर्लभ हो जायेगा। किन्तु जो लोग मिलेंगे, वे शुद्ध सोने से भी अधिक मूल्यवान होंगे। [13]अपने क्रोध से मैं आकाश को हिला दूँगा। धरती अपनी धुरी से डिगा दी जायेगी।"

यह सब उस समय घटेगा जब सर्वशक्तिमान यहोवा अपना क्रोघ दर्शायेगा। [14]तब बाबुल के निवासी ऐसे भागेंगे जैसे घायल हरिण भागता है। वे ऐसे भागेंगे जैसे बिना गड़ेरिये की भेड़ भागती हैं। हर कोई व्यक्ति भाग कर अपने देश और अपने लोगों की तरफ़ मुड़ आयेगा। [15]किन्तु बाबुल के लोगों का पीछा उनके शत्रु नहीं छोड़ेंगे और जब शत्रु किसी व्यक्ति को धर पकड़ेगा तो वह उसे तलवार के घाट उतार देगा। [16]उनके घरों की हर वस्तु चुरा ली जायेगी। उनकी पत्नियों के साथ कुकर्म किया जायेगा और उनके छोटे-छोटे बच्चों को लोगों के देखते पीट पीटकर मार डाला जायेगा।

[17]परमेश्वर कहता है, "देखों, मैं मादी की सेनाओं से बाबुल पर आक्रमण कराऊँगा। मादी की सेनाएँ यदि सोने और चाँदी का भुगतान ले भी लेंगी तो भी वे उन पर आक्रमण करना बंद नहीं करेंगी। [18]बाबुल के युवकों को सैनिक आक्रमण करके मार डालेंगे। वे बच्चों तक पर दया नहीं दिखायेंगे। छोटे बालकों तक के प्रति वे करुणा नहीं करेंगे। बाबुल का विनाश होगा और यह विनाश सदोम और अमोरा के विनाश के समान ही होगा। इस विनाश को परमेश्वर करायेगा और वहाँ कुछ भी नहीं बचेगा।

[19]"बाबुल सबसे सुन्दर राजधानी है। बाबुल के निवासियों को अपने नगर पर गर्व है। [20]किन्तु बाबुल का सौन्दर्य बना नहीं रहेगा। भविष्य में वहाँ लोग नहीं रहेंगे। अराबी के लोग वहाँ अपने तम्बू नहीं गाड़ेंगे। गड़ेरिये चराने के लिये वहाँ अपनी भेड़ों को नहीं लायेंगे। [21]जो पशु वहाँ रहेंगे वे बस मरुभूमि के पशु ही होंगे। बाबुल में अपने घरों में लोग नहीं रह पायेंगे। घरों में जंगली कुत्ते और भेड़िए चिल्लाएंगे। घरों के भीतर जंगली बकरे विहार करेंगे। [22]बाबुल के विशाल भवनों में कुत्ते और गीदड़ रोयेंगे। बाबुल बरबाद हो जायेगा। बाबुल का अंत निकट है। अब बाबुल के विनाश की मैं और अधिक प्रतीक्षा नहीं करता रहूँगा।"

इस्राएल घर लौटेगा

14 आगे चल कर, यहोवा याकूब पर फिर अपना प्रेम दर्शायेगा। यहोवा इस्राएल के लोगों को फिर चुनेगा। उस समय यहोवा उन लोगों को उनकी धरती देगा। फिर गैर यहूदी लोग, यहूदी लोगों के साथ अपने को जोड़ेंगे। दोनों ही जातियों के लोग एकत्र हो कर याकूब के परिवार के रूप में एक हो जायेंगे। [2]वे जातियाँ इस्राएल की धरती के लिये इस्राएल के लोगों को फिर वापस ले लेंगी। दूसरी जातियों के वे स्त्री पुरुष इस्राएल के दास हो जायेंगे। बीते हुए समय में उन लोगों ने इस्राएल के लोगों को बलपूर्वक अपना दास बनाया था। इस्राएल के लोग उन जातियों को हरायेंगे और फिर इस्राएल उन पर शासन करेगा। [3]यहोवा तुम्हारे श्रम को समाप्त करेगा और तुम्हें आराम देगा। पहले तुम दास हुआ करते थे, लोग तुम्हें कड़ी मेहनत करने को विवश करते थे किन्तु यहोवा तुम्हारी इस कड़ी मेहनत को अब समाप्त कर देगा।

बाबुल के राजा के विषय में एक गीत

[4]उस समय बाबुल के राजा के बारे में तुम यह गीत गाने लगोगे:

वह राजा दुष्ट था जब वह हमारा शासक था
किन्तु अब उसके राज्य का अन्त हुआ।
[5] यहोवा दुष्ट शासकों का राज दण्ड तोड़ देता है।
यहोवा उनसे उनकी शक्ति छीन लेता है।
[6] बाबुल का राजा क्रोध में भरकर
लोगों को पीटा करता है।
उस दुष्ट शासक ने लोगों को पीटना
कभी बंद नहीं किया।
उस दुष्ट राजा ने क्रोध में भरकर
लोगों पर राज किया।
उसने लोगों के साथ बुरे कामों का
करना नहीं छोड़ा।
[7] किन्तु अब सारा देश विश्राम में है।
देश में शान्ति है।
लोगों ने अब उत्सव मनाना शुरु किया है।
[8] तू एक बुरा शासक था,
और अब तेरा अन्त हुआ है।
यहाँ तक की चीड़ के वृक्ष भी प्रसन्न है।
लबानोन में देवदार के वृक्ष मगन हैं।
वृक्ष यह कहते हैं,
"जिस राजा ने हमें गिराया था।
आज उस राजा का ही पतन हो गया है,
और अब वह राजा कभी खड़ा नहीं होगा।"
[9] अधोलोक, यानी मृत्यु का प्रदेश उत्तेजित है
क्योंकि तू आ रहा है।
धरती के प्रमुखों की आत्माएँ जगा रहा है।
तेरे लिये अधोलोक है।
अधोलोक तेरे लिये सिंहासन से
राजाओं को खड़ा कर रहा है।
तेरे अगुवायी के वे सब तैयार होंगे।
[10] ये सभी प्रमुख तेरी हँसी उड़ायेंगे।
वे कहेंगे,
"तू भी अब हमारी तरह मरा हुआ है।
तू अब ठीक हम लोगों जैसा है।"
[11] तेरे अभिमान को मृत्यु के लोक में
नीचे उतारा गया।
तेरे अभिमानी आत्मा की आने की घोषणा तेरी
वीणाओं का संगीत करता है।
तेरे शरीर को मक्खियाँ खा जायेंगी।
तू उन पर ऐसे लेटेगा मानों वे तेरा बिस्तर हो।
कीड़े ऐसे तेरी देह को ढक लेंगे मानों
कोई कम्बल हों।

12 तेरा स्वरुप भोर के तारे सा था,
किन्तु तू आकाश के ऊपर से गिर पड़ा।
धरती के सभी राष्ट्र पहले तेरे सामने
झुका करते थे।
किन्तु तुझको तो अब काट कर गिरा दिया गया।
13 तू सदा अपने से कहा करता था कि,
"मैं सर्वोच्च परमेश्वर सा बनूँगा।
मैं आकाशों के ऊपर जीऊँगा।
मैं परमेश्वर के तारों के ऊपर अपना
सिंहासन स्थापित करुँगा।
मैं जफोन के पवित्र पर्वत पर बैठूँगा।
मैं उस छिपे हुए पर्वत पर देवों से मिलूँगा।
14 मैं बादलों के वेदी तक जाऊँगा।
मैं सर्वोच्च परमेश्वर सा बनूँगा।"
15 किन्तु वैसा नहीं हुआ।
तू परमेश्वर के साथ ऊपर
आकाश में नहीं जा पाया।
तुझे अधोलोक के नीचे गहरे
पाताल में ले आया गया।
16 लोग जो तुझे टकटकी लगा कर देखा करते हैं,
वे तुझे तेरे लिये सोचा करते हैं।
लोगों को आज यह दिखता है कि
तू बस मरा हुआ है, और लोग कहा करते हैं,
"क्या यही वह व्यक्ति है जिसने धरती के
सारे राज्यों में भय फैलाया हुआ है?
17 क्या यह वही व्यक्ति है जिसने नगर नष्ट किये
और जिसने धरती को उजाड़ में बदल दिया?
क्या यह वही व्यक्ति है जिसने लोगों को
युद्ध में बन्दी बनाया और उनको
अपने घरों में नहीं जाने दिया?"
18 धरती का हर राजा शान से मृत्यु को प्राप्त किया।
हर किसी राजा का मकबरा (घर) बना है।
19 किन्तु हे बुरे राजा, तुझको तेरी कब्र से
निकाल फेंका दिया गया है।
तू उस शाखा के समान है जो वृक्ष से कट गयी
और उसे काट कर दूर फेंक दिया गया।
तू एक गिरी हुई लाश है जिसे युद्ध में मारा
गया, और दूसरे सैनिक उसे रौंदते चले गये।
अब तू ऐसा दिखता है
जैसे अन्य मरे व्यक्ति दिखते हैं।
तुझको कफन में लपेटा गया है।
20 बहुत से और भी राजा मरे।
उनके पास अपनी अपनी कब्र हैं।
किन्तु तू उनमें नहीं मिलेगा।
क्योंकि तूने अपने ही देश का विनाश किया।
अपने ही लोगों का तूने वध किया है।
जैसा विनाश तूने मचाया था।
21 उसकी सन्तानों के वध की तैयारी करो।
तुम उन्हें मृत्यु के घाट उतारो
क्योंकि उनका पिता अपराधी है।
अब कभी उसके पुत्र नहीं होंगे।
उसकी सन्तानों अब कभी भी संसार को
अपने नगरों से नहीं भरेंगी।
तेरी संताने वैसा करती नहीं रहेगी।
तेरी संतानों को वैसा करने से रोक दिया जायेगा।

22सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा, "मैं खड़ा होऊँगा और उन लोगों के विरुद्ध लड़ूँगा। मैं प्रसिद्ध नगर बाबुल को उजाड़ कर दूँगा। बाबुल के सभी लोगों को मैं नष्ट कर दूँगा। मैं उनकी संतानों, पोते-पोतियों और वंशजों को मिटा दूँगा।" ये सब बातें यहोवा ने स्वयं कही थी।

23यहोवा ने कहा था, "मैं बाबुल को बदल डालूँगा। उस स्थान में पशुओं का वास होगा, न कि मनुष्यों का। वह स्थान दलदली प्रदेश बन जायेगा। मैं 'विनाश की झाड़ू' से बाबुल को बाहर कर दूँगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यें बातें कही थी।

परमेश्वर अश्शूर को भी दण्ड देगा

24सर्वशक्तिमान यहोवा ने एक वचन दिया था। यहोवा ने कहा था, "मैं वचन देता हूँ, कि यें बातें ठीक वैसे ही घटेंगी, जैसे मैंने इन्हें सोचा है। ये बातें ठीक वैसे ही घटेंगी जैसी कि मेरी योजना है। 25मै अपने देश में अश्शूर के राजा का नाश करुँगा अपने पहाड़ों पर मैं अश्शूर के राजा को अपने पावों तले कुचलूँगा। उस राजा ने मेरे लोगों को अपना दास बनाकर उनके कन्धों पर एक जूआ रख दिया है। यहूदा की गर्दन से वह जूआ उठा लिया जायेगा। उस विपत्ति को उठाया जायेगा। 26मैं अपने लोगों के लिये ऐसी ही योजना बना रहा हूँ। सभी जातियों को दण्ड देने के लिए, मैं अपनी शक्ति का प्रयोग करुँगा।"

[27]यहोवा जब कोई योजना बनाता है तो कोई भी व्यक्ति उस योजना को रोक नहीं सकता! यहोवा लोगों को दण्ड देने के लिये जब अपना हाथ उठाता है तो कोई भी व्यक्ति उसे रोक नहीं सकता।

पलिश्तियों को परमेश्वर का सन्देश

[28]यह दुखद सन्देश उस वर्ष दिया गया था जब राजा आहाज की मृत्यु हुई थी।

[29]हे, पलिश्तियों के प्रदेशों! तू बहुत प्रसन्न है क्योंकि जो राजा तुझे मार लगाया करता था, आज मर चुका है। किन्तु तुझे वास्तव में प्रसन्न नहीं होना चाहिये। यह सच है कि उसके शासन का अंत हो चुका है। किन्तु उस राजा का पुत्र अभी आकर राज करेगा और वह एक ऐसे साँप के समान होगा जो भयानक नागों को जन्म दिया करता है। यह नया राजा तुम लोगों के लिये एक बड़े फुर्तीले भयानक नाग के जैसा होगा। [30]किन्तु मेरे दीन जन सुरक्षा पूर्वक खाते पीते रह पायेंगे। उनकी संतानें भी सुरक्षित रहेंगी। मेरे दीन जन, सो सकेंगे और सुरक्षित अनुभव करेंगे। किन्तु तुम्हारे परिवार को मैं भूख से मार डालूँगा और तुम्हारे सभी बचे हुए लोग मर जायेंगे।

31 हे नगर द्वार के वासियों, रोओ!
नगर में रहने वाले तुम लोग,
चीखो–चिल्लाओ!
पलिश्ती के तुम सब लोगों भयभीत होंगे।
तुम्हारा साहस गर्म मोम की
भाँति पिघल कर ढल जायेगा।
उत्तर दिशा की ओर देखो!
वहाँ धूल का एक बादल है!
देखो, अश्शूर से एक सेना आ रही है!
उस सेना के सभी लोग बलशाली हैं!
32 वह सेना अपने नगर में दूत भेजेंगे।
दूत अपने लोगों से क्या कहेंगे?
वे घोषणा करेंगे: पलिश्ती पराजित हुआ,
किन्तु यहोवा ने सिय्योन को सुदृढ़ बनाया है,
और उसके दीन जन वहाँ रक्षा पाने को गये।

मोआब को परमेश्वर का सन्देश

15 यह बुरा सन्देश मोआब के विषय में है।
एक रात मोआब में स्थित आर के
नगर का धन सेनाओं ने लूटा।
उसी रात नगर को तहस नहस कर दिया गया।
एक रात मोआब का किर नाम का
नगर सेनाओं ने लूटा।
उसी रात वह नगर तहस नहस किया गया।
2 राजा का घराना और दिबोन के निवासी अपना
दुःख रोने को ऊँचे पर पूजास्थलों में चले गये।
मोआब के निवासी नबो और
मेदबा के लिये रोते हैं।
उन सभी लोगों ने अपनी दाढ़ी और सिर अपना
शोक दर्शाने के लिये मुड़ाये थे।
3 मोआब मे सब कहीं घरो और गलियों में,
लोग शोक वस्त्र पहनकर हाय हाय करते हैं।
4 हेशबोन और एलाले नगरों के निवासी बहुत
ऊँचे स्वर में विलाप कर रहे हैं।
बहूत दूर यहस की नगरी तक वह विलाप
सुना जा सकता है।
यहाँ तक कि सैनिक भी डर गये हैं।
वे सैनिक भय से काँप रहे हैं।
5 मेरा मन दुःख से मोआब के लिये रोता है।
लोग कहीं शरण पाने को दौड़ रहे हैं।
वे सुदूर जोआर में जाने को भाग रहे हैं।
लोग दूर के देश
एग्लतशलीशिय्या को भाग रहे हैं।
लोग लूहीत की पहाड़ी चढ़ाई पर
रोते बिलखाते हुए भाग रहे हैं।
लोग होरोनैम के मार्ग पर और वे बहुत ऊँचे
स्वर में रोते बिलखते हुए जा रहे हैं।
6 किन्तु निम्रीम का नाला ऐसे सूख गया
जैसे रेगिस्तान सूखा होता है।
वहाँ सभी वृक्ष सूख गये।
कुछ भी हरा नहीं हैं।
7 सो लोग जो कुछ उनके पास है उसे इकटठा
करते हैं, और मोआब को छोड़ते हैं।
उन वस्तुओं को लेकर वे नाले (पाप्लर
या अराबा) से सीमा पार कर रहे हैं।
8 मोआब में हर कहीं विलाप ही सुनाई देता है।
दूर के नगर एगलैम में लोग बिलख रहे हैं।
बेरेलीम नगर के लोग विलाप कर रहे हैं।

9 दीमोन नगर का जल खून से भर गया है,
और मैं (यहोवा) दीमोन पर अभी
और विपत्तियाँ ढाऊँगा।
मोआब के कुछ निवासी शत्रु से बच गये हैं।
किन्तु उन लोगों को खा जाने को
मैं सिंहों को भेजूँगा।

16 उस प्रदेश के राजा के लिये तुम लोगों को एक उपहार भेजना चाहिये। तुम्हें रेगिस्तान से होते हुए सिय्योन की पुत्री के पर्वत पर सेला नगर से एक मेमना भेजना चाहिये।

2 अरी ओ मोआब की स्त्रियों, अर्नोन की नदी को
पार करने का प्रयत्न करो।
वे सहारे के लिये इधर–उधर दौड़ रही हैं।
वे ऐसी उन छोटी चिड़ियों जैसी है
जो धरती पर पड़ी हुई है
जब उनका घोंसला गिर चुका।

3 वे पुकार रही हैं, "हमको सहारा दो!
बताओ हम क्या करें!
हमारे शत्रुओं से तुम हमारी रक्षा करो।
तुम हमें ऐसे बचाओ जैसे दोपहर की
धूप से धरती बचाती है।
हम शत्रुओं से भाग रहे हैं,तुम हमको छुपा लो।
हम को तुम शत्रुओं के हाथों में मत पड़ने दो।"

4 उन मोआब वासियों को अपना घर
छोड़ने को विवश किया गया था।
अत: तुम उनको अपनी धरती पर रहने दो।
तुम उनके शत्रुओं उनको छुपा लो।
यह लूट रुक जायेगी।
शत्रु हार जायेंगे और ऐसे पुरुष जो दूसरों की
हानि करते हैं, इस धरती से उखड़ेंगे।

5 फिर एक नया राजा आयेगा।
यह राजा दाऊद के घराने से होगा।
वह सत्यपूर्ण, करुण और दयालु होगा।
यह राजा न्यायी और निष्पक्ष होगा।
वह खरे और नेक काम करेगा।

6हमने सुना है कि मोआब के लोग बहुत अभिमानी और गर्वीले हैं। ये लोग हिंसक हैं और बड़ा बोले भी। इनका बड़ा बोल सच्चा नहीं है।

7समूचा मोआब देश अपने अभिमान के कारण कष्ट उठायेगा। मोआब के सारे लोग विलाप करेंगे। वे लोग बहुत दुःखी रहेंगे। वे ऐसी वस्तुओं की इच्छा करेंगे जैसी उनके पास पहले हुआ करती थीं। वे कीरहरासत में बने हुए अंजीर के पूड़ों की इच्छा करेंगे। 8वे लोग बहुत दुःखी रहा करेंगे क्योंकि हेशबोन के खेत और सिबमा की अँगूर की बेलों में अँगूर नहीं लगा पा रहे हैं। बाहर के शासकों ने अँगूर की बेलों को काट फेंका है। याजेर की नगरी से लेकर मरुभूमि में दूर–दूर तक शत्रु की सेनाएँ फैल गयी हैं। वे समुद्र के किनारे तक जा पहुँची हैं।

मोआब के विषय में एक शोक–गीत

9 "मैं उन लोगों के साथ विलाप करुँगा
जो याजेर और सिबमा के निवासी हैं
क्योंकि अंगूर नष्ट किये गये।
मैं हेशबोन और एलाले के
लोगों के साथ शोक करुँगा
क्योंकि वहाँ फसल नहीं होगी।
वहाँ गर्मी का कोई फल नहीं होगा।
वहाँ पर आनन्द के ठहाके भी नहीं होंगे।

10 अंगूर के बगीचे में आनन्द नहीं होगा
और न ही वहाँ गीत गाये जायेंगे।
मैं कटनी के समय की सारी
खुशी समाप्त कर दूँगा।
दाखमधु बनने के लिये अंगूर तो तैयार है,
किन्तु वे सब नष्ट हो जायेंगे।

11 इसलिए मैं मोआब के लिये बहुत दुःखी हूँ।
मैं कीरहैरेम के लिये बहुत दुःखी हूँ।
मैं उन नगरों के लिये अत्याधिक दुःखी हूँ।

12 मोआब के निवासी अपने
ऊँचे पूजा के स्थानों पर जायेंगे।
वे लोग प्रार्थना करने का प्रयत्न करेंगे।
किन्तु वे उन सभी बातों को देखेंगे
जो कुछ घट चुकी है,और वे प्रार्थना
करने को दुर्बल हो जायेंगे।"

13यहोवा ने मोआब के बारे में पहले अनेक बार ये बातें कही थीं 14और अब यहोवा कहता है, "तीन वर्ष में (उस रीति से जैसे किराये का मजदूर समय गिनता है) वे सभी व्यक्ति और उनकी वे वस्तुएँ जिन पर उन्हें गर्व

था, नष्ट हो जायेंगी। वहाँ बहुत थोड़े से लोग ही बचेंगे, बहुत से नहीं।"

आराम के लिए परमेश्वर का सन्देश

17 यह दमिश्क के लिये दुःखद सन्देश है। यहोवा कहता है कि दमिश्क के साथ में बातें घटेंगी:

"दमिश्क जो आज नगर है
किन्तु कल यह उजड़ जायेगा।
दमिश्क में बस टूटे फूटे भवन ही बचेंगे।
[2] अरोएर के नगरों को लोग छोड़ जायेंगे।
उन उजड़े हुए नगरों में
भेड़ों की रेवड़ें खुली घूमेंगी।
वहाँ कोई उनको डराने वाला नहीं होगा।
[3] एप्रैम (इस्राएल) के गढ़ नगर ध्वस्त हो जायेंगे।
दमिश्क के शासन का अन्त हो जायेगा।
जैसे घटनाएँ इस्राएल में घटती हैं वैसी ही
घटनाएँ अराम में भी घटेंगी।
सभी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति उठा लिये जायेंगे।"
सर्वशक्तिमान यहोवा ने बताया कि ये बातें घटेंगी।
[4] उन दिनों याकूब की (इस्राएल की)
सारी सम्पति चली जायेगी।
याकूब वैसा हो जायेगा जैसा व्यक्ति
रोग से दुबला हो।

[5]वह समय ऐसा होगा जैसे रपाईम घाटी में फसल काटने के समय होता है। मजदूर उन पौधों को इकट्ठा करते हैं जो खेत में उपजते हैं। फिर वे उन पौधों की बालों को काटते हैं और उनसे अनाज के दाने निकालते हैं।

[6]वह समय उस समय के भी समान होगा जब लोग जैतून की फसल उतारते हैं। लोग जैतून के पेड़ों से जैतून झाड़ते हैं। किन्तु पेड़ की चोटी पर प्राय: कुछ फल तब भी बचे रह जाते हैं। चोटी की कुछ शाखाओं पर चार पाँच जैतून के फल छूट जाते हैं। उन नगरों में भी ऐसा ही होगा। सर्वशक्तिमान यहोवा ने यें बातें कही थीं।

[7]उस समय लोग परमेश्वर की ओर निहारेंगे। परमेश्वर, जिसने उनकी रचना की है। वे इस्राएल के पवित्र की ओर सहायता के लिये देखेंगें। [8]लोग उन वेदियों पर विश्वास करना समाप्त कर देंगे जिनको उन्होंने स्वयं अपने हाथों से बनाया था। अशेरा देवी के जिन खम्भों और धूप जलाने की वेदियों को उन्होंने अपनी उँगलियों से बनाया था, वे उन पर भरोसा करना बंद कर देंगे।

[9]उस समय, सभी गढ़–नगर उजड़ जायेंगे। वे नगर ऐसे पर्वत और जंगलों के समान हो जायेंगे, जैसे वे इस्राएलियों के आने से पहले हुआ करते थे। बीते हुए दिनों में वहाँ से सभी लोग दूर भाग गये थे क्योंकि इस्राएल के लोग वहाँ आ रहे थे। भविष्य में यह देश फिर उजड़ जायेगा। [10]ऐसा इसलिये होगा क्योंकि तुमने अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भुला दिया है। तुमने यह याद नहीं रखा कि परमेश्वर ही तुम्हारा शरण स्थल है।

तुम सुदूर स्थानों से कुछ बहुत अच्छी अँगूर की बेलें लाये थे। तुम अंगूर की बेलों को रोप सकते हो किन्तु उन पौधों में बढ़वार नहीं होगी। [11]एक दिन तुम अपनी अँगूर की उन बेलों को रोपोगे और उनकी बढ़वार का जतन करोगे। अगले दिन, वे पौधे बढ़ने भी लगेंगे किन्तु फसल उतारने के समय जब तुम उन बेलों के फल इकट्ठे करने जाओगे तब देखोगे कि सब कुछ सूख चुका है। एक बीमारी सभी पौधों का अंत कर देगी।

[12] बहुत सारे लोगों का भीषणा नाद सुनो!
यह नाद सागर के नाद जैसा भयानक है।
लोगों का शोर सुनो। ये शोर ऐसा है
जैसे सागर की लहरे टकरा उठती हो।
[13] लोग उन्ही लहरों जैसे होंगे।
परमेश्वर उन लोगों को झिड़की देगा,
और वे दूर भाग जायेंगे।
लोग उस भूसे के समान होंगे जिस की पहाड़ी
पर हवा उड़ाती फिरती है।
लोग वैसे हो जायेंगे जैसे आँधी
उखाड़े जा रही है।
आँधी उसे उड़ाती है और दूर ले जाती है।
[14] उस रात लोग बहुत ही डर जायेंगे।
सुबह होने से पहले, कुछ भी नहीं बच पायेगा।
सो शत्रुओं को वहाँ कुछ भी हाथ नहीं आयेगा।
वे हमारी धरती की ओर आयेंगे,
किन्तु वहाँ भी कुछ नहीं होगा।

कूश के लिये परमेश्वर का सन्देश

18 उस धरती को देखो जो कूश की नदियों के साथ–साथ फैली है। इस धरती में कीड़े–मकोड़े

भरे पड़े हैं। तुम उनके पंखों की भिन्नाहट सुन सकते हो। [2]यह धरती लोगों को सरकण्डों की नावों से सागर के पार भेजती है।

हे तेज़ चलने वाले हरकारो, एक ऐसी जाति के लोगों के पास जाओ जो लम्बे और शक्तिशाली हैं! (इन लम्बें शक्तिशाली लोगों से सब कहीं के लोग डरते हैं। वे एक बलवान जाति के लोग हैं। उनकी जाति दूसरी जातियों को पराजित कर देती हैं। वे एक ऐसे देश के हैं जिसे नदियाँ विभाजित करती हैं।) [3]ऐसे उन लोगों को सावधान कर दो कि उनके साथ कोई बुरी घटना घटने को है। उस जाति के साथ घटती हुई इस घटना को दुनिया के सब लोग देखेंगे। लोग इसे इस तरह साफ–साफ़ देखेंगे, जैसे पहाड़ पर लगे हुए झण्डे को लोग देखते हैं। इन लम्बे और शक्तिशाली व्यक्तियों के साथ जो बातें घटेंगी, उनके बारे में इस धरती के सभी निवासी सुनेंगे। इसको वे इतनी स्पष्टता से सुनेंगे जितनी स्पष्टता से युद्ध से पहले बजने वाले नरसिंगे की आवाज़ सुनाई देती हैं।

[4]यहोवा ने कहा, "जो स्थान मेरे लिये तैयार किया गया है, मैं उस स्थान पर होऊँगा। मैं चुपचाप इन बातों को घटते हुए देखूँगा। गर्मी के एक सुहावने दिन दोपहर के समय जब लोग आराम कर रहे होंगे (यह तब होगा जब कटनी का गर्म समय होगा, वर्षा नहीं होगी, बस अलख सुबह की ओस ही पड़ेगी।) [5]तभी कोई बहुत भयानक बात घटेगी। यह वह समय होगा जब फूल खिल चुके होंगे। नये अँगूर फूट रहे होंगे और उनकी बढ़वार हो रही होगी। किन्तु फसल उतारने के समय से पहले ही शत्रु आयेगा और इन पौधों को काट डालेगा। शत्रु आकर अँगूर की लताओं को तोड़ डालेगा और उन्हें कहीं दूर फेंक देगा। [6]अँगूर की यें बेलें शिकारी पहाड़ी पक्षियों और जंगली जानवरों के खाने के लिये छोड़ दी जायेंगी। गर्मियो में पक्षी इन दाख लताओं में बसेरा करेंगे और उस सदी में जंगली पशु इन दाख लताओं को चरेंगे।"

[7]उस समय, सर्वशक्तिमान यहोवा को एक विशेष भेंट चढ़ाई जायेगी। यह भेंट उन लोगों की ओर से आयेगी, जो लम्बे और शक्तिशाली हैं। (सब कहीं के लोग इन लोगों से डरते हैं। ये एक शक्तिशाली जाति के लोग हैं। यह जाति दूसरी जाति के लोगों को पराजित कर देती है। ये एक ऐसे देश के हैं, जो नदियों से विभाजित हैं।) यह भेंट यहोवा के स्थान सिय्योन पर्वत पर लायी जायेगी।

मिस्र के लिए परमेश्वर का सन्देश

19 मिस्र के बारे में दु:खद सन्देश:

देखो! एक उड़ते हुए बादल पर यहोवा आ रहा है। यहोवा मिस्र में प्रवेश करेगा और मिस्र के सारे झूठे देवता भय से थर–थर काँपने लगेंगे। मिस्र वीर था किन्तु उसकी वीरता गर्म मोम की तरह पिघल कर बह जायेगी।

[2]परमेश्वर कहता है, "मैं मिस्र के लोगों को आपस में ही एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध करने के लिये उकसाऊँगा। लोग अपने ही भाइयों से लड़ेंगे। पड़ोसी, पड़ोसी के विरोध में हो जायेगा। नगर, नगर के विरोध में और राज्य, राज्य के विरोध में हो जायेंगे। [3]मिस्र के लोग चक्कर में पड़ जायेंगे। वे लोग अपने झूठे देवताओं और बुद्धिमान लोगों से पूछेंगे कि उन्हें क्या करना चाहिये। वे लोग अपने ओझाओं और जादूगरों से पूछताछ करेंगे किन्तु उनकी सलाह व्यर्थ होगी।"

[4]सर्वशक्तिमान यहोवा स्वामी का कहना है: "मैं (परमेश्वर) मिस्र को एक कठोर स्वामी को सौंप दूँगा। एक शक्तिशाली राजा लोगों पर राज करेगा। [5]नील नदी का पानी सूख जायेगा। नदी के तल में पानी नहीं रहेगा। [6]सभी नदियों से दुर्गन्ध आने लगेगी। मिस्र की नहरें सूख जायेंगी। उनका पानी जाता रहेगा। पानी के सभी पौधे सड़ जायेंगे। [7]वे सभी पौधे जो नदी के किनारे उगे होंगे, सूख कर उड़ जायेंगे। यहाँ तक कि वे पौधे भी, जो नदी के सबसे चौड़े भाग में होंगे, व्यर्थ हो जायेंगे।

[8]"मछुआरे, और वे सभी लोग जो नील नदी से मछलियाँ पकड़ा करते हैं, दु:खी होकर त्राहि–त्राहि कर उठेंगे। वे अपने भोजन के लिए नील नदी पर आश्रित हैं किन्तु वह सूख जायेगी। [9]वे लोग जो कपड़ा बनाया करते हैं, अत्यधिक दु:खी होंगे। इन लोगों को सन का कपड़ा बनाने के लिए पटसन की आवश्यकता होगी किन्तु नदी के सूख जाने से सन के पौधों की बढ़वार नहीं हो पायेगी। [10]पानी इकट्ठा करने के लिये बाँध बनाने वाले लोगों के पास काम नहीं रह जायेगा। सो वे बहुत दु:खी होंगे।

[11]"सोअन नगर के मुखिया मूर्ख हैं। फिरौन के बुद्धिमान मन्त्री गलत सलाह देते हैं। वे मुखिया लोग कहते हैं कि वे बुद्धिमान हैं। उनका कहना है कि वे पुराने राजाओं के

वंशज हैं। किन्तु जैसा वे सोचते हैं, वैसे बुद्धिमान नहीं हैं।"

[12]हे मिस्र, तेरे बुद्धिमान पुरुष कहाँ हैं? उन बुद्धिमान लोगों को सर्वशक्तिमान यहोवा ने मिस्र के लिये जो योजना बनाई है, उसका पता होना चाहिये। उन लोगों को, जो होने वाला है, तुम्हें बताना चाहिये।

[13]सोअन के मुखिया मूर्ख बना दिये गये हैं। नोप के मुखियाओं ने झूठी बातों पर विश्वास किया है। सो मुखिया लोग मिस्र को ग़लत रास्ते पर ले जाते हैं। [14]यहोवा ने मुखियाओं को उलझन में डाल दिया है। वे भटक गये हैं और मिस्र को गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं। वे नशे में धुत ऐसे लोगों के समान हैं जो बीमारी के कारण धरती में लोट रहे हैं। [15]मिस्र के लिए कोई कुछ नहीं कर पाएगा। (फिर चाहे वे सिर हो अथवा पूँछ, "खजूर की शाखायें हो या सरकंडे" (अर्थात् "महत्वपूर्ण हो या महत्वहीन लोग।")

[16]उस समय, मिस्र के निवासी भयभीत स्त्रियों के समान हो जायेंगे। वे सर्वशक्तिमान यहोवा से डरेंगे। यहोवा लोगों को दण्ड देने के लिए अपना हाथ उठायेगा और लोग डर जायेंगे। [17]मिस्र में सब लोगों के लिये यहूदा का प्रदेश भय का कारण होगा। मिस्र में कोई भी यहूदा का नाम सुन कर डर जायेगा। ऐसा इसलिये होगा क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा ने भयानक घटनायें घटाने की योजना बनायी है। [18]उस समय, मिस्र में ऐसे पाँच नगर होंगे जहाँ लोग कनान की भाषा (यहूदी भाषा) बोलेंगे। इन नगरों में एक नगर का नाम होगा "नाश की नगरी।"

लोग सर्वशक्तिमान यहोवा के अनुसरण की प्रतिज्ञा करेंगे। [19]उस समय मिस्र के बीच में यहोवा के लिये एक वेदी होगी। मिस्र की सीमापर यहोवा को आदर देने के लिए एक स्मारक होगा। [20]यह इस बात का प्रतीक होगा कि सर्वशक्तिमान यहोवा शक्तिमान कार्य करता है। जब कभी लोग सहायता के लिए यहोवा को पुकारेंगे, यहोवा सहायता भेजेगा। यहोवा लोगों को बचाने और उनकी रक्षा करने के लिये एक व्यक्ति को भेजेगा। वह व्यक्ति उन व्यक्तियों को उन दूसरे लोगों से बचायेगा जो उनके साथ बुरी बातें करते हैं।

[21]सचमुच उस समय, मिस्र के लोग यहोवा को जानेंगे। वे लोग परमेश्वर से प्रेम करेंगे। वे लोग परमेश्वर की सेवा करेंगे और बहुत सी बलियाँ चढ़ायेंगे। वे लोग यहोवा की मनौतियाँ मानेंगे और उन मनौतियों का पालन करेंगे।

[22]यहोवा मिस्र के लोगों को दण्ड देगा। फिर यहोवा उन्हें (चंगा) क्षमा कर देगा और वे यहोवा की ओर लौट आयेंगे। यहोवा उनकी प्रार्थनाएँ सुनेगा और उन्हें क्षमा कर देगा।

[23]उस समय, वहाँ एक ऐसा राजमार्ग होगा जो मिस्र से अश्शूर जायेगा। फिर अश्शूर से लोग मिस्र में जायेंगे और मिस्र से अश्शूर में। मिस्र अश्शूर के लोगों के साथ परमेश्वर की उपासना करेगा।

[24]उस समय, इस्राएल, अश्शूर और मिस्र आपस में एक हो जायेंगे और पृथ्वी पर शासन करेंगे। यह शासन धरती के लिये वरदान होगा। [25]सर्वशक्तिमान यहोवा इन देशों को आशीर्वाद देगा। वह कहेगा, "हे मिस्र के लोगों, तुम मेरे हो। अश्शूर, तुझे मैंने बनाया है। इस्राएल, मैं तेरा स्वामी हूँ। तुम सब धन्य हो!"

अश्शूर मिस्र और कूश को हरायेगा

20 सर्गोन अश्शूर का राजा था। सर्गोन ने तर्तान को नगर के विरुद्ध युद्ध करने के लिए अशदोद भेजा। तर्तान ने वहाँ जा कर नगर पर कब्जा कर लिया। [2]उस समय आमोस के पुत्र यशायाह के द्वारा यहोवा ने कहा, "जा, और अपनी कमर से शोक वस्त्र उतार फेंक। अपने पैरों की जूतियाँ उतार दे।" यशायाह ने यहोवा की आज्ञा का पालन किया और वह बिना कपड़ों और बिना जूतों के इधर–उधर घूमा।

[3]फिर यहोवा ने कहा, "यशायाह तीन साल तक बिना कपड़ों और बिना जूतियाँ पहने इधर–उधर घूमता रहा है। मिस्र और कूश के लिए यह एक संकेत है कि [4]अश्शूर का राजा मिस्र और कूश को हरायेगा। अश्शूर वहाँ के बंदियों को लेकर, उनके देशों से दूर ले जायेगा। बूढ़े व्यक्ति और जवान लोग बिना कपड़ों और नंगे पैरों ले जाये जायेंगे। वे पूरी तरह से नंगे होंगे। मिस्र के लोग लज्जित होंगे। [5]जो लोग सहायता के लिये कूश की ओर देखा करते थे, वे टूट जायेंगे। जो लोग मिस्र की महिमा से चकित थे वे लज्जित होंगे।"

[6]समुद्र के पास रहने वाले, वे लोग कहेंगे, "हमने सहायता के लिये उन देशों पर विश्वास किया। हम उनके पास दौड़े गये ताकि वे हमे अश्शूर के राजा से बचा लें किन्तु उन देशों को देखो कि उन देशों पर ही जब कब्जा कर लिया गया तब हम कैसे बच सकते थे?"

परमेश्वर का बाबुल को सन्देश

21 सागर के मरुप्रदेश के बारे में दुःखद सन्देश।

मरुप्रदेश से कुछ आने वाला है।
यह नेगव से आती हवा जैसा आ रही है।
यह किसी भयानक देश से आ रही है।
2 मैंने कुछ देखा है जो बहुत ही भयानक है
और घटने ही वाला है।
मुझे गद्दार तुझे धोखा देते हुए दिखते हैं।
मैं लोगों को तुम्हारा धन छीनते हुए देखता हूँ।
एलाम, तुम जाओ और लोगों से युद्ध करो!
मादै, तुम अपनी सेनाएँ लेकर नगर को घेर लो
तथा उसको पराजित करो!
मैं उस बुराई का अन्त करूँगा
जो उस नगर में है।

[3]मैंने ये भयानक बातें देखीं और अब मैं बहुत डर गया हूँ। डर के मारे पेट में दर्द हो रहा है। यह दर्द प्रसव की पीड़ा जैसा है। जो बातें मैं सुनता हूँ, वे मुझे बहुत डराती है। जो बातें मैं देख रहा हूँ, उनके कारण मैं भय के मारे काँपने लगता हूँ। [4]मैं चिन्तित हूँ और भय से थर–थर काँप रहा हूँ। मेरी सुहावनी शाम भय की रात बन गयी है।

5 लोग सोचते हैं, सब कुछ ठीक है।
लोग कहते हैं,
"चौकी तैयार करो और
उस पर आसन बिछाओ, खाओ, पिओ!"
किन्तु मेरा कहना है, "मुखियाओं!
खडे होओ और युद्ध की तैयारी करो।"
उसी समय सैनिक कह रहे हैं,
"पहरेदारों को तैनात करो!
अधिकारियों, खड़े हो जाओ
और अपनी ढालों को झलकाओ!"

[6]मेरे स्वामी ने मुझे ये बातें बतायी हैं, "जा और नगर की रक्षा के लिए किसी व्यक्ति को ढूँढ। [7]यदि वह रखवाला घुड़सवारों की, गधों की अथवा ऊँटों की पंक्तियों को देखें तो उसे सावधानी के साथ सुनना चाहिये।"

[8]सो फिर वह पहरेदार जोर से बोला पहरेदार ने कहा, "मेरे स्वामी, मैं हर दिन चौकीदार के बुर्ज पर चौकीदारी करता आया हूँ। हर रात मैं खड़ा हुआ पहरा देता रहा हूँ। किन्तु... [9]देखो! वे आ रहे हैं! मुझे घुड़सवारो की पंक्तियाँ दिखाई दे रही हैं।"

फिर सन्देशवाहक ने कहा,
"बाबुल पराजित हुआ,
बाबुल धरती पर ध्वस्त किया गया।
उसके मिथ्या देवों की सभी मूर्तियाँ
धरती पर लुढ़का दी गई
और वे चकनाचूर हो गई हैं।"

[10]यशायाह ने कहा, "हे खलिहान में अनाज की तरह रौंदे गए मेरे लोगों, मैंने सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर से जो कुछ सुना है, सब तुम्हें बता दिया है।"

एदोम को परमेश्वर का सन्देश

[11]दूमा के लिये दुःखद सन्देश।

सेईर से मुझको किसी ने पुकारा।
उसने मुझ से कहा,
"हे पहरेदार, रात अभी कितनी शेष बची है?
अभी और कितनी देर यह रात रहेगी!"
12 पहरेदार ने कहा, "भोर होने को है
किन्तु रात फिर से आयेगी।
यदि तुझे कोई बात पूछनी है तो लौट आ
और मुझसे पूछ ले।"

अरब के लिये परमेश्वर का सन्देश

[13]अरब के लिये दुःखद सन्देश।

हे ददानी के काफिले, तू रात अरब के मरुभूमि
में कुछ वृक्षों के पास गुजार ले।
14 कुछ प्यासे यात्रियों को पीने को पानी दो।
तेमा के लोगों, उन लोगों को भोजन दो
जो यात्रा कर रहे हैं।
15 वे लोग ऐसी तलवारों से भाग रहे थे
जो उनको मारने को तत्पर थे।।
वे लोग उन धनुषो से बचकर भाग रहे थे
जो उन पर छूटने के लिये तने हुए थे।
वे भीषण लड़ाई से भाग रहे थे।

[16]मेरे स्वामी यहोवा ने मुझे बताया था कि ऐसी बातें घटेंगी। यहोवा ने कहा था, "एक वर्ष में (एक ऐसा ढँग जिससे मजदूर किराये का समय को गिनता है।) केदार का वैभव नष्ट हो जायेगा। [17]उस समय केदार के थोड़े से

धनुषधारी, प्रतापी सैनिक ही जीवित बच पायेंगे।" इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मुझे ये बातें बताई थीं।

यरूशलेम के लिये परमेश्वर का सन्देश

22 दिव्य दर्शन की घाटी* के बारे में दुःखद सन्देश:

तुम लोगों के साथ क्या हुआ है?
क्यों तुम अपने घरों की छतों पर छिप रहे हो?

2 बीते समय में यह नगर बहुत व्यस्त नगर था।
यह नगर बहुत शोरगुल से भरा
और बहुत प्रसन्न था।
किन्तु अब बातें बदल गई।
तुम्हारे लोग मारे गये किन्तु तलवारों से नहीं,
और वे मारे गये
किन्तु युद्ध में लड़ते समय नहीं।

3 तुम्हारे सभी अगुवे एक साथ कहीं भाग गये
किन्तु उन्हें पकड़ कर बन्दी बनाया गया,
जब वे बिना धनुष के थे।
तुम्हारे सभी अगुवे कहीं दूर भाग गये किन्तु
उन्हें पकड़ा और बन्दी बनाया गया।

4 मैं इसलिए कहता हूँ,
"मेरी तरफ मत देखो,
बस मुझको रोने दो!
यरूशलेम के विनाश पर मुझे सान्त्वना देने के
लिये मेरी ओर मत लपको।"

[5]यहोवा ने एक विशेष दिन चुना है। उस दिन वहाँ बलवा और भगदड़ मच जायेगा। दिव्य दर्शन की घाटी में लोग एक दूसरे को रौंद डालेंगे। नगर की चार दीवारी उखाड़ फेंकी जायेगी। घाटी के लोग पहाड़ पर के लोगों के ऊपर चिल्लायेंगे। [6]एलाम के घुड़सवार सैनिक अपनी अपनी तरकसें लेकर घोड़ों पर चढ़े युद्ध को प्रस्थान करेंगे। किर के लोग अपनी ढालों से ध्वनि करेंगे। [7]तुम्हारी इस विशेष घाटी में सेनाएँ आ जुटेंगी। घाटी रथों से भर जायेगी। घुड़सवार सैनिक नगर द्वारों के सामने तैनात किये जायेंगे। [8]उस समय यहूदा के लोग उन हथियारों का प्रयोग करना चाहेंगे जिन्हें वे जंगल के महल में रखा करते हैं।

यहूदा की रक्षा करने वाली चहारदीवारी को शत्रु उखाड़ फेंकेगा। [9-11]दाऊद के नगर की चहारदीवारी तड़कने लगेगी और उसकी दरारें तुम्हें दिखाई देंगी। सो तुम मकानों को गिनने लगोगे और दीवार की दरारों को भरने के लिये तुम उन मकानों के पत्थरों का उपयोग करोगे। उन दुहरी दीवारों के बीच 'पुराने तालाब' का जल बचा कर रखने के लिये तुम एक स्थान बनाओगे, और वहाँ पानी को एकत्र करोगे।

यह सब कुछ तुम अपने आपको बचाने के लिये करोगे। फिर भी उस परमेश्वर पर तुम्हारा भरोसा नहीं होगा जिसने इन सब वस्तुओं को बनाया है। तुम उसकी ओर (परमेश्वर) नहीं देखोगे जिसने बहुत पहले इन सब वस्तुओं की रचना की थी।

[12]सो, मेरा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा लोगों से उनके मरे हुए मित्रों के लिए विलाप करने और दुःखी होने के लिये कहेगा। लोग अपने सिर मुँड़ा लेंगे और शोक वस्त्र धारण करेंगे।

[13]किन्तु देखो! अब लोग प्रसन्न हैं। लोग खुशियाँ मना रहे हैं। वे लोग कह रहे हैं: मवेशियों को मारो, भेड़ों का वध करो। हम उत्सव मनायेंगे। तुम अपना खाना खाओ और अपना दाखमधु पियो। खाओ और पियो क्योंकि कल तो हमें मर जाना है।

[14]सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें मुझसे कही थीं और मैंने उन्हें अपने कानों सुना था: "तुम बुरे काम करने के अपराधी हो और मैं निश्चय के साथ कहता हूँ कि इस अपराध के क्षमा किये जाने से पहले ही तुम मर जाओगे।" मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें कही थीं।

शेबना के लिये परमेश्वर का सन्देश:

[15]मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा ने मुझसे ये बातें कहीं: "उस शेबना नाम के सेवक के पास जाओ। वह महल का प्रबन्ध–अधिकारी है। [16]उस से पूछना, 'तू यहाँ क्या कर रहा है? क्या यहाँ तेरे परिवार का कोई व्यक्ति गड़ा हुआ है? यहाँ तू एक कब्र क्यों बना रहा है?'"

यशायाह ने कहा, "देखो इस आदमी को! एक ऊँचे स्थान पर यह अपनी कब्र बना रहा है। अपनी कब्र बनाने के लिये यह चट्टान को काट रहा है।

[17-18]"हे पुरुष, यहोवा तुझे कुचल डालेगा। यहोवा तुझे बाँध कर एक छोटी सी गेंद की तरह गोल बना कर

दिव्यदर्शन की घाटी यह कदाचित यरूशलेम के पास की कोई घाटी रही होगी।

किसी विशाल देश में फेंक देगा और वहाँ तेरी मौत हो जायेगी।"

यहोवा ने कहा, "तुझे अपने रथों पर बड़ा अभिमान था। किन्तु उस दूर देश में तेरे नये शासक के पास और भी अच्छे रथ हैं। उसके महल में तेरे रथ महत्वपूर्ण नहीं दिखाई देंगे। [19]यहाँ मैं तुझे तेरे महत्त्वपूर्ण काम से धकेल बाहर करुँगा। तेरे महत्त्वपूर्ण काम से तेरा नया मुखिया तुझे दूर कर देगा। [20]उस समय मैं अपने सेवक एल्याकीम को जो हिल्कियाह का पुत्र है, बुलाऊँगा [21]और तेरा चोगा लेकर उस सेवक को पहना दूँगा। तेरा राजदण्ड भी मैं उसे दे दूँगा। जो महत्त्वपूर्ण काम तेरे पास हैं, मैं उसे भी उस ही को दे दूँगा। वह सेवक यरूशलेम के लोगों और यहूदा के परिवार के लिए पिता के समान होगा।

[22]"यहूदा के भवन की चाबी मैं उस पुरुष के गले में डाल दूँगा। यदि वह किसी द्वार को खोलेगा तो वह द्वार खुला ही रहेगा। कोई भी व्यक्ति उसे बंद नहीं कर पायेगा। यदि वह किसी द्वार को बंद करेगा तो वह द्वार बंद हो जायेगा। कोई भी व्यक्ति उसे खोल नहीं पायेगा। वह सेवक अपने पिता के घर में एक सिंहासन के समान होगा। [23]मैं उसे एक ऐसी खूँटी के समान सुदृढ़ बनाऊँगा जिसे बहुत सख़्त तख्ते में ठोका गया है। [24]उसके पिता के घर की सभी माननीय और महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ उसके ऊपर लटकेंगी। सभी वयस्क और छोटे बच्चे उस पर निर्भर करेंगे। वे लोग ऐसे होंगे जैसे छोटे–छोटे पात्र और बड़ी–बड़ी सुराहियाँ उसके ऊपर लटक रही हों।

[25]"उस समय, वह खूँटी (शेबना) जो अब एक बड़े कठोर तख्ते में गाड़ी हुई खूँटी है, दुर्बल हो कर टूट जायेगी। वह खूँटी धरती पर गिर पड़ेगी और उस खूँटी पर लटकी हुई सभी वस्तुएँ नष्ट हो जायेंगी। तब वह प्रत्येक बात जो मैंने उस सन्देश में बताई थी, घटित होगी।" (ये बातें घटेंगी क्योंकि इन्हें यहोवा ने कहा है।)

लबानोन को परमेश्वर का सन्देश

23 सोर के विषय में दुःखद सन्देश:
हे तर्शीश के जहाजों, दुःख मनाओ! तुम्हारा बन्दरगाह उजाड़ दिया गया है। (इन जहाज़ों पर जो लोग थे, उन्हें यह समाचार उस समय बताया गया था जब वे कित्तियों के देश से अपने रास्ते जा रहे थे।)

[2]हे समुद्र के निकट रहने वाले लोगों, रुको और शोक मनाओ! हे, सीदोन के सौदागरों शोक मनाओं। सिदोन तेरे सन्देशवाहक समुद्र पार जाया करते थे। उन लोगों ने तुझे धन दौलत से भर दिया। [3]वे लोग अनाज की तलाश में समुद्रों में यात्रा करते थे। सोर के वे लोग नील नदी के आसपास जो अनाज पैदा होता था, उसे मोल ले लिया करते थे और फिर उस अनाज को दूसरे देशों में बेचा करते थे।

[4]हे सीदोन, तुझे शर्म आनी चाहिए। क्योंकि अब सागर और सागर का किला कहता है:

मैं सन्तान रहित हूँ।
मुझे प्रसव की वेदना का ज्ञान नहीं है।
मैंने किसी बच्चे को जन्म नहीं दिया।
मैंने युवती व युवक को
पाल कर बड़े नहीं किया।

[5] मिस्र सोर का समाचार सुनेगा और
यह समाचार मिस्र को दुःख देगा।

[6] तेरे जलयान तर्शीश को लौट जाने चाहिए।
हे सागरतट वासियों! दुःख में डूब जाओ।

[7] बीते दिनों में तुमने सोर नगर का रस लिया।
यह नगरी शुरु से ही विकसित होती रही।
उस नगर के कुछ लोग कहीं
दूर बसने को चले गये।

[8] सोर के नगर ने बहुत सारे नेता पैदा किये।
वहाँ के व्यापारी राजपुत्रों के समान होते हैं
और वे लोग वस्तुएँ खरीदते व बेचते हैं।
वे हर कहीं आदर पाते हैं।
सो किसने सोर के विरुद्ध योजनाएँ रची हैं।

[9] हाँ, सर्वशक्तिमान यहोवा ने
वे योजनाएँ बनायी थी।
उसने ही उन्हें महत्त्वपूर्ण न
बनाने का निश्चय किया था।

[10] हे तर्शीश के जहाजों
तुम अपने देश को लौट जाओ।
तुम सागर को ऐसे पार करो
जैसे वह छोटी सी नदी हो।
कोई भी व्यक्ति अब तुम्हें नहीं रोकेगा।

[11] यहोवा ने अपना हाथ सागर के ऊपर
फैलाया है और राज्यों को कँपा दिया।

यहोवा ने कनान (फिनिसियाँ) के बारे में
आदेश दे दिया है कि उसके गढ़ियों को
नष्ट कर दिया जाये।

12 यहोवा कहता है, हे! सीदोन की कुँवारी पुत्री,
तुझे नष्ट किया जायेगा।
अब तू और अधिक आनन्द न मना पायेगी।"
किन्तु सोर के निवासी कहते हैं,
"हमको कित्ती बचायेगा।"
किन्तु यदि तुम सागर को पार कर कित्तीम जाओ
वहाँ भी तुम चैन का स्थान नहीं पाओगे।

13 अत: सोर के निवासी कहा करते हैं,
"बाबुल के लोग हम को बचायेंगे!"
किन्तु तुम बाबुल के लोगों को धरती पर देखो।
एक देश के रुप में आज
बाबुल का कोई अस्तित्व नहीं है।
बाबुल के ऊपर अश्शूर ने चढ़ाई की और
उस के चारों ओर बुर्जियाँ बनाई।
सैनिकों ने सुन्दर घरों का सब धन लूट लिया।
अश्शूर ने बाबुल को जंगली
पशुओं का घर बना दिया।
उन्होंने बाबुल को खण्डहरों में बदल दिया।

14 सो तर्शीश के जलयानों तुम विलाप करो।
तुम्हारा सुरक्षा स्थान (सोर) नष्ट हो जायेगा।

15सत्तर वर्ष तक लोग सोर को भूल जायेंगे। (यह समय, किसी राजा के शासन काल के बराबर समय माना जाता था।) सत्तर वर्ष के बाद, सोर एक वेश्या के समान हो जायेगा। इस गीत में:

16 हे वेश्या! जिसे पुरुषों ने भुला दिया।
तू अपनी वीणा उठा और इस नगर में घूम।
तू अपने गीत को अच्छी तरह से बजा।
तू अक्सर अपना गीत गाया कर।
तभी तुझको लोग फिर से याद करेंगे।

17सत्तर वर्ष के बाद, परमेश्वर सोर के विषय में फिर विचार करेगा और वह उसे एक निर्णय देगा। सोर में फिर से व्यापार होने लगेगा। धरती के सभी देशों के लिये सोर एक वेश्या के समान हो जायेगा। 18किन्तु सोर जिस धन को कमायेगा, उसको रख नहीं पायेगा। सोर का अपने व्यापार से हुआ लाभ यहोवा के लिये बचाकर रखा जायेगा। सोर उस लाभ को उन लोगों को दे देगा जो यहोवा की सेवा करते हैं। इसलिये यहोवा के सेवक भर पेट खाना खायेंगे और अच्छे कपड़े पहनेंगे।

परमेश्वर इस्राएल को दण्ड देगा

24 देखो! यहोवा इस धरती को नष्ट करेगा। यहोवा भूचालों के द्वारा इस धरती को मरोड़ देगा। यहोवा लोगों को कहीं दूर जाने को विवश करेगा।

2उस समय, हर किसी के साथ एक जैसी घटनाएँ घटेगी, साधारण मनुष्य और याजक एक जैसे हो जायेंगे। स्वामी और सेवक एक जैसे हो जायेंगे। दासियाँ और उनकी स्वामिनियाँ एक समान हो जायेंगी। मोल लेने वाले और बेचने वाले एक जैसे हो जायेंगे। कर्जा लेने वाले और कर्जा देने वाले लोग एक जैसे हो जायेंगे। धनवान और ऋणी लोग एक जैसे हो जायेंगे। 3सभी लोगों को वहाँ से धकेल बाहर किया जायेगा। सारी धन–दौलत छीन ली जायेंगी। ऐसा इसलिये घटेगा क्योंकि यहोवा ने ऐसा ही आदेश दिया है। 4देश उजड़ जायेगा और दु:खी होगा। दुनिया ख़ाली हो जायेगी और वह दुर्बल हो जायेगी। इस धरती के महान नेता शक्तिहीन हो जायेंगे।

5इस धरती के लोगों ने इस धरती को गंदा कर दिया है। ऐसा कैसा हो गया? लोगों ने परमेश्वर की शिक्षा के विरोध में गलत काम किये। (इसलिये ऐसा हुआ) लोगों ने परमेश्वर के नियमों का पालन नहीं किया। बहुत पहले लोगों ने परमेश्वर के साथ एक वाचा की थी। किन्तु परमेश्वर के साथ किये उस वाचा को लोगों ने तोड़ दिया। 6इस धरती के रहने वाले लोग अपराधी हैं। इसलिये परमेश्वर ने इस धरती को नष्ट करने का निश्चय किया। उन लोगों को दण्ड दिया जायेगा और वहाँ थोड़े से लोग ही बच पायेंगे।

7अँगूर की बेलें मुरझा रही हैं। नयी दाखमधु की कमी पड़ रही है। पहले लोग प्रसन्न थे। किन्तु अब वे ही लोग दु:खी हैं। 8लोगों ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करना छोड़ दिया है। प्रसन्नता की सभी ध्वनियाँ रुक गयी हैं। खंजरिओं और वीणाओं का आनन्दपूर्ण संगीत समाप्त हो चुका है। 9अब लोग जब दाखमधु पीते है, तो प्रसन्नता के गीत नहीं गाते। अब जब व्यक्ति दाखमधु पीते है, तब वह उसे कड़वी लगती है।

10इस नगर का एक अच्छा सा नाम है, "गड़बड़ से भरा", इस नगर का विनाश किया गया। लोग घरों में नहीं

घुस सकते। द्वार बंद हो चुके हैं। [11]गलियों में दुकानों पर लोग अभी भी दाखमधु को पूछते हैं किन्तु समूची प्रसन्नता जा चुकी है है। आनन्द तो दूर कर दिया गया है। [12]नगर के लिए बस विनाश ही बच रहा है। द्वार तक चकनाचूर हो चुके हैं।

13 "फसल के समय लोग जैतून के पेड़ से
जैतून को गिराया करेंगे।
किन्तु केवल कुछ ही जैतून पेड़ों पर बचेंगे।
जैसे अंगूर की फसल उतारने के बाद
थोड़े से अंगूर बचे रह जाते हैं।
यह ऐसा ही इस धरती के राष्ट्रों के साथ होगा।

14 बचे हुए लोग चिल्लाने लग जायेंगे।
पश्चिम से लोग यहोवा की महानता की
स्तुति करेंगे और वे, प्रसन्न होंगे।

15 वे लोग कहा करेंगे, "पूर्व के लोगों,
यहोवा की प्रशंसा करो!"
दूर देश के लोगों, इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा के नाम का गुणगान करो।"

16 इस धरती पर हर कहीं हम
परमेश्वर के स्तुति गीत सुनेंगे।
इन गीतों में परमेश्वर की स्तुति होगी।
किन्तु मैं कहता हूँ,
"मैं बरबाद हो रहा हूँ।
मैं जो कुछ भी देखता हूँ सब कुछ भयंकर है।
गद्दार लोग, लोगों के विरोधी हो रहे हैं,
और उन्हें चोट पहुँचा रहे हैं।

17 मैं धरती के वासियों पर खतरा आते देखता हूँ।
मैं उनके लिये भय,गड्ढे और फँदे देख रहा हूँ।

18 लोग खतरे की सुनकर डर से काँप जायेंगे।
कुछ लोग भाग जायेंगे किन्तु वे गड्ढे
और फँदों में जा गिरेंगे
और उन गड्ढों से कुछ चढ़कर
बच निकल आयेंगे।
किन्तु वे फिर दूसरे फँदों में फँसेंगे।
ऊपर आकाश की छाती फट जायेगी
जैसे बाढ़ के दरवाजे खुल गये हो।"
बाढ़े आने लगेंगी और धरती की
नींव डगमग हिलने लगेंगी।"

19 भूचाल आयेगा और धरती फटकर खुल जायेगी।

20 संसार के पाप बहुत भारी हैं।
उस भार से दबकर यह धरती गिर जायेगी।
यह धरती किसी झोपड़ी सी काँपेगी
और नशे में धुत्त किसी व्यक्ति की तरह
धरती गिर जायेगी।
यह धरती बनी न रहेगी।

21 उस समय यहोवा सबका न्याय करेगा।
उस समय यहोवा आकाश में स्वर्ग की सेनाएँ
और धरती के राजा उस न्याय का विषय होंगे।

22 इन सबको एक साथ एकत्र किया जायेगा।
उनमें से कुछ काल कोठरी में बन्द होंगे
और कुछ कारागार में रहेंगे।
कन्तु अन्त में बहुत समय के बाद
इन सबका न्याय होगा।

23 यरूशलेम में सिय्योन के पहाड़ पर
यहोवा राजा के रूप में राज्य करेगा।
अग्रजों के सामने उसकी महिमा होगी।
उसकी महिमा इतनी भव्य होगी कि
चाँद घबरा जायेगा,
सूरज लज्जित होगा।

परमेश्वर का एक स्तुति-गीत

25 हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है।
मैं तेरे नाम की स्तुति करता हूँ
और मैं तुझे सम्मान देता हूँ।
तूने अनेक अद्भुत कार्य किये हैं।
जो भी शब्द तूने बहुत पहले कहे थे
वे पूरी तरह से सत्य हैं।
हर बात वैसी ही घटी जैसे तूने बतायी थी।

2 तूने नगर को नष्ट किया।
वह नगर सुदृढ़ प्राचीरों से संरक्षित था।
किन्तु अब वह मात्र
पत्थरों का ढेर रह गया।
परदेसियों का महल नष्ट कर दिया गया।
अब उसका फिर से निर्माण नहीं होगा।

3 सामर्थी लोग तेरी महिमा करेंगे।
क्रूर जातियों के नगर तुझसे डरेंगे।

4 यहोवा निर्धन लोगों के लिये जो जरुरतमंद हैं,

तू सुरक्षा का स्थान है।
अनेक विपत्तियाँ उनको
पराजित करने को आती हैं
किन्तु तू उन्हें बचाता है।
तू एक ऐसा भवन है जो उनको
तूफानी वर्षा से बचाता है
और तू एक ऐसी हवा है
जो उनको गर्मी से बचाता है।
विपत्तियाँ भयानक आँधी और
घनघोर वर्षा जैसी आती हैं।
वर्षा दीवारों से टकराती हैं
और नीचे बह जाती है
किन्तु मकान में जो लोग हैं,
उनको हानि नहीं पहुँचती है।

5 नारे लगाते हुए शत्रु ने ललकारा।
घोर शत्रु ने चुनौतियाँ देने को ललकारा।
किन्तु तूने हे परमेश्वर, उनको रोक लिया।
वे नारे ऐसे थे जैसे गर्मी किसी खुश्क जगह पर।
तूने उन क्रूर लोगों के विजय गीत ऐसे रोक
दिये थे जैसे सघन मेघों की छाया
गर्मी को दूर करती है।

अपने सेवकों के लिए परमेश्वर का भोज

6उस समय, सर्वशक्तिमान यहोवा इस पर्वत के सभी लोगों के लिये एक भोज देगा। भोज में उत्तम भोजन और दाखमधु होगा। दावत में नर्म और उत्तम माँस होगा। 7किन्तु अब देखो, एक ऐसा पर्दा है जो सभी जातियों और सभी व्यक्तियों को ढके है। इस पर्दे का नाम है, "मृत्यु।" 8किन्तु मृत्यु का सदा के लिये अंत कर दिया जायेगा और मेरा स्वामी यहोवा हर आँख का हर आँसू पोंछ देगा। बीते समय में उसके सभी लोग शर्मिन्दा थे। यहोवा उन की लज्जा का इस धरती पर से हरण कर लेगा। यह सब कुछ घटेगा क्योंकि यहोवा ने कहा था, ऐसा हो।

9 उस समय लोग ऐसा कहेंगे,
"देखो यह हमारा परमेश्वर है!
यह वही है जिसकी हम बाट जोह रहे थे।
यह हमको बचाने को आया है।
हम अपने यहोवा की प्रतीक्षा करते रहे।
अत: हम खुशियाँ मनायेंगे और प्रसन्न होंगे
कि यहोवा ने हमको बचाया है।"

10 इस पहाड़ पर यहोवा की शक्ति है
और मोआब पराजित होगा।
यहोवा शत्रु को ऐसे कुचलेगा
जैसे भूसा कुचला जाता है
जो खाद के ढेर में होता है।

11 यहोवा अपने हाथ ऐसे फैलायेगा
जैसे कोई तैरता हुआ व्यक्ति फैलाता है।
तब यहोवा उन सभी वस्तुओं को एकत्र करेगा
जिन पर लोगों को गर्व है।
यहोवा उन सभी सुन्दर वस्तुओं को बटोर लेगा
जिन्हें उन्होंने बनाये थे और
वह उन वस्तुओं को फेंक देगा।

12 यहोवा लोगों की ऊँची दीवारों को नष्ट कर देगा।
यहोवा उनके सुरक्षा स्थानों को नष्ट कर देगा।
यहोवा उनको धरती की धूल में पटक देगा।

परमेश्वर का एक स्तुति–गीत

26

उस समय, यहूदा के लोग यह गीत गायेंगे:

यहोवा हमें मुक्ति देता है।
हमारी एक सुदृढ़ नगरी है।
हमारे नगर का सुदृढ़ परकोटा और सुरक्षा है।

2 उसके द्वारों को खोलो
ताकि भले लोग उसमें प्रवेश करें।
वे लोग परमेश्वर के जीवन की खरी
राह का पालन करते हैं।

3 हे यहोवा, तू हमें सच्ची शांति प्रदान करता है।
तू उनको शान्ति दिया करता है,
जो तेरे भरोसे हैं और
तुझ पर विश्वास रखते हैं।

4 अत: सदैव यहोवा पर विश्वास करो।
क्यों? क्योंकि यहोवा याह ही तुम्हारा सदा
सर्वदा के लिये शरणस्थल होगा!

5 किन्तु अभिमानी नगर को यहोवा ने झुकाया है
और वहाँ के निवासियों को
उसने दण्ड दिया है।
यहोवा ने उस ऊँचे बसी नगरी को
धरती पर गिराया।

उसने इसे धूल में मिलाने गिराया है।
6 तब दीन और नम्र लोग नगरी के
खण्डहरों को अपने पैर तले रौंदेंगे।
7 खरापन खरे लोगों के जीने का ढंग है।
खरे लोग उस राह पर चलते हैं
जो सीधी और सच्ची होती है।
परमेश्वर, तू उस राह को चलने के लिये
सुखद व सरल बनाता है।
8 किन्तु हे परमेश्वर! हम तेरे
न्याय के मार्ग की बाट जोह रहे हैं।
हमारा मन तुझे और तेरे नाम को
स्मरण करना चाहता है।
9 मेरा मन रात भर तेरे साथ रहना चाहता है
और मेरे अन्दर की आत्मा हर नये दिन की
प्रात: में तेरे साथ रहना चाहता है।
जब धरती पर तेरा न्याय आयेगा,
लोग खरा जीवन जीना सीख जायेंगे।
10 यदि तुम केवल दुष्ट पर दया दिखाते रहो तो
वह कभी भी अच्छे कर्म करना नहीं सीखेगा।
दुष्ट जन चाहे भले लोगों के बीच में रहे
लेकिन वह तब भी बुरे कर्म करता रहेगा।
वह दुष्ट कभी भी यहोवा की
महानता नहीं देख पायेगा।
11 हे यहोवा तू उन्हें दण्ड देने को तत्पर है
किन्तु वे इसे नहीं देखते।
हे यहोवा तू अपने लोगों पर अपना
असीम प्रेम दिखाता है
जिसे देख दुष्ट जन लज्जित हो रहे हैं।
तेरे शत्रु अपने ही पापों की आग में
जलकर भस्म होंगे।
12 हे यहोवा, हमको सफलता तेरे ही कारण मिली है।
सो कृपा करके हमें शान्ति दे।

यहोवा अपने लोगों को नया जीवन देगा

13 हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है किन्तु पहले
हम पर दूसरे देवता राज करते थे।
हम दूसरे स्वामियों से जुड़े हुए थे
किन्तु अब हम यह चाहते हैं कि लोग बस
एक ही नाम याद करें वह है तेरा नाम।
14 अब वे पहले स्वामी जीवित नहीं हैं।
वे भूत अब अपनी कब्रों से कभी भी नहीं उठेंगे।
तूने उन्हें नष्ट करने का निश्चय किया था
और तूने उनकी याद तक को मिटा दिया।
15 हे यहोवा, तूने जाति को बढ़ाया।
जाति को बढ़ाकर तूने महिमा पायी।
तूने प्रदेश की सीमाओं को बढ़ाया।
16 हे यहोवा, तुझे लोग दुःख में याद करते हैं,
और जब तू उनको दण्ड दिया करता है
तब लोग तेरी मूक प्रार्थनाएँ किया करते हैं।
17 हे यहोवा, हम तेरे कारण ऐसे होते हैं
जैसे प्रसव पीड़ा को झेलती स्त्री हो
जो बच्चे को जन्म देते समय रोती–बिलखाती
और पीड़ा भोगती है।
18 इसी तरह हम भी गर्भवान होकर पीड़ा भोगते हैं।
हम जन्म देते हैं किन्तु केवल वायु को।
हम संसार को नये लोग नहीं दे पाये।
हम धरती पर उद्धार को नहीं ला पाये।
19 यहोवा कहता है, मरे हुए तेरे लोग
फिर से जी जायेंगे!
मेरे लोगों की देह मृत्यु से जी उठेगी।
हे मरे हुए लोगों, हे धूल में मिले हुओं,
उठो और तुम प्रसन्न हो जाओ।
वह ओस जो तुझको घेरे हुए है, ऐसी है
जैसे प्रकाश में चमकती हुई ओस।
धरती उन्हें फिर जन्म देगी जो अभी मरे हुए हैं।

न्याय पुरस्कार या दण्ड

20 हे मेरे लोगों, तुम अपने कोठरियों में जाओ।
अपने द्वारों को बन्द करो और
थोड़े समय के लिये अपने कमरों में छिप जाओ।
तब तक छिपे रहो जब तक
परमेश्वर का क्रोध शांत नहीं होता।
21 यहोवा अपने स्थान को तजेगा और
वह संसार के लोगों के पापों का न्याय करेगा।
उन लोगों के खून को धरती दिखायेगी
जिनको मारा गया था।
धरती मरे हुए लोगों को
और अधिक ढके नहीं रहेगी।

27 उस समय, यहोवा लिब्यातान* का न्याय करेगा
जो एक दुष्ट सर्प है।
हे यहोवा अपनी बड़ी तलवार, अपनी सुदृढ़
और शक्तिशाली तलवार, कुंडली मारे सर्प
लिब्यातान को मारने में उपयोग करेगा।
यहोवा सागर के विशालकाय
जीव को मार डालेगा।
2 उस समय, वहाँ खुशियों से भरा
अंगूर का एक बाग होगा।
तुम उसके गीत गाओ।
3 "मैं यहोवा, उस बाग का ध्यान रखूँगा।
मैं बाग को उचित समय पर सींचूँगा।
मैं बगीचे की रात दिन रखवाली करुँगा
ताकि कोई भी उस को हानि न पहुँचा पाये।
4 मैं कुपित नहीं होऊँगा।
यदि काँटे कँटेली मुझे वहाँ मिले तो
मैं वैसे रौंदूगा जैसे सैनिक रौंदता चला जाता है
और उनको फूँक डालूँगा।
5 लेकिन यदि कोई व्यक्ति मेरी शरण में आये
और मुझसे मेल करना चाहे तो वह चला आये
और मुझ से मेल कर ले।
6 आने वाले दिनों में याकूब (इस्राएल) के लोग
उस पौधे के समान होंगे
जिसकी जड़े उत्तम होती हैं।
याकूब का विकास उस पनपते पौधे सा होगा
जिस पर बहार आई हो।
फिर धरती याकूब के वंशजों से भर जायेगी
जैसे पेड़ों के फलों से वह भर जाती है।"

परमेश्वर इस्राएल को खोज निकालता है

[7]यहोवा ने अपने लोगों को उतना दण्ड नहीं दिया है जितना उसने उनके शत्रुओं को दिया है। उसके लोग उतने नहीं मरे हैं जितने वे लोग मरे हैं जो इन लोगों को मारने के लिए प्रयत्नशील थे।

[8]यहोवा इस्राएल को दूर भेज कर उसके साथ अपना विवाद सुलझा लेगा। यहोवा ने इस्राएल को उस तेज हवा के झोंके सा उड़ा दिया जो रेगिस्तान की गर्म लू के समान होता है।

[9]याकूब का अपराध कैसे क्षमा किया जायेगा? उसके पापों को कैसे दूर किया जाएगा? ये बातें घटेंगी: वेदी की शिलाएँ चकनाचूर हो कर धूल में मिल जायेंगी; झूठे देवताओं के स्तम्भ और उनकी पूजा की वेदियाँ तहस–नहस कर दी जायेंगी।

[10]यह सुरक्षित नगरी उजड़ गई है। सब लोग कहीं दूर भाग गए हैं। वह नगर एक खुली चरागाह जैसा हो गया है। जवान मवेशी यहाँ घास चर रहे हैं। मवेशी अँगूर की बेलों की शाखों से पत्तियाँ चर रहे हैं। [11]अँगूर की बेलें सूख रही हैं। शाखाएँ कट कर गिर रही हैं और स्त्रियाँ उन शाखाओं से धन का काम ले रही हैं।

लोग इसे समझ नहीं रहे हैं। इसीलिए उनका स्वामी परमेश्वर उन्हें चैन नहीं देगा। उनका रचयिता उनके प्रति दयालु नहीं होगा।

[12]उस समय, यहोवा दूसरे लोगों से अपने लोगों को अलग करने लगेगा। परात नदी से वह इस कार्य का आरम्भ करेगा। परात नदी से लेकर मिस्र की नदी तक यहोवा तुम इस्राएलियों को एक एक करके इकट्ठा करेगा।

[13]अश्शूर में अभी मेरे बहुत से लोग खोये हुए हैं। मेरे कुछ लोग मिस्र को भाग गये हैं। किन्तु उस समय एक विशाल भेरी बजाई जायेगी और वे सभी लोग वापस यरूशलेम आ जायेंगे और उस पवित्र पर्वत पर यहोवा के सामने वे सभी लोग झुक जायेंगे।

उत्तर इस्राएल को चेतावनी

28 शोमरोन को देखो!
एप्रैम के मदमस्त लोग
उस नगर पर गर्व करते हैं।
वह नगर पहाड़ी पर बसा है
जिसके चारों तरफ एक सम्पन्न घाटी है।
शोमरोन के वासी यह सोचा करते हैं कि
उनका नगर फूलों के मुकुट सा है।
किन्तु वे दाखमधु से धुत्त हैं
और यह "सुन्दर मुकुट"
मुरझाये पौधे सा है।
2 देखो, मेरे स्वामी के पास एक व्यक्ति है
जो सुदृढ़ और वीर है।
वह व्यक्ति इस देश में इस प्रकार आयेगा
जैसे ओलों और वर्षा का तूफान आता है।

लिब्यातान सागर का विशाल दैत्य या प्राणी।

वह देश में इस प्रकार आयेगा
जैसे बाढ़ आया करती है।
वह शोमरोन के मुकुट को
धरती पर उतार फेंकेगा।
3 नशे में धुत्त एप्रैम के लोग
अपने "सुन्दर मुकुट" पर गर्व करते हैं
किन्तु वह नगरी पाँव तले रौंदी जायेगी।
4 वह नगर पहाड़ी पर बसा है
जिस के चारों तरफ एक सम्पन्न घाटी है
किन्तु वह "फूलों का सुन्दर मुकुट"
बस एक मुरझाता हुआ पौधा है।
वह नगर गर्मी में अंजीर के
पहले फल के समान होगा।
जब कोई उस पहली अंजीर को देखता है
तो जल्दी से तोड़कर उसे चट कर जाता है।

5उस समय, सर्वशक्तिमान यहोवा "सुन्दर मुकुट" बनेगा। वह उन बचे हुए अपने लोगों के लिये "फूलों का शानदार मुकुट" होगा। 6फिर यहोवा उन न्यायाधीशों को बुद्धि प्रदान करेगा जो उसके अपने लोगों का शासन करते हैं। नगर द्वारों पर युद्धों में लोगों को यहोवा शक्ति देगा। 7किन्तु अभी वे मुखिया लोग मदमत्त हैं। याजक और नबी सभी दाखमधु और सुरा से धुत्त हैं। वे लड़खड़ाते हैं और नीचे गिर पड़ते हैं। नबी जब अपने सपने देखते हैं तब वे पिये हुए होते हैं। न्यायाधीश जब न्याय करते हैं तो वे नशे में डूबे हुए होते हैं। 8हर खाने की मेज उल्टी से भरी हुई है। कहीं भी कोई स्वच्छ स्थान नहीं रहा है।

परमेश्वर अपने लोगों की सहायता करना चाहता है

9वे कहा करते हैं, यह व्यक्ति कौन है? यह किसे शिक्षा देने की कोशिश कर रहा है? वह अपने सन्देश किसे समझा रहा है? क्या उन बच्चों को जिनका अभी–अभी दूध छुड़ाया गया है? क्या उन बच्चों को जिन्हें अभी–अभी अपनी माताओं की छाती से दूर किया गया है? 10इसीलिए यहोवा उन से इस प्रकार बोलता है जैसे वे दूध मुँहे बच्चे हों।

सौ लासौ सौ लासौ
काव लाकाव काव लाकाव
ज़ेईर शाम ज़ेईर शाम।

11फिर यहोवा उन लोगों से बात करेगा उसके होंठ काँपते हुए होंगे और वह उन लोगों से बातें करने में दूसरी विचित्र भाषा का प्रयोग करेगा।

12यहोवा ने पहले उन लोगों से कहा था, "यहाँ विश्राम का एक स्थान है। थके मांदे लोगों को यहाँ आने दो और विश्राम पाने दो। यह शांति का ठौर है।"

किन्तु लोगों ने परमेश्वर की सुननी नहीं चाही। 13सो परमेश्वर के वचन किसी विचित्र भाषा के जैसे हो जाएँगे।

सौ लासौ सौ लासौ
काव लाकाव काव लाकाव
ज़ेईर शाम ज़ेईर शाम।"*

सो लोग जब चलेंगे तो पीछे की ओर लुढ़क जाएँगे और जख्मी होंगे। लोगों को फँसा लिया जाएगा और वे पकड़े जाएँगे।

परमेश्वर के न्याय से कोई नहीं बच सकता

14हे, यरूशलेम के आज्ञा नहीं माननेवाले अभिमानी मुखियाओं, तुम यहोवा का सन्देश सुनो। 15तुम लोग कहते हो, "हमने मृत्यु के साथ एक वाचा किया है। शेओल (मृत्यु का प्रदेश) के साथ हमारा एक अनुबन्ध है। इसलिए हम दण्डित नहीं होंगे। दण्ड हमें हानि पहुँचाये बिना हमारे पास से निकल जायेगा। अपनी चालाकियों और अपनी झूठों के पीछे हम छिप जायेंगे।"

16इन बातों के कारण मेरा स्वामी यहोवा कहता है: "मैं एक पत्थर–एक कोने का पत्थर–सिय्योन में धरती पर गाड़ूँगा। यह एक अत्यन्त मूल्यवान पत्थर होगा। इस अति महत्त्वपूर्ण पत्थर पर ही हर किसी वस्तु का निर्माण होगा। जिसमें विश्वास होगा, वह कभी घबराएगा नहीं।

17"लोग दीवार की सीध देखने के लिये जैसे सूत डाल कर देखते हैं, वैसे ही मैं जो उचित है उसके लिए न्याय और खरेपन का प्रयोग करुँगा।

"तुम दुष्ट लोग अपनी झूठों और चालाकियों के पीछे अपने को छुपाने का जतन कर रहे हो, किन्तु तुम्हें दण्ड दिया जायेगा। यह दण्ड ऐसा ही होगा जैसे तुम्हारे छिपने

सो लासौ ... जेईर शाम यह कदाचित कोई हिब्रू गीत है। इस गीत के द्वारा बच्चों को लिखना सिखाया जाता था। गीत का अनुवाद इन शब्दों में किया जा सकता है: "एक आज्ञा यहाँ एक आज्ञा वहाँ, एक नियम यहाँ एक नियम वहाँ, एक पाठ यहाँ एक पाठ वहाँ।"

के स्थानों को नष्ट करने के लिए कोई तूफान या कोई बाढ़ आ रही हो। [18]मृत्यु के साथ तुम्हारे वाचा को मिटा दिया जायेगा। अधोलोक के साथ हुआ तुम्हारा सन्धि भी तुम्हारी सहायता नहीं करेगा।

"जब भयानक दण्ड तुम पर पड़ेगा तो तुम कुचले जाओगे। [19]वह हर बार जब आएगा तुम्हें वहाँ ले जाएगा। तुम्हारा दण्ड भयानक होगा। तुम्हें सुबह दर सुबह और दिन रात दण्ड मिलेगा।

[20]"तब तुम इस कहानी को समझोगे: कोई पुरुष एक ऐसे बिस्तर पर सोने का जतन कर रहा था जो उसके लिये बहुत छोटा था। उसके पास एक कंबल था जो इतना चौड़ा नहीं था कि उसे ढक ले। सो वह बिस्तर और वह कम्बल उसके लिए व्यर्थ रहे और देखो तुम्हारा वाचा भी तुम्हारे लिये ऐसा ही रहेगा।"

[21]"यहोवा वैसे ही युद्ध करेगा जैसे उसने पराजीम नाम के पहाड़ पर किया था। यहोवा वैसे ही कुपित होगा जैसे वह 'गिबोन की घाटी' में हुआ था। तब यहोवा उन कामों को करेगा जो उसे निश्चय ही करने हैं। यहोवा कुछ विचित्र काम करेगा। किन्तु वह अपने काम को पूरा कर देगा। उसका काम किसी एक अजनबी का काम है। [22]अब तुम्हें इन बातों का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारे बन्धन की रस्सियाँ और अधिक कस जायेंगी।

सर्वशक्तिमान यहोवा ने इस समूचे प्रदेश को नष्ट करने की ठान ली है। जो शब्द मैंने सुने थे, अटल हैं। सो वे बातें अवश्य घटित होंगी।

यहोवा खरा दण्ड देता है

[23]जो सन्देश मैं तुम्हें सुना रहा हूँ, उसे ध्यान से सुनो। [24]क्या कोई किसान अपने खेत को हर समय जोतता रहता है? नहीं! क्या वह माटी को हर समय संवारता रहता है? नहीं! [25]किसान अपनी धरती को तैयार करता है, और फिर उसमें बीज अलग अलग डालता है। किसान अलग–अलग बीजों की रुपाई, ढंग से करता है। किसान सौंफ के बीज बिखेरता है। किसान अपने खेत पर जीरे के बीज बिखेरता है और एक किसान कठिये गेंहूँ को बोता है। एक किसान खास स्थान पर जौ लगाता है। एक किसान कठिये गेंहूँ के बीजों को खेत की मेंड़ पर लगाता है।

[26]उसका परमेश्वर उसको शिक्षा देता है और अच्छे प्रकार से उसे निर्देश देता है। [27]क्या कोई किसान तेज़ दाँतदार तख़्तों का प्रयोग सौंफ के दानों को गहाने के लिये करता है? नहीं! क्या कोई किसान जीरे को गहाने के लिए किसी छकड़े का प्रयोग करता है? नहीं! एक किसान इन मसालों के बीजों के छिलके उतारने के लिये एक छोटे से डण्डे का प्रयोग ही करता है।

[28]रोटी के लिए अनाज को पीसा जाता है, पर लोग उसे सदा पीसते ही तो नहीं रहते। अनाज को दलने के लिए कोई घोड़ों से जुती गाड़ी का पहिया अनाज पर फिरा सकता है किन्तु वह अनाज को पीस–पीस कर एक दम मैदा जैसा तो नहीं बना देता। [29]सर्वशक्तिमान यहोवा से यह पाठ मिलता है। यहोवा अद्‌भुत सलाह देता है। यहोवा सचमुच बहुत बुद्धिमान है।

यरूशलेम के प्रति परमेश्वर का प्रेम

29 परमेश्वर कहता है, "अरीएल को देखो! अरीएल वह स्थान हैं जहाँ दाऊद ने छावनी डाली थी। वर्ष दो वर्ष साथ उत्सवों के पूरे चक्र तक गुजर जाने दो। [2]तब मैं अरीएल को दण्ड दूँगा। वह नगरी दु:ख और विलाप से भर जायेगी। वह एक ऐसी मेरी बलि वेदी होगी जिस पर इस नगरी के लोग बलि चढ़ायेंगे! [3]अरीएल तेरे चारों तरफ मैं सेनाएँ लगाऊँगा। मैं युद्ध के लिये तेरे विरोध में बुर्ज बनाऊँगा। [4]मैं तुझ को हरा दूँगा और धरती पर गिरा दूँगा। तू धरती से बोलेगा। मैं तेरी आवाज ऐसे सुनूँगा जैसे धरती से किसी भूत की आवाज उठ रही हो। धूल से मरी–मरी तेरी दुर्बल आवाज आयेगी।" [5]तेरे शत्रु धूल के कण की भाँति नगण्य होंगे। वहाँ बहुत से क्रूर व्यक्ति भूसे की तरह आँधी में उड़ते हुए होंगे। [6]सर्वशक्तिमान यहोवा मेघों के गर्जन से, धरती की कम्पन से, और महाध्वनियों से तेरे पास आयेगा। यहोवा दण्डित करेगा। यहोवा तूफान, तेज आँधी और अग्नि का प्रयोग करेगा जो जला कर सभी नष्ट कर देगी। [7]फिर बहुत बहुत देशों का अरीएल के साथ नगर और उसके किले के विरोध में लड़ना रात के स्वप्न सा होगा। जो अचानक विलीन होता है। [8]किन्तु उन सेनाओं को भी यह एक स्वप्न जैसा होगा। वे सेनाएँ वे वस्तु न पायेंगी जिनको वे चाहते हैं। यह वैसा ही होगा जैसे भूखा व्यक्ति भोजन का स्वप्न देखे और जागने पर वह अपने को वैसा ही भूखा

पाये। यह वैसा ही होगा जैसे कोई प्यासा पानी का स्वप्न देखे और जब जागे तो वह अपने को प्यासा का प्यासा ही पाये।

सिय्योन के विरोध में लड़ते हुए
सभी देश सचमुच ऐसे ही होंगे।
यह बात उन पर खरी उतरेगी।
देशों को वे वस्तु नहीं मिलेगी
जिनकी उन्हें चाह है।

9 आश्चर्यचकित हो जाओ
और अचरज मे भर जाओ।
तुम सभी धुत्त होगे किन्तु दाखमधु से नहीं।
देखो और अचरज करो!
तुम लड़खड़ाओगे और गिर जाओगे
किन्तु सुरा से नहीं।

10 यहोवा ने तुमको सुलाया है।
यहोवा ने तुम्हारी आँखें बन्द कर दी।
(तुम्हारी आँखें नहीं है)
तुम्हारी बुद्धि पर यहोवा ने पर्दा डाल दिया है।
(नबी तुम्हारी बुद्धि हैं।)

11मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि ये बातें घटेंगी। किन्तु तुम मुझे नहीं समझ रहे। मेरे शब्द उस पुस्तक के समान है, जो बन्द हैं और जिस पर एक मुहर लगी है। **12**तुम उस पुस्तक को एक ऐसे व्यक्ति को दे सकते हो जो पढ़ पुस्तक है और उस व्यक्ति से कह सकते हो कि वह उस पुस्तक को पढ़े। किन्तु वह व्यक्ति कहेगा, "मैं पुस्तक को पढ़ नहीं सकता क्योंकि यह बन्द है और मैं इसे खोल नहीं सकता।" अथवा तुम उस पुस्तक को किसी भी ऐसे व्यक्ति को दे सकते हो जो पढ़ नहीं सकता, और उस व्यक्ति से कह सकते हो कि वह उस पुस्तक को पढ़े। तब वह व्यक्ति कहेगा, "मैं इस किताब को नहीं पढ़ सकता क्योंकि मैं पढ़ना नहीं जानता।"

13मेरा स्वामी कहता है, "ये लोग कहते हैं कि वे मुझे प्रेम करते हैं। अपने मुख के शब्दों से वे मेरे प्रति आदर व्यक्त करते हैं। किन्तु उनके मन मुझ से बहुत दूर है। वह आदर जिसे वे मेरे प्रति दिखाते हैं, बस कोरे मानव नियम हैं जिन्हें उन्होंने कंठ कर रखा हैं। **14**सो मैं इन लोगों को शक्ति से पूर्ण और अचरज भरी बातें करते हुए आश्चर्यचकित करता रहूँगा। उनके बुद्धिमान पुरुष अपना विवेक छोड़ बैठेंगे। उनके बुद्धिमान पुरुष समझने में असमर्थ हो जायेंगे।"

15धिक्कार है उन लोगों को जो यहोवा से बातें छिपाने का जतन करेंगे। वे सोचते हैं कि यहोवा तो समझेगा नहीं। वे लोग अन्धेरे में पाप करते हैं। वे लोग अपने मन में कहा करते हैं, "हमें कोई देख नहीं सकता। हम कौन हैं, इसे कोई व्यक्ति नहीं जानेगा।"

16तुम भ्रम में पड़े हो। तुम सोचा करते हो, कि मिट्टी कुम्हार के बराबर है। तुम सोचा करते हो कि कृति अपने कर्ता से कह सकती है "तुने मेरी रचना नहीं की है!" यह वैसा ही है, जैसे घड़े का अपने बनाने वाले कुम्हार से यह कहना, "तू समझता नहीं है तू क्या कर रहा है।"

एक उत्तम समय आ रहा है

17यह सच है: कि लबानोन थोड़े दिनों बाद, अपने विशाल ऊँचे पेड़ों को लिये सपाट जुते खेतों में बदल जायेगा और सपाट खेत ऊँचे-ऊँचे पेड़ों वाले सघन वनों का रुप ले लेंगे। **18**पुस्तक के शब्दों को बहरे सुनेंगे, अन्धे अन्धेरे और कोहरे में से भी देख लेंगे। **19**यहोवा दीन जनों को प्रसन्न करेगा। दीन जन इस्राएल के उस पवित्रतम में आनन्द मनायेंगे।

20ऐसा तब होगा जब नीच और क्रूर व्यक्ति समाप्त हो जायेंगे। ऐसा तब होगा जब बुरा काम करने में आनन्द लेने वाले लोग चले जायेंगे। **21**(वे लोग दूसरे लोगों के बारे में झूठ बोला करते हैं। वे न्यायालय में लोगों को फँसाने का यत्न करते हैं। वे भोले भाले लोगों को नष्ट करने में जुटे रहते हैं।)

22सो यहोवा ने याकूब के परिवार से कहा। (यह वही यहोवा है जिसने इब्राहीम को मुक्त किया था।) यहोवा कहता है, "अब याकूब (इस्राएल के लोग) को लज्जित नहीं होना होगा। अब उसका मुँह कभी पीला नहीं पड़ेगा। **23**वह अपनी सभी संतानों को देखेगा और कहेगा कि मेरा नाम पवित्र है। इन संतानो को मैंने अपने हाथों से बनाया है और ये संतानें मानेंगी कि याकूब का पवित्र (परमेश्वर) वास्तव में पवित्र है और यें सन्ताने इस्राएल के परमेश्वर को आदर देंगी। **24**वे लोग जो गलतियाँ करते रहे हैं, अब समझ जायेंगे। वे लोग जो शिकायत करते रहे हैं अब निर्देशों को स्वीकार करेंगे।"

इस्राएल को परमेश्वर पर विश्वास रखना चाहिये, मिस्र पर नहीं

30 यहोवा ने कहा, "मेरे इन बच्चों को देखो, ये मेरी बात नहीं मानते। ये योजनाएँ बनाते हैं किन्तु मेरी सहायता नहीं लेना चाहते। ये दूसरी जातियों के साथ समझौता करते हैं जबकि मेरी आत्मा उन समझौतों को नहीं चाहती। ये लोग अपने सिर पर पाप का बोझ बढ़ाते चले जा रहे हैं। [2]ये बच्चे सहायता के लिये मिस्र की ओर चले जा रहे हैं, किन्तु ये मुझ से कुछ नहीं पूछते कि क्या ऐसा करना उचित है। उन्हें उम्मीद हैं कि फिरौन उन्हें बचा लेगा। वे चाहते हैं कि वे मिस्र उन्हें बचा ले।

[3]"किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ कि मिस्र में शरण लेने से तुम्हारा बचाव नहीं होगा। मिस्र तुम्हारी रक्षा करने में समर्थ नहीं होगा। [4]तुम्हारे अगुआ सोअन में गये हैं और तुम्हारे राजदूत हानेस को चले गये हैं। [5]किन्तु उन्हें निराशा ही हाथ लगेगी। वे एक ऐसे राष्ट्र पर विश्वास कर रहे हैं जो उन्हें नहीं बचा पायेगी। मिस्र बेकार है, मिस्र कोई सहायता नहीं देगा। मिस्र के कारण उन्हें अपमानित और लज्जित होना पड़ेगा।"

यहूदा को परमेश्वर का सन्देश

[6]दक्षिण के पशुओं के लिए दु:खद सन्देश:

नेगव विपत्तियों और खतरों से भरा एक देश है। यह प्रदेश सिंहों, नागों और उड़ने वाले साँपों से भरा पड़ा है। किन्तु कुछ लोग नेगव से होते हुए यात्रा कर रहे हैं—वे मिस्र की ओर जा रहे हैं। उन लोगों ने गधों की पीठों पर अपनी धन दौलत लादी हुई है। उन लोगों ने अपना खज़ाना ऊँटों की पीठों पर लाद रखा है अर्थात् ये लोग एक ऐसे देश पर भरोसा रखे हैं जो उन्हें नहीं बचा सकता। [7]मिस्र ही वह बेकार का देश है। मिस्र की सहायता बेकार है। इसलिये मैं मिस्र को एक ऐसा रहाब कहता हूँ जो निठल्ला पड़ा रहता है।"

[8]अब इसे एक चिन्ह पर लिख दो ताकि सभी लोग इसे देख सकें। इसे एक पुस्तक में लिख दो। इन्हे अन्तिम दिनों के लिये लिख दो। ये बातें सुदूर भविष्य के साक्षी होंगी:

[9]ये लोग उन बच्चों के जैसे हैं जो अपने माता–पिता की बात नहीं मानते। वे झूठे हैं और यहोवा की शिक्षाओं को सुनना तक नहीं चाहते। [10]वे नबियों से कहा करते हैं, "हमें जो करना चाहिये, उनके बारे में दर्शन मत किया करो! हमें सच्चाई मत बताओ! हमसे ऐसी अच्छी अच्छी बातें कहो, जो हमें अच्छी लगे! हमारे लिये केवल अच्छी बातें ही देखो। [11]जो बातें सचमुच घटने को हैं, उन्हें देखना बन्द करो! हमारे रास्ते से हट जाओ! इस्राएल के उस पवित्र परमेश्वर के बारे में हमें बताना बन्द करो।"

यहूदा की सहायता केवल परमेश्वर से आती है

[12]इस्राएल का पवित्र (परमेश्वर) कहता है, "तुम लोगों ने यहोवा से इस सन्देश को स्वीकार करने से मना कर दिया है। तुम लोग सहायता के लिये लड़ाई–झगड़ों और झूठ पर निर्भर रहना चाहते हो। [13]तुम क्योंकि इन बातों के लिए अपराधी हो, इसलिए तुम एक ऐसी ऊँची दीवार के समान हो जिसमें दरारें आ चुकी हैं। वह दीवार ढह जायेगी और छोटे–छोटे टुकड़ों में टूट कर ढेर हो जायेगी। [14]तुम मिट्टी के उस बड़े बर्तन के समान हो जाओगे जो टूट कर छोटे–छोटे टुकड़ों में बिखर जाता है। ये टुकड़ें बेकार होते हैं। इन टुकड़ों से तुम न तो आग से जलता कोयला ही उठा सकते हो और न ही किसी जोहड़ से पानी।"

[15]इस्राएल का वह पवित्र, मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "यदि तुम मेरी ओर लौट आओ तो तुम बच जाओगे। यदि तुम मुझ पर भरोसा रखोगे तभी तुम्हें तुम्हारा बल प्राप्त होगा किन्तु तुम्हें शांत रहना होगा।"

किन्तु तुम तो वैसा करना ही नहीं चाहते! [16]तुम कहते हो, "नहीं, हमें घोड़ों की आवश्यकता है जिन पर चढ़ कर हम दूर भाग जायें!" यह सच है–तुम घोड़ों पर चढ़ कर दूर भाग जाओगे किन्तु शत्रु तुम्हारा पीछा करेगा और वह तुम्हारे घोड़ों से अधिक तेज़ होगा। [17]एक शत्रु ललकारेगा और तुम्हारे हज़ारों लोग भाग खड़े होंगे। पाँच शत्रु ललकारेंगे और तुम्हारे सभी लोग उनके सामने से भाग जायेंगे। वहाँ तुम ऐसे ही अकेले बचे रह जाओगे, जैसे पहाड़ी पर लगा तुम्हारे झण्डे का डण्डा।

[18]यहोवा तुम पर अपनी करुणा दर्शाना चाहता है। यहोवा बाट जोह रहा है। यहोवा तुम्हें सुख चैन देने के लिए तैयार खड़ा है। यहोवा खरा परमेश्वर है और हर वह व्यक्ति जो यहोवा की सहायता की प्रतीक्षा में है, धन्य (आनन्दित) होगा।

[19]हाँ, हे सिय्योन पर्वत पर रहने वालो, हे यरूशलेम के निवासियों, तुम लोग रोते बिलखते नहीं रहोगे। यहोवा तुम्हारे रोने को सुनेगा और वह तुम पर दया करेगा। यहोवा तुम्हारी सुनेगा और वह तुम्हारी सहायता करेगा।

परमेश्वर अपने लोगों की सहायता करेगा

[20]यद्यपि मेरा यहोवा परमेश्वर तुम्हें दुःख और कष्ट दे सकता है ऐसे ही जैसे मानों वह ऐसा रोटी–पानी हो, जिसे तुम हर दिन खाते–पीते हो। किन्तु वास्तव में परमेश्वर तो तुम्हारा शिक्षक है, और वह तुमसे छिपा नहीं रहेगा। तुम स्वयं अपनी आँखों से अपने उस शिक्षक को देखोगे। [21]तब यदि तुम बुरे काम करोगे और बुरा जीवन जीओगे (दाहिनी ओर अथवा बायीं ओर) तो तुम अपने पीछे एक आवाज़ को कहते सुनोगे, "खरी राह यह है। तुझे इसी राह में चलना है।"

[22]तुम्हारे पास चाँदी सोने से मढ़े मूर्ति हैं। उन झूठे देवों ने तुमको बुरा (पापपूर्ण) बना दिया है। लेकिन तुम उन झूठे देवों की सेवा करना छोड़ दोगे। तुम उन देवों को कूड़े कचरे और मैले चिथड़ों के समान दूर फेंक दोगे।

[23]उस समय, यहोवा तुम्हारे लिये वर्षा भेजेगा। तुम खेतों में बीज बोओगे, और धरती तुम्हारे लिये भोजन उपजायेगी। तुम्हें भरपूर उपज मिलेगा। तुम्हारे पशुओं के लिए खेतों में भरपूर चारा होगा। तुम्हारे पशुओं के लिये वहाँ बड़ी–बड़ी चरागाहें होंगी। [24]तुम्हारे मवेशियों और तुम्हारे गधों को जैसे चारे की आवश्यकता होगी, वह सब उन्हें मिलेगा। खाने की इतनी बहुतायत होगी कि तुम्हें अपने पशुओं के खाने के लिए भी फावड़ों और पंजों से चारा को फैलाना होगा। [25]हर पर्वत और पहाड़ियों पर पानी से भरी जलधाराएँ होंगी। ये बातें तब घटेंगी जब बहुत से लोग मर चुकेंगे और मीनारें ढह चुकेंगी।

[26]उस समय चाँद की चाँदनी सूरज की धूप सी उजली हो जायेगी। सूर्य का प्रकाश आज से सात गुणा अधिक उज्ज्वल हो जायेगा। सूर्य एक दिन में उतना प्रकाश देने लगेगा जितना वह पूरे सप्ताह में देता है। ये बातें उस समय घटेंगी जब यहोवा अपने टूटे लोगों की मरहम पटटी करेगा और सजा के कारण जो चोटें उन्हें आई हैं, उन्हें अच्छा करेगा।

[27]देखो! दूर से यहोवा का नाम आ रहा है। उसका क्रोध एक ऐसी अग्नि के समान है जो धुएँ के काले बादलों से युक्त है। यहोवा का मुख क्रोध से भरा हुआ है। उसकी जीभ एक जलती हुई लपट जैसी है। [28]यहोवा की साँस (आत्मा) एक ऐसी विशाल नदी के समान है जो तब तक चढ़ती रहती है, जब तक वह गले तक नहीं पहुँच जाती। यहोवा सभी राष्ट्रों का न्याय करेगा। यह वैसा ही होगा जैसे वह उन्हें विनाश की छलनी से छान डाले। यहोवा उनका नियन्त्रण करेगा। यह नियन्त्रण वैसा ही होगा, जैसे पशु पर नियन्त्रण पाने के लिए लगाम लगायी जाती है। वह उन्हें उनके विनाश की ओर ले जाएगा।

[29]उस समय, तुम खुशी के गीत गाओगे। वह समय उन रातों के जैसा होगा जब तुम अपने उत्सव मनाना शुरु करते हो। तुम उन व्यक्तियों के समान प्रसन्न होओगे जो इस्राएल की चट्टान यहोवा के पर्वत पर जाते समय बांसुरी को सुनते हुए प्रसन्न होते हैं।

[30]यहोवा सभी लोगों को अपनी महान वाणी सुनने को विवश करेगा। यहोवा लोगों को क्रोध के साथ नीचे आती हुई अपनी शक्तिशाली भुजा देखने को विवश करेगा। यह भुजा उस महा अग्नि के समान होगी जो सब कुछ भस्म कर डालती है। यहोवा की शक्ति उस आंधी के जैसी होगी जो तेज़ वर्षा और ओलों के साथ आता है। [31]अश्शूर जब यहोवा की आवाज़ सुनेगा तो वह डर जायेगा। यहोवा लाठी से अश्शूर पर वार करेगा। [32]यहोवा अश्शूर को पीटेगा और यह पिटाई ऐसी होगी जैसे कोई नगाड़ों और वीणाओं पर संगीत बजा रहा हो। यहोवा अपने शक्तिशाली भुजा (शक्ति) से अश्शूर को पराजित करेगा।

[33]तोपेत* को बहुत पहले से ही तैयार कर लिया गया है। राजा के लिये यह तैयार है। यह भट्टी बहुत गहरी और बहुत चौड़ी बनायी गयी है। वहाँ लकड़ी का एक बहुत बड़ा ढेर और आग मौजूद है। यहोवा की आत्मा जलती हुई गंधक की नदी के रुप में आयेगी और इसे भस्म कर के नष्ट कर देगी।

इस्राएल को परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा रखना चाहिये

31 उन लोगों को धिक्कार है जो सहायता पाने के लिये मिस्र की ओर उतर रहे हैं। ये लोग

तोपेत हिनोम की घाटी। इस घाटी में झूठे देवता मोलेक पर लोग अपने बच्चों की बलि चढ़ाया करते थे।

घोड़े चाहते हैं। उनका विचार है, घोड़े उन्हें बचा लेंगे। लोगों को आशा है कि मिस्र के रथ और घुड़सवार सैनिक उन्हें बचा लेंगे। लोग सोचते हैं कि वे सुरक्षित इसलिये हैं कि वह एक विशाल सेना है। लोग इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) पर भरोसा नहीं रखते। लोग यहोवा से सहायता नहीं माँगते।

[2]किन्तु, यहोवा ही बुद्धिमान है और वह यहोवा ही है जो उन पर विपत्तियाँ ढायेगा। लोग यहोवा के आदेश को नहीं बदल पायेंगे। यहोवा बुरे लोगों (यहूदा) के विरुद्ध खड़ा होगा और युद्ध करेगा। यहोवा उन लोगों (मिस्र) के विरुद्ध युद्ध करेगा, जो उन्हें सहायता पहुँचाने का यत्न करते हैं।

[3]मिस्र के लोग मात्र मनुष्य हैं परमेश्वर नहीं। मिस्र के घोड़े मात्र पशु हैं, आत्मा नहीं। यहोवा अपना हाथ आगे बढ़ायेगा और सहायक (मिस्र) पराजित हो जायेगा और सहायता चाहने वाले लोगों (यहूदा) का पतन होगा। वे सभी लोग साथ साथ मिट जायेंगे।

[4]यहोवा ने मुझ से यह कहा, "जब कोई सिंह अथवा सिंह का कोई बच्चा किसी पशु को खाने के लिये पकड़ता है तो वह मरे हुए पशु पर खड़ा हो जाता है और दहाड़ता है। उस समय उस शक्तिशाली सिंह को कोई भी डरा नहीं पाता। यदि चरवाहे आयें और उस सिंह का हाँका करने लगे तो भी वह सिंह डरेगा नहीं। लोग कितना ही शोर करते रहें, किन्तु वह सिंह नहीं भागेगा।"

इसी प्रकार सर्वशक्तिमान यहोवा सिय्योन पर्वत पर उतरेगा। उस पर्वत पर यहोवा युद्ध करेगा। [5]सर्वशक्तिमान यहोवा वैसे ही यरूशलेम की रक्षा करेगा जैसे अपने घोंसलों के ऊपर उड़ती हुई चिड़ियाँ। यहोवा उसे बचायेगा और उसकी रक्षा करेगा। यहोवा ऊपर से होकर निकल जायेगा और यरूशलेम की रक्षा करेगा।

[6]हे, इस्राएल के वंशज! तुमने परमेश्वर से विद्रोह किया। तुम्हें परमेश्वर की ओर मुड़ आना चाहिये। [7]तब लोग उन सोने चाँदी की मूर्तियों को पूजना छोड़ेंगे जिन्हें तुमने बनाया है। उन मूर्तियों को बनाकर तुमने सचमुच पाप किया था। [8]यह सच है कि तलवार के द्वारा अश्शूर को हरा दिया जायेगा। किन्तु वह तलवार किसी मनुष्य की तलवार नहीं होगी। अश्शूर नष्ट हो जायेगा किन्तु वह विनाश किसी मनुष्य की तलवार के द्वारा नहीं किया जायेगा। अश्शूर परमेश्वर की तलवार से भाग निकलेगा। वह उस तलवार से भागेगा। किन्तु उसके जवान पुरुषों को पकड़कर दास बना लिया जायेगा। [9]घबराहट में उनका शरण दाता गायब हो जायेगा। उनके नेता पराजित कर दिये जायेंगे और वे अपने झण्डे को छोड़ देंगे।

ये सभी बातें यहोवा ने कही थी। यहोवा की अग्नि स्थल (वेदी) सिय्योन पर है और यहोवा की भट्टी (वेदी) यरूशलेम में है।

मुखियाओं को खरा और सच्चा होना चाहिए

32 मैं जो बातें बता रहा हूँ, उन्हें सुनो! किसी राजा को ऐसे राज करना चाहिये जिससे भलाई आये। मुखियाओं को लोगों का नेतृत्व करते समय निष्पक्ष निर्णय लेने चाहिये। [2]यदि ऐसा होगा तो राजा उस स्थान के समान हो जायेगा जहाँ लोग आँधी और वर्षा से बचने के लिये आश्रय लेते हैं। यह सूखी धरती में जलधाराओं के समान होगा। यह ऐसा ही होगा जैसे गर्म प्रदेश में किसी बड़ी चट्टान की ठण्डी छाया। [3]फिर लोगों की वे आँखे जो देख सकती हैं, वे बंद नहीं रहेगी। उन के कान जो सुनते हैं, वे वास्तव में उस पर ध्यान देंगे। [4]वे लोग जो उतावले हैं, वे सही फैसले लेंगे। वे लोग जो अभी साफ़ साफ़ नहीं बोल पाते हैं, वे साफ़ साफ़ और जल्दी जल्दी बोलने लगेंगे। [5]मूर्ख लोग महान व्यक्ति नहीं कहलायेंगे। लोग षड़यन्त्र करने वालों को सम्मान योग्य नहीं कहेंगे।

[6]एक मूर्ख व्यक्ति तो मूर्खतापूर्ण बातें ही कहता है और वह अपने मन में बुरी बातों की ही योजनाएँ बनाता है। मूर्ख व्यक्ति अनुचित कार्य करने की ही सोचता है। मूर्ख व्यक्ति यहोवा के बारे में ग़लत बातें कहता है। मूर्ख व्यक्ति भूखों को भोजन नहीं करने देता। मूर्ख व्यक्ति प्यासे लोगों को पानी नहीं पीने देता। [7]वह मूर्ख व्यक्ति बुराई को एक हथियार के रुप में इस्तेमाल करता है। वह निर्धन लोगों से झूठ के जरिए बरबाद करने के लिये बुरे बुरे रास्ते बताता रहता है। उसकी यें झूठी बातें गरीब लोगों को निष्पक्ष न्याय मिलने से दूर रखती हैं।

[8]किन्तु एक अच्छा मुखिया अच्छे काम करने की योजना बनाता है और उसकी वे अच्छी बातें ही उसे एक अच्छा नेता बनाती हैं।

बुरा समय आ रहा है

[9]तुममें से कुछ स्त्रियाँ अभी खुश हैं। तुम सुरक्षित अनुभव करती हो। किन्तु तुम्हें खड़े होकर जो वचन मैं बोल रहा उन्हें सुनना चाहिये। [10]स्त्रियों तुम अभी सुरक्षित अनुभव करती हो किन्तु एक वर्ष बाद तुम पर विपत्ति आने वाली है। क्यों? क्योंकि तुम अगले वर्ष अँगूर इकट्ठे नहीं करोगी–इकट्ठे करने के लिये अँगूर होंगे ही नहीं।

[11]स्त्रियों, अभी तुम चैन से हो, किन्तु तुम्हें डरना चाहिये! स्त्रियों, अभी तुम सुरक्षित अनुभव करती हो, किन्तु तुम्हें चिन्ता करनी चाहिये! अपने सुन्दर वस्त्रों को उतार फेंको और शोक वस्त्रों को धारण कर लो। उन वस्त्रों को अपनी कमर पर लपेट लो। [12]अपनी शोक से भरी छातियों पर उन शोक वस्त्रों को पहन लो।

विलाप करो क्योंकि तुम्हारे खेत उजड़े हुए हैं। तुम्हारे अँगूर के बगीचे जो कभी अँगूर दिया करते थे, अब खाली पड़े हैं। [13]मेरे लोगों की धरती के लिये विलाप करो। विलाप करो, क्योंकि वहाँ बस काँटे और खरपतवार ही उगा करेंगे। विलाप करो इस नगर के लिये और उन सब भवनों के लिये जो कभी आनन्द से भरे हुए थे।

[14]लोग इस प्रमुख नगर को छोड़ जायेंगे। यह महल और ये मिनारें वीरान छोड़ दिये जायेंगे। वे जानवरों की माँद जैसे हो जाएँगे। नगर में जंगली गधे विहार करेंगे। वहाँ भेड़े घास चरती फिरेंगी।

[15-16]तब तक ऐसा ही होता रहेगा, जब तक परमेश्वर ऊपर से हमें अपनी आत्मा नहीं देगा। अब धरती पर कोई अच्छाई नहीं है। यह रेगिस्तान सी बनी हुई हैं किन्तु आने वाले समय में यह रेगिस्तान उपजाऊ मैदान हो जायेगा और यह उपजाऊ मैदान एक हरे भरे वन जैसा बन जायेगा। चाहे जंगल हो चाहे उपजाऊ धरती, हर कहीं न्याय और निष्पक्षता मिलेगी। [17]वह नेकी सदा–सदा के लिये शांति और सुरक्षा को लायेगी। [18]मेरे लोग शांति के इस सुन्दर क्षेत्र में निवास करेंगे। मेरे लोग सुरक्षा के तम्बुओं में रहा करेंगे। वे निश्चिंतता के साथ शांतिपूर्ण स्थानों में निवास करेंगे।

[19]किन्तु ये बातें घटें इससे पहले उस वन को गिरना होगा। उस नगर को पराजित होना होगा। [20]तुममें से कुछ लोग हर जलधारा के निकट बीज बोते हो। तुम अपने मवेशियों और अपने गधों को इधर–उधर चरने के लिए खुला छोड़ देते हो। तुम लोग बहुत प्रसन्न रहोगे।

बुराई से और अधिक बुराई ही पैदा होती है

33 देखो, तुम लोग लड़ाई करते हो और उन लोगों की वस्तुएँ लूटते हो और वह भी ऐसे लोगों कि जिन्होंने कभी कोई तुम्हारी वस्तु नहीं चोरी की। तुम ऐसे लोगों को धोखा देते रहे जिन्होंने कभी तुम्हें धोखा नहीं दिया। इसलिये जब तुम चोरी करना बन्द कर दोगे तो दूसरे लोग तुम्हारी वस्तुऐं चोरी करना शुरु कर देंगे। जब तुम लोगों को धोखा देना बंद कर दोगे तो लोग तुम्हें धोखा देना आरम्भ कर देंगे। तब तुम कहोगे,

[2] हे यहोवा, हम पर दया कर।
हमने तेरे सहारे की बाट जोही है।
हे यहोवा, हर सुबह तू हमको शक्ति दे।
जब हम विपत्ति में हो, तू हम को बचा ले।
[3] तेरी शक्तिशाली ध्वनि से लोग डरा करते हैं
और वे तुझ से दूर भाग जाते हैं।
तेरी महानता के कारण राष्ट्र दूर भाग जाते हैं।

[4]तुम लोग युद्ध में चोरी किया करते हो। वे सभी वस्तुएँ तुमसे ले ली जायेंगी। अनगिनत लोग आयेंगे और तुम्हारी धन–दौलत तुमसे छीन लेंगे। यह उस समय का जैसा होगा जब टिड्डी दल आता है और तुम्हारी सभी फसलों को चट कर जाता है।

[5]यहोवा बहुत महान है। वह बहुत ऊँचे स्थान पर रहता है। यहोवा सिय्योन को खरेपन और सच्चाई से परिपूर्ण करता है।

[6]हे यरूशलेम, तू सम्पन्न है। तू परमेश्वर के ज्ञान और विवेक से सम्पन्न है। तू मुक्ति से भरपूर है। तू यहोवा का आदर करता है और वही आदर तुझे सम्पन्न बनाता है। इसीलिए तू जान सकता है कि तू सदा बना रहेगा।

[7]किन्तु सुनो! वीर पुरुष बाहर पुकार रहे हैं और सन्देशवाहक जो शांति लाते हैं, ज़ोर–जोर से बोल रहे हैं। [8]रास्ते नष्ट हो गये हैं। गलियों में कोई नहीं चल फिर रहा है। लोगों ने जो सन्धियाँ की थी, वे उन्होंने तोड़ दिये हैं। लोग साक्षियों के प्रमाण पर विश्वास करने से मना करते हैं। कोई भी किसी दूसरे व्यक्ति का आदर नहीं करता। [9]धरती बीमार है और मर रही है। लबानोन मर रहा है और शारोन की घाटी सूखी और उजाड़ है। बाशान और कर्मेल जो कभी एक सुन्दर वृक्ष के समान विकसित हो रहे थे, अब उन वृक्षों का विकास रुक गया है।

[10]यहोवा कहता है, "मैं अब खड़ा होऊँगा और अपनी महानता दर्शाऊँगा। अब मैं लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण बनूँगा। [11]तुम लोगों ने बेकार के काम किये हैं। वे चीजें भूसे और सूखी घास के जैसे हैं। वे बेकार हैं। तुम्हारी आत्मा अग्नि के समान हो जायेगी और तुम्हें जला डालेगी। [12]लोग तब तक जलते रहेंगे जब तक उनकी हड्डिया जल कर चूने जैसी नहीं हो जातीं। लोग काँटों और सूखी झाड़ियों के समान जल्दी ही जल जायेंगे।

[13]"दूर देशों के लोगों, जो काम मैंने किये हैं, तुम उनके बारे में सुनते हो। हे मेरे पास के लोगों, तुम मेरी शक्ति को समझते हो।"

[14]सिय्योन में पापी डरे हुए हैं। वे लोग जो बुरे काम किया करते हैं, डर से थर–थर काँप रहे हैं। वे कहते है, "क्या इस विनाशकारी आग से हम में से कोई बच सकता है? कौन रह सकता है इस आग के निकट जो सदा–सदा के लिये जलती रहती है?"

[15]वे लोग ही इस आग में से बच पायेंगे जो अच्छे हैं, सच्चे हैं। वे लोग पैसे के लिये दूसरों को हानि नहीं पहुँचाना चाहते। वे लोग घूस नहीं लेते। दूसरे लोगों की हत्याओं की योजना को वे सुनने तक से मना कर देते हैं। बुरे काम करने की योजनाओं को वे देखना भी नहीं चाहते। [16]ऐसे लोग ऊँचे स्थानों पर सुरक्षा पूर्वक निवास करेंगे। ऊँची चट्टान की गढ़ियों में वे सुरक्षित रहेंगे। ऐसे लोगों के पास सदा ही खाने को भोजन और पीने को जल रहेगा।

[17]तुम्हारी आँखें उस राजा (परमेश्वर) का, उसकी सुंदरता में दर्शन करेंगी। तुम उस महान धरती को देखोगे। [18–19]बीते हुए दिनों में तुमने जो कष्ट उठाये हैं, तुम उनके बारे में सोचोगे। तुम सोचोगे, "दूसरे देशों के वे लोग कहाँ हैं? वे लोग ऐसी बोली बोला करते थे, जिसे हम समझ नहीं सकते थे। दूसरे देशों के वे सेवक और कर एकत्र करने वाले कहाँ हैं? वे गुप्तचर जिन्होंने हमारी सुरक्षा मिनारों का लेखा जोखा लिया था, कहाँ हैं? वे सब समाप्त हो गये!"

परमेश्वर यरूशलेम को बचायेगा

[20]हमारे धार्मिक उत्सवों की नगरी, सिय्योन को देखो। विश्राम निवास के उस सुन्दरस्थान यरूशलेम को देखो। यरूशलेम उस तम्बू के समान है जिसे कभी उखाड़ा नहीं जायेगा। वे खूँटे जो उसे अपने स्थान पर थामे रखते हैं, कभी उखाड़े नहीं जायेंगें। उसके रस्से कभी टूटेंगे नहीं। [21–23]वहाँ हमारे लिए शक्तिशाली यहोवा विस्तृत झरनों और नदियों वाले एक स्थान के समान होगा। किन्तु उन नदियों पर कभी शत्रु की नौकाएँ अथवा शक्तिशाली जहाज़ नहीं होंगे। उन नौकाओं पर काम करने वाले तुम लोग रस्सियों को नहीं थामे रख सके। तुम मस्तूल को मजबूत नहीं बनाये रख सके। सो तुम अपनी पालों को भी नहीं खोल पाओगे। क्यों? क्योंकि यहोवा हमारा न्यायकर्ता है। यहोवा हमारे लिए नियम बनाता है। यहोवा हमारा राजा है। वह हमारी रक्षा करता है। इसी से यहोवा हमें बहुत सा धन देगा। यहाँ तक कि अपाहिज लोग भी युद्ध में बहुत सा धन जीत लेंगे। [24]वहाँ रहने वाला कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं कहेगा, "मैं रोगी हूँ।" वहाँ रहने वाले लोग ऐसे लोग हैं जिनके पाप क्षमा कर दिये गये हैं।

परमेश्वर अपने शत्रुओं को दण्ड देगा

34 हे सभी देशों के लोगों, पास आओ और सुनो! तुम सब लोगों को ध्यान से सुनना चाहिये। हे धरती और धरती पर के सभी लोगों, हे जगत और जगत की सभी वस्तुओं, तुम्हें इन बातों पर कान देना चाहिये। [2]यहोवा सभी देशों और उनकी सेनाओं पर कुपित है। यहोवा उन सबको नष्ट कर देगा। वह उन सभी को मरवा डालेगा। [3]उनकी लाशें बाहर फेंक दी जायेंगी। लाशों से दुर्गन्ध उठेगी और पहाड़ के ऊपर से खून नीचे को बहेगा। [4]आकाश चर्म पत्र के समान लपेट कर मूंद दिये जायेंगे। ग्रह–तारे मर कर किसी अँगूर की बेल या अंजीर के पत्तों के समान गिरने लगेंगे। आकाश के सभी तारे पिघल जायेंगे। [5]यहोवा कहता है, "ऐसा उस समय होगा जब आकाश में मेरी तलवार खून में सन जायेगी।"

देखो! यहोवा की तलवार एदोम को काट डालेगी। यहोवा ने उन लोगों को अपराधी ठहराया है सो उन लोगों को मरना ही होगा। [6]क्यों? क्योंकि यहोवा ने निश्चय किया कि बोस्रा और एदोम के नगरों में मार काट का एक समय आएगा। [7]सो मेढ़े, मवेशी और हट्टे कट्टे जंगली बैल मारे जायेंगे। धरती उनके खून से भर जायेगी। मिट्टी उनकी चर्बी से पट जायेगी।

[8]ऐसी बातें घटेंगी क्योंकि यहोवा ने दण्ड देने का एक समय निश्चित कर लिया है। यहोवा ने एक वर्ष ऐसा चुन

लिया है जिसमें लोग अपने उन बुरे कामों के लिये जो उन्होंने सिय्योन के विरुद्ध किये हैं, अवश्य ही भुगतान कर देंगे। [9]एदोम की नदियाँ ऐसी हो जायेंगी जैसे मानो वे गर्म तारकोल की हों। एदोम की धरती जलती हुई गंधक और तारकोल के समान हो जायेगी। [10]वे आगे रात दिन जला करेंगी। कोई भी व्यक्ति उस आग को रोक नहीं पायेगा। एदोम से सदा धुँआ उठा करेगा। वह धरती सदा-सदा के लिये नष्ट हो जायेगी। उस धरती से होकर फिर कभी कोई नहीं गुज़रा करेगा। [11]वह धरती परिंदों और छोटे-छोटे जानवरों की हो जायेंगी। वहाँ उल्लू और कौवों का वास होगा। परमेश्वर उस धरती को सूनी उजाड़ भूमि में बदल देगा। यह वैसी ही हो जायेगी जैसी यह सृष्टि से पहले थी। [12]स्वतन्त्र व्यक्ति और मुखिया लोग समाप्त हो जायेंगे। उन लोगों को शासन करने के लिए वहाँ कुछ भी नहीं बचेगा।

[13]वहाँ के सभी सुन्दर भवनों में काँटे और जंगली झाड़ियाँ उग आयेंगी। जंगली कुत्ते और उल्लू उन मकानों में वास करेंगे। परकोटों से युक्त नगरों को जंगली जानवर अपना निवास बना लेंगे। वहाँ जो घास उगेगी उसमें बड़े-बड़े पक्षी रहेंगे। [14]वहाँ जंगली बिल्लियाँ और लकड़बघ्घे साथ रहा करेंगे तथा जंगली बकरियाँ वहाँ अपने मित्रों को बुलायेंगी। रात के जीव जन्तु वहाँ अपने लिए आश्रय खोजते फिरेंगे और वहीं विश्राम करने के लिए अपनी जगह बना लेंगे। [15]साँप वहाँ अपने घर बना लेंगे। वहाँ साँप अपने अण्डे दिया करेंगें। अण्डे फूटेंगे और उन अन्धकारपूर्ण स्थानों से रेंगते हुए साँप के बच्चे बाहर निकलेंगे। वहाँ मरी वस्तुओं को खाने वाले पक्षी एक के बाद एक इकट्ठे होते चले जाएँगे।

[16]यहोवा के चर्म पत्र को देखो। पढ़ो उसमें क्या लिखा है। कुछ भी नहीं छुटा है। उस चर्म पत्र में लिखा है कि वे सभी पशु पक्षी इकट्ठे हो जायेंगे। इसलिए परमेश्वर के मुख ने यह आदेश दिया और उसकी आत्मा ने उन्हें एक साथ इकट्ठा कर दिया। परमेश्वर की आत्मा उन्हें परस्पर एकत्र करेगा। [17]परमेश्वर उनके साथ क्या करेगा, यह उसने निश्चय कर लिया है। इसके बाद परमेश्वर ने उनके लिए एक जगह चुनी। परमेश्वर ने एक रेखा खींची और उन्हें उनकी धरती दिखा दी। इसलिए वह धरती सदा सदा पशुओं की हो जायेगी। वे वहाँ वर्ष दर वर्ष रहते चले जायेंगे।

परमेश्वर अपने लोगों को सुख देगा

35 सूखा रेगिस्तान बहुत खुशहाल हो जायेगा। रेगिस्तान प्रसन्न होगा और एक फूल के समान विकसित होगा। [2]वह रेगिस्तान खिलते हुये फूलों से भर उठेगा और अपनी प्रसन्नता दर्शाने लगेगा। ऐसा लगेगा जैसे रेगिस्तान आनन्द में भरा नाच रहा है। यह रेगिस्तान ऐसा सुन्दर हो जायेगा जैसा लबानोन का वन है, कर्मेल का पहाड़ है और शारोन की घाटी है। ऐसा इसलिए होगा क्योंकि सभी लोग यहोवा की महिमा का दर्शन करेंगे। लोग हमारे परमेश्वर की महानता को देखेंगे।

[3]दुर्बल बाँहों को फिर से शक्तिपूर्ण बनाओ। दुर्बल घुटनों को मज़बूत करो। [4]लोग डरे हुए हैं और असमंजस में पड़े हैं। उन लोगों से कहो, "शक्तिशाली बनो! डरो मत!" देखो, तुम्हारा परमेश्वर आयेगा और तुम्हारे शत्रुओं को जो उन्होंने किया है, उसका दण्ड देगा। वह आयेगा और तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल देगा और तुम्हारी रक्षा करेगा। [5]फिर तो अन्धे देखने लगेंगे। उनकी आँखें खुल जायेंगी। फिर तो बहरे लोग सुन सकेंगे। उन के कान खुल जायेंगे। [6]लूले-लंगड़े लोग हिरन की तरह नाचने लगेंगे और ऐसे लोग जो अभी गूंगे हैं, प्रसन्न गीत गाने में अपनी वाणी का उपयोग करने लगेंगे। ऐसा उस समय होगा जब मरुभूमि में पानी के झरने बहने लगेंगे। सूखी धरती पर झरने बह चलेंगे। [7]लोग अभी जल के रूप में मृग मरीचिका को देखते हैं किन्तु उस समय जल के सच्चे सरोवर होंगे। सूखी धरती पर कुएँ हो जायेंगे। सूखी धरती से जल फूट बहेगा। जहाँ एक समय जंगली जानवरों का राज था, वहाँ लम्बे लम्बे पानी के पौधे उग आयेंगे।

[8]उस समय, वहाँ एक राह बन जायेगी और इस राजमार्ग का नाम होगा 'पवित्र मार्ग'। उस राह पर अशुद्ध लोगों को चलने की अनुमति नहीं होगी। कोई भी मूर्ख उस राह पर नहीं चलेगा। बस परमेश्वर के पवित्र लोग ही उस पर चला करेंगे। [9]उस सड़क पर कोई खतरा नहीं होगा। लोगों को हानि पहुँचाने के लिये उस सड़क पर शेर नहीं होंगे। कोई भी भयानक जन्तु वहाँ नहीं होगा। वह सड़क उन लोगों के लिए होगी जिन्हें परमेश्वर ने मुक्त किया है।

[10]परमेश्वर अपने लोगों को मुक्त करेगा और वे लोग फिर लौट कर वहाँ आयेंगे। लोग जब सिय्योन पर आयेंगे तो वे प्रसन्न होंगे। वे सदा सदा के लिए प्रसन्न हो जायेंगे। उनकी प्रसन्नता उनके माथों पर एक मुकुट के समान

होगी। वे अपनी प्रसन्नता और आनन्द से पूरी तरह भर जायेंगे। शोक और दु:ख उनसे दूर बहुत दूर चले जायेंगे।

अश्शूर का यहूदा पर आक्रमण

36 हिजकिय्याह यहूदा का राजा था और सन्हेरीब अश्शूर का राजा था। हिजकिय्याह के शासन के चौदहवें वर्ष में सन्हेरीब ने यहूदा के किलाबन्द नगरों से युद्ध किया और उसने उन नगरों को हरा दिया। [2]सन्हेरीब ने अपने सेनापति को यरूशलेम से लड़ने को भेजा। वह सेनापति लाकीश को छोड़कर यरूशलेम में राजा हिजकिय्याह के पास गया। वह अपने साथ एक शक्तिशाली सेना को भी ले गया था। वह सेनापति अपनी सेना के साथ नहर के पास वाली सड़क पर गया। (यह सड़क उस नहर के पास है जो ऊपर वाले पोखर से आती है।)

[3]यरूशलेम के तीन व्यक्ति सेनापति से बात करने के लिये बाहर निकल कर गये। ये लोग थे हिल्किय्याह का पुत्र एल्याकीम, आसाप का पुत्र योआह और शेब्ना। एल्याकीम महल का सेवक था। योआह कागज़ात को संभाल कर रखने का काम करता था और शेब्ना राजा का सचिव था।

[4]सेनापति ने उनसे कहा, "तुम लोग, राजा हिजकिय्याह से जाकर ये बातें कहो: महान राजा, अश्शूर का राजा कहता है:

"तुम अपनी सहायता के लिये किस पर भरोसा रखते हो? [5]मैं तुम्हें बताता हूँ कि यदि युद्ध में तुम्हारा विश्वास शक्ति और कुशल योजनाओं पर है तो वह व्यर्थ है। वे कोरे शब्दों के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। इसलिए तुम मुझ से युद्ध क्यों कर रहे हो? [6]अब मैं तुमसे पूछता हूँ, तुम सहायता पाने के लिये किस पर भरोसा करते हो? क्या तुम सहायता के लिये मिस्र पर निर्भर हो? मिस्र तो एक टूटी हुई लाठी के समान है। यदि तुम सहारा पाने को उस पर टिकोगे तो वह तुम्हें बस हानि ही पहुँचायेगी और तुम्हारे हाथ में एक छेद बना देगी। मिस्र के राजा फिरौन पर किसी भी व्यक्ति के द्वारा सहायता पाने के लिये भरोसा नहीं किया जा सकता।

[7]"किन्तु हो सकता है तुम कहो, 'हम सहायता पाने के लिये अपने यहोवा परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं।' किन्तु मेरा कहना है कि हिजकिय्याह ने यहोवा की वेदियों को और पूजा के ऊँचे स्थानों को नष्ट कर दिया है। यह सत्य है, सही है? यह सत्य है कि यहूदा और यरूशलेम से हिजकिय्याह ने ये बातें कही थीं: 'तुम यहाँ यरूशलेम में बस एक इसी वेदी पर उपासना किया करोगे।'

[8]"यदि तुम अब भी मेरे स्वामी से युद्ध करना चाहते हो तो अश्शूर का राजा तुमसे यह सौदा करना चाहेगा: राजा का कहना है, 'यदि युद्ध में तुम्हारे पास घुड़सवार पूरे हैं तो मैं तुम्हें दो हजार घोड़े दे दूँगा।' [9]किन्तु इतना होने पर भी तुम मेरे स्वामी के एक सेवक तक को नहीं हरा पाओगे। उसके किसी छोटे से छोटे अधिकारी तक को तुम नहीं हरा पाओगे। इसलिए तुम मिस्र के घुड़सवार और रथों पर अपना भरोसा क्यों बनाये रखते हो।

[10]"और अब देखो जब मैं इस देश में आया था और मैंने युद्ध किया था, यहोवा मेरे साथ था। जब मैंने नगरों को उजाड़ा, यहोवा मेरे साथ था। यहोवा मुझसे कहा करता था, 'खड़ा हो। इस नगरी में जा और इसे ध्वस्त कर दे।'"

[11]यरूशलेम के तीनों व्यक्तियों, एल्याकीम, शेब्ना और योआह ने सेनापति से कहा, "कृपा करके हमारे साथ अरामी भाषा में ही बात कर। क्योंकि इसे हम समझ सकते हैं। तू यहूदी भाषा में हमसे मत बोल। यदि तू यहूदी भाषा का प्रयोग करेगा तो नगर परकोटे पर के सभी लोग तुझे समझ जायेंगे।"

[12]इस पर सेनापति ने कहा, "मेरे स्वामी ने मुझे ये बातें बस तुम्हें और तुम्हारे स्वामी हिजकिय्याह को ही सुनाने के लिए नहीं भेजा है। मेरे स्वामी ने मुझे इन बातों को उन्हें बताने के लिए भेजा है जो लोग नगर परकोटे पर बैठे हैं। उन लोगों को न तो पूरा खाना मिलता है और न पानी। सो उन्हें अपने मलमूत्र को तुम्हारी ही तरह खाना–पीना होगा।"

[13]फिर सेनापति ने खड़े हो कर ऊँचे स्वर में कहा। वह यहूदी भाषा में बोला। [14]सेनापति ने कहा, "महासम्राट अश्शूर के राजा के शब्दों को सुनो:

तुम अपने आप को हिजकिय्याह के द्वारा मूर्ख मत बनने दो, वह तुम्हें बचा नहीं पायेगा। [15]हिजकिय्याह जब यह कहता है, 'यहोवा में विश्वास रखो! यहोवा अश्शूर के राजा से हमारी रक्षा करेगा।

यहोवा अश्शूर के राजा को हमारे नगर को हराने नहीं देगा तो उस पर विश्वास मत करो।'

[16]हिजकिय्याह के इन शब्दों की अनसुनी करो। अश्शूर के राजा की सुनो! अश्शूर के राजा का कहना है, 'हमे एक सन्धि करनी चाहिये। तुम लोग नगर से बाहर निकल कर मेरे पास आओ। फिर हर व्यक्ति अपने घर जाने को स्वतन्त्र होगा। हर व्यक्ति अपने अँगूर की बेलों से अँगूर खाने को स्वतन्त्र होगा और हर व्यक्ति अपने अंजीर के पेड़ों के फल खाने को स्वतन्त्र होगा। स्वयं अपने कुँए का पानी पीने को हर व्यक्ति स्वतन्त्र होगा। [17]जब तक मैं आकर तुम्हें तुम्हारे ही जैसे एक देश में न ले जाऊँ, तब तक तुम ऐसा करते रह सकते हो। उस नये देश में तुम अच्छा अनाज और नया दाखमधु पाओगे। उस धरती पर तुम्हें रोटी और अँगूर के खेत मिलेंगे।"

[18]हिजकिय्याह को तुम अपने को मूर्ख मत बनाने दो। वह कहता है, 'यहोवा हमारी रक्षा करेगा।' किन्तु मैं तुमसे पूछता हूँ क्या किसी दूसरे देश का कोई भी देवता वहाँ के लोगों को अश्शूर के राजा की शक्ति से बचा पाया? नहीं! हमने वहाँ के हर व्यक्ति को हरा दिया। [19]हमात और अर्पाद के देवता आज कहाँ हैं? उन्हें हरा दिया गया है। सपर्वेम के देवता कहाँ हैं? वे हरा दिये गये हैं और क्या शोमरोन के देवता वहाँ के लोगों को मेरी शक्ति से बचा पाये? नहीं। [20]किसी भी देश अथवा जाति के ऐसे किसी भी एक देवता का नाम मुझे बताओ जिसने वहाँ के लोगों को मेरी शक्ति से बचाया है। मैंने उन सब को हरा दिया। इसलिए देखो मेरी शक्ति से यरूशलेम को यहोवा नहीं बचा पायेगा।"

[21]यरूशलेम के लोग एक दम चुप रहे। उन्होंने सेनापति को कोई उतर नहीं दिया। हिजकिय्याह ने लोगों को आदेश दिया था कि वे सेनापति को कोई उत्तर न दें।

[22]इसके बाद महल के सेवक (हिल्किय्याह के पुत्र एल्याकीम) राजा के सचिव (शेब्ना) और दफतरी (आसाप के पुत्र योआह) ने अपने वस्त्र फाड़ डाले। इससे यह प्रकट होता है कि वे बहुत दु:खी थे वे तीनों व्यक्ति हिजकिय्याह के पास गये और सेनापति ने जो कुछ उनसे कहा था, वह सब उसे कह सुनाया।

हिजकिय्याह की परमेश्वर से प्रार्थना

37 हिजकिय्याह ने जब सेनापति का सन्देश सुना तो उसने अपने वस्त्र फाड़ लिये। फिर विशेष शोक वस्त्र धारण करके वह यहोवा के मन्दिर में गया। [2]हिजकिय्याह ने महल के सेवक एल्याकीम को राजा के सचिव शेब्ना को और याजकों के अग्रजों को आमोस के पुत्र यशायाह नबी के पास भेजा। इन तीनों ही लोगों ने विशेष शोक–वस्त्र पहने हुए थे।

[3]इन लोगों ने यशायाह से कहा, "राजा हिजकिय्याह ने कहा है कि आज का दिन शोक और दु:ख का एक विशेष दिन होगा। यह दिन एक ऐसा दिन होगा जैसे जब एक बच्चा जन्म लेता है। किन्तु बच्चे को जन्म देने वाली माँ में जितनी शक्ति होनी चाहिये उसमें उतनी ताकत नहीं होती। [4]सम्भव है तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, सेनापति द्वारा कही बातों को सुन ले। अश्शूर के राजा ने सेनापति को साक्षात परमेश्वर को अपमानित करने भेजा है। हो सकता है तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उन बुरी अपमानपूर्ण बातों को सुन लिया है और वह उन्हें इसका दण्ड देगा। कृपा करके इस्राएल के उन थोड़े से लोगों के लिये प्रार्थना करो जो बचे हुए हैं"

[5-6]हिजकिय्याह के सेवक यशायाह के पास गये। यशायाह ने उनसे कहा, "अपने मालिक को यह बता देना: 'यहोवा कहता है तुमने सेनापति से जो सुना है, उन बातों से मत डरना। अश्शूर के राजा के लड़कों ने मेरा अपमान करने के लिये जो बुरी बातें कही हैं, उन से मत डरना। [7]देखो अश्शूर के राजा को मैं एक अफवाह सुनावाऊँगा। अश्शूर के राजा को एक ऐसी रपट मिलेगी जो उसके देश पर आने वाले खतरे के बारे मे होगी। इससे वह अपने देश वापस लौट जायेगा। उस समय मैं उसे, उसके अपने ही देश में तलवार से मौत के घाट उतार दूँगा।' "

अश्शूर की सेना का यरूशलेम को छोड़ना

[8-9]अश्शूर के राजा को एक सूचना मिली, सूचना में कहा गया था, "कूश का राजा तिर्हाका तुझसे युद्ध करने आ रहा है।" सो अश्शूर का राजा लाकीश को छोड़ कर लिबना चला गया। सेनापति ने यह सुना और वह लिबना नगर को चला गया जहाँ अश्शूर का राजा युद्ध कर रहा था। फिर अश्शूर के राजा ने हिजकिय्याह के पास दूत

भेजे। राजा ने उन दूतों से कहा, [10]"यहूदा के राजा हिजकिय्याह से तुम ये बातें कहना:

जिस देवता पर तुम्हारा विश्वास है, उससे तुम मूर्ख मत बनो। ऐसा मत कहो कि अश्शूर के राजा से परमेश्वर यरूशलेम को पराजित नहीं होने देगा।

[11]देखो, तुम अश्शूर के राजाओं के बारे में सुन ही चुके हो। उन्होंने हर किसी देश में लोगों के साथ क्या कुछ किया है। उन्हें उन्होंने बुरी तरह हराया है। क्या तुम उनसे बच पाओगे? नहीं, कदापि नहीं! [12]क्या उन लोगों के देवताओं ने उनकी रक्षा की थी? नहीं! मेरे पूर्वजों ने उन्हें नष्ट कर दिया था। मेरे लोगों ने गोजान, हारान और रेसेप के नगरों को हरा दिया था और उन्होंने एदेन के लोगों जो तलस्सार में रहा करते थे, उन्हें भी हरा दिया था। [13]हमात और अर्पाद के राजा कहाँ गये? सपर्वैम का राजा आज कहाँ है? हेना और इव्वा के राजा अब कहाँ हैं? उनका अंत कर दिया गया! वे सभी नष्ट कर दिये गये!"

हिजकिय्याह की परमेश्वर से प्रार्थना

[14]हिजकिय्याह ने उन लोगों से वह सन्देश ले लिया और उसे पढ़ा। फिर हिजकिय्याह यहोवा के मन्दिर में चला गया। हिजकिय्याह ने उस सन्देश को खोला और यहोवा के सामने रख दिया। [15]फिर हिजकिय्याह यहोवा से प्रार्थना करने लगा। हिजकिय्याह बोला:

[16]"इस्राएल के परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा, तू राजा के समान करुब (स्वर्गदूतों) पर विराजता है। तू और बस केवल तू ही परमेश्वर है, जिसका धरती के सभी राज्यों पर शासन है। तूने स्वर्गो और धरती की रचना की है। [17]मेरी सुन! अपनी आँखें खोल और देख, कान लगाकर सुन इस सन्देश के शब्दों को, जिसे सन्हेरीब ने मुझे भेजा है। इसमें तुझ साक्षात परमेश्वर के बारे में अपमानपूर्ण बुरी–बुरी बातें कही हैं।

[18]हे यहोवा, अश्शूर के राजाओं ने वास्तव में सभी देशों और वहाँ की धरती को तबाह कर दिया है। [19]अश्शूर के राजाओं ने उन देशों के देवताओं को जला डाला है किन्तु वे सच्चे देवता नहीं थे। वे तो केवल ऐसे मूर्ति थे जिन्हें लोगों ने बनाया था। वे तो कोरी लकड़ी थे, कोरे पत्थर थे। इसलिये वे समाप्त हो गये। वे नष्ट हो गये। [20]सो अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा। अब कृपा करके अश्शूर के राजा की शक्ति से हमारी रक्षा कर। ताकि धरती के सभी राज्यों को भी पता चल जाये कि तू यहोवा है और तू ही हमारा एकमात्र परमेश्वर है!

हिजकिय्याह को परमेश्वर का उत्तर

[21]फिर आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के पास यह सन्देश भेजा, "यह वह है जिसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने कहा है, 'अश्शूर के राजा सन्हेरीब के बारे में तूने मुझसे प्रार्थना की है।'

[22]सो मुझे यहोवा ने जो सन्हेरीब विरोध में कहा, वह यह है:

सिय्योन की कुवाँरी पुत्री (यरूशलेम के लोग)
तुझे तुच्छ जानती है।
वह तेरी हँसी उड़ाती है।
यरूशलेम की पुत्री तेरी हँसी उड़ाती है।

[23] तूने मेरे लिये मेरे विरोध में बुरी बातें कही।
तू बोलता रहा।
तू अपनी आवाज मेरे विरोध में उठायी थी!
तूने मुझ इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) को
अभिमान भी आँखों से घूरा था।

[24] मेरे स्वामी यहोवा के विषय में
तूने बुरी बातें कहलवाने के लिये
तूने अपने सेवकों का प्रयोग किया।
तूने कहा, "मैं बहुत शक्तिशाली हूँ!
मेरे पास बहुत से रथ हैं।
मैंने अपनी शक्ति से लबानोन को हराया जब
मैं अपने रथों को लबानोन के महान पर्वत के
ऊँचे शिखरों के ऊपर ले आया।
मैंने लबानोन के सभी महान पेड़ काट डाले।
मैं उच्चतम शिखर से लेकर गहरे
जंगलों तक प्रवेश कर चुका हूँ।

[25] मैंने विदेशी धरती पर कुँए खोदे
और पानी पिया।
मैंने मिस्र की नदियाँ सुखा दी
और उस देश पर चल कर गया है!"

26 ये वह जो तूने कहा।
क्या तूने यह नहीं सुना कि
परमेश्वर ने क्या कहा?
मैंने (परमेश्वर ने) बहुत बहुत पहले ही
यह योजना बना ली थी।
बहुत–बहुत पहले ही
मैंने इसे तैयार कर लिया था
अब इसे मैंने घटित किया है।
मैंने ही तुम्हें उन नगरों को नष्ट करने दिया
और मैंने ही तुम्हें उन नगरों को
पत्थरों के ढेर में बदलने दिया।
27 उन नगरों के निवासी कमजोर थे।
वे लोग भयभीत और लज्जित थे।
वे खेत के पौधे के जैसे थे,
वे नई घास के जैसे थे।
वे उस घास के समान थे
जो मकानों की छतों पर उगा करती है।
वह घास लम्बी होने से पहले ही रेगिस्तान की
गर्म हवा से झुलसा दी जाती है।
28 तेरी सेना और तेरे युद्धों के बारे में
मैं सब कुछ जानता हूँ।
मुझे पता है जब तूने विश्राम किया था।
जब तू युद्ध के लिये गया था,
मुझे तब का भी पता है।
तू युद्ध से घर कब लौटा, मैं यह भी जानता हूँ।
मुझे इसका भी ज्ञान है कि
तू मुझ पर क्रोधित है।
29 तू मुझसे खुश नहीं है और
मैंने तेरे अहंकारपूर्ण अपमानों को सुना है।
सो मैं तुझे दण्ड दूँगा।
मैं तेरी नाक में नकेल डालूँगा।
मैं तेरे मुँह पर लगाम लगाऊँगा और तब
मैं तुझे विवश करुँगा कि
तू जिस मार्ग से आया था,
उसी मार्ग से मेरे देश को
छोड़ कर वापस चला जा!"

[30]इस पर यहोवा ने हिजकिय्याह से कहा, "हिजकिय्याह, तुझे यह दिखाने के लिये कि ये शब्द सच्चे हैं, मैं तुझे एक संकेत दूँगा। इस वर्ष तू खाने के लिए कोई अनाज नहीं बोयेगा। सो इस वर्ष तू पिछले वर्ष की फसल से यूँ ही उग आये अनाज को खायेगा। अगले वर्ष भी ऐसी ही होगा किन्तु तीसरे वर्ष तू उस अनाज को खायेगा जिसे तूने उगाया होगा। तू अपनी फसलों को काटेगा। तेरे पास खाने को भरपूर होगा। तू अँगूर की बेलें रोपेगा और उनके फल खायेगा।

[31]यहूदा के परिवार के कुछ लोग बच जायेंगे। वे ही लोग बढ़ते हुए एक बहुत बड़ी जाति का रूप ले लेंगे। वे लोग उन वृक्षों के समान होंगे जिनकी जड़ें धरती में बहुत गहरी जाती हैं और जो बहुत तगड़े हो जाते हैं और बहुत से फल (संतानें) देते हैं। [32]यरूशलेम से कुछ ही लोग जीवित बचकर बाहर जा पाएँगे। सिय्योन पर्वत से बचे हुए लोगों का एक समूह ही बाहर जा पाएगा। सर्वशक्तिमान यहोवा का सुदृढ़ प्रेम ही ऐसा करेगा।

[33]सो यहोवा ने अश्शूर के राजा के बारे में यह कहा,
वह इस नगर में नहीं आ पायेगा,
वह इस नगर पर एक भी बाण नहीं छोड़ेगा,
वह अपनी ढालों का मुहँ
इस नगर की ओर नहीं करेगा।
इस नगर के परकोटे पर हमला करने के
लिए वह मिट्टी का टीला खड़ा नहीं करेगा।
34 उसी रास्ते से जिससे वह आया था,
वह वापस अपने नगर को लौट जायेगा।
इस नगर में वह प्रवेश नहीं करेगा।"
यह सन्देश यहोवा की ओर से है।
35 यहोवा कहता है,
मैं बचाऊँगा और इस नगर की रक्षा करुँगा।
मैं ऐसा स्वयं अपने लिये
और अपने सेवक दाऊद के लिए करुँगा।

[36]सो यहोवा के दूत ने अश्शूर की छावनी में जा कर एक लाख पचासी हजार सैनिकों को मार डाला। अगली सुबह जब लोग उठे, तो उन्होंने देखा कि उनके चारों ओर मरे हुए सैनिकों की लाशें बिखरी हैं। [37]इस पर अश्शूर का राजा सन्हेरीब वापस लौट कर अपने घर नीनवे चला गया और वहीं रहने लगा।

[38]एक दिन, जब सन्हेरीब अपने देवता निस्रोक के मन्दिर में उसकी पूजा कर रहा था, उसी समय उसके पुत्र अद्रम्मेलेक और शरेसेर ने तलवार से उसकी हत्या कर दी और फिर वे अरारात को भाग खड़े हुए। इस प्रकार

सन्हेरीब का पुत्र एसर्हद्दोन अश्शूर का नया राजा बन गया।

हिजकिय्याह की बीमारी

38 उस समय के आसपास हिजकिय्याह बहुत बीमार पड़ा। इतना बीमार कि जैसे वह मर ही गया हो। सो आमोस का पुत्र यशायाह उससे मिलने गया। यशायाह ने राजा से कहा, "यहोवा ने तुम्हें ये बातें बताने के लिये कहा है: 'शीघ्र ही तू मर जायेगा। सो जब तू मरे, परिवार वाले क्या करें, यह तुझे उन्हें बता देना चाहिये। अब तू फिर कभी अच्छा नहीं होगा।' "

[2]हिजकिय्याह ने उस दीवार की तरफ करवट ली जिसका मुँह मन्दिर की तरफ था। उसने यहोवा की प्रार्थना की, उसने कहा, [3]"हे यहोवा, कृपा कर, याद कर कि मैंने सदा तेरे सामने विश्वासपूर्ण और सच्चे हृदय के साथ जीवन जिया है। मैंने वे बातें की हैं जिन्हें तू उत्तम कहता है।" इसके बाद हिजकिय्याह ने ऊँचे स्वर में रोना शुरु कर दिया।

[4]यशायाह को यहोवा से यह सन्देश मिला: [5]"हिजकिय्याह के पास जा और उससे कह दे: ये बातें वे हैं जिन्हें तुम्हारे पिता दाऊद का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मैंने तेरी प्रार्थना सुनी है और तेरे दु:ख भरे आँसू देखे हैं। तेरे जीवन में मैं पन्द्रह वर्ष और जोड़ रहा हूँ। [6]अश्शूर के राजा के हाथों से मैं तुझे छुड़ा डालूँगा और इस नगर की रक्षा करूँगा।' "

[22]*किन्तु हिजकिय्याह ने यशायाह से पूछा, "यहोवा की ओर से ऐसा कौन सा संकेत है जो प्रमाणित करता है कि मैं अच्छा हो जाऊँगा? कौन सा ऐसा संकेत है जो प्रमाणित करता है कि मैं यहोवा के मन्दिर में जाने योग्य हो जाऊँगा?"

[7]तुझे यह बताने के लिए कि जिन बातों को वह कहता है, उन्हें वह पूरा करेगा। यहोवा की ओर से यह संकेत है: [8]"देख, आहाज़ की धूप घड़ी* की वह छाया जो अंशों पर पड़ी हैं, मैं उसे दस अंश पीछे हटा दूँगा। सूर्य की वह छाया दस अंश तक पीछे चली जायेगी।"

[21]*फिर इस पर यशायाह ने कहा, "अंजीरों को आपस में मसलवा कर उसके फोड़ों पर बाँध। इससे वह अच्छा हो जायेगा।"

[9]यह हिजकिय्याह का वह पत्र है जो उसने बीमारी से अच्छा होने के बाद लिखी थी:

10 मैंने अपने मन में कहा कि मैं तब तक जीऊँगा
जब तक बूढ़ा होऊँगा।
किन्तु मेरा काल आ गया था कि
मैं मृत्यु के द्वार से गुजरूँ।
अब मैं अपना समय यहीं पर बिताऊँगा।

11 इसलिए मैंने कहा,
"मैं यहोवा याह को फिर कभी
जीवितों की धरती पर नहीं देखूँगा।
धरती पर जीते हुए लोगों को मैं नहीं देखूँगा।

12 मेरा घर, चरवाहे के अस्थिर तम्बू सा
उखाड़ कर गिराया जा रहा है
और मुझसे छीना जा रहा है।
अब मेरा वैसा ही अन्त हो गया है
जैसे करघे से कपड़ा लपेट कर
काट लिया जाता है।
क्षणभर में तूने मुझ को इस
अंत तक पहुँचा दिया!

13 मैं भोर तक अपने को शान्त करता रहा।
वह सिंह की नाई मेरी हड्डियों को तोड़ता है।
एक ही दिन में तू मेरा अन्त कर डालता है!

14 मैं कबूतर सा रोता रहा।
मैं एक पक्षी जैसा रोता रहा।
मेरी आँखें थक गयी तो भी मैं लगातार
आकाश की तरफ निहारता रहा।
मेरे स्वामी, मैं विपत्ति में हूँ
मुझको उबारने का वचन दे।"

15 मैं और क्या कह सकता हूँ?
मेरे स्वामी ने मुझ को बताया है
जो कुछ भी घटेगा, और मेरा स्वामी ही
उस घटना को घटित करेगा।
मैंने इन विपत्तियों को अपनी आत्मा में झेला है

वचन 22 यह बाइसवां पद छपे हुए हिब्रू पाठ में अंत में दिया गया हैं।

धूप घड़ी यह धूप घड़ी हो सकता है या कोई ऐसी प्राचीन वेधशाला हो सकती है जिसमें ऐसी सीढ़ियाँ बनी हो जिन पर बढ़ते हुए समय के साथ छाया बढ़ती जाती थी। यहाँ उस छाया को पीछे करने का अभिप्राय: है, समय के चक्र को मोड़ देना।

वचन 21 छपे हूए हिब्रू पाठ में पद 21 अंत में दी गयी है।

इसलिए मैं जीवन भर विनम्र रहूँगा।
16 हे मेरे स्वामी, इस कष्ट के समय का उपयोग
फिर से मेरी चेतना को सशक्त बनाने में कर।
मेरे मन को सशक्त और स्वस्थ होने में
मेरी सहायता कर!
मुझको सहारा दे कि मैं अच्छा हो जाऊँ!
मेरी सहायता कर कि मैं फिर से जी उठूँ!
17 देखो! मेरी विपत्तियाँ समाप्त हुई!
अब मेरे पास शांति है।
तू मुझ से बहुत अधिक प्रेम करता है!
तूने मुझे कब्र में सड़ने नहीं दिया।
तूने मेरे सब पाप क्षमा किये!
तूने मेरे सब पाप दूर फेंक दिये।
18 तेरी स्तुति मरे व्यक्ति नहीं गाते!
मृत्यु के देश में पड़े लोग
तेरे यशगीत नहीं गाते।
वे मरे हुए व्यक्ति जो कब्र में समायें हैं,
सहायता पाने को तुझ पर भरोसा नहीं रखते।
19 वे लोग जो जीवित हैं जैसा आज
मैं हूँ तेरा यश गाते हैं।
एक पिता को अपनी सन्तानों को बताना चाहिए
कि तुझ पर भरोसा किया जा सकता है।
20 इसलिए मैं कहता हूँ:
"यहोवा ने मुझ को बचाया है सो हम
अपने जीवन भर यहोवा के मन्दिर में
गीत गायेंगे और बाजे बजायेंगे।"

बाबुल के सन्देश वाहक

39 उस समय, बलदान का पुत्र मरोदक बलदान बाबुल का राजा हुआ करता था। मरोदक ने हिजकिय्याह के पास पत्र और उपहार भेजे। मरोदक ने उसके पास इसलिये उपहार भेजे थे कि उसने सुना था कि हिजकिय्याह बीमार था और फिर अच्छा हो गया था। [2]इन उपहारों को पाकर हिजकिय्याह बहुत प्रसन्न हुआ। इसलिये हिजकिय्याह ने मरोदक के लोगों को अपने ख़ज़ाने की मूल्यवान वस्तुएँ दिखाई। हिजकिय्याह ने उन लोगों को अपनी सारी सम्पत्ति दिखाई। चाँदी, सोना, मूल्यवान तेल और इत्र उन्हें दिखाये। हिजकिय्याह ने उन्हें युद्ध में काम आने वाली तलवारें और ढालें भी दिखाई। हिजकिय्याह ने उन्हें वे सभी वस्तुएँ दिखाई जो उसने जमा कर रखी थीं। हिजकिय्याह ने अपने घर की और अपने राज्य की हर वस्तु उन्हें दिखायी।

[3]यशायाह नबी राजा हिजकिय्याह के पास गया और उससे बोला, "ये लोग क्या कह रहे हैं? ये लोग कहाँ से आये हैं?"

हिजकिय्याह ने कहा, "ये लोग दूर देश से मेरे पास आये हैं। ये लोग बाबुल से आये हैं।"

[4]इस पर यशायाह ने उससे पूछा, "उन्होंने तेरे महल में क्या देखा?"

हिजकिय्याह ने कहा, "मेरे महल की हर वस्तु उन्होंने देखी। मैंने अपनी सारी सम्पत्ति उन्हें दिखाई थी।"

[5]यशायाह ने हिजकिय्याह से यह कहा: "सर्वशक्तिमान यहोवा के शब्दों को सुनो। [6]"भविष्य में जो कुछ तेरे घर में है, वह सब कुछ बाबुल ले जाया जायेगा। और तेरे बुजुर्गो की वह सारी धन दौलत जो अचानक उन्होंने एकत्र की है, ले ली जायेगी। तेरे पास कुछ नहीं छोड़ा जायेगा। सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह कहा है। [7]बाबुल का राजा तेरे पुत्रों को ले जायेगा। वे पुत्र जो तुझसे पैदा होंगे। तेरे पुत्र बाबुल के राजा के महल में हाकिम बनेंगे।"

[8]हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, "यहोवा के इन वचनों का सुनना मेरे लिये बहुत उत्तम होगा।" (हिजकिय्याह ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसका विचार था, "जब मैं राजा होऊँगा, तब शांति रहेगी और कोई उत्पात नहीं होगा।")

इस्राएल के दण्ड का अंत

40 तुम्हारा परमेश्वर कहता है,
"चैन दे, चैन दे मेरे लोगों को!
2 तू दया से बातें कर यरूशलेम से!
यरूशलेम को बता दे,
'तेरी दासता का समय अब पूरा हो चुका है।
तूने अपने अपराधों की कीमत दे दी है।'"
यहोवा ने यरूशलेम के किये हुए
पापों का दुगना दण्ड उसे दिया है!
3 सुनो! एक व्यक्ति का जोर से पुकारता हुआ स्वर:
"यहोवा के लिये बियाबान में एक राह बनाओ!
हमारे परमेश्वर के लिये बियाबान में

एक रास्ता चौरस करो!

4 हर घाटी को भर दो।
हर एक पर्वत और पहाड़ी को समतल करो।
टेढ़ी–मेढ़ी राहों को सीधा करो।
उबड़–खाबड़ को चौरस बना दो।

5 तब यहोवा की महिमा प्रगट होगी।
सब लोग इकट्ठे यहोवा के तेज को देखेंगे।
हाँ, यहोवा ने स्वयं ये सब कहा है।"

6 एक वाणी मुखरित हुई, उसने कहा,
"बोलो!"
सो व्यक्ति ने पूछा,
"मैं क्या कहूँ?"
वाणी ने कहा,
"लोग सर्वदा जीवित नहीं रहेंगे।
वे सभी रेगिस्तान के घास के समान है।
उनकी धार्मिकता जंगली फूल के समान है।

7 एक शक्तिशाली आँधी यहोवा की ओर से
उस घास पर चलती है,
और घास सूख जाती है,
जंगली फूल नष्ट हो जाता है।
हाँ सभी लोग घास के समान हैं।

8 घास मर जाती है
और जंगली फूल नष्ट हो जाता है।
किन्तु हमारे परमेश्वर के
वचन सदा बने रहते हैं।"

मुक्ति: परमेश्वर का सुसन्देश

9 हे, सिय्योन, तेरे पास सुसन्देश कहने को है,
तू पहाड़ पर चढ़ जा और
ऊँचे स्वर से उसे चिल्ला!
यरूशलेम, तेरे पास एक सुसन्देश कहने को है।
भयभीत मत हो, तू ऊँचे स्वर में बोल!
यहूदा के सारे नगरों को तू ये बातें बता दे:
"देखो, ये रहा तुम्हारा परमेश्वर!

10 मेरा स्वामी यहोवा शक्ति के साथ आ रहा है।
वह अपनी शक्ति का उपयोग लोगों पर
शासन करने में लगायेगा।
यहोवा अपने लोगों को प्रतिफल देगा।
उसके पास देने को उनकी मजदूरी होगी।

11 यहोवा अपने लोगों की वैसे ही अगुवाई करेगा
जैसे कोई गड़ेरिया अपने
भेड़ों की अगुवाई करता है।
यहोवा अपने बाहु को काम में लायेगा
और अपनी भेड़ों को इकट्ठा करेगा।
यहोवा छोटी भेड़ों को उठाकर गोद में थामेगा,
और उनकी माताऐं उसके साथ–साथ चलेंगी।

संसार परमेश्वर ने रचा: वह इसका शासक है

12 किसने अँजली में भर कर समुद्र को नाप दिया?
किसने हाथ से आकाश को नाप दिया?
किसने कटोरे में भर कर धरती की
सारी धूल को नाप दिया?
किसने नापने के धागे से पर्वतो और
चोटियों को नाप दिया?
यह यहोवा ने किया था!

13 यहोवा की आत्मा को किसी व्यक्ति ने
यह नहीं बताया कि उसे क्या करना था।
यहोवा को किसी ने यह नहीं बताया कि
उसे जो उसने किया है, कैसे करना था।

14 क्या यहोवा ने किसी से सहायता माँगी?
क्या यहोवा को किसी ने
निष्पक्षता का पाठ पढ़ाया है?
क्या किसी व्यक्ति ने यहोवा को ज्ञान सिखाया है?
क्या किसी व्यक्ति ने यहोवा को बुद्धि से
काम लेना सिखाया है? नहीं!
इन सभी बातों का यहोवा को
पहले ही से ज्ञान है!

15 देखो, जगत के सारे देश घड़े में
एक छोटी बूंद जैसे हैं।
यदि यहोवा सुदूरवर्ती देशों तक को लेकर
अपनी तराजू पर धर दे,
तो वे छोटे से रजकण जैसे लगेंगे।

16 लबानोन के सारे वृक्ष भी काफी नहीं है कि
उन्हें यहोवा के लिये जलाया जाये।
लबानोन के सारे पशु काफी नहीं हैं कि
उनको उसकी एक बलि के लिये मारा जाये।

17 परमेश्वर की तुलना में
विश्व के सभी राष्ट्र कुछ भी नहीं हैं।

परमेश्वर की तुलना में
विश्व के सभी राष्ट्र बिल्कुल मूल्यहीन हैं।

परमेश्वर क्या है लोग कल्पना भी नहीं कर सकते

18 क्या तुम परमेश्वर की तुलना किसी भी
वस्तु से कर सकते हो? नहीं!
क्या तुम परमेश्वर का चित्र बना सकते हो? नहीं!
19 किन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो पत्थर
और लकड़ी की मूर्तियाँ बनाते हैं
और उन्हें देवता कहते हैं।
एक कारीगर मूर्ति को बनाता है।
फिर दूसरा कारीगर उस पर
सोना मढ़ देता है और उसके लिये
चाँदी की जंजीरे बनता है!
20 सो वह व्यक्ति आधार के लिये
एक विशेष प्रकार की लकड़ी चुनता है
जो सड़ती नहीं है।
तब वह एक अच्छे लकड़ी के
कारीगर को ढूँढता है।
वह कारीगर एक ऐसा "देवता" बनाता है
जो ढुलकता नहीं है!
21 निश्चय ही, तुम सच्चाई जानते हो, बोलो?
निश्चय ही तुमने सुना है!
निश्चय ही बहुत पहले किसी ने तुम्हें बताया है!
निश्चय ही तुम जानते हो कि
धरती को किसने बनाया है!
22 यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है!
वही धरती के चक्र के ऊपर बैठता है!
उसकी तुलना में लोग टिड्डी से लगते हैं।
उसने आकाशों को किसी कपड़े के
टुकड़े की भाँति खोल दिया।
उसने आकाश को उसके नीचे बैठने को
एक तम्बू की भाँति तान दिया।
23 सच्चा परमेश्वर शासकों को
महत्त्वहीन बना देता है।
वह इस जगत के न्यायकर्ताओं को
पूरी तरह व्यर्थ बना देता है!
24 वे शासक ऐसे हैं जैसे वे पौधे
जिन्हें धरती में रोपा गया हो,
किन्तु इससे पहले की वे अपनी जड़े
धरती में जमा पाये,
परमेश्वर उन को बहा देता है
और वे सूख कर मर जाते हैं।
आँधी उन्हें तिनके सा उड़ा कर ले जाती है।
25 "क्या तुम किसी से भी मेरी
तुलना कर सकते हो? नहीं!
कोई भी मेरे बराबर का नहीं है।
26 ऊपर आकाशों को देखो।
किसने इन सभी तारों को बनाया?
किसने वे सभी आकाश की सेना बनाई?
किसको सभी तारे नाम–बनाम मालूम हैं?
सच्चा परमेश्वर बहुत ही सुदृढ़
और शक्तिशाली है इसलिए
कोई तारा कभी निज मार्ग नहीं भूला।"
27 हे याकूब, यह सच है!
हे इस्राएल, तुझको इसका
विश्वास करना चाहिए!
सो तू क्यों ऐसा कहता है कि
"जैसा जीवन मैं जीता हूँ
उसे यहोवा नहीं देख सकता।
परमेश्वर मुझको पकड़ नहीं पायेगा
और न दण्ड दे पायेगा।"
28 सचमुच तूने सुना है और जानता है कि
यहोवा परमेश्वर बुद्धिमान है।
जो कुछ वह जानता है उन सभी बातों को
मनुष्य नहीं सीख सकता।
यहोवा कभी थकता नहीं, उसको कभी
विश्राम की आवश्यकता नहीं होती।
यहोवा ने ही सभी दूरदराज के स्थान
धरती पर बनाये।
यहोवा सदा जीवित है।
29 यहोवा शक्तिहीनों को
शक्तिशाली बनने में सहायता देता है।
वह ऐसे उन लोगों को जिनके पास
शक्ति नहीं है, प्रेरित करता है कि
वह शक्तिशाली बने।
30 युवक थकते हैं और
उन्हें विश्राम की जरुरत पड़ जाती है।

यहाँ तक कि किशोर भी ठोकर खाते हैं
और गिरते हैं।
[31] किन्तु वे लोग जो यहोवा के भरोसे हैं
फिर से शक्तिशाली बन जाते हैं।
जैसे किसी गरुड़ के फिर से पंख उग आते हैं।
ये लोग बिना विश्राम चाहे निरंतर दौड़ते रहते हैं।
ये लोग बिना थके चलते रहते हैं।

यहोवा सृजनहार है : वह अमर है

41 यहोवा कहा करता है,
"सुदूरवर्ती देशों, चुप रहो
और मेरे पास आओ!
जातियों, फिर से सुदृढ़ बनों।
मेरे पास आओ और मुझसे बातें करो।
आपस में मिल कर हम
निश्चय करें कि उचित क्या है।
[2] किसने उस विजेता को जगाया है,
जो पूर्व से आयेगा?
कौन उससे दूसरे देशों को हरवाता
और राजाओं को अधीन कर देता?
कौन उसकी तलवारों को इतना बढ़ा देता है
कि वे इतनी असंख्य हो जाती
जितनी रेत–कण होते है?
कौन उसके धनुषों को इतना असंख्य कर देता
जितना भूसे के छिलके होते हैं?
[3] यह व्यक्ति पीछा करेगा और उन राष्टों का
पीछा बिना हानि उठाये करता रहेगा
और ऐसे उन स्थानों तक जायेगा
जहाँ वह पहले कभी गया ही नहीं।
[4] कौन ये सब घटित करता है?
किसने यह किया?
किसने आदि से सब लोगों को बुलाया?
मैं यहोवा ने इन सब बातों को किया!
मैं यहोवा ही सबसे पहला हूँ।
आदि के भी पहले से मेरा अस्तित्व रहा है,
और जब सब कुछ चला जायेगा तो भी
मैं यहाँ रहूँगा।
[5] "सुदूरवर्ती देश इसको देखें और भयभीत हों।
दूर धरती के छोर के लोग फिर आपस में
एक जुट होकर भय से काँप उठें।"

[6]"एक दूसरे की सहायता करेंगें। देखो! अब वे अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए एक दूसरे की हिम्मत बढ़ा रहे हैं। [7]मूर्ति बनानें के लिए एक कारीगर लकड़ी काट रहा है। फिर वह व्यक्ति सुनार को उत्साहित कर रहा है। एक कारीगर हथौड़ें से धातु का पतरा बना रहा है। फिर वह कारीगर निहायी पर काम करनेवाले व्यक्ति को प्रेरित कर रहा है। यह आखिरी कारीगर कह रहा है, काम अच्छा है किन्तु यह धातु पिंड कहीं उखड़ न जाये। इसलिए इस मूर्ति को आधार पर कील से जड़ दों! उससे मूर्ति गिरेगा नहीं, वह कभी हिलडुल तक नहीं पायेगा।"

यहोवा ही हमारी रक्षा कर सकता है

[8]यहोवा कहता है:
"किन्तु तू इस्राएल, मेरा सेवक है।
याकूब, मैंने तुझ को चुना है
तू मेरे मित्र इब्राहीम का वंशज है।
[9] मैंने तुझे धरती के दूर देशों से उठाया।
मैंने तुम्हें उस दूर देश से बुलाया।
मैंने कहा, 'तू मेरा सेवक है।'
मैंने तुझे चुना है और
मैंने तुझे कभी नहीं तजा है।
[10] तू चिंता मत कर, मैं तेरे साथ हूँ।
तू भयभीत मत हो, मैं तेरा परमेश्वर हूँ।
मैं तुझे सुदृढ़ करुँगा।
मैं तुझे अपने नेकी के
दाहिने हाथ से सहारा दूँगा।
[11] देख, कुछ लोग तुझ से नाराज हैं
किन्तु वे लजायेंगे।
जो तेरे शत्रु हैं वे नहीं रहेंगे,
वे सब खो जायेंगे।
[12] तू ऐसे उन लोगों की खोज करेगा
जो तेरे विरुद्ध थे।
किन्तु तू उनको नहीं पायेगा।
वे लोग जो तुझ से लड़े थे,
पूरी तरह लुप्त हो जायेंगे।
[13] मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ।
मैंने तेरा सीधा हाथ थाम रखा है।
मैं तुझ से कहता हूँ कि मत डर!

मैं तुझे सहारा दूँगा।
14 मूल्यवान यहूदा, तू निर्भय रह!
हे मेरे प्रिय इस्राएल के लोगों!
भयभीत मत रहो।"
सचमुच मैं तुझको सहायता दूँगा।
स्वयं यहोवा ही ने यें बातें कहीं थी।
इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) ने
जो तुम्हारी रक्षा करता है, कहा था:
15 "देख, मैंने तुझे एक नये दाँवने के
यन्त्र सा बनाया है।
इस यन्त्र में बहुत से दाँते हैं जो बहुत तीखे हैं।
किसान इसको अनाज के
छिलके उतारने के काम में लाते है।
तू पर्वतों को पैरों तले मसलेगा
और उनको धूल में मिला देगा।
तू पर्वतों को ऐसा कर देगा जैसे भूसा होता है।
16 तू उनको हवा में उछालेगा
और हवा उनको उड़ा कर दूर ले जायेगी
और उन्हें कहीं छितरा देगी।
तब तू यहोवा में स्थित हो कर आनन्दित होगा।
तुझको इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर)
पर बहुत गर्व होगा।
17 गरीब जन, और जरुरत मंद जल ढूँढ़ते हैं
किन्तु उन्हें जल नहीं मिलता है।
वे प्यासे हैं और उनकी जीभ सूखी है।
मैं उनकी विनतियों का उत्तर दूँगा।
मैं उनको न ही तजूँगा और न ही मरने दूँगा।
18 मैं सूखे पहाड़ों पर नदियाँ बहा दूँगा।
घाटियों में से मैं जलस्रोत बहा दूँगा।
मैं रेगिस्तान को जल से भरी
झील में बदल दूँगा।
उस सूखी धरती पर पानी के सोते मिलेंगे।
19 मरुभूमि में देवदार के, कीकर के, जैतून के,
सनावर के, तिघारे के, चीड़ के पेड़ उगेंगे!
20 लोग ऐसा होते हुए देखेंगे और वे जानेंगे कि
यहोवा की शक्ति ने यह सब किया है।
लोग इनको देखेंगे और समझना शुरु करेंगे
कि इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) ने
यह बातें की हैं।"

यहोवा की झूठे देवताओं को चेतावनी

[21]याकूब का राजा यहोवा कहता है, "आ, और मुझे अपनी युक्तियाँ दे। अपना प्रमाण मुझे दिखा और फिर हम यह निश्चय करेंगे कि उचित बातें क्या हैं? [22]तुम्हारे मूर्तियों को हमारे पास आकर, जो घट रहा है, वह बताना चाहिये।

"प्रारम्भ में क्या कुछ घटा था और भविष्य में क्या घटने वाला है। हमें बताओं हम बड़े ध्यान से सुनेंगे। जिससे हम यह जान जायें कि आगे क्या होने वाला है। [23]हमें उन बातों को बताओ जो घटनेवाली हैं। जिन्हें जानने का हमें इन्तज़ार है ताकि हम विश्वास करें कि सचमुच तुम देवता हो। कुछ करो! कुछ भी करो। चाहे भला चाहे बुरा ताकि हम देख सकें और जान सके कि तुम जीवित हो और तुम्हारा अनुसरण करें।

[24]"देखो झूठे देवताओं, तुम बेकार से भी ज्यादा बेकार हो! तुम कुछ भी तो नहीं कर सकते। केवल बेकार के भ्रष्ट लोग ही तुम्हें पूजना चाहते हैं!"

बस यहोवा ही परमेश्वर है

25 "उत्तर में मैंने एक व्यक्ति को उठाया है।
वह पूर्व से जहाँ सूर्य उगा करता है,
आ रहा है।
वह मेरे नाम की उपासना किया करता है।
जैसे कुम्हार मिट्टी रौंदा करता है
वैसे ही वह विशेष व्यक्ति राजाओं को रौंदेगा।"
26 यह सब घटने से पहले ही
हमें जिसने बताया है,
हमें उसे परमेश्वर कहना चाहिए।
क्या हमें ये बातें तुम्हारे
किसी मूर्ति ने बतायी? नहीं!
किसी भी मूर्ति ने कुछ भी
हमको नहीं बताया था।
वे मूर्ति तो एक भी शब्द नहीं बोल पाते हैं।
वे झूठे देवता एक भी शब्द
जो तुम बोला करते हो नहीं सुन पाते हैं।
27 मैं यहोवा सिय्योन को इन बातों के
विषय में बताने वाला पहला था।
मैंने एक दूत को इस सन्देश के साथ
यरूशलेम भेजा था कि:

"देखो, तुम्हारे लोग वापस आ रहे हैं!
28 मैंने उन झूठे देवों को देखा था,
उनमें से कोई भी इतना बुद्धिमान नहीं था
जो कुछ कह सके।
मैंने उनसे प्रश्न पूछे थे
वे एक भी शब्द नहीं बोल पाये थे।
29 वे सभी देवता बिल्कुल ही व्यर्थ हैं!
वे कुछ नहीं कर पाते
वे पूरी तरह मूल्यहीन हैं!

यहोवा का विशेष सेवक

42 "मेरे दास को देखो!
मैं ही उसे सम्भाला हूँ।
मैंने उसको चुना है,
मैं उससे अति प्रसन्न हूँ।
मैं अपनी आत्मा उस पर रखता हूँ।
वह ही सब देशों में न्याय खरेपन से लायेगा।
2 वह गलियों में जोर से नहीं बोलेगा।
वह नहीं चिल्लायेगा और न चीखेगा।
3 वह कोमल होगा।
कुचली हुई घास का तिनका तक
वह नहीं तोड़ेगा।
वह टिमटिमाती हुई लौ तक को नहीं बुझायेगा।
वह सच्चाई से न्याय स्थापित करेगा।
4 वह कमजोर अथवा कुचला हुआ
तब तक नहीं होगा जब तक
वह न्याय को दुनियाँ में न ले आये।
दूर देशों के लोग उसकी
शिक्षाओं पर विश्वास करेंगे।"

यहोवा जगत का सृजन हार और शासक है

5 सच्चे परमेश्वर यहोवा ने ये बातें कही हैं: (यहोवा ने आकाशों को बनाया है। यहोवा ने आकाश को धरती पर ताना है। धरती पर जो कुछ है वह भी उसी ने बनाया है। धरती पर सभी लोगों में वही प्राण फूँकता है। धरती पर जो भी लोग चल फिर रहे हैं, उन सब को वही जीवन प्रदान करता है।):

6 "मैं यहोवा ने तुझ को खरे
काम करने को बुलाया है।
मैं तेरा हाथ थामूँगा और तेरी रक्षा करूँगा।
तू एक चिन्ह यह प्रगट करने को होगा कि
लोगों के साथ मेरी एक वाचा है।
तू सब लोगों पर चमकने को एक प्रकाश होगा।
7 तू अन्धो की आँखो को प्रकाश देगा
और वे देखने लगेंगे।
ऐसे बहुत से लोग जो बन्दीगृह में पड़े हैं,
तू उन लोगों को मुक्त करेगा।
तू बहुत से लोगों को जो अन्धेरे में रहते हैं
उन्हें उस कारागर से तू बाहर छुड़ा लायेगा।"
8 "मैं यहोवा हूँ!
मेरा नाम यहोवा है।
मैं अपनी महिमा दूसरे को नहीं दूँगा।
मैं उन मूर्तियों (झूठे देवों) को वह प्रशंसा,
जो मेरी है, नहीं लेने दूँगा।
9 प्रारम्भ में मैंने कुछ बातें
जिनको घटना था, बतायी थी
और वे घट गयीं।
अब तुझको वे बातें घटने से पहले ही बताऊँगा
जो आगे चल कर घटेंगी।"

परमेश्वर की स्तुति

10 यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ,
तुम जो दूर दराज के देशों में बसे हो,
तुम जो सागर पर जलयान चलाते हो,
तुम समुद्र के सभी जीवों, दूरवर्ती देशों के
सभी लोगों, यहोवा का यशगान करो!
11 हे मरुभूमि एवं नगरों और केदार के
गाँवों, यहोवा की प्रशंसा करो!
सेला के लोगों, आनन्द के लिये गाओ!
अपने पर्वतों की चोटी से गाओ।
12 यहोवा को महिमा दो।
दूर देशों के लोगों उसका यशगान करो!
13 यहोवा वीर योद्धा सा बाहर निकलेगा
उस व्यक्ति सा जो युद्ध के लिये तत्पर है।
वह बहुत उत्तेजित होगा।
वह पुकारेगा और जोर से ललकारेगा
और अपने शत्रुओं को पराजित करेगा।

परमेश्वर धीरज रखता है

[14] "बहुत समय से मैंने कुछ भी नहीं कहा है।
मैंने अपने ऊपर नियंन्त्रण बनाये रखा है
और मैं चुप रहा हूँ।
किन्तु अब मैं उतने जोर से चिल्लाऊँगा जितने
जोर से बच्चे को जनते हुए स्त्री चिल्लाती है!
मैं बहुत तीव्र और जोर से साँस लूँगा।
[15] मैं पर्वतों–पहाड़ियों को नष्ट कर दूँगा।
मैं जो पौधे वहाँ उगते हैं।
उनको सुखा दूँगा।
मैं नदियों को सूखी धरती में बदल दूँगा।
मैं जल के सरोवरों को सुखा दूँगा।
[16] फिर मैं अन्धों को ऐसी राह दिखाऊँगा
जो उनको कभी नहीं दिखाई गयी।
नेत्रहीन लोगों को मैं ऐसी राह दिखाऊँगा
जिन पर उनका जाना कभी नहीं हुआ।
अन्धेरे को मैं उनके लिये प्रकाश में बदल दूँगा।
ऊँची नीची धरती को मैं समतल बनाऊँगा।
मैं उन कामों को करुँगा जिनका
मैंने वचन दिया है!
मैं अपने लोगों को कभी नहीं त्यागूँगा।
[17] किन्तु कुछ लोगों ने
मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया।
उन लोगों के पास वे मूर्तियाँ हैं
जो सोने से मढ़ी हैं।
उन से वे कहा करते हैं कि
'तुम हमारे देवता हो।'
वे लोग अपने झूठे देवताओं के विश्वासी हैं।
किन्तु ऐसे लोग बस निराश ही होंगे!"

इस्राएल ने परमेश्वर की नहीं सुनी

[18] तुम बहरे लोगों को मेरी सुनना चाहिए!
तुम अंधे लोगों को इधर दृष्टि डालनी चाहिए
और मुझे देखना चाहिए!
[19] कौन है उतना अन्धा जितना मेरा दास है?
कोई नहीं।
कौन है उतना बहरा जितना मेरा दूत है
जिसे को मैंने इस संसार में भेजा है?
कोई नहीं!
यह अन्धा कौन है जिस के साथ मैंने वाचा की?
ये इतना अन्धा है जितना अन्धा
यहोवा का दास है।
[20] वह देखता बहुत है,
किन्तु मेरी आज्ञा नहीं मानता।
वह अपने कानों से साफ साफ सुन सकता है
किन्तु वह मेरी सुनने से इन्कार करता है।"
[21] यहोवा अपने सेवक के साथ
सच्चा रहना चाहता है।
इसलिए वह लोगों के लिए
अद्‌भुत उपदेश देता है।
[22] किन्तु दूसरे लोगों की ओर देखो।
दूसरे लोगों ने उनको हरा दिया और
जो कुछ उनका था, छीन लिया।
काल कोठरियों में वे सब फँसे हैं,
कारागरों के भीतर वे बन्दी हैं।
लोगों ने उनसे उनका धन छीन लिया है
और कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जो
उनको बचा ले।
दूसरे लोगों ने उनका धन छीन लिया और कोई
व्यक्ति ऐसा नहीं जो कहे
"इसको वापस करो!"

[23] तुममें से क्या कोई भी इसे सुनता है? क्या तुममें से किसी को भी इस बात की परवाह है और क्या कोई सुनता है कि भविष्य में तुम्हारे साथ क्या होनेवाला है? [24] याकूब और इस्राएल की सम्पत्ति लोगों को किसने लेने दी? यहोवा ने ही उन्हें ऐसा करने दिया! हमने यहोवा के विरुद्ध पाप किया था। सो यहोवा ने लोगों को हमारी सम्पत्ति छीनने दी। इस्राएल के लोग उस ढंग से जीना नहीं चाहते थे जिस ढंग से यहोवा चाहता था। इस्राएल के लोगों ने उसकी शिक्षा पर कान नहीं दिया। [25] सो यहोवा उन पर क्रोधित हो गया। यहोवा ने उनके विरुद्ध भयानक लड़ाईयाँ भड़कवा दीं। यह ऐसे हुआ जैसे इस्राएल के लोग आग में जल रहे हों और वे जान ही न पाये हों कि क्या हो रहा है। यह ऐसा था जैसे वे जल रहे हों। किन्तु उन्होंने जो वस्तुएँ घट रही थीं, उन्हें समझने का जतन ही नहीं किया।

परमेश्वर सदा अपने लोगों के साथ रहता है

43 याकूब, तुझको यहोवा ने बनाया था! इस्राएल, तेरी रचना यहोवा ने की थी और अब यहोवा का कहना है: "भयभीत मत हो! मैंने तुझे बचा लिया है। मैंने तुझे नाम दिया है। तू मेरा है। [2]जब तुझ पर विपत्तियाँ पड़ती हैं, मैं तेरे साथ रहता हूँ। जब तू नदी पार करेगा, तू बहेगा नहीं। तू जब आग से होकर गुज़रेगा, तो तू जलेगा नहीं। लपटें तुझे हानि नहीं पहुँचायेंगी। [3]क्यों? क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं इस्राएल का पवित्र तेरा उद्धारकर्ता हूँ। तेरी बदले में मैंने मिस्र को दे कर तुझे आजाद कराया है। मैंने कूश और सबा को तुझे अपना बनाने को दे डाला है। [4]तू मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसलिये मैं तेरा आदर करूँगा। मैं तुझे प्रेम करता हूँ, ताकि तू जी सके, और मेरा हो सके। इसके लिए मैं सभी मनुष्यों और जातियों को बदले में दे दूँगा।"

परमेश्वर अपनी संतानों को घर लायेगा

[5]"इसलिये डर मत! मैं तेरे साथ हूँ। तेरे बच्चों को इकट्ठा करके मैं उन्हें तेरे पास लाऊँगा। मैं तेरे लोगों को पूर्व और पश्चिम से इकट्ठा करूँगा। [6]मैं उत्तर से कहूँगा: मेरे बच्चे मुझे लौटा दे।" मैं दक्षिण से कहूँगा: "मेरे लोगों को बंदी बना कर मत रख। दूर–दूर से मेरे पुत्र और पुत्रियों को मेरे पास ले आ! [7]उन सभी लोगों को, जो मेरे हैं, मेरे पास ले आ अर्थात उन लोगों को जो मेरा नाम लेते हैं। मैंने उन लोगों को स्वयं अपने लिये बनाया है। उनकी रचना मैंने की है और वे मेरे हैं।"

जगत के लिए इस्राएल परमेश्वर की साक्षी है

[8]"ऐसे लोगों को जिनकी आँखे तो हैं किन्तु फिर भी वे अन्धे हैं, उन्हें निकाल लाओ। ऐसे लोगों को जो कानों के होते हुए भी बहरे हैं, उन्हें निकाल लाओ। [9]सभी लोगों और सभी राष्ट्रों को एक साथ इकट्ठा करो। यदि किसी भी मिथ्या देवता ने कभी इन बातों के बारे में कुछ कहा है और भूतकाल में यह बताया था कि आगे क्या कुछ होगा तो उन्हें अपने गवाह लाने दो और उन (मिथ्या देवताओं) को प्रमाणित सिद्ध करने दो। उन्हें सत्य बताने दो और उन्हें सुनो।"

[10]यहोवा कहता है, "तुम ही लोग तो मेरे साक्षी हो। तू मेरा वह सेवक है जिसे मैंने चुना है। मैंने तुझे इसलिए चुना है ताकि तू समझ ले कि 'वह मैं ही हूँ' और मुझ में विश्वास करे। मैं सच्चा परमेश्वर हूँ। मुझसे पहले कोई परमेश्वर नहीं था और मेरे बाद भी कोई परमेश्वर नहीं होगा। [11]मैं स्वयं ही यहोवा हूँ। मेरे अतिरिक्त और कोई दूसरा उद्धारकर्ता नहीं है, बस केवल मैं ही हूँ। [12]वह मैं ही हूँ जिसने तुझसे बात की थी। तुझे मैंने बचाया है। वे बातें तुझे मैंने बतायी थीं। जो तेरे साथ था, वह कोई अनजाना देवता नहीं था। तू मेरा साक्षी है और मैं परमेश्वर हूँ।" (ये बातें स्वयं यहोवा ने कही थीं) [13]मैं तो सदा से ही परमेश्वर रहा हूँ। जब मैं कुछ करता हूँ तो मेरे किये को कोई भी व्यक्ति नहीं बदल सकता और मेरी शक्ति से कोई भी व्यक्ति किसी को बचा नहीं सकता।"

[14]इस्राएल का पवित्र यहोवा तुझे छुड़ाता है। यहोवा कहता है, "मैं तेरे लिये बाबुल में सेनाएँ भेजूँगा। सभी ताले लगे दरवाजों को मैं तोड़ दूँगा। कसदियों के विजय के नारे दुःखभरी चीखों में बदल जाएँगे। [15]मैं तेरा पवित्र यहोवा हूँ। इस्राएल को मैंने रचा है। मैं तेरा राजा हूँ।"

यहोवा फिर अपने लोगों की रक्षा करेगा

[16]यहोवा सागर में राहें बनायेगा। यहाँ तक कि पछाड़ें खाते हुए पानी के बीच भी वह अपने लोगों के लिए राह बनायेगा। यहोवा कहता है, [17]"वे लोग जो अपने रथों, घोड़ों और सेनाओं को लेकर मुझसे युद्ध करेंगे, पराजित हो जायेंगे। वे फिर कभी नहीं उठ पायेंगे। वे नष्ट हो जायेंगे। वे दीये की लौ की तरह बुझ जायेंगे। [18]सो उन बातों को याद मत करो जो प्रारम्भ में घटी थीं। उन बातों को मत सोचो जो कभी बहुत पहले घटी थीं। [19]क्यों? क्योंकि मैं नयी बातें करने वाला हूँ! अब एक नये वृक्ष के समान तुम्हारा विकास होगा। तुम जानते हो कि यह सत्य है। मैं मरुभूमि में सचमुच एक मार्ग बनाऊँगा। मैं सचमुच सूखी धरती पर नदियाँ बहा दूँगा। [20]यहाँ तक कि बनैले पशु और उल्लू भी मेरा आदर करेंगे। विशालकाय पशु और पक्षी मेरा आदर करेंगे। जब मरुभूमि में मैं पानी रख दूँगा तो वे मेरा आदर करेंगे। सूखी धरती में जब मैं नदियों की रचना कर दूँगा तो वे मेरा आदर करेंगे। मैं ऐसा अपने लोगों को पानी देने के लिये करूँगा। उन लोगों को जिन्हें मैंने चुना है। [21]ये वे लोग हैं जिन्हें मैंने बनाया है और ये लोग मेरी प्रशंसा के गीत गाया करेंगे।

[22]"याकूब, तूने मुझे नहीं पुकारा। क्यों? क्योंकि हे इस्राएल, तेरा मन मुझसे भर गया था। [23]तुम लोग भेड़ की अपनी बलियाँ मेरे पास नहीं लाये। तुमने मेरा मान नहीं रखा। तुमने मुझे बलियाँ नहीं अर्पित कीं। मुझे अन्न बलियाँ अर्पित करने के लिए मैं तुम पर ज़ोर नहीं डालता। तुम मेरे लिए धूप जलाते–जलाते थक जाओ, इसके लिए मैं तुम पर दबाव नहीं डालता। [24]तुम अपनी बलियों की चर्बी से मुझे तृप्त नहीं करते मुझे आदर देने के लिये वस्तुएँ मोल लेने के लिए अपने धन का उपयोग नहीं करते। अपनी बलियों की चर्बी से मुझे तृप्त नहीं करते। किन्तु तुम मुझ पर दबाव डालते हो कि मैं तुम्हारे दास का सा आचरण करुँ। तुम तब तक पाप करते चले गये जब तक मैं तुम्हारे पापों से पूरी तरह तंग नहीं आ गया।

[25]"मैं वही हूँ जो तुम्हारे पापों को धो डालता हूँ। स्वयं अपनी प्रसन्नता के लिये ही मैं ऐसा करता हूँ। मैं तुम्हारे पापों को याद नहीं रखूँगा। [26]मेरे विरोध में तुम्हारें जो आक्षेप हैं, उन्हें लाओ, आओ, हम दोनों न्यायालय को चलें। तुमने जो कुछ किया है, वह तुम्हें बताना चाहिये और दिखाना चाहिये कि तुम उचित हो। [27]तुम्हारे आदि पिता ने पाप किया था और तुम्हारे हिमायतियों ने मेरे विरुद्ध काम किये थे। [28]मैंने तुम्हारे पवित्र शासकों को अपवित्र बना दिया। मैंने याकूब के लोगों को अभिशप्त बनाया। मैंने इस्राएल का अपमान कराया।"

केवल यहोवा ही परमेश्वर है

44 "याकूब, तू मेरा सेवक है। इस्राएल, मेरी बात सुन! मैंने तुझे चुना है। जो कुछ मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दे! [2]मैं यहोवा हूँ और मैंने तुझे बनाया है। तू जो कुछ है, तुझे बनाने वाला मैं ही हूँ। जब तू माता की देह में ही था, मैंने तभी से तेरी सहायता की है। मेरे सेवक याकूब! डर मत! यशूरून (इस्राएल) तुझे मैंने चुना है।

[3]"प्यासे लोगों के लिये मैं पानी बरसाऊँगा। सूखी धरती पर मैं जलधाराएँ बहाऊँगा। तेरी संतानों में मैं अपनी आत्मा डालूँगा। तेरे परिवार पर वह एक बहती जलधारा के समान होगी। [4]वे संसार के लोगों के बीच फलेंगे–फूलेंगे। वे जलधाराओं के साथ–साथ लगे बढ़ते हुए चिनार के पेड़ों के समान होंगे।

[5]"लोगों में कोई कहेगा, 'मैं यहोवा का हूँ।' तो दूसरा व्यक्ति याकूब का नाम लेगा। कोई व्यक्ति अपने हाथ पर लिखेगा, 'मैं यहोवा का हूँ' और दूसरा व्यक्ति 'इस्राएल' नाम का उपयोग करेगा।"

[6]यहोवा इस्राएल का राजा है। सर्वशक्तिमान यहोवा इस्राएल की रक्षा करता है। यहोवा कहता है, "परमेश्वर केवल मैं ही हूँ। अन्य कोई परमेश्वर नहीं है। मैं ही आदि हूँ। मैं ही अंत हूँ। [7]मेरे जैसा परमेश्वर कोई दूसरा नहीं है और यदि कोई है तो उसे अब बोलना चाहिये। उसको आगे आ कर कोई प्रमाण देना चाहिये कि वह मेरे जैसा है। भविष्य में क्या कुछ होने वाला है उसे बहुत पहले ही किसने बता दिया था? तो वे हमें अब बता दें कि आगे क्या होगा? [8]डरो मत, चिंता मत करो! जो कुछ घटने वाला है, वह मैंने तुम्हें सदा ही बताया है। तुम लोग मेरे साक्षी हो। कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है। केवल मैं ही हूँ। कोई अन्य 'शरणस्थान' नहीं है। मैं जानता हूँ केवल मैं ही हूँ।"

झूठे देवता बेकार हैं

[9]कुछ लोग मूर्ति (झूठे देवता) बनाया करते हैं। किन्तु वे बेकार हैं। लोग उन बुतों से प्रेम करते हैं किन्तु वे बुत बेकार हैं। वे लोग उन बुतों के साक्षी हैं किन्तु वे देख नहीं पाते। वे कुछ नहीं जानते। वे लज्जित होंगे।

[10]इन झूठे देवताओं को कोई क्यों गढ़ेगा? इन बेकार के बुतों को कोई क्यों ढ़ालेगा? [11]उन देवताओं को कारीगरों ने गढ़ा है और वे कारीगर तो मात्र मनुष्य हैं, न कि देवता। यदि वे सभी लोग एकजुट हो पंक्ति में आयें और इन बातों पर विचार विनिमय करें तो वे सभी लज्जित होंगे और डर जायेंगे।

[12]कोई एक कारीगर कोयलों पर लोहे को तपाने के लिए अपने औजारों का उपयोग करता है। यह व्यक्ति धातु को पीटने के लिए अपना हथौड़ा काम में लाता है। इसके लिए वह अपनी भुजाओं की शक्ति का प्रयोग करता है। किन्तु उसी व्यक्ति को जब भूख लगती है, उसकी शक्ति जाती रहती है। वही व्यक्ति यदि पानी न पिये तो कमज़ोर हो जाता है।

[13]दूसरा व्यक्ति अपने रेखा पटकने के सूत का उपयोग करता है। वह तख्ते पर रेखा खींचने के लिए परकार को काम में लाता है। यह रेखा उसे बताती है कि वह कहाँ से काटे। फिर वह व्यक्ति निहानी का प्रयोग करता है और लकड़ी में मूर्तियों को उभारता है। वह मूर्तियों को नापने

के लिए अपने नपाई के यन्त्र का प्रयोग करता है और इस तरह वह कारीगर लकड़ी को ठीक व्यक्ति का रुप दे देता है और फिर व्यक्ति का सा यह मूर्ति मठ में बैठा दिया जाता है।

[14]कोई व्यक्ति देवदार, सनोवर, अथवा बांज के वृक्ष को काट गिराता है। (किन्तु वह व्यक्ति उन पेड़ों को उगाता नहीं। ये पेड़ वन में स्वयं अपने आप उगते हैं। यदि कोई व्यक्ति चीड़ का पेड़ उगाये तो उसकी बढ़वार वर्षा करती है।) [15]फिर वह मनुष्य उस पेड़ को अपने जलाने के काम में लाता है। वह मनुष्य उस पेड़ को काट कर लकड़ी की मुढ़्ढियाँ बनाता है और उन्हें खाना बनाने और खुद को गरमाने के काम में लाता है। व्यक्ति थोड़ी सी लकड़ी की आग सुलगा कर अपनी रोटियाँ सेंकता है। किन्तु तो भी मनुष्य उसी लकड़ी से देवता की मूर्ति बनाता है और फिर उस देवता की पूजा करने लगता है। यह देवता तो एक मूर्ति है जिसे उस व्यक्ति ने बनाया है! किन्तु वही मनुष्य उस मूर्ति के आगे अपना माथा नवाता है! [16]वही मनुष्य आधी लकड़ी को आग में जला देता है और उस आग पर माँस पका कर भर पेट खाता है और फिर अपने आप को गरमाने के लिए मनुष्य उसी लकड़ी को जलाता है और फिर वही कहता है, "बहुत अच्छे! अब मैं गरम हूँ और इस आग की लपटों को देख सकता हूँ।" [17]किन्तु थोड़ी बहुत लकड़ी बच जाती है। सो उस लकड़ी से व्यक्ति एक मूर्ति बना लेता है और उसे अपना देवता कहने लगता है। वह उस देवता के आगे माथा नवाता है और उसकी पूजा करता है। वह उस देवता से प्रार्थना करते हुए कहता है, "तू मेरा देवता है, मेरी रक्षा कर!"

[18]ये लोग यह नहीं जानते कि यें क्या कर रहे हैं? ये लोग समझते ही नहीं। ऐसा है जैसे इनकी आँखें बंद हो और ये कुछ देख ही न पाते हों। इनका मन समझने का जतन ही नहीं करता। [19]इन वस्तुओं के बारे में ये लोग कुछ सोचते ही नहीं है। ये लोग नासमझ हैं। इसलिए इन लोगों ने अपने मन में कभी नहीं सोचा: "आधी लकड़ियाँ मैंने आग में जला डालीं। दहकते कोयलों का प्रयोग मैंने रोटी सेंकने और माँस पकाने में किया। फिर मैंने माँस खाया और बची हुई लकड़ी का प्रयोग मैंने इस भ्रष्ट वस्तु (मूर्ति) को बनाने में किया। अरे, मैं तो एक लकड़ी के टुकड़े की पूजा कर रहा हूँ!"

[20]यह तो बस उस राख को खाने जैसा ही है। वह व्यक्ति यह नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है? वह भ्रम में पड़ा हुआ है। इसीलिए उसका मन उसे गलत राह पर ले जाता है। वह व्यक्ति अपना बचाव नहीं कर पाता है और वह यह देख भी नहीं पाता है कि वह गलत काम कर रहा है। वह व्यक्ति नहीं कहेगा, "यह मूर्ति जिसे मैं थामे हूँ एक झूठा देवता है।"

सच्चा परमेश्वर यहोवा इस्राएल का सहायक है

21 "हे याकूब, ये बातें याद रख!
  इस्राएल, याद रख कि तू मेरा सेवक है।
मैंने तुझे बनाया।
  तू मेरा सेवक है।
इसलिए इस्राएल, मैं तुझको नहीं भूलाऊँगा।
22 तेरे पाप एक बड़े बादल जैसे थे।
  किन्तु मैंने तेरे पापों को उड़ा दिया।
तेरे पाप बादल के समान
  वायु में विलीन हो गये।
मैंने तुझे बचाया और तेरी रक्षा की।
  इसलिए मेरे पास लौट आ!"
23 आकाश प्रसन्न है,
  क्योंकि यहोवा ने महान काम किये।
धरती और यहाँ तक कि धरती के नीचे
  बहुत गहरे स्थान भी प्रसन्न हैं!
पर्वत परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए गाओ।
  वन के सभी वृक्ष, तुम भी खुशी गाओ!
क्यों? क्योंकि यहोवा ने
  याकूब को बचा लिया है।
यहोवा ने इस्राएल के लिये महान कार्य किये हैं।
24 जो कुछ भी तू है वह यहोवा ने तुझे बनाया।
यहोवा ने यह किया जब
  तू अभी माता के गर्भ में ही था।
यहोवा तेरा रखवाला कहता है।
"मैं यहोवा ने सब कुछ बनाया!
मैंने ही वहाँ आकाश ताना है,
  और अपने सामने धरती को बिछाया!"

[25]झूठे नबी शगुन दिखाया करते हैं किन्तु यहोवा दर्शाता है कि उनके शगुन झूठे हैं। जो लोग जादू टोना कर के भविष्य बताते हैं, यहोवा उन्हें मूर्ख सिद्ध करेगा। यहोवा

तथाकथित बुद्धिमान मनुष्यों तक को भ्रम में डाल देता है। वे सोचते हैं कि वे बहुत कुछ जानते हैं किन्तु यहोवा उन्हें ऐसा बना देता है कि वे मूर्ख दिखाई दें। 26यहोवा अपने सेवकों को लोगों को सन्देश सुनाने के लिए भेजता है और फिर यहोवा उन सन्देशों को सच कर देता है। यहोवा लोगों को क्या करना चाहियें उन्हें यह बताने के लिए दूत भेजता है और फिर यहोवा दिखा देता है कि उनकी सम्मति अच्छी हैं।

परमेश्वर कुस्रू को यहूदा के पुन: निर्माण के लिये चुनता है

यहोवा यरुशलेम से कहता हैं,
"लोग तुझ में आकर फिर बसेंगे!"
"यहोवा यहूदा के नगरों से कहता है,
"तुम्हारा फिर से निर्माण होगा!"
यहोवा ध्वस्त हुए नगरों से कहता है,
"मैं तुम नगरों को फिर से उठाऊँगा!"
27 यहोवा गहरे सागर से कहता है,
"सूख जा!'
मैंने तेरी जलधाराओं को सूखा बना दूँगा!"
28 यहोवा कुस्रू से कहता है,
"तू मेरा चरवाहा है।
जो मैं चाहता हूँ तू वही काम करेगा।
तू यरुशलेम से कहेगा,
'तुझको फिर से बनाया जायेगा!'
तू मन्दिर से कहेगा, 'तेरी नीवों का
फिर से निर्माण होगा!'"

परमेश्वर कुस्रू को इस्राएल की मुक्ति के लिये चुनता है

45 ये वे बातें हैं जिन्हें यहोवा अपने चुने हुए राजा कुस्रू से कहता है:
"मैं कुस्रू का दाहिना हाथ थामूँगा।
मैं राजाओं की शक्ति छीनने में
उसकी सहायता करुँगा।
नगर द्वार कुस्रू को रोक नहीं पायेंगे।
मैं नगर के द्वार खोल दूँगा,
और कुस्रू भीतर चला जायेगा।
2 "कुस्रू, तेरी सेनाएँ आगे बढ़ेंगी
और मैं तेरे आगे चलूँगा।
मैं पर्वतों को समतल कर दूँगा।
मैं काँसे के नगर-द्वारों को तोड़ डालूँगा।
मैं द्वार पर लगी लोहे की
आँगल को काट डालूँगा।
3 मैं तुझे अन्धेरे में रखी हुई दौलत दूँगा।
मैं तुझको छिपी हुई सम्पत्ति दूँगा।
मैं ऐसा करुँगा ताकि तुझको पता चल जाये कि
मैं इस्राएल का परमेश्वर हूँ, और
मैं तुझको तेरे नाम से पुकार रहा हूँ!
4 मैं ये बातें अपने सेवक याकूब के लिये करता हूँ।
मैं ये बातें इस्राएल के अपने चुने हुए
लोगों के लिये करता हूँ।
कुस्रू, मैं तुझे नाम से पुकार रहा हूँ।
तू मुझको नहीं जानता है, किन्तु
मैं तुझको सम्मान की उपाधि दे रहा हूँ।
5 मैं यहोवा हूँ!
मैं ही मात्र एक परमेश्वर हूँ।
मेरे सिवा दूसरा कोई परमेश्वर नहीं है।
मैं तुझे तेरा कमरबन्ध पहनाता हूँ,
किन्तु फिर भी तू मुझको नहीं पहचानता है।
6 मैं यह काम करता हूँ ताकि सब लोग जान जायें
कि मैं ही मात्र परमेश्वर हूँ।
पूर्व से पश्चिम तक सभी लोग
ये जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ
और मेरे सिवा दूसरा कोई परमेश्वर नहीं।
7 मैंने प्रकाश को बनाया और
मैंने ही अन्धकार को रचा।
मैंने शान्ति को सृजा और विपत्तियाँ भी
मैंने ही बनायीं हैं।
मैं यहोवा हूँ।
मैं ही ये सब बातें करता हूँ।

8 ऊपर आकाश से पुण्य ऐसे बरसता है
जैसे मेघ से वर्षा धरती पर बरसती है!
धरती खुल जाती है और पुण्य कर्म
उसके साथ-साथ उग आते हैं
जो मुक्ति में फलते फूलते हैं।
मैंने, मुझ यहोवा ने ही यह सब किया है।

परमेश्वर अपनी सृष्टि का नियन्त्रण करता हैं

[9]“धिक्कार है इन लोगों को, यें उसी से बहस कर रहे हैं जिसने इन्हें बनाया है। ये किसी टूटे हुए घड़े के ठीकरों के जैसे हैं। कुम्हार नरम गीली मिट्‌टी से घड़ा बनाता है पर मिट्‌टी उससे नहीं पूछती ‘अरे, तू क्या कर रहा है?’ वस्तुएँ जो बनायी गयी हैं, वे यह शक्ति नहीं रखतीं कि अपने बनाने वाले से कोई प्रश्न पूछे। ये लोग भी मिट्‌टी के टूटे घड़े के ठीकरों के जैसे हैं। [10]अरे, एक पिता जब अपने पुत्रों को माता में जन्म दे रहा होता है तो बच्चे उससे यह नहीं पूछ सकते कि तू हमें जन्म क्यों दे रहा है? बच्चे अपनी माँ से यह सवाल नहीं कर सकते हैं कि तू हमें क्यों पैदा कर रही है?’”

[11]परमेश्वर यहोवा इस्राएल का पवित्र है। उसने इस्राएल को बनाया। यहोवा कहता है,

“क्या तू मुझसे मेरे बच्चों के बारे में पूछेगा
अथवा तू मुझे आदेश देगा
उनके ही बारे में जिस को
मैंने अपने हाथों से रचा।
[12] सो देख, मैंने धरती बनायी
और वे सभी लोग जो
इस पर रहते हैं, मेरे बनाये हुए हैं।
मैंने स्वयं अपने हाथों से आकाशों की
रचना की, और मैं आकाश के
सितारों को आदेश देता हूँ।
[13] कुस्रू को मैंने ही उसकी शक्ति दी है
ताकि वह भले कार्य करे।
उसके काम को मैं सरल बनाऊँगा।
कुस्रू मेरे नगर को फिर से बनायेगा
और मेरे लोगों को वह स्वतन्त्र कर देगा।
कुस्रू मेरे लोगों को मुझे नहीं बेचेगा।
इन कामों को करने के लिये मुझे उसको
कोई मोल नहीं चुकाना पड़ेगा।
लोग स्वतन्त्र हो जायेंगे
और मेरा कुछ भी मोल नहीं लगेगा।”
सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें कहीं।
[14] यहोवा कहता हैं,
“मिस्र और कूश ने बहुत वस्तुएँ बनायी थी,
किन्तु हे इस्राएल, तुम वे वस्तुएँ पाओगे।
सेबा के लम्बे लोग तुम्हारे होंगे।
वे अपने गर्दन के चारों ओर जंजीर लिये हुए
तुम्हारे पीछे पीछे चलेंगे।
वे लोग तुम्हारे सामने झुकेंगे, और
वे तुमसे विनती करेंगे।”
इस्राएल, परमेश्वर तेरे साथ है,
और उसे छोड़ कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है।
[15] हे परमेश्वर, तू वह परमेश्वर है
जिसे लोग देख नहीं सकते।
तू ही इस्राएल का उद्धारकर्ता है।
[16] बहुत से लोग मिथ्या देवता बनाया करते हैं।
किन्तु वे लोग तो निराश ही होंगे।
वे सभी लोग तो लज्जित हो जायेंगे।
[17] किन्तु इस्राएल यहोवा के द्वारा बचा लिया जायेगा।
वह मुक्ति युगों तक बनी रहेगी।
फिर इस्राएल कभी भी लज्जित नहीं होगा।
[18] यहोवा ही परमेश्वर है।
उसने आकाश रचे हैं,
और उसी ने धरती बनायी है।
यहोवा ही ने धरती को
अपने स्थान पर स्थापित किया है।
जब यहोवा ने धरती बनाई
उसने ये नहीं चाहा कि धरती खाली रहे।
उसने इसको रचा ताकि इसमें जीवन रहे।
मैं यहोवा हूँ।
मेरे सिवा कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है।
[19] मैंने अकेले ये बातें नहीं कीं।
मैंने मुक्त भाव से कहा है।
संसार के किसी भी अन्धेरे में
मैं अपने वचन नहीं छुपाता।
मैंने याकूब के लोगों से नहीं कहा कि
वे मुझे विरान स्थानों पर ढूँढे।
मैं परमेश्वर हूँ, और मैं सत्य बोलता हूँ।
मैं वही बातें कहता हूँ जो सत्य हैं।”

यहोवा सिद्ध करता है कि वह ही परमेश्वर है

[20]“तुम लोग दूसरी जातियों से बच भागे। सो आपस में इकट्‌ठे हो जाओ और मेरे सामने आओ। (यें लोग अपने साथ मिथ्या देवों के मूर्ति रखते हैं और इन बेकार के देवताओं से प्रार्थना करते हैं। किन्तु यें लोग यह नहीं

जानते कि वे क्या कर रहे हैं? [21]इन लोगों को मेरे पास आने को कहो। इन लोगों को अपने तर्क पेश करने दो।)

"वे बातें जो बहुत दिनों पहले घटी थीं, उनके बारे में तुम्हें किसने बताया? बहुत–बहुत दिनों पहले से ही इन बातों को निरन्तर कौन बताता रहा? वह मैं यहोवा ही हूँ जिसने ये बातें बतायी थीं। मैं ही एक मात्र यहोवा हूँ। मेरे अतिरिक्त कोई और परमेश्वर नहीं है? क्या ऐसा कोई और है जो अपने लोगों की रक्षा करता है? नहीं, ऐसा कोई अन्य परमेश्वर नहीं है! [22]हे हर कहीं के लोगों, तुम्हें इन झूठे देवताओं के पीछे चलना छोड़ देना चाहिये। तुम्हें मेरा अनुसरण करना चाहिये और सुरक्षित हो जाना चाहिये। मैं परमेश्वर हूँ। मुझ से अन्य कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर केवल मैं ही हूँ।

[23]"मैंने स्वयं अपनी शक्ति को साक्षी करके प्रतिज्ञा की है। यह एक उत्तम वचन है। यह एक आदेश है जो पूरा होगा ही। हर व्यक्ति मेरे (परमेश्वर के) आगे झुकेगा और हर व्यक्ति मेरा अनुसरण करने का वचन देगा। [24]लोग कहेंगे, 'नेकी और शक्ति बस यहोवा से मिलती है।'"

कुछ लोग यहोवा से नाराज़ हैं, किन्तु यहोवा का साक्षी आयेगा और यहोवा ने जो किया है, उसे बतायेगा। इस प्रकार वे नाराज़ लोग निराश होंगे। [25]यहोवा अच्छे काम करने के लिए इस्राएल के लोगों को विजयी बनाएगा और लोग उसकी प्रशंसा करेंगे।

झूठे देव व्यर्थ हैं

46 बेल और नबो* तेरे आगे झुका दिए गये हैं। झूठे देवता तो बस केवल मूर्ति हैं। लोगों ने इन बुतों को जानवरों की पीठों पर लाद दिया है। ये बुत बस एक बोझ हैं, जिन्हें ढोना ही है। ये झूठे देवता कुछ नहीं कर सकते। बस लोगों को थका सकते हैं। [2]इन सभी झूठे देवताओं को झुका दिया जाएगा। ये बच कर कहीं नहीं भाग सकेंगे। उन सभी को बन्दियों की तरह ले जाया जायेगा।

[3]"याकूब के परिवार, मेरी सुन! हे इस्राएल के लोगों जो अभी जीवित हो, सुनो! मैं तुम्हें तब से धारण किए हूँ जब अभी तुम माता के गर्भ में ही थे। [4]मैं तुम्हें तब से धारण किए हूँ जब से तुम्हारा जन्म हुआ है और मैं तुम्हें तब भी धारण करूँगा, जब तुम बूढ़े हो जाओगे। तुम्हारे बाल सफेद हो जायेंगे, मैं तब भी तुम्हें धारण किए रहूँगा क्योंकि मैंने तुम्हारी रचना की है। मैं तुम्हें निरन्तर धारण किए रहूँगा और तुम्हारी रक्षा करूँगा।

[5]"क्या तुम किसी से भी मेरी तुलना कर सकते हो? नहीं! कोई भी व्यक्ति मेरे समान नहीं है। मेरे बारे में तुम हर बात नही समझ सकते। मेरे जैसा तो कुछ है ही नहीं। [6]कुछ लोग सोने और चाँदी से धनवान हैं। सोने चाँदी के लिए उन्होंने अपनी थैलियों के मुँह खोल दिए हैं। वे अपनी तराजुओं से चाँदी तौला करते हैं। ये लोग लकड़ी से झूठे देवता बनाने के लिये कलाकारों को मजदूरी देते हैं और फिर वे लोग उसी झूठे देवता के आगे झुकते हैं और उसकी पूजा करते हैं। [7]वे लोग झूठे देवता को अपने कन्धों पर रख कर ले चलते हैं। वह झूठा देवता तो बेकार है। लोगों को उसे ढोना पड़ता है। लोग उस झूठे देवता को धरती पर स्थापित करते हैं। किन्तु वह झूठा देवता हिल–डुल भी नहीं पाता। वह झूठा देवता अपने स्थान से चल कर कहीं नहीं जाता। लोग उसके सामने चिल्लाते हैं किन्तु वह कभी उत्तर नहीं देगा। वह झूठा देवता तो बस मूर्ति है। वह लोगों को उनके कष्टों से नहीं उबार सकता।

[8]"तुम लोगों ने पाप किये हैं। तुम्हें इन बातों को फिर से याद करना चाहिये। इन बातों को याद करो और सुदृढ़ हो जाओ। [9]उन बातों को याद करो जो बहुत पहले घटी थीं। याद रखो कि मैं परमेश्वर हूँ। कोई दूसरा अन्य परमेश्वर नहीं है। वे झूठे देवता मेरे जैसे नहीं हैं।

[10]"प्रारम्भ में मैंने तुम्हें उन बातों के बारे में बता दिया था जो अंत में घटेगी। बहुत पहले से ही मैंने तुम्हें वे बातें बता दी हैं, जो अभी घटी नहीं हैं। जब मैं किसी बात की कोई योजना बनाता हूँ तो वह घटती है। मैं वही करता हूँ जो करना चाहता हूँ। [11]देखो, पूर्व दिशा से मैं एक व्यक्ति को बुला रहा हूँ। वह व्यक्ति एक उकाब के समान होगा। वह एक दूर देश से आयेगा और वह उन कामों को करेगा जिन्हें करने की योजना मैंने बनाई है। मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि मैं इसे करूँगा और मैं उसे करूँगा ही। क्योंकि उसे मैंने ही बनाया है। मैं उसे लाऊँगा ही!

[12]"तुम में से कुछ सोचा करते हो कि तुम में महान शक्ति है किन्तु तुम भले काम नहीं करते हो। मेरी सुनों। [13]मैं भले काम करूँगा! मैं शीघ्र ही अपने लोगों की रक्षा करूँगा। मैं अपने सिय्योन और अपने अद्भुत इस्राएल के लिये उद्धार लाऊँगा।"

बेल और नबो ये दो नाम दो झूठे देवताओं के हैं।

बाबुल को परमेश्वर का सन्देश

47 "हे बाबुल की कुमारी पुत्री,
नीचे धूल में गिर जा और वहाँ पर बैठ जा!
अब तू रानी नहीं है!
लोग अब तुझको कोमल
और सुन्दर नहीं कहा करेंगे।
2 अब तुझको अपना कोमल वस्त्र उतार कर
कठिन परिश्रम करना चाहिए।
अब तू चक्की ले और उस पर आटा पीस।
तू अपना घाघरा इतना ऊपर उठा कि
लोगों को तेरी टाँगे दिखने लग जाये
और नंगी टाँगों से तू नदी पार कर।
तू अपना देश छोड़ दे!
3 लोग तेरे शरीर को देखेंगे
और वे तेरा भोग करेंगे।
तू अपमानित होगी।
मैं तुझसे तेरे बुरे कर्मों का मोल दिलवाऊँगा
जो तूने किये हैं।
तेरी सहायता को कोई भी
व्यक्ति आगे नहीं आयेगा।"
4 "मेरे लोग कहते हैं,
'परमेश्वर हम लोगों को बचाता है।
उसका नाम,
इस्राएल का पवित्र सर्वशक्तिमान है।'"
5 यहोवा कहता है, हे बाबुल, तू बैठ जा
और कुछ भी मत कह।
बाबुल की पुत्री, चली जा अन्धेरे में।
क्यों? क्योंकि अब तू और अधिक
'राज्यों की रानी' नहीं कहलायेगी।
6 "मैंने अपने लोगों पर क्रोध किया था।
ये लोग मेरे अपने थे,
किन्तु मैं क्रोधित था, इसलिए
मैंने उनको अपमानित किया।
मैंने उन्हें तुझको दे दिया,
और तूने उन्हें दण्ड दिया।
तूने उन पर कोई करुणा नहीं दर्शायी और
तूने उन बूढ़ों पर भी
बहुत कठिन काम का जुआ लाद दिया।
7 तू कहा करती थी,
'मैं अमर हूँ।
मैं सदा रानी रहूँगी।'
किन्तु तूने उन बुरी बातों पर ध्यान नहीं दिया
जिन्हें तूने उन लोगों के साथ किया था।
तूने कभी नहीं सोचा कि बाद में क्या होगा।
8 इसलिए अब, ओ 'मनोहर स्त्री,'
मेरी बात तू सुन ले!
तू निज को सुरक्षित जान
और अपने आप से कह।'
'केवल मैं ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हूँ।
मेरे समान कोई दूसरा बड़ा नहीं है।
मुझको कभी भी विधवा नहीं होना है।
मेरे सदैव बच्चे होते रहेंगे।'
9 ये दो बातें तेरे साथ में घटित होंगी:
प्रथम, तेरे बच्चे तुझसे छूट जायेंगे
और फिर तेरा पति भी तुझसे छूट जायेगा।
हाँ, ये बातें तेरे साथ अवश्य घटेंगी।
तेरे सभी जादू और शक्तिशाली टोने
तुझको नहीं बचा पायेंगे।
10 तू बुरे काम करती है, फिर भी
तू अपने को सुरक्षित समझती है।
तू कहा करती है कि तेरे बुरे काम को
कोई नहीं देखता।
तू बुरे काम करती है किन्तु तू सोचती है कि
तेरी बुद्धि और तेरा ज्ञान तुझको बचा लेंगे।
तू स्वयं को सोचती है कि
बस एक तू ही महत्त्वपूर्ण है।
तेरे जैसा और कोई भी दूसरा नहीं है।"
11 "किन्तु तुझ पर विपत्तियाँ आयेंगी।
तू नहीं जानती कि यह कब हो जायेगा,
किन्तु विनाश आ रहा है।
तू उन विपत्तियों को रोकने के लिये
कुछ भी नहीं कर पायेगी।
तेरा विनाश इतना शीघ्र होगा कि
तुझको पता तक भी न चलेगा कि
क्या कुछ तेरे साथ घट गया।
12 जादू और टोने को सीखने में तूने कठिन श्रम
करते हुए जीवन बिता दिया।

सो अब अपने जादू और टोने को चला।
सम्भव है, टोने-टोटके तुझको बचा ले।
सम्भव है, उनसे तू किसी को डरा दे।
13 तेरे पास बहुत से सलाहकार हैं।
क्या तू उनकी सलाहों से तंग आ चुकी है?
तो फिर उन लोगों को जो सितारे पढ़ते हैं,
बाहर भेज।
जो बता सकते हैं महीना कब शुरु होता है।
सो सम्भव है वे तुझको बता पाये कि
तुझ पर कब विपत्तियाँ पड़ेंगी।
14 किन्तु वे लोग तो स्वयं
अपने को भी बचा नहीं पायेंगे।
वे घास के तिनकों जैसे भक से जल जायेंगे।
वे इतने शीघ्र जलेंगे कि अंगार तक
कोई नहीं बचेगा जिसमें रोटी सेकी जा सके।
कोई आग तक नहीं बचेगी
जिसके पास बैठ कर वे खुद को गर्मा ले।
15 ऐसा ही हर वस्तु के साथ में घटेगा
जिनके लिये तूने कड़ी मेहनत की।
तेरे जीवन भर जिन से तेरा व्यापार रहा,
वे ही व्यक्ति तुझे त्याग जायेंगे।
हर कोई अपनी-अपनी राह चला जायेगा।
कोई भी व्यक्ति तुझको बचाने को नहीं बचेगा।"

परमेश्वर अपने जगत पर राज करता है

48 यहोवा कहता है,
"याकूब के परिवार, तू मेरी बात सुन।
तुम लोग अपने आप को 'इस्राएल'
कहा करते हो।
तुम यहूदा के घराने से वचन देने के लिये
यहोवा का नाम लेते हो।
तुम इस्राएल के परमेश्वर की प्रशंसा करते हो।
किन्तु जब तुम ये बातें करते हो तो सच्चे नहीं
होते हो और निष्ठावान नहीं रहते।
2 तुम लोग अपने को पवित्र
नगरी के नागरिक कहते हो।
तुम इस्राएल के परमेश्वर के भरोसे रहते हो।
उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।
3 मैंने तुम्हें बहुत पहले उन वस्तुओं के बारे में
तुम्हें बताया था जो आगे घटेंगी।
मैंने तुम्हें उस वस्तुओं के बारे में बताया था,
और फिर अचानक मैंने बातें घटा दीं।
4 मैंने इसलिए वह किया था
क्योंकि मुझको ज्ञात था कि
तुम बहुत जिद्दी हो।
मैंने जो कुछ भी बताया था उस पर विश्वास
करने से तुमने मना किया।
तुम बहुत जिद्दी थे,
जैसे लोहे की छड़ नहीं झुकती है।
यह बात ऐसी थी जैसे तुम्हारा
सिर काँसे का बना हुआ है।
5 इसलिए मैंने तुमको पहले ही बता दिया था,
उन सभी ऐसी बातों को जो घटने वाली हैं।
जब वे बातें घटी थी उससे बहुत पहले
मैंने तुम्हें वह बात दी थी।
मैंने ऐसा इसलिए किया था
ताकि तू कह न सके कि ये काम
हमारे देवताओं ने किये,
ये बातें हमारे देवताओं ने,
हमारी मूर्तियों ने घटायी हैं।"

इस्राएल को पवित्र करने के लिए परमेश्वर का ताड़ना

6 "तूने उन सभी बातों को जो हो चुकी हैं,
देखा और सुना है।
इसलिए तुझको ये समाचार
दूसरों को बताना चाहिए।
अब मैं तुझे नयी बातें बताना आरम्भ करता हूँ
जिनको तू अभी नहीं जानता है।
7 ये वे बातें नहीं हैं जो पहले घट चुकी है।
ये बातें ऐसी हैं जो अब शुरु हो रही हैं।
आज से पहले तूने ये बातें नहीं सुनी।
सो तू नहीं कह सकता, 'हम तो
इसे पहले से ही जानते हैं।'
8 किन्तु तूने कभी उस पर कान नहीं दिया
जो मैंने कहा।
तूने कुछ नहीं सीखा।
तूने मेरी कभी नहीं सुनी,

किन्तु मैंने तुझे उन बातों के बारे में बताया
क्योंकि मैं जानता न था कि
तू मेरे विरोध में होगा।
अरे! तू तो विद्रोही रहा जब से तू पैदा हुआ।

9 किन्तु मैं धीरज धरूँगा।
ऐसा मैं अपने लिये करूँगा।
मुझको क्रोध नहीं आया इसके लिये लोग
मेरा यश गायेंगे।
मैं अपने क्रोध पर काबू करूँगा कि
तुम्हारा नाश न करूँ।
तुम मेरी बाट जोहते हुए मेरा गुण गाओगे।

10 देख, मैं तुझे पवित्र करूँगा।
चाँदी को शुद्ध करने के लिये लोग
उसे आँच में डालते हैं!
किन्तु मैं तुझे विपत्ति की
भट्टी में डालकर शुद्ध करूँगा।

11 यह मैं स्वयं अपने लिये करूँगा!
तू मेरे साथ ऐसे नहीं बरतेगा,
जैसे मेरा महत्त्व न हो।
किसी मिथ्या देवता को
मैं अपनी प्रशंसा नहीं लेने दूँगा।

12 याकूब, तू मेरी सुन!
हे इस्राएल के लोगों,
मैंने तुम्हें अपने लोग बनने को बुलाया है।
तुम इसलिए मेरी सुनों!
मैं परमेश्वर हूँ,
मैं ही आरम्भ हूँ और
मैं ही अन्त हूँ।

13 मैंने स्वयं अपने हाथों से धरती की रचना की।
मेरे दाहिने हाथ ने आकाश को बनाया।
यदि मैं उन्हें पुकारुँ तो दोनों साथ-साथ
मेरे सामने आयेंगे।

14 "इसलिए तुम सभी जो आपस में इकट्ठे हुए हो
मेरी बात सुनों!
क्या किसी झूठे देव ने तुझसे ऐसा कहा है कि
आगे चल कर ऐसी बातें घटित होंगी? नहीं।"
यहोवा इस्राएल से जिसे,
उस ने चुना है, प्रेम करता है।
वह जैसा चाहेगा वैसा ही बाबुल
और कसदियों के साथ करेगा।

15 यहोवा कहता है कि मैंने तुझसे कहा था,
"मैं उसको बुलाऊँगा और मैं उसको लाऊँगा
और उसको सफल बनाऊँगा!

16 मेरे पास आ और मेरी सुन!
मैंने आरम्भ में साफ़-साफ बोला
ताकि लोग मुझे सुन ले
और मैं उस समय वहाँ पर था
जब बाबुल की नींव पड़ी।"

इस पर यशायाह ने कहा, "अब देखो, मेरे स्वामी यहोवा ने इन बातों को तुम्हें बताने के लिये मुझे और अपनी आत्मा को भेजा है। 17 यहोवा जो मुक्तिदाता है और इस्राएल का पवित्र है, कहता है,

मैं तेरा यहोवा परमेश्वर हूँ।
मैं तुझको सिखाता हूँ कि क्या हितकर है।
मैं तुझको राह पर लिये चलता हूँ
जैसे तुझे चलना चाहिए।

18 यदि तू मेरी मानता तो तुझे उतनी शान्ति मिल
जाती जितनी नदी भर करके बहती है।
तुझ पर उत्तम वस्तुएँ ऐसी छा जाती
जैसे समुद्र की तरंग हों।

19 यदि तू मेरी मानता तो तेरी सन्तानें
बहुत बहुत होतीं।
तेरी सन्तानें वैसे अनगिनत हो जाती
जैसे रेत के असंख्य कण होते हैं।
यदि तू मेरी मानता तो तू नष्ट नहीं होता।
तू भी मेरे साथ में बना रहता।"

20 हे मेरे लोगों, तुम बाबुल को छोड़ दो!
हे मेरे लोगों तुम कसदियों से भाग जाओ!
प्रसन्नता में भरकर तुम लोगों से
इस समाचार को कहो!
धरती पर दूर दूर इस समाचार को फैलाओ!
तुम लोगों को बता दो,
"यहोवा ने अपने दास याकूब को उबार लिया है!

21 यहोवा ने अपने लोगों को मरुस्थल में राह
दिखाई, और वे लोग कभी प्यासे नहीं रहे!
क्यों? क्योंकि उसने अपने लोगों के लिये
चट्टान फोड़कर पानी बहा दिया!

22 किन्तु परमेश्वर कहता है,
"दुष्टों को शांति नहीं है!"

अपने विशेष सेवक को परमेश्वर का बुलावा

49 हे दूर देशों के लोगों, मेरी बात सुनों
हे धरती के निवासियों,
तुम सभी मेरी बात सुनों!
मेरे जन्म से पहले ही यहोवा ने मुझे
अपनी सेवा के लिये बुलाया।
जब मैं अपनी माता के गर्भ में ही था,
यहोवा ने मेरा नाम रख दिया था।

2 यहोवा अपने बोलने के लिये
मेरा उपयोग करता है।
जैसे कोई सैनिक तेज तलवार को
काम में लाता है वैसे ही
वह मेरा उपयोग करता है
किन्तु वह अपने हाथ में छुपा कर
मेरी रक्षा करता है।
यहोवा मुझको किसी तेज तीर के
समान काम में लेता है
किन्तु वह अपने तीरों के तरकश में
मुझको छिपाता भी है।

3 यहोवा ने मुझे बताया है,
"इस्राएल, तू मेरा सेवक है।
मैं तेरे साथ में अद्भुत कार्य करुँगा।"

4 मैंने कहा,
"मैं तो बस व्यर्थ ही कड़ी मेहनत करता रहा।
मैं थक कर चूर हुआ।
मैं काम का कोई काम नहीं कर सका।
मैंने अपनी सब शक्ति लगा दी।
सचमुच, किन्तु मैं कोई काम
पूरा नहीं कर सका।
इसलिए यहोवा निश्चय करे कि
मेरे साथ क्या करना है।
परमेश्वर को मेरे प्रतिफल का
निर्णय करना चाहिए।

5 यहोवा ने मुझे मेरी माता के गर्भ में रचा था।
उसने मुझे बनाया कि मैं उसकी सेवा करुँ।
उसने मुझको बनाया ताकि मैं याकूब और
इस्राएल को उसके पास लौटाकर ले आऊँ।
यहोवा मुझको मान देगा।
मैं परमेश्वर से अपनी शक्ति को पाऊँगा।"
यह यहोवा ने कहा था।

6 "तू मेरे लिये मेरा अति महत्त्वपूर्ण दास है।
इस्राएल के लोग बन्दी बने हुए हैं।
उन्हें मेरे पास वापस लौटा लाया जायेगा
और तब याकूब के परिवार समूह
मेरे पास लौट कर आयेंगे।
किन्तु तेरे पास एक दूसरा काम है।
वह काम इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है!
मैं तुझको सब राष्ट्रों के लिये
एक प्रकाश बनाऊँगा।
तू धरती के सभी लोगों की रक्षा के लिये
मेरी राह बनेगा।"

7 इस्राएल का पवित्र यहोवा, इस्राएल की रक्षा
करता है और यहोवा कहता है,
"मेरा दास विनम्र है।
वह शासकों की सेवा करता है,
और लोग उससे घृणा करते हैं।
किन्तु राजा उसका दर्शन करेंगे
और उसके सम्मान में खड़े होंगे।
महान नेता भी उसके सामने झुकेंगे।"
ऐसा घटित होगा क्योंकि इस्राएल का वह
पवित्र यहोवा ऐसा चाहता है,
और यहोवा के भरोसे रहा जा सकता है।
वह वही है जिसने तुझको चुना।

8 यहोवा कहता है, "उचित समय आने पर
मैं तुम्हारी प्रार्थनाओं का उत्तर दूँगा।
मैं तुमको सहारा दूँगा। मुक्ति के दिनों में
मैं तुम्हारी रक्षा करुँगा और तुम इसका प्रमाण
होगे कि लोगों के साथ में मेरी वाचा है।
अब देश उजड़ चुका है, किन्तु तुम यह धरती
इसके स्वामियों को लौटवाओगे।

9 तुम बन्दियों से कहोगे,
'तुम अपने कारागार से बाहर निकल आओ!'
तुम उन लोगों से जो अन्धेरे में हैं,
कहोगे, 'अन्धेरे से बाहर आ जाओ।'
वे चलते हुए राह में भोजन कर पायेंगे।

वे वीरान पहाड़ों में भी भोजन पायेंगे।
10 लोग भूखे नहीं रहेंगे, लोग प्यासे नहीं रहेंगे।
गर्म सूर्य, गर्म हवा उनको दुःख नहीं देंगे।
क्यों? क्योंकि वही जो उन्हें चैन देता है,
(परमेश्वर) उनको राह दिखायेगा।
वही लोगों को पानी के झरनों के
पास–पास ले जायेगा।
11 मैं अपने लोगों के लिये एक राह बनाऊँगा।
पर्वत समतल हो जायेंगे
और दबी राहें ऊपर उठ आयेंगी।
12 देखो, दूर दूर देशों से लोग यहाँ आ रहे हैं।
उत्तर से लोग आ रहे हैं
और लोग पश्चिम से आ रहे हैं।
लोग मिस्र में स्थित असवान से आ रहे हैं।"
13 हे आकाशों, हे धरती,
तुम प्रसन्न हो जाओ!
हे पर्वतों, आनन्द से जयकारा बोलो!
क्यों? क्योंकि यहोवा अपने
लोगों को सुख देता है।
यहोवा अपने दीन हीन लोगों के लिये
बहुत दयालु है।

सिय्योन: त्यागी गई स्त्री

14 किन्तु अब सिय्योन ने कहा,
"यहोवा ने मुझको त्याग दिया।
मेरा स्वामी मुझको भूल गया।"
15 किन्तु यहोवा कहता है,
"क्या कोई स्त्री अपने ही बच्चों को
भूल सकती है? नहीं!
क्या कोई स्त्री उस बच्चे को जो उसकी ही
कोख से जन्मा है, भूल सकती है? नहीं!
सम्भव है कोई स्त्री अपनी सन्तान को भूल जाये।
परन्तु मैं (यहोवा) तुझको नहीं भूल सकता हूँ।
16 देखो जरा, मैंने अपनी हथेली पर
तेरा नाम खोद लिया है।
मैं सदा तेरे विषय में सोचा करता हूँ।
17 तेरी सन्तानें तेरे पास लौट आयेंगी।
जिन लोगों ने तुझको पराजित किया था,
वे ही व्यक्ति तुझको अकेला छोड़ जायेंगे।"

इस्राएलियों की वापसी

18 ऊपर दृष्टि करो, तुम चारों ओर देखो!
तेरी सन्तानें सब आपस में इकट्ठी होकर
तेरे पास आ रही हैं।
यहोवा का यह कहना है,
"अपने जीवन की शपथ लेकर
मैं तुम्हें ये वचन देता हूँ,
तेरी सन्तानें उन रत्नों जैसी होंगी
जिनको तू अपने कंठ में पहनता है।
तेरी सन्तानें वैसी ही होंगी जैसा वह कंठहार
होता है जिसे दुल्हिन पहनती है।
19 आज तू नष्ट है और आज तू पराजित है।
तेरी धरती बेकार है किन्तु कुछ ही दिनों बाद
तेरी धरती पर बहुत बहुत सारे लोग होंगे
और वे लोग जिन्होंने तुझे उजाड़ा था,
दूर बहुत दूर चले जायेंगे।
20 जो बच्चे तूने खो दिये, उनके लिये तुझे बहुत
दुःख हुआ किन्तु वही बच्चे तुझसे कहेंगे।
'यह जगह रहने को बहुत छोटी है!
हमें तू कोई विस्तृत स्थान दे!
21 फिर तू स्वयं अपने आप से कहेगा,
'इन सभी बच्चों को मेरे लिये किसने जन्माया?
यह तो बहुत अच्छा है।
मैं दुःखी था और अकेला था।
मैं हारा हुआ था।
मैं अपने लोगों से दूर था।
सो ये बच्चे मेरे लिये किसने पाले हैं?
देखो जरा, मैं अकेला छोड़ा गया।
ये इतने सब बच्चे कहाँ से आ गये?'"
22 मेरा स्वामी यहोवा कहता है,
"देखो, अपना हाथ उठाकर हाथ के इशारे से मैं
सारे ही देशों को बुलावे का संकेत देता हूँ।
मैं अपना झण्डा उठाऊँगा कि
सब लोग उसे देखें।
फिर वे तेरे बच्चों को तेरे पास लायेंगे।
वे लोग तेरे बच्चों को अपने कन्धे पर उठायेंगे
और वे उनको अपनी बाहों में उठा लेंगे।
23 राजा तेरे बच्चों के शिक्षक होंगे
और राजकन्याएँ उनका ध्यान रखेंगी।

वे राजा और उनकी कन्याएँ दोनों
तेरे सामने माथा नवायेंगे।
वे तेरे पाँवों भी धूल का चुम्बन करेंगे।
तभी तू जानेगा कि मैं यहोवा हूँ।
तभी तुझको समझ में आयेगा कि
हर ऐसा व्यक्ति जो मुझमें भरोसा रखता है,
निराश नहीं होगा।"

24 जब कोई शक्तिशाली योद्धा युद्ध में जीतता है
तो क्या कोई उसकी जीती हुई वस्तुओं को
उससे ले सकता है?
जब कोई विजेता सैनिक किसी बन्दी पर पहरा
देता है, तो क्या कोई पराजित
बन्दी बचकर भाग सकता है?

25 किन्तु यहोवा कहता है,
"उस बलवान सैनिक से बन्दियों को छुड़ा लिया
जायेगा और जीत की वस्तुएँ
उससे छीन ली जायेंगी।
यह भला क्यों कर होगा?
मैं तुम्हारे युद्धों को लड़ूँगा
और तुम्हारी सन्तानें बचाऊँगा।

26 ऐसे उन लोगों को जो तुम्हें कष्ट देते हैं
मैं ऐसा कर दूँगा कि वे आपस में
एक दूसरे के शरीरों को खायें।
उनका खून दाखमधु बन जायेगा
जिससे वे धुत्त होंगे।
तब हर कोई जानेगा कि मैं वही यहोवा हूँ
जो तुमको बचाता है।
सारे लोग जान जायेंगे कि
तुमको बचाने वाला याकूब का समर्थ है।"

इस्राएल को उसके पापों का दण्ड

50 यहोवा कहता है,
"हे इस्राएल के लोगों,
तुम कहा करते थे कि मैंने तुम्हारी माता
यरुशलेम को त्याग दिया।
किन्तु वह त्यागपत्र कहाँ है
जो प्रमाणित कर दे कि मैंने उसे त्यागा है।
हे मेरे बच्चों,
क्या मुझको किसी का कुछ देना है?
क्या अपना कोई कर्ज चुकाने के लिये
मैंने तुम्हें बेचा है? नहीं!
देखो जरा, तुम बिके थे इसलिए कि
तुमने बुरे काम किये थे।
इसलिए तुम्हारी माँ (यरुशलेम) दूर भेजी गई थी।

2 जब मैं घर आया था,
मैंने वहाँ किसी को नहीं पाया।
मैंने बार–बार पुकारा
किन्तु किसी ने उत्तर नहीं दिया।
क्या तुम सोचते हो कि तुमको
मैं नहीं बचा सकता हूँ?
मैं तुम्हारी विपत्तियों से तुम्हें बचाने की
शक्ति रखता हूँ।
देखो, यदि मैं समुद्र को सूखने को आदेश दूँ
तो वह सूख जायेगा।
मछलियाँ प्राण त्याग देंगी क्योंकि वहाँ जल न
होगा और उनकी देह सड़ जायेंगी।

3 मैं आकाशों को काला कर सकता हूँ।
आकाश वैसे ही काले हो जायेंगे
जैसे शोकवस्त्र होते हैं।"

परमेश्वर का सेवक परमेश्वर के भरोसे

4मेरे स्वामी यहोवा ने मुझे शिक्षा देने की योग्यता दी है। इसी से अब इन दुःखी लोगों को मैं सशक्त बना रहा हूँ। हर सुबह वह मुझे जगाता है और एक शिष्य के रुप में शिक्षा देता है। 5मेरा स्वामी यहोवा सीखने में मेरा सहायक है और मैं उसका विरोधी नहीं बना हूँ। मैं उसके पीछे चलना नहीं छोड़ूँगा। 6उन लोगों को मैं अपनी पिटाई करने दूँगा। मैं उन्हें अपनी दाढ़ी के बाल नोचने दूँगा। वे लोग जब मेरे प्रति अपशब्द कहेंगे और मुझ पर थूकेंगे तो मैं अपना मुँह नहीं मोड़ूँगा। 7मेरा स्वामी, यहोवा मेरी सहायता करेगा। इसलिये उनके अपशब्द मुझे दुःख नहीं पहुँचायेंगे। मैं सुदृढ़ रहूँगा। मैं जानता हूँ कि मुझे निराश नहीं होना पड़ेगा।

8यहोवा मेरे साथ है। वह दर्शाता है कि मैं निर्दोष हूँ। इसलिये कोई भी व्यक्ति मुझे अपराधी नहीं दिखा पायेगा। यदि कोई व्यक्ति मुझे अपराधी प्रमाणित करने का जतन करना चाहता है तो वह व्यक्ति मेरे पास आये। हम इसके लिये साथ साथ मुकद्दमा लड़ेंगे। 9किन्तु देख, मेरा स्वामी

यहोवा मेरी सहायता करता है, सो कोई भी व्यक्ति मुझे दोषी नहीं दिखा सकता। वे सभी लोग मूल्यहीन पुराने कपड़ों जैसे हो जायेंगे। कीड़े उन्हें चट कर जायेंगे।

[10]जो व्यक्ति यहोवा का आदर करता है उसे उसके सेवक की भी सुननी चाहिये। वह सेवक, आगे क्या होगा, इसे जाने बिना ही परमेश्वर में पूरा विश्वास रखते हुए अपना जीवन बिताता है। वह सचमुच यहोवा के नाम में विश्वास रखता है और वह सेवक अपने परमेश्वर के भरोसे रहता है।

[11]"देखो, तुम लोग अपने ही ढंग से जीना चाहते हो। अपनी अग्नि और अपनी मशालों को तुम स्वयं जलाते हो। तुम अपने ही ढंग से रहना चाहते । किन्तु तुम्हें दण्ड दिया जायेगा। तुम अपनी ही आग में गिरोगे और तुम्हारी अपनी ही मशालें तुम्हें जला डालेंगी। ऐसी घटना मैं घटवाऊँगा।"

इस्राएल को इब्राहीम के जैसा होना चाहिए

51 "तुममें से कुछ लोग उत्तम जीवन जीने का कठिन प्रयत्न करते हो। तुम सहायता पाने को यहोवा के निकट जाते हो। मेरी सुनो। तुम्हें अपने पिता इब्राहीम की ओर देखना चाहिये। इब्राहीम ही वह पत्थर की खदान है जिससे तुम्हें काटा गया है। [2]इब्राहीम तुम्हारा पिता है और तुम्हें उसी की ओर देखना चाहिये। तुम्हें सारा की ओर निहारना चाहिये क्योंकि सारा ही वह स्त्री है जिसने तुम्हें जन्म दिया है। इब्राहीम को जब मैंने बुलाया था, वह अकेला था। तब मैंने उसे वरदान दिया था और उसने एक बड़े परिवार की शुरुआत की थी। उससे अनगिनत लोगों ने जन्म लिया।"

[3]सिय्योन पर्वत को यहोवा वैसे ही आशीर्वाद देगा। यहोवा को यरूशलेम और उसके खंडहरों के लिये खेद होगा और वह उस नगर के लिये कोई बहुत बड़ा काम करेगा। यहोवा रेगिस्तान को बदल देगा। वह रेगिस्तान अदन के उपवन के जैसे एक उपवन में बदल जायेगा। वह उजाड़ स्थान यहोवा के बगीचे के जैसा हो जाएगा। लोग अत्याधिक प्रसन्न होंगे। लोग वहाँ अपना आनन्द प्रकट करेंगे। वे लोग धन्यवाद और विजय के गीत गायेंगे।

4 "हे मेरे लोगों, तुम मेरी सुनो!
मेरी व्यवस्थाएँ प्रकाश के समान होंगी जो
लोगों को दिखायेंगी कि कैसे जिया जाता है।

5 मैं शीघ्र ही प्रकट करुँगा कि मैं न्यायपूर्ण हूँ।
मैं शीघ्र ही तुम्हारी रक्षा करुँगा।
मैं अपनी शक्ति को काम में लाऊँगा और
मैं सभी राष्ट्रों का न्याय करुँगा।
सभी दूर-दूर के देश मेरी बाट जोह रहे हैं।
उनको मेरी शक्ति की प्रतीक्षा है
जो उनको बचायेगी।

6 ऊपर आकाशों को देखो।
अपने चारों ओर फैली हुई धरती को देखो,
आकाश ऐसे लोप हो जायेगा
जैसे धुएँ का एक बादल खो जाता है
और धरती ऐसे ही बेकार हो जायेगी
जैसे पुराने वस्त्र मूल्यहीन होते हैं।
धरती के वासी अपने प्राण त्यागेंगे
किन्तु मेरी मुक्ति सदा ही बनी रहेगी।
मेरी उत्तमता कभी नहीं मिटेगी।

7 अरे ओ उत्तमता को समझने वाले लोगों,
तुम मेरी बात सुनो।
अरे ओ मेरी शिक्षाओं पर चलने वालो,
तुम वे बातें सुनों जिनको मैं बताता हूँ।
दुष्ट लोगों से तुम मत डरो।
उन बुरी बातों से जिनको वे तुमसे कहते हैं,
तुम भयभीत मत हो।

8 क्यों? क्योंकि वे पुराने कपड़ों के समान होंगे
और उनको कीड़े खा जायेंगे।
वे ऊन के जैसे होंगे और उन्हें कीड़े
चाट जायेंगे, किन्तु मेरा खरापन सदैव ही
बना रहेगा और मेरी मुक्ति निरन्तर बनी रहेगी।"

परमेश्वर का सामर्थ्य उसके लोगों का रक्षा करता है

9 यहोवा की भुजा (शक्ति) जाग-जाग।
अपनी शक्ति को सज्जित कर!
तू अपनी शक्ति का प्रयोग कर।
तू वैसे जाग जा जैसे तू बहुत बहुत
पहले जागा था।
तू वही शक्ति है जिसने रहाब के
छक्के छुड़ाये थे।
तूने भयानक मगरमच्छ को हराया था।

10 तूने सागर को सुखाया!
तूने गहरे समुद्र को जल हीन बना दिया।
तूने सागर के गहरे सतह को एक राह में
बदल दिया और
तेरे लोग उस राह से पार हुए और बच गये थे।
11 यहोवा अपने लोगों की रक्षा करेगा।
वे सिय्योन पर्वत की ओर
आनन्द मनाते हुए लौट आयेंगे।
ये सभी आनन्द मग्न होंगे।
सारे ही दु:ख उनसे दूर कहीं भागेंगे।
12 यहोवा कहता है,
"मैं वही हूँ जो तुमको चैन दिया करता है।
इसलिए तुमको दूसरे लोगों से
क्यों डरना चाहिए?
वे तो बस मनुष्य है जो जिया करते हैं
और मर जाते हैं।
वे बस मानवमात्र हैं।
वे वैसे मर जाते हैं जैसे घास मर जाती है।"
13 यहोवा ने तुम्हें रचा है।
उसने निज शक्ति से इस धरती को बनाया है!
उसने निज शक्ति से धरती पर
आकाश तान दिया किन्तु तुम उसको और
उसकी शक्ति को भूल गये।
इसलिए तुम सदा ही उन क्रोधित मनुष्यों से
भयभीत रहते हो जो तुम को
हानि पहुँचाते हैं।
तुम्हारा नाश करने को
उन लोगों ने योजना बनाई
किन्तु आज वे कहाँ हैं? (वे सभी चले गये!)
14 लोग जो बन्दी हैं, शीघ्र ही मुक्त हो जायेंगे।
उन लोगों की मृत्यु काल कोठरी में नहीं होगी
और न ही वे कारागार में सड़ते रहेंगे।
उन लोगों के पास खाने को पर्याप्त होगा।
15 "मैं ही यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ।
मैं ही सागर को झकोरता हूँ और
मैं ही लहरें उठाता हूँ।"
(उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।)

16"मेरे सेवक, मैं तुझे वे शब्द दूँगा जिन्हें मैं तुझसे कहलवाना चाहता हूँ। मैं तुझे अपने हाथों से ढक कर तेरी रक्षा करुँगा। मैं तुझसे नया आकाश और नयी धरती बनवाऊँगा। मैं तुम्हारे द्वारा सिय्योन (इस्राएल) को यह कहलवाने के लिए कि 'तुम मेरे लोग हों,' तेरा उपयोग करुगा।"

परमेश्वर ने इस्राएल को दण्ड दिया।

17 जाग! जाग!
यरूशलेम, जाग उठ!
यहोवा तुझसे बहुत ही कुपित था।
इसलिए तुझको दण्ड दिया गया था।
वह दण्ड ऐसा था जैसा जहर का
कोई प्याला हो
और वह तुझको पीना पड़े
और उसे तूने पी लिया।

18यरूशलेम में बहुत से लोग हुआ करते थे किन्तु उनमें से कोई भी व्यक्ति उसकी अगुवाई नहीं कर सका। उसने पाल–पोस कर जिन बच्चों को बड़ा किया था, उनमें से कोई भी उसे राह नहीं दिखा सका। 19दो जोड़े विपत्ति यरुशलेम पर टूट पड़ी हैं, लूटपाट और अनाज की परेशानी तथा भयानक भूख और हत्याएँ।

जब तू विपत्ति में पड़ी थी, किसी ने भी तुझे सहारा नहीं दिया, किसी ने भी तुझ पर तरस नहीं खाया। 20तेरे लोग दुर्बल हो गये। वे वहाँ धरती पर गिर पड़े हैं और वहीं पड़े रहेंगे। वे लोग वहाँ हर गली के नुक्कड़ पर पड़े हैं। वे लोग ऐसे हैं जैसे किसी जाल में फंसा हिरण हो। उन लोगों पर यहोवा के कोप की मार तब तक पड़ती रही, जब तक वे ऐसे न हो गये कि और दण्ड झेल ही न सकें। परमेश्वर ने जब कहा कि उन्हें और दण्ड दिया जायेगा तो वे बहुत कमज़ोर हो गये।

21हे बेचारे यरूशलेम, तू मेरी सुन। तू किसी धुत्त व्यक्ति के समान दुर्बल है किन्तु तू दाखमधु पी कर धुत्त नहीं हुआ है, बल्कि तू तो ज़हर के उस प्याले को पीकर ऐसा दुर्बल हो गया है।

22तुम्हारा परमेश्वर और स्वामी वह यहोवा अपने लोगों के लिये युद्ध करेगा। वह तुमसे कहता है, "देखो! मैं 'ज़हर के इस प्याले' (दण्ड) को तुमसे दूर हटा रहा हूँ। मैं अपने क्रोध को तुम पर से हटा रहा हूँ। अब मेरे क्रोध से तुम्हें और अधिक दण्ड नहीं भोगना होगा। 23अब मैं अपने क्रोध की मार उन लोगों पर डालूँगा जो तुम्हें दु:ख

पहुँचाते हैं। वे लोग तुम्हें मार डालना चाहते थे। उन लोगों ने तुमसे कहा था, 'हमारे आगे झुक जाओ। हम तुम्हें कुचल डालेंगे!' अपने सामने झुकाने के लिये उन्होंने तुम्हें विवश किया। फिर उन लोगों ने तुम्हारी पीठ को ऐसा बना डाला जैसे धूल–मिट्टी हो ताकि वे तुम्हें रौंद सकें। उनके लिए चलने के वास्ते तुम किसी राह के जैसे हो गये थे।"

इस्राएल का उद्धार होगा

52 जाग उठो! जाग उठो हे सिय्योन!
अपने वस्त्र को धारण करो!
तुम अपनी शक्ति सम्भालो!
हे पवित्र यरूशलेम, तुम खड़े हो जाओ!
ऐसे वे लोग जिनको परमेश्वर का अनुसरण
करना स्वीकार्य नहीं हैं
और जो स्वच्छ नहीं हैं,
तुझमें फिर प्रवेश नहीं कर पायेंगे।

2 तू धूल झाड़ दे!
तू अपने सुन्दर वस्त्र धारण कर!
हे यरूशलेम, हे सिय्योन की पुत्री,
तू एक बन्दिनी थी किन्तु अब तू स्वयं को
अपनी गर्दन में बन्धी जंजीरों से मुक्त कर!

3 यहोवा का यह कहना है,
"तुझे धन के बदले में नहीं बेचा गया था।
इसलिए धन के बिना ही
तुझे बचा लिया जायेगा।"

4मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मेरे लोग बस जाने के लिए पहले मिस्र में गये थे, और फिर वे दास बन गये। बाद में अश्शूर ने उन्हें बेकार में ही दास बना लिया था। 5अब देखो, यह क्या हो गया है! अब किसी दूसरे राष्ट्र ने मेरे लोगों को ले लिया है। मेरे लोगों को ले जाने के लिए इस देश ने कोई भुगतान नहीं किया था। यह देश मेरे लोगों पर शासन करता है और उनकी हँसी उड़ाता है। वहाँ के लोग सदा ही मेरे प्रति बुरी बातें कहा करते हैं।"

6यहोवा कहता है, "ऐसा इसलिये हुआ था कि मेरे लोग मेरे बारे में जानें। मेरे लोगों को पता चल जायेगा कि मैं कौन हूँ? मेरे लोग मेरा नाम जान जायेंगे और उन्हें यह भी पता चल जायेगा कि वह मैं ही हूँ जो उनसे बोल रहा हूँ।"

7सुसमाचार के साथ पहाड़ों के ऊपर से आते हुए सन्देशवाहक को देखना निश्चय ही एक अद्भुत बात है। किसी सन्देशवाहक को यह घोषणा करते हुए सुनना कितना अदभुत है: "वहाँ शांति का निवास है, हम बचा लिये गये हैं! तुम्हारा परमेश्वर राजा है!"

8 नगर के रखवाले जयजयकार करने लगे हैं।
वे आपस में मिलकर आनन्द मना रहे हैं!
क्यों? क्योंकि उनमें से हर एक यहोवा को
सिय्योन को लौटकर आते हुए देख रहा है।

9 यरूशलेम, तेरे वे भवन जो बर्बाद हो चुके हैं
फिर से प्रसन्न हो जायेंगे।
तुम सभी आपस में मिल कर आनन्द मनाओगे।
क्यों? क्योंकि यहोवा यरूशलेम पर
दयालू हो जायेगा।
यहोवा अपने लोगों का उद्धार करेगा।

10 यहोवा सभी राष्ट्रों के ऊपर अपनी पवित्र शक्ति
दर्शाएगा और सभी वे देश जो दूर–दूर बसे हैं,
देखेंगे कि परमेश्वर
अपने लोगों की रक्षा कैसे करता है।

11 तुम लोगों को चाहिए कि बाबुल छोड़ जाओ!
वह स्थान छोड़ दो!
हे लोगों, उन वस्तुओं को ले चलने वाले
जो उपासना के काम आती हैं,
अपने आप को पवित्र करो।
ऐसी कोई भी वस्तु जो पवित्र नहीं है,
उसको मत छुओ।

12 तुम बाबुल छोड़ोगे किन्तु जल्दी में छोड़ने का
तुम पर कोई दबाव नहीं होगा।
तुम पर कहीं दूर भाग जाने का
कोई दबाव नहीं होगा।
तुम चल कर बाहर जाओगे
और यहोवा तुम्हारे साथ साथ चलेगा।
तुम्हारी अगुवाई यहोवा ही करेगा
और तुम्हारी रक्षा के लिये
इस्राएल का परमेश्वर पीछे–पीछे भी होगा।

परमेश्वर का कष्ट सहता सेवक

13"मेरे सेवक की ओर देखो। यह बहुत सफल होगा। यह बहुत महत्त्वपूर्ण होगा। आगे चल कर

लोग उसे आदर देंगे और उसका सम्मान करेंगे।" [14]"किन्तु बहुत से लोगों ने जब मेरे सेवक को देखा तो वे भौंचक्के रह गये। मेरा सेवक इतनी बुरी तरह से सताया हुआ था कि वे उसे एक मनुष्य के रुप में बड़ी कठिनता से पहचान पाये। [15]किन्तु और भी बड़ी संख्या में लोग उसे देख कर चकित होंगे। राजा उसे देखकर आश्चर्य में पड़ जायेंगे और एक शब्द भी नहीं बोल पायेंगे। मेरे सेवक के बारे में उन लोगों ने वह कहानी बस सुनी ही नहीं है, जो कुछ हुआ था, बल्कि उन्होंने तो उसे देखा था। उन लोगों ने उस कहानी को सुना भर नहीं था, बल्कि उसे समझा था।"

53 हमने जो बातें बतायी थी; उनका सचमुच किसने विश्वास किया? यहोवा के दण्ड को सचमुच किसने स्वीकारा?

[2]यहोवा के सामने एक छोटे पौधे की तरह उसकी बढ़वार हुई। वह एक ऐसी जड़ के समान था जो सूखी धरती में फूट रही थी। वह कोई विशेष, नहीं दिखाई देता था। न ही उसकी कोई विशेष महिमा थी। यदि हम उसको देखते तो हमें उसमें कोई ऐसी विशेष बात नहीं दिखाई देती, जिससे हम उसको चाह सकते। [3]उस से घृणा की गई थी और उसके मित्रों ने उसे छोड़ दिया था। वह एक ऐसा व्यक्ति था जो पीड़ा को जानता था। वह बीमारी को बहुत अच्छी तरह पहचानता था। लोग उसे इतना भी आदर नहीं देते थे कि उसे देख तो लें। हम तो उस पर ध्यान तक नहीं देते थे।

[4]किन्तु उसने हमारे पाप अपने ऊपर ले लिए। उसने हमारी पीड़ा को हमसे ले लिया और हम यही सोचते रहे कि परमेश्वर उसे दण्ड दे रहा है। हमने सोचा परमेश्वर उस पर उसके कर्मो के लिये मार लगा रहा है। [5]किन्तु वह तो उन बुरे कामों के लिये बेधा जा रहा था, जो हमने किये थे। वह हमारे अपराधों के लिए कुचला जा रहा था। जो कर्ज़ हमें चुकाना था, यानी हमारा दण्ड था, उसे वह चुका रहा था। उसकी यातनाओं के बदले में हम चंगे (क्षमा) किये गये थे। [6]किन्तु उसके इतना करने के बाद भी हम सब भेड़ों की तरह इधर–उधर भटक गये। हममें से हर एक अपनी–अपनी राह चला गया। यहोवा द्वारा हमें हमारे अपराधों से मुक्त कर दिये जाने के बाद और हमारे अपराध को अपने सेवक से जोड़ देने पर भी हमने ऐसा किया।

[7]उसे सताया गया और दण्डित किया गया। किन्तु उसने उसके विरोध में अपना मुँह नहीं खोला। वह वध के लिये ले जायी जाती हुई भेड़ के समान चुप रहा। वह उस मेमने के समान चुप रहा जिसका ऊन उतारा जा रहा हो। अपना बचाव करने के लिये उसने कभी अपना मुँह नहीं खोला। [8]लोगों ने उस पर बल प्रयोग किया और उसे ले गये। उसके साथ खेरपन से न्याय नहीं किया गया। उसके भावी परिवार के प्रति कोई कुछ नहीं कह सकता क्योंकि सजीव लोगों की धरती से उसे उठा लिया गया। मेरे लोगों के पापों का भुगतान करने के लिये उसे दण्ड दिया गया था।

[9]उसकी मृत्यु हो गयी और दुष्ट लोगों के साथ उसे गाड़ा गया। धनवान लोगों के बीच उसे दफ़नाया गया। उसने कभी कोई हिंसा नहीं की। उसने कभी झूठ नहीं बोला किन्तु फिर भी उसके साथ ऐसी बातें घटीं।

[10]यहोवा ने उसे कुचल डालने का निश्चय किया। यहोवा ने निश्चय किया कि वह यातनाएँ झेले। सो सेवक ने अपना प्राण त्यागने को खुद को सौंप दिया। किन्तु वह एक नया जीवन अनन्त–अनन्त काल तक के लिये पायेगा। वह अपने लोगों को देखेगा। यहोवा उससे जो करना चाहता है, वह उन बातों को पूरा करेगा।

[11]वह अपनी आत्मा में बहुत सी पीड़ाएँ झेलेगा किन्तु वह घटने वाली अच्छी बातों को देखेगा। वह जिन बातों का ज्ञान प्राप्त करता है, उनसे संतुष्ट होगा। मेरा वह उत्तम सेवक बहुत से लोगों को उनके अपराधों से छुटकारा दिलाएगा। वह उनके पापों को अपने सिर ले लेगा। [12]इसलिए मैं उसे बहुतों के साथ पुरस्कार का सहभागी बनाऊँगा। वह इस पुरस्कार को विजेताओं के साथ ग्रहण करेगा। क्यों? क्योंकि उसने अपना जीवन दूसरों के लिए दे दिया।

उसने अपने आपको अपराधियों के बीच गिना जाने दिया। जबकि उसने वास्तव में बहुतेरों के पापों को दूर किया और अब वह पापियों के लिए प्रार्थना करता है।

परमेश्वर अपने लोगों को वापस लाता है

54 हे स्त्री, तू प्रसन्न से हो जा!
तूने बच्चों को जन्म नहीं दिया
किन्तु फिर भी तुझे अति प्रसन्न होना है।
यहोवा ने कहा, "जो स्त्री अकेली है,

उसकी बहुत सन्तानें होंगी
निस्बत उस स्त्री के जिस के पास
उसका पति है।"

2 अपने तम्बू विस्तृत कर, अपने द्वार पूरे खोल।
अपने तम्बू को बढ़ने से मत रोक।
अपने रस्सियाँ बढ़ा और खूंटे मजबूत कर।

3 क्यों? क्योंकि तू अपनी वंश-बेल
दायें और बायें फैलायेगी।
तेरी सन्तानें अनेकानेक राष्ट्रों की
धरती को ले लेंगी और वे सन्तानें
उन नगरों में फिर बसेंगी जो बर्बाद हुए थे।

4 तू भयभीत मत हो, तू लज्जित नहीं होगी।
अपना मन मत हार क्योंकि
तुझे अपमानित नहीं होना होगा।
जब तू जवान थी, तू लज्जित हुई थी
किन्तु उस लज्जा को अब तू भूलेगी।
अब तुझको वो लाज नहीं याद रखनी हैं
तूने जिसे उस काल में भोगा था
जब तूने अपना पति खोया था।

5 क्यों? क्योंकि तेरा पति वही था
जिसने तुझको रचा था।
उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।
वही इस्राएल की रक्षा करता है,
वही इस्राएल का पवित्र है और वही समूची
धरती का परमेश्वर कहलाता है!

6 तू एक ऐसी स्त्री के जैसी थी जिसको उसके ही
पति ने त्याग दिया था।
तेरा मन बहुत भारी था किन्तु तुझे यहोवा ने
अपना बनाने के लिये बुला लिया।
तू उस स्त्री के समान है जिसका बचपन में ही
ब्याह हुआ और
जिसे उसके पति ने त्याग दिया है।
किन्तु परमेश्वर ने तुम्हें अपना
बनाने के लिये बुला लिया है।

7 तेरा परमेश्वर कहता है,
"मैंने तुझे थोड़े समय के लिये त्यागा था।
किन्तु अब मैं तुझे फिर से अपने पास आऊँगा
और अपनी महा करुणा तुझ पर दर्शाऊँगा।

8 मैं बहुत कुपित हुआ और थोड़े से समय के
लिये तुझसे छुप गया किन्तु अपनी
महाकरुणा से मैं तुझको सदा चैन दूँगा।"
तेरे उद्धारकर्ता यहोवा ने यह कहा है।

परमेश्वर अपने लोगों से सदा प्रेम करता है

9 परमेश्वर कहता है,
"यह ठीक वैसा ही है जैसे नूह के काल में मैंने
बाढ़ के द्वारा दुनियाँ को दण्ड दिया था।
मैंने नूह को वरदान दिया कि फिर से
मैं दुनियाँ पर बाढ़ नहीं लाऊँगा।
उसी तरह तुझको, मैं वह वचन देता हूँ,
मैं तुझसे कुपित नहीं होऊँगा और तुझसे
फिर कठोर वचन नहीं बोलूँगा।"

10 यहोवा कहता है,
"चाहे पर्वत लुप्त हो जाये और
ये पहाड़ियाँ रेत में बदल जायें किन्तु मेरी
करुणा तुझे कभी भी नहीं त्यागेगी।
मैं तुझसे मेल करुँगा और उस मेल का
कभी अन्त न होगा।"
यहोवा तुझ पर करुणा दिखाता है और उस
यहोवा ने ही ये बातें बतायी हैं।

11 "हे नगरी, हे दुखियारी!
तुझको तुफानों ने सताया है और किसी ने
तुझको चैन नहीं दिया है।
मैं तेरा मूल्यवान पत्थरों से
फिर से निर्माण करुँगा।
मैं तेरी नींव फिरोजें और नीलम से धरुँगा।

12 मैं तेरी दीवारें चुनने में मणिक को लगाऊँगा।
तेरे द्वारों पर मैं दमकते हुए रत्नों को जड़ूँगा।
तेरी सभी दीवारें मैं मूल्यवान पत्थरों से उठाऊँगा।

13 तेरी सन्तानें यहोवा द्वारा शिक्षित होंगी।
तेरी सन्तानों की सम्पन्नता महान होगी।

14 मैं तेरा निर्माण खरेपन से करुँगा ताकि तू दमन
और अन्याय से दूर रहे।
फिर कुछ नहीं होगा जिससे तू डरेगी।
तुझे हानि पहुँचाने कोई भी नहीं आयेगा।

15 मेरी कोई भी सेना तुझसे कभी युद्ध नहीं करेगी
और यदि कोई सेना तुझ पर चढ़ बैठने का

प्रयत्न करे तो तू उस सेना को
पराजित कर देगा।

[16]“देखो, मैंने लुहार को बनाया है। वह लोहे को तपाने के लिए धौंकनी धौंकता है। फिर वह तपे लोहे से जैसे चाहता है, वैसे औजार बना लेता है। उसी प्रकार मैंने ‘विनाशकर्त्ता’ को बनाया है जो वस्तुओं को नष्ट करता है।

[17]“तुझे हराने के लिए लोग हथियार बनायेंगे किन्तु वे हथियार तुझे कभी हरा नहीं पायेंगे। कुछ लोग तेरे विरोध में बोलेंगे। किन्तु हर ऐसे व्यक्ति को बुरा प्रमाणित किया जायेगा जो तेरे विरोध में बोलेगा।”

यहोवा कहता है, “यहोवा के सेवकों को क्या मिलता है? उन्हें न्यायिक विजय मिलती है। यह उन्हें मुझसे मिलती हैं।”

परमेश्वर ऐसा भोजन देता है जिससे सच्ची तृप्ति मिलती है

55 “हे प्यासे लोगों,
जल के पास आओ।
यदि तुम्हारे पास धन हीं है
तो इसकी चिन्ता मत करो।
आओ, खाना लो और खाओ।
आओ, भोजन लो।
तुम्हें इसकी कीमत देने की आवश्यकता नहीं है।
बिना किसी कीमत के दूध और दाखमधु लो।
2 व्यर्थ ही अपना धन ऐसी किसी वस्तु पर क्यों
बर्बाद करते हो जो सच्चा भोजन नहीं है?
ऐसी किसी वस्तु के लिये क्यों श्रम करते हो
जो सचमुच में तुम्हें तृप्त नहीं करती?
मेरी बात ध्यान से सुनो।
तुम सच्चा भोजन पाओगे।
तुम उस भोजन का आनन्द लोगे।
जिससे तुम्हारा मन तृप्त हो जायेगा।
3 जो कुछ मैं कहता हूँ, ध्यान से सुनों।
मुझ पर ध्यान दो कि तुम्हारा प्राण सजीव हो।
तुम मेरे पास आओ और मैं तुम्हारे साथ एक
वाचा करुँगा जो सदा–सदा के
लिये बना रहेगा।
यह वाचा वैसी ही होगी जैसी वाचा
दाऊद के संग मैंने की थी।
मैंने दाऊद को वचन दिया था कि
मैं उस पर सदा करुणा करुँगा
और तुम उस वाचा के भरोसे रह सकते हो।
4 मैंने अपनी उस शक्ति का दाऊद को साक्षी
बनाया था जो सभी राष्ट्रों के लिये थी।
मैंने दाऊद का बहुत देशों का प्रशासक
और उनका सेनापति बनाया था।”
5 अनेक अज्ञात देशों में अनेक अनजानी
जातियाँ हैं।
तू उन सभी जातियों को बुलायेगा,
जो जातियाँ तुझ से अपरिचित हैं
किन्तु वे भागकर तेरे पास आयेंगी।
ऐसा घटेगा क्योंकि तेरा परमेश्वर
यहोवा ऐसा ही चाहता है।
ऐसा घटेगा क्योंकि वह इस्राएल का पवित्र
तुझको मान देता है।
6 सो तुम यहोवा को खोजो।
कहीं बहुत देर न हो जाये।
अब तुम उसको पुकार लो जब तक
वह तुम्हारे पास है।
7 हे पापियों!
अपने पापपूर्ण जीवन को त्यागो।
तुमको चाहिये कि
तुम बुरी बातें सोचना त्याग दो।
तुमको चाहिये कि तुम यहोवा के
पास लौट आओ।
जब तुम ऐसा करोगे तो यहोवा तुम्हें सुख देगा।
उन सभी को चाहिये कि
वे यहोवा की शरण में आयें
क्योंकि परमेश्वर हमें क्षमा करता है।

लोग परमेश्वर को नहीं समझ पायेंगे

8 यहोवा कहता है,
“तुम्हारे विचार वैसे नहीं, जैसे मेरे हैं।
तुम्हारी राहें वैसी नहीं जैसी मेरी राहें हैं।
9 जैसे धरती से ऊँचे स्वर्ग हैं
वैसे ही तुम्हारी राहों से मेरी राहें ऊँची हैं
और मेरे विचार तुम्हारे विचारों से ऊँचे हैं।”

ये बातें स्वयं यहोवा ने ही कहीं हैं।

10 "आकाश से वर्षा और हिम गिरा करते हैं और
वे फिर वहीं नहीं लौट जाते जब तक
वे धरती को नहीं छू लेते हैं
और धरती को गीला नहीं कर देते हैं।
फिर धरती पौधों को अंकुरित करती है
और उनको बढ़ाती है और वे पौधे
किसानों के लिये बीज को उपजाते हैं
और लोग उन बीजों से खाने के
लिये रोटियाँ बनाते हैं।

11 ऐसे ही मेरे मुख में से मेरे शब्द निकलते हैं
और जब तक घटनाओं को घटा नहीं लेते,
वे वापस नहीं आते हैं।
मेरे शब्द ऐसी घटनाओं को घटाते हैं
जिन्हें मैं घटवाना चाहता हूँ।
मेरे शब्द वे सभी बातें पूरी करा लेते हैं
जिनको करवाने को मैं उनको भेजता हूँ।

12 जब तुम्हें आनन्द से भरकर शांति
और एकता के साथ में उस धरती से
छुड़ाकर ले जाया जा रहा होगा
जिसमें तुम बन्दी थे, तो तुम्हारे सामने खुशी में
पहाड़ फट पड़ेंगे और थिरकने लगेंगे।
पहाड़ियाँ नृत्य में फूट पड़ेंगी।
तुम्हारे सामने जगंल के सभी पेड़
ऐसे हिलने लगेंगे जैसे तालियाँ पीट रहे हो।

13 जहाँ कंटीली झाड़ियाँ उगा करती हैं
वहाँ देवदार के विशाल वृक्ष उगेंगे।
जहाँ खरपतवार उगा करते थे,
वहाँ हिना के पेड़ उगेंगे।
ये बातें उस यहोवा को प्रसिद्ध करेंगी।
ये बातें प्रमाणित करेंगी कि यहोवा शक्तिपूर्ण है।
यह प्रमाण कभी नष्ट नहीं होगा।"

सभी जातियाँ यहोवा का अनुसरण करेंगी

56 यहोवा ने यें बातें कही थीं, "सब लोगों के साथ वही काम करो जो न्यायपूर्ण हों! क्यों? क्योंकि मेरा उद्धार शीघ्र ही तुम्हारे पास आने को है। सारे संसार में मेरा छुटकारा शीघ्र ही प्रकट होगा।"

[2]ऐसा व्यक्ति जो सब्त के दिन–सम्बन्धी परमेश्वर के नियम का पालन करता है, धन्य होगा और वह व्यक्ति जो बुरा नहीं करेगा, प्रसन्न रहेगा। [3]कुछ ऐसे लोग जो यहूदी नहीं हैं, अपने को यहोवा से जोड़ेंगे। ऐसे व्यक्तियों को यह नहीं कहना चाहिये: "यहोवा अपने लोगों में मुझे स्वीकार नहीं करेगा।" किसी हिजड़े को यह नहीं कहना चाहिये: "मैं लकड़ी का एक सूखा टुकड़ा हूँ। मैं किसी बच्चे को जन्म नहीं दे सकता।"

[4-5]इन हिजड़ों को एसी बातें नहीं कहनी चाहिये क्योंकि यहोवा ने कहा है "इनमें से कुछ हिजड़े सब्त के नियमों का पालन करते हैं और जो मैं चाहता हूँ, वे वैसा ही करना चाहते हैं। वे सच्चे मन से मेरी वाचा का पालन करते हैं। इसलिये मैं अपने मन्दिर में उनके लिए यादगार का एक पत्थर लगाऊँगा। मेरे नगर में उनका नाम याद किया जायेगा। हाँ! मैं उन्हें पुत्र–पुत्रियों से भी कुछ अच्छा दूँगा। उन हिजड़ों को मैं एक नाम दूँगा जो सदा–सदा बना रहेगा। मेरे लोगों से वे काट कर अलग नहीं किये जायेंगे।"

[6]कुछ ऐसे लोग जो यहूदी नहीं हैं, अपने आपको यहोवा से जोड़ेंगे। वे ऐसा इसलिये करेंगे कि यहोवा की सेवा और यहोवा के नाम को प्रेम कर पायें। यहोवा के सेवक बनने के लिये वे स्वयं को उससे जोड़ लेंगे। वे सब्त के दिन को उपासना के एक विशेष दिन के रुप में माना करेंगे और वे मेरी वाचा (विधान) का गम्भीरता से पालन करेंगे।

[7]यहोवा कहता है, "मैं उन लोगों को अपने पवित्र पर्वत पर लाऊँगा। अपने प्रार्थना भवन में मैं उन्हें आनन्द से भर दूँगा। वे जो भेंट और बलियाँ मुझे अर्पित करेंगे, मैं उनसे प्रसन्न होऊँगा। क्यों? क्योंकि मेरा मन्दिर सभी जातियों का प्रार्थना का गृह कहलायेगा।" [8]परमेश्वर ने इस्राएल के देश निकाला दिये इस्राएलियों को परस्पर इकट्ठा किया। मेरा स्वामी यहोवा जिसने यह किया, कहता है, "मैंने जिन लोगों को एक साथ इकट्ठा किया, उन लोगों के समूह में दूसरे लोगों को भी इकट्ठा करुँगा।

परमेश्वर का अपनी सेवा के लिये सबको बुलावा

9 हे वन के पशुओं!
तुम सभी खाने पर आओ।

10 ये धर्म के रखवाले (नबी) सभी नेत्रहीन हैं।

उनको पता नहीं कि वे क्या कर रहे हैं।
वे उस गूँगे कुत्ते के समान हैं
जो नहीं जानता कि कैसे भौंका जाता है?
वे धरती पर लोटते हैं और सो जाते हैं।
हाय! उनको नींद प्यारी है।

11 वे लोग ऐसे हैं जैसे भूखें कुत्ते हों।
जिनको कभी भी तृप्ति नहीं होती।
वे ऐसे चरवाहे हैं जिनको पता तक नहीं कि
वे क्या कर रहे हैं?
वे उस की अपनी उन भेड़ों से हैं जो अपने
रास्ते से भटक कर कहीं खो गयी।
वे लालची हैं उनको तो बस
अपना पेट भरना भाता है।

12 वे कहा करते हैं,
"आओ थोड़ी दाखमधु ले
और उसे पीयें यव सुरा भरपेट पियें।
हम कल भी यही करेंगे, कल थोड़ी
और अधिक पियेंगे।

इस्राएल परमेश्वर की नहीं मानता है

57 अच्छे लोग चले गये
किन्तु इस पर तो ध्यान किसी ने नहीं दिया।
लोग समझते नहीं हैं कि
क्या कुछ घट रहा है।
भले लोग एकत्र किये गये।
लोग समझते नहीं कि विपत्तियाँ आ रही हैं।
उन्हें पता तक नहीं हैं कि
भले लोग रक्षा के लिये एकत्र किये गये।

2 किन्तु शान्ति आयेगी और लोग आराम से अपने
बिस्तरों में सोयेंगे और लोग उसी तरह जीयेंगे
जैसे परमेश्वर उनसे चाहता हैं।

3 "हे चुड़ैलों के बच्चों, इधर आओ।
तुम्हारा पिता व्यभिचार का पापी है।
तुम्हारी माता अपनी देह
यौन व्यापार में बेचा करती है।
इधर आओ!

4 हे विद्रोहियों और झूठी सन्तानों,
तुम मेरी हँसी उड़ाते हो।
मुझ पर अपना मुँह चिढ़ाते हो।
तुम मुझ पर जीभ निकालते हो।

5 तुम सभी लोग हरे पेड़ों के तले
झूठे देवताओं के कारण कामातुर होते हो।
हर नदी के तीर पर तुम बाल वध करते हो
और चट्टानी जगहों पर उनकी बलि देते हो।

6 नदी की गोल बट्टियों को तुम पूजना चाहते हो।
तुम उन पर दाखमधु उनकी
पूजा के लिये चढ़ाते हो।
तुम उन पर बलियों को चढ़ाया करते हो किन्तु
तुम उनके बदले बस पत्थर ही पाते हो।
क्या तुम यह सोचते हो कि
मैं इससे प्रसन्न होता हूँ? नहीं!
यह मुझको प्रसन्न नहीं करता है।
तुम हर किसी पहाड़ी और हर ऊँचे पर्वत पर
अपना बिछौना बनाते हो।

7 तुम उन ऊँची जगहों पर जाया करते हो
और तुम वहाँ बलियाँ चढ़ाते हो।

8 और फिर तुम उन बिछौने के बीच जाते हो
और मेरे विरुद्ध तुम पाप करते हो।
उन देवों से तुम प्रेम करते हो।
वे देवता तुमको भाते हैं।
तुम मेरे साथ में थे किन्तु उनके साथ होने के
लिये तुमने मुझको त्याग दिया।
उन सभी बातों पर तुमने परदा डाल दिया
जो तुम्हें मेरी याद दिलाती हैं।
तुमने उनको द्वारों के पीछे और द्वार की
चौखटों के पीछे छिपाया और
तुम उन झूठे देवताओं के पास
उन के संग वाचा करने को जाते हो।

9 तुम अपना तेल और फुलेल लगाते हो ताकि तुम
अपने झूठे देवता मोलक के
सामने अच्छे दिखो।
तुमने अपने दूत दूर-दूर देशों को भेजे हैं और
इससे ही तुम नरक में, मृत्यु के देश में गिरोगे।

इस्राएल को परमेश्वर का विश्वास करना चाहिये न कि मूर्तियों का

10 इन बातों को करने में तूने परिश्रम किया है।
फिर भी तू कभी भी नहीं थका।

तुझे नई शक्ति मिलती रही क्योंकि
इन बातों में तूने रस लिया।

11 तूने मुझको कभी नहीं याद किया यहाँ तक कि
तूने मुझ पर ध्यान तक नहीं दिया!
सो तू किसके विषय में
चिन्तित रहा करता था?
तू किससे भयभीत रहता था?
तू झूठ क्यों कहता था?
देख मैं बहुत दिनों से चुप रहता आया हूँ
और फिर भी तूने मेरा आदर नहीं किया।

12 तेरी 'नेकी' का मैं बखान कर सकता था
और तेरे उन धार्मिक कर्मों का जिनको
तू करता है, बखान कर सकता था।
किन्तु वे बातें अर्थहीन और व्यर्थ हैं!

13 जब तुझको सहारा चाहिये तो
तू उन झूठे देवों को जिन्हें तूने अपने चारों
ओर जुटाया है, क्यों नहीं पुकारता है।
किन्तु मैं तुझको बताता हूँ कि
उन सब को आँधी उड़ा देगी।
हवा का एक झोंका उन्हें तुम से छीन ले जायेगा।
किन्तु वह व्यक्ति जो मेरे सहारे है,
धरती को पायेगा।
ऐसा ही व्यक्ति मेरे पवित्र पर्वत को पायेगा।

यहोवा अपने भक्तों की रक्षा करेगा

14 रास्ता साफ कर! रास्ता साफ करो!
मेरे लोगों के लिये राह को साफ करो!

15 वह जो ऊँचा है
और जिसको ऊपर उठाया गया है,
वह जो अमर है,
वह जिसका नाम पवित्र है, वह यह कहता है:
मैं एक ऊँचे और पवित्र स्थान पर रहा करता हूँ
किन्तु मैं उन लोगों के बीच भी रहता हूँ
जो दु:खी और विनम्र हैं।
ऐसे उन लोगों को मैं नया जीवन दूँगा
जो मन से विनम्र हैं।
ऐसे उन लोगों को मैं नया जीवन दूँगा
जो हृदय से दु:खी हैं।

16 मैं सदा-सदा ही मुकद्दमा लड़ता रहूँगा।
सदा-सदा ही मैं तो क्रोधित नहीं रहूँगा।
यदि मैं कुपित ही रहूँ तो मनुष्य की आत्मा
यानी वह जीवन जिसे मैंने उनको दिया है,
मेरे सामने ही मर जायेगा।

17 उन्होंने लालच से हिंसा भरे स्वार्थ साधे थे
और उसने मुझको क्रोधित कर दिया था।
मैंने इस्राएल को दण्ड दिया।
मैंने उसे निकाल दिया क्योंकि
मैं उस पर क्रोधित था
और इस्राएल ने मुझको त्याग दिया।
जहाँ कहीं इस्राएल चाहता था, चला गया।

18 मैंने इस्राएल की राहें देख ली थी।
किन्तु मैं उसे क्षमा (चंगा) करूँगा।
मैं उसे चैन दूँगा और ऐसे वचन बोलूँगा
जिस से उसको आराम मिले और
मैं उसको राह दिखाऊँगा।
फिर उसे और उसके लोगों को
दु:ख नहीं छू पायेगा।

19 उन लोगों को मैं एक नया शब्द शान्ति सिखाऊँगा।
मैं उन सभी लोगों को शान्ति दूँगा
जो मेरे पास हैं
और उन लोगों को जो मुझ से दूर हैं।
मैं उन सभी लोगों को चंगा (क्षमा) करूँगा!"
यहोवा ने ये सभी बातें बतायी थी।

20 किन्तु दुष्ट लोग क्रोधित सागर के जैसे होते हैं। वे चुप या शांत नहीं रह सकते। वे क्रोधित रहते हैं और समुद्र की तरह कीचड़ उछालते रहते हैं। मेरे परमेश्वर का कहना है: 21 "दुष्ट लोगों के लिए कहीं कोई शांति नहीं है।"

लोगों से कहो कि वे परमेश्वर का अनुसरण करें

58 जोर से पुकारो, जितना तुम पुकार सको!
अपने को मत रोको!
जोर से पुकारो जैसे नरसिंगा गरजता है!
लोगों को उनके बुरे कामों के बारे में
जो उन्होंने किये हैं, बताओ!
याकूब के घराने को उनके
पापों के बारे में बताओ!

[2] वे सभी प्रतिदिन मेरी उपासना को आते हैं और
वे मेरी राहों को समझना चाहते हैं
वे ठीक वैसा ही आचरण करते हैं
जैसे वे लोग किसी ऐसी जाति के हों
जो वही करती है जो उचित होता है।
जो अपने परमेश्वर का आदेश मानते हैं।
वे मुझसे चाहते हैं कि उनका न्याय निष्पक्ष हो।
वे चाहते हैं कि परमेश्वर उनके पास रहे।

[3]अब वे लोग कहते हैं, "तेरे प्रति आदर दिखाने के लिये हम भोजन करना बन्द कर देते हैं। तू हमारी ओर देखता क्यों नहीं? तेरे प्रति आदर व्यक्त करने के लिये हम अपनी देह को क्षति पहुँचाते हैं। तू हमारी ओर ध्यान क्यों नहीं देता?"

किन्तु यहोवा कहता है, "उपवास के उन दिनों में उपवास रखते हुए तुम्हें आनन्द आता है किन्तु उन्हीं दिनों तुम अपने दासों का खून चूसते हो। [4]जब तुम उपवास करते हो तो भूख की वजह से लड़ते–झगड़ते हो और अपने दुष्ट मुक्कों से आपस में मारा–मारी करते हो। यदि तुम चाहते हो कि स्वर्ग में तुम्हारी आवाज सुनी जाये तो तुम्हें उपवास ऐसे नहीं रखना चाहिये जैसे तुम आज कल रखते हो। [5]तुम क्या यह सोचते हो कि भोजन नहीं करने के उन विशेष दिनों में बस मैं लोगों को अपने शरीरों को दु:ख देते देखना चाहता हूँ? क्या तुम ऐसा सोचते हो कि मैं लोगों को दु:खी देखना चाहता हूँ? क्या तुम यह सोचते हो कि मैं लोगों को मुरझाये हुए पौधों के समान सिर लटकाये और शोक वस्त्र पहनते देखना चाहता हूँ? क्या तुम यह सोचते हो कि मैं लोगों को अपना दु:ख प्रकट करने के लिये राख में बैठे देखना चाहता हूँ? यही तो वह सब कुछ है जो तुम खाना न खाने के दिनों में करते हो। क्या तुम ऐसा सोचते हो कि यहोवा तुमसे बस यही चाहता है?

[6]"मैं तुम्हें बताऊँगा कि मुझे कैसा विशेष दिन चाहिये–एक ऐसा दिन जब लोगों को आज़ाद किया जाये। मुझे एक ऐसा दिन चाहिये जब तुम लोगों के बोझ को उन से दूर कर दो। मैं एक ऐसा दिन चाहता हूँ जब तुम दु:खी लोगों को आज़ाद कर दो। मुझे एक ऐसा दिन चाहिये जब तुम उनके कंधों से भार उतार दो। [7]मैं चाहता हूँ कि तुम भूखे लोगों के साथ अपने खाने की वस्तुएँ बाँटो। मैं चाहता हूँ कि तुम ऐसे गरीब लोगों को ढूँढों जिनके पास घर नहीं है और मेरी इच्छा है कि तुम उन्हें अपने घरों में ले आओ। तुम जब किसी ऐसे व्यक्ति को देखो, जिसके पास कपड़े न हों तो उसे अपने कपड़े दे डालो। उन लोगों की सहायता से मुँह मत मोड़ो, जो तुम्हारे अपने हों।"

[8]यदि तुम इन बातों को करोगे तो तुम्हारा प्रकाश प्रभात के प्रकाश के समान चमकने लगेगा। तुम्हारे जख्म भर जायेंगे। तुम्हारी "नेकी" (परमेश्वर) तुम्हारे आगे–आगे चलने लगेगी और यहोवा की महिमा तुम्हारे पीछे–पीछे चली आयेगी। [9]तुम तब यहोवा को जब पुकारोगे, तो यहोवा तुम्हें उसका उत्तर देगा। जब तुम यहोवा को पुकारोगे तो वह कहेगा, "मैं यहाँ हूँ।"

परमेश्वर के लोगों को नेकी करनी चाहिए

तुम्हें लोगों का दमन करना और लोगों को दु:ख देना छोड़ देना चाहिये। तुम्हें लोगों से किसी बातों के लिये कड़वे शब्द बोलना और उन पर लांछन लगाना छोड़ देना चाहिये। [10]तुम्हें भूखों की भूख के लिये दु:ख का अनुभव करते हुए उन्हें भोजन देना चाहिये। दु:खी लोगों की सहायता करते हुए तुम्हें उनकी आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिये। जब तुम ऐसा करोगे तो अन्धेरे में तुम्हारी रोशनी चमक उठेगी और तुम्हें कोई दु:ख नहीं रह जायेगा। तुम ऐसे चमक उठोगे जैसे दोपहर के समय धूप चमकती है।

[11]यहोवा सदा तुम्हारी अगुवाई करेगा। मरुस्थल में भी वह तेरे मन की प्यास बुझायेगा। यहोवा तेरी हड्डियों को मज़बूत बनायेगा। तू एक ऐसे बाग़ के समान होगा जिसमें पानी की बहुतायत है। तू एक ऐसे झरने के समान होगा जिसमें सदा पानी रहता है।

[12]बहुत वर्षो पहले तुम्हारे नगर उजाड़ दिये गये थे। इन नगरों को तुम नये सिरे से फिर बसाओगे। इन नगरों का निर्माण तुम इनकी पुरानी नीवों पर करोगे। तुम टूटे परकोटे को बनाने वाले कहलाओगे और तुम मकानों और रास्तों को बहाल करने वाले कहलाओगे।

[13]ऐसा उस समय होगा जब तू सब्त के बारे में परमेश्वर के नियमों के विरुद्ध पाप करना छोड़ देगा और ऐसा उस समय होगा जब तू उस विशेष दिन, स्वयं अपने आप को प्रसन्न करने के कामों को करना रोक देगा। सब्त के दिन को तुझे एक खुशी का दिन कहना चाहिये। यहोवा

के इस विशेष दिन का तुझे आदर करना चाहिये। जिन बातों को तू हर दिन कहता और करता है, उनको न करते हुए तुझे उस विशेष दिन का आदर करना चाहिये।

14 तब तू यहोवा में प्रसन्नता प्राप्त करेगा, और
मैं यहोवा धरती के ऊँचे–ऊँचे स्थानों पर
"मैं तुझको ले जाऊँगा।
मैं तेरा पेट भरुँगा।
मैं तुझको ऐसी उन वस्तुओं को दूँगा
जो तेरे पिता याकूब के पास हुआ करती थीं।"
ये बातें यहोवा ने बतायी थी!

दुष्ट लोगों को अपना जीवन बदलना चाहिये

59 देखो, तुम्हारी रक्षा के लिये यहोवा की शक्ति पर्याप्त है। जब तुम सहायता के लिये उसे पुकारते हो तो वह तुम्हारी सुन सकता है। [2]किन्तु तुम्हारे पाप तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से अलग करते हैं और इसीलिए वह तुम्हारी तरफ से कान बन्द कर लेता है।

[3]तुम्हारे हाथ गन्दे हैं, वे खून से सने हुए हैं। तुम्हारी उँगलियाँ अपराधों से भरी हैं। अपने मुँह से तुम झूठ बोलते हो। तुम्हारी जीभ बुरी बातें करती है। [4]दूसरे व्यक्ति के बारे में कोई व्यक्ति सच नहीं बोलता। लोग अदालत में एक दूसरे के खिलाफ़ मुकद्दमा करते हैं। अपने मुकद्दमे जीतने के लिये वे झूठे तर्कों पर निर्भर करते हैं। वे एक दूसरे के बारे में परस्पर झूठ बोलते हैं। वे कष्ट को गर्भ में धारण करते हैं और बुराईयों को जन्म देते हैं। [5]वे साँप के विष भरे अण्डों के समान बुराई को सेते हैं। यदि उनमें से तुम एक अण्डा भी खा लो तो तुम्हारी मृत्यु हो जाये और यदि तुम उनमें से किसी अण्डे को फोड़ दो तो एक ज़हरीला नाग बाहर निकल पड़े।

लोग झूठ बोलते हैं। यह झूठ मकड़ी के जालों जैसी कपड़े नहीं बन सकते। [6]उन जालों से तुम अपने को ढक नहीं सकते।

कुछ लोग बदी करते हैं और अपने हाथों से दूसरों को हानि पहुँचाते हैं। [7]ऐसे लोग अपने पैरों का प्रयोग बदी के पास पहुँचने के लिए करते हैं। ये लोग निर्दोष व्यक्तियों को मार डालने की जल्दी में रहते हैं। वे बुरे विचारों में पड़े रहते हैं। वे जहाँ भी जाते हैं विनाश और विध्वंस फैलाते हैं।

[8]ऐसे लोग शांति का मार्ग नहीं जानते। उनके जीवन में नेकी तो होती ही नहीं। उनके रास्ते ईमानदारी के नहीं होते। कोई भी व्यक्ति जो उनके जैसा जीवन जीता है, अपने जीवन में कभी शांति नहीं पायेगा।

इस्राएल के पापों से विपत्ति का आना

9 इसलिए परमेश्वर का न्याय
और मुक्ति हमसे बहुत दूर है।
हम प्रकाश की बाट जोहते हैं।
पर बस केवल अन्धकार फैला है।
हमको चमकते प्रकाश की आशा है
किन्तु हम अन्धेरे में चल रह हैं।

10 हम ऐसे लोग हैं जिनके पास आँखें नहीं है।
नेत्रहीन लोगों के समान
हम दीवारों को टटोलते चलते हैं।
हम ठोकर खाते हैं और गिर जाते हैं
जैसे यह रात हो।
दिन के प्रकाश में भी
हम मुर्दों की भाँति गिर पड़ते हैं।

11 हम सब बहुत दुःखी हैं।
हम सब ऐसे कराहते हैं
जैसे कोई रीछ और कोई कपोत कराहाता है।
हम ऐसे उस समय की बाट जोह रहे हैं
जब लोग निष्पक्ष होंगे किन्तु
अभी तक तो कहीं भी नेकी नहीं है।
हम उद्धार की बाट जोह रहे हैं
किन्तु उद्धार बहुत–बहुत दूर है।

12 क्यों? क्योंकि हमने अपने
परमेश्वर के विरोध में बहुत पाप किये हैं।
हमारे पाप बताते है कि हम बहुत बुरे हैं।
हमें इसका पता है कि
हम इन बुरे कर्मों को करने के अपराधी हैं।

13 हमने पाप किये थे और
हमने अपने यहोवा से मुख मोड़ लिया था।
यहोवा से हम विमुख हुए और उसे त्याग दिया।
हमने बुरे कर्मों की योजना बनाई थी।
हमने ऐसी उन बातों की योजना बनाई थी
जो हमारे परमेश्वर के विरोध में थी।
हमने वे बातें सोची थी

और दूसरों को सताने की योजना बनाई थी।
14 हमसे नेकी को पीछे ढकेला गया।
निष्पक्षता दूर ही खड़ी रही।
गलियों में सत्य गिर पड़ा था
मानों नगर में अच्छाई का प्रवेश नहीं हुआ।
15 सच्चाई चली गई और वे लोग लूटे गये
जो भला करना चाहते थे।
यहोवा ने ढूँढा था किन्तु कोई भी,
कहीं भी अच्छाई न मिल पायी।
16 यहोवा ने खोज देखा किन्तु उसे कोई व्यक्ति
नहीं मिला जो लोगों के साथ खड़ा हो
और उनको सहारा दे।
इसलिये यहोवा ने स्वयं अपनी शक्ति का
और स्वयं अपनी नेकी का प्रयोग किया
और यहोवा ने लोगों को बचा लिया।
17 यहोवा ने नेकी का कवच पहना।
यहोवा ने उद्धार का शिरस्त्राण धारण किया।
यहोवा ने दण्ड के बने वस्त्र पहने थे।
यहोवा ने तीव्र भावनाओं का चोगा पहना था
18 यहोवा अपने शत्रु पर क्रोधित है
सो यहोवा उन्हें ऐसा दण्ड देगा
जैसा उन्हें मिलना चाहिये।
यहोवा अपने शत्रुओं से कुपित है
सो यहोवा सभी दूर–दूर के देशों के
लोगों को दण्ड देगा।
यहोवा उन्हें वैसा दण्ड देगा
जैसा उन्हें मिलना चाहिये।
19 फिर पश्चिम के लोग यहोवा के
नाम को आदर देंगे और पूर्व के लोग
यहोवा की महिमा से भय विस्मित हो जायेंगे।
यहोवा ऐसे ही शीघ्र आ जायेगा
जैसे तीव्र नदी बहती हुई आ जाती है।
यह उस तीव्र वायु वेग सा होगा
जिसे यहोवा उस नदी को
तूफान बहाने के लिये भेजता है।

20फिर सिय्योन पर्वत पर एक उद्धार कर्ता आयेगा। वह याकूब के उन लोगों के पास आयेगा जिन्होंने पाप तो किये थे किन्तु जो परमेश्वर की ओर लौट आए थे।

21यहोवा कहता है: “मैं उन लोगों के साथ एक वाचा करुँगा। मैं वचन देता हूँ मेरी आत्मा और मेरे शब्द जिन्हें मैं तेरे मुख में रख रहा हूँ तुझे कभी नहीं छोड़ेंगे। वे तेरी संतानों और तेरे बच्चों के बच्चों के साथ रहेंगे। वे आज तेरे साथ रहेंगे और सदा–सदा तेरे साथ रहेंगे।”

परमेश्वर आ रहा है

60 “हे यरूशलेम, हे मेरे प्रकाश, तू उठ जाग!
तेरा प्रकाश (परमेश्वर) आ रहा है!
यहोवा की महिमा तेरे ऊपर चमकेगी।
2 आज अन्धेरे ने सारा जग
और उसके लोगों को ढक रखा है।
किन्तु यहोवा का तेज प्रकट होगा
और तेरे ऊपर चमकेगा।
उसका तेज तेरे ऊपर दिखाई देगा।
3 उस समय सभी देश तेरे प्रकाश (परमेश्वर) के
पास आयेंगे।
राजा तेरे भव्य तेज के पास आयेंगे।
4 अपने चारों ओर देख! देख, तेरे चारों
ओर लोग इकट्ठे हो रहे हैं
और तेरी शरण में आ रहे हैं।
ये सभी लोग तेरे पुत्र हैं
जो दूर अति दूर से आ रहे हैं
और उनके साथ तेरी पुत्रियाँ आ रही हैं।
5 ऐसा भविष्य में होगा और ऐसे समय में
जब तुम अपने लोगों को देखोगे
तब तुम्हारे मुख खुशी से चमक उठेंगे।
पहले तुम उत्तेजित होगे
किन्तु फिर आनन्दित होवोगे।
समुद्र पार देशों की सारी धन दौलत
तेरे सामने धरी होगी।
तेरे पास देशों की सम्पत्तियाँ आयेंगी।
6 मिद्यान और एपा देशों के ऊँटों के झुण्ड
तेरी धरती को ढक लेंगे।
शिबा के देश से ऊँटों की लम्बी पंक्तियाँ
तेरे यहाँ आयेंगी।
वे सोना और सुगन्ध लायेंगे।
लोग यहोवा के प्रशंसा के गीत गायेंगे।

7 केदार की भेड़ें इकट्ठी की जायेंगी
और तुझको दे दी जायेंगी।
नबायोत के मेढ़े तेरे लिये लाये जायेंगे।
वे मेरी वेदी पर स्वीकर करने के लायक बलियाँ
बनेंगे और मैं अपने अद्भुत मन्दिर
और अधिक सुन्दर बनाऊँगा।

8 इन लोगों को देखो!
ये तेरे पास ऐसी जल्दी में आ रहे हैं
जैसे मेघ नभ को जल्दी पार करते हैं।
ये ऐसे दिख रहे हैं जैसे अपने घोंसलों की
ओर उड़ते हुए कपोत हों।

9 सुदूर देश मेरी प्रतिक्षा में हैं।
तर्शीश के बड़े–बड़े जलयान
जाने को तत्पर है।
ये जलयान तेरे वंशजों को दूर–दूर
देशों से लाने को तत्पर हैं
और इन जहाजों पर उनका स्वर्ण उनके साथ
आयेगा और उनकी चाँदी भी
ये जहाज लायेंगे।
ऐसा इसलिये होगा कि
तेरे परमेश्वर यहोवा का आदर हो।
ऐसा इसलिये होगा कि
इस्राएल का पवित्र अद्भुत काम करता है।

10 दूसरे देशों की सन्तानें तेरी दीवारें फिर उठायेंगी
और उनके शासक तेरी सेवा करेंगे।
जब मैं तुझसे क्रोधित हुआ था,
मैंने तुझको दु:ख दिया किन्तु अब मेरी इच्छा है
कि तुझ पर कृपालु बनूँ।
इसलिये तुझको मैं चैन दूँगा।

11 तेरे द्वार सदा ही खुले रहेंगे।
वे दिन अथवा रात में कभी बन्द नहीं होंगे।
देश और राजा तेरे पास धन लायेंगे।

12 कुछ जाति और कुछ राज्य तेरी सेवा नहीं करेंगे
किन्तु वे जातियाँ और राज्य नष्ट हो जायेंगे।

13 लबानोन की सभी महावस्तुएं
तुझको अर्पित की जायेंगी।
लोग तेरे पास देवदार, तालीशपत्र
और सरों के पेड़ लायेंगे।
यह स्थान मेरे सिहांसन के सामने
एक चौकी सा होगा
और मैं इसको बहुत मान दूँगा।

14 वे ही लोग जो पहले तुझको दु:ख दिया
करते थे, तेरे सामने झुकेंगे।
वे ही लोग जो तुझसे घृणा करते थे,
तेरे चरणों में झुक जायेंगे।
वे ही लोग तुझको कहेंगे,
'यहोवा का नगर,'
'सिय्योन नगर इस्राएल के पवित्र का है।'"

नया इस्राएल शांति का देश

15 "फिर तुझको अकेला नहीं छोड़ा जायेगा।
फिर कभी तुझसे घृणा नहीं होगी।
तू फिर से कभी भी उजड़ेगी नहीं।
तू महान रहेगी, तू सदा
और सर्वदा आनन्दित रहेगी।

16 तेरी जरुरत की वस्तुएँ
तुझको जातियाँ प्रदान करेंगी।
यह इतना ही सहज होगा
जैसे दूध मुँह बच्चे को माँ का दूध मिलता है।
वैसे ही तू शासकों की सम्पत्तियाँ पियेगी।
तब तुझको पता चलेगा कि यह मैं यहोवा हूँ
जो तेरी रक्षा करता है।
तुझको पता चल जायेगा कि
वह याकूब का महामहिम तुझको बचाता है।

17 फिलहाल तेरे पास ताँबा है
परन्तु इसकी जगह मैं तुझको सोना दूँगा।
अभी तो तेरे पास लोहा है,
पर उसकी जगह तुझे चाँदी दूँगा।
तेरी लकड़ी की जगह मैं तुझको ताँबा दूँगा।
तेरे पत्थरों की जगह तुझे लोहा दूँगा
और तुझे दण्ड देने की जगह
मैं तुझे सुख चैन दूँगा।
जो लोग अभी तुझको दु:ख देते हैं
वे ही लोग तेरे लिये ऐसे काम करेंगे
जो तुझे सुख देंगे।

18 तेरे देश में हिंसा और तेरी सीमाओं में तबाही
और बरबादी कभी नहीं सुनाई पड़ेगी।
तेरे देश में लोग फिर कभी

तेरी वस्तुएँ नहीं चुरायेंगे।
तू अपने परकोटों का नाम 'उद्धार' रखेगा और
तू अपने द्वारों का नाम 'स्तुति' रखेगा।

19 दिन के समय में तेरे लिये सूर्य का प्रकाश नहीं
होगा और रात के समय में चाँद का
प्रकाश तेरी रोशनी नहीं होगी।
क्यों? क्योंकि यहोवा ही सदैव
तेरे लिये प्रकाश होगा।
तेरा परमेश्वर तेरी महिमा बनेगा।

20 तेरा 'सूरज' फिर कभी भी नहीं छिपेगा।
तेरा 'चाँद' कभी भी काला नहीं पड़ेगा।
क्यों? क्योंकि यहोवा का प्रकाश
सदा सर्वदा तेरे लिये होगा
और तेरा दुःख का समय समाप्त हो जायेगा।

21 तेरे सभी लोग उत्तम बनेंगे।
उनको सदा के लिये धरती मिल जायेगी।
मैंने उन लोगों को रचा है।
वे अद्‌भुत पौधे मेरे अपने ही
हाथों से लगाये हुए हैं।

22 छोटे से छोटा भी विशाल घराना बन जायेगा।
छोटे से छोटा भी एक शक्तिशाली
राष्ट्र बन जायेगा।
जब उचित समय आयेगा,
मैं यहोवा शीघ्र ही आ जाऊँगा
और मैं ये सभी बातें घटित कर दूँगा।"

यहोवा का मुक्ति सन्देश

61 यहोवा का सेवक कहता है, "मेरे स्वामी यहोवा ने मुझमें अपनी आत्मा स्थापित की है। यहोवा मेरे साथ है, क्योंकि कुछ विशेष काम करने के लिये उसने मुझे चुना है। यहोवा ने मुझे इन कामों को करने के लिए चुना है: दीन दुःखी लोगों के लिए सुसमाचार की घोषणा करना; दुःखी लोगों को सुख देना; जो लोग बंधन में पड़े हैं, उनके लिये मुक्ति की घोषणा करना; बन्दी लोगों को उनके छुटकारे की सूचना देना; [2]उस समय की घोषणा करना जब यहोवा अपनी करुणा प्रकट करेगा; उस समय की घोषणा करना जब हमारा परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देगा; दुःखी लोगों को पुचकारना; [3]सिय्योन के दुःखी लोगों को आदर देना (अभी तो उनके पास बस राख हैं); सिय्योन के लोगों को प्रसन्नता का स्नेह प्रदान करना; (अभी तो उनके पास बस दुःख हैं) सिय्योन के लोगों को परमेश्वर की स्तुति के गीत प्रदान करना (अभी तो उनके पास बस उनके दर्द हैं); सिय्योन के लोगों को उत्सव के वस्त्र देना (अभी तो उनके पास बस उनके दुःख ही हैं।) उन लोगों को 'उत्तमता के वृक्ष' का नाम देना; उन लोगों को यहोवा के अद्‌भुत वृक्ष की संज्ञा देना।"

[4]"उस समय, उन पुराने नगरों को जिन्हें उजाड़ दिया गया था, फिर से बसाया जायेगा। उन नगरों को वैसे ही नया बना दिया जायेगा जैसे वे आरम्भ में थे। वे नगर जिन्हें वर्षों पहले हटा दिया गया था, नये जैसे बना दिये जायेंगे।

[5]"फिर तुम्हारे शत्रु तुम्हारे पास आयेंगे और तुम्हारी भेड़ें चराया करेंगे। तुम्हारे शत्रुओं की संतानें तुम्हारे खेतों और तुम्हारे बगीचों में काम किया करेंगी। [6]तुम 'यहोवा के याजक' कहलाओगे। तुम 'हमारे परमेश्वर के सहायक' कहलाओगे। धरती के सभी देशों से आई हुई सम्पत्ति को तुम प्राप्त करोगे और तुम्हें इस बात का गर्व होगा कि वह सम्पत्ति तुम्हारी है।

[7]"बीते समय में लोग तुम्हें लज्जित करते थे और तुम्हारे बारे में बुरी बुरी बातें बनाया करते थे। तुम इतने लज्जित थे जितना और कोई दूसरा व्यक्ति नहीं था। इसलिए तुम्हें अपनी धरती में दूसरे लोगों से दुगुना हिस्सा प्राप्त होगा। तुम ऐसी प्रसन्नता पाओगे जिसका कभी अंत नहीं होगा। [8]ऐसा क्यों घटित होगा? क्योंकि मैं यहोवा हूँ और मुझे नेकी से प्रेम है। मुझे चोरी से और हर उस बात से, जो अनुचित है, घृणा है। इसलिये लोगों को, जो उन्हें मिलना चाहिये, वह भुगतान मैं दूँगा। अपने लोगों के साथ सदा सदा के लिए मैं यह वाचा कर रहा हूँ कि [9]सभी देशों का हर कोई व्यक्ति मेरे लोगों को जान जायेगा। मेरी जाति के वंशजों को हर कोई जान जायेगा। हर कोई व्यक्ति जो उन्हें देखेगा, जान जायेगा कि यहोवा उन्हें आशीर्वाद देता है।"

यहोवा का सेवक उद्धार और उत्तमता लाता है

10 "यहोवा मुझको अति प्रसन्न करता है।
मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व परमेश्वर में स्थिर है
और प्रसन्नता में मगन है।
यहोवा ने उद्धार के वस्त्र से मुझको ढक लिया।

वे वस्त्र ऐसे ही भव्य हैं जैसे भव्य वस्त्र कोई
पुरूष अपने विवाह के
अवसर पर पहनता है।
यहोवा ने मुझे नेकी के चोगे से ढक लिया है।
यह चोगा वैसा ही सुन्दर है
जैसा सुन्दर किसी नारी का
विवाह वस्त्र होता है।

11 धरती पौधे उगाती है।
लोग बगीचों में बीज डालते हैं
और वह बगीचा उन बीजों को उगाता है।
वैसे ही यहोवा नेकी को उगायेगा।
इस तरह मेरा स्वामी सभी जातियों के बीच
स्तुति को बढ़ायेगा।"

नया यरूशलेम: नेकी का एक नगर

62 मुझको सिय्योन से प्रेम है
अत: मैं उसके लिये बोलता रहूँगा।
मुझको यरूशलेम से प्रेम है
अत: मैं चुप न होऊँगा।
मैं उस समय तक बोलता रहूँगा जब तक नेकी
चमकती हुई ज्योति सी नहीं चमकेगी।
मैं उस समय तक बोलता रहूँगा
जब तक उद्धार आग की लपट सा
भव्य बन कर नहीं धधकेगा।

2 फिर सभी देश तेरी नेकी को देखेंगे।
तेरे सम्मान को सब राजा देखेंगे।
तभी तू एक नया नाम पायेगा।
स्वयं यहोवा तुम लोगों के लिये
वह नया नाम पायेगा।

3 यहोवा को तुम लोगों पर बहुत गर्व होगा।
तुम यहोवा के हाथों में
सुन्दर मुकुट के समान होगे।

4 फिर तुम कभी ऐसे जन नहीं कहलाओगे,
'परमेश्वर के त्यागे हुए लोग।'
तुम्हारी धरती कभी ऐसी धरती नहीं कहलायेगी
जिसे परमेश्वर ने उजाड़ा।
तुम लोग परमेश्वर के प्रिय जन कहलाओगे।
तुम्हारी धरती परमेश्वर की दुल्हिन कहलायेगी।
क्यों? क्योंकि यहोवा तुमसे प्रेम करता है
और तुम्हारी धरती उसकी हो जायेगी।

5 जैसे एक युवक कुँवारी को ब्याहता है।
वैसे ही तेरे पुत्र तुझे ब्याह लेंगे।
और जैसे दुल्हा अपनी दुल्हिन के संग
आनन्दित होता है
वैसे ही तुम्हारा परमेश्वर
तुम्हारे संग प्रसन्न होगा।"

परमेश्वर अपना वचन पालेगा

6 "यरूशलेम की चारदीवारी मैंने रखवाले (नबी)
बैठा दिये हैं कि उसका ध्यान रखें।
ये रखवाले मूक नहीं रहेंगे।
यह रखवाले यहोवा को
तुम्हारी जरुरतों की याद दिलाते हैं।
हे रखवालों, तुम्हें चुप नहीं होना चाहिये।

7 तुमको यहोवा से प्रार्थना करना
बन्द नहीं करना चाहिये।
तुमको सदा उसकी प्रार्थना करते ही रहना चाहिये।
जब तक वह फिर से यरूशलेम का
निर्माण न कर दे,
तब तक तुम उसकी प्रार्थना करते रहो।
यरूशलेम एक ऐसा नगर है
जिसका धरती के सभी लोग यश गायेंगे।

8 यहोवा ने स्वयं अपनी शक्ति को प्रमाण बनाते
हुए वाचा की और
यहोवा अपनी शक्ति के प्रयोग से ही
उस वाचा को पालेगा।
यहोवा ने कहा था, "मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि
मैं तुम्हारे भोजन को कभी तुम्हारे
शत्रु को न दूँगा।
मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि
तुम्हारी बनायी दाखमधु तुम्हारा शत्रु
कभी नहीं ले पायेगा।

9 जो व्यक्ति खाना जुटाता है, वही उसे खायेगा
और वह व्यक्ति यहोवा के गुण गायेगा।
वह व्यक्ति जो अंगूर बीनता है,
वही उन अंगूरों की बनी दाखमधु पियेगा।
मेरी पवित्र धरती पर ऐसी बातें हुआ करेंगी।"

10 द्वार से होते हुए आओ!
लोगों के लिये राहें साफ करो!
मार्ग को तैयार करो!
राह पर के पत्थर हटा दो!
लोगों के लिये संकेत के रूप में
झण्डा उठा दो!
11 यहोवा सभी दूर देशों के लिये बोल रहा है:
"सिय्योन के लोगों से कह दो:
देखो, तुम्हारा उद्धारकर्ता आ रहा है।
वह तुम्हारा प्रतिफल ला रहा है।
वह अपने साथ तुम्हारे लिये
प्रतिफल ला रहा है।"
12 उसके लोग कहलायेंगे: "पवित्र जन,"
"यहोवा के उद्धार पाये लोग।"
यरूशलेम कहलायेगा:
"वह नगर जिसको यहोवा चाहता है,"
"वह नगर जिसके साथ परमेश्वर है।"

यहोवा अपने लोगों का न्याय करता है

63 यह कौन है जो एदोम से आ रहा है?
यह बोस्रा की नगरी से लाल धब्बों से युक्त
कपड़े पहने आ रहा है।
वह अपने वस्त्रों में अति भव्य दिखता है।
वह लम्बे डग बढ़ाता हुआ अपनी
महाशक्ति के साथ आ रहा है
और मैं सच्चाई से बोलता हूँ।
2 "तू ऐसे वस्त्र जो लाल धब्बों से युक्त हैं,
क्यों पहनता है?
तेरे वस्त्र ऐसे लाल क्यों हैं जैसे उस व्यक्ति के
जो अंगूर से दाखमधु बनाता है?"
3 वह उत्तर देता है,
"दाखमधु के कुंडे में मैंने अकेले ही दाख रौंदी।
किसी ने भी मुझको सहायता नहीं दी।
मैं क्रोधित था और मैंने लोगों को रौंदा
जैसे अंगूर दाखमधु बनाने के लिये रौंदे जाते हैं।
रस छिटकर मेरे वस्त्रों में लगा।
4 मैंने राष्ट्रों को दण्ड देने के लिये
एक समय चुना।
मेरा वह समय आ गया कि मैं अपने लोगों को
बचाऊँ और उनकी रक्षा करूँ।
5 मैं चकित हुआ कि किसी भी व्यक्ति ने
मेरा समर्थन नहीं किया।
इसलिये मैंने अपनी शक्ति का प्रयोग
अपने लोगों को बचाने के लिये किया।
स्वयं मेरे अपने क्रोध ने ही मेरा समर्थन किया।
6 जब मैं क्रोधित था, मैंने लोगों को रौंद दिया था।
जब मैं क्रोध में पागल था,
मैंने उनको दण्ड दिया।
मैंने उनका लहू धरती पर उंडेल दिया।"

यहोवा अपने लोगों पर दयालू रहा

7 यह मैं याद रखूँगा कि यहोवा दयालु है और
मैं यहोवा की स्तुति करना याद रखूँगा।
यहोवा ने इस्राएल के घराने को
बहुत सी वस्तुएँ प्रदान की।
यहोवा हमारे प्रति बहुत ही कृपालु रहा।
यहोवा ने हमारे प्रति दया दिखाई।
8 यहोवा ने कहा था "ये मेरे लोग हैं।
ये बच्चें कभी झूठ नहीं कहते हैं"
इसलिये यहोवा ने उन लोगों को बचा लिया।
9 उनको उनके सब संकटो से
किसी भी स्वर्गदूत ने नहीं बचाया था।
उसने स्वयं ही अपने प्रेम और अपनी दया से
उनको छुटकारा दिलाया था।
10 किन्तु वे लोग यहोवा से मुख मोड़ चले।
उन्होंने उसकी पवित्र आत्मा को
बहुत दु:खी किया।
सो यहोवा उनका शत्रु बन गया।
यहोवा ने उन लोगों के विरोध में युद्ध किया।
11 किन्तु यहोवा अब भी
पहले का समय याद करता है।
यहोवा मूसा के और उसके
लोगों को याद करता हैं।
यहोवा वही था जो लोगों को सागर के
बीच से निकाल कर लाया।
यहोवा ने अपनी भेंड़ों (लोगों) की अगुवाई के
लिये अपने चरवाहों (नबियों)
का प्रयोग किया।

किन्तु अब वह यहोवा कहाँ है जिसने अपनी
आत्मा को मूसा में रख दिया था?

12 यहोवा ने अपने दाहिने हाथ से
मूसा की अगुवाई की।
यहोवा ने अपनी अद्भुत शक्ति से
मूसा को राह दिखाई।
यहोवा ने जल को चीर दिया था।
जिससे लोग सागर को पैदल
पार कर सके थे।
इस अद्भुत कार्य को करके
यहोवा ने अपना नाम प्रसिद्ध किया था

13 यहोवा ने लोगों को राह दिखाई।
वे लोग गहरे सागर के बीच से
बिना गिरे ही पार हो गये थे।
वे ऐसे चले थे जैसे मरुस्थल के
बीच से घोड़ा चला जाता हैं।

14 जैसे मवेशी घाटियों से उतरते
और विश्राम का ठौर पाते हैं
वैसे ही यहोवा के प्राण ने
हमें विश्राम की जगह दी है।
हे यहोवा, इस ढंग से तूने अपने लोगों को राह
दिखाई और तूने अपना नाम
अद्भुत कर दिया।

उसके लोगों की सहायता के लिए यहोवा से प्रार्थना

15 हे यहोवा, तू आकाश से नीचे देख।
उन बातों को देख जो घट रही हैं!
तू हमें अपने महान पवित्र घर से
जो आकाश मैं है, नीचे देख।
तेरा सुदृढ़ प्रेम हमारे लिये कहाँ हैं?
तेरे शक्तिशाली कार्य कहाँ हैं?
तेरे हृदय का प्रेम कहाँ है?
मेरे लिये तेरी कृपा कहाँ है?
तूने अपना करुण प्रेम
मुझसे कहाँ छिपा रखा है?

16 देख, तू ही हमारा पिता है!
इब्राहीम को यह पता नहीं है कि
हम उसकी सन्तानें हैं।
इस्राएल (याकूब) हमको पहचानता नहीं है।
यहोवा तू ही हमारा पिता है।
तू वही यहोवा है
जिसने हमको सदा बचाया है।

17 हे यहोवा, तू हमको अपने से दूर
क्यों ढकेल रहा है?
तू हमारे लिये अपना अनुसरण करने को
क्यों कठिन बनाता है?
यहोवा तू हमारे पास लौट आ।
हम तो तेरे दास हैं।
हमारे पास आ और हमको सहारा दे।
हमारे परिवार तेरे हैं।

18 थोड़े समय के लिये हमारे शत्रुओं ने तेरे पवित्र
लोगों पर कब्जा कर लिया था।
हमारे शत्रुओं ने तेरे मन्दिर को
कुचल दिया था।

19 कुछ लोग तेरा अनुसरण नहीं करते हैं।
वे तेरे नाम को धारण नहीं करते हैं।
जैसे वे लोग हम भी वैसे हुआ करते थे।

64

यदि तू आकाश चीर कर धरती पर नीचे
उतर आये तो सब कुछ ही बदल जाये।
तेरे सामने पर्वत पिघल जाये।

2 पहाड़ों में लपेट उठेंगी।
वे ऐसे जलेंगे जैसे झाड़ियाँ जलती हैं।
पहाड़ ऐसे उबलेंगे जैसे उबलता पानी
आग पर रखा गया हो।
तब तेरे शत्रु तेरे बारे में समझेंगे।
जब सभी जातियाँ तुझको देखेंगी
तब वे भय से थर–थर काँपेंगी।

3 किन्तु हम सचमुच नहीं चाहते हैं कि
तू ऐसे कामों को करे कि
तेरे सामने पहाड़ पिघल जायें।

4 सचमुच तेरे ही लोगों ने तेरी कभी नहीं सुनी।
जो कुछ भी तूने बात कही सचमुच तेरे ही
लोगों ने उन्हें कभी नहीं सुना।
तेरे जैसा परमेश्वर किसी ने भी नहीं देखा।
कोई भी अन्य परमेश्वर नहीं,
बस केवल तू है।
यदि लोग धीरज धर कर

तेरे सहारे की बाट जोहते रहें,
तो तू उनके लिये बड़े काम कर देगा।
5 जिनको अच्छे काम करने में रस आता है,
तू उन लोगों के साथ है।
वे लोग तेरे जीवन की रीति को याद करते हैं।
पर देखो, बीते दिनों में
हमने तेरे विरुद्ध पाप किये हैं।
इसलिये तू हमसे क्रोधित हो गया था।
अब भला कैसे हमारी रक्षा होगी?
6 हम सभी पाप से मैले हैं।
हमारी सब 'नेकी' पुराने गन्दे कपड़ों सी है।
हम सूखे मुरझाये पत्तों से हैं।
हमारे पापों ने हमें आँधी सा उड़ाया है।
7 हम तेरी उपासना नहीं करते हैं।
हम को तेरे नाम में विश्वास नहीं है।
हम में से कोई तेरा अनुसरण करने को
उत्साही नहीं है।
इसलिये तूने हमसे मुख मोड़ लिया है।
क्योंकि हम पाप से भरे हैं
इसलिये तेरे सामने हम असमर्थ हैं।
8 किन्तु यहोवा, तू हमारा पिता है।
हम मिट्टी के लौंदे हैं और तू कुम्हार है।
तेरे ही हाथों ने हम सबको रचा है।
9 हे यहोवा, तू हमसे कुपित मत बना रह!
तू हमारे पापों को सदा ही याद मत रख!
कृपा करके तू हमारी ओर देख!
हम तेरे ही लोग हैं।
10 तेरी पवित्र नगरियाँ उजड़ी हुई हैं।
आज वे नगरियाँ ऐसी हो गई हैं
जैसे रेगिस्तान हों।
सिय्योन रेगिस्तान हो गया है!
यरूशलेम ढह गया है!
11 हमारा पवित्र मन्दिर आग से भस्म हुआ है।
वह मन्दिर हमारे लिये बहुत ही महान था।
हमारे पूर्वज वहाँ तेरी उपासना करते थे।
वे सभी उत्तम वस्तु जिनके हम स्वामी थे,
अब बर्बाद हो गई हैं।
12 क्या ये वस्तुएँ सदैव तुझे अपना प्रेम
हम पर प्रकट करने से दूर रखेंगी?
क्या तू कभी कुछ नहीं कहेगा?
क्या तू ऐसे ही चुप रह जायेगा?
क्या तू सदा हम को दण्ड देता रहेगा?

परमेश्वर के बारे में सभी लोग जानेंगे

65 यहोवा कहता है, "मैंने उन लोगों को भी सहारा दिया है जो उपदेश ग्रहण करने के लिए कभी मेरे पास नहीं आये। जिन लोगों ने मुझे प्राप्त कर लिया, वे मेरी खोज में नहीं थे। मैंने एक ऐसी जाति से बात की जो मेरा नाम धारण नहीं करती थी। मैंने कहा था, 'मैं यहाँ हूँ! मैं यहाँ हूँ!'

2 "जो लोग मुझसे मुँह मोड़ गये थे, उन लोगों को अपनाने के लिए मैं भी तत्पर रहा। मैं इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि वे लोग मेरे पास लौट आयें। किन्तु वे जीवन की एक ऐसी राह पर चलते रहे जो अच्छी नहीं है। वे अपने मन के अनुसार काम करते रहे। 3 वे लोग मेरे सामने रहते हैं और सदा मुझे क्रोधित करते रहते हैं। अपने विशेष बागों में वे लोग मिथ्या देवताओं को बलियाँ अर्पित करते हैं और धूप अगरबत्ती जलाते हैं। 4 वे लोग कब्रों के बीच बैठते हैं और मरे हुए लोगों से सन्देश पाने का इतज़ार करते रहते हैं। यहाँ तक कि वे मुर्दों के बीच रहा करते हैं। वे सुअर का माँस खाते हैं। उनके प्यालों में अपवित्र वस्तुओं का शोरवा है।

5 "किन्तु वे लोग दूसरे लोगों से कहा करते हैं, 'मेरे पास मत आओ, मुझे उस समय तक मत छुओ, जब तक मैं तुम्हें पवित्र न कर दूँ।' मेरी आँखों में वे लोग धुएँ के जैसे हैं और उनकी आग हर समय जला करती है।"

इस्राएल को दण्डित होना चाहिये

6 "देखो, यह एक हुण्डी है। इसका भुगतान तो करना ही होगा। यह हुण्डी बताती है कि तुम अपने पापों के लिये अपराधी हो। मैं उस समय तक चुप नहीं होऊँगा जब तक इस हुण्डी का भुगतान न कर दूँ और देखो तुम्हें दण्ड देकर ही मैं इस हुण्डी का भुगतान करुँगा।

7 "तुम्हारे पाप और तुम्हारे पूर्वज एक ही जैसे हैं।" यहोवा ने यह कहा है, "तुम्हारे पूर्वजों ने जब पहाड़ों में धूप अगरबत्तियाँ जलाई थीं, तभी इन पापों को किया था। उन पहाड़ों पर उन्होंने मुझे लज्जित किया था और सबसे

पहले मैंने उन्हें दण्ड दिया। जो दण्ड उन्हें मिलना चाहिये था, मैंने उन्हें वही दण्ड दिया।"

परमेश्वर इस्राएल को पूरी तरह नष्ट नहीं करेगा

[8]यहोवा कहता है, "अँगूरों में जब नयी दाखमधु हुआ करती है, तब लोग उसे निचोड़ लिया करते हैं, किन्तु वे अँगूरों को पूरी तरह नष्ट तो नहीं कर डालते। वे इसलिये ऐसा करते हैं कि अँगूरों का उपयोग तो फिर भी किया जा सकता है। अपने सेवकों के साथ मैं ऐसा ही करुँगा। मैं उन्हें पूरी तरह नष्ट नहीं करुँगा। [9]इस्राएल के कुछ लोगों को मैं बचाये रखूँगा। यहूदा के कुछ लोग मेरे पर्वतों को प्राप्त करेंगे। मेरे सेवकों का वहाँ निवास होगा। मेरे चुने हुए लोगों को धरती मिलेगी। [10]फिर तो शारोन की घाटी हमारी भेड़–बकरियों की चरागाह होगी तथा आकोर की तराई हमारे मवेशियों के आराम करने की जगह बन जायेगी। ये सब बातें मेरे लोगों के लिये होंगी। उन लोगों के लिये जो मेरी खोज में हैं।

[11]"किन्तु तुम लोग, जिन्होंने यहोवा को त्याग दिया है, दण्डित किये जाओगे। तुम ऐसे लोग हो जिन्होंने मेरे पवित्र पर्वत को भुला दिया है। तुम ऐसे लोग हो जो भाग्य के मिथ्या देवता की पूजा करते हो। तुम भाग्य रुपी झूठे देवता के सहारे रहते हो। [12]किन्तु तुम्हारे भाग्य का निर्धारण तो मैं करता हूँ। मैं तलवार से तुम्हें दण्ड दूँगा। जो तुम्हें दण्ड देगा, तुम सभी उसके आगे मिमिआने लगोगे। मैंने तुम्हें पुकारा किन्तु तुमने कोई उत्तर नहीं दिया। मैंने तुमसे बातें कीं किन्तु तुमने सुना तक नहीं। तुम उन कामों को ही करते रहे जिन्हें मैंने बुरा कहा था। तुमने उन कामों को करने की ही ठान ली जो मुझे अच्छे नहीं लगते थे।"

[13] सो मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।
"मेरे दास भोजन पायेंगे, किन्तु तुम भूखे मरोगे।
मेरे दास पीयेंगे किन्तु अरे दुष्टों, तुम प्यासे मरोगे।
मेरे दास प्रसन्न होंगे किन्तु अरे ओ दुष्टों,
तुम लज्जित होंगे।
[14] मेरे दासों के मन खरे हैं इसलिये वे प्रसन्न होंगे।
किन्तु अरे ओ दुष्टों, तुम रोया करोगे
क्योंकि तुम्हारे मनों में पीड़ा बसेगी।
तुम अपने टूटे हुए मन से बहुत दुःखी रहोगे।
[15] तुम्हारे नाम मेरे लोगों के लिये गालियों के
जैसे हो जायेंगे।"
मेरा स्वामी यहोवा तुमको मार डालेगा
और वह अपने दासों को
एक नये नाम से बुलाया करेगा।
[16] अब लोग धरती से आशीषें माँगते हैं
किन्तु आगे आनेवाले दिनों में वे विश्वासयोग्य
परमेश्वर से आशीष माँगा करेंगे।
अभी लोग उस समय धरती की शक्ति के भरोसे
रहा करते हैं जब वे कोई वचन देते हैं।
किन्तु भविष्य में वे विश्वसनीय
परमेश्वर के भरोसे रहा करेंगे।
क्यों? क्योंकि पिछले दिनों की
सभी विपत्तियाँ भूला दी जायेंगी।
मेरे लोग फिर उन पिछली
विपत्तियों को याद नहीं करेंगे।

एक नया समय आ रहा है

[17] "देखो, मैं एक नये स्वर्ग
और नयी धरती की रचना करूँगा।
लोग मेरे लोगों की पिछली बात याद नहीं रखेंगे।
उनमें से कोई बात याद में नहीं रहेगी।
[18] मेरे लोग दुःखी नहीं रहेंगे।
नहीं, वे आनन्द में रहेंगे
और वे सदा खुश रहेंगे।
मैं जो बातें रचूँगा, वे उनसे प्रसन्न रहेंगे।
मैं ऐसा यरूशलेम रचूँगा
जो आनन्द से परिपूर्ण होगा
और मैं उनको एक प्रसन्न जाति बनाऊँगा।
[19] फिर मैं यरूशलेम से प्रसन्न रहूँगा।
मैं अपने लोगों से प्रसन्न रहूँगा
और उस नगरी में फिर कभी विलाप
और कोई दुःख नहीं होगा।
[20] उस नगरी में कोई बच्चा ऐसा नहीं होगा
जो पैदा होने के बाद कुछ ही दिन जियेगा।
उस नगरी का कोई भी व्यक्ति
अपनी अल्प आयु में नहीं मरेगा।
हर पैदा हुआ बच्चा लम्बी उम्र जियेगा
और उस नगरी का प्रत्येक बूढ़ा व्यक्ति
एक लम्बे समय तक जीता रहेगा।
वहाँ सौ साल का व्यक्ति भी जवान कहलायेगा।

किन्तु कोई भी ऐसा व्यक्ति जो सौ साल से
पहले मरेगा उसे अभिशप्त कहा जायेगा।
21 देखो, उस नगरी में यदि कोई व्यक्ति अपना घर
बनायेगा तो वह व्यक्ति अपने घर में बसेगा।
यदि कोई व्यक्ति वहाँ अंगूर का बाग लगायेगा
तो वह अपने बाग के अँगूर खायेगा।
22 वहाँ ऐसा नहीं होगा कि कोई अपना घर बनाये
और कोई दूसरा उसमें निवास करे।
ऐसा भी नहीं होगा कि बाग कोई दूसरा लगाये
और उस बाग का फल कोई और खाये।
मेरे लोग इतना जियेंगा जितना ये वृक्ष जीते हैं।
ऐसे व्यक्ति जिन्हें मैंने चुना है,
उन सभी वस्तुओं का आनन्द लेंगे
जिन्हें उन्होंने बनाया है।
23 फिर लोग व्यर्थ का परिश्रम नहीं करेंगे।
लोग ऐसे उन बच्चों को नहीं जन्म देंगे
जिनके लिये वे मन में डरेंगे कि
वे किसी अचानक विपत्ति का शिकार न हों।
मेरे सभी लोग यहोवा की आशीष पायेंगे।
मेरे लोग और उनकी संताने आर्शीवाद पायेंगे।
24 मुझे उन सभी वस्तुओं का पता हो जायेगा
जिनकी आवश्यकता उन्हें होगी,
इससे पहले की वे उन्हें मुझसे माँगे।
इससे पहले कि वे मुझ से सहायता की प्रार्थना
पूरी कर पायेंगे, मैं उनको मदद दूँगा।
25 भेड़िये और मेमनें एक साथ चरते फिरेंगे।
सिंह भी मवेशियों के जैसे ही भूसा चरेंगे
और भुजंगों का भोजन बस मिट्टी ही होगी।
मेरे पवित्र पर्वत पर कोई किसी को भी
हानि नहीं पहुँचायेगा
और न ही उन्हें नष्ट करेगा।"
यह यहोवा ने कहा है।

परमेश्वर सभी जातियों का न्याय करेगा

66 यहोवा यह कहता है,
"आकाश मेरा सिंहासन है।
धरती मेरे पाँव की चौकी बनी है।
सो क्या तू यह सोचता है कि
तू मेरे लिये भवन बना सकता है?
नहीं, तू नहीं बना सकता।
क्या तू मुझको विश्रामस्थल दे सकता है?
नहीं, तू नहीं दे सकता।
2 मैंने स्वयं ही ये सारी वस्तुऐं रची हैं।
ये सारी वस्तुऐं यहाँ टिकी हैं
क्योंकि उन्हें मैंने बनाया है।
यहोवा ने ये बातें कहीं थी।
मुझे बता कि मैं कैसे लोगों की
चिन्ता किया करता हूँ?
मुझको दीन हीन लोगों की चिंता है।
ये ही वे लोग हैं जो बहुत दुःखी रहते हैं।
ऐसे ही लोगों की मैं चिंता किया करता हूँ
जो मेरे वचनो का पालन किया करता हैं।
3 मुझे बलि के रूप में अर्पित करने को कुछ लोग
बैल का वध किया करता हैं
किन्तु वे लोगों से मारपीट भी करते हैं।
मुझे अर्पित करने को ये भेड़ों को मारते हैं
किन्तु ये कुत्तों की गर्दन भी तोड़ते हैं
और सुअरों का लहू ये मुझ पर चढ़ाते हैं।
ऐसे लोगों को धूप के जलाने की
याद बनी रहा करती हैं
किन्तु वे व्यर्थ की अपनी
प्रतिमाओं से प्रेम करते हैं।
ऐसे ये लोग अपनी मनचीती
राहों पर चला करते हैं, मेरी राहों पर नहीं।
वे पूरी तरह से अपने घिनौने
मूर्ति के प्रेम में डूबे हैं।
4 इसलिये मैंने यह निश्चय किया है कि
मैं उनकी जूती उन्हीं के सिर करूँगा।
मेरा यह मतलब है कि मैं उनको दण्ड दूँगा
उन वस्तुओं को काम में लाते हुये
जिनसे वे बहुत ड़रते हैं।
मैंने उन लोगों को पुकारा था
किन्तु उन्होंने नहीं सुना।
मैंने उनसे बोला था किन्तु उन्होंने सुना ही नहीं।
इसलिये अब मैं भी उनके साथ ऐसा ही करूँगा।
वे लोग उन सभी बुरे कामों को करते रहे हैं
जिनको मैंने बुरा बताया था।
उन्होंने ऐसे काम करने को चुने

जो मुझको नहीं भाते थे।"

5 हे लोगों, यहोवा का भय विस्मय
मानने वालों और यहोवा के आदेशों का
अनुसरण करने वालों, उन बातों को सुनो।
यहोवा कहता है,
"तुमसे तुम्हारे भाईयों ने घृणा की क्योंकि
तुम मेरे पीछे चला करते थे,
वे तुम्हारे विरुद्ध हो गये।
तुम्हारे बंधु कहा करते थे:
'जब यहोवा सम्मानित होगा
हम तुम्हारे पीछे हो लेंगे।
फिर तुम्हारे साथ में हम भी खुश हो जायेंगे।'
ऐसे उन लोगों को दण्ड दिया जायेगा।

दण्ड और नयी जाति

[6]"सुनो तो, नगर और मन्दिर से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दे रही है। यहोवा द्वारा अपने विरोधियों को, जो दण्ड दिया जा रहा है। वह आवाज उसी की है। यहोवा उन्हें वही दण्ड दे रहा है जो उन्हें मिलना चाहिये।

[7–8]"ऐसा तो नहीं हुआ करता कि प्रसव पीड़ा से पहले ही कोई स्त्री बच्चा जनती हो। ऐसा तो कभी नहीं हुआ कि किसी स्त्री ने किसी पीड़ा का अनुभव करने से पहले ही अपने पुत्र को पैदा हुआ देखा हो। ऐसा कभी नहीं हुआ। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति ने एक दिन में कोई नया संसार आरम्भ होते हुए नहीं देखा। किसी भी व्यक्ति ने किसी ऐसी नयी जाति का नाम कभी नहीं सुना होगा जो एक ही दिन में आरम्भ हो गयी हो। धरती को बच्चा जनने के दर्द जैसी पीड़ा निश्चय ही पहले सहनी होगी। इस प्रसव पीड़ा के बाद ही वह धरती अपनी संतानों–एक नयी जाति को जन्म देगी। [9]जब मैं किसी स्त्री को बच्चा जनने की पीड़ा देता हूँ तो वह बच्चे को जन्म दे देती है।"

तुम्हारा यहोवा कहता है, "मैं तुम्हें बच्चा जनने की पीड़ा में डालकर तुम्हारा गर्भद्वार बंद नहीं कर देता। मैं तुम्हें इसी तरह इन विपत्तियों में बिना एक नयी जाति प्रदान किये, नहीं डालूँगा।"

10 हे यरूशलेम, प्रसन्न रहो!
हे लोगों, यरूशलेम के प्रेमियों,
तुम निश्चय ही प्रसन्न रहो।
यरूशलेम के संग दु:ख की बातें घटी थी
इसलिये तुममें से कुछ लोग भी दु:खी हैं।
किन्तु अब तुमको चाहिये कि
तुम बहुत–बहुत प्रसन्न हो जाओ।

11 क्यों? क्योंकि अब तुम को दया ऐसे मिलेगी
जैसे छाती से दूध मिल जाया करता है।
तुम यरुशलेम के वैभव का
सच्चा आनन्द पाओगे।

12 यहोवा कहता है, "देखो, मैं तुम्हें शांति दूंगा।
यह शांति तुम तक ऐसे पहुँचेगी
जैसे कोई महानदी बहती हुई पहुँच जाती है।
सब धरती के राष्ट्रों की धन–दौलत बहती हुई
तुम तक पहुँच जायेगी।
यह धन–दौलत ऐसे बहते हुये आयेगी
जैसे कोई बाढ़ की धारा।
तुम नन्हें बच्चों से होवोगे, तुम दूध पीओगे,
तुम को उठा लिया जायेगा
और गोद में थाम लिये जायेगा,
तुम्हें घुटनों पर उछाला जायेगा।

13 मैं तुमको दुलारुँगा जैसे माँ अपने
बच्चे को दुलारती है।
तुम यरूशलेम के भीतर चैन पाओगे।

14 तुम वे वस्तुऐं देखोगे जिनमें
तुम्हें सचमुच रस आता है।
तुम स्वतंत्र हो कर घास से बढोगे।
यहोवा की शक्ति को उसके लोग देखेंगे,
किन्तु यहोवा के शत्रु उसका क्रोध देखेंगे।"

[15]देखो, अग्नि के साथ यहोवा आ रहा है। धूल के बादलों के साथ यहोवा की सेनाएँ आ रही हैं। यहोवा अपने क्रोध से उन व्यक्तियों को दण्ड देगा। यहोवा जब क्रोधित होगा तो उन व्यक्तियों को दण्ड देने के लिये आग की लपटों का प्रयोग करेगा। [16]यहोवा लोगों का न्याय करेगा और फिर आग और अपनी तलवार से वह अपराधी लोगों को नष्ट कर डालेगा। यहोवा उन बहुत से लोगों को नष्ट कर देगा। वह अपनी तलवार से लाशों के अम्बार लगा देगा।

[17]यहोवा का कहना है, "वे लोग जो अपने बगीचों को पूजने के लिए स्नान करके पवित्र होते हैं और एक दूसरे के पीछे परिक्रमा करते हैं, वे जो सुअर का माँस

खाते हैं और चूहे जैसे घिनौने जीव जन्तुओं को खाते हैं, इन सभी लोगों का नाश होगा।

[18]"बुरे विचारों में पड़े हुए वे लोग बुरे काम किया करते हैं। इसलिए उन्हें दण्ड देने को मैं आ रहा हूँ। मैं सभी जातियों और सभी लोगों को इकट्ठा करुँगा। परस्पर एकत्र हुए सभी लोग मेरी शक्ति को देखेंगे। [19]कुछ लोगों पर मैं एक चिन्ह लगा दूँगा, मैं उनकी रक्षा करुँगा। इन रक्षा किये लोगों में से कुछ लोगों को मैं तर्शीश लिव्या और लूदी के लोगों के पास भेजूँगा। (इन देशों के लोग धनुर्धारी हुआ करते हैं।) तुबाल, यूनान और सभी दूर देशों में मैं उन्हें भेजूँगा। दूर देशों के उन लोगों ने मेरे उपदेश कभी नहीं सुने। उन लोगों ने मेरी महिमा का दर्शन भी नहीं किया है। सो वे बचाए गए लोग उन जातियों को मेरी महिमा के बारे में बतायेंगे। [20]वे तुम्हारे सभी भाइयों और बहनों को सभी देशों से यहाँ ले आयेंगे। तुम्हारे भाइयों और बहनों को वे मेरे पवित्र पर्वत पर यरूशलेम में ले आयेंगे। तुम्हारे भाई बहन यहाँ घोड़ों, खच्चरों, ऊँटों, रथों और पालकियों में बैठ कर आयेंगे। तुम्हारे वे भाई– बहन यहाँ उसी प्रकार से उपहार के रुप में लाये जायेंगे जैसे इस्राएल के लोग शुद्ध थालों में रख कर यहोवा के मन्दिर में अपने उपहार लाते हैं। [21]इन लोगों में से कुछ लोगों को मैं याजकों और लेवियों के रूप में चुन लूँगा। ये बातें यहोवा ने बताई थीं।

नये आकाश और नयी धरती

[22]"मैं एक नये संसार की रचना करुँगा। ये नये आकाश और नयी धरती सदा–सदा टिके रहेंगे और उसी प्रकार तुम्हारे नाम और तुम्हारे वंशज भी सदा मेरे साथ रहेंगे। [23]हर सब्त के दिन और महीने के पहले दिन वे सभी लोग मेरी उपासना के लिये आया करेंगे।

[24]"ये लोग मेरी पवित्र नगरी में होंगे और यदि कभी वे नगर से बाहर जायेंगे, तो उन्हें उन लोगों की लाशें दिखाई देंगी जिन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किये हैं। उन लाशों में कीड़े पड़े हुए होंगे और वे कीड़े कभी नहीं मरेंगे। उन देहों को आग जला डालेगी और वह आग कभी समाप्त नहीं होगी।"

यिर्मयाह

1 यिर्मयाह के ये सन्देश हैं। यिर्मयाह हिल्किय्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था। यिर्मयाह उन याजकों के परिवार से था जो अनातोत नगर में रहते थे। वह नगर उस प्रदेश में है जो बिन्यामीन परिवार का था। [2]यहोवा ने यिर्मयाह से उन दिनों बातें करनी आरम्भ की। जब योशिय्याह यहूदा राष्ट्र का राजा था। योशिय्याह आमोन नामक राजा का पुत्र था। यहोवा ने यिर्मयाह से योशिय्याह के राज्यकाल के तेरहवें वर्ष में बातें करनी आरम्भ की। [3]यहोवा यिर्मयाह से उस समय बातें करता रहा जब यहोयाकीम यहूदा का राजा था। यहोयाकीम योशिय्याह का पुत्र था। यिर्मयाह को सिदकिय्याह के राज्यकाल के ग्यारह वर्ष पाँच महीने तक, यहोवा की वाणी सुनाई पड़ती रही। सिदकिय्याह भी योशिय्याह का एक पुत्र था। सिदकिय्याह के राज्यकाल के ग्यारहवें वर्ष के पाँचवें महीने में यरूशलेम के निवासियों को देश–निकाला दिया गया था।

परमेश्वर यिर्मयाह को अपने पास बुलाता है

[4]यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यहोवा का सन्देश यह था:

5 "तुम्हारी माँ के गर्भ में रखने के पहले
मैंने तुमको जान लिया।
तुम्हारे जन्म लेने के पहले,
मैंने तुम्हें विशेष कार्य के लिये चुना था।
मैंने तुम्हें राष्ट्रों का नबी होने को चुना था।"

[6]तब मैंने अर्थात् यिर्मयाह ने कहा, "किन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा, मैं तो बोलना भी नहीं जानता। मैं तो अभी बालक ही हूँ।"

[7]किन्तु यहोवा ने मुझसे कहा,
"मत कहो, 'मैं बालक ही हूँ।'
तुम्हें हर उन स्थानों पर जाना है जहाँ मैं भेजूँ।
तुम्हें वह सब कहना है जिसे मैं कहने को कहूँ।
8 किसी से मत डरो।
मैं तुम्हारे साथ हूँ, और मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।"
यह सन्देश यहोवा का है।

[9]तब यहोवा ने अपना हाथ बढ़ाया और मेरे मुँह को छू लिया। यहोवा ने मुझसे कहा,
"यिर्मयाह, मैं अपने शब्द तेरे मुँह में दे रहा हूँ।
10 आज मैंने तुम्हें राज्यों और
राष्ट्रों का अधिकारी बनाया है।
तुम इन्हें उखाड़ और उजाड़ सकते हो।
तुम इन्हें नष्ट और उठा फेंक सकते हो।
तुम निर्माण और रोपण कर सकते हो।"

दो अर्न्तदृश्य

[11]यहोवा का सन्देश मुझे मिला। यह सन्देश यहोवा का था: "यिर्मयाह, तुम क्या देखते हो?"

मैंने यहोवा को उत्तर दिया और कहा, "मैं बादाम की लकड़ी की एक छड़ी देखता हूँ।"

[12]यहोवा ने मुझसे कहा, "तुमने बहुत ठीक देखा और मैं इस बात की चौकसी कर रहा हूँ कि तुमको दिया गया मेरा सन्देश ठीक उतरे।"

[13]यहोवा का सन्देश मुझे फिर मिला। यहोवा के यहाँ का सन्देश यह था, "यिर्मयाह, तुम क्या देखते हो?"

मैंने यहोवा को उत्तर दिया और कहा, "मैं उबलते पानी का एक बर्तन देख रहा हूँ। यह बर्तन उत्तर की ओर से टपक रहा है।"

[14]यहोवा ने मुझसे कहा, "उत्तर से कुछ भयानक आएगा। यह उन सब लोगों के लिए होगा जो इस देश में रहते हैं। [15]कुछ समय बाद मैं उत्तर के राज्यों के सभी लोगों को बुलाऊँगा।" ये बातें यहोवा ने कहीं। "उन देशों के राजा आएंगे। वे यरूशलेम के द्वार के सामने अपने सिंहासन जमाएंगे। वे यरूशलेम के सभी नगर दीवारों पर आक्रमण

करेंगे। वे यहूदा प्रदेश के सभी नगरों पर आक्रमण करेंगे। [16]और मैं अपने लोगों के विरुद्ध अपने निर्णय की घोषणा करुँगा। मैं यह इसलिये करूँगा, क्योंकि वे बुरे लोग हैं, और वे मेरे विरुद्ध चले गए हैं। मेरे लोगों ने मुझे छोड़ा। उन्होंने अन्य देवताओं को बलि चढ़ाई। उन्होंने अपने हाथों से बनाई गई मूर्तियों को पूजा।

[17]"यिर्मयाह, जहाँ तक तुम्हारी बात है, उठो। तैयार हो जाओ! उठो और लोगो को सन्देश दो। वह सब कुछ लोगों से कहो जो मैं कहने को कहूँ। लोगों से मत डरो। यदि तुम लोगों से डरे तो मैं उनसे डरने का अच्छा कारण तुम्हें दे दूँगा। [18]जहाँ तक मेरी बात है, मैं आज ही तुझे एक दृढ़ नगर, एक लौह स्तम्भ, एक काँसे की दीवार बनाने जा रहा हूँ। तुम देश में हर एक के विरुद्ध खड़े होने योग्य होगे, यहूदा देश के राजाओं के विरुद्ध, यहूदा के प्रमुखों के विरूद्ध, यहूदा के याजकों के विरुद्ध और यहूदा देश के लोगों के विरुद्ध भी। [19]वे सब लोग तुम्हारे विरुद्ध लड़ेंगे, किन्तु वे तुझे पराजित नहीं करेंगे। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, और मैं तेरी रक्षा करूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है।

यहूदा विश्वासयोग्य नहीं रहा

2 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यहोवा का सन्देश यह था: [2]"यिर्मयाह, जाओ और यरूशलेम के लोगों को सन्देश दो। उनसे कहो:

'जिस समय तुम नव राष्ट्र थे, तुम मेरे विश्वासयोग्य थे। तुमने मेरा अनुगमन नयी दुल्हन सा किया। तुमने मेरा अनुगमन मरुभूमि में से होकर किया, उस प्रदेश में अनुगमन किया जिसे कभी कृषि भूमि न बनाया गया था। [3]इस्राएल के लोग यहोवा को एक पवित्र भेंट थे। वे यहोवा द्वारा उतारे गये प्रथम फल थे। इस्राएल को चोट पहुँचाने का प्रयत्न करने वाले हर एक लोग अपराधी निर्णीत किये गए थे। उन बुरे लोगों पर बुरी आपत्तियाँ आई थीं।'" यह सन्देश यहोवा का था।

[4]याकूब के परिवार, यहोवा का सन्देश सुनो। इस्राएल के तुम सभी परिवार समूहो, सन्देश सुनो।

[5]जो यहोवा कहता है, वह यह है: "क्या तुम समझते हो कि, मैं तुम्हारे पूर्वजों का हितैषी नहीं था? तब वे क्यों मुझसे दूर हो गए? तुम्हारे पूर्वजों ने निरर्थक देव मूर्तियाँ पूजीं। और वे स्वंय निरर्थक हो गये। [6]तुम्हारे पूर्वजों ने यह नहीं कहा, 'यहोवा ने हमें मिस्र से निकाला। यहोवा ने मरुभूमि में हमारा नेतृत्व किया। यहोवा हमे सूखे चट्टानी प्रदेश से लेकर आया, यहोवा ने हमें अन्धकारपूर्ण और भयपूर्ण देशों में राह दिखाई। कोई भी लोग वहाँ नहीं रहते कोई भी लोग उस देश से यात्रा नहीं करते। लेकिन यहोवा ने उस प्रदेश में हमारा नेतृत्व किया। अत: वह यहोवा अब कहाँ हैं?'"

[7]"यहोवा कहता है, मैं तुम्हें अनेकअच्छी चीज़ों से भरे उत्तम देश में लाया।मैंने यह किया जिससे तुम वहाँ उगे हुये फल और पैदावार को खा सको। किन्तु तुम आए और मेरे देश को तुमने 'गन्दा' किया। मैंने वह देश तुम्हें दिया था, किन्तु तुमने उसे बुरा स्थान बनाया। [8]याजकों ने नहीं पूछा, 'यहोवा कहाँ हैं?' व्यवस्था को जाननेवाले लोगों ने मुझको जानना नहीं चाहा। इस्राएल के लोगों के प्रमुख मेरे विरुद्ध चले गए। नबियों ने झूठे बाल देवता के नाम भविष्यवाणी की। उन्होंने निरर्थक देव मूर्तियों की पूजा की।"

[9]यहोवा कहता है, "अत: मैं अब तुम्हें फिर दोषी करार दूँगा, और तुम्हारे पौत्रों को भी दोषी ठहराऊँगा। [10]समुद्र पार कित्तियों के द्वीपों को जाओ और देखो किसी को केदार प्रदेश को भेजो और उसे ध्यान से देखने दो। ध्यान से देखो क्या कभी किसी ने ऐसा काम किया: [11]क्या किसी राष्ट्र के लोगों ने कभी अपने पुराने देवताओं को नये देवता से बदला है? नहीं! निसन्देह उनके देवता वास्तव में देवता हैं ही नहीं। किन्तु मेरे लोगों ने अपने यशस्वी परमेश्वर को निरर्थक देव मूर्तियों से बदला हैं।

[12]"आकाश, जो हुआ है उससे अपने हृदय को आघात पहुँचने दो! भय से काँप उठो!" यह सन्देश यहोवा का था। [13]"मेरे लोगों ने दो पाप किये हैं। उन्होंने मुझे छोड़ दिया (मैं ताजे पानी का सोता हूँ।) और उन्होंने अपने पानी के निजी हौज खोदे हैं। (वे अन्य देवताओं के भक्त बने हैं।) किन्तु उनके हौज टूटे हैं। उन हौजों में पानी नहीं रुकेगा।

[14]"क्या इस्राएल के लोग दास हो गए हैं? क्या वे एक जन्मजात दास से हो गए हैं? इस्राएल के लोगों की सम्पत्ति अन्य लोगों ने क्यों ले ली? [15]जवान सिंह (शत्रु) इस्राएल राष्ट्र पर दहाड़ते हैं, गुर्राते हैं। सिंहों ने इस्राएल के लोगों का देश उजाड़ दिया हैं। इस्राएल के नगर जला दिये गए हैं। उनमें कोई भी नहीं रह गया है। [16]नोप और तहपन्हेस नगरों के लोगों ने तुम्हारे सिर के शीर्ष को

कुचल दिया है। 17यह परेशानी तुम्हारे अपने दोष के कारण है। तुम अपने यहोवा परमेश्वर से विमुख हो गए, जबकि वह सही दिशा में तुम्हें ले जा रहा था। 18यहूदा के लोगों, इसके बारे में सोचो: क्या उसने मिस्र जाने में सहायता की? क्या इसने नील नदी का पानी पीने में सहायता की? नहीं! क्या इसने अश्शूर जाने में सहायता की? क्या इसने परात नदी का जल पीने में सहायता की? नहीं! 19तुमने बुरे काम किये, और वे बुरी चीजें तुम्हें केवल दण्ड दिलाएंगी। विपत्तियाँ तुम पर टूट पड़ेंगी और ये विपत्तियाँ तुम्हें पाठ पढ़ाएंगी। इस विषय में सोचो; तब तुम यह समझोगे कि अपने परमेश्वर से विमुख हो जाना कितना बुरा है। मुझसे न डरना बुरा है।" यह सन्देश मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा का था।

20"यहूदा बहुत पहले तुमने अपना जुआ फेंक दिया था। तुमने वह रस्सियाँ तोड़ फेंकी जिसे मैं तुम्हें अपने पास रखने में काम में लाता था। तुमने मुझसे कहा, 'मैं आपकी सेवा नहीं करूँगा!' सच्चाई यह है कि तुम वेश्या की तरह हर एक ऊँची पहाड़ी पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे लेटे और काम किये। 21यहूदा, मैंने तुम्हें विशेष अंगूर की बेल की तरह रोपा। तुम सभी अच्छे बीज के समान थे। तुम उस भिन्न बेल में कैसे बदले जो बुरे फल देती है? 22यदि तुम अपने को ल्ये से भी धोओ, बहुत साबुन भी लगाओ, तो भी मैं तुम्हारे दोष के दाग को देख सकता हूँ।" यह सन्देश परमेश्वर यहोवा का था।

23"यहूदा, तुम मुझसे कैसे कह सकते हो, 'मैं अपराधी नहीं हूँ। मैंने बाल की मूर्तियों की पूजा नहीं की है?' उन कामों के बारे में सोचों जिन्हें तुमने घाटी में किये। उस बारे में सोचों, तुमने क्या कर डाला है। तुम उस तेज ऊँटनी के समान हो जो एक स्थान से दूसरे स्थान को दौड़ती है। 24तुम उस जँगली गधी की तरह हो जो मरुभूमि में रहती है और सहभोग के मौसम में जो हवा को सूंघती है (गन्ध लेती है।) कोई व्यक्ति उसे कामोत्तेजना के समय लौटा कर ला नहीं सकता। सहभोग के समय हर एक गधा जो उसे चाहता है, पा सकता है। उसे खोज निकालना सरल है। 25यहूदा, देवमूर्तियों के पीछे दौड़ना बन्द करो। उन अन्य देवताओं के लिये प्यास को बुझ जाने दो। किन्तु तुम कहते हो, 'यह व्यर्थ है! मैं छोड़ नहीं सकता! मैं उन अन्य देवताओं से प्रेम करता हूँ। मैं उनकी पूजा करना चाहता हूँ।'

26"चोर लज्जित होता है जब उसे लोग पकड़ लेते हैं। उसी प्रकार इस्राएल का परिवार लज्जित है। राजा और प्रमुख, याजक और नबी लज्जित हैं। 27वे लोग लकड़ी के टुकड़ो से बातें करते हैं, वे कहते हैं, 'तुम मेरे पिता हो।' वे लोग चट्टान से बात करते हैं, वे कहते हैं, 'तुमने मुझे जन्म दिया है।' वे सभी लोग लज्जित होंगे। वे लोग मेरी ओर ध्यान नहीं देते। उन्होंने मुझसे पीठ फेर ली है। किन्तु जब यहूदा के लोगों पर विपत्ति आती है तब वे मुझसे कहते हैं, 'आ और हमें बचा!' 28उन देवमूर्तियों को आने और तुमको बचाने दो! वे देवमूर्तियाँ कहाँ हैं जिसे तुमने अपने लिये बनाया है? हमें देखने दो, क्या वे मूर्तियाँ आती हैं और तुम्हारी रक्षा विपत्ति से करती हैं? यहूदा के लोगों, तुम लोगों के पास उतनी मूर्तियाँ हैं जितने नगर।

29"तुम मुझसे विवाद क्यों करते हो? तुम सभी मेरे विरुद्ध हो गए हो।" यह सन्देश यहोवा का था। 30"यहूदा के लोगों, मैंने तुम्हारे लोगों को दण्ड दिया, किन्तु इसका कोई परिणाम न निकला। तुम तब लौट कर नहीं आए जब दण्डित किये गये। तुमने उन नबियों को तलवार के घाट उतारा जो तुम्हारे पास आए। तुम खूंखार सिंह की तरह थे और तुमने नबियों को मार डाला।" 31इस पीढ़ी के लोगों, यहोवा के सन्देश पर ध्यान दो:

"क्या मैं इस्राएल के लोगों के लिये मरुभूमि सा बन गया? क्या मैं उनके लिये अंधेरे और भयावने देश सा बन गया? मेरे लोग कहते हैं, 'हम अपनी राह जाने को स्वतन्त्र हैं, यहोवा, हम फिर तेरे पास नहीं लौटेंगे!' वे उन बातों को क्यों कहते हैं? 32क्या कोई युवती अपने आभूषण भूलती है? नहीं। क्या कोई दुल्हन अपने श्रृंगार के लिए अपना दुपट्टा भूल जाती है? नहीं। किन्तु मेरे लोग मुझे अनगिनत दिनों से भूल गए हैं।

33"यहूदा, तुम सचमुच प्रेमियों (झूठे देवताओं) के पीछे पड़ना जानते हो। अत: तुमने पाप करना स्वयं ही सीख लिया है। 34तुम्हारे हाथ खून से रंगे हैं! यह गरीब और भोले लोगों का खून है। तुमने लोगो को मारा और वे लोग ऐसे चोर भी नहीं थे जिन्हें तुमने पकड़ा हो! तुम वे बुरे काम करते हो! 35किन्तु तुम फिर भी कहते रहते हो, 'हम निरपराध हैं। परमेश्वर मुझ पर क्रोधित नहीं है।' अत: मैं तुम्हें झूठ बोलने वाला अपराधी होने का भी निर्णय दूँगा। क्यों? क्योंकि तुम कहते हो, 'मैंने कुछ भी बुरा नहीं किया है।' 36तुम्हारे लिये इरादे को बदलना बहुत

आसान है। अश्शूर ने तुम्हें हताश किया! अत: तुमने अश्शूर को छोड़ा और सहायता के लिये मिस्र पहुँचे। मिस्र तुम्हें हताश करेगा। [37]ऐसा होगा कि तुम मिस्र भी छोड़ोगे और तुम्हारे हाथ लज्जा से तुम्हारी आँखों पर होंगे। तुमने उन देशों पर विश्वास किया। किन्तु तुम्हें उन देशों में कोई सफलता नहीं मिलेगी। क्यों? क्योंकि यहोवा ने उन देशों को अस्वीकार कर दिया है।

3 "यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक देता है, और वह पत्नी उसे छोड़ देती है तथा अन्य व्यक्ति से विवाह कर लेती है तो क्या वह व्यक्ति अपनी पत्नी के पास फिर आ सकता है? नहीं! यदि वह व्यक्ति उस स्त्री के पास लौटेगा तो देश पूरी तरह गन्दा हो जाएगा। यहूदा, तुमने वेश्या की तरह अनेक प्रेमियों (असत्य देवताओं) के साथ काम किये और अब तुम मेरे पास लौटना चाहते हो!" यह सन्देश यहोवा का था। [2]"यहूदा, खाली पहाड़ी की चोटी को देखो। क्या कोई ऐसी जगह है जहाँ तुम्हारा अपने प्रेमियों (असत्य देवताओं) के साथ शारीरिक सम्बन्ध न चला? तुम सड़क के किनारे प्रेमियों की प्रतीक्षा करती बैठी हो। तुम वहाँ मरुभूमि में प्रतीक्षा करते अरब की तरह बैठी। तुमने देश को गन्दा किया है! कैसे? तुमने बहुत से बुरे काम किये और तुम मेरी अभक्त रही। [3]तुमने पाप किये अत: वर्षा नहीं आई! बसन्त समय की कोई वर्षा नहीं हुई। किन्तु अभी भी तुम लज्जित होने से इन्कार करती हो तुम्हारे चेहरे पर वेश्या का वह भाव है जब वह लज्जित होने से इन्कार करती है। तुम अपने किये कामों पर लज्जित होने से भी इन्कार करती हो। [4]किन्तु अब तुम मुझे बुलाती हो। 'मेरे पिता, तू मेरे बचपन से मेरे प्रिय मित्र रहा है।' [5]तुमने ये भी कहा 'परमेश्वर सदैव मुझ पर क्रोधित नहीं रहेगा। परमेश्वर का क्रोध सदैव बना नहीं रहेगा।'

"यहूदा, तुम यह सब कुछ कहती हो, किन्तु तुम उतने ही पाप करती हो जितने तुम कर सकती हो।"

दो बुरी बहनें: इस्राएल और यहूदा

[6]उन दिनों जब योशिय्याह यहूदा राष्ट्र पर शासन कर रहा था। यहोवा ने मुझसे बातें की। यहोवा ने कहा, "यिर्मयाह, तुमने उन बुरे कामों को देखा जो इस्राएल ने किये? तुमने देखा कि उसने कैसे मेरे साथ विश्वासघात किया। उसने हर एक पहाड़ी के ऊपर और हर एक हरे पेड़ के नीच झूठी मूर्तियों की पूजा करके व्यभिचार करने का पाप किया। [7]मैंने अपने से कहा, 'इस्राएल मेरे पास तब लौटेगी जब वह इन बुरे कामों को कर चुकेगी।' किन्तु वह मेरे पास लौटी नहीं और इस्राएल की अविश्वासी बहन यहूदा ने देखा कि उसने क्या किया है? [8]इस्राएल विश्वासघातिनी थी और यहूदा जानती थी कि मैंने उसे क्यों दूर हटाया। यहूदा जानती थी कि मैंने उसको इसलिए अस्वीकृत किया कि उसने व्यभिचार का पाप किया था। किन्तु इसने उसकी विश्वासघाती बहन को डराया नहीं। यहूदा डरी नहीं। यहूदा भी निकल गई और उसने वेश्या की तरह काम किया। [9]यहूदा ने यह ध्यान भी नहीं दिया कि वह वेश्या की तरह काम कर रही है। अत: उसने अपने देश को 'गन्दा' किया। उसने लकड़ी और पत्थर की बनी देवमूर्तियों की पूजा करके व्यभिचार का पाप किया। [10]इस्राएल की अविश्वासी बहन (यहूदा) अपने पूरे हृदय से मेरे पास नहीं लौटी। उसने केवल बहाना बनाया कि वह मेरे पास लौटी है।" यह सन्देश यहोवा का था।

[11]यहोवा ने मुझसे कहा, "इस्राएल मेरी भक्त नहीं रही। किन्तु उसके पास कपटी यहूदा की अपेक्षा अच्छा बहाना था। [12]यिर्मयाह, उत्तर की ओर देखो और यह सन्देश बोलो:

'अविश्वासी इस्राएल के लोगों तुम लौटो।'
यह सन्देश यहोवा का था।
'मैं तुम पर भौंहे चढ़ाना छोड़ दूँगा,
मैं दयासागर हूँ।'
यह सन्देश यहोवा का था।
'मैं सदैव तुम पर क्रोधित नहीं रहूँगा।
[13] तुम्हें केवल इतना करना होगा कि
तुम अपने पापों को पहचानो।
तुम यहोवा अपने परमेश्वर के विरुद्ध गए,
यह तुम्हारा पाप है।
तुमने अन्य राष्ट्रों के लोगों की देव मूर्तियों को
अपना प्रेम दिया।
तुमने देव मूर्तियों की पूजा हर एक
हरे पेड़ के नीचे की।
तुमने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया।'"
यह सन्देश यहोवा का था।

14"अभक्त लोगों, मेरे पास लौट आओ।" यह सन्देश यहोवा का था।

"मैं तुम्हारा स्वामी हूँ। मैं हर एक नगर से एक व्यक्ति लूँगा और हर एक परिवार से दो व्यक्ति और तुम्हें सिय्योन पर लाऊँगा। 15तब मैं तुम्हें नये शासक दूँगा। वे शासक मेरे भक्त होंगे। वे तुम्हारा मार्ग दर्शन ज्ञान और समझ से करेंगे। 16उन दिनों तुम लोग बड़ी संख्या में देश में होगे।" यह सन्देश यहोवा का है।

"उस समय लोग फिर यह कभी नहीं कहेंगे, 'मैं उन दिनों को याद करता हूँ जब हम लोगों के पास यहोवा का साक्षीपत्र का सन्दूक था।' वे पवित्र सन्दूक के बारे में फिर कभी सोचेंगे भी नहीं। वे न तो इसे याद करेंगे और न ही उसके लिये अफसोस करेंगे। वे दूसरा पवित्र सन्दूक कभी नहीं बनाएंगे। 17उस समय, यरूशलेम नगर 'यहोवा का सिंहासन' कहा जाएगा। सभी राष्ट्र एक साथ यरूशलेम नगर में यहोवा के नाम को सम्मान देने आएंगे। वे अपने हठी और बुरे हृदय के अनुसार अब कभी नहीं चलेंगे। 18उन दिनों यहूदा का परिवार इस्राएल के परिवार के साथ मिल जायेगा। वे उत्तर में एक देश से एक साथ आएंगे। वे उस देश में आएंगे जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दिया था।

19"मैंने अर्थात् यहोवा ने अपने से कहा, 'मैं तुमसे अपने बच्चो का सा व्यवहार करना चाहता हूँ, मैं तुम्हें एक सुहावना देश देना चाहता हूँ। वह देश जो किसी भी राष्ट्र से अधिक सुन्दर होगा।' मैंने सोचा था कि तुम मुझे 'पिता' कहोगे। मैंने सोचा था कि तुम मेरा सदैव अनुसरण करोगे। 20किन्तु तुम उस स्त्री की तरह हुए जो पतिव्रता नहीं रही। इस्राएल के परिवार, तुम मेरे प्रति विश्वासघाती रहे!" यह सन्देश यहोवा का था। 21तुम नंगी पहाड़ियों पर रोना सुन सकते हो। इस्राएल के लोग कृपा के लिये रो रहे और प्रार्थना कर रहे हैं। वे बहुत बुरे हो गए थे। वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए थे।

22यहोवा ने यह भी कहा। "इस्राएल के अविश्वासी लोगों, तुम मेरे पास लौट आओ। मेरे पास लौटो, और मैं तुम्हारे अविश्वासी होने के अपराध को क्षमा करूँगा।" लोगों को कहना चाहिये, "हाँ, हम लोग तेरे पास आएँगे तू हमारा परमेश्वर यहोवा है। 23पहाड़ियों पर देवमूर्तियों की पूजा मूर्खता थी। पर्वतों के सभी गरजने वाले दल केवल थोथे निकले। निश्चय ही इस्राएल की मुक्ति, यहोवा अपने परमेश्वर से है। 24हमारे पूर्वजों की हर एक अपनी चीज बलि रूप में उस घृणित ने खाई है। यह तब हुआ जब हम लोग बच्चे थे। उस घृणित ने हमारे पूर्वजों के पशु भेड़, पुत्र, पुत्री लिये। 25हम अपनी लज्जा में गड़ जायँ, अपनी लज्जा को हम कम्बल की तरह अपने को लपेट लेने दें। हमने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। बचपन से अब तक हमने और हमारे पूर्वजों ने पाप किये हैं। हमने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा नहीं मानी है।"

4 यह सन्देश यहोवा का है। "इस्राएल, यदि तुम लौट आना चाहो, तो मेरे पास आओ। अपनी देव मूर्तियों को फेंको। मुझसे दूर न भटको। 2यदि तुम वे काम करोगे तो प्रतिज्ञा करने के लिये मेरे नाम का उपयोग करने योग्य बनोगे, तुम यह कहने योग्य होगे, 'जैसा कि यहोवा शाश्वत है।' तुम इन शब्दों का उपयोग सच्चे, ईमानदारी भरे और सही तरीके से करने योग्य बनोगे। यदि तुम ऐसा करोगे तो राष्ट्र यहोवा द्वारा वरदान पाएगा और वे यहोवा द्वारा किये गए कामों को गर्व से बखान करेंगे।"

3यहूदा राष्ट्र के मनुष्यों और यरूशलेम नगर से, यहोवा जो कहता है, वह यह है: "तुम्हारे खेतों में हल नहीं चले हैं। खेतों में हल चलाओ। काँटो में बीज न बोओ। 4यहोवा के लोग बनो, अपने हृदय को बदलो। यहूदा के लोगों और यरूशलेम के निवासियों, यदि तुम नहीं बदले, तो मैं बहुत क्रोधित होऊँगा। मेरा क्रोध आग की तरह फैलेगा और मेरा क्रोध तुम्हें जला देगा और कोई व्यक्ति उस आग को बुझा नहीं पाएगा। यह क्यों होगा? क्योंकि तुमने बुरे काम किये हैं।"

उत्तर दिशा से विध्वंस

5यहूदा के लोगों में इस सन्देश की घोषणा करो: यरूशलेम नगर के हर एक व्यक्ति से कहो, 'सारे देश में तुरही बजाओ।' जोर से चिल्लाओ और कहो, 'एक साथ आओ, हम सभी रक्षा के लिये दृढ़ नगरों को भाग निकलें।' 6सिय्योन की ओर सूचक ध्वज उठाओ, अपने जीवन के लिये भागो, प्रतीक्षा न करो। यह इसलिये करो कि मैं उत्तर से विध्वंस ला रहा हूँ। मैं भयंकर विनाश ला रहा हूँ। 7एक सिंह अपनी गुफा से निकला है, राष्ट्रों का विध्वंसक तेज कदम बढ़ाना आरम्भ कर चुका है। वह तुम्हारे देश को नष्ट करने के लिये अपना घर छोड़ चुका है। तुम्हारे

नगर ध्वस्त होंगे। उनमें रहने वाला कोई व्यक्ति नहीं बचेगा। [8]अत: टाट के कपड़े पहनो, रोओ, क्यों? क्योंकि यहोवा हम पर बहुत क्रोधित है।" [9]यह सन्देश यहोवा का है, ऐसे समय यह होता है। राजा और प्रमुख साहस खो बैठेंगे, याजक डरेंगे, नबियों का दिल दहलेगा।"

[10]तब मैंने अर्थात् यिर्मयाह ने कहा, "मेरे स्वामी यहोवा, तूने सचमुच यहूदा और यरूशलेम के लोगों को धोखे में रखा है। तूने उनसे कहा, 'तुम शान्तिपूर्वक रहोगे।' किन्तु अब उनके गले तर तलवार खिंची हुई है।"

[11]उस समय एक सन्देश यहूदा और यरूशलेम के लोगों को दिया जाएगा: "नंगी पहाड़ियों से गरम आँधी चल रही है। यह मरुभूमि से मेरे लोगों की ओर आ रही है। यह वह मन्द हवा नहीं जिसका उपयोग किसान भूसे से अन्न निकालने के लिये करते हैं। [12]यह उससे अधिक तेज हवा है और मुझसे आ रही है। अब मैं यहूदा के लोगों के विरुद्ध अपने न्याय की घोषणा करूँगा।" [13]देखो! शत्रु मेघ की तरह उठ रहा है, उसके रथ चक्रवात के समान है। उसके घोड़े उकाब से तेज हैं। यह हम सब के लिये बुरा होगा, हम बरबाद हो जाएंगे।

[14]यरूशलेम के लोगों, अपने हृदय से बुराइयों को धो डालो। अपने हृदयों को पवित्र करो, जिससे तुम बच सको। बुरी योजनायें मत बनाते चलो। [15]दान देश के दूत की वाणी, जो वह बोलता है, ध्यान से सुनो। कोई एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश से बुरी खबर ला रहा है। [16]"इस राष्ट्र को इसका विवरण दो। यरूशलेम के लोगों में इस खबर को फैलाओ। शत्रु दूर देश से आ रहे हैं। वे शत्रु यहूदा के नगरों के विरुद्ध युद्ध–उद्घोष कर रहे हैं। [17]शत्रुओं ने यरूशलेम को ऐसे घेरा है जैसे खेत की रक्षा करने वाले लोग हो। यहूदा, तुम मेरे विरुद्ध गए, अत: तुम्हारे विरुद्ध शत्रु आ रहे हैं!" यह सन्देश यहोवा का है!

[18]"जिस प्रकार तुम रहे और तुमने पाप किया उसी से तुम पर यह विपत्ति आई। यह तुम्हारे पाप ही हैं जिसने जीवन को इतना कठिन बनाया है। यह तुम्हारा पाप ही है जो उस पीड़ा को लाया जो तुम्हारे हृदय को बेधती है।"

यिर्मयाह का रुंदन

[19]आह, मेरा दु:ख और मेरी परेशानी मेरे पेट मे दर्द कर रही हैं। मेरा हृदय धड़क रहा है। हाय, मैं इतना भयभीत हूँ। मेरा हृदय मेरे भीतर तड़प रहा है। मैं चुप नहीं बैठ सकता। क्यों? क्योंकि मैंने तुरही का बजना सुना है। तुरही सेना को युद्ध के लिये बुला रही है। [20]ध्वंस के पीछे विध्वंस आता है। पूरा देश नष्ट हो गया है। अचानक मेरे डेरे नष्ट कर दिये गये हैं, मेरे परदे फाड़ दिये गए हैं। [21]हे यहोवा, मैं कब तक युद्ध पताकायें देखूँगा? युद्ध की तुरही को कितने समय सुनूँगा?

[22]परमेश्वर ने कहा, "मेरे लोग मूर्ख हैं। वे मुझे नहीं जानते। वे बेवकूफ बच्चे हैं। वे समझते नहीं। वे पाप करने में दक्ष हैं, किन्तु वे अच्छा करना नहीं जानते।"

विनाश आ रहा है

[23]मैंने धरती को देखा। धरती खाली थी, इस पर कुछ नहीं था। मैंने गगन को देखा, और इसका प्रकाश चला गया था। [24]मैंने पर्वतों पर नजर डाली, और वे काँप रहे थे। सभी पहाड़ियाँ लड़खड़ा रही थीं। [25]मैंने ध्यान से देखा, किन्तु कोई मनुष्य नहीं था, आकाश के सभी पक्षी उड़ गए थे। [26]मैंने देखा कि सुहावना प्रदेश मरुभूमि बन गया था। उस देश के सभी नगर नष्ट कर दिये गये थे। यहोवा ने यह कराया। यहोवा और उसके प्रचण्ड क्रोध ने यह कराया।

[27]यहोवा ये बातें कहता है: "पूरा देश बरबाद हो जाएगा। (किन्तु मैं देश को पूरी तरह नष्ट नहीं करुँगा।) [28]अत: इस देश के लोग मरे लोगों के लिये रोयेंगे। आकाश अँधकारपूर्ण होगा। मैंने कह दिया है, और बदलूँगा नहीं। मैंने एक निर्णय किया है, और मैं अपना विचार नहीं बदलूँगा।"

[29]यहूदा के लोग घुड़सवारों और धनुर्धारियों का उद्घोष सुनेंगे, और लोग भाग जायेंगे। कुछ लोग गुफाओं में छिपेंगे कुछ झाड़ियों में तथा कुछ चट्टानों पर चढ़ जाएंगे। यहूदा के सभी नगर खाली हैं। उनमें कोई नहीं रहता।

[30]हे यहूदा, तुम नष्ट कर दिये गये हो, तुम क्या कर रहे हो? तुम अपने सुन्दरतम लाल वस्त्र क्यों पहनते हो? तुम अपने सोने के आभूषण क्यों पहने हो? तुम अपनी आँखों में अन्जन क्यों लगाते हो। तुम अपने को सुन्दर बनाते हो, किन्तु यह सब व्यर्थ है। तुम्हारे प्रेमी तुमसे घृणा करते हैं, वे मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं।

[31]मैं एक चीख सुनता हूँ जो उस स्त्री की चीख की तरह है जो बच्चा जन्म रही हो। यह चीख उस स्त्री की तरह है जो प्रथम बच्चे को जन्म रही हो। यह सिय्योन की पुत्री की चीख है। वह अपने हाथ प्रार्थना में यह कहते हुए उठा रही है, "आह! मैं मूर्छित होने वाली हूँ, हत्यारे मेरे चारों ओर हैं!"

यहूदा के लोगों के पाप

5 यहोवा कहता है: "यरूशलेम की सड़कों पर ऊपर नीचे जाओ। चारों ओर देखो और इन चीजों के बारे में सोचो। नगर के सार्वजनिक चौराहो को खोजो, पता करो कि क्या तुम किसी एक अच्छे व्यक्ति को पा सकते हो, ऐसे व्यक्ति को जो ईमानदारी से काम करता हो, ऐसा जो सत्य की खोज करता हो। यदि तुम एक अच्छे व्यक्ति को ढूँढ निकालोगे तो मैं यरूशलेम को क्षमा कर दूँगा! [2]लोग प्रतिज्ञा करते हैं और कहते हैं, 'जैसा कि यहोवा शाश्वत है।' किन्तु वे सच्चाई से यही तात्पर्य नहीं रखते।"

[3]हे यहोवा, मैं जानता हूँ कि तू लोगों में सच्चाई देखना चाहता है। तूने यहूदा के लोगों को चोट पहुँचाई, किन्तु उन्होंने किसी पीड़ा का अनुभव नहीं किया। तूने उन्हें नष्ट किया, किन्तु उन्होंने अपना सबक सीखने से इन्कार कर दिया। वे बहुत हठी हो गए। उन्होंने अपने पापों के लिये पछताने से इन्कार कर दिया।

[4]किन्तु मैं (यिर्मयाह) ने अपने से कहा, "वे केवल गरीब लोग ही है जो उतने मूर्ख हैं। ये वही लोग हैं जो यहोवा के मार्ग को नहीं सीख सके! गरीब लोग अपने परमेश्वर की शिक्षा को नहीं जानते। [5]इसलिये मैं यहूदा के लोगों के प्रमुखों के पास जाऊँगा। मैं उनसे बातें करूँगा। निश्चय ही प्रमुख यहोवा के मार्ग को समझते हैं। मुझे विश्वास है कि वे अपने परमेश्वर के नियमों को जानते हैं।" किन्तु सभी प्रमुख यहोवा की सेवा करने से इन्कार करने में एक साथ हो गए। [6]वे परमेश्वर के विरुद्ध हुए, अत जंगल का एक सिंह उन पर आक्रमण करेगा। मरुभूमि में एक भेड़िया उन्हें मार डालेगा। एक तेंदुआ उनके नगरों के पास घात लगाये है। नगरों के बाहर जाने वाले किसी को भी तेंदुआ टुकड़ों में चीर डालेगा। यह होगा, क्योंकि यहूदा के लोगों ने बार–बार पाप किये हैं। वे कई बार यहोवा से दूर भटक गए हैं।

[7]परमेश्वर ने कहा, "यहूदा, मुझे कारण बताओ कि मुझे तुमको क्षमा क्यों कर देना चाहिये? तुम्हारी सन्तानों ने मुझे त्याग दिया है। उन्होंने उन देवमूर्तियों से प्रतिज्ञा की है जो परमेश्वर हैं ही नहीं। मैंने तुम्हारी सन्तानों को हर एक चीज़ दी जिसकी जरुरत उन्हें थी। किन्तु फिर भी वे विश्वासघाती रहे! उन्होंने वेश्यालयों में बहुत समय बिताया। [8]वे उन घोड़ों जैसे रहे जिन्हें बहुत खाने को है, और जो जोड़ा बनाने को हो। वे उन घोड़ों जैसे रहे जो पड़ोसी की पत्नियों पर हिन हिना रहे हैं। [9]क्या मुझे यहूदा के लोगों को ये काम करने के कारण, दण्ड देना चाहिए? यह सन्देश यहोवा का है। हाँ! तुम जानते हो कि मुझे इस प्रकार के राष्ट्र को दण्ड देना चाहिये। मुझे उन्हें वह दण्ड देना चाहिए जिसके वे पात्र हैं।

[10]यहूदा की अंगूर की बेलों की कतारों के सहारे से निकलो। बेलों को काट डालो। (किन्तु उन्हें पूरी तरह नष्ट न करो।) उनकी सारी शाखायें छाँट दो? क्योंकि ये शाखाये यहोवा की नहीं हैं। [11]इस्राएल और यहूदा के परिवार हर प्रकार से मेरे विश्वासघाती रहे हैं।" यह सन्देश यहोवा के यहाँ से है।

[12]"उन लोगों ने यहोवा के बारे में झूठ कहा है। उन्होंने कहा हैं, 'यहोवा हमारा कुछ नहीं करेगा। हम लोगों का कुछ भी बुरा न होगा। हम किसी सेना का आक्रमण अपने ऊपर नहीं देखेंगे। हम कभी भूखों नहीं मरेंगे।' [13]झूठे नबी मरे प्राण हैं। परमेश्वर का सन्देश उनमें नहीं उतरा है। विपत्तियाँ उन पर आयेंगी।"

[14]सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा ने यह सब कहा, "उन लोगों ने कहा कि मैं उन्हें दण्ड नहीं दूँगा। अत: यिर्मयाह, जो सन्देश मैं तुझे दे रहा हूँ, वह आग जैसा होगा और वे लोग लकड़ी जैसे होंगे। आग सारी लकड़ी जला डालेगी।" [15]इस्राएल के परिवार, यह सन्देश यहोवा का है, "तुम पर आक्रमण के लिये मैं एक राष्ट्र को बहुत दूर से जल्दी ही लाऊँगा। यह एक पुराना राष्ट्र है। यह एक प्राचीन राष्ट्र है। उस राष्ट्र के लोग वह भाषा बोलते हैं जिसे तुम नहीं समझते। तुम नहीं समझ सकते कि वे क्या कहते हैं? [16]उनके तरकश खुली कब्र हैं, उनके सभी लोग वीर सैनिक हैं। [17]वे सैनिक तुम्हारी घर लाई फसल को खा जाएंगे। वे तुम्हारा सारा भोजन खा जाएंगे। वे तुम्हारे पुत्र–पुत्रियों को खा जाएंगे (नष्ट कर देंगे) वे तुम्हारे रेवड़ और पशु झुण्ड को चट कर जाएंगे। वे

तुम्हारे अंगूर और अंजीर को चाट जाएंगे। वे तुम्हारे दृढ़ नगरों को अपनी तलवारों से नष्ट कर डालेंगे। जिन नगरों पर तुम्हारा विश्वास है उन्हें वे नष्ट कर देंगे।"

[18]यह सन्देश यहोवा का है। "किन्तु कब वे भयानक दिन आते हैं, यहूदा मैं तुझे पूरी तरह नष्ट नहीं करूँगा। [19]यहूदा के लोग तुमसे पूछेंगे, 'यिर्मयाह, हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारा ऐसा बुरा क्यों किया?' उन्हें यह उत्तर दो, 'यहूदा के लोगों, तुमने यहोवा को त्याग दियाहै, और तुमने अपने ही देश में विदेशी देव मूर्तियों की पूजा की है। तुमने वे काम किये, अत: तुम अब उस देश में जो तुम्हारा नहीं है,विदेशियों की सेवा करोगे।'"

[20]यहोवा ने कहा, "याकूब के परिवार में, इस सन्देश की घोषणा करो। इस सन्देश को यहूदा राष्ट्र में सुनाओ। [21]इस सन्देश को सुनो, तुम मूर्ख लोगों, तुम्हें समझ नहीं हैं: 'तुम लोगों की आँखें है, किन्तु तुम देखते नहीं! तुम लोगों के कान हैं, किन्तु तुम सुनते नहीं!' [22]निश्चय ही तुम मुझसे भयभीत हो।" यह सन्देश यहोवा का है। "मेरे सामने तुम्हें भय से काँपना चाहिये। मैं ही वह हूँ, जिसने समुद्र तटों को समुद्र की मर्यादा बनाई। मैंने बालू की ऐसी सीमा बनाई जिसे पानी तोड़ नहीं सकता। तरंगे तट को कुचल सकती हैं, किन्तु वे इसे नष्ट नहीं करेंगी। चढ़ती हुई तरंगे गरज सकती हैं, किन्तु वे तट की मर्यादा तोड़ नहीं सकती। [23]किन्तु यहूदा के लोग हठी हैं। वे हमेशा मेरे विरुद्ध जाने की योजना बनाते हैं। वे मुझसे मुड़े हैं और मुझसे दूर चले गए हैं। [24]यहूदा के लोग कभी अपने से नहीं कहते, 'हमें अपने परमेश्वर यहोवा से डरना और उसका सम्मान करना चाहिए। वह हमे ठीक समय पर पतझड़ और बसन्त की वर्षा देता है। वे यह निश्चित करता है कि हम ठीक समय पर फसल काट सकें।' [25]यहूदा के लोगों, तुमने अपराध किया है। अत: वर्षा और पकी फसल नहीं आई। तुम्हारे पापों ने तुम्हें यहोवा की उन अच्छी चीजों का भोग नहीं करने दिया है। [26]मेरे लोगों के बीच पापी लोग हैं। वे पापी लोग पक्षियों को फँसाने के लिये जाल बनाने वालों के समान हैं। वे लोग अपना जाल बिछाते हैं, किन्तु वे पक्षी के बदले मनुष्यों को फँसाते हैं। [27]इन व्यक्तियों के घर झूठ से वैसे भरे होते हैं, जैसे चिड़ियों से भरे पिंजरे हों। उनके झूठ ने उन्हें धनी और शक्तिशाली बनाया है। [28]जिन पापों को उन्होंने किया है उन्ही से वे बड़े और मोटे हुए हैं। जिन बुरे कामों को वे करते हैं उनका कोई अन्त नहीं। वे अनाथ बच्चों के मामले के पक्ष में बहस नहीं करेंगे, वे अनाथों की सहायता नहीं करेंगे। वे गरीब लोगों को उचित न्याय नहीं पानें देंगे। [29]क्या मुझे इन कामों के करने के कारण यहूदा को दण्ड देना चाहिये?" यह सन्देश यहोवा का है। "तुम जानते हो कि मुझे ऐसे राष्ट्र को दण्ड देना चाहिये। मुझे उन्हें वह दण्ड देना चाहिए जो उन्हें मिलना चाहिए।"

[30]यहोवा कहता है, "यहूदा देश में एक भयानक और दिल दहलाने वाली घटना घट रही है। जो हुआ है वह यह है कि: [31]नबी झूठ बोलते हैं, याजक अपने हाथ में शक्ति लेते हैं। मेरे लोग इसी तरह खुश हैं। किन्तु लोगों, तुम क्या करोगे जब दण्ड दिया जायेगा?"

शत्रु द्वारा यरूशलेम का घेराव

6 बिन्यामीन के लोगों, अपनी जान लेकर भागो, यरूशलेम नगर से भाग चलो! युद्ध की तुरही तकोआ नगर में बजाओ! बेथक्केरेम नगर में खतरे का झण्डा लगाओ! ये काम करो क्योंकि उत्तर की ओर से विपत्ति आ रही है। तुम पर भयंकर विनाश आ रहा है। [2]सिय्योन की पुत्री, तुम एक सुन्दर चरागाह के समान हो। [3]गड़ेरिये यरूशलेम आते हैं, और वे अपनी रेवड़ लाते हैं। वे उसके चारों ओर अपने डेरे डालते हैं। हर एक गड़ेरिया अपनी रेवड़ की रक्षा करता है।

[4]"यरूशलेम नगर के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार हो जाओ! उठो, हम लोग दोपहर को नगर पर आक्रमण करेंगे, किन्तु पहले ही देर हो चुकी है। संध्या की छाया लम्बी हो रही है, [5]अत: उठो! हम नगर पर रात में आक्रमण करेंगे! हम यरूशलेम के दृढ़ रक्षा–साधनों को नष्ट करेंगे।"

[6]सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यही है: "यरूशलेम के चारों ओर के पेड़ों को काट डालो और यरूशलेम के विरुद्ध घेरा डालने का टीला बनाओ। इस नगर को दण्ड मिलना चाहिये।" इस नगर के भीतर दमन करने के अतिरिक्त कुछ नहीं है। [7]जैसे कुँआ अपना पानी स्वच्छ रखता है उसी प्रकार यरूशलेम अपनी दुष्टता को नया बनाये रखता है। इस नगर में हिंसा और विध्वंस सुना जाता हैं। मैं सदैव यरूशलेम की बीमारी और चोटों को देख सकता हूँ। [8]यरूशलेम, इस चेतावनी को सुनो।

यदि तुम नहीं सुनोगे तो मैं अपनी पीठ तुम्हारी ओर कर लूँगा। मैं तुम्हारे प्रदेश को सूनी मरुभूमि कर दूँगा। कोई भी व्यक्ति वहाँ नहीं रह पायेगा।"

[9]सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है: "उन इस्राएल के लोगों को इकट्ठा करो जो अपने देश में बच गए थे। उन्हें इस प्रकार इकट्ठे करो, जैसे तुम अंगूर की बेल से आखिरी अंगूर इकट्ठे करते हो। अंगूर इकट्ठे करने वाले की तरह हर एक बेल की जाँच करो।"

[10]मैं किससे बात करुँ? मैं किसे चेतावनी दे सकता हूँ? मेरी कौन सुनेगा? इस्राएल के लोगों ने अपने कानो को बन्द किया है। अत: वे मेरी चेतावनी सुन नहीं सकते। लोग यहोवा की शिक्षा पसन्द नहीं करते। वे यहोवा का सन्देश सुनना नहीं चाहते। [11]किन्तु मैं (यिर्मयाह) यहोवा के क्रोध से भरा हूँ। मैं इसे रोकते–रोकते थक गया हूँ। "सड़क पर खेलते बच्चों पर यहोवा का क्रोध उंडेलो। एक साथ एकत्रित युवकों पर इसे उंडेलो। पति और उसकी पत्नी दोनों पकड़े जाएंगे। बूढ़े और अति बूढ़े लोग पकड़े जाएंगे। [12]उनके घर दूसरे लोगों को दे दिए जाएंगे। उनके खेत और उनकी पत्नियाँ दूसरों को दे दी जाएंगी। मैं अपने हाथ उठाऊँगा और यहूदा देश के लोगों को दण्ड दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का था।

[13]"इस्राएल के सभी लोग धन और अधिक धन चाहते हैं। छोटे से लेकर बड़े तक सभी लालची हैं। यहाँ तक कि याजक और नबी झूठ पर जीते हैं। [14]मेरे लोग बहुत बुरी तरह चोट खाये हुये हैं। नबी और याजक मेरे लोगों के घाव भरने का प्रयत्न ऐसे करते हैं, मानों वे छोटे से घाव हों। वे कहते हैं, 'यह बहुत ठीक है, यह बिल्कुल ठीक है।' किन्तु यह सचमुच ठीक नहीं हुआ है। [15]नबियों और याजकों को उस पर लज्जित होना चाहिये, जो बुरा वे करते हैं। किन्तु वे तनिक भी लज्जित नहीं। वे तो अपने पाप पर संकोच करना तक भी नहीं जानते। अत: वे अन्य हर एक के साथ दण्डित होंगे। जब मैं दण्ड दूँगा, वे जमीन पर फेंक दिये जायेंगे।" यह सन्देश यहोवा का है।

[16]यहोवा यह सब कहता है: "चौराहों पर खड़े होओ और देखो। पता करो कि पुरानी सड़क कहाँ थी। पता करो कि अच्छी सड़क कहाँ है, और उस सड़क पर चलो। यदि तुम ऐसा करोगे, तुम्हें आराम मिलेगा! किन्तु तुम लोगों ने कहा है, 'हम अच्छी सड़क पर नहीं चलेंगे!' [17]मैंने तुम्हारी चौकसी के लिये चौकीदार चुने! मैंने उनसे कहा, 'युद्ध–तुरही की आवाज पर कान रखो।' किन्तु उन्होंने कहा, 'हम नहीं सुनेंगे!' [18]अत: तुम सभी राष्ट्रों, उन देशों के तुम सभी लोगों, सुनो ध्यान दो! वह सब सुनो जो मैं यहूदा के लोगों के साथ करूँगा। [19]पृथ्वी के लोगों, यह सुनो: मैं यहूदा के लोगों पर विपत्ति ढाने जा रहा हूँ। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने सभी बुरे कामों की योजनायें बनाई। यह होगा क्योंकि उन्होंने मेरे सन्देशों की ओर ध्यान नहीं दिया है। उन लोगों ने मेरे नियमों का पालन करने से इन्कार किया है।"

[20]यहोवा कहता है, "तुम शबा देश से मुझे सुगन्धि की भेंट क्यों लाते हो? तुम भेंट के रूप में दूर देशों से सुगन्धि क्यों लाते हो? तुम्हारी होमबलि मुझे प्रसन्न नहीं करती। तुम्हारी बलि मुझे खुश नहीं करती।" [21]अत: यहोवा जो कहता है, वह यह है: "मैं यहूदा के लोगों के सामने समस्यायें रखूँगा। वे लोगों को गिराने वाले पत्थर से होंगे। पिता और पुत्र उन पर ठोकर खाकर गिरेंगे। मित्र और पड़ोसी मरेंगे।"

[22]यहोवा जो कहता है, वह यह है: "उत्तर के देश से एक सेना आ रही है, पृथ्वी के दूर स्थानों से एक शक्तिशाली राष्ट्र आ रहा है। [23]सैनिकों के हाथ में धनुष और भाले हैं, वे क्रूर हैं। वे कृपा करना नहीं जानते। वे बहुत शक्तिशाली हैं। वे सागर की तरह गरजते हैं, जब वे अपने घोड़ों पर सवार होते हैं। वह सेना युद्ध के लिये तैयार होकर आ रही है। हे सिय्योन की पुत्री, सेना तुम पर आक्रमण करने आ रही हैं।" [24]हमने उस सेना के बारे मैं सूचना पाई है। हम भय से असहाय हैं। हम स्वंय को विपत्तियों के जाल में पड़ा अनुभव करते हैं। हम वैसे ही कष्ट में हैं जैसे एक स्त्री को प्रसव–वेदना होती है। [25]खेतों में मत जाओ, सड़कों पर मत निकलो। क्यों? क्योंकि शत्रु के हाथों में तलवार है, क्योंकि खतरा चारों ओर है। [26]हे मेरे लोगों, टाट के वस्त्र पहन लो। राख में लोट लगा लो। मरे लोगों के लिए फूट–फूट कर रोओ। तुम एकमात्र पुत्र के खोने पर रोने सा रोओ। ये सब करो क्योंकि विनाशक अति शीघ्रता से हमारे विरुद्ध आएंगे।

[27]"यिर्मयाह, मैंने (यहोवा ने) तुम्हें प्रजा की कच्ची धातु का पारखी बनाया है। तुम हमारे लोगों की जाँच करोगे और उनके व्यवहार की चौकसी रखोगे। [28]मेरे लोग मेरे विरुद्ध हो गए है, और वे बहुत हठी हैं। वे लोगों के बारे में बुरी बातें कहते घूमते हैं। वे उस काँसे और

लोहे की तरह हैं जो चमकहीन और जंग खाये हैं। [29]वे उस श्रमिक की तरह हैं जिसने चाँदी को शुद्ध करने की कोशिश की। उसकी धोकनी तेज चली, आग भी तेज जली, किन्तु आग से केवल रांगा निकला। यह समय की बरबादी थी जो शुद्ध चाँदी बनाने का प्रयत्न किया गया। ठीक इसी प्रकार मेरे लोगों से बुराई दूर नहीं की जा सकी। [30]मेरे लोग 'खोटी चाँदी' कहे जायेंगे। उनको यह नाम मिलेगा क्योंकि यहोवा ने उन्हें स्वीकार नहीं किया।"

यिर्मयाह का मन्दिर उपदेश

7 यह यहोवा का सन्देश यिर्मयाह के लिये है: [2]यिर्मयाह, यहोवा के मन्दिर के द्वार के सामने खड़े हो। द्वार पर यह सन्देश घोषित करो:

"यहूदा राष्ट्र के सभी लोगों, यहोवा के यहाँ का सन्देश सुनो। यहोवा की उपासना करने के लिये तुम सभी लोग जो इन द्वारों से होकर आए हो इस सन्देश को सुनो। [3]इस्राएल के लोगों का परमेश्वर यहोवा है। सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है, 'अपना जीवन बदलो और अच्छे काम करो। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें इस स्थान पर रहने दूँगा। [4]इस झूठ पर विश्वास न करो जो कुछ लोग बोलते हैं। वे कहते हैं, "यह यहोवा का मन्दिर है। यहोवा का मन्दिर है! यहोवा का मन्दिर है!" [5]यदि तुम अपना जीवन बदलोगे और अच्छा काम करोगे, तो मैं तुम्हें इस स्थान पर रहने दूँगा। तुम्हें एक दूसरे के प्रति निष्ठावान होना चाहिए। [6]तुम्हें अजनबियों के साथ भी निष्ठावान होना चाहिये। तुम्हें विधवा और अनाथ बच्चों के लिए उचित काम करना चाहिये। निरपराध लोगों को न मारो। अन्य देवताओं का अनुसरण न करो। क्यों? क्योंकि वे तुम्हारे जीवन को नष्ट कर देंगे। [7]यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे तो मैं तुम्हें इस स्थान पर रहने दूँगा। मैंने यह प्रदेश तुम्हारे पूर्वजों को अपने पास सदैव रखने के लिये दिया।

[8]"'किन्तु तुम झूठ में विश्वास कर रहे हो और वह झूठ व्यर्थ हैं। [9]क्या तुम चोरी और हत्या करोगे? क्या तुम व्यभिचार का पाप करोगे? क्या तुम लोगों पर झूठा आरोप लगाओगे? क्या तुम असत्य देवता बाल की पूजा करोगे और अन्य देवताओं का अनुसरण करोगे जिन्हें तुम नहीं जानते? [10]यदि तुम ये पाप करते हो तो क्या तुम समझते हो कि तुम उस मन्दिर में मेरे सामने खड़े हो सकते हो जिसे मेरे नाम से पुकारा जाता हो? क्या तुम सोचते हो कि तुम मेरे सामने खड़े हो सकते हो और कह सकते हो, "हम सुरक्षित हैं?" सुरक्षित इसलिये कि जिससे तुम ये घृणित कार्य कर सको। [11]यह मन्दिर मेरे नाम से पुकारा जाता है। क्या यह मन्दिर तुम्हारे लिये डकैतों के छिपने के स्थान के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है? मैं तुम्हारी चौकसी रख रहा हूँ।"' यह सन्देश यहोवा का है।

[12]"यहूदा के लोगों, तुम अब शीलो नगर को जाओ। उस स्थान पर जाओ जहाँ मैंने प्रथम बार अपने नाम का मन्दिर बनाया। इस्राएल के लोगों ने भी पाप कर्म किये। जाओ और देखो कि उस स्थान का मैंने उन पाप कर्मो के लिये क्या किया जो उन्होंने किये। [13]इस्राएल के लोगों, तुम लोग ये सब पाप कर्म करते रहे।" यह सन्देश यहोवा का था! "मैंने तुमसे बार–बार बातें कीं, किन्तु तुमने मेरी अनसुनी कर दी। मैंने तुम लोगों को पुकारा पर तुमने उत्तर नहीं दिया। [14]इसलिये मैं अपने नाम से पुकारे जाने वाले यरूशलेम के इस मन्दिर को नष्ट करूँगा। मैं उस मन्दिर को वैसे ही नष्ट करुँगा जैसे मैंने शीलो को नष्ट किया और यरूशलेम में वह मन्दिर जो मेरे नाम पर हैं, वही मन्दिर है जिसमें तुम विश्वास करते हो। मैंने उस स्थान को तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को दिया। [15]मैं तुम्हें अपने पास से वैसे ही दूर फेंक दूँगा जैसे मैंने तुम्हारे सभी भाईयों को एप्रैम से फेंका।

[16]"यिर्मयाह, जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम यहूदा के इन लोगों के लिये प्रार्थना मत करो। न उनके लिये याचना करो और न ही उनके लिये प्रार्थना। उनकी सहायता के लिये मुझसे प्रार्थना मत करो। उनके लिये तुम्हारी प्रार्थना को मैं नहीं सुनूँगा। [17]मैं जानता हूँ कि तुम देख रहे हो कि वे यहूदा के नगर में क्या कर रहे हैं? तुम देख सकते हो कि वे यरूशलेम नगर की सड़कों पर क्या कर रहे हैं? [18]यहूदा के लोग जो कर रहे हैं वह यह है: "बच्चे लकड़ियाँ इकट्ठी करते हैं। पिता लोग उस लकड़ी का उपयोग आग जलाने में करते हैं। स्त्रियाँ आटा गूंधती हैं और स्वर्ग की रानी की भेंट के लिये रोटियाँ बनाती हैं। यहूदा के वे लोग अन्य देवताओं की पूजा के लिये पेय भेंट चढ़ाते हैं। वे मुझे क्रोधित करने के लिये यह करते हैं। [19]किन्तु मैं वह नहीं हूँ जिसे यहूदा के लोग सचमुच चोट पहुँचा रहे हैं।" यह संदेश यहोवा का है। "वे

केवल अपने को ही चोट पहुँचा रहे हैं। वे अपने को लज्जा का पात्र बना रहे हैं।"

[20]अत: यहोवा यह कहता है: "मैं अपना क्रोध इस स्थान के विरूद्ध प्रकट करुँगा। मैं लोगों तथा जानवरों को दण्ड दूँगा। मैं खेत में पेड़ों और उस भूमि में उगने वाली फसलों को दण्ड दूँगा। मेरा क्रोध प्रचण्ड अग्नि सा होगा और कोई व्यक्ति उसे रोक नहीं सकेगा।"

यहोवा बलि की अपेक्षा, अपनी आज्ञा का पालन अधिक चाहता है

[21]इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, "जाओ और जितनी भी होमबलि और बलि चाहो, भेंट करो। उन बलियों के माँस स्वयं खाओ। [22]मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाया। मैंने उनसे बातें कीं, किन्तु उन्हें कोई आदेश होमबलि और बलि के विषय में नहीं दिया। [23]मैंने उन्हें केवल यह आदेश दिया, 'मेरी आज्ञा का पालन करो और मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा तथा तुम मेरे लोग होगे। जो मैं आदेश देता हूँ वह करो, और तुम्हारे लिए सब अच्छा होगा।'

[24]"किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी एक न सुनी। उन्होंने मुझ पर ध्यान नहीं दिया। वे हठी रहे और उन्होंने उन कामों को किया जो वे करना चाहते थे। वे अच्छे न बने। वे पहले से भी अधिक बुरे बने, वे पीछे को गए, आगे नहीं बढ़े। [25]उस दिन से जिस दिन तुम्हारे पूर्वजों ने मिस्र छोड़ा आज तक मैंने अपने सेवकों को तुम्हारे पास भेजा है। मेरे सेवक नबी हैं। मैंने उन्हें तुम्हारे पास बारबार भेजा। [26]किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी अनसुनी की। उन्होंने मुझ पर ध्यान नहीं दिया। वे बहुत हठी रहे, और उन्होंने अपने पूर्वजों से भी बढ़कर बुराईयाँ कीं।

[27]"यिर्मयाह, तुम यहूदा के लोगों से ये बातें कहोगे। किन्तु वे तुम्हारी एक न सुनेंगे। तुम उनसे बातें करोगे किन्तु वे तुम्हें जवाब भी नहीं देंगे। [28]इसलिये तुम्हें उनसे ये बातें कहनी चाहियें: यह वह राष्ट्र है जिसने यहोवा अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। इन लोगों ने परमेश्वर की शिक्षाओं को अनसुनी किया। ये लोग सच्ची शिक्षा नहीं जानते।

हत्या–घाटी

[29]"यिर्मयाह, अपने बालों को काट डालो और इसे फेंक दो। पहाड़ी की नंगी चोटी पर चढ़ो और रोओ चिल्लाओ। क्यों? क्योंकि यहोवा ने इस पीढ़ी के लोगों को दुत्कार दिया है। यहोवा ने इन लोगों से अपनी पीठ मोड़ ली है और वह क्रोध में इन्हें दण्ड देगा। [30]ये करो क्योंकि मैंने यहूदा के लोगों को पाप करते देखा है।" यह सन्देश यहोवा का है। "उन्होंने अपनी देवमूर्तियाँ स्थापित की हैं और मैं उन देवमूर्तियों से घृणा करता हूँ। उन्होंने देवमूर्तियों को उस मन्दिर में स्थापित किया है जो मेरे नाम से है। उन्होंने मेरे मन्दिर को 'गन्दा' कर दिया है। [31]यहूदा के उन लोगों ने बेन हिन्नोम घाटी में तोपेत के उच्च स्थान बनाए हैं। उन स्थानों पर लोग अपने पुत्र–पुत्रियों को मार डालते थे, वे उन्हें बलि के रुप में जला देते थे। यह ऐसा है जिसके लिये मैंने कभी आदेश नहीं दिया। इस प्रकार की बात कभी मेरे मन में आई ही नहीं!" [32]अत: मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ। वे दिन आ रहे हैं।" यह सन्देश यहोवा का है, "जब लोग इस स्थान को तोपेत या बेन हिन्नोम की घाटी फिर नहीं कहेंगे। नहीं, वे इसे हत्याघाटी कहेंगे। वे इसे यह नाम इसलिये देंगे कि वे तोपेत में इतने व्यक्तियों को दफनायेंगे कि उनके लिये किसी अन्य को दफनाने की जगह नहीं बचेगी। [33]तब लोगों के शव जमीन के ऊपर पड़े रहेंगे और आकाश के पक्षियों के भोजन होंगे। उन लोगों के शरीर को जंगली जानवर खायेंगे। वहाँ उन पक्षियों और जानवरों को भगाने के लिये कोई व्यक्ति जीवित नहीं बचेगा। [34]मैं आनन्द और प्रसन्नता के कहकहों को यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर समाप्त कर दूँगा। यहूदा और यरूशलेम में दुल्हन और दुल्हे की हँसी–ठिठोली अब से आगे नहीं सुनाई पड़ेगी। पूरा प्रदेश सूनी मरुभूमि बन जाएगा।"

8

यह सन्देश यहोवा का है: "उस समय लोग यहूदा के राजाओं और प्रमुख शासकों की हड्डियों को उनके कब्रों से निकाल लेंगे। वे याजकों और नबियों की हड्डियों को उनके कब्रों से ले लेंगे। वे यरूशलेम के सभी लोगों के कब्रों से हड्डियाँ निकाल लेंगे। [2]वे लोग उन हड्डियों को सूर्य, चन्द्र और तारों की पूजा के लिये नीचे जमीन पर फैलायेंगे। यरूशलेम के लोग सूर्य, चन्द्र और तारों की पूजा से प्रेम करते हैं। कोई भी व्यक्ति उन हड्डियाँ को इकट्ठा नहीं करेगा और न ही उन्हें फिर

दफनायेगा। अत: उन लोगों की हड्डियाँ गोबर की तरह जमीन पर पड़ी रहेंगी।

[3]"मैं यहूदा के लोगों को अपना घर और प्रदेश छोड़ने पर विवश करूँगा। लोग विदेशों में ले जाए जाएंगे। यहूदा के वे कुछ लोग जो युद्ध में नहीं मारे जा सके, चाहेंगे कि वे मार डाले गए होते।" यह सन्देश यहोवा का है।

पाप और दण्ड

[4]यिर्मयाह, यहूदा के लोगों से यह कहो कि यहोवा यह सब कहता है, "तुम यह जानते हो कि जो व्यक्ति गिरता है वह फिर उठता है। और यदि कोई व्यक्ति गलत राह पर चलता है तो वह चारों ओर से घूम कर लौट आता है। [5]यहूदा के लोग गलत राह चले गए हैं। (जीवन बिताये) किन्तु यरूशलेम के वे लोग गलत राह चलते ही क्यों जा रहे हैं? वे अपने झूठ में विश्वास रखते हैं। वे मुड़ने तथा लौटने से इन्कार करते हैं। [6]मैंने उनको ध्यान से सुना है, किन्तु वे वह नहीं कहते जो सत्य है। लोग अपने पाप के लिये पछताते नहीं। लोग उन बुरे कामों पर विचार नहीं करते जिन्हें उन्होंने किये हैं। प्रत्येक अपने मार्ग पर वैसे ही चला जा रहा है। वे युद्ध में दौड़ते हुए घोड़ों के समान हैं। [7]आकाश के पक्षी भी काम करने का ठीक समय जानते हैं। सारस, कबूतर, खन्जन और मैना भी जानते हैं कि कब उनको अपने नये घर में उड़ कर जाना है। किन्तु मेरे लोग नहीं जानते कि यहोवा उनसे क्या कराना चाहता है।

[8]"तुम कहते रहते हो, 'हमे यहोवा की शिक्षा मिली है। अत: हम बुद्धिमान है!' किन्तु यह सत्य नहीं! क्यो? क्योंकि शास्त्रियों ने अपनी लेखनी से झूठ उगला है। [9]उन 'चतुर लोगों' ने यहोवा की शिक्षा अनसुनी की है अत: सचमुच वे वास्तव में बुद्धिमान लोग नहीं हैं। वे 'चतुर लोग' जाल में फँसाये गए। वे काँप उठे और लज्जित हुए। [10]अत: मैं उनकी पत्नियों को अन्य लोगों को दूँगा। मैं उनके खेत को नये मालिकों को दे दूँगा। इस्राएल के सभी लोग अधिक से अधिक धन चाहते हैं। छोटे से लेकर बड़े से बड़े सभी लोग उसी तरह के हैं। सभी लोग नबी से लेकर याजक तक सब झूठ बोलते हैं। [11]नबी और याजक हमारे लोगों के घावों को भरने का प्रयत्न ऐसे करते हैं मानों वे छोटे से घाव हों। वे कहते हैं, 'यह बिल्कुल ठीक है, यह बिल्कुल ठीक है।' किन्तु यह बिल्कुल ठीक नहीं। [12]उन लोगों को अपने किये बुरे कामों के लिये लज्जित होना चाहिये। किन्तु वे बिल्कुल लज्जित नहीं। उन्हें इतना भी ज्ञान नहीं कि उन्हें अपने पापों के लिये ग्लानि हो सके अत: वे अन्य सभी के साथ दण्ड पायेंगे। मैं उन्हें दण्ड दूँगा और जमीन पर फेंक दूँगा।" ये बातें यहोवा ने कहीं।

[13]"मैं उनके फल और फसलें ले लूँगा जिससे उनके यहाँ कोई पकी फसल नहीं होगी।" यह सन्देश यहोवा का है: "अंगूर की बेलों में कोई अंगूर नहीं होंगे। अंजीर के पेड़ों पर कोई अंजीर नहीं होगा। यहाँ तक कि पत्तियाँ सूखेंगी और मर जाएंगी। मैं उन चीजों को ले लूँगा जिन्हें मैंने उन्हें दे दी थी।

[14]"हम यहाँ खाली क्यों बैठे हैं? आओ, दृढ़ नगरो को भाग निकले। यदि हमारा परमेश्वर यहोवा हमें मारने ही जा रहा है, तो हम वहीं मरें। हमने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है अत: परमेश्वर ने हमें पीने को जहरीला पानी दिया है। [15]हम शान्ति की आशा करते थे, किन्तु कुछ भी अच्छा न हो सका। हम ऐसे समय की आशा करते हैं, जब वह क्षमा कर देगा किन्तु केवल विपत्ति ही आ पड़ी है। [16]दान के परिवार समूह के प्रदेश से हम शत्रु के घोड़ो के नथनों के फड़फड़ाने की आवाज सुनते हैं, उनकी टापों से पृथ्वी काँप उठी है, वे प्रदेश और इसमें की सारी चीजों को नष्ट करने आए है। वे नगर और इसके निवासी सभी लोगों को जो वहाँ रहते हैं, नष्ट करने आए हैं।

[17]यहूदा के लोगों, मैं तुम्हें डसने को विषैले साँप भेज रहा हूँ। उन साँपों को सम्मोहित नहीं किया जा सकता। वे ही साँप तुम्हें डसेंगे।" यह सन्देश यहोवा का है।

[18]परमेश्वर, मैं बहुत दु:खी और भयभीत हूँ। [19]मेरे लोगों की सुन। इस देश में वे चारों ओर सहायता के लिए पुकार रहे हैं। वे कहते हैं, "क्या यहोवा अब भी सिय्योन में है? क्या सिय्योन के राजा अब भी वहाँ है?"

किन्तु परमेश्वर कहता है, "यहूदा के लोग, अपनी देव मूर्तियो की पूजा करके मुझे क्रोधित क्यों करते हैं? उन्होंने अपने व्यर्थ विदेशी देव मूर्तियों की पूजा की है।" [20]लोग कहते हैं, "फसल काटने का समय गया। बसन्त गया और हम बचाये न जा सके।"

[21]मेरे लोग बीमार है, अत: मैं बीमार हूँ। मैं इन बीमार लोगों की चिन्ता में दु:खी और निराश हूँ। [22]निश्चय ही, गिलाद प्रदेश में कुछ दवा है। निश्चय ही गिलाद प्रदेश में

वैद्य है। तो भी मेरे लोगों के घाव क्यों अच्छे नहीं होते?

9 यदि मेरा सिर पानी से भरा होता, और मेरी आँखें आँसू का झरना होतीं तो मैं अपने नष्ट किये गए लोगों के लिए दिन रात रोता रहता।

[2]यदि मुझे मरुभूमि में रहने का स्थान मिल गयाहोता जहाँ किसी घर में यात्री रात बिताते, तो मैं अपने लोगों को छोड़ सकता था। मैं उन लोगों से दूर चला जा सकता था। क्यों? क्योंकि वे सभी परमेश्वर के विश्वासघाती व व्यभिचारी हो गए हैं, वे सभी उसके विरुद्ध हो रहे हैं। [3]"वे लोग अपनी जीभ का उपयोग धनुष जैसा करते हैं, उनके मुख से झूठ बाण के समान छूटते हैं। पूरे देश में सत्य नहीं। झूठ प्रबल हो गया है, वे लोग एक पाप से दूसरे पाप करते जाते हैं। वे मुझे नहीं जानते।" यहोवा ने ये बातें कहीं।

[4]"अपने पड़ोसियों से सतर्क रहो, अपने निज भाइयों पर भी विश्वास न करो। क्यों? क्योंकि हर एक भाई ठग हो गया है। हर पड़ोसी तुम्हारे पीठ पीछे बात करता है। [5]हर एक व्यक्ति अपने पड़ोसी से झूठ बोलता है। कोई व्यक्ति सत्य नहीं बोलता। यहूदा के लोगों ने अपनी जीभ को झूठ बोलने की शिक्षा दी है। उन्होंने तब तक पाप किये जब तक कि वे इतने थके कि लौट न सकें। [6]एक बुराई के बाद दूसरी बुराई आई। झूठ के बाद झूठ आया। लोगों ने मुझको जानने से इन्कार कर दिया।" यहोवा ने ये बातें कहीं।

[7]अत: सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "मैं यहूदा के लोगों की परीक्षा वैसे ही करूँगा जैसे कोई व्यक्ति आग में तपाकर किसी धातु की परीक्षा करता है। मेरे पास अन्य विकल्प नहीं है। मेरे लोगों ने पाप किये हैं। [8]यहूदा के लोगों की जीभ तेज बाणों की तरह हैं। उनके मुँह से झूठ बरसता है। हर एक व्यक्ति अपने पड़ोसी से अच्छा बोलता है। किन्तु वह छिपे अपने पड़ोसी पर आक्रमण करने की योजना बनाता है। [9]क्या मुझे यहूदा के लोगों को इन कामों के करने के लिये दण्ड नहीं देना चाहिए?" यह सन्देश यहोवा का है। "तुम जानते हो कि मुझे इस प्रकार के लोगों को दण्ड देना चाहिए। मैं उनको वह दण्ड दूँगा जिसके वे पात्र हैं।"

[10] मैं (यिर्मयाह) पर्वतों के लिए
फूट फूट कर रोऊँगा।
मैं खाली खेतों के लिये शोक गीत गाऊँगा।
क्यों? क्योंकि जीवित वस्तुएं छीन ली गई।
कोई व्यक्ति वहाँ यात्रा नहीं करता।
उन स्थान पर पशु ध्वनि नहीं सुनाई पड़ सकती।
पक्षी उड़ गए हैं और जानवर चले गए हैं।

[11] "मैं (यहोवा) यरूशलेम नगर को
कूड़े का ढेर बना दूँगा।
यह गीदड़ों की माँदे बनेगा।
मैं यहूदा देश के नगरों को नष्ट करुँगा
अत: वहाँ कोई भी नहीं रहेगा।"

[12] क्या कोई व्यक्ति ऐसा बुद्धिमान है
जो इन बातों को समझ सके?
क्या कोई ऐसा व्यक्ति है
जिसे यहोवा से शिक्षा मिली है?
क्या कोई यहोवा के सन्देश की
व्याख्या कर सकता है?
देश क्यों नष्ट हुआ?
यह एक सूनी मरुभूमि की तरह क्यों कर दिया
गया जहाँ कोई भी नहीं जाता?

[13] यहोवा ने इन प्रश्नों का उत्तर दिया। उसने कहा, "यह इसलिये हुआ कि यहूदा के लोगों ने मेरी शिक्षा पर चलना छोड़ दिया। मैंने उन्हें अपनी शिक्षा दी, किन्तु उन्होंने मेरी सुनने से इन्कार किया। उन्होंने मेरे उपदेशों का अनुसरण नहीं किया। [14] यहूदा के लोग अपनी राह चले, वे हठी रहे। उन्होंने असत्य देवता बाल का अनुसरण किया। उनके पूर्वजों ने उन्हें असत्य देवताओं के अनुसरण करने की शिक्षा दी।"

[15]अत: इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "मैं शीघ्र ही यहूदा के लोगों को कड़वा फल चखाऊँगा। मैं उन्हें जहरीला पानी पिलाऊँगा। [16]मैं यहूदा के लोगों को अन्य राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। वे अजनबी राष्ट्रों में रहेंगे। उन्होंने और उनके पूर्वजों ने उन देशों को कभी नहीं जाना। मैं तलवार लिये व्यक्तियों को भेजूँगा। वे लोग यहूदा के लोगों को मार डालेंगे। वे लोगों को तब तक मारते जाएंगे जब तक वे समाप्त नहीं हो जाएंगे।"

[17]सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है: "अब इन सबके बारे में सोचो। अन्त्येष्टि के समय भाड़े पर रोने वाली स्त्रियों को बुलाओ। उन स्त्रियों को बुलाओ जो विलाप करने में चतुर हों।" [18]लोग कहते हैं, 'उन

स्त्रियों को जल्दी से आने और हमारे लिये रोने दो, तब हमारी आँखे आँसू से भरेंगी और पानी की धारा हमारी आँखों से फूट पड़ेगी।'

[19]"जोर से रोने की आवाजें सिय्योन से सुनी जा रही हैं। 'हम सचमुच बरबाद हो गए! हम सचमुच लज्जित हैं। हमें अपने देश को छोड़ देना चाहिये, क्योंकि हमारे घर नष्ट और बरबाद हो गये हैं। हमारे घर अब केवल पत्थरों के ढेर हो गये है।'"

[20]यहूदा की स्त्रियों, अब यहोवा का सन्देश सुनो। यहोवा के मुख से निकले शब्दों को सुनने के लिये अपने कान खोल लो। यहोवा कहता है, "अपनी पुत्रियों को जोर से रोना सिखाओ। हर एक स्त्री को इस शोक गीत को सीख लेना चाहिये:

[21]'"मृत्यु हमारी खिड़कियों से चढ़कर आ गई है। मृत्यु हमारे महलों में घुस गई है। सड़क पर खेलने वाले हमारे बच्चों की मृत्यु आ गई है। सामाजिक स्थानों में मिलने वाले युवकों की मृत्यु हो गई है।'

[22]"यिर्मयाह कहो, 'जो यहोवा कहता है, वह यह है: मनुष्यों के शव खेतों में गोबर से पड़े रहेंगे। उनके शव जमीन पर उस फसल से पड़े रहेंगे जिन्हें किसान ने काट डाला है। किन्तु उनको इकट्ठा करने वाला कोई नहीं होगा।'"

[23]यहोवा कहता है, "बुद्धिमान को अपनी बुद्धिमानी की डींग नहीं मारनी चाहिए। शक्तिशाली को अपने बल का बखान नहीं करना चाहिए। सम्पत्तिशाली को अपनी सम्पत्ति की हवा नहीं बांधनी चाहिए। [24]किन्तु यदि कोई डींग मारना ही चाहता है तो उसे इन चीजों की डींग मारने दो: उसे इस बात की डींग मारने दो कि वह मुझे समझता और जानता है। उसे इस बात की डींग हाँकने दो कि वह यह समझता है कि मैं यहोवा हूँ। उसे इस बात की हवा बांधने दो कि मैं कृपालु और न्यायी हूँ। उसे इस बात का ढींढोरा पीटने दो कि मैं पृथ्वी पर अच्छे काम करता हूँ। मुझे इन कामों को करने से प्रेम है। यह सन्देश यहोवा का है।

[25]वह समय आ रहा है, "यह सन्देश यहोवा का है, "जब मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा जो केवल शरीर से खतना कराये हैं। [26]मैं मिस्र, यहूदा, एदोम, अम्मोन तथा मोआब के राष्ट्रों और उन सभी लोगों के बारे में बातें कर रहा हूँ जो मरुभूमि में रहते हैं जो दाढ़ी के किनारों के बालों को काटते हैं। उन सभी देशों के लोगों ने अपने शरीर का खतना नहीं करवाया है। किन्तु इस्राएल के परिवार के लोगों ने हृदय से खतना को नहीं ग्रहण किया है, जैसे कि परमेश्वर के लोगों को करना चाहिए।"

यहोवा और देवमूर्तियाँ

10 इस्राएल के परिवार, यहोवा की सुनो। [2]जो यहोवा कहता है, वह यह है:

"अन्य राष्ट्रों के लोगों की तरह न रहो। आकाश के विशेष संकेतों से न डरो। अन्य राष्ट्र उन संकेतों से डरते हैं जिन्हें वे आकाश में देखते हैं। किन्तु तुम्हें उन चीजों से नहीं डरना चाहिये। [3]अन्य लोगों के रीति रिवाज व्यर्थ हैं। उनकी देव मूर्तियाँ जंगल की लकड़ी के अतिरिक्त कुछ नहीं। उनकी देव मूर्तियाँ कारीगर की छैनी से बनी हैं। [4]वे अपनी देव मूर्तियों को सोने चाँदी से सुन्दर बनाते हैं। वे अपनी देव मूर्तियों को हथौड़े और कील से लटकाते हैं जिससे वे लटके रहें, गिर न पड़े। [5]अन्य देशों की देवमूर्तियों, ककड़ी के खेत में खड़े फूस के पुतले के समान हैं। वे न बोल सकती हैं, और न चल सकती हैं। उन्हें उठा कर ले जाना पड़ता है क्योंकि वे चल नहीं सकते। उनसे मत डरो। वे न तो तुमको चोट पहुँचा सकती हैं और न ही कोई लाभ!"

[6]यहोवा तुझ जैसा कोई अन्य नहीं है! तू महान है! तेरा नाम महान और शक्तिपूर्ण है। [7]परमेश्वर, हर एक व्यक्ति को तेरा सम्मान करना चाहिए। तू सभी राष्ट्रों का राजा है। तू उनके सम्मान का पात्र है। राष्ट्रों में अनेक बुद्धिमान व्यक्ति हैं। किन्तु कोई व्यक्ति तेरे समान बुद्धिमान नहीं है।

[8]अन्य राष्ट्रों के सभी लोग शरारती और मूर्ख हैं। उनकी शिक्षा निरर्थक लकड़ी की मूर्तियों से मिली है। [9]वे अपनी मूर्तियों को तर्शीश नगर की चाँदी और उफाज नगर के सोने का उपयोग करके बनाते हैं। वे देवमूर्तियाँ बढ़इयों और सुनारों द्वारा बनाई जाती हैं। वे उन देवमूर्तियों को नीले और बैंगनी वस्त्र पहनाते हैं। निपुण लोग उन्हें "देवता" बनाते हैं। [10]किन्तु केवल यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है। वह एकमात्र परमेश्वर है जो चेतन है। वह शाश्वत शासक है। जब परमेश्वर क्रोध करता है तो धरती काँप जाती है। राष्ट्रों के लोग उसके क्रोध को रोक नहीं सकते।

[11]यहोवा कहता है, "उन लोगों को यह सन्देश दो: 'उन असत्य देवताओं ने पृथ्वी और स्वर्ग नहीं बनाए और वे असत्य देवता नष्ट कर दिए जाएंगे, और पृथ्वी और स्वर्ग से लुप्त हो जाएंगे।'"

[12]वह परमेश्वर एक ही है जिसने अपनी शक्ति से पृथ्वी बनाई। परमेश्वर ने अपने बुद्धि का उपयोग किया और संसार की रचना कर डाली। अपनी समझ के अनुसार परमेश्वर ने पृथ्वी के ऊपर आकाश को फैलाया। [13]परमेश्वर कड़कती बिजली बनाता है और वह आकाश से बड़े जल की बाढ़ को गिराता है। वह पृथ्वी के हर एक स्थान पर, आकाश में मेघों को उठाता है। वह बिजली को वर्षा के साथ भेजता है। वह अपने गोदामों से पवन को निकालता है।

[14]लोग इतने बेवकूफ हैं! सुनार उन देवमूर्तियों से मूर्ख बनाए गये हैं जिन्हें उन्होंने स्वंय बनाया है। ये मूर्तियाँ झूठ के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं, वे निष्क्रिय हैं। [15]वे देवमूर्तियाँ किसी काम की नहीं। वे कुछ ऐसी हैं जिनका मजाक उड़ाया जा सके। न्याय का समय आने पर वे देवमूर्तियाँ नष्ट कर दी जाएंगी। [16]किन्तु याकूब का परमेश्वर उन देवमूर्तियों के समान नहीं है। परमेश्वर ने सभी वस्तुओं की सृष्टि की, और इस्राएल वह परिवार है जिसे परमेश्वर ने अपने लोग के रूप में चुना। परमेश्वर का नाम "सर्वशक्तिमान यहोवा" है।

विनाश आ रहा है

[17]अपनी सभी चीजें लो और जाने को तैयार हो जाओ। यहूदा के लोगो, तुम नगर में पकड़ लिये गए हो और शत्रु ने इसका घेरा डाल लिया है। [18]यहोवा कहता है, "इस समय मैं यहूदा के लोगों को इस देश से बाहर फेंक दूँगा। मैं उन्हें पीड़ा और परेशानी दूँगा। मैं ऐसा करूँगा जिससे वे सबक सीख सकें।"

[19]ओह, मैं (यिर्मयाह) बुरी तरह घायल हूँ। घायल हूँ और मैं अच्छा नहीं हो सकता। तो भी मैंने स्वयं से कहा, "यह मेरी बीमारी है, मुझे इससे पीड़ित होना चाहिये।" [20]मेरा डेरा बरबाद हो गया। डेरे की सारी रस्सियाँ टूट गई हैं। मेरे बच्चे मुझे छोड़ गये। वे चले गये। कोई व्यक्ति मेरा डेरा लगाने को नहीं बचा है। कोई व्यक्ति मेरे लिये शरण स्थल बनाने को नहीं बचा है। [21]गड़ेरिये (प्रमुख) मूर्ख हैं। वे यहोवा को प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करते। वे बुद्धिमान नहीं हैं, अत: उनकी रेवड़ें (लोग) बिखर गई और नष्ट हो गई हैं। [22]ध्यान से सुनो! एक कोलाहल! कोलाहल उत्तर से आ रहा है। यह यहूदा के नगरों को नष्ट कर देगा। यहूदा एक सूनी मरुभूमि बन जायेगा। यह गीदड़ों की माँद बन जायेगा। [23]हे यहोवा, मैं जानता हूँ कि व्यक्ति सचमुच अपनी जिन्दगी का मालिक नहीं है। लोग सचमुच अपने भविष्य की योजना नहीं बना सकते है। लोग सचमुच नहीं जानते कि कैसे ठीक जीवित रहा जाय। [24]हे यहोवा, हमें सुधार! किन्तु न्यायी बन! क्रोध में हमे दण्ड न दे! अन्यथा तू हमें नष्ट कर देगा! [25]यदि तू क्रोधित है तो अन्य राष्ट्रों को दण्ड दे। वे, न तूझको जानते हैं न ही तेरा सम्मान करते हैं। वे लोग तेरी आराधना नहीं करते। उन राष्ट्रों ने याकूब के परिवार को नष्ट किया। उन्होंने इस्राएल को पूरी तरह नष्ट कर दिया। उन्होंने इस्राएल की जन्मभूमि को नष्ट किया।

वाचा टूटी

11 यह वह सन्देश है जो यिर्मयाह को मिला। यहोवा का यह सन्देश आया: [2]"यिर्मयाह इस वाचा के शब्दों को सुनो। इन बातों के विषय में यहूदा के लोगों से कहो। ये बातें यरूशलेम में रहने वाले लोगों से कहो।

[3]यह वह है, जो इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'जो व्यक्ति इस वाचा का पालन नहीं करेगा उस पर विपत्ति आएगी।' [4]मैं उस वाचा के बारे में कह रहा हूँ जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों के साथ की। मैंने वह वाचा उनके साथ तब की जब मैं उन्हें मिस्र से बाहर लाया। मिस्र अनेक मुसीबतों की जगह थी यह लोहे को पिघला देने वाली गर्म भट्‌टी की तरह थी। मैंने उन लोगों से कहा, "मेरी आज्ञा मानो और वह सब करो जिसका मैं तुम्हे आदेश दूँ। यदि तुम यह करोगे तो तुम मेरे लोग रहोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा।"

[5]"मैंने यह तुम्हारे पूर्वजों को दिये गये वचन को पूरा करने के लिये किया। मैंने उन्हें बहुत उपजाऊ भूमि देने की प्रतिज्ञा की, ऐसी भूमि जिसमे दूध और शहद की नदी बहती हो और आज तुम उस देश में रह रहे हो।" मैं (यिर्मयाह) ने उत्तर दिया, "यहोवा, आमीन।"

[6]यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, इस सन्देश की शिक्षा यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर दो। सन्देश यह है, "इस वाचा की बातों को सुनो और तब उन नियमों का पालन करो। [7]मैंने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से बाहर लाने के समय एक चेतावनी दी थी। मैंने बार बार ठीक इसी दिन तक उन्हें चेतावनी दी। मैंने उनसे अपनी आज्ञा का पालन करने के लिये कहा। [8]किन्तु तुम्हारे

पूर्वजों ने मेरी एक न सुनी। वे हठी थे और वही किया जो उनके अपने बुरे हृदय ने चाहा। वाचा में यह कहा गया है कि यदि वे आज्ञा का पालन नहीं करेंगे तो विपत्तियाँ आएंगे। अत: मैंने उन सभी विपत्तियों को उन पर आने दिया। मैंने उन्हें वाचा को मानने का आदेश दिया, किन्तु उन्होंने नहीं माना।"

[9]यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, मैं जानता हूँ कि यहूदा के लोगों और यरूशलेम के निवासियों ने गुप्त योजनायें बना रखी हैं। [10]वे लोग वैसे ही पाप कर रहे हैं जिन्हें उनके पूर्वजों ने किया था। उनके पूर्वजों ने मेरे सन्देश को सुनने से इन्कार किया। उन्होंने अन्य देवताओं का अनुसरण किया और उन्हें पूजा। इस्राएल के परिवार और यहूदा के परिवार ने उस वाचा को तोड़ा है जिसे मैंने उनके पूर्वजों के साथ की थी।"

[11]अत: यहोवा कहता है: "मैं यहूदा के लोगों पर शीघ्र ही भयंकर विपत्ति ढाऊँगा। वे बचकर भाग नहीं पाएंगे और वे सहायता के लिये मुझे पुकारेंगे। किन्तु मैं उनकी एक न सुनूँगा। [12]यहूदा के नगरों के लोग और यरूशलेम नगर के लोग जाएंगे और अपनी देवमूर्तियों से प्रार्थना करेंगे। वे लोग उन देवमूर्तियों को सुगन्धि धूप जलाते हैं। किन्तु वे देवमूर्तियाँ यहूदा के लोगों की सहायता नहीं कर पाएंगी जब वह भयंकर विपत्ति का समय आयेगा।

[13]"यहूदा के लोगों, तुम्हारे पास बहुत सी देवमूर्तियाँ हैं, वहाँ उतनी देवमूर्तियाँ हैं जितने यहूदा में नगर हैं। तुमने उस घृणित बाल की पूजा के लिये बहुत सी वेदियाँ बना रखी हैं यरूशलेम में जितनी सड़के हैं उतनी ही वेदियाँ है।

[14]"यिर्मयाह, जहाँ तक तुम्हारी बात है, यहूदा के इन लोगों के लिये प्रार्थना न करो। उनके लिये याचना न करो। उनके लिये प्रार्थनायें न करो। मैं सुनूँगा नहीं। वे लोग कष्ट उठायेंगे और तब वे मुझे सहायता के लिये पुकारेंगे। किन्तु मैं सुनूँगा नहीं।

15 "मेरी प्रिया (यहूदा)
मेरे घर (मन्दिर) में क्यों है?
उसे वहाँ रहने का अधिकार नहीं है।
उसने बहुत से बुरे काम किये हैं,
यहूदा, क्या तुम सोचती हो कि विशेष प्रतिज्ञायें
और पशु बलि तुम्हें नष्ट होनें से बचा लेंगी?
क्या तुम आशा करती हो कि तुम मुझे बलि
भेंट करके दण्ड पाने से बच जाओगी?

16 यहोवा ने तुम्हें एक नाम दिया था।
उन्होंने तुम्हें हरा भरा जैतून वृक्ष कहा था
जिसकी सुन्दरता देखने योग्य है
किन्तु एक प्रबल आँधी के गरज के साथ,
यहोवा उस वृक्ष में आग लगा देगा
और इसकी शाखायें जल जाएंगी।

17 सर्वशक्तिमान यहोवा ने तुमको रोपा,
और उसने यह घोषणा की है कि
तुम पर बरबादी आएगी।
क्यों? क्योंकि इस्राएल के परिवार और यहूदा
के परिवार ने बुरे काम किये हैं।
उन्होंने बाल को बलि भेंट करके
मुझको क्रोधित किया है!"

यिर्मयाह के विरुद्ध बुरी योजनाएं

[18]यहोवा ने मुझे दिखाया कि अनातोत के व्यक्ति मेरे विरुद्ध षड़यन्त्र कर रहे हैं। यहोवा ने मुझे वह सब दिखाया जो वे कर रहे थे। अत: मैंने जाना कि वे मेरे विरुद्ध थे। [19]जब यहोवा ने मुझे दिखाया कि लोग मेरे विरुद्ध हैं इसके पहले मैं उस भोले मेमने के समान था जो काट दिये जाने की प्रतीक्षा में हो। मैं नहीं समझता था कि वे मेरे विरुद्ध हैं। वे मेरे बारे में यह कह रहे थे: "आओ, हम लोग पेड़ और उसके फल को नष्ट कर दें। आओ हम उसे मार डालें। तब लोग उसे भूल जाएंगे।" [20]किन्तु यहोवा तू एक न्यायी न्यायाधीश है। तू लोगों के हृदय और मन की परीक्षा करना जानता है। मैं अपने तर्कों को तेरे सामने प्रस्तुत करूँगा और मैं तुझको उन्हें दण्ड देने को कहूँगा जिसके वे पात्र हैं।

[21]अनातोत के लोग यिर्मयाह को मार डालने की योजना बना रहे थे। उन लोगों ने यिर्मयाह से कहा, "यहोवा के नाम भविष्यवाणी न करो वरना हम तुम्हें मार डालेंगे।" यहोवा ने अनातोत के उन लोगों के बारे में एक निर्णय किया। [22]सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा, "मैं शीघ्र ही अनातोत के उन लोगों को दण्ड दूँगा उनके युवक युद्ध में मारे जाएंगे। उनके पुत्र और उनकी पुत्रियाँ भूखों मरेंगी। [23]अनातोत नगर में कोई भी व्यक्ति नहीं बचेगा। कोई व्यक्ति जीवित नहीं रहेगा। मैं उन्हें दण्ड दूँगा। मैं उनके साथ कुछ बुरा घटित होने दूँगा।"

यिर्मयाह परमेश्वर से शिकायत करता है

12 यहोवा यदि मैं तुझसे तर्क करता हूँ, तू सदा ही सही निकलता है। किन्तु मैं तुझसे उन सब के बारे में पूछना चाहता हूँ जो सही नहीं लगतीं। दुष्ट लोग सफल क्यों हैं? जो तुझ पर विश्वास नहीं करते, उनका उतना जीवन सुखी क्यों है? [2] तूने उन दुष्ट लोगों को यहाँ बसाया है। वे दृढ़ जड़ वाले पौधे जैसे हैं जो बढते तथा फल देते हैं। अपने मुँह से वे तुझको अपने समीपी और प्रिय कहते हैं। किन्तु अपने हृदय से वे वास्तव में तुझसे बहुत दूर हैं। [3]किन्तु मेरे यहोवा, तू मेरे हृदय को जानता है। तू मुझे और मेरे मन को देखता और परखता है, मेरा हृदय तेरे साथ है। उन दुष्ट लोगों को मारी जाने वाली भेड़ के समान घसीट। बलि दिवस के लिये उन्हें चुन। [4]कितने अधिक समय तक भूमि प्यासी पड़ी रहेगी? घास कब तक सूखी और मरी रहेगी? इस भूमि के जानवर और पक्षी मर चुके हैं और यह दुष्ट लोगों का अपराध है। फिर भी वे दुष्ट लोग कहते हैं, "यिर्मयाह हम लोगों पर आने वाली विपत्ति को देखने को जीवित नहीं रहेगा।"

परमेश्वर का यिर्मयाह को उत्तर

[5]"यिर्मयाह, यदि तुम मनुष्यों की पग दौड़ में थक जाते हो तो तुम घोड़ों के मुकाबले में कैसे दौड़ोगे? यदि तुम सुरक्षित देश में थक जाते हो तो तुम यरदन नदी के तटों पर उगी भयंकर कंटीली झाड़ियों में पहुँचकर क्या करोगे? [6]ये लोग तुम्हारे अपने भाई हैं। तुम्हारे अपने परिवार के सदस्य तुम्हारे विरुद्ध योजना बना रहे हैं। तुम्हारे अपने परिवार के लोग तुम पर चीख रहे हैं। यदि वे मित्र सचभी बोलें, उन पर विश्वास न करो।"

यहोवा अपने लोगों अर्थात यहूदा को त्यागता है

[7]"मैंने (यहोवा) अपना घर छोड़ दिया है। मैंने अपनी विरासत अस्वीकार कर दी है। मैंने जिससे (यहूदा) प्यार किया है, उसे उसके शत्रुओं को दे दिया है। [8]मेरे अपने लोग मेरे लिये जंगली शेर बन गये हैं। वे मुझ पर गरजते है, अत: मैं उनसे घृणा करता हूँ। [9]मेरे अपने लोग गिद्धों से घिरा, मरता हुआ जानवर बन गये हैं। वे पक्षी उस पर मंडरा रहे हैं। जंगली जानवरो आओ। आगे बढ़ो, खाने को कुछ पाओ। [10]अनेक गड़ेरियों (प्रमुखों) ने मेरे अंगूर के खेतों को नष्ट किया है। उन गड़ेरियों ने मेरे खेत के पौधों को रोंदा है। उन गड़ेरियों ने मेरे सुन्दर खेत को सूनी मरुभूमि में बदला है। [11]उन्होंने मेरे खेत को मरुभूमि में बदल दिया है। यह सूख गया और मर गया। कोई भी व्यक्ति वहाँ नहीं रहता। पूरा देश ही सूनी मरुभूमि है। उस खेत की देखभाल करने वाला कोई व्यक्ति नहीं बचा है। [12]अनेक सैनिक उन सूनी पहाड़ियों को रौंदते गए हैं। यहोवा ने उन सेनाओं का उपयोग उस देश को दण्ड देने के लिए किया। देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक के लोग दण्डित किये गये हैं। कोई व्यक्ति सुरक्षित न रहा। [13]लोग गेहूँ बोएंगे, किन्तु वे केवल काँटे ही काटेंगे। वे अत्याधिक थकने तक काम करेंगे, किन्तु वे अपने सारे कामों के बदले कुछ भी नहीं पाएंगे। वे अपनी फसल पर लज्जित होंगे। यहोवा के क्रोध ने यह सब कुछ किया।"

इस्राएल के पड़ोसियों को यहोवा का वचन

[14]यहोवा जो कहता है, वह यह है: "मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं इस्राएल देश के चारों ओर रहने वाले सभी लोगों के लिये क्या करुँगा। वे लोग बहुत दुष्ट हैं। उन्होंने उस देश को नष्ट किया जिसे मैंने इस्राएल के लोगों को दिया था। मैं उन दुष्ट लोगों को उखाड़ूँगा और उनके देश से उन्हें बाहर फेंक दूँगा। मैं उनके साथ यहूदा के लोगों को भी उखाड़ूँगा। [15]किन्तु उन लोगों को उनके देश से उखाड़ फेंकने के बाद मैं उनके लिए अफसोस करुँगा। मैं हर एक परिवार को उनकी अपनी सम्पत्ति और अपनी भूमि पर वापस लाऊँगा। [16]मैं चाहता हूँ कि वे लोग अब मेरे लोगों की तरह रहना सीख लें। बीते समय में उन लोगों ने हमारे लोगों को शपथ खाने के लिये बाल के नाम का उपयोग करना सिखाया। अब, मैं चाहता हूँ कि वे लोग अपना पाठ ठीक वैसे ही अच्छी तरह पढ़ लें। मैं चाहता हूँ कि वे लोग मेरे नाम का उपयोग करना सीखें। मैं चाहता हूँ कि वे लोग कहें, 'क्योंकि यहोवा शाश्वत है।' यदि वे लोग वैसा करते हैं तो मैं उन्हें सफल होने दूँगा और उन्हें अपने लोगों के बीच रहने दूँगा। [17]किन्तु यदि कोई राष्ट्र मेरे सन्देश को अनसुना करता है तो मैं उसे पूरी तरह नष्ट कर दूँगा। मैं उसे सूखे पौधे की तरह उखाड़ डालूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है।

अधोवस्त्र

13 जो यहोवा ने मुझसे कहा वह यह है: "यिर्मयाह, जाओ और एक सन (बहुमूल्य सूती वस्त्र) का अधोवस्त्र खरीदो। तब इसे अपनी कमर में लपेटो। अधोवस्त्र को गीला न होने दो।"

[2]अत: मैंने एक सन (बहुमूल्य सूती वस्त्र) का अधोवस्त्र खरीदा, जैसा कि यहोवा ने करने को कहा था और मैंने इसे अपनी कमर में लपेटा। [3]तब यहोवा का सन्देश मेरे पास दुबारा आया। [4]सन्देश यह था: "यिर्मयाह, अपने खरीदे गये और पहने गये अधोवस्त्र को लो और परात को जाओ। अधोवस्त्र को चट्टानों की दरार में छिपा दो।"

[5]अत: मैं परात गया और जैसा यहोवा ने कहा था, मैंने अधोवस्त्र को वहाँ छिपा दिया। [6]कई दिनों बाद यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, अब तुम परात जाओ। उस अधोवस्त्र को लो जिसे मैंने छिपाने को कहा था।"

[7]अत: मैं परात को गया और मैंने खोदकर अधोवस्त्र को निकाला, मैंने उसे चटटानों की दरार से निकाला जहाँ मैंने उसे छिपा रखा था। किन्तु अब मैं अधोवस्त्र को पहन नहीं सकता था क्योंकि वह गल चुका था, वह किसी भी काम का नहीं रह गया था।

[8]तब यहोवा का सन्देश मुझे मिला। [9]यहोवा ने जो कहा, वह यह है: "अधोवस्त्र गल चुका है और किसी भी काम का नहीं रह गया है। इसी प्रकार मैं यहूदा और यरूशलेम के घमंडी लोगों को बरबाद करुँगा। [10]मैं उन घमंडी और दुष्ट यहूदा के लोगों को नष्ट करूँगा। उन्होंने मेरे सन्देशों को अनसुना किया है। वे हठी हैं और वे केवल वह करते हैं जो वे करना चाहते हैं। वे अन्य देवताओं का अनुसरण और उनकी पूजा करते हैं। वे यहूदा के लोग इस सन के अधोवस्त्र की तरह हो जाएंगे। वे बरबाद होंगे और किसी काम के नहीं रहेंगे।" [11]अधोवस्त्र व्यक्ति के कमर से कस कर लपेटा जाता है। उसी प्रकार मैंने पूरे इस्राएल और यहूदा के परिवारों को अपने चारों ओर लपेटा।" यह सन्देश यहोवा के यहाँ से है। "मैंने वैसा इसलिये किया कि वे लोग मेरे लोग होंगे। तब मेरे लोग मुझे यश, प्रशंसा और प्रतिष्ठा प्रदान करेंगे। किन्तु मेरे लोगों ने मेरी एक न सुनी।"

यहूदा को चेतावनियाँ

[12]"यिर्मयाह, यहूदा के लोगों से कहो: 'इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'हर एक दाखमधु की मशक दाखमधु से भरी जानी चाहिये। वे लोग हँसेंगे और तुमसे कहेंगे, 'निश्चय ही हम जानते हैं कि हर एक दाखमधु की मशक दाखमधु से भरी जानी चाहिए।' [13]तब तुम उनसे कहोगे, 'यहोवा जो कहता है वह यह है: मैं इस देश के हर एक रहने वाले को मदमत्त सा असहाय करुँगा। मैं उन राजाओं के बारे में कह रहा हूँ जो दाऊद के सिंहासन पर बैठते हैं। मैं यरूशलेम के निवासी याजकों, नबियों और सभी लोगों के बारे में कह रहा हूँ। [14]मैं यहूदा के लोगों को ठोकर खाने और एक दूसरे पर गिरने दूँगा। पिता और पुत्र एक दूसरे पर गिरेंगे।'" यह सन्देश यहोवा का है। "'मैं उनके लिए अफसोस नहीं करूँगा और न उन पर दया। मैं करुणा को, यहूदा के लोगों को नष्ट करने से रोकने नहीं दूँगा।'"

[15]सुनो और ध्यान दो। यहोवा ने तुम्हें सन्देश दिया है। घमण्डी मत बनो। [16]अपने परमेश्वर यहोवा का सम्मान करो, उसकी स्तुति करो नहीं तो वह अंधकार लाएगा। अंधेरी पहाड़ियों पर लड़खड़ाने और गिरने से पहले उसकी स्तुति करो। यहूदा के लोगों, तुम प्रकाश की आशा करतेहो। किन्तु यहोवा प्रकाश को घोर अंधकार में बदलेगा। यहोवा प्रकाश को अति गहन अधंकार से बदल देगा। [17]यहूदा के लोगों, यदि तुम यहोवा की अनसुनी करते हो तो मैं छिप जाऊँगा और रोऊँगा। तुम्हारा घमण्ड मुझे रूलायेगा। मैं फूट–फूट कर रोऊँगा। मेरी आँखें आँसुओं से भर जाएंगी। क्यों? क्योंकि यहोवा की रेवड़ पकड़ी जाएगी। [18]ये बातें राजा और उसकी पत्नी से कहो, "अपने सिंहासनों से उतरो। तुम्हारे सुन्दर मुकुट तुम्हारे सिरों से गिर चुके हैं।" [19]नेगव मरुभूमि के नगरों में ताला पड़ चुका है, उन्हें कोई खोल नहीं सकता। यहूदा के लोगों को देश निकाला दिया जा चुका है। उन सभी को बन्दी के रूप में ले जाया गया है।

[20]यरूशलेम, ध्यान से देखो! शत्रुओं को उत्तर से आते देखो। तुम्हारी रेवड़ कहाँ है? परमेश्वर ने तुम्हें सुन्दर रेवड़ दी थी। तुमसे उस रेवड़ की देखभाल की आशा थी। [21]जब यहोवा उस रेवड़ का हिसाब तुमसे माँगेगा तो तुम उसे क्या उत्तर दोगे? तुमसे आशा थी कि तुम परमेश्वर के बारे में लोगों को शिक्षा दोगे। तुम्हारे नेताओं से लोगों

का नेतृत्व करने की आशा थी। लेकिन उन्होंने यह कार्य नहीं किये। अत: तुम्हें अत्यन्त दु:ख व पीड़ा भुगतनी होगी [22]तुम अपने से पूछ सकते हो, "यह बुरी विपत्ति मुझ पर क्यों आई?" ये विपत्तियाँ तुम्हारे अनेक पापों के कारण आई। तुम्हारे पापों के कारण तुम्हे निर्वस्त्र किया गया और जूते ले लिये गए। उन्होंने यह तुम्हें लज्जित करने को किया। [23]एक काला आदमी अपनी चमड़ी का रंग बदल नहीं सकता। और कोई चीता अपने धब्बे नहीं बदल सकता। ओ यरूशलेम, उसी तरह तुम भी बदल नहीं सकते, अच्छा काम नहीं कर सकते। तुम सदैव बुरा काम करते हो। [24]"मैं तुम्हें अपना घर छोड़ने को विवश करूँगा, जब तुम भागोगे तब हर दिशा में दौड़ोगे। तुम उस भूसे की तरह होगे जिसे मरुभूमि की हवा उड़ा ले जाती है। [25] ये वे सब चीजें हैं जो तुम्हारे साथ होंगी, यह मेरी योजना का तुम्हारा हिस्सा है।" यह सन्देश यहोवा का है।

"यह क्यों होगा? क्योंकि तुम मुझे भूल गए, तुमने असत्य देवताओं पर विश्वास किया। [26]यरूशलेम, मैं तुम्हारे वस्त्र उतारुँगा लोग तुम्हारी नग्नता देखेगें और तुम लज्जा से गड़ जाओगे। [27]मैंने उन भयंकर कामों को देखा जो तुमने किये। मैंने तुम्हें हँसते और अपने प्रेमियों के साथ शारीरिक सम्बन्ध करते देखा। मै जानता हूँ कि तुमने वेश्या की तरह दुष्कर्म किया है। मैंने तुम्हें पहाड़ियों और खेतों में देखा है। यरूशलेम, यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा। मुझे बताओ कि तुम कब तक अपने गंदे पापों को करते रहोगे?"

सूखा पड़ना और झूठे नबी

14 यह यिर्मयाह को सूखे के बारे में यहोवा का सन्देश है:

[2]"यहूदा राष्ट्र उन लोगों के लिये रो रहा है जो मर गये हैं। यहूदा के नगर के लोग दुर्बल, और दुर्बल होते जा रहे हैं। वे लोग भूमि पर लेट कर शोक मनाते हैं। यरूशलेम नगर से एक चीख परमेश्वर के पास पहुँच रही है। [3]लोगों के प्रमुख अपने सेवकों को पानी लाने के लिए भेजते हैं। सेवक कुण्डों पर जाते हैं। किन्तु वे कुछ भी पानी नहीं पाते। सेवक खाली बर्तन लेकर लौटते हैं। अत: वे लज्जित और परेशान हैं। वे अपने सिर को लज्जा से ढक लेते हैं। [4]कोई भी फसल के लिए भूमि तैयार नहीं करता। भूमि पर वर्षा नहीं होती, किसान हताश हैं। अत: वे अपना सिर लज्जा से ढकते हैं। [5]यहाँ तक कि हिरनी भी अपने नये जन्में बच्चे को खेत में अकेला छोड़ देती है। वह वैसा करती है क्योंकि वहाँ घास नहीं है। [6]जंगली गधे नंगी पहाड़ी पर खड़े होते हैं। वे गीदड़ की तरह हवा सूंघते हैं। किन्तु उनकी आँखों को कोई चरने की चीज नहीं दिखाई पड़ती। क्योंकि चरने योग्य वहाँ कोई पौधे नहीं हैं।

[7]"हम जानते हैं कि यह सब कुछ हमारे अपराध के कारण है। हम अब अपने पापों के कारण कष्ट उठा रहे हैं। हे यहोवा, अपने अच्छे नाम के लिये हमारी कुछ मदद कर। हम स्वीकार करते हैं कि हम लोगों ने तुझको कई बार छोड़ा है। हम लोगों ने तेरे विरुद्ध पाप किये हैं। [8]परमेश्वर, तू इस्राएल की आशा है। विपत्ति के दिनों में तूने इस्राएल को बचाया। किन्तु अब ऐसा लगता है कि तू इस देश में अजनबी है। ऐसा प्रतीत होता है कि तू वह यात्री है जो एक रात यहाँ ठहरा हो। [9]तू उस व्यक्ति के समान लगता है जिस पर अचानक हमला किया गया हो। तू उस सैनिक सा लगता है जिसके पास किसी को बचाने की शक्ति न हो। किन्तु हे यहोवा, तू हमारे साथ है। हम तेरे नाम से पुकारे जाते हैं, अत: हमें असहाय न छोड़।"

[10]यहूदा के लोगों के बारे में यहोवा जो कहता है, वह यह है: "यहूदा के लोग सचमुच मुझे छोड़ने में प्रसन्न हैं। वे लोग मुझे छोड़ना अब भी बन्द नहीं करते। अत: अब यहोवा उन्हें नहीं अपनायेगा। अब यहोवा उनके बुरे कामों को याद रखेगा जिन्हें वे करते हैं। यहोवा उन्हें उनके पापों के लिये दण्ड देगा।"

[11]तब यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, यहूदा के लोगों के लिये कुछ अच्छा हो, इसकी प्रार्थना न करो।" [12]यहूदा के लोग उपवास कर सकते हैं और मुझसे प्रार्थना कर सकते हैं। किन्तु मैं उनकी प्रार्थनायें नहीं सुनूँगा। यहाँ तक कि यदि ये लोग होमबलि और अन्न भेंट चढ़ायेंगे तो भी मैं उन लोगों को नहीं अपनाऊँगा। मैं यहूदा के लोगों को युद्ध में नष्ट करुँगा। मैं उनका भोजन छीन लूँगा और यहूदा के लोग भूखों मरेंगे और मैं उन्हें भयंकर बीमारियों से नष्ट करुँगा।

[13]किन्तु मैंने यहोवा से कहा, "हमारे स्वामी यहोवा! नबी लोगों से कुछ और ही कह रहे थे। वे यहूदा के लोगों से कह रहे थे, 'तुम लोग शत्रु की तलवार से दु:ख नहीं उठाओगे। तुम लोगों को कभी भूख से कष्ट नहीं होगा। यहोवा तुम्हें इस देश में शान्ति देगा।'"

[14]तब यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, वे नबी मेरे नाम पर झूठा उपदेश दे रहे हैं। मैंने उन नबियों को नहीं भेजा मैंने उन्हें कोई आदेश या कोई बात नहीं की वे नबी असत्य कल्पनायें, व्यर्थ जादू और अपने झूठे दर्शन का उपदेश कर रहे हैं। [15]इसलिये उन नबियों के विषय में जो मेरे नाम पर उपदेश दे रहे हैं, मेरा कहना यह है। मैंने उन नबियों को नहीं भेजा। उन नबियों ने कहा, 'कोई भी शत्रु तलवार से इस देश पर आक्रमण नहीं करेगा। इस देश में कभी भुखमरी नहीं होगी।' वे नबी भूखों मरेंगे और शत्रु की तलवार के घाट उतारे जाएंगे [16]और जिन लोगों से वे नबी बातें करते हैं सड़कों पर फेंक दिये जाएंगे। वे लोग भूखों मरेंगे और शत्रु की तलवार के घाट उतारे जाएंगे। कोई व्यक्ति उनको या उनकी पत्नियों या उनके पुत्रों अथवा उनकी पुत्रियों को दफनाने को नहीं रहेगा। मैं उन्हें दण्ड दूँगा।

17 "यिर्मयाह, यह सन्देश यहूदा के लोगों को दो:
'मेरी आँखें आँसुओं से भरी हैं।
मैं बिना रूके रात–दिन रोऊँगा।
मैं अपनी कुमारी पुत्री के लिये रोऊँगा।
मैं अपने लोगों के लिए रोऊँगा।
क्यों? क्योंकि किसी ने उन पर प्रहार किया
और उन्हें कुचल डाला।
वे बुरी तरह घायल किये गए हैं।

18 यदि मैं देश में जाता हूँ तो
मैं उन लोगों को देखता हूँ
जो तलवार के घाट उतारे गए हैं।
यदि मैं नगर में जाता हूँ,
मैं बहुत सी बीमारियाँ देखता हूँ,
क्योंकि लोगों के पास भोजन नहीं है।'
याजक और नबी विदेश पहुँचा दिये गये हैं।'"

19 "हे यहोवा, क्या तूने पूरी तरह यहूदा
राष्ट्र को त्याग दिया है?
यहोवा, क्या तू सिय्योन से घृणा करता है?
तूने इसे बुरी तरह से चोट की है कि हम फिर
से अच्छे नहीं बनाए जा सकते।
तूने वैसा क्यों किया?
हम शान्ति की आशा रखते थे,
किन्तु कुछ भी अच्छा नहीं हुआ।
हम लोग घाव भरने के समय की प्रतीक्षा
कर रहे थे, किन्तु केवल त्रास आया।

20 हे यहोवा,हम जानते हैं कि हम बहुत
बुरे लोग हैं, हम जानते हैं कि हमारे
पूर्वजों ने बुरे काम किये।
हाँ, हमने तेरे विरुद्ध पाप किये।

21 हे यहोवा, अपने नाम की अच्छाई के लिये
तू हमें धक्का देकर दूर न कर।
अपने सम्मानीय सिंहासन के गौरव को न हटा।
हमारे साथ की गई वाचा को याद रख
और इसे न तोड़।

22 विदेशी देवमूर्तियों में वर्षा लाने की शक्ति नहीं है,
आकाश में पानी बरसाने की शक्ति नहीं है।
केवल तू ही हमारी आशा है,
एक मात्र तू ही है
जिसने यह सब कुछ बनाया है।"

15

यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, यदि मूसा और शमूएल भी यहूदा के लोगों के लिये प्रार्थना करने वाले होते, तो भी मैं इन लोगों के लिये अफसोस नहीं करता। यहूदा के लोगों को मुझसे दूर भेजो। उनसे जाने को कहो। [2]वे लोग तुमसे पूछ सकते हैं, 'हम लोग कहाँ जाएंगे?' तुम उनसे यह कहो, यहोवा जो कहता है, वह यह है:

"'मैंने कुछ लोगों को मरने के लिये निश्चित किया है। वे लोग मरेंगे। मैंने कुछ लोगों को तलवार के घाट उतारना निश्चित किया है, वे लोग तलवार के घाट उतारे जाएंगे। मैंने कुछ को भूख से मरने के लिए निश्चित किया है। वे लोग भूख से मरेंगे। मैंने कुछ लोगों का बन्दी होना और विदेश ले जाया जाना निश्चित किया है। वे लोग उन विदेशों में बन्दी रहेंगे। [3]यहोवा कहता है कि मैं चार प्रकार की विनाशकारी शक्तियाँ उनके विरुद्ध भेजूँगा।' यह सन्देश यहोवा का है। 'मैं शत्रु को तलवार के साथ मारने के लिए भेजूँगा। मैं कुत्तों को उनका शव घसीट ले जाने को भेजूँगा। मैं हवा में उड़ते पक्षियों और जंगली जानवरों को उनके शवों को खाने और नष्ट करने को भेजूँगा। [4]मैं यहूदा के लोगों को ऐसा दण्ड दूँगा कि धरती के लोग इसे देख कर काँप जायेंगें। मैं यहूदा के लोगों के साथ यह, मनश्शे ने यरूशलेम में जो कुछ किया, उसके कारण करूँगा। मनश्शे, राजा हिलकिय्याह

का पुत्र था। मनश्शे यहूदा राष्ट्र का एक राजा था।'

[5]"यरूशलेम नगर, तुम्हारे लिये कोई अफसोस नहीं करेगा। कोई व्यक्ति तुम्हारे लिए न दुःखी होगा, न ही रोएगा। कौन तुम्हारा कुशल क्षेम पूछने तुम्हारे पास आयेगा! [6]यरूशलेम, तुमने मुझे छोड़ा।" यह सन्देश यहोवा का है।

"तुमने मुझे बार बार त्यागा। अत: मैं दण्ड दूँगा और तुझे नष्ट करूँगा मैं तुम पर दया करते हुए थक गया हूँ। [7]मैं अपने सूप से यहूदा के लोगों को फटक दूँगा। मैं देश के नगर द्वार पर उन्हें बिखेर दूँगा। मेरे लोग बदले नहीं हैं। अत: मैं उन्हें नष्ट करूँगा। मैं उनके बच्चों को ले लूँगा। [8]अनेक स्त्रियाँ अपने पतियों को खो देंगी। सागर के बालू से भी अधिक वहाँ विधवायें होंगी। मैं एक विनाशक को दोपहरी में लाऊँगा। विनाशक यहूदा के युवकों की माताओं पर आक्रमण करेगा। मैं यहूदा के लोगों को पीड़ा और भय दूँगा। मैं इसे अतिशीघ्रता से घटित कराऊँगा। [9]शत्रु तलवार से आक्रमण करेगा और लोगों को मारेगा। वे यहूदा के बचे लोगों को मार डालेंगे। एक स्त्री के सात पुत्र हो सकते हैं, किन्तु वे सभी मरेंगे। वह रोती, और रोती रहेगी, जब तक वह दुर्बल नहीं हो जाती और वह साँस लेने योग्य भी नहीं रहेगी। वह लज्जा और अनिश्चयता में होगी, उसके उजले दिन दुःख से काले होंगे।"

यिर्मयाह फिर परमेश्वर से शिकायत करता है

[10]हाय माता, तूने मुझे जन्म क्यों दिया? मैं (यिर्मयाह) वह व्यक्ति हूँ जो पूरे देश को दोषी कहे और आलोचना करे। मैंने न कुछ उधार दिया है और न ही लिया है। किन्तु हर एक व्यक्ति मुझे अभिशाप देता है। [11]यहोवा सच ही, मैंने तेरी ठीक सेवा की है। विपत्ति के समय में मैंने अपने शत्रुओं के बारे में तुझसे प्रार्थना की।

परमेश्वर यिर्मयाह को उत्तर देता हैं

[12]"यिर्मयाह, तुम जानते हो कि कोई व्यक्ति लोहे के टुकड़े को चकनाचूर नहीं कर सकता। मेरा तात्पर्य उस लोहे से है जो उत्तर का है और कोई व्यक्ति काँसे के टुकड़े को भी चकनाचूर नहीं कर सकता। [13]यहूदा के लोगों के पास सम्पत्ति और खजाने हैं। मैं उस सम्पत्ति को अन्य लोगों को दूँगा। उन अन्य लोगों को वह सम्पत्ति खरीदनी नहीं पड़ेगी। मैं उन्हें वह सम्पत्ति दूँगा। क्यों? क्योंकि यहूदा ने बहुत पाप किये हैं।" यहूदा ने देश के हर एक भाग में पाप किया है। [14]यहूदा के लोगों, मैं तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं का दास बनाऊँगा। तुम उस देश में दास होगे जिसे तुमने कभी जाना नहीं। मैं बहुत क्रोधित हुआ हूँ। मेरा क्रोध तप्त अग्नि सा है और तुम जला दिये जाओगे।"

[15]हे यहोवा, तू मुझे समझता है। मुझे याद रख और मेरी देखभाल कर। लोग मुझे चोट पहुँचाते हैं। उन लोगों को वह दण्ड दे जिसके वह पात्र हैं। तू उन लोगों के प्रति सहनशील है। किन्तु उनके प्रति सहनशील रहते समय मुझे नष्ट न कर दे। मेरे बारे में सोच। यहोवा उस पीड़ा को सोच जो मैं तेरे लिये सहता हूँ। [16] तेरा सन्देश मुझे मिला और मैं उसे निगल गया। तेरे सन्देश ने मुझे बहुत प्रसन्न कर दिया। मैं प्रसन्न था कि मुझे तेरे नाम से पुकारा जाता है। तेरा नाम यहोवा सर्वशक्तिमान है। [17]मैं कभी भीड़ में नहीं बैठा क्योंकि उन्होंने हँसी उड़ाई और मजा लिया। अपने ऊपर तेरे प्रभाव के कारण मैं अकेला बैठा। तूने मेरे चारों ओर की बुराइयों पर मुझे क्रोध से भर दिया। [18]मैं नहीं समझ पाता कि मैं क्यों अब तक घायल हूँ? मैं नहीं समझ पाता कि मेरा घाव अच्छा क्यों नहीं होता और भरता क्यों नहीं? हे यहोवा, मैं समझता हूँ कि तू बदल गया है। तू सोते के उस पानी की तरह है जो सूख गया हो। तू उस सोते की तरह है जिसका पानी सूख गया हो।

[19]तब यहोवा ने कहा, "यिर्मयाह, यदि तुम बदल जाते हो और मेरे पास आते हो, तो मैं तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा। यदि तुम बदल जाते हो और मेरे पास आते हो तो तुम मेरी सेवा कर सकते हो। यदि तुम महत्वपूर्ण बात कहते हो और उन बेकार बातों को नहीं कहते, तो तुम मेरे लिये कह सकते हो। यिर्मयाह, यहूदा के लोगों को बदलना चाहिये और तुम्हारे पास उन्हें आना चाहिये। किन्तु तुम मत बदलो और उनकी तरह न बनो। [20]मैं तुम्हें शक्तिशाली बनाऊँगा। वे लोग सोचेंगे कि तुम काँसे की बनी दीवार जैसे शक्तिशाली हो यहूदा के लोग तुम्हारे विरुद्ध लड़ेंगे, किन्तु वे तुम्हें हरायेंगे नहीं। वे तुमको नहीं हरायेंगे। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, तुम्हारा उद्धार करूँगा।"

यह सन्देश यहोवा को है। [21]"मैं तुम्हारा उद्धार उन बुरे लोगों से करूँगा। वे लोग तुम्हें डराते हैं। किन्तु मैं तुम्हें उन लोगों से बचाऊँगा।"

विनाश का दिन

16 यहोवा का सन्देश मुझे मिला। [2]"यिर्मयाह, तुम्हें विवाह नहीं करना चाहिये। तुम्हें इस स्थान पर पुत्र या पुत्री पैदा नहीं करना चाहिये।"

[3]यहूदा देश में जन्म लेने वाले पुत्र–पुत्रियों के बारे में यहोवा यह कहता है, और उन बच्चों के माता–पिता के बारे में जो यहोवा कहता है, वह यह है: [4]"वे लोग भयंकर मृत्यु के शिकार होंगे। उन लोगों के लिये कोई रोएगा नहीं। कोई भी व्यक्ति उन्हें दफनायेगा नहीं। उनके शव जमीन पर गोबर की तरह पड़े रहेंगे। वे लोग शत्रु की तलवार के घाट उतरेंगे या भूखों मरेंगे। उनके शव आकाश के पक्षियों और भूमि के जंगली जानवरों का भोजन बनेंगे।"

[5]अत: यहोवा कहता है, "यिर्मयाह, उन घरों में न जाओ जहाँ लोग अन्तिम क्रिया की दावत खा रहे हैं। वहाँ मरे के लिये रोने या अपना शोक प्रकट करने न जाओ। ये सब काम न करो। क्यों? क्योंकि मैंने अपना आशीर्वाद वापस ले लिया है। मैं यहूदा के इन लोगों पर दया नहीं करूँगा। मैं उनके लिये अफसोस नहीं करूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है।

[6]"यहूदा देश में महत्वपूर्ण लोग और साधारण लोग मरेंगे। कोई व्यक्ति उन लोगों को न दफनायेगा न ही उनके लिये रोएगा। इन लोगों के लिए शोक प्रकट करने को न तो कोई अपने को काटेगा और न ही अपने सिर के बाल साफ करायेगा। [7]कोई व्यक्ति उन लोगों के लिए भोजन नहीं लाएगा जो मरे के लिए रो रहे होंगे। जिनके माता पिता मर गए होंगे उन लोगों को कोई व्यक्ति समझाये बुझायेगा नहीं। जो मरे के लिये रो रहे होंगे उन्हें शान्त करने के लिये कोई व्यकि दाखमधु नहीं पिलायेगा।"

[8]"यिर्मयाह, उस घर में न जाओ जहाँ लोग दावत खा रहे हो। उस घर में न जाओ और उनके साथ बैठकर न खाओ न दाखमधु पीओ। [9]इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिशाली यहोवा यह कहता है: 'मजा उड़ाने वाले लोगों के शोर को शीघ्र ही मैं बन्द कर दूँगा। विवाह की दावत में लोगों के हँसी मजाक की किलकारियों को मैं बन्द कर दूँगा। यह तुम्हारे जीवनकाल में होगा। मैं ये काम शीघ्रता से करूँगा।'

[10]"यिर्मयाह, तुम यहूदा के लोगों को ये बातें बताओगे और लोग तुमसे पूछेंगे, 'यहोवा ने हम लोगों के लिये इतनी भयंकर बातें क्यों कही हैं? हमने क्या गलत काम किया है? हम लोगों ने यहोवा अपने परमेश्वर के विरुद्ध कौन सा पाप किया है?' [11]तुम्हें उन लोगों से यह कहना चाहिये, 'तुम लोगों के साथ भयंकर घटनायें घटेंगी क्योंकि तुम्हारे पूर्वजों ने मेरा अनुसरण करना छोड़ा और अन्य देवताओं का अनुसरण करना तथा सेवा करना आरम्भ किया। उन्होंने उन अन्य देवताओं की पूजा की। तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे छोड़ा और मेरे नियमों का पालन करना त्यागा। [12]किन्तु तुम लोगों ने अपने पूर्वजों से भी अधिक बुरे पाप किये हैं। तुम लोग बहुत हठी हो और तुम केवल वही करते हो जिसे तुम करना चाहते हो। तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं कर रहे हो। [13]अत: मैं तुम्हें इस देश से बाहर निकाल फेंकूँगा। मैं तुम्हें विदेश में जाने को विवश करुँगा। तुम ऐसे देश में जाओगे जिसे तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने कभी नहीं जाना। उस देश में तुम उन सभी असत्य देवताओं की पूजा कर सकते हो जिन्हें तुम चाहते हो। मैं न तो तुम्हारी सहायता करुँगा और न ही तुम्हारे प्रति कोई सहानुभूति दिखाऊँगा।' यह सन्देश यहोवा का है।

[14]"लोग प्रतिज्ञा करते हैं और कहते हैं, 'यहोवा निश्चय ही शाश्वत है। केवल वही है जो इस्राएल के लोगों को मिस्र देश से बाहर लाया' किन्तु समय आ रहा है, जब लोग ऐसा नहीं कहेंगे।" यह सन्देश यहोवा का है। [15]लोग कुछ नया कहेंगे। वे कहेंगे, 'निश्चय ही यहोवा शाश्वत है। वह ही केवल ऐसा है जो इस्राएल के लोगों को उत्तरी देश से ले आया। वह उन्हें उन सभी देशों से लाया जिनमें उसने उन्हें भेजा था।' लोग ये बातें क्यो कहेंगे? क्योंकि मैं इस्राएल के लोगों को उस देश में वापस लाऊँगा जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दिया था।

[16]"मैं शीघ्र ही अनेकों मछुवारों को इस देश में आने के लिये बुलाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "वे मछुवारे यहूदा के लोगों को पकड़ लेंगे। यह होने के बाद मैं बहुत से शिकारियों को इस देश में आने के लिये बुलाऊँगा। वे शिकारी यहूदा के लोगों का शिकार हर एक पहाड़, पहाड़ी और चट्टानों की दरारों में करेंगे। [17]मैं वह सब जो वे करते हैं, देखता हूँ। यहूदा के लोग उन कामों को मुझसे छिपा नहीं सकते जिन्हें वे करते हैं। उनके पाप मुझसे छिपे नहीं हैं। [18]मैं यहूदा के लोगों ने जो बुरे काम किये हैं, उसका बदला चुकाऊँगा। मैं हर एक पाप के लिये दो बार उनको दण्ड दूँगा। मैं यह

करुँगा क्योंकि उन्होंने मेरे देश को 'गन्दा' बनाया है। उन्होंने मेरे देश को भंयकर मूर्तियों से गन्दा किया है। मैं उन देवमूर्तियों से घृणा करता हूँ। किन्तु उन्होंने मेरे देश को अपनी देवमूर्तियों से भर दिया है।"

[19] हे यहोवा, तू मेरी शक्ति और गढ़ है।
विपत्ति के समय भाग कर बचने की
तू सुरक्षित शरण है।
सारे संसार से राष्ट्र तेरे पास आएंगे।
वे कहेंगे,
"हमारे पिता असत्य देवता रखते थे।
उन्होंने उन व्यर्थ देवमूर्तियों की पूजा की,
किन्तु उन देवमूर्तियों ने उनकी
कोई सहायता नहीं की।"

[20] क्या लोग अपने लिये सच्चे देवता बना सकते हैं?
नहीं, वे मूर्तियाँ बना सकते हैं,
किन्तु वे मूर्तियाँ सचमुच देवता नहीं हैं।

[21] अत: मैं उन लोगों को सबक सिखाऊँगा,
जो देवमूर्तियों को देवता बनाते हैं।
अब मै सीधे अपनी शक्ति और
प्रभुता के बारे में शिक्षा दूँगा।
तब वे समझेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ।
वे जानेंगे कि मेरा नाम यहोवा है।"

हृदय पर लिखा अपराध

17 "यहूदा के लोगों का पाप वहाँ लिखा है जहाँ से उसे मिटाया नहीं जा सकता। वे पाप लोहे की कलम से पत्थरों पर लिखे गये थे। उनके पाप हीरे की नोकवाली कलम से लिखे गए थे, और वह पत्थर उनका हृदय है। वे पाप उनकी वेदी के सींगों के बीच काटे गए थे। [2]उनके बच्चे असत्य देवताओं को अर्पित की गई वेदी को याद रखते हैं। वे अशेरा को अर्पित किये गए लकड़ी के खंभे को याद रखते हैं। वे उन चीजों को हरे पेड़ों के नीचे और पहाड़ियों पर याद करते हैं। [3]वे उन चीजों को खुले स्थान के पहाड़ों पर याद करते हैं। यहूदा के लोगों के पास सम्पत्ति और खजाने हैं। मैं उन चीजों को दूसरे लोगों को दूँगा। मैं तुम्हारे देश के सभी उच्च स्थानों को नष्ट करूँगा। तुमने उन स्थानों पर पूजा करके पाप किया है। [4]तुम उस भूमि को खोओगे जिसे मैंने तुम्हें दी। मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हें उनके दास की तरह उस भूमि में ले जाने दूँगा जिसके बारे में तुम नहीं जानते। क्यों? क्योंकि मैं बहुत क्रोधित हूँ। मेरा क्रोध तप्त अग्नि सा है, और तुम सदैव के लिये जल जाओगे।"

जनता में विश्वास एवं परमेश्वर में विश्वास

[5]यहोवा यह सब कहता है, "जो लोग केवल दूसरे लोगों में विश्वास करते हैं उनका बुरा होगा। जो शक्ति के लिये केवल दूसरों के सहारे रहते हैं उनका बुरा होगा। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने यहोवा पर विश्वास करना छोड़ दिया है। [6]वे लोग मरुभूमि की झाड़ी की तरह हैं। वह झाड़ी उस भूमि पर है जहाँ कोई नहीं रहता। वह झाड़ी गर्म और सूखी भूमि में है। वह झाड़ी खराब मिट्टी में है। वह झाड़ी उन अच्छी चीजों को नहीं जानती जिन्हें परमेश्वर दे सकता हैं [7]किन्तु जो व्यक्ति यहोवा में विश्वास करता हैं, आशीर्वाद पाएगा। क्यों? क्योंकि यहोवा उसको ऐसा दिखायेगा कि उनपर विश्वास किया जा सके। [8]वह व्यक्ति उस पेड़ की तरह शक्तिशाली होगा जो पानी केपास लगाया गया हो। उस पेड़ की लम्बी जड़ें होती हैं जो पानी पाती हैं। वह पेड़ गर्मी के दिनों से नहीं डरता इसकी पत्तियाँ सदा हरी रहती हैं। यह वर्ष के उन दिनों में परेशान नहीं होता जब वर्षा नहीं होती। उस पेड़ में सदा फल आते हैं।

[9]"व्यक्ति का दिमाग बड़ा कपटी होता है। दिमाग बहुत बीमार भी हो सकता है और कोई भी व्यक्ति दिमाग को ठीक ठीक नहीं समझता। [10]किन्तु मैं यहोवा हूँ और मैं व्यक्ति के हृदय को जान सकता हूँ। मैं व्यक्ति के दिमाग की जाँच कर सकता हूँ। अत: मैं निर्णय कर सकता हूँ कि हर एक व्यक्ति को क्या मिलना चाहिये? मैं हर एक व्यक्ति को उसके लिये ठीक भुगतान कर सकता हूँ जो वह करता है। [11]कभी कभी एक चिड़िया उस अंडे से बच्चा निकालती है जिसे उसने नहीं दिया। वह व्यक्ति जो धन के लिये ठगता है, उस चिड़िया के समान है। जब उस व्यक्ति की आधी आयु समाप्त होगी तो वह उस धन को खो देगा। अपने जीवन के अन्त में यह स्पष्ट हो जाएगा कि वह एक मूर्ख व्यक्ति था।"

[12]आरम्भ ही से हमारा मन्दिर परमेश्वर के लिये एक गौरवशाली सिंहासन था। यह एक बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। [13]हे यहोवा, तू इस्राएल की आशा है। हे यहोवा, तू अमृत जल के सोते के समान है। यदि कोई

तेरा अनुसरण करना छोड़ेगा तो उसका जीवन बहुत घट जाएगा।

यिर्मयाह की तीसरी शिकायत

[14]हे यहोवा, यदि तू मुझे स्वस्थ करता है, मैं सचमुच स्वस्थ हो जाऊँगा। मेरी रक्षा कर, और मेरी सचमुच रक्षा हो जायेगी। हे यहोवा, मैं तेरी स्तुति करता हूँ! [15]यहूदा के लोग मुझसे प्रश्न करते रहते हैं। वे पूछते रहते हैं, "यिर्मयाह, यहोवा के यहाँ का सन्देश कहाँ है? हम लोग देखें कि सन्देश सत्य प्रामाणित होता है?"

[16]हे यहोवा, मैं तुझसे दूर नहीं भागा, मैंने तेरा अनुसरण किया है। तूने जैसा चाहा वैसा गड़ेरिया मैं बना। मैं नहीं चाहता कि भंयकर दिन आएं। यहोवा तू जानता है जो कुछ मैंने कहा। जो हो रहा है, तू सब देखता है। [17]हे यहोवा, तू मुझे नष्ट न कर। मैं विपत्ति के दिनों मे तेरा आश्रित हूँ। [18]लोग मुझे चोट पहुँचा रहे हैं। उन लोगों को लज्जित कर। किन्तु मुझे निराश न कर। उन लोगों को भयभीत होने दे। किन्तु मुझे भयभीत न कर। मेरे शत्रुओं पर भयंकर विनाश का दिन ला उन्हें तोड़ और उन्हें फिर तोड़।

सब्त दिवस को पवित्र रखना

[19]यहोवा ने मुझसे ये बातें कहीं, "यिर्मयाह, जाओ और यरूशलेम के जन–द्वार पर खड़े हो जाओ, जहाँ से यहूदा के राजा अन्दर आते और बाहर जाते हैं। मेरे लोगों को मेरा सन्देश दो और तब यरूशलेम के अन्य सभी द्वारों पर जाओ और यही काम करो।"

[20]उन लोगों से कहो: "यहोवा के सन्देश को सुनो। यहूदा के राजाओं, सुनो। यहूदा के तुम सभी लोगों, सुनो। इस द्वार से यरूशलेम में आने वाले सभी लोगों, मेरी बात सुनो। [21]यहोवा यह बात कहता है: इस बात में सावधान रहो कि सब्त के दिन सिर पर बोझ ले कर न चलो और सब्त के दिन यरूशलेम के द्वारों से बोझ न लाओ। [22]सब्त के दिन अपने घरों से बोझ बाहर न ले जाओ। उस दिन कोई काम न करो। मैंने यही आदेश तुम्हारे पूर्वजों को दिया था। [23]किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरे इस आदेश का पालन नहीं किया। उन्होंने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। तुम्हारे पूर्वज बहुत हठी थे। मैंने उन्हें दण्ड दिया किन्तु इसका कोई अच्छा फल नहीं निकला। उन्होंने मेरी एक न सुनी। [24]किन्तु तुम्हें मेरी आज्ञा का पालन करने में सावधान रहना चाहिये।" यह सन्देश यहोवा का है। "तुम्हें सब्त के दिन यरूशलेम के द्वारों से बोझ नहीं लाना चाहिये। तुम्हें सब्त के दिन को पवित्र दिन बनाना चाहिये। तुम, उस दिन कोई भी काम नहीं करोगे।

[25]"यदि तुम इस आदेश का पालन करोगे तो राजा जो दाऊद के सिंहासन पर बैठेंगे, यरूशलेम के द्वारों से आएंगे। वे राजा अपने रथों और घोड़ों पर सवार होकर आएंगे। यहूदा और इस्राएल के लोगों के प्रमुख उन राजाओं के साथ होंगे। यरूशलेम नगर में सदैव रहने वाले लोग यहाँ होंगे। [26]यहूदा के नगरों से लोग यरूशलेम आएंगे। लोग यरूशलेम को उन छोटे गाँवों से आएंगे जो इसके चारों ओर हैं। लोग उस प्रदेश से आएंगे जहाँ बिन्यामीन का परिवार समूह रहता है। लोग पश्चिमी पहाड़ की तराइयों तथा पहाड़ी प्रदेशों से आएंगे और लोग नेगव से आएंगे। वे सभी लोग होमबलि, बलि, अन्नबलि, सुगन्धि और धन्यवाद भेंट लेकर आएंगे। वे उन भेंटों और बलियों को यहोवा के मन्दिर को लाएंगे।

[27]"किन्तु यदि तुम मेरी बात नहीं सुनते और मेरे आदेश को नहीं मानते तो बुरी घटनायें होंगी। यदि तुम सब्त के दिन यरूशलेम के द्वार से बोझ ले जाते हो तब तुम उसे पवित्र दिन नहीं रखते। इस दशा में मैं ऐसे आग लगाऊँगा जो बुझाई नहीं जा सकती। वह आग यरूशलेम के द्वारों से आरम्भ होगी और महलों को भी जला देगी।"

कुम्हार और मिट्टी

18 यह यहोवा का वह सन्देश है जो यिर्मयाह को मिला: [2]"यिर्मयाह, कुम्हार के घर जाओ। मैं अपना सन्देश तुम्हें कुम्हार के घर पर दूँगा।"

[3]अत: मैं कुम्हार के घर गया। मैंने कुम्हार को चाक पर मिट्टी से बर्तन बनाते देखा। [4]वह एक बर्तन मिट्टी से बना रहा था। किन्तु बर्तन में कुछ दोष था। इसलिये कुम्हार ने उस मिट्टी का उपयोग फिर किया और उसने दूसरा बर्तन बनाया। उसने अपने हाथों का उपयोग बर्तन को वह रूप देने के लिये किया जो रुप वह देना चाहता था।

[5]तब यहोवा से सन्देश मेरे पास आया, [6]"इस्राएल के परिवार, तुम जानते हो कि मैं (परमेश्वर) वैसा ही तुम्हारे साथ कर सकता हूँ। तुम कुम्हार के हाथ की मिट्टी

के समान हो और मैं कुम्हार की तरह हूँ। [7]ऐसा समय आ सकता है, जब मैं एक राष्ट्र या राज्य के बारे में बाते करुँ। मैं यह कह सकता हूँ कि मैं उस राष्ट्र को उखाड़ फेंकूँगा या यह भी हो सकता है कि मैं यह कहूँ कि मैं उस राष्ट्र को उखाड़ गिराऊँगा और उस राष्ट्र या राज्य को नष्ट कर दूँगा। [8]किन्तु उस राष्ट्र के लोग अपने हृदय और जीवन को बदल सकते हैं। उस राष्ध्र के लोग बुरे काम करना छोड़ सकते हैं। तब मैं अपने इरादे को बदल दूँगा। मैं उस राष्ट्र पर विपत्ति ढाने की अपनी योजना का अनुसरण करना छोड़ सकता हूँ। [9]कभी ऐसा अन्य समय आ सकता है जब मैं किसी राष्ट्र के बारे में बातें करुँ। मैं यह कह सकता हूँ कि मैं उस राष्ट्र का निर्माण करुँगा और उसे स्थिर करुँगा। [10]किन्तु मैं यह देख सकता हूँ कि मेरी आज्ञा का पालन न करके वह राष्ट्र बुरा काम कर रहा है। तब मैं उस अच्छाई के बारे में फिर सोचूँगा जिसे देने की योजना मैंने उस राष्ट्र के लिये बना रखी है।

[11]"अत: यिर्मयाह, यहूदा के लोगों और यरूशलेम में जो लोग रहते हैं उनसे कहो, 'यहोवा जो कहता है वह यह है: अब मैं सीधे तुम लोगों के लिये विपत्ति का निर्माण कर रहा हूँ। मैं तुम लोगों के विरुद्ध योजना बना रहा हूँ। अत: उन बुरे कामों को करना बन्द करो जो तुम कर रहे हो। हर एक व्यक्ति को बदलना चाहिये और अच्छा काम करना आरम्भ करना चाहिये।' [12]किन्तु यहूदा के लोग उत्तर देंगे, 'ऐसी कोशिश करने से कुछ नहीं होगा। हम वही करते रहेंगे जो हम करना चाहते हैं। हम लोगों में हर एक वही करेगा जो हठी और बुरा हृदय करना चाहता है।'"

[13]उन बातों को सुनो जो यहोवा कहता है, "दूसरे राष्ट्र के लोगों से यह प्रश्न करो: 'क्या तुमने कभी किसी की वे बुराई करते हुये सुना है जो इस्राएल ने किया है।' अन्य के बारे में इस्राएल द्वारा की गई बुराई का करना सुना है? इस्राएल परमेश्वर की दुल्हन के समान विशेष है। [14] तुम जानते हो कि चट्टानों कभी स्वत: मैदान नहीं छोड़तीं। तुम जानते हो कि लबानोन के पहाड़ों के ऊपर की बर्फ कभी नहीं पिघलती। तुम जानते हो कि शीतल बहने वाले झरने कभी नहीं सूखते। [15]किन्तु हमारे लोग हमें भूल चुके हैं, वे व्यर्थ देवमूर्तियों की बलि चढ़ाते हैं। मेरे लोग जो कुछ करते हैं उनसे ठोकर खाकर गिरते हैं। वे अपने पूर्वजों की पुरानी राहों में ठोकर खाकर गिरते फिरते हैं। मेरे लोगों को ऊबड़ खाबड़ सड़कों और तुच्छ राजमार्गो पर चलना शायद अधिक पसन्द है, इसकी अपेक्षा कि वे मेरा अनुसरण अच्छी सड़क पर करें। [16]अत: यहूदा देश एक सूनी मरुभूमि बनेगा। इसके पास से गुजरते लोग हर बार सीटी बजाएंगे और सिर हिलायेंगे। इस बात से चकित होगें कि देश कैसे बरबाद किया गया। [17]मैं यहूदा के लोगों को उनके शत्रुओं के सामने बिखेरुँगा। प्रबल पूर्वी आँधी जैसे चीजों के चारों ओर उड़ती है वैसे ही मैं उनको बिखेरुँगा। मैं उन लोगों को नष्ट करूँगा। उस समय वे मुझे अपनी सहायता के लिये आता नहीं देखेंगे। नहीं, वे मुझे अपने को छोड़ता देखेंगे।"

यिर्मयाह की चौथी शिकायत

[18]तब यिर्मयाह के शत्रुओं ने कहा, "आओ, हम यिर्मयाह के विरूद्ध षड़यन्त्र रचे। निश्चय ही, याजक द्वारा दी गई व्यवस्था की शिक्षा मिटेगी नहीं और बुद्धिमान लोगों की सलाह अब भी हम लोगों को मिलेगी। हम लोगों को नबियों के सन्देश भी मिलेंगे। अत: हम लोग उसके बारे में झूठ बोलें। उससे वह बरबाद होगा। वह जो कुछ कहता है, हम किसी पर ध्यान नहीं देंगे।"

[19]हे यहोवा, मेरी सुन और मेरे विरोधियों की सुन, तब तय कर कि कौन ठीक है? [20]मैंने यहूदा के लोगों के लिये अच्छा किया है। किन्तु अब वे उल्टे बदले में बुराई दे रहे हैं। वे मुझे फँसा रहे हैं। वे मुझे धोखा देकर फँसाने और मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं। [21]अत: अब उनके बच्चों को अकाल में भूखों मरने दे। उनके शत्रुओं को उन्हें तलवार से हरा डालने दे। उनकी पत्नियों को शिशु रहित होने दे। यहूदा के लोगों को मृत्यु के घाट उतारे जाने दे। उनकी पत्नियों को विधवा होने दे। यहूदा के लोगों को मृत्यु के घाट उतारे जाने दें। युवकों को युद्ध में तलवार के घाट उतार दिये जाने दे। [22] उनके घरों में रूदन मचनें दे। उन्हें तब रोने दे जब तू अचानक उनके विरुद्ध शत्रु को लाए। इसे होने दे क्योंकि हमारे शत्रुओं ने मुझे धोखा दे कर फँसाने की कोशिश की है। उन्होंने मेरे फँसने के लिये गुप्त जाल डाला है। [23]हे यहोवा, मुझे मार डालने की उनकी योजना को तू जानता है। उनके अपराधों को तू क्षमा न कर। उनके पापों को मत धो। मेरे शत्रुओं को नष्ट कर। क्रोधित रहते समय ही उन लोगों को दण्ड दे।

टूटा सुराही

19 यहोवा ने मुझसे कहा: "यिर्मयाह, जाओ और किसी कुम्हार से एक मिट्टी का सुराही खरीदो। [2]ठीकरा–द्वार के सामने के पास बेन हिन्नोम घाटी को जाओ। अपने साथ लोगों के अग्रजों (प्रमुखों) और कुछ याजकों को लो। उस स्थान पर उनसे वह कहो जो मैं तुमसे कहता हूँ। [3]अपने साथ के लोगों से कहो, 'यहूदा के राजाओं और इस्राएल के लोगों, यहोवा के यहाँ से यह सन्देश सुनो। इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'मैं इस स्थान पर शीघ्र ही एक भयंकर घटना घटित कराऊँगा। हर एक व्यक्ति जो इसे सुनेगा, चकित और भयभीत होगा। [4]मैं ये काम करुँगा क्योंकि यहूदा के लोगों ने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया है। उन्होंने इसे विदेशी देवताओं का स्थान बना दिया है। यहूदा के लोगों ने इस स्थान पर अन्य देवताओं के लिये बलियाँ जलाई हैं। बहुत पहले लोग उन देवताओं को नहीं पूजते थे। उनके पूर्वज उन देवताओं को नहीं पूजते थे। ये अन्य देशों के नये देवता हैं। यहूदा के राजाओं ने भोले बच्चों के खून से इस स्थान को रंगा है। [5]यहूदा के राजाओं ने बाल देवता के लिये उच्च स्थान बनाए हैं। उन्होंने उन स्थानों का उपयोग अपने पुत्रों को आग में जलाने के लिये किया। उन्होंने अपने पुत्रों को बाल के लिये होमबलि के रुप में जलाया। मैंने उन्हें यह करने को नहीं कहा। मैंने तुमसे यह नहीं माँगा कि तुम अपने पुत्रों को बलि के रूप में भेंट करो। मैंने कभी इस सम्बन्ध में सोचा भी नहीं। [6]अब लोग उस स्थान का हिन्नोम की घाटी तोपेत कहते हैं। किन्तु मैं तुम्हें यह चेतावनी देता हूँ, वे दिन आ रहे हैं।'" यह सन्देश यहोवा का है, "'जब लोग इस स्थान को वध की घाटी कहेंगे। [7]इस स्थान पर मैं यहूदा और यरूशलेम के लोगों की योजनाओं को नष्ट करूँगा। शत्रु इन लोगों का पीछा करेगा और मैं इस स्थान पर यहूदा के लोगों को तलवार के घाट उतर जाने दूँगा और मैं उनके शवों को पक्षियों और जंगली जानवरों का भोजन बनाऊँगा। [8]मैं इस नगर को पूरी तरह नष्ट करुँगा। जब लोग यरूशलेम से गुजरेंगे तो सीटी बजाएंगे और सिर हिलायेंगे। उन्हें विस्मय होगा जब वे देखेंगे कि नगर किस प्रकार ध्वस्त किया गया है। [9]शत्रु अपनी सेना को नगर के चारों ओर लाएगा। वह सेना लोगों को भोजन लेने बाहर नहीं आने देगी। अत: नगर में लोग भूखों मरने लगेंगे। वे इतने भूखे हो जाएंगे कि अपने पुत्र और पुत्रियों के शरीर को खाने लगेंगे और तब वे एक दूसरे को खाने लगेंगे।'

[10]"यिर्मयाह, तुम ये बातें लोगों से कहोगे और जब वे देख रहे हों तभी तुम उस सुराही को तोड़ना। [11]उस समय, तुम यह कहना, सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'मैं यहूदा राष्ट्र और यरूशलेम नगर को वैसे ही तोड़ूँगा जैसे कोई मिट्टी का सुराही तोड़ता है। यह सुराही फिर जोड़कर बनाया नहीं जा सकता। यहूदा राष्ट्र के लिये भी यही सब होगा। मरे लोग इस तोपेत में तब तक दफनाए जाएंगे जब तक यहाँ जगह नहीं रह जाएगी। [12]मैं यह इन लोगों और इस स्थान के साथ ऐसा करूँगा। मैं इस नगर को तोपेत की तरह कर दूँगा।' यह सन्देश यहोवा का है। [13]'यरूशलेम के घर तथा राजा के महल इतने गन्दे होंगे जितना यह स्थान तोपेत है। राजा के महल इस स्थान तोपेत की तरह बरबाद होंगे। क्यों? क्योंकि लोगों ने उन घरों की छत पर असत्य देवताओं की पूजा की। उन्होंने ग्रह–नक्षत्रों की पूजा की और उनके सम्मान में बलि जलाई। उन्होंने असत्य देवताओं को पेय भेंट दी।'"

[14]तब यिर्मयाह ने तोपेत को छोड़ा जहाँ यहोवा ने उपदेश देने को कहा था। यिर्मयाह यहोवा के मन्दिर को गया और उसके आँगन में खड़ा हुआ। यिर्मयाह ने सभी लोगों से कहा, [15]"इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'मैंने कहा है कि मैं यरूशलेम और उसके चारों ओर के गाँवों पर अनेक विपत्तियाँ ढाऊँगा। मैं इन्हें शीघ्र घटित कराऊँगा। क्यों? क्योंकि लोग बहुत हठी हैं वे मेरी सुनने और मेरी आज्ञा का पालन करने से इन्कार करते हैं।'"

यिर्मयाह और पशहूर

20 पशहूर नामक एक व्यक्ति याजक था। वह यहोवा के मन्दिर में उच्चतम अधिकारी था। पशहूर इम्मेर नामक व्यक्ति का पुत्र था। पशहूर ने यिर्मयाह को मन्दिर के आँगन में उन बातों का उपदेश करते सुना। [2]इसलिये उसने यिर्मयाह नबी को पिटवा दिया और उसने यिर्मयाह के हाथ और पैरों को विशाल काष्ठ के लट्ठों के बीच बन्द कर दिया। यह मन्दिर के ऊपरी बिन्यामीन द्वार पर था। [3]अगले दिन पशहूर ने यिर्मयाह को काष्ठ के लट्ठों के बीच से निकाला। तब यिर्मयाह ने पशहूर से

कहा, "यहोवा का दिया तुम्हारा नाम पशहूर नहीं है। अब यहोवा की ओर से तुम्हारा नाम सर्वत्र आतंक है। [4]यही तुम्हारा नाम है, क्योंकि यहोवा कहता है, 'मैं शीघ्र ही तुमको अपने आपके लिये आतंक बनाऊँगा। मैं शीघ्र ही तुम्हें तुम्हारे सभी मित्रों के लिये आतंक बनाऊँगा। तुम शत्रुओं द्वारा अपने मित्रों को तलवार के घाट उतारते देखोगे। मैं यहूदा के सभी लाोगों को बाबुल के राजा को दे दूँगा। वह यहूदा के लोगों को बाबुल देश को ले जाएगा और उसकी सेना यहूदा के लोगों को अपनी तलवार के घाट उतारेगी। [5]यहूदा के लोगों ने चीजों को बनाने में कठिन परिश्रम किया और धनी हो गए। किन्तु मैं वे सारी चीजें उनके शत्रुओं को दे दूँगा। यरूशलेम के राजा के पास बहुत से धन भन्डार हैं। किन्तु मैं उन सभी धन भन्डारों को शत्रु को दें दूँगा। शत्रु उन चीजों को लेगा और उन्हें बाबुल देश को ले जाएगा। [6]और पशहूर तुम और तुम्हारे घर में रहने वाले सभी लोग यहाँ से ले जाए जाओगे। तुमको जाने को और बाबुल देश में रहने को विवश किया जायेगा। तुम बाबुल में मरोगे और तुम उस विदेश में दफनाए जाओगे। तुमने अपने मित्रों को झूठा उपदेश दिया। तुमने कहा कि ये घटनायें नहीं घटेंगीं । किन्तु तुम्हारे सभी मित्र भी मरेंगे और बाबुल में दफनाए जायेंगे।'"

यिर्मयाह की पाँचवीं शिकायत

[7]हे यहोवा, तूने मुझे धोखा दिया और मैं निश्चय ही मूर्ख बनाया गया। तू मुझसे अधिक शक्तिशाली है अत: तू विजयी हुआ। मैं मजाक बन कर रह गया हूँ। लोग मुझ पर हँसते हैं और सारा दिन मेरा मजाक उड़ाते हैं। [8]जब भी मैं बोलता हूँ, चीख पड़ता हूँ। मैं लगातार हिंसा और तबाही के बारे में चिल्ला रहा हूँ। मैं लोगों को उस सन्देश के बारे में बताता हूँ जिसे मैंने यहोवा से प्राप्त किया। किन्तु लोग केवल मेरा अपमान करते हैं और मेरा मजाक उड़ाते हैं। [9]कभी–कभी मैं अपने से कहता हूँ: "मैं यहोवा के बारे में भूल जाऊँगा। मैं अब आगे यहोवा के नाम पर नहीं बोलूँगा।" किन्तु यदि मैं ऐसा कहता हूँ तो यहोवा का सन्देश मेरे भीतर भड़कती ज्वाला सी हो जाती है। मुझे ऐसा लगता है कि यह अन्दर तक मेरी हड्डियों को जला रही है। मैं अपने भीतर यहोवा के सन्देश को रोकने के प्रयत्न में थक जाता हूँ और अन्तत: मैं इसे अपने भीतर रोकने में समर्थ नहीं हो पाता। [10]मैं अनेक लोगों को दबी जुबान अपने विरुद्ध बातें करता सुनता हूँ। सर्वत्र मैं वह सब सुनता हूँ जो मुझे भयभीत करते हैं। यहाँ तक कि मेरे मित्र भी मेरे विरुद्ध बातें करते है। चलो हम अधिकारियों को इसके बारे में सूचित करे। लोग केवल इस प्रतीक्षा में हैं कि मैं कोई गलती करुँ। वे कह रहे हैं, "आओ हम झूठ बोलें और कहें कि उसने कुछ बुरे काम किए हैं। सम्भव है हम यिर्मयाह को धोखा दे सकें। तब वह हमारे साथ होगा। अन्तत: हम उससे छुटकारा पायेंगे। तब हम उसे दबोच लेंगे और उससे अपना बदला ले लेंगे।" [11] किन्तु यहोवा मेरे साथ है। यहोवा एक दृढ़ सैनिक सा है। अत: जो लोग मेरा पीछा करते हैं मुँह की खायेंगे। वे लोग मुझे पराजित नहीं कर सकेंगे। वे लोग असफल होंगे। वे निराश होंगे। वे लोग लज्जित होंगे और लोग उस लज्जा को कभी नहीं भूलेंगे।

[12]सर्वशक्तिमान यहोवा तू अच्छे लोगों की परीक्षा लेता है। तू व्यक्ति के दिल और दिमाग को गहराई से देखता है। मैंने उन व्यक्तियों के विरुद्ध तूझे अनेकों तर्क दिये हैं। अत: मुझे यह देखना है कि तू उन्हें वह दण्ड देता है कि नहीं जिनके वे पात्र हैं। [13]यहोवा के लिये गाओ! यहोवा की स्तुति करो! यहोवा दीनों के जीवन की रक्षा करता है! वह उन्हें दुष्ट लोगों की शक्ति से बचाता है!

यिर्मयाह की छठी शिकायत

[14]उस दिन को धिक्कार है जिस दिन मेरा जन्म हुआ। उस दिन को बधाई न दो जिस दिन मैं माँ की कोख में आया। [15]उस व्यक्ति को अभिशाप दो जिसने मेरे पिता को यह सूचना दी कि मेरा जन्म हुआ है। उसने कहा था, "तुम्हारा लड़का हुआ है, वह एक लड़का है।" उसने मेरे पिता को बहुत प्रसन्न किया था जब उसने उनसे यह कहा था। [16]उस व्यक्ति को वैसा ही होने दो जैसे वे नगर जिन्हें यहोवा ने नष्ट किया। यहोवा ने उन नगरों पर कुछ भी दया नहीं की। उस व्यक्ति को सवेरे युद्ध का उदघोष सुनने दो, और दोपहर को युद्ध की चीख सुनने दो। [17] तूने मुझे माँ के पेट में ही, क्यों न मार डाला? तब मेरी माँ की कोख कब्र बन जाती, और मैं कभी जन्म नहीं ले सका होता। [18]मुझे माँ के पेट से बाहर क्यों आना पड़ा? जो कुछ मैंने पाया है वह परेशानी और दु:ख है और मेरे जीवन का अन्त लज्जाजनक होगा।

राजा सिदकिय्याह के निवेदन को परमेश्वर अस्वीकार करता है

21 यह यहोवा का वह सन्देश है जो यिर्मयाह को मिला। यह सन्देश तब आया जब यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने पशहूर नामक एक व्यक्ति तथा सपन्याह नामक एक याजक को यिर्मयाह के पास भेजा। पशहूर मल्किय्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था। सपन्याह मासेयाह नामक व्यक्ति का पुत्र था। पशहूर और सपन्याह यिर्मयाह के लिये एक सन्देश लेकर आए। [2]पशहूर और सपन्याह ने यिर्मयाह से कहा, "यहोवा से हम लोगों के लिए प्रार्थना करो। यहोवा से पूछो कि क्या होगा? हम जानना चाहते हैं क्योंकि बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर हम लोगों पर आक्रमण कर रहा है। सम्भव है यहोवा हम लोगों के लिए वैसे ही महान कार्य करे जैसा उसने बीते समय में किया। सम्भव है कि यहोवा नबूकदनेस्सर को आक्रमण करने से रोक दे या उसे चले जाने दे।"

[3]तब यिर्मयाह ने पशहूर और सपन्याह को उत्तर दिया। उसने कहा, "राजा सिदकिय्याह से कहो, [4]इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जो कहता है, यह वह है: 'तुम्हारे हाथों में युद्ध के अस्त्र शस्त्र हैं। तुम उन अस्त्र शस्त्रों का उपयोग अपनी सुरक्षा के लिए बाबुल के राजा और कसदियों के विरुद्ध कर रहे हो। किन्तु मैं उन अस्त्रों को व्यर्थ कर दूँगा।

"'बाबुल की सेना नगर के चारों ओर दीवार के बाहर है। वह सेना नगर के चारों ओर है। शीघ्र ही मैं उस सेना को यरूशलेम में ले आऊँगा। [5]मैं स्वयं यहूदा तुम लोगों के विरुद्ध लड़ूँगा। मैं अपने शक्तिशाली हाथों से तुम्हारे विरुद्ध लड़ूँगा। मैं तुम पर बहुत अधिक क्रोधित हूँ, अत: मैं अपनी शक्तिशाली भुजाओं से तुम्हारे विरुद्ध लड़ूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध घोर युद्ध करुँगा और दिखाऊँगा कि मैं कितना क्रोधित हूँ। [6]मैं यरूशलेम में रहने वाले लोगो को मार डालूँगा। मैं लोगों और जानवरों को मार डालूँगा। वे उस भयंकर बीमारी से मरेंगे जो पूरे नगर में फैल जाएगी। [7]जब यह हो जायेगा तब उसके बाद,'" यह सन्देश यहोवा का है। "'मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह को बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को दूँगा। मैं सिदकिय्याह के अधिकारियों को भी नबूकदनेस्सर को दूँगा। यरूशलेम के कुछ लोग भयंकर बीमारी से नहीं मरेंगे। कुछ लोग तलवार के घाट नहीं उतारे जाएँगे। उनमें से कुछ भूखों नहीं मरेंगे किन्तु मैं उन लोगों को नबूकदनेस्सर को दूँगा। मैं यहूदा के शत्रु को विजयी बनाऊँगा। नबूकदनेस्सर की सेना यहूदा के लोगों को मार डालना चाहती है। इसलिये यहूदा और यरूशलेम के लोग तलवार के घाट उतार दिए जाएंगे। नबूकदनेस्सर कोई दया नहीं दिखायेगा। वह उन लोगों के लिए अफसोस नहीं करेगा।'

[8]"यरूशेलम के लोगों से ये बातें भी कहो। यहोवा ये बातें कहता है, 'समझ लो कि मैं तुम्हें जीने और मरने में से एक को चुनने दूँगा। [9]कोई भी व्यक्ति जो यरूशलेम में ठहरेगा, मरेगा। वह व्यक्ति तलवार, भूख या भयंकर बीमारी से मरेगा किन्तु जो व्यक्ति यरूशलेम के बाहर जायेगा और बाबुल की सेना को आत्म समर्पण करेगा, जीवित रहेगा। उस सेना ने नगर को घेर लिया है। अत: कोई व्यक्ति नगर में भोजन नहीं ला सकता। किन्तु जो कोई नगर को छोड़ देगा, वह अपने जीवन को बचा लेगा। [10]मैंने यरूशलेम नगर पर विपत्ति ढाने का निश्चय कर लिया है। मैं नगर की सहायता नहीं करूँगा।'" यह सन्देश यहोवा का है। "'मैं यरूशलेम के नगर को बाबुल के राजा को दूँगा। वह इसे आग से जलायेगा।'

11 "यहूदा के राज परिवार से यह कहो,
यहोवा के सन्देश को सुनो।
12 दाऊद के परिवार यहोवा यह कहता है,
'तुम्हें प्रतिदिन लोगों का निष्पक्ष
न्याय करना चाहिए।
अपराधियों से उनके शिकारों की रक्षा करो।
यदि तुम ऐसा नहीं करते तो
मैं बहुत क्रोधित होऊँगा।
मेरा क्रोध ऐसे आग की तरह होगा
जिसे कोई व्यक्ति बुझा नहीं सकता।
यह घटित होगा क्योंकि तुमने बुरे काम कियेहैं।'
13 यरूशलेम, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ।
तुम पर्वत की चोटी पर बैठी हो।
तुम इस घाटी के ऊपर एक रानी की
तरह बैठी हो।
यरूशलेम के लोगों, तुम कहते हो,
'कोई भी हम पर आक्रमण नहीं कर सकता।
कोई भी हमारे दृढ़ नगर में घुस नहीं सकता।'
किन्तु यहोवा के यहाँ से उस सन्देश को सुनो:
14 'तुम वह दण्ड पाओगे जिसके पात्र तुम हो।
मैं तुम्हारे वनों में आग लगाऊँगा।

वह आग तुम्हारे चारों ओर की हर एक
चीज जला देगी।'"

बुरे राजाओं के विरुद्ध न्याय

22 यहोवा ने कहा, "यिर्मयाह राजा के महल को जाओ। यहूदा के राजा के पास जाओ और वहाँ उसे इस सन्देश का उपदेश दो। [2]'यहूदा के राजा, यहोवा के यहाँ से सन्देश सुनो। तुम दाऊद के सिंहासन से शासन करते हो, अत: सुनो। राजा, तुम्हें और तुम्हारे अधिकारियों को यह अच्छी तरह सुनना चाहिये। यरूशलेम के द्वारों से आने वाले सभी लोगों को यहोवा का सन्देश को सुनना चाहिये। [3]यहोवा कहता है: वे काम करो जो अच्छे और न्यायपूर्ण हों। उस व्यक्ति की रक्षा जिसकी चोरी की गई हो उस व्यक्ति से करो जिसने चोरी की है। विदेशी अनाथ बच्चों और विधवाओं को मत मारो। [4]"यदि तुम इन आदेशों का पालन करते हो तो जो घटित होगा वह यह है: जो राजा दाऊद के सिंहासन पर बैठेंगे, वे यरूशलेम नगर में नगर द्वारों से आते रहेंगे। वे राजा नगर द्वारों से अपने अधिकारियों सहित आएंगे। वे राजा, उनके उत्तराधिकारी और उनके लोग रथों और घोड़ों पर चढ़कर आएंगे। [5]किन्तु यदि तुम इन आदेशों का पालन नहीं करोगे तो यहोवा यह कहता है: मैं अर्थात यहोवा प्रतिज्ञा करता हूँ कि राजा का महल ध्वस्त कर दिया जायेगा यह चट्टानों का एक ढेर रह जायेगा।'"

[6]यहोवा उन महलों के बारे में यह कहता है जिनमें यहूदा के राजा रहते हैं:

"गिलाद वन की तरह यह महल ऊँचा है। यह लबानोन पर्वत के समान ऊँचा है। किन्तु मैं इसे सचमुच मरुभूमि सा बनाऊँगा। यह महल उस नगर की तरह सूना होगा जिसमें कोई व्यक्ति न रहता हो। [7] मैं लोगों को महल को नष्ट करने भेजूँगा। हर एक व्यक्ति के पास वे औजार होंगे जिनसे वह इस महल को नष्ट करेगा। वे लोग तुम्हारी देवदार की मजबूत और सुन्दर कड़ियों को काट डालेंगे। वे लोग उन कड़ियों को आग में फेंक देंगे।"

[8]"अनेक राष्ट्रों से लोग इस नगर से गुजरेंगे। वे एक दूसरे से पूछेंगे, 'यहोवा ने यरूशलेम के साथ ऐसा भयंकर काम क्यों किया? यरूशलेम कितना महान नगर था।' [9]उस प्रश्न का उत्तर यह होगा, 'परमेश्वर ने यरूशलेम को नष्ट किया, क्योंकि यहूदा के लोगों ने यहोवा अपने परमेश्वर के साथ की गई वाचा को मानना छोड़ दिया। उन लोगों ने अन्य देवताओं की पूजा और सेवाए की।'"

राजा यहोशाहाज (शल्लूम) के विरुद्ध न्याय

[10]उस राजा के लिये मत रोओ जो मर गया। उसके लिये मत रोओ। किन्तु उस राजा के लिये फूट–फूट कर रोओ जो यहाँ से जा रहा है। उसके लिये रोओ, क्योंकि वह फिर कभी वापस नहीं आएगा। शल्लूम (यहोशाहाज) अपनी जन्मभूमि को फिर कभी नहीं देखेगा।

[11]यहोवा योशिय्याह के पुत्र शल्लूम (यहोशाहाज) के बारे में जो कहता है, वह यह है (शल्लूम अपने पिता योशिय्याह की मृत्यु के बाद यहूदा का राजा हुआ।) "शल्लूम (यहोशाहाज) यरूशलेम से दूर चला गया। वह फिर यरूशलेम को वापस नहीं लौटेगा। [12]शल्लूम (यहोशाहाज) वहीं मरेगा जहाँ उसे मिस्री ले जाएँगे। वह इस भूमि को फिर नहीं देखेगा।"

राजा यहोयाकीम के विरुद्ध न्याय

[13]राजा यहोयाकीम के लिये यह बहुत बुरा होगा। वह बुरे कर्म कर रहा है अत: वह अपना महल बना लेगा। वह लोगों को ठग रहा है, अत: वह ऊपर कमरे बना सकता है। वह अपने लोगों से बेगार ले रहा है। वह उनके काम की मजदूरी नहीं दे रहा है। [14]यहोयाकीम कहता है, 'मैं अपने लिये एक विशाल महल बनाऊँगा। मैं दूसरी मंजिल पर विशाल कमरे बनाऊँगा।' अत: वह विशाल खिड़कियों वाला महल बना रहा है। वह देवदार के फलकों को दीवारों पर मढ़ रहा है और इन पर लाल रंग चढ़ा रहा है। [15]यहोयाकीम, अपने घर में देवदार की अधिक लकड़ी का उपयोग तुम्हें महान सम्राट नहीं बनाता। तुम्हारा पिता योशिय्याह भोजन पान पाकर ही सन्तुष्ट था। उसने वह किया जो ठीक और न्यायपूर्ण था। योशिय्याह ने वह किया, अत: उसके लिये सब कुछ अच्छा हुआ। [16]योशिय्याह ने दीन–हीन लोगों को सहायता दी। योशिय्याह ने वह किया, अत: उसके लिये सब कुछ अच्छा हुआ। यहोयाकीम "परमेश्वर को जानने" का अर्थ क्या होता है? मुझको जानने का अर्थ, ठीक रहना और न्यायपूर्ण होना है।" यह सन्देश यहोवा का है। [17]"यहोयाकीम, तुम्हारी आँखें केवल तुम्हारे अपने लाभ को देखती हैं, तुम सदैव अपने लिये अधिक से अधिक पाने की सोचते हो। तुम निरपराध

लोगों को मारने के लिये इच्छुक रहते हो। तुम अन्य लोगों की चीजों की चोरी करने के इच्छुक रहते हो।" [18]अत: योशिय्याह के पुत्र यहोयाकीम से यहोवा जो कहता है, वह यह है: "यहूदा के लोग यहोयाकीम के लिए रोएंगे नहीं। वे आपस में यह नहीं कहेंगे, 'हे मेरे भाई, मैं यहोयाकीम के बारे में इतना दु:खी हूँ। हे मेरी बहन, मैं यहोयाकीम के बारे में इतना दु:खी हूँ।' यहूदा के लोग यहोयाकीम के लिए रोएंगे नहीं। वे उसके बारे में नहीं कहेंगे, 'हे स्वामी, हम इतने दु:खी है। हे राजा, हम इतने दु:खी हैं।' [19]यरूशलेम के लोग यहोयाकीम को एक मरे गधे की तरह दफनायेंगे। वे उसके शव को केवल दूर घसीट ले जाएंगे और वे उसके शव को यरूशलेम के द्वार के बाहर फेंक देंगे।

[20]"यहूदा, लबानोन के पर्वतों पर जाओ और चिल्लाओ। बाशान के पर्वतों में अपना रोना सुनाई पड़ने दो। अबारीम के पर्वतों में जाकर चिल्लाओ। क्यों? क्योंकि तुम्हारे सभी 'प्रेमी' नष्ट कर दिये जायेंगे।

[21]"हे यहूदा, तुमने अपने को सुरक्षित समझा, किन्तु मैंने तुम्हें चेतावनी दी मैंने तुम्हें चेतावनी दी, परन्तु तुमने सुनने से इन्कार किया तुमने यह तब से किया जब तुम युवती थी और यहूदा जब से तुम युवती थी, तुमने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया। [22]हे यहूदा, मेरा दण्ड आँधी की तरह आएगा और यह तुम्हारे सभी गड़ेरियों (प्रमुखों) को उड़ा ले जाएगा। तुमने सोचा था कि अन्य कुछ राष्ट्र तुम्हारी सहायता करेंगे। किन्तु वे राष्ट्र भी पराजित होंगे। तब तुम सचमुच निराश होओगी। तुमने जो सब बुरे काम किये, उनके लिये लज्जित होओगी।

[23]"हे राजा, तुम देवदार से बने अपने महल में ऊँचे पर्वत पर रहते हो। तुम उसी तरह रह रहे हो, जैसा कि पहले लबानोन में रहे हो, जहाँ से यह लकड़ी लाई गई हैं। तुम समझते हो कि ऊँचे पर्वत पर अपने विशाल महल में तुम सुरक्षित हो। किन्तु तुम सचमुच तब कराह उठोगे जब तुम्हें तुम्हारा दण्ड मिलेगा। तुम प्रसव करती स्त्री की तरह पीड़ित होगे।"

राजा कोन्याह के विरुद्ध न्याय

[24]यह सन्देश यहोवा का है, "मैं निश्चय ही शाश्वत हूँ अत: यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा कोन्याह मैं तुम्हारे साथ ऐसा करूँगा। चाहे तुम मेरे दायें हाथ की राजमुद्रा ही क्यों न हो, मैं तुम्हें तब भी बाहर फेकूँगा। [25]कोन्याह मैं तुम्हें बाबुल और कसदियों के राजा नबूकदनेस्सर को दूँगा। वे ही लोग ऐसे हैं जिनसे तुम डरते हो। वे लोग तुम्हें मार डालना चाहते हैं। [26]मैं तुम्हें और तुम्हारी माँ को ऐसे देश में फेकूँगा कि जहाँ तुम दोनों में से कोई भी पैदा नहीं हुआ था। तुम और तुम्हारी माँ दोनों उसी देश में मरेंगें। [27]कोन्याह तुम अपने देश में लौटना चाहोगे, किन्तु तुम्हें कभी भी लौटने नहीं दिया जाएगा।"

[28]कोन्याह उस टूटे बर्तन की तरह है जिसे किसी ने फेंक दिया हो। वह ऐसे बर्तन की तरह है जिसे कोई व्यक्ति नहीं चाहता। कोन्याह और उसकी सन्तानें क्यों बाहर फेंक दी जायेगी?वे किसी विदेश में क्यों फेकें जाएंगे? [29]भूमि, भूमि, यहूदा की भूमि! यहोवा का सन्देश सुनो! [30]यहोवा कहता है, "कोन्याह के बारे में यह लिख लो: 'वह ऐसा व्यक्ति है जिसके भविष्य में अब बच्चे नहीं होंगे। कोन्याह अपने जीवन में सफल नहीं होगा।उसकी सन्तान में से कोई भी यहूदा पर शासन नहीं करेगा।'"

23

"यहूदा के गड़रियों (प्रमुखों) के लिये यह बहुत बुरा होगा। वे गड़ेरिये भेड़ों को नष्ट कर रहें हैं। वे भेड़ों को मेरी चरागाह से चारों ओर भगा रहे हैं।" यह सन्देश यहोवा का है।

[2]वे गड़ेरिये (प्रमुख) मेरे लोगों के लिये उत्तरदायी हैं और इस्राएल का परमेश्वर यहोवा उन गड़ेरियों से यह कहता हैं, "गड़ेरियों (प्रमुखों), तुमने मेरी भेड़ों को चारों ओर भगाया है। तुमने उन्हें चले जाने को विवश किया है। तुमने उनकी देख भाल नहीं रखी है। किन्तु मैं तुम लोगो को देखूँगा, मैं तुम्हें उन बुरे कामों के लिये दण्ड दूँगा जो तुमने किये हैं।" यह सन्देश यहोवा के यहाँ से है। [3]"मैंने अपनी भेड़ों (लोगों) को विभिन्न देशों में भेजा। किन्तु मैं अपनी उन भेड़ों (लोगों) को एक साथ इकट्ठी करुँगा जो बची रह गई हैं और मैं उन्हें उनकी चरागाह (देश) में लाऊँगा। जब मेरी भेड़ें (लोग) अपनी चरागाह (देश) में वापस आएंगी तो उनके बहुत बच्चे होंगे और उनकी संख्या बढ़ जाएगी। [4]मैं अपनी भेड़ों के लिये नये गड़ेरिये (प्रमुख) रखूँगा वे गड़ेरिये (प्रमुख) मेरी भेड़ों (लोगों) की देखभाल करेंगे और मेरी भेड़ें (लोग) भयभीत या डरेंगी नहीं। मेरी भेड़ों (लोगों) में से कोई खोएगी नहीं।" यह सन्देश यहोवा का है।

सच्चा "अंकुर"

[5] यह सन्देश यहोवा का है:
"समय आ रहा है जब मैं दाऊद के कुल में
एक सच्चा 'अंकुर' उगाऊँगा।
वह ऐसा राजा होगा जो बुद्धिमत्ता से शासन
करेगा और वह वही करेगा
जो देश में उचित और न्यायपूर्ण होगा।
[6] उस सच्चे 'अंकुर' के समय में यहूदा के लोग
सुरक्षित रहेंगे और इस्राएल सुरक्षित रहेगा।
उसका नाम यह होगा यहोवा
हमारी सच्चाई हैं।"

[7]यह सन्देश यहोवा का है, "अत: समय आ रहा है जब लोग भविष्य में यहोवा के नाम पर पुरानी प्रतिज्ञा फिर नहीं करेंगे। पुरानी प्रतिज्ञा यह है: 'यहोवा जीवित है, यहोवा ही वह है जो इस्राएल के लोगों को मिस्र देश से बाहर लाया था।' [8]किन्तु अब लोग कुछ नया कहेंगे, 'यहोवा जीवित है, यहोवा ही वह है जो इस्राएल के लोगों को उत्तर के देश से बाहर लाया। वह उन्हें उन सभी देशों से बाहर लाया जिनमें उसने उन्हें भेजा था।' तब इस्राएल के लोग अपने देश में रहेंगे।"

झूठे नबियों के विरुद्ध न्याय

[9]नबियों के लिये सन्देश है:

"मैं बहुत दु:खी हूँ, मेरा हृदय विदीर्ण हो गया है। मेरी सारी हड्डियाँ काँप रही हैं। मैं (यिर्मयाह) मतवाले के समान हूँ। क्यों? यहोवा और उसके पवित्र सन्देश के कारण। [10]यहूदा देश ऐसे लोगों से भरा है जो व्यभिचार का पाप करते हैं। वे अनेक प्रकार से अभक्त हैं। यहोवा ने भूमि को अभिशाप दिया और वह बहुत सूख गई। पौधे चरगाहों में सूख रहे हैं और मर रहे हैं। खेत मरुभूमि से हो गए हैं। नबी पापी हैं, वे नबी अपने प्रभाव और अपनी शक्ति का उपयोग गलत ढंग से करते हैं। [11]नबी और याजक तक भी पापी हैं। मैंने उन्हें अपने मन्दिर में पाप करते देखा है।" यह सन्देश यहोवा का है। [12]"अत: मैं उन्हें अपना सन्देश देना बन्द करूँगा। यह ऐसा होगा मानों वे अन्धकार में चलने को विवश किये गए हों। यह ऐसा होगा मानों नबियों और याजकों के लिये फिसलन वाली सड़क हो। उस अंधेरी जगह में वे नबी और याजक गिरेंगे। मैं उन पर आपत्तियाँ ढाऊँगा। उस समय मैं उन नबियों और याजकों को दण्ड दूँगा। यह सन्देश यहोवा का है। [13]मैंने शोमरोन के नबियों को कुछ बुरा करते देखा। मैंने उन नबियों को झूठे बाल देवता के नाम भविष्यवाणी करते देखा। उन नबियों ने इस्राएल के लोगों को यहोवा से दूर भटकाया। [14]मैंने यहूदा के नबियों को यरूशलेम में बहुत भयानक कर्म करते देखा। इन नबियों ने व्यभिचार करने का पाप किया। उन्होंने झूठी शिक्षाओं पर विश्वास किया, और उन झूठे उपदेशों को स्वीकार किया। उन्होंने दुष्ट लोगों को पाप करते रहने के लिये उत्साहित किया। अत: लोगों ने पाप करना नहीं छोड़ा। वे सभी लोग सदोम नगर की तरह हैं। यरूशलेम के लोग मेरे लिये अमोरा नगर के समान हैं। [15]अत: सर्वशक्तिमान यहोवा नबियों के बारे में ये बातें कहता है, "मैं उन नबियों को दण्ड दूँगा। वह दण्ड विषैला भोजन पानी खाने पीने जैसा होगा। नबियों ने आध्यात्मिक बीमारी उत्पन्न की और वह बीमारी पूरे देश में फैल गई। अत: मैं उन नबियों को दण्ड दूँगा। वह बीमारी यरूशलेम में नबियों से आई।"

[16]सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है: "वे नबी तुमसे जो कहें उसकी अनसुनी करो। वे तुम्हें मूर्ख बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे नबी अर्न्तदर्शन करने की बात करते हैं। किन्तु वे अपना अर्न्तदर्शन मुझसे नहीं पाते। उनका अर्न्तदर्शन उनके मन की उपज है। [17]कुछ लोग यहोवा के सच्चे सन्देश से घृणा करते हैं। अत: वे नबी उन लोगों से भिन्न भिन्न कहते हैं। वे कहते हैं, 'तुम शान्ति से रहोगे।' कुछ लोग बहुत हठी हैं। वे वही करते हैं जो वे करना चाहते हैं। अत: वे नबी कहते हैं, 'तुम्हारा कुछ भी बुरा नहीं होगा।' [18]किन्तु इन नबियों में से कोई भी स्वर्गीय परिषद में सम्मिलित नहीं हुआ है। उनमें से किसी ने भी यहोवा के सन्देश को न देखा है न ही सुना है। उनमें से किसी ने भी यहोवा के सन्देश पर गम्भीरता से ध्यान नहीं दिया है। [19]अब यहोवा के यहाँ से दण्ड आँधी की तरह आएगा। यहोवा का क्रोध बवंडर की तरह होगा। यह उन दुष्ट लोगों के सिरों को कुचलता हुआ आएगा। [20]यहोवा का क्रोध तब तक नहीं रूकेगा जब तक वे जो करना चाहते हैं, पूरा न कर लें। जब वह दिन चला जाएगा तब तुम इसे ठीक ठीक समझोगे। [21]मैंने उन नबियों को नहीं भेजा। किन्तु वे अपने सन्देश देने दौड़ पड़े। मैंने उनसे बातें नहीं कीं। किन्तु उन्होंने मेरे नाम के उपदेश दिये। [22]यदि वे मेरी स्वर्गीय परिषद में सम्मिलित हुए होते तो उन्होंने

यहूदा के लोगों को मेरा सन्देश दिया होता। उन्होंने लोगों को बुरे कर्म करने से रोक दिया होता। उन्होंने लोगों को पाप कर्म करने से रोक दिया होता।"

[23]यह सन्देश यहोवा का है। "मैं परमेश्वर हूँ, यहाँ वहाँ और सर्वत्र। मैं बहुत दूर नहीं हूँ। [24]कोई व्यक्ति किसी छिपने के स्थान में अपने को मुझसे छिपाने का प्रयत्न कर सकता है। किन्तु उसे देख लेना मेरे लिये सरल है। क्यों? क्योकि मैं स्वर्ग और धरती दोनों पर सर्वत्र हूँ!" यहोवा ने ये बातें कहीं।

[25]"ऐसे नबी हैं जो मेरे नाम पर झूठा उपदेश देते हैं। वे कहते हैं, 'मैंने एक स्वप्न देखा है! मैंने एक स्वप्न देखा है!' मैंने उन्हें वे बातें करते सुना है। [26]यह कब तक चलता रहेगा? वे नबी झूठ ही का चिन्तन करते हैं और तब वे उस झूठ का उपदेश लोगों को देते हैं। [27]ये नबी प्रयत्न करते हैं कि यहूदा के लोग मेरा नाम भूल जायँ। वे इस काम को, आपस में एक दूसरे से कल्पित स्वप्न कहकर कर रहे हैं। ये लोग मेरे लोगों से मेरा नाम वैसे ही भुलवा देने का प्रयत्न कर रहे हैं जैसे उनके पूर्वज मुझे भूल गए थे। उनके पूर्वज मुझे भूल गए और उन्होंने असत्य देवता बाल की पूजा की। [28]भूसा वह नहीं है जो गेहूँ है। ठीक उसी प्रकार उन नबियों के स्वप्न मेरे सन्देश नहीं हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने स्वप्नों को कहना चाहता है तो उसे कहने दो। किन्तु उस व्यक्ति को मेरे सन्देश को सच्चाई से कहने दो जो मेरे सन्देश को सुनता है। [29]मेरा सन्देश ज्वाला की तरह है। यह उस हथौड़े की तरह है जो चट्टान को चूर्ण करता है। यह सन्देश यहोवा का है।

[30]"इसलिए मैं झूठे नबियों के विरुद्ध हूँ। क्योंकि वे मेरे सन्देश को एक दूसरे से चुराने में लगे रहते हैं।" यह सन्देश यहोवा का है। [31]"वे अपनी बात कहते हैं और दिखावा यह करते हैं कि वह यहोवा का सन्देश है। [32]मैं उन झूठे नबियों के विरुद्ध हूँ जो झूठे स्वप्न का उपदेश देते हैं।" यह सन्देश यहोवा का है। "वे अपने झूठ और झूठे उपदेशों से मेरे लोगों को भटकाते हैं। मैंने उन नबियों को लोगों को उपदेश देने के लिये नहीं भेजा। मैंने उन्हें अपने लिये कुछ करने का आदेश कभी नहीं दिया। वे यहूदा के लोगों की सहायता बिल्कुल नहीं कर सकते।" यह सन्देश यहोवा का है।

यहोवा से दुःखपूर्ण सन्देश

[33]"यहूदा के लोग, नबी अथवा याजक तुमसे पूछ सकते हैं, 'यिर्मयाह, यहोवा की घोषणा क्या है?' तुम उन्हें उत्तर दोगे और कहोगे, 'तुम यहोवा के लिये दुर्वह भार हो और मैं यहोवा उस दुर्वह भार को नीचे पटक दूँगा।' यह सन्देश यहोवा का है।

[34]"कोई नबी या कोई याजक अथवा संभवत: लोगों में से कोई कह सकता है, 'यह यहोवा से घोषणा है।' उस व्यक्ति ने यह झूठ कहा, अत: मैं उस व्यक्ति और उसके पूरे परिवार को दण्ड दूँगा। [35]जो तुम आपस में एक दूसरे से कहोगे वह यह है: 'यहोवा ने क्या उत्तर दिया?' या 'यहोवा ने क्या कहा?' [36]किन्तु तुम पुन: इस भाव को कभी नहीं दुहराओगे। यहोवा की घोषणा (दुर्वह भार)। यह इसलिये कि यहोवा का सन्देश किसी के लिये दुर्वह भार नहीं होना चाहिये। किन्तु तुमने हमारे परमेश्वर के शब्द को बदल दिया। वह सजीव परमेश्वर है अर्थात सर्वशक्तिमान यहोवा।

[37]"यदि तुम परमेश्वर के सन्देश के बारे में जानना चाहते हो तब किसी नबी से पूछो, 'यहोवा ने तुम्हें क्या उत्तर दिया?' या 'यहोवा ने क्या कहा?' [38]किन्तु यह न कहो, 'यहोवा के यहाँ से घोषणा (दुर्वह भार) क्या हैं?' यदि तुम इन शब्दों का उपयोग करोगे तो यहोवा तुमसे यह सब कहेगा, 'तुम्हें मेरे सन्देश को यहोवा के यहाँ से घोषणा (दुर्वह भार) नहीं कहना चाहिये था।' मैंने तुमसे उन शब्दों का उपयोग न करने को कहा था। [39]किन्तु तुमने मेरे सन्देश को दुर्वह भार कहा, 'अत: मैं तुम्हें एक दुर्वह भार की तरह उठाऊँगा और अपने से दूर पटक दूँगा। मैंने तुम्हारे पूर्वजों को यरूशलेम नगर दिया था। किन्तु अब मैं तुम्हें और उस नगर को अपने से दूर फेंक दूँगा। [40]मैं सदैव के लिए तुम्हें कलंकित बना दूँगा। तुम कभी अपनी लज्जा को नहीं भूलोगे।'"

अच्छे अंजीर और बुरे अंजीर

24 यहोवा ने मुझे ये चीजें दिखाई: यहोवा के मन्दिर के सामने मैंने सजी दो अंजीर की टोकरियाँ देखीं। (मैंने इस अन्तर्दर्शन को बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर द्वारा यकोन्याह को बन्दी बना लिये जाने के बाद देखा। यकोन्याह राजा यहोयाकीम का पुत्र था। यकोन्याह और उसके बड़े अधिकारी यरूशलेम से दूर

पहुँचा दिये गए थे। वे बाबुल पहुँचाये गए थे। नबूकदनेस्सर यहूदा के सभी बढ़इयों और धातुकारों को ले गया था।) [2]एक टोकरी में बहुत अच्छे अंजीर थे। वे उन अंजीरों की तरह थे जो मौसम के आरम्भ में पकते हैं। किन्तु दूसरी टोकरी में सड़े गले अंजीर थे। वे इतने अधिक सड़े गले थे कि उन्हें खाया नहीं जा सकता था।

[3]यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, तुम क्या देखते हो?" मैंने उत्तर दिया, "मैं अंजीर देखता हूँ। अच्छे अंजीर बहुत अच्छे हैं। और सड़े गले अंजीर बहुत ही सड़े गले हैं। वे इतने सड़े गले हैं कि खाये नहीं जा सकते।"

[4]तब यहोवा का सन्देश मुझे मिला। [5]इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, ने कहा, "यहूदा के लोग अपने देश से ले जाए गए। उनका शत्रु उन्हें बाबुल ले गया। वे लोग इन अच्छे अंजीरों की तरह होंगे। मैं उन लोगों पर दया करुँगा। [6]मैं उनकी रक्षा करूँगा। मैं उन्हें यहूदा देश में वापस लाऊँगा। मैं उन्हें चीर कर फेंकूँगा नहीं, मैं फिर उनका निर्माण करुँगा। मैं उन्हें उखाड़ूँगा नहीं अपितु रोपूँगा जिससे वे बढ़े। [7]मैं उन्हें अपने को समझने की इच्छा रखने वाला बनाऊँगा। वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ। वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर। मैं यह करूँगा क्योंकि वे बाबुल के बन्दी पूरे हृदय से मेरी शरण में आएंगे।

[8]"किन्तु यहूदा का राजा सिदकिय्याह उन अंजीरों की तरह है जो इतने सड़े गले हैं कि खाये नहीं जा सकते। सिदकिय्याह उसके बड़े अधिकारी, वे सभी लोग जो यरूशलेम में बच गए हैं और यहूदा के वे लोग जो मिस्र में रह रहें हैं उन सड़े गले अंजीरों की तरह होंगे।

[9]"मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा। वह दण्ड पृथ्वी के सभी लोगों का हृदय दहला देगा। लोग यहूदा के लोगों का मजाक उड़ायेंगे। लोग उनके विषय में हँसी उड़ाएंगे। लोग उन्हें उन सभी स्थानों पर अभिशाप देंगे जहाँ उन्हें मैं बिखेरुँगा। [10]मैं उनके विरूद्ध तलवारें, भूखमरी और बीमारियाँ भेजूँगा। मैं उन पर तब तक आक्रमण करूँगा जब तक कि वे सभी मर नहीं जाते। तब वे भविष्य में उस भूमि पर नहीं रहेंगे जिसे मैंने इनको तथा इनके पूर्वजों को दिया था।"

यिर्मयाह के उपदेश का सार

25 यह वह सन्देश है, जो यहूदा के सभी लोगों से सम्बन्धित, यिर्मयाह को मिला। यह सन्देश यहोयाकीम के यहूदा में राज्यकाल के चौथे वर्ष में आया। यहोयाकीम योशिय्याह का पुत्र था। राजा के रूप में उसके राज्यकाल का चौथा वर्ष वही था जो बाबुल में नबूकदनेस्सर का पहला वर्ष था। [2]यह वही सन्देश है जिसे यिर्मयाह नबी ने यहूदा के लोगों और यरूशलेम के लोगों को दिया।

[3]मैंने इन गत तेईस वर्षों में यहोवा के सन्देशों को तुम्हें बार–बार दिया है। मैं यहूदा के राजा आमोन के पुत्र योशिय्याह के राज्यकाल के तेरहवें वर्ष से नबी हूँ। मैंने उस समय से आज तक यहोवा के यहाँ से सन्देशों को तुम्हें दिया है। किन्तु तुमने उसे अनसुना किया है। [4]यहोवा ने अपने सेवक नबियों को तुम्हारे पास बार–बार भेजा है। किन्तु तुमने उन्हें अनसुना किया है। तुमने उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया है।

[5]उन नबियों ने कहा, "अपने जीवन को बदलो। उन बुरे कामों को करना छोड़ो। यदि तुम बदल जाओगे, तो तुम उस भूमि पर वापस लौट और रह सकोगे जिसे यहोवा ने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को बहुत पहले दी थी। उसने यह भूमि तुम्हें सदैव रहने को दी। [6]अन्य देवताओं का अनुसरण न करो। उनकी सेवा या उनकी पूजा न करो। उन मूर्तियों की पूजा न करो जिन्हें कुछ लोगों ने बनाया है। वह मुझे तुम पर केवल क्रोधित करता है। यह करना तुम्हें केवल चोट पहुँचाता है।"

[7]"किन्तु तुमने मेरी अनसुनी की।" यह सन्देश यहोवा का है। "तुमने उन मूर्तियों की पूजा की जिन्हें कुछ लोगों ने बनाया और उसने मुझे क्रोधित किया और उसने तुम्हें केवल चोट पहुँचाई।"

[8]अत: सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, "तुमने मेरे सन्देश को अनसुना किया है। [9]अत: मैं उत्तर के सभी परिवार समूहों को शीघ्र बुलाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं शीघ्र ही बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को भेजूँगा। वह मेरा सेवक है। मैं उन लोगों को यहूदा देश और यहूदा के लोगों के विरुद्ध बुलाऊँगा। मैं उन्हें तुम्हारे चारों ओर के पड़ोसी राष्ट्रों के विरुद्ध भी लाऊँगा। मैं उन सभी देशों को नष्ट करुँगा। मैं उन देशों को सदैव के लिये सूनी मरुभूमि बना दूँगा। लोग उन देशों को देखेंगे और जिस बुरी तरह से वे नष्ट हुए हैं उस पर सीटी बजाएंगे। [10]मैं उन स्थानों पर सुख और आनन्द की किलोलों को बन्द कर दूँगा। वहाँ भविष्य में दुल्हा–दुल्हनों की उमंग

भरी हँसी ठिठोली न होगी। मैं चक्की चलाने लोगों के गीतों को दूर कर दूँगा। मैं दीपकों का उजाला खत्म करूँगा। [11]वह सारा क्षेत्र ही सूनी मरुभूमि होगा। वे सारे लोग बाबुल के राजा के सत्तर वर्ष तक दास होंगे।

[12]"किन्तु जब सत्तर वर्ष बीत जाएंगे तो मैं बाबुल के राजा को दण्ड दूँगा। मैं बाबुल राष्ट्र को दण्ड दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं कसदियों के देश को उनके पाप के लिए दण्ड दूँगा। मैं उस देश को सदैव के लिये मरुभूमि बनाऊँगा। [13]मैंने कहा है कि बाबुल पर अनेक विपत्तियाँ आएंगी। वे सभी चीजे घटित होंगी। यिर्मयाह ने उन विदेशी राज्यों के बारे में उपदेश दिया और वे सभी चेतावनियाँ इस पुस्तक में लिखी हैं। [14]हाँ बाबुल के लोगों को कई राष्ट्रों और कई बड़े राजाओं की सेवा करनी पड़ेगी। मैं उन्हें उसके लिए उनको उचित दण्ड दूँगा जो सब वे करेंगे।"

विश्व के राष्ट्रों के साथ न्याय

[15]इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह सब मुझसे कहा, "यिर्मयाह, यह दाखमधु का प्याला मेरे हाथों से लो। यह मेरे क्रोध का दाखमधु है। मैं तुम्हें विभिन्न राष्ट्रों में भेज रहा हूँ। उन सभी राष्ट्रों को इस प्याले से पिलाओ। [16]वे इस दाखमधु को पीएंगे। तब वे उलटी करेंगे और पागलों सा व्यवहार करेंगे। वे यह उन तलवारों के कारण ऐसा करेंगे जिन्हें मैं उनके विरूद्ध शीघ्र भेजूँगा।"

[17]अत: मैंने यहोवा के हाथ से प्याला लिया। मैं उन राष्ट्रों में गया और उन लोगों को उस प्याले से पिलाया। [18]मैंने इस दाखमधु को यरूशलेम और यहूदा के लोगों के लिये ढाला। मैंने यहूदा के राजाओं और प्रमुखों को इस प्याले से पिलाया। मैंने यह इसलिये किया कि वे सूनी मरूभूमि बन जायँ। मैंने यह इसलिये किया कि यह स्थान इतनी बुरी तरह से नष्ट हो जाय कि लोग इसके बारे में सीटी बजाएं और इस स्थान को अभिशाप दें और यह हुआ, यहूदा अब उसी तरह का है।

[19]मैंने मिस्र के राजा फ़िरौन को भी प्याले से पिलाया। मैंने उसके अधिकारियों, उसके बड़े प्रमुखों और उसके सभी लोगों को यहोवा के क्रोध के प्याले से पिलाया।

[20]मैंने सभी अरबों और उस देश के सभी राजाओं को उस प्याले से पिलाया।

मैंने पलिश्ती देश के सभी राजाओं को उस प्याले से पिलाया। ये अश्कलोन, अज्जा, एक्रोन नगरों और अशदोद नगर के बचे भाग के राजा थे।

[21]तब मैंने एदोम, मोआब और अम्मोन के लोगों को उस प्याले से पिलाया।

[22]मैंने सोर और सीदोन के राजाओं को उस प्याले से पिलाया।

मैंने बहुत दूर के देशों के राजाओं को भी उस प्याले से पिलाया। [23]मैंने ददान, तेमा और बूज के लोगों को उस प्याले से पिलाया। मैंने उन सबको उस प्याले से पिलाया जो अपने गाल के बालों को काटते हैं। [24]मैंने अरब के सभी राजाओं को उस प्याले से पिलाया। ये राजा मरुभूमि में रहते हैं। [25]मैंने जिम्री, एलाम और मादै के सभी राजाओं को उस प्याले से पिलाया। [26]मैंने उत्तर के सभी समीप और दूर के राजाओं को उस प्याले से पिलाया। मैने एक के बाद दूसरे को पिलाया। मैने पृथ्वी पर के सभी राज्यों को यहोवा के क्रोध के उस प्याले से पिलाया। किन्तु बाबुल का राजा इन सभी अन्य राष्ट्रों के बाद इस प्याले से पीएगा।

[27]"यिर्मयाह, उन राष्ट्रों से कहो कि इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'मेरे क्रोध के इस प्याले को पीओ। उसे पीकर मत्त हो जाओ और उलटियाँ करो। गिर पड़ो और उठो नहीं, क्योंकि तुम्हें मार डालने के लिये मैं तलवार भेज रहा हूँ।'

[28]"वे लोग तुम्हारे हाथ से प्याला लेने से इन्कार करेंगे। वे इसे पीने से इन्कार करेंगे। किन्तु तुम उनसे यह कहोगे, "सर्वशक्तिमान यहोवा यह बातें बताता है: 'तुम निश्चय ही इस प्याले से पियोगे। [29]मैं अपने नाम पर पुकारे जाने वाले यरूशलेम नगर पर पहले ही बुरी विपत्तियाँ ढाने जा रहा हूँ। सम्भव है कि तुम लोग सोचो कि तुम्हें दण्ड नहीं मिलेगा। किन्तु तुम गलत सोच रहे हो। तुम्हें दण्ड मिलेगा। मैं पृथ्वी के सभी लोगों पर आक्रमण करने के लिए तलवार मंगाने जा रहा हूँ।'" यह सन्देश यहोवा का है।

[30] "यिर्मयाह, तुम उन्हें यह सन्देश दोगे:
'यहोवा ऊँचे और पवित्र मन्दिर से
गर्जना कर रहा है!
यहोवा अपनी चरागाह (लोग) के विरुद्ध
चिल्लाकर कह रहा है!
उसकी चिल्लाहट वैसी ही ऊँची है,

जैसे उन लोगों की,
जो अंगूरों को दाखमधु बनाने के लिये
पैरों से कुचलते हैं।

31 वह चिल्लाहट पृथ्वी के सभी
लोगों तक जाती है।
यह चिल्लाहट किस बात के लिये है?
यहोवा सभी राष्ट्रों के लोगों को दण्ड दे रहा है।
यहोवा ने अपने तर्कपूर्ण निर्णय
लोगों के विरुद्ध दिये।
उसने लोगों के साथ न्याय किया और वह बुरे
लोगों को तलवार के घाट उतार रहा है।'"
यह सन्देश यहोवा का है।

32 सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है:
"एक देश से दूसरे देश तक शीघ्र ही
बरबादी आएगी!
वह शक्तिशाली आँधी की तरह पृथ्वी के सभी
अति दूर के देशों में आएगी!"

33उन लोगों के शव देश के एक सिरे से दूसरे सिरे को पहुँचेंगे। कोई भी उन मरों के लिये नहीं रोएगा। कोई भी यहोवा द्वारा मारे गये उनके शवों को इकट्ठा नहीं करेगा और दफनायेगा नहीं। वे गोबर की तरह जमीन पर पड़े छोड़ दिये जाएंगे।

34 गड़रियों (प्रमुखों), तुम्हें भेड़ों (लोगों) को
राह दिखानी चाहिये।
बड़े प्रमुखों, तुम जोर से चिल्लाना आरम्भ करो।
भेड़ों (लोगों) के प्रमुखों, पीड़ा से
तड़पते हुए जमीन पर लेटो।
क्यों? क्योंकि अब तुम्हारे मृत्यु के घाट उतारे
जाने का समय आ गया है।
मैं तुम्हारी भेड़ें को बिखेरुँगा।
वे टूटे घड़े के ठीकरों की तरह चारों ओर बिखरेंगे।

35 गड़ेरियों (प्रमुखों) के छिपने के लिये
कोई स्थान नहीं होगा।
वे प्रमुख बचकर नहीं निकल पाएंगे।

36 मैं गड़ेरियों (प्रमुखों) का शोर मचाना सुन रहा हूँ।
मैं भेड़ों (लोगों) के प्रमुखों का रोना सुन रहा हूँ।
यहोवा उनकी चरागाह (देश) को
नष्ट कर रहा है।

37 वे शान्त चरागाहें सूनी मरूभूमि सी हैं।
यह हुआ, क्योंकि यहोवा बहुत क्रोधित है।

38 यहोवा अपनी माद छोड़ते हुए
सिंह की तरह खतरनाक है।
यहोवा क्रोधित है!
यहोवा का क्रोध उन लोगों को चोट पहुँचाएगा।
उनका देश सूनी मरुभूमि बन जाएगा।

मन्दिर पर यिर्मयाह की शिक्षा

26 यहोयाकीम के यहूदा में राज्य करने के प्रथम वर्ष यहोवा का यह सन्देश मिला। यहोयाकीम राजा योशिय्याह का पुत्र था। 2यहोवा ने कहा, "यिर्मयाह, यहोवा के मन्दिर के आँगन में खड़े होओ। यहूदा के उन सभी लोगों को यह सन्देश दो जो यहोवा के मन्दिर में पूजा करने आ रहे हैं। तुम उनसे वह सब कुछ कहो जो मैं तुमसे कहने को कह रहा हूँ। मेरे सन्देश के किसी भाग को मत छोड़ो। 3संभव है वे मेरे सन्देश को सुनें और उसके अनुसार चलें। संभव है वे ऐसी बुरी जिन्दगी बिताना छोड़ दें। यदि वे बदल जायँ तो मैं उनको दण्ड देने की योजना के विषय में, अपने निर्णय को बदल सकता हूँ। मैं उनको वह दण्ड देने की योजना बना रहा हूँ क्योंकि उन्होंने अनेक बुरे काम किये हैं। 4तुम उनसे कहोगे, 'यहोवा जो कहता है, वह यह है: मैंने अपने उपदेश तुम्हें दिये। तुम्हें मेरी आज्ञा का पालन करना चाहिये और मेरे उपदेशों पर चलना चाहिये। 5तुम्हें मेरे सेवकों की वे बातें सुननी चाहिये जो वे तुमसे कहें। (नबी मेरे सेवक हैं) मैंने नबियों को बार-बार तुम्हारे पास भेजा है किन्तु तुमने उनकी अनसुनी की है। 6यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते तो मैं अपने यरूशलेम के मन्दिर को शीलो के पवित्र तम्बू की तरह कर दूँगा। सारे विश्व के लोग अन्य नगरों के लिये विपत्ति माँगने के समय यरूशलेम के बारे में सोचेंगे।'"

7याजकों, नबियों और सभी लोगों ने यहोवा के मन्दिर में यिर्मयाह को यह सब कहते सुना। 8यिर्मयाह ने वह सब कुछ कहना पूरा किया जिसे यहोवा ने लोगों से कहने का आदेश दिया था। तब याजकों, नबियों और लोगों ने यिर्मयाह को पकड़ लिया। उन्होंने कहा, "ऐसी भयंकर बात करने के कारण तुम मरोगे। 9यहोवा के नाम पर ऐसी बातें करने का साहस तुम कैसे करते हो? तुम यह

कैसे कहने का साहस करते हो कि यह मन्दिर शीलो के मन्दिर की तरह नष्ट होगा? तुम यह कहने का साहस कैसे करते हो कि यरूशलेम बिना किसी निवासी के मरुभूमि बनेग!" सभी लोग यिर्मयाह के चारों ओर यहोवा के मन्दिर में इकट्ठे हो गए।

[10]इस प्रकार यहूदा के शासकों ने उन सारी घटनाओं को सुना जो घटित हो रही थीं। अत: वे राजा के महल से बाहर आए। वे यहोवा के मन्दिर को गए। वहाँ वे नये फाटक के प्रवेश के स्थान पर बैठ गए। नया फाटक वह फाटक है जहाँ से यहोवा के मन्दिर को जाते है। [11]तब याजकों और नबियों ने शासकों और सभी लोगों से बातें कीं। उन्होंने कहा, "यिर्मयाह मार डाला जाना चाहिये। इसने यरूशलेम के बारे में बुरा कहा है। तुमने उसे वे बातें कहते सुना।"

[12]तब यिर्मयाह ने यहूदा के सभी शासकों और अन्य सभी लोगों से बात की। उसने कहा, "यहोवा ने मुझे इस मन्दिर और इस नगर के बारे में बातें कहने के लिये भेजा। जो सब तुमने सुना है वह यहोवा के यहाँ से है। [13]तुम लोगों को अपना जीवन बदलना चाहिये! तुम्हें अच्छे काम करना आरम्भ करना चाहिये। तुम्हें अपने यहोवा परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिये। यदि तुम ऐसा करोगे तो यहोवा अपना इरादा बदल देगा। यहोवा वे बुरी विपत्तियाँ नहीं लायेगा, जिनके घटित होने के बारे में उसने कहा। [14]जहाँ तक मेरी बात है, मैं तुम्हारे वश में हूँ। मेरे साथ वह करो जिसे तुम अच्छा और ठीक समझते हो। [15]किन्तु यदि तुम मुझे मार डालोगे तो एक बात निश्चित समझो। तुम एक निरपराध व्यक्ति को मारने के अपराधी होगे। तुम इस नगर और इसमें जो भी रहते हैं उन्हें भी अपराधी बनाओगे। सच में, यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। जो सन्देश तुमने सुना है वह, सच में, यहोवा का है।"

[16]तब शासक और सभी लोग बोल पड़े। उन लोगों ने याजकों और नबियों से कहा, "यिर्मयाह, नहीं मारा जाना चाहिये। यिर्मयाह ने जो कुछ कहा है वह हमारे यहोवा परमेश्वर की ही वाणी है।"

[17]तब अग्रजों (प्रमुखों) में से कुछ खड़े हुए और उन्होंने सब लोगों से बातें कीं। [18]उन्होंने कहा, "मीकायाह नबी मोरसेती नगर का था। मीकायाह उन दिनों नबी था जिन दिनों हिजकिय्याह यहूदा का राजा था। मीकाय्याह ने यहूदा के सभी लोगों से यह कहा:

सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है:
"सिय्योन एक जुता हुआ खेत बनेगा।
यरूशलेम चट्टानों की ढेर होगा।
जिस पहाड़ी पर मन्दिर बना है
उस पर पेड़ उगेंगे।"

मीका 3:12

[19]"हिजकिय्याह यहूदा का राजा था और हिजकिय्याह ने मीकायाह को नहीं मारा। यहूदा के किसी व्यक्ति ने मीकायाह को नहीं मारा। तुम जानते हो हिजकिय्याह यहोवा का सम्मान करता था। वह यहोवा को प्रसन्न करना चाहता था। यहोवा कह चुका था कि वह यहूदा का बुरा करेगा। किन्तु हिजकिय्याह ने यहोवा से प्रार्थना की और यहोवा ने अपना इरादा बदल दिया। यहोवा ने वे बुरी विपत्तियाँ नहीं आने दीं। यदि हम लोग यिर्मयाह को चोट पहुँचायेंगे तो हम लोग अपने ऊपर अनेक विपत्तियाँ बुलाएंगे और वे विपत्तियाँ हम लोगों के अपने दोष के कारण होंगी।"

[20]अतीत काल में एक दूसरा व्यक्ति था जो यहोवा के सन्देश का उपदेश देता था। उसका नाम ऊरिय्याह था। वह शमाय्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था। ऊरिय्याह, किर्यत्यारीम नगर का था। ऊरिय्याह ने इस नगर और देश के विरुद्ध वही उपदेश दिया जो यिर्मयाह ने दिया है। [21]राजा यहोयाकीम उसके सेना–अधिकारी और यहूदा के प्रमुखों ने ऊरिय्याह का उपदेश सुना। वे क्रोधित हुए। राजा यहोयाकीम ऊरिय्याह को मार डालना चाहता था। किन्तु ऊरिय्याह को पता लगा कि यहोयाकीम उसे मार डालना चाहता है। ऊरिय्याह डर गया और वह मिस्र देश को भाग निकला। [22]किन्तु यहोयाकीम ने एलनातान नामक एक व्यक्ति तथा कुछ अन्य लोगों को मिस्र भेजा। एलनातान अकबोर नामक व्यक्ति का पुत्र था। [23]वे लोग ऊरिय्याह को मिस्र से वापस ले आये। तब वे लोग ऊरिय्याह को राजा यहोयाकीम के पास ले गए। यहोयाकीम ने ऊरिय्याह को तलवार के घाट उतार देने का आदेश दिया। ऊरिय्याह का शव उस कब्रिस्तान में फेंक दिया गया जहाँ गरीब लोग दफनाये जाते थे।

[24]शापान का पुत्र अहीकाम ने यिर्मयाह का समर्थन किया। अत: अहीकाम ने लोगों द्वारा मार डाले जाने से यिर्मयाह को बचा लिया।

यहोवा ने नबूकदनेस्सर को शासक बनाया है

27 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्यकाल के चौथे वर्ष यह आया। सिदकिय्याह राजा योशिय्याह का पुत्र था। 2यहोवा ने मुझसे जो कहा, वह यह है: "यिर्मयाह, छड़ और चमड़े की पट्टियों से जुवा बनाओ। उस जुवा को अपनी गर्दन के पीछे की ओर रखो। 3तब एदोम, मोआब, अम्मोन, सोर और सीदोन के राजाओं को सन्देश भेजो। ये सन्देश इन राजाओं के राजदूतों द्वारा भेजो जो यहूदा के राजा सिदकिय्याह से मिलने यरूशलेम आए हैं। 4उन राजदूतों से कहो कि वे सन्देश अपने स्वामियों को दें। उनसे यह कहो कि इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'अपने स्वामियों से कहो कि 5मैंने पृथ्वी और इस पर रहने वाले सभी लोगों को बनाया। मैंने पृथ्वी के सभी जानवरों को बनाया। मैंने यह अपनी बड़ी शक्ति और शक्तिशाली भुजा से किया। मैं यह पृथ्वी किसी को भी जिसे चाहूँ दे सकता हूँ। 6इस समय मैंने बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को तुम्हारे देश दे दिये है। वह मेरा सेवक है। मैं जंगली जानवरों को भी उसका आज्ञाकारी बनाऊँगा। 7सभी राष्ट्र नबूकदनेस्सर उसके पुत्र और उसके पौत्र की सेवा करेंगे। तब बाबुल की पराजय का समय आएगा। कई राष्ट्र और बड़े सम्राट बाबुल को अपना सेवक बनाएंगे।

8"'किन्तु इस समय कुछ राष्ट्र या राज्य बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर की सेवा करने से इन्कार कर सकते हैं। वे उसके जुवे को अपनी गर्दन पर रखने से इन्कार कर सकते हैं। यदि ऐसा होता है तो जो मैं करूँगा वह यह है: मैं उस राष्ट्र को तलवार, भूख और भयंकर बीमारी का दण्ड दूँगा।'" यह सन्देश यहोवा का है। "'मैं वह तब तक करूँगा जब तक मैं उस राष्ट्र को नष्ट न कर दूँ। मैं नबूकदनेस्सर का उपयोग उस राष्ट्र को नष्ट करने के लिये करूँगा जो उसके विरुद्ध करता है। 9अत: अपने नबियों की एक न सुनो। उन व्यक्तियों की एक न सुनो जो भविष्य की घटनाओं को जानने के लिये जादू का उपयोग करते हैं। उन लोगों की एक न सुनो जो यह कहते हैं कि हम स्वप्न का फल बता सकते हैं। उन व्यक्तियों की एक न सुनो जो मरों से बात करते हैं या वे लोग जो जादूगर हैं। वे सभी तुमसे कहते हैं, "तुम बाबुल के राजा के दास नहीं बनोगे।" 10किन्तु वे लोग तुमसे झूठ बोलते हैं। मैं तुम्हें तुम्हारी जन्म भूमि से बहुत दूर जाने पर विवश करूँगा और तुम दूसरे देश में मरोगे।

11"'किन्तु वे राष्ट्र, जो बाबुल के राजा के जुवे को अपने कंधे पर रखेंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे, जीवित रहेंगे। मैं उन राष्ट्रों को उनके अपने देश में रहने दूँगा और बाबुल के राजा की सेवा करने दूँगा।'" यह सन्देश यहोवा का है। "'उन राष्ट्रों के लोग अपनी भूमि पर रहेंगे और उस पर खेती करेंगे।

12"'मैंने यहूदा के राजा सिदकिय्याह को भी यही सन्देश दिया। मैंने कहा, सिदकिय्याह, तुम्हें बाबुल के राजा के जुवे के नीचे अपनी गर्दन देनी चाहिये और उसकी आज्ञा माननी चाहिये। यदि तुम बाबुल के राजा और उसके लोगों की सेवा करोगे तो तुम रह सकोगे। 13यदि तुम बाबुल के राजा की सेवा करना स्वीकार नहीं करते तो तुम और तुम्हारे लोग शत्रु की तलवार के घाट उतारे जाएंगे, तथा भूख और भयंकर बीमारी से मरेंगे। यहोवा ने कहा कि ये घटनायें होंगी। 14किन्तु झूठे नबी कह रहे हैं: तुम बाबुल के राजा के दास कभी नहीं होगे।

"'उन नबियों की एक न सुनो। क्योंकि वे तुम्हें झूठा उपदेश दे रहे हैं। 15मैंने उन नबियों को नहीं भेजा है।'" यह सन्देश यहोवा का है। "वे झूठा उपदेश दे रहे हैं और कह रहे हैं कि वह सन्देश मेरे यहाँ से है। अत: यहूदा के लोगों, मैं तुम्हें दूर भेजूँगा। तुम मरोगे और वे नबी भी जो उपदेश दे रहे हैं मरेंगे।"

16तब मैंने (यिर्मयाह) याजक और उन सभी लोगों से कहा, "यहोवा कहता है: 'वे झूठे नबी कह रहे हैं, 'कसदियों ने बहुत सी चीजें यहोवा के मन्दिर से ली। वे चीजें शीघ्र ही वापस लाई जाएंगी।' उन नबियों की एक न सुनो क्योंकि वे तुम्हें झूठा उपदेश दे रहे हैं। 17उन नबियों की एक न सुनो। बाबुल के राजा की सेवा करो और तुम जीवित रहोगे। तुम्हारे लिये कोई कारण नहीं कि तुम यरूशलेम नगर को नष्ट करवाओ। 18यदि वे लोग नबी हैं और उनके पास यहोवा का सन्देश है तो उन्हें प्रार्थना करने दो। उन चीजों के बारे में उन्हें प्रार्थना करने दो जो अभी तक राजा के महल में हैं और उन्हें उन चीजों के बारे में प्रार्थना करने दो जो अब तक यरूशलेम में हैं। उन नबियों को प्रार्थना करने दो ताकि वे सभी चीजें बाबुल नहीं ले जायी जायें।"

[19]सर्वशक्तिमान यहोवा उन सब चीजों के बारे में यह कहता है जो अभी तक यरूशलेम में बची रह गई हैं। मन्दिर में स्तम्भ, काँसे का बना सागर, हटाने योग्य आधार, और अन्य चीजें हैं। बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने उन चीजों को यरूशलेम में छोड़ दिया। [20]नबूकदनेस्सर जब यहूदा के राजा यकोन्याह को बन्दी बनाकर ले गया तब उन चीजों को नहीं ले गया। यकोन्याह राजा यहोयाकीम का पुत्र था। नबूकदनेस्सर यहूदा और यरूशलेम के अन्य बड़े लोगों को भी ले गया। [21]इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा मन्दिर में बची, राजमहल में बची और यरूशलेम में बची चीजों के बारे में यह कहता है: "वे सभी चीजें भी बाबुल ले जाई जाएंगी। [22]वे चीजें बाबुल में तब तक रहेंगी जब तक वह समय आएगा कि मैं उन्हें लेने जाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "तब मैं उन चीजों को वापस लाऊँगा। मैं इन चीजों को इस स्थान पर वापस रखूँगा।"

झूठा नबी हनन्याह

28 यहूदा में सिदकिय्याह के राज्यकाल के चौथे वर्ष के पाँचवें महीने में हनन्याह नबी ने मुझसे बात की। हनन्याह अज्जूर नामक व्यक्ति का पुत्र था। हनन्याह गिबोन नगर का रहने वाला था। हनन्याह ने जब मुझसे बातें की, तब वह यहोवा के मन्दिर में था। याजक और सभी लोग भी वहाँ थे। हनन्याह ने जो कहा वह यह है: [2]"इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, 'मैं उस जुवे को तोड़ डालूँगा जिसे बाबुल के राजा ने यहूदा के लोगों पर रखा है। [3]दो वर्ष पूरे होने के पहले मैं उन चीजों को वापस ले आऊँगा जिन्हें बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर यहोवा के मन्दिर से ले गया है। नबूकदनेस्सर उन चीजों को बाबुल ले गया है। किन्तु मैं उन्हें यरूशलेम वापस ले आऊँगा। [4]मैं यहूदा के राजा यकोन्याह को भी वापस यहाँ ले आऊँगा। यकोन्याह, यहोयाकीम का पुत्र है मैं उन सभी यहूदा के लोगों को वापस लाऊँगा जिन्हें नबूकदनेस्सर ने अपना घर छोड़ने और बाबुल जाने को विवश किया।' यह सन्देश यहोवा का है। 'अत: मैं उस जुवे को तोड़ दूँगा जिसे बाबुल के राजा ने यहूदा के लोगों पर रखा है!'"

[5]तब यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से यह कहा: वे यहोवा के मन्दिर में खड़े थे। याजक और वहाँ के सभी लोग यिर्मयाह का कहा हुआ सुन सकते थे। [6]यिर्मयाह ने हनन्याह से कहा, "आमीन! मुझे आशा है कि यहोवा निश्चय ही ऐसा करेगा! मुझे आशा है कि यहोवा उस सन्देश को सच घटित करेगा जो तुम देते हो। मुझे आशा है कि यहोवा अपने मन्दिर की चीजों को बाबुल से इस स्थान पर वापस लायेगा और मुझे आशा है कि यहोवा उन सभी लोगों को इस स्थान पर वापस लाएगा जो अपने घरों को छोड़ने को विवश किये गए थे।

[7]"किन्तु हनन्याह वह सुनो जो मुझे कहना चाहिये। वह सुनो जो मैं सभी लोगों से कहता हूँ। [8]हनन्याह हमारे और तुम्हारे नबी होने के बहुत पहले भी नबी थे। उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि युद्ध, भूखमरी और भयंकर बीमारियाँ अनेक देशों और राज्यों में आयेंगी। [9]किन्तु उस नबी की जाँच यह जानने के लिये होनी चाहिये कि उसे यहोवा ने सचमुच भेजा है जो यह कहता है कि हम लोग शान्तिपूर्वक रहेंगे। यदि उस नबी का सन्देश सच घटित होता है तो लोग समझ सकते हैं कि सत्य ही वह यहोवा द्वारा भेजा गया है।"

[10]यिर्मयाह अपने गर्दन पर एक जुवा रखे था। तब हनन्याह नबी ने उस जुवे को यिर्मयाह की गर्दन से उतार लिया। हनन्याह ने उस जुवे को तोड़ डाला। [11]तब हनन्याह सभी लोग के सामने बोला। उसने कहा, "यहोवा कहता है, 'इसी तरह मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के जुवे को तोड़ दूँगा। उसने उस जुवे को विश्व के सभी राष्ट्रों पर रखा है। किन्तु मैं उस जुवे को दो वर्ष बीतने से पहले ही तोड़ दूँगा।'"

हनन्याह के वह कहने के बाद यिर्मयाह मन्दिर को छोड़कर चला गया।

[12]तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह तब हुआ जब हनन्याह ने यिर्मयाह की गर्दन से जुवे को उतार लिया था और उसे तोड़ डाला था। [13]यहोवा ने यिर्मयाह से कहा, "जाओ और हनन्याह से कहो, 'यहोवा जो कहता है, वह यह है: तुमने एक काठ का जुवा तोड़ा है। किन्तु मैं काठ की जगह एक लोहे का जुवा बनाऊँगा।' [14]इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'मैं इन सभी राष्ट्रों की गर्दन पर लोहे का जुवा रखूँगा। मैं यह बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर की उनसे सेवा कराने के लिये करूँगा और वे उसके दास होंगे। मैं नबूकदनेस्सर को जंगली जानवरों पर भी शासन का अधिकार दूँगा।'"

[15]तब यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से कहा, "हनन्याह, सुनो! यहोवा ने तुझे नहीं भेजा। यहोवा ने तुम्हें नहीं भेजा किन्तु तुमने यहूदा के लोगों को झूठ में विश्वास कराया है। [16]अत: यहोवा जो कहता है, वह यह है, 'हनन्याह मैं तुम्हें शीघ्र ही इस संसार से उठा लूँगा। तुम इस वर्ष मरोगे। क्यों? क्योंकि तुमने लोगों को यहोवा के विरुद्ध जाने की शिक्षा दी है।'"

[17]हनन्याह उसी वर्ष के सातवें महीने मर गया।

बाबुल में यहूदी बन्दियों के लिये एक पत्र

29 यिर्मयाह ने बाबुल में बन्दी यहूदियों को एक पत्र भेजा। उसने इसे अग्रजों (प्रमुखों), याजकों, नबियों और बाबुल में रहने वाले सभी लोगों को भेजा। ये वे लोग थे जिन्हें नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम में पकड़ा था और बाबुल ले गया था। [2](यह पत्र, राजा यकोन्याह, राजमाता, अधिकारी, यहूदा और यरूशलेम के प्रमुख, बढ़ई, और ठठेरों के यरूशलेम से ले जाए जाने के बाद भेजा गया था। [3]सिदकिय्याह ने एलासा और गमर्याह को राजा नबूकदनेस्सर के पास भेजा। सिदकिय्याह यहूदा का राजा था। एलासा शापान का पुत्र था और गमर्याह हिल्किय्याह का पुत्र था। यिर्मयाह ने उस पत्र को उन लोगों को बाबुल ले जाने के लिये दिया। पत्र में जो लिखा था वह यह है:

> [4]इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा ये बातें उन सभी लोगों से कहता है जिन्हें बन्दी के रुप में उसने यरूशलेम से बाबुल भेजा था: [5]"घर बनाओ और उनमें रहो। उस देश में बस जाओ। पौधे लगाओ और अपनी उगाई हुई फसल से भोजन प्राप्त करो। [6]विवाह करो तथा पुत्र–पुत्रियाँ पैदा करो। अपने पुत्रों के लिए पत्नियाँ खोजो और अपनी पुत्रियों की शादी करो। यह इसलिये करो जिससे उनके भी लड़के और लड़कियाँ हो बहुत से बच्चे पैदा करो और बाबुल में अपनी संख्या बढ़ाओ। अपनी संख्या मत घटाओ। [7]मैं जिस नगर में तुम्हें भेजूँ उसके लिये अच्छा काम करो। जिस नगर में तुम रहो उसके लिये यहोवा से प्रार्थना करो। क्यों? क्योंकि यदि उस नगर में शान्ति रहेगी तो तुम्हें भी शान्ति मिलेगी।" [8]इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "अपने नबियों और जादूगरों को अपने को मूर्ख मत बनाने दो। उनके उन स्वप्नों के बारे में न सुनो जिन्हें वे देखते हैं। [9]वे झूठा उपदेश देते हैं और वे यह कहते हैं कि उनका सन्देश मेरे यहाँ से है। किन्तु मैंने उसे नहीं भेजा।" यह सन्देश यहोवा का है।

[10]यहोवा जो कहता है, वह यह है: "बाबुल सत्तर वर्ष तक शक्तिशाली रहेगा। उसके बाद बाबुल में रहने वाले लोगों, मैं तुम्हारे पास आऊँगा। मैं तुम्हें वापस यरूशलेम लाने की सच्ची प्रतिज्ञा पूरी करुँगा। [11]मैं यह इसलिये कहता हूँ क्योंकि मैं उन अपनी योजनाओं को जानता हूँ जो तुम्हारे लिये हैं।" यह सन्देश यहोवा का है। "तुम्हारे लिये मेरी अच्छी योजनाए हैं। मैं तुम्हें चोट पहुँचाने की योजना नहीं बना रहा हूँ। मैं तुम्हें आशा और उज्जवल भविष्य देने की योजना बना रहा हूँ। [12]तब तुम लोग मेरा नाम लोगे। तुम मेरे पास आओगे और मेरी प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी बातों पर ध्यान दूँगा। [13]तुम लोग मेरी खोज करोगे और जब तुम पूरे हृदय से मेरी खोज करोगे तो तुम मुझे पाओगे। [14]मैं अपने को तुम्हें प्राप्त होने दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं तुम्हें तुम्हारे बन्दीखाने से वापस लाऊँगा। मैंने तुम्हें यह स्थान छोड़ने को विवश किया। किन्तु मैं तुम्हें उन सभी राष्ट्रों और स्थानों से इकट्ठा करुँगा जहाँ मैंने तुम्हें भेजा है।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं तुम्हें इस स्थान पर वापस लाऊँगा।"

[15]तुम लोग यह कह सकते हो, "किन्तु यहोवा ने हमें यहाँ बाबुल में नबी दिये है।" [16]किन्तु यहोवा तुम्हारे उन सम्बन्धियों के बारे में जो बाबुल नहीं ले जाए गए यह कहता है: मैं उस राजा के बारे में बात कर रहा हूँ जो इस समय दाऊद के राजसिंहासन पर बैठा है और उन सभी अन्य लोगों के बारे में जो अब भी यरूशलेम नगर में रहते हैं। [17]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "मैं शीघ्र ही तलवार, भूख और भयंकर बीमारी उन लोगों के विरुद्ध भेजूँगा जो अब भी यरूशलेम में हैं और मैं उन्हें वे ही सड़े–गले अंजीर बनाऊँगा जो खाने योग्य नहीं। [18]मैं उन लोगों का पीछा, जो अभी भी यरूशलेम में हैं, तलवार, भूख और भयंकर बीमारी से करूँगा

और मैं इसे ऐसा कर दूँगा कि पृथ्वी के सभी राज्य यह देखकर डरेंगे कि इन लोगों के साथ क्या घटित हो गया है। वे लोग नष्ट कर दिए जाएंगे। लोग जब उन घटित घटनाओं को सुनेंगे तो आश्चर्य से सिसकारी भरेंगे और जब लोग किन्हीं लोगों के लिये बुरा होने की मांग करेंगे तो इसे उदाहरण रुप में याद करेंगे। मैं उन लोगों को जहाँ कहीं जाने को विवश करूँगा, लोग वहाँ उनका अपमान करेंगे। [19]मैं उन सभी घटनाओं को घटित कराऊँगा क्योंकि यरूशलेम के उन लोगों ने मेरे सन्देश को अनसुना किया है।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैंने अपना सन्देश उनके पास बार–बार भेजा। मैंने अपने सेवक नबियों को उन लोगों को अपना सन्देश देने को भेजा। किन्तु लोगों ने उन्हें अनसुना किया।" यह सन्देश यहोवा का है। [20]"तुम लोग बन्दी हो। मैंने तुम्हें यरूशलेम छोड़ने और बाबुल जाने को विवश किया। अत: यहोवा का सन्देश सुनो।"

[21]सर्वशक्तिमान यहोवा कोलायाह के पुत्र अहाब और मासेयाह के पुत्र सिदकिय्याह के बारे में यह कहता है: "ये दोनों व्यक्ति तुम्हें झूठा उपदेश दे रहे थे। उन्होंने कहा है कि उनके सन्देश मेरे यहाँ से हैं। किन्तु वे झूठ बोल रहे थे। उन दोनों नबियों को बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को दे दूँगा और नबूकदनेस्सर बाबुल में बन्दी तुम सभी लोगों के सामने उन नबियों को मार डालेगा। [22]सभी यहूदी बन्दी उन लोगों का उपयोग उदाहरण के लिये तब करेंगे जब वे अन्य लोगों का बुरा होने की मांग करेंगे। वे बन्दी कहेंगे, 'यहोवा तुम्हारे साथ सिदकिय्याह और अहाब के समान व्यवहार करे। बाबुल के राजा ने उन दोनों को आग में जला दिया!' [23]उन दोनों नबियों ने इस्राएल के लोगों के साथ घृणित कर्म किया था। उन्होंने अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ व्यभिचार किया है। उन्होंने झूठ भी बोला है और कहा है कि वे झूठ मुझ यहोवा के यहाँ से हैं। मैंने उनसे वह सब करने को नहीं कहा। मैं जानता हूँ कि उन्होंने क्या किया है? मैं साक्षी हूँ।" यह सन्देश यहोवा का है।

शमायाह को परमेश्वर का सन्देश

[24]शमायाह को भी एक सन्देश दो। शमायाह नेहलामी परिवार से है। [25]इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "शमायाह, तुमने यरूशलेम के सभी लोगों को पत्र भेजे और तुमने यासेयाह के पुत्र याजक सपन्याह को पत्र भेजे। तुमने सभी याजकों को पत्र भेजे। तुमने उन पत्रों को अपने नाम से भेजा और यहोवा की सत्ता के नाम पर नहीं। [26]शमायाह, तुमने सपन्याह को अपने पत्र में जो लिखा था वह यह है: 'सपन्याह यहोवा ने यहोयादा के स्थान पर तुम्हें याजक बनाया है। तुम यहोवा के मन्दिर के अधिकारी हो। तुम्हें उस किसी को कैद कर लेना चाहिये जो पागल की तरह काम करता है और नबी की तरह व्यवहार करता है। तुम्हें उस व्यक्ति के पैरों को लकड़ी के बड़े टुकड़ें के बीच रखना चाहिये और उसके गले में लौह–कटक पहनाना चाहिए। [27]इस समय यिर्मयाह नबी की तरह काम कर रहा है। अत: तुमने उसे बन्दी क्यों नहीं बनाया? [28]यिर्मयाह ने हम लोगों को यह सन्देश बाबुल में दिया था: बाबुल में रहने वाले लोगों, तुम वहाँ लम्बे समय तक रहोगे। अत: अपने मकान बनाओ और वहीं बस जाओ। बाग लगाओ और वह खाओ, जो उपजाओ।'"

[29]याजक सपन्याह ने यिर्मयाह नबी को पत्र सुनाया। [30]तब यिर्मयाह के पास यहोवा का सन्देश आया। [31]"यिर्मयाह, बाबुल के सभी बन्दियों को यह सन्देश भेजो: 'नेहलामी परिवार के शमायाह के बारे में जो यहोवा कहता है, वह यह है: शमायाह ने तुम्हारे सामने भविष्यवाणी की, किन्तु मैंने उसे नहीं भेजा। शमायाह ने तुम्हें झूठ में विश्वास कराया है। शमायाह ने यह किया है। [32]अत: यहोवा जो कहता है वह यह है: नेहलामी परिवार के शमायाह को मैं शीघ्र दण्ड दूँगा। मैं उसके परिवार को पूरी तरह नष्ट कर दूँगा और मैं अपने लोगों के लिये जो अच्छा करूँगा उसमें उसका कोई भाग नहीं होगा।'" यह सन्देश यहोवा का है। "'मैं शमायाह को दण्ड दूँगा क्योंकि उसने लोगों को यहोवा के विरुद्ध जाने की शिक्षा दी है।'"

आशा के प्रतिज्ञाएं

30 यह सन्देश यहोवा का है जो यिर्मयाह को मिले। [2]इस्राएल के लोगों के परमेश्वर यहोवा ने

यह कहा, "यिर्मयाह, मैंने जो सन्देश दिये हैं, उन्हें एक पुस्तक में लिख डालो। इस पुस्तक को अपने लिये लिखो।" [3]यह सन्देश यहोवा का है। "यह करो, क्योंकि वे दिन आएंगे जब मैं अपने लोगों इस्राएल और यहूदा को देश निकाले से वापस लाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं उन लोगों को उस देश में वापस लाऊँगा जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दिया था। तब मेरे लोग उस देश को फिर अपना बनायेंगे।"

[4]यहोवा ने यह सन्देश इस्राएल और यहूदा के लोगों के बारे में दिया। [5]यहोवा ने जो कहा, वह यह है:

"हम भय से रोते लोगों का रोना सुनते हैं! लोग भयभीत हैं! कहीं शान्ति नहीं! [6]यह प्रश्न पूछो इस पर विचार करो: क्या कोई पुरुष बच्चे को जन्म दे सकता है? निश्चय ही नहीं! तब मैं हर एक शक्तिशाली व्यक्ति को पेट पकड़े क्यों देखता हूँ मानों वे प्रसव करने वाली स्त्री की पीड़ा सह रहे हो? क्यों हर एक व्यक्ति का मुख शव सा सफेद हो रहा है? क्यों? क्योंकि लोग अत्यन्त भयभीत हैं। [7]यह याकूब के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है। यह बड़ी विपत्ति का समय है। इस प्रकार का समय फिर कभी नहीं आएगा। किन्तु याकूब बच जायेगा।"

[8]यह सन्देश सर्वशक्तिमान यहोवा का है: "उस समय, मैं इस्राएल और यहूदा के लोगों की गर्दन से जुवे को तोड़ डालूँगा और तुम्हें जकड़ने वाली रस्सियों को मैं तोड़ दूँगा। विदेशों के लोग मेरे लोगों को फिर कभी दास होने के लिये विवश नहीं करेंगे। [9]इस्राएल और यहूदा के लोग अन्य देशों की भी सेवा नहीं करेंगे। नहीं, वे तो अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करेंगे और वे अपने राजा दाऊद की सेवा करेंगे। मैं उस राजा को उनके पास भेजूँगा।

[10]"अत: मेरे सेवक याकूब डरो नहीं।" यह सन्देश यहोवा का है। "इस्राएल, डरो नहीं। मैं उस अति दूर के स्थान से तुम्हें बचाऊँगा। तुम उस बहुत दूर के देश में बन्दी हो, किन्तु मैं तुम्हारे वंशजों को उस देश से बचाऊँगा। याकूब फिर शान्ति पाएगा। याकूब को लोग तंग नहीं करेंगे। मेरे लोगों को भयभीत करने वाला कोई शत्रु नहीं होगा। [11]इस्राएल और यहूदा के लोगों, मैं तुम्हारे साथ हूँ।" यह सन्देश यहोवा का है, "और मैं तुम्हें बचाऊँगा। मैंने तुम्हें उन राष्ट्रों में भेजा। किन्तु मैं उन सभी राष्ट्रों को पूरी तरह नष्ट कर दूँगा। यह सत्य है कि मैं उन राष्ट्रों को नष्ट करूँगा। किन्तु मैं तुम्हें नष्ट नहीं करूँगा। तुम्हें उन बुरे कामों का जरूर दण्ड मिलेगा जिन्हें तुमने किये। किन्तु मैं तुम्हें अच्छी प्रकार से अनुशासित करूँगा।"

[12]यहोवा कहता है, "इस्राएल और यहूदा के तुम लोगों को एक घाव है जो अच्छा नहीं किया जा सकता। तुम्हें एक चोट है जो अच्छी नहीं हो सकती। [13]तुम्हारे घावों को ठीक करने वाला कोई व्यक्ति नहीं है। अत: तुम स्वस्थ नहीं हो सकते। [14]तुम अनेक राष्ट्रों के मित्र बने हो, किन्तु वे राष्ट्र तुम्हारी परवाह नहीं करते। तुम्हारे मित्र तुम्हें भूल गये हैं। मैंने तुम्हें शत्रु जैसी चोट पहुँचाई। मैंने तुम्हें कठोर दण्ड दिया। मैंने यह तुम्हारे बड़े अपराध के लिये किया। [15]इस्राएल और यहूदा तुम अपने घाव के बारे में क्यों चिल्ला रहे हो? तुम्हारा घाव कष्टकर है और इसका कोई उपचार नहीं है। मैंने अर्थात् यहोवा ने तुम्हारे बड़े अपराधों के कारण तुम्हें यह सब किया। मैंने ये चीजें तुम्हारे अनेक पापों के कारण कीं। [16]उन राष्ट्रों ने तुम्हें नष्ट किया। किन्तु अब वे राष्ट्र नष्ट किये जायेंगें। इस्राएल और यहूदा तुम्हारे शत्रु बन्दी होंगे। उन लोगों ने तुम्हारी चीजें चुराईं। किन्तु अन्य लोग उनकी चीजें चुराएंगे। उन लोगों ने तुम्हारी चीजें युद्ध में लीं। किन्तु अन्य लोग उनसे चीजें युद्ध में लेंगे। [17]मैं तुम्हारे स्वास्थ को लौटाऊँगा और मैं तुम्हारे घावों को भरूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "क्यों? क्योंकि अन्य लोगों ने कहा कि तुम जाति–बहिष्कृत हो। उन लोगों ने कहा, 'कोई भी सिय्योन की परवाह नहीं करता।'"

[18]यहोवा कहता है: "याकूब के लोग अब बन्दी हैं। किन्तु वे वापस आएंगे। और मैं याकूब के परिवारों पर दया करूँगा। नगर अब बरबाद इमारतों से ढका एक पहाड़ी मात्र है। किन्तु यह नगर फिर बनेगा और राजा का महल भी वहाँ फिर बनेगा जहाँ इसे होना चाहिये।[19]उन स्थानों पर लोग स्तुतिगान करेंगे। वहाँ हँसी ठट्ठा भी सुनाई पड़ेगा। मैं उन्हें बहुत सी सन्तानें दूँगा। इस्राएल और यहूदा छोटे नहीं रहेंगे। मैं उन्हें सम्मान दूँगा। कोई व्यक्ति उनका अनादर नहीं करेगा। [20]याकूब का परिवार प्राचीन काल के परिवारों सा होगा। मैं इस्राएल और यहूदा के लोगों को शक्तिशाली बनाऊँगा और मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा जो उन पर चोट करेंगे। [21]उन्हीं में से एक उनका अगुवा होगा। वह शासक मेरे लोगों में से होगा। वह मेरे नजदीक तब आएंगे जब मैं उनसे ऐसा करने को

कहूँगा। अत: मैं उस अगुवा को अपने पास बुलाऊँगा और वह मेरे निकट होगा। [22]तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा।"

[23]यहोवा बहुत क्रोधित था। उसने लोगों को दण्ड दिया और दण्ड प्रचंड आंधी की तरह आया। दण्ड एक चक्रवात सा, दुष्ट लोगों के विरुद्ध आया। [24]यहोवा तब तक क्रोधित रहेगा जब तक वे लोगों को दण्ड देना पूरा नहीं करता वह तब तक क्रोधित रहेगा जब तक वह अपनी योजना के अनुसार दण्ड नहीं दे लेता। जब वह दिन आएगा तो यहूदा के लोगों, तुम समझ जाओगे।

नया इस्राएल

31 यहोवा ने यह सब कहा: "उस समय मैं इस्राएल के पूरे परिवार समूहों का परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे।"

[2]यहोवा कहता है, "कुछ लोग, जो शत्रु की तलवार के घाट नहीं उतारे गए, वे लोग मरुभूमि में आराम पाएंगे। इस्राएल आराम की खोज में आएगा।" [3]बहुत दूर से यहोवा अपने लोगों के सामने प्रकट होगा। यहोवा कहते है लोगों, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ और मेरा प्रेम सदैव रहेगा। मैं सदैव तुम्हारे प्रति सच्चा रहूँगा। [4]मेरी दुल्हन, इस्राएल, मैं तुम्हें फिर सवारुँगा। तुम फिर सुन्दर देश बनोगी। तुम अपना तम्बूरा फिर संभालोगी। तुम विनोद करने वाले अन्य सभी लोगों के साथ नाचोगी। [5]इस्राएल के किसानों, तुम अंगूर के बाग फिर लगाओगे। तुम शोमरोन नगर के चारों ओर पहाड़ी पर उन अंगूरों के बाग लगाओगे और किसान लोग उन अंगूरों के बागों के फलों का आनन्द लेंगे। [6]वह समय आएगा, जब एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश का चौकीदार यह सन्देश घोषित करेगा: 'आओ, हम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करने सिय्योन चलें! एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के चौकीदार भी उसी सन्देश की घोषणा करेंगे।"

[7]यहोवा कहता है, "प्रसन्न होओ और याकूब के लिये गाओ। सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र इस्राएल के लिये उद्घोष करो। अपनी स्तुतियाँ करो। यह उद्घोष करो, 'यहोवा ने अपने लोगों की रक्षा की है। उसने इस्राएल राष्ट्र के जीवित बचे लोगों की रक्षा की है!' [8]समझ लो कि मैं उत्तर देश से इस्राएल को लाऊँगा। मैं पृथ्वी के अति दूर स्थानों से इस्राएल के लोगों को इकट्ठा करूँगा। उन व्यक्तियों में से कुछ अन्धे और लंगड़े हैं। कुछ स्त्रियाँ गर्भवती हैं और शिशु को जन्म देगी। असंख्य लोग वापस आएंगे। [9]लौटते समय वे लोग रो रहे होंगे। किन्तु मैं उनकी अगुवाई करुँगा और उन्हें आराम दूँगा। मैं उन लोगों को पानी के नालों के साथ लाऊँगा। मैं उन्हें अच्छी सड़क से लाऊँगा जिससे वे ठोकर खाकर न गिरें। मैं उन्हें इस प्रकार लाऊँगा क्योंकि मैं इस्राएल का पिता हूँ और एप्रैम मेरा प्रथम पुत्र है।

[10]"राष्ट्रों, यहोवा का यह सन्देश सुनो। सागर के किनारे के दूर देशों को यह सन्देश दो कहो: 'जिसने इस्राएल के लोगों को बिखेरा, वही उन्हें एक साथ वापस लायेगा और वह गड़ेरिये की तरह अपनी झुंड (लोग) की देखभाल करेगा।' [11] यहोवा याकूब को वापस लायेगा यहोवा अपने लोगों की रक्षा उन लोगों से करेगा जो उनसे अधिक बलवान हैं। [12]इस्राएल के लोग सिय्योन की ऊँचाइयों पर आएंगे, और वे आनन्द घोष करेंगे। उनके मुख यहोवा द्वारा दी गई अच्छी चीजों के कारण प्रसन्नता से झूम उठेंगे। यहोवा उन्हें अन्न, नयी दाखमधु, तेल, नयी भेड़ें और गायें देगा। वे उस उद्यान की तरह होंगे जिसमे प्रचुर जल हो और इस्राएल के लोग भविष्य में तंग नहीं किये जाएंगे। [13] तब इस्राएल की युवतियाँ प्रसन्न होंगी और नाचेंगी। युवा, वृद्ध पुरुष भी उस नृत्य में भाग लेंगे। मैं उनके दु:ख को सुख में बदल दूँगा। मैं इस्राएल के लोगों को आराम दूँगा। मैं उनकी खिन्नता को प्रसन्नता में बदल दूँगा। [14]याजकों के लिये आवश्यकता से अधिक बलि भेंट दी जायेगी और मेरे लोग इससे भरे पूरे तथा सन्तुष्ट होंगे जो अच्छी चीजें मैं उन्हें दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है।

[15]यहोवा कहता है, "रामा में एक चिल्लाहट सुनाई पड़ेगी। यह कटु रूदन और अधिक उदासी भरी होगी। राहेल अपने बच्चों के लिए रोएगी राहेल सान्त्वना पाने से इन्कार करेगी, क्योंकि उसके बच्चे मर गए हैं।"

[16]किन्तु यहोवा कहता है: "रोना बन्द करो, अपनी आँखे आँसू से न भरो! तुम्हें अपने काम का पुरस्कार मिलेगा!" यह सन्देश यहोवा का है। "इस्राएल के लोग अपने शत्रु के देश से वापस आएंगे। [17]अत: इस्राएल, तुम्हारे लिये आशा है।" यह सन्देश यहोवा का है। "तुम्हारे बच्चे अपने देश में वापस लौटेंगे। [18]मैंने एप्रैम को रोते सुना है। मैंने एप्रैम को यह कहते सुना है: 'हे यहोवा, तूने, सच ही, मुझे दण्ड दिया है और मैंने अपना पाठ सीख लिया। मैं उस बछड़े की तरह था जिसे कभी प्रशिक्षण

नहीं मिला कृपया मुझे दण्ड देना बन्द कर, मैं तेरे पास वापस आऊँगा। तू सच ही मेरा परमेश्वर यहोवा है। [19]हे यहोवा, मैं तुझसे भटक गया था। किन्तु मैंने जो बुरा किया उससे शिक्षा ली। अत: मैंने अपने हृदय और जीवन को बदल डाला। जो मैंने युवाकाल में मूर्खतापूर्ण काम किये उनके लिये मैं परेशान और लज्जित हूँ।'"

[20]परमेश्वर कहता है: "तुम जानते हो कि एप्रैम मेरा प्रिय पुत्र है। मैं उस बच्चे से प्यार करता हूँ। हाँ, मैं प्राय: एप्रैम के विरुद्ध बोलता हूँ, किन्तु फिर भी मैं उसे याद रखता हूँ। मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ। मैं सच ही, उसे आराम पहुँचाना चाहता हूँ।" यह सन्देश यहोवा का है।

[21]"इस्राएल के लोगों, सड़कों के संकेतों को लगाओ। उन संकेतों को लगाओ जो तुम्हें घर का मार्ग बतायें। सड़क को ध्यान से देखो। उस सड़क पर ध्यान रखो जिससे तुम यात्रा कर रहे हो। मेरी दुल्हन इस्राएल घर लौटो, अपने नगरों को लौट आओ। [22]अविश्वासी पुत्री कब तक तुम चारों ओर मंडराती रहोगी? तुम कब घर आओगी?" यहोवा एक नयी चीज धरती पर बनाता है: एक स्त्री, पुरुष के चारों तरफ।

[23]इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: "मैं यहूदा के लोगों के लिये फिर अच्छा काम करूँगा। उस समय यहूदा देश और उसके नगरों के लोग इन शब्दों का उपयोग फिर करेंगे। 'ऐ सच्ची निवास भूमि ये पवित्र पर्वत यहोवा तुम्हें आशीर्वाद दे।'

[24]"यहूदा के सभी नगरों में लोग एक साथ शान्तिपूर्वक रहेंगे। किसान और वह व्यक्ति जो अपनी भेड़ों की रेवड़ों के साथ चारों ओर घूमते हैं, यहूदा में शान्ति से एक साथ रहेंगे। [25]मैं उन लोगों को आराम और शक्ति दूँगा जो थके और कमजोर हैं।"

[26]यह सुनने के बाद मैं (यिर्मयाह) जगा और अपने चारों ओर देखा। वह बड़ी आनन्ददायक नींद थी।

[27]"वे दिन आ रहे हैं जब मैं यहूदा और इस्राएल के परिवारों को बढ़ाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं उनके बच्चों और जानवरों के बढ़ने में भी सहायता करुँगा। यह पौधे के रोपने और देख भाल करने जैसा होगा।[28]अतीत में, मैंने इस्राएल और यहूदा पर ध्यान दिया, किन्तु मैंने उस समय उन्हें फटकारने की दृष्टि से ध्यान दिया। मैंने उन्हें उखाड़ फेंका। मैंने उन्हें नष्ट किया। मैंने उन पर अनेक विपत्तियाँ ढाई। किन्तु अब मैं उन पर उनको बनाने तथा उन्हें शक्तिशाली करने की दृष्टि से ध्यान दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है।"

[29]"उस समय लोग इस कहावत को कहना बन्द कर देंगे:

पूर्वजों ने खट्टे अंगूर खाये
और बच्चों के दाँत खट्टे हो गये।"

[30]किन्तु हर एक व्यक्ति अपने पाप के लिये मरेगा। जो व्यक्ति खट्टे अंगूर खायेगा, वही खट्टे स्वाद के कारण अपने दाँत घिसेगा।"

नयी वाचा

[31]यहोवा ने यह सब कहा, "वह समय आ रहा है जब मैं इस्राएल के परिवार तथा यहूदा के परिवार के साथ नयी वाचा करूँगा। [32]यह उस वाचा की तरह नहीं होगी जिसे मैंने उनके पूर्वजों के साथ की थी। मैंने वह वाचा तब की जब मैंने उनके हाथ पकड़े और उन्हें मिस्र से बाहर लाया। मैं उनका स्वामी था और उन्होंने वाचा तोड़ी।" यह सन्देश यहोवा का है।

[33]"भविष्य में यह वाचा मैं इस्राएल के लोगों के साथ करूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं अपनी शिक्षाओं को उनके मस्तिष्क में रखूँगा तथा उनके हृदयों पर लिखूँगा। मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे। [34]लोगों को यहोवा को जानने के लिए अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों को, शिक्षा देना नहीं पड़ेगी। क्यों? क्योंकि सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक सभी मुझे जानेंगे।" यह सन्देश यहोवा का है। "जो बुरा काम उन्होंने कर दिया उसे मैं क्षमा कर दूँगा। मैं उनके पापों को याद नहीं रखूँगा।"

यहोवा इस्राएल को कभी नहीं छोड़ेगा

[35] यहोवा यह कहता है:
"यहोवा सूर्य को दिन में चमकाता है
और यहोवा चाँद और तारों को
रात में चमकाता है।
यहोवा सागर को चंचल करता है जिससे उसकी
लहरे तट से टकराती हैं।
उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।"

[36] यहोवा यह सब कहता है,
"मेरे सामने इस्राएल के वंशज
उसी दशा में एक राष्ट्र न रहेंगे।

यदि मैं सूर्य, चन्द्र, तारे और सागर पर
अपना नियन्त्रण खो दूँगा।"

37 यहोवा कहता है:
"मैं इस्राएल के वंशजों का कभी नही त्याग करुँगा।
यह तभी संभव है यदि लोग ऊपर आसमान
को नापने लगें और नीचे धरती के
सारे रहस्यों को जान जायँ।
यदि लोग वह सब कर सकेंगे
तभी मैं इस्राएल के वंशजों को त्याग दूँगा।
तब मैं उनको, जो कुछ उन्होंने किया,
उसके लिये त्यागूँगा।"
यह सन्देश यहोवा का है।

नया यरूशलेम

[38]यह सन्देश यहोवा का है: "वे दिन आ रहे हैं जब यरूशलेम नगर यहोवा के लिये फिर बनेगा। पूरा नगर हननेल के स्तम्भ से कोने वाले फाटक तक फिर बनेगा। [39]नाप की जंजीर कोने वाले फाटक से सीधे गारेब की पहाड़ी तक बिछेगी और तब गोआ नामक स्थान तक फैलेगी। [40]पूरी घाटी जहाँ शव और राख फेंकी जाती है, यहोवा के लिये पवित्र होगी और उसमें किद्रोन घाटी तक के सभी टीले पूर्व में अश्वद्वार के कोने तक सम्मिलित होंगे। सारा क्षेत्र यहोवा के लिये पवित्र होगा। यरूशलेम का नगर भविष्य में न ध्वस्त होगा, न ही नष्ट किया जाएगा।"

यिर्मयाह एक खेत खरीदता है

32 सिदकिय्याह के यहूदा में राज्य काल के दसवें वर्ष, यिर्मयाह को यहोवा का यह सन्देश मिला। सिदकिय्याह का दसवाँ वर्ष नबूकदनेस्सर का अट्ठारहवाँ वर्ष था। [2]उस समय बाबुल के राजा की सेना यरूशलेम नगर को घेरे हुए थी और यिर्मयाह रक्षक प्रांगण में बन्दी था। यह प्रांगण यहूदा के राजा के महल में था। [3](यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने उस स्थान पर यिर्मयाह को बन्दी बना रखा था। सिदकिय्याह यिर्मयाह की भविष्यवाणियों को पसन्द नहीं करता था। यिर्मयाह ने कहा, "यहोवा यह कहता है: 'मैं यरूशलेम को शीघ्र ही बाबुल के राजा को दे दूँगा। नबूकदनेस्सर इस नगर पर अधिकार कर लेगा। [4]यहूदा का राजा सिदकिय्याह कसदियों की सेना से बचकर निकल नहीं पाएगा। किन्तु वह निश्चय ही बाबुल के राजा को दिया जायेगा और सिदकिय्याह बाबुल के राजा से आमने–सामने बातें करेगा। सिदकिय्याह उसे अपनी आँखों से देखेगा। [5]बाबुल का राजा सिदकिय्याह को बाबुल ले जाएगा। सिदकिय्याह तब तक वहाँ ठहरेगा जब तक मैं उसे दण्ड नहीं दे लेता।' यह सन्देश यहोवा का है। 'यदि तुम कसदियों की सेना से लड़ोगे, तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी।'"

[6]जिस समय यिर्मयाह बन्दी था, उसने कहा, "यहोवा का सन्देश मुझे मिला। वह सन्देश यह था: [7]यिर्मयाह, तुम्हारा चचेरा भाई हननेल शीघ्र ही तुम्हारे पास आएगा। वह तुम्हारे चाचा शल्लूम का पुत्र है। हननेल तुमसे यह कहेगा, 'यिर्मयाह, अनातोत नगर के पास मेरा खेत खरीद लो। इसे खरीद लो क्योंकि तुम मेरे सबसे समीपी रिश्तेदार हो। उस खेत को खरीदना तुम्हारा अधिकार तथा तुम्हारा उत्तरदायित्व है।'

[8]"तब यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। मेरा चचेरा भाई रक्षक प्रांगण में मेरे पास आया। हननेल ने मुझसे कहा, 'यिर्मयाह, बिन्यामीन परिवार समूह के प्रदेश में अनातोत नगर के पास मेरा खेत खरीद लो। उस भूमि को तुम अपने लिये खरीदो क्योंकि यह तुम्हारा अधिकार है कि तुम इसे खरीदो और अपना बनाओ।'"

अत: मुझे ज्ञात हुआ कि यह यहोवा का सन्देश है। [9]मैंने अपने चचेरे भाई हननेल से अनातोत में भूमि खरीद ली। मैंने उसके लिये सत्तरह शेकेल चाँदी तौली। [10]मैंने पट्टे पर हस्ताक्षर किये और मुझे पट्टे की एक प्रति मुहरबन्द मिली और जो मैंने किया था उसके साक्षी के रूप सें कुछ लोगों को बुला लिया तथा मैंने तराजू पर चाँदी तौली। [11]तब मैंने पट्टे की मुहरबन्द प्रति और मुहर रहित प्रति प्राप्त की [12]और मैंने उसे बारुक को दिया। बारुक नोरिय्याह का पुत्र था। नोरिय्याह महसेयाह का पुत्र था। मुहरबन्द पट्टे में मेरी खरीद की सभी शर्ते और सीमायें थीं। मैंने अपने चचेरे भाई हननेल और अन्य साक्षियों के सामने वह पट्टा बारुक को दिया। उन साक्षियों ने भी उस पट्टे पर हस्ताक्षर किये। उस समय यहूदा के बहुत से व्यक्ति प्रांगण में बैठे थे जिन्होंने मुझे बारुक को पट्टा देते देखा।

[13]सभी लोगों को साक्षी कर मैंने बारुक से कहा, [14]"इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, 'मुहरबन्द और मुहर रहित दोनों पट्टे की

प्रतियों को लो और इसे मिट्टी के घड़े में रख दो। यह तुम इसलिये करो कि पट्टा बहुत समय तक रहे।' [15]इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'भविष्य में मेरे लोग एक बार फिर घर, खेत और अंगूर के बाग इस्राएल देश में खरीदेंगे।'"

[16]नेरिय्याह के पुत्र बारुक को पट्टा देने के बाद मैंने यहोवा से प्रार्थना की। मैंने कहा:

[17]"परमेश्वर यहोवा, तूने पृथ्वी और आकाश बनाया। तूने उन्हें अपनी महान शक्ति से बनाया। तेरे लिये कुछ भी करना अति कठिन नहीं है। [18]यहोवा, तू हजारों व्यक्तियों का विश्वासपात्र और उन पर दयालु है। किन्तु तू व्यक्तियों को उनके पूर्वजों के पापों के लिए भी दण्ड देता है। महान और शक्तिशाली परमेश्वर, तेरा नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है। [19]हे यहोवा, तू महान कार्यो की योजना बनाता और उन्हें करता है। तू वह सब देखता है जिन्हें लोग करते हैं और उन्हें पुरस्कार देता है जो अच्छे काम करते हैं तथा उन्हें दण्ड देता है जो बुरे काम करते हैं, तू उन्हें वह देता है जिनके वे पात्र हैं। [20]हे यहोवा, तूने मिस्र देश में अत्यन्त प्रभावशाली चमत्कार किया। तूने आज तक भी प्रभावशाली चमत्कार किया है। तूने ये चमत्कार इस्राएल में दिखाया और तूने इन्हें वहाँ भी दिखाये जहाँ कहीं मनुष्य रहते हैं। तू इन चमत्कारों के लिये प्रसिद्ध है। [21]हे यहोवा, तूने प्रभावशाली चमत्कारों का प्रयोग किया और अपने लोग इस्राएल को मिस्र से बाहर ले आया। तूने उन चमत्कारों को करने के लिये अपने शक्तिशाली हाथों का उपयोग किया। तेरी शक्ति आश्चर्यजनक रही!

[22]"हे यहोवा, तूने यह धरती इस्राएल के लोगों को दी। यह वही धरती है जिसे तूने उनके पूर्वजों को देने का वचन बहुत पहले दिया था। यह बहुत अच्छी धरती है। यह बहुत सी अच्छी चीजों वाली अच्छी धरती है। [23]इस्राएल के लोग इस धरती में आये और उन्होंने इसे अपना बना लिया। किन्तु उन लोगों ने तेरी आज्ञा नहीं मानी। वे तेरे उपदेशों के अनुसार न चले। उन्होंने वह नहीं किया जिसके लिये तूने आदेश दिया। अत: तूने इस्राएल के लोगों पर वे भयंकर विपत्तियाँ ढाई।

[24]"अब शत्रु ने नगर पर घेरा डाला है। वे ढाल बना रहे हैं जिससे वे यरूशलेम की चहारदीवारी पर चढ़ सकें और उस पर अधिकार कर लें। अपनी तलवारों का उपयोग करके तथा भूख और भयंकर बीमारी के कारण बाबुल की सेना यरूशलेम नगर को हरायेगी। बाबुल की सेना अब नगर पर आक्रमण कर रही है। यहोवा तूने कहा था कि यह होगा, और अब तू देखता है कि यह घटित हो रहा है।

[25]"मेरे स्वामी यहोवा, वे सभी बुरी घटनायें घटित हो रही हैं। किन्तु तू अब मुझसे कह रहा है, 'यिर्मयाह, चाँदी से खेत खरीदो और खरीद की साक्षी के लिये कुछ लोगों को चुनो।' तू यह उस समय कह रहा है जब बाबुल की सेना नगर पर अधिकार करने को तैयार है। मैं अपने धन को उस तरह बरबाद क्यों करुँ?"

[26]तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला: [27]"यिर्मयाह, मैं यहोवा हूँ। मैं पृथ्वी के हर एक व्यक्ति का परमेश्वर हूँ। यिर्मयाह, तुम जानते हो कि मेरे लिये कुछ भी असंभव नहीं है।" [28]यहोवा ने यह भी कहा, "मैं शीघ्र ही यरूशलेम नगर को बाबुल की सेना और बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को दे दूँगा। वह सेना नगर पर अधिकार कर लेगी। [29]बाबुल की सेना पहले से ही यरूशलेम नगर पर आक्रमण कर रही है। वे शीघ्र ही नगर में प्रवेश करेंगे और आग लगा देंगे। वे इस नगर को जला कर राख कर देंगे। इस नगर में ऐसे मकान हैं जिनमें यरूशलेम के लोगों ने असत्य देवता बाल को छतों पर बलि भेंट दे कर मुझे क्रोधित किया है और लोगों ने अन्य देवमूर्तियों को मदिरा भेंट चढ़ाई। बाबुल की सेना उन मकानों को जला देगी। [30]मैंने इस्राएल और यहूदा के लोगों पर नजर रखी है। वे जो कुछ करते हैं, बुरा है। वे तब से बुरा कर रहे हैं जब से वे युवा थे। इस्राएल के लोगों ने मुझे बहुत क्रोधित किया। उन्होंने मुझे क्रोधित किया क्योंकि उन्होंने उन देवमूर्तियों की पूजा की जिन्हें उन्होंने अपने हाथों से बनाया।" यह सन्देश यहोवा का है। [31]"जब से यरूशलेम नगर बसा तब से अब तक इस नगर के लोगों ने मुझे क्रोधित किया है। इस नगर ने मुझे इतना क्रोधित किया है कि मुझे इसे अपनी नजर के सामने से दूर कर देना चाहिये। [32]यहूदा

और इस्राएल के लोगों ने जो बुरा किया है, उसके लिये, मैं यरूशलेम को नष्ट करूँगा। जनसाधारण उनके राजा, प्रमुख, उनके याजक और नबी यहूदा के पुरुष और यरूशलेम के लोग, सभी ने मुझे क्रोधित किया है।

[33]"उन लोगों को सहायता के लिये मेरे पास आना चाहिये था। लेकिन उन्होने मुझसे अपना मुँह मोड़ा। मैंने उन लोगों को बार–बार शिक्षा देनी चाही किन्तु उन्होंने मेरी एक न सुनी। मैंने उन्हें सुधारना चाहा किन्तु उन्होंने अनसुनी की। [34]उन लोगों ने अपनी देवमूर्तियाँ बनाई हैं और मैं उन देवमूर्तियों से घृणा करता हूँ। वे उन देवमूर्तियों को उस मन्दिर में रखते हैं जो मेरे नाम पर है। इस तरह उन्होंने मेरे मन्दिर को अपवित्र किया है।

[35]"बेनहिन्नोम की घाटी में उन लोगों ने असत्य देवता बाल के लिये उच्च स्थान बनाए। उन्होंने वे पूजा स्थान अपने पुत्र–पुत्रियों को शिशु बलिभेंट के रुप में जला सकने के लिये बनाए। मैंने उनको कभी ऐसे भयानक काम करने के लिये आदेश नहीं दिये। मैंने यह कभी सोचा तक नहीं कि यहूदा के लोग ऐसा भयंकर पाप करेंगे।

[36]"तुम सभी लोग कहते हो, 'बाबुल का राजा यरूशलेम पर अधिकार कर लेगा। वह तलवार, भुखमरी और भयंकर बीमारी का उपयोग इस नगर को पराजित करने के लिये करेगा।' किन्तु यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर कहता है, [37]'मैंने इस्राएल और यहूदा के लोगों को अपना देश छोड़ने को विवश किया है। मैं उन लोगों पर बहुत क्रोधित था। किन्तु मैं उन्हें इस स्थान पर वापस लाऊँगा। मैं उन्हें उन देशों से इकट्ठा करुँगा जिनमें जाने के लिये मैंने उन्हें विवश किया। मैं उन्हें इस देश में वापस लाऊँगा। मैं उन्हें शान्तिपूर्वक और सुरक्षित रहने दूँगा। [38]इस्राएल और यहूदा के लोग मेरे अपने लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा। [39]वे एक उद्देश्य रखेंगे सच ही, जीवन भर मेरी उपासना करना चाहेंगे। उनके लिये शुभ होगा और उनके बाद उनके परिवारों के लिये भी शुभ होगा।

[40]"'मैं इस्राएल और यहूदा के लोगों के साथ एक वाचा करूँगा। यह वाचा सदैव के लिये रहेगी। इस वाचा के अनुसार मैं लोगों से कभी दूर नहीं जाऊँगा। मैं उनके लिये सदैव अच्छा रहूँगा। मैं उन्हें, अपना आदर करने के लिये इच्छुक बनाऊँगा। तब वे मुझसे कभी दूर नहीं हटेंगे। [41]वे मुझे प्रसन्न करेंगे। मैं उनका भला करने में आनन्दित होऊँगा और मैं, निश्चय ही, उन्हें इस धरती में बसाऊँगा और उन्हें बढ़ाऊँगा। यह मैं अपने पूरे हृदय और आत्मा से करूँगा।'"

[42]यहोवा जो कहता है, वह यह है, "मैंने इस्राएल और यहूदा के लोगों पर यह बड़ी विपत्ति ढाई है। इसी तरह मैं उन्हें अच्छी चीजें दूँगा। मैं उन्हें अच्छी चीजें करने का वचन देता हूँ। [43]तुम लोग यह कहते हो, 'यह देश सूनी मरूभूमि है। यहाँ कोई व्यक्ति और कोई जानवर नहीं हैं। बाबुल की सेना ने इस देश को पराजित किया।' किन्तु भविष्य में लोग फिर इस देश में भूमि खरीदेंगे। [44]लोग अपने धन का उपयोग करेंगे और खेत खरीदेंगे। वे अपनी वाचाओं पर हस्ताक्षर के साक्षी होंगे। लोग उस प्रदेश में फिर खेत खरीदेंगे जिसमें बिन्यामीन परिवार समूह के लोग रहते हैं। वे यरूशलेम क्षेत्र के चारों ओर खेत खरीदेंगे। वे यहूदा प्रदेश के नगरों, पहाड़ी प्रदेश, पश्चिमी पर्वत चरण, और दक्षिणी मरुभूमि के क्षेत्र में खेत खरीदेंगे। यह होगा, क्योंकि मैं तुम्हारे लोगों को वापस लाऊँगा।'" यह सन्देश यहोवा का है।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा

33 यिर्मयाह को दूसरी बार यहोवा का सन्देश मिला। यिर्मयाह अभी भी रक्षक प्रांगण में ताले के अन्दर बन्दी था। [2]यहोवा ने पृथ्वी को बनाया और उसकी वह रक्षा करता है। उसका नाम यहोवा है। यहोवा कहता है, [3]"यहूदा, मुझसे प्रार्थना करो और मैं उसे पूरा करुँगा। मैं तुम्हें महत्वपूर्ण रहस्य बताऊँगा। तुमने उन्हें कभी पहले नहीं सुना है। [4]इस्राएल का परमेश्वर यहोवा है। यहोवा यरूशलेम के मकानों और यहूदा के राजाओं के महलों के बारे में यह कहता है। शत्रु उन मकानों को ध्वस्त कर देगा। शत्रु नगर की चहारदीवारियों के ऊपर तक ढाल बनायेगा। शत्रु तलवार का उपयोग करेगा और इन नगरों के लोगों के साथ युद्ध करेगा।

[5]"यरूशलेम के लोगों ने बहूत बुरे काम किये हैं। मैं उन लोगों पर क्रोधित हूँ। मैं उनके विरुद्ध हो गया हूँ। इसलिये वहाँ मैं असंख्य लोगों को मार डालूँगा। बाबुल की सेना यरूशलेम के विरुद्ध लड़ने के लिये आएगी। यरूशलेम के घरों में असंख्य शव होंगे।

[6]"किन्तु उसके बाद मैं उस नगर में लोगों को स्वस्थ बनाऊँगा। मैं उन लोगों को शान्ति और सुरक्षा का आनन्द लेने दूँगा। [7]मैं इस्राएल और यहूदा में फिर से सब कुछ अच्छा घटित होने दूँगा। मैं उन लोगों को अतीत की तरह शक्तिशाली बनाऊँगा। [8]उन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किये, किन्तु मैं उस पाप को धो दूँगा। वे मेरे विरुद्ध लड़े, किन्तु मैं उन्हें क्षमा कर दूँगा। [9]तब यरूशलेम आश्चर्यचकित करने वाला स्थान हो जायेगा। लोग सुखी होंगे और अन्य राष्ट्रों के लोग इसकी प्रशंसा करेंगे। यह उस समय होगा जब लोग यह सुनेंगे कि वहाँ सब अच्छा हो रहा है। वे उन अच्छे कामों को सुनेंगे जिन्हें मैं यरूशलेम के लिये कर रहा हूँ।

[10]"तुम लोग यह कह रहे हो, 'हमारा देश सूनी मरुभूमि हैं। वहाँ कोई व्यक्ति या कोई जानवर जीवित नहीं रहे।' अब यरूशलेम की सड़कों और यहूदा के नगरों में निर्जन शान्ति है। किन्तु वहाँ शीघ्र ही चहल–पहल होगी। [11]वहाँ सुख और आनन्द की किलोलें होंगी। वहाँ वर–वधु की उमंग भरी चुहल होगी। वहाँ यहोवा के मन्दिर में अपनी भेंट लाने वालें की मधुर वाणी होगी। वे लोग कहेंगे, सर्वशक्तिमान यहोवा की स्तुति करो! यहोवा दयालु है! यहोवा की दया सदा बनी रहती है! लोग ये बातें कहेंगे क्योंकि मैं फिर यहूदा के लिये अच्छे काम करूँगा। यह वैसा ही होगा जैसा आरम्भ में था।" ये बातें यहोवा ने कही।

[12]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "यह स्थान अब सूना है। यहाँ कोई लोग या जानवर नहीं रह रहें। किन्तु अब यहूदा के सभी नगरों में लोग रहेंगे। वहाँ गडरिये होंगे और चरागाहें होंगी जहाँ वे अपनी रेवड़ों को आराम करने देंगे। [13]गड़ेरिये अपनी भेड़ों को तब गिनते है जब भेड़ें उनके आगे चलती हैं। लोग अपैनी भेड़ों को पूरे देश में चारों ओर पहाड़ी प्रदेश, पश्चिमी पर्वत चरण, नेगव और यहूदा के सभी नगरों में गिनेंगे।"

अच्छी शाखा

[14]यह सन्देश यहोवा का है: "मैंने इस्राएल और यहूदा के लोगों को विशेष वचन दिया है। वह समय आ रहा है जब मैं वह करूँगा जिसे करने का वचन मैंने दिया है। [15]उस समय मैं दाऊद के परिवार से एक अच्छी शाखा उत्पन्न करूँगा। वह अच्छी शाखा वह सब करेगी जो देश के लिये अच्छा और उचित होगा। [16]इस शाखा के समय यहूदा के लोगों की रक्षा हो जाएगी। लोग यरूशलेम में सुरक्षित रहेंगे। उस शाखा का नाम 'यहोवा हमारी धार्मिकता (विजय) हैं।'"

[17]यहोवा कहता है, "दाऊद के परिवार का कोई न कोई व्यक्ति सदैव सिंहासन पर बैठेगा और इस्राएल के परिवार पर शासन करेगा [18]और लेवी के परिवार से याजक सदैव होंगे। वे याजक मेरे सामने सदा रहेंगे और मुझे होमबलि, अन्नबलि, और बलिभेंट करेंगे।"

[19]यहोवा का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला। [20]यहोवा कहता है, "मैंने रात और दिन से वाचा की है। मैंने वाचा की कि वह सदैव रहेगी। तुम उस वाचा को बदल नहीं सकते। दिन और रात सदा ठीक समय पर आएंगे। यदि तुम उस वाचा को बदल सकते हो [21]तो तुम दाऊद और लेवी के साथ की गई मेरी वाचा को भी बदल सकते हो। तब दाऊद और लेवी के परिवार के वंशज राजा और पुरोहित नहीं हो सकेंगे। [22]किन्तु मैं अपने सेवक दाऊद को और लेवी के परिवार समूह को अनेक वंशज दूँगा। वे उतने होंगे जितने आकाश में तारे हैं, और आकाश के तारों को कोई गिन नहीं सकता और वे इतने होंगे जितने सागर तट पर बालू के कण होते हैं और उन बालू के कणों को कोई गिन नहीं सकता।"

[23]यहोवा का यह सन्देश यिर्मयाह ने प्राप्त किया: [24]"यिर्मयाह, क्या तुमने सुना है कि लोग क्या कह रहे हैं? वे लोग कह रहे हैं: यहोवा ने इस्राएल और यहूदा के दो परिवारों को अस्वीकार कर दिया है। यहोवा ने उन लोगों को चुना था, किन्तु अब वह उन्हें राष्ट्र के रूप में भी स्वीकार नहीं करता।'"

[25]यहोवा कहता है, "यदि मेरी वाचा दिन और रात के साथ बनी नहीं रहती, और यदि मैं आकाश और पृथ्वी के लिये नियम नहीं बनाता, तभी संभव है कि मैं उन लोगों को छोड़ूँ। [26]तभी यह संभव होगा कि मैं याकूब के वंशजों से दूर हट जाऊँ और तभी यह हो सकता है कि मैं दाऊद के वंशजों को इब्राहीम, इसहाक और याकूब के वंशजों पर शासन करने न दूँ। किन्तु दाऊद मेरा सेवक है और मैं उन लोगों पर दया करूँगा और मैं फिर उन लोगों को उनकी धरती पर वापस लौटा लाऊँगा।"

यहूदा के राजा सिदकिय्याह को चेतावनी

34 यहोवा का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह सन्देश उस समय मिला जब बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर यरूशलेम और उसके चारों ओर के सभी नगरों से युद्ध कर रहा था। नबूकदनेस्सर अपने साथ अपनी सारी सेना और शासित राज्यों तथा साम्राज्य के लोगों को मिलाये हुए था।

[2]सन्देश यह था: "यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर जो कहता है, वह यह है: "यिर्मयाह, यहूदा के राजा सिदकिय्याह के पास जाओ और उसे यह सन्देश दो: 'सिदकिय्याह, यहोवा जो कहता है, वह यह है: मैं यरूशलेम नगर को बाबुल के राजा को शीघ्र ही दे दूँगा और वह उसे जला डालेगा। [3]सिदकिय्याह, तुम बाबुल के राजा से बचकर निकल नहीं पाओगे। तुम निश्चय ही पकड़े जाओगे और उसे दे दिये जाओगे। तुम बाबुल के राजा को अपनी आँखों से देखोगे। वह तुमसे आमने-सामने बातें करेगा और तुम बाबुल जाओगे। [4]किन्तु यहूदा के राजा सिदकिय्याह यहोवा के दिये वचन को सुनो। यहोवा तुम्हारे बारे में जो कहता है, वह यह है: तुम तलवार से नहीं मारे जाओगे। [5]तुम शान्तिपूर्वक मरोगे। तुम्हारे राजा होने से पहले जो राजा राज्य करते थे तुम्हारे उन पूर्वजों के सम्मान के लिये लोगों ने अग्नि तैयार की। उसी प्रकार तुम्हारे सम्मान के लिये लोग अग्नि बनायेंगे। वे तुम्हारे लिये रोएंगे। वे शोक में डूबे हुए कहेंगे, 'हे स्वामी, मैं स्वयं तुम्हें यह वचन देता हूँ। यह सन्देश यहोवा का है।'"

[6]अत: यिर्मयाह ने यहोवा का सन्देश यरूशलेम में सिदकिय्याह को दिया। [7]यह उस समय हुआ जब बाबुल के राजा की सेना यरूशलेम के विरुद्ध लड़ रही थी। बाबुल की सेना यहूदा के उन नगरों के विरुद्ध भी लड़ रही थी जिन पर अधिकार नहीं हो सका था। वे लाकीश और अजेका नगर थे। वे ही केवल किलाबन्द नगर थे जो यहूदा प्रदेश में बचे थे।

लोगों ने वाचाओं में से एक को तोड़ा

[8]सिदकिय्याह ने यरूशलेम के सभी निवासियों से यह वाचा की थी कि मैं सभी यहूदी दासों को मुक्त कर दूँगा। जब सिदकिय्याह ने वह वाचा कर ली, उसके बाद यिर्मयाह को यहोवा का सन्देश मिला। [9]हर व्यक्ति से आशा की जाती है कि वह अपने यहूदी दासों को स्वतन्त्र करे। सभी यहूदी दास-दासी स्वतन्त्र किये जाने थे। यहूदा के परिवार समूह के किसी भी व्यक्ति को दास रखने की संभावना किसी भी व्यक्ति से नहीं की जा सकती थी। [10]अत: सभी प्रमुखों और यहूदा के सभी लोगों ने इस वाचा को स्वीकार किया था। हर एक व्यक्ति अपने दास-दासियों को स्वतन्त्र कर देगा और उन्हें और अधिक समय तक दास के रूप में नहीं रखेगा। हर एक व्यक्ति सहमत था और इस प्रकार सभी दास स्वतन्त्र कर दिये गये। [11]किन्तु उसके बाद उन लोगों ने जिनके पास दास थे, अपने निर्णय को बदला दिया। अत: उन्होंने स्वतन्त्र किये गये लोगों को फिर पकड़ लिया और उन्हें दास बनाया।

[12]तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला: [13]यिर्मयाह, यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर जो कहता है वह यह है: "मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाया जहाँ वे दास थे। जब मैंने ऐसा किया तब मैंने उनसे एक वाचा की। [14]मैंने तुम्हारे पूर्वजों से कहा, 'हर एक सात वर्ष के अन्त में प्रत्येक व्यक्ति को अपने यहूदी दासों को स्वतन्त्र कर देना चाहिये। यदि तुम्हारे यहाँ तुम्हारा ऐसा यहूदी साथी है जो अपने को तुम्हारे हाथ बेच चुका है तो तुम्हें उसे छ: महीने सेवा के बाद स्वतन्त्र कर देना चाहिये।' किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने न तो मेरी सुनी, न ही उस पर ध्यान दिया। [15]कुछ समय पहले तुमने अपने हृदय को, जो उचित है, उसे करने के लिये बदला। तुममें से हर एक ने अपने उन यहूदी साथियों को स्वतन्त्र किया जो दास थे और तुमने मेरे सामने उस मन्दिर में जो मेरे नाम पर है एक वाचा भी की। [16]किन्तु अब तुमने अपने इरादे बदल दिये हैं। तुमने यह प्रकट किया है कि तुम मेरे नाम का सम्मान नहीं करते। तुमने यह कैसे किया? तुम में से हर एक ने अपने दास दासियों को वापस ले लिया है जिन्हें तुमने स्वतन्त्र किया था। तुम लोगों ने उन्हें फिर दास होने के लिये विवश किया है।

[17]"अत: जो यहोवा कहता है, वह यह है: 'तुम लोगों ने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया है। तुमने अपने साथी यहूदियों को स्वतन्त्रता नहीं दी है। क्योंकि तुमने यह वाचा पूरी नहीं की है, इसलिये मैं "स्वतन्त्रता" दूँगा।' यह यहोवा का सन्देश है। "तलवार से, भयंकर बीमारी से और भूख से मारे जाने की स्वतन्त्रता मैं दूँगा। मै तुम्हें कुछ ऐसा कर दूँगा कि जब वे तुम्हारे बारे में सुनेंगे तो पृथ्वी के सारे राज्य भयभीत हो उठेंगे। [18]मैं उन लोगों को दूसरों के

हाथ दूँगा जिन्होंने मेरी वाचा को तोड़ा है और उस प्रतिज्ञा का पालन नहीं किया है जिसे उन्होंने मेरे सामने की है। इन लोगों ने मेरे सामने एक बछड़े को दो टुकड़ों में काटा और वे दोनों टुकड़ों के बीच से गुजरे। [19]ये वे लोग हैं जो उस समय बछड़े के टुकड़ों के बीच से गुजरे जब उन्होंने मेरे साथ वाचा की थी: यहूदा और यरूशलेम के प्रमुख, न्यायालयों के बड़े अधिकारी, याजक और उस देश के लोग। [20]अत: मैं उन लोगों को उनके शत्रुओं और उन व्यक्तियों को दूँगा जो उन्हें मार डालना चाहते हैं। उन व्यक्तियों के शव हवा में उड़ने वाले पक्षियों और पृथ्वी पर के जंगली जानवरों के भोजन बनेंगे। [21]मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह और उसके प्रमुखों को उनके शत्रुओं एवं जो उन्हें मार डालना चाहते हैं, को दूँगा। मैं सिदकिय्याह और उनके लोगों को बाबुल के राजा की सेना को तब भी दूँगा जब वह सेना यरूशलेम को छोड़ चुकी होगी। [22]किन्तु मैं कसदी सेना को यरूशलेम में फिर लौटने का आदेश दूँगा। यह सन्देश यहोवा का है। वह सेना यरूशलेम के विरुद्ध लड़ेगी। वे इस पर अधिकार करेंगे, इसमें आग लगायेंगे तथा इसे जला डालेंगे और मैं यहूदा के नगरों को नष्ट कर दूँगा। वे नगर सूनी मरुभूमि हो जायेंगे। वहाँ कोई व्यक्ति नहीं रहेगा।'"

रेकाबी परिवार का उत्तम उदाहरण

35 जब यहोयाकीम यहूदा का राजा था तब यहोवा का सन्देश यर्मयाह का मिला। यहोयाकीम राजा योशिय्याह का पुत्र था। यहोवा का सन्देश यह था: [2]"यिर्मयाह, रेकाबी परिवार के पास जाओ। उन्हें यहोवा के मन्दिर के बगल के कमरों में से एक में आने के लिये निमन्त्रित करो। उन्हें पीने के लिये दाखमधु दो।"

[3]अत: मैं (यिर्मयाह) याजन्याह से मिलने गया। याजन्याह उस यिर्मयाह नामक एक व्यक्ति का पुत्र था जो हबस्सिन्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था और मैं याजन्याह के सभी भाइयों और पुत्रों से मिला। मैंने पूरे रेकाबी परिवार को एक साथ इकट्ठा किया। [4]तब मैं रेकाबी परिवार को यहोवा के मन्दिर में ले आया। हम लोग उस कमरे में गये जो हानान के पुत्रों का कहा जाता है। हानान यिग्दल्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था। हानान परमेश्वर का व्यक्ति था। वह कमरा उस कमरे से अगला कमरा था जिसमें यहूदा के राजकुमार ठहरते थे। यह शल्लूम के पुत्र मासेयाह के कमरे के ऊपर था। मासेयाह मन्दिर में द्वारपाल था। [5]तब मैंने (यिर्मयाह) रेकाबी परिवार के सामने कुछ प्यालों के साथ दाखमधु से भरे कुछ कटोरे रखे और मैंने उनसे कहा, "थोड़ी दाखमधु पीओ।"

[6]किन्तु रेकाबी लोगों ने उत्तर दिया, "हम दाखमधु कभी नहीं पीते। हम इसलिये नहीं पीते क्योंकि हमारे पूर्वज रेकाबी के पुत्र योनादाब ने यह आदेश दिया था: 'तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को दाखमधु कभी नहीं पीनी चाहिये [7]तुम्हें कभी घर बनाना, पौधे रोपना और अंगूर की बेल नहीं लगानी चाहिये। तुम्हें उनमे से कुछ भी नहीं करना चाहिये। तुम्हें केवल तम्बुओं में रहना चाहिये। यदि तुम ऐसा करोगे तो उस प्रदेश में अधिक समय तक रहोगे जहाँ तुम एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हो।' [8]इसलिये हम रेकाबी लोग उन सब चीजों का पालन करते हैं जिन्हें हमारे पूर्वज योनादाब ने हमें आदेश दिया है। [9]हम दाखमधु कभी नहीं पीते और हमारी पत्नियाँ पुत्र और पुत्रियाँ दाखमधु कभी नहीं पीते। हम रहने के लिये घर कभी नहीं बनाते और हम लोगों के अंगूर के बाग या खेत कभी नहीं होते और हम फसलें कभी नहीं उगाते। [10]हम तम्बूओं में रहे हैं और वह सब माना है जो हमारे पूर्वज योनादाब ने आदेश दिया है। [11]किन्तु जब बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा देश पर आक्रमण किया तब हम लोग यरूशलेम को गए। हम लोगों ने आपस में कहा, 'आओ हम यरूशलेम नगर में शरण लें जिससे हम कसदी और अरामी सेना से बच सकें।' अत: हम लोग यरूशलेम में ठहर गए।"

[12]तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला: [13]इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: "यिर्मयाह, जाओ यहूदा एवं यरूशलेम के लोगों को यह सन्देश दो: लोगों, तुम्हें सबक सीखना चाहिये और मेरे सन्देश का पालन करना चाहिये:" यह सन्देश यहोवा का है। [14]"रेकाब के पुत्र योनादाब ने अपने पुत्रों को आदेश दिया कि वे दाखमधु न पीएं, और उस आदेश का पालन हुआ है। आज तक योनादाब के वंशजों ने अपने पूर्वज के आदेश का पालन किया है। वे दाखमधु नहीं पीते। किन्तु मैं तो यहोवा हूँ और यहूदा के लोगों, मैंने तुम्हें बार बार सन्देश दिया है, किन्तु तुमने उसका पालन नहीं किया। [15]इस्राएल और यहूदा के लोगों, मैंने अपने सेवक

नबियों को तुम्हारे पास भेजा। मैंने उन्हें तुम्हारे पास बार बार भेजा। उन नबियों ने तुमसे कहा, 'इस्राएल और यहूदा के लोगों, तुम सब को बुरा करना छोड़ देना चाहिये। तुम्हें अच्छा होना चाहिये। अन्य देवताओं का अनुसरण न करो। उन्हें न पूजो, न ही उनकी सेवा करो। यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे तो तुम उस देश में रहोगे जिसे मैंने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को दिया है।' किन्तु तुम लोगों ने मेरे सन्देश पर ध्यान नहीं दिया। [16]योनादाब के वंशजों ने अपने पूर्वज के आदेश को, जो उसने दिया, माना। किन्तु यहूदा के लोगों ने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया।"

[17]अत: इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: "मैंने कहा कि यहूदा और यरूशलेम के लिये बहुत सी बुरी घटनायें घटेंगी। मैं उन बुरी घटनाओं को शीघ्र ही घटित कराऊँगा। मैंने उन लोगों को समझाया, किन्तु उन्होंने मेरी एक न सुनी। मैंने उन्हें पुकारा, किन्तु उन्होंने उत्तर नहीं दिया।"

[18]तब यिर्मयाह ने रेकाबी परिवार के लोगों से कहा, "इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'तुम लोगों ने अपने पूर्वज योनादाब के आदेश का पालन किया है। तुमने योनादाब की सारी शिक्षाओं का अनुसरण किया है। तुमने वह सब किया है जिसके लिये उसने आदेश दिया था। [19]इसलिये इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: रेकाब के पुत्र योनादाब के वंशजों में से एक ऐसा सदैव होगा जो मेरी सेवा करेगा।'"

राजा यहोयाकीम यिर्मयाह के पत्रकों को जला देता है

36 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह योशिय्याह के पुत्र यहोयाकीम के यहूदा में राज्यकाल के चौथे वर्ष हुआ। यहोवा का सन्देश यह था: [2]"यिर्मयाह, पत्रक लो और उन सन्देशों को उस पर लिख डालो जिन्हें मैंने तुमसे कहे है। मैंने तुमसे इस्राएल और यहूदा के राष्ट्रों एवं सभी राष्ट्रों के बारे में बातें की हैं। जब से योशिय्याह राजा था तब से अब तक मैंने जो सन्देश तुम्हें दिये हैं, उन्हें लिख डालो। [3]संभव है, यहूदा का परिवार यह सुने कि मैं उनके लिये क्या करने की योजना बना रहा हूँ और संभव है वे बुरा काम करना छोड़ दें। यदि वे ऐसा करेंगे तो मैं उन्हें, जो बुरे पाप उन्होंने किये हैं, उसके लिये क्षमा कर दूँगा।"

[4]इसलिये यिर्मयाह ने बारुक नामक एक व्यक्ति को बुलाया। बारुक, नेरिय्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था। यिर्मयाह ने उन सन्देशों को कहा जिन्हें यहोवा ने उसे दिया था। जिस समय यिर्मयाह सन्देश दे रहा था उसी समय बारुक उन्हें पत्रक पर लिख रहा था। [5]तब यिर्मयाह ने बारुक से कहा, "मैं यहोवा के मन्दिर में नहीं जा सकता। मुझे वहाँ जाने की आज्ञा नहीं है। [6]इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम यहोवा के मन्दिर में आओ। वहाँ उपवास के दिन जाओ और पत्रक से लोगों को सुनाओ। उन सन्देशों को जिन्हें यहोवा ने तुम्हें दिया और जिनको तुमने पत्रक में लिखा, उन्हें लोगों के सामने पढ़ो। उन सन्देशों को यहूदा के सभी लोगों के सामने पढ़ो जो अपने रहने के नगरों से यरूशलेम में आएं। [7]शायद वे लोग यहोवा से सहायता की याचना करें। कदाचित् हर एक व्यक्ति बुरा काम करना छोड़ दे। यहोवा ने यह घोषित कर दिया है कि वह उन लोगों पर बहुत क्रोधित है।" [8]अत: नेरिय्याह के पुत्र बारुक ने वह सब किया जिसे यिर्मयाह नबी ने करने को कहा। बारुक ने उस पत्रक को जोर से पढ़ा जिसमें यहोवा के सन्देश लिखे थे। उसने इसे यहोवा के मन्दिर में पढ़ा।

[9]यहोयाकीम के राज्यकाल के पाँचवें वर्ष के नवें महीने में एक उपवास घोषित हुआ। यह आज्ञा थी कि यरूशलेम में रहने वाले सभी लोग और यहूदा के नगरों से यरूशलेम में आने वाले लोग यहोवा के सामने उपवास रखेंगे। [10]उस समय बारुक ने उस पत्रक को पढ़ा जिसमें यिर्मयाह के कथन थे। उसने पत्रक को यहोवा के मन्दिर में पढ़ा। बारुक ने पत्रक को उन सभी लोगों के सामने पढ़ा जो यहोवा के मन्दिर में थे। बारुक उस समय ऊपरी आँगन में यमरिया के कमरे में था। वह पत्रक को पढ़ रहा था। वह कमरा मन्दिर के नये द्वार के पास स्थित था। यमरिया शापान का पुत्र था। यमरिया मन्दिर में एक शास्त्री था।

[11]मीकायाह नामक एक व्यक्ति ने यहोवा के उन सारे सन्देशों को सुना जिन्हें बारुक ने पत्रक से पढ़ा। मीकायाह उस गमर्याह का पुत्र था जो शापान का पुत्र था। [12]जब मीकायाह ने पत्रक से सन्देश को सुना तो वह राजा के महल में सचिव के कमरे में गया। राजकीय सभी अधिकारी राजमहल में बैठे थे। उन अधिकारियों के नाम ये हैं: सचिव एलीशामा, शमायाह का पुत्र दलायाह, अबबोर का

पुत्र एलनातान, शापान का पुत्र गमर्याह, हनन्याह का पुत्र सिदकिय्याह और अन्य सभी राजकीय अधिकारी भी वहाँ थे। [13]मीकायाह ने उन अधिकारियों से वह सब कहा जो उसने बारुक को पत्रक से पढ़ते सुना था।

[14]तब उन अधिकारियों ने बारुक के पास यहूदी नामक एक व्यक्ति को भेजा। यहूदी शेलेम्याह के पुत्र नतन्याह का पुत्र था। शेलेम्याह कूशी का पुत्र था। यहूदी ने बारुक से कहा, "वह पत्रक तुम लाओ जिसे तुमने पढ़ा और मेरे साथ चलो"

नेरिय्याह के पुत्र बारुक ने पत्रक को लिया और यहूदी के साथ अधिकारियों के पास गया।

[15]तब उन अधिकारियों ने बारुक से कहा, "बैठो और पत्रक को हम लोगों के सामने पढ़ो।"

अत: बारुक ने उस पत्रक को उन्हें सुनाया।

[16]उन राजकीय अधिकारियों ने उस पत्रक से सभी सन्देश सुने। तब वे डर गए और एक दूसरे को देखने लगे। उन्होंने बारुक से कहा, "हमें पत्रक के सन्देश के बारे में राजा यहोयाकीम से कहना होगा।" [17]तब अधिकारियों ने बारुक से एक प्रश्न किया। उन्होंने पूछा, "बारुक यह बताओ कि तुमने ये सन्देश कहाँ से पाए जिन्हें तुमने इस पत्रक पर लिखा? क्या तुमने उन सन्देशों को लिखा जिन्हें यिर्मयाह ने तुम्हें बताया?"

[18]बारुक ने उत्तर दिया, "हाँ, यिर्मयाह ने कहा और मैंने सारे सन्देशों को स्याही से इस पत्रक पर लिखा।"

[19]तब राजकीय अधिकारियों ने बारुक से कहा, "तुम्हें और यिर्मयाह को कहीं जा कर छिप जाना चाहिये। किसी से न बताओ कि तुम कहाँ छिपे हो।"

[20]तब राजकीय अधिकारियों ने शास्त्री एलीशामा कमरे में पत्रक को रखा। वे राजा यहोयाकीम के पास गए और पत्रक के बारे में उसे सब कुछ बताया। [21]अत: राजा यहोयाकीम ने यहूदी को पत्रक को लेने भेजा। यहूदी शास्त्री एलीशामा के कमरे से पत्रक को लाया। तब यहूदी ने राजा और उसके चारों ओर खड़े सभी सेवकों को पत्रक को पढ़ कर सुनाया। [22]यह जिस समय हुआ, नवाँ महीना था, अत: राजा यहोयाकीम शीतकालीन महल– खण्ड में बैठा था। राजा के सामने अंगीठी में आग जल रही थी। [23]यहूदी ने पत्रक से पढ़ना आरम्भ किया। किन्तु जब वह दो या तीन पक्तियाँ पढ़ता, राजा यहोयाकीम पत्रक को पकड़ लेता था। तब वह उन पक्तियों को एक छोटे चाकू से पत्रक में से काट डालता था और उन्हें अंगीठी में फेंक देता था। अन्तत: पूरा पत्रक आग में जला दिया गया [24]जब राजा यहोयाकीम और उसके सेवकों ने पत्रक से सन्देश सुने तो वे डरे नहीं। उन्होंने अपने वस्त्र यह प्रकट करने के लिए नहीं फाड़े कि उन्हें अपने बुरे किये कामों के लिये दु:ख है।

[25]एलनातान, दलइया और यिर्मयाह ने राजा यहोयाकीम से पत्रक को न जलाने के लिये बात करने का प्रयत्न किया। किन्तु राजा ने उनकी एक न सुनी [26]और राजा यहोयाकीम ने कुछ व्यक्तियों को आदेश दिया कि वे शास्त्री बारुक और यिर्मयाह नबी को बन्दी बनायें। ये व्यक्ति राजा का एक पुत्र अज्राएल का पुत्र सरायाह और अब्देल का पुत्र शेलेम्याह थे। किन्तु वे व्यक्ति बारुक और यिर्मयाह को न ढूंढ सके क्योंकि यहोवा ने उन्हें छिपा दिया था।

[27]यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह तब हुआ जब यहोयाकीम ने यहोवा के उन सभी सन्देशों वाले पत्रक को जला दिया था, जिन्हें यिर्मयाह ने बारुक से कहा था और बारुक ने सन्देशों को पत्रक पर लिखा था। यहोवा का जो सन्देश यिर्मयाह को मिला, वह यह था:

[28]"यिर्मयाह, दूसरा पत्रक तैयार करो। इस पर उन सभी सन्देशों को लिखो जो प्रथम पत्रक पर थे। यानि वही पत्रक जिसे यहूदा के राजा यहोयाकीम ने जला दिया था। [29]यिर्मयाह, यहूदा के राजा यहोयाकीम से यह भी कहो, यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'यहोयाकीम तुमने उस पत्रक को जला दिया। तुमने कहा, "यिर्मयाह ने क्यों लिखा कि बाबुल का राजा निश्चय ही आएगा और इस देश को नष्ट करेगा? वह क्यों कहता है कि बाबुल का राजा इस देश के लोगों और जानवरों दोनों को नष्ट करेगा?" [30]अत: यहूदा के राजा यहोयाकीम के बारे में जो यहोवा कहता है, वह यह है: यहोयाकीम के वंशज दाऊद के राज सिंहासन पर नहीं बैठेंगे। जब यहोयाकीम मरेगा उसे राजा जैसे अन्त्येष्टि नहीं दी जाएगी, अपितु उसका शव भूमि पर फेंक दिया जायेगा। उसका शव दिन की गर्मी में और रात के ठंडे पाले में छोड़ दिया जाएगा। [31]यहोवा अर्थात मैं यहोयाकीम और उसकी सन्तान को दण्ड दूँगा और मैं उसके अधिकारियों को दण्ड दूँगा। मैं यह करूँगा क्योंकि वे दुष्ट हैं। मैंने उन पर तथा यरूशलेम के सभी निवासियों पर और यहूदा के लोगों पर भयंकर

विपत्ति ढाने की प्रतिज्ञा की है। मैं अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उन पर सभी बुरी विपत्तियाँ ढाऊँगा क्योंकि उन्होंने मेरी अनसुनी की है।'"

[32]तब यिर्मयाह ने दूसरा पत्रक लिया और उसे नेरिय्याह के पुत्र शास्त्री बारुक को दिया। जैसे यिर्मयाह बोलता जाता था वैसे ही बारुक उन्हीं सन्देशों को पत्रक पर लिखता जाता था जो उस पत्रक पर थे जिसे राजा यहोयाकीम ने आग में जला दिया था और उन्हीं सन्देशों की तरह बहुत सी अन्य बातें दूसरे पत्रक में जोड़ी गई।

यिर्मयाह बन्दीगृह में डाला गया

37 नबूकदनेस्सर बाबुल का राजा था। नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीम के पुत्र यकोन्याह के स्थान पर सिदकिय्याह को यहूदा का राजा नियुक्त किया। सिदकिय्याह राजा योशिय्याह का पुत्र था। [2]किन्तु सिदकिय्याह ने यहोवा के उन सन्देशों पर ध्यान नहीं दिया जिन्हें यहोवा ने यिर्मयाह नबी को उपदेश देने के लिये दिया था और सिदकिय्याह के सेवकों तथा यहूदा के लोगों ने यहोवा के सन्देश पर ध्यान नहीं दिया।

[3]राजा सिदकिय्याह ने यहूकल नामक एक व्यक्ति और याजक सपन्याह को यिर्मयाह नबी के पास एक सन्देश लेकर भेजा। यहूकल शेलेम्याह का पुत्र था। याजक सपन्याह मासेयाह का पुत्र था। जो सन्देश वे यिर्मयाह के लिये लाये थे वह यह है: "यिर्मयाह, हमारे परमेश्वर यहोवा से हम लोगों के लिये प्रार्थना करो।"

[4](उस समय तक, यिर्मयाह बन्दीगृह में नहीं डाला गया था, अत: जहाँ कहीं वह जाना चाहता था, जा सकता था। [5]उस समय ही फिरौन की सेना मिस्र से यहूदा को प्रस्थान कर चुकी थी। बाबुल सेना ने पराजित करने के लिये, यरूशलेम नगर के चारों ओर घेरा डाल रखा था। तब उन्होंने मिस्र से उनकी ओर कूच कर चुकी हुई सेना के बारे में सुना था। अत: बाबुल की सेना मिस्र से आने वाली सेना से लड़ने के लिये, यरूशलेम से हट गई थी।)

[6]यहोवा का सन्देश यिर्मयाह नबी को सन्देश मिला: [7]"इस्राएल के लोगों का परमेश्वर यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'यहूकल और सपन्याह मैं जानता हूँ कि यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने तुम्हें मेरे पास प्रश्न पूछने को भेजा है। राजा सिदकिय्याह को यह उत्तर दो, फिरौन की सेना यहाँ आने और बाबुल की सेना के विरुद्ध, तुम्हारी सहायता के लिये मिस्र से कूच कर चुकी है। किन्तु फिरौन की सेना मिस्र लौट जाएगी। [8]उसके बाद बाबुल की सेना यहाँ लौटेगी। यह यरूशलेम पर आक्रमण करेगी। तब बाबुल की वह सेना यरूशलेम पर अधिकार करेगी और उसे जला डालेगी।' [9]यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'यरूशलेम के लोगों, अपने को मूर्ख मत बनाओ। तुम आपस में यह मत कहो, बाबुल की सेना निश्चिय ही, हम लोगों को शान्त छोड़ देगी। वह नहीं छोड़ेगी। [10]यरूशलेम के लोगों, यदि तुम बाबुल की उस सारी सेना को ही क्यों न पराजित कर डालो जो तुम पर आक्रमण कर रही है, तो भी उनके डेरों में कुछ घायल व्यक्ति बच जाएंगे। वे थोड़े घायल व्यक्ति भी अपने डेरों से बाहर निकलेंगे और यरूशलेम को जलाकर राख कर देंगे।'"

[11]जब बाबुल सेना ने मिस्र के फिरौन की सेना के साथ युद्ध करने के लिये यरूशलेम को छोड़ा, [12]तब यिर्मयाह यरूशलेम से बिन्यामीन प्रदेश की यात्रा करना चाहता था। वहाँ वह अपने परिवार की कुछ सम्पत्ति के विभाजन में भाग लेने जा रहा था। [13]किन्तु जब यिर्मयाह यरूशलेम के बिन्यामीन द्वार पर पहुँचा तब रक्षकों के अधिकारी कप्तान ने उसे बन्दी बना लिया। कप्तान का नाम यिरिय्याह था। यिरिय्याह शेलेम्याह का पुत्र था। शेलेम्याह हनन्याह का पुत्र था। इस प्रकार कप्तान यिरिय्याह ने यिर्मयाह को बन्दी बनाया और कहा, "यिर्मयाह, तुम हम लोगों को बाबुल पक्ष में मिलने के लिये, छोड़ रहे हो।"

[14]यिर्मयाह ने यिरिय्याह से कहा, "यह सच नहीं है। मैं कसदियों के साथ मिलने के लिये नहीं जा रहा हूँ।" किन्तु यिरिय्याह ने यिर्मयाह की एक न सुनी। यिरिय्याह ने यिर्मयाह को बन्दी बनाया और उसे यरूशलेम के राजकीय अधिकारियों के पास ले गया। [15]वे अधिकारी यिर्मयाह पर बहुत क्रोधित थे। उन्होंने यिर्मयाह को पीटने का आदेश दिया। तब उन्होंने यिर्मयाह को बन्दी गृह में डाल दिया। बन्दीगृह योनातान नामक व्यक्ति के घर में था। योनातान यहूदा के राजा का शास्त्री था। योनातान का घर बन्दीगृह बना दिया गया था। [16]उन लोगों ने यिर्मयाह को योनातान के घर की एक कोठरी में रखा। वह कोठरी जमीन के नीचे कूप–गृह थी। यिर्मयाह उसमें लम्बे समय तक रहा।

[17]तब राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह को बुलवाया और उसे राजमहल में लाया गया। सिदकिय्याह ने यिर्मयाह

से एकान्त में बातें कीं। उसने यिर्मयाह से पूछा, "क्या यहोवा को कोई सन्देश है?"

यिर्मयाह ने उत्तर दिया, "हाँ, यहोवा का सन्देश है। सिदकिय्याह, तुम बाबुल के राजा के हाथ में दे दिये जाओगे।" [18]तब यिर्मयाह ने राजा सिदकिय्याह से कहा, "मैंने कौन सा अपराध किया है? मैंने कौन सा अपराध तुम्हारे, तुम्हारे अधिकारियों या यरूशलेम के विरुद्ध किया है? तुमने मुझे बन्दीगृह में क्यों फेंका? [19]राजा सिदकिय्याह, तुम्हारे नबी अब कहाँ है? उन नबियों ने तुम्हें झूठा सन्देश दिया। उन्होंने कहा, 'बाबुल का राजा तुम पर या यहूदा देश पर आक्रमण नहीं करेगा।' [20]किन्तु अब मेरे यहोवा, यहूदा के राजा, कृपया मेरी सुन। कृपया मेरा निवेदन अपने तक पहुँचने दे। मैं आपसे इतना माँगता हूँ। शास्त्री योनातान के घर मुझे वापस न भेजे। यदि आप मुझे वहाँ भेजेंगे मैं वहीं मर जाऊँगा।"

[21]अत: राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह के लिये आँगन में रक्षकों के संरक्षण में रहने का आदेश दिया और उसने यह आदेश दिया कि यिर्मयाह को सड़क पर रोटी बनाने वालों से रोटियाँ दी जानीं चाहियें। यिर्मयाह को तब तक रोटी दी जाती रही जब तक नगर में रोटी समाप्त नहीं हुई। इस प्रकार यिर्मयाह आँगन में रक्षकों के संरक्षण में रहा।

यिर्मयाह हौज में फेंक दिया जाता है

38 कुछ राजकीय अधिकारियों ने यिर्मयाह द्वारा दिये जा रहे उपदेश को सुना। वे मत्तान के पुत्र शपन्याह, पशहूर के पुत्र गदल्याह, शेलेम्याह का पुत्र यहूकल, और मल्किय्याह का पुत्र पशहूर थे। यिर्मयाह सभी लोगों को यह सन्देश दे रहा था। [2]"जो यहोवा कहता है, वह यह है: 'जो कोई भी यरूशलेम में रहेंगे वे सभी तलवार, भूख, भंयकर बीमारी से मरेंगे। किन्तु जो भी बाबुल की सेना को आत्मसमर्पण करेगा, जीवित रहेगा। वे लोग जीवित बचा जाये।' [3]और यहोवा यही कहता है, 'यह यरूशलेम नगर बाबुल के राजा की सेना को, निश्चय ही, दिया जाएगा। वह इस नगर पर अधिकार करेगा।'"

[4]तब जिन राजकीय अधिकारियों ने यिर्मयाह के उस कथन को सुना जिसे वह लोगों से कह रहा था, वे राजा सिदकिय्याह के पास गए। उन्होंने राजा से कहा, "यिर्मयाह को अवश्य मार डालना चाहिये। वह उन सैनिकों को भी हतोत्साहित कर रहा है जो अब तक नगर में हैं। यिर्मयाह जो कुछ कह रहा है उससे वह हर एक का साहस तोड़ रहा है। यिर्मयाह हम लोगों का भला होता नहीं देखना चाहता। वह यरूशलेम के लोगों को बरबाद करना चाहता है।"

[5]अत: राजा सिदकिय्याह ने उन अधिकारियों से कहा, "यिर्मयाह तुम लोगों के हाथ में है। मैं तुम्हें रोकने के लिये कुछ नहीं कर सकता।"

[6]अत: उन अधिकारियों ने यिर्मयाह को लिया और उसे मल्किय्याह के हौज में डाल दिया। (मल्किय्याह राजा का पुत्र था।) वह हौज मन्दिर के आँगन में था जहाँ राजा के रक्षक ठहरते थे। उन अधिकारियों ने यिर्मयाह को हौज में उतारने के लिये रस्सी का उपयोग किया। हौज में पानी बिल्कुल नहीं था, उसमें केवल कीचड़ थी और यिर्मयाह कीचड़ में धंस गया।

[7]किन्तु एबेदमेलेक नामक एक व्यक्ति ने सुना कि अधिकारियों ने यिर्मयाह को हौज में रखा है। एबेदमेलेक कूश का निवासी था और वह राजा के महल में खोजा था। राजा सिदकिय्याह बिन्यामीन द्वार पर बैठा था। अत: एबेदमेलेक राजमहल से निकला और राजा से बातें करने उस द्वार पर पहुँचा। [8-9]एबेदमेलेक ने कहा, "मेरे स्वामी राजा उन अधिकारियों ने दुष्टता का काम किया है। उन्होंने यिर्मयाह नबी के साथ दुष्टता की है। उन्होंने उसे हौज में डाल दिया है।" उन्होंने उसे वहाँ मरने को छोड़ दिया है।"

[10]तब राजा सिदकिय्याह ने कूशी एबेदमेलेक को आदेश दिया। आदेश यह था: "एबेदमेलेक राजमहल से तुम तीन व्यक्ति अपने साथ लो। जाओ और मरने से पहले यिर्मयाह को हौज से निकालो।"

[11]अत: एबेदमेलेक ने अपने साथ व्यक्तियों को लिया। किन्तु पहले वह राजमहल के भंडारगृह के एक कमरे में गया। उसने कुछ पुराने कम्बल और फटे पुराने कपड़े उस कमरे से लिये। तब उसने उन कम्बलों को रस्सी के सहारे हौज में यिर्मयाह के पास पहुँचाया। [12]कूशी एबेदमेलेक ने यिर्मयाह से कहा, "इन पुराने कम्बलों और चिथड़ों को अपनी बगल के नीचे लगाओ। जब हम लोग तुम्हें खींचेंगे तो ये तुम्हारी बाँहों के नीचे गदेले बनेंगे। तब रस्सियाँ तुम्हें चुभेंगी नहीं।" अत: यिर्मयाह ने वही किया जो एबेदमेलेक ने कहा। [13]उन लोगों ने यिर्मयाह को रस्सियों से ऊपर खींचा और हौज के बाहर निकाल लिया और यिर्मयाह मन्दिर के आँगन में रक्षकों के संरक्षण में रहा।

सिदकिय्याह यिर्मयाह से फिर प्रश्न पूछता है

[14]तब राजा सिदकिय्याह ने किसी को यिर्मयाह नबी को लाने के लिये भेजा। उसने यहोवा के मन्दिर के तीसरे द्वार पर यिर्मयाह को मंगवाया। तब राजा ने कहा, "यिर्मयाह, मैं तुमसे कुछ पूछ रहा हूँ। मुझसे कुछ भी न छिपाओ, मुझे सब ईमानदारी से बताओ।"

[15]यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा, "यदि मैं आपको उत्तर दूँगा तो संभव है आप मुझे मार डालें और यदि मैं आपको सलाह भी दूँ तो आप उसे नहीं मानेंगे।"

[16]किन्तु राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से शपथ खाई। सिदकिय्याह ने यह गुप्त रूप से किया। यह वह है जो सिदकिय्याह ने शपथ ली, "यिर्मयाह जैसा कि यहोवा शाश्वत है, जिसने हमें प्राण और जीवन दिया है यिर्मयाह। मैं तुम्हें मारूँगा नहीं और मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हें उन अधिकारियों को नहीं दूँगा जो तुम्हें मार डालना चाहते हैं।"

[17]तब यिर्मयाह ने राजा सिदकिय्याह से कहा, "यह वह है जिसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर कहता है, 'यदि तुम बाबुल के राजा के अधिकारियों को आत्मसमर्पण करोगे तो तुम्हारा जीवन बच जाएगा और यरूशलेम जलाकर राख नहीं किया जाएगा, तुम और तुम्हारा परिवार जीवित रहेगा। [18]किन्तु यदि तुम बाबुल के राजा के अधिकारियों को आत्मसमर्पण करने से इन्कार करोगे तो यरूशलेम बाबुल सेना को दे दिया जाएगा। वे यरूशलेम को जलाकर राख कर देंगे और तुम स्वयं उनसे बचकर नहीं निकल पाओगे।'"

[19]तब राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, "किन्तु मैं यहूदा के उन लोगों से डरता हूँ जो पहले ही बाबुल सेना से जा मिले हैं। मुझे भय है कि सैनिक मुझे यहूदा के उन लोगों को दे देंगे और वे मेरे साथ बुरा व्यवहार करेंगे और चोट पहुँचायेंगे।"

[20]किन्तु यिर्मयाह ने उत्तर दिया, "सैनिक तुम्हें यहूदा के उन लोगों को नहीं देंगे। राजा सिदकिय्याह, जो मैं कह रहा हूँ उसे करके, यहोवा की आज्ञा का पालन करो। तब सभी कुछ तुम्हारे भले के लिये होगा और तुम्हारा जीवन बच जाएगा। [21]किन्तु यदि तुम बाबुल की सेना के सामने आत्मसमर्पण करने से इन्कार करते हो तो यहोवा ने मुझे दिखा दिया है कि क्या होगा। यह वह है जो यहोवा ने मुझसे कहा है: [22]वे सभी स्त्रियाँ जो यहूदा के राजमहल में रह गई हैं बाहर लाई जाएंगी। वे बाबुल के राजा के बड़े अधिकारियों के सामने लाई जायेंगी। तुम्हारी स्त्रियाँ एक गीत द्वारा तुम्हारी खिल्ली उड़ाएंगी। जो कुछ स्त्रियाँ कहेंगी वह यह है:

'तुम्हारे अच्छे मित्र तुम्हें गलत राह ले गए
और वे तुमसे अधिक शक्तिशाली थे।
वे ऐसे मित्र थे जिन पर तुम्हारा विश्वास था।
तुम्हारे पाँव कीचड़ में फँसे है।
तुम्हारे मित्रों ने तुम्हें छोड़ दिया है।'

[23]तुम्हारी सभी पत्नियाँ और तुम्हारे बच्चे बाहर लाये जाएंगे। वे बाबुल सेना को दे दिये जाएंगे। तुम स्वयं बाबुल की सेना से बचकर नहीं निकल पाओगे। तुम बाबुल के राजा द्वारा पकड़े जाओगे और यरूशलेम जलाकर राख कर दिया जाएगा।"

[24]तब सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, "किसी व्यक्ति से यह मत कहना कि मैं तुमसे बातें करता रहा। यदि तुम कहोगे तो तुम मारे जाओगे। [25]वे अधिकारी पता लगा सकते हैं कि मैंने तुमसे बातें कीं। तब वे तुम्हारे पास आएंगे और तुमसे कहेंगे, 'यिर्मयाह, यह बताओ कि तुमने राजा सिदकिय्याह से क्या कहा और हमें यह बताओ कि राजा सिदकिय्याह ने तुमसे क्या कहा? हम लोगों के प्रति ईमानदार रहो और हमें सब कुछ बता दो, नहीं तो हम तुम्हें मार डालेंगे।' [26]यदि वे तुमसे ऐसा कहें तो उनसे कहना, 'मैं राजा से प्रार्थना कर रहा था कि वे मुझे योनातान के घर के नीचे कूप–गृह में वापस न भेजें। यदि मुझे वहाँ वापस जाना पड़ा तो मैं मर जाऊँगा।'"

[27]ऐसा हुआ कि राजा के वे राजकीय अधिकारी यिर्मयाह से पूछने उसके पास आ गए। अत: यिर्मयाह ने वह सब कहा जिसे कहने का आदेश राजा ने दिया था। तब उन अधिकारियों ने यिर्मयाह को अकेले छोड़ दिया। किसी व्यक्ति को पता न चला कि यिर्मयाह और राजा ने क्या बातें कीं।

[28]इस प्रकार यिर्मयाह रक्षकों के संरक्षण में मन्दिर के आँगन में उस दिन तक रहा जिस दिन यरूशलेम पर अधिकार कर लिया गया।

यरूशलेम का पतन

39 यरूशलेम पर जिस तरह अधिकार हुआ वह यह है: यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्यकाल के नवें वर्ष के दसवें महीने में बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी पूरी सेना के साथ यरूशलेम के विरुद्ध कूच किया। उसने हराने के लिये नगर का घेरा डाला [2]और सिदकिय्याह के ग्यारहवें वर्ष के चौथे महीने के नौवें दिन यरूशलेम की चहारदीवारी टूटी। [3]तब बाबुल के राजा के सभी राजकीय अधिकारी यरूशलेम नगर में घुस आए। वे अन्दर आए और बीच वाले द्वार पर बैठ गए। उन अधिकारियों के नाम ये हैं: समगर जिले का प्रशासक नेर्गलसरेसेर एक बहुत उच्च अधिकारी नेबो–सर्सकीम अन्य उच्च अधिकारी और बहुत से अन्य बड़े अधिकारी भी वहाँ थे।

[4]यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने बाबुल के उन पदाधिकारियों को देखा, अत: वह और उसके सैनिक वहाँ से भाग गये। उन्होंने रात में यरूशलेम को छोड़ा और राजा के बाग से होकर बाहर निकले। वे उस द्वार से गए जो दो दीवारों के बीच था। तब वे मरुभूमि की ओर बढ़े। [5]किन्तु बाबुल की सेना ने सिदकिय्याह और उसके साथ की सेना का पीछा किया। कसदियों की सेना ने यरीहो के मैदान में सिदकिय्याह को जा पकड़ा उन्होंने सिदकिय्याह को पकड़ा और उसे बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के पास ले गए। नबूकदनेस्सर हमात प्रदेश के रिबला नगर में था। उस स्थान पर नबूकदनेस्सर ने सिदकिय्याह के लिये निर्णय सुनाया। [6]वहाँ रिबला नगर में बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह के पुत्रों को उसके सामने मार डाला और सिदकिय्याह के सामने ही नबूकदनेस्सर ने यहूदा के सभी राजकीय अधिकारियों को मार डाला। [7]तब नबूकदनेस्सर ने सिदकिय्याह की आँखे निकाल लीं। उसने सिदकिय्याह को काँसे की जंजीर से बाँधा और उसे बाबुल ले गया।

[8]बाबुल की सेना ने राजमहल और यरूशलेम के लोगों के घरों में आग लगा दी और उन्होंने यरूशलेम की दीवारें गिरा दीं। [9]नबूजरदान नामक एक व्यक्ति बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक था। उसने उन लोगों को लिया जो यरूशलेम में बच गए थे और उन्हें बन्दी बना लिया। वह उन्हें बाबुल ले गया। नबूजरदान ने यरूशलेम के उन लोगों को भी बन्दी बनाया जो पहले ही उसे आत्मसमर्पण कर चुके थे। उसने यरूशलेम के अन्य सभी लोगों को बन्दी बनाया और उन्हें बाबुल ले गया। [10]किन्तु विशेष रक्षकों के अधिनायक नबूजरदान ने यहूदा के कुछ गरीब लोगों को अपने पीछे छोड़ दिया। वे ऐसे लोग थे जिनके पास कुछ नहीं था। इस प्रकार उस दिन नबूजरदान ने उन यहूदा के गरीब लोगों को अंगूर के बाग और खेत दिये।

[11]किन्तु नबूकदनेस्सर ने नबूजरदान को यिर्मयाह के बारे में कुछ आदेश दिये। नबूजरदान, नबूकदनेस्सर के विशेष रक्षकों का अधिनायक था। आदेश ये थे: [12]"यिर्मयाह को ढूँढों और उसकी देख–रेख करो। उसे चोट न पहुँचाओ। उसे वह सब दो, जो वह माँगे।" [13]अत: राजा के विशेष रक्षकों के अधिनायक नबूजरदान बाबुल की सेना का एक मुख्य पदाधिकारी नबूसजबान एक उच्च अधिकारी नेर्गलसरेसेर और बाबुल की सेना के अन्य सभी अधिकारी यिर्मयाह की खोज में भेजे गए।

[14]उन लोगों ने यिर्मयाह को मन्दिर के आँगन से निकाला जहाँ वह यहूदा के राजा के रक्षकों के संरक्षण में पड़ा था। कसदी सेना के उन अधिकारियों ने यिर्मयाह को गदल्याह के सुपुर्द किया। गदल्याह अहीकाम का पुत्र था। अहीकाम शापान का पुत्र था। गदल्याह को आदेश था कि वह यिर्मयाह को उसके घर वापस ले जाये। अत: यिर्मयाह अपने घर पहुँचा दिया गया और वह अपने लोगों में रहने लगा।

एबेदमेलेक को यहोवा से सन्देश

[15]जिस समय यिर्मयाह रक्षकों के संरक्षण में मन्दिर के आँगन में था, उसे यहोवा का एक सन्देश मिला। सन्देश यह था, [16]"यिर्मयाह, जाओ और कूश के एबेदमेलेक को यह सन्देश दो: यह वह सन्देश है, जिसे सर्वशक्तिमान यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर देता है: 'बहुत शीघ्र ही मैं इस यरूशलेम नगर सम्बन्धी अपने सन्देशों को सत्य घटित करूँगा। मेरा सन्देश विनाश लाकर सत्य होगा। अच्छी बातों को लाकर नहीं। तुम सभी इस सत्य को घटित होता हुआ अपनी आँखों से देखोगे। [17]किन्तु एबेदमेलेक उस दिन मैं तुम्हें बचाऊँगा।' यह यहोवा का सन्देश है। 'तुम उन लोगों को नहीं दिये जाओगे जिनसे तुम्हें भय है। [18]एबेदमेलेख मैं तुझे बचाऊँगा। तुम तलवार के घाट नहीं उतारे जाओगे, अपितु बच निकलोगे और

जीवित रहोगे। ऐसा होगा, क्योंकि तुमने मुझ पर विश्वास किया है।'" यह सन्देश यहोवा का है।

यिर्मयाह स्वतन्त्र किया जाता है

40 रामा नगर में स्वतन्त्र किये जाने के बाद यिर्मयाह को यहोवा का सन्देश मिला। बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों के अधिनायक नबूजरदान को यिर्मयाह रामा में मिला। यिर्मयाह जंजीरों में बंधा था। वह यरूशलेम और यहूदा के सभी बन्दियों के साथ था। वे बन्दी बाबुल को बन्धुवाई में ले जाए जा रहे थे। [2]जब अधिनायक नबूजरदान को यिर्मयाह मिला तो उसने उससे बातें कीं। उसने कहा, "यिर्मयाह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने यह घोषित किया था कि यह विपत्ति इस स्थान पर आएगी [3]और अब यहोवा ने सब कुछ वह कर दिया है जिसे उसने करने को कहा था। यह विपत्ति इसलिये आई कि यहूदा के लोगों, तुमने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। तुम लोगों ने यहोवा की आज्ञा नहीं मानी। [4]किन्तु यिर्मयाह, अब मैं तुम्हें स्वतन्त्र करता हूँ। मैं तुम्हारी कलाइयों से जंजीर उतार रहा हूँ। यदि तुम चाहो तो मेरे साथ बाबुल चलो और मैं तुम्हारी अच्छी देखभाल करूँगा। किन्तु यदि तुम मेरे साथ चलना नहीं चाहते तो न चलो। देखो पूरा देश तुम्हारे लिये खुला है। तुम जहाँ चाहो जाओ। [5]अथवा शापान के पुत्र अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास लौट जाओ। बाबुल के राजा ने यहूदा के नगरों का प्रशासक गदल्याह को चुना है। जाओ और गदल्याह के साथ लोगों के बीच रहो या तुम जहाँ चाहो जा सकते हो।"

तब नबूजरदान ने यिर्मयाह को कुछ भोजन और भेंट दिया तथा उसे विदा किया। [6]इस प्रकार यिर्मयाह अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास मिस्पा गया। यिर्मयाह गदल्याह के साथ उन लोगों के बीच रहा जो यहूदा देश में छोड़ दिये गए थे।

गदल्याह का अल्पकालीन शासन

[7]यहूदा की सेना के कुछ सैनिक, अधिकारी और उनके लोग, जब यरूशलेम नष्ट हो रहा था, खुले मैदान में थे। उन सैनिकों ने सुना कि अहीकाम के पुत्र गदल्याह को बाबुल के राजा ने प्रदेश में बचे लोगों का प्रशासक नियुक्त किया है। बचे हुए लोगों में वे सभी स्त्री, पुरुष और बच्चे थे जो बहुत अधिक गरीब थे और बन्दी बनाकर बाबुल नहीं पहुँचाये गए थे। [8]अत: वे सैनिक गदल्याह के पास मिस्पा में आए। वे सैनिक नतन्याह का पुत्र इश्माएल, योहानान और उसका भाई योनातान, कारेह के पुत्र तन्हूमेत का पुत्र सरायाह, नतोपावासी एपै के पुत्र माकावासी का पुत्र याजन्याह और उनके साथ के पुरुष थे।

[9]शापान के पुत्र अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने उन सैनिकों और उनके लोगों को अधिक सुरक्षित अनुभव कराने की शपथ खाई। गदल्याह ने जो कहा, वह यह है: "सैनिकों तुम लोग कसदी लोगों की सेवा करने से भयभीत न हो। इस प्रदेश में बस जाओ और बाबुल के राजा की सेवा करो। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारा सब कुछ भला होगा। [10]मैं स्वयं मिस्पा में रहूँगा। मैं उन कसदी लोगों से तुम्हारे लिये बातें करूँगा जो यहाँ आएंगे। तुम लोग यह काम मुझ पर छोड़ो। तुम्हें दाखमधु ग्रीष्म के फल और तेल पैदा करना चाहिये। जो तुम पैदा करो उसे अपने इकट्ठा करने के घड़ों में भरो। उन नगरों में रहो जिस पर तुमने अधिकार कर लिया है।"

[11]यहूदा के सभी लोगों ने, जो मोआब, अम्मोन, एदोम और अन्य सभी प्रदेशों में थे, सुना कि बाबुल के राजा ने यहूदा के कुछ लोगों को उस देश में छोड़ दिया है और उन्होंने यह सुना कि बाबुल के राजा ने शापान के पौत्र एवं अहीकाम के पुत्र गदल्याह को उनका प्रशासक नियुक्त किया है। [12]जब यहूदा के लोगों ने यह खबर पाई, तो वे यहूदा प्रदेश में लौट आए। वे गदल्याह के पास उन सभी देशों से मिस्पा लौटे, जिनमें वे बिखर गए थे। अत: वे लौटे और उन्होंने दाखमधु और ग्रीष्म फलों की बड़ी फसल काटी।

[13]कारेह का पुत्र योहानान और यहूदा की सेना के सभी अधिकारी, जो अभी तक खुले प्रदेशों में थे, गदल्याह के पास आए। गदल्याह मिस्पा नगर में था। [14]योहानान और उसके साथ के अधिकारियों ने गदल्याह से कहा, "क्या तुम्हें मालूम है कि अम्मोनी लोगों का राजा बालीस तुम्हें मार डालना चाहता है? उसने नतन्याह के पुत्र इश्माएल को तुम्हें मार डालने के लिये भेजा है।" किन्तु अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने उन पर विश्वास नहीं किया।

[15]तब कारेह के पुत्र योहानान ने मिस्पा में गदल्याह से गुप्त वार्ता की। योहानान ने गदल्याह से कहा, "मुझे जाने दो और नतन्याह के पुत्र इश्माएल को मार डालने दो। कोई भी व्यक्ति इस बारे में नहीं जानेगा। हम लोग

इश्माएल को तुम्हें मारने नहीं देंगे। वह यहूदा के उन सभी लोगों को जो तुम्हारे पास इकट्ठे हुए हैं, विभिन्न देशों में फिर से बिखेर देगा और इसका यह अर्थ होगा कि यहूदा के थोड़े से बचे–खुचे लोग भी नष्ट हो जायेंगे।"

16किन्तु अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने कारेह के पुत्र योहानान से कहा, "इश्माएल को न मारो। इश्माएल के बारे में जो तुम कह रहे हो, वह सत्य नहीं है।"

41 सातवें महीने में नतन्याह (एलीशामा का पुत्र) का पुत्र इश्माएल, अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास आया। इश्माएल अपने दस व्यक्तियों के साथ आया। वे लोग मिस्पा नगर में आए थे। इश्माएल राजा के परिवार का सदस्य था। वह यहूदा के राजा के अधिकारियों में से एक था। इश्माएल और उसके लोगों ने गदल्याह के साथ खाना खाया। 2जब वे साथ भोजन कर रहे थे तभी इश्माएल और उसके दस व्यक्ति उठे और अहीकाम के पुत्र गदल्याह को तलवार से मार दिया। गदल्याह वह व्यक्ति था जिसे बाबुल के राजा ने यहूदा का प्रशासक चुना था। 3इश्माएल ने यहूदा के उन सभी लोगों को भी मार डाला जो मिस्पा में गदल्याह के साथ थे। इश्माएल ने उन कसदी सैनिकों को भी मार डाला जो गदल्याह के साथ थे।

4–5गदल्याह की हत्या के एक दिन बाद अस्सी व्यक्ति मिस्पा आए। वे अन्नबलि और सुगन्धि यहोवा के मन्दिर के लिये ला रहे थे। उन अस्सी व्यक्तियों ने अपनी दाढ़ी मुड़ा रखी थी, अपने वस्त्र फाड़ डाले थे और अपने को काट रखा था। वे शकेम, शीलो और शोमरोन से आए थे। इनमें से कोई भी यह नहीं जानता था कि गदल्याह की हत्या कर दी गई है। 6इश्माएल मिस्पा नगर से उन अस्सी व्यक्तियों से मिलने गया। उनसे मिलने जाते समय वह रोता रहा। इश्माएल उन अस्सी व्यक्तियों से मिला और उसने कहा, "अहीकाम के पुत्र गदल्याह से मिलने मेरे साथ चलो।" 7वे अस्सी व्यक्ति मिस्पा नगर में गए। तब इश्माएल और उसके व्यक्तियों ने उनमें से सत्तर लोगों को मार डाला। इश्माएल और उसके व्यक्तियों ने उन सत्तर व्यक्तियों के शवों को एक गहरे हौज में डाल दिया। 8किन्तु बचे हुए दस व्यक्तियों ने इश्माएल से कहा, "हमें मत मारो। हमारे पास गेहूँ और जौ हैं और हमारे पास तेल और शहद है। हम लोगों ने उन चीजों को एक खेत में छिपा रखा है।" अत: इश्माएल ने उन व्यक्तियों को छोड़ दिया। उसने अन्य लोगों के साथ उनको नहीं मारा। 9(वह हौज बहुत बड़ा था। यह यहूदा के आसा नामक राजा द्वारा बनवाया गया था। राजा आसा ने उसे इसलिये बनाया था कि युद्ध के दिनों में नगर को उससे पानी मिलता रहे। आसा ने यह काम इस्राएल के राजा बाशा से नगर की रक्षा के लिये किया था। इश्माएल ने उस हौज में इतने शव डाले कि वह भर गया।)

10इश्माएल ने मिस्पा नगर के अन्य सभी लोगों को भी पकड़ा। (उन लोगों में राजा की पुत्रियाँ और वे अन्य सभी लोग थे जो वहाँ बच गए थे। वे ऐसे लोग थे जिन्हें नबूजरदान ने गदल्याह पर नजर रखने के लिये चुना था। नबूजरदान बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक था। अत: इश्माएल ने उन लोगों को पकड़ा और अम्मोनी लोगों के देश में जाने के लिये बढ़ना आरम्भ किया।)

11कारेह का पुत्र योहानान और उसके साथ के सभी सैनिक अधिकारियों ने उन सभी दुराचारों को सुना जो इश्माएल ने किये। 12इसलिये योहानान और उसके साथ के सैनिक अधिकारियों ने अपने व्यक्तियों को लिया और नतन्याह के पुत्र इश्माएल से लड़ने गए। उन्होंने इश्माएल को उस बड़े पानी के हौज के पास पकड़ा जो गिबोन नगर में है। 13उन बन्दियों ने जिन्हें इश्माएल ने बन्दी बनाया था, योहानान और सैनिक अधिकारियों को देखा। वे लोग अति प्रसन्न हुए। 14तब वे सभी लोग जिन्हें इश्माएल ने मिस्पा में बन्दी बनाया था, कारेह के पुत्र योहानान के पास दौड़ पड़े। 15किन्तु इश्माएल और उसके आठ व्यक्ति जोहानान से बच निकले। वे अम्मोनी लोगों के पास भाग गये।

16अत: कारेह के पुत्र योहानान और उसके सभी सैनिक अधिकारियों ने बन्दियों को बचा लिया। इश्माएल ने गदल्याह की हत्या की थी और उन लोगों को मिस्पा से पकड़ लिया था। बचे हुए लोगों में सैनिक, स्त्रियाँ, बच्चे, और अदालत के अधिकारी थे। योहानान उन्हें गिबोन नगर से वापस लाया।

मिस्र को बच निकलना

17–18योहानान तथा अन्य सैनिक अधिकारी कसदियों से भयभीत थे। बाबुल के राजा ने गदल्याह को यहूदा का प्रशासक चुना था। किन्तु इश्माएल ने गदल्याह की हत्या कर दी थी और योहानान को भय था कि कसदी क्रोधित होंगे। अत: उन्होंने मिस्र को भाग निकलने का निश्चय

किया। मिस्र के रास्ते में वे गेरथ किम्हाम में रुके। गेरथ किम्हाम बेतलेहेम नगर के पास है।

42 जब वे गेरथ किम्हाम में थे योहानान और होशायाह का पुत्र याजन्याह नामक एक व्यक्ति यिर्मयाह नबी के पास गए। योहानान और याजन्याह के साथ सभी सैनिक अधिकारी गए। बड़े से लेकर बहुत छोटे तक सभी व्यक्ति यिर्मयाह के पास गए। [2]उन सभी लोगों ने उससे कहा, "यिर्मयाह, कृपया सुन जो हम कहते हैं। अपने परमेश्वर यहोवा से, यहूदा के परिवार के इन सभी बचे व्यक्तियों के लिये प्रार्थना करो। यिर्मयाह, तुम देख सकते हो कि हम लोगों में बहुत अधिक नहीं बचे हैं। किसी समय हम बहुत अधिक थे। [3]यिर्मयाह, अपने परमेश्वर यहोवा से यह प्रार्थना करो कि वह बताये कि हमें कहाँ जाना चाहिये और हमें क्या करना चाहिये।"

[4]तब यिर्मयाह नबी ने उत्तर दिया, "मैं समझता हूँ कि तुम मुझसे क्या कराना चाहते हो। मैं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से वही प्रार्थना करूँगा जो तुम मुझसे करने को कहते हो। मैं हर एक बात, जो यहोवा कहेगा बताऊँगा। मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपाऊँगा।"

[5]तब उन लोगों ने यिर्मयाह से कहा, "यदि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा जो कुछ कहता है उसे हम नहीं करते तो हमें आशा है कि यहोवा ही सच्चा और विश्वसनीय गवाह हमारे विरुद्ध होगा। हम जानते हैं कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें यह बताने को भेजा कि हम क्या करे? [6]इसका कोई महत्व नहीं कि हम सन्देश को पसन्द करते हैं या नहीं। हम लोग अपने परमेश्वर, यहोवा की आज्ञा का पालन करेंगे। हम लोग तुम्हें यहोवा के यहाँ उससे सन्देश लेने के लिये भेज रहे हैं। हम उसका पालन करेंगे जो वह कहेगा। तब हम लोगों के लिए सब अच्छा होगा। हाँ, हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा का पालन करेंगे।"

[7]दस दिन बीतने के बाद यहोवा के यहाँ से यिर्मयाह को सन्देश मिला। [8]तब यिर्मयाह ने कारेह के पुत्र योहानान और उसके साथ के सैनिक अधिकारियों को एक साथ बुलाया। यिर्मयाह ने बहुत छोटे व्यक्ति से लेकर बहुत बड़े व्यक्ति तक को भी एक साथ बुलाया। [9]तब यिर्मयाह ने उनसे कहा, "जो इस्राएल के लोगों का परमेश्वर यहोवा कहता है, यह वह है: "तुमने मुझे उसके पास भेजा। मैंने यहोवा से वह पूछा, जो तुम लोग मुझसे पूछना चाहते थे। यहोवा यह कहता है: [10]'यदि तुम लोग यहूदा में रहोगे तो मैं तुम्हारा निर्माण करूँगा मैं तुम्हें नष्ट नहीं करूँगा। मैं तुम्हें रोपूँगा और मैं तुमको उखाड़ूँगा नहीं। मैं यह इसलिये करूँगा कि मैं उन भयंकर विपत्तियों के लिये दुःखी हूँ जिन्हें मैंने तुम लोगों पर घटित होने दीं। [11]इस समय तुम बाबुल के राजा से भयभीत हो। किन्तु उससे भयभीत न हो। बाबुल के राजा से भयभीत न हो: यही यहोवा का सन्देश है, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हें बचाऊँगा। मैं तुम्हें खतरे से निकालूँगा। वह तुम पर अपना हाथ नहीं रख सकेगा। [12]मैं तुम पर दयालु रहूँगा और बाबुल का राजा भी तुम्हारे साथ दया का व्यवहार करेगा और वह तुम्हें तुम्हारे देश वापस लायेगा।' [13]किन्तु तुम यह कह सकते हो, हम यहूदा में नहीं ठहरेंगे। यदि तुम ऐसा कहोगे तो तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन करोगे। [14]तुम यह भी कह सकते हो, 'नहीं हम लोग जाएंगे और मिस्र में रहेंगे। हमे उस स्थान पर युद्ध की परेशानी नहीं होगी। हम वहाँ युद्ध की तुरही नहीं सुनेंगे और मिस्र में हम भूखे नहीं रहेंगे।' [15]यदि तुम यह सब कहते हो, तो यहूदा के बचे लोगों यहोवा के इस सन्देश को सुनो। इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'यदि तुम मिस्र में रहने के लिये जाने का निर्णय करते हो तो यह सब घटित होगा: [16]तुम युद्ध की तलवार से डरते हो, किन्तु यही तुम्हें वहाँ पराजित करेगी और तुम भूख से परेशान हो, किन्तु तुम मिस्र में भूखे रहोगे। तुम वहाँ मरोगे। [17]हर एक वह व्यक्ति तलवार, भूख और भयंकर बीमारी से मरेगा जो मिस्र में रहने के लिये जाने का निर्णय करेगा। जो लोग मिस्र जाएंगे उसमें से कोई भी जीवित नहीं बचेगा। उनमें से कोई भी उन भयंकर विपत्तियों से नहीं बचेगा जिन्हें मैं उन पर ढाऊँगा।)'

[18]"इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा, यह कहता है: 'मैंने अपना क्रोध यरूशलेम के विरुद्ध प्रकट किया है। मैंने उन लोगों को दण्ड दिया जो यरूशलेम में रहते थे। उसी प्रकार मैं अपना क्रोध प्रत्येक उस व्यक्ति पर प्रकट करुँगा जो मिस्र जाएगा। लोग तुम्हारा उदाहरण तब देंगे जब वे अन्य लोगों के साथ बुरा घटित होने की प्रार्थना करेंगे। तुम अभिशाप वाणी के समान होओगे। तुम पर जो हुआ उसे देख कर लोग भयभीत होंगे। लोग तुम्हारा अपमान करेंगे और तुम फिर कभी यहूदा को नहीं देख पाओगे।'

[19]"यहूदा के बचे हुए लोगों, यहोवा ने तुमसे कहा, 'मिस्र मत जाओ।' मैं तुम्हें स्पष्ट चेतावनी देता हूँ। [20]तुम लोग एक बड़ी भूल कर रहे हो, जिसके कारण तुम मरोगे। तुम लोगों ने यहोवा अपने परमेश्वर के पास मुझे भेजा। तुमने मुझसे कहा, 'परमेश्वर यहोवा से हमारे लिये प्रार्थना करो। हर बात हमें बताओ जो यहोवा करने को कहता है। हम यहोवा की आज्ञा का पालन करेंगे।' [21]अत: आज मैंने यहोवा का सन्देश तुम्हें दिया है। किन्तु तुमने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने वह सब नहीं किया है जिसे करने के लिये कहने को उसने मुझे भेजा है। [22]तुम लोग रहने के लिये मिस्र जाना चाहते हो अब निश्चय ही तुम यह समझ गये होंगे कि मिस्र में तुम पर यह घटेगा: तुम तलवार से या भूख से, या भंयकर बीमारी से मरोगे।"

43 इस प्रकार यिर्मयाह ने लोगों को यहोवा उसके परमेश्वर का सन्देश देना पूरा किया। यिर्मयाह ने लोगों को वह सब कुछ बता दिया जिसे लोगों से कहने के लिये यहोवा ने उसे भेजा था.

[2]होशाया का पुत्र अजर्याह, कारेह का पुत्र योहानान और कुछ अन्य लोग घमण्डी और हठी थे। वे लोग यिर्मयाह पर क्रोधित हो गए। उन लोगों ने यिर्मयाह से कहा, "यिर्मयाह, तुम झूठ बोलते हो! हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से हमें यह कहने को नहीं भेजा, 'तुम लोगों को मिस्र में रहने के लिये नहीं जाना चाहिये।' [3]यिर्मयाह, हम समझते हैं कि नेरिय्याह का पुत्र बारुक तुम्हें हम लोगों के विरुद्ध होने के लिये उकसा रहा है। वह चाहता है कि तुम हमें कसदी लोगों के हाथ में दे दो। वह यह इसलिये चाहता है जिससे वे हमें मार डालें या वह तुमसे यह इसलिये चाहता है कि वे हमें बन्दी बना लें और बाबुल ले जाये।"

[4]इसलिये योहानान सैनिक अधिकारी और सभी लोगों ने यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन किया। यहोवा ने उन्हें यहूदा में रहने का आदेश दिया था। [5]किन्तु यहोवा की आज्ञा मानने के स्थान पर योहानान और सैनिक अधिकारी उन बचे लोगों को यहूदा से मिस्र ले गए। बीते समय में, शत्रु उन बचे हुओं को अन्य देशों को ले गया था। किन्तु वे यहूदा वापस आ गए थे। [6]अब योहानान और सभी सैनिक अधिकारी, सभी पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को मिस्र ले गए। उन लोगों में राजा की पुत्रियाँ थीं। (नबूजरदान ने गदल्याह को उन लोगों का प्रशासक नियुक्त किया था। नबूजरदान बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक था।) योहानान यिर्मयाह नबी और नेरिय्याह के पुत्र बारुक को भी साथ ले गया। [7]उन लोगों ने यहोवा की एक न सुनी। अत: वे सभी लोग मिस्र गए। वे तहपन्हेस नगर को गए।

[8]तहपन्हेस नगर में यिर्मयाह ने यहोवा से यह सन्देश पाया, [9]"यिर्मयाह, कुछ बड़े पत्थर लो। उन्हें लो और उन्हें तहपन्हेस में फिरौन के राजमहल के प्रवेश द्वार के ईंटें के चबूतरे के पास मिट्टी में गाड़ो। यह तब करो जब यहूदा के लोग तुम्हें ऐसा करते देख रहे हो। [10]तब यहूदा के उन लोगों से कहो जो तुम्हें देख रहे हो, 'इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है: मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को यहाँ आने के लिये बुलावा भेजूँगा। वह मेरा सेवक है और मैं उसके राज सिंहासन को इन पत्थरों पर रखूँगा जिन्हें मैंने यहाँ गाड़ा है। नबूकदनेस्सर अपनी चंदोवा इन पत्थरों के ऊपर फैलाएगा। [11]नबूकदनेस्सर यहाँ आएगा और मिस्र पर आक्रमण करेगा। वह उन्हें मृत्यु के घाट उतारेगा जो मरने वाले हैं। जो बन्दी बनाये जाने के योग्य है वह उन्हें बन्दी बनायेगा और वह उन्हें तलवार के घाट उतारेगा जिन्हें तलवार से मारना है। [12]नबूकदनेस्सर मिस्र के असत्य देवताओं के मन्दिरों में आग लगा देगा। वह उन मन्दिरों को जला देगा और उन देवमूर्तियों को अलग करेगा। गड़ेरिया अपने कपड़ों को स्वच्छ रखने के लिये उसमें से जूँ और अन्य खटमलों को दूर फेंकता है। ठीक इसी प्रकार नबूकदनेस्सर मिस्र को स्वच्छ करने के लिए कुछ को दूर करेगा। तब वह सुरक्षापूर्वक मिस्र को छोड़ेगा।'" [13]नबूकदनेस्सर उन स्मृतिपाषाणों को नष्ट करेगा जो मिस्र में सूर्य देवता के मन्दिर में है और वह मिस्र के असत्य देवों के मन्दिरों को जला देगा।

यहूदा और मिस्र के लोगों को यहोवा का सन्देश

44 यिर्मयाह को यहोवा से एक सन्देश मिला। यह सन्देश मिस्र में रहने वाले यहूदा के सभी लोगों के लिये था। यह सन्देश यहूदा के उन लोगों के लिए था जो मिग्दोल, तहपन्हेस, नोप और दक्षिणी मिस्र में रहते थे। सन्देश यह था: [2]इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान

यहोवा कहता है, "तुम लोगों ने उन भयंकर घटनाओं को देखा जिन्हें मैं यरूशलेम नगर और यहूदा के अन्य सभी नगर के विरुद्ध लाया। वे नगर आज पत्थरों के खाली ढेर हैं। [3]वे स्थान नष्ट किए गए क्योंकि उनमें रहने वाले लोगों ने बुरे काम किये। उन लोगों ने अन्य देवताओं को बलिभेंट की, और इसने मुझे क्रोधित किया। तुम्हारे लोग और तुम्हारे पूर्वज अतीत काल में उन देवताओं को नहीं पूजते थे। [4]मैंने अपने नबी उन लोगों के पास बार बार भेजे। वे नबी मेरे सेवक थे। उन नबियों ने मेरे सन्देश दिये और लोगों से कहा, 'यह भयंकर काम न करो जिससे मैं घृणा करता हूँ। क्योंकि तुम देवमूर्तियों की पूजा करते हो' [5]किन्तु उन लोगों ने नबियों की एक न सुनी। उन्होंने उन नबियों पर ध्यान न दिया। उन लोगों ने दुष्टता भरे काम करने नहीं छोड़े। उन्होंने अन्य देवताओं को बलि भेंट करना बन्द नहीं किया। [6]इसलिये मैंने अपना क्रोध उन लोगों के विरुद्ध प्रकट किया। मैंने यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों को दण्ड दिया। मेरे क्रोध ने यरूशलेम और यहूदा के नगरों को सूने पत्थरों का ढेर बनाया, जैसे वे आज है।"

[7]अत: इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, "देवमूर्ति की पूजा करते रह कर तुम अपने को क्यों चोट पहुँचाते हो, तुम पुरुष, स्त्रियों, बच्चों और शिशुओं को यहूदा के परिवार से अलग कर रहे हो। तुममें से कोई भी नहीं जीवित रहेगा। [8]लोगों देवमूर्तियाँ बनाकर तुम मुझे क्रोधित करना क्यों चाहते हो? अब तुम मिस्र में रह रहे हो और अब मिस्र के असत्य देवताओं को भेंट चढ़ाकर तुम मुझे क्रोधित कर रहे हो। लोगों तुम अपने को नष्ट कर डालोगे। यह तुम्हारे अपने दोष के कारण होगा। तुम अपने को कुछ ऐसा बना लोगे कि अन्य राष्टों के लोग, तुम्हारी बुराई करेंगे और पृथ्वी के अन्य राष्टों के लोग तुम्हारा मजाक उड़ायेंगे। [9]क्या तुम उन दुष्टता भरे कामों को भूल चुके हो जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने किया? क्या तुम उन दुष्टतापूर्ण कामों को भूल चुके हो जिन्हें यहूदा के राजा और रानियों ने किया? क्या तुम उन दुष्टतापूर्ण कामों को भूल चुके हो जिन्हें तुमने और तुम्हारी पत्नियों ने यहूदा की धरती पर और यरूशलेम की सड़कों पर किया? [10]आज भी यहूदा के लोगों ने अपने को विनम्र नहीं बनाया। उन्होंने मुझे कोई सम्मान नहीं दिया और उन लोगों ने मेरी शिक्षाओं का अनुसरण नहीं किया। उन्होंने उन नियमों का पालन नहीं किया जिन्हें मैंने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को दिया।"

[11]अत: इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है: "मैंने तुम पर भयंकर विपत्ति ढाने का निश्चय किया है। मैं यहूदा के पूरे परिवार को नष्ट कर दूँगा। [12]यहूदा के थोड़े से लोग ही बचे थे। वे लोग यहाँ मिस्र में आए हैं। किन्तु मैं यहूदा के परिवार के उन कुछ बचे लोगों को नष्ट कर दूँगा। वे तलवार के घाट उतरेंगे या भूख से मरेंगे। वे कुछ ऐसे होंगे कि अन्य राष्ट्रों के लोग उनके बारे में बुरा कहेंगे। अन्य राष्ट्र उससे भयभीत होंगे जो उन लोगों के साथ घटित होगा। वे लोग अभिशाप वाणी बन जायेंगे। अन्य राष्ट्र यहूदा के उन लोगों का अपमान करेंगे। [13]मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा जो मिस्र में रहने चले गए हैं। मैं उन्हें दण्ड देने के लिये तलवार, भूख और भयंकर बीमारी का उपयोग करूँगा। मैं उन लोगों को वैसे ही दण्ड दूँगा जैसे मैंने यरूशलेम नगर को दण्ड दिया। [14]इन थोड़े बचे हुओं में से, जो मिस्र में रहने चले गए हैं, कोई भी मेरे दण्ड से नहीं बचेगा। उनमें से कोई भी यहूदा वापस आने के लिये नहीं बच पायेगा। वे लोग यहूदा वापस लौटना और वहाँ रहना चाहते हैं किन्तु उनमें से एक भी व्यक्ति संभवत: कुछ बच निकलने वालों के अतिरिक्त वापस नहीं लौटेगा।"

[15]मिस्र में रहने वाली यहूदा की स्त्रियों में से अनेक अन्य देवताओं को बलि भेट कर रही थी। उनके पति इसे जानते थे, किन्तु उन्हें रोकते नहीं थे। वहाँ यहूदा के लोगों का एक विशाल समूह एक साथ इकट्ठा होता था। वे यहूदा के लोग थे जो दक्षिणी मिस्र में रह रहे थे। उन सभी व्यक्तियों ने यिर्मयाह से कहा, [16]"हम यहोवा का सन्देश नहीं सुनेंगे जो तुम दोगे। [17]हमने स्वर्ग की रानी को बलि भेंट करने की प्रतिज्ञा की है और हम वह सब करेंगे जिसकी हमने प्रतिज्ञा की है। हम उसकी पूजा में बलि चढ़ायेंगे और पेय भेंट देंगे। यह हमने अतीत में किया और हमारे पूर्वजों, राजाओं और हमारे पदाधिकारियों ने अतीत में यह किया। हम सब ने यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर यह किया। जिन दिनों हम स्वर्ग की रानी की पूजा करते थे हमारे पास बहुत अन्न होता था। हम सफल होते थे। हम लोगों का कुछ भी बुरा नहीं हुआ। [18]किन्तु तभी हम लोगों ने स्वर्ग की रानी की पूजा छोड़ दी और हमने उसे पेय भेंट देनी बन्द कर दी। जबसे हमने

उसकी पूजा में वे काम बन्द किये तब से ही समस्यायें उत्पन्न हुई हैं। हमारे लोग तलवार और भूख से मरे हैं।"

[19]तब स्त्रियाँ बोल पड़ीं। उन्होंने यिर्मयाह से कहा, "हमारे पति जानते थे कि हम क्या कर रहे थे। हमने स्वर्ग की रानी को बलि देने के लिये उनसे स्वीकृति ली थी। मदिरा भेंट चढ़ाने के लिये हमें उनकी स्वीकृति प्राप्त थी। हमारे पति यह भी जानते थे कि हम ऐसी विशेष रोटी बनाते थे जो उनकी तरह दिखाई पड़ती थी।"

[20]तब यिर्मयाह ने उन सभी स्त्रियों और पुरुषों से बातें कीं। उसने उन लोगों से बातें कीं जिन्होंने वे बातें अभी कही थीं। [21]यिर्मयाह ने उन लोगों से कहा, "यहोवा को याद था कि तुमने यहूदा के नगर और यरूशलेम की सड़कों पर बलि भेंट की थी। तुमने और तुम्हारे पूर्वजों, तुम्हारे राजाओं, तुम्हारे अधिकारियों और देश के लोगों ने उसे किया। यहोवा को याद था और उसने तुम्हारे किये गये कर्मो के बारे में सोचा। [22]अत: यहोवा तुम्हारे प्रति और अधिक चुप नहीं रह सका। यहोवा ने उन भयंकर कामों से घृणा की जो तुमने किये। इसीलिये यहोवा ने तुम्हारे देश को सूनी मरुभूमि बना दिया। अब वहाँ कोई व्यक्ति नहीं रहता। अन्य लोग उस देश के बारे में बुरी बातें कहते हैं। [23]वे सभी बुरी घटनायें तुम्हारे साथ घटी क्योंकि तुमने अन्य देवताओं को बलि भेंट की। तुमने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। तुमने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने उसके उपदेशों या उसके दिये नियमों का अनुसरण नहीं किया। तुमने उसके साथ की गयी वाचा का पालन नहीं किया।"

[24]तब यिर्मयाह ने उन सभी पुरुष और स्त्रियों से बात की। यिर्मयाह ने कहा, "मिस्र में रहने वाले यहूदा के तुम सभी लोगों यहोवा के यहाँ से सन्देश सुनो: [25]इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: 'स्त्रियों, तुमने वह किया जो तुमने करने को कहा। तुमने कहा, "हमने जो प्रतिज्ञा की है उसका पालन हम करेंगे। हम ने प्रतिज्ञा की है कि हम स्वर्ग की देवी को बलि भेंट करेंगे और पेय भेंट डालेंगे।" अत: ऐसा करती रहो। वह करो जो तुमने करने की प्रतिज्ञा की है। अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करो। [26]किन्तु मिस्र में रहने वाले सभी लोगों यहोवा के सन्देश को सुनो: मैंने अपने बड़े नाम का उपयोग करते हुए यह प्रतिज्ञा की है: मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब मिस्र में रहने वाला यहूदा का कोई भी व्यक्ति प्रतिज्ञा करने के लिये मेरे नाम का उपयोग कभी नहीं कर पायेगा। वे फिर कभी नहीं कहेंगे, "जैसा कि यहोवा शाश्वत है।" [27]मैं यहूदा के उन लोगों पर नजर रख रहा हूँ। किन्तु मैं उन पर नजर उनकी देखरेख के लिये नहीं रख रहा हूँ। मैं उन पर चोट पहुँचाने के लिये नजर रख रहा हूँ। मिस्र में रहने वाले यहूदा के लोग भूख से मरेंगे और तलवार से मारे जायेंगे। वे तब तक मरते चले जायेंगे जब तक वे समाप्त नहीं होंगे। [28]यहूदा के कुछ लोग तलवार से मरने से बच निकलेंगे। वे मिस्र से यहूदा वापस लौटेंगे। किन्तु बहुत थोड़े से यहूदा के लोग बच निकलेंगे। तब यहूदा के बचे हुए वे लोग जो मिस्र में आकर रहेंगे यह समझेंगे कि किसका सन्देश सत्य घटित होता है। वे जानेंगे कि मेरा सन्देश अथवा उनका सन्देश सच निकलता है। [29]लोगों मैं तुम्हें इसका प्रमाण दूँगा यह यहोवा के यहाँ से सन्देश है कि मैं तुम्हें मिस्र में दण्ड दूँगा। तब तुम निश्चय ही समझ जाओगे कि तुम्हें चोट पहुँचाने की मेरी प्रतिज्ञा, सच ही घटित होगी। [30]जो मैं कहता हूँ वह करूँगा यह तुम्हारे लिये प्रमाण होगा।' जो यहोवा कहता है, यह वह है 'होप्रा फ़िरौन मिस्र का राजा है। उसके शत्रु उसे मार डालना चाहते हैं। मैं होप्रा फिरौन को उसके शत्रुओं को दूँगा। सिदकिय्याह यहूदा का राजा था। नबूकदनेस्सर सिदकिय्याह का शत्रु था और मैंने सिदकिय्याह को उसके शत्रु को दिया। उसी प्रकार मैं होप्रा फिरौन को उसके शत्रु को दूँगा।'"

बारुक को सन्देश

45 यहोयाकीम योशिय्याह का पुत्र था। यहोयाकीम के यहूदा में राज्यकाल के चौथे वर्ष यिर्मयाह नबी ने नेरिय्याह के पुत्र बारुक से यह कहा। बारुक ने इन तथ्यों को पत्रक पर लिखा। यिर्मयाह ने बारुक से जो कहा, वह यह है: [2]"इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जो तुमसे कहता है, वह यह है: [3]'बारुक, तुमने कहा है: यह मेरे लिये बहुत बुरा है। यहोवा ने मेरी पीड़ा के साथ मुझे शोक दिया है। मैं बहुत थक गया हूँ। अपने कष्टों के कारण मैं क्षीण हो गया हूँ। मैं आराम नहीं पा सकता।' [4]यिर्मयाह, बारुक से यह कहो: 'यहोवा जो कहता है, वह यह है: मैं उसे ध्वस्त कर दूँगा जिसे मैंने बनाया है। मैंने जिसे रोपा है उसे मैं उखाड़ फेंकूँगा। मैं यहूदा में

सर्वत्र यही करूँगा। [5]बारुक, तुम अपने लिये कुछ बड़ी बात होने की आशा कर रहे हो। किन्तु उन चीजों की आशा न करो। उनकी ओर नजर न रखो क्योंकि मैं सभी लोगों के लिये कुछ भयंकर विपत्ति उत्पन्न करूँगा।' ये बाते यहोवा ने कही, 'तुम्हें अनेकों स्थानों पर जाना पड़ेगा। किन्तु तुम चाहे जहाँ जाओ, मैं तुम्हें जीवित बचकर निकल जाने दूँगा।'"

राष्ट्रों के बारे में यहोवा का सन्देश

46 यिर्मयाह नबी को ये सन्देश मिले। ये सन्देश विभिन्न राष्ट्रों के लिये हैं।

मिस्र के बारे में सन्देश

[2]यह सन्देश मिस्र के बारे में है। यह सन्देश निको फिरौन की सेना के बारे में है। निको मिस्र का राजा था। उसकी सेना कर्कमीश नगर में पराजित हुई थी। कर्कमीश परात नदी पर है। यहोयाकीम के यहूदा पर राज्य काल के चौथे वर्ष बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने निको फिरौन की सेना को कर्कमीश में पराजित किया। यहोयाकीम राजा योशिय्याह का पुत्र था। मिस्र के लिए यहोवा का सन्देश यह है:

[3]"अपनी विशाल और छोटी ढालों को तैयार करो। युद्ध के लिये कूच कर दो। [4]घोड़ों को तैयार करो। सैनिकों, अपने घोड़े पर सवार हो। युद्ध के लिये अपनी जगह जाओ। अपनी टोप पहनो। अपने भाले तेज करो। अपने कवच पहन लो। [5]मैं यह क्या देखता हूँ? सेना डर गई है। सैनिक भाग रहे हैं। उनके वीर सैनिक पराजित हो गये हैं। वे जल्दी में भाग रहे हैं। वे पीछे मुड़कर नहीं देखते। सर्वत्र भय छाया है।" यहोवा ने ये बातें कहीं।

[6]"तेज घावक भाग कर निकल नहीं सकते। शक्तिशाली सैनिक बचकर भाग नहीं सकता। वे सभी ठोकर खाएंगे और गिरेंगे। उत्तर में यह परात नदी के किनारे घटित होगा। [7]नील नदी सा कौन उमड़ा आ रहा है? उस बलवती और तेज नदी सा कौन बढ़ रहा है? [8]यह मिस्र है जो उमड़ते नील नदी सा आ रहा है। यह मिस्र है जो उस बलवान तेज नदी सा आ रहा है। मिस्र कहता है: 'मैं आऊँगा और पृथ्वी को पाट दूँगा, मैं नगरों और उनके लोगों को नष्ट कर दूँगा।' [9]घुड़सवारों, युद्ध में टूट पड़ो। सारथियों, तेज हाँकों। वीर सैनिकों, आगे बढ़ो। कूश और पूत के सैनिकों अपनी ढालें लो। लूदीया के सैनिकों, अपने धनुष संभालो।

[10]"किन्तु उस दिन, हमारा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा विजयी होगा। उस समय वह उन लोगों को दण्ड देगा जिन्हें दण्ड मिलना है। यहोवा के शत्रु वह दण्ड पाएंगे जो उन्हें मिलना है। तलवार तब तक काटेगी जब तक वह कुंठित नहीं हो जाती। तलवार तब तक मारेगी जब तक इसकी रक्त पिपासा बुझ नहीं जाती। यह होगा, क्योंकि ये हमारे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा के लिए बलि भेंट होती है। वह बलि मिस्र की सेना है जो परात नदी के किनारे उत्तरी प्रदेश में है।

[11]"मिस्र, गिलाद को जाओ और कुछ दवायें लाओ। तुम अनेक दवायें बनाओगे, किन्तु वे सहायक नहीं होंगी। तुम स्वस्थ नहीं होगे। [12]राष्ट्र तुम्हारी व्यथा की पुकार को सुनेंगे। तुम्हारा रूदन पूरी पृथ्वी पर सुना जाएगा। एक वीर सैनिक दूसरे वीर सैनिक पर टूट पड़ेगा और दोनों वीर सैनिक साथ गिरेंगे।"

[13]यह वह सन्देश है जिसे यहोवा ने यिर्मयाह नबी को दिया। यह सन्देश नबूकदनेस्सर के बारे में है जो मिस्र पर आक्रमण करने आ रहा है।

[14]"मिस्र में इस सन्देश की घोषणा करो, इसका उपदेश मिग्दोल नगर में दो। इसका उपदेश नोप और तहपन्हेस नगर में भी दो। 'युद्ध के लिये तैयार हो। क्यों? क्योंकि तुम्हारे चारों ओर लोग तलवारों से मारे जा रहे हैं।' [15]मिस्र,तुम्हारे शक्तिशाली सैनिक क्यों मारे जाएंगे? वे मुकाबले में नहीं टिकेंगे क्योंकि यहोवा उन्हें नीचे धक्का देगा। [16]वे सैनिक बार–बार ठोकर खायेंगे, वे एक दूसरे पर गिरेंगे। वे कहेंगे, 'उठो, हम फिर अपने लोगों में चलें, हम अपने देश चलें। हमारा शत्रु हमें पराजित कर रहा है।' हमें अवश्य भाग निकलना चाहिये।' [17]वे सैनिक अपने देश में कहेंगे, 'मिस्र का राजा फिरौन केवल एक नाम की गूंज है। उसके गौरव का समय गया।'" [18]राजा का यह सन्देश है। राजा सर्वशक्तिमान यहोवा है। "यदि मेरा जीना सत्य है तो एक शक्तिशाली पथ दर्शक आएगा। वह सागर के निकट ताबोर और कर्मेल पर्वतों सा महान होगा। [19]मिस्र के लोगों, अपनी वस्तुओं को बाँधो, बन्दी होने को तैयार हो जाओ। क्यों? क्योंकि नोप एक बरबाद सूना प्रदेश बनेगा नगर नष्ट होंगे और कोई भी व्यक्ति उनमें नहीं रहेगा।

[20]"मिस्र एक सुन्दर गाय सा है। किन्तु उसे पीड़ित करने को उत्तर से एक गोमक्षी आ रही है। [21]मिस्र की सेना में भाड़े के सैनिक मोटे बछड़ों से हैं। वे सभी मुड़कर भाग खड़े होंगे। वे आक्रमण के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े नहीं रहेंगे। उनकी बरबादी का समय आ रहा है। वे शीघ्र ही दण्ड पाएंगे। [22]मिस्र एक फुंफकारते उस साँप सा है जो बच निकलना चाहता है। शत्रु निकट से निकट आता जा रहा है और मिस्री सेना भागने का प्रयत्न कर रही है। शत्रु मिस्र के विरुद्ध कुल्हाड़ियों के साथ आएगा,वे उन पुरुषों के समान हैं जो पेड़ काटते हैं।" [23]यहोवा यह सब कहता है, "शत्रु मिस्र के वन को काट गिरायेगा। वन में असंख्य वृक्ष हैं, किन्तु वे सब काट डाले जायेंगे। शत्रु के सैनिक टिड्डी दल से भी अधिक हैं। वे इतने अधिक सैनिक हैं कि उन्हें कोई गिन नहीं सकता। [24]मिस्र लज्जित होगा, उत्तर का शत्रु उसे पराजित करेगा।"

[25]इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: "मैं बहुत शीघ्र, थीबिस के देवता आमोन को दण्ड दूँगा और मैं फिरौन, मिस्र और उसके देवताओं को दण्ड दूँगा। मैं मिस्र के राजाओं को दण्ड दूँगा। मैं फिरौन पर आश्रित लोगों को दण्ड दूँगा। [26]मैं उन सभी लोगों को उनके शत्रुओं से पराजित होने दूँगा और वे शत्रु उन्हें मार डालना चाहते हैं। मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर और उसके सेवकों के हाथ में उन लोगों को दूँगा। बहुत पहले मिस्र शान्ति से रहा और इन सब विपत्तियों के समय के बाद मिस्र फिर शान्तिपूर्वक रहेगा। यहोवा ने ये बातें कहीं।"

उत्तरी इस्राएल के लिए सन्देश

[27]"मेरे सेवक याकूब, भयभीत न हो। इस्राएल, आतंकित न हो। मैं निश्चय ही तुम्हें उन दूर देशों से बचाऊँगा।मैं तुम्हारे बच्चों को वहाँ से बचाऊँगा जहाँ वे बन्दी हैं। याकूब को पुन: सुरक्षा और शान्ति मिलेगी और कोई व्यक्ति उसे भयभीत नहीं करेगा।" [28]यहोवा यह सब कहता है: याकूब मेरे सेवक, डरो नहीं। मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैंने तुम्हें विभिन्न स्थानों में दूर भेजा और मैं उन सभी राष्ट्रों को पूर्णत: नष्ट करूँगा। किन्तु मैं तुम्हें पूर्णत: नष्ट नहीं करुँगा। तुम्हें उसका दण्ड मिलना चाहिये जो तुमने बुरे काम किये हैं। अत: मैं तुम्हें दण्ड से बच निकालने नहीं दूँगा। मैं तुम्हें अनुशासन में लाऊँगा, किन्तु मैं उचित ही करूँगा!"

पलिश्ती लोगों के बारे में सन्देश

47 यह सन्देश यहोवा का है जो यिर्मयाह नबी को मिला। यह सन्देश पलिश्ती लोगों के बारे में है। यह सन्देश, जब फिरौन ने गज्जा नगर पर आक्रमण किया, उससे पहले आया।

[2]यहोवा कहता है: "ध्यान दो, शत्रु के सैनिक उत्तर में एक साथ मोर्चा लगा रहे हैं। वे तटों को डूबाती तेज नदी की तरह आएंग वे पूरे देश को बाढ़ सा ढक लेंगे। वे नगरों और उनमें रह रहे निवासियों को ढक लेंगे। उस देश का हर एक रहने वाला सहायता के लिए चिल्लाएगा।

[3]"वे दौड़ते घोड़ों की आवाज सुनेंगे, वे रथों की घरघराहट सुनेंगे। वे पहियों की घरघराहट सुनेंगे। पिता अपने बच्चों की सुरक्षा करने में सहायता नहीं कर सकेंगे। वे पिता सहायता करने में एकदम असमर्थ होंगे।

[4]"सभी पलिश्ती लोगों को नष्ट करने का समय आ गया है। सोर और सिदोन के बचे सहायकों को नष्ट करने का समय आ गया है। यहोवा पलिश्ती लोगों को शीघ्र नष्ट करेगा। कप्तोर द्वीप में बचे लोगों को वह नष्ट करेगा। [5]गज्जा के लोग शोक में डूबेंगे और अपना सिर मुड़ाएंगे। अश्कलोन के लोग चुप कर दिए जाएंगे। घाटी के बचे लोगों, कब तक तुम अपने को काटते रहोगे?

[6]"ओ! यहोवा की तलवार, तू रुकी नहीं तू कब तक मार करती रहेगी? अपनी म्यान में लौट जाओ, रूको, शान्त होओ। [7]किन्तु यहोवा की तलवार कैसे विश्राम लेगी?यहोवा ने इसे आदेश दिया है। यहोवा ने इसे यह आदेश दिया है कि यह अश्कलोन नगर और समुद्र तट पर आक्रमण करे।"

मोआब के बारे में सन्देश

48 यह सन्देश मोआब देश के बारे में है। इस्राएल के लोगों के परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा ने जो कहा, वह यह है:

"नबो पर्वत का बुरा होगा, नबो पर्वत नष्ट होगा। किर्यातैम नगर लज्जित होगा। इस पर अधिकार होगा। शक्तिशाली स्थान लज्जित होगा। यह बिखर जायेगा। [2]मोआब की पुन: प्रशंसा नहीं होगी। हेशबोन नगर के लोग मोआब के पराजय की योजना बनाएंगे। वे कहेंगे, 'आओ, हम उस राष्ट्र का अन्त कर दें।' मदमेन तुम भी चुप किये जाओगे, तलवार तुम्हारा पीछा करेगी। [3]होरोनैम

नगर से रूदन सुनो, वे बहुत घबराहट और विनाश की चीखे हैं। [4]मोआब नष्ट किया जाएगा। उसके छोटे बच्चे सहायता की पुकार करेंगे। [5]मोआब के लोगों लूहीत के मार्ग तक जाओ। वे जाते हुए फूट फूट कर रो रहे हैं। होरोनैम के नगर तक जाने वाली सड़क से पीड़ा और कष्ट का रूदन सुना जा सकता है! [6]भाग चलो, जीवन के लिए भागो! झाड़ी सी उड़ो जो मरुभूमि में उड़ती है।

[7]तुम अपनी बनाई चीजों और अपने धन पर विश्वास करते हो। अत: तुम बन्दी बना लिये जाओगे। कमोश देवता बन्दी बनाया जायेगा और उसके याजक और पदाधिकारी उसके साथ जाएंगे। [8]विध्वंसक हर एक नगर के विरुद्ध आएगा, कोई नगर नहीं बचेगा। घाटी बरबाद होगी। उच्च मैदान नष्ट होगा। यहोवा कहता है: यह होगा अत: ऐसा ही होगा। [9]मोआब के खेतों में नमक फैलाओ। देश सूनी मरुभूमि बनेगा। मोआब के नगर खाली होंगे। उनमें कोई व्यक्ति भी न रहेगा। [10]यदि व्यक्ति वह नहीं करता जिसे यहोवा कहता है यदि वह अपनी तलवार का उपयोग उन लोगों को मारने के लिये नहीं करता, तो उस व्यक्ति का बुरा होगा।

[11]"मोआब का कभी विपत्ति से पाला नहीं पड़ा। मोआब शान्त होने के लिये छोड़ी गई दाखमधु सा है। मोआब एक घड़े से कभी दूसरे घड़े में ढाला नहीं गया। वह कभी बन्दी नहीं बनाया गया। अत: उसका स्वाद पहले की तरह है और उसकी गन्ध बदली नहीं है।" [12]यहोवा यह सब कहता है, "किन्तु मैं लोगों को शीघ्र ही तुम्हें तुम्हारे घड़े से ढालने भेजूँगा। वे लोग मोआब के घड़े को खाली कर देंगे और तब वे उन घड़ों को चकनाचूर कर देंगे।"

[13]तब मोआब के लोग अपने असत्य देवता कमोश के लिए लज्जित होंगे। इस्राएल के लोगों ने बेतेल में झूठे देवता पर विश्वास किया था और इस्राएल के लोगों को उस समय ग्लानि हुई थी जब उस असत्य देवता ने उनकी सहायता नहीं की थी। मोआब वैसा ही होगा।

[14]"तुम यह नहीं कह सकते 'हम अच्छे सैनिक हैं। हम युद्ध में वीर पुरुष है।' [15]शत्रु मोआब पर आक्रमण करेगा। शत्रु उन नगरों में आएगा और उन्हें नष्ट करेगा। नरसंहार में उसके श्रेष्ठ युवक मारे जाएँगे। यह सन्देश राजा का है। उस राजा का नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।" [16]मोआब का अन्त निकट है। मोआब शीघ्र ही नष्ट कर दिया जाएगा। [17]मोआब के चारों ओर रहने वाले लोगों, तुम सभी उस देश के लिए रोओगे। तुम लोग जानते हो कि मोआब कितना प्रसिद्ध है। अत: इसके लिए रोओ। कहो, 'शासक की शक्ति भंग हो गई। मोआब की शक्ति और प्रतिष्ठा चली गई।'

[18]"दीबोन में रहने वाले लोगों अपने प्रतिष्ठा के स्थान से बाहर निकलो। धूलि में जमीन पर बैठो। क्यों? क्योंकि मोआब का विध्वंसक आ रहा है और वह तुम्हारे दृढ़ नगरों को नष्ट कर देगा।

[19]"अरोएर में रहने वाले लोगों, सड़क के सहारे खड़े होओ और सावधानी से देखो। पुरुष को भागते देखो, स्त्री को भागते देखो, उनसे पूछो, क्या हुआ है?

[20]मोआब बरबाद होगा और लज्जा से गड़ जाएगा। मोआब रोएगा और रोएगा। अर्नोन नदी पर घोषित करो कि मोआब नष्ट हो गया। [21]उच्च मैदान के लोग दण्ड पा चुके होलोन, यहसा और मेपात नगरों का न्याय हो चुका। [22]दीबोन, नबो और बेतदिबलातैम, [23]किर्य्यतैम, बेतगामूल और बेतमोन। [24]करिय्योत बोस्रा तथा मोआब के निकट और दूर के सभी नगरों के साथ न्याय हो चुका। [25]मोआब की शक्ति काट दी गई, मोआब की भुजायें टूट गई।" यहोवा ने यह सब कहा।

[26]"मोआब ने समझा था वह यहोवा से भी अधिक महत्वपूर्ण है। अत: मोआब को दण्डित करो कि वह पागल सा हो जाय। मोआब गिरेगा और अपनी उलटी में चारों ओर लौटेगा। लोग मोआब का मजाक उड़ाएंगे।

[27]"मोआब तुमने इस्राएल का मजाक उड़ाया था। इस्राएल चोरों के गिरोह द्वारा पकड़ा गया था। हर बार तुम इस्राएल के बारे में कहते थे। तुम अपना सिर हिलाते थे ऐसा अभिनय करते थे मानो तुम इस्राएल से श्रेष्ठ हो [28]मोआब के लोगों, अपने नगरों को छोड़ो। जाओ और पहाड़ियों पर रहो, उस कबूतर की तरह रहो जो अपने घोंसले गुफा के मुख पर बनाता है। [29]हम मोआब के गर्व को सुन चुके हैं, वह बहुत घमण्डी था। उसने समझा था कि वह बहुत बड़ा है। वह सदा अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनता रहा। वह अत्याधिक घमण्डी था।"

[30]यहोवा कहता है, "मैं जानता हूँ कि मोआब शीघ्र ही क्रोधित हो जाता है और अपनी प्रशंसा के गीत गाता है। किन्तु उसकी शेखियाँ झूठ है। वह जो करने को कहता है, कर नहीं सकता। [31]अत: मैं मोआब के लिए रोता हूँ। मैं मोआब में हर एक के लिए रोता हूँ। मैं कीर्हेरेस के

लोगों के लिये रोता हूँ। [32]मैं याजेर के लोग के साथ याजेर के लिये रोता हूँ। सिबमा अतीत में तुम्हारी अंगूर की बेले सागर तक फैली थीं। वे याजेर नगर तक पहुँच गई थीं। किन्तु विध्वंसक ने तुम्हारे फल और अंगूर ले लिये। [33]मोआब के विशाल अंगूर के बागों से सुख और आनन्द विदा हो गये। मैंने दाखमधु निष्कासकों से दाखमधु का बहना रोक दिया है। अब दाखमधु बनाने के लिये अंगूरों पर चलने वालों के नृत्य गीत नहीं रह गए हैं। खुशी का शोर गुल सभी समाप्त हो गयी है।

[34]"हेशबोन और एलाले नगरों के लोग रो रहे हैं। उनका रूदन दूर यहस के नगर में भी सुनाई पड़ रहा है। उनका रूदन सोआर नगर से सुनाई पड़ रहा है और होरोनैम एवं एग्लथ शेलिशिया के दूर नगरों तक पहुँच रहा है। यहाँ तक कि निम्रीम का भी पानी सूख गया है। [35]मैं मोआब को उच्च स्थानों पर होम बलि चढ़ाने से रोक दूँगा। मैं उन्हें अपने देवताओं को बलि चढ़ाने से रोकूँगा। यहोवा ने यह सब कहा।

[36]"मुझे मोआब के लिये बहुत दुःख है। शोक गीत छेड़ने वाली बाँसुरी की धुन की तरह मेरा हृदय रूदन कर रहा है। मैं कीर्हेरेस के लोगों के लिये दुःखी हूँ। उनके धन और सम्पत्ति सभी ले लिये गए हैं। [37]हर एक अपना सिर मुड़ाये है। हर एक की दाढ़ी साफ हो गई है। हर एक के हाथ कटे हैं और उनसे खून निकल रहा है। हर एक अपनी कमर में शोक के वस्त्र लपेटे हैं। [38]मोआब में लोग घरों की छतों और हर एक सार्वजनिक चौराहों में सर्वत्र मरे हुओं के लिये रो रहे हैं। वहाँ शोक है क्योंकि मैंने मोआब को खाली घड़े की तरह फोड़ डाला है।" यहोवा ने यह सब कहा।

[39]"मोआब बिखर गया है। लोग रो रहे हैं। मोआब ने आत्म समर्पण किया है। अब मोआब लज्जित है। लोग मोआब का मजाक उड़ाते हैं, किन्तु जो कुछ हुआ है वह उन्हें भयभीत कर देता है।"

[40]यहोवा कहता है, "देखो, एक उकाब आकाश से नीचे को टूट पड़ रहा है। यह अपने परों को मोआब पर फैला रहा है। [41]मोआब के नगरों पर अधिकार होगा। छिपने के सुरक्षित स्थान पराजित होंगे। उस समय मोआब के सैनिक वैसे ही आतंकित होंगे जैसे प्रसव करती स्त्री। [42]मोआब का राष्ट्र नष्ट कर दिया जायेगा। क्यों? क्योंकि वे समझते थे कि वे यहोवा से भी अधिक महत्वपूर्ण हैं।"

[43]यहोवा यह सब कहता है: "मोआब के लोगों, भय गहरे गड्ढे और जाल तुम्हारी प्रतीक्षा में हैं। [44]लोग डरेंगे और भाग खड़े होंगे, और वे गहरे गड्ढों में गिरेंगे। यदि कोई गहरे गड्ढे से निकलेगा तो वह जाल में फँसेगा। मैं मोआब पर दण्ड का वर्ष लाऊँगा।" यहोवा ने यह सब कहा।

[45]"शक्तिशाली शत्रु से लोग भाग चले हैं। वे सुरक्षा के लिये हेशबोन नगर में भागे। किन्तु वहाँ सुरक्षा नहीं थी। हेशबोन में आग लगी। वह आग सीहोन के नगर से शुद्ध हुई और यह मोआब के प्रमुखों को नष्ट करने लगी। यह उन घमण्डी लोगों को नष्ट करने लगी। [46]मोआब यह तुम्हारे लिये, बहुत बुरा होगा। कमोश के लोग नष्ट किये जा रहे हैं। तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ बन्दी और कैदी के रुप में ले जाए जा रहे हैं।

[47]"मोआब के लोग बन्दी के रूप में दूर पहुँचाए जाएंगे। किन्तु आने वाले दिनों में मैं मोआब के लोगों को वापस लाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है।

यहाँ मोआब के साथ न्याय समाप्त होता है।

अम्मोन के बारे में सन्देश

49 यह सन्देश अम्मोनी लोगों के बारे में है। यहोवा कहता है, "अम्मोनी लोगों, क्या तुम सोचते हो कि इस्राएली लोगों के बच्चे नहीं हैं? क्या तुम समझते हो कि वहाँ माता–पिता के मरने के बाद उनकी भूमि लेने वाले कोई नहीं? शायद ऐसा ही है और इसलिए मल्काम ने गाद की भूमि ले ली है।"

[2]यहोवा कहता है, "वह समय आएगा जब रब्बा अम्मोन के लोग युद्ध का घोष सुनेंगे। रब्बा अम्मोन नष्ट किया जाएगा। यह नष्ट इमारतों से ढकी पहाड़ी बनेगा और इसको चारों ओर के नगर जला दिये जाएंगे। उन लोगों ने इस्राएल के लोगों को वह भूमि छोड़ने को विवश किया। किन्तु इस्राएल के लोग उन्हें हटने के लिए विवश करेंगे।" यहोवा ने यह सब कहा।

[3]"हेशबोन के लोगों, रोओ। क्योंकि ऐ नगर नष्ट कर दिया गया है। रब्बा अम्मोन की स्त्रियों, रोओ। अपने शोक वस्त्र पहनो और रोओ। सुरक्षा के लिये नगर को भागो। क्यों? क्योंकि शत्रु आ रहा है। वे मल्कान देवता को ले जाएंगे और वे मल्कान के याजकों और अधिकारियों को ले जाएंगे। [4]तुम अपनी शक्ति की डींग मारते हो। किन्तु

अपना बल खो रहे हो। तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारा धन तुम्हें बचाएगा। तुम समझते हो कि तुम पर कोई आक्रमण करने की सोच भी नहीं सकता।" [5]किन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, "मैं हर ओर से तुम पर विपत्ति ढाऊँगा। तुम सब भाग खड़े होगे, फिर कोई भी तुम्हें एक साथ लाने में समर्थ न होगा।"

[6]"अम्मोनी लोग बन्दी बनाकर दूर पहुँचाए जायेंगे। किन्तु समय आएगा जब मैं अम्मोनी लोगों को वापस लाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है।

एदोम के बारे में सन्देश

[7]यह सन्देश एदोम के बारे में है: सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "क्या तेमान नगर में बुद्धि बची नहीं रह गई है? क्या एदोम के बुद्धिमान लोग अच्छी सलाह देने योग्य नहीं रहे? क्या वे अपनी बुद्धिमत्ता खो चुके हैं? [8]ददान के निवासियों भागो, छिपो। क्यों? क्योंकि मैं एसाव को उसके कामों के लिए दण्ड दूँगा।

[9]"यदि अंगूर तोड़ने वाले आते हैं और अपनेअंगूर के बागों से अंगूर तोड़ते हैं और बेलों पर कुछ अंगूर छोड़ ही देते हैं। यदि चोर रात को आते हैं तो वे उतना ही ले जाते हैं जितना उन्हें चाहिये सब नहीं। [10]किन्तु मैं एसाव से हर चीज ले लूँगा। मैं उसके सभी छिपने के स्थान ढूँढ डालूँगा। वह मुझसे छिपा नहीं रह सकेगा। उसके बच्चे, सम्बन्धी और पड़ोसी मरेंगे। [11]कोई भी व्यक्ति उनके बच्चों की देख–रेख के लिये नहीं बचेगा। उसकी पत्नियाँ किसी भी विश्वासपात्र को नहीं पाएंगी।"

[12]यह वह है, जो यहोवा कहता है, "कुछ व्यक्ति दण्ड के पात्र नहीं होते, किन्तु उन्हें कष्ट होता है। किन्तु एदोम तुम दण्ड पाने योग्य हो, अत: सचमुच तुमको दण्ड मिलेगा। जो दण्ड तुम्हें मिलना चाहिये, उससे तुम बचकर नहीं निकल सकते। तुम्हें दण्ड मिलेगा।" [13]यहोवा कहता है, "मैं अपनी शक्ति से यह प्रतिज्ञा करता हूँ, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि बोस्रा नगर नष्ट कर दिया जाएगा। वह नगर बरबाद चट्टानों का ढेर बनेगा। जब लोग अन्य नगरों का बुरा होना चाहेंगे तो वे इस नगर को उदाहरण के रूप में याद करेंगे। लोग उस नगर का अपमान करेंगे और बोस्रा के चारों ओर के नगर सदैव के लिये बरबाद हो जाएंगे।"

[14]मैंने एक सन्देश यहोवा से सुना। यहोवा ने राष्ट्रों को सन्देश भेजा। सन्देश यह है: "अपनी सेनाओं को एक साथ एकत्रित करो! युद्ध के लिये तैयार हो जाओ। एदोम राष्ट्र के विरुद्ध कूच करो। [15]एदोम, मैं तुम्हें महत्वहीन बनाऊँगा। हर एक व्यक्ति तुमसे घृणा करेगा। [16]एदोम, तुमने अन्य राष्ट्रों को आतंकित किया है। अत: तुमने समझा कि तुम महत्वपूर्ण हो। किन्तु तुम मूर्ख बनाए गए थे। तुम्हारे घमण्ड ने तुझे धोखा दिया है। एदोम, तुम ऊँचे पहाड़ियों पर बसे हो, तुम बड़ी चट्टानों और पहाड़ियों के स्थानों पर सुरक्षित हो। किन्तु यदि तुम अपना निवास उकाब के घोंसले की ऊँचाई पर ही क्यों न बनाओ, तो भी मैं तुझे पा लूँगा और मैं वहाँ से नीचे ले आऊँगा।" यहोवा ने यह सब कहा।

[17]"एदोम नष्ट किया जाएगा। लोगों को नष्ट नगरों को देखकर दु:ख होगा। लोग नष्ट नगरों पर आश्चर्य से सीटी बजाएंगे। [18]एदोम, सदोम, अमोरा और उनके चारों ओर के नगरों जैसा नष्ट किया जाएगा। कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा।" यह सब यहोवा ने कहा।

[19] "कभी यरदन नदी के समीप की घनी झाड़ियों से एक सिंह निकलेगा और वह सिंह उन खेतों में जाएगा जहाँ लोग अपनी भेड़ें और अपने पशु रखते हैं। मैं उस सिंह के समान हूँ। मैं एदोम जाऊँगा और मैं उन लोगों को आंतकित करुँगा। मैं उन्हें भगाऊँगा। उनका कोई युवक मुझको नहीं रोकेगा। कोई भी मेरे समान नहीं है। कोई भी मुझको चुनौती नहीं देगा। उनके गड़ेरियों (प्रमुखों) में से कोई भी हमारे विरुद्ध खड़ा नहीं होगा।"

[20]अत: यहोवा ने एदोम के विरुद्ध जो योजना बनाई है उसे सुनो। तेमान में लोगों के साथ जो करने का निश्चय यहोवा ने किया है उसे सुनो। शत्रु एदोम की रेवड़ (लोग) के बच्चों को घसीट ले जाएगा। उन्होंने जो कुछ किया उससे एदोम के चरागाह खाली हो जायेगें। [21]एदोम के पतन के धमाके से पृथ्वी काँप उठेगी। उनका रूदन लगातार लाल सागर तक सुनाई पड़ेगा।

[22]यहोवा उस उकाब की तरह मंडरायेगा जो अपने शिकार पर टूटता है। यहोवा बोस्रा नगर पर अपने पंख उकाब के समान फैलाया है। उस समय एदोम के सैनिक बहुत आतंकित होंगे। वे प्रसव करती स्त्री की तरह भय से रोएंगे।

दमिश्क के बारे में सन्देश

[23]यह सन्देश दमिश्क नगर के लिये है: "हमात और अर्पद नगर भयभीत हैं। वे डरे हैं क्योंकि उन्होंने बुरी खबर सुनी है। वे साहसहीन हो गए हैं। वे परेशान और आतंकित हैं। [24]दमिश्क नगर दुर्बल हो गया है। लोग भाग जाना चाहते हैं। लोग भय से घबराने को तैयार बैठे हैं। प्रसव करती स्त्री की तरह लोग पीड़ा और कष्ट का अनुभव कर रहे हैं।

[25]"दमिश्क प्रसन्न नगर है। लोगों ने अभी उस तमाशे के नगर को नहीं छोड़ा है। [26]अत: युवक इस नगर के सार्वजनिक चौराहे में मरेंगे। उस समय उसके सभी सैनिक मार डाले जाएंगे।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कुछ कहा है। [27]मैं दमिश्क की दीवारों में आग लगा दूँगा। वह आग बेन्नहदद के दृढ़ दुर्गों को पूरी तरह जलाकर राख कर देगी।"

केदार और हासोर के बारे में सन्देश

[28]यह सन्देश केदार के परिवार समूह और हासोर के शासकों के बारे में है। बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने उन्हें पराजित किया था।

यहोवा कहता है, "जाओ और केदार के परिवार समूह पर आक्रमण करो। पूर्व के लोगों को नष्ट कर दो। [29]उनके डेरे और रेवड़ ले लिये जाएंगे। उनके डेरे और सभी चीजें ले जायी जायेंगी। उनका शत्रु ऊँटों को ले लेगा। लोग उनके सामने चिल्लाएंगे: 'हमारे चारों ओर भयंकर घटनायें घट रही है।' [30] शीघ्र ही भाग निकलो! हासोर के लोगों, छिपने का ठीक स्थान ढूँढो।" यह सन्देश यहोवा का है। "नबूकदनेस्सर ने तुम्हारे विरुद्ध योजना बनाई है। उसने तुम्हें पराजित करने की चुस्त योजना बनाई है।

[31]"एक राष्ट्र है, जो खुशहाल है। उस राष्ट्र को विश्वास है कि उसे कोई नहीं हरायेगा। उस राष्ट्र के पास सुरक्षा के लिये द्वार और रक्षा प्राचीर नहीं है। वे लोग अकेले रहते हैं। यहोवा कहता है, 'उस राष्ट्र पर आक्रमण करो।' [32]शत्रु उनके ऊँटों और पशुओं के बड़े झुण्डों को चुरा लेगा। शत्रु उनके विशाल जानवरों के समूह को चुरा लेगा। मैं उन लोगों को पृथ्वी के हर भाग में भाग जाने पर विवश करूँगा जिन्होंने अपने बालों के कोनों को कटा रखा है। और मैं उनके लिये चारों ओर से भयंकर विपत्तियाँ लाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। [33]"हासोर का प्रदेश जंगली कुत्तों के रहने का स्थान बनेगा। यह सदैव के लिये सूनी मरुभूमि बनेगा। कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा कोई व्यक्ति उस स्थान पर नहीं रहेगा।"

एलाम के बारे में सन्देश

[34]जब सिदकिय्याह यहूदा का राजा था तब उसके राज्यकाल के आरम्भ में यिर्मयाह नबी ने यहोवा का एक सन्देश प्राप्त किया। यह सन्देश एलाम राष्ट्र के बारे में है।

[35]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "मैं एलाम का धनुष बहुत शीघ्र तोड़ दूँगा। धनुष एलाम का सबसे शक्तिशाली अस्त्र है। [36]मैं एलाम पर चतुर्दिक तूफान लाऊँगा। मैं उन्हें आकाश के चारों दिशाओं से लाऊँगा। मैं एलाम के लोगों को पृथ्वी पर सर्वत्र भेजूँगा जहाँ चतुर्दिक आँधिया चलती हैं और एलाम के बन्दी हर राष्ट्र में जाएंगे। [37]मैं एलाम को, उनके शत्रुओं के देखते, टुकड़ों में बाँट दूँगा। मैं एलाम को उनके सामने तोड़ूँगा जो उसे मार डालना चाहते हैं। मैं उन पर भयंकर विपत्तियाँ लाऊँगा। मैं उन्हें दिखाऊँगा कि मैं उन पर कितना क्रोधित हूँ।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं एलाम का पीछा करने को तलवार भेजूँगा। तलवार उनका पीछा तब तक करेगी जब तक मैं उन सबको मार नहीं डालूँगा। [38]मैं एलाम को दिखाऊँगा कि मैं व्यवस्थापक हूँ और मैं उसके राजाओं तथा पदाधिकारियों को नष्ट कर दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। [39]"किन्तु भविष्य में मैं एलाम के लिये सब अच्छा घटित होने दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है।

बाबुल के बारे में सन्देश

50 यह सन्देश यहोवा का है जिसे उसने बाबुल राष्ट्र और बाबुल के लोगों के लिये दिया। यहोवा ने यह सन्देश यिर्मयाह द्वारा दिया।

[2]"हर एक राष्ट्र को यह घोषित कर दो! झण्डा उठाओ और सन्देश सुनाओ। पूरा सन्देश सुनाओ और कहो, 'बाबुल राष्ट्र पर अधिकार किया जाएगा। बेल देवता लज्जा का पात्र बनेगा। मरोदक देवता बहुत डर जाएगा। बाबुल की देवमूर्तियाँ लज्जा का पात्र बनेंगी उसके मूर्ति देवता भयभीत हो जाएंगे।' [3]उत्तर से एक राष्ट्र बाबुल पर

आक्रमण करेगा। वह राष्ट्र बाबुल को सूनी मरुभूमि सा बना देगा। कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा मनुष्य और पशु दोनो वहाँ से भाग जाएंगे।" [4]यहोवा कहता है, "उस समय, इस्राएल के और यहूदा के लोग एक साथ होंगे। वे एक साथ बराबर रोते रहेंगे और एक साथ ही वे अपने यहोवा परमेश्वर को खोजने जाएंगे। [5]वे लोग पूछेंगे सिय्योन कैसे जाएँ वे उस दिशा में चलना आरम्भ करेंगे। लोग कहेंगे, 'आओ, हम यहोवा से जा मिलें, हम एक ऐसी वाचा करें जो सदैव रहे। हम लोग एक ऐसी वाचा करे जिसे हम कभी न भूले।'

[6]"मेरे लोग खोई भेड़ की तरह हो गए हैं। उनके गड़ेरिए (प्रमुख) उन्हें गलत रास्ते पर ले गए हैं। उनके मार्गदर्शकों ने उन्हें पर्वतों और पहाड़ियों में चारों ओर भटकाया है। वे भूल गए कि उनके विश्राम का स्थान कहाँ है। [7]जिसने भी मेरे लोगों को पाया, चोट पहुँचाई और उन शत्रुओं ने कहा, 'हमने कुछ गलत नहीं किया।' उन लोंगों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। यहोवा उनका सच्चा विश्रामस्थल है। यहोवा परमेश्वर है जिस पर उनके पूर्वजों ने विश्वास किया।

[8]"बाबुल से भाग निकलो। कसदी लोगों के देश को छोड़ दो। उन बकरों की तरह बनो जो झुण्ड को राह दिखाते हैं। [9]मैं बहुत से राष्ट्रों को उत्तर से एक साथ लाऊँगा। राष्ट्रों का यह समूह बाबुल के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयार होगा। बाबुल उत्तर के लोगों द्वारा अधिकार में लाया जाएगा। वे राष्ट्र बाबुल पर अनेक बाण चलायेंगे और वे बाण उन सैनिकों के समान होंगे जो युद्ध भूमि से खाली हाथ नहीं लौटते। [10]शत्रु कसदी लोगों से सारा धन लेगा। वे शत्रु सैनिक जो चाहेंगे, लेंगे।" यह सब यहोवा कहता है।

[11]"बाबुल, तुम उत्तेजित और प्रसन्न हो। तुमने मेरा देश लिया। तुम अन्न के चारों ओर नयी गाय की तरह नाचते हो। तुम्हारी हँसी घोडों की हिनहिनाहट सी है। [12]अब तुम्हारी माँ बहुत लज्जित होगी तुम्हें जन्म देने वाली माँ को ग्लानि होगा बाबुल सभी राष्ट्रो की तुलना में सबसे कम महत्व का होगा। वह एक सूनी मरुभूमि होगी। [13]यहोवा अपना क्रोध प्रकट करेगा। अत: कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा। बाबुल नगर पूरी तरह खाली होगा। बाबुल से गुजरने वाला हर एक व्यक्ति डरेगा। वे अपना सिर हिलाएंगे जब वे देखेंगे कि यह किस बुरी तरह नष्ट हुआ है।

[14]"बाबुल के विरुद्ध युद्ध की तैयारी करो। सभी सैनिकों अपने धनुष से बाबुल पर बाण चलाओ। अपने बाणों को न बचाओ। बाबुल ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। [15]बाबुल के चारों ओर के सैनिकों, युद्ध का उद्घोष करो। अब बाबुल ने आत्म समर्पण कर दिया है। उसकी दीवारों और गुम्बदों को गिरा दिया गया है। यहोवा उन लोगों को वह दण्ड दे रहा है जो उन्हें मिलना चाहिये। राष्ट्रों तुम बाबुल को वह दण्ड दो जो उसे मिलना चाहिये। सके साथ वह करो जो उसने अन्य राष्ट्रों के साथ किया है। [16]बाबुल के लोगों को उनकी फसलें न उगाने दो। उन्हें फसलें न काटने दो। बाबुल के सैनिक ने अपने नगर में अनेकों बन्दी लाए थे। अब शत्रु के सैनिक आ गए हैं, अत: वे बन्दी अपने घर लौट रहे हैं। वे बन्दी अपने देशों को वापस भाग रहे हैं।

[17]"इस्राएल भेड़ की तरह है जिसे सिंहो ने पीछा करके भगा दिया है। उसे खाने वाला पहला सिंह अश्शूर का राजा था। उसकी हड्डियों को चूर करने वाला अंतिमसिंह बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर था। [18]अत: सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर कहता है: 'मैं शीघ्र ही बाबुल के राजा और उसके देश को दण्ड दूँगा। मैं उसे वैसे ही दण्ड दूँगा जैसे मैंने अश्शूर के राजा को दण्ड दिया।'

[19]"किन्तु इस्राएल को मैं उसके खेतों में वापस लाऊँगा। वह वही भोजन करेगा जो कर्मेल पर्वत और बाशान की भूमि की उपज है। वह भोजन करेगा और भरा पूरा होगा। वह एप्रैम और गिलाद भूमि में पहाड़ियों पर खायेगा।"

[20]यहोवा कहता है, "उस समय लोग इस्राएल के अपराध को जानना चाहेंगे। किन्तु कोई अपराध नहीं होगा। लोग यहूदा के पापों को जानना चाहेंगे किन्तु कोई पाप नहीं मिलेगा। क्यों? क्योंकि मैं इस्राएल और यहूदा के कुछबचे हुओं को बचा रहा हूँ और मैं उनके सभी पापों के लिये उन्हें क्षमा कर रहा हूँ।" [21]यहोवा कहता है, मरातैम देश पर आक्रमण करो। पकोद के प्रदेश के निवासियों पर आक्रमण करो। उन पर आक्रमण करो, उन्हें मार डालो और उन्हें पूरी तरह नष्ट कर दो। वह सब करो जिसके लिये मैं आदेश दे रहा हूँ!

[22]"युद्ध का घोष पूरे देश में सुना जा सकता है। यह बहुत अधिक विध्वंस का शोर है। [23]बाबुल पूरी पृथ्वी का हथौड़ा था। किन्तु अब हथौड़ा टूट गया और बिखर

गया है। बाबुल सच में सबसे अधिक बरबाद राष्ट्रों में से एक है। [24]बाबुल, मैंने तुम्हारे लिए एक जाल बिछाया, और जानने के पहले ही तुम इसमें आ फँसे। तुम यहोवा के विरुद्ध लड़े, इसलिये तुम मिल गए और पकड़े गए। [25]यहोवा ने अपना भण्डार गृह खोल दिया है। यहोवा ने भण्डार गृह से अपने क्रोध के अस्त्र शस्त्र निकाले हैं। सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा ने उन अस्त्र शस्त्रों को निकाला हैं क्योंकि उसे काम करना है। उसे कसदी लोगों के देश में काम करना है।

[26]"अति दूर से बाबुल के विरुद्ध आओ, उसके अन्न भरे भण्डार गृहों को तोड़कर खोलो। बाबुल को पूरी तरह नष्ट करो और किसी को जीवित न छोड़ो। उसके शवों को अन्न के बड़े ढेर की तरह एक ढेर में लगाओ। [27]बाबुल के सभी युवकों को मार डालो। उनका नहसंहार होने दो। उनकी पराजय का समय आ गया है। अत: उनके लिये बहुत बुरा होगा। यह उनके दण्डित होने का समय है। [28]लोग बाबुल देश से भाग रहे हैं, वे उस देश से बच निकल रहे हैं। वे लोग सिय्योन को आ रहे हैं और वे सभी से वह सब कह रहे हैं जो यहोवा कर रहा है। वे कह रहे हैं कि बाबुल को, जो दण्ड मिलना चाहिये। यहोवा उसे दे रहा है। बाबुल ने यहोवा के मन्दिर को नष्ट किया, अत: अब यहोवा बाबुल को नष्ट कर रहा है।

[29]"धनुर्धारियों को बाबुल के विरुद्ध बुलाओ। उन लोगोंसे नगर को घेरने को कहो। किसी को बच निकलने मत दो। जो उसने बुरा किया है उसका उल्टा भुगतान करो। उसके साथ वही करो जो उसने अन्य राष्ट्रों के साथ किया है। बाबुल ने यहोवा का सम्मान नहीं किया। बाबुल इस्राएल के पवित्रतम के प्रति बड़ा क्रूर रहा। अत: बाबुल को दण्ड दो। [30] बाबुल के युवक सड़कों पर मारे जाएंगे, उस दिन उसके सभी सैनिक मर जाएंगे।

यह सब यहोवा कहता है। [31]"बाबुल, तुम बहुत गर्वीले हो, और मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। हमारा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है। "मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ और तुम्हारे दण्डित होने का समय आ गया है। [32]गर्वीला बाबुल ठोकर खाएगा और गिरेगा और कोई व्यक्ति उसे उठाने में सहायता नहीं करेगा। मैं उसके नगरों में आग लगाऊँगा, वह आग उसके चारों ओर के सभी को पूरी तरह जला देगी।" [33]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, इस्राएल और यहूदा के लोग दास हैं। शत्रु उन्हें ले गया, और शत्रु इस्राएल को निकल जाने नहीं देगा। [34]किन्तु परमेश्वर उन लोगों को वापस लाएगा। उसका नाम सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा है। वह दृढ़ शक्ति से उन लोगों की रक्षा करेगा। वह उनकी रक्षा करेगा जिससे वह पृथ्वी को विश्राम दे सके। किन्तु वह बाबुल के निवासियों को विश्राम नहीं देगा।"

[35] यहोवा कहता है, "बाबुल के निवासियों को तलवार के घाट उतर जाने दो। बाबुल के राजकीय अधिकारियों और ज्ञानियों को भी तलवार से कट जाने दो। [36]बाबुल के याजकों को तलवार के घाट उतरने दो। वे याजक मूर्ख लोगों की तरह होंगे। बाबुल के सैनिकों को तलवार से कटने दो, वे सैनिक त्रास से भर जाएंगे। [37]बाबुल के घोड़ों और रथों को तलवार के घाट उतरने दो। अन्य देशों के भाड़े के सैनिकों को तलवार से कट जाने दो। वे सैनिक भयभीत अबलाओं की तरह होंगे। बाबुल के खजाने के विरुद्ध तलवार उठने दो, वे खजाने ले लिये जाएंगे। [38]बाबुल की नदियों के विरुद्ध तलवार उठने दो। वे नदियाँ सूख जाएंगी। बाबुल देश में असंख्य देव मूर्तियाँ है। वे मूर्तियाँ प्रकट करती है कि बाबुल के लोग मूर्ख हैं। अत: उन लोगों के साथ बुरी घटनायें घटेंगी।

[39]"बाबुल फिर लोगों से नहीं भरेगा, जंगली कुत्ते, शुतुरमुर्ग और अन्य मरुभूमि के जानवर वहाँ रहेंगे। किन्तु वहाँ कभी कोई मनुष्य फिर नहीं रहेगा। [40]परमेश्वर ने सदोम, अमोरा और उनके चारों ओर के नगरों को पूरी तरह से नष्ट किया था और अब उन नगरों में कोई नहीं रहता।इसी प्रकार बाबुल में कोई नहीं रहेगा और कोई मनुष्य वहाँ रहने कभी नहीं जायेगा।

[41]"देखो, उत्तर से लोग आ रहे हैं, वे एक शक्तिशाली राष्ट्र से आ रहे हैं। पूरे संसार के चारों ओर से एक साथ बहुत से राजा आ रहे हैं। [42]उनकी सेना के पास धनुष और भाले हैं, सैनिक क्रूर हैं, उनमें दया नहीं है। सैनिक अपने घोड़ों पर सवार आ रहे हैं, और प्रचण्ड घोष सागर की तरह गरज रहे हैं। वे अपने स्थानों पर युद्ध के लिये तैयार खड़े हैं। बाबुल नगर वे तुम पर आक्रमण करने को तत्पर हैं। [43]बाबुल के राजा ने उन सेनाओं के बारे में सुना, और वह आतंकित हो गया। वह इतना डर गया है कि उसके हाथ हिल नहीं सकते। उसके डर से उसके पेट में ऐसे पीड़ा हो रही है, जैसे वह प्रसव करने वाली स्त्री हो।"

[44]यहोवा कहता है, "कभी यरदन नदी के पास की घनी झाड़ियों से एक सिंह निकलेगा। वह सिंह उन खेतों में आएगा जहाँ लोग अपने जानवर रखते हैं और सब जानवर भाग जाएंगे। मैं उस सिंह की तरह होऊँगा। मैं बाबुल को, उसके देश से पीछा करके भगाऊँगा। यह करने के लिये मैं किसे चुनूँगा? कोई व्यक्ति मेरे समान नहीं है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो मुझे चुनौती दे सके। अत: इसे मैं करूँगा। कोई गड़ेरिया मुझे भगाने नहीं आएगा। मैं बाबुल के लोगों को पीछा करके भगाऊँगा।"

[45]बाबुल के साथ यहोवा ने जो करने की योजना बनाई है, उसे सुनो। बाबुल लोगों के लिये यहोवा ने जो करने का निर्णय लिया है उसे सुनो। दुश्मन दुध मुँहे को, बाबुल के समूह (लोगों) से खींच लेगा। बाबुल के चरागाह, उनके कृत्यों के कारण खाली हो जायेगें। [46]बाबुल का पतन होगा, और वह पतन पृथ्वी को कंपकंपा देगा। सभी राष्ट्रों के लोग बाबुल के विध्वस्त होने के बारे में सुनेंगे।

51

यहोवा कहता है, "मैं एक प्रचण्ड आँधी उठाऊँगा। मैं इसे बाबुल और बाबुल के लोगों के विरुद्ध बहाऊँगा। [2]मैं बाबुल को ओसाने के लिए लोगों को भेजूँगा। वे बाबुल को ओसा देंगे। वे लोग बाबुल को सूना बना देंगे। सेनायें नगर का घेरा डालेंगी और भयंकर विध्वंस होगा। [3]बाबुल के सैनिक अपने धनुष–बाण का उपयोग नहीं कर पाएंगे। वे सैनिक अपना कवच भी नहीं पहन सकेंगे। बाबुल के युवकों के लिए दु:ख अनुभव न करो। उसकी सेना को पूरी तरह नष्ट करो। [4]बाबुल के सैनिक कसदियों की भूमि में मारे जाएंगे। वे बाबुल की सड़कों पर बुरी तरह घायल होंगे।" [5]सर्वशक्तिमान यहोवा ने इस्राएल व यहूदा के लोगों को विधवा सा अनाथ नहीं छोड़ा है। परमेश्वर ने उन लोगों को नहीं छोड़ा। नहीं वे लोग इस्राएल के पवित्रतम को छोड़ने के अपराधी है। उन्होंने उसको छोड़ा किन्तु उसने इनको नहीं छोड़ा।

[6]बाबुल से भाग चलो। अपना जीवन बचाने के लिये भागो। बाबुल के पापों के कारण वहाँ मत ठहरो और मारे न जाओ। यह समय है जब यहोवा बाबुल के लोगों को उन बुरे कामों का दण्ड देगा जो उन्होंने किये। बाबुल को दण्ड मिलेगा जो उसे मिलना चाहिए। [7]बाबुल यहोवा के हाथ का सुनहले प्याले जैसा था। बाबुल ने पूरी पृथ्वी को मतवाला बना डाला। राष्ट्रों ने बाबुल की दाखमधु पी। अत: वे पागल हो उठे। [8]बाबुल का पतन होगा और वह अचानक टूट जाएगा। उसके लिए रोओ! उसकी पीड़ा की औषधि लाओ! कदाचित् वह स्वस्थ हो जाये!

[9]हमने बाबुल को स्वस्थ करने को प्रयत्न किया, किन्तु वह स्वस्थ न हुआ। अत: हम उसे छोड़ दे और अपने अपने देशों को लौट चले। बाबुल का दण्ड आकाश का परमेश्वर निश्चित करेगा, वह निर्णय करेगा कि बाबुल का क्या होगा। वह बादलों के समान ऊँचा हो गया है। [10]यहोवा ने हम लोगों के लिये बदला लिया। आओ इस बारे में सिय्योन में बतायें। हम यहोवा हमारे परमेश्वर ने जो कुछ किया है उसके बारे में बतायें।

[11]बाणों को तेज करो! ढाल ओढ़ो। यहोवा ने मादी के राजाओं को जगा दिया है। उसने उन्हें जगाया है क्योंकि वह बाबुल को नष्ट करना चाहता है। यहोवा बाबुल के लोगों को वह दण्ड देगा जिसके वे पात्र हैं। बाबुल की सेना ने यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर को ध्वस्त किया था। अत: यहोवा उन्हें वह दण्ड देगा जो उन्हें मिलना चाहिये। [12]बाबुल की दीवारों के विरुद्ध झण्डे उठा लो। अधिक रक्षक लाओ। चौकीदारों को उनके स्थान पर रखो। एक गुप्त आक्रमण के लिये तैयार हो जाओ। यहोवा वह करेगा जो उसने योजना बनाई है। यहोवा वह करेगा जो उसने बाबुल के लोगों के विरुद्ध करने को कहा। [13]बाबुल तुम प्रभूत जल के पास हो। तुम खजाने से पूर्ण हो। किन्तु राष्ट्र के रूप में तुम्हारा अन्त आ गया है। यह तुम्हें नष्ट कर देने का समय है। [14]सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह प्रतिज्ञा अपना नाम लेकर की है: "बाबुल मैं तुम्हें निश्चय ही असंख्य शत्रु सेना से भर दूँगा। वे टिड्डी दल के समान होंगे। वे सैनिक तुम्हारे विरुद्ध जीतेंगे और वे तुम्हारे ऊपर खड़े होंगे एवं अपना विजय घोष करेंगे।"

[15]यहोवा ने अपनी महान शक्ति का उपयोग किया और पृथ्वी को बनाया। उसने विश्व को बनाने के लिये अपनी बुद्धि का उपयोग किया। उसने अपनी समझ का उपयोग आकाश को फैलाने में किया। [16]जब वह गरजता है तब आकाश का जल गरज उठता है। वह सारी पृथ्वी से मेघों को ऊपर भेजता है। वह वर्षा के साथ बिजली को भेजता है। वह अपने भण्डार गृह से हवाओं को लाता है। [17]किन्तु लोग इतने बेवकूफ हैं। वें नहीं समझते कि परमेश्वर ने क्या कर दिया है। कुशल मूर्तिकार असत्य देवताओं की मूर्तियाँ बनाते हैं। वे देवमूर्तियाँ केवल असत्य

देवता हैं। अत: वे प्रकट करती हैं कि वह मूर्तिकार कितना मूर्ख है। वे देवमूर्तियाँ सजीव नहीं हैं। [18]वे देवमूर्तियाँ व्यर्थ हैं। लोगों ने उन मूर्तियों को बनाया है और वे मजाक के अलावा कुछ नहीं हैं। उनके न्याय का समय आएगा और वे देवमूर्तियाँ नष्ट कर दी जाएंगी। [19]किन्तु याकूब का अँश (परमेश्वर) उन व्यर्थ देवमूर्तियों सा नहीं है। लोगों ने परमेश्वर को नहीं बनाया, परमेश्वर ने लोगों को बनाया। परमेश्वर ने ही सब कुछ बनाया। ाउसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।

[20]यहोवा कहता है, "बाबुल तुम मेरा युद्ध का हथियार हो, मैं तुम्हारा उपयोग राष्ट्रों को कुचलने के लिये करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग राज्यों को नष्ट करने के लिये करता हूँ। [21]मैं तुम्हारा उपयोग घोड़े और घुड़सवार को कुचलने के लिये करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग रथ और सारथी को कुचलने के लिये करता हूँ। [22]मैं तुम्हारा उपयोग स्त्रियों और पुरुषों को कुचलने के लिये करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग वृद्ध और युवक को कुचलने के लिये करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग युवकों और युवतियों को कुचलने के लिये करता हूँ [23]मैं तुम्हारा उपयोग गड़ेरिये और रेवड़ों को कुचलने के लिये करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग किसान और बैलों को कुचलने के लिये करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग प्रशासकों और बड़े अधिकारियों को कुचलने के लिये करता हूँ। [24]किन्तु मैं बाबुल को उल्टा भुगतान करूँगा। मैं सभी बाबुल के लोगों को उल्टा भुगतान करूँगा। मैं उन्हें सिय्योन के लिये उन्होंने जो बुरा किया, उन सबका भुगतान करूँगा। यहूदा मैं उनको उल्टा भुगतान करूँगा जिससे तुम उसे देख सको।" यहोवा ने यह सब कहा।

[25]यहोवा कहता है, "बाबुल, तुम पर्वत को गिरा रहे हो और मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। बाबुल, तुमने पूरा देश नष्ट किया है और मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। मैं तुम्हारे विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊँगा। मैं तुम्हें चट्टानों से लुढ़काऊँगा। मैं तुम्हें जला हुआ पर्वत कर दूँगा। [26]लोगों को चक्की बनाने योग्य बड़ा पत्थर नहीं मिलेगा बाबुल से लोग इमारतों की नींव के लिये कोई भी चट्टान नहीं ला सकेंगे। क्यों? क्योंकि तुम्हारा नगर सदैव के लिये चट्टानों के टुकड़ों का ढेर बन जाएगा।" यह सब यहोवा ने कहा। [27]"देश में युद्ध का झण्डा उठाओ! सभी राष्टों में तुरही बजा दो! राष्ट्रों को बाबुल के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयार करो! अरारात मिन्नी और अश्कनज राज्यों को बाबुल के विरुद्ध युद्ध के लिए बुलाओ। उसके विरुद्ध सेना संचालन के लिये सेनापति चुनो। सेना को उसके विरुद्ध भेजो। इतने अधिक घोड़ों को भेजो कि वे टिड्डी दल जैसे हो जायँ। [28]उसके विरुद्ध राष्टों को युद्ध के लिये तैयार करो। मादी के राजाओं को तैयार करो। उनके प्रशासकों और उनके बड़े अधिकारियों को तैयार करो। उनसे शासित सभी देशों को बाबुल के विरुद्ध युद्ध के लिये लाओ। [29]देश इस प्रकार काँपता है मानों पीड़ा भोग रहा हो। यह काँपेगा जब यहोवा बाबुल के लिये बनाई योजना को पूरा करेगा। यहोवा की योजना बाबुल को सूनी मरुभूमि बनाने की है। कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा। [30]कसदी सैनिकों ने लड़ना बन्द कर दिया है। वे अपने दुर्गों में ठहरे हैं। उनकी शक्ति क्षीण हो गई है। वे भयभीत अबला से हो गये हैं। बाबुल के घर जल रहे हैं। उसके फाटकों के अवरोध टूट गए हैं। [31]एक के बाद दूसरा राजदूत आ रहा है। राजदूत के पीछे राजदूत आ रहे हैं। वे बाबुल के राजा को खबर सुना रहे हैं कि उसके पूरे नगर पर अधिकार हो गया। [32]वे स्थान जहाँ से नदियों को पार किया जाता है अधिकार में कर लिये गये हैं। दलदली भूमि जल रही है बाबुल के सभी सैनिक भयभीत हैं।"

[33] इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: "बाबुल नगर एक खलिहान सा है। फसल कटने के समय भूसे से अच्छा अन्न अलग करने के लिये लोग डंठल को पीटते हैं और बाबुल को पीटने का समय शीघ्र आ रहा है।

[34]"बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने अतीत में हमें नष्ट किया। अतीत में नबूकदनेस्सर ने हमें चोट पहुँचाई। अतीत में वह हमारे लोगों को ले गया और हम खाली घड़े से हो गए। उसने हमारी सर्वोत्तम चीजें लीं। वह विशाल दानव की तरह था जो तब तक सब कुछ खाता गया जब तक उसका पेट न भरा। वह सर्वोत्तम चीजें ले गया, और हम लोगो को दूर फेंक दिया। [35]बाबुल ने हमें चोट पहुँचाने के लिये भयंकर काम किये और अब मैं चाहता हूँ बाबुल के साथ वैसा ही घटित हो।" सिय्योन में रहने वाले लोगों ने यह कहा, "बाबुल हमारे लोगों को मारने के अपराधी हैं और अब वे उन बुरे कामों के लिये दण्ड पा रहे हैं जो उन्होंने किये थे।" यरूशलेम नगर ने यह सब कहा। [36]अत: यहोवा कहता है, "यहूदा मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। मैं

यह निश्चय देखूँगा कि बाबुल को दण्ड मिले। मैं बाबुल के समुद्र को सुखा दूँगा और मैं उसके पानी के सोतों को सुखा दूँगा। [37]बाबुल बरबाद इमारतों का ढेर बन जाएगा। बाबुल जंगली कुत्तों के रहने का स्थान बनेगा। लोग चट्टानों के ढेर को देखेंगे और चकित होंगे। लोग बाबुल के बारे में अपना सिर हिलायेंगे। बाबुल ऐसी जगह हो जायेगा जहाँ कोई भी नहीं रहेगा।

[38]"बाबुल के लोग गरजते हुए जवान सिंह की तरह हैं। वे सिंह के बच्चे की तरह गुर्राते हैं। [39]वे लोग उत्तेजित सिंहों का सा काम कर रहे हैं। मैं उन्हें दावत दूँगा। मैं उन्हें मत्त बनाऊँगा। वे हँसेंगे और आनन्द का समय बितायेंगे और तब वे सदैव के लिये सो जायेंगे। वे कभी नहीं जागेंगे।" यहोवा ने यह सब कहा।

[40]"मैं बाबुल के लोगों को मार डाले जाने के लिये ले जाऊँगा। बाबुल मारे जाने की प्रतीक्षा करने वाले भेड़, मेंमने और बकरियों जैसा होगा।

[41]"शेशक पराजित होगा। सारी पृथ्वी का उत्तम और सर्वाधिक गर्वीला देश बन्दी होगा। अन्य राष्टों के लोग बाबुल पर निगाह डालेंगे और जो कुछ वे देखेंगे उससे वे भयभीत हो उठेंगे। [42]बाबुल पर सागर उमड़ पड़ेगा। उसकी गरजती तरंगे उसे ढक लेंगी। [43]तब बाबुल के नगर बरबाद और सूने हो जायेंगे। बाबुल एक सूखी मरुभूमि बन जाएगा। यह ऐसा देश बनेगा जहाँ कोई मनुष्य नहीं रहेगा, लोग बाबुल से यात्रा भी नहीं करेंगे। [44]मैं बेल देवता को बाबुल में दण्ड दूँगा। मैं उसके द्वारा निगले व्यक्तियों को उगलवाऊँगा। अन्य राष्ट्र बाबुल में नहीं आएंगे और बाबुल नगर की चहारदीवारी गिर जायेगी। [45]मेरे लोगों, बाबुल नगर से बाहर निकलो। अपना जीवन बचाने को भाग चलो। यहोवा के तेज क्रोध से बच भागो।

[46]"मेरे लोगों, दुःखी मत होओ। अफवाहें उड़ेंगी किन्तु डरो नहीं। इस वर्ष एक अफवाह उड़ती है। अगले वर्ष दूसरी अफवाह उड़ेगी। देश में भयंकर यद्ध के बारे में अफवाहें उड़ेंगी। शासकों के दूसरे शासकों के विरुद्ध युद्ध के बारे में अफवाहें उड़ेंगी। [47] निश्चय ही वह समय आयेगा जब मैं बाबुल के असत्य देवताओं को दण्ड दूँगा और पूरा बाबुल देश लज्जा का पात्र बनेगा। उस नगर की सड़कों पर असंख्य मरे व्यक्ति पड़े रहेंगे। [48]तब पृथ्वी और आकाश और उसके भीतर की सभी चीजें बाबुल पर प्रसन्न होकर गाने लगेंगे, वे जय जयकार करेंगे, क्योंकि सेना उत्तर से आएगी, और बाबुल के विरुद्ध लड़ेगी।" यह सब यहोवा ने कहा है।

[49]"बाबुल ने इस्राएल के लोगों को मारा। बाबुल ने पृथ्वी पर सर्वत्र लोगों को मारा। अत: बाबुल का पतन अवश्य होगा। [50]लोगों, तुम तलवार के घाट उतरने से बच निकले, तुम्हें शीघ्रता करनी चाहिये और बाबुल को छोड़ना चाहिये। प्रतीक्षा न करो। तुम दूर देश में हो। किन्तु जहाँ कहीं रहो यहोवा को याद करो और यरूशलेम को याद करो।

[51]"यहूदा के हम लोग लज्जित हैं। हम लज्जित हैं क्योंकि हमारा अपमान हुआ। क्यों? क्योंकि विदेशी यहोवा के मन्दिर के पवित्र स्थानों में प्रवेश कर चुके हैं।"

[52]यहोवा कहता है, "समय आ रहा है जब मैं बाबुल की देवमूर्तियों को दण्ड दूँगा। उस समय उस देश में सर्वत्र घायल लोग पीड़ा से रोएंगे। [53]बाबुल उठता चला जाएगा जब तक वह आकाश न छू ले। बाबुल अपने दुर्गो को दृढ़ बनायेगा। किन्तु मैं उस नगर के विरुद्ध लड़ने के लिए लोगों को भेजूँगा और वे लोग उसे नष्ट कर देंगे।" यहोवा ने यह सब कहा।

[54]"हम बाबुल में लोगों का रोना सुन सकते हैं। हम कसदी लोगों के देश में चीजों को नष्ट करने वाले लोगों का शोर सुन सकते हैं। [55]यहोवा बहुत शीघ्र बाबुल को नष्ट करेगा। वह नगर के उद्घोष को चुप कर देगा। शत्रु सागर की गरजती तरंगों की तरह टूट पड़ेंगे। चारों ओर के लोग उस गरज को सुनेंगे। [56]सेना आएगी और बाबुल को नष्ट करेगी। बाबुल के सैनिक पकड़े जाएेंगे। उनके धनुष टूटेंगे। क्यों? क्योंकि यहोवा उन लोगों को दण्ड देता है जो बुरा करते हैं। यहोवा उन्हें पूरा दण्ड देता है जिसके वे पात्र हैं। [57]मैं बाबुल के बड़े पदाधिकारियों और बुद्धिमान लोगों को मत्त कर दूँगा। मैं उसके प्रशासकों, अधिकारियों और सैनिकों को भी मत्त करुँगा। तब वे सदैव के लिये सो जायेंगे, वे कभी नहीं जागेंगे।" राजा ने यह कहा उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।

[58]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "बाबुल की मोटी और दृढ़ दीवार गिरा दी जाएगी। इसके ऊँचे द्वार जला दिये जायेंगे। बाबुल के लोग कठिन परिश्रम करेंगे परउसका कोई लाभ न होगा। वे नगर को बचाने के प्रयत्न में बहुत थक जायेंगे, किन्तु वे लपटों के केवल ईंधन होंगे।"

यिर्मयाह बाबुल को एक सन्देश भेजता है

[59]यह वह सन्देश है जिसे यिर्मयाह ने सरायाह नामक अधिकारी को दिया। सरायाह नेरिय्याह का पुत्र था। नेरिय्याह महसेयाह का पुत्र था। सरायाह यहूदा के राजा सिदकिय्याह के साथ बाबुल गया था। यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्य काल के चौथे वर्ष में यह हुआ। उस समय यिर्मयाह ने सरायाह नामक अधिकारी को यह सन्देश दिया। [60]यिर्मयाह ने पत्रक पर उन सब भयंकर घटनाओं को लिख रखा था जो बाबुल में घटित होने वाली थीं। उसने यह सब बाबुल के बारे में लिख रखा था।

[61]यिर्मयाह ने सरायाह से कहा, "सरायाह, बाबुल जाओ। निश्चय करो कि यह सन्देश तुम इस प्रकार पढ़ो कि सभी लोग सुन लें। [62]इसके बाद कहो, 'हे यहोवा तूने कहा है कि तू इस बाबुल नामक स्थान को नष्ट करेगा। तू इसे ऐसे नष्ट करेगा कि कोई मनुष्य या जानवर यहाँ नहीं रहेगा। यह सदैव के लिये सूना और बरबाद स्थान हो जाएगा।' [63]जब तुम पत्रक को पढ़ चुको तो इससे एक पत्थर बांधो। तब इस पत्रक को परात नदी में डाल दो। [64]तब कहो, 'बाबुल इसी प्रकार डूबेगा। बाबुल फिर कभी नहीं उठेगा। बाबुल डूबेगा क्योंकि मैं वहाँ भयंकर विपत्तियाँ ढाऊँगा।'" यिर्मयाह के शब्द यहाँ समाप्त हुए।

यरूशलेम का पतन

52 सिदकिय्याह जब यहूदा का राजा हुआ, वह इक्कीस वर्ष का था। सिदकिय्याह ने यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य किया। उसकी माँ का नाम हमूतल था जो यिर्मयाह की पुत्री थी। हमूतल का परिवार लिब्ना नगर का था। [2]सिदकिय्याह ने बुरे काम किये, ठीक वैसे ही जैसे यहोयाकीम ने किये थे। यहोवा सिदकिय्याह द्वारा उन बुरे कामों का करना पसन्द नहीं करता था। [3]यरूशलेम और यहूदा के साथ भयंकर घटनायें घटीं, क्योंकि यहोवा उन पर क्रोधित था। अन्त में यहोवा ने अपने सामने से यहूदा और यरूशलेम के लोगों को दूर फेंक दिया।

सिदकिय्याह बाबुल के राजा के विरुद्ध हो गया। [4]अत: सिदकिय्याह के शासनकाल के नौवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने सेना के साथ यरूशलेम को कूच किया। नबूकदनेस्सर अपने साथ अपनी पूरी सेना लिये था। बाबुल की सेना ने यरूशलेम के बाहर डेरा डाला। इसके बाद उन्होंने नगर–प्राचीर के चारों ओर मिट्टी के टीले बनाये जिससे वे उन दीवारों पर चढ़ सकें। [5]सिदकिय्याह के राज्यकाल के ग्यारहवें वर्ष तक यरूशलेम नगर पर घेरा पड़ा रहा। [6]उस वर्ष के चौथे महीने के नौवें दिन भुखमरी की हालत बहुत खराब थी। नगर में खाने के लिये कुछ भी भोजन नहीं रह गया था। [7]उस दिन बाबुल की सेना यरूशलेम में प्रवेश कर गई। यरूशलेम के सैनिक भाग गए। वे रात को नगर छोड़ भागे। वे दो दीवारों के बीच के द्वार से गए। द्वार राजा के उद्यान के पास था। यद्यपि बाबुल की सेना ने यरूशलेम नगर को घेर रखा था तो भी यरूशलेम के सैनिक भाग निकले। वे मरुभूमि की ओर भागे।

[8]किन्तु बाबुल की सेना ने सिदकिय्याह का पीछा किया। उन्होंने उसे यरीहो के मैदान में पकड़ा। सिदकिय्याह के सभी सैनिक भाग गए। [9]बाबुल की सेना ने राजा सिदकिय्याह को पकड़ लिया। वे रिबला नगर में उसे बाबुल के राजा के पास ले गए। रिबला हमात देश में है। रिबला में बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह के बारे में अपना निर्णय सुनाया। [10]वहाँ रिबला नगर में बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह के पुत्रों को मार डाला। सिदकिय्याह को अपने पुत्रों का मारा जाना देखने को विवश किया गया। बाबुल के राजा ने यहूदा के राजकीय पदाधिकारियों को भी मार डाला। [11]तब बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह की आँखे निकाल लीं। उसने उसे काँसे की जंजीर पहनाई। तब वह सिदकिय्याह को बाबुल ले गया। बाबुल में उसने सिदकिय्याह को बन्दीगृह में डाल दिया। सिदकिय्याह अपने मरने के दिन तक बन्दीगृह में रहा।

[12]बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक नबूजरदान यरूशलेम आया। नबूकदनेस्सर के राज्यकाल के उन्नीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के दसवें दिन यह हुआ। नबूजरदान बाबुल का महत्वपूर्ण अधिनायक था। [13]नबूजरदान ने यहोवा के मन्दिर को जला डाला। उसने राजमहल तथा यरूशलेम के अन्य घरों को भी जला दिया। उसने यरूशलेम की हर एक महत्वपूर्ण इमारत को जला दिया। [14]पूरी कसदी सेना ने यरूशलेम की चाहरदीवारी को तोड़ गिराया। यह सेना उस समय राजा के विशेष रक्षकों के अधिनायक के अधीन थी। [15]अधिनायक नबूजरदान ने अब तक यरूशलेम में बचे लोगों को भी बन्दी बना लिया। वह उन्हें भी ले गया जिन्होंने

पहले ही बाबुल के राजा को आत्मसमर्पण कर दिया था। वह उन कुशल कारीगरों को भी ले गया जो यरूशलेम में बचे रह गए थे। [16]किन्तु नबूजरदान ने कुछ अति गरीब लोगों को देश में पीछे छोड़ दिया था। उसने उन लोगों को अंगूर के बागों और खेतों में काम करने के लिए छोड़ा था।

[17]कसदी सेना ने मन्दिर के काँसे के स्तम्भों को तोड़ दिया। उन्होंने यहोवा के मन्दिर के काँसे के तालाब और उसके आधार को भी तोड़ा। वे उस सारे काँसे को बाबुल ले गए। [18]बाबुल की सेना इन चीजों को भी मन्दिर से ले गई: बर्तन, बेलचे, दीपक जलाने के यन्त्र, बड़े कटोरे, कड़ाहियाँ और काँसे की वे सभी चीजें जिनका उपयोग मन्दिर की सेवा में होता था।

[19]राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक इन चीजों को ले गया: चिलमची, अंगीठियाँ, बड़े कटोरे, बर्तन, दीपाधार, कड़ाहियाँ और दाखमधु के लिये काम में आने वाले बड़े प्याले। वह उन सभी चीजों को जो सोने और चाँदी की बनी थीं, ले गया। [20]दो स्तम्भ सागर तथा उसके नीचे के बारह काँसे के बैल तथा सरकने वाले आधार बहुत भारी थे। राजा सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के लिये ये चीजे बनायी थी। वह काँसा जिससे वे चीजें बनी थीं, इतना भारी था कि तौला नहीं जा सकता था।

[21]काँसे का हर एक स्तम्भ अट्ठारह हाथ ऊँचा था। हर एक स्तम्भ बारह हाथपरिधि वाला था। हर एक स्तम्भ खोखला था। हर एक स्तम्भ की दीवार चार ईंच मोटी थी। [22]पहले स्तम्भ के ऊपर जो काँसे का शीर्ष था वह पाँच हाथ ऊँचा था। यह चारों ओर जाल के अलंकरण और काँसे के अनार से सजा था। अन्य स्तम्भों पर भी अनार थे। यह पहले स्तम्भ की तरह था। [23]स्तम्भों की बगल में छियानबे अनार थे। स्तम्भों के चारों ओर बने जाल के अलंकार पर सब मिला कर सौ अनार थे।

[24]राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक सरायाह और सपन्याह को बन्दी के रूप में ले गया। सरायाह महायाजक था और सपन्याह उससे दूसरा। तीन चौकीदार भी बन्दी बनाए गए। [25]राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक लड़ने वाले व्यक्तियों के अधीक्षक को भी ले गया। उसने राजा के सात सलाहकारों को भी बन्दी बनाया। वे लोग उस समय तक यरूशलेम में थे। उसने उस शास्त्री को भी लिया जो व्यक्तियों को सेना में रखने का अधिकारी था और उसने साठ साधारण व्यक्तियों को लिया जो तब तक नगर में थे। [26-27]अधिनायक नबूजरदान ने उन सभी अधिकारियों को लिया। वह उन्हें बाबुल के राजा के सामने लाया। बाबुल का राजा रिबला नगर में था। रिबला हमात देश में है। वहाँ उस रिबला नगर में राजा ने उन अधिकारियों को मार डालने का आदेश दिया।

इस प्रकार यहूदा के लोग अपने देश से ले जाए गए। [28]इस प्रकार नबूकदनेस्सर बहुत से लोगों को बन्दी बनाकर ले गया।

राजा नबूकदनेस्सर के शासन के सातवें वर्ष में: यहूदा के तीन हजार तेईस पुरुष।
[29]नबूकदनेस्सर के शासन के अट्ठारहवें वर्ष में: यरूशलेम से आठ सौ बत्तीस लोग।
[30]नबूकदनेस्सर के शासन के तेईसवें वर्ष में: नबूजरदान ने यहूदा के सात सौ पैंतालीस व्यक्ति बन्दी बनाए। नबूजरदान राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक था। सब मिलाकर चार हजार छ: सौ लोग बन्दी बनाए गए थे।

यहोयाकीम स्वतन्त्र किया जाता है

[31]यहूदा का राजा यहोयाकीम सैंतीस वर्ष, तक बाबुल के बन्दीगृह में बन्दी रहा। उसके बन्दी रहने के सैंतीसवें वर्ष, बाबुल का राजा एबीलमरोदक यहोयाकीम पर बहुत दयालु रहा। उसने यहोयाकीम को उस वर्ष बन्दीगृह से बाहर निकाला। यह वही वर्ष था जब एबीलमरोदक बाबुल का राजा हुआ। एबीलमरोदक ने यहोयाकीम को बारहवें महीने के पच्चीसवें दिन बन्दीगृह से छोड़ दिया। [32]एबीलमरोदक ने यहोयाकीम से दयालुता से बातें कीं। उसने यहोयाकीम को उन अन्य राजाजों से उच्च्च सम्मान का स्थान दिया जो बाबुल में उसके साथ थे। [33]अत: यहोयाकीम ने अपने बन्दी के वस्त्र उतारे। शेष जीवन में वह नियम से राजा की मेज पर भोजन करता रहा। [34]बाबुल का राजा प्रतिदिन उसे स्वीकृत धन देता था। यह तब तक चला जब तक यहोयाकीम मरा नहीं।

विलापगीत

अपने विनाश पर यरूशलेम का विलाप

1 एक समय वह था जब यरूशलेम में लोगों की भीड़ थी। किन्तु आज वही नगरी उजाड़ पड़ी हुई हैं! एक समय वह था जब देशों के मध्य यरूशलेम महान नगरी थी! किन्तु आज वही ऐसी हो गयी है जैसी कोई विधवा होती है! वह समय था जब नगरियों के बीच वह एक राजकुमारी सी दिखती थी। किन्तु आज वही नगरी दासी बना दी गयी है।

2 रात में वह बुरी तरह रोती है और उसके अश्रु गालों पर टिके हुए है! उसके पास कोई नहीं है जो उसको ढांढस दे। उसके मित्र देशों में कोई ऐसा देश नहीं है जो उसको चैन दे। उसके सभी मित्रों ने उससे मुख फेर लिया। उसके मित्र उसके शत्रु बन गये।

3 बहुत कष्ट सहने के बाद यहूदा बंधुआ बन गयी। बहुत मेहनत के बाद भी यहूदा दूसरे देशों के बीच रहती है, किन्तु उसने विश्राम नहीं पाया है। जो लोग उसके पीछे पड़े थे, उन्होंने उसको पकड़ लिया। उन्होंने उसको संकरी घाटियों के बीच में पकड़ लिया।

4 सिय्योन की राहें बहुत दुःख से भरी हैं। वे बहुत दुःखी हैं क्योंकि अब उत्सव के दिनों के हेतु कोई भी व्यक्ति सिय्योन पर नहीं जाता है। सिय्योन के सारे द्वार नष्ट कर दिये गये है। सिय्योन के सब याजक दहाड़ें मारते हैं। सिय्योन की सभी युवा स्त्रियां उससे छीन ली गयी हैं और यह सब कुछ सिय्योन का गहरा दुःख है।

5 यरूशलेम के शत्रु विजयी हैं। उसके शत्रु सफल हो गये हैं, ये सब इसलिये हो गया क्योंकि यहोवा ने उसको दण्ड दिया। उसने यरूशलेम के अनगिनत पापों के लिये उसे दण्ड दिया। उसकी संताने उसे छोड़ गयी। वे उनके शत्रुओं के बन्धन मे पड़ गये।

6 सिय्योन की पुत्री की सुंदरता जाती रही है। उसकी राजकन्याएं दीन हरिणी सी हुई। वे वैसी हरिणी थीं जिनके पास चरने को चरागाह नहीं होती। बिना किसी शक्ति के वे इधर–उधर भागती हैं। वे ऐसे उन व्यक्तियों से बचती इधर–उधर फिरती हैं जो उनके पीछे पड़े हैं।

7 यरूशलेम बीती बात सोचा करती है, उन दिनों की बातें जब उस पर प्रहार हुआ था और वह बेघर–बार हुई थी। उसे बीते दिनों के सुख याद आती थीं। वे पुराने दिनों में जो अच्छी वस्तुएं उसके पास थीं, उसे याद आती थीं।

वह ऐसे उस समय को याद करती है जब उसके लोग शत्रुओं के द्वारा बंदी किये गये। वह ऐसे उस समय को याद करती है जब उसे सहारा देने को कोई भी व्यक्ति नहीं था। जब शत्रु उसे देखते थे, वे उसकी हंसी उड़ाते थे। वे उसकी हंसी उड़ाते थे क्योंकि वह उजड़ चुकी थी।

8 यरूशलेम ने गहन पाप किये थे। उसने पाप किये थे कि जिससे वह ऐसी वस्तु हो गई कि जिस पर लोग अपना सिर नचाते थे। वे सभी लोग उसको जो मान देते थे, अब उससे घृणा करने लगे। वे उससे घृणा करने लगे क्योंकि उन्होंने उसे नंगा देख लिया है। यरूशलेम दहाड़े मारती है और वह मुख फेर लेती है।

9 यरूशलेम के वस्त्र गंदे थे। उसने नहीं सोचा था कि उसके साथ क्या कुछ घटेगा। उसका पतन विचित्र था, उसके पास कोई नहीं था जो उसको शांति देता। वह कहा करती है, "हे यहोवा, देख मैं कितनी दुःखी हूँ! देख मेरा शत्रु कैसा सोच रहा है कि वह कितना महान है!"

10 शत्रु ने हाथ बढ़ाया और उसकी सब उत्तम वस्तु लूट लीं। दरअसल उसने वे पराये देश उसके पवित्र स्थान में भीतर प्रवेश करते हुये देखे। हे यहोवा, यह आज्ञा तूने ही दी थी कि वे लोग तेरी सभा में प्रवेश नहीं करेंगे!

11 यरूशलेम के सभी लोग कराह रहे हैं, उसके सभी लोग खाने की खोज में है। वे खाना जुटाने को

अपने मूल्यवान वस्तुयें बेच रहे हैं। वे ऐसा करते हैं ताकि उनका जीवन बना रहे। यरूशलेम कहता है, "देख यहोवा, तू मुझको देख! देख, लोग मुझको कैसे घृणा करते है।

[12]मार्ग से होते हुए जब तुम सभी लोग मेरे पास से गुजरते हो तो ऐसा लगता है जैसे ध्यान नहीं देते हो। किन्तु मुझ पर दृष्टि डालो और जरा देखो, क्या कोई ऐसी पीड़ा है जैसी पीड़ा मुझको है? क्या ऐसा कोई दु:ख है जैसा दु:ख मुझ पर पड़ा है? क्या ऐसा कोई कष्ट है जैसे कष्ट का दण्ड यहोवा ने मुझे दिया है? उसने अपने कठिन क्रोध के दिन पर मुझको दण्डित किया है।

[13]यहोवा ने ऊपर से आग को भेज दिया और वह आग मेरी हड्डियों के भीतर उतरी। उसने मेरे पैरों के लिये एक फंदा फेंका। उसने मुझे दूसरी दिशा में मोड़ दिया है। उसने मुझे वीरान कर डाला है। सारे दिन मैं रोती रहती हूँ।

[14]"मेरे पाप मुझ पर जुए के समान कसे गये। यहोवा के हाथों द्वारा मेरे पाप मुझ पर कसे गये। यहोवा का जुआ मेरे कन्धों पर है। यहोवा ने मुझे दुर्बल बना दिया है। यहोवा ने मुझे उन लोगों को सौंपा जिनके सामने मैं खड़ी नहीं हो सकती।

[15]"यहोवा ने मेरे सभी वीर योद्धा नकार दिये। वे वीर योद्धा नगर के भीतर थे। यहोवा ने मेरे विरुद्ध में फिर एक भीड़ भेजी, वह मेरे युवा सैनिक को मरवाने उन लोगों को लाया था। यहोवा ने मेरे अंगूर गरठ में कुचल दिये। वह गरठ यरूशलेम की कुमारियों का होता था।

[16]"इन सभी बातों को लेकर मैं चिल्लाई। मेरे नयन जल में डूब गये। मेरे पास कोई नहीं मुझे चैन देने। मेरे पास कोई नहीं जो मुझे थोड़ी सी शांति दे। मेरे संताने ऐसी बनी जैसे उजाड़ होता है। वे ऐसे इसलिये हुआ कि शत्रु जीत गया था।"

[17]सिय्योन अपने हाथ फैलाये हैं। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उसको चैन देता। यहोवा ने याकूब के शत्रुओं को आज्ञा दी थी। यहोवा ने उसे घेर लेने की आज्ञा दी थी। यरूशलेम ऐसी हो गई जैसी कोई अपवित्र वस्तु थी।

[18]यरूशलेम कहा करती है, "यहोवा तो न्यायशील है क्योंकि मैंने ही उस पर कान देना नकारा था। सो, हे सभी व्यक्तियों, सुनो! तुम मेरा कष्ट देखो! मेरे युवा स्त्री और पुरुष बंधुआ बना कर पकड़े गये हैं।

[19]मैंने अपने प्रेमियों को पुकारा। किन्तु वे आँखें बचा कर चले गये। मेरे याजक और बुजुर्ग मेरे नगर में मर गये। वे अपने लिये भोजन को तरसते थे। वे चाहते थे कि वे जीवित रहें।

[20]"हे यहोवा, मुझे देख। मैं दु:ख में पड़ी हूँ! मेरा अंतरंग बेचैन है! मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरा हृदय उलट–पलट गया हो! मुझे मेरे मन में ऐसा लगता है क्योंकि मैं हठी रही थी! गलियों में मेरे बच्चों को तलवार ने काट डाला है। घरों के भीतर मौत का वास था।

[21]"मेरी सुन, क्योंकि मैं कराह रही हूँ! मेरे पास कोई नहीं है जो मुझको चैन दे, मेरे सब शत्रुओं ने मेरी दु:खों की बात सुन ली है। वे बहुत प्रसन्न हैं। वे बहुत ही प्रसन्न हैं क्योंकि तूने मेरे साथ ऐसा किया। अब उस दिन को ले आ जिसकी तूने घोषणा की थी। उस दिन तू मेरे शत्रुओं को वैसा ही बना दे जैसी मैं अब हूँ।

[22]"मेरे शत्रुओं का बंदी तू अपने सामने आने दे। फिर उनके साथ तू वैसा ही करेगा जैसा मेरे पापों के बदले में तूने मेरे साथ किया।

ऐसा कर क्योंकि मैं बार बार कराह रहा। ऐसा कर क्योंकि मेरा हृदय दुर्बल है।"

यहोवा द्वारा यरूशलेम का विनाश

2 देखों यहोवा ने सिय्योन की पुत्री को कैसे बादल से ढक दिया है। उसने इस्राएल की महिमा आकाश से धरती पर फेंक दी। यहोवा ने उसे याद तक नहीं रखा कि सिय्योन अपने क्रोध के दिन पर उसके चरणों की चौकी हुआ करता था।

[2]यहोवा ने याकूब के भवन निगल लिये। वह दया से रहित होकर उसको निगल गया। उसने यहूदा की पुत्री के गढ़ियों को भर क्रोध में मिटाया। यहोवा ने यहूदा के राजा को गिरा दिया; और यहूदा के राज्य को धरती पर पटक दिया। उसने राज्य को बर्बाद कर दिया।

[3]यहोवा ने क्रोध में भर कर के इस्राएल की सारी शक्ति उखाड़ फेंकी। उसने इस्राएल के ऊपर से अपने दाहिना हाथ उठा लिया है। उसने ऐसा उस घड़ी में किया था जब शत्रु उस पर चढा था। वह याकूब में धधकती हुई आग सा भड़की। वह एक ऐसी आग थी जो आस–पास का सब कुछ चट कर जाती है।

[4]यहोवा ने शत्रु के समान अपना धनुष खेंचा था। उसके दाहिने हाथ में उसके तलवार का मुटठा था। उसने यहूदा के सभी सुन्दर पुरुष मार डाले। यहोवा ने उन्हें मार दिया मानों जैसे वे शत्रु हों। यहोवा ने अपने क्रोध को बरसाया। यहोवा ने सिय्योन के तम्बुओं पर उसको उडेंल दिया जैसे वह आग हो।

[5]यहोवा शत्रु हो गया था और उसने इस्राएल को निगल लिया। उसकी सभी महलों को उसने निगल लिया उसके सभी गढ़ियो को उसने निगल लिया था। यहूदा की पुत्री के भीतर मरे हुए लोगों के हेतु उसने हाहाकार और शोक मचा दिया।

[6]यहोवा ने अपना ही मन्दिर नष्ट किया था जैसे वह कोई उपवन हो, उसने उस ठांव को नष्ट किया जहाँ लोग उसकी उपासना करने के लिये मिला करते थे। यहोवा ने लोगों को ऐसा बना दिया कि वे सिय्योन में विशेष सभाओं को और विश्राम के विशेष दिनों को भूल जायें। यहोवा ने याजक और राजा को नकार दिया। उसने बड़े क्रोध में भर कर उन्हें नकारा।

[7]यहोवा ने अपनी ही वेदी को नकार दिया और उसने अपना उपासना का पवित्र स्थान को नकार दिया था। यरूशलेम केमहलों की दिवारें उसने शत्रु कॊ सौंप दी। यहोवा के मन्दिर में शत्रु शोर कर रहा था। वे ऐसे शोर करते थे जैसे कोई छुट्टी का दिन हो।

[8]उसने सिय्योन की पुत्री का परकोटा नष्ट करना सोचा है। उसने किसी नापने की डोरी से उस पर निशान डाला था। उसने स्वयं को विनाश से रोका नहीं। इसलिये उसने दुःख में भर कर के बाहरी फसीलों को और दूसरे नगर के परकोटों को रूला दिया था। वे दोनों ही साथ-साथ व्यर्थ हो गयीं।

[9]यरूशलेम के दरवाज़े टूट कर धरती पर बैठ गये। द्वार के सलाखों को तोड़कर उसने तहस-नहस कर दिया। उसके ही राजा और उसकी राजकुमारियाँ आज दूसरे लोगों के बीच है। उनके लिये आज कोई शिक्षा ही नहीं रही। यरूशलेम के नबी भी यहोवा से कोई दिव्य दर्शन नहीं पाते।

[10]सिय्योन के बुज़ुर्ग अब धरती पर बैठते हैं। वे धरती पर बैठते हैं और चुप रहते हैं। अपने माथों पर धूल मलते हैं और शोक वस्त्र पहनते हैं। यरूशलेम की युवतियाँ दुःख में अपनी माथा धरती पर नवाती हैं।

[11]मेरे नयन आँसुओं से दुख रहे हैं! मेरा अंतरंग व्याकुल है! मेरे मन को ऐसा लगता है जैसे वह बाहर निकल कर धरती पर गिरा हो! मुझको इसलिये ऐसा लगता है कि मेरे अपने लोग नष्ट हुए हैं। सन्तानें और शिशु मूर्छित हो रहें हैं। वे नगर के गलियों और बाज़ारों में मूर्छित पड़े हैं।

[12]वे बच्चे बिलखते हुए अपनी माँओं से पूछते हैं, "कहाँ है माँ, कुछ खाने को और पीने को?" वे यह प्रश्न ऐसे पूछते हैं जैसे जख़्मी सिपाही नगर के गलियों में गिरते प्राणों को त्यागते, वे यह प्रश्न पूछते हैं। वे अपनी माँओं की गोद में लेटे हुए प्राणों को त्यागते हैं।

[13]हे सिय्योन की पुत्री, मैं किससे तेरी तुलना करूँ? तुझको किसके समान कहूँ? हे सिय्योन की कुँवारी कन्या, तुझको किससे तुलना करूँ? तुझे कैसे ढांढस बंधाऊँ? तेरा विनाश सागर सा विस्तृत है! ऐसा कोई भी नहीं जो तेरा उपचार करें।

[14]तेरे नबियों ने तेरे लिये दिव्य दर्शन लिये थे। किन्तु वे सभी व्यर्थ झूठे सिद्ध हुए। तेरे पापों के विरुद्ध उन्होंने उपदेश नहीं दिये। उन्होंने बातों को सुधारने का जतन नहीं किया। उन्होंने तेरे लिये उपदेशों का सन्देश दिया, किन्तु वे झूठे सन्देश थे। तुझे उनसे मूर्ख बनाया गया।

[15]बटोही राह से गुजरते हुए स्तब्ध होकर तुझ पर ताली बजाते हैं। यरूशलेम की पुत्री पर वे सीटियाँ बजाते और माथा नचाते हैं। वे लोग पूछते हैं, "क्या यही वह नगरी है जिसे लोग कहा करते थे, 'एक सम्पूर्ण सुन्दर नगर' तथा 'सारे संसार का आनन्द'?"

[16]तेरे सभी शत्रु तुझ पर अपना मुँह खोलते हैं। तुझ पर सीटियाँ बजाते हैं और तुझ पर दाँत पीसते हैं। वे कहा करते है, "हमने उनको निगल लिया! सचमुच यही वह दिन है जिसकी हमको प्रतीक्षा थी। आखिरकार हमने इसे घटते हुए देख लिया।"

[17]यहोवा ने वैसा ही किया जैसी उसकी योजना थी। उसने वैसा ही किया जैसा उसने करने के लिये कहा था। बहुत-बहुत दिनों पहले जैसा उसने आदेश दिया था, वैसा ही कर दिया। उसने बर्बाद किया, उसको दया तक नहीं आयी। उसने तेरे शत्रुओं को प्रसन्न किया कि तेरे साथ ऐसा घटा। उसने तेरे शत्रुओं की शक्ति बढ़ा दी।

[18]हे यरूशलेम की पुत्री परकोटे, तू अपने मन से यहोवा की टेर लगा! आसुँओं को नदी सा बहने दे!

रात–दिन अपने आसुँओं को गिरने दे! तू उनको रोक मत! तू अपनी आँखों को थमने मत दे!

[19]जाग उठ! रात में विलाप कर! रात के हर पहर के शुरु में विलाप कर! आँसुओ में अपना मन बाहर निकाल दे जैसा वह पानी हो! अपना मन यहोवा के सामने निकाल रख! यहोवा की प्रार्थना में अपने हाथ ऊपर उठा। उससे अपनी संतानों का जीवन माँग। उससे तू उन सन्तानों का जीवन माँग ले जो भूख से बेहोश हो रहें है। वे नगर के हर कूँचे गली में बेहोश पड़ी है।

[20]हे यहोवा, मुझ पर दृष्टि कर! देख कौन है वह जिसके साथ तूने ऐसा किया! तू मुझको यह प्रश्न पूछने दे: क्या माँ उन बच्चों को खा जाये जिनको वह जनती है? क्या माँ उन बच्चों को खा जाये जिनको वे पोसती रही है? क्या यहोवा के मन्दिर में याजक और नबियों के प्राणों को लिया जाये?

[21]नवयुवक और वृद्ध नगर की गलियों में धरती पर पड़े रहें। मेरी युवा स्त्रियाँ, पुरुष और युवक तलवार के धार उतारे गये थे।

हे यहोवा, तूने अपने क्रोध के दिन पर उनका वध किया है! तूने उन्हें बिना किसी करुणा के मारा है!

[22]तूने मुझ पर घिर आने को चारों ओर से आतंक बुलाया। आतंक को तूने ऐसे बुलाया जैसे पर्व के दिन पर बुलाया हो। उस दिन जब यहोवा ने क्रोध किया था ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो बचकर भाग पाया हो अथवा उससे निकल पाया हो। जिनको मैंने बढ़ाया था और मैंने पाला–पोसा, उनको मेरे शत्रुओं ने मार डाला है।

एक व्यक्ति द्वारा अपनी यातनाओं पर विचार

3 मैं ऐक ऐसा व्यक्ति हूँ जिसने बहुतेरी यातनाएं भोगी है; यहोवा के क्रोध के तले मैंने बहुतेरी दण्ड यातनाएं भोगी है!

[2]यहोवा मुझको लेकर के चला और वह मुझे अन्धेरे के भीतर लाया न कि प्रकाश में।

[3]यहोवा ने अपना हाथ मेरे विरोध में कर दिया। ऐसा उसने बारम्बार सारे दिन किया।

[4]उसने मेरा मांस, मेरा चर्म नष्ट कर दिया। उसने मेरी हडिड्यों को तोड़ दिया।

[5]यहोवा ने मेरे विरोध में, कड़वाहट और आपदा फैलायी है। उसने मेरी चारों तरफ़ कड़वाहट और विपत्ति फैला दी।

[6]उसने मुझे अन्धेरे में बिठा दिया था। उसने मुझको उस व्यक्ति सा बना दिया था जो कोई बहुत दिनों पहले मर चुका हो।

[7]यहोवा ने मुझको भीतर बंद किया, इससे मैं बाहर आ न सका। उसने मुझ पर भारी ज़ंजीरें घेरी थीं।

[8]यहाँ तक कि जब मैं चिल्लाकर दुहाई देता हूँ, यहोवा मेरी विनती को नहीं सुनता है।

[9]उसने पत्थर से मेरी राह को मूंद दिया है। उसने मेरी राह को विषम कर दिया है।

[10]यहोवा उस भालू सा हुआ जो मुझ पर आक्रमण करने को तत्पर है। वह उस सिंह सा हुआ हैं जो किसी ओट में छुपा हुआ हैं।

[11]यहोवा ने मुझे मेरी राह से हटा दिया। उसने मेरी धज्जियाँ उड़ा दीं। उसने मुझे बर्बाद कर दिया है।

[12]उसने अपना धनुष तैयार किया। उसने मुझको अपने बाणों का निशाना बना दिया था।

[13]मेरे पेट में बाण मार दिया। मुझ पर अपने बाणों से प्रहार किया था।

[14]मैं अपने लोगों के बीच हंसी का पात्र बन गया। वे दिन भर मेरे गीत गा–गा कर मेरा मज़ाक बनाते है।

[15]यहोवा ने मुझे कड़वी बातों से भर दिया कि मैं उनको पी जाऊँ। उसने मुझको कड़वे पेयों से भरा था।

[16]उसने मेरे दांत पथरीली धरती पर गडा दिये। उसने मुझको मिट्टी में मिला दिया।

[17]मेरा विचार था कि मुझको शांति कभी भी नहीं मिलेगी। अच्छी भली बातों को मैं तो भूल गया था।

[18]स्वंय अपने आप से मैं कहने लगा था, "मुझे तो बस अब और आस नहीं है कि यहोवा कभी मुझे सहारा देगा।"

[19]हे यहोवा, तू मेरे दुखिया पन याद कर, और यह कि कैसा मेरा घर नहीं रहा। याद कर उस कड़वे पेय को और उस जहर को जो तूने मुझे पीने को दिया था।

[20]मुझको तो मेरी सारी यातनाएँ याद हैं और मैं बहुत ही दु:खी हूँ।

[21]किन्तु उसी समय जब मैं सोचता हूँ, तो मुझको आशा होने लगती हैं। मैं ऐसा सोचा करता हूँ:

[22]यहोवा के प्रेम और करुणा का तो अंत कभी नहीं होता। यहोवा की कृपाएं कभी समाप्त नहीं होती।

[23]हर सुबह वे नये हो जाते हैं! हे यहोवा, तेरी सच्चाई महान है!

[24]मैं अपने से कहा करता हूँ, "यहोवा मेरे हिस्से में है। इसी कारण से मैं आशा रखूंगा।"

[25]यहोवा उनके लिये उत्तम है जो उसकी बाट जोहते हैं। यहोवा उनके लिये उत्तम है जो उसकी खोज में रहा करते हैं।

[26]यह उत्तम है कि कोई व्यक्ति चुपचाप यहोवा की प्रतिक्षा करे कि वह उसकी रक्षा करेगा।

[27]यह उत्तम है कि कोई व्यक्ति यहोवा के जुए को धारण करे, उस समय से ही जब वह युवक हो।

[28]व्यक्ति को चाहिये कि वह अकेला चुप बैठे ही रहे जब यहोवा अपने जुए को उस पर धरता है।

[29]उस व्यक्ति को चाहिये कि यहोवा के सामने वह दण्डवत् प्रणाम करे। सम्भव है कि कोई आस बची हो।

[30]उस व्यक्ति को चाहिये कि वह अपना गाल कर दे, उस व्यक्ति के सामने जो उस पर प्रहार करता हो। उस व्यक्ति को चाहिये कि वह अपमान झेलने को तत्पर रहे।

[31]उस व्यक्ति को चाहिये वह याद रखे कि यहोवा किसी को भी सदा–सदा के लिये नहीं बिसराता।

[32]यहोवा दण्ड देते हुए भी अपनी कृपा बनाये रखता है। वह अपने प्रेम और दया के कारण अपनी कृपा रखता है।

[33]यहोवा कभी भी नहीं चाहता कि लोगों को दण्ड दे। उसे नहीं भाता कि लोगों को दुःखी करे।

[34]यहोवा को यह बातें नहीं भाती है: उसको नहीं भाता कि कोई व्यक्ति अपने पैरों के तले धरती के सभी बंदियों को कुचल डाले।

[35]उसको नहीं भाता है कि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को छले। कुछ लोग उसके मुकदमें में परम प्रधान परमेश्वर के सामने ही ऐसा किया करते है।

[36]उसको नहीं भाता कि कोई व्यक्ति अदालत में किसी से छल करे। यहोवा को इन में से कोई भी बात नहीं भाती है।

[37]जब तक स्वयं यहोवा ही किसी बात के होने की आज्ञा नहीं देता, तब तक ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है कि कोई बात कहे और उसे पूरा करवा ले।

[38]बुरी–भली बातें सभी परम प्रधान परमेश्वर के मुख से ही आती हैं।

[39]कोई जीवित व्यक्ति शिकायत कर नहीं सकता जब यहोवा उस ही के पापों का दण्ड उसे देता है।

[40]आओ, हम अपने कर्मों को परखें और देखें, फिर यहोवा के शरण में लौट आयें।

[41]आओ, स्वर्ग के परमेश्वर के लिये हम हाथ उठायें और अपना मन ऊँचा करें।

[42]आओ, हम उससे कहें, "हमने पाप किये हैं और हम जिद्दी बने रहे और इसलिये तूने हमको क्षमा नहीं किया।

[43]तूने क्रोध से अपने को ढांप लिया, हमारा पीछा तू करता रहा है, तूने हमें निर्दयतापूर्वक मार दिया! [44]तूने अपने को बादल से ढांप लिया। तूने ऐसा इसलिये किया था कि कोई भी विनती तुझ तक पहुँचे ही नहीं।

[45]तूने हमको दूसरे देशों के लिये ऐसा बनाया जैसा कूड़ा कर्कट हुआ करता हैं।

[46]हमारे सभी शत्रु हमसे क्रोध भरे बोलते हैं।

[47]हम भयभीत हुए हैं, हम गर्त में गिर गये हैं। हम बुरी तरह क्षतिग्रस्त है! हम टूट चुके हैं!"

[48]मेरी आँखों से आँसुओं की नदियां बही! मैं विलाप करता हूँ क्योंकि मेरे लोगों का विनाश हुआ है!

[49]मेरे नयन बिना रूके बहते रहेंगे! मैं सदा विलाप करता रहूँगा!

[50]हे यहोवा, मैं तब तक विलाप करता रहूँगा जब तक तू दृष्टि न करे और हम को देखे! मैं तब तक विलाप ही करता रहूंगा जब तक तू स्वर्ग से हम पर दृष्टि न करे!

[51]जब मैं देखा करता हूँ जो कुछ मेरी नगरी की युवतियों के साथ घटा तब मेरे नयन मुझको दुःखी करते हैं।

[52]जो लोग व्यर्थ में ही मेरे शत्रु बने हैं, वे घूमते हैं मेरी शिकार की फिराक में, मानों मैं कोई चिड़िया हूँ।

[53]जीते जी उन्होंने मुझको घड़े में फेंका और मुझ पर पत्थर लुढ़काए थे।

[54]मेरे सिर पर से पानी गुज़र गया था। मैंने मन में कहाँ, "मेरा नाश हुआ।"

[55]हे यहोवा, मैंने तेरा नाम पुकारा। उस गर्त के तल से मैंने तेरा नाम पुकारा।

[56]तूने मेरी आवाज़ को सुना। तूने कान नहीं मूंद लिये। तूने बचाने से और मेरी रक्षा करने से नकारा नहीं।

[57]जब मैंने तेरी दुहाई दी, उसी दिन तू मेरे पास आ गया था। तूने मुझ से कहा था, "भयभीत मत हो।"

[58]हे यहोवा, मेरे अभियोग में तूने मेरा पक्ष लिया। मेरे लिये तू मेरा प्राण वापस ले आया।

[59]हे यहोवा, तूने मेरी विपत्तियां देखी हैं, अब मेरे लिये तू मेरा न्याय कर।

[60]तूने स्वंय देखा है कि शत्रुओं ने मेरे साथ कितना अन्याय किया। तूने स्वंय देखा है उन सारे षड़यंत्रों को जो उन्होंने मुझ से बदला लेने को मेरे विरोध में रचे थे।

[61]हे यहोवा, तूने सुना है कि वे मेरा अपमान कैसे करते हैं। तूने सुना है उन षड़यंत्रों को जो उन्होंने मेरे विरोध में रचाये।

[62]मेरे शत्रुओं के वचन और विचार सदा ही मेरे विरुद्ध रहे।

[63]देखो यहोवा, चाहे वे बैठे हों, चाहे वे खड़े हों, कैसे वे मेरी हंसी उड़ाते हैं!

[64]हे यहोवा, उनके साथ वैसा ही कर जैसा उनके साथ करना चाहिये! उनके कर्मों का फल तू उनको दे दे!

[65]उनका मन हठीला कर दे! फिर अपना अभिशाप उन पर डाल दे!

[66]क्रोध में भर कर तू उनका पीछा कर! उन्हें बर्बाद कर दे! हे यहोवा, आकाश के नीचे से तू उन्हें समाप्त कर दे!

यरूशलेम पर हमले का आतंक

4 देखों, किस तरह सोना चमक रहित हो गया। देखों, सारा सोना कैसे खोटा हो गया। चारों ओर हीरे–जवाहरात बिखरे पड़े हैं। हर गली के सिर पर ये रत्न फैले हैं।

[2]सिय्योन के निवासी बहुत मूल्यवान थे, जिनका मूल्य सोने की तौल में तुलना था। किन्तु अब उनके साथ शत्रु ऐसे बर्ताव करते हैं जैसे वे मिट्टी के पुराने घड़े हों। शत्रु उनके साथ ऐसा बर्ताव करता है जैसे वे कुम्हार के बनाये मिट्टी के पात्र हों।

[3]यहाँ तक कि गीदड़ी भी अपने बच्चे को थन देती है, वह अपने बच्चे को दूध पीने देती है। किन्तु मेरे लोग निर्दय हो गये हैं। वह ऐसे हो गये जैसे मरुभूमि में निवासी–शुतुर्मुर्ग।

[4]प्यास के मारे आबोध शिशुओं की जीभ तालू से चिपक रही है। ये छोटे बच्चे रोटी को तरसते हैं। किन्तु कोई भी उन्हें कुछ भी खाने को लिये देता नहीं।

[5]ऐसे लोग जो स्वादिष्ट भोजन खाया करते थे, आज भूख से गलियों में मर रहें हैं। ऐसे लोग जो उत्तम वस्त्र पहनते हुए पले बढ़े थे, अब कूड़े के ढेरों पर बीनते फिरते हैं।

[6]मेरे लोगों का पाप बहुत बड़ा था। उनका पाप सदोम और अमोरा के पापों से बड़ा पाप था। सदोम और अमोरा को अचानक नष्ट किया गया। उनके विनाश में किसी भी मनुष्य का हाथ नहीं था। यह तो परमेश्वर ने किया था।

[7]यहूदा के लोग जो परमेश्वर को समर्पित थे, वे बर्फ से उजले थे, दूध से धुले थे। उनकी कायाएं मूंग से अधिक लाल थीं। उनकी दाढ़ियाँ नीलम से श्यामल थी।

[8]किन्तु उनके मुख अब धुएं से काले हो गये हैं। यहाँ तक कि गलियों में उनको कोई नहीं पहचानता था। उनकी ठठरी पर अब झुर्रियां पड़ रही है। उनका चर्म लकड़ी सा कड़ा हो गया है।

[9]ऐसे लोग जिन्हें तलवार के घाट उतारे गये उन से कहीं भाग्यवान थे जो लोग भूख–मरी के मारे मरे। भूख के सताये लोग बहुत ही दुःखी थे, वे बहुत व्याकुल थे। वे मरे क्योंकि खेतों का दिया हुआ खाने को उनके पास नहीं था।

[10]उन दिनों ऐसी स्त्रियों ने भी जो बहुत अच्छी हुआ करती थी, अपनी ही बच्चों के मांस को पकाया था। वे बच्चे अपनी ही माँओं का आहार बने। ऐसा तब हुआ था जब मेरे लोगों का विनाश हुआ था।

[11]यहोवा ने अपने सब क्रोध का प्रयोग किया; अपना समूचा क्रोध उसने उंडेल दिया। सिय्योन में जिसने आग भड़कायी, सिय्योन की नीवों को नीचे तक जला दिया था।

[12]जो कुछ घटा था, धरती के किसी भी राजा को उसका विश्वास नहीं था। जो कुछ घटा था, धरती के किसी भी लोगों को उसका विश्वास नहीं था। यरूशलेम के द्वारों से होकर कोई भी शत्रु भीतर आ सकता है, इसका किसी को भी विश्वास नहीं था।

[13]किन्तु ऐसा ही हुआ, क्योंकि यरूशलेम के नबियों ने पाप किये थे। ऐसा हुआ क्योंकि यरूशलेम के याजक बुरे काम किया करते थे। यरूशलेम के नगर में वे बहुत खून बहाया करते थे; वे नेक लोगों का खून बहाया करते थे।

[14]याजक और नबी गलियों में अंधे से घुमते थे। खून से वे गंदे हो गये थे। यहाँ तक कि कोई भी उनका वस्त्र नहीं छूता था क्योंकि वे गंदे थे।

[15]लोग चिल्लाकर कहते थे, "दूर हटो! दूर हटो! तुम अस्वच्छ हो, हमको मत छूओ।" वे लोग

इधर–उधर यूं ही फिरा करते थे। उनके पास कोई घर नहीं था। दूसरी जातियों के लोग कहते थे, "हम नहीं चाहते कि वे हमारे पास रहें।"

[16]वे लोग स्वंय यहोवा के द्वारा ही नष्ट किये गये थे। उसने उनकी ओर फिर कभी नहीं देखा। उसने याजकों को आदर नहीं दिया। यहूदा के मुखिया लोगों के साथ वह मित्रता से नहीं रहा।

[17]सहायता पाने की बाट जोहते–जोहते अपनी आँखों ने काम करना बंद किया, और अब हमारी आँखें थक गई हैं। किन्तु कोई भी सहायता नहीं आई। हम प्रतीक्षा करते रहे कि कोई ऐसी जाति आये जो हमको बचा ले। हम अपनी निगरानी बुर्ज से देखते रह गये। किन्तु किसी ने भी हम को बचाया नहीं।

[18]हर समय दुशमन हमारे पीछे पड़े रहे यहाँ तक कि हम बाहर गली में भी निकल नहीं पाये। हमारा अंत निकट आया। हमारा समय पूरा हो चुका था। हमारा अंत आ गया!

[19]वे लोग जो हमारे पीछे पड़े थे, उनकी गती आकाश में उकाब की गती से तीव्र थी। उन लोगों ने पहाड़ों के भीतर हमारा पीछा किया। वे हमको पकड़ने को मरुभूमि में लुके–छिपे थे।

[20]वह राजा जो हमारी नाकों के भीतर हमारा प्राण था, गर्त में फसा लिया गया था; वह राजा ऐसा व्यक्ति था जिसे यहोवा ने स्वयं चुना था। राजा का बारे में हमने कहा था, "उसकी छत्र छाया में हम जीवित रहेंगे, उसकी छाया में हम जातियों के बीच जीवित रहेंगे।"

[21]एदोम के लोगों, प्रसन्न रहो और आनन्दित रहो! हे ऊज के निवासियों, प्रसन्न रहो! किन्तु सदा याद रखो, तुम्हारे पास भी यहोवा के क्रोध का प्याला आयेगा। जब तुम उसे पिओगे, धुत्त हो जाओगे और स्वंय को नंगा कर डालोगे।

[22]सिय्योन, तेरा दण्ड पूरा हुआ। अब फिर से तू कभी बंधन में नहीं पड़ोगी। किन्तु हे एदोम के लोगों, यहोवा तुम्हारे पापों का दण्ड देगा। तुम्हारे पापों को वह उघाड़ देगा।

यहोवा से विनती:

5 हे यहोवा, हमारे साथ जो घटा हैं, याद रख। हे यहोवा, हमारे तिरस्कार को देख।

[2]हमारी धरती परायों के हाथों में दे दी गयी। हमारे घर परदेसियों के हाथों में दिये गये।

[3]हम अनाथ हो गये। हमारा कोई पिता नहीं। हमारी माताएं विधवा सी हो गयी हैं।

[4]पानी पीने तक हमको मोल देना पड़ता है, इंधन की लकड़ी तक खरीदनी पड़ती हैं।

[5]अपने कन्धों पर हमें जुए का बोझ उठाना पड़ता है। हम थक कर चूर होते हैं किन्तु विश्राम तनिक हमको नहीं मिलता।

[6]हमने मिस्र के साथ एक वाचा किया; अश्शूर के साथ भी हमने एक वाचा किया था कि पर्याप्त भोजन मिले।

[7]हमारे पूर्वज़ों ने तेरे विरोध में पाप किये थे। आज वे मर चुके हैं। अब वे विपत्तियां भोग रहे हैं।

[8]हमारे दास ही स्वामी बने हैं। यहां कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो हमको उनसे बचा ले।

[9]बस भोजन पाने को हमें अपना जीवन दांव पर लगाना पड़ता है। मरुभूमि में ऐसे लोगों के कारण, जिनके पास तलवार है हमें अपना जीवन दांव पर लगाना पड़ता है।

[10]हमारी खाल तन्दूर सी तप रही है, हमारी खाल तप रही उस भूख के कारण जो हमको लगी हैं।

[11]सिय्योन की स्त्रियों के साथ कुकर्म किये गये हैं। यहूदा की नगरियों की कुमारियों के साथ कुकर्म किये गये हैं।

[12]हमारे राजकुमार फांसी पर चढ़ाये गये; उन्होंने हमारे अग्रजों का आदर नहीं किया।

[13]हमारे वे शत्रुओं ने हमारे युवा पुरुषों के साथ चक्की में आटा पिसवाया। हमारे युवा पुरुष लकड़ी के बोझ तले ठोकर खाते हुये गिरे।

[14]हमारे बुज़ुर्ग अब नगर के द्वारों पर बैठा नहीं करते। हमारे युवक अब संगीत में भाग नहीं लेते।

[15]हमारे मन में अब कोई खुशी नहीं है। हमारा हर्ष मरे हुए लोगों के विलाप में बदल गया है।

[16]हमारा मुकुट हमारे सिर से गिर गया है। हमारी सब बातें बिगड़ गयी हैं क्योंकि हमने पाप किये थे।

[17]इसलिये हमारे मन रोगी हुए है; इन ही बातों से हमारे आँखें मद्धिम हुई है। [18]सिय्योन का पर्वत विरान हो गया है। सिय्योन के पहाड़ पर अब सियार घूमते है। [19]किन्तु हे यहोवा, तेरा राज्य तो अमर हैं। तेरा महिमापूर्ण सिंहासन सदा–सदा बना रहता है।

[20]हे यहोवा, ऐसा लगता है जैसे तू हमको सदा के लिये भूल गया है। ऐसा लगता है जैसे इतने समय के लिये तूने हमें अकेला छोड़ दिया है।

[21]हे यहोवा, हमको तू अपनी ओर मोड़ ले। हम प्रसन्नता से तेरे पास लौट आयेंगे; हमारे दिन फेर दे जैसे वह पहले थे।

[22]क्या तूने हमें पूरी तरह बिसरा दिया? तू हम से बहुत क्रोधित रहा है।

यहेजकेल

प्रस्तावना

1 [1-3]मैं बूजी का पुत्र याजक यहेजकेल हूँ। मैं देश निष्कासित था। मैं उस समय बाबुल में कबार नदी पर था जब मेरे लिए स्वर्ग खुला और मैंने परमेश्वर का दर्शन किया। यह तीसवें वर्ष के चौथे महीने जुलाई का पाँचवां दिन था।

राजा यहोयाकीम के देश–निष्कासन के पाँचवें वर्ष और महीने के पाँचवें दिन यहेजकेल को यहोवा का सन्देश मिला। उस स्थान पर उसके ऊपर यहोवा की शक्ति आई।

यहोवा का रथ और उसका सिंहासन

[4]मैंने (यहेजकेल) एक धूल भरी आंधी उत्तर से आती देखी। यह एक विशाल बादल था और उसमें से आग चमक रही थी। इसके चारों ओर प्रकाश जगमगा रहा था। यह आग में चमकते तप्त धातु सा दिखता था। [5]बादल के भीतर चार प्राणी थे। वे मनुष्यों की तरह दिखते थे। [6]किन्तु हर एक प्राणी के चार मुख और चार पंख थे। [7]उनके पैर सीधे थे। उनके पैर बछड़े के पैर जैसे दिखते थे और वे झलकाये हुए पीतल की तरह चमकते थे। [8]उनके पंखों के नीचे मानवी हाथ थे। वहाँ चार प्राणी थे और हर एक प्राणी के चार मुख और चार पंख थे। [9]उनके पंख एक दूसरे को छूते थे। जब वे चलते थे, मुड़ते नहीं थे। वे उसी दिशा में चलते थे जिसे देख रहे थे।

[10]हर एक प्राणी के चार मुख थे। सामने की ओर उनका चेहरा मनुष्य का था। दायीं ओर सिंह का चेहरा था। बांयी ओर बैल का चेहरा था और पीछे की ओर उकाब का चेहरा था। [11]प्राणियों के पंख उनके ऊपर फैले हुये थे। वे दो पंखों से अपने पास के प्राणी के दो पंखों को स्पर्श किये थे तथा दो को अपने शरीर को ढकने के लिये उपयोग में लिया था। [12]वे प्राणी जब चलते थे तो मुड़ते नहीं थे। वे उसी दिशा में चलते थे जिसे वे देख रहे थे। वे वहीं जाते थे जहाँ आत्मा उन्हें ले जाती थी।

[13]हर एक प्राणी इस प्रकार दिखता था। उन प्राणियों के बीच के स्थान में जलती हुई कोयले की आग सी दिख रही थी। यह आग छोटे–छोटे मशालों की तरह उन प्राणियों के बीच चल रही थी। आग बड़े प्रकाश के साथ चमक रही थी और बिजली की तरह कौंध रही थी! [14]वे प्राणी बिजली की तरह तेजी से पीछे को और आगे को दौड़ते थे!

[15-16]जब मैंने प्राणियों को देखा तो चार चक्र देखे! हर एक प्राणी के लिये एक चक्र था। चक्र भूमि को छू रहे थे और एक समान थे। चक्र ऐसे दिख रहे थे मानों पीली शुद्ध मणि के बने हों। वे ऐसे दिखते थे मानों एक चक्र के भीतर दूसरा चक्र हो। [17]वे चक्र किसी भी दिशा में घूम सकते थे। किन्तु वे प्राणी जब चलते थे तो घूम नहीं सकते थे। [18]उन चक्रों के घेरे ऊँचे और डरावने थे! उन चारों चक्रों के घेरे में आँखें ही आँखें थी।

[19]चक्र सदा प्राणियों के साथ चलते थे। यदि प्राणी ऊपर हवा में जाते तो चक्र भी उनके साथ जाते। [20]वे वहीं जाते, जहाँ "आत्मा" उन्हें ले जाना चाहती और चक्र उनके साथ जाते थे। क्यों? क्योंकि प्राणियों की "आत्मा" (शक्ति) चक्र में थी। [21]इसलिये यदि प्राणी चलते थे तो चक्र भी चलते थे। यदि प्राणी रूक जाते थे तो चक्र भी रूक जाते थे। यदि चक्र हवा में ऊपर जाते तो प्राणी उनके साथ जाते थे। क्यों? क्योंकि आत्मा चक्र में थी।

[22]प्राणियों के सिर के ऊपर एक आश्चर्यजनक चीज थी। यह एक उल्टे कटोरे की सी थी। कटोरा बर्फ की तरह स्वच्छ था! [23]इस कटोरे के नीचे हर एक प्राणी के सीधे पंख थे जो दूसरे प्राणी तक पहुँच रहे थे। दो पंख उसके शरीर के एक भाग को ढकते थे और अन्य दो दूसरे भाग को।

[24]जब कभी वे प्राणी चलते थे, उनके पंख बड़ी तेज ध्वनि करते थे। वह ध्वनि समुद्र के गर्जन जैसी उत्पन्न होती थी। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के समीप से निकलने के वाणी के समान थी। वह किसी सेना के जन–समूह के शोर की तरह थी। जब वे प्राणी चलना बन्द करते थे तो वे अपने पंखों को अपनी बगल में समेट लेते थे।

[25]उन प्राणियों ने चलना बन्द किया और अपने पंखों को समेटा और वहाँ फिर भीषण आवाज हुआ। वह आवाज उस कटोरे से हुआ जो उनके सिर के ऊपर था। [26]उस कटोरे के ऊपर वहाँ कुछ था जो एक सिंहासन की तरह दिखता था। यह नीलमणि की तरह नीला था। वहाँ कोई था जो उस सिंहासन पर बैठा एक मनुष्य की तरह दिख रहा था! [27]मैंने उसे उसकी कमर से ऊपर देखा। वह तप्त–धातु की तरह दिखा। उसके चारों ओर ज्वाला सी फूट रही थी! मैंने उसे उसकी कमर के नीचे देखा। यह आग की तरह दिखा जो उसके चारों ओर जगमगा रही थी। [28]उसके चारों ओर चमकता प्रकाश बादलों में मेघ धनुष सा था। यह यहोवा की महिमा सा दिख रहा था। जैसे ही मैंने वह देखा, मैं धरती पर गिर गया। मैंने धरती पर अपना माथा टेका। तब मैंने एक आवाज़ सम्बोधित करते हुए सुनी।

2 उस वाणी ने कहा, "मनुष्य के पुत्र,* खड़े हो जाओ और मैं तुमसे बातें करूँगा।"

[2]तब आत्मा मुझे मेरे पैरों पर सीधे खड़ा कर दिया और मैंने उस को सुना जो मुझसे बातें कर रहा था। [3]उसने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, मैं तुम्हें इस्राएल के परिवार से कुछ कहने के लिये भेज रहा हूँ।" वे लोग कई बार मेरे विरुद्ध हुए। उनके पूर्वज भी मेरे विरुद्ध हुए। उन्होंने मेरे विरुद्ध अनेक बार पाप किये और वे आज तक मेरे विरुद्ध अब भी पाप कर रहे हैं। [4]मैं तुम्हें उन लोगों से कुछ कहने के लिये भेज रहा हूँ। किन्तु वे बहुत हठी हैं। वे बड़े कठोर चित्त वाले हैं। किन्तु तुम्हें उन लोगों से बातें करनी हैं। तुम्हें कहना चाहिए, "हमारा स्वामी यहोवा ये बातें बताता है।" [5]किन्तु वे लोग तुम्हारी सुनेंगे नहीं। वे मेरे विरुद्ध पाप करना बन्द नहीं करेंगे। क्यों? क्योंकि वे बहुत विद्रोही लोग हैं, वे सदा मेरे विरुद्ध हो जाते हैं! किन्तु तुम्हें वे बातें उनसे कहनी चाहिये जिससे वे समझ सकें कि उनके बीच में कोई नबी रह रहा है।

[6]"मनुष्य के पुत्र उन लोगों से डरो नहीं। जो वे कहें उससे डरो मत। यह सत्य है कि वे तुम्हारे विरुद्ध हो जायेंगे और तुमको चोट पहुँचाना चाहेंगे। वे काँटे के समान होंगे। तुम ऐसा सोचोगे कि तुम बिच्छुओं के बीच रह रहे हो। किन्तु वे जो कुछ कहें उनसे डरो नहीं। वे विद्रोही लोग हैं। किन्तु उनसे डरो नहीं। [7]तुम्हें उनसे वे बातें कहनी चाहिए जो मैं कह रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि वे तुम्हारी नहीं सुनेंगे और वे मेरे विरुद्ध पाप करना बन्द नहीं करेंगे! क्यों? क्योंकि वे विद्रोही लोग हैं।

[8]"मनुष्य के पुत्र, तुम्हें उन बातों को सुनना चाहिये जिन्हें मैं तुमसे कहता हूँ। उन विद्रोही लोगों की तरह मेरे विरुद्ध न जाओ। अपना मुँह खोलो जो बात मैं तुमसे कहता हूँ, स्वीकार करो और उन वचनों को लोगों से कहो। इन वचनों को खा लो।"

[9]तब मैंने (यहेजकेल) एक भुजा को अपनी ओर बढ़ते देखा। वह एक गोल किया हुआ लम्बा पत्र जिस पर वचन लिखे थे, पकड़े हुए था। [10]मैंने उस गोल किये हुए पत्र को खोला और उस पर सामने और पीछे वचन लिखे थे। उसमें सभी प्रकार के करूण गीत, कथायें और चेतावनियाँ थीं।

3 परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, जो तुम देखते हो उसे खा जाओ। इस गोल किये पत्र को खा जाओ और तब जाकर इस्राएल के लोगों से ये बातें कहो।"

[2]इसलिये मैंने अपना मुँह खोला और उसने गोल किये पत्र को मेरे मुँह में रखा। [3]तब परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, मैं तुम्हें इस गोल किये पत्र को दे रहा हूँ। इसे निगल जाओ! इस गोल किये पत्र को अपने शरीर में भर जाने दो।"

इसलिये मैं गोल किये पत्र को खा गया। यह मेरे मुँह में शहद की तरह मीठा था।

[4]तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार में जाओ। मेरे कहे हुए वचन उनसे कहो। [5]मैं तुम्हें किन्हीं विदेशियों में नहीं भेज रहा हूँ जिनकी बातें तुम समझ न सको। तुम्हें दूसरी भाषा सीखनी नहीं पड़ेगी। मैं तुम्हें इस्राएल के परिवार में भेज रहा हूँ। [6]मैं तुम्हें कई भिन्न देशों में नहीं भेज रहा हूँ जहाँ लोग ऐसी भाषा बोलते हैं कि तुम समझ नहीं सकते। यदि तुम उन

मनुष्य के पुत्र यह प्राय: किसी व्यक्ति या मनुष्य को सम्बोधित करने का ढंग था। किन्तु यहाँ यह यहेजकेल के लिये सम्बोधन है।

लोगों के पास जाओगे और उनसे बातें करोगे तो वे तुम्हारी सुनेंगे। किन्तु तुम्हें उन कठिन भाषाओं को नहीं समझना है। [7]नहीं! मैं तो तुम्हें इस्राएल के परिवार में भेज रहा हूँ। केवल वे लोग ही कठोर चित्त वाले हैं–वे बहुत ही हठी हैं और इस्राएल के लोग तुम्हारी सुनने से इन्कार कर देंगे। वे मेरी सुनना नहीं चाहते! [8]किन्तु मैं तुमको उतना ही हठी बनाऊँगा जितने वे हैं। तुम्हारा चित्त ठीक उतना ही कठोर होगा जितना उनका! [9]हीरा अग्नि–चट्टान से भी अधिक कठोर होता है। उसी प्रकार तुम्हारा चित्त उनके चित्त से अधिक कठोर होगा। तुम उनसे अधिक हठी होगे अत: तुम उन लोगों से नहीं डरोगे । तुम उन लोगों से नहीं डरोगे जो सदा मेरे विरुद्ध जाते हैं।"

[10]तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, तुम्हें मेरी हर एक बात, जो मैं तुमसे कहता हूँ, सुनना होगा और तुम्हें उन बातों को याद रखना होगा। [11]तब तुम अपने उन सभी लोगों के बीच जाओ जो देश–निष्कासित हैं। उनके पास जाओ और कहो, 'हमारा स्वामी यहोवा ये बातें कहता है', वे मेरी नहीं सुनेंगे और वे पाप करना बन्द नहीं करेंगे। किन्तु तुम्हें ये बातें कहनी हैं।"

[12]तब आत्मा ने मुझे ऊपर उठाया। तब मैंने अपने पीछे एक आवाज सुनी। यह बिजली की कड़क की तरह बहुत तेज थी। उसने कहा, "यहोवा की महिमा धन्य है!" [13]तब प्राणियों के पंख हिलने आरम्भ हुए। पंखों ने, जब एक दूसरे को छुआ, तो उन्होंने बड़ी तेज आवाज की और उनके सामने के चक्र बिजली की कड़क की तरह प्रचण्ड घोष करने लगे! [14]आत्मा ने मुझे उठाया और दूर ले गई। मैंने वह स्थान छोड़ा। मैं बहुत दु:खी था और मेरी आत्मा बहुत अशान्त थी किन्तु यहोवा की शक्ति मेरे भीतर बहुत प्रबल थी! [15]मैं इस्राएल के उन लोगों के पास गया जो तेलाबीब* में रहने को विवश किये गए थे। ये लोग कबार नदी के सहारे रहते थे। मैंने वहाँ के निवासियों को अभिवादन किया। मैं वहाँ सात दिन ठहरा और उन्हें यहोवा की कही गई बातों को बताया।

[16]सात दिन बाद यहोवा का सन्देश मुझे मिला। उसने कहा, [17]"मनुष्य के पुत्र, मैं तुम्हें इस्राएल का सन्तरी बना रहा हूँ। मैं उन बुरी घटनाओं को बताऊँगा जो उनके साथ घटित होंगी और तुम्हें इस्राएल को उन घटनाओं के बारे में चेतावनी देनी चाहिए। [18]यदि मैं कहता हूँ, 'यह बुरा व्यक्ति मरेगा!' तो तुम्हें यह चेतावनी उसे देनी चाहिए! तुम्हें उससे कहना चाहिये कि वह अपनी जिन्दगी बदले और बुरे काम करना बन्द करे। यदि तुम उस व्यक्ति को चेतावनी नहीं दोगे तो वह मर जायेगा। वह मरेगा क्योंकि उसने पाप किया। किन्तु मैं तुमको भी उसकी मृत्यु के लिये उत्तरदायी बनाऊँगा! क्यों? क्योंकि तुम उसके पास नहीं गए और उसके जीवन को नहीं बचाया।

[19]"यह हो सकता है कि तुम किसी व्यक्ति को चेतावनी दोगे, उसे उसके जीवन को बदलने के लिये समझाओगे और बुरा काम न करने को कहोगे। यदि वह व्यक्ति तुम्हारी अनसुनी करता है तो मर जायेगा। वह मरेगा क्योंकि उसने पाप किया था। किन्तु तुमने उसे चेतावनी दी, अत: तुमने अपना जीवन बचा लिया।

[20]"या यह हो सकता है कि कोई अच्छा व्यक्ति अच्छा बने रहना छोड़ दे। मैं उसके सामने कुछ ऐसा लाकर रख दूँ कि वह उसका पतन (पाप) करे। वह बुरे काम करना आरम्भ करेगा। इसलिये वह मरेगा। वह मरेगा, क्योंकि वह पाप कर रहा है और तुमने उसे चेतावनी नहीं दी। मैं तुम्हें उसकी मृत्यु के लिये उत्तरदायी बनाऊँगा, और लोग उसके द्वारा किये गए सभी अच्छे कार्यों को याद नहीं करेंगे।

[21]"किन्तु यदि तुम उस अच्छे व्यक्ति को चेतावनी देते हो और उससे पाप करना बन्द करने को कहते हो, और यदि वह पाप करना बन्द कर देता है, तब वह नहीं मरेगा। क्यों? क्योंकि तुमने उसे चेतावनी दी और उसने तुम्हारी सुनी। इस प्रकार तुमने अपना जीवन बचाया।"

[22]तब यहोवा की शक्ति मेरे ऊपर आई। उसने मुझसे कहा, "उठो, और घाटी में जाओ। मैं तुमसे उस स्थान पर बात करूँगा।"

[23]इसलिये मैं खड़ा हुआ और बाहर घाटी में गया। यहोवा की महिमा वहाँ प्रकट हुआ ठीक वैसा ही, जैसा मैंने उसे कबार नदी के सहारे देखा था। इसलिए मैंने धरती पर अपना सिर झुकाया। [24]किन्तु "आत्मा" आयी और उसने मुझे उठाकर मेरे पैरों पर खड़ा कर दिया। उसने मुझसे कहा, "घर जाओ और अपने को अपने घर में ताले के भीतर बंद कर लो। [25]मनुष्य के पुत्र, लोग रस्सी के साथ आएंगे और तुमको बांध देंगे। वे तुमको

तेलाबीब यह स्थान इस्राएल के बाहर था। हम निश्चय के साथ नहीं कह सकते कि यह कहाँ है। इस नाम का अर्थ "स्रोत–गिरि" है।

लोगों के बीच बाहर जाने नहीं देंगे। [26]मैं तुम्हारी जीभ को तुम्हारे तालू से चिपका दूँगा, तुम बात करने योग्य नहीं रहोगे। इसलिये कोई भी व्यक्ति उन लोगों को ऐसा नहीं मिलेगा जो उन्हें शिक्षा दे सके कि वे पाप कर रहे हैं। क्यों? क्योंकि वे लोग सदा मेरे विरुद्ध जा रहे हैं। [27]किन्तु मैं तुमसे बातचीत करुँगा तब मैं तुम्हें बोलने दूँगा। किन्तु तुम्हें उनसे कहना चाहिए, 'हमारा स्वामी यहोवा ये बातें कहता है।' यदि कोई व्यक्ति सुनना चाहता है तो यह बहुत अच्छा है। यदि कोई व्यक्ति इसे नहीं सुनना चाहता, तो न सुने। किन्तु वे लोग सदा मेरे विरुद्ध जाते रहे।

4 "मनुष्य के पुत्र, एक ईंट लो। इस पर एक चित्र खींचो। एक नगर का, अर्थात यरूशलेम का एक चित्र बनाओ [2]और तब उस प्रकार कार्य करो मानो तुम उस नगर का घेरा डाले हुए सेना हो। नगर के चारों ओर एक मिट्टी की दीवार इस पर आक्रमण करने में सहायता के लिये बनाओ। नगर की दीवार तक पहुँचने वाली एक कच्ची सड़क बनाओ। तोड़ फोड़ करने वाले लट्ठे लाओ और नगर के चारों ओर सैनिक डेरे खड़े करो [3]और तब तुम एक लोहे की कड़ाही लो और इसे अपने और नगर के बीच रखो। यह एक लोहे की दीवार की तरह होगी, जो तुम्हें और नगर को अलग करेगी। इस प्रकार तुम यह प्रदर्शित करोगे कि तुम उस नगर के विरुद्ध हो। तुम उस नगर को घेरोगे और उस पर आक्रमण करोगे। क्यों? क्योंकि यह इस्राएल के परिवार के लिये एक उदाहरण होगा। यह प्रदर्शित करेगा कि मैं (परमेश्वर) यरूशलेम को नष्ट करुँगा।

[4]"तब तुम्हें अपने बायीं करवट लेटना चाहिए। तुम्हें वह करना चाहिए जो प्रदर्शित करे कि तुम इस्राएल के लोगों के पापों को अपने ऊपर ले रहे हो। तुम उस पाप को उतने ही दिनों तक ढोओगे जितने दिन तक तुम अपनी बायीं करवट लेटोगे। [5]तुम इस तरह इस्राएल के पाप को तीन सौ नब्बे दिनों तक सहोगे। इस प्रकार मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि इस्राएल, एक दिन एक वर्ष के बराबर के, कितने लम्बे समय तक दण्डित होगा।

[6]"उस समय के बाद तुम अपनी दायीं करवट चालीस दिन तक लेटोगे। इस समय यहूदा के पापों को चालीस दिन तक सहन करोगे। एक दिन एक वर्ष का होगा। मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि यहूदा कितने लम्बे समय के लिये दण्डित होगा।"

[7]परमेश्वर फिर बोला। उसने कहा, "अब, अपनी आस्तीनों को मोड़ लो और अपने हाथों को ईंट के ऊपर उठाओ। ऐसा दिखाओ मानो तुम यरूशलेम नगर पर आक्रमण कर रहे हो। इसे यह दिखाने के लिये करो कि तुम मेरे नबी के रूप में लोगों से बातें कर रहे हो। [8]इस पर ध्यान रखो, मैं तुम्हें रस्सियों से बाँध रहा हूँ। तुम तब तक एक बगल से दूसरी बगल करवट नहीं ले सकते जब तक तुम्हारा नगर पर आक्रमण समाप्त नहीं होता।"*

[9]परमेश्वर ने यह भी कहा, "तुम्हें रोटी बनाने के लिये कुछ अन्न लाना चाहिए। कुछ गेहूँ, जौ, सेम, मसूर, तिल, बाजरा और कठिया गेहूँ लाओ। इस सभी को एक कटोरे में मिलाओ और उन्हें पीसकर आटा बनाओ। तुम्हें इस आटे का उपयोग रोटी बनाने के लिये करना होगा। तुम केवल इसी रोटी को तीन सौ नब्बे दिनों तक अपनी बगल के सहारे लेटे हुये खाओगे। [10]तुम्हें केवल एक प्याला वह आटा रोटी बनाने के लिये प्रतिदिन उपयोग करना होगा। तुम उस रोटी को पूरे दिन में समय समय पर खाओगे। [11]और तुम केवल तीन प्याले पानी प्रतिदिन पी सकते हो। [12]तुम्हें प्रतिदिन अपनी रोटी बनानी चाहिए। तुम्हें आदमी का सूखा मल लाकर उसे जलाना चाहिए। तब तुम्हें उस जलते मल पर अपनी रोटी पकानी चाहिए। तुम्हें इस रोटी को लोगों के सामने खाना चाहिए।" [13]तब यहोवा ने कहा, "यह प्रदर्शित करेगा कि इस्राएल का परिवार विदेशों में अपवित्र रोटियाँ खाएगा और मैंने उन्हें इस्राएल को छोड़ने और उन देशों में जाने को विवश किया था!"

[14]तब मैंने (यहेजकेल) आश्चर्य से कहा, "किन्तु मेरे स्वामी यहोवा, मैंने अपवित्र भोजन कभी नहीं खाया। मैंने कभी उस जानवर का माँस नहीं खाया, जो किसी रोग से मरा हो या जिसे जंगली जानवर ने मार डाला हो। मैंने बाल्यावस्था से लेकर अब तक कभी अपवित्र माँस नहीं खाया है। मेरे मुँह में कोई भी वैसा बुरा माँस कभी नहीं गया है।"

[15]तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "ठीक है! मैं तुम्हें रोटी पकाने के लिये गाय का सूखा गोबर उपयोग में लाने दूँगा। तुम्हें आदमी के सूखे मल का उपयोग नहीं करना होगा।"

नगर ... नहीं होता हिब्रू में श्लेष है। हिब्रू शब्द का अर्थ "भूखों मरने का समय" "आपत्तिकाल" या "किसी नगर पर उसके विरुद्ध आक्रमण" हो सकता है।

[16]तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, मैं यरूशलेम की रोटी की आपूर्ति को नष्ट कर रहा हूँ। लोगों के पास खाने के लिये रोटियाँ नहीं के बराबर होंगी। वे अपनी भोजन–आपूर्ति के लिये बहुत परेशान होंगे और उनके लिये पीने का पानी नहीं के बराबर है। वे उस पानी को पीते समय बहुत भयभीत रहेंगे। [17]क्यों? क्योंकि लोगों के लिये पर्याप्त भोजन और पानी नहीं होगा। लोग एक दूसरे को देखकर भयभीत होंगे क्योंकि वे अपने पापों के कारण एक दूसरे को नष्ट होता हुआ देखेंगे।"

5 [1-2]"मनुष्य के पुत्र अपने उपवास के समय* के बाद तुम्हें ये काम करने चाहिए। तुम्हें एक तेज तलवार लेनी चाहिए। उस तलवार का उपयोग नाई के उस्तरे की तरह करो। तुम अपने बाल और दाढ़ी उससे काट लो। बालों को तराजू में रखो और तौलो। अपने बालों को तीन बराबर भागों में बाँटो। अपने बालों का एक तिहाई भाग उस ईंट पर रखो जिस पर नगर का चित्र बना है। उस नगर में उन बालों को जलाओ। यह प्रदर्शित करता है कि कुछ लोग नगर के अन्दर मरेंगे। तब तलवार का उपयोग करो और अपने बालों के एक तिहाई को छोटे–छोटे टुकड़ों में काट डालो। उन बालों को उस नगर (ईंट) के चारों ओर रखो। यह प्रदर्शित करेगा कि कुछ लोग नगर के बाहर मरेंगे। तब अपने बालों के एक तिहाई को हवा में उड़ा दो। इन्हें हवा को दूर उड़ा ले जाने दो। यह प्रदर्शित करेगा कि मैं अपनी तलवार निकालूँगा और कुछ लोगों का पीछा करके उन्हें दूर देशों में भगा दूँगा। [3]किन्तु तब तुम्हें जाना चाहिए और उन बालों में से कुछ को लाना चाहिए। उन बालों को लाओ, उन्हें ढको और उनकी रक्षा करो। यह प्रदर्शित करेगा कि मैं अपने लोगों में से कुछ को बचाऊँगा [4]और तब उन उड़े हुए बालों में से कुछ और अधिक बालों को लाओ। उन बालों को आग में फेंक दो। यह प्रदर्शित करता है कि आग वहाँ शुरु होगी और इस्राएल के पूरे खानदान को जलाकर नष्ट कर देगी।"

[5]तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा "वह ईंट यरूशलेम है, मैंने इस यरूशलेम नगर को अन्य राष्ट्रों के बीच रखा है, इस समय इस्राएल के चारों ओर अन्य देश हैं। [6]यरूशलेम के लोगों ने मेरे आदेशों के प्रति विद्रोह किया। वे अन्य किसी भी राष्ट्र से अधिक बुरे थे! उन्होंने मेरे नियमों को उससे भी अधिक तोड़ा जितना उनके चारों ओर के किसी भी देश के लोगों ने तोड़ा। उन्होंने मेरे आदेशों को सुनने से इनकार कर दिया। उन्होंने मेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया!"

[7]इसलिये मेरे स्वामी यहोवा, ने कहा, "मैं तुम लोगों पर भयंकर विपत्ति लाऊँगा। क्यों? क्योंकि तुमने मेरे आदेशों का पालन नहीं किया। तुम लोगों ने मेरे नियमों को अपने चारों ओर रहने वाले लोगों से भी अधिक तोड़ा! तुम लोगों ने वे काम भी किये जिन्हें वे लोग भी गलत कहते हैं!" [8]इसलिये मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "इसलिए मैं भी तुम्हारे विरुद्ध हूँ, मैं तुम्हें इस प्रकार दण्ड दूँगा जिससे दूसरे लोग भी देख सकें। [9]मैं तुम लोगों के साथ वह करूँगा जिसे मैंने पहले कभी नहीं किया। मैं उन भयानक कामों को फिर कभी नहीं करूँगा। क्यों? क्योंकि तुमने इतने अधिक भयंकर काम किये। [10]यरूशलेम में लोग भूख से इतने तड़पेंगे कि माता–पिता अपने बच्चों को खा जाएंगें और बच्चे अपने माता–पिता को खा जाएंगे। मैं तुम्हें कई प्रकार से दण्ड दूँगा और जो लोग जीवित बचे हैं, उन्हें मैं हवा में बिखेर दूँगा।"

[11]मेरे स्वामी यहोवा कहता है, "यरूशलेम, मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं तुम्हें दण्ड दूँगा! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि तुमने मेरे 'पवित्र स्थान' के विरुद्ध भयंकर पाप किया! तुमने वे भयानक काम किये जिन्होंने इसे गन्दा बना दिया! मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम पर दया नहीं करुँगा! मैं तुम्हारे लिए दु:ख का अनुभव नहीं करुँगा! [12]तुम्हारे एक तिहाई लोग नगर के भीतर रोग और भूख से मरेंगे। तुम्हारे एक तिहाई लोग युद्ध में नगर के बाहर मरेंगे और तुम्हारे लोगों के एक तिहाई को मैं अपनी तलवार निकाल कर उन का पीछा कर के उन्हें दूर देशों में खदेड़ दूँगा। [13]केवल तब मैं तुम्हारे लोगों पर क्रोधित होना बन्द करूँगा। मैं समझ लूँगा कि वे उन बुरे कामों के लिए दण्डित हुए हैं जो उन्होंने मेरे साथ किये थे और वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ और मैंने उनसे बातें उनके प्रति गहरा प्रेम होने के कारण की!"

[14]परमेश्वर ने कहा, "यरूशलेम मैं तुझे नष्ट करुँगा तुम पत्थरों के ढेर के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं रह जाओगे। तुम्हारे चारों ओर के लोग तुम्हारी हँसी उड़ाएंगे।

अपने उपवास के समय "नगर पर तुम्हारा आक्रमण।" देखें यहेजकेल 4:8

हर एक व्यक्ति जो तुम्हारे पास से गुजरेगा, तुम्हारी हँसी उड़ाएगा। [15]तुम्हारे चारों ओर के लोग तुम्हारी हँसी उड़ाएंगे, किन्तु उनके लिए तुम एक सबक भी बनोगे। वे देखेंगे कि मैं क्रोधित था और मैंने तुमको दण्ड दिया। मैं बहुत क्रोधित था। मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी। मुझ, यहोवा ने तुमसे कहा था कि मैं क्या करूँगा! [16]मैंने कहा था कि मैं तुम्हारे पास भयंकर भुखमरी का समय भेजूँगा। मैंने तुमसे कहा था, मैं उन चीजों को भेजूँगा जो तुमको नष्ट करेंगी और तुमसे कहा था कि मैं तुम्हारी भोजन की आपूर्ति छीन लूँगा, और वह भूखमरी का वह समय बार–बार आया। [17]मैंने तुमसे कहा था कि मैं तुझ पर भूख तथा जंगली पशु भेजूँगा, जो तुम्हारे बच्चों को मार डालेंगे। मैंने तुमसे कहा था कि पूरे नगर में रोग और मृत्यु का राज्य होगा और मैं उन शत्रु–सैनिकों को तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिये लाऊँगा। मुझ यहोवा ने यह कहा था, ये सभी बातें घटित होंगी और सभी घटित हुई!"

6 तब यहोवा का वचन मेरे पास फिर आया। [2]उसने कहा, "मनुष्य के पुत्र' इस्राएल के पर्वतों की ओर मुड़ो। उनके विरुद्ध मेरे पक्ष में कहो। [3]उन पर्वतों से यह कहो:

"'इस्राएल के पर्वतों, मेरे स्वामी यहोवा की ओर से यह सन्देश सुनो! मेरे स्वामी यहोवा पहाड़ियों, पर्वतों, घाटियों और खार–खड्डों से यह कहता है। ध्यान दो! मैं (परमेश्वर) शत्रु को तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिये ला रहा हूँ। मैं तुम्हारे उच्च–स्थानों को नष्ट कर दूँगा। [4]तुम्हारी वेदियों को तोड़ कर टुकड़े–टुकड़े कर दिया जायेगा तुम्हारी सुगन्धि* चढ़ाने की वेदियाँ ध्वस्त कर दी जाएंगी! और मैं तुम्हारे शवों को तुम्हारी गन्दी मूर्तियों के सामने फेकूँगा। [5]मैं इस्राएल के लोगों के शवों को उनके देवताओं की गन्दी मूर्तियों के सामने फेंकूँगा। मैं तुम्हारी हड्डियों को तुम्हारी वेदियों के चारों ओर बिखेरूँगा। [6]जहाँ कहीं तुम्हारे लोग रहेंगे उन पर विपत्तियाँ आएंगी। उनके नगर पत्थरों के ढेर बनेंगे। उनके उच्च स्थान नष्ट किये जाएंगे। क्यों? इसलिये कि उन पूजा–स्थानों का उपयोग दुबारा न हो सके। वे सभी वेदियाँ नष्ट कर दी जायेंगी। लोग फिर कभी उन गन्दी मूर्तियों को नहीं पूजेंगे। उन सुगन्धि–वेदियों को ध्वस्त किया जाएगा। जो चीजें तुम बनाते हो वे पूरी तरह नष्ट की जाएंगी। [7]तुम्हारे लोग मारे जाएंगे और तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ!'"

[8]परमेश्वर ने कहा, "किन्तु मैं तुम्हारे कुछ लोगों को बच निकलने दूँगा। वे थोड़े समय तक विदेशों में रहेंगे। मैं उन्हें बिखेरूँगा और अन्य देशों में रहने के लिये विवश करुँगा। [9]तब वे बचे हुए लोग* बन्दी बनाए जाएंगे। वे विदेशों में रहने को विवश किये जाएंगे। किन्तु वे बचे हुए लोग मुझे याद रखेंगे। मैंने उनकी आत्मा (हृदय) को खण्डित किया। जिन पापों को उन्होंने किया, उसके लिये वे स्वयं ही घृणा करेंगे। बीते समय में वे मुझसे विमुख हुए थे और दूर हो गए थे। वे अपनी गन्दी मूर्तियों के पीछे लगे हुए थे। वे उस स्त्री के समान थे जो अपने पति को छोड़कर, किसी दूसरे पुरुष के पीछे दौड़ने लगी। उन्होंने बड़े भयंकर पाप किये। [10]किन्तु वे समझ जाएंगे कि मैं यहोवा हूँ और वे यह जानेंगे कि यदि मैं कुछ करने के लिये कहूँगा तो मैं उसे करूँगा। वे समझ जायेंगे कि वे सब विपत्तियाँ जो उन पर आई हैं, मैंने डाली हैं।"

[11]तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "हाथों से ताली बजाओं और अपने पैर पीटो। उन सभी भयंकर चीजों के विरुद्ध कहो जिन्हें इस्राएल के लोगों ने किया है। उन्हें चेतावनी दो कि वे रोग और भूख से मारे जाएंगे। उन्हें बताओ कि वे युद्ध में मारे जाएंगे। [12]दूर के लोग रोग से मरेंगे। समीप के लोग तलवार से मारे जाएंगे। जो लोग नगर में बचे रहेंगे, वे भूख से मरेंगे। मैं तभी क्रोध करना छोड़ूँगा, [13]और केवल तभी तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। तुम यह तब समझोगे जब तुम अपने शवों को गन्दी मूर्तियों के सामने और वेदियों के चारों ओर देखोगे। तुम्हारे पूजा के उन हर स्थानों के निकट, हर एक ऊँची पहाड़ी, पर्वत तथा हर एक हरे वृक्ष और पत्ते वाले हर एक बांज वृक्ष के नीचे, वे शव होंगे। उन सभी स्थानों पर तुमने अपनी बलि–भेंट की है। वे तुम्हारी गन्दी मूर्तियों के लिए मधुर गन्ध थी। [14]किन्तु मैं अपना हाथ तुम लोगों पर उठाऊँगा और तुम्हें और तुम्हारे लोगों को जहाँ कही वे रहे, दण्ड दूँगा! मैं तुम्हारे देश को नष्ट करूँगा! यह

सुगन्धि पेड़ का विशेष सूखा रस। इसे मधुर–गन्ध धुएं के लिये जलाया जाता था तथा इसे परमेश्वर को भेंट के रूप में दिया जाता था।

बचे लोग ऐसे लोग जो किसी ध्वंस से बच गए हों। यहाँ उन यहूदी लोगों से तात्पर्य है जो शत्रु की सेनाओं द्वारा यहूदा और इस्राएल के ध्वस्त किये जाने पर बच गये थे।

दिबला मरूभूमि से भी अधिक सूनी होगी। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!"

7 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। [2]उसने कहा, "मनुष्य के पुत्र, अब मेरे स्वामी यहोवा का यह सन्देश है। यह सन्देश इस्राएल देश के लिये है:

अन्त!
अन्त आ गया है।
पूरा देश नष्ट हो जायेगा।
[3] अब तुम्हारा अन्त आ गया है!
मैं दिखाऊँगा कि मैं तुम पर कितना क्रोधित हूँ।
मैं तुम्हें उन बुरे कामों के लिये दण्ड दूँगा
जो तुमने किये।
जो भंयकर काम तुमने किये उनके लिए
मैं तुमसे भुगतान कराऊँगा।
[4] मैं तुम्हारे ऊपर तनिक भी दया नहीं करूँगा।
मैं तुम्हारे लिये अफसोस नहीं करूँगा।
मैं तुम्हें तुम्हारे बुरे कामों के लिये
दण्ड दे रहा हूँ।
तुमने भयानक काम किये हैं।
अब तुम समझ जाओगे कि मैं यहोवा हूँ।"

[5]मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं। "एक के बाद एक विपत्तियाँ आयेंगी! [6]अन्त आ रहा है और यह बहुत जल्दी आयेगा! [7]इस्राएल के तुम लोगों, क्या तुमने सीटी सुनी है? शत्रु आ रहा है। वह दण्ड का समय शीघ्र आ रहा है! शत्रुओं का शोरगुल पर्वतों पर अधिकाधिक बढ़ता जा रहा है। [8]मैं शीघ्र ही दिखा दूँगा कि मैं कितना क्रोधित हूँ। मैं तुम्हारे विरुद्ध अपने पूरे क्रोध को प्रकट करूँगा। मैं उन बुरे कामों के लिये दण्ड दूँगा जो तुमने किये। मैं उन सभी भयानक कामों के लिए तुमसे भुगतान कराऊँगा जो तुमने किये। [9]मैं तुम पर तनिक भी दया नहीं करुँगा मैं तुम्हारे लिये अफसोस नहीं करुँगा। मैं तुम्हें तुम्हारे बुरे कामों के लिये दण्ड दे रहा हूँ। तुमने जो भयानक काम किये हैं, अब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ और मैं दण्ड भी देता हूँ।

[10]"दण्ड का वह समय आ गया। क्या तुम सीटी सुन रहे हो? परमेश्वर ने संकेत दिया है। दण्ड आरम्भ हो रहा है। डाली अंकुरित होने लगी है। घमण्डी राजा (नबूकदनेस्सर) पहले से ही अधिक शक्तिशाली होता जा रहा था। [11]वह हिंसक व्यक्ति उन बुरे लोगों को दण्ड देने के लिये तैयार है। इस्राएल में लोगों की संख्या बहुत है, किन्तु वह उनमें से नहीं है। वह उस भीड़ का व्यक्ति नहीं है। वह उन लोगों में से कोई महत्वपूर्ण प्रमुख नहीं है।

[12]"वह दण्ड का समय आ गया है। वह दिन आ पहुँचा। जो लोग चीजें खरीदते हैं, प्रसन्न नहीं होंगे और जो लोग चीजें बेचते हैं, वे उन्हें बेचने में बुरा नहीं मानेंगे। क्यों? क्योंकि वह भंयकर दण्ड हर एक व्यक्ति के लिये होगा। [13]जो लोग अपनी स्थायी सम्पत्ति बेचेंगे वे उसे कभी नहीं पाएंगे। यदि कोई व्यक्ति जीवित भी बचा रहेगा तो भी वह अपनी स्थायी सम्पत्ति वापस नहीं पा सकता। क्यों? क्योंकि यह दर्शन लोगों के पूरे समूह के लिये है। इसलिए यदि कोई व्यक्ति जीवित भी बच निकलता है, तो भी लोग इससे अधिक संतुष्ट नहीं होंगे।

[14]"वे लोगों को चेतावनी देने के लिये तुरही बजाएंगे। लोग युद्ध के लिये तैयार होंगे। किन्तु वे युद्ध करने के लिये नहीं निकलेंगे। क्यों? क्योंकि मैं पूरे जन–समूह को दिखाऊँगा कि मैं कितना क्रोधित हूँ। [15]तलवार लिये हुए शत्रु नगर के बाहर हैं। रोग और भूख नगर के भीतर हैं। यदि कोई युद्ध के मैदान में जाएगा तो शत्रु के सैनिक उसे मार डालेंगे। यदि वह नगर में रहता है तो भूख और रोग उसे नष्ट करेंगे।

[16]"किन्तु कुछ लोग बच निकलेंगे। वे बचे लोग भाग कर पहाड़ों में चले जाएंगे। किन्तु वे लोग सुखी नहीं होंगे। वे अपने पापों के कारण दु:खी होंगे। वे चिल्लायेंगे और कबूतरों की तरह दु:ख–भरी आवाज़ निकालेंगे। [17]लोग इतने थके और खिन्न होंगे कि बाहें भी नहीं उठा पाएंगे। उनके पैर पानी की तरह ढीले होंगे। [18]वे शोक–वस्त्र पहनेंगे और भयभीत रहेंगे। तुम हर मुख पर ग्लानि पाओगे। वे (शोक प्रदर्शन के लिये) अपने बाल मुड़वा लेंगे। [19]वे अपनी चाँदी की देव मूर्तियों को सड़कों पर फेक देंगे। वे अपने सोने की देवमूर्तियों को गन्दे चीथड़ो की तरह समझेंगे! क्यों? क्योंकि जब यहोवा ने अपना क्रोध प्रकट किया वे मूर्तियाँ उन्हें बचा न सकीं। वे मूर्तियाँ लोगों के लिये पतन (पाप) के जाल के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं थीं। वे मूर्तियाँ लोगों को भोजन नहीं देंगी वे मूर्तियाँ उनके पेट में अन्न नहीं पहुँचायेंगी।

[20]"उन लोगों ने अपने सुन्दर आभूषण का उपयोग किया और मूर्ति बनाई। उन्हें अपनी मूर्ति पर गर्व था। उन्होंने अपनी भयानक मूर्तियाँ बनाई। उन लोगों ने

उन गन्दी चीजों को बनाया। इसलिये मैं (परमेश्वर) उन्हें गन्दें चिथड़े की तरह फेंक दूँगा। 21मैं उन्हें अजनबियों को लेने दूँगा। वे अजनबी उनका मजाक उड़ाएंगे। वे अजनबी, उन लोगों में से कुछ को मारेंगे और कुछ को बन्दी बनाकर ले जाएंगे। 22मैं उनसे अपना मुँह फेर लूँगा, मैं उनकी ओर नहीं देखूँगा। वे अजनबी मेरे मन्दिर को नष्ट करेंगे, वे उस पवित्र भवन के गोपनीय भागों में जाएंगे और उसे अपवित्र करेंगे।

23"बन्दियों के लिये जंजीरें बनाओ! क्यों? क्योंकि बहुत से लोग दूसरे लोगों को मारने के कारण दण्डित होंगे। नगर के हर स्थान पर हिंसा भड़केगी। 24मैं अन्य राष्ट्रों से बुरे लोगों को लाऊँगा और वे लोग इस्राएल के लोगों के सभी घरों को ले लेंगे। मैं तुम शक्तिशाली लोगों को गर्वीला होने से रोक दूँगा। दूसरे राष्ट्रों के वे लोग तुम्हारे पूजा–स्थानों को ले लेगें।

25"तुम लोग भय से काँप उठोगे। तुम लोग शान्ति चाहोगे, किन्तु शान्ति नहीं मिलेगी। 26तुम एक के बाद दूसरी दुःख–कथा सुनोगे। तुम बुरी खबरों के अलावा कुछ नहीं सुनोगे। तुम नबी की खोज करोगे और उससे दर्शन पूछोगे। किन्तु कोई मिलेगा नहीं। याजक के पास तुम्हें शिक्षा देने को कुछ भी नहीं होगा और अग्रजों (प्रमुखों) के पास तुम्हें देने को कोई अच्छी सलाह नहीं होगी। 27तुम्हारा राजा उन लोगों के लिये रोएगा, जो मर गए। प्रमुख शोक–वस्त्र पहनेंगे। साधारण लोग बहुत डर जाएंगे। क्यों? क्योंकि मैं उसका बदला दूँगा जो उन्होंने किया। मैं उनका दण्ड निश्चित करूँगा। और मैं उन्हें दण्ड दूँगा। तब वे लोग समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

8 एक दिन मैं (यहेजकेल) अपने घर में बैठा था और यहूदा के अग्रज (प्रमुख) वहाँ मेरे सामने बैठे थे। यह देश–निकाले के छठे वर्ष के छठे महीने (सितम्बर) के पाँचवें दिन हुआ। अचानक मेरे स्वामी यहोवा की शक्ति मुझमें उतरी। 2मैंने कुछ देखा जो आग की तरह था। यह एक मनुष्य शरीर जैसा दिखाई पड़ता था। कमर से नीचे वह आग–सा था। कमर से ऊपर वह आग में तप्त–धातु की तरह चमकीला और कान्तिवाला था। 3तब मैंने कुछ ऐसा देखा जो बाहु की तरह था। वह बाहु बाहर बढ़ी और उसने मेरे सिर के बालों से मुझे पकड़ लिया। तब आत्मा ने मुझे हवा में उठा लिया और परमेश्वर के दर्शन में वह मुझे यरूशलेम को ले गई। वह मुझे उत्तर की ओर के भीतर फाटक पर ले गई। वह देवमूर्ति, जिससे परमेश्वर को ईर्ष्या होती है, उस फाटक के सहारे है। 4किन्तु इस्राएल के परमेश्वर का तेज वहाँ था। वह तेज वैसा ही दिखता था जैसा दर्शन मैंने घाटी के किनारे कबार नहर के पास देखा था।

5परमेश्वर ने मुझसे कहा। उसने कहा, "मनुष्य के पुत्र, उत्तर की ओर देखो!" इसलिये मैंने उत्तर की ओर देखा। और वहाँ प्रवेश मार्ग के सहारे वेदी–द्वार के उत्तर में वह देवमूर्ति थी जिसके प्रति परमेश्वर को ईर्ष्या होती थी।

6तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम देखते हो कि इस्राएल के लोग कैसा भंयकर काम कर रहे हैं? यहाँ उन्होंने उस चीज को मेरे मन्दिर के ठीक बगल में बनाया है। यदि तुम मेरे साथ आओगे तो तुम और भी अधिक भंयकर चीजें देखोगे!"

7इसलिये मैं आंगन के प्रवेश–द्वार पर गया और मैंने दीवार में एक छेद देखा। 8परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र! उस दीवार के छेद में से घुसो।" इसलिये मैं दीवार के उस छेद में से होकर गया और वहाँ मैंने एक दरवाजा देखा।

9तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "अन्दर जाओ, और उन भयानक दुष्ट चीजों को देखो जिन्हें लोग यहाँ कर रहे हैं।" 10इसलिये मैं अन्दर गया और मैंने देखा। मैंने हर एक प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु और जानवरों की देवमूर्तियों को देखा जिनके बारे में सोचने से तुम्हें घृणा होती है। वे देवमूर्तियाँ गन्दी मूर्तियाँ थीं जिन्हें इस्राएल के लोग पूजते थे। वहाँ उन जानवरों के चित्र हर दीवार पर चारों ओर खुदे हुए थे!

11तब मैंने इस पर ध्यान दिया कि शापान का पुत्र याजन्याह और इस्राएल के सत्तर अग्रज (प्रमुख) उस स्थान पर पूजा करने वालों के साथ थे। वहाँ पर वे, लोगों के ठीक सामने थे, और हर एक प्रमुख के हाथ में अपनी सुगन्धि का थाल था। जलती सुगन्धि का धुँआ हवा में उठ रहा था। 12तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम देखते हो कि इस्राएल के प्रमुख अंधेरे में क्या करते हैं? हर एक व्यक्ति के पास अपने असत्य देवता के लिये एक विशेष कमरा है! वे लोग आपस में बातें करते हैं, 'यहोवा हमें देख नहीं सकता। यहोवा ने इस देश को छोड़ दिया है।'" 13तब परमेश्वर ने मुझसे कहा,

"यदि तुम मेरे साथ आओगे तो तुम उन लोगों को और भी अधिक भयानक काम करते देखोगे!"

[14]तब वह मुझे यहोवा के मन्दिर के प्रवेशद्वार पर ले गया। यह द्वार उत्तर की ओर था। वहाँ मैंने स्त्रियों को बैठे और रोते देखा। वे असत्य देवता तम्मूज के विषय में शोक मना रहीं थीं!

[15]परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम इन भंयकर चीजों को देखते हो? मेरे साथ आओ और तुम इनसे भी बुरे काम देखोगे!" [16]तब वह मुझे मन्दिर के भीतरी आँगन में ले गया। उस स्थान पर मैंने पच्चीस व्यक्तियों को नीचे झुके हुए और पूजा करते देखा। वे बरामदे और वेदी के बीच थे, किन्तु वे गलत दिशा में मुँह किये खड़े थे! उनकी पीठ पवित्र स्थान की ओर थी! वे सूर्य की पूजा करने के लिये नीचे झुके थे!

[17]तब परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम इसे देखते हो? यहूदा के लोग मेरे मन्दिर को इतना महत्वहीन समझते हैं कि वे मेरे मन्दिर में यह भयंकर काम करते हैं। यह देश हिंसा से भरा हुआ है। वे लगातार मुझको पागल करने वाला काम करते हैं! देखो, उन्होंने अपने नाकों में असत्य देवता की तरह चन्द्रमा का सम्मान करने के लिये बालियाँ पहन रखी हैं। [18]मैं उन पर अपना क्रोध प्रकट करुँगा। मैं उन पर कोई दया नहीं करुँगा। मैं उनके लिये दु:ख का अनुभव नहीं करुँगा। वे मुझे जोर से पुकारेंगे, किन्तु मैं उनको सुनने से इन्कार कर दूँगा!"

9 तब परमेश्वर ने नगर को दण्ड देने के लिये उत्तरदायी प्रमुखों को जोर से पुकारा। हर एक प्रमुख के हाथ में उसका अपना विध्वंसक शस्त्र था। [2]तब मैंने ऊपरी द्वार से छ: व्यक्तियों को सड़क पर आते देखा। यह द्वार उत्तर की ओर है। हर एक व्यक्ति अपने घातक शस्त्र को अपने हाथ में लिये था। उन व्यक्तियों में से एक ने सूती वस्त्र पहन रखा था। उसके पास कमर में लिपिक की एक कलम और स्याही थी। वे लोग मन्दिर से काँसे की वेदी के पास गए और वहाँ खड़े हुए। [3]तब इस्राएल के परमेश्वर का तेज करुब (स्वर्गदूतों) के ऊपर से, जहाँ वह था, उठा। तब वह तेज मन्दिर के द्वार पर गया। जब वह डयोढ़ी पर पहुँचा तो वह रूक गया। तब उस तेज ने उस व्यक्ति को बुलाया जो सूती वस्त्र, कलम और स्याही धारण किये हुए था।

[4]तब यहोवा ने उससे कहा, "यरूशलेम नगर से होकर निकलो। जो लोग उस नगर में लोगों द्वारा की गई भंयकर चीजों के विषय में दु:खी हैं और घबरायें हुए हैं, उन हर एक के ललाट पर एक चिन्ह अंकित करो।"

[5-6]तब मैंने परमेश्वर को अन्य लोगों से कहते सुना, "मैं चाहता हूँ कि तुम लोग प्रथम व्यक्ति का अनुसरण करो। तुम उन सभी व्यक्तियों को मार डालो। जिनके ललाट पर चिन्ह नहीं है। तुम इस पर ध्यान नहीं देना कि वे अग्रज (प्रमुख) युवक, युवतियाँ, बच्चे, या मातायें हैं। तुम्हें अपने शस्त्रों का उपयोग करना है, उन हर एक को मार डालना है जिनके ललाट पर चिन्ह नहीं है। कोई दया न दिखाओ। किसी व्यक्ति के लिये अफसोस न करो। यहाँ मेरे मन्दिर से आरम्भ करो।" इसलिये उन्होंने मन्दिर के सामने के अग्रजों (प्रमुखों) से आरम्भ किया।

[7]परमेश्वर ने उनसे कहा, "इस स्थान को अपवित्र बना दो! इस आंगन को शवों से भर दो!" इसलिए वे गए और उन्होंने नगर में लोगों को मार डाला।

[8]जब वे लोग, लोगों को मारने गए, तो मैं वहीं रूका रहा। मैंने भूमि पर अपना माथा टेकते हुए कहा, "हे मेरे स्वामी यहोवा, यरूशलेम के विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करने के लिये, क्या तू इस्राएल में बचे हुये सभी लोगों को मार रहा है?"

[9]परमेश्वर ने कहा, "इस्राएल और यहूदा के परिवार ने अत्याधिक बुरे पाप किये हैं। इस देश में सर्वत्र लोगों की हत्यायें हो रही हैं और यह नगर अपराध से भरा पड़ा है। क्यों? क्योंकि लोग स्वयं कहते हैं, 'यहोवा ने इस देश को छोड़ दिया। वे उन कामों को नहीं देख सकता जिन्हें हम कर रहे हैं।' [10]और मैं दया नहीं दिखाऊँगा। मैं उन लोगों के लिये अफसोस अनुभव नहीं करुँगा। उन्होंने स्वयं इसे बुलाया है, मैं इन लोगों को केवल दण्ड दे रहा हूँ जिसके ये पात्र हैं!"

[11]तब सूती वस्त्र, लिपिक की कलम और स्याही धारण करने वाला व्यक्ति बोला। उसने कहा, "मैंने वह कर दिया जो तेरा आदेश था।"

10 तब मैंने उस कटोरे को देखा जो करुब (स्वर्गदूत) के सिरों के ऊपर था। कटोरा नीलमणि की तरह स्वच्छ नीला दिख रहा था। वहाँ कटोरे के ऊपर कुछ सिंहासन की तरह दिख रहा था। [2]तब उस व्यक्ति ने जो सिंहासन पर बैठा था, सन के वस्त्र पहने हुए

व्यक्ति से कहा, “तुफानी–बादल” में आओ। करुब (स्वर्गदूत) के क्षेत्र में आओ। करुब (स्वर्गदूतों) के बीच से कुछ अंगारे अपने हाथ में लो। अपने हाथ में उन कोयलों को ले जाओ और जाकर उन्हें यरूशलेम नगर पर फेंक दो।”

वह व्यक्ति मेरे पीछे चला। [3]करुब (स्वर्गदूत) उस समय मन्दिर के दक्षिण के क्षेत्र में खड़े थे, जब वह व्यक्ति बादल में घुसा। बादल भीतरी आँगन में भर गया। [4]तब यहोवा का तेज करुब (स्वर्गदूत) से अलग होकर मन्दिर के द्वार पर चला गया। तब बादल मन्दिर में भर गया और यहोवा के तेज़ की प्रखर ज्योति पूरे आँगन में भर गई। [5]तब मैंने करुब (स्वर्गदूतों) के पंखों की फड़फड़ाहट पूरे बाहरी आँगन में सुनी जा सकती थी। बाहरी आँगन में फड़फड़ाहट बड़ी प्रचण्ड थी, वैसी ही जैसी सर्वशक्तिमान परमेश्वर की गरजती वाणी होती है, जब वह बातें करता है।

[6]परमेश्वर ने सन के वस्त्र पहने हुए व्यक्ति को आदेश दिया था। परमेश्वर ने उसे “तुफानी–बादल” में घुसने के लिये कहा और करुब (स्वर्गदूतों) के बीच से कुछ अंगारे लेने को कहा। इसलिये वह व्यक्ति तूफानी–बादल में घुस गया और गोल चक्रों में से एक के सहारे खड़ा हो गया। [7]करुब (स्वर्गदूतों) में से एक ने अपना हाथ बढ़ाया और करुब (स्वर्गदूतों) के क्षेत्र के बीच से कुछ अंगारे लिये। उसने अंगारों को उस व्यक्ति के हाथों में रख दिया और वह व्यक्ति वहाँ से चला गया। ([8]करुब (स्वर्गदूतों) के पंखों के नीचे कुछ ऐसा था जो मनुष्य की भुजाओं की तरह दिखता था।)

[9]तब मैंने देखा कि वहाँ चार गोल चक्र थे। हर एक करुब (स्वर्गदूत) की बगल में एक चक्र था, और चक्र स्वच्छ पीले रत्न की तरह दिखते थे। [10]वे चार चक्र थे और सब चक्र एक से प्रतीत होते थे। वे ऐसे दिखते थे मानों एक चक्र दूसरे चक्र में हो। [11]जब वे चलते थे तो किसी भी दिशा में जा सकते थे। जब कभी वे चलते थे वे चारों एक साथ चलते थे। किन्तु उनके चलने के साथ करुब (स्वर्गदूत) साथ–साथ चक्कर नहीं लगाते थे। वे उस दिशा में चलते थे, जिधर उनका मुख होता था। जब वे चलते थे तो वे इधर–उधर नहीं मुड़ते थे। [12]उनके पूरे शरीर पर आँखे थीं। उनकी पीठ, उनकी भुजा, उनके पंख और उनके चक्र में आँखे थीं। हाँ, चारों चक्रों में आँखे थीं! [13]मेरे सुनते हुए इन पहियों को चक्कर कहा गया, अर्थात् घूमने वाले पहिए।

[14-15]हर एक करुब (स्वर्गदूत) चार मुखों वाला था। पहला मुख करुब का था। दूसरा मुख मनुष्य का था। तीसरा सिंह का मुख था और चौथा उकाब का मुख था। तब मैंने जाना कि ये करुब (स्वर्गदूत) वे जानवर थे जिन्हें मैंने कबार नदी के दर्शन में देखा था!

तब करुब (स्वर्गदूत) हवा में उठे। [16]उनके साथ चक्र उठे। चक्रों ने अपनी दिशा उस समय नहीं बदली जब करुब (स्वर्गदूत) ने पंख खोले और वे हवा में उड़े। [17]यदि करुब (स्वर्गदूत) हवा में उड़ते थे तो चक्र उनके साथ जाते थे। यदि करुब (स्वर्गदूत) शान्त खड़े रहते थे तो चक्र भी वैसा ही करते थे। क्यों? क्योंकि उनमें प्राणियों की आत्मा की शक्ति थी।

[18]तब यहोवा का तेज मन्दिर की देहली से उठा, करुब (स्वर्गदूतों) के स्थान के ऊपर गया और वहाँ ठहर गया। [19]तब करुब (स्वर्गदूतों) ने अपने पंख खोले और हवा में उड़ गए। मैंने उन्हें मन्दिर को छोड़ते देखा! चक्र उनके साथ चले। तब वे यहोवा के मन्दिर के पूर्वी द्वार पर ठहरे। इस्राएल के परमेश्वर का तेज हवा में उनके ऊपर था।

[20]तब मैंने इस्राएल के परमेश्वर के तेज के नीचे प्राणियों को कबार नदी के दर्शन में याद किया और मैंने अनुभव किया कि वे प्राणी करुब (स्वर्गदूत) थे। [21]हर एक प्राणी के चार मुख थे, चार पंख थे और पंखों के नीचे कुछ ऐसा था जो मनुष्य की भुजाओं की तरह दिखता था। [22]करुब (स्वर्गदूतों) के वही चार मुख थे जो कबार नदी के दर्शन के प्राणियों के थे और वे सीधे आगे उस दिशा में देखते थे, जिधर वे जा रहे थे।

11

तब आत्मा मुझे यहोवा के मन्दिर के पूर्वी द्वार पर ले गया। इस द्वार का मुख पूर्व को है जहाँ सूरज निकलता है। मैंने इस फाटक के प्रवेश द्वार पर पच्चीस व्यक्ति देखे। अज्जूर का पुत्र याजन्याह उन लोगों के साथ था और बनायाह का पुत्र पलत्याह वहाँ था। पलत्याह लोगों का प्रमुख था।

[2]तब परमेश्वर ने मुझसे कहा। उसने बताया, “मनुष्य के पुत्र, ये वे व्यक्ति हैं जो इस नगर में बुरी योजना बनाते हैं। ये सदा लोगों को बुरे काम करने को कहते हैं। [3]वे लोग कहते हैं, ‘हम लोग शीघ्र ही फिर से अपने मकान बनाने लगेंगे। हम लोग पात्र में रखे माँस की तरह इस

नगर में सुरक्षित हैं!' [4]वे यह झूठ फैला रहे हैं। इसलिये तुम्हें मेरे लिये लोगों से बात करनी चाहिए। मनुष्य के पुत्र! जाओ और लोगों के बीच भविष्यवाणी करो।"

[5]तब यहोवा की आत्मा मुझमें आई। उसने मुझसे कहा, "उनसे कहो कि यहोवा ने यह सब कहा है: इस्राएल के परिवार, तुम बड़ी योजना बना रहे हो। किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम क्या सोच रहे हो! [6]तुमने इस नगर में बहुत से लोगों को मार डाला है। तुमने सड़कों को शवों से पाट दिया है। [7]अब हमारा स्वामी यहोवा, यह कहता है, 'वे शव माँस हैं और यह नगर पात्र है। किन्तु वह (नबूकदनेस्सर) आएगा और तुम्हें इस सुरक्षित पात्र से निकाल ले जाएगा! [8]तुम तलवार से भयभीत हो। किन्तु मैं तुम्हारे विरुद्ध तलवार ला रहा हूँ।'" हमारे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा है। इसलिये ये घटित होंगी!

[9]परमेश्वर ने यह भी कहा, "मैं तुम लोगों को इस नगर से बाहर ले जाऊँगा और मैं तुम्हें अजनबियों को सौप दूँगा। मैं तुम लोगों को दण्ड दूँगा! [10]तुम तलवार के घाट उतरोगे। मैं तुम्हें यहाँ इस्राएल में दण्ड दूँगा जिससे तुम समझोगे कि वह मैं हूँ जो तुम्हें दण्ड दे रहा हूँ। मैं यहोवा हूँ। [11]हाँ, यह स्थान खौलती कड़ाही बनेगा और तुम इसमें के माँस होंगे, जो भूना जाता है! मैं तुम्हें यहाँ इस्राएल में दण्ड दूँगा। [12]तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। वह मेरा नियम था जिसे तुमने तोड़ा है! तुमने मेरे आदेशों का पालन नहीं किया। तुमने अपने चारों ओर के राष्ट्रों की तरह रहने का निर्णय किया।"

[13]जैसे ही मैंने परमेश्वर के लिये बोलना समाप्त किया, बनायाह का पुत्र पलत्याह मर गया! मैं धरती पर गिर पड़ा। मैंने धरती पर माथा टेका और कहा, "हे मेरे स्वामी यहोवा, तू क्या इस्राएल के सभी बचे हुओं को पूरी तरह नष्ट करने पर तुला हुआ है!"

[14]किन्तु तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [15]"मनुष्य के पुत्र, तुम इस्राएल के परिवार के अपने उन भाईयों को याद करो जिन्हें अपने देश को छोड़ने के लिये विवश किया गया था। लेकिन मैं उन्हें वापस लाऊँगा। किन्तु यहाँ यरूशलेम में रहने वाले लोग कह रहे हैं, यहोवा हम से दूर रह। यह भूमि हमें दी गई–यह हमारी है!"

[16]इसलिये उन लोगों से यह सब कहो: हमारा स्वामी यहोवा, कहता है, "यह सत्य है कि मैंने अपने लोगों को बहुत दूर के देशों में जाने को विवश किया। मैंने ही उनको बहुत से देशों में बिखेरा और मैं अन्य देशों में उन के लिये थोड़े समय का पवित्र स्थान ठहरुँगा। [17]इसलिये तुम्हें उन लोगों से कहना चाहिए कि उनका स्वामी यहोवा, उन्हें वापस लाएगा। मैंने तुम्हें, बहुत से देशों में बिखेर दिया है। किन्तु मैं तुम लोगों को एक साथ इकट्ठा करुँगा और उन राष्ट्रों से तुम्हें वापस लाऊँगा। मैं इस्राएल का प्रदेश तुम्हें वापस दूँगा [18]और जब हमारे लोग लौटेंगे तो वे उन सभी भंयकर गन्दी देवमूर्तियों को, जो अब यहाँ है, नष्ट कर देंगे। [19]मैं उन्हें एक साथ लाऊँगा और उन्हें एक व्यक्ति सा बनाऊँगा। मैं उनमें नयी आत्मा भरूँगा। मैं उनके पत्थर के हृदय को दूर करुँगा और उसके स्थान पर सच्चा हृदय दूँगा। [20]तब वे मेरे नियमों का पालन करेंगे। वे मेरे आदेशों का पालन करेंगे, वे वह कार्य करेंगे जिन्हें मैं करने को कहूँगा। वे सचमुच मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।"

[21]तब परमेश्वर ने कहा, "किन्तु इस समय उनका हृदय भयंकर गन्दी देवमूर्तियों का हो चुका है। मुझे उन लोगों को उन बुरे कर्मों के लिये दण्ड देना चाहिए जो उन्होंने किया है।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा है। [22]तब करुब (स्वर्गदूत) ने अपने पंख खोले और हवा में उड़ गये। चक्र उनके साथ गए। इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर था। [23]यहोवा का तेज ऊपर हवा में उठा और उसने यरूशलेम को छोड़ दिया। वह क्षण भर के लिये यरूशलेम के पूर्व की पहाड़ी* पर ठहरा। [24]तब आत्मा ने मुझे हवा में उठाया और वापस बाबुल में पहुँचा दिया। उसने मुझे उन लोगों के पास लौटाया, जो इस्राएल छोड़ने के लिये विवश किये गये थे। तब दर्शन में परमेश्वर की आत्मा हवा में उठी और मुझे छोड़ दिया। मैंने उन सभी चीजों को परमेश्वर के दर्शन में देखा। [25]तब मैंने निर्वासित लोगों से बातें की। मैंने वे सभी बातें बताई जो यहोवा ने मुझे दिखाई थीं।

12

तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, तुम विद्रोही लोगों के साथ रहते हो। वे सदैव मेरे विरुद्ध गये हैं। देखने के लिये उनकी आँखें हैं जो कुछ मैंने उनके लिये किया है। किन्तु वे उन चीजों को नहीं देखते। सुनने के लिये उनके कान हैं, उन चीजों को जो मैंने उन्हें करने को कहा है। किन्तु वे मेरे आदेश नहीं सुनते। क्यों? क्योंकि वे विद्रोही लोग हैं।

पूर्व की पहाड़ी यह जैतून का पहाड़ है।

[3]इसलिए, मनुष्य के पुत्र अपना सामान बांध लो। ऐसा व्यवहार करो मानों तुम किसी दूर देश को जा रहे हो। यह इस प्रकार करो कि लोग तुम्हें देखते रहें। संभव है, कि वे लोग तुम पर ध्यान दें, किन्तु वे लोग बड़े विद्रोही लोग हैं।

[4]"दिन के समय तुम अपना सामान इस प्रकार बाहर ले जाओ कि लोग तुम्हें देखते रहें। तब शाम को ऐसा दिखावा करो, कि तुम दूर देश में एक बन्दी की तरह जा रहे हो। [5]लोगों की आँखों के सामने दीवार में एक छेद बनाओ और उस दीवार के छेद से बाहर जाओ। [6]रात को अपना सामान कन्धे पर रखो और उस स्थान को छोड़ दो। अपने मुँह को ढक लो जिससे तुम यह न देख सको कि तुम कहाँ जा रहे हो। इन कामों को तुम्हें इस प्रकार करना चाहिये, कि लोग तुम्हें देख सकें। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हें इस्राएल के परिवार के लिये एक उदाहरण के रूप में उपयोग कर रहा हूँ।"

[7]इसलिये मैंने (यहेजकेल) आदेश के अनुसार किया। दिन के समय मैंने अपना सामान उठाया और ऐसा दिखावा किया मानों मैं किसी दूर देश को जा रहा हूँ। उस शाम मैंने अपने हाथों का उपयोग किया और दीवार में एक छेद बनाया। रात को मैंने अपना सामान कन्धे पर रखा और चल पड़ा। मैंने यह सब इस प्रकार किया कि सभी लोग मुझे देख सकें।

[8]अगली सुबह मुझे यहोवा का वचन मिला। उसने कहा, [9]"मनुष्य के पुत्र, क्या इस्राएल के उन विद्रोही लोगों ने तुमसे पूछा कि तुम क्या कर रहे हो? [10]उनसे कहो कि उनके स्वामी यहोवा ने ये बातें बताई है। यह दुःखद वचन यरूशलेम के प्रमुखों और वहाँ रहने वाले इस्राएल के सभी लोगों के बारे में है। [11]उनसे कहो, 'मैं (यहेजकेल) तुम सभी लोगों के लिये एक उदाहरण हूँ। जो कुछ मैंने किया है वह तुम लोगों के लिये सत्य होगा।' तुम सचमुच बन्दी के रूप में दूर देश में जाने के लिये विवश किये जाओगे। [12]तुम्हारा प्रमुख दीवार में छेद करेगा और रात को गुप्त रूप से निकल भागेगा। वह अपने मुख को ढक लेगा जिससे लोग उसे पहचानेंगे नहीं। उसकी आँखें, यह देखने के लायक नहीं होंगी कि वह कहाँ जा रहा है। [13]वह भाग निकलने का प्रयत्न करेगा। किन्तु मैं (परमेश्वर) उसे पकड़ लूँगा! वह मेरे जाल में फँस जाएगा और मैं उसे बाबुल लाऊँगा जो कसदियों के लोगों का देश है। किन्तु वह देख नहीं पाएगा कि वह कहाँ जा रहा है। शत्रु उसकी आँखे निकाल लेगा और उसे अन्धा कर देगा। [14]मैं राजा के लोगों को विवश करूँगा कि वे इस्राएल के चारों ओर विदेशों में रहें। मैं उसकी सेना को तितर–बितर कर दूँगा और शत्रु के सैनिक उनका पीछा करेंगे। [15]तब वे लोग समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ। वे समझेगें कि मैंने उन्हें राष्ट्रों में बिखेरा। वे समझ जाएंगे कि मैंने उन्हें अन्य देशों में जाने के लिये विवश किया।

[16]"किन्तु मैं कुछ लोगों को जीवित रखूँगा। वे रोग, भूख और युद्ध से नहीं मरेंगे। मैं उन लोगों को इसलिए जीवित रहने दूँगा, कि वे अन्य लोगों से उन भंयकर कामों के बारे में कह सकेंगे, जो उन्होंने मेरे विरुद्ध किये। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

[17]तब यहोवा का वचन मेरे पास आया। उसने कहा, [18]"मनुष्य के पुत्र! तुम्हें ऐसा करना चाहिये मानों तुम बहुत भयभीत हो। जब तुम खाना खाओ तब तुम्हें काँपना चाहिए। तुम्हें पानी पीते समय चिन्तित और भयभीत होने का दिखावा करना चाहिये। [19]तुम्हें यह साधारण जनता से कहना चाहिए। तुम्हें कहना चाहिये, "हमारा स्वामी यहोवा यरूशलेम के निवासियों और इस्राएल के अन्य भागों के लोगों से यह कहता है। लोगों, तुम भोजन करते समय बहुत परेशान होगे। तुम पानी पीते समय भयभीत होगे। क्यों? क्योंकि तुम्हारे देश में सभी कुछ नष्ट हो जाएगा। वहाँ रहने वाले सभी लोगों के प्रति शत्रु बहुत क्रूर होगा। [20]तुम्हारे नगरों में इस समय बहुत लोग रहते हैं, किन्तु वे नगर नष्ट हो जाएंगे। तुम्हारा पूरा देश नष्ट हो जाएगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

[21]तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [22]"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के प्रदेश के बारे में लोग यह कहावत क्यों सुनाते हैं:

विपत्ति शीघ्र न आएगी,
दर्शन कभी न होंगे।

[23]"उन लोगों से कहो कि तुम्हारा स्वामी यहोवा तुम्हारी इस कहावत का पढ़ना बन्द कर देगा। वे इस्राएल के बारे में वे बातें कभी भी नहीं कहेंगे। अब वे यह कहावत सुनाएंगे:

विपत्ति शीघ्र आएगी।
दर्शन घटित होंगे।

[24]"यह सत्य है कि इस्राएल में कभी भी झूठे दर्शन घटित नहीं होंगे। अब ऐसे जादूगर भविष्य में नहीं होंगे

जो ऐसी भविष्यवाणी करेंगे जो सच्ची नहीं होगी। [25]क्यों? क्योंकि मैं यहोवा हूँ। मैं वही कहूँगा, जो मैं कहना चाहूँगा और वह चीज घटित होगी और मैं घटना–काल को लम्बा खींचने नहीं दूँगा। वे विपत्तियाँ शीघ्र आ रही हैं। तुम्हारे अपने जीवनकाल में ही। विद्रोही लोगों! जब मैं कुछ कहता हूँ तो मैं उसे घटित करता हूँ।" मेरे स्वामी यहोवा ने उन बातों को कहा।

[26]तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [27]"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के लोग समझते हैं कि जो दर्शन मैं तुझे देता हूँ, वे बहुत दूर के भविष्य में घटित होंगे। वे समझते हैं, कि जिन विपत्तियों के बारे में तुम बातें करते हो, वे आज से बहुत वर्षों बाद घटित होंगी। [28]अत: तुम्हें उनसे यह कहना चाहिये, 'मेरा स्वामी यहोवा कहता है: मैं और अधिक विलम्ब नहीं कर सकता। यदि मैं कहता हूँ, कि कुछ घटित होगा तो वह घटित होगा।'" मेरे स्वामी यहोवा ने उन बातों को कहा।

13 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। [2]"मनुष्य के पुत्र, तुम्हें इस्राएल के नबियों से मेरे लिये बातें करनी चाहिये। वे नबी वास्तव में मेरे लिये बातें नहीं कर रहे हैं। वे नबी वही कुछ कह रहे हैं जो वे कहना चाहतें हैं।" इसलिये तुम्हें उनसे बातें करनी चाहियें। उनसे ये बातें कहो, 'यहोवा के यहाँ से मिले इस वचन को सुनो! [3]मेरा स्वामी यहोवा यह वचन देता है। मूर्ख नबियों! तुम लोगों पर विपत्तियाँ आएंगी। तुम लोग अपनी आत्मा का अनुसरण कर रहे हो। तुम लोगों से वह नहीं कह रहे हो जो तुम सचमुच दर्शन में देखते हो।

[4]"'इस्राएलियों, तुम्हारे नबी शून्य खण्डहरों में दौड़ लगाने वाली लोमड़ियों जैसे होंगे। [5]तुमने नगर की टूटी दीवारों के निकट सैनिक को नहीं रखा है। तुमने इस्राएल के परिवार की रक्षा के लिये दीवारें नहीं बनाई हैं। इसलिये यहोवा के लिये, जब तुम्हें दण्ड देने का समय आएगा तो तुम युद्ध में हार जाओगे!

[6]"'झूठे नबियों ने कहा, कि उन्होंने दर्शन देखा है। उन्होंने अपना जादू किया और कहा कि घटनाएँ होंगी, किन्तु उन्होंने झूठ बोला। उन्होंने कहा कि यहोवा ने उन्हें भेजा किन्तु उन्होंने झूठ बोला। वे अपने झूठ के सत्य होने की प्रतीक्षा अब तक कर रहे हैं।

[7]"'झूठे नबियों, जो दर्शन तुमने देखे, वे सत्य नहीं थे। तुमने अपने जादू किये और कहा कि कुछ घटित होगा, किन्तु तुम लोगों ने झूठ बोला। तुम कहते हो कि यह यहोवा का कथन है, किन्तु मैंने तुम लोगों से बातें नहीं कीं!'"

[8]अत: मेरा स्वामी यहोवा अब सचमुच कुछ कहेगा, वह कहता है, "तुमने झूठ बोला। तुमने वे दर्शन देखे जो सच्चे नहीं थे। इसलिये मैं (परमेश्वर) अब तुम्हारे विरुद्ध हूँ!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं। [9]यहोवा ने कहा, "मैं उन नबियों को दण्ड दूँगा जिन्होंने असत्य दर्शन देखे और जिन्होंने झूठ बोला। मैं उन्हें अपने लोगों से अलग करूँगा। उनके नाम इस्राएल के परिवार की सूची में नहीं रहेंगे। वे फिर इस्राएल प्रदेश में कभी नहीं आएंगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा और स्वामी हूँ!

[10]"उन झूठे नबियों ने बार–बार मेरे लोगों से झूठ बोला। नबियों ने कहा कि शान्ति रहेगी और वहाँ कोई शान्ति नहीं है। लोगों को दीवारें दृढ़ करनी हैं और युद्ध की तैयारी करनी हैं। किन्तु वे टूटी दीवारों पर लेप की एक पतली तह चढ़ा रहे हैं। [11]उन लोगों से कहो कि मैं ओले और मूसलाधार वर्षा (शत्रु–सेना) भेजूँगा। प्रचण्ड आँधी चलेगी और चक्रवात आएगा। तब दीवार गिर जाएगी। [12]दीवार नीचे गिर जाएगी। लोग नबियों से पूछेंगे, 'उस लेप का क्या हुआ, जिसे तुमने दीवार पर चढ़ाया था?'" [13]मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं क्रोधित हूँ और मैं तुम लोगों के विरुद्ध एक तूफान भेजूँगा। मैं क्रोधित हूँ और मैं घनघोर वर्षा भेजूँगा। मैं क्रोधित हूँ और मैं आकाश से ओले बरसाऊँगा और तुम्हें पूरी तरह से नष्ट करूँगा! [14]तुम लेप दीवार पर चढ़ाते हो। किन्तु मैं पूरी दीवार को नष्ट कर दूँगा। मैं इसे धाराशायी कर दूँगा। दीवार तुम पर गिरेगी और तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। [15]मैं, दीवार और उस पर लेप चढ़ाने वालों के विरुद्ध अपना क्रोध दिखाना समाप्त कर दूँगा। तब मैं कहूँगा, 'अब कोई दीवार नहीं है और अब कोई मज़दूर इस पर लेप चढ़ाने वाला नहीं है।'

[16]"ये सब कुछ इस्राएल के झूठे नबियों के लिये होगा। वे नबी यरूशलेम के लोगों से बातचीत करते हैं। वे नबी कहते हैं कि शान्ति होगी, किन्तु कोई शान्ति नहीं है।" मेरे स्वामी यहोवा ने उन बातों को कहा।

[17]परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, इस्राएल में स्त्री नबियों को ढूँढो। वे स्त्री नबी मेरे लिये नहीं बोलतीं। वे वही कहती हैं जो वे कहना चाहती हैं। अत: तुम्हें मेरे लिये उनके विरुद्ध कहना चाहिए। तुम्हें उनसे यह कहना

चाहिये। [18]'मेरा स्वामी यहोवा कहता है: स्त्रियों, तुम पर विपत्ति आएगी। तुम लोगों की भुजाओं पर पहनने के लिये कपड़े का बाजूबन्द सीती हो। तुम लोगों के सिर पर बांधने के लिये विशेष "दुपट्टा" बनाती हो। तुम कहती हो कि वे चीजें लोगों के जीवन को नियन्त्रित करने की जादूई शक्ति रखती हैं। तुम केवल अपने को जीवित रखने के लिये उन लोगों को जाल में फँसाती हो! [19]तुम लोगों को ऐसा समझाती हो कि मैं महत्वपूर्ण नहीं हूँ। तुम उन्हें मुट्ठी भर जौ और रोटी के कुछ टुकड़ों के लिये मेरे विरुद्ध करती हो। तुम मेरे लोगों से झूठ बोलती हो। वे लोग झूठ सुनना पसन्द करते हैं। तुम उन व्यक्तियों को मार डालती हो जिन्हें जीवित रहना चाहिये और तुम ऐसे लोगों को जीवित रहने देना चाहती हो जिन्हें मर जाना चाहिये! [20]इसलिये यहोवा और स्वामी तुमसे यह कहता है: तुम उन कपड़े के "बाजूबन्दों" को लोगों को जाल में फँसाने के लिये बनाती हो–किन्तु मैं उन लोगों को स्वतन्त्र करूँगा। मैं तुम्हारी भुजाओं से उन "बाजूबन्दों" को फाड़ फेंकूँगा और लोग तुमसे स्वतन्त्र हो जाएंगे। वे जाल से मुक्त पक्षियों की तरह होंगे! [21]मैं उन "बाजूबन्दों" को फाड़ डालूँगा और अपने लोगों को तुम्हारी शक्ति से बचाऊँगा। वे लोग तुम्हारे जाल से भाग निकलेंगे और तुम समझ जाओगी कि मैं यहोवा हूँ।

[22]"'स्त्री नबियों तुम झूठ बोलती हो। तुम्हारा झूठ अच्छे लोगों को कष्ट पहुँचाता है, मैं उन अच्छे लोगों को कष्ट पहुँचाना नहीं चाहता। तुम बुरे लोगों की सहायता करती हो और उन्हें उत्साहित करती हो। तुम उन्हें अपना जीवन बदलने के लिये नहीं कहतीं। तुम उनके जीवन की रक्षा नहीं करना चाहती! [23]तुम अब भविष्य में व्यर्थ दर्शन नहीं देखोगी। तुम भविष्य में जादू नहीं करोगी। मैं अपने लोगों को तुम्हारी शक्ति से बचाऊँगा और तुम जान जाओगी कि मैं यहोवा हूँ।'"

14 इस्राएल के कुछ अग्रज (प्रमुख) मेरे पास आए। वे मुझसे बात करने के लिये बैठ गये। [2]यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [3]"मनुष्य के पुत्र, ये व्यक्ति तुमसे बातें करने आए हैं। वे चाहते थे कि तुम मुझसे राय लो। किन्तु वे व्यक्ति अब तक अपनी गन्दी देवमूर्तियों को रखे हैं। वे उन चीजों को रखते हैं जो उनसे पाप कराती हैं। वे अब तक उन मूर्तियों की पूजा करते हैं। इसलिये वे मेरे पास राय लेने क्यों आते हैं? क्या मुझे उनके प्रश्नों के उत्तर देने चाहिए? नहीं! [4]किन्तु मैं उन्हें उत्तर दूँगा। मैं उन्हें दण्ड दूँगा! तुम्हें उन लोगों से यह कह देना चाहिये, 'मेरा स्वामी यहोवा कहता है: यदि कोई इस्राएली व्यक्ति नबी के पास आता है और मुझसे राय पाने के लिये कहता है तो वह नबी उस व्यक्ति को उत्तर नहीं देगा। उस व्यक्ति के प्रश्न का उत्तर मैं स्वयं दूँगा। मैं उसे तब भी उत्तर दूँगा यदि उसने गन्दी देवमूर्तियाँ रखी हैं, यदि वह उन चीजों को रखता है जो उससे पाप कराती हैं और यदि वह तब तक उन मूर्तियों की पूजा करता है। उसकी सारी गन्दी देवमूर्तियों के होते हुए भी मैं उससे बात करुँगा। [5]क्यों? क्योंकि मैं उनके हृदय को छूना चाहता हूँ। मैं दिखाना चाहता हूँ कि मैं उनसे प्रेम करता हूँ, यद्यपि उन्होंने मुझे अपनी गन्दी देवमूर्तियों के लिये छोड़ा।'

[6]"इसलिये इस्राएल के परिवार से यह सब कहो। उनसे कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा कहता है। मेरे पास वापस आओ और अपनी गन्दी देवमूर्तियों को छोड़ दो। उन भयंकर असत्य देवताओं से मुख मोड़ लो। [7]यदि कोई इस्राएली या इस्राएल में रहने वाला विदेशी मेरे पास राय के लिये आता है, तो मैं उसे उत्तर दूँगा। मैं उसे तब भी उत्तर दूँगा यदि उसने गन्दी देवमूर्तियाँ रखी हैं, यदि वह उन चीजों को रखता है जो उससे पाप कराती हैं और यदि वह तब तक उन मूर्तियों की पूजा करता है और यह उत्तर है जिसे मैं उसे दूँगा। [8]मैं उस व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा। मैं उसे नष्ट करूँगा। वह अन्य लोगों के लिये एक उदाहरण बनेगा। लोग उसकी हँसी उड़ाएंगे। मैं उसे अपने लोगों से निकाल बाहर करूँगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ! [9]यदि नबी इतना अधिक मूर्ख है कि वह अपना उत्तर देता है तो मैं उसे दिखा दूँगा कि वह कितना बड़ा मूर्ख है, मैं उसके विरुद्ध अपनी शक्ति का उपयोग करूँगा। मैं उसे नष्ट करूँगा और अपने लोगों, इस्राएल से उसे निकाल बाहर करूँगा। [10]इस प्रकार वह व्यक्ति जो राय के लिए आया और नबी जिसने उत्तर दिया दोनों एक ही दण्ड पाएंगे। [11]क्यों? क्योंकि इस प्रकार वे नबी मेरे लोगों को मुझसे दूर ले जाना बन्द कर देंगे। इस प्रकार मेरे लोग अपने पापों से गन्दा होना बन्द कर देंगे। तब वे मेरे विशेष लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।'" मेरे स्वामी यहोवा ने वह सब बातें कहीं।

[12]तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [13]"मनुष्य के पुत्र, मैं अपने उस राष्ट्र को दण्ड दूँगा जो

मुझे छोड़ता है और मेरे विरुद्ध पाप करता है। मैं उनकी भोजन आपूर्ति बन्द कर दूँगा। मैं अकाल का समय उत्पन्न कर सकता हूँ और उस देश से मनुष्यों और पशुओं को बाहर कर सकता हूँ। [14]मैं उस देश को दण्ड दूँगा चाहे वहाँ नूह, दानिय्येल और अय्यूब रहते हों। वे लोग अपना जीवन अपनी अच्छाईयों से बचा सकते हैं, किन्तु वे पूरे देश को नहीं बचा सकते।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा।

[15]परमेश्वर ने कहा, "या, मैं उस पूरे प्रदेश में जंगली जानवरों को भेज सकता हूँ और वे जानवर सभी लोगों को मार सकते हैं। जंगली जानवरों के कारण उस देश से होकर कोई व्यक्ति यात्रा नहीं करेगा। [16]यदि नूह, दानिय्येल और अय्यूब वहाँ रहे होते तो मैं उन तीनों अच्छे व्यक्तियों को बचा लेता। वे तीनों व्यक्ति स्वयं अपना जीवन बचा सकते हैं। किन्तु मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ कि वे अन्य लोगों का जीवन नहीं बचा सकते यहाँ तक कि अपने पुत्र–पुत्रियों का जीवन भी नहीं। वह बुरा देश नष्ट कर दिया जाएगा!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा।

[17]परमेश्वर ने कहा, "या, उस देश के विरुद्ध लड़ने के लिये मैं शत्रु की सेना को भेज सकता हूँ। वे सैनिक उस देश को नष्ट कर देंगे। मैं उस देश से सभी लोगों और जानवरों को निकाल बाहर करुँगा। [18]यदि नूह, दानिय्येल और अय्यूब वहाँ रहते तो मैं उन तीनों अच्छे लोगों को बचा लेता। वे तीनों व्यक्ति स्वयं अपना जीवन बचा सकते हैं। किन्तु मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ कि अन्य लोगों का जीवन वे नहीं बचा सकते यहाँ तक कि अपने पुत्र–पुत्रियों का जीवन भी नहीं। वह बुरा देश नष्ट कर दिया जाएगा!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा।

[19]परमेश्वर ने कहा, "या, मैं उस देश के विरुद्ध महामारी भेज सकता हूँ। मैं उन लोगों पर अपने क्रोध की वर्षा करूँगा। मैं सभी मनुष्यों और जानवरों को उस देश से हटा दूँगा। [20]यदि नूह, दानिय्येल और अय्यूब वहाँ रहते तो मैं उन तीन अच्छे लोगों को बचा लेता क्योंकि वे अच्छे व्यक्ति हैं, वे तीनों व्यक्ति स्वयं अपना जीवन बचा सकते हैं। किन्तु मैं अपने जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ कि अन्य लोगों का जीवन वे नहीं बचा सकते थे यहाँ तक कि अपने पुत्र–पुत्रियों का जीवन भी नहीं!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा।

[21]तब मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, "इसलिये सोचो कि यरूशलेम के लिये यह कितना बुरा होगा, मैं उस नगर के विरुद्ध उन चारों दण्डों को भेजूँगा! मैं शत्रु–सेना, भूखमरी, महामारी, और जंगली जानवर उस नगर के विरुद्ध भेजूँगा। मैं उस देश से सभी लोगों और जानवरों को निकाल बाहर करूँगा! [22]उस देश से कुछ लोग बच निकलेंगे। वे अपने पुत्र–पुत्रियों को लाएंगे और तुम्हारे पास सहायता के लिये आएंगे। तब तुम जानोगे कि वे लोग सचमुच कितने बुरे हैं। तुम उन विपत्तियों के सम्बन्ध में उचित होने की धारणा बनाओगे जिन्हें मैं यरूशलेम पर लाऊँगा। [23]तुम उनके रहने के ढंग और जो बुरे कार्य वे करते हैं, उन्हें देखोगे। तब तुम समझोगे कि उन लोगों को दण्ड देने का उचित कारण मेरे लिए था।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

15

तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, क्या अंगूर की बेल की लकड़ी जंगल के किसी पेड़ की कटी छोटी शाखा से अधिक अच्छी होती है? नहीं! [3]क्या तुम अंगूर की बेल की लकड़ी को किसी उपयोग में ला सकते हो? नहीं! क्या तुम उससे तश्तरियाँ लटकाने के लिये खूंटियाँ बना सकते हो? नहीं! [4]लोग उस लकड़ी को केवल आग में डालते हैं। कुछ सूखी लकड़ियाँ सिरों से जलना आरम्भ करती है, बीच का भाग आग से काला पड़ जाता है। किन्तु लकड़ी पूरी तरह नहीं जलती। क्या तुम उस जली लकड़ी से कोई चीज बना सकते हो? [5]यदि जलने के पहले तुम उस लकड़ी से कोई चीज नहीं बना सकते हो, तो निश्चय ही, उसके जल जाने के बाद उससे कोई चीज नहीं बना सकते! [6]इसलिये अंगूर की बेल की लकड़ी के टुकड़े जंगल के किसी पेड़ की लकड़ी के टुकड़ों के समान ही है। लोग उन लकड़ी के टुकड़ों को आग में डालते हैं, और आग उन्हें जलाती है। उसी प्रकार, मैं यरूशलेम के निवासियों को आग में फेंकूँगा!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कही। [7]"मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा। किन्तु कुछ लोग उन लकड़ियों की तरह होंगे जो पूरी तरह नहीं जलतीं, उन्हें दण्ड दिया जाएगा, किन्तु वे पूरी तरह नष्ट नहीं किये जाएंगे। तुम देखोगे कि मैं इन लोगों को दण्ड दूँगा और तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ! [8]मैं उस देश को नष्ट करूँगा क्योंकि लोगों ने मुझको असत्य देवताओं की पूजा के लिये छोड़ा।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

16 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, यरूशलेम के लोगों को उन भंयकर बुरे कामों को समझाओ जिन्हें उन्होंने किया है। [3]तुम्हें कहना चाहिए, 'मेरा स्वामी यहोवा यरूशलेम के लोगों को यह सन्देश देता है: अपना इतिहास देखो। तुम कनान में उत्पन्न हुए थे। तुम्हारा पिता एमोरी था। तुम्हारी माँ हित्ती थी। [4]यरूशलेम, जिस दिन तुम उत्पन्न हुए थे, तुम्हारे नाभि–नाल को काटने वाला कोई नहीं था। किसी ने तुम पर नमक नहीं डाला और तुम्हें स्वच्छ करने के लिये नहलाया नहीं। किसी ने तुम्हें वस्त्र में नहीं लपेटा। [5]यरूशलेम, तुम सब तरह से अकेले थे। कोई न तुम्हारे प्रति खेद प्रकट करता था, न ही ध्यान देता था। यरूशलेम, जिस दिन तुम उत्पन्न हुए, तुम्हारे माता–पिता ने तुम्हें मैदान में डाल दिया। तुम तब तक रक्त और झिल्ली में लिपटे थे।

[6]"'तब मैं (परमेश्वर) उधर से गुजरा। मैंने तुम्हें वहाँ खून से लथपथ पड़ा पाया। तुम खून में सनी थीं, किन्तु मैंने कहा, "जीवित रहो!" हाँ, तुम रक्त में सनी थीं, किन्तु मैंने कहा, "जीवित रहो!" [7]मैंने तुम्हारी सहायता खेत में पौधे की तरह बढ़ने में की। तुम बढ़ती ही गई। तुम एक युवती बनी, तुम्हारा ऋतु–धर्म आरम्भ हुआ, तुम्हारे वक्ष–स्थल बढ़े, तुम्हारे केश बढ़ने आरम्भ हुए। किन्तु तुम तब तक वस्त्रहीन और नंगी थीं। [8]मैंने तुम पर दृष्टि डाली। मैंने देखा कि तुम प्रेम के लिये तैयार थीं। इसलिये मैंने तुम्हारे ऊपर अपने वस्त्र डाले और तुम्हारी नग्नता को ढका। मैंने तुमसे विवाह करने का वचन दिया। मैंने तुम्हारे साथ वाचा की और तुम मेरी बनीं।'" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं। [9]"मैंने तुम्हें पानी से नहलाया। मैंने तुम्हारे रक्त को धोया और मैंने तुम्हारी त्वचा पर तेल मला। [10]मैंने तुम्हें एक सुन्दर पहनावा और कोमल चमड़े के जूते दिये। मैंने तुम्हें एक महीन मलमल और एक रेशमी वस्त्र दिया। [11]तब मैंने तुम्हें कुछ आभूषण दिये। मैंने तुम्हारी भुजाओं में बाजूबन्द पहनाए और तुम्हारे गले में हार पहनाया। [12]मैंने तुम्हें एक नथ, कुछ कान की बालियाँ और सुन्दर मुकुट पहनने के लिये दिया। [13]तुम अपने सोने चाँदी के आभूषणों, अपने मलमल और रेशमी वस्त्रों और कढ़ाई किये पहनावे में सुन्दर दिखती थीं! तुमने उत्तम भोजन किया। तुम अत्याधिक सुन्दर थी और तुम रानी बनीं! [14]तुम अपनी सुन्दरता के लिये विख्यात हुई। यह सब कुछ इसलिये हुआ क्योंकि मैंने तुम्हें इतना अधिक सुन्दर बनाया!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

[15]परमेश्वर ने कहा, "किन्तु तुमने अपनी सुन्दरता पर विश्वास करना आरम्भ किया। तुमने अपने यश का उपयोग किया और मुझसे विश्वासघात किया। तुमने एक वेश्या की तरह काम किया जो हर गुजरने वाले की हो। तुमने उन सभी को अपने को अर्पित किया! [16]तुमने अपने सुन्दर वस्त्र लिये और उनका उपयोग अपनी पूजा के स्थानों को सजाने के लिये किया। तुमने उन स्थानों पर एक वेश्या की तरह काम किया। तुमने अपने को उस हर व्यक्ति को अर्पित किया जो वहाँ आया! [17]तब मेरा दिया हुआ सुन्दर आभूषण तुमने लिया और तुमने उस सोने–चाँदी का उपयोग मनुष्यों की मूर्तियाँ बनाने के लिये किया। तुमने उनके साथ भी यौन–सम्बन्ध किया! [18]तब तुमने सुन्दर वस्त्र लिये और उन मूर्तियों के लिये पहनावा बनाया। तुमने यह सुगन्धि और धूप–बत्ती को लिया जो मैंने तुम्हें दी थी तथा उसे उन देवमूर्तियों के सामने चढ़ाया! [19]मैंने तुम्हें रोटी, मधु और तेल दिये। किन्तु तुमने वह भोजन अपनी देवमूर्तियों को दिया। तुमने उसे अपने असत्य देवताओं को प्रसन्न करने के लिये सुगन्धि के रूप में भेंट किया। तुमने उन असत्य देवताओं के साथ वेश्या जैसा व्यवहार किया!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

[20]परमेश्वर ने कहा, "तुमने अपने पुत्र–पुत्रियाँ लेकर जिन्हें तूने मेरे लिए जन्म दिया, उन मूर्तियों को बलि चढ़ायी। किन्तु ये वे पाप हैं जो तुमने तब किये जब मुझे धोखा दिया और उन असत्य देवताओं के पास चली गई। [21]तुमने मेरे पुत्रों की हत्या की और उन्हें आग के द्वारा उन असत्य देवताओं पर चढ़ाया। [22]तुमने मुझे छोड़ा और वे भयानक काम किये और तुमने अपना वह समय कभी याद नहीं किया जब तुम बच्ची थीं। तुमने याद नहीं किया कि जब मैंने तुम्हें पाया तब तुम नंगी थीं और रक्त में छटपटा रही थीं।

[23]"उन सभी बुरी चीजों के बाद, ओह यरूशलेम, यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब बातें कहीं। [24]"उन सब बातों के बाद तुमने उस असत्य देवता की पूजा के लिये वह टीला बनाया। तुमने हर एक सड़क के मोड़ पर असत्य देवताओं की पूजा के

लिये उन स्थानों को बनाया। [25]तुमने अपने टीले हर एक सड़क की छोर पर बनाए। तब तुमने अपने सौन्दर्य का मान घटाया। तुमने इसका उपयोग हर पास से गुजरने वाले को फँसाने के लिये किया। तुमने अपने अधोवस्त्र को ऊपर उठाया जिससे वे तुम्हारी टांगे देख सकें और तब तुम उन लोगों के साथ एक वेश्या के समान हो गई। [26]तब तुम उस पड़ोसी मिस्र के पास गई जिसका यौन अंग विशाल था। तुमने मुझे क्रोधित करने के लिये उसके साथ कई बार यौन–सम्बन्ध स्थापित किया। [27]इसलिये मैंने तुम्हें दण्ड दिया। मैंने तुम्हें अनुमोदित की गई भूमि का एक भाग ले लिया। मैंने तुम्हारे शत्रु पलिश्तियों की पुत्रियों (नगरों) को वह करने दिया जो वे तुम्हारा करना चाहती थीं। जो पाप तुमने किये उससे उनके भी मर्म पर चोट पहुँची। [28]तब तुम अश्शूर के साथ शारीरिक सम्बंध करने गई। किन्तु तुम्हें पर्याप्त न मिल सका। तुम कभी तृप्त न हुई। [29]इसलिए तुम कनान की ओर मुड़ी और उसके बाद बाबुल की ओर और तब भी तुम तृप्त न हुई। [30]तुम इतनी कमजोर हो। तुमने उन सभी व्यक्तियों (देशों) को पाप करने में लगने दिया। तुमने ठीक एक वेश्या की तरह काम किया।" वे बातें मेरे स्वामी यहोवा ने कहीं।

[31]"तुमने अपने टीले हर एक सड़क के छोर पर बनाए और तुमने अपनी पूजा के स्थान हर सड़क की मोड़ पर बनाए। और कमाई को तुच्छ जाना। इसलिए तू वेश्या भी न रही। [32]तुम व्यभिचारिणी स्त्री। तुमने अपने पति की तुलना में अजनबियों के साथ शारीरिक सम्बंध करना अधिक अच्छा माना। [33]अधिकांश वेश्यायें शारीरिक सम्बंध के लिये व्यक्ति को भुगतान करने के लिये विवश करती हैं। किन्तु तुम अपने प्रेमियों को लुभाने के लिये स्वयं भेंट देती हो और उन्हें शारीरिक सम्बन्ध के लिये आमंत्रित करती हो। तुमने अपने चारों ओर के सभी लोगों को अपने साथ शारीरिक सम्बंध के लिये आमन्त्रित किया। [34]तुम अधिकांश वेश्याओं के ठीक विपरीत हो। अधिकांश वेश्यायें पुरुषों को अपने भुगतान के लिये विवश करती हैं। किन्तु तुम पुरूषों को अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध का भुगतान करती हो।"

[35]हे वेश्या, यहोवा से आये वचन को सुनो। [36]मेरा स्वामी यहोवा ये बातें कहता है: "तुमने अपनी मुद्रा व्यय कर दी है और अपने प्रेमियों तथा गन्दें देवताओं को अपना नंगा शरीर देखने दिया है तथा अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध करने दिया है। तुमने अपने बच्चों को मारा है और उनका खून बहाया है। वह उन असत्य देवताओं को तुम्हारी भेंट थीं। [37]इसलिये मैं तुम्हारे सभी प्रेमियों को एक साथ इकट्ठा कर रहा हूँ। मैं उन सभी को लाऊँगा जिनसे तुमने प्रेम किया तथा जिन मनुष्यों से घृणा की। मैं सभी को एक साथ ले आऊँगा और उन्हें तुम्हें नग्न देखने दूँगा। वे तुम्हें पूरी तरह नग्न देखेंगे। [38]तब मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हें किसी हत्यारिन और उस स्त्री की तरह दण्ड दूँगा जिसने व्यभिचार का पाप किया हो। तुम वैसे ही दण्डित होगी मानों कोई क्रोधित और ईर्ष्यालु पति दण्ड दे रहा हो। [39]मैं उन सभी प्रेमियों को तुम्हें प्राप्त कर लेने दूँगा। वे तुम्हारे टीलों को नष्ट कर देंगे। वे तुम्हारे पूजा–स्थानों को जला डालेंगे। वे तुम्हारे वस्त्र फाड़ डालेंगे तथा तुम्हारे सुन्दर आभूषण ले लेंगे। वे तुम्हें वैसे वस्त्रहीन और नंगी छोड़ देंगे जैसी तुम तब थीं जब मैंने तुम्हें पाया था। [40]वे अपने साथ विशाल जन–समूह लाएंगे और तुमको मार डालने के लिये तुम्हारे ऊपर पत्थर फेकेंगे। तब अपनी तलवार से वे तुम्हें टुकड़े–टुकड़े कर डालेंगे। [41]वे तुम्हारा घर (मन्दिर) जला देंगे। वे तुम्हें इस तरह दण्ड देंगे कि सभी अन्य स्त्रियाँ देख सकें। मैं तुम्हारा वेश्या की तरह रहना बन्द कर दूँगा। मैं तुम्हें अपने प्रेमियों को धन देने से रोक दूँगा। [42]तब मैं क्रोधित और ईर्ष्यालु होना छोड़ दूँगा। मैं शान्त हो जाऊँगा। मैं फिर कभी क्रोधित नहीं होऊँगा। [43]ये सारी बातें क्यों होंगी? क्योंकि तुमने वह याद नहीं रखा कि तुम्हारे साथ बचपन में क्या घटित हुआ था। तुमने वे सभी बुरे पाप किये और मुझे क्रोधित किया। इसलिये उन बुरे पापों के लिये मुझे तुमको दण्ड देना पड़ा। किन्तु तुमने और भी अधिक भंयकर योजनाएँ बनाई।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

[44]"तुम्हारे बारे में बात करने वाले सब लोगों के पास एक और बात भी कहने के लिये होगी। वे कहेंगे, 'माँ की तरह ही पुत्री भी है।' [45]तुम अपनी माँ की पुत्री हो। तुम अपने पति या बच्चों का ध्यान नहीं रखती हो। तुम ठीक अपनी बहन के समान हो। तुम दोनों ने अपने पतियों तथा बच्चों से घृणा की। तुम ठीक अपने माता–पिता की तरह हो। तुम्हारी माँ हित्ती थी और तुम्हारा पिता एमोरी था। [46]तुम्हारी बड़ी बहन शोमरोन थी। वह तुम्हारे उत्तर में अपने पुत्रियों (नगरों) के साथ

रहती थी और तुम्हारी छोटी बहन सदोम की थी। वह अपनी पुत्रियों (नगरों) के साथ तुम्हारे दक्षिण में रहती थी! [47]तुमने वे सभी भयंकर पाप किये जो उन्होंने किये। किन्तु तुमने वे काम भी किये जो उनसे भी बुरे थे! [48]मैं यहोवा और स्वामी हूँ। मैं सदा जीवित हूँ और अपनी जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ कि तुम्हारी बहन सदोम और उसकी पुत्रियों ने कभी उतने बुरे काम नहीं किये जितने तुमने और तुम्हारी पुत्रियों ने किये।"

[49]परमेश्वर ने कहा, "तुम्हारी बहन सदोम और उसकी पुत्रियाँ घमण्डी थीं। उनके पास आवश्यकता से अधिक खाने को था और उनके पास बहुत अधिक समय था। वे दीन–असहाय लोगों की सहायता नहीं करती थीं। [50]सदोम और उसकी पुत्रियाँ बहुत अधिक घमण्डी हो गई और मेरे सामने भयंकर पाप करने लगीं। जब मैंने उन्हें उन कामों को करते देखा तो मैंने दण्ड दिया।"

[51]परमेश्वर ने कहा, "शोमरोन ने उन पापों का आधा किया जो तुमने किये। तुमने शोमरोन की अपेक्षा बहुत अधिक भयंकर पाप किये! तुमने अपनी बहनों की अपेक्षा अत्याधिक भयंकर पाप किये हैं! सदोम और शोमरोन की तुलना करने पर, वे तुमसे अच्छी लगती हैं। [52]इसलिए तुम्हें लज्जित होना चाहिए। तुमने अपनी बहनों की, तुलना में, अपने से अच्छी लगनेवाली बनाया है। तुमने भयंकर पाप किये हैं अत: तुम्हें लज्जित होना चाहिए।"

[53]परमेश्वर ने कहा, "मैंने सदोम और उसके चारों ओर के नगरों को नष्ट किया। मैंने शोमरोन और इसके चारों ओर के नगरों को नष्ट किया। यरूशलेम, मैं तुम्हें नष्ट करूँगा। किन्तु मैं उन नगरों को फिर से बनाऊँगा। यरूशलेम, मैं तुमको भी फिर से बनाऊँगा [54]मैं तुम्हें आराम दूँगा। तब तुम उन भयंकर पापों को याद करोगे जो तुमने किये तथा तुम लज्जित होगे। [55]इस प्रकार तुम और तुम्हारी बहनें फिर से बनाई जाएंगी। सदोम और उसके चारों ओर के नगर, शोमरोन और उसके चारों ओर के नगर तथा तुम और तुम्हारे चारों ओर के नगर फिर से बनाए जाएंगे।"

[56]परमेश्वर ने कहा, "अतीत काल में तुम घमण्डी थीं और अपनी बहन सदोम की हँसी उड़ाती थीं। किन्तु तुम वैसा फिर नहीं कर सकोगी। [57]तुमने यह दण्डित होने से पहले अपने पड़ोसियों द्वारा हँसी उड़ाना आरम्भ किये जाने के पहले, किया था। एदोम की पुत्रियाँ (नगर) तथा पलिश्ती अब तुम्हारी हँसी उड़ा रही हैं। [58]अब तुम्हें उन भयंकर पापों के लिये कष्ट उठाना पड़ेगा जो तुमने किये।" यहोवा ने ये बातें कहीं।

[59]मेरे स्वामी यहोवा, ने ये सब चीजें कहीं, "तुमने अपने विवाह की प्रतिज्ञा भंग की। तुमने हमारी वाचा का आदर नहीं किया। [60]किन्तु मुझे वह वाचा याद है जो उस समय की गई थी जब तुम बच्ची थीं। मैंने तुम्हारे साथ वाचा की थी जो सदैव चलती रहने वाली थी। [61]मैं तुम्हारी बहनों को तुम्हारे पास लाऊँगा और मैं उन्हें तुम्हारी पुत्रियाँ बनाऊँगा। यह हमारी वाचा में नहीं था, किन्तु मैं यह तुम्हारे लिये करुँगा। तब तुम उन भयंकर पापों को याद करोगी, जिन्हें तुमने किया और तुम लज्जित होगी। [62]अत: मैं तुम्हारे साथ वाचा करुँगा, और तुम जानोगी कि मैं यहोवा हूँ। [63]मैं तुम्हारे प्रति अच्छा रहूँगा जिससे तुम मुझे याद करोगी और उन पापों के लिये लज्जित होगी जो तुमने किये। मैं तुम्हें शुद्ध करुँगा और तुम्हें फिर कभी लज्जित नहीं होना पड़ेगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

17

तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार को यह कहानी सुनाओ। उनसे पूछो कि इसका तात्पर्य क्या है? [3]उनसे कहो:

एक विशाल उकाब (नबूकदनेस्सर) विशाल
पंख सहित लबानोन में आया।
उकाब के चितकबरे लम्बे पंख थे।
[4] उस उकाब ने उस विशाल
देवदार वृक्ष (लबानोन) के माथे को तोड़
डाला और उसे कनान ले गया।
उकाब ने व्यापारियों के नगर में
उस शाखा को रखा।
[5] तब उकाब ने बीजों (लोगों) में से कुछ को
कनान से लिया।
उसने उन्हें अच्छी भूमि में बोया।
उसने एक अच्छी नदी के सहारे उन्हें बोया।
[6] बीज उगे और वे अंगूर की बेल बने।
यह बेल अच्छी थी। बेल ऊँची नहीं थी।
किन्तु यह एक बड़े क्षेत्र को
ढकने के लिये फैल गई।
बेल के तने बने और छोटी बेलें
बहुत लम्बी हो गई।

7 तब दूसरे बड़े पंखों वाले उकाब ने
अंगूर की बेल को देखा।
उकाब के लम्बे पंख थे।
अंगूर की बेल चाहती थी कि
यह नया उकाब उसकी देख–भाल करे।
इसलिये इसने अपनी जड़ों को
इस उकाब की ओर फैलाया।
इसकी शाखायें इस उकाब की ओर फैलीं।
इसकी शाखायें उस खेत से दूर फैली
जहाँ यह बोई गई थी।
अंगूर की बेल चाहती थी कि
नया उकाब इसे पानी दे।
8 अंगूर की बेल अच्छे खेत में बोई गई थी।
यह प्रभूत जल के पास बोई गई थी।
यह शाखायें और फल उत्पन्न कर सकती थी।
यह एक बहुत अच्छी अंगूर की
बेल हो सकती थी।"
9 मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं,
"क्या तुम समझते हो कि बेल सफल होगी?
नहीं! नया उकाब बेल को
जमीन से उखाड़ देगा।
और पक्षी बेल की जड़ों को तोड़ देगा।
वह सारे अंगूर खा जाएगा।
तब नयी पत्तियाँ सूखेंगी और मर जाएंगी।
वह बेल बहुत कमजोर होगी।
इस बेल को जड़ से उखाड़ने के लिए
शक्तिशाली अस्त्र–शस्त्र या
शक्तिशाली राष्ट्र की जरूरत नहीं होगी।
10 क्या यह बेल वहाँ बढ़ेगी जहाँ बोई गई हैं?
नहीं, गर्म पुरवाई चलेगी
और बेल सूखेगी और मर जाएगी।
यह वहीं मरेगी जहाँ यह बोई गई थी।"

[11]यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [12]"इस कहानी की व्याख्या इस्राएल के लोगों के बीच करो, वे सदा मेरे विरुद्ध जाते हैं। उनसे यह कहो: पहला उकाब (नबूकदनेस्सर) बाबुल का राजा है। वह यरूशलेम आया और राजा तथा अन्य प्रमुखों को ले गया। वह उन्हें बाबुल लाया। [13]तब नबूकदनेस्सर ने राजा के परिवार के एक व्यक्ति के साथ सन्धि की। नबूकदनेस्सर ने उस व्यक्ति को प्रतिज्ञा करने के लिये विवश किया। इस प्रकार इस व्यक्ति ने नबूकदनेस्सर के प्रति राजभक्त रहने की प्रतिज्ञा की। नबूकदनेस्सर ने इस व्यक्ति को यहूदा का नया राजा बनाया। तब उसने सभी शक्तिशाली व्यक्तियों को यहूदा से बाहर निकाला। [14]इस प्रकार यहूदा एक दुर्बल राज्य बन गया, जो राजा नबूकदनेस्सर के विरुद्ध नहीं उठ सकता था। यहूदा के नये राजा के साथ नबूकदनेस्सर ने जो सन्धि की थी उसका पालन करने के लिये लोग विवश किये गये। [15]किन्तु इस नये राजा ने किसी भी प्रकार नबूकदनेस्सर के विरुद्ध विद्रोह करने का प्रयत्न किया। उसने सहायता मांगने के लिये मिस्र को दूत भेजे। नये राजा ने बहुत से घोड़े और सैनिक मांगे। इस दशा में, क्या तुम समझते हो कि यहूदा का राजा सफल होगा? क्या तुम समझते हो कि नये राजा के पास पर्याप्त शक्ति होगी कि वह सन्धि को तोड़कर दण्ड से बच सकेगा?"

[16]मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं अपने जीवन की शपथ खाकर वचन देता हूँ कि यह नया राजा बाबुल में मरेगा! नबूकदनेस्सर ने इस व्यक्ति को यहूदा का नया राजा बनाया। किन्तु इस व्यक्ति ने नबूकदनेस्सर के साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी। इस नये राजा ने सन्धि की उपेक्षा की। [17]मिस्र का राजा यहूदा के राजा की रक्षा करने में समर्थ नहीं होगा। वह बड़ी संख्या में सैनिक भेज सकता है किन्तु मिस्र की महान शक्ति यहूदा की रक्षा नहीं कर सकेगी। नबूकदनेस्सर की सेनायें नगर पर अधिकार के लिये कच्ची सड़कें और मिट्टी की दीवारें बनाएंगी। बड़ी संख्या में लोग मरेंगे। [18]किन्तु यहूदा का राजा बचकर निकल नहीं सकेगा। क्यों? क्योंकि उसने अपने सन्धि की उपेक्षा की। उसने नबूकदनेस्सर को दिये अपने वचन को तोड़ा।" [19]मेरा स्वामी यहोवा यह वचन देता है, "मैं अपने जीवन की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं यहूदा के राजा को दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि उसने मेरी चेतावनियों की उपेक्षा की। उसने हमारी सन्धि को तोड़ा। [20]मैं अपना जाल फैलाऊँगा और वह इसमें फंसेगा। मैं उसे बाबुल लाऊँगा तथा मैं उसे उस स्थान में दण्ड दूँगा। मैं उसे दण्ड दूँगा क्योंकि वह मेरे विरुद्ध उठा। [21]मैं उसकी सेना को नष्ट करूँगा। मैं उसके सर्वोत्तम सैनिकों को नष्ट करूँगा और बचे हुए लोगों को हवा में उड़ा दूँगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ और मैंने ये बातें तुमसे कही थीं।"

[22]मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कही थीं:

"मैं लम्बे देवदार के वृक्ष से एक शाखा लूँगा।
मैं वृक्ष की चोटी से एक छोटी शाखा लूँगा।
और मैं स्वयं उसे बहुत ऊँचे पर्वत पर बोऊँगा।
[23] मैं स्वयं इसे इस्राएल में ऊँचे पर्वत पर लगाऊँगा।
यह शाखा एक वृक्ष बन जाएगी।
इसकी शाखायें निकलेंगी और
इसमें फल लगेंगे।
यह एक सुन्दर देवदार का वृक्ष बन जाएगा।
अनेक पक्षी इसकी शाखाओं पर बैठा करेंगे।
अनेक पक्षी इसकी शाखाओं के
नीचे छाया में रहेंगे।
[24] तब अन्य वृक्ष उसे जानेंगे कि मैं ऊँचे वृक्षों को
भूमि पर गिराता हूँ।
और मैं छोटे वृक्षों को बढ़ाता
और उन्हें लम्बा बनाता हूँ।
मैं हरे वृक्षों को सुखा देता हूँ।
और मैं सूखे वृक्षों को हरा करता हूँ।
मैं यहोवा हूँ।
यदि मैं कहूँगा कि मैं कुछ करुँगा
तो मैं उसे अवश्य करूँगा!"

18 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [2]"तुम लोग इस कहावत को दुहराते रहते हो। क्यों? तुम कहते हो:

पूर्वजों ने खट्टे अंगूर खाये,
किन्तु बच्चों को खट्टा स्वाद मिला।

तुम सोचते हो कि तुम पाप कर सकते हो और भविष्य में कुछ व्यक्ति इसके लिये दण्डित होंगे।" [3]किन्तु मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं अपने जीवन की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस्राएल में लोग अब भविष्य में इस कहावत को कभी सत्य नहीं समझेंगे! [4]मैं सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करूँगा। यह महत्वपूर्ण नहीं होगा कि वह व्यक्ति माता–पिता है अथवा सन्तान। जो व्यक्ति पाप करेगा वह व्यक्ति मरेगा!

[5]"यदि कोई व्यक्ति भला है, तो वह जीवित रहेगा। वह भला व्यक्ति लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करता है। [6]वह भला व्यक्ति पहाड़ों पर नहीं जाता और असत्य देवताओं को चढ़ाए गए भोजन में कोई हिस्सा नहीं बंटाता। वह इस्राएल में उन गन्दें देवताओं की मूर्तियों की स्तुति नहीं करता। वह अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ व्यभिचार का पाप नहीं करता। वह अपनी पत्नी के साथ, उसके मासिक धर्म के समय, शारीरिक सम्बंध नहीं करता। [7]वह भला व्यक्ति लोगों से अनुचित लाभ नहीं उठाता। यदि कोई व्यक्ति उससे मुद्रा ऋण लेता है तो वह भला व्यक्ति गिरवी रखकर दूसरे व्यक्ति को मुद्रा देता है और जब वह व्यक्ति उसे भुगतान कर देता है तो भला व्यक्ति उसे गिरवी वस्तु वापिस कर देता है। भला व्यक्ति भूखे लोगों को भोजन देता है और वह उन लोगों को वस्त्र देता है जिन्हें उनकी आवश्यकता है। [8]यदि कोई मुद्रा ऋण लेना चाहता है तो भला व्यक्ति उसे ऋण देता है। वह उसऋ ण का ब्याज नहीं लेता। भला व्यक्ति कुटिल होने से इन्कार करता है। वह हर व्यक्ति के प्रति सदा भला रहता है। लोग उस पर विश्वास कर सकते हैं। [9]वह मेरे नियमों का पालन करता है। वह मेरे निर्णयों को समझता है और भला एवं विश्वसनीय होना सीखता है। क्योंकि वह भला व्यक्ति है, अत: वह जीवित रहेगा।

[10]"किन्तु उस व्यक्ति का कोई ऐसा पुत्र हो सकता है, जो उन अच्छे कामों में से कुछ भी न करता हो। पुत्र चीजें चुरा सकता है तथा लोगों की हत्या कर सकता है। [11]पुत्र इन बुरे कामों में से कोई भी काम कर सकता है। वह पहाड़ों पर जा सकता है और असत्य देवताओं को चढ़ाए गए भोजन में हिस्सा बटा सकता है। वह पापी पुत्र अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ व्यभिचार करने का पाप कर सकता है। [12]वह गरीब और असहाय़ लोगों के साथ बुरा व्यवहार कर सकता है। वह लोगों से अनुचित लाभ उठा सकता है। वह गिरवी चीज को तब भी न लौटाये जब कोई व्यक्ति अपने ऋण का भुगतान कर चुका हो। वह पापी पुत्र उन गन्दी देवमूर्तियों की प्रार्थना कर सकता है एवं अन्य भयंकर पाप भी कर सकता है। [13]किसी व्यक्ति को उस पापी पुत्र सेऋ ण लेने की आवश्यकता हो सकती है। वह पुत्र उसे मुद्रा ऋण दे सकता है, किन्तु वह उस व्यक्ति को उस ऋण पर ब्याज देने के लिये विवश करेगा। अत: वह पापी पुत्र जीवित नहीं रहेगा। उसने भयंकर पाप किये अत: मार दिया जाएगा और अपनी मृत्यु के लिये वह स्वयं ही उत्तरदायी है।

[14]"संभवत: उस पापी पुत्र का भी एक पुत्र हो। किन्तु यह पुत्र अपने पिता द्वारा किये गए पाप–कर्मों को देख सकता है और वह अपने पिता की तरह रहने से इन्कार

कर सकता है। वह भला व्यक्ति लोगों के साथ भला व्यवहार करता है। [15]वह व्यक्ति पहाड़ों पर नहीं जाता, न ही असत्य देवताओं को चढ़ाए गए भोजन में हिस्सा बटाता है। वह इस्राएल में उन गन्दी देवमूर्तियों की प्रार्थना नहीं करता। वह अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ व्यभिचार का पाप नहीं करता। [16]वह भला पुत्र लोगों से अनुचित लाभ नहीं उठाता। यदि कोई व्यक्ति उससे ऋण लेता है तब भला पुत्र चीज गिरवी रखता है और उस व्यक्ति को मुद्रा दे देता है और जब वह व्यक्ति वापस भुगतान करता है तो भला व्यक्ति गिरवी चीज वापस कर देता है। भला व्यक्ति भूखों को भोजन देता है और वह उन लोगों को वस्त्र देता है जिन्हें उसकी आवश्यकता है। [17]वह गरीबों की सहायता करता है यदि कोई व्यक्ति ऋण लेना चाहता है तो भला पुत्र उसे मुद्रा उधार दे देता है और वह उस ऋण पर ब्याज नहीं लेता। भला पुत्र मेरे नियमों का पालन करता है और मेरे नियम के अनुसार चलता है! वह भला पुत्र अपने पिता के पापों के कारण मारा नहीं जायेगा! वह भला पुत्र जीवित रहेगा। [18]पिता लोगों को चोट पहुँचा सकता है और चीजें चुरा सकता है! वह मेरे लोगों के लिये कभी कुछ अच्छा कार्य नहीं कर सकता। वह पिता अपने पापों के कारण मरेगा। किन्तु पुत्र अपने पिता के पापों के लिये दण्डित नहीं होगा।

[19]"तुम पूछ सकते हो, 'पिता के पाप के लिये पुत्र दण्डित क्यों नहीं होगा?' इसका कारण यह है कि पुत्र भला रहा और उसने अच्छे काम किये! उसने बहुत सावधानी से मेरे नियमों का पालन किया! अत: वह जीवित रहेगा। [20]जो व्यक्ति पाप करता है वही व्यक्ति मार डाला जाता है। एक पुत्र अपने पिता के पापों के लिये दण्डित नहीं होगा और एक पिता अपने पुत्र के पापों के लिये दण्डित नहीं होगा। एक भले व्यक्ति की भलाई केवल उसकी निजी होती है और बुरे व्यक्ति की बुराई केवल उसी की होती है।

[21]"इस स्थिति में यदि कोई बुरा व्यक्ति अपना जीवन–क्रम परिवर्तित करता है तो वह जीवित रहेगा, मरेगा नहीं वह व्यक्ति अपने किये पापों को फिर करना छोड़ सकता है। वह बहुत सावधानी से मेरे सभी नियमों का पालन करना आरम्भ कर सकता है। वह न्यायशील और भला हो सकता है। [22]परमेश्वर उसके उन सभी पापों को याद नहीं रखेगा जिन्हें उसने किये। परमेश्वर केवल उसकी भलाई को याद करेगा, अत: वह व्यक्ति जीवित रहेगा।"

[23]मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं बुरे लोगों को मरने देना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि वे अपने जीवन को बदलें, जिससे वे जीवित रह सकें!

[24]"ऐसा भी हो सकता है, कि भला व्यक्ति भला न रह जाय। वह अपने जीवन को बदल सकता है और उन भयंकर पापों का करना आरम्भ कर सकता है जिन्हें बुरे लोगों ने भूतकाल में किया था। (वह बुरा व्यक्ति बदल गया अत: वह जीवित रह सकता है।) अत: यदि वह भला व्यक्ति बदलता है और बुरा बन जाता है तो परमेश्वर उस व्यक्ति के किये अच्छे कामों को याद नहीं रखेगा। परमेश्वर यही याद रखेगा कि वह व्यक्ति उसके विरुद्ध हो गया और उसने पाप करना आरम्भ किया। इसलिये वह व्यक्ति अपने पापों के कारण मरेगा।"

[25]परमेश्वर ने कहा, "तुम लोग कह सकते हो, 'परमेश्वर हमारा स्वामी न्यायपूर्ण नहीं है!' किन्तु इस्राएल के परिवारों, सुनों। मैं उसी प्रकार का हूँ। तुम लोग ऐसे हो कि जरुर बदलोगे! [26]यदि एक भला व्यक्ति बदलता है और पापी बनता है तो उसे अपने किये गये बुरे कामों के कारण मरना ही चाहिए। [27]यदि कोई पापी व्यक्ति बदलता है और भला तथा न्याय प्रिय बनता है तो वह अपने जीवन को बचाएगा। वह जीवित रहेगा! [28]उस व्यक्ति ने देखा कि वह कितना बुरा था और मेरे पास लौटा। उसने उन बुरे पापों को करना छोड़ दिया जो उसने भूतकाल में किये थे। अत: वह जीवित रहेगा! वह मरेगा नहीं!"

[29]इस्राएल के लोगों ने कहा, "यह न्यायपूर्ण नहीं है! मेरा स्वामी यहोवा न्यायपूर्ण नहीं है!"

परमेश्वर ने कहा, "मैं उसी प्रकार का हूँ। तुम ऐसे लोग हो जो बदलोगे ही! [30]क्यों? क्योंकि इस्राएल के परिवार, मैं हर एक व्यक्ति के साथ न्याय केवल उसके उन कर्मो के लिये करुँगा जिन्हें वह व्यक्ति करता है!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं: "इसलिये मेरे पास लौटो! पाप करना छोड़ो! उन भयंकर चीजों (मूर्तियों) को अपने द्वारा पाप मत करने दो! [31]उन सभी भयंकर चीजों (मूर्तियों) को फेंक दो जिन्हें तुमने बनाया, वे तुमसे केवल पाप करवाते हैं! अपने हृदय और आत्मा को बदलो! इस्राएल के लोगों, तुम अपने को क्यों मर जाने देना चाहते हो? [32]मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता! तुम

हमारे पास आओ और रहो!" वे बातें मेरे स्वामी यहोवा ने कहीं।

19 यहोवा ने मुझसे कहा, "तुम्हें इस्राएल के प्रमुखों के विषय में इस करुण-गीत को गाना चाहिये।
2 'कैसी सिंहनी है तुम्हारी माँ?
वह सिहों के बीच एक सिंहनी थी।
वह जवान सिंहों से घिरी रहती थी और अपने
बच्चों का लालन पालन करती थी।
3 उन सिंह-शावकों में से एक उठता है
वह एक शक्तिशाली युवा सिंह हो गया है।
उसने अपना भोजन पाना सीख लिया है।
उसने एक व्यक्ति को मारा और खा गया।
4 लोगों ने उसे गरजते सुना
और उन्होंने उसे अपने जाल में फँसा लिया!
उन्होंने उसके मुँह में नकेल डालीं
और युवा सिंह को मिस्र ले गये।
5 सिंह माता को आशा थी कि
सिंह-शावक प्रमुख बनेगा।
किन्तु अब उसकी सारी आशायें लुप्त हो गई।
इसलिये अपने शावकों में से उसने
एक अन्य को लिया।
उसे उसने सिंह होने का प्रशिक्षण दिया।
6 वह युवा सिंहों के साथ शिकार को निकला।
वह एक बलवान युवा सिंह बना।
उसने अपने भोजन को पकड़ना सीखा।
उसने एक आदमी को मारा और उसे खाया।
7 उसने महलों पर आक्रमण किया।
उसने नगरों को नष्ट किया।
उस देश का हर एक व्यक्ति
तब भय से अवाक होता था।
जब वह उसका गरजना सुनता था।
8 तब उसके चारों ओर रहने वाले लोगों ने
उसके लिये जाल बिछाया
और उन्होंने उसे अपने जाल में फँसा लिया।
9 उन्होंने उस पर नकेल लगाई
और उसे बन्द कर दिया।
उन्होंने उसे अपने जाल में बन्द रखा।
इस प्रकार उसे वे बाबुल के
राजा के पास ले गए।
अब, तुम इस्राएल के पर्वतों पर
उसकी गर्जना सुन नहीं सकते।
10 तुम्हारी माँ एक अंगूर की बेल जैसी थी,
जिसे पानी के पास बोया गया था।
उसके पास काफी जल था,
इसलिये उसने अनेक शक्तिशाली
बेलें उत्पन्न कीं।
11 तब उसने एक बड़ी शाखा उत्पन्न की,
वह शाखा टहलने की छड़ी जैसी थी।
वह शाखा राजा के राजदण्ड जैसी थी।
बेल ऊँची, और ऊँची होती गई।
इसकी अनेक शाखायें थीं और
वह बादलों को छूने लगी।
12 किन्तु बेल को जड़ से उखाड़ दिया गया,
और उसे भूमि पर फेंक दिया गया।
गर्म पुरवाई हवा चली और
उसके फलों को सुखा दिया
शक्तिशाली शाखायें टूट गई,
और उन्हें आग में फेंक दिया गया।
13 किन्तु वह अंगूर की बेल
अब मरूभूमि में बोयी गई है।
यह बहुत सूखी और प्यासी धरती है।
14 विशाल शाखा से आग फैली।
आग ने उसकी सारी टहनियों
और फलों को जला दिया।
अत: कोई सहारे की शक्तिशाली
छड़ी नहीं रही।
कोई राजा का राजदण्ड न रहा।'

यह मृत्यु के बारे में करुण-गीत था और यह मृत्यु के बारे में करुणगीत के रूप में गाया गया था।"

20 एक दिन इस्राएल के अग्रजों (प्रमुखों) में से कुछ मेरे पास यहोवा की राय पूछने आए। यह पाँचवें महीने (अगस्त) का दसवाँ दिन और देश-निकाले का सातवाँ वर्ष था। अग्रज (प्रमुख) मेरे सामने बैठे।

2 तब यहोवा का वचन मेरे पास आया। उसने कहा, 3 "मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के अग्रजों (प्रमुखों) से बात करो। उनसे कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा, ये बातें बताता है: क्या तुम लोग मेरी सलाह मांगने आये हो? यदि तुम लोग आए हो तो मैं तुम्हें यह नहीं दूँगा। मेरे स्वामी यहोवा ने यह बात

कही।' [4]"क्या तुम्हें उनका निर्णय करना चाहिए? मनुष्य के पुत्र क्या तुम उनका निर्णय करोगे? तुम्हें उन्हें उन भंयकर पापों के बारे में बताना चाहिए जो उनके पूर्वजों ने किये थे। [5]तुम्हें उनसे कहना चाहिए, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: जिस दिन मैंने इस्राएल को चुना, मैंने अपना हाथ याकूब के परिवार के ऊपर उठाया और मैने मिस्र देश में उनसे एक प्रतिज्ञा की। मैंने अपना हाथ उठाया और कहा: मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। [6]उस दिन मैंने तुम्हें मिस्र से बाहर लाने का वचन दिया था और मैं तुमको उस प्रदेश में लाया जिसे मैं तुम्हें दे रहा था। वह एक अच्छा देश था जो अनेक अच्छी चीजों से भरा था। यह सभी देशों से अधिक सुन्दर था!

[7]"मैंने इस्राएल के परिवार से उनकी भंयकर देवमूर्तियों को फेंकने के लिये कहा। मैंने, उन मिस्र की गन्दी देवमूर्तियों के साथ उन्हें गन्दा न होने के लिये कहा। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। [8]किन्तु वे मेरे विरुद्ध हो गये और उन्होंने मेरी एक न सुनी। उन्होंने अपनी भंयकर देवमूर्तियों को नहीं फेंका। उन्होंने अपनी गन्दी देवमूर्तियों को मिस्र में नहीं छोड़ा। इसलिये मैंने (परमेश्वर ने) उन्हें मिस्र में नष्ट करने का निर्णय किया अर्थात् अपने क्रोध की पूरी शक्ति का अनुभव कराना चाहा। [9]किन्तु मैंने उन्हें नष्ट नहीं किया। मैं लोगों से जहाँ वे रह रहे थे पहले ही कह चुका था कि मैं अपने लोगों को मिस्र से बाहर ले जाऊँगा। मैं अपने अच्छे नाम को समाप्त नहीं करना चाहता, इसलिये मैंने उन लोगों के सामने इस्राएलियों को नष्ट नहीं किया। [10]मैं इस्राएल के परिवार को मिस्र से बाहर लाया। मैं उन्हें मरूभूमि में ले गया। [11]तब मैंने उनको अपने नियम दिये। मैंने उनको सारे नियम बताये। यदि कोई व्यक्ति उन नियमों का पालन करेगा तो वह जीवित रहेगा। [12]मैंने उनको विश्राम के सभी विशेष दिनों के बारे में भी बताया। वे पवित्र दिन उनके और मेरे बीच विशेष प्रतीक थे। वे यह संकेत करते थे कि मैं यहोवा हूँ और मैं उन्हें अपने विशेष लोग बना रहा हूँ।

[13]"किन्तु इस्राएल का परिवार मरूभूमि में मेरे विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। उन्होंने मेरे नियमों का अनुसरण नहीं किया। उन्होंने मेरे नियमों का पालन करने से इनकार किया और वे नियम अच्छे हैं। यदि कोई व्यक्ति उनका पालन करेगा तो वह जीवित रहेगा। उन्होंने मेरे विशेष विश्राम के दिनों के प्रति ऐसा व्यवहार किया मानो उनका कोई महत्व न हो। वे उन दिनों में अनेकों बार काम करते रहे। मैंने मरूभूमि में उन्हें नष्ट करने का निश्चय किया अर्थात अपने क्रोध की पूरी शक्ति का अनुभव उन्हें कराना चाहा। [14]किन्तु मैंने उन्हें नष्ट नहीं किया। अन्य राष्ट्रों ने मुझे इस्राएल को मिस्र से बाहर लाते देखा। मैं अपने अच्छे नाम को समाप्त नहीं करना चाहता था, इसलिये मैंने उन राष्ट्रों के सामने इस्राएल को नष्ट नहीं किया। [15]मैंने मरूभूमि में उन लोगों को एक और वचन दिया। मैंने वचन दिया कि मैं उन्हें उस प्रदेश में नहीं लाऊँगा जिसे मैं उन्हें दे रहा हूँ। वह अनेक चीजों से भरा एक अच्छा प्रदेश था। यह सभी देशों से अधिक सुन्दर था।

[16]"इस्राएल के लोगों ने मेरे नियमों का पालन करने से इन्कार किया। उन्होंने मेरे नियमों का अनुसरण नहीं किया। उन्होंने मेरे विश्राम के दिनों को ऐसे लिया मानो वे महत्व नहीं रखते। उन्होंने ये सभी काम इसलिये किये कि उनका हृदय उन गन्दी देवमूर्तियों का हो चुका था। [17]किन्तु मुझे उन पर करूणा आई, अत: मैंने उन्हें नष्ट नहीं किया। मैंने उन्हें मरूभूमि में पूरी तरह नष्ट नहीं किया। [18]मैंने उनके बच्चों से बातें कीं। मैंने उनसे कहा, 'अपने माता पिता जैसे न बनो। उनकी गन्दी देवमूर्तियों से अपने को गन्दा न बनाओ। उनके नियमों का अनुसरण न करो। उनके आदेशों का पालन न करो। [19]मैं यहोवा हूँ। मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मेरे नियमों का पालन करो। मेरे आदेशों को मानो। वह काम करो जो मैं कहूँ। [20]यह प्रदर्शित करो कि मेरे विश्राम के दिन तुम्हारे लिये महत्वपूर्ण हैं। याद रखो कि वे तुम्हारे और हमारे बीच विशेष प्रतीक हैं। मैं यहोवा हूँ और वे पवित्र दिन यह संकेत करते हैं कि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ।

[21]"'किन्तु वे बच्चे मेरे विरुद्ध हो गये। उन्होंने मेरे नियमों का पालन नहीं किया। उन्होंने मेरे आदेश नहीं माने। उन्होंने वे काम नहीं किये जो मैंने उनसे कहा वे अच्छे नियम थे। यदि कोई उनका पालन करेगा तो वह जीवित रहेगा। उन्होंने मेरे विश्राम के दिनों को ऐसे लिया मानों वे महत्व न रखते हों। इसलिये मैंने उन्हें मरूभूमि में पूरी तरह नष्ट करने का निश्चय किया जिससे वे मेरे क्रोध की पूरी शक्ति का अनुभव कर सकें। [22]लेकिन मैंने अपने को रोक लिया। अन्य राष्ट्रों ने मुझे इस्राएल को मिस्र से बाहर लाते देखा। जिससे मेरा नाम अपवित्र न

हो। इसलिये मैंने उन अन्य देशों के सामने इस्राएल को नष्ट नहीं किया। 23इसलिये मैंने मरुभूमि में उन्हें एक और वचन दिया। मैंने उन्हें विभिन्न राष्ट्रों में बिखेरने और दूसरे अनेकों देशों में भेजने की प्रतीज्ञा की।

24"'इस्राएल के लोगों ने मेरे आदेश का पालन नहीं किया। उन्होंने मेरे नियमों को मानने से इन्कार कर दिया। उन्होंने मेरे विशेष विश्राम के दिनों को ऐसे लिया मानो वे महत्व न रखते हों। उन्होंने अपने पूर्वजों की गन्दी देवमूर्तियों को पूजा। 25इसलिये मैंने उन्हें वे नियम दिये जो अच्छे नहीं थे। मैंने उन्हें वे आदेश दिये जो उन्हें सजीव नहीं कर सकते थे। 26मैंने उन्हें अपनी भेंटों से अपने आप को गन्दा बनाने दिया। उन्होंने अपने प्रथम उत्पन्न बच्चों तक की बलि चढ़ानी आरम्भ कर दी। इस प्रकार मैंने उन लोगों को नष्ट करना चाहा। तब वे समझे कि मैं यहोवा हूँ।' 27अत: मनुष्य के पुत्र, अब इस्राएल के परिवार से कहो। उनसे कहो कि मेरा स्वामी यहोवा ये बातें कहता है: इस्राएल के लोगों ने मेरे विरुद्ध बुरी बातें कहीं और मेरे विरुद्ध बुरी योजनायें बनाई। 28किन्तु मैं इसके होते हुए भी, उन्हें उस प्रदेश में लाया जिसे देने का वचन मैंने दिया था। उन्होंने उन पहाड़ियों और हरे वृक्षों को देखा अत: वे उन सभी स्थानों पर पूजा करने गये। वे अपनी बलियाँ तथा क्रोध–भेंटें उन सभी स्थानों को ले गए। उन्होंने अपनी वे बलियाँ चढ़ाई जो मधुर गन्ध वाली थी और उन्होंने अपनी पेय–भेंटे उन स्थानों पर चढ़ाई। 29मैंने इस्राएल के लोगों से पूछा कि वे उन ऊँचे स्थान पर क्यों जा रहे हैं। लेकिन वे ऊँचे स्थान आज भी वहाँ हैं।'"

30परमेश्वर ने कहा, "इस्राएल के लोगों ने उन सभी बुरे कामों को किया। अत: इस्राएल के लोगों से बात करो। उनसे कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: तुम लोगों ने उन कामों को करके अपने को गन्दा बना लिया है जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने किया। तुमने एक वेश्या की तरह काम किया है। तुमने उन भयंकर देवताओं के साथ मुझे छोड़ दिया है जिनकी पूजा तुम्हारे पूर्वज करते थे। 31तुम उसी प्रकार की भेंट चढ़ा रहे हो। तुम अपने बच्चों को आग में (असत्य देवताओं की भेंट के रूप में) डाल रहे हो। तुम अपने को आज भी गन्दी देवमूर्तियों से गन्दा बना रहे हो! क्या तुम सचमुच सोचते हो कि मैं तुम्हें अपने पास आने दूँगा और अपनी सलाह मांगने दूँगा? मैं यहोवा और स्वामी हूँ। मैं अपने जीवन की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर नहीं दूँगा और तुम्हें सलाह नहीं दूँगा! 32तुम कहते रहते हो कि तुम अन्य राष्ट्रों की तरह होओगे। तुम उन राष्ट्रों के लोगों की तरह रहते हो। तुम लकड़ी और पत्थर के खण्डों (देवमूर्तियों) की पूजा करते हो!'"

33मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "अपने जीवन की शपथ खाकर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हारे ऊपर राजा की तरह शासन करुँगा। मैं अपनी शक्तिशाली भुजाओं को उठाऊँगा और तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करुँगा! 34मैं तुम्हें इन अन्य राष्ट्रों से बाहर लाऊँगा। मैंने तुम लोगों को उन राष्ट्रों में बिखेरा। किन्तु मैं तुम लोगों को एक साथ इकट्ठा करुँगा और इन राष्ट्रों से वापस लौटाऊँगा। किन्तु मैं अपनी शक्तिशाली भुजाएं उठाऊँगा और तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करुँगा! 35मैं पहले की तरह तुम्हें मरूभूमि में ले चलूँगा। किन्तु यह वह स्थान होगा जहाँ अन्य राष्ट्रों रहते हैं। हम आमने–सामने खड़े होंगे और मैं तुम्हारे साथ न्याय करुँगा। 36मैं तुम्हारे साथ वैसा ही न्याय करुँगा जैसा मैंने तुम्हारे पूर्वजों के साथ मिस्र की मरूभूमि में किया था।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

37"मैं तुम्हें अपराधी प्रमाणित करूँगा और साक्षीपत्र के अनुसार तुम्हें दण्ड दूँगा। 38मैं उन सभी लोगों को दूर करुँगा जो मेरे विरुद्ध खड़े हुए और जिन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किये। मैं उन लोगों को तुम्हारी जन्मभूमि से दूर करुँगा। वे इस्राएल देश में फिर कभी नहीं लौटेंगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

39इस्राएल के परिवार, अब सुनो, मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "यदि कोई व्यक्ति अपनी गन्दी देवमूर्तियों की पूजा करना चाहता है तो उसे जाने दो और पूजा करने दो। किन्तु बाद में यह न सोचना कि तुम मुझसे कोई सलाह पाओगे! तुम मेरे नाम को भविष्य में और अधिक अपवित्र नहीं कर सकोगे! उस समय नहीं, जब तुम अपने गन्दी देवमूर्तियों को भेंट देना जारी रखते हो।"

40मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "लोगों को मेरी सेवा के लिये मेरे पवित्र पर्वत–इस्राएल के ऊँचे पर्वत पर आना चाहिए! इस्राएल का सारा परिवार अपनी भूमि पर होगा वे वहाँ अपने देश में होंगे। यह वह ही स्थान है जहाँ तुम आ सकते हो और मेरी सलाह मांग सकते हो और तुम्हें उस स्थान पर मुझे अपनी भेंट चढ़ाने आना चाहिये।

तुम्हें अपनी फसल का पहला भाग वहाँ उस स्थान पर लाना चाहिये। तुम्हें अपनी सभी पवित्र भेंटें वहीं लानी चाहिये। [41]तब तुम्हारी भेंट की मधुर गन्ध से मैं प्रसन्न होऊँगा। यह सब होगा जब मैं तुम्हें वापस लाऊँगा। मैंने तुम्हें विभिन्न राष्ट्रों में बिखेरा था। किन्तु मैं तुम्हें एक साथ इकट्ठा करुँगा और तुम्हें फिर से अपने विशेष लोग बनाऊँगा और सभी राष्ट्र यह देखेंगे। [42]तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ। तुम यह तब जानोगे जब मैं तुम्हें इस्राएल देश में वापस लाऊँगा। यह वही देश है जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को देने का वचन दिया था। [43]उस देश में तुम उन बुरे पापों को याद करोगे जिन्होंने तुम्हें दोषी बनाया और तुम लज्जित होगे। [44]इस्राएल के परिवार! तुमने बहुत बुरे काम किये और तुम लोगों को उन बुरे कामों के कारण नष्ट कर दिया जाना चाहिए। किन्तु अपने नाम की रक्षा के लिये मैं वह दण्ड तुम लोगों को नहीं दूँगा जिसके पात्र तुम लोग हो। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।"

[45]तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [46]"मनुष्य के पुत्र, यहूदा के दक्षिण भाग नेगव की ओर ध्यान दो। नेगव–वन के विरुद्ध कुछ कहो। [47]नेगव–वन से कहो, 'यहोवा के सन्देश को सुनो। मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं: ध्यान दो, मैं तुम्हारे वन में आग लगाने वाला हूँ। आग हर एक हरे वृक्ष और हर एक सूखे वृक्ष को नष्ट करेगी। जो लपटें जलेंगी उन्हें बुझाया नहीं जा सकेगा। दक्षिण से उत्तर तक सारा देश अग्नि से जला दिया जाएगा। [48]तब लोग जानेंगे कि मैंने अर्थात यहोवा ने आग लगाई है। आग बुझाई नहीं जा सकेगी!'"

[49]तब मैंने (यहेजकेल) ने कहा, "हे मेरे स्वामी यहोवा! यदि मैं इन बातों को कहता हूँ तो लोग कहेंगे कि मैं उन्हें केवल कहानियाँ सुना रहा हूँ। वे नहीं सोचेंगे कि यह सचमुच घटित होगा!"

21 इसलिये यहोवा का वचन मुझे फिर मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, यरूशलेम की ओर ध्यान दो और उसके पवित्र स्थानों के विरुद्ध कुछ कहो। मेरे लिये इस्राएल देश के विरुद्ध कुछ कहो। [3]इस्राएल देश से कहो, 'यहोवा ने ये बातें कहीं हैं: मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ! मैं अपनी तलवार म्यान से बाहर निकालूँगा! मैं सभी लोगों को तुमसे दूर करूँगा, अच्छे और बुरे दोनों को! [4]मैं अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के व्यक्तियों को तुमसे अलग करूँगा। मैं अपनी तलवार म्यान से निकालूँगा और दक्षिण से उत्तर तक के सभी लोगों के विरुद्ध उसका उपयोग करूँगा। [5]तब सभी लोग जानें कि मैं यहोवा हूँ और वे जान जाएंगे कि मैंने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली है। मेरी तलवार म्यान में फिर तब तक नहीं लौटेगी जब तक यह खत्म नहीं कर लेती।'"

[6]परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, टूटे हृदय वाले व्यक्ति की तरह सिसको। लोगों के सामने कराहो। [7]तब वे तुमसे पूछेंगे, 'तुम कराह क्यों रहे हो?' तब तुम्हें कहना चाहिये, 'कष्टदायक समाचार मिलने वाला है, इसलिये। हर एक हृदय भय से पिघल जाएगा। सभी हाथ कमजोर हो जाएंगे।' हर एक अन्तरात्मा कमजोर हो जाएगी। हर एक घुटने पानी जैसे हो जाएंगे।' ध्यान दो, वह बुरा समाचार आ रहा है! ये घटनायें घटित होंगी। मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।"

तलवार तैयार है

[8]परमेश्वर का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [9]"मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये लोगों से बातें करो। ये बातें कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:

"'ध्यान दो, एक तलवार, एक तेज तलवार है,
और तलवार झलकाई गई है।
[10] तलवार को जान लेने के लिये
तेज किया गया था।
बिजली के समान चकाचौंध करने के लिये
इसको झलकाया गया था।
"मेरे पुत्र, तुम उस छड़ी से दूर भाग गये
जिससे मैं तुम्हें दण्ड देता था।
तुमने उस लकड़ी की छड़ी से
दण्डित होने से इन्कार किया।
[11] इसलिये तलवार को झलकाया गया है।
अब यह प्रयोग की जा सकेगी।
तलवार तेज की गई और झलकाई गई थी।
अब यह मारने वाले के
हाथों में दी जा सकेगी।

[12]"'मनुष्य के पुत्र, चिल्लाओ और चीखो। क्यों? क्योंकि तलवार का उपयोग मेरे लोगों और इस्राएल के सभी शासकों के विरुद्ध होगा! वे शासक युद्ध चाहते थे, इसलिये वे हमारे लोगों के साथ तब होंगे जब तलवार आएगी!

इसलिये अपनी जांघे पीटो और अपना दुःख प्रकट करने के लिये शोर मचाओ! [13]क्यों? क्योंकि यह परीक्षा मात्र नहीं है! तुमने लकड़ी की छड़ी से दण्डित होने से इन्कार किया अतः उसके अतिरिक्त तुम्हें दण्डित करने के लिये मैं क्या उपयोग में लाऊँ? हाँ, तलवार ही।'" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

[14]परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, तालियाँ बजाओ और मेरे लिये लोगों से ये बातें करो:

'दो बार तलवार को वार करने दो,
हाँ, तीन बार!
यह तलवार लोगों को मारने के लिये है!
यह तलवार है, बड़े नर–संहार के लिये!
यह तलवार लोगों को धार पर रखेगी।
[15] उनके हृदय भय से पिघल जाएंगे
और बहुत से लोग गिरेंगे।
बहुत से लोग अपने नगर–द्वार पर मरेंगे।
हाँ, तलवार बिजली की तरह चमकेगी।
ये लोगों को मारने के लिये झलकाई गई है!
[16] तलवार, धारदार बनो!
तलवार दायें काटो,
सीधे सामने काटो,
बायें काटो,
जाओ हर एक स्थान में जहाँ तुम्हारी धार,
जाने के लिये चुनी गई!
[17] "तब मैं भी ताली बजाऊँगा
और मैं अपना क्रोध प्रकट
करना बन्द कर दूँगा।
मैं यहोवा, कह चुका हूँ!'"

यरूशलेम तक के मार्ग को चुनना

[18]यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [19]"मनुष्य के पुत्र, दो सड़कों के नक्शे बनाओ। जिन में से बाबुल के राजा की तलवार इस्राएल आने के लिये एक को चुन सके। दोनों सड़कें उसी बाबुल देश से निकलेंगी। तब नगर को पहुँचने वाली सड़क के सिरे पर एक चिन्ह बनाओ। [20]चिन्ह का उपयोग यह दिखाने के लिये करो कि कौन–सी सड़क का उपयोग तलवार करेगी। एक सड़क अम्मोनी नगर रब्बा को पहुँचाती है। दूसरी सड़क यहूदा, सुरक्षित नगर, यरूशलेम को पहुँचाती है! [21]यह स्पष्ट करता है कि बाबुल का राजा उस सड़क की योजना बना रहा है जिससे वह उस क्षेत्र पर आक्रमण करे। बाबुल का राजा उस बिन्दु पर आ चुका है जहाँ दोनों सड़कें अलग होती हैं। बाबुल के राजा ने जादू के संकेतों का उपयोग भविष्य को जानने के लिये किया है। उसने कुछ बाण हिलाये, उसने परिवार की देवमूर्तियों से प्रश्न पूछे, उसने गुर्दे को देखा जो उस जानवर का था जिसे उसने मारा था।

[22]"संकेत उसे बताते हैं कि वह उस दायीं सड़क को पकड़े जो यरूशलेम पहुँचाती है! उसने अपने साथ विध्वंसक लट्ठों को लाने की योजना बनाई है। वह आदेश देगा और उसके सैनिक जान से मारना आरम्भ करेंगे। वे युद्ध–घोष करेंगे। तब वे एक मिट्टी की दीवार नगर के चारों ओर बनायेंगे। वे एक मिट्टी की सड़क दीवार तक पहुँचाने वाली बनाएंगे। वे नगर पर आक्रमण के लिए लकड़ी की मीनार बनाएंगे। [23]वे जादूई चिन्ह इस्राएल के लोगों के लिये कोई अर्थ नहीं रखते। वे उन वचनों का पालन करते हैं जो उन्होंने दिये। किन्तु यहोवा उनके पाप याद रखेगा! तब इस्राएली लोग बन्दी बनाए जाएंगे।"

[24]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "तुमने बहुत से बुरे काम किये हैं। तुम्हारे पाप पूरी तरह स्पष्ट हैं। तुमने मुझे यह याद रखने को विवश किया कि तुम दोषी हो। अतः शत्रु तुम्हें अपने हाथों में कर लेगा [25]और इस्राएल के पापी प्रमुखों, तुम मारे जाओगे। तुम्हारे दण्ड का समय आ पहुँचा है! अब अन्त निकट है!"

[26]मेरा स्वामी यहोवा यह सन्देश देता है, "पगड़ी उतारो! मुकुट उतारो! परिवर्तन का समय आ पहुँचा है! महत्वपूर्ण प्रमुख नीचे लाए जाएंगे और जो लोग महत्वपूर्ण नहीं हैं, वे महत्वपूर्ण बनेंगे। [27]मैं उस नगर को पूरी तरह नष्ट करुँगा! किन्तु यह तब तक नहीं होगा जब तक उपयुक्त व्यक्ति नया राजा नहीं होता। तब मैं उसे (बाबुल के राजा को) नगर पर अधिकार करने दूँगा।"

अम्मोन के विरुद्ध भविष्यवाणी

[28]परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये लोगों से कहो। वे बातें कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा ये बातें अम्मोन के लोगों और उनके लज्जाजनक देवता से कहता है:

"'ध्यान दो, एक तलवार!
एक तलवार अपनी म्यान से बाहर है।
तलवार झलकाई गई है!
तलवार मारने के लिये तैयार है।
बिजली की तरह चमकने के लिए
इसको झलकाया गया था!
29 तुम्हारे दर्शन व्यर्थ हैं।
तुम्हारे जादू तुम्हारी सहायता नहीं करेंगे।
यह केवल झूठ का गुच्छा है।
अब तलवार पापियों की गर्दन पर है।
वे शीघ्र ही मुर्दा हो जाएंगे।
उनका अन्त समय आ पहुँचा है।
उनके पाप की समाप्ति का
समय आ गया है।

बाबुल के विरुद्ध भविष्यवाणी

30"'अब तुम तलवार (बाबुल) को म्यान में वापस रखो। बाबेल मैं तुम्हारे साथ न्याय, तुम जहाँ बने हो उसी स्थान पर करूँगा अर्थात् उसी देश में जहाँ तुम उत्पन्न हुए हो। 31मैं तुम्हारे विरुद्ध अपने क्रोध की वर्षा करूँगा। मेरा क्रोध तुम्हें तप्त पवन की तरह जलाएगा। मैं तुम्हें क्रूर व्यक्तियों के हाथों में दूँगा। वे व्यक्ति मनुष्यों को मार डालने में कुशल हैं। 32तुम आग के लिये ईंधन बनोगे। तुम्हारा खून भूमि में गहरा बह जाएगा अर्थात् लोग तुम्हें फिर याद नहीं करेंगे। मैंने अर्थात् यहोवा ने यह कह दिया है!'"

यहेजकेल यरूशलेम के विरुद्ध बोलता है

22 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, क्या तुम न्याय करोगे? क्या तुम हत्यारों के नगर (यरूशलेम) के साथ न्याय करोगे? क्या तुम उससे उन सब भयंकर बातों के बारे में कहोगे जो उसने की हैं? 3तुम्हें कहना चाहिये, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: नगर हत्यारों से भरा है। अत: उसके लिये दण्ड का समय आएगा। उसने अपने लिये गन्दी देवमूर्तियों को बनाया और इन देवमूर्तियों ने उसे गन्दा बनाया!

4"'यरूशलेम के लोगों, तुमने बहुत लोगों को मार डाला। तुमने गन्दी देवमूर्तियाँ बनाई। तुम दोषी हो और तुम्हें दण्ड देने का समय आ गया है। तुम्हारा अन्त आ गया है। अन्य राष्ट्रों तुम्हारा मजाक उड़ाएंगे। वे देश तुम पर हँसेंगे। 5दूर और निकट के लोग तुम्हारा मजाक उड़ाएंगे। तुमने अपना नाम बदनाम किया है। तुम अट्टहास सुन सकते हो।

6"'ध्यान दो! यरूशलेम में हर एक शासक ने अपने को शक्तिशाली बनाया जिससे वह अन्य लोगों को मार सके। 7यरूशलेम के लोग अपने माता–पिता का सम्मान नहीं करते। वे उस नगर में विदेशियों को सताते हैं। वे अनाथों और विधवाओं* को उस स्थान पर ठगते हैं। 8तुम लोग मेरी पवित्र चीजों से घृणा करते हो। तुम मेरे विश्राम के दिनों को ऐसे लेते हो मानों वे महत्वपूर्ण न हों। 9यरूशलेम के लोग अन्य लोगों के बारें में झूठ बोलते हैं। वे यह उन भोले लोगों को मार डालने के लिये करते हैं। लोग पर्वतों पर असत्य देवताओं की पूजा करने जाते हैं और तब वे यरूशलेम में उनके मैत्री–भोजन को खाने आते हैं।

"'यरूशलेम में लोग अनेक यौन–सम्बन्धी पाप करते हैं।10यरूशलेम में लोग अपने पिता की पत्नी के साथ व्यभिचार करते हैं। यरूशलेम में लोग मासिक धर्म के समय में भी नारियों से बलात्कार करते हैं। 11कोई अपने पड़ोसी की पत्नी के विरुद्ध भी ऐसा भयंकर पाप करता है। कोई अपनी पुत्रवधू के साथ शारीरिक सम्बन्ध करता है और उसे अपवित्र करता है और कोई अपने पिता की पुत्री अर्थात अपनी बहन के साथ शारीरिक सम्बंध करता है।

12"'यरूशलेम में, तुम लोग, लोगों को मार डालने के लिये धन लेते हो। तुम लोग ऋण देते हो और उस ऋण पर ब्याज लेते हो। तुम लोग थोड़े धन को पाने के लिये अपने पड़ोसी को ठगते हो और तुम लोग मुझे भूल गए हो।'" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

13परमेश्वर ने कहा, "अब ध्यान दो! मैं अपनी भुजा को नीचे टिकाकर, तुम्हें रोक दूँगा! मैं तुम्हें लोगों को धोखा देने और मार डालने के लिये दण्ड दूँगा। 14क्या तब भी तुम वीर बने रहोगे? क्या तुम पर्याप्त बलवान

अनाथों और विधवाओं वे नारियाँ है जिनके पति मर चुके हैं और अनाथ वे बच्चे है जिनके माता–पिता मर चुके हैं। प्राय: इनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं होता।

रहोगे जब मैं तुम्हें दण्ड देने आऊँगा? नहीं! मैं यहोवा हूँ। मैंने यह कह दिया है और मैं वह करूँगा जो मैंने करने को कहा है! [15]मैं तुम्हें राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। मैं तुम्हें बहुत-से देशों में जाने को विवश करूँगा। मैं नगर की गन्दी चीजों को पूरी तरह नष्ट करुँगा। [16]किन्तु यरूशलेम तुम अपवित्र हो जाओगे और अन्य राष्ट्र इन घटनाओं को होता देखेंगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

इस्राएल बेकार कचरे की तरह है

[17]यहोवा का वचन मुझ तक आया। उसने कहा, [18]"मनुष्य के पुत्र, काँसा, लोहा, सीसा और टीन चाँदी की तुलना में बेकार हैं। कारीगर चाँदी को शुद्ध करने के लिये आग में डालते हैं। चाँदी गल जाती है और कारीगर इसे कचरे से अलग करता है। इस्राएल राष्ट्र उस बेकार कचरे की तरह हो गया है। [19]इसलिये यहोवा तथा स्वामी यह कहता है, 'तुम सभी लोग बेकार कचरे की तरह हो गए हो। इसलिये मैं तुम्हें इस्राएल में इकट्ठा करुँगा। [20]कारीगर चाँदी, काँसा, लोहा, सीसा और टीन को आग में डालते हैं। वे आग को अधिक गर्म करने के लिये फूँकते हैं। तब धातुओं का गलना आरम्भ हो जाता है। इसी प्रकार मैं तुम्हें अपनी आग में डालूँगा और तुम्हें पिघलाऊँगा। वह आग मेरा गरम क्रोध है। [21]मैं तुम्हें उस आग में डालूँगा और मैं अपने क्रोध की आग को फूँके मारुँगा और तुम्हारा पिघलना आरम्भ हो जाएगा। [22]चाँदी आग में पिघलती है और कारीगर चाँदी को ढालते हैं तथा बचाते हैं। इसी प्रकार तुम नगर में पिघलोगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ और तुम समझोगे कि मैंने तुम्हारे विरुद्ध अपने क्रोध को उंड़ेला है।'"

यहेजकेल यरूशलेम के विरुद्ध बोलता है

[23]यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [24]"मनुष्य के पुत्र, यरूशलेम से बातें करो। उससे कहो कि वह पवित्र नहीं है। मैं उस देश पर क्रोधित हूँ इसलिये उस देश ने अपनी वर्षा नहीं पाई है। [25]यरूशलेम में नबी बुरे कार्यक्रम बना रहे हैं। वे उस सिंह की तरह हैं जो उस समय गरजता है जब वह अपने पकड़े हुए जानवर को खाता है। उन नबियों ने बहुत से जीवन नष्ट किये हैं। उन्होंने अनेक कीमती चीजें ली हैं। उन्होंने यरूशलेम में अनेक स्त्रियों को विधवा बनाया।

[26]"याजकों ने सचमुच मेरे उपदेशों को हानि पहुँचाई है। वे मेरी पवित्र चीजों को ठीक-ठीक नहीं बरतते अर्थात् वे यह प्रकट नहीं करते कि वे महत्वपूर्ण हैं। वे पवित्र चीजों को अपवित्र चीजों की तरह बरतते हैं। वे शुद्ध चीजों को अशुद्ध चीजों की तरह बरतते हैं। वे लोगों को इनके विषय में शिक्षा नहीं देते। वे मेरे विशेष विश्राम के दिनों का सम्मान करने से इन्कार करते हैं। वे मुझे इस तरह लेते हैं मानों मैं महत्वपूर्ण नहीं हूँ।

[27]"यरूशलेम में प्रमुख उन भेड़िये के समान हैं जो अपने पकड़े जानवर को खा रहा है। वे प्रमुख केवल सम्पन्न बनने के लिये आक्रमण करते हैं और लोगों को मार डालते हैं।

[28]"नबी, लोगों को चेतावनी नहीं देते, वे सत्य को ढक देते हैं। वे उन कारीगरों के समान हैं जो दीवार को ठीक-ठीक दृढ़ नहीं बनाते वे केवल छेदों पर लेप कर देते हैं। उनका ध्यान केवल झूठ पर होता है। वे अपने जादू का उपयोग भविष्य जानने के लिये करते हैं, किन्तु वे केवल झूठ बोलते हैं। वे कहते हैं, 'मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं। किन्तु वे केवल झूठ बोल रहे हैं-यहोवा ने उनसे बातें नहीं की!'

[29]"सामान्य जनता एक दूसरे का लाभ उठाते हैं। वे एक दूसरे को धोखा देते और चोरी करते हैं। वे गरीब और असहाय व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं। वे विदेशियों को भी धोखा देते थे, मानों उनके विरुद्ध कोई नियम न हो!

[30]"मैंने लोगों से कहा कि तुम लोग अपना जीवन बदलो और अपने देशों की रक्षा करो। मैंने लोगों को दीवारों को दृढ़ करने के लिये कहा। मैं चाहता था कि वे दीवारों के छेदों पर खड़े रहें और अपने नगर की रक्षा करें। किन्तु कोई व्यक्ति सहायता के लिये नहीं आया! [31]अत: मैं अपना क्रोध प्रकट करुँगा, मैं उन्हें पूरी तरह नष्ट करूँगा! मैं उन्हें उन बुरे कामों के लिये दण्डित करुँगा जिन्हें उन्होंने किये हैं। यह सब उनका दोष है!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

23 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, शोमरोन और यरूशलेम के बारें में इस कहानी को सुनो। दो बहनें थीं। वे एक ही माँ की पुत्रियाँ थीं। [3]वे मिस्र में तब वेश्यायें हो गई जब छोटी लड़कियाँ हीं थीं। मिस्र में उन्होंने प्रथम प्रेम किया

और लोगों को अपने चुचुक और अपने नवोदित स्तनों को पकड़ने दिया। [4]बड़ी लड़की ओहोला नाम की थी और उसकी बहन का नाम ओहोलीबा था। वे मेरी हो गयीं और उनके पुत्र–पुत्रियाँ उत्पन्न हुयीं (ओहोला वस्तुत: शोमरोन है और ओहोलीबा वस्तुत: यरूशलेम है।)

[5]"तब ओहोला मेरे प्रति पतिव्रता नहीं रह गई। वह एक वेश्या की तरह रहने लगी। वह अपने प्रेमियों की चाह रखने लगी। उसने अश्शूर के सैनिकों को उनकी [6]नीली वर्दियों में देखा। वे सभी मन चाहे युवक घुड़सवार थे। वे प्रमुख और अधिकारी थे [7]और ओहोला ने अपने को उन सभी लोगों को अर्पित किया। वे सभी अश्शूर की सेना में विशिष्ट चुने सैनिक थे और उसने सभी को चाहा! वह उनकी गन्दी देवमूर्तियों के साथ गन्दी हो गई। [8]इसके अतिरिक्त उसने मिस्र से अपने प्रेम–व्यापार को भी बन्द नहीं किया। मिस्र ने उससे तब प्रेम किया जब वह किशोरी थी। मिस्र पहला प्रेमी था जिसने उसके नवजात स्तनों का स्पर्श किया। मिस्र ने उस पर अपने झूठे प्रेम की वर्षा की। [9]इसलिये मैंने उसके प्रेमियों को उसे भोगने दिया। वह अश्शूर को चाहती थी, इसलिये मैंने उसे उन्हें दे दिया! [10]उन्होंने उसके साथ बलात्कार किया। उन्होंने उसके बच्चों को लिया और उन्होंने तलवार चलाई और उसे मार डाला। उन्होंने उसे दण्ड दिया और स्त्रियाँ अब तक उसकी बातें करती हैं।

[11]"उसकी छोटी बहन ओहोलीबा ने इन सभी घटनाओं को घटित होते देखा। किन्तु ओहोलीबा ने अपनी बहन से भी अधिक पाप किये! वह ओहोला की तुलना में अधिक धोखेबाज थी। [12]यह अश्शूर के प्रमुखों और अधिकारियों को चाहती थी। वह नीली वर्दी में घोड़े पर सवार उन सैनिकों को चाहती थी। वे सभी चाहने योग्य युवक थे। [13]मैंने देखा कि वे दोनों स्त्रियाँ एक ही गलती से अपना जीवन नष्ट करने जा रही थीं।

[14]"ओहोलीबा मेरे प्रति धोखेबाज बनी रही। बाबुल में उसने मनुष्यों की तस्वीरों को दीवारों पर खुदे देखा। वे कसदी लोगों की तस्वीरें उनकी लाल पोशाकों में थीं। [15]उन्होंने कमर में पेटियाँ बांध रखी थीं और उनके सिर पर लम्बी पगड़ियाँ थीं। वे सभी रथ के अधिकारियों की तरह दिखते थे। वे सभी बाबुल की जन्मभूमि में उत्पन्न पुरूष ज्ञात होते थे। [16]ओहोलीबा ने उन्हें चाहा। उसने उनको आमंत्रित करने के लिये दूत भेजे। [17]इसलिये वे बाबुल के लोग उसकी प्रेम–शैया पर उसके साथ शारीरिक सम्बंध करने आये। उन्होंने उसका उपयोग किया और उसे इतना गन्दा कर दिया कि वह उनसे घृणा करने लगी!

[18]"ओहोलीबा ने सबको दिखा दिया कि वह धोखेबाज है। उसने इतने अधिक व्यक्तियों को अपने नंगे शरीर का उपभोग करने दिया कि मुझे उससे वैसी ही घृणा हो गई जैसी उसकी बहन के प्रति हो गई थी। [19]ओहोलीबा, बार–बार मुझसे धोखेबाजी करती रही और तब उसने अपने उस प्रेम–व्यापार को याद किया जो उसने किशोरावस्था में मिस्र में किया था। [20]उसने अपने प्रेमी के गधे जैसे लिंग और घोड़े के सदृश वीर्य–प्रवाह को याद किया।

[21]"ओहोलीबा, तुमने अपने उन दिनों को याद किया जब तुम युवती थीं, जब तुम्हारे प्रेमी तुम्हारे चुचुक को छूते थे और तुम्हारे नवजात स्तनों को पकड़ते थे। [22]अत: ओहोलीबा, मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: तुम अपने प्रेमियों से घृणा करने लगीं। किन्तु मैं तुम्हारे प्रेमियों को यहाँ लाऊँगा। वे तुम्हें घेर लेंगे। [23]मैं उन सभी लोगों को बाबुल से, विशेषकर कसदी लोगों को, लाऊँगा। मैं पकोद, शो और कोआ से लोगों को लाऊँगा और मैं उन सभी लोगों को अश्शूर से लाऊँगा। इस प्रकार मैं सभी प्रमुखों और अधिकारियों को लाऊँगा। वे सभी चाहने योग्य, रथपति विशेष योग्यता के लिये चुने घुड़सवार थे। [24]उन लोगों की भीड़ तुम्हारे पास आएगी। वे अपने घोड़ों पर सवार और अपने रथों पर आएंगे। लोग बड़ी संख्या में होंगे। उनके पास उनके भाले, उनकी ढालें और उनके सिर के सुरक्षा कवच होंगे। वे तुम्हारे चारों ओर इकट्ठे होंगे। मैं उन्हें बताऊँगा कि तुमने मेरे साथ क्या किया और वे अपनी तरह से तुम्हें दण्ड देंगे। [25]मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि मैं कितना ईर्ष्यालु हूँ। वे बहुत क्रोधित होंगे और तुम्हें चोट पहुँचायेंगे। वे तुम्हारी नाक और तुम्हारे कान काट लेंगे। वे तलवार चलाएंगे और तुम्हें मार डालेंगे। तब वे तुम्हारे बच्चों को ले जाएंगे और तुम्हारा जो कुछ बचा होगा उसे जला देंगे। [26]वे तुम्हारे अच्छे वस्त्र–आभूषण ले लेंगे [27]और मिस्र के साथ हुए तुम्हारे प्रेम–व्यापार के सपने को मैं रोक दूँगा। तुम उनकी प्रतीक्षा कभी नहीं करोगी। तुम फिर कभी मिस्र को याद नहीं करोगी!"

[28]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं तुमको उन लोगों को दे रहा हूँ, जिससे तुम घृणा करती हो। मैं

तुमको उन लोगों को दे रहा हूँ जिनसे तुम घृणा करने लगी थी [29]और वे दिखायेंगे कि वे तुमसे कितनी घृणा करते हैं! वे तुम्हारी हर एक चीज ले लेंगे जो तुमने कमाई है। वे तुम्हें रिक्त और नंगा छोड़ देंगे! लोग तुम्हारे पापों को स्पष्ट देखेंगे। वे समझेंगे कि तुमने एक वेश्या की तरह व्यवहार किया और बुरे सपने देखे। [30]तुमने वे बुरे काम तब किये जब तुमने मुझे उन अन्य राष्ट्रों का पीछा करने के लिये छोड़ा था। तुमने वे बुरे काम तब किये जब तुमने उनकी गन्दी देवमूर्तियों की पूजा करनी आरम्भ की। [31]तुमने अपनी बहन का अनुसरण किया और उसी की तरह रहीं। तुमने अपने आप विष का प्याला लिया और उसे अपने हाथों में उठाये रखा। तुमने अपना दण्ड स्वयं कमाया।" [32]मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा

"तुम अपनी बहन के विष के प्याले को पीओगी।
यह विष का प्याला लम्बा–चौड़ा है।
उस प्याले में बहुत विष (दण्ड) आता है।
लोग तुम पर हँसेंगे और व्यंग्य करेंगे।
[33] तुम मदमत्त व्यक्ति की तरह लड़खड़ाओगी।
तुम बहुत अस्थिर हो जाओगी।
वह प्याला विनाश और विध्वंस का है।
यह उसी प्याले (दण्ड) की तरह है
जिसे तुम्हारी बहन ने पीया।
[34] तुम उसी प्याले में विष पीओगी।
तुम उसकी अन्तिम बूंद तक उसे पीओगी।
तुम गिलास को फेंकोगी और उसके
टुकड़े कर डालोगी
और तुम पीड़ा से अपनी छाती विदीर्ण करोगी।
यह होगा क्योंकि मैं यहोवा और स्वामी हूँ
और मैंने वे बातें कहीं।

[35]"इस प्रकार, मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं, 'यरूशलेम, तुम मुझे भूल गए। तुमने मुझे दूर फेंका और मुझे पीछे छोड़ दिया। इसलिये तुम्हें मुझे छोड़ने और वेश्या की तरह रहने का दण्ड भोगना चाहिए। तुम्हें अपने दुष्ट सपनों के लिये कष्ट अवश्य पाना चाहिए।'"

ओहोला और ओहोलीबा के विरुद्ध निर्णय

[36]मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम ओहोला और ओहोलीबा का न्याय करोगे? तब उनको उन भंयकर बातों को बताओ जो उन्होंने किये। [37]उन्होंने व्यभिचार का पाप किया है। वे हत्या करने के अपराधी हैं। उन्होंने वेश्या की तरह काम किया, उन्होंने अपनी गन्दी देवमूर्तियों के साथ रहने के लिये मुझको छोड़ा। मेरे बच्चे उनके पास थे, किन्तु उन्होंने उन्हें आग से गुजरने के लिये विवश किया। उन्होंने अपनी गन्दी देवमूर्तियों को भोजन देने के लिये यह किया। [38]उन्होंने मेरे विश्राम के दिनों और पवित्र स्थानों को ऐसे लिया मानों वे महत्वपूर्ण न हों। [39]उन्होंने अपनी देवमूर्तियों के लिये अपने बच्चों को मार डाला और तब वे मेरे पवित्र स्थान पर गए और उसे भी गन्दा बनाया। उन्होंने यह मेरे मन्दिर के भीतर किया!

[40]"उन्होंने बहुत दूर के स्थानों से मनुष्यों को बुलाया है। इन व्यक्तियों को तुमने एक दूत भेजा और वे लोग तुम्हें देखने आए। तुम उनके लिये नहाई, अपनी आँखों को सजाया और अपने आभूषणों को पहना। [41]तुम सुन्दर बिस्तर पर बैठी, जिसके सामने मेज रखा था। तुमने मेरी सुगन्ध और मेरे तेल को इस मेज पर रखा।

[42]"यरूशलेम में शोर ऐसा सुनाई पड़ता था मानों दावत उड़ाने वाले लोगों का हो। दावत में बहुत लोग आये। लोग जब मरुभूमि से आते थे तो पहले से पी रहे होते थे। वे स्त्रियों को बाजूबन्द और सुन्दर मुकुट देते थे। [43]तब मैंने एक स्त्री से बातें कीं, जो व्यभिचार से शिथिल हो गई थी। मैंने उससे कहा, 'क्या वे उसके साथ व्यभिचार करते रह सकते हैं, और वह उनके साथ करती रह सकती है?' [44]किन्तु वे उसके पास वैसे ही जाते रहे जैसे वे किसी वेश्या के पास जा रहे हों। हाँ, वे उन दुष्ट स्त्रियाँ ओहोला और ओहोलीबा के पास बार–बार गए।

[45]"किन्तु अच्छे लोग उनका न्याय अपराधी के रूप में करेंगे। वे उन स्त्रियों का न्याय व्यभिचार का पाप करने वालियों और हत्यारिनों के रूप में करेंगे। क्यों? क्योंकि ओहोला और ओहोलीबा ने व्यभिचार का पाप किया है और उस रक्त से उनके हाथ अब भी रंगे हैं जिन्हें उन्होंने मार डाला था।"

[46]मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कही, "लोगों को एक साथ इकट्ठा करो। तब उन लोगों को ओहोला और ओहोलीबा को दण्ड देने दो। लोगों का यह समूह उन दोनों स्त्रियों को दण्डित करेगा तथा इनका मजाक उड़ाएगा। [47]तब वह समूह उन्हें पत्थर मारेगा और उन्हें मार डालेगा। तब वह समूह अपनी तलवारों से स्त्रियों के टुकड़े करेगा।

वे स्त्रियों के बच्चों को मार डालेंगे और उनके घर जला डालेंगे। [48]इस प्रकार मैं इस देश की लज्जा को धोऊँगा और सभी स्त्रियों को चेतावनी दी जाएगी कि वे वह लज्जाजनक काम न करें जो तुमने किया है। [49]वे तुम्हें उन दुष्ट कामों के लिये दण्डित करेंगे जो तुमने किया और तुम्हें अपनी गन्दी देवमूर्तियों की पूजा के लिये दण्ड मिलेगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा और स्वामी हूँ।"

पात्र और माँस

24 मेरे स्वामी यहोवा का वचन मुझे मिला। यह देश–निकाले के नवें वर्ष के दसवें महीने का दसवाँ दिन था। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, आज की तिथि और इस टिप्पणी को लिखो: 'आज बाबुल के राजा की सेना ने यरूशलेम को घेरा।' [3]यह कहानी उस परिवार से कहो जो (इस्राएल) आज्ञा मानने से इन्कार करे। उनसे ये बातें कहो। 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:

"'पात्र को आग पर रखो,
पात्र को रखो और उस में जल डालो।
[4] उसमें माँस के टुकड़े डालो,
हर अच्छे टुकड़े डालो,
जाँघे और कंधे।
पात्र को सर्वोत्तम हड्डियों से भरो।
[5] झुण्ड के सर्वोत्तम जानवर का उपयोग करो,
पात्र के नीचे ईंधन का ढेर लगाओ,
और माँस के टुकड़ों को पकाओ।
शोरवे को तब तक पकाओ
जब तक हड्डियाँ भी न पक जाय!
[6] इस प्रकार मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
"'यह यरूशलेम के लिये बुरा होगा।
यह हत्यारों से भरे नगर के लिये बुरा होगा।
यरूशलेम उस पात्र की तरह है
जिस पर जंख के दाग हों,
और वे दाग दूर न किये जा सकें!
वह पात्र शुद्ध नहीं है,
इसलिये माँस का हर एक टुकड़ा
पात्र से बाहर निकालो!
उस माँस को मत खाओ!
याजकों को उस बेकार माँस में से
कोई टुकड़ा मत चुनने दो!
[7] यरूशलेम एक जंख लगे पात्र की तरह है,
क्यों? क्योंकि हत्याओं का रक्त
वहाँ अब तक है!
उसने रक्त को खुली चट्टानों पर डाला है!
उसने रक्त को भूमि पर नहीं डाला
और इसे मिट्टी से नहीं ढका।
[8] मैंने उसका रक्त को खुली चट्टान पर डाला।
अत: यह ढका नहीं जाएगा।
मैंने यह किया, जिससे लोग क्रोधित हो,
और उसे निरपराध लोगों की
हत्या का दण्ड दें।'"
[9] अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
हत्यारों से भरे इस नगर के लिये यह बुरा होगा!
मैं आग के लिए बहुत सी
लकड़ी का ढेर बनाऊँगा
[10] पात्र के नीचे बहुत सा ईंधन डालो।
आग जलाओ।
अच्छी प्रकार माँस को पकाओ!
मसाले मिलाओ और हड्डियों को
जल जाने दो।
[11] तब पात्र को अंगारों पर खाली छोड़ दो।
इसे इतना तप्त होने दो कि
इसके दाग चमकने लगे।
वे दाग पिघल जाएंगे।
जंख नष्ट होगा।
[12] यरूशलेम अपने दागों को धोने का
कठोर प्रयत्न कर सकती है।
किन्तु वह जंख दूर नहीं होगा!
केवल आग (दण्ड) उस जंख को दूर करेगी!
[13] तुमने मेरे विरुद्ध पाप किया
और पाप से कंलकित हुई।
मैंने तुम्हें नहलाना चाहा
और तुम्हें स्वच्छ करना चाहा!
किन्तु दाग छूटे नहीं।
मैं तुमको फिर नहलाना नहीं चाहूँगा।
जब तक मेरा तप्त क्रोध
तुम्हारे प्रति समाप्त नहीं होता।

[14]"मैं यहोवा हूँ। मैंने कहा, तुम्हें दण्ड मिलेगा, और मैं इसे दिलाऊँगा। मैं दण्ड को रोकूँगा नहीं। मैं तुम्हारे

लिये दु:ख का अनुभव नहीं करूँगा। मैं तुम्हें उन बुरे पापों के लिये दण्ड दूँगा जो तुमने किये।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु

[15]तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [16]"मनुष्य के पुत्र, तुम अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करते हो किन्तु मैं उसे तुमसे दूर कर रहा हूँ। तुम्हारी पत्नी अचानक मरेगी। किन्तु तुम्हें अपना शोक प्रकट नहीं करना चाहिए। तुम्हें जोर से रोना नहीं चाहिए। तुम रोओगे और तुम्हारे आँसू गिरेंगे। [17]किन्तु तुम्हें अपना शोक–रूदन बहुत मन्द रखना चाहिए। अपनी मृत पत्नी के लिये जोर से न रोओ। तुम्हें सामान्य नित्य के वस्त्र पहनने चाहिए। अपनी पगड़ी और अपने जूते पहनो। अपने शोक को प्रकट करने के लिये अपनी मूँछे न ढको और वह भोजन न करो जो प्राय: किसी के मरने पर लोग करते हैं।"

[18]अगली सुबह मैंने लोगों को बताया कि परमेश्वर ने क्या कहा है। उसी शाम मेरी पत्नी मरी। अगली प्रात: मैंने वही किया जो परमेश्वर ने आदेश दिया था। [19]तब लोगों ने मुझसे कहा, "तुम यह काम क्यों कर रहे हो? इसका मतलब क्या है?"

[20]मैंने उनसे कहा, "यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने मुझसे, [21]इस्राएल के परिवार से कहने को कहा। मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, 'ध्यान दो, मैं अपने पवित्र स्थान को नष्ट करुँगा। तुम लोगों को उस पर गर्व है और तुम लोग उसकी प्रशंसा के गीत गाते हो। तुम्हें उस स्थान को देखने का प्रेम है। तुम सचमुच उस स्थान से प्रेम करते हो। किन्तु मैं उस स्थान को नष्ट करुँगा और तुम्हारे पीछे छूटे हुए तुम्हारे बच्चे युद्ध में मारे जाएंगे। [22]किन्तु तुम वही करोगे जो मैंने अपनी मृत पत्नी के बारे में किया है। तुम अपना शोक प्रकट करने के लिये अपनी मूँछे नहीं ढकोगे। तुम वह भोजन नहीं करोगे जो लोग प्राय: किसी के मरने पर खाते हैं। [23]तुम अपनी पगड़ियाँ और अपने जूते पहनोगे। तुम अपना शोक नहीं प्रकट करोगे। तुम रोओगे नहीं। किन्तु तुम अपने पाप के कारण बरबाद होते रहोगे। तुम चुपचाप अपनी आहें एक दूसरे के सामने भरोगे। [24]अत: यहेजकेल तुम्हारे लिये एक उदाहरण है। तुम वही सब करोगे जो इसने किया। दण्ड का यह समय आयेगा और तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

[25-26]"मनुष्य के पुत्र, मैं उस सुरक्षित स्थान यरूशलेम को लोगों से ले लूँगा। वह सुन्दर स्थान उनको आनन्दित करता है। उन्हें उस स्थान को देखने का प्रेम है। वे सचमुच उस स्थान से प्रेम करते हैं। किन्तु उस समय मैं नगर और उनके बच्चों को उन लोगों से ले लूँगा। बचने वालों में से एक यरूशलेम के बारे में बुरा सन्देश लेकर तुम्हारे पास आएगा। [27]उस समय तुम उस व्यक्ति से बातें कर सकोगे। तुम और अधिक चुप नहीं रह सकोगे। इस प्रकार तुम उनके लिये उदाहरण बनोगे। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

अम्मोन के विरुद्ध भविष्यवाणी

25 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, अम्मोन के लोगों पर ध्यान दो और मेरे लिये उनके विरुद्ध कुछ कहो। [3]अम्मोन के लोगों से कहो: 'मेरे स्वामी यहोवा का कथन सुनो! मेरा स्वामी यहोवा कहता है: तुम तब प्रसन्न थे जब मेरा पवित्र स्थान नष्ट हुआ था। तुम लोग तब इस्राएल देश के विरुद्ध थे जब यह दूषित हुआ था। तुम यहूदा के परिवार के विरुद्ध थे जब वे लोग बन्दी बनाकर ले जाए गए। [4]इसलिये मैं तुम्हें, पूर्व के लोगों को दूँगा। वे तुम्हारी भूमि लेंगे। उनकी सेनायें तुम्हारे देश में अपना डेरा डालेंगी। वे तुम्हारे बीच रहेंगे। वे तुम्हारे फल खाएंगे और तुम्हारा दूध पीएंगे।

[5]"'मैं रब्बा नगर को ऊँटों की चरागाह और अम्मोन देश को भेड़ों का बाड़ा बना दूँगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ। [6]यहोवा यह कहता है: तुम प्रसन्न थे कि यरूशलेम नष्ट हुआ। तुमने तालियाँ बजाई और पैरों पर थिरके। तुमने इस्राएल प्रदेश को अपमानित करने वाले मजाक किये। [7]अत: मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। तुम वैसी कीमती चीजों की तरह होगे जिन्हें सैनिक युद्ध में पाते हैं। तुम अपना उत्तराधिकार खो दोगे। तुम दूर देशों में मरोगे। मैं तुम्हारे देश को नष्ट करुँगा! तब तुम जानोगे कि मै यहोवा हूँ।'"

मोआब और सेईर के विरुद्ध भविष्यवाणी

[8]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "मोआब और सेईर (एदोम) कहते हैं, 'यहूदा का परिवार ठीक किसी अन्य राष्ट्र की तरह है। [9]मैं मोआब के कन्धे पर प्रहार

करूँगा, मैं इसके उन नगरों को लूँगा जो इसकी सीमा पर प्रदेश के गौरव, बेत्यशीमोत, बालमोन और किर्यातैम हैं। [10]तब मैं इन नगरों को पूर्व के लोगों को दूँगा। वे तुम्हारा प्रदेश लेंगे और मैं पूर्व के लोगों को अम्मोन को नष्ट करने दूँगा। तब हर एक व्यक्ति भूल जाएगा कि अम्मोन के लोग एक राष्ट्र थे। [11]इस प्रकार मैं मोआब को दण्ड दूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।'"

एदोम के विरुद्ध भविष्यवाणी

[12]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "एदोम के लोग यहूदा के परिवार के विरुद्ध उठ खड़े हुए और उससे बदला लेना चाहा। एदोम के लोग दोषी हैं।" [13]इसलिये मेरा स्वामी यहोवा कहता है: "मैं एदोम को दण्ड दूँगा। मैं एदोम के लोगों और जानवरों को नष्ट करूँगा। मैं एदोम के पूरे देश को तेमान से ददान तक नष्ट करूँगा। एदोमी युद्ध में मारे जाएंगे। [14]मैं अपने लोगों, इस्राएल का उपयोग करुँगा और एदोम के विरुद्ध भी होऊँगा। इस प्रकार इस्राएल के लोग मेरे क्रोध को एदोम के विरुद्ध प्रकट करेंगे। तब एदोम के लोग समझेंगे कि मैंने उनको दण्ड दिया।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

पलिश्तियों के विरुद्ध भविष्यवाणी

[15]मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा, "पलिश्तियों ने भी बदला लेने का प्रयत्न किया। वे बहुत क्रूर थे। उन्होंने अपने क्रोध को अपने भीतर अत्याधिक समय तक जलते रखा।" [16]इसलिये मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, "मैं पलिश्तियों को दण्ड दूँगा। हाँ, मैं करेत से उन लोगों को नष्ट करुँगा। मैं समुद्र–तट पर रहने वाले उन लोगों को पूरी तरह नष्ट करुँगा। [17]मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा, मैं उन से बदला लूँगा। मैं अपने क्रोध द्वारा उन्हें एक सबक सिखाऊँगा तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!"

सोर के बारे में दुःखद समाचार

26 देश–निकाले के ग्यारहवें वर्ष में, महीने के पहले दिन, यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, सोर ने यरूशलेम के विरुद्ध बुरी बातें कहीं: आहा! लोगों की रक्षा करने वाला नगर–द्वार नष्ट हो गया है! नगर–द्वार मेरे लिये खुला है। नगर (यरूशलेम) नष्ट हो गया है, अत: मैं इससे बहुत सी बहुमूल्य चीजें ले सकता हूँ!"

[3]इसलिये मेरा स्वामी यहोवा कहता है: "सोर, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ! मैं तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिये कई राष्ट्रों को लाऊँगा। वे समुद्र तट की लहरों की तरह बार–बार आएंगे।"

[4]परमेश्वर ने कहा, "शत्रु के वे सैनिक सोर की दीवारों को नष्ट करेंगे और उनके स्तम्भों को गिरा देंगे। मैं भी उसकी भूमि से ऊपर की मिट्टी को खुरच दूँगा। मैं सोर को चट्टान मात्र बना डालूँगा। [5]सोर समुद्र के किनारे मछलियों के जालों को फैलाने का स्थान मात्र रह जाएगा। मैंने यह कह दिया है!" मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "सोर उन बहुमूल्य वस्तुओं की तरह होगा जिन्हें सैनिक युद्ध में पाते हैं। [6]मूल प्रदेश में उसकी पुत्रियाँ (छोटे नगर) युद्ध में मारी जाएंगी। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

नबूकदनेस्सर सोर पर आक्रमण करेगा

[7]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं सोर के विरुद्ध उत्तर से एक शत्रु लाऊँगा। बाबुल का महान राजा नबूकदनेस्सर शत्रु है! वह एक विशाल सेना लाएगा। उसमें घोड़े, रथ, घुड़सवार सैनिक, और अत्याधिक संख्या में अन्य सैनिक होंगे। वे सैनिक विभिन्न राष्ट्रों से होंगे। [8]नबूकदनेस्सर मूल–प्रदेश में तुम्हारी पुत्रियों (छोटे नगर) को मार डालेगा। वह तुम्हारे नगरों पर आक्रमण करने के लिये मीनारें बनाएगा! वह तुम्हारे नगर के चारों ओर कच्ची सड़क बनाएगा! वह एक कच्ची सड़क दीवार तक पहुँचाने वाली बनाएगा। [9]वह तुम्हारी दीवारों को तोड़ने के लिये लट्ठे लाएगा। वह कुदालियों का उपयोग करेगा और तुम्हारी मीनारों को तोड़ गिराएगा। [10]उसके घोड़े इतनी बड़ी संख्या में होंगे कि उनकी टापों से उठी धूलि तुम्हें ढक लेगी। तुम्हारी दीवारें घुड़सवार सैनिकों, बन्द गाड़ियों और रथों की आवाज से काँप उठेगी। जब बाबुल का राजा नगर–द्वार से नगर में प्रवेश करेगा। हाँ, वे तुम्हारे नगर में आएंगे क्योंकि इसकी दीवारें गिराई जाएंगी। [11]बाबुल का राजा तुम्हारे नगर से घोड़े पर सवार होकर निकलेगा। उसके घोड़ों की टाप तुम्हारी सड़कों को कुचलती हुई आएगी। वह तुम्हारे लोगों को तलवार से मार डालेगा। तुम्हारे नगर की दृढ़ स्तम्भ–पंक्तियाँ धराशायी होंगी। [12]नबूकदनेस्सर के

सैनिक तुम्हारी सम्पत्ति ले जाएंगे। वे उन चीजों को ले जाएंगे जिन्हें तुम बेचना चाहते हो। वे तुम्हारी दीवारों को ध्वस्त करेंगे और तुम्हारे सुन्दर भवनों को नष्ट करेंगें। वे तुम्हारे पत्थरों और लकड़ियों के घरों को कूड़े की तरह समुद्र में फेंक देंगे। [13]इस प्रकार मैं तुम्हारे आनन्द गीतों के स्वर को बन्द कर दूँगा। लोग तुम्हारी वीणा को भविष्य में नहीं सुनेंगे। [14]मैं तुमको नंगी चट्टान मात्र कर दूँगा। तुम समुद्र के किनारे मछलियों के जालों को फैलाने के स्थान रह जाओगे। तुम्हारा निर्माण फिर नहीं होगा। क्यों? क्योंकि मैं, यहोवा ने यह कहा है!" मेरे स्वामी यहोवा ने वे बातें कहीं।

अन्य राष्ट्र सोर के लिये रोयेंगे

[15]मेरा स्वामी यहोवा सोर से यह कहता है: "भूमध्य सागर के तट से लगे देश तुम्हारे पतन की ध्वनि से काँप उठेंगे। यह तब होगा जब तुम्हारे लोग चोट खाएंगे और मारे जाएंगे। [16]तब समुद्र तट के देशों के सभी प्रमुख अपने सिंहासनों से उतरेंगे और अपना दु:ख प्रकट करेंगे। वे अपनी विशेष पोशाक उतारेंगे। वे अपने सुन्दर वस्त्रों को उतारेंगे। तब वे अपने काँपने के वस्त्र (भय) पहनेंगे। वे भूमि पर बैठेंगे और भय से काँपेंगे। वे इस पर शोकग्रस्त होंगे कि तुम इतने शीघ्र कैसे नष्ट हो गए। [17]वे तुम्हारे विषय में यह करुण गीत गायेंगे:

'हे सोर, तुम प्रसिद्ध नगर थे
समुद्र पार से लोग तुम पर बसने आए।
तुम प्रसिद्ध थे,
किन्तु अब तुम कुछ नहीं हो।
तुम सागर पर शक्तिशाली थे, और वैसे ही
तुम में निवास करने वाले व्यक्ति थे!
तुमने विशाल भू–पर रहने वाले
सभी लोगों को भयभीत किया।

[18] अब जिस दिन तुम्हारा पतन होता है,
समुद्र तट से लगे देश भय से कंपित होंगे।
तुमने समुद्र तट के सहारे कई उपनिवेश बनाए,
अब वे लोग भयभीत होंगे,
जब तुम नहीं रहोगे!'"

[19]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "सोर, मैं तुम्हें नष्ट करुँगा और तुम एक प्राचीन खाली नगर हो जाओगे। वहाँ कोई नहीं रहेगा। मैं समुद्र को तुम्हारे ऊपर बहाऊँगा। विशाल समुद्र तुम्हें ढक लेगा। [20]मैं तुम्हें नीचे उस गहरे अधोगर्त में भेजूँगा, जिस स्थान पर मरे हुए लोग हैं। तुम उन लोगों से मिलोगे जो बहुत पहले मर चुके। मैं तुम्हें उन सभी प्राचीन और खाली नगरों की तरह पाताल लोक में भेजूँगा। तुम उन सभी अन्य लोगों के साथ होगे जो कब्र में जाते हैं। तुम्हारे साथ तब कोई नहीं रहेगा। तुम फिर कभी जीवितों के प्रदेश में नहीं रहोगे! [21]अन्य लोग उससे डरेंगे जो तुम्हारे साथ हुआ। तुम समाप्त हो जाओगे! लोग तुम्हारी खोज करेंगे, किन्तु तुमको फिर कभी पाएंगे नहीं!" मेरा स्वामी यहोवा यही कहता है।

सोर समुद्र पर व्यापार का महान केन्द्र

27 यहोवा का वचन मुझे फिर मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, सोर के बारे में यह करुण–गीत गाओ। [3]सोर के बारे में यह कहो:

'सोर, तुम समुद्र के द्वार हो।
तुम अनेक राष्ट्रों के लिये व्यापारी हो,
तुम समुद्र तट के सहारे के अनेक
देशों की यात्रा करते हो।
मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है।
सोर तुम सोचते हो कि
तुम इतने अधिक सुन्दर हो!
तुम सोचते हो कि तुम पूर्णत: सुन्दर हो!

[4] भूमध्य सागर तुम्हारे नगर के चारों
ओर सीमा बनाता है।
तुम्हारे निर्माताओं ने तुम्हें पूर्णत: सुन्दर बनाया।
तुम उन जहाजों की तरह हो
जो तुम्हारे यहाँ से यात्रा पर जाती हैं।

[5] तुम्हारे निर्माताओं ने, सनीर पर्वत से
सनौवर के पेड़ों का उपयोग,
तुम्हारे सभी तख्तों को बनाने के लिये किया।
उन्होंने लबानोन से देवदार
वन का उपयोग,
तुम्हारे मस्तूल को बनाने के लिये किया।

[6] उन्होंने बाशान से बांज वृक्ष का उपयोग,
तुम्हारे पतवारों को बनाने के लिये किया।
उन्होंने सनौवर से चीड़ वृक्ष का उपयोग,
तुम्हारे जहाजी फर्श के कमरे के लिये किया,
और उन्होंने इस निवास को

हाथी–दाँत से सजाया।
7 तुम्हारे पाल के लिये
उन्होंने मिस्र में बने रंगीन
सूती वस्त्र का उपयोग किया।
पाल तुम्हारा झंड़ा था।
कमरे के लिये तुम्हारे पर्दे नीले
और बैंगनी थे।
वे सनौवर के समुद्र तट से आते थे।
8 सीदोन और अर्वद के निवासियों ने
तुम्हारे लिये तुम्हारी नावों को खेया।
सोर तुम्हारे बुद्धिमान व्यक्ति
तुम्हारे जहाजों के चालक थे।
9 गबल के अग्रज प्रमुख और बुद्धिमान व्यक्ति
जहाज के तख्तों के बीच कल्किन* लगाने
में सहायता के लिये जहाज पर थे।
समुद्र के सारे जहाज और उनके चालक
तुम्हारे साथ व्यापार और
वाणिज्य करने आते थे।'

[10]"फारस, लूद और पूत के लोग तुम्हारी सेना में थे। वे तुम्हारे युद्ध के सैनिक थे। उन्होंने अपनी ढालें और सिर के कवच तुम्हारी दीवारों पर लटकाये थे। उन्होंने तुम्हारे नगर के लिये सम्मान और यश कमाया। [11]अर्वद के व्यक्ति तुम्हारे नगर के चारों ओर की दीवार पर रक्षक के रूप में खड़े थे। गम्मत के व्यक्ति तुम्हारी मीनारों में थे। उन्होंने तुम्हारे नगर के चारों ओर की दीवारों पर अपनी ढाले टाँगी। उन्होंने तुम्हारी सुन्दरता को पूर्ण किया।

[12]"तर्शीश तुम्हारे सर्वोत्तम ग्राहकों में से एक था। वे तुम्हारी सभी अद्‌भुत विक्रय वस्तुओं के बदले चाँदी, लोहा, टीन और सीसा देते थे। [13]यावान, तूबल, मेशेक और काले सागर के चारों ओर के क्षेत्र के लोग तुम्हारे साथ व्यापार करते थे। वे तुम्हारी विक्रय चीजों के बदले गुलाम और काँसा देते थे। [14]तोगर्मा राष्ट्र के लोग घोड़े, युद्ध अश्व और खच्चर उन चीजों के बदले में देते थे जिन्हें तुम बेचते थे। [15]ददान के लोग तुम्हारे साथ व्यापार करते थे। तुम अपनी चीजों को अनेक स्थानों पर बेचते थे। लोग तुमको भुगतान करने के लिये हाथी दाँत और आबनूस की लकड़ी लाते थे। [16]एदोम तुम्हारे साथ व्यापार करता था क्योंकि तुम्हारे पास बहुत सी अच्छी चीजें थीं। एदोम के लोग नीलमणि, बैंगनी वस्त्र, बारीक कढ़ाई के काम, बारीक सूती, मूंगा और लाल तुम्हारी विक्रय चीजों के बदले देते थे।

[17]"यहूदा और इस्राएल के लोगों ने तुम्हारे साथ व्यापार किया। उन्होंने तुम्हारी विक्रय चीजों के लिये भुगतान में गेहूँ, जैतून, अगाती, अंजीर, शहद, तेल और मलहम दिये। [18]दमिश्क एक अच्छा ग्राहक था। वे तुम्हारे पास की अद्‌भुत चीजों के लिये व्यापार करते थे। वे हेलबोन से दाखमधु का व्यापार करते थे और उन चीजों के लिये सफेद ऊन लेते थे। [19]जो चीजें तुम बेचते थे उनसे दमिश्क उजला से दाखमधु मंगाने का व्यापार करता था। वे उन चीजों के भुगतान में तैयार लोहा, कस्सिय और गन्ना देते थे। [20]ददान अच्छा धन्धा प्रदान करता था। वे तुम्हारे साथ काठी के वस्त्र और सवारी के घोड़ों का व्यापार करते थे। [21]अरब और केदार के सभी प्रमुख मेमने, भेड़ और बकरियाँ तुम्हारी विक्रय की गई वस्तुओं के लिये देते थे। [22]शबा और रामा के व्यापारी तुम्हारे साथ व्यापार करते थे। वे सर्वोत्तम मसाले, हर प्रकार के रत्न और सोना तुम्हारी विक्रय की गई चीजों के लिये देते थे। [23]हारान, कन्ने, एदेन तथा शबा, अश्शूर, कलमद के व्यापारी तुम्हारे साथ व्यापार करते थे। [24]उन्होंने सर्वोत्तम कपड़ों, बारीक कढ़े हुए और नीले वस्त्र, रंग–बिरंगे कालीन, अच्छी बटी रस्सियाँ और देवदार की लकड़ी से बने सामान भुगतान में दिये। ये वे चीजें थीं जिनसे उन्होंने तुम्हारे साथ व्यापार किया। [25]तर्शीश के जहाज उन चीजों को ले जाते थे जिन्हें तुम बेचते थे।

'सोर, तुम उन व्यापारी बेड़ों में से एक की तरह हो,
तुम समुद्र पर बहुमूल्य वस्तुओं से लदे हुये हो।
26 वे व्यक्ति जो तुम्हारी नावों को खेते थे।
तुम्हें विशाल और शक्तिशाली
समुद्रों के पार ले गए।
किन्तु शक्तिशाली पुरवाई
तुम्हारे जहाजों को समुद्र में नष्ट करेगी
27 और तुम्हारी सारी सम्पत्ति समुद्र में डूब जाएगी।
तुम्हारी सम्पत्ति, तुम्हारा व्यापार,
और विक्रय चीजें,
तुम्हारे मल्लाह और तुम्हारे चालक,

कल्किन तारकोल की तरह कोई चीज जिसे जहाज को पानी–प्रवेश से सुरक्षित रखने के लिये उपयोग में लाते थे जिससे वह डूबे नहीं।

तुम्हारे व्यक्ति जो,
तुम्हारे जहाज पर तख्तों के बीच में
कल्किन लगाते हैं,
तुम्हारे मल्लाह और
तुम्हारे नगर के सभी सैनिक और
तुम्हारे नाविक
सारे समुद्र में डूब जाएंगे।
यह उसी दिन होगा जिस दिन तुम नष्ट होगे!

28 तुमने अपने व्यापारियों को बहुत
दूर के स्थानों में भेजा।
वे स्थान भय से काँप उठेंगे,
जब वे तुम्हारे चालकों का चिल्लाना सुनेंगे!

29 तुम्हारे सारे नाविक जहाज से कूदेंगे।
मल्लाह और चालक जहाज से कूदेंगे,
और तट पर तैर आएंगे।

30 वे तुम्हारे बारे में बहुत दु:खी होंगे।
वे रो पड़ेंगे।
वे अपने सिरों पर धूली डालेंगे।
वे राख में लोटेंगे।

31 वे तुम्हारे लिए सिर पर उस्तरा फिरायेंगे।
वे शोक–वस्त्र पहनेंगे।
वे तुम्हारे लिये रोये–चिल्लायेंगे।
वे किसी ऐसे रोते हुए के समान होंगे,
जो किसी के मरने पर रोता है।

32 "वे अपने फूट–फूट कर रोने के समय तुम्हारे बारे में यह शोक गीत गायेंगे और रोयेंगे:

'कोई सोर की तरह नहीं है!
सोर नष्ट कर दिया गया,
समुद्र के बीच में!

33 तुम्हारे व्यापारी समुद्रों के पार गए।
तुमने अनेक लोगों को,
अपनी विशाल सम्पत्ति
और विक्रय वस्तुओं से सन्तुष्ट किया।
तुमने भूमि के राजाओं को सम्पन्न बनाया!

34 किन्तु अब तुम समुद्रों द्वारा टूटे हो
और गहरे जल द्वारा भी।
सभी चीजें जो तुम बेचते हो,
और तुम्हारे सभी व्यक्ति नष्ट हो चुके हैं!

35 समुद्र तट के निवासी सभी व्यक्ति
तुम्हारे लिये शोकग्रस्त हैं।
उनके राजा भयानक रूप से डरे हैं।
उनके चेहरे से शोक झांकता है।

36 अन्य राष्ट्रों के व्यापारी तुम पर छींटा कसते हैं।
जो घटनायें तुम्हारे साथ घटीं,
लोगों को भयभीत करेगी।
क्यों? क्योंकि तुम अब समाप्त हो।
तुम भविष्य में नहीं रहोगे।'"

सोर अपने को परमेश्वर समझता है

28 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2 "मनुष्य के पुत्र, सोर के राजा से कहो। मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:

'तुम बहुत घमण्डी हो!
और तुम कहते हो
"मैं परमेश्वर हूँ।!
मैं समुद्रों के मध्य में देवताओं के
आसन पर बैठता हूँ।'
किन्तु तुम व्यक्ति हो, परमेश्वर नहीं!
तुम केवल सोचते हो कि तुम परमेश्वर हो।

3 तुम सोचते हो तुम दानिय्येल से बुद्धिमान हो!
तुम समझते हो कि तुम सारे
रहस्यों को जान लोगे!

4 अपनी बुद्धि और अपनी समझ से।
तुमने सम्पत्ति स्वयं कमाई है
और तुमने अपने कोषागार में
सोना–चाँदी रखा है।

5 अपनी तीव्र बुद्धि और व्यापार से
तुमने अपनी सम्पत्ति बढ़ाई है,
और अब तुम उस सम्पत्ति के
कारण गर्वीले हो।

6 अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
सोर, तुमने सोचा तुम परमेश्वर की तरह हो।

7 मैं अजनबियों को तुम्हारे विरुद्ध
लड़ने के लिये लाऊँगा।
वे राष्ट्रों में बड़े भंयकर हैं!
वे अपनी तलवारें बाहर खीचेंगे
और उन सुन्दर चीजों के विरुद्ध चलाएंगे
जिन्हें तुम्हारी बुद्धि ने कमाया।

वे तुम्हारे गौरव को ध्वस्त करेंगे।
8 वे तुम्हें गिराकर कब्र में पहुँचाएंगे।
तुम उस मल्लाह की तरह होगे
जो समुद्र में मरा।
9 वह व्यक्ति तुमको मार डालेगा।
क्या अब भी तुम कहोगे, "मैं परमेश्वर हूँ?"
उस समय वह तुम्हें अपने अधिकार में करेगा।
तुम समझ जाओगे कि
तुम मनुष्य हो, परमेश्वर नहीं!
10 अजनबी तुम्हारे साथ विदेशी
जैसा व्यवहार करेंगे,
और तुमको मार डालेंगे।
ये घटनाएँ होंगी क्योंकि
मेरे पास आदेश–शक्ति है!'"
मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

11यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 12"मनुष्य के पुत्र, सोर के राजा के बारे में करुण गीत गाओ। उससे कहो, 'मेरे स्वामी यहोवा यह कहता है:

तुम आदर्श पुरुष थे,
तुम बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण थे,
तुम पूर्णत: सुन्दर थे,
13 तुम एदेन में थे
परमेश्वर के उद्यान में
तुम्हारे पास हर एक बहुमूल्य रत्न थे
लाल, पुखराज, हीरे,
फिरोजा, गोमेद और जस्पर
नीलम, हरितमणि और नीलमणि
और ये हर एक रत्न सोने में जड़े थे।
तुमको यह सौन्दर्य प्रदान किया गया था
जिस दिन तुम्हारा जन्म हुआ था।
परमेश्वर ने तुम्हें शक्तिशाली बनाया।
14 तुम चुने गए करुब (स्वर्गदूत) थे।
तुम्हारे पंख मेरे सिंहासन पर फैले थे
और मैंने तुमको परमेश्वर के
पवित्र पर्वत पर रखा।
तुम उन रत्नों के बीच चले
जो अग्नि की तरह कौंधते थे।
15 तुम अच्छे और ईमानदार थे
जब मैंने तुम्हें बनाया।
किन्तु इसके बाद तुम बुरे बन गए।
16 तुम्हारा व्यापार तुम्हारे पास
बहुत सम्पत्ति लाता था।
किन्तु उसने भी तुम्हारे भीतर क्रूरता
उत्पन्न की और तुमने पाप किया।
अत: मैंने तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार किया
मानों तुम गन्दी चीज हो।
मैंने तुम्हें परमेश्वर के पर्वत से फेंक दिया।
तुम विशेष करुब (स्वर्गदूतों) में से एक थे,
तुम्हारे पंख फैले थे मेरे सिंहासन पर
किन्तु मैंने तुम्हें आग की तरह कौंधने वाले
रत्नों को छोड़ने को विवश किया।
17 तुम अपने सौन्दर्य के कारण घमण्डी हो गए,
तुम्हारे गौरव ने तुम्हारी
बुद्धिमत्ता को नष्ट किया,
इसलिये मैंने तुम्हें धरती पर ला फेंका,
और अब अन्य राजा तुम्हें
आँख फाड़ कर देखते हैं।
18 तुमने अनेक गलत काम किये,
तुम बहुत कपटी व्यापारी थे।
इस प्रकार तुमने पवित्र स्थानों को
अपवित्र किया,
इसलिये मैं तुम्हारे ही भीतर से अग्नि लाया,
इसने तुमको जला दिया,
तुम भूमि पर राख हो गए।
अब हर कोई तुम्हारी लज्जा देख सकता है।
19 अन्य राष्ट्रों में सभी लोग,
जो तुम पर घटित हुआ,
उसके बारे में शोकग्रस्त थे।
जो तुम्हें हुआ, वह लोगों को भयभीत करेगा।
तुम समाप्त हो गये हो!'"

सीदोन के विरुद्ध सन्देश

20यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 21"मनुष्य के पुत्र, सीदोन पर ध्यान दो और मेरे लिये उस स्थान के विरुद्ध कुछ कहो। 22कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:

"'सीदोन, मैं तेरे विरुद्ध हूँ!
तुम्हारे लोग मेरा सम्मान करना सीखेंगे,

मैं सीदोन को दण्ड दूँगा,
तब लोग समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ।
तब वे समझेंगे कि मैं पवित्र हूँ
और वे मुझको उस रूप में लेंगे।
23 मैं सीदोन में रोग और मृत्यु भेजूँगा,
नगर के बाहर तलवार (शत्रु सैनिक)
उस मृत्यु को लायेगी।
तब वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ!'"

राष्ट्र इस्राएल का मजाक उड़ाना बन्द करेंगे।

24"'अतीत काल में इस्राएल के चारों ओर के देश उससे घृणा करते थे। किन्तु उन अन्य देशों के लिये बुरी घटनायें घटेंगी। कोई भी तेज काँटे या कंटीली झाड़ी इस्राएल के परिवार को घायल करने वाली नहीं रह जाएगी। तब वे जानेंगे कि मैं उनका स्वामी यहोवा हूँ।'"

25मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैंने इस्राएल के लोगों को अन्य राष्ट्रों में बिखेर दिया। किन्तु मैं फिर इस्राएल के परिवार को एक साथ इकट्ठा करूँगा। तब वे राष्ट्र समझेंगे कि मैं पवित्र हूँ और वे मुझे उसी रूप में लेंगे। उस समय इस्राएल के लोग अपने देश में रहेंगे अर्थात जिस देश को मैंने अपने सेवक याकूब को दिया। 26वे उस देश में सुरक्षित रहेंगे। वे घर बनायेंगे तथा अंगूर की बेलें लगाएंगे। मैं उसके चारों ओर के राष्ट्रों को दण्ड दूँगा जिन्होंने उससे घृणा की। तब इस्राएल के लोग सुरक्षित रहेंगे। तब वे समझेंगे कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ।"

मिस्र के विरुद्ध सन्देश

29 देश निकाले के दसवें वर्ष के दसवें महीने (जनवरी) के बारहवें दिन मेरे स्वामी यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, मिस्र के राजा फिरौन की ओर ध्यान दो, मेरे लिये उसके तथा मिस्र के विरुद्ध कुछ कहो। 3कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:

मिस्र के राजा फिरौन, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ।
तुम नील नदी के किनारे
विश्राम करते हुए विशाल दैत्य हो।
तुम कहते थे,
"यह मेरी नदी है! मैंने यह नदी बनाई है!"
4-5 किन्तु मैं तुम्हारे जबड़े में आँकड़े दूँगा।
नील नदी की मछलियाँ
तुम्हारी चमड़ी से चिपक जाएंगी।
मैं तुमको और तुम्हारी मछलियाँ को
तुम्हारी नदियों से बाहर कर सूखी
भूमि पर फेंक दूँगा, तुम धरती पर गिरोगे,
और कोई न तुम्हें उठायेगा, न ही दफनायेगा।
मैं तुम्हें जंगली जानवरों और पक्षियों को दूँगा,
तुम उनके भोजन बनोगे।
6 तब मिस्र में रहने वाले सभी लोग–
जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!
मैं इन कामों को क्यों करूँगा?
क्योंकि इस्राएल के लोग सहारे के लिये
मिस्र पर झुके, किन्तु मिस्र
केवल दुर्बल घास का तिनका निकला।
7 इस्राएल के लोग सहारे के लिये
मिस्र पर झुके और मिस्र ने केवल
उनके हाथों और कन्धों को विदीर्ण किया।
वे सहारे के लिये तुम पर झुके किन्तु तुमने
उनकी पीठ को तोड़ा और मरोड़ दिया।'"
8 इसलिये मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
"मैं तुम्हारे विरुद्ध तलवार लाऊँगा।
मैं तुम्हारे सभी लोगों और
जानवरों को नष्ट करुँगा।
9 मिस्र खाली और नष्ट हो जाएगा।
तब वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

परमेश्वर ने कहा, "मैं वे काम क्यों करूँगा? क्योंकि तुमने कहा, 'यह मेरी नदी है। मैंने इस नदी को बनाया।' 10अत: मैं (परमेश्वर) तुम्हारे विरुद्ध हूँ। मैं तुम्हारी नील नदी की कई शाखाओं के विरुद्ध हूँ। मैं मिस्र को पूरी तरह नष्ट करूँगा। मिग्दोल से सवेन तक तथा जहाँ तक कूश की सीमा है, वहाँ तक नगर खाली होंगे। 11कोई व्यक्ति या जानवर मिस्र से नहीं गुजरेगा। कोई व्यक्ति या जानवर मिस्र में चालीस वर्ष तक नहीं रहेगा। 12मैं मिस्त्र देश को उजाड़ कर दूँगा और उसके नगर चालीस वर्ष तक उजाड़ रहेंगे। मैं मिस्रियों को राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। मैं उन्हें विदेशों में बसा दूँगा।"

13मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं मिस्र के लोगों को कई राष्ट्रों में बिखेरूँगा। किन्तु चालीस वर्ष के अन्त में फिर मैं उन लोगों को एक साथ इकट्ठा करूँगा। 14मैं

मिस्र के बंदियों को वापस लाऊँगा। मैं मिस्रियों को पत्रास के प्रदेश में, जहाँ वे उत्पन्न हुए थे, वापस लाऊँगा। किन्तु उनका राज्य महत्वपूर्ण नहीं होगा। [15]यह सबसे कम महत्वपूर्ण राज्य होगा। मैं इसे फिर अन्य राष्ट्रों से ऊपर कभी नहीं उठाऊँगा। मैं उन्हें इतना छोटा कर दूँगा कि वे राष्ट्रों पर शासन नहीं कर सकेंगे [16]और इस्राएल का परिवार फिर कभी मिस्र पर आश्रित नहीं रहेगा। इस्राएली अपने पाप को याद रखेंगे। वे याद रखेंगे कि वे सहायता के लिये मिस्र की ओर मुड़े, परमेश्वर की ओर नहीं और वे समझेंगे कि मैं यहोवा और स्वामी हूँ।"

बाबुल मिस्र को लेगा

[17]देश निकाले के सत्ताईसवें वर्ष के पहले महीने (अप्रैल) के पहले दिन यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [18]"मनुष्य के पुत्र, बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने सोर के विरुद्ध अपनी सेना को भीषण युद्ध में लगाया। उन्होंने हर एक सैनिक के बाल कटवा दिये। भारी वजन ढोने के कारण हर एक कंधा रगड़ से नंगा हो गया। नबूकदनेस्सर और उसकी सेना ने सोर को हराने के लिये कठिन प्रयत्न किया। किन्तु वे उन कठिन प्रयत्नों से कुछ पा न सके।" [19]अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को मिस्र देश दूँगा और नबूकदनेस्सर मिस्र के लोगों को ले जाएगा। नबूकदनेस्सर मिस्र की कीमती चीजों को ले जाएगा। यह नबूकदनेस्सर की सेना का वेतन होगा। [20]मैंने नबूकदनेस्सर को मिस्र देश उसके कठिन प्रयत्न के पुरस्कार के रूप में दिया है। क्यों? क्योंकि उन्होंने मेरे लिये काम किया!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

[21]"उस दिन मैं इस्राएल के परिवार को शक्तिशाली बनाऊँगा और तुम्हारे लोग मिस्रियों का मजाक उड़ाएंगे। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

बाबुल की सेना मिस्र पर आक्रमण करेगी

30 यहोवा का वचन मुझे फिर मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, मेरे लिए कुछ कहो। कहो, मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:

रोओ और कहो,
वह भंयकर दिन आ रहा है।
[3] वह दिन समीप है!
हाँ, न्याय करने का यहोवा का दिन समीप है।
यह एक दुर्दिन होगा।
यह राष्ट्रों के साथ न्याय
करने का समय होगा!
[4] मिस्र के विरुद्ध तलवार आएगी!
कूश के लोग भय से काँप उठेंगे,
जिस समय मिस्र का पतन होगा।
बाबुल की सेना मिस्र के लोगों को
बन्दी बना कर ले जाएगी।
मिस्र की नींव उखड़ जाएगी!

[5]"'अनेक लोगों ने मिस्र से शान्ति–सन्धि की। किन्तु कूश, पूत, लूद, समस्त अरब, कूब और इस्राएल के सभी लोग नष्ट होंगे!

[6] मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
हाँ, जो मिस्र की सहायता करते हैं
उनका पतन होगा!
उसकी शक्ति का गर्व नीचा होगा।
मिस्र के लोग युद्ध में मारे जाएंगे
मिग्दोल से लेकर सवेन तक के।
मेरे स्वामी यहोवा ने वे बातें कहीं!
[7] मिस्र उन देशों में मिल जाएगा
जो नष्ट कर दिए गए।
मिस्र उन खाली देशों में से एक होगा।
[8] मैं मिस्र में आग लगाऊँगा
और उसके सभी सहायक नष्ट हो जायेंगे।
तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!

[9]"'उस समय मैं दूतों को भेजूँगा। वे जहाजों में कूश को बुरी खबरें पहुँचाने के लिये जाएंगे। कूश अब अपने को सुरक्षित समझता है। किन्तु कूश के लोग भय से तब काँप उठेंगे जब मिस्र दण्डित होगा। वह समय आ रहा है!'"

[10] मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
"मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर का
उपयोग करूँगा
और मैं मिस्र के लोगों को नष्ट करूँगा।
[11] नबूकदनेस्सर और उसके लोग
राष्ट्रों में सर्वाधिक भंयकर हैं।
मैं उन्हें मिस्र को नष्ट करने के लिये लाऊँगा।
वे मिस्र के विरुद्ध अपनी तलवारें निकालेंगे।

वे प्रदेश को शवों से पाट देंगे।
12 मैं नील नदी को सूखी भूमि बना दूँगा।
तब मैं सूखी भूमि को बुरे
लोगों को बेच दूँगा।
मैं अजनबियों का उपयोग उस देश को
खाली करने के लिये करुँगा।
मैं यहोवा ने, यह कहा है!"

मिस्र की देवमूर्तियाँ नष्ट की जाएंगी

13 मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
"मैं मिस्र में देवमूर्तियों को नष्ट करुँगा।
मैं मूर्तियों को नोप से बाहर करुँगा।
मिस्र देश में कोई भी प्रमुख
भविष्य के लिये नहीं होगा,
और मैं मिस्र में भय भर दूँगा।
14 मैं पत्रोस को खाली करा दूँगा।
मैं सोअन में आग लगा दूँगा।
मैं नो को दण्ड दूँगा
15 और मैं सीन नामक मिस्र के किले के विरुद्ध
अपने क्रोध की वर्षा करूँगा।!
मैं नो के लोगों को नष्ट करूँगा।
16 मैं मिस्र में आग लगाऊँगा।
सीन नामक स्थान भय से पीड़ित होगा,
नो नगर में सैनिक टूट पड़ेंगे
और नो को प्रतिदिन नयी
परेशानियाँ होंगी।
17 आवेन और पीवेसेत के युवक
युद्ध में मारे जाएंगे
और स्त्रियाँ पकड़ी जाएँगी
और ले जाई जाएँगी।
18 तहपन्हेस का यह काला दिन होगा,
जब मैं मिस्र के अधिकार को
समाप्त करूँगा
मिस्र की गर्वीली शक्ति समाप्त होगी!
मिस्र को दुर्दिन ढक लेगा
और उसकी पुत्रियाँ पकड़ी
और ले जायी जाएँगी।
19 इस प्रकार मैं मिस्र को दण्ड दूँगा।
तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!"

मिस्र सदा के लिये दुर्बल होगा

[20]देश निकाले के ग्यारहवें वर्ष में प्रथम महीने (अप्रैल) के सातवें दिन यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [21]"मनुष्य के पुत्र, मैंने मिस्र के राजा फिरौन की भुजा (शक्ति) तोड़ डाली है। कोई भी उसकी भुजा पर पट्टी नहीं लपेटेगा। उसका घाव नहीं भरेगा। अत: उसकी भुजा तलवार पकड़ने योग्य शक्ति वाली नहीं होगी।"

[22]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं मिस्र के राजा फिरौन के विरुद्ध हूँ। मैं उसकी दोनों भुजाओं शक्तिशाली भुजा और पहले से टूटी भुजा–को तोड़ डालूँगा। मैं उसके हाथ से तलवार को गिरा दूँगा। [23]मैं मिस्रियों को राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। [24]मैं बाबुल के राजा की भुजाओं को शक्तिशाली बनाऊँगा। मैं अपनी तलवार उसके हाथ में दूँगा। किन्तु मैं फिरौन की भुजा को तोड़ दूँगा। तब फिरौन पीड़ा से चीखेगा, राजा की चीख एक मरते हुए व्यक्ति की चीख सी होगी। [25]अत: मैं बाबुल के राजा की भुजाओं को शक्तिशाली बनाऊँगा, किन्तु फिरौन की भुजायें कट गिरेंगी। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

"मैं बाबुल के राजा के हाथों अपनी तलवार दूँगा। तब वह मिस्र देश के विरुद्ध अपनी तलवार को आगे बढ़ायेगा। [26]मैं मिस्रियों को राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। तब वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ!"

अश्शूर एक देवदार वृक्ष की तरह है

31 देश निकाले के ग्यारहवें वर्ष में तीसरे महीने (जून) के प्रथम दिन यहोवा का संदेश मुझे मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, मिस्र के राजा फिरौन और उसके लोगों से यह कहो:

'तुम्हारी महानता में कौन तुम्हारे समान है?
3 अश्शूर, लबानोन में, सुन्दर शाखाओं सहित
एक देवदार का वृक्ष था।
वन की छाया–युक्त
और अति ऊँचा एक देवदार का वृक्ष था।
इसके शिखर जलद भेदी थे!
4 जल वृक्ष को उगाता था।
गहरी नदियाँ वृक्ष को ऊँचा करती थीं।
नदियाँ उन स्थान के चारों ओर बहती थीं,
जहाँ वृक्ष लगे थे।
केवल इसकी धारायें ही खेत के

अन्य वृक्षों तक बहती थीं।
5 इसलिये खेत के सभी वृक्षों से
ऊँचा वृक्ष वही था
और इसने कई शाखायें फैला रखी थीं।
वहाँ काफी जल था।
अत: वृक्ष–शाखायें बाहर फैली थीं।
6 वृक्ष की शाखाओं में संसार के
सभी पक्षियों ने घोंसले बनाए थे।
वृक्ष की शाखाओं के नीचे खेत के सभी जानवर
बच्चों को जन्म देते थे।
सभी बड़े राष्ट्र उस वृक्ष की छाया में रहते थे।
7 अत: वृक्ष अपनी महानता और अपनी लम्बी
शाखाओं में सुन्दर था।
क्यों? क्योंकि इसकी जड़ें यथेष्ट
जल तक पहुँची थीं!
8 परमेश्वर के उद्यान के देवदारु वृक्ष भी,
उतने बड़े नहीं थे जितना यह वृक्ष।
सनौवर के वृक्ष इतनी अधिक
शाखायें नहीं रखते,
चिनार–वृक्ष भी ऐसी शाखायें नहीं रखते,
परमेश्वर के उद्यान का कोई भी वृक्ष,
इतना सुन्दर नहीं था जितना यह वृक्ष।
9 मैंने अनेक शाखाओं सहित
इस वृक्ष को सुन्दर बनाया
और परमेश्वर के उद्यान अदन के
सभी वृक्ष इससे ईर्ष्या करते थे!'"

10अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "वृक्ष ऊँचा हो गया है। इसने अपने शिखरों को बादलों में पहुँचा दिया है। वृक्ष गर्वीला है क्योंकि यह ऊँचा है! **11**इसलिये मैंने एक शक्तिशाली राजा को इस वृक्ष को लेने दिया। उस शासक ने वृक्ष को उसके बुरे कामों के लिये दण्ड दिया। मैंने उस वृक्ष को अपने उद्यान से बाहर किया है। **12**अजनबी अत्याधिक भंयकर राष्ट्रों ने इसे काट डाला और छोड़ दिया। वृक्ष की शाखायें पर्वतों पर और सारी घाटी में गिरीं। उस प्रदेश में बहने वाली नदियों में वे टूटे अंग बह गए। वृक्ष के नीचे कोई छाया नहीं रह गई, अत: सभी लोगों ने उसे छोड़ दिया। **13**अब उस गिरे वृक्ष में पक्षी रहते हैं और इसकी गिरी शाखाओं पर जंगली जानवर चलते हैं।

14"अब कोई भी, उस जल का वृक्ष गर्वीला नहीं होगा। वे बादलों तक पहुँचना नहीं चाहेंगे। कोई भी शक्तिशाली वृक्ष, जो उस जल को पीता है, ऊँचा होने की अपनी प्रशंसा नहीं करेगा। क्यों? क्योंकि उन सभी की मृत्यु निश्चित हो चुकी है। वे सभी मृत्यु के स्थान शेओल[94] नामक पाताल लोक में चले जाएंगे। वे उन अन्य लोगों के साथ हो जाएंगे जो मरे और नीचे नरक में चले गए।"

15मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "उस दिन जब तक वृक्ष शेओल को गया मैंने लोगों से शोक मनवाया। मैंने गहरे जल को, उसके लिये, शोक से ढक दिया। मैंने वृक्ष की नदियों को रोक दिया और वृक्ष के लिये जल का बहना रूक गया। मैंने लबानोन से इसके लिये शोक मनवाया। खेत के सभी वृक्ष इस बड़े वृक्ष के शोक से रोगी हो गए। **16**मैंने वृक्ष को गिराया और वृक्ष के गिरने की ध्वनि के भय से राष्ट्र काँप उठे। मैंने वृक्ष को मृत्यु के स्थान पर पहुँचाया। यह नीचे उन लोगों के साथ रहने गया जो उस नरक में नीचे गिरे हुए थे। अतीत में एदेन के सभी वृक्ष अर्थात् लबानोन के सर्वोत्तम वृक्ष उस पानी को पीते थे। उन सभी वृक्षों ने पाताल लोक में शान्ति प्राप्त की। **17**हाँ, वे वृक्ष भी बड़े वृक्ष के साथ मृत्यु के स्थान पर गए। उन्होंने उन व्यक्तियों का साथ पकड़ा जो युद्ध में मर गए थे। उस बड़े वृक्ष ने अन्य वृक्षों को शक्तिशाली बनाया। वे वृक्ष, राष्ट्रों में, उस बड़े वृक्ष की छाया में रहते थे।

18"अत: मिस्र, एदेन में बहुत से विशाल और शक्तिशाली वृक्ष है। उनमें से किस वृक्ष के साथ मैं तुम्हारी तुलना करूँगा! तुम एदेन के वृक्षों के साथ पाताल लोक को जाओगे! मृत्यु के स्थान में तुम उन विदेशियों और युद्ध में मारे गए व्यक्तियों के साथ में लेटोगे।

"हाँ, यह फिरौन और उसके सभी लोगों के साथ होगा!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

फिरौन: एक सिंह या दैत्य?

32 देश–निकाले के बारहवें वर्ष के बारहवें महीने (मार्च) के प्रथम दिन यहोवा का वचन मेरे पास आया। उसने कहा, **2**"मनुष्य के पुत्र, मिस्र के राजा के विषय में यह करुणगीत गाओ। उससे कहो:
'तुमने सोचा था तुम शक्तिशाली युवा सिंह हो,
राष्ट्रों में गर्व सहित टहलते हुए।

राष्ट्रों किन्तु सचमुच समुद्र के दैत्य जैसे हो।
तुम प्रवाह को धकेल कर रास्ता बनाते हो,
और अपने पैरों से जल को
मटमैला करते हो।
तुम मिस्र की नदियों को उद्वेलित करते हो'"

3 मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
"मैंने बहुत से लोगों को एक साथ
इकट्ठा किया है।
अब मैं तुम्हारे ऊपर अपना जाल फेंकूँगा।
तब वे लोग तुम्हें खींच लेंगे।

4 तब मैं तुम्हें सूखी जमीन पर गिरा दूँगा।
मैं तुम्हें खेत में फेंकूँगा।
मैं सभी पक्षियों को तुम्हें खाने के लिये बुलवाऊँगा।
मैं हर जगह से जंगली जानवरों को तुम्हें खाने
और पेट भरने के लिये बुलवाऊँगा।

5 मैं तुम्हारे शरीर को पर्वतों पर बिखेरूँगा।
मैं तुम्हारे शव से घाटियों को भर दूँगा।

6 मैं तुम्हारा रक्त पर्वतों पर डालूँगा
और धरती इसे सोखेगी।
नदियाँ तुमसे भर जाएंगी।

7 मैं तुमको लुप्त कर दूँगा।
मैं नभ को ढक दूँगा
और नक्षत्रों को काला कर दूँगा।
मैं सूर्य को बादल से ढक दूँगा
और चन्द्र नहीं चमकेगा।

8 मैं सभी चमकती ज्योतियों को नभ में
तुम्हारे ऊपर काला बनाऊँगा।
मैं तुम्हारे सारे देश में अंधेरा कर दूँगा।

9"बहुत से लोग शोकग्रस्त और व्यग्र होंगे, जब वे सुनेंगे कि तुमको नष्ट करने के लिये मैं एक शत्रु को लाया। राष्ट्र जिन्हें तुम जानते भी नहीं, तिलमिला जायेंगे। 10मैं बहुत से लोगों को तुम्हारे बारे में आघात पहुँचाऊँगा उनके राजा तुम्हारे बारे में उस समय बुरी तरह से भयभीत होंगे जब मैं उनके सामने अपनी तलवार चलाऊँगा। जिस दिन तुम्हारा पतन होगा उसी दिन, हर एक क्षण, राजा लोग भयभीत होंगे। हर एक राजा अपने जीवन के लिये भयभीत होगा।"

11क्यों? क्योंकि मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "बाबुल के राजा की तलवार तुम्हारे विरुद्ध युद्ध करने आयेगी। 12मैं उन सैनिकों का उपयोग तुम्हारे लोगों को युद्ध में मार डालने में करूँगा। वे सैनिक राष्ट्रों में सबसे भयंकर राष्ट्र से आते हैं। वे उन चीजों को नष्ट कर देंगे जिनका गर्व मिस्र को है। मिस्र के लोग नष्ट कर दिये जायेंगे। 13मिस्र में नदियों के सहारे बहुत से जानवर हैं। मैं इन जानवरों को भी नष्ट करूँगा! लोग भविष्य में, अपने पैरों से पानी को गंदा नहीं करेंगे। गायों के खुर भविष्य में पानी को मैला नहीं करेंगे। 14इस प्रकार मैं मिस्र में पानी को शान्त बनाऊँगा। मैं उनकी नदियों को मन्द बहाऊँगा वे तेल की तरह बहेंगी।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा, 15"मैं मिस्र देश को खाली कर दूँगा। वह हर चीज से रहित होगा। मैं मिस्र में रहने वाले सभी लोगों को दण्ड दूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा और स्वामी हूँ!

16"यह एक करुणगीत है जिसे लोग मिस्र के लिये गायेंगे। दूसरे राष्ट्रों में पुत्रियाँ (नगर) मिस्र के बारे में इस करुण गीत को गायेंगी। वे इसे, मिस्र और उसके सभी लोगों के बारे में करुण गीत के रूप में गायेंगी।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था!

मिस्र का नष्ट किया जाना

17देश निकाले के बारहवें वर्ष में, उस महीने के पन्द्रहवें दिन, यहोवा का संदेश मुझे मिला। उसने कहा, 18"मनुष्य के पुत्र, मिस्र के लोगों के लिये रोओ। मिस्र और उन पुत्रियों को, शक्तिशाली राष्ट्र से कब्र तक पहुँचाओ। उन्हें उस पाताल लोक में पहुँचाओ जहाँ वे उन अन्य व्यक्तियों के साथ होंगे जो उस नरक में गए।

19"मिस्र, तुम किसी अन्य से अच्छे नहीं हो। मृत्यु के स्थान पर चले जाओ। जाओ और उन विदेशियों के साथ लेटो।

20"मिस्र को उन सभी अन्य लोगों के साथ रहने जाना पड़ेगा जो युद्ध में मारे गए थे। शत्रु ने उसे और उसके लोगों को उठा फेंका है।

21"मजबूत और शक्तिशाली व्यक्ति युद्ध में मारे गए। वे विदेशी मृत्यु के स्थान पर गए। उस स्थान से वे लोग मिस्र और उसके सहायकों से बातें करेंगे। वे जो युद्ध में मारे गये थे।

22-23"अश्शूर और उसकी सारी सेना वहाँ मृत्यु के स्थान पर हैं। उनकी कब्रें नीचे गहरे नरक में हैं। वे सभी अश्शूर के सैनिक युद्ध में मारे गए। उनकी कब्रे

उसकी कब्र के चारों ओर हैं। जब वे जीवित थे तब वे लोगों को भयभीत करते थे। किन्तु अब वे सभी पूर्ण शान्त हैं वे सभी युद्ध में मारे गए थे।

24"एलाम वहाँ है और इसकी सारी सेना उसकी कब्र के चारों ओर हैं। वे सभी युद्ध में मारे गए। वे विदेशी गहरे नीचे धरती में गए। जब वे जीवित थे, वे लोगों को भयभीत करते थे। किन्तु वे अपनी लज्जा को अपने साथ उस गहरे नरक में ले गए। 25उन्होंने एलाम और उसके सैनिकों के लिए, जो युद्ध में मारे गए हैं, बिस्तर लगा दिया है। एलाम की सारी सेना उसकी कब्र के चारों ओर हैं। ये सभी विदेशी युद्ध में मारे गए थे। जब वे जीवित थे, वे लोगों को डराते थे। किन्तु वे अपनी लज्जा को अपने साथ उस गहरे नरक में ले गए। वे उन सभी लोगों के साथ रखे गये, जो मारे गए थे।

26"मेशेक, तूबल और उनकी सारी सेनायें वहाँ है। उनकी कब्रें इनके चारों ओर हैं। वे सभी विदेशी युद्ध में मारे गए थे। जब वे जीवित थे तब वे लोगों को भयभीत करते थे। 27किन्तु अब वे शक्तिशाली व्यक्तियों के साथ लेटे हैं जो बहुत पहले मर चुके थे। वे अपने युद्ध के अस्त्र–शस्त्रों के साथ दफनाए गए। उनकी तलवारें उनके सिर के नीचे रखी जाएंगी। किन्तु उनके पाप उनकी हड्डियों पर हैं। क्यों? क्योंकि जब वे जीवित थे, उन्होंने लोगों को डराया था।

28"मिस्र, तुम भी नष्ट होगे। तुम उन विदेशियों के साथ लेटोगे। तुम उन अन्य सैनिकों के साथ लेटोगे जो युद्ध में मारे जा चुके हैं।

29"एदोम भी वहीं है। उसके राजा और अन्य प्रमुख उसके साथ वहाँ हैं। वे शक्तिशाली सैनिक भी थे। किन्तु अब वे उन अन्य लोगों के साथ लेटे हैं। जो युद्ध में मारे गए थे। वे उन विदेशियों के साथ लेटे हैं। वे उन व्यक्तियों के साथ नीचे नरक में चले गए।

30"उत्तर के सभी शासक वहाँ हैं। वहाँ सीदोन के सभी सैनिक हैं। उनकी शक्ति लोगों को डराती थी। किन्तु वे हक्के–बक्के हैं। वे विदेशी उन अन्य व्यक्तियों के साथ लेटे हैं जो युद्ध में मारे गए थे। वे अपनी लज्जा अपने साथ उस गहरे नरक में ले गए।

31"फिरौन उन लोगों को देखेगा जो मृत्यु के स्थान पर गए। वह और उसके साथ सभी लोगों को पूर्ण शान्ति मिलेगी। हाँ, फिरौन और उसकी सेना युद्ध में मारी जाएगी।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

32"जब फिरौन जीवित था तब मैंने लोगों को उससे भयभीत कराया। किन्तु अब वह उन विदेशियों के साथ लेटेगा। फिरौन और उसकी सेना उन अन्य सैनिकों के साथ लेटेगी जो युद्ध में मारे गए थे।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

परमेश्वर यहेजकेल को इस्राएल का पहरेदार चुनता है

33 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, अपने लोगों से बातें करो। उनसे कहो, 'मैं शत्रु के सैनिकों को उस देश के विरुद्ध युद्ध के लिये ला सकता हूँ। जब ऐसा होगा तो लोग एक व्यक्ति को पहरेदार के रूप में चुनेंगे। 3यदि पहरेदार शत्रु के सैनिकों को आते देखता है, तो वह तुरही बजाता है और लोगों को सावधान करता है। 4यदि लोग उस चेतावनी को सुनें किन्तु अनसुनी करें तो शत्रु उन्हें पकड़ेगा और उन्हें बन्दी के रूप में ले जायेगा। यह व्यक्ति अपनी मृत्यु के लिये स्वयं उत्तरदायी होगा। 5उसने तुरही सुनी, पर चेतावनी अनसुनी की। इसलिये अपनी मृत्यु के लिये वह स्वयं दोषी है। यदि उसने चेतावनी पर ध्यान दिया होता तो उसने अपना जीवन बचा लिया होता।

6"'किन्तु यह हो सकता है कि पहरेदार शत्रु के सैनिकों को आता देखता है, किन्तु तुरही नहीं बजाता। उस पहरेदार ने लोगों को चेतावनी नहीं दी। शत्रु उन्हें पकड़ेगा और उन्हें बन्दी बनाकर ले जाएगा। वह व्यक्ति ले जाया जाएगा क्योंकि उसने पाप किया। किन्तु पहरेदार भी उस आदमी की मृत्यु का उत्तरदायी होगा।'"

7"अब, मनुष्य के पुत्र, मैं तुमको इस्राएल के परिवार का पहरेदार चुन रहा हूँ। यदि तुम मेरे मुख से कोई सन्देश सुनो तो तुम्हें मेरे लिये लोगों को चेतावनी देनी चाहिए। 8मैं तुमसे कह सकता हूँ, 'यह पापी व्यक्ति मरेगा।' तब तुम्हें उस व्यक्ति के पास जाकर मेरे लिये उसे चेतावनी देनी चाहिए। यदि तुम उस पापी व्यक्ति को चेतावनी नहीं देते और उसे अपना जीवन बदलने को नहीं कहते, तो वह पापी व्यक्ति मरेगा, क्योंकि उसने पाप किया। किन्तु मैं तुम्हें उसकी मृत्यु का उत्तरदायी बनाऊँगा। 9किन्तु यदि तुम उस बुरे व्यक्ति को अपना जीवन बदलने के लिये

और पाप करना छोड़ने के लिये चेतावनी देते हो और यदि वह पाप करना छोड़ने से इन्कार करता है तो वह मरेगा क्योंकि उसने पाप किया, किन्तु तुमने अपना जीवन बचा लिया।"

परमेश्वर लोगों को नष्ट करना नहीं चाहता

[10]"अत: मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार से मेरे लिये कहो। वे लोग कह सकते हैं, 'हम लोगों ने पाप किया है और नियमों को तोड़ा है। हमारे पाप हमारी सहनशक्ति के बाहर हैं। हम उन पापों के कारण नाश हो रहे हैं। हम जीवित रहने के लिये क्या कर सकते हैं।'

[11]"तुम्हें उनसे कहना चाहिए, 'मेरा स्वामी यहोवा कहता है: मैं अपनी जीवन की शपथ खाकर विश्वास दिलाता हूँ कि मैं लोगों को मरता देख कर आनन्दित नहीं होता, पापी व्यक्तियों को भी नहीं। मैं नहीं चाहता कि वे मरें। मैं उन पापी व्यक्तियों को अपने पास लौटाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वे अपने जीवन को बदलें जिससे वे जीवित रह सकें। अत: मेरे पास लौटो! बुरे काम करना छोड़ो! इस्राएल के परिवार, तुम्हें मरना ही क्यों चाहिए?"

[12]"मनुष्य के पुत्र, अपने लोगों से कहो: 'यदि किसी व्यक्ति ने अतीत में पुण्य किया है तो उससे उसका जीवन नहीं बचेगा। यदि वह बच जाये और पाप करना शुरु करे। यदि किसी व्यक्ति ने अतीत में पाप किया, तो वह नष्ट नहीं किया जाएगा, यदि वह पाप से दूर हट जाता है। अत: याद रखो, एक व्यक्ति द्वारा अतीत में किये गए पुण्य कर्म उसकी रक्षा नहीं करेंगे, यदि वह पाप करना आरम्भ करता है।

[13]"यह हो सकता है कि मैं किसी अच्छे व्यक्ति के लिये कहूँ कि वह जीवित रहेगा। किन्तु यह हो सकता है कि वह अच्छा व्यक्ति यह सोचना आरम्भ करे कि अतीत में उसके द्वारा किये गए अच्छे कर्म उसकी रक्षा करेंगे। अत: वह बुरे काम करना आरम्भ कर सकता है। किन्तु मैं उसके अतीत के पुण्यों को याद नहीं रखूँगा! नहीं, वह उन पापों के कारण मरेगा जिन्हें वह करना आरम्भ करता है।

[14]"या यह हो सकता है कि मैं किसी पापी व्यक्ति के लिये कहूँगा कि वह मरेगा। किन्तु वह अपने जीवन को बदल सकता है। वह पाप करना छोड़ सकता है और ठीक–ठीक रहना आरम्भ कर सकता है। वह अच्छा और उचित हो सकता है। [15]वह उस गिरवीं की चीज को लौटा सकता है जिसे उसने ऋ ण में मुद्रा देते समय रखा था। वह उन चीजों के लिये भुगतान कर सकता है जिन्हें उसने चुराया था। वह उन नियमों का पालन कर सकता है जो जीवन देते हैं। वह बुरे काम करना छोड़ देता है। तब वह व्यक्ति निश्चय ही जीवित रहेगा। वह मरेगा नहीं। [16]मैं उसके अतीत के पापों को याद नहीं करुँगा। क्यों? क्योंकि वह अब ठीक–ठीक रहता है और उचित व्यवहार रखता है। अत: वह जीवित रहेगा!

[17]"किन्तु तुम्हारे लोग कहते हैं, 'यह उचित नहीं है! यहोवा मेरा स्वामी वैसा नहीं हो सकता!'

"परन्तु वे ही लोग हैं जो उचित नहीं हैं! वे ही लोग हैं, जिन्हें बदलना चाहिए! [18]यदि अच्छा व्यक्ति पुण्य करना बन्द कर देता है और पाप करना आरम्भ करता है तो वह अपने पापों के कारण मरेगा। [19]और यदि कोई पापी पाप करना छोड़ देता है और ठीक–ठीक तथा उचित रहना आरम्भ करता है तो वह जीवित रहेगा! [20]किन्तु तुम लोग अब भी कहते हो कि मैं उचित नहीं हूँ। किन्तु मैं सत्य कह रहा हूँ। इस्राएल के परिवार, हर एक व्यक्ति के साथ न्याय, वह जो करता है, उसके अनुसार होगा!"

यरूशलेम पर अधिकार कर लिया गया

[21]देश–निकाले के बारहवें वर्ष में, दसवें महीने (जनवरी) के पाँचवें दिन एक व्यक्ति मेरे पास यरूशलेम से आया। वह वहाँ के युद्ध से बच निकला था। उसने कहा, "नगर (यरूशलेम) पर अधिकार हो गया!"

[22]ऐसा हुआ कि जिस दिन वह व्यक्ति मेरे पास आया उसकी पूर्व संध्या को, मेरे स्वामी यहोवा की शक्ति मुझ पर उतरी। परमेश्वर ने मुझे बोलने योग्य नहीं बनाया। जिस समय वह व्यक्ति मेरे पास आया, यहोवा ने मेरा मुख खोल दिया था और फिर से मुझे बोलने दिया। [23]तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [24]"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के ध्वस्त नगर में इस्राएली लोग रह रहे हैं। वे लोग कह रहे हैं, 'इब्राहीम केवल एक व्यक्ति था और परमेश्वर ने उसे यह सारी भूमि दे दी। अब हम अनेक लोग हैं अत: निश्चय ही यह भूमि हम लोगों की है! यह हमारी भूमि है!'

[25]"तुम्हें उनसे कहना चाहिये कि मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, 'तुम लोग रक्त–युक्त माँस खाते हो। तुम

लोग अपनी देवमूर्तियों से सहायता की आशा करते हो। तुम लोगों को मार डालते हो। अत: मैं तुम लोगों को यह भूमि क्यों दूँ? [26]तुम अपनी तलवार पर भरोसा करते हो। तुममें से हर एक भंयकर पाप करता है। तुममें से हर एक अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ व्यभिचार करता है। अत: तुम भूमि नहीं पा सकते।'

[27]"तुम्हें कहना चाहिये कि स्वामी यहोवा यह कहता है, 'मैं अपने जीवन की शपथ खा कर प्रतिज्ञा करता हूँ, कि जो लोग उन ध्वस्त नगरों में रहते हैं, वे तलवार के घाट उतारे जाएंगे। यदि कोई उस देश से बाहर होगा तो मैं उसे जानवरों से मरवाऊँगा और खिलाऊँगा। यदि लोग किले और गुफाओं में छिपे होंगे तो वे रोग से मरेंगे। [28]मैं भूमि को खाली और बरबाद करुँगा। वह देश उन सभी चीजों को खो देगा जिन पर उसे गर्व था। इस्राएल के पर्वत खाली हो जाएंगे। उस स्थान से कोई गुजरेगा नहीं। [29]उन लोगों ने अनेक भंयकर पाप किये हैं। अत: मैं उस देश को खाली और बरबाद करुँगा। तब वे लोग जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।'"

[30]"अब तुम्हारे विषय में, मनुष्य के पुत्र, तुम्हारे लोग दीवारों के सहारे झुके हुए और अपने दरवाजों में खड़े हैं और वे तुम्हारे बारे में बात करते हैं। वे एक दूसरे से कहते हैं, 'आओ, हम जाकर सुनें जो यहोवा कहता है।' [31]अत: वे तुम्हारे पास वैसे ही आते हैं जैसे वे मेरे लोग हों। वे तुम्हारे सामने मेरे लोगों की तरह बैठेंगे। वे तुम्हारा सन्देश सुनेंगे। किन्तु वे वह नहीं करेंगे जो तुम कहोगे। वे केवल वह करना चाहते हैं जो अनुभव करने में अच्छा हो। वे लोगों को धोखा देना चाहते हैं और अधिक धन कमाना चाहते हैं।

[32]"तुम इन लोगों की दृष्टि में प्रेमगीत गाने वाले गायक से अधिक नहीं हो। तुम्हारा स्वर अच्छा है। तुम अपना वाद्य अच्छा बजाते हो। वे तुम्हारा संदेश सुनेंगे किन्तु वे वह नहीं करेंगे जो तुम कहते हो। [33]किन्तु जिन चीजों के बारे में तुम गाते हो, वे सचमुच घटित होंगी और तब लोग समझेंगे कि उनके बीच सचमुच एक नबी रहता था!"

इस्राएल भेड़ों की एक रेवड़ की तरह है

34 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, मेरे लिए इस्राएल के गड़ेरियों (प्रमुखों) के विरुद्ध बातें करो। उनसे मेरे लिये बातें करो। उनसे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है: 'इस्राएल के गड़ेरियों (प्रमुखों) तुम केवल अपना पेट भर रहे हो। यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा। तुम गड़ेरियों, रेवड़ों का पेट क्यों नहीं भरते? [3]तुम मोटी भेड़ों को खाते हो और अपने वस्त्र बनाने के लिये उनकी ऊन का उपयोग करते हो। तुम मोटी भेड़ को मारते हो, किन्तु तुम रेवड़ का पेट नहीं भरते। [4]तुमने दुर्बल को बलवान नहीं बनाया। तुमने रोगी भेड़ की परवाह नहीं की है। तुमने चोट खाई हुई भेड़ों को पट्टी नहीं बाँधी। कुछ भेड़ें भटक कर दूर चली गईं और तुम उन्हें खोजने और उन्हें वापस लेने नहीं गए। तुम उन खोई भेड़ों को खोजने नहीं गए। नहीं, तुम क्रूर और कठोर रहे, यही मार्ग था जिस पर तुमने भेड़ों को ले जाना चाहा!

[5]"'और अब, भेड़ें बिखर गई हैं क्योंकि कोई गड़ेरिया नहीं था। वे हर एक जंगली जानवर का भोजन बनीं। अत: वे बिखर गई। [6]मेरी रेवड़ सभी पर्वतों और ऊँची पहाड़ियों पर भटकी। मेरी रेवड़ धरती की सारी सतह पर बिखर गई। कोई भी उनकी खोज और देखभाल करने वाला नहीं था।'"

[7]अत: तुम गड़ेरियों, यहोवा का वचन सुनों। मेरा स्वामी यहोवा कहता है, [8]"मैं अपने जीवन की शपथ खाकर तुम्हें यह विश्वास दिलाता हूँ। जंगली जानवरों ने मेरी भेड़ों को पकड़ा। हाँ, मेरी रेवड़ सभी जंगली जानवरों का भोजन बन गई। क्यों? क्योंकि उनका कोई ठीक गड़ेरिया नहीं था। मेरे गड़ेरियों ने मेरे रेवड़ की खोज नहीं की। उन गड़ेरियों ने भेड़ों को केवल मारा और स्वयं खाया। उन्होंने मेरी रेवड़ का पेट नहीं भरा।"

[9]अत: तुम गड़ेरियों, यहोवा के संदेश को सुनो! [10]यहोवा कहता है, "मैं उन गड़ेरियों के विरुद्ध हूँ! मैं उनसे अपनी भेड़ें माँगूँगा! मैं उन पर आक्रमण करूँगा! वे भविष्य में मेरे गड़ेरिये नहीं रहेंगे! तब गड़ेरिये अपना पेट भी नहीं भर पाएंगे। मैं उनके मुख से अपनी रेवड़ को बचाऊँगा। तब मेरी भेड़ें उनका भोजन नहीं होंगी।"

[11]मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं स्वयं उनका गड़ेरिया बनूँगा। मैं अपनी भेड़ों की खोज करूँगा। मैं उनको ढूँढूंगा। [12]यदि कोई गड़ेरिया अपनी भेड़ों के साथ उस समय है जब उसकी भेड़ें दूर भटकने लगी हों तो वह उनको खोजने जाएगा। उसी प्रकार मैं अपनी भेड़ों की खोज करूँगा। मैं अपनी भेड़ों को बचाऊँगा। मैं उन्हें उन स्थानों

से लौटाऊँगा जहाँ वे उस बदली तथा अंधेरे में भटक गई थीं। [13]मैं उन्हें उन राष्ट्रों से वापस लाऊँगा। मैं उन देशों से उन्हें इकट्ठा करूँगा। मैं उन्हें उनके अपने देश में लाऊँगा। मैं उन्हें इस्राएल के पर्वतों पर, जलस्रोतों के सहारे, उन सभी स्थानों में, जहाँ लोग रहते हैं, खिलाऊँगा। [14]मैं उन्हें घास वाले खेतों में ले जाऊँगा। वे इस्राएल के पर्वतों के ऊँचे स्थानों पर जाएंगी। वहाँ वे अच्छी धरती पर सोएँगी और घास खाएंगी। वे इस्राएल के पर्वत पर भरी–पूरी घास वाली भूमि में चरेंगी। [15]हाँ, मैं अपने रेवड़ को खिलाऊँगा और उन्हें विश्राम के स्थान पर ले जाऊँगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

[16]"मैं खोई भेड़ की खोज करुँगा। मैं उन भेड़ों को वापस लाऊँगा जो बिखर गई थीं। मैं उन भेड़ों की पट्टी करुँगा जिन्हें चोट लगी थी। मैं कमजोर भेड़ को मजबूत बनाऊँगा। किन्तु मैं उन मोटे और शक्तिशाली गड़ेरियों को नष्ट कर दूँगा। मैं उन्हें वह दण्ड दूँगा जिसके वे पात्र हैं।"

[17]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "और तुम, मेरी रेवड़, मैं प्रत्येक भेड़ के साथ न्याय करुँगा। मैं मेढ़ों और बकरों के बीच न्याय करुँगा। [18]तुम अच्छी भूमि पर उगी घास खा सकते हो। अत: तुम उस घास को क्यों कुचलते हो जिसे दूसरी भेड़ें खाना चाहती हैं। तुम पर्याप्त स्वच्छ जल पी सकते हो। अत: तुम उस जल को हिलाकर गन्दा क्यों करते हो, जिसे अन्य भेड़ें पीना चाहती हैं। [19]मेरी रेवड़ उस घास को खाएंगी जिसे तुमने अपने पैरों से कुचला और वह पानी पीएंगी जिसे तुमने अपने पैरों से हिलाकर गन्दा कर दिया!"

[20]अत: मेरा स्वामी यहोवा उनसे कहता है: "मैं स्वयं मोटी और पतली भेड़ों के साथ न्याय करूँगा! [21]तुम अपनी बगल से और अपने कन्धों से धक्का देकर और अपनी सींगों से सभी कमजोर भेड़ों को तब तक मार गिराते हो, जब तक तुम उनको दूर चले जाने के लिये विवश नहीं करते। [22]अत: मैं अपनी रेवड़ को बचाऊँगा। वे भविष्य में जंगली जानवरों से नहीं पकड़ी जाएंगी। मैं प्रत्येक भेड़ के साथ न्याय करुँगा। [23]तब मैं उनके ऊपर एक गड़ेरिया अपने सेवक दाऊद को रखूँगा। वह उन्हें अपने आप खिलाएगा और उनका गड़ेरिया होगा। [24]तब मैं यहोवा और स्वामी, उनका परमेश्वर होऊँगा और मेरा सेवक दाऊद उनके बीच रहने वाला शासक होगा। मै (यहोवा) ने यह कहा है।

[25]"मैं अपनी भेड़ों के साथ एक शान्ति–सन्धि करुँगा। मैं हानिकर जानवरों को देश से बाहर कर दूँगा। तब भेड़ें मरूभूमि में सुरक्षित रहेंगी और जंगल में सोएंगी। [26]मैं भेड़ों को और अपनी पहाड़ी (यरूशलेम) के चारों ओर के स्थानों को आशीर्वाद दूँगा। मैं ठीक समय पर वर्षा करुँगा। वे आशीर्वाद सहित वर्षा करेंगे। [27]खेतों में उगने वाले वृक्ष अपने फल देंगे। भूमि अपनी फसल देगी। अत: भेड़ें अपने प्रदेश में सुरक्षित रहेंगी। मैं उनके ऊपर रखे जूवों को तोड़ दूँगा। मैं उन्हें उन लोगों की शक्ति से बचाऊँगा जिन्होंने उन्हें दास बनाया। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। [28]वे जानवरों की तरह भविष्य में अन्य राष्ट्रों द्वारा बन्दी नहीं बनाये जाएंगे। वे जानवर उन्हें भविष्य में नहीं खाएंगे। अपितु अब वे सुरक्षित रहेंगे। कोई उन्हें आतंकित नहीं करेगा। [29]मैं उन्हें कुछ ऐसी भूमि दूँगा जो एक अच्छा उद्यान बनेगी। तब वे उस देश में भूख से पीड़ित नहीं होंगे। वे भविष्य में राष्ट्रों से अपमानित होने का कष्ट न पाएंगे। [30]तब वे समझेंगे कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ। तब वे समझेंगे कि मैं उनके साथ हूँ। इस्राएल का परिवार समझेगा कि वे मेरे लोग हैं!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था!

[31]"तुम मेरी भेड़ों, मेरी चरागाह की भेड़ों, तुम केवल मनुष्य हो और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

एदोम के विरुद्ध सन्देश

35 मुझे यहोवा का वचन मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, सेईर पर्वत की ओर ध्यान दो और मेरे लिये इसके विरुद्ध कुछ कहो। [3]इससे कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:

सेईर पर्वत, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ!
मैं तुम्हें दण्ड दूँगा।
मैं तुम्हें खाली बरबाद क्षेत्र कर दूँगा।
[4] मैं तुम्हारे नगरों को नष्ट करुँगा,
और तुम खाली हो जाओगे।
तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ।
[5] क्यों? क्योंकि तुम सदा मेरे
लोगों के विरुद्ध रहे।

तुमने इस्राएल के विरुद्ध
अपनी तलवारों का उपयोग
उनकी विपत्ति के समय में किया,
उनके अन्तिम दण्ड के समय में।'"

[6]अत: मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं अपने जीवन की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हें मैं मृत्यु के मुँह में भेजूँगा। मृत्यु तुम्हारा पीछा करेगी। तुम्हें व्यक्तियों के मारने से घृणा नहीं है, अत: मृत्यु तुम्हारा पीछा करेगी। [7]मैं सेईर पर्वत को खाली बरबाद कर दूँगा। मैं उस हर एक व्यक्ति को मार डालूँगा जो उस नगर से आएगा और मैं उस हर व्यक्ति को मार डालूँगा जो उस नगर में जाने का प्रयत्न करेगा। [8]मैं उसके पर्वतों को शवों से ढक दूँगा। वे शव तुम्हारी सारी पहाड़ियों, तुम्हारी घाटी और तुम्हारे सारे विषम जंगलों में फैले होंगे। [9]मैं तुझे सदा के लिये खाली कर दूँगा। तुम्हारे नगरों में कोई नहीं रहेगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

[10]तुमने कहा, "ये दोनों राष्ट्र और देश (इस्राएल और यहूदा) मेरे होंगे। हम उन्हें अपना बना लेंगे।"

किन्तु यहोवा वहाँ है! [11]मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "तुम मेरे लोगों के प्रति ईर्ष्यालु थे। तुम उन पर क्रोधित थे और तुम मुझसे घृणा करते थे। अत: अपने जीवन की शपथ खाकर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हें वैसे ही दण्डित करुँगा जैसे तुमने उन्हें चोट पहुँचाई। मैं तुझे दण्ड दूँगा और अपने लोगों को समझने दूँगा कि मैं उनके साथ हूँ। [12]तब तुम भी समझोगे कि मैंने तुम्हारे लिये सभी अपमानों को सुना है। तुमने इस्राएल पर्वत के विरुद्ध बहुत सी बुरी बातें की हैं। तुमने कहा, 'इस्राएल नष्ट कर दिया गया! हम लोग उसे भोजन की तरह चबा जाएंगे!" [13]तुम गर्वीले थे तथा मेरे विरुद्ध तुमने बातें कीं। तुमने अनेक बार कहा और जो तुमने कहा, उसका हर एक शब्द मैंने सुना! हाँ, मैंने तुम्हें सुना।"

[14]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता हैं, "उस समय सारी धरती प्रसन्न होगी जब मैं तुम्हें नष्ट करूँगा। [15]तुम तब प्रसन्न थे जब इस्राएल देश नष्ट हुआ था। मैं तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करुँगा। सेईर पर्वत और एदोम का पूरा देश नष्ट कर दिया जाएगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

इस्राएल देश का फिर निर्माण किया जाएगा

36 "मनुष्य के पुत्र, मेरे लिए इस्राएल के पर्वतों से कहो। इस्राएल के पर्वतों को यहोवा का वचन सुनने को कहो! [2]उनसे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, 'शत्रु ने हमें छला है। उन्होंने कहा: अहा! अब प्राचीन पर्वत हमारा होगा!'"

[3]"अत: मेरे लिये इस्राएल के पर्वतों से कहो। कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, शत्रु ने तुम्हें खाली किया। उन्होंने तुम्हें चारों ओर से कुचल डाला है। उन्होंने ऐसा किया अत: तुम अन्य राष्ट्रों के अधिकार में गए। तब तुम्हारे बारे में लोगों ने बातें और कानाफूसी की। [4]अत: इस्राएल के पर्वतों, मेरे स्वामी यहोवा के वचन को सुनो। मेरा स्वामी यहोवा पर्वतों, पहाड़ियों, धाराओं, घाटियों, खाली खण्डहरों और छोड़े गए नगरों से, जो चारों ओर के अन्य राष्ट्रों द्वारा लूटे और मजाक उड़ाए गए कहता है। [5]मेरा स्वामी यहोवा कहता है: मैं शपथ खाता हूँ कि मैं अपनी तीव्र अनुभूतियों को अपने लिये बोलने दूँगा। मैं एदोम और अन्य राष्ट्रों को अपने क्रोध का अनुभव कराऊँगा। उन राष्ट्रों ने मेरा देश अपना बना लिया! वे उस देश को लेकर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने देश को अपना बना लिया!"

[6]"इसलिये इस्राएल देश के बारे में ये कहो। पर्वतों, पहाड़ियों, धाराओं और घाटियों से कहो। यह कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, 'मैं अपनी तीव्र अनुभूतियों और क्रोध को अपने लिये बोलने दूँगा। क्यों? क्योंकि इन राष्ट्रों से तुम्हें अपमान की पीड़ा मिली है।'" [7]अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हारे चारों ओर के राष्ट्र अपमान का कष्ट भोगेंगे।"

[8]"किन्तु इस्राएल के पर्वतों, तुम मेरे इस्राएल के लोगों के लिये नये पेड़ उगाओगे और फल पैदा करोगे। मेरे लोग शीघ्र लौटेंगे। [9]मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हारी सहायता करुँगा। लोग तुम्हारी भूमि जोतेंगे। लोग बीज बोएंगे। [10]तुम्हारे ऊपर असंख्य लोग रहेंगे। इस्राएल का सारा परिवार और सभी लोग वहाँ रहेंगे। नगरों में, लोग रहने लगेंगे। नष्ट स्थान नये स्थानों की तरह बनेंगे। [11]मैं तुम्हें बहुत से लोग और जानवर दूँगा। वे बढ़ेंगे और उनके बहुत बच्चे होंगे। मैं तुम्हारे ऊपर रहने वाले लोगों को वैसे ही तुम्हें प्राप्त कराऊँगा, जैसे तुमने पहले किया था। मैं

तुम्हें तुम्हारे आरम्भ से भी अच्छा बनाऊँगा। तुम फिर कभी उनको, उनके सन्तानों से वंचित नहीं करोगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। [12]हाँ, मैं अपने लोग, इस्राएल को तुम्हारी भूमि पर चलाऊँगा। वे तुम पर अधिकार करेंगे और तुम उनके होगे। तुम उन्हें बिना बच्चों के फिर कभी नहीं बनाओगे।"

[13]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "हे इस्राएल देश लोग तुमसे बुरी बातें कहते हैं। वे कहते हैं कि तुमने अपने लोगों को नष्ट किया। वे कहते हैं कि तुम बच्चों को दूर ले गए। [14]अब भविष्य में तुम लोगों को नष्ट नहीं करोगे। तुम भविष्य में बच्चों को दूर नहीं ले जाओगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं थीं। [15]"मैं उन अन्य राष्ट्रों को तुम्हें, और अधिक अपमानित नहीं करने दूँगा। तुम उन लोगों से और अधिक चोट नहीं खाओगे। तुम उनको बच्चों से रहित फिर कभी नहीं करोगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

यहोवा अपने अच्छे नाम की रक्षा करेगा

[16]तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, [17]"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल का परिवार अपने देश में रहता था। किन्तु उन्होंने उस देश को उन कामों से गन्दा बना दिया जो उन्होंने किया। मेरे लिये वे ऐसी स्त्री के समान थे जो अपने मासिक धर्म से अशुद्ध हो गई हो। [18]उन्होंने जब उस देश में लोगों की हत्या की तो उन्होंने धरती पर खून फैलाया। उन्होंने अपनी देवमूर्तियों से देश को गन्दा किया। अत: मैंने उन्हें दिखाया कि मैं कितना क्रोधित था। [19]मैंने उन्हें राष्ट्रों में बिखेरा और सभी देशों में फैलाया। मैंने उन्हें वही दण्ड उस बुरे काम के लिये दिया जो उन्होंने किया। [20]वे उन अन्य राष्ट्रों को गये और उन देशों में भी उन्होंने मेरे अच्छे नाम को बदनाम किया। कैसे? वहाँ राष्ट्रों ने उनके बारे में बातें कीं। उन्होंने कहा, ये यहोवा के लोग हैं किन्तु इन्होंने उसका देश छोड़ दिया तो जरुर यहोवा में कुछ खराबी होगी!

[21]"इस्राएल के लोगों ने मेरे पवित्र नाम को जहाँ कहीं वे गये, बदनाम किया। मैंने अपने नाम के लिये दु:ख अनुभव किया। [22]अत: इस्राएल के परिवार से कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, 'इस्राएल के परिवार, तुम जहाँ गए वहाँ तुमने मेरे पवित्र नाम को बदनाम किया। इसे रोकने के लिये मैं कुछ करने जा रहा हूँ। मैं यह तुम्हारे लिये नहीं करूँगा। इस्राएल, मैं इसे अपने पवित्र नाम के लिये करूँगा। [23]मैं उन राष्ट्रों को दिखाऊँगा कि मेरा महान नाम सच में पवित्र है। तब वे राष्ट्र जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।'" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

[24]परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हें उन राष्ट्रों से बाहर निकालूँगा, एक साथ इकट्ठा करूँगा और तुम्हें तुम्हारे अपने देश में लाऊँगा। [25]तब मैं तुम्हारे ऊपर शुद्ध जल छिड़कूँगा और तुम्हें शुद्ध करूँगा। मैं तुम्हारी सारी गन्दगियों को धो डालूँगा और उन घृणित देवमूर्तियों से उत्पन्न गन्दगी को धो डालूँगा।"

[26]परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम में नयी आत्मा भी भरूँगा और तुम्हारे सोचने के ढंग को बदलूँगा। मैं तुम्हारे शरीर से कठोर हृदय को बाहर करुँगा और तुम्हें एक कोमल मानवी हृदय दूँगा। [27]मैं तुम्हारे भीतर अपनी आत्मा प्रतिष्ठित करुँगा। मैं तुम्हें बदलूँगा जिससे तुम मेरे नियमों का पालन करोगे। तुम सावधानी से मेरे आदेशों का पालन करोगे। [28]तब तुम उस देश में रहोगे जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था। तुम मेरे लोग रहोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा।"

[29]परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हें बचाऊँगा भी और तुम्हें अशुद्ध होने से रोकूँगा। मैं अन्न को उगने के लिये आदेश दूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध भूखमरी का समय नहीं लाऊँगा। [30]मैं तुम्हारे वृक्षों से फलों की बड़ी फसलें और खेतों से अन्न की फसलें दूँगा। तब तुम अन्य देशों में भूखे रहने की लज्जा फिर कभी अनुभव नहीं करोगे। [31]तुम उन बुरे कामों को याद करोगे जो तुमने किये। तुम याद करोगे कि वे काम अच्छे नहीं थे। तब तुम अपने पापों और जो भंयकर काम किये उनके लिये तुम स्वयं अपने से घृणा करोगे।"

[32]मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं चाहता हूँ कि तुम यह याद रखो: मैं तुम्हारी भलाई के लिये ये काम नहीं कर रहा हूँ! मैं उन्हें अपने अच्छे नाम के लिये कर रहा हूँ। इस्राएल के परिवार, तुम्हें अपने रहने के ढंग पर लज्जित और व्याकुल होना चाहिये!"

[33]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "जिस दिन मैं तुम्हारे पापों को धोऊँगा, मैं लोगों को वापस तुम्हारे नगरों में लाऊँगा। वे नष्ट नगर फिर बनाए जाएंगे। [34]खाली पड़ी भूमि फिर जोती जाएगी। यहाँ से गुजरने वाले हर एक को यह बरबादियों के ढेर के रूप में नहीं

दिखेगा। [35]वे कहेंगें, 'अतीत में यह देश नष्ट हो गए थे। लेकिन अब ये अदन के उद्यान जैसे हैं। नगर नष्ट हो गये थे। वे बरबाद और खाली थे। किन्तु अब वे सुरक्षित हैं और उनमें लोग रहते हैं।'"

[36]परमेश्वर ने कहा, "तब तुम्हारे चारों ओर के राष्ट्र समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ और मैंने उन नष्ट स्थानों को फिर बसाया। मैंने इस प्रदेश में, जो खाली पड़ा था पेड़ों को रोपा। मैं यहोवा हूँ। मैंने यह कहा और मैं इसे घटित कराऊँगा!"

[37]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं इस्राएल के परिवार से उनके लिये यह करने की याचना कराऊँगा। मैं उनको असंख्य लोग बनाऊँगा। वे भेड़ों की रेवड़ों की तरह होंगे। [38]यरूशलेम में विशेष त्योहार के अवसर के समय (बकरियों–भेंड़ों की रेवड़ों की तरह, लोग होंगे।) नगर और बरबाद स्थान, लोगों के झुण्ड से भर जाएंगे। तब वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

सूखी हड्डियों का दर्शन

37 यहोवा की शक्ति मुझ पर उतरी। यहोवा की आत्मा मुझे नगर के बाहर ले गई और नीचे एक घाटी के बीच में रखा। घाटी मरे लोगों की हड्डियों से भरी थी। [2]घाटी में असंख्य हड्डियाँ भूमि पर पड़ी थी। यहोवा ने मुझे हड्डियों के चारों ओर घुमाया। मैंने देखा कि हड्डियाँ बहुत सूखी हैं।

[3]तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या यह हड्डियाँ जीवित हो सकती हैं?"

मैने उत्तर दिया, "मेरे स्वामी यहोवा, उस प्रश्न का उत्तर केवल तू जानता है।"

[4]मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "उन हड्डियों से मेरे लिये बातें करो। उन हड्डियों से कहो, 'सूखी हड्डियों, यहोवा का वचन सुनों! [5]मेरा स्वामी यहोवा तुम से यह कहता है: मैं तुममें आत्मा को आने दूँगा और तुम जीवित हो जाओगे! [6]मैं तुम्हारे ऊपर नसें और माँस पेशियाँ चढ़ाऊँगा और मैं तुम्हें चमड़ी से ढक दूँगा। तब मैं तुम में प्राण का संचार करुँगा और तुम फिर जीवित हो उठोगे। तब तुम समझोगे कि मैं स्वामी यहोवा हूँ।'"

[7]अत: मैंने यहोवा के लिये उन हड्डियों से वैसे ही बातें कीं जैसा उसने कहा। मैं जब कुछ कह ही रहा था तभी मैंने प्रचण्ड ध्वनि सुनी। हड्डियाँ खड़खड़ाने लगीं और हड्डियाँ हड्डियों से एक साथ जुड़ीं! [8]वहाँ मेरी आँखों के सामने नसों, माँस पेशियों और त्वचा ने हड्डियों को ढकना आरम्भ किया। किन्तु शरीर हिले नहीं, उनमें प्राण नहीं था।

[9]तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "सांस से मेरे लिये कहो। मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये सांस से बातें करो। सांस से कहो कि स्वामी यहोवा यह कह रहा है: 'सांस, हर दिशा से आओ और इन शवों में प्राण संचार करो। उनमें प्राण संचार करो और वे फिर जीवित हो जाएंगे!'"

[10]इस प्रकार मैंने यहोवा के लिये सांस से बातें कीं जैसा उसने कहा और शवों में सांस आई। वे जीवित हुए और खड़े हो गये। वहाँ बहुत से पुरुष थे, वे एक बड़ी विशाल सेना थे!

[11]तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, ये हड्डियाँ इस्राएल के पूरे परिवार की तरह हैं! इस्राएल के लोग कहते हैं, हमारी हड्डियाँ सूख गई हैं , हमारी आशा समाप्त है। हम पूरी तरह नष्ट किये जा चुके हैं। [12]इसलिये उनसे मेरे लिये बातें करो। उनसे कहो स्वामी यहोवा यह कहता है, 'मेरे लोगों, मैं तुम्हारी कब्रें खोलूँगा और तुम्हें कब्रों के बाहर लाऊँगा! तब मैं तुम्हें इस्राएल की भूमि पर लाऊँगा। [13]मेरे लोगों, मैं तुम्हारी कब्रें खोलूँगा और तुम्हारी कब्रों से तुम्हें बाहर लाऊँगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ। [14]मैं अपनी आत्मा तुममें डालूँगा और तुम फिर से जीवित हो जाओगे। तब तुमको मैं तुम्हारे देश में वापस लाऊँगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। तुम जानोगे कि मैंने ये बातें कहीं और उन्हें घटित कराया।'" यहोवा ने यह कहा था।

यहूदा और इस्राएल का फिर एक होना

[15]मुझे यहोवा का वचन फिर मिला। उसने कहा, [16]"मनुष्य के पुत्र, एक छड़ी लो और उस पर यह सन्देश लिखो: 'यह छड़ी यहूदा और उसके मित्र इस्राएल के लोगों की है।' तब दूसरी छड़ी लो और इस पर लिखो, 'एप्रैम की यह छड़ी, यूसुफ और उसके मित्र इस्राएल के लोगों की है।' [17]तब दोनों छड़ियों को एक साथ जोड़ दो। तुम्हारे हाथ में वे एक छड़ी होंगी।

[18]"तुम्हारे लोग यह स्पष्ट करने को कहेंगे कि इसका अर्थ क्या है। [19]उनसे कहो कि स्वामी यहोवा कहता है, 'मैं यूसुफ की छड़ी लूँगा जो इस्राएल के लोगों, जो एप्रैम

और उसके मित्रों के हाथ में है। तब मैं उस छड़ी को यहूदा की छड़ी के साथ रखूँगा और इन्हें एक छड़ी बनाऊँगा। मेरे हाथ में वह एक छड़ी होगी!'

[20]"उनके आँखों के सामने उन छड़ियों को अपने हाथों में पकड़ो। तुमने वे नाम उन छड़ियों पर लिखे थे। [21]लोगों से कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है: 'मैं इस्राएल के लोगों को उन राष्ट्रों से लाऊँगा, जहाँ वे गए हैं। मैं उन्हें चारों ओर से एकत्रित करूँगा और उनके अपने देश में लाऊँगा। [22]मैं उन्हें इस्राएल के पर्वतों के प्रदेश में एक राष्ट्र बनाऊँगा। उन सभी का केवल एक राजा होगा। वे दो राष्ट्र नहीं बने रहेंगे। वे भविष्य में राज्यों में नहीं बँटे जा सकते। [23]वे अपनी देवमूर्तियों और भंयकर मूर्तियों या अपने अन्य किसी अपराध से अपने आपको गन्दा बनाते नहीं रहेंगे। किन्तु मैं उन्हें सभी पापों से बचाता रहूँगा, चाहे वे जहाँ कहीं भी हों। मैं उन्हें नहलाऊँगा और शुद्ध करूँगा। वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर रहूँगा।

[24]"'मेरा सेवक दाऊद उनके ऊपर राजा होगा। उन सभी का केवल एक गड़ेरिया होगा। वे मेरे नियमों के सहारे रहेंगे और मेरे विधियों का पालन करेंगे। वे वह काम करेंगे जो मैं कहूँगा। [25]वे उस भूमि पर रहेंगे जो मैंने अपने सेवक याकूब को दी। तुम्हारे पूर्वज उस स्थान पर रहते थे और मेरे लोग वहाँ रहेंगे। वे, उनके बच्चे और उनके पौत्र–पौत्रियाँ वहाँ सर्वदा रहेंगी और मेरा सेवक दाऊद उनका प्रमुख सदा रहेगा। [26]मैं उनके साथ एक शान्ति–सन्धि करुँगा। यह सन्धि सदा बनी रहेगी। मैं उनको उनका देश देना स्वीकार करता हूँ। मैं उन्हें बहुसंख्यक लोग बनाना स्वीकार करता हूँ। मैं अपना पवित्र स्थान वहाँ उनके साथ सदा के लिये रखना स्वीकार करता हूँ। [27]मेरा पवित्र तम्बू वहाँ उनके बीच रहेगा। हाँ, मैं उनका परमेश्वर और वे मेरे लोग होंगे। [28]तब अन्य राष्ट्र समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ और वे जानेंगे कि मैं इस्राएल को, उनके बीच सदा के लिये अपना पवित्र स्थान रखकर, अपने विशेष लोग बना रहा हूँ।'"

गोग के विरुद्ध सन्देश

38 यहोवा का सन्देश मुझे मिला। उसने कहा, [2]"मनुष्य के पुत्र, मागोग प्रदेश में गोग पर ध्यान दो। वह मेशेक और तूबल राष्ट्रों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रमुख है। गोग के विरुद्ध मेरे लिये कुछ कहो। [3]उससे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, गोग तुम मेशेक और तूबल राष्ट्रों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रमुख हो! किन्तु मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। [4]मैं तुम्हें पकड़ूँगा और तुम्हारी पूरी सेना के साथ वापस लाऊँगा। मैं तुम्हारी सेना के सभी पुरुषों को वापस लाऊँगा। मैं सभी घोड़ों और घुड़सवारों को वापस लाऊँगा। मैं तुम्हारे मुँह में नकेल डालूँगा और तुम सभी को वापस लाऊँगा। सभी सैनिक अपनी सभी तलवारों और ढालों के साथ अपनी सैनिक पोशाक में होंगे। [5]फारस, कूश और पूत के सैनिक उनके साथ होंगे। वे सभी अपनी ढालें तथा सिर के कवच धारण किये होंगे। [6]वहाँ अपने सैनिकों के सभी समूहों के साथ गोमेर भी होगा। वहाँ दूर उत्तर से अपने सैनिकों के सभी समूहों के साथ तोगर्मा का राष्ट्र भी होगा। उस बन्दियों की पंक्ति में वहाँ बहु संख्यक लोग होंगे।

[7]"तैयार हो जाओ। हाँ, अपने को तैयार करो और अपने साथ मिलने वाली सेना को भी। तुम्हें निगरानी रखनी चाहिए और तैयार रहना चाहिए। [8]बहुत लम्बे समय के बाद तुम काम पर बुलाये जाओगे। आगे आने वाले वर्षों में तुम उस प्रदेश में आओगे जो युद्ध के बाद पुन: निर्मित होगा। उस देश में लोग इस्राएल के पर्वत पर आने के लिये बहुत से राष्ट्रों से इकट्ठे किये जाएंगे। अतीत में इस्राएल का पर्वत बार–बार नष्ट किया गया था। किन्तु ये लोग उन दूसरे राष्ट्रों से वापस लौटे होंगे। वे सभी सुरक्षित रहेंगे। [9]किन्तु तुम उन पर आक्रमण करने आओगे। तुम तूफान की तरह आओगे। तुम देश को ढकते हुए गरजते मेघ की तरह आओगे। तुम और बहुत से राष्ट्रों के तुम्हारे सैनिकों के समूह, इन लोगों पर आक्रमण करने आएंगे।"

[10]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "उस समय तुम्हारे मस्तिष्क में एक विचार उठेगा। तुम एक बुरी योजना बनाना आरम्भ करोगे। [11]तुम कहोगे, 'मैं उस देश पर आक्रमण करने जाऊँगा जिसके नगर बिना दीवार के हैं (इस्राएल)। वे लोग शान्तिपूर्वक रहते हैं। वे समझते हैं कि वे सुरक्षित हैं। उनकी रक्षा के लिये उनके नगरों के चारों ओर कोई दीवार नहीं है। उनके दरवाजों में ताले नहीं हैं, उनके दरवाजे भी नहीं हैं! [12]मैं इन लोगों को हराऊँगा और उनकी सभी कीमती चीजें उनसे ले लूँगा। मैं उन स्थानों के विरुद्ध लड़ूँगा जो नष्ट हो चुके थे, किन्तु अब

लोग उनमें रहने लगे हैं। मैं उन लोगों (इस्राएल) के विरुद्ध लड़ूँगा जो दूसरे राष्ट्रों से इकट्ठे हुए थे। अब वे लोग मवेशी और सम्पत्ति वाले हैं। वे संसार के चौराहे पर रहते हैं जिस स्थान में से शक्तिशाली देशों को अन्य शक्तिशाली सभी देशों तक जाने के लिये यात्रा करनी पड़ती है।"

[13]"शबा, ददान और तर्शीश के व्यापारी और सभी नगर जिनके साथ वे व्यापार करते हैं, तुमसे पूछेंगे, 'क्या तुम कीमती चीजों पर अधिकार करने आये हो? क्या तुम अपने सैनिकों के समूहों के साथ, उन अच्छी चीजों को हड़पने और चाँदी, सोना मवेशी तथा सम्पत्ति ले जाने आए थे? क्या तुम उन सभी कीमती चीजों को लने आये थे?'"

[14]परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये गोग से कहो। उससे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, "तुम हमारे लोगों पर तब आक्रमण करने आओगे जब वे शान्तिपूर्वक और सुरक्षित रह रहे हैं। [15]तुम दूर उत्तर के अपने स्थान से आओगे और तुम बहुसंख्यक लोगों को साथ लाओगे। वे सभी घुड़सवार होंगे। तुम एक विशाल और शक्तिशाली सेना होगे। [16]तुम मेरे लोग इस्राएल के विरुद्ध लड़ने आओगे। तुम देश को गरजते मेघ की तरह ढकने वाले होगे। मैं बाद में, अपने देश के विरुद्ध लड़ने के लिये तुम्हें लाऊँगा। तब गोग, राष्ट्र जानेंगे कि मैं कितना शक्तिशाली हूँ। वे मेरा सम्मान करेंगे और समझेंगे कि मैं पवित्र हूँ। वे देखेंगे कि मैं तुम्हारे विरुद्ध क्या करूँगा!"

[17]यहोवा यह कहता है, "उस समय लोग याद करेंगे कि मैंने अतीत में तुम्हारे बारे में जो कहा। वे याद करेंगे कि मैने अपने सेवकों इस्राएल के नबियों का उपयोग किया। वे याद करेंगे कि इस्राएल के नबियों ने मेरे लिये अतीत में बातें कीं और कहा कि मैं तुमको उनके विरुद्ध लड़ने के लिये लाऊँगा।"

[18]मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, "उस समय, गोग इस्राएल देश के विरुद्ध लड़ने आएगा। मैं अपना क्रोध प्रकट करूँगा। [19]क्रोध और उत्तेजना में मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस्राएल में एक प्रबल भूकम्प आएगा। [20]उस समय सभी सजीव प्राणी भय से काँप उठेंगे। समुद्र में मछलियाँ, आकाश में पक्षी, खेतों में जंगली जानवर और वे सभी छोटे प्राणी जो धरती पर रेंगते हैं, भय से काँप उठेंगे। पर्वत गिर पड़ेंगे और शिखर ध्वस्त होंगी। हर एक दीवार धरती पर आ गिरेगी!"

[21]मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "इस्राएल के पर्वतों पर, मैं गोग के विरुद्ध हर प्रकार का भय उत्पन्न करुँगा। उसके सैनिक इतने भयभीत होंगे कि वे एक दूसरे पर आक्रमण करेंगे और अपनी तलवार से एक दूसरे को मार डालेंगे। [22]मैं गोग को रोग और मृत्यु का दण्ड दूँगा। मैं गोग और बहुत से राष्ट्रों के सैनिकों के ऊपर ओले, आग और गंधक की वर्षा करुँगा। [23]तब मैं दिखाऊँगा कि मैं कितना महान हूँ, मैं प्रमाणित करुँगा कि मैं पवित्र हूँ। बहुत से राष्ट्र मुझे ये काम करते देखेंगे और वे जानेंगे कि मैं कौन हूँ। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

गोग और उसकी सेना की मृत्यु

39 "मनुष्य के पुत्र, गोग के विरुद्ध मेरे लिये कहो। उससे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है, 'गोग, तुम मेशेक और तूबल देशों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रमुख हो! किन्तु मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। [2]मैं तुम्हें पकडूँगा और वापस लाऊँगा। मैं तुम्हें सुदूर उत्तर से लाऊँगा। मैं तुम्हें इस्राएल के पर्वतों के विरुद्ध युद्ध करने के लिये लाऊँगा। [3]किन्तु मैं तुम्हारा धनुष तुम्हारे बायें हाथ से झटक कर गिरा दूँगा। मैं तुम्हारे दायें हाथ से तुम्हारे बाण झटक कर गिरा दूँगा। [4]तुम इस्राएल के पर्वतों पर मारे जाओगे। तुम, तुम्हारे सैनिक समूह और तुम्हारे साथ के अन्य सभी राष्ट्र युद्ध में मारे जाएंगे। मैं तुमको हर एक प्रकार के पक्षियों, जो माँसभक्षी हैं तथा सभी जंगली जानवरों को भोजन के रूप में दूँगा। [5]तुम नगर में प्रवेश नहीं करोगे। तुम खुले मैंदानों में मारे जाओगे। मैंने यह कह दिया है!'" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

[6]परमेश्वर ने कहा, "मैं मागोग और उन व्यक्तियों के, जो समुद्र–तट पर सुरक्षित रहते हैं, विरुद्ध आग भेजूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। [7]मैं अपना पवित्र नाम अपने इस्राएल लोगों में विदित करुँगा। भविष्य में, मैं अपने पवित्र नाम को, लोगों द्वारा और अधिक बदनाम नहीं करने दूँगा। राष्ट्र जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। वे समझेंगे कि मैं इस्राएल में परम पवित्र हूँ। [8]वह समय आ रहा है! यह घटित होगा!" यहोवा ने ये बातें कहीं! "यह वही दिन है जिसके बारे में मैं कह रहा हूँ।

[9]"उस समय, इस्राएल के नगरों में रहने वाले लोग उन खेतों में जाएंगे। वे शत्रु के अस्त्र–शस्त्रों को इकट्ठा करेंगे और उन्हें जला देंगे। वे सभी ढालों, धनुषों, और बाणों, गदाओं और भालों को जलाएंगे। वे उन अस्त्र–शस्त्रों का उपयोग सात वर्ष तक ईंधन के रूप में करेंगे। [10]उन्हें मैंदानों से लकड़ी इकट्ठी नहीं करनी पड़ेगी या जंगलों से ईंधन नहीं काटना पड़ेगा, क्योंकि वे अस्त्र–शस्त्रों का उपयोग ईंधन के रुप में करेंगे। वे कीमती चीजों को सैनिकों से छीनेंगे जिसे वे उनसे चुराना चाहते थे। वे सैनिकों से अच्छी चीजें लेंगे जिन्होंने उनसे अच्छी चीजें ली थीं।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।"

[11]परमेश्वर ने कहा, "उस समय में गोग को दफनाने के लिये इस्राएल में एक स्थान चुनूँगा। वह मृत सागर के पूर्व में यात्रियों की घाटी में दफनाया जाएगा। यह यात्रियों के मार्ग को रोकेगा। क्यों? क्योंकि गोग और उसकी सारी सेना उस स्थान में दफनायी जाएगी। लोग इसे 'गोग की सेना की घाटी' कहेंगे। [12]इस्राएल का परिवार देश को शुद्ध करने के लिए सात महीने तक उन्हें दफनाएगा। [13]देश के साधारण लोग शत्रु के सैनिकों को दफनाएंगे। इस्राएल के लोग उस दिन प्रसिद्ध होंगे जिस दिन मैं अपने लिए सम्मान पाऊँगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

[14]परमेश्वर ने कहा, "लोग मजदूरों को, उन मरे सैनिकों को दफनाने के लिये पूरे समय की नौकरी देंगे। इस प्रकार वे देश को पवित्र करेंगे। वे मज़दूर सात महीने तक कार्य करेंगे। वे शवों को ढूँढते हुए चारों ओर जाएंगे। [15]वे मज़दूर चारों ओर ढूँढते फिरेंगे। यदि उनमें कोई एक हड्डी देखेगा तो वह उसके पास एक चिन्ह बना देगा। चिन्ह वहाँ तब तक रहेगा जब तक कब्र खोदने वाला आता नहीं और गोग की सेना की घाटी में उस हड्डी को दफनाता नहीं। [16]वह मृतक लोगों का नगर, (कब्रिस्तान) हमोना कहलाएगा। इस प्रकार वे देश को शुद्ध करेंगे।"

[17]मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा, "मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये पक्षियों और जंगली जानवरों से कुछ कहो। उनसे कहो, 'यहाँ आओ! यहाँ आओ! एक स्थान पर इकट्ठे हो। यह बलि जो मैं तुम्हारे लिये तैयार कर रहा हूँ उसके लिए आओ, उसे खाओ। इस्राएल के पर्वतों पर एक विशाल बलिदान होगा। आओ, माँस खाओ और खून पिओ। [18]तुम शक्तिशाली सैनिकों के शरीर का माँस खाओगे। तुम संसार के प्रमुखों का खून पीओगे। वे बाशान के मेढ़ों, मेमनों, बकरों और मोटे बैलों के समान होंगे। [19]तुम जितनी चाहो, उतनी चर्बी खा सकते हो और तुम खून तब तक पी सकते हो जब तक तुम्हारे पेट न भरे। तुम मेरी बलि से खाओगे और पीओगे जिसे मैंने तुम्हारे लिये मारा। [20]मेरी मेज पर खाने को तुम बहुत–सा माँस पा सकते हो। वहाँ घोड़े और रथ सारथी, शक्तिशाली सैनिक और अन्य सभी लड़ने वाले व्यक्ति होंगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

[21]परमेश्वर ने कहा, "मैं अन्य राष्ट्रों को दिखाऊँगा कि मैंने क्या किया है। वे राष्ट्र मेरा सम्मान करना आरम्भ करेंगे! वे मेरी वह शक्ति देखेंगे जो मैंने शत्रु के विरुद्ध उपयोग की। [22]तब, उस दिन के बाद, इस्राएल का परिवार जानेगा कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ। [23]राष्ट्र यह जान जाएंगे कि इस्राएल का परिवार क्यों दूसरे देशों में बन्दी बनाकर ले जाया गया था। वे जानेंगे कि मेरे लोग मेरे विरुद्ध हो उठे थे। इसलिए मैं उनसे दूर हट गया था। मैंने उनके शत्रुओं को उन्हें हराने दिया। अत: मेरे लोग युद्ध में मारे गए। [24]उन्होंने पाप किया और अपने को गन्दा बनाया। अत: मैंने उन्हें उन कामों के लिये दण्ड दिया जो उन्होंने किये। अत: मैंने उनसे अपना मुँह छिपाया है और उनको सहायता देने से इन्कार किया।"

[25]अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "अब मैं याकूब के परिवार को बन्धुवाई से निकालूँगा। मैंने पूरे इस्राएल के परिवार पर दया की है। मैं अपने पवित्र नाम के लिये विशेष भावना प्रकट करूँगा। [26]लोग अपनी लज्जा और मेरे विरुद्ध विद्रोह के सारे समय को भूल जायेंगे। वे अपने देश में सुरक्षा के साथ रहेंगे। कोई भी उन्हें भयभीत नहीं करेगा। [27]मैं अपने लोगों को अन्य देशों से वापस लाऊँगा। मैं उन्हें उनके शत्रुओं के देशों से इकट्ठा करूँगा। तब बहुत से राष्ट्र समझेंगे कि मैं कितना पवित्र हूँ। [28]वे समझेंगे कि मैं यहोवा उनका परमेश्वर हूँ। क्यों? क्योंकि मैंने उनसे उनका घर छुड़वाया और अन्य देशों में बन्दी के रूप में भिजवाया और तब मैंने उन्हें एक साथ इकट्ठा किया और उनके अपने देश में वापस लाया। [29]मैं इस्राएल के परिवार में अपनी आत्मा उतारूँगा और उसके बाद, मैं फिर अपने लोगों से दूर नहीं हटूँगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

नया मन्दिर

40 हम लोगों को बन्दी के रूप में ले जाए जाने के पच्चीसवें वर्ष में, वर्ष के आरम्भ में (अकटूबर) महीने के दसवें दिन, यहोवा की शक्ति मुझ में आई। बाबुल वासियों द्वारा इस्राएल पर अधिकार करने के चौदहवें वर्ष का यह वही दिन था। दर्शन में यहोवा मुझे वहाँ ले गया।

[2]दर्शन में परमेश्वर मुझे इस्राएल देश ले गया। उसने मुझे एक बहुत ऊँचे पर्वत के समीप उतारा। पर्वत पर एक भवन था जो नगर के समान दिखता था। [3]यहोवा मुझे वहाँ ले आया। वहाँ एक व्यक्ति था जो झलकाये गये काँसे की तरह चमकता हुआ दिखता था। वह व्यक्ति एक कपड़े नापने का फीता और नापने की एक छड़ अपने हाथ में लिये था। वह फाटक से लगा खड़ा था। [4]उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, अपनी आँख और अपने कान का उपयोग करो। इन चीजों पर ध्यान दो और मेरी सुनों। जो मैं तुम्हें दिखाता हूँ उस पर ध्यान दो। क्यों? क्योंकि तुम यहाँ लाए गए हो, अत: मैं तुम्हें इन चीजों को दिखा सकता हूँ। तुम इस्राएल के परिवार से वह सब बताना जो तुम यहाँ देखो।"

[5]मैंने एक दीवार देखी जो मन्दिर के बाहर चारों ओर से घेरती थी। उस व्यक्ति के हाथ में चीजों को नापने की एक छड़ थी। यह एक बालिश्त और एक हाथ लम्बी थी। अत: उस व्यक्ति ने दीवार की मोटाई नापी। वह एक छड़ मोटी थी। उस व्यक्ति ने दीवार की ऊँचाई नापी। यह एक छड़ ऊँची थी।

[6]तब व्यक्ति पूर्वी द्वार को गया। वह व्यक्ति उसकी पैड़ियों पर चढ़ा और फाटक की देहली को नापा। यह एक छड़ चौड़ी थी। [7]रक्षकों के कमरे एक छड़ लम्बे और एक छड़ चौड़े थे। कमरों के बीच के दीवारों की मोटाई पाँच हाथ थी। भीतर की ओर फाटक के प्रवेश कक्ष के बगल में फाटक की देहली एक छड़ चौड़ी थी। [8]तब उस व्यक्ति ने मन्दिर से लगे फाटक के प्रवेश कक्ष को नापा। [9]यह एक छड़ चौड़ा था। तब उस व्यक्ति ने फाटक के प्रवेश कक्ष को नापा। यह आठ हाथ था। उस व्यक्ति ने फाटक के द्वार–स्तम्भों को नापा। हर एक द्वार स्तम्भ दो हाथ चौड़ा था। प्रवेश कक्ष का दरवाजा भीतर को था। [10]फाटक के हर ओर तीन छोटे कमरे थे। ये तीनों छोटे कमरे हर ओर से एक नाप के थे। दोनों ओर के द्वार स्तम्भ एक नाप के थे। [11]उस व्यक्ति ने फाटक के दरवाजें की चौड़ाई नापी। यह दस हाथ चौड़ी और तेरह हाथ चौड़ी थी। [12]हर एक कमरे के सामने एक नीची दीवार थी। यह दीवार एक हाथ ऊँची और एक हाथ मोटी थी। कमरे वर्गाकार थे और हर ओर से छ: हाथ लम्बे थे।

[13]उस व्यक्ति ने फाटक को एक कमरे की छत से दूसरे कमरे की छत तक नापा। यह पच्चीस हाथ था। एक द्वार दूसरे द्वार के ठीक विपरीत था। [14]उस व्यक्ति ने प्रवेश कक्ष को भी नापा। यह बीस हाथ चौड़ा था। प्रवेश कक्ष के चारों ओर आँगन था। [15]प्रवेश कक्ष का फाटक पूरे बाहर की ओर से, फाटक के भीतर तक नाप में पचास हाथ था। [16]रक्षकों के कमरों में चारों ओर छोटी खिड़कियाँ थीं। छोटे कमरों में द्वार–स्तम्भों की ओर भीतर को खिड़कियाँ अधिक पतली हो गई थीं। प्रवेश कक्ष में भी भीतर के चारों ओर खिड़कियाँ थीं। हर एक द्वार स्तम्भ पर खजूर के वृक्ष खुदे थे।

बाहर का आँगन

[17]तब वह व्यक्ति मुझे बाहरी आँगन में लाया। मैंने कमरे और पक्के रास्ते को देखा। वे आँगन के चारों ओर थे। पक्के रास्ते पर सामने तीस कमरे थे। [18]पक्का रास्ता फाटक की बगल से गया था। पक्का रास्ता उतना ही लम्बा था जितने फाटक थे। यह नीचे का रास्ता था। [19]तब उस व्यक्ति ने नीचे फाटक के सामने भीतर की ओर से लेकर आँगन की दीवार के सामने भीतर की ओर तक नापा। यह सौ हाथ पूर्व और उत्तर में था।

[20]उस व्यक्ति ने बाहरी आँगन, जिसका सामना उत्तर की ओर है, के फाटक की लम्बाई और चौड़ाई को नापा। [21]इसके हर एक ओर तीन कमरे हैं। इसके द्वार स्तम्भों और प्रवेश कक्ष की नाप वही थी जो पहले फाटक की थी। फाटक पचास हाथ लम्बा और पच्चीस हाथ चौड़ा था। [22]इसकी खिडकियाँ इसके प्रवेश कक्ष और इसकी खजूर के वृक्षों की नक्काशी की नाप वही थी जो पूर्व की ओर मुखवाले फाटक की थी। फाटक तक सात पैड़ियाँ थीं। फाटक का प्रवेश कक्ष भीतर था। [23]भीतरी आँगन में उत्तर के फाटक तक पहुँचने वाला एक फाटक था। यह पूर्व के फाटक के समान था। उस व्यक्ति ने एक फाटक से

दूसरे तक नापा। यह एक फाटक से दूसरे फाटक तक सौ हाथ था।

[24]तब वह व्यक्ति मुझे दक्षिण की ओर ले गया। मैंने दक्षिण में एक द्वार देखा। उस व्यक्ति ने द्वार–स्तम्भों और प्रवेश कक्ष को नापा। [25]वे नाप में उतने ही थे जितने अन्य फाटक। मुख्य द्वार पचास हाथ लम्बे और पच्चीस हाथ चौड़े थे। [26]सात पैड़ियाँ इस फाटक तक पहुँचाती थीं। इसका प्रवेश कक्ष भीतर को था। हर एक ओर एक–एक द्वार–स्तम्भ पर खजूर की नक्काशी थी। [27]भीतरी आँगन की दक्षिण की ओर एक फाटक था। उस व्यक्ति ने दक्षिण की ओर एक फाटक से दूसरे फाटक तक नापा। यह सौ हाथ चौड़ा था।

भीतरी आँगन

[28]तब वह व्यक्ति मुझे दक्षिण फाटक से होकर भीतरी आँगन में ले गया। दक्षिण के फाटक की नाप उतनी ही थी जितनी अन्य फाटकों की। [29]दक्षिण फाटक के कमरे, द्वार–स्तम्भ और प्रवेश कक्ष की नाप उतनी ही थी जितनी अन्य फाटकों की थी। खिड़कियाँ, फाटक और प्रवेश कक्ष के चारों ओर थीं। फाटक पचास हाथ लम्बा और पच्चीस हाथ चौड़ा था। उसके चारों ओर प्रवेश कक्ष थे। [30]प्रवेश कक्ष पच्चीस हाथ लम्बा और पाँच हाथ चौड़ा था। [31]दक्षिण फाटक के प्रवेश कक्ष का सामना बाहरी आँगन की ओर था। इसके द्वार–स्तम्भों पर खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी। इसकी सीढ़ी की आठ पैड़ियाँ थीं।

[32]वह व्यक्ति मुझे पूर्व की ओर के भीतरी आँगन में लाया। उसने फाटक को नापा। उसकी नाप वही थी जो अन्य फाटकों की। [33]पूर्वी द्वार के कमरे, द्वार–स्तम्भ और प्रवेश कक्ष के नाप वही थे जो अन्य फाटकों के। फाटक और प्रवेश कक्ष के चारों ओर खिड़कियाँ थीं। पूर्वी फाटक पचास हाथ लम्बा और पच्चीस हाथ चौड़ा था। [34]इसके प्रवेश कक्ष का सामना बाहरी आँगन की ओर था। हर एक ओर के द्वार–स्तम्भों पर खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी। इसकी सीढ़ी में आठ पैड़ियाँ थीं।

[35]तब वह व्यक्ति मुझे उत्तरी द्वार पर लाया। उसने इसे नापा। इसकी नाप वह थी जो अन्य फाटकों की अर्थात [36]इसके कमरों, द्वार–स्तम्भों और प्रवेश कक्ष की। फाटक के चारों ओर खिड़कियाँ थीं। यह पचास हाथ लम्बा और पच्चीस हाथ चौड़ा था। [37]द्वार–स्तम्भों का सामना बाहरी आँगन की ओर था। हर एक ओर के द्वार–स्तम्भों पर खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी और इसकी सीढ़ी की आठ पैड़ियाँ थीं।

बलियाँ तैयार करने के कमरें

[38]एक कमरा था जिसका दरवाजा फाटक के प्रवेश कक्ष के पास था। यह वहाँ था जहाँ याजक होमबलि के लिये जानवरों को नहलाते हैं। [39]फाटक के प्रवेश कक्ष के दोनों ओर दो मेजें थीं। होमबलि पाप के लिये भेंट और अपराध के लिये भेंट के जानवर उन्हीं मेजों पर मारे जाते थे। [40]प्रवेश कक्ष के बाहर, जहाँ उत्तरी फाटक खुलता है, दो मेजें थीं और फाटक के प्रवेश कक्ष के दूसरी ओर दो मेजें थीं [41]फाटक के भीतर चार मेजें थीं। चार मेजें फाटक के बाहर थीं। सब मिलाकर आठ मेजें थीं। याजक इन मेजों पर बलि के लिए जानवरों को मारते थे। [42]होमबलि के लिये कटी शिला की चार मेजें थीं। ये मेजें डेढ़ हाथ लम्बी, डेढ़ हाथ चौड़ी और एक हाथ ऊँची थीं। याजक होमबलि और बलिदानों के लिये जिन जानवरों को मारा करते थे, उनको मारने के औजारों को इन मेजों पर रखते थे। [43]एक हाथ की चौड़ाई के कुन्दें पूरे मन्दिर में लगाए गए थे। भेंट के लिये माँस मेजों पर रहता था।

याजकों के कमरे

[44]भीतरी आँगन के फाटक के बाहर दो कमरे थे। एक उत्तरी फाटक के साथ था। इसका सामना दक्षिण को था। दूसरा कमरा दक्षिण फाटक के साथ था। इसका सामना उत्तर को था। [45]उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "यह कमरा, जिसका सामना दक्षिण को है, उन याजक के लिये है जो अपने काम पर हैं और मन्दिर में सेवा कर रहे हैं। [46]किन्तु वह कमरा जिसका सामना उत्तर को है, उन याजकों के लिये है जो अपने काम पर हैं और वेदी पर सेवा कर रहे हैं। ये सभी याजक सादोक के वंशज हैं। सादोक के वंशज ही लेवीवंश के एकमात्र व्यक्ति हैं जो यहोवा की सेवा उनके पास बलि लाकर कर सकते हैं।"

[47]उस व्यक्ति ने आँगन को नापा। आँगन पूर्ण वर्गाकार था। यह सौ हाथ लम्बा और सौ हाथ चौड़ा था। वेदी मन्दिर के सामने थी।

मन्दिर का प्रवेश–कक्ष

[48]वह व्यक्ति मुझे मन्दिर के प्रवेश कक्ष में लाया और उनके हर एक द्वार–स्तम्भ को नापा। यह पाँच हाथ प्रत्येक ओर था। फाटक चौदह हाथ चौड़ा था। फाटक की बगल की दीवारें तीन हाथ हर ओर थीं। [49]प्रवेश कक्ष बीस हाथ लम्बा और बारह हाथ चौड़ा था। प्रवेश–कक्ष तक दस सीढ़ियाँ पहुँचाती थीं। द्वार–स्तम्भ के सहारे दोनों ओर स्तम्भ थे।

मन्दिर का पवित्र स्थान

41 वह व्यक्ति मुझे मन्दिर के बीच के कमरे पवित्र स्थान में लाया। उसने इसके प्रत्येक द्वार–स्तम्भों को नापा। वे छः हाथ मोटे हर ओर थे। [2]दरवाजा दस हाथ चौड़ा था। द्वार की बगलें पाँच हाथ हर ओर थीं। उस व्यक्ति ने बाहरी पवित्र स्थान को नापा। यह चालीस हाथ लम्बा और बीस हाथ चौड़ा था।

मन्दिर का परम पवित्र स्थान

[3]तब वह व्यक्ति अन्दर गया और हर एक द्वार–स्तम्भ को नापा। हर एक द्वार–स्तम्भ दो हाथ मोटा था। यह छः हाथ ऊँचा था। द्वार सात हाथ चौड़ा था। [4]तब उस व्यक्ति ने कमरे की लम्बाई नापी। यह बीस हाथ लम्बा और बीस हाथ चौड़ा था। बीच के कमरे के प्रवेश के पहले था। उस व्यक्ति ने कहा, "यह परम पवित्र स्थान है।"

मन्दिर के चारों ओर के बाकी कमरें

[5]तब उस व्यक्ति ने मन्दिर की दीवार नापी। यह छः हाथ चौड़ी थी। बगल के कमरे चार हाथ चौड़े मन्दिर के चारों ओर थे। [6]बगल के कमरे तीन विभिन्न मंजिलों पर थे। वे एक दूसरे के ऊपर थे। हर एक मंजिल पर तीस कमरे थे। बगल के कमरे चारों ओर की दीवार पर टिके हुए थे। अतः मन्दिर की दीवार स्वयं कमरों को टिकाये हुए नहीं थी। [7]मन्दिर के चारों ओर बगल के कमरों की मंजिल नीचे की मंजिल से अधिक चौड़ी थी। मन्दिर के चारों ओर ऊँचा चबूतरा हर मंजिल पर मन्दिर की हर एक ओर फैला हुआ था। इसलिए सबसे ऊपर की मंजिल पर कमरे अधिक चौड़े थे। दूसरी मंजिल से होकर एक सीढ़ी सबसे नीचे के मंजिल से सबसे ऊँचे मंजिल तक गई थी।

[8]मैंने यह भी देखा कि मन्दिर के चारों ओर की नींव सर्वत्र पक्की थी। बगल के कमरों की नींव एक पूरे मापदण्ड (10.6इंच) ऊँची थी। [9]बगल के कमरों की बाहरी दीवार पाँच हाथ मोटी थी। मन्दिर के बगल के कमरों [10]और याजक के कमरों के बीच खुला क्षेत्र बीस हाथ मन्दिर के चारों ओर था। [11]बगल के कमरों के दरवाजें पक्की फर्श की उस नींव पर खुलते थे जो दीवार का हिस्सा नहीं थी। एक दरवाजें का मुख उत्तर की ओर था और दूसरे का दक्षिण की ओर। पक्की फर्श चारों ओर पाँच हाथ चौड़ी थी।

[12]पश्चिमी ओर मन्दिर के आँगन के सामने का भवन सत्तर हाथ चौड़ा था। भवन की दीवार चारों ओर पाँच हाथ मोटी थी। यह नब्बे हाथ लम्बी थी। [13]तब उस व्यक्ति ने मन्दिर को नापा। मन्दिर सौ हाथ लम्बा था। भवन और इसकी दीवार के साथ आँगन भी सौ हाथ लम्बे थे। [14]मन्दिर का पूर्वी मुख और आँगन सौ हाथ चौड़ा था।

[15-16]उस व्यक्ति ने उस भवन की लम्बाई को नापा जिसका सामना मन्दिर के पीछे के आँगन की ओर था तथा जिसकी दीवारें दोनों ओर थीं। यह सौ हाथ लम्बा था। बीच के कमरे के भीतरी कमरे (पवित्र स्थान) और आँगन के प्रवेश कक्ष पर चौखटें लगीं थीं। तीनों पर ही चारों ओर जालीदार खिड़कियाँ थीं। मन्दिर के चारों ओर देहली से लगे, फर्श से खिड़कियों तक लकड़ी की चौखटें जड़ी हुई थीं। खिड़कियाँ ढकी हुई थीं।

[17]द्वार के ऊपर की दीवार, भीतरी कमरे और बाहर तक, सारी लकड़ी की चौखटों से मढ़ी गई थीं। मन्दिर के भीतरी कमरे तथा बाहरी कमरे की सभी दीवारों पर [18]करुब (स्वर्गदूतों) और खजूर के वृक्षों की नक्काशी की गई थी। करुब (स्वर्गदूतों) के बीच एक खजूर का वृक्ष था। हर एक करुब (स्वर्गदूतों) के दो मुख थे। [19]एक मुख मनुष्य का था जो एक ओर खजूर के पेड़ को देख रहा था। दूसरा मुख सिंह का था जो दूसरी ओर खजूर के वृक्ष को देखता था। वे मन्दिर के चारों ओर उकेरे गये थे। [20]बीच के कमरे पवित्र स्थान की सभी दीवारों पर करुब (स्वर्गदूत) तथा खजूर के वृक्ष उकेरे गए थे।

[21]बीच के कमरे (पवित्र स्थान) के द्वार–स्तम्भ वर्गाकार थे। सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने ऐसा कुछ था जो [22]वेदी के समान लकड़ी का बना दिखता था। यह

तीन हाथ ऊँचा और दो हाथ लम्बा था। इसके कोने, नींव और पक्ष लकड़ी के थे। उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "यह मेज है जो यहोवा के सामने है।"

[23]बीच का कमरा (पवित्र स्थान) और सर्वाधिक पवित्र स्थान दो दरवाजों वाले थे। [24]एक दरवाजा दो छोटे दरवाजों से बना था। हर एक दरवाजा सचमुच दो हिलते हुए दरवाजों सा था। [25]बीच के कमरे (पवित्र स्थान) के दरवाजों पर करुब (स्वर्गदूत) और खजूर के वृक्ष उकेरे गए थे। वे वैसे ही थे जैसे दीवारों पर उकेरे गए थे। बाहर की ओर प्रवेश कक्ष के बाहरी हिस्से पर लकड़ी की नक्काशी थी [26]और प्रवेश कक्ष के दोनों ओर खिड़कियों के दीवारों पर और प्रवेश कक्ष के ऊपरी छत में तथा मन्दिर के चारों ओर के कमरों खजूर के वृक्ष अंकित थे।

याजकों के कमरे

42 तब वह व्यक्ति मुझे बाहरी आँगन में ले गया जिसका सामना उत्तर को था। वह उन कमरों में ले गया जो मन्दिर से आँगन के आर–पार और उत्तर के भवनों के आर–पार थे। [2]उत्तर की ओर का भवन सौ हाथ लम्बा और पचास हाथ चौड़ा था। [3]वहाँ छज्जों के तीन मंजिल इन भवनों की दीवारों पर थे। वे एक दूसरे के सामने थे। भीतरी आँगन और बाहरी आँगन के पक्के रास्ते के बीच बीस हाथ खुला क्षेत्र था। [4]कमरों के सामने एक विशाल कक्ष था। वह भीतर पहुँचाता था। यह दस हाथ चौड़ा, सौ हाथ लम्बा था। उनके दरवाजे उत्तर को थे। [5]ऊपर के कमरे अधिक पतले थे क्योंकि छज्जे मध्य और निचली मंजिल से अधिक स्थान घेरे थे। [6]कमरे तीन मंजिलों पर थे। बाहरी आँगन की तरह के उनके स्तम्भ नहीं थे। इसलिये ऊपर के कमरे मध्य और नीचे की मंजिल के कमरों से अधिक पीछे थे। [7]बाहर एक दीवार थी। यह कमरों के समान्तर थी। [8]यह बाहरी आँगन को ले जाती थी। यह कमरों के आर–पार थी। यह पचास हाथ लम्बी थी। [9]इन कमरों के नीचे एक द्वार था जो बाहरी आँगन से पूर्व को ले जाता था। [10]बाहरी दीवार के आरम्भ में, दक्षिण की ओर मन्दिर के आँगन के सामने और मन्दिर के भवन की दीवार के बाहर, कमरे थे। इन कमरों के सामने [11]एक विशाल कक्ष था। वे उत्तर के कमरों के समान थे। दक्षिण के द्वार लम्बाई–चौड़ाई में उतने ही माप वाले थे जितने उत्तर के। दक्षिण के द्वार नाप, रूपाकृति और प्रवेश कक्ष की दृष्टि से उत्तर के द्वारों के समान थे। [12]दक्षिण के कमरों के नीचे एक द्वार था जो पूर्व की ओर जाता था। यह विशाल–कक्ष में पहुँचाता था। दक्षिण के कमरों के आर–पार एक विभाजक दीवार थी।

[13]उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "आँगन के आर–पार वाले दक्षिण के कमरे और उत्तर के कमरे पवित्र कमरे हैं। ये उन याजकों के कमरे हैं जो यहोवा को बलि–भेंट चढ़ाते हैं। वे याजक इन कमरों में अति पवित्र भेंट को खाएंगे। वे सर्वाधिक पवित्र भेंट को वहाँ रखेंगे। क्यों? क्योंकि यह स्थान पवित्र है। सर्वाधिक पवित्र भेंटे ये हैं: अन्न भेंट, पाप के लिये भेंट और अपराध के लिये भेंट। [14]याजक पवित्र–क्षेत्र में प्रवेश करेंगे। किन्तु बाहरी आँगन में जाने के पहले वे अपने सेवा वस्त्र पवित्र स्थान में रख देंगे। क्यों? क्योंकि ये वस्त्र पवित्र हैं। यदि याजक चाहता है कि वह मन्दिर के उस भाग में जाए जहाँ अन्य लोग हैं तो उसे उन कमरों में जाना चाहिए और अन्य वस्त्र पहन लेना चाहिए।"

मन्दिर का बाहरी भाग

[15]वह व्यक्ति जब मन्दिर के भीतर की नाप लेना समाप्त कर चुका, तब वह मुझे उस फाटक से बाहर लाया जो पूर्व को था। उसने मन्दिर के बाहर चारों ओर नापा। [16]उस व्यक्ति ने मापदण्ड से, पूर्व के सिरे को नापा। यह पाँच सौ हाथ लम्बा था। [17]उसने उत्तर के सिरे को नापा। यह पाँच सौ हाथ लम्बा था। [18]उसने दक्षिण के सिरे को नापा। यह पाँच सौ हाथ लम्बा था। [19]वह पश्चिम की तरफ चारों ओर गया और इसे नापा। यह पाँच सौ हाथ लम्बा था। [20]उसने मन्दिर को चारों ओर से नापा। दीवार मन्दिर के चारों ओर गई थी। दीवार पाँच सौ हाथ लम्बी और पाँच सौ हाथ चौड़ी थी। यह पवित्र क्षेत्र को अपवित्र क्षेत्र से अलग करती थी।

यहोवा अपने लोगों के बीच रहेगा

43 वह व्यक्ति मुझे फाटक तक ले गया, उस फाटक तक जो पूर्व को खुलता था। [2]वहाँ पूर्व से इस्राएल के परमेश्वर की महिमा उतरी। परमेश्वर का आवाज समुद्र के गर्जन के समान ऊँचा था। परमेश्वर की महिमा से भूमि प्रकाश से चमक उठी थी। [3]दर्शन वैसा ही था जैसा दर्शन मैंने कबार नदी के

किनारे देखा था। मैने धरती पर अपना माथा टेकते हुए प्रणाम किया। [4]यहोवा की महिमा, मन्दिर में उस फाटक से आई जो पूर्व को खुलता है।

[5]तब आत्मा ने मुझे ऊपर उठाया और भीतरी आँगन में ले गई। यहोवा की महिमा ने मन्दिर को भर दिया। [6]मैंने मन्दिर के भीतर से किसी को बातें करते सुना। व्यक्ति मेरी बगल में खड़ा था। [7]मन्दिर में एक आवाज ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, यही स्थान मेरे सिंहासन और पदपीठ का है। मैं इस स्थान पर इस्राएल के लोगों में सदा रहूँगा। इस्राएल का परिवार मेरे पवित्र नाम को फिर बदनाम नहीं करेगा। राजा और उनके लोग मेरे नाम को अपवित्र करके या इस स्थान पर अपने राजाओं का शव दफनाकर लज्जित नहीं करेंगे। [8]वे मेरे नाम को, अपनी देहली को मेरी देहली के साथ बनाकर तथा अपने द्वार–स्तम्भ को मेरे द्वार–स्तम्भ के साथ बनाकर लज्जित नहीं करेंगे। अतीत में केवल एक दीवार उन्हें मुझसे अलग करती थी। अत: उन्होंने हर समय जब पाप और उन भंयकर कामों को किया तब मेरे नाम को लज्जित किया। यही कारण था कि मैं क्रोधित हुआ और उन्हें नष्ट किया। [9]अब उन्हें व्यभिचार को दूर करने दो और अपने राजाओं के शव को मुझसे बहुत दूर ले जाने दो। तब मैं उनके बीच सदा रहूँगा।

[10]"अब मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार से उपासना के बारे में कहो। तब वे अपने पापों पर लज्जित होंगे। वे मन्दिर की योजना के बारे में सीखेंगे। [11]वे उन बुरे कामों के लिये लज्जित होंगे जो उन्होंने किये हैं। उन्हें मन्दिर की आकृति समझने दो। उन्हें यह सीखने दो कि वह कैसे बनेगा, उसका प्रवेश–द्वार, निकास–द्वार और इस पर की सारी रूपाकृतियाँ कहाँ होंगी। उन्हें इसके सभी नियमों और विधियों के बारे में सिखाओ और इन्हें लिखो जिससे वे सभी इन्हें देख सकें। तब वे मन्दिर के सभी नियमों और विधियों का पालन करेंगे। तब वे यह सब कुछ कर सकते हैं। [12]मन्दिर का नियम यह है: पर्वत की चोटी पर सारा क्षेत्र सर्वाधिक पवित्र है। यह मन्दिर का नियम है।

वेदी

[13]"वेदी की माप, हाथों और इससे लम्बी माप का उपयोग करके, यह है। वेदी की नींव के चारों ओर एक गन्दा नाला था। यह एक हाथ गहरा और हर ओर एक हाथ चौड़ा था। इसके सिरे के चारों ओर एक बालिश्त नौ इंच ऊँची किनारी थी। वेदी कितनी ऊँची थी, वह यह थी। [14]भूमि से निचली किनारी तक, नींव की नाप दो हाथ है। यह एक हाथ चौड़ी थी। छोटी किनारी से बड़ी किनारी तक इसकी नाप चार हाथ होगी। यह दो हाथ चौड़ी थी। [15]वेदी पर आग का स्थान चार हाथ ऊँचा था। वेदी के चारों कोने सींगों के आकार के थे। [16]वेदी पर आग का स्थान बारह हाथ लम्बा और बारह हाथ चौड़ा था। यह पूरी तरह वर्गाकार था। [17]किनारी भी वर्गाकार थी, चौदह हाथ लम्बी और चौदह हाथ चौड़ी। इसके चारों ओर पट्टी आधा हाथ चौड़ी थी। (नींव के चारों ओर की गन्दी नाली दो हाथ चौड़ी थी।) वेदी तक जाने वाली पैड़ियाँ पूर्व दिशा में थीं।"

[18]तब उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, स्वामी यहोवा यह कहता है: 'वेदी के लिये ये नियम हैं। जिस दिन होमबलि दी जानी होती है और इस पर खून छिड़कना होता है, [19]उस दिन तुम सादोक के परिवार के लोगों को एक नया बैल पाप बलि के रूप में दोगे। ये व्यक्ति लेवी परिवार समूह के हैं। वे याजक होते हैं। वे भेंट उन पुरुषों के पास लाएंगे और इस प्रकार मेरी सेवा करेंगे। मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।'" [20]"तुम बैल का कुछ खून लोगे और वेदी के चारों सींगों पर, किनारे के चारों कोनों पर और पट्टी के चारों ओर डालोगे। इस प्रकार तुम वेदी को पवित्र करोगे। [21]तुम बैल को पाप बलि के रूप में लोगे। बैल, पवित्र क्षेत्र के बाहर, मन्दिर के विशेष स्थान पर जलाया जाएगा।

[22]"दूसरे दिन तुम बकरा भेंट करोगे जिसमें कोई दोष नहीं होगा। यह पाप बलि होगी। याजक वेदी को उसी प्रकार शुद्ध करेगा जिस प्रकार उसने बैल से उसे शुद्ध किया। [23]जब तुम वेदी को शुद्ध करना समाप्त कर चुको तब तुम्हें चाहिए कि तुम एक दोष रहित नया बैल और रेवड़ में से एक दोष रहित मेढ़ा बलि चढ़ाओ। [24]तब याजक उन पर नमक छिड़केंगे। तब याजक बैल और मेढ़े को यहोवा को होमबलि के रूप में बलि चढ़ाएंगे। [25]तुम एक बकरा प्रतिदिन सात दिन तक, पाप बलि के लिये तैयार करोगे। तुम एक नया बैल और रेवड़ से एक मेढ़ा भी तैयार करोगे। बैल और मेढ़े में कोई दोष नहीं होना चाहिए। [26]सात दिन तक याजक वेदी को पवित्र करते रहेंगे। तब याजक वेदी को समर्पित करेंगे।

[27]इसके साथ ही वेदी को तैयार करने और इसे परमेश्वर को समर्पित करने के, वे सात दिन पूरे हो जाएंगे। आठवें दिन और उसके आगे याजक तुम्हारी होमबलि और मेल बलि वेदी पर चढ़ा सकते हैं। तब मैं तुम्हें स्वीकार करुँगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

बाहरी द्वार

44 तब वह व्यक्ति मुझे मन्दिर के बाहरी फाटक, जिसका सामना पूर्व को है, वापस लाया। हम लोग द्वार के बाहर थे और बाहरी द्वार बन्द था। [2]यहोवा ने मुझसे कहा, "यह फाटक बन्द रहेगा। यह खोला नहीं जाएगा। कोई भी इससे होकर प्रवेश नहीं करेगा। क्यों? क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इससे प्रवेश कर चुका है। अत: यह बन्द रहना चाहिए। [3]लोगों का शासक इस स्थान पर तब बैठेगा जब वह मेल बलि को यहोवा के साथ खाएगा। वह फाटक के साथ के प्रवेश-कक्ष के द्वार से प्रवेश करेगा तथा उसी रास्ते से बाहर जाएगा।"

मन्दिर की पवित्रता

[4]तब वह व्यक्ति मुझे उत्तरी द्वार से मन्दिर के सामने लाया। मैंने दृष्टि डाली और यहोवा की महिमा को यहोवा के मन्दिर में भरता देखा। मैंने अपने माथे को धरती पर टेकते हुए प्रणाम किया। [5]यहोवा ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, बहुत सावधानी से देखो! अपनी आँखों और कानों का उपयोग करो। इन चीजों को देखो। मैं तुम्हें मन्दिर के बारे में सभी नियम-विधि बताता हूँ। सावधानीपूर्वक मन्दिर के प्रवेश-द्वार और पवित्र स्थान से सभी निकासों को देखो। [6]तब इस्राएल के उन लोगों को यह सन्देश दो जिन्होंने मेरी आज्ञा पालन करने से इन्कार कर दिया था। उनसे कहो, मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, 'इस्राएल के परिवार, मैंने तुम्हारे द्वारा की गई भंयकर चीजों को आवश्यकता से अधिक सहन किया है! [7]तुम विदेशियों को मेरे मन्दिर में लाये और उन लोगों का सचमुच खतना नहीं हुआ था। वे पूरी तरह से मेरे प्रति समर्पित नहीं थे। इस प्रकार तुमने मेरे मन्दिर को अपवित्र किया था। तुमने हमारी वाचा को तोड़ा, भंयकर काम किये और तब तुमने मुझे रोटी की भेंट, चर्बी और खून दिया। किन्तु इसने मेरे मन्दिर को गन्दा बनाया। [8]तुमने मेरी पवित्र चीजों की देखभाल नहीं की। नहीं, तुमने विदेशियों को मेरे मन्दिर के लिये उत्तरदायी बनाया।'"

[9]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "एक विदेशी को जिसका खतना न हुआ हो, मेरे मन्दिर में नहीं आना चाहिए, उन विदेशियों को भी नहीं, जो इस्राएल के लोगों के बीच स्थायी रूप से रहते हैं। उसका खतना अवश्य होना चाहिए और उसे मेरे प्रति पूरी तरह समर्पित होना चाहिए, इसके पूर्व कि वह मेरे मन्दिर में आए। [10]अतीत में, लेवीवंशियों ने मुझे तब छोड़ दिया, जब इस्राएल मेरे विरुद्ध गया। इस्राएल ने मुझे अपनी देवमूर्तियों का अनुसरण करने के लिये छोड़ा। लेवीवंशी अपने पाप के लिये दण्डित होंगे। [11]लेवीवंशी मेरे पवित्र स्थान में सेवा करने के लिये चुने गये थे। उन्होंने मन्दिर के फाटक की चौकीदारी की। उन्होंने मन्दिर में सेवा की। उन्होंने बलियों तथा होमबलियों के जानवरों को लोगों के लिये मारा। वे लोगों की सहायता करने और उनकी सेवा के लिये चुने गए थे। [12]किन्तु उन लेवीवंशियों ने मेरे विरुद्ध पाप करने में लोगों की सहायता की! उन्होंने लोगों को अपनी देवमूर्तियों की पूजा करने में सहायता की। अत: मैं उनके विरुद्ध प्रतिज्ञा कर रहा हूँ, 'वे अपने पाप के लिये दण्डित होंगे।'" मेरे स्वामी यहोवा ने यह बात कही है।

[13]"अत: लेवीवंशी बलि को मेरे पास याजकों की तरह नहीं लाएंगे। वे मेरी किसी पवित्र चीज के पास या सर्वाधिक पवित्र वस्तु के पास नहीं जाएंगे। वे अपनी लज्जा को, जो बुरे काम उन्होंने किये, उसके कारण, ढोएंगे। [14]किन्तु मैं उन्हें मन्दिर की देखभाल करने दूँगा। वे मन्दिर में काम करेंगे और वे सब काम करेंगे जो इसमें किये जाते हैं।

[15]"सभी याजक लेवी के परिवार समूह से हैं। किन्तु जब इस्राएल के लोग मेरे विरुद्ध मुझसे दूर गए तब केवल सादोक परिवार के याजकों ने मेरे पवित्र स्थान की देखभाल की। अत: केवल सादोक के वंशज ही मुझे भेंट लाएंगे। वे मेरे सामने खड़े होंगे और अपने बलि चढ़ाए गए जानवरों की चर्बी और खून मुझे भेंट करेंगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा! [16]"वे मेरे पवित्र स्थान में प्रवेश करेंगे। वे मेरी मेज के पास मेरी सेवा करने आएंगे। वे उन चीजों की देखभाल करेंगे जिन्हें मैंने उन्हें दीं। [17]जब वे भीतरी आँगन के फाटकों में प्रवेश करेगें तब वे बहुमूल्य सन के वस्त्र पहनेंगे। जब बे

भीतरी आँगन के फाटक और मन्दिर में सेवा करेंगे, तब वे ऊनी वस्त्र पहनेंगे।[18]वे सन की पगड़ी अपने सिर पर धारण करेंगे, और वे सन की जांघिया पहनेंगे। वे ऐसा कुछ नहीं पहनेंगे जिससे पसीना आये। [19]वे मेरी सेवा करते समय के वस्त्र को, बाहरी आँगन में लोगों के पास जाने के पहले, उतारेंगे। तब वे इन वस्त्रों को पवित्र कमरों में रखेंगे। तब वे दूसरे वस्त्र पहनेंगे। इस प्रकार वे लोगों को उन पवित्र वस्त्रों को छूने नहीं देंगे।

[20]"वे याजक अपने सिर के बाल न ही मुड़वायेंगे, न ही अपने बालों को बहुत बढ़ने देंगे। यह इस बात को प्रकट करेगा कि वे शोकग्रस्त हैं और याजकों को यहोवा की सेवा के विषय में प्रसन्न रहना चाहिये। याजक अपने सिर के बालों की केवल छंटाई कर सकते हैं। [21]कोई भी याजक उस समय दाखमधु नहीं पी सकता जब वे भीतरी आँगन में जाता है। [22]याजक को विधवा से या तलाक प्राप्त स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए। नहीं, वे इस्राएल के परिवार की कन्यायों से विवाह करेंगे, या वे उस स्त्री से विवाह कर सकते हैं जिसका पति याजक रहा हो।

[23]"याजक मेरे लोगों को, पवित्र चीजों और जो चीजें पवित्र नहीं हैं, के बीच अन्तर के विषय में भी शिक्षा देंगे। वे मेरे लोगों को, जो शुद्ध और जो शुद्ध नहीं है, की जानकारी करने में सहायता देंगे। [24]याजक न्यायालय में न्यायाधीश होगा। वे लोगों के साथ न्याय करते समय मेरे नियम का अनुसरण करेंगे। वे मेरी विशेष दावतों के समय मेरे नियम–विधियों का पालन करेंगे। वे मेरे विशेष विश्राम के दिनों का सम्मान करेंगे और उन्हें पवित्र रखेंगे। [25]वे व्यक्ति के शव के पास जाकर अपने को अपवित्र करने नहीं जाएंगे। किन्तु वे तब अपने को अपवित्र कर सकते हैं यदि मरने वाला व्यक्ति पिता, माता, पुत्र, पुत्री, भाई या अविवाहिता बहन हो। ये याजक को अपवित्र बनायेगा। [26]शुद्ध किये जाने के बाद याजक को सात दिन तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। [27]तब यह पवित्र स्थान को लौट सकता है। किन्तु जिस दिन वह भीतरी आँगन के पवित्र स्थान में सेवा करने जाये, उसे पापबलि अपने लिये चढ़ानी चाहिये।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

[28]"लेवीवंशियों की अपनी भूमि के विषय में: मैं उनकी सम्पत्ति हूँ। तुम लेवीवंशियों को कोई सम्पत्ति (भूमि) इस्राएल में नहीं दोगे। मैं इस्राएल में उनके हिस्से में हूँ। [29]वे अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि खाने के लिये पाएंगे। जो कुछ इस्राएल के लोग यहोवा को देंगे, वह उनका होगा। [30] हर प्रकार की तैयार फसल का प्रथम भाग याजकों के लिये होगा। तुम अपने गूंधे आटे का प्रथम भाग भी याजक को दोगे। यह तुम्हारे परिवार पर आशीर्वाद की वर्षा करेगा। [31]याजक को उस पक्षी या जानवर नहीं खाना चाहिये जिसकी स्वाभाविक मृत्यु हो या जो जंगली जानवर द्वारा टुकड़े–टुकड़े कर दिया गया हो।

पवित्र काम के उपयोग के लिये भूमि का बँटवारा

45 "तुम इस्राएल के परिवार के लिये भूमि का विभाजन गोट डालकर करोगे। उस समय तुम भूमि का एक भाग अलग करोगे। वह यहोवा के लिये पवित्र हिस्सा होगा। भूमि पच्चीस हजार हाथ लम्बी और बीस हजार हाथ चौड़ी होगी। यह पूरी भूमि पवित्र होगी। [2]एक वर्गाकार पाँच सौ निनानबे हाथ क्षेत्र मन्दिर के लिये होगा। मन्दिर के चारों ओर एक खुला क्षेत्र पचास हाथ चौड़ा होगा। [3]अति पवित्र स्थान में तुम पच्चीस हजार हाथ लम्बा और दस हजार हाथ चौड़ा नापोगे। मन्दिर इस क्षेत्र में होगा। मन्दिर का क्षेत्र सर्वाधिक पवित्र स्थान होगा।

[4]"यह भूमि का पवित्र भाग मन्दिर के सेवक याजकों के लिये होगा जहाँ वे परमेश्वर के समीप सेवा करने आते हैं। यह याजकों के घरों और मन्दिर के लिये होगा। [5]दूसरा क्षेत्र पच्चीस हजार हाथ लम्बा और दस हजार हाथ चौड़ा उन लेवीवंशियों के लिये होगा जो मन्दिर में सेवा करते हैं। यह भूमि भी लेवीवंशियों की, उनके रहने के नगरों के लिये, होगी।

[6]"तुम नगर को पाँच हजार हाथ चौड़ा और पच्चीस हजार हाथ लम्बा क्षेत्र दोगे। यह पवित्र क्षेत्र के सहारे होगा। यह इस्राएल के पूरे परिवार के लिये होगा। [7]शासक पवित्र स्थान और नगर की अपनी भूमि के दोनों ओर की भूमि अपने पास रखेगा। यह पवित्र क्षेत्र और नगर के क्षेत्र के बीच में होगा। यह उसी चौड़ाई का होगा जो चौड़ाई परिवार समूह की भूमि की है। यह लगातार पश्चिमी सीमा से पूर्वी सीमा तक जाएगा। [8]यह भूमि इस्राएल में शासक की सम्पत्ति होगी। इस प्रकार शासक को मेरे लोगों के जीवन को भविष्य में कष्टकर बनाने की आवश्यकता नहीं होगी। किन्तु वे भूमि को इस्राएलियों के लिये उनके परिवार समूहों को देंगे।"

[9]मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा, "इस्राएल के शासकों, बहुत हो चुका! क्रूर होना और लोगों से चीजें चुराना, छोड़ो! न्यायी बनो और अच्छे काम करो। हमारे लोगों को अपने घरों से बाहर जाने के लिये बलपूर्वक विवश न करो!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

[10]"लोगों को ठगना बन्द करो। सही बाटों और मापों का उपयोग करो। [11]एपा (सूखी चीजों का बाट) और बथ (द्रव का मापक) एक ही समान होने चाहिएं। एक बथ और एपा दोनों 1/10 होमर के बराबर होने चाहिए। वे मापक होमर पर आधारित होंगे। [12]एक शेकेल बीस गेरा के बराबर होना चाहिए। एक मिना साठ शेकेल के बराबर होना चाहिए। यह बीस शेकेल जमा पच्चीस शेकेल जमा पन्द्रह शेकेल के बराबर होना चाहिए।

[13]"यह विशेष भेंट है जिसे तुम्हें देना चाहिए:

1/6 एपा गेहूँ के हर एक होमर छ: बुशल गेहूँ के लिये।

1/6 एपा जौ के हर एक होमर छ: बुशल जौ के लिये।

[14]1/10 बथ जैतून का तेल, हर एक कोर जैतून के तेल के लिये। याद रखें:–

दस बथ का एक होमर

दस बथ का एक कोर

[15]एक भेड़, दो सौ भेड़ों के लिये–

इस्राएल में सिंचाई के लिए बने हर कुँए से।

"ये विशेष भेंटे अन्नबलि, होमबलि और मेलबलि के लिये हैं। ये भेंटें लोगों को पवित्र बनाने के लिये हैं।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

[16]"देश का हर एक व्यक्ति इस्राएल के शासक के लिये यह भेंट देगा। [17]किन्तु शासक को विशेष पवित्र दिनों के लिये आवश्यक चीजें देनी चाहिए। शासक को होमबलि, अन्नबलि और पेय भेंट की व्यवस्था दावत के दिन, नवचन्द्र, सब्त और इस्राएल के परिवार के सभी विशेष दावतों के लिये करनी चाहिए। शासकों को सभी पापबलि, अन्नबलि, होमबलि, मेलबलि जो इस्राएल के परिवार को पवित्र करने के लिये उपयोग की जाती हैं, देना चाहिए।"

[18]मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें बताई, "पहले महीने में, महीने के प्रथम दिन तुम एक दोष रहित नया बैल लोगे। तुम्हें उस बैल का उपयोग मन्दिर को पवित्र करने के लिये करना चाहिए। [19]याजक कुछ खून पाप के लिये भेंट से लेगा और इसे मन्दिर के द्वार–स्तम्भों और वेदी के किनारी के चारों कोनों और भीतरी आँगन के फाटक के स्तम्भों पर डालेगा। [20]तुम यही काम महीने के सातवें दिन उस व्यक्ति के लिये करोगे जिसने गलती से पाप कर दिया हो, या अनजाने में किया हो। इस प्रकार तुम मन्दिर को शुद्ध करोगे।"

फसह पर्व की दावत के समय भेंट

[21]"पहले महीने के चौदहवें दिन तुम्हें फसह पर्व मनाना चाहिये। अखमीरी रोटी का यह उत्सव इस समय आरम्भ होता है। उत्सव सात दिन तक चलता है। [22]उस समय शासक एक बैल अपने लिए तथा इस्राएल के लोगों के लिए भेंट करेगा। बैल पापबलि के लिये होगा। [23]दावत के सात दिन तक शासक दोष रहित सात बैल और सात मेढ़े भेंट करेगा। वे यहोवा को होमबलि होंगे। शासक उत्सव के सात दिन हर रोज एक बैल भेंट करेगा और वह पाप बलि के लिये हर एक दिन एक बकरा भेंट करेगा। [24]शासक एक एपा जौ हर एक बैल के साथ अन्नबलि के रूप में, और एक एपा जौ हर एक मेढ़े के साथ भेंट करेगा। शासक को एक गैलन तेल हर एफा अन्न के लिये देना चाहिए। [25]शासक को यही काम उत्सव (शरण) के सात दिन तक करना चाहिये। यह उत्सव सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन आरम्भ होता है। ये भेंटे पापबलि, होमबलि, अन्नबलियाँ और तेल–भेंटे, होंगी।"

शासक और त्यौहार

46 मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "भीतरी आँगन का पूर्वी फाटक काम के छ: दिनों में बन्द रहेगा। किन्तु यही सब्त के दिन और नवचन्द्र के दिन खुलेगा। [2]शासक फाटक के प्रवेश कक्ष से अन्दर आएगा और उस फाटक के स्तम्भ के सहारे खड़ा होगा। तब याजक शासक की होमबलि और मेलबलि चढ़ाएगा। शासक फाटक की देहली पर उपासना करेगा। तब वह बाहर जाएगा। किन्तु फाटक संध्या होने तक बन्द नहीं होगा। [3]देश के लोग भी यहोवा के सम्मुख जहाँ फाटक सब्त के दिन और नवचन्द्र के दिन खुलता है, वहीं उपासना करेंगे।

[4]"शासक सब्त के दिन होमबलि चढ़ाएगा। उसे दोष रहित छ: मेमने और दोष रहित एक मेढ़ा देना चाहिए। [5]उसे एक एपा अन्नबलि मेढ़े के साथ देनी चाहिए। शासक उतनी अन्नबलि मेमनों के साथ देगा, जितनी वह दे सकता है। उसे एक हिन जैतून का तेल हर एक एपा अन्न के साथ देना चाहिए।

[6]"नवचन्द्र के दिन उसे एक बैल भेंट करना चाहिए, जिसमें कोई दोष न हो। वह छ: मेमने और एक मेढ़ा, जिसमें कोई दोष न हो, भी भेंट करेगा। [7]शासक को, बैल के साथ एक एपा अन्नबलि और एक एपा अन्नबलि मेढ़े के साथ देनी चाहिए। शासक को मेमनों के साथ तथा हर एक एपा अन्न के लिये एक हिन तेल के साथ, जितना हो सके, देना चाहिए।

[8]"शासक को पूर्वी फाटक के प्रवेश कक्ष से होकर मन्दिर के क्षेत्र में आना जाना चाहिए।

[9]"जब देश के निवासी यहोवा से मिलने विशेष त्यौहार पर आएंगे तो जो व्यक्ति उत्तर फाटक से उपासना करने को प्रवेश करेगा, वह दक्षिण फाटक से जाएगा। जो व्यक्ति दक्षिण फाटक से प्रवेश करेगा, वह उत्तर फाटक से जायेगा। कोई भी उसी मार्ग से नहीं लौटेगा जिससे उसने प्रवेश किया। हर एक व्यक्ति को सीधे आगे बढ़ना चाहिए। [10]जब लोग अन्दर जाएंगे तो शासक अन्दर जाएगा। जब वे बाहर आएंगे तब शासक बाहर जाएगा।

[11]"दावतों और विशेष बैठकों के अवसर पर एक एपा अन्नबलि हर नये बैल के साथ चढ़ाई जानी चाहिए। एक एपा अन्नबलि हर मेढ़े के साथ चढ़ाई जानी चाहिए और हर एक मेमने के साथ उसे जितना अधिक वह दे सके देना चाहिए। उसे एक हिन तेल हर अन्न के एक एपा के लिये देना चाहिए।

[12]"जब शासक यहोवा को स्वेच्छा भेंट देता है, यह होमबलि, मेलबलि या स्वेच्छा भेंट हो सकती है, चढ़ायेगा तो उसके लिये पूर्व का फाटक खुलेगा। तब वह अपनी होमबलि और अपनी मेलबलि को सब्त के दिन की तरह चढ़ाएगा। जब वह जाएगा उसके बाद फाटक बन्द होगा।

नित्य भेंट

[13]"तुम दोष रहित एक वर्ष का एक मेमना दोगे। यह प्रतिदिन यहोवा को होम बलि के लिये होगा। प्रत्येक प्रात: तुम इसे दोगे। [14]तुम प्रत्येक प्रात: मेमने के साथ अन्नबलि भी चढ़ाओगे। तुम 1/6 एपा आटा और 1/3हिन तेल अच्छे आटे को चिकना करने के लिये, दोगे। यह यहोवा को नित्य अन्नबलि होगी। [15]इस प्रकार वे सदैव मेमना, अन्नबलि और तेल, होम बलि के लिये हर प्रात: देते रहेंगे।"

अपनी सन्तान को शासक द्वारा भूमि देने के नियम

[16]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "यदि शासक अपनी भूमि के किसी हिस्से को अपने पुत्रों को पुरस्कार के रूप में देगा तो वह पुत्रों की होगी। यह उनकी सम्पत्ति है। [17]किन्तु यदि कोई शासक अपनी भूमि के किसी भाग को अपने दास को पुरस्कार के रूप में देता है तो वह पुरस्कार उसके स्वतन्त्र होने की तिथि तक ही उसका रहेगा। तब पुरस्कार शासक को वापस हो जाएगा। केवल राजा के पुत्र ही उसकी भूमि के पुरस्कार को अपने पास रख सकते हैं [18]और शासक लोगों की भूमि का कोई भी हिस्सा नहीं लेगा और न ही उन्हें अपनी भूमि छोड़ने को विवश करेगा। उसे अपनी भूमि का कुछ भाग अपने पुत्रों को देना चाहिए। इस तरह से हमारे लोग अपनी भूमि से वंचित होने के लिये विवश नहीं किये जाएंगे।"

विशेष रसोईघर

[19]वह व्यक्ति मुझे द्वार से फाटक की बगल में ले गया। वह मुझे याजकों के उत्तर में पवित्र कमरों की ओर ले गया। मैंने वहाँ बहुत दूर पश्चिम में एक स्थान देखा। [20]उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "यही वह स्थान है जहाँ याजक दोष बलि और पाप बलि को पकायेंगे। यहीं पर याजक अन्नबलि को पकायेंगे। क्यों? जिससे उन्हें उन भेंटों को बाहरी आँगन में ले जाने की आवश्यकता न रहे। इस प्रकार वे उन पवित्र चीजों को बाहर नहीं लाएंगे जहाँ साधारण लोग होंगे।"

[21]तब वह व्यक्ति मुझे बाहरी आँगन में लाया। वह मुझे आँगन के चारों कोनों में ले गया। आँगन के हर एक कोने में एक छोटा आँगन था। [22]आँगन के कोनों में छोटे आँगन थे। हर एक छोटा आँगन चालीस हाथ लम्बा और तीस हाथ चौड़ा था। चारों कोनों की नाप समान थी। [23]भीतर इन छोटे आँगनों के चारों ओर ईंटे की एक दीवार थी। हर एक दीवार में भोजन पकाने के स्थान बने थे। [24]उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "ये रसोईयाँ हैं जहाँ

वे लोग जो मन्दिर की सेवा करते हैं, लोगों के लिये बलि पकायेंगे।"

मन्दिर से बहता जल

47 वह व्यक्ति मन्दिर के द्वार पर मुझे वापस ले गया। मैंने मन्दिर की पूर्वी देहली के नीचे से पानी आते देखा। (मन्दिर का सामना मन्दिर की पूर्वी ओर है।) पानी मन्दिर के दक्षिणी छोर के नीचे से वेदी के दक्षिण में बहता था। [2]वह व्यक्ति मुझे उत्तर फाटक से बाहर लाया और बाहरी फाटक के पूर्व की तरफ चारों ओर ले गया। फाटक के दक्षिण की ओर पानी बह रहा था।

[3]वह व्यक्ति पूर्व की ओर हाथ में नापने का फीता लेकर बढ़ा। उसने एक हजार हाथ नापा। तब उसने मुझे उस स्थान से पानी से होकर चलने को कहा। वहाँ पानी केवल मेरे टखने तक गहरा था। उस व्यक्ति ने अन्य एक हजार हाथ नापा। तब उसने उस स्थान पर पानी से होकर चलने को कहा। वहाँ पानी मेरे घुटनों तक आया। [4]तब उसने अन्य एक हजार हाथ नापा और उस स्थान पर पानी से होकर चलने को कहा। वहाँ पानी कमर तक गहरा था। [5]उस व्यक्ति ने अन्य एक हजार हाथ नापा। किन्तु वहाँ पानी इतना गहरा था कि पार न किया जा सके। यह एक नदी बन गया था। पानी तैरने के लिये पर्याप्त गहरा था। यह नदी इतनी गहरी थी कि पार नहीं कर सकते थे। [6]तब उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुमने जिन चीजों को देखा, उन पर गहराई से ध्यान दिया?"

तब वह व्यक्ति नदी के किनारे के साथ मुझे वापस ले गया। [7]जैसे मैं नदी के किनारे से वापस चला, मैंने पानी के दोनों ओर बहुत अधिक पेड़ देखे। [8]उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "यह पानी पूर्व को अरबा घाटी की तरफ नीचे बहता है। पानी मृत सागर में पहुँचता है। उस सागर में पानी स्वच्छ और ताजा हो जाता है। [9]इस पानी में बहुत मछलियाँ हैं और जहाँ यह नदी जाती है वहाँ बहुत प्रकार के जानवर रहते हैं। [10]तुम मछुआरों को लगातार एनगदी से ऐनेग्लैम तक खड़े देख सकते हो। तुम उनको अपना मछली का जाल फेंकते और कई प्रकार की मछलियाँ पकड़ते देख सकते हो। मृत सागर में उतनी ही प्रकार की मछलियाँ हैं जितनी प्रकार की भूमध्य सागर में। [11]किन्तु दलदल और गड्ढों के प्रदेश के छोटे क्षेत्र अनुकूल नहीं बनाये जा सकते। वे नमक के लिये छोड़े जाएंगे। [12]हर प्रकार के फलदार वृक्ष नदी के दोनों ओर उगते हैं। इनके पत्ते कभी सूखते और मरते नहीं। इन वृक्षों पर फल लगना कभी रूकता नहीं। वृक्ष हर महीने फल पैदा करते हैं। क्यों? क्योंकि पेड़ों के लिये पानी मन्दिर से आता है। पेड़ों का फल भोजन बनेगा, और उनकी पत्तियाँ औषधियाँ होंगी।"

परिवार समूहों के लिए भूमि का बँटवारा

[13]मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "ये सीमायें इस्राएल के बारह परिवार समूहों में भूमि के बाँटने के लिये हैं। यूसुफ को दो भाग मिलेंगे। [14]तुम भूमि को बराबर बाँटोगे। मैंने इस भूमि को तुम्हारे पूर्वजों को देने का वचन दिया था। अत: मैं यह भूमि तुम्हें दे रहा हूँ।

[15]"यहाँ भूमि की ये सीमायें हैं। उत्तर की ओर यह सीमा भूमध्य सागर से हेतलोन होकर जाती है जहाँ सड़क हमात और सदाद तक [16]बेरोता, सिब्रैम (जो दमिश्क और हमात की सीमा के बीच है) और हसर्हत्तीकोन जो हौरान की सीमा पर है, की ओर मुड़ती है। [17]अत: सीमा समुद्र से हसरेनोन तक जायेगी जो दमिश्क और हमात की उत्तरी सीमा पर है। यह उत्तर की ओर होगी।

[18]"पूर्व की ओर, सीमा हसरेनोन से हौरान और दमिश्क के बीच जाएगी और यरदन नदी के सहारे गिलाद और इस्राएल की भूमि के बीच पूर्वी समुद्र तक लगातार, तामार तक जायेगी। यह पूर्वी सीमा होगी।

[19]"दक्षिण ओर, सीमा तामार से लगातार मरीबोत कादेश के नखलिस्तान तक जाएगी। तब यह मिस्र के नाले के सहारे भूमध्य सागर तक जाएगी। यह दक्षिणी सीमा होगी।

[20]"पश्चिमी ओर, भूमध्य सागर लगातार हमात के सामने के क्षेत्र तक सीमा बनेगा। यह तुम्हारी पश्चिमी सीमा होगी।

[21]"इस प्रकार तुम इस भूमि को इस्राएल के परिवार समूहों में बाँटोगे। [22]तुम इसे अपनी सम्पत्ति और अपने बीच रहने वाले विदेशियों की सम्पत्ति के रूप में जिनके बच्चे तुम्हारे बीच रहते हैं, बाँटोगे। ये विदेशी निवासी होंगे, ये स्वाभाविक जन्म से इस्राएली होंगे। तुम कुछ भूमि इस्राएल के परिवार समूहों में से उनको बाँटोगे। [23]वह

परिवार समूह जिसके बीच वह निवासी रहता है, उसे कुछ भूमि देगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा है!

इस्राएल के परिवार समूह के लिये भूमि

48 [1-7]उत्तरी सीमा भूमध्य सागर से पूर्व हेतलोन से हमात दर्रा और तब, लगातार हसेरनोन तक जाती है। यह दमिश्क और हमात की सीमाओं के मध्य है। परिवार समूहों में से इस समूह की भूमि इन सीमाओं के पूर्व से पश्चिम को जाएगी। उत्तर से दक्षिण, इस क्षेत्र के परिवार समूह हैं, दान, आशेर, नप्ताली, मनश्शे, एप्रैम, रूबेन, यहूदा।

भूमि का विशेष भाग

[8]भूमि का अगला क्षेत्र विशेष उपयोग के लिये होगा। यह भूमि यहूदा की भूमि के दक्षिण में है। यह क्षेत्र पच्चीस हजार हाथ उत्तर से दक्षिण तक लम्बा है और पूर्व से पश्चिम तक, यह उतना चौड़ा होगा जितना अन्य परिवार समूहों का होगा। मन्दिर भूमि के इस विभाग के बीच होगा। [9]तुम इस भूमि को यहोवा को समर्पित करोगे। यह पच्चीस हजार हाथ लम्बा और बीस हजार हाथ चौड़ा होगा। [10]भूमि का यह विशेष क्षेत्र याजकों और लेवीवंशियों में बँटेगा।

याजक इस क्षेत्र का एक भाग पाएंगे। यह भूमि उत्तर की ओर पच्चीस हजार हाथ लम्बी, पश्चिम की ओर दस हजार हाथ चौड़ी, पूर्व की ओर दस हजार हाथ चौड़ी और दक्षिण की ओर पच्चीस हजार हाथ लम्बी होगी। भूमि के इस क्षेत्र के बीच में यहोवा का मन्दिर होगा। [11]यह भूमि सादोक के वंशजों के लिये है। ये व्यक्ति मेरे पवित्र याजक होने के लिये चुने गए थे। क्यों? क्योंकि इन्होंने तब भी मेरी सेवा करना जारी रखा जब इस्राएल के अन्य लोगों ने मुझे छोड़ दिया। सादोक के परिवार ने मुझे लेवी परिवार समूह के अन्य लोगों की तरह नहीं छोड़ा। [12]इस पवित्र भू–भाग का विशेष हिस्सा विशेष रूप से इन याजकों का होगा। यह लेवीवंशियों की भूमि से लगा हुआ होगा।

[13]"याजकों की भूमि से लगी भूमि को लेवीवंशी अपने हिस्से के रूप में पाएंगे। यह पच्चीस हजार हाथ लम्बी, दस हजार हाथ चौड़ी होगी। वे इस भूमि की पूरी लम्बाई और चौड़ाई पच्चीस हजार हाथ लम्बी और बीस हजार हाथ चौड़ी पाएंगे। [14]लवीवंशी इस भूमि का कोई भाग न तो बेचेंगे, न ही व्यापार करेंगे। वे इस भूमि का कोई भी भाग बेचने का अधिकार नहीं रखते। वे देश के इस भाग के टुकड़े नहीं कर सकते। क्यों? क्योंकि यह भूमि यहोवा की है। यह अति विशेष है। यह भूमि का सर्वोत्तम भाग है।

नगर सम्पत्ति के लिये हिस्से

[15]"भूमि का एक क्षेत्र पाँच हजार हाथ चौड़ा और पच्चीस हजार हाथ लम्बा होगा जो याजकों और लेवीवंशियों को दी गई भूमि से, अतिरिक्त होगा। यह भूमि नगर, पशुओं की चरागाह और घर बनाने के लिये हो सकती है। साधारण लोग इसका उपयोग कर सकते हैं। नगर इसके बीच में होगा। [16]नगर की नाप यह है: उत्तर की ओर यह साढ़े चार हजार हाथ होगा। पूर्व की ओर यह साढ़े चार हजार हाथ होगा। दक्षिण की ओर यह साढ़े चार हजार हाथ होगा। पश्चिम की ओर यह साढ़े चार हजार हाथ होगा। [17]नगर की चरागाह होगी। ये चरागाहें ढाई सौ हाथ उत्तर की ओर, ढाई सौ हाथ दक्षिण की ओर होगी। वे ढाई सौ हाथ पूर्व की ओर तथा ढाई सौ हाथ पश्चिम की ओर होगी। [18]पवित्र क्षेत्र के सहारे जो लम्बाई बचेगी, वह दस हजार हाथ पूर्व में और दस हजार हाथ पश्चिम में होगी। यह भूमि पवित्र क्षेत्र के बगल में होगी। यह भूमि नगर के मजदूरों के लिये अन्न पैदा करेगी। [19]नगर के मजदूर इसमें खेती करेंगे। मजदूर इस्राएल के सभी परिवार समूहों में से होंगे।

[20]"यह भूमि का विशेष क्षेत्र वर्गाकार होगा। यह पच्चीस हजार हाथ लम्बा और पच्चीस हजार हाथ चौड़ा होगा। तुम इस क्षेत्र को विशेष कामों के लिये अलग रखोगे। एक भाग याजकों के लिये है। एक भाग लेवीवंशियों के लिये है और एक भाग नगर के लिये है।

[21-22]"इस विशेष भूमि का एक भाग देश के शासक के लिये होगा। यह विशेष भूमि का क्षेत्र वर्गाकार है। यह पच्चीस हजार हाथ लम्बा और पच्चीस हजार हाथ चौड़ा है। इसका एक भाग याजकों के लिये, एक भाग लेवीवंशियों के लिये और एक भाग मन्दिर के लिये है। मन्दिर इस भूमि क्षेत्र के बीच में है। शेष भूमि देश के शासक की है। शासक बिन्यामीन और यहूदा की भूमि के बीच की भूमि पाएगा।

[23-27]“विशेष क्षेत्र के दक्षिण में उस परिवार समूह की भूमि होगी जो यरदन नदी के पूर्व रहता था। हर परिवार समूह उस भूमि का एक हिस्सा पाएगा जो पूर्वी सीमा से भूमध्य सागर तक गई है। उत्तर से दक्षिण के ये परिवार समूह हैं: बिन्यामीन, शिमोन, इस्साकार, जबूलून और गाद।

[28]“गाद की भूमि की दक्षिणी सीमा तामार से मरीबोत–कादेश के नखलिस्तान तक जाएगी। तब मिस्र के नाले से भूमध्य सागर तक पहुँचेगी [29]और यही वह भूमि है जिसे तुम इस्राएल के परिवार समूह में बाँटोगे। वही हर एक परिवार समूह पाएगा।” मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा!

नगर के फाटक

[30]“नगर के ये फाटक हैं। फाटकों का नाम इस्राएल के परिवार समूह के नामों पर होंगे।

“उ त्तर की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ लम्बा होगा। [31]उसमें तीन फाटक होंगे। रुबेन का फाटक, यहूदा का फाटक और लेवी का फाटक।

[32]“पूर्व की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ लम्बा होगा। उसमें तीन फाटक होंगे: यूसुफ का फाटक, बिन्यामीन का फाटक और दान का फाटक।

[33]“दक्षिण की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ लम्बा होगा। उसमें तीन फाटक होंगे: शिमोन का फाटक, इस्साकार का फाटक और जबूलून का फाटक।

[34]“पश्चिम की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ लम्बा होगा। इसमें तीन फाटक होंगे: गाद का फाटक, आशेर का फाटक और नप्ताली का फाटक।

[35]“नगर के चारों ओर की दूरी अट्ठारह हजार हाथ होगी। अब से आगे नगर का नाम होगा: यहोवा यहाँ है।

दानिय्येल

दानिय्येल का बाबुल ले जाया जाना

1 नबूकदनेस्सर बाबुल का राजा था। नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर आक्रमण किया और अपनी सेना के साथ उसने यरूशलेम को चारों ओर से घेर लिया। यह उन दिनों की बात है जब यहूदा के राजा यहोयाकीम के शासन का तीसरा वर्ष चल रहा था। [2]यहोवा ने यहूदा के राजा यहोयाकीम को नबूकदनेस्सर के द्वारा पराजित करा दिया। नबूकदनेस्सर ने परमेश्वर के मन्दिर के साज़ो–सामान को भी हथिया लिया। नबूकदनेस्सर उन वस्तुओं को शिनार ले गया। नबूकदनेस्सर ने उन वस्तुओं को उस मन्दिर में रखवा दिया जिसमें उसके देवताओं की मूर्तिया थी।

[3]इसके बाद राजा नबूकदनेस्सर ने अशपनज को एक आदेश दिया। (अशपनज राजा के खोजे सेवकों का प्रधान था।) राजा ने अशपनज को कुछ यहूदी पुरुषों को उसके महल में लाने को कहा था। नबूकदनेस्सर चाहता था कि प्रमुख परिवारों और इस्राएल के राजा के परिवार के कुछ यहूदी पुरुषों को वहाँ लाया जाये। [4]नबूकदनेस्सर को केवल हट्टे–कट्टे यहूदी जवान ही चाहिये थे। राजा को बस ऐसे युवक ही चाहिये थे जिनके शरीर पर कोई खरोंच तक न लगी हो और उनका शरीर किसी भी तरह के दोष से रहित हो। राजा सुन्दर, चुस्त और बुद्धिमान नौजवान ही चाहता था। राजा को ऐसे युवक चाहिये थे जो बातों को शीघ्रता से और सरलता से सीखने में समर्थ हों। राजा को ऐसे युवकों की आवश्यकता थी जो उसके महल में सेवा कार्य कर सकें। राजा ने अशपनज को आदेश दिया कि उन इस्राएली युवकों को कसदियों की भाषा और लिपि की शिक्षा दी जाये।

[5]राजा नबूकदनेस्सर उन युवकों को प्रतिदिन एक निश्चित मात्रा में भोजन और दाखमधु दिया करता था। यह भोजन उसी प्रकार का होता था, जैसा स्वयं राजा खाया करता था। राजा की इच्छा थी कि इस्राएल के उन युवकों को तीन वर्ष तक प्रशिक्षण दिया जाये और फिर तीन वर्ष के बाद वे युवक बाबुल के राजा के सेवक बन जायें। [6]उन युवकों में दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह शामिल थे। ये युवक यहूदा के परिवार समूह से थे।

[7]सो इसके बाद यहूदा के उन युवकों को अशपनज ने नये नाम रख दिये। दानिय्येल को बेलतशस्सर का नया नाम दिया गया। हनन्याह का नया नाम था शद्रक। मीशाएल को नया नाम दिया गया मेशक और अजर्याह का नया नाम रखा गया अबेदनगो।

[8]दानिय्येल राजा के उत्तम भोजन और दाखमधु को ग्रहण करना नहीं चाहता था। दानिय्येल नहीं चाहता था कि वह उस भोजन और उस दाखमधु से अपने आपको अशुद्ध कर ले। सो उसने इस प्रकार अपने आपको अशुद्ध होने से बचाने के लिये अशपनज से विनती की। [9]परमेश्वर ने अशपनज को ऐसा बना दिया कि वह दानिय्येल के प्रति कृपालु और अच्छा विचार करने लगा। [10]किन्तु अशपनज ने दानिय्येल से कहा, 'मैं अपने स्वामी, राजा से डरता हूँ। राजा ने मुझे आज्ञा दी है कि तुम्हें यह भोजन और यह दाखमधु दी जाये। यदि तू इस भोजन को नहीं खाता है तो तू दुर्बल और रोगी दिखने लगेगा। तू अपनी उम्र के दूसरे युवकों से भद्दा दिखाई देगा। राजा इसे देखेगा और मुझ पर क्रोध करेगा। हो सकता है, वह मेरा सिर कटवा दे! जबकि यह दोष तुम्हारा होगा।"

[11]इसके बाद दानिय्येल ने अपने देखभाल करने वाले से बातचीत की। अशपनज ने उस रखवाले को दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह के ऊपर ध्यान रखने को कहा हुआ था। [12]दानिय्येल ने उस रखवाले से कहा, "कृपा करके दस दिन तक तू हमारी परीक्षा ले। हमे खाने को साग–सब्जी और पीने को पानी के सिवाय कुछ मत दे। [13]फिर दस दिन के बाद उन दूसरे नौजवानों के साथ तू हमारी तुलना करके देख, जो राजा का भोजन करते हैं

और फिर अपने आप देख कि अधिक स्वस्थ कौन दिखाई देता है। फिर तू अपने–आप यह निर्णय करना कि तू हमारे साथ कैसा व्यवहार करना चाहता है। हम तो तेरे सेवक हैं।”

[14]सो वह रखवाला दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह की दस दिन तक परीक्षा लेते रहने के लिये तैयार हो गया। [15]दस दिनों के बाद दानिय्येल और उसके मित्र उन सभी नौजवानों से अधिक हट्टे–कट्टे दिखाई देने लगे जो राजा का खाना खा रहे थे। [16]सो उस रखवाले ने उन्हें राजा का वह विशेष भोजन और दाखमधु देना बन्द कर दिया और वह दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह को उस खाने के स्थान पर साग सब्जियाँ देने लगा।

[17]परमेश्वर ने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह को बुद्धि प्रदान की और उन्हें अलग–अलग तरह की लिपियों और विज्ञानों को सीखने की योग्यता दी। दानिय्येल तो हर प्रकार के दिव्य दर्शनों और स्वप्नों को भी समझ सकता था।

[18]राजा चाहता था कि उन सभी युवकों को तीन वर्ष तक प्रशिक्षण दिया जाये। प्रशिक्षण का समय पूरा होने पर अशपनज उन सभी युवकों को राजा नबूकदनेस्सर के पास ले गया। [19]राजा ने उनसे बातें कीं। राजा ने पाया कि उनमें से कोई भी युवक उतना अच्छा नहीं था जितने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह थे। सो वे चारों युवक राजा के सेवक बना दिये गये। [20]राजा हर बार उनसे किसी महत्त्वपूर्ण बात के बारे में पूछता और वे अपने प्रचुर ज्ञान और समझ बूझ का परिचय देते। राजा ने देखा कि वे चारों उसके राज्य के सभी जादूगरों और बुद्धिमान लोगों से दस गुणा अधिक उत्तम हैं। [21]सो राजा कुस्रू के शासन काल के पहले वर्ष तक दानिय्येल राजा की सेवकाई करता रहा।

नबूकदनेस्सर का स्वप्न

2 नबूकदनेस्सर ने अपने शासन के दूसरे वर्ष के मध्य एक सपना देखा। उसके सपने ने उसे व्याकुल कर दिया। जैसे तैसे बहुत देर बाद उसे नींद आई। [2]सो राजा ने अपने समझदार लोगों को अपने पास बुलाया। वे लोग जादू–टोना किया करते थे, और तारों को देखा करते थे। सपनों का फल बताने के लिये वे ऐसा किया करते थे। वे ऐसा इसलिये करते थे कि जो कुछ भविष्य में घटनेवाला है, वे उसे जान जायें। राजा उन लोगों से यह चाहता था कि वे, उसके बारे में उसे बतायें जो सपना उसने देखा है। सो वे भीतर आये और आकर राजा के आगे खड़े हो गये। [3]तब राजा ने उन लोगों से कहा, “मैंने एक सपना देखा हैं जिससे मैं व्याकुल हूँ। मैं यह जानना चाहता हूँ कि उस सपने का अर्थ क्या है?”

[4]इस पर उन कसदियों ने राजा से उत्तर देते हुए कहा। वे अरामी भाषा में बोल रहे थे। “राजा चिरंजीव रहे। हम तेरे दास हैं। तू अपना स्वप्न हमें बता। फिर हम तुझे उसका अर्थ बतायेंगे।”

[5]इस पर राजा नबूकदनेस्सर ने उन लोगों से कहा, “नहीं! वह सपना क्या था, यह भी तुम्हें ही बताना है और उस सपने का अर्थ क्या है, यह भी तुम्हें ही बताना है और यदि तुम ऐसा नहीं कर पाये तो मैं तुम्हारे टुकड़े–टुकड़े कर डालने की आज्ञा दे दूँगा। मैं तुम्हारे घरों को तोड़ कर मलबे के ढ़ेर और राख में बदल डालने की आज्ञा भी दे दूँगा [6]और यदि तुम मुझे मेरा सपना बता देते हो और उसकी व्याख्या कर देते हो तो मैं तुम्हें अनेक उपहार, बहुत से प्रतिफल और महान आदर प्रदान करूँगा। सो तुम मुझे मेरे सपने के बारे में बताओ और बताओ कि उसका अर्थ क्या है।”

[7]उन बुद्धिमान पुरुषों ने राजा से फिर कहा, “हे राजन, कृपा करके हमें सपने के बारे में बताओ और हम तुम्हें यह बतायेंगे कि उस सपने का फल क्या है।”

[8]इस पर राजा नबूकदनेस्सर ने कहा, “मैं जानता हूँ, तुम लोग और अधिक समय लेने का जतन कर रहे हो। तुम जानते हो कि मैंने जो कहा, वही मेरा अभिप्राय है। [9]तुम यह जानते हो कि यदि तुमने मुझे मेरे सपने के बारे में नहीं बताया तो तुम्हें दण्ड दिया जायेगा। सो तुम सब एक मत हो कर मुझसे बातें बना रहे हो। तुम और अधिक समय लेना चाहते हो। तुम्हें यह आशा है कि मैं जो कुछ करना चाहता हूँ उसे तुम्हारी बातों में आकर भूल जाऊँगा। अच्छा अब तुम मुझे मेरा सपना बताओ। यदि तुम मुझे मेरा सपना बता पाओगे तभी मैं यह जान पाऊँगा कि वास्तव में उस सपने का अर्थ क्या है। यह तुम मुझे बता पाओगे!”

[10]कसदियों ने राजा को उत्तर देते हुए कहा, "हे राजन, धरती पर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जैसा, आप करने को कह रहे हैं, जो वैसा कर सके। बुद्धिमान पुरुषों अथवा जादूगरों या कसदियों से किसी भी राजा ने कभी भी ऐसा करने को नहीं कहा। यहाँ तक कि महानतम और सबसे अधिक शक्तिशाली किसी भी राजा ने कभी अपने बुद्धिमान पुरुषों से ऐसा करने को नहीं कहा। [11]महाराज, आप वह काम करने को कह रहे हैं, जो असम्भव है। बस राजा को उसके सपने के बारे में और उसके फल के बारे में देवता ही बता सकते हैं। किन्तु देवता तो लोगों के बीच नहीं रहते।"

[12]जब राजा ने यह सुना तो उसे बहुत क्रोध आया और उसने बाबुल के सभी विवेकी पुरुषों को मरवा डालने की आज्ञा दे दी। [13]राजा नबूकदनेस्सर के आज्ञा का ढ़िंढोरा पिटवा दिया गया। सभी बुद्धिमान पुरुषों को मारा जाना था, इसलिए दानिय्येल और उसके मित्रों को भी मरवा डालने के लिये उनकी खोज में राज–पुरुष भेज दिये गये।

[14]अर्योक राजा के रक्षकों का नायक था। वह बाबुल के बुद्धिमान पुरुषों को मार डालने के लिये जा रहा था, किन्तु दानिय्येल ने उससे बातचीत की। दानिय्येल ने अर्योक से बुद्धिमानी के साथ नम्रतापूर्वक बात की। [15]दानिय्येल ने अर्योक से पूछा, "राजा ने इतना कठोर दण्ड देने की आज्ञा क्यों दी है?"

इस पर अर्योक ने राजा के सपने वाली सारी कहानी कह सुनाई, दानिय्येल उसे समझ गया। [16]दानिय्येल ने जब यह कहानी सुन ली तो वह राजा नबूकदनेस्सर के पास गया। दानिय्येल ने राजा से विनती की कि वह उसे थोड़ा समय और दे। उसके बाद वह राजा को उसका स्वप्न और उस स्वप्न का फल बता देगा।

[17] इसके बाद दानिय्येल अपने घर को चल दिया। उसने अपने मित्र हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह को वह सारी बात कह सुनाई। [18]दानिय्येल ने अपने मित्रों से स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करने को कहा। दानिय्येल ने उनसे कहा कि वे परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह उन पर दयालू हो और इस रहस्य को समझने में उनकी सहायता करे जिससे बाबुल के दूसरे विवेकी पुरुषों के साथ दानिय्येल और उसके मित्र भी मौत के घाट न उतार दिये जायें।

[19]रात के समय परमेश्वर ने एक दर्शन में दानिय्येल को वह रहस्य समझा दिया। इस पर स्वर्ग के परमेश्वर की स्तुति करते हुए [20]दानिय्येल ने कहा:

"परमेश्वर के नाम की सदा प्रशंसा करो!
शक्ति और सामर्थ्य उसमें ही होते हैं!

[21] वह ही समय को बदलता है
वह ही वर्ष के ऋतुओं को बदलता है।
वह ही राजाओं को बदलता है।
वही राजाओं को शक्ति देता है
और वही छीन लेता है।
वही बुद्धि देता है और लोग
बुद्धिमान बन जाते हैं।
वही लोगों को ज्ञान देता है
और लोग ज्ञानी बन जाते हैं।

[22] वह गहन और छिपे रहस्यों का ज्ञाता है
जो समझ पाना कठिन है।
उसके संग प्रकाश बना रहता है,
सो इसी से वह जानता है कि अन्धेर में
और रहस्य भरे स्थानों में क्या है!

[23] हे मेरे पूर्वजों के परमेश्वर, मैं तुझको धन्यवाद
देता हूँ और तेरे गुण गाता हूँ।
तूने ही मुझको ज्ञान और शक्ति दी।
जो बातें हमने पूछी थी उनके बारे में
तूने हमें बताया!
तूने हमें राजा के सपने के बारे में बताया।"

दानिय्येल द्वारा राजा के स्वप्न की व्याख्या

[24]इसके बाद दानिय्येल अर्योक के पास गया। राजा नबूकदनेस्सर ने अर्योक का बाबुल के बुद्धिमान पुरुषों की हत्या के लिये नियुक्त किया था। दानिय्येल ने अर्योक से कहा, "बाबुल के बुद्धिमान पुरुषों की हत्या मत करो। मुझे राजा के पास ले चलो, मैं उसे उसका स्वप्न और उस स्वप्न का फल बता दूँगा।"

[25]सो अर्योक दानिय्येल को शीघ्र ही राजा के पास ले गया। अर्योक ने राजा से कहा, "यहूदा के बन्दियों में मैंने एक ऐसा पुरुष ढूँढ लिया है जो राजा को उसके सपने का मतलब बता सकता है।"

[26]सो राजा ने दानिय्येल (बेलतशस्सर) से एक प्रश्न पूछा, "क्या तू मुझे मेरे सपने और उसके अर्थ के बारे में

बता सकता है?" [27]दानिय्येल ने उत्तर दिया, "हे राजा नबूकदनेस्सर, तुम जिस रहस्य के बारे में पूछ रहे हो, उसे तुम्हें न तो कोई पण्डित, न कोई तान्त्रिक और न कोई कसदी बता सका है। [28]किन्तु स्वर्ग में एक परमेश्वर ऐसा है जो भेद भरी बातों का रहस्य बताता है। परमेश्वर ने राजा नबूकदनेस्सर को आगे क्या होने वाला है, यह दर्शाने के लिये सपना दिया है। अपने बिस्तर में सोते हुए तुमने सपने में जो बातें देखी थीं, वे ये हैं, [29]हे राजा! तुम अपने बिस्तर में सो रहे थे। तुमने भविष्य में घटने वाली बातों के बारे में सोचना आरम्भ किया। परमेश्वर लोगों को रहस्यपूर्ण बातों के बारे में बता सकता है। सो उसने भविष्य में जो घटने वाला है, वह तुम्हें दर्शा दिया। [30]परमेश्वर ने वह रहस्य मुझे भी बता दिया है। ऐसा इसलिये नहीं हुआ कि मेरे पास दूसरे लोगों से कोई अधिक बुद्धि है। बल्कि मुझे परमेश्वर ने इस भेद को इसलिए बताया है कि राजा को उसके सपने का फल पता चल जाये और इस तरह हे राजन, तुम्हारे मन में जो बातें आ रही थीं, उन्हें तुम समझ जाओ।

[31]"हे राजन, सपने में आपने अपने सामने खड़ा एक विशाल मूर्ति देखा है, वह मूर्ति बहुत बड़ा था, वह चमकदार था और बहुत अधिक प्रभावपूर्ण था। वह ऐसा था जिसे देखकर देखने वाले की आँखे फटी की फटी रह जायें। [32]उस मूर्ति का सिर शुद्ध सोने का बना था। उसकी छाती और भुजाएँ चाँदी की बनी थीं। उसका पेट और जाँघें काँसे की बनी थीं। [33]उस मूर्ति की पिण्डलियाँ लोहे की बनी थीं। उस मूर्ति के पैर लोहे और मिट्टी के बने थे। [34]जब तुम उस मूर्ति की ओर देख रहे थे, तुमने एक चट्टान देखी। देखते-देखते, वह चट्टान उखड़ कर गिर पड़ी किन्तु उस चट्टान को किसी व्यक्ति ने काट कर नहीं गिराया था। फिर हवा में लुढ़कती वह चट्टान मूर्ति के लोहे और मिट्टी के बने पैरों से जा टकराई। उस चट्टान से मूर्ति के पैर चकनाचूर हो गये। [35]फिर तत्काल ही लोहा, मिट्टी, काँसा, चाँदी और सोना सब चूर-चूर हो गया और वह चूरा गर्मियों के दिनों में खलिहान के भूसे जैसा हो गया। उन टुकड़ों को हवा उड़ा ले गयी। वहाँ कुछ भी तो नहीं बचा। कोई यह कह ही नहीं सकता था कि वहाँ कभी कोई मूर्ति था भी। फिर वह चट्टान जो उस मूर्ति से टकराई थी, एक विशाल पर्वत के रुप में बदल गयी और सारी धरती पर छा गयी।"

[36]"आपका सपना तो यह था। अब हम राजा को यह बताते हैं कि इस सपने का फल क्या है? [37]हे राजन, आप अत्यंत महत्त्वपूर्ण राजा हैं। स्वर्ग के परमेश्वर ने तुम्हें राज्य दिया है। शक्ति दी है। सामर्थ्य और महिमा दी हैं। [38]आपको परमेश्वर ने नियन्त्रण की शक्ति दी हैं और आप, लोगों पर, वन के पशुओं पर और पक्षियों पर शासन करते हो। वे चाहे कहीं भी रहते हों, उन सब पर परमेश्वर ने तुम्हें शासक ठहराया है। हे राजा नबूकदनेस्सर, उस मूर्ति के ऊपर जो सोने का सिर था, वह आप ही हैं।

[39]"आप के बाद जो दूसरा राज आयेगा, वही वह चाँदी का हिस्सा है। किन्तु वह राज्य तुम्हारे राज्य के समान विशाल नहीं होगा। इसके बाद धरती पर एक तीसरे राज्य का शासन होगा। वही वह काँसे वाला भाग हैं। [40]इसके बाद फिर एक चौथा राज्य आयेगा, वह राज्य लोहे के समान मज़बूत होगा। जैसे लोहे से वस्तुएँ टूट कर चकनाचूर हो जाती हैं, वेसे ही वह चौथा राज्य दूसरे राज्यों को भंग करके चकनाचूर करेगा।

[41]"आपने जो यह देखा था कि उस मूर्ति के पैर और पंजे थोड़े मिट्टी के और थोड़े लोहे के बने हैं, उसका मतलब यह है कि वह चौथा राज्य एक बटा हुआ राज्य होगा। इसमें कुछ तो लोहे की शक्ति होगी क्योंकि आपने मिट्टी मिला लोहा देखा है। [42]उस मूर्ति के पैर के पंजों के अगले भाग जो थोड़े लोहे और थोड़े मिट्टी के बने थे, इसका अर्थ यह है कि वह चौथा राज्य थोड़ा तो लोहे के समान शक्तिशाली होगा और थोड़ा मिट्टी के समान दुर्बल। [43]आपने लोहे को मिट्टी से मिला हुआ देखा था किन्तु जैसे लोहा और मिट्टी पूरी तरह कभी आपस में नही मिलते, उस चौथे राज्य के लोग वैसे ही मिले जुले होंगे। किन्तु एक जाति के रुप में वे लोग आपस में एक जुट नहीं होंगे।

[44]"चौथे राज्य के उन राजाओं के समय में ही स्वर्ग का परमेश्वर एक दूसरे राज्य की स्थापना कर देगा। इस राज्य का कभी अंत नहीं होगा और यह सदा-सदा बना रहेगा! यह एक ऐसा राज्य होगा जो कभी किसी दूसरे समूह के लोगों के हाथ में नहीं जायेगा। यह राज्य उन दूसरे राज्य को कुचल देगा। यह उन राज्यों का विनाश कर देगा। किन्तु वह राज्य अपने आप सदा-सदा बना रहेगा।

[45]"हे राजा नबूकदनेस्सर, आपने पहाड़ से उखड़ी हुई चट्टान तो देखी। किसी व्यक्ति ने उस चट्टान को उखाड़ा नहीं! उस चट्टान ने लोहे को, काँसे को, मिट्टी को, चाँदी को ओर सोने को टुकड़े-टुकड़े कर दिया था। इस प्रकार से महान परमेश्वर ने आपको वह दिखाया हैं जो भविष्य में होने वाला है। यह सपना सच्चा है और आप सपने की इस व्याख्या पर भरोसा कर सकते हैं।"

[46]इसके बाद राजा नबूकदनेस्सर ने दानिय्येल को झुक कर नमस्कार किया। राजा ने दानिय्येल की प्रशंसा की। राजा ने यह आज्ञा दी कि दानिय्येल को सम्मानित करने के लिये एक भेंट और सुगन्ध प्रदान की जाये। [47]फिर राजा ने दानिय्येल से कहा, "मुझे निश्चयपूर्वक ज्ञान हो गया है कि तेरा परमेश्वर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली परमेश्वर है। वह सभी राजाओं का यहोवा है। वह लोगों को उन बातों के बारे में बताता है, जिन्हें वे नहीं जान सकते। मुझे पता है कि यह सच है। क्योंकि तू मुझे भेद की इन बातों को बता सका।"

[48]इसके बाद उस राजा ने दानिय्येल को अपने राज्य में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पद प्रदान किया तथा राजा ने बहुत से बहुमूल्य उपहार भी दानिय्येल को दिये। नबूकदनेस्सर ने दानिय्येल को बाबुल के समूचे प्रदेश का शासक नियुक्त कर दिया। तथा उसने दानिय्येल को बाबुल के सभी पण्डितों का प्रधान बना दिया। [49]दानिय्येल ने राजा से विनती की कि वह शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बाबुल प्रदेश के महत्त्वपूर्ण हाकिम बना दें। सो राजा ने वैसा ही किया जैसा दानिय्येल ने चाहा था। दानिय्येल स्वयं उन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में हो गया था जो राजा के निकट रहा करते थे।

सोने की प्रतिमा और धधकती भट्टी

3 राजा नबूकदनेस्सर ने सोने की एक प्रतिमा बनवा रखी थी। वह प्रतिमा साठ हाथ ऊँची और छ: हाथ चौड़ी थी। नबूकदनेस्सर ने उस प्रतिमा को बाबुल प्रदेश में दूरा के मैदान में स्थापित कर दिया [2]और फिर राजा ने प्रांत के राज्यपालों, मुखियाओं, अधिपतियों, सलाहकारों, खजांचियों, न्यायाधीशों, शासकों तथा दूसरे सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को अपने राज्य में आकर इकट्ठा होने के लिये बुलवा भेजा। राजा चाहता था कि वे सभी लोग प्रतिमा के प्रतिष्ठा महोत्सव में सम्मिलित हों।

[3]सो वे सभी लोग आये और उस प्रतिमा के आगे खड़े हो गये जिसे राजा नबुकदनेस्सर ने प्रतिष्ठित कराया था। [4]फिर उस ढंढोरची ने, जो राजा की घोषनाएँ प्रसारित किया करता था, ऊँचे स्वर में कहा, "सुनों, सुनों, अरे ओ अलग अलग जातियों और भाषा समूह के लोगों! तुम्हें जो करने की आज्ञा दी गयी है, वह यह है, [5]"तुम जब सभी संगीत वाद्यों की ध्वनि सुनो तो तुम्हें तत्काल झुक कर प्रणाम करना होगा। तुम जब नरसिगों, बाँसुरियों, सितारो, सात तारों वाले बाजो, वीणाओ, और मशक-शहनाई तथा अन्य सभी प्रकार के बाजों की आवाज़ सुनो तो तुम्हें सोने की इस प्रतिमा की पूजा करनी है। इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा राजा नबूकदनेस्सर ने की है। [6]यदि कोई व्यक्ति इस सोने की प्रतिमा को झुक कर प्रणााम नहीं करेगा और इसे नहीं पूजेगा तो उस व्यक्ति को तुरंत ही धधकती हुई भट्टी में फेंक दिया जायेगा।"

[7]सो, जैसे ही वे लोग नरसिंगों, बाँसुरियों, सितारों, सात तारों वाले बाजों, मशक शहनाइयों और दूसरी तरह के संगीत-वाद्यों को सुनते, नीचे झुक जाते और सोने की उस प्रतिमा की पूजा करते। राजा नबूकदनेस्सर द्वारा स्थापित सोने की उस प्रतिमा की, सारी प्रजा, सभी जातियाँ और वहाँ के हर प्रकार की भाषा बोलने वाले लोग पूजा किया करते थे।

[8]इसके बाद, कुछ कसदी लोग राजा के पास आये। उन लोगों ने यहूदियों के विरोध में राजा के कान भरे। [9]राजा नबूकदनेस्सर से उन्होंने कहा, "हे राजन, आप चिरंजीवी हों! [10]हे राजन, आपने एक आदेश दिया था, आपने कहा था कि हर वह व्यक्ति जो नरसिंगों, बाँसुरियों, सितारों, सात तारों वाले बाजों, वीणाओं, मशक शहनाइयों और दूसरे सभी तरह के वाद्य-यन्त्रों की ध्वनि को सुनता है, उसे सोने की प्रतिमा के आगे झुक कर उसकी पूजा करनी चाहिये। [11]आपने यह भी कहा था कि यदि कोई व्यक्ति सोने की प्रतिमा के आगे झुक कर उसकी पूजा नहीं करेगा तो उसे किसी धधकती भट्टी में झोंक दिया जायेगा। [12]हे राजन, यहाँ कुछ ऐसे यहूदी हैं जो आपके इस आदेश पर ध्यान नहीं देते। आपने उन यहूदियों को बाबुल प्रदेश में महत्त्वपूर्ण हाकिम बनाया हुआ है। ऐसे लोगों के नाम हैं-शद्रक, मेशक और अबेदनगो। ये लोग आपके देवताओं की पूजा नहीं करते और जिस सोने की

प्रतिमा को आप ने स्थापित किया है, वे न तो उसके आगे झुकते हैं और न ही उसकी पूजा करते हैं।"

[13]इस पर नबूकदनेस्सर क्रोध में आग–बबूला हो उठा। उसने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बुलवा भेजा। सो उन लोगों को राजा के सामने लाया गया। [14]राजा नबूकदनेस्सर ने उन लोगों से कहा, "अरे शद्रक, मेशक और अबेदनगो। क्या यह सच है कि तुम मेरे देवताओं की पूजा नहीं करते? और क्या यह भी सच है कि तुम मेरे द्वारा स्थापित करायी गयी सोने की प्रतिमा के आगे न तो झुकते हो, और न ही उसकी पूजा करते हो? [15]अब देखो, तुम जब नरसिंगों, बाँसुरियों, सितारों, सात तार के बाजों, वीणाओं, मशक–शहनाइयों तथा हर तरह के दूसरे वाद्य–यन्त्रों की ध्वनि सुनो तो तुम्हें सोने की प्रतिमा के आगे झुक कर उसकी पूजा करनी होगी। यदि तुम मेरे द्वारा बनवाई गयी उस मूर्ति की पूजा करने को तैयार हो, तब तो अच्छा है किन्तु यदि उसकी पूजा नहीं करते हो तो तुम्हें तत्काल ही धधकती हुई भट्टी में झोंक दिया जायेगा। फिर तुम्हें कोई भी देवता मेरी शक्ति से बचा नहीं पायेगा!"

[16]शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने उत्तर देते हुए राजा से कहा, "हे नबूकदनेस्सर, हमें तुझसे इन बातों की व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है! [17]यदि, हमारा परमेश्वर जिसकी हम उपासना करते हैं, उसका अस्तित्व है तो वह इस जलती हुई भट्टी से हमें बचा लेने में समर्थ है। सो अरे ओ राजा, वह हमें तेरी ताकत से बचा लेगा। [18]किन्तु राजा, हम यह चाहते हैं कि तू इतना जान ले कि यदि परमेश्वर हमारी रक्षा न भी करे तो भी हम तेरे देवताओं की सेवा से इन्कार करते हैं। सोने की जो प्रतिमा तूने स्थापित कराई है हम उसकी पूजा नहीं करेंगे।"

[19]इस पर तो नबूकदनेस्सर क्रोध से भड़क उठा। उसने शद्रक, मेशक और अबेदनगो की ओर घृणा से देखा। उसने आज्ञा दी कि भट्टी को जितनी वह तपा करती है, उसे उससे सात गुणा अधिक दहकाया जाये। [20]इसके बाद नबूकदनेस्सर ने अपनी सेना के कुछ बहुत मज़बूत सैनिकों को आज्ञा दी कि वे शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बाँध लें। राजा ने उन सैनिकों को आज्ञा दी कि वे शद्रक, मेशक और अबेदनगो को धधकती भट्टी में झोंक दें।

[21]सो शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बाँध दिया गया और फिर धधकती भट्टी में धकेल दिया गया। उन्होंने अपने वस्त्र–अंगरखे, पतलूनें और टोप तथा अन्य कपड़े पहन रखे थे। [22]जिस समय राजा ने यह आज्ञा दी थी उस समय वह बहुत क्रोधित था, इसलिये उन्होंने तत्काल ही भट्टी को बहुत अधिक तपा लिया! आग इतनी अधिक भड़क रही थी कि उसकी लपटों से वे शक्तिशाली सैनिक मर गये! वे सैनिक उस समय मारे गये जब उन्होंने आग के पास जाकर शद्रक, मेशक और अबेदनगो को आग में धकेला था। [23]शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग में गिर गये थे। उन्हें बहुत कस कर बाँधा हुआ था।

[24]इस पर राजा नबूकदनेस्सर उछल कर अपने पैरो, पर खड़ा हो गया। उसे बहुत आश्चर्य हो रहा था। उसने अपने मंत्रियों से पूछा, "यह ठीक है न कि हमने तो बस तीन व्यक्तियों को बंधवाया था और आग में उन्हीं तीन को डलवाया था?"

उसके मंत्रियों ने उत्तर दिया, "हाँ, महाराज।"

[25]राजा बोला, "देखो, मुझे तो आग के भीतर इधर–उधर घूमते हुए चार व्यक्ति दिखाई दे रहे हैं। वे बंधे हुए नहीं हैं और आग उन का कुछ नहीं बिगाड़ पाई है। देखो, वह चौथा पुरुष तो किसी स्वर्गदूत जैसा दिखाई दे रहा है!"

[26]इसके बाद नबूकदनेस्सर उस जलती हुई भट्टी के मुँह पर गया। उसने ज़ोर से पुकार कर कहा, "शद्रक, मेशक और अबेदनगो, बाहर आओ! परम प्रधान परमेश्वर के सेवकों बाहर आओ!

सो शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग से बाहर निकल आये। [27]जब वे बाहर आये तो प्रांत के राज्यपालों, हाकिमों, आधिपतियों और राजा के मंत्रियों ने उनके चारों तरफ़ भीड़ लगा दी। वे देख पा रहे थे कि उस आग ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को छुआ तक नहीं है। उनके शरीर जरा भी नहीं जले थे। उनके बाल झुलसे तक नहीं थे। उनके कपड़ों को आँच तक नहीं आई थी। उनके शरीर से ऐसी गंध तक नहीं निकल रही थी जैसे वे आग के आस–पास भी गए हों।

[28]फिर नबूकदनेस्सर ने कहा, "शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की स्तुति करो। उनके परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूत को भेजकर, अपने सेवकों की आग से रक्षा की है! इन तीनों पुरुषों की अपने परमेश्वर में आस्था थी। इन्होंने मेरे आदेश को मानने से मना कर दिया और दूसरे किसी देवता की सेवा या पूजा करने के बजाय उन्होंने मरना स्वीकार किया। [29]सो आज से मैं यह

नियम बनाता हूँ: किसी भी देश अथवा किसी भी भाषा को बोलने वाला कोई व्यक्ति यदि शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर के विरोध में कुछ कहेगा तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायेंगे और उसके घर को उस समय तक तोड़ा-फोड़ा जायेगा, जब तक वह मलबे और राख का ढेर मात्र न रह जाये। कोई भी दूसरा देवता अपने लोगों को इस तरह नहीं बचा सकता।" **30**इसके बाद राजा ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बाबुल के प्रदेश में और अधिक महत्त्वपूर्ण पद प्रदान कर दिये।

एक पेड़ के बारे में नबूकदनेस्सर का स्वप्न

4 राजा नबूकदनेस्सर ने बहुत सी जातियों और दूसरी भाषा बोलने वाले लोगों को, जो सारी दुनिया में बसे हुए थे, यह पत्र भेजा शुभकामनाएँ:

2परम प्रधान परमेश्वर ने मेरे साथ जो आश्चर्यजनक अद्भुत बातें की हैं, उनके बारे में तुम्हें बताते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता है।

3 अद्भुत चमत्कार किये हैं!
परमेश्वर शक्ति पूर्ण चमत्कार किये हैं!
परमेश्वर का राज्य सदा टिका रहता है;
परमेश्वर का शासन
पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहता है।

4मैं, नबूकदनेस्सर, अपने महल में था। मैं प्रसन्न और सफल था। **5**मैंने एक सपना देखा जिसने मुझे डरा दिया। मैं अपने बिस्तर में सो रहा था। मैंने दर्शनों को देखा। जो कुछ मैंने देखा था, उसने मुझे बहुत डरा दिया। **6**सो मैंने यह आज्ञा दी कि बाबुल के सभी बुद्धिमान लोगों को मेरे पास लाया जाये ताकि वे मुझे मेरे स्वप्न का फल बतायें। **7**जब तांत्रिक और कसदी लोग मेरे पास आये तो मैंने उन्हें अपने सपने के बारे में बताया। किन्तु वे लोग मुझे मेरे सपने का अर्थ नहीं बता पाये। **8**अंत में दानिय्येल मेरे पास आया (मैंने अपने ईश्वर को सम्मानित करने के लिए दानिय्येल को बेलतशस्सर नाम दिया था। पवित्र ईश्वरों की आत्मा का उसमें निवास है।) दानिय्येल को मैंने अपना सपना कह सुनाया। **9**मैंने उसे कहा,

"हे बेलतशस्सर, तू सभी तांत्रिकों में सबसे बड़ा है। मुझे पता है कि तुझमें पवित्र ईश्वरों की आत्मा वास करती है। मैं जानता हूँ कि किसी भी रहस्य को समझना तेरे लिये कठिन नहीं है। मैंने जो सपना देखा था, वह यह है। तू मुझे इसका अर्थ समझा। **10**जब मैं अपने बिस्तर में लेटा हुआ था तो मैंने जो दिव्य दर्शन देखे, वे ये हैं। मैंने देखा कि मेरे सामने धरती के बीचों-बीच एक वृक्ष खड़ा है। वह वृक्ष बहुत लम्बा था। **11**वृक्ष बड़ा होता हुआ एक विशाल मज़बूत वृक्ष बन गया। वृक्ष की चोटी आकाश छूने लगी। उस वृक्ष को धरती पर कहीं से भी देखा जा सकता था। **12**वृक्ष की पत्तियाँ सुन्दर थीं। वृक्ष पर बहुत अच्छे फल बहुतायात में लगे थे और उस वृक्ष पर हर किसी के लिए भरपूर खाने को था। जंगली जानवर वृक्ष के नीचे आसरा पाये हुए थे और वृक्ष की शाखाओं पर चिड़ियों का बसेरा था। हर पशु पक्षी उस वृक्ष से ही भोजन पाता था।

13"अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे दर्शन में मैं उन वस्तुओं को देख रहा था और तभी एक पवित्र स्वर्गदूत को मैंने स्वर्ग से नीचे उतरते हुए देखा। **14**वह बड़े ऊँचे स्वर में बोला। उसने कहा, 'वृक्ष को काट फेंको। इसकी टहनियों को काट डालो। इसकी पत्तियों को नोच लो। इसके फलों को चारों ओर बिखेर दो। इस वृक्ष के नीचे आसरा पाये हुए पशु कहीं दूर भाग जायेंगे। इसकी शाखाओं पर बसेरा किये हुए पक्षी कहीं उड़ जायेंगे। **15**किन्तु इसके तने और इसकी जड़ों को धरती में रहने दो। इसके चारों ओर लोहे और काँसे का एक बंधेज बांध दो। अपने आस पास उगी घास के साथ इसका तना और इसकी जड़ें धरती में रहेंगी। जंगली पशुओं और पेड़ पौधों के बीच यह खेतों में रहेगा। ओस से वह नम हो जायेगा। **16**वह अधिक समय तक मनुष्य की तरह नहीं सोचेगा। उसका मन पशु के मन जैसा हो जायेगा। उसके ऐसा ही रहते हुए सातऋ तु चक्र (वर्ष) बीत जायेगा।'

17"एक पवित्र स्वर्गदूत ने इस दण्ड की घोषणा की थी ताकि धरती के सभी लोगों को यह पता चल जाये कि मनुष्यों के राज्यों के ऊपर परम

प्रधान परमेश्वर शासन करता है। परमेश्वर जिसे भी चाहता है। इन राज्यों को दे देता है और परमेश्वर उन राज्यों पर शासन करने के लिये विनम्र मनुष्यों को चुनता है।

[18]"बस मैंने (राजा नबूकदनेस्सर ने) सपने में यही देखा है। अब हे बेलतशस्सर! तू मुझे यह बता कि इस सपने का अर्थ क्या है? मेरे राज्य का कोई भी बुद्धिमान पुरुष मुझे इस सपने का फल नहीं बता पा रहा है। किन्तु हे बेलतशस्सर, तू मेरे इस सपने की व्याख्या कर सकता है क्योंकि तुझमें पवित्र परमेश्वर की आत्मा निवास करती है।"

[19]तब दानिय्येल (जिसका नाम बेलतशस्सर भी था) थोड़ी देर के लिए एक दम चुप हो गया। जिन बातों को वह सोच रहा था, वे उसे व्याकुल किये डाल रही थीं। सो राजा ने उससे कहा, "हे बेलतशस्सर (दानिय्येल), तू उस सपने या उस सपने के फल से भयभीत मत हो।"

इस पर बेलतशस्सर (दानिय्येल) ने राजा को उत्तर दिया, "हे मेरे स्वामी, काश यह सपना तेरे शत्रुओं पर पड़े और इसका फल, जो तेरे विरोधी हैं, उनको मिले!" [20-21]आपने सपने में एक वृक्ष देखा था। वह वृक्ष बड़ा हुआ और मज़बूत बन गया। वृक्ष की चोटी आसमान छू रही थी। धरती में हर कहीं से वह वृक्ष दिखाई देता था। उसकी पत्तियाँ सुन्दर थीं और उस पर बहुतायत में फल लगे थे। उन फलों से हर किसी को पर्याप्त भोजन मिलता था। जंगली पशुओं का तो वह घर ही था और उसकी शाखाओं पर चिड़ियों ने बसेरा किया हुआ था। तुमने सपने में ऐसा वृक्ष देखा था। [22]हे राजन, वह वृक्ष आप ही हैं। आप महान और शक्तिशाली बन चुके हैं। आप उस ऊँचे वृक्ष के समान हैं जिसने आकाश छू लिया है और आपकी शक्ति धरती के सुदूर भागों तक पहुँची हुई है।

[23]"हे राजन, आपने एक पवित्र स्वर्गदूत को आकाश से नीचे उतरते देखा था। स्वर्गदूत ने कहा था वृक्ष को काट डालो और उसे नष्ट कर दो। वृक्ष के तने पर लोहे और काँसे का बन्धेज डाल दो और इसके तने और जड़ों को धरती में ही छोड़ दो। खेत में घास के बीच इसे रहने दो। ओस से ही यह नमी लेता रहेगा। वह किसी जंगली पशु के रुप में रहा करेगा। इसके इसी हाल में सात ऋतु–चक्र (साल) बीत जायेंगे।

[24]"हे राजा, आपके स्वप्न का फल यही है। परम प्रधान परमेश्वर ने मेरे स्वामी राजा के प्रति इन बातों के घटने का आदेश दिया है। [25]हे राजा नबूकदनेस्सर, प्रजा से दूर चले जाने के लिये आपको विवश किया जायेगा। जंगली पशुओं के बीच आपको रहना होगा। मवेशियों के समान आप घास से पेट भरेंगे और ओस से भीगेंगे। सात ऋतु चक्र (वर्ष) बीत जायेंगे और फिर उसके बाद तुम यह पाठ पढ़ोगे कि परम प्रधान परमेश्वर मनुष्यों के साम्राज्यों पर शासन करता है और वह जिसे भी चाहता है, उसको राज्य दे देता है।

[26]"वृक्ष के तने और उसकी जड़ों को धरती में छोड़ देने के आदेश का अर्थ यह है–कि आपका साम्राज्य आपको वापस मिल जायेगा। किन्तु यह उसी समय होगा जब तुम यह जान जाओगे कि तुम्हारे राज्य पर परम प्रधान परमेश्वर का ही शासन है। [27]इसलिये हे राजन, आप कृपा करके मेरी सलाह मानें। मैं आपको यह सलाह देता हूँ कि आप पाप करना छोड़ दें और जो उचित है, वही करें। कुकर्मो का त्याग कर दें। गरीबों पर दयालु हों। तभी आप सफल बने रह सकेंगे।"

[28]ये सभी बातें राजा नबूकदनेस्सर के साथ घटीं। [29-30]इस सपने के बारह महीने बाद जब राजा नबूकदनेस्सर बाबुल में अपने महल की छत पर घूम रहा था, तो छत पर खड़े–खड़े ही वह कहने लगा, "बाबुल को देखो! इस महान नगर का निर्माण मैंने किया है। यह महल मेरा है! मैंने अपनी शक्ति से इस विशाल नगर का निर्माण किया है। इस स्थान का निर्माण मैंने यह दिखाने के लिये किया है कि मैं कितना बड़ा हूँ!"

[31]ये शब्द अभी उसके मुँह में ही थे कि एक आकाशवाणी हुई। आकाशवाणी ने कहा, "राजा नबूकदनेस्सर, तेरे साथ ये बातें घटेंगी। राजा के रूप में तुझसे तेरी शक्ति छीन ली गयी है। [32]तुझे प्रजा से दूर जाना होगा। जंगली पशुओं के साथ तेरा निवास होगा। तू ढ़ोरों की तरह घास खायेगा।

इससे पहले कि तू सबक सीखे, सात ऋतु चक्र (वर्ष) बीत जायेंगे। तब तू यह समझेगा कि मनुष्य के राज्यों पर परम प्रधान परमेश्वर शासन करता है और परम प्रधान परमेश्वर जिसे चाहता है, उसे राज्य दे देता है।"

[33]फिर तत्काल ही ये बातें घट गयीं। नबूकदनेस्सर को लोगों से दूर जाना पड़ा। उसने ढ़ोरों की तरह घास खाना शुरू कर दिया। वह ओस में भीगा। किसी उकाब के पंखों के समान उसके बाल बढ़ गये और उसके नाखून ऐसे बढ़ गये जैसे किसी पक्षी के पंजों के नाखून होते हैं।

[34]फिर उस समय के अंत में मैं (नबूकदनेस्सर) ने ऊपर स्वर्ग की ओर देखा। मैं फिर सहीं ढ़ंग से सोचने विचार ने लगा। सो मैंने परम प्रधान परमेश्वर की स्तुति की, जो सदा अमर है, मैंने उसे आदर और महिमा प्रदान की परमेश्वर शासन सदा करता है! उसका राज्य पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहता है।

[35] इस धरती के लोग सचमुच बडे नहीं हैं।
परमेश्वर लोगों के साथ
जो कुछ चाहता है वह करता है।
स्वर्ग की शक्तियों से कोई भी
रोक नहीं पाता है।
उसका सशक्त हाथ जो कुछ वह करता है
उस पर कोई नहीं प्रश्न करता है।

[36]सो, उस अवसर, पर परमेश्वर ने मुझे मेरी बुद्धि फिर दे दी और उसने एक राजा के रूप में मेरा बड़ा मान, सम्मान और शक्ति भी वापस लौटा दी। मेरे मन्त्री और मेरे राजकीय लोग फिर मेरे पास आने लगे। मैं फिर से राजा बन गया। मैं पहले से भी अधिक महान और शक्तिशाली हो गया था [37]और देखो अब मैं, नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा की स्तुति करता हूँ तथा उसे आदर और महिमा देता हूँ। वह जो कुछ करता है, ठीक करता है। वह सदा न्यायपूर्ण है। उसमें अहंकारी लोगों को विनम्र बना देने की क्षमता हैर!

दीवार पर अभिलेख

5 राजा बेलशस्सर ने अपने एक हजार अधिकारियों को एक बड़ी दावत दी। राजा उनके साथ दाखमधु पी रहा था। [2]राजा बेलशस्सर ने दाखमधु पीते हुए अपने सेवकों को सोने और चाँदी के प्याले लाने को कहा। ये वे प्याले थे जिन्हें उसके दादा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मन्दिर से लिया था। राजा बेलशस्सर चाहता था कि उसके शाही लोग, उसकी पत्नियाँ, तथा उसकी दासियाँ इन प्यालों से दाखमधु पियें। [3]सो सोने के वे प्याले लाये गये जिन्हें यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर से उठाया गया था। फिर राजा ने और उसके अधिकारियों ने, उसकी रानियों ने तथा उसकी दासियों ने, उन प्यालों से दाखमधु पिया किया। [4]दाखमधु पीते हुए वे अपने देवताओं की मूर्तियों की स्तुति कर रहे थे। उन्होंने उन देवताओं की स्तुति की जो देवता सोने, चाँदी, काँसे, लोहे, लकड़ी और पत्थर के मूर्ति मात्र थे।

[5]उसी समय अचानक किसी पुरुष का एक हाथ प्रकट हुआ और दीवार पर लिखने लगा। उसकी उंगलियाँ दीवार के लेप को कुरेदती हुई शब्द लिखने लगीं। दीवार के पास राजा के महल में उस हाथ ने दीवार पर लिखा। हाथ जब लिख रहा था तो राजा उसे देख रहा था।

[6]राजा बेलशस्सर बहुत भयभीत हो उठा। डर से उसका मुख पीला पड़ गया और उसके घुटने इस प्रकार काँपने लगे कि वे आपस में टकरा रहे थे। उसके पैर इतने बलहीन हो गये कि वह खड़ा भी नहीं रह पा रहा था। [7]राजा ने तांत्रिकों और कसदियों को अपने पास बुलवाया और उनसे कहा, "मुझे जो काई भी इस लिखावट को पढ़कर बताएगा और मुझे उसका अर्थ समझा देगा, मैं उसे पुरस्कार दूँगा। उस व्यक्ति को मैं बैंगनी पोशाक भेंट करुँगा। मैं उसके गले में सोने का हार पहनाऊँगा और मैं उसे अपने राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शासक बना दूँगा।"

[8]सो राजा के सभी बुद्धिमान पुरुष वहाँ आ गये किन्तु वे उस लिखावट को नहीं पढ़ सके। वे समझ ही नहीं सके कि उसका अर्थ क्या हैं। [9]राजा बेलशस्सर के हाकिम चक्कर में पड़े हुए थे और राजा तो और भी अधिक भयभीत और चिंतित था। उसका मुख डर से पीला पड़ा हुआ था।

[10]तभी जहाँ वह दावत चल रही थी, वहाँ राजा की माँ आई। उसने राजा और उसके राजकीय अधिकारियों की आवाज़ें सुन लीं थीं, उसने कहा, "हे राजा, चिरंजीव रह! डर मत! तू अपने मुँह को डर से इतना पीला मत पड़ने दे! [11]देख, तेरे राज्य में एक ऐसा व्यक्ति है जिसमें

पवित्र ईश्वरों की आत्मा बसती है। तेरे पिता के दिनों में इस व्यक्ति ने यह दर्शाया था कि वह रहस्यों को समझ सकता है। उसने यह दिखा दिया था कि वह बहुत चुस्त और बुद्धिमान है। उसने यह प्रकट कर दिया था कि इन बातों में वह ईश्वर के समान है। तेरे दादा राजा नबूकदनेस्सर ने इस व्यक्ति को सभी बुद्धिमान पुरुषों पर मुखिया नियुक्त किया था। वह सभी तांत्रिकों और कसदियों पर हुकूमत करता था। [12]मैं जिस व्यक्ति के बारे में बातें कर रही हूँ उसका नाम दानिय्येल है। किन्तु राजा ने उसे बेलतशस्सर का नाम दे दिया था। बेलतशस्सर (दानिय्येल) बहुत चुस्त है और वह बहुत सी बातें जानता है। वह स्वप्नों की व्याख्या कर सकता है। पहेलियों को समझा सकता है और कठिन से कठिन हलों को सुलझा सकता है। तू दानिय्येल को बुला। दीवार पर जो लिखा है, उसका अर्थ तुझे वही बतायेगा।"

[13]सो वे दानिय्येल को राजा के पास ले आये। राजा ने दानिय्येल से कहा, "क्या तेरा नाम दानिय्येल है? मेरे पिता महाराज यहूदा से जिन लोगों को बंदी बनाकर लाये थे, क्या तू उन्हीं में से एक है? [14]मैंने सुना है, कि ईश्वरों की आत्मा का तुझमें निवास है और मैंने यह भी सुना है कि तू रहस्यों को समझता है, तू बहुत चुस्त और बुद्धिमान है। [15]बुद्धिमान पुरुष और तांत्रिकों को इस दीवार की लिखावट को समझाने के लिए मेरे पास लाया गया। मैं चाहता था कि वे लोग उस लिखावट का अर्थ बतायें। किन्तु दीवार पर लिखी इस लिखावट की व्याख्या वे मुझे नहीं दे पाए। [16]मैंने तेरे बारे में सुना है कि तू बातों के अर्थ की व्याख्या कर सकता है और तू अत्यंत कठिन समस्याओं के उत्तर भी ढूँढ सकता है। यदि दीवार की इस लिखावट को तू पढ़ दे और इसका अर्थ तू मुझे समझा दे तो मैं तुझे ये वस्तुएँ दूँगा। मैं तुझे बैंगनी रंग की पोशाक प्रदान करुँगा, तेरे गले में सोने का हार पहनाऊँगा। फिर तो तू इस राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शासक बन जायेगा।"

[17]इसके बाद दानिय्येल ने राजा को उत्तर देते हुए कहा, "हे राजा बेलशस्सर, तुम अपने उपहार अपने पास रखो, अथवा चाहो तो उन्हें किसी और को दे दो। मैं तुम्हें वैसे ही दीवार की लिखावट पढ़ दूँगा और उसका अर्थ क्या है, यह तुम्हें समझा दूँगा।

[18]"हे राजन, परम प्रधान परमेश्वर ने तुम्हारे दादा नबूकदनेस्सर को एक महान शक्तिशाली राजा बनाया था। परमेश्वर ने उन्हें अत्याधिक महत्त्वपूर्ण बनाया था। [19]बहुत से देशों के लोग और विभिन्न भाषाएँ बोलनेवाले नबूकदनेस्सर से डरा करते थे क्योंकि परम प्रधान परमेश्वर ने उसे एक बहुत बड़ा राजा बनाया था। यदि नबूकदनेस्सर किसी को मार डालना चाहता तो वह मार दिया जाता और यदि वह चाहता कि कोई व्यक्ति जीवित रहे तो उसे जीवित रहने दिया जाता। यदि वह लोगों को बड़ा बनाना चाहता तो वह उन्हें बड़ा बना देता और यदि वह चाहता कि उन्हें महत्त्वहीन कर दिया जाये तो वह उन्हें महत्त्वहीन कर देता।

[20]किन्तु नबूकदनेस्सर को अभिमान हो गया और वह हठीला बन गया। सो परमेश्वर द्वारा उससे उसकी शक्ति छीन ली गयी। उसे उसके राज सिंहासन से उतार फेंका गया और उसे महिमा विहीन बना दिया गया। [21]इसके बाद लोगों से दूर भाग जाने के लिये नबूकदनेस्सर को विवश किया गया। उसकी बुद्धि किसी पशु की बुद्धि जैसी हो गयी। वह जंगली गधों के बीच में रहने लगा और ढोरों की तरह घास खाता रहा। वह ओस में भीगा। जब तक उसे सबक नहीं मिल गया, उसके साथ ऐसा ही होता गया। फिर उसे यह ज्ञान हो गया कि मनुष्य के राज्य पर परम प्रधान परमेश्वर का ही शासन है और साम्राज्यों के ऊपर शासन करने के लिये वह जिस किसी को भी चाहता है, भेज देता है।

[22]"किन्तु हे बेलशस्सर, तुम तो इन बातों को जानते ही हो! तुम नबूकदनेस्सर के पोते हो किन्तु फिर भी तुमने अपने आप को विनम्र नहीं बनाया। [23]नहीं! तुम विनम्र तो नहीं हुए और उलटे स्वर्ग के यहोवा के विरुद्ध हो गये। तुमने यहोवा के मन्दिर के पात्रों को अपने पास लाने की आज्ञा दी और फिर तुमने, तुम्हारे शाही हाकिमों ने, तुम्हारी पत्नियों ने, तुम्हारी दासियों ने उन पात्रों में दाखमधु पीया। तुमने चाँदी, सोने, काँसे, लोहे, लकड़ी और पत्थर के देवताओं के गुण गाये। वे सचमुच के देवता नहीं है। वे देख नहीं सकते, सुन नहीं सकते तथा वे कुछ समझ भी नहीं सकते हैं। तुमने उस परमेश्वर को आदर नहीं दिया, जिसका तुम्हारे जीवन या जो कुछ भी तुम करते हो, उस पर अधिकार है। [24]सो इसलिए, परमेश्वर ने उस हाथ को भेजा जिसने दीवार पर लिखा। [25]दीवार पर जो शब्द लिखे गये हैं, वे ये हैं: 'मने, मने तकेल, ऊपर्सीन।'

[26]"इन शब्दों का अर्थ यह है, 'मने' अर्थात् जब तेरे राज्य का अंत होगा, परमेश्वर ने तब तक के दिन गिन लिये हैं।

[27]'तकेल': अर्थात् तराज़ू पर तुझे तोल लिया गया है और तू पूरा नहीं उतरा है।

[28]'ऊपर्सीन': अर्थात् तुझसे तेरा राज्य छीना जा रहा है और उसका बंटवारा हो रहा है। यह राज्य मादियों और फारसियों के लोगों को दे दिया जायेगा।"

[29]इसके बाद बेलशस्सर ने आज्ञा दी कि दानिय्येल को बैंगनी वेशभूषा पहनायी जाये। उसके गले में सोने का हार पहना दिया जाय और यह घोषणा कर दी गयी कि वह राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शासक होगा। [30]उसी रात बाबुल की प्रजा के स्वामी राजा बेलशस्सर का वध कर दिया गया। [31]मादे का रहने वाला एक व्यक्ति जिसका नाम दारा था और जिसकी आयु कोई बासठ वर्ष की थी, वहाँ का नया राजा बना।

दानिय्येल और सिंह

6 दारा के मन में विचार आया कि कितना अच्छा रहे यदि एक सौ बीस प्रांत–अधिपतियों के द्वारा समूचे राज्य की हुकूमत को चलाया जाये [2]और इसके लिये उसने उन एक सौ बीस प्रांत–अधिपतियों के ऊपर शासन करने के लिये तीन व्यक्तियों को अधिकारी नियुक्त कर दिया। इन तीनों देख–रेख करने वालों में एक था दानिय्येल। इन तीन व्यक्तियों की नियुक्ति राजा ने इसलिये की थी कि कोई उसके साथ छल न कर पाये और उसके राज्य की कोई भी हानि न हो। [3]दानिय्येल ने यह कर दिखाया कि वह दूसरे पर्यवेक्षकों से अधिक उत्तम है। दानिय्येल ने यह काम अपने अच्छे चरित्र और बड़ी योग्यताओं के द्वारा सम्पन्न किया। राजा दानिय्येल से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने दानिय्येल को सारी हुकूमत का हाकिम बनाने की सोची। [4]किन्तु जब दूसरे पर्यवेक्षकों और प्रांत–अधिपतियों ने इसके बारे में सुना तो उन्हें दानिय्येल से ईर्ष्या होने लगी। वे दानिय्येल को कोसने के लिये कारण ढूँढने का जतन करने लगे। सो जब दानिय्येल सरकारी कामकाज से कहीं बाहर जाता तो वे उसके द्वारा किये गये कामों पर नज़र रखने लगे। किन्तु फिर भी वे दानिय्येल में कोई दोष नहीं ढूँढ़ पाये। सो वे उस पर कोई गलत काम करने का दोष नहीं लगा सके। दानिय्येल बहुत ईमानदार और भरोसेमंद व्यक्ति था। उसने राजा के साथ कभी कोई छल नहीं किया। वह कठिन परिश्रमी था।

[5]आखिरकार उन लोगों ने कहा, "दानिय्येल पर कोई बुरा काम करने का दोष लगाने की कोई वजह हम कभी नहीं ढूँढ़ पायेंगे। इसलिये हमें शिकायत के लिए कोई ऐसी बात ढूँढ़नी चाहिये जो उसके परमेश्वर के नियमों से सम्बन्ध रखती हो।"

[6]सो वे दोनों पर्यवेक्षक और वे प्रांत–अधिपति टोली बना कर राजा के पास गये। उन्होंने कहा, "हे राजा दारा, तुम अमर रहो! [7]हम सभी पर्यवेक्षक, हाकिम, प्रांत–अधिपति, मंत्री और राज्यपाल किसी एक बात पर सहमत हैं। हमारा विचार है कि राजा को यह नियम बना देना चाहिये और हर व्यक्ति को इस नियम का पालन करना चाहिये। वह नियम यह हैं, 'यदि अगले तीस दिनों तक कोई भी व्यक्ति हे राजा, आपको छोड़ किसी और देवता या व्यक्ति की प्रार्थना करे तो उस व्यक्ति को शेरों की माँद में डाल दिया जाये। [8]अब हे राजा! जिस कागज पर यह नियम लिखा है, तुम उस पर हस्ताक्षर कर दो। इस तरह से यह नियम कभी बदला नहीं जा सकेगा। क्योंकि मीदियों और फ़ारसियों के नियम न तो बदले जा सकते हैं और न ही मिटाए जा सकते हैं।" [9]सो राजा दारा ने यह नियम बना कर उस पर हस्ताक्षर कर दिये।

[10]दानिय्येल तो सदा ही प्रतिदिन तीन बार परमेश्वर से प्रार्थना किया करता था। हर दिन तीन बार दानिय्येल अपने घुटनों के बल झुक कर अपने परमेश्वर की प्रार्थना करता और उसका गुणगान करता था। दानिय्येल ने जब इस नये नियम के बारे में सुना तो वह अपने घर चला गया। दानिय्येल अपने मकान की छत के ऊपर, अपने कमरे में चला गया। दानिय्येल उन खिड़कियों के पास गया जो यरूशलेम की तरफ़ खुलती थीं। फिर वह अपने घुटनों के बल झुका और जैसे सदा किया करता था, उसने वैसे ही प्रार्थना की।

[11]फिर वे लोग झुण्ड बना कर दानिय्येल के यहाँ जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने दानिय्येल को प्रार्थना करते और परमेश्वर से दया माँगते पाया। [12]बस फिर क्या था। वे लोग राजा के पास जा पहुँचे और उन्होंने राजा से उस नियम के बारे में बात की जो उसने बनाया था। उन्होंने कहा, "हे राजा दारा, आपने एक नियम बनाया है। जिसके अनुसार अगले तीस दिनों तक यदि कोई व्यक्ति किसी देवता से

अथवा तेरे अतिरिक्त किसी व्यक्ति से प्रार्थना करता है तो, राजन, उसे शेरों की माँद में फेंकवा दिया जायेगा। बताइये क्या आपने इस नियम पर हस्ताक्षर नहीं किये थे?"

राजा ने उत्तर दिया, "हाँ,' मैंने उस नियम पर हस्ताक्षार किये थे और मादियों और फारसियों के नियम अटल होते हैं। न तो वे बदले जा सकते हैं, और नहीं मिटाये, जा सकते हैं।"

[13]इस पर उन लोगों ने राजा से कहा, "दानिय्येल नाम का वह व्यक्ति आपकी बात पर ध्यान नहीं दे रहा है। दानिय्येल यहूदा के बन्दियों में से एक हैं। जिस नियम पर आपने हस्ताक्षर किये हैं, दानिय्येल उस पर ध्यान नहीं दे रहा है। दानिय्येल अभी भी हर दिन तीन बार अपने परमेश्वर की प्रार्थना करता है।"

[14]राजा ने जब यह सुना तो वह बहुत दुःखी और व्याकुल हो उठा। राजा ने दानिय्येल को बचाने की ठान ली। दानिय्येल को बचाने की कोई उपाय सोचते सोचते उसे शाम हो गयी। [15]इसके बाद वे लोग एक झुण्ड बना कर राजा के पास पहुँचे। उन्होंने राजा से कहा, "हे राजन, मादियों और फ़ारसियों की व्यवस्था के अनुसार जिस नियम अथवा आदेश पर राजा हस्ताक्षर कर दे, वह न तो कभी बदला जा सकता है और न ही कभी मिटाया जा सकता है।"

[16]सो राजा दारा ने आदेश दे दिया। वे लोग दानिय्येल को पकड़ लाये और उसे शेरों की मांद में फेंक दिया। राजा ने दानिय्येल से कहा, "मुझे आशा है कि तू जिस परमेश्वर की सदा उपासना करता है, वह तेरी रक्षा करेगा।" [17]एक बड़ा सा पत्थर लाया गया और उसे शेरों की माँद के द्वार पर अड़ा दिया गया। फिर राजा ने अपनी अंगूठी ली और उस पत्थर पर अपनी मुहर लगा दी। साथ ही उसने अपने हाकिमों की अंगूठियों की मुहरें भी उस पत्थर पर लगा दीं। इसका यह अभिप्राय था कि उस पत्थर को कोई भी हटा नहीं सकता था और शेरों की उस माँद से दानिय्येल को बाहर नहीं ला सकता था। [18]इसके बाद राजा दारा अपने महल को वापस चला गया। उस रात उसने खाना नहीं खाया। वह नहीं चाहता था कि कोई उसके पास आये और उसका मन बहलाये। राजा सारी रात सो नहीं पाया।

[19]अगली सुबह जैसे ही सूरज का प्रकाश फैलने लगा, राजा दारा जाग गया और शेरों की माँद की ओर दौड़ा। [20]राजा बहुत चिंतित था। राजा जब शेरों की माँद के पास गया तो वहाँ उसने दानिय्येल को ज़ोर से आवाज़ लगाई। राजा ने कहा, "हे दानिय्येल, हे जीवित परमेश्वर के सेवक, क्या तेरा परमेश्वर तुझे शेरों से बचा पाने में समर्थ हो सका है? तू तो सदा ही अपने परमेश्वर की सेवा करता रहा है।"

[21]दानिय्येल ने उत्तर दिया, "राजा, अमर रहे! [22]मेरे परमेश्वर ने मुझे बचाने के लिए अपना स्वर्गदूत भेजा था। उस स्वर्गदूत ने शेरों के मुँह बन्द कर दिये। शेरों ने मुझे कोई हानि नहीं पहुँचाई क्योंकि मेरा परमेश्वर जानता है कि मैं निरपराध हूँ। मैंने राजा के प्रति कभी कोई बुरा नहीं किया है।"

[23]राजा दारा बहुत प्रसन्न था। राजा ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे दानिय्येल को शेरों की माँद से बाहर खींच लें। जब दानिय्येल को शेरों की माँद से बाहर लाया गया तो उन्हें उस पर कहीं कोई घाव नहीं दिखाई दिया। शेरों ने दानिय्येल को कोई हानि नहीं पहुँचाई थी क्योंकि दानिय्येल को अपने परमेश्वर में विश्वास था।

[24]इसके बाद राजा ने उन लोगों को जिन्होंने दानिय्येल पर अभियोग लगा कर उसे शेरों की माँद में डलवाया था, बुलवाने का आदेश दिया और उन लोगों को, उनकी पत्नियों को और उनके बच्चों को शेरों की मांद में फेंकवा दिया गया। इससे पहले कि वे शेरों की मांद में धरती पर गिरते, शेरों ने उन्हें दबोच लिया। शेर उनके शरीरों को खा गये और फिर उनकी हड्डियों को भी चबा गये।

[25]इस पर राजा दारा ने सारी धरती के लोगों, दूसरी जाति के विभिन्न भाषा बोलनेवालों को यह पत्र लिखा:

शुभकामनाएँ।

[26]मैं एक नया नियम बना रहा हूँ। मेरे राज्य के हर भाग के लोगों के लिये यह नियम होगा। तुम सभी लोगों को दानिय्येल के परमेश्वर का भय मानना चाहिये और उसका आदर करना चाहिये।

दानिय्येल का परमेश्वर जीवित परमेश्वर है। परमेश्वर सदा–सदा अमर रहता है! साम्राज्य उसका कभी समाप्त नहीं होगा उसके शासन का अंत कभी नहीं होगा [27]परमेश्वर लोगों को बचाता है और रक्षा करता है। स्वर्ग में और धरती के ऊपर परमेश्वर अद्भुत आश्चर्यपूर्ण कर्म करता है! परमेश्वर ने दानिय्येल को शेरों से बचा लिया।"

[28]इस तरह जब दारा का राज था और जिन दिनों फारसी राजा कुस्रू की हुकूमत थी, दानिय्येल ने सफलता प्राप्त की।

चार पशुओं के बारे में दानिय्येल का स्वप्न

7 बेलशस्सर के बाबुल पर शासन काल के पहले वर्ष दानिय्येल को एक सपना आया सपने में अपने पलंग पर लेटे हुए दानिय्येल ने, ये दर्शन देखे। दानिय्येल ने जो सपना देखा था, उसे लिख लिया। [2]दानिय्येल ने बताया, “रात में मैंने सपने में एक दर्शन पाया। मैंने देखा कि चारों दिशाओं से हवा बह रही हैं और उन हवाओं से सागर उफनने लगा था। [3]फिर मैंने तीन पशुओं को देखा। हर पशु दूसरे पशु से भिन्न था। वे चारों पशु समुद्र में से उभर कर बाहर निकले थे।

[4]“उनमें से पहला पशु सिंह के समान दिखाई दे रहा था और उस सिंह के उकाब के जैसे पंख थे। मैंने उस पशु को देखा। फिर मैंने देखा कि उसके पंख उखाड़ फेंके गये हैं। धरती पर से उस पशु को इस प्रकार उठाया गया जिससे वह किसी मनुष्य के समान अपने दो पैरों पर खड़ा हो गया। इस सिंह को मनुष्य का सा दिमाग़ दे दिया गया था।

[5]“और फिर मैंने देखा कि मेरे सामने एक और दूसरा पशु मौजूद है। यह पशु एक भालू के जैसा था। वह अपनी एक बगल पर उठा हुआ था। उस पशु के मुँह मे दांतों के बीच तीन पसलियाँ थीं। उस भालू से कहा गया था, ‘उठ और तुझे जितना चाहिये उतना माँस खा ले!’

[6]“इसके बाद, मैंने देखा कि मेरे सामने एक और पशु खड़ा है। यह पशु चीते जैसे लग रहा था और उस चीते की पीठ पर चार पंख थे। पंख ऐसे लग रहे थे, जैसे वे किसी चिड़िया के पंख हों। इस पशु के चार सिर थे, और उसे शासन का अधिकार दिया गया था।

[7]“इसके बाद, सपने में रात को मैंने देखा कि मेरे सामने एक और चौथा जानवर खड़ा है। यह जानवर बहुत खुँखार और भयानक लग रहा था। वह बहुत मज़बूत दिखाई दे रहा था। उसके लोहे के लम्बे–लम्बे दाँत थे। यह जानवर अपने शिकारों को कुचल कर के खा डाल रहा था और शिकार को खा चुकने के बाद जो कुछ बच रहता, वह उसे अपने पैरों तले कुचल रहा था। इस पशु से पहले मैंने सपने में जो पशु देखे थे, यह चौथा पशु उन सबसे अलग था। इस पशु के दस सींग थे।

[8]“अभी मैं उन सींगों के बारे में सोच ही रहा था कि उन सींगों के बीच एक सींग और उग आया। यह सींग बहुत छोटा था। इस छोटे सींग पर आँखे थी, और वे आँखे किसी व्यक्ति की आँखों जैसी थीं। इस छोटे सींग में एक मुख भी था और वह स्वयं की प्रशंसा कर रहा था। इस छोटे सींग ने अन्य सींगों में से तीन सींग उखाड़ फेंके।

चौथे पशु का न्याय

[9]“मेरे देखते ही देखते, उनकी जगह पर सिंहासन रखे गये और वह सनातन राजा सिंहासन पर विराज गया। उसके वस्त्र अति धवल थे, वे वस्त्र बर्फ से श्वेत थे। उनके सिर के बाल श्वेत थे, वे ऊन से भी श्वेत थे। उसका सिंहासन अग्नि का बना था और उसके पहिए लपटों से बने थे। [10]सनातन राजा के सामने एक आग की नदी बह रही थी। लाखों करोड़ों लोग उसकी सेवा में थे। उसके सामने करोड़ों दास खड़े थे। यह दृश्य कुछ वैसा ही था जैसे दरबार शुरु होने को पुस्तके खोली गयी हों।

[11]“मैं देखता का देखता रह गया क्योंकि वह छोटा सींग डींगे मार रहा था। मैं उस समय तक देखता रहा जब अंतिम रूप से चौथे पशु की हत्या कर दी गयी। उसकी देह को नष्ट कर दिया गया और उसे धधकती हुई आग में डाल दिया गया। [12]दूसरे पशुओं की शक्ति और राजसत्ता उनसे छीन लिये गये। किन्तु एक निश्‍चित समय तक उन्हें जीवित रहने दिया गया।

[13]“रात को मैंने अपने दिव्य स्वप्न में देखा कि मेरे सामने कोई खड़ा है, जो मनुष्य जैसा दिखाई देता था। वह आकाश में बादलों पर आ रहा था। वह उस सनातन राजा के पास आया था। सो उसे उसके सामने ले आया गया।

[14]“वह जो मनुष्य के समान दिखाई दे रहा था, उसे अधिकार, महिमा और सम्पूर्ण शासन सत्ता सौंप दी गयी। सभी लोग, सभी जातियाँ और प्रत्येक भाषा–भाषी लोग उसकी आराधना करेंगे। उसका राज्य अमर रहेगा। उसका राज्य सदा बना रहेगा। वह कभी नष्ट नहीं होगा।

चौथे पशु के स्वप्न का फल

[15]“मैं, दानिय्येल बहुत विकल और चिंतित था। वे दर्शन जो मैंने देखे थे, उन्होंने मुझे विकल बनाया

हुआ था। [16]मैं, जो वहाँ खड़े थे, उनमें से एक के पास पहुँचा। मैंने उससे पूछा, "इस सब कुछ का अर्थ क्या है? "सो उसने बताया, उसने मुझे समझाया कि इन बातों का मतलब क्या है। [17]उसने कहा, 'वे चार बड़े पशु, चार राज्य हैं। वे चारों राज्य धरती से उभरेंगे। [18]किन्तु परमेश्वर के पवित्र लोग उस राज्य को प्राप्त करेंगे जो एक अमर राज्य होगा।'

[19]"फिर मैंने यह जानना चाहा कि वह चौथा पशु क्या था और उसका क्या अभिप्राय था? वह चौथा पशु सभी दूसरे पशुओं से भिन्न था। वह बहुत भयानक था। उसके दाँत लोहे के थे, और पंजे काँसे के थे। यह वह पशु था, जिसने अपने शिकार को चकनाचूर करके पूरी तरह खा लिया था, और अपने शिकार को खाने के बाद जो कुछ बचा था, उसे उसने अपने पैरों तले रौंद डाला था। [20]उस चौथे पशु के सिर पर जो दस सींग थे, मैंने उनके बारे में जानना चाहा और मैंने उस सींग के बारे में भी जानना चाहा जो वहाँ उगा था। उस सींग ने उन दस सींगों में से तीन सींग उखाड़ फेंके थे। वह सींग अन्य सींगों से अधिक बड़ा दिखाई देता था। उसके आँखे थी और वह अपनी डींगे हाँके चला जा रहा था। [21]मैं देख ही रहा था कि उस सींग ने परमेश्वर के पवित्र लोग के विरुद्ध युद्ध और उन पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया है और वह सींग उन्हें मारे डाल रहा है। [22]परमेश्वर के पवित्र लोग को वह सींग उस समय तक मारता रहा जब तक सनातन राजा ने आकर उसका न्याय नहीं किया। सनातन राजा ने उस सींग के न्याय की घोषणा की। उस न्याय से परम परमेश्वर के भक्तों को सहारा मिला और उन्हें उनके अपने राज्य की प्राप्ति हो गयी।

[23]"और फिर उसने सपने को मुझे इस प्रकार समझाया कि वह चौथा पशु, वह चौथा राज्य है जो धरती पर आयेगा। वह राज्य अन्य सभी राज्यों से अलग होगा। वह चौथा राज्य संसार में सब कहीं लोगों का विनाश करेगा। संसार के सभी देशों को वह अपने पैरों तले रौंदेगा और उनके टुकड़े टुकड़े कर देगा। [24]वे दस सींग वे दस राजा हैं, जो इस चौथे राज्य में आयेंगे। इन दसों राजाओं के चले जाने के बाद एक और राजा आयेगा। वह राजा अपने से पहले के राजाओं से अलग होगा। वह उन में से तीन दूसरे राजाओं को पराजित करेगा। [25]यह विशेष राजा परम प्रधान परमेश्वर के विरुद्ध बातें करेगा तथा वह राजा परमेश्वर के पवित्र लोग को हानि पहुँचायेगा और उनका वध करेगा। जो पवित्र उत्सव और जो नियम इस समय प्रचलन में है, वह राजा उन्हें बदलने का जतन करेगा। परमेश्वर के पवित्र लोग साढ़े तीन साल तक उस राजा की शक्ति के अधीन रहेंगे।

[26]""किन्तु जो कुछ होना है, उसका निर्णय न्यायालय करेगा और उस राजा से उसकी शक्ति छीन ली जायेगी। उसके राज्य का पूरी तरह अंत हो जायेगा। [27]फिर परमेश्वर के पवित्र लोग उस राज्य का शासन चलायेंगे। धरती के सभी राज्यों के सभी लोगों पर उनका शासन होगा। यह राज्य सदा सदा अटल रहेगा, और अन्य सभी राज्यों के लोग उन्हें आदर देंगे और उनकी सेवा करेंगे।'

[28]"इस प्रकार उस सपने का अंत हुआ। मैं, दानिय्येल तो बहुत डर गया था। डर से मेरा मुँह पीला पड़ गया था। मैंने जो बातें देखी थीं और सुनी थीं, मैंने उनके बारे में दूसरे लोगों को नहीं बताया।"

भेड़े और बकरे के बारे में दानिय्येल का दर्शन

8 बेलशस्सर के शासन काल के तीसरे साल मैंने यह दर्शन देखा। यह उस दर्शन के बाद का दर्शन है। [2]मैंने देखा कि मैं शूशन नगर में हूँ। शूशन, एलाम प्रांत की राजधानी थी। मैं ऊलै नदी के किनारे पर खड़ा था। [3]मैंने आँखें ऊपर उठाई तो देखा कि ऊलै नदी के किनारे पर एक मेढ़ा खड़ा है। उस मेढ़े के दो लम्बे लम्बे सींग थे। यद्यपि उसके दोनों ही सींग लम्बे थे। पर एक सींग दूसरे से बड़ा था। लम्बा वाला सींग छोटे वाले सींग के बाद में उगा था। [4]मैंने देखा कि वह मेढ़ा इधर उधर सींग मारता फिरता है। मैंने देखा कि वह मेढ़ा कभी पश्चिम की ओर दौड़ता हैं तो कभी उत्तर की ओर, और कभी दक्षिण की ओर उस मेढ़े को कोई भी पशु रोक नहीं पा रहा है और न ही कोई दूसरे पशुओं को बचा पा रहा है। वह मेढ़ा वह सब कुछ कर सकता है, जो कुछ वह करना चाहता है। इस तरह से वह मेढ़ा बहुत शक्तिशाली हो गया।

[5]मैं उस मेढ़े के बारे में सोचने लगा। मैं अभी सोच ही रहा था कि पश्चिम की ओर से मैंने एक बकरे को आते देखा। यह बकरा सारी धरती पर दौड़ गया। किन्तु उस बकरे के पैर धरती से छुए तक नहीं। इस बकरे के एक

लम्बा सींग था। जो साफ–साफ दिख रहा था, वह सींग बकरे की दोनों आँखों के बीचों–बीच था।

[6]फिर वह बकरा उस दो सींग वाले मेढ़े के पास आया। यह वही मेढ़ा था जिसे मैंने ऊलै नदी के किनारे खड़ा देखा था। वह बकरा क्रोध से भरा हुआ था। सो वह मेढ़े की तरफ लपका। [7]बकरे को उस मेढ़े की तरफ भागते हुए मैंने देखा। वह बकरा गुस्से में आग बबूला हो रहा था। सो उसने मेढ़े के दोनों सींग तोड़ डाले। मेढ़ा बकरे को रोक नहीं पाया। बकरे ने मेढ़े को धरती पर पछाड़ दिया और फिर उस बकरे ने उस मेढ़े को पैरों तले कुचल दिया। वहाँ उस मेढ़े को बकरे से बचाने वाला कोई नहीं था।

[8]सो वह बकरा बहुत शक्तिशाली बन बैठा। किन्तु जब वह शक्तिशाली बना, उसका बड़ा सींग टूट गया और फिर उस बड़े सींग की जगह चार सींग और निकल आये। वे चारों सींग आसानी से दिखाई पड़ते थे। वे चार सींग अलग–अलग चारों दिशाओं की ओर मुड़े हुए थे।

[9]फिर उन चार सींगों में से एक सींग में एक छोटा सींग और निकल आया। वह छोटा सींग बढ़ने लगा और बढ़ते–बढ़ते बहुत बड़ा हो गया। यह सींग दक्षिण–पूर्व की ओर बढ़ा। यह सींग सुन्दर धरती की ओर बढ़ा। [10]वह छोटा सींग बढ़कर बहुत बड़ा हो गया। उसने बढ़ते बढ़ते आकाश छू लिया। उस छोटे सींग ने, यहाँ तक कि कुछ तारों को भी धरती पर पटक दिया और उन सभी तारों को पैरों तले मसल दिया। [11]वह छोटा सींग बहुत मज़बूत हो गया और फिर वह तारों के शासक (परमेश्वर) के विरुद्ध हो गया। उस छोटे सींग ने उस शासक (परमेश्वर) को अर्पित की जाने वाली दैनिक बलियों को रोक दिया। वह स्थान जहाँ लोग उस शासक (परमेश्वर) की उपासना किया करते थे, उसने उसे उजाड़ दिया [12]और उनकी सेना को भी हरा दिया और एक विद्रोही कार्य के रुप में वह छोटा सींग दैनिक बलियों के ऊपर अपने आपको स्थापित कर दिया। वह सत्य को धरती पर दे पटक दिया। वह छोटा सींग जो कुछ किया उस सब कुछ में सफल हो गया।

[13]फिर मैंने किसी पवित्र जन को बोलते सुना और उसके बाद मैंने सुना कि कोई दूसरा पवित्र जन उस पहले पवित्र जन को उत्तर दे रहा है। पहले पवित्र जन ने कहा, "यह दर्शन दर्शाता है कि दैनिक बलियों का क्या होगा? यह उस भयानक पाप के विषय में है जो विनाश कर डालता है। यह दर्शाता है कि जब लोग उस शासक के पूजास्थल को तोड़ डालेंगे तब क्या होगा? यह दर्शन दर्शाता है कि जब लोग उस समूचे स्थान को पैर तले रौंदेंगे तब क्या होगा। यह दर्शन दर्शाता है कि जब लोग तारों के ऊपर पैर धरेंगे तब क्या होगा? किन्तु ये बातें कब तक होती रहेंगी?"

[14]दूसरे पवित्र जन ने कहा, "दो हजार तीन सौ दिन तक ऐसा ही होता रहेगा और फिर उसके बाद पवित्र स्थान को फिर से स्थापित कर दिया जायेगा।"

दर्शन की व्याख्या

[15]मैं, दानिय्येल ने यह दर्शन देखा था, और यह प्रयत्न किया कि उसका अर्थ समझ लूँ। अभी मैं इस दर्शन के विषय में सोच ही रहा था कि मनुष्य के जैसा दिखने वाला कोई अचानक आ कर मेरे सामने खड़ा हो गया। [16]इसके बाद मैंने किसी पुरुष की वाणी सुनी। यह वाणी ऊलै नदी के ऊपर से आ रही थी। उस आवाज़ ने कहा, "जिब्राएल, इस व्यक्ति को इसके दर्शन का अर्थ समझा दो।"

[17]सो जिब्राएल जो किसी मनुष्य के समान दिख रहा था, जहाँ मैं खड़ा था, वहाँ आ गया। वह जब मेरे पास आया तो मैं बहुत डर गया। मैं धरती पर गिर पड़ा। किन्तु जिब्राएल ने मुझसे कहा, "अरे मनुष्य, समझ ले कि यह दर्शन अंत समय के लिये है।"

[18]अभी जिब्राएल बोल ही रहा था कि मुझे नींद आ गयी। नींद बहुत गहरी थी। मेरा मुख धरती की ओर था। फिर जिब्राएल ने मुझे छुआ और मुझे मेरे पैरों पर खड़ा कर दिया। [19]जिब्राएल ने कहा, "देख, मैं तुझे अब, उस दर्शन को समझाता हूँ। मैं तुझे बताऊँगा कि परमेश्वर के क्रोध के समय के बाद में क्या कुछ घटेगा।

[20]"तूने दो सींगों वाला मेढ़ा देखा था। वे दो सींग है मादी और फारस के दो देश। [21]वह बकरा यूनान का राजा है। उसकी दोनों आँखों के बीच का बड़ा सींग वह पहला राजा है। [22]वह सींग टूट गया और उसके स्थान पर चार सींग निकल आये। वे चार सींग चार राज्य हैं। वे चार राज्य, उस पहले राजा के राष्ट्र से प्रकट होंगे किन्तु वे चारों राज्य उस पहले राजा के से मज़बूत नहीं होंगे।

[23]“जब उन राज्यों का अंत निकट होगा, तब वहाँ एक बहुत साहसी और क्रूर राजा होगा। यह राजा बहुत मक्कार होगा। ऐसा उस समय घटेगा जब पापियों की संख्या बढ़ जायेगी। [24]यह राजा बहुत शक्तिशाली होगा किन्तु उसकी शक्ति उसकी अपनी नहीं होगी। यह राजा भयानक तबाही मचा देगा। वह जो कुछ करेगा उसमें उसे सफलता मिलेगी। वह शक्तिशाली लोगों–यहाँ तक कि परमेश्वर के पवित्र लोग को भी नष्ट कर देगा।

[25]“यह राजा बहुत चुस्त और मक्कार होगा। वह अपनी कपट और झूठों के बल पर सफलता पायेगा। वह अपने आप को सबसे बड़ा समझेगा। लोगों को वह बिना किसी पूर्व चेतावनी के नष्ट करवा देगा। यहाँ तक कि वह राजाओं के राजा (परमेश्वर) से भी युद्ध का जतन करेगा किन्तु उस क्रूर राजा की शक्ति का अंत कर दिया जायेगा और उसका अंत किसी मनुष्य के हाथों नहीं होगा।

[26]“उन भक्तों के बारे में यह दर्शन और वे बातें जो मैंने कही हैं, सत्य हैं। किन्तु इस दर्शन पर तू मुहर लगा कर रख दे। क्योंकि वे बातें अभी बहुत सारे समय तक घटने वाली नहीं हैं।’”

[27]उस दिव्य दर्शन के बाद में मैं दानिय्येल, बहुत कमज़ोर हो गया और बहुत दिनों तक बीमार पड़ा रहा। फिर बीमारी से उठकर मैंने लौट कर राजा का कामकाज करना आरम्भ कर दिया किन्तु उस दिव्य दर्शन के कारण मैं बहुत व्याकुल रहा करता था। मैं उस दर्शन का अर्थ समझ ही नहीं पाया था।

दानिय्येल की विनती

9 राजा दारा के शासन के पहले वर्ष के दौरान ये बातें घटी थीं। दारा क्षयर्ष नाम के व्यक्ति का पुत्र था। दारा मादी लोगों से सम्बन्धित था। वह बाबुल का राजा बना। [2]दारा के राजा के पहले वर्ष में मैं, दानिय्येल कुछ किताबें पढ़ रहा था। उन पुस्तकों में मैंने देखा कि यहोवा ने यिर्मयाह को यह बताया है कि यरूशलेम का पुन:निर्माण कितने बरस बाद होगा। यहोवा ने कहा था कि इससे पहले कि यरूशलेम फिर से बसे, सत्तर वर्ष बीत जायेंगे।

[3]फिर मैं अपने स्वामी परमेश्वर की ओर मुड़ा और उससे प्रार्थना करते हुए सहायता की याचना की। मैंने भोजन करना छोड़ दिया और ऐसे कपड़े पहन लिये जिनसे यह लगे कि मैं दु:खी हूँ। मैंने अपने सिर पर धूल डाल ली। [4]मैंने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करते हुए उसको अपने सभी पाप बता दिये। मैंने कहा, “हे यहोवा, तू महान और भययोग्य परमेश्वर है। जो व्यक्ति तुझसे प्रेम करते हैं, तू उनके साथ अपने प्रेम और दयालुता के वाचा को निभाता है। जो लोग तेरे आदेशों का पालन करते हैं उनके साथ तू अपना वाचा निभाता है।

[5]“किन्तु हे यहोवा, हम पापी हैं! हमने बुरा किया है। हमने कुकर्म किये हैं। हमने तेरा विरोध किया है। तेरे निष्पक्ष न्याय और तेरे आदेशों से हम दूर भटक गये हैं। [6]हम नबियों की बात नहीं सुनते। नबी तो तेरे सेवक हैं। नबियों ने तेरे बारे में बताया। उन्होंने हमारे राजाओं, हमारे मुखियाओं और हमारे पूर्वजों को बताया था। उन्होंने इस्राएल के सभी लोगों को भी बताया था। किन्तु हमने उन नबियों की नहीं सुनी!

[7]“हे यहोवा, तू खरा है, और तुझमें नेकी है! जबकि हम आज लज्जित हैं। यरूशलेम और यहूदा के लोग लज्जित हैं–इस्राएल के सभी लोग लज्जित हैं। वे लोग जो निकट हैं और वे लोग जो बहुत दूर हैं। हे यहोवा! तूने उन लोगों को बहुत से देशों में फैला दिया। उन सभी देशों में बसे इस्राएल के लोगों को शर्म आनी चाहिये। हे यहोवा, उन सभी बुरी बातों के लिये, जो उन्होंने तेरे विरुद्ध की हैं, उन्हें लज्जित होना चाहिये।

[8]“हे यहोवा, हम सब को लज्जित होना चाहिये। हमारे सभी राजाओं और मुखियाओं को लज्जित होना चाहिये, हमारे सभी पूर्वजों को लज्जित होना चाहिये। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिये कि हे यहोवा, हमने तेरे विरुद्ध पाप किये हैं।

[9]“किन्तु हे यहोवा, तू दयालु है। लोग, जो बुरे कर्म करते तो तू उन्हें, क्षमा कर देता है। हमने वास्तव में तुझसे मुँह फेर लिया था। [10]हमने अपने यहोवा परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। यहोवा ने अपने सेवकों, अपने नबियों के द्वारा हमें व्यवस्था का विधान प्रदान किया। किन्तु हमने उसकी व्यवस्थाओं को नहीं माना। [11]इस्राएल का कोई भी व्यक्ति तेरी शिक्षाओं पर नहीं चला। वे सभी भटक गये थे। उन्होंने तेरे आदेशों का पालन नहीं किया। मूसा, (जो परमेश्वर का सेवक था) की व्यवस्था के विधान में शापों और वादों का उल्लेख हुआ है। वे शाप और वादे

व्यवस्था के विधान पर नहीं चलने के दण्ड का बखान करते हैं और वे सभी बातें हमारे संग घट चुकी हैं क्योंकि हमने यहोवा के विरोध में पाप किये हैं।

[12]"परमेश्वर ने बताया था कि हमारे साथ और हमारे मुखियाओं के साथ वे बातें घटेंगी और उसने उन्हें घटा दिया। उसने हमारे साथ भयानक बातें घटा दीं। यरूशलेम को जितना कष्ट उठाना पड़ा, किसी दूसरे नगर ने नहीं उठाया। [13]वे सभी भयानक बातें हमारे साथ भी घटीं। ये बातें ठीक वैसे हीं घटी, जैसे मूसा के व्यवस्था के विधान में लिखी हुई हैं। किन्तु हमने अभी भी परमेश्वर से सहारा नहीं माँगा है! हमने अभी भी पाप करना नहीं छोड़ा है। हे यहोवा, तेरे सत्य पर हम अभी भी ध्यान नहीं देते। [14]यहोवा ने वे भयानक बातें तैयार रख छोड़ी थीं और उसने हमारे साथ उन बातों को घटा दिया। हमारे परमेश्वर यहोवा ने ऐसा इसलिए किया था कि वह तो जो कुछ भी करता है, न्याय ही करता है। किन्तु हम अभी भी उसकी नहीं सुनते।

[15]"हे हमारे परमेश्वर, यहोवा, तूने अपनी शक्ति का प्रयोग किया और हमें मिस्र से बाहर निकाल लाया। हम तो तेरे अपने लोग हैं। आज तक उस घटना के कारण तू जाना माना जाता है। हे यहोवा, हमने पाप किये हैं। हमने भयानक काम किये हैं। [16]हे यहोवा, यरूशलेम पर क्रोध करना छोड़ दे। यरूशलेम तेरे पवित्र पर्वतों पर स्थित है। तू जो करता है, ठीक ही करता है। सो यरूशलेम पर क्रोधित होना छोड़ दे। हमारे आसपास के लोग हमारा अपमान करते हैं और हमारे लोगों की हँसी उड़ाते हैं। हमारे पूर्वजों ने तेरे विरुद्ध पाप किया था। यह सब कुछ इसलिए हो रहा है।

[17]"अब, हे यहोवा, तू मेरी प्रार्थना सुन ले। मैं तेरा दास हूँ। सहायता के लिए मेरी विनती सुन। अपने पवित्र स्थान के लिए तू अच्छी बातें कर। वह भवन नष्ट कर दिया गया था। किन्तु हे स्वामी, तू स्वयं अपने भले के लिए इन भली बातों को कर। [18]हे मेरे परमेश्वर, मेरी सुन! जरा अपनी आँखें खोल और हमारे साथ जो भयानक बातें घटी हैं, उन्हें देख! वह नगर जो तेरे नाम से पुकारा जाता था, देख उसके साथ क्या हो गया है! मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि हम अच्छे लोग हैं। इसलिये मैं इन बातों की याचना कर रहा हूँ। यह याचना तो मैं इसलिये कर रहा हूँ कि मैं जानता हूँ कि तू दयालु है। [19]हे यहोवा मेरी सुन, हे यहोवा, हमें क्षमा कर! हे यहोवा, हम पर ध्यान दे, और फिर कुछ कर! अब और प्रतीक्षा मत कर! इसी समय कुछ कर! उसे तू स्वयं अपने भले के लिये कर! हे परमेश्वर, अब तो अपने नगर और अपने उन लोगों के लिये, जो तेरे नाम से पुकारे जाते हैं, कुछ कर।"

सत्तर सप्ताहों के बारे में दर्शन

[20]मैं परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए ये बातें कह रहा था। मैं इस्राएल के लोगों के और अपने पापों के बारे में बता रहा था। मैं परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर प्रार्थना कर रहा था। [21]मैं अभी प्रार्थना कर ही रहा था कि जिब्राएल मेरे पास आया। जिब्राएल वही स्वर्गदूत था जिसे मैंने दर्शन में देखा था। जिब्राएल शीघ्रता से मेरे पास आया। वह सांझ की बलि के समय आया था। [22]मैं जिन बातों को समझना चाहता था, उन बातों को समझने में जिब्राएल ने मेरी सहायता की। जिब्राएल ने कहा, "हे दानिय्येल, मैं तुझे बुद्धि प्रदान करने और समझने में तेरी सहायता को आया हूँ। [23]जब तूने पहले प्रार्थना आरम्भ की थी, मुझे तभी आदेश दे दिया गया था और देख मैं तुझे बताने आ गया हूँ। परमेश्वर तुझे बहुत प्रेम करता है! यह आदेश तेरी समझ में आ जायेगा और तू उस दर्शन का अर्थ जान लेगा।

[24]"हे दानिय्येल, परमेश्वर ने तेरी प्रजा और तेरी नगरी के लिये सत्तर सप्ताहो का समय निश्चित किया है। सत्तर सप्ताहो के समय का यह आदेश इसलिए दिया गया है कि बुरे कर्म करना छोड़ दिया जाये, पाप करना बन्द कर दिया जाये, सब लोगों को शुद्ध किया जाये, सदा–सदा बनी रहने वाली नेकी को लाया जाये, दर्शन और नबियों पर मुहर लगा दी जाये, और एक अत्यंत पवित्र स्थान को समर्पित किया जाये।

[25]"दानिय्येल, तू इन बातों को समझ ले। इन बातों को जान ले! वापस आने और यरूशलेम के पुनर्निर्माण की आज्ञा को समय से लेकर अभिषिक्त के आने के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। इसके बाद यरूशलेम फिर से बसाया जायेगा। यरूशलेम में लोगों के परस्पर मिलने के स्थान फिर से बन जायेंगे। नगर की रक्षा करने के लिये नगर के चारों ओर खाई भी होगी। बासठ सप्ताह तक यरूशलेम को बसाया जायेगा। किन्तु उस समय बहुत सी विपत्तियाँ आयेंगी। [26]बासठ सप्ताह बाद उस अभिषिक्त पुरुष की हत्या कर दी जायेगी। वह चला जायेगा। फिर

होने वाले नेता के लोग नगर को और उस पवित्र ठांव को तहस–नहस कर देंगे। वह अंत ऐसे आयेगा जैसे बाढ़ आती है। अंत तक युद्ध होता रहेगा। उस स्थान को पूरी तरह तहस–नहस कर देने की परमेश्वर आज्ञा दे चुका है।

27"इसके बाद वह भावी शासक बहुत से लोगों के साथ एक वाचा करेगा। वह वाचा एक सप्ताह तक चलेगा। भेंटे और बलियाँ आधे सप्ताह तक रुकी रहेंगी और फिर एक विनाश कर्ता आयेगा। वह भयानक विध्वंसक बातें करेगा। किन्तु परमेश्वर उस विनाश कर्ता के सम्पूर्ण विनाश की आज्ञा दे चुका है।"

हिद्देकेल नदी के किनारे दानिय्येल का दर्शन

10 कुस्रू फ़ारस का राजा था। कुस्रू के शासन काल के तीसरे वर्ष दानिय्येल को इन बातों का पता चला। (दानिय्येल का ही दूसरा नाम बेलतशस्सर था) ये संकेत सच थे और ये एक बड़े युद्ध के बारे में थे। दानिय्येल उन्हें समझ गया। वे बातें एक दर्शन में उसे समझाई गई थीं।

2दानिय्येल का कहना है, "उस समय, मैं, दानिय्येल, तीन सप्ताहों तक बहुत दुःखी रहा। 3उन तीन सप्ताहों के दौरान, मैंने कोई भी चटपटा खाना नहीं खाया। मैंने किसी भी प्रकार का माँस नहीं खाया। मैंने दाखमधु नहीं पी। किसी भी तरह का तेल मैंने अपने सिर में नहीं डाला। तीन सप्ताह तक मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया।

4"वर्ष के पहले महीने के अठाईसवें दिन मैं हिद्देकेल महानदी के किनारे खड़ा था। 5वहाँ खड़े–खड़े जब मैंने ऊपर की ओर देखा तो वहाँ मैंने एक पुरुष को अपने सामने खड़े पाया। उसने सन के कपड़े पहने हुए थे। उसकी कमर में शुद्ध सोने की बनी हुई कमर बांध थी। 6उसका शरीर चमचमाते पत्थर के जैसी थी। उसका मुख बिजली के समान उज्ज्वल था! उसकी बांहें और उसके पैर चमकदार पीतल से झिलमिला रहे थे! उसकी आवाज़ इतनी ऊँची थी जैसे लोगों की भीड़ की आवाज़ होती है!

7"यह दर्शन बस मुझे, दानिय्येल को ही हुआ। जो लोग मेरे साथ थे, वे यद्यपि उस दर्शन को नहीं देख पाये किन्तु वे फिर भी डर गये थे। वे इतना डर गये कि भाग कर कहीं जा छिपे। 8सो मैं अकेला छूट गया। मैं उस दर्शन को देख रहा था और वह दृश्य मुझे भयभीत कर डाला था। मेरी शक्ति जाती रही। मेरा मुख ऐसे पीला पड़ गया जैसे मानो वह किसी मरे हुए व्यक्ति का मुख हो। मैं बेबस था। 9फिर दर्शन के उस व्यक्ति को मैंने बात करते सुना। मैं उसकी आवाज़ को सुन ही रहा था कि मुझे गहरी नींद ने घेर लिया। मैं धरती पर औंधे मुँह पड़ा था।

10"फिर एक हाथ ने मुझे छू लिया। ऐसा होने पर मैं अपने हाथों और अपने घुटनों के बल खड़ा हो गया। मैं डर के मारे थर थर काँप रहा था। 11दर्शन के उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, 'दानिय्येल, तू परमेश्वर का बहुत प्यारा है। जो शब्द मैं तुझसे कहूँ उस पर तू सावधानी के साथ विचार कर। खड़ा हो। मुझे तेरे पास भेजा गया है। जब उसने ऐसा कहा तो मैं खड़ा हो गया। मैं अभी भी थर–थर काँप रहा था क्योंकि मैं डरा हुआ था। 12इसके बाद दर्शन के उस पुरुष ने फिर बोलना आरम्भ किया। उसने कहा, 'दानिय्येल, डर मत। पहले ही दिन से तूने यह निश्चय कर लिया था कि तू परमेश्वर के सामने विवेकपूर्ण और विनम्र रहेगा। परमेश्वर तेरी प्रार्थनाओं को सुनता रहा है। तू प्रार्थना करता रहा है, मैं इसलिए तेरे पास आया हूँ। 13किन्तु फारस का युवराज (स्वर्गदूत) इक्कीस दिन तक मेरे साथ लड़ता रहा और मुझे तंग करता रहा। इसके बाद मिकाएल जो एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण युवराज (स्वर्गदूत) था। मेरी सहायता के लिए मेरे पास आया क्योंकि मैं वहाँ फारस के राजा के साथ उलझा हुआ था।'

14"हे दानिय्येल, अब मैं तेरे पास तुझे वह बताने को आया हूँ जो भविष्य में तेरे लोगों के साथ घटने वाला है। कह स्वप्न एक आने वाले समय के बारे में है।'

15"अभी वह व्यक्ति मुझसे बात ही कर रहा था कि मैंने धरती की तरफ़ नीचे अपना मुँह झुका लिया। मैं बोल नहीं पा रहा था। 16फिर किसी ने जो मनुष्य के जैसा दिखाई दे रहा था, मेरे होंठों को छुआ। मैंने अपना मुँह खोला और बोलना आरम्भ किया। मेरे सामने जो खड़ा था, उससे मैंने कहा, महोदय, मैंने दर्शन में जो देखा था, मैं उससे व्याकुल और भयभीत हूँ। मैं अपने को असहाय समझ रहा हूँ। 17मैं तेरा दास दानिय्येल हूँ। मैं तुझसे कैसे बात कर सकता हूँ? मेरी शक्ति जाती रही है। मुझसे तो सांस भी नहीं लिया जा रहा है।"

18"मनुष्य जैसे दिखते हुए उसने मुझे फिर छुआ। उसके छूते ही मुझे अच्छा लगा। 19फिर वह बोला, 'दानिय्येल,

डर मत। परमेश्वर तुझे बहुत प्रेम करता है। तुझे शांति प्राप्त हो। अब तू सुदृढ़ हो जा! सुदृढ़ हो जा!'

"उसने मुझसे जब बात की तो मैं और अधिक बलशाली हो गया। फिर मैंने उससे कहा, 'प्रभु! आपने तो मुझे शक्ति दे दी है। अब आप बोल सकते हैं।'

[20]"सो उसने फिर कहा, 'दानिय्येल, क्या तू जानता है, मैं तेरे पास क्यों आया हूँ? फारस के युवराज (स्वर्गदूत) से युद्ध करने के लिये मुझे फिर वापस जाना है। मेरे चले जाने के बाद यूनान का युवराज (स्वर्गदूत) यहाँ आयेगा। [21]किन्तु दानिय्येल अपने जाने से पहले तुम को सबसे पहले मुझे यह बताना है कि सत्य की पुस्तक में क्या लिखा है। उन बुरे राजकुमारों (स्वर्गदूतों) के विरोध में मीकाएल स्वर्गदूत के अलावा मेरे साथ कोई नहीं खड़ा होता। मीकाएल वह राजकुमार है (स्वर्गदूत) जो तेरे लोगों पर शासन करता है।"

11 मादी राजा दारा के शासन काल के पहले वर्ष मीकाएल को फारस के युवराज (स्वर्गदूत) के विरुद्ध युद्ध में सहारा देने और उसे सशक्त बनाने को मैं उठ खड़ा हुआ।

[2]"'अब देख, दानिय्येल मैं, तुझे सच्ची बात बताता हूँ। फारस में तीन राजाओं का शासन और होगा। यह इसके बाद एक चौथा राजा आयेगा। यह चौथा राजा अपने पहले के फारस के अन्य राजाओं से कहीं अधिक धनवान होगा। वह चौथा राजा शक्ति पाने के लिये अपने धन का प्रयोग करेगा। वह हर किसी को यूनान के विरोध में कर देगा। [3]इसके बाद एक बहुत अधिक शक्तिशाली राजा आयेगा, वह बड़ी शक्ति के साथ शासन करेगा। वह जो चाहेगा वही करेगा। [4]राजा के आने के बाद उसके राज्य के टुकड़े हे जायेंगे। उसका राज्य संसार में चार भागों में बंट जायेगा। उसका राज्य उसके पुत्र पोतों के बीच नहीं बटेगा। जो शक्ति उसमें थी, वह उसके राज्य में नहीं रहेगी। ऐसा क्यों होगा? ऐसा इसलिए होगा कि उसका राज्य उखाड़ दिया जायेगा और उसे अन्य लोगों को दे दिया जायेगा।

[5]"'दक्षिण का राजा शक्तिशाली हो जायेगा। किन्तु इसके बाद उसका एक सेनापति उस से भी अधिक शक्तिशाली हो जाएगा। वह सेना नायक शासन करने लगेगा और बहुत बलशाली हो जायेगा।

[6]"'फिर कुछ वर्षों बाद एक समझौता होगा और दक्षिणी राजा की पुत्री उत्तरी राजा से ब्याही जायेगी। वह शांति स्थापना के लिए ऐसा करेगी। किन्तु वह और दक्षिणी राजा पर्याप्त शक्तिशाली नहीं होंगे। फिर लोग उसके और उस व्यक्ति के जो उसे उस देश में लाया था, विरुद्ध हो जायेंगे और वे लोग उसके बच्चे के और उस स्त्री के हिमायती व्यक्ति के भी विरुद्ध हो जायेंगे।

[7]"'किन्तु उस स्त्री के परिवार का एक व्यक्ति दक्षिणी राजा के स्थान को ले लेने के लिए आयेगा। वह उत्तर के राजा की सेनाओं पर आक्रमण करेगा। वह राजा के सुदृढ़ किले में प्रवेश करेगा। वह युद्ध करेगा और विजयी होगा। [8]वह उनके देवताओं की मूर्तियों को ले लेगा। वह उनके धातु के बने मूर्तियों तथा उनकी चाँदी–सोने की बहुमूल्य वस्तुओं पर कब्जा कर लेगा। वह उन वस्तुओं को वहाँ से मिस्र ले जायेगा। फिर कुछ वर्षो तक वह उत्तर के राजा को तंग नहीं करेगा। [9]उत्तर का राजा दक्षिण के राज्य पर हमला करेगा। किन्तु पराजित होगा और फिर अपने देश को लौट जायेगा।

[10]"'उत्तर के राजा के पुत्रों ने युद्ध की तैयारियाँ करेंगे। वे एक विशाल सेना जुटायेंगे। वह सेना एक शक्तिशाली बाढ़ की तरह बड़ी तेज़ी से धरती पर आगे बढ़ती चली जायेगी। वह सेना दक्षिण के राजा के सुदृढ़ दुर्ग तक सारे रास्ते युद्ध करती जायेगी। [11]फिर दक्षिण का राजा क्रोध से तिलमिला उठेगा। उत्तर के राजा से युद्ध करने के लिये वह बाहर निकल आयेगा। उत्तर का राजा यद्यपि एक बहुत बड़ी सेना जुटायेगा किन्तु युद्ध में हार जायेगा। [12]"उत्तर की सेना पराजित हो जायेगी, और उन सैनिकों को कहीं ले जाया जायेगा। दक्षिणी राजा को बहुत अभिमान हो जायेगा और वह उत्तरी सेना के हजारों सैनिकों को मौत के घाट उतार देगा। किन्तु वह इसी प्रकार से सफलता नहीं प्राप्त करता रहेगा। [13]उत्तर का राजा एक और सेना जुटायेगा। यह सेना पहली सेना से अधिक बड़ी होगी। कई वर्षो बाद वह आक्रमण करेगा। वह सेना बहुत विशाल होगी और उसके पास बहुत से हथियार होंगे। वह सेना युद्ध को तैयार होगी।

[14]"'उन दिनों बहुत से लोग दक्षिण के राजा के विरोध में हो जायेंगे। कुछ तुम्हारे अपने ही ऐसे लोग, जिन्हें युद्ध प्रिय है, दक्षिण के राजा के विरुद्ध बगावत करेंगे। वे जीतेंगे तो नहीं किन्तु ऐसा करते हुए वे उस दर्शन को

सत्य सिद्ध करेंगे। [15]फिर इसके बाद उत्तर का राजा आयेगा और वह नगर परकोटे पर ढलवाँ चबूतरे बना कर उस सुदृढ़ नगर पर कब्जा कर लेगा। दक्षिण के राजा की सेना युद्ध का उत्तर नहीं दे पायेगी। यहाँ तक कि दक्षिणी सेना के सर्वोत्तम सैनिक भी इतने शक्तिशाली नहीं होंगे कि वे उत्तर की सेना को रोक पायें।

[16]"'उत्तर का राजा जैसा चाहेगा, वैसा करेगा। उसे कोई भी रोक नहीं पायेगा। इस सुन्दर धरती पर वह नियन्त्रण करके शक्ति पा लेगा। उसे इस प्रदेश को नष्ट करने की शक्ति प्राप्त हो जायेगी। [17]फिर उत्तर का राजा दक्षिण के राजा से युद्ध करने के लिये अपनी सारी शक्ति का उपयोग करने का निश्चय करेगा। वह दक्षिण के राजा के साथ एक सन्धि करेगा। उत्तर का राजा दक्षिण के राजा से अपनी एक पुत्री का विवाह कर देगा। उत्तर का राजा ऐसा इसलिए करेगा कि वह दक्षिण के राजा को हरा सके। किन्तु उसकी वे योजनाएँ फलीभूत नहीं होंगी। इन योजनाओं से उसे कोई सहायता नहीं मिलेगी।

[18]"'इसके बाद उत्तर का राजा भूमध्य–सागर के तट से लगते हुए देशों पर अपना ध्यान लगायेगा। वह उन देशों में से बहुत से देशों को जीत लेगा। किन्तु फिर एक सेनापति उत्तर के राजा के उस अहंकार और उस बगावत का अंत कर देगा। वह सेनापति उस उत्तर के राजा को लज्जित करेगा।

[19]"'ऐसा घटने के बाद उत्तर का वह राजा स्वयं अपने देश के सुदृढ़ किलों की ओर लौट जायेगा। किन्तु वह दुर्बल हो चुका होगा और उसका पतन हो जायेगा। फिर उसका पता भी नहीं चलेगा।

[20]"'उत्तर के उस राजा के बाद एक नया शासक आयेगा। वह शासक किसी कर वसूलने वाले को भेजेगा। वह शासक ऐसा इसलिए करेगा कि वह सम्पन्नता के साथ जीवन बिताने के लिए पर्याप्त धन जुटा सके। किन्तु थोड़े ही वर्षो में उस शासक का अंत हो जायेगा। किन्तु वह युद्ध में नहीं मारा जायेगा।

[21]"'उस शासक के बाद एक बहुत क्रूर एवं घृणा योग्य व्यक्ति आयेगा। उस व्यक्ति को राज परिवार का वंशज होने का गौरव प्राप्त नहीं होगा। वह चालाकी से राजा बनेगा। जब लोग अपने को सुरक्षित समझे हुए होंगे, वह तभी राज्य पर आक्रमण करेगा और उस पर कब्जा कर लेगा। [22]वह विशाल शक्तिशाली सेनाओं को हरा देगा। वह समझौते के मुखिया के साथ सन्धि करने पर भी उसे पराजित करेगा। [23]बहुत से राष्ट्र उस क्रूर एवं घृणा योग्य राजा के साथ सन्धि करेंगे किन्तु वह उनसे मिथ्यापूर्ण चालाकी बरतेगा। वह अत्यधिक शक्ति प्राप्त कर लेगा किन्तु बहुत थोड़े से लोग ही उसके समर्थक होंगे।

[24]"'जब उस प्रदेश के सर्वाधिक धनी क्षेत्र अपने को सुरक्षित अनुभव कर रहे होंगे, वह क्रूर एवं घृणापूर्ण शासक उन पर आक्रमण कर देगा। वह ठीक समय पर आक्रमण करेगा और वहाँ सफलता प्राप्त करेगा जहाँ उसके पूर्वजों को भी सफलता नहीं मिली थी। वह जिन देशों को पराजित करेगा उनकी सम्पत्ति छीन कर अपने पिछलगुओं को देगा। वह सुदृढ़ नगरों को पराजित करने की योजनाएँ रचेगा। वह सफलता तो पायेगा किन्तु बहुत थोड़े से समय के लिए।

[25]"'उस क्रूर एवं घृणा योग्य राजा के पास एक विशाल सेना होगी। वह उस सेना का उपयोग अपनी शक्ति और अपने साहस के प्रदर्शन के लिये करेगा और इससे वह दक्षिण के राजा पर आक्रमण करेगा। सो दक्षिण का राजा भी एक बहुत बड़ी और शक्तिशाली सेना जुटायेगा और युद्ध के लिए कूच करेगा किन्तु वे लोग जो उससे विरोध रखते हैं, छिपे–छिपे योजनाएँ रचेंगे और दक्षिणी राजा को पराजित कर दिया जायेगा। [26]वे ही लोग जो दक्षिणी राजा के अच्छे मित्र समझे जाते रहे। उसे पराजित करने का जतन करेंगे। उसकी सेना पराजित कर दी जायेगी। युद्ध में उसके बहुत से सैनिक मारे जायेंगे। [27]उन दोनों राजाओं का मन इसी बात में लगेगा कि एक दूसरे को हानि पहुँचायी जाये। वे एक ही मेज़ पर बैठ कर एक दूसरे से झूठ बोलेंगे किन्तु इससे उन दोनों में से किसी का भी भला नहीं होगा, क्योंकि परमेश्वर ने उनका अंत आने का समय निर्धारित कर दिया है।

[28]"'बहुत सी धन दौलत के साथ, वह उत्तर का राजा अपने देश लौट जायेगा। फिर उस पवित्र वाचा के प्रति वह बुरे कर्म करने का निर्णय लेगा। वह अपनी योजनानुसार काम करेगा और फिर अपने देश लौट जायेगा।

[29]"'फिर उत्तर का राजा ठीक समय पर दक्षिण के राजा पर हमला कर देगा किन्तु इस बार वह पहले की तरह कामयाब नहीं होगा। [30]पश्चिम से जहाज़ आयेंगे और उत्तर के राजा के विरुद्ध युद्ध करेंगे। वह उन जहाज़ों को आते देखकर डर जायेगा। फिर वापस

लौट कर पवित्र वाचा पर वह अपना क्रोध उतारेगा। वह लौट कर, जिन लोगों ने पवित्र वाचा पर चलना छोड़ दिया था, उनकी सहायता करेगा। [31]फिर उत्तर का वह राजा यरूशलेम के मन्दिर को अशुद्ध करने के लिये अपनी सेना भेजेगा। वे लोगों को दैनिक बलि समर्पित करने से रोकेंगे। इसके बाद वे वहाँ कुछ ऐसा भयानक घृणित वस्तु स्थापित करेंगे जो सचमुच विनाशक होगा। वे ऐसा भयानक काम शुरु करेंगे जो विनाश को जन्म देता है।

[32]"'वह उत्तरी राजा झूठी और चिकनी चुपड़ी बातों से उन यहूदियों को छलेगा जो पवित्र वाचा का पालन करना छोड़ चुके हैं। वे यहूदी और बुरे पाप करने लगेंगे किन्तु वे यहूदी, जो परमेश्वर को जानते हैं, और उसका अनुसरण करते हैं, और अधिक सुदृढ़ हो जायेंगे। वे पलट कर युद्ध करेंगे!

[33]"'वे यहूदी जो विवेकपूर्ण है जो कुछ घट रहा होगा, दूसरे यहूदियों को उसे समझने में सहायता देंगे। किन्तु जो विवेकपूर्ण होंगे, उन्हें तो मृत्यु दण्ड तक झेलना होगा। कुछ समय तक उनमें से कुछ यहूदियों को तलवार के घाट उतारा जायेगा और कुछ को आग में फेंक दिया जायेगा। अथवा बन्दी गृहों में डाल दिया जायेगा। उनमें से कुछ यहूदियों के घर बार और धन दौलत छीन लिये जायेंगे। [34]जब वे यहूदी दण्ड भोग रहे होगें तो उन्हें थोड़ी सी सहायता मिलेगी। किन्तु उन यहूदियों में, जो उन विवेकपूर्ण यहूदियों का साथ देंगे, बहुत से केवल दिखावे के होंगे। [35]कुछ विवेकपूर्ण यहूदी मार दिए जाएंगे। ऐसा इसलिए होगा कि वे और अधिक सुदृढ़ बनें, स्वच्छ बनें और अंत समय के आने तक निर्दोष रहें। फिर ठीक समय पर अंत होने का समय आ जायेगा।'"

आत्म प्रशंसक राजा

[36]"'उत्तर का राजा जो चाहेगा, सो करेगा। वह अपने बारे में डींग हांकेगा। वह आत्म प्रशंसा करेगा और सोचेगा कि वह किसी देवता से भी अच्छा है। वह ऐसी बातें करेगा जो किसी ने कभी सुनी तक न होंगी। वह देवताओं का परमेश्वर के विरोध में ऐसी बातें करेगा। वह उस समय तक कामयाब होता चला जायेगा जब तक वे सभी बुरी बातें घट नहीं जाती। किन्तु परमेश्वर ने योजना रची है, वह तो पूरी होगी ही।

[37]"'उत्तर का वह राजा उन देवताओं की उपेक्षा करेगा जिन्हें उसके पूर्वज पूजा करते थे। उन देवताओं की मूर्तियों की वह परवाह नहीं करेगा जिनकी पूजा स्त्रियाँ किया करती हैं। वह किसी भी देवता की परवाह नहीं करेगा बल्कि वह स्वयं अपनी प्रशंसा करता रहेगा और अपने आपको किसी भी देवता से बड़ा मानेगा। [38]वह अपने पूर्वजों के देवता की अपेक्षा किले के देवता की पूजा करेगा वह सोने, चाँदी, बहुमूल्य हीरे जवाहरात और अन्य उपहारों से एक ऐसे देवता की पूजा करेगा जिसे उसके पूर्वज जानते तक नहीं थे।

[39]"'इस विदेशी देवता की सहायता से वह उत्तर का राजा सुदृढ़ गढ़ियों पर आक्रमण करेगा। वह उन लोगों को सम्मान देगा जिनको वह बहुत पसन्द करेगा। वह बहुत से लोगों को उन के अधीन कर देगा। वे राजा जिस धरती पर राज करते हैं, उसके लिये वह उनसे भुगतान लिया करेगा।

[40]"'अंत आने के समय उत्तर का राजा, उस दक्षिण के राजा के साथ युद्ध करेगा। उत्तर का राजा उस पर हमला करेगा। वह रथों, घुड़सवारों और बहुत से विशाल जलयानों को लेकर उस पर चढ़ाई करेगा। उत्तर का राजा बाढ़ के से वेग के साथ उस धरती पर चढ़ आयेगा। [41]उत्तर का राजा 'सुन्दर धरती' पर आक्रमण करेगा। उत्तरी राजा के द्वारा बहुत से देश पराजित होंगे किन्तु एदोम, मोआब और अम्मोनियों के मुखिया बच जायेंगे। [42]उत्तर का राजा बहुत से देशों में अपनी शक्ति दिखायेगा। मिस्र को भी उसकी शक्ति का पता चल जायेगा। [43]वह मिस्र के सोने चाँदी के खजानों और उसकी समूची सम्पत्ति को छीन लेगा। लूबी और कूशी लोग भी उसके अधीन हो जायेंगे। [44]किन्तु उत्तर के उस राजा को पूर्व और उत्तर से एक समाचार मिलेगा जिससे वह भयभीत हो उठेगा और उसे क्रोध आयेगा। वह बहुत से देशों को तबाह कर देने के लिये उठेगा। [45]वह अपने राजकीय तम्बू समुद्र और सुन्दर पवित्र पर्वत के बीच लगवायेगा। किन्तु आखिरकार वह बुरा राजा मर जायेगा। जब उस का अंत आयेगा तो उसे सहारा देने वाला वहाँ कोई नहीं होगा।'"

12

"दर्शन वाले व्यक्ति ने कहा, 'हे दानिय्येल, उस समय मीकाएल नाम का वह प्रधान स्वर्गदूत उठ खड़ा होगा। मीकाएल तुम्हारे यहूदी लोगों का संरक्षक है। फिर एक विपत्तिपूर्ण समय आयेगा। वह समय इतना भयानक होगा, जितना भयानक इस धरती

पर, जब से कोई जाति अस्तित्व में आयी है, कभी नहीं आया होगा। किन्तु हे दानिय्येल, उस समय तेरे लोगों में से हर वह व्यक्ति जिसका नाम, जीवन की पुस्तक में लिखा मिलेगा, बच जायेगा। [2]धरती के वे असंख्य लोग जो मर चुके हैं और जिन्हें दफ़नाया जा चुका है, उठ खड़े होंगे और उनमें से कुछ अनन्त जीवन जीने के लिए उठ जायेंगे। किन्तु कुछ इसलिए जागेंगे कि उन्हें कभी नहीं समाप्त होने वाली लज्जा और घृणा प्राप्त होगी। [3]आकाश की भव्यता के समान बुद्धिमान पुरुष चमक उठेंगे। ऐसे बुद्धिमान पुरुष जिन्होंने दूसरों को अच्छे जीवन की राह दिखाई थी, अनन्त काल के लिये तारों के समान चमकने लगेंगे।

[4]"'किन्तु हे दानिय्येल! इस सन्देश को तू छिपा कर के रख दे। तुझे यह पुस्तक बन्द कर देनी चाहिये। तुझे अंत समय तक इस रहस्य को छिपाकर रखना है। सच्चा ज्ञान पाने के लिए बहुत से लोग इधर–उधर भाग दौड़ करेंगे और इस प्रकार सच्चे ज्ञान का विकास होगा।'

[5]"फिर मैं (दानिय्येल) ने दृष्टि उठाई और दो अन्य लोगों को देखा। उनमें से एक व्यक्ति नदी के उस किनारे खड़ा हुआ था जिस किनारे मैं था और दूसरा व्यक्ति नदी के दूसरे किनारे खड़ा था। [6]वह व्यक्ति जिसने सन के कपड़े पहन रखे थे, नदी में पानी के बहाव के विरुद्ध खड़ा था। उन दोनों में से किसी एक ने उससे पूछा, 'इन आश्चर्यपूर्ण बातों को समाप्त होने में अभी कितना समय लगेगा?'"

[7]"वह व्यक्ति जिसने सन के वस्त्र धारण किया हुआ था और जो नदी के जल के बहाव के विरुद्ध खड़ा हुआ था, उसने अपना दाहिना और बायां–दोनों हाथ आकाश की ओर उठाये। मैंने उस व्यक्ति को अमर परमेश्वर के नाम का प्रयोग करके एक शपथ बोलते हुए सुना। उसने कहा, यह साढ़े तीन साल तक घटेगा। पवित्र जन की शक्ति टूट जायेगी और फिर ये सभी बातें अंतिम रूप से समाप्त हो जाएँगी।'

[8]"मैंने यह उत्तर सुना तो था किन्तु वास्तव में मैंने उसे समझा नहीं। सो मैंने पूछा, 'हे महोदय, इन सभी बातों के सच निकलने के बाद क्या होगा?'

[9]"उसने उत्तर दिया, 'दानिय्येल, तू अपना जीवन जीए जा। यह संदेश गुप्त है और जब तक अंत समय नहीं आयेगा, यह गुप्त ही बना रहेगा। [10]बहुत से लोगों को शुद्ध किया जायेगा। वह लोग स्वयं अपने आप को स्वच्छ करेंगे किन्तु दुष्ट लोग, दुष्ट ही बने रहेंगे और वे दुष्ट लोग इन बातों को नहीं समझेंगे किन्तु बुद्धिमान इन बातों को समझ जायेंगे।

[11]"'जब दैनिक बलियाँ रोक दी जायेंगी तब से अब तक, जब वहाँ कुछ ऐसा भयानक घृणित वस्तु स्थापित होगा जो सचमुच विनाशक होगा, एक हजार दो सौ नब्बे दिनों का समय बीत चुका होगा। [12]वह व्यक्ति जो प्रतीक्षा करते हुए इन एक हजार तीन सौ पैंतीस दिनों के समय के अंत तक पहुँचेगा, वह बहुत अधिक भाग्यशाली होगा।

[13]"'हे दानिय्येल। जहाँ तक तेरी बात है, जा और अंत समय तक अपना जीवन जी। तुझे तेरा विश्राम प्राप्त होगा और अंत में तू अपना भाग प्राप्त करने के लिये मृत्यु से फिर उठ खड़ा होगा।'"

होशे

होशे के द्वारा यहोवा परमेश्वर का सन्देश

1 यह यहोवा का वह सन्देश है, जो बेरी के पुत्र होशे के द्वारा प्राप्त हु आ। यह सन्देश उस समय आया था जब यहूदा में उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह का राज्य था। यह उन दिनों की बात है जब इस्राएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम का समय था।

[2]होशे के लिये यह यहोवा का पहला सन्देश था। यहोवा ने कहा, "जा, और एक वेश्या से विवाह कर ले फिर उस वेश्या से संतान पैदा कर। क्यों? क्योंकि इस देश के लोग वेश्या का सा आचरण कर रहे हैं। वे यहोवा के प्रति सच्चे नहीं रहे हैं। उन्होंने यहोवा को त्याग दिया है।"

यिज्रेल का जन्म

[3]सो होशे ने दिबलैम की पुत्री गोमेर से विवाह कर लिया। गोमेर गर्भवती हुई और उसने होशे के लिये एक पुत्र को जन्म दिया। [4]यहोवा ने होशे से कहा, "इसका नाम यिज्रेल रखो। क्यों? क्योंकि मैं शीघ्र ही यिज्रेल घाटी में की गई हत्याओं के लिये येहू के परिवार को दण्ड दूँगा फिर इसके बाद इस्राएल के वंश के राज्य का अंत कर दूँगा [5]उसी समय यिज्रेल घाटी में, मैं इस्राएल के धनुष को तोड़ दूँगा।"

लोरुहामा का जन्म

[6]इसके बाद गोमेर फिर गर्भवती हुई और उसने एक कन्या को जन्म दिया। यहोवा ने होशे से कहा, "इस कन्या का नाम लोरुहामा रख। क्यों? क्योंकि मैं अब इस्राएल के वंश पर और अधिक दया नहीं दिखाऊँगा। मैं उन्हें क्षमा नहीं करूँगा। [7]बल्कि मैं तो यहूदा के वंश पर दया दिखाऊँगा। मैं यहूदा के वंश की रक्षा करूँगा। किन्तु उनकी रक्षा के लिये मैं न तो धनुष और तलवार का प्रयोग करूँगा और नहीं युद्ध के घोड़ों और सैनिकों का, मैं स्वयं अपनी शक्ति से उन्हें बचाऊँगा।"

लोअम्मी का जन्म

[8]गोमेर ने अभी लोरुहामा को दूध पिलाना छोड़ा ही था कि वह फिर गर्भवती हो गयी। सो उसने एक पुत्र को जन्म दिया। [9]इसके बाद यहोवा ने कहा, "इसका नाम लोअम्मी रख। क्यों? क्योंकि तुम मेरी प्रजा नहीं हो और मैं तुम्हारा परमेश्वर नहीं हूँ।"

परमेश्वर यहोवा का वचन: इस्राएली असंख्य होंगे

[10]"भविष्य में, इस्राएल की प्रजा इतनी अधिक हो जायेगी जितने सागर की रेत के कण होते हैं। वह रेत जो न तो नापी जा सकती है, और न ही जिसकी गिनती की जा सकती है। फिर उसी स्थान पर जहाँ उनसे यह कहा गया था, 'तुम मेरी प्रजा नहीं हो,' उनसे यह कहा जायेगा 'तुम जीवित परमेश्वर की संतानें हो।'

[11]"इसके बाद यहूदा और इस्राएल के लोग एक साथ इकट्ठे किये जायेंगे। वे अपने लिये एक शासक का चुनाव करेंगे। उस धरती के हिसाब से उनकी प्रजा अधिक हो जायेगी! यिज्रेल का दिन वास्तव में एक महान दिन होगा।"

2 "फिर तुम अपने भाई-बंधूओं से कहा करोगे, 'तुम मेरी प्रजा हो' और अपनी बहनों को बताया करोगे, 'उसने मुझ पर दया दिखायी है।'"

इस्राएल की जाति से यहोवा का कथन

[2]"अपनी माँ के साथ विवाद करो! क्योंकि वह मेरी पत्नी नहीं है! और नही मैं उसका पति हूँ! उससे कहो कि वह वेश्या न बनी रहे। उससे कहो कि वह अपने प्रेमियों को अपनी छातियों के बीच से दूर हटा दे। [3]यदि वह अपने इस व्यभिचार को छोड़ने से मना करे तो मैं उसे एक दम नंगा कर दूँगा। मैं उसे वैसा कर के छोड़ूँगा जैसा वह उस दिन थी, जब वह पैदा हुई थी। मैं उसके

लोगों को उससे छीन लूँगा और वह ऐसी हो जायेगी जैसे कोई वीरान रेगिस्तान होता है। मैं उसे प्यासा मार दूँगा। [4]मैं उसकी संतानों पर कोई दया नहीं दिखाऊँगा क्योंकि वे व्यभिचार की संताने होंगी। [5]उनकी माँ ने वेश्या का सा आचरण किया है। उनकी माँ को, जो काम उसने किये हैं, उनके लिये लज्जित होना चाहिये। उसने कहा था, 'मैं अपने प्रेमियों के पास चली जाऊँगी। मेरे प्रेमी मुझे खाने और पीने को देते हैं। वे मुझे ऊन और सन देते हैं। वे मुझे दाखमधु और जैतून का तेल देते हैं।'

[6]"इसलिये, मैं (यहोवा) तेरी (इस्राएल) राह काँटों से भर दूँगा। मैं एक दीवार खड़ी कर दूँगा। जिससे उसे अपना रास्ता ही नहीं मिल पायेगा। [7]वह अपने प्रेमियों के पीछे भागेगी किन्तु वह उन्हें प्राप्त नहीं कर सकेगी। वह अपने प्रेमियों को ढूँढती फिरेगी किन्तु उन्हें ढूँढ नहीं पायेगी। फिर वह कहेगी, 'मैं अपने पहले पति (परमेश्वर) के पास लौट जाऊँगी। जब मैं उसके साथ थी, मेरा जीवन बहुत अच्छा था। आज की अपेक्षा, उन दिनों मेरा जीवन अधिक सुखी था।'

[8]"वह (इस्राएल) यह नहीं जानती थी कि मैं (यहोवा) ही उसे अन्न, दाखमधु और तेल दिया करता था। मैं उसे अधिक से अधिक चाँदी और सोना देता रहता था। किन्तु इस्राएल के लोगों ने उस चाँदी और सोने का प्रयोग बाल की मूर्तियाँ बनाने में किया। [9]इसलिये मैं (यहोवा) वापस आऊँगा और अपने अनाज को उस समय वापस ले लूँगा जब वह पक कर कटनी के लिये तैयार होगा। मैं उस समय अपने दाखमधु को वापस ले लूँगा जब अँगूर पक कर तैयार होंगे। अपनी ऊन और सन को भी मैं वापस ले लूँगा। ये वस्तुएँ मैंने उसे इसलिये दी थीं कि वह अपने नंगे तन को ढक ले। [10]अब मैं उसे वस्त्र विहीन करके नंगा कर दूँगा ताकि उसके सभी प्रेमी उसे देख सकें। कोई भी व्यक्ति उसे मेरी शक्ति से बचा नहीं पायेगा। [11]मैं (परमेश्वर) उससे उसकी सारी हँसी खुशी छीन लूँगा। मैं उसके वार्षिक उत्सवों, नये चाँद की दावतों और विश्राम के दिनों के उत्सवों का अंत कर दूँगा। मैं उसकी सभी विशेष दावतों को रोक दूँगा। [12]उसकी अँगूर की बेलों और अंजीर के वृक्षों को मैं नष्ट कर दूँगा। उसने कहा था, 'ये वस्तुएँ मेरे प्रेमियों ने मुझे दी थीं।' किन्तु अब मैं उसके बगीचों को बदल डालूँगा। वे किसी उजड़े जंगल जैसे हो जायेंगे। उन वृक्षों से जंगली जानवर आकर अपनी भूख मिटाया करेंगे।

[13]"वह बाल की सेवा किया करती थी, इसलिये मैं उसे दण्ड दूँगा। वह बाल देवताओं के आगे धूप जलाया करती थी। वह आभूषणों से सजती और नथ पहना करती थी। फिर वह अपने प्रेमियों के पास जाया करती और मुझे भूले रहती।" यहोवा ने यह कहा था।

[14]"इसलिये, मैं (यहोवा) उसकी मनुहार करूँगा। मैं उसे रेगिस्तान में ले जाऊँगा। मैं उसके साथ दयापूर्वक बातें करूँगा। [15]वहाँ मैं उसे अँगूर के बगीचे दूँगा। आशा के द्वार के रूप में मैं उसे आकोर की घाटी दे दूँगा। फिर वह मुझे उसी प्रकार उत्तर देगी जैसे उस समय दिया करती थी, जब वह मिस्र से बाहर आयी थी।" [16]यहोवा ने यह बताया है।

"उस अवसर पर, तू मुझे 'मेरा पति' कह कर पुकारेगी। तब तू मुझे 'मेरे बाल' नहीं कहेगी। [17]मैं बाल देवताओं के नामों को उसके मुख पर से दूर हटा दूँगा। फिर लोग बाल देवताओं के नाम नहीं लिया करेंगे।

[18]"फिर, मैं इस्राएल के लोगों के लिये जंगल के पशुओं, आकाश के पक्षियों, और धरती पर रेंगने वाले प्राणियों के साथ एक वाचा करूँगा। मैं धनुष, तलवार और युद्ध के अस्त्रों को तोड़ फेंकूँगा। कोई अस्त्र–शस्त्र उस धरती पर नहीं बच पायेगा। मैं उस धरती को सुरक्षित बना दूँगा जिससे इस्राएल के लोग शांति के साथ विश्राम कर सकेंगे।[19]मैं (यहोवा) तुझे सदा–सदा के लिये अपनी दुल्हन बना लूँगा। मैं तुझे नेकी, खरेपन, प्रेम और करुणा के साथ अपनी दुल्हन बना लूँगा। [20]मैं तुझे अपनी सच्ची दुल्हन बनाऊँगा। तब तू सचमुच यहोवा को जान जायेगी [21]उस समय, मैं तुझे उत्तर दूँगा।" यहोवा ऐसा कहता है:

"मैं आकाशों से कहूँगा और
वे धरती को वर्षा देंगे।
[22] धरती अन्न, दाखमधु और तेल उपजायेगी
और वे यिज्रेल की मांग पूरी करेंगे।
[23] मैं उसकी धरती पर बहुतेरे बीजों को बोऊँगा।
मैं लोरुहामा पर दया दिखाऊँगा:
मैं लोअम्मी से कहूँगा 'तू मेरी प्रजा है'
और वे मुझसे कहेंगे,
'तू हमारा परमेश्वर है।'"

होशे का गोमेर को दासता से छुड़ाना

3 इसके बाद यहोवा ने मुझसे फिर कहा, "यद्यपि गोमेर के बहुत से प्रेमी हैं। किन्तु तुझे उससे प्रीत बनाये रखनी चाहिये। क्यों? क्योंकि यह तेरा यहोवा का सा आचरण होगा। यहोवा इस्राएल की प्रजा पर अपना प्रेम बनाये रखता है किन्तु इस्राएल के लोग अन्य देवताओं की पूजा करते रहते हैं और वे दाख के पुओं को खाना पसंद करते हैं।"

[2]सो मैंने गामेर को चाँदी के पन्द्रह सिक्कों और नौ बुशल जौ के बदले खरीद लिया। [3]फिर उससे कहा, "तुझे घर में मेरे साथ बहुत दिनों तक रहना है। तुझे किसी वेश्या के जैसा नहीं होना चाहिये। किसी पराये पुरुष के साथ तुझे नहीं रहना है। मैं तभी वास्तव में तेरा पति बनूँगा।"

[4]इसी प्रकार, इस्राएल के लोग बहुत दिनों तक बिना किसी राजा या मुखिया के रहेंगे। वे बिना किसी बलिदान अथवा बिना किसी स्मृति पत्थर के रहेंगे। उनके पास कोई याजकों की पोशाक नहीं होगी या उनके कोई गृह देवता नहीं होंगे। [5]इसके बाद इस्राएल के लोग वापस लौट आयेंगे और तब वे अपने यहोवा परमेश्वर और अपने राजा दाऊद की खोज करेंगे। अंतिम दिनों में वे यहोवा को और उसकी नेकी को आदर देने आयेंगे।

इस्राएल पर यहोवा का कोप

4 हे इस्राएल के लोगों, यहोवा के सन्देश को सुनो! यहोवा इस देश में रहने वाले लोगों के विरुद्ध अपने तर्क बतायेगा। वास्तव में इस देश के लोग परमेश्वर को नहीं जानते। ये लोग परमेश्वर के प्रति सच्चे और निष्ठावान नहीं हैं। [2]ये लोग कसमें खातें है, झूठ बोलते हैं, हत्याएँ करते हैं और चोरियाँ करते हैं। वे व्यभिचार करते हैं और फिर उससे उनके बच्चे होते हैं। ये लोग एक के बाद एक हत्याएँ करते चले जाते हैं। [3]इसलिये यह देश ऐसा हो गया है जैसा किसी की मृत्यु के ऊपर रोता हुआ कोई व्यक्ति हो। यहाँ के सभी लोग दुर्बल हो गये हैं। यहाँ तक कि जंगल के पशु, आकाश के पक्षी और सागर की मछलियाँ मर रही हैं। [4]किसी एक व्यक्ति को किसी दूसरे पर न तो कोई अभियोग लगाना चाहिये और न ही कोई दोष मढ़ना चाहिये। हे याजक, मेरा तर्क तुम्हारे विरुद्ध है! [5]हे याजकों, तुम्हारा पतन दिन के समय होगा और रात के समय तुम्हारे साथ नबी का भी पतन हो जायेगा और मैं तुम्हारी माता को नष्ट कर दूँगा। [6]"मेरी प्रजा का विनाश हुआ क्योंकि उनके पास कोई ज्ञान नहीं था किन्तु तुमने तो सीखने से ही मना कर दिया। सो मैं तुम्हें अपना याजक बनने का निषेध कर दूँगा। तुमने अपने परमेश्वर के विधान को भुला दिया हैं। इसलिए मैं तुम्हारी संतानों को भूल जाऊँगा। [7]वे अहंकारी हो गये! मेरे विरुद्ध वे पाप करते चले गये। इसलिए मैं उनकी महिमा को लज्जा में बदल दूँगा।

[8]"याजकों ने लोगों के पापों में हिस्सा बंटाया। वे उन पापों को अधिक से अधिक चाहते चले गये। [9]इसलिए याजक लोगों से कोई भिन्न नहीं रह गये थे। मैं उन्हें उनके कर्मो का दण्ड दूँगा। उन्होंने जो बुरे काम किये हैं, मैं उनसे उनका बदला चुकाऊँगा। [10]वे खाना तो खायेंगे किन्तु उन्हें तृप्ति नहीं होगी! वे वेश्यागमन तो करेंगे किन्तु उनके संतानें नहीं होंगी। ऐसा क्यों? क्योंकि उन्होंने यहोवा को त्याग दिया और वे वेश्याओं के जैसे हो गये।

[11]"व्यभिचार, तीव्र मदिरा और नयी दाखमधु किसी व्यक्ति की सीधी तरह से सोचने की शक्ति को नष्ट कर देते हैं। [12]देखों, मेरे लोग लकड़ी के टुकड़ों से सम्मति माँगते हैं। वे सोचते हैं कि ये छड़ियाँ उन्हें उत्तर देंगी। ऐसा क्यों हो गया?ऐसा इसलिए हुआ कि वे वेश्याओं के समान उन झूठे देवताओं के पीछे पड़े रहे। उन्होंने अपने परमेश्वर को त्याग दिया और वे वेश्याओं जैसे बन बैठे। [13]वे पहाड़ों की चोटियों पर बलियाँ चढ़ाया करते हैं। पहाड़ियों के ऊपर बाँज, चिनार तथा बाँज के पेड़ों के तले धूप जलाते हैं। उन पेड़ों तले की छाया अच्छी दिखती है। इसलिये तुम्हारी पुत्रियाँ वेश्याओं की तरह उन पेड़ों के नीचे सोती हैं और तुम्हारी बहुएँ वहाँ पाप पूर्ण यौनाचार करती हैं।

[14]"मैं तुम्हारी पुत्रियों को वेश्याएँ बनने के लिये अथवा तुम्हारी बहुओं को पापपूर्ण यौनाचार के लिये दोष नहीं दे सकता। लोग वेश्याओं के पास जा कर उनके साथ सोते है और फिर वे मन्दिर की वेश्याओं के पास जा कर बलियाँ अर्पित कर देते हैं। इस प्रकार वे मूर्ख लोग स्वयं अपने आप को ही तबाह कर रहे हैं।

इस्राएल के लज्जापूर्ण पाप

[15]"हे इस्राएल, तू एक वेश्या के समान आचरण करती है। किन्तु यहूदा को अपराधी मत बनने दे। तू

गिलगाल अथवा बेतावेन के पास मत जा। यहोवा के नाम पर कसमें मत खा। ऐसा मत कह, 'यहोवा के जीवन की सौगन्ध!' [16]इस्राएल को यहोवा ने बहुत सी वस्तुएँ दी थीं। यहोवा एक ऐसे गड़ेरिये के समान है जो अपनी भेड़ों को घास से भरपूर एक बड़े से मैदान की ओर ले जाता है। किन्तु इस्राएल जिद्दी है। इस्राएल उस जवान बछड़े के समान है जो बार-बार, इधर-उधर भागता है। [17]एप्रैम भी उसकी मूर्तियों में उसका साथी बन गया। सो उसे अकेला छोड़ दो।

[18]"एप्रैम ने उनकी मदमत्तता में हिस्सा बटाया। उन्हें वेश्याएँ बने रहने दो। रहने दो उन्हें उनके प्रेमियों के साथ। [19]वे उन देवताओं की शरण में गये और उनकी विचार शक्ति जाती रही। उनकी बलियाँ उनके लिये शर्मिंदगी ले कर आई।"

मुखियाओं ने इस्राएल और यहूदा से पाप करवाये

5 "हे याजकों, इस्राएल के वंशजो, तथा राजा के परिवार के लोगों, मेरी बात सुनो।

"तुम मिसपा में जाल के समान हो। तुम ताबोर की धरती पर फैलाये गये फँदे जैसे हो। [2]तुमने अनेकानेक कुकर्म किये हैं। इसलिए मैं तुम सब को दण्ड दूँगा! [3]मैं एप्रैम को जानता हूँ। मैं उन बातों को भी जानता हूँ जो इस्राएल ने की हैं। हे एप्रैम, तू अब तक एक वेश्या के जैसा आचरण करता है। इस्राएल पापों से अपवित्र हो गया है। [4]इस्राएल के लोगों ने बहुत से बुरे कर्म किये हैं और वे बुरे कर्म ही उन्हें परमेश्वर के पास फिर लौटने से रोक रहे हैं। वे सदा ही दूसरे देवताओं के पीछे पीछे दौड़ते रहने के रास्ते सोचते रहते हैं। वे यहोवा को नहीं जानते। [5]इस्राएल का अहंकार ही उनके विरोध में एक साक्षी बन गया है। इसलिए इस्राएल और एप्रैम का उनके पापों में पतन होगा किन्तु उनके साथ ही यहूदा भी ठोकर खायेगा।

[6]"लोगों के मुखिया यहोवा की खोज में निकल पड़ेंगे। वे अपनी 'भेड़ों' और 'गायों' को भी अपने साथ ले लेंगे किन्तु वे यहोवा को नहीं पा सकेंगे। ऐसा क्यों? क्योंकि यहोवा ने उन्हें त्याग दिया था। [7]वे यहोवा के प्रति सच्चे नहीं रहे थे। उनकी संतानें किसी पराये से थीं। सो अब वह उनका और उनकी धरती का फिर से विनाश करेगा।"

इस्राएल के विनाश की भविष्यवाणी

[8]तुम गिबाह में नरसिंगे को फूँको, रामा में तुम तुरही बजाओ, बेतावेन में तुम चेतावनी दो। बिन्यामीन, शत्रु तुम्हारे पीछे पड़ा है।

[9]एप्रैम दण्ड के समय में उजाड़ हो जायेगा। हे इस्राएल के घरानो मैं (परमेश्वर) तुम्हें सचेत करता हूँ कि निश्चय ही वे बातें घटेंगी।

[10]यहूदा के मुखिया चोर से बन गये हैं। वे किसी और व्यक्ति की धरती चुराने का जतन करते रहते हैं। इसलिये मैं (परमेश्वर) उन पर क्रोध पानी सा उंडेलूँगा।

[11]एप्रैम दण्ड़ित किया जायेगा, उसे कुचला और मसला जायेगा जैसे अंगूर कुचले जाते हैं। क्योंकि उसने निकम्मे का अनुसरण करने का निश्चय किया था।

[12]मैं एप्रैम को ऐसे नष्ट कर दूँगा जैसे कोई कीड़ा किसी कपड़े के टुकड़े को बिगाड़े। यहूदा को मैं वैसे नष्ट कर दूँगा जैसे सड़ाहट किसी लकड़ी के टुकड़े को बिगाड़े।

[13]एप्रैम अपना रोग देख कर और यहूदा अपना घाव देख कर अश्शूर की शरण पहुँचेंगे। उन्होने अपने समस्याए उस महान राजा को बतायी थी। किन्तु वह राजा तुझे चंगा नहीं कर सकता, वह तेरे घाव को नहीं भर सकता है।

[14]क्योंकि मैं एप्रैम के हेतु सिंह सा बनूँगा और मैं यहूदा की जाति के लिये एक जवान सिंह बनूँगा। मैं-हाँ, मैं (यहोवा) उनके चिथड़े उड़ा दूँगा। मैं उनको दूर ले जाऊँगा, मुझसे कोई भी उनको बचा नहीं पायेगा।

[15]फिर मैं अपनी जगह लौट जाऊँगा जब तक कि वे लोग स्वंय को अपराधी नहीं मानेंगे, जब तक वे मुझको खोजते न आयेंगे। हाँ! अपनी विपत्तियों में वे मुझे ढूँढने का कठिन जतन करेंगे।

यहोवा की ओर लौट आने का प्रतिफल

6 आओ, हम यहोवा के पास लौट आयें। उसने आघात दिये थे वही हमें चंगा करेगा। उसने हमें आघात दिये थे वही उन पर मरहम भी लगायेगा।

[2]दो दिन के बाद वही हमें फिर जीवन की ओर लौटायेगा। तीसरे दिन वह ही हमें उठा कर खड़ा करेगा, हम उसके सामने फिर जी पायेंगे।

[3]आओ, यहोवा के विषय में जानकारी करें। आओ, यहोवा को जानने का कठिन जतन करे। हमको इसका

पता है कि वह आ रहा है वैसे ही जैसे हम को ज्ञान है कि प्रभात आ रहा है। यहोवा हमारे पास वैसे ही आयेगा जैसे कि बसंत की वह वर्षा आती है जो धरती को सींचती है।

लोग सच्चे नहीं है

[4]हे एप्रैम, तुम ही बताओ कि मैं (यहोवा) तुम्हारे साथ क्या करुँ? हे यहूदा, तुम्हारे साथ मुझे क्या करना चाहिये? तुम्हारी आस्था भोर की धुंध सी है। तुम्हारी आस्था उस ओस की बूंद सी है जो सुबह होते ही कहीं चली जाती है।

[5]मैंने नबियों का प्रयोग किया और लोगों के लिये नियम बना दिये। मेरे आदेश पर लोगों का वध किया गया किन्तु इन निर्णयों से भली बातें ऊपजेंगी।

[6]क्योंकि मुझे सच्चा प्रेम भाता है न कि मुझे बलियाँ भाती हैं, मुझे भाता है कि परमेश्वर का ज्ञान रखें, न कि वे यहाँ होमबलियाँ लाया करें।

[7]किन्तु लोगों ने वाचा तोड़ दी थी जैसे उसे आदम ने तोड़ा था। अपने ही देश में उन्होंने मेरे संग विश्वासघात किया।

[8]गिलाद उन लोगों की नगरी है, जो पाप किया करते हैं। वहाँ के लोग चाल बाज हैं और वे औरों की हत्या करते हैं।

[9]जैसे डाकू किसी की घात में छुपे रहते हैं कि उस पर हमला करें, वैसे ही शकेम की राह पर याजक घात में बैठे रहते हैं। जो लोग वहाँ से गुजरते हैं वे उन्हे मार डालते हैं। उन्होने बुरे काम किये हैं।

[10]इस्राएल की प्रजा में मैंने भयानक बात देखी है। एप्रैम परमेश्वर के हेतू सच्चा नहीं रहा था । इस्राएल पाप से दोषयुक्त हो गया है।

[11]यहूदा, तेरे लिये भी एक कटनी का समय है। यह उस समय होगा, जब मैं अपने लोगों को बंधुआयी से लौटा कर लाऊँगा।

7 मैं इस्राएल को चंगा करूँगा! लोग एप्रैम के पाप जान जायेंगे, लोगों के सामने शोमरोन के झूठ उजागर होंगे। लोग उन चोरों के बारें में जान जायेंगे जो नगर में आते जाते रहते हैं।

[2]लोगों को विश्वास नहीं है कि मैं उनके अपराधो की याद करूँगा। वे सब और से अपने किये बुरे कामों से घिरे हैं। मुझको उनके वे बुरे कर्म साफ–साफ दिख रहे हैं।

[3]वे अपने कुकर्मों से निज राजा को प्रसन्न रखते हैं। वे झूठे देवों की पूजा कर के अपने मुखियाओं को खुश करते हैं।

[4]तंदूर पर पकाने वाला रोटी के लिये आटा गूँथता है। वह तंदूर में रोटी रखा करता है। किन्तु वह आग को तब तक नहीं दहकाता जब तक की रोटी फूल नहीं जाती है। किन्तु इस्राएल के लोग उस नान बाई से नहीं हैं। इस्राएल के लोग हर समय अपनी आग दहकाये रखते हैं।

[5]हमारे राजा के दिन वे अपनी आग दहकाते हैं, अपनी दाखमधु की दावतें वे दिया करते हैं। मुखिया दाखमधु की गर्मी से दुखिया गये हैं। सो राजाओं न उन लोगों के साथ हाथ मिलाया है जो परमेश्वर की हँसी करते हैं।

[6]लोग षडयंत्र रचा करते हैं। उनके उत्तेजित मन भाड़ से धधकते हैं। उनकी उत्तेजनायें सारी रात धधका करती हैं, और सुबह होते होते वह जलती हुई आग सी तेज हो जाती हैं।

[7]वे सारे लोग भभकते हुये भाड़ से हैं, उन्होंने अपने राजाओं को नष्ट किया था। उनके सब शासको का पतन हुआ था। उनमें से कोई भी मेरी शरण में नही आया था।"

इस्राएल अपने नाश से बेसुध

[8]एप्रैम दूसरी जातियों के संग मिला जुला करता है। एप्रैम उस रोटी सा है जिसे दोनो और से वहीं सेंका गया है।

[9]एप्रैम का बल गैरो ने नष्ट किया है किन्तु एप्रैम को इसका पता नहीं है। सफेद बाल भी एप्रैम पर छिटका दिये गये हैं किन्तु एप्रैम को इसका पता नहीं है।

[10]एप्रैम का अहंकार उसके विरोध में बोलता है। लोगों ने बहुतेरी यातनायें झेली हैं किन्तु वे अब भी अपने परमेश्वर यहोवा के पास नहीं लौटे हैं। लोग उसकी शरण में नहीं गये थे।

[11]एप्रैम उस भोले कपोत सा बन गया है जिसके पास कुछ भी समझ नहीं होती है। लोगों ने मिस्र से सहायता मांगी और लोग अश्शूर की शरण में गये।

[12]वे उन देशों की शरण में जाते हैं किन्तु मैं जाल में उनको फसाऊँगा, मैं अपना जाल उनके ऊपर फेकूँगा। मैं उनको ऐसे नीचे खींच लूँगा जैसे गगन के पक्षी खेंच लिये जाते हैं। मैं उनको उनकी वाचाओं का दण्ड दूँगा।

[13]यह उनके लिये बुरा होगा उन्होने मुझको मेरी बात मानने से इन्कार किया। इसलिये उनको मिटा दिया जायेगा। मैंने उन लोगों को बचाया था किन्तु वे मेरे विरोध में झूठ बोलते हैं।

[14]वे कभी मन से मुझे नहीं पुकारते हैं। हाँ, बिस्तर में पड़े हुए वे पुकारा करते हैं। जब वे नया अन्न और नयी दाखमधु मांगते हैं तब पूजा के अंग के रूप में वे अपने अंगों को स्वंय काटा करते हैं। किन्तु वे अपने हृदय में मुझ से दूर हुये हैं।

[15]मैंने उन्हें सधाया था और उनकी भुजा बलशाली बनायी थी, किन्तु उन्होंने मेरे विरोध में षड़यंत्र रचे। [16]वे झूठे देवों की ओर मुड़ गये। वे उस धनुष के समान बने जो झूठे लक्ष्य भेद करता है। उनके मुखिया लोग अपनी ही शक्ति की शेखी बघारते थे, किन्तु उन्हें तलवार के घाट उतारा जायेगा। फिर लोग मिस्र में उन पर हँसेंगे।

मूर्ति पूजा से इस्राएल का विनाश

8 तुम अपने होठों से नरसिंगा लगाओ और चेतावनी फूँको। यहोवा के भवन के ऊपर तुम उकाब से बन जाओ। इस्राएल के लोगों ने मेरी वाचा को तोड़ दिया; उन्होने मेरे विधान का पालन न किया।

[2]वे मुझको आर्त स्वर से पुकारते हैं, “हे मेरे परमेश्वर, हम इस्राएल के वासी तुझ को जानते हैं!”

[3]किन्तु इस्राएल हाय! उसने भली बातों को नकार दिया। इसी से शत्रु उसके पीछे पड़ गया हैं।

[4]इस्राएल वासियों ने अपना राजा चुना किन्तु वे मेरे पास सम्मति को नहीं आये। इस्राएल वासियों ने अपने मुखिया चुने थे किन्तु उन्होंने उन्हें नहीं चुना जिनको मैं जानता था। इस्राएल वासियों ने अपने लिये मूर्तियां घड़ने में अपने सोने चांदी का प्रयोग किया, इसलिये उनका नाश होगा।

[5-6]हे शोमरोन, यहोवा ने तेरे बछड़े का निषेध किया। इस्राएल निवासियों से परमेश्वर कहता है–“मैं बहुत ही कुपित हूँ, इस्राएल के लोगों को उनके पापों के लिये दण्ड दिया जायेगा। कुछ कामगारों ने वे मूर्ति बनाये थे वे परमेश्वर तो नहीं है। शोमरोन के बछड़े को टुकड़े–टुकड़े तोड़ दिया जायेगा।

[7]“इस्राएल के लोगों ने एक ऐसा काम किया जो मूर्खता से भरा था। वह ऐसा काम था जैसे कोई हवा को बोने लगे। किन्तु उनके हाथ बस विपत्तियाँ लगेंगी – वे केवल एक बवण्ड़र काट पायेंगे। खेतों को बीच में अनाज तो उगेगा नहीं, इससे वे भोजन नहीं पायेंगे, और यदि थोड़ा बहुत उग भी जाये तो उसको पराये खा जायेंगे।

[8]“इस्राएल निगला गया (नष्ट किया गया) है, इस्राएल एक ऐसा बेकार सा पात्र हो गया है जिसको कोई भी नहीं चाहता है। इस्राएल को दूर फेंक दिया गया–दूसरे लोगों के बीच में उन्हें छिटक दिया गया।

[9]“एप्रैम अपने ‘प्रेमियों’ के पास गया था। जैसे कोई जंगली गधा भटके। वैसे ही वह अश्शूर में भटका।

[10]“इस्राएल अन्यजातियों के बीच निज ‘प्रेमियों’ के पास गया किन्तु अब आपस में इस्राएल निवासियों को मैं इकट्ठा करूँगा। उस शक्तिशाली राजा से वे कुछ सताये जायेंगे।”

इस्राएल का परमेश्वर को बिसराना और मूर्तियों को पूजना

[11]एप्रैम ने अधिकाधिक वेदियों बनायी थी किन्तु वह तो एक पाप था। वे वेदियों ही एप्रैम के हेतु पाप की वेदियों बन गई।

[12]यद्यपि मैंने एप्रैम के हेतू दस हजार नियम लिख दिये थे, किन्तु उसने सोचा था कि वे नियम जैसे किसी अजनबी के लिये हों।

[13]इस्राएल के लोगों को बलियां भाती थी, वे माँस का चढ़ावा चढ़ाते थे और उसको खाया करते थे। यहोवा उनके बलिदानों को नहीं स्वीकारता है। वह उनके पापों को याद रखता है, वह उनको दण्डित करेगा, उनको मिस्र बंदी के रूप में ले जाया जायेगा।

[14]इस्राएल ने राजमहल बनाये थे किन्तु वह अपने निर्माता को भूल गया! अब देखो यहूदा ये गढ़ियाँ बनाता है। किन्तु मैं यहूदा के नगरी पर आग को भेजूँगा और वह आग यहूदा की गढ़ियाँ नष्ट करेगा!

देश निकाले का दुःख

9 हे इस्राएल, तू उस पुकार का आनन्द मत मना, जैसे देश–देश के लोग मनाते हैं! तू प्रसन्न मत हो! तूने तो एक वेश्या के जैसा आचरण किया है और परमेश्वर को बिसरा दिया है। तूने हर खलिहान की धरती पर व्यभिचार किया है। [2]किन्तु उन खलिहानों से मिला अन्न

इस्राएल को पर्याप्त भोजन नहीं दे पायेगा। इस्राएल के लिये पर्याप्त दाखमधु भी नहीं रहेगी।

[3]इस्राएल के लोग यहोवा की धरती पर नहीं रह पायेंगे। एप्रैम मिस्र को लौट जायेगा। अश्शूर में उन्हें वैसा खाना खाना पड़ेगा जैसा उन्हें नहीं खाना चाहिये। [4]इस्राएल के निवासी यहोवा को दाखमधु का चढ़ावा नहीं चढ़ायेंगे। वे उसे बलियाँ अर्पित नहीं कर पायेंगे। ये बलियाँ उनके लिए विलाप करते हुए की रोटी जैसी होंगी। जो इसे खाएंगे वैसे भी अपवित्र हो जाएंगे। यहोवा के मन्दिर में उनकी रोटी नहीं जा पायेगी। उनके पास बस उतनी सी ही रोटी होगी, जिससे वे मात्र जीवित रह पायेंगे। [5]वे (इस्राएली) यहोवा के अवकाश के दिनों अथवा उत्सवों को मना नहीं पायेंगे।

[6]इस्राएल के लोग पूरी तरह से नष्ट होने के डर से अश्शूर को गये थे किन्तु मिस्र उन्हें इकट्ठा करके ले लेगा। मोप के लोग उन्हें गाड़ देंगे। चाँदी से भरे उनके खज़ानों पर खरपतवार उग आयेगा। उनके डेरों में, कँटीली झाड़ियाँ उग आयेंगी।

इस्राएल ने सच्चे नबियों को नकारा

[7]नबी कहता है, "हे इस्राएल, इन बातों को जान ले दण्ड देने का समय आ गया है। जो बुरे काम तूने किये हैं, तेरे लिये उनके भुगतान का समय आ गया है।" किन्तु इस्राएल के लोग कहते हैं, "नबी मूर्ख है, परमेश्वर की आत्मा से युक्त यह पुरुष उन्मादी है।" नबी कहता है, "तुम्हारे बुरे कामों के लिये तुम्हें दण्ड दिया जायेगा। तुम्हारी घृणा के लिये तुम्हें दण्ड दिया जायेगा।"

[8]परमेश्वर और नबी उन पहरेदारों के समान हैं जो ऊपर से एप्रैम पर ध्यान रखे हुए हैं। किन्तु मार्ग तो अनेक फँदों से भरा हुआ है। किन्तु लोग तो नबी से उसके परमेश्वर के घर तक में घृणा करते हैं।

[9]गिबा के दिनों की तरह इस्राएल के लोग तो बर्बादी के बीच गहरे उतर चुके हैं। यहोवा इस्राएलियों के पापों का ध्यान कर के, उन्हें उनके पापों का दण्ड देगा।

मूर्ति पूजा के कारण इस्राएल का विनाश

[10]जैसे रेगिस्तान में किसी को अँगूर मिल जायें, मेरे लिये इस्राएल का मिलना वैसा ही था। तुम्हारे पूर्वज मुझे ऐसे ही मिले जैसे ऋतु के प्रारम्भ में अंजीर के पेड़ पर किसी को अंजीर के पहले फल मिलते हैं। किन्तु वे तो बाल–पोर के पास चले गये। वे बदल गये और ऐसे हो गये जैसे कोई सड़ी–गली वस्तु होती है। वे जिन भयानक वस्तुओं को (झूठे देवताओं को) प्रेम करते थे, उन्हीं के जैसे हो गये।

इस्राएलियों का वंश नहीं बढ़ेगा

[11]इस्राएल का वैभव कहीं वैसे ही उड़ जायेगा, जैसे कोई पक्षी उड़ जाता है। वहाँ न कोई गर्भ धारण करेगा, न कोई जन्म लेगा और न ही बच्चे होंगे। [12]किन्तु यदि इस्राएली अपने बच्चे पाल भी लेंगे तो भी सब बेकार जायेगा। मैं उनसे उनके बच्चे छीन लूँगा। मैं उन्हें त्याग दूँगा और उन्हें विपदाओं के अलावा कुछ भी नहीं मिल पायेगा।

[13]मैं देख रहा हूँ कि एप्रैम अपनी संतानों को एक फँदें की ओर ले जा रहा है। एप्रैम अपने बच्चों को इस हत्यारे के पास बाहर ला रहा है। [14]हे यहोवा, तुझे उनको जो देना है, उसे तू उन्हें दे दे। उन्हें एक ऐसा गर्भ दे, जो गिर जाता है। उन्हें ऐसे स्तन दे जो दूध नहीं पिला पाते।

[15]उनकी समूची बुराई गिल्गाल में है। वहीं मैंने उनसे घृणा करना शुरु किया था। मैं उन्हें मेरे घर से निकल जाने को विवश करूँगा, उनके उन कुकर्मो के लिये जिनको वे करते हैं। मैं उनसे अब प्यार नहीं करता रहूँगा। उनके सभी मुखिया मुझसे बागी हो गये हैं, अब वे मेरे विरोध में हो गये हैं।

[16]एप्रैम को दण्ड दिया जायेगा, उनकी जड़ सूख रही है। उनके और अधिक संताने अब नहीं होंगी। चाहे उनके संताने होती रहें किन्तु उनके दुलारे शिशुओं को जो उनके शरीर से पैदा होते हैं मैं मार डालूंगा।

[17]वे लोग मेरे परमेश्वर की तो नहीं सुनेंगे; सो वह भी उनकी बात सुनने को नकार देगा और फिर वे अन्य देशों के बीच बिना किसी घर के भटकते हुये फिरेंगे।

इस्राएल के वैभव ने इस्राएल से मूर्ति पूजा करवाई

10 इस्राएल एक ऐसी दाखलता है
जिस पर बहुतेरे फल लगते हैं।
इस्राएल ने परमेश्वर से अधिकाधिक वस्तुऐं
पाई किन्तु वह झूठे देवताओं के लिये
अनेकानेक वेदियाँ बनाता ही चला गया।

उसकी धरती अधिकाधिक उत्तम होने लगी
सो वह अच्छे से अच्छा पत्थर झूठे
देवताओं को मान देने के लिये पधराता गया।

[2] इस्राएल के लोग परमेश्वर को
धोखा देने का जतन करते ही रहे।
किन्तु अब तो उन्हें निज अपराध
मानना चाहिये।
यहोवा उनकी वेदियों को तोड़ फेंकेगा,
वह स्मृति–स्तूपों को तहस–नहस करेगा।

इस्राएलियों के बुरे निर्णय

[3]अब इस्राएल के लोग कहा करते हैं, "न तो हमारा कोई राजा है और न ही हम यहोवा का मान करते हैं! और उसका राजा हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता है!"

[4]वे वचन तो देते हैं। किन्तु वचन देते हुए बस वे झूठ ही बोलते हैं। वे उन वचनों का पालन नहीं करते! दूसरे देशों के साथ वे ऐसी सन्धि करते हैं, जो सन्धि परमेश्वर को नहीं भाती। न्यायाधीश जोते हुए खेत में उगने वाले जहरीले खरपतवार के जैसे हो गये हैं।

[5]शोमरोन के लोग बेतावेन में बछड़ों की पूजा करते हैं। ऐसे लोगों को वास्तव में विलाप करना होगा। वे याजक वास्तव में विलाप करेंगे क्योंकि उसकी सुन्दर मूर्ति कही चली गई है। उसे कहीं उठा ले जाया गया। [6]उसे अश्शूर के महान राजा को उपहार देने के लिए उठा ले जाया गया। एप्रैम की लज्जापूर्ण मूर्ति को वह ले लेगा। इस्राएल को अपनी मूर्तियों पर लज्जित होना होगा। [7]शोमरोन के झूठे देवता को नष्ट कर दिया जायेगा। वह पानी पर तैरते हुए किसी लकड़ी के टुकड़े जैसा हो जायेगा।

[8]इस्राएल ने पाप किये और ऊँचे स्थानों का निर्माण किया। आवेन के ऊँचे स्थान नष्ट कर दिये जायेंगे। उनकी वेदियों पर कँटीली झाड़ियाँ और खरपतवार उग आयेंगे। उस समय वे पर्वतों से कहेंगे, "हमें ढक लो" और पहाड़ियों से कहेंगे, "हम पर गिर पड़ो!"

इस्राएल को अपने पाप का भुगतान करना होगा

[9]हे इस्राएल, तू गिबा के समय से ही पाप करता आया हैं और वे लोग वहाँ पाप करते ही चले गये। गिबा के वे दुष्ट लोग सचमुच युद्ध की पकड़ में आ जायेंगे। [10]उन्हें दण्ड देने के लिए मैं आऊँगा। उनके विरुद्ध इकट्ठी होकर सेनाएँ चढ़ आयेंगी। इस्राएलियों को उनके दोनों पापों के लिए वे दण्ड देंगी।

[11]एप्रैम उस सुधारी हुई जवान गाय के समान है जिसे खलिहान में अनाज पर गहाई के लिये चलना अच्छा लगता है। मैं उसके कन्धों पर एक उत्तम जुवा रखूँगा। मैं एप्रैम पर रस्सी लगाऊँगा। फिर यहूदा जुताई करेगा और स्वयं याकूब धरती को फोड़ेगा।

[12]यदि तुम नेकी को बोओगे तो सच्चे प्रेम की फसल काटोगे। अपनी धरती को जोतो और यहोवा की शरण जाओ। यहोवा आयेगा और वह तुम पर वर्षा की तरह नेकी बरसायेगा!

[13]किन्तु तुमने तो बदी का बीज बोया है और विपत्ति की फसल काटी है। तुमने अपने झूठ का फल भोगा है। ऐसा इसलिये हुआ कि तुमने अपनी शक्ति और अपने सैनिकों पर विश्वास किया। [14]इसलिये तुम्हारी सेनायें युद्ध का शोर सुनेंगी और तुम्हारी गढ़ियाँ ढह जायेंगी। यह वैसा ही होगा जैसे बेतर्बेल नगर को युद्ध के समय शल्मन ने नष्ट कर दिया था। युद्ध के उस समय अपने बच्चों के साथ माताओं की हत्या कर दी गयी थी। [15]बेतेल में तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा क्योंकि तुमने बहुत से कुकर्म किये हैं। उस दिन के शुरु होने पर इस्राएल के राजा का पूरी तरह विनाश हो जायेगा।

इस्राएल यहोवा को भूल गया

11 "जब इस्राएल अभी बच्चा था, मैंने, (यहोवा ने) उसको प्रेम किया था। मैंने अपने बच्चे को मिस्र से बाहर बुला लिया था।

[2]किन्तु इस्राएलियों को मैंने जितना अधिक बुलाया वे मुझसे उतने ही अधिक दूर हुए थे। इस्राएल के लोगों ने बाल देवताओं को बलियाँ चढ़ाई थी। उन्होंने मूर्तियों के आगे धूप जलाई थी।

[3]एप्रैम को मैंने ही चलना सिखाया था! इस्राएल को मैंने गोद में उठाया था! और मैंने उन्हें स्वस्थ किया था! किन्तु वे इसे नहीं जानते हैं।

[4]मैंने उन्हें डोर बांध कर राह दिखाई, डोर–वह प्रेम की डोर थी। मैं उस ऐसे व्यक्ति सा था जिसने उन्हें स्वतंत्रता दिलाई, मैं नीचे की ओर झुका और मैंने उनको आहार दिया था।

[5]किन्तु इस्राएलियों ने परमेश्वर की ओर मुड़ने से मना कर दिया। सो वे मिस्र चले जायेंगे और अश्शूर का राजा उनका राजा बन जायेगा। [6]उनके नगरों के ऊपर तलवार लटका करेगी। वह तलवार उनके शक्तिशाली लोगों का वध कर देगी। वह उनके मुखियाओं का काम तमाम कर देगी।

[7]मेरे लोग मेरे लौट आने की बाट जोहेंगे, वे ऊपर वाले परमेश्वर को पुकारेंगे किन्तु परमेश्वर उनकी सहायता नहीं करेगा।

यहोवा इस्राएल का विनाश नहीं चाहता

[8]हे एप्रैम, मैं तुझको त्याग देना नहीं चाहता हूँ। हे इस्राएल, मैं चाहता हूँ कि मैं तेरी रक्षा करुँ। मैं तुझ को अदना सा कर देना नहीं चाहता हूँ! मैं नहीं चाहता हूँ कि तुझ को सबोयीम सा बना दूँ! मैं अपना मन बदल रहा हूँ तेरे लिये प्रेम बहुत ही तीव्र है।

[9]मैं निज भीषण क्रोध को जीतने नहीं दूँगा। मैं फिर एप्रैम को नष्ट नहीं कर दूँगा। मैं तो परमेश्वर हूँ मैं कोई मनुष्य नहीं। मैं तो वह पवित्र हूँ, मैं तेरे साथ हूँ। मैं अपने क्रोध को नहीं दिखाऊँगा।

[10]मैं सिंह की दहाड़ सी गर्जना करूँगा। मैं गर्जना करूँगा और मेरी संताने पास आयेंगी और मेरे पीछे चलेंगी। मेरी संताने जो भय से थर-थर कांप रहीं है, पश्चिम से आयेंगी।

[11]वे कंपकंपाते पक्षियों सी मिस्र से आयेंगी। वे कांपते कपोत सी अश्शूर की धरती से आयेंगी और मैं उन्हें उनके घर वापस ले जाऊँगा।" यहोवा ने यह कहा था।

[12]एप्रैम ने मुझे झूठे देवताओं से ढक दिया। इस्राएल के लोगों ने रहस्यमयी योजनायें रच डालीं। किन्तु अभी भी यहूदा एल के साथ था। यहूदा पवित्रों के प्रति सच्चा था।

यहोवा इस्राएल के विरुद्ध है

12 एप्रैम अपना समय नष्ट करता रहता है। इस्राएल सारे दिन, "हवा के पीछे भागता रहता है।" लोग अधिक से अधिक झूठ बोलते रहते हैं, वे अधिक से अधिक चोरियाँ करते रहते हैं। अश्शूर के साथ उन्होंने सन्धि की हुई है और वे अपने जैतून के तेल को मिस्र ले जा रहे हैं।

[2]यहोवा कहता है, "इस्राएल के विरोध में मेरा एक अभियोग है। याकूब ने जो कर्म किये हैं, उसे उनके लिए दण्ड दिया जाना चाहिये। अपने किये कुकर्मो के लिये, उसे निश्चय ही दण्ड दिया जाना चाहिये। [3]अभी याकूब अपनी माता के गर्भ में ही था कि उसने अपने भाई के साथ चालबाजियाँ शुरु कर दीं। याकूब एक शक्तिशाली युवक था और उस समय उसने परमेश्वर से युद्ध किया। [4]याकूब ने परमेश्वर के स्वर्गदूत से कुश्ती लड़ी और उससे जीत गया। उसने पुकारा और कृपा करने के लिये विनती की। यह बेतेल में घटा था। उसी स्थान पर उसने हमसे बातचीत की थी। [5]हाँ, यहोवा सेनाओं का परमेश्वर है। उसका नाम यहोवा है। [6]सो अपने परमेश्वर की ओर लौट आओ। उसके प्रति सच्चे बनो। उचित कर्म करो! अपने परमेश्वर पर सदा भरोसा रखो!

[7]"याकूब एक सचमुच का व्यापारी है। वह अपने मित्रों तक को छलता है! उसकी तराजू तक झूठी है। [8]एप्रैम ने कहा, 'मैं धनवान हूँ! मैंने सच्ची सम्पत्ति पा ली है। मेरे अपराधों का किसी व्यक्ति को पता ही नहीं चलेगा। मेरे पापों को कोई व्यक्ति जान ही नहीं पायेगा।'

[9]"किन्तु मैं तो तभी से तुम्हारा परमेश्वर यहोवा रहा हूँ जब तुम मिस्र की धरती पर हुआ करते थे। मैं तुझे तम्बुओं में वैसे ही रखूँगा जैसे तू मिलाप के तम्बू के अवसर पर रहा करता था। [10]मैंने नबियों से बात की। मैंने उन्हें अनेक दर्शन दिये। मैंने नबियों को तुम्हें अपने पाठ पढ़ाने के बहुत से तरीके दिये। [11]किन्तु गिलाद में फिर भी पाप है। वहाँ व्यर्थ की अनेक वस्तुएँ हैं। गिलाद में लोग बैलों की बलियाँ अर्पित करते हैं। उनकी बहुत सी वेदियाँ इस प्रकार की हैं, जैसे जुते हुए खेत में मिट्टी की पंक्तियाँ हो।

[12]"याकूब आराम की ओर भाग गया था। इस स्थान पर इस्राएल (याकूब) ने पत्नी के लिए मजदूरी की थी। दूसरी पत्नी प्राप्त करने के लिए उसने मेढ़े रखी थीं। [13]किन्तु यहोवा एक नबी के द्वारा इस्राएल को मिस्र से ले आया। यहोवा ने एक नबी के द्वारा इस्राएल को सुरक्षित रखा। [14]किन्तु एप्रैम ने यहोवा को बहुत अधिक कुपित कर दिया। एप्रैम ने बहुत से लोगों को मार डाला। सो उसके अपराधों के लिए उसको दण्ड दिया जायेगा। उसका स्वामी (यहोवा) उससे उसकी लज्जा सहन करवायेगा।'

इस्राएल ने अपना नाश स्वयं किया

13 "एप्रैम ने स्वयं को इस्राएल में अत्यन्त महत्वपूर्ण बना लिया। एप्रैम जब बोला करता था, तो लोग भय से थरथर काँपा करते थे किन्तु एप्रैम ने पाप किये उसने बाल को पूजना शुरू कर दिया। [2]फिर इस्राएल अधिक से अधिक पाप करने लगा। उन्होंने अपने लिये मूर्तियाँ बनाई। कारीगर चाँदी से उन सुन्दर मूर्तियों को बनाने लगे और फिर वे लोग अपने उन मूर्तियों से बातें करने लगे! वे लोग उन मूर्तियों के आगे बलियाँ चढ़ाते हैं। सोने से उन बछड़ों को वे चूमा करते हैं। [3]इसी कारण वे लोग शीघ्र ही नष्ट हो जायेंगे। वे लोग सुबह की उस धुंध के समान होंगे जो आती है और फिर शीघ्र ही गायब हो जाती है। इस्राएली उस भूसे के समान होंगे जिसे खलिहान में उड़ाया जाता है। इस्राएली उस धुँए के समान होंगे जो किसी चिमनी से उठता है और लुप्त हो जाता है।

[4]"तुम लोग जब मिस्र में हुआ करते थे, मैं तभी से तुम्हारा परमेश्वर यहोवा रहा हूँ। मुझे छोड़ तुम किसी दूसरे परमेश्वर को नहीं जानते थे। वह मैं ही हूँ जिसने तुम्हें बचाया था। [5]मरुभूमि में मैं तुम्हें जानता था उस सूखी धरती में मैं तुम्हें जानता था। [6]मैंने इस्राएलियों को खाने को दिया। उन्होंने वह भोजन खाया। अपना पेट भर कर वे तृप्त हो गये। उन्हें अभिमान हो गया और वे मुझे भूल गये!

[7]"मैं इसीलिये उनके लिए सिंह के समान बन जाऊँगा। मैं राह किनारे घात लगाये चीता जैसा हो जाऊँगा। [8]मैं उन पर उस रींछनी की तरह झपट पड़ूँगा, जिससे उसके बच्चे छीन लिये गये हों। मैं उन पर हमला करूँगा। मैं उनकी छातियाँ चीर फाड़ दूँगा। मैं उस सिंह या किसी दूसरे ऐसे हिंसक पशु के समान हो जाऊँगा जो अपने शिकार को फाड़ कर खा रहा होता है।"

परमेश्वर के कोप से इस्राएल को कोई नहीं बचा सकता

[9]"हे इस्राएल, मैंने तेरी रक्षा की थी, किन्तु तूने मुझसे मुख मोड़ लिया। सो अब मैं तेरा नाश करूँगा! [10]कहाँ है तेरा राजा? तेरे सभी नगरों में वह तुझे नहीं बचा सकता है! कहाँ हैं तेरे न्यायाधीश? तूने उनसे यह कहते हुए याचना की थी, 'मुझे एक राजा और अनेक प्रमुख दो।' [11]मैं क्रोधित हुआ और मैंने तुम्हें एक राजा दे दिया। मैं और अधिक क्रोधित हुआ और मैंने तुम से उसे छीन लिया।

[12]"एप्रैम ने निज अपराध छिपाने का जतन किया; उसने सोचा था कि उसके पाप गुप्त हैं। किन्तु उन बातों के लिये उसको दण्ड दिया जायेगा।

[13]"उसका दण्ड ऐसा होगा जैसे कोई स्त्री प्रसव पीड़ा भोगती है; किन्तु वह पुत्र बुद्धिमान नहीं होगा उसकी जन्म की बेला आयेगी किन्तु वह पुत्र बच नहीं पायेगा।

[14]"क्या मैं उन्हें कब्र की शक्ति से बचा लूँ? क्या मैं उनको मृत्यु से मुक्त करा लूँ? हे मृत्यु, कहाँ है तेरी व्याधियाँ? हे कब्र, तेरी शक्ति कहाँ है? मेरी दृष्टि से करुणा छिपा रहेगी!

[15]"इस्राएल निज बंधुओं के बीच बढ रहा है किन्तु पवन पुरवाई आयेगी। वह यहोवा को आंधी मरुस्थल से आयेगी, और इस्राएल के कुएँ सूखेंगे। उसका पानी का सोता सूख जायेगा। वह आँधी इस्राएल के खजाने से हर मूल्यवान वस्तु को ले जायेगी।

[16]"शोमरोन को दण्ड दिया जायेगा क्योंकि उसने अपने परमेश्वर से मुख फेरा था। इस्राएली तलवारों से मार दिये जायेंगे उनकी संतानों के चिथड़े उड़ा दिये जायेंगे। उनकी गर्भवती स्त्रियाँ चीर कर खोल दी जायेंगी।"

यहोवा की ओर मुड़ना

14 हे इस्राएल, तेरा पतन हुआ और तूने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया। इसलिये अब तू अपने परमेश्वर यहोवा की ओर लौट आ। [2]जो बातें तुझे कहनी हैं, उनके बारे में सोच और यहोवा की ओर लौट आ। उससे कह, "हमारे पापों को दूर कर और उन अच्छी बातों को स्वीकार कर जिन्हें हम कर रहे हैं। हम अपने मुख से तेरी स्तुति करेंगे।"

[3]अश्शूर हमें बचा नहीं पायेगा। हम घोड़ों पर सवारी नहीं करेंगे। हम फिर अपने ही हाथों से बनाई हुई वस्तुओं को, "अपना परमेश्वर" नहीं कहेंगे। क्यों? क्योंकि बिना माँ–बाप के अनाथ बच्चों पर दया दिखानेवाला बस तू ही है।

यहोवा इस्राएल को क्षमा करेगा

[4] यहोवा कहता है,
"उन्होंने मुझे त्याग दिया।

मैं उन्हें इस के लिये क्षमा कर दूँगा।
मैं उन्हें मुक्त भाव से प्रेम करूँगा।
मैं अब उन पर क्रोधित नहीं हूँ।
5 मैं इस्राएल के निमित्त ओस सा बनूँगा।
इस्राएल कुमुदिनी के फूल सा खिलेगा।
उसकी बढ़वार लबानोन के देवदार
वृक्षों सी होगी।
6 उसकी शाखायें जैतून के पेड़ सी बढ़ेंगी
वह सुन्दर हो जायेगा।
वह उस सुंगध सा होगा जो लबानोन के
देवदार वृक्षों से आती है।
7 इस्राएल के लोग फिर से मेरे संरक्षण में रहेंगे।
उनकी बढवार अन्न की होगी,
वे अंगूर की बेल से फलें–फूलेंगे।
वे ऐसे सर्वप्रिय होंगे
जैसे लबानोन का दाखमधु है।"

इस्राएल को मूर्तियों के विषय में यहोवा की चेतावनी

8 "हे एप्रैम, मुझ यहोवा को इन मूर्तियों से
कोई सरोकार नहीं है।
मैं ही ऐसा हूँ जो तुम्हारी प्रार्थनाओं का
उत्तर देता हूँ।
मैं ही ऐसा हूँ जो ऊपर से
तुम्हारी रखवाली करता हूँ।
मैं हरे–भरे सनोवर के पेड़ सा हूँ।
तुम्हारे फल मुझसे ही आते हैं।"

अन्तिम सम्मति

9 ये बातें बुद्धिमान व्यक्ति को समझनी चाहियें,
ये बातें किसी चतुर व्यक्ति को जाननी चाहियें।
यहोवा की राहें उचित है।
सज्जन उसी रीति से जीएंगे;
और दुष्ट उन्हीं से मर जायेंगे।

योएल

टिड्डियाँ फसलों को खा जायेंगी

1 पतूएल के पुत्र योएल ने यहोवा से इस संदेश को प्राप्त किया:

[2]मुखियों, इस सन्देश को सुनो! हे इस धरती के निवासियों, तुम सभी मेरी बात सुनो। क्या तुम्हारे जीवन काल में पहले कभी कोई ऐसी बात घटी है? नहीं! क्या तुम्हारे पुरखों के समय में कभी कोई ऐसी बात घटी है? नहीं!

[3]इन बातों के बारे में तुम अपने बच्चों को बताया करोगे और तुम्हारे बच्चे ये बातें अपने बच्चों को बतायेंगे और तुम्हारे नाती पोते ये बातें अगली पीढ़ियों को बतायेंगे।

[4]कुतरती हुई टिड्डियों से जो कुछ भी बचा, उसको भिन्नाती हुई टिड्डियों ने खा लिया और भिन्नाती टिड्डियों से जो कुछ बचा, उसको फुदकती टिड्डियों ने खा लिया है और फुदकती टिड्डियों से जो कुछ रह गया, उसे विनाशकारी टिड्डियों ने चट कर डाला है!

टिड्डियों का आना

[5]ओ मतवालों, जागो, उठो और रोओ! ओ सभी लोगों दाखमधु पीने वालों, विलाप करो। क्योंकि तुम्हारी मधुर दाखमधु अब समाप्त हो चुकी है। अब तुम, उसका नया स्वाद नहीं पाओगे।

[6]देखो, विशाल शक्तिशाली लोग मेरे देश पर आक्रमण करने को आ रहे हैं। उनके साथ अनगिनत सैनिक हैं। वे "टिड्डे" (शत्रु के सैनिक) तुम्हें फाड़ डालनें में समर्थ होंगे! उनके दाँत सिंह के दाँतों जैसे हैं।

[7]वे "टिड्डे" मेरे बागों के अंगूर चट कर जायेंगे! वे मेरे अंजीर के पेड़ नष्ट कर देंगे। वे मेरे पेड़ों को छाल तक चट कर जायेंगे। उनकी टहनियाँ पीली पड़ जायेंगी और वे पेड़ सूख जायेंगे।

लोगों का विलाप

[8]उस युवती सा रोओ, जिसका विवाह होने को है और जिसने शोक वस्त्र पहने हों जिसका भावी पति शादी से पहले ही मारा गया हो।

[9]हे याजकों! हे यहोवा के सेवकों, विलाप करो! क्योंकि अब यहोवा के मन्दिर में न तो अनाज होगा और न ही पेय भेंटे चढ़ेंगी।

[10]खेत उजड़ गये हैं। यहाँ तक कि धरती भी रोती है क्योंकि अनाज नष्ट हुआ है, नया दाखमधु सूख गया है और जैतून का तेल समाप्त हो गया है।

[11]हे किसानो, तुम दुःखी होवो! हे अंगूर के बागवानों, जोर से विलाप करो! तुम गेहूँ और जौ के लिये भी विलाप करो! क्योंकि खेत की फसल नष्ट हुई है।

[12]अंगूर की बेलें सूख गयी हैं और अंजीर के पेड़ मुरझा रहे हैं। अनार के पेड़, खजूर के पेड़ और सेब के पेड़ –बगीचे के ये सभी पेड़ सूख गये हैं। लोगों के बीच में प्रसन्नता मर गयी है।

[13]हे याजकों, शोक वस्त्र धारण करो, जोर से विलाप करो। हे वेदी के सेवकों, जोर से विलाप करो। हे मेरे परमेश्वर के दासों, अपने शोक वस्त्रों में तुम सो जाओगे। क्योंकि अब वहाँ अन्न और पेय भेंटे परमेश्वर के मन्दिर में नहीं होंगी।

टिड्डियों से भयानक विनाश

[14]लोगों को बता दो कि एक ऐसा समय आयेगा जब भोजन नहीं किया जायेगा। एक विशेष सभा के लिए लोगों को बुला लो। सभा में मुखियाओं और उस धरती पर रहने वाले सभी लोगों को इकट्ठा करो। उन्हें अपने यहोवा परमेश्वर के मंदिर में ले आओ और यहोवा से विनती करो। [15]दुःखी रहो क्योंकि यहोवा का वह विशेष दिन आने को है। उस समय दण्ड इस प्रकार आयेगा जैसे

सर्वशक्तिमान परमेश्वर का कोई आक्रमण हो। [16]हमारा भोजन हमारे देखते–देखते चट हो गया है। हमारे परमेश्वर के मंदिर से आनन्द और प्रसन्नता जाती रही है। [17]हमने बीज तो बोये थे, किन्तु वे धरती में पड़े–पड़े सूख कर मर गये हैं। हमारे पौधे सूख कर मर गये हैं। हमारे खत्ते खाली पड़े हैं और ढह रहे हैं।

[18]हमारे पशु भूख से कराह रहे हैं। हमारे मवेशी खोये–खोये से इधर–उधर घूमते हैं। उनके पास खाने को घास नहीं हैं। भेड़ें मर रही हैं। [19]हे यहोवा, मैं तेरी दुहाई दे रहा हूँ। क्योंकि हमारी चरागाहों को आग ने रेगिस्तान बना दिया है। बगीचों के सभी पेड़ लपटों से झुलस गये हैं। [20]जंगली पशु भी तेरी सहायता चाहते हैं। नदियाँ सूख गयी हैं। कहीं पानी का नाम नहीं! आग ने हमारी हरी–भरी चरागाहों को मरुभूमि में बदल दिया है।

यहोवा का दिन जो आने को है

2 सिय्योन पर नरसिंगा फूँको। मेरे पवित्र पर्वत पर चेतावनी सुनाओ। उन सभी लोगों को जो इस धरती पर रहते हैं, तुम भय से कँपा दो। यहोवा का विशेष दिन आ रहा है। यहोवा का विशेष दिन पास ही आ पहुँचा है।

[2]वह दिन अन्धकार भरा होगा, वह दिन उदासी का होगा, वह दिन काला होगा और वह दिन दुर्दिन होगा। भोर की पहली किरण के साथ तुम्हें पहाड़ पर सेना फैलती हुई दिखाई देगी। वह सेना विशाल और शक्तिशाली भी होगी। ऐसा पहले तो कभी भी घटा नहीं था और आगे भी कभी ऐसा नहीं घटेगा, न ही भूत काल में, न ही भविष्य में।

[3]वह सेना इस धरती को धधकती आग जैसे तहस–नहस कर देगी। सेना के आगे की भूमि वैसी हो जायेगी जैसे एदेन का बगीचा और सेना के पीछे की धरती वैसी हो जायेगी जैसे उजड़ा हुआ रेगिस्तान हो। उनसे कुछ भी नहीं बचेगा।

[4]वे घोड़े की तरह दिखते हैं और ऐसे दौड़ते हैं जैसे युद्ध के घोड़े हों।

[5]उन पर कान दो। वह नाद ऐसा है जैसे पहाड़ पर चढ़ते रथों का घर्र–घर्र नाद हो। वह नाद ऐसा है जैसे भूसे को चटपटाती हुई लपटें जला रही हों। वे लोग शक्तिशाली हैं। वे युद्ध को तत्पर हैं।

[6]इस सेना के आगे लोग भय से काँपते हैं। उनके मुख डर से पीले पड़ जाते हैं।

[7]वे सैनिक बहुत तेज दौड़ते हैं। वे सैनिक दीवारों पर चढ़ते हैं। प्रत्येक सैनिक सीधा ही आगे बढ़ जाता है। वे अपने मार्ग से जरा भी नहीं हटते हैं।

[8]वे एक दूसरे को आपस में नहीं धकेलते हैं। हर एक सैनिक अपनी राह पर चलता है। यदि कोई सैनिक आघात पा करके गिर जाता है तो भी वे दूसरे सैनिक आगे ही बढ़ते रहते हैं।

[9]वे नगर पर चढ़ जाते हैं और बहुत जल्दी ही परकोटा फलांग जाते हैं। वे भवनों पर चढ़ जाते और खिड़कियों से होकर भीतर घुस जाते हैं जैसे कोई चोर घुस जाये।

[10]धरती और आकाश तक उनके सामने काँपते हैं। सूरज और चाँद भी काले पड़ जाते हैं और तारे चमकना छोड़ देते हैं।

[11]यहोवा जोर से अपनी सेना को पुकारता है। उसकी छावनी विशाल है। वह सेना उसके आदेशों को मानती है। वह सेना अति बलशाली है। यहोवा का विशेष दिन महान और भयानक है। कोई भी व्यक्ति उसे रोक नहीं सकता।

यहोवा लोगों से बदलने को कहता है

[12]यहोवा का यह सन्देश है: “अपने पूर्ण मन के साथ अब मेरे पास लौट आओ। तुमने बुरे कर्म किये हैं। विलाप करो, विलाप करो और निराहार रहो!

[13]“अरे वस्त्र नहीं, तुम अपने ही मन को फाड़ो। तुम लौट कर अपने परमेश्वर यहोवा के पास जाओ। वह दयालु और करुणापूर्ण है। उसको शीघ्र क्रोध नहीं आता है। उसका प्रेम महान है। सम्भव है जो क्रोध दण्ड उसने तुम्हारे लिये सोचा है, उसके लिये वह अपना मन बदल ले।

[14]“कौन जानता है, सम्भव है यहोवा अपना मन बदल ले और यह भी सम्भव है कि वह तुम्हारे लिये कोई वरदान छोड़ जाये। फिर तुम अपने परमेश्वर यहोवा को अन्नबलि और पेय भेंट अर्पित कर पाओगे।

यहोवा से प्रार्थना करो

[15]“सिय्योन पर नरसिंगा फूँको। उस विशेष सभा के लिये बुलावा दो। उस उपवास के विशेष समय का बुलावा दो।

[16]"तुम, लोगों को जुटाओ। उस विशेष सभा के लिये उन्हें बुलाओ। तुम बूढ़े पुरुषों को एकत्र करो और बच्चे भी साथ एकत्र करो। वे छोटे शिशु भी जो अभी भी स्तन पीते हो, लाओ। नयी दुल्हिन को और उसके पति को सीधे उनके शयन–कक्षों से बुलाओ।

[17]"हे याजकों और यहोवा के दासों, आँगन और वेदी के बीच में बुहार करो। सभी लोगों ये बातें तुम्हें कहनी चाहिये: "यहोवा ने तुम्हारे लोगों पर करुणा की। तुम अपने लोगों को लज्जित मत होने दो। तुम अपने लोगों को दूसरों के बीच में हँसी का पात्र मत बनने दो। तुम दूसरे देशों को हँसते हुए कहने का अवसर मत दो कि उनका परमेश्वर कहाँ है?"

यहोवा तुम्हें तुम्हारी धरती वापस दिलवायेगा

[18]फिर यहोवा अपनी धरती के बारे में बहुत अधिक चिन्तित हुआ। उसे अपने लोगों पर दया आयी।

[19]यहोवा ने अपने लोगों से कहा। वह बोला, "मैं तुम्हारे लिये अन्न, दाखमधु और तेल भिजवाऊँगा। ये तुमको भरपूर मिलेंगे। मैं तुमको अब और अधिक जातियों के बीच में लज्जित नहीं करूँगा।

[20]"नहीं, मैं तुम्हारी धरती को त्यागने के लिये उन लोगों (उत्तर अथवा बाबुल) पर दबाव दूँगा। मैं उनको सूखी और उजड़ी हुई धरती पर भेजूँगा। उनमें से कुछ पूर्व के सागर में जोयेंगे और उनमें से कुछ पश्चिमी समुद्र में जायेंगे। उन शत्रुओं ने ऐसे भयानक कर्म किये हैं। वे लोग वैसे हो जायेंगे जैसे सड़ती हुई मृत वस्तुएँ होती हैं। वहाँ ऐसी भयानक दुर्गन्ध होगी।"

धरती को फिर नया बनाया जायेगा

[21]हे धरती, तू भयभीत मत हो। प्रसन्न हो जा और आनन्द से भर जा क्योंकि यहोवा बड़े काम करने को है।

[22]ओ मैदानी पशुओं, तुम भय त्यागो। जंगल की चारागाहें घास उगाया करेंगी। वृक्ष फल देने लगेंगे। अंजीर के पेड़ और अंगूर की बेलें भरपूर फल देंगे।

[23]सो, हे सिय्योन के लोगों, प्रसन्न रहो। अपने परमेश्वर यहोवा में आनन्द से भर जाओ। क्योंकि वह तुम्हारे साथ भला करेगा और तुम्हें वर्षा देगा। वह तुम्हें अगली वर्षा देगा और वह तुझे पिछली वर्षा भी देगा जैसे पहले दिया करता था।

[24]तुम्हारे ये खलिहान गेहूँ से भर जायेंगे और तुम्हारे कुप्पे दाखमधु और जैतून के तेल से उफनने लगेंगे।

[25]मुझ यहोवा ने अपनी सशक्त सेना तुम्हारे विरोध में भेजी थी। वे भिन्नाती हुई टिड्डियाँ, फुदकती हुई टिड्डियाँ, विनाशकारी टिड्डियाँ और कुतरती टिड्डियाँ तुम्हारी वस्तुएँ खा गये। किन्तु मैं, यहोवा उन विपत्तियों के वर्षों के बदले में फिर से तुम्हें और वर्ष दूँगा।

[26]फिर तुम्हारे पास खाने को भरपूर होगा। तुम सन्तुष्ट होओगे। अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का तुम गुणगान करोगे। उसने तुम्हारे लिये अद्भुत बातें की हैं। अब मेरे लोग फिर कभी लज्जित न होंगे।

[27]तुमको पता चल जायेगा कि मैं इस्राएली लोगों के साथ हूँ। तुमको पता चल जायेगा कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ और कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है। मेरे लोग फिर कभी लज्जित न होंगे।

सभी लोगों पर अपनी आत्मा उंडेलने की यहोवा की प्रतिज्ञा

[28]इस के बाद मैं तुम सब पर अपनी आत्मा उंडेलूँगा। तुम्हारे पुत्र–पुत्रियाँ भविष्यवाणी करेंगे। तुम्हारे बूढ़े दिव्य स्वप्नों को देखेंगे। तुम्हारे युवक दर्शन करेंगे।

[29]उस समय मैं अपनी आत्मा दास–दासियों पर उंडेलूँगा।

[30]धरती पर और आकाश में मैं अद्भुत चिन्ह प्रकट करूँगा। वहाँ खून, आग और गहरा धुआँ होगा।

[31]सूरज अंधकार में बदल जायेगा। चाँद भी खून के रंग में बदलेगा और फिर यहोवा का महान और भयानक दिन आयेगा!

[32]तब कोई भी ऐसा व्यक्ति जो यहोवा का नाम लेगा, छुटकारा पायेगा। सिय्योन के पहाड़ पर और यरूशलेम में वे लोग बसेंगे जो बचाये गये हैं। यह ठीक वैसा ही होगा जैसा यहोवा ने बताया है। उन बचाये गये लोगों में बस वे ही लोग होंगे जिन्हें यहोवा ने बुलाया था।

यहूदा के शत्रुओं को यहोवा द्वारा दण्ड दिये जाने का वचन

3 "उन दिनों और उस समय, मैं यहूदा और यरूशलेम को बंधन मुक्त कराकर देश निकाले से वापस ले आऊँगा। [2]मैं सभी जातियों को भी एकत्र करूँगा।

इन सभी जातियों को मैं यहोशापात की तराई में इकट्ठा करूँगा और वहीं मैं उनका न्याय करूँगा। उन जातियों ने मेरे इस्राएली लोगों को तितर–बितर कर दिया था। दूसरी जातियों के बीच रहने के लिये उन्होंने उन्हें विवश किया था। इसीलिए मैं उन जातियों को दण्ड दूँगा। उन जातियों ने मेरी धरती का बँटवारा कर दिया था। [3]मेरे लोगों के लिये उन्होंने पासे फेंके थे। उन्होंने एक लड़के को बेचकर उसके बदले एक वेश्या खरीदी और दाखमधु के बदले लड़की बेच डाली

[4]"हे सोर, सीदोन, और पलिश्तीन के सभी प्रदेशों! तुम मेरे लिये कोई महत्व नहीं रखते! क्या तुम मुझे मेरे किसी कर्म के लिए दण्ड दे रहे हो? हो सकता है तुम यह सोच रहे हो कि तुम मुझे दण्ड दे रहे हो किन्तु शीघ्र ही मैं ही तुम्हें दण्ड देने वाला हूँ। [5]तुमने मेरा चाँदी, सोना लूट लिया। मेरे बहुमूल्य खजानों को लेकर तुमने अपने मंदिरों में रख लिया।

[6]"यहूदा और यरूशलेम के लोगों को तुमने यूनानियों के हाथ बेच दिया और इस प्रकार तुम उन्हें उनकी धरती से बहुत दूर ले गये। [7]उस सुदूर देश में तुमने मेरे लोगों को भेज दिया। किन्तु मैं उन्हें लौटा कर वापस लाऊँगा और तुमने जो कुछ किया है, उसका तुम्हें दण्ड दूँगा [8]मैं यहूदा के लोगों को तुम्हारे पुत्र–पुत्रियाँ बेच दूँगा। और फिर वे उन्हें शबाइ लोगों को बेच देंगे।" ये बातें यहोवा ने कही थीं।

युद्ध की तैयारी करो

[9]लोगों को यह बता दो–युद्ध को तैयार रहो! शूरवीरों को जगाओ, सारे योद्धाओं को अपने पास एकत्र करो। उन्हें उठ खड़ा होने दो!

[10]अपने हलों की फालियों को पीट कर तलवार बनाओं और अपनी डांगियों को तुम भालों में बदल लो। ऐसा करो कि दुर्बल कहने लगे कि "मैं एक शूरवीर हूँ।"

[11]हे सभी जातियों के लोगों, जल्दी करो! वहाँ एकत्र हो जाओ। हे यहोवा, तू भी अपने प्रबल वीरों को ले आ!

[12]हे जातियों! जागो! यहोशापात की घाटी में आ जाओ! मैं वहाँ बैठकर सभी आसपास के देशों का न्याय करूँगा।

[13]तुम हँसुआ ले आओ, क्योंकि पकी फसल खड़ी है। आओ, तुम अंगूर रौंदो क्योंकि अंगूर का गरठ भरा हुआ है। घड़े भर जायेंगे और वे बाहर उफनेंगे क्योंकि उनका पाप बहुत बड़ा है।

[14]उस न्याय की घाटी में बहुत–बहुत सारे लोग हैं। उस न्याय की घाटी में यहोवा का दिन आने वाला है।

[15]सूरज चाँद काले पड़ जायेंगे। तारे चमकना छोड़ देंगे।

[16]परमेश्वर यहोवा सिय्योन से गरजेगा। वह यरूशलेम से गरजेगा। आकाश और धरती काँप–काँप जायेंगे किन्तु अपने लोगों के लिये परमेश्वर यहोवा शरणस्थल होगा। वह इस्राएल के लोगों का सुरक्षा स्थान बनेगा।

[17]तब तुम जान जाओगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं सिय्योन पर बसता हूँ जो मेरा पवित्र पर्वत है। यरूशलेम पवित्र बन जायेगा। फिर पराये कभी भी उसमें से होकर नहीं जा पायेंगे।

यहूदा के लिए नया जीवन का वचन

18 उस दिन मधुर दाखमधु पर्वत से टपकेगा।
पहाड़ों से दूध की नदियाँ और यहूदा की सभी
सूखी नदियाँ बहते हुए जल से भर जायेंगी।
यहोवा के मन्दिर से एक फव्वारा फूटेगा जो
शित्तीम की घाटी को पानी से सींचेगा।

19 मिस्र खाली हो जायेगा और एदोम
एक उजाड़ हो जायेगा।
क्योंकि वे यहूदा के लोगों के संग
निर्दयी ही रहे थे।
उन्होंने अपने ही देश में निरपराध
लोगों का वध किया था।

20 किन्तु यहूदा में लोग सदा ही बसे रहेंगे और
यरूशलेम में लोग पीढ़ियों तक रहेंगे।

21 उन लोगों ने मेरे लोगों का वध किया था
इसलिये निश्चय ही मैं उन्हें दण्ड दूँगा।
क्योंकि परमेश्वर यहोवा का
सिय्योन पर निवासस्थान है!

आमोस

प्रस्तावना

1 आमोस का सन्देश। आमोस तकोई नगर का गड़ेरिया था। यहूदा पर राजा उज्जिय्याह के शासन काल और इस्राएल पर योआश के पुत्र राजा यारोबाम के शासन काल में आमोस को इस्राएल के बारे में (अन्त)दर्शन हुआ। यह भूकम्प के दो वर्ष पूर्व हुआ।

अराम के विरुद्ध दण्ड

[2]आमोस ने कहा: यहोवा सिय्योन में सिंह की तरह दहाड़ेगा। यहोवा की दहाड़ यरूशलेम से होगी। गड़ेरियों के हरे मैदान सूख जायेंगे। यहाँ तक कि कर्म्मेल पर्वत भी सूखेगा।

[3]यह सब यहोवा कहता है: "मैं दमिश्क के लोगों को उनके द्वारा किये गये अनेक अपराधों का दण्ड अवश्य दूँगा। क्यों? क्योंकि उन्होंने गिलाद को, अन्न को भूसे से अलग करने वाले लोहे के औजारों से पीटा। [4]अत: मैं हजाएल के घर (सिरिया) में आग लगाऊँगा, और वह आग बेन्हदद के ऊँचे किलों को नष्ट करेगी।

[5]"मैं दमिश्क के द्वार की मजबूत छड़ों को भी तोड़ दूँगा। आवेन की घाटी में सिंहासन पर बैठने वाले व्यक्ति को भी मैं नष्ट करूँगा। एदेन में राजदण्ड धारण करने वाले राजा को भी मैं नष्ट करूँगा। अराम के लोग पराजित होंगे। लोग उन्हें बन्दी बनाकर कीर देश में ले जाएंगे।" यहोवा ने वह सब कहा।

पलिश्तियों को दण्ड

[6]यहोवा यह कहता है: "मैं निश्चय ही अज्जा के लोगों द्वारा किये गए अनेक पापों के लिए उन्हें दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि उन्होंने लोगों के एक पूरे राष्ट्र को पकड़ा और दास के रूप में एदोम को भेजा था। [7]इसलिये मैं अज्जा नगर की दीवार पर आग लगाऊँगा। यह आग अज्जा के महत्त्वपूर्ण किलों को नष्ट करेगी [8]मैं अशदोद में राजसिंहासन पर बैठने वाले व्यक्ति को नष्ट करुँगा। मैं अश्कलोन में राजदण्ड धारण करने वाले राजा को नष्ट करुँगा। मैं एक्रोन के लोगों को दण्ड दूँगा। तब अभी तक जीवित बचे पलिश्ती मरेंगे।" परमेश्वर यहोवा ने वह सब कहा।

फनूशिया को दण्ड

[9] यहोवा यह सब कहता है: "मैं निश्चय ही सोर के लोगों को उनके द्वारा किये गए अनेक अपराधों के लिए दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि उन्होंने लोगों के एक पूरे राष्ट्र को पकड़ा और एदोम को दास के रूप में भेजा था। उन्होंने उस वाचा को याद नहीं रखा जिसे उन्होंने अपने भाईयों (इस्राएल) के साथ किया था [10]अत: मैं सोर की दीवारों पर आग लगाऊँगा। वह आग सोर की ऊँची मीनारों को नष्ट करेगी।"

एदोमियों को दण्ड

[11]यहोवा यह सब कहता है: "मैं निश्चय ही एदोम के लोगों को उनके द्वारा किये गए अनेक अपराधों के लिये दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि एदोम ने अपने भाई (इस्राएल) का पीछा तलवार लेकर किया। एदोम ने तनिक भी दया न दिखाई। एदोम का क्रोध बराबर बना रहा। वह जंगली जानवर की तरह इस्राएल को चीर–फाड़ करता रहा। [12]अत: मैं तेमान में आग लगाऊँगा। वह आग बोस्रा के ऊँचे किलों को नष्ट करेगी।"

अम्मोनियों को दण्ड

[13]यहोवा यह सब कहता है: "मैं निश्चय ही अम्मोन के लोगों को उनके द्वारा किये गये अनेक अपराधों के लिये दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि उन्होंने गिलाद में गर्भवती

स्त्रियों को मार डाला। अम्मोनी लोगों ने यह इसलिये किया कि वे उस देश को ले सकें और अपने देश को बड़ा कर सकें। [14]अत: मैं रब्बा की दीवार पर आग लगाऊँगा। यह आग रब्बा के ऊँचे किलों को नष्ट करेगी। युद्ध के दिन यह आग लगेगी। यह आग एक ऐसे दिन लगेगी जब तूफ़ानी दिन में आँधियाँ चल रही होगी। [15]तब इनके राजा और प्रमुख पकड़े जाएंगे। वे सब एक साथ बन्दी बनाकर ले जाए जाएंगे।" यहोवा ने वह सब कहा है।

मोआब को दण्ड

2 यहोवा यह सब कहता है: "मैं मोआब के लोगों को इनके द्वारा किये गए अपराधों के लिए अवश्य दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि मोआब ने एदोम के राजा की हड्डियों को जलाकर चूना बनाया। [2]अत: मैं मोआब में आग लगाऊँगा और वह आग करिय्योत के ऊँचे किलों को नष्ट करेगी। वहाँ भयंकर चिल्लाहट और तुरही का घोष होगा, और मोआब मर जाएगा। [3]अत: मैं मोआब के राजाओं को समाप्त कर दूँगा और मैं मोआब के सभी प्रमुखों को मार डालूँगा।" यहोवा ने वह सब कहा।

यहूदा को दण्ड

[4]यहोवा यह कहता है: "मैं यहूदा को उसके द्वारा किये अनेकों अपराधों के लिये अवश्य दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि उन्होंने यहोवा के आदेशों को मानने से इन्कार किया। उन्होंने उनके आदेशों का पालन नहीं किया। उनके पूर्वजों ने झूठ पर विश्वास किया और उन झूठी बातों ने यहूदा के लोगों से परमेश्वर का अनुसरण करना छुड़ाया। [5] इसलिये मैं यहूदा में आग लगाऊँगा और यह आग यरूशलेम के ऊँचे किलों को नष्ट करेगी।"

इस्राएल को दण्ड

[6]यहोवा यह कहता है: "मैं इस्राएल को उनके द्वारा किये गए अनेकों अपराधों के लिये दण्ड अवश्य दूँगा। क्यों? क्योंकि उन्होंने चाँदी के चन्द टुकड़ों के लिये अच्छे और भोले-भाले लोगों को दास के रूप में बेचा। उन्होंने एक जोड़ी जूते के लिए गरीब लोगों को बेचा। [7]उन्होंने उन गरीब लोगों को धक्का दे मुँह के बल गिराया और वे उनको कुचलते हुये गए। उन्होंने कष्ट भोगते लोगों की एक न सुनी। पिताओं और पुत्रों ने एक ही युवती के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। उन्होंने मेरे पवित्र नाम को अपवित्र किया है। [8]उन्होंने गरीब लोगों के वस्त्रों को लिया और वे उन पर गलीचे की तरह तब तक बैठे जब तक वे वेदी पर पूजा करते रहे। उन्होंने गरीबों को उनके वस्त्र गिरवी रखकर सिक्के उधार दिये। उन्होंने लोगों को जुर्माना देने को मजबूर किया और उस जुर्माने की रकम से अपने परमेश्वर के मन्दिर में पीने के लिये दाखमधु खरीदी।

[9]"किन्तु मैंने ही उनके पहले एमोरियों को नष्ट किया था। एमोरी ऊँचे बरगद के पेड़ की तरह थे। वे उतने शक्तिशाली थे जितने बांज के पेड़। किन्तु मैंने उनके ऊपर के फल तथा उनके नीचे की जड़ें नष्ट कीं।

[10]"वह मैं ही था जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल कर लाया। चालीस वर्ष तक मैं तुम्हें मरुभूमि से होकर लाया। मैंने तुम्हें एमोरियों की भूमि पर कब्जा कर लेने में सहायता दी। [11] मैंने तुम्हारे कुछ पुत्रों को नबी बनाया। मैंने तुम्हारे युवकों में से कुछ को नाजीर बनाया। इस्राएल के लोगों, यह सत्य है।" यहोवा ने यह सब कहा। [12]"किन्तु तुम लोगों ने नाजीरों को दाखमधु पिलाई। तुमने नबियों को भविष्यवाणी करने से रोका। [13]तुम लोग मेरे लिये भारी बोझ की तरह हो। मैं उस गाड़ी की तरह हूँ जो अत्याधिक अनाज से लदी होने के कारण झुकी हो। [14]कोई भी व्यक्ति बचकर नहीं निकल पाएगा, यहाँ तक कि सर्वाधिक तेज दौड़ने वाला भी। शक्तिशाली पुरुष भी पर्याप्त शक्तिशाली नहीं रहेंगे। सैनिक अपने को नहीं बचा पाएँगे। [15]धनुष और बाण वाले भी नहीं बच पाएंगे। तेज दौड़ने वाले भी नहीं बच निकलेंगे। घुड़सवार भी जीवित भाग नहीं पाएंगे। उस समय, बहुत वीर योद्धा भी नंगे हाथों भाग खड़े होंगे। उन्हें अपने वस्त्र पहनने तक का समय भी नहीं मिलेगा।" यहोवा ने यह सब कहा है!

इस्राएल को चेतावनी

3 इस्राएल के लोगों, इस सन्देश को सुनो! यहोवा ने तुम्हारे बारे में यह सब कहा है! यह सन्देश उन सभी परिवारों (इस्राएल) के लिये है जिन्हें मैं मिस्र देश से बाहर लाया हूँ। [2]"पृथ्वी पर अनेक परिवार हैं। किन्तु तुम अकेले परिवार हो जिसे मैंने विशेष ध्यान देने के लिये चुना। किन्तु तुम मेरे विरुद्ध हो गए। अत: मैं तुम्हारे सभी पापों के लिये दण्ड दूँगा।"

इस्राएल को दण्ड देने का कारण

[3]दो व्यक्ति तब तक एक साथ नहीं चल सकते जब तक वे कोई वाचा न करें! [4]जंगल में सिंह अपने शिकार को पकड़ने के बाद ही गरजता है। यदि कोई जवान सिंह अपनी माँद में गरज रहा हो तो उसका संकेत यही है कि उसने अपने शिकार को पकड़ लिया है। [5]कोई चिड़िया भूमि पर जाल में तब तक नहीं पड़ेगी जब तक उसमें कोई चुग्ग न हो और यदि जाल बन्द हो जाये तो वह चिड़िया को फँसा लेगा। [6]यदि कोई तुरही खतरे की चेतावनी देगी तो लोग भय से अवश्य काँप उठेंगे। यदि कोई विपत्ति किसी नगर में आई हो तो उसे यहोवा ने भेजा। [7]मेरा स्वामी यहोवा कुछ भी करने का निश्चय कर सकता है। किन्तु कुछ भी करने से पहले वह अपने सेवक नबियों को अपनी छिपी योजना बतायेगा। [8]यदि कोई सिंह दहाड़ेगा तो लोग भयभीत होंगे। यदि यहोवा कुछ भविष्यवक्ता से कहेगा तो वह भविष्यवाणी करेगा।

[9-10]अशदोद और मिस्र के ऊँचे किलों पर जाओ और इस सन्देश की घोषणा करो: "शोमरोन के पर्वतों पर जाओ। वहाँ तुम बड़ी गड़बड़ी पाओगे। क्यों? क्योंकि लोग नहीं जानते कि ठीक कैसे रहा जाता है। वे अन्य लोगों के प्रति क्रूर थे। वे अन्य लोगों से चीजें लेते थे और उन चीजों को अपने ऊँचे किलों में छिपाते थे। उनके खजाने युद्ध में ली गई उनकी चीजों से भरे हैं।"

[11]अत: यहोवा कहता है, "उस देश में एक शत्रु आएगा। वह शत्रु तुम्हारी शक्ति ले लेगा। वह उन चीजों को ले लेगा जिन्हें तुमने अपने ऊँचे किलों में छिपा रखा है।"

[12]यहोवा यह कहता है, "जैसे जब कोई सिंह किसी मेमने पर झपटता है तो गड़ेरया उस मेमने का केवल कोई हिस्सा ही बचा सकता है। वह सिंह के मुँह से उसके दो पैर, या उसके कान के एक हिस्से को ही खींच सकता है। ठीक इसी तरह इस्राएल के अधिक लोग नहीं बचाये जा सकेंगे। सामारिया में रहने वाले लोग अपने बिछौने का कोई कोना या अपनी चौकी का कोई पाया ही बचा पाएंगे।"

[13]मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा, यह कहता है: "याकूब (इस्राएल) के परिवार के लोगों को इन बातों की चेतावनी दो। [14]इस्राएल ने पाप किया और मैं उनके पापों के लिये उन्हें दण्ड दूँगा। मैं बेतेल की वेदी को भी नष्ट करूँगा। वेदी की सींगे काट दी जाएंगी और वे भूमि पर गिर जाएंगी। [15]मैं गर्मी के गृहों के साथ शीतकालीन गृहों को भी नष्ट करूँगा। हाथी दाँत से सजे गृह भी नष्ट होंगे। अनेकों गृह नष्ट किये जाएंगे।" यहोवा यह सब कहता है।

आनन्दप्रिय स्त्री

4 शोमरोन के पर्वत की बाशान की गायों मेरी बात सुनो। तुम गरीब लोगों को चोट पहुँचाती हो। तुम उन गरीबों को कुचलती हो। तुम अपने अपने पतियों से कहती हो, "पीने के लिये हमारे लिये कोई दाखमधु लाओ!"

[2]मेरा स्वामी यहोवा ने मुझे एक वचन दिया। उसने अपनी पवित्रता के नाम प्रतिज्ञा की, कि तुम पर विपत्तियाँ आएंगी। लोग काँटों का उपयोग करेंगे और तुम्हें बन्दी बनाकर ले जाएंगे। वे तुम्हारे बच्चों को ले जाने के लिये मछलियों को फँसाने के काँटों का उपयोग करेंगे। [3]तुम्हारा नगर नष्ट होगा। तुम दीवारों के छेदों से नगर के बाहर जाओगी। तुम अपने आपको शवों के ढेर पर फेंकोगी।

यहोवा यह कहता है: [4]"बेतेल जाओ और पाप करो! गिल्गाल जाओ तथा और अधिक पाप करो। अपनी बलियों की भेंट प्रात:काल करो। तीन दिन वाले पवित्र दिनों में अपनी फसल का दसवाँ भाग लाओ [5]और खमीर के साथ बनी धन्यवाद भेंट चढ़ाओ। हर एक को स्वेच्छा भेंट के बारे में बताओ। इस्राएल, तुम उन्हें करना पसन्द करते हो। अत: जाओ और वही करो।" यहोवा ने यह कहा।

[6] "मैंने तुम्हें अपने पास बुलाने के लिये कई काम किये। मैंने तुम्हें खाने को कुछ भी नहीं दिया। तुम्हारे किसी भी नगर में भोजन नहीं था। किन्तु तुम मेरे पास वापस नहीं लौटे।" यहोवा ने यह सब कहा।

[7]"मैंने वर्षा भी बन्द की और यह फसल पकने के तीन महीने पहले हुआ। अत: कोई फसल नहीं हुई। तब मैंने एक नगर पर वर्षा होने दी किन्तु दूसरे नगर पर नहीं। वर्षा देश के एक हिस्से में हुई। किन्तु देश के अन्य भागों में भूमि बहुत सूख गई। [8]अत: दो या तीन नगरों से लोग पानी लेने के लिये दूसरे नगरों को लड़खड़ाते हुए गए किन्तु वहाँ भी हर एक व्यक्ति के लिये पर्याप्त जल नहीं मिला। तो भी तुम मेरे पास सहायता के लिये नहीं आए।" यहोवा ने यह सब कहा।

[9]"मैंने तुम्हारी फसलों को गर्मी और बीमारी से मार डाला। मैंने तुम्हारे बागों और अंगूर के बगीचों को नष्ट किया। टिड्डियों ने तुम्हारे अंजीर के पेड़ों और जैतून के पेड़ों को खा डाला। किन्तु फिर भी तुम मेरे पास सहायता को नहीं आए।" यहोवा ने यह सब कहा।

[10]"मैंने तुम्हारे विरुद्ध महामारियाँ वैसे ही भेजीं जैसे मैंने मिस्र में भेजी थीं। मैंने तुम्हारे युवकों को तलवार के घाट उतार दिया। मैंने तुम्हारे घोड़े ले लिए। मैंने तुम्हारे डेरों को शवों की दुर्गन्ध से भरा। किन्तु तब भी तुम मेरे पास सहायता को वापस नहीं लौटे।" यहोवा ने यह सब कहा।

[11]"मैंने तुम्हें वैसे ही नष्ट किया जैसे मैंने सदोम और अमोरा को नष्ट किया था और वे नगर पूरी तरह नष्ट किये गये थे। तुम आग से खींची गई जलती लकड़ी की तरह थे। किन्तु तुम फिर भी सहायता के लिये मेरे पास नहीं लौटे।" यहोवा ने यह सब कहा।

[12]"अत: इस्राएल, मैं तुम्हारे साथ यह सब करुँगा। मैं तुम्हारे साथ यह करुँगा। इस्राएल, अपने परमेश्वर से मिलने के लिये तैयार हो जाओ! [13]मैं कौन हूँ? मैं वही हूँ जिसने पर्वतों को बनाया। मैंने तुम्हारा प्राण बनाया। मैंने लोगों को अपने विचार जनाए। मैं ही सुबह को शाम में बदलता हूँ। मैं पृथ्वी के ऊपर के पर्वतों पर चलता हूँ। मैं कौन हूँ? मेरा नाम यहोवा, सेनाओं का परमेश्वर है।"

इस्राएल के लिये शोक सन्देश

5 इस्राएल के लोगों, इस सन्देश को सुनो, यह शोक सन्देश तुम्हारे विषय में है।

[2]इस्राएल की कुमारी गिर गई है। वह अब कभी उठेगी नहीं। वह धूलि में पड़ी अकेली छोड़ दी गई है। उसे उठाने वाला कोई व्यक्ति नहीं है।

[3]मेरे स्वामी यहोवा यह कहता है: "हजार सैनिकों के साथ नगर से जाने वाले अधिकारी केवल सौ सैनिकों के साथ लौटेंगे। सौ सैनिकों के साथ नगर छोड़ने वाले अधिकारी केवल दस सैनिको के साथ लौटेंगे।"

यहोवा इस्राएल को अपने पास लौटने के लिये प्रोत्साहित करता है

[4]यहोवा इस्राएल के घराने से यह कहता है: "मेरी खोज करते आओ और जीवित रहो।

[5]"किन्तु बेतेल में न खोजो। गिल्गाल मत जाओ। सीमा को पार न करो और बेर्शेबा न जाओ। गिल्गल के लोग बन्दी के रूप में ले जाए जाएंगे और बेतेल नष्ट किया जाएगा।

[6]"यहोवा के पास जाओ और जीवित रहो। यदि तुम यहोवा के यहाँ नहीं जाओगे, तो यूसुफ के घर में आग लगेगी। आग यूसुफ के परिवार को नष्ट करेगी और बेतेल में उसे कोई भी नहीं रोक सकेगा।

[7–9]"तुम्हें सहायता के लिए यहोवा के पास जाना चाहिये। ये वही है जिसने कचपचिया और मृगशिरा को बनाया। वह अन्धकार को प्रात: प्रकाश में बदलता है। वह दिन को अंधेरी रात में बदलता है। वह समुद्र से जल को उठा कर उसे पृथ्वी पर बरसाता है। उसका नाम यहोवा है वह शक्तिशाली नगरों के मजबूत किलों को ढहा देता है।"

इस्राएलियों द्वारा किये गए बुरे काम

लोगों, यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा तुमने अच्छाई को कड़वाहट में बदला। तुमने औचित्य को मार डाला और इसे धूलि में मिला दिया। [10]नबी सामाजिक स्थानों पर जाते हैं और उन बुरे कामों के विरुद्ध बोलते हैं जिन्हें लोग किया करते हैं। किन्तु लोग उन नबियों से घृणा करते हैं। नबी सत्य कहते हैं, किन्तु लोग उन नबियों से घृणा करते हैं।

[11]तुम गरीबों से अनुचित कर वसूलते हो। तुम उनसे ढेर सारा गेहूँ लेते हो और इस धन का उपयोग तुम तराशे पत्थरों से सुन्दर महल बनाने में करते हो। किन्तु तुम उन महलों में नहीं रहोगे। तुम अंगूरों की बेलों के सुन्दर खेत बनाते हो। किन्तु तुम उनसे प्राप्त दाखमधु को नहीं पीओगे।

[12]क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारे अनेक पापों को जानता हूँ। तुमने, सच ही, कुछ बुरे काम किये है। तुमने उचित काम करने वालों को चोट पहुँचाई। तुमने घूस के रूप में धन लिया। गरीब लोगों के साथ अनेक मुकद्दमों में तुमने अन्याय किया।

[13]उस समय बुद्धिमान चुप रहेंगे। क्यों? क्योंकि यह बुरा समय है।

[14]तुम कहते हो कि परमेश्वर हमारे साथ है। अत: अच्छे काम करो, बुरे नहीं। तब तुम जीवित रहोगे और सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा सच ही तुम्हारे साथ होगा।

[15]बुराई से घृणा करो। अच्छाई से प्रेम करो। न्यायालयों में न्याय वापस लाओ और तब संभव है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा यूसुफ परिवार के बचे लोगों पर दयालु हो।

बड़े शोक का समय आ रहा है

[16]यही कारण है कि मेरा स्वामी सर्वशक्तिमान परमेश्वर यह कह रहा है, "लोग सभी सार्वजनिक स्थानों में रोएंगे, लोग सड़को पर रोएंगे। लोग पेशेवर रोने वालों को भाड़े पर रखेंगे।

[17]"लोग अंगूर के सभी खेतों में रोएंगे। क्यों? क्योंकि मैं वहाँ से निकलूँगा और तुम्हें दण्ड दूँगा।" यहोवा ने यह सब कहा है।

[18]तुममे से कुछ यहोवा के न्याय के विशेष दिन को देखना चाहते हैं। तुम उस दिन को क्यों देखना चाहते हो? यहोवा का विशेष दिन तुम्हारे लिये अन्धकार लाएगा, प्रकाश नही।

[19]तुम किसी सिंह के सामने से बच कर भाग निकलने वाले ऐसे व्यक्ति के समान होगे जिस पर भागते समय रीछ आक्रमण कर देता है और फिर जब वह उस रीछ से भी बच निकलकर किसी घर में जा घुसता है तो वहाँ दीवार पर हाथ रखते ही, उसे साँप डस लेता है!

[20]अत: यहोवा का विशेष दिन अन्धकार लाएगा, प्रकाश नहीं, यह शोक का समय होगा उल्लास का नहीं।

यहोवा इस्राएलियों की आराधना अस्वीकार कर रहा है

[21]मै तुम्हारे पवित्र दिनों से घृणा करता हूँ! मैं उन्हें स्वीकार नहीं करूँगा! मै तुम्हारी धार्मिक सभाओं का आनन्द नहीं लेता!

[22]यदि तुम होमबलि और अन्नबलि भी दोगे तो मैं स्वीकार नहीं करूँगाा। तुम जिन मोटे जानवरों को शान्ति–भेंट के रूप मे दोगे उन्हें मैं देखूँगा भी नहीं।

[23] तुम यहाँ से अपने शोरगुल वाले गीतों को दूर करो। मैं तुम्हारी वीणा के संगीत को नहीं सुनूँगा।

[24]तुम्हें अपने सारे देश में न्याय को नदी की तरह बहने देना चाहिये। अच्छाई को सदा सरिता की धारा की तरह बहने दो जो कभी सूखती नहीं।

[25]इस्राएल, तुमने चालीस वर्ष तक मरुभूमि में मुझे बलि और भेंट चढ़ाई।

[26] तुम अपने राजा (देवता) सक्कुथ और नक्षत्र देवता कैवन की मूर्तियों को लेकर चले। इन देवताओं की मूर्तियों को स्वयं तुमने अपने लिए बनाया था।

[27]अत: मैं तुम्हें बन्दी बनाकर दमिश्क के पार पहुँचाऊँगा यह सब यहोवा कहता है। उसका नाम सर्वशक्तिमान परमेश्वर है।

इस्राएल से अच्छा समय ले लिया जाएगा

6 सिय्योन के तुम लोगों में से कुछ का जीवन बहुत आराम का है। सामारिया पर्वत के कुछ लोग अपने को सुरक्षित अनुभव करते है। किन्तु तुम पर अनेक विपत्तियाँ आएंगी। राष्ट्रों के सर्वोत्तम नगरों के तुम "सम्मानित" लोग हो। "इस्राएल के लोग" न्याय पाने के लिए तुम्हारे पास आते है!

[2]जाओ और कलने पर ध्यान दो। वहाँ से विशाल नगर हमात को जाओ। पलिश्ती नगर गत को जाओ। क्या तुम इन राज्यों से अच्छे हो? नहीं। उनके देश तुम्हारे से बड़े हैं। [3]तुम लोग वह काम कर रहे हो, जो दण्ड के दिन को समीप लाता है। तुम हिंसा के शासन को समीप, और समीप ला रहे हो।

[4]किन्तु तुम सभी विलासों का भोग करते हो। तुम हाथी दाँत की सेज पर सोते हो और अपने बिछौने पर आराम करते हो। तुम रेवड़ों में से कोमल मेमने और बाड़ों में से नये बछड़े खाते हो।

[5]तुम अपनी वीणायें बजाते हो और राजा दाऊद की तरह अपन वाद्यों पर अभ्यास करते हो।

[6]तुम सुन्दर प्यालों में दाखमधु पीया करते हो। तुम सर्वोत्तम तेलों से अपनी मालिश करते हो और तुम्हें इसके लिये घबराहट भी नहीं कि यूसुफ का परिवार नष्ट किया जा रहा है।

[7]वे लोग अब अपने बिछौने पर आराम कर रहे है। किन्तु उनका अच्छा समय समाप्त होगा। वे बन्दी के रूप में विदेशों में पहुँचाये जाएंगे और वे प्रथम पकड़े जाने वालों में से कुछ होंगे। [8]मेरे स्वामी यहोवा ने यह प्रतिज्ञा की थी। उन्होंने अपना नाम सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा लिया और यह प्रतिज्ञा की:

"मै उन बातों से घृणा करता हूँ, "जिन पर याकूब को गर्व है। मैं उसकी दृढ़ मीनारों से घृणा करता हूँ। अत: मैं शत्रु को नगर तथा नगर की हर एक चीज लेने दूँगा।"

थोड़े से इस्राएली जीवित बचेंगे

9उस समय, किसी घर में यदि दस व्यक्ति जीवित बचेंगे तो वे भी मर जाएंगे। 10जब कोई मर जाएगा तब कोई सम्बन्धी शव लेने आएगा, जिससे वह उसे बाहर ले जा सके और जला सके। सम्बन्धी घर में से हड्डियों लेने आएगा। लोग किसी भी उस व्यक्ति से जो घर के भीतर छिपा होगा, पूछेंगे, "क्या तुम्हारे पास कोई अन्य शव है?" वह व्यक्ति उत्तर देगा, "नहीं। तब व्यक्ति के सम्बन्धी कहेंगे, "चुप! हमें यहोवा का नाम नहीं लेना चाहिये।"

11देखो, परमेश्वर यहोवा आदेश देगा और विशाल महल टुकड़े–टुकड़े किये जाएंगे और छोटे घर छोटे–छोटे टुकड़ों में तोड़े जाएंगे।

12क्या घोड़े शिलाखंड़ो पर दौड़ते हैं? नहीं! क्या लोग समुद्र को बैलों से जोत सकते है? नहीं।

तो भी तुम हर चीज को उलट–पलट देते हो। तुम अच्छाई और न्याय को जहर में बदल देते हो।

13तुम लो–देवर में प्रसन्न हो, तुम कहते हो, "हमने करनैम को अपनी शक्ति से जीता है।"

14"किन्तु इस्राएल, मैं तुम्हारे विरुद्ध एक राष्ट्र को भेजूँगा। वह राष्ट्र तुम्हारे सारे देश को, लेबो–हमात से लेकर अराबा नाले तक विपत्ति में डालेंगे।" सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा ने वह सब कहा।

दर्शन में टिड्डियाँ

7 यहोवा ने मुझे यह दिखाया: उसने दूसरी फसल उगने के समय टिड्डी दलों की रचना आरम्भ कीं। राजा द्वारा प्रथम फसल काट लिये जाने का बाद यह दूसरी फसल थी। 2टिड्डियों ने देश की सारी घास खा डाली। उसके बाद मैंने कहा, "मेरे स्वामी यहोवा, मैं प्रार्थना करता हूँ, हमें क्षमा कर! याकूब बच नहीं सकता! वह अत्यन्त छोटा है!"

3तब यहोवा ने इसके बारे में अपने विचार को बदला। यहोवा ने कहा, "ऐसा नहीं होगा।"

दर्शन में आग

4मेरे स्वामी यहोवा ने मुझे ये चीजें दिखाई: मैंने देखा कि यहोवा परमेश्वर अग्नि को वर्षा की तरह बरसने के लिए बुला रहा है। अग्नि ने विशाल गहरे समुद्र को नष्ट कर दिया। अग्नि भूमि को चट करने लगी। 5 किन्तु मैंने कहा, "हे परमेश्वर यहोवा, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, ठहर। याकूब बच नहीं सकता! वह बहुत छोटा है!"

6तब यहोवा ने इसके बारे में अपना विचार बदला। परमेश्वर यहोवा ने कहा, "ऐसा नहीं होगा।"

दर्शन में साहुल

7यहोवा ने मुझे यह दिखाया: यहोवा एक दीवार के सहारे एक साहुल अपने हाथ में लेकर खड़ा हुआ था। दीवार साहुल से सीधी की गई थी। 8यहोवा ने मुझसे कहा, "आमोस, तुम क्या देखते हो?"

मैंने कहा, "साहुल।"

तब मेरे स्वामी ने कहा, "देखो, मैं अपने इस्राएल के लोगों पर साहुल का उपयोग करूँगा। मैं अब और आगे उनके टेढ़ेपन को नजरन्दाज नहीं करूँगा। मैं उन बुरे भागों को काट फेकूँगा। 9इसहाक के उच्च स्थान नष्ट किये जाएंगे। इस्राएल के पवित्र स्थान चट्टान की ढेरों में बदल दिये जाएंगे। मैं आक्रमण करूँगा और यारोबाम के परिवार को तलवार के घाट उतारूँगा।"

अमस्याह आमोस को भविष्यवाणी करने से रोकने का प्रयत्न करता है

10बेतेल के याजक अमस्याह ने इस्राएल के राजा यारोबाम को यह सन्देश भेजा: "आमोस तुम्हारे विरुद्ध षड़यन्त्र रच रहा है। वह इस्राएल के लोगों को तुम्हारे विरुद्ध युद्ध के लिये भड़का रहा है। वह इतना अधिक कह रहा है कि उसके शब्द पूरे देश में भी समा नहीं सकते। 11आमोस ने कहा है, 'यारोबाम तलवार के घाट उतरेगा और इस्राएल के लोगों को बन्दी बनाकर अपने देश से बाहर ले जाए जाएंगे।'"

12अमस्याह ने भी आमोस से कहा, "हे दर्शी, यहूदा जाओ और वहीं खाओ। अपने उपदेश वहीं दो। 13किन्तु यहाँ बेतेल में और अधिक उपदेश मत दो! यह यारोबाम का पवित्र स्थान है। यह इस्राएल का मन्दिर है!"

14तब आमोस ने अमस्याह को उत्तर दिया, "मैं पेशेवर नबी नहीं हूँ और मैं नबी के परिवार का नहीं हूँ। मैं पशु पालता हूँ और गूलर के पेड़ो की देखभाल करता हूँ। 15मैं गड़ेरिया था और यहोवा ने मुझे भेड़ों को चराने से मुक्त किया। यहोवा ने मुझसे कहा, 'जाओ, मेरे लोग इस्राएलियों

में भविष्यवाणी करो।' [16]इसलिये यहोवा के सन्देश को सुनो। तुम मुझसे कहते हो 'इस्राएल के विरुद्ध भविष्यवाणी मत करो। इसहाक के परिवार के विरुद्ध उपदेश मत दो।' [17]किन्तु यहोवा कहता है: 'तुम्हारी पत्नी नगर मे वेश्या बनेगी। तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ तलवार द्वारा मारे जाएंगे। अन्य लोग तुम्हारी भूमि लेंगे और आपस में बाटेंगे और तुम विदेश में मरोगे। इस्राएल के लोग निश्चय ही, इस देश से बन्दी के रूप में ले जाए जाएंगे।'"

दर्शन में पके फल

8 यहोवा ने मुझे यह दिखाया: मैंने ग्रीष्म के फलों की एक टोकरी देखी: [2]यहोवा ने पूछा, "आमोस, तुम क्या देखते हो?"

मैंने कहा, "ग्रीष्म के फलों की एक टोकरी।"

तब यहोवा ने मुझसे कहा, "मेरे लोग इस्राएलियों का अन्त आ गया है। मैं उनके पापों को और अनदेखा नहीं कर सकता। [3]मन्दिर के गीत शोक गीत बन जाएंगे। मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा। सर्वत्र शव ही होंगे। सन्नाटे में लोग शवों को ले जाएंगे और उनके ढेर लगा देंगे।"

इस्राएल के व्यापारी केवल धन बनाने में लगे रहना चाहते है

[4]मेरी सुनो! लोगों तुम असहायों को कुचलते हो। तुम इस देश के गरीबों को नष्ट करना चाहते हो।

[5]व्यापारियों, तुम कहते हो, "नवचन्द्र कब बीतेगा, जिससे हम अन्न बेच सकेंगे? सब्त कब बीतेगा, जिससे हम अपना गेहूँ बेचने को ला सकेंगे? हम कीमते बढ़ा सकेंगे, बाटों को हलका कर सकेंगे, और हम तराजुओं को ऐसा व्यवस्थित कर लेगें कि लोगों को ठग सकें।

[6]"गरीब अपना ऋण वापस नहीं कर सकते अत: हम उन्हें दास के रूप में खरीदेंगे। हम उन गरीबों को एक जोड़ी जूतों की कीमत में खरीदेंगे। अहो! हम उस खराब गेहूँ को भी बेच सकते हैं, जो फर्श पर बिखर गया हो।"

[7]यहोवा ने प्रतिज्ञा की। उसने "याकूब गर्व" नामक अपने नाम का उपयोग किया और यह प्रतिज्ञा की: "मैं उन लोगों के किये कामों के लिए उन्हें क्षमा नहीं कर सकता।

[8]"उन कामों के कारण पूरा देश काँप जाएगा। इस देश का हर एक निवासी मृतकों के लिये रोयेगा। पूरा देश मिस्र में नील नदी की तरह उमड़ेगा और नीचे गिरेगा। पूरा देश चारों ओर उछाल दिया जायेगा।"

[9]यहोवा ने ये बाते भी कहीं: "उस समय, मैं सूरज दोपहर में ही अस्त करूँगा। मैं प्रकाश भरे दिन में पृथ्वी को अन्धकारपूर्ण करूँगा।

[10]"मैं तुम्हारे पवित्र दिनों को मृतकों के लिए शोक–दिवस में बदलूँगा। तुम्हारे सभी गीत मृतकों के लिये शोक गीत बनेंगे। मैं हर एक को शोक वस्त्र पहनाऊँगा। मैं हर एक सिर को मुँड़वा दूँगा। मैं ऐसा गहरा शोक भरा रोना बनाऊँगा मानो वह एक मात्र पुत्र के शोक का हो। यह एक अत्यन्त कटु अन्त होगा।'

परमेश्वर के संसार के लिए भयंकर भुखमरी पूर्ण भविष्य

[11]यहोवा कहता है: "देखो, वे दिन समीप आ रहे हैं, जब मैं देश मे भुखमरी लाऊँगा, लोग रोटी के भूखे और पानी के प्यासे नहीं होंगे, बल्कि लोग यहोवा के वचन के भूखे होंगे।

[12]"लोग एक सागर से दूसरे सागर तक भटकेंगे। वे उत्तर से दक्षिण तक भटकेंगे। वे लोग यहोवा के सन्देश के लिये आगे बढ़ेंगे, पीछे हटेंगे, किन्तु वे उसे पाएंगे नहीं।

[13]"उस समय सुन्दर युवतियाँ और युवक प्यास के कारण बेहोश हो जाएंगे। [14]उन लोगों ने शोमरोन के पाप के नाम पर प्रतिज्ञायें की। उन्होंने कहा, 'दान तुम्हारे देवता की सत्ता निश्चित सत्य है, इससे हम प्रतिज्ञा करते हैं...,' और बेर्शेबा के देवता की सत्ता निश्चित सत्य है, इससे हम प्रतिज्ञा करते है...,' अत: उन लोगों का पतन होगा और वे फिर कभी उठेंगे नहीं।"

दर्शन में यहोवा का वेदी के सहारे खड़ा होना

9 मैंने अपने स्वामी को वेदी के सहारे खड़ा देखा। उसने कहा,

"स्तम्भों के सिरे पर प्रहार करो, और पूरी इमारत की देहली तक काँप उठेगी। स्तम्भों को लोगों के सिर पर गिराओ। यदि कोई जीवित बचेगा, सो उसे तलवार से मारो। कोई व्यक्ति भाग सकता है, किन्तु वह बच नहीं

सकेगा। लोगों में से कोई भी व्यक्ति बचकर नहीं निकलेगा।

[2]“यदि वे नीचे पाताल में खोदकर जाएंगें, मैं उन्हें वहाँ से खींच लूँगा। यदि वे ऊपर आकाश में जाएंगे मैं उन्हें वहाँ से नीचे लाऊँगा। [3]यदि वे कर्म्मेल पर्वत की चोटी पर जा छिपेंगे, मैं उन्हें वहाँ खोज लूँगा और मैं उन्हें उस स्थान से ले आऊँगा। यदि वे मुझसे, समुद्र के तल में छिपना चाहते है, मैं सर्प को आदेश दूँगा और वह उन्हें डस लेगा।

[4]“यदि वे पकड़े जाएंगे और अपने शत्रु द्वारा ले जाए जाएंगे, मैं तलवार को आदेश दूँगा और वह उन्हें वहीं मारेगी। हाँ, मैं उन पर कड़ी निगाह रखूँगा किन्तु मैं उन्हें कष्ट देने के तरीकों पर निगाह रखूँगा। उनके लिये अच्छे काम करने के तरीकों पर नहीं।”

देश के लोगों को दण्ड नष्ट करेगा

[5]मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा, उस प्रदेश को छुएगा और वह पिघल जाएगा तब उस देश के सभी निवासी मृतकों के लिए रोएंगे। यह प्रदेश मिस्र की नील नदी की तरह ऊपर उठेगा और नीचे गिरेगा।

[6] यहोवा ने अपने ऊपर के निवास आकाश के ऊपर बनाए। उसने अपने आकाश को पृथ्वी पर रखा। वह सागर के जल को बुला लेता है, और देश पर उसकी वर्षा करता है। उसका नाम यहोवा है।

यहोवा इस्राएल को नष्ट करने का प्रतीज्ञा करता है

[7]यहोवा यह कहता है: “इस्राएल, तुम मेरे लिये कूशियों की तरह हो। मैं इस्राएल को मिस्र से निकाल कर लाया। मैं पलिश्तियों को भी कप्तोर से लाया और अरामियों को कीर से।”

[8]मेरे स्वामी यहोवा पापपूर्ण राज्य (इस्राएल) पर दृष्टि रखा है। यहोवा यह कहता है, “मैं पृथ्वी पर से इस्राएल को नष्ट कर दूँगा। किन्तु मैं याकूब के परिवार को पूरी तरह नष्ट नहीं करूँगा।

[9]“मैं इस्राएल के घराने को तितर–बितर करके अन्य राष्ट्रों में बिखेर देने का आदेश देता हूँ। यह उसी प्रकार होगा जैसे कोई व्यक्ति अनाज को छनने से छान देता है। अच्छा आटा उससे निकल जाता है, किन्तु बुरे अंश फँस जाते है। याकूब के परिवार के साथ ऐसा ही होगा।

[10]“मेरे लोगों के बीच पापी कहते हैं, ‘हम लोगों के साथ कुछ भी बुरा घटित नहीं होगा!’ किन्तु वे सभी लोग तलवार से मार दिये जाएँगे!”

परमेश्वर राज्य की पुनस्थापना की प्रतिज्ञा करता है

[11] “दाऊद का डेरा गिर गया है, किन्तु उस समय
इस डेरे को मैं फिर खड़ा करूँगा।
मैं दीवारो के छेदों को भर दूँगा।
मैं नष्ट इमारतों को फिर से बनाऊँगा।
मैं इसे ऐसा बनाऊँगा जैसा यह पहले था।
[12] फिर वे एदोम में जो लोग बच गये हैं,
उन्हें और उन जातियों को जो मेरे नाम से
जानी जाती हैं, ले जायेंगा।”
यहोवा ने वे बातें कहीं,
और वे उन्हें घटित करायेगा।
[13] यहोवा कहता है, “वह समय आ रहा है,
जब हर प्रकार का भोजन बहुतायत में होगा।
अभी लोग पूरी तरह फसल काट भी नहीं पायें
होंगे कि जुताई का समय आ जायेगा।
लोग अभी अंगूरों का रस निकाल ही रहे होंगे
की अंगूरों की रुपाई का समय फिर आ पहुँचेगा।
पर्वतों से दाखमधु की धार बहेगी
और वह पहाड़ियों से बरसेगी।
[14] मैं अपने लोगों इस्राएलियों को
देश निकाले से वापस लाऊँगा।
वे नष्ट हुए नगरों को फिर से बनाएंगे
और उन नगरों में रहेंगे।
वे अंगूर की बेलों के बाग लगाएंगे और वे उन
बागों से प्राप्त दाखमधु पीएंगे।
वे बाग लगाएंगे और वे उन बागों के
फलों को खाएंगे।
[15] मैं अपने लोगों को उनकी भूमि पर जमाऊँगा
और वे पुन: उस देश से उखाड़े नहीं जाएंगे
जिसे मैंने उन्हें दिया है।”
यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने ये बाते कहीं।

ओबद्याह

एदोम दण्डित होगा

यह ओबद्याह का दर्शन है। मेरा स्वामी यहोवा एदोम के बारे में यह कहता है: हमने यहोवा परमेश्वर से एक सन्देश प्राप्त किया है। राष्ट्रों को एक दूत भेजा गया है। उसने कहा, "हम एदोम के विरुद्ध लड़ने चलें।"

यहोवा एदोम से कहता है

2 "एदोम, मैं तुम्हें सब से छोटा राष्ट्र बना दूँगा।
लोग तुमसे बहुत घृणा करेंगे।
3 तुम अपने अभिमान के द्वारा छले गये हो।
तुम ऊँची पहाड़ियों की गुफाओं में रहते हो।
तुम्हारा घर पहाड़ियों में ऊँचे पर है।
तुम अपने मन में कहते हो,
'मुझे कोई भी धूल नहीं चटा सकता।'"

एदोम नीचा किया जाएगा

4परमेश्वर यहोवा यह कहता है: "यद्यपि तुम उकाब की तरह ऊपर उड़ो, और अपना घोंसला तारों के बीच बना लो, तो भी मैं तुम्हें वहाँ से नीचे उतारूँगा।"

5तुम सचमुच बरबाद हो जाओगे! देखो! कोई चोर तुम्हारे यहाँ आता है! जब, रात में डाकू आते है! तो वे भी उतना ही चुराकर या लूटकर ले जाते हैं जितना ले जा सकते हैं! तुम्हारे अंगूर के बगीचों में जब अंगूर तोड़ने वाले आते हैं तो अंगूर तोड़ने के बाद वे भी अपने पीछे कुछ न कुछ छोड़ ही जाते हैं।

6 किन्तु हे एदोम! तुझसे तेरा सब कुछ छिन जायेगा। लोग तेरे सभी छिपे खजानों को ढूँढ निकालेंगे और हथिया लेंगे!

7वे सभी लोग जो तुम्हारे मित्र हैं, तुम्हें देश से बाहर जाने को विवश करेंगे। तुम्हारे साथ शान्तिपूर्वक रहने वाले तुम्हें धोखा देंगे और तुमको हराएंगे। वे लोग तुम्हारी रोटी तुम्हारे साथ खायेंगे। किन्तु वे तुम्हें जाल में फँसाने की योजना बना रहे हैं। 'किन्तु तुम उसे जान नहीं पाओगे!"

8यहोवा कहता है: उस दिन, मैं एदोम के बुद्धिमानों को नष्ट करूँगा और मैं एसाव पर्वत से समझदारी को नष्ट कर दूँगा।

9तब तेमान, तुम्हारे शक्तिशाली लोग भयभीत होंगे और एसाव पर्वत का हर व्यक्ति नष्ट होगा।

10तुम शर्म से गड़ जाओगे, और तुम सदैव के लिये नष्ट हो जाओगे। क्योंकि अपने भाई याकूब के प्रति तुम इतने अधिक क्रूर निकले।

11उस समय तुम सहायता किये बिना दूसरी ओर खड़े रहे। अजनबी याकूब का खजाना ले गए। विदेशी इस्राएल के नगर–द्वार में घुसे। उन विदेशियों ने गोट डालकर यह निश्चय किया कि वे यरूशलेम का कौन सा भाग लेंगे। उस समय तुम उन विदेशियों के समान ही थे।

12तुम अपने भाई के विपत्ति काल में उस पर हँसे, तुम्हें यह नहीं करना चाहिये था। तुम तब प्रसन्न थे जब लोगों ने यहूदा को नष्ट किया। तुम्हें वैसा नहीं करना चाहिये था। उनकी विपत्ति के समय तुमने उसकी खिल्ली उड़ाई। तुम्हें वैसा नहीं करना चाहिये था। 13तुम मेरे लोगों के नगर–द्वार में घुसे और उनकी समस्याओं पर हँसे। तुम्हें वह नहीं करना चाहिये था। उनके उस विपत्ति काल में तुमने उनके खजाने लिये, तुम्हें वह नहीं करना चाहिये था।

14 तुम चौराहों पर खड़े हुए और तुमने जान बचाकर भागने की कोशिश करने वाले लोगों को मार डाला। तुम्हें वैसा नहीं करना चाहिये था। तुमने उन लोगों को पकड़ लिया जो जीवित बच निकले थे। तुम्हें वह नहीं करना चाहिए था।

सभी राष्ट्रों का न्याय होना

[15]सभी राष्ट्रों पर शीघ्र ही यहोवा का दिन आ रहा है। तुमने दूसरे लोगों के साथ बुरा किया। वे ही बुराईयाँ तुम्हारे साथ घटित होंगी। वे सभी बुराईयाँ तुम्हारे ही सिर पर उतर आएंगी।

[16]क्योंकि जैसे तुमने मेरे पवित्र पर्वत पर दाखमधु पीकर विजय की खुशी मनाई। वैसे ही सभी जातियाँ निरन्तर मेरे दण्ड को पीएंगी और उसे निगलेंगी और उनका लोप हो जायेगा।

[17]किन्तु सिय्योन पर्वत पर कुछ बचकर रह जाने वाले होंगे। यह मेरा पवित्र स्थान होगा। याकूब का राष्ट्र उन चीजों को वापस पाएगा जो उसकी थीं।

[18]याकूब का परिवार जलती आग–सा होगा। यूसुफ का राष्ट्र जलती लपटों जैसा बन जायेगा। किन्तु एसाव का राष्ट्र राख की तरह होगा। यहूदा के लोग एदोमी लोगों को नष्ट करेंगे। एसाव के राष्ट्र में कोई जीवित नहीं रहेगा। क्यों? क्योंकि परमेश्वर यहोव ने ऐसा कहा।

[19]तब नेगव के लोग एसाव पर्वत पर रहेंगे और पर्वत की तराईयों के लोग पलिश्ती प्रदेश को लेंगे। परमेश्वर के वे लोग एप्रैम और शोमरोन की भूमि पर रहेंगे। गिलाद, बिन्यामीन का होगा।

[20]इस्राएल के लोग अपने घर छोड़ने को विवश किये गए थे। किन्तु वे लोग कनानियों का प्रदेश सारपत तक ले लेंगे। यहूदा के लोग यरूशलेम छोड़ने और सपाराद में रहने को विवश किये गए थे। किन्तु वे लोग नेगव के नगरों को लेंगे।

[21]विजयी सिय्योन पर्वत पर होंगे। वे लोग एसाव पर्वत के निवासियों पर शासन करेंगे और राज्य यहोवा का होगा।

योना

परमेश्वर का बुलावा और योना का भागना

1 अमित्तै के पुत्र योना से यहोवा ने कहा। यहोवा ने कहा, [2]"नीनवे एक बड़ा नगर है। वहाँ के लोग जो पाप कर्म कर रहे हैं, उनमें बहुत से कुकर्मों के बारे में मैंने सुना है। इसलिए तू उस नगर में जा और वहाँ के लोगों को बता कि वे उन बुरे कर्मों का करना त्याग दें।"

[3]योना परमेश्वर की बात नहीं मानना चाहता था, सो योना ने यहोवा से कहीं दूर भाग जाने का प्रयत्न किया। सो योना यापो की ओर चला गया। योना ने एक नौका ली जो सुदूर नगर तर्शीश को जा रही थी। योना ने अपनी यात्रा के लिए धन दिया और वह नाव पर जा चढ़ा। योना चाहता था कि इस नाव पर वह लोगों के साथ तर्शीश चला जाये और यहोवा से कहीं दूर भाग जाये।

भयानक तूफान

[4]किन्तु यहोवा ने सागर में एक भयानक तूफान उठा दिया। आँधी से सागर में थपेड़े उठने लगे। तूफान इतना प्रबल था कि वह नाव जैसे बस टूक टूक होने जा रही थी। [5]लोग चाहते थे कि नाव को डूबने से बचाने के लिये उसे कुछ हलका कर दिया जाये। सो वे नाव के सामान को उठा कर समुद्र में फेंकने लगे। मल्लाह बहुत डरे हुए थे। हर व्यक्ति अपने अपने देवता से प्रार्थना करने लगा।

योना सोने के लिये नाव में नीचे चला गया था। योना सो रहा था। [6] नाव के प्रमुख खिवैया ने योना को इस रूप में देखकर कहा, "उठ! तू क्यों सो रहा है? अपने देवता से प्रार्थना कर! हो सकता है, तेरा देवता तेरी प्रार्थना सुन ले और हमें बचा ले!"

यह तूफान क्यों आया?

[7] लोग फिर आपस में कहने लगे, "हमें यह जानने के लिये कि हम पर ये विपत्तियाँ किसके कारण पड़ रही हैं, हमें पासे फेंकने चाहियें।"

सो लोगों ने पासे फेंके। पासों से यह प्रकट हुआ कि यह विपत्ति योना के कारण आई है। [8]इस पर लोगों ने योना से कहा, "यह किसका दोष है, जिसके कारण यह विपत्ति हम पर पड़ रही है! सो तूने जो किया है, उसे तू हमें बता। हमें बता तेरा काम धन्धा क्या है? तू कहाँ से आ रहा है? तेरा देश कौन सा है? तेरे अपने लोग कौन हैं?"

[9]योना ने लोगों से कहा, "मैं एक हीब्रू (यहूदी) हूँ और स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा की उपासना करता हूँ। वह वही परमेश्वर है, जिसने सागर और धरती को रचा है।"

[10]योना ने लोगों से कहा कि, वह यहोवा से दूर भाग रहा है। जब लोगों को इस बात का पता चला, तो वह बहुत अधिक डर गये। लोगों ने योना से पूछा, "तूने अपने परमेश्वर के विरुद्ध क्या बुरी बात की है?"

[11]उधर आँधी तूफान और समुद्र की लहरें प्रबल से प्रबलतर होती चली जा रही थीं। सो लोगों ने योना से कहा, "हमें अपनी रक्षा के लिये क्या करना चाहिये? समुद्र को शांत करने के लिये हमें तेरे साथ क्या करना चाहिये?"

[12]योना ने लोगों से कहा, "मैं जानता हूँ कि मेरे कारण ही समुद्र में यह तूफान आया है। सो तुम लोग मुझे समुद्र में फेंक दो। इससे तूफान शांत हो जायेगा।"

[13]किन्तु लोग योना को समुद्र में फेंकना नहीं चाहते थे। लोग नाव को तट पर वापस लाने के लिये, उसे खेने का प्रयत्न करने लगे। किन्तु वे वैसा कर नहीं पाये, क्योंकि आँधी, तूफान और सागर की लहरें बहुत शक्तिशाली थीं और वे प्रबल से प्रबल होती चली जा रही थीं!

योना का दण्ड

[14]सो लोगों ने यहोवा को पुकारते हुए कहा, "हे यहोवा, इस पुरुष को हम इसके उन बुरे कामों के लिए समुद्र में फेंक रहे हैं, जो इसने किये हैं। कृपा कर के, तू हमें किसी निरपराध व्यक्ति का हत्यारा मत कहना। इसके वध के लिए तू हमें मत मार डालना। हम जानते हैं कि तू यहोवा है और तू जैसा चाहेगा, वैसा ही करेगा। किन्तु कृपा करके हम पर दयालु हो।"

[15]सो लोगों ने योना को समुद्र में फेंक दिया। तूफान रुक गया, सागर शांत हो गया! [16]जब लोगों ने यह देखा, तो वे यहोवा से डरने लगे और उसका सम्मान करने लगे। लोगों ने एक बलि अर्पित की, और यहोवा से विशेष मन्नते माँगी।

[17]योना जब समुद्र में गिरा, तो यहोवा ने योना को निगल जाने के लिए एक बहुत बड़ी मछली भेजी। योना तीन दिन और तीन रात तक उस मछली के पेट में रहा।

2 योना जब मछली के पेट में था, तो उसने अपने परमेश्वर यहोवा की प्रार्थना की। योना ने कहा,

[2]"मैं गहरी विपत्ति में था। मैंने यहोवा की दुहाई दी और उसने मुझको उत्तर दिया! मैं गहरी कब्र के बीच था हे यहोवा, मैंने तुझे पुकारा और तूने मेरी पुकार सुनी!

[3]"तूने मुझको सागर में फेंक दिया था। तेरी शक्तिशाली लहरों ने मुझे थपेडे मारे मैं सागर के बीच में, मैं गहरे से गहरा उतरता चला गया। मेरे चारों तरफ बस पानी ही पानी था। [4]फिर मैंने सोचा, 'अब मैं, जाने को विवश हूँ, जहाँ तेरी दृष्टि मुझे देख नहीं पाएगी।' किन्तु मैं सहायता पाने को तेरे पवित्र मन्दिर की ओर निहारता रहूँगा।

[5]"सागर के जल ने मुझे निगल लिया है। पानी ने मेरा मुख बन्द कर दिया, और मेरा साँस घुट गया। मैं गहन सागर के बीच मैं उतरता चला गया मेरे सिर के चारों ओर शैवाल लिपट गये हैं। [6]मैं सागर की तलहटी पर पड़ा था, जहाँ पर्वत जन्म लेते हैं। मुझको ऐसा लगा, जैसे इस बन्दीगृह के बीच सदा सर्वदा के लिये मुझ पर ताले जड़े हैं। किन्तु हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तूने मुझको मेरी इस कब्र से निकाल लिया! हे परमेश्वर, तूने मुझको जीवन दिया!

[7]"जब मैं मूर्छित हो रहा था। तब मैंने यहोवा का स्मरण किया हे यहोवा, मैंने तुझसे विनती की और तूने मेरी प्रार्थनाएं अपने पवित्र मन्दिर में सुनी। [8]कुछ लोग व्यर्थ के मूर्तियों की पूजा करते हैं, किन्तु उन मूर्तियों ने उनको कभी सहारा नहीं दिया। [9]मुक्ति तो बस केवल यहोवा से आती है! हे यहोवा, मैं तुझे बलियाँ अर्पित करूँगा, और तेरे गुण गाऊँगा। मैं तेरा धन्यवाद करूँगा। मैं तेरी मन्नते मानूँगा और अपनी मन्नतों को पूरा करूँगा।"

[10]फिर यहोवा ने उस मछली से कहा और उसने योना को सूखी धरती पर अपने पेट से बाहर उगल दिया।

परमेश्वर का बुलावा और योना का आज्ञापालन

3 इसके बाद यहोवा ने योना से फिर कहा। यहोवा ने कहा, [2]"तू नीनवे के बड़े नगर में जा और वहाँ जा कर, जो बातें मैं तुझे बताता हूँ, उनकी शिक्षा दे।"

[3]सो यहोवा की आज्ञा मान कर योना नीनवे को चला गया। नीनवे एक विशाल नगर था। वह इतना विशाल था, कि उस नगर में एक किनारे से दूसरे किनारे तक व्यक्ति को पैदल चल कर जाने में तीन दिन का समय लगता था।

[4] सो योना ने नगर की यात्रा आरम्भ की और सारे दिन चलने के बाद, उसने लोगों को उपदेश देना आरम्भ कर दिया। योना ने कहा, "चालीस दिन बाद नीनवे तबाह हो जायेगा!"

[5]परमेश्वर की ओर से मिले इस सन्देश पर, नीनवे के लोगों ने विश्वास किया और उन लोगों ने कुछ समय के लिए खाना छोड़ कर अपने पापों पर सोच–विचार करने का निर्णय़ लिया। लोगों ने अपना दुःख व्यक्त करने के लिये विशेष प्रकार के वस्त्र धारण कर लिये। नगर के सभी लोगों ने चाहे वे बहुत बड़े या बहुत छोटे हो, ऐसा ही किया।

[6]नीनवे के राजा ने ये बातें सुनीं और उसने भी अपने बुरे कामों का शोक मनाया। इसके लिये राजा ने अपना सिंहासन छोड़ दिया। उसने अपने राजसी वस्त्र हटा दिये और अपना दुःख व्यक्त करने के लिए शोकवस्त्र धारण कर लिये। इसके बाद वह राजा धूल में बैठ गया। [7]राजा ने एक विशेष सन्देश लिखवाया और उस सन्देश की सारे नगर में घोषणा करवा दी:

राजा और उसके बड़े शासकों की ओर से आदेश था:

कुछ समय के लिये कोई भी पुरुष अथवा कोई भी पशु कुछ भी नहीं खायेगा। किसी रेवड़ या

पशुओं के झुण्ड को चरागाहों में नहीं जाने दिया जायेगा। नीनवे के सजीव प्राणी न तो कुछ खायेंगे और न ही जल पीयेंगे। [8]बल्कि हर व्यक्ति और हर पशु टाट धारण करेंगे जिससे यह दिखाई दे कि वे दुःखी हैं। लोग ऊँचे स्वर में परमेश्वर को पुकारेंगे। हर व्यक्ति को अपना जीवन बदलना होगा और उसे चाहिये कि वह बुरे कर्म करना छोड़ दे। [9]तब हो सकता है कि परमेश्वर की इच्छा बदल जाये और उसने जो योजना रच रखी है, वैसी बातें न करे। हो सकता है परमेश्वर की इच्छा बदल जाये और कुपित न हो। तब हो सकता है कि हमें दण्ड न दिया जाये।

[10] लोगों ने जो बातें की थी, उन्हें परमेश्वर ने देखा। परमेश्वर ने देखा कि लोगों ने बुरे कर्म करना बन्द कर दिया है। सो परमेश्वर ने अपना मन बदल लिया और जैसा करने की उसने योजना रची थी, वैसा नहीं किया। परमेश्वर ने लोगों को दण्ड नहीं दिया।

परमेश्वर की करुणा से योना कुपित

4 योना इस बात पर प्रसन्न नहीं था कि परमेश्वर ने नगर को बचा लिया था। योना क्रोधित हुआ। [2]उसने यहोवा से शिकायत करते हुए कहा, "मैं जानता था कि ऐसा ही होगा! मैं तो अपने देश में था, और तूने ही मुझसे यहाँ आने को कहा था। उसी समय मुझे यह पता था कि तू इस पापी नगर के लोगों को क्षमा कर देगा। मैंने इसलिये तर्शीश भाग जाने की सोची थी। मैं जानता था कि तू एक दयालु परमेश्वर है! मैं जानता था कि तू करुणा दर्शाता है और लोगों को दण्ड देना नहीं चाहता! मुझे पता था कि तू करुणा से पूर्ण है! मुझे ज्ञान था कि यदि इन लोगों ने पाप करना छोड़ दिया तो तू इनके विनाश की अपनी योजनाओं को बदल देगा। [3]सो हे यहोवा, अब मैं तुझसे यही माँगता हूँ, कि तू मुझे मार डाल। मेरे लिये जीवित रहने से मर जाना उत्तम है!"

[4]इस पर यहोवा ने कहा, "क्या तू सोचता है कि बस इसलिए कि मैं ने उन लोगों को नष्ट नहीं किया, तेरा क्रोध करना उचित है?"

[5]इन सभी बातों से योना अभी भी कुपित था। सो वह नगर के बाहर चला गया। योना एक ऐसे स्थान पर चला गया था जो नगर के पूर्वी प्रदेश के पास ही था। योना ने वहाँ अपने लिये एक पड़ाव बना लिया। फिर उसकी छाया में वहीं बैठे–बैठे वह इस बात की बाट जोहने लगा कि देखें इस नगर के साथ क्या घटता है?

रेंड़ का पौधा और कीड़ा

[6]उधर यहोवा ने रेंड़ का एक ऐसा पौधा लगाया जो बहुत तेज़ी से बढ़ा और योना पर छा गया। इसने योना को बैठने के लिए एक शीतल स्थान बना दिया। योना को इससे और अधिक आराम प्राप्त हुआ। इस पौधे के कारण योना बहुत प्रसन्न था।

[7]अगले दिन सुबह उस पौधे का एक भाग खा डालने के लिये परमेश्वर ने एक कीड़ा भेजा। कीड़े ने उस पौधे को खाना शुरु कर दिया और वह पौधा मुरझा गया।

[8]सूरज जब आकाश में ऊपर चढ़ चुका था, परमेश्वर ने पुरवाई की गर्म हवाएँ चला दीं। योना के सिर पर सूरज चमक रहा था, और योना एक दम निर्बल हो गया था। योना ने परमेश्वर से चाहा कि वह उसे मौत दे दे। योना ने कहा, "मेरे लिये जीवित रहने से अच्छा है कि मैं मर जाऊँ।"

[9]किन्तु परमेश्वर ने योना से कहा, "बता, तेरे विचार में क्या सिर्फ इसलिए कि यह पौधा सूख गया है, तेरा क्रोध करना उचित है?"

योना ने उत्तर दिया, "हाँ, मेरा क्रोध करना उचित ही है! मुझे इतना क्रोध आ रहा है कि जैसे बस मैं अपने प्राण ही दे दूँ!"

[10]इस पर यहोवा ने कहा, "देख, उस पौधे के लिये तूने तो कुछ भी नहीं किया! तूने उसे उगाया तक नहीं। वह रात में फूटा था और अगले दिन नाश हो गया और अब तू उस पौधे के लिये इतना दुःखी है। [11]यदि तू उस पौधे के लिए व्याकुल हो सकता है, तो देख नीनवे जैसे बड़े नगर के लिये जिसमें बहुत से लोग और बहुत से पशु रहते हैं, जहाँ एक लाख बीस हजार से भी अधिक लोग रहते हैं और जो यह भी नहीं जानते कि वे कोई गलत काम कर रहे हैं, उनके लिये क्या मैं तरस न खाऊँ!"

मीका

शोमरोन और इस्राएल को दण्ड दिया जायेगा

1 यहोवा का वह वचन जो राजा योताम, आहाज और हिजकिय्याह के समय में मीका को प्राप्त हुआ। ये पुरुष यहूदा के राजा थे। मीका मोरेशेती से था। मीका ने शोमरोन और यरूशलेम के बारे में ये दर्शन देखे।

2 हे लोगों, तुम सभी सुनो! हे धरती
और जो कुछ धरती पर है, सुन।
मेरा स्वामी यहोवा इस पवित्र मन्दिर से जायेगा।
मेरा स्वामी तुम्हारे विरोध में
एक साक्षी के रूप में आयेगा।
3 देखो, यहोवा अपने स्थान से बाहर जा रहा है।
वह धरती के ऊँचे स्थानों पर चलने के लिये
उतर कर नीचे आ रहा है।
4 परमेश्वर यहोवा के पांव तले पहाड़ पिघल
जायेंगे, घाटियाँ चरमरा जायेंगी।
जैसे आग के सामने मोम पिघल जाता है,
जैसे ढलान से पानी उतरता हुआ बहता है।
5 ऐसा क्यों होगा? यह इसलिये होगा कि
याकूब ने पाप किया है।
क्योंकि इस्राएल के वंश ने पाप किया है।

शोमरोन, पाप का कारण

याकूब से किसने पाप मानने से मना करवाया है? वह तो शोमरोन है! यहूदा में और कौन ऊँचा स्थान है? यह तो यरूशलेम है!

6 इसलिये मैं शोमरोन को खाली मैदान के खण्डहरों का ढ़ेर बनाऊँगा। वह ऐसा स्थान हो जायेगा जिसमें अंगूर लगाये जाते हैं। मैं शोमरोन के पत्थरों को घाटी में नीचे उखाड़ फेंकूँगा और मैं उसकी नीवों को बर्बाद कर दूँगा! 7 उसके सारे मूर्ति टुकड़ों में तोड़ दिये जायेंगे। सारा धन, जो भी इसने कमाया है, आग से भस्म होगा और मैं इसके झूठे देवताओं की मूर्तियों को नष्ट कर दूँगा क्योंकि शोमरोन से ये वस्तुएँ मेरे प्रति सच्चा न रहकर के पाई। सो ये सारी वस्तुएँ दूसरों के पास चली जायेंगी। ऐसे लोगों के पास जो मेरे प्रति सच्चे नहीं हैं।

मीका का महान दुःख

8 मैं इस शीघ्र आने वाले विनाश के कारण व्याकुल होऊँगा और हाय–हाय करूँगा। मैं जूते न पहनूँगा और न वस्त्र धारण करूँगा। गीदड़ों के जैसे मैं जोर से चिल्लाऊँगा। मैं विलाप करूँगा जैसे शुतुर्मुर्ग करते हैं। 9 शोमरोन का घाव नहीं भर सकता है। उसकी व्याधि (पाप) यहूदा तक फैल गया है। यह मेरे लोगों के नगर–द्वार तक पहुँच गया बल्कि यह तो यरूशलेम तक आ गया है।

10 इसकी बात गात की नगरी में मत करो। अको में मत रोओ। विलाप करो और बेत–आप्रा को मिट्टी में लोटो। 11 हे शापीर की निवासिनी, तू अपनी राह नंगी चली जा और लज्जाहीन हो कर चली जा। वे लोग, जो सानान के निवासी हैं, बाहर नही निकलेंगे। बेतेसेल के लोग रोये बिलखायेगें और तुम से इसका सहारा लेंगे।

12 ऐसा वह व्यक्ति जो मारोत का निवासी है, सुसमाचार आने को बाट जोहता हुआ दुर्बल हुआ जा रहा है। क्यों? क्योंकि यहोवा से नीचे यरूशलेम के नगर द्वार पर विपत्ती के उतरी है।

13 हे लाकीश की निवासियों, तुम वेगवान घोड़ों को रथ में जोतो। सिय्योन के पाप लाकीश में शुरु हुए थे। क्यों? क्योंकि तू इस्राएल के पापों का अनुसरण करती है।

14 सो तुझे गात में मोरेशेत को विदा के उपहार देने हैं। इस्राएल के राजा को अकजीब के घराने छलेंगे।

15 हे मारेशा के निवासियों, तेरे विरुद्ध मैं एक व्यक्ति को लाऊँगा जो तेरी सब वस्तुओं को छीन लेगा। इस्राएल की महिमा (परमेश्वर) अदुल्लाम में आयेगी।

[16]इसलिये तू अपने बाल काट ले और तू गंजा बन जा। क्यों? क्योंकि तू अपने बच्चों के लिये जिनसे तू प्यार करता था रोये चिल्लायेगा और तू शोक दर्शाने के लिये गंजा गिद्ध बन जा। क्यों? क्योंकि वे तुझको छोड़ने को और बाहर निकल जाने को विवश हो जायेंगे।

लोगों की बुरी योजनाएँ

2 ऐसे उन लोगों पर विपत्तियाँ गिरेंगी, जो पापपूर्ण योजना बनाते हैं। ऐसे लोग बिस्तर में सोते हुए षड़यन्त्र रचते हैं और पौ फटते ही वे अपने षड़यन्त्रों पर चलने लगते हैं। क्यों? क्योंकि उन के पास उन्हें पूरा करने की शक्ति है।

[2]उन्हें खेत चाहिये सो वे उनको ले लेते हैं। उनको घर चाहिये सो वे उनको ले लेते हैं। वे किसी व्यक्ति को छलते हैं और उसका घर छीन लेते हैं। वे किसी व्यक्ति को छलते हैं और वे उससे उसकी वस्तुएँ छीन लेते हैं।

लोगों को दण्ड देने की यहोवा की योजनाएँ

[3]इसलिये यहोवा ये बातें कहता है, "देखो, मैं इस परिवार पर विपत्तियाँ ढाने की योजना रच रहा हूँ। तुम अपनी सुरक्षा नहीं कर पाओगे। इस जुए के बोझ से तुम सिर ऊँचा करके नहीं चल पाओगे। क्यों? क्योंकि यह एक बुरा समय होगा।

[4]उस समय लोग तेरी हँसी उड़ाएँगे। तेरे बारे में लोग करुण गीत गायेंगे और वे कहेंगे:

'हम बर्बाद हो गये! यहोवा ने मेरे लोगों की धरती
छीन ली है और उसे दूसरे लोगों को दे दिया है।
हाँ उसने मेरी धरती को मुझसे छीन लिया है।
यहोवा ने हमारी धरती हमारे शत्रुओं के
बीच बाँट दी है।'

[5] "तेरी भूमि कोई व्यक्ति नाप नहीं पायेगा।
यहोवा के लोगों में भूमि को
बाँटने के लिये लोग पासे नहीं डालेंगे।"

मीका को उपदेश देने को मना करना

[6]लोग कहा करते हैं, "तू हमको उपदेश मत दे। उन्हें ऐसे नहीं कहना चाहिये, हम पर कोई भी बुरी बात नहीं पड़ेगी।" [7]हे याकूब के लोगों, किन्तु मुझे ये बातें कहनी हैं,"जो काम तूने किये हैं, यहोवा उनसे क्रोधित हो रहा है। यदि तुम लोग उचित रीति से जीवन जीते तो मैं तुम्हारे लिये अच्छे शब्द कहता।"

परमेश्वर के लोग परमेश्वर के शत्रु हो गये

[8]किन्तु अभी हाल में, मेरे ही लोग मेरे शत्रु हो गये हैं। तुम राहगीरों के कपड़े उतारते हो। जो लोग सोचते हैं कि वे सुरक्षित हैं, किन्तु तुम उनसे ही वस्तुएँ छीनते हो जैसे वे युद्धबन्दी हो।

[9]मेरे लोगों की स्त्रियों को तुमने उनके घर से निकल जाने को विवश किया जो घर सुन्दर और आराम देह थे। तुमने मेरी महिमा को उनके नन्हे बच्चों से सदा–सदा के लिये छीन लिया है।

[10]उठो और यहाँ से भागों! यह विश्राम का स्थान नहीं है। क्योंकि यह स्थान पवित्र नहीं है, यह नष्ट हो गया! यह भयानक विनाश है।!

[11]सम्भव है, कोई झूठा नबी आये और वह झूठ बोले। सम्भव है, वह कहे, "ऐसा समय आयेगा जब दाखमधु बहुत होगा, जब मदिरा बहुतायत में होगी और फिर इस तरह वह उसका नबी बन जायेगा।"

यहोवा अपने लोगों को एकत्र करेगा

[12]हाँ, हे याकूब के लोगों, मैं तुम सब को ही इकट्ठा करूँगा। मैं इस्राएल के बचे हुए लोगों को एकत्र करूँगा। जैसे बाड़े में भेड़े इकट्ठी की जाती हैं, वैसे ही मैं उनको एकत्र करूँगा जैसे किसी चरागाह में भेंड़ो का झुण्ड। फिर तो वह स्थान बहुत से लोगों के शोर से भर जायेगा।

[13]उनमें से कोई एक मुक्तिदाता उभरेगा। प्राचीर तोड़ता वहाँ द्वार बनाता, वह अपने लोगों के सामने आयेगा। वे लोग मुक्त होकर उस नगर को छोड़ निकलेंगे। उनके सामने उनका राजा चलेगा। लोगों के सामने उनका यहोवा होगा।

इस्राएल के मुखिया बुराई के अपराधी हैं

3 फिर मैंने कहा, "हे याकूब के मुखियाओं, अब सुनो। हे इस्राएल के प्रजा के शासकों, अब सुनो। तुमको जानना चाहिये कि न्याय क्या होता है!

[2]"किन्तु तुमको नेकी से घृणा है और तुम लोगों की खाल तक उतार लेते हो। तुम लोगों की हड्डियों से माँस नोच लेते हो!

[3]"तुम मेरे लोगों को नष्ट कर रहे हो! तुम उनकी खाल तक उनसे उतार रहे हो और उनकी हड्डियाँ तोड़ रहे हो। तुम उनकी हड्डियाँ ऐसे तोड़ रहे हो जैसे हांडी में माँस चढ़ाने के लिये।

[4]"तुम यहोवा से विनती करोगे किन्तु वह तुम्हें उत्तर नहीं देगा। नहीं, यहोवा अपना मुख तुमसे छुपायेगा। क्यों? क्योंकि तुमने बुरे कर्म किये हैं!"

झूठे नबी

[5]झूठे नबी यहोवा के लोगों को जीवन की उल्टी रीति सिखाते हैं। यहोवा उन झूठे नबियों के विषय में यह कहता है:

"यदि लोग इन नबियों को खाने को देते हैं, तो वे चिल्लाकर कहते हैं, तुम्हारे संग शान्ति हो, किन्तु यदि लोग उन्हें खाने को नहीं देते तो वे सेना को उनके विरुद्ध युद्ध करने को प्रेरित करते हैं।

[6]"इसलिये यह तुम्हारे लिये रात सा होगा। तुम कोई दर्शन नहीं देख पाओगे। भविष्य के गर्त में जो छिपा है, तुम बता नहीं पाओगे। इसलिये यह तुमको अन्धेरे जैसा लगेगा। नबियों पर सूर्य छिप जायेगा और उनके ऊपर दिन काला पड़ जायेगा।

[7]"भविष्य के दृष्टा लज्जित हो जायेंगे। वे लोग, जो भविष्य देखतें हैं, उनके मुँह काले हो जायेंगे। हाँ, वे सभी अपना मुँह बन्द कर लेंगे। क्यों? क्योंकि वहाँ परमेश्वर की ओर से कोई उत्तर नहीं होगा!"

मीका परमेश्वर का सच्चा नबी है

[8]"किन्तु यहोवा की आत्मा ने मुझको शक्ति, नेकी, और सामर्थ्य से भर दिया था। मैं याकूब को उसके पाप बतलाऊँगा। हाँ, मैं इस्राएल को उसके पापों के विषय में कहूँगा!

इस्राएल के मुखिया दोषी हैं

[9]हे याकूब के मुखियाओं, इस्राएल के शासकों, तुम मेरी बात सुनो! तुम खरी राहों से घृणा करते हो! यदि कोई वस्तु सीधी हो तो तुम उसे टेढ़ी कर देते हो! [10]तुमने सिय्योन का निर्माण लोगों की हत्या करके किया। तुमने यरूशलेम को पाप के द्वारा बनाया था! [11]यरूशलेम के न्यायाधीश उनके पक्ष में जो न्यायालय में जीतेगा, निर्णय देने के लिए घूस लिया करते हैं। यरूशलेम के याजकों को धन देना पड़ता है, इसके पहले कि वे लोगों को सीख दें। लोगों को नबियों को धन देना पड़ता है। इसके पहले कि वे भविष्य में झाँके और फिर भी वे मुखिया सोचते हैं कि उन पर कोई दण्ड नहीं पड़ सकता। वे सोचा करते हैं, "यहोवा उनको बचा लेगा और वे कहते हैं, "यहोवा हमारे बीच रहता है। इसलिये हमारे साथ कोई बुरी बात घट नहीं सकती है।"

[12]हे मुखियाओं, तुम्हारे ही कारण सिय्योन का विनाश होगा। यह किसी जुते हुए खेत सा सपाट हो जायेगा। यरुशलेम पत्थरों का टीला बन जायेगा और मन्दिर का पर्वत झाड़ियों से ढका हुआ एक सूनी पहाड़ी होगा।

व्यवस्था यरूशलेम से आयेगी

4 आगे आने वाले समय में यह घटना घटेगी यहोवा के मन्दिर का पर्वत सभी पर्वतों में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हो जायेगा। उसे पहाड़ो के ऊपर उठा दिया जायेगा। दूसरे देशों के लोग इसकी ओर उमड़ पड़ेंगे। [2]अनेक जातियाँ यहाँ आ कर कहेंगी, "आओ! चलो, यहोवा के पहाड़ पर ऊपर चलें। याकूब के परमेश्वर के मन्दिर चलें। फिर परमेश्वर हमको अपनी राह सिखायेगा और फिर हम उसके पथ में बढ़ते चले जायेंगे।" क्यों? क्योंकि परमेश्वर की शिक्षाएँ सिय्योन से आयेंगी और यहोवा का वचन यरूशलेम से आयेगा।"

[3]परमेश्वर बहुत सी जातियों का न्याय करेगा। परमेश्वर उन सशक्त देशों के फैसले करेगा, जो बहुत–बहुत दूर हैं और फिर वे देश अपनी तलवारें गलाकर और पीटकर हल की फाली में बदल लेंगे। वे देश अपने भालों को पीटकर ऐसे औजारों में बदल लेंगे, जिनसे पेड़ों की काट–छाँट हुआ करती है। देश तलवारें उठाकर आपस में नहीं लड़ेंगे। अब वे युद्ध की विद्याएँ और अधिक नहीं सीखेंगे।

[4]किन्तु हर कोई अपने अंगूरों की बेलों तले और अंजीर के पेड़ के नीचे बैठा करेगा। कोई भी व्यक्ति उन्हें डरा नहीं पायेगा! क्यों? क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह कहा है!

[5]दूसरे देशों के सभी लोग अपने देवताओं का अनुसरण करते हैं। किन्तु हम अपने परमेश्वर यहोवा के नाम में सदा–सर्वदा जिया करेंगे!

वह राज्य जिसे वापस लाना है

[6]यहोवा कहता है, "यरूशलेम पर प्रहार हुआ और वह लंगडा हो गया। यरूशलेम को फेंक दिया गया था। यरूशलेम को हानि पहुँचाई गई और उसको दण्ड़ दिया। किन्तु मैं उसको फिर अपने पास वापस ले आऊँगा।

[7]"उस 'ध्वस्त' नगरी के लोग विशेष वंश होंगे। उस नगर के लोगों को छोड़कर भाग जाने को विवश किया गया था। किन्तु मैं उनको एक सुदृढ़ जाति के रूप में बनाऊँगा।" यहोवा उनका राजा होगा और वह सिय्योन के पहाड़ पर से सदा शासन करेगा।

[8]"हे रेवड़ के मीनार, हे ओपेल, सिय्योन की पहाड़ी! जैसा पहले राज्य हुआ करता था, तू वैसा ही राज्य बनेगी। हाँ, हे सिय्योन की पुत्री! वह राज्य तेरे पास आयेगा।"

इस्राएलियों को बाबुल के पास निश्चय ही क्यों जाना चाहिए?

[9]अब तुम क्यों इतने ऊँचे स्वर में पुकार रहे हो? क्या तुम्हारा राजा जाता रहा है? क्या तुमने अपना मुखिया खो दिया है? तुम ऐसे तड़प रहे हो जैसे कोई स्त्री प्रसव के काल में तड़पती है। [10]सिय्योन की पुत्री, तू पीड़ा को झेल। तू उस स्त्री जैसी हो जा जो प्रसव की घड़ी में बिलखती है। क्योंकि अब तुझको नगर (यरूशलेम) त्यागना है। तुझको खुले मैदान में रहना है। तुझे बाबुल जाना पड़ेगा किन्तु उस स्थान से तेरी रक्षा हो जायेगी। यहोवा वहाँ जायेगा और वह तुझ को तेरे शत्रुओं से वापस ले आयेगा।

दूसरी जातियों को यहोवा नष्ट करेगा

[11]तुझसे लड़ने के लिये अनेक जातियाँ आयीं। वे कहती हैं, "सिय्योन को देखो! उस पर हमला करो!"

[12]लोगों की उनकी अपनी योजनाएँ है, किन्तु उन्हें ऐसी उन बातों का पता नहीं जिन के विषय में यहोवा योजना बना रहा है। यहोवा उन लोगों को किसी विशेष प्रयोजन के लिये यहाँ लाया। वे लोग वैसे कुचल दिये जायेंगे जैसे खलिहान में अनाज की पूलियाँ कुचली जाती हैं।

इस्राएल अपने शत्रुओं को पराजित कर विजयी होगा

[13]हे सिय्योन की पुत्री, खड़ी हो और तू उन लोगों को कुचल दे! मैं तुम्हें बहुत शक्तिशाली बनाऊँगा। तू ऐसी होगी जैसे तेरे लोहे के सींग हो। तू ऐसी होगी जैसे तेरे काँसे के खुर हो। तू मार–मार कर बहुत सारे लोगों की धज्जियाँ उड़ा देगी। "तू उनके धन को यहोवा को अर्पित करेगी। तू उनके खजाने, सारी धरती के यहोवा को समर्पित करेगी।"

5 हे सुदृढ़ नगर, अब तू अपने सैनिकों को एकत्र कर। शत्रु आक्रमण करने को हमें घेर रहे हैं! वे इस्राएल के न्यायाधीश के मुख पर अपने सोंटे से प्रहार करेंगे।

बेतलेहेम में मसीह जन्म लेगा

[2]हे बेतलेहेम एप्राता, तू यहूदा का छोटा नगर है और तेरा वंश गिनती में बहुत कम है। किन्तु पहले तुझसे ही "मेरे लिए इस्राएल का शासक आयेगा।" बहुत पहले सुदूर अतीत में उसके घराने की जड़े बहुत पहले से होंगी।

[3]यहोवा अपने लोगों को उनके शत्रुओं के हाथ में सौंप देगा। वे उस समय तक वहीं पर बने रहेंगे जब तक वह स्त्री अपने बच्चे को जन्म नहीं देती। फिर उसके बन्धु जो अब तक जीवित हैं, लौटकर आयेंगे। वे इस्राएल के लोगों के पास लौटकर आयेंगे।

[4]तब इस्राएल का शासक खड़ा होगा और भेड़ों के झुण्ड को चरायेगा। यहोवा की शक्ति से वह उनको राह दिखायेगा। वह यहोवा परमेश्वर के अदभुत नाम की शक्ति से उनको राहें दिखायेगा। वहाँ शान्ति होगी, क्योंकि ऐसे उस समय में उसकी महिमा धरती के छोरों तक पहुँच जायेगी।

[5]वहाँ शांति होगी, यदि अश्शूर की सेना हमारे देश में आयेगी और वह सेना हमारे विशाल भवन तोड़ेगी, तो इस्राएल का शासक सात गड़ेरिये चुनेगा। नहीं, हम आठ मुखियाओं को पायेंगे।

[6]वे अश्शूर के लोगों पर अपनी तलवारों से शासन करेंगे। नंगी तलवारों के साथ उन का राज्य निम्रोद की धरती पर रहेगा। फिर इस्राएल का शासक हमको अश्शूर के लोगों से बचायेगा। वे लोग जो हमारी धरती पर चढ़ आयेंगे और वे हमारे सीमाएँ रौंद डालेंगे।

[7]फिर बहुत से लोगों के बीच में याकूब के बचे हुए वशंज ओस के बूँद जैसे होंगे जो यहोवा की ओर से आई हो। वे घास के ऊपर वर्षा जैसे होंगे। वे लोगों पर

निर्भर नहीं होंगे। वे किसी जन की प्रतीक्षा नहीं करेंगे। वे किसी पर भी निर्भर नहीं होंगे।

[8]बहुत से लोगों के बीच याकूब के बचे हुए लोग उस सिंह जैसे होंगे जो जंगल के पशुओं के बीच होता है। जब सिंह बीच से गुजरता है तो वह वहीं जाता है, जहाँ वह जाना चाहता है। वह पशु पर टूट पड़ता है और उस पशु को कोई बचा नहीं सकता है। उसके बचे हुए लोग ऐसे ही होंगे। [9]तुम अपने हाथ अपने शत्रुओं पर उठाओगे और तुम उनका विनाश कर डालोगे।

लोग परमेश्वर के भरोसे रहेंगे

[10]यहोवा कहता है: "उस समय मैं तुमसे तुम्हारे घोड़े छीन लूँगा। तुम्हारे रथों को नष्ट कर डालूँगा।

[11]मैं तुम्हारे देश के नगर उजाड़ दूँगा। मैं तुम्हारे सभी गढ़ों को गिरा दूँगा।

[12]फिर तुम जादू चलाने का यत्न नहीं करोगे। फिर ऐसे उन लोगों को, जो भविष्य बताने का प्रयत्न करते हैं, तुम नहीं रखोगे।

[13]मैं तुम्हारे झूठे देवताओं के मूर्तियों को नष्ट करूँगा। उन झूठे देवों के पत्थर के स्मृति–स्तम्भ मैं उखाड़ फेंकूँगा जिनको तुमने स्वयं अपने हाथों से बनाया है। तुम उनकी पूजा नहीं कर पाओगे।

[14]मैं अशेरा की पूजा के खम्भों को नष्ट कर दूँगा। तुम्हारे झूठे देवताओं को मैं तहस–नहस कर दूँगा।

[15]कुछ लोग ऐसे होंगे जो मेरी नहीं सुनेंगे। मैं उन पर क्रोध करूँगा और मैं उन से बदला लूँगा।

यहोवा परमेश्वर की शिकायत

6 जो यहोवा कहता है: उस पर तुम कान दो। तुम पहाड़ो के सामने खड़े हो जाओ और फिर उनको कथा का अपना पक्ष सुनाओ, पहाड़ो को तुम अपनी कहानी सुनाओ।

[2]यहोवा को अपने लोगों से एक शिकायत है। पर्वतों, तुम यहोवा की शिकायत को सुनो। धरती की नीवों, यहोवा की शिकायत को सुनो। वह प्रमाणित करेगा कि इस्राएल दोषी है!

[3]यहोवा कहता है: हे मेरे लोगों, क्या मैंने कभी तुम्हारा कोई बुरा किया है? मैंने कैसे तुम्हारा जीवन कठिन किया है? मुझे बताओ, मैंने तुम्हारे साथ क्या किया है?

[4]मैं तुम को बताता हूँ जो मैंने तुम्हारे साथ किया है, मैं तुम्हे मिस्र की धरती से निकाल लाया, मैंने तुम्हे दासता से मुक्ति दिलाई थी। मैंने तुम्हारे पास मूसा, हारून और मरियम को भेजा था।

[5]हे मेरे लोगों, मोआब के राजा बालाक के कुचक्र याद करो। वे बातें याद करो जो बोर के पुत्र बिलाम ने बालाक से कहीं थी। वे बातें याद करो जो शित्तीम से गिल्गाल तक घटी थी। तभी समझ पाओगे की यहोवा उचित है!"

परमेश्वर हमसे क्या चाहता है?

[6]जब मैं यहोवा के सामने जाऊँ और प्रणाम करूँ, तो परमेश्वर के सामने अपने साथ क्या लेकर के जाऊँ? क्या यहोवा के सामने एक वर्ष के बछड़े की होम बलि लेकर के जाऊँ?

[7]क्या यहोवा एक हजार मढ़ों से अथवा दसियों हजार तेल की धारों से प्रसन्न होगा? क्या अपने पाप के बदले में मुझ को अपनी प्रथम संतान जो अपने शरीर से उपजी हैं, अर्पित करनी चाहिये?

[8]हे मनुष्य, यहोवा ने तुझे वे बातें बतायीं हैं जो उत्तम हैं। ये वे बातें हैं, जिनकी यहोवा को तुझ से अपेक्षा है। ये वे बातें हैं–तू दूसरे लोगों के साथ में सच्चा रह; तू दूसरो से दया के साथ प्रेम कर, और अपने जीवन नम्रता से परमेश्वर के प्रति बिना उपहारों से तुम उसे प्रभावित करने का जतन मत करो।

इस्राएल के लोग क्या रहे थे?

[9]यहोवा की वाणी यरूशलेम नगर को पुकार रही है। बुद्धिमान व्यक्ति यहोवा के नाम को मान देता हैं। इसलिए सजा के राजदण्ड पर ध्यान दे और उस पर ध्यान दे, जिसके पास राजदण्ड है!

[10]क्या अब भी दुष्ट अपने चुराये खजाने को छिपा रहे हैं? दुष्ट क्या अब भी लोगों को उन टोकरियों से छला करते हैं जो बहुत छोटी हैं? (यहोवा इस प्रकार से लोगों को छले जाने से घृणा करता है!)

[11]क्या मैं उन ऐसे बुरे लोगों को नजरअन्दाज कर दूँ जो अब भी खोटे बाँट और खोटी तराजू लोगों को ठगने के काम में लाते हैं? क्या मैं उन ऐसे बुरे लोगों को नजर अन्दाज कर दूँ, जो अब भी ऐसी गलत बोरियाँ रखते हैं, जिनके भार से गलत तौल दी जाती है?

[12]उस नगर के धनी पुरुष अभी भी क्रूर कर्म करते हैं! उस नगर के निवासी अभी भी झूठ बोला करते हैं। हाँ, वे लोग मनगढ़ंत झूठों को बोला करते हैं!

[13]सो मैंने तुम्हे दण्ड देना शुरु कर दिया है। मैं तुम्हे तुम्हारे पापों के लिये नष्ट कर दूँगा।

[14]तुम खाना खाओगे किन्तु तुम्हारा पेट नहीं भरेगा। तुम फिर भी भूखे रहोगे। तुम लोगों को बचाओगे, उन्हे सुरक्षित घर ले आने को किन्तु तुम जिसे भी बचाओगे, मैं उसे तलवार के घाट उतार दूँगा!

[15]तुम अपने बीज बोओगे किन्तु तुम उनसे भोजन नहीं प्राप्त करोगे। तुम घानी में पेर कर अपने जैतून का तेल निचोड़ोगे किन्तु तुम्हे उतना भी तेल नहीं मिलेगा जो अर्घ्य देने को पर्याप्त हो। तुम अपने अंगूरों को खूंद कर निचोड़ोगे किन्तु तुमको वह दाखमधु पीने को काफी नहीं होगा। [16]ऐसा क्यों होगा? क्योंकि तुम ओम्री के नियमों पर चलते हो। तुम उन बुरी बातों को करते हो जिनको आहाब का परिवार करता था। तुम उनकी शिक्षाओं पर चला करते हो इसलिए मैं तुम्हें नष्ट भ्रष्ट कर दूँगा। तुम्हारे नगर के लोग हँसी के पात्र बनेंगे। तुम्हे अन्य राज्यों की घृणा झेलनी होगी।

लोगो के पाप–आचरण पर मीका की व्याकुलता

7 मैं व्याकुल हूँ। क्यों? क्योंकि मैं गर्मी के उस फल सा हूँ जिसे अब तक बीन लिया गया है। मैं उन अंगूरों सा हूँ जिन्हें तोड़ लिया गया है। अब वहाँ कोई अंगूर खाने को नहीं बचे हैं। शुरु की अंजीरे जो मुझको भाती हैं, एक भी नहीं बची है।

[2]इस का अर्थ यह है कि सभी सच्चे लोग जाते रहे हैं। कोई भी सज्जन व्यक्ति इस प्रदेश में नहीं बचा है। हर व्यक्ति किसी दूसरे को मारने की घात में रहता है। हर व्यक्ति अपने ही भाई को फंदे में फँसाने का जतन करता है।

[3]लोग दोनों हाथों से बुरा करने में पारंगत हैं। अधिकारी लोग रिश्वत माँगते हैं। न्यायाधीश अदालतों में फैसला बदलने के लिये धन लिया करते हैं। "महत्वपूर्ण मुखिया" खरे और निष्पक्ष निणर्य नहीं लेते हैं। उन्हें जैसा भाता है, वे वैसा ही काम करते हैं।

[4]यहाँ तक कि उनका सर्वोच्च काँटों की झाड़ी सा होता है। यहाँ तक कि उनका सर्वोच्च काँटों की झाड़ी से अधिक टेढ़ा होता है।

दण्ड का दिन आ रहा है

तुम्हारे नबियों ने कहा था कि यह दिन आयेगा और तुम्हारे रखवालों का दिन आ पहुँचा है। अब तुमको दण्ड दिया जायेगा! तुम्हारी मति बिगड़ जायेगा! [5]तुम अपने पड़ोसी का भरोसा मत करो! तुम मित्र का भरोसा मत करो! अपनी पत्नी तक से खुलकर बात मत करो! [6]व्यक्ति के अपने ही घर के लोग उसके शत्रु हो जायेंगे। पुत्र अपने पिता का आदर नहीं करेगा। पुत्री अपनी माँ के विरुद्ध हो जायेगी। बहू अपने सास के विरुद्ध हो जायेगी।

यहोवा बचाने वाला है

[7]मैं सहायता के लिये यहोवा को निहारुँगा! मैं परमेश्वर की प्रतिक्षा करूँगा कि वह मुझको बचा ले। मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।

[8]मेरा पतन हुआ है। किन्तु हे मेरे शत्रु, मेरी हँसी मत उड़ा! मैं फिर से खड़ा हो जाऊँगा। यद्यपि आज अन्धेरे में बैठा हूँ यहोवा मेरे लिये प्रकाश होगा।

यहोवा क्षमा करता है

[9]यहोवा के विरुद्ध मैंने पाप किया था। अत: वह मुझ पर क्रोधित था। किन्तु न्यायालय में वह मेरे अभियोग का वकालत करेगा। वह, वे ही काम करेगा जो मेरे लिये उचित है। फिर वह मुझको बाहर प्रकाश में ले आयेगा और मैं उसके छुटकारे को देखूँगा।

[10]फिर मेरी बैरिन यह देखेगी और लज्जित हो जायेगी। मेरे शत्रु ने यह मुझ से कहा था, "तेरा परमेश्वर यहोवा कहाँ है?" उस समय, मैं उस पर हँसूंगी। लोग उसको ऐसे कुचल देंगे जैसे गलियों में कीचड़ कुचली जाती है।

यहूदी लौटने को हैं

[11]वह समय आयेगा, जब तेरे परकोटे का फिर निर्माण होगा, उस समय तुम्हारा देश विस्तृत होंगे।

[12]तेरे लोग तेरी धरती पर लौट आयेंगे। वे लोग अश्शूर से आयेंगे और वे लोग मिस्र के नगरों से आयेंगे। तेरे लोग मिस्र से और परात नदी के दूसरे छोर से आयेंगे। वे पश्चिम के समुद्र से और पूर्व के पहाड़ों से आयेंगे।

[13]धरती उन लोगों के कारण जो इसके निवासी थे बर्बाद हुई थी, उन कर्मों के कारण जिनको वे करते थे।

[14]सो अपने राजदण्ड से तू उन लोगों का शासन कर। तू उन लोगों के झुण्ड का शासन कर जो तेरे अपने हैं। लोगों का वह झुण्ड जंगलों में और कर्म्मेल के पहाड़ पर अकेला ही रहता है। वह झुण्ड बाशान में रहता है और गिलाद में बसता है जैसे वह पहले रहा करता था!

इस्राएल अपने शत्रुओं को हरायेगा

[15]जब मैं तुमको मिस्र से निकाल कर लाया था, तो मैंने बहुत से चमत्कार किये थे। वैसे ही और चमत्कार मैं तुम को दिखाऊँगा।

[16]वे चमत्कार जातियाँ देखेंगी और लज्जित हो जायेंगी। वे जातियाँ देखेंगी कि उनकी "शक्ति" मेरे सामने कुछ नहीं है। वे चकित रह जायेंगे और वे अपने मुखों पर हाथ रखेंगे! वे कानों को बन्द कर लेंगे और कुछ नहीं सुनेंगे।

[17]वे सांप से धूल चाटते हुये धरती पर लोटेंगे, वा भय से कापेंगे। जैसे कीड़े निज बिलों से रेंगतें हैं, वैसे ही वे धरती पर रेंगा करेंगे। वे डरे–कांपते हुये हमारे परमेश्वर यहोवा के पास जायेंगे। परमेश्वर, वे तुम्हारे सामने डरेंगे!

यहोवा की स्तुति

[18] तेरे समान कोई परमेश्वर नहीं है।
तू पापी जनों को क्षमा कर देता है।
तू अपने बचे हुये लोगों के
पापों को क्षमा करता है।
यहोवा सदा ही क्रोधित नहीं रहेंगा, क्योंकि
उसको तो दयालु ही रहना भाता है।

[19] हे यहोवा, हमारे पापों को दूर कर के फिर
हमको सुख चैन देगा, हमारे पापों को
तू दूर गहरे सागर में फेंक देगा।

[20] याकूब के हेतु तू सच्चा होगा।
इब्राहीम के हेतु तू दयालु होगा।
तूने ऐसी ही प्रतिज्ञा बहुत पहले
हमारे पूर्वजो के साथ की थी।

नहूम

1 यह नीनवे के विषय में एक दुःखद भविष्यवाणी है। यह पुस्तक नहूम के दर्शन की पुस्तक है। नहूम एल्कोश से था।

यहोवा नीनवे से कुपित है

[2]यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर है। यहोवा अपराधी लोगों को दण्ड देता है। यहोवा अपराधी लोगों को दण्ड देता है और यहोवा बहुत कुपित है! यहोवा अपने शत्रुओं को दण्ड देता है। वह अपने बैरियों पर क्रोधित रहता है।

[3]यहोवा धैर्यशील है, किन्तु साथ ही वह बहुत महा सामर्थी है! और यहोवा अपराधी लोगों को दण्ड देता है। वह उन्हें ऐसे ही छुट कर नहीं चले जाने देगा। देखों, यहोवा दुर्जनों को दण्ड देने आ रहा है। वह अपनी शक्ति दिखाने के लिये बवण्डरों और तूफानों को काम में लायेगा। मनुष्य तो धरती पर मिट्टी में चलता है, किन्तु यहोवा मेघों पर विचरता है!

[4]यदि यहोवा सागर को घुड़के तो सागर भी सूख जाये। सारी ही नदियों को वह सुखा सकता है! बाशान और कर्म्मेल की हरी–भरी भूमि सूख कर मर जाया करती है। लबानोन के फूल मुरझा कर गिर जाते हैं।

[5]यहोवा का आगमन होगा और पर्वत भय से काँपेंगे और ये पहाड़ियाँ पिघलकर बह जायेंगी। यहोवा का आगमन होगा और यह धरती भय से काँप उठेगी। यह जगत और जो कुछ इसमें है जो जीवित है, भय से काँपेगा।

[6]यहोवा के महाकोप का सामना कोई नहीं कर सकता, कोई भी उसका भयानक कोप नहीं सह सकता। उसका क्रोध आग सा धधकेगा। जब वह पधारेगा तब चट्टाने चटकेंगी।

[7]यहोवा संकट के काल में उत्तम है। वह सुरक्षित शरण ऐसे उन लोगों का है जो उसके भरोसे हैं। वह उनकी देख रेख करता है।

[8]किन्तु वह अपने शत्रुओं को पूरी तरह नष्ट कर देगा। वह उन्हें बाढ़ के समान बहा कर ले जायेगा। अंधकार के बीच वह अपने शत्रुओं का पीछा करेगा।

[9]क्या तुम यहोवा के विरोध में षड़यंत्र रच रहे हो? वह तेरा अंत कर देगा। फिर और कोई दूसरी बार कभी यहोवा का विरोध नहीं करेगा!

[10]तुम्हारे शत्रु उलझे हुये काँटो से नष्ट होंगे। वे सूखी घास जैसे शीघ्र जल जायेंगे।

[11]हे अश्शूर, एक व्यक्ति तुझसे ही आया है। जिसने यहोवा के विरोध में षड़यंत्र रचे और उसने पाप पूर्ण सलाहें प्रदान कीं।

[12]यहोवा ने यहूदा से ये बातें कहीं थी: "अश्शूर की जनता पूर्ण शक्तिशाली है। उनके पास बहुतेरे सैनिक हैं। किन्तु उन सब को ही काट फेंका जायेगा। सब का अंत किया जायेगा। हे मेरे लोगों, मैंने तुमको बहुतेरे कष्ट दिये किन्तु अब आगे तुम्हें और कष्ट नहीं दूँगा।

[13]"मैं अब तुम्हें अश्शूर की शक्ति से मुक्त करूँगा। तुम्हारे कन्धे से मैं वह जुआ उतार दूँगा। तुम्हारी जंजीरे जिनमें तुम बंधे हो मैं अब तोड़ दूँगा।"

[14]हे अश्शूर के राजा, तेरे विषय में यहोवा ने यह आदेश दिया है: "तेरा नाम लेवा कोई भी वंशज न रहेगा। तेरी खुदी हुई मूर्तियाँ और धातु की मूर्तियाँ मैं नष्ट कर दूँगा जो तेरे देवताओं के मन्दिरों में रखे हुये हैं। मैं तेरे लिये कब्र बना रहा हूँ क्योंकि तेरा अंत आ रहा है!'

[15]देख यहूदा! देख वहाँ, पहाड़ के ऊपर से कोई आ रहा है। कोई हरकारा सुसंदेश ले कर आ रहा है! देखो वह कह रहा है कि यहाँ पर शांति है! यहूदा, तू अपने विशेष अवकाश दिवस मना ले। यहूदा, तू अपनी मन्नते मना ले। अब फिर कभी दुर्जन तुझ पर वार न करेंगे और वे फिर तुझको हरा नहीं पायेंगे। उन सभी दुर्जनों का अन्त कर दिया गया है!

नीनवे का विनाश होगा

2 नीनवे, तेरे विरुद्ध युद्ध करने को विनाशकारी आ रहा है। सो तू अपने नगर के स्थान सुरक्षित कर ले। राहों पर आँख रख, युद्ध को तत्पर रह, लड़ाई की तैयारी कर!

[2]क्यों? क्योंकि यहोवा याकूब को महिमा लौटा रहा है जैसे इस्राएल की महिमा। अश्शूर के लोगों ने इस्राएल की प्रजा का नाश किया और उनकी अंगूर की बेलें रौंद ड़ाली हैं।

[3]उन सैनिकों की ढाल लाल है। उनकी वर्दियाँ सुर्ख लाल हैं। उनके रथ युद्ध के लिये पंक्तिबद्ध हो गये हैं और वे ऐसे चमक रहे हैं जैसे वे आग की लपटें हों। उनके घोड़े चल पड़ने को तत्पर हैं।

[4]उनके रथ गलियों में भयंकर रीति से भागते हैं। वे खुले मैदानों में सुलगती मशालों से दिखते हुये वेग से पीछे और आगे को दौड़ रहे हैं । वे ऐसे लगते हैं जैसे यहाँ वहाँ बिजली कड़क रही हो!

[5]अश्शूर का राजा अपने उन सैनिकों को बुला रहा है जो सर्वश्रेष्ठ हैं। किन्तु वे ठोकर खा रहे हैं और मार्ग में गिरे जा रहे हें। वे नगर परकोटे पर दौड़ते हैं और वे भेदक मूसल के लिये प्राचीर रच रहे हैं

[6]किन्तु वे द्वार जो नदियों के निकट है, खुले हैं। शत्रु उनमें से जा रहा है और राजा के महल को ध्वस्त कर रहा है।

[7]देखो, यह शत्रु रानी को उठा ले जाता है और उसकी दासियाँ बिलखती हैं जैसे दुःख से भरी कपोती हों। वे अपना दुःख प्रगट करने को निज छाती पीट रहीं हैं।

[8]नीनवे ऐसे तालाब सा हो गया है जिस का पानी बह कर बाहर निकल रहा हो। वे लोग पुकार कर कह रहे हैं, "रुको! रुको! ठहरे रहो, कहीं भाग मत जाओ।" किन्तु कोई न ही रूकता है और न ही कोई उन पर ध्यान देता है!

[9]हे सैनिको, तुम जो नीनवे का विनाश कर रहे हो! तुम चाँदी ले लो और यह सोना ले लो! यहाँ पर लेने को बहुतेरी वस्तुऐं हैं। यहाँ पर बहुत से खजाने भी हैं!

[10]अब नीनवे खाली है, सब कुछ लुट गया है। नगर बर्बाद हो गया है! लोगों ने निज साहस खो दिया है। उनके मन डर से पिघल रहे हैं, उनके घुटने आपस में टकराते हैं। उनके तन काँप रहे हैं, उनके मुख डर से पीले पड़ गये हैं।

[11]नीनवे जो कभी सिंह का माँद था, अब वह कहाँ है? जहाँ सिंह और सिंहनियाँ रहा करते थे। उनके बच्चे निर्भय थे।

[12]जिस सिंह ने (नीनवे के राजा ने) अपने बच्चों और मादाओं को तृप्ति देने के लिये कितने ही शिकार मारे थे। उसने माँद (नीनवे) भर ली थी। मादाओं और नरों की देहों से जिनको उसने मारा था।

[13]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "नीनवे, मैं तेरे विरुद्ध हूँ! मैं तेरे रथो को युद्ध में जला दूँगा। मैं तेरे 'जवान सिंहों' की हत्या करूँगा। तू फिर कभी इस धरती पर कोई भी अपना शिकार नहीं मार पायेगा। लोग फिर कभी तेरे हरकारों को नहीं सुनेंगे।"

नीनवे के लिये बुरा समाचार

3 उस हत्यारों के नगर को धिक्कार है। नीनवे, ऐसा नगर है जो झूठों से भरा है। यह दूसरे देशों के लूट के माल से भरा है। यह उन बहुत सारे लोगों से भरा है जिनका उसने पीछा किया और जिन्हे इसने मार डाला है!

[2]देखो, कोड़ों की फटकार, पहियों का शोर, और घोड़ों की टापें सुनाई दे रही हैं, और साथ–साथ उछलते रथों का शब्द सुनाई दे रहा है!

[3]घुड़सवार हमला कर रहे हैं और उनकी तलवारें चमक रही हैं, उनके भाले चमचमाते हैं! कितने ही लोग मरे हुये हैं, लाशों के ढ़ेर लग गये हैं, अनगिनत लाशें फैली हैं। लोग मुर्दो पर गिर–गिर कर चल रहे हैं!

[4]यह सब कुछ नीनवे के कारण घटा है। नीनवे उस वेश्या सी है जो कभी तृप्ति नहीं होती, उसको और अधिक, और अधिक चाहिए था। उसने अपने को बहुत सारे देशों को बेच दिया था और उसने उनको अपना दास बनाने को जादू चलाया था।

[5]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "हे नीनवे, मैं तेरे विरुद्ध हूँ। मैं तेरे वस्त्र तेरे मुँह तक ऊपर उठा दूँगा। तेरी नग्न देह को मैं सारे देशों को दिखा दूँगा। वे सारे राज्य तेरी लाज को देखेंगे।

[6]"मैं तेरे ऊपर घिनौनी वस्तु फेंक दूँगा। मैं तुझ से घृणा के साथ बर्ताव करूँगा। लोग तुझ को देखेंगे और तुझ पर हँसेंगे।

[7]"जो कोई भी तुझ को देखेगा तुझ से दूर भागेगा। हे नीनवे, मुझ को इसका पता है कि कोई ऐसा नहीं है जो तुझ को सुख चैन दे।"

[8]नीनवे, क्या तू नील नदी के तट पर बसी अमोन से उत्तम है? नहीं! अमोन के चारों ओर भी पानी हुआ करता था। अमोन इस पानी का इस्तेमाल स्वयं को शत्रु से बचाने के लिये खाई के रूप में किया करता था। इस पानी का उपयोग वह एक परकोटे के रूप में भी करता था। [9]कूश और मिस्र ने अमोन को बहुत शक्ति प्रदान की थी। उसे पूत और लूबी का भी समर्थन प्राप्त था। [10]किन्तु अमोन हार गया। उसके लोगों को बंदी बना कर किसी पराये देश में ले जाया गया। गली के हर नुक्कड़ पर सैनिकों ने उसके छोटे बच्चों को पीट–पीट कर मार डाला। उन्होंने पासे फेंक–फेंक कर यह देखा कि किस महत्वपूर्ण व्यक्ति को कौन अपने यहाँ दास बना कर रखे। अमोन के सभी महत्वपूर्ण पुरुषों पर उन्होंने जंजीरें डाल दी थीं।

[11]"सो नीनवे, तेरा भी किसी नशे में धुत्त व्यक्ति के समान, पतन होगा! तू छिपता फिरेगा। शत्रु से दूर, तू कोई सुरक्षित स्थान ढूँढ़ता फिरेगा। [12]किन्तु नीनवे, तेरी सभी मज़बूत गढ़ियाँ अंजीर के पेड़ों सा हो जायेंगी। नयी अंजीरें पकतीं है, एक व्यक्ति आता है, और पेड़ को झकझोर देता है। अंजीरें उस व्यक्ति के मुख में गिरती हैं और वे उन्हें खाता है, और वे समाप्त हो जाती हैं!

[13]नीनवे, तेरे लोग तो स्त्रियों जैसे हैं और शत्रु के सैनिक उन्हें ले लेने के लिये तैयार बैठे हैं। तेरी धरती के द्वार खुले पड़े हैं कि तेरा शत्रु भीतर आ जाये। तेरे द्वारों में लगी लकड़ी के आँगल को आग ने जलाकर नष्ट कर दिया है।

[14]तू पानी इकट्ठा कर और उसे अपने नगर के भीतर जमा कर ले। क्योंकि शत्रु के सैनिक तेरे नगर को घेर लेंगे। वे नगर के भीतर किसी भी व्यक्ति को खाना–पीना नहीं लाने देंगे। अपनी सुरक्षा को मज़बूत बना! और अधिक ईंटें बनाने के लिये मिट्टी ले! गारा बना और ईंटें बनाने के लिए साँचे ले। [15]तू यह सब काम कर सकता है किन्तु फिर भी आग तुझे पूरी तरह नष्ट कर देगी और तलवार तुझे मार डालेगी। तेरी धरती ऐसी दिखाई देगी जैसे उस पर कोई टिड्डी दल आया हो और सब कुछ चट कर गया हो।

नीनवे, तू बढ़ता ही चला गया। तू एक टिड्डी दल के जैसा हो गया। तू टिड्डी का झुण्ड बन गया। [16]तेरे यहाँ अनेकानेक व्यापारी हो गये जो अनेक स्थानों पर जा कर वस्तुएँ खरीदा करते थे। वे इतने अनगिनत हो गये जितने आकाश में तारे हैं! वे उस टिड्डी दल के जैसे हो गये, जो खाता है और सब कुछ को उस समय तक खाता रहता है जब तक वह समाप्त नहीं हो जाती और फिर छोड़ कर चला जाता है। [17]तेरे सरकारी हाकिम भी टिड्डियों जैसे ही हैं। ये उन टिड्डियों के समान हैं जो ठण्डे के दिन एक चट्टान पर बैठ जाती है, किन्तु जब सूरज चढ़ने लगता है और चट्टान गर्म होने लगती है तो वह कहीं दूर उड़ जाती है। कोई नहीं जानता, वे कहाँ चली गयीं! तेरे हाकिम भी ऐसे ही होंगे।

[18]हे अश्शूर के राजा, तेरे चरवाहे (मुखिया) सो गये। वे शक्तिशाली पुरुष नींद में पड़े हैं। और तेरी भेड़ें (प्रजा) अब पहाड़ों पर भटक रही हैं। उन्हें वापस लाने वाला कोई नहीं है।

[19]नीनवे, तू बुरी तरह घायल हुआ है और ऐसा कुछ नहीं है जो तेरे घाव को भर सके। हर कोई जो तेरे विनाश के समाचार को सुनता है, तालियाँ बजाता है। वे सब प्रसन्न हैं! क्योंकि उन सब ने उस पीड़ा का अनुभव किया है, जिसे तू सदा उन्हें पहुँचाया करता था!

हबक्कूक

हबक्कूक की परमेश्वर से शिकायत

1 यह वह संदेश है जो हबक्कूक नबी को दिया गया था।

[2]हे यहोवा, मैं निरतंर तेरी दुहाई देता रहता हूँ। तू मेरी कब सुनेगा? मैं इस हिंसा के बारे में तेरे आगे चिल्लाता रहा हूँ किन्तु तूने कुछ नहीं किया! [3]लोग लूट लेते हैं और दूसरे लोगों को हानि पहुँचाते हैं। लोग वाद विवाद करते हैं और झगड़ते हैं। हे यहोवा! तू ऐसी भयानक बातें मुझे क्यों दिखा रहा है? [4]व्यवस्था असहाय हो चुकी है और लोगों के साथ न्याय नहीं कर पा रही है। दुष्ट लोग सज्जनों के साथ अपनी लड़ाईयाँ जीत रहे हैं। सो, व्यवस्था अब निष्पक्ष नहीं रह गयी है!

हबक्कूक को परमेश्वर का उत्तर

[5]यहोवा ने उत्तर दिया, "दूसरी जातियों को देख! उन्हें ध्यान से देख, तुझे आश्चर्य होगा। मैं तेरे जीवन काल में ही कुछ ऐसा करूँगा जो तुझे चकित कर देगा। इस पर विश्वास करने के लिये तुझे यह देखना ही होगा। यदि तुझे उसके बारे में बताया जाये तो तू उस पर भरोसा ही नहीं कर पायेगा। [6]मैं बाबुल के लोगों को एक बलशाली जाति बना दूंगा। वे लोग बड़े दुष्ट और शक्तिशाली योद्धा हैं। वे आगे बढ़ते हुए सारी धरती पर फैल जायेंगे। वे उन घरों और उन नगरों पर अधिकार कर लेंगे जो उनके नहीं है। [7]बाबुल के लोग दूसरे लोगों को भयभीत करेंगे। बाबुल के लोग जो चाहेंगे, सो करेंगे और जहाँ चाहेंगे, वहाँ जायेंगे। [8]उनके घोड़े चीतों से भी तेज़ दौड़ने वाले होंगे और सूर्य छिप जाने के बाद के भेड़ियों से भी अधिक खूंखार होंगे। उनके घुड़सवार सैनिक सुदूर स्थानों से आयेंगे। वे अपने शत्रुओं पर वैसे टूट पड़ेंगे जैसे आकाश से कोई भूखा गिद्ध झपट्टा मारता है। [9]वे सभी बस युद्ध के भूखे होंगे। उनकी सेनाएँ मरुस्थल की हवाओं की तरह नाक की सीध में आगे बढ़ेंगी। बाबुल के सैनिक अनगिनत लोगों को बंदी बनाकर ले जायेंगे। उनकी संख्या इतनी बड़ी होगी जितनी रेत के कणों की होती है।

[10]"बाबुल के सैनिक दूसरे देशों के राजाओं की हँसी उड़ायेंगे। दूसरे देशों के राजा उनके लिए चुटकुले बन जायेंगे। बाबुल के सैनिक ऊँचे सुदृढ़ परकोटे वाले नगरों पर हँसेंगे। वे सैनिक उन अन्धे परकोटों पर मिट्टी के दमदमे बांध कर उन नगरों को सरलता से हरा देंगे। [11]फिर वे दूसरे स्थानों पर युद्ध के लिये उन स्थानों को छोड़ कर ऐसे ही आगे बढ़ जायेंगे जैसे आंधी आती है और आगे बढ़ जाती है। बाबुल के वे लोग बस अपनी शक्ति को ही पूजेंगे।"

परमेश्वर से हबक्कूक के प्रश्न

[12]फिर हबक्कूक ने कहा, "हे यहोवा, तू अमर यहोवा है! तू मेरा पवित्र परमेश्वर है जो कभी भी नहीं मरता! हे यहोवा, तूने बाबुल के लोगों को अन्य लोगों को दण्ड देने को रचा है। हे हमारी चट्टान, तूने उनको यहूदा के लोगों को दण्ड देने के लिये रचा है।

[13]"तेरी भली आँखें कोई दोष नहीं देखती हैं। तू पाप करते हुए लोगों के नहीं देख सकता है। सो तू उन पापियों की विजय कैसे देख सकता है? तू कैसे देख सकता है कि सज्जन को दुर्जन पराजित करे?

[14]"तूने ही लोगों को ऐसे बनाया है जैसे सागर की अनगिनत मछलियाँ जो सागर के छुद्र जीव हैं बिना किसी मुखिया के।

[15]"शत्रु काँटे और जाल डाल कर उनको पकड़ लेता है। अपने जाल में फँसा कर शत्रु उन्हें खींच ले जाता है और शत्रु अपनी इस पकड़ से बहुत प्रसन्न होता है।

[16]"यह फंदे और जाल उसके लिये ऐसा जीवन जीने में जो धनवान का होता है और उत्तम भोजन

खाने में उसके सहायक बनते हैं। इसलिये वह शत्रु अपने ही जाल और फंदों को पूजता है। वह उन्हें मान देने के लिये बलियाँ देता है और वह उनके लिये धूप जलाता है।

[17]"क्या वह अपने जाल से इसी तरह मछलियाँ बटोरता रहेगा? क्या वह (बाबुल की सेना) इसी तरह निर्दय लोगों का नाश करता रहेगा?

2 "मैं पहरे की मीनार पर जाकर खड़ा होऊँगा। मैं वहाँ अपनी जगह लूँगा और रखवाली करूँगा। मैं यह देखने की प्रतिक्षा करूँगा कि यहोवा मुझसे क्या कहता है। मैं प्रतिक्षा करूँगा और यह जान लूँगा कि वह मेरे प्रश्नों का क्या उत्तर देता है।"

परमेश्वर द्वारा हबक्कूक की सुनवाई

[2]यहोवा ने मुझे उत्तर दिया, "मैं तुझे जो कुछ दर्शाता हूँ, तू उसे लिख ले। सूचना शिला पर इसे साफ़–साफ़ लिख दे ताकि लोग आसानी से उसे पढ़ सकें। [3]यह संदेश आगे आने वाले एक विशेष समय के बारे में है। यह संदेश अंत समय के बारे में है और यह सत्य सिद्ध होगा! ऐसा लग सकता है कि वैसा समय तो कभी आयेगा ही नहीं। किन्तु धीरज के साथ उसकी प्रतीक्षा कर। वह समय आयेगा और उसे देर नहीं लगेगी। [4]यह संदेश उन लोगों की सहायता नहीं कर पायेगा जो इस पर कान देने से इन्कार करते हैं। किन्तु सज्जन इस संदेश पर विश्वास करेगा और अपने विश्वास के कारण सज्जन जीवित रहेगा।

[5]परमेश्वर ने कहा, "दाखमधु व्यक्ति को भरमा सकती है। इसी प्रकार किसी शक्तिशाली पुरुष को उसका अहंकार मूर्ख बना देता है। उस व्यक्ति को शांति नहीं मिलेगी। मृत्यु के समान कभी उसका पेट नहीं भरता, वह हर समय अधिक से अधिक की इच्छा करता रहता है। मृत्यु के समान ही उसे कभी तृप्ति नहीं मिलेगी। वह दूसरे देशों को हराता रहेगा। वह दूसरे देशों के उन लोगों को अपनी प्रजा बनाता रहेगा। [6]निश्चय ही, ये लोग उसकी हँसी उड़ाते हुये यह कहेंगे, 'उस पर हाय पड़े जो इतने दिनों तक लूटता रहा है। जो ऐसे उन वस्तुओं को हथियाता रहा है जो उसकी नहीं थी! जो कितने ही लोगों को अपने कर्ज के बोझ तले दबाता रहा है।'

[7]"हे पुरुष, तूने लोगों से धन ऐंठा है। एक दिन वे लोग उठ खड़े होंगे और जो कुछ हो रहा है, उन्हें उसका अहसास होगा और फिर वे तेरे विरोध में खड़े हो जायेंगे। तब वे तुझसे उन वस्तुओं को छीन लेंगे। तू बहुत भयभीत हो उठेगा। [8]तूने बहुत से देशों की वस्तुएं लूटी हैं। सो वे लोग तुझसे और अधिक लेंगे। तूने बहुत से लोगों की हत्या की है। तूने खेतों और नगरों का विनाश किया है। तूने वहाँ सभी लोगों को मार डाला है। [9]हाँ! जो व्यक्ति बुरे कामों के द्वारा धनवान बनता है, उसका यह धनवान बनना, उसके लिये बहुत बुरा होगा। ऐसा व्यक्ति सुरक्षापूर्वक रहने के लिये ऐसे काम करता है। वह सोचा करता है कि वह उसकी वस्तुएं चुराने से दूसरे व्यक्तियों को रोक सकता है। किन्तु बुरी बातें उस पर पड़ेंगी ही।

[10]"तूने बहुत से लोगों के नाश की योजनाएँ बना रखी हैं। इससे तेरे अपने लोगों की निन्दा होगी और तुझे भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। [11]तेरे घर की दीवारों के पत्थर तेरे विरोध में चीख–चीख कर बोलेंगे। यहाँ तक कि तेरे अपने ही घर की छत की कड़ियाँ यह मानने लगेंगी कि तू बुरा है।

[12]"हाय पड़े उस बुरे अधिकारी पर जो खून बहाकर एक नगर का निर्माण करता है और दुष्टता के आधार पर चहारदीवारी से युक्त एक नगर को सुदृढ़ बनाता है। [13]सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह ठान ली है कि उन लोगों ने जो कुछ बनाया था, उस सब कुछ को एक आग भस्म कर देगी। उनका समूचा श्रम बेकार हो जायेगा। [14]फिर सब कहीं के लोग यहोवा की महिमा को जान जायेंगे और इसका समाचार ऐसे ही फैल जायेगा जैसे समुद्र में पानी फैला हो। [15]उस पर हाय पड़े जो अपने क्रोध में लोगों को उन्हें अपमानित करने के लिये मारता–पीटता है और उन्हें तब तक मारता रहता है जब तक वे लड़खड़ा न जाये. और फिर दाखमधु में धुत्त हुए से गिर न जायें।

[16]"किन्तु उसे यहोवा के क्रोध का पता चल जायेगा। वह क्रोध विष के एक ऐसे प्याले के समान होगा जिसे यहोवा ने अपने दाहिने हाथ में लिया हुआ है। उस व्यक्ति को उस क्रोध के विष को चखना होगा और फिर वह किसी धुत्त व्यक्ति के समान धरती पर गिर पड़ेगा।

"ओ दुष्ट शासक, तुझे विष के उसी प्याले में से पीना होगा। तेरी निन्दा होगी। तुझे आदर नहीं मिलेगा।

[17]लबानोन में तूने बहुत से लोगों की हत्या की है। तूने वहाँ बहुत से पशु लूटे हैं। सो तू जो लोग मारे गये थे, उनसे भयभीत हो उठेगा और तूने उस देश के प्रति जो बुरी बातें की; उनके कारण तू डर जायेगा। उन नगरों के साथ और उन नगरों में रहने वाले लोगों के साथ जो कुछ तूने किया, उससे तू डर जायेगा।"

मूर्तियों की निरर्थकता का सन्देश

[18]उसका यह झूठा देवता, उसकी रक्षा नहीं कर पायेगा क्योंकि वह तो बस एक ऐसी मूर्ति है जिसे किसी मनुष्य ने धातु से मढ़ दिया है। वह मात्र एक मूर्ति है। इसलिए जो व्यक्ति स्वयं उसका निर्माता है, उससे सहायता की अपेक्षा नहीं कर सकता। वह मूर्ति तो बोल तक नहीं सकता! [19]धिक्कार है उस व्यक्ति को जो एक कठपुतली से कहता है–"ओ देवता, जाग उठ!" उस व्यक्ति को धिक्कार है जो एक ऐसी पत्थर की मूर्ति से जो बोल तक नहीं पाती, कहता है, "ओ देवता, उठ बैठ!" क्या वह कुछ बोलेगी और उसे राह दिखाएगी वह मूर्ति चाहे सोने से मढ़ा हो, चाहे चाँदी से, किन्तु उसमें प्राण तो है ही नहीं।

[20]किन्तु यहोवा इससे भिन्न है! यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में रहता है। इसलिए यहोवा के सामने सम्पूर्ण पृथ्वी धरती को चुप रह कर उसके प्रति आदर प्रकट करना चाहिए।

हबक्कूक की प्रार्थना

3 हबक्कूक नबी के लिये शिग्योनीत प्रार्थना:

[2]हे यहोवा, मैंने तेरे विषय में सुना है। हे यहोवा, बीते समय में जो शक्तिपूर्ण कार्य तूने किये थे, उनपर मुझको आश्चर्य है। अब मेरी तुझसे विनती है कि हमारे समय में तू फिर उनसे भी बड़े काम कर। मेरी तुझसे विनती है कि तू हमारे अपने ही दिनों में उन बातों को प्रकट करेगा किन्तु जब तू जोश में भर जाये तब भी तू हम पर दया को दर्शाना याद रख।

[3]परमेश्वर तेमान की ओर से आ रहा है। वह पवित्र परान के पहाड़ से आ रहा है। आकाश प्रतिबिंबित तेज से भर उठा। धरती पर उसकी महिमा छा गई है!

[4]वह महिमा ऐसी है जैसे कोई उज्जवल ज्योति हो। उसके हाथ से ज्योति की किरणें फूट रही हैं और उसके हाथ में उसकी शक्ति छिपी है।

[5]उसके सामने महामारियाँ चलती हैं और उसके पीछे विध्वंसक नाश चला करता है।

[6]यहोवा खड़ा हुआ और उसने धरती को कँपा दिया। उसने अन्य जातियों के लोगों पर तीखी दृष्टि डाली और वे भय से काँप उठे। जो पर्वत अनन्त काल से अचल खड़े थे, वे पर्वत टूट–टूट कर गिरे और चकनाचूर हो गये। पुराने, अति प्राचीन पहाड़ ढह गये थे। परमेश्वर सदा से ही ऐसा रहा है!

[7]मुझको ऐसा लगा जैसे कुशान के नगर दुःख में हैं। मुझको ऐसा दिखा जैसे मिद्यान के भवन डगमगा गये हों।

[8]हे यहोवा, क्या तूने नदियों पर कोप किया? क्या जलधाराओं पर तुझे क्रोध आया था? क्या समुद्र तेरे क्रोध का पात्र बन गया? जब तू अपने विजय के घोड़ों पर आ रहा था और विजय के रथों पर चढ़ा था, क्या तू क्रोध से भरा था?

[9]तूने अपना धनुष ताना और तीरों ने अपने लक्ष्य को बेध दिया। जल की धाराएँ धरती को चीरने के लिए फूट पड़ी।

[10]पहाड़ों ने तुझे देखा और वे काँप उठे। जल धरती को फोड़ कर बहने लगा था। धरती से ऊँचे फव्वारे गहन गर्जन करते हुए फूट रहे थे।

[11]सूर्य और चाँद ने अपना प्रकाश त्याग दिया। उन्होंने जब तेरी भव्य बिजली की कौंधों को देखा, तो चमकना छोड़ दिया। वे बिजलियाँ ऐसी थी जैसे भाले हों और जैसे हवा में छुटे हुए तीर हों।

[12]क्रोध में तूने धरती को पाँव तले रौंद दिया और देशों को दण्डित किया।

[13]तू ही अपने लोगों को बचाने आया था। तू ही अपने चुने राजा को विजय की राह दिखाने को आया था। तूने प्रदेश के हर बुरे परिवार का मुखिया, साधारण जन से लेकर अति महत्वपूर्ण व्यक्ति तक मार दिया।

[14]उन सेना नायकों ने हमारे नगरों पर तूफान की तरह से आक्रमण किया। उनकी इच्छा थी कि वे हमारे असहाय लोगों को जो गलियों के भीतर वैसे डर छुपे बैठे हैं जैसे कोई भिखारी छिपा झुका खाता है खाना कुचल डाले। किन्तु तूने उनके सिर को मुगदर की मार से फोड़ दिया।

[15]किन्तु तूने सागर को अपने ही घोड़ों से पार किया था और तूने महान जल निधि को उलट–पलट कर रख दिया।

[16]मैंने ये बातें सुनी और मेरी देह काँप उठी। जब मैंने महा–नाद सुना, मेरे होंठ फड़फड़ाने लगे! मेरी हड्डियाँ दुर्बल हुई। मेरी टाँगे काँपने लगीं। इसीलिये धैर्य के साथ मैं उस विनाश के दिन की बाट जोहूँगा। ऐसे उन लोगों पर जो हम पर आक्रमण करते हैं, वह दिन उतर रहा है।

यहोवा में सदा आनन्दित रहो

[17]अंजीर के वृक्ष चाहे अंजीर न उपजायें, अंगूर की बेलों पर चाहे अंगूर न लगें, वृक्षों के ऊपर चाहे जैतून न मिलें और चाहे ये खेत अन्न पैदा न करें, बाड़ों में चाहे एक भी भेड़ न रहे और पशुशाला पशुधन से खाली हों।

[18]किन्तु फिर भी मैं तो यहोवा में मग्न रहूँगा। मैं अपने रक्षक परमेश्वर में आनन्द लूँगा।

[19]यहोवा, जो मेरा स्वामी है, मुझे मेरा बल देता है। वह मुझ को वेग से हिरण सा भागने में सहायता देता है। वह मुझ को सुरक्षा के साथ पहाड़ों के ऊपर ले जाता है।

सपन्याह

1 यह सन्देश है जिसे यहोवा ने सपन्याह को दिया। सपन्याह ने यह सन्देश तब पाया जब आमोन का पुत्र योशिय्याह यहूदा का राजा था। सपन्याह कूशी का पुत्र था। कूशी गदल्याह का पुत्र था। गदल्याह अमर्याह का पुत्र था। अमर्याह हिजकिय्याह का पुत्र था।

लोगों का न्याय करने का यहोवा का दिन

[2]यहोवा कहता है, "मैं पृथ्वी की हर चीज़ को नष्ट कर दूँगा! [3]मैं सभी लोगों और सभी जानवरों को नष्ट करूंगा। मैं आकाश की चिड़ियों और सागर की मछलियों को नष्ट करूँगा। मैं पापी लोगों को और उन सभी चीज़ों को, जो उन्हें पापी बनाती है, नष्ट करूँगा। मैं सभी लोगो का इस धरती पर से नाम निशान मिटा दूँगा।" यहोवा ने यह सब कहा।

[4]यहोवा ने कहा, "मैं यहूदा और यरूशलेम के निवासियों को दण्ड दूँगा: मैं इन चीजों को उस स्थान से हटा दूँगा: मैं बाल–पूजन के अन्तिम चिन्हों को हटा दूँगा। मैं उन पुरोहितों और उन सभी लोगों को जो अपनी छतों पर तारों की पूजा करने जाते हैं, विदा करूँगा। [5]लोग उन झूठे पुरोहितों के बारे में भूल जाएंगे। कुछ लोग कहते हो कि वे मेरी उपासना करते हैं। उन लोगों ने मेरी उपासना करने की प्रतिज्ञा की किन्तु अब वे झूठे देवता मोलेक की पूजा करते हैं। अत: मैं उन लोगों को उस स्थान से हटाऊंगा। [6]कुछ लोग यहोवा से विमुख हो गये। उन्होंने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया। उन लोगों ने यहोवा से सहायता मांगना भी बन्द कर दिया। अत: मैं उन लोगों को उस स्थान से हटाऊंगा।"

[7]मेरे स्वामी यहोवा के आगे चुप रह! क्यों? क्योंकि लोगों के न्याय करने का यहोवा का दिन जल्दी ही आ रहा है! यहोवा ने अपनी भेंट–बलि (यहूदा के लोग) तैयार कर ली है और उसने अपने बुलाये हुए मेहमानों (यहूदा के शत्रुओं) से तैयार रहने के लिए कह दिया है।

[8]यहोवा ने कहा, "यहोवा के बलि के दिन, मैं राजपुत्रों और अन्य प्रमुखों को दण्ड दूँगा। मैं अन्य देशों के वस्त्रों को पहनने वाले सभी लोगों को दण्ड दूंगा। [9]उस समय मैं उन सभी लोगों को दण्ड दूँगा जो देहली पर कूदते हैं। मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा जो अपने स्वामी के गृह को कपट और हिंसा से इकट्ठे किए गए धन से भरते हैं।"

[10]यहोवा ने यह भी कहा, "उस समय, लोग यरूशलेम में मत्स्य–द्वार पर सहायता के लिये पुकार रहे होंगे। नगर के अन्य भागों में भी लोग चिल्ला रहे होंगे और लोग नगर के चारों ओर की पहाड़ियों में चीज़ों के नष्ट होने की भारी आवाज़े सुन रहे होंगे। [11]नगर के निचले भागों में रहने वाले लोगों, तुम चिल्लाओगे। क्यों? क्योंकि कारोबारी और धनी व्यापारी नष्ट कर दिये जायेंगे।

[12]"उस समय, मैं एक दीपक लूंगा और यरूशलेम में होकर खोज करूँगा। मैं उन सभी लोगों को ढूँढूंगा जो अपने ही तरीके से रहने में सन्तुष्ट हैं। वे लोग कहते है, 'यहोवा कुछ नहीं करता। वे न सहायता करते हैं न चोट ही पहुँचाते हैं!' मैं उन लोगो का पता लगाऊंगा और उन्हें दण्ड दूँगा! [13]तब अन्य लोग उनकी सारी सम्पत्ति लेंगे तथा उनके घरों को नष्ट करेंगे। उस समय जिन लोगों ने घर बनाए होंगे, वे उनमें नहीं रहेंगे और जिन लोगों ने अंगूर की बेलें खेतों में रोपी होंगी, वे उन अंगूरों का दाखमधु नहीं पीएंगे, उन चीजों को अन्य लोग लेंगे।"

[14]यहोवा के न्याय का विशेष दिन शीघ्र आ रहा है! वह दिन निकट है, और तेजी से आ रहा है। यहोवा के न्याय के विशेष दिन लोग चीखों भरे स्वर सुनेंगे। यहाँ तक कि वीर योद्धा भी चीख उठेंगे! [15]उस समय परमेश्वर अपना क्रोध प्रकट करेगा। यह भयंकर विपत्तियों का समय होगा। यह विध्वंस का समय होगा। यह काले,

घिरे हुए बादल और तूफानी दिन के अन्धकार का समय होगा। [16]यह युद्ध के ऐसे समय की तरह होगा जब लोग सुरक्षा मीनारों और सुरक्षित नगरों से सींगों और तुरही का नाद सुनेंगे।

[17]यहोवा ने कहा, "मैं लोगों का जीवन बहुत दूभर कर दूँगा। लोग उन अन्धों की तरह चारों ओर जाएंगे जिन्हें यह भी मालूम नहीं कि वे कहाँ जा रहे है? क्यों? क्योंकि उन लोगों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। अनेक लोग मार डाले जाएंगे। उनका खून जमीन पर बहेगा। उनके शव गोबर की तरह जमीन पर पड़े सड़ते रहेंगे। [18]उनका सोना–चाँदी उनकी सहायता नहीं कर पाएंगे! उस समय, यहोवा बहुत क्षुब्ध और क्रोधित होगा। यहोवा पूरे संसार को अपने क्रोध की अग्नि में जलाकर नष्ट कर देगा! यहोवा पूरी तरह पृथ्वी पर सब कुछ नष्ट कर देगा!"

परमेश्वर लोगों से जीवन–पद्धति बदलने को कहता है

2 लज्जाहीन लोगों, मुरझाये और मरते फूलों की तरह होने के पहले [2]अपने जीवन को बदल डालो। दिन की गर्मी में कोई फूल मुरझायेगा और मर जाएगा। तुम वैसे ही होगे जब यहोवा अपना भयंकर क्रोध प्रकट करेगा। अत: अपने जीवन को, यहोवा द्वारा तुम्हारे विरुद्ध क्रोध प्रकट करने के पहले, बदल डालो! [3]तुम सभी विनम्र लोगों, यहोवा के पास आओ! उसके नियमों को मानो। अच्छे काम करना सीखो। विनम्र होना सीखो। संभव है तब तुम सुरक्षित रह सको जब यहोवा अपना क्रोध प्रकट करे।

यहोवा इस्राएल के पड़ोसियों को दण्ड देगा

[4]अज्जा नगर में कोई भी नहीं बचेगा। अश्कलोन नष्ट किया जायेगा। दोपहर तक लोग अशदोद छोड़ने को विवश किये जायेंगे। एक्रोन सूना होगा! [5]पलिश्ती लोगों, सागर के तट पर रहने वाले लोगों, यहोवा का यह सन्देश तुम्हारे लिये हैं। कनान देश, पलिश्ती देश, तुम नष्ट कर दिये जाओगे, वहाँ कोई नहीं रहेगा! [6]समुद्र के किनारे की तुम्हारी भूमि तुम्हारे गड़ेरियों और उनकी भेड़ों के लिये खाली खेत हो जाएंगे। [7]तब वह भूमि यहूदा के बचे हुए लोगों के लिये होगी। यहोवा यहूदा के उन लोगों को याद रखेगा। वे लोग विदेश में बन्दी हैं। किन्तु यहोवा उन्हें वापस लाएगा। तब यहूदा के लोग उन खेतों में अपनी भेड़ों को घास चरने देंगे। शाम को वे अश्कलोन के खाली घरों में लेटेंगे।

[8]यहोवा कहता है, "मैं जानता हूँ कि मोआब और अम्मोन के लोगों ने क्या किया! उन लोगों ने हमारे लोगों को लज्जित किया। उन लोगों ने अपने देश को और अधिक बड़ा करने के लिये उनकी भूमि ली। [9]अत: जैसा कि मैं शाश्वत हूँ, मोआब और अम्मोन के लोग सदोम और अमोरा की तरह नष्ट किये जाएंगे। मैं सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि वे देश सदैव के लिये पूरी तरह नष्ट किये जाएंगे। उनकी भूमि में जंगली घासें उगेंगी। उनकी भूमि मृत सागर के नमक से ढकी भूमि जैसी होगी। मेरे लोगों में से बचे हुए उस भूमि को तथा इसमें छोड़ी गई हर चीज को लेंगे।"

[10]वे बातें, मोआब और अम्मोन के लोगों के लिये घटित होंगी क्योंकि उन्होंने सर्वशक्तिमान यहोवा के लोगों को लज्जित किया। [11]वे लोग यहोवा से डरेंगे! क्यों? क्योंकि यहोवा उनके देवताओं को नष्ट करेगा। तब सभी दूर–दराज़ के देश यहोवा की उपासना करेंगे। [12]कूश के लोगों, इसका अर्थ तुम भी हो। यहोवा की तलवार तुम्हारे लोगों को मार डालेगी [13]और यहोवा उत्तर की ओर अपना हाथ बढ़ाएगा और अश्शूर को दण्ड देगा। वे नीनवे को नष्ट करेगा, वह नगर खाली सूखी मरुभूमि जैसा होगा। [14]तब केवल भेड़ें और जंगली जानवर उस बर्बाद नगर में रहेंगे। उल्लू और कौवे उन स्तम्भों पर बैठेंगे जो खड़े छोड़ दिये गए हैं। उनकी ध्वनि खिड़कियों से आती सुनाई पड़ेगी। कौवे, द्वारों की सीढ़ियों पर बैठेंगे। उन सूने घरों में काले पक्षी बैठेंगे। [15]नीनवे इन दिनों इतना अधिक घमण्डी है। यह ऐसा प्रसन्न नगर है। लोग समझते हैं कि वे सुरक्षित हैं। वे समझते हैं कि नीनवे संसार में सबसे बड़ा स्थान है। किन्तु वह नगर नष्ट किया जाएगा! यह एक सूना स्थान होगा, जहाँ केवल जंगली जानवर आराम करने जाते हैं। जब लोग उधर से गुजरेंगे और देखेंगे कि कितनी बुरी तरह नगर नष्ट किया गया है तब वे सीटियाँ बजाएंगे और सिर हिलायेंगे।

यरूशलेम का भविष्य

3 यरूशलेम, तुम्हारे लोग परमेश्वर के विरुद्ध लड़े! तुम्हारे लोगों ने अन्य लोगों को चोट पहुँचाई और तुम पाप से कलंकित हो! [2]तुम्हारे लोग मेरी एक नहीं सुनते! वे मेरी शिक्षा को स्वीकार नहीं करते। यरूशलेम यहोवा में विश्वास नहीं रखता। यरूशलेम अपने परमेश्वर तक को नहीं जानती। [3]यरूशलेम के प्रमुख गुर्राते सिंह जैसे है। इसके न्यायाधीश ऐसे भूखे भेड़ियों की तरह हैं जो भेड़ों पर आक्रमण करने शाम को आते हैं, और प्रात:काल कुछ बचा नहीं रहता। [4]उसके नबी अपनी गुप्त योजनायें सदा अधिक से अधिक पाने के लिये बना रहे हैं। उसके याजकों ने पवित्र चीज़ों को अशुद्ध करता है। उन्होंने परमेश्वर की शिक्षा के प्रति बुरे काम किये हैं। [5]किन्तु परमेश्वर अब भी उस नगर में है और वह उनके प्रति लगातार न्यायपूर्ण बना रहा है। परमेश्वर कुछ भी बुरा नहीं करता। वह अपने लोगों की भलाई करता चला आ रहा है। लगातार हर सुबह वह अपने लोगों के साथ न्याय करता है। किन्तु बुरे लोग अपने किये बुरे कामों के लिये लज्जित नहीं हैं।

[6]परमेश्वर कहता है, "मैंने पूरे राष्ट्रों को नष्ट कर दिया है। मैंने उनकी रक्षा मीनारों को नष्ट किया है। मैंने उनकी सड़कें नष्ट की हैं और अब वहां कोई नहीं जाता। उनके नगर सूने हैं, उनमें अब कोई नहीं रहता। [7]मैं तुमसे यह इसलिए कह रहा हूँ ताकि तुम शिक्षा लो। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझसे डरो और मेरा सम्मान करो। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारा घर नष्ट नहीं होगा। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं अपनी बनाई योजना के अनुसार तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा।" किन्तु वे बुरे लोग वैसे ही बुरे काम और अधिक करना चाहते हैं जिन्हें उन्होंने पहले ही कर रखा हैं!

[8]यहोवा ने कहा, "अत: तनिक प्रतीक्षा करो! मेरे खड़े होने और अपने न्याय किये जाने के लिये मेरी प्रतीक्षा करो। अनेक राष्ट्रों से लोगों को लाने और तुमको दण्ड देने के लिये उनका उपयोग करने का निर्णय मेरा है। मैं उन लोगों का उपयोग अपना क्रोध तुम्हारे विरुद्ध प्रकट करने के लिये करूँगा। मैं उनका उपयोग यह दिखाने के लिये करूँगा कि मैं कितना क्षुब्ध हूँ, और यहूदा का पूरा प्रदेश नष्ट होगा! [9]तब मैं अन्य राष्ट्रों के लोगों की सहायता साफ–साफ बोलने के लिये करूँगा और वे यहोवा के नाम की प्रशंसा करेंगे। वे सभी एक साथ मेरी उपासना करेंगे। [10]लोग कूश में नदी की दूसरी ओर से पूरा रास्ता तय कर के आएंगे। मेरे बिखरे लोग मेरे पास आएंगे। मेरे उपासक मेरे पास आएंगे और अपनी भेंट लाएंगे।

[11]"यरूशलेम, तब तुम आगे चलकर उन बुरे कामों के लिये लज्जित होना बन्द कर दोगे। क्यों? क्योंकि मैं यरूशलेम से उन सभी बुरे लोगों को निकाल बाहर करूँगा। मैं उन सभी घमण्डी लोगों को दूर कर दूँगा। उन घमण्डी लोगों में से कोई भी मेरे पवित्र पर्वत पर नहीं रह जाएगा। [12]मैं केवल सीधे और विनम्र लोगों को अपने नगर (यरूशलेम) में रहने दूँगा और वे यहोवा के नाम में विश्वास करेंगे। [13]इस्राएल के बचे लोग बुरा काम नहीं करेंगे। वे झूठ नहीं बोलेंगे। वे झूठ बोलकर लोगों को ठगना नहीं चाहेंगे। वे उन भेड़ों की तरह होंगे जो खाती हैं और शान्त लेटती है, और कोई भी उन्हें तंग नहीं करेगा।"

आनन्द सन्देश

[14]हे यरूशलेम, गाओ और आनन्दित होओ! हे इस्राएल, आनन्द से घोष करो! यरूशलेम, प्रसन्न होओ, तमाशे करो! [15]क्यों? क्योंकि यहोवा ने तुम्हारा दण्ड रोक दिया! उन्होंने तुम्हारे शत्रुओं की दृढ़ मीनारों को नष्ट कर दिया! इस्राएल के राजा, यहोवा तुम्हारे साथ है। तुम्हें किसी बुरी घटना के होने के बारे में चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं! [16]उस समय, यरूशलेम से कहा जाएगा, "दृढ़ बनो, डरो नहीं।" [17]तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ हैं। वह शक्तिशाली सैनिक सा हैं। वह तुम्हारी रक्षा करेगा। वह दिखायेगा कि वह तुम से कितना प्यार करता है। वह दिखायेगा कि वह तुम्हारे साथ कितने प्रसन्न है। वे हसेगा और तुम्हारे बारे में ऐसे प्रसन्न होगा। [18]जैसे लोग दावत में होता है।" यहोवा ने कहा, "मैं तुम्हारी लज्जा को दूर करूँगा। मैं तुम्हारे दुर्भाग्य को तुम से दूर कर दूँगा।

[19]उस समय, मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा जिन्होंने तुम्हें चोट पहुँचाई। मैं अपने घायल लोगों की रक्षा करूँगा। मैं उन लोगों को वापस लाऊँगा, जो भागने को विवश किये गए थे और मैं उन्हें प्रसिद्ध करूँगा। लोग सर्वत्र उनकी प्रशंसा करेंगे। [20]उस समय, मैं तुम्हें वापस लाऊँगा। मैं तुम्हें एक साथ वापस लाऊँगा। मैं तुम्हें प्रसिद्ध बनाऊँगा। सर्वत्र लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे। यह तब होगा जब मैं तुम्हारी आँखों के सामने तुम बन्दियों को वापस लाऊँगा!" यहोवा ने यह सब कहा।

हाग्गै

मंदिर बनाने का समय

1 परमेश्वर यहोवा का सन्देश नबी हाग्गै के द्वारा शालतीएल के पुत्र यहूदा के शासक जरुब्बाबेल और यहोसादाक के पुत्र महायाजक यहोशू को मिला। यह सन्देश फारस के राजा दारा के दूसरे वर्ष के छठें महीने के प्रथम दिन मिला था। इस सन्देश में कहा गया: [2]सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, "लोग कहते हैं कि यहोवा का मंदिर बनाने के लिये समय नहीं आया है।"

[3]तब यहोवा का संदेश नबी हाग्गै के द्वारा आया, जिसमें कहा गया था: [4]"क्या यह तुम्हारे स्वयं के लिये लकड़ी मढ़े मकानों में रहने का समय है जबकि यह मंदिर अभी खाली पड़ा है? [5]यही कारण है कि सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: जो कुछ तुम्हारे साथ घट रहा हैं उस के बारे में सोचो!

[6]तुमने बोया बहुत है, पर तुम काटते हो नहीं के बराबर। तुम खाते हो, पर तुम्हारा पेट नहीं भरता। तुम पीते हो, पर तुम्हें नशा नहीं होता। तुम वस्त्र पहनते हो, किन्तु तुम्हें पर्याप्त गरमाहट नहीं मिलती। तुम जो थोड़ा बहुत कमाते हो पता नहीं कहां चला जाता है; लगता है जैसे जेबों में छेद हो गए हैं!'

[7]"सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'जो कुछ तुम्हारे साथ घट रहा है उसके बारें में सोचो! [8]पर्वत पर चढ़ो। लकड़ी लाओ और मंदिर को बनाओ। तब मैं मंदिर से प्रसन्न होऊँगा, और सम्मानित होऊँगा।'" यहोवा यह सब कहता है।

[9]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "तुम बहुत अधिक पाने की चाह में रहते हो, किन्तु तुम्हें नहीं के बराबर मिलता हैं। तुम जो कुछ भी घर पर लाते हो, मैं इसे उड़ा ले जाता हूँ! क्यो? क्योंकि मेरा मंदिर खंडहर पड़ा है। किन्तु तुम लोगों में हर एक को अपने अपने घरों की पड़ी है। [10]यही कारण है कि आकाश अपनी ओस तक रोक लेता है, और इसी कारण भूमि अपनी फसल नहीं देती। ऐसा तुम्हारे कारण हो रहा हैं।"

[11]यहोवा कहता है, "मैंने धरती और पर्वतों पर सूखा पड़ने का आदेश दिया है। अनाज, नया दाखमधु, जैतून का तेल, या वह सभी कुछ जिसे यह धरती पैदा करती है, नष्ट हो जायेगा! तथा सभी लोग और सभी मवेशी कमजोर पड़ जायेंगे।"

नये मंदिर के कार्य का आरम्भ

[12]तब शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और यहोसादाक के पुत्र महायाजक यहोशू ने सब बचे हुये लोगों के साथ अपने परमेश्वर यहोवा का सन्देश और उसके भेजे हुये नबी हाग्गै के वचनों को स्वीकार किया और लोग अपने परमेश्वर यहोवा से भयभीत हो उठे।

[13]परमेश्वर यहोवा के सन्देशवाहक हाग्गै ने लोगों को यहोवा का सन्देश दिया। उसने यह कहा, "मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

[14]तब परमेश्वर यहोवा ने शालतीएल के पुत्र यहूदा के शासक जरूब्बाबेल को प्रेरित किया और परमेश्वर यहोवा ने यहोसादाक के पुत्र महायाजक यहोशू को भी प्रेरित किया और परमेश्वर यहोवा ने बाकी के सभी लोगों को भी प्रेरित किया। तब वे आये और अपने सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा के मंदिर के निर्माण में काम करने लगे। [15]उन्होंने यह राजा दारा के दूसरे वर्ष के छठें महीने के चौबीसवें दिन किया।

यहोवा का लोगों को प्रेरित करना

2 यहोवा का सन्देश सातवें महीनें के इक्कीसवें दिन हाग्गै को मिला। सन्देश में कहा गया, [2]"अब यहूदा के शासक शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल, यहोसादाक के

पुत्र महायाजक यहोशू और जो लोग बचे हैं उनसे बातें करो और कहो: [3]"क्या तुममे कोई ऐसा बचा हैं जिसने उस मंदिर को अपने पहले के वैभव में देखा है। अब तुमको यह कैसा लग रहा है? क्या खण्डहर हुआ यह मन्दिर उस पहले वैभवशाली मन्दिर की तुलना में कहीं भी ठहर पाता हैं? [4]किन्तु जरुब्बाबेल, अब तुम साहसी बनों! यहोवा यह कहता है, 'यहोसादाक के पुत्र महायाजक यहोशू, तुम भी साहसी बनो और देश के सभी लोगों तुम भी साहसी बनो!' यहोवा यह कहता है, 'काम करो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ!' सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है!"

[5]यहोवा कहता है, "जहाँ तक मेरी प्रतिज्ञा की बात है, जो मैंने तुम्हारे मिस्र से बाहर निकलने के समय तुमसे की है, वह मेरी आत्मा तुममें हैं। डरो नहीं! [6]क्यों? क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'एक बार फिर मैं शीघ्र ही पृथ्वी और आकाश एवं समुद्र और सूखी भूमि को कम्पित करूँगा! [7]मैं सभी राष्ट्रों को कंपा दूंगा और वे सभी राष्ट्र अपनी सम्पत्ति के साथ तुम्हारे पास आएंगे। तब मैं इस मंदिर को गौरव से भर दूंगा! सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है। [8]उनकी चाँदी मेरी हैं और उनका सोना मेरा है।' सर्वशक्तिमान यहोवा यही कहता है। [9]इस मंदिर का परवर्ती गौरव प्रथम मंदिर के गौरव से बढ़कर होगा। सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है 'और इस स्थान पर मैं शान्ति स्थापित करूँगा। सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है!"

कार्य आरंभ हो चुका है वरदान प्राप्त होगा

[10]यहोवा का सन्देश दारा के दूसरे वर्ष के नौवें महीने के चौबीसवें दिन नबी हाग्गै को मिला। सन्देश में कहा गया था, [11]सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, अब याजक से पूछो कि व्यवस्था क्या है: [12]"संभव है कोई व्यक्ति अपने कपड़ों की तहों में पवित्र मांस ले चले। संभव है कि उस कपड़े की तह से जिसमें वह पवित्र मांस ले जा रहा हो, रोटी, या पका भोजन, दाखमधु, तेल या किसी अन्य भोजन का स्पर्श हो जाय। क्या वह चीज जिसका स्पर्श तह से होता है पवित्र हो जायेगी?"

याजक ने उत्तर दिया, "नहीं।"

[13]तब हाग्गै ने कहा, "संभव है कोई व्यक्ति किसी शव को छूले। तब वह अपवित्र हो जाएगा। किन्तु यदि वह किसी चीज को छूएगा तो क्या वह अपवित्र हो जायेगी?"

तब याजक ने उत्तर दिया, "हाँ, वह अपवित्र हो जाएगी।"

[14]तब हाग्गै ने उत्तर दिया, "परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मेरे सामने इन लोगों के प्रति वही नियम है, और वही नियम इस राष्ट्र के प्रति है! उसके हाथों ने जो कुछ किया वही नियम उसके लिए भी है। जो कुछ वे अपने हाथों भेंट करेंगे वह भी अपवित्र होगा। [15]किन्तु अब कृपया सोचें, आज के पहले क्या हुआ, इसके पूर्व कि यहोवा, परमेश्वर के मंदिर में एक पत्थर पर दूसरा पत्थर रखा गया था? [16]एक व्यक्ति बीस माप अनाज की ढेर के पास आता है, किन्तु वहाँ उसे केवल दस ही मिलते हैं और जब एक व्यक्ति दाखमधु के पीपे के पास पचास माप निकालने आता है तो वहाँ वह केवल बीस ही पाता है! [17]मैंने, तुम्हें और तुम्हारे हाथों ने जो कुछ किया उसे दण्ड दिया। मैंने तुमको उन बीमारियों से, जो पौधों को मारती है, और फफूंदी एवं ओलो से, दण्डित किया। किन्तु तुम फिर भी मेरे पास नहीं आए।' यहोवा यह कहता है।"

[18]यहोवा कहता है, "इस दिन से आगे सोचो अर्थात नौवें महीने के चौबीसवें दिन से जिस दिन यहोवा, के मंदिर की नींव तैयार की गई। सोचो। [19]क्या बीज अब भी भण्डार–गृह में है? क्या अंगूर की बेलें, अंजीर के वृक्ष, अनार और जैतून के वृक्ष अब तक फल नहीं दे रहे है? नहीं! किन्तु आज के दिन से, आगे के लिए मैं तुम्हे आशीर्वाद दूँगा।"

[20]तब महीने के चौबीसवें दिन हाग्गै को दूसरी बार यहोवा का सन्देश मिला। सन्देश में कहा गया, [21]"यहूदा के प्रशासक जरुब्बाबेल से कहो, 'मैं आकाश और पृथ्वी को कंपाने जा रहा हूँ [22]और मैं राज्यों के सिंहासनों को उठा फेंकूंगा और राष्ट्रों के राज्यों की शक्ति को नष्ट कर दूंगा और मैं रथों और उनके सवारों को नीचे फेंक दूंगा। तब घोड़े और उनके घुड़सवार गिरेंगे। भाई, भाई का दुश्मन हो जाएगा। [23]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "मैं उस दिन शालतीएल के पुत्र, अपने सेवक, जरुब्बाबेल को लूंगा।" यहोवा परमेश्वर यह कहता है और मैं तुम्हें मुद्रा अंकित करने की अंगूठी बनाऊँगा। क्यों? क्योंकि मैंने तुम्हें चुना है!"

सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा है।

जकर्याह

यहोवा अपने लोगों की वापसी चाहता है

1 बेरेक्याह के पुत्र जकर्याह ने यहोवा का सन्देश पाया। फारस में दारा के राज्यकाल के दूसरे वर्ष के आठवें महीने में यह हुआ। जकर्याह बेरेक्याह का पुत्र था। बेरेक्याह इद्दो नबी का पुत्र था। सन्देश यह है:

[2]यहोवा तुम्हारे पूर्वजों पर बहुत क्रोधित हुआ है। [3]अत: तुम्हें लोगों से यह सब कहना चाहिये। यहोवा कहता हैं, "मेरे पास वापस आओ तो मैं तुम्हारे पास वापस लौटूंगा।" यह सब सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा।

[4]यहोवा ने कहा, "अपने पूर्वजों के समान न बनो। बीते समय में, नबी ने उनसे बातें कीं। उन्होंने कहा, 'सर्वशक्तिमान यहोवा चाहता है कि तुम अपने बुरे रहन–सहन को छोड़ दो। बुरे काम बन्द कर दो!' किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी एक न सुनी।" यहोवा ने ये बातें कही।

[5]परमेश्वर ने कहा, "तुम्हारे पूर्वज जा चुके और वे नबी सदैव जीवित न रहे। [6]नबी मेरे सेवक थे। मैंने उनका उपयोग तुम्हारे पूर्वजों को अपने व्यवस्था और अपनी शिक्षा देने के लिये किया और तुम्हारे पूर्वजों ने अन्त में शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने कहा, 'सर्वशक्तिमान यहोवा ने वह किया जिसे करने को उसने कहा था। उसने हमारे बुरे रहन–सहन और सभी बुरे किये गए कामों के लिये दण्ड दिया।' इस प्रकार वे परमेश्वर के पास वापस लौटे।"

घोड़ों का दर्शन

[7]जकर्याह ने फारस में दारा के राज्यकाल के दूसरे वर्ष के ग्यारहवें महीने के चौबीसवें दिन, (अर्थात् शबात) यहोवा का दूसरा सन्देश पाया। जकर्याह बेरेक्याह का पुत्र था और बेरेक्याह इद्दो नबी का पुत्र था। सन्देश यह है:

[8]रात को, मैंने एक व्यक्ति को लाल घोड़े पर बैठे देखा। वह घाटी में कुछ मालती की झाड़ियों के बीच खड़ा था। उसके पीछे लाल, भूरे और श्वेत रंग के घोड़े थे। [9]मैंने पूछा, "महोदय, ये घोड़े किसलिये हैं?"

तब मुझसे बात करते हुए, स्वर्गदूत ने कहा, "मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि ये घोड़े किसलिये हैं।"

[10]तब मालती की झाड़ियों के बीच स्थित उस व्यक्ति ने कहा, "यहोवा ने इन घोड़ों को पृथ्वी पर इधर–उधर घूमने के लिये भेजे हैं।"

[11]तब घोड़ों ने मालती की झाड़ियों में स्थित यहोवा के दूत से बातें कीं। उन्होंने कहा, "हम लोग पृथ्वी पर इधर–उधर घूम चुके है, और सब कुछ शान्त और व्यवस्थित हैं।"

[12]तब यहोवा के दूत ने कहा, "यहोवा, आप यरूशलेम और यहूदा के नगर को कब तक आराम दिलायेंगे? अब तो आप इन नगरों पर सत्तर वर्ष तक अपना क्रोध प्रकट कर चुके हैं।"

[13]तब यहोवा ने उस दूत को उत्तर दिया जो मुझसे बाते कर रहा था। यहोवा ने अच्छे शान्तिदायक शब्द कहे। [14]तब यहोवा के दूत ने मुझे लोगों से यह सब कहने को कहा:

सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: "मैं यरूशलेम और सिय्योन से विशेष प्रेम रखता हूँ [15]और मैं उन राष्ट्रों पर बहुत क्रोधित हूँ जो अपने को इतना सुरक्षित अनुभव करते हैं। मैं कुछ क्रोधित हो गया था और मैंने उन राष्ट्रों का उपयोग अपने लोगों को दण्ड देने के लिये किया। किन्तु उन राष्ट्रों ने बहुत अधिक विनाश किया।"

[16]अत: यहोवा कहता है, "मैं यरूशलेम लौटूँगा और उसे आराम दूँगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "यरूशलेम का निर्माण पुन: होगा। और वहां मेरा मंदिर बनेगा।"

[17]स्वर्गदूत ने कहा, "लोगों से यह भी कहो: "सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'मेरे नगर फिर

सम्पन्न होंगे, मैं सिय्योन को आराम दूँगा। मैं यरूशलेम को अपना विशेष नगर चुनूँगा।'"

सींगों का दर्शन

[18]तब मैंने ऊपर नजर उठाई और चार सींगों को देखा। [19]तब मैंने उस दूत से जो मुझसे बातें कर रहा था, पूछा, "इन सींगों का अर्थ क्या हैं?"

उसने कहा, "ये वे सींगे है, जिन्होंने इस्राएल, यहूदा और यरूशलेम के लोगों को विदेशों में जाने को विवश किया।"

[20]तब यहोवा ने मुझे चार कारीगर दिखाये। [21]मैंने उनसे पूछा, "ये चार कारीगर क्या करने आ रहे हैं?"

उसने कहा, "ये लोग उन सींगों को नष्ट करने आए हैं। उन सींगों ने यहूदा के लोगों को विदेशों में जाने को विवश किया। उन सींगों ने किसी पर दया नहीं दिखाई। ये सींगे उन राष्ट्रों का प्रतीक है जिन्होंने यहूदा के लोगों पर आक्रमण किया था और उन्हें विदेशों में जाने को विवश किया था।"

यरूशलेम को मापने का दर्शन

2 तब मैंने ऊपर निगाह उठाई और मैंने एक व्यक्ति को नापने की रस्सी को लिये हुए देखा। [2]मैंने उससे पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?"

उसने मुझे उत्तर दिया, "मैं यरूशलेम को नापने जा रहा हूँ, कि वह कितना लम्बा तथा कितना चौड़ा हैं।"

[3]तब वह दूत, जो मुझसे बाते कर रहा था, चला गया और उससे बातें करने को दूसरा दूत बाहर गया। [4]उसने उससे कहा, "दौड़कर जाओ और उस युवक से कहो कि यरूशलेम इतना विशाल है कि उसे नापा नहीं जा सकता। उससे यह कहो, 'यरूशलेम बिना चहारदीवारी का नगर होगा। क्यों? क्योंकि वहाँ असंख्य लोग और जानवर रहेंगे। [5]यहोवा कहता है, 'मैं उसकी चारों ओर उसकी रक्षा के लिये आग की दीवार बनूँगा और उस नगर को गौरव देने के लिये वहीं रहूँगा।'"

परमेश्वर अपने लोगों को घर बुलाता है

यहोवा कहता है, [6]"जल्दी करो! उत्तर देश से भाग निकलो! हाँ, यह सत्य है कि मैंने तुम्हारे लोगों को चारों ओर बिखेरा। [7]सिय्योन के लोगों, तुम बाबुल में बन्दी हो। किन्तु अब भाग निकलो! उस नगर से भाग जाओ!" सर्वशक्तिमान यहोवा ने मेरे बारे में यह कहा, "उसने मुझे भेजा है, जिन्होंने उन राष्ट्रों में युद्ध में तुमसे चीज़ें छीनीं! [8]उसने तुझे प्रतिष्ठा देने को मुझे भेजा है।" किन्तु उसके बाद, यहोवा मुझे उनके विरुद्ध भेजेगा। क्यों? क्योंकि यदि वे तुम्हें चोट पहुँचायेंगे तो वह यहोवा की आँख की पुतली को चोट पहुँचाना होगा। उन राष्ट्रों ने अपना सम्मान पाया [9]और मैं उन लोगों के विरुद्ध अपना हाथ उठाऊँगा और उनके दास उनकी सम्पत्ति लेंगे। तब तुम समझोगे कि सर्वशक्तिमान यहोवा ने मुझे भेजा है। [10]यहोवा कहता है, "सिय्योन, प्रसन्न हो! क्यों? क्योंकि मैं आ रहा हूँ और मैं तुम्हारे नगर में रहूँगा। [11]उस समय अनेक राष्ट्रों के लोग मेरे पास आएंगे और वे मेरे लोग हो जायेंगे। मैं तुम्हारे नगर में रहूँगा और तुम जानोगे कि सर्वशक्तिमान यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।" [12]यहोवा यरूशलेम को फिर से अपना विशेष नगर चुनेगा और यहूदा, पवित्र–भूमि का उनका हिस्सा होगा। [13]सभी व्यक्ति, शान्त हो जाओ! यहोवा अपने पवित्र घर से बाहर आ रहा है।

महायाजक के बारे में दर्शन

3 तब दूत ने मुझे महायाजक यहोशू को दिखाया। यहोशू यहोवा के दूत के सामने खड़ा था और शैतान यहोशू की दायीं ओर खड़ा था। शैतान वहाँ यहोशू द्वारा किये गए बुरे कामों के लिये दोष देने को था। [2]तब यहोवा के दूत ने कहा, "शैतान, यहोवा तुम्हें फटकारे। यहोवा तुम्हें अपराधी घोषित करे! यहोवा ने यरूशलेम को अपना विशेष नगर चुना हैं। उन्होंने उस नगर को बचाया–जैसे जलती लकड़ी को आग से बाहर निकाल दिया जाये।"

[3]यहोशू दूत के सामने खड़ा था और यहोशू गन्दे वस्त्र पहने था। [4]तब अपने समीप खड़े अन्य दूतों से दूत ने कहा, "यहोशू के गन्दे वस्त्रों को उतार लो।" तब दूत ने यहोशू से बाते कीं। उसने कहा, "मैंने तुम्हारे अपराधों को हर लिया है और मैं तुम्हें नये वस्त्र बदलने को देता हूँ।"

[5]तब मैंने कहा, "उसके सिर पर एक नयी पगड़ी बाँधो।" अत: उन्होंने एक नयी पगड़ी उसे बांधी। यहोवा के दूत के खड़े रहते ही उन्होंने उसे नये वस्त्र पहनाये।

[6]तब यहोवा के दूत ने यहोशू से यह कहा:

[7]सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा, "वैसे ही रहो जैसा मैं कहूँ, और जो मैं कहूँ वह सब करो और तुम मेरे मंदिर के उच्चाधिकारी होगे। तुम इसके आँगन की देखभाल करोगे और मैं अनुमति दूँगा कि तुम यहाँ खड़े स्वर्गदूतों के बीच स्वतन्त्रता से घूमो। [8]अत: यहोशू, तुम्हें और तुम्हारे साथ के लोगों को मेरी बातें सुननी होंगी। तुम महायाजक हो, और तुम्हारे साथ के लोग दूसरों के समक्ष एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं और मैं सच ही, अपने विशेष सेवक को लाऊँगा–उसे शाख कहते हैं। [9]देखो, मैं एक विशेष पत्थर यहोशू के सामने रखता हूँ। उस पत्थर के सात पहलू है और मैं उस पत्थर पर विशेष सन्देश खोदूँगा। वह इस तथ्य को प्रकट करेगा कि मैं एक दिन में इस देश के सभी पापों को दूर कर दूँगा।"

[10]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "उस समय, लोग बैठेंगे और अपने मित्रों एवं पड़ोसियों को अपने उद्यानों में आमंन्त्रित करेंगे। हर व्यक्ति अपने अंजीर के पेड़ तथा अंगूर की बेल के नीचे अमन–चैन से रहेगा।"

दीपाधार और दो जैतून के पेड़

4 तब जो दूत मुझसे बातें कर रहा था, मेरे पास आया और उसने मुझे जगाया। मैं नींद से जागे व्यक्ति की तरह लग रहा था। [2]तब दूत ने पूछा, "तुम क्या देखते हो?"

मैंने कहा, "मैं एक ठोस सोने का दीपाधार देखता हूँ। उस दीपाधार पर सात दीप हैं और दीपाधार के ऊपरी सिरे पर एक प्याला है। प्याले में से सात नल निकल रहे हैं। हर एक नल हर एक दीप तक जा रहा हैं। वे नल तेल को हर एक दीप के प्याले तक लाते हैं" [3]और दो जैतून के पेड़, एक दायीं और दूसरा बायीं ओर प्याले के सहारे हैं।" [4]और तब मैंने, उस दूत से जो मुझसे बातें कर रहा था, पूछा, "महोदय, इन सबका अर्थ क्या है?"

[5]मुझसे बातें करने वाले दूत ने कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि ये सब चीजें क्या हैं?"

मैंने कहा, "नहीं महोदय।"

[6]तब उसने मुझसे कहा, "यह सन्देश यहोवा की ओर से जरुब्बाबेल को है: 'तुम्हारी शक्ति और प्रभुता से सहायता नहीं मिलेगी। वरन, तुम्हें सहायता मेरी आत्मा से मिलेगी।' सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा! [7]वह ऊँचा पर्वत जरूब्बाबेल के लिये समतल भूमि–सा होगा। वह मंदिर को बनायेगा और जब अन्तिम पत्थर उस स्थान पर रखा जाएगा तब लोग चिल्ला उठेंगे–'सुन्दर! अति सुन्दर।'"

[8]मुझे यहोवा से मिले सन्देश में भी कहा गया, [9]"जरुब्बाबेल मेरे मंदिर की नींव रखेगा और जरुब्बाबेल मंदिर को बनाना पूरा करेगा। लोगों तब तुम समझोगे कि सर्वशक्तिमान यहोवा ने मुझे तुम लोगों के पास भेजा है। [10]लोग उस सामान्य आरम्भ से लज्जित नहीं होंगे और वे सचमुच तब प्रसन्न होंगे, जब वे जरुब्बाबेल को पूरी की गई भवन को साहुल से नापते और जांच करते देखेंगे। अत: पत्थर के सात पहलू जिन्हें तुमने देखा वे यहोवा की आँखों के प्रतीक हैं जो हर दिशा में देख रही हैं। वे पृथ्वी पर सब कुछ देखती हैं।"

[11]तब मैंने (जकर्याह) उससे कहा, "मैंने एक जैतून का पेड़ दीपाधार की दायीं ओर और एक बायीं ओर देखा। उन दोनों जैतून के पेड़ों का तात्पर्य क्या है?" [12]मैंने उससे यह भी कहा, "मैंने जैतून की दो शाखायें सोने के रंग के तेल को ले जाते, सोने के नलों के सहारे देखीं। इन चीज़ों का तात्पर्य क्या हैं?"

[13]तब दूत ने मुझसे कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि इन चीज़ों का तात्पर्य क्या है?"

मैंने कहा, "नहीं महोदय।"

[14]अत: उसने कहा, "वे उन दो व्यक्तियों के प्रतीक है, जो सारे संसार में यहोवा की सेवा के लिये चुने गए थे।"

उड़ता हुआ गोल लिपटा पत्रक

5 मैंने फिर निगाह ऊँची की और मैंने एक उड़ता हुआ गोल लिपटा पत्रक देखा। [2]दूत ने मुझसे पूछा, "तुम क्या देखते हो?"

मैंने कहा, "मैं एक उड़ता हुआ गोल लिपटा पत्रक देखता हूँ। यह गोल लिपटा पत्रक तीस फुट लम्बा और पन्द्रह फूट चौड़ा है।"

[3]तब दूत ने मुझसे कहा, "उस गोल लिपटे पत्रक पर एक शाप लिखा है। उस गोल लिपटे पत्रक की एक ओर चोरों को शाप लिखा हैं और दूसरी ओर उन लोगों को शाप है, जो प्रतिज्ञा करके झूठ बोलते हैं। [4]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "मैं इस गोल लिपटे पत्रक को चोरों के घर और उन लोगों के घर भेजूँगा, जो गलत प्रतिज्ञा करते समय मेरे नाम का उपयोग करते हैं। वह गोल लिपटा

पत्रक वहीं रहेगा और यह उन घरों को नष्ट करेगा। यहाँ तक कि पत्थर और लकड़ी के खम्भे भी नष्ट हो जाएंगे।"

स्त्री और टोकरी

[5]तब मेरे साथ बात करने वाला दूत बाहर गया। उसने मुझसे कहा, "देखो! तुम क्या होता हुआ देख रहे हो?"

[6]मैंने कहा, "मैं नहीं जानता, कि यह क्या हैं?"

उसने कहा, "वह मापक टोकरी हैं।" उसने यह भी कहा, "यह टोकरी इस देश के लोगों के पापों को नापने के लिये है।"

[7]टोकरी का ढक्कन सीसे का था। जब वह खोला गया, तब उसके भीतर बैठी स्त्री मिली। [8]दूत ने कहा, "स्त्री बुराई का प्रतीक है।" तब दूत ने स्त्री को टोकरी में धक्का दे डाला और सीसे के ढक्कन को उसके मुख में रख दिया। इससे यह प्रकट होता था, कि पाप बहुत भारी (बुरा) है। [9]तब मैंने नजर उठाई और दो स्त्रियों को सारस के समान पंख सहित देखा। वे उड़ी और अपने पंखों में हवा के साथ उन्होंने टोकरी को उठा लिया। वे टोकरी को लिये हवा में उड़ती रहीं। [10]तब मैंने बातें करने वाले उस दूत से पूछा, "वे टोकरी को कहाँ ले जा रही हैं?"

[11]दूत ने मुझसे कहा, "वे शिनार में इसके लिये एक मंदिर बनाने जा रही हैं। जब वे मंदिर बना लेंगी तो वे उस टोकरी को वहाँ रखेंगी।"

चार रथ

6 तब मैं चारों ओर घूम गया। मैंने निगाह उठाई और मैंने चार रथों को चार कांसे के पर्वतों के बीच से जाते देखा। [2]प्रथम रथ को लाल घोड़े खींच रहे थे। दूसरे रथ को काले घोड़े खींच रहे थे। [3]तीसरे रथ को श्वेत घोड़े खींच रहे थे और चौथे रथ को लाल धब्बे वाले घोड़े खींच रहे थे। [4]तब मैंने बात करने वाले उस दूत से पूछा, "महोदय, इन चीज़ों का तात्पर्य क्या है?"

[5]दूत ने कहा, "ये चारों दिशाओं की हवाओं के प्रतीक हैं। वे अभी सारे संसार के स्वामी के यहाँ से आये हैं। [6]काले घोड़े उत्तर को जाएंगे। लाल घोड़े पूर्व को जाएंगे। श्वेत घोड़े पश्चिम को जाएंगे और लाल धब्बेदार घोड़े दक्षिण को जाएंगे।"

[7]लाल धब्बेदार घोड़े अपने हिस्से की पृथ्वी को देखते हुए जाने को उत्सुक थे, अत: दूत ने उनसे कहा, "जाओ, पृथ्वी का चक्कर लगाओ।" अत:, वे अपने हिस्से की पृथ्वी पर टहलते हुए गए।

[8]तब यहोवा ने मुझे जोर से पुकारा। उन्होंने कहा, "देखो, वे घोड़े, जो उत्तर को जा रहे थे, अपना काम बाबुल में पूरा कर चुके। उन्होंने मेरी आत्मा को शान्त कर दिया–अब मैं क्रोधित नहीं हूँ।"

याजक यहोशू एक मुकुट पाता है

[9]तब मैंने यहोवा का एक अन्य सन्देश प्राप्त किया। उसने कहा, [10]"हेल्दै, तोबिय्याह और यदायाह बाबुल के बन्दियों में से आ गए हैं। उन लोगों से चाँदी और सोना लो और तब सपन्याह के पुत्र योशियाह के घर जाओ। [11]उस सोने–चांदी का उपयोग एक मुकुट बनाने में करो। उस मुकुट को यहोशू के सिर पर रखो। (यहोशू महायाजक था। यहोशू यहोसादाक का पुत्र था।) तब यहोशू से ये बातें कहो:

[12]सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है,

"शाख नामक एक व्यक्ति है। वह शक्तिशाली हो जाएगा। [13]वह यहोवा का मंदिर बनाएगा, और वह सम्मान पाएगा। वह अपने राजसिंहासन पर बैठेगा, और शासक होगा। उसके सिंहासन की बगल में एक याजक खड़ा होगा और ये दोनों व्यक्ति शान्तिपूर्वक एक साथ काम करेंगे।

[14]"वे मुकुट को मंदिर में रखेंगे जिससे लोगों को याद रखने में सहायता मिलेगी। वह मुकुट हेल्दै, तोबिय्याह, यदायाह और सपन्याह के पुत्र योशियाह को सम्मान प्रदान करेगा। [15]दूर के निवासी लोग आएंगे और मंदिर को बनाएंगे। लोगों, तब तुम समझोगे कि यहोवा ने मुझे तुम लोगों के पास है। यह सब कुछ घटित होगा, यदि तुम वह करोगे, जिसे करने को यहोवा कहता है।"

यहोवा दया और करुणा चाहता है

7 फारस में दारा के राज्यकाल के चौथे वर्ष, जकर्याह को यहोवा का एक सन्देश मिला। यह नौवे महीने का चौथा दिन था। (अर्थात् किस्लव।) [2]बेतेल के लोगों ने शरेसेर, रेगेम्मेलेक और अपने साथियों को यहोवा से एक प्रश्न पूछने को भेजा। [3]वे सर्वशक्तिमान यहोवा के मंदिर में नबियों और याजकों के पास गए। उन लोगों ने उनसे यह प्रश्न पूछा: "हम लोगों ने कई वर्ष तक मंदिर के ध्वस्त होने का शोक मनाया है। हर वर्ष के पाँचवें

महीने में, रोने और उपवास रखने का हम लोगों का विशेष समय रहा हैं। क्या हमें इसे करते रहना चाहिये?"

4मैंने सर्वशक्तिमान यहोवा का यह सन्देश पाया है: 5"याजकों और इस देश के अन्य लोगों से यह कहो: जो उपवास और शोक पिछले सत्तर वर्षों से वर्ष के पाँचवें और सातवें महीने में तुम करते आ रहे हो, क्या वह उपवास, सच ही, मेरे लिये था? नहीं! 6और जब तुमने खाया और दाखमधु पिया तब क्या वह मेरे लिये था? नहीं! यह तुम्हारी अपनी भलाई के लिये ही था। 7परमेश्वर ने प्रथम नबियों का उपयोग बहुत पहले यही बात कहने के लिये किया था। उन्होंने यह बात तब कही थी, जब यरूशलेम मनुष्यों से भरा–पूरा सम्पत्तिशाली था। परमेश्वर ने ये बाते तब कही थीं, जब यरूशलेम के चारों ओर के नगरों में तथा नेगव एवं पश्चिमी पहाड़ियों की तराईयों में लोग शान्तिपूर्वक रहते थे।"

8जकर्याह को यहोवा का यह सन्देश है:

9सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें कहीं, "तुम्हें जो सत्य और उचित हो, करना चाहिये। तुममें हर एक को एक दूसरे के प्रति दयालु और करूणापूर्ण होना चाहिये। 10विधवाओं, अनाथों, अजनबियों या दीन लोगों को चोट न पहुँचाओ। एक दूसरे का बुरा करने का विचार भी मन में न आने दो!"

11किन्तु उन लोगों ने अनसुनी की। उन्होंने उसे करने से इन्कार किया जिसे वे चाहते थे। उन्होंने अपने कान बन्द कर लिये, जिससे वे, परमेश्वर जो कहे, उसे न सुन सकें। 12वे बड़े हठी थे। उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करना अस्वीकार कर दिया। अपनी आत्मशक्ति से सर्वशक्तिमान यहोवा ने नबियों द्वारा अपने लोगों को सन्देश भेजे। किन्तु लोगों ने उसे नहीं सुना, अत: सर्वशक्तिमान यहोवा बहुत क्रोधित हुआ। 13अत: सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा, "मैंने उन्हें पुकारा और उन्होंने उत्तर नहीं दिया। इसलिये अब यदि वे मुझे पुकारेंगे, तो मैं उत्तर नहीं दूँगा। मैं अन्य राष्ट्रों को तूफान की तरह उनके विरुद्ध लाऊँगा। वे उन्हें नहीं जानते, किन्तु जब वे देश से गुजरेंगे, तो वह उजड़ जाएगा। यह सुहावना देश नष्ट हो जाएगा।"

यहोवा यरूशलेम को आशीर्वाद देने की प्रतिज्ञा करता है

8 यह सन्देश सर्वशक्तिमान यहोवा का है 2सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "मैं सच ही, सिय्योन से प्रेम करता हूँ। मैं उससे इतना प्रेम करता हूँ कि, जब वह मेरी विश्वासपात्र न रही, तब मैं उस पर क्रोधित हो गया।" 3यहोवा कहता है, "मैं सिय्योन के पास वापस आ गया हूँ। मैं यरूशलेम में रहने लगा हूँ। यरूशलेम विश्वास नगर कहलाएगा। मेरा पर्वत, पवित्र पर्वत कहा जाएगा।"

4सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "यरूशलेम में फिर बूढ़े स्त्री–पुरुष सामाजिक स्थलों पर दिखाई पड़ेंगे। लोग इतनी लम्बी आयु तक जीवित रहेंगे कि उन्हें सहारे की छड़ी की आवश्यकता होगी 5और नगर सड़को पर खेलने वाले बच्चों से भरा होगा। 6बचे हुये लोग इसे आश्चर्यजनक मानेंगे और मैं भी इसे आश्चर्यजनक मानूँगा!"

7सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "देखो, मैं पूर्व और पश्चिम के देशों से अपने लोगों को बचा ले चल रहा हूँ। 8मैं उन्हें यहाँ वापस लाऊँगा और वे यरूशलेम में रहेंगे। वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका अच्छा और विश्वसनीय परमेश्वर होऊँगा!"

9सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "शक्तिशाली बनो! लोगों, तुम आज वही सन्देश सुन रहे हो, जिसे नबियों ने तब दिया था जब सर्वशक्तिमान यहोवा ने अपने मंदिर को फिर से बनाने के लिये नींव डाली। 10उस समय के पहले लोगों के पास श्रमिकों को मजदूरी पर रखने या जानवर को किराये पर लेने के लिये धन नहीं था और मनुष्यों का आवागमन सुरक्षित नहीं था। सारी आपत्तियों से किसी प्रकार की मुक्ति नहीं थी। मैंने हर एक को अपने पड़ोसी के विरुद्ध कर दिया था। 11किन्तु अब वैसा नहीं है। बचे हुओं के लिये अब वैसा नहीं होगा। सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें कहीं।

12"ये लोग शान्ति के साथ फसल लगायेंगे। उनके अंगूर के बाग अंगूर देंगे। भूमि अच्छी फसल देगी तथा आकाश वर्षा देगा। मैं ये सभी चीजें अपने इन लोगों को दूँगा। 13लोग अपने शापों में यरूशलेम और यहूदा का नाम लेने लगे हैं। किन्तु मैं इस्राएल और यहूदा को बचाऊँगा और उनके नाम वरदान के रूप में प्रमाणित होने लगेंगे। अत: डरो नहीं। शक्तिशाली बनो!"

14सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे क्रोधित किया था। अत: मैंने उन्हें नष्ट करने का निर्णय लिया। मैंने अपने इरादे को न बदलने का निश्चय किया।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा। 15"किन्तु अब मैंने अपना इरादा बदल दिया है और उसी तरह मैंने

यरूशलेम और यहूदा के लोगों के प्रति अच्छा बने रहने का निश्चय किया है। अत: डरो नहीं! [16]किन्तु तुम्हें यह करना चाहिए: अपने पड़ोसियों से सत्य बोलो। जब तुम अपने नगरों में निर्णय लो, तो वह करो जो सत्य, ठीक और शान्ति लाने वाला हो। [17]अपने पड़ोसियों को चोट पहुँचाने के लिये गुप्त योजनायें न बनाओ! झूठी प्रतिज्ञायें न करो! ऐसा करने में तुम्हें आनन्द नहीं लेना चाहिये। क्यों? क्योंकि मैं उन बातों से घृणा करता हूँ।" यहोवा ने यह सब कहा।

[18]मैंने सर्वशक्तिमान यहोवा का यह सन्देश पाया। [19]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "तुम्हारे शोक मनाने और उपवास के विशेष दिन चौथे महीने, पाँचवे महीने, सातवे महीने और दसवें महीने में हैं। वे शोक के दिन प्रसन्नता के दिन में बदल जाने चाहिये। वे अच्छे और प्रसन्नता के पवित्र दिन होंगे और तुम्हें सत्य और शान्ति से प्रेम करना चाहिए!"

[20]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "भविष्य में, अनेक नगरों से लोग यरूशलेम आएंगे।

[21]एक नगर के लोग दूसरे नगर के मिलने वाले लोगों से कहेंगे, "हम सर्वशक्तिमान यहोवा की उपासना करने जा रहे हैं, 'हमारे साथ आओ!' [22]अनेक लोग और अनेक शक्तिशाली राष्ट्र सर्वशक्तिमान यहोवा की खोज में यरूशलेम आएंगे। वे वहाँ उनकी उपासना करने आएंगे। [23]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "उस समय, विभिन्न राष्ट्रों से विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले दस व्यक्ति एक यहूदी के चादर का पल्ला पकड़ेंगे और कहेंगे, "हमने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है। क्या हम उनकी उपासना करने तुम्हारे साथ आ सकते हैं?'"

अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध न्याय

9 एक दु:खपूर्ण सन्देश। यह यहोवा का सन्देश हद्राक के देश और उसकी राजधानी दमिश्क के बारे में है: "इस्राएल के परिवार समूह के लोग ही एक मात्र वे लोग नहीं है जो परमेश्वर के बारे में जानते हैं। हर एक व्यक्ति सहायता के लिये उनकी ओर देख सकता है। [2]हद्राक के देश की सीमा हमात है और सोर तथा सीदोन भी यही करते हैं। (वे लोग बहुत बुद्धिमान हैं।) [3]सोर एक क़िले की तरह बना है। वहाँ के लोगों ने चाँदी इतनी इकट्ठा की है, कि वह धूलि के समान सुलभ है और सोना इतना सामान्य है, जितनी मिट्टी। [4]किन्तु हमारे स्वामी यहोवा, यह सब ले लेगा। वे उसकी शक्तिशाली नौसेना को नष्ट करेगा और वह नगर आग से नष्ट हो जाएगा!

[5]"अश्कलोन में रहने वाले लोग इन घटनाओं को देखेंगे और वे डरेंगे। अज्जा के लोग भय से काँप उठेंगे और एक्रोन के लोग सारी आशाएँ छोड़ देंगे, जब वे उन घटनाओं को घटित होते देखेंगे। अज्जा में कोई राजा बचा नहीं रहेगा। कोई भी व्यक्ति अब अश्कलोन में नहीं रहेगा। [6]अश्दाद में लोग यह भी नहीं जानेंगे कि उनके अपने पिता कौन हैं? मैं गर्वीले पलिश्ती लोगों को पूरी तरह नष्ट कर दूँगा। [7]वे रक्त सहित माँस को या कोई भी वर्जित भोजन नहीं खायेंगे। कोई भी बचा पलिश्ती हमारे राष्ट्र का अंग बनेगा। वे यहूदा में एक नया परिवार समूह होंगे। एक्रोन के लोग हमारे लोगों के एक भाग होंगे जैसा कि यबूसी लोग बन गए। मैं अपने देश की रक्षा करूँगा। [8]मैं शत्रु की सेनाओं को यहाँ से होकर नहीं निकलने दूँगा। मैं उन्हें अपने लोगों को और अधिक चोट नहीं पहुँचाने दूँगा। मैंने अपनी आँखों से देखा कि अतीत में मेरे लोगों ने कितना कष्ट उठाया।"

भविष्य का राजा

[9]सिय्योन, आनन्दित हो! यरूशलेम के लोगों आनन्द– घोष करो! देखों, तुम्हारा राजा तुम्हारे पास आ रहा है! वह विजय पाने वाला एक अच्छा राजा है। किन्तु वह विनम्र है। वह गधे पर सवार है, एक गधे के बच्चे पर सवार है।

[10]राजा कहता है, "मैंने एप्रैम में रथों को और यरूशलेम में घुड़सवारों को नष्ट किया। मैंने युद्ध में प्रयोग किये गये धनुषों को नष्ट किया।" अन्य राष्ट्रों ने शान्ति–संधि की बातें सुनीं। वह राजा सागर से सागर तक राज्य करेगा। वह नदी से लेकर पृथ्वी के दूरतम स्थानों पर राज्य करेगा।

यहोवा अपने लोगों की रक्षा करेगा

[11]यरूशलेम हमने अपनी वाचा को खून से मुहरबन्द किया। अत: मैंने तुम्हारे बन्दियों को स्वतन्त्र कर दिया, तुम्हारे लोग उस सूने बन्दीगृह में अब नहीं रह गये हैं। [12]बन्दियों, अपने घर जाओ! अब तुम्हारे लिये कुछ आशा का अवसर है। अब मैं तुमसे कह रहा हूँ, मैं

तुम्हारे पास लौट रहा हूँ! [13]यहूदा, मैं तुम्हारा उपयोग एक धनुष–जैसा करूँगा। एप्रैम, मैं तुम्हारा उपयोग बाणों जैसा करूँगा। इस्राएल, मैं तुम्हारा उपयोग यूनान से लड़ने के लिए दृढ़ तलवार जैसा करूँगा।

[14]यहोवा उसके सामने प्रकट होगा और वह अपने बाण बिजली की तरह चलायेगा। यहोवा, मेरे स्वामी तुरही बजाएगा और सेना मरुभूमि के तूफान के समान आगे बढ़ेगी।

[15]सर्वशक्तिमान यहोवा उनकी रक्षा करेगा। सैनिक पत्थर और गुलेल का उपयोग शत्रु को पराजित करने में करेंगे। वे अपने शत्रुओं का खून बहायेंगे, यह दाखमधु जैसा बहेगा। यह वेदी के कोनों पर फेंके गए खून जैसा होगा!

[16]उस समय, उनके परमेश्वर यहोवा अपने लोगों को वैसे ही बचाएगा, जैसे गड़ेरिया भेड़ों को बचाता है। वे उनके लिये बहुत मूल्यवान होंगे। वे उनके हाथों में जगमगाते रत्न–से होंगे। [17]हर एक चीज अच्छी और सुन्दर होगी!

वहाँ अद्‌भुत फसल होगी, किन्तु वहाँ केवल अन्न और दाखमधु नहीं होगी। वहाँ युवक–युवतियाँ होंगी!

यहोवा की प्रतिज्ञायें

10 बसन्त ऋतु में यहोवा से वर्षा के लिये प्रार्थना करो। यहोवा बिजली भेजेगा और वर्षा होगी। और परमेश्वर हर एक व्यक्ति के खेत में पौधे उगायेगा।

[2]ये जादूगर अपनी छोटी मूर्तियों और जादू का उपयोग भविष्य की घटनाओं को जानने के लिए करते हैं, किन्तु यह सब व्यर्थ है। वे लोग दर्शन करते है और अपने स्वप्नों के बारे में कुछ कहते हैं, किन्तु यह सब व्यर्थ झूठ के अलावा कुछ नहीं हैं। अत: लोग भेड़ों की तरह इधर–उधर सहायता के लिये पुकारते हुए भटक रहे हैं। किन्तु उनको रास्ता दिखाने वाला कोई गड़ेरिया नहीं।

[3]यहोवा कहता है, "मैं गड़ेरियों (प्रमुखों) पर बहुत क्रोधित हूँ। मैंने उन प्रमुखों को अपनी भेड़ों (लोगों) की देखभाल का उत्तरदायित्व सौंपा था।" यहूदा के लोग परमेश्वर की रेवड़ है और सर्वशक्तिमान यहोवा, सचमुच, अपनी रेवड़ की देखभाल करता है। वह उनकी ऐसी देख भाल रखता है, जैसे कोई सैनिक अपने घोड़े की रखता है।

[4]"कोने का पत्थर, डेरे की खूँटी, युद्ध का धनुष और आगे बढ़ते सैनिक सभी यहूदा से एक साथ आएंगे। [5]वे अपने शत्रुओं को पराजित करेंगे, यह कीचड़ में सड़कों पर आगे बढ़ते सैनिकों जैसा होंगे। वे युद्ध करेंगे, और यहोवा उनके साथ है। अत: वे शत्रु के घुड़सवारों को भी हरायेंगे। [6]मैं यहूदा के परिवार को शक्तिशाली बनाऊँगा। मैं यूसुफ के परिवार को युद्ध में विजयी बनाऊँगा। मैं उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित वापस लाऊँगा। मैं उन्हें आराम दूँगा। यह ऐसा होगा, मानों मैंने उन्हें कभी नहीं छोड़ा। मैं यहोवा, उनका परमेश्वर हूँ और मैं उनकी सहायता करूँगा। [7]एप्रैम के लोग शक्तिशाली पुरुष होंगे और ऐसे प्रसन्न होंगे, जैसे वे सैनिक जिन्हें पीने के लिये बहुत अधिक मिल गया हो। उनकी सन्तानें आनन्द मनायेंगी और वे भी प्रसन्न रहेंगे। वे सभी एक साथ यहोवा के साथ आनन्द का अवसर पाएंगे।

[8]"मैं उनको सीटी दे कर सभी को एक साथ बुलाऊँगा। मैं, सच ही, उन्हें बचाऊँगा। ये लोग असंख्य हो जाएंगे। [9]हाँ, मैं सभी राष्ट्रों में अपने लोगों को बिखेर रहा हूँ। किन्तु उन देशों में वे मुझे याद करेंगे। वे और उनकी सन्तानें बची रहेंगी। और वे वापस आएंगे। [10]मैं उन्हें मिस्र और अश्शूर से वापस लाऊँगा। मैं उन्हें गिलाद क्षेत्र में लाऊँगा और क्योंकि वहाँ काफी जगह नहीं होगी। अत: मैं उन्हें समीप के लबानोन में भी रहने दूँगा।" [11](यह वैसा ही होगा, जैसा यह पहले तब था, जब परमेश्वर उन्हें मिस्र से निकाल लाया था। उसने समुद्र की तरंगों पर चोट की थी। समुद्र फट गया था और लोग विपत्ति के समुद्र को पैदल पार कर गए थे। यहोवा नदियों की धाराओं को सुखा देगा। वे अश्शूर के गर्व और मिस्र की शक्ति को नष्ट कर देगा।) [12]यहोवा अपने लोगों को शक्तिशाली बनाएगा और वे उनके और उनके नाम के लिये जीवित रहेंगे। यहोवा ने यह सब कहा।

परमेश्वर यहूदा के चारों ओर के राष्ट्रों को दण्ड देगा

11 लबानोन, अपने द्वार खोलो, क्योंकि आग भीतर आएगी और वह तुम्हारे देवदारू के पेड़ों को जला देगी।

[2]साइप्रस के पेड़ रोएंगे क्योंकि देवदारू के पेड़ गिर गए। वे विशाल पेड़ उठा लिये गए। बाशान के ओक–वृक्षों, उस वन के लिये रोओ, जो काट डाला गया।

[3]रोते गड़ेरियों की सुनो। उनके शक्तिशाली प्रमुख दूर कर दिये गए। जवान सिंहों की दहाड़ को सुनो। यरदन नदी के किनारे की उनकी घनी झाड़ियां ले ली गई।

[4]मेरा परमेश्वर यहोवा कहता है, “उन भेड़ों की रक्षा करो, जिन्हें मारने के लिये पाला गया हैं। [5]उनके प्रमुख, स्वामी और व्यापारी के समान है। स्वामी अपनी भेड़ों को मारता है और उन्हें दण्ड नहीं मिलता। व्यापारी भेड़ों को बेचता है और कहता है, ‘यहोवा की महिमा से मैं सम्पन्न हूँ।” गड़ेरिये अपनी भेड़ों के लिये दु:खी नहीं होते [6]और मैं इस देश में रहने वालों के लिये दु:खी नहीं होता।” यहोवा ने यह सब कहा, “देखो, मैं हर एक को उसके पड़ोसी और राजा के हाथ सौंप दूँगा। मैं उन्हें उनका देश नष्ट करने दूँगा, मैं उन्हें रोकूँगा नहीं!”

[7]अत: मैंने उन दीन भेड़ों की देखभाल की, जिन्हें मारने के लिये पाला गया था। मुझे दो छड़ियाँ मिलीं। मैंने एक छड़ी का नाम अनुग्रह रखा और दूसरी छड़ी को एकता कहा और तब मैंने भेड़ों की देखभाल आरम्भ की। [8]मैंने सभी तीन गड़ेरियों को एक महीने में नष्ट कर दिया। मैं भेड़ों पर क्रोधित हुआ और वे मुझसे घृणा करने लगीं। [9]तब मैंने कहा, “मैं तुम्हें छोड़ता हूँ! मैं तुम्हारी देखभाल नहीं करूँगा! मैं उन्हें मर जाने दूँगा, जो मर जाना चाहते हैं। मैं उन्हें नष्ट हो जाने दूँगा, जो नष्ट किया जाना चाहते है। और जो बचेंगे वे एक दूसरे को नष्ट करेंगे।” [10]तब मैंने अनुग्रह नामक छड़ी ली और इसे तोड़ दी। मैंने यह इस बात को प्रकट करने के लिये किया कि सभी राष्ट्रों के साथ परमेश्वर की वाचा टूट गई। [11]अत: उस दिन वाचा समाप्त हो गई और उन दीन भेड़ों ने जो मेरी ओर देख रही थीं, समझ लिया कि यह सन्देश यहोवा का है।

[12]तब मैंने कहा, “यदि तुम मुझे भुगतान करना चाहते हो, तो भुगतान करो, यदि नहीं चाहते तो मत करो!” अत: उन्होंने चांदी के तीस टुकड़े दिये। [13]तब यहोवा ने मुझसे कहा, “इसका अर्थ है कि वे मेरी कीमत कितनी आंकते हैं। उन अधिक धन को मंदिर के खज़ाने में डाल दो।” इसलिये मैंने चांदी के तीस टुकड़ों को लिया और उन्हें यहोवा के मंदिर के खजाने में डाल दिया। [14]तब मैंने एकता नामक छड़ी को दो टुकड़ों में काट डाला। यह, मैंने यह बात प्रकट करने के लिये किया कि इस्राएल और यहूदा के बीच की एकता टूट गई।

[15]तब यहोवा ने मुझसे कहा, “अब, एक ऐसी छड़ी की खोज करो, जिसका उपयोग वास्तव में भेड़ों को हाँकने के लिये न हो सके। [16]यह इस बात को प्रकट करेगा कि मैं इस देश के लिये एक नया गड़ेरिया लाऊँगा। “किन्तु यह युवक उन भेड़ों की देखभाल करने में सक्षम नहीं होगा, जो नष्ट की जा चुकी है। वह चोट खाई भेड़ों को स्वस्थ नहीं कर सकेगा। वह उन्हें खिला नहीं पाएगा जो अभी जीवित बची हैं। और स्वस्थ भेड़ें सारी खा ली जाएंगी, केवल उनकी खुरें बची रहेंगी।”

[17]हे मेरे नालायक गड़ेरिये। तुमने मेरी भेड़ों को त्याग दिया। उसे दण्ड दो! तलवार से उसकी दायीं भुजा और दायीं आंख पर प्रहार करो। उनकी दायीं भुजा व्यर्थ होगी और उसकी दायीं आंख अन्धी होगी।

यहूदा के चारो ओर के राष्ट्रों के बारे में दर्शन

12 इस्राएल के बारे में यहोवा का दु:खद सन्देश। यहोवा ने पृथ्वी और आकाश को बनाया। उसने मनुष्य की आत्मा को रचा और यहोवा ने ये बातें कहीं, [2]“देखो, मैं यरूशलेम को उसके चारों ओर के राष्ट्रों के लिये जहर का प्याला जैसा बनाऊँगा। राष्ट्र आएंगे और उस नगर पर प्रहार करेंगे और सारा यहूदा जाल में जा फंसेगा। [3]किन्तु मैं यरूशलेम को भारी चट्टान बनाऊँगा और जो कोई इसे उठाने की कोशिश करेगा स्वयं घायल होगा। वे लोग, सचमुच, कटेंगे और जख्मी हो जाएंगे। किन्तु पृथ्वी के सारे राष्ट्र एक साथ आएंगे और यरूशलेम के विरुद्ध लड़ेंगे। [4]किन्तु उस समय, मैं घोड़ों को भयभीत कर दूँगा और घुड़सवार घबरा जाएंगे। मैं शत्रु के सभी घोड़ों को अन्धा कर दूँगा, किन्तु मेरी आंखे खुली होंगी और मैं यहूदा के परिवार की रक्षा करता रहूँगा। [5]यहूदा के परिवार प्रमुख लोगों को उत्साहित करेंगे। वे कहेंगे, ‘सर्वशक्तिमान यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हैं। वह हमें शक्तिशाली बना रहा है।’ [6]उस समय, मैं यहूदा परिवार के प्रमुखों को जंगल में जलती हुई आग जैसा बनाऊँगा। वह अपने शत्रुओं को तिनके को भस्म करने वाली आग जैसा भस्म कर देगा। वह अपने चारों ओर के शत्रुओं को नष्ट कर देगा और यरूशलेम के निवासी फिर बैठने और आराम करने की स्थिति में होंगे।”

[7]पहले यहोवा यहूदा के लोगों को बचायेगा, अत: यरूशलेम के निवासी बहुत अधिक डींग नहीं हांकेंगे। दाऊद के परिवार और यरूशलेम में रहने वाले अन्य लोग यह डींग नहीं हांक सकेंगे कि वे यहूदा में रहने वाले अन्य लोगों से अच्छे हैं। [8]किन्तु यहोवा यरूशलेम

के लोगों की रक्षा करेंगे। यहाँ तक कि कमजोर से कमजोर आदमी दाऊद के समान बड़ा योद्धा बनेगा और दाऊद के परिवार के लोग यहोवा के अपने दूतों की तरह मार्गदर्शक होंगे।

[9]यहोवा कहता है, "उस समय, मैं उन राष्ट्रों को नष्ट करूँगा जो यरूशलेम के विरुद्ध युद्ध करने आएंगे। [10]मैं दाऊद के घर और यरूशलेम के निवासियों के हृदय में दया और करुणा की भावना भरूंगा। वे मेरी ओर देखेंगे, जिसे उन्होंने छेद डाला था और वे बहुत दुखी होंगे। वे इतने ही दुखी होंगे, जितना अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु पर रोनेवाला व्यक्ति, या अपने पहलौठे पुत्र की मृत्यु पर रोनेवाला व्यक्ति। [11]यरूशलेम में एक बड़े शोक और रूदन का समय आएगा। यह उस समय की तरह होगा, जब मगिद्दो घाटी में हदद्रिम्मोन की मृत्यु पर लोग रोए थे। [12]हर एक परिवार अकेले रोएंगे। दाऊद के परिवार के लोग अकेले रोएंगे और उनकी पत्नियाँ अकेली रोएंगी। नथन के परिवार के पुरुष अकेले रोएंगे, और उनकी पत्नियाँ अकेली रोएंगी। [13]लेवी के परिवार के पुरुष अकेले रोएंगे और उनकी पत्नियाँ अकेली रोएंगी। शिमई के परिवार के पुरुष अकेले रोएंगे और उनकी पत्नियां अकेली रोएंगी। [14]और यही बात सभी परिवार समूहों में होगी। पुरुष अकेले रोएंगे और स्त्रियाँ अकेली रोएंगी।"

13 किन्तु उस समय, पानी का एक नया स्रोत दाऊद के परिवार तथा यरूशलेम में रहने वाले लोगों के लिये फूट पड़ेगा। वह सोता उनके पापों को धो देगा और लोगों को शुद्ध कर देगा।

झूठे नबी भविष्य में नहीं

[2]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "उस समय, मैं पृथ्वी से सभी मूर्तियों को हटा दूँगा। लोग उनका नाम भी याद नहीं रखेंगे और मैं झूठे नबियों और अशुद्ध आत्माओं को भी पृथ्वी से हटा दूँगा। [3]यदि कोई व्यक्ति भविष्यवाणी करता रहता है तो उसे दण्ड मिलेगा। यहाँ तक कि उसके माता–पिता, उसकी अपनी माँ और अपने पिता उससे कहेंगे, 'तुमने यहोवा के नाम पर झूठ बोला है। अत: तुम्हें मर जाना चाहिए!' उसकी अपनी माँ और उसके अपने पिता भविष्यवाणी करने के कारण उसे छुरा घोंप देंगे। [4]उस समय, नबी अपनी भविष्यवाणी और अपने दर्शन के लिये लज्जित होंगे। वे उस तरह का मोटा वस्त्र नहीं पहनेंगे, जो यह प्रकट करे कि व्यक्ति नबी है। वे उन वस्त्रों को, भविष्यवाणी कहे जाने वाले झूठ से, लोगों को धोखा देने के लिये नहीं पहनेंगे। [5]वे लोग कहेंगे, 'मैं नबी नहीं हूँ मैं एक किसान हूँ। मैंने बचपन से किसान के रूप में काम किया हैं।' [6]अन्य लोग कहेंगे, 'किन्तु तुम्हारे हाथों पर ये घाव कैसे हैं?' वह कहेगा, 'यह चोट मुझे अपने मित्र के घर लगी।'"

[7]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "तलवार, गड़ेरिये पर चोट कर! मेरे मित्र को मार! गड़ेरिये पर प्रहार करो और भेड़ें भाग खड़ी होंगी और मैं उन छोटों को दण्ड दूँगा। [8]देश के दो तिहाई लोग चोट खाएंगे और मरेंगे। किन्तु एक तिहाई बचे रहेंगे। [9]तब मैं उन बचे हुए लोगों की जाँच करूँगा। मैं उन्हें बहुत से कष्ट दूँगा। वे कष्ट उस आग की तरह होंगे, जिसे एक व्यक्ति चाँदी की शुद्धता की परख के लिये उपयोग करता है। मैं उनकी जाँच वैसे ही करूँगा, जैसे व्यक्ति सोने की जांच करता है। तब वे सहायता के लिये मेरी पुकार करेंगे, और मैं उनकी सहायता करूँगा। मैं कहूँगा, 'तुम मेरे लोग हो।' और वे कहेंगे, 'यहोवा मेरा परमेश्वर है।'"

निर्णय का दिन

14 देखो, यहोवा निर्णय का विशेष दिन रखता है और जो धन तुमने लिया है वह तुम्हारे नगर में बँटेगा। [2]मैं सभी राष्ट्रों को यरूशलेम के विरुद्ध लड़ने के लिये एक साथ लाऊँगा। वे नगर पर अधिकार करेंगे तथा घरों को नष्ट करेंगे। स्त्रियों के साथ कुकर्म होगा, और लोगों में से आधे बन्दी बनाए जाएंगे। किन्तु बाकी लोग नगर से नहीं ले जाए जाएंगे। [3]तब यहोवा उन राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध करेगा। यह एक सच्चा युद्ध होगा। [4]उस समय, वह जैतून के पर्वत पर खड़े होगा। वह पहाड़ी जो यरूशलेम के पूर्व है। अंजीर का पर्वत फट पड़ेगा। पर्वत का एक भाग उत्तर को जाएगा और दूसरा भाग दक्षिण को। एक गहरी घाटी पूर्व से पश्चिम तक उभर आएगी। [5]जैसे–जैसे वह पर्वतीय घाटी तुम्हारे समीप, और समीप आती जाएगी, तुम भाग जाना चाहोगे। तुम उसी समय की तरह भागोगे, जैसे तुम यहूदा के राजा उज्जिय्याह के समय में भूकम्प से भागे थे। किन्तु यहोवा, मेरा परमेश्वर आएगा और उनके सभी पवित्र लोग उनके साथ होंगे।

[6-7]वह एक बहुत अधिक विशेष दिन होगा। उस दिन प्रकाश, शीत और तुषार कुछ नहीं होगा। केवल यहोवा ही जानता हैं कि यह कैसे होगा, किन्तु कोई दिन–रात नहीं होंगे। तब जब सामान्य रूप से अंधेरा आएगा, तो उस समय उजाला भी होगा। [8]उस समय, यरूशलेम से लगातार पानी बहेगा। वह धारा बंट जाएंगी और एक भाग पूर्व को बहेगा और एक भाग पश्चिम को भूमध्य सागर तक जाएगा और यह पूरे वर्ष ग्रीष्म और शीत ऋतु दोनों में बहेगा [9]और यहोवा उस समय, पूरे संसार के राजा होगा। यहोवा एक है। उसका नाम "एक" है। [10]उस समय यरूशलेम के चारों ओर का क्षेत्र अराबा मरुभूमि की तरह सूना हो जाएगा। गेब से लेकर नेगव में रिम्मोन तक देश मरुभूमि सा हो जाएगा। किन्तु यरूशलेम का पूरा नगर फिर से, बिन्यामीन द्वार से प्रथम द्वार (अर्थात् कोने का द्वार) और हननेल की मीनार से राजा के दाखमधु निष्कासक तक बनेगा। [11]प्रतिबन्ध उठ जायेगा और लोग वहाँ अपने घर बनायेंगे। यरूशलेम सुरक्षित होगा।

[12]किन्तु यहोवा उन राष्ट्रों को दण्ड देगा जो यरूशलेम के विरुद्ध लड़े। वह उन्हें भयंकर बीमारी लगा देगा। खड़े खड़े उनका शरीर गल जायेगा। उनकी आँखें उनके कोटर में गलेंगी तथा उनकी जीभ उनके मुखों में गलेगी। [13-15]वह भंयकर बीमारी शत्रुओं के डेरे में होगी और उनके घोड़ों, खच्चरों, ऊँटों और गधों को वह भंयकर बीमारी लग जाएगी।

उस समय, वे लोग, सचमुच, यहोवा से डरेंगे। वे एक दूसरे का गला दबायेंगे। वे एक दूसरे पर प्रहार करने के लिये हाथ उठाएंगे। यहूदा के लोग यरूशलेम में युद्ध करेंगे, किन्तु वे नगर के चारों ओर के राष्ट्रों से धन प्राप्त करेंगे। वे बहुत अधिक सोना, चाँदी, और वस्त्र प्राप्त करेंगे। [16]कुछ लोग जो यरूशलेम में युद्ध करने आएंगे। वे बच जाएंगे और हर वर्ष वे राजा, सर्वशक्तिमान यहोवा की उपासना को आएंगे। वे झोपड़ियों का पर्व मनाने आएंगे [17]और यदि पृथ्वी के किसी परिवार के लोग राजा, सर्वशक्तिमान यहोवा की उपासना करने यरूशलेम नहीं जाएंगे तो यहोवा उन्हें वर्षा से वंचित कर देगा। [18]यदि मिस्र का कोई परिवार बटोरने का पर्व मनाने नहीं आएगा, तो उसे वही भंयकर बीमारी होगी, जो यहोवा ने अन्य शत्रु राष्ट्रों को लगा दी थी। [19]वह मिस्र के लिये तथा किसी भी राष्ट्र के लिये दण्ड होगा, जो बटोरने का पर्व मनाने नहीं आएगा।

[20]उस समय, हर एक चीज परमेश्वर का होगा। यहाँ तक कि घोड़े के कक्षबन्ध पर भी "यहोवा का पवित्र'नामक सूचक होगा और यहोवा के मंदिर में उपयोग में आने वाले सभी बर्तन वैसे ही महत्वपूर्ण होंगे, जैसे वेदी पर उपयोग में आने वाला प्याला। [21]वस्तुत:, यहूदा और यरूशलेम की हर एक तश्तरी पर "सर्वशक्तिमान यहोवा को पवित्र" नामक सूचक होगा। और हर एक व्यक्ति जो यहोवा की उपासना करेगा, उन तश्तरियों में भोजन पकाने और भोजन करने का अधिकारी होगा और उस समय, सर्वशक्तिमान यहोवा के मंदिर में वस्तुएं क्रय–विक्रय करने वाला कोई व्यापारी नहीं होगा।

मलाकी

1 परमेश्वर का सन्देश। यह सन्देश यहोवा का है। इस सन्देश को मलाकी ने इस्राएल को दिया।

परमेश्वर इस्राएल से प्रेम करता है

[2] यहोवा ने कहा, "लोगों, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।" किन्तु तुमने कहा, "कैसे पता चले कि तू हमसे प्रेम करता है?"

यहोवा ने कहा, "एसाव याकूब का भाई था। ठीक? किन्तु मैंने याकूब को चुना [3]और मैंने एसाव को स्वीकार नहीं किया। मैंने एसाव के पहाड़ी प्रदेश को नष्ट किया। एसाव का देश नष्ट किया गया और अब वहाँ केवल जंगली कुत्ते रहते हैं।"

[4]संभव है एदोम के लोग कहे, "हम नष्ट किये गए। किन्तु हम अपने नगरों को पुन: बनाएंगे।"

किन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "यदि वे उन नगरों को पुन: बनाते हैं तो मैं उन्हें पुन: नष्ट करूँगा!" इसलिए लोग एदोम को बुरा देश कहते हैं। लोग कहते है कि यहोवा उन लोगों से सदा के लिये घृणा करता है।

[5]लोगों, तुमने यह सब देखा और कहा, "इस्राएल के बाहर भी यहोवा महान है।"

ये याजक परमेश्वर को सम्मान नहीं देते

[6]सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा, "बच्चे अपने पिता का सम्मान करते हैं। सेवक अपने स्वामियों का सम्मान करते हैं। मैं तुम्हारा पिता हूँ, अत: तुम मेरा सम्मान क्यों नहीं करते? मैं तुम्हारा स्वामी हूँ, अत: तुम मेरा सम्मान क्यों नहीं करते? याजकों, तुम मेरे नाम का सम्मान नहीं करते।"

किन्तु तुम कहते हो, "हमने क्या किया है, जो प्रकट करता है कि हम तेरे नाम का सम्मान नहीं करते?"

[7]यहोवा ने कहा, "तुम मेरी वेदी पर अशुद्ध रोटी लाते हो!"

किन्तु तुम कहते हो, "वह रोटी अशुद्ध कैसे हैं?"

यहोवा ने कहा, "तुम मेरी मेज (वेदी) का सम्मान नहीं करते। [8]तुम अन्धे जानवर बलि के लिये लाते हो और यह गलत है। तुम बलि के लिये रोगी और विकलांग जानवर लाते हो। यह गलत हैं! तुम अपने शासक को उन रोगी जानवरों को भेंट देने का प्रयत्न करो। क्या वह उन जानवरों को भेंट के रूप में स्वीकार करेगा? नहीं! वह उन भेंटों को स्वीकार नहीं करेगा!" सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है!

[9]"याजकों, तुम्हें यहोवा से हमारे लिए अच्छा बने रहने की प्रार्थना करनी चाहिये। किन्तु वह तुम्हारी नहीं सुनेगा और यह सारा दोष तुम्हारा है।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।

[10]"निश्चय ही, तुम लोगों में से कोई याजक तो मंदिर के द्वारों को बन्द करता और आग ठीक–ठीक जलाता। सो मैं तुम लोगों से प्रसन्न नहीं हूँ। मैं तुम्हारी भेंट स्वीकार नहीं करूँगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है।

[11]"संसार में सर्वत्र लोग मेरे नाम का सम्मान करते हैं। संसार में सर्वत्र लोग मेरे लिये अच्छी भेंटे लाते हैं। वे अच्छी सुगन्धि मेरी भेंट के रूप में जलाते हैं। क्यों? क्योंकि मेरा नाम उन सभी लोगों के लिये महत्वपूर्ण है।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।

[12]"किन्तु लोगों, तुम यह प्रकट करते हो कि तुम मेरे नाम का सम्मान नहीं करते। तुम कहते हो कि यहोवा की मेज (वेदी) पवित्र नहीं हैं [13]और तुम उस मेज से भोजन लेना पसन्द नहीं करते। तुम भोजन को सूंघते हो और उसे खाने से इन्कार करते हो। तुम कहते हो कि यह बुरा हैं। किन्तु यह सत्य नहीं है। तुम रोगी, विकलांग और चोट खाये जानवर मेरे लिये लाते हो। तुम रोगी जानवरों को

मुझे बलि के रूप में भेंट करने का प्रयत्न करते हो। किन्तु मैं तुमसे उन रोगी जानवरों को स्वीकार नहीं करूँगा। [14]कुछ लोगों के पास अच्छे नर–जानवर हैं, जिसे वे बलि के रूप में दे सकते हैं। किन्तु वे उन अच्छे जानवरों को मुझे नहीं देते। कुछ लोग मेरे पास अच्छे जानवर लाते हैं। वे उन स्वस्थ जानवरों को मुझे देने की प्रतिज्ञा करते हैं। किन्तु वे गुप्त रूप से उन अच्छे जानवरों को बदल देते हैं और मुझे रोगी जानवर देते हैं। उन लोगों के साथ बुरा घटेगा! मैं महान राजा हूँ। तुम्हें मेरा सम्मान करना चाहिये! संसार में सर्वत्र लोग मेरा सम्मान करते हैं!" सर्वशक्तिमान यहोवा ने वह सब कहा!

याजकों के लिये नियम

2 "याजकों, यह नियम तुम्हारे लिये हैं! मेरी सुनो! जो मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दो। मेरे नाम का सम्मान करो! [2]यदि तुम मेरे नाम का सम्मान नहीं करते तो तुम्हारे साथ बुरा घटित होगा। तुम आशीर्वाद दोगे, किन्तु वे अभिशाप बनेंगे। मैं बुरा घटित कराऊँगा क्योंकि तुम मेरे नाम का सम्मान नहीं करते!" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।

[3]"देखो, मैं तुम्हारे वंशजों को दण्ड दूँगा। याजकों, तुम पवित्र दिनों को मुझे बलि–भेंट करते हो। तुम गोबर और मरे जानवर की अंतड़ियों को लेते हो और उन भागों को फेंक देते हो। किन्तु मैं उस गोबर को तुम्हारे चेहरों पर मलूंगा और तुम इसके साथ फेंक दिये जाओगे! [4]तब तुम समझोगे कि मैं तुम्हें यह आदेश क्यों दे रहा हूँ? मैं तुमको ये बातें इसलिये बता रहा हूँ कि लेवी के साथ मेरी वाचा चलती रहेगी।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।"

[5]यहोवा ने कहा, "मैंने यह वाचा लेवी के साथ की। मैंने उसे शान्तिपूर्ण जीवन देने की प्रतिज्ञा की और मैंने उसे वह दिया। लेवी ने मुझे सम्मान दिया। उसने मेरे नाम को सम्मान दिया! [6]लेवी ने सच्ची शिक्षा दी। लेवी ने झूठे उपदेश नहीं दिये! लेवी ईमानदार और शान्तिप्रिय व्यक्ति था। लेवी ने मेरा अनुसरण किया और अनेक व्यक्तियों को पाप कर्मों से बचाया। [7]याजक को परमेश्वर के उपदेशों को जानना चाहिए। लोगों को याजक के पास जाने योग्य होना चाहिये और परमेश्वर की शिक्षा को सीखना चाहिए। याजक को लोगों के लिये परमेश्वर का दूत होना चाहिए।"

[8]यहोवा ने कहा, "याजकों, तुमने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया! तुमने शिक्षाओं का उपयोग लोगो से बुरा काम कराने के लिये किया। तुमने लेवी के साथ किए गए वाचा को भ्रष्ट किया!" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा! [9]"तुम उस तरह नहीं रहे जैसा रहने को मैंने कहा! तुमने हमारी शिक्षाओं को स्वीकार नहीं किया हैं! अत: मैं तुम्हें महत्वहीन बनाऊँगा, लोग तुम्हारा सम्मान नहीं करेंगे!"

यहूदा परमेश्वर के प्रति सच्चा नहीं रहा

[10]हम सब का एक ही पिता (परमेश्वर) है। उसी परमेश्वर ने हम सभी को बनाया! अत: लोग अपने भाईयों को क्यों ठगते हैं? वे लोग प्रकट करते हैं कि वे वाचा का सम्मान नहीं करते। वे उस वाचा का सम्मान नहीं करते जिसे हमारे पूर्वजों ने परमेश्वर के साथ किया। [11]यहूदा के लोगों ने अन्य लोगों को ठगा। यरूशलेम और इस्राएल के लोगों ने भयंकर काम किये! यहूदा के निवासियों ने यहोवा के पवित्र मंदिर का सम्मान नहीं किया। परमेश्वर उस स्थान से प्रेम करता है। यहूदा के लोगों ने उन विदेशी स्त्रियों से विवाह किए जो झूठे देवों की पूजा किया करती थी! [12]यहोवा उन लोगों को यहूदा के परिवार से दूर कर देगा। वे लोग यहोवा के पास भेंट ला सकते हैं, किन्तु उससे कोई सहायता नहीं मिलेगी। [13]तुम रो सकते हो और यहोवा की वेदी को आंसुओं से ढक सकते हो, किन्तु यहोवा तुम्हारी भेंट स्वीकार नहीं करेगा। यहोवा उन चीजों से प्रसन्न नहीं होगा, जिन्हें तुम उसके पास लाओगे।

[14]तुम पूछते हो, "हमारी भेंटे यहोवा द्वारा स्वीकार क्यों नहीं की जातीं?" क्यों? क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे किये बुरे कामों को देखा, वह तुम्हारे विरुद्ध साक्षी है। उसने देखा कि तुम अपनी पत्नी को ठगते हो। तुम उस स्त्री के साथ तब से विवाहित हो जबसे तुम जवान हुए थे। वह तुम्हारी प्रेयसी थी। तब तुमने परस्पर प्रतिज्ञा की और वह तुम्हारी पत्नी हो गई। किन्तु तुमने उसे ठगा। [15]परमेश्वर चाहता है कि पति और पत्नी एक शरीर और एक आत्मा हो जायें। क्यों? जिससे उनके बच्चे पवित्र हों। अत: उस आध्यात्मिक एकता की रक्षा करो। अपनी पत्नी को न ठगो। वह तुम्हारी पत्नी तब से है जब से तुम युवक हुए।

[16]इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, "मैं विवाह– विच्छेद से घृणा करता हूँ। मैं पुरुषों के क्रूर कामों से घृणा करता हूँ। अत: अपनी आत्मिक एकता की सुरक्षा करो। अपनी पत्नी को धोखा मत दो।"

न्याय का विशेष समय

[17]तुमने गलत शिक्षा दी है। और उन गलत शिक्षाओं ने यहोवा को बहुत अधिक दु:खी किया है। तुमने यह शिक्षा दी कि परमेश्वर उन्हें पसन्द करता है जो बुरे काम करते हैं। तुमने कहा कि परमेश्वर उन्हें अच्छे लोग समझता है और तुमने यह शिक्षा दी कि परमेश्वर लोगों को बुरा काम करने के लिये दण्ड नहीं देता।

3 सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "देखों मैं अपना दूत भेज रहा हूँ। वह मेरे लिए मार्ग तैयार करेगा। यहोवा जिसकी खोज में तुम हो, वह अचानक अपने मंदिर में आयेगा। वाचा का संदेशवाहक सचमुच आ रहा है।"

[2]"कोई व्यक्ति उस समय के लिये तैयारी नहीं कर सकता। कोई व्यक्ति उसके विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकता, जब वह आयेगा। वह जलती आग के समान होगा। वह उस अच्छी रेह की तरह होंगा जिसे लोग चीजों को स्वच्छ करने के लिये उपयोग में लाते हैं। [3]वह लेवीवंशियों को पवित्र करेगा। वह उन्हें ऐसे ही शुद्ध करेगा जैसे आग चांदी को शुद्ध करती है! वह उन्हें शुद्ध सोना और चाँदी के समान बनाएगा। तब वे यहोवा को भेंट लाएंगे और वे उन कामों को ठीक ढंग से करेंगे। [4]तब यहोवा यहुदा और यरूशलेम में भेंटे स्वीकार करेगा। यह बीते काल के समान होगा। यह पुराने लम्बे समय की तरह होगा। [5]तब मैं तुम्हारे पास आऊँगा और तब मैं ठीक काम करूँगा। मैं उस गवाह की तरह होऊँगा जो लोगों द्वारा किये गए बुरे कामों के बारे में न्यायाधीश से कहता है। कुछ लोग बुरे जादू करते हैं। कुछ लोग व्यभिचार का पाप करते हैं। कुछ लोग झूठी प्रतिज्ञायें करते हैं। कुछ लोग अपने मजदूरों को ठगते हैं–वे अपनी वाचा की गई रकम नहीं देते। लोग विधवाओं और अनाथों की सहायता नहीं करते। लोग अजनबियों की सहायता नहीं करते। लोग मेरा सम्मान नहीं करते!" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।

परमेश्वर के यहाँ से चोरी

[6]"मैं यहोवा हूँ, और मैं बदलता नहीं। तुम याकूब की सन्तान हो, और तुम पूरी तरह नष्ट नहीं किये गए। [7]किन्तु तुमने मेरे नियमों का कभी पालन नहीं किया। यहाँ तक कि तुम्हारे पूर्वजों ने भी मेरा अनुसरण करना बन्द कर दिया। मेरे पास वापस लौटो और मैं तुम्हारे पास वापस लौटूँगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।

तुम कहते हो, "हम वापस कैसे लौट सकते हैं?"

[8]परमेश्वर को लूटना बन्द करो! लोगों को परमेश्वर की चीजें नहीं चुरानी चाहियें किन्तु तुमने मेरी चीजें चुराई!"

तू पूछता हैं, "हमने तेरा क्या चुराया?"

"तुम्हें मुझको अपनी चीज़ों का दसवां भाग देना चाहिये था। तुम्हें मुझे विशेष भेंट देनी चाहिये थी। किन्तु तुमने वे चीज़ें मुझे नहीं दीं। [9]इस प्रकार तुम्हारे पूरे राष्ट्र ने मेरी चीज़ें चुराई हैं। इस से बुरी घटनायें तुम्हारे साथ घट रही हैं।" सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है।

[10]सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "इस परीक्षा की जांच करो। अपनी चीजों का दसवां भाग मुझको लाओ। उन चीजों को खज़ाने में रखो। मेरे घर भोजन लाओ। इसे परख कर तो देखो। तुम यदि उन कामों को करोगे तो मैं, सच ही, तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। तुम्हारे पास अच्छी चीज़ें वैसे ही हो जाएंगी जैसे गगन से वर्षा होती हैं। तुम हर चीज आवश्यकता से अधिक पाओगे। [11]मैं कीड़ों को तुम्हारी फसलों को नष्ट नहीं करने दूँगा। तुम्हारी अंगूर की सभी बेलें अंगूर उपजाएंगी।" सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है।

[12]"अन्य राष्ट्रों के लोग तुम्हारे प्रति भले रहेंगे। तुम्हारा देश सचमुच आश्चर्यजनक देश होगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब सकता है।

न्याय का विशेष समय

[13]यहोवा कहता है, "तुमने मुझसे ओछी बातें कहीं।"

किन्तु तुम पूछते हो, "हमने तेरे बारे में क्या कहा?"

[14]"तुमने कहा, 'यहोवा की उपासना व्यर्थ हैं। हमने वे काम किये जो यहोवा ने करने को कहे, किन्तु हम लोगों को कुछ भी नहीं मिला। हम अपने पापों के लिये वैसे ही दुखी रहे जैसे मैयत में रोते लोग। किन्तु इससे कुछ काम नहीं निकला। [15]हम समझते रहे कि गर्वीलें लोग सुखी रहते हैं। दुष्ट लोग सफल होते हैं। वे परमेश्वर के धैर्य

की परीक्षा करने के लिये बुरे काम करते हैं, और परमेश्वर उन्हें दण्ड नहीं देता।'" [16]परमेश्वर के भक्तों ने आपस में बातें कीं और यहोवा ने उनकी सुनी। उसके सामने एक पुस्तक हैं। उस पुस्तक में परमेश्वर के भक्तों के नाम हैं। वे ही लोग है जो यहोवा के नाम का सम्मान करते हैं।

[17]यहोवा ने कहा, "वे लोग मेरे हैं। मैं उन पर कृपालु रहूंगा। व्यक्ति अपने उन बच्चों पर अधिक कृपालु रहता है जो उसके आज्ञाकारी होते हैं। उसी प्रकार मैं अपने भक्तों पर कृपालु रहूंगा। [18]लोगों, तुम मेरे पास वापस लौटोगे और तुम अच्छे और बुरे का अन्तर समझोगे। तुम परमेश्वर के भक्त और जो भक्त नहीं हैं उसके बीच के अन्तर को समझोगे।

4 "न्याय का समय आ रहा है। यह गर्म भट्टी–सा होगा। वे सभी गर्वीलें व्यक्ति दण्डित होंगे। वे सभी पापी लोग सूखी घास की तरह जलेंगे। उस समय वे आग में ऐसी जलती झाड़ी–से होंगे जिसकी कोई शाखा या जड़ बची नहीं रहेगी।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।

[2]"किन्तु, मेरे भक्तों, तुम पर अच्छाई उगते सूरज के समान चमकेगी और यह सूरज की किरणों की तरह स्वास्थ्यवर्धक शक्ति देगी। तुम ऐसे ही स्वतन्त्र और प्रसन्न होओगे जैसे अपने बाड़े से स्वतन्त्र हुए बछड़े। [3]तब तुम उन बुरे लोगों को कुचलोगे, वे तुम्हारे पैरों के नीचे की राख–से होंगे। मैं न्याय के समय इन घटनाओं को घटित कराऊँगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा!

[4]"मूसा की व्यवस्था को याद करो और पालन करो। मूसा मेरा सेवक था। मैंने होरेब (सिनाइ) पर्वत पर उन विधियों और नियमों को उसे दिया। वे नियम इस्राएल के सभी लोगों के लिये हैं।"

[5]यहोवा ने कहा, "देखो, मैं नबी एलिय्याह को तुम्हारे पास भेजूँगा। वह यहोवा के यहाँ से उस महान और भयंकर न्याय के समय से पहले आएगा। [6]एलिय्याह माता–पिता को अपने बच्चों के समीप होने में सहायता करेगा। यह अवश्य घटित होगा, या मैं (परमेश्वर) आऊँगा और तुम्हारे देश को पूरी तरह नष्ट कर दूँगा!"

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

These Scriptures:
- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from: http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from: http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html

मत्ती

यीशु की वंशावली

1 इब्राहीम के वंशज दाऊद के पुत्र यीशु मसीह की वंशावली इस प्रकार है:

2 इब्राहीम का पुत्र था इसहाक
और इसहाक का पुत्र हुआ याकूब।
फिर याकूब के यहूदा
और उसके भाई उत्पन्न हुए।
3 यहूदा के बेटे थे फिरिस और जोरह।
(उनकी माँ का नाम तामार था।)
फिरिस, हिस्रोन का पिता था।
हिस्रोन राम का पिता था।
4 राम अम्मीनादाब का पिता था।
आम्मीनादाब से नहशोन
और नहशोन से सलमोन का जन्म हुआ।
5 सलमोन से बोअज का जन्म हुआ।
(बोअज की माँ का नाम राहब था।)
बोअज और रूथ से ओबेद पैदा हुआ,
ओबेद यिशै का पिता था।
6 और यिशै से राजा दाऊद पैदा हुआ।
(सुलैमान दाऊद का पुत्र था)
जो उस स्त्री से जन्मा जो पहले
उरिय्याह की पत्नी थी।
7 सुलैमान रहबाम का पिता था
और रहबाम अबिय्याह का पिता था।
अबिय्याह से आसा का जन्म हुआ।
8 और आसा यहोशाफात का पिता बना।
फिर यहोशाफात से योराम
और योराम से उज्जिय्याह का जन्म हुआ।
9 उज्जिय्याह योताम का पिता था
और योताम, आहाज का।
फिर आहाज से हिजकिय्याह।
10 और हिजकिय्याह से मनश्शिह का जन्म हुआ।
मनश्शिह आमोन का पिता बना
और आमोन योशिय्याह का।
11 फिर इस्राएल के लोगों को बंदी बना कर
बेबिलोन ले जाते समय योशिय्याह से
यकुन्याह और उसके भाईयों ने जन्म लिया।
12 बेबिलोन में ले जाये जाने के बाद यकुन्याह
शालतिएल का पिता बना।
और फिर शालतिएल से जरुब्बाबिल।
13 तथा जरुब्बाबिल से अबीहूद पैदा हुए।
अबीहूद इल्याकीम का
और इल्याकीम अजोर का पिता बना।
14 अजोर सदोक का पिता था।
सदोक से अखीम
और अखीम से इलीहूद पैदा हुए।
15 इलीहूद इलियाजार का पिता था
और इलियाजार मत्तान का।
मत्तान याकूब का पिता बना।
16 और याकूब से यूसुफ पैदा हुआ।
जो मरियम का पति था।
मरियम से यीशु का जन्म हुआ
जो मसीह कहलाया।

17 इस प्रकार इब्राहीम से दाऊद तक चौदह पीढ़ियाँ हुई। और दाऊद से लेकर बंदी बना कर बाबुल पहुँचाये जाने तक की चौदह पीढ़ियाँ, तथा बंदी बना कर बाबुल पहुँचाये जाने से मसीह के जन्म तक चौदह पीढ़ियाँ और हुई।

यीशु मसीह का जन्म

18 यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: जब उसकी माता मरियम की यूसुफ के साथ सगाई हुई तो विवाह होने से पहले ही पता चला कि वह पवित्र आत्मा की शक्ति से

गर्भवती है। [19]किन्तु उसका भावी पति यूसुफ एक अच्छा व्यक्ति था। और इसे प्रकट करके लोगों में उसे बदनाम करना नही चाहता था। इसलिये उसने निश्चय किया कि चुपके से वह सगाई तोड़ दे।

[20]किन्तु जब वह इस बारे में सोच ही रहा था, सपने में उसके सामने प्रभु के दूत ने प्रकट होकर उससे कहा, "ओ! दाऊद के पुत्र यूसुफ, मरियम को पत्नी बनाने से मत डर क्योंकि जो बच्चा उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। [21]वह एक पुत्र को जन्म देगी। तू उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार करेगा।"

[22]यह सब कुछ इसलिये हुआ है कि प्रभु ने भविष्यवक्ता द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो: [23]"सुनो, एक कुँवारी कन्या गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म देगी। उसका नाम इम्मानुएल रखा जायेगा।" (जिसका अर्थ है 'परमेश्वर हमारे साथ है।')* [24]जब यूसुफ नींद से जागा तो उसने वही किया जिसे करने की प्रभु के दूत ने उसे आज्ञा दी थी। वह मरियम को ब्याह कर अपने घर ले आया। [25]किन्तु जब तक उसने पुत्र को जन्म नही दे दिया, वह उसके साथ नही सोया। यूसुफ ने बेटे का नाम यीशु रखा।

पूर्व से विद्वानों का आना

2 हेरोदेस जब राज्य कर रहा था, उन्हीं दिनों यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ। कुछ ही समय बाद कुछ विद्वान जो सितारों का अध्ययन करते थे, पूर्व से यरूशलेम आये। [2]उन्होंने पूछा, "यहूदियों का नवजात राजा कहाँ है? हमने उसके सितारे को, आकाश में देखा है। इसलिए हम पूछ रहे हैं। हम उसकी आराधना करने आये हैं।"

[3]जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह बहुत बेचैन हुआ और उसके साथ यरूशलेम के दूसरे सभी लोग भी चिंता करने लगे। [4]सो उसने यहूदी समाज के सभी प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों को इकट्ठा करके उनसे पूछा कि मसीह का जन्म कहाँ होना है। [5]उन्होंने उसे बताया, "यहूदिया के बैतलहम में। क्योंकि भविष्यवक्ता द्वारा लिखा गया है कि:

[6] 'ओ, यहूदा की धरती पर स्थित बैतलहम,
तू यहूदा के अधिकारियों में
किसी प्रकार भी सबसे छोटा नहीं
क्योंकि तुझ में से एक शासक प्रकट होगा
जो मेरे लोगों इस्राएल की, करेगा देखभाल।"

मीका 5:2

[7]तब हेरोदेस ने सितारों का अध्ययन करने वाले उन विद्वानों को बुलाया और पूछा कि वह सितारा किस समय प्रकट हुआ था। [8]फिर उसने उन्हें बैतलहम भेजा और कहा "जाओ उस शिशु के बारे में अच्छी तरह से पता लगाओ और जब वह तुम्हें मिल जाये तो मुझे बताओ ताकि मैं भी आकर उसकी उपासना कर सकूँ।"

[9]फिर वे राजा की बात सुनकर चल दिये। वह सितारा भी जिसे आकाश में उन्होंने देखा था उनके आगे आगे जा रहा था। फिर जब वह स्थान आया जहाँ वह बालक था, तो सितारा उसके ऊपर रुक गया। [10]जब उन्होंने यह देखा तो वे बहुत आनन्दित हुए। [11]वे घर के भीतर गये और उन्होंने उसकी माता मरियम के साथ बालक के दर्शन किये। उन्होंने साष्टांग प्रणाम करके उसकी उपासना की। फिर उन्होंने बहुमूल्य वस्तुओं की अपनी पिटारी खोली और सोना, लोबान और गन्धरस के उपहार उसे अर्पित किये। [12]किन्तु परमेश्वर ने एक स्वप्न में उन्हें सावधान कर दिया, कि वे वापस हेरोदेस के पास न जायें। सो वे एक दूसरे मार्ग से अपने देश को लौट गये।

यीशु को लेकर माता-पिता का मिस्र जाना

[13]जब वे चले गये तो यूसुफ को सपने में प्रभु के एक दूत ने प्रकट हो कर कहा, "उठ, बालक और उसकी माँ को लेकर चुपके से मिस्र चला जा और मैं जब तक तुझ से न कहूँ, वहीं ठहरना। क्योंकि हेरोदेस इस बालक को मरवा डालने के लिए ढूँढ़ेगा।"

[14]सो यूसुफ खड़ा हुआ तथा बालक और उसकी माता को लेकर रात में ही मिस्र के लिए चल पड़ा। [15]फिर हेरोदेस के मरने तक वह वहीं ठहरा रहा। यह इसलिये हुआ कि प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा जो कहा था, पूरा हो सके: "मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बाहर आने को कहा"*

बैतलहम के सभी बालकों का हेरोदेस के द्वारा मरवाया जाना

[16]हेरोदेस ने जब यह देखा कि सितारों का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने उसके साथ चाल चली है, तो वह

सुनो ... जायेगा यशा. 7:14

मैंने ... कहा देखें होशे 11:1

आग बबूला हो उठा। उसने आज्ञा दी कि बैतलहम और उसके आसपास में दो वर्ष के या उससे छोटे सभी बालकों की हत्या कर दी जाये। (सितारों का अध्ययन करने वाले विद्वानों के बताये समय को आधार बना कर) [17]तब भविष्यवक्ता यिर्मयाह द्वारा कहा गया यह वचन पूरा हुआ:

[18]"रामाह में दु:ख भरा एक शब्द सुना गया,
शब्द रोने का, गहरे विलाप का था।
राहेल अपने शिशुओं के लिए रोती थी
चाहती नहीं थी कोई उसे धीरज बँधाए,
क्योंकि उसके तो सभी बालक मर चुके थे।"

यिर्मयाह 31:15

यीशु को लेकर यूसुफ और मरियम का मिस्र लौटना

[19]फिर हेरोदेस की मृत्यु के बाद मिस्र में यूसुफ के सपने में प्रभु का एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ [20]और उससे बोला, "उठ, बालक और उसकी माँ को लेकर इस्राएल की धरती पर चला जा क्योंकि वे जो बालक को मार डालना चाहते थे, मर चुके हैं।"

[21]तब यूसुफ खड़ा हुआ और बालक तथा उसकी माता को लेकर इस्राएल जा पहुँचा। [22]किन्तु जब यूसुफ ने यह सुना कि यहूदिया पर अपने पिता हेरोदेस के स्थान पर अरखिलाउस राज्य कर रहा है तो वह वहाँ जाने से डर गया किन्तु सपने में परमेश्वर से आदेश पाकर वह गलील प्रदेश के लिए [23]चल पड़ा और वहाँ नासरत नाम के नगर में घर बना कर रहने लगा ताकि भविष्यवक्ताओं द्वारा कहा गया वचन पूरा हो कि: 'वह नासरी* कहलायेगा।'

बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का कार्य

3 उन्ही दिनों यहूदिया के बियाबान मरुस्थल में उपदेश देता हुआ बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना वहाँ आया। [2]वह प्रचार करने लगा, "मन फिराओ! क्योंकि स्वर्ग का राज्य आने को है।" [3]यह यूहन्ना वही है जिसके बारे में भविष्यवक्ता यशायाह ने चर्चा करते हुए कहा था:

"जंगल में एक पुकारीवाले की आवाज है:
'प्रभु के लिए मार्ग तैयार करो
और उसके लिए राहें सीधी करो।"

यशायाह 40:3

[4]यूहन्ना के वस्त्र ऊँट की ऊन के बने थे और वह कमर पर चमड़े की पेटी बाँधे था। टिड्डियाँ और जँगली शहद उसका भोजन था। [5]उस समय यरुशलेम, समूचे यहूदिया क्षेत्र और यर्दन नदी के आसपास के लोग उसके पास आ इकट्ठे हुए। [6]उन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया और यर्दन नदी में उन्हें उसके द्वारा बपतिस्मा दिया गया।

[7]जब उसने देखा कि बहुत से फरीसी* और सदूकी* उसके पास बपतिस्मा लेने आ रहे हैं तो वह उनसे बोला, "ओ, साँप के बच्चो। तुम्हें किसने चेता दिया है कि तुम प्रभु के भावी क्रोध से बच निकलो? [8]तुम्हें प्रमाण देना होगा कि तुममें वास्तव में मन फिराव हुआ है। [9]और मत सोचो कि अपने आप से यह कहना ही काफी होगा कि 'हम इब्राहीम की संतान हैं।' मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर इब्राहीम के लिये इन पत्थरों से भी बच्चे पैदा करा सकता है। [10]पेड़ों की जड़ों पर कुल्हाड़ा रखा जा चुका है। और हर वह पेड़ जो उत्तम फल नही देता काट गिराया जायेगा और फिर उसे आग में झोंक दिया जायेगा।

[11]"मैं तो तुम्हें तुम्हारे मन फिराव के लिये जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह जो मेरे बाद आने वाला है, मुझसे महान है। मैं तो उसके जूतों के तस्मे खोलने योग्य भी नही हूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और अग्नि से बपतिस्मा देगा। [12]उसके हाथों में उसका छाज है जिससे वह अनाज को भूसे से अलग करता है। अपने खलिहान से वह साफ किये समस्त अनाज को उठा, इकट्ठा कर, कोठियों में भरेगा और भूसे को ऐसी आग में झोंक देगा जो कभी बुझाए नही बुझेगी।"

यीशु का यूहन्ना से बपतिस्मा लेना

[13]उस समय यीशु गलील से चल कर यर्दन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। [14]किन्तु यूहन्ना ने यीशु को रोकने का यत्न करते हुए कहा, "मुझे तो

नासरी एक व्यक्ति जो नासरत का रहने वाला हो। नासरत का अर्थ संभवत: शाखा या मूल है। देखें यशा.11:1 और 53:2

फरीसी एक यहूदी धार्मिक समूह, जो 'पुराना धर्म नियम' और दूसरे यहूदी नियमों तथा रीति-रिवाजों का कट्टरता से पालन करने का दावा करता है।

सदूकी एक प्रमुख यहूदी धार्मिक समूह जो 'पुराना धर्म नियम' की केवल पहली पाँच पुस्तकों को ही स्वीकार करता है और किसी के मर जाने के बाद उसका पुनरुत्थान नहीं मानता।

स्वयं तुझ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है। फिर तू मेरे पास क्यों आया है?"

[15]उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "अभी तो इसे इसी प्रकार होने दो। हमें, जो परमेश्वर चाहता है उसे पूरा करने के लिए यही करना उचित है।" फिर उसने वैसा ही होने दिया।

[16]और तब यीशु ने बपतिस्मा ले लिया। जैसे ही वह जल से बाहर निकला, आकाश खुल गया। उसने परमेश्वर के आत्मा को एक कबूतर की तरह नीचे उतरते और अपने ऊपर आते देखा। [17]तभी यह आकाशवाणी हुई:

"यह मेरा प्रिय पुत्र है। जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ।"

यीशु की परीक्षा

4 फिर आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान के द्वारा उसे परखा जा सके। [2]चालीस दिन और चालीस रात भूखा रहने के बाद जब उसे भूख बहुत सताने लगी [3]तो उसे लुभाने वाला उसके पास आया और बोला "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इन पत्थरों से कह कि ये रोटियाँ बन जायें।"

[4]यीशु ने उत्तर दिया, "शास्त्र में लिखा है:

'मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं जीता
बल्कि वह प्रत्येक उस शब्द से जीता है
जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।'"

व्यवस्थाविवरण 8:3

[5]फिर शैतान उसे यरुशलेम के पवित्र नगर में ले गया। वहाँ मंदिर की सबसे ऊँची बुर्ज पर खड़ा करके [6]उसने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो नीचे कूद पड़ क्योंकि शास्त्र में लिखा है:

'वह तेरी देखभाल के लिये अपने दूतों को
आज्ञा देगा और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे
ताकि तेरे पैरों में कोई पत्थर तक न लगे।'"

भजन संहिता 91:11-12

[7]यीशु ने उत्तर दिया, "किन्तु शास्त्र यह भी कहता है, 'अपने प्रभु परमेश्वर को परीक्षा में मत डाल।'"

व्यवस्थाविवरण 6:16

[8]फिर शैतान यीशु को एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया। और उसे संसार के सभी राज्य और उनका वैभव दिखाया। [9]शैतान ने तब उससे कहा, "ये सभी वस्तुएँ मैं तुझे दे दूँगा यदि तू मेरे आगे झुके और मेरी उपासना करे।"

[10]फिर यीशु ने उससे कहा, "शैतान, दूर हो। शास्त्र कहता है:

'अपने प्रभु परमेश्वर की उपासना कर
और केवल उसी की सेवा कर।'"

व्यवस्थाविवरण 6:13

[11]फिर शैतान उसे छोड़ कर चला गया। और स्वर्गदूत आकर उसकी देखभाल करने लगे।

यीशु के कार्य का आरम्भ

[12]यीशु ने जब सुना कि यूहन्ना पकड़ा जा चुका है तो वह गलील लौट आया। [13]परन्तु वह नासरत में नहीं ठहरा और जाकर कफरनहूम में, जो जबूलून और नपताली के क्षेत्र में गलील की झील के पास था, रहने लगा। [14]यह इसलिये हुआ कि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा जो कहा, वह पूरा हो:

[15] "जबूलून और नपताली के देश सागर के रास्ते पर, यर्दन नदी के पश्चिम में,
ग़ैर यहूदियों के देश गलील में
[16] जो लोग अँधेरे में जी रहे थे
उन्होंने एक महान ज्योति देखी
और जो मृत्यु की छाया के
देश में रहते थे उन पर,
ज्योति के प्रभात का एक प्रकाश फैला।"

यशायाह 9:1-2

यीशु द्वारा शिष्यों का चुना जाना

[17]उस समय से यीशु ने सुसंदेश का प्रचार शुरू कर दिया: "मन फिराओ! क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"

[18]जब यीशु गलील की झील के पास से जा रहा था उसने दो भाइयों को देखा शमौन (जो पतरस कहलाया) और उसका भाई अंद्रियास। वे झील में अपने जाल डाल रहे थे। वे मछुआरे थे। [19]यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि लोगों के लिये मछलियाँ पकड़ने के बजाय मनुष्य रूपी मछलियाँ कैसे पकड़ी जाती हैं।" [20]उन्होंने तुरंत अपने जाल छोड़ दिये और उसके पीछे हो लिये।

[21]फिर वह वहाँ से आगे चल पड़ा। और उसने देखा कि जब्दी का बेटा याकूब और उसका भाई यूहन्ना अपने

पिता के साथ नाव में बैठे अपने जालों की मरम्मत कर रहे हैं। यीशु ने उन्हें बुलाया। 22और वे तत्काल नाव और अपने पिता को छोड़ कर उसके पीछे चल दिये।

यीशु का लोगों को उपदेश और उन्हें चंगा करना

23यीशु समूचे गलील क्षेत्र में यहूदी प्रार्थनालय में स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार का उपदेश देता और हर प्रकार के रोगों और संतापों को दूर करता घूमने लगा। 24समस्त सीरिया देश में उसका समाचार फैल गया। इसलिये लोग ऐसे सभी व्यक्तियों को जो संतापी थे, या तरह तरह की बीमारियों और वेदनाओं से पीड़ित थे, जिन पर दुष्टात्माएँ सवार थीं, जिन्हें मिर्गी आती थी और जो लकवे के मारे थे, उसके पास लाने लगे। यीशु ने उन्हें चंगा किया। 25इसलिये गलील, दस नगर, यरुशलेम, यहूदिया और यर्दन नदी–पार के लोगों की बड़ी–बड़ी भीड़ उसका अनुसरण करने लगीं।

यीशु का उपदेश

5 यीशु ने जब यह बड़ी भीड़ देखी तो वह एक पहाड़ पर चला गया। वहाँ वह बैठ गया और उसके अनुयायी उसके पास आ गये। 2तब यीशु ने उन्हें उपदेश देते हुए कहा:

3 "धन्य हैं वे जो ह्रदय से दीन हैं,
स्वर्ग का राज्य उनके लिए है।
4 धन्य हैं वे जो शोक करते हैं क्योंकि
परमेश्वर उन्हें सांतवन देता है
5 धन्य हैं वे जो नम्र हैं
क्योंकि यह पृथ्वी उन्हीं की है।
6 धन्य हैं वे जो नीति के प्रति भूखे और प्यासे
रहते हैं! क्योंकि परमेश्वर
उन्हें संतोष देगा, तृप्ति देगा।
7 धन्य हैं वे जो दयालू हैं क्योंकि
उन पर दया गगन से बरसेगी।
8 धन्य हैं वे जो हृदय के शुद्ध हैं क्योंकि
वे परमेश्वर के दर्शन करेंगे।
9 धन्य हैं वे जो शान्ति के काम करते हैं।
क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे।
10 धन्य हैं वे जो यातनाएँ भोगते नीति के हित।
स्वर्ग का राज्य उनके लिये ही है।

11"और तुम भी धन्य हो क्योंकि जब लोग तुम्हारा अपमान करें, तुम्हें यातनाएँ दें, और मेरे लिये तुम्हारे विरोध में तरह तरह की झूठी बातें कहें, बस इसलिये कि तुम मेरे अनुयायी हो, 12तब तुम प्रसन्न रहना, आनन्द से रहना, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हें इसका प्रतिफल मिलेगा। यह वैसा ही है जैसे तुमसे पहले के भविष्यवक्ताओं को लोगों ने सताया था।

तुम नमक के समान हो: तुम प्रकाश के समान हो

13"तुम समूची मानवता के लिये नमक हो। किन्तु यदि नमक ही बेस्वाद हो जाये तो उसे फिर नमकीन नहीं बनाया जा सकता है। वह फिर किसी काम का नही रहेगा। केवल इसके, कि उसे बाहर, लोगों की ठोकरों में फेंक दिया जाये।

14"तुम जगत के लिये प्रकाश हो। एक ऐसा नगर जो पहाड़ की चोटी पर बसा है, छिपाये नहीं छिपाया जा सकता। 15लोग दीया जलाकर किसी बाल्टी के नीचे उसे नहीं रखते बल्कि उसे दीवट पर रखा जाता है और वह घर के सब लोगों को प्रकाश देता है। 16"लोगों के सामने तुम्हारा प्रकाश ऐसे चमके कि वे तुम्हारे अच्छे कामों को देखें और स्वर्ग में स्थित तुम्हारे परम पिता की महिमा का बखान करें।"

यीशु और यहूदी धर्म–नियम

17"यह मत सोचो कि मैं मूसा के धर्म–नियम या भविष्यवक्ताओं के लिखे को नष्ट करने आया हूँ। मैं उन्हें नष्ट करने नहीं बल्कि उन्हें पूर्ण करने आया हूँ। 18मैं तुम से सत्य कहता हूँ कि जब तक धरती और आकाश समाप्त नहीं हो जाते, मूसा की व्यवस्था का एक एक शब्द और एक एक अक्षर बना रहेगा, वह तब तक बना रहेगा जब तक वह पूरा नहीं हो लेता। 19इसलिये जो इन आदेशों में से किसी छोटे से छोटे बिना को भी तोड़ता है और लोगों को भी वैसा ही करना सिखाता है, वह स्वर्ग के राज्य में कोई महत्त्व नहीं पायेगा। किन्तु जो उन पर चलता है और दूसरों को उन पर चलने का उपदेश देता है, वह स्वर्ग के राज्य में महान समझा जायेगा। 20मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब तक तुम व्यवस्था के उपदेशकों और फ़रीसियों से धर्म के आचरण में आगे न निकल जाओ, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं पाओगे।

क्रोध

[21]"तुम जानते हो कि हमारे पूर्वजों से कहा गया था 'हत्या मत करो* और यदि कोई हत्या करता है तो उसे अदालत में उसका जवाब देना होगा।' [22]किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो व्यक्ति अपने भाई पर क्रोध करता है, उसे भी अदालत में इसके लिये उत्तर देना होगा। और जो कोई अपने भाई का अपमान करेगा उसे सर्वोच्च संघ के सामने जवाब देना होगा। और यदि कोई अपने किसी बन्धु से कहे 'अरे असभ्य, मूर्ख।' तो नरक की आग के बीच उस पर इसकी जवाब देही होगी।

[23]"इसलिये यदि तू वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रहा है और वहाँ तुझे याद आये कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कोई विरोध है [24]तो तू उपासना की भेंट को वहीं छोड़ दे और पहले जा कर अपने उस बन्धु से सुलह कर। और फिर आकर भेंट चढ़ा।

[25]"तेरा शत्रु तुझे न्यायालय में ले जाता हुआ जब रास्ते में ही हो, तू झटपट उसे अपना मित्र बना ले कहीं वह तुझे न्यायी को न सौंप दे और फिर न्यायी सिपाही को। जो तुझे जेल में डाल देगा। [26]मैं तुझे सत्य बताता हूँ तू जेल से तब तक नहीं छूट पायेगा जब तक तू पाई-पाई न चुका दे।

व्यभिचार

[27]"तुम जानते हो कि यह कहा गया है, 'व्यभिचार मत करो।'* [28]किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि कोई किसी स्त्री को वासना की आँख से देखता है तो वह अपने मन में पहले ही उसके साथ व्यभिचार कर चुका है। [29]इसलिये यदि तेरी दाहिनी आँख तुझ से पाप करवाये तो उसे निकाल कर फेंक दे। क्योंकि तेरे लिये यह अच्छा है कि तेरे शरीर का कोई एक अंग नष्ट हो जाये बजाय इसके कि तेरा सारा शरीर ही नरक में डाल दिया जाये। [30]और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझ से पाप करवाये तो उसे काट कर फेंक दे। क्योंकि तेरे लिये यह अच्छा है कि तेरे शरीर का एक अंग नष्ट हो जाये बजाय इसके कि तेरा सम्पूर्ण शरीर ही नरक में चला जाये।

हत्या मत करो देखे निर्गमन 20:13 और व्यवस्था. 5:17
व्यभिचार मत करो देखें निर्गमन 20:14 और व्यवस्था. 5:18

तलाक

[31]"कहा गया है,'जब कोई अपनी पत्नी को तलाक देता है तो अपनी पत्नी को उसे लिखित रूप में तलाक देना चाहिये।'* [32]किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि हर वह व्यक्ति जो अपनी पत्नी को तलाक देता है, यदि उसने यह तलाक उसके व्यभिचारी आचरण के कारण नहीं दिया है तो जब वह दूसरा विवाह करती है, तो मानो वह व्यक्ति ही उससे व्यभिचार करवाता है। और जो कोई उस छोड़ी हुई स्त्री से विवाह रचाता है तो वह भी व्यभिचार करता है।

शपथ

[33]"तुमने यह भी सुना है कि हमारे पूर्वजों से कहा गया था, 'तू शपथ मत तोड़ बल्कि प्रभु से की गयी प्रतिज्ञाओं को पूरा कर।'* [34]किन्तु मैं तुझसे कहता हूँ कि शपथ ले ही मत। स्वर्ग की शपथ मत ले क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। [35]धरती की शपथ मत ले क्योंकि यह उसकी पाँव की चौकी है। यरुशलेम की शपथ मत ले क्योंकि यह महा सम्राट का नगर है। [36]अपने सिर की शपथ भी मत ले क्योंकि तू किसी एक बाल तक को सफेद या काला नहीं कर सकता है। [37]यदि तू 'हाँ' चाहता है तो केवल 'हाँ' कह और 'ना' चाहता है तो केवल 'ना'। क्योंकि इससे अधिक जो कुछ है वह उससे है जो बद है।

बदले की भावना मत रख

[38]"तुमने सुना है: कहा गया है, 'आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत'* [39]किन्तु मैं तुझ से कहता हूँ कि किसी बुरे व्यक्ति का भी विरोध मत कर। बल्कि यदि कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी उसकी तरफ़ कर दे। [40]यदि कोई तुझ पर मुकदमा चला कर तेरा कुर्ता भी उतरवाना चाहे तो तू उसे अपना चोगा तक दे दे। [41]यदि कोई तुझे एक मील चलाए तो तू उसके साथ दो मील चला जा। [42]यदि कोई तुझसे कुछ माँगे तो उसे वह दे दे। जो तुझसे उधार लेना चाहे, उसे मना मत कर।

जब कोई ... देना चाहिए देखें व्यवस्था. 24:1
तू शपथ ... पूरा कर देखें लैव्य. 19:12; गिनती 30:2; व्यवस्था. 23:21
आँख के ... दाँत देखें निर्गमन 21:24; लैव्य. 24:20

सबसे प्रेम रखो

[43]“तुमने सुना है: कहा गया है ‘तू अपने पड़ौसी से प्रेम कर* और शत्रु से घृणा कर।’ [44]किन्तु मैं कहता हूँ अपने शत्रुओं से भी प्यार करो। जो तुम्हें यातनाएँ देते हैं, उनके लिये भी प्रार्थना करो। [45]ताकि तुम स्वर्ग में रहने वाले अपने पिता की सिद्ध संतान बन सको। क्योंकि वह बुरों और भलों सब पर सूर्य का प्रकाश चमकाता है। पापियों और धर्मीयों, सब पर वर्षा कराता है। [46]यह मैं इसलिये कहता हूँ कि यदि तू उन्हीं से प्रेम करेगा जो तुझसे प्रेम करते हैं तो तुझे क्या फल मिलेगा। क्या ऐसा तो कर वसूल करने वाले भी नही करते? [47]यदि तू अपने भाई बंदों का ही स्वागत करेगा तो तू औरों से अधिक क्या कर रहा है? क्या ऐसा तो विधर्मी भी नहीं करते? [48]इसलिये परिपूर्ण बनो, वैसे ही जैसे तुम्हारा स्वर्ग–पिता–परिपूर्ण है।

दान की शिक्षा

6 “सावधान रहो! और परमेश्वर चाहता है उन कामों का लोगों के सामने दिखावा मत करो। नहीं तो तुम अपने परम–पिता से, जो स्वर्ग में है, उसका प्रतिफल नहीं पाओगे।

[2]“इसलिये जब तुम किसी दीन–दुखी को दान देते हो तो उसका ढोल मत पीटो, जैसा कि धर्म–सभाओं और गलियों में कपटी लोग औरों से प्रशंसा पाने के लिए करते हैं। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उन्हें तो इसका पूरा फल पहले ही दिया जा चुका है। [3]किन्तु जब तू किसी दीन दुखी को देता है तो तेरा बायाँ हाथ न जान पाये कि तेरा दाहिना हाथ क्या कर रहा है। [4]ताकि तेरा दान छिपा रहे। तेरा वह परम पिता जो तू छिपाकर करता है उसे भी देखता है, वह तुझे उसका प्रतिफल देगा।

प्रार्थना का महत्त्व

[5]“जब तुम प्रार्थना करो तो कपटियों की तरह मत करो। क्योंकि वे यहूदी प्रार्थना–सभाओं और गली के नुक्कड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना चाहते हैं ताकि लोग उन्हें देख सकें। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उन्हें तो उसका फल पहले ही मिल चुका है। [6]किन्तु जब तू प्रार्थना करे, अपनी कोठरी में चला जा और द्वार बन्द करके गुप्त रूप से अपने परम–पिता से प्रार्थना कर। फिर तेरा परम–पिता जो तेरे छिपकर किए गए कर्मों को देखता है, तुझे उन का प्रतिफल देगा।

[7]“जब तुम प्रार्थना करते होवो तो विधर्मियों की तरह यूँ ही निरार्थक बातों को बार–बार मत दुहराते रहो। वे तो यह सोचते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुन ली जायेगी। [8]इसलिये उनके जैसे मत बनो क्योंकि तुम्हारा परम पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम्हारी आवश्यकता क्या है। [9]इसलिए इस प्रकार प्रार्थना करो:

‘स्वर्ग धाम में हमारे पिता, पवित्र रहे तव नाम।
[10] जग में तेरा राज्य आवे ।
जो चाहे तू पूरा हो सब वैसे ही धरती पर,
जैसे वह सदा स्वर्ग में पूरा होता रहता है।
[11] दिन प्रतिदिन का आहार तू आज हमें दे,
[12] अपराधों को क्षमा दान कर
जैसे हमने अपने अपराधी क्षमा किये।
[13] भारी कठिन परीक्षा मत ले
हमें उससे बचा जो बुरा है।’
[क्योंकि राज्य और महिमा
सदा तेरी है। आमीन।]*

[14]इसलिये यदि तुम लोगों के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा स्वर्ग–पिता भी तुम्हे क्षमा करेगा। [15]किन्तु यदि तुम लोगों को क्षमा नही करोगे तो तुम्हारा परम पिता भी तुम्हारे पापों के लिए क्षमा नही देगा।

उपवास की व्याख्या

[16]“जब तुम उपवास करो तो मुँह लटकाये कपटियों जैसे मत दिखो। क्योंकि वे तरह तरह से मुँह बनाते हैं ताकि वे लोगों को जतायें कि वे उपवास कर रहे हैं। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ उन्हें तो पहले ही उनका प्रतिफल मिल चुका है। [17]किन्तु जब तू उपवास रखे तो अपने सिर पर सुगंध मल और अपना मुँह धो [18]ताकि लोग यह न जानें कि तू उपवास कर रहा है। बल्कि तेरा परम पिता जिसे तू देख नहीं सकता, देखे कि तू उपवास कर रहा है। तब तेरा परम पिता जो तेरे छिपकर किए गए सब कर्मों को देखता है, तुझे उनका प्रतिफल देगा।

‘तू अपने पड़ौसी से प्रेम कर’ लैव्य. 19:18

क्योंकि राज्य ... आमीन कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

परमेश्वर धन से बड़ा है

[19]“अपने लिये धरती पर भंडार मत भरो। क्योंकि उसे कीड़े और जंग नष्ट कर देंगे। चोर सेंध लगाकर उसे चुरा सकते हैं। [20]बल्कि अपने लिये स्वर्ग में भण्डार भरो जहाँ उसे कीड़े या जंग नष्ट नहीं कर पाते। और चोर भी वहाँ सेंध लगा कर उसे चुरा नहीं पाते। [21]याद रखो जहाँ तुम्हारा भंडार होगा वहीं तुम्हारा मन भी रहेगा।

[22]“शरीर के लिये प्रकाश का स्रोत आँख हैं। इसलिये यदि तेरी आँख ठीक है तो तेरा सारा शरीर प्रकाशवान रहेगा। [23]किन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो जाए तो तेरा सारा शरीर अंधेरे से भर जायेगा। इसलिये वह एकमात्र प्रकाश जो तेरे भीतर है यदि अंधकारमय हो जाये तो वह अंधेरा कितना गहरा होगा।

[24]“कोई भी एक साथ दो स्वामियों का सेवक नहीं हो सकता क्योंकि वह एक से घृणा करेगा और दूसरे से प्रेम। या एक के प्रति समर्पित रहेगा और दूसरे का तिरस्कार करेगा। तुम धन और परमेश्वर दोनों की एक साथ सेवा नहीं कर सकते।

चिंता छोड़ो

[25]“मैं तुमसे कहता हूँ अपने जीने के लिये खाने-पीने की चिंता छोड़ दो। अपने शरीर के लिये वस्त्रों की चिंता छोड़ दो। निश्चय ही जीवन भोजन से और शरीर कपड़ों से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। [26]देखो! आकाश के पक्षी न तो बुआई करते हैं और न कटाई, न ही वे कोठारों में अनाज भरते हैं किन्तु तुम्हारा स्वर्गिय पिता उनका भी पेट भरता है। क्या तुम उनसे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं हो? [27]तुम में से क्या कोई ऐसा है जो चिंता करके अपने जीवन काल में एक घड़ी भी और बढ़ा सकता है?

[28]“और तुम अपने वस्त्रों की क्यों सोचते हो? सोचो जंगल के फूलों की वे कैसे खिलते हैं। वे न कोई काम करते हैं और न अपने लिए कपड़े बनाते हैं। [29]मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलेमान भी अपने सारे वैभव के साथ उनमें से किसी एक के समान भी नहीं सज सका। [30]इसलिये जब जँगली पौधो को जो आज जीवित हैं पर जिन्हें कल ही भाड़ में झोंक दिया जाना है, परमेश्वर ऐसे वस्त्र पहनाता है तो अरे ओ कम विश्वास रखने वालो, क्या वह तुम्हें और अधिक वस्त्र नहीं पहनायेगा? [31]इसलिये चिंता करते हुए यह मत कहो कि ‘हम क्या खायेंगे या हम क्या पीयेंगे या क्या पहनेंगे?’ [32]विधर्मी लोग इन सब वस्तुओं के पीछे दौड़ते रहते हैं किन्तु स्वर्ग धाम में रहने वाला तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। [33]इसलिये सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और तुमसे जो धर्म भावना वह चाहता है, उसकी चिंता करो। ये सब वस्तुएँ तो तुम्हें आप ही रूँगे में दे ही दी जायेंगी। [34]कल की चिंता मत करो, क्योंकि कल की तो अपनी और चिंताएँ होंगी। हर दिन की अपनी ही परेशानियाँ होती हैं।

यीशु का वचन: दूसरों को दोषी ठहराने के प्रति

7 “दूसरों पर दोष लगाने की आदत मत डालो ताकि तुम पर भी दोष न लगाया जाये। [2]क्योंकि तुम्हारा न्याय उसी फैसले के आधार पर होगा, जो फैसला तुमने दूसरों का न्याय करते हुए दिया था। और परमेश्वर तुम्हें उसी नाप से नापेगा जिससे तुमने दूसरों को नापा है। [3]तू अपने भाई बंदों की आँख का तिनका तक क्यों देखता है? जबकि तुझे अपनी आँख का लट्ठा भी दिखाई नहीं देता। [4]जब तेरी अपनी आँख में लट्ठा समाया है तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है कि तू मुझे तेरी आँख का तिनका निकालने दे। [5]ओ कपटी! पहले तू अपनी आँख से लट्ठा निकाल, फिर तू ठीक तरह से देख पायेगा और अपने भाई की आँख का तिनका निकाल पायेगा।

[6]“कुत्तों को पवित्र वस्तु मत दो। और सुअरों के आगे अपने मोती मत बिखेरो। नहीं तो वे सुअर उन्हें पैरों तले रौंद डालेंगें। और कुत्ते पलट कर तुम्हारी भी धज्जियाँ उड़ा देंगे।

जो कुछ चाहते हो, उसके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करते रहो

[7]“परमेश्वर से माँगते रहो, तुम्हें दिया जायेगा। खोजते रहो तुम्हें प्राप्त होगा खटखटाते रहो तुम्हारे लिए द्वार खोल दिया जायेगा। [8]क्योंकि हर कोई जो माँगता ही रहता है, प्राप्त करता है। जो खोजता है पा जाता है और जो खटखटाता ही रहता है उस के लिए द्वार खोल दिया जाएगा।

[9]“तुममें से ऐसा पिता कौन सा है जिसका पुत्र उससे रोटी माँगे और वह उसे पत्थर दे? [10]या जब वह उससे

मछली माँगे तो वह उसे साँप दे दे। बताओ क्या कोई देगा? ऐसा कोई नहीं करेगा! [11]इसलिये यदि चाहे तुम बुरे ही क्यों न हो, जानते हो कि अपने बच्चों को अच्छे उपहार कैसे दिये जाते हैं। सो निश्चय ही स्वर्ग में स्थित तुम्हारा परम पिता माँगने वालों को अच्छी वस्तुएँ देगा।

व्यवस्था की सबसे बड़ी शिक्षा

[12]"इसलिये जैसा व्यवहार अपने लिये तुम दूसरे लोगों से चाहते हो, वैसा ही व्यवहार तुम भी उनके साथ करो।' व्यवस्था के विधि और भविष्यवक्ताओं के लिखे का यही सार है।

स्वर्ग और नरक का मार्ग

[13]"सूक्ष्म मार्ग से प्रवेश करो। यह मैं तुम्हें इसलिये बता रहा हूँ क्योंकि चौड़ा द्वार और बड़ा मार्ग तो विनाश की ओर ले जाता है। बहुत से लोग हैं जो उस पर चल रहे हैं। [14]किन्तु कितना सँकरा है वह द्वार और कितनी सीमित है वह राह जो जीवन की ओर जाती है। बहुत थोड़े से हैं वे लोग जो उसे पा रहे हैं।

कर्म ही बताते हैं कि कोई कैसा है

[15]"झूठे भविष्यवक्ताओं से बचो! वे तुम्हारे पास सरल भेड़ों के रूप में आते हैं किन्तु भीतर से वे खूँखार भेड़िये होते हैं। [16]तुम उन्हें उन के कर्मों के परिणामों से पहचानोगे। कोई कँटीली झाड़ी से न तो अंगूर इकट्ठे कर पाता है और न ही गोखरु से अंजीर। [17]ऐसे ही अच्छे पेड़ पर अच्छे फल लगते हैं किन्तु बुरे पेड़ पर तो बुरे फल ही लगते हैं। [18]एक उत्तम वृक्ष बुरे फल नहीं उपजाता और न ही कोई बुरा पेड़ उत्तम फल पैदा कर सकता है। [19]हर वह पेड़ जिस पर अच्छे फल नहीं लगते हैं, काट कर आग में झोंक दिया जाता है। [20]इसलिए मैं तुम लोगों से फिर दोहरा कर कहता हूँ कि उन लोगों को तुम उनके कर्मों के परिणामों से पहचानोगे।

[21]"प्रभु-प्रभु कहने वाला हर व्यक्ति स्वर्ग के राज्य में नहीं जा पायेगा बल्कि वह जो स्वर्ग में स्थित मेरे परम पिता की इच्छा पर चलता है वही उसमें प्रवेश पायेगा। [22]उस महान दिन बहुत से मुझसे पूछेंगे 'प्रभु! हे प्रभु! क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की? क्या तेरे नाम से हमने दुष्टात्माएँ नहीं निकालीं और क्या हमने तेरे नाम से बहुत से आश्चर्य कर्म नहीं किये?' [23]तब मैं उनसे खुल कर कहूँगा कि मैं तुम्हें नहीं जानता, 'अरे कुकर्मियों, यहाँ से भाग जाओ।'

एक बुद्धिमान और एक मूर्ख

[24]"इसलिये जो कोई भी मेरे इन शब्दों को सुनता है और इन पर चलता है उसकी तुलना उस बुद्धिमान मनुष्य से होगी जिसने अपना मकान चट्टान पर बनाया, [25]वर्षा हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और ये सब उस मकान से टकराये पर वह गिरा नहीं। क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर रखी गयी थी। [26]किन्तु वह जो मेरे शब्दों को सुनता है पर उन पर आचरण नहीं करता, उस मूर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपना घर रेत पर बनाया। [27]वर्षा हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस मकान से टकराईं, जिससे वह मकान पूरी तरह ढह गया।"

[28]परिणाम यह हुआ कि जब यीशु ने ये बातें कह कर पूरी कीं, तो उसके उपदेशों पर भीड़ के लोगों को बड़ा अचरज हुआ। [29]क्योंकि वह उन्हें यहूदी धर्म नेताओं के समान नहीं बल्कि एक अधिकारी के समान शिक्षा दे रहा था।

यीशु का कोढ़ी को ठीक करना

8 यीशु जब पहाड़ से नीचे उतरा तो बहुत बड़ा जन समूह उसके पीछे हो लिया। [2]वहीं एक कोढ़ी भी था। वह यीशु के पास आया और उसके सामने झुक कर बोला, "प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे ठीक कर सकता है।"

[3]इस पर यीशु ने अपना हाथ बढ़ा कर कोढ़ी को छुआ और कहा, "निश्चय ही मैं चाहता हूँ ठीक हो जा!" और तत्काल कोढ़ी का कोढ़ जाता रहा। [4]फिर यीशु ने उससे कहा, "देख इस बारे में किसी से कुछ मत कहना। पर याजक के पास जा कर उसे अपने आप को दिखा। फिर मूसा के आदेश के अनुसार भेंट चढ़ा ताकि लोगों को तेरे ठीक होने की साक्षी मिले।"

[5]फिर यीशु जब कफरनहूम पहुँचा, एक रोमी सेना नायक उसके पास आया और उससे सहायता के लिये विनती करता हुआ बोला, [6]"प्रभु, मेरा एक दास घर में बीमार पड़ा है। उसे लकवा मार गया है। उसे बहुत पीड़ा हो रही है।"

[7]तब यीशु ने सेना नायक से कहा, "मैं आकर उसे अच्छा करुँगा।"

[8]सेना नायक ने उत्तर दिया, "प्रभु, मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तू मेरे घर में आये। इसलिये केवल आज्ञा दे दे, बस मेरा दास ठीक हो जायेगा। [9]यह मैं जानता हूँ क्योंकि मैं भी एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो किसी बड़े अधिकारी के नीचे काम करता हूँ। और मेरे नीचे भी दूसरे सिपाही हैं। जब मैं एक सिपाही से कहता हूँ 'जा' तो वह चला जाता है और दूसरे से कहता हूँ 'आ' तो वह आ जाता है। मैं अपने दास से कहता हूँ कि 'यह कर' तो वह उसे करता है।"

[10]जब यीशु ने यह सुना तो चकित होते हुए उसने जो लोग उसके पीछे आ रहे थे, उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ मैंने इतना गहरा विश्वास इस्राएल में भी किसी में नही पाया। [11]मैं तुम्हें यह और बताता हूँ कि, बहुत से पूर्व और पश्चिम से आयेंगे और वे भोज में इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में अपना-अपना स्थान ग्रहण करेंगे। [12]किन्तु राज्य की मूलभूत प्रजा बाहर अंधेरे में धकेल दी जायेगी जहाँ वे लोग चीख-पुकार करते हुए दाँत पीसते रहेंगे।"

[13]तब यीशु ने उस सेनानायक से कहा, "जा वैसा ही तेरे लिए हो, जैसा तेरा विश्वास है।" और तत्काल उस सेनानायक का दास अच्छा हो गया।

यीशु का बहुतों को ठीक करना

[14]यीशु जब पतरस के घर पहुँचा उसने पतरस की सास को बुखार से पीड़ित बिस्तर में लेटे देखा। [15]सो यीशु ने उसे अपने हाथ से छुआ और उसका बुखार उतर गया। फिर वह उठी और यीशु की सेवा करने लगी।

[16]जब साँझ हुई, तो लोग उसके पास बहुत से ऐसे लोगों को लेकर आये जिनमें दुष्टात्माएँ थीं। अपनी एक ही आज्ञा से उसने दुष्टात्माओं को निकाल दिया। इस तरह उसने सभी रोगियों को चंगा कर दिया। [17]यह इसलिये हुआ ताकि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो:

> "उसने हमारे रोगों को ले लिया
> और हमारे संतापों को ओढ़ लिया।"
>
> *यशायाह 53:4*

यीशु का अनुयायी बनने की चाह

[18]यीशु ने जब अपने चारों ओर भीड़ देखी तो उसने अपने अनुयायियों को आज्ञा दी कि वे झील के परले किनारे चले जायें। [19]तब एक यहूदी धर्मशास्त्री उसके पास आया और बोला, "गुरु, जहाँ कहीं तू जायेगा, मैं तेरे पीछे चलूँगा।"

[20]इस पर यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों की खोह और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं किन्तु मनुष्य के पुत्र के पास सिर टिकाने को भी कोई स्थान नहीं है।"

[21]और उसके एक शिष्य ने उससे कहा, "प्रभु, पहले मुझे जा कर अपने पिता को गाड़ने की अनुमति दे।"

[22]किन्तु यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ और मरे हुवों को अपने मुर्दे आप गाड़ने दे।"

यीशु का तूफान को शांत करना

[23]तब यीशु एक नाव पर जा बैठा। उसके अनुयायी भी उसके साथ थे। [24]उसी समय झील में इतना भयंकर तूफान उठा कि नाव लहरों से दबी जा रही थी। किन्तु यीशु सो रहा था। [25]तब उसके अनुयायी उसके पास पहुँचे और उसे जगाकर बोले, "प्रभु! हमारी रक्षा कर। हम मरने को हैं!"

[26]तब यीशु ने उनसे कहा, "अरे अल्प विश्वासियों! तुम इतने डरे हुए क्यों हो?" तब उसने खड़े होकर तूफान और झील को डाँटा और चारों तरफ़ शांति छा गयी।

[27]लोग चकित थे। उन्होंने कहा, "यह कैसा व्यक्ति है? आँधी तूफान और सागर तक इसकी बात मानते हैं!"

दो व्यक्तियों का दुष्टात्माओं से छुटकारा

[28]जब यीशु झील के उस पार, गदरेनियों के देश पहुँचा, तो उसे कब्रों से निकल कर आते दो व्यक्ति मिले, जिन में दुष्टात्माएँ थीं। वे इतने भयानक थे कि उस राह से कोई निकल तक नहीं सकता था। [29]वे चिल्लाये, "हे परमेश्वर के पुत्र, तू हमसे क्या चाहता है? क्या तू यहाँ निश्चित समय से पहले ही हमें दंड देने आया है?"

[30]वहाँ कुछ ही दूरी पर बहुत से सुअरों का एक रेवड़ चर रहा था। [31]सो उन दुष्टात्माओं ने उससे विनती करते हुए कहा, "यदि तुझे हमें बाहर निकालना ही है, तो हमें सुअरों के उस झुंड में भेज दे।"

[32]सो यीशु ने उनसे कहा, "चले जाओ।" तब वे उन व्यक्तियों में से बाहर निकल आए और सुअरों में जा घुसे। फिर वह समूचा रेवड़ ढलान से लुढ़कते, पुढ़कते दौड़ता हुआ झील में जा गिरा। सभी सुअर पानी में डूब कर मर गये। [33]सुअर के रेवड़ों के रखवाले तब वहाँ से दौड़ते हुए नगर में आये और सुअरों के साथ तथा दुष्ट आत्माओं से ग्रस्त उन व्यक्तियों के साथ जो कुछ हुआ था, कह सुनाया। [34]फिर तो नगर के सभी लोग यीशु से मिलने बाहर निकल पड़े। जब उन्होंने यीशु को देखा तो उससे विनती की कि वह उनके यहाँ से कहीं और चला जाये।

लकवे के रोगी को अच्छा करना

9 फिर यीशु एक नाव पर जा चढ़ा और झील के पार अपने नगर आ गया। [2]लोग लकवे के एक रोगी को खाट पर लिटा कर उसके पास लाये। यीशु ने जब उनके विश्वास को देखा तो उसने लकवे के रोगी से कहा, "हिम्मत रख हे! बालक, तेरे पाप क्षमा हुए।"

[3]तभी कुछ यहूदी धर्मशास्त्री आपस में कहने लगे,"यह व्यक्ति (यीशु) अपने शब्दों से परमेश्वर का अपमान करता है।"

[4]यीशु, क्योंकि जानता था कि वे क्या सोच रहे हैं, उनसे बोला, "तुम अपने मन में बुरे विचार क्यों आने देते हो? [5]अधिक सहज क्या है? यह कहना कि 'तेरे पाप क्षमा हुए' या यह कहना 'खड़ा हो और चल पड़?' [6]ताकि तुम यह जान सको कि पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने की शक्ति मनुष्य के पुत्र में है।" यीशु ने लकवे के मारे से कहा, "खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और घर चला जा।" [7]वह लकवे का रोगी खड़ा हो कर अपने घर चला गया। [8]जब भीड़ में लोगों ने यह देखा तो वे श्रद्धामय विस्मय से भर उठे। और परमेश्वर की स्तुति करने लगे जिसने मनुष्य को ऐसी शक्ति दी।

यीशु का मत्ती को चुनना

[9]यीशु जब वहाँ से जा रहा था तो उसने चुंगी की चौकी पर बैठे एक व्यक्ति को देखा। उसका नाम मत्ती था। यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ।" इस पर मत्ती खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया।

[10]ऐसा हुआ कि जब यीशु मत्ती के घर बहुत से चुंगी वसूलने वालों और पापियों के साथ अपने अनुयायियों समेत भोजन कर रहा था [11]तो उसे फ़रीसियों ने देखा। वे यीशु के अनुयायियों से पूछने लगे, "तुम्हारा गुरु चुंगी वसूलने वालों और दुष्टों के साथ खाना क्यों खा रहा है?"

[12]यह सुनकर यीशु उनसे बोला, "स्वस्थ लोगों को नहीं बल्कि रोगियों को एक चिकित्सक की आवश्यकता होती है। [13]इसलिये तुम लोग जाओ और समझो कि शास्त्र के इस वचन का अर्थ क्या है 'मैं बलिदान नहीं चाहता बल्कि दया चाहता हूँ।'* मैं धर्मीयों को नहीं, बल्कि पापियों को बुलाने आया हूँ।"

यीशु दूसरे यहूदी धर्म–नेताओं से भिन्न है

[14]फिर बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के शिष्य यीशु के पास गये और उससे पूछा, "हम और फ़रीसी बार–बार उपवास क्यों करते हैं और तेरे अनुयायी क्यों नहीं करते?"

[15]फिर यीशु ने उन्हें बताया, "क्या दूल्हे के साथी, जब तक दूल्हा उनके साथ है, शोक मना सकते हैं? किन्तु वे दिन आयेंगे जब दूल्हा उन से छीन लिया जायेगा। फिर उस समय वे दुखी होंगे और उपवास करेंगे।

[16]"बिना सिकुड़े नये कपड़े का पैबंद पुरानी पोशाक पर कोई नहीं लगाता क्योंकि यह पैबंद पोशाक को और अधिक फाड़ देगा और कपड़े की खींच और बढ़ जायेगी। [17]नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरा जाता नहीं तो मशकें फट जाती हैं और दाखरस बहकर बिखर जाता है। और मशकें भी नष्ट हो जाती हैं। इसलिये लोग नया दाखरस, नयी मशकों में भरते हैं जिससे दाखरस और मशक दोनों ही सुरक्षित रहते हैं।"

मृत लड़की को जीवन दान और रोगी स्त्री को चंगा करना

[18]यीशु उन लोगों को जब ये बातें बता ही रहा था, तभी यहूदी धर्म–सभा भवन का एक मुखिया उसके पास आया और उसके सामने झुक कर विनती करते हुए बोला, "अभी–अभी मेरी बेटी मर गयी है। तू चल कर यदि उस पर अपना हाथ रख दे तो वह फिर से जी उठेगी।"

[19]इस पर यीशु खड़ा हो कर अपने शिष्यों समेत उसके साथ चल दिया।

मैं ... चाहता हूँ देखें होशे 6:6

[20]वहीं एक ऐसी स्त्री थी जिसे बारह साल से बहुत अधिक रक्त बह रहा था। वह पीछे से यीशु के निकट आयी और उसके वस्त्र की कन्नी छू ली। [21]वह मन में सोच रही थी "यदि मैं तनिक भी इसका वस्त्र छू पाऊँ, तो ठीक हो जाऊँगी।"

[22]मुड़कर उसे देखते हुए यीशु ने कहा, "स्त्री, हिम्मत रख। तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।" और वह स्त्री तुरंत उसी क्षण ठीक हो गयी।

[23]उधर यीशु जब यहूदी धर्म–सभा भवन के मुखिया के घर पहुँचा तो उसने देखा कि शोक धुन बजाते हुए बाँसुरी वादक और वहाँ इकट्ठे हुए लोग लड़की की मृत्यु पर शोर कर रहे हैं। [24]तब यीशु ने लोगों से कहा, "यहाँ से बाहर जाओ। लड़की मरी नहीं है, वह तो सो रही है।" इस पर लोग उसकी हँसी उड़ाने लगे। [25]फिर जब भीड़ के लोगों को बाहर भेज दिया गया तो यीशु ने लड़की के कमरे में जा कर उसका हाथ पकड़ा और वह उठ बैठी। [26]इसका समाचार उस सारे क्षेत्र में फैल गया।

यीशु द्वारा बहुतों का उपचार

[27]यीशु जब वहाँ से जाने लगा तो दो अन्धे व्यक्ति उसके पीछे हो लिये। वे पुकार रहे थे "हे दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर।"

[28]यीशु जब घर के भीतर पहुँचा तो वे अन्धे उसके पास आये। तब यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं, तुम्हें फिर से आँखें दे सकता हूँ?" उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ प्रभु।"

[29]इस पर यीशु ने उन की आँखों को छूते हुए कहा, "तुम्हारे लिए वैसा ही हो जैसा तुम्हारा विश्वास है।"

[30]और अंधों को दृष्टि मिल गयी। फिर यीशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, "इसके विषय में किसी को पता नहीं चलना चाहिये।" [31]किन्तु उन्होंने वहाँ से जाकर इस समाचार को उस क्षेत्र में चारों ओर फैला दिया।

[32]जब वे दोनों वहाँ से जा रहे थे तो कुछ लोग यीशु के पास एक गूँगे को लेकर आये। गूँगे में दुष्ट आत्मा समाई हुई थी और इसीलिए वह कुछ बोल नहीं पाता था।

[33]जब दुष्ट आत्मा को निकाल दिया गया तो वह गूँगा, जो पहले कुछ भी नहीं बोल सकता था, बोलने लगा। तब भीड़ के लोगों ने अचरज से भर कर कहा, "इस्राएल में ऐसी बात पहले कभी नहीं देखी गयी।"

[34]किन्तु फरीसी कह रहे थे, "वह दुष्टात्माओं को शैतान की सहायता से बाहर निकालता है।"

यीशु को लोगों पर खेद

[35]यीशु यहूदी धर्म सभाओं में उपदेश देता, परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करता, लोगों के रोगों और हर प्रकार के संतापों को दूर करता उस सारे क्षेत्र में गाँव–गाँव और नगर–नगर घूमता रहा था।

[36]यीशु जब किसी भीड़ को देखता तो उसके प्रति करुणा से भर जाता था क्योंकि वे लोग वैसे ही सताये हुए और असहाय थे, जैसे वे भेड़ें होतीं हैं जिनका कोई चरवाहा नहीं होता। [37]तब यीशु ने अपने अनुयायिओं से कहा, "तैयार खेत तो बहुत हैं किन्तु मज़दूर कम हैं। [38]इसलिए फसल के प्रभु से प्रार्थना करो कि, वह अपनी फसल को काटने के लिये मज़दूर भेजे।"

सुसमाचार के प्रचार के लिए शिष्यों को भेजना

10 सो यीशु ने अपने बारह शिष्यों को पास बुलाकर उन्हें दुष्टात्माओं को बाहर निकालने, और हर तरह के रोगों और संतापों को दूर करने की शक्ति प्रदान की। [2]उन बारह प्रेरितों के नाम ये हैं:–सबसे पहला शमौन, जो पतरस कहलाया, और उसका भाई अंद्रियास, जब्दी का बेटा याकूब और उसका भाई यूहन्ना। [3]फिलिप्पुस, बरतुल्मै, थोमा, कर वसूलने वाला मत्ती, हलफै का बेटा याकूब और तद्दै। [4]शमौन ज़िलौती* और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे धोखे से पकड़वाया था। [5]यीशु ने इन बारहों को बाहर भेजते हुए आज्ञा दी कि वे "ग़ैर यहूदियों के क्षेत्र में न जायें तथा किसी भी सामरी–नगर में प्रवेश न करें। [6]बल्कि वे इस्राएल के परिवार की खोई हुई भेड़ों के पास ही जायें [7]और उन्हें उपदेश दें कि 'स्वर्ग का राज्य निकट है।' [8]वे बीमारों को ठीक करें, मरे हुओं को जीवन दें, कोढ़ियों को चंगा करें और दुष्टात्माओं को निकालें। तुमने बिना कुछ दिये प्रभु की आशीष और शक्तियाँ पाई हैं, इसलिये उन्हें दूसरों को बिना कुछ लिये मुक्त भाव से बाँटो। [9]अपने पटुके में सोना, चाँदी या ताँबा मत रखो। [10]यात्रा के लिए कोई झोला तक मत लो। कोई फालतू

ज़िलौत एक कट्टर पंथी राजनीतिक दल का नाम था। जिसका वह सदस्य हुआ करता था।

कुर्ता, चप्पल और छड़ी मत रखो। क्योंकि मज़दूर का उसके खाने पर अधिकार है।

[11]"तुम लोग जब कभी किसी नगर या गाँव में जाओ तो पता करो कि वहाँ विश्वासयोग्य कौन है। फिर तब तक वहीं ठहरे रहो जब तक वहाँ से चल न दो। [12]जब तुम किसी घर बार में जाओ तो परिवार के लोगों का सत्कार करते हुए कहो, 'तुम्हें शांति मिले।' [13]यदि घर बार के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा आशीर्वाद उनके साथ साथ रहेगा और यदि वे इस योग्य न होंगे तो तुम्हारा आशीर्वाद तुम्हारे पास वापस आ जाएगा।

[14]"यदि कोई तुम्हारा स्वागत न करे या तुम्हारी बात न सुने तो उस घर या उस नगर को छोड़ दो। और अपने पाँव में लगी वहाँ की धूल वहीं झाड़ दो। [15]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब न्याय होगा, उस दिन उस नगर की स्थिति से सदोम और अमोरा* नगरों की स्थिति कहीं अच्छी होगी।"

अपने प्रेरितों को यीशु की चेतावनी

[16]"सावधान! मैं तुम्हें ऐसे ही बाहर भेज रहा हूँ जैसे भेड़ों को भेड़ियों के बीच में भेजा जाये। सो साँपों की तरह चतुर और कबूतरों के समान भोले बनो। [17]लोगों से सावधान रहना क्योंकि वे तुम्हें बंदी बनाकर यहूदी पंचायतों को सौंप देंगे और वे तुम्हें अपने धर्म–सभा भवनों में कोड़ों से पिटवायेंगे। [18]तुम्हें शासकों और राजाओं के सामने पेश किया जायेगा, क्योंकि तुम मेरे अनुयायी हो। तुम्हें अवसर दिया जायेगा कि तुम उनको और ग़ैरयहूदियों को मेरे बारे में गवाही दो। [19]जब वे तुम्हें पकड़ें तो चिंता मत करना कि, तुम्हें क्या कहना है और कैसे कहना है। क्योंकि उस समय तुम्हें बता दिया जायेगा कि तुम्हें क्या बोलना है। [20]याद रखो बोलने वाले तुम नहीं हो, बल्कि तुम्हारे परम पिता का आत्मा तुम्हारे भीतर बोलेगा।

[21]"भाई अपने भाइयों को पकड़वा कर मरवा डालेंगे, माता–पिता अपने बच्चों को पकड़वायेंगे और बच्चे अपने माँ–बाप के विरुद्ध हो जायेंगे। वे उन्हें मरवा डालेंगे। [22]मेरे नाम के कारण लोग तुमसे घृणा करेंगे किन्तु जो अंत तक टिका रहेगा उसी का उद्धार होगा। [23]वे जब तुम्हें एक नगर में सताएँ तो तुम दूसरे में भाग जाना। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि इससे पहले कि तुम इस्राएल के सभी नगरों का चक्कर पूरा करो, मनुष्य का पुत्र दुबारा आ जाएगा।

[24]"शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं होता और न ही कोई दास अपने स्वामी से बड़ा होता है। [25]शिष्य को गुरु के बराबर होने में और दास को स्वामी के बराबर होने में ही संतोष करना चाहिये। जब वे घर के स्वामी को ही बैल्ज़ाबुल कहते हैं तो, उसके घर के दूसरे लोगों के साथ तो और भी बुरा व्यवहार करेंगे!"

प्रभु से डरो, लोगों से नहीं

[26]"इसलिये उनसे डरना मत क्योंकि जो कुछ छिपा है, सब उजागर होगा। और हर वह वस्तु जो गुप्त है, प्रकट की जायेगी। [27]मैं अँधेरे में जो कुछ तुमसे कहता हूँ, मैं चाहता हूँ, उसे तुम उजाले में कहो। मैंने जो कुछ तुम्हारे कानों में कहा है, तुम उसकी मकान की छतों पर चढ़कर, घोषणा करो। [28]उनसे मत डरो जो तुम्हारे शरीर को नष्ट कर सकते हैं किन्तु तुम्हारी आत्मा को नहीं मार सकते। बस उस परमेश्वर से डरो जो तुम्हारे शरीर और तुम्हारी आत्मा को नरक में डाल कर नष्ट कर सकता है। [29]एक पैसे की दो चिड़ियाओं में से भी एक तुम्हारे परम पिता के जाने बिना और उसकी इच्छा के बिना धरती पर नहीं गिर सकती। [30]अरे तुम्हारे तो सिर का एक एक बाल तक गिना हुआ है। [31]इसलिये डरो मत तुम्हारा मूल्य तो वैसी अनेक चिड़ियाओं से कहीं अधिक है।"

यीशु में विश्वास

[32]"जो कोई मुझे सब लोगों के सामने अपनायेगा, मैं भी उसे स्वर्ग में स्थित अपने परम–पिता के सामने अपनाऊँगा। [33]किन्तु जो कोई मुझे सब लोगों के सामने नकारेगा, मैं भी उसे स्वर्ग में स्थित अपने परम पिता के सामने नकारूँगा।

[34]"यह मत सोचो कि मैं धरती पर शांति लाने आया हूँ। शांति नहीं बल्कि मैं तलवार का आवाहन करने आया हूँ।

[35–36] 'मैं मनुष्य को उसके पिता के विरोध में,
पुत्री को माँ के विरोध में,
बहू को सास के विरोध में करने आया हूँ।

सदोम और अमोरा ये उन दो नगरों के नाम हैं जिन्हें वहाँ के निवासियों को उनके पापों का दण्ड देने के लिये प्रभु ने नष्ट कर दिया था।

मनुष्य के शत्रु, उसके अपने
घर के ही लोग होंगे।

मीका 7:6

[37]"जो अपने माता–पिता को मुझ से अधिक प्रेम करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है। जो अपने बेटे बेटी को मुझसे ज्यादा प्यार करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है। [38]वह जो यातनाओं का अपना क्रूस स्वयं उठाकर मेरे पीछे नहीं हो लेता, मेरा होने के योग्य नहीं है। [39]वह जो अपनी जान बचाने की चेष्टा करता है, अपने प्राण खो देगा। किन्तु जो मेरे लिये अपनी जान देगा, वह जीवन पायेगा। [40]जो तुम्हें अपनाता है, वह मुझे अपनाता है और जो मुझे अपनाता है, वह उस परमेश्वर को अपनाता है, जिसने मुझे भेजा है। [41]जो किसी नबी को इसलिये अपनाता है कि वह नबी है, उसे वही प्रतिफल मिलेगा जो कि नबी को मिलता है। और यदि तुम किसी भले आदमी का इसलिये स्वागत करते हो कि वह भला आदमी है, उसे सचमुच वही प्रतिफल मिलेगा जो किसी भले आदमी को मिलना चाहिए। [42]और यदि कोई मेरे इन भोले–भाले शिष्यों में से किसी एक को भी इसलिये एक गिलास ठंडा पानी तक दे कि वह मेरा अनुयायी है, तो मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उसे इसका प्रतिफल, निश्चय ही, बिना मिले नहीं रहेगा।"

यीशु और बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना

11 अपने बारह शिष्यों को इस प्रकार समझा चुकने के बाद यीशु वहाँ से चल पड़ा और गलील प्रदेश के नगरों में उपदेश देता घूमने लगा।

[2]यूहन्ना ने जब जेल में यीशु के कामों के बारे में सुना तो उसने अपने शिष्यों के द्वारा संदेश भेजकर [3]पूछा कि "क्या तू वही है 'जो आने वाला था' या हम किसी और आने वाले की बाट जोहें?"

[4]उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, "जो कुछ तुम सुन रहे हो, और देख रहे हो, जाकर यूहन्ना को बताओ कि, [5]अंधों को आँखें मिल रही हैं, लूले–लंगड़े चल पा रहे हैं, कोढ़ी चंगे हो रहे हैं, बहरे सुन रहे हैं और मरे हुए जिलाये जा रहे हैं। और दीन दुखियों में सुसमाचार का प्रचार किया जा रहा है। [6]वह धन्य है जो मुझे अपना सकता है।"

[7]जब यूहन्ना के शिष्य वहाँ से जा रहे थे तो यीशु भीड़ में लोगों से यूहन्ना के बारे में कहने लगा, "तुम लोग इस बियाबान में क्या देखने आये हो? क्या कोई सरकंडा? जो हवा में थरथरा रहा है। नहीं! [8]तो फिर तुम क्या देखने आये हो? क्या एक पुरुष जिसने बहुत अच्छे वस्त्र पहने हैं? देखो जो उत्तम वस्त्र पहनते हैं, वे तो राज भवनों में ही पाये जाते हैं। [9]तो तुम क्या देखने आये हो? क्या कोई नबी? हाँ, मैं तुम्हें बताता हूँ कि जिसे तुमने देखा है वह किसी नबी से कहीं ज्यादा है। [10]यह वही है जिसके बारे में शास्त्रों में लिखा है:

'देख मैं तुझसे पहले ही अपना दूत भेज रहा हूँ।
वह तेरे लिये राह बनायेगा।'

मलाकी 3:1

[11]"मैं तुझसे सत्य कहता हूँ बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना से बड़ा कोई मनुष्य पैदा नहीं हुआ। फिर भी स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा व्यक्ति भी यूहन्ना से बड़ा है। [12]बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के समय से आज तक स्वर्ग का राज्य भयानक आघातों को झेलता रहा है और हिंसा के बल पर इसे छीनने का प्रयत्न किया जाता रहा है। [13]यूहन्ना के आने तक सभी भविष्यवक्ताओं और 'मूसा की व्यवस्था' ने भविष्यवाणी की थी, [14]और यदि तुम व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं ने जो कुछ कहा, उसे स्वीकार करने को तैयार हो तो जिसके आने की भविष्यवाणी की गयी थी, यह यूहन्ना वही एलिय्याह है। [15]जो सुन सकता है, सुने!

[16]"आज की पीढ़ी के लोगों की तुलना मैं किन से करूँ? वे बाज़ारों में बैठे उन बच्चों के समान हैं जो एक दूसरे से पुकार कर कह रहे हैं,

[17] 'हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजायी,
पर तुम नहीं नाचे।
हमने शोकगीत गाये
किन्तु तुम नहीं रोये।'

[18]बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना आया। जो न औरों की तरह खाता था और न ही पीता था। पर लोगों ने कहा था कि उस में दुष्टात्मा है। [19]फिर मनुष्य का पुत्र आया। जो औरों के समान ही खाता–पीता है, पर लोग कहते हैं 'इस आदमी को देखो, यह पेटू है, पियक्कड़ है। यह चुंगी वसूलने वालों और पापियों का मित्र है।' किन्तु बुद्धि की उत्तमता उसके कामों से सिद्ध होती है।"

अविश्वासियों को यीशु की चेतावनी

[20]फिर यीशु ने उन नगरों को धिक्कारा जिनमें उसने बहुत से आश्चर्यकर्म किये थे। क्योंकि वहाँ के लोगों ने पाप करना नहीं छोड़ा और अपना मन नहीं फिराया था।

[21]"अरे अभागे खुराजीन, अरे अभागे बैतसैदा* तुम में जो आश्चर्यकर्म किये गये, यदि वे सूर और सैदा में किये जाते तो वहाँ के लोग बहुत पहले से ही टाट के शोक वस्त्र ओढ़ कर और अपने शरीर पर राख मल* कर खेद व्यक्त करते हुए मन फिरा चुके होते।' [22]किन्तु मैं तुम लोगों से कहता हूँ न्याय के दिन सूर और सैदा* की स्थिति तुमसे अधिक सहने योग्य होगी। [23]और अरे कफरनहूम, क्या तू सोचता है कि तुझे स्वर्ग की महिमा तक ऊँचा उठाया जायेगा? तू तो अधोलोक में नरक को जायेगा। क्योंकि जो आश्चर्यकर्म तुझमें किये गये, यदि वे सदोम में किये जाते तो वह नगर आज तक टिका रहता। [24]पर मैं तुम्हें बताता हूँ कि न्याय के दिन तेरे लोगों की हालत से सदोम की हालत कहीं अच्छी होगी।"

यीशु को अपनाने वालों को सुख चैन का वचन

[25]उस अवसर पर यीशु बोला, "परम पिता, तू स्वर्ग और धरती का स्वामी है, मैं तेरी स्तुति करता हूँ क्योंकि तूने इन बातों को, उनसे जो ज्ञानी हैं और समझदार हैं, छिपा कर रखा है। और जो भोले भाले हैं उनके लिए प्रकट किया है। [26]हाँ परम पिता यह इसलिये हुआ क्योंकि तूने इसे ही ठीक जाना।

[27]"मेरे परम पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया है और वास्तव में परम पिता के अलावा कोई भी पुत्र को नहीं जानता। और कोई भी पुत्र के अलावा परम पिता को नहीं जानता। और हर वह व्यक्ति परम पिता को जानता है, जिसके लिये पुत्र ने उसे प्रकट करना चाहा है।

[28]"अरे, ओ थके-माँदे, बोझ से दबे लोगों! मेरे पास आओ, मैं तुम्हें सुख चैन दूँगा। [29]मेरा जुआ लो और उसे अपने ऊपर सँभालो। फिर मुझ से सीखो क्योंकि मैं सरल हूँ और मेरा मन कोमल है। तुम्हें भी अपने लिये सुख-चैन मिलेगा। [30]क्योंकि वह जुआ जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ बहुत सरल है। और वह बोझ जो मैं तुम पर डाल रहा हूँ, हल्का है।"

यहूदियों द्वारा यीशु और उसके शिष्यों की आलोचना

12 लगभग उसी समय यीशु सब्त के दिन अनाज के खेतों से होकर जा रहा था। उसके शिष्यों को भूख लगी और वे गेहूँ की कुछ बालें तोड़ कर खाने लगे। [2]फरीसियों ने ऐसा होते देख कहा, "देख, तेरे शिष्य वह कर रहे हैं जिसका सब्त के दिन किया जाना मूसा की व्यवस्था के अनुसार उचित नहीं है।"

[3]इस पर यीशु ने उनसे पूछा, "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद और उसके साथियों ने, जब उन्हें भूख लगी, क्या किया था? [4]उसने परमेश्वर के घर में घुस कर परमेश्वर को चढ़ाई पवित्र रोटियाँ कैसे खाई थीं? यद्यपि उसको और उसके साथियों को उनका खाना मूसा की व्यवस्था के विरुद्ध था। उनको केवल याजक ही खा सकते थे। [5]या मूसा की व्यवस्था में तुमने यह नहीं पढ़ा कि सब्त के दिन मंदिर के याजक ही वास्तव में सब्त को बिगाड़ते हैं। और फिर भी उन्हें कोई कुछ नहीं कहता। [6]किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ, यहाँ कोई है जो मन्दिर से भी बड़ा है। [7]यदि तुम शास्त्रों में जो लिखा है, उसे जानते कि, 'मैं लोगों में दया चाहता हूँ, पशुबलि नहीं' तो तुम उन्हें दोषी नहीं ठहराते, जो निर्दोष हैं।

[8]"हाँ, मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।"

यीशु द्वारा सूखे हाथ का अच्छा किया जाना

[9]फिर वह वहाँ से चल दिया और यहूदी धर्म सभागार में पहुँचा। [10]वहाँ एक व्यक्ति था, जिसका हाथ सूख चुका था। सो लोगों ने यीशु से पूछा, "मूसा के विधि के अनुसार सब्त के दिन किसी को चंगा करना, क्या उचित है?" उन्होंने उससे यह इसलिए पूछा था कि, वे उस पर दोष लगा सकें।

[11]किन्तु उसने उन्हें उत्तर दिया, "मानों तुममें से किसी के पास एक ही भेड़ है, और वह भेड़ सब्त के दिन किसी गढ़े में गिर जाती है, तो क्या तुम उसे पकड़ कर बाहर नहीं निकालोगे? [12]फिर आदमी तो एक भेड़ से कहीं

खुराजीन, बैतसैद, कफ़रनहूम झील गलील के किनारे बसे नगर जहाँ यीशु ने उपदेश दिये थे।

टाट के शोक ... राख मल उन दिनों लोग शोक व्यक्त करने के लिए इस प्रकार के मोटे कपड़े पहना करते थे, और अपने शरीर पर राख मला करते थे।

सूर और सैदा उन नगरों के नाम हैं जहाँ बहुत बुरे लोग रहा करते थे।

अधिक महत्त्वपूर्ण है। सो सब्त के दिन 'मूसा की व्यवस्था' भलाई करने की अनुमति देती है।"

[13]तब यीशु ने उस सूखे हाथ वाले आदमी से कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ा" और उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। वह पूरी तरह अच्छा हो गया था। ठीक वैसा ही जैसा उसका दूसरा हाथ था। [14]फिर फरीसी वहाँ से चले गये और उसे मारने के लिए कोई रास्ता ढूँढने की तरकीब सोचने लगे।

यीशु वही करता है जिसके लिए परमेश्वर ने उसे चुना

[15]यीशु यह जान गया और वहाँ से चल पड़ा। बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। उसने उन्हें चंगा करते हुए [16]चेतावनी दी कि वे उसके बारे में लोगों को कुछ न बतायें। [17]यह इसलिए हुआ कि भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा प्रभु ने जो कहा था, वह पूरा हो:

[18] "यह मेरा सेवक है, जिसे मैंने चुना है।
यह मेरा प्यारा है, मैं इससे आनन्दित हूँ,
अपना 'आत्मा' इस पर मैं रखूँगा
सब देशों के सब लोगों को
यही न्याय घोषणा करेगा
[19] यह कभी नहीं चीखेगा या झगड़ेगा ही
लोग इसे गलियों कूचों में नहीं सुनेगे।
[20] यह झुके सरकंडे तक को नहीं तोड़ेगा
यह बुझते दीपक तक को नहीं बुझाएगा
डटा रहेगा तब तक
जब तक न्याय-वजय हो
[21] तब फिर सभी लोग अपनी
आशाएँ उसमें बाँधेंगे
बस केवल उसी नाम में।"

यशायाह 42:1-4

यीशु में परमेश्वर की शक्ति है

[22]फिर यीशु के पास लोग एक ऐसे अन्धे को लाये जो गूँगा भी था क्योंकि उस पर दुष्ट आत्मा सवार थी। यीशु ने उसे चंगा कर दिया और इसीलिये वह गूँगा अंधा बोलने और देखने लगा। [23]इस पर सभी लोगों को बहुत अचरज हुआ और वे कहने लगे, "क्या यह व्यक्ति दाऊद का पुत्र हो सकता है?"

[24]जब फ़रीसियों ने यह सुना तो वे बोले, "यह दुष्टात्माओं को उनके शासक बैल्ज़ाबुल* के सहारे बाहर निकालता है।"

[25]यीशु को उनके विचारों का पता चल गया। वह उनसे बोला, "हर वह राज्य जिसमें फूट पड़ जाती है, नष्ट हो जाता है। वैसे ही हर नगर या परिवार जिसमें फूट पड़ जाये टिका नहीं रहेगा। [26]तो यदि शैतान ही अपने आप को बाहर निकाले फिर तो उसमें अपने ही विरुद्ध फूट पड़ गयी है। सो उसका राज्य कैसे बना रह सकेगा। [27]और फिर यदि यह सच है कि मैं बैल्ज़ाबुल के सहारे दुष्ट आत्माओं को निकालता हूँ तो तुम्हारे अनुयायी किसके सहारे उन्हें बाहर निकालते हैं? सो तुम्हारे अपने अनुयायी ही सिद्ध करेंगे कि तुम अनुचित हो। [28]मैं दुष्टात्माओं को परमेश्वर के आत्मा की शक्ति से निकालता हूँ। इससे यह सिद्ध है कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट ही आ पहुँचा है।

[29]"फिर कोई किसी बलवान के घर में घुस कर उसका माल कैसे चुरा सकता है, जब तक कि पहले वह उस बलवान को बाँध न दे। तभी वह उसके घर को लूट सकता है।

[30]"जो मेरे साथ नहीं है, मेरा विरोधी है। और जो बिखरी हुई भेड़ों को इकट्ठा करने में मेरी मदद नहीं करता, वह उन्हें बिखरा रहा है। [31]इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि सभी की हर तरह की निन्दा और पाप क्षमा कर दिये जायेंगे किन्तु 'आत्मा' की निन्दा करने वाले को क्षमा नहीं किया जायेगा। [32]कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में यदि कुछ कहता है तो उसे क्षमा किया जा सकता है, किन्तु 'पवित्र आत्मा' के विरोध में कोई कुछ कहे तो उसे क्षमा नहीं किया जायेगा। न इस युग में और न आने वाले युग में।

व्यक्ति अपने कर्मों से जाना जाता है

[33]"तुम लोग जानते हो कि अच्छा फल लेने के लिए तुम्हें अच्छा पेड़ ही लगाना चाहिये। और बुरे पेड़ से बुरा ही फल मिलता है। क्योंकि पेड़ अपने फल से ही जाना जाता है। [34]अरे ओ साँप के बच्चो! जब तुम बुरे हो तो अच्छी बातें कैसे कह सकते हो? व्यक्ति के शब्द, जो उसके मन में भरा है, उसी से निकलते हैं। [35]एक अच्छा व्यक्ति जो अच्छाई उसके मन में इकट्ठी है, उसी में से अच्छी बातें

बैल्ज़ाबुल यह दुष्टात्माओं के राजा 'शैतान' का नाम है।

निकालता है। जबकि एक बुरा व्यक्ति जो बुराई उसके मन में है, उसी में से बुरी बातें निकालता है। [36]किन्तु मैं तुम लोगों को बताता हूँ कि न्याय के दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने हर व्यर्थ बोले शब्द का हिसाब देना होगा। [37]तेरी बातों के आधार पर ही तुझे निर्दोष और तेरी बातों के आधार पर ही तुझे दोषी ठहराया जायेगा।"

यीशु से आश्चर्य चिन्ह की माँग

[38]फिर कुछ यहूदी धर्म शास्त्रियों और फ़रीसियों ने उससे कहा, "गुरु, हम तुझे आश्चर्य चिन्ह प्रकट करते देखना चाहते हैं।"

[39]उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, "इस युग के बुरे और दुराचारी लोग ही आश्चर्य चिन्ह देखना चाहते हैं। भविष्यवक्ता योना के आश्चर्य चिन्ह को छोड़कर, उन्हें और कोई आश्चर्य चिन्ह नहीं दिया जायेगा।" [40]"और जैसे योना तीन दिन और तीन रात उस समुद्री जीव के पेट में रहा था, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात धरती के भीतर रहेगा। [41]न्याय के दिन नीनेवा के निवासी आज की इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़े होंगे और उन्हें दोषी ठहरायेंगे। क्योंकि नीनेवा के वासियों ने योना के उपदेश से मन फिराया था। और यहाँ तो कोई योना से भी बड़ा मौजूद है! [42]न्याय के दिन दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़ी होगी और उन्हें अपराधी ठहरायेगी, क्योंकि वह धरती के दूसरे छोर से सुलेमान का उपदेश सुनने आयी थी और यहाँ तो कोई सुलैमान से भी बड़ा मौजूद है!

लोगों में शैतान

[43]"जब कोई दुष्टात्मा किसी व्यक्ति को छोड़ती है तो वह आराम की खोज में सूखी धरती ढूँढती फिरती है, किन्तु वह उसे मिल नहीं पाती। [44]तब वह कहती है कि जिस घर को मैंने छोड़ा था, मैं फिर वहीं लौट जाऊँगी। सो वह लौटती है और उसे अब तक खाली, साफ सुथरा तथा सजा-सँवरा पाती है। [45]फिर वह लौटती है और अपने साथ सात और दुष्टात्माओं को लाती है जो उससे भी बुरी होती हैं। फिर वे सब आकर वहाँ रहने लगती हैं। और उस व्यक्ति की दशा पहले से भी अधिक भयानक हो जाती है। आज की इस बुरी पीढ़ी के लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।"

यीशु के अनुयायी ही उसका परिवार

[46]वह अभी भीड़ के लोगों से बातें कर ही रहा था कि उसकी माता और भाई-बन्धु वहाँ आकर बाहर खड़े हो गये। वे उससे बात करने को बाट जोह रहे थे। [47]किसी ने यीशु से कहा "सुन तेरी माँ और तेरे भाई-बन्धु बाहर खड़े हैं और तुझ से बात करना चाहते हैं।"

[48]उत्तर में यीशु ने बात करने वाले से कहा, "कौन है मेरी माँ? कौन हैं मेरे भाई-बंधु?" [49]फिर उसने हाथ से अपने अनुयायिओं की तरफ इशारा करते हुए कहा, "ये हैं मेरी माँ और मेरे भाई-बन्धु। [50]हाँ स्वर्ग में स्थित मेरे पिता की इच्छा पर जो कोई चलता है, वही मेरा भाई, बहन और माँ है।"

किसान और बीज का दृष्टान्त

13 उसी दिन यीशु उस घर को छोड़ कर झील के किनारे उपदेश देने जा बैठा। [2]बहुत से लोग उसके चारों तरफ़ इकट्ठे हो गये। सो वह एक नाव पर चढ़ कर बैठ गया। और भीड़ किनारे पर खड़ी रही। [3]उसने उन्हें दृष्टान्तों का सहारा लेते हुए बहुत सी बातें बतायीं। उसने कहा कि "एक किसान बीज बोने निकला। [4]जब वह बुवाई कर रहा था तो कुछ बीज राह के किनारे जा पड़े। चिड़ियाएँ आयीं और उन्हें चुग गयीं। [5]थोड़ें बीज चट्टानी धरती पर जा गिरे। वहाँ मिट्टी बहुत उथली थी। बीज तुरंत उगे, क्योंकि वहाँ मिट्टी तो गहरी थी नहीं; [6]इसलिये जब सूरज चढ़ा तो वे पौधे झुलस गये। और क्योंकि उन्होंने ज्यादा जड़ें तो पकड़ी नहीं थीं इसलिए वे सूख कर गिर गये। [7]बीजों का एक हिस्सा कँटीली झाड़ियों में जा गिरा, झाड़ियाँ बड़ी हुई, और उन्होंने उन पौधों को दबोच लिया। [8]पर थोड़े बीज जो अच्छी धरती पर गिरे थे, अच्छी फसल देने लगे। फसल, जितना बोया गया था, उससे कोई तीस गुना, साठ गुना यासौ गुना से भी ज़्यादा हुई। [9]जो सुन सकता है, वह सुन ले।"

दृष्टान्त-कथाओं का प्रयोजन

[10]फिर यीशु के शिष्यों ने उसके पास जाकर उससे पूछा, "तू उनसे बातें करते हुए दृष्टान्त कथाओं का प्रयोग क्यों करता है?"

[11]उत्तर में उसने उनसे कहा, "स्वर्ग के राज्य के भेदों को जानने का अधिकार सिर्फ तुम्हें दिया गया है, उन्हें

नहीं। [12]क्योंकि जिसके पास थोड़ा बहुत है, उसे और भी दिया जायेगा और उसके पास बहुत अधिक हो जायेगा। किन्तु जिसके पास कुछ भी नहीं है, उससे जितना सा उसके पास है, वह भी छीन लिया जायेगा। [13]इसीलिये मैं उनसे दृष्टान्त कथाओं का प्रयोग करते हुए बात करता हूँ। क्योंकि यद्यपि वे देखते हैं, पर वास्तव में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता, वे यद्यपि सुनते हैं पर वास्तव में न वे सुनते हैं, न समझते हैं। [14]इस प्रकार उन पर यशायाह की यह भविष्यवाणी खरी उतरती है:

'तुम सुनोगे और सुनते ही रहोगे
पर तुम्हारी समझ में कुछ भी न आयेगा,
तुम बस देखते ही रहोगे
पर तुम्हें कुछ भी न सूझ पायेगा
[15] क्योंकि इनके हृदय जड़ता से भर गये
इन्होंने अपने कान बन्द कर रखे हैं
और अपनी आखें मूँद रखी हैं ताकि
वे अपनी आँखों से कुछ भी न देखें
और वे कान से कुछ न सुन पायें
या कि अपने हृदय से कभी न समझें
और कभी मेरी ओर मुड़कर आयें
और जिससे मैं उनका उद्धार करूँ।'

यशायाह 6:9-10

[16]किन्तु तुम्हारी आँखें और तुम्हारे कान भाग्यवान् हैं क्योंकि वे देख और सुन सकते हैं। [17]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, बहुत से भविष्यवक्ता और धर्मात्मा जिन बातों को देखना चाहते थे, उन्हें तुम देख रहे हो। वे उन्हें नहीं देख सके। और जिन बातों को वे सुनना चाहते थे, उन्हें तुम सुन रहे हो। वे उन्हें नहीं सुन सके।

बीज बोने की दृष्टान्त-कथा का अर्थ

[18]"तो बीज बोने वाले की दृष्टान्त-कथा का अर्थ सुनो। [19]वह बीज जो राह के किनारे गिर पड़ा था, उसका अर्थ है कि जब कोई स्वर्ग के राज्य का सुसंदेश सुनता है और उसे समझता नहीं है तो बदी आकर, उसके मन में जो उगा था, उसे उखाड़ ले जाती है। [20]वे बीज जो चट्टानी धरती पर गिरे थे, उनका अर्थ है वह व्यक्ति जो सुसंदेश सुनता है, उसे आनन्द के साथ तत्काल ग्रहण भी करता है [21]किन्तु अपने भीतर उसकी जड़ें नहीं जमने देता, वह थोड़ी ही देर ठहर पाता है, जब सुसंदेश के कारण उस पर कष्ट और यातनाएँ आती हैं तो वह जल्दी ही डगमगा जाता है। [22]काँटों में गिरे बीज का अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश को सुनता तो है, पर संसार की चिंताएँ और धन का लोभ सुसंदेश को दबा देता है और वह व्यक्ति सफल नहीं हो पाता। [23]अच्छी धरती पर गिरे बीज से अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश को सुनता है और समझता है। वह सफल होता है। वह सफलता बोये बीज से तीस गुना, साठ गुना या सौ गुना तक होती है।"

गेहूँ और खरपतवार का दृष्टान्त

[24]यीशु ने उनके सामने एक और दृष्टान्त कथा रखी: "स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान है जिसने अपने खेत में अच्छे बीज बोये थे। [25]पर जब लोग सो रहे थे, उस व्यक्ति का शत्रु आया और गेहूँ के बीच खरपतवार बो गया। [26]जब गेहूँ में अंकुर निकले और उस पर बालें आयी तो खरपतवार भी दिखने लगी। [27]तब खेत के मालिक के पास आकर उसके दासों ने उससे कहा, 'मालिक, तूने तो खेत में अच्छा बीज बोया था, बोया था न? फिर ये खरपतवार कहाँ से आई?'

[28]"तब उसने उनसे कहा, 'यह किसी शत्रु का काम है।' उसके दासों ने उससे पूछा, 'क्या तू चाहता है कि हम जाकर खरपतवार उखाड़ दें?'

[29]"वह बोला, 'नही, क्योंकि जब तुम खरपतवार उखाड़ोगे तो उनके साथ, तुम गेहूँ भी उखाड़ दोगे।

[30]जब तक फसल पके दोनों को साथ साथ बढ़ने दो, फिर कटाई के समय में फसल काटने वालों से कहूँगा कि पहले खरपतवार की पुलियाँ बना कर उन्हें जला दो, और फिर गेहूँ को बटोर कर मेरी खत्ती में रख दो।'"

कई अन्य दृष्टान्त-कथाएँ

[31]यीशु ने उनके सामने और दृष्टान्त-कथाएँ रखी। "स्वर्ग का राज्य राई के छोटे से बीज के समान होता है, जिसे किसी ने लेकर खेत में बो दिया हो। [32]यह बीज छोटे से छोटा होता है किन्तु बड़ा होने पर यह बाग के सभी पौधों से बड़ा हो जाता है। यह पेड़ बनता है और आकाश के पक्षी आकर इसकी शाखाओं पर शरण लेते हैं।"

[33]उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा और कही-"स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है, जिसे किसी स्त्री ने तीन

भार आटे में मिलाया और तब तक उसे रख छोड़ा जब तक वह सब का सब खमीर नहीं हो गया।"

[34]यीशु ने लोगों से यह सब कुछ दृष्टान्त–कथाओं के द्वारा कहा। वास्तव में वह उनसे दृष्टान्त कथाओं के बिना कुछ भी नहीं कहता था। [35]ऐसा इसलिये था कि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता के द्वारा जो कुछ कहा था वह पूरा हो: परमेश्वर ने कहा कि,

"मैं दृष्टान्त कथाओं के द्वारा अपना मुँह खोलूँगा।
सृष्टि के आदिकाल से जो बातें
छिपी रही हैं, उन्हें उजागर करूँगा।"

भजन संहिता 78:2

गेहूँ और खरपतवार के दृष्टान्त की व्याख्या

[36]फिर यीशु उस भीड़ को विदा करके घर चला आया। तब उसके शिष्यों ने आकर उससे कहा, "खेत के खरपतवार के दृष्टान्त का अर्थ हमें समझा।"

[37]उत्तर में यीशु बोला, "जिसने उत्तम बीज बोया था, वह है मनुष्य का पुत्र। [38]और खेत यह संसार है। अच्छे बीज का अर्थ है, स्वर्ग के राज्य के लोग। खरपतवार का अर्थ है, वे व्यक्ति जो शैतान की संतान हैं। [39]वह शत्रु जिसने खरपतवार बीजे थे, शैतान है और कटाई का समय है, इस जगत का अंत और कटाई करने वाले हैं स्वर्गदूत।

[40]"ठीक वैसे ही जैसे खरपतवार को इकट्ठा करके आग में जला दिया गया, वैसे ही सृष्टि के अंत में होगा। [41]मनुष्य का पुत्र अपने दूतों को भेजेगा और वे उसके राज्य से सभी पापियों को और उनको, जो लोगों को पाप के लिये प्रेरित करते हैं, [42]इकट्ठा करके धधकते भाड़ में झोंक देंगे जहाँ बस दाँत पीसना और रोना ही रोना होगा। [43]तब धर्मी अपने परम पिता के राज्य में सूरज की तरह चमकेंगे। जो सुन सकता है, सुन ले!"

धन का भण्डार और मोती का दृष्टान्त

[44]"स्वर्ग का राज्य खेत में गड़े धन जैसा है। जिसे किसी मनुष्य ने पाया और फिर उसे वहीं गाड़ दिया। वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने जो कुछ उसके पास था, जाकर बेच दिया और वह खेत मोल ले लिया।

[45]"स्वर्ग का राज्य एक ऐसे व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में हो। [46]जब उसे एक अनमोल मोती मिला तो जाकर जो कुछ उसके पास था, उसने बेच डाला, और मोती मोल ले लिया।

मछली पकड़ने का जाल

[47]"स्वर्ग का राज्य मछली पकड़ने के लिए झील में फेंके गए एक जाल के समान भी है। जिसमें तरह तरह की मछलियाँ पकड़ी गयी। [48]जब वह जाल पूरा भर गया तो उसे किनारे पर खींच लिया गया। और वहाँ बैठ कर अच्छी मछलियाँ छाँट कर टोकरियों में भर ली गयीं किन्तु बेकार मछलियाँ फेंक दी गयी। [49]सृष्टि के अन्त में ऐसे ही होगा। स्वर्गदूत आयेंगे और धर्मियों में से पापियों को छाँट कर [50]धधकते भाड़ में झोंक देंगे जहाँ बस रोना और दाँत पीसना होगा।"

[51]यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा, "तुम ये सब बातें समझते हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ!"

[52]यीशु ने उनसे कहा, "देखो, इसीलिये हर धर्मशास्त्री जो परमेश्वर के राज्य को जानता है, एक ऐसे गृहस्वामी के समान है, जो अपने कोठार से नई–पुरानी वस्तुओं को बाहर निकालता है।"

यीशु का अपने देश लौटना

[53]इन दृष्टान्त कथाओं को समाप्त करके वह वहाँ से चल दिया [54]और अपने देश आ गया। फिर उसने यहूदी धर्म सभाओं में उपदेश देना आरम्भ कर दिया। इससे हर कोई अचरज में पड़ कर कहने लगा, "इसे ऐसी सूझबूझ और चमत्कारी शक्ति कहाँ से मिली? [55]क्या यह वही बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या इसकी माँ का नाम मरियम नहीं है? याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा इसी के तो भाई हैं न? [56]क्या इसकी सभी बहनें हमारे ही बीच नहीं हैं? तो फिर उसे यह सब कहाँ से मिला।" [57]सो उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। फिर यीशु ने कहा, "किसी नबी का अपने गाँव और घर को छोड़ कर, सब आदर करते हैं।"

[58]सो उनके अविश्वास के कारण उसने वहाँ अधिक आश्चर्य कर्म नहीं किये।

हेरोदेस का यीशु के बारे में सुनना

14 उस समय गलील के शासक हेरोदेस ने जब यीशु के बारे में सुना [2]तो उसने अपने सेवकों से कहा, "यह बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना है जो मरे हुओं में

से जी उठा है। और इसी लिये ये शक्तियाँ उसमें काम कर रही हैं। जिनसे यह इन चमत्कारों को करता है।"

यूहन्ना की हत्या

[3]यह वही हेरोदेस था जिसने यूहन्ना को बंदी बना, जंजीरों में बाँध, जेल में डाल दिया था। यह उसने हिरोदियास के कहने पर किया था, जो पहले उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी थी। [4]यूहन्ना प्राय: उससे कहा करता था कि "तुझे इसके साथ नहीं रहना चाहिये।" [5]सो हेरोदेस उसे मार डालना चाहता था, पर वह लोगों से डरता था क्योंकि लोग यूहन्ना को नबी मानते थे। [6]पर जब हेरोदेस का जन्म दिन आया तो हिरोदियास की बेटी ने हेरोदेस और उसके मेहमानों के सामने नाच कर हेरोदेस को इतना प्रसन्न किया [7]कि उसने शपथ ले कर, वह जो कुछ चाहे, उसे देने का वचन दिया।

[8]अपनी माँ के सिखावे में आकर उसने कहा, "मुझे थाली में रख कर बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का शीष दे।" [9]यद्यपि राजा बहुत दुखी था किन्तु अपनी शपथ और अपने मेहमानों के कारण उसने उसकी माँग पूरी करने का आदेश दे दिया। [10]उसने जेल में यूहन्ना का सिर काटने के लिये आदमी भेजे। [11]सो यूहन्ना का सिर थाली में रख कर लाया गया और उसे लड़की को दे दिया गया। वह उसे अपनी माँ के पास ले गयी। [12]तब यूहन्ना के अनुयायी आये और उन्होंने उसके धड़ को लेकर दफना दिया। और फिर उन्होंने आकर यीशू को बताया।

यीशु का पाँच हजार से अधिक को खाना खिलाना

[13]जब यीशु ने इसकी चर्चा सुनी तो वह वहाँ से नाव में किसी एकान्त स्थान पर अकेला चला गया। किन्तु जब भीड़ को इसका पता चला तो वे अपने नगरों से पैदल ही उसके पीछे हो लिये। [14]यीशु जब नाव से बाहर निकल कर किनारे पर आया तो उसने एक बड़ी भीड़ देखी। उसे उन पर दया आयी और उसने उनके बीमारों को अच्छा किया।

[15]जब शाम हुई तो उसके शिष्यों ने उसके पास आकर कहा, "यह सुनसान जगह है और बहुत देर भी हो चुकी है, सो भीड़ को विदा कर, ताकि वे गाँव में जा कर अपने लिये खाना मोल ले लें।"

[16]किन्तु यीशु ने उनसे कहा, "इन्हें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। तुम इन्हें कुछ खाने को दो।"

[17]उन्होंने उससे कहा, "हमारे पास पाँच रोटियों और दो मछलियों को छोड़ कर और कुछ नहीं है।"

[18]यीशु ने कहा, "उन्हें मेरे पास ले आओ।" [19]उसने भीड़ के लोगों से कहा कि वे घास पर बैठ जायें। फिर उसने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ ले कर स्वर्ग की ओर देखा और भोजन के लिये परमेश्वर का धन्यवाद किया। फिर रोटी के टुकड़े तोड़े और उन्हें अपने शिष्यों को दे दिया। शिष्यों ने वे टुकड़े लोगों में बाँट दिये। [20]सभी ने छक कर खाया। इसके बाद बचे हुए टुकड़ों से उसके शिष्यों ने बारह टोकरियाँ भरीं। [21]स्त्रियों और बच्चों को छोड़ कर वहाँ खाने वाले कोई पाँच हज़ार पुरुष थे।

यीशु का झील पर चलना

[22]इसके तुरंत बाद यीशु ने अपने शिष्यों को नाव पर चढ़ाया और जब तक वह भीड़ को विदा करे, उनसे गलील की झील के पार अपने से पहले ही जाने को कहा। [23]भीड़ को विदा करके वह अकेले में प्रार्थना करने को पहाड़ पर चला गया। साँझ होने पर वह वहाँ अकेला था। [24]तब तक नाव किनारे से मीलों दूर जा चुकी थी और लहरों में थपेड़े खाती डगमगा रही थी। सामने की हवा चल रही थी।

[25]सुबह कोई तीन और छ: बजे के बीच यीशु झील पर चलता हुआ उनके पास आया। [26]उसके शिष्यों ने जब उसे झील पर चलते हुए देखा तो वह घबराये हुए आपस में कहने लगे "यह तो कोई भूत है!" वे डर के मारे चीख उठे।

[27]यीशु ने तत्काल उनसे बात करते हुए कहा, "हिम्मत रखो! यह मैं हूँ! अब और मत डरो।"

[28]पतरस ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "प्रभु, यदि यह तू है, तो मुझे पानी पर चल कर अपने पास आने को कह।"

[29]यीशु ने कहा, "चला आ।"

पतरस नाव से निकल कर पानी पर यीशु की तरफ चल पड़ा। [30]उसने जब तेज हवा देखी तो वह घबराया। वह डूबने लगा और चिल्लाया, "प्रभु, मेरी रक्षा कर।"

[31]यीशु ने तत्काल उसके पास पहुँच कर उसे सँभाल लिया और उससे बोला, "ओ अल्प विश्वासी, तूने संदेह क्यों किया?"

[32]और वे नाव पर चढ़ आये। हवा थम गयी। [33]नाव पर के लोगों ने यीशु की उपासना की और कहा, "तू सचमुच परमेश्वर का पुत्र है।"

[34]सो झील पार करके वे गन्नेसरत के तट पर उतर गये। [35]जब वहाँ रहने वालों ने यीशु को पहचाना तो उन्होंने उसके आने का समाचार आसपास सब कहीं भिजवा दिया। जिससे लोग–जो रोगी थे, उन सब को वहाँ ले आये [36]और उससे प्रार्थना करने लगे कि वह उन्हें अपने वस्त्र का बस किनारा ही छू लेने दे। और जिन्होंने छू लिया, वे सब पूरी तरह चंगे हो गये।

मनुष्य के बनाये नियमों से परमेश्वर का विधान बड़ा है

15 फिर कुछ फ़रीसी और यहूदी धर्मशास्त्री यरुशलेम से यीशु के पास आये और उससे पूछा, [2]"तेरे अनुयायी हमारे पुरखों के रीति–रिवाजों का पालन क्यों नहीं करते? वे खाना खाने से पहले अपने हाथ क्यों नहीं धोते?"

[3]यीशु ने उत्तर दिया, "अपने रीति रिवाजों के कारण तुम परमेश्वर के विधि को क्यों तोड़ते हो? [4]क्योंकि परमेश्वर ने तो कहा था, 'तू अपने माता–पिता का आदर कर'* और 'जो कोई अपने पिता या माता का अपमान करता है, उसे अवश्य मार दिया जाना चाहिये।'* [5]किन्तु तुम कहते हो जो कोई अपने पिता या अपनी माता से कहे, 'क्योंकर मैं अपना सब कुछ परमेश्वर को अर्पित कर चुका हूँ, इसलिये तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता।' [6]इस तरह उसे अपने माता पिता का आदर करने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार तुम अपने रीति रिवाजों के कारण परमेश्वर के आदेश को नकारते हो। [7]ओ ढोंगियो, तुम्हारे बारे में यशायाह ने ठीक ही भविष्यवाणी की थी। उसने कहा था:

[8] 'ये मेरा केवल होठों से आदर करते है;
पर इनके मन मुझ से सदा दूर रहते हैं
[9] इनकी अर्पित उपासना मुझ को बिना काम की
क्योंकि ये लोगों को कह सिखाते
मनुष्य के अपने सिद्धान्त, बनाये नियम।'"

यशायाह 29:13

[10]उसने भीड़ को अपने पास बुलाया और उनसे कहा, "सुनो और समझो कि [11]मनुष्य के मुख के भीतर जो जाता है वह उसे अपवित्र नहीं करता, बल्कि उसके मुँह से निकला हुआ शब्द उसे अपवित्र करता है।"

[12]तब यीशु के शिष्य उसके पास आये और बोले, "क्या तुझे पता है कि तेरी बात का फरीसियों ने बहुत बुरा माना है?"

[13]यीशु ने उत्तर दिया, "हर वह पौधा जिसे मेरे स्वर्ग में स्थित पिता की ओर से नहीं लगाया गया है, उखाड़ दिया जायेगा। [14]उन्हें छोड़ो, वे तो अन्धों के अंधे नेता हैं। यदि एक अंधा दूसरे अंधे को राह दिखाता है, तो वे दोनों ही गढ़े में गिरते हैं।"

[15]तब पतरस ने उससे कहा, "हमें अपवित्रता सम्बन्धी दृष्टान्त का अर्थ समझा।"

[16]यीशु बोला, "क्या तुम अब भी नहीं समझते? [17]क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ किसी के मुँह में जाता है, वह उस के पेट में पहुँचता है और फिर पखाने में निकल जाता है? [18]किन्तु जो मनुष्य के मुँह से बाहर आता है, वह उसके मन से निकलता है। यही उस को अपवित्र करता है। [19]क्योंकि बुरे विचार, हत्या, व्यभिचार, दुराचार, चोरी, झूठ और निन्दा जैसी सभी बुराइयाँ मन से ही आती हैं। [20]ये ही हैं जिनसे कोई अपवित्र बनता है। बिना हाथ धोए खाने से कोई अपवित्र नहीं होता।"

ग़ैर यहूदी स्त्री की सहायता

[21]फिर यीशु उस स्थान को छोड़ कर सूर और सैदा की ओर चल पड़ा। [22]वहाँ की एक कनानी स्त्री आयी और चिल्लाने लगी, "हे प्रभु, दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर। मेरी पुत्री पर दुष्ट आत्मा बुरी तरह सवार है।"

[23]यीशु ने उससे एक शब्द भी नहीं कहा, सो उसके शिष्य उसके पास आये और विनती करने लगे, "यह हमारे पीछे चिल्लाती हुई आ रही है, इसे दूर हटा।"

[24]यीशु ने उत्तर दिया, "मुझे केवल इस्राएल के लोगों की खोई हुई भेड़ों के अलावा किसी और के लिये नहीं भेजा गया है।"

[25]तब उस स्त्री ने यीशु के सामने झुक कर विनती की, "हे प्रभु, मेरी रक्षा कर!"

[26]उत्तर में यीशु ने कहा, "यह उचित नहीं है कि बच्चों का खाना लेकर उसे घर के कुत्तों के आगे डाल दिया जाये।"

तू ... कर देखें निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16
जो कोई ... जाना चाहिये देखें निर्गमन 21:17

[27]वह बोली, "यह ठीक है प्रभु, किन्तु अपने स्वामी की मेज़ से गिरे हुए चूरे में से थोड़ा बहुत तो घर के कुत्ते भी खा ही लेते हैं।"

[28]तब यीशु ने कहा, "स्त्री, तेरा विश्वास बहुत बड़ा है। जो तू चाहती है, पूरा हो।" और तत्काल उसकी बेटी अच्छी हो गयी।

यीशु का बहुतों को अच्छा करना

[29]फिर यीशु वहाँ से चल पड़ा और झील गलील के किनारे पहुँचा। वह एक पहाड़ पर चढ़ कर उपदेश देने बैठ गया।

[30]बड़ी-बड़ी भीड़ लँगड़े-लूलों, अंधों, अपाहिजों, बहरे-गूंगों और ऐसे ही दूसरे रोगियों को लेकर उसके पास आने लगी। भीड़ ने उन्हें उसके चरणों में धरती पर डाल दिया। और यीशु ने उन्हें चंगा कर दिया। [31]इससे भीड़ के लोगों को, यह देखकर कि बहरे गूंगे बोल रहे हैं, अपाहिज अच्छे हो गये, लँगड़े-लूले चल फिर रहे हैं और अन्धे अब देख पा रहे हैं, बड़ा अचरज हुआ। वे इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

चार हज़ार से अधिक को भोजन

[32]तब यीशु ने अपने शिष्यों को पास बुलाया और कहा, "मुझे इस भीड़ पर तरस आ रहा है क्योंकि ये लोग तीन दिन से लगातार मेरे साथ हैं और इनके पास कुछ खाने को भी नहीं है। मैं इन्हें भूखा ही नहीं भेजना चाहता क्योंकि हो सकता है कहीं वे रास्ते में ही मुर्छित होकर न गिर पड़ें।"

[33]तब उसके शिष्यों ने कहा, "इतनी बड़ी भीड़ के लिए ऐसी बियाबान जगह में इतना खाना हमें कहाँ से मिलेगा?"

[34]तब यीशु ने उनसे पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?" उन्होंने कहा, "सात रोटियाँ और कुछ छोटी मछलियाँ।"

[35]यीशु ने भीड़ से धरती पर बैठने को कहा और उन सात रोटियों और मछलियों को लेकर उसने परमेश्वर का धन्यवाद किया [36]और रोटियाँ तोड़ीं और अपने शिष्यों को देने लगा। फिर उसके शिष्यों ने उन्हें आगे लोगों में बाँट दिया। [37]लोग तब तक खाते रहे जब तक थक न गये। फिर उसके शिष्यों ने बचे हुए टुकड़ों से सात टोकरियाँ भरीं। [38]औरतों और बच्चों को छोड़ कर वहाँ चार हज़ार पुरुषों ने भोजन किया। [39]भीड़ को विदा करके यीशु नाव में आ गया और मगदन को चला गया।

यहूदी नेताओं की चाल

16 फिर फरीसी और सदूकी यीशु के पास आये। वे उसे परखना चाहते थे सो उन्होंने उससे कोई चमत्कार करने को कहा, ताकि पता लग सके कि उसे परमेश्वर की अनुमति मिली हुई है।

[2]उस ने उत्तर दिया, "सूरज छुपने पर तुम लोग कहते हो 'आज मौसम अच्छा रहेगा क्योंकि आसमान लाल है' [3]और सूरज उगने पर तुम कहते हो 'आज अंधड़ आयेगा क्योंकि आसमान धुँधला और लाल है।' तुम आकाश के लक्षणों को पढ़ना जानते हो, पर अपने समय के लक्षणों को नहीं पढ़ सकते। [4]अरे दुष्ट और दुराचारी पीढ़ी के लोग कोई चिन्ह देखना चाहते हैं, पर उन्हें सिवाय योना के चिन्ह के कोई और दूसरा चिन्ह नहीं दिखाया जायेगा।" फिर वह उन्हें छोड़ कर चला गया।

यीशु की चेतावनी

[5]यीशु के शिष्य झील के पार चले आये, पर वे रोटी लाना भूल गये। [6]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "चौकन्ने रहो! और फरीसियों और सदूकियों के ख़मीर से बचे रहो।"

[7]वे आपस में सोच विचार करते हुए बोले, "हो सकता है, उसने यह इसलिये कहा क्यों कि हम कोई रोटी साथ नहीं लाये।"

[8]वे क्या सोच रहे हैं, यीशु यह जानता था, सो वह बोला, "ओ अल्प विश्वासियों, तुम आपस में अपने पास रोटी, नहीं होने के बारे में क्यों सोच रहे हो? [9]क्या तुम अब भी नहीं समझते या याद करते कि पाँच हज़ार लोगों के लिए वे पाँच रोटियाँ और फिर कितनी टोकरियाँ भर कर तुमने उठाई थी? [10]और क्या तुम्हें याद नहीं चार हज़ार के लिये वे सात रोटियाँ और फिर कितनी टोकरियाँ भर कर तुमने उठाई थी? [11]क्यों नहीं समझते कि मैंने तुमसे रोटियों के बारे में नहीं कहा? मैंने तो तुम्हें फ़रीसियों और सदूकियों के ख़मीर से बचने को कहा है।"

[12]तब वे समझ गये कि रोटी के ख़मीर से नहीं बल्कि उसका मतलब फरीसियों और सदूकियों की शिक्षाओं से बचे रहने से है।

यीशु मसीह है

[13]जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया तो उसने अपने शिष्यों से पूछा, "लोग क्या कहते हैं, कि मैं मनुष्य का पुत्र कौन हूँ?"*

[14]वे बोले, "कुछ कहते हैं कि तू बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना है, और दूसरे कहते हैं कि तू एलिय्याह* है और कुछ अन्य कहते हैं कि तू यिर्मयाह* या भविष्यवक्ताओं में से कोई एक है।"

[15]यीशु ने उनसे कहा, "और तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" [16]शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू मसीह है, साक्षात परमेश्वर का पुत्र।"

[17]उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "योना के पुत्र शमौन! तू धन्य है क्योंकि तुझे यह बात किसी मनुष्य ने नहीं, बल्कि स्वर्ग में स्थित मेरे परम पिता ने दर्शाई है। [18]मैं कहता हूँ कि तू पतरस है। और इसी चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा। मृत्यु की शक्ति* उस पर प्रबल नहीं होंगी। [19]मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दे रहा हूँ। ताकि धरती पर जो कुछ तू बाँधे, वह परमेश्वर के द्वारा स्वर्ग में बाँधा जाये और जो कुछ तू धरती पर छोड़े, वह स्वर्ग में परमेश्वर के द्वारा छोड़ दिया जाये।" [20]फिर उसने अपने शिष्यों को कड़ा आदेश दिया कि वे किसी को यह न बतायें कि वह मसीह है।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

[21]उस समय यीशु अपने शिष्यों को बताने लगा कि, उसे यरुशलेम जाना चाहिये। जहाँ उसे यहूदी धर्मशास्त्रियों, बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं और प्रमुख याजकों द्वारा यातनाएँ पहुँचा कर मरवा दिया जायेगा। फिर तीसरे दिन वह मरे हुओं में से जी उठेगा।

[22]तब पतरस उसे एक तरफ ले गया और उसकी आलोचना करता हुआ उससे बोला, "हे प्रभु! परमेश्वर तुझ पर दया करे। तेरे साथ ऐसा कभी न हो!"

[23]फिर यीशु उसकी तरफ मुड़ा और बोला, "पतरस, मेरे रास्ते से हट जा। अरे शैतान! तू मेरे लिए एक अड़चन है। क्योंकि तू परमेश्वर की तरह नहीं लोगों की तरह सोचता है।"

[24]फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है, तो वह अपने आप को भुलाकर, अपना क्रूस स्वयं उठाये और मेरे पीछे हो ले। [25]जो कोई अपना जीवन बचाना चाहता है, उसे वह खोना होगा। किन्तु जो कोई मेरे लिये अपना जीवन खोयेगा, वही उसे बचाएगा। [26]यदि कोई अपना जीवन देकर सारा संसार भी पा जाये तो उसे क्या लाभ? अपने जीवन को फिर से पाने के लिए कोई भला क्या दे सकता है? [27]मनुष्य का पुत्र दूतों सहित अपने परमपिता की महिमा के साथ आने वाला है। जो हर किसी को उसके कर्मों का फल देगा। [28]मैं तुम से सत्य कहता हूँ यहाँ कुछ ऐसे हैं जो तब तक नहीं मरेंगे जब तक वे मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते न देख लें।"

तीन शिष्यों को मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु का दर्शन

17 छः दिन बाद यीशु, पतरस, याकूब, और उसके भाई यूहन्ना को साथ लेकर एकान्त में ऊँचे पहाड़ पर गया। [2]वहाँ उनके सामने उसका रूप बदल गया। उसका मुख सूरज के समान दमक उठा और उसके वस्त्र ऐसे चमचमाने लगे जैसे प्रकाश। [3]फिर अचानक मूसा और एलिय्याह उनके सामने प्रकट हुए और यीशु से बात करने लगे।

[4]यह देखकर पतरस यीशु से बोला, "प्रभु, अच्छा है कि हम यहाँ हैं। यदि तू चाहे तो मैं यहाँ तीन मंडप बना दूँ–एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।"

[5]पतरस अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकते हुए बादल ने आकर उन्हें ढक लिया और बादल से आकाशवाणी हुई कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। इसकी सुनो!"

[6]जब शिष्यों ने यह सुना तो वे इतने सहम गये कि धरती पर औंधे मुँह गिर पड़े। [7]तब यीशु उनके पास गया और

मनुष्य का पुत्र यानी यीशु। यीशु परमेश्वर का पुत्र था किन्तु उसके नाम से लगता है कि वह एक मनुष्य भी था। दानि. 7:13-14 में बताया गया है कि यह 'मसीह' का नाम है।

एलिय्याह एक भविष्यवक्ता था जो यीशु से सैकड़ों साल पहले हुआ था और लोगों को परमेश्वर के बारे में बताता था।

यिर्मयाह एक भविष्यवक्ता जो यीशु से सैकड़ों साल पहले लोगों को परमेश्वर के बारे में बताता था।

मृत्यु की शक्ति शाब्दिक 'मृत्यु के द्वार।'

उन्हें छूते हुए बोला, "डरो मत, खड़े होवो।" [8]जब उन्होंने अपनी आँखें उठाई तो वहाँ बस यीशु को ही पाया।

[9]जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तो यीशु ने उन्हें आदेश दिया कि "जो कुछ तुमने देखा है, तब तक किसी को मत बताना जब तक मनुष्य के पुत्र को मरे हुओं में से फिर जिला न दिया जाय।"

[10]फिर उसके शिष्यों ने उससे पूछा, यहूदी धर्मशास्त्री फिर क्यों कहते हैं, एलिय्याह का पहले आना निश्चित है?"

[11]उत्तर देते हुए उसने उनसे कहा, "एलिय्याह आ रहा है, वह हर वस्तु को व्यवस्थित कर देगा। [12]किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि एलिय्याह तो अब तक आ चुका है। पर लोगों ने उसे पहचाना नहीं। और उसके साथ जैसा चाहा वैसा किया। उनके द्वारा मनुष्य के पुत्र को भी वैसे ही सताया जाने वाला है।" [13]तब उसके शिष्य समझे कि उसने उनसे बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के बारे में कहा था।

रोगी लड़के का अच्छा किया जाना

[14]जब यीशु भीड़ में वापस आया तो एक व्यक्ति उसके पास आया और उसे दंडवत प्रणाम करके बोला, [15]"हे प्रभु, मेरे बेटे पर दया कर। उसे मिर्गी आती है। वह बहुत तड़पता है। वह आग में या पानी में अक्सर गिरता पड़ता रहता है। [16]मैं उसे तेरे शिष्यों के पास लाया, पर वे उसे अच्छा नहीं कर पाये।"

[17]उत्तर में यीशु ने कहा, "अरे भटके हुए अविश्वासी लोगों! मैं कितने समय तुम्हारे साथ और रहूँगा? कितने समय मैं यूँ ही तुम्हारी सहता रहूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।" [18]फिर यीशु ने दुष्टात्मा को आदेश दिया और वह उसमें से बाहर निकल आयी। और वह लड़का तत्काल अच्छा हो गया।

[19]फिर उसके शिष्यों ने अकेले में यीशु के पास जाकर पूछा, "हम इस दुष्टात्मा को बाहर क्यों नहीं निकाल पाये?"

[20]यीशु ने उन्हें बताया, "क्योंकि तुममें विश्वास की कमी है। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, यदि तुममें राई के बीज जितना भी विश्वास हो तो तुम इस पहाड़ से कह सकते हो 'यहाँ से हट कर वहाँ चला जा' और वह चला जायेगा। तुम्हारे लिये असम्भव कुछ भी नहीं होगा।" [21]['ऐसी दुष्टात्मा केवल प्रार्थना या उपवास करने से निकलती है।']*

यीशु का अपनी मृत्यु के बारे में बताना

[22]जब यीशु के शिष्य आए और उसके साथ गलील में मिले तो यीशु ने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के द्वारा ही पकड़वाया जाने वाला है [23]जो उसे मार डालेंगे। किन्तु तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।" इस पर यीशु के शिष्य बहुत व्याकुल हुए।

कर का भुगतान

[24]जब यीशु और उसके शिष्य कफ़रनहूम में आये तो मंदिर का दो दरम का कर वसूल करने वाले पतरस के पास आये और बोले, "क्या तेरा गुरु दो दरम का मंदिर का कर नहीं देता?" [25]पतरस ने उत्तर दिया, "हाँ, वह देता है।" और घर में चला आया। पतरस से बोलने के पहले ही यीशु बोल पड़ा, उसने कहा, "शमौन, तेरा क्या विचार है? धरती के राजा किससे चुंगी और कर लेते हैं? स्वयं अपने बच्चों से या दूसरों के बच्चों से?"

[26]पतरस ने उत्तर दिया, "दूसरे के बच्चों से।" तब यीशु ने उससे कहा, "यानी उसके अपने बच्चों को छूट रहती है। [27]पर हम उन लोगों को नाराज़ न करें इसलिये झील पर जा और अपना काँटा फेंक और फिर जो पहली मछली पकड़ में आये उसका मुँह खोलना तुझे चार दरम का सिक्का मिलेगा। उसे लेकर मेरे और अपने लिए उन्हें दे देना।"

सबसे बड़ा कौन

18 तब यीशु के शिष्यों ने उसके पास आकर पूछा, "स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन है?"

[2]तब यीशु ने एक बच्चे को अपने पास बुलाया और उसे उनके सामने खड़ा करके कहा, [3]"मैं तुमसे सत्य कहता हूँ जब तक कि तुम लोग बदलोगे नहीं और बच्चों के समान नहीं बन जाओगे, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकोगे। [4]इसलिये अपने आपको जो कोई इस बच्चे के समान नम्र बनाता है, वही स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा है।"

[5]"और जो कोई ऐसे बालक जैसे व्यक्ति को मेरे नाम में स्वीकार करता है वह मुझे स्वीकार करता है। [6]किन्तु जो मुझमें विश्वास करने वाले मेरे किसी ऐसे नम्र अनुयायी के रास्ते की बाधा बनता है, अच्छा हो कि उसके गले में एक चक्की का पाट लटका कर उसे समुद्र की गहराई में

पद 21 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 21 जोड़ा गया है।

डुबो दिया जाये। [7]बाधाओं के कारण मुझे संसार के लोगों के लिए खेद है पर, बाधाएँ तो आयेंगी ही किन्तु खेद तो मुझे उस पर है जिसके द्वारा बाधाएँ आती है। [8]इसलिए यदि तेरा हाथ या तेरा पैर तेरे लिए बाधा बने तो उसे काट फेंक, क्योंकि स्वर्ग में बिना हाथ या बिना पैर के अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए अधिक अच्छा है; बजाय इसके कि दोनों हाथों और दोनों पैरों समेत तुझे नरक की कभी न बुझने वाली आग में डाल दिया जाये। [9]यदि तेरी आँख तेरे लिये बाधा बने तो उसे बाहर निकाल कर फेंक दे, क्योंकि स्वर्ग में काना होकर अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये अधिक अच्छा है; बजाय इसके कि दोनों आँखों समेत तुझे नरक की आग में डाल दिया जाए।

खोई भेड़ की दृष्टान्त–कथा

[10]"सो देखो, मेरे इन मासूम अनुयायिओं में से किसी को भी तुच्छ मत समझना। मैं तुम्हें बताता हूँ कि उनके रक्षक स्वर्गदूतों की पहुँच स्वर्ग में मेरे परम पिता के पास लगातार रहती है।[11]["मनुष्य का पुत्र भटके हुओं के उद्धार के लिये आया।"]*

[12]"बता तू क्या सोचता है? यदि किसी के पास सौ भेड़ें हों और उनमें से एक भटक जाये तो क्या वह दूसरी निन्यानवें भेड़ों को पहाड़ी पर ही छोड़ कर उस एक खोई भेड़ को खोजने नहीं जाएगा? [13](वह निश्चय ही जाएगा) और जब उसे वह मिल जायेगी, मैं तुमसे सत्य कहता हूँ तो वह दूसरी निन्यानवें की बजाय–जो खोई नहीं थीं, इसे पाकर अधिक प्रसन्न होगा। [14]इसी तरह स्वर्ग में स्थित तुम्हारा पिता क्या नहीं चाहता कि मेरे इन अबोध अनुयायिओं में से कोई एक भी न भटके।

जब कोई तेरा बुरा करे

[15]"यदि तेरा बन्धु तेरे साथ कोई बुरा व्यवहार करे तो अकेले में जाकर आपस में ही उसे उसका दोष बता। यदि वह तेरी सुन ले तो तूने अपने बंधु को फिर जीत लिया। [16]पर यदि वह तेरी न सुने तो दो एक को अपने साथ ले जा ताकि हर बात की दो तीन गवाही हो सकें। [17]यदि वह उन की भी न सुने तो कलीसिया को बता दे। और यदि वह कलीसिया की भी न माने तो फिर तू उस से ऐसे व्यवहार कर जैसे वह विधर्मी हो या कर वसूलने वाला हो।

[18]"मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जो कुछ तुम धरती पर बाँधोगे स्वर्ग में प्रभु के द्वारा बाँधा जायेगा और जिस किसी को तुम धरती पर छोड़ोगे स्वर्ग में परमेश्वर के द्वारा छोड़ दिया जायेगा।

[19]"मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि इस धरती पर यदि तुम में से कोई दो सहमत हो कर स्वर्ग में स्थित मेरे पिता से कुछ माँगोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे पूरा करेगा [20]क्योंकि जहाँ मेरे नाम पर दो या तीन लोग मेरे अनुयायी के रूप में इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके साथ हूँ।"

क्षमा न करने वाले दास की दृष्टान्त–कथा

[21]फिर पतरस यीशु के पास गया और बोला, "प्रभु, मुझे अपने भाई को कितनी बार अपने प्रति अपराध करने पर भी क्षमा कर देना चाहिए? यदि वह सात बार अपराध करे तो भी?"

[22]यीशु ने कहा, "न केवल सात बार, बल्कि मैं तुझे बताता हूँ तुझे उसे सतत्तर बार तक क्षमा करते जाना चाहिये।

[23]"सो स्वर्ग के राज्य की तुलना उस राजा से की जा सकती है जिसने अपने दासों से हिसाब चुकता करने की सोची थी। [24]जब उसने हिसाब लेना शुरू किया तो उसके सामने एक ऐसे व्यक्ति को लाया गया जिस पर दसियों लाख रुपया निकलता था। [25]पर उसके पास चुकाने का कोई साधन नहीं था। उसके स्वामी ने आज्ञा दी कि उस दास को, उसकी घर वाली, उसके बाल बच्चों और जो कुछ उसका माल असबाब है, सब समेत बेच कर कर्ज़ चुका दिया जाये।

[26]"तब उसका दास उसके पैरों में गिर कर गिड़गिड़ाने लगा, 'धीरज धरो, मैं सब कुछ चुका दूँगा।' [27]इस पर स्वामी को उस दास पर दया आ गयी। उसने उसका कर्ज़ा माफ करके उसे छोड़ दिया।

[28]"फिर जब वह दास वहाँ से जा रहा था, तो उसे उसका एक साथी दास मिला जिसे उसे कुछ रुपये देने थे। उसने उसका गिरहबान पकड़ लिया और उसका गला घोटते हुए बोला, 'जो तुझे मेरा देना है, लौटा दे!'

[29]"इस पर उसका साथी दास उसके पैरों में गिर पड़ा और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, 'धीरज धर, मैं चुका दूँगा।'

पद 11 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 11 जोड़ा गया है।

[30]"पर उसने मना कर दिया। इतना ही नहीं उसने उसे तब तक के लिये, जब तक वह उसका कर्ज न चुका दे, जेल भी भिजवा दिया। [31]दूसरे दास इस सारी घटना को देखकर बहुत दुखी हुए। और उन्होंने जो कुछ घटा था, सब अपने स्वामी को जाकर बता दिया।

[32]"तब उसके स्वामी ने उसे बुलाया और कहा, 'अरे नीच दास, मैंने तेरा वह सारा कर्ज़ माफ कर दिया क्योंकि तूने मुझ से दया की भीख माँगी थी। [33]क्या तुझे भी अपने साथी दास पर दया नहीं दिखानी चाहिये थी जैसे मैंने तुझ पर दया की थी?' [34]सो उसका स्वामी बहुत बिगड़ा और उसे तब तक दण्ड भुगतने के लिए सौंप दिया जब तक समूचा कर्ज़ चुकता न हो जाये।

[35]"सो जब तक तुम अपने भाई-बंदों को अपने मन से क्षमा न कर दो मेरा स्वर्गीय परम पिता भी तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करेगा।"

तलाक

19 ये बातें कहने के बाद वह गलील से लौट कर यहूदिया के क्षेत्र में यर्दन नदी के पार चला गया। [2]एक बड़ी भीड़ वहाँ उसके पीछे हो ली, जिसे उसने चंगा किया।

[3]उसे परखने के जतन में कुछ फरीसी उसके पास पहुँचे और बोले, "क्या यह उचित है कि कोई अपनी पत्नी को किसी भी कारण से तलाक दे सकता है?'

[4]उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, "क्या तुमने शास्त्र में नहीं पढ़ा कि जगत को रचने वाले ने प्रारम्भ में, 'उन्हें एक स्त्री और एक पुरुष के रूप में रचा था?'* [5]और कहा था 'इसी कारण अपने माता-पिता को छोड़ कर पुरुष अपनी पत्नी के साथ दो होते हुए भी एक शरीर होकर रहेगा।'* [6]सो वे दो नहीं रहते बल्कि एक रूप हो जाते हैं। इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे किसी भी मनुष्य को अलग नही करना चाहिये।"

[7]वे बोले, "फिर मूसा ने यह क्यों निर्धारित किया है कि कोई पुरुष अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है। शर्त यह है कि वह उसे तलाक नामा लिख कर दे।"

[8]यीशु ने उनसे कहा, "मूसा ने यह विधान तुम लोगों के मन की जड़ता के कारण दिया था। किन्तु प्रारम्भ में ऐसी रीति नहीं थी। [9]तो मैं तुमसे कहता हूँ कि जो व्यभिचार को छोड़कर अपनी पत्नी को किसी और कारण से त्यागता है और किसी दूसरी स्त्री को ब्याहता है तो वह व्यभिचार करता है।"*

[10]इस पर उसके शिष्यों ने उससे कहा, "यदि एक स्त्री और एक पुरुष के बीच ऐसी स्थिति है तो किसी को ब्याह ही नहीं करना चाहिये।"

[11]फिर यीशु ने उनसे कहा, "हर कोई तो इस उपदेश को ग्रहण नहीं कर सकता। इसे बस वे ही ग्रहण कर सकते हैं जिनको इसकी क्षमता प्रदान की गयी है। [12]कुछ ऐसे हैं जो अपनी माँ के गर्भ से ही नपुंसक पैदा हुए हैं। और कुछ ऐसे हैं जो लोगों द्वारा नपुंसक बना दिये गये हैं। और अंत में कुछ ऐसे हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के कारण विवाह नहीं करने का निश्चय किया है। जो इस उपदेश को ले सकता है, ले।"

यीशु की आशीष : बच्चों को

[13]फिर लोग कुछ बालकों को यीशु के पास लाये कि वह उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दे और उनके लिए प्रार्थना करे। किन्तु उसके शिष्यों ने उन्हें डाँटा। [14]उस पर यीशु ने कहा, "बच्चों को रहने दो, उन्हें मत रोको, मेरे पास आने दो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों का ही है।" [15]फिर उसने बच्चों के सिर पर अपना हाथ रखा और वहाँ से चल दिया।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न

[16]वहीं एक व्यक्ति था। वह यीशु के पास आया और बोला, "गुरु अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या अच्छा काम करना चाहिये?"

[17]यीशु ने उससे कहा, "अच्छा क्या है, इसके बारे में तू मुझसे क्यों पूछ रहा है? क्योंकि अच्छा तो केवल एक ही है! फिर भी यदि तू अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो तू आदेशों का पालन कर।"

[18]उसने यीशु से पूछा, "कौन से आदेश?" तब यीशु बोला, "हत्या मत कर। व्यभिचार मत कर। चोरी मत कर। झूठी गवाही मत दे। [19]अपने पिता और अपनी माता

रचने वाले ... रचा था देखें उत्पत्ति 1:27; 5:2
इसी कारण ... कर रहेगा देखें उत्पत्ति 2:24

पद 9 कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है जो इस प्रकार है: "और जो छोड़ी हुई स्त्री को ब्याहता है वह व्यभिचार करता है।"

का आदर कर'* और 'जैसे तू अपने आप को प्यार करता है, वैसे ही अपने पड़ोसी से भी प्यार कर।'*"

20युवक ने यीशु से पूछा, "मैंने इन सब बातों का पालन किया है। अब मुझमें किस बात की कमी है?"

21यीशु ने उससे कहा, "यदि तू संपूर्ण बनना चाहता तो जा और जो कुछ तेरे पास है, उसे बेचकर धन गरीबों में बाँट दे ताकि स्वर्ग में तुझे धन मिल सके। फिर आ और मेरे पीछे हो ले!"

22किन्तु जब उस नौजवान ने यह सुना तो वह दुखी होकर चला गया क्योंकि वह बहुत धनवान था।

23यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि एक धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर पाना कठिन है। 24हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ कि किसी धनवान व्यक्ति के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने से एक ऊँट का सूई के नकुए से निकल जाना आसान है।"

25जब उसके शिष्यों ने यह सुना तो अचरज से भरकर पूछा, "फिर किसका उद्धार हो सकता है?"

26यीशु ने उन्हें देखते हुए कहा, "मनुष्यों के लिए यह असम्भव है, किन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है।"

27उत्तर में तब पतरस ने उससे कहा, "देख, हम सब कुछ त्याग कर तेरे पीछे हो लिये हैं। सो हमें क्या मिलेगा?"

28यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम लोगों से सत्य कहता हूँ कि नये युग में जब मनुष्य का पुत्र अपने प्रतापी सिंहासन पर विराजेगा तो तुम भी, जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह सिंहासनों पर बैठ कर परमेश्वर के लोगों का न्याय करोगे। 29और मेरे लिए जिसने भी घर-बार या भाइयों या बहनों या पिता या माता या बच्चों या खेतों को त्याग दिया है, वह सौ गुणा अधिक पायेगा और अनन्त जीवन का भी अधिकारी बनेगा। 30किन्तु बहुत से जो अब पहले हैं, अन्तिम हो जायेंगे और जो अन्तिम हैं, पहले हो जायेंगे।"

मज़दूरों की दृष्टांत-कथा

20 "स्वर्ग का राज्य एक ज़मींदार के समान है जो सुबह सवेरे अपने अंगूर के बगीचों के लिये मज़दूर लाने को निकला। 2उसने चाँदी के एक रुपए पर मज़दूर रख कर उन्हें अपने अंगूर के बगीचे में काम करने भेज दिया।

3"नौ बजे के आसपास ज़मींदार फिर घर से निकला और उसने देखा कि कुछ लोग बाज़ार में इधर उधर यूँ ही बेकार खड़े हैं। 4तब उसने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे अंगूर के बगीचे में जाओ, मैं तुम्हें जो कुछ उचित होगा, दूँगा।' 5सो वे भी बगीचे में काम करने चले गये।

"फिर कोई बारह बजे और दुबारा तीन बजे के आसपास, उसने वैसा ही किया। 6कोई पाँच बजे वह फिर अपने घर से गया और कुछ लोगों को बाज़ार में इधर उधर खड़े देखा। उसने उनसे पूछा, 'तुम यहाँ दिन भर बेकार ही क्यों खड़े रहते हो?'

7"उन्होंने उससे कहा, 'क्योंकि हमें किसी ने मजूरी पर नहीं रखा।'

"उसने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे अंगूर के बगीचे में चले जाओ।'

8"जब साँझ हुई तो अंगूर के बगीचे के मालिक ने अपने प्रधान कर्मचारी को कहा, 'मज़दूरों को बुलाकर अंतिम मज़दूर से शुरू करके जो पहले लगाये गये थे उन तक सब की मज़दूरी चुका दो।'

9"सो वे मज़दूर जो पाँच बजे लगाये थे, आये और उनमें से हर किसी को चाँदी का एक रुपया मिला। 10फिर जो पहले लगाये गये थे, वे आये। उन्होंने सोचा उन्हें कुछ अधिक मिलेगा पर उनमें से भी हर एक को एक ही चाँदी का रुपया मिला। 11रुपया तो उन्होंने ले लिया पर ज़मींदार से शिकायत करते हुए 12उन्होंने कहा, 'जो बाद में लगे थे, उन्होंने बस एक घंटा काम किया और तूने हमें भी उतना ही दिया जितना उन्हें। जबकि हमने सारे दिन चमचमाती धूप में मेहनत की।'

13"उत्तर में उनमें से किसी एक से जमींदार ने कहा, 'दोस्त, मैंने तेरे साथ कोई अन्याय नहीं किया है। क्या हमने तय नहीं किया था कि मैं तुम्हें चाँदी का एक रुपया दूँगा? 14जो तेरा बनता है, ले और चला जा। मैं सबसे बाद में रखे गये इस को भी उतनी ही मज़दूरी देना चाहता हूँ जितनी तुझे दे रहा हूँ। 15क्या मैं अपने धन का जो चाहूँ वह करने का अधिकार नहीं रखता? मैं अच्छा हूँ क्या तू इससे जलता है?'

16"इस प्रकार अंतिम पहले हो जायेंगे और पहले अंतिम हो जायेंगे।"

अपने पिता ... आदर कर निर्गमन 20:12-16

वैसे ही ... प्यार कर लैव्य. 19:18

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

[17]जब यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ यरुशलेम जा रहा था तो वह उन्हें एक तरफ़ ले गया और चलते चलते उनसे बोला, [18]"सुनो, हम यरुशलेम पहुँचने को हैं। मनुष्य का पुत्र वहाँ प्रमुख याजकों और यहूदी धर्म शास्त्रियों के हाथों सौंप दिया जायेगा। वे उसे मृत्यु दण्ड के योग्य ठहरायेंगे। [19]फिर उसका उपहास करवाने और कोड़े लगवाने को उसे ग़ैर यहूदियों को सौंप देंगे। फिर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा किन्तु तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।"

एक माँ का अपने बच्चों के लिए आग्रह

[20]फिर जब्दी के बेटों की माँ अपने बेटों समेत यीशु के पास पहुँची और उसने झुक कर प्रार्थना करते हुए उससे कुछ माँगा।

[21]यीशु ने उससे पूछा, "तू क्या चाहती है?"

वह बोली, "मुझे वचन दे कि मेरे ये दोनों बेटे तेरे राज्य में एक तेरे दाहिनी ओर और दूसरा तेरे बाई ओर बैठे।"

[22]यीशु ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जानते कि तुम क्या माँग रहे हो। क्या तुम यातनाओं का वह प्याला पी सकते हो, जिसे मैं पीने वाला हूँ?"

उन्होंने उससे कहा, "हाँ, हम पी सकते हैं!"

[23]यीशु उनसे बोला, "निश्चय ही तुम वह प्याला पीयोगे। किन्तु मेरे दाएँ और बायें बैठने का अधिकार देने वाला मैं नहीं हूँ। यहाँ बैठने का अधिकार तो उनका है, जिनके लिए यह मेरे पिता द्वारा सुरक्षित किया जा चुका है।"

[24]जब बाकी दस शिष्यों ने यह सुना तो वे उन दोनों भाइयों पर बहुत बिगड़े। [25]तब यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, "तुम जानते हो कि गैर यहूदी राजा, लोगों पर अपनी शक्ति दिखाना चाहते हैं और उनके महत्त्वपूर्ण नेता, लोगों पर अपना अधिकार जताना चाहते हैं। [26]किन्तु तुम्हारे बीच ऐसा नहीं होना चाहिये। बल्कि तुममें जो बड़ा बनना चाहे, तुम्हारा सेवक बने। [27]और तुममें से जो कोई पहला बनना चाहे, उसे तुम्हारा दास बनना होगा। [28]तुम्हें मनुष्य के पुत्र जैसा ही होना चाहिये जो सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने और बहुतों के छुटकारे के लिये अपने प्राणों की फिरौती देने आया है।"

अंधों को आँखें

[29]जब वे यरीहो नगर से जा रहे थे एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे हो ली। [30]वहाँ सड़क किनारे दो अंधे बैठे थे। जब उन्होंने सुना कि यीशु वहाँ से जा रहा है, वे चिल्लाये, "प्रभु! दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर!"

[31]इस पर भीड़ ने उन्हें धमकाते हुए चुप रहने को कहा। पर वे और अधिक चिल्लाये, "प्रभु! दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर!"

[32]फिर यीशु रुका और उनसे बोला। उसने कहा, "तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?"

[33]उन्होंने उससे कहा, "प्रभु, हम चाहते हैं कि देख सकें।"

[34]यीशु को उन पर दया आयी। उसने उनकी आँखों को छुआ, और तुरंत ही वे फिर देखने लगे। वे उसके पीछे हो लिए।

यीशु का यरुशलेम में भव्य प्रवेश

21 यीशु और उसके अनुयायी जब यरुशलेम के पास जैतून पर्वत के निकट बैतफगे पहुँचे तो यीशु ने अपने दो शिष्यों को [2]यह आदेश देकर भेजा कि अपने ठीक सामने के गाँव में जाओ और वहाँ जाते ही तुम्हें एक गर्धबी बँधी मिलेगी। उसके साथ उसका बछेरा भी होगा। उन्हें बाँध कर मेरे पास ले आओ। [3]यदि कोई तुमसे कुछ कहे तो उससे कहना 'प्रभु को इनकी आवश्यकता है। वह जल्दी ही इन्हें लौटा देगा।'"

[4]ऐसा इसलिये हुआ कि भविष्यवक्ता का यह वचन पूरा हो:

[5] "सिओन की नगरी से कहो,
'देख तेरा राजा तेरे पास आ रहा है।
वह विनयपूर्ण है, वह गर्धब पर सवार है,
हाँ गर्धब के बछेरे पर जो
एक श्रमिक पशु का बछेरा है।'"

जकर्याह 9:9

[6]सो उसके शिष्य चले गये और वैसा ही किया जैसा उन्हें यीशु ने बताया था। [7]वे गर्धबी और उसके बछेरे को ले आये। और उन पर अपने वस्त्र डाल दिये क्योंकि यीशु को बैठना था। [8]भीड़ में बहुत से लोगों ने अपने वस्त्र राह में बिछा दिये और दूसरे लोग पेड़ों से टहनियाँ काट लाये और उन्हें मार्ग में बिछा दिया। [9]जो लोग उनके आगे चल

रहे थे और जो लोग उनके पीछे चल रहे थे सब पुकार कर कह रहे थे:

"होशन्ना! धन्य है दाऊद का वह पुत्र!
जो आ रहा है प्रभु के नाम पर
धन्य है प्रभु जो स्वर्ग में विराजा!"

भजन संहिता 118:26

[10]सो जब उसने यरूशलेम में प्रवेश किया तो समूचे नगर में हलचल मच गयी। लोग पूछने लगे, "यह कौन है?"

[11]लोग ही जवाब दे रहे थे, "यह गलील के नासरत का नबी यीशु है।"

यीशु मंदिर में

[12]फिर यीशु मंदिर के अहाते में आया और उसने मन्दिर के अहाते में जो लोग ले-बेच कर रहे थे, उन सब को बाहर खदेड़ दिया। उसने पैसों की लेन-देन करने वालों की चौकियाँ उलट दीं और कबूतर बेचने वालों के तख्त पलट दिये। [13]वह उनसे बोला, "शास्त्र कहते हैं 'मेरा घर प्रार्थना-गृह कहलायेगा।* किन्तु तुम इसे डाकुओं का अड्डा बना रहे हो।'"

[14]मंदिर में कुछ अंधे, लँगड़े लूले उसके पास आये। जिन्हें उसने चंगा कर दिया। [15]जब प्रमुख याजकों और यहूदी धर्म शास्त्रियों ने उन अद्भुत कामों को देखा जो उसने किये थे और मंदिर में बच्चों को ऊँचे स्वर में कहते सुना: "होशन्ना। दाऊद का वह पुत्र धन्य है"

[16]तो वे बहुत क्रोधित हुए। और उससे पूछा, "तू सुनता है ये क्या कह रहे हैं?"

यीशु ने उनसे कहा, "हाँ सुनता हूँ। क्या धर्मशास्त्र में तुम लोगों ने नहीं पढ़ा-'तूने बालकों और दूध पीते बच्चों तक से स्तुति करवाई है।'"*

[17]फिर उन्हें वहीं छोड़ कर वह यरुशलेम नगर से बाहर बैतनिय्याह को चला गया। जहाँ उसने रात बिताई।

विश्वास की शक्ति

[18]अगले दिन अलख सुबह जब वह नगर को वापस लौट रहा था तो उसे भूख लगी। [19]राह किनारे उसने अंजीर का एक पेड़ देखा सो वह उसके पास गया, पर उसे उस पर पत्तों को छोड़ और कुछ नहीं मिला। सो उसने पेड़ से कहा, "तुझ पर आगे कभी फल न लगे!" और वह अंजीर का पेड़ तुरंत सूख गया।

[20]जब शिष्यों ने यह देखा तो अचरज के साथ पूछा, "यह अंजीर का पेड़ इतनी जल्दी कैसे सूख गया?"

[21]यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। यदि तुम में विश्वास है और तुम संदेह नहीं करते तो तुम न केवल वह कर सकते हो जो मैंने अंजीर के पेड़ का किया। बल्कि यदि तुम इस पहाड़ से कहो, 'उठ और अपने आप को सागर में डुबो दे' तो वही हो जायेगा। [22]और प्रार्थना करते तुम जो कुछ माँगो, यदि तुम्हें विश्वास है तो तुम पाओगे।"

यहूदी नेताओं का यीशु के अधिकार पर संदेह

[23]जब यीशु मंदिर में जाकर उपदेश दे रहा था तो प्रमुख याजकों और यहूदी बुज़ुर्गों ने पास जाकर उससे पूछा, "ऐसी बातें तू किस अधिकार से करता है? और यह अधिकार तुझे किसने दिया?"

[24]उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ, यदि उसका उत्तर तुम मुझे दे दो तो मैं तुम्हें बता दूँगा कि मैं ये बातें किस अधिकार से करता हूँ। [25]बताओ यूहन्ना को बपतिस्मा कहाँ से मिला? परमेश्वर से या मनुष्य से?"

वे आपस में विचार करते हुए कहने लगे, "यदि हम कहते हैं 'परमेश्वर से' तो यह हमसे पूछेगा 'फिर तुम उस पर विश्वास क्यों नहीं करते?' [26]किन्तु यदि हम कहते हैं 'मनुष्य से' तो हमें लोगों का डर है क्योंकि वे यूहन्ना को एक नबी मानते हैं।"

[27]सो उत्तर में उन्होंने यीशु से कहा, "हमें नहीं पता।"

इस पर यीशु उनसे बोला, "अच्छा तो फिर मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि ये बातें मैं किस अधिकार से करता हूँ!"

यहूदियों के लिए एक दृष्टांत-कथा

[28]"अच्छा बताओ तुम लोग इसके बारे में क्या सोचते हो? एक व्यक्ति के दो पुत्र थे। वह बड़े के पास गया और बोला, 'पुत्र आज मेरे अंगूरों के बगीचे में जा और काम कर।'

[29]"किन्तु पुत्र ने उत्तर दिया, 'मेरी इच्छा नहीं है' पर बाद में उसका मन बदल गया और वह चला गया।

मेरा घर ... कहलायेगा यिर्म. 7:11
तूने बालकों ... करवाई है भजन. 8:3

[30]"फिर वह पिता दूसरे बेटे के पास गया और उससे भी वैसे ही कहा। उत्तर में बेटे ने कहा, 'जी हाँ', मगर वह गया नहीं।

[31]"बताओ इन दोनों में से जो पिता चाहता था, किसने किया?"

उन्होंने कहा, "बड़े ने।"

यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कर वसूलने वाले और वेश्याएँ परमेश्वर के राज्य में तुमसे पहले जायेंगे। [32]यह मैं इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना तुम्हें जीवन का सही रास्ता दिखाने आया और तुमने उसमें विश्वास नहीं किया। किन्तु कर वसूलने वालों और वेश्याओं ने उसमें विश्वास किया। तुमने जब यह देखा तो भी बाद में न मन फिराया और न ही उस पर विश्वास किया।"

परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजना

[33]"एक और दृष्टान्त सुनो: एक ज़मींदार था। उसने अंगूरों का एक बगीचा लगाया और उसके चारों ओर बाड़ लगा दी। फिर अंगूरों का रस निकालने का गरठ लगाने को एक गढ़ा खोदा और रखवाली के लिए एक मीनार बनायी। फिर उसे बटाई पर देकर वह यात्रा पर चला गया। [34]जब अंगूर उतारने का समय आया तो बगीचे के मालिक ने किसानों के पास अपने दास भेजे ताकि वे अपने हिस्से के अंगूर ले आयें।

[35]"किन्तु किसानों ने उसके दासों को पकड़ लिया। किसी की पिटाई की, किसी पर पत्थर फेंके और किसी को तो मार ही डाला। [36]एक बार फिर उसने पहले से और अधिक दास भेजे। उन किसानों ने उनके साथ भी वैसा ही बर्ताव किया। [37]बाद में उसने उनके पास अपने बेटे को भेजा। उसने कहा, 'वे मेरे बेटे का तो मान रखेंगे ही।'

[38]"किन्तु उन किसानों ने जब उसके बेटे को देखा तो वे आपस में कहने लगे,'यह तो उसका उत्तराधिकारी है, आओ इसे मार डालें और उसका उत्तराधिकार हथिया लें।' [39]सो उन्होंने उसे पकड़ कर बगीचे के बाहर धकेल दिया और मार डाला।

[40]"तुम क्या सोचते हो जब वहाँ अंगूरों के बगीचे का मालिक आयेगा तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?"

[41]उन्होंने उससे कहा, "क्योंकि वे निर्दय थे इसलिए वह उन्हें बेरहमी से मार डालेगा और अंगूरों के बगीचे को दूसरे किसानों को बटाई पर दे देगा जो फसल आने पर उसे उसका हिस्सा देंगे।"

[42]यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुमने शास्त्र का यह वचन नहीं पढ़ा:

> 'जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने
> बेकार समझा, वही कोने का सबसे
> अधिक महत्त्वपूर्ण पत्थर बन गया?'
> 'ऐसा प्रभु के द्वारा किया गया जो
> हमारी दृष्टि में अद्भुत है।'

भजन संहिता 118:22-23

[43]"इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ परमेश्वर का राज्य तुमसे छीन लिया जायेगा और वह उन लोगों को दे दिया जायेगा जो उसके राज्य के अनुसार बर्ताव करेंगे। [44]जो इस चट्टान पर गिरेगा, टुकड़े टुकड़े हो जायेगा और यदि यह चट्टान किसी पर गिरेगी तो उसे रौंद डालेगी।"

[45]जब प्रमुख याजकों और फ़रीसियों ने यीशु की दृष्टांत-कथाएँ सुनीं तो वे ताड़ गये कि वह उन्हीं के बारे में कह रहा था। [46]सो उन्होंने उसे पकड़ने का जतन किया किन्तु वे लोगों से डरते थे क्योंकि लोग यीशु को नबी मानते थे।

विवाह भोज पर लोगों को राजा के बुलावे की दृष्टान्त-कथा

22 एक बार फिर यीशु उनसे दृष्टान्त कथाएँ कहने लगा। वह बोला, [2]"स्वर्ग का राज्य उस राजा के जैसा है जिसने अपने बेटे के ब्याह पर दावत दी। [3]राजा ने अपने दासों को भेजा कि वे उन लोगों को बुला लायें जिन्हें विवाह भोज पर न्योता दिया गया है। किन्तु वे लोग नहीं आये।

[4]"उसने अपने सेवकों को फिर भेजा, उसने कहा कि जिन लोगों को विवाह-भोज पर बुलाया गया है उनसे कहो, 'देखो मेरी दावत तैयार है। मेरे साँड़ों और मोटे ताजे पशुओं को काटा जा चुका है। सब कुछ तैयार है। ब्याह की दावत में आ जाओ।'

[5]"पर लोगों ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और वे चले गये। कोई अपने खेतों में काम करने चला गया तो कोई अपने काम धन्धे पर। [6]और कुछ लोगों ने तो राजा के सेवकों को पकड़ कर उनके साथ मार-पीट की और उन्हें मार डाला। [7]सो राजा ने क्रोधित होकर अपने

सैनिक भेजे। उन्होंने उन हत्यारों को मौत के घाट उतार दिया और उनके नगर में आग लगा दी।

[8]"फिर राजा ने सेवकों से कहा, 'विवाह भोज तैयार है किन्तु जिन्हें बुलाया गया था, वे अयोग्य सिद्ध हुए। [9]इसलिये गली के नुक्कड़ों पर जाओ और तुम जिसे भी पाओ ब्याह की दावत पर बुला लाओ।' [10]फिर सेवक गलियों में गये और जो भी भले बुरे लोग उन्हें मिले वे उन्हें बुला लाये। और शादी का महल महमानों से भर गया।

[11]"किन्तु जब मेहमानों को देखने राजा आया तो वहाँ उसने एक ऐसा व्यक्ति देखा जिसने विवाह के वस्त्र नहीं पहने थे। [12]राजा ने उससे कहा, 'हे मित्र, विवाह के वस्त्र पहने बिना तू यहाँ भीतर कैसे आ गया?' पर वह व्यक्ति चुप रहा। [13]इस पर राजा ने अपने सेवकों से कहा, 'इसके हाथ-पाँव बाँध कर बाहर अन्धेरे में फेंक दो। जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते होंगे।'

[14]"क्योंकि बुलाये तो बहुत गये हैं पर चुने हुए थोड़े से हैं।"

यहूदी नेताओं की चाल

[15]फिर फरीसियों ने जाकर एक सभा बुलाई, जिससे वे इस बात का गणित कर सकें कि यीशु को उसकी अपनी ही कही किसी बात में कैसे फँसाया जा सकता है। [16]उन्होंने अपने चेलों को हिरोदियों के साथ उसके पास भेजा। उन लोगों ने यीशु से कहा, "गुरु, हम जानते हैं कि तू सच्चा है तू सचमुच परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देता है। और तू, कोई क्या सोचता है, तू इसकी चिंता नहीं करता क्योंकि तू किसी व्यक्ति की हैसियत पर नहीं जाता। [17]सो हमें बता तेरा क्या विचार है कि सम्राट कैसर को कर चुकाना उचित है कि नहीं?"

[18]यीशु उनके बुरे इरादे को ताड़ गया, सो वह बोला, "ओ कपटियो! तुम मुझे क्यों परखना चाहते हो? [19]मुझे कोई दीनारी दिखाओ जिससे तुम कर चुकाते हो।" सो वे उसके पास दीनारी ले आये। [20]तब उसने उनसे कहा, "इस पर किसकी मूरत और लेख खुदे हैं?"

[21]उन्होंने उससे कहा, "महाराजा कैसर के।"

तब उसने उनसे कहा, "अच्छा तो फिर जो महाराजा कैसर का है, उसे महाराजा कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है, उसे परमेश्वर को।"

[22]यह सुनकर वे अचरज से भर गये और उसे छोड़ कर चले गये।

सदूकियों की चाल

[23]उसी दिन कुछ सदूकी जो पुर्नजीवन को नहीं मानते थे, उसके पास आये। और उससे पूछा [24]कि "गुरु, मूसा के उपदेश के अनुसार यदि बिना बाल बच्चों के कोई मर जाये तो उसका भाई, निकट सम्बन्धी होने के नाते उसकी विधवा से ब्याह करे और अपने भाई का वंश बढ़ाने के लिये संतान पैदा करे। [25]अब मानो हम सात भाई हैं। पहले का ब्याह हुआ और बाद में उसकी मृत्यु हो गयी। फिर क्योंकि उसके कोई संतान नहीं हुई, इसलिये उसके भाई ने उसकी पत्नी को अपना लिया। [26]जब तक कि सातों भाई मर नहीं गये दूसरे, तीसरे भाइयों के साथ भी वैसा ही हुआ [27]और सब के बाद वह स्त्री भी मर गयी। [28]अब हमारा पूछना यह है कि अगले जीवन में उन सातों में से वह किसकी पत्नी होगी क्योंकि उसे सातों ने ही अपनाया था?"

[29]उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे कहा, "तुम भूल करते हो क्योंकि तुम शास्त्रों को और परमेश्वर की शक्ति को नहीं जानते। [30]तुम्हें समझना चाहिये कि पुर्नजीवन में लोग न तो शादी करेंगे और न ही कोई शादी में दिया जायेगा। बल्कि वे स्वर्ग के दूतों के समान होंगे। [31]इसी सिलसिले में तुम्हारे लाभ के लिए परमेश्वर ने मरे हुओं के पुनरुत्थान के बारे में जो कहा है, क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा? उसने कहा था, [32]'मैं इब्राहीम का परमेश्वर हूँ, इसहाक का परमेश्वर हूँ, और याकूब का परमेश्वर हूँ।'* वह मरे हुओं का नहीं बल्कि जीवितों का परमेश्वर है।"

[33]जब लोगों ने यह सुना तो उसके उपदेश पर वे बहुत चकित हो गए।

सबसे बड़ा आदेश

[34]जब फरीसियों ने सुना कि यीशु ने अपने उत्तर से सदूकियों को चुप करा दिया है तो वे सब इकट्ठे हुए [35]उनमें से एक यहूदी धर्मशास्त्री ने यीशु को फँसाने के उद्देश्य से उससे पूछा, [36]"गुरु, व्यवस्था में सबसे बड़ा आदेश कौन सा है?"

मैं ... परमेश्वर हूँ देखें निर्गमन 3:6

[37]यीशु ने उससे कहा, "सम्पूर्ण मन से, सम्पूर्ण आत्मा से और सम्पूर्ण बुद्धि से तुझे अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम करना चाहिये।"* [38]यह सबसे पहला और सबसे बड़ा आदेश है। [39]फिर ऐसा ही दूसरा आदेश यह है: 'अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता है।'* [40]सम्पूर्ण व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के ग्रन्थ इन्हीं दो आदेशों पर टिके हैं।"

यीशु का फ़रीसियों से एक प्रश्न

[41]जब फ़रीसी अभी इकट्ठे ही थे, कि यीशु ने उनसे एक प्रश्न पूछा, [42]"मसीह के बारे में तुम क्या सोचते हो कि वह किसका बेटा है?"

उन्होंने उससे कहा, "दाऊद का।" [43]यीशु ने उनसे पूछा, "फिर आत्मा से प्रेरित दाऊद ने उसे 'प्रभु' कहते हुए यह क्यों कहा था कि:

[44] 'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा:
'मेरे दाहिने हाथ बैठ कर शासन कर
जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को
तेरे अधीन न कर दूँ।'

भजन संहिता 110:1

[45]फिर जब दाऊद ने उसे प्रभु कहा तो वह उसका बेटा कैसे हो सकता है?" [46]उत्तर में कोई भी उससे कुछ नहीं कह सका। और न ही उस दिन के बाद किसी को उससे कुछ और पूछने का साहस ही हुआ।

यीशु द्वारा यहूदी धर्म–नेताओं की आलोचना

23 यीशु ने फिर अपने शिष्यों और भीड़ से कहा। [2]उसने कहा, "यहूदी धर्म शास्त्री और फरीसी मूसा के विधान की व्याख्या के अधिकारी हैं। [3]इसलिए जो कुछ वे कहें उस पर चलना और उसका पालन करना। किन्तु जो वे करते हैं वह मत करना। मैं यह इसलिए कहता हूँ क्योंकि वे बस कहते हैं पर करते नहीं हैं। [4]वे लोगों के कंधों पर इतना बोझ लाद देते हैं कि वे उसे उठा कर चल ही न सकें और लोगों पर दबाव डालते हैं कि वे उसे लेकर चलें। किन्तु वे स्वयं उनमें से किसी पर भी चलने के लिए पाँव तक नहीं हिलाते।

[5]"वे अच्छे कर्म इसलिए करते हैं कि लोग उन्हें देखें। वास्तव में वे अपने ताबीज़ों और पोशाकों की झालरों को इसलिये बड़े से बड़ा करते रहते हैं ताकि लोग उन्हें धर्मात्मा समझें। [6]वे उत्सवों में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान पाना चाहते हैं। धर्म सभाओं में उन्हें प्रमुख आसन चाहिये। [7]बाज़ारों में वे आदर के साथ नमस्कार कराना चाहते हैं। और चाहते हैं कि लोग उन्हें रब्बी* कहकर संबोधित करें।

[8]"किन्तु तुम लोगों से अपने आप को रब्बी मत कहलवाना क्योंकि तुम्हारा सच्चा गुरु तो बस एक है। और तुम सब केवल भाई बहन हो। [9]धरती पर लोगों को तुम अपने में से किसी को भी 'पिता' मत कहने देना। क्योंकि तुम्हारा पिता तो बस एक ही है, और वह स्वर्ग में है। [10]न ही लोगों को तुम अपने को स्वामी कहने देना क्योंकि तुम्हारा स्वामी तो बस एक ही है और वह मसीह है। [11]तुममें सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति वही होगा जो तुम्हारा सेवक बनेगा। [12]जो अपने आपको उठायेगा उसे नवा दिया जायेगा और जो अपने आपको नवाएगा उसे उठाया जायेगा।

[13]"अरे कपटी धर्मशास्त्रियो! और फ़रीसियो! तुम्हें धिक्कार है। तुम लोगों के लिए स्वर्ग के राज्य का द्वार बंद करते हो। न तो तुम स्वयं उसमें प्रवेश करते हो और न ही उनको जाने देते हो जो प्रवेश के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। [14]["ओ कपटी, यहूदी धर्मशास्त्रियो और फरीसियो तुम विधवाओं की सम्पत्ति हड़प जाते हो। दिखाने के लिये लम्बी–लम्बी प्रार्थनाएँ करते हो। इसके लिये तुम्हें कड़ा दण्ड मिलेगा।"]*

[15]"अरे कपटी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों! तुम्हें धिक्कार है। तुम किसी को अपने पंथ में लाने के लिए धरती और समुद्र पार कर जाते हो। और जब वह तुम्हारे पंथ में आ जाता है तो तुम उसे अपने से भी दुगुना नरक का पात्र बना देते हो!

[16]"अरे अंधे रहनुमाओं! तुम्हें धिक्कार है जो कहते हो यदि कोई मंदिर की सौगंध खाता है तो उसे उस शपथ को रखना आवश्यक नहीं है किन्तु यदि कोई मंदिर के सोने की शपथ खाता है तो उसे उस शपथ का पालन आवश्यक है। [17]अरे अंधे मूर्खो! बड़ा कौन है? मन्दिर का सोना या वह मंदिर जिसने उस सोने को पवित्र बनाया।

सम्पूर्ण मन ... करना चाहिये व्यवस्था. 6:5
अपने पड़ोसी ... करता है लैव्य.19:18

रब्बी अर्थात् गुरु।
पद 14 कुछ यूनानी प्रतियों में यह पद 14 जोड़ा गया है।

[18]तुम यह भी कहते हो 'यदि कोई वेदी की सौगंध खाता है तो कुछ नहीं,' किन्तु यदि कोई वेदी पर रखे चढ़ावे की सौगंध खाता है तो वह अपनी सौगंध से बँधा है। [19]अरे अंधों! कौन बड़ा है? वेदी पर रखा चढ़ावा या वह वेदी जिससे वह चढ़ावा पवित्र बनता है? [20]इसलिये यदि कोई वेदी की शपथ लेता है तो वह वेदी के साथ वेदी पर जो रखा है, उस सब की भी शपथ लेता है। [21]वह जो मंदिर है, उसकी भी शपथ लेता है वह मंदिर के साथ जो मंदिर के भीतर है, उसकी भी शपथ लेता है। [22]और वह जो स्वर्ग की शपथ लेता है, वह परमेश्वर के सिंहासन के साथ जो उस सिंहासन पर विराजमान है उसकी भी शपथ लेता है।

[23]"अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियो और फरीसियो! तुम्हारा जो कुछ है, तुम उसका दसवाँ भाग, यहाँ तक कि अपने पुदीने, सौंफ और जीरे तक के दसवें भाग को परमेश्वर को देते हो। फिर भी तुम व्यवस्था की महत्त्वपूर्ण बातों यानी न्याय, दया और विश्वास का तिरस्कार करते हो। तुम्हें उन बातों की उपेक्षा किये बिना इनका पालन करना चाहिये था। [24]ओ अंधे रहनुमाओ! तुम अपने पानी से मच्छर तो छानते हो पर ऊँट को निगल जाते हो।

[25]"ओ कपटी यहूदी धर्म शास्त्रियो! और फरीसियों! तुम्हें धिक्कार है। तुम अपनी कटोरियाँ और थालियाँ बाहर से तो धोकर साफ करते हो पर उनके भीतर जो तुमने छल कपट या अपने लिये रियायत में पाया है, भरा है। [26]अरे अंधे फरीसियो! पहले अपने प्याले को भीतर से माँजो ताकि भीतर के साथ वह बाहर से भी स्वच्छ हो जाये।

[27]"अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियों! और फरीसियों! तुम्हें धिक्कार है। तुम लिपी-पुती समाधि के समान हो जो बाहर से तो सुंदर दिखती है किन्तु भीतर से मरे हुओं की हड्डियों और हर तरह की अपवित्रता से भरी होती है। [28]ऐसे ही तुम बाहर से तो धर्मात्मा दिखाई देते हो किन्तु भीतर से छलकपट और बुराई से भरे हुए हो।

[29]"अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियो! और फरीसियो! तुम नबियों के लिये मक़बरे बनाते हो और धर्मात्माओं की क़ब्रों को सजाते हो। [30]और कहते हो कि 'यदि तुम अपने पूर्वजों के समय में होते तो नबियों को मारने में उनका हाथ नहीं बटाते।' [31]मतलब यह कि तुम मानते हो कि तुम उनकी संतान हो जो नबियों के हत्यारे थे। [32]सो तुम जो तुम्हारे पुरखों ने शुरू किया, उसे पूरा करो।

[33]"अरे साँपों और नागों की संतानो! तुम कैसे सोचते हो कि तुम नरक भोगने से बच जाओगे। [34]इसलिये मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं तुम्हारे पास नबियों, बुद्धिमानों और गुरुओं को भेज रहा हूँ। तुम उनमें से बहुतों को मार डालोगे और बहुतों को क्रूस पर चढ़ाओगे। कुछ एक को तुम अपनी धर्मसभाओं में कोड़े लगवाओगे और एक नगर से दूसरे नगर उनका पीछा करते फिरोगे। [35]परिणामस्वरूप निर्दोष हाबील से लेकर बिरिक्याह के बेटे जकरयाह तक जिसे तुमने मन्दिर के गर्भ गृह और वेदी के बीच मार डाला था, हर निरपराध व्यक्ति की हत्या का दण्ड तुम पर होगा। [36]मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ इस सब कुछ के लिये इस पीढ़ी के लोगों को दंड भोगना होगा।"

यरूशलेम के लोगों पर यीशु को खेद

[37]"ओ यरूशलेम, यरूशलेम! तू वह है जो नबियों की हत्या करता है और परमेश्वर के भेजे दूतों को पत्थर मारता है। मैंने कितनी बार चाहा है कि जैसे कोई मुर्गी अपने चूज़ो को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा कर लेती है वैसे ही मैं तेरे बच्चों को एकत्र कर लूँ। किन्तु तुम लोगों ने नहीं चाहा। [38]अब तेरा मंदिर पूरी तरह उजड़ जायेगा। [39]सचमुच मैं तुम्हें बताता हूँ तुम मुझे तब तक फिर नहीं देखोगे जब तक तुम यह नहीं कहोगे: 'धन्य है वह जो प्रभु के नाम पर आ रहा है!'"*

यीशु द्वारा मंदिर के विनाश की भविष्यवाणी

24 मंदिर को छोड़ कर यीशु जब वहाँ से होकर जा रहा था तो उसके शिष्य उसे मंदिर के भवन दिखाने उसके पास आये। [2]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तुम इन भवनों को सीधे खड़े देख रहे हो? मैं तुम्हें सच बताता हूँ, यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर टिका नहीं रहेगा। एक एक पत्थर गिरा दिया जायेगा।"

[3]यीशु जब जैतून पर्वत* पर बैठा था तो एकांत में उसके शिष्य उसके पास आये और बोले, "हमें बता यह कब घटेगा? जब तू वापस आयेगा और इस संसार का अंत होने को होगा तो कैसे संकेत प्रकट होंगे?"

धन्य है ... आ रहा है भजन. 118:26

जैतून पर्वत यरूशलेम के निकट का एक पहाड़ जिस पर जैतून के बहुत से पेड़ थे।

[4]उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "सावधान! तुम लोगों को कोई छलने न पाये। [5]मैं यह इस लिए कह रहा हूँ कि ऐसे बहुत से हैं जो मेरे नाम से आयेंगे और कहेंगे 'मैं मसीह हूँ' और वे बहुतों को छलेंगे। [6]तुम पास के युद्धों की बातें या दूर के युद्धों की अफवाहें सुनोगे पर देखो तुम घबराना मत। ऐसा तो होगा ही किन्तु अभी अंत नहीं आया है। [7]हर एक जाति दूसरी जाति के विरोध में और एक राज्य दूसरे राज्य के विरोध में खड़ा होगा। अकाल पड़ेंगे। हर कहीं भूचाल आयेंगे। [8]किन्तु ये सब बातें तो केवल पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।

[9]"उस समय वे तुम्हें दण्ड दिलाने के लिए पकड़वायेंगे, और वे तुम्हें मरवा डालेंगे। क्योंकि तुम मेरे शिष्य हो, सभी जातियों के लोग तुमसे घृणा करेंगे। [10]उस समय बहुत से लोगों का मोह टूट जायेगा और विश्वास डिग जायेगा। वे एक दूसरे को अधिकारियों के हाथों सौंपेंगे और परस्पर घृणा करेंगे। [11]बहुत से झूठे नबी उठ खड़े होंगे और लोगों को ठगेंगे। [12]क्योंकि बदी बढ़ जायेगी सो बहुत से लोगों का प्रेम ठंडा पड़ जायेगा। [13]किन्तु जो अंत तक टिका रहेगा उसका उद्धार होगा। [14]स्वर्ग के राज्य का यह सुसमाचार समस्त विश्व में सभी जातियों को साक्षी के रूप में सुनाया जाएगा और तभी अन्त आएगा।

[15]"इसलिए जब तुम लोग भयानक विनाशकारी वस्तु को, जिसका उल्लेख दानिय्येल नबी द्वारा किया गया था, मंदिर के पवित्र स्थान पर खड़े देखो," (पढ़ने वाला स्वयं समझ ले कि इसका अर्थ क्या है) [16]"तब जो लोग यहूदिया में हों उन्हें पहाड़ों पर भाग जाना चाहिये। [17]जो अपने घर की छत पर हो, वह घर से बाहर कुछ भी ले जाने के लिए नीचे न उतरे। [18]और जो बाहर खेतों में काम कर रहा हो, वह पीछे मुड़ कर अपने वस्त्र तक न ले। [19]उन स्त्रियों के लिये, जो गर्भवती होंगी या जिनके दूध पीते बच्चे होंगे, वे दिन बहुत कष्ट के होंगे। [20]प्रार्थना करो कि तुम्हें सर्दियों के दिनों या सब्त के दिन भागना न पड़े। [21]उन दिनों ऐसी विपत्ति आयेगी जैसी जब से परमेश्वर ने यह सृष्टि रची है, आज तक कभी नहीं आयी और न कभी आयेगी। [22]और यदि परमेश्वर ने उन दिनों को घटाने का निश्चय न कर लिया होता तो कोई भी न बचता किंतु अपने चुने हुओं के कारण वह उन दिनों को कम करेगा। [23]उन दिनों यदि कोई तुम लोगों से कहे, 'देखो, यह रहा मसीह' [24]या 'वह रहा मसीह' तो उसका विश्वास मत करना। मैं यह कहता हूँ क्योंकि कपटी मसीह और कपटी नबी खड़े होंगे और ऐसे ऐसे आश्चर्य चिह्न दिखायेंगे और अद्भुत काम करेंगे कि बन पड़े तो वह चुने हुओं को भी चकमा दे दें। [25]देखो मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है।

[26]"सो यदि वे तुमसे कहें, 'देखो वह जंगल में है' तो वहाँ मत जाना और यदि वे कहें, 'देखो वह उन कमरों के भीतर छुपा है' तो उनका विश्वास मत करना। [27]मैं यह कह रहा हूँ क्योंकि जैसे बिजली पूरब में शुरू होकर पश्चिम के आकाश तक कौंध जाती है वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी प्रकट होगा। [28]जहाँ कहीं लाश होगी वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।

[29]"उन दिनों जो मुसीबत पड़ेगी उसके तुरंत बाद:

'सूरज काला पड़ जायेगा
चाँद से उसकी चाँदनी नहीं छिटकेगी
आसमान से तारे गिरने लगेंगे और आकाश में महाशक्तियाँ झकझोर दी जायेंगी।'

यशायाह 13:10; 34:4,5

[30]"उस समय मनुष्य के पुत्र के आने का संकेत आकाश में प्रकट होगा। तब पृथ्वी पर सभी जातियों के लोग विलाप करेंगे और वे मनुष्य के पुत्र को शक्ति और महिमा के साथ स्वर्ग के बादलों में प्रकट होते देखेंगे। [31]वह ऊँचे स्वर की तुरही के साथ अपने दूतों को भेजेगा। फिर वे स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक सब कहीं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा।

[32]"अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो। जैसे ही उसकी टहनियाँ कोमल हो जाती हैं और कोंपलें फूटने लगती हैं तुम लोग जान जाते हो कि गर्मियाँ आने को हैं। [33]वैसे ही जब तुम यह सब घटित होते हुए देखो तो समझ जाना कि वह समय निकट आ पहुँचा है, बल्कि ठीक द्वार तक। [34]मैं तुम लोगों से सत्य कहता हूँ कि इस पीढ़ी के लोगों के जीते जी ही ये सब बातें घटेंगी। [35]चाहे धरती और आकाश मिट जायें किन्तु मेरा वचन कभी नहीं मिटेगा।"

केवल परमेश्वर जानता है कि वह समय कब आएगा

[36]"उस दिन या उस घड़ी के बारे में कोई कुछ नहीं जानता। न स्वर्ग में दूत और न स्वंय पुत्र। केवल परम पिता जानता है। [37]जैसे नूह के दिनों में हुआ, वैसे ही

मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। [38]वैसे ही जैसे लोग जल प्रलय आने से पहले के दिनों तक खाते–पीते रहे, ब्याह–शादियाँ रचाते रहे जब तक नूह नाव पर नहीं चढ़ा। [39]उन्हें तब तक कुछ पता नहीं चला जब तक जल प्रलय न आ गया और उन सब को बहा नहीं ले गया। मनुष्य के पुत्र का आना भी ऐसा ही होगा। [40]उस समय खेत में काम करते दो आदमियों में से एक को उठा लिया जायेगा और एक को वहीं छोड़ दिया जायेगा। [41]चक्की पीसती दो औरतों में से एक उठा ली जायेगी और एक वहीं पीछे छोड़ दी जायेगी।

[42]"सो तुम लोग सावधान रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा स्वामी कब आ जाये। [43]याद रखो यदि घर का स्वामी जानता कि रात को किस घड़ी चोर आ जायेगा तो वह सजग रहता और चोर को अपने घर में सेंध नहीं लगाने देता। [44]इसलिए तुम भी तैयार रहो क्योंकि तुम जब उसकी सोच भी नहीं रहे होंगे, मनुष्य का पुत्र आ जायेगा।

[45]"तब सोचो वह भरोसेमंद सेवक कौन है, जिसे स्वामी ने अपने घर के सेवकों के ऊपर उचित समय उन्हें उनका भोजन देने के लिए लगाया है। [46]धन्य है वह सेवक जिसे उसका स्वामी जब आता है तो कर्तव्य करते पाता है। [47]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ वह स्वामी उसे अपनी समूची सम्पत्ति का अधिकारी बना देगा। [48]दूसरी तरफ सोचो एक बुरा दास है, जो अपने मन में कहता है मेरा स्वामी बहुत दिनों से वापस नहीं आ रहा है [49]सो वह अपने साथी दासों से मार पीट करने लगता है और शराबियों के साथ खाना पीना शुरू कर देता है [50]तो उसका स्वामी ऐसे दिन आ जायेगा जिस दिन वह उसके आने की सोचता तक नहीं और जिसका उसे पता तक नहीं। [51]और उसका स्वामी उसे बुरी तरह दण्ड देगा और कपटियों के बीच उसका स्थान निश्चित करेगा जहाँ बस लोग रोते होंगे और दाँत पीसते होंगे।

दूल्हे की प्रतीक्षा करती दस कन्याओं की दृष्टांत–कथा

25 "उस दिन स्वर्ग का राज्य उन दस कन्याओं के समान होगा जो मशालें लेकर दूल्हे से मिलने निकलीं। [2]उनमें से पाँच लापरवाह थीं और पाँच चौकस। [3]पाँचों लापरवाह कन्याओं ने अपनी मशालें तो ले ली पर उनके साथ तेल नहीं लिया। [4]उधर चौकस कन्याओं ने अपनी मशालों के साथ कुप्पियों में तेल भी ले लिया। [5]क्योंकि दूल्हे को आने में देर हो रही थी, सभी कन्याएँ ऊँघने लगीं और पड़ कर सो गयी।

[6]"पर आधी रात धूम मची आ हा, 'दूल्हा आ रहा है! उससे मिलने बाहर चलो।'

[7]"उसी क्षण वे सभी कन्याएँ उठ खड़ी हुई और अपनी मशालें तैयार कीं। [8]लापरवाह कन्याओं ने चौकस कन्याओं से कहा, 'हमें अपना थोड़ा तेल दे दो, हमारी मशालें बुझी जा रही हैं।'

[9]"उत्तर में उन चौकस कन्याओं ने कहा, 'नहीं! हम नहीं दे सकती। क्योंकि फिर न ही यह हमारे लिए काफी होगा और न ही तुम्हारे लिये। सो तुम तेल बेचने वाले के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।'

[10]"जब वे मोल लेने जा ही रही थीं कि दूल्हा आ पहुँचा। सो वे कन्याएँ, जो तैयार थीं, उसके साथ विवाह के उत्सव में भीतर चली गई और फिर किसी ने द्वार बंद कर दिया।

[11]"आखिरकार वे बाकी की कन्याएँ भी गई और उन्होंने कहा, 'स्वामी, हे स्वामी, द्वार खोलो, हमें भीतर आने दो।'

[12]"किन्तु उसने उत्तर देते हुए कहा, 'मैं तुमसे सच कह रहा हूँ: मैं तुम्हें नहीं जानता।'

[13]"सो सावधान रहो। क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को, जब मनुष्य का पुत्र लौटेगा।

तीन दासों की दृष्टांत कथा

[14]"स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान होगा जिसने यात्रा पर जाते हुए अपने दासों को बुला कर अपनी सम्पत्ति पर अधिकारी बनाया। [15]उसने एक को चाँदी के सिक्कों से भरी पाँच थैलियाँ दीं। दूसरे को दो और तीसरे को एक। वह हर एक को उसकी योग्यता के अनुसार दे कर यात्रा पर निकल पड़ा। [16]जिसे चाँदी के सिक्कों से भरी पाँच थैलियाँ मिली थीं, उसने तुरन्त उस पैसे को काम में लगा दिया और पाँच थैलियाँ और कमा ली। [17]ऐसे ही जिसे दो थैलियाँ मिली थीं, उसने भी दो और कमा लीं। [18]पर जिसे एक मिली थी उसने कहीं जाकर धरती में गढ़ा खोदा और अपने स्वामी के धन को गाड़ दिया।

[19]"बहुत समय बीत जाने के बाद उन दासों का स्वामी लौटा और हर एक से लेखा जोखा लेने लगा। [20]वह

व्यक्ति जिसे चाँदी के सिक्कों की पाँच थैलियाँ मिली थी, अपने स्वामी के पास गया और चाँदी की पाँच और थैलियाँ ले जाकर उससे बोला, 'स्वामी, तुमने मुझे पाँच थैलियाँ सौंपी थीं। चाँदी के सिक्कों की ये पाँच थैलियाँ और हैं जो मैंने कमाई हैं।'

21"उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश! तुम भरोसे के लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में तुम विश्वास पात्र रहे, मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में शामिल हो।'

22"फिर जिसे चाँदी के सिक्कों की दो थैलियाँ मिली थीं, अपने स्वामी के पास आया और बोला, 'स्वामी, तूने मुझे चाँदी की दो थैलियाँ सौंपी थीं, चाँदी के सिक्कों की ये दो थैलियाँ और हैं जो मैंने कमाई हैं।'

23"उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश! तुम भरोसे के लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में तुम विश्वास पात्र रहे। मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में शामिल हो।'

24"फिर वह जिसे चाँदी की एक थैली मिली थी, अपने स्वामी के पास आया और बोला, 'स्वामी, मैं जानता हूँ तू बहुत कठोर व्यक्ति है। तू वहाँ काटता है जहाँ तूने बोया नहीं है, और जहाँ तूने कोई बीज नहीं डाला वहाँ फसल बटोरता है। 25सो मैं डर गया था इसलिए मैंने जाकर चाँदी के सिक्कों की थैली को धरती में गाड़ दिया। यह ले जो तेरा है यह रहा, ले ले।'

26"उत्तर में उसके स्वामी ने उससे कहा, 'तू एक बुरा और आलसी दास है, तू जानता है कि मैं बिन बोये काटता हूँ और जहाँ मैंने बीज नहीं बोये, वहाँ से फसल बटोरता हूँ 27तो तुझे मेरा धन साहूकारों के पास जमा करा देना चाहिये था। फिर जब मैं आता तो जो मेरा था सूद के साथ ले लेता।'

28"इसलिये इससे चाँदी के सिक्कों की यह थैली ले लो और जिसके पास चाँदी के सिक्कों की दस थैलियाँ हैं, इसे उसी को दे दो। 29क्योंकि हर उस व्यक्ति को, जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग किया, और अधिक दिया जायेगा। और जितनी उसे आवश्यकता है, वह उससे अधिक पायेगा। किन्तु उससे, जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग नहीं किया, सब कुछ छीन लिया जायेगा। 30सो उस बेकार के दास को बाहर अन्धेरे में धकेल दो जहाँ लोग रोयेंगे और अपने दाँत पीसेंगे।"

मनुष्य का पुत्र सबका न्याय करेगा

31"मनुष्य का पुत्र जब अपनी स्वर्गिक महिमा में अपने सभी दूतों समेत अपने शानदार सिंहासन पर बैठेगा 32तो सभी जातियाँ उसके सामने इकट्ठी की जायेंगी और वह एक को दूसरे से वैसे ही अलग करेगा, जैसे एक गड़रिया अपनी बकरियों से भेड़ों को अलग करता है। 33वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर रखेगा और बकरियों को बाँई ओर।

34"फिर वह राजा, जो उसके दाहिनी ओर हैं, उनसे कहेगा, 'मेरे पिता से आशीष पाये लोगो, आओ और जो राज्य तुम्हारे लिये जगत की रचना से पहले तैयार किया गया है उसका अधिकार लो। 35यह राज्य तुम्हारा है क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे कुछ खाने को दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे कुछ पीने को दिया। मैं पास से जाता हुआ कोई अनजाना था, और तुम मुझे भीतर ले गये। 36मैं नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहनाए। मैं बीमार था, और तुमने मेरी सेवा की। मैं बंदी था, और तुम मेरे पास आये।'

37"फिर उत्तर में धर्मी लोग उससे पूछेंगे, 'प्रभु, हमने तुझे कब भूखा–देखा और खिलाया या प्यासा देखा और पीने को दिया? 38तुझे हमने कब पास से जाता हुआ कोई अनजाना देखा और भीतर ले गये या बिना कपड़ों के देखकर तुझे कपड़े पहनाए? 39और हमने कब तुझे बीमार या बंदी देखा और तेरे पास आये?'

40"फिर राजा उत्तर में उनसे कहेगा, 'मैं तुमसे सच कह रहा हूँ जब कभी तुमने मेरे भोले–भाले भाइयों में से किसी एक के लिये भी कुछ किया तो वह तुमने मेरे ही लिये किया।'

41"फिर वह राजा अपनी बाँई ओर वालों से कहेगा, 'अरे अभागो! मेरे पास से चले जाओ, और जो आग शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गयी है, उस अनंत आग में जा गिरो। 42यही तुम्हारा दण्ड है क्योंकि मैं भूखा था पर तुमने मुझे खाने को कुछ नहीं दिया, 43मैं अजनबी था पर तुम मुझे भीतर नहीं ले गये। मैं कपड़ों के बिना नंगा था, पर तुमने मुझे कपड़े नहीं पहनाये। मैं बीमार और बंदी था, पर तुमने मेरा ध्यान नहीं रखा।'

[44]"फिर वे भी उत्तर में उससे पूछेंगे, 'प्रभु, हमने तुझे भूखा या प्यासा या अनजाना या बिना कपड़ों के नंगा या बीमार या बंदी कब देखा और तेरी सेवा नहीं की।'

[45]"फिर वह उत्तर में उनसे कहेगा, 'मैं तुमसे सच कह रहा हूँ जब कभी तुमने मेरे इन भोले भाले अनुयायियों में से किसी एक के लिए भी कुछ करने में लापरवाही बरती तो वह तुमने मेरे लिए ही कुछ करने में लापरवाही बरती।'

[46]"फिर ये बुरे लोग अनंत दण्ड पाएँगे और धर्मी लोग अनंत जीवन में चले जायेंगे।"

यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की हत्या का षड़यंत्र

26 इन सब बातों के कह चुकने के बाद यीशु अपने शिष्यों से बोला, [2]"तुम लोग जानते हो कि दो दिन बाद फसह पर्व है। और मनुष्य का पुत्र शत्रुओं के हाथों क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिये पकड़वाया जाने वाला है।"

[3]तब प्रमुख याजक और बुज़ुर्ग यहूदी नेता कैफ़ा नाम के प्रमुख याजक के भवन के आँगन में इकट्ठे हुए। [4]और उन्होंने किसी तरकीब से यीशु को पकड़ने और मार डालने की योजना बनायी। [5]फिर भी वे कह रहे थे "हमें यह पर्व के दिनों नहीं करना चाहिये नहीं तो हो सकता है लोग कोई दंगा–फ़साद करें।"

यीशु पर इत्र का छिड़काव

[6]यीशु जब बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर पर था [7]तभी एक स्त्री सफेद चिकने, स्फटिक के पात्र में बहुत कीमती इत्र भर कर लायी और उसे उसके सिर पर उँडेल दिया। उस समय वह पटरे पर झुका बैठा था।

[8]जब उसके शिष्यों ने यह देखा तो वे क्रोध में भर कर बोले, "इत्र की ऐसी बर्बादी क्यों की गयी? [9]यह इत्र अच्छे दामों में बेचा जा सकता था और फिर उस धन को दीन दुखियों में बाँटा जा सकता था।"

[10]यीशु जान गया कि वे क्या कह रहे हैं। सो उनसे बोला, "तुम इस स्त्री को क्यों तंग कर रहे हो? उसने तो मेरे लिए एक सुन्दर काम किया है? [11]क्योंकि दीन दुःखी तो सदा तुम्हारे पास रहेंगे पर मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूँगा। [12]उसने मेरे शरीर पर यह सुगंधित इत्र छिड़क कर मेरे गाड़े जाने की तैयारी की है। [13]मैं तुमसे सच कहता हूँ समस्त संसार में जहाँ कहीं भी सुसमाचार का प्रचार–प्रसार किया जायेगा, वहीं इसकी याद में, जो कुछ इसने किया है, उसकी चर्चा होगी।"

यहूदा यीशु से शत्रुता ठानता है

[14]तब यहूदा इस्करियोती जो उसके बारह शिष्यों में से एक था, प्रधान याजकों के पास गया और उनसे बोला, [15]"यदि मैं यीशु को तुम्हें पकड़वा दूँ तो तुम लोग मुझे क्या दोगे?" तब उन्होंने यहूदा को चाँदी के तीस सिक्के देने की इच्छा जाहिर की। [16]उसी समय से यहूदा यीशु को धोखे से पकड़वाने की ताक में रहने लगा।

यीशु का अपने शिष्यों के साथ फ़सह भोज

[17]बिना ख़मीर की रोटी के उत्सव से पहले दिन यीशु के शिष्यों ने पास आकर पूछा, "तू क्या चाहता है कि हम तेरे खाने के लिये फ़सह भोज की तैयारी कहाँ जाकर करें?"

[18]उसने कहा, "गाँव में उस व्यक्ति के पास जाओ और उससे कहो, कि गुरु ने कहा है, 'मेरी निश्चित घड़ी निकट है, मैं तेरे घर अपने शिष्यों के साथ फ़सह पर्व मनाने वाला हूँ।'"

[19]फिर शिष्यों ने वैसा ही किया जैसा यीशु ने बताया था और फ़सह पर्व की तैयारी की।

[20]दिन ढले यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ पटरे पर झुका बैठा था। [21]तभी उनके भोजन करते वह बोला, "मैं सच कहता हूँ, तुममें से एक मुझे धोखे से पकड़वायेगा।"

[22]वे बहुत दुखी हुए और उनमें से प्रत्येक उससे पूछने लगा, "प्रभु, वह मैं तो नहीं हूँ! बता क्या मैं हूँ?"

[23]तब यीशु ने उत्तर दिया, "वही जो मेरे साथ एक थाली में खाता है मुझे धोखे से पकड़वायेगा। [24]मनुष्य का पुत्र तो जायेगा ही, जैसा कि उसके बारे में शास्त्र में लिखा है। पर उस व्यक्ति को धिक्कार है जिस व्यक्ति के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जा रहा है। उस व्यक्ति के लिये कितना अच्छा होता कि उसका जन्म ही न हुआ होता।"

[25]तब उसे धोखे से पकड़वाने वाला यहूदा बोल उठा, "हे रब्बी, वह मैं नहीं हूँ। क्या मैं हूँ?"

यीशु ने उससे कहा, "हाँ, ऐसा ही है जैसा तूने कहा है।"

प्रभु का भोज

[26]जब वे खाना खा ही रहे थे, यीशु ने रोटी ली, उसे आशीष दी और फिर तोड़ा। फिर उसे शिष्यों को देते हुए वह बोला, "लो, इसे खाओ, यह मेरी देह है।"

[27]फिर उसने प्याला उठाया और धन्यवाद देने के बाद उसे उन्हें देते हुए कहा, "तुम सब इसे थोड़ा थोड़ा पिओ। [28]क्योंकि यह मेरा लहू है जो एक नये वाचा की स्थापना करता है। यह बहुत लोगों के लिए बहाया जा रहा है। ताकि उनके पापों को क्षमा करना सम्भव हो सके। [29]मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं उस दिन तक दाखरस को नहीं चखूँगा जब तक अपने परम पिता के राज्य में तुम्हारे साथ नया दाखरस न पी लूँ।"

[30]फिर वे फ़सह का भजन गाकर जैतून पर्वत पर चले गये।

यीशु का कथन : सब शिष्य उसे छोड़ देंगे

[31]फिर यीशु ने उनसे कहा, "आज रात तुम सब का मुझमें से विश्वास डिग जायेगा। क्योंकि शास्त्र में लिखा है:

'मैं गड़ेरिये को मारूँगा और
रेवड़ की भेड़ें तितर बितर हो जायेंगी।'

जकर्याह 13:7

[32]पर फिर से जी उठने के बाद मैं तुमसे पहले ही गलील चला जाऊँगा।"

[33]पतरस ने उत्तर दिया, "चाहे सब तुझ में से विश्वास खो दें किन्तु मैं कभी नहीं खोऊँगा।"

[34]यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य कहता हूँ आज इसी रात मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार मुझे नकार चुकेगा।"

[35]तब पतरस ने उससे कहा, "यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े तो भी तुझे मैं कभी नहीं नकारूँगा।"

बाकी सब शिष्यों ने भी यही कहा।

यीशु की एकान्त प्रार्थना

[36]फिर यीशु उनके साथ उस स्थान पर आया जो गतसमने कहलाता था। और उसने अपने शिष्यों से कहा, "जब तक मैं वहाँ जाऊँ और प्रार्थना करूँ, तुम यहीं बैठो।" [37]फिर यीशु पतरस और जब्दी के दो बेटों को अपने साथ ले गया। और दुख तथा व्याकुलता अनुभव करने लगा। [38]फिर उसने उनसे कहा, "मेरा मन बहुत दुःखी है, जैसे मेरे प्राण निकल जायेंगे। तुम मेरे साथ यहीं ठहरो और सावधान रहो।"

[39]फिर थोड़ा आगे बढ़ने के बाद वह धरती पर झुक कर प्रार्थना करने लगा। उसने कहा, "हे मेरे परम पिता, यदि हो सके तो यातना का यह प्याला मुझसे टल जाये। फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं बल्कि जैसा तू चाहता है वैसा ही कर। [40]फिर वह अपने शिष्यों के पास गया और उन्हें सोता पाया। वह पतरस से बोला, 'सो तुम लोग मेरे साथ एक घड़ी भी नहीं जाग सके। [41]जागते रहो और प्रार्थना करो ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो। तुम्हारा मन तो वही करना चाहता है जो उचित है किन्तु, तुम्हारा शरीर दुर्बल है।"

[42]एक बार फिर उसने जाकर प्रार्थना की और कहा, "हे मेरे परम पिता, यदि यातना का यह प्याला मेरे पिये बिना टल नहीं सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।"

[43]तब वह आया और उन्हें फिर सोते पाया। वे अपनी आँखें खोले नहीं रख सके। [44]सो वह उन्हें छोड़ कर फिर गया और तीसरी बार भी पहले की तरह उन ही शब्दों में प्रार्थना की।

[45]फिर यीशु अपने शिष्यों के पास गया और उनसे पूछा, "क्या तुम अब भी आराम से सो रहे हो? सुनो, समय आ चुका है, जब मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों सौंपा जाने वाला है। [46]उठो, आओ चलें। देखो मुझे पकड़वाने वाला यह रहा।"

यीशु को बंदी बनाना

[47]यीशु जब बोल ही रहा था, यहूदा जो बारह शिष्यों में से एक था, आया। उसके साथ तलवारों और लाठियों से लैस प्रमुख याजकों और यहूदी नेताओं की भेजी एक बड़ी भीड़ भी थी। [48]यहूदा ने जो उसे पकड़वाने वाला था, उन्हें एक संकेत देते हुए कहा कि जिस किसी को मैं चूमूँ, वही यीशु है, उसे पकड़ लो, [49]फिर वह यीशु के पास गया और बोला, "हे नबी।" और बस उसने यीशु को चूम लिया।

[50]यीशु ने उससे कहा, "मित्र जिस काम के लिए तू आया है, उसे कर।" फिर भीड़ के लोगों ने पास जा कर यीशु को दबोच कर बंदी बना लिया। [51]फिर जो लोग यीशु के साथ थे, उनमें से एक ने तलवार खींच ली और

वार करके महा याजक के दास का कान उड़ा दिया।

[52]तब यीशु न उससे कहा, "अपनी तलवार को म्यान में रखो। जो तलवार चलाते हैं वे तलवार से ही मारे जायेंगे। [53]क्या तुम नहीं सोचते कि मैं अपने परम पिता को बुला सकता हूँ और वह तुरंत स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं से भी अधिक मेरे पास भेज देगा? [54]किन्तु यदि मैं ऐसा करूँ तो शास्त्रों की लिखी यह कैसे पूरी होगी कि सब कुछ ऐसे ही होना है?"

[55]उसी समय यीशु ने भीड़ से कहा, "तुम तलवारों, लाठियों समेत मुझे पकड़ने ऐसे क्यों आये हो जैसे किसी चोर को पकड़ने आते हैं? मैं हर दिन मंदिर में बैठा उपदेश दिया करता था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा। [56]किन्तु यह सब कुछ घटा ताकि भविष्यवक्ताओं की लिखी पूरी हो।" फिर उसके सभी शिष्य उसे छोड़ कर भाग खड़े हुए।

यहूदी नेताओं के सामने यीशु की पेशी

[57]जिन्होंने यीशु को पकड़ा था, वे उसे कैफ़ा नामक महा याजक के सामने ले गये। वहाँ यहूदी धर्मशास्त्री और बुज़ुर्ग यहूदी नेता भी इकट्ठे हुए। [58]पतरस उससे दूर-दूर रहते उसके पीछे पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक चला गया। और फिर नतीजा देखने वहाँ पहरेदारों के साथ बैठ गया। [59]महा याजक समूची यहूदी महासभा समेत यीशु को मृत्यु दण्ड देने के लिए उसके विरोध में कोई अभियोग ढूँढने का यत्न कर रहे थे। [60]पर ढूँढ नहीं पाये। यद्यपि बहुत से झूठे गवाहों ने आगे बढ़ कर झूठ बोले। अंत में दो व्यक्ति आगे आये [61]और बोले, "इसने कहा था कि मैं परमेश्वर के मंदिर को नष्ट कर सकता हूँ और तीन दिन में उसे फिर बना सकता हूँ।"

[62]फिर महा याजक ने खड़े हो कर यीशु से पूछा, "क्या उत्तर में तुझे कुछ नहीं कहना कि ये लोग तेरे विरोध में यह क्या गवाही दे रहे हैं?" [63]किन्तु यीशु चुप रहा। फिर महायाजक ने उससे पूछा, "मैं तुझे साक्षात् परमेश्वर की शपथ देता हूँ, हमें बता क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है?"

[64]यीशु ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ। किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम मनुष्य के पुत्र को उस परम शक्तिशाली की दाहिनी ओर बैठे और स्वर्ग के बादलों पर आते शीघ्र ही देखोगे।"

[65]महायाजक यह सुनकर इतना क्रोधित हुआ कि वह अपने कपड़े फाड़ते हुए बोला, "इसने जो बातें कही हैं वे परमेश्वर की निन्दा में जाती हैं। अब हमें और गवाह नहीं चाहियें। तुम सब ने परमेश्वर के विरोध में कहते, इसे सुना है। [66]तुम लोग क्या सोचते हो?"

उत्तर में वे बोले, "यह अपराधी है। इसे मर जाना चाहिये।"

[67]फिर उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसे घूँसे मारे। कुछ ने थप्पड़ मारे और कहा, [68]"अरे मसीह! भविष्यवाणी कर कि वह कौन है जिसने तुझे मारा?"

पतरस का यीशु को नकारना

[69]पतरस अभी नीचे आँगन में ही बाहर बैठा था कि एक दासी उसके पास आयी और बोली, "तू भी तो उसी गलीली यीशु के साथ था।"

[70]किन्तु सब के सामने पतरस मुकर गया। उसने कहा, "मुझे पता नहीं तू क्या कह रही है।"

[71]फिर वह ड्योढ़ी तक गया ही था कि एक दूसरी स्त्री ने उसे देखा और जो लोग वहाँ थे, उनसे बोली, "यह व्यक्ति यीशु नासरी के साथ था।"

[72]एक बार फिर पतरस ने इन्कार किया और कसम खाते हुए कहा, "मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।"

[73]थोड़ी देर बाद वहाँ खड़े लोग पतरस के पास गये और उससे बोले, "तेरी बोली साफ बता रही है कि तू असल में उन्हीं में से एक है।"

[74]तब पतरस अपने को धिक्कारने और कसमें खाने लगा, "मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।" तभी मुर्गे ने बाँग दी। [75]तभी पतरस को वह याद हो आया जो यीशु ने उससे कहा था, "मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार मुझे नकारेगा।" तब पतरस बाहर चला गया और फूट फूट कर रो पड़ा।

यीशु की पिलातुस के आगे पेशगी

27 अलख सुबह सभी प्रमुख याजकों और यहूदी बुज़ुर्ग नेताओं ने यीशु को मरवा डालने के लिए षड्यन्त्र रचा। [2]फिर वे उसे बाँध कर ले गये और राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया।

यहूदा की आत्महत्या

[3]यीशु को पकड़वाने वाले यहूदा ने जब देखा कि यीशु को दोषी ठहराया गया है, तो वह बहुत पछताया और उसने प्रमुख याजकों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं को चाँदी के वे तीस सिक्के लौटा दिये। [4]उसने कहा, "मैंने एक निरपराध व्यक्ति को मार डालने के लिए पकड़वा कर पाप किया है।"

इस पर उन लोगों ने कहा, "हमें क्या! यह तेरा अपना मामला है।"

[5]इस पर यहूदा चाँदी के उन सिक्कों को मंदिर के भीतर फेंक कर चला गया और फिर बाहर जाकर अपने को फाँसी लगा ली।

[6]प्रमुख याजकों ने वे सिक्के उठा लिए और कहा, "हमारे नियम के अनुसार इस धन को मंदिर के कोष में रखना उचित नहीं है क्योंकि इसका इस्तेमाल किसी को मरवाने के लिए किया गया था।" [7]इसलिए उन्होंने निर्णय करके उस पैसे से यरुशलेम में बाहर से आने वाले लोगों के मर जाने पर गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल लिया। [8]इसीलिये आज तक वह खेत 'लहू का खेत' के नाम से जाना जाता है। [9]इस प्रकार परमेश्वर का, भविष्यवक्ता यर्मियाह के द्वारा कहा यह वचन पूरा हुआ:

"उन्होंने चाँदी के तीस सिक्के लिए, वह रकम जिसे इस्राएल के लोगों ने उसके लिये देना तय किया था। [10]और प्रभु द्वारा मुझे दिये गये आदेश के अनुसार उससे कुम्हार का खेत खरीदा।"*

पिलातुस का यीशु से प्रश्न

[11]इसी बीच यीशु राज्यपाल के सामने पेश हुआ। राज्यपाल ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

यीशु ने कहा, "हाँ, मैं हूँ।"

[12]दूसरी तरफ जब प्रमुख याजक और बुज़ुर्ग यहूदी नेता उस पर दोष लगा रहे थे तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया। [13]तब पिलातुस ने उससे पूछा, "क्या तू नहीं सुन रहा है कि वे तुझ पर कितने आरोप लगा रहे हैं?"

[14]किन्तु यीशु ने पिलातुस को किसी भी आरोप का कोई उत्तर नहीं दिया। पिलातुस को इस पर बहुत अचरज हुआ।

यीशु को छोड़ने में पिलातुस असफल

[15]फसह पर्व के अवसर पर राज्यपाल का रिवाज़ था कि वह किसी भी एक क़ैदी को, जिसे भीड़ चाहती थी, उनके लिए छोड़ दिया करता था। [16]उसी समय बरअब्बा नाम का एक बदनाम कैदी वहाँ था। [17]सो जब भीड़ आ जुटी तो पिलातुस ने उनसे पूछा, "तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिये किसे छोड़ूँ, बरअब्बा को या उस यीशु को, जो मसीह कहलाता है?" [18]पिलातुस जानता था कि उन्होंने उसे डाह के कारण पकड़वाया है।

[19]पिलातुस जब न्याय के आसन पर बैठा था तो उसकी पत्नी ने उसके पास एक संदेश भेजा: "उस सीधे सच्चे मनुष्य के साथ कुछ मत कर बैठना। मैंने उसके बारे में एक सपना देखा है जिससे आज सारे दिन मैं बेचैन रही।"

[20]किन्तु प्रमुख याजकों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं ने भीड़ को बहकाया, फुसलाया कि वह पिलातुस से बरअब्बा को छोड़ने की और यीशु को मरवा डालने की माँग करें। [21]उत्तर में राज्यपाल ने उनसे पूछा, "मुझ से दोनों कैदियों में से तुम अपने लिये किसे छुड़वाना चाहते हो?"

उन्होनें उत्तर दिया, "बरअब्बा को!"

[22]तब पितालुस ने उनसे पूछा, "तो मैं, जो मसीह कहलाता है उस यीशु का क्या करूँ?"

वे सब बोले, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!"

[23]पिलातुस ने पूछा, "क्यों, उसने क्या अपराध किया है?"

किन्तु वे तो और अधिक चिल्लाये, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो।"

[24]पिलातुस ने देखा कि अब कोई लाभ नहीं। बल्कि दंगा भड़कने को है। सो उसने थोड़ा पानी लिया और भीड़ के सामने अपने हाथ धोये, वह बोला, "इस व्यक्ति के खून से मेरा कोई सरोकार नहीं है। यह तुम्हारा मामला है।"

[25]उत्तर में सब लोगों ने कहा, "इसकी मौत की जवाबदेही हम और हमारे बच्चे स्वीकार करते हैं।"

[26]तब पिलातुस ने उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवा कर क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

उन्होंने … खरीदा जकर्य 11:12−13; यिर्म. 32:6−9

यीशु का उपहास

[27]फिर राज्यपाल के सिपाही यीशु को राज्यपाल निवास के भीतर ले गये। वहाँ उसके चारों तरफ सिपाहियों की पूरी पलटन इकट्ठी हो गयी। [28]उन्होंने उसके कपड़े उतार दिये और चमकीले लाल रंग के वस्त्र पहना कर [29]काँटों से बना एक ताज उसके सिर पर रख दिया। उसके दाहिने हाथ में एक सरकंडा थमा दिया और उसके सामने अपने घुटनों पर झुक कर उसकी हँसी उड़ाते हुए बोले, "यहूदियों का राजा अमर रहे।" [30]फिर उन्होंने उसके मुँह पर थूका, छड़ी छीन ली और उसके सिर पर मारने लगे। [31]जब वे उसकी हँसी उड़ा चुके तो उसकी पोशाक उतार ली और उसे उसके अपने कपड़े पहना कर क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

[32]जब वे बाहर जा ही रहे थे तो उन्हें कुरैन का रहने वाला शिमौन नाम का एक व्यक्ति मिला। उन्होंने उस पर दबाव डाला कि वह यीशु का क्रूस उठा कर चले। [33]फिर जब वे गुलगुता (जिसका अर्थ है खोपड़ी का स्थान।) नामक स्थान पर पहुँचे तो [34]उन्होंने यीशु को पित्त मिली दाखरस पीने को दी। किन्तु जब यीशु ने उसे चखा तो पीने से मना कर दिया। [35]सो उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया और उसके वस्त्र पासा फेंक कर आपस में बाँट लिये। [36]इसके बाद वे वहाँ बैठ कर उस पर पहरा देने लगे। [37]उन्होंने उसका अभियोग पत्र लिखकर उसके सिर पर टाँग दिया, "यह यहूदियों का राजा यीशु है।" [38]इसी समय उसके साथ दो डाकू भी क्रूस पर चढ़ाये जा रहे थे एक उसके दाहिने ओर और दूसरा बायीं ओर। [39]पास से जाते हुए लोग अपना सिर मटकाते हुए उसका अपमान कर रहे थे। [40]वे कह रहे थे, "अरे मंदिर को गिरा कर तीन दिन में उसे फिर से बनाने वाले, अपने को तो बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस से नीचे उतर आ।"

[41]ऐसे ही महायाजक धर्मशास्त्रियों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं के साथ उसकी यह कहकर हँसी उड़ा रहे थे: [42]"दूसरों का उद्धार करने वाला यह अपना उद्धार नहीं कर सकता! यह इस्राएल का राजा है। यह क्रूस से अभी नीचे उतरे तो हम इसे मान लें। [43]यह परमेश्वर में विश्वास करता है। सो यदि परमेश्वर चाहे तो अब इसे बचा ले। आखिर यह तो कहता भी था 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।'" [44]उन लुटेरों ने भी जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, उसकी ऐसे ही हँसी उड़ाई।

यीशु की मृत्यु

[45]फिर समूची धरती पर दोपहर से तीन बजे तक अन्धेरा छाया रहा। [46]कोई तीन बजे के आस-पास यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा "एली, एली, लमा शबकतनी।" अर्थात्, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों बिसरा दिया?"

[47]वहाँ खड़े लोगों में से कुछ यह सुनकर कहने लगे यह एलिय्याह को पुकार रहा है।

[48]फिर तुरंत उनमें से एक व्यक्ति दौड़ कर सिरके में डुबोया हुआ स्पंज एक छड़ी पर टाँग कर लाया और उसे यीशु को चूसने के लिए दिया। [49]किन्तु दूसरे लोग कहते रहे कि छोड़ो देखते हैं कि एलिय्याह इसे बचाने आता है या नहीं?

[50]यीशु ने फिर एक बार ऊँचे स्वर में पुकार कर प्राण त्याग दिये। [51]उसी समय मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टूकड़े हो गया। धरती काँप उठी। चट्टानें फट पड़ीं। [52]यहाँ तक कि कब्रें खुल गयीं और परमेश्वर के मरे हुए बंदों के बहुत से शरीर जी उठे। [53]वे कब्रों से निकल आये और यीशु के जी उठने के बाद पवित्र नगर में जाकर बहुतों को दिखाई दिये।

[54]रोमी सेना नायक और यीशु पर पहरा दे रहे लोग भूचाल और वैसी ही दूसरी घटनाओं को देख कर डर गये थे। वे बोले, "यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था।"

[55]वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ खड़ी थीं। जो दूर से देख रही थीं। वे यीशु की देखभाल के लिए गलील से उसके पीछे आ रही थीं। [56]उनमें मरियम मगदलीनी, याकूब और योसेस की माता मरियम तथा जब्दी के बेटों की माँ थी।

यीशु का दफ़न

[57]साँझ के समय अरिमतियाह नगर से यूसुफ़ नाम का एक धनवान आया। वह खुद भी यीशु का अनुयायी हो गया था। यूसुफ पिलातुस के पास गया और उससे यीशु का शव माँगा। [58]तब पिलातुस ने आज्ञा दी कि शव उसे दे दिया जाये। [59]यूसुफ ने शव ले लिया और उसे एक नयी चादर में लपेट कर [60]अपनी निजी नयी कब्र में रख दिया जिसे उसने चट्टान में काट कर बनवाया था। फिर

उसने चट्टान के दरवाजे पर एक बड़ा सा पत्थर लुढ़काया और चला गया। [61]मरियम मगदलीनी और दूसरी स्त्री मरियम वहाँ कब्र के सामने बैठी थीं।

यीशु की कब्र पर पहरा

[62]अगले दिन जब शुक्रवार बीत गया तो प्रमुख याजक और फ़रीसी पिलातुस से मिले। [63]उन्होंने कहा, "महोदय हमें याद है कि उस छली ने, जब वह जीवित था, कहा था कि तीसरे दिन मैं फिर जी उठूँगा। [64]तो आज्ञा दीजिये कि तीसरे दिन तक कब्र पर चौकसी रखी जाये। जिससे ऐसा न हो कि उसके शिष्य आकर उसका शव चुरा ले जायें और लोगों से कहें वह मरे हुओं में से जी उठा। यह दूसरा छलावा पहले छलावे से भी बुरा होगा।"

[65]पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम पहरे के लिये सिपाही ले सकते हो। जाओ जैसी चौकसी कर सकते हो, करो।" [66]तब वे चले गये और उस पत्थर पर मुहर लगा कर और पहरेदारों को वहाँ बैठा कर कब्र को सुरक्षित कर दिया।

यीशु का फिर से जी उठना

28 सब्त के बाद जब रविवार की सुबह पौ फट रही थी, मरियम मगदलीनी और दूसरी स्त्री मरियम कब्र की जाँच करने आईं।

[2]क्योंकि स्वर्ग से प्रभु का एक स्वर्गदूत वहाँ उतरा था, इसलिए उस समय एक बहुत बड़ा भूचाल आया। स्वर्गदूत ने वहाँ आकर पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। [3]उसका रूप आकाश की बिजली की तरह चमचमा रहा था और उसके वस्त्र बर्फ़ के जैसे उजले थे। [4]वे सिपाही जो कब्र का पहरा दे रहे थे, डर के मारे काँपने लगे और ऐसे हो गये जैसे मर गये हों।

[5]तब स्वर्गदूत बोला और उसने उन स्त्रियों से कहा, "डरो मत, मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को खोज रही हो जिसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया था। [6]वह यहाँ नहीं है। जैसा कि उसने कहा था, वह मौत के बाद फिर जिला दिया गया है। आओ, उस स्थान को देखो, जहाँ वह लेटा था। [7]और फिर तुरंत जाओ और उसके शिष्यों से कहो, 'वह मरे हुओं में से जिला दिया गया है और अब वह तुमसे पहले गलील को जा रहा है तुम उसे वहीं देखोगे' जो मैंने तुमसे कहा है, उसे याद रखो।"

[8]उन स्त्रियों ने तुरंत ही क़ब्र को छोड़ दिया। वे भय और आनन्द से भर उठीं थीं। फिर यीशु के शिष्यों को यह बताने के लिये वे दौड़ पड़ीं। [9]अचानक यीशु उनसे मिला और बोला, "अरे तुम!" वे उसके पास आयीं, उन्होंने उसके चरण पकड़ लिये और उसकी उपासना की। [10]तब यीशु ने उनसे कहा, "डरो मत, मेरे बंधुओं के पास जाओ, और उनसे कहो कि वे गलील के लिए रवाना हो जायें, वहीं वे मुझे देखेंगे"

पहरेदारों द्वारा यहूदी नेताओं को घटना की सूचना

[11]अभी वे स्त्रियाँ अपने रास्ते में ही थीं कि कुछ सिपाही जो पहरेदारों में थे, नगर में गए और जो कुछ घटा था, उस सब की सूचना प्रमुख याजकों को जा सुनाई। [12]सो उन्होंने बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं से मिल कर एक योजना बनायी। उन्होंने सिपाहियों को बहुत सा धन देकर [13]कहा कि वे लोगों से कहें कि यीशु के शिष्य रात को आये और जब हम सो रहे थे उसकी लाश को चुरा ले गये। [14]यदि तुम्हारी यह बात राज्यपाल तक पहुँचती है तो हम उसे समझा लेंगे और तुम पर कोई आँच नहीं आने देंगे। [15]पहरेदारों ने धन लेकर वैसा ही किया, जैसा उन्हें बताया गया था। और यह बात यहूदियों में आज तक इसी रूप में फैली हुई है।

यीशु की अपने शिष्यों से बातचीत

[16]फिर ग्यारहों शिष्य गलील में उस पहाड़ी पर पहुँचे जहाँ जाने को उनसे यीशु ने कहा था। [17]जब उन्होंने यीशु को देखा तो उसकी उपासना की। यद्यपि कुछ के मन में संदेह था। [18]फिर यीशु ने उनके पास जाकर कहा, "स्वर्ग में और पृथ्वी पर सभी अधिकार मुझे सौंपे गये हैं। [19]सो, जाओ और सभी देशों के लोगों को मेरा अनुयायी बनाओ। तुम्हें यह काम परम पिता के नाम में, पुत्र के नाम में और पवित्र आत्मा के नाम में उन्हें बपतिस्मा दे कर पूरा करना है। [20]वे सभी आदेश जो मैंने तुम्हें दिये हैं, उन्हें उन पर चलना सिखाओ। और याद रखो इस सृष्टि के अंत तक मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा।"

मरकुस

यीशु के आने की तैयारी

1 यह परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के शुभ संदेश का प्रारम्भ है। [2]भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक में लिखा है कि:

> "सुन! मैं अपने दूत को
> तुझसे पहले भेज रहा हूँ।
> वह तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा।"
>
> *मलाकी 3:1*

> [3] "जंगल में किसी पुकारने वाले का शब्द
> सुनाई दे रहा है:
> 'प्रभु के लिये मार्ग तैयार करो।
> और उसके लिये राहें सीधी बनाओ।'"
>
> *यशायाह 40:3*

[4]यूहन्ना लोगों को जंगल में बपतिस्मा* देता आया था। उसने लोगों से बपतिस्मा लेने को कहा कि वे अपने मन फिराव को दिखा सकें और उनके पापों की क्षमा हो। [5]फिर समूचे यहूदिया देश के और यरुशलेम के लोग उसके पास गये और उस ने यर्दन नदी में उन्हें बपतिस्मा दिया। क्योंकि उन्होंने अपने पाप मान लिये थे। [6]यूहन्ना ऊँट के बालों के बने वस्त्र पहनता था और कमर पर चमड़े की पेटी बाँधे रहता था। वह टिड्डियाँ और जंगली शहद खाया करता था। [7]वह इस बात का प्रचार करता था: "मेरे बाद मुझसे अधिक शक्तिशाली एक व्यक्ति आ रहा है। मैं इस योग्य भी नहीं हूँ कि झुक कर उसके जूतों के बन्ध तक खोल सकूँ। [8]मैं तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह पवित्र–आत्मा से तुम्हें बपतिस्मा देगा।"

यीशु का बपतिस्मा और उसकी परीक्षा

[9]उन दिनों ऐसा हुआ कि यीशु नासरत से गलील आया और यर्दन नदी में उसने यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। [10]जैसे ही वह जल से बाहर आया उसने आकाश को खुले हुए देखा। और देखा कि एक कबूतर के रूप में आत्मा उस पर उतर रहा है। [11]फिर आकाशवाणी हुई: "तू मेरा पुत्र है, जिसे मैं प्यार करता हूँ। मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हूँ।"

[12]फिर आत्मा ने उसे तत्काल बियाबान जंगल में भेज दिया। [13]जहाँ चालीस दिन तक शैतान उसकी परीक्षा लेता रहा। वह जंगली जानवरों के साथ रहा और स्वर्गदूतों उसकी सेवा करते रहे।

यीशु द्वारा कुछ शिष्यों का चयन

[14]यूहन्ना को बंदीगृह में डाले जाने के बाद यीशु गलील आया। और परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने लगा। [15]उसने कहा, "समय पूरा हो चुका है। परमेश्वर का राज्य आ रहा है। मन फिराओ और सुसमाचार में विश्वास करो।"

[16]जब यीशु गलील झील के किनारे से हो कर जा रहा था उसने शमौन और शमौन के भाई अन्द्रियास को देखा। क्योंकि वे मछुए थे इसलिए झील में जाल डाल रहे थे। [17]यीशु ने उनसे कहा, "आओ, और मेरे पीछे हो लो। मैं तुम्हें लोगों को एकत्र करने वाले बनाऊँगा।" [18]उन्होंने तुरंत अपने जाल छोड़ दिये और उसके पीछे चल पड़े।

[19]फिर थोड़ा आगे बढ़ कर यीशु ने जब्दी के बेटे याकूब और उसके भाई युहन्ना को देखा। वे अपनी नाव में जालों की मरम्मत कर रहे थे। [20]उसने उन्हें तुरंत बुलाया। सो वे अपने पिता जब्दी को मज़दूरों के साथ नाव में छोड़ कर उसके पीछे चल पड़े।

बपतिस्मा यह यूनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है पानी में गोता देना। यह एक धार्मिक प्रक्रिया है।

दुष्टात्मा के चंगुल से छुटकारा

21और कफरनहूम पहुँचे। फिर अगले सब्त के दिन यीशु प्रार्थनासभा में गया और लोगों को उपदेश देने लगा। 22उसके उपदेशों पर लोग चकित हुए। क्योंकि वह उन्हें किसी शास्त्र-ज्ञाता की तरह नहीं बल्कि एक अधिकारी की तरह उपदेश दे रहा था। 23उनकी यहूदी प्रार्थना सभा में संयोग से एक ऐसा व्यक्ति भी था जिसमें कोई दुष्टात्मा समायी थी। वह चिल्ला कर बोला, 24"नासरत के यीशु! तुझे हम से क्या चाहिये? क्या तू हमारा नाश करने आया है? मैं जानता हूँ तू कौन है, तू परमेश्वर का पवित्र जन है!"

25इस पर यीशु ने झिड़कते हुए उससे कहा, "चुप रह! और इसमें से बाहर निकल!" 26दुष्टात्मा ने उस व्यक्ति को झिंझोड़ा और वह ज़ोर से चिल्लाती हुई उसमें से निकल गयी।

27हर व्यक्ति चकित हो उठा। इतना चकित, कि सब आपस में एक दूसरे से पूछने लगे, "यह क्या है? अधिकार के साथ दिया गया एक नया उपदेश! यह दुष्टात्माओं को भी आज्ञा देता है और वे उसे मानती हैं।" 28इस तरह गलील और उसके आसपास हर कहीं यीशु का नाम जल्दी ही फैल गया।

यीशु द्वारा अनेक व्यक्तियों का चंगा किया जाना

29फिर वे प्रार्थना सभागार से निकल कर याकूब और यूहन्ना के साथ सीधे शमौन और अन्द्रियास के घर पहुँचे। 30शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी इसलिए उन्होंने यीशु को तत्काल उसके बारे में बताया। 31यीशु उसके पास गया और हाथ पकड़ कर उसे उठाया। तुरन्त उसका ज्वर उतर गया और वह उनकी सेवा करने लगी।

32सूरज डूबने के बाद जब शाम हुई तो वहाँ के लोग सभी रोगियों और दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को उसके पास लाये। 33सारा नगर उसके द्वार पर उमड़ पड़ा। 34उसने तरह तरह के रोगों से पीड़ित बहुत से लोगों को चंगा किया और बहुत से लोगों को दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया। क्योंकि वे उसे जानती थीं, इसलिये उसने उन्हें बोलने नहीं दिया।

लोगों को सुसमाचार सुनाने की तैयारी

35अँधेरा रहते, बड़ी सुबह वह घर छोड़ कर किसी एकांत स्थान पर चला गया जहाँ उसने प्रार्थना की। 36किन्तु शमौन और उसके साथी उसे ढूँढने निकले 37और उसे पा कर बोले, "हर व्यक्ति तेरी खोज में है!"

38इस पर यीशु ने उनसे कहा, "हमें दूसरे नगरों में जाना ही चाहिये ताकि वहाँ भी उपदेश दिया जा सके क्योंकि मैं इसी के लिए आया हूँ।" 39इस तरह वह गलील में सब कहीं उनकी प्रार्थना सभाओं में उपदेश देता और दुष्टात्माओं को निकालता गया।

कोढ़ से छुटकारा

40फिर एक कोढ़ी उसके पास आया। उसने उसके सामने झुक कर उससे विनती की और कहा, "यदि तू चाहे, तो तू मुझे ठीक कर सकता है।"

41उसे उस पर दया आयी और उसने अपना हाथ फैला कर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम अच्छे हो जाओ!" 42और उसे तत्काल कोढ़ से छुटकारा मिल गया। वह पूरी तरह शुद्ध हो गया।

43यीशु ने उसे कड़ी चेतावनी दी और तुरन्त भेज दिया। 44यीशु ने उससे कहा, "देख इसके बारे में तू किसी को कुछ नहीं बताना। किन्तु याजक के पास जा और उसे अपने आप को दिखा। और मूसा के नियम के अनुसार अपने ठीक होने की भेंट अर्पित कर ताकि हर किसी को तेरे ठीक होने की साक्षी मिले।" 45परन्तु वह बाहर जाकर खुले तौर पर इस बारे में लोगों से बातचीत करके इसका प्रचार करने लगा। इससे यीशु फिर कभी नगर में खुले तौर पर नहीं जा सका। वह एकांत स्थानों में रहने लगा किन्तु लोग हर कहीं से उसके पास आते रहे।

लकवे के मारे का चंगा किया जाना

2 कुछ दिनों बाद यीशु वापस कफरनहूम आया तो यह समाचार फैल गया कि वह घर में है। 2फिर वहाँ इतने लोग इकट्ठे हुए कि दरवाज़े के बाहर भी तिल धरने तक को जगह न बची। जब यीशु लोगों को उपदेश दे रहा था 3तो कुछ लोग एक लकवे के मारे को चार आदमियों से उठवाकर वहाँ लाये। 4किन्तु भीड़ के कारण वे उसे यीशु के पास नहीं ले जा सके। इसलिये जहाँ यीशु था उसके ऊपर की छत का कुछ भाग उन्होंने हटाया और जब वे खोद कर छत में एक खुला सूराख बना चुके तो उन्होंने जिस बिस्तर पर लकवे का मारा लेटा हुआ था

उसे नीचे लटका दिया। [5]उनके इतने गहरे विश्वास को देख कर यीशु ने लकवे के मारे से कहा, "हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।"

[6]उस समय वहाँ कुछ धर्मशास्त्री भी बैठे थे। वे अपने अपने मन में सोच रहे थे। [7] "यह व्यक्ति इस तरह बात क्यों करता है? यह तो परमेश्वर का अपमान करता है। परमेश्वर के सिवा, और कौन पापों को क्षमा कर सकता है?"

[8]यीशु ने अपनी आत्मा में तुरंत यह जान लिया कि वे मन ही मन क्या सोच रहे हैं। वह उनसे बोला, "तुम अपने मन में ये बातें क्यों सोच रहे हो? [9]सरल क्या है: इस लकवे के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए या यह कहना कि उठ, अपना बिस्तर उठा और चल दे? [10]किन्तु मैं तुम्हें प्रमाणित करूँगा कि इस पृथ्वी पर मनुष्य के पुत्र को यह अधिकार है कि वह पापों को क्षमा करे।" फिर यीशु ने उस लकवे के मारे से कहा, [11]"मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और अपने घर जा।" [12]सो वह खड़ा हुआ, तुरंत अपना बिस्तर उठाया और उन सब के देखते देखते ही बाहर चला गया। यह देखकर वे अचरज में पड़ गये। उन्होंने परमेश्वर की प्रशंसा की और बोले, "हमने ऐसी बातें कभी नहीं देखीं!"

[13]एक बार फिर यीशु झील के किनारे गया तो समूची भीड़ उसके पीछे हो ली। यीशु ने उन्हें उपदेश दिया। [14]चलते हुए उसने हलफई के बेटे लेवी को चुंगी की चौकी पर बैठे देख कर उससे कहा, "मेरे पीछे आ" सो लेवी खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया।

[15]इसके बाद जब यीशु अपने चेलों या शिष्यों समेत उसके घर भोजन कर रहा था तो बहुत से कर वसूलने वाले और पापी लोग भी उसके साथ भोजन कर रहे थे। इनमें बहुत से वे लोग थे जो उसके पीछे पीछे चले आये थे। [16]जब फ़रीसियों के कुछ धर्मशास्त्रियों ने यह देखा कि यीशु पापियों और कर वसूलने वालों के साथ भोजन कर रहा है तो उन्होंने उसके अनुयायिओं से कहा, "यीशु कर वसूलने वालों और पापियों के साथ भोजन क्यों करता है?"

[17]यीशु ने यह सुनकर उनसे कहा, "चंगे-भले लोगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं होती, रोगियों को ही वैद्य की आवश्यकता होती है। मैं धर्मियों को नहीं बल्कि पापियों को बुलाने आया हूँ।"

यीशु अन्य धर्मगुरुओं से भिन्न है

[18]यूहन्ना के शिष्य और फरीसियों के शिष्य उपवास किया करते थे। कुछ लोग यीशु के पास आये और उससे पूछने लगे, "यूहन्ना और फ़रीसियों के चेले उपवास क्यों रखते हैं? और तेरे शिष्य उपवास क्यों नहीं रखते?"

[19]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "निश्चय ही बराती जब तक दूल्हे के साथ हैं, उनसे उपवास रखने की उम्मीद नहीं की जाती। जब तक दूल्हा उनके साथ है, वे उपवास नहीं रखते। [20]किन्तु वे दिन आयेंगे जब दूल्हा उनसे अलग कर दिया जायेगा और तब, उस समय, वे उपवास करेंगे।

[21]"कोई भी किसी पुराने वस्त्र में अनसिकुड़े कोरे कपड़े का पैबन्द नहीं लगाता। और यदि लगाता है तो कोरे कपड़े का पैबन्द पुराने कपड़े को भी ले बैठता है और फटे कपड़े की खोंच और भी बढ़ जाती है। [22]और इसी तरह पुरानी मशक में कोई भी नयी दाखरस नहीं भरता। और यदि कोई ऐसा करे तो नयी दाखरस पुरानी मशक को फाड़ देगी और मशक के साथ साथ दाखरस भी बर्बाद हो जायेगी। इसीलिये नयी दाखरस नयी मशकों में ही भरी जाती है।"

यहूदियों द्वारा यीशु और उसके शिष्यों की आलोचना

[23]ऐसा हुआ कि सब्त के दिन यीशु खेतों से होता हुआ जा रहा था। जाते जाते उसके शिष्य खेतों से अनाज की बालें तोड़ने लगे। [24]इस पर फरीसी यीशु से कहने लगे, "देख सब्त के दिन वे ऐसा क्यों कर रहे हैं जो उचित नही है?"

[25]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुमने कभी दाऊद के विषय में नहीं पढ़ा कि उसने क्या किया था जब वह और उसके साथी संकट में थे और उन्हें भूख लगी थी? [26]क्या तुमने नहीं पढ़ा कि, जब अबियातार महा याजक था तब, वह परमेश्वर के मन्दिर में कैसे गया और परमेश्वर को भेंट में चढ़ाई रोटियाँ उसने कैसे खाई (जिनका खाना महायाजक को छोड़ कर किसी को भी उचित नहीं है) कुछ रोटियाँ उसने उनको भी दी थीं जो उसके साथ थे?"

[27]यीशु ने उनसे कहा, "सब्त मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के लिये। [28]इसलिये मनुष्य का पुत्र सब्त का भी प्रभु है।"

सूखे हाथ वाले को चंगा करना

3 एक बार फिर यीशु यहूदी प्रार्थनालय में गया। वहाँ एक व्यक्ति था जिसका एक हाथ सूख चुका था। [2]कुछ लोग घात लगाये थे कि वह उसे ठीक करता है कि नहीं, ताकि उन्हें उस पर दोष लगाने का कोई कारण मिल जाये। [3]यीशु ने सूखे हाथ वाले व्यक्ति से कहा, "लोगों के सामने खड़ा हो जा।"

[4]और लोगों से पूछ, "सब्त के दिन किसी का भला करना उचित है या किसी को हानि पहुँचाना? किसी का जीवन बचाना ठीक है या किसी को मारना?" किन्तु वे सब चुप रहे।

[5]फिर यीशु ने क्रोध में भर कर चारों ओर देखा और उनके मन की कठोरता से वह बहुत दुखी हुआ। फिर उसने उस मनुष्य से कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ा।" उसने हाथ बढ़ाया, उसका हाथ पहले जैसा ठीक हो गया। [6]तब फरीसी वहाँ से चले गये और हेरोदियों के साथ मिल कर यीशु के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगे कि वे उसकी हत्या कैसे कर सकते हैं!

बहुतों का यीशु के पीछे हो लेना

[7]यीशु अपने शिष्यों के साथ झील गलील पर चला गया। उसके पीछे एक बहुत बड़ी भीड़ भी हो ली जिसमें गलील, [8]यहूदिया, यरुशलेम, इदूमिया और यर्दन नदी के पार के तथा सूर और सैदा के लोग भी थे। लोगों की यह भीड़ उन कामों के बारे में सुनकर उसके पास आयी थी जिन्हें वह करता था। [9]भीड़ के कारण उसने अपने शिष्यों से कहा कि वे उसके लिये एक छोटी नाव तैयार रखें ताकि भीड़ उसे दबा न ले। [10]यीशु ने बहुत से लोगों को चंगा किया था इसलिये बहुत से वे लोग जो रोगी थे, उसे छूने के लिये भीड़ में ढकेलते रास्ता बनाते उमड़े चले आ रहे थे। [11]जब कभी दुष्टात्माएँ यीशु को देखतीं वे उसके सामने नीचे गिर पड़तीं और चिल्ला कर कहतीं "तू परमेश्वर का पुत्र है!" [12]किन्तु वह उन्हें चेतावनी देता कि वे सावधान रहें और इसका प्रचार न करें।

यीशु द्वारा अपने बारह प्रेरितों का चयन

[13]फिर यीशु एक पहाड़ पर चला गया और उसने जिनको वह चाहता था, अपने पास बुलाया। वे उसके पास आये। [14]जिनमें से उसने बारह को चुना। और उन्हें प्रेरित की पदवी दी। उसने उन्हें चुना ताकि वे उसके साथ रहें और वह उन्हें उपदेश प्रचार के लिये भेजे [15]और वे दुष्टात्माओं को खदेड़ बाहर निकालने का अधिकार रखें। [16]इस प्रकार उसने बारह पुरुषों की नियुक्ति की। ये थे–शमौन (जिसे उसने पतरस नाम दिया); [17]जब्दी का पुत्र याकूब और याकूब का भाई यूहन्ना (जिनका नाम उसने बूअनर्गिस रखा, जिसका अर्थ है "गर्जन का पुत्र"); [18]अंद्रियास, फिलिप्पुस, बरतुलमै, मत्ती, थोमा, हलफई का पुत्र याकूब, तद्दी और शमौन जिलौती या कनानी [19]तथा यहूदा इस्करियोती जिसने आगे चल कर यीशु को धोखे से पकड़वाया था।

यहूदियों का कथन: यीशु में शैतान का वास है

[20]तब वे सब घर चले गये। जहाँ एक बार फिर इतनी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी कि यीशु और उसके शिष्य खाना तक नहीं खा सके। [21]जब उसके परिवार के लोगों ने यह सुना तो वे उसे लेने चल दिये क्योंकि लोग कह रहे थे कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है।

[22]यरुशलेम से आये धर्मशास्त्री कहते थे, "उसमें बालज़ेबुल यानी शैतान समाया है। वह दुष्टात्माओं के सरदार की शक्ति के कारण ही दुष्टात्माओं को बाहर निकालता है।"

[23]यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया और दुष्टान्तों का प्रयोग करते हुए उनसे कहने लगा, "शैतान, शैतान को कैसे निकाल सकता है? [24]यदि किसी राज्य में अपने ही विरुद्ध फूट पड़ जाये तो वह राज्य स्थिर नहीं रह सकेगा। [25]और यदि किसी घर में अपने ही भीतर फूट पड़ जाये तो वह घर बच नहीं पायेगा। [26]इसलिए यदि शैतान स्वयं अपना विरोध करता है और फूट डालता है तो वह बना नहीं रह सकेगा और उसका अंत हो जायेगा। [27]किसी शक्तिशाली के मकान में घुस कर उसके माल–असबाब को लूट कर निश्चय ही कोई तब तक नहीं ले जा सकता जब तक सबसे पहले वह उस शक्तिशाली व्यक्ति को बाँध न दे। ऐसा करके ही वह उसके घर को लूट सकता है। [28]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, लोगों को हर बात की क्षमा मिल सकती है, उनके पाप और जो निन्दा–बुरा भला कहना–उन्होंने किये हैं, वे भी क्षमा किये जा सकते हैं। [29]किन्तु पवित्र आत्मा को जो कोई भी अपमानित करेगा, उसे क्षमा कभी नहीं मिलेगी। वह अनन्त पाप का भागी है।"

[30]यीशु ने यह इसलिये कहा था कि कुछ लोग कह रहे थे इसमें कोई दुष्ट आत्मा समाई है।

यीशु के अनुयायी ही उसका सच्चा परिवार

[31]तभी उसकी माँ और भाई वहाँ आये और बाहर खड़े हो कर उसे भीतर से बुलवाया। [32]यीशु के चारों ओर भीड़ बैठी थी। उन्होंने उससे कहा, "देख तेरी माता, तेरे भाई और तेरी बहनें तुझे बाहर बुला रहे हैं।"

[33]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरी माँ और मेरे भाई कौन हैं?" [34]उसे घेर कर चारों ओर बैठे लोगों पर उसने दृष्टि डाली और कहा, "ये है मेरी माँ और मेरे भाई! [35]जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वही मेरा भाई, बहन और माँ है।"

बीज बोने का दृष्टान्त

4 उसने झील के किनारे उपदेश देना फिर शुरू कर दिया। वहाँ उसके चारों ओर बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। इसलिये वह झील में खड़ी एक नाव पर जा बैठा। और सभी लोग झील के किनारे धरती पर खड़े थे। [2]उसने दृष्टांत देकर उन्हें बहुत सी बातें सिखाईं। अपने उपदेश में उसने कहा, [3]"सुनो! एक बार एक किसान बीज बोने के लिए निकला। [4]तब ऐसा हुआ कि जब उसने बीज बोये तो कुछ मार्ग के किनारे गिरे। पक्षी आये और उन्हे चुग गए। [5]दूसरे कुछ बीज पथरीली धरती पर गिरे जहाँ बहुत मिट्टी नहीं थी। वे गहरी मिट्टी न होने के कारण जल्दी ही उग आये [6]और जब सूरज उगा तो वे झुलस गये और जड़ न पकड़ पाने के कारण मुरझा गये। [7]कुछ और बीज काँटों में जा गिरे। काटें बड़े हुए और उन्होंने उन्हें दबा लिया जिससे उनमें दाने नहीं पड़े। [8]कुछ बीज अच्छी धरती पर गिरे। वे उगे, उनकी बढ़वार हुई और उन्होंने अनाज पैदा किया। तीस गुणी, साठ गुणी और यहाँ तक कि सौ गुणी अधिक फसल उतरी।"

[9]फिर उसने कहा, "जिसके पास सुनने को कान हैं, वह सुने!"

यीशु का कथन: वह दृष्टान्तों का प्रयोग क्यों करता है

[10]फिर जब वह अकेला था तो उसके बारह शिष्यों समेत जो लोग उसके आसपास थे, उन्होंने उससे दृष्टान्तों के बारे में पूछा।

[11]यीशु ने उन्हें बताया, "तुम्हें तो परमेश्वर के राज्य का भेद दे दिया गया है किन्तु उनके लिये जो बाहर के हैं, सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं:

[12] 'ताकि वे देखें और देखते ही रहें,
पर उन्हें कुछ सूझे नहीं,
सुनें और सुनते ही रहें
पर कुछ समझें नहीं।
ऐसा न हो जाए कि वे फिरें
और क्षमा किए जाएँ।'"

यशायाह 6:9–10

बीज बोने के दृष्टान्त की व्याख्या

[13]उसने उनसे कहा, "यदि तुम इस दृष्टान्त को नहीं समझते तो किसी भी और दृष्टान्त को कैसे समझोगे? [14]किसान जो बोता है, वह वचन है। [15]कुछ लोग किनारे का वह मार्ग हैं जहाँ वचन बोया जाता है। जब वे वचन को सुनते हैं तो तत्काल शैतान आता है और जो वचन रूपी बीज उनमें बोया गया है, उसे उठा ले जाता है [16]और कुछ लोग ऐसे हैं जैसे पथरीली धरती में बोया बीज। जब वे वचन को सुनते हैं तो उसे तुरन्त आनन्द के साथ अपना लेते हैं [17]किन्तु उनके भीतर कोई जड़ नहीं होती, इसलिए वे कुछ ही समय ठहर पाते हैं और बाद में जब वचन के कारण उन पर विपत्ति आती है और उन्हें यातनाएँ दी जाती हैं, तो वे तत्काल अपना विश्वास खो बैठते हैं। [18]और दूसरे लोग ऐसे हैं जैसे काँटों में बोये गये बीज। ये वे हैं जो वचन को सुनते हैं [19]किन्तु इस जीवन की चिंताएँ, धन दौलत का लालच और दूसरी वस्तुओं को पाने की इच्छा उनमें आती है और वचन को दबा लेती है। जिससे उस पर फल नहीं लग पाता। [20]और कुछ लोग उस बीज के समान हैं जो अच्छी धरती पर बोया गया है। ये वे हैं जो वचन को सुनते हैं और ग्रहण करते हैं। इन पर फल लगता है कहीं तीस गुणा, कहीं साठ गुणा तो कहीं सौ गुणे से भी अधिक।"

जो तुम्हारे पास है, उसका उपयोग करो

[21]फिर उसने उनसे कहा, "क्या किसी दिये को कभी इसलिये लाया जाता है कि उसे किसी बर्तन के या बिस्तर के नीचे रख दिया जाये? क्या इसे दीवट के ऊपर रखने

के लिये नहीं लाया जाता? [22]क्योंकि कुछ भी ऐसा गुप्त नहीं है जो प्रकट नहीं होगा और कोई रहस्य ऐसा नहीं है जो प्रकाश में नहीं आयेगा। [23]यदि किसी के पास कान हैं तो वह सुने!"

[24]फिर उसने उनसे कहा, "जो कुछ तुम सुनते हो उस पर ध्यानपूर्वक विचार करो, जिस नाप से तुम दूसरों को नापते हो, उसी नाप से तुम भी नापे जाओगे। बल्कि तुम्हारे लिये उसमें कुछ और भी जोड़ दिया जायेगा। [25]जिसके पास है उसे और भी दिया जायेगा और जिस किसी के पास नहीं है, उसके पास जो कुछ है, वह भी ले लिया जायेगा।"

बीज का दृष्टान्त

[26]फिर उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति खेत में बीज फैलाये। [27]रात को सोये और दिन को जागे और फिर बीज में अंकुर निकलें, वे बढ़ें और पता ही न चले कि यह सब कैसे हो रहा है। [28]धरती अपने आप अनाज उपजाती है। पहले अंकुर फिर बाल और फिर बालों में भरपूर अनाज। [29]जब अनाज पक जाता है तो वह तुरन्त उसे हंसिये से काटता है क्योंकि फसल काटने का समय आ जाता है।"

राई के दाने का दृष्टान्त

[30]फिर उसने कहा, "हम कैसे बतायें कि परमेश्वर का राज्य कैसा है? उसकी व्याख्या करने के लिये हम किस उदाहरण का प्रयोग करें? [31]वह राई के दाने जैसा है जो जब धरती में बोया जाता है तो बीजों में सबसे छोटा होता है। [32]किन्तु जब वह रोप दिया जाता है तो बढ़ कर भूमि के सभी पौधों से बड़ा हो जाता है। उसकी शाखाएँ इतनी बड़ी हो जाती हैं कि हवा में उड़ती चिड़ियाएँ उसकी छाया में घोंसला बना सकती हैं।"

[33]ऐसे ही और बहुत से दृष्टान्त देकर वह उन्हें वचन सुनाया करता था। वह उन्हें, जितना वे समझ सकते थे, बताता था। [34]बिना किसी दृष्टान्त का प्रयोग किये वह उनसे कुछ भी नहीं कहता था। किन्तु जब अपने शिष्यों के साथ वह अकेला होता तो सब कुछ का अर्थ बता कर उन्हें समझाता।

बवंडर को शांत करना

[35]उस दिन जब शाम हुई, यीशु ने उनसे कहा, "चलो, उस पार चलें।" [36]इसलिये, वे भीड़ को छोड़ कर, जैसे वह था वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले। उसके साथ और भी नावें थीं। [37]एक तेज बवंडर उठा। लहरें नाव पर पछाड़ें मार रही थीं। नाव पानी से भर जाने को थी। [38]किन्तु यीशु नाव के पिछले भाग में तकिया लगाये सो रहा था। उन्होंने उसे जगाया और उससे कहा, "हे गुरु, क्या तुझे ध्यान नहीं है कि हम डूब रहे हैं?"

[39]यीशु खड़ा हुआ। उसने हवा को डाँटा और लहरों से कहा, "शान्त हो जाओ! थम जाओ!" तभी बवंडर थम गया और चारों तरफ असीम शांति छा गयी।

[40]फिर यीशु ने उनसे कहा, "तुम डरते क्यों हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं है?"

[41]किन्तु वे बहुत डर गये थे। फिर उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा, "आखिर यह है कौन कि हवा और पानी भी इसकी आज्ञा मानते हैं?"

दुष्टात्माओं से छुटकारे

5 फिर वे झील के उस पार गिरासेनियों के देश पहुँचे। [2]यीशु जब नाव से बाहर आया तो कब्रों में से निकल कर तत्काल एक ऐसा व्यक्ति जिस में दुष्टात्मा का प्रवेश था, उससे मिलने आया। [3]वह कब्रों के बीच रहा करता था। उसे कोई नहीं बाँध सकता था, यहाँ तक कि ज़ंजीरों से भी नहीं। [4]क्योंकि उसे जब जब हथकड़ी और बेड़ियाँ डाली जातीं, वह उन्हें तोड़ देता। ज़ंजीरों के टुकड़े-टुकड़े कर देता और बेड़ियों को चकनाचूर। कोई भी उसे काबू नहीं कर पाता था। [5]क़ब्रों और पहाड़ियों में रात-दिन लगातार, वह चीखता-पुकारता अपने को पत्थरों से घायल करता रहता था।

[6]उसने जब दूर से यीशु को देखा, वह उसके पास दौड़ा आया और उसके सामने प्रणाम करता हुआ गिर पड़ा। [7]और ऊँचे स्वर में पुकारते हुए बोला, "सबसे महान परमेश्वर के पुत्र, हे यीशु! तू मुझसे क्या चाहता है? तुझे परमेश्वर की शपथ, मेरी विनती है तू मुझे यातना मत दे।" [8]क्योंकि यीशु उससे कह रहा था, " ओ दुष्टात्मा, इस मनुष्य में से निकल आ।"

[9]तब यीशु ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

और उसने उसे बताया, "मेरा नाम लीजन अर्थात् सेना

है क्योंकि हम बहुत से हैं।" [10]उसने यीशु से बार बार विनती की कि वह उन्हें उस क्षेत्र से न निकाले।

[11]वहीं पहाड़ी पर उस समय सुअरों का एक बड़ा सा रेवड़ चर रहा था। [12]दुष्टात्माओं ने उससे विनती की, "हमें उन सुअरों में भेज दो ताकि हम उन में समा जायें।" [13]और उसने उन्हें अनुमति दे दी। फिर दुष्टात्माएँ उस व्यक्ति में से निकल कर सुअरों में समा गयीं, और वह रेवड़, जिसमें कोई दो हज़ार सुअर थे, ढलवाँ किनारे से नीचे की तरफ लुढ़कते–पुढ़कते दौड़ता हुआ झील में जा गिरा। और फिर वहीं डूब मरा।

[14]फिर रेवड़ के रखवालों ने जो भाग खड़े हुए थे, शहर और गाँव में जा कर यह समाचार सुनाया। तब जो कुछ हुआ था, उसे देखने लोग वहाँ आये। [15]वे यीशु के पास पहुँचे और देखा कि वह व्यक्ति जिस पर दुष्टात्माएँ सवार थीं, कपड़े पहने पूरी तरह सचेत वहाँ बैठा है; और यह वही था जिस में दुष्टात्माओं की पूरी सेना समाई थी, वे डर गये। [16]जिन्होंने वह घटना देखी थी, लोगों को उसका ब्योरा देते हुए बताया कि जिसमें दुष्टात्माएँ समाई थीं, उसके साथ और सुअरों के साथ क्या बीती। [17]तब लोग उससे विनती करने लगे कि वह उनके यहाँ से चला जाये।

[18]और फिर जब यीशु नाव पर चढ़ रहा था तभी जिस व्यक्ति में दुष्टात्माएँ थीं, यीशु से विनती करने लगा कि वह उसे भी अपने साथ ले ले।

[19]किन्तु यीशु ने उसे अपने साथ चलने की अनुमति नही दी। और उससे कहा, "अपने ही लोगों के बीच घर चला जा और उन्हें वह सब बता जो प्रभु ने तेरे लिये किया है। और उन्हें यह भी बता कि प्रभु ने दया कैसे की।" [20]फिर वह चला गया और दिकपुलिस के लोगों को बताने लगा कि यीशु ने उसके लिये कितना बड़ा काम किया है। इससे सभी लोग चकित हुए।

एक मृत लड़की और रोगी स्त्री

[21]यीशु जब फिर परले पार गया तो उसके चारों तरफ एक बड़ी भीड़ जमा हो गयी। वह झील के किनारे था। तभी [22]यहूदी धर्मसभा भवन का एक अधिकारी जिसका नाम याईर था वहाँ आया और जब उसने यीशु को देखा तो वह उसके पैरों पर गिर कर [23]आग्रह के साथ विनती करता हुआ बोला, "मेरी नन्ही सी बच्ची मरने को पड़ी है, मेरी विनती है कि तू मेरे साथ चल और अपना हाथ उसके सिर पर रख जिससे वह अच्छी हो कर जीवित रहे।"

[24]तब यीशु उसके साथ चल पड़ा और एक बड़ी भीड़ भी उसके साथ हो ली। जिससे वह दबा जा रहा था।

[25]वहीं एक स्त्री थी जिसे बारह बरस से लगातार खून जा रहा था। [26]वह अनेक चिकित्सकों से इलाज कराते कराते बहुत दुःखी हो चुकी थी। उसके पास जो कुछ था, सब खर्च कर चुकी थी, पर उसकी हालत में कोई भी सुधार नहीं आ रहा था, बल्कि और बिगड़ती जा रही थी। [27]जब उसने यीशु के बारे में सुना तो वह भीड़ में उसके पीछे आयी और उसका वस्त्र छू लिया। [28]वह मन ही मन कह रही थी, "यदि मैं तनिक भी इसका वस्त्र छू पाऊँ तो ठीक हो जाऊँगी।" [29]और फिर जहाँ से खून जा रहा था, वह स्त्रोत तुरंत ही सूख गया। उसे अपने शरीर में ऐसी अनुभूति हुई जैसे उसका रोग अच्छा हो गया हो। [30]यीशु ने भी तत्काल अनुभव किया जैसे उसकी शक्ति उसमें से बाहर निकली हो। वह भीड़ में पीछे मुड़ा और पूछा, "मेरे वस्त्र किसने छुए?"

[31]तब उसके शिष्यों ने उससे कहा, "तू देख रहा है भीड़ तुझे चारों तरफ़ से दबाये जा रही है और तू पूछता है 'मुझे किसने छुआ?'"

[32]किन्तु वह चारों तरफ देखता ही रहा कि ऐसा किसने किया। [33]फिर वह स्त्री, यह जानते हुए कि उसको क्या हुआ है, भय से काँपती हुई सामने आई और उसके चरणों पर गिर कर सब सच सच कह डाला। [34]फिर यीशु ने उससे कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे बचाया है। चैन से जा और अपनी बीमारी से बची रह।"

[35]वह अभी बोल ही रहा था कि यहूदी धर्मसभा भवन के अधिकारी के घर से कुछ लोग आये और उससे बोले, "तेरी बेटी मर गयी। अब तू गुरु को नाहक कष्ट क्यों देता है?"

[36]किन्तु यीशु ने, उन्होंने जो कहा था सुना और यहूदी धर्मसभा भवन के अधिकारी से वह बोला, "डर मत, बस विश्वास कर।"

[37]फिर वह सब को छोड़, केवल पतरस, याकूब, और याकूब के भाई यूहन्ना को साथ लेकर [38]यहूदी धर्मसभा भवन के अधिकारी के घर गया। उसने देखा कि वहाँ खलबली मची है; और लोग ऊँचे स्वर में रोते हुए विलाप

कर रहे हैं। [39]वह भीतर गया और उनसे बोला, "यह रोना बिलखना क्यों है? बच्ची मरी नहीं है; वह सो रही है।" [40]इस पर उन्होंने उसकी हँसी उड़ाई। फिर उसने सब लोगों को बाहर भेज दिया और बच्ची के पिता, माता और जो उसके साथ थे, केवल उन्हें साथ रखा। [41]उसने बच्ची का हाथ पकड़ा और कहा, "तलीता, कूमी!" (अर्थात् "छोटी बच्ची, मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ी हो जा!") [42]फिर छोटी बच्ची तत्काल खड़ी हो गयी और इधर उधर चलने फिरने लगी। (वह लड़की बारह साल की थी)। लोग तुरन्त आश्चर्य से भर उठे। [43]यीशु ने उन्हें बड़े आदेश दिये कि किसी को भी इसके बारे में पता न चले। फिर उसने उन लोगों से कहा कि वे उस बच्ची को खाने को कुछ दें।

यीशु का अपने नगर जाना

6 फिर यीशु उस स्थान को छोड़ कर अपने नगर को चल दिया। उसके शिष्य भी उसके साथ थे। [2]जब सब्त का दिन आया, उसने प्रार्थना सभागार में उपदेश देना आरम्भ किया। उसे सुनकर बहुत से लोग आश्चर्यचकित हुए। वे बोले, "इसको ये बातें कहाँ से मिली हैं? यह कैसी बुद्धिमानी है जो इसको दी गयी है? यह ऐसे आश्चर्य कर्म कैसे करता है? [3]क्या यह वही बढ़ई नहीं है जो मरियम का बेटा है, और क्या यह याकूब, योसेस, यहूदा और शमौन का भाई नही है? क्या ये जो हमारे साथ रहती हैं इसकी बहनें नही हैं?" सो उन्हें उसे स्वीकार करने में समस्या हो रही थी।

[4]यीशु ने तब उनसे कहा, "किसी नबी का अपने निजी देश, संबंधियों और परिवार को छोड़ और कहीं अनादर नहीं होता।" [5]वहाँ वह कोई आश्चर्य कर्म भी नहीं कर सकता। सिवाय इसके कि वह कुछ रोगियों पर हाथ रख कर उन्हें चंगा कर दे। [6]यीशु को उनके अविश्वास पर बहुत अचरज हुआ।

फिर वह गाँवों में लोगों को उपदेश देता घूमने लगा। [7]उसने सभी बारह शिष्यों को अपने पास बुलाया। और दो दो कर के वह उन्हें बाहर भेजने लगा। उसने उन्हें दुष्टात्माओं पर अधिकार दिया। [8]और यह निर्देश दिया, "आप अपनी यात्रा के लिए लाठी के सिवा साथ कुछ न लें। न रोटी, न बिस्तर, न पटुके में पैसे। [9]आप चप्पल तो पहन सकते है किन्तु कोई अतिरिक्त कुर्ती नहीं। [10]जिस किसी घर में तुम जाओ, वहाँ उस समय तक ठहरो जब तक उस नगर को छोड़ो। [11]और यदि किसी स्थान पर तुम्हारा स्वागत न हो और वहाँ के लोग तुम्हें न सुनें, तो उसे छोड़ दो। और उनके विरोध में साक्षी देने के लिये अपने पैरों से वहाँ की धूल झाड़ दो।"

[12]फिर वे वहाँ से चले गये। और उन्होंने उपदेश दिया कि लोगों, मन फिराओ! [13]उन्होनें बहुत सी दुष्टात्माओं को बाहर निकाला और बहुत से रोगियों को जैतून के तेल से अभिषेक करते हुए चंगा किया।

हेरोदेस का विचार: यीशु यहून्ना है

[14]राजा हेरोदेस* ने इस बारे में सुना; क्योंकि यीशु का यश सब कहीं फैल चुका था। कुछ लोग कह रहे थे, "बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा है और इसीलिये उसमें अद्‌भुत शक्तियाँ काम कर रही हैं।"

[15]दूसरे कह रहे थे, "वह एलिय्याह* है।"

कुछ और कह रहे थे, "यह नबी है या प्राचीन काल के नबियों जैसा कोई एक।"

[16]पर जब हेरोदेस ने यह सुना तो वह बोला, "यूहन्ना जिसका सिर मैंने कटवाया था, वही जी उठा है!"

बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना की हत्या

[17]क्योंकि हेरोदेस ने स्वयं ही यूहन्ना को बंदी बनाने और जेल में डालने की आज्ञा दी थी। उसने अपने भाई फिलिप की पत्नी हेरोदियास के कारण, जिससे उसने विवाह कर लिया था, ऐसा किया। [18]क्योंकि यूहन्ना हेरोदेस से कहा करता था कि यह उचित नहीं है कि तुमने अपने भाई की पत्नी से विवाह कर लिया है। [19]इस पर हेरोदियास उससे बैर रखने लगी थी। वह चाहती थी कि उसे मार डाला जाये पर मार नहीं पाती थी। [20]क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना से डरता था। हेरोदेस जानता था कि यूहन्ना एक सच्चा और पवित्र पुरुष है, इसीलिये वह इसकी रक्षा करता था। हेरोदेस जब यूहन्ना की बातें सुनता था तो वह बहुत घबराता था, फिर भी उसे उसकी बातें सुनना बहुत भाता था।

हेरोदेस अर्थात् हेरोद अंतिपस, गलील और पेरि का राजा तथा हेरोद महान का पुत्र।

एलिय्याह एक ऐसा व्यक्ति जो यीशु मसीह से सैंकड़ों साल पहले हुआ था और परमेश्वर के बारे में लोगों को बताता था।

[21]संयोग से फिर वह समय आया जब हेरोदेस ने ऊँचे अधिकारियों, सेना के नायकों और गलील के बड़े लोगों को अपने जन्म दिन पर एक जेवनार दी। [22]हेरोदियास की बेटी ने भीतर आकर जो नृत्य किया, उससे उसने जेवनार में आये मेहमानों और हेरोदेस को बहुत प्रसन्न किया।

इस पर राजा हेरोदेस ने लड़की से कहा, "माँग, जो कुछ तुझे चाहिये। मैं तुझे दूँगा।" [23]फिर उसने उससे शपथपूर्वक कहा, "मेरे आधे राज्य तक जो कुछ तू माँगेगी, मैं तुझे दूँगा।"

[24]इस पर वह बाहर निकल कर अपनी माँ के पास आई और उससे पूछा, "मुझे क्या माँगना चाहिये?"

फिर माँ ने बताया, "बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का सिर।"

[25]तब वह तत्काल दौड़ कर राजा के पास भीतर आयी और कहा, "मैं चाहती हूँ कि तू मुझे बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का सिर तुरन्त थाली में रख कर दे।"

[26]इस पर राजा बहुत दुखी हुआ, पर अपनी शपथ और अपनी जेवनार के मेहमानों के कारण वह उस लड़की को मना करना नहीं चाहता था। [27]इसलिये राजा ने उसका सिर ले आने की आज्ञा देकर तुरंत एक जल्लाद भेज दिया। फिर उसने जेल में जाकर उसका सिर काट कर [28]और उसे थाली में रख कर उस लड़की को दिया। और लड़की ने उसे अपनी माँ को दे दिया। [29]जब यूहन्ना के शिष्यों ने इस विषय में सुना तो वे आकर उसका शव ले गये और उसे एक कब्र में रख दिया।

यीशु का पाँच हज़ार से अधिक को भोजन कराना

[30]फिर दिव्य संदेश का प्रचार करने वाले प्रेरितों ने यीशु के पास इकट्ठे होकर जो कुछ उन्होंने किया था और सिखाया था, सब उसे बताया। [31]फिर यीशु ने उनसे कहा, "तुम लोग मेरे साथ किसी एकांत स्थान पर चलो और थोड़ा आराम करो" क्योंकि वहाँ बहुत लोगों का आना जाना लगा हुआ था और उन्हें खाने तक का मौका नहीं मिल पाता था। [32]इसलिये वे अकेले ही एक नाव में बैठ कर किसी एकांत स्थान को चले गये। [33]बहुत से लोगों ने उन्हें जाते देखा और पहचान लिया कि वे कौन थे। इसलिये वे सारे नगरों से धरती के रास्ते चल पड़े और उनसे पहले ही वहाँ जा पहुँचे। [34]जब यीशु नाव से बाहर निकला तो उसने एक बड़ी भीड़ देखी। वह उनके लिए बहुत दुखी हुआ क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों जैसे थे। सो वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा।

[35]तब तक बहुत शाम हो चुकी थी। इसलिये उसके शिष्य उसके पास आये और बोले, "यह एक सुनसान जगह है और शाम भी बहुत हो चुकी है। [36]लोगों को आसपास के गाँवों और बस्तियों में जाने दो ताकि वे अपने लिए कुछ खाने को मोल ले सकें।"

[37]किन्तु उसने उत्तर दिया, "उन्हें खाने को तुम दो।"

तब उन्होंने उससे कहा, "क्या हम जायें और दो सौ दीनार की रोटियाँ मोल ले कर उन्हें खाने को दें?"

[38]उसने उनसे कहा, "जाओ और देखो, तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?"

पता करके उन्होंने कहा, "हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।"

[39]फिर उसने आज्ञा दी, "हरी घास पर सब को पंगत में बैठा दो।" [40]तब वे सौ-सौ और पचास-पचास की पंगतों में बैठ गये। [41]और उसने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ उठा कर स्वर्ग की ओर देखते हुए धन्यवाद दिया और 'रोटियाँ तोड़ कर लोगों को परोसने के लिए, अपने शिष्यों को दीं। और उसने उन दो मछलियों को भी उन सब लोगों में बाँट दिया। [42]सब ने छक कर खाया और तृप्त हुए। [43]और फिर उन्होंने बची हुई रोटियों और मछलियों से भर कर, बारह टोकरियाँ उठाई। [44]जिन लोगों ने रोटियाँ खाई, उनमे केवल पुरुषों की ही संख्या पाँच हज़ार थी।

यीशु का पानी पर चलना

[45]फिर उसने अपने चेलों को तुरंत नाव पर चढ़ाया ताकि जब तक वह भीड़ को बिदा करे, वे उससे पहले ही परले पार बैतसैदा चले जायें। [46]उन्हें विदा करके, प्रार्थना करने के लिये, वह पहाड़ी पर चला गया। [47]और जब शाम हुई तो नाव झील के बीचों-बीच थी और वह अकेला धरती पर था। [48]उसने देखा कि उन्हें नाव खेना भारी पड़ रहा था। क्योंकि हवा उनके विरुद्ध थी। लगभग रात के चौथे पहर वह झील पर चलते हुए उनके पास आया। वह उनके पास से निकलने को ही था। [49]उन्होंने उसे झील पर चलते देख सोचा कि वह कोई भूत है। और उनकी चीख निकल गयी [50]क्योंकि सभी ने उसे देखा था

और वे सहम गये थे। तुरंत उसने उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "साहस रखो, यह मैं हूँ! डरो मत!" [51]फिर वह उनके साथ नाव पर चढ़ गया और हवा थम गयी। इससे वे बहुत चकित हुए। [52]वे रोटियों के आश्चर्य कर्म के विषय में समझ नहीं पाये थे। उनकी बुद्धि जड़ हो गयी थी।

[53]झील पार करके वे गन्नेसरत पहुँचे। उन्होंने नाव बाँध दी। [54]जब वे नाव से उतर कर बाहर आये तो लोग यीशु को पहचान गये। [55]फिर वे बीमारों को खाटों पर डाले समूचे क्षेत्र में जहाँ कहीं भी, उन्होंने सुना कि वह है, उन्हें लिये दौड़ते फिरे। [56]वह गावों में, नगरों में या बस्तियों में, जहाँ कहीं भी जाता, लोग अपने बीमारों को बाज़ारों में रख देते और उससे विनती करते कि वह अपने वस्त्र का बस कोई सिरा ही उन्हें छू लेने दे। और जो भी उसे छू पाये, सब चंगे हो गये।

मनुष्य के नियमों से परमेश्वर का विधान महान है

7 तब फरीसी और कुछ धर्मशास्त्री जो यरुशलेम से आये थे, यीशु के आसपास एकत्र हुए। [2]उन्होंने देखा कि उसके कुछ शिष्य बिना हाथ धोये भोजन कर रहे हैं। [3]क्योंकि अपने पुरखों की रीति पर चलते हुए फरीसी और दूसरे यहूदी जब तक सावधानी के साथ पूरी तरह अपने हाथ नहीं धो लेते भोजन नहीं करते। [4]ऐसे ही बाज़ार से लाये खाने को वे बिना धोये नहीं खाते। ऐसी ही और भी अनेक रूढ़ियाँ है, जिनका वे पालन करते हैं। जैसे कटोरों, कलसों, ताँबे के बर्तनों को माँजना, धोना आदि।

[5]इसलिये फरीसियों और धर्मशास्त्रियों ने यीशु से पूछा–"तुम्हारे शिष्य पुरखों की परम्परा का पालन क्यों नहीं करते? बल्कि अपना खाना बिना हाथ धोये ही खा लेते हैं।"

[6]यीशु ने उनसे कहा, "यशायाह ने तुम जैसे कपटियों के बारे में ठीक ही भविष्यवाणी की थी। जैसा कि लिखा है:

'ये मेरा आदर केवल होठों से करते हैं,
पर इनके मन मुझसे सदा दूर हैं।
[7] मुझको इनकी उपासना अर्पित है बिना काम की;
और ये मेरी व्यर्थ उपासना करते हैं।
क्योंकि ये लोगों को मनुज के बनाये सिद्धान्त
और नियम कह करके सिखाते हैं।'

यशायाह 29:13

[8]तुमने परमेश्वर का आदेश उठाकर एक तरफ रख दिया है और तुम मनुष्यों की परम्परा का सहारा ले रहे हो।"

[9]उसने उनसे कहा: "तुम परमेश्वर के आदेशों को टालने में बहुत चतुर हो गये हो ताकि तुम अपनी रूढ़ियों की स्थापना कर सको! [10]उदाहरण के लिये मूसा ने कहा, 'अपने माता–पिता का आदर कर' और 'जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, उसे निश्चय ही मार डाला जाये।' [11]पर तुम कहते हो कि यदि कोई व्यक्ति अपने माता–पिता से कहता है कि मेरी जिस किसी वस्तु से तुम्हें लाभ पहुँच सकता था, मैंने परमेश्वर को समर्पित कर दी है।' [12]तो तुम उसके माता–पिता के लिये कुछ भी करना समाप्त कर देने की अनुमति देते हो। [13]इस तरह तुम अपने बनाये रीति–रिवाजों से परमेश्वर के वचन को टाल देते हो। ऐसी ही और भी बहुत सी बातें तुम लोग करते हो।"

[14]यीशु ने भीड़ को फिर अपने पास बुलाया और कहा, "हर कोई मेरी बात सुने और समझे। [15]ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो बाहर से मनुष्य के भीतर जा कर उसे अशुद्ध करे, बल्कि जो वस्तुएँ मनुष्य के भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध कर सकती हैं।" [16][यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।]*

[17]फिर जब भीड़ को छोड़ कर वह घर के भीतर गया तो उसके शिष्यों ने उससे इस दृष्टान्त के बारे में पूछा। [18]तब उसने उनसे कहा, "क्या तुम भी कुछ नही समझे? क्या तुम नहीं देखते कि कोई भी वस्तु जो किसी व्यक्ति में बाहर से भीतर जाती है, वह उसे दूषित नहीं कर सकती [19]क्योंकि वह उसके ह्रदय में नहीं, पेट में जाती है और फिर पखाने से होकर बाहर निकल जाती है।" (ऐसा कहकर उसने खाने की सभी वस्तुओं को शुद्ध कहा।)

[20]फिर उसने कहा, "मनुष्य के भीतर से जो निकलता है, वही उसे अशुद्ध बनाता है [21]क्योंकि मनुष्य के हृदय के भीतर से ही बुरे विचार और अनैतिक कार्य, चोरी, हत्या, [22]व्यभिचार, लालच, दुष्टता, छल–कपट, अभद्रता, ईर्ष्या, चुगलखोरी, अहंकार और मूर्खता बाहर आते हैं।

पद 16 "कुछ यूनानी प्रतियों में पद 16 जोड़ा गया है।"

[23]ये सब बुरी बातें भीतर से आती हैं और व्यक्ति को अशुद्ध बना देती हैं।"

ग़ैर यहूदी महिला को सहायता

[24]फिर यीशु ने वह स्थान छोड़ दिया और सूर के आस-पास के प्रदेश को चल पड़ा। वहाँ वह एक घर में गया। वह नहीं चाहता था कि किसी को भी उसके आने का पता चले। किन्तु वह अपनी उपस्थिति को छुपा नहीं सका। [25]वास्तव में एक स्त्री जिसकी लड़की में दुष्ट आत्मा का निवास था, यीशु के बारे में सुन कर तत्काल उसके पास आयी और उसके पैरों में गिर पड़ी। [26]यह स्त्री यूनानी थी और सीरिया के फिनीकी में पैदा हुई थी। उसने अपनी बेटी में से दुष्टात्मा को निकालने के लिये यीशु से प्रार्थना की।

[27]यीशु ने उससे कहा, "पहले बच्चों को तृप्त हो लेने दे क्योंकि बच्चों की रोटी लेकर उसे कुत्तों के आगे फेंक देना ठीक नहीं है।"

[28]स्त्री ने उससे उत्तर में कहा, "प्रभु, कुत्ते भी तो मेज़ के नीचे बच्चों के खाते समय गिरे चूरचार को खा लेते हैं।"

[29]फिर यीशु ने उससे कहा, "इस उत्तर के कारण, तू चैन से अपने घर जा सकती है। दुष्टात्मा तेरी बेटी को छोड़ बाहर जा चुकी है।"

[30]सो वह घर चल दी और अपनी बच्ची को खाट पर सोते पाया। तब तक दुष्टात्मा उससे निकल चुकी थी।

बहरा गूँगा सुनने-बोलने लगा

[31]फिर वह सूर के इलाके से वापस आ गया और दिकपुलिस यानी दस-नगर के रास्ते सिदोन होता हुआ झील गलील पहुँचा। [32]वहाँ कुछ लोग यीशु के पास एक व्यक्ति को लाये जो बहरा था और ठीक से बोल भी नहीं पाता था। लोगों ने यीशु से प्रार्थना की कि वह उस पर अपना हाथ रख दे।

[33]यीशु उसे भीड़ से दूर एक तरफ़ ले गया। यीशु ने अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डालीं और फिर उसने थूका और उस व्यक्ति की जीभ छुई। [34]फिर स्वर्ग की ओर ऊपर देख कर गहरी साँस भरते हुए उससे कहा, "इप्फत्तह!" (अर्थात् "खुल जा!") [35]और उसके कान खुल गए, और उसकी जीभ की गांठ भी खुल गई, और वह साफ साफ बोलने लगा।

[36]फिर यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि वे किसी को कुछ न बतायें। पर उसने लोगों को जितना रोकना चाहा, उन्होंने उसे उतना ही अधिक फैलाया। [37]लोग आश्चर्यचकित होकर कहने लगे, "यीशु जो करता है, भला करता है। यहाँ तक कि वह बहरों को सुनने की शक्ति और गूँगों को बोली देता है।"

चार हज़ार को भोजन

8 उन्हीं दिनों एक दूसरे अवसर पर एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई। उनके पास खाने को कुछ नहीं था। यीशु ने अपने शिष्यों को पास बुलाया और उनसे कहा, [2]"मुझे इन लोगों पर तरस आ रहा है क्योंकि इन लोगों को मेरे साथ तीन दिन हो चुके हैं और उनके पास खाने को कुछ नहीं है। [3]और यदि मैं इन्हें भूखा ही घर भेज देता हूँ तो वे मार्ग में ही ढेर हो जायेंगे। कुछ तो बहुत दूर से आये हैं।"

[4]उसके शिष्यों ने उत्तर दिया, "इस जंगल में इन्हें खिलाने के लिये किसी को पर्याप्त भोजन कहाँ से मिल सकता है?"

[5]फिर यीशु ने उनसे पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?" "सात", उन्होंने उत्तर दिया।

[6]फिर उसने भीड़ को धरती पर नीचे बैठ जाने की आज्ञा दी। और उसने वे सात रोटियाँ लीं, धन्यवाद किया और उन्हें तोड़ कर बाँटने के लिये अपने शिष्यों को दिया। और फिर उन्होंने भीड़ के लोगों में बाँट दिया। [7]उनके पास कुछ थोड़ी मछलियाँ भी थीं, उसने धन्यवाद करके उन्हें भी बाँट देने को कहा। [8]लोगों ने भर पेट भोजन किया। और फिर उन्होंने बचे हुए टुकड़ों को इकट्ठा करके सात टोकरियाँ भरीं। [9]वहाँ कोई चार हज़ार पुरुष रहे होंगे। फिर यीशु ने उन्हें विदा किया [10]और वह तत्काल अपने शिष्यों के साथ नाव में बैठ कर दलमनूता प्रदेश को चला गया।

फ़रीसियों की चाहत : यीशु कुछ अनुचित करे

[11]फिर फरीसी आये और उससे प्रश्न करने लगे, उन्होंने उससे कोई स्वर्गीय आश्चर्य चिह्न प्रकट करने को कहा। उन्होंने यह उसकी परीक्षा लेने के लिये कहा था। [12]तब अपने मन में गहरी आह भरते हुए यीशु ने कहा, "इस पीढ़ी के लोग कोई आश्चर्य-चिन्ह क्यों चाहते हैं?

इन्हें कोई चिन्ह नहीं दिया जायेगा।" [13]फिर वह उन्हें छोड़ कर वापस नाव में आ गया और झील के परले पार चला गया।

यहूदी नेताओं के विरुद्ध यीशु की चेतावनी

[14]यीशु के शिष्य कुछ खाने को लाना भूल गये थे। एक रोटी के सिवाय उनके पास और कुछ नहीं था। [15]यीशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, "सावधान! फरीसियों और हेरोदेस के ख़मीर से बचे रहो।"

[16]"हमारे पास रोटी नहीं हैं," इस पर, वे आपस में सोच विचार करने लगे।

[17]वे क्या कह रहे हैं, यह जानकर यीशु उनसे बोला, "रोटी पास नहीं होने के विषय में तुम क्यों सोच विचार कर रहे हो? क्या तुम अभी भी नहीं समझते बूझते? क्या तुम्हारी बुद्धि इतनी जड़ हो गयी है? [18]तुम्हारी आँखें हैं, क्या तुम देख नहीं सकते? तुम्हारे कान हैं, क्या तुम सुन नहीं सकते? क्या तुम्हें याद नहीं? [19]जब मैंने पाँच हज़ार लोगों के लिये पाँच रोटियों के टुकड़े किये थे और तुमने उन्हें कितनी टोकरियों में बटोरा था?"

"बारह", उन्होंने कहा।

[20]"और जब मैंने चार हज़ार के लिये सात रोटियों के टुकड़े किये थे तो तुमने कितनी टोकरियाँ भर कर उठाई थीं?"

"सात", उन्होंने कहा।

[21]फिर यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम अब भी नहीं समझे?"

अंधे को आँखें

[22]फिर वे बैतसैदा चले आये। वहाँ कुछ लोग यीशु के पास एक अंधे को लाये और उससे प्रार्थना की कि वह उसे छू दे। [23]उसने अंधे व्यक्ति का हाथ पकड़ा और उसे गाँव के बाहर ले गया। उसने उसकी आँखों पर थूका, अपने हाथ उस पर रखे और उससे पूछा, "तुझे कुछ दीखता है?"

[24]ऊपर देखते हुए उसने कहा, "मुझे लोग दीख रहे हैं। वे आसपास चलते पेड़ों जैसे लग रहे हैं।"

[25]तब यीशु ने उसकी आँखों पर जैसे ही फिर अपने हाथ रखे, उसने अपनी आँखें पूरी खोल दीं। उसे ज्योति मिल गयी थी। वह सब कुछ साफ़ साफ़ देख रहा था। [26]फिर यीशु ने उसे घर भेज दिया और कहा, "वह गाँव में न जाये।"

पतरस का कथन: यीशु मसीह है

[27]और फिर यीशु और उसके शिष्य कैसरिया फिलिप्पी के आसपास के गाँवों को चल दिये। रास्ते में यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?"

[28]उन्होंने उत्तर दिया, "बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना पर कुछ लोग एलिय्याह और दूसरे तुझे भविष्यवक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।"

[29]फिर यीशु ने उनसे पूछा, "और तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?"

पतरस ने उसे उत्तर दिया, "तू मसीह है।"

[30]फिर उसने उन्हें चेतावनी दी कि वे उसके बारे में यह किसी से न कहें।

[31]और उसने उन्हें समझाना शुरू किया, "मनुष्य के पुत्र को बहुत सी यातनाएँ उठानी होंगी और बुज़ुर्ग प्रमुख याजक तथा धर्म शास्त्रियों द्वारा वह नकारा जायेगा और निश्चय ही वह मार दिया जायेगा। और फिर तीसरे दिन वह मरे हुओं में से जी उठेगा।" [32]उसने उनको यह साफ़ साफ़ बता दिया। फिर पतरस उसे एक तरफ़ ले गया और झिड़कने लगा। [33]किन्तु यीशु ने पीछे मुड़कर अपने शिष्यों पर दृष्टि डाली और पतरस को फटकारते हुए बोला, "शैतान, मुझसे दूर हो जा! तू परमेश्वर की बातों से सरोकार नहीं रखता, बल्कि मनुष्य की बातों से सरोकार रखता है।"

[34]फिर अपने शिष्यों के साथ भीड़ को उसने अपने पास बुलाया और उनसे कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहता है तो वह अपना सब कुछ त्याग करे और अपना क्रूस उठा कर मेरे पीछे हो ले। [35]क्योंकि जो कोई अपने जीवन को बचाना चाहता है, उसे इसे खोना होगा। और जो कोई मेरे लिये और सुसमाचार के लिये अपना जीवन देगा, उसका जीवन बचेगा। [36]यदि कोई व्यक्ति अपनी आत्मा खोकर सारे जगत् को भी पा लेता है, तो उसका क्या लाभ? [37]क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी वस्तु के बदले में जीवन नही पा सकता। [38]यदि कोई इस व्यभिचारी और पापी पीढ़ी में मेरे नाम और वचन के कारण लजाता है तो मनुष्य का पुत्र भी जब पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने

परम पिता की महिमा सहित आयेगा, तो वह भी उसके लिए लजायेगा।"

9 और फिर उसने उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, यहाँ जो खड़े हैं, उनमें से कुछ ऐसे हैं जो परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य सहित आया देखने से पहले मृत्यु का अनुभव नहीं करेंगे।"

मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु का दर्शन देना

[2]छः दिन बाद यीशु केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना को साथ लेकर, एक ऊँचे पहाड़ पर गया। वहाँ उनके सामने उसने अपना रूप बदल दिया। [3]उस के वस्त्र चमचमा रहे थे। एकदम उजले सफेद! धरती पर कोई भी धोबी जितना उजला नहीं धो सकता, उससे भी अधिक उजले सफेद। [4]एलिय्याह और मूसा भी उसके साथ प्रकट हुए। वे यीशु से बात कर रहे थे।

[5]तब पतरस बोल उठा और उसने यीशु से कहा, "हे रब्बी, यह बहुत अच्छा हुआ कि हम यहाँ हैं। हमें तीन मण्डप बनाने दे–एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये।" [6]पतरस ने यह इसलिये कहा कि वह नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या कहे। वे बहुत डर गये थे।

[7]तभी एक बादल आया और उन पर छा गया। बादल में से यह कहते एक वाणी निकली–"यह मेरा प्रिय पुत्र है। इसकी सुनो!"

[8]और तत्काल उन्होंने जब चारों ओर देखा तो यीशु को छोड़ कर अपने साथ किसी और को नहीं पाया।

[9]जब वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे तो यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि उन्होंने जो कुछ देखा है, उसे वे तब तक किसी को न बतायें जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे।

[10]सो उन्होंने इस बात को अपने भीतर ही रखा। किन्तु वे सोच विचार कर रहे थे कि "मर कर जी उठने" का क्या अर्थ है? [11]फिर उन्होंने यीशु से पूछा, "धर्मशास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना निश्चित है?"

[12]यीशु ने उनसे कहा, "हाँ, सब बातों को ठीक से व्यवस्थित करने के लिए निश्चय ही एलिय्याह पहले आयेगा। किन्तु मनुष्य के पुत्र के बारे में यह क्यों लिखा गया है कि उसे बहुत सी यातनाएँ झेलनी होंगी और उसे घृणा के साथ नकारा जायेगा? [13]मैं तुम्हें बताता हूँ, एलिय्याह आ चुका है, और उन्होंने उसके साथ जो कुछ चाहा, किया। ठीक वैसा ही जैसा उसके विषय में लिखा हुआ है।"

बीमार लड़के को चंगा करना

[14]जब वे दूसरे शिष्यों के पास आये तो उन्होंने उनके आसपास जमा एक बड़ी भीड़ देखी। उन्होंने देखा कि उनके साथ धर्मशास्त्री विवाद कर रहे हैं। [15]और जैसे ही सब लोगों ने यीशु को देखा, वे चकित हुए। और स्वागत करने उसकी तरफ़ दौड़े।

[16]फिर उसने उनसे पूछा, "तुम उनसे किस बात पर विवाद कर रहे हो?"

[17]भीड़ में से एक व्यक्ति ने उत्तर दिया, "हे गुरु, मैं अपने बेटे को तेरे पास लाया था। उस पर एक दुष्टात्मा सवार है, जो उसे बोलने नहीं देती। [18]जब कभी वह दुष्टात्मा इस पर आती है, इसे नीचे पटक देती है और इसके मुँह से झाग निकलने लगते हैं और यह दाँत पीसने लगता है और अकड़ जाता है। मैंने तेरे शिष्यों से इस दुष्ट आत्मा को बाहर निकालने की प्रार्थना की किन्तु वे उसे नहीं निकाल सके।"

[19]फिर यीशु ने उन्हें उत्तर दिया और कहा, "ओ अविश्वासी लोगो, मैं तुम्हारे साथ कब तक रहूँगा? और कब तक तुम्हारी सहूँगा? लड़के को मेरे पास ले आओ!"

[20]तब वे लड़के को उसके पास ले आये और जब दुष्टात्मा ने यीशु को देखा तो उसने तत्काल लड़के को मरोड़ दिया। वह धरती पर जा पड़ा और चक्कर खा गया। उसके मुँह से झाग निकल रहे थे।

[21]तब यीशु ने उसके पिता से पूछा, "यह ऐसा कितने दिनों से है?"

पिता ने उत्तर दिया, "यह बचपन से ही ऐसा है। [22]दुष्टात्मा इसे मार डालने के लिए कभी आग में गिरा देती है तो कभी पानी में। क्या तू कुछ कर सकता है? हम पर दया कर, हमारी सहायता कर।"

[23]यीशु ने उससे कहा, "तूने कहा, 'क्या तू कुछ कर सकता है?' विश्वासी व्यक्ति के लिए सब कुछ सम्भव है।"

[24]तुरंत बच्चे का पिता चिल्लाया और बोला, "मैं विश्वास करता हूँ। मेरे अविश्वास को हटा!"

[25]यीशु ने जब देखा कि भीड़ उन पर चढ़ी चली आ रही है, उसने दुष्टात्मा को ललकारा और उससे कहा, "ओ बच्चे को बहरा गूँगा कर देने वाली दुष्टात्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ इसमें से बाहर निकल आ और फिर इसमें दुबारा प्रवेश मत कर!"

[26]तब दुष्टात्मा चिल्लाई। बच्चे पर भयानक दौरा पड़ा। और वह बाहर निकल गयी। बच्चा मरा हुआ सा दिखने लगा, बहुत लोगों ने कहा, "वह मर गया!" [27]फिर यीशु ने लड़के को हाथ से पकड़ कर उठाया और खड़ा किया। वह खड़ा हो गया।

[28]इसके बाद यीशु अपने घर चला गया। अकेले में उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "हम इस दुष्टात्मा को बाहर क्यों नहीं निकाल सके?"

[29]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "ऐसी दुष्टात्मा प्रार्थना के बिना बाहर नहीं निकाली जा सकती थी।"

अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में यीशु का कथन

[30]फिर उन्होंने वह स्थान छोड़ दिया। और जब वे गलील होते हुए जा रहे थे तो वह नहीं चाहता था कि वे कहाँ हैं, इसका किसी को भी पता चले। [31]क्योंकि वह अपने शिष्यों को शिक्षा दे रहा था। उसने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र मनुष्य के ही हाथों धोखे से पकड़वाया जायेगा और वे उसे मार डालेंगे। मारे जाने के तीन दिन बाद वह जी उठेगा।" [32]पर वे इस बात को समझ नहीं सके और यीशु से इसे पूछने में डरते थे।

सबसे बड़ा कौन है

[33]फिर वे कफ़रनहूम आये। यीशु जब घर में था, उसने उनसे पूछा, "रास्ते में तुम किस बात पर सोच विचार कर रहे थे?" [34]पर वे चुप रहे। क्योंकि वे राह चलते आपस में विचार कर रहे थे कि सबसे बड़ा कौन है।

[35]सो वह बैठ गया। उसने बारहों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा, "यदि कोई सबसे बड़ा बनना चाहता है तो उसे निश्चय ही सबसे छोटा हो कर सब का सेवक बनना होगा।"

[36]और फिर एक छोटे बच्चे को लेकर उसने उनके सामने खड़ा किया। बच्चे को अपनी गोद में लेकर वह उनसे बोला, [37]"मेरे नाम में जो कोई इनमें से किसी भी एक बच्चे को अपनाता है, वह मुझे अपना रहा है; और जो कोई मुझे अपनाता है, न केवल मुझे अपना रहा है, बल्कि उसे भी अपना रहा है, जिसने मुझे भेजा है।"

जो हमारा विरोधी नहीं है, हमारा है

[38]यूहन्ना ने यीशु से कहा, "हे गुरु, हमने किसी को तेरे नाम से दुष्टात्माएँ बाहर निकालते देखा है। हमने उसे रोकना चाहा क्योंकि वह हममें से कोई नहीं था।"

[39]किन्तु यीशु ने कहा, "उसे रोको मत। क्योंकि जो कोई मेरे नाम से आश्चर्य कर्म करता है, वह तुरंत बाद मेरे लिए बुरी बातें नहीं कह पायेगा। [40]वह जो हमारे विरोध में नहीं है, हमारे पक्ष में है। [41]जो इसलिये तुम्हें एक कटोरा पानी पिलाता है कि तुम मसीह के हो, मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, उसे इसका प्रतिफल मिले बिना नहीं रहेगा।

[42]"और जो कोई इन नन्हे अबोध बच्चों में से किसी को, जो मुझमें विश्वास रखते हैं, पाप के मार्ग पर ले जाता है, तो उसके लिये अच्छा है कि उसकी गर्दन में एक चक्की का पाट बाँध कर उसे समुद्र में फेंक दिया जाये। [43]यदि तेरा हाथ तुझ से पाप करवाये तो उसे काट डाल, टुंडा हो कर जीवन में प्रवेश करना कहीं अच्छा है बजाय इसके कि दो हाथों वाला हो कर नरक में डाला जाये, जहाँ की आग कभी नहीं बुझती। [44]* [45]यदि तेरा पैर तुझे पाप की राह पर ले जाये उसे काट दे। लँगड़ा हो कर जीवन में प्रवेश करना कहीं अच्छा है, बजाय इसके कि दो पैरों वाला हो कर नरक में डाला जाये। [46]* [47]यदि तेरी आँख तुझ से पाप करवाए तो उसे निकाल दे। काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कहीं अच्छा है, बजाय इसके कि दो आँखों वाला हो कर नरक में डाला जाये। [48]जहाँ के कीड़े कभी नहीं मरते और जहाँ की आग कभी बुझती नहीं। [49]हर व्यक्ति को आग पर नमकीन बनाया जायेगा।

[50]"नमक अच्छा है। किन्तु नमक यदि अपना नमकीनपन ही छोड़ दे तो तुम उसे दुबारा नमकीन कैसे बना सकते हो? अपने में नमक रखो और एक दूसरे के साथ शांति से रहो।"

पद 44 मरकुस की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 44 जोड़ा गया है जो पद 48 के समान है।

पद 46 मरकुस की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 46 जोड़ा गया है जो पद 48 के समान है।

तलाक के बारे में यीशु की शिक्षा

10 फिर यीशु ने वह स्थान छोड़ दिया और यहूदिया के क्षेत्र में यर्दन नदी के पार आ गया। भीड़ की भीड़ फिर उसके पास आने लगीं। और अपनी रीति के अनुसार वह उपदेश देने लगा।

[2]फिर कुछ फरीसी उसके पास आये और उससे पूछा, "क्या किसी पुरुष के लिये उचित है कि वह अपनी पत्नी को तलाक दे?" उन्होंने उसकी परीक्षा लेने के लिये उससे यह पूछा था।

[3]उसने उन्हें उत्तर दिया, "मूसा ने तुम्हें क्या नियम दिया है?"

[4]उन्होंने कहा, "मूसा ने किसी पुरुष को त्यागपत्र लिखकर पत्नी को त्यागने की अनुमति दी थी।"

[5]यीशु ने उनसे कहा, "मूसा ने तुम्हारे लिए यह आज्ञा इसलिए लिखी थी कि तुम्हें कुछ भी समझ में नहीं आ सकता। [6]सृष्टि के प्रारम्भ से ही, 'परमेश्वर ने उन्हें पुरुष और स्त्री के रूप में रचा है।' [7]'इसीलिये एक पुरुष अपने माता–पिता को छोड़ कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा। [8]और वे दोनों एक तन हो जायेंगे।' इसलिए वे दो नहीं रहते बल्कि एक तन हो जाते हैं। [9]इसलिये जिसे परमेश्वर ने मिला दिया है, उसे मनुष्य को अलग नहीं करना चाहिए।"

[10]फिर वे जब घर लौटे तो शिष्यों ने यीशु से इस विषय में पूछा। [11]उसने उनसे कहा, "जो कोई अपनी पत्नी को तलाक दे कर दूसरी स्त्री से ब्याह रचाता है, वह उस पत्नी के प्रति व्यभिचार करता है। [12]और यदि वह स्त्री अपने पति का त्याग करके दूसरे पुरुष से ब्याह करती है तो वह व्यभिचार करती है।"

बच्चों को यीशु की आशीष

[13]फिर लोग यीशु के पास नन्हें–मुन्ने बच्चों को लाने लगे ताकि वह उन्हें छू कर आशीष दे। किन्तु उसके शिष्यों ने उन्हें झिड़क दिया। [14]जब यीशु ने यह देखा तो उसे बहुत क्रोध आया। फिर उसने उनसे कहा, "नन्हे–मुन्ने बच्चों को मेरे पास आने दो। उन्हें रोको मत क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों का ही है। [15]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ जो कोई परमेश्वर के राज्य को एक छोटे बच्चे की तरह नहीं अपनायेगा, उसमें कभी प्रवेश नही करेगा।" [16]फिर उन बच्चों को यीशु ने गोद में उठा लिया और उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीष दी।

यीशु से एक धनी व्यक्ति का प्रश्न

[17]यीशु जैसे ही अपनी यात्रा पर निकला, एक व्यक्ति उसकी ओर दौड़ा और उसके सामने झुक कर उसने पूछा, "उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकार पाने के लिये मुझे क्या करना चाहिये?"

[18]यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? केवल परमेश्वर के सिवा और कोई उत्तम नहीं है। [19]तू व्यवस्था की आज्ञाओं को जानता है: 'हत्या मत कर, व्यभिचार मत कर, चोरी मत कर, झूठी गवाही मत दे, छल मत कर, अपने माता–पिता का आदर कर...' *"

[20]उस व्यक्ति ने यीशु से कहा, "गुरु, मैं अपने लड़कपन से ही इन सब बातों पर चलता रहा हूँ।"

[21]यीशु ने उस पर दृष्टि डाली और उसके प्रति प्रेम का अनुभव किया। फिर उससे कहा, "तुझमें एक कमी है। जा, जो कुछ तेरे पास है, उसे बेच कर गरीबों में बाँट दे। स्वर्ग में तुझे धन का भंडार मिलेगा। फिर आ, और मेरे पीछे हो ले।"

[22]यीशु के ऐसा कहने पर वह व्यक्ति बहुत निराश हुआ और दुःखी होकर चला गया क्योंकि वह बहुत धनवान था।

[23]यीशु ने चारों ओर देख कर अपने शिष्यों से कहा, "उन लोगों के लिये, जिनके पास धन है, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!"

[24]उसके शब्दों पर उसके शिष्य अचरज में पड़ गये। पर यीशु ने उनसे फिर कहा, "मेरे बच्चों, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है! [25]परमेश्वर के राज्य में किसी धनी के प्रवेश कर पाने से, किसी ऊँट का सुई के नाके में से निकल जाना आसान है!"

[26]उन्हें और अधिक अचरज हुआ। वे आपस में कहने लगे, "फिर किसका उद्धार हो सकता है?"

[27]यीशु ने उन्हें देखते हुए कहा, "यह मनुष्यों के लिये असम्भव है किन्तु परमेश्वर के लिये नहीं। क्योंकि परमेश्वर के लिये सब कुछ सम्भव है।"

[28]फिर पतरस उससे कहने लगा, "देख, हम सब कुछ त्याग कर तेरे पीछे हो लिये हैं।"

[29]यीशु ने कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, कोई भी ऐसा नहीं है जो मेरे लिये और सुसमाचार के लिये घर,

---

हत्या ... आदर कर देखें निर्गमन 20:12–16; व्यवस्था. 5:16–20

भाइयों, बहनों, माँ, बाप, बच्चों, खेत, सब कुछ को छोड़ देगा। [30]और जो इस युग में घरों, भाइयों, बहनों, माताओं, बच्चों और खेतों को सौ गुणा अधिक करके नहीं पायेगा–किन्तु यातना के साथ। और आने वाले युग में अनन्त जीवन। [31]और बहुत से वे जो आज सबसे अन्तिम हैं, सबसे पहले हो जायेंगे, और बहुत से वे जो आज सबसे पहले हैं, सबसे अन्तिम हो जायेंगे।"

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

[32]फिर यरुशलेम जाते हुए जब वे मार्ग में थे तो यीशु उनसे आगे चल रहा था। वे डरे हुए थे और जो उनके पीछे चल रहे थे, वे भी डरे हुए थे। फिर यीशु बारहों शिष्यों को अलग ले गया और उन्हें बताने लगा कि उसके साथ क्या होने वाला है। [33] "सुनो, हम यरुशलेम जा रहे हैं। मनुष्य के पुत्र को धोखे से पकड़वा कर प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों को सौंप दिया जायेगा। और वे उसे मृत्यु दण्ड दे कर ग़ैर यहूदियों को सौंप देंगे [34]जो उसकी हँसी उड़ाएँगे और उस पर थूकेंगे। वे उसे कोड़े लगायेंगे और फिर मार डालेंगे। और फिर तीसरे दिन वह जी उठेगा।"

याकूब और यूहन्ना का यीशु से आग्रह

[35]फिर जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना यीशु के पास आये और उससे बोले, "गुरु, हम चाहते हैं कि हम जो कुछ तुझ से माँगे, तू हमारे लिये वह कर।"

[36]यीशु ने उनसे कहा, "तुम मुझ से अपने लिये क्या करवाना चाहते हो?"

[37]फिर उन्होंने उससे कहा, "हमें अधिकार दे कि तेरी महिमा में हम तेरे साथ बैठें, हममें से एक तेरे दायें और दूसरा बायें।"

[38]यीशु ने उनसे कहा, "तुम नहीं जानते तुम क्या माँग रहे हो। जो कटोरा मैं पीने को हूँ, क्या तुम उसे पी सकते हो? या जो बपतिस्मा मैं लेने को हूँ, तुम उसे ले सकते हो?"

[39]उन्होंने उससे कहा, "हम वैसा कर सकते हैं!"

फिर यीशु ने उनसे कहा, "तुम वह प्याला पिओगे, जो मैं पीता हूँ? तुम वह बपतिस्मा लोगे, जो बपतिस्मा मैं लेने को हूँ? [40]किन्तु मेरे दायें और बायें बैठने का स्थान देना मेरा अधिकार नहीं है। ये स्थान उन्हीं पुरुषों के लिए हैं जिनके लिये ये तैयार किये गये हैं।"

[41]जब बाकी के दस शिष्यों ने यह सुना तो वे याकूब और यूहन्ना पर क्रोधित हुए। [42]फिर यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया और उनसे कहा, "तुम जानते हो कि जो ग़ैर यहूदियों के शासक माने जाते हैं, उनका और उनके महत्त्वपूर्ण नेताओं का उन पर प्रभुत्व है। [43]पर तुम्हारे साथ ऐसा नहीं है। तुममें से जो कोई बड़ा बनना चाहता है, वह तुम सब का दास बने। [44]और जो तुम में प्रधान बनना चाहता है, वह सब का सेवक बने [45]क्योंकि मनुष्य का पुत्र तक सेवा कराने नहीं आया है, बल्कि सेवा करने आया है। और बहुतों के छुटकारे के लिये अपना जीवन देने आया है।"

अंधे को आँखें

[46]फिर वे यरीहो आये और जब यीशु अपने शिष्यों और एक बड़ी भीड़ के साथ यरीहो को छोड़ कर जा रहा था, तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई नाम का एक अंधा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था। [47]जब उसने सुना कि वह नासरी यीशु है, तो उसने ऊँचे स्वर में पुकार पुकार कर कहना शुरू किया, "दाऊद के पुत्र यीशु, मुझ पर दया कर!"

[48]बहुत से लोगों ने डाँट कर उसे चुप रहने को कहा। पर वह और भी ऊँचे स्वर में पुकारने लगा, "दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर!"

[49]तब यीशु रुका और बोला, "उसे मेरे पास लाओ।"

सो उन्होंने उस अंधे व्यक्ति को बुलाया और उससे कहा, "हिम्मत रख! खड़ा हो! वह तुझे बुला रहा है।" [50]वह अपना कोट फेंक कर उछल पड़ा और यीशु के पास आया।

[51]फिर यीशु ने उससे कहा, "तू मुझ से अपने लिए क्या करवाना चाहता है?" अंधे ने उससे कहा, "हे रब्बी, मैं फिर से देखना चाहता हूँ।"

[52]तब यीशु बोला, "जा, तेरे विश्वास से तेरा उद्धार हुआ।" फिर वह तुरंत देखने लगा और मार्ग में यीशु के पीछे हो लिया।

11 फिर जब व यरुशलेम के पास जैतून पर्वत पर बैतफगे और बैतनिय्याह पहुँचे तो यीशु ने अपने शिष्यों में से दो को [2]यह कह कर सामने के गाँव में भेजा, "जाओ वहाँ जैसे ही तुम गाँव में प्रवेश करोगे एक गदही का बछेरा बँधा हुआ मिलेगा जिस पर पहले कभी कोई

नहीं चढ़ा। उसे खोल कर यहाँ ले आओ। [3]और यदि कोई तुमसे पूछे कि 'तुम यह क्यों कर रहे हो?' तो तुम कहना, 'प्रभु को इसकी आवश्यकता है। फिर वह इसे तुरंत ही वापस लौटा देगा।' "

[4]तब वे वहाँ से चल पड़े और उन्होंने खुली गली में एक द्वार के पास गदही के बछेरे को बँधा पाया। सो उन्होंने उसे खोल लिया। [5]कुछ व्यक्तियों ने, जो वहाँ खड़े थे, उनसे पूछा, "इस गदही के बछेरे को खोल कर तुम क्या कर रहे हो?" [6]उन्होंने उनसे वही कहा जो यीशु ने बताया था। इस पर उन्होंने उन्हें जाने दिया। [7]फिर वे उस गदही के बछेरे को यीशु के पास ले आये। उन्होंने उस पर अपने वस्त्र डाल दिये। फिर यीशु उस पर बैठ गया। [8]बहुत से लोगों ने अपने कपड़े रास्ते में बिछा दिये और बहुतों ने खेतों से टहनियाँ काट कर वहाँ बिछा दीं। [9]वे लोग जो आगे थे और वे भी जो पीछे थे, पुकार रहे थे,

"होशन्ना!
वह धन्य है जो प्रभु के नाम पर आ रहा है!
[10] धन्य है हमारे पिता दाऊद का राज्य
जो आ रहा है।
होशन्ना स्वर्ग में!"

भजन संहिता 118:25,26

[11]फिर उसने यरुशलेम में प्रवेश किया और मन्दिर में गया। उसने चारों ओर की हर वस्तु को देखा क्योंकि शाम को बहुत देर हो चुकी थी, वह बारहों शिष्यों के साथ बैतनिय्याह को चला गया।

[12]अगले दिन जब वे बैतनिय्याह से निकल रहे थे, उसे बहुत भूख लगी थी। [13]थोड़ी दूर पर उसे अंजीर का एक हरा भरा पेड़ दिखाई दिया। यह देखने के लिये वह पेड़ के पास पहुँचा कि कहीं उसे उसी पर कुछ मिल जाये। किन्तु जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे पत्तों के सिवाय कुछ न मिला क्योंकि अंजीरों की ऋतु नहीं थी। [14]तब उसने पेड़ से कहा, "अब आगे से कभी कोई तेरा फल न खाये।" उसके शिष्यों ने यह सुना।

यीशु का मन्दिर जाना

[15]फिर वे यरुशलेम को चल पड़े। जब उन्होंने मन्दिर में प्रवेश किया तो यीशु ने उन लोगों को जो मन्दिर में ले बेच कर रहे थे, बाहर निकालना शुरू कर दिया। उसने पैसे का लेन देन करने वालों की चौकियाँ उलट दीं और कबूतर बेचने वालों के तख्त पलट दिये। [16]और उसने मंदिर में से किसी को कुछ भी ले जाने नहीं दिया। [17]फिर उसने शिक्षा देते हुए उनसे कहा, "क्या शास्त्रों में यह नहीं लिखा है, 'मेरा घर सभी जाति के लोगों के लिये प्रार्थना–गृह कहलायेगा?' किन्तु तुमने उसे 'चोरों का अड्डा' बना दिया है।"

[18]जब प्रधान याजकों और धर्मशास्त्रियों ने यह सुना तो वे उसे मारने का कोई रास्ता ढूँढने लगे। क्योंकि भीड़ के सभी लोग उसके उपदेश से चकित थे। इसलिये वे उससे डरते थे। [19]फिर जब शाम हुई, तो वे नगर से बाहर निकले।

विश्वास की शक्ति

[20]अगले दिन सुबह जब यीशु अपने शिष्यों के साथ जा रहा था तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक से सूखा देखा। [21]तब पतरस ने याद करते हुए यीशु से कहा, "हे रब्बी, देख! जिस अंजीर के पेड़ को तूने शाप दिया था, वह सूख गया है!"

[22]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "परमेश्वर में विश्वास रखो। [23]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ: यदि कोई इस पहाड़ से यह कहे, 'तू उखड़ कर समुद्र में जा गिर' और उसके मन में किसी तरह का कोई संदेह न हो बल्कि विश्वास हो कि जैसा उसने कहा है, वैसा ही हो जायेगा तो उसके लिये वैसा ही होगा। [24]इसीलिये मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम प्रार्थना में जो कुछ माँगोगे, विश्वास करो वह तुम्हें मिल गया है, वह तुम्हारा हो गया है। [25]और जब कभी तुम प्रार्थना करते खड़े होते हो तो यदि तुम्हें किसी से कोई शिकायत है तो उसे क्षमा कर दो ताकि स्वर्ग में स्थित तुम्हारा परम पिता तुम्हारे पापों के लिए तुम्हें भी क्षमा कर दे।" [26]["किन्तु यदि तुम दूसरों को क्षमा नहीं करोगे तो तुम्हारा स्वर्ग में स्थित पिता तुम्हारे पापों को भी क्षमा नहीं करेगा।"]*

यीशु के अधिकार पर यहूदी नेताओं को संदेह

[27]फिर वे यरुशलेम लौट आये। यीशु जब मन्दिर में टहल रहा था तो प्रमुख याजक, धर्मशास्त्री और बुज़ुर्ग

पद 26 कुछ प्रारम्भिक यूनानी प्रतियों में पद 26 जोड़ा गया है।

यहूदी नेता उसके पास आये। [28]और बोले, "तू इन कार्यों को किस अधिकार से करता है? इन्हें करने का अधिकार तुझे किसने दिया है?"

[29]यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ, यदि मुझे उत्तर दे दो तो मैं तुम्हें बता दूँगा कि मैं यह कार्य किस अधिकार से करता हूँ। [30]जो बपतिस्मा यूहन्ना दिया करता था, वह उसे स्वर्ग से प्राप्त हुआ था या मनुष्य से? मुझे उत्तर दो!"

[31]वे यीशु के प्रश्न पर यह कहते हुए आपस में विचार करने लगे, "यदि हम यह कहते हैं, 'यह उसे स्वर्ग से प्राप्त हुआ था,' तो यह कहेगा, 'तो तुम उसका विश्वास क्यों नहीं करते?' [32]किन्तु यदि हम यह कहते हैं, 'वह मनुष्य से प्राप्त हुआ था,' तो लोग हम पर ही क्रोध करेंगे।" (वे लोगों से बहुत डरते थे क्योंकि सभी लोग यह मानते थे कि यूहन्ना वास्तव में एक भविष्यवक्ता है।) [33]इसलिये उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, "हम नहीं जानते।"

इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तो फिर मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं ये कार्य किस अधिकार से करता हूँ।"

परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजना

12 यीशु दृष्टान्त कथाओं का सहारा लेते हुए उनसे कहने लगा: "एक व्यक्ति ने अंगूरों का एक बगीचा लगाया और उसके चारों तरफ़ दीवार खड़ी कर दी। फिर अंगूर के रस के लिए एक कुण्ड बनाया और फिर उसे कुछ किसानों को किराये पर दे कर, यात्रा पर निकल पड़ा। [2]फिर अंगूर पकने की ऋतु में उसने उन किसानों के पास अपना एक दास भेजा ताकि वह किसानों से बगीचे में जो अंगूर हुए हैं, उनमें से उसका हिस्सा ले आये। [3]किन्तु उन्होंने पकड़ कर उस दास की मार–पिटाई की और खाली हाथों वहाँ से भगा दिया। [4]उसने एक और दास उनके पास भेजा। उन्होंने उसके सिर पर वार करते हुए उसका बुरी तरह अपमान किया। [5]उसने फिर एक और दास भेजा जिसकी उन्होंने हत्या कर डाली। उसने ऐसे ही और भी अनेक दास भेजे जिनमें से उन्होंने कुछ की मार–पिटाई की और कितनों को मार डाला।

[6]"अब उसके पास भेजने को अपना प्यारा पुत्र ही बचा था। आखिरकार उसने उसे भी उनके पास यह कहते हुए भेज दिया, 'वे मेरे पुत्र का तो सम्मान करेंगे ही।'

[7]"उन किसानों ने एक दूसरे से कहा, 'यह तो उसका उत्तराधिकारी है। आओ इसे मार डालें। इससे उत्तराधिकार हमारा हो जायेगा।' [8]इस तरह उन्होंने उसे पकड़ कर मार डाला और अंगूरों के बगीचे से बाहर फेंक दिया।

[9]"इस पर अंगूर के बगीचे का मालिक क्या करेगा? वह आकर उन किसानों को मार डालेगा और बगीचा दूसरों को दे देगा। [10]क्या तुमने शास्त्र का यह वचन नहीं पढ़ा है:

'वह पत्थर जिसे कारीगरों ने बेकार माना,
वही कोने का पत्थर बन गया।'
[11] यह प्रभु ने किया,
जो हमारी दृष्टि में अद्भुत है।'"

भजन संहिता 118:22–23

[12]वे यह समझ गये थे कि उसने जो दृष्टान्त कहा है, उनके विरोध में था। सो वे उसे बंदी बनाने का कोई रास्ता ढूँढने लगे, पर लोगों से वे डरते थे इसलिये उसे छोड़ कर चले गये।

यीशु को छलने का प्रयत्न

[13]तब उन्होंने कुछ फ़रीसियों और हेरोदियों को उसे बातों में फसाने के लिये उसके पास भेजा। [14]वे उसके पास आये और बोले, "गुरु, हम जानते हैं कि तू बहुत ईमानदार है और तू इस बात की तनिक भी परवाह नहीं करता कि दूसरे लोग क्या सोचते हैं। क्योंकि तू मनुष्यों की हैसियत या रुतबे पर ध्यान दिये बिना प्रभु के मार्ग की सच्ची शिक्षा देता है। सो बता कैसर को कर देना उचित है या नहीं? हम उसे कर चुकायें या न चुकायें?"

[15]यीशु उनकी चाल समझ गया। उसने उनसे कहा, "तुम मुझे क्यों परखते हो? एक दीनार लाओ ताकि मैं उसे देख सकूँ।" [16]सो वे दीनार ले आये। फिर यीशु ने उनसे पूछा, "इस पर किस का चेहरा और नाम अंकित है?" उन्होंने कहा, "कैसर का।"

[17]तब यीशु ने उन्हें बताया, "जो कैसर का है, उसे कैसर को दो और जो परमेश्वर का है, उसे परमेश्वर को दो।" तब वे बहुत चकित हुए।

सदूकियों की चाल

[18]फिर कुछ सदूकी, जो पुनर्जीवन को नहीं मानते, उसके पास आये और उन्होंने उससे पूछा, [19]"हे गुरु,

मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि यदि किसी का भाई मर जाये और उसकी पत्नी के कोई बच्चा न हो तो उसके भाई को चाहिये कि वह उसे ब्याह ले और फिर अपने भाई के वंश को बढ़ाये। [20]एक बार की बात है कि सात भाई थे। सबसे बड़े भाई ने ब्याह किया और बिना कोई बच्चा छोड़े वह मर गया। [21]फिर दूसरे भाई ने उस स्त्री से विवाह किया, पर वह भी बिना किसी संतान के ही मर गया। तीसरे भाई ने भी वैसा ही किया। [22]सातों में से किसी ने भी कोई बच्चा नहीं छोड़ा। आखिरकार वह स्त्री भी मर गयी। [23]मौत के बाद जब वे लोग फिर जी उठेंगे, तो बता वह स्त्री किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वे सातों ही उसे अपनी पत्नी के रूप में रख चुके थे।"

[24]यीशु ने उनसे कहा, "तुम न तो शास्त्रों को जानते हो, और न ही परमेश्वर की शक्ति को। निश्चय ही क्या यही कारण नहीं है जिससे तुम भटक गये हो? [25]क्योंकि वे लोग जब मरे हुओं में से जी उठेंगे तो उनके विवाह नहीं होंगे, बल्कि वे स्वर्गदूतों के समान स्वर्ग में होंगे। [26]मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुमने मूसा की पुस्तक में झाड़ी के बारे में जो लिखा गया है, नहीं पढ़ा? वहाँ परमेश्वर ने मूसा से कहा था, 'मैं इब्राहीम का परमेश्वर हूँ, इसहाक का परमेश्वर हूँ और याकूब का परमेश्वर हूँ।'* [27]वह मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है। तुम लोग बहुत बड़ी भूल में पड़े हो!"

सबसे बड़ा आदेश

[28]फिर एक यहूदी धर्मशास्त्री आया और उसने उन्हें वाद-विवाद करते सुना। यह देख कर कि यीशु ने उन्हें किस अच्छे ढंग से उत्तर दिया है, उसने यीशु से पूछा, "सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण आदेश कौन सा है?"

[29]यीशु ने उत्तर दिया, "सबसे महत्त्वपूर्ण आदेश यह है: 'हे इस्राएल, सुन! केवल हमारा परमेश्वर ही एकमात्र प्रभु है। [30]समूचे मन से, समूचे जीवन से, समूची बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से तुझे अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम करना चाहिये।'* [31]दूसरा आदेश यह है: 'अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता है।'* इन आदेशों से बड़ा और कोई आदेश नहीं है।"

[32]इस पर यहूदी धर्मशास्त्री ने उससे कहा, "गुरु, तूने ठीक कहा। तेरा यह कहना ठीक है कि परमेश्वर एक है, उसके अलावा और दूसरा कोई नहीं है। [33]अपने समूचे मन से, सारी समझ-बूझ से सारी शक्ति से परमेश्वर को प्रेम करना और अपने समान अपने पड़ोसी से प्यार रखना, सारी बलियों और समर्पित भेंटों से जिनका विधान किया गया है, अधिक महत्त्वपूर्ण है।"

[34]जब यीशु ने देखा कि उस व्यक्ति ने समझदारी के साथ उत्तर दिया है तो वह उससे बोला, "तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं है।" इसके बाद किसी और ने उससे कोई और प्रश्न पूछने का साहस नहीं किया।

[35]फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए कहा, "धर्मशास्त्री कैसे कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है? [36]दाऊद ने स्वयं पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर कहा था:

'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु (मसीह) से कहा:
मेरी दाहिनी ओर बैठ जब तक मैं
तेरे शत्रुओं को तेरे पैरों तले न कर दूँ।'

भजन संहिता 110:1

[37]दाऊद स्वयं उसे 'प्रभु' कहता है। फिर मसीह दाऊद का पुत्र कैसे हो सकता है?" एक बड़ी भीड़ प्रसन्नता के साथ उसे सुन रही थी।

[38]अपने उपदेश में उसने कहा, "धर्मशास्त्रियों से सावधान रहो। वे अपने लम्बे चोगे पहने हुए इधर उधर घूमना पसंद करते हैं। बाज़ारों में अपने को नमस्कार करवाना उन्हें भाता है। [39]और प्रार्थना सभागारों में वे महत्त्वपूर्ण आसनों पर बैठना चाहते हैं। वे जेवनारों में भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान पाने की इच्छा रखते हैं। [40]वे विधवाओं की सम्पत्ति हड़प जाते हैं। दिखावे के लिये वे लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ बोलते हैं। इन लोगों को कड़े से कड़ा दण्ड मिलेगा।"

सच्चा दान

[41]यीशु दान-पात्र के सामने बैठा हुआ देख रहा था कि लोग दान पात्र में किस तरह धन डाल रहे हैं। बहुत से धनी लोगों ने बहुत सा धन डाला। [42]फिर वहाँ एक गरीब विधवा आयी और उसने उसमें दो दमड़ियाँ डालीं जो एक पैसे के बराबर भी नहीं थीं।

[43]फिर उसने अपने चेलों को पास बुलाया और उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, धनवानों द्वारा इस दान-पात्र

"मैं इब्राहीम ... हूँ" देखें निर्गमन 3:6
'हे इस्राएल ... करना चाहिये' देखें व्यवस्था. 6:4-5
"अपने पड़ोसी ... करता है" लैव्य. 19:18

में डाले गये प्रचुर दान से इस निर्धन विधवा का यह दान कहीं महान है। [44]क्योंकि उन्होंने जो कुछ उनके पास फालतू था, उसमें से दान दिया, किन्तु इसने अपनी दीनता में जो कुछ इसके पास था सब कुछ दे डाला। इसके पास इतना सा ही था जो इसके जीवन का सहारा था!"

यीशु द्वारा विनाश की भविष्यवाणी

13 जब वह मंदिर से जा रहा था, उसके एक शिष्य ने उससे कहा, "गुरु, देख! ये पत्थर और भवन कितने अनोखे हैं।"

[2]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तू इन विशाल भवनों को देख रहा है? यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर टिका नहीं रहेगा। एक-एक पत्थर ढहा दिया जायेगा।"

[3]जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा था तो उससे पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास ने अकेले में पूछा, [4]"हमें बता, यह सब कुछ कब घटेगा? जब ये सब कुछ पूरा होने को होगा तो उस समय कैसे संकेत होंगे?"

[5]इस पर यीशु कहने लगा "सावधान! कोई तुम्हें छलने न पाये। [6]मेरे नाम से बहुत से लोग आयेंगे और दावा करेंगे 'मैं वही हूँ।' वे बहुतों को छलेंगे। [7]जब तुम युद्धों या युद्धों की अफवाहों के बारे में सुनो तो घबराना मत। ऐसा तो होगा ही किन्तु अभी अंत नहीं है। [8]एक जाति दूसरी जाति के विरोध में और एक राज्य दूसरे राज्य के विरोध में खड़े होंगे। बहुत से स्थानों पर भूचाल आयेंगे और अकाल पड़ेंगे। ये पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।

[9]"अपने बारे में सचेत रहो। वे लोग तुम्हें न्यायालयों के हवाले कर देंगे और फिर तुम्हें उनके सभागारों में पीटा जाएगा और मेरे कारण तुम्हें शासकों और राजाओं के आगे खड़ा होना होगा ताकि उन्हें कोई प्रमाण मिल सके। [10]किन्तु यह आवश्यक है कि पहले सब किसी को सुसमाचार सुना दिया जाये। [11]और जब कभी वे तुम्हें पकड़ कर तुम पर मुकदमा चलायें तो पहले से ही यह चिन्ता मत करने लगना कि तुम्हें क्या कहना है। उस समय जो कुछ तुम्हें बताया जाये, वही बोलना क्योंकि ये तुम नहीं हो जो बोल रहे हो, बल्कि बोलने वाला तो पवित्र आत्मा है।

[12]"भाई, भाई को धोखे से पकड़वा कर मरवा डालेगा। पिता, पुत्र को धोखे से पकड़वायेगा। और बाल बच्चे अपने माता-पिता के विरोध में खड़े होकर उन्हें मरवायेंगे। [13]मेरे कारण सब लोग तुमसे घृणा करेंगे। किन्तु जो अंत तक धीरज धरे रहेगा, उसका उद्धार होगा।

[14]"जब तुम 'भयानक विनाशकारी वस्तुओं को', जहाँ वे नहीं होनी चाहियें, वहाँ खड़े देखो" (पढ़ने वाला स्वयं समझ ले कि इसका अर्थ क्या है) "तब जो लोग यहूदिया में हों, उन्हें पहाड़ों पर भाग जाना चाहिये और [15]जो लोग अपने घर की छत पर हों, वे घर में भीतर जा कर कुछ भी लाने के लिये नीचे न उतरें। [16]और जो बाहर मैदान में हों, वह पीछे मुड़ कर अपना वस्त्र तक न लें। [17]उन स्त्रियों के लिये जो गर्भवती होंगी या जिनके दूध पीते बच्चे होंगे, वे दिन बहुत भयानक होंगे। [18]प्रार्थना करो कि यह सब कुछ सर्दियों में न हो। [19]उन दिनों ऐसी विपत्ति आयेगी जैसी जब से परमेश्वर ने इस सृष्टि को रचा है, आज तक न कभी आयी है और न कभी आयेगी। [20]और यदि परमेश्वर ने उन दिनों को घटा न दिया होता तो कोई भी नहीं बचता। किन्तु उन चुने हुए व्यक्तियों के कारण जिन्हें उसने चुना है, उसने उस समय को कम किया है। [21]उन दिनों यदि कोई तुमसे कहे, 'देखो, यह रहा मसीह!' या 'वह रहा मसीह!' तो उसका विश्वास मत करना। [22]क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता दिखाई पड़ने लगेंगे। और वे ऐसे ऐसे आश्चर्य चिह्न दर्शाएँगे और अद्भुत काम करेंगे कि हो सके तो चुने हुओं को भी चक्कर में डाल दें। [23]इसीलिये तुम सावधान रहना। मैंने समय से पहले ही तुम्हें सब कुछ बता दिया है।

[24]"उन दिनों यातना के उस काल के बाद,

'सूरज काला पड़ जायेगा,
चाँद से उसकी चाँदनी नहीं छिटकेगी।
[25] आकाश से तारे गिरने लगेंगे
और आकाश में महाशक्तियाँ
झकझोर दी जायेंगी।'

यशायाह 13:10; 34:4

[26]"तब लोग मनुष्य के पुत्र को महाशक्ति और महिमा के साथ बादलों में प्रकट होते देखेंगे। [27]फिर वह अपने दूतों को भेज कर चारों दिशाओं, पृथ्वी के एक छोर से आकाश के दूसरे छोर तक सब कहीं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा।

[28]"अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो कि जब उसकी टहनियाँ कोमल हो जाती है और उस पर कोंपलें फूटने लगती हैं

तो तुम जान जाते हो कि ग्रीष्म ऋतु आने को है। [29]ऐसे ही जब तुम यह सब कुछ घटित होते देखो तो समझ जाना कि वह समय* निकट आ पहुँचा है, बल्कि ठीक द्वार तक। [30]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि निश्चित रूप से इन लोगों के जीते जी ही ये सब बातें घटेंगी। [31]धरती और आकाश नष्ट हो जायेंगे किन्तु मेरा वचन कभी न टलेगा।

[32]"उस दिन या उस घड़ी के बारे में किसी को कुछ पता नहीं, न स्वर्ग में दूतों को और न अभी मनुष्य के पुत्र को, केवल परम पिता परमेश्वर जानता है। [33]सावधान! जागते रहो! क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आ जायेगा। [34]यह ऐसे ही है जैसे कोई व्यक्ति किसी यात्रा पर जाते हुए सेवकों के ऊपर अपना घर छोड़ जाये और हर एक को उसका अपना अपना काम दे जाये। तथा चौकीदार को यह आज्ञा दे कि वह जागता रहे। [35]इसलिये तुम भी जागते रहो क्योंकि घर का स्वामी न जाने कब आ जाये। साँझ गये, आधी रात, मुर्गे की बाँग देने के समय या फिर दिन निकले। [36]यदि वह अचानक आ जाये तो ऐसा करो जिससे वह तुम्हें सोते न पाये। [37]जो मैं तुमसे कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ 'जागते रहो!'"

यीशु की हत्या का षड़यन्त्र

14 फ़सह पर्व और बिना ख़मीर की रोटी का उत्सव* आने से दो दिन पहले की बात है कि प्रमुख याजक और यहूदी धर्मशास्त्री कोई ऐसा रास्ता ढूँढ रहे थे जिससे चालाकी के साथ उसे बंदी बनाया जाये और मार डाला जाये। [2]वे कह रहे थे, "किन्तु यह हमें पर्व के दिनों में नहीं करना चाहिये, नहीं तो हो सकता है, लोग कोई फसाद खड़ा करें।"

यीशु पर इत्र उँडेलना

[3]जब बैतनिय्याह में यीशु शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा था, तभी एक स्त्री सफेद चिकने स्फटिक के एक पात्र में शुद्ध बाल छड़ का इत्र लिये आयी। उसने उस पात्र को तोड़ा और इत्र को यीशु के सिर पर उँडेल दिया।

[4]इससे वहाँ कुछ लोग बिगड़ कर आपस में कहने लगे, "इत्र की ऐसी बर्बादी क्यों की गयी है? [5]यह इत्र तीन सौ दीनारी से भी अधिक में बेचा जा सकता था। और फिर उस धन को कंगालों में बाँटा जा सकता था।" उन्होंने उसकी कड़ी आलोचना की।

[6]तब यीशु ने कहा, "उसे क्यों तंग करते हो? छोड़ो उसे। उसने तो मेरे लिये एक मनोहर काम किया है। [7]क्योंकि कंगाल तो सदा तुम्हारे पास रहेंगे सो तुम जब चाहो उनकी सहायता कर सकते हो, पर मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूँगा। [8]इस स्त्री ने वही किया जो वह कर सकती थी। उसने समय से पहले ही गाड़े जाने के लिये, मेरे शरीर पर सुगन्ध छिड़क कर उसे तैयार किया है। [9]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ: सारे संसार में जहाँ कहीं भी सुसमाचार का प्रचार–प्रसार किया जायेगा, वहीं इसकी याद में जो कुछ इस ने किया है, उसकी चर्चा होगी।"

[10]तब यहूदा इसकरियोती जो उसके बारह शिष्यों में से एक था, प्रधान याजक के पास यीशु को धोखे से पकड़वाने के लिए गया। [11]वे उस की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे धन देने का वचन दिया। इसलिए फिर यहूदा यीशु को धोखे से पकड़वाने की ताक में रहने लगा।

[12]बिना ख़मीर की रोटी के उत्सव से एक दिन पहले, जब फ़सह (मेमने) की बलि दी जाया करती थी उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "तू क्या चाहता है कि हम कहाँ जा कर तेरे खाने के लिये फ़सह भोज की तैयारी करें?"

[13]तब उसने अपने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा, "नगर में जाओ, जहाँ तुम्हें एक व्यक्ति जल का घड़ा लिये मिले, उसके पीछे हो लेना। [14]फिर जहाँ कहीं भी वह भीतर जाये, उस घर के स्वामी से कहना, 'गुरु ने पूछा है भोजन का मेरा वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शिष्यों के साथ फ़सह का खाना खा सकूँ।' [15]फिर वह तुम्हें ऊपर का एक बड़ा सजा–सजाया तैयार कमरा दिखायेगा, वहीं हमारे लिये तैयारी करो।"

[16]तब उसके शिष्य वहाँ से नगर को चल दिये जहाँ उन्होंने हर बात वैसी ही पायी जैसी उनसे यीशु ने कही थी। तब उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया है।

वह समय यहाँ यीशु जिस समय की चर्चा कर रहा है, वह समय है जब कोई बहुत महत्त्वपूर्ण घटना घटेगी। देखें लूका 21:31 जहाँ यीशु ने कहा है कि वही परमेश्वर के राज्य के आने का समय है।

बिना ख़मीर की रोटी का उत्सव यहूदियों का यह पर्व एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उत्सव हैं। इस दिन वे बिना खमीर की रोटी के साथ विशेष प्रकार का भोजन करते है।

[17]दिन ढले अपने बारह शिष्यों के साथ यीशु वहाँ पहुँचा। [18]जब वे बैठे खाना खा रहे थे, तब यीशु ने कहा, "मैं सत्य कहता हूँ: तुम में से एक जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, वही मुझे धोखे से पकड़वायेगा।"

[19]इससे वे दुखी हो कर एक दूसरे से कहने लगे, "निश्चय ही वह मैं नहीं हूँ!"

[20]तब यीशु ने उनसे कहा, "वह बारहों में से वही एक है, जो मेरे साथ एक ही थाली में खाता है। [21]मनुष्य के पुत्र को तो जाना ही है, जैसा कि उसके बारे में लिखा है। पर उस व्यक्ति को धिक्कार है जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाएगा। उस व्यक्ति के लिये कितना अच्छा होता कि वह पैदा ही न हुआ होता।"

प्रभु का भोज

[22]जब वे खाना खा ही रहे थे, यीशु ने रोटी ली, धन्यवाद दिया, रोटी को तोड़ा और उसे उनको देते हुए कहा, "लो, यह मेरी देह है।"

[23]फिर उसने कटोरा उठाया, धन्यवाद किया और उसे उन्हें दिया और उन सब ने उसमें से पीया।

[24]तब यीशु बोला, "यह मेरा लहू है जो एक नए वाचा का आरंभ है। यह बहुतों के लिये बहाया जा रहा है। [25]तुमसे सत्य कहता हूँ कि अब मैं उस दिन तक दाखमधु को चखूँगा तक नहीं जब तक परमेश्वर के राज्य में नया दाखमधु न पीऊँ।"

[26]तब एक गीत गा कर वे जैतून के पहाड़ पर चले गये।

यीशु की भविष्यवाणी–सब शिष्य उसे छोड़ जायेंगे

[27]यीशु ने उनसे कहा, "तुम सब का विश्वास डिग जायेगा। क्योंकि लिखा है:

'मैं गड़ेरिये को मारूँगा और भेड़ें
तितर–बितर हो जायेंगी।'

जकर्याह 13:7

[28]किन्तु फिर से जी उठने के बाद मैं तुमसे पहले ही गलील चला जाऊँगा।"

[29]तब पतरस बोला, "चाहे सब अपना विश्वास खो बैठें, पर मैं नही खोऊँगा।"

[30]इस पर यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य कहता हूँ, आज, इसी रात मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले तू तीन बार मुझे नकार चुकेगा।"

[31]इस पर पतरस ने और भी बल देते हुए कहा, "यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े तो भी मैं तुझे कभी नकारूँगा नहीं!" तब बाकी सब शिष्यों ने भी ऐसा ही कहा।

यीशु की एकांत प्रार्थना

[32]फिर वे एक ऐसे स्थान पर आये जिसे गतसमने कहा जाता था। वहाँ यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जब तक मैं प्रार्थना करता हूँ, तुम यहीं बैठो।" [33]और पतरस, याकूब और यूहन्ना को वह अपने साथ ले गया। वह बहुत दुखी और व्याकुल हो रहा था। [34]उसने उनसे कहा, "मेरा मन दुखी है, जैसे मेरे प्राण निकल जायेंगे। तुम यहीं ठहरो और सावधान रहो।"

[35]फिर थोड़ा और आगे बढ़ने के बाद वह धरती पर झुक कर प्रार्थना करने लगा कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर से टल जाये। [36]फिर उसने कहा, "हे परम पिता! तेरे लिये सब कुछ सम्भव है। इस कटोरे* को मुझ से दूर कर। फिर जो कुछ भी मैं चाहता हूँ, वह नहीं बल्कि जो तू चाहता है, वही कर।"

[37]फिर वह लौटा तो उसने अपने शिष्यों को सोते देख पतरस से कहा, "शमौन, क्या तू सो रहा है? क्या तू एक घड़ी भी जाग नहीं सका? [38]जागते रहो और प्रार्थना करो ताकि तुम किसी परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो चाहती है किन्तु शरीर निर्बल है।"

[39]वह फिर चला गया और वैसे ही वचन बोलते हुए उसने प्रार्थना की। [40]जब वह दुबारा लौटा तो उसने उन्हें फिर सोते पाया। उनकी आँखों में नींद भरी थी। उन्हें सूझ नहीं रहा था कि उसे क्या उत्तर दें।

[41]वह तीसरी बार फिर लौट कर आया और उनसे बोला, "क्या तुम अब भी आराम से सो रहे हो? अच्छा, तो सोते रहो। वह घड़ी आ पहुँची है जब मनुष्य का पुत्र धोखे से पकड़वाया जा कर पापियों के हाथों सौंपा जा

कटोरे यहाँ यीशु उन यातनाओं की ओर संकेत कर रहा है जो आगे चल कर उसे झेलनी है। ये यातनाएँ बहुत कठोर होंगी। उस कटोरे से पीने के समान जिसमें कुछ ऐसा भरा है, जिसे पीना बहुत कठिन है।

रहा है। [42]खड़े हो जाओ! आओ चलें। देखो, यह आ रहा है, मुझे धोखे से पकड़वाने वाला व्यक्ति।"

यीशु का बंदी बनाया जाना

[43]यीशु बोल ही रहा था कि उसके बारह शिष्यों में से एक यहूदा वहाँ दिखाई पड़ा। उसके साथ लाठियाँ और तलवारें लिए एक भीड़ थी, जिसे याजकों, धर्मशास्त्रियों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं ने भेजा था।

[44]धोखे से पकड़वाने वाले ने उन्हें यह संकेत बता रखा था, "जिसे मैं चूँमू वही वह है। उसे हिरासत में ले लेना और पकड़ कर सावधानी से ले जाना।"

[45]सो जैसे ही यहूदा वहाँ आया, उसने यीशु के पास जाकर कहा, "रब्बी!" और उसे चूम लिया। [46]फिर तुरंत उन्होंने उसे पकड़ कर हिरासत में ले लिया। [47]उसके एक शिष्य ने जो उसके पास ही खड़ा था अपनी तलवार खींच ली और महायाजक के एक दास पर चला दी जिससे उसका कान कट गया।

[48]फिर यीशु ने उनसे कहा, "क्या मैं कोई अपराधी हूँ जिसे पकड़ने तुम लाठी–तलवार ले कर आये हो? [49]हर दिन मन्दिर में उपदेश देते हुए मैं तुम्हारे साथ ही था किन्तु तुमने मुझे नहीं पकड़ा। अब यह हुआ ताकि शास्त्र का वचन पूरा हो।" [50]फिर उसके सभी शिष्य उसे अकेला छोड़ भाग खड़े हुए।

[51]अपनी वस्त्र रहित देह पर चादर लपेटे एक नौजवान उसके पीछे आ रहा था। उन्होंने उसे पकड़ना चाहा [52]किन्तु वह अपनी चादर छोड़ कर नंगा भाग खड़ा हुआ।

यीशु की पेशी

[53]वे यीशु को प्रधान याजक के पास ले गये। फिर सभी प्रमुख याजक, बुज़ुर्ग यहूदी नेता और धर्मशास्त्री इकटठे हुए। [54]पतरस उससे दूर–दूर रहते हुए उसके पीछे–पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक चला गया। और वहाँ पहरेदारों के साथ बैठ आग तापने लगा।

[55]सारी यहूदी महासभा और प्रमुख याजक यीशु को मृत्य दण्ड देने के लिये उसके विरोध में कोई प्रमाण ढूँढने का यत्न कर रहे थे पर ढूँढ नहीं पाये। [56]बहुतों ने उसके विरोध में झूठी गवाहियाँ दीं, पर वे गवाहियाँ आपस में विरोधी थीं।

[57]फिर कुछ लोग खड़े हुए और उसके विरोध में झूठी गवाही देते हुए कहने लगे, [58]"हमने इसे यह कहते सुना है, 'मनुष्यों के हाथों बने इस मंदिर को मैं ढहा दूँगा और फिर तीन दिन के भीतर दूसरा बना दूँगा जो हाथों से बना नहीं होगा।'" [59]किन्तु इसमें भी उनकी गवाहियाँ एक सी नहीं थीं।

[60]तब उनके सामने महायाजक ने खड़े होकर यीशु से पूछा, "ये लोग तेरे विरोध में ये क्या गवाहियाँ दे रहे हैं? क्या उत्तर में तुझे कुछ नही कहना?" [61]इस पर यीशु चुप रहा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

महायाजक ने उससे फिर पूछा, "क्या तू पवित्र परमेश्वर का पुत्र मसीह है?"

[62]यीशु बोला, "मैं हूँ। और तुम मनुष्य के पुत्र को उस परम शक्तिशाली की दाहिनी ओर बैठे और स्वर्ग के बादलों में आते देखोगे।"

[63]महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़ते हुए कहा, "हमें और गवाहों की क्या आवश्यकता है? [64]तुमने ये अपमानपूर्ण बातें कहते हुए इसे सुना, अब तुम्हारा क्या विचार है?"

उन सब ने उसे अपराधी ठहराते हुए कहा, "इसे मृत्यु–दण्ड मिलना चाहिये।" [65]तब कुछ लोग उस पर थूकते, कुछ उसका मुँह ढकते, कुछ घूँसे मारते और कुछ हँसी उड़ाते कहने लगे, "भविष्यवाणी कर!" और फिर पहरेदारों ने पकड़ कर उसे पीटा।

पतरस का यीशु को नकारना

[66]पतरस अभी नीचे आँगन ही में बैठा था कि महायाजक की एक दासी आई। [67]जब उसने पतरस को वहाँ आग तापते देखा तो बड़े ध्यान से उसे पहचान कर बोली, "तू भी तो उस यीशु नासरी के ही साथ था।" [68]किन्तु पतरस मुकर गया और कहने लगा, "मैं नहीं जानता या मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि तू क्या कह रही है।" यह कहते हुए वह ड्योढ़ी तक चला गया, और मुर्गे ने बाँग दी।*

[69]उस दासी ने जब उसे दुबारा देखा तो वहाँ खड़े लोगों से फिर कहने लगी, "यह व्यक्ति भी उन ही में से एक है।"[70]पतरस फिर मुकर गया। फिर थोड़ी देर बाद वहाँ खड़े लोगों ने पतरस से कहा, "निश्चय ही तू उनमें से एक है क्योंकि तू भी गलील का है।"

और ... दी बहुत से युनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

[71]तब पतरस अपने को धिक्कारने और कसमें खाने लगा, "जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो, उस व्यक्ति को मैं नहीं जानता!"

[72]तत्काल, मुर्गे ने दूसरी बार बाँग दी। पतरस को उसी समय वे शब्द याद हो आये जो उससे यीशु ने कहे थे: "इससे पहले कि मुर्गा दो बार बाँग दे, तू मुझे तीन बार नकारेगा।" तब पतरस जैसे टूट गया। वह फूट-फूट कर रोने लगा।

यीशु पिलातुस के सामने पेश

15 जैस ही सुबह हुई महायाजकों, धर्मशास्त्रियों, बुजुर्ग यहूदी नेताओं और समूची यहूदी महासभा ने एक योजना बनायी। वे यीशु को बँधवा कर ले गये और उसे पिलातुस को सौंप दिया। [2]पिलातुस ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

यीशु ने उत्तर दिया, "ऐसा ही है। तू स्वयं कह रहा है।"

[3]फिर प्रमुख याजकों ने उस पर बहुत से दोष लगाये। [4]पिलातुस ने उससे फिर पूछा, "क्या तुझे उत्तर नहीं देना है? देख वे कितनी बातों का दोष तुझ पर लगा रहे हैं।"

[5]किन्तु यीशु ने अब भी कोई उत्तर नहीं दिया। इस पर पिलातुस को बहुत अचरज हुआ।

पिलातुस यीशु को छोड़ने में विफल

[6]फ़सह पर्व के अवसर पर पिलातुस किसी भी एक बंदी को, जिसे लोग चाहते थे उनके लिये छोड़ दिया करता था। [7]बरअब्बा नाम का एक बंदी उन बलवाइयों के साथ जेल में था जिन्होंने दंगें में हत्या की थी। [8]लोग आये और पिलातुस से कहने लगे कि वह जैसा सदा से उनके लिए करता आया है, वैसा ही करे।

[9]पिलातुस ने उनसे पूछा, "क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?" [10]पिलातुस ने यह इसलिए कहा कि वह जानता था कि प्रमुख याजकों ने ईर्ष्या-द्वेष के कारण ही उसे पकड़वाया है। [11]किन्तु प्रमुख याजकों ने भीड़ को उकसाया कि वह उसके बजाय उनके लिये बरअब्बा को ही छोड़े।

[12]किन्तु पिलातुस ने उनसे बातचीत करके फिर पूछा, "जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसका मैं क्या करूँ बताओ तुम क्या चाहते हो?"

[13]उत्तर में वे चिल्लाये, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!"

[14]तब पिलातुस ने उनसे पूछा, "क्यों, उसने ऐसा क्या अपराध किया है?"

पर उन्होंने और अधिक चिल्ला कर कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो।"

[15]पिलातुस भीड़ को खुश करना चाहता था इसलिये उसने उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवा कर क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

[16]फिर सिपाही उसे रोम के राज्यपाल निवास में ले गये। उन्होंने सिपाहियों की पूरी पलटन को बुला लिया। [17]फिर उन्होंने यीशु को बैंजनी रंग का वस्त्र पहनाया और काँटों का एक ताज बना कर उसके सिर पर रख दिया। [18]फिर उसे सलामी देने लगे: "यहूदियों के राजा का स्वागत है!" [19]वे उसके सिर पर सरकंडे मारते जा रहे थे। वे उस पर थूक रहे थे। और घुटनों के बल झुक कर वे उसके आगे नमन करते जाते थे। [20]इस तरह जब वे उसकी खिल्ली उड़ा चुके तो उन्होंने उसका बैंजनी वस्त्र उतारा और उसे उसके अपने कपड़े पहना दिये। और फिर उसे क्रूस पर चढ़ाने, बाहर ले गये।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

[21]उन्हें कुरैन का रहने वाला शिमौन नाम का एक व्यक्ति, रास्ते में मिला। वह गाँव से आ रहा था। वह सिकन्दर और रुफुस का पिता था। सिपाहियों ने उस पर दबाव डाला कि वह यीशु का क्रूस उठा कर चले। [22]फिर वे यीशु को गुलगुता नामक स्थान पर ले गये (जिसका अर्थ है "खोपड़ी-स्थान।") [23]तब उन्होंने उसे लोहबान मिला हुआ दाखरस पीने को दिया। किन्तु उसने उसे नहीं लिया। [24]फिर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया। उसके वस्त्र उन्होंने बाँट लिये और यह देखने के लिए कि कौन क्या ले, उन्होंने पासे फेंके।

[25]दिन के नौ बजे थे, जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया। [26]उसके विरुद्ध एक लिखित अभियोग पत्र उस पर अंकित था: "यहूदियों का राजा।" [27]उसके साथ दो डाकू भी क्रूस पर चढ़ाये गये। एक उसके दाहिनी ओर और दूसरा बाँई ओर। [28]["तब धर्मशास्त्र का वह वचन, 'वह डाकूओं के संग गिना गया', पूरा हुआ।"]* [29]उसके पास से निकलते हुए लोग उसका अपमान कर रहे थे। अपना सिर

पद 28 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 28 जोड़ा गया है।

नचा–नचा कर वे कहते, "अरे, वाह! तू वही है जो मंदिर को ढहा कर तीन दिन में फिर बनाने वाला था। 30अब क्रूस पर से नीचे उतर और अपने आप को तो बचा ले!"

31इसी तरह प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों ने भी यीशु की खिल्ली उड़ाई। वे आपस में कहने लगे, "यह औरों का उद्धार करता था, पर स्वयं अपने को नहीं बचा सकता है। 32अब इस 'मसीह' और 'इस्राएल के राजा को' क्रूस पर से नीचे तो उतरने दे ताकि हम यह देख कर उसमें विश्वास कर सकें।" उन दोनों ने भी, जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, उसका अपमान किया।

यीशु की मृत्यु

33फिर समूची धरती पर दोपहर तक अंधकार छाया रहा। 34दिन के तीन बजे ऊँचे स्वर में पुकारते हुए यीशु ने कहा, "इलोई, इलोई, लमा शबकतनी।" अर्थात्, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों भुला दिया?"

35जो पास में खड़े थे, उनमें से कुछ ने जब यह सुना तो वे बोले, "सुनो! यह एलिय्याह को पुकार रहा है।"

36तब एक व्यक्ति दौड़ कर सिरके में डुबोया हुआ स्पंज एक छड़ी पर टाँग कर लाया और उसे यीशु को पीने के लिए दिया और कहा, "ठहरो, देखते हैं कि इसे नीचे उतारने के लिए एलिय्याह आता है कि नहीं।"

37फिर यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा और प्राण त्याग दिये।

38तभी मंदिर का पट ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। 39सेना के एक अधिकारी ने जो यीशु के सामने खड़ा था, उसे पुकारते हुए सुना और देखा कि उसने प्राण कैसे त्यागे। उसने कहा, "यह व्यक्ति वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था!"

40कुछ स्त्रियाँ वहाँ दूर से खड़ी देख रही थीं जिनमें मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम और सलौमी थीं। 41जब यीशु गलील में था तो ये स्त्रियाँ उसकी अनुयायी थीं और उसकी सेवा करती थीं। वहीं और भी बहुत सी स्त्रियाँ थीं जो उसके साथ यरुशलेम तक आयी थीं।

यीशु का दफ़नाया जाना

42शाम हो चुकी थी और क्योंकि सब्त के पहले का, वह तैयारी का दिन था 43इसलिये अरिमतिया का यूसुफ़ आया। वह यहूदी महासभा का सम्मानित सदस्य था और परमेश्वर के राज्य के आने की बाट जोहता था। साहस के साथ वह पिलातुस के पास गया और उससे यीशु का शव माँगा। 44पिलातुस को बड़ा अचरज हुआ कि वह इतनी जल्दी कैसे मर गया। उसने सेना के अधिकारी को बुलाया और उससे पूछा क्या उसको मरे काफी देर हो चुकी है? 45फिर जब उसने सेनानायक से ब्यौरा सुन लिया तो यूसुफ को शव दे दिया। 46फिर यूसुफ ने सन के उत्तम रेशों का बना थोड़ा कपड़ा खरीदा, यीशु को क्रूस पर से नीचे उतारा, उसके शव को उस वस्त्र में लपेटा और उसे एक कब्र में रख दिया जिसे शिला को काट कर बनाया गया था। और फिर कब्र के मुँह पर एक बड़ा सा पत्थर लुढ़का कर टिका दिया। 47मरियम मगदलीनी और योसेस की माँ मरियम देख रही थीं कि यीशु को कहाँ रखा गया है।

यीशु का फिर से जी उठना

16 सब्त का दिन बीत जाने पर मरियम मगदलीनी, सलौमी और याकूब की माँ मरियम ने यीशु के शव का अभिषेक कर पाने के लिये सुगन्ध–सामग्री मोल ली। 2सप्ताह के पहले दिन बड़ी सुबह सूरज निकलते ही वे कब्र पर गयीं। 3वे आपस में कह रही थीं, "हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर को कौन सरकाएगा?"

4फिर जब उन्होंने आँख उठाईं तो देखा कि वह बहुत बड़ा पत्थर वहाँ से हटा हुआ है। 5फिर जब वे कब्र के भीतर गयीं तो उन्होंने देखा कि श्वेत वस्त्र पहने हुए एक युवक दाहिनी ओर बैठा है। वे सहम गयीं।

6फिर युवक ने उनसे कहा, "डरो मत, तुम जिस यीशु नासरी को ढूँढ रही हो, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह जी उठा है! वह यहाँ नहीं है। इस स्थान को देखो जहाँ उन्होंने उसे रखा था। 7अब तुम जाओ और उसके शिष्यों तथा पतरस से कहो कि वह तुम से पहले ही गलील जा रहा है जैसा कि उसने तुमसे कहा था, वह तुम्हें वहीं मिलेगा।"

8तब भय और अचरज में डूबीं वे कब्र से बाहर निकल कर भाग गयीं। उन्होंने किसी को कुछ नहीं बताया क्योंकि वे बहुत घबराई हुई थीं

[मरकुस पुस्तक की कुछ आदिम यूनानी प्रतियाँ पद आठ पर ही समाप्त हो जाती हैं।]

कुछ अनुयायियों को यीशु का दर्शन

[9]सप्ताह के पहले दिन प्रभात में जी उठने के बाद वह सबसे पहले मरियम मगदलीनी के सामने प्रकट हुआ जिसे उसने सात दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया था। [10]उसने यीशु के साथियों को, जो शोक में डूबे, विलाप कर रहे थे, जाकर बताया। [11]जब उन्होंने सुना कि यीशु जीवित है और उसने उसे देखा है तो उन्होने विश्वास नहीं किया।

[12]इसके बाद उनमें से दो के सामने जब वे खेतों को जाते हुए, मार्ग में थे, वह एक दूसरे रूप में प्रकट हुआ। [13]उन्होंने लौट कर औरों को भी इसकी सूचना दी पर उन्होंने भी उनका विश्वास नहीं किया।

शिष्यों से यीशु की बातचीत

[14]बाद में, जब उसके ग्यारहों शिष्य भोजन कर रहे थे, वह उनके सामने प्रकट हुआ और उसने उन्हें उनके अविश्वास और मन की जड़ता के लिए डाँटा फटकारा क्योंकि इन्होंने उनका विश्वास ही नहीं किया था जिन्होंने जी उठने के बाद उसे देखा था।

[15]फिर उसने उनसे कहा, "जाओ और सारी दुनिया के लोगों को सुसमाचार का उपदेश दो। [16]जो कोई विश्वास करता है और बपतिस्मा लेता है, उसका उद्धार होगा और जो अविश्वासी है, वह दोषी ठहराया जायेगा। [17]"जो मुझमें विश्वास करेंगे, उनमें ये चिह्न होंगे: वे मेरे नाम पर दुष्टात्माओं को बाहर निकाल सकेंगे, वे नयी–नयी भाषा बोलेंगे, [18]वे अपने हाथों से साँप पकड़ लेंगे और वे यदि विष भी पी जायें तो उनको हानि नहीं होगी, वे रोगियों पर अपने हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे।"

[19]इस प्रकार जब प्रभु यीशु उनसे बात कर चुका तो उसे स्वर्ग पर उठा लिया गया। वह परमेश्वर के दाहिने बैठ गया। [20]उसके शिष्यों ने बाहर जा कर सब कहीं उपदेश दिया, उनके साथ प्रभु काम कर रहा था। प्रभु ने वचन को आश्चर्यकर्म की शक्ति से युक्त करके सत्य सिद्ध किया।

लूका

1 बहुत से लोगों ने हमारे बीच घटी बातों का ब्यौरा लिखने का प्रयत्न किया। [2]वे ही बातें हमें उन लोगों द्वारा बतायी गयीं, जिन्होंने उन्हें प्रारम्भ से ही घटते देखा था और जो सुसमाचार के प्रचारक रहे थे। [3]हे मान्यवर थियुफिलुस! क्योंकि मैंने प्रारम्भ से ही सब कुछ का बड़ी सावधानी से अध्ययन किया है इसलिए मुझे यह उचित जान पड़ा कि मैं भी तुम्हारे लिये इसका एक क्रमानुसार विवरण लिखूँ। [4]जिससे तुम उन बातों की निश्चिंतता को जान लो जो तुम्हें सिखाई गयी हैं।

जकरयाह और इलीशिबा

[5]उन दिनों जब यहूदिया पर हेरोदेस का राज था वहाँ जकरयाह नाम का एक यहूदी याजक हुआ करता था। जो उपासकों के अबिय्याह समुदाय* का था उसकी पत्नी का नाम इलीशिबा था और वह हारुन के परिवार से थी। [6]वे दोनों ही धर्मी थे। वे बिना किसी दोष के प्रभु के सभी आदेशों और नियमों का पालन करते थे। [7]किन्तु उनके कोई संतान नहीं थी, क्योंकि इलीशिबा बाँझ थी और वे दोनों ही बहुत बूढ़े हो चले थे।

[8]जब जकरयाह के समुदाय की मंदिर में याजक के काम की बारी थी, और वह परमेश्वर के सामने उपासना के लिये उपस्थित था। [9]तो याजकों में चली आ रही परम्परा के अनुसार पर्ची डालकर उसे चुना गया कि वह प्रभु के मंदिर में जाकर धूप जलाये। [10]जब धूप जलाने का समय आया तो बाहर इकट्ठे हुए लोग प्रार्थना कर रहे थे।

[11]उसी समय जकरयाह के सामने प्रभु का एक दूत प्रकट हुआ। वह धूप की वेदी के दाहिनी ओर खड़ा था। [12]जब जकरयाह ने उस दूत को देखा तो वह घबरा गया और भय ने जैसे उसे जकड़ लिया हो। [13]फिर प्रभु के दूत ने उससे कहा, "जकरयाह डर मत, तेरी प्रार्थना सुन ली गयी है। इसलिये तेरी पत्नी इलीशिबा एक पुत्र को जन्म देगी, तू उसका नाम यूहन्ना रखना। [14]वह तुम्हें तो आनन्द और प्रसन्नता देगा ही, साथ ही उसके जन्म से और भी बहुत से लोग प्रसन्न होंगे। [15]क्योंकि वह प्रभु की दृष्टि में महान होगा। वह कभी भी किसी दाखरस या किसी भी मदिरा का सेवन नहीं करेगा। अपने जन्म काल से ही वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा। [16]वह इस्राएल के बहुत से लोगों को उनके प्रभु परमेश्वर की ओर लौटने को प्रेरित करेगा। [17]वह एलिय्याह की शक्ति और आत्मा में स्थित हो प्रभु के आगे आगे चलेगा। वह पिताओं का हृदय उनकी संतानों की ओर वापस मोड़ देगा और वह आज्ञा ना मानने वालों को ऐसे विचारों की ओर प्रेरित करेगा जिससे वे धर्मियों के जैसे विचार रखें। यह सब, वह लोगों को प्रभु की खातिर तैयार करने के लिए करेगा।"

[18]तब जकरयाह ने प्रभु के दूत से कहा, "मैं यह कैसे जानूँ कि यह सच है? क्योंकि मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो चली है।"

[19]तब प्रभु के दूत ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "मैं जिब्राईल हूँ। मैं वह हूँ जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता हूँ। मुझे तुझ से बात करने और इस सुसमाचार को बताने को भेजा गया है। [20]किन्तु देख! क्योंकि तूने मेरे शब्दों पर, जो निश्चित समय आने पर सत्य सिद्ध होंगे, विश्वास नहीं किया, इसलिये तू गूँगा हो जायेगा और उस दिन तक नहीं बोल पायेगा जब तक यह पूरा न हो ले।"

[21]उधर बाहर लोग जकरयाह की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्हें अचरज हो रहा था कि वह इतनी देर मन्दिर में क्यों रुका हुआ है। [22]फिर जब वह बाहर आया तो उनसे बोल नहीं पा रहा था। उन्हें लगा जैसे मन्दिर के भीतर उसे कोई

समुदाय यहूदी याजकों को 24 समुदायों में बाँटा गया था। देखें 1 इति. 24:7−18

दर्शन हुआ है। वह गूँगा हो गया था और केवल संकेत कर रहा था। [23]और फिर ऐसा हुआ कि जब उसका उपासना के काम का समय पूरा हो गया तो वह वापस अपने घर लौट गया।

[24]थोड़े दिनों बाद उसकी पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई। पाँच महीने तक वह सबसे अलग थलग रही। उसने कहा, [25]"अब अन्त में जाकर इस प्रकार प्रभु ने मेरी सहायता की है। लोगों के बीच मेरी लाज रखने को उसने मेरी सुधि ली।"

कुँवारी मरियम

[26]इलीशिबा को जब छठा महीना चल रहा था, गलील के एक नगर नासरत में परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूत जिब्राईल को [27]एक कुँवारी के पास भेजा गया जिसकी यूसुफ़ नाम के एक व्यक्ति से सगाई हो चुकी थी। वह दाऊद का वंशज था। और उस कुँवारी का नाम मरियम था। [28]जिब्राईल उसके पास आया और बोला, "तुझ पर अनुग्रह हुआ है, तेरी जय हो। प्रभु तेरे साथ हैं।"

[29]यह वचन सुन कर वह बहुत घबरा गयी, वह सोच में पड़ गयी कि इस अभिवादन का अर्थ क्या हो सकता है?

[30]तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मरियम, डर मत, तुझ से परमेश्वर प्रसन्न है। [31]सुन! तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नाम यीशु रखेगी। [32]वह महान, होगा और वह परम परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा। और प्रभु परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन प्रदान करेगा। [33]वह अनन्त काल तक याकूब के घराने पर राज करेगा तथा उसके राज्य का अंत कभी नहीं होगा।"

[34]इस पर मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह सत्य कैसे हो सकता है? क्योंकि मैं तो अभी कुँवारी हूँ!"

[35]उत्तर में स्वर्गदूत ने उससे कहा, "तेरे पास पवित्र आत्मा आयेगा और परम प्रधान (परमेश्वर) की शक्ति तुझे अपनी छाया में ले लेगी। इस प्रकार वह जन्म लेने वाला पवित्र बालक परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा। [36]और यह भी सुन कि तेरे ही कुनबे की इलीशिबा के गर्भ में भी बुढ़ापे में एक पुत्र है और उसके गर्भ का यह छठा महीना है। लोग कहते थे कि वह बाँझ है। [37]किन्तु परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं।"

[38]मरियम ने कहा, "मैं प्रभु की दासी हूँ। जैसा तूने मेरे लिये कहा है, वैसा ही हो!" और तब वह स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।

जकरयाह और इलीशिबा के पास मरियम का जाना

[39]उन्हीं दिनों मरियम तैयार होकर तुरन्त यहूदिया के पहाड़ी प्रदेश में स्थित एक नगर को चल दी। [40]फिर वह जकरयाह के घर पहुँची और उसने इलीशिबा को अभिवादन किया। [41]हुआ यह कि जब इलीशिबा ने मरियम का अभिवादन सुना तो जो बच्चा उसके पेट में था, उछल पड़ा और इलीशिबा पवित्र आत्मा से अभिभूत हो उठी। [42]ऊँची आवाज में पुकारते हुए वह बोली, "तू सभी स्त्रियों में सबसे अधिक भाग्यशाली है और जिस बच्चे को तू जन्म देगी, वह धन्य है। [43]किन्तु यह इतनी बड़ी बात मेरे साथ क्यों घटी कि मेरे प्रभु की माँ मेरे पास आयी! [44]क्योंकि तेरे अभिवादन का शब्द जैसे ही मेरे कानों में पहुँचा, मेरे पेट में बच्चा खुशी से उछल पड़ा। [45]तू धन्य है, जिसने यह विश्वास किया कि प्रभु ने जो कुछ कहा है वह हो कर रहेगा।"

मरियम द्वारा परमेश्वर की स्तुति

[46]तब मरियम ने कहा,

[47] "मेरी आत्मा प्रभु (परमेश्वर) की स्तुति करती है;
मेरी आत्मा मेरे रखवाले परमेश्वर
में आनन्दित है।

[48] उसने अपनी दीन दासी की सुधि ली,
हाँ आज के बाद सभी मुझे धन्य कहेंगे।

[49] क्योंकि उस शक्तिशाली ने
मेरे लिये महान कार्य किये।
उसका नाम पवित्र है।

[50] जो उससे डरते हैं वह उन पर
पीढ़ी दर पीढ़ी दया करता है।

[51] उसने अपने हाथों की शक्ति दिखाई।
उसने अहंकारी लोगों को
उनके अभिमानपूर्ण विचारों के साथ
तितर–बितर कर दिया।

[52] उसने सम्राटों को उनके सिंहासनों से
नीचे उतार दिया।
और उसने विनम्र लोगों को ऊँचा उठाया।

53 उसने भूखे लोगों को अच्छी वस्तुओं से
भरपूर कर दिया और धनी लोगों को
खाली हाथों लौटा दिया।
54 वह अपने दास इस्राएल की सहायता करने
आया हमारे पुरखों को दिये वचन के अनुसार
55 उसे इब्राहीम और उसके वंशजों पर
सदा सदा दया दिखाने की याद रही।"

56मरियम कोई तीन महीने तक इलीशिबा के साथ ठहरी और फिर अपने घर लौट आयी।

यूहन्ना का जन्म

57फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का समय आया और उसके घर एक पुत्र पैदा हुआ। 58जब उसके पड़ोसियों और उसके परिवार के लोगों ने सुना कि प्रभु ने उस पर दया दर्शायी है तो सबने उसके साथ मिल कर हर्ष मनाया।

59और फिर ऐसा हुआ कि आठवें दिन बालक का ख़तना करने के लिए लोग वहाँ आये। वे उसके पिता के नाम के अनुसार उसका नाम जकरयाह रखने जा रहे थे, 60तभी उसकी माँ बोल उठी, "नहीं, इसका नाम तो यूहन्ना रखा जाना है।"

61तब वे उससे बोले, "तुम्हारे किसी भी सम्बन्धी का यह नाम नहीं है।" 62और फिर उन्होंने संकेतों में उसके पिता से पूछा कि वह उसे क्या नाम देना चाहता है?

63इस पर जकरयाह ने उनसे लिखने के लिये एक तख्ती माँगी और लिखा, "इसका नाम है यूहन्ना।" इस पर वे सब अचरज में पड़ गये। 64तभी तत्काल उसका मुँह खुल गया और उसकी वाणी फूट पड़ी। वह बोलने लगा और परमेश्वर की स्तुति करने लगा। 65इससे सभी पड़ोसी डर गये और यहूदिया के सारे पहाड़ी क्षेत्र में लोगों में इन सब बातों की चर्चा होने लगी। 66जिस किसी ने भी यह बात सुनी, अचरज में पड़कर कहने लगा, "यह बालक क्या बनेगा?" क्योंकि प्रभु का हाथ उस पर है।

जकरयाह की स्तुति

67तब उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से अभिभूत हो उठा और उसने भविष्यवाणी की:

68 "इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की जय हो
क्योंकि वह अपने लोगों की सहायता के
लिए आया और उन्हें स्वतन्त्र कराया।
69 उसने हमारे लिये अपने सेवक दाऊद के
परिवार से एक रक्षक प्रदान किया।
70 जैसा कि उसने बहुत पहले अपने पवित्र
भविष्यवक्ताओं के द्वारा वचन दिया था।
71 उसने हमें हमारे शत्रुओं से और उन सब
के हाथों से, जो हमें घृणा करते थे,
हमारे छुटकारे का वचन दिया था।
72 हमारे पुरखों पर दया दिखाने का और
अपने पवित्र वचन को याद रखने का।
73 उसका वचन था एक वह शपथ जो
हमारे पूर्वज इब्राहीम के साथ ली गयी थी
74 कि हमारे शत्रुओं के हाथों से हमारा
छुटकारा हो और बिना किसी डर के
प्रभु की सेवा करने की अनुमति मिले।
75 और अपने जीवन भर हर दिन उसके सामने
हम पवित्र और धर्मी रह सकें।
76 "हे बालक, अब तू परम प्रधान (परमेश्वर)
का नबी कहलायेगा
क्योंकि तू प्रभु के आगे-आगे चल कर
उसके लिए राह तैयार करेगा।
77 और उसके लोगों से कहेगा कि उनके
पापों की क्षमा द्वारा उनका उद्धार होगा।
78 हमारे परमेश्वर के कोमल अनुग्रह से
एक नये दिन का प्रभात
हम पर ऊपर से उतरेगा।
79 उन पर चमकने के लिये जो मौत की गहन
छाया में जी रहे हैं ताकि हमारे चरणों
को शांति के मार्ग की दिशा मिले।"

80इस प्रकार वह बालक बढ़ने लगा और उसकी आत्मा दृढ़ से दृढ़तर होने लगी। वह जनता में प्रकट होने से पहले तक निर्जन स्थानों में रहता रहा।

यीशु का जन्म

2 उन्हीं दिनों औगुस्तुस कैसर की ओर से एक आज्ञा निकली कि सारे रोमी जगत की जनगणना अंकित की जाये। 2यह पहली जनगणना थी। यह उन दिनों हुई थी जब सीरिया का राज्यपाल क्विरिनियुस था। 3सो गणना के लिए हर कोई अपने अपने नगर गया।

[4]यूसुफ भी, क्योंकि वह दाऊद के परिवार एवं वंश से था, इसलिये वह भी गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया। [5]वह वहाँ अपनी मँगेतर मरियम के साथ, जो गर्भवती भी थी, अपना नाम लिखवाने गया था। [6]ऐसा हुआ कि अभी जब वे वहीं थे, मरियम का बच्चा जनने का समय आ गया। [7]और उसने अपने पहले पुत्र को जन्म दिया। क्योंकि वहाँ सराय के भीतर उन लोगों के लिये कोई स्थान नहीं मिल पाया था इसलिए उसने उसे कपड़ों में लपेट कर चरनी में लिटा दिया।

यीशु के जन्म की सूचना

[8]तभी वहाँ उस क्षेत्र में बाहर खेतों में कुछ गडरिये थे जो रात के समय अपने रेवड़ों की रखवाली कर रहे थे। [9]उसी समय प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके सामने प्रकट हुआ और उनके चारों ओर प्रभु का तेज प्रकाशित हो उठा। वे सहम गए। [10]तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो मत, मैं तुम्हारे लिये अच्छा समाचार लाया हूँ, जिससे सभी लोगों को महान आनन्द होगा। [11]क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे उद्धारकर्ता प्रभु मसीह का जन्म हुआ है। [12]तुम्हें उसे पहचानने का चिह्न होगा कि तुम एक बालक को कपड़ों में लिपटा, चरनी में लेटा पाओगे।"

[13]उसी समय अचानक उस स्वर्गदूत के साथ बहुत से और स्वर्गदूत वहाँ उपस्थित हुए। वे यह कहते हुए प्रभु की स्तुति कर रहे थे,

[14] "स्वर्ग में परमेश्वर की जय हो
और धरती पर उन लोगों को शांति मिले
जिनसे वह प्रसन्न है।"

[15]और जब स्वर्गदूत उन्हें छोड़कर स्वर्ग लौट गये तो वे गड़ेरिये आपस में कहने लगे "आओ हम बैतलहम चलें और जो घटना घटी है और जिसे प्रभु ने हमें बताया है, उसे देखें।"

[16]सो वे शीघ्र ही चल दिये और वहाँ जाकर उन्होंने मरियम और यूसुफ को पाया और देखा कि बालक चरनी में लेटा हुआ है। [17]गडरियों ने जब उसे देखा तो इस बालक के विषय में जो संदेश उन्हें दिया गया था, उसे उन्होंने सब को बता दिया। [18]जिस किसी ने भी उन्हें सुना, वे सभी गड़ेरियों की कही बातों पर आश्चर्य करने लगे। [19]किन्तु मरियम ने इन सब बातों को अपने मन में बसा लिया और वह उन पर जब तब विचार करने लगी। [20]उधर वे गड़ेरिये जो कुछ उन्होंने सुना था और देखा था, उस सब कुछ के लिए परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए अपने अपने घरों को लौट गये।

[21]और जब बालक के ख़तने का आठवाँ दिन आया तो उस का नाम यीशु रखा गया। उसे यह नाम उसके गर्भ में आने से भी पहले स्वर्गदूत द्वारा दे दिया गया था।

यीशु मन्दिर में अर्पित

[22]और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार सूतक के दिन पूरे हुए और शुद्ध होने का समय आया तो वे यीशु को प्रभु को समर्पित करने के लिये यरूशलेम ले गये। [23]प्रभु की व्यवस्था में लिखे अनुसार, "हर पहली नर सन्तान प्रभु को समर्पित मानी जाएगी।"* [24]और प्रभु की व्यवस्था कहती है, "एक जोड़ी कपोत या कबूतर के दो बच्चे बलि चढ़ाने चाहिए" सो वे व्यवस्था के अनुसार बलि चढ़ाने ले गये।

शमौन को यीशु का दर्शन

[25]यरूशलेम में शमौन नाम का एक धर्मी और भक्त व्यक्ति हुआ करता था। वह इस्राएल के सुख–चैन की बाट जोहता रहता था। पवित्र आत्मा उसके साथ था। [26]पवित्र आत्मा द्वारा उसे प्रकट किया गया था कि जब तक वह प्रभु के मसीह के दर्शन नहीं कर लेगा, मरेगा नहीं। [27]वह आत्मा से प्रेरणा पाकर मंदिर में आया और जब व्यवस्था के विधि के अनुसार कार्य के लिये बालक यीशु को उसके माता–पिता मंदिर में लाये। [28]तो शमौन यीशु को अपनी गोद में उठा कर परमेश्वर की स्तुति करते हुए बोला:

[29] "प्रभु, अब तू अपने वचन के अनुसार
मुझ अपने दास को शांति के साथ मुक्त कर
[30] क्योंकि मैं अपनी आँखों से तेरे
उस उद्धार का दर्शन कर चुका हूँ
[31] जिसे तूने सभी लोगों के
सामने तैयार किया है।
[32] यह बालक ग़ैर यहूदियों के लिए तेरे मार्ग को
उजागर करने के हेतु प्रकाश का स्रोत है

हर पहली ... मानी जाएगी देखें निर्गमन 13:2

और तेरे अपने इस्राएल के लोगों के लिये
यह महिमा है।"

[33]उसके माता–पिता यीशु के लिए कही गयी इन बातों से अचरज में पड़ गये। [34]फिर शमौन ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उसकी माँ मरियम से कहा, "यह बालक इस्राएल में बहुतों के पतन या उत्थान का कारण बनने और एक ऐसा चिन्ह ठहराया जाने के लिए निर्धारित किया गया है जिसका विरोध किया जायेगा। [35] जिससे असंख्य हृदयों के भाव प्रकट हो जायेंगे।"

हन्नाह द्वारा यीशु के दर्शन

[36]वहीं हन्नाह नाम की एक महिला नबी थी। वह अशेर कबीले के फनूएल की पुत्री थी। वह बहुत बूढ़ी थी। अपने विवाह के बस सात साल बाद तक ही वह पति के साथ रही थी। [37]और फिर चौरासी वर्ष तक वह वैसे ही विधवा रही। उसने मंदिर कभी नहीं छोड़ा। उपवास और प्रार्थना करते हुए वह रात–दिन उपासना करती रहती थी। [38]उसी समय वह उस बच्चे और माता–पिता के पास आई। उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया और जो लोग यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोह रहे थे, उन सब को उस बालक के बारे में बताया।

यूसुफ और मरियम का घर लौटना

[39]प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सारा अपेक्षित विधि–विधान पूरा करके वे गलील में अपने नगर नासरत लौट आये। [40]उधर वह बालक बढ़ता एवं हृष्ट–पुष्ट होता गया। वह बहुत बुद्धिमान था और उस पर परमेश्वर का अनुग्रह था।

बालक यीशु

[41]फ़सह पर्व पर हर वर्ष उसके माता–पिता यरूशलेम जाया करते थे। [42]जब वह बारह साल का हुआ तो सदा की तरह वे पर्व पर गये। [43]जब पर्व समाप्त हुआ और वे घर लौट रहे थे तो यीशु वहीं यरूशलेम में रह गया किन्तु माता–पिता को इसका पता नहीं चल पाया। [44]यह सोचते हुए कि वह दल में कहीं होगा, वे दिन भर यात्रा करते रहे। फिर वे उसे अपने संबन्धियों और मित्रों के बीच खोजने लगे। [45]और जब वह उन्हें नहीं मिला तो उसे ढूँढते ढूँढते वे यरूशलेम लौट आये। [46]और फिर हुआ यह कि तीन दिन बाद वह उपदेशकों के बीच बैठा, उन्हें सुनता और उनसे प्रश्न पूछता मंदिर में उन्हें मिला। [47]वे सभी जिन्होंने उसे सुना था, उसकी सूझबूझ और उसके प्रश्नोत्तरों से आश्चर्यचकित थे। [48]जब उसके माता–पिता ने उसे देखा तो वे दंग रह गये। उसकी माता ने उससे पूछा, "बेटे, तुमने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? तेरे पिता और मैं तुझे ढूँढते हुए बुरी तरह व्याकुल थे।"

[49]तब यीशु ने उनसे कहा, "आप मुझे क्यों ढूँढ रहे थे? क्या तुम नहीं जानते कि मुझे मेरे पिता के घर में ही होना चाहिये?" [50]किन्तु यीशु ने उन्हें जो उत्तर दिया था, वे उसे समझ नहीं पाये।

[51]फिर वह उनके साथ नासरत लौट आया और उनकी आज्ञा का पालन करता रहा। उसकी माता इन सब बातों को अपने मन में रखती जा रही थी। [52]उधर यीशु बुद्धि में, डील–डौल में और परमेश्वर तथा मनुष्यों के प्रेम में बढ़ने लगा।

यूहन्ना का संदेश

3 तिबिरियुस कैसर के शासन के पन्द्रहवें साल में जब यहूदिया का राज्यपाल पुन्तियुस पिलातुस था और उस प्रदेश के चौथाई भाग के राजाओं में हेरोदेस गलील का, उसका भाई फिलिप्पुस इतूरैया और त्रखोनीतिस का, तथा लिसानियास अबिलेने का अधीनस्थ शासक था। [2]और यूहन्ना तथा कैफा महायाजक थे, तभी जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास जंगल में परमेश्वर का वचन पहुँचा। [3]सो यर्दन के आसपास के समूचे क्षेत्र में घूम घूम कर वह पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के हेतु बपतिस्मा का प्रचार करने लगा। [4]भविष्यवक्ता यशायाह के वचनों की पुस्तक में जैसा लिखा है:

"किसी का जंगल में पुकारता हुआ शब्द:
'प्रभु के लिये मार्ग तैयार करो
और उसके लिये राहें सीधी करो।
[5] हर घाटी भर दी जायेगी और हर पहाड़
और पहाड़ी सपाट हो जायेंगे
टेढ़ी–मेढ़ी और ऊबड़–खाबड़ राहें
समतल कर दी जायेंगी
[6] और सभी लोग परमेश्वर के उद्धार
का दर्शन करेंगे!'"

यशायाह 40:3–5

[7]यूहन्ना उससे बपतिस्मा लेने आये अपार जन समूह से कहता, "अरे साँप के बच्चो! तुम्हें किसने चेता दिया है कि तुम आने वाले क्रोध से बच निकलो? [8]परिणामों द्वारा तुम्हें प्रमाण देना होगा कि वास्तव में तुम्हारा मन फिरा है। और आपस में यह कहना तक आरंभ मत करो कि 'इब्राहीम हमारा पिता है।' मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर इब्राहीम के लिये इन पत्थरों से भी बच्चे पैदा करा सकता है। [9]पेड़ों की जड़ों पर कुल्हाड़ा रखा जा चुका है और हर उस पेड़ को जो उत्तम फल नहीं देता, काट गिराया जायेगा और फिर उसे आग में झोंक दिया जायेगा।"

[10]तब भीड़ ने उससे पूछा; "तो हमें क्या करना चाहिये?"

[11]उत्तर में उसने उनसे कहा, "जिस किसी के पास दो कुर्ते हों, वह उन्हें, जिसके पास न हों, उनके साथ बाँट लें। और जिसके पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे।"

[12]फिर उन्होंने उससे पूछा, "हे गुरु, हमें क्या करना चाहिये?"

[13]इस पर उसने उनसे कहा, "जितना चाहिये उससे अधिक एकत्र मत करो।"

[14]कुछ सैनिकों ने उससे पूछा, "और हमें क्या करना चाहिये?"

सो उसने उन्हें बताया, "बल पूर्वक किसी से धन मत लो। किसी पर झूठा दोष मत लगाओ। अपने वेतन में संतोष करो।"

[15]लोग जब बड़ी आशा के साथ बाट जोह रहे थे और यूहन्ना के बारे में अपने मन में यह सोच रहे थे कि कहीं यही तो मसीह नहीं है,

[16]तभी यूहन्ना ने यह कहते हुए उन सब को उत्तर दिया: "मैं तो तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह जो मुझ से अधिक सामर्थ्यवान है, आ रहा है। मैं उसके जूतों की तनी खोलने योग्य भी नहीं हूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और अग्नि द्वारा बपतिस्मा देगा। [17]उसके हाथ में फटकने की डाँगी है, जिससे वह अनाज को भूसे से अलग कर अपने खलिहान में उठा कर रखता है। किन्तु वह भूसे को ऐसी आग में झोंक देगा जो कभी नहीं बुझने वाली।" [18]इस प्रकार ऐसे ही और बहुत से शब्दों से वह उन्हें समझाते हुए सुसमाचार सुनाया करता था।

यूहन्ना के कार्य की समाप्ति

[19](बाद में यूहन्ना ने उस चौथाई प्रदेश के अधीनस्थ राजा हेरोदेस को उसके भाई की पत्नी हिरोदिआस के साथ उसके बुरे सम्बन्धों और उसके दूसरे बुरे कर्मों के लिए डाँटा फटकारा। [20]इस पर हेरोदेस ने यूहन्ना को बंदी बनाकर, जो कुछ कुकर्म उसने किये थे, उनमें एक कुकर्म और जोड़ लिया।)

यूहन्ना द्वारा यीशु को बपतिस्मा

[21]ऐसा हुआ कि जब सब लोग बपतिस्मा ले रहे थे तो यीशु ने भी बपतिस्मा लिया। और जब यीशु प्रार्थना कर रहा था, तभी आकाश खुल गया। [22]और पवित्र आत्मा एक कबूतर का देह धारण कर उस पर नीचे उतरा। और आकाशवाणी हुई कि "तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से बहुत प्रसन्न हूँ।"

यूसुफ की वंश परम्परा

[23]यीशु ने जब अपना सेवा कार्य आरम्भ किया तो वह स्वयं लगभग तीस वर्ष का था। ऐसा सोचा गया कि वह एली के बेटे यूसुफ का पुत्र था।

[24] एली जो मत्तात का,
मत्तात जो लेवी का,
लेवी जो मलकी का,
मलकी जो यन्ना का
यन्ना जो यूसुफ का,

[25] यूसुफ जो मत्तित्याह का,
मत्तित्याह जो आमोस का,
आमोस जो नहूम का,
नहूम जो असल्याह का,
असल्याह जो नोगह का,

[26] नोगह जो मात का,
मात जो मत्तित्याह का,
मत्तित्याह जो शिमी का,
शिमी जो योसेख का,
योसेख जो योदाह का

[27] योदाह जो योनान का,
योनान जो रेसा का,
रेसा जो जरुब्बाबिल का,
जरुब्बाबिल जो शालतियेल का,

शालतियेल जो नेरी का,
28 नेरी जो मलकी का,
मलकी जो अद्दी का,
अद्दी जो कोसाम का,
कोसाम जो इलमोदाम का,
इलमोदाम जो ऐर का,
29 ऐर जो यहोशुआ का
यहोशुआ जो इलाज़ार का,
इलाज़ार जो योरीम का,
योरीम जो मत्तात का,
मत्तात जो लेवी का
30 लेवी जो शमौन का
शमौन जो यहूदा का,
यहूदा जो यूसुफ का,
यूसुफ जो योनान का,
योनान जो इलियाकीम का,
31 इलयाकीम जो मेलिया का,
मेलिया जो मिन्ना का,
मिन्ना जो मत्तात का,
मत्तात जो नातान का,
नातान जो दाऊद का,
32 दाऊद जो यिशै का,
यिशै जो ओबेद का,
ओबेद जो बोअज का,
बोअज जो सलमोन का,
सलमोन जो नहशोन का,
33 नहशोन जो अम्मीनादाब का,
अम्मीनादाब जो आदमीन का,
आदमीन जो अरनी का
अरनी जो हिस्रोन का,
हिस्रोन जो फिरिस का,
फिरिस जो यहूदाह का,
34 यहूदाह जो याकूब का,
याकूब जो इसहाक का,
इसहाक जो इब्राहीम का,
इब्राहीम जो तिरह का,
तिरह जो नाहोर का,
35 नाहोर जो सरूग का,
सरुग जो रऊ का,
रऊ जो फिलिग का,
फिलिग जो एबिर का,
एबिर जो शिलह का,
36 शिलह जो केनान का,
केनान जो अरफक्षद का,
अरफक्षद जो शेम का,
शेम जो नूह का,
नूह जो लिमिक का,
37 लिमिक जो मथूशिलह का,
मथूशिलह जो हनोक का,
हनोक जो यिरिद का,
यिरिद जो महललेल का,
महललेल जो केनान का,
38 केनान जो एनोश का,
एनोश जो शेत का
शेत जो आदम का,
और आदम जो परमेश्वर का पुत्र था।

यीशु की परीक्षा

4 पवित्र आत्मा से भावित होकर यीशु यर्दन नदी से लौट आया। आत्मा उसे वीराने में राह दिखाता रहा। 2वहाँ शैतान ने चालीस दिन तक उसकी परीक्षा ली। उन दिनों यीशु बिना कुछ खाये रहा। फिर जब वह समय पूरा हुआ तो यीशु को बहुत भूख लगी।

3सो शैतान ने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इस पत्थर से रोटी बन जाने को कह।"

4इस पर यीशु ने उसे उत्तर दिया, "शास्त्र में लिखा है:

'मनुष्य केवल रोटी पर नहीं जीता।'"

व्यवस्था विवरण 8:3

5फिर शैतान उसे बहुत ऊँचाई पर ले गया और पल भर में ही सारे संसार के राज्यों को उसे दिखाते हुए। 6शैतान ने उससे कहा, "मैं इन राज्यों का सारा वैभव और अधिकार तुझे दे दूँगा क्योंकि वह मुझे दिया गया है और मैं उसे जिसको चाहूँ दे सकता हूँ। 7सो यदि तू मेरी उपासना करे तो यह सब तेरा हो जायेगा।"

8यीशु ने उसे उत्तर देते हुए कहा, "लिखा गया है:

'तुझे बस अपने प्रभु परमेश्वर की
ही उपासना करनी चाहिये।
तुझे केवल उसी की सेवा करनी चाहिए!'"

व्यवस्था विवरण 6:13

[9]तब वह उसे यरूशलेम ले गया और वहाँ मंदिर के सबसे ऊँचे शिखर पर ले जाकर खड़ा कर दिया। और उससे बोला, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो यहाँ से अपने आप को नीचे गिरा दे! [10]क्योंकि लिखा है :

'वह अपने स्वर्गदूतों को तेरे विषय में
आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें।'"

भजन संहिता 91:11

[11]और लिखा है:

'वे तुझे अपनी बाहों में ऐसे उठा लेंगे कि
तेरा पैर तक किसी पत्थर को न छुए।'"

भजन संहिता 91:12

[12]यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, "शास्त्र में यह भी लिखा है:

'तुझे अपने प्रभु परमेश्वर को
परीक्षा में नहीं डालना चाहिये।'"

व्यवस्था विवरण 6:16

[13]सो जब शैतान उसकी सब तरह से परीक्षा ले चुका तो उचित समय तक के लिये उसे छोड़ कर चला गया।

लोगों को यीशु का उपदेश

[14]फिर आत्मा की शक्ति से पूर्ण हो कर यीशु गलील लौट आया और उस सारे प्रदेश में उसकी चर्चाएँ फैलने लगी। [15]वह उनकी धर्म–सभाओं में उपदेश देने लगा। सभी उसकी प्रशंसा करते थे।

[16]फिर वह नासरत आया जहाँ वह पला–बढ़ा था। और अपनी आदत के अनुसार सब्त के दिन वह यहूदी धर्म सभागार में गया। जब वह पाठ करने खड़ा हुआ। [17]तो यशायाह नबी की पुस्तक उसे दी गयी। उसने जब पुस्तक खोली तो उसे वह स्थान मिला जहाँ लिखा था:

[18] "प्रभु का आत्मा मुझमें समाया है
उसने मेरा अभिषेक किया है ताकि
मैं दीनों को सुसमाचार सुनाऊँ।
उसने मुझे बंदियों को यह घोषित करने के लिए
कि वे मुक्त है,
अन्धों को यह सन्देश सुनाने को कि
वे फिर दृष्टि पायेंगे,
दलितों को छुटकारा दिलाने को और
[19] प्रभु के अनुग्रह का समय बतलाने को भेजा है।"

यशायाह 61:1−2

[20]फिर उसने पुस्तक बंद करके सेवक को वापस दे दी। और वह नीचे बैठ गया। प्रार्थना सभा में सब लोगों की आँखें उसे ही निहार रही थीं। [21]तब उसने उनसे कहना आरम्भ किया, "आज तुम्हारे सुनते हुए शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ!"

[22]हर कोई उसकी बड़ाई कर रहा था। उसके मुख से जो सुन्दर वचन निकल रहे थे, उन पर सब चकित थे। वे बोले, "क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?"

[23]फिर यीशु ने उनसे कहा, "निश्चय ही तुम मुझे यह कहावत सुनाओगे, 'अरे वैद्य, स्वयं अपना इलाज कर। कफ़रनहूम में तेरे जिन कर्मो के विषय में हमने सुना है, उन कर्मो को यहाँ अपने स्वयं के नगर में भी कर!'" [24]यीशु ने तब उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि अपने नगर में किसी नबी की मान्यता नहीं होती। [25]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ इस्राएल में एलिय्याह के काल में जब आकाश जैसे मुँद गया था और साढ़े तीन साल तक सारे देश में भयानक अकाल पड़ा था, तब वहाँ अनगिनत विधवाएँ थीं। [26]किन्तु सैदा प्रदेश के सारपत नगर की एक विधवा को छोड़ कर एलिय्याह को किसी और के पास नहीं भेजा गया था। [27]और नबी एलिशा के काल में इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे किन्तु उनमें से सीरिया के रहने वाले नामान के कोढ़ी को छोड़ कर और किसी को शुद्ध नहीं किया गया था।"

[28]सो जब यहूदी प्रार्थना सभा में लोगों ने यह सुना तो सभी को बहुत क्रोध आया। [29]सो वे खड़े हुए और उन्होंने उसे नगर से बाहर धकेल दिया। वे उसे पहाड़ की उस चोटी पर ले गये जिस पर उनका नगर बसा था ताकि वे वहाँ चट्टान से उसे नीचे फेंक दें। [30]किन्तु वह उनके बीच से निकल कर कहीं अपनी राह चला गया।

दुष्टात्मा से छुटकारा दिलाना

[31]फिर वह गलील के एक नगर कफरनहूम पहुँचा और सब्त के दिन लोगों को उपदेश देने लगा। [32]लोग उसके उपदेश से आश्चर्यचकित थे क्योंकि उसका संदेश अधिकारपूर्ण होता था। [33]वहीं उस प्रार्थना सभा में एक व्यक्ति था जिसमें दुष्टात्मा समायी थी। वह ऊँचे स्वर में चिल्लाया, [34] "हे यीशु नासरी! तू हमसे क्या चाहता है? क्या तू हमारा नाश करने आया है? मैं जानता हूँ तू कौन है–तू परमेश्वर का पवित्र पुरुष है!" [35]यीशु ने झिड़कते

हुए उससे कहा, "चुप रह! इसमें से बाहर निकल आ!" इस पर दुष्टात्मा ने उस व्यक्ति को लोगों के सामने एक पटकी दी और उसे बिना कोई हानि पहुँचाए उसमें से बाहर निकल आयी।

[36]सभी लोग चकित थे। वे एक दूसरे से बात करते हुए बोले, "यह कैसा वचन है? अधिकार और शक्ति के साथ यह दुष्टात्माओं को आज्ञा देता है और वे बाहर निकल आती हैं।" [37]उस क्षेत्र में आसपास हर कहीं उसके बारे में समाचार फैलने लगे।

रोगी स्त्री का ठीक किया जाना

[38]तब यीशु प्रार्थना सभागार को छोड़ कर शमौन के घर चला गया। शमौन की सास को बहुत ताप चढ़ा था। उन्होंने यीशु को उसकी सहायता करने के लिये विनती की। [39]यीशु उसके सिरहाने खड़ा हुआ और उसने ताप को डाँटा। ताप ने उसे छोड़ दिया। वह तत्काल खड़ी हो गयी और उनकी सेवा करने लगी।

यीशु द्वारा बहुतों को चंगा किया जाना

[40]जब सूरज ढल रहा था तो जिन के यहाँ प्रकार-प्रकार के रोगों से ग्रस्त रोगी थे, वे सभी उन्हें उसके पास लाये। और उसने अपना हाथ उनमें से हर एक के सिर पर रखते हुए उन्हें चंगा कर दिया। [41]उनमें बहुतों में से दुष्टात्माएँ चिल्लाती हुई यह कहती बाहर निकल आयीं, "तू परमेश्वर का पुत्र है।" किन्तु उसने उन्हें बोलने नहीं दिया, क्योंकि वे जानती थी, "वह मसीह है।"

यीशु की अन्य नगरों को यात्रा

[42]जब पौ फटी तो वह वहाँ से किसी एकांत स्थान को चला गया। किन्तु भीड़ उसे खोजते खोजते वहीं जा पहुँची जहाँ वह था। उन्होंने प्रयत्न किया कि वह उन्हें छोड़ कर न जाये। [43]किन्तु उसने उनसे कहा, "परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार मुझे दूसरे नगरों में भी पहुँचाना है क्योंकि मुझे इसी लिए भेजा गया है।"

[44]और इस प्रकार वह यहूदिया की प्रार्थना सभाओं में निरन्तर उपदेश करने लगा।

यीशु के प्रथम शिष्य

5 बात यूँ हुई कि भीड़ में लोग यीशु को चारों ओर से घेर कर जब परमेश्वर का वचन सुन रहे थे और वह गन्नेसरत नामक झील के किनारे खड़ा था। [2]तभी उसने झील के किनारे दो नावें देखीं। उनमें से मछुआरे निकल कर अपने जाल साफ कर रहे थे। [3]यीशु उनमें से एक नाव पर चढ़ गया जो कि शमौन की थी, और उसने नाव को किनारे से कुछ हटा लेने को कहा। फिर वह नाव पर बैठ गया और वहीं नाव पर से जन समूह को उपदेश देने लगा।

[4]जब वह उपदेश समाप्त कर चुका तो उसने शमौन से कहा, "गहरे पानी की तरफ बढ़ और मछली पकड़ने के लिए अपने जाल डालो।"

[5]शमौन बोला, "स्वामी, हमने सारी रात कठिन परिश्रम किया है, पर हमें कुछ नहीं मिल पाया, किन्तु तू कह रहा है इसलिए मैं जाल डाले देता हूँ।" [6]जब उन्होंने जाल फेंके तो बड़ी संख्या में मछलियाँ पकड़ी गयी। उनके जाल जैसे फट रहे थे। [7]सो उन्होंने दूसरी नावों में बैठे अपने साथियों को संकेत देकर सहायता के लिये बुलाया। वे आ गये और उन्होंने दोनों नावों पर इतनी मछलियाँ लाद दी कि वे मानों डूबने लगीं।

[8]जब शमौन पतरस ने यह देखा तो वह यीशु के चरणों में गिर कर बोला, "प्रभु मैं एक पापी मनुष्य हूँ। तू मुझसे दूर रह।" [9]उसने यह इसलिये कहा था कि इतनी मछलियाँ बटोर पाने के कारण उसे और उसके सभी साथियों को बहुत अचरज हो रहा था। [10]जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी, जो शमौन के साथी थे, इस प्रकार बहुत आश्चर्य हुआ था। सो यीशु ने शमौन से कहा, "डर मत, क्योंकि अब से आगे तू मनुष्यों को बटोरा करेगा!"

[11]फिर वे अपनी नावें किनारे पर लाये और सब कुछ त्याग कर यीशु के पीछे हो लिये।

कोढ़ी का शुद्ध किया जाना

[12]सो ऐसा हुआ कि जब यीशु एक नगर में था तभी वहाँ कोढ़ से पूरी तरह ग्रस्त एक कोढ़ी भी था। जब उसने यीशु को देखा तो दण्डवत प्रणाम करके उससे प्रार्थना की, "प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे ठीक कर सकता है।"

[13]इस पर यीशु ने अपना हाथ बढ़ा कर कोढ़ी को यह कहते हुए छुआ, "मैं चाहता हूँ, ठीक हो जा!" और तत्काल उसका कोढ़ जाता रहा। [14]फिर यीशु ने उसे आज्ञा दी कि वह इस विषय में किसी से कुछ न कहे। उससे कहा, "याजक के पास जा और उसे अपने आप को दिखा और मूसा के आदेश के अनुसार भेंट चढ़ा ताकि लोगों को तेरे ठीक होने का प्रमाण मिले।"

[15]किन्तु यीशु के विषय में समाचार और अधिक गति से फैल रहे थे। और लोगों के दल के दल इकट्ठे हो कर उसे सुनने और अपनी बीमारियों से छुटकारा पाने उसके पास आ रहे थे। [16]किन्तु यीशु प्राय: प्रार्थना करने कहीं एकान्त वन में चला जाया करता था।

लकवे के रोगी को चंगा करना

[17]ऐसा हुआ कि एक दिन जब वह उपदेश दे रहा था तो वहाँ फ़रीसी और यहूदी धर्मशास्त्री भी बैठे थे। वे गलील और यहूदिया के हर नगर तथा यरुशलेम से आये थे। लोगों को ठीक करने के लिए प्रभु की शक्ति उसके साथ थी। [18]तभी कुछ लोग खाट पर लकवे के एक रोगी को लिये उसके पास आये। वे उसे भीतर लाकर यीशु के सामने रखने का जतन कर रहे थे। [19]किन्तु भीड़ के कारण उसे भीतर लाने का रास्ता न पाते हुए वे ऊपर छत पर जा चढ़े और उन्होंने उसे उसके बिस्तर समेत छत के बीचोबीच से खपरेल हटाकर यीशु के सामने उतार दिया। [20]उनके विश्वास को देखते हुए यीशु ने कहा, "हे मित्र, तेरे पाप क्षमा हुए।"

[21]तब यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी आपस में सोचने लगे, "यह कौन है जो परमेश्वर के लिए ऐसे अपमान के शब्द बोलता है? परमेश्वर को छोड़ दूसरा कौन है जो पाप क्षमा कर सकता है?"

[22]किन्तु यीशु उनके सोच–विचार को ताड़ गया। सो उत्तर में उसने उनसे कहा, "तुम अपने मन में ऐसा क्यों सोच रहे हो? [23]सरल क्या है? यह कहना कि 'तेरे लिए तेरे पाप क्षमा हुए' या यह कहना कि 'उठ और चल दे?' [24]पर इसलिये कि तुम जान सको कि मनुष्य के पुत्र को धरती पर पाप क्षमा करने का अधिकार है।" उसने लकवे के मारे से कहा, "मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और घर चला जा!"

[25]सो वह तुरन्त खड़ा हुआ और उनके देखते देखते जिस बिस्तर पर वह लेटा था, उसे उठा परमेश्वर की स्तुति करता हुआ अपने घर चला गया। [26]वे सभी जो वहाँ थे आश्चर्यचकित होकर परमेश्वर का गुणगान करने लगे। वे श्रद्धा और विस्मय से भर उठे और बोले, "आज हमने कुछ अद्‌भुत देखा है!"

लेवी को यीशु का बुलावा

[27]इसके बाद यीशु चल दिया। तभी उसने चुंगी की चौकी पर बैठे लेवी नाम के एक कर वसूलने वाले को देखा। वह उससे बोला, "मेरे पीछे चला आ!" [28]सो वह खड़ा हुआ और सब कुछ तज कर उसके पीछे हो लिया।

[29]फिर लेवी ने अपने घर पर यीशु के सम्मान में एक स्वागत समारोह किया। वहाँ कर वसूलने वालों और दूसरे लोगों का एक बड़ा जमघट उनके साथ भोजन कर रहा था। [30]तब फरीसियों और धर्मशास्त्रियों ने उसके शिष्यों से यह कहते हुए शिकायत की "तुम कर वसूलने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते–पीते हो?"

[31]उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "स्वस्थ लोगों को नहीं, बल्कि रोगियों को चिकित्सक की आवश्यकता होती है। [32]मैं धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को मन फिराने के लिए बुलाने आया हूँ।"

उपवास पर यीशु का मत

[33]उन्होंने यीशु से कहा, "यूहन्ना के शिष्य प्राय: व्रत रखते हैं और प्रार्थना करते हैं। और ऐसा ही फरीसियों के अनुयायी भी करते हैं किन्तु तेरे अनुयायी तो हर समय खाते पीते रहते हैं।"

[34]यीशु ने उनसे पूछा, "क्या दूल्हे के अतिथि जब तक दूल्हा उनके साथ है, उपवास करते हैं? [35]किन्तु वे दिन भी आयेंगे जब दूल्हा उनसे छीन लिया जायेगा। फिर उन दिनों में वे भी उपवास करेंगे।"

[36]उसने उनसे एक दृष्टांत कथा और कही, "कोई भी किसी नयी पोशाक से कोई टुकड़ा फाड़ कर उसे पुरानी पोशाक पर नहीं लगाता और यदि कोई ऐसा करता है तो उसकी नयी पोशाक तो फटेगी ही, साथ ही वह नया पेबन्द भी पुरानी पोशाक के साथ मेल नहीं खायेगा। [37]कोई भी पुरानी मशकों में नयी दाखरस नहीं भरता और यदि भरता है तो नयी दाखरस पुरानी मशकों को फाड़ देगा। वह

बिखर जायेगा और मशकें नष्ट हो जायेंगी। [38]लोग हमेशा नयाँ दाखरस नयी मशकों में भरते है। [39]पुराना दाखरस पी कर कोई भी नएँ की चाहत नहीं करता क्योंकि वह कहता है 'पुराना ही उत्तम है।'"

सब्त का प्रभु यीशु

6 अब ऐसा हुआ कि सब्त के एक दिन यीशु जब अनाज के कुछ खेतों से होता हुआ जा रहा था तो उसके शिष्य अनाज की बालों को तोड़ते, हथेलियों पर मसलते उन्हें खाते जा रहे थे। [2]तभी कुछ फरीसियों ने कहा, "जिसका सब्त के दिन किया जाना उचित नहीं है, उसे तुम लोग क्यों कर रहे हो?"

[3]उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे पूछा, "क्या तुमने नहीं पढ़ा जब दाऊद और उसके साथी भूखे थे, तब दाऊद ने क्या किया था? [4]क्या तुमने नहीं पढ़ा कि उसने परमेश्वर के घर में घुस कर, परमेश्वर को अर्पित रोटियाँ उठा कर खा ली थी और उन्हें भी दी थी, जो उसके साथ थे? जबकि याजकों को छोड़ कर उनका खाना किसी के लिये भी उचित नहीं।" [5]उसने आगे कहा, "मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है।"

यीशु द्वारा सब्त के दिन रोगी का अच्छा किया जाना

[6]दूसरे सब्त के दिन ऐसा हुआ कि वह यहूदी धर्म सभा में जाकर उपदेश देने लगा। वहीं एक ऐसा व्यक्ति था जिसका दाहिना हाथ मुरझाया हुआ था। [7]वहीं यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी यह देखने की ताक में थे कि वह सब्त के दिन किसी को चंगा करता है कि नहीं। ताकि वे उस पर दोष लगाने का कोई कारण पा सकें। [8]वह उनके विचारों को जानता था, सो उसने उस मुरझाये हाथ वाले व्यक्ति से कहा, "उठ और सब के सामने खड़ा हो जा।" वह उठा और वहाँ खड़ा हो गया। [9]तब यीशु ने लोगों से कहा, "मैं तुमसे पूछता हूँ–सब्त के दिन किसी का भला करना उचित है या किसी को हानि पहुँचाना, किसी का जीवन बचाना उचित है या किसी के जीवन को नष्ट करना?" [10]यीशु ने चारों ओर उन सब पर दृष्टि डाली और फिर उससे कहा, "अपना हाथ सीधा फैला।" उसने वैसा ही किया और उसका हाथ फिर से अच्छा हो गया। [11]किन्तु इस पर आग बबूला होकर वे आपस में विचार करने लगे कि "यीशु का क्या किया जाये?"

बारह प्रेरितों का चुना जाना

[12]उन्हीं दिनों ऐसा हुआ कि यीशु प्रार्थना करने के लिये एक पहाड़ पर गया और सारी रात परमेश्वर को प्रार्थना करते हुए बिता दी। [13]फिर जब भोर हुई तो उसने अपने अनुयायियों को पास बुलाया। उनमें से उसने बारह को चुना जिन्हें उसने "प्रेरित" नाम दिया: [14]शमौन (जिसे उसने पतरस भी कहा) और उसका भाई अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुलमै, [15]मत्ती, थोमा, हलफ़ई का बेटा याकूब, और शमौन जिलौती; [16]याकूब का बेटा यहूदा और यहूदा इस्करियोती जो विश्वासघाती बना।

यीशु का लोगों को उपदेश देना और चंगा करना

[17]फिर यीशु उनके साथ पहाड़ी से नीचे उतर कर समतल स्थान पर आ खड़ा हुआ। वहीं उसके शिष्यों की भी एक बड़ी भीड़ थी। साथ ही समूचे यहूदिया, यरूशलेम, सूर और सैदा के सागर तट से अनगिनत लोग वहाँ आ इकट्ठे हुए। [18]वे उसे सुनने और रोगों से छुटकारा पाने वहाँ आये थे। जो दुष्टात्माओं से पीड़ित थे, वे भी वहाँ आकर अच्छे हुए। [19]समूची भीड़ उसे छू भर लेने के प्रयत्न में थी क्योंकि उसमें से शक्ति निकल रही थी और उन सब को निरोग बना रही थी!

[20]फिर अपने शिष्यों को देखते हुए वह बोला:

"धन्य हो तुम जो दीन हो,
स्वर्ग का राज्य तुम्हारा है,
[21] धन्य हो तुम, जो अभी भूखे रहे हो,
क्योंकि तुम्हारी तृप्ति होगी
धन्य हो तुम जो आज आँसू बहा रहे हो,
क्योंकि तुम आगे हँसोगे।

[22]"धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण घृणा तुमसे करें जन, और करें तुमको बहिष्कृत; और करें निन्दा तुम्हारी, नाम तक को दुष्ट कह कर, काट दें वे। [23]तब उसी दिन मगन हो कर उछलना मौज में तुम क्योंकि देखो है महा प्रतिफल तुम्हारा स्वर्ग में। क्योंकि उनके पुरखों ने भी भविष्य वक्ताओं के साथ ऐसा ही किया था।

[24] "तुमको धिक्कार है, ओ धनिक जन,
क्योंकि तुमको पूरा सुख चैन मिल रहा है
[25] तुम्हें धिक्कार है, जो अब भरपेट हो
क्योंकि तुम भूखे रहोगे,

तुम्हें धिक्कार है, जो अब हँस रहे हो,
क्योंकि तुम आँसू बहा बिलखा करोगे।

[26]"तुम्हें धिक्कार है, जब तुम्हारी प्रशंसा हो क्योंकि उनके पूर्वजों ने भी झूठे नबियों के साथ ऐसा व्यवहार किया।

अपने बैरी से भी प्रेम करो

[27]"ओ सुनने वालो! मैं तुमसे कहता हूँ अपने शत्रु से भी प्रेम करो। जो तुमसे घृणा करते हैं, उनके साथ भी भलाई करो। [28]उन्हें भी आशीर्वाद दो, जो तुम्हें शाप देते हैं। उनके लिए भी प्रार्थना करो जो तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते। [29]यदि कोई तुम्हारे गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो। यदि कोई तुम्हारा कोट ले ले तो उसे अपना कुर्ता भी ले लेने दो। [30]जो कोई तुमसे माँगे, उसे दो। यदि कोई तुम्हारा कुछ रख ले तो उससे वापस मत माँगो। [31]तुम अपने लिये जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते हो, तुम्हें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये। [32]यदि तुम बस उन्हीं को प्यार करते हो, जो तुम्हें प्यार करते हैं, तो इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि अपने से प्रेम करने वालों से तो पापी तक भी प्रेम करते हैं। [33]यदि तुम बस उन्हीं का भला करो, जो तुम्हारा भला करते हैं, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? ऐसा तो पापी तक करते हैं। [34]यदि तुम केवल उन्हीं को उधार देते हो, जिनसे तुम्हें वापस मिल जाने की आशा है, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? ऐसे तो पापी भी पापियों को देते हैं कि उन्हें उनकी पूरी रकम वापस मिल जाये। [35]बल्कि अपने शत्रु को भी प्यार करो, उनके साथ भलाई करो। कुछ भी लौट आने की आशा छोड़ कर उधार दो। इस प्रकार तुम्हारा प्रतिफल महान होगा और तुम परम परमेश्वर की संतान बनोगे क्योंकि परमेश्वर कृतघ्नों और दुष्ट लोगों पर भी दया करता है। [36]जैसे तुम्हारा परम पिता दयालु है, वैसे ही तुम भी दयालु बनो।

अपने आप को जानो

[37]"किसी को दोषी मत कहो तो तुम्हें भी दोषी नहीं कहा जायेगा। किसी का खंडन मत करो तो तुम्हारा भी खंडन नहीं किया जायेगा। क्षमा करो, तुम्हें भी क्षमा मिलेगी। [38]दो, तुम्हें भी दिया जायेगा। वे पूरा नाप दबा–दबा कर और हिला–हिला कर बाहर निकलता हुआ तुम्हारी झोली में उडेंलेंगे क्योंकि जिस नाप से तुम दूसरों को नापते हो, उसी से तुम्हें भी नापा जायेगा।"

[39]उसने उनसे एक दृष्टान्त कथा और कही, "क्या कोई अन्धा किसी दूसरे अन्धे को राह दिखा सकता है? क्या वे दोनों ही किसी गढ़े में नहीं जा गिरेंगे? [40]कोई भी विद्यार्थी अपने पढ़ाने वाले से बड़ा नहीं हो सकता, किन्तु जब कोई व्यक्ति पूरी तरह कुशल हो जाता है तो वह अपने गुरु के समान बन जाता है।

[41]"तू अपने भाई की आँख में कोई किरच क्यों देखता है और अपनी आँख का लट्ठा भी तुझे नहीं सूझता? [42]सो अपने भाई से तू कैसे कह सकता है: 'बंधु, तू अपनी आँख का तिनका मुझे निकालने दे।' जब तू अपनी आँख के लट्ठे तक को नहीं देखता! अरे कपटी, पहले अपनी आँख का लट्ठा दूर कर, तब तुझे अपने भाई की आँख का तिनका बाहर निकालने के लिये दिखाई दे पायेगा।

दो प्रकार के फल

[43]"कोई भी ऐसा उत्तम पेड़ नहीं है जिस पर बुरा फल लगता हो। न ही कोई ऐसा बुरा पेड़ है, जिस पर उत्तम फल लगता हो। [44]हर पेड़ अपने फल से ही जाना जाता है। लोग कँटीली झाड़ी से अंजीर नहीं बटोरते। न ही किसी झड़बेरी से लोग अंगूर उतारते हैं। [45]एक अच्छा मनुष्य उसके मन में अच्छाइयों का जो खजाना है, उसी से अच्छी बातें उपजाता है। और एक बुरा मनुष्य, जो उसके मन में बुराई है, उसी से बुराई पैदा करता है। क्योंकि एक मनुष्य मुँह से वही बोलता है, जो उसके ह्रदय से उफन कर बाहर आता है।

दो प्रकार के लोग

[46]"तुम मुझे 'प्रभु, प्रभु' क्यों कहते हो और जो मैं कहता हूँ, उस पर नहीं चलते। [47]हर कोई जो मेरे पास आता है और मेरा उपदेश सुनता है और उस का आचरण करता है, वह किस प्रकार का होता है, मैं तुम्हें बताऊँगा। [48]वह उस व्यक्ति के समान है जो मकान बना रहा है। उसने गहरी खुदाई की और चट्टान पर नींव डाली। फिर जब बाढ़ आयी और नदी उस मकान से टकराई तो यह उसे हिला तक न सकी, क्योंकि वह बहुत अच्छी तरह बना हुआ था। [49]किन्तु जो मेरा उपदेश सुनता है और उस

पर चलता नहीं, वह उस व्यक्ति के समान है जिसने बिना नींव धरे धरती पर मकान बनाया। नदी उससे टकराई और वह तुरन्त ढह गया और पूरी तरह तहस–नहस हो गया।"

विश्वास की शक्ति

7 यीशु लोगों को जो सुनाना चाहता था, उसे कह चुकने के बाद वह कफ़रनहूम चला आया। [2]वहाँ एक सेनानायक था जिसका दास इतना बीमार था कि मरने को पड़ा था। वह सेवक उसका बहुत प्रिय था। [3]सेनानायक ने जब यीशु के विषय में सुना तो उसने कुछ बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं को यह विनती करने के लिये उसके पास भेजा कि वह आकर उसके सेवक के प्राण बचा ले। [4]जब वे यीशु के पास पहुँचे तो उन्होंने सच्चे मन से विनती करते हुए कहा, "वह इस योग्य है कि तू उसके लिये ऐसा करे। [5]क्योंकि वह हमारे लोगों से प्रेम करता है। उसने हमारे लिए धर्म–सभा–भवन का निर्माण किया है।"

[6]सो यीशु उनके साथ चल दिया। अभी जब वह घर से अधिक दूर नहीं था, उस सेनानायक ने उसके पास अपने मित्र यह कहने के लिये भेज, "हे प्रभु, अपने को कष्ट मत दे। क्योंकि मैं इतना अच्छा नहीं हूँ कि तू मेरे घर में आये। [7]इसीलिये मैंने तेरे पास आने तक की नहीं सोची। किन्तु तू बस कह भर दे, मेरा सेवक स्वस्थ हो जायेगा। [8]मैं स्वयं किसी अधिकारी के नीचे काम करने वाला व्यक्ति हूँ और मेरे नीचे भी कुछ सैनिक हैं। मैं जब किसी से कहता हूँ 'जा' तो वह चला जाता है और जब दूसरे से कहता हूँ 'आ' तो वह आ जाता है। और जब मैं अपने दास से कहता हूँ, 'यह कर' तो वह उसे ही करता है।"

[9]यीशु ने जब यह सुना तो उसे उस पर बहुत आश्चर्य हुआ। जो जन समूह उसके पीछे चला आ रहा था, उसकी तरफ़ मुड़ कर यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें बताता हूँ ऐसा विश्वास मुझे इस्राएल में भी कहीं नहीं मिला।"

[10]फिर भेजे हुए वे लोग जब वापस घर पहुँचे तो उन्होंने उस सेवक को निरोग पाया।

मृतक को जीवनदान

[11]फिर ऐसा हुआ कि यीशु नाइन नाम के एक नगर को चला गया। उसके शिष्य और एक बड़ी भीड़ उसके साथ थी। [12]वह जैसे ही नगर–द्वार के निकट आया तो वहाँ से एक मुर्दे को ले जाया जा रहा था। वह अपनी विधवा माँ का इकलौता बेटा था। सो नगर के अनगिनत लोगों की भीड़ उसके साथ थी। [13]जब प्रभु ने उसे देखा तो उसे उस पर बहुत दया आयी। वह बोला, "रो मत।" [14]फिर वह आगे बढ़ा और उसने ताबूत को छुआ वे लोग जो ताबूत को ले जा रहे थे, निश्चल खड़े थे। यीशु ने कहा, "नवयुवक, मैं तुझसे कहता हूँ, 'खड़ा हो जा!'" [15]सो वह मरा हुआ आदमी उठ बैठा और बोलने लगा। यीशु ने उसे उसकी माँ को वापस लौटा दिया।

[16]और फिर वे सभी श्रद्धा और विस्मय से भर उठे। और यह कहते हुए परमेश्वर की महिमा बखानने लगे कि "हमारे बीच एक महान नबी प्रकट हुआ है।" और कहने लगे, "परमेश्वर अपने लोगों की सहायता के लिये आ गया है।"

[17]यीशु का यह समाचार यहूदिया और आसपास के गाँवों में सब कहीं फैल गया।

यूहन्ना का प्रश्न

[18]इन सब बातों के विषय में यूहन्ना के अनुयायियों ने उसे सब कुछ जा बताया। सो यूहन्ना ने अपने दो शिष्यों को बुलाकर [19]उन्हें प्रभु से यह पूछने को भेजा कि "क्या तू वही है, जो आने वाला है या हम किसी और की बाट जोहें?"

[20]फिर वे लोग जब यीशु के पास पहुँचे तो उन्होंने कहा, "बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना ने हमें तुझसे यह पूछने भेजा है कि क्या तू वही है जो आने वाला है या हम किसी और की बाट जोहें?"

[21]उसी समय उसने बहुत से रोगियों को निरोग किया और उन्हें वेदनाओं तथा दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया। और बहुत से अंधों को आँखें दीं। [22]फिर उसने उन्हें उत्तर दिया, "जाओ और जो तुमने देखा है और सुना है, उसे यूहन्ना को बताओ: कि अंधे लोग फिर देख रहे हैं, लँगड़े लूले चल फिर रहे हैं और कोढ़ी शुद्ध हो गये हैं। बहरे सुन पा रहे हैं और मुर्दे फिर जिलाये जा रहे हैं। और धनहीन लोगों को सुसमाचार सुनाया जा रहा है। [23]वह व्यक्ति धन्य है जिसे मुझे स्वीकार करने में कोई समस्या नहीं।"

[24]जब यूहन्ना का संदेश लाने वाले चले गये तो यीशु ने भीड़ में लोगों को यूहन्ना के बारे में बताना प्रारम्भ किया:

"तुम बियाबान जंगल में क्या देखने गये थे? क्या हवा में झूलता कोई सरकंडा? नहीं? [25]फिर तुम क्या देखने गये थे? क्या कोई पुरुष जिसने बहुत उत्तम वस्त्र पहने हों? नहीं, वे लोग जो उत्तम वस्त्र पहनते हैं और जो विलास का जीवन जीते हैं, वे तो राज–भवनों में ही पाये जाते हैं। [26]किन्तु बताओ तुम क्या देखने गये थे? क्या कोई नबी? हाँ, मैं तुम्हे बताता हूँ कि तुमने जिसे देखा है, वह किसी नबी से कहीं अधिक है। [27]यह वही है जिसके विषय में लिखा गया है:

'देख मैं तुझसे पहले ही अपना दूत भेज रहा हूँ,
वह तुझसे पहले ही राह तैयार करेगा।'

मलाकी 3:1

[28]"मैं तुम्हें बताता हूँ कि किसी स्त्री से पैदा हुओं में यूहन्ना से महान् कोई नहीं है। किन्तु फिर भी परमेश्वर के राज्य का छोटे से छोटा व्यक्ति भी उससे बड़ा है।"

[29](तब हर किसी ने, यहाँ तक कि कर वसूलने वालों ने भी यूहन्ना को सुन कर उसका बपतिस्मा लेकर यह मान लिया कि परमेश्वर का मार्ग सत्य है। [30]किन्तु फरीसियों और व्यवस्था के जानकारों ने उसका बपतिस्मा न लेकर उनके सम्बन्ध में परमेश्वर की इच्छा को नकार दिया।)

[31]"तो फिर इस पीढ़ी के लोगों की तुलना मैं किस से करूँ वे कि कैसे हैं? [32]वे बाज़ार में बैठे उन बच्चों के समान हैं जो एक दूसरे से पुकार कर कहते हैं:

'हमने तुम्हारे लिये बाँसुरी बजायी पर
तुम नहीं नाचे।
हमने तुम्हारे लिए शोक–गीत गाया
किन्तु तुम नहीं रोये।'

[33]"क्योंकि बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना आया जो न तो रोटी खाता था और न ही दाखरस पीता था और तुम कहते हो 'उसमें दुष्टात्मा है।' [34]फिर खाते पीते हुए मनुष्य का पुत्र आया, पर तुम कहते हो, 'देखो यह पेटू है, पियक्कड़ है, कर वसूलने वालों और पापियों का मित्र है।' [35]बुद्धि की उत्तमता तो उसके परिणाम से ही सिद्ध होती है।"

शमौन फरीसी

[36]एक फरीसी ने अपने साथ खाने पर उसे निमंत्रित किया। सो वह फरीसी के घर गया और उसके यहाँ भोजन करने बैठा। [37]वहीं नगर में उन दिनों एक पापी स्त्री थी, उसे जब यह पता लगा कि वह एक फरीसी के घर भोजन कर रहा है तो वह स्फटिक के एक पात्र में इत्र लेकर आयी। [38]वह उसके पीछे उसके चरणों में खड़ी थी। वह रो रही थी। अपने आँसुओं से वह उसके पैर भिगोने लगी। फिर उसने पैरों को अपने बालों से पोंछा और चरणों को चूम कर उन पर इत्र उँड़ेल दिया। [39]उस फरीसी ने जिसने यीशु को अपने घर बुलाया था, यह देखकर मन ही मन सोचा, "यदि यह मनुष्य नबी होता तो जान जाता कि उसे छूने वाली यह स्त्री कौन है और कैसी है? वह जान जाता कि यह तो पापिन है।"

[40]उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है।"

वह बोला, "गुरु, कह।"

[41]यीशु ने कहा, "किसी साहूकार के दो कर्ज़दार थे। एक पर उसके पाँच सौ चाँदी के सिक्के* निकलते थे और दूसरे पर पचास। [42]क्योंकि वे कर्ज़ नहीं लौटा पाये थे इसलिये उसने दया पूर्वक दोनों के कर्ज़ माफ़ कर दिये। अब बता दोनों में से उसे अधिक प्रेम कौन करेगा?"

[43]शमौन ने उत्तर दिया, "मेरा विचार है, वही जिसका उसने अधिक कर्ज़ छोड़ दिया।"

यीशु ने कहा, "तूने उचित न्याय किया।" [44]फिर उस स्त्री की तरफ़ मुड़ कर वह शमौन से बोला, "तू इस स्त्री को देख रहा है? मैं तेरे घर में आया, तूने मेरे पैर धोने को मुझे जल नहीं दिया किन्तु इसने मेरे पैर आँसुओं से तर कर दिये। और फिर उन्हें अपने बालों से पोंछा। [45]तूने स्वागत में मुझे नहीं चूमा किन्तु यह जब से मैं भीतर आया हूँ, मेरे पैरों को निरन्तर चूमती रही है। [46]तूने मेरे सिर पर तेल का अभिषेक नहीं किया, किन्तु इसने मेरे पैरों पर इत्र छिड़का। [47]इसीलिये मैं तुझे बताता हूँ कि इसका अगाध प्रेम दर्शाता है कि इसके बहुत से पाप क्षमा कर दिये गये हैं। किन्तु वह जिसे थोड़े पापों की क्षमा मिली, वह थोड़ा प्रेम करता है।"

[48]तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, "तेरे पाप क्षमा कर दिये गये हैं।"

[49]फिर जो उसके साथ भोजन कर रहे थे, वे मन ही मन सोचने लगे, "यह कौन है जो पापों को भी क्षमा कर देता है?"

चाँदी के सिक्के मूल में दीनारी।

[50]तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, “तेरे विश्वास ने तेरी रक्षा की है। शान्ति के साथ जा।”

यीशु अपने शिष्यों के साथ

8 इसके बाद ऐसा हुआ कि यीशु परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार लोगों को सुनाते हुए नगर–नगर और गाँव–गाँव घूमने लगा। उसके बारहों शिष्य भी उसके साथ हुआ करते थे। [2]उसके साथ कुछ स्त्रियाँ भी हुआ करती थीं जिन्हें उसने रोगों और दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया था। इनमें मरियम मगदलीनी नाम की एक स्त्री थी जिसे सात दुष्टात्माओं से छुटकारा मिला था। [3]हेरोदेस के प्रबन्ध अधिकारी खोजा की पत्नी योअन्ना भी इन्हीं में थी। साथ ही सुसन्नाह तथा और बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं। ये स्त्रियाँ अपने ही साधनों से यीशु और उसके शिष्यों की सेवा का प्रबन्ध करती थीं।

बीज बोने की दृष्टान्त कथा

[4]जब नगर–नगर से आकर लोगों की बड़ी भीड़ उसके यहाँ एकत्र हो रही थी, तो उसने उनसे एक दृष्टान्त कथा कही:

[5]“एक किसान अपने बीज बोने निकला। जब उसने बीज बोये तो कुछ बीज राह किनारे जा पड़े और पैरों तले रुँद गये। और चिड़ियाएँ उन्हें चुग गयीं। [6]कुछ बीज चट्‌टानी धरती पर गिरे, वे जब उगे तो नमी के बिना मुरझा गये। [7]कुछ बीज कँटीली झाड़ियों में गिरे। काँटों की बढ़वार भी उनके साथ हुई और काँटों ने उन्हें दबोच लिया। [8]और कुछ बीज अच्छी धरती पर गिरे। वे उगे और उन्होंने सौ गुनी अधिक फसल दी।”

ये बातें बताते हुए उसने पुकार कर कहा, “जिसके पास सुनने को कान हैं, वह सुन ले।”

[9]उसके शिष्यों ने उससे पूछा, “इस दृष्टान्त कथा का क्या अर्थ है?”

[10]सो उसने बताया, “परमेश्वर के राज्य के रहस्य जानने की सुविधा तुम्हें दी गयी है किन्तु दूसरों को यह रहस्य दृष्टान्त कथाओं के द्वारा दिये गये हैं ताकि:

‘वे देखते हुए भी न देख पायें
और सुनते हुए भी न समझ पाये।’

यशायाह 6:9

[11]“इस दृष्टान्त कथा का अर्थ यह है: बीज परमेश्वर का वचन है। [12]वे बीज जो राह किनारे गिरे थे, वे वो व्यक्ति हैं जो जब वचन को सुनते हैं, तो शैतान आता है और वचन को उनके मन से निकाल ले जाता है ताकि वे विश्वास न कर पायें और उनका उद्धार न हो सके। [13]वे बीज जो चट्‌टानी धरती पर गिरे थे उनका अर्थ है, वे व्यक्ति जो जब वचन को सुनते हैं तो उसे आनन्द के साथ अपनाते तो हैं। किन्तु उनके भीतर उसकी जड़ नहीं जम पाती। वे कुछ समय के लिये विश्वास करते हैं किन्तु परीक्षा की घड़ी में वे डिग जाते हैं। [14]और जो बीज काँटो में गिरे, उसका अर्थ है, वे व्यक्ति जो वचन को सुनते हैं किन्तु जब वे अपनी राह चलने लगते हैं तो चिन्ताएँ, धन–दौलत और जीवन के भोग विलास उसे दबा देते हैं, जिससे उन पर कभी पकी फसल नहीं उतरती। [15]और अच्छी धरती पर गिरे बीज से अर्थ है वे व्यक्ति जो अच्छे और सच्चे मन से जब वचन को सुनते हैं तो उसे धारण भी करते हैं। फिर अपने धैर्य के साथ वे उत्तम फल देते हैं।”

अपने सत्य का उपयोग करो

[16]“कोई भी किसी दिये को बर्तन के नीचे ढक देने को नहीं जलाता। या उसे बिस्तर के नीचे नहीं रखता। बल्कि वह उसे दीवट पर रखता है ताकि जो भीतर आयें, प्रकाश देख सकें। [17]क्योंकि कुछ भी ऐसा छिपा नहीं है जो उजागर नहीं होगा और कुछ भी ऐसा छिपा नहीं है जिसे जना नहीं दिया जायेगा और जो प्रकाश में नहीं आयेगा। [18]इसलिये ध्यान से सुनो क्योंकि जिसके पास है उसे और भी दिया जायेगा और जिसके पास नहीं है, उससे जो उसके पास दिखाई देता है, वह भी ले लिया जायेगा।”

यीशु के अनुयायी ही उसका सच्चा परिवार हैं

[19]तभी यीशु की माँ और उसके भाई उसके पास आये किन्तु वे भीड़ के कारण उसके निकट नहीं जा सके। [20]इसलिये यीशु से यह कहा गया, “तेरी माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं। वे तुझसे मिलना चाहते हैं।”

[21]किन्तु यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरी माँ और मेरे भाई तो ये हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर चलते हैं!”

शिष्यों को यीशु की शक्ति का दर्शन

[22]तभी एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने शिष्यों के साथ एक नाव पर चढ़ा और उनसे बोला, "आओ, झील के उस पार चलें।" सो उन्होंने पाल खोल दी। [23]जब वे नाव चला रहे थे, यीशु सो गया। झील पर आँधी-तूफान उतर आया। उनकी नाव में पानी भरने लगा। वे ख़तरे में पड़ गये। [24]सो वे उसके पास आये और उसे जगाकर कहने लगे, "स्वामी! स्वामी! हम डूब रहे हैं!"

फिर वह खड़ा हुआ और उसने आँधी तथा लहरों को डाँटा। वे थम गयीं और वहाँ शान्ति छा गयी। [25]फिर उसने उनसे पूछा, "कहाँ गया तुम्हारा विश्वास?" किन्तु वे डरे हुए थे और अचरज में पड़े थे। वे आपस में बोले, "आखिर यह है कौन जो हवा और पानी दोनों को आज्ञा देता है और वे उसे मानते हैं?"

दुष्टात्मा से छुटकारा

[26]फिर वे गिरासेनियों के प्रदेश में पहुँचे जो गलील झील के सामने परले पार था। [27]जैसे ही वह किनारे पर उतरा, नगर का एक व्यक्ति उसे मिला। उसमें दुष्टात्माएँ समाई हुई थी। एक लम्बे समय से उसने न तो कपड़े पहने थे और न ही वह घर में रहा था, बल्कि वह मकबरों में रहा करता था। [28]जब उसने यीशु को देखा तो चिल्लाते हुए उसके सामने गिर कर ऊँचे स्वर में बोला, "हे परम प्रधान (परमेश्वर) के पुत्र यीशु, तू मुझसे क्या चाहता है? मैं विनती करता हूँ मुझे पीड़ा मत पहुँचा।" [29]उसने उस दुष्टात्मा को उस व्यक्ति में से बाहर निकलने का आदेश दिया था, क्योंकि उस दुष्टात्मा ने उस मनुष्य को बहुत बार पकड़ा था। ऐसे अवसरों पर उस बेड़ियों से बाँध कर पहरे में रखा जाता था। किन्तु वह सदा ज़ंजीरों को तोड़ देता था और दुष्टात्मा उसे वीराने में भगाए फिरती थी।

[30]सो यीशु ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

उसने कहा, "सेना" क्योंकि उसमें बहुत सी दुष्टात्माएँ समाई थीं। [31]वे यीशु से तर्क-वितर्क के साथ विनती कर रही थीं कि वह उन्हें गहन गर्त में जाने की आज्ञा न दे। [32]अब देखो, तभी वहाँ पहाड़ी पर सुअरों का एक रेवड़ चर रहा था। दुष्टात्माओं ने उससे विनती की कि वह उन्हें सुअरों में जाने दे। सो उसने उन्हें अनुमति दे दी। [33]इस पर वे दुष्टात्माएँ उस व्यक्ति में से बाहर निकली और उन सुअरों में प्रवेश कर गयी। और सुअरों का वह रेवड़ नीचे उस ढलुआ तट से लुढ़कते पुढ़कते दौड़ता हुआ झील में जा गिरा और डूब गया।

[34]रेवड़ के रखवाले, जो कुछ हुआ था, उसे देखकर वहाँ से भाग खड़े हुए। और उन्होंने इसका समाचार नगर और गाँव के इजारों में जा सुनाया। [35]फिर वहाँ के लोग जो कुछ घटा था उसे देखने बाहर आये। वे यीशु से मिले। और उन्होंने उस व्यक्ति को जिसमें से दुष्टात्माएँ निकली थीं यीशु के चरणों में बैठे पाया। उस व्यक्ति ने कपड़े पहने हुए थे और उसका दिमाग एकदम सही था। इससे वे सभी डर गये। [36]जिन्होंने देखा, उन्होंने लोगों को बताया कि दुष्टात्मा-ग्रस्त व्यक्ति कैसे ठीक हुआ। [37]इस पर गिरासेन प्रदेश के सभी निवासियों ने उससे प्रार्थना की कि वह वहाँ से चला जाये क्योंकि वे सभी बहुत डर गये थे। सो यीशु नाव में आया और लौट पड़ा। [38]किन्तु जिस व्यक्ति में से दुष्टात्माएँ निकली थीं, वह यीशु से अपने को साथ ले चलने की विनती कर रहा था। इस पर यीशु ने उसे यह कहते हुए लौटा दिया कि, [39]"घर जा और जो कुछ परमेश्वर ने तेरे लिये किया है, उसे बता।"

सो वह लौटकर, यीशु ने उसके लिये जो कुछ किया था, उसे सारे नगर में सबसे कहता फिरा।

रोगी स्त्री का अच्छा होना और मृत लड़की को जीवनदान

[40]अब देखो जब यीशु लौटा तो जन समूह ने उसका स्वागत किया क्योंकि वे सभी उसकी प्रतीक्षा में थे। [41]तभी याईर नाम का एक व्यक्ति वहाँ आया। वह वहाँ के यहूदी धर्म-सभा-भवन का मुखिया था। वह यीशु के चरणों में गिर पड़ा और उससे अपने घर चलने की विनती करने लगा। [42]क्योंकि उसके बारह साल की एक इकलौती बेटी थी, वह मरने वाली थी।

सो यीशु जब जा रहा था तो भीड़ उसे कुचले जा रही थी। [43]वहीं एक स्त्री थी जिसे बारह साल से खून बह रहा था। जो कुछ उसके पास था, उसने चिकित्सकों पर खर्च कर दिया था, पर वह किसी से भी ठीक नहीं हो पायी थी। [44]वह उसके पीछे आयी और उसने उसके चोगे की कन्नी छू ली। और उसका खून जाना तुरन्त रुक गया। [45]तब यीशु ने पूछा, "वह कौन है जिसने मुझे छुआ है?"

जब सभी मना कर रहे थे, पतरस बोला, "स्वामी, सभी लोगों ने तो तुझे घेर रखा है और वे सभी तो तुझ पर गिरे पड़ रहे हैं।"

46किन्तु यीशु ने कहा, "किसी ने मुझे छुआ है क्योंकि मुझे लगा है जैसे मुझ में से शक्ति निकली हो।" 47उस स्त्री ने जब देखा कि वह छुप नहीं पायी है, तो वह काँपती हुई आयी और यीशु के सामने गिर पड़ी। वहाँ सभी लोगों के सामने उसने बताया कि उसने उसे क्यों छुआ था। और कैसे तत्काल वह अच्छी हो गयी। 48इस पर यीशु ने उससे कहा, "पुत्री, तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार किया है। चैन से जा।"

49वह अभी बोल ही रहा था कि यहूदी धर्म–सभा–भवन के मुखिया के घर से वहाँ कोई आया और बोला, "तेरी बेटी मर चुकी है! सो गुरु को अब और कष्ट मत दे।"

50यीशु ने यह सुन लिया। सो वह उससे बोला, "डर मत! विश्वास रख। वह बच जायेगी।"

51जब यीशु उस घर में आया तो उसने अपने साथ पतरस, यूहन्ना, याकूब और बच्ची के माता–पिता को छोड़ कर किसी और को अपने साथ भीतर नहीं आने दिया। 52सभी लोग उस लड़की के लिये रो रहे थे और विलाप कर रहे थे। यीशु बोला, "रोना बंद करो। यह मरी नहीं है, बल्कि सो रही है।"

53इस पर लोगों ने उसकी हँसी उड़ाई। क्योंकि वे जानते थे कि लड़की मर चुकी है। 54किन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ा और पुकार कर कहा, "बच्ची, खड़ी हो जा!" 55उसकी आत्मा लौट आयी, और वह तुरंत उठ बैठी। यीशु ने आज्ञा दी, "इसे कुछ खाने को दिया जाये।" 56इस पर लड़की के माता पिता को बहुत अचरज हुआ किन्तु यीशु ने उन्हें आदेश दिया कि जो घटना घटी है, उसे वे किसी को न बतायें।

यीशु द्वारा बारह शिष्यों का भेजा जाना

9 फिर यीशु ने बारहों शिष्यों को एकसाथ बुलाया। और उन्हें दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाने का अधिकार और शक्ति प्रदान की। उसने उन्हें रोग दूर करने की शक्ति भी दी। 2फिर उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाने और रोगियों को चंगा करने के लिये बाहर भेजा। 3उसने उनसे कहा, "अपनी यात्रा के लिये वे कुछ साथ न लें: न लाठी, न झोला, न रोटी, न चाँदी और न कोई अतिरिक्त वस्त्र। 4तुम जिस किसी घर के भीतर जाओ, वहीं ठहरो। और जब तक विदा लो, वहीं ठहरे रहो। 5और जहाँ कहीं लोग तुम्हारा स्वागत न करें तो जब तुम उस नगर को छोड़ो तो उनके विरुद्ध गवाही के रूप में अपने पैरों की धूल झाड़ दो।"

6सो वहाँ से चल कर वे हर कहीं सुसमाचार का उपदेश देते और लोगों को चंगा करते सभी गाँवों से होते हुए यात्रा करने लगे।

हेरोदेस की भ्रान्ति

7अब जब एक चौथाई देश के राजा हेरोदेस ने, जो कुछ हुआ था, उसके बारे में सुना तो वह चिंता में पड़ गया क्योंकि कुछ लोगों के द्वारा कहा जा रहा था, "यूहन्ना को मरे हुओं में से जिला दिया गया है।" 8दूसरे कह रहे थे, "एलिय्याह प्रकट हुआ है।" कुछ और कह रहे थे, "पुराने युग का कोई नबी जी उठा है।" 9किन्तु हेरोदेस ने कहा, "मैंने यूहन्ना का तो सिर कटवा दिया था, फिर यह है कौन जिसके बारे में मैं ऐसी बातें सुन रहा हूँ?" सो हेरोदेस उसे देखने का जतन करने लगा।

पाँच हज़ार से अधिक का भोज

10फिर जब प्रेरित लौट कर आये तो उन्होंने जो कुछ किया था, सब यीशु को बताया। सो वह उन्हें वहाँ से अपने साथ लेकर चुपचाप बैतसैदा नामक नगर को चला गया। 11पर भीड़ को पता चल गया सो वह भी उसके पीछे हो ली। यीशु ने उनका स्वागत किया और परमेश्वर के राज्य के विषय में उन्हें बताया। और जिन्हें उपचार की आवश्यकता थी, उन्हें चंगा किया।

12जब दिन ढलने लग रहा था तो वे बारहों उसके पास आये और बोले, "भीड़ को विदा कर ताकि वे आसपास के गाँवों और खेतों में जाकर आसरा और भोजन पा सकें क्योंकि हम यहाँ सुदूर निर्जन स्थान में हैं।"

13किन्तु उसने उनसे कहा, "तुम ही इन्हें खाने को कुछ दो।" वे बोले, "हमारे पास बस पाँच रोटियों और दो मछलियों को छोड़ कर और कुछ भी नहीं है। तू यह तो नहीं चाहता है कि हम जाएँ और इन सब के लिए भोजन

मोल लेकर आएँ।" [14](वहाँ लगभग पाँच हज़ार पुरुष थे।) किन्तु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "उन्हें पचास पचास के समूहों में बैठा दो।"

[15]सो उन्होंने वैसा ही किया और हर किसी को बैठा दिया। [16]फिर यीशु ने पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर स्वर्ग की ओर देखते हुए उनके लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया और फिर उनके टुकड़े करते हुए उन्हें अपने शिष्यों को दिया कि वे लोगों को परोस दें। [17]लोगों ने खूब छक कर खाया और बचे हुए टुकड़ों से उसके शिष्यों ने बारह टोकरियाँ भरीं।

यीशु ही मसीह है

[18]हुआ यह कि जब यीशु अकेले प्रार्थना कर रहा था तो उसके शिष्य भी उसके साथ थे। सो यीशु ने उनसे पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?"

[19]उन्होंने उत्तर दिया, "बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना, कुछ कहते हैं एलिय्याह किन्तु कुछ दूसरे कहते हैं प्राचीन युग का कोई नबी उठ खड़ा हुआ है।"

[20]यीशु ने उनसे कहा, "और तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ?" पतरस ने उत्तर दिया, "परमेश्वर का मसीह।"

[21]किन्तु इस विषय में किसी को भी न बताने की चेतावनी देते हुए यीशु ने उनसे कहा, [22]"यह निश्चित है कि मनुष्य का पुत्र बहुत सी यातनाएँ झेलेगा और वह बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं, याजकों और धर्मशास्त्रियों द्वारा नकारा जाकर मरवा दिया जायेगा। और फिर तीसरे दिन जीवित कर दिया जायेगा।"

[23]फिर उसने उन सब से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे चलना चाहता है तो उसे अपने आप को नकारना होगा और उसे हर दिन अपना क्रूस उठाना होगा। तब वह मेरे पीछे चले। [24]क्योंकि जो कोई अपना जीवन बचाना चाहता है, वह उसे खो बैठेगा पर जो कोई मेरे लिये अपने जीवन का त्याग करता है, वही उसे बचा पायेगा। [25]क्योंकि इसमें किसी व्यक्ति का क्या लाभ है कि वह सारे संसार को तो प्राप्त कर ले किन्तु अपने आप को नष्ट कर दे या भटक जाये। [26]जो कोई भी मेरे लिये या मेरे शब्दों के लिये लज्जित है, उसके लिये परमेश्वर का पुत्र भी जब अपने वैभव, अपने परमपिता और पवित्र स्वर्गदूतों के वैभव में प्रकट होगा तो उसके लिये लज्जित होगा। [27]किन्तु मैं सच्चाई के साथ तुमसे कहता हूँ यहाँ कुछ ऐसे खड़े हैं, जो तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे, जब तक परमेश्वर के राज्य को देख न लें।"

मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु

[28]इन शब्दों के कहने के लगभग आठ दिन बाद वह पतरस, यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने के लिए पहाड़ के ऊपर गया। [29]फिर ऐसा हुआ कि प्रार्थना करते हुए उसके मुख का स्वरूप कुछ भिन्न ही हो गया और उसके वस्त्र चमचम करते सफेद हो गये। [30]वहीं उससे बात करते हुए दो पुरुष प्रकट हुए। वे मूसा और एलिय्याह थे। [31]जो अपनी महिमा के साथ प्रकट हुए थे और यीशु की मृत्यु के विषय में बात कर रहे थे जिसे उसे यरुशलेम में साधना था। [32]किन्तु पतरस और वे जो उसके साथ थे नींद से घिरे थे। सो जब वे जागे तो उन्होंने यीशु की महिमा को देखा और उन्होंने उन दो जनों को भी देखा जो उसके साथ खड़े थे। [33]और फिर हुआ यूँ कि जैसे ही वे उससे विदा ले रहे थे, पतरस ने यीशु से कहा, "स्वामी, अच्छा है कि हम यहाँ हैं, हमें तीन मण्डप बनाने हैं–एक तेरे लिए, एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये।" (वह नहीं जानता था, वह क्या कह रहा था।)

[34]वह ये बातें कर ही रहा था कि एक बादल उमड़ा और उसने उन्हें अपनी छाया में समेट लिया। जैसे ही उन पर बादल छाया, वे घबरा गये। [35]तभी बादलों से आकाशवाणी हुई, "यह मेरा पुत्र है, इसे मैंने चुना है, इसकी सुनो।"

[36]जब आकाशवाणी हो चुकी तो उन्होंने यीशु को अकेले पाया। वे इसके बारे में चुप रहे। उन्होंने जो कुछ देखा था, उस विषय में उस समय किसी से कुछ नहीं कहा।

लड़के को दुष्टात्मा से छुटकारा

[37]अगले दिन ऐसा हुआ कि जब वे पहाड़ी से नीचे उतरे तो उन्हें एक बड़ी भीड़ मिली। [38]तभी भीड़ में से एक व्यक्ति चिल्ला उठा, "गुरु, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे बेटे पर अनुग्रह–दृष्टि कर। वह मेरी इकलौती सन्तान है। [39]अचानक एक दुष्ट आत्मा उसे जकड़ लेती है और वह चीख उठता है। उसे दुष्टात्मा ऐसे मरोड़ में डालती है कि उसके मुँह से झाग निकलने लगता है। वह उसे कभी नहीं छोड़ती और सताए जा रही है। [40]मैंने तेरे शिष्यों से

प्रार्थना की कि वह उसे बाहर निकाल दें किन्तु वे ऐसा नहीं कर सके।"

41तब यीशु ने उत्तर दिया, "अरे अविश्वासियो और भटकाये गये लोगो, मैं और कितने दिन तुम्हारे साथ रहूँगा और कब तक तुम्हारी सहता रहूँगा? अपने बेटे को यहाँ ला।"

42अभी वह लड़का आ ही रहा था कि दुष्टात्मा ने उसे पटकी दी और मरोड़ दिया। किन्तु यीशु ने दुष्ट आत्मा को फटकारा और लड़के को निरोग करके वापस उसके पिता को सौंप दिया। 43वे सभी परमेश्वर की इस महानता से चकित हो उठे।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की चर्चा

यीशु जो कुछ कर रहा था उसे देखकर लोग जब आश्चर्य कर रहे थे तभी यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, 44"अब जो मैं तुमसे कह रहा हूँ, उन बातों पर ध्यान दो। मनुष्य का पुत्र मनुष्य के हाथों पकड़वाया जाने वाला है।" 45किन्तु वे इस बात को नहीं समझ सके। यह बात उनसे छुपी हुई थी। सो वे उसे जान नहीं पाये। और वे उस बात के विषय में उससे पूछने से डरते थे।

सबसे बड़ा कौन?

46एक बार यीशु के शिष्यों के बीच इस बात पर विवाद छिड़ा कि उनमें सबसे बड़ा कौन है? 47यीशु ने जान लिया कि उनके मन में क्या विचार हैं। सो उसने एक बच्चे को लिया और उसे अपने पास खड़ा करके 48उनसे बोला, "जो कोई इस छोटे बच्चे का मेरे नाम में सत्कार करता है, वह मानों मेरा ही सत्कार कर रहा है। और जो कोई मेरा सत्कार करता है, वह उसका ही सत्कार कर रहा है जिसने मुझे भेजा है। इसीलिए जो तुममें सबसे छोटा है, वही सबसे बड़ा है।"

जो तुम्हारा विरोधी नहीं है, वह तुम्हारा ही है

49यूहन्ना ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, "स्वामी, हमने तेरे नाम पर एक व्यक्ति को दुष्टात्माएँ निकालते देखा है। हमने उसे रोकने का प्रयत्न किया, क्योंकि वह हममें से कोई नहीं है, जो तेरा अनुसरण करते हैं।"

50इस पर यीशु ने यूहन्ना से कहा, "उसे रोक मत क्योंकि जो तेरे विरोध में नहीं है, वह तेरे पक्ष में ही है।"

एक सामरी नगर

51अब ऐसा हुआ कि जब उसे ऊपर स्वर्ग में ले जाने का समय आया तो वह यरूशलेम जाने का निश्चय कर चल पड़ा। 52उसने अपने दूतों को पहले ही भेज दिया था। वे चल पड़े और उसके लिये तैयारी करने को एक सामरी गाँव में पहुँचे। 53किन्तु सामरियों ने वहाँ उसका स्वागत सत्कार नहीं किया क्योंकि वह यरूशलेम को जा रहा था। 54जब उसके शिष्यों–याकूब और यूहन्ना ने यह देखा तो वे बोले, "प्रभु क्या तू चाहता है कि हम आदेश दें कि आकाश से अग्नि बरसे और उन्हें भस्म कर दे?"

55इस पर वह उनकी तरफ़ मुड़ा और उनको डाँटा फटकारा, ["और यीशु ने कहा, 'क्या तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा से सम्बन्ध रखते हो? 56मनुष्य का पुत्र मनुष्य की आत्माओं को नष्ट करने नहीं बल्कि उनका उद्धार करने आया है।'"]* फिर वे दूसरे गाँव चले गये।

यीशु का अनुसरण

57जब वे राह किनारे चले जा रहे थे किसी ने उससे कहा, "तू जहाँ कहीं भी जाये, मैं तेरे पीछे चलूँगा।"

58यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के पास खोह होते हैं। और आकाश की चिड़ियाओं के भी घोंसले होते हैं किन्तु मनुष्य के पुत्र के पास सिर टिकाने तक को कोई स्थान नहीं है।" 59उसने किसी दूसरे से कहा, "मेरे पीछे हो ले।"

किन्तु वह व्यक्ति बोला, "हे प्रभु, मुझे जाने दे ताकि मैं पहले अपने पिता को दफ़न कर आऊँ।"

60तब यीशु ने उससे कहा, "मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ने दे, तू जा और परमेश्वर के राज्य की घोषणा कर।"

61फिर किसी और ने भी कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे पीछे चलूँगा किन्तु पहले मुझे अपने घर वालों से विदा ले आने दे।"

62इस पर यीशु ने उससे कहा, "ऐसा कोई भी जो हल पर हाथ रखने के बाद पीछे देखता है, परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है।"

और यीशु ... आया है कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

यीशु द्वारा सत्तर शिष्यों का भेजा जाना

10 इन घटनाओं के बाद प्रभु ने सत्तर* व्यक्तियों को और नियुक्त किया और फिर जिन–जिन नगरों और स्थानों पर उसे स्वयं जाना था, दो–दो करके उसने उन्हें अपने से आगे भेजा। [2]वह उनसे बोला, "फसल बहुत व्यापक है किन्तु, काम करने वाले मज़दूर कम हैं। इसलिए फसल के प्रभु से विनती करो कि वह अपनी फसलों में मज़दूर भेजे। [3]जाओ और याद रखो, मैं तुम्हें 'भेड़ियों' के बीच भेड़ के मेमनों के समान भेज रहा हूँ। [4]अपने साथ न कोई बटुआ, न थैला और न ही जूते लेना। रास्ते में किसी से नमस्कार तक मत करो। [5]जिस किसी घर में जाओ, सबसे पहले कहो 'इस घर को शान्ति मिले।' [6]यदि वहाँ कोई शान्तिपूर्ण व्यक्ति होगा तो तुम्हारी शान्ति उसे प्राप्त होगी। किन्तु यदि वह व्यक्ति शान्तिपूर्ण नहीं होगा तो तुम्हारी शान्ति तुम्हारे पास लौट आयेगी। [7]जो कुछ वे लोग तुम्हें दें, उसे खाते पीते उसी घर में ठहरो। क्योंकि मज़दूरी पर मज़दूर का हक है। घर–घर मत फिरते रहो। [8]और जब कभी तुम किसी नगर में प्रवेश करो और उस नगर के लोग तुम्हारा स्वागत सत्कार करें तो जो कुछ वे तुम्हारे सामने परोसें, बस वही खाओ। [9]उस नगर के रोगियों को निरोग करो और उनसे कहो 'परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।' [10]और जब कभी तुम किसी ऐसे नगर में जाओ जहाँ के लोग तुम्हारा सम्मान न करें, तो वहाँ की गलियों में जा कर कहो, [11]'इस नगर की वह धूल तक जो हमारे पैरों में लगी है, हम तुम्हारे विरोध में यहीं पोंछे जा रहे हैं। फिर भी यह ध्यान रहे कि परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुँचा है।' [12]मैं तुमसे कहता हूँ कि उस दिन उस नगर के लोगों से सदोम के लोगों की दशा कहीं अच्छी होगी।"

अविश्वासियों को यीशु की चेतावनी

[13]"ओ खुराजीन, ओ बैतसैदा, तुम्हें धिक्कार है, क्योंकि जो आश्चर्य कर्म तुममें किये गए, यदि उन्हें सूर और सैदा में किया जाता, तो न जाने वे कब के टाट के शोक–वस्त्र धारण कर और राख में बैठ कर मन फिरा लेते। [14]कुछ भी हो न्याय के दिन सूर और सैदा की स्थिति तुमसे कहीं अच्छी होगी। [15]अरे कफ़रनहूम क्या तू स्वर्ग तक ऊँचा उठाया जायेगा? तू तो नीचे नरक में पड़ेगा!

[16]"शिष्यो! जो कोई तुम्हें सुनता है, मुझे सुनता है, और जो तुम्हारा निषेध करता है, वह मेरा निषेध करता है। और जो मुझे नकारता है, वह उसे नकारता है जिसने मुझे भेजा है।"

शैतान का पतन

[17]फिर वे सत्तर आनन्द के साथ वापस लौटे और बोले, "हे प्रभु, दुष्टात्माएँ तक तेरे नाम में हमारी आज्ञा मानती हैं!" [18]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैंने शैतान को आकाश से बिजली के समान गिरते देखा है। [19]सुनो! साँपों और बिच्छुओं को पैरों तले रौंदने और शत्रु की समूची शक्ति पर प्रभावी होने का सामर्थ्य मैंने तुम्हें दे दिया है। तुम्हें कोई कुछ हानि नहीं पहुँचा पायेगा। [20]किन्तु बस इसी बात पर प्रसन्न मत होओ कि आत्माएँ तुम्हारे वश में हैं बल्कि इस पर प्रसन्न होओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में अंकित हैं।"

यीशु की परम पिता से प्रार्थना

[21]उस क्षण वह पवित्र आत्मा में स्थित होकर आनन्दित हुआ और बोला, "हे परम पिता! हे स्वर्ग और धरती के स्वामी! मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तूने इन बातों को चतुर और प्रतिभावान लोगों से छुपा कर रखते हुए भी शिशुओं* के लिये उन्हें प्रकट कर दिया। हे परम पिता! निश्चय ही तू ऐसा ही करना चाहता था।

[22]"मुझे मेरे पिता द्वारा सब कुछ दिया गया है और पिता के सिवाय कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है और पुत्र के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि पिता कौन है, या उसके सिवा जिसे पुत्र इसे प्रकट करना चाहता है।"

[23]फिर शिष्यों की तरफ मुड़ कर उसने चुपके से कहा, "धन्य हैं वे आँखें जो तुम देख रहे हो, उसे देखती हैं। [24]क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि उन बातों को बहुत से नबी और राजा देखना चाहते थे, जिन्हें तुम देख रहे हो, पर देख नहीं सके। जिन बातों को तुम सुन रहे हो, वे उन्हें सुनना चाहते थे, पर वे सुन न पाये।"

सत्तर लूका ने कदाचित यह संख्या बहत्तर लिखी थी किन्तु लूका की कुछ ग्रीक प्रतियों में यह संख्या सत्तर भी मिलती है।

शिशुओं शिशुओं से अभिप्राय है सीधे सादे सरल अबोध जन।

अच्छे सामरी की कथा

[25]तब एक न्यायशास्त्री खड़ा हुआ और यीशु की परीक्षा लेने के लिये उससे पूछा, "गुरु, अनन्त जीवन पाने के लिये मैं क्या करूँ?"

[26]इस पर यीशु ने उस से कहा, "व्यवस्था के विधि में क्या लिखा है, वहाँ तू क्या पढ़ता है?"

[27]उसने उत्तर दिया, "'तू अपने समूचे मन, सम्पूर्ण आत्मा, सारी शक्ति और समग्र बुद्धि से अपने प्रभु से प्रेम कर'।* और 'अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार कर, जैसे तू अपने आप से करता है।'"*

[28]तब यीशु ने उससे कहा, "तूने ठीक उत्तर दिया है। तो तू ऐसा ही कर इसी से तू जीवित रहेगा।"

[29]किन्तु उसने अपने को न्याय संगत ठहराने की इच्छा करते हुए यीशु से कहा, "और मेरा पड़ोसी कौन है?"

[30]यीशु ने उत्तर में कहा, "देखो, एक व्यक्ति यरूशलेम से यरीहो जा रहा था कि वह डाकुओं से घिर गया। उन्होंने सब कुछ छीन कर उसे नंगा कर दिया और मार पीट कर उसे अधमरा छोड़, वे चले गये। [31]अब संयोग से उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था। जब उसने इसे देखा तो वह मुँह मोड़ कर दूसरी ओर चला गया। [32]उसी रास्ते होता हुआ, एक लेवी* भी वहीं आया। उसने उसे देखा और वह भी मुँह मोड़ कर दूसरी ओर चला गया। [33]किन्तु एक सामरी भी जाते हुए वहीं आया जहाँ वह पड़ा था। जब उसने उस व्यक्ति को देखा तो उसके लिये उसके मन में करुणा उपजी, [34]सो वह उसके पास आया और उसके घावों पर तेल और दाखरस डाल कर पट्टी बाँध दी। फिर वह उसे अपने पशु पर लाद कर एक सराय में ले गया और उसकी देखभाल करने लगा। [35]अगले दिन उसने दो दीनारी निकाली और उन्हें सराय वाले को देते हुए बोला, 'इसका ध्यान रखना और इससे अधिक जो कुछ तेरा खर्चा होगा, जब मैं लौटूँगा, तुझे चुका दूँगा।'

[36]"बता तेरे विचार से डाकुओं के बीच घिरे व्यक्ति का पड़ोसी इन तीनों में से कौन हुआ?"

[37]न्यायशास्त्री ने कहा, "वही जिसने उस पर दया की।"

इस पर यीशु ने उससे कहा, "जा और वैसा ही कर जैसा उसने किया!"

मरियम और मार्था

[38]जब यीशु और उसके शिष्य अपनी राह चले जा रहे थे तो यीशु एक गाँव में पहुँचा। एक स्त्री ने, जिसका नाम मार्था था, उदारता के साथ उसका स्वागत सत्कार किया। [39]उसकी मरियम नाम की एक बहन थी जो प्रभु के चरणों में बैठी, जो कुछ वह कह रहा था, उसे सुन रही थी। [40]उधर तरह तरह की तैयारियों में लगी मार्था व्याकुल होकर यीशु के पास आयी और बोली, "हे प्रभु, क्या तुझे चिंता नहीं है कि मेरी बहन ने सारा काम बस मुझ ही पर डाल दिया है? इसलिए उससे मेरी सहायता करने को कह।"

[41]प्रभु ने उसे उत्तर दिया, "मार्था, हे मार्था, तू बहुत सी बातों के लिये चिंतित और व्याकुल रहती है। [42]किन्तु बस एक ही बात आवश्यक है, और मरियम ने क्योंकि अपने लिये उसी उत्तम अंश को चुन लिया है, सो वह उससे नहीं छीना जायेगा।"

प्रार्थना

11 अब ऐसा हुआ कि यीशु कहीं प्रार्थना कर रहा था। जब वह प्रार्थना समाप्त कर चुका तो उसके एक शिष्य ने उससे कहा, "हे प्रभु, हमें सिखा कि हम प्रार्थना कैसे करें। जैसा कि यूहन्ना ने अपने शिष्यों को सिखाया था।"

[2]इस पर वह उनसे बोला, "तुम प्रार्थना करो, तो कहो:

'हे पिता, तेरा नाम पवित्र हो।
तेरा राज्य आवे,
[3] हमें दे दिन–प्रतिदिन आहार,
[4] क्षमा कर अपराध हमारे,
क्योंकि हमने भी अपने अपराधी क्षमा किये,
कठिन परीक्षा में मत पड़ने दे।'"

माँगते रहो

[5]फिर उसने उनसे कहा, "मानो तुममें से किसी का एक मित्र है, सो तुम आधी रात उसके पास जाकर कहते हो, 'हे मित्र, मुझे तीन रोटियाँ दे। [6]क्योंकि मेरा एक मित्र अभी–अभी यात्रा पर मेरे पास आया है और मेरे पास

तू अपने ... प्रेम कर व्यवस्था. 6:5
अपने ... करता है लैव्य. 19:18
लेवी लेविय समूह का एक व्यक्ति। यह परिवार समूह मंदिर में यहूदी याजक का सहायक होता था।

उसके सामने परोसने को कुछ भी नहीं है।' [7]और कल्पना करो उस व्यक्ति ने भीतर से उत्तर दिया, 'मुझे तंग मत कर, द्वार बंद हो चुका है, बिस्तर में मेरे साथ मेरे बच्चे हैं, सो तुझे कुछ भी देने मैं खड़ा नहीं हो सकता।' [8]मैं तुम्हें बताता हूँ वह यद्यपि नहीं उठेगा और तुम्हें कुछ नहीं देगा, किन्तु फिर भी क्योंकि वह तुम्हारा मित्र है, सो तुम्हारे निरन्तर, बिना संकोच मांगते रहने से वह खड़ा होगा और तुम्हारी आवश्यकता भर, तुम्हें देगा। [9]और इसीलिये मैं तुमसे कहता हूँ माँगो, तुम्हें दिया जाएगा। खोजो, तुम पाओगे। खटखटाओ, तुम्हारे लिए द्वार खोल दिया जायेगा। [10]क्योंकि हर कोई जो माँगता है, पाता है। जो खोजता है, उसे मिलता है। और जो खटखटाता है, उसके लिए द्वार खोल दिया जाता है। [11]तुममें ऐसा पिता कौन होगा जो यदि उसका पुत्र मछली माँगे, तो मछली के स्थान पर उसे साँप थमा दे [12]और यदि वह अण्डा माँगे तो उसे बिच्छू दे दे। [13]सो बुरे होते हुए भी जब तुम जानते हो कि अपने बच्चों को उत्तम उपहार कैसे दिये जाते हैं, तो स्वर्ग में स्थित परम पिता, जो उससे माँगते हैं, उन्हें पवित्र आत्मा कितना अधिक देगा।"

यीशु में परमेश्वर की शक्ति

[14]फिर जब यीशु एक गूँगा बना डालने वाली दुष्टात्मा को निकाल रहा था तो ऐसा हुआ कि जैसे ही वह दुष्टात्मा बाहर निकली, तो वह गूँगा, बोलने लगा। भीड़ के लोग इससे बहुत चकित हुए। [15]किन्तु उनमें से कुछ ने कहा, "यह दैत्यों के शासक बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।"

[16]किन्तु औरों ने उसे परखने के लिये किसी स्वर्गीय चिन्ह की माँग की। [17]किन्तु यीशु जान गया कि उनके मनों में क्या है। सो वह उनसे बोला, "वह राज्य जिसमें अपने भीतर ही फूट पड़ जाये, नष्ट हो जाता है और ऐसे ही किसी घर का भी फूट पड़ने पर उसका नाश हो जाता है। [18]यदि शैतान अपने ही विरुद्ध फूट पड़े तो उसका राज्य कैसे टिक सकता है? यह मैंने तुमसे इसलिये पूछा है कि तुम कहते हो कि मैं बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ। [19]किन्तु यदि मैं बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ तो तुम्हारे अनुयायी उन्हें किसकी सहायता से निकालते हैं? सो तुझे तेरे अपने लोग ही अनुचित सिद्ध करेंगे। [20]किन्तु यदि मैं दुष्टात्माओं को परमेश्वर की शक्ति से निकालता हूँ तो यह स्पष्ट है कि परमेश्वर का राज्य तुम तक आ पहुँचा है!

[21]"जब एक शक्तिशाली मनुष्य पूरी तरह हथियार कसे अपने घर की रक्षा करता है तो उसकी सम्पत्ति सुरक्षित रहती है। [22]किन्तु जब कभी कोई उससे अधिक शक्तिशाली उस पर हमला कर उसे हरा देता है तो वह उसके सभी हथियारों को, जिन पर उसे भरोसा था, उससे छीन लेता है और लूट के माल को वे आपस में बाँट लेते हैं।

[23]"जो मेरे साथ नहीं है, मेरे विरोध में है और वह जो मेरे साथ बटोरता नहीं है, बिखेरता है।"

खाली व्यक्ति

[24]"जब कोई दुष्टात्मा किसी मनुष्य से बाहर निकलती है तो विश्राम को खोजते हुए सूखे स्थानों से होती हुई जाती है और जब उसे आराम नहीं मिलता तो वह कहती हैं, 'मैं अपने उसी घर लौटूँगी जहाँ से गयी हूँ।' [25]और वापस जाकर वह उसे साफ़ सुथरा और व्यवस्थित पाती है। [26]फिर वह जाकर अपने से भी अधिक दुष्ट अन्य सात दुष्टात्माओं को वहाँ लाती है। फिर वे उसमें जाकर रहने लगती हैं। इस प्रकार उस व्यक्ति की बाद की यह स्थिति पहली स्थिति से भी अधिक बुरी हो जाती है!"

वे धन्य हैं

[27]फिर ऐसा हुआ कि जैसे ही यीशु ने ये बातें कहीं, भीड़ में से एक स्त्री उठी और ऊँचे स्वर में बोली, "वह गर्भ धन्य है, जिसने तुझे धारण किया। वे स्तन धन्य है, जिनका तूने पान किया है।"

[28]इस पर उसने कहा, "धन्य तो बल्कि वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर चलते हैं!"

प्रमाण की माँग

[29]जैसे जैसे भीड़ बढ़ रही थी, वह कहने लगा, "यह एक दुष्ट पीढ़ी है। यह कोई चिह्न देखना चाहती है। किन्तु इसे योना के चिन्ह के सिवा और कोई चिह्न नहीं दिया जायेगा। [30]क्योंकि जैसे नीनवे के लोगों के लिए योना चिह्न बना, वैसे ही इस पीढ़ी के लिये मनुष्य का पुत्र भी चिह्न बनेगा। [31]दक्षिण की रानी* न्याय के दिन प्रकट

दक्षिण की रानी अर्थात् शीना हज़ार मील चल कर सुलैमान से परमेश्वर का ज्ञान सीखने आयी थी।

होकर इस पीढ़ी के लोगों पर अभियोग लगायेगी और उन्हें दोषी ठहरायेगी क्योंकि वह धरती के दूसरे छोरों से सुलेमान का ज्ञान सुनने को आयी और अब देखो यहाँ तो कोई सुलेमान से भी बड़ा है। 32नीनवे के लोग न्याय के दिन इस पीढ़ी के लोगों के विरोध में खड़े होकर उन पर दोष लगायेंगे क्योंकि उन्होंने योना के उपदेश को सुन कर मन फिराया था। और देखो अब तो योना से भी महान कोई यहाँ है!

विश्व का प्रकाश बनो

33"दीपक जलाकर कोई भी उसे किसी छिपे स्थान या किसी बर्तन के भीतर नहीं रखता, बल्कि वह इसे दीवट पर रखता है ताकि जो भीतर आयें प्रकाश देख सकें। 34तुम्हारी देह का दीपक तुम्हारी आँखें हैं, सो यदि आँखें साफ हैं तो सारी देह प्रकाश से भरी है किन्तु, यदि ये बुरी हैं तो तुम्हारी देह अंधकारमय हो जाती है। 35सो ध्यान रहे कि तुम्हारे भीतर का प्रकाश अंधकार नहीं है। 36अत: यदि तुम्हारा सारा शरीर प्रकाश से परिपूर्ण है और इसका कोई भी अंग अंधकारमय नहीं है तो वह पूरी तरह ऐसे चमकेगा मानो कोई दीपक तुम पर अपनी किरणों में चमक रहा हो।"

यीशु द्वारा फरीसियों की आलोचना

37यीशु ने जब अपनी बात समाप्त की तो एक फरीसी ने उससे अपने साथ भोजन करने का आग्रह किया। सो वह भीतर जाकर भोजन करने बैठ गया। 38किन्तु जब उस फरीसी ने यह देखा कि भोजन करने से पहले उसने अपने हाथ नहीं धोये तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। 39इस पर प्रभु ने उनसे कहा, "अब देखो तुम फरीसी थाली और कटोरी को बस बाहर से तो माँजते हो पर भीतर से तुम हुए लोग लालच और दुष्टता से भरे हो। 40अरे मूर्ख लोगो! क्या जिसने बाहरी भाग को बनाया, वही भीतरी भाग को भी नहीं बनाता? 41इसलिए जो कुछ भीतर है, उसे दीनों को दे दे। फिर तेरे लिए सब कुछ पवित्र हो जायेगा। 42अरे फ़रीसियो! तुम्हें धिक्कार है क्योंकि तुम अपने पुदीने और सुदाब बूटी और हर किसी जड़ी बूटी का दसवाँ हिस्सा तो अर्पित करते हो किन्तु परमेश्वर के लिये प्रेम और न्याय की उपेक्षा करते हो। किन्तु इन बातों को तुम्हें उन बातों की उपेक्षा किये बिना करना चाहिये था। 43ओ फरीसियो, तुम्हें धिक्कार है! क्योंकि तुम यहूदी प्रार्थना सभाओं में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आसन चाहते हो और बाज़ारों में सम्मानपूर्ण नमस्कार लेना तुम्हें भाता है। 44तुम्हें धिक्कार है क्योंकि तुम बिना किसी पहचान की उन क़ब्रों के समान हो जिन पर लोग अनजाने ही चलते हैं।"

यहूदी धर्मशास्त्रियों से यीशु की बातचीत

45तब एक न्यायशास्त्री ने यीशु से कहा, "गुरु, जब तू ऐसी बातें कहता है तो हमारा भी अपमान करता है।"

46इस पर यीशु ने कहा, "अरे न्यायशास्त्रियो! तुम्हें धिक्कार है। क्योंकि तुम लोगों पर ऐसे बोझ लादते हो जिन्हें उठाना कठिन है। और तुम स्वयं उन बोझों को एक उँगली तक से छूना भर नहीं चाहते। 47तुम्हें धिक्कार है क्योंकि तुम नबियों के लिये कब्रें बनाते हो जबकि वे तुम्हारे पूर्वज ही थे जिन्होंने उनकी हत्या की। 48इससे तुम यह दिखाते हो कि तुम अपने पूर्वजों के उन कामों का समर्थन करते हो। क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मारा और तुमने उनकी कब्रें बनाईं। 49इसीलिये परमेश्वर के ज्ञान ने भी कहा, 'मैं नबियों और प्रेरितों को भी उनके पास भेजूँगा। फिर कुछ को तो वे मार डालेंगे और कुछ को यातनाएँ देंगे।' 50इसीलिये संसार के प्रारम्भ से जितने भी नबियों का खून बहाया गया है, उसका हिसाब इस पीढ़ी के लोगों से चुकता किया जायेगा। 51यानी हाबिल की हत्या से लेकर जकरयाह की हत्या तक का हिसाब, जो परमेश्वर के मंदिर और वेदी के बीच की गयी थी। हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ इस पीढ़ी के लोगों को इसके लिए लेखा जोखा देना ही होगा।

52"हे न्याय शास्त्रियो, तुम्हें धिक्कार है, क्योंकि तुमने ज्ञान की कुंजी ले तो ली है। पर उसमें न तो तुमने खुद प्रवेश किया और जो प्रवेश करने का जतन कर रहे थे उनको भी तुमने बाधा पहुँचाई।"

53और फिर जब यीशु वहाँ से चला गया तो वे धर्म शास्त्री और फरीसी उससे घोर शत्रुता रखने लगे। बहुत सी बातों के बारे में वे उससे तीखे प्रश्न पूछने लगे। 54क्योंकि वे उसे उसकी कही किसी बात से फँसाने की टोह में लगे थे।

फरीसियों जैसे मत बनो

12 और फिर जब हजारों की इतनी भीड़ आ जुटी कि लोग एक दूसरे को कुचल रहे थे तब यीशु पहले अपने शिष्यों से कहने लगा, "फरीसियों के ख़मीर से, जो उनका कपट है, बचे रहो। [2]कुछ छिपा नहीं है जो प्रकट नहीं कर दिया जायेगा। ऐसा कुछ अनजाना नहीं है जिसे जना नहीं दिया जायेगा। [3]इसीलिये हर वह बात जिसे तुमने अँधेरे में कहा है, उजाले में सुनी जायेगी। और एकांत कमरों में जो कुछ भी तुमने चुपचाप किसी के कान में कहा है, मकानों की छतों पर से घोषित किया जायेगा।

बस परमेश्वर से डरो

[4]"किन्तु मेरे मित्रो! मैं तुमसे कहता हूँ उनसे मत डरो जो बस तुम्हारे शरीर को मार सकते हैं और उसके बाद ऐसा कुछ नहीं है जो उनके बस में हो। [5]मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि तुम्हें किस से डरना चाहिये। उससे डरो जो तुम्हें मारकर नरक में डालने की शक्ति रखता है। हाँ, मैं तुम्हें बताता हूँ, बस उसी से डरो।

[6]"क्या दो पैसे की पाँच चिड़ियाएँ नहीं बिकती? फिर भी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता। [7]और देखो तुम्हारे सिर का एक एक बाल तक गिना हुआ है। डरो मत तुम तो बहुत सी चिड़ियाओं से कहीं अधिक मूल्यवान हो।"

यीशु के नाम पर लज्जाओ मत

[8]"किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ जो कोई व्यक्ति सभी के सामने मुझे स्वीकार करता है, मनुष्य का पुत्र भी उस व्यक्ति को परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने स्वीकार करेगा। [9]किन्तु वह जो मुझे दूसरों के सामने नकारेगा, उसे परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने नकार दिया जायेगा।

[10]"और हर उस व्यक्ति को तो क्षमा कर दिया जायेगा जो मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई शब्द बोलता है, किन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करता है, उसे क्षमा नहीं किया जायेगा।

[11]"सो जब वे तुम्हें यहूदी धर्म–सभाओं, शासकों और अधिकारियों के सामने ले जायें तो चिंता मत करो कि तुम अपना बचाव कैसे करोगे या तुम्हें क्या कुछ कहना होगा। [12]चिंता मत करो क्योंकि पवित्र आत्मा तुम्हें सिखायेगा कि उस समय तुम्हें क्या बोलना चाहिये।"

स्वार्थ के विरुद्ध चेतावनी

[13]फिर भीड़ में से उससे किसी ने कहा, "गुरु, मेरे भाई से पिता की सम्पत्ति का बँटवारा करने को कह दे।"

[14]इस पर यीशु ने उससे कहा, "अरे भले मानुष, मुझे तुम्हारा न्यायकर्ता या पंच किसने बनाया है?" [15]सो यीशु ने उनसे कहा, "सावधानी के साथ सभी प्रकार के लोभ से अपने आप को दूर रखो। क्योंकि आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति होने पर भी जीवन का आधार उसका संग्रह नहीं होता।"

[16]फिर उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा सुनाई: "किसी धनी व्यक्ति की धरती पर भरपूर उपज हुई। [17]वह अपने मन में सोचते हुए कहने लगा, 'मैं क्या करूँ, मेरे पास फ़सल को रखने के लिये स्थान तो है नहीं।' [18]फिर उसने कहा, 'ठीक है मैं यह करूँगा कि अपने अनाज के कोठों को गिरा कर बड़े कोठे बनवाऊँगा और अपने समूचे अनाज को और सामान को वहाँ रख छोड़ूँगा।' [19]फिर अपनी आत्मा से कहूँगा, 'अरे मेरी आत्मा अब बहुत सी उत्तम वस्तुएँ, बहुत से बरसों के लिये तेरे पास संचित हैं। घबरा मत, खा, पी और मौज उड़ा।' [20]किन्तु परमेश्वर उससे बोला, 'अरे मूर्ख, इसी रात तेरी आत्मा तुझसे ले ली जायेगी। जो कुछ तूने तैयार किया है, उसे कौन लेगा?'

[21]"देखो, उस व्यक्ति के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है, वह अपने लिए भंडार भरता है किन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वह धनी नहीं है।"

परमेश्वर से बढ़कर कुछ नहीं है

[22]फिर उसने अपने शिष्यों से कहा, "इसीलिये मैं तुमसे कहता हूँ, अपने जीवन की चिंता मत करो कि तुम क्या खाओगे अथवा अपने शरीर की चिंता मत करो कि तुम क्या पहनोगे? [23]क्योंकि जीवन भोजन से और शरीर वस्त्रों से अधिक महत्त्वपूर्ण है। [24]कौवों को देखो, न वे बोते हैं, न ही वे काटते हैं। न उनके पास भंडार है और न अनाज के कोठे। फिर भी परमेश्वर उन्हें भोजन देता है। तुम तो कौवों से कितने अधिक मूल्यवान हो। [25]चिन्ता करके, तुम में से कौन ऐसा है, जो अपनी आयु में एक घड़ी भी और जोड़ सकता है? [26]क्योंकि यदि तुम इस छोटे

से काम को भी नहीं कर सकते तो शेष के लिये चिन्ता क्यों करते हो? [27]कुमुदिनियों को देखो, वे कैसे उगती हैं? न वे श्रम करती हैं, न कताई, फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलेमान अपने सारे वैभव के साथ उन में से किसी एक के समान भी नहीं सज सका। [28]इसलिये जब मैदान की घास को, जो आज यहाँ है और जिसे कल ही भाड़ में झोक दिया जायेगा, परमेश्वर ऐसे वस्त्रों से सजाता है तो ओ अल्प विश्वासियो, तुम्हें तो वह और कितने ही अधिक वस्त्र पहनायेगा। [29]और चिन्ता मत करो कि तुम क्या खाओगे और क्या पीओगे। इनके लिये मत सोचो। [30]क्योंकि जगत के और सभी लोग इन वस्तुओं के पीछे दौड़ रहे हैं पर तुम्हारा पिता तो जानता ही है कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है। [31]बल्कि तुम तो उसके राज्य की ही चिन्ता करो। ये वस्तुएँ तो तुम्हें दे ही दी जायेंगी।

धन पर भरोसा मत करो

[32]"मेरी भोली भेड़ो, डरो मत, क्योंकि तुम्हारा परम पिता तुम्हें स्वर्ग का राज्य देने को तत्पर है। [33]सो अपनी सम्पत्ति बेच कर धन गरीबों में बाँट दो। अपने पास ऐसी थैलियाँ रखो जो पुरानी न पड़ें अर्थात् कभी समाप्त न होने वाला कोष स्वर्ग में जुटाओ जहाँ उस तक किसी चोर की पहुँच न हो। और न उसे कीड़े मकौड़े नष्ट कर सकें। [34]क्योंकि जहाँ तुम्हारा कोष है, वहीं तुम्हारा मन भी रहेगा।

सदा तैयार रहो

[35]"कर्म करने को सदा तैयार रहो। और अपने दीपक जलाए रखो। [36]और उन लोगों के जैसे बनो जो ब्याह के भोज से लौटकर आते अपने स्वामी की प्रतीज्ञा में रहते है ताकि, जब वह आये और द्वार खटखटाये तो वे तत्काल उसके लिए द्वार खोल सकें। [37]वे सेवक धन्य हैं जिन्हें स्वामी आकर जागते और तैयार पाएगा। मैं तुम्हें सच्चाई के साथ कहता हूँ कि वह भी उनकी सेवा के लिये कमर कस लेगा और उन्हें खाने की चौकी पर भोजन के लिए बिठायेगा। वह आयेगा और उन्हें भोजन करायेगा। [38]वह चाहे आधी रात से पहले आए और चाहे आधी रात के बाद यदि उन्हें तैयार पाता है तो वे धन्य है। [39]इस बात के लिए निश्चित रहो कि यदि घर के स्वामी को यह पता होता कि चोर किस घड़ी आ रहा है, तो वह उसे अपने घर में सेंध नहीं लगाने देता। [40]सो तुम भी तैयार रहो क्योंकि मनुष्य का पुत्र ऐसी घड़ी आयेगा जिसे तुम सोच भी नहीं सकते।"

विश्वासपात्र सेवक कौन?

[41]तब पतरस ने पूछा, "हे प्रभु, यह दष्टान्त कथा तू हमारे लिये कह रहा है या सब के लिये?"

[42]इस पर यीशु ने कहा, "तो फिर ऐसा विश्वास-पात्र, बुद्धिमान प्रबन्ध-अधिकारी कौन होगा जिसे प्रभु अपने सेवकों के ऊपर उचित समय पर, उन्हें भोजन सामग्री देने के लिये नियुक्त करेगा? [43]वह सेवक धन्य है जिसे उसका स्वामी जब आये तो उसे वैसा ही करते पाये। [44]मैं सच्चाई के साथ तुमसे कहता हूँ कि वह उसे अपनी सभी सम्पत्तियों का अधिकारी नियुक्त करेगा। [45]किन्तु यदि वह सेवक अपने मन में यह कहे कि मेरा स्वामी तो आने में बहुत देर कर रहा है और वह दूसरे पुरुष और स्त्री सेवकों को मारना पीटना आरम्भ कर दे तथा खाने-पीने और मदमस्त होने लगे [46]तो उस सेवक का स्वामी ऐसे दिन आ जायेगा जिसकी वह सोचता तक नहीं। एक ऐसी घड़ी जिसके प्रति वह अचेत है। फिर वह उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा और उसे अविश्वासियों के बीच स्थान देगा।

[47]"वह सेवक जो अपने स्वामी की इच्छा जानता है और उसके लिए तत्पर नहीं होता या जैसा उसका स्वामी चाहता है, वैसा ही नहीं करता, उस सेवक पर तीखी मार पड़ेगी। [48]किन्तु वह जिसे अपने स्वामी की इच्छा का ज्ञान नहीं और कोई ऐसा काम कर बैठे जो मार पड़ने योग्य हो तो उस सेवक पर हल्की मार पड़ेगी। क्योंकि प्रत्येक उस व्यक्ति से जिसे बहुत अधिक दिया गया है, अधिक अपेक्षित किया जायेगा। उस व्यक्ति से जिसे लोगों ने अधिक सौंपा है, उससे लोग अधिक ही माँगेंगे।

यीशु के साथ असहमति

[49]"मैं धरती पर एक आग भड़काने आया हूँ। मेरी कितनी इच्छा है कि वह कदाचित् अभी तक भड़क उठती। [50]मेरे पास एक बपतिस्मा है जो मुझे लेना है जब तक यह पूरा नहीं हो जाता, मैं कितना व्याकुल हूँ। [51]तुम क्या सोचते हो मैं इस धरती पर शान्ति स्थापित करने के लिये आया हूँ? नहीं! मैं तुम्हें बताता हूँ, मैं तो विभाजन

करने आया हूँ। [52]क्योंकि अब से आगे एक घर के पाँच आदमी एक दूसरे के विरुद्ध बट जायेंगे। तीन दो के विरोध में, और दो तीन के विरोध में हो जायेंगे।

[53] पिता पुत्र के विरोध में,
और पुत्र पिता के विरोध में,
माँ बेटी के विरोध में,
और बेटी माँ के विरोध में,
सास, बहू के विरोध में
और बहू सास के विरोध में हो जायेंगी।"

समय की पहचान

[54]फिर वह भीड़ से बोला, "जब तुम पश्चिम की ओर से किसी बादल को उठते देखते हो तो तत्काल कह उठते हो, 'वर्षा आ रही है' और फिर ऐसा ही होता है। [55]और फिर जब दक्षिणी हवा चलती है, तुम कहते हो, 'गर्मी पड़ेगी' और ऐसा ही होता है। [56]अरे कपटियो! तुम धरती और आकाश के स्वरूपों की व्याख्या करना तो जानते हो, फिर ऐसा क्योंकि तुम वर्तमान समय की व्याख्या करना नहीं जानते?"

अपनी समस्याएँ सुलझाओ

[57]"जो उचित है, उसके निर्णायक तुम अपने आप क्यों नहीं बनते? [58]जब तुम अपने विरोधी के साथ अधिकारियों के पास जा रहे हो तो रास्ते में ही उसके साथ समझौता करने का जतन करो। नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें न्यायाधीश के सामने खींच ले जाये और न्यायाधीश तुम्हें अधिकारी को सौंप दे। और अधिकारी तुम्हें जेल में बन्द कर दे। [59]मैं तुम्हें बताता हूँ, तुम वहाँ से तब तक नहीं छूट पाओगे जब तक अंतिम पाई तक न चुका दो।"

मन बदलो

13 उस समय वहाँ उपस्थित कुछ लोगों ने यीशु को उन गलीलियों के बारे में बताया जिनका रक्त पिलातुस ने उनकी बलियों के साथ मिला दिया था। [2]सो यीशु ने उन से कहा, "तुम क्या सोचते हो कि ये गलीली दूसरे सभी गलीलियों से बुरे पापी थे क्योंकि उन्हें ये बातें भुगतनी पड़ीं? [3]नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ, यदि तुम मन नहीं, फिराओगे तो तुम सब भी वैसी ही मौत मरोगे जैसी वे मरे थे। [4]या उन अट्ठारह व्यक्तियों के विषय में तुम क्या सोचते हो जिनके ऊपर शीलोह के बुर्ज ने गिर कर उन्हें मार डाला। क्या सोचते हो, वे यरूशलेम में रहने वाले दूसरे सभी व्यक्तियों से अधिक अपराधी थे? [5]नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ कि यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी वैसे ही मरोगे।"

निष्फल पेड़

[6]फिर उसने यह दृष्टान्त कथा कही: "किसी व्यक्ति ने अपनी दाख की बारी में अंजीर का एक पेड़ लगाया हुआ था सो वह उस पर फल खोजता आया पर उसे कुछ नहीं मिला। [7]इस पर उसने माली से कहा, 'अब देख मैं तीन साल से अंजीर के इस पेड़ पर फल ढूँढ़ता आ रहा हूँ किन्तु मुझे एक भी फल नहीं मिला। सो इसे काट डाल। यह धरती को यूँ ही व्यर्थ क्यों करता रहे?' [8]माली ने उसे उत्तर दिया, 'हे स्वामी, इसे इस साल तब तक छोड़ दे, जब तक मैं इसके चारों तरफ गढ़ा खोद कर इसमें खाद लगाऊँ। [9]फिर यदि यह अगले साल फल दे तो अच्छा है और यदि नहीं दे तो तू इसे काट सकता है।' "

सब्त के दिन स्त्री को निरोग करना

[10]किसी प्रार्थना सभा में सब्त के दिन यीशु जब उपदेश दे रहा था [11]तो वहीं एक ऐसी स्त्री थी जिसमें दुष्ट आत्मा समाई हुई थी। जिसने उसे अठारह बरसों से पंगु बनाया हुआ था। वह झुक कर कुबड़ी हो गयी थी और थोड़ी सी भी सीधी नहीं हो सकती थी। [12]यीशु ने उसे जब देखा तो उसे अपने पास बुलाया और कहा, "हे स्त्री, तुझे अपने रोग से छुटकारा मिला!" यह कहते हुए [13]उसके सिर पर अपने हाथ रख दिये। और वह तुरंत सीधी खड़ी हो गयी। वह परमेश्वर की स्तुति करने लगी।

[14]यीशु ने क्योंकि सब्त के दिन उसे निरोग किया था, इसलिये यहूदी–प्रार्थना–सभा के नेता ने क्रोध में भर कर लोगों से कहा, "काम करने के लिए छ: दिन होते हैं सो उन्हीं दिनों में आओ और अपने रोग दूर करवाओ पर सब्त के दिन निरोग होने मत आओ।"

[15]प्रभु ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "ओ कपटियो! क्या तुममें से हर कोई सब्त के दिन अपने बैल या अपने गधे को बाड़े से निकाल कर पानी पिलाने कहीं नहीं ले जाता? [16]अब यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है और जिसे

शैतान ने अट्ठारह साल से जकड़ रखा था, क्या इसको सब्त के दिन इसके बंधनों से मुक्त नहीं किया जाना चाहिये था?" [17]जब उसने यह कहा तो उसका विरोध करने वाले सभी लोग लज्जा से गढ़ गये। उधर सारी भीड़ उन आश्चर्य पूर्ण कर्मों से जिन्हें उसने किया था, आनंदित हो रही थी।

स्वर्ग का राज्य कैसा है?

[18]सो उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य कैसा है और मैं उसकी तुलना किससे करूँ? [19]वह सरसों के बीज जैसा है, जिसे किसी ने लेकर अपने बाग़ में बो दिया। वह बड़ा हुआ और एक पेड़ बन गया। फिर आकाश की चिड़ियाओं ने उसकी शाखाओं पर घोंसले बना लिये।"

[20]उसने फिर कहा, "परमेश्वर के राज्य की तुलना मैं किससे करूँ? [21]यह उस ख़मीर के समान है जिसे एक स्त्री ने लेकर तीन भाग आटे में मिलाया और वह समूचा आटा ख़मीर युक्त हो गया।"

सँकरा द्वार

[22]यीशु जब नगरों और गांवों से होता हुआ उपदेश देता यरूशलेम जा रहा था। [23]तभी उससे किसी ने पूछा, "प्रभु, क्या थोड़े से ही व्यक्तियों का उद्धार होगा?" उसने उससे कहा, [24]"सँकरे द्वार से प्रवेश करने को हर सम्भव प्रयत्न करो, क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि भीतर जाने का प्रयत्न बहुत से करेंगे पर जा नहीं पायेंगे। [25]जब एक बार घर का स्वामी उठ कर द्वार बन्द कर देता है, तो तुम बाहर ही खड़े दरवाज़ा खटखटाते कहोगे, 'हे स्वामी, हमारे लिये दरवाज़ा खोल दे!' किन्तु वह तुम्हें उत्तर देगा, 'मैं नहीं जानता तुम कहाँ से आये हो?' [26]तब तुम कहने लगोगे, 'हमने तेरे साथ खाया, तेरे साथ पिया, तूने हमारी गलियों में हमें शिक्षा दी।' [27]पर वह तुमसे कहेगा, 'मैं नहीं जानता तुम कहाँ से आये हो? अरे कुकर्मियो! मेरे पास से भाग जाओ।' [28]तुम इब्राहीम, इज़हाक, याकूब तथा अन्य सभी नबियों को परमेश्वर के राज्य में देखोगे किन्तु तुम्हें बाहर धकेल दिया जायेगा तो वहाँ बस रोना और दाँत पीसना ही होगा। [29]फिर पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोग परमेश्वर के राज्य में आ–आकर भोजन की चौकी पर अपना स्थान ग्रहण करेंगे। [30]ध्यान रहे कि वहाँ जो अंतिम हैं, पहले हो जायेंगे और जो पहले हैं, वे अंतिम हो जायेंगे।"

यीशु की मृत्यु यरुशलेम में

[31]उसी समय यीशु के पास कुछ फ़रीसी आये और उससे कहा, "हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है, इसलिये यहाँ से कहीं और चला जा।"

[32]तब उसने उनसे कहा, "जाओ और उस लोमड़* से कहो, 'सुन मैं लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालूँगा, मैं आज भी चंगा करूँगा और कल भी। फिर तीसरे दिन मैं अपना काम पूरा करूँगा।' [33]फिर भी मुझे आज, कल और परसों चलते ही रहना होगा। क्योंकि किसी नबी के लिये यह उचित नहीं होगा कि वह यरूशलेम से बाहर प्राण त्यागे।

[34]"हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू नबियों की हत्या करता है और परमेश्वर ने जिन्हें तेरे पास भेजा है, उन पर पत्थर बरसाता है। मैंने कितनी ही बार तेरे लोगों को वैसे ही परस्पर इकट्ठा करना चाहा है जैसे एक मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे समेट लेती है। पर तूने नहीं चाहा। [35]देख तेरे लिये तेरा घर परमेश्वर द्वारा बिसराया हुआ पड़ा है। मैं तुझे बताता हूँ तू मुझे उस समय तक फिर नहीं देखेगा जब तक वह समय न आ जाये जब तू कहेगा, 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम पर आ रहा है।'"

क्या सब्त के दिन उपचार उचित है?

14 एक बार सब्त के दिन प्रमुख फ़रीसियों में से किसी के घर यीशु भोजन पर गया। उधर वे बड़ी निकटता से उस पर आँख रखे हुए थे। [2]वहाँ उसके सामने जलोदर से पीड़ित एक व्यक्ति था। [3]यीशु ने यहूदी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों से पूछा, "सब्त के दिन किसी को निरोग करना उचित है या नही?" [4]किन्तु वे चुप रहे। सो यीशु ने उस आदमी को लेकर चंगा कर दिया। और फिर उसे कहीं भेज दिया। [5]फिर उसने उनसे पूछा, "यदि तुममें से किसी के पास अपना बेटा है या बैल है, वह कुँए में गिर जाता है तो क्या सब्त के दिन और भी तुम उसे तत्काल बाहर नहीं निकालोगे?" [6]वे इस पर उससे तर्क नहीं कर सके।

लोमड़ लोमडी़ चालाक होती है, इसलिये यीशु ने यहाँ हेरोदेस को लोमड़ के रूप में सम्बोधित करके उसे धूर्त कहना चाहा है।

अपने को महत्त्व मत दो

[7]क्योंकि यीशु ने यह देखा कि अतिथि जन अपने लिये बैठने को कोई सम्मानपूर्ण स्थान खोज रहे थे, सो उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा सुनाई। वह बोला: [8]"जब तुम्हें कोई विवाह भोज पर बुलाये तो वहाँ किसी आदरपूर्ण स्थान पर मत बैठो। क्योंकि हो सकता है वहाँ कोई तुमसे अधिक बड़ा व्यक्ति उसके द्वारा बुलाया गया हो। [9]फिर तुम दोनों को बुलाने वाला तुम्हारे पास आकर तुमसे कहेगा, 'अपना यह स्थान इस व्यक्ति को दे दो।' और फिर लज्जा के साथ तुम्हें सबसे नीचा स्थान ग्रहण करना पड़ेगा। [10]सो जब तुम्हें बुलाया जाता है तो जाकर सबसे नीचे का स्थान ग्रहण करो जिससे जब तुम्हें आमंत्रित करने वाला आएगा तो तुमसे कहेगा, 'हे मित्र, उठ ऊपर बैठ।' फिर उन सब के सामने, जो तेरे साथ वहाँ अतिथि होंगे, तेरा मान बढ़ेगा। [11]क्योंकि हर कोई जो अपने आप को उठायेगा, उसे नवा दिया जायेगा और जो अपने आप को नवायेगा, उसे ऊँचा किया जायेगा।"

प्रतिफल

[12]फिर जिसने उसे आमन्त्रित किया था, वह उससे बोला, "जब कभी तू कोई दिन या रात का भोज दे तो अपने मित्रों, भाई बंदों, संबंधियों या धनी मानी पड़ोसियों को मत बुला क्योंकि बदले में वे तुझे बुलायेंगे और इस प्रकार तुझे उसका फल मिल जायेगा। [13]बल्कि जब तू कोई भोज दे तो दीन दुखियों, अपाहिजों, लँगड़ों और अंधों को बुला। [14]फिर क्योंकि उनके पास तुझे वापस लौटाने को कुछ नहीं है, सो यह तेरे लिए आशीर्वाद बन जायेगा। इसका प्रतिफल तुझे धर्मी लोगों के जी उठने पर दिया जायेगा।"

बड़े भोज की दृष्टान्त कथा

[15]फिर उसके साथ भोजन कर रहे लोगों में से एक ने यह सुनकर यीशु से कहा, "हर वह व्यक्ति धन्य है, जो परमेश्वर के राज्य में भोजन करता है!"

[16]तब यीशु ने उससे कहा, "एक व्यक्ति किसी बड़े भोज की तैयारी कर रहा था, उसने बहुत से लोगों को न्योता दिया। [17]फिर दावत के समय जिन्हें न्योता दिया गया था, दास को भेजकर यह कहलवाया, 'आओ क्योंकि अब भोजन तैयार है।' [18]वे सभी एक जैसे आनाकानी करने लगे। पहले ने उससे कहा, 'मैंने एक खेत मोल लिया है, मुझे जाकर उसे देखना है, कृपया मुझे क्षमा करें।' [19]फिर दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़ी बैल मोल लिये हैं, मैं तो बस उन्हें परखने जा ही रहा हूँ, कृपया मुझे क्षमा करें।' [20]एक और भी बोला, 'मैंने पत्नी ब्याही है, इस कारण मैं नहीं आ सकता।' [21]सो जब वह सेवक लौटा तो उसने अपने स्वामी को ये बातें बता दी। इस पर उस घर का स्वामी बहुत क्रोधित हुआ और अपने सेवक से कहा, 'शीघ्र ही नगर के गली कूँचों में जा और दीन-हीनों, अपाहिजों, अंधों और लँगड़ों को यहाँ बुला ला।' [22]उस दास ने कहा, 'हे स्वामी, तुम्हारी आज्ञा पूरी कर दी गयी है किन्तु अभी भी स्थान बचा है।' [23]फिर स्वामी ने सेवक से कहा, 'सड़कों पर और खेतों की मेढ़ों तक जाओ और वहाँ से लोगों को आग्रह करके यहाँ बुला लाओ ताकि मेरा घर भर जाये। [24]और मैं तुमसे कहता हूँ जो पहले बुलाये गये थे उनमें से एक भी मेरे भोज को न चखे!'"

नियोजित बनो

[25]यीशु के साथ अपार जन समूह जा रहा था। वह उनकी तरफ़ मुड़ा और बोला, [26]"यदि मेरे पास कोई भी आता है और अपने पिता, माता, पत्नी और बच्चों, अपने भाइयों और बहनों और यहाँ तक कि अपने जीवन तक से मुझ से अधिक प्रेम रखता है, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता! [27]जो अपना क्रूस उठाये बिना मेरे पीछे चलता है, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता। [28]यदि तुममें से कोई बुर्ज बनाना चाहे तो क्या वह पहले बैठ कर उसके मूल्य का, यह देखने के लिये कि उसे पूरा करने के लिये उसके पास काफ़ी कुछ है या नहीं, हिसाब-किताब नहीं लगायेगा? [29]नहीं तो वह नींव तो डाल देगा और उसे पूरा न कर पाने से, जिन्होंने उसे शुरू करते देखा, सब उसकी हँसी उड़ायेंगे और कहेंगे। [30]'अरे देखो इस व्यक्ति ने बनाना प्रारम्भ तो किया, 'पर यह उसे पूरा नहीं कर सका।'

[31]"या कोई राजा ऐसा होगा जो किसी दूसरे राजा के विरोध में युद्ध छेड़ने जाये और पहले बैठ कर यह विचार न करे कि अपने दस हज़ार सैनिकों के साथ क्या वह बीस हज़ार सैनिकों वाले अपने विरोधी का सामना कर भी सकेगा या नहीं। [32]और यदि वह समर्थ नहीं होगा तो

उसका विरोधी अभी मार्ग में ही होगा तभी वह अपना प्रतिनिधि मंडल भेज कर शांति-संधि का प्रस्ताव करेगा। [33]तो फिर इसी प्रकार तुममें से कोई भी जो अपनी सभी सम्पत्तियों का त्याग नहीं कर देता, मेरा शिष्य नहीं हो सकता।

अपना प्रभाव मत खोओ

[34]"नमक उत्तम है पर यदि वह अपना स्वाद खो दे तो उसे किसमें डाला जा सकता है। [35]न तो वह मिट्टी के लायक रहेगा और न खाद की कूड़ी के। लोग बस उसे यूँ ही फेंक देते हैं।

"जिसके पास सुनने को कान हैं, उसे सुनने दो।"

खोए हुए को पाने के आनन्द की दृष्टान्त-कथाएँ

15 अब जब कर वसूलने वाले और पापी सभी उसे सुनने उसके पास आने लगे थे। [2]तो फरीसी और यहूदी धर्म शास्त्री बड़बड़ाते हुए कहने लगे, "यह व्यक्ति तो पापियों का स्वागत करता है और उनके साथ खाता है।"

[3]इस पर यीशु ने उन्हें यह दृष्टान्त कथा सुनाई: [4]"मानों तुममें से किसी के पास सौ भेड़ें हैं और उनमें से कोई एक खो जाये तो क्या वह निन्यानबें भेड़ों को खुले में छोड़ कर खोई हुई भेड़ का पीछा तब तक नहीं करेगा, जब तक कि वह उसे पा न ले। [5]फिर जब उसे भेड़ मिल जाती है तो वह उसे प्रसन्नता के साथ अपने कन्धों पर उठा लेता है। [6]और जब घर लौटता है तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को पास बुलाकर उनसे कहता है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मुझे मेरी खोयी हुई भेड़ मिल गयी है।' [7]मैं तुमसे कहता हूँ, इसी प्रकार किसी एक मन फिराने वाले पापी के लिये, उन निन्यानबें धर्मी पुरुषों से, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं है, स्वर्ग में कहीं अधिक आनन्द मनाया जाएगा।

[8]"या सोचो कोई औरत है जिसके पास दस चाँदी के सिक्के हैं और उसका एक सिक्का खो जाता है तो क्या वह दीपक जला कर घर को तब तक नहीं बुहारती रहेगी और सावधानी से नहीं खोजती रहेगी जब तक कि वह उसे मिल न जाये? [9]और जब वह उसे पा लेती है तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को पास बुला कर कहती है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मेरा सिक्का जो खो गया था, मिल गया है।' [10]मैं तुमसे कहता हूँ कि इसी प्रकार एक मन फिराने वाले पापी के लिये भी परमेश्वर के दूतों की उपस्थिति में वहाँ आनन्द मनाया जायेगा।"

भटके पुत्र को पाने की दृष्टान्त-कथा

[11]फिर यीशु ने कहा: "एक व्यक्ति के दो बेटे थे। [12]सो छोटे ने अपने पिता से कहा, 'जो सम्पत्ति मेरे बाँटे में आती है, उसे मुझे दे दे।' तो पिता ने उन दोनों को अपना धन बाँट दिया। [13]अभी कोई अधिक समय नहीं बीता था, कि छोटे बेटे ने अपनी समूची सम्पत्ति समेटी और किसी दूर देश को चल पड़ा। और वहाँ जँगलियों सा उद्दण्ड जीवन जीते हुए उसने अपना सारा धन बर्बाद कर डाला। [14]जब उसका सारा धन समाप्त हो चुका था तभी उस देश में सभी ओर व्यापक भयानक अकाल पड़ा। सो वह अभाव में रहने लगा। [15]इसलिये वह उस देश के किसी व्यक्ति के यहाँ जाकर मज़दूरी करने लगा उसने उसे अपने खेतों में सुअर चराने भेज दिया। [16]वहाँ वह सोचता कदाचित् कैरब की वे फलियाँ ही पेट भरने को उसे मिल जायें जिन्हें सुअर खाते थे। पर किसी ने उसे एक फली तक नहीं दी। [17]फिर जब उसके होश ठिकाने आये तो वह बोला, 'मेरे पिता के पास कितने ही ऐसे मज़दूर हैं जिनके पास खाने के बाद भी बचा रहता है। और मैं यहाँ भूखों मर रहा हूँ। [18]सो मैं यहाँ से उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा: पिता जी, मैंने स्वर्ग के परमेश्वर और तेरे विरुद्ध पाप किया है। [19]अब आगे मैं तेरा बेटा कहलाने योग्य नहीं रहा हूँ। मुझे अपना दिहाड़ी का आदमी ही बना ले।' [20]सो वह उठकर अपने पिता के पास चल दिया।

"अभी वह पर्याप्त दूरी पर ही था कि उसके पिता ने उसे देख लिया और उसके पिता को उस पर बहुत दया आयी। सो दौड़ कर उसने उसे अपनी बाहों में समेट लिया और चूमा। [21]पुत्र ने पिता से कहा, 'पिताजी, मैंने तुम्हारी दृष्टि में और स्वर्ग के विरुद्ध पाप किया है, मैं अब और अधिक तुम्हारा पुत्र कहलाने योग्य नहीं हूँ।' [22]किन्तु पिता ने अपने सेवकों से कहा, 'जल्दी से उत्तम वस्त्र निकाल लाओ और उन्हें इसे पहनाओ। इसके हाथ में अँगूठी और पैरों में चप्पल पहनाओ। [23]कोई मोटा ताजा बछड़ा लाकर मारो और आओ उसे खाकर हम आनन्द मनायें। [24]क्योंकि मेरा यह बेटा जो मर गया था अब जैसे फिर

जीवित हो गया है। यह खो गया था, पर अब यह मिल गया है।' सो वे आनन्द मनाने लगे।

[25]"अब उसका बड़ा बेटा जो खेत में था, जब आया और घर के पास पहुँचा तो उसने गाने नाचने के स्वर सुने। [26]उसने अपने एक सेवक को बुलाकर पूछा, 'यह सब क्या हो रहा है?' [27]सेवक ने उससे कहा, 'तेरा भाई आ गया है और तेरे पिता ने उसे सुरक्षित और स्वस्थ पाकर एक मोटा सा बछड़ा कटवाया है!' [28]बड़ा भाई आग बबूला हो उठा, वह भीतर जाना तक नहीं चाहता था। सो उसके पिता ने बाहर आकर उसे समझाया बुझाया। [29]पर उसने पिता को उत्तर दिया, 'देख मैं बरसों से तेरी सेवा मैं करता आ रहा हूँ। मैंने तेरी किसी भी आज्ञा का विरोध नहीं किया, पर तूने मुझे तो कभी एक बकरी तक नहीं दी कि मैं अपने मित्रों के साथ कोई आनन्द मना सकता। [30]पर जब तेरा यह बेटा आया जिसने वेश्याओं में तेरा धन उड़ा दिया, उसके लिये तूने मोटा ताजा बछड़ा मरवाया।' [31]पिता ने उससे कहा, 'मेरे पुत्र, तू सदा ही मेरे पास है और जो कुछ मेरे पास है, सब तेरा है। [32]किन्तु हमें प्रसन्न होना चाहिए और उत्सव मनाना चाहिये क्योंकि तेरा यह भाई, जो मर गया था, अब फिर जीवित हो गया है। यह खो गया था, जो फिर अब मिल गया है।' "

सच्चा धन

16 फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "एक धनी पुरुष था। उसका एक प्रबन्धक था उस प्रबन्धक पर लांछन लगाया गया कि वह उसकी सम्पत्ति को नष्ट कर रहा है। [2]सो उसने उसे बुलाया और कहा, 'तेरे विषय में मै यहं क्या सुन रहा हूँ? अपने प्रबन्ध का लेखा जोखा दे क्योंकि अब आगे तू प्रबन्धक नहीं रह सकता।' [3]इस पर प्रबन्धक ने मन ही मन कहा, 'मेरा स्वामी मुझसे मेरा प्रबन्धक का काम छीन रहा है, सो अब मैं क्या करूँ? मुझमें अब इतनी शक्ति भी नहीं रही कि मैं खेतों में खुदाई–गुड़ाई का काम तक कर सकूँ और माँगने में मुझे लाज आती है। [4]ठीक, मुझे समझ आ गया कि मुझे क्या करना चाहिये जिससे जब मैं प्रबन्धक के पद से हटा दिया जाऊँतो लोग अपने घरों में मेरा स्वागत सत्कार करें।' [5]सो उसने स्वामी के हर देनदार को बुलाया। पहले व्यक्ति से उसने पूछा, 'तुझे मेरे स्वामी का कितना देना है?' [6]उसने कहा, 'एक सौ माप जैतून का तेल।' इस पर वह उससे बोला, 'यह ले अपनी बही और बैठ कर जल्दी से इसे पचास कर दे।' [7]फिर उसने दूसरे से कहा, 'और तुझ पर कितनी देनदारी है?' उसने बताया, 'एक सौ भार गेहूँ।' वह उससे बोला, 'यह ले अपनी बही और सौ का अस्सी कर दे।' [8]इस पर उसके स्वामी ने उस बेईमान प्रबन्धक की प्रशंसा की क्योंकि उसने चतुराई से काम लिया था। सांसारिक व्यक्ति अपने जैसे व्यक्तियों से व्यवहार करने में आध्यात्मिक व्यक्तियों से अधिक चतुर हैं।

[9]"मैं तुमसे कहता हूँ सांसारिक धन–सम्पत्ति से अपने लिये मित्र बनाओ। क्योंकि जब धन–सम्पत्ति समाप्त हो जायेगी, वे अनन्त निवास में तुम्हारा स्वागत करेंगे। [10]वे लोग जिन पर थोड़े से के लिये विश्वास किया जा सकता है, उन पर अधिक के लिये भी विश्वास किया जायेगा और इसी तरह जो थोड़े से के लिए बेईमान हो सकता है वह अधिक के लिए भी बेइमान होगा। [11]इस प्रकार यदि तुम सांसारिक सम्पत्ति के लिये ही भरोसे योग्य नहीं रहे तो सच्चे धन के विषय में तुम पर कौन भरोसा करेगा? [12]जो किसी दूसरे का है, यदि तुम उसके लिये विश्वास के पात्र नहीं रहे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?

[13]"कोई भी दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। वह या तो एक से घृणा करेगा और दूसरे से प्रेम या वह एक के प्रति समर्पित रहेगा और दूसरे को तिरस्कार करेगा। तुम धन और परमेश्वर दोनों की उपासना एकसाथ नहीं कर सकते।"

प्रभु का विधि अटल है

[14]अब जब पैसे के पुजारी फरीसियों ने यह सब सुना तो उन्होंने यीशु की बहुत खिल्ली उड़ाई। [15]इस पर उसने उनसे कहा, "तुम वो हो जो लोगों को यह जताना चाहते हो कि तुम बहुत अच्छे हो किन्तु परमेश्वर तुम्हारे मनों को जानता है। लोग जिसे बहुत मूल्यवान समझते हैं, परमेश्वर के लिए वह तुच्छ है।

[16]"यूहन्ना तक व्यवस्था का विधि और नबियों की प्रमुखता रही। उसके बाद परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचारित किया जा रहा है और हर कोई बड़ी तीव्रता से इसकी ओर खिंचा चला आ रहा है। [17]फिर भी स्वर्ग और धरती का डिग जाना तो सरल है

किन्तु व्यवस्था के विधि के एक-एक बिंदु की शक्ति सदा अटल है।"

तलाक और पुर्नविवाह के बारे में परमेश्वर का नियम

[18]"वह हर कोई जो अपनी पत्नी को त्यागता है और दूसरी को ब्याहता है, व्यभिचार करता है। ऐसे ही जो अपने पति द्वारा त्यागी गयी, किसी स्त्री से ब्याह करता है, वह भी व्यभिचार करता है।"

धनी पुरुष और लाज़र

[19]"अब देखो, एक व्यक्ति था जो बहुत धनी था। वह बैंगनी रंग की उत्तम मलमल के वस्त्र पहनता था और हर दिन विलासिता के जीवन का आनन्द लेता था। [20]वहीं लाजर नाम का एक दीन दु:खी उसके द्वार पर पड़ा रहता था। उसका शरीर घावों से भरा हुआ था। [21]उस धनी पुरुष की जूठन से ही वह अपना पेट भरने को तरसता रहता था। यहाँ तक कि कुत्ते भी आते और उसके घावों को चाट जाते। [22]और फिर ऐसा हुआ कि वह दीन-हीन व्यक्ति मर गया। सो स्वर्गदूतों ने ले जाकर उसे इब्राहीम की गोद में बैठा दिया। फिर वह धनी पुरुष भी मर गया और उसे दफ़ना दिया गया। [23]नरक में तड़पते हुए उसने जब आँखें उठा कर देखा तो इब्राहीम उसे बहुत दूर दिखाई दिया किन्तु उसने लाज़र को उसकी गोद में देखा। [24]तब उसने पुकार कर कहा, 'पिता इब्राहीम, मुझ पर दया कर और लाजर को भेज कि वह पानी में अपनी उँगली डुबो कर मेरी जीभ ठंडी कर दे, क्योंकि मैं इस आग में तड़प रहा हूँ।' [25]किन्तु इब्राहीम ने कहा, 'हे मेरे पुत्र, याद रख, तूने तेरे जीवन काल में अपनी अच्छी वस्तुएँ पा लीं जबकि लाज़र को बुरी वस्तुएँ ही मिली। सो अब वह यहाँ आनन्द भोग रहा है और तू यातना। [26]और इस सब कुछ के अतिरिक्त हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई डाल दी गयी है ताकि यहाँ से यदि कोई तेरे पास जाना चाहे, वह जा न सके और वहाँ से कोई यहाँ आ न सके।' [27]उस सेठ ने कहा, 'तो फिर हे पिता, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू लाज़र को मेरे पिता के घर भेज दे [28]क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं, वह उन्हें चेतावनी देगा ताकि उन्हें तो इस यातना के स्थान पर न आना पड़े।' [29]किन्तु इब्राहीम ने कहा, 'उनके पास मूसा है और नबी हैं। उन्हें उनकी सुनने दे।' [30]सेठ ने कहा, 'नहीं, पिता इब्राहीम, यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाये तो वे मन फिराएंगे।' [31]इब्राहीम ने उससे कहा, 'यदि वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो, यदि कोई मरे हुओं में से उठकर उनके पास जाये तो भी वे नहीं मानेंगे।'"

पाप और क्षमा

17 यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जिनसे लोग भटकते हैं, ऐसी बातें तो होंगी ही किन्तु धिक्कार है उस व्यक्ति को जिसके द्वारा वे बातें हों। [2]उसके लिये अधिक अच्छा यह होता कि बजाय इसके कि वह इन छोटों में से किसी को पाप करने को प्रेरित कर सके, उसके गले में चक्की का पाट लटका कर उसे सागर में धकेल दिया जाता। [3]सावधान रहो, यदि तुम्हारा भाई पाप करे तो उसे डाँटो और यदि वह अपने किये पर पछताये तो उसे क्षमा कर दो। [4]यदि हर दिन वह तेरे विरुद्ध सात बार पाप करे और सातों बार लौटकर तुझसे कहे कि मुझे पछतावा है तो तू उसे क्षमा कर दे।"

तुम्हारा विश्वास कितना बड़ा है?

[5]इस पर शिष्यों ने प्रभु से कहा, "हमारे विश्वास की बढ़ोतरी कर।"

[6]प्रभु ने कहा, "यदि तुममें सरसों के दाने जितना भी विश्वास होता तो तुम इस शहतूत के पेड़ से कह सकते 'उखड़ जा और समुद्र में जा लग।' और वह तुम्हारी बात मान लेता।

उत्तम सेवक बनो

[7]"मान लो तुममें से किसी के पास एक दास है जो हल चलाता या भेड़ों को चराता है। वह जब खेत से लौट कर आये तो क्या उसका स्वामी उससे कहेगा, 'तुरन्त आ और खाना खाने को बैठ जा?' [8]किन्तु बजाय इसके क्या वह उससे यह नहीं कहेगा, 'मेरा भोजन तैयार कर, अपने वस्त्र पहन और मेरे खाते व पीते मुझे परस, तब इसके बाद तू भी खा पी सकता है?' [9]अपनी आज्ञा पूरी करने पर क्या वह उस सेवक का धन्यवाद करता है। [10]तुम्हारे साथ भी ऐसा ही है। जो कुछ तुमसे करने को कहा गया है, उसे कर चुकने के बाद तुम्हें कहना चाहिये, 'हम दास हैं, हम किसी बड़ाई के अधिकारी नहीं हैं। हमने तो बस अपना कर्तव्य किया है।'"

आभारी रहो

[11]फिर जब यीशु यरूशलेम जा रहा था तो वह सामरिया और गलील के बीच की सीमा के पास से निकला। [12]जब वह एक गाँव में जा रहा था तभी उसे दस कोढ़ी मिले। वे कुछ दूरी पर खड़े थे। [13]वे ऊँचे स्वर में पुकार कर बोले, "हे यीशु! हे स्वामी! हम पर दया कर!"

[14]फिर जब उसने उन्हें देखा तो वह बोला, "जाओ और अपने आप को याजकों को दिखाओ।" वे अभी जा ही रहे थे कि वे कोढ़ से मुक्त हो गये। [15]किन्तु उनमें से एक ने जब यह देखा कि वह शुद्ध हो गया है, तो वह वापस लौटा और ऊँचे स्वर में परमेश्वर की स्तुति करने लगा। [16]वह मुँह के बल यीशु के चरणों में गिर पड़ा और उसका आभार व्यक्त किया। और देखो, वह एक सामरी था। [17]यीशु ने उससे पूछा, "क्या सभी दस के दस कोढ़ से मुक्त नहीं हो गये? फिर वे नौ कहाँ हैं? [18]क्या इस परदेसी को छोड़ कर उनमें से कोई भी परमेश्वर की स्तुति करने वापस नहीं लौटा" [19]फिर यीशु ने उससे कहा, "खड़ा हो और चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा किया है।"

परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर ही है

[20]एक बार जब फरीसियों ने यीशु से पूछा, "परमेश्वर का राज्य कब आयेगा?"

तो उसने उन्हें उत्तर दिया, "परमेश्वर का राज्य ऐसे प्रत्यक्ष रूप में नहीं आता। [21]लोग यह नहीं कहेंगे, 'वह यहाँ है' या 'वह वहाँ है', क्योंकि परमेश्वर का राज्य तो तुम्हारे भीतर ही है।"

[22]किन्तु उसने शिष्यों को बताया, "ऐसा समय आयेगा जब तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को भी देखने को तरसोगे किन्तु, उसे देख नहीं पाओगे। [23]और लोग तुमसे कहेंगे, 'देखो, 'यहाँ!' या देखो, 'वहाँ!' तुम वहाँ मत जाना या उनका अनुसरण मत करना।"

जब यीशु लौटेगा

[24]"वैसे ही जैसे बिजली कौंध कर एक छोर से दूसरे छोर तक आकाश को चमका देती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन होगा। [25]किन्तु पहले उसे बहुत सी यातनाएँ भोगनी होंगी और इस पीढ़ी द्वारा वह निश्चय ही नकार दिया जायेगा। [26]वैसे ही जैसे नूह के दिनों में हुआ था, मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा। [27]उस दिन तक जब नूह ने नौका में प्रवेश किया, लोग खाते-पीते रहे, ब्याह रचाते और विवाह में दिये जाते रहे। फिर जल प्रलय आया और उसने सबको नष्ट कर दिया। [28]इसी प्रकार लूत के दिनों में भी ठीक ऐसे ही हुआ था। लोग खाते-पीते, मोल लेते, बेचते खेती करते और घर बनाते रहे। [29]किन्तु उस दिन जब लूत सदोम से बाहर निकला तो आकाश से अग्नि और गंधक बरसने लगे और वे सब नष्ट हो गये। [30]उस दिन भी जब मनुष्य का पुत्र प्रकट होगा, ठीक ऐसा ही होगा।

[31]"उस दिन यदि कोई व्यक्ति छत पर हो और उसका सामान घर के भीतर हो तो उसे लेने वह नीचे न उतरे। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति खेत में हो तो वह पीछे न लौटे। [32]लूत की पत्नी को याद करो, [33]जो कोई अपना जीवन बचाने का प्रयत्न करेगा, वह उसे खो देगा और जो अपना जीवन खोयेगा, वह उसे बचा लेगा। [34]मैं तुम्हें बताता हूँ, उस रात एक चारपाई पर जो दो मनुष्य होंगे, उनमें से एक उठा लिया जायेगा और दूसरा छोड़ दिया जायेगा। [35]दो स्त्रियाँ जो एक साथ चक्की पीसती होंगी, उनमें से एक उठा ली जायेगी और दूसरी छोड़ दी जायेगी।" [36]['दो पुरुष जो खेत में होंगे, उनमें से एक उठा लिया जायेगा और दूसरा छोड़ दिया जायेगा।']*

[37]फिर यीशु के शिष्यों ने उससे पूछा, "हे प्रभु, ऐसा कहाँ होगा?"

उसने उनसे कहा, "जहाँ लोथ पड़ी होगी, गिद्ध भी वहीं इकट्ठे होंगे।"

परमेश्वर अपने भक्त जनों की अवश्य सुनेगा

18 फिर उसने उन्हें यह बताने के लिए कि वे निरन्तर प्रार्थना करते रहें और निराश न हों, यह दृष्टान्त कथा सुनाई-[2]वह बोला: "किसी नगर में एक न्यायाधीश हुआ करता था। वह न तो परमेश्वर से डरता था और न ही मनुष्यों की परवाह करता था। [3]उसी नगर में, एक विधवा भी रहा करती थी। और वह उसके पास बार बार आती और कहती, 'देख, मुझे मेरे प्रति किए गए अन्याय के विरुद्ध न्याय मिलना ही चाहिये।' [4]सो एक लम्बे समय तक तो वह न्यायाधीश आनाकानी करता रहा

पद 36 लूका की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 36 जोड़ा गया है।

पर आखिरकार उसने अपने मन में सोचा, 'चाहे मैं न तो परमेश्वर से डरता हूँ और न लोगों की परवाह करता हूँ। [5]तो भी क्योंकि इस विधवा ने मेरे कान खा डाले हैं, सो मैं देखूँगा कि उसे न्याय मिल जाये ताकि यह मेरे पास बार-बार आकर कहीं मुझे ही न थका डाले।'"

[6]फिर प्रभु ने कहा, "देखो उस दुष्ट न्यायाधीश ने क्या कहा था। [7]सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों पर ध्यान नहीं देगा कि उन्हें, जो उसे रात दिन पुकारते रहते हैं, न्याय मिले? क्या वह उनकी सहायता करने में देर लगायेगा? [8]मैं तुमसे कहता हूँ कि वह देखेगा कि उन्हें न्याय मिल चुका है और शीघ्र ही मिल चुका है। फिर भी जब मनुष्य का पुत्र आयेगा तो क्या वह इस धरती पर विश्वास को पायेगा?"

दीनता के साथ परमेश्वर की उपासना

[9]फिर यीशु ने उन लोगों के लिए भी जो अपने आप को तो नेक मानते थे, और किसी को कुछ नहीं समझते, यह दृष्टान्त कथा सुनाई: [10]"मंदिर में दो व्यक्ति प्रार्थना करने गये, एक फरीसी था और दूसरा कर वसूलने वाला। [11]वह फरीसी अलग खड़ा होकर यह प्रार्थना करने लगा, 'हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं दूसरे लोगों जैसा डाकू, ठग और व्यभिचारी नहीं हूँ और न ही इस कर वसूलने वाले जैसा हूँ। [12]मैं सप्ताह में दो बार उपवास रखता हूँ और अपनी समूची आय का दसवाँ भाग दान देता हूँ।'

[13]"किन्तु वह कर वसूलने वाला जो दूर खड़ा था और यहाँ तक कि स्वर्ग की ओर अपनी आँखें तक नहीं उठा रहा था, अपनी छाती पीटते हुए बोला, 'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।' [14]मैं तुम्हें बताता हूँ, यही मनुष्य नेक ठहराया जाकर अपने घर लौटा, न कि वह दूसरा। क्योंकि हर वह व्यक्ति जो अपने आप को बड़ा समझेगा, उसे छोटा बना दिया जायेगा और जो अपने आप को दीन मानेगा, उसे बड़ा बना दिया जायेगा।"

बच्चे स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हैं

[15]लोग अपने बच्चों तक को यीशु के पास ला रहे थे कि वह उन्हें बस छू भर दे। किन्तु जब उसके शिष्यों ने यह देखा तो उन्हें झिड़क दिया। [16]किन्तु यीशु ने बच्चों को अपने पास बुलाया और शिष्यों से कहा, "इन छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो, इन्हें रोको मत, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों का ही है। [17]मैं सच्चाई के साथ तुमसे कहता हूँ कि ऐसा कोई भी जो परमेश्वर के राज्य को एक अबोध बच्चे की तरह ग्रहण नहीं करता, उसमें कभी प्रवेश नहीं पायेगा!"

एक धनिक का यीशु से प्रश्न

[18]फिर किसी यहूदी नेता ने यीशु से पूछा, "उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकार पाने के लिये मुझे क्या करना चाहिये?"

[19]यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? केवल परमेश्वर को छोड़ कर और कोई भी उत्तम नहीं है। [20]तू व्यवस्था के आदेशों को तो जानता है: 'व्यभिचार मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत कर, झूठी गवाही मत दे, अपने पिता और माता का आदर कर।'"*

[21]वह यहूदी नेता बोला, "मैं इन सब बातों को अपने लड़कपन से ही मानता आया हूँ।"

[22]यीशु ने जब यह सुना तो वह उससे बोला, "अभी भी एक बात है जिसकी तुझ में कमी है। तेरे पास जो कुछ है, सब कुछ को बेच डाल और फिर जो मिले, उसे गरीबों में बाँट दे। इससे तुझे स्वर्ग में भण्डार मिलेगा। फिर आ और मेरे पीछे हो ले।" [23]सो जब उस यहूदी नेता ने यह सुना तो वह बहुत दुःखी हुआ, क्योंकि उसके पास बहुत सारी सम्पत्ति थी।

[24]यीशु ने जब यह देखा कि वह बहुत दुःखी है तो उसने कहा, "उन लोगों के लिये जिनके पास धन है, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर पाना कितना कठिन है! [25]हाँ, किसी ऊँट के लिये सूई के नकुए से निकल जाना तो सम्भव है पर किसी धनिक का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर पाना असंभव है!"

उद्धार किसका होगा

[26]वे लोग जिन्होंने यह सुना, बोले, "फिर भला उद्धार किसका होगा?"

[27]यीशु ने कहा, "वे बातें जो मनुष्य के लिए असम्भव हैं, परमेश्वर के लिए सम्भव हैं।"

व्यभिचार मत ... आदर कर निर्गमन 20:12-26; व्यवस्था. 5:16-20

[28]फिर पतरस ने कहा, "देख, हमारे पास जो कुछ था, तेरे पीछे चलने के लिए हमने वह सब कुछ त्याग दिया है।"

[29]तब यीशु उनसे बोला, "मैं सच्चाई के साथ तुमसे कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं है जिसने परमेश्वर के राज्य के लिये घर–बार या पत्नी या भाई–बंधु या माता–पिता या संतान का त्याग कर दिया हो, [30]और उसे इसी वर्तमान युग में कई–कई गुणा अधिक न मिले और आने वाले काल में वह अनन्त जीवन को न पा जाये।"

यीशु मर कर जी उठेगा

[31]फिर यीशु उन बारहों को एक ओर ले जाकर उनसे बोला, "सुनो, हम यरूशलेम जा रहे हैं। मनुष्य के पुत्र के विषय में नबियों द्वारा जो कुछ लिखा गया है, वह पूरा होगा। [32]हाँ, वह विधर्मियों को सौंपा जायेगा, उसकी हँसी उड़ाई जायेगी, उसे कोसा जायेगा और उस पर थूका जायेगा। [33]फिर वे उसे पीटेंगे और मार डालेंगे और तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।" [34]इनमें से कोई भी बात वे नहीं समझ सके। यह कथन उनसे छिपा ही रह गया। वे समझ नहीं सके कि वह किस विषय में बता रहा था।

अंधे को आँखें

[35]यीशु जब यरीहो के पास पहुँच रहा था तो भीख माँगता हुआ एक अंधा, वहीं राह किनारे बैठा था। [36]जब अन्धे ने पास से लोगों के जाने की आवाज़ सुनी तो उसने पूछा, "क्या हो रहा है?"

[37]सो लोगों ने उससे कहा, "नासरी यीशु यहाँ से जा रहा है।"

[38]सो अंधा यह कहते हुए पुकार उठा, "दाऊद के बेटे यीशु! मुझ पर दया कर।"

[39]वे जो आगे चल रहे थे उन्होंने उससे चुप रहने को कहा। किन्तु वह और अधिक पुकारने लगा "दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर!"

[40]यीशु रुक गया और उसने आज्ञा दी कि नेत्रहीन को उसके पास लाया जाये। सो जब वह पास आया तो यीशु ने उससे पूछा, [41]"तू क्या चाहता है? मैं तेरे लिये क्या करूँ?"

उसने कहा, "हे प्रभु, मैं फिर से देखना चाहता हूँ।"

[42]इस पर यीशु ने कहा, "तुझे ज्योति मिले, तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार किया है।"

[43]और तुरन्त ही उसे आँखें मिल गयीं। वह परमेश्वर की महिमा का बखान करते हुए यीशु के पीछे हो लिया। जब सब लोगों ने यह देखा तो वे परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

जक्कई

19 और फिर यीशु यरीहो में प्रवेश करके जब वहाँ से जा रहा था। [2]तो वहाँ जक्कई नाम का एक व्यक्ति भी मौजूद था। वह कर वसूलने वालों का मुखिया था। सो वह बहुत धनी था। [3]वह यह देखने का जतन कर रहा था कि यीशु कौन है, पर भीड़ के कारण वह देख नहीं पा रहा था क्योंकि उसका कद छोटा था। [4]सो वह सब के आगे दौड़ता हुआ एक गूलर के पेड़ पर जा चढ़ा ताकि, वह उसे देख सके क्योंकि यीशु को उसी रास्ते से होकर निकलना था। [5]फिर जब यीशु उस स्थान पर आया तो उसने ऊपर देखते हुए जक्कई से कहा, "जक्कई, जल्दी से नीचे उतर आ क्योंकि मुझे आज तेरे ही घर ठहरना है।"

[6]सो उसने झटपट नीचे उतर प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत किया। [7]जब सब लोगों ने यह देखा तो वे बड़बड़ाने लगे और कहने लगे, "यह एक पापी के घर अतिथि बनने जा रहा है!"

[8]किन्तु जक्कई खड़ा हुआ और प्रभु से बोला, "हे प्रभु, देख, मैं अपनी सारी सम्पत्ति का आधा ग़रीबों को दे दूँगा और यदि मैंने किसी का छल से कुछ भी लिया है तो उसे चौगुना करके लौटा दूँगा!"

[9]यीशु ने उससे कहा, "इस घर पर आज उद्धार आया है, क्योंकि यह व्यक्ति भी इब्राहीम की ही एक सन्तान है। [10]क्योंकि मनुष्य का पुत्र जो कोई खो गया है, उसे ढूँढने और उसकी रक्षा के लिए आया है।"

परमेश्वर जो देता है उसका उपयोग करो

[11]वे जब इन बातों को सुन रहे थे तो यीशु ने उन्हें एक और दृष्टान्त–कथा सुनाई क्योंकि यीशु यरुशलेम के निकट था और वे सोचते थे कि परमेश्वर का राज्य तुरंत ही प्रकट होने जा रहा है। [12]सो यीशु ने कहा, "एक उच्च कुलीन व्यक्ति राजा का पद प्राप्त करके आने को

किसी दूर देश को गया। [13]सो उसने अपने दस सेवकों को बुलाया और उनमें से हर एक को दस दस थैलियाँ दी और उनसे कहा 'जब तक मैं लौटूँ, इनसे कोई व्यापार करो।' [14]किन्तु उसके नगर के दूसरे लोग उससे घृणा करते थे, इसलिये उन्होंने उसके पीछे यह कहने को एक प्रतिनिधि मंडल भेजा, 'हम नहीं चाहते कि यह व्यक्ति हम पर राज करे।'

[15]"किन्तु उसने राजा की पदवी पा ली। फिर जब वह वापस घर लौटा तो जिन सेवकों को उसने धन दिया था उनको यह जानने के लिए कि उन्होंने क्या लाभ कमाया है, उसने बुलावा भेजा। [16]पहला आया और बोला, 'हे स्वामी, तेरी थैलियों से मैंने दस थैलियाँ और कमायी हैं।' [17]इस पर उसके स्वामी ने उससे कहा, 'उत्तम सेवक, तूने अच्छा किया। क्योंकि तू इस छोटी सी बात पर विश्वास के योग्य रहा। तू दस नगरों का अधिकारी होगा।' [18]फिर दूसरा सेवक आया और कहा, 'हे स्वामी, तेरी थैलियों से पाँच थैलियाँ* और कमाई हैं।' [19]फिर उसने इससे कहा, 'तू पाँच नगरों के ऊपर होगा।' [20]फिर वह अन्य सेवक आया और कहा, 'हे स्वामी, यह रही तेरी थैली जिसे मैंने गमछे में बाँध कर कहीं रख दिया था। [21]मैं तुझ से डरता रहा हूँ, क्योंकि तू, एक कठोर व्यक्ति है। तूने जो रखा नहीं है तू उसे भी ले लेता है और जो तूने बोया नहीं तू उसे काटता है।' [22]स्वामी ने उससे कहा, 'अरे दुष्ट सेवक, मैं तेरे अपने ही शब्दों के आधार पर तेरा न्याय करूँगा। तू तो जानता ही है कि मैं जो रखता नहीं हूँ, उसे भी ले लेने वाला और जो बोता नहीं हूँ, उसे भी काटने वाला एक कठोर व्यक्ति हूँ? [23]तो फिर तूने मेरा धन बैंक में क्यों नहीं जमा कराया ताकि जब मैं वापस आता तो ब्याज समेत उसे ले लेता।' [24]फिर पास खड़े लोगों से उसने कहा, 'इसकी थैली इससे ले लो और जिसके पास दस थैलियाँ हैं उसे दे दो।' [25]इस पर उन्होंने उससे कहा, हे स्वामी, उसके पास तो दस थैलियाँ है। [26]स्वामी ने कहा, 'मैं तुमसे कहता हूँ प्रत्येक उस व्यक्ति को जिसके पास है और अधिक दिया जायेगा और जिसके पास नहीं है, उससे जो उसके पास है, वह भी छीन लिया जायेगा। [27]किन्तु मेरे वे शत्रु जो नहीं चाहते कि मैं उन पर शासन करूँ उनको यहाँ मेरे सामने लाओ और मार डालो।'"

थैलियाँ शाब्दिक मीना। एक मीना बराबर उन दिनों का तीन महीने का वेतन।

यीशु का यरूशलेम में प्रवेश

[28]ये बातें कह चुकने के बाद यीशु आगे चलता हुआ यरूशलेम की ओर बढ़ने लगा। [29]और फिर जब वह बैतफगे और बैतनिय्याह में उस पहाड़ी के निकट पहुँचा जो जैतून की पहाड़ी कहलाती थी तो उसने अपने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा, [30]"यह जो गाँव तुम्हारे सामने है वहाँ जाओ। जैसे ही तुम वहाँ जाओगे, तुम्हें गधे का एक बछेरा वहाँ बँधा मिलेगा जिस पर किसी ने कभी सवारी नहीं की होगी, उसे खोलकर यहाँ ले आओ [31]और यदि कोई तुमसे पूछे तुम इसे क्यों खोल रहे हो, तो तुम्हें उससे यह कहना है, 'प्रभु को चाहिये।'"

[32]फिर जिन्हें भेजा गया था, वे गये और यीशु ने उनको जैसा बताया था, उन्हें वैसा ही मिला। [33]सो जब वे उस बछेरे को खोल ही रहे थे, उसके स्वामी ने उनसे पूछा, "तुम इस बछेरे को क्यों खोल रहे हो?"

[34]उन्होंने कहा, "यह प्रभु को चाहिये।" [35]फिर वे उसे यीशु के पास ले आये। उन्होंने अपने वस्त्र उस बछेरे पर डाल दिये और यीशु को उस पर बिठा दिया। [36]जब यीशु जा रहा था तो लोग अपने वस्त्र सड़क पर बिछाते जा रहे थे।

[37]और फिर जब वह जैतून की पहाड़ी से तलहटी के पास आया तो शिष्यों की समूची भीड़ उन सभी अद्भुत कार्यों के लिये, जो उन्होंने देखे थे, ऊँचे स्वर में प्रसन्नता के साथ परमेश्वर की स्तुति करने लगी। वे पुकार उठे:

[38] "'धन्य है वह राजा,
जो प्रभु के नाम में आता है;

भजन संहिता 118:26

स्वर्ग में शान्ति हो, और आकाश में
परम परमेश्वर की महिमा हो"

[39]भीड़ में खड़े हुए कुछ फरीसियों ने उससे कहा, "गुरु, शिष्यों को मना कर।"

[40]सो उसने उत्तर दिया, "मैं तुमसे कहता हूँ यदि ये चुप हो भी जायें तो ये पत्थर चिल्ला उठेंगे।"

[41]जब उसने पास आकर नगर को देखा तो वह उस पर रो पड़ा। [42]और बोला, "यदि तू बस आज यह जानता कि शान्ति तुझे किस से मिलेगी किन्तु वह अभी तेरी आँखों से ओझल है। [43]वे दिन तुझ पर आयेंगे जब तेरे शत्रु चारों ओर बाधाएँ खड़ी कर देंगे। वे तुझे घेर लेंगे और सब ओर से तुझ पर दबाव डालेंगे। [44]वे तुझे धूल में

मिला देंगे–तुझे और तेरे भीतर रहने वाले तेरे बच्चों को। तेरी चारदीवारी के भीतर वे एक पत्थर पर दूसरा पत्थर नहीं रहने देंगे। क्योंकि जब परमेश्वर तेरे पास आया, तूने उस घड़ी को नहीं पहचाना।"

यीशु मंदिर में

[45]फिर यीशु ने मन्दिर में प्रवेश किया और जो वहाँ दुकानदारी कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा। [46]उसने उनसे कहा, "लिखा गया है, 'मेरा घर प्रार्थनागृह होगा'* किन्तु तुमने इसे 'डाकुओं का अड्डा बना डाला है।'"

[47]सो अब तो वह हर दिन मन्दिर में उपदेश देने लगा। प्रमुख याजक, यहूदी धर्मशास्त्री और मुखिया लोग उसे मार डालने की ताक में रहने लगे। [48]किन्तु उन्हें ऐसा कर पाने का कोई अवसर न मिल पाया क्योंकि लोग उसके वचनों को बहुत महत्त्व दिया करते थे।

यीशु से यहूदियों का एक प्रश्न

20 एक दिन जब यीशु मंदिर में लोगों को उपदेश देते हुए सुसमाचार सुना रहा था तो प्रमुख याजक और यहूदी धर्मशास्त्री बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं के साथ उसके पास आये। [2]उन्होंने उससे पूछा, "हमें बता तू यह काम किस अधिकार से कर रहा है? वह कौन है जिसने तुझे यह अधिकार दिया है?"

[3]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं भी तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ, तुम मुझे बताओ [4]यूहन्ना को बपतिस्मा देने का अधिकार स्वर्ग से मिला था या मनुष्य से?"

[5]इस पर आपस में विचार विमर्श करते हुए उन्होंने कहा, "यदि हम कहते हैं 'स्वर्ग से' तो यह कहेगा 'तो तुम ने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?' [6]और यदि हम कहें 'मनुष्य से' तो सभी लोग हम पर पत्थर बरसायेंगे। क्योंकि वे यह मानते हैं कि यूहन्ना एक नबी था।" [7]सो उन्होंने उत्तर दिया कि वे नहीं जानते कि वह कहाँ से मिला।

[8]फिर यीशु ने उनसे कहा, "तो मैं भी तुम्हें नहीं बताऊँगा कि यह कार्य मैं किस अधिकार से करता हूँ?"

परमेश्वर अपने पुत्र को भेजता है

[9]फिर यीशु लोगों से यह दृष्टान्त कथा कहने लगा: "किसी व्यक्ति ने अंगूरों का एक बगीचा लगाकर उसे कुछ किसानों को किराये पर चढ़ा दिया और वह एक लम्बे समय के लिये कहीं चला गया। [10]जब फसल उतारने का समय आया, तो उसने एक सेवक को किसानों के पास भेजा ताकि वे उसे अंगूरों के बगीचे के कुछ फल दे दें। किन्तु किसानों ने उसे मार–पीट कर खाली हाथों लौटा दिया। [11]तब उसने एक दूसरा सेवक वहाँ भेजा। किन्तु उन्होंने उसकी भी पिटाई कर डाली। उन्होंने उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया और उसे भी खाली हाथों लौटा दिया। [12]इस पर उसने एक तीसरा सेवक भेजा किन्तु उन्होंने इसको भी घायल करके बाहर धकेल दिया। [13]तब बगीचे का स्वामी कहने लगा, 'मुझे क्या करना चाहिये? मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा।' [14]किन्तु किसानों ने जब उसके बेटे को देखा तो आपस में सोच विचार करते हुए वे बोले 'यह तो उत्तराधिकारी है, आओ हम इसे मार डालें ताकि उत्तराधिकार हमारा हो जाये।' [15]और उन्होंने उसे बगीचे से बाहर खदेड़ कर मार डाला।

"तो फिर बगीचे का स्वामी उनके साथ क्या करेगा? [16]वह आयेगा और उन किसानों को मार डालेगा तथा अंगूरों का बगीचा औरों को सौंप देगा।"

उन्होंने जब यह सुना तो वे बोले, "ऐसा कभी न हो।" [17]तब यीशु ने उनकी ओर देखते हुए कहा, "तो फिर यह जो लिखा है उसका अर्थ क्या है:

> 'जिस पत्थर को कारीगरों ने
> बेकार समझ लिया था वही
> कोने का प्रमुख पत्थर बन गया?'

भजन संहिता 118:22

[18]हर कोई जो उस पत्थर पर गिरेगा टुकड़े–टुकड़े हो जायेगा और जिस पर वह गिरेगा चकना चूर हो जायेगा।"

[19]उसी क्षण यहूदी धर्मशास्त्री और प्रमुख याजक कोई रास्ता ढूँढकर उसे पकड़ लेना चाहते थे क्योंकि वे जान गये थे कि उसने यह दृष्टान्त कथा उनके विरोध में कही है। किन्तु वे लोगों से डरते थे।

यहूदी नेताओं की चाल

[20]सो वे सावधानी से उस पर नज़र रखने लगे। उन्होंने ऐसे गुप्तचर भेजे जो ईमानदार होने का स्वांग रचते थे। ताकि वे उसे उसकी कही किसी बात में फँसा कर राज्यपाल की शक्ति और अधिकार के अधीन कर दें। [21]सो उन्होंने

मेरा घर ... प्रार्थनागृह होगा यशा. 56:7

उससे पूछते हुए कहा, "गुरु, हम जानते हैं कि तू जो उचित है वही कहता है और उसी का उपदेश देता है और न ही तू किसी का पक्ष लेता है। बल्कि तू तो सच्चाई से परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देता है। [22]सो बता कैसर को हमांरा कर चुकाना उचित है या नहीं चुकाना?"

[23]यीशु उनकी चाल को ताड़ गया था। सो उसने उनसे कहा, [24]"मुझे एक दीनारी दिखाओ, इस पर मूरत और लिखावट किसके हैं?" उन्होंने कहा, "कैसर के।"

[25]इस पर उसने उनसे कहा, "तो फिर जो कैसर का है, उसे कैसर को दो। और जो परमेश्वर का है उसे परमेश्वर को।"

[26]वे उसके उत्तर पर चकित हो कर चुप रह गये और उसने लोगों के सामने जो कुछ कहा था, उस पर उसे पकड़ नहीं पाये।

यीशु को पकड़ने के लिये सदूकियों की चाल

[27]अब देखो कुछ सदूकी उसके पास आये। ये सदूकी वे थे जो पुनरुत्थान को नहीं मानते। उन्होंने उससे पूछते हुए कहा, [28]"गुरु, मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि यदि किसी का भाई मर जाये और उसके कोई बच्चा न हो और उसके पत्नी हो तो उसका भाई उस विधवा से ब्याह करके अपने भाई के लिये, उससे संतान उत्पन्न करे। [29]अब देखो, सात भाई थे। पहले भाई ने किसी स्त्री से विवाह किया और वह बिना किसी संतान के ही मर गया। [30]फिर दूसरे भाई ने उसे ब्याहा, [31]और ऐसे ही तीसरे भाई ने। सब के साथ एक जैसा ही हुआ। वे बिना कोई संतान छोड़े मर गये। [32]बाद में वह स्त्री भी मर गयी। [33]अब बताओ, पुनरुत्थान होने पर वह किसकी पत्नी होगी क्योंकि उससे तो सातों ने ही ब्याह किया था?"

[34]तब यीशु ने उनसे कहा, "इस युग के लोग ब्याह करते हैं और ब्याह करके विदा होते हैं। [35]किन्तु वे लोग जो उस युग के किसी भाग के योग्य और मरे हुओं में से जी उठने के लिए ठहराये गये हैं, वे न तो ब्याह करेंगे और न ही ब्याह करके विदा किये जायेंगे। [36]और वे फिर कभी मरेंगे भी नहीं, क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं क्योंकि वे पुनरुत्थान के पुत्र हैं। [37]किन्तु मूसा तक ने झाड़ी से सम्बन्धित अनुच्छेद में दिखाया है कि मरे हुए जिलाए गये हैं, जबकि उसने कहा था प्रभु, 'इब्राहीम का परमेश्वर है, इसहाक का परमेश्वर है और याकूब का परमेश्वर है'* [38]वह मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है। वे सभी लोग जो उसके हैं, जीवित हैं।"

[39]कुछ यहूदी धर्मशास्त्रियों ने कहा, "गुरु, अच्छा कहा।" [40]क्योंकि फिर उससे कोई और प्रश्न पूछने का साहस नहीं कर सका।

क्या मसीह दाऊद का पुत्र है?

[41]यीशु ने उनसे कहा, "वे कहते हैं कि 'मसीह दाऊद का पुत्र है।' यह कैसे हो सकता है? [42]क्योंकि भजन संहिता की पुस्तक में दाऊद स्वयं कहता है कि

'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु (मसीह) से कहा:
मेरे दाहिने हाथ बैठ,
[43] जब तक कि मैं तेरे विरोधियों को
तेरे पैर रखने की चौकी न बना दूँ।'

भजन संहिता 110:1

[44]इस प्रकार जब दाऊद 'मसीह' को प्रभु कहता है तो मसीह दाऊद का पुत्र कैसे हो सकता है?"

यहूदी धर्मशास्त्रियों के विरोध में यीशु की चेतावनी

[45]सभी लोगों के सुनते उसने अपने अनुयायिओं से कहा, [46]"यहूदी धर्मशास्त्रियों से सावधान रहो। वे लम्बे चोगे पहन कर यहाँ-वहाँ घूमना चाहते हैं, हाट-बाजारों में वे आदर के साथ स्वागत-सत्कार पाना चाहते हैं। और यहूदी प्रार्थना सभाओं में उन्हें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण आसन की लालसा रहती है। दावतों में वे आदर-पूर्ण स्थान चाहते हैं। [47]वे विधवाओं के घर-बार लूट लेते हैं। दिखावे के लिये वे लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ करते हैं। इन लोगों को कठिन से कठिन दण्ड भुगतना होगा।"

सच्चा दान

21 यीशु ने आँखें उठा कर देखा कि धनी लोग दान पात्र में अपनी अपनी भेंट डाल रहे हैं। [2]तभी उसने एक गरीब विधवा को उसमें ताँबे के दो छोटे सिक्के डालते हुए देखा। [3]उसने कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि दूसरे सभी लोगों से इस गरीब विधवा ने अधिक दान दिया है। [4]यह मैं इसलिये कहता हूँ क्योंकि इन सब ही लोगों ने अपने उस धन में से जिसकी उन्हें आवश्यकता

इब्राहीम का ... याकूब का परमेश्वर है निर्गमन 3:6

नहीं थी, दान दिया था किन्तु उसने गरीब होते हुए भी जीवित रहने के लिए जो कुछ उसके पास था, सब कुछ दे डाला।"

मन्दिर का विनाश

[5]कुछ लोग मंदिर के विषय में चर्चा कर रहे थे कि वह सुंदर पत्थरों और परमेश्वर को अर्पित की गयी मनौती की भेंटों से कैसे सजाया गया है।

[6]तभी यीशु ने कहा, "ऐसा समय आयेगा जब, ये जो कुछ तुम देख रहे हो, उसमें एक पत्थर दूसरे पत्थर पर टिका नहीं रह पायेगा। वे सभी ढहा दिये जायेंगे।"

[7]वे उससे पूछते हुए बोले, "गुरु, ये बातें कब होंगी? और ये बातें जो होने वाली हैं, उसके क्या संकेत होंगे?"

[8]यीशु ने कहा, "सावधान रहो, कहीं कोई तुम्हें छल न ले। क्योंकि मेरे नाम से बहुत से लोग आयेंगे और कहेंगे, 'वह मैं हूँ' और 'समय आ पहुँचा है।' उनके पीछे मत जाना। [9]परन्तु जब तुम युद्धों और दंगों की चर्चा सुनो तो डरना मत क्योंकि ये बातें तो पहले घटेंगी ही। और उनका अन्त तुरंत नहीं होगा।"

[10]उसने उनसे फिर कहा, "एक जाति दूसरी जाति के विरोध में खड़ी होगी और एक राज्य दूसरे राज्य के विरोध में। [11]बड़े-बड़े भूचाल आयेंगे और अनेक स्थानों पर अकाल पड़ेंगे और महामारियाँ होंगी। आकाश में भयानक घटनाएँ घटेंगी और महान संकेत प्रकट होंगे।

[12]"किन्तु इन बातों के घटने से पहले वे तुम्हें बंदी बना लेंगे और तुम्हें यातनाएँ देंगे। वे तुम पर अभियोग चलाने के लिये तुम्हें यहूदी प्रार्थना सभागारों को सौंप देंगे और फिर तुम्हें जेल भेज दिया जायेगा। और फिर मेरे नाम के कारण वे तुम्हें राजाओं और राज्यपालों के सामने ले जायेंगे। [13]इससे तुम्हें मेरे विषय में साक्षी देने का अवसर मिलेगा। [14]इसलिये पहले से ही इसकी चिंता न करने का निश्चय कर लो कि अपना बचाव तुम कैसे करोगे। [15]क्योंकि मैं तुम्हें ऐसी बुद्धि और ऐसे शब्द दूँगा कि तुम्हारा कोई भी विरोधी तुम्हारा सामना और तुम्हारा खण्डन नहीं कर सकेगा। [16]किन्तु तुम्हारे माता-पिता, भाई बन्धु, सम्बन्धी और मित्र ही तुम्हें धोखे से पकड़वायेंगे और तुममें से कुछों को तो मरवा ही डालेंगे। [17]मेरे कारण सब तुमसे बैर करेंगे। [18]किन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल तक बांका नहीं होगा। [19]तुम्हारी सहनशीलता, तुम्हारे प्राणों की रक्षा करेगी।"

यरूशलेम का नाश

[20]"अब देखो जब यरुशलेम को तुम सेनाओं से घिरा देखो तब समझ लेना कि उसका तहस नहस हो जाना निकट है। [21]तब तो जो यहूदिया में हों, उन्हें चाहिये कि वे पहाड़ों पर भाग जायें और वे जो नगर के भीतर हों, बाहर निकल आयें और वे जो गांवों में हों उन्हें नगर में नहीं जाना चाहिये [22]क्योंकि वे दिन दण्ड देने के होंगे। ताकि जो लिखी गयी हैं, वे सभी बातें पूरी हों। [23]उन स्त्रियों के लिये, जो गर्भवती होंगी और उनके लिये जो दूध पिलाती होंगी, वे दिन कितने भयानक होंगे। क्योंकि उन दिनों इस धरती पर बहुत बड़ी विपत्ति आयेगी और इन लोगों पर परमेश्वर का क्रोध होगा। [24]वे तलवार की धार से गिरा दिये जायेंगे। और बंदी बना कर सब देशों में पहुँचा दिये जायेंगे। और यरूशलेम ग़ैर यहूदियों के पैरों तले तब तक रौंदा जायेगा जब तक कि ग़ैर यहूदियों का समय पूरा नहीं हो जाता।"

डरो मत

[25]"सूरज, चाँद और तारों में संकेत प्रकट होंगे और धरती पर की सभी जातियों पर विपतियाँ आयेंगी और वे सागर की उथल-पुथल से घबरा उठेंगे। [26]लोग डर और संसार पर आने वाली विपदाओं के डर से मूर्छित हो जायेंगे क्योंकि स्वर्गिक शक्तियाँ कँपाई जायेंगी। [27]और तभी वे मनुष्य के पुत्र को अपनी शक्ति और महान् महिमा के साथ एक बादल में आते हुए देखेंगे। [28]अब देखो, ये बातें जब घटने लगें तो तुम खड़े होकर अपने सिर ऊपर उठा लेना। क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट आ रहा होगा।"

मेरा वचन अमर है

[29]फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त-कथा कही: "और सभी पेड़ों तथा अंजीर के पेड़ को देखो। [30]उन में जैसे ही कोंपलें फूटती हैं, तुम अपने आप जान जाते हो कि गर्मी की ॠतु बस आ ही पहुँची है। [31]वैसे ही तुम जब इन बातों को घटते देखो तो जान लेना कि परमेश्वर का राज्य निकट है।

[32]"मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें घट नहीं लेतीं, इस पीढ़ी का अंत नहीं होगा। [33]धरती और आकाश नष्ट हो जाएँगे, पर मेरा वचन सदा अटल रहेगा।

सदा तैयार रहो

[34]"अपना ध्यान रखो, ताकि तुम्हारे मन कहीं डट कर पीने पिलाने और सांसारिक चिंताओं से जड़ न हो जायें। और वह दिन एक फंदे की तरह तुम पर अचानक न आ पड़े। [35]निश्चय ही वह इस समूची धरती पर रहने वालों पर ऐसे ही आ गिरेगा। [36]हर क्षण सतर्क रहो, और प्रार्थना करो कि तुम्हें उन सभी बातों से, जो घटने वाली हैं, बचने की शक्ति प्राप्त हो। और आत्म–विश्वास के साथ मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े हो सको।"

[37]प्रतिदिन वह मंदिर में उपदेश दिया करता था किन्तु, रात बिताने के लिए वह हर साँझ जैतून नामक पहाड़ी पर चला जाता था। [38]सभी लोग भोर के तड़के उठते ताकि मंदिर में उसके पास जाकर, उसे सुनें।

यीशु की हत्या का षड़यन्त्र

22 अब फ़सह नाम का बिना ख़मीर की रोटी का पर्व आने को था। [2]उधर प्रमुख याजक तथा यहूदी धर्मशास्त्री, क्योंकि लोगों से डरते थे इसलिये किसी ऐसे रास्ते की ताक में थे जिससे वे यीशु को मार डालें।

यहूदा का षड़यन्त्र

[3]फिर इस्करियोती कहलाने वाले उस यहूदा में, जो उन बारहों में से एक था, शैतान आ समाया। [4]वह प्रमुख याजकों और अधिकारियों के पास गया और उनसे यीशु को वह कैसे पकड़वा सकता है, इस बारे में बातचीत की। [5]वे बहुत प्रसन्न हुए और इसके लिये उसे धन देने को सहमत हो गये। [6]वह भी राज़ी हो गया और वह ऐसे अवसर की ताक में रहने लगा जब भीड़–भाड़ न हो और वह उसे उनके हाथों सौंप दे।

फ़सह की तैयारी

[7]फिर बिना ख़मीर की रोटी का वह दिन आया जब फ़सह के मेमने की बली देनी होती है। [8]सो उसने यह कहते हुए पतरस और यूहन्ना को भेजा कि "जाओ और हमारे लिये फ़सह का भोज तैयार करो ताकि हम उसे खा सकें।"

[9]उन्होंने उससे पूछा, "तू हमसे उसकी तैयारी कहाँ चाहता है?" [10]उसने उनसे कहा, "तुम जैसे ही नगर में प्रवेश करोगे तुम्हें पानी का घड़ा ले जाते हुए एक व्यक्ति मिलेगा, उसके पीछे हो लेना और जिस घर में वह जाये तुम भी चले जाना। [11]और घर के स्वामी से कहना गुरु ने तुझसे पूछा है कि वह अतिथि–कक्ष कहाँ है जहाँ मैं अपने शिष्यों के साथ फ़सह पर्व का भोजन कर सकूँ। [12]फिर वह व्यक्ति तुम्हें सीढ़ियों के ऊपर सजा–सजाया एक बड़ा कमरा दिखायेगा, वहीं तैयारी करना।"

[13]वे चल पड़े और वैसा ही पाया जैसा उसने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह भोज तैयार किया।

प्रभु का अन्तिम भोज

[14]फिर वह घड़ी आयी तब यीशु अपने शिष्यों के साथ भोजन पर बैठा। [15]उसने उनसे कहा, "यातना उठाने से पहले यह फ़सह का भोजन तुम्हारे साथ करने की मेरी प्रबल इच्छा थी। [16]क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक परमेश्वर के राज्य में यह पूरा नहीं हो लेता तब तक मैं इसे दुबारा नहीं खाऊँगा।"

[17]फिर उसने कटोरा उठाकर धन्यवाद दिया और कहा, "लो इसे आपस में बाँट लो। [18]क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ आज के बाद जब तक परमेश्वर का राज्य नहीं आ जाता मैं कैसा भी दाखरस कभी नहीं पिऊँगा।"

[19]फिर उसने थोड़ी रोटी ली और धन्यवाद दिया। उसने उसे तोड़ा और उन्हें देते हुए कहा, "यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दी गयी है। मेरी याद में ऐसा ही करना।" [20]ऐसे ही जब वे भोजन कर चुके तो उसने कटोरा उठाया और कहा, "यह प्याला मेरे उस रक्त के रूप में एक नए वाचा का प्रतीक है जिसे तुम्हारे लिए उँडेला गया है।"

यीशु का विरोधी कौन होगा?

[21]"किन्तु देखो, मुझे जो धोखे से पकड़वायेगा, उसका हाथ यहीं मेज़ पर मेरे साथ है। [22]क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो मारा ही जायेगा जैसा कि सुनिश्चित है किन्तु धिक्कार है उस व्यक्ति को जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाएगा।"

[23]इस पर वे आपस में एक दूसरे से प्रश्न करने लगे, "उनमें से वह कौन हो सकता है जो ऐसा करने जा रहा है?"

सेवक बनो

[24]फिर उनमें यह बात भी उठी कि उनमें से सबसे बड़ा किसे समझा जाये। [25]किन्तु यीशु ने उनसे कहा, "ग़ैर यहूदियों के राजा उन पर प्रभुत्व रखते हैं और वे जो उन पर अधिकार का प्रयोग करते हैं, स्वयं को लोगों का उपकारक कहलवाना चाहते हैं। [26]किन्तु तुम वैसे नहीं हो बल्कि तुममें तो सबसे बड़ा सबसे छोटे जैसा होना चाहिये और जो शासक है उसे सेवक के समान होना चाहिए। [27]क्योंकि बड़ा कौन है: वह जो खाने की मेज़ पर बैठा है या वह जो उसे परोसता है? क्या वही नहीं जो मेज पर है किन्तु तुम्हारे बीच मैं वैसा हूँ जो परोसता है।

[28]"किन्तु तुम वे हो जिन्होंने मेरी परीक्षाओं में मेरा साथ दिया है। [29]और मैं तुम्हें वैसे ही एक राज्य दे रहा हूँ जैसे मेरे परम पिता ने इसे मुझे दिया था। [30]ताकि मेरे राज्य में तुम मेरी मेज़ पर खाओ और पिओ और इस्राएल की बारहों जनजातियों का न्याय करते हुए सिंहासनों पर बैठो।"

विश्वास बनाये रखो

[31]"शमौन, हे शमौन, सुन, तुम सब को गेहूँ की तरह फटकने के लिए शैतान ने चुन लिया है। [32]किन्तु मैंने तुम्हारे लिये प्रार्थना की है कि तुम्हारा विश्वास न डगमगाये और जब तू वापस आये तो तेरे बंधुओं की शक्ति बढ़े।"

[33]किन्तु शमौन ने उससे कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे साथ जेल जाने और मरने तक को तैयार हूँ।"

[34]फिर यीशु ने कहा, "पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि आज तब तक मुर्गा बाँग नहीं देगा जब तक तू तीन बार मना नहीं कर लेगा कि तू मुझे जानता है।"

यातना झेलने को तैयार रहो

[35]फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैंने तुम्हें जब बिना बटुए, बिना थैले या बिना चप्पलों के भेजा था तो क्या तुम्हें किसी वस्तु की कमी रही थी?"

उन्होंने कहा, "किसी वस्तु की नहीं।"

[36]उसने उनसे कहा, "किन्तु अब जिस किसी के पास भी कोई बटुआ है, वह उसे ले ले और वह थैला भी ले चले। और जिसके पास भी तलवार न हो, वह अपना चोगा तक बेच कर उसे मोल ले ले। [37]क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि शास्त्र का यह लिखा मुझ पर निश्चय ही पूरा होगा:

'वह एक अपराधी समझा गया था'

यशायाह 53:12

हाँ मेरे सम्बन्ध में लिखी गयी यह बात पूरी होने पर आ रही है।"

[38]वे बोले, "हे प्रभु, देख, यहाँ दो तलवारें हैं।" इस पर उसने उनसे कहा, "बस बहुत हैं।"

प्रेरितों को प्रार्थना का आदेश

[39]फिर वह वहाँ से उठ कर नित्य प्रति की तरह जैतून–पर्वत चला गया। और उसके शिष्य भी उसके पीछे पीछे हो लिये। [40]वह जब उस स्थान पर पहुँचा तो उसने उनसे कहा, "प्रार्थना करो कि तुम्हें परीक्षा में न पड़ना पड़े।"

[41]फिर वह किसी पत्थर को जितनी दूर तक फेंका जा सकता है, लगभग उनसे उतनी दूर अलग चला गया। फिर वह घुटनों के बल झुका और प्रार्थना करने लगा, [42]"हे परम पिता, यदि तेरी इच्छा हो तो इस प्याले को मुझसे दूर हटा किन्तु फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो।" [43]तभी एक स्वर्गदूत वहाँ प्रकट हुआ और उसे शक्ति प्रदान करने लगा। [44]उधर यीशु बड़ी बेचैनी के साथ और अधिक तीव्रता से प्रार्थना करने लगा। उसका पसीना रक्त की बूँदों के समान धरती पर गिर रहा था। [45]और जब वह प्रार्थना से उठकर अपने शिष्यों के पास आया तो उसने उन्हें शोक में थक कर सोते हुए पाया। [46]सो उसने उनसे कहा, "तुम सो क्यों रहे हो? उठो और प्रार्थना करो कि तुम किसी परीक्षा में न पड़ो।"

यीशु को बंदी बनाना

[47]वह अभी बोल ही रहा था कि एक भीड़ आ जुटी। यहूदा नाम का एक व्यक्ति जो बारह शिष्यों में से एक था, उनकी अगुआई कर रहा था। वह यीशु को चूमने के लिये उसके पास आया।

[48]पर यीशु ने उससे कहा, "हे यहूदा, क्या तू एक चुम्बन के द्वारा मनुष्य के पुत्र को धोखे से पकड़वाने जा रहा है" [49]जो घटने जा रहा था, उसे देखकर उसके

आसपास के लोगों ने कहा, "हे प्रभु, क्या हम तलवार के वार करें?" 50और उनमें से एक ने तो प्रमुख याजक के दास पर वार करके उसका दाहिना कान काट ही डाला।

51किन्तु यीशु ने तुरंत कहा, "उन्हें यह भी करने दो।" फिर यीशु ने उसके कान को छू कर चंगा कर दिया।

52फिर यीशु ने उस पर चढ़ाई करने आये प्रमुख याजकों, मन्दिर के अधिकारियों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं से कहा, "क्या तुम तलवारें और लाठियाँ ले कर किसी डाकू का सामना करने निकले हो? 53मंदिर में मैं हर दिन तुम्हारे ही साथ था, किन्तु तुमने मुझ पर हाथ नहीं डाला। पर यह समय तुम्हारा है। अंधकार के शासन का काल।"

पतरस का इन्कार

54उन्होंने उसे बंदी बना लिया और वहाँ से ले गये। फिर वे उसे प्रमुख याजक के घर ले गये। पतरस कुछ दूरी पर उसके पीछे पीछे आ रहा था। 55आँगन के बीच उन्होंने आग सुलगाई और एक साथ नीचे बैठ गये। पतरस भी वहीं उन्हीं में बैठा था। 56आग के प्रकाश में एक दासी ने उसे वहाँ बैठे देखा। उसने उस पर दृष्टि गढ़ाते हुए कहा, "यह आदमी तो उसके साथ भी था।"

57किन्तु पतरस ने इन्कार करते हुए कहा, "हे स्त्री, मैं उसे नहीं जानता।" 58थोड़ी देर बाद एक दूसरे व्यक्ति ने उसे देखा और कहा, "तू भी उन्हीं में से एक है।" किन्तु परतरस बोला, "भले आदमी, मैं वह नहीं हूँ।"

59कोई लगभग एक घड़ी बीती होगी कि कोई और भी बलपूर्वक कहने लगा, "निश्चय ही यह व्यक्ति उसके साथ भी था। क्योंकि देखो यह गलील वासी भी है।"

60किन्तु पतरस बोला, "भले आदमी, मैं नहीं जानता तू किसके बारे में बात कर रहा है।"

उसी घड़ी, वह अभी बातें कर ही रहा था कि एक मुर्गे ने बाँग दी। 61और प्रभु ने मुड़ कर पतरस पर दृष्टि डाली। तभी पतरस को प्रभु का वह वचन याद आया जो उसने उससे कहा था: "आज मुर्गे के बाँग देने से पहले तू मुझे तीन बार नकार चुकेगा।" 62तब वह बाहर चला आया और फूट–फूट कर रो पड़ा।

यीशु का उपहास

63जिन व्यक्तियों ने यीशु को पकड़ रखा था वे उसका उपहास करने और उसे पीटने लगे। 64उसकी आँखों पर पट्‌टी बाँध दी और उससे यह कहते हुए पूछने लगे कि "बता वह कौन है जिसने तुझे मारा?" 65उन्होंने उसका अपमान करने के लिए उससे और भी बहुत सी बातें कहीं।

यीशु यहूदी नेताओं के सामने

66जब दिन हुआ तो प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों समेत लोगों के बुज़ुर्ग नेताओं की एक सभा हुई। फिर वे लोग उसे अपनी महा सभा में ले गये। 67उन्होंने पूछा, "हमें बता क्या तू मसीह है?"

यीशु ने उनसे कहा, "यदि मैं तुमसे कहूँ तो तुम मेरा विश्वास नहीं करोगे। 68और यदि मैं पूछूँ तो तुम उत्तर नहीं दोगे। 69किन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठाया जायेगा।"

70वे सब बोले, "तब तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?"

71फिर उन्होंने कहा, "अब हमें किसी और प्रमाण की आवश्यकता क्यों है? हमने स्वयं इसके अपने मुँह से यह सुन तो लिया है।"

पिलातुस द्वारा यीशु से पूछताछ

23 फिर उनकी सारी पंचायत उठ खड़ी हुई और वे उसे पिलातुस के सामने ले गये। 2वे उस पर अभियोग लगाने लगे। उन्होंने कहा, "हमने हमारे लोगों को बहकाते हुए इस व्यक्ति को पकड़ा है। यह कैसर को कर चुकाने का विरोध करता है और कहता है यह स्वयं मसीह है, एक राजा।"

3इस पर पिलातुस ने यीशु से पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू ही तो कह रहा है, मैं वही हूँ।"

4इस पर पिलातुस ने प्रमुख याजकों और भीड़ से कहा, "मुझे इस व्यक्ति पर किसी आरोप का कोई आधार दिखाई नहीं देता।"

5पर वे यह कहते हुए दबाव डालते रहे, "इसने समूचे यहूदिया में लोगों को अपने उपदेशों से भड़काया है। यह इसने गलील में आरंभ किया था और अब समूचा मार्ग पार करके यहाँ तक आ पहुँचा है।"

यीशु का हेरोदेस के पास भेजा जाना

[6]पिलातुस ने यह सुनकर पूछा, "क्या यह व्यक्ति गलील का है?" [7]फिर जब उसको यह पता चला कि वह हेरोदेस के अधिकार क्षेत्र के अधीन है तो उसने उसे हेरोदेस के पास भेज दिया जो उन दिनों यरुशलेम में ही था। [8]सो हेरोदेस ने जब यीशु को देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि बरसों से वह उसे देखना चाह रहा था। क्योंकि वह उसके विषय में सुन चुका था और उसे कोई अद्भुत कर्म करते हुए देखने की आशा रखता था। [9]उसने यीशु से अनेक प्रश्न पूछे किन्तु यीशु ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। [10]प्रमुख याजक और यहूदी धर्म शास्त्री वहीं खड़े थे और वे उस पर तीखे ढँग के साथ दोष लगा रहे थे। [11]हेरोदेस ने भी अपने सैनिकों समेत उसके साथ अपमानपूर्ण व्यवहार किया और उसकी हँसी उड़ाई। फिर उन्होंने उसे एक उत्तम चोगा पहना कर पिलातुस के पास वापस भेज दिया। [12]उस दिन हेरोदेस और पिलातुस एक दूसरे के मित्र बन गये। इससे पहले तो वे एक दूसरे के शत्रु थे।

यीशु को मरना होगा

[13]फिर पिलातुस ने प्रमुख याजकों, यहूदी नेताओं और लोगों को एकसाथ बुलाया। [14]उसने उनसे कहा, "तुम इसे लोगों को भटकाने वाले एक व्यक्ति के रूप में मेरे पास लाये हो। और मैंने यहाँ अब तुम्हारे सामने ही इसकी जाँच पड़ताल की है और तुमने इस पर जो दोष लगाये हैं उनका न तो मुझे कोई आधार मिला है और [15]न ही हेरोदेस को क्योंकि उसने इसे वापस हमारे पास भेज दिया है। जैसा कि तुम देख सकते हो इसने ऐसा कुछ नहीं किया है कि यह मौत का भागी बने। [16]इसलिये मैं इसे कोड़े मरवा कर छोड़ दूँगा।" [17] ["पिलातुस को फ़सह पर्व पर हर साल जनता के लिये कोई एक बंदी छोड़ना पड़ता था।"]*

[18]किन्तु वे सब एक साथ चिल्लाये "इस आदमी को ले जाओ। हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दो।" [19](बरअब्बा को शहर में मार धाड़ और हत्या करने के जुर्म में जेल में डाला हुआ था।)

[20]पिलातुस यीशु को छोड़ देना चाहता था, सो उसने उन्हें फिर समझाया। [21]पर वे नारा लगाते रहे, "इसे क्रूस पर चढ़ा दो, इसे क्रूस पर चढ़ा दो।"

[22]पिलातुस ने उनसे तीसरी बार पूछा, "किन्तु इस व्यक्ति ने क्या अपराध किया है? मुझे इसके विरोध में कुछ नहीं मिला है जो इसे मृत्यु दण्ड का भागी बनाये। इसलिए मैं कोड़े लगवाकर इसे छोड़ दूँगा।"

[23]पर वे ऊँचे स्वर में नारे लगा लगा कर माँग कर रहे थे कि उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जाये। और उनके नारों का कोलाहल इतना बढ़ गया कि [24]पिलातुस ने निर्णय दे दिया कि उनकी माँग मान ली जाये। [25]पिलातुस ने उस व्यक्ति को छोड़ दिया जिसे मार धाड़ और हत्या करने के जुर्म में जेल में डाला गया था (यह वही था जिसके छोड़ देने की वे माँग कर रहे थे।) और यीशु को उनके हाथों में सौंप दिया कि वे जैसा चाहें, करें।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

[26]जब वे यीशु को ले जा रहे थे तो उन्होंने कुरैन के रहने वाले शमौन नाम के एक व्यक्ति को, जो अपने खेतों से आ रहा था, पकड़ लिया और उस पर क्रूस लाद कर उसे यीशु के पीछे पीछे चलने को विवश किया।

[27]लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे चल रही थी। इसमें कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी थी जो उसके लिये रो रही थीं और विलाप कर रही थीं। [28]यीशु उनकी तरफ मुड़ा और बोला, "यरूशलेम की पुत्रियों, मेरे लिये मत बिलखो बल्कि स्वयं अपने लिये और अपनी संतान के लिये विलाप करो। [29]क्योंकि ऐसे दिन आ रहे हैं जब लोग कहेंगे, 'वे स्त्रियाँ धन्य हैं, जो बाँझ हैं और धन्य हैं, वे कोख जिन्होंने किसी को कभी जन्म ही नहीं दिया। वे स्तन धन्य हैं जिन्होंने कभी दूध नहीं पिलाया।' [30]फिर वे पर्वतों से कहेंगे 'हम पर गिर पड़ो' और पहाड़ियों से कहेंगे 'हमें ढक लो' [31]क्योंकि लोग जब पेड़ हरा है, उसके साथ तब ऐसा करते हैं तो जब पेड़ सूख जायेगा तब क्या होगा?"

[32]दो और व्यक्ति, जो दोनों ही अपराधी थे, उसके साथ मृत्यु-दण्ड के लिये बाहर ले जाये जा रहे थे। [33]फिर जब वे उस स्थान पर आये जो खोपड़ी कहलता है तो उन्होंने उन दोनों अपराधियों के साथ उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। एक अपराधी को उसके दाहिनी ओर, दूसरे

पद 17 लूका की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 17 जोड़ा गया है।

को बाँई ओर। [34]इस पर यीशु बोला, "हे परम पिता, इन्हें क्षमा करना क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।" फिर उन्होंने पासा फेंक कर उसके कपड़ों का बटवारा कर लिया। [35]वहाँ खड़े लोग देख रहे थे। यहूदी नेता उसका उपहास करते हुए बोले, 'इसने दूसरों का उद्धार किया है। यदि यह परमेश्वर का चुना हुआ मसीह है तो इसे अपने आप अपनी रक्षा करने दो।"

[36]सैनिकों ने भी आकर उसका उपहास किया। उन्होंने उसे सिरका पीने को दिया [37]और कहा, "यदि तू यहूदियों का राजा है तो अपने आपको बचा ले।" [38]उसके ऊपर यह सूचना अंकित कर दी गई थी "यह यहूदियों का राजा है।"

[39]वहाँ लटकाये गये अपराधियों में से एक ने उसका अपमान करते हुए कहा, "क्या तू मसीह नहीं है? हमें और अपने आप को बचा ले।"

[40]किन्तु दूसरे ने उस पहले अपराधी को फटकारते हुए कहा, "क्या तू परमेश्वर से नहीं डरता? तुझे भी वही दण्ड मिल रहा है [41]किन्तु हमारा दण्ड तो न्याय पूर्ण है क्योंकि हमने जो कुछ किया, उसके लिये जो हमें मिलना चाहिये था, वही मिल रहा है पर इस व्यक्ति ने तो कुछ भी बुरा नहीं किया है!" [42]फिर वह बोला, "यीशु जब तू अपने राज्य में आये तो मुझे याद रखना।"

[43]यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य कहता हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

यीशु का देहान्त

[44]उस समय दिन के बारह बजे होंगे तभी तीन बजे तक समूची धरती पर गहरा अंधकार छा गया। [45]सूरज भी नहीं चमक रहा था। उधर मंदिर में परदे के फट कर दो टुकड़े हो गये। [46]यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा, "हे परम पिता, मैं अपना आत्मा तेरे हाथों सौंपता हूँ।" यह कहकर उसने प्राण छोड़ दिये।

[47]जब रोमी सेना नायक ने, जो कुछ घटा था, उसे देखा तो परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए उसने कहा, "यह निश्चय ही एक अच्छा मनुष्य था!"

[48]जब वहाँ देखने आये एकत्र लोगों ने, जो कुछ हुआ था, उसे देखा तो वे अपनी छाती पीटते लौट गये। [49]किन्तु वे सभी जो उसे जानते थे, उन स्त्रियों समेत, जो गलील से उसके पीछे पीछे आ रहीं थीं, इन बातों को देखने कुछ दूरी पर खड़े थे।

अरमतियाह का यूसुफ़

[50]अब वहीं यूसुफ नाम का एक पुरुष था जो यहूदी महासभा का एक सदस्य था। वह एक अच्छा धर्मी पुरुष था। [51]वह उनके निर्णय और उसे काम में लाने के लिये सहमत नहीं था। वह यहूदियों के एक नगर अरमतियाह का निवासी था। वह परमेश्वर के राज्य की बाट जोहा करता था। [52]यह व्यक्ति पिलातुस के पास गया और यीशु के शव की याचना की। [53]उसने शव को क्रूस पर से नीचे उतारा और सन के उत्तम रेशों के बने कपड़े में उसे लपेट दिया। फिर उसने उसे चट्टान में काटी गयी एक कब्र में रख दिया, जिसमें पहले कभी किसी को नहीं रखा गया था। [54]वह शुक्रवार का दिन था और सब्त का प्रारम्भ होने को था।

[55]वे स्त्रियाँ जो गलील से यीशु के साथ आई थी, यूसुफ के पीछे हो लीं। उन्होंने वह कब्र देखी, और देखा कि उसका शव कब्र में कैसे रखा गया। [56]फिर उन्होंने घर लौट कर सुंगधित सामग्री और लेप तैयार किये।

सब्त के दिन व्यवस्था के विधि के अनुसार उन्होंने आराम किया।

यीशु का फिर से जी उठना

24 सप्ताह के पहले दिन अलख सुबह वे स्त्रियाँ कब्र पर उस सुगंधित सामग्री को, जिसे उन्होंने तैयार किया था, लेकर आयीं। [2]उन्हें कब्र पर से पत्थर लुढ़का हुआ मिला। [3]सो वे भीतर चली गयीं किन्तु उन्हें वहाँ प्रभु यीशु का शव नहीं मिला। [4]जब वे इस पर अभी उलझन में ही पड़ी थीं कि, उनके पास चमचमाते वस्त्र पहने दो व्यक्ति आ खड़े हुए। [5]डर के मारे उन्होंने धरती की तरफ अपने मुँह लटकाये हुए थे। उन दो व्यक्तियों ने उनसे कहा "जो जीवित है, उसे तुम मुर्दों के बीच क्यों ढूँढ रही हो? [6]वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है। याद करो जब वह अभी गलील में ही था, उसने तुमसे क्या कहा था। [7]उसने कहा था कि 'मनुष्य के पुत्र का पापियों के हाथों सौंपा जाना निश्चित है। फिर वह क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा और तीसरे दिन उसको फिर से जीवित कर देना निश्चित है।" [8]तब उन स्त्रियों को उसके शब्द याद हो आये।

[9]वे कब्र से लौट आयीं और उन्होने ये सब बातें उन ग्यारहों और अन्य सभी को बतायीं। [10]ये स्त्रियाँ थीं

मरियम–मगदलीनी, योअन्ना और याकूब की माता, मरियम। वे तथा उनके साथ की दूसरी स्त्रियाँ इन बातों को प्रेरितों से कह रहीं थीं [11]पर उनके शब्द प्रेरितों को व्यर्थ से जान पड़े। सो उन्होंने उनका विश्वास नहीं किया। [12]किन्तु पतरस खड़ा हुआ और कब्र की तरफ़ दौड़ आया। उसने नीचे झुक कर देखा पर उसे सन के उत्तम रेशों से बने कफन के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई दिया था। फिर अपने मन ही मन जो कुछ हुआ था, उस पर अचरज करता हुआ वह चला गया।

इम्माऊस के मार्ग पर

[13]उसी दिन उसके शिष्यों में से दो, यरूशलेम से कोई सात मील दूर बसे इम्माऊस नाम के गाँव को जा रहे थे। [14]जो घटनाएँ घटीं थीं, उन सब पर वे आपस में बातचीत कर रहे थे। [15]जब वे उन बातों पर चर्चा और सोच विचार कर रहे थे तभी स्वयं यीशु वहाँ आ उपस्थित हुआ और उनके साथ–साथ चलने लगा। [16]किन्तु उन्हें उसे पहचानने नहीं दिया गया। [17]यीशु ने उनसे कहा, “चलते चलते एक दूसरे से ये तुम किन बातों की चर्चा कर रहे हो?”

वे चलते हुए रुक गये। वे बड़े दुखी दिखाई दे रहे थे। [18]उनमें से किलयुपास नाम के एक व्यक्ति ने उससे कहा, “यरूशलेम में रहने वाला तू अकेला ही ऐसा व्यक्ति होगा जो पिछले दिनों जो बातें घटी हैं, उन्हें नहीं जानता।”

[19]यीशु ने उनसे पूछा, “कौन सी बातें?” उन्होंने उससे कहा, “सब नासरी यीशु के बारे में हैं।

यह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने जो किया और कहा उससे परमेश्वर और सभी लोगों के सामने यह दिखा दिया कि वह एक महान् नबी था। [20]और हम इस बारे में बातें कर रहे थे कि हमारे प्रमुख याजकों और शासकों ने उसे कैसे मृत्यु दण्ड देने के लिए सौंप दिया। और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। [21]हम आशा रखते थे कि यही वह था जो इस्राएल को मुक्त कराता। और इस सब कुछ के अतिरिक्त इस घटना को घटे यह तीसरा दिन है। [22]और हमारी टोली की कुछ स्त्रियों ने हमें अचम्भे में डाल दिया है। आज भोर के तड़के वे कब्र पर गयीं। [23]किन्तु उन्हें उसका शव नहीं मिला। वे लौटीं और हमें बताया कि उन्होंने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया है जिन्होंने कहा था कि वह जीवित है। [24]फिर हम में से कुछ कब्र पर गये और जैसा स्त्रियों ने बताया था, उन्होंने वहाँ वैसा ही पाया। उन्होंने उसे नहीं देखा।”

[25]तब यीशु ने उनसे कहा, “तुम कितने मूर्ख हो और नबियों ने जो कुछ कहा, उस पर विश्वास करने में कितने मंद हो। [26]क्या मसीह के लिये यह आवश्यक नहीं था कि वह इन यातनाओं को भोगे और इस प्रकार अपनी महिमा में प्रवेश करे?” [27]और इस तरह मूसा से प्रारम्भ करके सब नबियों तक और समूचे शास्त्रों में उसके बारे में जो कहा गया था, उसने उसकी व्याख्या करके उन्हें समझाया।

[28]वे जब उस गाँव के पास आये, जहाँ जा रहे थे, यीशु ने ऐसे बर्ताव किया, जैसे उसे आगे जाना हो। [29]किन्तु उन्होंने उससे बलपूर्वक आग्रह करते हुए कहा, “हमारे साथ रुक जा क्योंकि लगभग साँझ हो चुकी है और अब दिन ढल चुका है।” सो वह उनके साथ ठहरने भीतर आ गया।

[30]जब उनके साथ वह खाने की मेज पर था तभी उसने रोटी उठाई और धन्यवाद किया। फिर उसे तोड़ कर जब वह उन्हें दे रहा था [31]तभी उनकी आँखें खोल दी गयी और उन्होंने उसे पहचान लिया। किन्तु वह उनके सामने से अदृश्य हो गया। [32]फिर वे आपस में बोले, “राह में जब वह हमसे बातें कर रहा था और हमें शास्त्रों को समझा रहा था तो क्या हमारे हृदय के भीतर आग सी नहीं भड़क उठी थी?”

[33]फिर वे तुरंत खड़े हुए और वापस यरूशलेम को चल दिये। वहाँ उन्हें ग्यारहों प्रेरित और दूसरे लोग उनके साथ इकट्ठे मिले, [34]जो कह रहे थे, “हे प्रभु, वास्तव में जी उठा है। उसने शमौन को दर्शन दिया है।”

[35]फिर उन दोनों ने राह में जो घटा था, उसका ब्योरा दिया और बताया कि जब उसने रोटी के टुकड़े लिये थे, तब उन्होंने यीशु को कैसे पहचान लिया था।”

यीशु का अपने शिष्यों के सामने प्रकट होना

[36]अभी वे उन्हें ये बातें बता ही रहे थे कि वह स्वयं उनके बीच आ खड़ा हुआ और उनसे बोला, “तुम्हें शान्ति मिले।”

[37]किन्तु वे चौंक कर भयभीत हो उठे। उन्होंने सोचा जैसे वे कोई भूत देख रहे हों।

[38]किन्तु वह उनसे बोला, “तुम ऐसे घबराये हुए क्यों हो? तुम्हारे मनों में संदेह क्यों उठ रहे हैं?

[39]मेरे हाथों और मेरे पैरों को देखो। मुझे छुओ, और देखो कि किसी भूत के माँस और हड्डियाँ नहीं होतीं और जैसा कि तुम देख रहे हो कि, मेरे वे हैं।"

[40]यह कहते हुए उसने हाथ और पैर उन्हें दिखाये। [41]किन्तु अपने आनन्द के कारण वे अब भी इस पर विश्वास नहीं कर सके। वे भौंचक्के थे सो यीशु ने उनसे कहा, "यहाँ तुम्हारे पास कुछ खाने को है" [42]उन्होंने पकाई हुई मछली का एक टुकड़ा उसे दिया। [43]और उसने उसे लेकर उनके सामने ही खाया।

[44]फिर उसने उनसे कहा, "ये बातें वे हैं जो मैंने तुमसे तब कहीं थीं, जब मैं अभी तुम्हारे साथ था। हर वह बात जो मेरे विषय में मूसा की व्यवस्था में, नबियों की पुस्तकों तथा भजनावलियों में लिखी हैं, पूरी होनी ही है।"

[45]फिर पवित्र शास्त्रों को समझने के लिये उसने उनकी बुद्धि के द्वार खोल दिये। [46]और उसने उनसे कहा, "यह वही है, जो लिखा है कि मसीह यातना भोगेगा और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। [47]और पापों की क्षमा के लिए मनफिराव का यह संदेश यरूशलेम से आरंभ होकर सब देशों में प्रचारित किया जाएगा। [48]तुम इन बातों के साक्षी हो। [49]और अब मेरे परम पिता ने मुझसे जो प्रतिज्ञा की है, उसे मैं तुम्हारे लिये भेजूँगा। किन्तु तुम्हें इस नगर में उस समय तक ठहरे रहना होगा, जब तक तुम स्वर्ग की शक्ति से युक्त न हो जाओ।"

यीशु की स्वर्ग को वापसी

[50]यीशु फिर उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया। और उसने हाथ उठा कर उन्हें आशीर्वाद दिया। [51]उन्हें आशीर्वाद देते देते ही उसने उन्हें छोड़ दिया और फिर उसे स्वर्ग में उठा लिया गया। [52]तब उन्होंने उसकी आराधना की और असीम आनन्द के साथ वे यरूशलेम लौट आये। [53]और मन्दिर में परमेश्वर की स्तुति करते हुए वे अपना समय बिताने लगे।

यूहन्ना

यीशु का आना

1 आदि में शब्द* था। शब्द परमेश्वर के साथ था। शब्द ही परमेश्वर था। [2]यह शब्द ही आदि में परमेश्वर के साथ था। [3]दुनिया की हर वस्तु उसी से उपजी। उसके बिना किसी की भी रचना नहीं हुई। [4]उसी में जीवन था और वह जीवन ही दुनिया के लोगों के लिये प्रकाश (ज्ञान, भलाई) था। [5]प्रकाश अँधेरे में चमकता है पर अँधेरा उसे समझ नहीं पाया।

[6]परमेश्वर का भेजा हुआ एक मनुष्य आया जिसका नाम यूहन्ना था। [7]वह एक साक्षी के रूप में आया था ताकि वह लोगों को प्रकाश के बारे में बता सके। जिससे सभी लोग उसके द्वारा उस प्रकाश में विश्वास कर सकें। [8]वह खुद प्रकाश नहीं था बल्कि वह तो लोगों को प्रकाश की साक्षी देने आया था। [9]उस प्रकाश की, जो सच्चा था, जो हर मनुष्य को ज्ञान की ज्योति देगा, जो धरती पर आने वाला था।

[10]वह इस जगत में ही था और यह जगत उसी के द्वारा अस्तित्व में आया पर जगत ने उसे पहचाना नहीं। [11]वह अपने घर आया था और उसके अपने ही लोगों ने उसे अपनाया नहीं। [12]पर जिन्होंने उसे अपनाया उन सबको उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया। [13]परमेश्वर की संतान के रूप में वह कुदरती तौर पर न तो लहू से पैदा हुआ था, न किसी शारीरिक इच्छा से और न ही माता–पिता की योजना से। बल्कि वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ।

[14]उस आदि शब्द ने देह धारण कर हमारे बीच निवास किया। हमने परम पिता के एकमात्र पुत्र के रूप में उसकी महिमा का दर्शन किया। वह करुणा और सत्य से पूर्ण था। [15]यूहन्ना ने उसकी साक्षी दी और पुकार कर कहा यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा था 'वह जो मेरे बाद आने वाला है, मुझसे महान है, मुझसे आगे है क्योंकि वह मुझसे पहले मौजूद था।'

[16]उसकी करुणा और सत्य की पूर्णता से हम सबने अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किये। [17]हमें व्यवस्था का विधान देने वाला मूसा था पर करुणा और सत्य हमें यीशु मसीह से मिले। [18]परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा किन्तु परमेश्वर के एकमात्र पुत्र ने, जो सदा परम पिता के साथ है उसे हम पर प्रकट किया।

यूहन्ना की यीशु के विषय में साक्षी

[19-20]जब यरूशलेम के यहूदियों ने उसके पास लेवियों और याजकों को यह पूछने के लिये भेजा "तुम कौन हो?" तो उसने साक्षी दी और बिना झिझक स्वीकार किया "मैं मसीह नहीं हूँ।"

[21]उन्होंने यूहन्ना से पूछा, "तो तुम कौन हो, क्या तुम एलिय्याह हो?"

यूहन्ना ने जवाब दिया, "नहीं, मैं वह नहीं हूँ।"

यहूदियों ने पूछा, "क्या तुम भविष्यवक्ता हो?"

उसने उत्तर दिया "नही।"

[22]फिर उन्होंने उससे पूछा, "तो तुम कौन हो? हमें बताओ ताकि जिन्होंने हमें भेजा है, उन्हें हम उत्तर दे सकें। तुम अपने विषय में क्या कहते हो?"

[23]यूहन्ना ने कहा:

> "मैं उसकी आवाज़ हूँ जो जंगल में
> पुकार रहा है:
> 'प्रभु के लिये सीधा रास्ता बनाओ'"
>
> *यशायाह 40:3*

शब्द मूल में यूनानी भाषा का शब्द है लोगोस जिसका अर्थ है संदेश। इसका अनुवाद सुसमाचार भी किया जा सकता है। यहाँ इसका अर्थ है–यीशु, यीशु एक रास्ता है जिसके द्वारा खुद परम पिता ने लोगों को अपने बारे में बताया।

[24]इन लोगों को फरीसियों ने भेजा था। [25]उन्होंने उससे पूछा, "यदि तुम न मसीह हो, न एलिय्याह हो, और न भविष्यवक्ता तो लोगों को बपतिस्मा क्यों देते हो?"

[26]उन्हें जवाब देते हुए यूहन्ना ने कहा, "मैं उन्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ। तुम्हारे ही बीच एक व्यक्ति है जिसे तुम लोग नहीं जानते। [27]यह वही है जो मेरे बाद आने वाला है। मैं उसके जूतों की तनियाँ खोलने लायक भी नहीं हूँ।"

[28]ये घटनाएँ यरदन के पार बैतनिय्याह में घटीं जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा दिया करता था।

[29]अगले दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी तरफ़ आते देखा और कहा, "परमेश्वर के मेमने को देखो जो जगत के पाप को हर ले जाता है। [30]यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा था, 'एक पुरुष मेरे पीछे आने वाला है जो मुझसे महान है, मुझसे आगे है क्योंकि वह मुझसे पहले विद्यमान था।' [31]मैं खुद उसे नहीं जानता था किन्तु मैं इसलिये बपतिस्मा देता आ रहा हूँ ताकि इस्राएल के लोग उसे जान लें।"

[32]फिर यूहन्ना ने अपनी यह साक्षी दी, "मैंनें देखा कि कबूतर के रूप में स्वर्ग से नीचे उतरती हुई आत्मा उस पर आ टिकी। [33]मैं खुद उसे नहीं जान पाया, पर जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने के लिये भेजा था मुझसे कहा, "तुम आत्मा को उतरते और किसी पर टिकते देखोगे, यह वही पुरुष है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देता है।' [34]मैंनें उसे देखा है और मैं प्रमाणित करता हूँ कि वह परमेश्वर का पुत्र है।"

यीशु के प्रथम अनुयायी

[35]अगले दिन यूहन्ना अपने दो चेलों के साथ वहाँ फिर उपस्थित था। [36]जब उसने यीशु को पास से गुजरते देखा, उसने कहा, "देखो परमेश्वर का मेमना।"

[37]जब उन दोनों चेलों ने उसे यह कहते सुना तो वे यीशु के पीछे चल पड़े। [38]जब यीशु ने मुड़कर देखा कि वे पीछे आ रहे हैं तो उनसे पूछा, "तुम्हें क्या चाहिये?"

उन्होंने जवाब दिया, "रब्बी, ("रब्बी" अर्थात् "गुरु") तेरा निवास कहाँ है?"

[39]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "आओ और देखो" और वे उसके साथ हो लिये। उन्होंने देखा कि वह कहाँ रहता है। उस दिन वे उसके साथ ठहरे क्योंकि लगभग शाम के चार बज चुके थे।

[40]जिन दोनों ने यूहन्ना की बात सुनी थी और यीशु के पीछे गये थे उनमें से एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। [41]उसने पहले अपने भाई शमौन को पाकर उससे कहा, "हमें मसीह: अर्थात् अभिषिक्त* मिल गया है।"

[42]फिर अन्द्रियास शमौन को यीशु के पास ले आया। यीशु ने उसे देखा और कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है। तू कैफ़ा (यानी 'पतरस') कहलायेगा।

[43]अगले दिन यीशु ने गलील जाने का निश्चय किया। फिर फिलिप्पुस को पाकर यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ।" [44]फिलिप्पुस अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा से था। [45]फिलिप्पुस को नतनएल मिला और उसने उससे कहा, "हमें वह मिल गया है जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्था के विधान में और भविष्यवक्ताओं ने लिखा है। वह है यूसुफ का बेटा, नासरत का यीशु।"

[46]फिर नतनएल ने उससे पूछा, "नासरत से भी कोई अच्छी वस्तु पैदा हो सकती है?"

फिलिप्पुस ने जवाब दिया, "जाओ और देखो।"

[47]यीशु ने नतनएल को अपनी तरफ आते हुए देखा और उसके बारे में कहा, "यह है एक सच्चा इस्राएली जिसमें कोई खोट नहीं है।"

[48]नतनएल ने पूछा, "तू मुझे कैसे जानता है?"

जवाब में यीशु ने कहा, "उससे पहले कि फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया था, मैंने देखा था कि तू अंजीर के पेड़ के नीचे था।"

[49]नतनएल ने उत्तर में कहा, "हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है, तू इस्राएल का राजा है।"

[50]इसके जवाब में यीशु ने कहा, "तुम इसलिये विश्वास कर रहे हो कि मैंने तुमसे यह कहा कि मैंनें तुम्हें अंजीर के पेड़ तले देखा। तुम आगे इससे भी बड़ी बातें देखोगे।" [51]इसने उससे फिर कहा, "मैं तुम्हें सत्य बता रहा हूँ तुम स्वर्ग को खुलते और स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र पर उतरते–चढ़ते देखोगे।"

काना में विवाह

2 गलील के काना में तीसरे दिन किसी के यहाँ विवाह था। यीशु की माँ भी मौजूद थी। [2]शादी में यीशु और उसके शिष्यों को भी बुलाया गया था। [3]वहाँ जब दाखरस

अभिषिक्त मूल में ख्रीष्ट

खत्म हो गया, तो यीशु की माँ ने कहा, "उनके पास अब और दाखरस नहीं है।"

[4]यीशु ने उससे कहा, "यह तू मुझसे क्यों कह रही है? मेरा समय अभी नहीं आया।"

[5]फिर उसकी माता ने सेवकों से कहा, "वही करो जो तुमसे यह कहता है।" [6]वहाँ पानी भरने के पत्थरे के छह मटके रखे थे। ये मटके वैसे ही थे जैसे यहूदी पवित्र स्नान के लिये काम में लाते थे। हर मटके में कोई बीस से तीस गैलन तक पानी आता था।

[7]यीशु ने सेवकों से कहा, "मटकों को पानी से भर दो।" और सेवकों ने मटकों को लबालब भर दिया।

[8]फिर उसने उनसे कहा, "अब थोड़ा बाहर निकालो, और दावत का इन्तज़ाम कर रहे प्रधान के पास उसे ले जाओ।" और वे उसे ले गये।

[9]फिर दावत के प्रबन्धकर्त्ता ने उस पानी को चखा जो दाखरस बन गया था। उसे पता ही नहीं चला कि वह दाखरस कहाँ से आया। पर उन सेवकों को इसका पता था जिन्होंने पानी निकाला था। फिर दावत के प्रबन्धक ने दूल्हे को बुलाया [10]और उससे कहा, "हर कोई पहले–बढ़िया दाखरस परोसता है और जब मेहमान काफ़ी तृप्त हो चुकते हैं तो फिर घटिया। पर तुमने तो उत्तम दाखरस अब तक बचा रखा है।"

[11]यीशु ने गलील के काना में यह पहला आश्चर्यकर्म करके अपनी महिमा प्रकट की। जिससे उसके शिष्यों ने उसमें विश्वास किया।

यीशु मन्दिर में

[12]इसके बाद यीशु अपनी माता, भाइयों और शिष्यों के साथ कफ़रनहूम चला गया जहाँ वे कुछ दिन ठहरे। [13]यहूदियों का फ़सह पर्व नज़दीक था। इसलिये यीशु यरूशलेम चला गया। [14]वहाँ मन्दिर में यीशु ने देखा कि लोग मवेशियों, भेड़ों और कबूतरों की बिक्री कर रहे हैं और सिक्के बदलने वाले सौदागर अपनी गद्दियों पर बैठे हैं। [15]इसलिए उसने रस्सियों का एक कोड़ा बनाया और सबको, मवेशियों और भेड़ों समेत, बाहर खदेड़ दिया। मुद्रा बदलने वालों के सिक्के उड़ेल दिये और उनकी चौकियाँ पलट दीं। [16]कबूतर बेचने वालों से उसने कहा, "इन्हें यहाँ से बाहर ले जाओ। मेरे परमपिता के घर को बाजार मत बनाओ।"

[17]इस पर उसके शिष्यों को याद आया कि शास्त्रों में लिखा है:

"तेरे घर के लिये मेरी लगन मुझे खा डालेगी।"
भजन संहिता 69:9

[18]जवाब में यहूदियों ने यीशु से कहा, "तू हमें कौन सा अद्भुत चिह्न दिखा सकता है, जिससे तू जो कुछ कर रहा है, उसका तू अधिकारी है यह साबित हो सके?"

[19]यीशु ने उन्हें जवाब में कहा, "इस मन्दिर को गिरा दो और मैं तीन दिन के भीतर इसे फिर बना दूँगा।"

[20]इस पर यहूदी बोले, "इस मन्दिर को बनाने में छियालीस साल लगे थे, और तू इसे तीन दिन में बनाने जा रहा है?"

[21](किन्तु अपनी बात में जिस मन्दिर की चर्चा यीशु ने की थी वह उसका अपना ही शरीर था। [22]आगे चलकर जब वह मौत के बाद फिर जी उठा तो उसके अनुयायियों को याद आया कि यीशु ने यह कहा था, और शास्त्रों पर और यीशु के शब्दों पर विश्वास किया।)

[23]फ़सह के त्योहार के दिनों जब यीशु यरूशलेम में था, बहुत से लोगों ने उसके अद्भुत चिह्नों और कर्मों को देखकर उसमें विश्वास किया। [24]किन्तु यीशु ने अपने आपको उनके भरोसे नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब लोगों को जानता था। [25]उसे इस बात की कोई जरूरत नहीं थी कि कोई आकर उसे लोगों के बारे में बताए, क्योंकि लोगों के मन में क्या है, इसे वह जानता था।

यीशु और नीकुदेमुस

3 वहाँ फरीसियों का एक आदमी था जिसका नाम था नीकुदेमुस। वह यहूदियों का नेता था। [2]वह यीशु के पास रात में आया और उससे बोला, "हे गुरु, हम जानते हैं कि तू गुरु है और परमेश्वर की ओर से आया है, क्योंकि ऐसे आश्चर्यकर्म जैसे तू करता है परमेश्वर की सहायता के बिना कोई नहीं कर सकता।"

[3]जवाब में यीशु ने उससे कहा, "सत्यसत्य, मैं तुम्हें बताता हूँ, यदि कोई व्यक्ति नये सिरे से जन्म न ले तो वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।"

[4]नीकुदेमुस ने उससे कहा, "कोई आदमी बूढ़ा हो जाने के बाद फिर जन्म कैसे ले सकता है? निश्चय ही वह अपनी माँ की कोख में प्रवेश करके दुबारा तो जन्म ले नहीं सकता!"

[5]यीशु ने जवाब दिया, "सच्चाई तुम्हें मैं बताता हूँ। यदि कोई आदमी जल और आत्मा से जन्म नहीं लेता तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं पा सकता। [6]माँस से केवल माँस ही पैदा होता है; और जो आत्मा से उत्पन्न हो वह आत्मा है। [7]मैंने तुमसे जो कहा है उस पर आश्चर्य मत करो, 'तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना ही होगा।' [8]हवा जिधर चाहती है, उधर बहती है। तुम उसकी आवाज़ सुन सकते हो। किन्तु तुम यह नहीं जान सकते कि वह कहाँ से आ रही है, और कहाँ को जा रही है। आत्मा से जन्म हुआ हर व्यक्ति भी ऐसा ही है।"

[9]जवाब में नीकुदेमुस ने उससे कहा, "यह कैसे हो सकता है?"

[10]यीशु ने उसे जवाब देते हुए कहा, "तुम इस्राएलियों के गुरु हो फिर भी यह नहीं जानते? [11]मैं तुम्हें सच्चाई बताता हूँ, हम जो जानते हैं, वही बोलते हैं। और वही बताते हैं जो हमने देखा है, पर तुम लोग जो हम कहते हैं उसे स्वीकार नहीं करते। [12]मैंने तुम्हें धरती की बातें बतायीं और तुमने उन पर विश्वास नहीं किया इसलिये अगर मैं स्वर्ग की बातें बताऊँ तो तुम उन पर कैसे विश्वास करोगे? [13]स्वर्ग में ऊपर कोई नहीं गया, सिवाय उसके, जो स्वर्ग से उतर कर आया है–यानी मानव–पुत्र।

[14]"जैसे मूसा ने रेगिस्तान में साँप को ऊपर उठा लिया था, वैसे ही मानव–पुत्र भी ऊपर उठा लिया जायेगा [15]ताकि वे सब जो उसमें विश्वास करते हैं, अनन्त जीवन पा सकें।"

[16]परमेश्वर को जगत से इतना प्रेम था कि उसने अपने एकमात्र पुत्र को दे दिया, ताकि हर वह आदमी जो उसमें विश्वास रखता है, नष्ट न हो जाये बल्कि उसे अनन्त जीवन मिल जाये। [17]परमेश्वर ने अपने बेटे को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि वह दुनिया को अपराधी ठहराये बल्कि उसे इसलिये भेजा कि उसके द्वारा दुनिया का उद्धार हो। [18]जो उसमें विश्वास रखता है उसे दोषी न ठहराया जाय पर जो उसमें विश्वास नहीं रखता, उसे दोषी ठहराया जा चुका है क्योंकि उसने परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के नाम में विश्वास नहीं रखा है। [19]इस निर्णय का आधार यह है कि ज्योति इस दुनिया में आ चुकी है पर ज्योति के बजाय लोग अंधेरे को अधिक महत्त्व देते हैं। क्योंकि उनके कार्य बुरे हैं। [20]हर वह आदमी जो पाप करता है ज्योति से घृणा रखता है और ज्योति के नज़दीक नहीं आता ताकि उसके पाप उजागर न हो जायें। [21]पर वह जो सत्य पर चलता है, ज्योति के निकट आता है ताकि यह प्रकट हो जाये कि उसके कर्म परमेश्वर के द्वारा कराये गये हैं।

यूहन्ना द्वारा यीशु का बपतिस्मा

[22]इसके बाद यीशु अपने अनुयायियों के साथ यहूदिया के इलाके में चला गया। वहाँ उनके साथ ठहर कर, वह लोगों को बपतिस्मा देने लगा। [23]वहीं शालेम के पास ऐनोन में यूहन्ना भी बपतिस्मा दिया करता था क्योंकि वहाँ पानी बहुतायत में था। लोग वहाँ आते और बपतिस्मा लेते थे। [24](यूहन्ना को अभी तक बंदी नहीं बनाया गया था।)

[25]अब यूहन्ना के कुछ शिष्यों और एक यहूदी के बीच स्वच्छताकरण को लेकर बहस छिड़ गयी। [26]इसलिये वे यूहन्ना के पास आये और बोले, "हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन के उस पार तेरे साथ था और जिसके बारे में तूने बताया था, वही लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, और हर आदमी उसके पास जा रहा है।"

[27]जवाब में यूहन्ना ने कहा, "किसी आदमी को तब तक कुछ नहीं मिल सकता जब तक वह उसे स्वर्ग से न दिया गया हो। [28]तुम सब गवाह हो कि मैंने कहा था 'मैं मसीह नहीं हूँ' बल्कि मैं तो उससे पहले भेजा गया हूँ। [29]दूल्हा वही है जिसे दुल्हन मिलती है। पर दूल्हे का मित्र जो खड़ा रहता है और उसकी अगुवाई में जब दूल्हे की आवाज़ को सुनता है, तो बहुत खुश होता है। मेरी यही खुशी अब पूरी हुई है। [30]अब निश्चित है कि उसकी महिमा बढ़े और मेरी घटे!

वह जो स्वर्ग से उतरा

[31]"जो ऊपर से आता है वह सबसे महान् है। वह जो धरती से है, धरती से जुड़ा है। इसलिये वह धरती की ही बातें करता है। जो स्वर्ग से उतरा है, सबके ऊपर है; [32]उसने जो कुछ देखा है, और सुना है, वह उसकी साक्षी देता है पर उसकी साक्षी को कोई ग्रहण नहीं करना चाहता। [33]जो उसकी साक्षी को मानता है वह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर सच्चा है। [34]क्योंकि वह, जिसे परमेश्वर ने भेजा है, परमेश्वर की ही बातें बोलता है। क्योंकि परमेश्वर ने उसे आत्मा का अनन्त दान दिया है। [35]पिता अपने पुत्र को प्यार करता है। और उसी के हाथों

में उसने सब कुछ सौंप दिया है। 36इसलिए वह जो उसके पुत्र में विश्वास करता है अनन्त जीवन पाता है पर वह जो परमेश्वर के पुत्र की बात नहीं मानता उसे वह जीवन नहीं मिलेगा। इसके बजाय उस पर परम पिता परमेश्वर का क्रोध बना रहेगा।"

यीशु और सामरी स्त्री

4 जब यीशु को पता चला कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु यूहन्ना से अधिक लोगों को बपतिस्मा दे रहा है और उन्हें शिष्य बना रहा है 2(यद्यपि यीशु स्वयं बपतिस्मा नहीं दे रहा था बल्कि यह उसके शिष्य कर रहे थे।) 3तो वह यहूदिया को छोड़कर एक बार फिर वापस गलील चला गया। 4इस बार उसे सामरिया होकर जाना पड़ा।

5इसलिये वह सामरिया के एक नगर सूखार में आया। यह नगर उस भूमि के पास था जिसे याकूब ने अपने बेटे यूसुफ को दिया था। 6वहाँ याकूब का कुआँ था। यीशु इस यात्रा में बहुत थक गया था इसलिये वह कुएँ के पास बैठ गया। समय लगभग दोपहर का था। 7एक सामरी स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उससे कहा, "मुझे जल दे।" 8(शिष्य लोग भोजन खरीदने के लिए नगर में गये हुए थे।) 9सामरी स्त्री ने उससे कहा, "तू यहूदी होकर भी मुझसे पीने के लिए जल क्यों माँग रहा है मैं तो एक सामरी स्त्री हूँ?" (यहूदी तो सामरियों से कोई सम्बन्ध नहीं रखते।) 10उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "यदि तू केवल इतना जानती कि परमेश्वर ने क्या दिया है और वह कौन है जो तुझसे कह रहा है 'मुझे जल दे' तो तू उससे माँगती और वह तुझे स्वच्छ जीवन–जल प्रदान करता।"

11स्त्री ने उससे कहा, "हे महाशय, तेरे पास तो कोई बर्तन तक नहीं है और कुआँ बहुत गहरा है फिर तेरे पास जीवन–जल कैसे हो सकता है? निश्चय तू हमारे पूर्वज याकूब से बड़ा है 12जिसने हमें यह कुआँ दिया और अपने बच्चों और मवेशियों के साथ खुद इसका जल पिया था।"

13उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "हर एक जो इस कुएँ का पानी पीता है, उसे फिर प्यास लगेगी 14किन्तु वह जो उस जल को पियेगा, जिसे मैं दूँगा, फिर कभी प्यासा नहीं रहेगा। बल्कि मेरा दिया हुआ जल उसके अन्तर में एक पानी के झरने का रूप ले लेगा जो उमड़–घुमड़ कर उसे अनन्त जीवन प्रदान करेगा।"

15तब उस स्त्री ने उससे कहा, "हे महाशय, मुझे वह जल प्रदान कर ताकि मैं फिर कभी प्यासी न रहूँ और मुझे यहाँ पानी खेंचने न आना पड़े।"

16इस पर यीशु ने उससे कहा, "जाओ अपने पति को बुलाकर यहाँ ले आओ।"

17उत्तर में स्त्री ने कहा, "मेरा कोई पति नहीं है।"

यीशु ने उससे कहा, "जब तुम यह कहती हो कि तुम्हारा कोई पति नहीं है तो तुम ठीक ही कहती हो। 18तुम्हारे पाँच पति थे और तुम अब जिस पुरुष के साथ रहती हो वह भी तुम्हारा पति नहीं है इसलिये तुमने जो कहा है सच कहा है।"

19इस पर स्त्री ने उससे कहा, "महाशय, मुझे तो लगता है कि तू अन्तर्यामी है। 20हमारे पूर्वजों ने इस पर्वत पर आराधना की है पर तू कहता है कि यरूशलेम ही आराधना की जगह है।"

21यीशु ने उससे कहा, "हे स्त्री, मेरा विश्वास कर। समय आ रहा है जब तुम परमपिता की आराधना न इस पर्वत पर करोगे और न यरूशलेम में। 22तुम सामरी लोग उसे नहीं जानते जिसकी आराधना करते हो। पर हम यहूदी उसे जानते हैं जिसकी आराधना करते हैं। क्योंकि उद्धार यहूदियों से ही है। 23पर समय आ रहा है और आ ही गया है जब सच्चे उपासक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई में करेंगे। परम पिता ऐसा ही उपासक चाहता है। 24परमेश्वर आत्मा है और इसीलिए जो उसकी आराधना करें उन्हें आत्मा और सच्चाई में ही उसकी आराधना करनी होगी।"

25फिर स्त्री ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह यानी ख्रीष्ट आने वाला है। जब वह आयेगा तो हमें सब कुछ बताएगा।"

26यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुझसे बात कर रहा हूँ, वही हूँ।"

27तभी उसके शिष्य वहाँ लौट आये। और उन्हें यह देखकर सचमुच बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह एक स्त्री से बातचीत कर रहा है। पर किसी ने भी उससे कुछ कहा नहीं, "तुझे इस स्त्री से क्या लेना है या तू इससे बातें क्यों कर रहा है?"

[28]वह स्त्री अपने पानी भरने के घड़े को वहीं छोड़कर नगर में वापस चली गयी और लोगों से बोली, [29]"आओ और देखो, एक ऐसा पुरुष है जिसने, मैंने जो कुछ किया है, वह सब कुछ मुझे बता दिया। क्या तुम नहीं सोचते कि वह मसीह हो सकता है?" [30]इस पर लोग नगर छोड़कर यीशु के पास जा पहुँचे।

[31]इसी समय यीशु के शिष्य उससे विनती कर रहे थे, "हे रब्बी, कुछ खा ले।"

[32]पर यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पास खाने के लिए ऐसा भोजन है जिसके बारे में तुम कुछ भी नहीं जानते।"

[33]इस पर उसके शिष्य आपस में एक दूसरे से पूछने लगे, "क्या कोई उसके खाने के लिए कुछ लाया होगा?"

[34]यीशु ने उनसे कहा, "मेरा भोजन उसकी इच्छा को पूरा करना है जिसने मुझे भेजा है। और उस काम को पूरा करना है जो मुझे सौंपा गया है। [35]तुम अक्सर कहते हो, 'चार महीने और हैं तब फ़सल आयेगी 'देखो मैं तुम्हें बताता हूँ अपनी आँखें खोलो और खेतों की तरफ़ देखो वे कटने के लिए तैयार हो चुके हैं। वह जो कटाई कर रहा है, अपनी मज़दूरी पा रहा है। [36]और अनन्त जीवन के लिये फसल इकट्ठी कर रहा है। ताकि फ़सल बोने वाला और काटने वाला दोनों ही साथ–साथ आनन्दित हो सकें। [37]यह कथन वास्तव में सच है। एक व्यक्ति बोता है और दूसरा व्यक्ति काटता है। [38]मैंने तुम्हें उस फसल को काटने भेजा है जिस पर तुम्हारी मेहनत नहीं लगी है। जिस पर दूसरों ने मेहनत की है और उनकी मेहनत का फल तुम्हें मिला है।"

[39]उस नगर के बहुत से सामरियों ने यीशु में विश्वास किया क्योंकि उस स्त्री के उन शब्दों को उन्होंने साक्षी माना था कि, "मैंने जब कभी जो कुछ किया उसने मुझे उसके बारे में सब कुछ बता दिया।" [40]जब सामरी उसके पास आये तो उन्होंने उससे उनके साथ ठहरने के लिए विनती की। इस पर वह दो दिन के लिए वहाँ ठहरा। [41]और उसके वचन से प्रभावित होकर बहुत से और लोग भी उसके विश्वासी हो गये।

[42]उन्होंने उस स्त्री से कहा, "अब हम केवल तुम्हारी साक्षी के कारण ही विश्वास नहीं रखते बल्कि अब हमने स्वयं उसे सुना है। और अब हम यह जान गये हैं कि वास्तव में यही वह व्यक्ति है जो जगत् का उद्धारकर्त्ता है।"

राजकर्मचारी के बेटे को जीवन–दान

[43]दो दिन बाद वह वहाँ से गलील को चल पड़ा। [44](क्योंकि यीशु ने खुद कहा था कि कोई नबी अपने ही देश में कभी आदर नहीं पाता है।) [45]इस तरह जब वह गलील आया तो गलीलियों ने उसका स्वागत किया क्योंकि उन्होंने वह सब कुछ देखा था जो उसने यरूशलेम में पर्व के दिनों किया था। (क्योंकि वे सब भी इस पर्व में शामिल थे।)

[46]यीशु एक बार फिर गलील में काना गया जहाँ उसने पानी को दाखरस में बदला था। अब की बार कफ़रनहूम में एक राजा का अधिकारी था जिसका बेटा बीमार था। [47]जब राजाधिकारी ने सुना कि यहूदिया से यीशु गलील आया है तो वह उसके पास आया और विनती की कि वह कफ़रनहूम जाकर उसके बेटे को अच्छा कर दे। क्योंकि उसका बेटा मरने को पड़ा था। [48]यीशु ने उससे कहा, "अद्भुत संकेत और आश्चर्यकर्म देखे बिना तुम लोग विश्वासी नहीं बनोगे।"

[49]राजाधिकारी ने उससे कहा, "महोदय, इससे पहले कि मेरा बच्चा मर जाये, मेरे साथ चल।"

[50]यीशु ने उत्तर में कहा, "जा तेरा पुत्र जीवित रहेगा।"

यीशु ने जो कुछ कहा था, उसने उस पर विश्वास किया और घर चल दिया। [51]वह घर लौटते हुए अभी रास्ते में ही था कि उसे उसके नौकर मिले और उसे समाचार दिया कि उसका बच्चा ठीक हो गया।

[52]उसने पूछा, "सही हालत किस समय से ठीक होना शुरू हुई थी?"

उन्होंने जवाब दिया, "कल दोपहर एक बजे उसका बुखार उतर गया था।"

[53]बच्चे के पिता को ध्यान आया कि यह ठीक वही समय था जब यीशु ने उससे कहा था, "तेरा पुत्र जीवित रहेगा।" इस तरह अपने सारे परिवार के साथ वह विश्वासी हो गया।

[54]यह दूसरा अद्भुत चिह्न था जो यीशु ने यहूदियों को गलील आने पर दर्शाया।

तालाब पर ला–इलाज रोगी का ठीक होना

5 इसके बाद यीशु यहूदियों के एक उत्सव में यरूशलेम गया। [2]यरूशलेम में भेड़–द्वार के पास एक तालाब है, इब्रानी भाषा में इसे 'बैतहसदा' कहा जाता है। इसके

किनारे पाँच बरामदे बने हैं [3]जिनमें नेत्रहीन, अपंग और लकवे के बीमारों की भीड़ पड़ी रहती है। ["लोग पानी के हिलने की प्रतिक्षा मे थे। [4]कभी कभी प्रभु का दूत जलाशय पर उतरता और जल को हिलाता। स्वर्गदूत के ऐसा करने पर जलाशय में जाने वाला पहला व्यक्ति अपने सभी रोगों से छुटकारा पा जाता।"]* [5]इन रोगियों में एक ऐसा मरीज़ भी था जो अड़तीस वर्ष से बीमार था। [6]जब यीशु ने उसे वहाँ लेटे देखा और यह जाना कि वह इतने लम्बे समय से बीमार है तो यीशु ने उससे कहा, "क्या तुम नीरोग होना चाहते हो?" [7]रोगी ने जवाब दिया, "हे प्रभु, मेरे पास कोई नहीं है जो जल के हिलने पर मुझे तालाब में उतार दे। जब मैं तालाब में जाने को होता हूँ, सदा कोई दूसरा आदमी मुझसे पहले उसमें उतर जाता है।"

[8]यीशु ने उससे कहा, "खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और चल पड़।" [9]वह आदमी तत्काल अच्छा हो गया। उसने अपना बिस्तर उठाया और चल दिया। उस दिन सब्त का दिन था [10]इस पर यहूदियों ने उससे, जो नीरोग हुआ था, कहना शुरू किया, "आज सब्त का दिन है और हमारे नियमों के यह विरुद्ध है कि तू अपना बिस्तर उठाए।"

[11]इस पर उसने जवाब दिया, "जिसने मुझे अच्छा किया है उसने कहा है कि अपना बिस्तर उठा और चल।"

[12]उन लोगों ने उससे पूछा, "वह कौन व्यक्ति है जिसने तुझसे कहा था, अपना बिस्तर उठा और चल?"

[13]पर वह व्यक्ति जो ठीक हुआ था, नहीं जानता था कि वह कौन था क्योंकि उस जगह बहुत भीड़ थी और यीशु वहाँ से चुपचाप चला गया था।

[14]इसके बाद यीशु ने उस व्यक्ति को मंदिर में देखा और उससे कहा, "देखो, अब तुम नीरोग हो, इसलिये पाप करना बन्द कर दो। नहीं तो कोई और बड़ा कष्ट तुम पर आ सकता है।" फिर वह व्यक्ति चला गया। [15]और यहूदियों से आकर उसने कहा कि उसे ठीक करने वाला यीशु था।

[16]क्योंकि यीशु ने ऐसे काम सब्त के दिन किये थे इसलिए यहूदियों ने उसे सताना शुरू कर दिया। [17]यीशु ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा, "मेरा पिता कभी काम बंद नहीं करता, इसीलिए मैं भी निरन्तर काम करता हूँ।" इसलिये यहूदी उसे मार डालने का और अधिक प्रयत्न करने लगे। [18]न केवल इसलिये कि वह सब्त को तोड़ रहा था बल्कि वह परमेश्वर को अपना पिता भी कहता था। और इस तरह अपने आपको परमेश्वर के समान ठहराता था।

यीशु की साक्षी

[19]उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें सच्चाई बताता हूँ, कि पुत्र स्वयं अपने आप कुछ नहीं कर सकता है। वह केवल वही करता है जो पिता को करते देखता है। पिता जो कुछ करता है पुत्र भी वैसे ही करता है। [20]पिता पुत्र को प्रेम करता है और वह सब कुछ उसे दिखाता है, जो वह करता है। उन कामों से भी और बड़ी-बड़ी बातें वह उसे दिखायेगा। तब तुम सब आश्चर्य करोगे। [21]जैसे पिता मृतकों को उठाकर उन्हें जीवन देता है। [22]पिता किसी का भी न्याय नहीं करता किन्तु उसने न्याय करने का अधिकार बेटे को दे दिया है। [23]जिससे सभी लोग पुत्र का आदर वैसे ही करें जैसे वे पिता का करते हैं। जो व्यक्ति पुत्र का आदर नहीं करता वह उस पिता का भी आदर नहीं करता जिसने उसे भेजा है।

[24]"मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जो मेरे वचन को सुनता है और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है, वह अनन्त जीवन पाता है। न्याय का दण्ड उस पर नहीं पड़ेगा। इसके विपरीत वह मृत्यु से जीवन में प्रवेश पा जाता है। [25]मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ कि वह समय आने वाला है बल्कि आ ही चुका है-जब वे, जो मर चुके हैं, परमेश्वर के पुत्र का वचन सुनेंगे और जो उसे सुनेंगे वे जीवित हो जायेंगे क्योंकि जैसे पिता जीवन का स्रोत है [26]वैसे ही उसने अपने पुत्र को भी जीवन का स्रोत बनाया है। [27]और उसने उसे न्याय करने का अधिकार दिया है। क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है। [28]इस पर आश्चर्य मत करो कि वह समय आ रहा है जब वे सब जो अपनी कब्रों में हैं, उसका वचन सुनेंगे [29]और बाहर आ जायेंगे। जिन्होंने अच्छे काम किये हैं वे पुनरुत्थान पर जीवन पाएँगे पर जिन्होंने बुरे काम किये हैं उन्हें पुनरुत्थान पर दण्ड दिया जायेगा।

लोग पानी ... पा जाता कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

यीशु का यहूदियों से कथन

[30]"मैं स्वयं अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता। मैं परमेश्वर से जो सुनता हूँ उसी के आधार पर न्याय करता हूँ और मेरा न्याय उचित है क्योंकि मैं अपनी इच्छा से कुछ नहीं करता बल्कि उसकी इच्छा से करता हूँ जिसने मुझे भेजा है।

[31]"यदि मैं अपनी तरफ से साक्षी दूँ तो मेरी साक्षी सत्य नहीं है। [32]मेरी ओर से साक्षी देने वाला एक और है। और मैं जानता हूँ कि मेरी ओर से जो साक्षी वह देता है, सत्य है।

[33]"तुमने लोगों को यूहन्ना के पास भेजा और उसने सत्य की साक्षी दी। [34]मैं मनुष्य की साक्षी पर निर्भर नहीं करता बल्कि यह मैं इसलिए कहता हूँ जिससे तुम्हारा उद्धार हो सके। [35]यूहन्ना उस दीपक की तरह था जो जलता है और प्रकाश देता है। और तुम कुछ समय के लिए उसके प्रकाश का आनन्द लेना चाहते थे।

[36]"पर मेरी साक्षी यूहन्ना की साक्षी से बड़ी है क्योंकि परम पिता ने जो काम पूरे करने के लिए मुझे सौंपे हैं, मैं उन्हीं कामों को कर रहा हूँ और वे काम ही मेरी साक्षी हैं कि परम पिता ने मुझे भेजा है। [37]परम पिता ने जिसने मुझे भेजा है, मेरी साक्षी दी है। तुम लोगों ने उसका वचन कभी नहीं सुना और न तुमने उसका रूप देखा है। [38]और न ही तुम अपने भीतर उसका संदेश धारण करते हो। क्योंकि तुम उसमें विश्वास नहीं रखते हो जिसे परम पिता ने भेजा है। [39]तुम शास्त्रों का अध्ययन करते हो क्योंकि तुम्हारा विचार है कि तुम्हें उनके द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त होगा। किन्तु ये सभी शास्त्र मेरी ही साक्षी देते हैं। [40]फिर भी तुम जीवन प्राप्त करने के लिये मेरे पास नहीं आना चाहते। [41]"मैं मनुष्य द्वारा की गयी प्रशंसा पर निर्भर नहीं करता। [42]किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम्हारे भीतर परमेश्वर का प्रेम नहीं है। [43]मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ फिर भी तुम मुझे स्वीकार नहीं करते किन्तु यदि कोई और अपने ही नाम से आए तो तुम उसे स्वीकार कर लोगे। [44]तुम मुझमें विश्वास कैसे कर सकते हो, क्योंकि तुम तो आपस में एक दूसरे से प्रशंसा स्वीकार करते हो। उस प्रशंसा की तरफ देखते तक नहीं जो एकमात्र परमेश्वर से आती है। [45]ऐसा मत सोचो कि मैं परम पिता के आगे तुम्हें दोषी ठहराऊँगा। जो तुम्हें दोषी सिद्ध करेगा वह तो मूसा होगा जिस पर तुमने अपनी आशाएँ टिकाई हुई हैं। यदि तुम वास्तव में मूसा में विश्वास करते [46]तो तुम मुझमें भी विश्वास करते क्योंकि उसने मेरे बारे में लिखा है। [47]जब तुम, जो उसने लिखा है उसी में विश्वास नहीं करते, तो मेरे वचन में विश्वास कैसे करोगे?"

पाँच हजार से अधिक को भोजन

6 इसके बाद यीशु गलील की झील यानी तिबिरियास के उस पार चला गया। [2]और उसके पीछे-पीछे एक अपार भीड़ चल दी क्योंकि उन्होंने रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान करने में अद्भुत चिह्न देखे थे। [3]यीशु पहाड़ पर चला गया और वहाँ अपने अनुयायियों के साथ बैठ गया। [4]यहूदियों का फ़सह पर्व निकट था।

[5]जब यीशु ने आँख उठाई और देखा कि एक विशाल भीड़ उसकी तरफ़ आ रही है तो उसने फिलिप्पुस से पूछा, "इन सब लोगों को भोजन कराने के लिए रोटी कहाँ से खरीदी जा सकती है?" [6](यीशु ने यह बात उसकी परीक्षा लेने के लिए कही थी क्योंकि वह तो जानता ही था कि वह क्या करने जा रहा है।)

[7]फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, "दो सौ चाँदी के सिक्कों से भी इतनी रोटियाँ नहीं ख़रीदी जा सकती हैं जिनमें से हर आदमी को एक निवाले से थोड़ा भी ज़्यादा मिल सके। [8]यीशु के एक दूसरे शिष्य शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने कहा, [9]यहाँ एक छोटे लड़के के पास पाँच जौ की रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं पर इतने सारे लोगों में इतने से क्या होगा।"

[10]यीशु ने उत्तर दिया, "लोगों को बैठाओ।" उस स्थान पर अच्छी खासी घास थी इसलिये लोग वहाँ बैठ गये। ये लोग लगभग पाँच हजार पुरुष थे [11]फिर यीशु ने रोटियाँ लीं और धन्यवाद देने के बाद जो वहाँ बैठे थे उनको परोस दीं। इसी तरह जितनी वे चाहते थे, उतनी मछलियाँ भी उन्हें दे दीं।

[12]जब उन के पेट भर गये यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जो टुकड़े बचे हैं, उन्हें इकट्ठा कर लो ताकि कुछ बेकार न जाये।" [13]फिर शिष्यों ने लोगों को परोसी गयी जौ की उन पाँच रोटियों के बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरीं।

[14]यीशु के इस आश्चर्यकर्म को देखकर लोग कहने लगे, "निश्चय ही यह व्यक्ति वही नबी है जिसे इस जगत् में आना है।"

[15]यीशु यह जानकर कि वे लोग आने वाले हैं और उसे ले जाकर राजा बनाना चाहते हैं, अकेला ही पर्वत पर चला गया।

यीशु का पानी पर चलना

[16]जब शाम हुई उसके शिष्य झील पर गये [17]और एक नाव में बैठकर वापस झील के पार कफरनहूम की तरफ़ चल पड़े। अँधेरा काफ़ी हो चला था किन्तु यीशु अभी भी उनके पास नहीं लौटा था। [18]तूफ़ानी हवा के कारण झील में लहरें तेज़ होने लगी थीं। [19]जब वे कोई पाँच-छः किलोमीटर आगे निकल गये, उन्होंने देखा कि यीशु झील पर चल रहा है और नाव के पास आ रहा है। इससे वे डर गये। [20]किन्तु यीशु ने उनसे कहा, "यह मैं हूँ, डरो मत।" [21]फिर उन्होंने तत्परता से उसे नाव में चढ़ा लिया। और नाव शीघ्र ही वहाँ पहुँच गयी जहाँ उन्हें जाना था।

यीशु की ढूँढ

[22]अगले दिन लोगों की उस भीड़ ने जो झील के उस पार रह गयी थी, देखा कि वहाँ सिर्फ एक नाव थी और अपने चेलों के साथ यीशु उस पर सवार नहीं हुआ था, बल्कि उसके शिष्य ही अकेले रवाना हुए थे। [23]तिबिरियास की कुछ नावें उस स्थान के पास आकर रुकीं, जहाँ उन्होंने प्रभु के धन्यवाद देने के बाद रोटी खायी थी। [24]इस तरह जब उस भीड़ ने देखा कि न तो वहाँ यीशु है और न ही उसके शिष्य तो वे नावों पर सवार हो गये और यीशु को ढूँढते हुए कफरनहूम की तरफ चल पड़े।

[25]जब उन्होंने यीशु को झील के उस पार पाया तो उससे कहा, "हे रब्बी, तू यहाँ कब आया?" [26]उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ, तुम मुझे इसलिये नहीं खोज रहे हो कि तुमने आश्चर्यपूर्ण चिह्न देखे हैं बल्कि इसलिए कि तुमने भर पेट रोटी खायी थी। [27]उस खाने के लिये परिश्रम मत करो जो सड़ जाता है बल्कि उसके लिये जतन करो जो सदा उत्तम बना रहता है और अनन्त जीवन देता है, जिसे तुम्हें मानव-पुत्र देगा। क्योंकि परम पिता परमेश्वर ने अनुमोदन की अपनी मोहर उसी पर लगायी है।"

[28]लोगों ने उससे पूछा, "जिन कामों को परमेश्वर चाहता है, उन्हें करने के लिए हम क्या करें?"

[29]उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "परमेश्वर जो चाहता है, वह यह है कि जिसे उसने भेजा है उस पर विश्वास करो।"

[30]लोगों ने पूछा, "तू कौन से आश्चर्य चिन्ह प्रकट करेगा जिन्हें हम देखें और तुझमें विश्वास करें? तू क्या कार्य करेगा? [31]हमारे पूर्वजों ने रेगिस्तान में मन्ना खाया था जैसा कि पवित्र शास्त्रों में लिखा है। उसने उन्हें खाने के लिए, स्वर्ग से रोटी दी।"

[32]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ वह मूसा नहीं था जिसने तुम्हें खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी थी बल्कि यह मेरा पिता है जो तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देता है। [33]वह रोटी जिसे परम पिता देता है वह स्वर्ग से उतरी है और जगत को जीवन देती है।"

[34]लोगों ने उससे कहा, "हे प्रभु, अब हमें वह रोटी दे और सदा देता रह।"

[35]यीशु ने उनसे कहा, "मैं ही वह रोटी हूँ जो जीवन देती है। जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा नहीं रहेगा और जो मुझमें विश्वास करता है कभी भी प्यासा नहीं रहेगा। [36]मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि तुमने मुझे देख लिया है, फिर भी तुम मुझमें विश्वास नहीं करते। हर वह व्यक्ति जिसे परम पिता ने मुझे सौंपा है, मेरे पास आयेगा [37]जो मेरे पास आता है, मैं उसे कभी नहीं लौटाऊँगा। [38]क्योंकि मैं स्वर्ग से अपनी इच्छा के अनुसार काम करने नहीं आया हूँ बल्कि उसकी इच्छा पूरी करने आया हूँ जिसने मुझे भेजा है। [39]और मुझे भेजने वाले की यही इच्छा है कि मैं जिनको परमेश्वर ने मुझे सौंपा है, उनमें से किसी को भी न खोऊँ और अन्तिम दिन उन सबको जिला दूँ। [40]यही मेरे परम पिता की इच्छा है कि हर वह व्यक्ति जो पुत्र को देखता है और उसमें विश्वास करता है, अनन्त जीवन पाये और अंतिम दिन मैं उसे जिला उठाऊँगा।"

[41]इस पर यहूदियों ने यीशु पर बड़बड़ाना शुरू किया क्योंकि वह कहता था, "वह रोटी मैं हूँ जो स्वर्ग से उतरी है।" [42]और उन्होंने कहा, "क्या यह यूसुफ का बेटा यीशु नहीं है, क्या हम इसके माता-पिता को नहीं जानते हैं। फिर यह कैसे कह सकता है यह स्वर्ग से उतरा है?"

[43]उत्तर में उनसे यीशु ने कहा, "आपस में बड़बड़ाना बंद करो, [44]मेरे पास तब तक कोई नहीं आ सकता जब तक मुझे भेजने वाला परम पिता उसे मेरे प्रति आकर्षित

न करे। मैं अंतिम दिन उसे पुनर्जीवित करूँगा। [45]नबियों ने लिखा है, 'और वे सब परमेश्वर के द्वारा सिखाए हुए होंगे।' हर वह व्यक्ति जो परम पिता की सुनता है और उससे सीखता है मेरे पास आता है। [46](किन्तु वास्तव में परम पिता को सिवाय उसके जिसे उसने भेजा है, किसी ने नहीं देखा। परम पिता को बस उसी ने देखा है।) [47]मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, जो विश्वासी है, वह अनन्त जीवन पाता है। [48]मैं वह रोटी हूँ जो जीवन देती है। [49]तुम्हारे पुरखों ने रेगिस्तान में मन्ना खाया था तो भी वे मर गये। [50]जबकि स्वर्ग से आयी इस रोटी को यदि कोई खाए तो मरे नहीं। [51]मैं ही वह जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है। यदि कोई इस रोटी को खाता है तो वह अमर हो जायेगा। और वह रोटी जिसे मैं दूँगा, मेरा शरीर है। इसी से संसार जीवित रहेगा।"

[52]फिर यहूदी लोग आपस में यह कहते हुए बहस करने लगे, "यह अपना शरीर हमें खाने को कैसे दे सकता है?"

[53]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का शरीर नहीं खाओगे और उसका लहू नहीं पिओगे तब तक तुममें जीवन नहीं होगा। [54]जो मेरा शरीर खाता रहेगा और मेरा लहू पीता रहेगा, अनन्त जीवन उसी का है। अन्तिम दिन मैं उसे अभिजीवित करूँगा। [55]मेरा शरीर सच्चा भोजन है और मेरा लहू ही सच्चा पेय है। [56]जो मेरे शरीर को खाता रहता है और लहू को पीता रहता है वह मुझ में ही रहता है, और मैं उसमें। [57]बिल्कुल वैसे ही जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा है और मैं परम पिता के कारण ही जीवित हूँ, उसी तरह वह जो मुझे खाता रहता है मेरे ही कारण जीवित रहेगा। [58]यही वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है। यह वैसी नहीं है जैसी हमारे पूर्वजों ने खायी थी। और बाद में वे मर गये थे। जो इस रोटी को खाता रहेगा, सदा के लिये जीवित रहेगा।" [59]यीशु ने ये बातें कफरनहूम के आराधनालय में उपदेश देते हुए कहीं।

अनन्त जीवन की शिक्षा

[60]यीशु के बहुत से अनुयायियों ने इन बातों को सुनकर कहा, "यह शिक्षा बहुत कठिन है, इसे कौन सुन सकता है?" [61]यीशु को अपने आप ही पता चल गया था कि उसके अनुयायियों को इसकी शिकायत है। इसलिये वह उनसे बोला, "क्या तुम इस शिक्षा से परेशान हो? [62]यदि ऐसा है तो तुमको यदि मनुष्य के पुत्र को जहाँ वह पहले था वहीं वापस लौटते देखना पड़े तो क्या होगा? [63]आत्मा ही है जो जीवन देता है। देह का कोई उपयोग नहीं है। वचन, जो मैंने तुमसे कहे हैं, आत्मा है और वे ही जीवन देते हैं। [64]किन्तु तुममें कुछ ऐसे भी हैं जो विश्वास नहीं करते।" (यीशु शुरू से ही जानता था कि वे कौन हैं जो विश्वासी नहीं हैं और वह कौन है जो उसे धोखा देगा।) [65]यीशु ने आगे कहा, "इसीलिये मैंने तुमसे कहा है कि मेरे पास तब तक कोई नहीं आ सकता जब तक परम पिता उसे मेरे पास आने की अनुमति नहीं दे देता।"

[66]इसी कारण यीशु के बहुत से अनुयायी वापस चले गये। और फिर कभी उसके पीछे नहीं चले।

[67]फिर यीशु ने अपने बारह शिष्यों से कहा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?"

[68]शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, हम किसके पास जायेंगे? वे वचन तो तेरे पास हैं जो अनन्त जीवन देते हैं। [69]अब हमने यह विश्वास कर लिया है और जान लिया है कि तू ही वह पवित्रतम है जिसे परमेश्वर ने भेजा है।"

[70]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या तुम बारहों को मैंने नहीं चुना है? फिर भी तुममें से एक शैतान है।"

[71]वह शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदा के बारे में बात कर रहा था क्योंकि वह यीशु के खिलाफ़ होकर उसे धोखा देने वाला था। यद्यपि वह भी उन बारह शिष्यों में से ही एक था।

यीशु और उसके भाई

7 इसके बाद यीशु ने गलील की यात्रा की। वह यहूदिया जाना चाहता था क्योंकि यहूदी उसे मार डालना चाहते थे। [2]यहूदियों का खेमों का पर्व* आने वाला था। [3]इसलिये यीशु के बंधुओं ने उससे कहा, "तुम्हें यह स्थान छोड़कर यहूदिया चले जाना चाहिये। ताकि तुम्हारे अनुयायी तुम्हारे कामों को देख सकें। [4]कोई भी वह व्यक्ति जो

खेमों का पर्व यह त्योहार हर साल हफ्ते भर मनाया जाता था, जब यहूदी लोग तम्बुओं में रहकर उन दिनों की याद करते थे जब मूसा के काल में उनके पूर्वज चालीस साल तक मरुभूमि में भटकते रहे थे।

लोगों में प्रसिद्ध होना चाहता है अपने कामों को छिपा कर नहीं करता। क्योंकि तुम आश्चर्य कर्म करते हो इसलिये सारे जगत के सामने अपने को प्रकट करो।" [5](यीशु के भाई तक उसमें विश्वास नहीं रखते थे।) [6]यीशु ने उनसे कहा, "मेरे लिये अभी ठीक समय नहीं आया है। पर तुम्हारे लिये हर समय ठीक है। [7]यह जगत तुमसे घृणा नहीं कर सकता पर मुझसे घृणा करता है। क्योंकि मैं यह कहता रहता हूँ कि इसकी करनी बुरी है। [8]इस पर्व में तुम लोग जाओ, मैं नहीं जा रहा क्योंकि मेरे लिए अभी ठीक समय नहीं आया है।" [9]ऐसा कहने के बाद यीशु गलील में रुक गया।

[10]जब उसके भाई पर्व में चले गये तो वह भी गया। पर वह खुले तौर पर नहीं, छिप कर गया था। [11]यहूदी नेता उसे पर्व में यह कहते खोज रहे थे, "वह मनुष्य कहाँ है?"

[12]यीशु के बारे में छिपे–छिपे उस भीड़ में तरह–तरह की बातें हो रही थीं। कुछ कह रहे थे, "वह अच्छा व्यक्ति है।" पर दूसरों ने कहा, "नहीं, वह लोगों को भटकाता है।" [13]कोई भी उसके बारे में खुलकर बातें नहीं कर पा रहा था क्योंकि वे लोग यहूदी नेताओं से डरते थे।

यरुशलेम में यीशु का उपदेश

[14]जब वह पर्व लगभग आधा बीत चुका था, यीशु मंदिर में गया और उसने उपदेश देना शुरू किया। [15]यहूदी नेताओं ने अचरज के साथ कहा, "यह मनुष्य जो कभी किसी पाठशाला में नहीं गया फिर इतना कुछ कैसे जानता है?"

[16]उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे कहा, "जो उपदेश मैं देता हूँ मेरा अपना नहीं है बल्कि उससे आता है, जिसने मुझे भेजा है। [17]यदि मनुष्य वह करना चाहे, जो परम पिता की इच्छा है तो वह यह जान जायेगा कि जो उपदेश मैं देता हूँ वह उसका है या मैं अपनी ओर से दे रहा हूँ। [18]जो अपनी ओर से बोलता है, वह अपने लिये यश कमाना चाहता है; किन्तु वह जो उसे यश देने का प्रयत्न करता है, जिसने उसे भेजा है, वही व्यक्ति सच्चा है। उसमें कहीं कोई खोट नहीं है। [19]क्या तुम्हें मूसा ने व्यवस्था का विधान नहीं दिया? पर तुममें से कोई भी उसका पालन नहीं करता। तुम मुझे मारने का प्रयत्न क्यों करते हो?"

[20]लोगों ने जवाब दिया, "तुझ पर भूत सवार है जो तुझे मारने का यत्न कर रहा है।"

[21]उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "मैंने एक आश्चर्यकर्म किया और तुम सब चकित हो गये। [22]इसी कारण मूसा ने तुम्हें ख़तना का नियम दिया था। (यह नियम मूसा का नहीं था बल्कि तुम्हारे पूर्वजों से चला आ रहा था।) और तुम सब्त के दिन लड़कों का ख़तना करते हो। [23]यदि सब्त के दिन किसी का ख़तना इसलिये किया जाता है कि मूसा का विधान न टूटे तो इसके लिये तुम मुझ पर क्रोध क्यों करते हो कि मैंने सब्त के दिन एक व्यक्ति को पूरी तरह चंगा कर दिया? [24]बातें जैसी दिखती हैं, उसी आधार पर उनका न्याय मत करो बल्कि जो वास्तव में उचित है उसी के आधार पर न्याय करो।"

क्या यीशु ही मसीह है?

[25]फिर यरूशलेम में रहने वाले लोगों में से कुछ ने कहा, "क्या यही वह व्यक्ति नहीं है जिसे वे लोग मार डालना चाहते हैं? [26]मगर देखो वह सब लोगों के बीच में बोल रहा है और वे लोग कुछ भी नहीं कह रहे हैं। क्या यह नहीं हो सकता कि यहूदी नेता वास्तव में जान गये हैं कि वही मसीह है। [27]खैर हम जानते हैं कि यह व्यक्ति कहाँ से आया है। जब वास्तविक मसीह आयेगा तो कोई नहीं जान पायेगा कि वह कहाँ से आया।"

[28]यीशु जब मंदिर में उपदेश दे रहा था, उसने ऊँचे स्वर में कहा, "तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो मैं कहाँ से आया हूँ। फिर भी मैं अपनी ओर से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है, वह सत्य है, तुम उसे नहीं जानते। [29]पर मैं उसे जानता हूँ क्योंकि मैं उसी से आया हूँ।"

[30]फिर वे उसे बंदी बनाने का जतन करने लगे पर कोई भी उस पर हाथ नहीं डाल सका क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था। [31]तो भी बहुत से लोग उसमें विश्वासी हो गये और कहने लगे, "जब मसीह आयेगा तो वह जितने आश्चर्य चिन्ह इस व्यक्ति ने प्रकट किये हैं उनसे अधिक नहीं करेगा। क्या वह ऐसा करेगा?"

यहूदियों का यीशु को बंदी बनाने का यत्न

[32]भीड़ में लोग यीशु के बारे में चुपके–चुपके क्या बात कर रहे हैं, फरीसियों ने सुना और प्रमुख धर्माधिकारियों तथा फरीसियों ने उसे बंदी बनाने के लिए मंदिर के

सिपाहियों को भेजा फिर यीशु बोला, [33]"मैं तुम लोगों के साथ कुछ समय और रहूँगा और फिर उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। [34]तुम मुझे ढूँढोगे पर तुम मुझे पाओगे नहीं। क्योंकि तुम लोग वहाँ जा नहीं पाओगे जहाँ मैं होऊँगा।"

[35]इसके बाद यहूदी नेता आपस में बात करने लगे, "यह कहाँ जाने वाला है जहाँ हम इसे नहीं ढूँढ पायेंगे। शायद यह वहीं तो नहीं जा रहा है जहाँ हमारे लोग यूनानी नगरों में तितर-बितर हो कर रहते हैं। क्या यह यूनानियों में उपदेश देगा? [36]जो इसने कहा है उसका अर्थ क्या है? कि तुम मुझे ढूँढोगे पर मुझे पाओगे नहीं। और जहाँ मैं होऊँगा वहाँ तुम नहीं आ सकते।"

यीशु द्वारा पवित्र आत्मा का उपदेश

[37]पर्व के अन्तिम और महत्त्वपूर्ण दिन यीशु खड़ा हुआ और उसने ऊँचे स्वर में कहा, "अगर कोई प्यासा है तो मेरे पास आये और पिये। [38]जो मुझमें विश्वासी है, जैसा कि शास्त्र कहते हैं उसके अंतरात्मा से स्वच्छ जीवन जल की नदियाँ फूट पड़ेंगी।" [39]यीशु ने यह आत्मा के विषय में कहा था। जिसे वे लोग पायेंगे जो उसमें विश्वास करेंगे वह आत्मा अभी तक दी नहीं गयी है क्योंकि यीशु अभी तक महिमावान नहीं हुआ।

यीशु के बारे में लोगों की बातचीत

[40]भीड़ के कुछ लोगों नें जब यह सुना वे कहने लगे, "यह आदमी निश्चय ही वही नबी है।"

[41]कुछ और लोग कह रहे थे, "यही व्यक्ति मसीह है।" कुछ और लोग कह रहे थे, "मसीह गलील से नहीं आयेगा। क्या ऐसा हो सकता है? [42]क्या शास्त्रों में नहीं लिखा है कि मसीह दाऊद की संतान होगा और बैतलहम से आयेगा जिस नगर में दाऊद रहता था।"

[43]इस तरह लोगों में फूट पड़ गयी। [44]कुछ उसे बंदी बनाना चाहते थे पर किसी ने भी उस पर हाथ नहीं डाला।

यहूदी नेताओं का यीशु में विश्वास

[45]इसलिये मन्दिर के सिपाही प्रमुख धर्माधिकारियों और फरीसियों के पास लौट आये। इस पर उनसे पूछा गया, "तुम उसे पकड़कर क्यों नहीं लाये?"

[46]सिपाहियों नें जवाब दिया, "कोई भी व्यक्ति आज तक ऐसे नहीं बोला जैसे वह बोलता है।"

[47]इस पर फरीसियों ने उनसे कहा, "क्या तुम भी तो नहीं भरमाए गये हो? [48]किसी भी यहूदी नेता या फरीसियों नें उसमें विश्वास नहीं किया है। [49]किन्तु ये लोग जिन्हें व्यवस्था के विधान का ज्ञान नहीं है परमेश्वर के अभिशाप के पात्र हैं।"

[50]नीकुदेमुस ने उनसे कहा, यह वही था जो पहले यीशु के पास गया था यह उन फरीसियों में से ही एक था [51]"हमारी व्यवस्था का विधान किसी को तब तक दोषी नहीं ठहराता जब तक उसकी सुन नहीं लेता और यह पता नहीं लगा लेता कि उसने क्या किया है।"

[52]उत्तर में उन्होंने उससे कहा, "क्या तू भी तो गलील का ही नहीं है? शास्त्रों को पढ़ तो तुझे पता चलेगा कि गलील से कोई नबी कभी नहीं आयेगा।"

[कुछ प्राचीन यूनानी प्रतियों में यूहन्ना 7:53-8:11 तक का पद नहीं है।]

दुराचारी स्त्री को क्षमा

[53] फिर वे सब वहाँ से अपने-अपने घर चले गये।

8 और यीशु जैतून पर्वत पर चला गया। [2]अलख सवेरे वह फिर मन्दिर में गया। सभी लोग उसके पास आये। यीशु बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। [3]तभी यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी लोग व्यभिचार के अपराध में एक स्त्री को वहाँ पकड़ लाये। और उसे लोगों के सामने खड़ा कर दिया। [4]और यीशु से बोले, "हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते रंगे हाथों पकड़ी गयी है। [5]मूसा का विधान हमें आज्ञा देता है कि ऐसी स्त्री को पत्थर मारने चाहियें। अब बता तेरा क्या कहना है?" [6](यीशु को जाँचने के लिये वे यह पूछ रहे थे ताकि उन्हें कोई ऐसा बहाना मिल जाये जिससे उसके विरुद्ध कोई अभियोग लगाया जा सके)। किन्तु यीशु नीचे झुका और अपनी उँगली से धरती पर लिखने लगा। [7]क्योंकि वे पूछते ही जा रहे थे इसलिये यीशु सीधा तन कर खड़ा हो गया और उनसे बोला, "तुम में से जो पापी नहीं है वही सबसे पहले इस औरत को पत्थर मारे।" [8]और वह फिर झुककर धरती पर लिखने लगा।

[9]जब लोगों ने यह सुना तो सबसे पहले बूढ़े लोग और फिर और भी एक-एक करके वहाँ से खिसकने लगे

और इस तरह वहाँ अकेला यीशु ही रह गया। यीशु के सामने वह स्त्री अब भी खड़ी थी। [10]यीशु खड़ा हुआ और उस स्त्री से बोला, "हे स्त्री, वे सब कहाँ गये। क्या तुम्हें किसी ने दोषी नहीं ठहराया?"

[11]स्त्री बोली, "नहीं, महोदय! किसी ने नहीं।"

यीशु ने कहा, "मैं भी तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा। जाओ और अब फिर कभी पाप मत करना।"

जगत का प्रकाश यीशु

[12]फिर वहाँ उपस्थित लोगों से यीशु ने कहा, "मैं जगत का प्रकाश हूँ जो मेरे पीछे चलेगा कभी अँधेरे में नहीं रहेगा। बल्कि उसे उस प्रकाश की प्राप्ति होगी जो जीवन देता है।"

[13]इस पर फरीसी उससे बोले, "तू अपनी साक्षी अपने आप दे रहा है, इसलिये तेरी साक्षी उचित नहीं है।"

[14]उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "यदि मैं अपनी साक्षी स्वयं अपनी तरफ से दे रहा हूँ तो भी मेरी साक्षी उचित है क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। किन्तु तुम लोग यह नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। [15]तुम लोग इंसानी सिद्धान्तों पर न्याय करते हो, मैं किसी का न्याय नहीं करता। [16]किन्तु यदि मैं न्याय करूँ भी तो मेरा न्याय उचित होगा। क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ बल्कि परम पिता, जिसने मुझे भेजा है वह और मैं मिलकर न्याय करते हैं। [17]तुम्हारे विधान में लिखा है कि दो व्यक्तियों की साक्षी न्याय संगत है। [18]मैं अपनी साक्षी स्वयं देता हूँ और परम पिता भी, जिसने मुझे भेजा है, मेरी ओर से साक्षी देता है।"

[19]इस पर लोगों ने उससे कहा, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु ने उत्तर दिया, "न तो तुम मुझे जानते हो, और न मेरे पिता को। यदि तुम मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जान लेते।"

[20]मन्दिर में उपदेश देते हुए, भेंट–पात्रों के पास से उसने ये शब्द कहे थे। किन्तु किसी ने भी उसे बंदी नहीं बनाया क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था।

यहूदियों का यीशु के विषय में अज्ञान

[21]यीशु ने उनसे एक बार फिर कहा, "मैं चला जाऊँगा और तुम लोग मुझे ढूँढोगे। पर तुम अपने ही पापों में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ नहीं आ सकते।"

[22]फिर यहूदी नेता कहने लगे, "क्या तुम सोचते हो कि वह आत्महत्या करने वाला है? क्योंकि उसने कहा है तुम वहाँ नहीं आ सकते जहाँ मैं जा रहा हूँ।"

[23]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तुम नीचे के हो और मैं ऊपर से आया हूँ तुम सांसारिक हो और मैं इस जगत से नहीं हूँ [24]इसलिये मैंने तुमसे कहा था कि तुम अपने पापों में मरोगे। यदि तुम विश्वास नहीं करते कि वह मैं हूँ। तुम अपने पापों में मरोगे।"

[25]फिर उन्होंने यीशु से पूछा, "तू कौन है?"

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं वही हूँ जैसा कि प्रारम्भ से ही मैं तुमसे कहता आ रहा हूँ। [26]तुमसे कहने को और तुम्हारा न्याय करने को मेरे पास बहुत कुछ है। पर सत्य वही है जिसने मुझे भेजा है। मैं वही कहता हूँ जो मैंने उससे सुना है।"

[27]वे यह नहीं जान पाये कि यीशु उन्हें परम पिता के बारे में बता रहा है। [28]फिर यीशु ने उनसे कहा, "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचा उठा लोगे तब तुम जानोगे कि वह मैं हूँ। मैं अपनी ओर से कुछ नहीं करता। मैं यह जो कह रहा हूँ, वही है जो मुझे परम पिता ने सिखाया है। [29]और वह जिसने मुझे भेजा है, मेरे साथ है। उसने मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सदा वही करता हूँ जो उसे भाता है।" [30]यीशु जब ये बातें कह रहा था, तो बहुत से लोग उसके विश्वासी हो गये।

पाप से छुटकारे का उपदेश

[31]सो यीशु उन यहूदी नेताओं से कहने लगा जो उसमें विश्वास करते थे, "यदि तुम लोग मेरे उपदेशों पर चलोगे तो तुम वास्तव में मेरे अनुयायी बनोगे। [32]और सत्य को जान लोगे। और सत्य तुम्हें मुक्त करेगा।"

[33]इस पर उन्होंने यीशु से प्रश्न किया, "हम इब्राहीम के वंशज हैं और हमने कभी किसी की दासता नहीं की। फिर तुम कैसे कहते हो कि तुम मुक्त हो जाओगे।"

[34]यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। हर वह जो पाप करता रहता है, पाप का दास है। [35]और कोई दास सदा परिवार के साथ नहीं रह सकता। केवल पुत्र ही सदा साथ रह सकता है। [36]अत: यदि पुत्र तुम्हें मुक्त करता है तभी तुम वास्तव में मुक्त होगे। मैं जानता हूँ तुम इब्राहीम के वंश से हो। [37]पर तुम मुझे मार

डालने का यत्न कर रहे हो। क्योंकि मेरे उपदेशों के लिये तुम्हारे मन में कोई स्थान नहीं है। **38**मैं वही कहता हूँ जो मुझे मेरे पिता ने दिखाया है और तुम वह करते हो जो तुम्हारे पिता से तुमने सुना है।"

39इस पर उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, "हमारे पिता इब्राहीम हैं।" यीशु ने कहा, "यदि तुम इब्राहीम की संतान होते तो तुम वही काम करते जो इब्राहीम ने किये थे। **40**पर तुम तो अब मुझे यानी एक ऐसे मनुष्य को, जो तुमसे उस सत्य को कहता है जिसे उसने परमेश्वर से सुना है, मार डालना चाहते हो। इब्राहीम ने तो ऐसा नहीं किया। **41**तुम अपने पिता के कार्य करते हो।"

फिर उन्होंने यीशु से कहा, "हम व्यभिचार के परिणाम स्वरूप पैदा नहीं हुए हैं। हमारा केवल एक पिता है और वह है परमेश्वर।"

42यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं परमेश्वर में से ही आया हूँ। और अब मैं यहाँ हूँ। मैं अपने आप से नहीं आया हूँ। बल्कि मुझे उसने भेजा है। **43**मैं जो कह रहा हूँ उसे तुम समझते क्यों नहीं? इसका कारण यही है कि तुम मेरा संदेश नहीं सुनते। **44**तुम अपने पिता शैतान की संतान हो। और तुम अपने पिता की इच्छा पर चलना चाहते हो। वह प्रारम्भ से ही एक हत्यारा था। और उसने सत्य का पक्ष कभी नहीं लिया। क्योंकि उसमें सत्य का कोई अंश तक नहीं है। जब वह झूठ बोलता है तो सहज भाव से बोलता है क्योंकि वह झूठा है और सभी झूठों को जन्म देता है। **45**पर क्योंकि मैं सत्य कह रहा हूँ, तुम लोग मुझमें विश्वास नहीं करोगे। **46**तुममें से कौन मुझ पर पापी होने का लांछन लगा सकता है। यदि मैं सत्य कहता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते? **47**वह व्यक्ति जो परमेश्वर का है, परमेश्वर के वचनों को सुनता है। इसी कारण तुम मेरी बात नहीं सुनते कि तुम परमेश्वर के नहीं हो।"

अपने और इब्राहीम के विषय में यीशु का कथन

48उत्तर में यहूदियों ने उससे कहा, "यह कहते हुए क्या हम सही नहीं थे कि तू सामरी है और तुझ पर कोई दुष्टात्मा सवार है?"

49यीशु ने उत्तर दिया, "मुझ पर कोई दुष्टात्मा नहीं है। बल्कि मैं तो अपने परम पिता का आदर करता हूँ और तुम मेरा अपमान करते हो। **50**मैं अपनी महिमा नहीं चाहता हूँ पर एक ऐसा है जो मेरी महिमा चाहता है और न्याय भी करता है। **51**मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ यदि कोई मेरे उपदेशों को धारण करेगा तो वह मौत को कभी नहीं देखेगा।"

52इस पर यहूदी नेताओं ने उससे कहा, "अब हम यह जान गये हैं कि तुम में कोई दुष्टात्मा समाया है। यहाँ तक कि इब्राहीम और नबी भी मर गये और तू कहता है यदि कोई मेरे उपदेश पर चले तो उसकी मौत कभी नहीं होगी। **53**निश्चय ही तू हमारे पूर्वज इब्राहीम से बड़ा नहीं है जो मर गया। और नबी भी मर गये। फिर तू क्या सोचता है? तू है क्या?"

54यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं अपनी महिमा करूँ तो वह महिमा मेरी कुछ भी नहीं है। जो मुझे महिमा देता है वह मेरा परम पिता है। जिसके बारे में तुम दावा करते हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है। **55**तुमने उसे कभी नहीं जाना। पर मैं उसे जानता हूँ, यदि मैं यह कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं भी तुम लोगों की ही तरह झूठा ठहरूँगा। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ, और जो वह कहता है उसका पालन करता हूँ। **56**तुम्हारा पूर्वज यह जानकर कि वह उस दिन को देखेगा जब मैं आऊँगा आनन्द से भर गया था। उसने इसे देखा और प्रसन्न हुआ।"

57फिर यहूदी नेताओं ने उससे कहा, "तू अभी पचास बरस का भी नहीं है और तूने इब्राहीम को देख लिया।"

58यीशु ने इस पर उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ। इब्राहीम से पहले भी मैं हूँ।" **59**इस पर उन्होंने यीशु पर मारने के लिये बड़े–बड़े पत्थर उठा लिये किन्तु यीशु छुपते–छिपाते मन्दिर से चला गया।

जन्म से अन्धे को दृष्टि–दान

9 जाते हुए उसने जन्म से अंधे एक व्यक्ति को देखा। **2**इस पर यीशु के अनुयायियों ने उससे पूछा, "हे रब्बी, यह व्यक्ति अपने पापों से अंधा जन्मा है या अपने माता–पिता के?"

3यीशु ने उत्तर दिया, "न तो इसने पाप किए हैं और न इसके माता–पिता ने बल्कि यह इसलिये अंधा जन्मा है ताकि इसे अच्छा करके परमेश्वर की शक्ति दिखायी जा सके। **4**उसके कामों को जिसने मुझे भेजा है, हमें निश्चित रूप से दिन रहते ही कर लेना चाहिये क्योंकि जब रात हो

जायेगी कोई काम नहीं कर सकेगा। [5]जब मैं जगत में हूँ मैं जगत की ज्योति हूँ।"

[6]इतना कहकर यीशु ने धरती पर थूका और उससे थोड़ी मिट्टी सानी उसे अंधे की आंखों पर मल दिया। [7]और उससे कहा, "जा और शिलोह के तालाब में धो आ। (शीलोह यानी भेजा हुआ।) और फिर उस अंधे ने जाकर आँखें धो डालीं। जब वह लौटा तो उसे दिखाई दे रहा था।"

[8]फिर उसके पड़ोसी और वे लोग जो उसे भीख माँगता देखने के आदी थे बोले, "क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जो बैठा हुआ भीख माँगा करता था?"

[9]कुछ ने कहा, "यह वही है," दूसरो ने कहा, "नहीं, यह वह नहीं है, उसका जैसा दिखाई देता है।" इस पर अंधा कहने लगा, "मैं वही हूँ।"

[10]इस पर लोगों ने उससे पूछा, "तुझे आँखों की ज्योति कैसे मिली?"

[11]उसने जवाब दिया, "यीशु नाम के एक व्यक्ति ने मिट्टी सान कर मेरी आँखों पर मली और मुझसे कहा, जा और शीलोह में धो आ और मैं जाकर धो आया। बस मुझे आँखों की ज्योति मिल गयी।"

[12]फिर लोगों ने उससे पूछा, "वह कहाँ है?"

उसने जवाब दिया, "मुझे पता नहीं।"

दृष्टि–दान पर फरीसियों का विवाद

[13]उस व्यक्ति को जो पहले अंधा था, वे लोग फ़रीसियों के पास ले गये। [14]यीशु ने जिस दिन मिट्टी सानकर उस अंधे को आँखें दी थीं वह सब्त का दिन था। [15]इस तरह फरीसी उससे एक बार फिर पूछने लगे, "उसने आँखों की ज्योति कैसे पायी?"

उसने बताया, "उसने मेरी आँखों पर गीली मिट्टी लगायी, मैंने उसे धोया और अब मैं देख सकता हूँ।"

[16]कुछ फरीसी कहने लगे, "यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं है क्योंकि यह सब्त का पालन नहीं करता।"

उस पर दूसरे बोले, "कोई पापी आदमी भला ऐसे आश्चर्य कर्म कैसे कर सकता है?" इस तरह उनमें आपस में ही विवाद होने लगा।

[17]वे एक बार फिर उस अंधे से बोले, "उसके बारे में तू क्या कहता है? क्योंकि इस तथ्य को तू जानता है कि उसने तुझे आँखें दी हैं।"

तब उसने कहा, "वह नबी है।"

[18]यहूदी नेताओं ने उस समय तक उस पर विश्वास नहीं किया कि वह व्यक्ति अंधा था और उसे आँखों की ज्योति मिल गयी है। जब तक उसके माता–पिता को बुलाकर [19]उन्होंने यह नहीं पूछ लिया, "क्या यही तुम्हारा पुत्र है जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा था। फिर यह कैसे हो सकता है कि वह अब देख सकता है?"

[20]इस पर उसके माता पिता ने उत्तर देते हुए कहा, "हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और यह अंधा जन्मा था। [21]पर हम यह नहीं जानते कि यह अब देख कैसे सकता है? और न ही हम यह जानते हैं कि इसे आँखों की ज्योति किसने दी है। इसी से पूछो, यह काफ़ी बड़ा हो चुका है। अपने बारे में यह खुद बता सकता है।" [22](उसके माता–पिता ने यह बात इसलिये कही थी कि वे यहूदी नेताओं से डरते थे। क्योंकि वे इस पर पहले ही सहमत हो चुके थे कि यदि कोई यीशु को मसीह माने तो उसे सायनागोग से निकाल दिया जाये। [23]इसलिये उसके माता–पिता ने कहा था, "वह काफ़ी बड़ा हो चुका है, उससे पूछो।)"

[24]यहूदी नेताओं ने उस व्यक्ति को दूसरी बारी फिर बुलाया जो अंधा था, और कहा, "सच कहो, और जो तू ठीक हुआ है उसका सिला परमेश्वर को दे। हमें मालूम है कि यह व्यक्ति पापी है।"

[25]इस पर उसने जवाब दिया, "मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं, मैं तो बस यह जानता हूँ कि मैं अंधा था, और अब देख सकता हूँ।"

[26]इस पर उन्होंने उससे पूछा, "उसने क्या किया? तुझे उसने आँखें कैसे दीं?"

[27]इस पर उसने उन्हें जवाब देते हुए कहा, "मैं तुम्हें बता तो चुका हूँ, पर तुम मेरी बात सुनते ही नहीं। तुम वह सब कुछ फिर फिर क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके अनुयायी बनना चाहते हो?"

[28]इस पर उन्होंने उसका अपमान किया और कहा, "तू उसका अनुयायी है पर हम मूसा के अनुयायी हैं। [29]हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बात की थी पर हम नहीं जानते कि यह आदमी कहाँ से आया है?"

[30]उत्तर देते हुए उस व्यक्ति ने उनसे कहा, "आश्चर्य है तुम नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है? पर मुझे उसने

आँखों की ज्योति दी है। [31]हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता बल्कि वह तो उनकी सुनता है जो समर्पित हैं और वही करते हैं जो परमेश्वर की इच्छा है। [32]कभी सुना नहीं गया कि किसी ने किसी जन्म से अंधे व्यक्ति को आँखों की ज्योति दी हो। [33]यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से नहीं होता तो यह कुछ नहीं कर सकता था।"

[34]उत्तर में उन्होंने कहा, "तू सदा से पापी रहा है। ठीक तब से जबसे तू पैदा हुआ। और अब तू हमें पढ़ाने चला है?" और इस तरह यहूदी नेताओं ने उसे वहाँ से बाहर धकेल दिया।

आत्मिक अंधापन

[35]यीशु ने सुना कि यहूदी नेताओं ने उसे धकेल कर बाहर निकाल दिया है तो उससे मिलकर उसने कहा, "क्या तू मनुष्य के पुत्र में विश्वास करता है?" उत्तर में वह व्यक्ति बोला

[36]"हे प्रभु, बताइये वह कौन है? ताकि मैं उसमें विश्वास करूँ!"

[37]यीशु ने उससे कहा, "तू उसे देख चुका है और वह वही है जिससे तू इस समय बात कर रहा है।"

[38]फिर वह बोला, "प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ।" और वह नतमस्तक हो गया।

[39]यीशु ने कहा, "मैं इस जगत में न्याय करने आया हूँ, ताकि वे जो नहीं देखते वे देखने लगें और वे जो देख रहे हैं, नेत्रहीन हो जायें।"

[40]कुछ फरीसी जो यीशु के साथ थे, यह सुनकर यीशु से बोले, "निश्चय ही हम अंधे नहीं हैं। क्या हम अंधे हैं?"

[41]यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम अँधे होते तो तुम पापी नहीं होते पर जैसा कि तुम कहते हो कि तुम देख सकते हो तो वास्तव में तुम पाप-युक्त हो।"

चरवाहा और उसकी भेड़ें

10 यीशु ने कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ जो भेड़ों के बाड़े में द्वार से प्रवेश न करके बाड़ा फाँद कर दूसरे प्रकार से घुसता है, वह चोर है, लुटेरा है। [2]किन्तु जो दरवाजे से घुसता है, वही भेड़ों का चरवाहा है। [3]द्वारपाल उसके लिए द्वार खोलता है। और भेड़ें उसकी आवाज सुनती हैं। वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर पुकारता है और उन्हें बाड़े से बाहर ले जाता है। [4]जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लेता है तो उनके आगे-आगे चलता है। और भेड़ें उसके पीछे पीछे चलती हैं क्योंकि वे उसकी आवाज पहचानती हैं। [5]भेड़ें किसी अनजान का अनुसरण कभी नहीं करतीं। वे तो उससे दूर भागती हैं। क्योंकि वे उस अनजान की आवाज नहीं पहचानतीं।" [6]यीशु ने उन्हें यह दृष्टान्त दिया पर वे नहीं समझ पाये कि यीशु उन्हें क्या बता रहा है।

अच्छा चरवाहा-यीशु

[7]इस पर यीशु ने उनसे फिर कहा, "मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ, भेड़ों के लिये द्वार मैं हूँ। [8]वे सब जो मुझसे पहले आये थे, चोर और लुटेरे हैं। किन्तु भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी। [9]मैं द्वार हूँ। यदि कोई मुझमें से होकर प्रवेश करता है तो उसकी रक्षा होगी वह भीतर आयेगा और बाहर जा सकेगा और उसे चारागाह मिलेगी। [10]चोर केवल चोरी, हत्या और विनाश के लिये ही आता है। किन्तु मैं इसलिये आया हूँ कि लोग भरपूर जीवन पा सकें।

[11]"अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपनी जान दे देता है। [12]किन्तु किराये का मज़दूर क्योंकि वह चरवाहा नहीं होता, भेड़ें उसकी अपनी नहीं होतीं, जब भेड़िये को आते देखता है, भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है। और भेड़िया उन पर हमला करके उन्हें तितर-बितर कर देता है। [13](किराये का मज़दूर, इसलिये भाग जाता है क्योंकि वह दैनिक मज़दूरी का आदमी है और इसीलिए भेड़ों की परवाह नहीं करता)।

[14]"अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अपनी भेड़ों को मैं जानता हूँ और मेरी भेड़ें मुझे [15]वैसे ही जानती हैं जैसे परम पिता मुझे जानता है और मैं परम पिता को जानता हूँ। अपनी भेड़ों के लिए मैं अपना जीवन देता हूँ। [16]मेरी और भेड़ें भी हैं जो इस बाड़े की नहीं हैं। मुझे उन्हें भी लाना होगा। वे भी मेरी आवाज सुनेगीं और इसी बाड़े में आकर एक हो जायेंगी। फिर सबका एक ही चरवाहा होगा। [17]परम पिता मुझसे इसीलिये प्रेम करता है कि मैं अपना जीवन देता हूँ। मैं अपना जीवन देता हूँ ताकि मैं उसे फिर वापस ले सकूँ। इसे मुझसे कोई लेता नहीं है। [18]बल्कि मैं अपने आप अपनी इच्छा से इसे देता हूँ। मुझे इसे देने का अधिकार है। यह आदेश मुझे मेरे परम पिता से मिला है।"

[19]इन शब्दों के कारण यहूदी नेताओं में एक और फूट पड़ गयी। [20]बहुत से कहने लगे, "यह पागल हो गया है। इस पर दुष्टात्मा सवार है। तुम इसकी परवाह क्यों करते हो।"

[21]दूसरे कहने लगे, "ये शब्द किसी ऐसे व्यक्ति के नहीं हो सकते जिस पर दुष्टात्मा सवार हो। निश्चय ही कोई दुष्टत्मा किसी अंधे को आँखें नहीं दे सकती।"

यहूदी यीशु के विरोध में

[22]फिर यरूशलेम में समर्पण का उत्सव* आया। सर्दी के दिन थे। [23]यीशु मंदिर में सुलेमान के दालान में टहल रहा था। [24]तभी यहूदी नेताओं ने उसे घेर लिया और बोले, "तू हमें कब तक तंग करता रहेगा? यदि तू मसीह है, तो साफ–साफ बता।"

[25]यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें बता चुका हूँ और तुम विश्वास नहीं करते। वे काम जिन्हें मैं परम पिता के नाम पर कर रहा हूँ, स्वयं मेरी साक्षी हैं। [26]किन्तु तुम लोग विश्वास नहीं करते। क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो। [27]मेरी भेड़ें मेरी आवाज को जानती हैं और मैं उन्हें जानता हूँ। वे मेरे पीछे चलती हैं और [28]मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। उनका कभी नाश नहीं होगा। और न कोई उन्हें मुझसे छीन पायेगा। [29]मुझे उन्हें सौंपने वाला मेरा परम पिता सबसे महान है। मेरे पिता से उन्हें कोई नहीं छीन सकता। [30]"मेरा पिता और मैं एक हैं।"

[31]फिर यहूदी नेताओं ने यीशु पर मारने के लिये पत्थर उठा लिये। [32]यीशु ने उनसे कहा, "पिता की ओर से मैंने तुम्हें अनेक अच्छे कार्य दिखाये हैं। उनमें से किस काम के लिए तुम मुझ पर पथराव करना चाहते हो?"

[33]यहूदी नेताओं ने उसे उत्तर दिया, "हम तुझ पर किसी अच्छे काम के लिए पथराव नहीं कर रहे हैं बल्कि इसलिए कर रहे हैं कि तूने परमेश्वर का अपमान किया है और तू, जो केवल एक मनुष्य है, अपने को परमेश्वर घोषित कर रहा है!"

[34]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या यह तुम्हारे विधान में नहीं लिखा है, 'मैंने कहा तुम सभी ईश्वर हो?'* [35]क्या यहाँ ईश्वर उन्हीं लोगों के लिये नहीं कहा गया जिन्हें परम पिता का संदेश मिल चुका है? और धर्म शास्त्र का खंडन नहीं किया जा सकता। [36]क्या तुम 'तू परमेश्वर का अपमान कर रहा है' यह उसके लिये कह रहे हो, जिसे परम पिता ने समर्पित कर इस जगत् को भेजा है, केवल इसलिये कि मैंने कहा, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ'? [37]यदि मैं अपने परम पिता के ही कार्य नहीं कर रहा हूँ तो मेरा विश्वास मत करो [38]किन्तु यदि मैं अपने परम पिता के ही कार्य कर रहा हूँ, तो, यदि तुम मुझ में विश्वास नहीं करते तो उन कार्यों में ही विश्वास करो जिससे तुम यह अनुभव कर सको और जान सको कि परम पिता मुझ में है और मैं परम पिता में।"

[39]इस पर यहूदियों ने उसे बंदी बनाने का प्रयत्न एक बार फिर किया। पर यीशु उनके हाथों से बच निकला।

[40]यीशु फिर यर्दन के पार उस स्थान पर चला गया जहाँ पहले यूहन्ना बपतिस्मा दिया करता था। यीशु वहाँ ठहरा, [41]बहुत से लोग उसके पास आये और कहने लगे, "यूहन्ना ने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किये पर इस व्यक्ति के बारे में यूहन्ना ने जो कुछ कहा था सब सच निकला।" [42]फिर वहाँ बहुत से लोग यीशु में विश्वासी हो गये।

लाज़र की मृत्यु

11 बैतनिय्याह का लाज़र नाम का एक व्यक्ति बीमार था। यह वह नगर था जहाँ मरियम और उसकी बहन मारथा रहती थीं। [2](मरियम वह स्त्री थी जिसने प्रभु पर इत्र डाला था और अपने सिर के बालों से प्रभु के पैर पोंछे थे। लाज़र नाम का रोगी उसी का भाई था।) [3]इन बहनों ने यीशु के पास समाचार भेजा, "हे प्रभु, जिसे तू प्यार करता है, वह बीमार है।"

[4]यीशु ने जब यह सुना तो वह बोला, "यह बीमारी जान लेवा नहीं है। बल्कि परमेश्वर की महिमा को प्रकट करने के लिये है। जिससे परमेश्वर के पुत्र को महिमा प्राप्त होगी।" [5](यीशु मारथा, उसकी बहन और लाज़र को प्यार करता था।) [6]इसलिए जब उसने सुना कि लाज़र बीमार हो गया है तो जहाँ वह ठहरा था, दो दिन और रुका। [7]फिर यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा, "आओ हम यहूदिया लौट चलें।"

[8]इस पर उसके अनुयायियों ने उससे कहा, "हे रब्बी, कुछ ही दिन पहले यहूदी नेता तुझ पर पथराव करने का यत्न कर रहे थे और तू फिर वहीं जा रहा है।"

समर्पण का उत्सव दिसम्बर का एक विशेष सप्ताह जिसे यहूदी मनाते थे।

मैंने कहा ... है भजन. 82:6

[9]यीशु ने उत्तर दिया, "क्या एक दिन में बारह घंटे नहीं होते हैं। यदि कोई व्यक्ति दिन के प्रकाश में चले तो वह ठोकर नहीं खाता क्योंकि वह इस जगत के प्रकाश को देखता है। [10]पर यदि कोई रात में चले तो वह ठोकर खाता है क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं है।"

[11]उसने यह कहा और फिर उनसे बोला, "हमारा मित्र लाज़र सो गया है पर मैं उसे जगाने जा रहा हूँ।"

[12]फिर उसके शिष्यों ने उससे कहा, "हे प्रभु, यदि उसे नींद आ गयी है तो वह अच्छा हो जायेगा।"

[13]यीशु लाज़र की मौत के बारे में कह रहा था पर शिष्यों ने सोचा कि वह स्वाभाविक नींद की बात कर रहा था। [14]इसलिये फिर यीशु ने उनसे स्पष्ट कहा, "लाज़र मर चुका है।" [15]मैं तुम्हारे लिये प्रसन्न हूँ कि मैं वहाँ नहीं था। क्योंकि अब तुम मुझमें विश्वास कर सकोगे। आओ अब हम उसके पास चलें।"

[16]फिर थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता था, दूसरे शिष्यों से कहा, "आओ हम भी प्रभु के साथ वहाँ चलें ताकि हम भी उसके साथ मर सकें।"

बैतनिय्याह में यीशु

[17]इस तरह यीशु चल दिया और वहाँ जाकर उसने पाया कि लाज़र को क्रब में रखे चार दिन हो चुके हैं। [18](बैतनिय्याह यरूशलेम से लगभग तीन किलोमीटर दूर था।) [19]भाई की मृत्यु पर मारथा और मरियम को सांत्वना देने के लिये बहुत से यहूदी नेता आये थे।

[20]जब मारथा ने सुना कि यीशु आया है तो वह उससे मिलने गयी। जबकि मरियम घर में ही रही [21]वहाँ जाकर मारथा ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई मरता नहीं। [22]पर मैं जानती हूँ कि अब भी तू परमेश्वर से जो कुछ माँगेगा वह तुझे देगा।"

[23]यीशु ने उससे कहा, "तेरा भाई जी उठेगा।" [24]मारथा ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि पुनरुत्थान के अन्तिम दिन वह जी उठेगा।"

[25]यीशु ने उससे कहा, "मैं ही पुनरुत्थान हूँ और मैं ही जीवन हूँ। वह जो मुझमें विश्वास करता है जियेगा। [26]और हर वह, जो जीवित है और मुझमें विश्वास रखता है, कभी नहीं मरेगा। क्या तू यह विश्वास रखती है।"

[27]वह यीशु से बोली, "हाँ प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि तू मसीह है, परमेश्वर का पुत्र जो जगत् में आने वाला था।"

यीशु रो दिया

[28]फिर इतना कह कर वह वहाँ से चली गयी और अपनी बहन को अकेले में बुलाकर बोली, "गुरु यहीं है, वह तुझे बुला रहा है।" [29]जब मरियम ने यह सुना तो वह तत्काल उठकर उससे मिलने चल दी। [30](यीशु अभी तक गाँव में नहीं आया था। वह अभी भी उसी स्थान पर था जहाँ उसे मारथा मिली थी।) [31]फिर जो यहूदी घर पर उसे सांत्वना दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि मरियम उठकर झटपट चल दी तो वे यह सोच कर कि वह कब्र पर विलाप करने जा रही है, उसके पीछे हो लिये। [32]मरियम जब वहाँ पहुँची जहाँ यीशु था तो यीशु को देखकर उसके चरणों में गिर पड़ी और बोली, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई मरता नहीं।"

[33]यीशु ने जब उसे और उसके साथ आये यहूदियों को रोते बिलखते देखा तो उसकी आत्मा तड़प उठी। वह बहुत व्याकुल हुआ। [34]और बोला, "तुमने उसे कहाँ रखा है?" वे उससे बोले, "प्रभु, आ और देख।"

[35]यीशु फूट–फूट कर रोने लगा।

[36]इस पर यहूदी कहने लगे, "देखो! यह लाज़र को कितना प्यार करता है।"

[37]मगर उनमें से कुछ ने कहा, "यह व्यक्ति जिसने अंधे को आँखे दीं, क्या लाज़र को भी मरने से नहीं बचा सकता?"

यीशु का लाज़र को फिर जीवित करना

[38]तब यीशु अपने मन में एक बार फिर बहुत अधिक व्याकुल हुआ और कब्र की तरफ गया। यह एक गुफा थी और उसका द्वार एक चट्टान से ढका हुआ था। [39]यीशु ने कहा, "इस चट्टान को हटाओ।"

मृतक की बहन मारथा ने कहा, "हे प्रभु, अब तक तो वहाँ से दुर्गन्ध आ रही होगी क्योंकि उसे दफनाए चार दिन हो चुके हैं।"

[40]यीशु ने उससे कहा, "क्या मैंने तुझसे नहीं कहा कि यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा का दर्शन पायेगी।"

[41]तब उन्होंने उस चट्टान को हटा दिया। और यीशु ने अपनी आँखें ऊपर उठाते हुए कहा, "परम पिता मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ क्योंकि तूने मेरी सुन ली है। [42]मैं जानता हूँ कि तू सदा मेरी सुनता है किन्तु चारों ओर

इकट्ठी भीड़ के लिये मैंने यह कहा है जिससे वे यह मान सकें कि मुझे तूने भेजा है।" [43]यह कहने के बाद उसने ऊँचे स्वर में पुकारा "लाज़र, बाहर आ!" [44]वह व्यक्ति जो मर चुका था बाहर निकल आया। उसके हाथ पैर अभी भी कफ़न में बँधे थें। उसका मुँह कपड़े में लिपटा हुआ था।

यीशु ने लोगों से कहा, "इसे खोल दो और जाने दो।"

यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की हत्या का षड़यन्त्र

[45]इसके बाद मरियम के साथ आये यहूदियों में से बहुतों ने यीशु के इस कार्य को देखकर उस पर विश्वास किया। [46]किन्तु उनमें से कुछ फरीसियों के पास गये और जो कुछ यीशु ने किया था, उन्हें बताया। [47]फिर महायाजकों और फरीसियों ने यहूदियों की सबसे ऊँची परिषद बुलाई। और कहा, "हमें क्या करना चाहिये? यह व्यक्ति बहुत से आश्चर्य चिह्न दिखा रहा है। [48]यदि हमने उसे ऐसे ही करते रहने दिया तो हर कोई उस पर विश्वास करने लगेगा और इस तरह रोमी लोग यहाँ आ जायेंगे और हमारे मन्दिर व देश को नष्ट कर देंगे।"

[49]किन्तु उस वर्ष के महायाजक कैफा ने उनसे कहा, "तुम लोग कुछ भी नहीं जानते। [50]और न ही तुम्हें इस बात की समझ है कि इसी में तुम्हारा लाभ है कि बजाय इसके कि सारी जाति ही नष्ट हो जाये, सबके लिये एक आदमी को मारना होगा।"

[51]यह बात उसने अपनी तरफ़ से नहीं कही थी पर क्योंकि वह उस साल का महायाजक था उसने भविष्यवाणी की थी कि यीशु लोगों के लिये मरने जा रहा है [52]न केवल यहूदियों के लिये बल्कि परमेश्वर की संतान जो तितर–बितर हैं, उन्हें एकत्र करने के लिये।

[53]इस तरह उसी दिन से वे यीशु को मारने के कुचक्र रचने लगे। [54]यीशु यहूदियों के बीच फिर कभी प्रकट होकर नहीं गया। और यरूशलेम छोड़कर वह निर्जन रेगिस्तान के पास इफ्राईम नगर जा कर अपने शिष्यों के साथ रहने लगा।

[55]यहूदियों का फ़सह पर्व आने को था। बहुत से लोग अपने गाँवों से यरूशलेम चले गये थे ताकि वे फ़सह पर्व से पहले अपने को पवित्र कर लें। [56]वे यीशु को खोज रहे थे। इसलिये जब वे मन्दिर में खड़े थे तो उन्होंने आपस में एक दूसरे से पूछना शुरू किया, "तुम क्या सोचते हो, क्या निश्चय ही वह इस पर्व में नहीं आयेगा।" [57]फिर महायाजकों और फरीसियों ने यह आदेश दिया कि यदि किसी को पता चले कि यीशु कहाँ है तो वह इसकी सूचना दे ताकि वे उसे बंदी बना सकें।

यीशु बैतनिय्याह में अपने मित्रों के साथ

12 फ़सह पर्व से छह दिन पहले यीशु बैतनिय्याह को रवाना हो गया। वहीं लाज़र रहता था जिसे यीशु ने मृतकों मे से जीवित किया था। [2]वहाँ यीशु के लिये उन्होंने भोजन तैयार किया। मारथा ने उसे परोसा। यीशु के साथ भोजन के लिये जो बैठे थे लाज़र भी उनमें एक था। [3]मरियम ने जटामाँसी से तैयार किया हुआ कोई आधा लीटर बहुमूल्य इत्र यीशु के पैरों पर लगायाा और फिर अपने केशों से उसके चरणों को पोंछा। सारा घर सुगंध से महक उठा।

[4]उसके शिष्यों में से एक यहूदा इस्करियोती ने, जो उसे धोखा देने वाला था कहा, [5]"इस इत्र को तीन सौ चाँदी के सिक्कों में बेचकर धन गरीबों को क्यों नहीं दे दिया गया?" [6]उसने यह बात इसलिये नहीं कही थी कि उसे गरीबों की बहुत चिन्ता थी बल्कि वह तो स्वयं एक चोर था। और रूपयों की थैली उसी के पास रहती थी। उसमें जो डाला जाता उसे वह चुरा लेता था।

[7]तब यीशु ने कहा, "रहने दो। उसे रोको मत। उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में यह सब किया है। [8]गरीब लोग सदा तुम्हारे पास रहेंगे पर मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।"

लाज़र के विरुद्ध षड़यन्त्र

[9]फ़सह पर्व पर आयी यहूदियों की भारी भीड़ को जब यह पता चला कि यीशु वहीं बैतनिय्याह में है तो वह उससे मिलने आयी। न केवल उससे बल्कि वह उस लाज़र को देखने के लिये भी आयी थी जिसे यीशु ने मरने के बाद फिर जीवित कर दिया था। [10]इसलिये महायाजकों ने लाज़र को भी मारने की योजना बनायी। [11]क्योंकि उसी के कारण बहुत से यहूदी अपने नेताओं को छोड़कर यीशु में विश्वास करने लगे थे।

यीशु का यरूशलेम में प्रवेश

[12]अगले दिन फ़सह पर्व पर आई भीड़ ने जब यह सुना कि यीशु यरूशलेम में आ रहा है [13]तो लोग खजूर

की टहनियाँ लेकर उससे मिलने चल पड़े। वे पुकार रहे थे,

"होशन्ना!
धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।
वह जो इस्राएल का राजा है।"

भजन संहिता 118:25–26

[14]तब यीशु को एक गधा मिला और वह उस पर सवार हो गया। जैसा कि धर्मशास्त्र में लिखा है:

15 "सिय्योन की पुत्री,* डर मत!
देख! तेरा राजा गधे के बछेरे
पर बैठा आ रहा है।"

जकर्याह 9:9

[16]पहले तो उसके अनुयायी इसे समझे ही नहीं किन्तु जब यीशु की महिमा प्रकट हुई तो उन्हें याद आया कि शास्त्र में ये बातें उसके बारे में लिखी हुई थीं–और लोगों ने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया था।

यीशु के विषय में लोगों का कथन

[17]उसके साथ जो भीड़ थी उसने यह साक्षी दी कि उसने लाज़र को कब्र से पुकार कर मरे हुओं में से पुनर्जीवित किया। [18]लोग उससे मिलने इसलिए आये थे कि उन्होंने सुना था कि यह वही है जिसने वह आश्चर्यकर्म किया है। [19]तब फरीसी आपस में कहने लगे, "सोचो तुम लोग कुछ नहीं कर पा रहे हो, देखो सारा जगत् उसके पीछे हो लिया है।"

अपनी मृत्यु के बारे में यीशु का वचन

[20]फ़सह पर्व पर जो आराधना करने आये थे उनमें से कुछ यूनानी थे। [21]वे गलील में बैतसैदा के निवासी फिलिप्पुस के पास गये और उससे विनती करते हुए कहने लगे, "महोदय, हम यीशु के दर्शन करना चाहते हैं।" तब फिलिप्पुस ने अन्द्रियास को आकर बताया। [22]फिर अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने यीशु के पास आकर कहा। [23]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मानव–पुत्र के महिमावान होने का समय आ गया है। [24]मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का एक दाना धरती पर गिर कर मर नहीं जाता, तब तक वह एक ही रहता है। पर जब वह मर जाता है तो अनगिनत दानों को जन्म देता है।" [25]जिसे अपना जीवन प्रिय है, वह उसे खो देगा किन्तु वह, जिसे इस संसार में अपने जीवन से प्रेम नहीं है, उसे अनन्त जीवन के लिये रखेगा। [26]यदि कोई मेरी सेवा करता है तो वह निश्चय ही मेरा अनुसरण करे और जहाँ मैं हूँ, वहीं मेरा सेवक भी रहेगा। यदि कोई मेरी सेवा करता है तो परम पिता उसका आदर करेगा।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

[27]"अब मेरा जी घबरा रहा है। क्या मैं कहूँ, 'हे पिता, मुझे दुख की इस घड़ी से बचा' किन्तु इस घड़ी के लिए ही तो मैं आया हूँ। [28]हे पिता, अपने नाम को महिमा प्रदान कर!"

तब आकाशवाणी हुई, "मैंने इसकी महिमा की है और मैं इसकी महिमा फिर करूँगा।"

[29]तब वहाँ मौजूद भीड़, जिसने यह सुना था, कहने लगी कि कोई बादल गरजा है। दूसरे कहने लगे, "किसी स्वर्गदूत ने उससे बात की है।"

[30]उत्तर में यीशु ने कहा, "यह आकाशवाणी मेरे लिए नहीं बल्कि तुम्हारे लिए थी। [31]अब इस जगत् के न्याय का समय आ गया है। अब इस जगत् के शासक को निकाल दिया जायेगा। [32]और यदि मैं धरती के ऊपर उठा लिया गया तो सब लोगों को अपनी ओर आकर्षित करूँगा।" [33](वह यह बताने के लिए ऐसा कह रहा था कि वह कैसी मृत्यु मरने जा रहा है।)

[34]इस पर भीड़ ने उसको जवाब दिया, "हमने व्यवस्था की यह बात सुनी है कि मसीह सदा रहेगा इसलिये तुम कैसे कहते हो कि मनुष्य के पुत्र को निश्चय ही ऊपर उठाया जायेगा। यह मनुष्य का पुत्र कौन है?"

[35]तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम्हारे बीच ज्योति अभी कुछ समय और रहेगी। जब तक ज्योति है चलते रहो। ताकि अँधेरा तुम्हें घेर न ले क्योंकि जो अँधेरे में चलता है, नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है। [36]जब तक ज्योति तुम्हारे पास है उसमें विश्वास बनाये रखो ताकि तुम लोग ज्योतिर्मय हो सको।" यीशु यह कहकर कहीं चला गया और उनसे छुप गया।

यहूदियों का यीशु में अविश्वास

[37]यद्यपि यीशु ने उनके सामने ये सब आश्चर्य चिन्ह प्रकट किये किन्तु उन्होंने विश्वास नहीं किया [38]ताकि

सिय्योन की पुत्री अर्थात् यरूशलेम।

भविष्यवक्ता यशायाह ने जो यह कहा था सत्य सिद्ध हो

"प्रभु हमारे संदेश पर किसने विश्वास किया है?
किस पर प्रभु की शक्ति प्रकट की गयी है?"

यशायाह 53:1

[39]इसी कारण वे विश्वास नहीं कर सके। क्योंकि यशायाह ने फिर कहा था,

[40] "उसने उनकी आँखे अंधी और
उनका हृदय कठोर बनाया ताकि
वे अपनी आँखों से देख न सकें और
बुद्धि से समझ न पायें और मेरी ओर
न मुड़ें जिससे मैं उन्हें चंगा कर सकूँ।"

यशायाह 6:10

[41]यशायाह ने यह इसलिये कहा था कि उसने उसकी महिमा देखी थी और उसके विषय में बातें भी की थीं।

[42]फिर भी बहुत थे यहाँ तक कि यहूदी नेताओं में से भी ऐसे अनेक थे जिन्होंने उसमें विश्वास किया। किन्तु फ़रीसियों के कारण अपने विश्वास की खुले तौर पर घोषणा नहीं की, क्योंकि ऐसा करने पर उन्हें आराधना सभा से निकाले जाने का भय था। [43]उन्हें मनुष्यों द्वारा दिया गया सम्मान परमेश्वर द्वारा दिये गये सम्मान से अधिक प्यारा था।

यीशु के उपदेशों पर ही मनुष्य का न्याय होगा

[44]यीशु ने पुकार कर कहा, "वह जो मुझ में विश्वास करता है, वह मुझ में नहीं, बल्कि उसमें विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है। [45]और जो मुझे देखता है, वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। [46]मैं जगत् में प्रकाश के रूप में आया ताकि हर वह व्यक्ति जो मुझ में विश्वास रखता है, अंधकार में न रहे।

[47]"यदि कोई मेरे शब्दों को सुनकर भी उनका पालन नहीं करता तो भी उसे मैं दोषी नहीं ठहराता क्योंकि मैं जगत् को दोषी ठहराने नहीं बल्कि उसका उद्धार करने आया हूँ। [48]जो मुझे नकारता है और मेरे वचनों को स्वीकार नहीं करता, उसके लिये एक है जो उसका न्याय करेगा। वह है मेरा वचन जिसका उपदेश मैंने दिया है। अन्तिम दिन वही उसका न्याय करेगा। [49]क्योंकि मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा है बल्कि परम पिता ने, जिसने मुझे भेजा है, आदेश दिया है कि मैं क्या कहूँ और क्या उपदेश दूँ। [50]और मैं जानता हूँ कि उसके आदेश का अर्थ है अनन्त जीवन। इसलिये मैं जो बोलता हूँ, वह ठीक वही है जो परम पिता ने मुझ से कहा है।"

यीशु का अपने शिष्यों के पैर धोना

13 फ़सह पर्व से पहले यीशु ने देखा कि इस जगत को छोड़ने और परम पिता के पास जाने का उसका समय आ पहुँचा है तो इस जगत् में जो उसके अपने थे और जिन्हें वह प्रेम करता था, उन पर उसने चरम सीमा का प्रेम दिखाया।

[2]शाम का खाना चल रहा था। शैतान अब तक शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के मन में यह डाल चुका था कि वह यीशु को धोखे से पकड़वाएगा। [3]यीशु यह जानता था कि परम पिता ने सब कुछ उसके हाथों सौंप दिया है और वह परमेश्वर से आया है, और परमेश्वर के पास ही वापस जा रहा है। [4]इसलिये वह खाना छोड़ कर खड़ा हो गया। उसने अपने बाहरी वस्त्र उतार दिये और एक अँगोछा अपने चारों ओर लपेट लिया। [5]फिर एक घड़े में जल भरा और अपने शिष्यों के पैर धोने लगा और उस अँगोछे से जो उसने लपेटा हुआ था, उनके पाँव पोंछने लगा।

[6]फिर जब वह शमौन पतरस के पास पहुँचा तो पतरस ने उससे कहा, "प्रभु, क्या तू मेरे पाँव धो रहा है।"

[7]उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "अभी तू नहीं जानता कि मैं क्या कर रहा हूँ पर बाद में जान जायेगा।"

[8]पतरस ने उससे कहा, "तू मेरे पाँव कभी भी नहीं धोयेगा।"

यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं न धोऊँ तो तू मेरे पास स्थान नहीं पा सकेगा।"

[9]शमौन पतरस ने उससे कहा, "प्रभु, केवल मेरे पैर ही नहीं, बल्कि मेरे हाथ और मेरा सिर भी धो दे।"

[10]यीशु ने उससे कहा, "जो नहा चुका है उसे अपने पैरों के सिवा कुछ भी और धोने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि वह पूरी तरह शुद्ध होता है। तुम लोग शुद्ध हो पर सबके सब नहीं।" [11]वह उसे जानता था जो उसे धोखे से पकड़वाने वाला है। इसलिए उसने कहा था, "तुम में से सभी शुद्ध नहीं हैं।"

[12]जब वह उनके पाँव धो चुका तो उसने अपने बाहरी वस्त्र फिर पहन लिये और वापस अपने स्थान पर आकर बैठ गया। और उनसे बोला, "क्या तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारे लिये क्या किया है? [13]तुम लोग मुझे 'गुरु' और 'प्रभु' कहते हो। और तुम उचित हो। क्योंकि मैं वही हूँ। [14]इसलिये यदि मैंनें प्रभु और गुरु होकर भी जब तुम्हारे पैर धोये हैं तो तुम्हें भी एक दूसरे के पैर धोने चाहियें। मैंनें तुम्हारे सामने एक उदाहरण रखा है [15]ताकि तुम दूसरों के साथ वही कर सको जो मैंनें तुम्हारे साथ किया है। [16]मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ एक दास स्वामी से बड़ा नहीं है और न ही एक संदेशवाहक उससे बड़ा है जो उसे भेजता है। [17]यदि तुम लोग इन बातों को जानते हो और उन पर चलते हो तो तुम सुखी होगे।

[18]"मैं तुम सब के बारे में नहीं कह रहा हूँ। मैं उन्हें जानता हूँ जिन्हें मैंने चुना है। (और यह भी कि यहूदा विश्वासघाती है) किन्तु मैंने उसे इसलिये चुना है ताकि शास्त्र का यह वचन सत्य हो, 'वही जिसने मेरी रोटी खायी मेरे विरोध में हो गया।' [19]अब यह घटित होने से पहले ही मैं तुम्हें इसलिये बता रहा हूँ कि जब यह घटित हो तब तुम विश्वास करो कि वह 'मैं हूँ'। [20]मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ कि वह जो किसी भी मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, मुझको ग्रहण करता है। और जो मुझे ग्रहण करता है, उसे ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है।"

यीशु का कथन: मरवाने के लिये उसे कौन पकड़वायेगा

[21]यह कहने के बाद यीशु बहुत व्याकुल हुआ और साक्षी दी, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, तुम में से एक मुझे धोखा देकर पकड़वायेगा।"

[22]तब उसके शिष्य एक दूसरे की तरफ़ देखने लगे। वे निश्चय ही नहीं कर पा रहे थे कि वह किस के बारे में कह रहा है। [23]उसका एक शिष्य यीशु के निकट ही बैठा हुआ था। इसे यीशु बहुत प्यार करता था। [24]तब शमौन पतरस ने उसे इशारा किया कि पूछे वह कौन हो सकता है जिस के विषय में यीशु बता रहा था।

[25]यीशु के प्रिय शिष्य ने सहज में ही उसकी छाती पर झुक कर उससे पूछा, "हे प्रभु, वह कौन है?"

[26]यीशु ने उत्तर दिया, "रोटी का टुकड़ा कटोरे में डुबो कर जिसे मैं दूँगा, वही वह है।" फिर यीशु ने रोटी का टुकड़ा कटोरे में डुबोया और उसे उठा कर शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा को दिया। [27]जैसे ही यहूदा ने रोटी का टुकड़ा लिया उसमें शैतान समा गया। फिर यीशु ने उससे कहा, "जो तू करने जा रहा है, उसे तुरन्त कर।" [28]किन्तु वहाँ बैठे हुओं में से किसी ने भी यह नहीं समझा कि यीशु ने उससे यह बात क्यों कही। [29]कुछ ने सोचा कि रुपयों की थैली यहूदा के पास रहती है इसलिए यीशु उससे कह रहा है कि 'पर्व' के लिये आवश्यक सामग्री मोल ले आओ या कह रहा है कि ग़रीबों को वह कुछ दे दे। इसलिए यहूदा ने रोटी का टुकड़ा लिया

[30]और तत्काल चला गया। यह रात का समय था।

अपनी मृत्यु के विषय में यीशु का वचन

[31]उसके चले जाने के बाद यीशु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र अब महिमावान हुआ है। और उसके द्वारा परमेश्वर की महिमा हुई है। [32]यदि उसके द्वारा परमेश्वर की महिमा हुई है तो परमेश्वर अपने द्वारा उसे महिमावान करेगा। और वह उसे महिमा शीघ्र ही देगा।"

[33]"हे मेरे प्यारे बच्चों, मैं अब थोड़ी ही देर और तुम्हारे साथ हूँ। तुम मुझे ढूँढोगे और जैसा कि मैंने यहूदी नेताओं से कहा था, तुम वहाँ नहीं आ सकते, जहाँ मैं जा रहा हूँ, वैसा ही अब मैं तुमसे कहता हूँ।

[34]"मैं तुम्हें एक नयी आज्ञा देता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो। जैसे मैंने तुमसे प्यार किया है वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो। [35]यदि तुम एक दूसरे से प्रेम रखोगे तभी हर कोई यह जान पायेगा कि तुम मेरे अनुयायी हो।"

यीशु का वचन–पतरस उसे पहचानने से इन्कार करेगा

[36]शमौन पतरस ने उससे पूछा, "हे प्रभु, तू कहाँ जा रहा है?"

यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता। पर तू बाद में मेरे पीछे आयेगा।"

[37]पतरस ने उससे पूछा, "हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिये अपने प्राण तक त्याग दूँगा।"

[38]यीशु ने उत्तर दिया, "तू अपना प्राण त्यागेगा? मैं तुझे सत्य कहता हूँ कि जब तक तू तीन बार इन्कार नहीं कर लेगा तब तक मुर्गा बाँग नहीं देगा।"

यीशु का शिष्यों को समझाना

14 “तुम्हारे हृदय दुखी नहीं होने चाहियें। परमेश्वर में विश्वास रखो और मुझमें भी विश्वास बनाये रखो। [2]मेरे परम पिता के घर में बहुत से कमरे हैं। (यदि ऐसा नहीं होता तो मैं तुमसे कह देता) मैं तुम्हारे लिए स्थान बनाने जा रहा हूँ। [3]और यदि मैं वहाँ जाऊँ और तुम्हारे लिए स्थान तैयार करूँ तो मैं फिर यहाँ आऊँगा और अपने साथ तुम्हें भी वहाँ ले चलूँगा ताकि तुम भी वहीं रहो जहाँ मैं हूँ। [4]और जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ का रास्ता जानते हो।”

[5]थोमा ने उससे कहा, “हे प्रभु, हम नहीं जानते तू कहाँ जा रहा है। फिर वहाँ का रास्ता कैसे जान सकते हैं?”

[6]यीशु ने उससे कहा, “मैं ही मार्ग हूँ, सत्य हूँ और जीवन हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई भी परम पिता के पास नहीं आता। [7]यदि तूने मुझे जान लिया होता तो तू परम पिता को भी जानता। अब तू उसे जानता है और उसे देख भी चुका है।”

[8]फिलिप्पुस ने उससे कहा, “हे प्रभु, हमे परम पिता के दर्शन करा दे। हमे संतोष हो जायेगा।”

[9]यीशु ने उससे कहा, “फिलिप्पुस मैं इतने लम्बे समय से तेरे साथ हूँ और तब भी तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है, उसने परम पिता को देख लिया है। फिर तू कैसे कहता है ‘हमें परम पिता के दर्शन करा दे।’ [10]क्या तुझे विश्वास नहीं है कि मैं परम पिता में हूँ और परम पिता मुझ में है? वे वचन जो मैं तुम लोगों से कहता हूँ, अपनी ओर से ही नहीं कहता। परम पिता जो मुझ में निवास करता है, अपने काम करता है। [11]जब मैं कहता हूँ कि मैं परम पिता में हूँ और परम पिता मुझ में है तो मेरा विश्वास करो और यदि नहीं तो स्वयं कामों के कारण ही विश्वास करो। [12]मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, जो मुझ में विश्वास करता है, वह भी उन कार्यो को करेगा जिन्हें मैं करता हूँ। वास्तव में वह इन कामों से भी बड़े काम करेगा। क्योंकि मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ। [13]और मैं वह सब कुछ करूँगा जो तुम लोग मेरे नाम से माँगोगे जिससे पुत्र के द्वारा परम पिता महिमावान हो। [14]यदि तुम मुझसे मेरे नाम में कुछ भी माँगोगे तो मैं उसे करूँगा।

पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा

[15]“यदि तुम मुझे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे। [16]मैं परम पिता से विनती करूँगा और वह तुम्हें एक दूसरा सहायक* देगा ताकि वह सदा तुम्हारे साथ रह सके। [17]यानी सत्य का आत्मा* जिसे जगत् ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह उसे न तो देखता है और न ही उसे जानता है। तुम लोग उसे जानते हो क्योंकि वह आज तुम्हारे साथ रहता है और भविष्य में तुम में रहेगा।

[18]“मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा। मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। [19]कुछ ही समय बाद जगत् मुझे और नहीं देखेगा किन्तु तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं जीवित हूँ और तुम भी जीवित रहोगे। [20]उस दिन तुम जानोगे कि मैं परम पिता में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुममें। [21]वह जो मेरे आदेशों को स्वीकार करता है और उनका पालन करता है, मुझसे प्रेम करता है। जो मुझमें प्रेम रखता है उसे मेरा परम पिता प्रेम करेगा। मैं भी उसे प्रेम करूँगा और अपने आप को उस पर प्रकट करूँगा।”

[22]यहूदा ने (यहूदा इस्करियोती ने नहीं) उससे कहा, “हे प्रभु, ऐसा क्यों है कि तू अपने आपको हम पर प्रकट करना चाहता है और जगत् पर नहीं?”

[23]उत्तर में यीशु ने उससे कहा, “यदि कोई मुझमें प्रेम रखता है तो वह मेरे वचन का पालन करेगा। और उससे मेरा परम पिता प्रेम करेगा। और हम उसके पास आयेंगे और उसके साथ निवास करेंगे। [24]जो मुझ में प्रेम नहीं रखता, वह मेरे उपदेशों पर नहीं चलता। यह उपदेश जिसे तुम सुन रहे हो, मेरा नहीं है, बल्कि उस परम पिता का है जिसने मुझे भेजा है।

[25]“ये बातें मैंने तुमसे तभी कही थीं जब मैं तुम्हारे साथ था। [26]किन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे परम पिता मेरे नाम से भेजेगा, तुम्हें सब कुछ बतायेगा। और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है उसे तुम्हें याद दिलायेगा।

[27]“मैं तुम्हारे लिये अपनी शांति छोड़ रहा हूँ। मैं तुम्हें स्वयं अपनी शांति दे रहा हूँ पर तुम्हें इसे मैं वैसे नहीं दे

सहायक उपदेशक अथवा ‘सुखदाता’ यहाँ यीशु पवित्र आत्मा के विषय में बता रहा है।

आत्मा पवित्र आत्मा। इसे परमेश्वर की आत्मा, और सुखदाता भी कहा है। वह मसीह से जुड़ा है। जगत में लोगों के बीच वह परमेश्वर का कार्य करता है। देखें यूहन्ना 16:13

रहा हूँ जैसे जगत देता है। तुम्हारा मन व्याकुल नहीं होना चाहिये और न ही उसे डरना चाहिये। [28]तुमने मुझे कहते सुना है कि मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास फिर आऊँगा। यदि तुमने मुझसे प्रेम किया होता तो तुम प्रसन्न होते क्योंकि मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ। क्योंकि परम पिता मुझ से महान है। [29]और अब यह घटित होने से पहले ही मैंने तुम्हें बता दिया है ताकि जब यह घटित हो तो तुम्हें विश्वास हो। [30]और अधिक समय तक मैं तुम्हारे साथ बात नहीं करूँगा क्योंकि इस जगत का शासक आ रहा है। मुझ पर उसका कोई बस नहीं चलता। किन्तु ये बातें इसलिए घट रहीं हैं ताकि जगत् जान जाये कि मैं परम पिता से प्रेम करता हूँ। [31]और पिता ने जैसी आज्ञा मुझे दी है, मैं वैसा ही करता हूँ।

"अब उठो, हम यहाँ से चलें।"

यीशु–सच्ची दाखलता

15 यीशु ने कहा, "सच्ची दाखलता मैं हूँ। और मेरा परम पिता देख–रेख करने वाला माली है। [2]मेरी हर उस शाखा को जिस पर फल नहीं लगता, वह काट देता है। और हर उस शाखा को जो फलती है, वह छाँटता है ताकि उस पर और अधिक फल लगें। [3]तुम लोग तो जो उपदेश मैंने तुम्हें दिया है, उसके कारण पहले ही शुद्ध हो। [4]तुम मुझ में रहो और मैं तुम में रहूँगा। वैसे ही जैसे कोई शाखा जब तक दाखलता में बनी नहीं रहती, तब तक अपने आप फल नहीं सकती वैसे ही तुम भी तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक मुझ में नहीं रहते।

[5]"वह दाखलता मैं हूँ और तुम उसकी शाखाएँ हो। जो मुझमें रहता है, और मैं जिस में रहता हूँ वह बहुत फलता है क्योंकि मेरे बिना तुम कुछ भी नहीं कर सकते। [6]यदि कोई मुझमें नहीं रहता तो वह टूटी शाखा की तरह फेंक दिया जाता है और सूख जाता है। फिर उन्हें बटोर कर आग में झोंक दिया जाता है और उन्हें जला दिया जाता है।

[7]"यदि तुम मुझ में रहो, और मेरे उपदेश तुम में रहें, तो जो कुछ तुम चाहते हो माँगो, वह तुम्हें मिलेगा। [8]इससे मेरे परम पिता की महिमा होती है कि तुम बहुत सफल होवो और मेरे अनुयायी रहो। [9]जैसे परम पिता ने मुझे प्रेम किया है, मैंने भी तुम्हें वैसे ही प्रेम किया है। मेरे प्रेम में बने रहो। [10]यदि तुम मेरे आदेशों का पालन करोगे तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे। वैसे ही जैसे मैं अपने परम पिता के आदेशों को पालते हुए उसके प्रेम में बना रहता हूँ। [11]मैंने ये बातें तुमसे इसलिये कही हैं कि मेरा आनन्द तुम में रहे और तुम्हारा आनन्द परिपूर्ण हो जाये। यह मेरा आदेश है [12]कि तुम आपस में प्रेम करो, वैसे ही जैसे मैंने तुम से प्रेम किया है। [13]बड़े से बड़ा प्रेम जिसे कोई व्यक्ति कर सकता है, वह है अपने मित्रों के लिए प्राण न्योछावर कर देना। [14]जो आदेश तुम्हें मैं देता हूँ, यदि तुम उन पर चलते रहो तो तुम मेरे मित्र हो। [15]अब से मैं तुम्हें 'दास' नहीं कहूँगा क्योंकि कोई दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या कर रहा है बल्कि मैं तुम्हें 'मित्र' कहता हूँ। क्योंकि मैंने तुम्हें वह हर बात बता दी है, जो मैंने अपने परम पिता से सुनी है। [16]तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना है और नियत किया है कि तुम जाओ और सफल बनो। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी सफलता बनी रहे ताकि मेरे नाम में जो कुछ तुम चाहो, परम पिता तुम्हें दे। [17]मैं तुम्हें यह आदेश दे रहा हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो।

यीशु की चेतावनी

[18]"यदि संसार तुमसे बैर करता है तो याद रखो वह तुमसे पहले मुझसे बैर करता है। [19]यदि तुम जगत् के होते तो जगत् तुम्हें अपनों की तरह प्यार करता पर तुम जगत् के नहीं हो मैंनें तुम्हें जगत् में से चुन लिया है और इसीलिए जगत् तुमसे बैर करता है। [20]मेरा वचन याद रखो एक दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं है। इसलिये यदि उन्होंने मुझे यातनाएँ दी हैं तो वे तुम्हें भी यातनाएँ देंगे। और यदि उन्होंने मेरा वचन माना तो वे तुम्हारा वचन भी मानेंगे। [21]पर वे मेरे कारण तुम्हारे साथ ये सब कुछ करेंगे क्योंकि वे उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। [22]यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता तो वे किसी भी पाप के दोषी न होते। पर अब अपने पाप के लिए उनके पास कोई बहाना नहीं है। [23]जो मुझसे बैर करता है वह परम पिता से बैर करता है। [24]यदि मैं उनके बीच वे कार्य नहीं करता जो कभी किसी ने नहीं किये तो वे पाप के दोषी न होते पर अब जब वे देख चुके हैं तब भी मुझसे और मेरे परम पिता दोनों से बैर रखते हैं। [25]किन्तु यह इसलिये हुआ कि उनके व्यवस्था–विधान में जो लिखा है वह सच हो सके। 'उन्होंने बेकार ही मुझ से बैर किया है।'

[26]"जब वह सहायक (जो सत्य की आत्मा है और परम पिता की ओर से आता है) तुम्हारे पास आयेगा जिसे मैं परम पिता की ओर से भेजूँगा, वह मेरी ओर से साक्षी देगा। [27]और तुम भी साक्षी दोगे क्योंकि तुम आदि से ही मेरे साथ रहे हो।

16 "ये बातें मैंने इसलिये तुमसे कही हैं कि तुम्हारा विश्वास न डगमगा जाये। [2]वे तुम्हें आराधना सभा से निकाल देंगे। वास्तव में वह समय आ रहा है जब तुम में से किसी को भी मार कर हर कोई सोचेगा कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है। [3]वे ऐसा इसलिए करेंगे कि वे न तो परम पिता को जानते हैं और न ही मुझे। [4]किन्तु मैंने तुमसे यह इसलिये कहा है ताकि जब उनका समय आये तो तुम्हें याद रहे कि मैंने उनके विषय में तुमको बता दिया था।

पवित्र आत्मा के कार्य

"आरम्भ में ये बातें मैंने तुम्हें नहीं बतायी थीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। [5]किन्तु अब मैं उसके पास जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है और तुममें से मुझ से कोई नहीं पूछेगा, 'तू कहाँ जा रहा है?' [6]क्योंकि मैंने तुम्हें ये बातें बता दी हैं, तुम्हारे हृदय शोक से भर गये हैं। [7]किन्तु मैं तुमसे सत्य कहता हूँ इसमें तुम्हारा भला है कि मैं जा रहा हूँ। क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो सहायक तुम्हारे पास नहीं आयेगा। किन्तु यदि मैं चला जाता हूँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। [8]और जब वह आयेगा तो पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में जगत् के संदेह दूर करेगा। [9]पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ में विश्वास नहीं रखते, [10]धार्मिकता के विषय में इसलिये कि अब मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ। और तुम मुझे अब और अधिक नहीं देखोगे। [11]न्याय के विषय में इसलिये कि इस जगत के शासक को दोषी ठहराया जा चुका है।

[12]"मुझे अभी तुमसे बहुत सी बातें कहनी हैं किन्तु तुम अभी उन्हें सह नहीं सकते। [13]किन्तु जब सत्य का आत्मा आयेगा तो वह तुम्हें पूर्ण सत्य की राह दिखायेगा क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा। वह जो कुछ सुनेगा वही बतायेगा। और जो कुछ होने वाला है उसको प्रकट करेगा। [14]वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि जो मेरा है उसे लेकर वह तुम्हें बतायेगा। हर वस्तु जो पिता की है, वह मेरी है। [15]इसीलिए मैंने कहा है कि जो कुछ मेरा है वह उसे लेगा और तुम्हें बतायेगा।

शोक आनन्द में बदल जायेगा

[16]"कुछ ही समय बाद तुम मुझे और अधिक नहीं देख पाओगे। और थोड़े समय बाद तुम मुझे फिर देखोगे।"

[17]तब उसके कुछ शिष्यों ने आपस में कहा, "यह क्या है जो वह हमें बता रहा है, "थोड़ी देर बाद तुम मुझे नहीं देख पाओगे?' और 'थोड़े समय बाद तुम मुझे फिर देखोगे?' और 'मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ।'" [18]फिर वे कहने लगे यह, "थोड़ी देर बाद क्या है! जिसके बारे में वह बता रहा है। वह क्या कह रहा है हम समझ नहीं रहे हैं।"

[19]यीशु समझ गया कि वे उससे प्रश्न करना चाहते हैं। इसलिये उसने उनसे कहा, "क्या तुम मैंने यह जो कहा है, उस पर आपस में सोच-विचार कर रहे हो, 'कुछ ही समय बाद तुम मुझे और अधिक नहीं देख पाओगे।' और 'फिर थोड़े समय बाद तुम मुझे देखोगे?' [20]मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, तुम विलाप करोगे और रोओगे किन्तु यह जगत् प्रसन्न होगा। तुम्हें शोक होगा किन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जायेगा। [21]जब कोई स्त्री जनने लगती है, तब उसे पीड़ा होती है क्योंकि उसकी पीड़ा की घड़ी आ चुकी होती है। किन्तु जब वह बच्चा जन चुकी होती है तो इस आनन्द से कि एक व्यक्ति इस संसार में पैदा हुआ है वह आनन्दित होती है और अपनी पीड़ा को भूल जाती है। [22]सो तुम सब भी इस समय वैसे ही दुखी हो किन्तु मैं तुमसे फिर मिलूँगा और तुम्हारे हृदय आनन्दित होंगे। और तुम्हारे आनन्द को तुमसे कोई छीन नहीं सकेगा। [23]उस दिन तुम मुझसे कोई प्रश्न नहीं पूछोगे। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ मेरे नाम में परम पिता से तुम जो कुछ भी माँगोगे वह उसे तुम्हें देगा। [24]अब तक मेरे नाम में तुमने कुछ नहीं माँगा है। माँगो, तुम पाओगे। ताकि तुम्हें भरपूर आनन्द हो।

जगत पर विजय

[25]"मैंने ये बातें तुम्हें दृष्टान्त देकर बतायी हैं। वह समय आ रहा है जब मैं तुमसे दृष्टान्त दे- देकर और अधिक समय बात नहीं करूँगा। बल्कि परम पिता के

विषय में खोल कर तुम्हें बताऊँगा। [26]उस दिन तुम मेरे नाम में माँगोगे और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि तुम्हारी ओर से मैं परम पिता से प्रार्थना करूँगा। [27]परम पिता स्वयं तुम्हें प्यार करता है क्योंकि तुमने मुझे प्यार किया है। और यह माना है कि मैं परम पिता से आया हूँ। [28]मैं परम पिता से प्रकट हुआ और इस जगत् में आया। और अब मैं इस जगत् को छोड़कर परम पिता के पास जा रहा हूँ।"

[29]उसके शिष्यों ने कहा, "देख अब तू बिना किसी दृष्टान्त के खोल कर बता रहा है। [30]अब हम समझ गये हैं कि तू सब कुछ जानता है। अब तुझे अपेक्षा नहीं है कि कोई तुझसे प्रश्न पूछे। इससे हमें यह विश्वास होता है कि तू परमेश्वर से प्रकट हुआ है।"

[31]यीशु ने इस पर उनसे कहा, "क्या तुम्हें अब विश्वास हुआ है? [32]सुनो, समय आ रहा है, बल्कि आ ही गया है जब तुम सब तितर–बितर हो जाओगे और तुम में से हर कोई अपने–अपने घर लौट जायेगा और मुझे अकेला छोड़ देगा किन्तु मैं अकेला नहीं हूँ क्योंकि मेरा परम पिता मेरे साथ है।

[33]"मैंने ये बातें तुमसे इसलिये कहीं कि मेरे द्वारा तुम्हें शांति मिले। जगत् में तुम्हें यातना मिली है किन्तु साहस रखो, मैंने जगत् को जीत लिया है!"

अपने शिष्यों के लिए यीशु की प्रार्थना

17 ये बातें कहकर यीशु ने आकाश की ओर देखा और बोला, "हे परम पिता, वह घड़ी आ पहुँची है अपने पुत्र को महिमा प्रदान कर ताकि तेरा पुत्र तेरी महिमा कर सके। [2]तूने उसे समूची मनुष्य जाति पर अधिकार दिया है कि वह, हर उसको, जिसको तूने उसे दिया है, अनन्त जीवन दे। [3]अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें। [4]जो काम तूने मुझे सौंपे थे, उन्हें पूरा करके जगत् में मैंने तुझे महिमावान किया है। [5]इसलिये अब तू अपने साथ मुझे भी महिमावान कर। हे परम पिता! वही महिमा मुझे दे जो जगत् से पहले, तेरे साथ मुझे प्राप्त थी।

[6]"जगत से जिन मनुष्यों को तूने मुझे दिया, मैंने उन्हें तेरे नाम का बोध कराया है। वे लोग तेरे थे किन्तु तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन का पालन किया। [7]अब वे जानते हैं कि हर वह वस्तु जो तूने मुझे दी है, वह तुझ ही से आती है। [8]मैंने उन्हें वे ही उपदेश दिये हैं जो तूने मुझे दिये थे और उन्होंने उनको ग्रहण किया। वे निश्चयपूर्वक जानते हैं कि मैं तुझसे ही आया हूँ। और उन्हें विश्वास हो गया है कि तूने मुझे भेजा है। [9]मैं उनके लिये प्रार्थना कर रहा हूँ। मैं जगत के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ बल्कि उनके लिए कर रहा हूँ जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं। [10]वह सब कुछ जो मेरा है, वह तेरा है और जो तेरा है, वह मेरा है। और मैंने उनके द्वारा महिमा पायी है। [11]मैं अब और अधिक समय जगत् में नहीं हूँ किन्तु वे जगत में हैं अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ। हे पवित्र पिता अपने उस नाम की शक्ति से उनकी रक्षा कर जो तूने मुझे दिया है ताकि जैसे तू और मैं एक हैं, वे भी एक हो सकें। [12]जब मैं उनके साथ था, मैंने तेरे उस नाम की शक्ति से उनकी रक्षा की, जो तूने मुझे दिया था। मैंने रक्षा की और उनमें से कोई भी नष्ट नहीं हुआ सिवाय उसके जो विनाश का पुत्र था ताकि शास्त्र का कहना सच हो।

[13]"अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ किन्तु ये बातें मैं जगत् में रहते हुए कह रहा हूँ ताकि वे अपने हृदयों में मेरे पूर्ण आनन्द को पा सकें। [14]मैंने तेरा वचन उन्हें दिया है पर संसार ने उनसे घृणा की क्योंकि वे सांसारिक नहीं हैं। वैसे ही जैसे मैं संसार का नहीं हूँ। [15]मैं यह प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ कि तू उन्हें संसार से निकाल ले बल्कि यह कि तू उनकी दुष्ट शैतान से रक्षा कर। [16]वे संसार के नहीं हैं, वैसे ही जैसे मैं संसार का नहीं हूँ। [17]सत्य के द्वारा तू उन्हें अपनी सेवा के लिये समर्पित कर। तेरा वचन सत्य है। [18]जैसे तूने मुझे इस जगत् में भेजा है, वैसे ही मैंने उन्हें जगत में भेजा है। [19]मैं उनके लिए अपने को तेरी सेवा में अर्पित कर रहा हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा स्वयं को तेरी सेवा में अर्पित करें।

[20]"किन्तु मैं केवल उन ही के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ बल्कि उनके लिये भी जो इनके उपदेशों द्वारा मुझ में विश्वास करेंगे। [21]वे सब एक हो। वैसे ही जैसे हे परम पिता तू मुझ में है और मैं तुझ में। वे भी हममें एक हों। ताकि जगत विश्वास करे कि मुझे तूने भेजा है। [22]वह महिमा जो तूने मुझे दी है, मैंने उन्हें दी है; ताकि वे भी वैसे ही एक हो सकें जैसे हम एक हों। [23]मैं उनमें होऊँगा और तू मुझमें होगा, जिससे वे पूर्ण एकता को प्राप्त हों और जगत जान जाये कि मुझे तूने भेजा है और तूने उन्हें भी वैसे ही प्रेम किया है जैसे तू मुझे प्रेम करता है।

[24]"हे परम पिता! जो लोग तूने मुझे सौंपे हैं, मैं चाहता हूँ कि जहाँ मैं हूँ, वे भी मेरे साथ हों ताकि वे मेरी उस महिमा को देख सकें जो तूने मुझे दी है। क्योंकि सृष्टि की रचना से भी पहले तूने मुझसे प्रेम किया है। [25]हे धार्मिक–पिता, जगत तुझे नहीं जानता किन्तु मैंने तुझे जान लिया है। और मेरे शिष्य जानते हैं कि मुझे तूने भेजा है। [26]न केवल मैंने तेरे नाम का उन्हें बोध कराया है बल्कि मैं इसका बोध कराता भी रहूँगा ताकि वह प्रेम जो तूने मुझ पर दर्शाया है उनमें भी हो। और मैं भी उनमें रहूँ।"

यीशु का बंदी बनाया जाना

18 यीशु यह कहकर अपने शिष्यों के साथ छोटी नदी किद्रोन के पार एक बगीचे में चला गया। [2]धोखे से उसे पकड़वाने वाला यहूदा भी उस जगह को जानता था क्योंकि यीशु वहाँ प्राय: अपने शिष्यों से मिला करता था। [3]इसलिये यहूदा रोमी सिपाहियों की एक टुकड़ी और महायाजकों और फरीसियों के भेजे लोगों और मन्दिर के पहरेदारों के साथ मशालें दीपक और हथियार लिये वहाँ आ पहुँचा।

[4]फिर यीशु जो सब कुछ जानता था कि उसके साथ क्या होने जा रहा है, आगे आया और उनसे बोला, "तुम किसे खोज रहे हो?"

[5]उन्होंने उसे उत्तर दिया, "यीशु नासरी को।"

यीशु ने उनसे कहा, "वह मैं हूँ।" (तब उसे धोखे से पकड़वाने वाला यहूदा भी वहाँ खड़ा था।) [6]जब उसने उनसे कहा, "वह मैं हूँ" तो वे पीछे हटे और धरती पर गिर पड़े।

[7]इस पर एक बार फिर यीशु ने उनसे पूछा, "तुम किसे खोज रहे हो?" वे बोले, "यीशु नासरी को।"

[8]यीशु ने उत्तर दिया, "मैंनें तुमसे कहा, वह मैं ही हूँ। यदि तुम मुझे खोज रहे हो तो इन लोगों को जाने दो।" [9]यह उसने इसलिये कहा कि जो उसने कहा था, वह सच हो, "मैंने उनमें से किसी को भी नहीं खोया, जिन्हें तूने मुझे सौंपा था।"

[10]फिर शमौन पतरस ने, जिसके पास तलवार थी, अपनी तलवार निकाली और महायाजक के दास का दाहिना कान काटते हुए उसे घायल कर दिया। (उस दास का नाम मलखुस था।) [11]फिर यीशु ने पतरस से कहा, "अपनी तलवार म्यान में रख। क्या मैं यातना का वह प्याला न पीऊँ जो परम पिता ने मुझे दिया है?"

यीशु का हन्ना के सामने लाया जाना

[12]फिर रोमी टुकड़ी के सिपाहियों और उनके सूबेदारों तथा यहूदियों के मंदिर के पहरेदारों ने यीशु को बंदी बना लिया। [13]और उसे बाँध कर पहले हन्ना के पास ले गये जो उस साल के महायाजक कैफा का ससुर था। [14]यह कैफा वही व्यक्ति था जिसने यहूदी नेताओं को सलाह दी थी कि सब लोगों के लिए एक का मरना अच्छा है।

पतरस का यीशु को पहचानने से इन्कार

[15]शमौन पतरस तथा एक और शिष्य यीशु के पीछे हो लिये। महायाजक इस शिष्य को अच्छी तरह जानता था इसलिए वह यीशु के साथ महायाजक के आँगन में घुस गया। [16]किन्तु पतरस बाहर द्वार के पास ही ठहर गया। फिर महायाजक की जान पहचान वाला दूसरा शिष्य बाहर गया और द्वारपालिन से कह कर पतरस को भीतर ले आया। [17]इस पर उस दासी ने जो द्वारपालिन थी कहा, "हो सकता है कि तू भी यीशु का ही शिष्य है?"

पतरस ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं नहीं हूँ।"

[18]क्योंकि ठंड बहुत थी दास और मंदिर के पहरेदार आग जलाकर वहाँ खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ वहीं खड़ा था और ताप रहा था।

महायाजक की यीशु से पूछताछ

[19]फिर महायाजक ने यीशु से उसके शिष्यों और उसकी शिक्षा के बारे में पूछा। [20]यीशु ने उसे उत्तर दिया, "मैंने सदा लोगों के बीच हर किसी से खुल कर बात की है। सदा मैंने प्रार्थना सभाओं में और मन्दिर में, जहाँ सभी यहूदी इकट्ठे होते हैं, उपदेश दिया है। मैंने कभी भी छिपा कर कुछ नहीं कहा है। [21]फिर तू मुझ से क्यों पूछ रहा है? मैंने क्या कहा है उनसे पूछ जिन्होंने मुझे सुना है। मैंनें क्या कहा, निश्चय ही वे जानते हैं।"

[22]जब उसने यह कहा तो मन्दिर के एक पहरेदार ने, जो वहीं खड़ा था, यीशु को एक थप्पड़ मारा और बोला, "तूने महायाजक को ऐसे उत्तर देने की हिम्मत कैसे की?"

[23]यीशु ने उसे उत्तर दिया, "यदि मैंने कुछ बुरा कहा है तो प्रमाणित कर और बता कि उसमें बुरा क्या था, और यदि मैंने ठीक कहा है तो तू मुझे क्यों मारता है?"

[24]फिर हन्ना ने उसे बँधे हुए ही महायाजक कैफा के पास भेज दिया।

पतरस का यीशु को पहचानने से फिर इन्कार

[25]जब शमौन पतरस खड़ा हुआ आग ताप रहा था तो उससे पूछा गया, "क्या यह सम्भव है कि तू भी उसका एक शिष्य है?" उसने इससे इन्कार किया। वह बोला, "नहीं मैं नहीं हूँ।"

[26]महायाजक के एक सेवक ने जो उस व्यक्ति का सम्बन्धी था जिसका पतरस ने कान काटा था, पूछा, "बता क्या मैंने तुझे उसके साथ बगीचे में नहीं देखा था?"

[27]इस पर पतरस ने एक बार फिर इन्कार किया। और तभी मुर्गे ने बाँग दी।

यीशु का पिलातुस के सामने लाया जाना

[28]फिर वे यीशु को कैफ़ा के घर से रोमी राज्यपाल के महल में ले गये। सुबह का समय था। यहूदी लोग राज्यपाल के भवन में आप नहीं जाना चाहते थे कि कहीं वे अपवित्र* न हो जायें। और फ़सह का भोजन न खा सकें। [29]तब पिलातुस उनके पास बाहर आया और बोला, "इस व्यक्ति के ऊपर तुम क्या दोष लगाते हो?"

[30]उत्तर में उन्होंने उससे कहा, "यदि यह अपराधी न होता तो हम इसे तुम्हें न सौंपते।"

[31]इस पर पिलातुस ने उनसे कहा, "इसे तुम ले जाओ और अपनी व्यवस्था के विधान के अनुसार इसका न्याय करो।"

यहूदियों ने उससे कहा, "हमें किसी को प्राणदण्ड देने का अधिकार नहीं है।" [32](यह इसलिए हुआ कि यीशु ने जो बात उसे कैसी मृत्यु मिलेगी, यह बताते हुए कही थी, सत्य सिद्ध हो।)

[33]तब पिलातुस राज्यपाल के महल में वापस चला गया। और यीशु को बुला कर उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

[34]यीशु ने उत्तर दिया, "यह बात क्या तू अपने आप कह रहा है या मेरे बारे में यह औरों ने तुझसे कही है?"

[35]पिलातुस ने उत्तर दिया, "क्या तू सोचता है कि मैं यहूदी हूँ? तेरे लोगों और महायाजकों ने तुझे मेरे हवाले किया है। तूने क्या किया है?"

[36]यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस जगत् का नहीं है। यदि मेरा राज्य इस जगत् का होता तो मेरी प्रजा मुझे यहूदियों को सौंपे जाने से बचाने के लिए युद्ध करती। किन्तु वास्तव में मेरा राज्य यहाँ का नहीं है।"

[37]इस पर पिलातुस ने उससे कहा, "तो तू राजा है?"

यीशु ने उत्तर दिया, "तू कहता है कि मैं राजा हूँ। मैं इसीलिए पैदा हुआ हूँ और इसी प्रयोजन से मैं इस संसार में आया हूँ कि सत्य की साक्षी दूँ। हर वह व्यक्ति जो सत्य के पक्ष में है, मेरा वचन सुनता है।"

[38]पिलातुस ने उससे पूछा, "सत्य क्या है?" ऐसा कह कर वह फिर यहूदियों के पास बाहर गया और उनसे बोला, "मैं उसमें कोई खोट नहीं पा सका हूँ [39]और तुम्हारी यह रीति है कि फ़सह पर्व के अवसर पर मैं तुम्हारे लिए किसी एक को मुक्त कर दूँ। तो क्या तुम चाहते हो कि मैं इस 'यहूदियों के राजा' को तुम्हारे लिये छोड़ दूँ?"

[40]एक बार वे फिर चिल्लाये, "इसे नहीं, बल्कि बरअब्बा को छोड़ दो!" (बरअब्बा एक बाग़ी था।)

यीशु को मृत्यु-दण्ड

19 तब पिलातुस ने यीशु को पकड़वा कर कोड़े लगवाये। [2]फिर सैनिकों ने कँटीली टहनियों को मोड़ कर एक मुकुट बनाया और उसके सिर पर रख दिया। और उसे बैंजनी रंग के कपड़े पहनाये। [3]और उसके पास आ-आकर कहने लगे, "यहूदियों का राजा जीता रहे" और फिर उसे थप्पड़ मारने लगे।

[4]पिलातुस एक बार फिर बाहर आया और उनसे बोला, "देखो, मैं तुम्हारे पास उसे फिर बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान सको कि मैं उसमें कोई खोट नहीं पा सका।" [5]फिर यीशु बाहर आया। वह काँटों का मुकुट और बैंजनी रंग का चोगा पहने हुए था। तब पिलातुस ने कहा, "यह रहा वह पुरुष।"

[6]जब उन्होंने उसे देखा तो महायाजकों और मंदिर के पहरेदारों ने चिल्ला कर कहा, "इसे क्रूस पर चढ़ा दो! इसे क्रूस पर चढ़ा दो!"

पिलातुस ने उससे कहा, "तुम इसे ले जाओ और क्रूस पर चढ़ा दो, मैं इसमें कोई खोट नहीं पा सक रहा हूँ।"

[7]यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, "हमारी व्यवस्था है जो कहती है, इसे मरना होगा क्योंकि इसने 'परमेश्वर का पुत्र' होने का दावा किया है।"

अपवित्र यहूदी यह मानते थे कि किसी ग़ैर यहूदी के घर में जाने से उनकी पवित्रता नष्ट हो जाती है। देखें यूहन्ना 11:55

[8]अब जब पिलातुस ने उन्हें यह कहते सुना तो वह बहुत डर गया। [9]और फिर राज्यपाल के महल के भीतर जाकर यीशु से कहा, "तू कहाँ से आया है? किन्तु यीशु ने उसे उत्तर नहीं दिया।" [10]फिर पिलातुस ने उससे कहा, "क्या तू मुझसे बात नहीं करना चाहता? क्या तू नहीं जानता कि मैं तुझे छोड़ने का अधिकार रखता हूँ और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।"

[11]यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तुम्हें तब तक मुझ पर कोई अधिकार नहीं हो सकता था जब तक वह तुम्हें परम पिता द्वारा नहीं दिया गया होता। इसलिये जिस व्यक्ति ने मुझे तेरे हवाले किया है, तुझसे भी बड़ा पापी है।"

[12]यह सुन कर पिलातुस ने उसे छोड़ने का कोई उपाय ढूँढने का यत्न किया। किन्तु यहूदी चिल्लाये, "यदि तू इसे छोड़ता है, तो तू कैसर का मित्र नहीं है, कोई भी जो अपने आप को राजा होने का दावा करता है, वह कैसर का विरोधी है।"

[13]जब पिलातुस ने ये शब्द सुने तो वह यीशु को बाहर उस स्थान पर ले गया जो "पत्थर का चबूतरा" कहलाता था। (इसे इब्रानी भाषा में "गब्बता" कहा गया है।) और वहाँ न्याय के आसन पर बैठा। [14]यह फ़सह सप्ताह की तैयारी का दिन था।* लगभग दोपहर हो रही थी। पिलातुस ने यहूदियों से कहा, "यह रहा तुम्हारा राजा।"

[15]वे फिर चिल्लाये, "इसे ले जाओ। इसे ले जाओ। इसे क्रूस पर चढ़ा दो।"

पिलातुस ने उनसे कहा, "क्या तुम चाहते हो तुम्हारे राजा को मैं क्रूस पर चढ़ाऊँ?"

इस पर महायाजकों ने उत्तर दिया, "कैसर को छोड़कर हमारा कोई दूसरा राजा नहीं है!"

[16]फिर पिलातुस ने उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए उन्हें सौंप दिया।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

इस तरह उन्होंने यीशु को हिरासत में ले लिया। [17]अपना क्रूस उठाये हुए वह उस स्थान पर गया जिसे, "खोपड़ी का स्थान" कहा जाता था। (इसे इब्रानी भाषा में "गुलगुता" कहते थे।) [18]वहाँ से उन्होंने उसे दो अन्य के साथ क्रूस पर चढ़ाया। एक इधर, दूसरा उधर और बीच में यीशु। [19]पिलातुस ने दोषपत्र क्रूस पर लगा दिया। इसमें लिखा था, "यीशु नासरी, यहूदियों का राजा" [20]बहुत से यहूदियों ने उस दोषपत्र को पढ़ा क्योंकि जहाँ यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह स्थान नगर के पास ही था। और वह ऐलान इब्रानी, युनानी और लातीनी में लिखा था। तब प्रमुख यहूदी नेता पिलातुस से कहने लगे–[21]यहूदियों का राजा मत कहो, "बल्कि कहो, 'उसने कहा था कि मैं यहूदियों का राजा हूँ।'"

[22]पिलातुस ने उत्तर दिया, "मैनें जो लिख दिया, सो लिख दिया।"

[23]जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके तो उन्होंने उसके वस्त्र लिए और उन्हें चार भागों में बाँट दिया। हर भाग एक सिपाही के लिये। उन्होंने कुर्ता भी उतार लिया। क्योंकि वह कुर्ता बिना सिलाई के ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था। [24]इसलिये उन्होंने आपस में कहा, "इसे फाड़ें नहीं बल्कि इसे कौन ले, इसके लिए पर्ची डाल लें।" ताकि शास्त्र का यह वचन पूरा हो,

> "उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिये
> और मेरे वस्त्र के लिए पर्ची डाली।"
>
> *भजन संहिता 22:18*

इसलिए सिपाहियों ने ऐसा ही किया।

[25]यीशु के क्रूस के पास उसकी माँ, मौसी क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलिनी खड़ी थीं। [26]यीशु ने जब अपनी माँ और अपने प्रिय शिष्य को पास ही खड़े देखा तो अपनी माँ से कहा, "प्रिय महिला, यह रहा तेरा बेटा।" [27]फिर वह अपने शिष्य से बोला, "यह रही तेरी माँ।" और फिर उसी समय से वह शिष्य उसे अपने घर ले गया।

यीशु की मृत्यु

[28]इसके बाद यीशु ने जान लिया कि सब कुछ पूरा हो चुका है। फिर इसलिए कि शास्त्र सत्य सिद्ध हो उसने कहा, "मैं प्यासा हूँ।" [29]वहाँ सिरके से भरा एक बर्तन रखा था। इसलिये उन्होंने एक स्पंज को सिरके मैं पूरी तरह डुबो कर हिस्सप अर्थात् जूफे की टहनी पर रखा और ऊपर उठा कर, उसके मुँह से लगाया। [30]फिर जब यीशु ने सिरका ले लिया तो वह बोला, पूरा हुआ।" तब उसने अपना सिर झुका दिया और प्राण त्याग दिये।

यह फसह ... दिन था अर्थात् शुक्रवार जब यहूदी सब्त की तैयारी करते थे।

[31]यह फ़सह की तैयारी का दिन था। सब्त के दिन उनके शव क्रूस पर न लटके रहें क्योंकि सब्त का वह दिन बहुत महत्त्वपूर्ण था इसके लिए यहूदियों ने पिलातुस से कहा कि वह आज्ञा दे कि उनकी टाँगें तोड़ दी जाएँ और उनके शव वहाँ से हटा दिए जाएँ। [32]तब सिपाही आये और उनमें से पहले, पहले की और फिर दूसरे व्यक्ति की, जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, टाँगें तोड़ी। [33]पर जब वे यीशु के पास आये, उन्होंने देखा कि वह पहले ही मर चुका है। इसलिए उन्होंने उसकी टाँगें नहीं तोड़ीं [34]पर उनमें से एक सिपाही ने यीशु के पंजर में अपना भाला बेधा जिससे तत्काल ही खून और पानी बह निकला। [35](जिसने यह देखा था उसने साक्षी दी; और उसकी साक्षी सच है, वह जानता है कि वह सच कह रहा है ताकि तुम लोग विश्वास करो।) [36]यह इसलिए हुआ कि शास्त्र का वचन पूरा हो कि "उसकी कोई भी हड्डी तोड़ी नहीं जायेगी।" [37]और धर्मशास्त्र में लिखा है, "जिसे उन्होंने भाले से बेधा, वे उसकी ओर ताकेंगे।"*

यीशु की अन्त्येष्टि

[38]इसके बाद अरमतियाह के यूसुफ़ ने जो यीशु का एक अनुयायी था किन्तु यहूदियों के डर से इसे छिपाये रखता था, पिलातुस से विनती की कि उसे यीशु के शव को वहाँ से ले जाने की अनुमति दी जाये। पिलातुस ने उसे अनुमति दे दी। सो वह आकर उसका शव ले गया। [39]निकुदेमुस भी, जो यीशु के पास रात को पहले आया था, वहाँ कोई तीस किलो मिला हुआ गंधरस और एलवा लेकर आया। फिर वे यीशु के शव को ले गये [40]और यहूदियों के शव को गाड़ने की व्यवस्था के अनुसार उसे सुगंधित सामग्री के साथ कफ़न में लपेट दिया। [41]जहाँ यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, वहाँ एक बगीचा था। और उस बगीचे में एक नयी कब्र थी जिसमें अभी तक किसी को रखा नहीं गया था। [42]क्योंकि वह सब्त की तैयारी का दिन शुक्रवार था और वह कब्र बहुत पास थी, इसलिये उन्होंने यीशु को उसी में रख दिया।

यीशु की क़ब्र खाली

20 सप्ताह के पहले दिन अलख सुबह अन्धेरा रहते मरियम मगदलिनी कब्र पर आयी। और उसने देखा कि क़ब्र से पत्थर हटा हुआ है। [2]फिर वह दौड़ कर शमौन पतरस और उस दूसरे शिष्य के पास जो यीशु का प्रिय था, पहुँची। और उनसे बोली, "वे प्रभु को क़ब्र से निकाल कर ले गये हैं। और हमें नहीं पता कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है।"

[3]फिर पतरस और वह दूसरा शिष्य वहाँ से क़ब्र को चल पड़े। [4]वे दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे पर दूसरा शिष्य पतरस से आगे निकल गया और क़ब्र पर पहले जा पहुँचा। [5]उसने नीचे झुककर देखा कि वहाँ कफ़न के कपड़े पड़े हैं। किन्तु वह भीतर नहीं गया। [6]तभी शमौन पतरस भी, जो उसके पीछे आ रहा था, आ पहुँचा। और क़ब्र के भीतर चला गया। उसने देखा कि वहाँ कफ़न के कपड़े पड़े हैं [7]और वह कपड़ा जो गाड़ते समय उसके सिर पर था कफ़न के साथ नहीं, बल्कि उससे अलग एक स्थान पर तह करके रखा हुआ है। [8]फिर दूसरा, शिष्य भी जो क़ब्र पर पहले पहुँचा था, भीतर गया। उसने देखा और विश्वास किया। [9](वे अब भी शास्त्र के इस वचन को नहीं समझे थे कि उसका मरे हुओं में से जी उठना निश्चित है।)

मरियम मगदलिनी को यीशु ने दर्शन दिये

[10]फिर वे शिष्य अपने घरों को वापस लौट गये। [11]मरियम रोती बिलखती कब्र के बाहर खड़ी थी। रोते-बिलखते वह क़ब्र में अंदर झाँकने के लिये नीचे झुकी। [12]जहाँ यीशु का शव रखा था वहाँ उसने श्वेत वस्त्र धारण किये, दो स्वर्गदूत, एक सिरहाने और दूसरा पैताने, बैठे देखे।

[13]उन्होंने उससे पूछा, "हे स्त्री, तू क्यों विलाप कर रही है?"

उसने उत्तर दिया, "वे मेरे प्रभु को उठा ले गये हैं और मुझे पता नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है?" [14]इतना कह कर वह मुड़ी और उसने देखा कि वहाँ यीशु खड़ा है। यद्यपि वह जान नहीं पायी कि वह यीशु था।

[15]यीशु ने उससे कहा, "हे स्त्री, तू क्यों रो रही है? तू किसे खोज रही है?" यह सोचकर कि वह माली है, उसने उससे कहा, "श्रीमान, यदि कहीं तुमने उसे उठाया

जिसे ... ताकेंगे जकर्या. 12:10

है तो मुझे बताओ तुमने उसे कहाँ रखा है? मैं उसे ले जाऊँगी।"

[16]यीशु ने उससे कहा, "मरियम!" वह पीछे मुड़ी और इब्रानी में कहा, "रब्बूनी।" (अर्थात् "हे गुरु।")

[17]यीशु ने उससे कहा, "मुझे मत छू क्योंकि मैं अभी तक परम पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ। बल्कि मेरे भाइयों के पास जा और उन्हें बता, "मैं अपने परम पिता और तुम्हारे परम पिता तथा अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूँ।"

[18]मरियम मगदलिनी यह कहती हुई शिष्यों के पास आई, "मैने प्रभु को देखा है, और उसने मुझे ये बातें बताई हैं।"

शिष्यों को दर्शन देना

[19]उसी दिन शाम को, जो सप्ताह का पहला दिन था, उसके शिष्य यहूदियों के डर के कारण दरवाज़े बंद किये हुए थे। तभी यीशु वहाँ आकर उनके बीच खड़ा हो गया और उनसे बोला, "तुम्हें शांति मिले।" [20]इतना कह चुकने के बाद उसने उन्हें अपने हाथ और अपनी बगल दिखाई। शिष्यों ने जब प्रभु को देखा तो वे बहुत प्रसन्न हुए।

[21]तब यीशु ने उनसे फिर कहा, "तुम्हें शांति मिले। वैसे ही जैसे परम पिता ने मुझे भेजा है, मैं भी तुम्हें भेज रहा हूँ।" [22]यह कह कर उसने उन पर फूँक मारी और उनसे कहा, "पवित्र आत्मा को ग्रहण करो। [23]जिस किसी भी व्यक्ति के पापों को तुम क्षमा करते हो, उन्हें क्षमा मिलती है और जिनके पापों को तुम क्षमा नहीं करते, वे बिना क्षमा पाए रहते हैं।"

यीशु का थोमा को दर्शन देना

[24]थोमा जो बारहों में से एक था और दिदिमस अर्थात् जुड़वाँ कहलाता था, जब यीशु आया था तब उनके साथ न था। [25]दूसरे शिष्य उससे कह रहे थे, "हमने प्रभु को देखा है।" किन्तु उसने उनसे कहा, "जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के निशान न देख लूँ और उनमें अपनी उँगली न डाल लूँ तथा उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूँ, तब तक मुझे विश्वास नहीं होगा।"

[26]आठ दिन बाद उसके शिष्य एक बार फिर घर के भीतर थे। और थोमा उनके साथ था। (यद्यपि दरवाज़े पर ताला पड़ा था।) यीशु आया और उनके बीच खड़ा होकर बोला, "तुम्हें शांति मिले।" [27]फिर उसने थोमा से कहा, "हाँ अपनी उँगली डाल और मेरे हाथ देख, अपना हाथ फैला कर मेरे पंजर में डाल। संदेह करना छोड़ और विश्वास कर।"

[28]उत्तर देते हुए थोमा बोला, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!"

[29]यीशु ने उससे कहा, "तूने मुझे देखकर, मुझमें विश्वास किया है। किन्तु धन्य वे हैं जो बिना देखे विश्वास रखते हैं।"

यह पुस्तक यूहन्ना ने क्यों लिखी

[30]यीशु ने और भी अनेक आश्चर्य चिह्न अपने अनुयायियों को दर्शाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे हैं। [31]और जो बातें यहाँ लिखी हैं, वे इसलिए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र, मसीह है। और इसलिये कि विश्वास करते हुए उसके नाम से तुम जीवन पाओ।

यीशु झील पर प्रकट हुआ

21 इसके बाद झील तिबिरियास पर यीशु ने शिष्यों के सामने फिर अपने आपको प्रकट किया। उसने अपने आपको इस तरह प्रकट किया। [2]शमौन पतरस, थोमा (जो जुड़वाँ कहलाता था) गलील के काना का नतनएल, जब्दी के बेटे और यीशु के दो अन्य शिष्य वहाँ इकट्ठे थे। [3]शमौन पतरस ने उनसे कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।"

वे उससे बोले, "हम भी तेरे साथ चल रहे हैं।" तो वे उसके साथ चल दिये और नाव में बैठ गये। पर उस रात वे कुछ नहीं पकड़ पाये।

[4]अब तक सुबह हो चुकी थी। तभी वहाँ यीशु किनारे पर आ खड़ा हुआ। किन्तु शिष्य जान नहीं सके कि वह यीशु है। [5]फिर यीशु ने उनसे कहा, "बालकों तुम्हारे पास कोई मछली है?" उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं।"

[6]फिर उसने कहा, "नाव की दाहिनी तरफ़ जाल फेंको तो तुम्हें कुछ मिलेगा।" सो उन्होंने जाल फेंका किन्तु बहुत अधिक मछलियों के कारण वे जाल को वापस खेंच नहीं सके।

[7]फिर यीशु के प्रिय शिष्य ने पतरस से कहा, "यह तो प्रभु है।" जब शमौन ने यह सुना कि वह प्रभु है तो

उसने अपना बाहर पहनने का वस्त्र कस लिया (क्योंकि वह नंगा था।) और पानी में कूद पड़ा। [8]किन्तु दूसरे शिष्य मछलियों से भरा हुआ जाल खेंचते हुए नाव से किनारे पर आये (क्योंकि वे धरती से अधिक दूर नहीं थे, उनकी दूरी कोई सौ मीटर की थी।) [9]जब वे किनारे आए उन्होंने वहाँ दहकते कोयलों की आग जलती देखी। उस पर मछली और रोटी पकने को रखी थी। [10]यीशु ने उनसे कहा, "तुमने अभी जो मछलियाँ पकड़ी हैं, उनमें से कुछ ले आओ।"

[11]फिर शमौन पतरस नाव पर गया और 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा। जाल में यद्यपि इतनी अधिक मछलियाँ थीं, फिर भी जाल फटा नहीं।

[12]यीशु ने उनसे कहा, "यहाँ आओ और भोजन करो।" उसके शिष्यों में से किसी को साहस नहीं हुआ कि वह उससे पूछे, "तू कौन है?" क्योंकि वे जान गये थे कि वह प्रभु है। [13]यीशु आगे बढ़ा। उसने रोटी ली और उन्हें दे दी और ऐसे ही मछलियाँ भी दीं।

[14]अब यह तीसरी बार थी जब मरे हुओं में से जी उठने के बाद यीशु अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुआ था।

यीशु की पतरस से बातचीत

[15]जब वे भोजन कर चुके तो यीशु ने शमौन पतरस से कहा, "यूहन्ना के पुत्र शमौन, जितना प्रेम ये मुझ से करते हैं, तू मुझसे उससे अधिक प्रेम करता है?"

पतरस ने यीशु से कहा, "हाँ प्रभु, तू जानता है कि मैं तुझे प्रेम करता हूँ।"

यीशु ने पतरस से कहा, "मेरे मेमनो* की रखवाली कर।"

[16]वह उससे दोबारा बोला, "यूहन्ना के पुत्र शमौन, क्या तू मुझे प्रेम करता है?"

पतरस ने यीशु से कहा, "हाँ प्रभु, तू जानता है कि मैं तुझे प्रेम करता हूँ।"

यीशु ने पतरस से कहा, "मेरी भेड़ों की रखवाली कर।"

[17]यीशु ने फिर तीसरी बार पतरस से कहा, "यूहन्ना के पुत्र शमौन, क्या तू मुझे प्रेम करता है?"

पतरस बहुत व्यथित हुआ कि यीशु ने उससे तीसरी बार यह पूछा, "क्या तू मुझसे प्रेम करता है?" सो पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, तू सब कुछ जानता है, तू जानता है कि मैं तुझसे प्रेम करता हूँ!"

यीशु ने उससे कहा, "मेरी भेड़ों को चरा। [18]मैं तुझसे सत्य कहता हूँ, जब तू जवान था, तब तू अपनी कमर पर फेंटा कस कर, जहाँ चाहता था, चला जाता था। पर जब तू बूढ़ा होगा, तो हाथ पसारेगा और कोई दूसरा तुझे बाँधकर जहाँ तू नहीं जाना चाहता, वहाँ ले जायेगा।" [19](उसने यह दर्शाने के लिए ऐसा कहा कि वह कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा।) इतना कहकर उसने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ!"

[20]पतरस पीछे मुड़ा और देखा कि वह शिष्य जिसे यीशु प्रेम करता था, उनके पीछे आ रहा है। (यह वही था जिसने भोजन करते समय उसकी छाती पर झुककर पूछा था, "हे प्रभु, वह कौन है, जो तुझे धोखे से पकड़वायेगा?") [21]सो जब पतरस ने उसे देखा तो वह यीशु से बोला, "हे प्रभु, इसका क्या होगा?"

[22]यीशु ने उससे कहा, "यदि मैं यह चाहूँ कि जब तक मैं आऊँ यह यहीं रहे, तो तुझे क्या? तू मेरे पीछे चला आ।"

[23]इस तरह यह बात भाइयों में यहाँ तक फैल गयी कि वह शिष्य नहीं मरेगा। यीशु ने यह नहीं कहा था कि वह नहीं मरेगा। बल्कि यही कहा था, "यदि मैं यह चाहूँ कि जब तक मैं आऊँ, यह यहीं रहे, तो तुझे क्या?"

[24]यही वह शिष्य है जो इन बातों की साक्षी देता है और जिसने ये बातें लिखी हैं। हम जानते हैं कि उसकी साक्षी सच है।

[25]यीशु ने और भी बहुत से काम किये। यदि एक-एक करके वे सब लिखे जाते तो मैं सोचता हूँ कि जो पुस्तकें लिखी जातीं वे इतनी अधिक होतीं कि समूची धरती पर नहीं समा पातीं।

मेमना और भेड़ इन शब्दों को यीशु अपने अनुयायिओं के लिए प्रयोग में लाता था।

प्रेरितों के काम

लूका द्वारा लिखी गयी दूसरी पुस्तक का परिचय

1 हे थियुफिलुस, मैंने अपनी पहली पुस्तक में उन सब कार्यों के बारे में लिखा जिन्हें प्रारंभ से ही यीशु ने किया और [2]उस दिन तक उपदेश दिया जब तक पवित्र आत्मा के द्वारा अपने चुने हुए प्रेरितों को निर्देश दिए जाने के बाद उसे ऊपर स्वर्ग में उठा न लिया गया। [3]अपनी मृत्यु के बाद उसने अपने आपको बहुत से ठोस प्रमाणों के साथ उनके सामने प्रकट किया कि वह जीवित है। वह चालीस दिनों तक उनके सामने प्रकट होता रहा तथा परमेश्वर के राज्य के विषय में उन्हें बताता रहा। [4]फिर एक बार जब वह उनके साथ भोजन कर रहा था तो उसने उन्हें आज्ञा दी, "यरूशलेम को मत छोड़ना बल्कि जिसके बारे में तुमने मुझसे सुना है, परम पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरा होने की प्रतीक्षा करना। [5]क्योंकि यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया था, किन्तु तुम्हें अब थोड़े ही दिनों बाद पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जायेगा।"

यीशु का स्वर्ग में ले जाया जाना

[6]सो जब वे आपस में मिले तो उन्होंने उससे पूछा, " हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल के राज्य की फिर से स्थापना कर देगा?"

[7]उसने उनसे कहा, "उन अवसरों या तिथियों को जानना तुम्हारा काम नहीं है, जिन्हें परम पिता ने स्वयं अपने अधिकार से निश्चित किया है। [8]बल्कि जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा, तुम्हें शक्ति प्राप्त हो जायेगी। और यरुशलेम में, समूचे यहूदिया और सामरिया में और धरती के छोरों तक तुम मेरे साक्षी बनोगे।"

[9]इतना कहने के बाद उनके देखते देखते उसे वर्ग में ऊपर उठा लिया गया। और फिर एक बादल ने उसे उनकी आँखों से ओझल कर दिया। [10]जब वह जा रहा था तो वे आकाश में उसके लिये आँखें बिछाये थे। तभी तत्काल श्वेत वस्त्र धारण किये हुए दो पुरुष उनके बराबर आ खड़े हुए [11]और कहा, "हे गलीली लोगो, तुम वहाँ खड़े-खड़े आकाश में टकटकी क्यों लगाये हो? यह यीशु जिसे तुम्हारे बीच से स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया, जैसे तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा, वैसे ही वह फिर वापस लोटेगा।"

एक नये प्रेरित का चुनाव

[12]फिर वे जैतून नाम के पर्वत से, जो यरूशलेम से कोई एक किलोमीटर* की दूरी पर स्थित है, यरूशलेम लौट आये। [13]और वहाँ पहुँच कर वे ऊपर के उस कमरे में गये जहाँ वे ठहरे हुए थे। ये लोग थे-पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा, बर्तुलमै और मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब, उत्साही शमौन और याकूब का पुत्र यहूदा।

[14]इनके साथ कुछ स्त्रियाँ, यीशु की माता मरियम और यीशु के भाई भी थे। ये सभी अपने आपको एक साथ प्रार्थना में लगाये रखते थे।

[15]फिर इन्हीं दिनों पतरस ने भाई-बंधुओं के बीच खड़े होकर, जिनकी संख्या कोई एक सौ बीस थी, कहा, [16]"हे मेरे भाइयो, यीशु को बंदी बनाने वालों के अगुआ यहूदा के विषय में, पवित्र शास्त्र का वह लेख जिसे दाऊद के मुख से पवित्र आत्मा ने बहुत पहले ही कह दिया था, उसका पूरा होना आवश्यक था। [17]वह हम में ही गिना गया था और इस सेवा में उसका भी भाग था।"

[18](इस मनुष्य ने जो धन उसे उसके नीचतापूर्ण काम के लिये मिला था, उससे एक खेत मोल लिया किन्तु वह पहले तो सिर के बल गिरा और फिर उसका शरीर फट गया और उसकी आँतें बाहर निकल आईं। [19]और सभी

किलोमीटर शाब्दिक सब्त के एक दिन की दूरी पर यानी सब्त के दिन विधान के द्वारा जितनी दूर चलना वैध था।

यरूशलेम वासियों को इसका पता चल गया। इसीलिये उनकी भाषा में उस खेत को हक्लदमा कहा गया जिसका अर्थ है "लहू का खेत।")

[20]"क्योंकि भजन संहिता में यह लिखा है कि,

'उसका घर उजड़ जाये और
उसमें रहने को कोई न बचे।'

भजन संहिता 69:25

और 'उसका मुखियापन कोई
दूसरा व्यक्ति ले ले।"

भजन संहिता 109:8

[21]"इसलिये यह आवश्यक है कि जब प्रभु यीशु हमारे बीच था तब जो लोग सदा हमारे साथ थे, उनमें से किसी एक को चुना जाये। [22]यानी उस समय से लेकर जब से यूहन्ना ने लोगों को बपतिस्मा देना प्रारम्भ किया था और जब तक यीशु को हमारे बीच से उठा लिया गया था। इन लोगों में से किसी एक को उसके फिर से जी उठने का हमारे साथ साक्षी होना चाहिये।"

[23]इसलिये उन्होंने दो व्यक्ति सुझाये! एक यूसुफ़ जिसे बरसब्बा कहा जाता था (यह यूसतुस नाम से भी जाना जाता था) और दूसरा मत्तियाह। [24]फिर वे यह कहते हुए प्रार्थना करने लगे, "हे प्रभु, तू सब के मनों को जानता है, हमें दर्शा कि इन दोनों में से तूने किसे चुना है [25]जो एक प्रेरित के रूप में सेवा के इस पद को ग्रहण करे जिसे अपने स्थान को जाने के लिए यहूदा छोड़ गया था।" [26]फिर उन्होंने उनके लिये पर्चियाँ डालीं और पर्ची मत्तियाह के नाम की निकली। इस तरह वह ग्यारह प्रेरितों के दल में सम्मिलित कर लिया गया।

पवित्र आत्मा का आगमन

2 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वे सब एक ही स्थान पर इकटठे थे। [2]तभी अचानक वहाँ आकाश से भयंकर आँधी का सा शब्द आया। और जिस घर में वे बैठे थे, उसमें भर गया। [3]और आग की फैलती लपटों जैसी जीभें वहाँ सामने दिखायी देने लगीं। वे आग की विभाजित जीभें उनमें से हर एक के ऊपर आ टिकीं। [4]वे सभी पवित्र आत्मा से भावित हो उठे। और आत्मा के द्वारा दिये गये सामर्थ्य के अनुसार वे दूसरी भाषाओं में बोलने लगे।

[5]वहाँ यरुशलेम में आकाश के नीचे के सभी देशों से आये यहूदी भक्त रहा करते थे। [6]जब यह शब्द गरजा तो एक भीड़ एकत्र हो गयी। वे लोग अचरज में पड़े थे क्योंकि हर किसी ने उन्हें उसकी अपनी भाषा में बोलते सुना। [7]वे आश्चर्य में भर कर विस्मय के साथ बोले, "ये बोलने वाले सभी लोग क्या गलीली नहीं हैं? [8]फिर हममें से हर एक उन्हें हमारी अपनी ही मातृभाषा में बोलते हुए कैसे सुन रहा है? [9]वहाँ पारथी, मेदी और एलामी, मैसोपोटामिया के निवासी, यहूदिया और कप्पूदूकिया पुन्तुस और एशिया [10]फ्रिगिया और पंफीलिया, मिस्र और साइरीन नगर के निकट लीबिया के कुछ प्रदेशों के लोग, रोम से आये यात्री जिनमें जन्मजात यहूदी और यहूदी धर्म ग्रहण करने वाले लोग, क्रेती तथा अरब के रहने वाले [11]हम सब परमेश्वर के आश्चर्य पूर्ण कामों को अपनी अपनी भाषाओं में सुन रहे हैं।" [12]वे सब विस्मय में पड़ कर भौंचक्के हो आपस में पूछ रहे थे "यह सब क्या हो रहा है?" [13]किन्तु दूसरे लोगों ने प्रेरितों का उपहास करते हुए कहा, "ये सब कुछ ज्यादा ही, नयी दाखरस चढ़ा गये हैं।"

पतरस का संबोधन

[14]फिर उन ग्यारहों के साथ पतरस खड़ा हुआ और ऊँचे स्वर में लोगों को सम्बोधित करने लगा, "यहूदी साथियो और यरुशलेम के सभी निवासियो! इसका अर्थ मुझे बताने दो। मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो। [15]ये लोग पिये हुए नहीं हैं, जैसा कि तुम समझ रहे हो। क्योंकि अभी तो सुबह के नौ बजे हैं। [16]बल्कि यह वह बात है जिसके बारे में योएल नबी ने कहा था:

[17] 'परमेश्वर कहता है:
अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं सभी
मनुष्यों पर अपनी आत्मा उँड़ेल दूँगा
फिर तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ
भविष्यवाणी करने लगेंगे।
तथा तुम्हारे युवा लोग दर्शन पायेंगे
और तुम्हारे बूढ़े लोग स्वप्न देखेंगे।

[18] हाँ, उन दिनों मैं अपने सेवकों और
सेविकाओं पर अपनी आत्मा
उँड़ेल दूँगा
और वे भविष्यवाणी करेंगे।

[19]मैं ऊपर आकाश में अद्भुत कर्म
और नीचे धरती पर चिह्न दिखाऊँगा
लहू, आग और धुएँ के बादल।
[20] सूर्य अन्धेरे में और चाँद रक्त में बदल जायेगा।
[21] और तब हर उस किसी का बचाव होगा
जो प्रभु का नाम पुकारेगा।'

योएल 2:28–32

[22]"हे इस्राएल के लोगों, इन वचनों को सुनो: नासरी यीशु एक ऐसा पुरुष था जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे सामने अद्भुत कर्मों, आश्चर्यो और चिह्नों समेत–जिन्हें परमेश्वर ने उसके द्वारा किया था–तुम्हारे बीच प्रकट किया। जैसा कि तुम स्वयं जानते ही हो। [23]इस पुरुष को परमेश्वर की निश्चित योजना और निश्चित पूर्व ज्ञान के अनुसार तुम्हारे हवाले कर दिया गया। और तुमने नीच मनुष्यों की सहायता से उसे क्रूस पर चढ़ाया और कीलें ठुकवा कर मार डाला। [24]किन्तु परमेश्वर ने उसे मृत्यु की वेदना से मुक्त करते हुए फिर से जिला दिया। क्योंकि उसके लिये यह सम्भव ही नहीं था कि मृत्यु उसे अपने वश में रख पाती। [25]जैसा कि दाऊद ने उसके विषय में कहा है:

'मैंने प्रभु को सदा ही अपने सामने देखा है।
वह मेरी दाहिनी ओर विराजता है,
ताकि मैं डिग न जाऊँ।
[26] इससे मेरा हृदय प्रसन्न है
और मेरी वाणी हर्षित है;
मेरी देह भी आशा में जियेगी
[27] क्योंकि तू मेरी आत्मा को
अधोलोक में नहीं छोड़ देगा।
तू अपने पवित्र जन को क्षय की
अनुभूति नहीं होने देगा।
[28] तूने मुझे जीवन की राह का ज्ञान कराया है।
अपनी उपस्थिति से तू मुझे
आनन्द से पूर्ण कर देगा।'

भजन संहिता 16:8–11

[29]"हे मेरे भाइयों! मैं विश्वास के साथ आदि पुरुष दाऊद के बारे में तुमसे कह सकता हूँ कि उसकी मृत्यु हो गयी और उसे दफ़ना दिया गया। और उसकी कब्र हमारे यहाँ आज तक मौजूद है। [30]किन्तु क्योंकि वह एक नबी था और जानता था कि परमेश्वर ने शपथपूर्वक उसे वचन दिया है कि वह उसके वंश में से किसी एक को उसके सिंहासन पर बैठायेगा। [31]इसलिये आगे जो घटने वाला है, उसे देखते हुए उसने जब यह कहा था:

'उसे अधोलोक में नहीं छोड़ा गया
और न ही उसकी देह ने सड़ने
गलने का अनुभव किया'

तो उसने मसीह के फिर से जी उठने के बारे में ही कहा था। [32]इसी यीशु को परमेश्वर ने पुनर्जीवित कर दिया। इस तथ्य के हम सब साक्षी हैं। [33]परमेश्वर के दाहिने हाथ सब से ऊँचा पद पाकर यीशु ने परम पिता से प्रतिज्ञा के अनुसार पवित्र आत्मा प्राप्त की और फिर उसने इस आत्मा को उँडेल दिया जिसे अब तुम देख रहे हो और सुन रहे हो। [34]दाऊद क्योंकि स्वर्ग में नहीं गया सो वह स्वयं कहता है:

'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु से कहा:
मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं
[35] तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों तले
पैर रखने की चौकी की तरह न कर दूँ।'

भजन संहिता 110:1

[36]"इसलिये समूचा इस्राएल निश्चय–पूर्वक जान ले कि परमेश्वर ने इस यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ा दिया था, 'प्रभु' और 'मसीह' दोनों ही ठहराया था!"

[37]लोगों ने जब यह सुना तो वे व्याकुल हो उठे और पतरस तथा अन्य प्रेरितों से कहा, "तो बंधुओ, हमें क्या करना चाहिये?"

[38]पतरस ने उनसे कहा, "मन फिरावओ और अपने पापों की क्षमा पाने के लिये तुममें से हर एक को यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेना चाहिये। फिर तुम पवित्र आत्मा का उपहार पा जाओगे। [39]क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हारे लिये, तुम्हारी संतानों के लिए और उन सब के लिये है जो बहुत दूर स्थित हैं। यह प्रतिज्ञा उन सबके लिए है जिन्हें हमारा प्रभु परमेश्वर अपने पास बुलाता है।

[40]और बहुत से वचनों द्वारा उसने उन्हें चेतावनी दी और आग्रह के साथ उनसे कहा "इस कुटिल पीढ़ी से अपने आपको बचाये रखो।" [41]सो जिन्होंने उसके संदेश को ग्रहण किया, उन्हें बपतिस्मा दिया गया। इस प्रकार उस दिन उनके समूह में कोई तीन हज़ार व्यक्ति और जुड़ गये। [42]उन्होंने प्रेरितों के उपदेश, संगत, रोटी के तोड़ने और प्रार्थनाओं के प्रति अपने को समर्पित कर दिया।

विश्वासियों का साझा जीवन

43हर व्यक्ति पर भय मिश्रित विस्मय का भाव छाया रहा और प्रेरितों द्वारा आश्चर्य कर्म और चिह्न प्रकट किये जाते रहे। 44सभी विश्वासी एक साथ रहते थे और उनके पास जो कुछ था, उसे वे सब आपस में बाँट लेते थे। 45उन्होंने अपनी सभी वस्तुएँ और सम्पत्ति बेच डाली और जिस किसी को आवश्यकता थी, उन सब में उसे बाँट दिया। 46मंदिर में एक समूह के रूप में वे हर दिन मिलते-जुलते रहे। वे अपने घरों में रोटी को विभाजित करते और उदार मन से आनन्द के साथ, मिल-जुलकर खाते। 47सभी लोगों की सद्भावनाओं का आनन्द लेते हुए वे प्रभु की स्तुति करते। और प्रतिदिन परमेश्वर, जिन्हें उद्धार मिल जाता, उन्हें उनके दल में और जोड़ देता।

लँगड़े भिखारी का अच्छा किया जाना

3 दोपहर बाद तीन बजे प्रार्थना के समय पतरस और यूहन्ना मंदिर जा रहे थे। 2तभी एक ऐसे व्यक्ति को जो जन्म से ही लँगड़ा था, ले जाया जा रहा था। वे हर दिन उसे मन्दिर के सुन्दर नामक द्वार पर बैठा दिया करते थे। ताकि वह मंदिर में जाने वाले लोगों से भीख में पैसे माँग लिया करे। 3इस व्यक्ति ने जब देखा कि यूहन्ना और पतरस मंदिर में प्रवेश करने ही वाले हैं तो उसने उनसे पैसे माँगे। 4यूहन्ना के साथ पतरस उसकी ओर एकटक देखते हुए बोला, "हमारी तरफ़ देख।" 5सो उसने उनसे कुछ मिल जाने की आशा करते हुए उनकी ओर देखा। 6किन्तु पतरस ने कहा, "मेरे पास सोना या चाँदी तो है नहीं किन्तु जो कुछ है, मैं तुझे दे रहा हूँ। नासरी यीशु मसीह के नाम से खड़ा हो जा और चल दे।" 7फिर उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसने उसे उठाया। तुरन्त उसके पैरों और टखनों में जान आ गयी। 8और वह अपने पैरों के बल उछला और चल पड़ा। वह उछलते कूदते चलता और परमेश्वर की स्तुति करता उनके साथ ही मंदिर में गया। 9सभी लोगों ने उसे चलते और परमेश्वर की स्तुति करते देखा। 10लोगों ने पहचान लिया कि यह तो वही है जो मंदिर के सुन्दर द्वार पर बैठा भीख माँगा करता था। उसके साथ जो कुछ घटा था उस पर वे आश्चर्य और विस्मय से भर उठे।

पतरस का प्रवचन

11वह व्यक्ति अभी पतरस और यूहन्ना के साथ-साथ ही था। सो सभी लोग अचरज में भर कर उस स्थान पर उनके पास दौड़े-दौड़े आये जो सुलेमान की डयोढ़ी कहलाता था। 12पतरस ने जब यह देखा तो वह लोगों से बोला, "हे इस्राएल के लोगो, तुम इस बात पर चकित क्यों हो रहे हो? ऐसे घूर घूर कर हमें क्यों देख रहे हो, जैसे मानो हमने ही अपनी शक्ति या भक्ति के बल पर इस व्यक्ति को चलने फिरने योग्य बना दिया है। 13इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु को महिमा से मंडित किया। और तुमने उसे मरवा डालने को पकड़वा दिया। और फिर पिलातुस के द्वारा उसे छोड़ दिये जाने का निश्चय करने पर पिलातुस के सामने ही तुमने उसे नकार दिया। 14उस पवित्र और नेक बंदे को तुमने अस्वीकार किया और यह माँगा कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाये। 15लोगों को जीवन की राह दिखाने वाले को तुमने मार डाला किन्तु परमेश्वर ने मरे हुओं में से उसे फिर से जिला दिया है। हम इसके साक्षी हैं। 16क्योंकि हम यीशु के नाम में विश्वास करते हैं इसलिये यह उसका नाम ही है जिसने इस व्यक्ति में जान फूँकी है जिसे तुम देख रहे हो और जानते हो। हाँ, उसी विश्वास ने जो यीशु से प्राप्त होता है, तुम सब के सामने इस व्यक्ति को पूरी तरह चंगा किया है।

17"हे भाइयो, अब मैं जानता हूँ कि जैसे अनजाने में तुमने वैसा किया, वैसे ही तुम्हारे नेताओं ने भी किया। 18परमेश्वर ने अपने सब भविष्यवक्ताओं के मुख से पहले ही कहलवा दिया था कि उसके मसीह को यातनाएँ भोगनी होंगी। उसने उसे इस तरह पूरा किया। 19इसलिये तुम अपना मन फिराओ और परमेश्वर की ओर लौट आओ ताकि तुम्हारे पाप धुल जायें। 20ताकि प्रभु की उपस्थिति में आत्मिक शांति का समय आ सके और प्रभु तुम्हारे लिये मसीह को भेजे जिसे वह तुम्हारे लिये चुन चुका है, यानी यीशु को। 21मसीह को उस समय तक स्वर्ग में रहना होगा जब तक सभी बातें पहले जैसी न हो जायें जिनके बारे में बहुत पहले से ही परमेश्वर ने अपने पवित्र नबियों के मुख से बता दिया था। 22मूसा ने कहा था, 'प्रभु परमेश्वर तुम्हारे लिये, तुम्हारे अपने लोगों में से ही एक मेरे जैसा नबी खड़ा करेगा। वह तुमसे जो कुछ कहे, तुम

उसी पर चलना। [23]और जो कोई व्यक्ति उस नबी की बातों को नहीं सुनेगा, लोगों में से उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया जायेगा।'* [24]हाँ! शमूएल और उसके बाद आये सभी नबियों ने जब कभी कुछ कहा तो इन ही दिनों की घोषणा की। [25]और तुम तो उन नबियों और उस करार के उत्तराधिकारी हो जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों के साथ किया था। उसने इब्राहीम से कहा था, 'तेरी संतानों से धरती के सभी लोग आशीर्वाद पायेंगे।'* [26]परमेश्वर ने जब अपने सेवक को पुनर्जीवित किया तो पहले–पहले उसे तुम्हारे पास भेजा ताकि तुम्हें तुम्हारे बुरे रास्तों से हटा कर आशीर्वाद दे।"

पतरस और यूहन्ना: यहूदी सभा के सामने

4 अभी पतरस और यूहन्ना लोगों से बात कर ही रहे थे कि याजक, मंदिर के सिपाहियों का मुखिया और कुछ सदूकी उनके पास आये। [2]वे उनसे इस बात पर चिढ़े हुए थे कि पतरस और यूहन्ना लोगों को उपदेश देते हुए यीशु के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा पुनरुत्थान का प्रचार कर रहे थे। [3]सो उन्होंने उन्हें बंदी बना लिया और क्योंकि उस समय साँझ हो चुकी थी, इसलिये अगले दिन तक हिरासत में रख छोड़ा। [4]किन्तु जिन्होंने वह संदेश सुना उनमें से बहुतों ने उस पर विश्वास किया और इस प्रकार उनकी संख्या लगभग पाँच हजार पुरुषों तक जा पहुँची।

[5]अगले दिन उनके नेता, बुजुर्ग और यहूदी धर्मशास्त्री यरूशलेम में इकट्ठे हुए। [6]महायाजक हन्ना, कैफ़ा, यूहन्ना, सिकन्दर और महायाजक के परिवार के सभी लोग भी वहाँ उपस्थित थे। [7]वे इन प्रेरितों को उनके सामने खड़ा करके पूछने लगे, "तुम ने किस शक्ति या अधिकार से यह कार्य किया?"

[8]फिर पवित्र आत्मा से भावित होकर पतरस ने उनसे कहा, "हे लोगों के नेताओं और बुजुर्ग नेताओं! [9]यदि आज हमसे एक लँगड़े व्यक्ति के साथ की गयी भलाई के बारे में यह पूछताछ की जा रही है कि वह अच्छा कैसे हो गया [10]तो तुम सब को और इस्राएल के लोगों को यह पता हो जाना चाहिये कि यह काम नासरी यीशु मसीह के नाम से हुआ है जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ा दिया और जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से पुनर्जीवित कर दिया है। उसी के द्वारा पूरी तरह से ठीक हुआ यह व्यक्ति तुम्हारे सामने खड़ा है। [11]यह यीशु वही

'वह पत्थर जिसे तुम राज मिस्त्रियों
ने नाकारा ठहराया था,
वही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्थर बन गया है।'

भजन संहिता 118:22

[12]किसी भी दूसरे में उद्धार निहित नहीं है। क्योंकि इस आकाश के नीचे लोगों को कोई दूसरा ऐसा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो पाये।"

[13]उन्होंने जब पतरस और यूहन्ना की निर्भीकता को देखा और यह समझा कि वे बिना पढ़े लिखे और साधारण से मनुष्य हैं तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। फिर वे जान गये कि ये यीशु के साथ रह चुके लोग हैं। [14]और क्योंकि वे उस व्यक्ति को जो चंगा हुआ था, उन ही के साथ खड़ा देख पा रहे थे सो उनके पास कहने को कुछ नहीं रहा। [15]उन्होंने उनसे यहूदी महासभा से निकल जाने को कहा और फिर वे यह कहते हुए आपस में विचार–विमर्श करने लगे, [16]"इन लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया जाये? क्योंकि यरूशलेम में रहने वाला हर कोई जानता है कि इनके द्वारा एक उल्लेखनीय आश्चर्यकर्म किया गया है और हम उसे नकार भी नहीं सकते। [17]किन्तु हम इन्हें चेतावनी दे दें कि वे इस नाम की चर्चा किसी और व्यक्ति से न करें ताकि लोगों में इस बात को और फैलने से रोका जा सके।"

[18]सो उन्होंने उन्हें भीतर बुलाया और आज्ञा दी कि यीशु के नाम पर वे न तो किसी से कोई ही चर्चा करें और न ही कोई उपदेश दें। [19]किन्तु पतरस और यूहन्ना ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम ही बताओ, क्या परमेश्वर के सामने हमारे लिये यह उचित होगा कि परमेश्वर की न सुन कर हम तुम्हारी सुनें? [20]हम, जो कुछ हमने देखा है और सुना है, उसे बताने से नहीं चूक सकते।" [21]फिर उन्होंने उन्हें और धमकाने के बाद छोड़ दिया। उन्हें दण्ड देने का उन्हें कोई रास्ता नहीं मिल सका क्योंकि जो घटना घटी थी, उसके लिये सभी लोग परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे। [22]जिस व्यक्ति पर अच्छा करने का यह आश्चर्य कर्म किया गया था, उसकी आयु चालीस साल से ऊपर थी।

प्रभु परमेश्वर ... दिया जायेगा व्यवस्था. 18:15,19
तेरी ... पायेगा उत्पत्ति 22:18; 26:24

पतरस और यूहन्ना की वापसी

[23]जब उन्हें छोड़ दिया गया तो वे अपने ही लोगों के पास आ गये और उनसे जो कुछ प्रमुख याजकों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं ने कहा था, वह सब उन्हें कह सुनाया। [24]जब उन्होंने यह सुना तो मिल कर ऊँचे स्वर में वे परमेश्वर को पुकारते हुए बोले, "स्वामी, तूने ही आकाश, धरती, समुद्र और उनके भीतर जो कुछ है, उसकी रचना की है। [25]तूने ही पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक, हमारे पूर्वज दाऊद के मुख से कहा था:

'इन जातियों ने जाने क्यों
अपना अहंकार दिखाया?
लोगों ने व्यर्थ ही
षड़यन्त्र क्यों रच डाले?
[26] धरती के राजाओं ने,
उसके विरुद्ध युद्ध करने को तैयार किया।
और शासक प्रभु और
उसके मसीह के–विरोध में एकत्र हुए।'

भजन संहिता 2:1–2

[27]हाँ, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी इस नगर में ग़ैर यहूदियों और इस्राएलियों के साथ मिल कर तेरे पवित्र सेवक यीशु के विरोध में, जिसे तूने मसीह के रूप में अभिषिक्त किया था, वास्तव में एकजुट हो गये थे। [28]वे इकट्ठे हुए ताकि तेरी शक्ति और इच्छा के अनुसार जो कुछ पहले ही निश्चित हो चुका था, वह पूरा हो। [29]और अब हे प्रभु, उनकी धमकियों पर ध्यान दे और अपने सेवकों को निर्भयता के साथ 'तेरे वचन' सुनाने की शक्ति दे [30]जबकि चंगा करने के लिये तू अपना हाथ बढ़ाये और चिह्न तथा अदभुत कर्म तेरे पवित्र सेवकों द्वारा यीशु के नाम पर किये जा रहे हों।"

[31]जब उन्होंने प्रार्थना पूरी की तो जिस स्थान पर वे एकत्र थे, वह हिल उठा और उन सब में 'पवित्र आत्मा' समा गया। और वे निर्भयता के साथ परमेश्वर के वचन बोलने लगे।

विश्वासियों का सहयोगी जीवन

[32]विश्वासियों का यह समूचा दल एक मन और एक तन था। कोई भी यह नहीं कहता था कि उसकी कोई भी वस्तु उसकी अपनी है। उनके पास जो कुछ होता, उस सब कुछ को वे बाँट लेते थे। [33]और वे प्रेरित समूची शक्ति के साथ प्रभु यीशु के फिर से जी उठने की साक्षी दिया करते थे। परमेश्वर का महान बरदान उन सब पर बना रहता। [34]उस दल में से किसी को भी कोई कमी नहीं थी। क्योंकि जिस किसी के पास खेत या घर होते, वे उन्हें बेच दिया करते थे और उससे जो धन मिलता, उसे लाकर [35]प्रेरितों के चरणों में रख देते। और जिसको जितनी आवश्यकता होती, उसे उतना धन दे दिया जाता था।

[36]उदाहरण के लिये युसूफ़ नाम का, साइप्रस में पैदा हुआ, एक लेवी था जिसे प्रेरित बरनाबास [अर्थात चैन का पुत्र] भी कहा करते थे। [37]उसने एक खेत बेच दिया जिसका वह मालिक था और उस धन को लाकर प्रेरितों के चरणों पर रख दिया।

हनन्याह और सफ़ीरा

5 हनन्याह नाम के एक व्यक्ति और उसकी पत्नी सफ़ीरा ने मिलकर अपनी सम्पत्ति का एक हिस्सा बेच दिया। [2]और अपनी पत्नी की जानकारी में उसने इसमें से कुछ धन बचा लिया। और कुछ धन प्रेरितों के चरणों में रख दिया। [3]इस पर पतरस ने कहा, "हे हनन्याह, शैतान को तूने अपने मन में यह बात क्यों डालने दी कि तूने पवित्र आत्मा से झूठ बोला और धरती को बेचने से मिले धन में से थोड़ा बचा कर रख लिया? [4]उसे बेचने से पहले क्या वह तेरी ही नहीं थी? और जब तूने उसे बेच दिया तो वह धन क्या तेरे ही अधिकार में नहीं था? तूने इस बात की क्यों सोची? तूने मनुष्यों से नहीं, परमेश्वर से झूठ बोला है।" [5]हनन्याह ने जब ये शब्द सुने तो वह पछाड़ खाकर गिर पड़ा और दम तोड़ दिया। जिस किसी ने भी इस विषय में सुना, सब पर गहरा भय छा गया। [6]फिर जवान लोगों ने उठ कर उसे कफ़न में लपेटा और बाहर ले जाकर गाड़ दिया।

[7]कोई तीन घण्टे बाद, जो कुछ घटा था, उससे अनजान उसकी पत्नी भीतर आयी। [8]पतरस ने उससे कहा, "बता, तूने तेरे खेत क्या इतनें में ही बेचे थे?"

सो उसने कहा, "हाँ। इतने में ही।"

[9]तब पतरस ने उससे कहा, "तुम दोनों प्रभु की आत्मा की परीक्षा लेने को सहमत क्यों हुए? देख तेरे पति को दफ़नाने वालों के पैर दरवाज़े तक आ पहुँचे हैं और वे तुझे भी उठा ले जायेंगे।" [10]तब वह उसके चरणों पर

गिर पड़ी और मर गयी। फिर युवक लोग भीतर आये और मरा पा कर उसे उठा ले गये और उसके पति के पास ही उसे दफ़ना दिया। [11]सो समूची कलीसिया और जिस किसी ने भी इन बातों को सुना, उन सब पर गम्भीर भय छा गया।

प्रमाण

[12]प्रेरितों द्वारा लोगों के बीच बहुत से चिह्न प्रकट हो रहे थे और आश्चर्य कर्म किये जा रहे थे। वे सभी सुलेमान के दालान में एकत्र थे। [13]उनमें सम्मिलित होने का साहस कोई नहीं करता था। पर लोग उनकी प्रशंसा अवश्य करते थे। [14]उधर प्रभु पर विश्वास करने वाले स्त्री और पुरुष अधिक से अधिक बढ़ते जा रहे थे। [15]परिणामस्वरूप लोग अपने बीमारों को लाकर चारपाइयों और बिस्तरों पर गलियों में लिटाने लगे ताकि जब पतरस उधर से निकले तो उनमें से कुछ पर कम से कम उसकी छाया ही पड़ जाये। [16]यरूशलेम के आसपास के नगरों से अपने बीमारों और दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को लेकर ठट के ठट लोग आने लगे। और वे सभी अच्छे हो जाया करते थे।

यहूदियों का प्रेरितों को रोकने का जतन

[17]फिर महायाजक और उसके साथी, यानी सदूकियों का दल, उनके विरोध में खड़े हो गये। वे ईर्ष्या से भरे हुए थे। [18]सो उन्होंने प्रेरितों को बंदी बना लिया और उन्हें सार्वजनिक बंदीगृह में डाल दिया। [19]किन्तु रात के समय प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बंदीगृह के द्वार खोल दिये। उसने उन्हें बाहर ले जाकर कहा, [20]"जाओ, मंदिर में खड़े हो जाओ और इस नये जीवन के विषय में लोगों को सब कुछ बताओ।" [21]जब उन्होंने यह सुना तो भोर के तड़के वे मंदिर में प्रवेश कर गये और उपदेश देने लगे।

फिर जब महायाजक और उसके साथी वहाँ पहुचे तो उन्होंने यहूदी संघ तथा इस्राएल के बुज़ुर्गों की पूरी सभा बुलायी। फिर उन्होंने बंदीगृह से प्रेरितों को बुलवा भेजा। [22]किन्तु जब अधिकारी बंदीगृह में पहुँचे तो वहाँ उन्हें प्रेरित नहीं मिले। उन्होंने लौट कर इसकी सूचना दी और [23]कहा, "हमें बंदीगृह की सुरक्षा के ताले लगे हुए और द्वारों पर सुरक्षा-कर्मी खड़े मिले थे किन्तु जब हमने द्वार खोले तो हमें भीतर कोई नहीं मिला।" [24]मंदिर के रखवालों के मुखिया ने और महायाजकों ने जब ये शब्द सुने तो वे उनके बारे में चक्कर में पड़ गये और सोचने लगे, "अब क्या होगा।" [25]फिर किसी ने भीतर आकर उन्हें बताया, "जिन लोगों को तुमने जेल में डाल दिया था, वे मंदिर में खड़े लोगों को उपदेश दे रहे हैं।" [26]सो मंदिर के सुरक्षा-कर्मियों का मुखिया अपने अधिकारियों के साथ वहाँ गया और प्रेरितों को बिना बल प्रयोग किये वापस ले आया क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं लोग उन्हें (मंदिर के सुरक्षाकर्मियों को) पत्थर न मारें।

[27]वे उन्हें भीतर ले आये और सर्वोच्च यहूदी सभा के सामने खड़ा कर दिया। फिर महायाजक ने उन से पूछते हुए कहा, [28]"हमने इस नाम से उपदेश न देने के लिए तुम्हें कठोर आदेश दिया था और तुमने फिर भी समूचे यरुशलेम को अपने उपदेशों से भर दिया है। और तुम इस व्यक्ति की मृत्यु का अपराध हम पर लादना चाहते हो।"

[29]पतरस और दूसरे प्रेरितों ने उत्तर दिया, "हमें मनुष्यों की अपेक्षा परमेश्वर की बात माननी चाहिये। [30]उस यीशु को हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मृत्यु से फिर जिला कर खड़ा कर दिया है जिसे एक पेड़ पर लटका कर तुम लोगों ने मार डाला था। [31]उसे ही प्रमुख और उद्धारकर्ता के रूप में महत्त्व देते हुए परमेश्वर ने अपने दाहिने स्थित किया है ताकि इस्राएलियों को मन फिराव और पापों की क्षमा प्रदान की जा सके। [32]इन सब बातों के हम साक्षी हैं और वैसे ही वह पवित्र आत्मा भी है जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा का पालन करते हैं।"

[33]जब उन्होंने यह सुना तो वे आग बबूला हो उठे और उन्हें मार डालना चाहा। [34]किन्तु महासभा में से एक गमलिएल नामक फरीसी, जो धर्मशास्त्र का शिक्षक भी था, तथा जिसका सब लोग आदर करते थे, खड़ा हुआ और आज्ञा दी कि इन्हें थोड़ी देर के लिये बाहर कर दिया जाये। [35]फिर वह उनसे बोला, "इस्राएल के पुरुषों, तुम इन लोगों के साथ जो कुछ करने पर उतारू हो, उसे सोच समझ कर करना। [36]कुछ समय पहले अपने आपको बड़ा घोषित करते हुए थियूदास प्रकट हुआ था। और कोई चार सौ लोग उसके पीछे भी हो लिये थे, पर वह मार डाला गया और उसके सभी अनुयायी तितर-बितर हो गये। परिणाम कुछ नहीं निकला। [37]उसके बाद जनगणना के समय गलील का रहने वाला यहूदा प्रकट हुआ। उसने भी कुछ लोगों को अपने पीछे आकर्षित कर लिया था। वह

भी मारा गया। उसके भी सभी अनुयायी इधर उधर बिखर गये। [38]इसीलिए इस वर्तमान विषय में मैं तुमसे कहता हूँ, इन लोगों से अलग रहो, इन्हें ऐसे ही अकेले छोड़ दो क्योंकि इनकी यह योजना या यह काम मनुष्य की ओर से है तो स्वयं समाप्त हो जायेगा। [39]किन्तु यदि यह परमेश्वर की ओर से है तो तुम उन्हें रोक नहीं पाओगे। और तब हो सकता है तुम अपने आपको ही परमेश्वर के विरोध में लड़ते पाओ।"

उन्होंने उसकी सलाह मान ली। [40]और प्रेरितों को भीतर बुला कर उन्होंने कोड़े लगवाये और यह आज्ञा देकर कि वे यीशु के नाम की कोई चर्चा न करें, उन्हें चले जाने दिया। [41]सो वे प्रेरित इस बात का आनन्द मनाते हुए कि उन्हें उसके नाम के लिये अपमान सहने योग्य गिना गया है, यहूदी महासभा से चले गये। [42]फिर मंदिर और घर-घर में हर दिन इस सुसमाचार का कि यीशु मसीह है उपदेश देना और प्रचार करना उन्होंने कभी नहीं छोड़ा।

विशेष कार्य के लिए सात पुरुषों का चुना जाना

6 उन्हीं दिनों जब शिष्यों की संख्या बढ़ रही थी, तो यूनानी बोलने वाले और इब्रानी बोलने वाले यहूदियों में एक विवाद उठ खड़ा हुआ क्योंकि वस्तुओं के दैनिक वितरण में उनकी विधवाओं के साथ उपेक्षा बरती जा रही थी। [2]सो बारहों प्रेरितों ने शिष्यों की समूची मण्डली को एक साथ बुला कर कहा, "हमारे लिये परमेश्वर के वचन की सेवा को छोड़ कर भोजन का प्रबन्ध करना उचित नहीं है। [3]सो बंधुओ अच्छी साख वाले पवित्र आत्मा और सूझबूझ से पूर्ण सात पुरुषों को अपने में से चुन लो। हम उन्हें इस काम का अधिकारी बना देंगे। [4]और अपने आपको प्रार्थना और वचन की सेवा के कामों में समर्पित रखेंगे।"

[5]इस सुझाव से सारी मण्डली बहुत प्रसन्न हुई। सो उन्होंने विश्वास और पवित्र आत्मा से युक्त स्तिफनुस नाम के व्यक्ति को और फिलिप्पुस, प्रखुरूस, नीकानोर, तिमोन, परमिनास और अंताकिया के निकुलाऊस को, जिसने यहूदी धर्म अपना लिया था, चुन लिया। [6]और इन लोगों को फिर उन्होंने प्रेरितों के सामने उपस्थित कर दिया। प्रेरितों ने प्रार्थना की और उन पर हाथ रखे।

[7]इस प्रकार परमेश्वर का वचन फैलने लगा और यरुशलेम में शिष्यों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी। याजकों का एक बड़ा समूह भी इस मत को मानने लगा था।

यहूदियों द्वारा स्तिफनुस का विरोध

[8]स्तिफनुस एक ऐसा व्यक्ति था जो अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण था। वह लोगों के बीच बड़े-बड़े आश्चर्य कर्म और अद्भुत चिन्ह प्रकट किया करता था। [9]किन्तु तथाकथित स्वतन्त्र किये गये लोगों के सभागार के कुछ लोग जो कुरेनी और सिकन्दरिया से तथा किलिकिया और एशिया से आये यहूदी थे, वे उसके विरोध में वाद-विवाद करने लगे। [10]किन्तु वह जिस बुद्धिमानी और आत्मा से बोलता था, वे उसके सामने नहीं ठहर सके। [11]फिर उन्होंने कुछ लोगों को लालच देकर कहलवाया, "हमने मूसा और परमेश्वर के विरोध में इसे अपमानपूर्ण शब्द कहते सुना है।" [12]इस तरह उन्होंने जनता को, बुजुर्ग यहूदी नेताओं को और यहूदी धर्मशास्त्रियों को भड़का दिया। फिर उन्होंने आकर उसे पकड़ लिया और सर्वोच्च यहूदी महासभा के सामने ले आये। [13]उन्होंने वे झूठे गवाह पेश किये जिन्होंने कहा, "यह व्यक्ति इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरोध में बोलते कभी रुकता ही नहीं है। [14]हमने इसे कहते सुना है कि यह नासरी यीशु इस स्थान को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा और मूसा ने जिन रीति रिवाजों को हमें दिया है उन्हें बदल देगा।" [15]फिर सर्वोच्च यहूदी महासभा में बैठे हुए सभी लोगों ने जब उसे ध्यान से देखा तो पाया कि उसका मुख किसी स्वर्गदूत के मुख के समान दिखाई दे रहा था।

स्तिफनुस का भाषण

7 फिर महायाजक ने कहा, "क्या यह बात ऐसे ही है?" [2]उसने उत्तर दिया, "बंधुओं और पितृ तुल्य बुजुर्गों! मेरी बात सुनो। हारान में रहने से पहले अभी जब हमारा पिता इब्राहीम मैसोपोटामिया में ही था, तो महिमामय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिये [3]और कहा, 'अपने देश और अपने लोगों को छोड़कर तू उस धरती पर चला जा, जिसे तुझे मैं दिखाऊँगा।' [4]सो वह कसदियों की धरती को छोड़ कर हारान में जा बसा जहाँ से उसके पिता की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उसे इस देश में आने की प्रेरणा दी

जहाँ तुम अब रह रहे हो। [5]परमेश्वर ने यहाँ उसे उत्तराधिकार में कुछ नहीं दिया, डग भर धरती तक नहीं। यद्यपि उसके कोई संतान नहीं थी किन्तु परमेश्वर ने उससे प्रतिज्ञा की कि यह देश वह उसे और उसके वंशजों को उनकी सम्पत्ति के रूप में देगा। [6]परमेश्वर ने उससे यह भी कहा, 'तेरे वंशज कहीं विदेश में परदेसी होकर रहेंगे और चार सौ साल तक उन्हें दास बनाकर, उनके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया जाएगा।' [7]परमेश्वर ने कहा, 'दास बनाने वाली उस जाति को मैं दण्ड दूँगा और इसके बाद वे उस देश से बाहर आ जायेंगे और इस स्थान पर वे मेरी सेवा करेंगे।' [8]परमेश्वर ने इब्राहीम को ख़तने की मुद्रा से मुद्रित करके करार-प्रदान किया। और इस प्रकार वह इसहाक का पिता बना। उसके जन्म के बाद आठवें दिन उसने उसका ख़तना किया। फिर इसहाक से याकूब और याकूब से बारह कुलों के आदि पुरुष पैदा हुए।

[9]"वे आदि पुरुष यूसुफ़ से ईर्ष्या रखते थे। सो उन्होंने उसे मिस्र में दास बनने के लिए बेच दिया। किन्तु परमेश्वर उसके साथ था [10]और उसने उसे सभी विपत्तियों से बचाया। परमेश्वर ने यूसुफ़ को विवेक दिया और उसे इस योग्य बनाया जिससे वह मिस्र के राजा फ़ैरो का अनुग्रह पात्र बन सका। फ़ैरो ने उसे मिस्र का राज्यपाल और अपने घर-बार का अधिकारी नियुक्त किया। [11]फिर समूचे मिस्र और कनान देश में अकाल पड़ा और बड़ा संकट छा गया। हमारे पूर्वज खाने को कुछ नहीं पा सके। [12]जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है, तो उसने हमारे पूर्वजों को वहाँ भेजा-यह पहला अवसर था। [13]उनकी दूसरी यात्रा के अवसर पर यूसुफ़ ने अपने भाइयों को अपना परिचय दे दिया और तभी फ़ैरो को भी यूसुफ़ के परिवार की जानकारी मिली। [14]सो यूसुफ़ ने अपने पिता याकूब और परिवार के सभी लोगों को, जो कुल मिलाकर पिचहत्तर थे, बुलवा भेजा। [15]तब याकूब मिस्र आ गया और उसने वहाँ वैसे ही प्राण त्यागे जैसे हमारे पूर्वजों ने वहाँ प्राण त्यागे थे। [16]उनके शव वहाँ से वापस सेकेम ले जाये गये जहाँ उन्हें मकबरे में दफ़ना दिया गया। यह वही मकबरा था जिसे इब्राहीम ने हमोर के बेटों से कुछ धन देकर खरीदा था।

[17]"जब परमेश्वर ने इब्राहीम को जो वचन दिया था, उसके पूरा होने का समय निकट आया तो मिस्र में हमारे लोगों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी। [18]आख़िरकार मिस्र पर एक ऐसे राजा का शासन हुआ जो यूसुफ़ को नहीं जानता था। [19]उसने हमारे लोगों के साथ धूर्तता पूर्ण व्यवहार किया। उसने हमारे पूर्वजों को बड़ी निर्दयता के साथ विवश किया कि वे अपने बच्चों को बाहर मरने को छोड़ें ताकि वे जीवित ही न बच पायें। [20]उसी समय मूसा का जन्म हुआ। वह बहुत सुन्दर बालक था। तीन महीने तक वह अपने पिता के घर के भीतर पलता बढ़ता रहा। [21]फिर जब उसे बाहर छोड़ दिया गया तो फ़ैरो की पुत्री उसे अपना पुत्र बना कर उठा ले गयी। उसने अपने पुत्र के रूप में उसका लालन-पालन किया। [22]मूसा को मिस्रियों के सम्पूर्ण कला-कौशल की शिक्षा दी गयी। वह वाणी और कर्म दोनों में ही समर्थ था।

[23]"जब वह चालीस साल का हुआ तो उसने इस्राएल की संतान, अपने भाई-बंधुओं के पास जाने का निश्चय किया। [24]सो जब एक बार उसने देखा कि उनमें से किसी एक के साथ बुरा व्यवहार किया जा रहा है तो उसने उसे बचाया और मिस्री व्यक्ति को मार कर उस दलित व्यक्ति का बदला ले लिया। [25]उसने सोचा था कि उसके अपने भाई बंधु जान जायेंगे कि उन्हें छुटकारा दिलाने के लिये परमेश्वर उसका उपयोग कर रहा है। किन्तु वे इसे नहीं समझ पाये। [26]अगले दिन उनमें से (उसके अपने लोगों में से) जब कुछ लोग झगड़ रहे थे तो वह उनके पास पहुँचा और यह कहते हुए उनमें बीच-बचाव का जतन करने लगा कि तुम लोग तो आपस में भाई-भाई हो। एक दूसरे के साथ बुरा बर्ताव क्यों करते हो? [27]किन्तु उस व्यक्ति ने जो अपने पड़ोसी के साथ झगड़ रहा था, मूसा को धक्क ा मारते हुए कहा, 'तुझे हमारा शासक और न्यायकर्ता किसने बनाया? [28]जैसे तूने कल उस मिस्री की हत्या कर दी थी,' क्या तू वेसे ही मुझे भी मार डालना चाहता है?* [29]मूसा ने जब यह सुना तो वह वहाँ से चला गया और मिद्यान में एक परदेसी के रूप में रहने लगा। वहाँ उसके दो पुत्र हुए।

[30]"चालीस वर्ष बीत जाने के बाद सिनाई पर्वत के पास मरुभूमि में एक जलती झाड़ी की लपटों के बीच उसके सामने एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ। [31]मूसा ने जब यह देखा तो इस दृश्य पर वह आश्चर्य चकित हो उठा। जब और अधिक निकटता से देखने के लिये वह उसके पास गया तो उसे प्रभु की वाणी सुनाई दी: [32]'मैं तेरे पूर्वजों का

मुझे ... चाहता है निर्गमन 2:14

परमेश्वर हूँ, इब्राहीम का, इसहाक का और याकूब का परमेश्वर हूँ।' * भय से काँपते हुए मूसा कुछ देखने का साहस नहीं कर पा रहा था। [33]तभी प्रभु ने उससे कहा, 'अपने पैरों की चप्पलें उतार क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है। [34]मैंने मिस्र में अपने लोगों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार को देखा है, परखा है। मैंने उन्हें विलाप करते हुए सुना है। उन्हें मुक्त कराने के लिये मैं नीचे उतरा हूँ। आ, अब मैं तुझे मिस्र भेजूँगा।'*

[35]"यह वही मूसा है जिसे उन्होंने यह कहते हुए नकार दिया था, 'तुझे शासक और न्यायकर्ता किसने बनाया है?' यह वही है जिसे परमेश्वर ने उस स्वर्गदूत द्वारा, जो उसके लिए झाड़ी में प्रकट हुआ था, शासक और मुक्तिदाता होने के लिये भेजा। [36]वह उन्हें मिस्र की धरती और लाल सागर तथा वनों में से चालीस साल तक आश्चर्य कर्म करते हुए और चिह्न दिखाते हुए, बाहर निकाल लाया। [37]यह वही मूसा है जिसने इस्राएल की संतानों से कहा था, 'तुम्हारे भाइयों में से ही तुम्हारे लिये परमेश्वर एक मेरे जैसा नबी भेजेगा।'* [38]यह वही है जो वीराने में सभा के बीच हमारे पूर्वजों और उस स्वर्गदूत के साथ मौजूद था जिसने सिनाई पर्वत पर उससे बातें की थीं। इसी ने हमें देने के लिये परमेश्वर से सजीव वचन प्राप्त किये थे।

[39]"किन्तु हमारे पूर्वजों ने उसका अनुसरण करने को मना कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने उसे नकार दिया और अपने हृदयों में वे फिर मिस्र की ओर लौट गये। [40]उन्होंने आरों से कहा था, 'हमारे लिये ऐसे देवताओं की रचना करो जो हमें मार्ग दिखायें। इस मूसा के बारे में, जो हमें मिस्र से बाहर निकाल लाया, हम नहीं जानते कि उसके साथ क्या कुछ घटा।'* [41]उन्हीं दिनों उन्होंने बछड़े की एक मूर्ति बनायी। और उस मूर्ति पर बलि चढ़ाई। वे, जिसे उन्होंने अपने हाथों से बनाया था, उस पर आनन्द मनाने लगे। [42]किन्तु परमेश्वर ने उनसे मुँह मोड़ लिया था। उन्हें आकाश के ग्रह-नक्षत्रों की उपासना के लिये छोड़ दिया गया था। जैसा कि नबियों की पुस्तक में लिखा है:

'हे इस्राएल के परिवार के लोगो,
क्या तुम पशुबलि और अन्य बलियाँ
वीराने में मुझे नहीं चढ़ाते रहे?
चालीस वर्ष तक
[43] तुम मोलेक के तम्बू और अपने देवता रिफान
के तारे को भी अपने साथ ले गये थे।
वे मूर्तियाँ भी तुम ले गये जिन्हें तुमने
उपासना के लिये बनाया था।
इसलिये मैं तुम्हें बेबिलोन से भी परे भेजूँगा।'

आमोस 5:25-27

[44]"साक्षी का तम्बू भी उस वीराने में हमारे पूर्वजों के साथ था। यह तम्बू उसी नमूने पर बनाया गया था जैसा कि उसने देखा था और जैसा कि मूसा से बात करने वाले ने बनाने को उससे कहा था। [45]हमारे पूर्वज उसे प्राप्त करके तभी वहाँ से आये थे जब यहोशू के नेतृत्त्व में उन्होंने उन जातियों से यह धरती ले ली थी जिन्हें हमारे पूर्वजों के सम्मुख परमेश्वर ने निकाल बाहर किया था। दाऊद के समय तक वह वहीं रहा। [46]दाऊद ने परमेश्वर के अनुग्रह का आनन्द उठाया। उसने चाहा कि वह याकूब के परमेश्वर के लिए एक मंदिर बनवा सके [47]किन्तु वह सुलेमान ही था जिसने उसके लिए मंदिर बनवाया।

[48]"कुछ भी हो परम परमेश्वर तो हाथों से बनाये भवनों में नहीं रहता। जैसा कि नबी ने कहा है:

प्रभु न कहा,
'स्वर्ग मेरा सिंहासन है
[49] और धरती चरण की चौकी बनी है।
किस तरह का मेरा घर तुम बनाओगे?
कहीं कोई जगह ऐसी है,
जहाँ विश्राम पाऊँ?
[50] क्या यह सभी कुछ,
मेरे करों की रचना नही रही?'

यशायाह 66:1-2

[51]"हे बिना ख़तने के मन और कान वाले हठीले लोगो! तुमने सदा ही पवित्र आत्मा का विरोध किया है। तुम अपने पूर्वजों के जैसे ही हो। [52]क्या कोई भी ऐसा नबी था, जिसे तुम्हारे पूर्वजों ने नहीं सताया? उन्होंने तो उन्हें भी मार डाला जिन्होंने बहुत पहले से ही उस धर्मी के आने की घोषणा कर दी थी, जिसे अब तुमने धोखा देकर पकड़वा दिया और मरवा डाला। [53]तुम वही हो

मैं ... परमेश्वर हूँ निर्गमन 3:6
अपने पैरों ... मिस्र भेजूँगा निर्गमन 3:5-10
तुम्हारे .... भेजेगा व्यवस्था. 18:15
हमारे लिये ... कुछ घटा निर्गमन 32:1

जिन्होंने स्वर्गदूतों द्वारा दिये गये व्यवस्था के विधान को पा तो लिया किन्तु उस पर चले नहीं!"

स्तिफनुस की हत्या

[54]जब उन्होंने यह सुना तो वे क्रोध से आगबबूला हो उठे और उस पर दाँत पीसने लगे। [55]किन्तु पवित्र आत्मा से भावित स्तिफनुस स्वर्ग की ओर देखता रहा। उसने देखा परमेश्वर की महिमा को और परमेश्वर के दाहिने खड़े यीशु को। [56]सो उसने कहा, "देखो! मैं देख रहा हूँ कि स्वर्ग खुला हुआ है और मनुष्य का पुत्र परमेश्वर के दाहिने खड़ा है।"

[57]इस पर उन्होंने चिल्लाते हुए अपने कान बन्द कर लिये और फिर वे सभी उस पर एक साथ झपट पड़े। [58]वे उसे घसीटते हुए नगर से बाहर ले गये और उस पर पथराव करने लगे। तभी गवाहों ने अपने वस्त्र उतार कर शाउल नाम के एक युवक के चरणों में रख दिये। [59]स्तिफ़नुस पर जब से उन्होंने पत्थर बरसाना प्रारम्भ किया, वह यह कहते हुए प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को स्वीकार कर।" [60]फिर वह घुटनों के बल गिर पड़ा और ऊँचे स्वर में चिल्लाया, "प्रभु, इस पाप को उनके विरुद्ध मत ले।" इतना कह कर वह चिर निद्रा में सो गया।

विश्वासियों पर अत्याचार

8 इस तरह शाऊल ने स्तिफनुस की हत्या का समर्थन किया। उसी दिन से यरूशलेम की कलीसिया पर घोर अत्याचार होने आरम्भ हो गये। प्रेरितों को छोड़ वे सभी लोग यहूदिया और सामरिया के गाँवों में तितर-बितर हो कर फैल गये। [2]कुछ भक्त जनों ने स्तिफनुस को दफना दिया और उसके लिये गहरा शोक मनाया। [3]शाऊल ने कलीसिया को नष्ट करना आरम्भ कर दिया। वह घर-घर जा कर औरत और पुरुषों को घसीटते हुए जेल में डालने लगा। [4]उधर तितर-बितर हुए लोग हर कहीं जा कर सुसमाचार का संदेश देने लगे।

सामरिया में फिलिप्पुस का उपदेश

[5]फिलिप्पुस सामरिया नगर को चला गया और वहाँ लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। [6]फिलिप्पुस के लोगों ने जब सुना और जिन अद्भुत चिन्हों को वह प्रकट किया करता था, देखा, तो जिन बातों को वह बताया करता था, उन पर उन्होंने गम्भीरता के साथ ध्यान दिया। [7]बहुत से लोगों में से, जिनमें दुष्टात्माएँ समायी थीं, वे ऊँचे स्वर में चिल्लाती हुई बाहर निकल आयीं थी। बहुत से लकवे के रोगी और विकलांग अच्छे हो रहे थे। [8]उस नगर में उल्लास छाया हुआ था।

[9]वहीं शमौन नाम का एक व्यक्ति हुआ करता था। वह काफी समय से उस नगर में जादू टोना किया करता था। और सामरिया के लोगों को आश्चर्य में डालता रहता था। वह महापुरुष होने का दावा किया करता था। [10]छोटे से लेकर बड़े तक सभी लोग उसकी बात पर ध्यान देते और कहते, "यह व्यक्ति परमेश्वर की वही शक्ति है जो महान शक्ति कहलाती है।" [11]क्योंकि उसने बहुत दिनों से उन्हें अपने चमत्कारों के चक्कर में डाल रखा था, इसीलिए वे उस पर ध्यान दिया करते थे। [12]किन्तु उन्होंने जब फिलिप्पुस पर विश्वास किया क्योंकि उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार और यीशु मसीह का नाम सुनाया था, तो वे स्त्री और पुरुष दोनों ही बपतिस्मा लेने लगे। [13]और स्वयं शमौन ने भी उन पर विश्वास किया। और बपतिस्मा लेने के बाद फिलिप्पुस के साथ वह बड़ी निकटता से रहने लगा। उन महान् चिह्नों और किये जा रहे अद्भुत कार्यो को जब उसने देखा, तो वह दंग रह गया।

[14]उधर यरुशलेम में प्रेरितों ने जब यह सुना कि सामरिया के लोगों ने परमेश्वर के वचन को स्वीकार कर लिया है तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। [15]सो जब वे पहुँचे तो उन्होंने उनके लिये प्रार्थना की कि उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हो। [16]क्योंकि अभी तक पवित्र आत्मा किसी पर भी नहीं उतरा था, उन्हें बस प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा ही दिया गया [17]सो पतरस और यूहन्ना ने उन पर अपने हाथ रखे और उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हो गया।

[18]जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने भर से पवित्र आत्मा दे दिया गया तो उनके सामने धन प्रस्तुत करते हुए वह बोला, [19]"यह शक्ति मुझे दे दो ताकि जिस किसी पर मैं हाथ रखूँ, उसे पवित्र आत्मा मिल जाये।"

[20]पतरस ने उससे कहा, "तेरा और तेरे धन का सत्यानाश हो, क्योंकि तूने यह सोचा कि तू धन से परमेश्वर के वरदान को मोल ले सकता है। [21]इस विषय में न तेरा कोई हिस्सा है, और न कोई साझा क्योंकि परमेश्वर के

सम्मुख तेरा हृदय ठीक नहीं है। 22इसलिये अपनी इस दुष्टता से मन फिराव कर और प्रभु से प्रार्थना कर। हो सकता है तेरे मन में जो विचार था, उस विचार के लिये तू क्षमा कर दिया जाये। 23क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तू कटुता से भरा है और पाप के चंगुल में फँसा है।"

24इस पर शमौन ने उत्तर दिया, "तुम प्रभु से मेरे लिये प्रार्थना करो ताकि तुमने जो कुछ कहा है, उसमें से कोई भी बात मुझ पर न घटे।!"

25फिर प्रेरित अपनी साक्षी देकर और प्रभु का वचन सुना कर रास्ते के बहुत से सामरी गाँवों में सुसमाचार का उपदेश करते हुए यरूशलेम लौट आये।

इथोपिया से आये व्यक्ति को फिलिप्पुस का उपदेश

26प्रभु के एक दूत ने फिलिप्पुस को कहते हुए बताया, "तैयार हो, और दक्षिण दिशा में उस राह पर जा, जो यरूशलेम से गाजा को जाती है।" (यह एक सुनसान मार्ग है।) 27सो वह तैयार हुआ और चल पड़ा। वहीं एक इथोपिया का खोजा था। वह इथोपिया की रानी कंदाके का एक अधिकारी था जो उसके समुचे कोष का कोषपाल था। वह आराधना के लिये यरूशलेम गया था। 28लौटते हुए वह अपने रथ में बैठा भविष्यवक्ता यशायाह का ग्रंथ पढ़ रहा था। 29तभी फिलिप्पुस को आत्मा से प्रेरणा मिली, "उस रथ के पास जा और वहीं ठहर।" 30फिलिप्पुस जब उस रथ के पास दौड़ कर गया तो उसने उसे यशायाह को पढ़ते सुना। सो वह बोला, "क्या जिसे तू पढ़ रहा है, उसे समझता भी है?"

31उसने कहा, "मैं भला तब तक कैसे समझ सकता हूँ, जब तक कोई मुझे इसकी व्याख्या नहीं करे?" फिर उसने फिलिप्पुस को रथ पर अपने साथ बैठने को बुलाया। 32शास्त्र के जिस अंश को वह पढ़ रहा था, वह था:

"उसे वध की भेड़ सा ले जाया जा रहा था।
वह तो उस मेमने के समान चुप था।
जो अपनी ऊन काटने वाले के समक्ष
चुप रहता है, ठीक वैसे ही
उसने अपना मुँह खोला नहीं!
33 ऐसी दीन दशा में उसको
न्याय से वंचित किया गया!
उसकी पीढ़ी का कौन वर्णन करेगा?
क्योंकि धरती से उसका जीवन तो ले लिया था।"

यशायाह 53:7-8

34उस खोजे ने फिलिप्पुस से कहा, "अनुग्रह करके मुझे बता कि भविष्यवक्ता यह किसके बारे में कह रहा है? अपने बारे में या किसी और के?" 35फिर फिलिप्पुस ने कहना शुरू किया और इस शास्त्र से लेकर यीशु के सुसमाचार तक सब उसे कह सुनाया।

36मार्ग में आगे बढ़ते हुए वे कहीं पानी के पास पहुँचे। फिर उस खोजे ने कहा, "देख! यहाँ जल है। अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या बाधा है?" [37"फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, 'यदि तू अपने सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करता है, तो ले सकता है।' उसने उत्तर दिया, 'हाँ! मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।'"]* 38तब उसने रथ को रोकने की आज्ञा दी। फिर फिलिप्पुस और वह खोजा दोनों ही पानी में उतर गये और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। 39और फिर जब वे पानी से बाहर निकले तो फिलिप्पुस को प्रभु का आत्मा कहीं उठा ले गया। और उस खोजे ने फिर उसे कभी नहीं देखा। उधर खोजा आनन्द मनाता हुआ अपने मार्ग पर आगे चला गया। 40उधर फिलिप्पुस ने अपने आपको अशदोद में पाया और जब तक वह कैसरिया नहीं पहुँच गया, सभी नगरों में सुसमाचार का प्रचार करते हुए यात्रा करता रहा।

शाऊल का हृदय परिवर्तन

9 शाऊल अभी प्रभु के अनुयायिओं को मार डालने की धमकियाँ दिया करता था। वह प्रमुख याजक के पास गया 2और उसने दमिश्क के प्रार्थना सभागारों के नाम माँग कर अधिकार पत्र ले लिया जिससे उसे वहाँ यदि कोई इस पंथ का अनुयायी मिले, फिर चाहे वह स्त्री हो, चाहे पुरुष, तो वह उन्हें बंदी बना सके और फिर वापस यरूशलेम ले आये।

3सो जब चलते चलते वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो अचानक उसके चारों ओर आकाश से एक प्रकाश कौंध गया 4और वह धरती पर जा पड़ा। उसने एक आवाज सुनी जो उससे कह रही थी, "शाऊल, अरे ओ शाऊल। तू मुझे क्यों सता रहा है?"

5शाऊल ने पूछा, "प्रभु, तू कौन है?" वह बोला, "मैं यीशु हूँ जिसे तू सता रहा है। 6पर तू अब खड़ा हो और

पद 37 'प्रेरितों के काम' की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 37 जोड़ा गया है।

नगर में जा। वहाँ तुझे बता दिया जायेगा कि तुझे क्या करना चाहिये।"

[7]जो पुरुष उसके साथ यात्रा कर रहे थे, अवाक् खड़े थे। उन्होंने आवाज़ तो सुनी किन्तु किसी को भी देखा नहीं। [8]फिर शाऊल धरती पर से खड़ा हुआ। किन्तु जब उसने अपनी आखें खोलीं तो वह कुछ भी देख नहीं पाया। सो वे उसे हाथ पकड़ कर दमिश्क ले गये। [9]तीन दिन तक वह न तो कुछ देख पाया, और न ही उसने कुछ खाया या पिया।

[10]दमिश्क में हनन्याह नाम का एक शिष्य था। प्रभु ने दर्शन देकर उससे कहा, "हनन्याह।" सो वह बोला, "प्रभु, मैं यह रहा।"

[11]प्रभु ने उससे कहा, "खड़ा हो और सीधी कहलाने वाली गली में जा। और वहाँ यहूदा के घर में जाकर तरसुस निवासी शाऊल नाम के एक व्यक्ति के बारे में पूछताछ कर क्योंकि वह प्रार्थना कर रहा है। [12]उसने एक दर्शन में देखा है कि हनन्याह नाम के एक व्यक्ति ने घर में आकर उस पर हाथ रखे हैं ताकि वह फिर से देख सके।"

[13]हनन्याह ने उत्तर दिया, "प्रभु, मैंने इस व्यक्ति के बारे में बहुत से लोगों से सुना है। यरूशलेम में तेरे संतों के साथ इसने जो बुरी बातें की हैं, वे सब मैंने सुनी हैं। [14]और यहाँ भी यह प्रमुख याजकों से तेरे नाम में सभी विश्वास रखने वालों को बंदी बनाने का अधिकार लेकर आया है।"

[15]किन्तु प्रभु ने उससे कहा, "तू जा क्योंकि इस व्यक्ति को विधर्मियों, राजाओं और इस्राएल के लोगों के सामने मेरा नाम लेने के लिये, एक साधन के रूप में मैंने चुना है। [16]मैं स्वयं उसे वह सब कुछ बताऊँगा, जो उसे मेरे नाम के लिए सहना होगा।"

[17]सो हनन्याह चल पड़ा और उस घर के भीतर पहुँचा और शाऊल पर उसने अपने हाथ रख दिये और कहा, "भाई शाऊल, प्रभु यीशु ने मुझे भेजा है, जो तेरे मार्ग में तेरे सम्मुख प्रकट हुआ था ताकि तू फिर से देख सके और पवित्र आत्मा से भावित हो जाये।" [18]फिर तुरंत छिलकों जैसी कोई वस्तु उसकी आँखों से ढलकी और उसे फिर दिखाई देने लगा। वह खड़ा हुआ और उसने बपतिस्मा लिया। [19]फिर थोड़ा भोजन लेने के बाद उसने अपनी शक्ति पुन: प्राप्त कर ली।

शाऊल का दमिश्क में प्रचार कार्य

वह दमिश्क में शिष्यों के साथ कुछ समय ठहरा। [20]फिर वह सीधा यहूदी धर्म सभागार में पहुँचा और यीशु का प्रचार करने लगा। वह बोला, "यह यीशु परमेश्वर का पुत्र है।"

[21]जिस किसी ने भी उसे सुना, चकित रह गया और बोला, "क्या यह वही नहीं है, जो यरूशलेम में यीशु के नाम में विश्वास रखने वालों को नष्ट करने का यत्न किया करता था। और क्या यह उन्हें यहाँ पकड़ने और प्रमुख याजकों के सामने ले जाने नहीं आया था?"

[22]किन्तु शाऊल अधिक से अधिक शक्तिशाली होता गया और दमिश्क में रहने वाले यहूदियों को यह प्रमाणित करते हुए कि यह यीशु ही मसीह है, पराजित करने लगा।

शाऊल का यहूदियों से बच निकलना

[23]बहुत दिन बीत जाने के बाद यहूदियों ने उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचा। [24]किन्तु उनकी योजनाओं का शाऊल को पता चल गया। वे नगर द्वारों पर रात दिन घात लगाये रहते थे ताकि उसे मार डालें। [25]किन्तु उसके शिष्य रात में उसे उठा ले गये और टोकरी में बैठा कर नगर की चारदीवारी से लटका कर उसे नीचे उतार दिया।

यरूशलेम में शाऊल का पहुँचना

[26]फिर जब वह यरूशलेम पहुँचा तो वह शिष्यों के साथ मिलने का जतन करने लगा। किन्तु वे तो सभी उससे डरते थे। उन्हें यह विश्वास नहीं था कि वह भी एक शिष्य है। [27]किन्तु बरनाबास उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले गया और उसने उन्हें बताया कि शाऊल ने प्रभु को मार्ग में किस प्रकार देखा और प्रभु ने उससे कैसे बातें कीं। और दमिश्क में किस प्रकार उसने निर्भयता से यीशु के नाम का प्रचार किया।

[28]फिर शाऊल उनके साथ यरूशलेम में स्वतन्त्रतापूर्वक आते जाते रहने लगा। वह निर्भीकता के साथ प्रभु के नाम का प्रवचन किया करता था। [29]वह यूनानी भाषा-भाषी यहूदियों के साथ वाद-विवाद और चर्चाएँ करता किन्तु वे तो उसे मार डालना चाहते थे। [30]किन्तु जब बंधुओं को इस बात का पता चला तो वे उसे कैसरिया ले गये और फिर उसे तरसुस पहुँचा दिया।

[31]इस प्रकार समूचे यहूदिया, गलील और सामरिया के कलीसिया का वह समय शांति से बीता। वह कलीसिया और अधिक शक्तिशाली होने लगी। क्योंकि वह प्रभु से डर कर अपना जीवन व्यतीत करती थी, और पवित्र आत्मा ने उसे और अधिक प्रोत्साहित किया था सो उसकी संख्या बढ़ने लगी।

[32]फिर उस समूचे क्षेत्र में घूमता फिरता पतरस लिद्दा के संतों से मिलने पहुँचा। [33]वहाँ उसे अनियास नाम का एक व्यक्ति मिला जो आठ साल से बिस्तर में पड़ा था। उसे लकवा मार गया था। [34]पतरस ने उससे कहा, "अनियास, यीशु मसीह तुझे स्वस्थ करता है। खड़ा हो और अपना बिस्तर ठीक कर।" सो वह तुरंत खड़ा हो गया। [35]फिर लिद्दा और शारोन में रहने वाले सभी लोगों ने उसे देखा और वे प्रभु की ओर मुड़ गये।

पतरस याफा में

[36]याफा में तबीता नाम की एक शिष्या रहा करती थी (जिसका यूनानी अनुवाद है दोरकास अर्थात् हिरणी)। वह सदा अच्छे अच्छे काम करती और गरीबों को दान देती। [37]उन्हीं दिनों वह बीमार हुई और मर गयी। उन्होंने उसके शव को स्नान करा के सीढ़ियों के ऊपर कमरे में रख दिया। [38]लिद्दा याफा के पास ही था, सो शिष्यों ने जब यह सुना कि पतरस लिद्दा में है तो उन्होंने उसके पास दो व्यक्ति भेजे कि वे उससे विनती करें, "अनुग्रह कर के जल्दी से जल्दी हमारे पास आ जा!" [39]सो पतरस तैयार होकर उनके साथ चल दिया। जब पतरस वहाँ पहुँचा तो वे उसे सीढ़ियों के ऊपर कमरे में ले गये। वहाँ सभी विधवाएँ विलाप करते हुए और उन कुर्तियों और दूसरे वस्त्रों को जिन्हें दोरकास ने जब वह उनके साथ थी, बनाया था, दिखाते हुए उसके चारों ओर खड़ी हो गयीं। [40]पतरस ने हर किसी को बाहर भेज दिया और घुटनों के बल झुक कर उसने प्रार्थना की। फिर शव की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "तबीता-खड़ी हो जा!" उसने अपनी आखें खोल दीं और पतरस को देखते हुए वह उठ बैठी। [41]उसे अपना हाथ देकर पतरस ने खड़ा किया और फिर संतों और विधवाओं को बुलाकर उन्हें उसे जीवित सौंप दिया। [42]समूचे याफा में हर किसी को इस बात का पता चल गया और बहुत से लोगों ने प्रभु में विश्वास किया। [43]फिर याफा में शमोन नाम के एक चर्मकार के यहाँ पतरस बहुत दिनों तक ठहरा।

पतरस और कुरनेलियुस

10 कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का एक व्यक्ति था। वह सेना के उस दल का नायक था जिसे इतालवी कहा जाता था। [2]वह परमेश्वर से डरने वाला भक्त था और वैसा ही उसका परिवार भी था। वह गरीब लोगों की सहायता के लिये उदारतापूर्वक दान दिया करता था और सदा ही परमेश्वर की प्रार्थना करता रहता था। [3]दिन के नवें पहर के आसपास उसने एक दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उसके पास आया है और उससे कह रहा है, "कुरनेलियुस।"

[4]सो कुरनेलियुस डरते हुए स्वर्गदूत की ओर देखते हुए बोला, "हे प्रभु, यह क्या है?"

स्वर्गदूत ने उससे कहा, "तेरी प्रार्थनाएँ और दीन दुखियों को दिया हुआ तेरा दान एक स्मारक के रूप में तुझे याद दिलाने के लिए परमेश्वर के पास पहुचें हैं। [5]सो अब कुछ व्यक्तियों को याफा भेज और शमौन नाम के एक व्यक्ति को, जो पतरस भी कहलाता है, यहाँ बुलवा ले। [6]वह शमौन नाम के एक चर्मकार के साथ रह रहा है। उसका घर सागर के किनारे है।" [7]वह स्वर्गदूत जो उससे बात कर रहा था, जब चला गया तो उसने अपने दो सेवकों और अपने निजी सहायकों में से एक भक्त सिपाही को बुलाया [8]और जो कुछ घटित हुआ था, उन्हें सब कुछ बताकर याफा भेज दिया।

[9]अगले दिन जब वे चलते चलते नगर के निकट पहुँचने ही वाले थे, पतरस दोपहर के समय प्रार्थना करने को छत पर चढ़ा। [10]उसे भूख लगी, सो वह कुछ खाना चाहता था। वे जब भोजन तैयार कर ही रहे थे तो उसकी समाधि लग गयी। [11]और उसने देखा कि आकाश खुल गया है और एक बड़ी चादर जैसी कोई वस्तु नीचे उतर रही है। उसे चारों कोनों से पकड़ कर धरती पर उतारा जा रहा है। [12]उस पर हर प्रकार के पशु, धरती के रेंगने वाले जीव-जंतु और आकाश के पक्षी थे। [13]फिर एक स्वर ने उससे कहा, "पतरस उठ। मार और खा।"

[14]पतरस ने कहा, "प्रभु, निश्चित रूप से नहीं, क्योंकि मैंने कभी भी किसी तुच्छ या समय के अनुसार अपवित्र आहार को नहीं लिया है।"

[15]इस पर उन्हें दूसरी बार फिर वाणी सुनाई दी, "किसी भी वस्तु को जिसे परमेश्वर ने पवित्र बनाया है, तुच्छ मत कहना!" [16]तीन बार ऐसा ही हुआ और वह वस्तु फिर तुरंत आकाश में वापस उठा ली गयी।

[17]पतरस ने जिस दृश्य को दर्शन में देखा था, उस पर वह अभी चक्कर में ही पड़ा हुआ था कि कुरनेलियुस के भेजे वे लोग दरवाजे पर खड़े पूछ रहे थे कि शमौन का घर कहाँ है? [18]उन्होंने बाहर बुलाते हुए पूछा, "क्या पतरस कहलाने वाला शमौन अतिथि के रूप में यहीं ठहरा है?"

[19]पतरस अभी उस दर्शन के बारे में सोच ही रहा था कि आत्मा ने उससे कहा, "सुन, तीन व्यक्ति तुझे ढूँढ रहे हैं। [20]सो खड़ा हो, और नीचे उतर बेझिझक उनके साथ चला जा, क्योंकि उन्हें मैंने ही भेजा है।" [21]इस प्रकार पतरस नीचे उतर आया और उन लोगों से बोला, "मैं वही हूँ, जिसे तुम खोज रहे हो। तुम क्यों आये हो।?"

[22]वे बोले, "हमें सेनानायक कुरनेलियुस ने भेजा है। वह परमेश्वर से डरने वाला नेक पुरुष है। यहूदी लोगों में उसका बहुत सम्मान है। उससे पवित्र-स्वर्गदूत ने तुझे अपने घर बुलाने का निमन्त्रण देने को और जो कुछ तू कहे उसे सुनने को कहा है।" [23]इस पर पतरस ने उन्हें भीतर बुला लिया और ठहरने को स्थान दिया।

फिर अगले दिन तैयार होकर वह उनके साथ चला गया। और याफा के निवासी कुछ अन्य बन्धु भी उसके साथ हो लिये। [24]अगले ही दिन वह कैसरिया जा पहुँचा। वहाँ अपने सम्बन्धियों और निकट-मित्रों को बुलाकर कुरनेलियुस उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। [25]पतरस जब भीतर पहुँचा तो कुरनेलियुस से उसकी भेंट हुई। कुरनेलियुस ने उसके चरणों पर गिरते हुए उसको दण्डवत प्रणाम किया। [26]किन्तु उसे उठाते हुए पतरस बोला, "खड़ा हो। मैं तो स्वयं मात्र एक मनुष्य हूँ।" [27]फिर उसके साथ बात करते करते वह भीतर चला गया। और वहाँ उसने बहुत से लोगों को एकत्र पाया। [28]उसने उनसे कहा, "तुम जानते हो कि एक यहूदी के लिये किसी दूसरी जाति के व्यक्ति के साथ कोई सम्बन्ध रखना या उसके यहाँ जाना विधान के विरुद्ध है किन्तु फिर भी परमेश्वर ने मुझे दर्शाया है कि मैं किसी भी व्यक्ति को अशुद्ध या अपवित्र न कहूँ। [29]इसीलिए मुझे जब बुलाया गया तो मैं बिना किसी आपत्ति के आ गया। इसलिये मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुमने मुझे किस लिये बुलाया है।"

[30]इस पर कुरनेलियुस ने कहा, "चार दिन पहले इसी समय दिन के नवें पहर (तीन बजे) मैं अपने घर में प्रार्थना कर रहा था। अचानक चमचमाते वस्त्रों में एक व्यक्ति मेरे सामने आ खड़ा हुआ। [31]और कहा, 'कुरनेलियुस! तेरी विनती सुन ली गयी है और दीन दुखियों को दिये गये तेरे दान परमेश्वर के सामने याद किये गये हैं। [32]इसलिये याफा भेजकर पतरस कहलाने वाले शमौन को बुलवा भेज। वह सागर किनारे चर्मकार शमौन के घर ठहरा हुआ है।' [33]इसीलिए मैंने तुरंत तुझे बुलवा भेजा और तूने यहाँ आने की कृपा करके बहुत अच्छा किया। सो अब प्रभु ने जो कुछ आदेश तुझे दिये हैं, उस सब कुछ को सुनने के लिये हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने उपस्थित हैं।"

कुरनेलियुस के घर पतरस का प्रवचन

[34]फिर पतरस ने अपना मुँह खोला। उसने कहा, "अब सचमुच मैं समझ गया हूँ कि परमेश्वर कोई भेद भाव नहीं करता [35]बल्कि हर जाति का कोई भी ऐसा व्यक्ति जो उससे डरता है और नेक काम करता है, वह उसे स्वीकार करता है। [36]यही है वह संदेश जिसे उसने यीशु मसीह के द्वारा शांति के सुसमाचार का उपदेश देते हुए इस्राएल के लोगों को दिया था। वह सभी का प्रभु है। [37]तुम उस महान घटना को जानते हो, जो समूचे यहूदिया में घटी थी। गलील में प्रारम्भ होकर यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा दिए जाने के बाद से जिसका प्रचार किया गया था। [38]तुम नासरी यीशु के विषय में जानते हो कि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा और शक्ति से उसका अभिषेक कैसे किया था और उत्तम कार्य करते हुए तथा उन सब को जो शैतान के बस में थे, चंगा करते हुए चारों ओर वह कैसे घूमता रहा था। क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। [39]और हम उन सब बातों के साक्षी हैं जिन्हें उसने यहूदियों के प्रदेश और यरुशलेम में किया था। उन्होंने उसे ही एक पेड़ पर लटका कर मार डाला। [40]किन्तु परमेश्वर ने तीसरे दिन उसे फिर से जीवित कर दिया और उसे प्रकट होने को प्रेरित किया। [41]सब लोगों के सामने नहीं वरन् बस उन साक्षियों के सामने जो परमेश्वर के द्वारा पहले से चुन लिये गये थे। अर्थात् हमारे सामने जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया और पिया। [42]उसी ने हमें आदेश दिया है कि हम लोगों को उपदेश दें

और प्रमाणित करें कि यह वही है, जो परमेश्वर के द्वारा जीवितों और मरे हुओं का न्यायकर्ता बनने को नियुक्त किया गया है। **43**सभी भविष्यवक्ताओं ने उसके विषय में साक्षी दी है कि उसमें विश्वास करने वाला हर व्यक्ति उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा पाता है।"

ग़ैर यहूदियों पर पवित्र आत्मा का उतरना

44पतरस अभी ये बातें कह ही रहा था कि उन सब पर पवित्र आत्मा उतर आया जिन्होंने सुसंदेश सुना था। **45**क्योंकि पवित्र आत्मा का वरदान ग़ैर यहूदियों पर भी उँडेला जा रहा था, सो पतरस के साथ आये यहूदी विश्वासी आश्चर्य में डूब गये। **46**वे उन्हें नाना भाषाएँ बोलते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए सुन रहे थे। तब पतरस बोला, **47**"क्या कोई इन लोगों को बपतिस्मा देने के लिये, जल सुलभ कराने को मना कर सकता है? इन्हें भी वैसे ही पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ हैं, जैसे हमें।" **48**इस प्रकार उसने यीशु मसीह के नाम में उन्हें बपतिस्मा देने की आज्ञा दी। फिर उन्होंने पतरस से अनुरोध किया कि वह कुछ दिन उनके साथ ठहरे।

पतरस का यरूशलेम लौटना

11 समूचे यहूदिया में बंधुओं और प्रेरितों ने सुना कि प्रभु का वचन ग़ैर यहूदियों ने भी ग्रहण कर लिया है। **2**सो जब पतरस यरुशलेम पहुँचा तो उन्होंने जो ख़तना के पक्ष में थे, उसकी आलोचना की। **3**वे बोले, "तू ख़तना रहित लोगों के घर में गया है और तूने उनके साथ खाना खाया है।"

4इस पर पतरस वास्तव में जो घटा था, उसे सुनाने समझाने लगा। **5**"मैंने याफा नगर में प्रार्थना करते हुए समाधि में एक दृश्य देखा। मैंने देखा कि एक बड़ी चादर जैसी कोई वस्तु नीचे उतर रही है, उसे चारों कोनों से पकड़ कर आकाश से धरती पर उतारा जा रहा है। फिर वह उतर कर मेरे पास आ गयी। **6**मैंने उस को ध्यान से देखा। मैंने देखा कि उसमें धरती के चौपाये जीव-जंतु, जँगली पशु रेंगने वाले जीव और आकाश के पक्षी थे। **7**फिर मैंने एक आवाज़ सुनी, जो मुझसे कह रही थी, 'पतरस उठ, मार और खा।' **8**किन्तु मैंने कहा, 'प्रभु, निश्चित रूप से नहीं, क्योंकि मैंने कभी भी किसी तुच्छ या समय के अनुसार किसी अपवित्र आहार को नहीं लिया है।' **9**आकाश से दूसरी बार उस स्वर ने फिर कहा, 'जिसे परमेश्वर ने पवित्र बनाया है, उसे तू अपवित्र मत समझ।' **10**तीन बार ऐसा ही हुआ। फिर वह सब आकाश में वापस उठा लिया गया। **11**उसी समय जहाँ मैं ठहरा हुआ था, उस घर में तीन व्यक्ति आ पहुचें। उन्हें मेरे पास कैसरिया से भेजा गया था। **12**आत्मा ने मुझसे उनके साथ बेझिझक चले जाने को कहा। ये छह: बन्धु भी मेरे साथ गये। और हमने उस व्यक्ति के घर में प्रवेश किया। **13**उसने हमें बताया कि एक स्वर्गदूत को अपने घर में खड़े उसने कैसे देखा था। जो कह रहा था याफा भेज कर पतरस कहलाने वाले शमौन को बुलवा ले। **14**वह तुझे वचन सुनायेगा जिससे तेरा और तेरे परिवार का उद्धार होगा। **15**जब मैंने प्रवचन आरम्भ किया तो पवित्र आत्मा उन पर उतर आया। ठीक वैसे ही जैसे प्रारम्भ में हम पर उतरा था। **16**फिर मुझे प्रभु का कहा यह वचन याद हो आया, 'यूहन्ना जल से बपतिस्मा देता था किन्तु तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जायेगा।' **17**इस प्रकार यदि परमेश्वर ने उन्हें भी वही बरदान दिया जिसे उसने जब हमने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया था, तब हमें दिया था, तो विरोध करने वाला मैं कौन होता था?"

18विश्वासियों ने जब यह सुना तो उन्होंने प्रश्न करना बन्द कर दिया। वे परमेश्वर की महिमा करते हुए कहने लगे, "अच्छा, तो परमेश्वर ने विधर्मियों तक को मन फिराव का वह अवसर दिया है, जो जीवन की ओर ले जाता है!"

अंताकिया में सुसमाचार का आगमन

19वे लोग जो स्तिफनुस के समय में दी जा रही यातनाओं के कारण तितर-बितर हो गये थे, दूर-दूर तक फीनीक, साइप्रस और अंताकिया तक जा पहुँचे। ये यहूदियों को छोड़ किसी भी और को सुसमाचार नहीं सुनाते थे। **20**इन्हीं विश्वासियों में से कुछ साइप्रस और कुरैन के थे। सो जब वे अंताकिया आये तो यूनानियों को भी प्रवचन देते हुए प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाने लगे। **21**प्रभु की शक्ति उनके साथ थी। सो एक विशाल जन समुदाय विश्वास धारण करके प्रभु की ओर मुड़ गया।

22इसका समाचार जब यरुशलेम में कलीसिया के कानों तक पहुँचा तो उन्होंने बरनाबास को अंताकिया

जाने को भेजा। [23]जब बरनाबास ने वहाँ पहुँच कर प्रभु के अनुग्रह को सकारथ होते देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उन सभी को प्रभु के प्रति भक्तिपूर्ण हृदय से विश्वासी बने रहने को उत्साहित किया। [24]क्योंकि वह पवित्र आत्मा और विश्वास से पूर्ण एक उत्तम पुरुष था। फिर प्रभु के साथ एक विशाल जनसमूह और जुड़ गया।

[25]बरनाबास शाऊल को खोजने तरसुस को चला गया। [26]फिर वह उसे ढूँढ कर अंताकिया ले आया। सारे साल वे कलीसिया से मिलते जुलते और विशाल जनसमूह को उपदेश देते रहे। अंताकिया में सबसे पहले इन्हीं शिष्यों को "मसीही" कहा गया।

[27]इसी समय यरुशलेम से कुछ नबी अंताकिया आये। [28]उनमें से अगबुस नाम के एक भविष्यवक्ता ने खड़े होकर पवित्र आत्मा के द्वारा यह भविष्यवाणी की कि सारी दुनिया में एक भयानक अकाल पड़ने वाला है (क्लोदियुस के काल में यह अकाल पड़ा था) [29]तब हर शिष्य ने अपनी शक्ति के अनुसार यहूदिया में रहने वाले बन्धुओं की सहायता के लिये कुछ भेजने का निश्चय किया था। [30]सो उन्होंने ऐसा ही किया और उन्होंने बरनाबास और शाऊल के हाथों अपने बुज़ुर्गों के पास अपने उपहार भेजे

हेरोदेस का कलीसिया पर अत्याचार

12 उसी समय के आसपास राजा हेरोदेस* ने कलीसिया के कुछ सदस्यों को सताना प्रारम्भ कर दिया। [2]उसने यूहन्ना के भाई याकूब की, तलवार से हत्या करवा दी। [3]उसने जब यह देखा कि इस बात से यहूदी प्रसन्न होते हैं तो उसने पतरस को भी बंदी बनाने के लिये हाथ बढ़ाया (यह बिना ख़मीर की रोटी के उत्सव के दिनों की बात है) [4]हेरोदेस ने पतरस को पकड़ कर जेल में डाल दिया। उसे चार चार सैनिकों की चार पंक्तियों के पहरे के हवाले कर दिया गया। प्रयोजन यह था कि उस पर मुकदमा चलाने के लिये फसह पर्व के बाद उसे लोगों के सामने बाहर लाया जाये। [5]सो पतरस को जेल में रोके रखा गया। उधर कलीसिया हृदय से उसके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करती रही।

जेल से पतरस का छुटकारा

[6]जब हेरोदेस मुकदमा चलाने के लिये उसे बाहर लाने को था, उस रात पतरस दो सैनिकों के बीच सोया हुआ था। वह दो ज़ंजीरों से बँधा था और द्वार पर पहरेदार जेल की रखवाली कर रहे थे। [7]अचानक प्रभु का एक स्वर्गदूत वहाँ आ खड़ा हुआ, जेल की कोठरी प्रकाश से जगमग हो उठी, उसने पतरस की बगल थपथपाई और उसे जगाते हुए कहा, "जल्दी खड़ा हो।" ज़ंजीरें उसके हाथों से खुल कर गिर पड़ी। [8]तभी स्वर्गदूत ने उसे आदेश दिया, "तैयार हो और अपनी चप्पल पहन ले।" सो पतरस ने वैसा ही किया। स्वर्गदूत ने उससे फिर कहा, "अपना चोगा पहन ले और मेरे पीछे चला आ।" [9]फिर उसके पीछे-पीछे पतरस बाहर निकल आया। वह समझ नहीं पाया कि स्वर्गदूत जो कुछ कर रहा था, वह यथार्थ था। उसने सोचा कि वह कोई दर्शन देख रहा है। [10]पहले और दूसरे पहरेदार को छोड़ कर आगे बढ़ते हुए वे लोहे के उस फाटक पर आ पहुँचे जो नगर की ओर जाता था। वह उनके लिये आप से आप खुल गया। और वे बाहर निकल गये। वे अभी गली पार ही गये थे कि वह स्वर्गदूत अचानक उसे छोड़ गया।

[11]फिर पतरस को जैसे होश आया, वह बोला, "अब मेरी समझ में आया कि यह वास्तव में सच है कि प्रभु ने अपने स्वर्गदूत को भेज कर हेरोदेस के पंजे से मुझे छुड़ाया है। यहूदी लोग मुझ पर जो कुछ घटने की सोच रहे थे, उससे उसी ने मुझे बचाया है।"

[12]जब उसने यह समझ लिया तो वह यूहन्ना की माता मरियम के घर चला गया। (यूहन्ना जो मरकुस भी कहलाता है।) वहाँ बहुत से लोग एक साथ प्रार्थना कर रहे थे। [13]पतरस ने द्वार को बाहर से खटखटाया। उसे देखने रूदे नाम की एक दासी वहाँ आयी। [14]पतरस की आवाज़ को पहचान कर आनन्द के मारे उसके लिए द्वार खोले बिना ही वह उल्टी भीतर दौड़ गयी और उसने बताया कि पतरस द्वार पर खड़ा है। [15]वे उससे बोले, "तू पागल हो गयी है।" किन्तु वह बलपूर्वक कहती रही कि यह ऐसा ही है। इस पर उन्होंने कहा, "वह उसका स्वर्गदूत होगा।"

[16]उधर पतरस द्वार खटखटाता ही रहा। फिर उन्होंने जब द्वार खोला और उसे देखा तो वे अचरज में पड़ गये। [17]उन्हें हाथ से चुप रहने का संकेत करते हुए उसने खोलकर बताया कि प्रभु ने उसे जेल से कैसे बाहर

हेरोदेस यहाँ हेरोदेस से अभिप्राय है हेरोदेस प्रथम जो हेरोदेस महान का पोता था।

निकाला है। उसने कहा, "याकूब तथा अन्य बन्धुओं को इस विषय में बता देना।" और तब वह उस स्थान को छोड़कर किसी दूसरे स्थान को चला गया।

[18]जब भोर हुई तो पहरेदारों में बड़ी खलबली फैल गयी। वे अचरज में पड़े सोच रहे थे कि पतरस के साथ क्या हुआ होगा। [19]इसके बाद हेरोदेस जब उसकी खोज बीन कर चुका और वह उसे नहीं मिला तो उसने पहरेदारों से पूछताछ की और उन्हें मार डालने की आज्ञा दी।

हेरोदेस की मृत्यु

हेरोदेस फिर यहूदिया से जा कर कैसरिया में रहने लगा। वहाँ उसने कुछ समय बिताया। [20]वह सूर और सैदा के लोगों से बहुत क्रोधित रहता था। वे एक समूह बनाकर उससे मिलने आये। राजा के निजी सेवक बलासतुस की मानमनौवल करके उन्होंने हेरोदेस से शांति की प्रार्थना की क्योंकि उनके देश को राजा के देश से ही खाने को मिलता था।

[21]एक निश्चित दिन हेरोदेस अपनी राजसी वेश-भूषा पहन कर अपने सिंहासन पर बैठा और लोगों को भाषण देने लगा। [22]लोग चिल्लाये, "यह तो किसी देवता की वाणी है, मनुष्य की नहीं।" [23]क्योंकि हेरोदेस ने परमेश्वर को महिमा प्रदान नहीं की थी, इसलिए तत्काल प्रभु के एक स्वर्गदूत ने उसे बीमार कर दिया। और उसमें कीड़े पड़ गये जो उसे खाने लगे और वह मर गया।

[24]किन्तु परमेश्वर का वचन प्रचार पाता रहा और फैलता रहा।

[25]बरनाबास और शाऊल यरूशलेम में अपना काम पूरा करके मरकुस कहलाने वाले यूहन्ना को भी साथ लेकर अंताकिया लौट आये

बरनाबास और शाऊल का चुना जाना

13 अंताकिया के कलीसिया में कुछ नबी और बरनाबास, काला कहलाने वाला शमौन, कुरेन का लूकियुस, देश के चौथाई भाग के राजा हेरोदेस के साथ पालितपोषित मनाहेम और शाऊल जैसे कुछ शिक्षक थे। [2]वे जब उपवास करते हुए प्रभु की उपासना में लगे हुए थे, तभी पवित्र आत्मा ने कहा, "बरनाबास और शाऊल को जिस काम के लिये मैंने बुलाया है, उसे करने के लिये मेरे निमित्त, उन्हें अलग कर दो।"

[3]सो जब शिक्षक और नबी अपना उपवास और प्रार्थना पूरी कर चुके तो उन्होंने बरनाबास और शाऊल पर अपने हाथ रखे और उन्हें विदा कर दिया।

बरनाबास और शाऊल की साइप्रस यात्रा

[4]पवित्र आत्मा के द्वारा भेजे हुए वे सिलुकिया गये जहाँ से जहाज़ में बैठ कर वे साइप्रस पहुँचें। [5]फिर जब वे सलमीस पहुँचे तो उन्होंने यहूदियों के सभागारों में परमेश्वर के वचन का प्रचार किया। यूहन्ना सहायक के रूप में उनके साथ था।

[6]उस समूचे द्वीप की यात्रा करते हुए वे पाफुस तक जा पहुँचे। वहाँ उन्हें एक जादूगर मिला, वह झूठा नबी था। उस यहूदी का नाम था बार-यीशु। [7]वह एक अत्यंत बुद्धिमान पुरुष था। वह राज्यपाल सिरगियुस पौलुस का सेवक था जिसने परमेश्वर का वचन फिर सुनने के लिये बरनाबास और शाऊल को बुलाया था। [8]किन्तु इलीमास जादूगर ने उनका विरोध किया। (यह बार-यीशु का अनुवादित नाम है)। उसने नगर-पति के विश्वास को डिगाने का जतन किया। [9]फिर शाऊल ने जिसे पौलूस भी कहा जाता था, पवित्र आत्मा से अभिभूत होकर इलीमास पर पैनी दृष्टि डालते हुए कहा, [10]"सभी प्रकार के छलों और धूर्तताओं से भरे, अरे शैतान के बेटे, तू हर नेकी का शत्रु है। क्या तू प्रभु के सीधे-सच्चे मार्ग को तोड़ना मरोड़ना नहीं छोड़ेगा? [11]अब देख प्रभु का हाथ तुझ पर आ पड़ा है। तू अंधा हो जायेगा और कुछ समय के लिये सूर्य तक को नहीं देख पायेगा।"

तुरन्त एक धुंध और अँधेरा उस पर छा गया और वह इधर-उधर टटोलने लगा कि कोई उसका हाथ पकड़ कर उसे चलाये। [12]सो नगर-पति ने, जो कुछ घटा था, जब उसे देखा तो उसने विश्वास धारण किया। वह प्रभु सम्बन्धी उपदेशों से बहुत चकित हुआ।

पौलुस और बरनाबास का साइप्रस से प्रस्थान

[13]फिर पौलुस और उसके साथी पाफुस से नाव के द्वारा पम्फूलिया के पिरगा में आ गये। किन्तु यूहन्ना उन्हें वहीं छोड़ कर यरुशलेम लौट आया। [14]उधर वे अपनी यात्रा पर बढ़ते हुए पिरगा से पिसिदिया के अंताकिया में आ पहुँचे। फिर सब्त के दिन यहूदी प्रार्थना-सभागार में जा कर बैठ गये। [15]व्यवस्था के विधान और नबियों के

ग्रन्थों का पाठ कर चुकने के बाद यहूदी प्रार्थना सभागार के अधिकारियों ने उनके पास यह संदेशा कहला भेजा, “हे भाइयो, लोगों को शिक्षा देने के लिये तुम्हारे पास कहने को कोई और वचन है तो उसे सुनाओ।”

[16]इस पर पौलुस खड़ा हुआ और अपने हाथ हिलाते हुए बोलने लगा, “हे इस्राएल के लोगो और परमेश्वर से डरने वाले ग़ैर यहूदियो, सुनो: [17]इन इस्राएल के लोगों के परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुना था और जब हमारे लोग मिस्र में ठहरे हुए थे, उसने उन्हें महान् बनाया था और अपनी महान शक्ति से ही वह उनको उस धरती से बाहर निकाल लाया था। [18]और लगभग चालीस वर्ष तक वह जंगल में उनकी सहता रहा। [19]और कनान देश की सात जातियों को नष्ट करके उसने वह धरती इस्राएल के लोगों को उत्तराधिकार के रूप में दे दी। [20]इस सब कुछ में कोई लगभग साढ़े चार सौ वर्ष लगे।

“इसके बाद शमूएल नबी के समय तक उसने उन्हें अनेक न्यायकर्ता दिये। [21]फिर उन्होंने एक राजा की माँग की, सो परमेश्वर ने बेंजामिन के गोत्र के एक व्यक्ति कीश के बेटे शाऊल को चालीस साल के लिये उन्हें दे दिया। [22]फिर शाऊल को हटा कर उसने उनका राजा दाऊद को बनाया जिसके विषय में उसने यह साक्षी दी थी, ‘मैंने यिशे के बेटे दाऊद को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पाया है, जो मेरे मन के अनुकूल है। जो कुछ मैं उससे कराना चाहता हूँ, वह उस सब कुछ को करेगा।’ [23]इस ही मनुष्य के एक वंशज को अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार परमेश्वर इस्राएल में उद्धार कर्ता यीशु के रूप में ला चुका है। [24]उसके आने से पहले यूहन्ना इस्राएल के सभी लोगों में मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता रहा है। [25]यूहन्ना जब अपने काम को पूरा करने को था, तो उसने कहा था, ‘तुम मुझे जो समझते हो, मैं वह नहीं हूँ। किन्तु एक ऐसा है जो मेरे बाद आ रहा है। मैं जिसकी जूतियों के बन्ध खोलने लायक भी नहीं हूँ।’

[26]“भाइयो, इब्राहीम की सन्तानो और परमेश्वर के उपासक ग़ैर यहूदियो! उद्धार का यह सुसंदेश हमारे लिए ही भेजा गया है। [27]यरुशलेम में रहने वालों और उनके शासकों ने यीशु को नहीं पहचाना। और उसे दोषी ठहरा दिया। इस तरह उन्होंने नबियों के उन वचनों को ही पूरा किया जिनका हर सब्त के दिन पाठ किया जाता है। [28]और यद्यपि उन्हें उसे मृत्यु दण्ड देने का कोई आधार नहीं मिला, तो भी उन्होंने पिलातुस से उसे मरवा डालने की माँग की। [29]उसके विषय में जो कुछ लिखा था, जब वे उस सब कुछ को पूरा कर चुके तो उन्होंने उसे क्रूस पर से नीचे उतार लिया और एक कब्र में रख दिया। [30]किन्तु परमेश्वर ने उसे मरने के बाद फिर से जीवित कर दिया। [31]और फिर जो लोग गलील से यरुशलेम तक उसके साथ रहे थे वह उनके सामने कई दिनों तक प्रकट होता रहा। ये अब लोगों के लिये उसकी साक्षी हैं। [32]हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में सुसमाचार सुना रहे हैं जो हमारे पूर्वजों के साथ की गयी थी [33]यीशु को, मर जाने के बाद पुनर्जीवित करके, उनकी संतानों के लिये परमेश्वर ने उसी प्रतिज्ञा को हमारे लिए पूरा किया है। जैसा कि भजन संहिता के दूसरे भजन में लिखा भी गया है:

‘तू मेरा पुत्र है,
मैंने तुझे आज ही जन्म दिया है।’

भजन संहिता 2:7

[34]और उसने उसे मरे हुओं में से जिला कर उठाया ताकि क्षय होने के लिये उसे फिर लौटना न पड़े। उसने इस प्रकार कहा था:

‘मैं तुझे वे पवित्र और अटल आशीश दूँगा
जिन्हें देने का वचन मैंने दाऊद को दिया।’

यशायाह 55:3

[35] इसी प्रकार एक अन्य भजन में वह कहता है:

‘तू अपने उस पवित्र जन को
क्षय का अनुभव नहीं होने देगा।’

भजन संहिता 16:10

[36]फिर दाऊद अपने युग में परमेश्वर के प्रयोजन के अनुसार अपना सेवा–कार्य पूरा करके चिर–निद्रा में सो गया, उसे उसके पूर्वजों के साथ दफना दिया गया और उसका क्षय हुआ। [37]किन्तु जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं के बीच से जिला कर उठाया, उसका क्षय नहीं हुआ। [38–39]सो हे भाइयों, तुम्हें जान लेना चाहिये कि यीशु के द्वारा ही पापों की क्षमा का उपदेश तुम्हें दिया गया है। और इसी के द्वारा हर कोई जो विश्वासी है, उन पापों से छुटकारा पा सकता है, जिनसे तुम्हें मूसा की व्यवस्था छुटकारा नहीं दिला सकती थी। [40]सो सावधान रहो, कहीं नबियों ने जो कुछ कहा है, तुम पर न घट जाये:

[41] 'निन्दा करने वालो, देखो,
भोचक्के हो कर मर जाओ,
क्योंकि तुम्हारे युग में एक कार्य ऐसा
करता हूँ, जिसकी चर्चा तक पर तुमको
कभी प्रतीति नहीं होने की!'"

हबक्कूक 1:5

[42]पौलुस और बरनाबास जब वहाँ से जा रहे थे तो लोगों ने उनसे अगले सब्त के दिन ऐसी ही और बातें बताने की प्रार्थना की। [43]जब सभा समाप्त हुई तो बहुत से यहूदियों और ग़ैर यहूदी भक्तों ने पौलुस और बरनाबास का अनुसरण किया। पौलुस और बरनाबास ने उनसे बातचीत करते हुए आग्रह किया कि वे परमेश्वर के अनुग्रह में स्थिति बनाये रखें।

[44]अगले सब्त के दिन तो लगभग समूचा नगर ही प्रभु का वचन सुनने के लिये उमड़ पड़ा। [45]इस विशाल जन समूह को जब यहूदियों ने देखा तो वे बहुत कुढ़ गये और अपशब्दों का प्रयोग करते हुए पौलुस ने जो कुछ कहा था, उसका विरोध करने लगे। [46]किन्तु पौलुस और बरनाबास ने निडर होकर कहा, "यह आवश्यक था कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता किन्तु क्योंकि तुम उसे नकारते हो तथा तुम अपने आपको अनन्त जीवन के योग्य नहीं समझते, सो हम अब ग़ैर यहूदियों की ओर मुड़ते हैं। [47]क्योंकि प्रभु ने हमें ऐसी आज्ञा दी है:

'मैंने तुमको ज्योति बनाया,
उनके हेतु जो यहूदी नही,
ताकि सभी का उद्धार करें,
दूर धरा के अपर छोर तक।'"

यशायाह 49:6

[48]ग़ैर यहूदियों ने जब यह सुना तो वे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने प्रभु के वचन का सम्मान किया। फिर उन्होंने जिन्हें अनन्त जीवन पाने के लिये निश्चित किया था, विश्वास ग्रहण कर लिया।

[49]इस प्रकार उस समूचे क्षेत्र में प्रभु के वचन का प्रचार प्रसार होता रहा। [50]उधर यहूदियों ने उच्च कुल की भक्त महिलाओं और नगर के प्रमुख व्यक्तियों को भड़काया तथा पौलुस और बरनाबास के विरुद्ध अत्याचार करने आरम्भ कर दिये और दबाव डाल कर उन्हें अपने क्षेत्र से बाहर निकलवा दिया। [51]फिर पौलुस और बरनाबास उनके विरोध में अपने पैरों की धूल झाड़ कर इकुनियुम को चल दिये। [52]किन्तु उनके शिष्य, आनन्द और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।

इकुनियुम में पौलुस और बरनाबास

14 इसी प्रकार पौलुस और बरनाबास इकुनियुम में यहूदी प्रार्थना सभागार में गये। वहाँ उन्होंने इस ढंग से व्याख्यान दिया कि यहूदियों के एक विशाल जन समूह ने विश्वास धारण किया। [2]किन्तु उन यहूदियों ने जो विश्वास नहीं कर सके थे, ग़ैर यहूदियों को भड़काया और बन्धुओं के विरुद्ध उन के मनों में कटुता पैदा कर दी। [3]सो पौलुस और बरनाबास वहाँ बहुत दिनों तक ठहरे रहे तथा प्रभु के विषय में निर्भयता से प्रवचन करते रहे। उनके द्वारा प्रभु अद्‌भुत चिन्ह और आश्चर्यकर्मो को करवाता हुआ अपने दया के संदेश की प्रतिष्ठा कराता रहा। [4]उधर नगर के लोगों में फूट पड़ गयी। कुछ प्रेरितों की तरफ और कुछ यहूदियों की तरफ़ हो गये।

[5]फिर जब ग़ैर यहूदियों और यहूदियों ने अपने नेताओं के साथ मिलकर उनके साथ बुरा व्यवहार करने और उन पर पथराव करने की चाल चली, [6]तो पौलुस और बरनाबास को इसका पता चल गया और वे लुकाउनिया के लिस्तरा और दिरबे जैसे नगरों तथा आसपास के क्षेत्र में बच भागे। [7]वहाँ भी वे सुसमाचार का प्रचार करते रहे।

लिस्तरा और दिरबे में पौलुस

[8]लिस्तरा में एक व्यक्ति बैठा हुआ था। वह अपने पैरों से अपंग था। वह जन्म से ही लँगड़ा था, चल फिर तो वह कभी नहीं पाया। [9]इस व्यक्ति ने पौलुस को बोलते हुए सुना था। पौलुस ने उस पर दृष्टि गड़ाई और देखा कि अच्छा हो जाने का विश्वास उसमें है। [10]सो पौलुस ने ऊँचे स्वर में कहा, "अपने पैरों पर सीधा खड़ा हो जा।" सो वह ऊपर उछला और चलने-फिरने लगा। [11]पौलुस ने जो कुछ किया था, जब भीड़ ने उसे देखा तो लोग लुकाउनिया की भाषा में पुकार कर कहने लगे, "हमारे बीच मनुष्यों का रूप धारण करके, देवता उतर आये हैं।" [12]वे बरनाबास को "ज़ेअस"* और पौलुस को "हिरमेस"*

ज़ेअस यूनानी बहुदेववादी हैं। ज़ेअस उनका एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देवता था।

हिरमेस एक और दूसरा यूनानी देवता। यूनानियों के विश्वास के अनुसार हिरमेस दूसरे देवताओं का संदेशवाहक।

कहने लगे। (पौलुस को हिरमेस इसलिये कहा गया क्योंकि वह प्रमुख वक्ता था।) [13]नगर के ठीक बाहर बने ज़ेअस के मंदिर का याजक नगर द्वार पर साँड़ों और मालाओं को लेकर आ पहुँचा। वह भीड़ के साथ पौलुस और बरनाबास के लिये बलि चढ़ाना चाहता था। [14]किन्तु जब प्रेरित बरनाबास और पौलुस ने यह सुना तो उन्होंने अपने कपड़े फाड़ डाले* और वे ऊँचे स्वर में यह कहते हुए भीड़ में घुस गये, [15]"हे लोगो, तुम यह क्यों कर रहे हो? हम भी वैसे ही मनुष्य हैं, जैसे तुम हो। यहाँ हम तुम्हें सुसमाचार सुनाने आये हैं ताकि तुम इन व्यर्थ की बातों से मुड़ कर उस सजीव परमेश्वर की ओर लौटो जिसने आकाश, धरती, सागर और इनमें जो कुछ है, उसकी रचना की। [16]बीते काल में उसने सभी जातियों को उनकी अपनी-अपनी राहों पर चलने दिया। [17]किन्तु तुम्हें उसने स्वयं अपनी साक्षी दिये बिना नहीं छोड़ा। क्योंकि उसने तुम्हारे साथ भलाइयाँ कीं। उसने तुम्हें आकाश से वर्षा दी और ऋतु के अनुसार फसलें दीं। वही तुम्हें भोजन देता है और तुम्हारे मन को आनन्द से भर देता है।"

[18]इन वचनों के बाद भी वे भीड़ को उनके लिये बलि चढ़ाने से प्राय: नहीं रोक पाये। [19]फिर अंताकिया और इकुनियुम से आये यहूदियों ने भीड़ को अपने पक्ष में करके पौलुस पर पथराव किया और उसे मरा जान कर नगर के बाहर घसीट ले गये। [20]फिर जब शिष्य उसके चारों ओर इकट्ठे हुए, तो वह उठा और नगर में चला आया और फिर अगले दिन बरनाबास के साथ वह दिरबे के लिए चल पड़ा।

सीरिया के अंताकिया को लौटना

[21-22]उस नगर में उन्होंने सुसमाचार का प्रचार करके बहुत से शिष्य बनाये। और उनकी आत्माओं को स्थिर करके विश्वास में बने रहने के लिये उन्हें यह कह कर प्रेरित किया "हमें बड़ी यातनाएँ झेल कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है," वे लिस्तरा, इकुनियुम और अंताकिया लौट आये। [23]हर कलीसिया में उन्होंने उन्हें उस प्रभु को सौंप दिया जिसमें उन्होंने विश्वास किया था।

[24]इसके पश्चात पिसिदिया से होते हुए वे पम्फूलिया आ पहुचें। [25]और पिरगा में जब सुसमाचार सुना चुके तो इटली चले गये। [26]वहाँ से वे अंताकिया को जहाज़ द्वारा गये जहाँ जिस काम को अभी उन्होंने पूरा किया था, उस काम के लिये वे परमेश्वर के अनुग्रह को समर्पित हो गये।

[27]सो जब वे पहुँचे तो उन्होंने कलीसिया के लोगों को इकट्ठा किया और परमेश्वर ने उनके साथ जो कुछ किया था, उसका विवरण कह सुनाया। और उन्होंने घोषणा की कि परमेश्वर ने विधर्मियों के लिये भी विश्वास का द्वार खोल दिया है। [28]फिर अनुयायियों के साथ वे बहुत दिनों तक वहाँ ठहरे रहे।

यरुशलेम में एक सभा

15 फिर कुछ लोग यहूदिया से आये और भाइयों को शिक्षा देने लगे: "यदि मूसा की विधि के अनुसार तुम्हारा ख़तना नहीं हुआ है तो तुम्हारा उद्धार नहीं हो सकता।" [2]पौलुस और बरनाबास उनसे सहमत नहीं थे, सो उनमें एक बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ। सो पौलुस बरनाबास तथा उनके कुछ और साथियों को इस समस्या के समाधान के लिये प्रेरितों और मुखियाओं के पास यरुशलेम भेजने का निश्चय किया गया।

[3]वे कलीसिया के द्वारा भेजे जाकर फीनीके और सामरिया होते हुए सभी भाइयों को अधर्मियों के हृदय परिवर्तन का विस्तार के साथ समाचार सुनाकर उन्हें हर्षित कर रहे थे। [4]फिर जब वे यरूशलेम पहुँचे तो कलीसिया ने, प्रेरितों ने और बुज़ुर्गों ने उनका स्वागत सत्कार किया। और उन्होंने उनके साथ परमेश्वर ने जो कुछ किया था, वह सब कुछ उन्हें कह सुनाया। [5]इस पर फरीसियों के दल के कुछ विश्वासी खड़े हुए और बोले, "उनका खतना अवश्य किया जाना चाहिये और उन्हें आदेश दिया जाना चाहिए कि वे मूसा की व्यवस्था के विधान का पालन करें।"

[6]सो इस प्रश्न पर विचार करने के लिये प्रेरित तथा बुज़ुर्ग लोग परस्पर एकत्र हुए। [7]एक लम्बे चौड़े वाद-विवाद के बाद पतरस खड़ा हुआ और उनसे बोला, "भाइयो! तुम जानते हो कि बहुत दिनों पहले तुममें से प्रभु ने एक चुनाव किया था कि मेरे द्वारा अधर्मी लोग सुसमाचार का संदेश सुनेंगे और विश्वास करेंगे। [8]और अन्तर्यामी परमेश्वर ने हमारे ही समान उन्हें भी पवित्र आत्मा का वरदान देकर, उनके सम्बन्ध में अपना समर्थन

पौलुस ... डाले लोगों के इस आचरण पर पौलुस और बरनाबास ने क्रोध व्यक्त करने के लिये अपने वस्त्र फाड़ डाले।

दर्शाया था। [9]विश्वास के द्वारा उनके हृदयों को पवित्र करके हमारे और उनके बीच उसने कोई भेद भाव नहीं किया। [10]सो अब शिष्यों की गर्दन पर एक ऐसा जुआ लाद कर जिसे न हम उठा सकते हैं और न हमारे पूर्वज, तुम परमेश्वर को झमेले में क्यों डालते हो? [11]किन्तु हमारा तो यह विश्वास है कि प्रभु यीशु के अनुग्रह से जैसे हमारा उद्धार हुआ है, वैसे ही हमें भरोसा है कि उनका भी उद्धार होगा!"

[12]इस पर समूचा दल चुप हो गया और बरनाबास तथा पौलुस को सुनने लगा। वे, ग़ैर यहूदियों के बीच परमेश्वर ने उनके द्वारा दो अद्‌भुत चिन्ह प्रकटाए थे, और आश्चर्य कर्म किये थे, उनका विवरण दे रहे थे। [13]वे जब बोल चुके तो याकूब कहने लगा, "हे भाइयो, मेरी सुनो, [14]शमौन ने बताया था कि परमेश्वर ने ग़ैर यहूदियों में से कुछ लोगों को अपने नाम के लिये चुनकर सर्वप्रथम कैसे प्रेम प्रकट किया था। [15]नबियों के वचन भी इसका समर्थन करते हैं। जैसा कि लिखा गया है:

[16] 'मैं इसके बाद आऊँगा।
फिर से मैं खड़ा करुँगा दाऊद के
उस घर को जो गिर चुका।
फिर से सँवारूँगा उसके खण्डहरों
को जीर्णोद्धार करुँगा।
[17] ताकि जो बचे हैं वे ग़ैर यहूदी सभी
जो अब मेरे कहलाते हैं, प्रभु की खोज करें
[18] यह बात वही प्रभु कहता है
जो युगयुग से इन बातो को प्रकटाता रहा है।'
आमोस 9:11-12

[19]"इस प्रकार मेरा यह निर्णय है कि हमें उन लोगों को, जो ग़ैर यहूदी होते हुए भी परमेश्वर की ओर मुड़े हैं, सताना नहीं चाहिये। [20]बल्कि हमें तो उनके पास लिख भेजना चाहिये कि वे मूर्तियों द्वारा अपवित्र किये गये खाने से बचें। व्यभिचार से बचें, गला घोट कर मारे गये किसी भी पशु का माँस खाने से बचें और लहू को कभी न खायें। [21]अनादि काल से मूसा की व्यवस्था के विधान का पाठ करने वाले नगर-नगर में पाए जाते रहे हैं। हर सब्त के दिन मूसा की व्यवस्था के विधान का प्रार्थना सभाओं में पाठ होता रहा है।"

ग़ैर यहूदी-विश्वासियों के नाम पत्र

[22]फिर प्रेरितों और बुज़ुर्गों ने समूचे कलीसिया के साथ यह निश्चय किया कि उन्हीं में से कुछ लोगों को चुनकर पौलुस और बरनाबास के साथ अंताकिया भेजा जाये। सो उन्होंने बरसब्बा कहे जाने वाले यहूदा और सिलास को चुन लिया। वे भाइयों में सर्व प्रमुख थे। [23]उन्होंने उनके हाथों यह पत्र भेजा:

तुम्हारे बंधु, बुज़ुर्गों और प्रेरितों की ओर से
अंताकिया, सीरिया और किलिकिया के
गैर यहूदी भाइयों को नमस्कार पहुँचे

[24]हमने जब से यह सुना है कि हमसे कोई आदेश पाये बिना ही, हममें से कुछ लोगों ने जाकर अपने शब्दों से तुम्हें दुःख पहुँचाया है, और तुम्हारे मन को अस्थिर कर दिया है[25]हम सब ने परस्पर सहमत होकर यह निश्चय किया है कि हम अपने में से कुछ लोग चुनें और अपने प्रिय बरनाबास और पौलुस के साथ उन्हें तुम्हारे पास भेजें। [26]ये वे ही लोग हैं जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिये अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी थी। [27]हम यहूदा और सिलास को भेज रहे हैं। वे तुम्हें अपने मुँह से इन सब बातों को बताएँगें। [28]पवित्र आत्मा को और हमें यही उचित जान पड़ा कि तुम पर इन आवश्यक बातों के अतिरिक्त और किसी बात का बोझ न डाला जाये:

[29] मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन
तुम्हें नहीं लेना चाहिये।
रक्त, गला घोंट कर मारे गये
पशु और व्यभिचार से बचे रहो।

यदि तुम ने अपने आप को इन बातों से बचाये रखा तो तुम्हारा कल्याण होगा।
अच्छा विदा।'

[30]इस प्रकार उन्हें विदा कर दिया गया और वे अंताकिया जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने धर्म-सभा बुलाई और उन्हें वह पत्र दे दिया। [31]पत्र पढ़ कर जो प्रोत्साहन उन्हें मिला, उस पर उन्होंने आनन्द मनाया। [32]यहूदा और सिलास ने, जो स्वयं ही दोनों नबी थे, भाइयों के सामने उन्हें उत्साहित करते हुए और दृढ़ता प्रदान करते हुए, एक लम्बा प्रवचन किया। [33]वहाँ कुछ समय बिताने के बाद, भाइयों ने उन्हें

शांतिपूर्वक उन्हीं के पास लौट जाने को विदा किया जिन्होंने उन्हें भेजा था। 34* ['किन्तु सिलास ने वहीं ठहरे रहने का निश्चय किया।'] 35पौलुस तथा बरनाबास ने अंताकिया में कुछ समय बिताया। बहुत से दूसरे लोगों के साथ उन्होंने प्रभु के वचन का उपदेश देते हुए लोगों में सुसमाचार का प्रचार किया।

पौलुस और बरनाबास का अलग होना

36कुछ दिनों बाद बरनाबास से पौलुस ने कहा, "आओ, जिन-जिन नगरों में हमने प्रभु के वचन का प्रचार किया है, वहाँ अपने भाइयों के पास वापस चल कर यह देखें कि वे क्या कुछ कर रहे हैं।" 37बरनाबास चाहता था कि मरकुस कहलाने वाले यूहन्ना को भी वे अपने साथ ले चलें। 38किन्तु पौलुस ने यही ठीक समझा कि वे उसे अपने साथ न लें जिसने पम्फूलिया में उनका साथ छोड़ दिया था और (प्रभु के) कार्य में जिसने उनका साथ नहीं निभाया। 39इस पर उन दोनों में तीव्र विरोध पैदा हो गया। परिणाम यह हुआ कि वे आपस में एक दूसरे से अलग हो गये। बरनाबास मरकूस को लेकर पानी के जहाज़ से साइप्रस चला गया। 40पौलुस सिलास को चुनकर वहाँ से चला गया और भाइयों ने उसे प्रभु के संरक्षण में सौंप दिया। 41सो पौलुस सीरिया और किलिकिया की यात्रा करते हुए वहाँ की कलीसिया को सुदृढ़ करता रहा।

तिमुथियुस का पौलुस और सिलास के साथ जाना

16 पौलुस दिरबे और लुस्तरा में भी आया। वहीं तिमुथियुस नामक एक शिष्य हुआ करता था। वह किसी विश्वासी यहूदी महिला का पुत्र था किन्तु उसका पिता यूनानी था। 2लिस्तरा और इकुनियुम के बंधुओं के साथ उसकी अच्छी बोलचाल थी। 3पौलुस तिमुथियुस को यात्रा पर अपने साथ ले जाना चाहता था। सो उसे उसने साथ ले लिया और उन स्थानों पर रहने वाले यहूदियों के कारण उसका ख़तना किया; क्योंकि वे सभी जानते थे कि उसका पिता एक यूनानी था। 4नगरों से यात्रा करते हुए उन्होंने वहाँ के लोगों को उन नियमों के बारे में बताया जिन्हें यरुशलेम में प्रेरितों और बुज़ुर्गो ने निश्चित किया था। 5इस प्रकार वहाँ की कलीसिया का विश्वास और सुदृढ़ होता गया और दिन प्रतिदिन उनकी संख्या बढ़ने लगी।

पौलुस का एशिया से बाहर बुलाया जाना

6सो वे फ्रूगिया और गलातिया के क्षेत्र से होकर निकले क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने को मना कर दिया था। 7फिर वे जब मूसिया की सीमा पर पहुँचे तो उन्होंने बितुनिया जाने का जतन किया। किन्तु यीशु की आत्मा ने उन्हें वहाँ भी नहीं जाने दिया। 8सो वे मूसिया होते हुए त्रोआस पहुँचे। 9रात के समय पौलुस ने दिव्यदर्शन में देखा कि मैसिडोनिया का एक पुरुष उस से प्रार्थना करते हुए कह रहा है, "मैसिडोनिया में आ और हमारी सहायता कर।" 10इस दिव्य दर्शन को देखने के बाद तुरन्त ही यह परिणाम निकालते हुए कि परमेश्वर ने उन लोगों के बीच सुसमाचार का प्रचार करने हमें बुलाया है, हमने मैसिडोनिया जाने की ठान ली।

लीदिया का हृदय परिवर्तन

11इस प्रकार हमने त्रोआस से जल मार्ग द्वारा जाने के लिये अपनी नावें खोल दीं और सीधे समोथ्राके जा पहुँचे। फिर अगले दिन नियापुलिस चले गये। 12वहाँ से हम एक रोमी उपनिवेश फिलिप्पी पहुँचे जो मैसिडोनिया के उस क्षेत्र का एक प्रमुख नगर है। इस नगर में हमने कुछ दिन बिताये।

13फिर सब्त के दिन यह सोचते हुए कि प्रार्थना करने के लिये वहाँ कोई स्थान होगा हम नगर-द्वार के बाहर नदी पर गये। हम वहाँ बैठ गये और एकत्र स्त्रियों से बातचीत करने लगे। 14वहीं लीदिया नाम की एक महिला थी। वह बैंजनी रंग के कपड़े बेचा करती थी। वह परमेश्वर की उपासक थी। वह बड़े ध्यान से हमारी बातें सुन रही थी। प्रभु ने उसके हृदय के द्वार खोल दिये थे ताकि, जो कुछ पौलुस कह रहा था, वह उन बातों पर ध्यान दे सके। 15अपने समूचे परिवार समेत बपतिस्मा लेने के बाद उसने हमसे यह कहते हुए विनती की, "यदि तुम मुझे प्रभु की सच्ची भक्त मानते हो तो आओ और मेरे घर ठहरो।" सो उसने हमें जाने के लिए तैयार कर लिया।

पौलुस और सिलास का बंदी बनाया जाना

16फिर ऐसा हुआ कि जब हम प्रार्थना स्थल की ओर जा रहे थे, हमें एक दासी मिली जिसमें एक शकुन बताने

पद 34 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 34 जोड़ा गया है।

वाली आत्मा* समायी थी। वह लोगों का भाग्य बता कर अपने स्वामियों को बहुत सा धन कमा कर देती थी। [17]वह हमारे और पौलुस के पीछे पीछे यह चिल्लाते हुए हो ली, "ये लोग परम परमेश्वर के सेवक हैं। ये तुम्हें मुक्ति के मार्ग का संदेश सुना रहे हैं।" [18]वह बहुत दिनों तक ऐसा ही करती रही सो पौलुस परेशान हो उठा। उसने मुड़ कर उस आत्मा से कहा, "मैं यीशु मसीह के नाम पर तुझे आज्ञा देता हूँ, 'इस लड़की में से बाहर निकल आ!'" सो वह उसमें से तत्काल बाहर निकल गयी।

[19]फिर उसके स्वामियों ने जब देखा कि उनकी कमाई की आशा पर ही पानी फिर गया है तो उन्होंने पौलुस और सिलास को धर दबोचा और उन्हें घसीटते हुए बाजार के बीच अधिकारियों के सामने ले गये। [20]फिर दण्डनायक के पास उन्हें ले जाकर वे बोले, "ये लोग यहूदी हैं और हमारे नगर में गड़बड़ी फैला रहे हैं। [21]ये ऐसे रीति रिवाजों की वकालत करते हैं जिन्हें अपनाना या जिन पर चलना हम रोमियों के लिये न्यायपूर्ण नहीं है।" [22]भीड़ भी विरोध में लोगों के साथ हो कर उन पर चढ़ आयी। दण्डाधिकारी ने उनके कपड़े फड़वा कर उतरवा दिये और आज्ञा दी कि उन्हें पीटा जाये। [23]उन पर बहुत मार पड़ चुकने के बाद उन्होंने उन्हें जेल में डाल दिया और जेल के अधिकारी को आज्ञा दी कि उन पर कड़ा पहरा बैठा दिया जाये। [24]ऐसी आज्ञा पाकर उसने उन्हें जेल की भीतरी कोठरी में डाल दिया। उसने उनके पैर काठ में कस दिये।

[25]लगभग आधी रात गये पौलुस और सिलास परमेश्वर के भजन गाते हुए प्रार्थना कर रहे थे और दूसरे कैदी उन्हें सुन रहे थे। [26]तभी वहाँ अचानक एक ऐसा भयानक भूचाल आया कि जेल की नीवें हिल उठीं। और तुरंत जेल के फाटक खुल गये। हर किसी की बेड़ियाँ ढीली हो कर गिर पड़ीं। [27]जेल के अधिकारी ने जाग कर जब देखा कि जेल के फाटक खुले पड़े हैं तो उसने अपनी तलवार खींच ली और यह सोचते हुए कि कैदी भाग निकले हैं वह स्वयं को जब मारने ही वाला था तभी [28]पौलुस ने ऊँचे स्वर में पुकारते हुए कहा, "अपने को हानि मत पहुँचा क्योंकि हम सब यहीं हैं।"

[29]इस पर जेल के अधिकारी ने मशाल मँगवाई और जल्दी से भीतर गया। और भय से काँपते हुए पौलुस और सिलास के सामने गिर पड़ा। [30]फिर वह उन्हें बाहर ले जा कर बोला, "महानुभावो, उद्धार पाने के लिये मुझे क्या करना चाहिये?"

[31]उन्होंने उत्तर दिया, "प्रभु यीशु पर विश्वास कर। इससे तेरा उद्धार होगा–तेरा और तेरे परिवार का।" [32]फिर उसके समूचे परिवार के साथ उन्होंने उसे प्रभु का वचन सुनाया। [33]फिर जेल का वह अधिकारी उसी रात और उसी घड़ी उन्हें वहाँ से ले गया। उसने उनके घाव धोये और अपने सारे परिवार के साथ उनसे बपतिस्मा लिया। [34]फिर वह पौलुस और सिलास को अपने घर ले आया और उन्हें भोजन कराया। परमेश्वर में विश्वास ग्रहण कर लेने के कारण उसने अपने समूचे परिवार के साथ आनन्द मनाया।

[35]जब पौ फटी तो दण्डाधिकारियों ने यह कहने अपने सिपाहियों को वहाँ भेजा कि उन लोगों को छोड़ दिया जाये।

[36]फिर जेल के अधिकारी ने ये बातें पौलुस को बतायीं कि दण्डाधिकारी ने तुम्हें छोड़ देने के लिये कहलवा भेजा है। इसलिये अब तुम बाहर आओ और शांति के साथ चले जाओ।

[37]किन्तु पौलुस ने उन सिपाहियों से कहा, "यद्यपि हम रोमी नागरिक हैं पर उन्होंने हमें अपराधी पाये बिना ही सब के सामने मारा–पीटा और जेल में डाल दिया। और अब चुपके–चुपके वे हमें बाहर भेज देना चाहते हैं, निश्चय ही ऐसा नहीं होगा। होना तो यह चाहिये कि वे स्वयं आकर हमें बाहर निकालें।"

[38]सिपाहियों ने दण्डाधिकारियों को ये शब्द जा सुनाये। दण्डाधिकारियों को जब यह पता चला कि पौलुस और सिलास रोमी हैं तो वे बहुत डर गये। [39]सो वे वहाँ आये और उनसे क्षमा याचना करके उन्हें बाहर ले गये और उनसे उस नगर को छोड़ जाने को कहा। [40]पौलुस और सिलास जेल से बाहर निकल कर लीदिया के घर पहुँचे। धर्म–बंधुओं से मिलते हुए उन्होंने उनका उत्साह बढ़ाया और फिर वहाँ से चल दिये।

पौलुस और सिलास थिस्सलुनिके में

17 फिर अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया की यात्रा समाप्त करके वे थिस्सुलुनिके जा पहुँचे। वहाँ यहूदियों का एक प्रार्थना सभागार था। [2]अपने सामान्य

आत्मा यह आत्मा एक शैतान की रूह थी जिसने इस लड़की को एक विशेष ज्ञान दे रखा था।

स्वभाव के अनुसार पौलुस उनके पास गया और तीन सब्त तक उनके साथ शास्त्रों पर विचार-विनिमय करता रहा। [3]और शास्त्रों से लेकर उन्हें समझाते हुए यह सिद्ध करता रहा कि मसीह को यातनाएँ झेलनी ही थीं और फिर उसे मरे हुओं में से जी उठना था। वह कहता, "यह यीशु ही, जिसका मैं तुम्हारे बीच प्रचार करता हूँ, मसीह है।" [4]उनमें से कुछ जो सहमत हो गए थे, पौलुस और सिलास के मत में सम्मिलित हो गये। परमेश्वर से डरने वाले अनगिनत यूनानी भी उनमें मिल गये। इनमें अनेक महत्त्वपूर्ण स्त्रियाँ भी सम्मिलित थीं।

[5]पर यहूदी तो डाह में जले जा रहे थे। उन्होंने कुछ बाज़ारू गुंडों को इकट्ठा किया और एक हुजूम बना कर नगर में दंगे करा दिये। उन्होंने यासोन के घर पर धावा बोल दिया। और यह कोशिश करने लगे कि किसी तरह पौलुस और सिलास को लोगों के सामने ले आयें। [6]किन्तु जब वे उन्हें नहीं पा सके तो यासोन को और कुछ दूसरे बन्धुओं को नगर अधिकारियों के सामने घसीट लाये। वे चिल्लाये, "ये लोग जिन्होंने सारी दुनिया में उथल पुथल मचा रखी है, अब यहाँ आये हैं। [7]और यासोन सम्मान के साथ उन्हें अपने घर में ठहराये हुए है। और वे सभी कैसर के आदेशों के विरोध में काम करते हैं। और कहते हैं 'एक राजा और है जिसका नाम है यीशु।"

[8]जब भीड़ ने और नगर के अधिकारियों ने यह सुना तो वे भड़क उठे। [9]और इस प्रकार उन्होंने यासोन तथा दूसरे लोगों को ज़मानती मुचलके लेकर छोड़ दिया।

पौलुस और सिलास बिरिया में

[10]फिर तुरन्त रातों रात भाइयों ने पौलुस और सिलास को बिरिया भेज दिया। वहाँ पहुँच कर वे यहूदी, प्रार्थना सभागार में गये। [11]ये लोग थिस्सुलुनिके के लोगों से अधिक अच्छे थे। इन लोगों ने पूरा मन लगाकर वचन को सुना और हर दिन शास्त्रों को उलटते पलटते यह जाँचते रहे कि पौलुस ने जो बातें बतायी हैं, क्या वे सत्य हैं। [12]परिणामस्वरुप बहुत से यहूदियों और महत्त्वपूर्ण यूनानी स्त्री-पुरुषों ने भी विश्वास ग्रहण किया। [13]किन्तु जब थिस्सुलुनिके के यहूदियों को यह पता चला कि पौलुस बिरिया में भी परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहा है तो वे वहाँ भी आ धमके। और वहाँ भी दंगे करना और लोगों को भड़काना शुरू कर दिया। [14]इसलिए तभी भाइयों ने तुरन्त पौलुस को सागर तट पर जाने को भेज दिया। किन्तु सिलास और तिमुथियुस वहीं ठहरे रहे। [15]पौलुस को ले जाने वाले लोगों ने उसे एथेंस पहुँचा दिया और सिलास तथा तिमुथियुस के लिये यह आदेश देकर कि वे जल्दी से जल्दी उसके पास आ जायें, वहाँ से चल पड़े।

पौलुस एथेंस में

[16]पौलुस एथेंस में तिमुथियुस और सिलास की प्रतीक्षा करते हुए नगर को मूर्तियों से भरा हुआ देखकर मन ही मन तिलमिला रहा था। [17]इसीलिये हर दिन वह यहूदी धर्मसभा-भवन में यहूदियों और यूनानी भक्तों से वाद-विवाद करता रहता था। वहाँ हाट-बाजार में जो कोई होता वह उससे भी हर दिन बहस करता रहता। [18]कुछ इपीकुरी और स्तोइकी दार्शनिक भी उससे शास्त्रार्थ करने लगे। उनमें से कुछ ने कहा, "यह अंटशंट बोलने वाला कहना क्या चाहता है?" दूसरों ने कहा, "यह तो विदेशी देवताओं का प्रचारक मालूम होता है।" उन्होंने यह इसलिये कहा था कि वह यीशु के बारे में उपदेश देता था और उसके फिर से जी उठने का प्रचार करता था। [19]वे उसे पकड़कर अरियुपगुस की सभा में अपने साथ ले गये और बोले, "क्या हम जान सकते हैं कि तू जिसे लोगों के सामने रख रहा है, वह नयी शिक्षा क्या है? [20]तू कुछ विचित्र बातें हमारे कानों में डाल रहा है, सो हम जानना चाहते हैं कि इन बातों का अर्थ क्या है?" [21]वहाँ रह रहे एथेंस के सभी लोग और परदेसी केवल कुछ नया सुनने या उन्हीं बातों की चर्चा के अतिरिक्त किसी भी और बात में अपना समय नहीं लगाते थे।

[22]तब पौलुस ने अरियुपगुस के सामने खड़े होकर कहा, "हे एथेंस के लोगो! मैं देख रहा हूँ तुम हर प्रकार से धार्मिक हो। [23]घूमते फिरते तुम्हारी उपासना की वस्तुओं को देखते हुए मुझे एक ऐसी वेदी भी मिली जिस पर लिखा था, 'अज्ञात परमेश्वर के लिये' सो तुम बिना जाने ही जिस की उपासना करते हो, मैं तुम्हें उसी का वचन सुनाता हूँ। [24]परमेश्वर, जिसने इस जगत की और इस जगत के भीतर जो कुछ है, उसकी रचना की वही धरती और आकाश का प्रभु है। वह हाथों से बनाये मंदिरों में नहीं रहता। [25]उसे किसी वस्तु का अभाव नहीं है सो मनुष्य के हाथों से उसकी सेवा नहीं हो सकती। वही सब

को जीवन, साँसें और अन्य सभी कुछ दिया करता है। [26]एक ही मनुष्य से उसने मनुष्य की सभी जातियों का निर्माण किया ताकि वे समूची धरती पर बस जायें और उसी ने लोगों का समय निश्चित कर दिया और उस स्थान की, जहाँ वे रहें, सीमाएँ बाँध दीं। [27]उस का प्रयोजन यह था कि लोग परमेश्वर को खोजें। हो सकता है वे उसे उस तक पहुँच कर पा लें। इतना होने पर भी हममें से किसी से भी वह दूर नहीं हैं:

[28] 'क्योंकि उसी में हम रहते हैं
उसी में हमारी गति है
और उसी में है हमारा अस्तित्व!'

इसी प्रकार स्वयं तुम्हारे ही कुछ लेखकों ने भी कहा है:

'क्योंकि हम उसके ही बच्चे हैं।'

[29]और क्योंकि हम परमेश्वर की संतान हैं इसलिये हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि वह दिव्य अस्तित्व सोने या चाँदी या पत्थर की बनी मानव कल्पना या कारीगरी से बनी किसी मूर्ति जैसा है। [30]ऐसे अज्ञान के युग की परमेश्वर ने उपेक्षा कर दी है और अब हर कहीं के मनुष्यों को वह मन फिरावने का आदेश दे रहा है। [31]उसने एक दिन निश्चित किया है जब वह अपने नियुक्त किये गये एक पुरुष के द्वारा न्याय के साथ जगत का निर्णय करेगा। मरे हुओं में से उसे जिलाकर उसने हर किसी को इस बात का प्रमाण दिया है!"

[32]जब उन्होंने मरे हुओं में से जी उठने की बात सुनी तो उनमें से कुछ तो उसकी हँसी उड़ाने लगे किन्तु कुछ ने कहा, "हम इस विषय पर तेरा प्रवचन फिर कभी सुनेंगे।" [33]तब पौलुस उन्हें छोड़ कर चल दिया। [34]कुछ लोगों ने विश्वास ग्रहण कर लिया और उसके साथ हो लिये। इनमें अरियुपगुसका* सदस्य दियुनुसियुस और दमरिस नामक एक महिला तथा उनके साथ के और लोग भी थे।

पौलुस कुरिन्थियुस में

18 इसके बाद पौलुस एथेंस छोड़ कर कुरिन्थियुस चला गया। [2]वहाँ वह पुन्तुस के रहने वाले अक्विला नाम के एक यहूदी से मिला। जो हाल में ही अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इटली से आया था। उन्होंने इटली इसलिये छोड़ी थी कि क्लौदियुस ने सभी यहूदियों को रोम से निकल जाने का आदेश दिया था। सो पौलुस उनसे मिलने गया। [3]और क्योंकि उनका काम धन्धा एक ही था सो वह उन ही के साथ ठहरा और काम करने लगा। व्यवसाय से वे तम्बू बनाने वाले थे। [4]हर सब्त के दिन वह यहूदी धर्मसभा भवनों में तर्क-वितर्क करके यहूदियों और यूनानियों को समझाने बुझाने का जतन करता।

[5]जब वे मैसिडोनिया से सिलास और तिमुथियुस आये तब पौलुस ने अपना सारा समय वचन के प्रचार में लगा रखा था। वह यहूदियों को यह प्रमाणित किया करता था कि यीशु ही मसीह है। [6]सो जब उन्होंने उसका विरोध किया और उससे भला बुरा कहा तो उसने उनके विरोध में अपने कपड़े झाड़ते हुए उनसे कहा, "तुम्हारा खून तुम्हारे ही सिर पड़े। उसका मुझ से कोई सरोकार नहीं है। अब से आगे मैं ग़ैर-यहूदियों के पास चला जाऊँगा।" [7]इस तरह पौलुस वहाँ से चल पड़ा और तीतुस-यूसतुस नाम के एक व्यक्ति के घर गया। वह परमेश्वर का उपासक था। उसका घर यहूदी धर्म-सभा-भवन से लगा हुआ था। [8]क्रिसपुस ने, जो यहूदी प्रार्थना सभागार का प्रधान था, अपने समूचे घराने के साथ प्रभु में विश्वास ग्रहण किया। साथ ही उन बहुत से कुरिन्थियों ने जिन्होंने पौलुस का प्रवचन सुना था, विश्वास ग्रहण करके बपतिस्मा लिया।

[9]एक रात सपने में प्रभु ने पौलुस से कहा, "डर मत, बोलता रह और चुप मत हो। [10]क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। सो तुझ पर हमला करके कोई भी तुझे हानि नहीं पहुँचायेगा क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।" [11]सो पौलुस, वहाँ डेढ़ साल तक परमेश्वर के वचन की उनके बीच शिक्षा देते हुए, ठहरा।

पौलुस का गल्लियो के सामने लाया जाना

[12]जब अखाया का राज्यपाल गल्लियो था तभी यहूदी एक जुट हो कर पौलुस पर चढ़ आये और उसे पकड़ कर अदालत में ले गये [13]और बोले, "यह व्यक्ति लोगों को परमेश्वर की उपासना ऐसे ढंग से करने के लिये बहका रहा है जो व्यवस्था के विधान के विपरीत है।"

अरियुपगुस एथेंस के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का एक दल। ये लोग न्यायधीशों के समान हुआ करते थे।

[14]पौलुस अभी अपना मुँह खोलने को ही था कि गल्लियो ने यहूदियों से कहा, "अरे यहूदियो, यदि यह विषय किसी अन्याय या गम्भीर अपराध का होता तो तुम्हारी बात सुनना मेरे लिये न्यायसंगत होता [15]किन्तु क्योंकि यह विषय शब्दों, नामों और तुम्हारी अपनी व्यवस्था के प्रश्नों से सम्बन्धित है, इसलिए इसे तुम अपने आप ही सुलटो। ऐसे विषयों में मैं न्यायाधीश नहीं बनना चाहता।" [16]और फिर उसने उन्हें अदालत से बाहर निकाल दिया।

[17]सो उन्होंने प्रार्थना सभागार के नेता सोस्थिनेस को धर दबोचा और अदालत के सामने ही उसे पीटने लगे। किन्तु गल्लियो ने इन बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

पौलुस की वापसी

[18]बहुत दिनों बाद तक पौलुस वहाँ ठहरा रहा। फिर भाइयों से विदा लेकर वह नाव के रास्ते सीरिया को चल पड़ा। उसके साथ प्रिसकिल्ला तथा अक्विला भी थे। पौलुस ने किंखिया में अपने केश उतरवाये क्योंकि उसने एक मन्नत मानी थी। [19]फिर वे इफिसुस पहुँचे और पौलुस ने प्रिसकिल्ला और अक्विला को वहीं छोड़ दिया। और आप प्रार्थना सभागार में जाकर यहूदियों के साथ बहस करने लगा। [20]जब वहाँ के लोगों ने उससे कुछ दिन और ठहरने को कहा तो उसने मना कर दिया। [21]किन्तु जाते समय उसने कहा, "यदि परमेश्वर की इच्छा हुई तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा।" फिर उसने इफिसुस से नाव द्वारा यात्रा की।

[22]फिर केसरिया पहुँच कर वह यरुशलेम गया और वहाँ कलीसिया के लोगों से भेंट की। फिर वह अंताकिया की ओर चला गया। [23]वहाँ कुछ समय बिताने के बाद उसने विदा ली और गलातिया एवम् फ्रिगिया के क्षेत्रों में एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हुए सभी अनुयायिओं के विश्वास को बढ़ाने लगा।

इफिसुस में अपुल्लोस

[24]वहीं अपुल्लोस नाम का एक यहूदी हुआ करता था। वह सिकंदरिया का निवासी था। वह विद्वान वक्ता था। वह इफिसुस में आया। शास्त्रों का उसे संपूर्ण ज्ञान था। [25]उसे प्रभु के मार्ग की दीक्षा भी मिली थी। वह हृदय में उत्साह भर कर प्रवचन करता तथा यीशु के विषय में बड़ी सावधानी से उपदेश देता था। यद्यपि उसे केवल यूहन्ना के बपतिस्मा का ही ज्ञान था। [26]यहूदी धर्म सभा में वह निर्भय हो कर बोलने लगा। जब प्रिस्किल्ला और अक्विला ने उसे बोलते सुना तो वे उसे एक ओर ले गये और अधिक बारीकी के साथ उसे परमेश्वर के मार्ग की व्याख्या समझाई। [27]सो जब उसने अखाया को जाना चाहा तो भाइयों ने उसका साहस बढ़ाया और वहाँ के अनुयायिओं को उसका स्वागत करने को लिख भेजा। जब वह वहाँ पहुँचा तो उनके लिये बड़ा सहायक सिद्ध हुआ जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह से विश्वास ग्रहण कर लिया था। [28]क्योंकि शास्त्रों से यह प्रमाणित करते हुए कि यीशु ही मसीह है, उसने यहूदियों को जनता के बीच जोरदार शब्दों में बोलते हुए शास्त्रार्थ में पछाड़ा था।

पौलुस इफ़िसुस में

19 ऐसा हुआ कि जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था तभी पौलुस भीतरी प्रदेशों से यात्रा करता हुआ इफिसुस में आ पहुँचा। वहाँ उसे कुछ शिष्य मिले। [2]और उसने उनसे कहा, "क्या जब तुमने विश्वास धारण किया था तब पवित्र आत्मा को ग्रहण किया था?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हमने तो सुना तक नहीं है कि कोई पवित्र आत्मा है भी।"

[3]सो वह बोला, "तो तुमने कैसा बपतिस्मा लिया है?"

उन्होंने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा।"

[4]फिर पौलुस ने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा तो मनफिराव का बपतिस्मा था। उसने लोगों से कहा था कि जो मेरे बाद आ रहा है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करो।"

[5]यह सुन कर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा ले लिया। [6]फिर जब पौलुस ने उन पर अपने हाथ रखे तो उन पर पवित्र आत्मा उतर आया और वे अलग अलग भाषाएँ बोलने और भविष्यवाणियाँ करने लगे। [7]कुल मिला कर वे कोई बारह व्यक्ति थे।

[8]फिर पौलुस यहूदी प्रार्थना सभागार में चला गया और तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा। वह यहूदियों के साथ बहस करते हुए उन्हें परमेश्वर के राज्य के विषय में समझाया करता था। [9]किन्तु उनमें से कुछ लोग बहुत हठी थे उन्होंने विश्वास ग्रहण करने को मना कर दिया और लोगों के सामने पंथ को भला बुरा कहते रहे। सो वह अपने शिष्यों को साथ ले उन्हें छोड़ कर चला गया।

और तरन्नुस की पाठशाला में हर दिन विचार–विमर्श करने लगा। [10]दो साल तक ऐसा ही होता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी एशिया–निवासी यहूदियों और ग़ैर यहूदियों ने प्रभु का वचन सुन लिया।

स्कीवा के बेटे

[11]परमेश्वर पौलुस के हाथों अनहोने आश्चर्य कर्म कर रहा था। [12]यहाँ तक कि उसके छुए रूमालों और अँगोछों को रोगियों के पास ले जाया जाता और उन की बीमारियाँ दूर हो जातीं तथा दुष्टात्माएँ उनमें से निकल भागतीं।

[13-14]कुछ यहूदी लोग, जो दुष्टात्माएँ उतारते इधर–उधर घूमा फिरा करते थे। यह करने लगे कि जिन लोगों में दुष्टात्माएँ समायी थीं, उन पर प्रभु यीशु के नाम का प्रयोग करने का यत्न करते और कहते, "मैं तुम्हें उस यीशु के नाम पर जिसका प्रचार पौलुस करता है, आदेश देता हूँ।" एक स्कीवा नाम के यहूदी महायाजक के सात पुत्र जब ऐसा कर रहे थे,

[15]तो दुष्टात्मा ने (एक बार) उनसे कहा, "मैं यीशु को पहचानती हूँ और पौलुस के बारे में भी जानती हूँ, किन्तु तुम लोग कौन हो?"

[16]फिर वह व्यक्ति जिस पर दुष्टात्मा सवार थी, उन पर झपटा। उसने उन पर काबू पा कर उन दोनों को हरा दिया। इस तरह वे नंगे ही घायल होकर उस घर से निकल कर भाग गये। [17]इफिसुस में रहने वाले सभी यहूदियों और यूनानियों को इस बात का पता चल गया। वे सब लोग बहुत डर गये थे। इस प्रकार प्रभु यीशु के नाम का आदर और अधिक बढ़ गया। [18]उनमें से बहुत से जिन्होंने विश्वास ग्रहण किया था, अपने द्वारा किये गये बुरे कामों को सबके सामने स्वीकार करते हुए वहाँ आये। [19]जादू टोना करने वालों में से बहुतों ने अपनी अपनी पुस्तकें लाकर वहाँ इकट्ठी कर दीं और सब के सामने उन्हें जला दिया। उन पुस्तकों का मूल्य पचास हजार चाँदी के सिक्कों के बराबर कूता गया। [20]इस प्रकार प्रभु का वचन अधिक प्रभावशाली होते हुए दूर दूर तक फैलने लगा।

पौलुस की यात्रा–योजना

[21]इन घटनाओं के बाद पौलुस ने अपने मन में मेसिडोनिया और अखाया होते हुए यरुशलेम जाने का निश्चय किया। उसने कहा, "वहाँ जाने के बाद मुझे रोम भी देखना चाहिये।" [22]सो उसने अपने तिमुथियुस और इरासतुस नामक दो सहायकों को मैसिडोनिया भेज दिया और स्वयं एशिया में थोड़ा समय और बिताया।

इफ़िसुस में उपद्रव

[23]उन्हीं दिनों इस पंथ को लेकर वहाँ बड़ा उपद्रव हुआ। [24]वहाँ देमेत्रियुस नाम का एक चाँदी का काम करने वाला सुनार हुआ करता था। उसने अरतिमिस की चाँदी की हटरियाँ बनवायी थीं जिससे कारीगरों को बहुत कारोबार मिला था। [25]उसने उन्हें और इस काम से जुड़े हुए दूसरे कारीगरों को इक्ट्ठा किया और कहा, "देखो लोगो, तुम जानते हो कि इस काम से हमें एक अच्छी आमदनी होती है। [26]तुम देख सकते हो और सुन सकते हो कि इस पौलुस ने न केवल इफिसुस में बल्कि लगभग एशिया के समूचे क्षेत्र में लोगों को बहका–फुसला कर बदल दिया है। वह कहता है कि मनुष्य के हाथों के बनाये देवता सच्चे देवता नहीं हैं। [27]इससे न केवल इस बात का भय है कि हमारा व्यवसाय बदनाम होगा बल्कि महान देवी अरतिमिस के मंदिर की प्रतिष्ठा समाप्त हो जाने का भी डर है। और जिस देवी की उपासना समूचे एशिया और संसार द्वारा की जाती है, उसकी गरिमा छिन जाने का भी डर है।"

[28]जब उन्होंने यह सुना तो वे बहुत क्रोधित हुए और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे, "इफ़िसियों की देवी अरतिमिस महान है!" [29]उधर सारे नगर में अव्यवस्था फैल गयी। सो लोगों ने मैसिडोनिया से आये तथा पौलुस के साथ यात्रा कर रहे गयुस और अरिस्तर्खुस को धर दबोचा और उन्हें रंगशाला* में ले भागे। [30]पौलुस लोगों के सामने जाना चाहता था किन्तु शिष्यों ने उसे नहीं जाने दिया। [31]कुछ प्रांतीय अधिकारियों ने जो उसके मित्र थे, उससे कहलवा भेजा कि वह वहाँ रंगशाला में आने का दुस्साहस न करे। [32]अब देखो कोई कुछ चिल्ला रहा था, और कोई कुछ, क्योंकि समूची सभा में हड़बड़ी फैली हुई थी। उनमें से अधिकतर यह नहीं जानते थे कि वे वहाँ एकत्र क्यों हुए हैं। [33]यहूदियों ने सिकन्दर को जिसका नाम भीड़ में से उन्होंने सुझाया था, आगे खड़ा कर रखा

रंगशाला एक विशेष स्थान जिसे रंगशाला के रूप में याजक सभाओं के लिये प्रयोग मे लाते थे।

था। सिकन्दर ने अपने हाथों को हिला हिला कर लोगों के सामने बचाव पक्ष प्रस्तुत करना चाहा। **34**किन्तु जब उन्हें यह पता चला कि वह एक यहूदी है तो वे सब कोई दो घण्टे तक एक स्वर में चिल्लाते हुए कहते रहे, "इफिसुसियों की देवी अरतिमिस महान है।"

35फिर नगर लिपिक ने भीड़ को शांत करके कहा, "हे इफिसुस के लोगो क्या संसार में कोई ऐसा व्यक्ति है जो यह नहीं जानता कि इफिसुस नगर महान देवी अरतिमिस और स्वर्ग से गिरी हुई पवित्र शिला का संरक्षक है?' **36**क्योंकि इन बातों से इन्कार नहीं किया जा सकता। इसलिये तुम्हें शांत रहना चाहिये और बिना विचारे कुछ नहीं करना चाहिये। **37**तुम इन लोगों को पकड़ कर यहाँ लाये हो यद्यपि उन्होंने न तो कोई मंदिर लूटा है और न ही हमारी देवी का अपमान किया है। **38**फिर भी देमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों को किसी के विरुद्ध कोई शिकायत है तो अदालतें खुली हैं और वहाँ राज्यपाल हैं। वहाँ आपस में एक दूसरे पर वे अभियोग चला सकते हैं। **39**किन्तु यदि तुम इससे कुछ अधिक जानना चाहते हो तो उसका फैसला नियमित सभा में किया जायेगा। **40**जो कुछ है उसके अनुसार हमें इस बात का डर है कि आज के उपद्रवों का दोष कहीं हमारे ही सिर न मढ़ दिया जाये। इस दंगे के लिये हमारे पास कोई भी हेतु नहीं है जिससे हम इसे उचित ठहरा सकें।" **41**इतना कहने के बाद उसने सभा विसर्जित कर दी।

पौलुस का मैसिडोनिया और यूनान जाना

20 फिर इस उपद्रव के शांत हो जाने के बाद पौलुस ने यीशु के शिष्यों को बुलाया और उनका हौसला बढ़ाने के बाद उनसे विदा ले कर वह मैसिडोनिया को चल दिया। **2**उस प्रदेश से होकर उसने यात्रा की और वहाँ के लोगों को उत्साह के अनेक वचन प्रदान किये। फिर वह यूनान आ गया। **3**वह वहाँ तीन महीने ठहरा और क्योंकि यहूदियों ने उसके विरुद्ध एक षड्यन्त्र रच रखा था सो जब वह जल मार्ग से सीरिया जाने को ही था कि उसने निश्चय किया कि वह मैसिडोनिया को लौट जाये। **4**बिरिया के पिरूस का बेटा सोपत्रुस, थिसलुनिकिया के रहने वाले अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस, दिरबे का निवासी गयूस और तिमुथियुस तथा एशियाई क्षेत्र के तुखिकुस और त्रुफिमुस उसके साथ थे। **5**ये लोग पहले चले गये थे और त्रोआस में हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। **6**बिना ख़मीर की रोटी के दिनों के बाद हम फिलिप्पी से नाव द्वारा चल पड़े और पाँच दिन बाद त्रोआस में उनसे जा मिले। वहाँ हम सात दिन तक ठहरे।

त्रोआस को पौलुस की अन्तिम यात्रा

7सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी विभाजित करने के लिये आपस में इकट्ठे हुए तो पौलुस उनसे बातचीत करने लगा। उसे अगले ही दिन चले जाना था सो वह आधी रात तक बातचीत करता ही रहा। **8**सीढ़ियों के ऊपर के कमरे में जहाँ हम इकट्ठे हुए थे, वहाँ बहुत से दीपक थे। **9**वहीं युतुखुस नामक एक युवक खिड़की में बैठा था वह गहरी नींद में डूबा था। क्योंकि पौलुस बहुत देर से बोले ही चला जा रहा था सो उसे गहरी नींद आ गयी थी। इससे वह तीसरी मंजिल से नीचे लुढ़क पड़ा और जब उसे उठाया तो वह मर चुका था। **10**पौलुस नीचे उतरा और उस पर भुका। उसे अपनी बाहों में ले कर उसने कहा, "घबराओ मत क्योंकि उसके प्राण अभी उसी में हैं।" **11**फिर वह ऊपर चला गया और उसने रोटी को तोड़ कर विभाजित किया और उसे खाया। वह उनके साथ बहुत देर, पौ–फटे तक बातचीत करता रहा। फिर उसने उनसे विदा ली। **12**उस जीवित युवक को वे घर ले आये। इससे उन्हें बहुत चैन मिला।

त्रोआस से मितुलेने की यात्रा

13हम जहाज़ पर पहले ही पहुँच गये और अस्सुस को चल पड़े। वहाँ पौलुस को हमें जहाज़ पर लेना था। उसने ऐसी ही योजना बनायी थी। वह स्वयं पैदल आना चाहता था। **14**वह जब अस्सुस में हमसे मिला तो हमने उसे जहाज़ पर चढ़ा लिया और हम मितेलेने को चल पड़े। **15**दूसरे दिन वहाँ से चल कर हम खियुस के सामने जा पहुँचे और अगले दिन उस पार सामोस आ गये। फिर उसके एक दिन बाद हम मिलेतुस आ पहुँचे। **16**क्योंकि पौलुस जहाँ तक हो सके पिन्तेकुस्त के दिन तक यरुशलेम पहुँचने की जल्दी कर रहा था, सो उसने निश्चय किया कि वह इफिसुस में रुके बिना आगे चला जायेगा जिससे उसे एशिया में समय न बिताना पड़े।

पौलुस की इफ़िसुस के बुज़ुर्गो से बातचीत

[17]उसने मिलेतुस से इफिसुस के बुज़ुर्गो और कलीसिया को संदेसा भेज कर अपने पास बुलाया। [18]उनके आने पर पौलुस ने उनसे कहा, "यह तुम जानते हो कि एशिया पहुँचने के बाद पहले दिन से ही हर समय मैं तुम्हारे साथ कैसे रहा हूँ [19]और दीनतापूर्वक आँसू बहा-बहा कर यहूदियों के षड्यन्त्रों के कारण मुझ पर पड़ी अनेक परीक्षाओं में भी मैं प्रभु की सेवा करता रहा। [20]तुम जानते हो कि मैं तुम्हें तुम्हारे हित की कोई बात बताने से कभी हिचकिचाया नहीं। और मैं तुम्हें उन बातों का सब लोगों के बीच और घर-घर जा कर उपदेश देने में कभी नहीं झिझका। [21]यहूदियों और यूनानियों को मैं समान भाव से मन फिराव के परमेश्वर की तरफ़ मुड़ने को कहता रहा हूँ और हमारे प्रभु यीशु में विश्वास के प्रति उन्हें सचेत करता रहा हूँ। [22]और अब पवित्र आत्मा के अधीन होकर मैं यरुशलेम जा रहा हूँ। मैं नहीं जानता वहाँ मेरे साथ क्या कुछ घटेगा। [23]मैं तो बस इतना जानता हूँ कि हर नगर में पवित्र आत्मा यह कहते हुए मुझे सचेत करती रहती है कि बंदीगृह और कठिनताएँ मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं। [24]किन्तु मेरे लिये मेरे प्राणों का कोई मूल्य नहीं है। मैं तो बस उस दौड़ धूप और उस सेवा को पूरा करना चाहता हूँ जिसे मैंने प्रभु यीशु से ग्रहण किया है वह है-परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की साक्षी देना।

[25]"और अब मैं जानता हूँ कि तुममें से कोई भी, जिनके बीच मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुँह आगे कभी नहीं देख पायेगा। [26]इसलिये आज मैं तुम्हारे सामने घोषणा करता हूँ कि तुममें से किसी के भी खून का दोषी मैं नहीं हूँ। [27]क्योंकि मैं परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को तुम्हें बताने में कभी नहीं हिचकिचाया हूँ। [28]अपनी और अपने समुदाय की रखवाली करते रहो। पवित्र आत्मा ने उनमें से तुम्हें उन पर दृष्टि रखने वाला बनाया है ताकि तुम परमेश्वर की उस कलीसिया का ध्यान रखो जिसे उसने अपने रक्त के बदले मोल लिया था। [29]मैं जानता हूँ कि मेरे विदा होने के बाद हिंसक भेड़िये तुम्हारे बीच आयेंगे और वे इस भोले-भाले समूह को नहीं छोड़ेंगे। [30]यहाँ तक कि तुम्हारे अपने बीच में से ही ऐसे लोग भी उठ खड़े होंगे, जो शिष्यों को अपने पीछे लगा लेने के लिए बातों को तोड़-मरोड़ कर कहेंगे। [31]इसलिये सावधान रहना। याद रखना कि मैंने तीन साल तक एक एक को दिन रात रो रो कर सचेत करना कभी नहीं छोड़ा था।

[32]"अब मैं तुम्हें परमेश्वर और उसके सुसंदेश के अनुग्रह के हाथों सौंपता हूँ। वही तुम्हारा निर्माण कर सकता है और तुम्हें उन लोगों के साथ जिन्हें पवित्र किया जा चुका है, तुम्हारा उत्तराधिकार दिला सकता है। [33]मैंने कभी किसी के सोने-चाँदी या वस्त्रों की अभिलाषा नहीं की। [34]तुम स्वयं जानते हो कि मेरे इन हाथों ने ही मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताओं को पूरा किया है। [35]मैंने अपने हर कर्म से तुम्हें यह दिखाया है कि कठिन परिश्रम करते हुए हमें निर्बलों की सहायता किस प्रकार करनी चाहिये और हमें प्रभु यीशु का वह वचन याद रखना चाहिये जिसे उसने स्वयं कहा था, 'लेने से देने में अधिक सुख है।' "

[36]यह कह चुकने के बाद वह उन सब के साथ घुटनों के बल झुका और उसने प्रार्थना की। [37]हर कोई फूट फूट कर रो रहा था। गले मिलते हुए वे उसे चूम रहे थे। [38]उसने जो यह कहा था कि वे उसका मुँह फिर कभी नहीं देखेंगे, इससे लोग बहुत अधिक दुखी थे। फिर उन्होंने उसे सुरक्षा पूर्वक जहाज़ तक पहुँचा दिया।

पौलुस का यरुशलेम जाना

21 फिर उनसे विदा हो कर हम ने सागर में अपनी नाव खोल दी और सीधे रास्ते कास जा पहुँचे और अगले दिन रोदुस। फिर वहाँ से हम पतरा को चले गये। [2]वहाँ हमने एक जहाज़ लिया जो फिनीके जा रहा था। [3]जब साइप्रस दिखाई पड़ने लगा तो हम उसे बायीं तरफ़ छोड़ कर सीरिया की ओर मुड़ गये क्योंकि जहाज़ को सूर में माल उतारना था सो हम भी वहीं उतर पड़े। [4]वहाँ हमें अनुयायी मिले जिनके साथ हम सात दिन तक ठहरे। उन्होंने आत्मा से प्रेरित होकर पौलुस को यरुशलेम जाने से रोकना चाहा। [5]फिर वहाँ ठहरने का अपना समय पूरा करके हमने विदा ली और अपनी यात्रा पर निकल पड़े। अपनी पत्नियों और बच्चों समेत वे सभी नगर के बाहर तक हमारे साथ आये। फिर वहाँ सागर तट पर हमने घुटनों के बल झुक कर प्रार्थना की। [6]और एक दूसरे से विदा लेकर हम जहाज़ पर चढ़ गये। और वे अपने-अपने घरों को लौट गये।

[7]सूर से जल मार्ग द्वारा यात्रा करते हुए हम पतुलिमयिस में उतरे। वहाँ भाइयों का स्वागत सत्कार करते हम उनके साथ एक दिन ठहरे। [8]अगले दिन उन्हें छोड़ कर हम कैसरिया आ गये। और इंजील के प्रचारक फिलिप्पुस के, जो चुने हुए विशेष सात सेवकों में से एक था, घर जा कर उसके साथ ठहरे। [9]उसके चार कुवाँरी बेटियाँ थीं जो भविष्यवाणी किया करती थीं। [10]वहाँ हमारे कुछ दिनों ठहरे रहने के बाद यहूदिया से अगबुस नामक एक नबी आया। [11]हमारे निकट आते हुए उसने पौलुस का कमर बंध उठा कर उससे अपने ही पैर और हाथ बाँध लिये और बोला, "यह है जो पवित्र आत्मा कह रहा है–यानी यरुशलेम में यहूदी लोग, जिसका यह कमर बंध है, उसे ऐसे ही बाँध कर विधर्मियों के हाथों सौंप देगें।"

[12]हमने जब यह सुना तो हमने और वहाँ के लोगों ने उससे यरुशलेम न जाने की प्रार्थना की। [13]इस पर पौलुस ने उत्तर दिया, "इस प्रकार रो–रो कर मेरा दिल तोड़ते हुए यह तुम क्या कर रहे हो? मैं तो यरुशलेम में न केवल बाँधे जाने के लिये बल्कि प्रभु यीशु मसीह के नाम पर मरने तक को तैयार हूँ।"

[14]क्योंकि हम उसे मना नहीं पाये। सो बस इतना कह कर चुप हो गये, "जैसी प्रभु की इच्छा।"

[15]इन दिनों के बाद फिर हम तैयारी करके यरुशलेम को चल पड़े। [16]कैसरिया से कुछ शिष्य भी हमारे साथ हो लिये थे। वे हमें साइप्रस के एक व्यक्ति मनासोन के यहाँ ले गये जो एक पुराना शिष्य था। हमें उसी के साथ ठहरना था।

पौलुस की याकूब से भेंट

[17]यरुशलेम पहुँचने पर भाइयों ने बड़े उत्साह के साथ हमारा स्वागत सत्कार किया। [18]अगले दिन पौलुस हमारे साथ याकूब से मिलने गया। वहाँ सभी अग्रज उपस्थित थे। [19]पौलुस ने उनका स्वागत सत्कार किया और उन सब कामों के बारे में जो परमेश्वर ने उसके द्वारा विधर्मियों के बीच कराये थे, एक एक करके कह सुनाया। [20]जब उन्होंने यह सुना तो वे परमेश्वर की स्तुति करते हुए उससे बोले, "बंधु तुम तो देख ही रहे हो यहाँ कितने ही हज़ारों यहूदी ऐसे हैं जिन्होंने विश्वास ग्रहण कर लिया है। किन्तु वे सभी व्यवस्था के प्रति अत्यधिक उत्साहित हैं। [21]तेरे विषय में उनसे कहा गया है कि तू विधर्मियों के बीच रहने वाले सभी यहूदियों को मूसा की शिक्षाओं को त्यागने की शिक्षा देता है। और उनसे कहता है कि वे न तो अपने बच्चों का ख़तना करायें और न ही हमारे रीति–रिवाजों पर चलें। [22]सो किया क्या जाये? वे यह तो सुन ही लेंगे कि तू आया हुआ है। [23]इसलिये तू वही कर जो तुझ से हम कह रहे हैं। हमारे साथ चार ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने कोई मन्नत मानी है। [24]इन लोगों को ले जा और उनके साथ शुद्धीकरण समारोह में सम्मिलित हो जा। और उनका खर्चा दे दे ताकि वे अपने सिर मुँडवा लें। इससे सब लोग जान जायेंगे कि उन्होंने तेरे बारे में जो सुना है, उसमें कोई सचाई नहीं है बल्कि तू तो स्वयं ही व्यवस्था के अनुसार जीवन जीता है। [25]जहाँ तक विश्वास ग्रहण करने वाले ग़ैर यहूदियों का प्रश्न है, हमने उन्हें एक पत्र में लिख भेजा है,

'वे मूर्तियों पर चढ़ाये गये भोजन,
लहू के खाने, गला घोट कर मारे हुए
पशुओं और यौन अनाचार से
अपने आप को दूर रखें।'"

[26]इस प्रकार पौलुस ने उन लोगों को अपने साथ लिया और उन लोगों के साथ अपने आप को भी अगले दिन शुद्ध कर लिया। फिर वह मंदिर में गया जहाँ उसने घोषणा की कि शुद्धीकरण के दिन कब पूरे होंगे और हममें से हर एक के लिये चढ़ावा कब चढ़ाया जायेगा।

[27]जब वे सात दिन लगभग पूरे होने वाले थे, कुछ यहूदियों ने उसे मंदिर में देख लिया। उन्होंने भीड़ में सभी लोगों को भड़का दिया और पौलुस को पकड़ लिया। [28]फिर वे चिल्ला कर बोले, "इस्राएल के लोगो सहायता करो। यह वही व्यक्ति है जो हर कहीं हमारी जनता के, हमारी व्यवस्था के और हमारे इस स्थान के विरोध में लोगों को सिखाता फिरता है। और अब तो यह विधर्मियों को मंदिर में ले आया है। और इसने इस प्रकार इस पवित्र स्थान को ही भ्रष्ट कर दिया है।" [29](उन्होंने ऐसा इसलिये कहा था कि त्रुफिमुस नाम के एक इफिसी को नगर में उन्होंने उसके साथ देखकर ऐसा समझा था कि पौलुस उसे मंदिर में ले गया है)

[30]सो सारा नगर विरोध में उठ खड़ा हुआ। लोग दौड़–दौड़ कर चढ़ आये और पौलुस को पकड़ लिया। फिर वे उसे घसीटते हुए मंदिर से बाहर ले गये और तत्काल फाटक बंद कर दिये गये। [31]वे उसे मारने का जतन कर

ही रहे थे कि रोमी टुकड़ी के सेनानायक के पास यह सूचना पहुँची कि समुचे यरुशलेम में खलबली मची हुई है। [32]उसने तुरंत कुछ सिपाहियों और सेना के अधिकारियों को अपने साथ लिया और पौलुस पर हमला करने वाले यहूदियों की ओर बढ़ा। यहूदियों ने जब उस सेनानायक और सिपाहियों को देखा तो उन्होंने पौलुस को पीटना बंद कर दिया। [33]तब वह सेना नायक पौलुस के पास आया और उसे बंदी बना लिया। उसने उसे दो ज़ंजीरों में बाँध लेने का आदेश दिया। फिर उसने पूछा कि वह कौन है और उसने क्या किया है? [34]भीड़ में से कुछ लोगों ने एक बात कही तो दूसरों ने दूसरी। इस हो-हुल्लड़ में क्योंकि वह यह नहीं जान पाया कि सच्चाई क्या है, इसलिये उसने आज्ञा दी कि उसे छावनी में ले चला जाये। [35]पौलुस जब सीढ़ियों के पास पहुँचा तो भीड़ में फैली हिंसा के कारण सिपाहियों को उसे अपनी सुरक्षा में ले जाना पड़ा [36]क्योंकि उसके पीछे लोगों की एक बड़ी भीड़ यह चिल्लाते हुए चल रही थी कि इसे मार डालो।

[37]जब वह छावनी के भीतर ले जाया जाने वाला ही था कि पौलुस ने सैनानायक से कहा, "क्या मैं तुझसे कुछ कह सकता हूँ?"

सेनानायक बोला, "क्या तू यूनानी बोलता है? [38]तो तू वह मिस्री तो नहीं है न जिसने कुछ समय पहले विद्रोह शुरू कराया था और जो यहाँ रेगिस्तान में चार हज़ार आतंकवादियों की अगुआई कर रहा था?"

[39]पौलुस ने कहा, "मैं सिलिकिया के तरसुस नगर का एक यहूदी व्यक्ति हूँ। और एक प्रसिद्ध नगर का नागरिक हूँ। मैं तुझसे चाहता हूँ कि तू मुझे इन लोगों के बीच बोलने दे।"

[40]उससे अनुमति पा कर पौलुस ने सीढ़ियों पर खड़े होकर लोगों की तरफ़ हाथ हिलाते हुए संकेत किया। जब सब शांत हो गया तो पौलुस इब्रानी भाषा में लोगों से कहने लगा।

पौलुस का भाषण

22 पौलुस ने कहा, "हे भाइयो और पितृ तुल्य सज्जनो! मेरे बचाव में अब मुझे जो कुछ कहना है, उसे सुनो।" [2]उन्होंने जब उसे इब्रानी भाषा में बोलते हुए सुना तो वे और अधिक शांत हो गये। फिर पौलुस कहा, [3]"मैं एक यहूदी व्यक्ति हूँ। किलिकिया के तरसुस में मेरा जन्म हुआ था और मैं इसी नगर में पल-पुस कर बड़ा हुआ। गमलिएल* के चरणों में बैठ कर हमारे परम्परागत विधान के अनुसार बड़ी कड़ाई के साथ मेरी शिक्षा-दीक्षा हुई। परमेश्वर के प्रति मैं बड़ा उत्साही था। ठीक वैसे ही जैसे आज तुम सब हो। [4]इस पंथ के लोगों को मैंने इतना सताया कि उनके प्राण तक निकल गये। मैंने पुरूषों और स्त्रियों को बंदी बनाया और जेलों में ठूँस दिया। [5]स्वयं महा याजक और बुज़ुर्गों की समूची सभा इसे प्रमाणित कर सकती है। मैंने दमिश्क में इनके भाइयों के नाम इनसे पत्र भी लिया था और इस पंथ के वहाँ रह रहे लोगों को पकड़ कर बंदी के रूप में यरुशलेम लाने के लिये मैं गया भी था ताकि उन्हें दण्ड दिलाया जा सके।

पौलुस का मन कैसे बदला

[6]"फिर ऐसा हुआ कि मैं जब यात्रा करते-करते दमिश्क के पास पहुँचा तो लगभग दोपहर के समय आकाश से अचानक एक तीव्र प्रकाश मेरे चारों और कौंध गया। [7]मैं धरती पर जा पड़ा। तभी मैंने एक आवाज़ सुनी जो मुझसे कह रही थी, 'शाऊल, ओ शाऊल! तू मुझे क्यों सता रहा है?' [8]तब मैंने उत्तर में कहा, 'प्रभु, तू कौन है?' वह मुझसे बोला, 'मैं वही नासरी यीशु हूँ जिसे तू सता रहा है।' [9]जो मेरे साथ थे, उन्होंने भी वह प्रकाश देखा किन्तु उस ध्वनि को जिस ने मुझे सम्बोधित किया था, वे समझ नहीं पाये। [10]मैंने पूछा, 'हे प्रभु, मैं क्या करूँ?' इस पर प्रभु ने मुझसे कहा, 'खड़ा हो, और दमिश्क को चला जा। वहाँ तुझे वह सब बता दिया जायेगा, जिसे करने के लिये तुझे नियुक्त किया गया है।' [11]क्योंकि मैं उस तीव्र प्रकाश की चौंध के कारण कुछ देख नहीं पा रहा था, सो मेरे साथी मेरा हाथ पकड़ कर मुझे ले चले और मैं दमिश्क जा पहुँचा।

[12]"वहाँ हनन्या* नाम का एक व्यक्ति था। वह व्यवस्था का पालन करने वाला एक भक्त था। वहाँ के निवासी सभी यहूदियों के साथ उसकी अच्छी बोलचाल थी। [13]वह मेरे पास आया और मेरे निकट खड़े हो कर बोला, 'भाई शाऊल, फिर से देखने लग' और उसी क्षण मैं उसे देखने

गमलीएल यहूदियों की एक धार्मिक शाखा फरीसियों का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण धर्म-गुरु।

हनन्याह 'प्रेरितों के काम' में हनन्याह नाम के तीन व्यक्तियों का उल्लेख मिलता है। अन्य दो के लिए देखें प्र.क. 5:1; 23:2

योग्य हो गया। [14]उसने कहा, 'हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुझे चुन लिया है कि तू उसकी इच्छा को जाने, उस धर्म-स्वरूप को देखे और उसकी वाणी को सुने। [15]क्योंकि तूने जो देखा है और जो सुना है, उसके लिये सभी लोगों के सामने तू उसकी साक्षी होगा। [16]सो अब तू किसकी बाट जोह रहा है, खड़ा हो बपतिस्मा ग्रहण कर और उसका नाम पुकारते हुए अपने पापों को धो डाल।'

[17]"फिर ऐसा हुआ कि जब मैं यरुशलेम लौट कर मंदिर में प्रार्थना कर रहा था तभी मेरी समाधि लग गयी [18]और मेंने देखा वह मुझसे कह रहा है, 'जल्दी कर और तुरंत यरुशलेम से बाहर चला जा क्योंकि मेरे बारे में वे तेरी साक्षी स्वीकार नहीं करेंगे।' [19]सो मैंने कहा, 'प्रभु ये लोग तो जानते हैं कि तुझ पर विश्वास करने वालों को बंदी बनाते हुए और पीटते हुए मैं यहूदी धर्म सभागारों में घूमता फिरा हूँ। [20]और तो और जब तेरे साक्षी स्तिफनुस का रक्त बहाया जा रहा था, तब भी मैं अपना समर्थन देते हुए वहीं खड़ा था। जिन्होंने उसकी हत्या की थी, मैं उनके कपड़ों की रखवाली कर रहा था। [21]फिर वह मुझसे बोला, 'तू जा, क्योंकि मैं तुझे विधर्मियों के बीच दूर-दूर तक भेजूँगा।'"

[22]इस बात तक वे उसे सुनते रहे पर फिर ऊँचे स्वर में पुकार कर चिल्ला उठे, "ऐसे मनुष्य से धरती को मुक्त करो। यह जीवित रहने योग्य नहीं है!" [23]वे जब चिल्ला रहे थे और अपने कपड़ों को उतार उतार कर फेंक रहे थे तथा आकाश में धूल उड़ा रहे थे, [24]तभी सेना-नायक ने आज्ञा दी कि पौलुस को किले में ले जाया जाये। उसने कहा कि कोड़े लगा लगा कर उससे पूछ-ताछ की जाये ताकि पता चले कि उस पर लोगों के इस प्रकार चिल्लाने का कारण क्या है। [25]किन्तु जब वे उसे कोड़े लगाने के लिये बाँध रहे थे तभी वहाँ खड़े सेनानायक से पौलुस ने कहा, "किसी रोमी नागरिक को, जो अपराधी न पाया गया हो, कोड़े लगाना क्या तुम्हारे लिये उचित है?"

[26]यह सुनकर सेना-नायक सेनापति के पास गया और बोला, "यह तुम क्या कर रहे हो? क्योंकि यह तो रोमी नागरिक है।"

[27]इस पर सेनापति ने उसके पास आकर पूछा, "मुझे बता, क्या तू रोमी नागरिक है?"

पौलुस ने कहा, "हाँ।"

[28]इस पर सेना-पति ने उत्तर दिया, "इस नागरिकता को पाने में मुझे तो बहुत सा धन खर्च करना पड़ा है।"

पौलुस ने कहा, "किन्तु मैं तो जन्मजात रोमी नागरिक हूँ।"

[29]सो वे लोग जो उससे पूछताछ करने को थे तुरंत पीछे हट गये और वह सेनापति भी यह समझ कर कि वह एक रोमी नागरिक है और उसने उसे बंदी बनाया है, बहुत डर गया।

यहूदी नेताओं के सामने पौलुस का भाषण

[30]क्योंकि वह सेनानायक इस बात का ठीक ठीक पता लगाना चाहता था कि यहूदियों ने पौलुस पर अभियोग क्यों लगाया, इसलिये उसने अगले दिन उसके बन्धन खोल दिए। फिर प्रमुख याजकों और सर्वोच्च यहूदी महा सभा को बुला भेजा और पौलुस को उनके सामने ला कर खड़ा कर दिया।

23 पौलुस ने यहूदी महा सभा पर गम्भीर दृष्टि डालते हुए कहा, "मेरे भाइयो! मैंने परमेश्वर के सामने आज तक उत्तम निष्ठा के साथ जीवन जिया है।" [2]इस पर महा याजक हनन्याह ने पौलुस के पास खड़े लोगों को आज्ञा दी कि वे उसके मुँह पर थप्पड़ मारें। [3]तब पौलुस ने उससे कहा, "अरे सफेदी पुती दीवार! तुझ पर परमेश्वर की मार पड़ेगी। तू यहाँ व्यवस्था के विधान के अनुसार मेरा कैसा न्याय करने बैठा है कि तू व्यवस्था के विरोध में मेरे थप्पड़ मारने की आज्ञा दे रहा है।"

[4]पौलुस के पास खड़े लोगों ने कहा, "परमेश्वर के महायाजक का अपमान करने का साहस तुझे हुआ कैसे?"

[5]पौलुस ने उत्तर दिया, "मुझे तो पता ही नहीं कि यह महायाजक है। क्योंकि शासन मे लिखा है 'तुझे अपनी प्रजा के शासक के लिये बुरा बोल नहीं बोलना चाहिये।'"*

[6]फिर जब पौलुस को पता चला कि उनमें से आधे लोग सदूकी हैं और आधे फ़रीसी तो महासभा के बीच उसने ऊँचे स्वर में कहा, "हे भाइयो, मैं फ़रीसी हूँ-एक फ़रीसी का बेटा हूँ। मरने के बाद फिर से जी उठने के प्रति मेरी मान्यता के कारण मुझ पर अभियोग चलाया जा रहा है!"

तुझे अपनी … बोलना चाहिये निर्गमन 22:28

[7]उसके ऐसा कहने पर फ़रीसियों और सदूकियों में एक विवाद उठ खड़ा हुआ और सभा के बीच फूट पड़ गयी। [8](सदूकियों का कहना है कि पुनरुत्थान नहीं होता न स्वर्गदूत होते हैं और न ही आत्माएँ। किन्तु फ़रीसियों का इनके अस्तित्त्व में विश्वास है।) [9]वहाँ बहुत शोरगुल मचा। फ़रीसियों के दल में से कुछ धर्मशास्त्री उठे और तीखी बहस करते हुए कहने लगे, "इस व्यक्ति में हम कोई खोट नहीं पाते हैं। यदि किसी आत्मा ने या किसी स्वर्गदूत ने इससे बातें की हैं तो इससे क्या?"

[10]क्योंकि यह विवाद हिंसक रूप ले चुका था, इससे वह सेनापति डर गया कि कहीं वे पौलुस के टुकड़े-टुकड़े न कर डालें। सो उसने सिपाहियों को आदेश दिया कि वे नीचे जा कर पौलुस को उनसे अलग करके छावनी में ले जायें।

[11]अगली रात प्रभु ने पौलुस के निकट खड़े होकर उससे कहा, "हिम्मत रख, क्योंकि तूने जैसे दृढ़ता के साथ यरुशलेम में मेरी साक्षी दी है, वैसे ही रोम में भी तुझे मेरी साक्षी देनी है।"

[12]फिर दिन निकले। यहूदियों ने एक षड्यन्त्र रचा। उन्होंने शपथ उठायी कि जब तक वे पौलुस को मार नहीं डालेंगे, न कुछ खायेंगे, न पियेंगे। [13]उनमें से चालीस से भी अधिक लोगों ने यह षड्यन्त्र रचा था [14]वे प्रमुख याजकों और बुजुर्गों के पास गये और बोले, "हमने सौगन्ध उठाई है कि हम जब तक पौलुस को मार नहीं डालते हैं, तब तक न हमें कुछ खाना है, न पीना।" [15]तो अब तुम और यहूदी महासभा, सेनानायक से कहो कि वह उसे तुम्हारे पास ले आए यह बहाना बनाते हुए कि तुम उसके विषय में और गहराई से छानबीन करना चाहते हो। इससे पहले कि वह यहाँ पहुँचे, हम उसे मार डालने को तैयार हैं।

[16]किन्तु पौलुस के भांजे को इस षड्यन्त्र की भनक लग गयी थी, सो वह छावनी में जा पहुँचा और पौलुस को सब कुछ बता दिया। [17]इस पर पौलुस ने किसी एक सेना-नायक को बुलाकर उससे कहा, "इस युवक को सेनापति के पास ले जाओ क्योंकि इसे उससे कुछ कहना है।" [18]सो वह उसे सेनापति के पास ले गया और बोला, "बंदी पौलुस ने मुझे बुलाया और मुझसे इस युवक को तेरे पास पहुँचाने को कहा क्योंकि यह तुझसे कुछ कहना चाहता है।"

[19]सेनापति ने उसका हाथ पकड़ा और उसे एक ओर ले जाकर पूछा, "बता तू मुझ से क्या कहना चाहता है?"

[20]युवक बोला, "यहूदी इस बात पर एकमत हो गये हैं कि वे पौलुस से और गहराई के साथ पूछताछ करने के बहाने महासभा में उसे लाये जाने की तुझ से प्रार्थना करें। [21]इसलिये उनकी मत सुनना। क्योंकि चालीस से भी अधिक लोग घात लगाये उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने यह कसम उठाई है कि जब तक वे उसे मार न लें, उन्हें न कुछ खाना है, न पीना। बस अब तेरी अनुमति की प्रतीक्षा में वे तैयार बैठे हैं।"

[22]फिर सेनापति ने युवक को यह आदेश देकर भेज दिया, "तू यह किसी को मत बताना कि तूने मुझे इसकी सूचना दे दी है।"

पौलुस का कैसरिया भेजा जाना

[23]फिर सेनापति ने अपने दो सेना-नायकों को बुलाकर कहा, "दो सौ सैनिकों, सत्तर घुड़सवारों, और सौ भालैतों को कैसरिया जाने के लिये तैयार रखो। रात के तीसरे पहर चल पड़ने के लिये तैयार रहना। [24]पौलुस की सवारी के लिये घोड़ों का भी प्रबन्ध रखना और उसे सुरक्षा पूर्वक राज्यपाल फ़ेलिक्स के पास ले जाना।" [25]उसने एक पत्र लिखा जिसका विषय था :

[26] महामहिम राज्यपाल फेलिक्स को
क्लोदियुस लूसियास का नमस्कार पहुँचे।

[27]इस व्यक्ति को यहूदियों ने पकड़ लिया था और वे इसकी हत्या करने ही वाले थे कि मैंने यह जानकर कि यह एक रोमी नागरिक है, अपने सैनिकों के साथ जा कर इसे बचा लिया। [28]मैं क्योंकि उस कारण को जानना चाहता था जिससे वे उस पर दोष लगा रहे थे, उसे उनकी महा-धर्म-सभा में ले गया। [29]मुझे पता चला कि उनकी व्यवस्था से संबंधित प्रश्नों के कारण उस पर दोष लगाया गया था। किन्तु उस पर कोई ऐसा अभियोग नहीं था जो उसे मृत्यु दण्ड के योग्य या बंदी बनाये जाने योग्य सिद्ध हो। [30]फिर जब मुझे सूचना मिली कि वहाँ इस मनुष्य के विरोध में कोई षड्यन्त्र रचा गया है तो मैंने इसे तुरंत तेरे पास भेज दिया है। और इस पर अभियोग लगाने वालों को यह

आदेश दे दिया है कि वे इसके विरुद्ध लगाये गये अपने अभियोग को तेरे सामने रखें।

[31]सो सिपाहियों ने इन आज्ञाओं को पूरा किया और वे रात में ही पौलुस को अंतिपतरिस के पास ले गये। [32]फिर अगले दिन घुड़-सवारों को उसके साथ आगे जाने के लिये छोड़ कर वे छावनी को लौट आये। [33]जब वे कैसरिया पहुँचे तो उन्होंने राज्यपाल को वह पत्र देते हुए पौलुस को उसे सौंप दिया। [34]राज्यपाल ने पत्र पढ़ा और पौलुस से पूछा कि वह किस प्रदेश का निवासी है। जब उसे पता चला कि वह किलिकिया का रहने वाला है [35]तो उसने उससे कहा, "तुझ पर अभियोग लगाने वाले जब आ जायेंगे, मैं तभी तेरी सुनवाई करूँगा।" उसने आज्ञा दी कि पौलुस को पहरे के भीतर हेरोदेस के महल में रखा जाये।

यहूदियों द्वारा पौलुस पर अभियोग

24 पाँच दिन बाद महायाजक हनन्याह कुछ बुज़ुर्ग यहुदी नेताओं और तिरतुल्लुस नाम के एक वकील को साथ लेकर कैसरिया आया। वे राज्य पाल के सामने पौलुस पर अभियोग सिद्ध करने आये थे। [2]फेलिक्स के सामने पौलुस की पेशी होने पर मुकदमे की कार्यवाही आरम्भ करते हुए तिरतुल्लुस बोला, "हे महोदय, तुम्हारे कारण हम बड़ी शांति के साथ रह रहे हैं और तुम्हारी दूर-दृष्टि से देश में बहुत से अपेक्षित सुधार आये हैं। [3]हे सर्वश्रेष्ट फेलिक्स, हम बड़ी कृतज्ञता के साथ इसे हर प्रकार से हर कहीं स्वीकार करते हैं।

[4]तुम्हारा और अधिक समय न लेते हुए, मेरी प्रार्थना है कि कृपया आप संक्षेप में हमें सुन लें। [5]बात यह है कि इस व्यक्ति को हमने एक उत्पाती के रूप में पाया है। सारी दुनिया के यहूदियों में इसने दंगे भड़कवाए हैं। यह नासरियों के पंथ का नेता है। [6]इसने मंदिर को भी अपवित्र करने का जतन किया है। हमने इसे इसीलिए पकड़ा है। हम इस पर जो आरोप लगा रहे हैं, ["हम अपनी व्यवस्था के अनुसार इसका न्याय करना चाहते थे [7]किन्तु सेनानायक लिसिआस ने बलपूर्वक उसे हमसे छीन लिया [8]और अपने लोगो को आज्ञा दी कि वे इसे अभियोग लगाने के लिए तेरे सामने ले जाये।"]* उन सब को आप स्वयं इससे पूछ ताछ करके जान सकते हो।" [9]इस अभियोग में यहूदी भी शामिल हो गये। वे दृढ़ता के साथ कह रहे थे कि ये सब बातें सच हैं।

[10]फिर राज्यपाल ने जब पौलुस को बोलने के लिये इशारा किया तो उसने उत्तर देते हुए कहा, "तू बहुत दिनों से इस देश का न्यायाधीश है। यह जानते हुए मैं प्रसन्नता के साथ अपना बचाव प्रस्तुत कर रहा हूँ। [11]तू स्वयं यह जान सकता है कि अभी आराधना के लिए मुझे यरुशलेम गये बस बारह दिन बीते हैं। [12]वहाँ मंदिर में मुझे न तो किसी के साथ बहस करते पाया गया है और न ही प्रार्थना सभाओं या नगर में कहीं और लोगों को दंगों के लिए भड़काते हुए [13]और अब तेरे सामने जिन अभियोगों को ये मुझ पर लगा रहे हैं उन्हें प्रमाणित नहीं कर सकते हैं। [14]किन्तु मैं तेरे सामने यह स्वीकार करता हूँ कि मैं अपने पूर्वजों के परमेश्वर की आराधना अपने पंथ के अनुसार करता हूँ, जिसे ये एक पंथ कहते हैं। मैं हर उस बात में विश्वास करता हूँ जिसे व्यवस्था बताती है और जो नबियों के ग्रन्थों में लिखी है। [15]और मैं परमेश्वर में वैसे ही भरोसा रखता हूँ जैसे स्वयं ये लोग रखते हैं कि धर्मियों और अधर्मियों दोनों का ही पुनरुत्थान होगा। [16]इसीलिये मैं भी परमेश्वर और लोगों के समक्ष सदा अपनी अन्तरात्मा को शुद्ध बनाये रखने के लिए प्रयत्न करता रहता हूँ।

[17]"बरसों तक दूर रहने के बाद मैं अपने दीन जनों के लिये उपहार ले कर भेंट चढ़ाने आया था। और [18]जब मैं यह कर ही रहा था उन्होंने मुझे मंदिर में पाया, तब मैं विधि-विधान पूर्वक शुद्ध था। न वहाँ कोई भीड़ थी और न कोई अशांति। [19]एशिया से आये कुछ यहूदी वहाँ मौजूद थे। यदि मेरे विरुद्ध उनके पास कुछ है तो उन्हें तेरे सामने उपस्थित हो कर मुझ पर आरोप लगाने चाहियें। [20]या ये लोग जो यहाँ हैं वे बतायें कि जब मैं यहूदी महासभा के सामने खड़ा था, तब उन्होंने मुझ में क्या खोट पाया[21]सिवाय इसके कि जब मैं उनके बीच में खड़ा था तब मैंने ऊँचे स्वर में कहा था, 'मरे हुओं में से जी उठने के विषय में आज तुम्हारे द्वारा मेरा न्याय किया जा रहा है।'"

[22]फिर फेलिक्स, जो इस-पंथ की पूरी जानकारी रखता था, मुकदमे की सुनवाई को स्थगित करते हुए बोला, "जब सेनानायक लुसिआस आयेगा, मैं तभी तुम्हारे इस मुकदमे पर अपना निर्णय दूँगा।" [23]फिर उसने सूबेदार

हम अपनी ... ले जायें कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है।

को आज्ञा दी कि थोड़ी छूट देकर पौलुस को पहरे के भीतर रखा जाये और उसके मित्रों को उसकी आवश्यकताएँ पूरी करने से न रोका जाये।

पौलुस की फेलिक्स और उसकी पत्नी से बातचीत

[24]कुछ दिनों बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला के साथ वहाँ आया। वह एक यहूदी महिला थी। फेलिक्स ने पौलुस को बुलवा भेजा और यीशु मसीह में विश्वास के विषय में उससे सुना। [25]किन्तु जब पौलुस नेकी, आत्मसंयम और आने वाले न्याय के विषय में बोल रहा था तो फेलिक्स डर गया और बोला, "इस समय तू चला जा, अवसर मिलने पर मैं तुझे फिर बुलवाऊँगा।" [26]उसी समय उसे यह आशा भी थी कि पौलुस उसे कुछ धन देगा इसीलिए फेलिक्स पौलुस को बातचीत के लिए प्राय: बुलवा भेजता था।

[27]दो साल ऐसे ही बीत जाने के बाद फेलिक्स का स्थान पुरखियुस फेस्तुस ने ग्रहण कर लिया। और क्योंकि फेलिक्स यहूदियों को प्रसन्न रखना चाहता था इसीलिये उसने पौलुस को बंदीगृह में ही रहने दिया।

पौलुस कैसर से अपना न्याय चाहता है

25 फिर फेस्तुस ने उस प्रदेश में प्रवेश किया और तीन दिन बाद वह कैसरिया से यरुशलेम को रवाना हो गया। [2]वहाँ प्रमुख याजकों और यहूदियों के मुखियाओं ने पौलुस के विरुद्ध लगाये गये अभियोग उसके सामने रखे और उससे प्रार्थना की[3]कि वह पौलुस को यरुशलेम भिजवा कर उन का पक्ष ले। (वे रास्ते में ही उसे मार डालने का षड्यन्त्र बनाये हुए थे।) [4]फेस्तुस ने उत्तर दिया, "पोलुस कैसरिया में बंदी है और वह जल्दी ही वहाँ जाने वाला है।" उसने कहा, [5]"तुम अपने कुछ मुखियाओं को मेरे साथ भेज दो और यदि उस व्यक्ति ने कोई अपराध किया है तो वे वहाँ उस पर अभियोग लगायें।"

[6]उनके साथ कोई आठ दस दिन बिता कर फेस्तुस कैसरिया चला गया। अगले ही दिन अदालत में न्यायासन पर बैठ कर उसने आज्ञा दी कि पौलुस को पेश किया जाये। [7]जब वह पेश हुआ तो यरुशलेम से आये यहूदी उसे घेर कर खड़े हो गये। उन्होंने उस पर अनेक गम्भीर आरोप लगाये किन्तु उन्हें वे प्रमाणित नहीं कर सके। [8]पौलुस ने स्वयं अपना बचाव करते हुए कहा, "मैंने यहूदियों के विधान के विरोध में कोई काम नहीं किया है, न ही मंदिर के विरोध में और न ही कैसर के विरोध में।"

[9]किन्तु क्योंकि फेस्तुस यहूदियों को प्रसन्न करना चाहता था, उत्तर में उसने पौलुस से कहा, "तो क्या तू यरुशलेम जाना चाहता है ताकि मैं वहाँ तुझ पर लगाये गये इन अभियोगों का न्याय करूँ?"

[10]पौलुस ने कहा, "इस समय मैं कैसर की अदालत के सामने खड़ा हूँ। मेरा न्याय यहीं किया जाना चाहिये। मैंने यहूदियों के साथ कुछ बुरा नहीं किया है, इसे तू भी बहुत अच्छी तरह जानता है। [11]यदि मैं किसी अपराध का दोषी हूँ और मैंने कुछ ऐसा किया है, जिसका दण्ड मृत्यु है तो मैं मरने से बचना नहीं चाहूँगा, किन्तु यदि ये लोग मुझ पर जो अभियोग लगा रहे हैं, उनमें कोई सत्य नहीं है तो मुझे कोई भी इन्हें नहीं सौंप सकता। यही कैसर से मेरी प्रार्थना है।"

[12]अपनी परिषद् से सलाह करने के बाद फेस्तुस ने उसे उत्तर दिया, "तूने कैसर से पुनर्विचार की प्रार्थना की है, इसलिये तुझे कैसर के सामने ही ले जाया जायेगा।"

पौलुस की अग्रिप्पा के सामने पेशी

[13]कुछ दिन बाद राजा अग्रिप्पा और बिरनिके फेस्तुस से मिलते कैसरिया आये। [14]जब वे वहाँ कई दिन बिता चुके तो फेस्तुस ने राजा के सामने पौलुस के मुकदमे को इस प्रकार समझाया, "यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जिसे फेलिक्स बंदी के रूप में छोड़ गया था। [15]जब मैं यरुशलेम में था, प्रमुख याजकों और बुजुर्गों ने उसके विरुद्ध मुकदमा प्रस्तुत किया था और माँग की थी कि उसे दंडित किया जाये। [16]मैंने उनसे कहा, 'रोमियों में ऐसा चलन नहीं है कि किसी व्यक्ति को, जब तक वादी-प्रतिवादी को आमने-सामने न करा दिया जाये और उस पर लगाये गये अभियोगों से उसे बचाव का अवसर न दे दिया जाये, उसे दण्ड के लिये, सौंपा जाये।' [17]सो वे लोग जब मेरे साथ यहाँ आये तो मैंने बिना देर लगाये अगले ही दिन न्यायासन पर बैठ कर उस व्यक्ति को पेश किये जाने की आज्ञा दी। [18]जब उस पर दोष लगाने वाले बोलने खड़े हुए तो उन्होंने उस पर ऐसा कोई दोष नहीं लगाया जैसा कि मैं सोच रहा था। [19]बल्कि उनके अपने धर्म की कुछ बातों पर ही और यीशु नाम के एक व्यक्ति पर जो मर

चुका है, उनमें कुछ मतभेद था। यद्यपि पौलुस का दावा है कि वह जीवित है। [20]मैं समझ नहीं पा रहा था कि इन विषयों की छानबीन कैसे की जाये, इसलिये मैंने उससे पूछा कि क्या वह अपने इन अभियोगों का न्याय कराने के लिये यरुशलेम जाने को तैयार है? [21]किन्तु पौलुस ने जब प्रार्थना की कि उसे सम्राट के न्याय के लिये ही वहाँ रखा जाये, तो मैंने आदेश दिया, कि मैं जब तक उसे कैसर के पास न भिजवा दूँ, उसे यहीं रखा जाये।"

[22]इस पर अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "इस व्यक्ति की सुनवाई मैं स्वयं करना चाहता हूँ।"

फेस्तुस ने कहा, "तुम उसे कल सुन लेना।"

[23]सो अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनिके बड़ी सजधज के साथ आये और उन्होंने सेना-नायकों तथा नगर के प्रमुख व्यक्तियों के साथ सभाभवन में प्रवेश किया। फेस्तुस ने आज्ञा दी और पौलुस को वहाँ ले आया गया। [24]फिर फेस्तुस बोला, "महाराजा अग्रिप्पा तथा उपस्थित सज्जनो! तुम इस व्यक्ति को देख रहे हो जिसके विषय में समूचा यहूदी-समाज, यरुशलेम में और यहाँ, मुझसे चिल्ला-चिल्ला कर माँग करता रहा है कि इसे अब और जीवित नहीं रहने देना चाहिये। [25]किन्तु मैंने जाँच लिया है कि इसने ऐसा कुछ नहीं किया है कि इसे मृत्यु-दण्ड दिया जाये। और क्योंकि इसने स्वयं सम्राट से पुनर्विचार की प्रार्थना की है इसलिये मैंने इसे वहाँ भेजने का निर्णय लिया है। [26]किन्तु इसके विषय में सम्राट के पास लिख भेजने को मेरे पास कोई निश्चित बात नहीं है। मैं इसे इसीलिये आप लोगों के सामने, और विशेष रूप से हे महाराजा अग्रिप्पा! तुम्हारे सामने लाया हूँ ताकि इस जाँच पड़ताल के बाद लिखने को मेरे पास कुछ हो। [27]कुछ भी हो मुझे किसी बंदी को उसका अभियोग-पत्र तैयार किये बिना वहाँ भेज देना असंगत जान पड़ता है।"

पौलुस राजा अग्रिप्पा के सामने

26 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "तुझे स्वयं अपनी ओर से बोलने की अनुमति है।" इस पर पौलुस ने अपना हाथ उठाया और अपने बचाव में बोलना आरम्भ किया, [2]"हे राजा अग्रिप्पा! मैं अपने आप को भाग्यवान समझता हूँ कि यहूदियों ने मुझ पर जो आरोप लगाये हैं, उन सब बातों के बचाव में, मैं तेरे सामने बोलने जा रहा हूँ। [3]विशेष रूप से यह इसलिये सत्य है कि तुझे सभी यहूदी प्रथाओं और उनके विवादों का ज्ञान है। इसलिये मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि धैर्य के साथ मेरी बात सुनी जाये।

[4]"सभी यहूदी जानते हैं कि प्रारम्भ से ही स्वयं अपने देश में और यरुशलेम में भी बचपन से ही मैंने कैसा जीवन जिया है। [5]वे मुझे बहुत समय से जानते हैं और यदि वे चाहें तो इस बात की गवाही दे सकते हैं कि मैंने हमारे धर्म के एक सबसे अधिक कट्टर पंथ के अनुसार एक फ़रीसी के रूप में जीवन जिया है। [6]और अब इस विचाराधीन स्थिति में खड़े हुए मुझे उस वचन का ही भरोसा है जो परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को दिया था। [7]यह वही वचन है जिसे हमारी बारहों जातियाँ दिन रात तल्लीनता से परमेश्वर की सेवा करते हुए, प्राप्त करने का भरोसा रखती हैं। हे राजन्, इसी भरोसे के कारण मुझ पर यहूदियों द्वारा आरोप लगाया जा रहा है। [8]तुम में से किसी को भी यह बात विश्वास के योग्य क्यों नहीं लगती है कि परमेश्वर मरे हुए को जिला देता है।

[9]"मैं भी सोचा करता था नासरी यीशु के नाम का विरोध करने के लिए जो भी बन पड़े, वह बहुत कुछ करूँ। [10]और ऐसा ही मैंने यरुशलेम में किया भी। मैंने परमेश्वर के बहुत से भक्तों को जेल में ठूँस दिया क्योंकि प्रमुख याजकों से इसके लिये मुझे अधिकार प्राप्त था। और जब उन्हें मारा गया तो मैंने अपना मत उन के विरोध में दिया। [11]यहूदी धर्म सभागारों में मैं उन्हें प्राय: दण्ड दिया करता और परमेश्वर के विरोध में बोलने के लिए उन पर दबाव डालने का यत्न करता रहता। उनके प्रति मेरा क्रोध इतना अधिक था कि उन्हें सताने के लिए मैं बाहर के नगरों तक गया।

पौलुस द्वारा यीशु के दर्शन के विषय में बताना

[12]"ऐसी ही एक यात्रा के अवसर पर जब मैं प्रमुख याजकों से अधिकार और आज्ञा पाकर दमिश्क जा रहा था, [13]तभी दोपहर को जब मैं अभी मार्ग में ही था कि मैंने हे राजन, स्वर्ग से एक प्रकाश उतरते देखा। उसका तेज सूर्य से भी अधिक था। वह मेरे और मेरे साथ के लोगों के चारों ओर कौंध गया। [14]हम सब धरती पर लुढ़क गये। फिर मुझे एक वाणी सुनाई दी। वह इब्रानी भाषा में मुझसे कह रही थी, 'हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सता रहा है? पैंने की नोक पर लात मारना तेरे

बस की बात नहीं है।' [15]फिर मैंने पूछा, 'हे प्रभु, तू कौन है?' प्रभु ने उत्तर दिया, 'मैं यीशु हूँ जिसे तू यातनाएँ दे रहा है। [16]किन्तु अब तू उठ और अपने पैरों पर खड़ा हो जा। मैं तेरे सामने इसीलिए प्रकट हुआ हूँ कि तुझे एक सेवक के रूप में नियुक्त करूँ और जो कुछ तूने मेरे विषय में देखा है और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊँगा, उसका तू साक्षी रहे। [17]मैं जिन यहूदियों और विधर्मियों के पास [18]उनकी आँखें खोलने, उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर लाने और शैतान की ताकत से परमेश्वर की ओर मोड़ने के लिये, तुझे भेज रहा हूँ, उनसे तेरी रक्षा करता रहूँगा। इससे वे पापों की क्षमा प्राप्त करेंगे और उन लोगों के बीच स्थान पायेंगे जो मुझ में विश्वास रखने के कारण पवित्र हुए हैं।'

पौलुस के कार्य

[19]"हे राजन अग्रिप्पा, इसीलिये तभी से उस दर्शन की आज्ञा का कभी भी उल्लंघन न करते हुए [20]बल्कि उसके विपरीत मैं पहले उन्हें दमिश्क में, फिर यरुशलेम में और यहूदिया के समूचे क्षेत्र में और ग़ैर यहूदियों को भी उपदेश देता रहा कि मन फिराव के, परमेश्वर की ओर मुड़ने और मनफिराव के योग्य का करें। [21]इसी कारण जब मैं यहाँ मंदिर में था, यहूदियों ने मुझे पकड़ लिया और मेरी हत्या का यत्न किया। [22]किन्तु आज तक मुझे परमेश्वर की सहायता मिलती रही है और इसीलिए मैं यहाँ छोटे और बड़े सभी लोगों के सामने साक्षी देता खड़ा हूँ। मैं बस उन बातों को छोड़ कर और कुछ नहीं कहता जो नबियों और मूसा के अनुसार घटनी ही थी [23]कि मसीह को यातनाएँ भोगनी होंगी और वही मरे हुओं में से पहला जी उठने वाला होगा और वह यहूदियों और ग़ैर यहूदियों को ज्योति का सन्देश देगा।"

पौलुस द्वारा अग्रिप्पा का भ्रम दूर करने का यत्न

[24]वह अपने बचाव में जब इन बातों को कह ही रहा था कि फेस्तुस ने चिल्ला कर कहा, "पौलुस, तेरा दिमाग ख़राब हो गया है! तेरी अधिक पढ़ाई तुझे पागल बनाये डाल रही है!"

[25]पौलुस ने कहा, "हे परमगुणी फेस्तुस, मैं पागल नहीं हूँ बल्कि जो बातें मैं कह रहा हूँ, वे सत्य हैं और संगत भी। [26]स्वयं राजा इन बातों को जानता है और मैं मुक्त भाव से उससे कह सकता हूँ। मेरा निश्चय है कि इनमें से कोई भी बात उसकी आँखों से ओझल नहीं है। मैं ऐसा इसलिये कह रहा हूँ कि यह बात किसी कोने में नहीं की गयी। [27]हे राजन अग्रिप्पा! नबियों ने जो लिखा है, क्या तू उसमें विश्वास रखता है? मैं जानता हूँ कि तेरा विश्वास है।"

[28]इस पर अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "क्या तू यह सोचता है कि इतनी सरलता से तू मुझे मसीही बनने को मना लेगा?"

[29]पौलुस ने उत्तर दिया, "थोड़े समय में, चाहे अधिक समय में, परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि न केवल तू बल्कि वे सब भी, जो आज मुझे सुन रहे हैं, वैसे ही हो जायें, जैसा में हूँ, सिवाय इन ज़ंजीरों के।"

[30]फिर राजा खड़ा हो गया और उसके साथ ही राज्यपाल, बिरनिके और साथ में बैठे हुए लोग भी उठ खड़े हुए। [31]वहाँ से बाहर निकल कर वे आपस में बात करते हुए कहने लगे, इस व्यक्ति ने तो ऐसा कुछ नहीं किया है, जिससे इसे मृत्यु-दण्ड या कारावास मिल सके। [32]अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "यदि इसने कैसर के सामने पुनर्विचार की प्रार्थना न की होती, तो इस व्यक्ति को छोड़ा जा सकता था।"

पौलुस को रोम भेजा जाना

27 जब यह निश्चय हो गया कि हमें जहाज़ से इटली जाना है तो पौलुस तथा कुछ दूसरे बंदियों को सम्राट की सेना के यूलियस नाम के एक सेना-नायक को सौंप दिया गया। [2]अद्रमुत्तियुम से हम एक जहाज. पर चढ़े जो एशिया के तटीय क्षेत्रों से हो कर जाने वाला था और समुद्र यात्रा पर निकल पड़े। थिस्सलुनीके निवासी एक मकदूनी, जिसका नाम अरिस्तर्खुस था, भी हमारे साथ था। [3]अगले दिन हम सैदा में उतरे। वहाँ यूलियस ने पौलुस के साथ अच्छा व्यवहार किया और उसे उसके मित्रों का स्वागत सत्कार ग्रहण करने के लिए उनके यहाँ जाने की अनुमति दे दी। [4]वहाँ से हम समुद्र-मार्ग से फिर चल पड़े। हम साइप्रस की आड़ लेकर चल रहे थे क्योंकि हवाएँ हमारे प्रतिकूल थीं। [5]फिर हम किलिकिया और पंफूलिया के सागर को पार करते हुए लुकिया और मीरा पहुँचे। [6]वहाँ सेनानायक को

सिकन्दरिया का इटली जाने वाला एक जहाज़ मिला। उसने हमें उस पर चढ़ा दिया।

[7]कई दिन तक हम धीरे धीरे आगे बढ़ते हुए बड़ी कठिनाई के साथ कनिदुस के सामने पहुँचे किन्तु क्योंकि हवा हमें अपने मार्ग पर नहीं बने रहने दे रही थी, सो हम सलभौने के सामने से क्रीत की ओट में अपनी नाव बढ़ाने लगे। [8]क्रीत के किनारे-किनारे बड़ी कठिनाई से नाव को आगे बढ़ाते हुए हम एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जिसका नाम था सुरक्षित बंदरगाह। यहाँ से लसेआ नगर पास ही था।

[9]समय बहुत बीत चुका था और नाव को आगे बढ़ाना भी संकटपूर्ण था क्योंकि तब तक उपवास का दिन समाप्त हो चुका था इसलिए पौलुस ने चेतावनी देते हुए उनसे कहा, [10]"हे पुरुषो, मुझे लगता है कि हमारी यह सागर-यात्रा विनाशकारी होगी, न केवल माल असबाब और जहाज़ के लिए बल्कि हमारे प्राणों के लिये भी।" [11]किन्तु पौलुस ने जो कहा था, उस पर कान देने के बजाय उस सेना नायक ने जहाज़ के मालिक और कप्तान की बातों का अधिक विश्वास किया। [12]और क्योंकि वह बन्दरगाह शीत ऋतु के अनुकूल नहीं था, इसलिए अधिकतर लोगों ने, यदि हो सके तो फिनिक्स पहुँचने का प्रयत्न करने की ही ठानी। और सर्दी वहीं बिताने का निश्चय किया। फिनिक्स क्रीत का एक ऐसा बन्दरगाह है जिसका मुख दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम दोनों के ही सामने पड़ता है।

तूफ़ान

[13]जब दक्षिणी पवन हौले-हौले बहने लगा तो उन्होंने सोचा कि जैसा उन्होंने चाहा था, वैसा उन्हें मिल गया है। सो उन्होंने लंगर उठा लिया और क्रीत के किनारे-किनारे जहाज़ बढ़ाने लगे। [14]किन्तु अभी कोई अधिक समय नहीं बीता था कि द्वीप की ओर से एक भीषण आँधी उठी और आरपार लपेटती चली गयी। यह 'उत्तर-पूर्वी' आंधी कहलाती थी। [15]जहाज़ तूफ़ान में घिर गया। वह आँधी को चीर कर आगे नहीं बढ़ पा रहा था सो हमने उसे यों ही छोड़ कर हवा के रूख बहने दिया। [16]हम क्लोदा नाम के एक छोटे से द्वीप की ओट में बहते हुए बड़ी कठिनाई से रक्षा नौकाओं को पा सके। [17]फिर रक्षा-नौकाओं को उठाने के बाद जहाज़ को रस्सों से लपेट कर बाँध दिया गया और कहीं सुरतिस के उथले पानी में फँस न जायें, इस डर से उन्होंने पालें उतार दीं और जहाज़ को बहने दिया। [18]दूसरे दिन तूफ़ान के घातक थपेड़े खाते हुए वे जहाज़ से माल-असबाब बाहर फेंकने लगे। [19]और तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों से जहाज़ पर रखे उपकरण फेंक दिये। [20]फिर बहुत दिनों तक जब न सूरज दिखाई दिया, न तारे और तूफ़ान अपने घातक थपेड़े मारता ही रहा तो हमारे बच पाने की आशा पूरी तरह जाती रही।

[21]बहुत दिनों से किसी ने भी कुछ खाया नहीं था। तब पौलुस ने उनके बीच खड़े हो कर कहा, "हे पुरुषो, यदि क्रीत से रवाना न होने की मेरी सलाह तुमने मानी होती तो तुम इस विनाश और हानि से बच जाते। [22]किन्तु मैं तुमसे अब भी आग्रह करता हूँ कि अपनी हिम्मत बाँधे रखो। क्योंकि तुममें से किसी को भी अपने प्राण नहीं खोने हैं। हाँ! बस यह जहाज़ नष्ट हो जायेगा [23]क्योंकि पिछली रात उस परमेश्वर का एक स्वर्गदूत, जिसका मैं हूँ और जिसकी सेवा करता हूँ, मेरे पास आकर खड़ा हुआ। [24]और बोला, 'पौलुस डर मत। तुझे निश्चय ही कैसर के सामने खड़ा होना है और उन सब को जो तेरे साथ यात्रा कर रहे हैं, परमेश्वर ने तुझे दे दिया है।' [25]सो लोगो! अपना साहस बनाये रखो क्योंकि परमेश्वर में मेरा विश्वास है, इसलिये जैसा मुझे बताया गया है, ठीक वैसा ही होगा। [26]किन्तु हम किसी टापू के उथले पानी में अवश्य जा फँसेंगे।"

[27]फिर जब चौदहवीं रात आयी हम अद्रिया के सागर में थपेड़े खा रहे थे तभी आधी रात के आसपास जहाज़ के चालकों को लगा जैसे कोई तट पास में ही हो। [28]उन्होंने सागर की गहराई नापी तो पाया कि वहाँ कोई अस्सी हाथ गहराई थी। थोड़ी देर बाद उन्होंने पानी की गहराई फिर नापी और पाया कि अब गहराई साठ हाथ रह गयी थी। [29]इस डर से कि वे कहीं किसी चट्टानी उथले किनारे में न फँस जायें, उन्होंने जहाज के पिछले हिस्से से चार लंगर फेंके और प्रार्थना करने लगे कि किसी तरह दिन निकल आये। [30]उधर जहाज़ के चलाने वाले जहाज़ से भाग निकलने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्होंने यह बहाना बनाते हुए कि वे जहाज़ के अगले भाग से कुछ लंगर डालने के लिये जा रहे हैं, रक्षा-नौकाएँ समुद्र में उतार दीं। [31]तभी सेना-नायक से पौलुस ने कहा, "यदि ये लोग जहाज़ पर नहीं रुके तो तुम भी नहीं

बच पाओगे।" [32]सो सैनिकों ने रस्सियों को काट कर रक्षा नौकाओं को नीचे गिरा दिया।

[33]भोर होने से थोड़ा पहले पौलुस ने यह कहते हुए सब लोगों से थोड़ा भोजन कर लेने का आग्रह किया कि चौदह दिन हो चुके हैं और तुम निरन्तर चिंता के कारण भूखे रहे हो। तुमने कुछ भी तो नहीं खाया है। [34]मैं तुमसे अब कुछ खाने के लिए इसलिए आग्रह कर रहा हूँ कि तुम्हारे जीवित रहने के लिये यह आवश्यक है। क्योंकि तुममें से किसी के सिर का एक बाल तक बाँका नहीं होना है। [35]इतना कह चुकने के बाद उसने थोड़ी रोटी ली और सबके सामने परमेश्वर का धन्यवाद किया। फिर रोटी को विभाजित किया और खाने लगा। [36]इससे उन सब की हिम्मत बढ़ी और उन्होंने भी थोड़ा भोजन लिया। [37]जहाज़ पर कुल मिलाकर हम दो सौ छिहत्तर व्यक्ति थे। [38]पूरा खाना खा चुकने के बाद उन्होंने समुद्र में अनाज फेंक कर जहाज़ को हल्का किया।

जहाज़ का टूटना

[39]जब भोर हुई तो वे उस धरती को पहचान नहीं पाये किन्तु उन्हें लगा जैसे वहाँ कोई किनारेदार खाडी है। उन्होंने निश्चय किया कि यदि हो सके तो जहाज़ को वहाँ टिका दें। [40]सो उन्होंने लंगर काट कर ढीले कर दिये और उन्हें समुद्र मे नीचे गिर जाने दिया। उसी समय उन्होंने पतवारों से बँधे रस्से ढीले कर दिये; फिर जहाज़ के अगले पतवार चढ़ा कर तट की ओर बढ़ने लगे। [41]और उनका जहाज़ रेते में जा टकराया। जहाज़ का अगला भाग उसमें फँस कर अचल हो गया। और शक्तिशाली लहरों के थपेड़ों से जहाज़ का पिछला भाग टूटने लगा।

[42]तभी सैनिकों ने कैदियों को मार डालने की एक योजना बनायी ताकि उनमें से कोई भी तैर कर बच न निकले। [43]किन्तु सेना-नायक पौलुस को बचाना चाहता था, इसलिये उसने उन्हें उनकी योजना को अमल में लाने से रोक दिया। उसने आज्ञा दी कि जो भी तैर सकते हैं, वे पहले ही कूद कर किनारे जा लगें [44]और बाकी के लोग तख्तों या जहाज़ के दूसरे टुकड़ों के सहारे चले जायें। इस प्रकार हर कोई सुरक्षा के साथ किनारे आ लगा।

माल्टा द्वीप पर पौलुस

28 इस सब कुछ से सुरक्षापुर्वक बच निकलने के बाद हमें पता चला कि उस द्वीप का नाम माल्टा था। [2]वहाँ के मूल निवासियों ने हमारे साथ असाधारण रूप से अच्छा व्यवहार किया। क्योंकि सर्दी थी और वर्षा होने लगी थी, इसलिए उन्होंने आग जलाई और हम सब का स्वागत किया। [3]पौलुस ने लकड़ियों का एक गट्ठर बनाया और वह जब लकड़ियों को आग पर रख रहा था तभी गर्मी खा कर एक विषैला नाग बाहर निकला और उसने उसके हाथ को डस लिया। [4]वहाँ के निवासियों ने जब उस जंतु को उसके हाथ से लटकते देखा तो वे आपस में कहने लगे, "निश्चय ही यह व्यक्ति एक हत्यारा है। यद्यपि यह सागर से बच निकला है किन्तु न्याय इसे जीने नहीं दे रहा है।" [5]किन्तु पौलुस ने उस नाग को आग में ही झटक दिया। पौलुस को किसी प्रकार की हानि नहीं हुई। [6]लोग सोच रहे थे कि वह या तो सूज जायेगा या फिर बरबस धरती पर गिर कर मर जायेगा। किन्तु बहुत देर तक प्रतीक्षा करने के बाद और यह देख कर कि उसे असाधारण रूप से कुछ भी नहीं हुआ है, उन्होंने अपनी धारणा बदल दी और बोले, "यह तो कोई देवता है।"

[7]उस स्थान के पास ही उस द्वीप के प्रधान अधिकारी पबलियुस के खेत थे। उसने अपने घर ले जा कर हमारा स्वागत-सत्कार किया। बड़े मुक्त भाव से तीन दिन तक वह हमारी आवभगत करता रहा। [8]पबलियुस का पिता बिस्तर में था। उसे बुखार और पेचीश हो रही थी। पौलुस उससे मिलने भीतर गया। फिर प्रार्थना करने के बाद उसने उस पर अपने हाथ रखे और वह अच्छा हो गया। [9]इस घटना के बाद तो उस द्वीप के शेष सभी रोगी भी वहाँ आये और वे ठीक हो गये। [10]अनेक उपहारों द्वारा उन्होंने हमारा मान बढ़ाया और जब हम वहाँ से नाव पर आगे को चले तो उन्होंने सभी आवश्यक वस्तुएँ ला कर हमें दीं।

पौलुस का रोम जाना

[11]फिर सिकंदरिया के एक जहाज़ पर हम वही चल पड़े। इस द्वीप पर ही जहाज़ जाड़े में रुका हुआ था। जहाज़ के अगले भाग पर जुड़वाँ भाइयों का चिन्ह अंकित था। [12]फिर हम सरकुस जा पहुँचे जहाँ हम तीन दिन ठहरे।

[13]वहाँ से जहाज़ द्वारा हम रेगियुम पहुँचे और फिर अगले ही दिन दक्षिणी हवा चल पड़ी। सो अगले दिन हम पुतियुली आ गये। [14]वहाँ हमें कुछ बंधु मिले और उन्होंने हमें वहाँ सात दिन ठहरने को कहा और इस तरह हम रोम आ पहुँचे। [15]जब वहाँ के बंधुओं को हमारी सूचना मिली तो वे अप्पियुस का बाज़ार और तीन सराय' तक हमसे मिलने आये। पौलुस ने जब उन्हें देखा तो परमेश्वर को धन्यवाद देकर वह बहुत उत्साहित हुआ।

पौलुस का रोम आना

[16]जब हम रोम पहुँचे तो एक सिपाही की देखरेख में पौलुस को अपने आप अलग से रहने की अनुमति दे दी गयी।

[17]तीन दिन बाद पौलुस ने यहूदी नेताओं को बुलाया और उनके एकत्र हो जाने पर वह उनसे बोला, "हे भाइयो, चाहे मैंने अपनी जाति या अपने पूर्वजों के विधि-विधान के प्रतिकूल कुछ भी नहीं किया है, तो भी यरुशलेम में मुझे बंदी के रूप में रोमियों को सौंप दिया गया था। [18]उन्होंने मेरी जाँच पड़ताल की और मुझे छोड़ना चाहा क्योंकि ऐसा कुछ मैंने किया ही नहीं था जो मृत्युदण्ड के लायक होता[19]किन्तु जब यहूदियों ने आपत्ति की तो मैं कैसर से पुनर्विचार की प्रार्थना करने को विवश हो गया। इसलिये नहीं कि मैं अपने ही लोगों पर कोई आरोप लगाना चाहता था। [20]यही कारण है जिससे मैं तुमसे मिलना और बातचीत करना चाहता था क्योंकि यह इस्राएल का वह भरोसा ही है जिसके कारण मैं ज़ंजीर में बँधा हूँ।"

[21]यहूदी नेताओं ने पौलुस से कहा, "तुम्हारे बारे में यहूदिया से न तो कोई पत्र ही मिला है, और न ही वहाँ से आने वाले किसी भी भाई ने तेरा कोई समाचार दिया और न तेरे बारे में कोई बुरी बात कही। [22]किन्तु तेरे विचार क्या हैं, यह हम तुझसे सुनना चाहते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि लोग सब कहीं इस पंथ के विरोध में बोलते हैं।"

[23]सो उन्होंने उसके साथ एक दिन निश्चित किया। और फिर जहाँ वह ठहरा था, बड़ी संख्या में आकर वे लोग एकत्र हो गये। मूसा की व्यवस्था और नबियों के ग्रंथों से यीशु के विषय में उन्हें समझाने का जतन करते हुए उसने परमेश्वर के राज्य के बारे में अपनी साक्षी दी और समझाया। वह सुबह से शाम तक इसी में लगा रहा। [24]उसने जो कुछ कहा था, उससे कुछ तो सहमत हो गये किन्तु कुछ ने विश्वास नहीं किया। [25]फिर आपस में एक दूसरे से असहमत होते हुए वे वहाँ से जाने लगे। तब पौलुस ने एक यह बात और कही, "यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा पवित्र आत्मा ने तुम्हारे पूर्वजों से कितना ठीक कहा था,

[26] 'जाकर इन लोगों से कह दे:
तुम सुनोगे, पर न समझोगे कदाचित्!
तुम बस देखते ही देखते रहोगे
पर न बूझोगे कभी भी!
[27] क्योंकि इनका हृदय जड़ता से भर गया
कान इनके कठिनता से श्रवण करते
और इन्होंने अपनी आँखे बंद कर ली
क्योंकि कभी ऐसा न हो जाये कि ये
अपनी आँख से देखें, और कान से सुनें
और हृदय से समझे, और कदाचित् लौटें
मुझको स्वस्थ करना पड़े उनको।'

यशायाह 6:9-10

[28]"इसलिये तुम्हें जान लेना चाहिये कि परमेश्वर का यह उद्धार विधर्मियों के पास भेज दिया गया है। वे इसे सुनेंगे।" [29]["जब पौलुस ये बातें कह चुका तो आपस में विवाद करते हुए यहूदी बहाँ से चले गये।"]*

[30]वहाँ किराये के अपने मकान में पौलुस पूरे दो साल तक ठहरा। जो कोई भी उससे मिलने आता, वह उसका स्वागत करता। [31]वह परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह के विषय में उपदेश देता। वह इस कार्य को पूरी निर्भयता और बिना कोई बाधा माने किया करता था।

पद 29 'प्रेरितों के काम' की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 29 जोड़ा गया है।

रोमियों

1 पौलुस जो यीशु मसीह का दास है, जिसे परमेश्वर ने प्रेरित होने के लिए बुलाया, जिसे परमेश्वर के उस सुसमाचार के प्रचार के लिए चुना गया

[2]जिसकी पहले ही नबियों द्वारा पवित्र शास्त्रों में घोषणा कर दी गयी [3]जिसका सम्बन्ध पुत्र से है, जो शरीर से दाऊद का वंशज है [4]किन्तु पवित्र आत्मा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाए जाने के कारण जिसे सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र दर्शाया गया है, यही यीशु मसीह हमारा प्रभु है। [5]इसी के द्वारा मुझे अनुग्रह और प्रेरिताई मिली, ताकि सभी ग़ैर यहूदियों में, उसके नाम में, वह आस्था जो विश्वास से जन्म लेती है, पैदा की जा सके। [6]उनमें परमेश्वर के द्वारा यीशु मसीह का होने के लिये तुम लोग भी बुलाये गये हो।

[7]वह मैं, तुम सब के लिए, जो रोम में हो और परमेश्वर के प्यारे हो, जो परमेश्वर के पवित्र जन होने के लिए बुलाये गये हो, यह पत्र लिख रहा हूँ।

हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें उसका अनुग्रह और शांति मिले।

धन्यवाद की प्रार्थना

[8]सबसे पहले मैं यीशु मसीह के द्वारा तुम सब के लिये अपने परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहता हूँ। क्योंकि तुम्हारे विश्वास की चर्चा संसार में सब कहीं हो रही है। [9]प्रभु, जिसकी सेवा उसके पुत्र के सुसमाचार का उपदेश देते हुए मैं अपने हृदय से करता हूँ, प्रभु मेरा साक्षी है, कि मैं तुम्हें लगातार याद करता रहता हूँ। [10]अपनी प्रार्थनाओं में मैं सदा ही विनती करता रहता हूँ कि परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आने की मेरी यात्रा किसी तरह पूरी हो। [11]मैं बहुत इच्छा रखता हूँ क्योंकि मैं तुमसे मिल कर कुछ आत्मिक उपहार देना चाहता हूँ, जिससे तुम शक्तिशाली बन सको। [12]या मुझे कहना चाहिये कि मैं जब तुम्हारे बीच होऊँ, तब एक दूसरे के विश्वास से हम परस्पर प्रोत्साहित हों। [13]भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम्हें पता हो कि मैंने तुम्हारे पास आना बार-बार चाहा है ताकि जैसा फल मैंने ग़ैर यहूदियों में पाया है, वैसा ही तुमसे भी पा सकूँ, किन्तु अब तक बाधा आती ही रही।

[14]मुझ पर यूनानियों और ग़ैर यूनानियों, बुद्धिमानों और मूर्खों सभी का क़र्ज़ है। [15]इसीलिये मैं तुम रोमवासियों को भी सुसमाचार का उपदेश देने को तैयार हूँ।

[16]मैं सुसमाचार के लिए शर्मिंदा नहीं हूँ क्योंकि उसमें पहले यहूदी और फिर ग़ैर यहूदी-जो भी उसमें विश्वास रखता है-उसके उद्धार के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है। [17]क्योंकि सुसमाचार में यह दर्शाया गया है, परमेश्वर मनुष्य को अपने प्रति सही कैसे बनाता है। यह आदि से अंत तक विश्वास पर टिका है जैसा कि शास्त्र में लिखा है, "धर्मी मनुष्य विश्वास से जीवित रहेगा।"

सबने पाप किया है

[18]उन लोगों के-जो सत्य को अधर्म से दबाते हैं, बुरे कर्मों और हर बुराई पर स्वर्ग से परमेश्वर का कोप प्रकट होगा। [19]और ऐसा हो रहा है क्योंकि परमेश्वर के बारे में वे पूरी तरह जानते हैं क्योंकि परमेश्वर ने इसे उन्हें जनाया है। [20]जब से संसार की रचना हुई उसकी अदृश्य-विशेषताएँ अनन्त शक्ति और परमेश्वरत्व-साफ साफ दिखाई देते हैं क्योंकि उन वस्तुओं से वे पूरी तरह जानी जा सकती हैं, जो परमेश्वर ने रचीं। इसलिए लोगों के पास कोई बहाना नहीं। [21]यद्यपि वे परमेश्वर को जानते हैं किन्तु वे उसे परमेश्वर के रूप में सम्मान या धन्यवाद नहीं देते। बल्कि वे अपने विचारों में निरर्थक हो गये। और उनके जड़ मन अन्धेरे से भर गये। [22]वे बुद्धिमान होने का दावा करके मूर्ख ही रह गये। [23]और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्यों, चिड़ियाओं,

पशुओं और साँपो से मिलती जुलती मूर्तियों में उन्होंने ढाल दिया।

[24]इसीलिये परमेश्वर ने उन्हें मन की बुरी इच्छाओं के हाथों सौंप दिया। वे दुराचार में पड़ कर एक दूसरे के शरीरों का अनादर करने लगे। [25]उन्होंने झूठ के साथ परमेश्वर के सत्य का सौदा किया और वे सृष्टि के बनाने वाले को छोड़ कर उसकी बनायी सृष्टि की उपासना सेवा करने लगे। परमेश्वर धन्य है। आमीन।

[26]इसलिए परमेश्वर ने उन्हें तुच्छ वासनाओं के हाथों सौंप दिया। उनकी स्त्रियाँ स्वाभाविक यौन सम्बन्धों की बजाय अस्वाभाविक यौन सम्बन्ध रखने लगीं। [27]इसी तरह पुरुषों ने स्त्रियों के साथ स्वाभाविक संभोग छोड़ दिया और वे आपस में ही वासना में जलने लगे। और पुरुष परस्पर एक दूसरे के साथ बुरे कर्म करने लगे। उन्हें अपने भ्रष्टाचार का यथोचित फल भी मिलने लगा।

[28]और क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को पहचानने से मना कर दिया सो परमेश्वर ने उन्हें कुबुद्धि के हाथों सौंप दिया। और ये ऐसे अनुचित काम करने लगे जो नहीं करने चाहिये थे। [29]वे हर तरह के अधर्म, पाप, लालच और वैर से भर गये। वे डाह, हत्या, लड़ाई–झगड़े, छल–छद्म और दुर्भावना से भरे हैं। वे दूसरों का सदा अहित सोचते हैं। वे कहानियाँ घड़ते रहते हैं। [30]वे पर निन्दक हैं, और परमेश्वर से घृणा करते हैं। वे उद्दण्ड हैं, अहंकारी हैं, बड़बोला हैं, बुराई के जन्मदाता हैं और माता–पिता की आज्ञा नहीं मानते। [31]वे मूढ़, वचन–भंग करने वाले, प्रेम–रहित और निर्दय हैं। [32]चाहे वे परमेश्वर की धर्म–पूर्ण विधि को जानते हैं जो बताती है कि जो ऐसी बातें करते हैं, वे मौत के योग्य हैं, फिर भी वे न केवल उन कामों को करते हैं, बल्कि वैसा करने वालों का समर्थन भी करते हैं।

तुम लोग भी पापी हो

2 सो, न्याय करने वाले मेरे मित्र तू चाहे कोई भी है, तेरे पास कोई बहाना नहीं है क्योंकि जिस बात के लिये तू किसी दूसरे को दोषी मानता है, उसी से तू अपने आपको भी अपराधी सिद्ध करता है क्योंकि तू जिन कर्मों का न्याय करता है उन्हें आप भी करता है। [2]अब हम यह जानते हैं कि जो लोग ऐसे काम करते हैं उन्हें परमेश्वर का उचित दण्ड मिलता है। [3]किन्तु अरे मेरे मित्र क्या तू सोचता है कि तू जिन कामों के लिए दूसरों को अपराधी ठहराता है और अपने आप वैसे ही काम करता है तो क्या तू सोचता है कि तू परमेश्वर के न्याय से बच जायेगा। [4]या तू उसके महान अनुग्रह, सहनशक्ति और धैर्य को हीन समझता है? और इस बात की उपेक्षा करता है कि उसकी करुणा तुझे प्रायश्चित्त की तरफ़ ले जाती है। [5]किन्तु अपनी कठोरता और कभी पछतावा नहीं करने वाले मन के कारण उसके क्रोध को अपने लिए उस दिन के वास्ते इकट्ठा कर रहा है जब परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रकट होगा। [6]परमेश्वर हर किसी को उसके कर्मों के अनुसार फल देगा। [7]जो लगातार अच्छे काम करते हुए महिमा, आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह बदले में अनन्त जीवन देगा। [8]किन्तु जो अपने स्वार्थीपन से सत्य पर नहीं चल कर अधर्म पर चलते हैं उन्हें बदले में क्रोध और प्रकोप मिलेगा। [9]हर उस मनुष्य पर दुःख और संकट आएँगे जो बुराई पर चलता है। पहले यहूदी पर और फिर ग़ैर यहूदी पर। [10]और जो कोई अच्छाई पर चलता है उसे महिमा, आदर और शांति मिलेगी। पहले यहूदी को और फिर ग़ैर यहूदी को [11]क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।

[12]जिन्होंने व्यवस्था को पाये बिना पाप किये, वे व्यवस्था से बाहर रहते हुए नष्ट होंगे। और जिन्होंने व्यवस्था में रहते हुए पाप किया उन्हें व्यवस्था के अनुसार ही दण्ड मिलेगा। [13]क्योंकि वे जो केवल व्यवस्था की कथा सुनते हैं परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं हैं। बल्कि जो व्यवस्था पर चलते हैं वे ही धर्मी ठहराये जायेंगे। [14]सो जब ग़ैर यहूदी लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं है स्वभाव से ही व्यवस्था की बातों पर चलते हैं तो चाहे उनके पास व्यवस्था नहीं है तो भी वे अपनी व्यवस्था आप हैं। [15]वे अपने मन पर लिखे हुए, व्यवस्था के कर्मों को दिखाते हैं। उनका विवेक भी इसकी ही साक्षी देता है और उनका मानसिक संघर्ष उन्हें अपराधी बताता है या निर्दोष कहता है। [16]ये बातें उस दिन होंगी जब परमेश्वर मनुष्य की छुपी बातों का, जिसका मैं उपदेश देता हूँ उस सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा न्याय करेगा।

यहूदी और व्यवस्था

[17]किन्तु यदि तू अपने आप को यहूदी कहता है और व्यवस्था में तेरा विश्वास है और अपने परमेश्वर का

तुझे अभिमान है [18]और तू उसकी इच्छा को जानता है और उत्तम बातों को ग्रहण करता है, क्योंकि व्यवस्था से तुझे सिखाया गया है, [19]तू यह मानता है कि तू अंधों का अगुआ है, जो अंधेरे में भटक रहे हैं उनके लिए तू प्रकाश है, [20]अबोध लोगों को सिखाने वाला है, बच्चों का उपदेशक है क्योंकि व्यवस्था में तुझे साक्षात् ज्ञान और सत्य ठोस रूप में प्राप्त हैं [21]तो तू जो औरों को सिखाता है, अपने को क्यों नहीं सिखाता। तू जो चोरी नहीं करने का उपदेश देता है, स्वयं चोरी क्यों करता है? [22]तू जो कहता है व्यभिचार नहीं करना चाहिये, स्वयं व्यभिचार क्यों करता है? तू जो मूर्तियों से घृणा करता है मंदिरों का धन क्यों छीनता है? [23]तू जो व्यवस्था का अभिमानी है, व्यवस्था को तोड़ कर परमेश्वर का निरादर क्यों करता है? [24]"तुम्हारे कारण ही ग़ैर यहूदियों में परमेश्वर के नाम का अपमान होता है।" जैसा कि शास्त्र में लिखा है।

[25]यदि तुम व्यवस्था का पालन करते हो तभी ख़तने का महत्त्व है पर यदि तुम व्यवस्था को तोड़ते हो तो तुम्हारा ख़तना रहित होने के समान ठहरा। [26]यदि किसी का ख़तना नहीं हुआ है और वह व्यवस्था के पवित्र नियमों पर चलता है तो क्या उसके ख़तना रहित होने को भी ख़तना न गिना जाये? [27]वह मनुष्य जिसका शरीर से ख़तना नहीं हुआ है और जो व्यवस्था का पालन करता है, तुझे अपराधी ठहरायेगा। जिसके पास लिखित व्यवस्था का विधान है, और जिसका ख़तना भी हुआ है, और जो व्यवस्था को तोड़ता है,

[28]जो बाहर से ही यहूदी है, वह वास्तव में यहूदी नहीं है। शरीर का ख़तना वास्तव में ख़तना नहीं है। [29]सच्चा यहूदी वही है जो भीतर से यहूदी है। सच्चा ख़तना आत्मा द्वारा मन का ख़तना है, न कि लिखित व्यवस्था का। ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा मनुष्य नहीं बल्कि परमेश्वर की ओर से की जाती है।

3 सो यहूदी होने का क्या लाभ या ख़तने का क्या मूल्य? [2]हर प्रकार से बहुत कुछ। क्योंकि सबसे पहले परमेश्वर का उपदेश तो उन्हें ही सौंपा गया। [3]यदि उनमें से कुछ विश्वासघाती हो भी गये तो क्या है? क्या उनका विश्वासघातीपन परमेश्वर की विश्वासपूर्णता को बेकार कर देगा? [4]निश्चय ही नहीं, यदि हर कोई झूठा भी है तो भी परमेश्वर सच्चा ठहरेगा। जैसा कि शास्त्र में लिखा है:

"ताकि जब तू कहे तू उचित सिद्ध हो
और जब तेरा न्याय हो, तू विजय पाये।"

भजन संहिता 51:4

[5]सो यदि हमारी अधार्मिकता परमेश्वर की धार्मिकता सिद्ध करे तो हम क्या कहें? क्या यह कि वह अपना कोप हम पर प्रकट करके अन्याय नहीं करता? (मैं एक मनुष्य के रूप में अपनी बात कह रहा हूँ।) [6]निश्चय ही नहीं, नहीं तो वह जगत का न्याय कैसे करेगा।

[7]किन्तु तुम कह सकते हो: "जब मेरी मिथ्यापूर्णता से परमेश्वर की सत्यपूर्णता और अधिक उजागर होती है तो इससे उसकी महिमा ही होती है, फिर भी मैं दोषी करार क्यों दिया जाता हूँ?" [8]और फिर क्यों न कहें: "आओ! बुरे काम करें ताकि भलाई प्रकट हो।" जैसा कि हमारे बारे में निन्दा करते हुए कुछ लोग हम पर आरोप लगाते हैं कि हम ऐसा कहते हैं। ऐसे लोग दोषी करार दिये जाने योग्य हैं। वे सभी दोषी हैं

[9]तो फिर क्या हुआ? क्या हम यहूदी ग़ैर यहूदियों से किसी भी तरह अच्छे हैं, नहीं बिल्कुल नहीं। क्योंकि हम यह दर्शा चुके हैं कि चाहे यहूदी हों, चाहे ग़ैर यहूदी, सभी पाप के वश में हैं। [10]शास्त्र कहता है:

"कोई भी धर्मी नहीं, एक भी!
[11] कोई समझदार नहीं, एक भी!
कोई ऐसा नहीं, जो प्रभु को खोजता!
[12] सब के सब भटके हैं एक से खोटे हुए,
साथ–साथ सब के सब, कोई भी यहाँ पर
दया तो दिखाता नहीं, एक भी नहीं!"

भजन संहिता 14:1−3

[13] "उनके मुँह खुली कब्र से बने हैं
वे अपनी जबान से छल करते हैं।"

भजन संहिता 5:9

"उनके होंठों पर नाग विष रहता है"

भजन संहिता 140:3

[14] "शाप से–कटुता से मुँह भरे रहते हैं।"

भजन संहिता 10:7

[15] "हत्या करने को वे हरदम उतावले रहते है।
[16] वे जहाँ कहीं जाते नाश ही
करते हैं, संताप देते हैं।
[17] उनको शांति के मार्ग का पता नहीं।"

यशायाह 59:7−8

18 "उनकी आँखों में प्रभु का भय नहीं है।"

भजन संहिता 36:1

[19]अब हम यह जानते हैं कि व्यवस्था में जो कुछ कहा गया है, वह उन को सम्बोधित है जो व्यवस्था के अधीन हैं। ताकि हर मुँह को बन्द किया जा सके और सारा जगत परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे। [20]व्यवस्था के कामों से कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी सिद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि व्यवस्था से जो कुछ मिलता है, वह है पाप की पहचान करना।

परमेश्वर मनुष्यों को धर्मी कैसे बनाता है

[21]किन्तु अब वास्तव में मनुष्य के लिए यह दर्शाया गया है कि परमेश्वर व्यवस्था के बिना ही उसे अपने प्रति सही कैसे बनाता है। निश्चय ही व्यवस्था और नबियों ने इसकी साक्षी दी है। [22]सभी विश्वासियों के लिये यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट की गयी है बिना किसी भेदभाव के। [23]क्योंकि सभी ने पाप किये हैं और सभी परमेश्वर की महिमा से विहीन हैं। [24]किन्तु यीशु मसीह में संपन्न किए गए अनुग्रह के छुटकारे के द्वारा उसके अनुग्रह से वे एक सेंतमेत के उपहार के रूप में धर्मी ठहराये गये हैं। [25]परमेश्वर ने यीशु मसीह को, उसमें विश्वास के द्वारा पापों से छुटकारा दिलाने के लिये, लोगों को दिया। उसने यह काम यीशु मसीह के बलिदान के रूप में किया। ऐसा यह प्रमाणित करने के लिए किया गया कि परमेश्वर सहनशील है क्योंकि उसने पहले उन्हें उनके पापों का दंड दिये बिना छोड़ दिया था [26]आज भी अपना न्याय दर्शाने के लिए कि वह न्यायपूर्ण है और न्यायकर्ता भी है; उनका जो यीशु मसीह में विश्वास रखते हैं।

[27]तो फिर घमण्ड करना कहाँ रहा? वह तो समाप्त हो गया। भला कैसे? क्या उस विधि से जिसमें व्यवस्था जिन कर्मों की अपेक्षा करती है, उन्हें किया जाता है? नहीं, बल्कि उस विधि से जिसमें विश्वास समाया है। [28]कोई व्यक्ति व्यवस्था के कामों के अनुसार चल कर नहीं बल्कि विश्वास के द्वारा ही धर्मी बन सकता है। [29]या परमेश्वर क्या बस यहूदियों का है? क्या वह ग़ैर यहूदियों का नहीं है? हाँ वह ग़ैर यहूदियों का भी है। [30]क्योंकि परमेश्वर एक है। वही उनको जिनका उनके विश्वास के आधार पर ख़तना हुआ है, और उनको जिनका ख़तना नहीं हुआ है उसी विश्वास के द्वारा, धर्मी ठहरायेगा। [31]सो क्या हम विश्वास के आधार पर व्यवस्था को व्यर्थ ठहरा रहे हैं? निश्चय ही नहीं। बल्कि हम तो व्यवस्था को और अधिक शक्तिशाली बना रहे हैं।

इब्राहीम का उदाहरण

4 तो फिर हम क्या कहें कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को इसमें क्या मिला? [2]क्योंकि यदि इब्राहीम को उसके कामों के कारण धर्मी ठहराया जाता है तो उसके गर्व करने की बात थी। किन्तु परमेश्वर के सामने वह वास्तव में गर्व नहीं कर सकता। [3]पवित्र शास्त्र क्या कहता है? "इब्राहीम ने परमेश्वर में विश्वास किया और वह विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया"*

[4]काम करने वाले को मज़दूरी देना कोई दान नहीं है, वह तो उसका अधिकार है। [5]किन्तु यदि कोई व्यक्ति काम करने की बजाय उस परमेश्वर में विश्वास करता है, जो पापी को भी छोड़ देता है; तो उसका विश्वास ही उसके धार्मिकता का कारण बन जाता है। [6]ऐसे ही दाऊद भी उसे धन्य मानता है जिसे कामों के आधार के बिना ही परमेश्वर धर्मी मानता है। वह जब कहता है:

7 "धन्य हैं वे जिनके व्यवस्था रहित कामों को
क्षमा मिली और जिनके पापों को
ढक दिया गया!

8 धन्य है वह पुरुष जिसके पापों को
परमेश्वर ने गिना नहीं है!"

भजन संहिता 32:1−2

[9]तब क्या यह धन्यपन केवल उन्हीं के लिये हैं जिनका ख़तना हुआ है, या उनके लिए भी जिनका ख़तना नहीं हुआ। (हाँ, यह उन पर भी लागू होता है जिनका ख़तना नहीं हुआ) क्योंकि हमने कहा है इब्राहीम का विश्वास ही उसके लिये धार्मिकता गिना गया। [10]तो यह कब गिना गया? जब उसका ख़तना हो चुका था या जब वह बिना ख़तने का था। नहीं ख़तना होने के बाद नहीं बल्कि ख़तना होने की स्थिति से पहले। [11]और फिर एक चिह्न के रूप में उसने ख़तना ग्रहण किया। जो उस विश्वास के परिणामस्वरूप धार्मिकता की एक छाप थी जो उसने उस समय दर्शाया था जब उसका ख़तना नहीं हुआ था। इसीलिए वह उन सभी का पिता है जो यद्यपि बिना ख़तने के हैं

इब्राहीम ... गया उत्पत्ति 15:6

किन्तु विश्वासी हैं। (इसलिए वे भी धर्मी गिने जाएँगे) [12]और वह उनका भी पिता है जिनका ख़तना हुआ है किन्तु जो हमारे पूर्वज इब्राहीम के विश्वास का जिसे उसने ख़तना होने से पहले प्रकट किया था, अनुसरण करते हैं।

विश्वास और परमेश्वर का वचन

[13]इब्राहीम या उसके वंशजों को यह वचन कि वे संसार के उत्तराधिकारी होंगे, व्यवस्था से नहीं मिला था बल्कि उस धार्मिकता से मिला था जो विश्वास के द्वारा उत्पन्न होती है। [14]यदि जो व्यवस्था को मानते हैं, वे जगत के उत्तराधिकारी हैं तो विश्वास का कोई अर्थ नहीं रहता और वचन भी बेकार हो जाता है। [15]लोगों द्वारा व्यवस्था का पालन नहीं किये जाने से परमेश्वर का क्रोध उपजता है किन्तु जहाँ व्यवस्था ही नहीं है वहाँ व्यवस्था का तोड़ना ही क्या?

[16]इसीलिए सिद्ध है कि परमेश्वर का वचन विश्वास का फल है और यह सेंतमेत में ही मिलता है। इस प्रकार उसका वचन इब्राहीम के सभी वंशजों के लिए सुनिश्चित है; न केवल उनके लिये जो व्यवस्था को मानते हैं बल्कि उन सब के लिये भी जो इब्राहीम के समान विश्वास रखते हैं। वह हम सब का पिता है। [17]शास्त्र बताता है, "मैंने तुझे (इब्राहीम) अनेक राष्टों का पिता बनाया।"* उस परमेश्वर की दृष्टि में वह इब्राहीम हमारा पिता है जिस पर उसका विश्वास है। परमेश्वर जो मरे हुए को जीवन देता है और जो नहीं है, उसे अस्तित्व देता है।

[18]सभी मानवीय आशाओं के विरुद्ध अपने मन में आशा सँजोये हुए इब्राहीम ने उसमें विश्वास किया, इसीलिए वह कहे गये के अनुसार अनेक राष्टों का पिता बना। "तेरे अनगिनत वंशज होंगे।"* [19]अपने विश्वास को बिना डगमगाये और यह जानते हुए भी कि उसकी देह सौ साल की बूढ़ी मरियल हो चुकी है और सारा बाँझ है, [20]परमेश्वर के वचन में विश्वास बनाये रखा। इतना ही नहीं, विश्वास को और मज़बूत करते हुए परमेश्वर को महिमा दी। [21]उसे पूरा भरोसा था कि परमेश्वर ने उसे जो वचन दिया है, उसे पूरा करने में वह पूरी तरह समर्थ है। [22]इसलिये, "यह विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया।"* [23]शास्त्र का यह वचन कि विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया, न केवल उसके लिये है, [24]बल्कि हमारे लिये भी है परमेश्वर हमें, जो उसमें विश्वास रखते हैं, धार्मिकता स्वीकार करेगा। उसने हमारे प्रभु यीशु को फिर से जीवित किया। [25]यीशु जिसे हमारे पापों के लिए मारे जाने को सौंपा गया और हमें धर्मी बनाने के लिए, मरे हुओं में से पुन: जीवित किया गया।

परमेश्वर का प्रेम

5 क्योंकि हम अपन विश्वास के कारण परमेश्वर के लिए धर्मी हो गये हैं, सो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल हो गया है। [2]उसी के द्वारा विश्वास के कारण उसकी जिस अनुग्रह में हमारी स्थिति है, उस तक हमारी पहुँच हो गयी है। और हम परमेश्वर की महिमा का कोई अंश पाने की आशा का आनन्द लेते हैं। [3]इतना ही नहीं, हम अपनी विपत्तियों में भी आनन्द लेते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि विपत्ति धीरज को जन्म देती है। [4]और धीरज से परखा हुआ चरित्र निकलता है। परखा हुआ चरित्र आशा को जन्म देता है। [5]और आशा हमें निराश नहीं होने देती क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हमें दिया गया है, परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय में उँडेल दिया गया है।

[6]क्योंकि हम जब अभी निर्बल ही थे तो उचित समय पर हम भक्तिहीनों के लिए मसीह ने अपना बलिदान दिया। [7]अब देखो, किसी धर्मी मनुष्य के लिए भी कोई कठिनाई से मरता है। किसी अच्छे आदमी के लिए अपने प्राण त्यागने का साहस तो कोई कर भी सकता है। [8]पर परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम दिखाया। जब कि हम तो पापी ही थे; किन्तु यीशु ने हमारे लिए प्राण त्यागे।

[9]क्योंकि अब जब हम उसके लहू के कारण धर्मी हो गये हैं तो अब उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से अवश्य ही बचाये जायेंगे। [10]क्योंकि जब हम उसके बैरी थे उसने अपनी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से हमारा मेलमिलाप कराया तो अब तो जब हमारा मेलमिलाप हो चुका है उसके जीवन से हमारी और कितनी अधिक रक्षा होगी। [11]इतना ही नहीं है हम अपने प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर की भक्ति पाकर अब उसमें आनन्द लेते हैं।

शास्त्र बताता ... बनाया उत्पत्ति 17:5
तेरें ... होंगे उत्पत्ति 15:5
यह विश्वास ... गया उत्पत्ति 15:6

आदम और यीशु

[12]इसीलिये एक व्यक्ति (आदम) के द्वारा जैसे धरती पर पाप आया और पाप से मृत्यु और इस प्रकार मृत्यु सब लोगों के लिए आयी क्योंकि सभी ने पाप किये थे। [13]अब देखो व्यवस्था के आने से पहले जगत में पाप था किन्तु जब तक कोई व्यवस्था नहीं होती किसी का भी पाप नहीं गिना जाता [14]किन्तु आदम से लेकर मूसा के समय तक मौत सब पर राज करती रही। मौत उन पर भी वैसे ही हावी रही जिन्होंने पाप नहीं किये थे जैसे आदम पर। आदम भी वैसा ही था जैसा वह जो (मसीह) आने वाला था। [15]किन्तु परमेश्वर का वरदान आदम के अपराध के जैसा नहीं था क्योंकि यदि उस एक व्यक्ति के अपराध के कारण सभी लोगों की मृत्यु हुई तो उस एक व्यक्ति यीशु मसीह की करुणा के कारण मिले परमेश्वर के अनुग्रह और वरदान तो सभी लोगों की भलाई के लिए कितना कुछ और अधिक हैं। [16]और यह वरदान भी उस पापी के द्वारा लाए गए परिणाम के समान नहीं है क्योंकि दंड के हेतु न्याय का आगमन एक अपराध के बाद हुआ था। किन्तु यह वरदान, जो दोष–मुक्ति की ओर ले जाता है, अनेक अपराधों के बाद आया था। [17]अत: यदि एक व्यक्ति की उस अपराध के कारण मृत्यु का शासन हो गया। तो जो परमेश्वर के अनुग्रह और उसके वरदान की प्रचुरता का–जिसमें धर्मी का निवास है–उपभोग कर रहे हैं–वे तो जीवन में उस एक व्यक्ति यीशु मसीह के द्वारा और भी अधिक शासन करेंगे।

[18]सो जैसे एक अपराध के कारण सभी लोगों को दोषी ठहराया गया, वैसे ही एक धर्म के काम के द्वारा सब के लिए परिणाम में अनन्त जीवन प्रदान करने वाली धार्मिकता मिली। [19]अत: जैसे उस एक व्यक्ति के आज्ञा न मानने के कारण सब लोग पापी बना दिये गये वैसे ही उस एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता के कारण सभी लोग धर्मी भी बना दिये जायेंगे। [20]व्यवस्था का आगमन इसलिये हुआ कि अपराध बढ़ पायें। किन्तु जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ परमेश्वर का अनुग्रह और भी अधिक बढ़ा। [21]ताकि जैसे मृत्यु के द्वारा पाप ने राज्य किया ठीक वैसे ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन को लाने के लिये परमेश्वर की अनुग्रह धार्मिकता के द्वारा राज्य करे।

पाप के लिए मृत किन्तु मसीह में जीवित

6 तो फिर हम क्या कहें? क्या हम पाप ही करते रहें ताकि परमेश्वर का अनुग्रह बढ़ता रहे? [2]निश्चय ही नहीं। हम जो पाप के लिए मर चुके हैं पाप में ही कैसे जियेंगे? [3]या क्या तुम नहीं जानते कि हम, जिन्होंने यीशु मसीह में बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु का ही बपतिस्मा लिया है। [4]सो उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेने से हम भी उसके साथ ही गाड़ दिये गये थे ताकि जैसे परम पिता की महिमामय शक्ति के द्वारा यीशु मसीह को मरे हुओं में से जिला दिया गया था, वैसे ही हम भी एक नया जीवन पायें।

[5]क्योंकि जब हम उसकी मृत्यु में उसके साथ रहे हैं तो उसके जैसे पुनरुत्थान में भी उसके साथ रहेंगे। [6]हम यह जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तित्त्व यीशु के साथ ही क्रूस पर चढ़ा दिया गया था ताकि पाप से भरे हमारे शरीर नष्ट हो जायें। और हम आगे के लिये पाप के दास न बने रहें। [7]क्योंकि जो मर गया वह पाप के बन्धन से छुटकारा पा गया।

[8]और क्योंकि हम मसीह के साथ मर गये, सो हमारा विश्वास है कि हम उसी के साथ जियेंगे भी। [9]हम जानते हैं कि मसीह जिसे मरे हुओं में से जीवित किया था अमर है। उस पर मौत का वश कभी नहीं चलेगा। [10]जो मौत वह मरा है, वह सदा के लिए पाप के लिए मरा है किन्तु जो जीवन वह जी रहा है, वह जीवन परमेश्वर के लिए है। [11]इसी तरह तुम अपने लिए भी सोचो कि तुम पाप के लिए मर चुके हो किन्तु यीशु मसीह में परमेश्वर के लिए जीवित हो।

[12]इसलिए तुम्हारे नाशवान् शरीरों के ऊपर पाप का वश न चले। ताकि तुम पाप की इच्छाओं पर कभी न चलो। [13]अपने शरीर के अंगों को अधर्म की सेवा के लिए पाप के हवाले न करो बल्कि मरे हुओं में से जी उठने वालों के समान परमेश्वर के हवाले कर दो। और अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता की सेवा के साधन के रूप में परमेश्वर के हवाले कर दो। [14]तुम पर पाप का शासन नहीं होगा क्योंकि तुम व्यवस्था के सहारे नहीं जीते हो बल्कि परमेश्वर की अनुग्रह के सहारे जीते हो।

धार्मिकता के सेवक

[15]तो हम क्या करें? क्या हम पाप करें? क्योंकि हम व्यवस्था के अधीन नहीं, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के

अधीन जीते हैं। निश्चय ही नहीं। [16]क्या तुम नहीं जानते कि जब तुम किसी की आज्ञा मानने के लिए अपने आप को दास के रूप में उसे सौंपते हो तो तुम दास हो। फिर चाहे तुम पाप के दास बनो, जो तुम्हें मार डालेगा और चाहे आज्ञाकारिता के, जो तुम्हें धार्मिकता की तरफ ले जायेगी। [17]किन्तु प्रभु का धन्यवाद है कि यद्यपि तुम पाप के दास थे, तुमने अपने मन से उन उपदेशों की रीति को माना जो तुम्हें सौंपे गये थे। [18]तुम्हें पापों से छुटकारा मिल गया और तुम धार्मिकता के सेवक बन गए हो। [19](मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ जिसे सभी लोग समझ सकें क्योंकि उसे समझना तुम लोगों के लिए कठिन है।) क्योंकि तुमने अपने शरीर के अंगों को अपवित्रता और व्यवस्था हीनता के आगे उनके दास के रूप में सौंप दिया था जिससे व्यवस्था हीनता पैदा हुई, अब तुम लोग ठीक वैसे ही अपने शरीर के अंगों को दास के रूप में धार्मिकता के हाथों सौंप दो ताकि संपूर्ण समर्पण उत्पन्न हो।

[20]क्योंकि तुम जब पाप के दास थे तो धार्मिकता की ओर से तुम पर कोई बन्धन नहीं था। [21]और देखो उस समय तुम्हें कैसा फल मिला? जिसके लिए आज तुम शर्मिन्दा हो। जिसका अंतिम परिणाम मृत्यु है। [22]किन्तु अब तुम्हें पाप से छुटकारा मिल चुका है और परमेश्वर के दास बना दिये गये हो तो जो खेती तुम काट रहे हो, तुम्हें परमेश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण में ले जायेगी। जिसका अंतिम परिणाम है अनन्त जीवन। [23]क्योंकि पाप का मूल्य तो बस मृत्यु ही है जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन, परमेश्वर का सेंतमेतका वरदान है।

विवाह का दृष्टान्त

7 हे भाइयो, क्या तुम नहीं जानते (मैं उन लोगों से कह रहा हूँ जो व्यवस्था को जानते हैं) कि व्यवस्था का शासन किसी व्यक्ति पर तभी तक है जब तक वह जीता है? [2]उदाहरण के लिए एक विवाहिता स्त्री अपने पति के साथ विधान के अनुसार तभी तक बँधी है जब तक वह जीवित है किन्तु यदि उसका पति मर जाता है, तो वह विवाह सम्बन्धी नियमों से छूट जाती है। [3]पति के जीते जी यदि किसी दूसरे पुरुष से सम्बन्ध जोड़े तो उसे व्यभिचारिणी कहा जाता है किन्तु यदि उसका पुरुष मर जाता है तो विवाह सम्बन्धी नियम उस पर नहीं लगता और इसीलिये यदि वह दूसरे पुरुष की हो जाती है तो भी वह व्यभिचारिणी नहीं है।

[4]हे मेरे भाइयो, ऐसे ही मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये तुम भी मर चुके हो। इसीलिये अब तुम भी किसी दूसरे से नाता जोड़ सकते हो। उससे जिसे मरे हुओं में से पुनर्जीवित किया गया है। ताकि हम परमेश्वर के लिए कर्मों की उत्तम खेती कर सकें। [5]क्योंकि जब हम मानव स्वभाव के अनुसार जी रहे थे, हमारी पाप-पूर्ण वासनाएँ जो व्यवस्था के द्वारा आयी थीं, हमारे अंगों पर हावी थीं। ताकि हम कर्मों की ऐसी खेती करें जिसका अंत मौत में होता है। [6]किन्तु अब हमें व्यवस्था से छुटकारा दे दिया गया है क्योंकि जिस व्यवस्था के अधीन हमें बंदी बनाया हुआ था, हम उसके लिये मर चुके हैं। और अब पुरानी लिखित व्यवस्था से नहीं, बल्कि आत्मा की नयी रीति से प्रेरित हो कर हम अपने स्वामी परमेश्वर की सेवा करते हैं।

पाप से लड़ाई

[7]तो फिर हम क्या कहें? क्या हम कहें कि व्यवस्था पाप है? निश्चय ही नहीं। जो भी हो, यदि व्यवस्था नहीं होती तो मैं पहचान ही नहीं पाता कि पाप क्या है? यदि व्यवस्था नहीं बताती, "जो अनुचित है उसकी चाहत मत करो" तो निश्चय ही मैं पहचान ही नहीं पाता कि अनुचित इच्छा क्या है।" [8]किन्तु पाप ने मौका मिलते ही व्यवस्था का लाभ उठाते हुए मुझमें हर तरह की ऐसी इच्छाएँ भर दीं जो अनुचित के लिए थीं। व्यवस्था के अभाव में पाप तो मर गया। [9]एक समय मैं बिना व्यवस्था के ही जीवित था, किन्तु जब व्यवस्था का आदेश आया तो पाप जीवन में उभर आया। [10]और मैं मर गया। वही व्यवस्था का आदेश जो जीवन देने के लिए था, मेरे लिये मृत्यु ले आया। [11]क्योंकि पाप को अवसर मिल गया और उसने उसी व्यवस्था के आदेश के द्वारा मुझे छला और उसी के द्वारा मुझे मार डाला।

[12]इस तरह व्यवस्था पवित्र है और वह विधान पवित्र, धर्मी और उत्तम है। [13]तो फिर क्या इसका यह अर्थ है कि जो उत्तम है, वही मेरी मृत्यु का कारण बना? निश्चय ही नहीं। बल्कि पाप उस उत्तम के द्वारा मेरे लिए मृत्यु का इसलिये कारण बना कि पाप को पहचाना जा सके। और व्यवस्था के विधान के द्वारा उसकी भयानक पाप-पूर्णता दिखाई जा सके।

मानसिक द्वन्द्व

[14]क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है और मैं हाड़–माँस का भौतिक मनुष्य हूँ जो पाप की दासता के लिए बिका हुआ है। [15]मैं नहीं जानता मैं क्या कर रहा हूँ क्योंकि मैं जो करना चाहता हूँ, नहीं करता, बल्कि मुझे वह करना पड़ता है, जिससे मैं घृणा करता हूँ। [16]और यदि मैं वही करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो मैं स्वीकार करता हूँ कि व्यवस्था उत्तम है। [17]किन्तु वास्तव में वह मैं नहीं हूँ जो यह सब कुछ कर रहा है, बल्कि यह मेरे भीतर बसा पाप है। [18]हाँ, मैं जानता हूँ कि मुझ में यानी मेरे भौतिक मानव शरीर में किसी अच्छी वस्तु का वास नहीं है। नेकी करने की इच्छा तो मुझ में है पर नेक काम मुझ से नहीं होते। [19]क्योंकि जो अच्छा काम मैं करना चाहता हूँ, मैं नहीं करता बल्कि जो मैं नहीं करना चाहता, वे ही बुरे काम मैं करता हूँ। [20]और यदि मैं वही काम करता हूँ जिन्हें करना नहीं चाहता तो वास्तव में उनका कर्त्ता जो उन्हें कर रहा है, मैं नहीं हूँ, बल्कि वह पाप है जो मुझ में बसा है।

[21]इसीलिए मैं अपने में यह नियम पाता हूँ कि मैं जब अच्छा करना चाहता हूँ, तो अपने में बुराई को ही पाता हूँ। [22]अपनी अन्तरात्मा में मैं परमेश्वर की व्यवस्था को सहर्ष मानता हूँ। [23]पर अपने शरीर में मैं एक दूसरे ही नियम को काम करते देखता हूँ यह मेरे चिन्तन पर शासन करने वाली व्यवस्था से युद्ध करता है और मुझे पाप की व्यवस्था का बंदी बना लेता है। यह व्यवस्था मेरे शरीर में क्रियाशील है। [24]मैं एक अभागा इंसान हूँ। मुझे इस शरीर से, जो मौत का निवाला है, छुटकारा कौन दिलायेगा? [25]अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ! सो अपने हाड़ माँस के शरीर से मैं पाप की व्यवस्था का गुलाम होते हुए भी अपनी बुद्धि से परमेश्वर की व्यवस्था का सेवक हूँ।

आत्मा से जीवन

8 इस प्रकार अब उनके लिये जो यीशु मसीह में स्थित हैं, कोई दण्ड नहीं है। [क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार चलते है।]* [2]क्योंकि आत्मा की व्यवस्था ने जो यीशु मसीह में जीवन देती है, तुझे पाप की व्यवस्था से जो मृत्यु की ओर ले जाती है, स्वतन्त्र कर दिया है। [3]जिसे मूसा की वह व्यवस्था जो मनुष्य के भौतिक स्वभाव के कारण दुर्बल बना दी गई थी, नहीं कर सकी उसे परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे ही जैसे शरीर में भेजकर–जिससे हम पाप करते हैं–उसकी भौतिक देह को पाप वाली बनाकर पाप को निरस्त कर के पूरा किया। [4]जिससे कि हमारे द्वारा, जो देह की भौतिक विधि से नहीं, बल्कि आत्मा की विधि से जीते हैं, व्यवस्था की आवश्यकताएँ पूरी की जा सकें।

[5]क्योंकि वे जो अपने भौतिक मानव स्वभाव के अनुसार जीते हैं, उनकी बुद्धि मानव स्वभाव की इच्छाओं पर टिकी रहती है परन्तु वे जो आत्मा के अनुसार जीते हैं, उनकी बुद्धि जो आत्मा चाहती है उन अभिलाषाओं में लगी रहती है। [6]भौतिक मानव स्वभाव के बस में रहने वाले मन का अन्त मृत्यु है; किन्तु आत्मा के वश में रहनेवाली बुद्धि का परिणाम है जीवन और शांति। [7]इस तरह भौतिक मानव स्वभाव से अनुशासित मन परमेश्वर का विरोधी है। क्योंकि वह न तो परमेश्वर के नियमों के अधीन है और न हो सकता है। [8]और वे जो भौतिकमानव स्वभाव के अनुसार जीते हैं, परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

[9]किन्तु तुम लोग भौतिक मानव स्वभाव के अधीन नहीं हो, बल्कि आत्मा के अधीन हो यदि वास्तव में तुममें परमेश्वर की आत्मा का निवास है। किन्तु यदि किसी में यीशु मसीह की आत्मा नहीं है तो वह मसीह का नहीं है। [10]दूसरी तरफ यदि तुममें मसीह है तो चाहे तुम्हारी देह पाप के हेतु मर चुकी है पवित्र आत्मा, परमेश्वर के साथ तुम्हें धार्मिक ठहराकर स्वयं तुम्हारे लिए जीवन बन जाती है। [11]और यदि वह आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया था, तुम्हारे भीतर वास करती है, तो वह परमेश्वर जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया था, तुम्हारे नाशवान शरीरों को अपनी आत्मा से जो तुम्हारे ही भीतर बसती है, जीवन देगा।

[12]इसलिए मेरे भाइयो, हम पर इस भौतिक शरीर का क़र्ज़ तो है किन्तु ऐसा नहीं कि हम इसके अनुसार जियें। [13]क्योंकि यदि तुम भौतिक शरीर के अनुसार जिओगे तो मरोगे। किन्तु यदि तुम आत्मा के द्वारा शरीर के व्यवहारों का अंत कर दोगे तो तुम जी जाओगे।

[14]जो परमेश्वर की आत्मा के अनुसार चलते हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं। [15]क्योंकि वह आत्मा जो तुम्हें मिली है, तुम्हें फिर से दास बन डरने के लिए नहीं है,

---

क्योंकि ... है कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है

बल्कि वह आत्मा जो तुमने पायी है तुम्हें परमेश्वर की संपालित संतान बनाती है। जिससे हम पुकार उठते हैं, "हे अब्बा, हे पिता!" [16]वह पवित्र आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ मिल कर साक्षी देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। [17]और क्योंकि हम उसकी संतान हैं, हम भी उत्तराधिकारी हैं, परमेश्वर के उत्तराधिकारी और मसीह के साथ हम उत्तराधिकारी यदि वास्तव में उसके साथ दुख उठाते हैं तो हमें उसके साथ महिमा मिलेगी ही।

हमें महिमा मिलेगी

[18]क्योंकि मेरे विचार में इस समय की हमारी यातनाएँ प्रकट होने वाली भावी महिमा के आगे कुछ भी नहीं है। [19]क्योंकि यह सृष्टि बड़ी आशा से उस समय का इंतज़ार कर रही है जब परमेश्वर की संतान को प्रकट किया जायेगा। [20]यह सृष्टि नि:सार थी अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि उसकी इच्छा से जिसने इसे इस आशा के अधीन किया [21]कि यह भी कभी अपनी विनाशमानता से छुटकारा पा कर परमेश्वर की संतान की शानदार स्वतन्त्रता का आनन्द लेगी।

[22]क्योंकि हम जानते हैं कि आज तक समूची सृष्टि पीड़ा में कराहती और तड़पती रही है। [23]न केवल यह सृष्टि बल्कि हम भी जिन्हें आत्मा का पहला फल मिला है, अपने भीतर कराहते रहे हैं। क्योंकि हमें उसके द्वारा पूरी तरह अपनाये जाने का इंतजार है कि हमारी देह–मुक्ति हो जायेगी। [24]हमारा उद्धार हुआ है। इसी से हमारे मन में आशा है किन्तु जब हम जिसकी आशा करते हैं, उसे देख लेते हैं तो वह आशा नहीं रहती। जो दिख रहा है उसकी आशा कौन कर सकता है। [25]किन्तु यदि जिसे हम देख नहीं रहे उसकी आशा करते हैं तो धीरज और सहनशीलता के साथ उसकी बाट जोहते हैं।

[26]ऐसे ही जैसे हम कराहते हैं, आत्मा हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करने आती है क्योंकि हम नहीं जानते कि हम किसके लिये प्रार्थना करें। किन्तु आत्मा स्वयं ऐसी आहें भर कर जिनकी शब्दों में अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती, हमारे लिए विनती करती है। [27]किन्तु वह अन्तर्यामी जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा से ही वह परमेश्वर के पवित्र जनों के लिए मध्यस्थता करती है।

[28]और हम जानते हैं कि हर परिस्थिति में वह आत्मा परमेश्वर के भक्तों के साथ मिल कर वह काम करता है जो भलाई ही लाते हैं उन सब के लिए जिन्हें उसके प्रयोजन के अनुसार ही बुलाया गया है। [29]जिन्हें उसने पहले ही चुना उन्हें पहले ही अपने पुत्र के रूप में ठहराया ताकि बहुत से भाइयों में वह सबसे बड़ा भाई बन सके। [30]जिन्हें उसने पहले से निश्चित किया, उन्हें भी उसने बुलाया और जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें उसने धर्मी ठहराया। और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी प्रदान की।

परमेश्वर का प्रेम

[31]तो इसे देखते हुए हम क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है तो हमारे विरोध में कौन हो सकता है? [32]उसने जिसने अपने पुत्र तक को बचा कर नहीं रखा बल्कि उसे हम सब के लिए मरने को सौंप दिया। वह भला हमें उसके साथ और सब कुछ क्यों नहीं देगा? [33]परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर ऐसा कौन है जो, दोष लगायेगा? वह परमेश्वर ही है जो उन्हें निर्दोष ठहराता है। [34]ऐसा कौन है जो उन्हें दोषी ठहराएगा? मसीह यीशु वह है जो मर गया और (और इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि) उसे फिर जिलाया गया। जो परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है और हमारी ओर से विनती भी करता है [35]कौन है जो हमें मसीह के प्यार से अलग करेगा? यातना या कठिनाई या अत्याचार या अकाल या नंगापन या जोखिम या तलवार? [36]जैसा कि शास्त्र कहता है:

> "तेरे (मसीह) लिए सारे दिन हमें मौत को सौंपा जाता है।
> हम काटी जाने वाली भेड़ जैसे समझे जाते हैं।"
>
> *भजन संहिता 44:22*

[37]तब भी उसके द्वारा जो हमें प्रेम करता है, इन सब बातों में हम एक शानदार विजय पा रहे हैं। [38]क्योंकि मैं मान चुका हूँ कि न मृत्यु और न जीवन, न स्वर्गदूत और न शासन करने वाली आत्माएँ, न वर्तमान की कोई वस्तु और न भविष्य की कोई वस्तु, न आत्मिक शक्तियाँ, [39]न कोई हमारे ऊपर का, और न हमसे नीचे का, न सृष्टि की कोई और वस्तु हमें प्रभु के उस प्रेम से, जो हमारे भीतर प्रभु यीशु मसीह के प्रति है, हमें अलग कर सकेगी।

परमेश्वर और यहूदी लोग

9 मसीह में मैं सच कह रहा हूँ। मैं झूठ नहीं कहता और मेरी चेतना जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकाशित

है, मेरे साथ मेरी साक्षी देती है [2]कि मुझे गहरा दुःख है और मेरे मन में निरन्तर पीड़ा है। [3]काश मैं चाह सकता कि अपने भाई बंदों और दुनियावी संबन्धियों के लिए मैं मसीह का शाप अपने ऊपर ले लेता और उससे अलग हो जाता। [4]जो इस्राएली हैं और जिन्हें परमेश्वर की संपालित संतान होने का अधिकार है, जो परमेश्वर की महिमा का दर्शन कर चुके हैं, जो परमेश्वर के करार के भागीदार हैं। जिन्हें मूसा की व्यवस्था, सच्ची उपासना और वचन प्रदान किया गया है। [5]पुरखे उन्हीं से सम्बन्ध रखते हैं और मानव शरीर की दृष्टि से मसीह उन्हीं में पैदा हुआ जो सब का परमेश्वर है और सदा धन्य है! आमीन।

[6]ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने अपना वचन पूरा नहीं किया है क्योंकि जो इस्राएल के वंशज हैं, वे सभी इस्राएली नहीं हैं। [7]और न ही इब्राहीम के वंशज होने के कारण वे सब सचमुच इब्राहीम की संतान हैं। बल्कि (जैसा परमेश्वर ने कहा), "तेरे वंशज इसहाक के द्वारा अपनी परम्परा बढ़ाएंगे।"* [8]अर्थात् यह नहीं है कि प्राकृतिक तौर पर शरीर से पैदा होने वाले बच्चे परमेश्वर के वंशज हैं, बल्कि परमेश्वर के वचन से प्रेरित होने वाले उसके वंशज माने जाते हैं। [9]वचन इस प्रकार कहा गया था: "निश्चित समय पर मैं लौटूँगा और सारा पुत्रवती होगी।"*

[10]इतना ही नहीं जब रिबका भी एक व्यक्ति, हमारे पूर्व पिता इसहाक से गर्भवती हुई [11]तो बेटों के पैदा होने से पहले और उनके कुछ भी भला बुरा करने से पहले कहा गया था जिससे परमेश्वर का वह प्रयोजन सिद्ध हो जो चुनाव से सिद्ध होता है। [12]और जो व्यक्ति के कर्मों पर नहीं टिका बल्कि उस परमेश्वर पर टिका है जो बुलाने वाला है। रिबका से कहा गया, "बड़ा बेटा छोटे बेटे की सेवा करेगा।"* [13]शास्त्र कहता है: "मैंने याकूब को चुना और इसाऊ को नकार दिया।"*

[14]तो फिर हम क्या कहें? क्या परमेश्वर अन्यायी है? [15]निश्चय ही नहीं। क्योंकि उसने मूसा से कहा था, "मैं जिस किसी पर भी दया करने की सोचूँगा, दया दिखाऊँगा। और जिस किसी पर भी अनुग्रह करना चाहूँगा, अनुग्रह करूँगा।"* [16]इसलिये न तो यह किसी की इच्छा पर निर्भर करता है और न किसी की दौड़ धूप पर बल्कि दयालु परमेश्वर पर निर्भर करता है। [17]क्योंकि शास्त्र में परमेश्वर ने फिरौन से कहा था, "मैंने तुझे इसीलिए खड़ा किया था कि मैं अपनी शक्ति तुझ में दिखा सकूँ। और मेरा नाम समूची धरती पर घोषित किया जाये।"* [18]सो परमेश्वर जिस पर चाहता है दया करता है और जिसे चाहता है कठोर बना देता है।

[19]तो फिर तू शायद मुझ से कहे, "यदि हमारे कर्मों का नियन्त्रण करने वाला परमेश्वर है तो फिर भी वह उसमें हमारा दोष क्यों समझता है?" आख़िरकार उसकी इच्छा का विरोध कौन कर सकता है? [20]मनुष्य तू कौन होता है जो परमेश्वर को उलट कर उत्तर दे? क्या कोई रचना अपने रचने वाले से पूछ सकती है, "तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया?" [21]क्या किसी कुम्हार को मिट्टी पर यह अधिकार नहीं है कि वह किसी एक लौंदे से एक भाँडा विशेष प्रयोजन के लिए और दूसरा हीन प्रयोजन के लिए बनाये?

[22]किन्तु इसमें क्या है यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी शक्ति जताने के लिए उन भाँडों की, जो क्रोध के पात्र थे और जिनका विनाश होने को था, बड़े धीरज के साथ सही, [23]उसने उनकी सही ताकि वह उन भाँड़ों के लाभ के लिए जो दया के पात्र थे और जिन्हें उसने अपनी महिमा पाने के लिए बनाया था, उन पर अपनी महिमा प्रकट कर सके। [24]अर्थात् हम जिन्हें उसने न केवल यहूदियों में से बुलाया बल्कि ग़ैर यहूदियों में से भी [25]जैसा कि होशे की पुस्तक में लिखा है:

"जो लोग मेरे नहीं थे उन्हें मैं अपना कहूँगा।
और वह स्त्री जो प्रिय नहीं थी
मैं उसे प्रिया कहूँगा।"

होशे 2:23

[26] "और वैसा ही घटेगा जैसा उसी भाग में
उनसे कहा गया था,
'तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो।'
वहीं वे जीवित परमेश्वर की
सन्तान कहलाएँगे।"

होशे 1:10

तेरे वंशज ... बढ़ाएंगे उत्पत्ति 21:12
निश्चित ... होगी उत्पत्ति 18:10,14
बड़ा ... करेगा उत्पत्ति 25:23
मैंने याकूब ... दिया मलाकी 1:2−3
मैं ... करूँगा निर्गमन 33:19
मैंने ... जाये निर्गमन 9:16

[27]और यशायाह इस्राएल के बारे में पुकार कर कहता है:

"यद्यपि इस्राएल की सन्तान समुद्र की बालू के कणों के समान असंख्य हैं तो भी उनमें से केवल थोड़े से ही बच पायेंगे। [28]क्योंकि प्रभु पृथ्वी पर अपने न्याय को पूरी तरह से और जल्दी ही पूरा करेगा।"*

[29]और जैसी कि यशायाह ने भविष्यवाणी की थी:

"यदि सर्वशक्तिशाली प्रभु हमारे लिए वंशज न छोड़ता तो हम सदोम जैसे और अरोमा जैसे ही हो जाते।"*

[30]तो फिर हम क्या कहें? हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि अन्य जातियों के लोग जो धार्मिकता की खोज में नहीं थे, उन्होंने धार्मिकता को पा लिया है। वे जो विश्वास के कारण ही धार्मिक ठहराए गए। [31]किन्तु इस्राएल के लोगों ने जो ऐसी व्यवस्था पर चलना चाहते थे जो उन्हें धार्मिक ठहराती, उसके अनुसार नहीं जी सके। [32]क्यों नहीं? क्योंकि वे इसका पालन विश्वास से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से कर रहे थे, वे उस चट्टान पर ठोकर खा गये, जो ठोकर दिलाती है। [33]जैसा कि शास्त्र कहता है:

"देखो, मैं सिय्योन में एक पत्थर रख रहा हूँ
जो ठोकर दिलाता है और
एक चट्टान जो अपराध कराती है।
किन्तु वह जो उस में विश्वास करता है,
उसे कभी निराश नहीं होना होगा।"

यशायाह 8:14;23:16

10

हे भाइयो, मेरे हृदय की इच्छा है और मैं परमेश्वर से उन सब के लिये प्रार्थना करता हूँ कि उनका उद्धार हो [2]क्योंकि मैं साक्षी देता हूँ कि उनमें परमेश्वर की धुन है। किन्तु वह ज्ञान पर नहीं टिकी है [3]क्योंकि वे उस धार्मिकता को नहीं जानते थे जो परमेश्वर से मिलती है और वे अपनी ही धार्मिकता की स्थापना का जतन करते रहे सो उन्होंने परमेश्वर की धार्मिकता को नहीं स्वीकारा। [4]मसीह ने व्यवस्था का अंत किया ताकि हर कोई जो विश्वास करता है, परमेश्वर के लिए धार्मिक हो।

[5]धार्मिकता के बारे में जो व्यवस्था से प्राप्त होती है, मूसा ने लिखा है, "जो व्यवस्था के नियमों पर चलेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।"* [6]किन्तु विश्वास से मिलने वाली धार्मिकता के विषय में शास्त्र यह कहता है, "तू अपने से यह मत पूछ, 'स्वर्ग में ऊपर कौन जायेगा?'*" (यानी, "मसीह को नीचे धरती पर लाने।") [7]"या, 'नीचे पाताल में कौन जायेगा?'*" (यानी, "मसीह को धरती के नीचे से ऊपर लाने।" यानी मसीह को मरे हुओं में से वापस लाने।") [8]शास्त्र यह कहता है, "वचन तेरे पास है, तेरे ओठों पर है और तेरे मन में है।"* यानी विश्वास का वह वचन जिसका हम प्रचार करते है। [9]कि यदि तू अपने मुँह से कहे, "यीशु मसीह प्रभु है" और तू अपने मन में यह विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया तो तेरा उद्धार हो जायेगा। [10]क्योंकि अपने हृदय के विश्वास से व्यक्ति धार्मिक ठहराया जाता है और अपने मुँह से उसके विश्वास को स्वीकार करने से उसका उद्धार होता है। [11]शास्त्र कहता है, "जो कोई उसमें विश्वास रखता है उसे निराश नहीं होना पड़ेगा।"* [12]यह इसलिये है कि यहूदियों और ग़ैर यहूदियों में कोई भेद नहीं क्योंकि सब का प्रभु तो एक ही है। और उसकी दया उन सब के लिये, जो उसका नाम लेते हैं, अपरम्पार है। [13]"हर कोई जो प्रभु का नाम लेता है, उद्धार पायेगा।"*

[14]किन्तु वे जो उसमें विश्वास नहीं करते, उसका नाम कैसे पुकारेंगे? और वे जिन्होने उसके बारे में सुना ही नहीं, उसमें विश्वास कैसे कर पायेंगे? और फिर भला जब तक कोई उन्हें उपदेश देने वाला न हो, वे कैसे सुन सकेंगे? [15]और उपदेशक तब तक उपदेश कैसे दे पायेंगे जब तक उन्हें भेजा न गया हो? जैसा कि शास्त्रों में कहा है: "सुसमाचार लाने वालों के चरण कितने सुंदर हैं।"*

[16]किन्तु सब ने सुसमाचार को स्वीकारा नहीं। यशायाह कहता है, "हे प्रभु, हमारे उपदेश को किसने स्वीकार किया?"* [17]सो उपदेश के सुनने से विश्वास उपजता है और उपदेश तब सुना जाता है जब कोई मसीह के विषय में उपदेश देता है।

यद्यपि ... करेगा यशायाह 10:22−23
यदि ... जाते यशायाह 1:9
जो ... रहेगा लैव्य. 18:5
तू अपने ... कौन जायेगा व्यवस्था. 30:12
मसीह ... लाने व्यवस्था. 30:12
वचन ... है व्यवस्था. 30:14
जो ... पड़ेगा यशा. 28:16
हर ... पायेगा योएल 2:32
सुसमाचार ... है यशा. 52:7
हे प्रभु ... किया यशा. 53:1

[18]किन्तु मैं कहता हूँ, "क्या उन्होंने हमारे उपदेश को नहीं सुना?" हाँ, निश्चय ही। शास्त्र कहता है:

"उनका स्वर समूची धरती पर फैल गया
और उनके वचन जगत के एक छोर से
दूसरे छोर तक पहुँचे।"

भजन संहिता 19:4

[19]किन्तु मैं पूछता हूँ, "क्या इस्राएली नहीं समझते थे?" मूसा कहता है:

"पहले मैं तुम लोगों के मन में ऐसे लोगों के
द्वारा जो वास्तव में कोई जाति नहीं है,
डाह पैदा करूँगा।
मैं विश्वासहीन जाति के द्वारा
तुम्हें क्रोध दिलाऊँगा।"

व्यवस्था विवरण 32:21

[20]फिर यशायाह साहस के साथ कहता है:

"मुझे उन लोगों ने पा लिया
जो मुझे नहीं खोज रहे थे।
मैं उनके लिए प्रकट हो गया
जो मेरी खोज खबर में नहीं थे।"

यशायाह 65:1

[21]किन्तु परमेश्वर ने इस्राएलियों के बारे में कहा है, "मैं सारे दिन आज्ञा न मानने वाले और अपने विरोधियों के आगे हाथ फैलाए रहा।"*

परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूला

11 तो मैं पूछता हूँ, "क्या परमेश्वर ने अपने ही लोगों को नकार नहीं दिया?" निश्चय ही नहीं। क्योंकि मैं भी एक इस्राएली हूँ, इब्राहीम के वंश से और बैंजामिन के गोत्र से हूँ। [2]परमेश्वर ने अपने लोगों को नहीं नकारा जिन्हें उसने पहले से ही चुना था। अथवा क्या तुम नहीं जानते कि एलिय्याह के बारे में शास्त्र क्या कहता है जब एलिय्याह परमेश्वर से इस्राएल के लोगों के विरोध में प्रार्थना कर रहा था? [3]"हे प्रभु, उन्होंने तेरे नबियों को मार डाला। तेरी वेदियों को तोड़ कर गिरा दिया। केवल एक नबी मैं ही बचा हूँ और वे मुझे भी मार डालने का जतन कर रहे हैं।"* [4]किन्तु तब परमेश्वर ने उसे कैसे उत्तर दिया था, "मैने अपने लिए सात हजार लोग बचा रखे हैं जिन्होंने बाल के आगे माथा नहीं टेका।"* [5]सो वैसे ही आज कल भी कुछ ऐसे लोग बचे हैं जो उसके अनुग्रह के कारण चुने हुए हैं। [6]और यदि यह परमेश्वर के अनुग्रह का परिणाम है तो लोग जो कर्म करते हैं, यह उन कर्मों का परिणाम नहीं है। नहीं तो परमेश्वर की अनुग्रह, अनुग्रह ही नहीं ठहरती।

[7]तो इससे क्या? इस्राएल के लोग जिसे खोज रहे थे, वे उसे नहीं पा सके। किन्तु चुने हुओं को वह मिल गया। जबकि बाकी सब को जड़ बना दिया गया। [8]शास्त्र कहता है:

"परमेश्वर ने उन्हें एक चेतना शून्य
आत्मा प्रदान की"

यशायाह 29:10

"ऐसी आँखें दीं जो देख नहीं सकती थीं
और ऐसे कान दिए जो सुन नहीं सकते थे।
और यही दशा ठीक आज तक बनी हुई है।"

व्यवस्था विवरण 29:4

[9]दाऊद कहता है:

"अपने ही भोगों में फँसकर वे बंदी बन जाएँ
उनका पतन हो और उन्हें दण्ड मिले।
[10] उनकी आँखें धुँधली हो जायें
ताकि वे देख न सकें और तू उनकी
पीड़ाओं तले, उनकी कमर
सदा-सदा झुकाए रखे।"

भजन संहिता 69:22-23

[11]सो मैं कहता हूँ क्या उन्होंने इसलिये ठोकर खाई कि वे गिर कर नष्ट हो जायें? निश्चय ही नहीं। बल्कि उनके गलती करने से ग़ैर यहूदी लोगों को छुटकारा मिला ताकि यहूदियों में स्पर्धा पैदा हो। [12]इस प्रकार यदि उनके ग़लती करने का अर्थ सारे संसार का बड़ा लाभ है और यदि उनके भटकने से ग़ैर यहूदियों का लाभ है तो उनकी संपूर्णता से तो बहुत कुछ होगा।

[13]यह अब मैं तुमसे कह रहा हूँ, जो यहूदी नहीं हो। क्योंकि मैं विशेष रूप से ग़ैर-यहूदियों के लिये प्रेरित हूँ, मैं अपने काम के प्रति पूरा प्रयत्नशील हूँ [14]इस आशा से कि मैं अपने लोगों में भी स्पर्धा जगा सकूँ और उनमें से कुछ का उद्धार करूँ। [15]क्योंकि यदि परमेश्वर के द्वारा उनके नकार दिये जाने से जगत् में परमेश्वर के साथ

मैं ... रहा यशा. 65:2
हे प्रभु ... है 1 राजा 19:10-14

मेलमिलाप पैदा होता है तो फिर उनका अपनाया जाना क्या मरे हुओं में से जिलाया जाना नहीं होगा?

[16]यदि हमारी भेंट का एक भाग पवित्र है तो क्या वह समूचा ही पवित्र नहीं है? यदि पेड़ की जड़ पवित्र है तो उसकी शाखाएँ भी पवित्र हैं।

[17]किन्तु यदि कुछ शाखाएँ तोड़ कर फेंक दी गयीं और तू जो एक जँगली जैतून की टहनी है उस पर पेबंद चढ़ा दिया जाये और वह जैतून के अच्छे पेड़ की जड़ों की शक्ति का हिस्सा बटाने लगे [18]तो तुझे उन टहनियों के आगे, जो तोड़ कर फेंक दी गयीं, अभिमान नहीं करना चाहिये। और यदि तू अभिमान करता है तो याद रख यह तू नहीं है जो जड़ों को पाल रहा है, बल्कि यह तो वह जड़ ही है जो तुझे पाल रही है। [19]अब तू कहेगा, "हाँ, किन्तु शाखाएँ इसलिये तोड़ी गयीं कि मेरा पेबंद चढ़े।" [20]यह सत्य है, वे अपने अविश्वास के कारण तोड़ फेंकी गयीं किन्तु तुम अपने विश्वास के बल पर अपनी जगह टिके रहे। इसलिये इसका गर्व मत कर बल्कि डरता रह। [21]यदि परमेश्वर ने प्राकृतिक डालियाँ नहीं रहने दीं तो वह तुझे भी नहीं रहने देगा।

[22]इसलिये तू परमेश्वर की कोमलता को देख और उसकी कठोरता पर ध्यान दे। यह कठोरता उनके लिए है जो गिर गये किन्तु उसकी करुणा तेरे लिये है यदि तू अपने पर उसका अनुग्रह बना रहने दे। नहीं तो पेड़ से तू भी काट फेंका जायेगा। [23]और यदि वे अपने अविश्वास में न रहें तो उन्हें भी फिर पेड़ से जोड़ लिया जायेगा क्योंकि परमेश्वर समर्थ है कि उन्हें फिर से जोड़ दे। [24]जब तुझे प्राकृतिक रूप से जँगली जैतून के पेड़ से एक शाखा की तरह काट कर प्रकृति के विरुद्ध एक उत्तम जैतून के पेड़ से जोड़ दिया गया, तो ये जो उस पेड़ की अपनी डालियाँ हैं, अपने ही पेड़ में आसानी से, फिर से क्यों नहीं जोड़ दी जायेंगी।

[25]हे भाइयो! मैं तुम्हें इस छिपे हुए सत्य से अंजान नहीं रखना चाहता। (कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझने लगो) कि इस्राएल के कुछ लोग ऐसे ही कठोर बना दिए गए हैं और ऐसे ही कठोर बने रहेंगे जब तक कि काफी ग़ैर यहूदी परमेश्वर के परिवार के अंग नहीं बन जाते। [26]और इस तरह समुचे इस्राएल का उद्धार होगा। जैसा कि शास्त्र कहता है:

"उद्धार करने वाला सिय्योन से आयेगा।
वह याक़ूब के परिवार से
सभी बुराइयाँ दूर करेगा।
[27] मेरा यह वाचा उनके साथ तब होगा
जब मैं उनके पापों को हर लूँगा।"

यशायाह 59:20−21; 27:9

[28]जहाँ तक सुसमाचार का सम्बन्ध है, वे तुम्हारे हित में परमेश्वर के शत्रु हैं किन्तु जहाँ तक परमेश्वर द्वारा उनके चुने जाने का सम्बन्ध है, वे उनके पुरखों को दिये वचन के अनुसार परमेश्वर के प्यारे हैं। [29]क्योंकि परमेश्वर जिसे बुलाता है और जिसे वह देता है, उसकी तरफ़ से अपना मन कभी नहीं बदलता। [30]क्योंकि जैसे तुम लोग पहले कभी परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते थे किन्तु अब तुम्हें उसकी अवज्ञा के कारण परमेश्वर की दया प्राप्त है। [31]वैसे ही अब वे उसकी आज्ञा नहीं मानते क्योंकि परमेश्वर की दया तुम पर है। ताकि अब उन्हें भी परमेश्वर की दया मिले। [32]क्योंकि परमेश्वर ने सब लोगों को अवज्ञा के कारागार में इसीलिए डाल रखा है कि वह उन पर दया कर सके।

परमेश्वर धन्य है

[33]परमेश्वर की करुणा, बुद्धि और ज्ञान कितने अपरम्पार हैं। उसके न्याय कितने गहन हैं; उसके रास्ते कितने गूढ़ हैं। शास्त्र कहता है:

[34] "प्रभु के मन को कौन जानता है?
और उसे सलाह देने वाला कौन हो सकता है"

यशायाह 40:13

[35] "परमेश्वर को किसी ने क्या दिया है
कि वह किसी को उसके बदले कुछ दे।"

अय्यूब 41:11

[36]क्योंकि सब का रचने वाला वही है। उसी से सब स्थिर हैं और यह उसी के लिए है। उसकी सदा महिमा हो! आमीन।

अपने जीवन प्रभु को अर्पण करो

12 इसलिए हे भाइयो, परमेश्वर की दया का स्मरण दिलाकर मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि अपने जीवन एक जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर को

प्रसन्न करते हुए अर्पित कर दो। यह तुम्हारी आध्यात्मिक उपासना है जिसे तुम्हें उसे चुकाना है। [2]अब और आगे इस दुनिया की रीति पर मत चलो बल्कि अपने मनों को नया करके अपने आप को बदल डालो ताकि तुम्हें पता चल जाये कि परमेश्वर तुम्हारे लिए क्या चाहता है। यानी जो उत्तम है, जो उसे भाता है और जो सम्पूर्ण है।

[3]इसलिये उसके अनुग्रह के कारण जो उपहार उसने मुझे दिया है, उसे ध्यान में रखते हुए मैं तुममें से हर एक से कहता हूँ, अपने को यथोचित समझो अर्थात् जितना विश्वास उसने तुम्हें दिया है, उसी के अनुसार अपने को समझना चाहिये। [4]क्योंकि जैसे हममें से हर एक के शरीर में बहुत से अंग हैं। चाहे सब अंगों का काम एक जैसा नहीं है। [5]हम अनेक हैं किन्तु मसीह में हम एक देह के रूप में हो जाते हैं। इस प्रकार हर एक अंग हर दूसरे अंग से जुड़ जाता है। [6]तो फिर उसके अनुग्रह के अनुसार हमें जो अलग–अलग उपहार मिले हैं, हम उनका प्रयोग करें। यदि किसी को भविष्यवाणी की क्षमता दी गयी है तो वह उसके पास जितना विश्वास है उसके अनुसार भविष्यवाणी करे। [7]यदि किसी को सेवा करने का उपहार मिला है तो अपने आप को सेवा के लिये अर्पित करे, यदि किसी को उपदेश देने का काम मिला है तो उसे अपने आप को प्रचार में लगाना चाहिये। [8]यदि कोई सलाह देने को है तो उसे सलाह देनी चाहिये। यदि किसी को दान देने का उपहार मिला है तो उसे मुक्त भाव से दान देना चाहिए। यदि किसी को अगुआई करने का उपहार मिलता है तो वह लगन के साथ अगुआई करे। जिसे दया दिखाने को मिली है, वह प्रसन्नता से दया करे।

[9]तुम्हारा प्रेम सच्चा हो। बदी से घृणा करो। नेकी से जुड़ो। [10]भाई चारे के साथ एक दूसरे के प्रति समर्पित रहो। आपस में एक दूसरे को आदर के साथ अपने से अधिक महत्त्व दो। [11]उत्साही बनो, आलसी नहीं, आत्मा के तेज से चमको। प्रभु की सेवा करो। [12]अपनी आशा में प्रसन्न रहो। विपत्ति में धीरज धरो। निरन्तर प्रार्थना करते रहो। [13]परमेश्वर के जनों की आवश्यकताओं में हाथ बटाओ। अतिथि–सत्कार के अवसर ढूँढते रहो।

[14]जो तुम्हें सताते हों उन्हें आशीर्वाद दो। उन्हें शाप मत दो, आशीर्वाद दो। [15]जो प्रसन्न हैं उनके साथ प्रसन्न रहो। जो दुःखी हैं, उनके दुःख में दुखी होओ। [16]मेल–मिलाप से रहो। अभिमान मत करो बल्कि दीनों की संगति करो। अपने को बुद्धिमान मत समझो।

[17]बुराई का बदला बुराई से किसी को मत दो। सभी लोगों की आँखों में जो अच्छा हो उसे ही करने की सोचो। [18]जहाँ तक बन पड़े सब मनुष्यों के साथ शांति से रहो। [19]किसी से अपने आप बदला मत लो। मेरे मित्रों, बल्कि इसे परमेश्वर के क्रोध पर छोड़ दो क्योंकि शास्त्र में लिखा है: "प्रभु ने कहा है बदला लेना मेरा काम है। प्रतिदान में दूँगा।"* [20]"बल्कि तू तो यदि तेरा शत्रु भूखा है तो उसे भोजन करा, यदि वह प्यासा है तो उसे पीने को दे। क्योंकि यदि तू ऐसा करता है तो वह तुझसे शर्मिन्दा होगा।"* [21]बदी से मत हार बल्कि अपनी नेकी से बदी को हरा दे।

13 हर व्यक्ति को प्रधान सत्ता की अधीनता स्वीकारनी चाहिये। क्योंकि शासन का अधिकार परमेश्वर की ओर से है। और जो अधिकार मौजूद हैं उन्हें परमेश्वर ने नियत किया है। [2]इसलिए जो सत्ता का विरोध करता है, वह परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करता है। और जो परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करते हैं, वे दण्ड पायेंगे। [3]अब देखो कोई शासक, उस व्यक्ति को, जो नेकी करता है, नहीं डराता बल्कि उसी को डराता है, जो बुरे काम करता है। यदि तुम सत्ता से नहीं डरना चाहते हो, तो भले काम करते रहो। तुम्हें सत्ता की प्रशंसा मिलेगी। [4]जो सत्ता में है वह परमेश्वर का सेवक है वह तेरा भला करने के लिए है। किन्तु यदि तू बुरा करता है तो उससे डर क्योंकि उसकी तलवार बेकार नहीं है। वह परमेश्वर का सेवक है जो बुरा काम करने वालों पर परमेश्वर का क्रोध लाता है। [5]इसलिये समर्पण आवश्यक है। न केवल डर के कारण बल्कि तुम्हारी अपनी चेतना के कारण।

[6]इसीलिये तो तुम लोग कर भी चुकाते हो क्योंकि अधिकारी परमेश्वर के सेवक हैं जो अपने कर्तव्यों को ही पूरा करने में लगे रहते हैं। [7]जिस किसी का तुझे देना है, उसे चुका दे। जो कर तुझे देना है, उसे दे। जिसकी चुंगी तुझ पर निकलती है, उसे चुंगी दे। जिससे तुझे डरना चाहिये, तू उससे डर। जिसका आदर करना चाहिये उसका आदर कर।

प्रभु ... दूँगा व्यवस्था. 32:35
बल्कि ... होगा नीति. 25:21–22

प्रेम ही विधान है

[8]आपसी प्रेम के अलावा किसी का ऋ ण अपने ऊपर मत रख क्योंकि जो अपने साथियों से प्रेम करता है, वह इस प्रकार व्यवस्था को ही पूरा करता है। [9]मैं यह इसलिये कह रहा हूँ, "व्यभिचार मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत कर, लालच मत रख।"* और जो भी दूसरी व्यवस्थाएँ हो सकती हैं, इस वचन में समा जाती हैं, "तुझे अपने साथी को ऐसे ही प्यार करना चाहिये, जैसे तू अपने आप को करता है।"* [10]प्रेम अपने साथी का बुरा कभी नहीं करता। इसीलिए प्रेम करना व्यवस्था के विधान को पूरा करना है।

[11]यह सब कुछ तुम इसलिये करो कि जैसे समय में तुम रह रहो हो, उसे जानते हो। तुम जानते हो कि तुम्हारे लिये अपनी नींद से जागने का समय आ पहुँचा है, क्योंकि जब हमने विश्वास धारण किया था हमारा उद्धार अब उससे अधिक निकट है। [12]"रात" लगभग पूरी हो चुकी है, "दिन" पास ही है, इसलिए आओ हम उन कर्मों से छुटकारा पा लें जो अंधकार के हैं। आओ हम प्रकाश के अस्त्रों को धारण करें। [13]इसलिए हम वैसे ही उत्तम रीति से रहें जैसे दिन के समय रहते हैं। बहुत अधिक दावतों में जाते हुए खा पीकर धुत्त न हो जाओ। लुच्चेपन दुराचार व्यभिचार में न पड़ें। न झगड़ें और न ही डाह रखें। [14]बल्कि प्रभु यीशु मसीह को धारण करें। और अपनी मानव देह की इच्छाओं को पूरा करने में ही मत लगे रहो।

दूसरों में दोष मत निकाल

14 जिसका विश्वास दुर्बल है, उसका भी स्वागत करो किन्तु मतभेदों पर झगड़ा करने के लिए नहीं। [2]कोई मानता है कि वह सब कुछ खा सकता है, किन्तु कोई दुर्बल व्यक्ति बस साग-पात ही खाता है। [3]तो वह जो हर तरह का खाना खाता है, उसे उस व्यक्ति को हीन नहीं समझना चाहिये जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता। वैसे ही वह जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता है, उसे सब कुछ खाने वाले को बुरा नहीं कहना चाहिये। क्योंकि परमेश्वर ने उसे अपना लिया है। [4]तू किसी दूसरे घर के दास पर दोष लगाने वाला कौन होता है? उसका अनुमोदन या उसे अनुचित ठहराना स्वामी पर ही निर्भर करता है। वह अवलम्बित रहेगा क्योंकि उसे प्रभु ने अवलम्बित होकर टिके रहने की शक्ति दी।

[5]और फिर कोई किसी एक दिन को सब दिनों से श्रेष्ठ मानता है और दूसरा उसे सब दिनों के बराबर मानता है तो हर किसी को पूरी तरह अपनी बुद्धि की बात माननी चाहिये। [6]जो किसी विशेष दिन को मनाता है वह उसे प्रभु को आदर देने के लिये ही मनाता है। और जो सब कुछ खाता है वह भी प्रभु को आदर देने के लिये ही खाता है। क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है। और जो किन्हीं वस्तुओं को नहीं खाता, वह भी ऐसा इसीलिए करता है क्योंकि वह भी प्रभु को ही आदर देना चाहता है। वह भी परमेश्वर को ही धन्यवाद देता है। [7]हम में से कोई भी न तो अपने लिये जीता है, और न अपने लिये मरता है। [8]हम जीते हैं तो प्रभु के लिये और यदि मरते हैं तो भी प्रभु के लिये। सो चाहे हम जियें चाहे मरें, हम हैं तो प्रभु के ही।

[9]इसीलिये मसीह मरा; और इसीलिए जी उठा ताकि वह, वे जो अब मर चुके हैं और वे जो अभी जीवित हैं, दोनों का प्रभु हो सके। [10]सो तू अपने विश्वास में सशक्त भाई पर दोष क्यों लगाता है? या तू अपने विश्वास में निर्बल भाई को हीन क्यों मानता है? हम सभी को परमेश्वर के न्याय के सिंहासन के आगे खड़ा होना है। [11]शास्त्र में लिखा है:

> "प्रभु ने कहा है, मेरे जीवन की शपथ हर
> किसी को मेरे सामने घुटने टेकने होंगे।
> और हर ज़ुबान परमेश्वर को पहचानेगी।"

[12]सो हममें से हर एक को परमेश्वर के आगे अपना लेखा-जोखा देना होगा।

पाप के लिए प्रेरित मत कर

[13]सो हम आपस में दोष लगाना बंद करें और यह निश्चय करें कि अपने भाई के रास्ते में हम कोई अड़चन खड़ी नहीं करेंगे और न ही उसे पाप के लिये उकसायेंगे। [14]प्रभु यीशु में आस्थावान होने के कारण मैं मानता हूँ कि अपने आप में कोई भोजन अपवित्र नहीं है। वह केवल उसके लिए अपवित्र है, जो उसे अपवित्र मानता है। उसके लिए उसका खाना अनुचित है। [15]यदि तेरे भाई को तेरे भोजन से ठेस पहँचती है तो तू वास्तव में प्यार का

व्यभिचार ... रख निर्गमन 20:13-15,17
तुझे ... है लैव्य. 19:18

व्यवहार नहीं कर रहा। तो तू अपने भोजन से उसे ठेस मत पहुँचा क्योंकि मसीह ने उस तक के लिए भी अपने प्राण तजे। **16**सो जो तेरे लिए अच्छा है उसे निन्दनीय मत बनने दे। **17**क्योंकि परमेश्वर का राज्य बस खाना–पीना नहीं है बल्कि वह तो धार्मिकता है, शांति है, और पवित्र आत्मा से प्राप्त आनन्द है। **18**जो मसीह की इस तरह सेवा करता है, उससे परमेश्वर प्रसन्न रहता है और लोग उसे सम्मान देते हैं।

19इसलिए, उन बातों में लगें जो शांति को बढ़ाती हैं और जिनसे एक दूसरे को आत्मिक बढ़ोतरी में सहायता मिलती है। **20**भोजन के लिये परमेश्वर के काम को मत बिगाड़ो। हर तरह का भोजन पवित्र है किन्तु किसी भी व्यक्ति के लिये वह कुछ भी खाना ठीक नहीं है जो किसी और भाई को पाप के रास्ते पर ले जाये। **21**माँस नहीं खाना श्रेष्ठ है, शराब नहीं पीना अच्छा है और कुछ भी ऐसा नहीं करना उत्तम है जो तेरे भाई को पाप में ढकेलता हो।

22अपने विश्वास को परमेश्वर और अपने बीच ही रख। वह धन्य है जो जिसे उत्तम समझता है, उसके लिए अपने को दोषी नहीं पाता। **23**किन्तु यदि कोई ऐसी वस्तु को खाता है, जिसके खाने के प्रति वह आश्वस्त नहीं है तो वह दोषी ठहरता है। क्योंकि उसका खाना उसके विश्वास के अनुसार नहीं है और वह सब कुछ जो विश्वास पर नहीं टिका है, पाप है।

15 हम जो आत्मिक रूप से शक्तिशाली हैं, उन्हें उनकी दुर्बलता सहनी चाहिये जो शक्तिशाली नहीं हैं। हम बस अपने आपको ही प्रसन्न न करें। **2**हम में से हर एक, दूसरों की अच्छाइयों के लिए इस भावना के साथ कि उनकी आत्मिक बढ़ोतरी हो, उन्हें प्रसन्न करे। **3**यहाँ तक कि मसीह ने भी स्वयं को प्रसन्न नहीं किया था। बल्कि जैसा कि मसीह के बारे में शास्त्र कहता है, "उनका अपमान जिन्होंने तेरा अपमान किया है, मुझ पर आ पड़ा है।"* **4**हर वह बात जो शास्त्रों में पहले लिखी गयी, हमें शिक्षा देने के लिए थी ताकि जो धीरज और बढ़ावा शास्त्रों से मिलता है, हम उससे आशा प्राप्त करें। **5**और समूचे धीरज और बढ़ावे का स्रोत परमेश्वर तुम्हें वरदान दे कि तुम लोग एक दूसरे के साथ यीशु मसीह के उदाहरण पर चलते हुए आपस में मिल जुल कर रहो। **6**ताकि तुम सब एक साथ एक स्वर से हमारे प्रभु यीशु मसीह के परम पिता, परमेश्वर को महिमा प्रदान करो। **7**इसलिए एक दूसरे को अपनाओ जैसे तुम्हें मसीह ने अपनाया। यह परमेश्वर की महिमा के लिए करो। **8**मैं तुम लोगों को बताता हूँ कि यह प्रकट करने को कि परमेश्वर विश्वसनीय है उनके पुरखों को दिये गए परमेश्वर के वचन को दृढ़ करने को मसीह यहूदियों का सेवक बना। **9**ताकि ग़ैर यहूदी लोग भी परमेश्वर को उसकी करुणा के लिए महिमा प्रदान करें। शास्त्र कहता है:

"इसलिये मैं ग़ैर यहूदियों के बीच तुझे पहचानूँगा
और तेरे नाम की महिमा गाऊँगा।"

भजन संहिता 18:49

10और यह भी कहा गया है,

"हे ग़ैर यहूदियो, परमेश्वर के चुने हुए
लोगों के साथ प्रसन्न रहो।"

व्यवस्था विवरण 32:43

11और फिर शास्त्र यह भी कहता है,

"हे ग़ैर यहूदी लोगो, तुम प्रभु की स्तुति करो।
और सभी जातियो,
परमेश्वर की स्तुति करो।"

भजन संहिता 117:1

12और फिर यशायाह भी कहता है,

"यिशै का एक वंशज प्रकट होगा
जो ग़ैर यहूदियों के शासक के रूप में उभरेगा।
ग़ैर यहूदी उस पर अपनी आशा लगाएँगे।"

यशायाह 11:10

13सभी आशाओं का स्रोत परमेश्वर, तुम्हें सम्पूर्ण आनन्द और शांति से भर दे। जैसा कि उसमें तुम्हारा विश्वास है। ताकि पवित्र आत्मा की शक्ति से तुम आशा से भरपूर हो जाओ।

पौलुस द्वारा अपने पत्र और कामों की चर्चा

14हे मेरे भाइयो, मुझे स्वयं तुम पर भरोसा है कि तुम नेकी से भरे हो और ज्ञान से परिपूर्ण हो। तुम एक दूसरे को शिक्षा दे सकते हो। **15**किन्तु तुम्हें फिर से याद दिलाने के लिये मैंने कुछ विषयों के बारे में साफ साफ लिखा है। मैंने परमेश्वर का जो अनुग्रह मुझे मिला है, उसके कारण यह किया है। **16**यानी मैं ग़ैर यहूदियों के लिए यीशु मसीह का सेवक बन कर परमेश्वर के सुसमाचार के लिए एक

उनका ... है भजन. 69:9

याजक के रूप में काम करूँ ताकि ग़ैर यहूदी परमेश्वर के आगे स्वीकार करने योग्य भेंट बन सकें और पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर के लिये पूरी तरह पवित्र बनें।

[17]सो मसीह यीशु में एक व्यक्ति के रूप में परमेश्वर के प्रति अपनी सेवा का मुझे गर्व है। [18]क्योंकि मैं बस उन्हीं बातों को कहने का साहस रखता हूँ जिन्हें मसीह ने ग़ैर यहूदियों को परमेश्वर की आज्ञा मानने का रास्ता दिखाने का काम मेरे वचनों, मेरे कर्मों, [19]आश्चर्य चिह्नों और अद्भुत कामों की शक्ति और परमेश्वर की आत्मा के सामर्थ्य से, मेरे द्वारा पूरा किया। सो यरूशलेम से लेकर इल्लुरिकुम के चारों ओर मसीह के सुसमाचार के उपदेश का काम मैंने पूरा किया। [20]मेरे मन में सदा यह अभिलाषा रही है कि मैं सुसमाचार का उपदेश वहाँ दूँ जहाँ कोई मसीह का नाम तक नहीं जानता, ताकि मैं किसी दूसरे व्यक्ति की नींव पर निर्माण न करूँ। [21]किन्तु शास्त्र कहता है:

"जिन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया है,
वे उसे देखेंगे।
और जिन्होंने सुना तक नहीं है, वे समझेंगें।"

यशायाह 32:15

पौलुस की रोम जाने की योजना

[22]मेरे ये कर्तव्य मुझे तुम्हारे पास आने से बार बार रोकते रहे हैं।

[23]किन्तु क्योंकि अब इन प्रदेशों में कोई स्थान नहीं बचा है और बहुत बरसों से मैं तुमसे मिलना चाहता रहा हूँ, [24]सो मैं जब स्पेन जाऊँगा तो आशा करता हूँ तुमसे मिलूँगा! मुझे उम्मीद है कि स्पेन जाते हुए तुमसे भेंट होगी। तुम्हारे साथ कुछ दिन ठहरने का आनन्द लेने के बाद मुझे आशा है कि वहाँ की यात्रा के लिए मुझे तुम्हारी मदद मिलेगी। [25]किन्तु अब मैं परमेश्वर के पवित्र जनों की सेवा में यरूशलेम जा रहा हूँ। [26]क्योंकि मकदूनिया और अखैया के कलीसिया के लोगों ने यरूशलेम में परमेश्वर के पवित्र जनों में जो दरिद्र हैं, उनके लिए कुछ देने का निश्चय किया है। [27]हाँ. उनके प्रति उनका कर्तव्य भी बनता है क्योंकि यदि ग़ैर यहूदियों ने यहूदियों के आध्यात्मिक कार्यों में हिस्सा बँटाया है तो ग़ैर यहूदियों को भी उनके लिये भौतिक सुख जुटाने चाहिये। [28]सो अपना यह काम पूरा करके और इकट्ठा किये गये इस धन को सुरक्षा के साथ उनके हाथों सौंप कर मैं तुम्हारे नगर से होता हुआ स्पेन के लिये रवाना होऊँगा [29]और मैं जानता हूँ कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा तो तुम्हारे लिए मसीह के पूरे आर्शीवादों समेत आऊँगा।

[30]हे भाइयो, तुमसे मैं प्रभु यीशु मसीह की ओर से आत्मा से जो प्रेम हम पाते हैं, उसकी साक्षी दे कर प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरी ओर से परमेश्वर के प्रति सच्ची प्रार्थनाओं में मेरा साथ दो [31]कि मैं यहूदियों में अविश्वासियों से बचा रहूँ और यरूशलेम के प्रति मेरी सेवा को परमेश्वर के पवित्र जन स्वीकार करें। [32]ताकि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मैं प्रसन्नता के साथ तुम्हारे पास आकर तुम्हारे साथ आनन्द मना सकूँ। [33]सम्पूर्ण शांति का धाम परमेश्वर तुम्हारे साथ रहे। आमीन।

रोम के मसीहियों को पौलूस का संदेश

16 मैं किंखिया की कलीसिया की विशेष सेविका हमारी बहन फ़ीबे की तुम से सिफारिश करता हूँ [2]कि तुम उसे प्रभु में ऐसी रीति से ग्रहण करो जैसी रीति परमेश्वर के लोगों के योग्य है। उसे तुमसे जो कुछ अपेक्षित हो सब कुछ से तुम उसकी मदद करना क्योंकि वह मुझ समेत बहुतों की सहायक रही है।

[3]प्रिस्का और अक्विला को मेरा नमस्कार। वे यीशु मसीह में मेरे सहकर्मी हैं। [4]उन्होंने मेरे प्राण बचाने के लिये अपने जीवन को भी दाव पर लगा दिया था। न केवल मैं उनका धन्यवाद करता हूँ बल्कि ग़ैर यहूदियों की सभी कलीसिया भी उनके धन्यवादी हैं। [5]उस कलीसिया को भी मेरा नमस्कार जो उनके घर में एकत्र होती है। मेरे प्रिय मित्र इपनितुस को मेरा नमस्कार जो एशिया में मसीह को अपनाने वालों में पहला है। [6]मरियम को, जिसने तुम्हारे लिये बहुत काम किया है, नमस्कार। [7]मेरे कुटुम्बी अन्द्रनीकुस और यूनियास को, जो मेरे साथ कारागार में थे और जो प्रमुख धर्म–प्रचारकों में प्रसिद्ध हैं, और जो मुझ से भी पहले मसीह में थे, मेरा नमस्कार। [8]प्रभु में मेरे प्रिय मित्र अम्पलियातुस को नमस्कार। [9]मसीह में हमारे सहकर्मी उरबानुस तथा मेरे प्रिय मित्र इस्तुखुस को नमस्कार। [10]मसीह में खरे और सच्चे अपिल्लेस को नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के परिवार को नमस्कार। [11]यहूदी साथी हिरोदियोन को नमस्कार। नरकिस्सुस के

परिवार के उन लोगों को नमस्कार जो प्रभु में हैं। [12]त्रुफेना और त्रुफोसा को जो प्रभु में परिश्रमी कार्यकर्ता हैं, नमस्कार। मेरी प्रिया परसिस को, जिसनें प्रभु में कठिन परिश्रम किया है, मेरा नमस्कार। [13]प्रभु के असाधारण सेवक रूफुस को और उसकी माँ को, जो मेरी भी माँ रही है, नमस्कार।

[14]असुंक्रितुस, फिलगोन, हिर्मेस, पत्रुबास, हिर्मोस और उनके साथी बंधुओं को नमस्कार। [15]फिलुलुगुस, यूलिया, नेर्युस तथा उसकी बहन उलुम्पास और उनके सभी साथी संतों को नमस्कार।

[16]तुम लोग पवित्र चुंबन द्वारा एक दूसरे का स्वागत करो। तुम्हें सभी मसीही कलीसियों की ओर से नमस्कार।

[17]हे भाइयो, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुमने जो शिक्षा पाई हैं, उसके विपरीत तुममें जो फूट डालते हैं और दूसरों के विश्वास को बिगाड़ते हैं, उनसे सावधान रहो, और उनसे दूर रहो। [18]क्योंकि ये लोग हमारे प्रभु यीशु मसीह की नहीं बल्कि अपने पेट की उपासना करते हैं। और अपनी खुशामद भरी चिकनी चुपड़ी बातों से भोले भाले लोगों के हृदय को छलते हैं। [19]तुम्हारी आज्ञाकारिता की चर्चा बाहर हर किसी तक पहुँच चुकी है। इस लिये तुमसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। किन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम नेकी के लिये बुद्धिमान बने रहो और बदी के लिये अबोध रहो।

[20]शांति का स्रोत परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को तुम्हारे पैरों तले कुचल देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का तुम पर अनुग्रह हो।

[21]हमारे साथी कार्यकर्ता तीमुथियुस और मेरे यहूदी साथी लूकियुस, यासोन तथा सोसिपत्रुस की ओर से तुम्हें नमस्कार। [22]इस पत्र के लेखक मुझ तिरतियुस का प्रभु में तुम्हें नमस्कार।

[23]मेरे और समूची कलीसिया के आतिथ्यकर्ता गयुस का तुम्हें नमस्कार। इरास्तुस जो नगर का ख़जांची है और हमारे बन्धु क्वारतुस का तुम को नमस्कार। [24]["हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सबके साथ रहे। आमीन।"]*

परमेश्वर की महिमा

[25]उसकी महिमा हो जो तुम्हारे विश्वास के अनुसार– यानी यीशु मसीह के सन्देश के जिस सुसमाचार का मैं उपदेश देता हूँ उसके अनुसार–तुम्हें सुदृढ़ बनाने में समर्थ है। परमेश्वर का यह रहस्यपूर्णसत्य युगयुगान्तर से छिपा हुआ था। [26]किन्तु जिसे अनन्त परमेश्वर के आदेश से भविष्यवक्ताओं के लेखों द्वारा अब हमें और ग़ैर यहूदियों को प्रकट करके बता दिया गया है जिससे विश्वास से पैदा होने वाली आज्ञाकारिता पैदा हो। [27]यीशु मसीह द्वारा उस एक मात्र ज्ञानमय परमेश्वर की अनन्त काल तक महिमा हो। आमीन!

पद 24 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 24 जोड़ा गया है।

1 कुरिन्थियों

1 हमारे भाई सोस्थिनिस के साथ पौलुस की ओर से जिसे परमेश्वर ने अपनी इच्छानुसार यीशु मसीह का प्रेरित बनने के लिए चुना

[2]कुरिन्थुस में स्थित परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम; जो यीशु मसीह में पवित्र किये गये, जिन्हें परमेश्वर ने पवित्र लोग बनने के लिये उनके साथ ही चुना है। जो हर कहीं हमारे और उनके प्रभु यीशु मसीह का नाम पुकारते रहते हैं।

[3]हमारे परम पिता की ओर से तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम सब को उसकी अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

पौलुस का परमेश्वर को धन्यवाद

[4]तुम्हें प्रभु यीशु में जो अनुग्रह प्रदान की गयी है, उसके लिये मैं तुम्हारी ओर से परमेश्वर का सदा धन्यवाद करता हूँ। [5]तुम्हारी यीशु मसीह में स्थिति के कारण तुम्हें हर किसी प्रकार से अर्थात् समस्त वाणी और सम्पूर्ण ज्ञान से सम्पन्न किया गया है। [6]मसीह के विषय में हमने जो साक्षी दी है वह तुम्हारे बीच प्रमाणित हुई है। [7]और इसी के परिणामस्वरूप तुम्हारे पास उसके किसी पुरस्कार की कमी नहीं है। तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने की प्रतीक्षा करते रहते हो। [8]वह तुम्हें अन्त तक हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन एक दम निष्कलंक, खरा बनाये रखेगा। [9]परमेश्वर विश्वासपूर्ण है। उसी के द्वारा तुम्हें हमारे प्रभु और उसके पुत्र यीशु मसीह की सत् संगति के लिये चुना गया है।

कुरिन्थुस के कलीसिया की समस्याएँ

[10]हे भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में मेरी तुमसे प्रार्थना है कि तुम में कोई मतभेद न हो। तुम सब एक साथ जुटे, रहो और तुम्हारा चिंतन और लक्ष्य एक ही हो। [11]मुझे खलोए के घराने के लोगों से पता चला है कि तुम्हारे बीच आपसी झगड़े हैं। [12]मैं यह कह रहा हूँ कि तुम में से कोई कहता है, "मैं पौलुस का हूँ" तो कोई कहता है, "मैं अपुल्लोस का हूँ।" किसी का मत है, "वह पतरस का है" तो कोई कहता है, "वह मसीह का है।" [13]क्या मसीह बँट गया है? पौलुस तो तुम्हारे लिये क्रूस पर नहीं चढ़ा था। क्या वह चढ़ा था? तुम्हें पौलुस के नाम का बपतिस्मा तो नहीं दिया गया। बताओ क्या दिया गया था? [14]परमेश्वर का धन्यवाद है कि मैंने तुममें से क्रिसपुस और गयुस को छोड़ कर किसी भी और को बपतिस्मा नहीं दिया। [15]ताकि कोई भी यह न कह सके कि तुम लोगों को मेरे नाम का बपतिस्मा दिया गया है। [16](मैंने स्तिफनुस के परिवार को भी बपतिस्मा दिया था किन्तु जहाँ तक बाकी के लोगों की बात है, सो मुझे याद नहीं कि मैंने किसी भी और को कभी बपतिस्मा दिया हो।) [17]क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं, बल्कि वाणी के किसी तर्क-वितर्क के बिना सुसमाचार का प्रचार करने के लिये भेजा था ताकि मसीह का क्रूस यूँ ही व्यर्थ न चला जाये।

परमेश्वर की शक्ति और ज्ञान-स्वरूप मसीह

[18]वे जो भटक रहे हैं, उनके लिए क्रूस का सन्देश एक निरी मूर्खता है। किन्तु जो उद्धार पा रहे हैं उनके लिये वह परमेश्वर की शक्ति है। [19]शास्त्रों में लिखा है:

> "ज्ञानियों के ज्ञान को मैं नष्ट कर दूँगा;
> और सारी चतुर की चतुरता मैं कुंठित करूँगा।"
>
> *यशायाह 29:14*

[20]कहाँ है ज्ञानी व्यक्ति? कहाँ है विद्वान? और इस युग का शास्त्रार्थी कहाँ है? क्या परमेश्वर ने सांसारिक बुद्धिमानी को मूर्खता नहीं सिद्ध किया? [21]इसीलिये क्योंकि परमेश्वरीय ज्ञान के द्वारा यह संसार अपने बुद्धि बल से

परमेश्वर को नहीं पहचान सका तो हम संदेश की तथाकथित मूर्खता का प्रचार करते हैं। [22]यहूदी लोग तो चमत्कारपूर्ण संकेतों की माँग करते हैं और ग़ैर यहूदी विवेक की खोज में हैं। [23]किन्तु हम तो बस क्रूस पर चढ़ाये गये मसीह का ही उपदेश देते हैं। एक ऐसा उपदेश जो यहूदियों के लिये विरोध का कारण है और ग़ैर यहूदियों के लिये निरी मूर्खता। [24]किन्तु उनके लिये जिन्हें बुला लिया गया है, फिर चाहे वे यहूदी हैं या ग़ैर यहूदी, यह उपदेश मसीह है जो परमेश्वर की शक्ति है, और परमेश्वर का विवेक है। [25]क्योंकि परमेश्वर की तथाकथित 'मूर्खता' मनुष्यों के ज्ञान से कहीं अधिक विवेकपूर्ण है। और परमेश्वर की तथाकथित 'दुर्बलता' मनुष्य की शक्ति से कहीं अधिक सक्षम है।

[26]हे भाइयो, अब तनिक सोचो कि जब परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया था तो तुममें से बहुतेरे न तो सांसारिक दृष्टि से बुद्धिमान थे और न ही शक्तिशाली। तुममें से अनेक का सामाजिक स्तर भी कोई ऊँचा नहीं था। [27]बल्कि परमेश्वर ने तो संसार में जो तथाकथित मूर्खतापूर्ण था, उसे चुना ताकि बुद्धिमान लोग लज्जित हों। परमेश्वर ने संसार में दुर्बलों को चुना ताकि जो शक्तिशाली हैं, वे लज्जित हों। [28]परमेश्वर ने संसार में से उन्हें को चुना जो नीचे थीं, जिनसे घृणा की जाती थी और जो कुछ भी नहीं है। परमेश्वर ने इन्हें चुना ताकि संसार जिसे कुछ समझता है, उसे वह नष्ट कर सके। [29]ताकि परमेश्वर के सामने कोई भी व्यक्ति अभिमान न कर पाये। [30]किन्तु तुम यीशु मसीह में उसी के कारण स्थित हो। वही परमेश्वर के वरदान के रूप में हमारी बुद्धि बन गया है। उसी के द्वारा हम निर्दोष ठहराये गये ताकि परमेश्वर को समर्पित हो सकें और हमें पापों से छुटकारे मिल पाये[31]जैसा कि शास्त्र में लिखा है: "यदि किसी को कोई गर्व करना है तो वह प्रभु में अपनी स्थिति का गर्व करे।"*

क्रूस पर चढ़े मसीह के विषय में संदेश

2 हे भाइयो, जब मैं तुम्हारे पास आया था तो परमेश्वर के रहस्यपूर्ण सत्य का, वाणी की चतुरता अथवा मानव बुद्धि के साथ उपदेश देते हुए नहीं आया था [2]क्योंकि मैंने यह निश्चय कर लिया था कि तुम्हारे बीच रहते, मैं यीशु मसीह और क्रूस पर हुई उसकी मृत्यु को छोड़ कर किसी और बात को जानूँगा तक नहीं। [3]सो मैं दीनता के साथ भय से पूरी तरह काँपता हुआ तुम्हारे पास आया। [4]और मेरी वाणी तथा मेरा संदेश मानव बुद्धि के लुभावने शब्दों से युक्त नहीं थे बल्कि उनमें था आत्मा की शक्ति का प्रमाण [5]ताकि तुम्हारा विश्वास मानव बुद्धि के बजाय परमेश्वर की शक्ति पर टिके।

परमेश्वर का ज्ञान

[6]जो समझदार हैं, उन्हें हम बुद्धि देते हैं किन्तु यह बुद्धि इस युग की बुद्धि नहीं है, न ही इस युग के उन शासकों की बुद्धि है जिन्हें विनाश के कगार पर लाया जा रहा है। [7]इसके स्थान पर हम तो परमेश्वर के उस रहस्यपूर्ण विवेक को देते हैं जो छिपा हुआ था और जिसे अनादि काल से परमेश्वर ने हमारी महिमा के लिये निश्चित किया था। [8]और जिसे इस युग के किसी भी शासक ने नहीं समझा क्योंकि यदि वे उसे समझ पाये होते तो वे उस महिमावान प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। [9]किन्तु शास्त्र में लिखा है:

"जिन्हें आँखों ने देखा नहीं
और कानों ने सुना नहीं;
जहाँ मनुष्य की बुद्धि तक कभी नहीं पहुँची
ऐसी बातें उनके हेतु प्रभु ने बनायी
जो जन उसके प्रेमी होते।"

यशायाह 64:4

[10]किन्तु परमेश्वर ने उन ही बातों को आत्मा के द्वारा हमारे लिये प्रकट किया है क्योंकि आत्मा हर किसी बात को ढूँढ निकालती है यहाँ तक कि परमेश्वर की छिपी गहराइयों तक को। [11]ऐसा कौन है जो दूसरे मनुष्य के मन की बातें जान ले सिवाय उस व्यक्ति के उस आत्मा के जो उसके अपने भीतर ही है। इसी प्रकार परमेश्वर के विचारों को भी परमेश्वर की आत्मा को छोड़ कर और कौन जान सकता है। [12]किन्तु हमने तो सांसारिक आत्मा नहीं बल्कि वह आत्मा पायी है जो परमेश्वर से मिलती है ताकि हम उन बातों को जान सकें जिन्हें परमेश्वर ने हमें मुक्त रूप से दिया है। [13]उन ही बातों को हम मानवबुद्धि द्वारा विचारे गये शब्दों में नहीं बोलते बल्कि आत्मा द्वारा विचारे गये शब्दों से आत्मा की वस्तुओं की व्याख्या करते हुए बोलते हैं। [14]एक प्राकृतिक व्यक्ति परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रकाशित सत्य को ग्रहण नहीं करता क्योंकि

यदि ... गर्व करे यिर्म. 9:24

उसके लिए वे बातें निरी मूर्खता होती हैं, वह उन्हें समझ नहीं पाता क्योंकि वे आत्मा के आधार पर ही परखी जा सकती हैं। [15]आध्यात्मिक मनुष्य सब बातों का न्याय कर सकता है किन्तु उसका न्याय कोई नहीं कर सकता। क्योंकि शास्त्र कहता है:

16 "प्रभु के मन को किसने जाना?
उसको कौन सिखाए?"

यशायाह 40:13

किन्तु हमारे पास यीशु का मन है।

मनुष्यों का अनुसरण उचित नहीं

3 किन्तु हे भाइयो, मैं तुम लोगों से वैसे बात नहीं कर सका जैसे आध्यात्मिक लोगों से करता हूँ। मुझे इसके विपरीत तुम लोगों से वैसे बात करनी पड़ी जैसे सांसारिक लोगों से की जाती है। यानी उनसे जो अभी मसीह में बच्चे हैं। [2]मैंने तुम्हें पीने को दूध दिया, ठोस आहार नहीं; क्योंकि तुम अभी उसे खा नहीं सकते थे और न ही तुम इसे आज भी खा सकते हो [3]क्योंकि तुम अभी तक सांसारिक हो। क्या तुम सांसारिक नहीं हो? जबकि तुममें आपसी ईर्ष्या और कलह मौजूद है। और तुम सांसारिक व्यक्तियों जैसा व्यवहार करते हो। [4]जब तुममें से कोई कहता है, "मैं पौलुस का हूँ" और दूसरा कहता है, "मैं अपुल्लोस का हूँ" तो क्या तुम सांसारिक मनुष्यों का सा आचरण नहीं करते?

[5]अच्छा तो बताओ अपुल्लोस क्या है और पौलुस क्या है? हम तो केवल वे सेवक हैं जिनके द्वारा तुमने विश्वास को ग्रहण किया है। हममें से हर एक ने बस वह काम किया है जो प्रभु ने हमें सौंपा था। [6]मैंने बीज बोया, अपुल्लोस ने उसे सींचा; किन्तु उसकी बढ़वार तो परमेश्वर ने ही की। [7]इस प्रकार न तो वह जिसने बोया, बड़ा है, और न ही वह जिसने उसे सींचा। बल्कि बड़ा तो परमेश्वर है जिसने उसकी बढ़वार की। [8]वह जो बोता है और वह जो सींचता है, दोनों का प्रयोजन समान है। सो हर एक अपने कर्मो के परिणामों के अनुसार ही प्रतिफल पायेगा। [9]परमेश्वर की सेवा में हम सब सहकर्मी हैं। तुम परमेश्वर के खेत हो। परमेश्वर के मन्दिर हो। [10]परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया था, मैंने एक कुशल प्रमुख शिल्पी के रूप में नींव डाली किन्तु उस पर निर्माण तो कोई और ही करता है; किन्तु हर एक को सावधानी के साथ ध्यान रखना चाहिये कि वह उस पर निर्माण कैसे कर रहा है। [11]क्योंकि जो नींव डाली गई है वह स्वयं यीशु मसीह ही है और उससे भिन्न दूसरी नींव कोई डाल ही नहीं सकता। [12]यदि लोग उस नींव पर निर्माण करते हैं, फिर चाहे वे उसमें सोना लगायें, चाँदी लगायें, बहुमूल्य रत्न लगायें, लकड़ी लगायें, फूस लगायें या तिनकों का प्रयोग करें, [13]हर व्यक्ति का कर्म स्पष्ट रूप से दिखाई देगा। क्योंकि वह दिन* उसे उजागर कर देगा। क्योंकि वह दिन ज्वाला के साथ प्रकट होगा और वही ज्वाला हर व्यक्ति के कर्मो को परखेगी कि वे कर्म कैसे हैं। [14]यदि उस नींव पर किसी व्यक्ति के कर्मों की रचना टिकाऊ होगी [15]तो वह उसका प्रतिफल पायेगा और यदि किसी का कर्म उस ज्वाला में भस्म हो जायेगा तो उसे हानि उठानी होगी। किन्तु फिर भी वह स्वयं वैसे ही बच निकलेगा जैसे कोई आग लगे भवन में से भाग कर बच निकले।

[16]क्या तुम नहीं जानते कि तुम लोग स्वयं परमेश्वर का मंदिर हो और परमेश्वर की आत्मा तुममें निवास करती है? [17]यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को हानि पहुँचाता है तो परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा। क्योंकि परमेश्वर का मंदिर तो पवित्र है। हाँ, तुम ही तो वह मंदिर हो।

[18]अपने आपको मत छलो। यदि तुममें से कोई यह सोचता है कि इस युग के अनुसार वह बुद्धिमान है तो उसे बस तथाकथित मूर्ख ही बने रहना चाहिये ताकि वह सचमुच बुद्धिमान बन जाये; [19]क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में सांसारिक चतुरता मूर्खता है। शास्त्र कहता है, "वही (परमेश्वर) फँसा देता बुद्धिमानों को उनकी ही चतुरता में।" [20]और फिर, "जानता है प्रभु बुद्धिमानों के विचार सब व्यर्थ हैं।" [21]इसलिये मनुष्यों पर किसी को भी गर्व नहीं करना चाहिये क्योंकि यह सब कुछ तुम्हारा ही तो है। [22]फिर चाहे वह पौलुस हो, अपुल्लोस हो या पतरस चाहे संसार हो, जीवन हो या मृत्यु हो, चाहे ये आज की बातें हों या आने वाले कल की। सभी कुछ तुम्हारा ही तो है। [23]और तुम मसीह के हो और मसीह परमेश्वर का।

वह दिन वह दिन जब यीशु सभी लोगों का न्याय करने के लिये आयेगा

मसीह के संदेशवाहक

4 हमारे बारे में किसी व्यक्ति को इस प्रकार सोचना चाहिये कि हम लोग मसीह के सेवक हैं। परमेश्वर ने हमें और रहस्यपूर्ण सत्य सौंपे हैं। [2]और फिर जिन्हें ये रहस्य सौंपे हैं, उन पर यह दायित्व भी है कि वे विश्वास योग्य हों। [3]मुझे इसकी तनिक भी चिंता नहीं है कि तुम लोग मेरा न्याय करो या मनुष्यों की कोई और अदालत। मैं स्वयं भी अपना न्याय नहीं करता। [4]क्योंकि मेरा मन स्वच्छ है। किन्तु इसी कारण मैं छूट नहीं जाता। प्रभु तो एक ही है जो न्याय करता है। [5]इसलिये ठीक समय आने से पहले अर्थात् जब तक प्रभु न आ जाये, तब तक किसी भी बात का न्याय मत करो। वही अन्धेरे में छिपी बातों को उजागर करेगा और मन की प्रेरणा को प्रकट करेगा। उस समय परमेश्वर की ओर से हर किसी की उपयुक्त प्रशंसा होगी।

[6]हे भाइयो, मैंने इन बातों को अपुल्लोस पर और स्वयं अपने पर तुम लोगों के लिये ही चरितार्थ किया है ताकि तुम हमारा उदाहरण देखते हुए उन बातों को न उलाँघ जाओ जो शास्त्र में लिखी हैं। ताकि एक व्यक्ति का पक्ष लेते हुए और दूसरे का विरोध करते हुए अहंकार में न भर जाओ। [7]कौन कहता है कि तू किसी दूसरे से अधिक अच्छा है। तेरे पास अपना ऐसा क्या है? जो तुझे दिया नहीं गया है? और जब तुझे सब कुछ किसी के द्वारा दिया गया है तो फिर इस रूप में अभिमान किस बात का कि जैसे तूने किसी से कुछ पाया ही न हो।

[8]तुम लोग सोचते हो कि जिस किसी वस्तु की तुम्हें आवश्यकता थी, अब वह सब कुछ तुम्हारे पास है। तुम सोचते हो अब तुम सम्पन्न हो गए हो। तुम हमारे बिना ही राजा बन बैठे हो। कितना अच्छा होता कि तुम सचमुच राजा होते ताकि तुम्हारे साथ हम भी राज्य करते। [9]क्योंकि मेरा विचार है कि परमेश्वर ने हम प्रेरितों को कर्म-क्षेत्र में उन लोगों के समान सबसे अंत में स्थान दिया है जिन्हें मृत्यु-दण्ड दिया जा चुका है। क्योंकि हम समूचे संसार, स्वर्गदूतों और लोगों के सामने तमाशा बने हैं। [10]हम मसीह के लिये मूर्ख बने हैं किन्तु तुम लोग मसीह में बहुत बुद्धिमान हो। हम दुर्बल हैं किन्तु तुम तो बहुत सबल हो। तुम सम्मानित हो और हम अपमानित। [11]इस घड़ी तक हम तो भूखे-प्यासे हैं। फटे-पुराने चिथड़े पहने हैं। हमारे साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। हम बेघर हैं। [12]अपने हाथों से काम करते हुए हम मेहनत मज़दूरी करते हैं। [13]गाली खा कर भी हम आशीर्वाद देते हैं। सताये जाने पर हम उसे सहते हैं। जब हमारी बदनामी हो जाती है, हम तब भी मीठा बोलते हैं। हम अभी भी जैसे इस दुनिया का मल-फेन और कूड़ा कचरा बने हुए हैं।

[14]तुम्हें लज्जित करने के लिये मैं यह नहीं लिख रहा हूँ। बल्कि अपने प्रिय बच्चों के रूप में तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ। [15]क्योंकि चाहे तुम्हारे पास मसीह में तुम्हारे दसियों हजार संरक्षक मौजूद हैं, किन्तु तुम्हारे पिता तो अनेक नहीं हैं। क्योंकि सुसमाचार द्वारा मसीह यीशु में मैं तुम्हारा पिता बना हूँ। [16]इसलिये तुमसे मेरा आग्रह है, मेरा अनुकरण करो। [17]मैंने इसीलिये तिमुथियुस को तुम्हारे पास भेजा है। वह प्रभु में स्थित मेरा प्रिय एवम् विश्वास करने योग्य पुत्र है। यीशु मसीह में मेरे आचरणों की वह तुम्हें याद दिलायेगा। जिनका मैंने हर कहीं, हर कलीसिया में उपदेश दिया है।

[18]कुछ लोग अंधकार में इस प्रकार फूल उठे हैं जैसे अब मुझे तुम्हारे पास कभी आना ही न हो। [19]अस्तु यदि परमेश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही मैं तुम्हारे पास आऊँगा और फिर अहंकार में फूले उन लोगों की मात्र वाचालता को नहीं बल्कि उनकी शक्ति को देख लूँगा। [20]क्योंकि परमेश्वर का राज्य वाचालता पर नहीं, शक्ति पर टिका है। [21]तुम क्या चाहते हो:

हाथ में छड़ी थामे मैं तुम्हारे पास
आऊँ या कि प्रेम और
कोमल आत्मा साथ में लाऊँ?

कलीसिया में दुराचार

5 सचमुच ऐसा बताया गया है कि तुम लोगों में दुराचार फैला हुआ है। ऐसा दुराचार- व्यभिचार तो अधर्मियों तक में नहीं मिलता। जैसे कोई तो अपनी विमाता तक के साथ सहवास करता है। [2]और फिर तुम लोग अभिमान में फूले हुए हो। किन्तु क्या तुम्हें इसके लिये दुखी नहीं होना चाहिये? जो कोई ऐसा दुराचार करता है उसे तो तुम्हें अपने बीच से निकाल बाहर करना चाहिये था। [3]मैं यद्यपि शारीरिक रूप से तुम्हारे बीच नहीं हूँ किन्तु आत्मिक रूप से तो वहीं उपस्थित हूँ। और मानो वहाँ उपस्थित रहते हुए जिसने ऐसे बुरे काम किये हैं, उसके विरुद्ध मैं अपना यह निर्णय दे चुका हूँ [4]कि जब

तुम मेरे साथ हमारे प्रभु यीशु के नाम में मेरी आत्मा और हमारे प्रभु यीशु की शक्ति के साथ एकत्रित होओगे [5]तो ऐसे व्यक्ति को उसके पापपूर्ण मानव स्वभाव को नष्ट कर डालने के लिये शैतान को सौंप दिया जायेगा ताकि प्रभु के दिन उसकी आत्मा का उद्धार हो सके।

[6]तुम्हारा यह बड़बोलापन अच्छा नहीं है। तुम इस कहावत को तो जानते ही हो, "थोड़ा सा ख़मीर आटे के पूरे लौंदे को खमीरमय कर देता है।" [7]पुराने ख़मीर से छुटकारा पाओ ताकि तुम आटे का नया लौंदा बन सको। तुम तो बिना ख़मीर वाली फ़सह की रोटी के समान हो। हमें पवित्र करने के लिये मसीह को फ़सह के मेमने के रूप में बलि चढ़ा दिया गया। [8]इसलिये आओ हम अपना फ़सह पर्व बुराई और दुष्टता से युक्त पुराने ख़मीर की रोटी से नहीं बल्कि निष्ठा और सत्य से युक्त बिना ख़मीर की रोटी से मनायें।

[9]अपने पिछले पत्र में मैंने लिखा था कि तुम्हें उन लोगों से अपना नाता नहीं रखना चाहिए जो व्यभिचारी हैं। [10]मेरा यह प्रयोजन बिलकुल नहीं था कि तुम इस दुनिया के व्यभिचारियों, लोभियों, ठगों या मूर्ति-पूजकों से कोई सम्बन्ध ही मत रखो। ऐसा होने पर तो तुम्हें इस संसार से ही निकल जाना होगा। [11]किन्तु मैंने तुम्हें जो लिखा है, वह यह है कि किसी ऐसे व्यक्ति से नाता मत रखो जो अपने आपको मसीही बन्धु कहला कर भी व्यभिचारी, लोभी, मूर्तिपूजक चुगलखोर, पियक्कड़ या एक ठग है। ऐसे व्यक्ति के साथ तो भोजन भी ग्रहण मत करो।

[12]जो लोग बाहर के हैं, कलीसिया के नहीं, उनका न्याय करने का भला मेरा क्या काम। क्या तुम्हें उन ही का न्याय नहीं करना चाहिये जो कलीसिया के भीतर के हैं? [13]कलीसिया के बाहर वालों का न्याय तो परमेश्वर करेगा। शास्त्र कहता है, "अपने बीच से, निकाल करो बाहर तुम पापी को।"*

आपसी विवादों का निबटारा

6 क्या तुममें से कोई ऐसा है जो अपने साथी के साथ कोई झगड़ा होने पर परमेश्वर के पवित्र पुरुषों के पास न जा कर अधर्मी लोगों की अदालत में जाने का साहस करता हो? [2]अथवा क्या तुम नहीं जानते कि परमेश्वर के पवित्र पुरुष ही जगत का न्याय करेंगे? और जब तुम्हारे द्वारा सारे संसार का न्याय किया जाना है तो क्या अपनी इन छोटी-छोटी बातों का न्याय करने योग्य तुम नहीं हो? [3]क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का भी न्याय करेंगे? फिर इस जीवन की इन रोज़मर्रा की छोटी मोटी बातों का तो कहना ही क्या। [4]यदि हर दिन तुम्हारे बीच कोई न कोई विवाद रहता ही है तो क्या न्यायाधीश के रूप में तुम ऐसे व्यक्तियों की नियुक्ति करोगे जिनका कलीसिया में कोई स्थान नहीं है। [5]यह मैं तुमसे इस लिये कह रहा हूँ कि तुम्हें कुछ लाज आये। क्या स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि तुम्हारे बीच कोई ऐसा बुद्धिमान पुरुष है ही नहीं जो अपने मसीही भाइयों के आपसी झगड़े सुलझा सके? [6]क्या एक भाई कभी अपने दूसरे भाई से मुकदमा लड़ता है! और तुम तो अविश्वासियों के सामने ऐसा कर रहे हो।

[7]वास्तव में तुम्हारी पराजय तो इसी में हो चुकी कि तुम्हारे बीच आपस में कानूनी मुकदमे हैं। इसके स्थान पर तुम आपस में अन्याय ही क्यों नहीं सह लेते? अपने आप को क्यों नहीं लुट जाने देते। [8]तुम तो स्वयं अन्याय करते हो और अपने ही मसीही भाइयों को लूटते हो!

[9]अथवा क्या तुम नहीं जानते कि बुरे लोग परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकार नहीं पायेंगे? अपने आप को मूर्ख मत बनाओ। यौनानाचार करने वाले, मूर्ति पूजक, व्यभिचारी, गुदा-भंजन कराने वाले, लौंडेबाज़, [10]लुटेरे, लालची, पियक्कड़, चुगलखोर और ठग परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी नहीं होंगे। [11]तुममें से कुछ ऐसे ही थे। किन्तु अब तुम्हें धोया गया और पवित्र कर दिया है। तुम्हें परमेश्वर की सेवा में अर्पित कर दिया गया है। प्रभु यीशु मसीह के नाम और हमारे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उन्हें धर्मी करार दिया जा चुका है।

अपने शरीर को परमेश्वर की महिमा में लगाओ

[12] "मैं कुछ भी करने को स्वतन्त्र हूँ।" किन्तु हर कोई बात हितकर नहीं होती। हाँ! "मैं सब कुछ करने को स्वतन्त्र हूँ।" किन्तु मैं अपने पर किसी को भी हावी नहीं होने दूँगा। [13]कहा जाता है, "भोजन पेट के लिये, और पेट भोजन के लिये है।" किन्तु परमेश्वर इन दोनों को ही समाप्त कर देगा। और हमारे शरीर भी तो यौन-अनाचार

अपने ... पापी को व्यवस्था. 22:21-24

के लिये नहीं हैं बल्कि प्रभु की सेवा के लिये हैं। और प्रभु हमारी देह के कल्याण के लिये है। [14]परमेश्वर ने केवल प्रभु को ही पुनर्जीवित नहीं किया बल्कि अपनी शक्ति से वह मृत्यु से हम सब को भी जिला उठायेगा। [15]क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर स्वयं यीशु मसीह से जुड़े हैं? तो क्या मुझे उन्हें, जो मसीह के अंग हैं, किसी वेश्या के अंग बना देना चाहिये? [16]निश्चय ही नहीं। अथवा क्या तुम यह नहीं जानते, कि जो अपने आपको वेश्या से जोड़ता है, वह उसके साथ एक देह हो जाता है। शास्त्र में कहा गया है: "क्योंकि वे दोनों एक देह हो जायेंगे।"* [17]किन्तु वह जो अपनी लौ प्रभु से लगाता है, उसकी आत्मा में एकाकार हो जाता है।

[18]यौनाचार से दूर रहो। दूसरे सभी पाप जिन्हें एक व्यक्ति करता है, उसके शरीर से बाहर होते हैं किन्तु ऐसा व्यक्ति जो व्यभिचार करता है वह तो अपने शरीर के ही विरुद्ध पाप करता है। [19]अथवा क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर उस पवित्र आत्मा के मंदिर हैं जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है और जो तुम्हारे भीतर निवास करता है। और वह आत्मा तुम्हारा अपना नहीं है [20]क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें कीमत चुका कर खरीदा है इसलिये अपने शरीरों के द्वारा परमेश्वर को महिमा प्रदान करो।

विवाह

7 अब उन बातों के बारे में जो तुमने लिखीं थीं: अच्छा यह है कि कोई पुरुष किसी स्त्री को छुए ही नहीं। [2]किन्तु यौन अनैतिकता की घटनाओं की सम्भावनाओं के कारण हर पुरुष की अपनी पत्नी होनी चाहिये और हर स्त्री का अपना पति। [3]पति को चाहिये कि पत्नी के रूप में जो कुछ पत्नी का अधिकार बनता है, उसे दे। और इसी प्रकार पत्नी को भी चाहिये कि पति को उसका यथोचित प्रदान करे। [4]अपने शरीर पर पत्नी का कोई अधिकार नहीं हैं बल्कि उसके पति का है। और इसी प्रकार पति का भी उसके अपने शरीर पर कोई अधिकार नहीं है, बल्कि उसकी पत्नी का है। [5]अपने आप को प्रार्थना में समर्पित करने के लिये थोड़े समय तक एक दूसरे से समागम न करने की आपसी सहमति को छोड़कर, एक दूसरे को संभोग से वंचित मत करो। फिर आत्म-संयम के अभाव के कारण कहीं शैतान तुम्हें किसी परीक्षा में न डाल दे, इसलिये तुम फिर समागम कर लो। [6]मैं यह एक छूट के रूप में कह रहा हूँ, आदेश के रूप में नहीं। [7]मैं तो चाहता हूँ सभी लोग मेरे जैसे होते। किन्तु हर व्यक्ति को परमेश्वर से एक विशेष बरदान मिला है। किसी का जीने का एक ढंग है तो दूसरे का दूसरा।

[8]अब मुझे अविवाहितों और विधवाओं के बारे में यह कहना है: यदि वे मेरे समान अकेले ही रहें तो उनके लिए यह उत्तम रहेगा। [9]किन्तु यदि वे अपने आप पर काबू न रख सकें तो उन्हें विवाह कर लेना चाहिये; क्योंकि वासना की आग में जलते रहने से विवाह कर लेना अच्छा है।

[10]अब जो विवाहित हैं उनको मेरा यह आदेश है, (यद्यपि यह मेरा नहीं है, बल्कि प्रभु का आदेश है) कि किसी पत्नी को अपना पति नहीं त्यागना चाहिये [11]किन्तु यदि वह उसे छोड़ ही दे तो उसे फिर अनब्याहा ही रहना चाहिये या अपने पति से मेल-मिलाप कर लेना चाहिये। और ऐसे ही पति को भी अपनी पत्नी को छोड़ना नहीं चाहिये।

[12]अब शेष लोगों से मेरा यह कहना है: (यह मैं कह रहा हूँ न कि प्रभु) यदि किसी मसीही भाई की कोई ऐसी पत्नी है जो इस मत में विश्वास नहीं रखती और उसके साथ रहने को सहमत है तो उसे त्याग नहीं देना चाहिये। [13]ऐसे ही यदि किसी स्त्री का कोई ऐसा पति है जो पंथ का विश्वासी नहीं है किन्तु उसके साथ रहने को सहमत है तो उस स्त्री को भी अपना पति त्यागना नहीं चाहिये। [14]क्योंकि वह अविश्वासी पति विश्वासीपत्नी से निकट संबन्धों के कारण पवित्र हो जाता है और इसी प्रकार वह अविश्वासिनी पत्नी भी अपने विश्वासी पति के निरन्तर साथ रहने से पवित्र हो जाती है। नहीं तो तुम्हारी संतान अस्वच्छ हो जाती किन्तु अब तो वे पवित्र हैं।

[15]फिर भी यदि कोई अविश्वासी अलग होना चाहता है तो वह अलग हो सकता है। ऐसी स्थितियों में किसी मसीही भाई या बहन पर कोई बंधन लागू नहीं होगा। परमेश्वर ने हमें शांति के साथ रहने को बुलाया है। [16]हे पत्नियो, क्या तुम जानती हो? हो सकता है तुम अपने अविश्वासी पति को बचा लो।

जैसे हो, वैसे जिओ

[17]प्रभु ने जिसको जैसा दिया है और जिसको जिस रूप में चुना है, उसे वैसे ही जीना चाहिये। सभी चर्चों में

क्योंकि ... जायेंगे उत्पत्ति 2:24

मैं इसी का आदेश देता हूँ। 18जब किसी को परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया, तब यदि वह ख़तना युक्त था तो उसे अपना ख़तना छिपाना नहीं चाहिये। और किसी को ऐसी दशा में बुलाया गया जब वह बिना ख़तने के था तो उसका ख़तना कराना नहीं चाहिये। 19ख़तना तो कुछ नहीं है, और न ही ख़तना नहीं होना कुछ है। बल्कि परमेश्वर के आदेशों का पालन करना ही सब कुछ है। 20हर किसी को उसी स्थिति में रहना चाहिये, जिसमें उसे बुलाया गया है। 21क्या तुझे दास के रूप में बुलाया गया है? तू इसकी चिंता मत कर। किन्तु यदि तू स्वतन्त्र हो सकता है तो आगे बढ़ और अवसर का लाभ उठा। 22क्योंकि जिसे प्रभु के दास के रूप में बुलाया गया, वह तो प्रभु का स्वतन्त्र व्यक्ति है। इसी प्रकार जिसे स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में बुलाया गया, वह मसीह का दास है। 23परमेश्वर ने कीमत चुका कर तुम्हें खरीदा है। इसलिए मनुष्यों के दास मत बनो। 24हे भाइयो, तुम्हें जिस भी स्थिति में बुलाया गया है, परमेश्वर के सामने उसी स्थिति में रहो।

विवाह करने सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर

25अविवाहितों के सम्बन्ध में प्रभु की ओर से मुझे कोई आदेश नहीं मिला है। इसीलिये मैं प्रभु की दया प्राप्त करके विश्वसनीय होने के कारण अपनी राय देता हूँ। 26मैं सोचता हूँ कि इस वर्तमान संकट के कारण यही अच्छा है कि कोई व्यक्ति मेरे समान ही अकेला रहे। 27यदि तुम विवाहित हो तो उससे छुटकारा पाने का यत्न मत करो। यदि तुम स्त्री से मुक्त हो तो उसे खोजो मत। 28किन्तु यदि तुम्हारा जीवन विवाहित है तो तुमने कोई पाप नहीं किया है। और यदि कोई कुँवारी कन्या विवाह करती है, तो कोई पाप नहीं करती है किन्तु ऐसे लोग शारीरिक कष्ट उठायेंगे जिनसे मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ।

29हे भाइयो, मैं तो यही कह रहा हूँ, वक्त बहुत थोड़ा है। इसलिये अब से आगे, जिनके पास पत्नियाँ हैं, वे ऐसे रहें, मानो उनके पास पत्नियाँ हैं ही नहीं। 30और वे जो बिलख रहे हैं, वे ऐसे रहें, मानो कभी दुखी ही न हुए हों। और जो आनन्दित हैं, वे ऐसे रहें, मानो प्रसन्न ही न हुए हों। और वे जो वस्तुएँ मोल लेते हैं, ऐसे रहें मानो उनके पास कुछ भी न हो। 31और जो सांसारिक सुख–विलासों का भोग कर रहे हैं, वे ऐसे रहें, मानों वे वस्तुएँ उनके लिए कोई महत्त्व नहीं रखतीं। क्योंकि यह संसार अपने वर्तमान स्वरूप में नाशमान है।

32मैं चाहता हूँ आप लोग चिंताओं से मुक्त रहें। एक अविवाहित व्यक्ति प्रभु सम्बन्धी विषयों के चिंतन में लगा रहता है कि वह प्रभु को कैसे प्रसन्न करे। 33किन्तु एक विवाहित व्यक्ति सांसारिक विषयों में ही लिप्त रहता है कि वह अपनी पत्नी को कैसे प्रसन्न कर सकता है। 34इस प्रकार उसका व्यक्तित्व बँट जाता है। और ऐसे ही किसी अविवाहित स्त्री या कुँवारी कन्या को जिसे बस प्रभु सम्बन्धी विषयों की ही चिंता रहती है। जिससे वह अपने शरीर और अपनी आत्मा से पवित्र हो सके। किन्तु एक विवाहित स्त्री सांसारिक विषयभोगों में इस प्रकार लिप्त रहती है कि वह अपने पति को रिझाती रह सके। 35ये मैं तुमसे तुम्हारे भले के लिये ही कह रहा हूँ तुम पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये नहीं। बल्कि अच्छी व्यवस्था के हित में और इसलिए भी कि तुम चित्त की चंचलता के बिना प्रभु को समर्पित हो सको।

36यदि कोई सोचता है कि वह अपनी युवा हो चुकी कुँवारी प्रिया के प्रति उचित नहीं कर रहा है और यदि उसकी कामभावना तीव्र है, तथा दोनों को ही आगे बढ़ कर विवाह कर लेने की आवश्यकता है, तो जैसा वह चाहता है, उसे आगे बढ़ कर वैसा कर लेना चाहिये। वह पाप नहीं कर रहा है। उन्हें विवाह कर लेना चाहिये। 37किन्तु जो अपने मन में बहुत पक्का है और जिस पर कोई दबाव भी नहीं हैं, बल्कि जिसका अपनी इच्छाओं पर भी पूरा बस है और जिसने अपने मन में पूरा निश्चय कर लिया है कि वह अपनी प्रिया से विवाह नहीं करेगा तो वह अच्छा ही कर रहा है। 38सो वह जो अपनी प्रिया से विवाह कर लेता है, अच्छा करता है और जो उससे विवाह नहीं करता, वह और भी अच्छा करता है।

39जब तक किसी स्त्री का पति जीवित रहता है, तभी तक वह विवाह के बन्धन में बँधी होती है किन्तु यदि उसके पति का देहान्त हो जाता है, तो जिसके साथ चाहे, विवाह करने, वह स्वतन्त्र है किन्तु केवल प्रभु में। 40पर यदि जैसी वह है, वैसी ही रहती है तो अधिक प्रसन्न रहेगी। यह मेरा विचार है। और मैं सोचता हूँ कि मुझमें भी परमेश्वर के आत्मा का ही निवास है।

चढ़ावे का भोजन

8 अब मूर्तियों पर चढ़ाई गई बलि के विषय में: हम यह जानते हैं, "हम सभी ज्ञानी है।" "ज्ञान" लोगों को अहंकार से भर देता है। किन्तु प्रेम से व्यक्ति अधिक शक्तिशाली बनता है। [2]यदि कोई सोचे कि वह कुछ जानता है तो जिसे जानना चाहिये उसके बारे में तो उसने अभी कुछ जाना ही नहीं। [3]यदि कोई परमेश्वर को प्रेम करता है तो वह परमेश्वर के द्वारा जाना जाता है।

[4]सो मूर्तियों पर चढ़ाये गये भोजन के बारे में हम जानते हैं कि इस संसार में वास्तविक प्रतिमा कहीं नहीं है। और यह कि 'परमेश्वर केवल एक ही है।' [5]और धरती या आकाश में यद्यपि तथाकथित देवता बहुत से हैं (बहुत से "देवता" हैं, बहुत से "प्रभु" हैं।) [6]किन्तु हमारे लिये तो एक ही परमेश्वर है, हमारा पिता। उसी से सब कुछ आता है। और उसी के लिये हम जीते हैं। प्रभु केवल एक है, यीशु मसीह। उसी के द्वारा सब वस्तुओं का अस्तित्व है और उसी के द्वारा हमारा जीवन है।

[7]किन्तु यह ज्ञान हर किसी के पास नहीं है। कुछ लोग जो अब तक मूर्ति उपासना के आदी हैं, ऐसी वस्तुएँ खाते हैं और सोचते हैं जैसे मानो वे वस्तुएँ मूर्ति का प्रसाद हों। उनके इस कर्म से उनकी आत्मा निर्बल होने के कारण दूषित हो जाती है। [8]किन्तु वह प्रसाद तो हमें परमेश्वर के निकट नहीं ले जायेगा। यदि हम उसे न खायें तो कुछ घट नहीं जाता और यदि खायें तो कुछ बढ़ नहीं जाता।

[9]सावधान रहो। कहीं तुम्हारा यह अधिकार उनके लिये, जो दुर्बल हैं, पाप में गिरने का कारण न बन जाये। [10]क्योंकि दुर्बल मन का कोई व्यक्ति यदि तुझ जैसे इस विषय के जानकार को मूर्ति वाले मंदिर में खाते हुए देखता है तो उसका दुर्बल मन क्या उस हद तक नहीं भटक जायेगा कि वह मूर्ति पर बलि चढ़ाई गयी वस्तुओं को खाने लगे। [11]तेरे ज्ञान से, दुर्बल मन के व्यक्ति का तो नाश ही हो जायेगा तेरे उसी बन्धु का, जिसके लिए मसीह ने जान दे दी। [12]इस प्रकार अपने भाइयों के विरुद्ध पाप करते हुए और उनके दुर्बल मन को चोट पहुँचाते हुए तुम लोग मसीह के विरुद्ध पाप कर रहे हो। [13]इस लिए यदि भोजन मेरे भाई को पाप की राह पर बढ़ाता है तो मैं फिर कभी भी माँस नहीं खाऊँगा ताकि मैं अपने भाई के लिए, पाप करने की प्रेरणा न बनूँ।

पौलुस भी दूसरे प्रेरितों जैसा ही है

9 क्या मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ? क्या मैं भी एक प्रेरित नहीं हूँ? क्या मैंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के दर्शन नहीं किये हैं? क्या तुम लोग प्रभु में मेरे ही कर्म का परिणाम नहीं हो? [2]चाहे दूसरों के लिये मैं प्रेरित न भी होऊँ –तो भी मैं तुम्हारे लिये तो प्रेरित हूँ ही। क्योंकि तुम एक ऐसी मुहर के समान हो जो प्रभु में मेरे प्रेरित होने को प्रमाणित करती है।

[3]वे लोग जो मेरी जाँच करना चाहते हैं, उनके प्रति आत्मरक्षा में मेरा उत्तर यह है: [4]क्या मुझे खाने पीने का अधिकार नहीं है? [5]क्या मुझे यह अधिकार नहीं कि मैं अपनी विश्वासिनी पत्नी को अपने साथ ले जाऊँ? जैसा कि दूसरे प्रेरित, प्रभु के बन्धु और पतरस ने किया है। [6]अथवा क्या बरनाबास और मुझे ही अपनी आजीविका कमाने के लिये कोई काम करना चाहिए? [7]सेना में ऐसा कौन होगा जो अपने ही खर्च पर एक सिपाही के रूप में काम करे। अथवा कौन होगा जो अंगूर की बगिया लगाकर भी उसका फल न चखे? या कोई ऐसा है जो भेड़ों के रेवड़ की देखभाल तो करता हो पर उनका थोड़ा बहुत भी दूध न पीता हो?

[8]क्या मैं मानवीय चिन्तन के रूप में ही ऐसा कह रहा हूँ? आखिरकार क्या व्यवस्था का विधान भी ऐसा ही नहीं कहता? [9]मूसा की व्यवस्था के विधान में लिखा है, "खलिहान में बैल का मुँह मत बाँधो।"* परमेश्वर क्या केवल बैलों के बारे में बता रहा है? [10]नहीं! निश्चित रूप से वह इसे क्या हमारे लिये नहीं बता रहा? हाँ, यह हमारे लिये ही लिखा गया था। क्योंकि खेत जोतने वाला किसी आशा से ही खेत जोतने और खलिहान में भूसे से अनाज अलग करने वाला फसल का कुछ भाग पाने की आशा तो रखेगा ही। [11]फिर यदि हमने तुम्हारे हित के लिये आध्यात्मिकता के बीज बोये हैं तो हम तुमसे भौतिक वस्तुओं की फसल काटना चाहते हैं, यह क्या कोई बहुत बड़ी बात है? [12]यदि दूसरे लोग तुमसे भौतिक वस्तुएँ पाने का अधिकार रखते हैं तो हमारा तो तुम पर क्या और भी अधिक अधिकार नहीं हैं? किन्तु हमने इस अधिकार का उपयोग नहीं किया है। बल्कि हम तो सब कुछ सहते रहे हैं

खलिहान ... बाँधो व्यवस्था. 25:4

ताकि हम मसीह के सुसमाचार के मार्ग में कोई बाधा न डाल दें। [13]क्या तुम नहीं जानते कि जो लोग मंदिर में काम करते हैं, वे अपना भोजन मन्दिर से ही पाते हैं। और जो नियमित रूप से वेदी की सेवा करते हैं, वेदी के चढ़ावे में उनका हिस्सा होता है? [14]इसी प्रकार प्रभु ने व्यवस्था दी है कि सुसमाचार के प्रचारकों की आजीविका सुसमाचार के प्रचार से ही होनी चाहिये।

[15]किन्तु इन अधिकारों में से मैंने एक का भी कभी प्रयोग नहीं किया। और ये बातें मैंने इसलिये लिखी भी नहीं हैं कि ऐसा कुछ मेरे विषय में किया जाये। बजाय इसके कि कोई मुझ से उस बात को ही छीन ले जिसका मुझे गर्व है। इस से तो मैं मर जाना ही ठीक समझूँगा। [16]इसलिये यदि मैं सुसमाचार का प्रचार करता हूँ तो इसमें मुझे गर्व करने का कोई हेतु नहीं हैं क्योंकि मेरा तो यह कर्तव्य है। और यदि मैं सुसमाचार का प्रचार न करूँ तो मेरे लिए यह कितना बुरा होगा। [17]फिर यदि यह मैं अपनी इच्छा से करता हूँ तो मैं इसका फल पाने योग्य हूँ, किन्तु यदि अपनी इच्छा से नहीं बल्कि किसी नियुक्ति के कारण यह काम मुझे सौंपा गया है [18]तो फिर मेरा प्रतिफल काहे का। इसलिये जब मैं सुसमाचार का प्रचार करूँ तो बिना कोई मूल्य लिये ही उसे करूँ। ताकि सुसमाचार के प्रचार में जो कुछ पाने का मेरा अधिकार है, मैं उसका पूरा उपयोग न करूँ।

[19]यद्यपि मैं किसी भी व्यक्ति के बन्धन में नहीं हूँ, फिर भी मैंने स्वयं को आप सब का सेवक बना लिया है। ताकि मैं अधिकतर लोगों को जीत सकूँ। [20]यहूदियों के लिये मैं एक यहूदी जैसा बना, ताकि मैं यहूदियों को जीत सकूँ। जो लोग व्यवस्था के विधान के अधीन हैं, उनके लिये मैं एक ऐसा व्यक्ति बना जो व्यवस्था के विधान के अधीन जैसा है। यद्यपि मैं स्वयं व्यवस्था के विधान के अधीन नहीं हूँ। यह मैंने इसलिये किया कि मैं व्यवस्था के विधान के अधीनों को जीत सकूँ। [21]मैं एक ऐसा व्यक्ति भी बना जो व्यवस्था के विधान को नहीं मानता। यद्यपि मैं परमेश्वर की व्यवस्था से रहित नहीं हूँ बल्कि मसीह की व्यवस्था के अधीन हूँ। ताकि मैं जो व्यवस्था के विधान को नहीं मानते हैं उन्हें जीत सकूँ। [22]जो दुर्बल हैं, उनके लिये मैं दुर्बल बना ताकि मैं दुर्बलों को जीत सकूँ। हर किसी के लिये मैं हर किसी के जैसा बना ताकि हर सम्भव उपाय से उनका उद्धार कर सकूँ। [23]यह सब कुछ मैं सुसमाचार के लिये करता हूँ ताकि इसके वरदानों में मेरा भी कुछ भाग हो।

[24]क्या तुम लोग यह नहीं जानते कि खेल के मैदान में दौड़ते तो सभी धावक हैं किन्तु पुरस्कार किसी एक को ही मिलता है। एसे दौड़ो कि जीत तुम्हारी ही हो! [25]किसी खेल प्रतियोगिता में प्रत्येक प्रतियोगी को हर प्रकार का आत्मसंयम करना होता है। वे एक नाशमान जयमाल से सम्मानित होने के लिये ऐसा करते हैं किन्तु हम तो एक अविनाशी मुकुट को पाने के लिए यह करते हैं। [26]इस प्रकार मैं उस व्यक्ति के समान दौड़ता हूँ जिसके सामने एक लक्ष्य है। मैं हवा में मुक्के नहीं मारता। [27]बल्कि मैं तो अपने शरीर को कठोर अनुशासन में तपा कर, उसे अपने वश में करता हूँ। ताकि कहीं ऐसा न हो जाय कि दूसरों को उपदेश देने के बाद परमेश्वर के द्वारा मैं ही व्यर्थ ठहरा दिया जाऊँ।

यहूदियों जैसे मत बनो

10 हे भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि हमारे सभी पूर्वज बादल की छत्र छाया में सुरक्षा पूर्वक लाल सागर पार कर गए थे। [2]उन सब को बादल के नीचे, समुद्र के बीच मूसा के अनुयायियों के रूप में बपतिस्मा दिया गया था। [3]उन सभी ने समान आध्यात्मिक भोजन खाया था [4]और समान आध्यात्मिक जल पिया था क्योंकि वे अपने साथ चल रही उस आध्यात्मिक चट्टान से ही जल ग्रहण कर रहे थे। और वह चट्टान थी मसीह। [5]किन्तु उनमें से अधिकांश लोगों से परमेश्वर प्रसन्न नहीं था, इसीलिये वे मरुभूमि में मारे गये।

[6]ये बातें ऐसे घटीं कि हमारे लिये उदाहरण सिद्ध हों और हम बुरी बातों की कामना न करें जैसे उन्होंने की थी। [7]मूर्ति–पूजक मत बनो, जैसे कि उनमें से कुछ थे। शास्त्र कहता है: "व्यक्ति खाने पीने के लिये बैठा और परस्पर आनन्द मनाने के लिए उठा।" [8]सो आओ हम कभी व्यभिचार न करें जैसे उनमें से कुछ किया करते थे। इसी नाते उनमें से 23,000 व्यक्ति एक ही दिन मर गए। [9]आओ हम मसीह की परीक्षा न लें, जैसे कि उनमें से कुछ ने ली थी। परिणामस्वरूप साँपों से डसे जाकर वे मारे गए। [10]शिकवा शिकायत मत करो जैसे कि उनमें से कुछ किया करते थे और इसी कारण विनाश के स्वर्गदूत द्वारा मार डाले गए।

[11]ये बातें उनके साथ ऐसे घटीं कि उदाहरण रहे। और उन्हें लिख दिया गया कि हमारे लिए जिन पर युगों का अन्त उतरा हुआ है, चेतावनी रहे। [12]इस लिये जो यह सोचता है कि वह दृढ़ता के साथ खड़ा है, उसे सावधान रहना चाहिये कि वह गिर न पड़े। [13]तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े हो, जो मनुष्यों के लिये सामान्य नहीं है। परमेश्वर विश्वसनीय है। वह तुम्हारी सहन शक्ति से अधिक तुम्हें परीक्षा में नहीं पड़ने देगा। परीक्षा के साथ साथ उससे बचने का मार्ग भी वह तुम्हें देगा ताकि तुम परीक्षा को उत्तीर्ण कर सको।

[14]हे मेरे प्रिय मित्रो, अंत में मैं कहता हूँ मूर्ति उपासना से दूर रहो। [15]तुम्हें समझदार समझ कर मैं ऐसा कह रहा हूँ। जो मैं कह रहा हूँ, उसे अपने आप परखो। [16]धन्यवाद का वह प्याला जिसके लिये हम धन्यवाद देते हैं, वह क्या मसीह के लहू में हमारी साझेदारी नहीं है? वह रोटी जिसे हम विभाजित करते हैं, क्या यीशु की देह में हमारी साझेदारी नहीं? [17]रोटी का होना एक ऐसा तथ्य है, जिसका अर्थ है कि हम सब एक ही शरीर से हैं। क्योंकि उस एक रोटी में ही हम सब साझेदार हैं।

[18]उन इस्राएलियों के बारे में सोचो, जो बलि की वस्तुएँ खाते हैं। क्या वे उस वेदी के साझेदार नहीं हैं? [19]इस बात को मेरे कहने का प्रयोजन क्या है? क्या मैं यह कहना चाहता हूँ कि मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन कुछ है या कि मूर्ति कुछ भी नहीं है। नहीं। [20]बल्कि मेरा आशय तो यह है कि वे अधर्मी जो बलि चढ़ाते हैं, वे उन्हें परमेश्वर के लिये नहीं, बल्कि दुष्ट आत्माओं के लिये चढ़ाते हैं। और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के साझेदार बनो। [21]तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे में से एक साथ नहीं पी सकते। तुम प्रभु के भोजन की चौकी और दुष्टात्माओं के भोजन की चौकी, दोनों में एक साथ हिस्सा नहीं बँटा सकते। [22]क्या हम प्रभु को चिड़ाना चाहते हैं? क्या जितना शक्तिशाली वह है, हम उससे अधिक शक्तिशाली हैं?

अपनी स्वतन्त्रता का प्रयोग परमेश्वर की महिमा के लिये करो

[23]जैसा कि कहा गया है कि हम कुछ भी करने के लिये स्वतन्त्र हैं। पर सब कुछ हितकारी तो नहीं है। 'हम कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र हैं' किन्तु हर किसी बात से विश्वास सुदृढ़ तो नहीं होता। [24]किसी को भी मात्र स्वार्थ की ही चिन्ता नहीं करनी चाहिये बल्कि औरों के परमार्थ की भी सोचनी चाहिये।

[25]बाजार में जो कुछ बिकता है, अपने अन्तर्मन के अनुसार वह सब कुछ खाओ। उसके बारे में कोई प्रश्न मत करो। [26]क्योंकि शास्त्र कहता है: "यह धरती और इस पर जो कुछ है, सब प्रभु का है।"*

[27]यदि अविश्वासियों में से कोई व्यक्ति तुम्हें भोजन पर बुलाये और तुम वहाँ जाना चाहो तो तुम्हारे सामने जो भी परोसा गया है, अपने अन्तर्मन के अनुसार सब खाओ। कोई प्रश्न मत पूछो। [28]किन्तु यदि कोई तुम लोगों को यह बताये, "यह देवता पर चढ़ाया गया चढ़ावा है" तो जिसने तुम्हें यह बताया है, उसके कारण और अपने अन्तर्मन के कारण उसे मत खाओ। [29]मैं जब अन्तर्मन कहता हूँ तो मेरा अर्थ तुम्हारे अन्तर्मन से नहीं बल्कि उस दूसरे व्यक्ति के अन्तर्मन से है। एकमात्र यही कारण है। क्योंकि मेरी स्वतन्त्रता भला दूसरे व्यक्ति के अन्तर्मन द्वारा लिये गये निर्णय से सीमित क्यों रहे? [30]यदि मैं धन्यवाद देकर, भोजन में हिस्सा लेता हूँ तो जिस वस्तु के लिये मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ, उसके लिये मेरी आलोचना नहीं की जानी चाहिये।

[31]इसलिये चाहे तुम खाओ, चाहे पिओ, चाहे कुछ और करो, बस सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो। [32]यहूदियों के लिये या ग़ैर यहूदियों के लिये या जो परमेश्वर के कलीसिया के हैं, उन के लिये कभी बाधा मत बनो [33]जैसे मैं स्वयं हर प्रकार से हर किसी को प्रसन्न रखने का जतन करता हूँ, और बिना यह सोचे कि मेरा स्वार्थ क्या है, परमार्थ की सोचता हूँ ताकि उनका उद्धार हो।

11 सो तुम लोग वैसे ही मेरा अनुसरण करो जैसे मैं मसीह का अनुसरण करता हूँ।

अधीन रहना

[2]मैं तुम्हारी प्रशँसा करता हूँ। क्योंकि तुम मुझे हर समय याद करते रहते हो; और जो शिक्षाएँ मैंने तुम्हें दी हैं, उनका सावधानी से पालन कर रहे हो। [3]पर मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि स्त्री का सिर पुरुष है, पुरुष का सिर मसीह है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।

यह ... का है भजन. 24:1; 50:12; 89:11

[4]हर ऐसा पुरुष जो सिर ढक कर प्रार्थना करता है या परमेश्वर की ओर से बोलता है, वह परमेश्वर का अपमान करता है जो अपना सिर है। [5]पर हर ऐसी स्त्री जो बिना सिर ढके प्रार्थना करती है या जनता में परमेश्वर की ओर से बोलती है, वह अपने पुरुष का अपमान करती है जो उसका सिर है। वह ठीक उस स्त्री के समान है जिसने अपना सिर मुँडवा दिया है। [6]यदि कोई स्त्री अपना सिर नहीं ढकती तो वह अपने बाल भी क्यों नहीं मुँडवा लेती। किन्तु यदि स्त्री के लिये बाल मुँडवाना लज्जा की बात है तो उसे अपना सिर भी ढकना चाहिये। [7]किन्तु पुरुष के लिये अपना सिर ढकना उचित नहीं है क्योंकि वह परमेश्वर के स्वरूप और महिमा का प्रतिबिम्ब है। किन्तु एक स्त्री अपने पुरुष की महिमा को प्रतिबिंबित करती है [8]मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ क्योंकि पुरुष किसी स्त्री से नहीं, बल्कि स्त्री पुरुष से बनी है। [9]पुरुष स्त्री के लिये नहीं रचा गया बल्कि स्त्री की रचना पुरुष के लिये की गयी है। [10]इसलिये परमेश्वर ने उसे जो अधिकार दिया है, उसके प्रतीक रूप में स्त्री को चाहिये कि वह अपना सिर ढके। उसे स्वर्गदूतों के कारण भी ऐसा करना चाहिये।

[11]फिर भी प्रभु में न तो स्त्री पुरुष से स्वतन्त्र हैं और न ही पुरुष स्त्री से। [12]क्योंकि जैसे पुरुष से स्त्री आयी, वैसे ही स्त्री ने पुरुष को जन्म दिया। किन्तु सब कोई परमेश्वर से आते हैं। [13]स्वयं निर्णय करो। क्या जनता के बीच एक स्त्री का सिर उघाड़े परमेश्वर की प्रार्थना करना अच्छा लगता है? [14]क्या स्वयं प्रकृति तुम्हें नहीं सिखाती कि यदि कोई पुरुष अपने बाल लम्बे बढ़ने दे तो यह उसके लिए लज्जा की बात है, [15]और यह कि एक स्त्री के लिए यही उसकी शोभा है? वास्तव में उसे उसके लंबे बाल एक प्राकृतिक ओढ़नी के रूप में दिये गये हैं। [16]अब इस पर यदि कोई विवाद करना चाहे तो मुझे कहना होगा कि न तो हमारे यहाँ कोई ऐसी प्रथा है और न ही परमेश्वर की कलीसिया में।

प्रभु का भोज

[17]अब यह अगला आदेश देते हुए मैं तुम्हारी प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ क्योंकि तुम्हारा आपस में मिलना तुम्हारा भला करने की बजाय तुम्हें हानि पहुँचा रहा है। [18]सबसे पहले यह कि मैंने सुना है कि तुम लोग सभा में जब परस्पर मिलते हो तो तुम्हारे बीच मतभेद रहता है। कुछ अंश तक मैं इस पर विश्वास भी करता हूँ। [19](आखिरकार तुम्हारे बीच मतभेद भी होंगे ही। जिससे कि तुम्हारे बीच में जो उचित ठहराया गया है, वह सामने आ जाये।) [20]सो जब तुम आपस में इकट्ठे होते हो तो सचमुच प्रभु का भोज पाने के लिये नहीं इकट्ठे होते, [21]बल्कि जब तुम भोज ग्रहण करते हो तो तुममें से हर कोई आगे बढ़ कर अपने ही खाने पर टूट पड़ता है। और बस कोई व्यक्ति तो भूखा ही चला जाता है, जबकि कोई व्यक्ति अत्यधिक खा–पी कर मस्त हो जाता है। [22]क्या तुम्हारे पास खाने पीने के लिये अपने घर नहीं हैं। अथवा इस प्रकार तुम परमेश्वर की कलीसिया का अनादर नहीं करते? और जो दीन हैं उनका तिरस्कार करने की चेष्टा नहीं करते? मैं तुमसे क्या कहूँ? इसके लिये क्या मैं तुम्हारी प्रशंसा करूँ। इस विषय में मैं तुम्हारी प्रशंसा नहीं करूँगा।

[23]क्योंकि जो सीख मैंने तुम्हें दी है, वह मुझे प्रभु से मिली थी। प्रभु यीशु ने उस रात, जब उसे मरवा डालने के लिये पकड़वाया गया था, एक रोटी ली [24]और धन्यवाद देने के बाद उसने उसे तोड़ा और कहा, "यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए है। मुझे याद करने के लिए तुम ऐसा ही किया करो।" [25]उनके भोजन कर चुकने के बाद इसी प्रकार उसने प्याला उठाया और कहा, "यह प्याला मेरे लहू के द्वारा किया गया एक नया वाचा है। जब कभी तुम इसे पिओ तभी मुझे याद करने के लिये ऐसा करो।" [26]क्योंकि जितनी बार भी तुम इस रोटी को खाते हो और इस प्याले को पीते हो, उतनी ही बार जब तक वह आ नहीं जाता, तुम प्रभु की मृत्यु का प्रचार करते हो।

[27]अत: जो कोई भी प्रभु की रोटी या प्रभु के प्याले को अनुचित रीति से खाता पीता है, वह प्रभु की देह और उस के लहू के प्रति अपराधी होगा। [28]व्यक्ति को चाहिये कि वह पहले अपने को परखे और तब इस रोटी को खाये और इस प्याले को पिये। [29]क्योंकि प्रभु के देह का अर्थ समझे बिना जो इस रोटी को खाता और इस प्याले को पीता है, वह इस प्रकार खा–पी कर अपने ऊपर दण्ड को बुलाता है। [30]इसी लिये तो तुममें से बहुत से लोग दुर्बल हैं, बीमार हैं और बहुत से तो चिरनिद्रा में सो गये हैं। [31]किन्तु यदि हमने अपने आप को अच्छी तरह से परख लिया होता तो हमें प्रभु का दण्ड न भोगना पड़ता।

[32]प्रभु हमें अनुशासित करने के लिये दण्ड देता है। ताकि हमें संसार के साथ दंडित न किया जाये।

[33]इसलिये हे मेरे भाइयो, जब भोजन करने तुम इकट्ठे होते हो तो परस्पर एक दूसरे की प्रतीक्षा करो। [34]यदि सचमुच किसी को बहुत भूख लगी हो तो उसे घर पर ही खा लेना चाहिये ताकि तुम्हारा एकत्र होना तुम्हारे लिये दण्ड का कारण न बने। अस्तु; दूसरी बातों को जब मैं आऊँगा, तभी सुलझाऊँगा।

पवित्र आत्मा के वरदान

12 हे भाइयो, अब मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मा के वरदानों के विषय में अनजान रहो। [2]तुम जानते हो कि जब तुम विधर्मी थे तब तुम्हें गूँगी जड़ मूर्तियों की ओर जैसे भटकाया जाता था, तुम वैसे ही भटकते थे। [3]सो मैं तुम्हें बताता हूँ कि परमेश्वर के आत्मा की ओर से बोलने वाला कोई भी यह नहीं कहता, "यीशु को शाप लगे" और पवित्र आत्मा के द्वारा कहने वाले को छोड़ कर न कोई यह कह सकता है, "यीशु प्रभु है।"

[4]हर एक को आत्मा के अलग-अलग वरदान मिले हैं। किन्तु उन्हें देने वाली आत्मा तो एक ही है। [5]सेवाएँ अनेक प्रकार की निश्चित की गयी हैं किन्तु हम सब जिसकी सेवा करते हैं, वह प्रभु तो एक ही है। [6]काम-काज तो बहुत से बताये गये हैं किन्तु सभी के बीच सब कर्मों को करने वाला वह परमेश्वर तो एक ही है। [7]हर किसी में आत्मा किसी न किसी रूप में प्रकट होता है जो हर एक की भलाई के लिये होता है। [8]किसी को आत्मा के द्वारा परमेश्वर के ज्ञान से युक्त होकर बोलने की योग्यता दी गयी है तो किसी को उसी आत्मा द्वारा दिव्य ज्ञान के प्रवचन की योग्यता। [9]और किसी को उसी आत्मा द्वारा विश्वास का वरदान दिया गया है तो किसी को चंगा करने की क्षमताएँ उसी आत्मा के द्वारा दी गयी हैं। [10]और किसी अन्य व्यक्ति को आश्चर्यपूर्ण शक्तियाँ दी गयी हैं तो किसी दूसरे को परमेश्वर की ओर से बोलने का सामर्थ्य दिया गया है। और किसी को मिली है भली बुरी आत्माओं के अंतर को पहचानने की शक्ति। किसी को अलग-अलग भाषाएँ बोलने की शक्ति प्राप्त हुई है, तो किसी को भाषाओं की व्याख्या करके उनका अर्थ निकालने की शक्ति। [11]किन्तु यह वही एक आत्मा है जो जिस-जिस को जैसा-जैसा ठीक समझता है, देते हुए, इन सब बातों को पूरा करता है।

मसीह की देह

[12]जैसे हममें से हर एक का शरीर तो एक है, पर उसमें अंग अनेक हैं। और यद्यपि अंगों के अनेक रहते हुए भी उनसे देह एक ही बनती है, वैसे ही मसीह है [13]क्योंकि चाहे हम यहूदी रहे हों, चाहे ग़ैर यहूदी, सेवक रहे हों या स्वतन्त्र। एक ही देह के विभिन्न अंग बन जाने के लिए हम सब को एक ही आत्मा द्वारा बपतिस्मा दिया गया और प्यास बुझाने को हम सब को एक ही आत्मा प्रदान की गयी।

[14]अब देखो, मानव शरीर किसी एक अंग से ही तो बना नहीं होता, बल्कि उसमें बहुत से अंग होते हैं। [15]यदि पैर कहे, "क्योंकि मैं हाथ नहीं हूँ, इसलिये मेरा शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं" तो इसीलिये क्या वह शरीर का अंग नहीं रहेगा। [16]इसी प्रकार यदि कान कहे, "क्योंकि मैं आँख नहीं हूँ, इसलिये मैं शरीर का नहीं हूँ" तो क्या इसी कारण से वह शरीर का नहीं रहेगा। [17]यदि एक आँख ही सारा शरीर होता तो सुना कहाँ से जाता? यदि कान ही सारा शरीर होता तो सूँघा कहाँ से जाता। [18]किन्तु वास्तव में परमेश्वर ने जैसा ठीक समझा, हर अंग को शरीर में वैसा ही स्थान दिया। [19]सो यदि शरीर के सारे अंग एक से हो जाते तो शरीर ही कहाँ होता। [20]किन्तु स्थिति यह है कि अंग तो अनेक होते हैं किन्तु शरीर एक ही रहता है।

[21]आँख हाथ से यह नहीं कह सकती, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं!" या ऐसे ही सिर, पैरों से यह नहीं कह सकता, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं!" [22]इसके बिल्कुल विपरीत शरीर के जिन अंगों को हम दुर्बल समझते हैं, वे बहुत आवश्यक होते हैं। [23]और शरीर के जिन अंगों को हम कम आदरणीय समझते हैं, उनका हम अधिक ध्यान रखते हैं। और हमारे गुप्त अंग और अधिक शालीनता पा लेते हैं। [24]जबकि हमारे प्रदर्शनीय अंगों को इस प्रकार के उपचार की आवश्यकता नहीं होती। किन्तु परमेश्वर ने हमारे शरीर की रचना इस ढंग से की है जिससे उन अंगों को जो कम सुन्दर हैं और अधिक आदर प्राप्त हो। [25]ताकि देह में कहीं कोई फूट न पड़े बल्कि देह के अंग परस्पर एक दूसरे का समान रूप से ध्यान रखें। [26]यदि शरीर का कोई एक अंग दुख पाता है तो उसके साथ शरीर के और सभी अंग दुखी होते हैं। यदि किसी एक

अंग का मान बढ़ता है तो उसकी प्रसन्नता में सभी अंग हिस्सा बटाते हैं।

[27]इस प्रकार तुम सभी लोग मसीह का शरीर हो और अलग–अलग रूप में उसके अंग हो। [28]इतना ही नहीं परमेश्वर ने कलीसिया में पहले प्रेरितों को, दूसरे नबियों को, तीसरे उपदेशकों को, फिर आश्चर्यकर्म करने वालों को, फिर चंगा करने की शक्ति से युक्त व्यक्तियों को, फिर उनको जो दूसरों की सहायता करते हैं, प्रस्थापित किया है, फिर अगुवाई करने वालों को और फिर उन लोगों को जो विभिन्न भाषाएँ बोल सकते हैं। [29]क्या ये सभी प्रेरित हैं? ये सभी क्या नबी हैं? क्या ये सभी उपदेशक हैं? क्या ये सभी आश्चर्यकार्य करते हैं? [30]क्या इन सब के पास चंगा करने की शक्ति है? क्या ये सभी दूसरी भाषाएँ बोलते हैं? क्या ये सभी अन्य भाषाओं की व्याख्या करते हैं? [31]हाँ, किन्तु तुम आत्मा के और बड़े वरदान पाने के लिए यत्न करते रहो। और इन सब के लिए उत्तम मार्ग तुम्हें अब मैं दिखाऊँगा।

प्रेम महान है

13 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएँ तो बोल सकूँ किन्तु मुझमें प्रेम न हो, तो मैं एक बजता हुआ घड़ियाल या झंकारती हुई झाँझ मात्र हूँ। [2]यदि मुझमें परमेश्वर की ओर से बोलने की शक्ति हो और मैं परमेश्वर के सभी रहस्यों को जानता होऊँ तथा समूचा दिव्य ज्ञान भी मेरे पास हो और इतना विश्वास भी मुझमें हो कि पहाड़ों को अपने स्थान से सरका सकूँ, किन्तु मुझमें प्रेम न हो [3]तो मैं कुछ नहीं हूँ। यदि मैं अपनी सारी सम्पत्ति थोड़ी–थोड़ी कर के जरूरत मन्दों के लिए दान कर दूँ और अब चाहे अपने शरीर तक को जला डालने के लिए सौंप दूँ किन्तु यदि मैं प्रेम नहीं करता तो। [4]इससे मेरा भला होने वाला नहीं है।

प्रेम धैर्यपूर्ण है, प्रेम दयामय है, प्रेम में ईर्ष्या नहीं होती, प्रेम अपनी प्रशंसा आप नहीं करता। [5]वह अभिमानी नहीं होता। वह अनुचित व्यवहार कभी नहीं करता, वह स्वार्थी नहीं है, प्रेम कभी झुँझलाता नहीं, वह बुराइयों का कोई लेखा–जोखा नहीं रखता। [6]बुराई पर कभी उसे प्रसन्नता नहीं होती। वह तो दूसरों के साथ सत्य पर आनंदित होता है। [7]वह सदा रक्षा करता है, वह सदा विश्वास करता है। प्रेम सदा आशा से पूर्ण रहता है। वह सहनशील है।

[8]प्रेम अमर है। जबकि भविष्यवाणी का सामर्थ्य तो समाप्त हो जायेगा, दूसरी भाषाओं को बोलने की क्षमता युक्त जीभें एक दिन चुप हो जायेंगी, दिव्य ज्ञान का उपहार जाता रहेगा, [9]क्योंकि हमारा ज्ञान तो अधूरा है, हमारी भविष्यवाणियाँ अपूर्ण हैं। [10]किन्तु जब पूर्णता आयेगी तो वह अधूरापन चला जायेगा। [11]जब मैं बच्चा था तो एक बच्चे की तरह ही बोला करता था, वैसे ही सोचता था और उसी प्रकार सोच विचार करता था, किन्तु अब जब मैं बड़ा होकर पुरुष बन गया हूँ, तो वे बचपने की बातें जाती रही हैं। [12]क्योंकि अभी तो दर्पण में हमें एक धुँधला सा प्रतिबिंब दिखायी पड़ रहा है किन्तु पूर्णता प्राप्त हो जाने पर हम पूरी तरह आमने–सामने देखेंगे। अभी तो मेरा ज्ञान आंशिक है किन्तु समय आने पर वह परिपूर्ण होगा। वैसे ही जैसे परमेश्वर मुझे पूरी तरह जानता है। [13]इस दौरान विश्वास, आशा और प्रेम तो बने ही रहेंगे और इन तीनों में भी सबसे महान् है प्रेम।

आध्यात्मिक वरदानों को कलीसिया की सेवा में लगाओ

14 प्रेम के मार्ग पर प्रयत्नशील रहो। और आध्यात्मिक वरदानों की निष्ठा के साथ अभिलाषा करो। विशेष रूप से परमेश्वर की ओर से बोलने की। [2]क्योंकि जिसे दूसरे की भाषा में बोलने का वरदान मिला है, वह तो वास्तव में लोगों से नहीं, बल्कि परमेश्वर से बातें कर रहा है। क्योंकि उसे कोई समझ नहीं पाता, वह तो आत्मा की शक्ति से रहस्यमय वाणी बोल रहा है। [3]किन्तु वह जिसे परमेश्वर की ओर से बोलने का बरदान प्राप्त है, वह लोगों से उन्हें आत्मा में दृढ़ता, प्रोत्साहन और चैन पहुँचाने के लिए बोल रहा है। [4]जिसे विभिन्न भाषाओ में बोलने का बरदान प्राप्त है वह तो बस अपनी आत्मा को ही सुदृढ़ करता है किन्तु जिसे परमेश्वर की ओर से बोलने का सामर्थ्य मिला है वह समूची कलीसिया को आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ बनाता है। [5]अब मैं चाहता हूँ कि तुम सभी दूसरी अनेक भाषाएँ बोलो किन्तु इससे भी अधिक मैं यह चाहता हूँ कि तुम परमेश्वर की ओर से बोल सको क्योंकि कलीसिया की आध्यात्मिक सुदृढ़ता के लिये अपने कहे की व्याख्या करने वाले को छोड़ कर, दूसरी भाषाएँ बोलने वाले से परमेश्वर की ओर से बोलने वाला बड़ा है।

[6]हे भाइयो, यदि दूसरी भाषाओं में बोलते हुए मैं तुम्हारे पास आऊँ तो इससे तुम्हारा क्या भला होगा, जब तक कि तुम्हारे लिये मैं कोई रहस्य उद्घाटन, दिव्यज्ञान, परमेश्वर का सन्देश या कोई उपदेश न दूँ। [7]यह बोलना तो ऐसे ही होगा जैसै किसी बाँसुरी या सारंगी जैसे निर्जीव वाद्य की ध्वनि। यदि किसी वाद्य के स्वरों में परस्पर स्पष्ट अन्तर नहीं होगा तो कोई कैसे पता लगा पायेगा कि बाँसुरी या सारंगी पर कौन सी धुन बजायी जा रही है। [8]और यदि बिगुल से अस्पष्ट ध्वनि निकलने लगे तो फिर युद्ध के लिये तैयार कौन होगा? [9]इसी प्रकार किसी दूसरे की भाषा में जब तक कि तुम साफ–साफ न बोलो, तब तक कोई कैसे समझ पायेगा कि तुमने क्या कहा है। क्योंकि ऐसे में तुम तो बस हवा में बोलने वाले ही रह जाओगे। [10]इसमें कोई सन्देह नहीं है कि संसार में भाँति–भाँति की बोलियाँ हैं और उनमें से कोई भी निरर्थक नहीं है। [11]सो जब तक मैं उस भाषा का जानकार नहीं हूँ, तब तक बोलने वाले के लिये मैं एक अजनबी ही रहूँगा। और वह बोलने वाला मेरे लिये भी अजनबी ही ठहरेगा। [12]तुम पर भी यही बात लागू होती है क्योंकि तुम आध्यात्मिक वरदानों को पाने के लिये उत्सुक हो। इसलिये उनमें भरपूर होने का प्रयत्न करो, जिससे कलीसिया को आध्यात्मिक सुदृढ़ता प्राप्त हो।

[13]परिणामस्वरूप जो दूसरी भाषा में बोलता है, उसे प्रार्थना करनी चाहिये कि वह अपने कहे का अर्थ भी बता सके। [14]क्योंकि यदि मैं किसी अन्य भाषा में प्रार्थना करूँ तो मेरी आत्मा तो प्रार्थना कर रही होती है किन्तु मेरी बुद्धि व्यर्थ रहती है। [15]तो फिर क्या करना चाहिये? मैं अपनी आत्मा से तो प्रार्थना करूँगा ही किन्तु साथ ही अपनी बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा। अपनी आत्मा से तो उसकी स्तुति करूँगा ही किन्तु अपनी बुद्धि से भी उसकी स्तुति करूँगा। [16]क्योंकि यदि तू केवल अपनी आत्मा से ही कोई आशीर्वाद दे तो वहाँ बैठा कोई व्यक्ति जो बस सुन रहा है, तेरे धन्यवाद पर "आमीन" कैसे कहेगा क्योंकि तू जो कह रहा है, उसे वह जानता ही नहीं। [17]अब देख तू तो चाहे भली–भाँति धन्यवाद दे रहा है किन्तु दूसरे व्यक्ति की तो उससे कोई आध्यात्मिक सुदृढ़ता नहीं होती।

[18]मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि मैं तुम सब से बढ़कर विभिन्न भाषाएँ बोल सकता हूँ। [19]किन्तु कलीसिया सभा के बीच किसी दूसरी भाषा में दसियों हज़ार शब्द बोलने की अपेक्षा अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए बस पाँच शब्द बोलना अच्छा समझता हूँ ताकि दूसरों को भी शिक्षा दे सकूँ।

[20]हे भाइयो, अपने विचारों में बचकाने मत रहो बल्कि बुराइयों के विषय में अबोध बच्चे जैसे बने रहो। किन्तु अपने चिन्तन में सयाने बनो। [21]व्यवस्था के विधान में लिखा है:

"उनका उपयोग करते हुए
जो अन्य बोली बोलते हैं,
उनके मुखों का उपयोग करते हुए
जो पराए हैं मैं इनसे बात करूँगा,
पर तब भी ये मेरी न सुनेंगे।

यशायाह 28:11–12

प्रभु ऐसा ही कहता है।

[22]सो दूसरी भाषाएँ बोलने का वरदान अविश्वासियों के लिए संकेत है न कि विश्वासियों के लिये। जबकि परमेश्वर की ओर से बोलना अविश्वासियों के लिये नहीं, बल्कि विश्वासियों के लिये है। [23]सो यदि समूचा कलीसिया एकत्र हो और हर कोई दूसरी–दूसरी भाषाओं में बोल रहा हो तभी बाहर के लोग या अविश्वासी भीतर आ जायें तो क्या वे तुम्हें पागल नहीं कहेंगे। [24]किन्तु यदि हर कोई परमेश्वर की ओर से बोल रहा हो और तब तक कुछ अविश्वासी या बाहर के आ जाएँ तो क्या सब लोग उसे उसके पापों का बोध नहीं करा देंगे। सब लोग जो कह रहे हैं, उसी पर उसका न्याय होगा। [25]जब उसके मन के भीतर छिपे भेद खुल जायेंगे तब तक वह यह कहते हुए "सचमुच तुम्हारे बीच परमेश्वर है" दण्डवत प्रणाम करके परमेश्वर की उपासना करेगा।

तुम्हारी सभाएँ और कलीसिया

[26]हे भाइयो, तो फिर क्या करना चाहिये? तुम जब इकट्ठे होते हो तो तुममें से कोई भजन, कोई उपदेश और कोई आध्यात्मिक रहस्य का उद्घाटन करता है। कोई किसी अन्य भाषा में बोलता है तो कोई उसकी व्याख्या करता है। ये सब बातें कलीसिया की आत्मिक सुदृढ़ता के लिये की जानी चाहियें। [27]यदि किसी अन्य भाषा में बोलना है तो अधिक से अधिक दो या तीन को ही

बोलना चाहिये–बारी–बारी, एक–एक करके। और जो कुछ कहा गया है, एक को उसकी व्याख्या करनी चाहिये। 28यदि वहाँ व्याख्या करने वाला कोई न हो तो बोलने वाले को चाहिये कि वह सभा में चुप ही रहे और फिर उसेअपने आप से और परमेश्वर से ही बातें करनी चाहियें।

29परमेश्वर की ओर से उसके दूत के रूप में बोलने का जिन्हें वरदान मिला है, ऐसे दो या तीन व्यक्तियों को ही बोलना चाहिये और दूसरों को चाहिये कि जो कुछ उन्होंने कहा है, वे उसे परखते रहें। 30यदि वहाँ किसी बैठे हुए पर किसी बात का रहस्य उद्‌घाटन होता है तो परमेश्वर की ओर से बोल रहे पहले वक्ता को चुप हो जाना चाहिये। 31क्योंकि तुम एक–एक करके परमेश्वर की ओर से बोल सकते हो ताकि सभी लोग सीखें और प्रोत्साहित हों। 32नबियों की आत्माएँ नबियों के वश में रहती हैं। 33क्योंकि परमेश्वर अव्यवस्था नहीं, शांति देता है। जैसा कि सन्तों की सभी कलीसियों में होता है।

34स्त्रियों को चाहिये कि वे सभाओं में चुप रहें क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है। बल्कि जैसा कि व्यवस्था के विधान में भी कहा गया है, उन्हें दब कर रहना चाहिये। 35यदि वे कुछ जानना चाहती हैं तो उन्हें घर पर अपने–अपने पति से पूछना चाहिये क्योंकि एक स्त्री के लिये यह शोभा नहीं देता कि वह सभा में बोले। 36क्या परमेश्वर का वचन तुमसे उत्पन्न हुआ? या वह मात्र तुम तक पहुँचा? निश्चित ही नहीं।

37यदि कोई सोचता है कि वह नबी है अथवा उसे आध्यात्मिक वरदान प्राप्त है तो उसे पहचान लेना चाहिये कि मैं तुम्हें जो कुछ लिख रहा हूँ, वह प्रभु का आदेश है। 38सो यदि कोई इसे नहीं पहचान पाता तो उसे भी नहीं पहचाना जायेगा।

39इसलिये हे मेरे भाइयो, परमेश्वर की ओर से बोलने को तत्पर रहो तथा दूसरी भाषाओं में बोलने वालों को भी मत रोको। 40किन्तु ये सभी बातें सही ढँग से और व्यवस्थानुसार की जानी चाहियें।

यीशु का सुसमाचार

15 हे भाइयो, अब मैं तुम्हें उस सुसमाचार की याद दिलाना चाहता हूँ जिसे मैंने तुम्हें सुनाया था और तुमने भी जिसे ग्रहण किया था और जिसमें तुम निरन्तर स्थिर बने हुए हो। 2और जिसके द्वारा तुम्हारा उद्धार भी हो रहा है बशर्ते तुम उन शब्दों को जिनका मैंने तुम्हें आदेश दिया था, अपने में दृढ़ता से थामे रखो। (नहीं तो तुम्हारा विश्वास धारण करना ही बेकार गया।)

3जो सर्वप्रथम बात मुझे प्राप्त हुई थी, उसे मैंने तुम तक पहुँचा दिया कि शास्त्रों के अनुसार: मसीह हमारे पापों के लिये मरा 4और उसे दफना दिया गया। और शास्त्र कहता है कि फिर तीसरे दिन उसे जिला कर उठा दिया गया। 5और फिर वह पतरस के सामने प्रकट हुआ और उसके बाद बारहों प्रेरितों को उसने दर्शन दिये। 6फिर वह पाँच सौ से भी अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया। उनमें से बहुतेरे आज तक जीवित हैं। यद्यपि कुछ की मृत्यु भी हो चुकी है। 7इसके बाद वह याकूब के सामने प्रकट हुआ। और तब उसने सभी प्रेरितों को फिर दर्शन दिये। 8और सब से अंत में उसने मुझे भी दर्शन दिये। मैं तो समय से पूर्व असामान्य जन्मे सतमासे बच्चे जैसा हूँ। 9क्योंकि मैं तो प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ। यहाँ तक कि मैं तो प्रेरित कहलाने योग्य भी नहीं हूँ क्योंकि मैं तो परमेश्वर की कलीसिया को सताया करता था। 10किन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से मैं वैसा बना हूँ जैसा आज हूँ। मुझ पर उसका अनुग्रह बेकार नहीं गया। मैंने तो उन सब से बढ़ चढ़कर परिश्रम किया है, यद्यपि वह परिश्रम करने वाला मैं नहीं था, बल्कि परमेश्वर का वह अनुग्रह था जो मेरे साथ रहता था। 11सो चाहे तुम्हें मैंने उपदेश दिया हो चाहे उन्होंने, हम सब यही उपदेश देते हैं और इसी पर तुमने विश्वास किया है।

हमारा पुनर्जीवन

12किन्तु जब कि मसीह को मरे हुओं में से पुनरुत्थापित किया गया तो तुममें से कुछ ऐसा क्यों कहते हो कि मृत्यु के बाद फिर से जी उठना सम्भव नहीं है। 13और यदि मृत्यु के बाद जी उठना है ही नहीं तो फिर मसीह भी मृत्यु के बाद नहीं जिलाया गया। 14और यदि मसीह को नहीं जिलाया गया तो हमारा उपदेश देना बेकार है और तुम्हारा विश्वास भी बेकार है। 15और हम भी फिर तो परमेश्वर के बारे में झूठे गवाह ठहरते हैं क्योंकि हमने परमेश्वर के सामने कसम उठा कर यह साक्षी दी है कि उसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया। किन्तु उनके कथन के अनुसार यदि मरे हुए जिलाये नहीं जाते तो फिर परमेश्वर

ने मसीह को भी नहीं जिलाया। [16]क्योंकि यदि मरे हुए नहीं जिलाये जाते हैं तो मसीह को भी नहीं जिलाया गया। [17]और यदि मसीह को फिर से जीवित नहीं किया गया है, फिर तो तुम्हारा विश्वास ही निरर्थक है और तुम अभी भी अपने पापों में फँसे हो। [18]हाँ, फिर तो जिन्होंने मसीह के लिए अपने प्राण दे दिये, वे यूँ ही नष्ट हुए। [19]यदि हमने केवल अपने इस भौतिक जीवन के लिये ही यीशु मसीह में अपनी आशा रखी है तब तो हम और सभी लोगों से अधिक अभागे हैं।

[20]किन्तु अब वास्तविकता यह है कि मसीह को मरे हुओं में से जिलाया गया है। वह मरे हुओं की फ़सह का पहला फल है। [21]क्योंकि जब एक मनुष्य के द्वारा मृत्यु आयी तो एक मनुष्य के द्वारा ही मृत्यु से पुनर्जीवित हो उठना भी आया। [22]क्योंकि ठीक वैसे ही जैसे आदम के कर्मों के कारण हर किसी के लिए मृत्यु आयी, वैसे ही मसीह के द्वारा सब को फिर से जिला उठाया जायेगा [23]किन्तु हर एक को उसके अपने कर्म के अनुसार सबसे पहले मसीह को, जो फसल का पहला फल है और फिर उसके पुन: आगमन पर उनको, जो मसीह के हैं। [24]इसके बाद जब मसीह सभी शासकों, अधिकारियों, हर प्रकार की शक्तियों का अंत करके राज्य को परम पिता परमेश्वर के हाथों सौंप देगा, तब प्रलय हो जायेगी। [25]किन्तु जब तक परमेश्वर मसीह के शत्रुओं को उसके पैरों तले न कर दे तब तक उसका राज्य करते रहना आवश्यक है। [26]सबसे अंतिम शत्रु के रूप में मृत्यु का नाश किया जायेगा। [27]क्योंकि "परमेश्वर ने हर किसी को मसीह के चरणों के अधीन रखा है।* अब देखो जब शास्त्र कहता है, सब कुछ" को उसके अधीन कर दिया गया है। तो जिसने "सब कुछ" को उसके चरणों के अधीन किया है, वह स्वयं इसका अपवाद है। [28]और जब सब कुछ मसीह के अधीन कर दिया गया है, तो यहाँ तक कि स्वयं पुत्र को भी उस परमेश्वर के अधीन कर दिया जायेगा जिसने सब कुछ को मसीह के अधीन कर दिया ताकि हर किसी पर पूरी तरह परमेश्वर का शासन हो।

[29]नहीं तो जिन्होंने अने प्राण दे दिये हैं, उनके कारण जिन्होंने बपतिस्मा लिया है, वे क्या करेंगे। यदि मरे हुए कभी पुनर्जीवित होते ही नहीं तो लोगों को उनके लिये बपतिस्मा दिया ही क्यों जाता है?

[30]और हम भी हर घड़ी संकट क्यों झेलते रहते हैं? [31]भाइयो! तुम्हारे लिए मेरा वह गर्व जिसे मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह में स्थित होने के नाते रखता हूँ, उसे साक्षी करके शपथ पूर्वक कहता हूँ कि मैं हर दिन मरता हूँ। [32]यदि मैं इफ़िसुस में जँगली पशुओं के साथ मानवीय स्तर पर ही लड़ा था तो उससे मुझे क्या मिला। यदि मरे हुए जिलाये नहीं जाते, "तो आओ, खायें, पीएँ (मौज मनायें) क्योंकि कल तो मर ही जाना है।"*

[33]भटकना बंद करो: "बुरी संगति से अच्छी आदतें नष्ट हो जाती हैं।" [34]होश में आओ, अच्छा जीवन अपनाओ, जैसा कि तुम्हें होना चाहिये। पाप करना बंद करो। क्योंकि तुममें से कुछ तो ऐसे हैं जो परमेश्वर के बारे में कुछ भी नहीं जानते। मैं यह इसलिये कह रहा हूँ कि तुम्हें लज्जा आए।

हमें कैसी देह मिलेगी?

[35]किन्तु कोई पूछ सकता है, "मरे हुए कैसे जिलाये जाते हैं? और वे फिर कैसी देह धारण करके आते हैं?" [36]तुम कितने मूर्ख हो। तुम जो बोते हो वह जब तक पहले मर नहीं जाता, जीवित नहीं होता। [37]और जहाँ तक जो तुम बोते हो, उसका प्रश्न है, तो जो पौधा विकसित होना है, तुम उस भरेपूरे पौधे को तो धरती में नहीं बोते। बस केवल बीज बोते हो, चाहे वह गेहूँ का दाना हो और चाहे कुछ और। [38]फिर परमेश्वर जैसा चाहता है, वैसा रूप उसे देता है। हर बीज को वह उसका अपना शरीर प्रदान करता है। [39]सभी जीवित प्राणियों के शरीर एक जैसे नहीं होते। मनुष्यों का शरीर एक तरह का होता है जबकि पशुओं का शरीर दूसरी तरह का। चिड़ियाओं की देह अलग प्रकार की होती है और मछलियों की अलग। [40]कुछ देह दिव्य होती हैं और कुछ पार्थिव किन्तु दिव्य देह की आभा एक प्रकार की होती है और पार्थिव शरीरों की दूसरे प्रकार की। [41]सूरज का तेज एक प्रकार का होता है और चाँद का दूसरे प्रकार का। तारों में भी एक भिन्न प्रकार का प्रकाश रहता है। और हाँ, तारों का प्रकाश भी एक दूसरे से भिन्न रहता है।

[42]सो जब मरे हुए जी उठेंगे तब भी ऐसा ही होगा। वह देह जिसे धरती में दफ़ना कर "बोया" गया है, नाशमान है किन्तु वह देह जिसका पुनरुत्थान हुआ है, अविनाशी

परमेश्वर ... रखा है भजन. 8:6

आओ ... जान है यशा. 22:13; 56:12

है। [43]वह काया जो धरती में "दफनाई" गयी है, अनादरपूर्ण है किन्तु वह काया जिसका पुनरुत्थान हुआ है, महिमा से मंडित है। वह काया जिसे धरती मे "गाड़ा" गया है, दुर्बल है किन्तु वह काया जिसे पुनर्जीवित किया गया है, शक्तिशाली है। [44]जिस काया को धरती में "दफनाया" गया है, वह प्राकृतिक है किन्तु जिसे पुनर्जीवित किया गया है, वह आध्यात्मिक शरीर है। यदि प्राकृतिक शरीर होते हैं तो आध्यात्मिक शरीरों का भी अस्तित्व है। [45]शास्त्र कहता है: "पहला मनुष्य (आदम) एक सजीव प्राणी बना।"* किन्तु अंतिम आदम (मसीह) जीवनदाता आत्मा बना। [46]आध्यात्मिक पहले नहीं आता, बल्कि पहले आता है भौतिक और फिर उसके बाद ही आता है आध्यात्मिक। [47]पहले मनुष्य को धरती की मिट्टी से बनाया गया और दूसरा मनुष्य (मसीह) स्वर्ग से आया। [48]जैसे उस मनुष्य की रचना मिट्टी से हुई, वैसे ही सभी लोग मिट्टी से ही बने। और उस दिव्य पुरुष के समान अन्य दिव्य पुरुष भी स्वर्गीय हैं। [49]सो जैसे हम उस मिट्टी से बने का रूप धारण करते हैं, वैसे ही उस स्वर्गिक का रूप भी हम धारण करेंगे।

[50]हे भाइयो, मैं तुम्हें यह बता रहा हूँ: मांस और लहू (हमारे ये पार्थिक शरीर) परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकार नहीं पा सकते। और न ही जो विनाशमान है, वह अविनाशी का उत्तराधिकारी हो सकता है। [51]सुनो, मैं तुम्हें एक रहस्यपूर्ण सत्य बताता हूँ: हम सभी मरेंगे नहीं, बल्कि हम सब बदल दिये जायेंगे। [52]जब अंतिम तुरही बजेगी तब पलक झपकते एक क्षण में ही ऐसा हो जायेगा क्योंकि तुरही बजेगी और मरे हुए अमर हो कर जी उठेंगे और हम जो अभी जीवित हैं, बदल दिये जायेंगे। [53]क्योंकि इस नाशवान देह का अविनाशी चोले को धारण करना आवश्यक है और इस मरणशील काया का अमर चोला धारण कर लेना अनिवार्य है। [54]सो जब यह नाशमान देह अविनाशी चोले को धारण कर लेगी और वह मरणशील काया अमर चोले को ग्रहण कर लेगी तो शास्त्र का लिखा यह पूरा हो जायेगा:

"विजय ने मृत्यु को निगल लिया।"

यशायाह 25:8

[55] "मृत्यु को विजय ने निगल लिया।
ओ मृत्यु, तेरा दंश कहाँ है?"

होशे 13:14

[56]पाप मृत्यु का दंश है और पाप को शक्ति मिलती है व्यवस्था से। [57]किन्तु परमेश्वर का धन्यवाद है जो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय दिलाता है।

[58]सो मेरे प्यारे भाइयो, अटल बने डटे रहो। प्रभु के कार्य के प्रति अपने आपको सदा पूरी तरह समर्पित कर दो। क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि प्रभु में किया गया तुम्हारा कार्य व्यर्थ नहीं है।

दूसरे विश्वासियों के लिये भेंट

16 अब देखो, संतों के लिये दान इकट्ठा करने के बारे में मैंने गलातिया की कलीसियाओं को जो आदेश दिया है तुम भी वैसे ही करो। [2]हर रविवार को अपनी आय में से कुछ न कुछ अपने घर पर ही इकट्ठा करते रहो। ताकि जब मैं आऊँ, उस समय दान इकट्ठा न करना पड़े। [3]मेरे वहाँ पहुँचने पर जिस किसी व्यक्ति को तुम चाहोगे, मैं उसे परिचय पत्र देकर तुम्हारा उपहार यरुशलेम ले जाने के लिए भेज दूँगा। [4]और यदि मेरा जाना भी उचित हुआ तो वे मेरे साथ ही चले जायेंगे।

पौलुस की योजनाएँ

[5]मैं जब मैसिडोनिया होकर जाऊँगा तो तुम्हारे पास भी आऊँगा क्योंकि मैसिडोनिया से होते हुए जाने का कार्यक्रम मैं निश्चित कर चुका हूँ। [6]हो सकता है मैं कुछ समय तुम्हारे साथ ठहरूँ या सर्दियाँ ही तुम्हारे साथ बिताऊँ ताकि जहाँ कहीं मुझे जाना हो, तुम मुझे विदा कर सको। [7]मैं यह तो नहीं चाहता कि वहाँ से जाते जाते ही बस तुमसे मिल लूँ बल्कि मुझे तो आशा है कि मैं यदि प्रभु ने चाहा तो कुछ समय तुम्हारे साथ रहूँगा भी। [8]मैं पिन्तेकुस्त के उत्सव तक इफिसुस में ही ठहरूँगा। [9]क्योंकि ठोस काम करने की सम्भावनाओं का वहाँ बड़ा द्वार खुला है और फिर वहाँ मेरे विरोधी भी तो बहुत से हैं।

[10]यदि तिमुथियुस आ पहुँचे तो ध्यान रखना उसे तुम्हारे साथ कष्ट न हो क्योंकि मेरे समान ही वह भी प्रभु का काम कर रहा है। [11]इसलिये कोई भी उसे छोटा न समझे। उसे उसकी यात्रा पर शान्ति के साथ विदा करना ताकि वह मेरे पास आ पहुँचे। मैं दूसरे भाइयों के साथ उसके आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

[12]अब हमारे भाई अपुल्लौस की बात यह है कि मैंने उसे दूसरे भाइयों के साथ तुम्हारे पास जाने को अत्यधिक

पहला ... बना उत्पत्ति 2:7

प्रोत्साहित किया है। किन्तु परमेश्वर की यह इच्छा बिल्कुल नहीं थी कि वह अभी तुम्हारे पास आता। सो अवसर पाते ही वह आ जायेगा।

पौलुस के पत्र की समाप्ति

[13]सावधान रहो। दृढ़ता के साथ अपने विश्वास में अटल बने रहो। [14]साहसी बनो, शक्तिशाली बनो। तुम जो कुछ करो, प्रेम से करो।

[15]तुम लोग स्तिफनुस के घराने को तो जानते ही हो कि वे अरवाया की फसल के पहले फल हैं। उन्होने परमेश्वर के पुरुषों की सेवा का बीड़ा उठाया है। सो भाइयो! तुम से मेरा निवेदन है कि [16]तुम लोग भी अपने आप को ऐसे लोगों की और हर उस व्यक्ति की अगुवाई में सौंप दो जो इस काम से जुड़ता है और प्रभु के लिये परिश्रम करता है।

[17]स्तिफ़नुस, फुरतुनातुस और अखइकुस की उपस्थिति से मैं प्रसन्न हूँ। क्योंकि मेरे लिये जो तुम नहीं कर सके, वह उन्होंने कर दिखाया। [18]उन्होंने मेरी तथा तुम्हारी आत्मा को आनन्दित किया है। इसलिये ऐसे लोगों का सम्मान करो।

[19]एशिया प्रान्त की कलीसियाओं की ओर से तुम्हें प्रभु में नमस्कार। अक्विला और प्रिस्किल्ला! उनके घर पर एकत्र होने वाली कलीसिया की ओर से तुम्हें हार्दिक नमस्कार। [20]सभी बंधुओं की ओर से तुम्हें नमस्कार। पवित्र चुम्बन के साथ तुम आपस में एक दूसरे का सत्कार करो।

[21]मैं, पौलुस, तुम्हें अपने हाथों से नमस्कार लिख रहा हूँ।

[22]यदि कोई प्रभु में प्रेम नहीं रखे तो उसे अभिशाप मिले। हमारे प्रभु आओ!*

[23]प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम्हें प्राप्त हो। [24]यीशु मसीह में तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम तुम सबके साथ रहे।

हमारे प्रभु आओ अरामिक भाषा मे: “मारनाथा।”

2 कुरिन्थियों

1 परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु के प्रेरित पौलुस तथा हमारे भाई तिमुथियुस की ओर से कुरिन्थुस परमेश्वर की कलीसिया तथा अखाया के समूचे क्षेत्र के पवित्र जनों के नाम:

[2]हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।

पौलुस का परमेश्वर को धन्यवाद

[3]हमारे प्रभु यीशु मसीह का परम पिता परमेश्वर धन्य है। वह करुणा का स्वामी है और आनन्द का स्रोत है। [4]हमारी हर विपत्ति में वह हमें शांति देता है ताकि हम भी हर प्रकार की विपत्ति में पड़े लोगों को वैसे ही शांति दे सकें, जैसे परमेश्वर ने हमें दी है। [5]क्योंकि जैसे मसीह की यातनाओं में हम सहभागी हैं, वैसे ही मसीह के द्वारा हमारा आनन्द भी तुम्हारे लिये उमड़ रहा है। [6]यदि हम कष्ट उठाते हैं तो वह तुम्हारे आनन्द और उद्धार के लिए है। यदि हम आनन्दित हैं तो वह तुम्हारे आनन्द के लिये है। यह आनन्द उन्हीं यातनाओं को जिन्हें हम भी सह रहे हैं तुम्हें धीरज के साथ सहने को प्रेरित करता है। [7]तुम्हारे विषय में हमें पूरी आशा है क्योंकि हम जानते हैं कि जैसे हमारे कष्टों को तुम बँटाते हो, वैसे ही हमारे आनन्द में भी तुम्हारा भाग है।

[8]हे भाइयो, हम यह चाहते हैं कि तुम उन यातनाओं के बारे में जानो जो हमें एशिया में झेलनी पड़ी थीं। वहाँ हम, हमारी सहन शक्ति की सीमा से कहीं अधिक बोझ के तले दब गये थे। यहाँ तक कि हमें जीने तक की कोई आशा नहीं रह गयी थी। [9]हाँ अपने-अपने मन में हमें ऐसा लगता था जैसे हमें मृत्यु-दण्ड दिया जा चुका है ताकि हम अपने आप पर और अधिक भरोसा न रख कर उस परमेश्वर पर भरोसा करें जो मरे हुए को भी फिर से जिला देता है। [10]हमें उस भयानक मृत्यु से उसी ने बचाया और हमारी वर्तमान परिस्थितियों में भी वही हमें बचाता रहेगा। हमारी आशा उसी पर टिकी है। वही हमें आगे भी बचाएगा। [11]यदि तुम भी हमारी ओर से प्रार्थना करके सहयोग दोगे तो हमें बहुत से लोगों की प्रार्थनाओं द्वारा परमेश्वर का जो अनुग्रह मिला है, उसके लिये बहुत से लोगों को हमारी ओर से धन्यवाद देने का हेतु मिल जायेगा।

पौलुस की योजनाओं में परिवर्तन

[12]हमें इसका गर्व है कि हम यह बात साफ मन से कह सकते हैं कि हमने इस जगत के साथ-और खासकर तुम लोगों के साथ परमेश्वर के अनुग्रह के अनुरूप व्यवहार किया है। हमने उस सरलता और सच्चाई के साथ व्यवहार किया है जो परमेश्वर से मिलती है न कि दुनियावी बुद्धि से। [13]हाँ। इसी लिये हम उसे छोड़ तुम्हें बस और कुछ नहीं लिख रहे हैं, जिससे तुम हमें पूरी तरह वैसे ही समझ लोगे। [14]जैसे तुमने हमें आंशिक रूप से समझा है। तुम हमारे लिये वैसे ही गर्व कर सकते हो जैसे हम तुम्हारे लिये उस दिन गर्व करेंगे जब हमारा प्रभु यीशु फिर आयेगा।

[15]और इसी विश्वास के कारण मैंने पहले तुम्हारे पास आने की ठानी थी ताकि तुम्हें दोबारा से आशीर्वाद का लाभ मिल सके। [16]मैं सोचता हूँ कि मैसिडोनिया जाते हुए तुमसे मिलूँ और जब मैसिडोनिया से लौटूँ तो फिर तुम्हारे पास जाऊँ। और फिर, तुम्हारे द्वारा ही यहूदिया के लिये विदा किया जाऊँ। [17]मैंने जब ये योजनाएँ बनायी थीं, तो मुझे कोई संशय नहीं था। या मैं जो योजनाएँ बनाता हूँ तो क्या उन्हें सांसारिक ढंग से बनाता हूँ कि एक ही समय "हाँ, हाँ" भी कहता रहूँ और "ना, ना" भी करता रहूँ।

[18]परमेश्वर विश्वसनीय है और वह इसकी साक्षी देगा कि तुम्हारे प्रति हमारा जो वचन है एक साथ "हाँ" और

"ना" नहीं कहता। [19]क्योंकि तुम्हारे बीच जिस परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का हमने, यानी सिलवानुस, तिमुथियुस और मैंने, प्रचार किया है, वह "हाँ" और "ना" दोनों एक साथ नहीं है बल्कि उसके द्वारा एक चिरन्तन "हाँ" की ही घोषणा की गयी है। [20]क्योंकि परमेश्वर ने जो अनन्त प्रतिज्ञाएँ की हैं, वे यीशु में सब के लिए "हाँ" बन जाती हैं। इसीलिये हम उसके द्वारा भी जो "आमीन" कहते हैं, वह परमेश्वर की ही महिमा के लिये होता है। [21]वह जो तुम्हें मसीह के व्यक्ति के रूप में हमारे साथ सुनिश्चित करता है और जिसने हमें भी अभिशिक्त किया है वह परमेश्वर ही है। [22]जिसने हम पर अपने स्वामित्व की मुहर लगायी और हमारे भीतर बयाने के रूप में वह पवित्र आत्मा दी जो इस बात का आश्वासन है कि जो देने का वचन उसने हमें दिया है, उसे वह हमें देगा।

[23]साक्षी के रूप में परमेश्वर की दुहाई देते हुए और अपने जीवन की शपथ लेते हुए मैं कहता हूँ कि मैं दोबारा कुरिन्थुस इसलिये नहीं आया था कि मैं तुम्हें पीड़ा से बचाना चाहता था। [24]इसका अर्थ यह नहीं है कि हम तुम्हारे विश्वास पर काबू पाना चाहते हैं। तुम तो अपने विश्वास में अड़िग हो। बल्कि बात यह है कि हम तो तुम्हारी प्रसन्नता के लिए तुम्हारे सहकर्मी हैं।

2 इसीलिए मैंने यह निश्चय कर लिया था कि तुम्हें फिर से दुःख देने तुम्हारे पास न आऊँ [2]क्योंकि यदि मैं तुम्हें दुखी करूँगा तो फिर भला ऐसा कौन होगा जो मुझे सुखी करेगा? सिवाय तुम्हें जिन्हें मैंने दुःख दिया है। [3]यही बात तो मैंने तुम्हें लिखी है कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँ तो जिनसे मुझे आनन्द मिलना चाहिये, उनके द्वारा मुझे दुःख न पहुँचाया जाये। क्योंकि तुम सब में मेरा यह विश्वास रहा है कि मेरी प्रसन्नता में ही तुम सब प्रसन्न होगे। [4]क्योंकि तुम्हें मैंने दुःख भरे मन और वेदना के साथ आँसू बहा-बहा कर यह लिखा है। पर तुम्हें दुःखी करने के लिये नहीं, बल्कि इस लिये कि तुम्हारे प्रति जो मेरा प्रेम है, वह कितना महान् है, तुम इसे जान सको।

बुरा करने वाले को क्षमा कर

[5]किन्तु यदि किसी ने मुझे कोई दुःख पहुँचाया है तो वह मुझे ही नहीं, बल्कि किसी न किसी मात्रा में तुम सब को पहुँचाया है। [6]ऐसे व्यक्ति को तुम्हारे समुदाय ने जो दण्ड दे दिया है, वही पर्याप्त है। [7]इसलिये तुम तो अब उसके विपरीत उसे क्षमा कर दो और उसे प्रोत्साहित करो ताकि वह कहीं बढ़े चढ़े दुःख में ही डूब न जाये। [8]इसीलिये मेरी तुमसे विनती है कि तुम उसके प्रति अपने प्रेम को बढ़ाओ। [9]यह मैंने तुम्हें यह देखने के लिये लिखा है कि तुम परीक्षा में पूरे उतरते हो कि नहीं और सब बातों में आज्ञाकारी रहोगे या नहीं। [10]किन्तु यदि तुम किसी को किसी बात के लिये क्षमा करते हो तो उसे मैं भी क्षमा करता हूँ और जो कुछ मैंने क्षमा किया है (यदि कुछ क्षमा किया है) तो वह मसीह की उपस्थिति में तुम्हारे लिये ही किया है। [11]ताकि हम शैतान से मात न खा जायें। क्योंकि उसकी चालों से हम अनजान नहीं हैं।

पौलुस की अशांति

[12]जब मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिये मैं त्रोवास आया तो वहाँ मेरे लिये प्रभु का द्वार खुला हुआ था। [13]अपने भाई तितुस को वहाँ न पा कर मेरा मन बहुत व्याकुल था। सो उनसे विदा लेकर मैं मैसिडोनिया को चल पड़ा।

मसीह से विजय

[14]किन्तु परमेश्वर धन्य है जो मसीह के द्वारा अपने विजय-अभियान में हमें सदा राह दिखाता है। और हमारे द्वारा हर कहीं अपने ज्ञान की सुगंध फैलाता है। [15]क्योंकि उनके लिये, जो अभी उद्धार की राह पर हैं और उनके लिये भी जो विनाश के मार्ग पर हैं, हम मसीह की परमेश्वर को समर्पित मधुर भीनी सुगंधित धूप हैं [16]किन्तु उनके लिये जो विनाश के मार्ग पर हैं, यह मृत्यु की ऐसी दुर्गन्ध है, जो मृत्यु की ओर ले जाती है। पर उनके लिये जो उद्धार के मार्ग पर बढ़ रहे हैं, यह जीवन की ऐसी सुगंध है, जो जीवन की ओर अग्रसर करती है। किन्तु इस काम के लिए सुपात्र कौन हैं? [17]परमेश्वर के वचन को अपने लाभ के लिये, उसमें मिलावट करके बेचने वाले बहुत से दूसरे लोगों जैसे हम नहीं हैं। नहीं! हम तो परमेश्वर के सामने परमेश्वर की ओर से भेजे हुए व्यक्तियों के समान मसीह में स्थित होकर, सच्चाई के साथ बोलते हैं।

नयी वाचा

3 इससे क्या ऐसा लगता है कि हम फिर से अपनी प्रशंसा अपने आप करने लगे हैं? अथवा क्या हमें

तुम्हारे लिये या तुमसे परिचय–पत्र लेने की आवश्यकता है? जैसा कि कुछ लोग करते हैं। निश्चय ही नहीं [2]हमारा पत्र तो तुम स्वयं हो जो हमारे मन में लिखा है, जिसे सभी लोग जानते हैं और पढ़ते हैं [3]और तुम भी तो ऐसा ही दिखाते हो मानो तुम मसीह का पत्र हो। जो हमारी सेवा का परिणाम है। जिसे स्याही से नहीं बल्कि सजीव परमेश्वर की आत्मा से लिखा गया है। जिसे पथरीली शिलाओं* पर नहीं बल्कि मनुष्य के हृदय पटल पर लिखा गया है।

[4]हमें मसीह के कारण परमेश्वर के सामने ऐसा दावा करने का भरोसा है। [5]ऐसा नहीं है कि हम अपने आप में इतने समर्थ हैं जो सोचने लगे हैं कि हम अपने आप से कुछ कर सकते हैं बल्कि हमें सामर्थ्य तो परमेश्वर से मिलता है। [6]उसी ने हमें एक नये करार का सेवक बनने योग्य ठहराया है। यह कोई लिखित संहिता नहीं है बल्कि आत्मा का वाचा है क्योंकि लिखित संहिता तो मारती है जबकि आत्मा जीवन देता है।

पौलुस की सेवा मूसा की सेवा से महान् है

[7]किन्तु वह सेवा जो मृत्यु से युक्त थी यानी व्यवस्था का विधान जो पत्थरों पर अंकित किया गया था उसमें इतना तेज था कि इस्राएल के लोग मूसा के उस तेजस्वी मुख को एकटक न देख सके। और यद्यपि उस का वह तेज बाद में क्षीण हो गया। [8]फिर भला आत्मा से युक्त सेवा और अधिक तेजस्वी क्यों नहीं होगी। [9]और फिर जब दोषी ठहराने वाली सेवा में इतना तेज है तो उस सेवा में कितना अधिक तेज होगा जो धर्मी ठहराने वाली सेवा है। [10]क्योंकि जो पहले तेज से परिपूर्ण था वह अब उस तेज के सामने जो उससे कहीं अधिक तेजस्वी है, तेज रहित हो गया है। [11]क्योंकि वह सेवा जिसका तेजहीन हो जाना निश्चित था, वह तेजस्वी थी, तो जो नित्य है, वह कितनी तेजस्वी होगी।

[12]अपनी इसी आशा के कारण हम इतने निर्भय हैं। [13]हम उस मूसा के जैसे नहीं हैं जो अपने मुख पर पर्दा डाले रहता था कि कहीं इस्राएल के लोग (यहूदी) अपनी आँखें गड़ा कर जिसका विनाश सुनिश्चित था, उस सेवा के अंत को न देख लें। [14]किन्तु उनकी बुद्धि जड़ हो गयी थी, क्योंकि आज तक जब वे उस पुराने वाचा को पढ़ते हैं, तो वही पर्दा उन पर बिना हटाये पड़ा रहता है। क्योंकि वह पर्दा बस मसीह के द्वारा ही हटाया जाता है। [15]आज तक जब जब मूसा का ग्रंथ पढ़ा जाता है तो पढ़ने वालों के मन पर वह पर्दा पड़ा ही रहता है। [16]किन्तु जब किसी का हृदय प्रभु की ओर मुड़ता है तो वह पर्दा हटा दिया जाता है। [17]देखो। जिस प्रभु की ओर मैं इंगित कर रहा हूँ, वही आत्मा है। और जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ छुटकारा है। [18]सो हम सभी अपने खुले मुख के साथ दर्पण में प्रभु के तेज का जब ध्यान करते हैं तो हम भी वैसे ही होने लगते हैं और हमारा तेज अधिकाधिक बढ़ने लगता है। यह तेज उस प्रभु से ही प्राप्त होता है। यानी आत्मा से।

माटी के भाँडों में अध्यात्म का धन

4 क्योंकि परमेश्वर के अनुग्रह से यह सेवा हमें प्राप्त हुई है, इसीलिये हम निराश नहीं होते। [2]हमने तो लज्जापूर्ण गुप्त कार्यो को छोड़ दिया है। हम कपट नहीं करते और न ही हम परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, बल्कि सत्य को सरल रूप में प्रकट करके लोगों की चेतना में परमेश्वर के सामने अपने आप को प्रशंसा के योग्य ठहराते हैं। [3]जिस सुसमाचार का हम प्रचार करते हैं, उस पर यदि कोई पर्दा पड़ा है तो यह केवल उनके लिये पड़ा है, जो विनाश की राह पर चल रहे हैं। [4]इस युग के स्वामी (शैतान) ने इन अविश्वासियों की बुद्धि को अंधा कर दिया है ताकि वे परमेश्वर के साक्षात् प्रतिरूप मसीह की महिमा के सुसमाचार से फूट रहे प्रकाश को न देख पायें। [5]हम स्वयं अपना प्रचार नहीं करते बल्कि प्रभु के रूप में मसीह यीशु का उपदेश देते हैं। और अपने बारे में तो यही कहते हैं कि हम यीशु के नाते तुम्हारे सेवक हैं। [6]क्योंकि उसी परमेश्वर ने, जिसने कहा था, “अंधकार से ही प्रकाश चमकेगा” वही हमारे हृदयों में प्रकाशित हुआ है, ताकि हमें यीशु मसीह के व्यक्तित्व में परमेश्वर की महिमा के ज्ञान की ज्योति मिल सके।

[7]किन्तु हम जैसे मिट्टी के भाँडों में यह सम्पत्ति इस लिये रखी गयी है कि यह अलौकिक शक्ति हमारी नहीं; बल्कि परमेश्वर की सिद्ध हो। [8]हम हर समय हर किसी प्रकार से कठिन दबावों में जीते हैं, किन्तु हम कुचले नहीं

शिलाओं परमेश्वर ने सिनाई पर्वत पर मूसा को जो व्यवस्था का विधान दिया था वह शिला पटलो पर लिखा हुआ था। देखें निर्गमन 24:12; 25:16

गये हैं। हम घबराये हुए हैं किन्तु निराश नहीं हैं। [9]हमें यातनाएँ दी जाती हैं किन्तु हम बिसराये नहीं गये हैं। हम झुका दिये गये हैं, पर नष्ट नहीं हुए हैं। [10]हम सदा अपनी देह में यीशु की हत्या को हर कहीं लिये रहते हैं। ताकि यीशु का जीवन भी हमारी देहों में स्पष्ट रूप से प्रकट हो। [11]यीशु के कारण हम जीवितों को निरन्तर मौत के हाथों सौंपा जाता है ताकि यीशु का जीवन भी नाशवान शरीरों में स्पष्ट रूप से उजागर हो। [12]इसी से मृत्यु हममें और जीवन तुममें सक्रिय हैं।

[13]शास्त्र में लिखा है, "मैंने विश्वास किया था इसीलिये मैं बोला।" हममें भी विश्वास की वही आत्मा है और हम भी विश्वास करते हैं इसीलिए हम भी बोलते हैं। [14]क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिला कर उठाया, वह हमें भी उसी तरह जीवित करेगा जैसे उसने यीशु को जिलाया था। और हमें भी तुम्हारे साथ अपने सामने खड़ा करेगा। [15]ये सब बातें तुम्हारे लिये ही की जा रही हैं, ताकि अधिक से अधिक लोगों में फैलती जा रही परमेश्वर का अनुग्रह, परमेश्वर को महिमा मंडित करने वाले अधिकाधिक धन्यवाद देने में प्रतिफलित हो सके।

विश्वास से जीवन

[16]इसी लिए हम निराश नहीं होते। यद्यपि हमारे भौतिक शरीर क्षीण होते जा रहे हैं, तो भी हमारी अंतरात्मा प्रतिदिन नयी से नयी होती जा रही है। [17]हमारा पल भर का यह छोटा–मोटा दुःख एक अनन्त अतुलनीय महिमा पैदा कर रहा है। [18]जो कुछ देखा जा सकता है, हमारी आँखें उस पर नहीं टिकी हैं, बल्कि अदृश्य पर टिकी हैं। क्योंकि जो देखा जा सकता है, वह विनाशी है, जबकि जिसे नहीं देखा जा सकता, वह अविनाशी है।

5 क्योंकि हम जानते हैं कि हमारी यह काया अर्थात् यह तम्बू जिसमें हम इस धरती पर रहते हैं गिरा दिया जाये तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग में एक चिरस्थायी भवन मिल जाता है जो मनुष्य के हाथों बना नहीं होता। [2]सो हम जब तक इस आवास में हैं, हम रोते–धोते रहते हैं और यही चाहते रहते हैं कि अपने स्वर्गीय भवन में जा बसें। [3](निश्चय ही हमारी यह धारणा है कि हम उसे पायेंगे और फिर बेघर नहीं रहेंगे)। [4]हममें से वे जो इस तम्बू यानी भौतिक शरीर में स्थित हैं, बोझ से दबे कराह रहे हैं। कारण यह है कि हम इन वस्त्रों को त्यागना नहीं चाहते बल्कि उनके ही ऊपर उन्हें धारण करना चाहते हैं ताकि जो कुछ नाशवान है, उसे अनन्त जीवन निगल ले। [5]जिसने हमें इस प्रयोजन के लिये ही तैयार किया है, वह परमेश्वर ही है। उसी ने इस आश्वासन के रूप में कि अपने वचन के अनुसार वह हमको देगा, बयाने के रूप में हमें आत्मा दी है।

[6]हमें पूरा विश्वास है, क्योंकि हम जानते हैं कि जब तक हम अपनी देह में रह रहे हैं, प्रभु से दूर हैं। [7]क्योंकि हम विश्वास के सहारे जीते हैं। बस आँखों देखी के सहारे नहीं। [8]हमें विश्वास है, इसी से मैं कहता हूँ कि हम अपनी देह को त्याग, जा कर प्रभु के साथ रहने को अच्छा समझते हैं। [9]इसी से हमारी यह अभिलाषा है कि हम चाहे उपस्थित रहें और चाहे अनुपस्थित, उसे अच्छे लगते रहें। [10]हम सब को अपने शरीर में स्थित रह कर भला या बुरा, जो कुछ किया है, उसका फल पाने के लिये मसीह के न्यायासन के सामने अवश्य उपस्थित होना होगा।

परोपकारी परमेश्वर के मित्र होते हैं

[11]इसी लिये प्रभु से डरते हुए हम सत्य को ग्रहण करने के लिये लोगों को समझाते–बुझाते हैं। हमारे और परमेश्वर के बीच कोई पर्दा नहीं है। और मुझे आशा है कि तुम भी हमें पूरी तरह जानते हो। [12]हम तुम्हारे सामने फिर से अपनी कोई प्रशंसा नहीं कर रहे हैं। बल्कि तुम्हें एक अवसर दे रहे हैं कि तुम हम पर गर्व कर सको। ताकि, जो प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली वस्तु पर गर्व करते हैं, न कि उस पर जो कुछ उनके मन में है, उन्हें उसका उत्तर मिल सके। [13]क्योंकि यदि हम दीवाने हैं तो परमेश्वर के लिये हैं और यदि सयाने हैं तो वह तुम्हारे लिये हैं। [14]हमारा नियन्ता तो मसीह का प्रेम है क्योंकि हमने अपने मन में यह धार लिया है कि वह एक व्यक्ति (मसीह) सब लोगों के लिये मरा। अत: सभी मर गये। [15]और वह सब लोगों के लिए मरा क्योंकि जो लोग जीवित हैं, वे अब आगे बस अपने ही लिये न जीते रहें, बल्कि उसके लिये जियें जो मरने के बाद फिर जीवित कर दिया गया।

[16]परिणामस्वरूप अब से आगे हम किसी भी व्यक्ति को सांसारिक दृष्टि से न देखें यद्यपि एक समय हमने मसीह को भी सांसारिक दृष्टि से देखा था। कुछ भी हो, अब हम उसे उस प्रकार नहीं देखते। [17]इसीलिये यदि कोई

मसीह में स्थित है तो अब वह परमेश्वर की नयी सृष्टि का अंग है। पुरानी बातें जाती रही हैं। सब कुछ नया हो गया है [18]और फिर ये सब बातें उस परमेश्वर की ओर से हुआ करती हैं, जिसने हमें मसीह के द्वारा अपने में मिला लिया है और लोगों को परमेश्वर से मिलाप का काम हमें सौंपा है। [19]हमारा संदेश है कि परमेश्वर लोगों के पापों की अनदेखी करते हुए मसीह के द्वारा उन्हें अपने में मिला रहा है और उसी ने मनुष्य को परमेश्वर से मिलाने का संदेश हमें सौंपा है। [20]इसीलिये हम मसीह के प्रतिनिधि के रूप में काम कर रहे हैं। मानो परमेश्वर हमारे द्वारा तुम्हें चेता रहा है। मसीह की ओर से हम तुमसे विनती करते हैं कि परमेश्वर के साथ मिल जाओ।

[21]जो पाप रहित है, उसे उसने इसलिये पाप–बली बनाया कि हम उसके द्वारा परमेश्वर के सामने नेक ठहराये जायें।

6 परमेश्वर के कार्य में साथ–साथ काम करने के नाते हम तुम लोगों से आग्रह करते हैं कि परमेश्वर का जो अनुग्रह तुम्हें मिला है, उसे व्यर्थ मत जाने दो। [2]क्योंकि उसने कहा है:

"मैंने उचित समय पर तेरी सुन ली,
और मैं उद्धार के दिन
तुझे सहारा देना आया।"

यशायाह 49:8

देखो। "उचित समय" यही है। देखो। "उद्धार का दिन" यही है।

[3]हम किसी के लिए कोई विरोध उपस्थित नहीं करते जिससे हमारे काम में कोई कमी आये। [4]बल्कि परमेश्वर के सेवक के रूप में हम हर तरह से अपने आप को अच्छा सिद्ध करते रहते हैं। धैर्य के साथ सब कुछ सहते हुए यातनाओं के बीच, विपत्तियों के बीच, कठिनाइयों के बीच [5]मार खाते हुए, बंदी गृहों में रहते हुए, अशांति के बीच, परिश्रम करते हुए, रातों–रात पलक भी न झपका कर, भूखे रह कर [6]अपनी पवित्रता, ज्ञान और धैर्य से, अपनी दयालुता, पवित्र आत्मा के वरदानों और सच्चे प्रेम, [7]अपने सच्चे संदेश और परमेश्वर की शक्ति से नेकी को ही अपने दायें–बायें हाथों में ढाल के रूप में लेकर [8]हम आदर और निरादर के बीच अपमान और सम्मान में अपने को उपस्थित करते रहते हैं। हमें ठग समझा जाता है, यद्यपि हम सच्चे हैं। [9]हमें गुमनाम समझा जाता है, जबकि हमें सभी जानते हैं। हमें मरते हुओं सा जाना जाता है, पर देखो हम तो जीवित हैं। हमें दंड भोगते हुओं सा जाना जाता है, तब भी देखो हम मृत्यु को नहीं सौंपे जा रहे हैं। [10]हमें शोक से व्याकुल समझा जाता है, जबकि हम तो सदा ही प्रसन्न रहते हैं। हम दीन–हीनों के रूप में जाने जाते हैं, जबकि हम बहुत सों को वैभवशाली बना रहे हैं। लोग समझते हैं हमारे पास कुछ नहीं है, जबकि हमारे पास तो सब कुछ है।

[11]हे कुरिन्थियो, हमने तुमसे पूरी तरह खुल कर बातें की हैं। तुम्हारे लिये हमारा मन खुला है। [12]हमारा प्यार तुम्हारे लिये कम नहीं हुआ है। किन्तु तुमने हमसे प्यार करना रोक दिया है। [13]तुम्हें अपना बच्चा समझते हुए मैं कह रहा हूँ कि उचित प्रतिदान के रूप में अपना मन तुम्हें भी हमारे लिये पूरी तरह खुला रखना चाहिये।

ग़ैर मसीहियों की संगत के विरुद्ध चेतावनी

[14]अविश्वासियों के साथ बेमेल संगत मत करो क्योंकि नेकी और बदी की भला कैसी समानता? या प्रकाश और अंधेरे में भला मित्रता कैसे हो सकती है? [15]ऐसे ही मसीह का शैतान से कैसा तालमेल? अथवा अविश्वासी के साथ विश्वासी का कैसा साझा? [16]परमेश्वर के मंदिर का मूर्तियों से क्या नाता? क्योंकि हम स्वयं उस सजीव परमेश्वर के मंदिर हैं, जैसा कि परमेश्वर ने कहा था :

"मैं उनमें अधिवास करूँगा;
चलूँ–फिरूँगा,
उनका परमेश्वर होऊँगा
और वे मेरे जन बनेंगे।

लैव्यव्यवस्था 26:11–12

[17] "इसीलिये तुम उनमें से बाहर आ जाओ,
उनसे अपने को अलग करो
अब तुम कभी कुछ भी न छूओ
जो अशुद्ध है तब मैं तुमको अपनाऊँगा।"

यशायाह 52:11

[18] "और मैं तुम्हारा पिता बनूँगा,
तुम मेरे पुत्र और पुत्री होवोगे,
सर्वशक्तिमान प्रभु यह कहता है।"

2 शमूएल 7:14; 7:8

7 हे प्रिय मित्रो, क्योंकि हमारे पास ये प्रतिज्ञाएँ हैं, इसलिये आओ, परमेश्वर के प्रति श्रद्धा के कारण

हम अपनी पवित्रता को परिपूर्ण करते हुए अपने बाहरी और भीतरी सभी दोषों को धो डालें।

पौलुस का आनन्द

[2]अपने मन में हमें स्थान दो। हमने किसी का भी कुछ बिगाड़ा नहीं है। हमने किसी को भी ठेस नहीं पहुँचाई है। हमने किसी के साथ छल नहीं किया है। [3]मैं तुम्हें नीचा दिखाने के लिये ऐसा नहीं कह रहा हूँ क्योंकि मैं तुम्हें बता ही चुका हूँ कि तुम तो हमारे मन में बसते हो। यहाँ तक कि हम तुम्हारे साथ मरने को या जीने को तैयार हैं। [4]मैं तुम पर भरोसा रखता हूँ। तुम पर मुझे बड़ा गर्व है। मैं सुख चैन से हूँ। अपनी सभी यातनाएँ झेलते हुए मुझमें आनन्द उमड़ता रहता है।

[5]जब हम मैसिडोनिया आये थे तब भी हमें आराम नहीं मिला था, बल्कि हमें तो हर प्रकार के दु:ख उठाने पड़े थे बाहर झगड़ों से और मन के भीतर डर से। [6]किन्तु दीन दुखियों को सुखी करने वाले परमेश्वर ने तितुस को यहाँ पहुँचा कर हमें सान्त्वना दी है। [7]और वह भी केवल उसके, यहाँ पहुँचने से नहीं बल्कि इससे हमें और अधिक सान्त्वना मिली कि तुमने उसे कितना सुख दिया था। उसने हमें बताया कि हमसे मिलने को तुम कितने व्याकुल हो। तुम्हें हमारी कितनी चिंता हैं। इससे हम और भी प्रसन्न हुए।

[8]यद्यपि अपने पत्र से मैंने तुम्हें दुख पहुँचाया है किन्तु फिर भी मुझे उस के लिखने का खेद नहीं हैं। चाहे पहले मुझे इसका दु:ख हुआ था किन्तु अब मैं देख रहा हूँ कि उस पत्र से तुम्हें बस पल भर को ही दु:ख पहुँचा था। [9]सो अब मैं प्रसन्न हूँ। इसलिये नहीं कि तुम को दुख पहुँचा था बल्कि इसलिये कि उस दु:ख के कारण ही तुमने पछतावा किया। तुम्हें वह दुख परमेश्वर की ओर से ही हुआ था ताकि तुम्हें हमारे कारण कोई हानि न पहुँच पाये। [10]क्योंकि वह दुख जिसे परमेश्वर देता है एक ऐसे मनफिराव को जन्म देता है जिसके लिए पछताना नहीं पड़ता और जो मुक्ति दिलाता है। किन्तु वह दुख जो सांसारिक होता है, उससे तो बस मृत्यु जन्म लेती है। [11]देखो। यह दुख जिसे परमेश्वर ने दिया है, उसने तुममें कितना उत्साह जगा दिया है, अपने भोलेपन की कितनी प्रतिरक्षा, कितना आक्रोश, कितनी आकुलता, हमसे मिलने की कितनी बेचैनी, कितना साहस, पापी के प्रति न्याय चुकाने की कैसी भावना पैदा कर दी है। तुमने हर बात में यह दिखा दिया है कि इस बारे में तुम कितने निर्दोष थे। [12]सो यदि मैंने तुम्हें लिखा था तो उस व्यक्ति के कारण नहीं जो अपराधी था और न ही उसके कारण जिसके प्रति अपराध किया गया था। बल्कि इस लिए लिखा था कि परमेश्वर के सामने हमारे प्रति तुम्हारी चिंता का तुम्हें बोध हो जाये। [13]इससे हमें प्रोत्साहन मिला है। हमारे इस प्रोत्साहन के अतिरिक्त तितुस के आनन्द से हम और अधिक आनन्दित हुए, क्योंकि तुम सब के कारण उसकी आत्मा को चैन मिला है। [14]तुम्हारे लिए मैंने उससे जो बढ़ चढ़ कर बातें की थीं, उसके लिए मुझे लजाना नहीं पड़ा है। बल्कि हमने जैसे तुमसे सब कुछ सच–सच कहा था, वैसे ही तुम्हारे बारे में हमारा गर्व तितुस के सामने सत्य सिद्ध हुआ है। [15]वह जब यह याद करता है कि तुम सब ने किस प्रकार उसकी आज्ञा मानी और डर से थरथर काँपते हुए तुमने कैसे उसको अपनाया तो तुम्हारे प्रति उसका प्रेम और भी बढ़ जाता है। [16]मैं प्रसन्न हूँ कि मैं तुममें पूरा भरोसा रख सकता हूँ।

हमारा दान

8 देखो, हे भाइयो, अब हम यह चाहते हैं कि तुम परमेश्वर के उस अनुग्रह के बारे में जानो जो मैसिडोनिया क्षेत्र की कलीसियाओं पर किया गया है। [2]मेरा अभिप्राय यह है कि यद्यपि उनकी कठिन परीक्षा ली गयी तो भी वे प्रसन्न रहे और अपनी गहन दरिद्रता के रहते हुए भी उनकी सम्पूर्ण उदारता उमड़ पड़ी। [3]मैं प्रमाणित करता हूँ कि उन्होंने जितना दे सकते थे दिया। इतना ही नहीं, बल्कि अपने सामर्थ्य से भी अधिक मन भर के दिया। [4]वे बड़े आग्रह के साथ संत जनों की सहायता करने में हमें सहयोग देने को विनय करते रहे। [5]उन्होंने जैसी हमें अपेक्षा थी, वैसे नहीं बल्कि पहले अपने आप को प्रभु को समर्पित किया और फिर परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल वे हमें अर्पित हो गये। [6]इसीलिये हमने तितुस से प्रार्थना की कि जैसे वह अपने कार्य का प्रारम्भ कर ही चुका है, वैसे ही इस अनुग्रह के कार्य को वह तुम्हारे लिये करे। [7]और जैसे कि तुम हर बात में यानी विश्वास में, वाणी में, ज्ञान में, अनेक प्रकार से उपकार करने में और हमने तुम्हें जिस प्रेम की शिक्षा दी है उस प्रेम में, भरपूर हो, वैसे ही अनुग्रह के इस कार्य में भी भरपूर हो जाओ।

[8]यह मैं आज्ञा के रूप में नहीं कह रहा हूँ बल्कि अन्य व्यक्तियों के मन में तुम्हारे लिए जो तीव्रता है, उस प्रेम की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिये ऐसा कह रहा हूँ। [9]क्योंकि हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से तुम परिचित हो। तुम यह जानते हो कि धनी होते हुए भी तुम्हारे लिये वह निर्धन बन गया। ताकि उसकी निर्धनता से तुम मालामाल हो जाओ।

[10]इस विषय में मैं तुम्हें अपनी सलाह देता हूँ। तुम्हें यह शोभा देता है। तुम पिछले साल न केवल दान देने की इच्छा में सबसे आगे थे बल्कि दान देने में भी सबसे आगे रहे। [11]अब दान करने की उस तीव्र इच्छा को तुम जो कुछ तुम्हारे पास है, उसी से पूरा करो। तुम इसे उतनी ही लगन से "पूरा करो" जितनी लगन से तुमने इसे "चाहा" था। [12]क्योंकि यदि दान देने की लगन है तो व्यक्ति के पास जो कुछ है, उसी के अनुसार उसका दान ग्रहण करने योग्य बनता है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं है। [13]हम यह नहीं चाहते कि दूसरों को तो सुख मिले और तुम्हें कष्ट; बल्कि हम तो बराबरी चाहते हैं। [14]हमारी इच्छा है कि उनके इस अभाव के समय में तुम्हारी सम्पन्नता उनकी आवश्यकताएँ पूरी करे ताकि आवश्यकता पड़ने पर आगे चल कर उनकी सम्पन्नता भी तुम्हारे अभाव को दूर कर सके ताकि समानता स्थापित हो। [15]जैसा कि शास्त्र कहता है:

"जिसने बहुत बटोरा उसके पास अधिक न रहा;
और जिसने अल्प बटोरा, उसके पास स्वल्प न रहा।"
निर्गमन 16:18

तितुस और उसके साथी

[16]परमेश्वर का धन्यवाद है जिसने तितुस के मन में तुम्हारी सहायता के लिए वैसी ही तीव्र इच्छा भर दी है, जैसी हमारे मन में है। [17]क्योंकि उसने हमारी प्रार्थना स्वीकार की और वह उसके लिए विशेष रूप से अपनी इच्छा भी रखता है, इसलिए वह स्वयं अपनी इच्छा से ही तुम्हारे पास आने को विदा हो रहा है। [18]हम उसके साथ उस भाई को भी भेज रहे हैं, जिसका सुसमाचार के प्रचार के रूप में सभी कलीसियाओं में हर कहीं यश फैल रहा है। [19]इसके अतिरिक्त इस दयापूर्ण कार्य में कलीसियाओं ने उसे हमारे साथ यात्रा करने को नियुक्त भी किया है। यह दया कार्य जिसका प्रबन्ध हमारे द्वारा किया जा रहा है, स्वयं प्रभु को सम्मानित करने के लिये और परोपकार में हमारी तत्परता को दिखाने के लिए है।

[20]हम सावधान रहने की चेष्टा कर रहे हैं इस बड़े धन के लिए जिसका प्रबन्ध कर रहे हैं, कोई हमारी आलोचना न करे। [21]क्योंकि हमें अपनी अच्छी साख बनाए रखने की चिंता है। न केवल प्रभु के आगे, बल्कि लोगों के बीच भी।

[22]और उनके साथ हम अपने उस भाई को भी भेज रहे हैं, जिसे बहुत से विषयों में और बहुत से अवसरों पर हमने परोपकार के लिए उत्सुक व्यक्ति के रुप में प्रमाणित किया है। और अब तो तुम्हारे लिये उसमें जो असीम विश्वास है, उससे उसमें सहायता करने का उत्साह और अधिक हो गया है।

[23]जहाँ तक तितुस का क्षेत्र है, तो वह तुम्हारे बीच सहायता कार्य में मेरा साथी और साथ साथ काम करने वाला रहा है। और जहाँ तक हमारे बन्धुओं का प्रश्न है, वे तो कलीसियाओं के प्रतिनिधि तथा मसीह के सम्मान हैं। [24]सो तुम उन्हें अपने प्रेम का प्रमाण देना और तुम्हारे लिये हम इतना गर्व क्यों रखते हैं, इसे सिद्ध करना ताकि सभी कलीसिया उसे देख सकें।

साथियों की मदद करो

9 अब संतों की सेवा के विषय में: तुम्हें इस प्रकार लिखते चले जाना मेरे लिये आवश्यक नहीं है [2]क्योंकि सहायता के लिये तुम्हारी तत्परता को मैं जानता हूँ और उसके लिए मैसिडोनिया निवासियों के सामने यह कहते हुए मुझे गर्व है कि अखाया के लोग तो, पिछले साल से ही तैयार हैं और तुम्हारे उत्साह ने उन में से अधिकतर को कार्य के लिए प्रेरणा दी है। [3]किन्तु मैं भाइयों को तुम्हारे पास इसलिये भेज रहा हूँ कि तुम को लेकर हम जो गर्व करते हैं, वह इस बारे में व्यर्थ सिद्ध न हो। और इसलिये भी कि तुम तैयार रहो, जैसा कि मैं कहता आया हूँ। [4]नहीं तो जब कोई मैसिडोनिया वासी मेरे साथ तुम्हारे पास आयेगा और तुम्हें तैयार नहीं पायेगा तो हम उस विश्वास के कारण जिसे हमने तुम्हारे प्रति दर्शाया है, लज्जित होंगे। (और तुम तो और भी अधिक लज्जित होगे।) [5]इसीलिये मैंने भाइयों से यह कहना आवश्यक समझा कि वे हमसे पहले ही तुम्हारे पास जायें और जिन उपहारों को देने का तुम पहले ही वचन दे चुके हो उन्हें पहले ही से उदारतापूर्वक तैयार रखें। इसलिये यह दान

स्वेच्छापूर्वक तैयार रखा जाये न कि दबाव के साथ तुमसे छीनी गयी किसी वस्तु के रूप में।

[6]इसे याद रखो। जो छितरा बोता है, वह छितरा ही काटेगा और जिस की बुआई सघन है, वह सघन ही काटेगा। [7]हर कोई बिना किसी कष्ट के या बिना किसी दबाव के, उतना ही दे जितना उसने मन में सोचा है। क्योंकि परमेश्वर प्रसन्न–दाता से ही प्रेम करता है। [8]और परमेश्वर तुम पर हर प्रकार के उत्तम वरदानों की वर्षा कर सकता है जिससे तुम अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुओं में सदा प्रसन्न हो सकते हो और सभी अच्छे कार्यों के लिये फिर तुम्हारे पास आवश्यकता से भी अधिक रहेगा। [9]जैसा कि शास्त्र में लिखा है:

"वह मुक्त भाव से देता है, वह दीन
जनों को देता है, और उसकी चिरउदारता
सदा–सदा को बनी रहती है।"

भजन संहिता 112:9

[10]वह परमेश्वर ही बोने वाले को बीज और खाने वाले को भोजन सुलभ कराता है। वही तुम्हें बीज देगा और उसकी बढ़वार करेगा, उसी से तुम्हारे धर्म की खेती फूलेगी फलेगी। [11]तुम हर प्रकार से सम्पन्न बनाये जाओगे ताकि तुम हर अवसर पर उदार बन सको। तुम्हारी उदारता परमेश्वर के प्रति लोगों के धन्यवाद को पैदा करेगी। [12]दान की इस पवित्र सेवा से न केवल पवित्र लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं बल्कि परमेश्वर के प्रति अत्यधिक धन्यवाद का भाव भी उपजता है। [13]क्योंकि तुम्हारी इस सेवा से जो प्रमाण प्रकट होता है, उससे संत जन परमेश्वर की स्तुति करेंगे। क्योंकि यीशु मसीह के सुसमाचार में तुम्हारे विश्वास की घोषणा से उत्पन्न हुई तुम्हारी आज्ञाकारिता के कारण और अपनी उदारता के कारण उनके लिये तथा दूसरे सभी लोगों के लिये तुम दान देते हो। [14]और वे भी तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हुए तुमसे मिलने की तीव्र इच्छा करेंगे। तुम पर परमेश्वर के असीम अनुग्रह के कारण [15]उस वरदान के लिये जिसका बखान नहीं किया जा सकता, परमेश्वर का धन्यवाद है।

पौलुस द्वारा अपनी सेवा का समर्थन

10 मैं, पौलुस, निजी तौर पर मसीह की कोमलता और सहनशीलता को साक्षी करके तुमसे निवेदन करता हूँ। लोगों का कहना है कि मैं जो तुम्हारे बीच रहते हुए विनम्र हूँ किन्तु वही मैं जब तुम्हारे बीच नहीं हूँ, तो तुम्हारे लिये निर्भय हूँ। [2]अब मेरी तुमसे प्रार्थना है कि जब मैं तुम्हारे बीच होऊँतो उसी विश्वास के साथ वैसी निर्भयता दिखाने को मुझ पर दबाव मत डालना जैसी कि मेरे विचार में मुझे कुछ उन लोगों के विरुद्ध दिखानी होगी जो सोचते हैं कि हम एक संसारी जीवन जीते हैं। [3]क्योंकि यद्यपि हम भी इस संसार में ही रहते हैं किन्तु हम संसारी लोगों की तरह नहीं लड़ते हैं। [4]क्योंकि जिन शस्त्रों से हम युद्ध लड़ते हैं, वे सांसारिक नहीं हैं, बल्कि उनमें गढ़ों को तहस–नहस कर डालने के लिए परमेश्वर की शक्ति निहित है। [5]और उन्हीं शस्त्रों से हम लोगों के तर्कों का और उस प्रत्येक अवरोध का, जो परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध खड़ा है, खण्डन करते हैं। [6]जब तुममें पूरी आज्ञाकारिता है तो हम हर प्रकार की अनाज्ञा को दण्ड देने के लिए तैयार हैं।

[7]तुम्हारे सामने जो तथ्य हैं उन्हें देखो। यदि कोई अपने मन में यह मानता है कि वह मसीह का है, तो वह अपने बारे में फिर से याद करे कि वह भी उतना ही मसीह का है जितना कि हम है। [8]और यदि मैं अपने उस अधिकार के विषय में कुछ और गर्व करूँ, जिसे प्रभु ने हमें तुम्हारे विनाश के लिये नहीं बल्कि आध्यात्मिक निर्माण के लिये दिया है [9]तो इसके लिये मैं लज्जित नहीं हूँ। मैं अपने पर नियत्रण रखूँगा कि अपने पत्रों के द्वारा तुम्हें भयभीत करने वाले के रूप में न दिखूँ। [10]मेरे विरोधियों का कहना है, "पौलुस के पत्र तो भारी भरकम और प्रभावपूर्ण होते हैं। किन्तु मेरा व्यक्तित्व दुर्बल, और वाणी अर्थहीन है।" [11]किन्तु ऐसे कहने वाले व्यक्ति को समझ लेना चाहिये कि तुम्हारे बीच न रहते हुए जब हम अपने पत्रों में कुछ लिखते हैं तो उसमें और तुम्हारे बीच रहते हुए हम जो कर्म करते हैं उनमें कोई अन्तर नहीं है।

[12]हम उन कुछ लोगों के साथ अपनी तुलना करने का साहस नहीं करते जो अपने आपको बहुत महत्त्वपूर्ण मानते हैं। किन्तु जब वे अपने को एक दूसरे से नापते हैं और परस्पर अपनी तुलना करते हैं तो वे यह दर्शाते हैं कि वे नहीं जानते कि वे कितने मूर्ख हैं। [13]जो भी हो, हम उचित सीमाओं से बाहर बढ़ चढ़ कर बात नहीं करेंगे, बल्कि परमेश्वर ने हमारी गतिविधियों की जो सीमाएँ हमें सौंपी हैं, हम उन्हीं में रहते हैं और वे सीमाएँ तुम तक

पहुँचती हैं। [14]हम अपनी सीमा का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं, जैसा कि यदि हम तुम तक नहीं पहुँच पाते तो हो जाता। किन्तु तुम तक यीशु मसीह का सुसमाचार लेकर हम तुम्हारे पास सबसे पहले पहुँचे हैं। [15]अपनी उचित सीमा से बाहर जाकर किसी दूसरे व्यक्ति के काम पर हम गर्व नहीं करते किन्तु हमें आशा है कि तुम्हारा विश्वास जैसे जैसे बढ़ेगा तो वैसे वैसे ही हमारी गतिविधियों के क्षेत्र के साथ तुम्हारे बीच हम भी व्यापक रूप से फैलेंगे। [16]इससे तुम्हारे क्षेत्र से आगे भी हम सुसमाचार का प्रचार कर पायेंगे। किसी अन्य को जो काम सौंपा गया था उस क्षेत्र में अब तक जो काम हो चुका है हम उसके लिए शेखी नहीं बघारते। [17]जैसा कि शास्त्र कहता है: "जिसे गर्व करना है वह, प्रभु ने जो कुछ किया है, उसी पर गर्व करे।"* [18]क्योंकि अच्छा वही माना जाता है जिसे प्रभु अच्छा स्वीकारता है, न कि वह जो अपने आप को स्वयं अच्छा समझता है।

बनावटी प्रेरित और पौलुस

11 काश, तुम मेरी थोड़ी सी मूर्खता सह लेते। हाँ, तुम उसे सह ही लो। [2]क्योंकि मैं तुम्हारे लिये ऐसी सजगता के साथ, जो परमेश्वर से मिलती है, सजग हूँ। मैंने तुम्हारी मसीह से सगाई करा दी है ताकि तुम्हें एक पवित्र कन्या के समान उसे अर्पित कर सकूँ। [3]किन्तु मैं डरता हूँ कि कहीं जैसे उस सर्प ने हव्वा को अपने कपट से भ्रष्ट कर दिया था, वैसे ही कहीं तुम्हारा मन भी उस एकनिष्ठ भक्ति और पवित्रता से, जो हमें मसीह के प्रति रखनी चाहिये, भटका न दिया जाये। [4]क्योंकि जब कोई तुम्हारे पास आकर जिस यीशु का उपदेश हमने तुम्हें दिया है, उसे छोड़ किसी दूसरे यीशु का तुम्हें उपदेश देता है, अथवा जो आत्मा तुमने ग्रहण की है, उससे अलग किसी और आत्मा को तुम ग्रहण करते हो अथवा छुटकारे के जिस संदेश को तुमने ग्रहण किया है, उससे भिन्न किसी दूसरे संदेश को भी ग्रहण करते हो।

[5]तो तुम बहुत प्रसन्न होते हो। पर मैं अपने आप को तुम्हारे उन "बड़े प्रेरितों" से बिलकुल भी छोटा नहीं मानता। [6]हो सकता है मेरी बोलने की शक्ति सीमित है किन्तु मेरा ज्ञान तो असीम है। इस बात को हमने सभी बातों में तुम्हें स्पष्ट रूप से दर्शाया है।

[7]और फिर मैंने सेंत मेंत में सुसमाचार का उपदेश देकर तुम्हें ऊँचा उठाने के लिये अपने आप को झुकाते हुए, क्या कोई पाप किया है? [8]मैंने दूसरी कलीसियाओं से अपना पारिश्रमिक लेकर उन्हें लूटा है ताकि मैं तुम्हारी सेवा कर सकूँ। [9]और जब मैं तुम्हारे साथ था तब भी आवश्यकता पड़ने पर मैंने किसी पर बोझ नहीं डाला क्योंकि मैसिडोनिया से आये भाइयों ने मेरी आवश्यकताएँ पूरी कर दी थीं। मैंने हर बात में अपने आप को तुम पर न बोझ बनने दिया है और न बनने दूँगा। [10]और क्योंकि मुझमें मसीह का सत्य निवास करता है, इसलिये अखाया के समूचे क्षेत्र में मुझे बढ़ चढ़कर बोलने से कोई नहीं रोक सकता। [11]भला क्यों? क्या इसलिये कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता? परमेश्वर जानता है, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।

[12]किन्तु जो मैं कर रहा हूँ उसे तो करता ही रहूँगा; ताकि उन तथाकथित प्रेरितों के गर्व को, जो गर्व करने का कोई ऐसा बहाना चाहते हैं जिससे वे भी उन कामों में हमारे बराबर समझे जा सकें जिनका उन्हें गर्व है; मैं उनके उस गर्व को समाप्त कर सकूँ। [13]ऐसे लोग नकली प्रेरित हैं। वे छली हैं, वे मसीह के प्रेरित होने का ढोंग करते हैं। [14]इसमें कोई अचरज नहीं है, क्योंकि शैतान भी तो परमेश्वर के दूत का रूप धारण कर लेता है। [15]इसलिये यदि उसके सेवक भी नेकी के सेवकों का सा रूप धर लें तो इसमें क्या बड़ी बात है? किन्तु अंत में उन्हें अपनी करनी के अनुसार फल तो मिलेगा ही।

पौलुस की यातनाएँ

[16]मैं फिर दोहराता हूँ कि मुझे कोई मूर्ख न समझे। किन्तु यदि फिर भी तुम ऐसे समझते हो तो मुझे मूर्ख बनाकर ही स्वीकार करो। ताकि मैं भी कुछ गर्व कर सकूँ। [17]अब यह जो मैं कह रहा हूँ, वह प्रभु के अनुसार नहीं कह रहा हूँ बल्कि एक मूर्ख के रूप में गर्वपूर्ण विश्वास के साथ कह रहा हूँ। [18]क्योंकि बहुत से लोग अपने सांसारिक जीवन पर ही गर्व करते हैं। [19]फिर तो मैं भी गर्व करूँगा। और फिर तुम तो इतने समझदार हो कि मूर्खों की बातें प्रसन्नता के साथ सह लेते हो। [20]क्योंकि यदि कोई तुम्हें दास बनाये, तुम्हारा शोषण करे, तुम्हें किसी जाल में फँसाये, अपने को तुमसे बड़ा बनाये अथवा तुम्हारे मुँह पर थप्पड़ मारे तो तुम उसे सह लेते हो। [21]मैं

जिसे ... करे यिर्म. 9:24

लज्जा के साथ कह रहा हूँ, हम बहुत दुर्बल रहे हैं। (मैं मूर्खतापूर्वक कह रहा हूँ) यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तु पर गर्व करने का साहस करता है तो वैसा ही साहस मैं भी करूँगा। [22]इब्रानी वे ही तो नहीं हैं। मैं भी हूँ। इस्राएली वे ही तो नहीं हैं। मैं भी हूँ। इब्राहीम की संतान वे ही तो नहीं हैं। मैं भी हूँ। [23]क्या वे ही मसीह के सेवक हैं? (एक सनकी की तरह मैं यह कहता हूँ) कि मैं तो उससे भी बड़ा मसीह का दास हूँ। मैंने बहुत कठोर परिश्रम किया है। मैं बार बार जेल गया हूँ। मुझे बार बार पीटा गया है। अनेक अवसरों पर मेरा मौत से सामना हुआ है। [24]पाँच बार मैंने यहूदियों से एक कम चालीस चालीस कोड़े खाये हैं। [25]मैं तीन–तीन बार लाठियों से पीटा गया हूँ। एक बार तो मुझ पर पथराव भी किया गया। तीन बार मेरा जहाज़ डूबा। एक दिन और एक रात मैंने समुद्र के गहरे जल में बिताई। [26]मैंने भयानक नदियों, खूँखार डाकुओं, स्वयं अपने लोगों, विधर्मियों, नगरों, ग्रामों, समुद्रों और दिखावटी बंधुओं के संकटों के बीच अनेक यात्राएँ की हैं। [27]मैंने कड़ा परिश्रम करके थकावट से चूर हो कर जीवन जीया है। अनेक अवसरों पर मैं सो तक नहीं पाया हूँ। भूखा और प्यासा रहा हूँ। प्राय: मुझे खाने तक को नहीं मिल पाया है। बिना कपड़ों के ठण्ड में ठिठुरता रहा हूँ। [28]और अब और अधिक क्या कहूँ? मुझ पर सभी कलीसियाओं की चिंता का भार भी प्रतिदिन बना रहा है। [29]किसकी दुर्बलता मुझे शक्तिहीन नहीं कर देती है और किसका पाप में प्रवृत्त होना मुझे बैचेन नहीं बना डालता है।

[30]यदि मुझे बढ़चढ़कर बातें करनी ही हैं तो मैं उन बातों को करूँगा जो मेरी दुर्बलता की हैं। [31]परमेश्वर और प्रभु यीशु का परम पिता जो सदा ही धन्य है, जानता है कि मैं कोई झूठ नहीं बोल रहा हूँ। [32]जब मैं दमिश्क में था तो महाराजा अरितास के राज्यपाल ने दमिश्क पर घेरा डाल कर मुझे बंदी कर लेने का जतन किया था। [33]किन्तु मुझे नगर की चारदीवारी की खिड़की से टोकरी में बैठा कर नीचे उतार दिया गया और मैं उसके हाथों से बच निकला।

पौलुस पर प्रभु का विशेष अनुग्रह

12 अब तो मुझे गर्व करना ही होगा। इससे कुछ मिलना नहीं है, किन्तु मैं तो प्रभु के दर्शनों और प्रभु के दैवी संदेशों पर गर्व करता ही रहूँगा। [2]मैं मसीह में स्थित एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसे चौदह साल पहले (मैं नहीं जानता बस परमेश्वर ही जानता है) देह सहित या देह रहित तीसरे स्वर्ग में उठा लिया गया था। [3]और मैं जानता हूँ कि इसी व्यक्ति को (मैं नहीं जानता, बस परमेश्वर ही जानता है) बिना शरीर के या शरीर सहित [4]स्वर्गलोक में उठा लिया गया था। और उसने अनिर्वचनीय शब्द सुने जिन्हें बोलने की अनुमति मनुष्य को नहीं है। [5]हाँ, ऐसे मनुष्य पर मैं अभिमान करूँगा किन्तु स्वयं अपने पर, अपनी दुर्बलताओं को छोड़कर अभिमान नहीं करूँगा। [6]क्योंकि यदि मैं अभिमान करने की सोचूँ तो भी मैं मूर्ख नहीं बनूँगा क्योंकि तब मैं सत्य कह रहा होऊँगा। किन्तु तुम्हें मैं इससे बचाता हूँ ताकि कोई मुझे जैसा करते देखता है या कहते सुनता है, उससे अधिक श्रेय न दे।

[7]असाधारण दैवी संदेशों के कारण मुझे कोई गर्व न हो जाये इसीलिये मुझे सालते रहने वाला एक काँटा भी दे दिया है। जो शैतान का दूत है, वह मुझे दुखता रहता है ताकि मुझे बहुत अधिक घमण्ड न हो जाये। [8]काँटे की इस समस्या के बारे में मैंने प्रभु से तीन बार प्रार्थना की है कि वह इस काँटे को मुझमें से निकाल ले, [9]किन्तु उसने मुझसे कह दिया है "तेरे लिये मेरा अनुग्रह पर्याप्त है क्योंकि निर्बलता में ही मेरी शक्ति सबसे अधिक होती है, इसीलिये मैं अपनी निर्बलता पर प्रसन्नता के साथ गर्व करता हूँ। ताकि मसीह की शक्ति मुझ में रहे। [10]इस प्रकार मसीह की ओर से मैं अपनी निर्बलताओं, अपमानों, कठिनाइयों, यातनाओं और बाधाओं में आनन्द लेता हूँ क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी शक्तिशाली होता हूँ।

कुरिन्थियों के प्रति पौलुस का प्रेम

[11]मैं मूर्खों की तरह बतियाता रहा हूँ किन्तु ऐसा करने को मुझे विवश तुमने किया। तुम्हें तो मेरी प्रशंसा करनी चाहिये थी यद्यपि वैसे तो मैं कुछ नहीं हूँ पर तुम्हारे उन "महाप्रेरितों" से मैं किसी प्रकार भी छोटा नहीं हूँ। [12]किसी को प्रेरित सिद्ध करने वाले आश्चर्य पूर्ण संकेत, अदभुत कर्म और आश्चर्य कर्म भी तुम्हारे बीच धीरज के साथ प्रकट किये गये हैं। मैंने हर प्रकार की यातना झेली है। चाहे संकेत हो, चाहे कोई चमत्कार या आश्चर्य कर्म [13]तुम दूसरी कलीसियाओं से किस दृष्टि से कम हो? सिवाय इसके कि मैं तुम पर किसी प्रकार भी कभी भार नहीं बना हूँ? मुझे इस के लिए क्षमा करो।

[14]देखो, तुम्हारे पास आने को अब मैं तीसरी बार तैयार हूँ। पर मैं तुम पर किसी तरह का बोझ नहीं बनूँगा। मुझे तुम्हारी सम्पत्तियों की नहीं तुम्हारी चाहत है। क्योंकि बच्चों को अपने माता पिता के लिये कोई बचत करने की आवश्यकता नहीं होती बल्कि अपने बच्चों के लिये माता–पिता को ही बचत करनी होती है। [15]जहाँ तक मेरी बात है, मेरे पास जो कुछ है, तुम्हारे लिए प्रसन्नता के साथ खर्च करूँगा यहाँ तक कि अपने आप को भी तुम्हारे लिए खर्च कर डालूँगा। यदि मैं तुमसे अधिक प्रेम रखता हूँ, तो भला तुम मुझे कम प्यार कैसे करोगे।

[16]हो सकता है, मैंने तुम पर कोई बड़ा बोझ न डाला हो किन्तु (तुम्हारा कहना है) मैं कपटी था मैंने तुम्हें अपनी चालाकी से फँसा लिया। [17]क्या जिन लोगों को मैंने तुम्हारे पास भेजा था, उनके द्वारा तुम्हें छला था? नहीं! [18]तितुस और उसके साथ हमारे भाई को मैंने तुम्हारे पास भेजा था। क्या उसने तुम्हें कोई धोखा दिया? नहीं क्या हम उसी निष्कपट आत्मा से नहीं चलते रहे? क्या हम उन्हीं चरण चिह्नों पर नहीं चले?

[19]अब तुम क्या यह सोच रहे हो कि एक लम्बे समय से हम तुम्हारे सामने अपना पक्ष रख रहे हैं। किन्तु हम तो परमेश्वर के सामने मसीह के अनुयायी के रूप में बोल रहे हैं। मेरे प्रिय मित्रो! हम जो कुछ भी कर रहे हैं, वह तुम्हें आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली बनाने के लिए है। [20]क्योंकि मुझे भय है कि कहीं जब मैं तुम्हारे पास आऊँ तो तुम्हें वैसा न पाऊँ, जैसा पाना चाहता हूँ और तुम भी मुझे वैसा न पाओ जैसा मुझे पाना चाहते हो। मुझे भय है कि तुम्हारे बीच मुझे कहीं आपसी झगड़े, ईर्ष्या, क्रोधपूर्ण कहा–सुनी, व्यक्तिगत षड्यन्त्र, अपमान, काना–फूसी, हेकड़पन और अव्यवस्था न मिले। [21]मुझे डर है कि जब मैं फिर तुमसे मिलने आऊँ तो तुम्हारे सामने मेरा परमेश्वर कहीं मुझे लज्जित न करे; और मुझे उन बहुतों के लिए विलाप न करना पड़े जिन्होंने पहले पाप किये हैं और अपवित्रता, व्यभिचार तथा भोग–विलास में डूबे रहने के लिये पछतावा नहीं किया है।

अंतिम चेतावनी और नमस्कार

13 यह तीसरा अवसर है जब मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। शास्त्र कहता है: "हर बात की पुष्टि, दो या तीन गवाहियों की साक्षी पर की जायेगी।" [2]जब दूसरी बार मैं तुम्हारे साथ था, मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी और अब जब मैं तुमसे दूर हूँ, मैं तुम्हें फिर चेतावनी देता हूँ कि यदि मैं फिर तुम्हारे पास आया तो जिन्होंने पाप किये हैं और जो पाप कर रहे हैं उन्हें और शेष दूसरे लोगों को भी नहीं छोड़ूँगा। [3]ऐसा मैं इसलिये कर रहा हूँ कि तुम इस बात का प्रमाण चाहते हो कि मुझमें मसीह बोलता है। वह तुम्हारे लिए निर्बल नहीं है, बल्कि समर्थ है। [4]यह सच है कि उसे उसकी दुर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया गया किन्तु अब वह परमेश्वर की शक्ति के कारण ही जी रहा है। यह भी सच है कि मसीह में स्थित हम निर्बल हैं किन्तु तुम्हारे लाभ के लिए परमेश्वर की शक्ति के कारण हम उसके साथ जीयेंगे।

[5]यह देखने के लिए अपने आप को परखो कि क्या तुम विश्वासपूर्वक जी रहे हो। अपनी जाँच पड़ताल करो अथवा क्या तुम नहीं जानते कि वह यीशु मसीह तुम्हारे भीतर ही है। यदि ऐसा नहीं है, तो तुम इस परीक्षा में पूरे नहीं उतरे। [6]मैं आशा करता हूँ कि तुम यह जान जाओगे कि हम इस परीक्षा में किसी भी तरह विफल नहीं हुए। [7]हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि तुम कोई बुराई न करो। इसलिये नहीं कि हम इस परीक्षा में खरे दिखाई दें, बल्कि इसलिए कि तुम वही करो जो उचित है। चाहे हम इस परीक्षा में विफल हुए ही क्यों न दिखाई दें। [8]वास्तव में हम सत्य के विरुद्ध कुछ कर ही नहीं सकते। हम तो जो करते हैं, सत्य के लिये ही करते हैं। [9]हमारी निर्बलता और तुम्हारी सबलता हमें प्रसन्न करती है और हम इसी के लिये प्रार्थना करते रहते हैं कि तुम दृढ़ से दृढ़तर बनो। [10]इसीलिये तुमसे दूर रहते हुए भी मैं इन बातों को तुम्हें लिख रहा हूँ ताकि जब मैं तुम्हारे बीच होऊँतो मुझे प्रभु के द्वारा दिये गये अधिकार से तुम्हें हानि पहुँचाने के लिए नहीं बल्कि तुम्हारे आध्यात्मिक विकास के लिए तुम्हारे साथ कठोरता न बरतनी पड़े।

[11]अब हे भाइयो, मैं तुमसे विदा लेता हूँ। अपने आचरण ठीक रखो। वैसा ही करते रहो जैसा करने को मैंने कहा है। एक जैसा सोचो। शांतिपूर्वक रहो। जिससे प्रेम और शांति का स्रोत परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।

[12]पवित्र चुम्बन द्वारा एक दूसरे का स्वागत करो। [13]सभी संतों का तुम्हें नमस्कार।

[14]तुम पर प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ रहे।

गलातियों

1 पौलुस की ओर से, जो एक प्रेरित है, जिसने एक ऐसा सेवा व्रत धारण किया है, जो उसे न तो मनुष्यों से प्राप्त हुआ है और न किसी एक मनुष्य द्वारा दिया गया है, बल्कि यीशु मसीह द्वारा उस परम पिता परमेश्वर से, जिसने यीशु मसीह को मरे हुओं में से फिर से जिला दिया था, दिया गया है।

[2]और मेरे साथ जो भाई हैं, उन सब की ओर से गलातिया* क्षेत्र की कलीसियाओं के नाम:

[3]हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।। [4]जिसने हमारे पापों के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया ताकि इस पापपूर्ण संसार से, जिसमें हम रह रहे हैं, वह हमें छुटकारा दिला सके। हमारे परम पिता परमेश्वर की यही इच्छा है। [5]वह सदा सर्वदा महिमावान हो आमीन!

सच्चा सुसमाचार एक ही है

[6]मुझे अचरज है! कि तुम लोग इतनी जल्दी उस परमेश्वर से मुँह मोड़ कर, जिसने मसीह के अनुग्रह द्वारा तुम्हें बुलाया था, किसी दूसरे सुसमाचार की ओर जा रहे हो। [7]कोई दूसरा सुसमाचार तो वास्तव में है ही नहीं, किन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हें भरमा रहे हैं और मसीह के सुसमाचार में हेर–फेर का जतन कर रहे हैं। [8]किन्तु चाहे हम हों और चाहे कोई स्वर्गदूत, यदि तुम्हें हमारे द्वारा सुनाये गये सुसमाचार से भिन्न सुसमाचार सुनाता है तो उसे धिक्कार है। [9]जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर दोहरा रहा हूँ कि यदि चाहे हम हों, और चाहे कोई स्वर्गदूत, यदि तुम्हारे द्वारा स्वीकार किए गए सुसमाचार से भिन्न सुसमाचार सुनाता है तो उसे धिक्कार है।

[10]क्या इससे तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं मनुष्यों का समर्थन चाहता हूँ? या यह कि मुझे परमेश्वर का समर्थन मिले? अथवा क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने का जतन कर रहा हूँ? यदि मैं मनुष्यों को प्रसन्न करता तो मैं मसीह के सेवक का सा नहीं होता।

पौलुस का सुसमाचार परमेश्वर से प्राप्त है

[11]हे भाइयों, मैं तुम्हें जताना चाहता हूँ कि वह सुसमाचार जिसका उपदेश तुम्हें मैंने दिया है, [12]कोई मनुष्य से प्राप्त सुसमाचार नहीं हैं क्योंकि न तो मैंने इसे किसी मनुष्य से पाया है और न ही किसी मनुष्य ने इसकी शिक्षा मुझे दी है। बल्कि दैवी संदेश के रूप में यह यीशु मसीह द्वारा मेरे सामने प्रकट हुआ है।

[13]यहूदी धर्म में मैं पहले कैसे जीया करता था, उसे तुम सुन चुके हो, और तुम यह भी जानते हो कि मैंने परमेश्वर की कलीसिया पर कितना अत्याचार किया है और उसे मिटा डालने का प्रयास तक किया है। [14]यहूदी धर्म के पालने में मैं अपने युग के समकालीन यहूदियों से आगे था क्योंकि मेरे पूर्वजों से जो परम्पराएँ मुझे मिली थीं, उनमें मेरी उत्साहपूर्ण आस्था थी।

[15]किन्तु परमेश्वर ने तो मेरे जन्म से पहले ही मुझे चुन लिया था और अपने अनुग्रह में मुझे बुला लिया था। [16]ताकि वह मुझे अपने पुत्र का ज्ञान करा दे जिससे मैं ग़ैर यहूदियों के बीच उसके सुसमाचार का प्रचार करूँ। उस समय तत्काल मैंने किसी मनुष्य से कोई राय नहीं ली। [17]और न ही मैं उन लोगों के पास यरूशलेम गया जो मुझसे पहले प्रेरित बने थे। बल्कि मैं अरब को गया और फिर वहाँ से दमिश्क लौट आया।

गलातिया कदाचित यह वही क्षेत्र रहा होगा जहाँ अपनी पहली धार्मिक सेवा यात्रा के अवसर पर पौलुस ने उपदेश दिया था और कलीसिया की स्थापना की थी। देखें प्रेरितों के काम 13 और 14

[18]फिर तीन साल के बाद पतरस से मिलने के लिए मैं यरूशलेम पहुँचा और उसके साथ एक पखवाड़े ठहरा। [19]किन्तु वहाँ मैं प्रभु के भाई याकूब को छोड़ कर किसी भी दूसरे प्रेरित से नहीं मिला। [20]मैं परमेश्वर के सामने शपथपूर्वक कहता हूँ कि जो कुछ में लिख रहा हूँ उसमें झूठ नहीं है। [21]उसके बाद मैं सीरिया और किलिकिया के प्रदेशों में गया।

[22]किन्तु यहूदिया के मसीह को मानने वाले कलीसिया व्यक्तिगत रूप से मुझे नहीं जानते थे। [23]किन्तु वे लोगों को कहते सुनते थे, "वही व्यक्ति जो पहले हमें सताया करता था, उसी विश्वास, यानी उसी मत का प्रचार कर रहा है, जिसे उसने कभी नष्ट करने का प्रयास किया था।" [24]मेरे कारण उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की।

पौलुस को प्रेरितों की मान्यता

2 चौदह साल बाद मैं फिर से यरूशलेम गया। बरनाबास मेरे साथ था और तितुस को भी मैंने साथ ले लिया था। [2]मैं परमेश्वर के दिव्य दर्शन के कारण वहाँ गया था। मैं ग़ैर यहूदियों के बीच जिस सुसमाचार का उपदेश दिया करता हूँ, उसी सुसमाचार को मैंने एक निजी सभा के बीच कलीसिया के मुखियाओं को सुनाया। मैं वहाँ इसलिए गया था कि परमेश्वर ने मुझे दर्शाया था कि मुझे वहाँ जाना चाहिए। ताकि जो काम मैंने पिछले दिनों किया था, या जिसे मैं कर रहा हूँ, वह बेकार न चला जाये। [3]परिणाम–स्वरूप तितुस तक को, जो मेरे साथ था, यद्यपि वह यूनानी है, फिर भी उसे ख़तना कराने के लिये विवश नहीं किया गया। [4]किन्तु उन झूठे बंधुओं के कारण जो लुके–छिपे हमारे बीच भेदिये के रूप में यीशु मसीह में हमारी स्वतन्त्रता का पता लगाने को इसलिए घुस आये थे कि हमें दास बना सकें, यह बात उठी [5]किन्तु हमने उनकी अधीनता में घुटने नहीं टेके ताकि वह सत्य जो सुसमाचार में निवास करता है, तुम्हारे भीतर बना रहे।

[6]किन्तु जाने माने प्रतिष्ठित लोगों से मुझे कुछ नहीं मिला। (वे कैसे भी थे, मुझे इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। बिना किसी भेदभाव के सभी मनुष्य परमेश्वर के सामने एक जैसे हैं।) उन सम्मानित लोगों से मुझे या मेरे सुसमाचार को कोई लाभ नहीं हुआ। [7]किन्तु इन मुखियाओं ने देखा कि परमेश्वर ने मुझे वैसे ही एक विशेष काम सौंपा है जैसे पतरस को परमेश्वर ने यहूदियों को सुसमाचार सुनाने का काम दिया था। किन्तु परमेश्वर ने ग़ैर यहूदी लोगों को सुसमाचार सुनाने का काम मुझे दिया। [8]परमेश्वर ने पतरस को एक प्रेरित के रूप में काम करने की शक्ति दी थी। पतरस ग़ैर यहूदी लोगों के लिए एक प्रेरित है। परमेश्वर ने मुझे भी एक प्रेरित के रूप में काम करने की शक्ति दी है। किन्तु मैं उन लोगों का प्रेरित हूँ जो यहूदी नहीं हैं। [9]इस प्रकार उन्होंने मुझ पर परमेश्वर के उस अनुग्रह को समझ लिया और कलीसिया के स्तम्भ समझे जाने वाले याकूब, पतरस और यूहन्ना ने बरनाबास और मुझसे साझेदारी के प्रतीक रूप में हाथ मिला लिया। और वे सहमत हो गये कि हम विधर्मियों के बीच उपदेश देते रहें और वे यहूदियों के बीच। [10]उन्होंने हमसे बस यही कहा कि हम उनके निर्धनों का ध्यान रखें। और मैं इसी काम को न केवल करना चाहता था बल्कि इसके लिए लालायित भी था।

पौलुस की दृष्टि में पतरस अनुचित

[11]किन्तु जब पतरस अंताकिया आया तो मैंने खुल कर उसका विरोध किया क्योंकि वह अनुचित था। [12]क्योंकि याकूब द्वारा भेजे हुए कुछ लोगों के यहाँ पहुँचने से पहले वह ग़ैर यहूदियों के साथ खाता पीता था। किन्तु उन लोगों के आने के बाद उसने ग़ैर यहूदियों से अपना हाथ खींच लिया और स्वयं को उनसे अलग कर लिया। उसने उन लोगों के डर से ऐसा किया जो चाहते थे कि ग़ैर यहूदियों का भी ख़तना होना चाहिए। [13]दूसरे यहूदियों ने भी इस दिखावे में उसका साथ दिया। यहाँ तक कि इस दिखावे के कारण बरनाबास तक भटक गया। [14]मैंने जब यह देखा कि सुसमाचार में निहित सत्य के अनुसार वे सीधे रास्ते पर नहीं चल रहे हैं तो सब के सामने पतरस से कहा, "जब तुम यहूदी होकर भी ग़ैर यहूदी का सा जीवन जीते हो, तो फिर ग़ैर यहूदियों को यहूदियों की रीति पर चलने को विवश कैसे कर सकते हो?"

[15]हम तो जन्म के यहूदी हैं। हमारा पापी ग़ैर यहूदी से कोई सम्बन्ध नहीं है। [16]फिर भी हम यह जानते हैं कि किसी व्यक्ति को व्यवस्था के विधान का पालन करने के कारण नहीं बल्कि यीशु मसीह में विश्वास के कारण नेक ठहराया जाता है। हमने इसी लिये यीशु मसीह का विश्वास धारण किया है ताकि इस विश्वास के कारण हम नेक ठहराये जायें, न कि व्यवस्था के विधान के पालन के

कारण। क्योंकि उसे पालने से तो कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं होता।

[17]किन्तु यदि हम जो यीशु मसीह में अपनी स्थिति के कारण धर्मी ठहराया जाना चाहते हैं, हम ही विधर्मियों के समान पापी पाये जायें तो इसका अर्थ क्या यह नहीं है कि मसीह पाप को बढ़ावा देता है। निश्चय ही नहीं।" [18]यदि जिसका मैं त्याग कर चुका हूँ, उस रीति का ही फिर से उपदेश देने लगूँ तब तो मैं आज्ञा का उल्लंघन करने वाला अपराधी बन जाऊँगा। [19]क्योंकि व्यवस्था के विधान के द्वारा व्यवस्था के लिये तो मैं मर चुका ताकि परमेश्वर के लिये मैं फिर से जी जाऊँ मसीह के साथ मुझे क्रूस पर चढ़ा दिया है। [20]इसी से अब आगे मैं जीवित नहीं हूँ किन्तु मसीह मुझ में जीवित है। सो इस शरीर में अब मैं जिस जीवन को जी रहा हूँ, वह तो विश्वास पर टिका है। परमेश्वर के उस पुत्र के प्रति विश्वास पर जो मुझसे प्रेम करता था, और जिसने अपने आप को मेरे लिए अर्पित कर दिया। [21]मैं परमेश्वर के अनुग्रह को नहीं नकार रहा हूँ, किन्तु यदि धार्मिकता व्यवस्था के विधान के द्वारा परमेश्वर से नाता जुड़ा पाता तो मसीह बेकार ही अपने प्राण क्यों देता।

परमेश्वर का वरदान विश्वास से मिलता है

3 हे मूर्ख गलातियो, तुम पर किसने जादू कर दिया है? तुम्हें तो, सब के सामने यीशु मसीह को क्रूस पर कैसे चढ़ाया गया था, इसका पूरा विवरण दे दिया गया था। [2]मैं तुमसे बस इतना जानना चाहता हूँ कि तुमने आत्मा का वरदान क्या व्यवस्था के विधान को पालने से पाया था अथवा सुसमाचार के सुनने और उस पर विश्वास करने से? [3]क्या तुम इतने मूर्ख हो सकते हो कि जिस जीवन को तुमने आत्मा से आरम्भ किया, उसे अब हाड़-माँस के शरीर की शक्ति से पूरा करोगे? [4]तुमने इतने कष्ट क्या बेकार ही उठाये? आशा है कि वे बेकार नहीं थे। [5]परमेश्वर, जो तुम्हें आत्मा प्रदान करता है और जो तुम्हारे बीच आश्चर्य कर्म करता है, वह यह इसलिए करता है कि तुम व्यवस्था के विधान को पालते हो या इसलिए कि तुमने सुसमाचार को सुना है और उस पर विश्वास किया है।

[6] यह वैसे ही है जैसे कि इब्राहीम के विषय में शास्त्र कहता है: "उसने परमेश्वर में विश्वास किया और यह उसके लिये धार्मिकता गिनी गई।"* [7] तो फिर तुम यह जान लो, "इब्राहीम के सच्चे वंशज वे ही हैं जो विश्वास करते हैं। [8]शास्त्र ने पहले ही बता दिया था, "परमेश्वर ग़ैर यहूदियों को भी उनके विश्वास के कारण धर्मीज्ञ ठहरायेगा। और इन शब्दों के साथ पहले से ही इब्राहीम को परमेश्वर द्वारा सुसमाचार से अवगत करा दिया गया था।"* [9] इसी लिये वे लोग जो विश्वास करते हैं विश्वासी इब्राहीम के साथ आशीष पाते हैं। [10]किन्तु वे सभी लोग जो व्यवस्था के विधानों के पालन पर निर्भर रहते हैं, वे तो किसी अभिशाप के अधीन हैं। शास्त्र में लिखा है: "ऐसा हर व्यक्ति शापित है जो व्यवस्था के विधान की पुस्तक में लिखी हर बात का लगन के साथ पालन नहीं करता।"* [11]अब यह स्पष्ट है कि व्यवस्था के विधान के द्वारा परमेश्वर के सामने कोई भी नेक नहीं ठहरता है। क्योंकि शास्त्र के अनुसार "धमी व्यक्ति विश्वास के सहारे जीयेगा।"* [12]किन्तु व्यवस्था का विधान तो विश्वास पर नहीं टिका है बल्कि शास्त्र के अनुसार, "जो व्यवस्था के विधान को पालेगा, वह उन ही के सहारे जीयेगा।"* [13]मसीह ने हमारे शाप को अपने ऊपर ले कर व्यवस्था के विधान के शाप से हमें मुक्त कर दिया। शास्त्र कहता है: "हर कोई जो वृक्ष पर टाँग दिया जाता है, शापित है।"* [14]मसीह ने हमें इसलिये मुक्त किया कि, इब्राहीम को दी गयी आशीश मसीह यीशु के द्वारा ग़ैर यहूदियों को भी मिल सके ताकि विश्वास के द्वारा हम उस आत्मा को प्राप्त करें, जिसका वचन दिया गया था।

व्यवस्था का विधान और वचन

[15]हे भाइयो, अब मैं तुम्हें दैनिक जीवन से एक उदाहरण देने जा रहा हूँ। देखो, जैसे किसी मनुष्य द्वारा कोई करार कर लिया जाने पर, न तो उसे रद्द किया जा सकता है और न ही उस में से कुछ घटाया जा सकता है। और न बढ़ाया, [16]वैसे ही इब्राहीम और उसके भावी वंशज के साथ की गयी प्रतिज्ञा के संदर्भ में भी है। (देखो, शास्त्र यह

उसने ... गिनी गई उत्पत्ति 15:6
परमेश्वर ग़ैर ... गया था उत्पत्ति 12:3
ऐसा हर ... नहीं करता व्यवस्था. 27:26
धर्मी ... जीयेगा हबक. 2:4
जो व्यवस्था ... जीयेगा लैव्य. 18:5
हर कोई ... शापित है व्यवस्था. 21:22-23

नहीं कहता, "और उसके वंशजों को" यदि ऐसा होता तो बहुतों की ओर संकेत होता किन्तु शास्त्र में एक वचन का प्रयोग है। शास्त्र कहता है "और तेरे वंशज को" जो मसीह है।) [17]मेरा अभिप्राय यह है कि जिस करार को परमेश्वर ने पहले ही सुनिश्चित कर दिया उसे चार सौ तीस साल बाद आने वाला व्यवस्था का विधान नहीं बदल सकता और न ही उसके वचन को नाकारा ठहरा सकता है। [18]क्योंकि यदि उत्तराधिकार व्यवस्था के विधान पर टिका है तो फिर वह वचन पर नहीं टिकेगा। किन्तु परमेश्वर ने उत्तराधिकार वचन के द्वारा मुक्त रूप से इब्राहीम को दिया था।

[19]फिर भला व्यवस्था के विधान का प्रयोजन क्या रहा? आज्ञाउल्लंघन के अपराध के कारण व्यवस्था के विधान को वचन से जोड़ दिया गया था ताकि जिस के लिए वचन दिया गया था, उस वंशज के आने तक वह रहे। व्यवस्था का विधान एक मध्यस्थ के रूप में मूसा की सहायता से स्वर्गदूत द्वारा दिया गया था। [20]अब देखो, मध्यस्थ तो दो के बीच होता है, किन्तु परमेश्वर तो एकही है।

मूसा की व्यवस्था के विधान का प्रयोजन

[21]क्या इसका यह अर्थ है कि व्यवस्था का विधान परमेश्वर के वचन का विरोधी है? निश्चित रूप से नहीं। क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था का विधान दिया गया होता जो लोगों में जीवन का संचार कर सकता तो वह व्यवस्था का विधान ही परमेश्वर के सामने धार्मिकता को सिद्ध करने का साधन बन जाता। [22]किन्तु शास्त्र ने घोषणा की है कि यह समूचा संसार पाप की शक्ति के अधीन है। ताकि यीशु मसीह में विश्वास के आधार पर जो वचन दिया गया है, वह विश्वासी जनों को भी मिले।

[23]इस विश्वास के आने से पहले, हमें व्यवस्था के विधान की देखरेख में, इस आने वाले विश्वास के प्रकट होने तक, बंदी के रूप में रखा गया। [24]इस प्रकार व्यवस्था का विधान हमें मसीह तक ले जाने के लिए एक कठोर अभिभावक था ताकि अपने विश्वास के आधार पर हम नेक ठहरें। [25]अब जब यह विश्वास प्रकट हो चुका है तो हम उस कठोर अभिभावक के अधीन नहीं हैं।

[26]यीशु मसीह में विश्वास के कारण तुम सभी परमेश्वर की संतान हो। [27]क्योंकि तुम सभी जिन्होंने मसीह का बपतिस्मा ले लिया है, मसीह में समा गये हो। [28]सो अब किसी में कोई अन्तर नहीं रहा न कोई यहूदी रहा, न ग़ैर यहूदी, न दास रहा, न स्वतन्त्र, न पुरुष रहा, न स्त्री, क्योंकि मसीह यीशु में तुम सब एक हो। [29]और क्योंकि तुम मसीह के हो तो फिर तुम इब्राहीम के वंशज हो। और परमेश्वर ने जो वचन इब्राहीम को दिया था, उस वचन के उत्तराधिकारी हो।

4 मैं कहता हूँ कि उत्तराधिकारी जब तक बालक है तो चाहे सब कुछ का स्वामी वही होता है, फिर भी वह दास से अधिक कुछ नहीं रहता। [2]वह अभिभावकों और घर के सेवकों के तब तक अधीन रहता है, जब तक उसके पिता द्वारा निश्चित समय नहीं आ जाता। [3]हमारी भी ऐसी ही स्थिति है। हम भी जब बच्चे थे तो सांसारिक नियमों के दास थे। [4]किन्तु जब उचित अवसर आया तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो एक स्त्री से जन्मा था। और व्यवस्था के अधीन जीता था। [5]ताकि वह व्यवस्था के अधीन व्यक्तियों को मुक्त कर सके जिससे हम परमेश्वर के गोद लिये बच्चे बन सकें।

[6]और फिर क्योंकि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, सो उसने तुम्हारे हृदयों में पुत्र की आत्मा को भेजा। वही आत्मा "हे अब्बा," "हे पिता" कहते हुए पुकारती है। [7]इसलिये अब तू दास नहीं है बल्कि पुत्र है और क्योंकि तू पुत्र है, इसलिये तुझे परमेश्वर ने अपना उत्तराधिकारी भी बनाया है।

गलाती मसीहियों के लिए पौलुस का प्रेम

[8]पहले तुम लोग जब परमेश्वर को नहीं जानते थे तो तुम लोग देवताओं के दास थे। वे वास्तव में परमेश्वर नहीं थे। [9]किन्तु अब तुम परमेश्वर को जानते हो, या यूँ कहना चाहिये कि परमेश्वर के द्वारा अब तुम्हें पहचान लिया गया है। फिर तुम उन साररहित, दुर्बल नियमों की ओर क्यों लौट रहे हो। तुम फिर से उनके अधीन क्यों होना चाहते हो? [10]तुम किन्ही विशेष दिनों, महीनों, ऋतुओं और वर्षो को मानने लगे हो। [11]तुम्हारे बारे में मुझे डर है कि तुम्हारे लिए जो काम मैंने किया है, वह सारा कहीं बेकार तो नहीं हो गया है।

[12]हे भाइयों, कृपया मेरे जैसे बन जाओ। देखो, मैं भी तो तुम्हारे जैसा बन गया हूँ, यह मेरी तुमसे प्रार्थना है, ऐसा नहीं है कि तुमने मेरे प्रति कोई अपराध किया है। [13]तुम तो जानते ही हो कि अपनी शारीरिक व्याधि के

कारण मैंने पहली बार तुम्हें ही सुसमाचार सुनाया था। [14]और तुमने भी, मेरी अस्वस्थता के कारण, जो तुम्हारी परीक्षा ली गयी थी, उससे मुझे छोटा नहीं समझा और न ही मेरा निषेध किया। बल्कि तुमने परमेश्वर के स्वर्ग दूत के रूप में मेरा स्वागत किया। मानों मैं स्वयं मसीह यीशु ही था। [15]सो तुम्हारी उस प्रसन्नता का क्या हुआ? मैं तुम्हारे लिये स्वयं इस बात का साक्षी हूँ कि यदि तुम समर्थ होते तो तुम अपनी आँखें तक निकाल कर मुझे दे देते। [16]सो क्या सच बोलने से ही मैं तुम्हारा शत्रु हो गया?

[17]तुम्हें व्यवस्था के विधान पर चलाना चाहने वाले तुममें बड़ी गहरी रुचि लेते हैं। किन्तु उनका उद्देश्य अच्छा नहीं है। वे तुम्हें मुझ से अलग करना चाहते हैं। ताकि तुम भी उनमें गहरी रुचि ले सको। [18]कोई किसी में सदा गहरी रुचि लेता रहे, यह तो एक अच्छी बात है किन्तु यह किसी अच्छे के लिए होना चाहिये। और बस उसी समय नहीं, जब मैं तुम्हारे साथ हूँ। [19]मेरे प्रिय बच्चो! मैं तुम्हारे लिये एक बार फिर प्रसववेदना को झेल रहा हूँ, जब तक तुम मसीह जैसे ही नहीं हो जाते। [20]मैं चाहता हूँ कि अभी तुम्हारे पास आ पहुँचूँ और तुम्हारे साथ अलग ही तरह से बातें करूँ, क्योंकि मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि तुम्हारे लिये क्या किया जाये।

सारा और हाजिरा का उदाहरण

[21]व्यवस्था के विधान के अधीन रहना चाहने वालों से मैं पूछना चाहता हूँ: क्या तुमने व्यवस्था के विधान का यह कहना नहीं सुना [22]कि इब्राहीम के दो पुत्र थे। एक का जन्म एक दासी से हुआ था और दूसरे का एक स्वतन्त्र स्त्री से। [23]दासी से पैदा हुआ पुत्र प्राकृतिक परिस्थितियों में जन्मा था किन्तु स्वतन्त्र स्त्री से जो पुत्र उत्पन्न हुआ था, वह परमेश्वर के द्वारा की गयी प्रतिज्ञा का परिणाम था।

[24]इन बातों का प्रतीकात्मक अर्थ है: ये दो स्त्रियाँ, दो वाचओं का प्रतीक हैं। एक वाचा सिनै पर्वत से प्राप्त हुआ था जिसने उन लोगों को जन्म दिया जो दासता के लिये थे। यह वाचा हाजिरा से सम्बन्धित है। [25]हाजिरा अरब में स्थित सिनै पर्वत का प्रतीक है, वह वर्तमान यरूशलेम की ओर संकेत करती है क्योंकि वह अपने बच्चों के साथ दासता भुगत रही है। [26]किन्तु स्वर्ग में स्थित यरूशलेम स्वतन्त्र है। और वही हमारी माता है। [27]शास्त्र कहता है:

"बाँझ! आनन्द मना,
तूने किसी को न जना;
हर्ष नाद कर, तुझ को प्रसव वेदना न हुई,
और हँसी–खुशी में खिलखिला।
क्योंकि परित्यक्ता की अनगिनत संतानें हैं
उसकी उतनी नहीं है जो पतिवंती है।"

यशायाह 54:1

[28]सो भाइयों, अब तुम इसहाक की जैसी परमेश्वर के वचन की संतान हो। [29] किन्तु जैसे उस समय प्राकृतिक परिस्थितियों के अधीन पैदा हुआ आत्मा की शक्ति से उत्पन्न हुए को सताता था, वैसी ही स्थिति आज है। [30]किन्तु देखो, पवित्र शास्त्र क्या कहता है? "इस दासी और इसके पुत्र को निकाल कर बाहर करो क्योंकि यह दासी पुत्र तो स्वतन्त्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा।"* [31]इसीलिए हे भाइयो, हम उस दासी की संतान नहीं हैं, बल्कि हम तो स्वतन्त्र स्त्री की संताने हैं।

स्वतन्त्र बने रहो

5 मसीह ने हमें स्वतन्त्र किया है, ताकि हम स्वतन्त्रता का आनन्द ले सकें। इसलिये अपने विश्वास को दृढ़ बनाये रखो और फिर से व्यवस्था के विधान के जुए का बोझ मत उठाओ। [2]सुनो! स्वयं मैं, पौलुस तुमसे कह रहा हूँ कि यदि ख़तना करा कर तुम फिर से व्यवस्था के विधान की ओर लौटते हो तो तुम्हारे लिये मसीह का कोई महत्व नहीं रहेगा। [3]अपना ख़तना कराने देने वाले प्रत्येक व्यक्ति को, मैं एक बार फिर से जताये देता हूँ कि उसे समूचे व्यवस्था के विधान पर चलना अनिवार्य है। [4]तुममें से जितने भी लोग व्यवस्था के पालन के कारण धर्मी के रूप में स्वीकृत होना चाहते हैं, वे सभी मसीह से दूर हो गये हैं और परमेश्वर के अनुग्रह के क्षेत्र से बाहर हैं। [5]किन्तु हम विश्वास के द्वारा परमेश्वर के सामने धर्मी स्वीकार किये जाने की आशा रखते हैं। आत्मा की सहायता से हम इसकी बाट जोह रहे हैं। [6]क्योंकि मसीह यीशु में स्थिति के लिये न तो ख़तना कराने का कोई महत्त्व है और न ख़तना नहीं कराने का बल्कि उसमें तो प्रेम से पैदा होने वाले विश्वास का ही महत्त्व है।

[7]तुम तो बहुत अच्छी तरह एक मसीह का जीवन जीते रहे हो। अब तुम्हें, ऐसा क्या है जो सत्य पर चलने से

इस दासी ... नहीं होगा उत्पत्ति 21:10

रोक रहा है। [8]ऐसी विमति जो तुम्हें सत्य से दूर कर रही है, तुम्हारे बुलाने वाले परमेश्वर की ओर से नहीं आयी है।

[9]"थोड़ा सा ख़मीर गुँधे हुए समूचे आटे को ख़मीर से उठा लेता है।" [10]प्रभु के प्रति मेरा पूरा भरोसा है कि तुम किसी भी दूसरे मत को नहीं अपनाओगे किन्तु तुम्हें विचलित करने वाला चाहे कोई भी हो, उचित दंड पायेगा।

[11]हे भाइयों, यदि मैं आज भी, जैसा कि कुछ लोग मुझ पर लांछन लगाते हैं कि मैं ख़तने का प्रचार करता हूँ तो मुझे अब तक यातनाएँ क्यों दी जा रही हैं? और यदि मैं अब भी ख़तने की आवश्यकता का प्रचार करता हूँ, तब तो मसीह के क्रूस के कारणपैदा हुई मेरी सभी बाधाएँ समाप्त हो जानी चाहियें। [12]मैं तो चाहता हूँ कि वे जो तुम्हें डिगाना चाहते हैं, ख़तना कराने के साथ साथ अपने आपको बधिया ही करा डालते।

[13]किन्तु भाइयो, तुम्हें परमेश्वर ने स्वतन्त्र रहने को चुना है। किन्तु उस स्वतन्त्रता को अपने आप पूर्ण स्वभाव की पूर्ति का साधन मत बनने दो, इसके विपरीत प्रेम के कारण परस्पर एक दूसरे की सेवा करो। [14]क्योंकि समूचे व्यवस्था के विधान का सार संग्रह इस एक कथन में ही है: "अपने साथियों से वैसे ही प्रेम करो, जैसे तुम अपने आप से करते हो।"* [15]किन्तु आपस में काट करते हुए यदि तुम एक दूसरे को खाते रहोगे तो देखो! तुम आपस में ही एक दूसरे को समाप्त कर दोगे।

मानव–प्रकृति और आत्मा

[16]किन्तु मैं कहता हूँ कि आत्मा के अनुशासन के अनुसार आचरण करो और अपनी पाप पूर्ण प्रकृति की इच्छाओं की पूर्ति मत करो। [17]क्योंकि शारीरिक भौतिक अभिलाषाएँ पवित्र आत्मा की अभिलाषाओं के और पवित्र आत्मा की अभिलाषाएँ शारीरिक भौतिक अभिलाषाओं के विपरीत होती हैं। इनका आपस में विरोध है। इसीलिए तो जो तुम करना चाहते हो, वह कर नहीं सकते। [18]किन्तु यदि तुम पवित्र आत्मा के अनुशासन में चलते हो तो फिर व्यवस्था के विधान के अधीन नहीं रहते।

[19]अब देखो। हमारे शरीर की पापपूर्ण प्रकृति के कामों को तो सब जानते हैं। वे हैं: व्यभिचार अपवित्रता, भोगविलास, [20]मूर्ति पूजा, जादू–टोना, बैरभाव, लड़ाई–झगड़ा, डाह, क्रोध, स्वार्थीपन, मतभेद, फूट, ईर्ष्या, [21]नशा, लंपटता या ऐसी ही और बातें। अब मैं तुम्हें इन बातों के बारे में वैसे ही चेता रहा हूँ जैसे मैंने तुम्हें पहले ही चेता दिया था कि जो लोग ऐसी बातों में भाग लेंगे, वे परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकार नहीं पायेंगे। [22]जबकि पवित्र आत्मा प्रेम, प्रसन्नता, शांति, धीरज, दयालुता, नेकी, विश्वास, [23]नम्रता और आत्म–संयम उपजाता है। ऐसी बातों के विरोध में कोई व्यवस्था का विधान नहीं है। [24]उन लोगों ने जो यीशु मसीह के हैं, अपने पापपूर्ण मानव–स्वभाव को वासनाओं और इच्छाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। [25]क्योंकि जब हमारे इस नये जीवन का स्रोत आत्मा है तो आओ आत्मा के ही अनुसार चलें। [26]हम अभिमानी न बनें। एक दूसरे को न चिड़ायें। और न ही परस्पर ईर्ष्या रखें।

एक दूसरे की सहायता करो

6 हे भाइयो, तुममें से यदि कोई व्यक्ति कोई पाप करते पकड़ा जाए तो तुम आध्यात्मिक जनों को चाहिये कि नम्रता के साथ उसे धर्म के मार्ग पर वापस लाने में सहायता करो। और स्वयं अपने लिये भी सावधानी बरतो कि कहीं तुम स्वयं भी किसी परीक्षा में न पड़ जाओ। [2]परस्पर एक दूसरे का भार उठाओ। इस प्रकार तुम मसीह की व्यवस्था का पालन करोगे। [3]यदि कोई व्यक्ति महत्त्वपूर्ण न होते हुए भी अपने को महत्त्वपूर्ण समझता है तो वह अपने को धोखा देता है। [4]अपने कर्म का मूल्यांकन हर किसी को स्वयं करते रहना चाहिये। ऐसा करने पर ही उसे अपने आप पर, किसी दूसरे के साथ तुलना किये बिना, गर्व करने का अवसर मिलेगा। [5] क्योंकि अपना दायित्व हर किसी को स्वयं ही उठाना है।

[6]जिसे परमेश्वर का वचन सुनाया गया है, उसे चाहिये कि जो उत्तम वस्तुएँ उसके पास हैं, उनमें अपने उपदेशक को साझी बनाए।

जीवन खेत–बोने जैसा है

[7]अपने आपको मत छलो। परमेश्वर को कोई बुद्धू नहीं बना सकता क्योंकि जो जैसा बोयेगा, वैसा ही काटेगा। [8]जो अपनी काया के लिए बोयेगा, वह अपनी काया से विनाश की फसल काटेगा। किन्तु जो आत्मा के खेत में बीज बोएगा, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की फसल

अपने साथियों ... करते हो लैव्य. 19:18

काटेगा। 9इसलिये आओ हम भलाई करते कभी न थकें, क्योंकि यदि हम भलाई करते ही रहेंगे तो उचित समय आने पर हमें उसका फल मिलेगा। 10सो जैसे ही कोई अवसर मिले, हमें सभी के साथ भलाई करनी चाहिये, विशेषकर अपने धर्म–भाइयों के साथ।

पत्र का समापन

11देखो, मैंने तुम्हें स्वयं अपने हाथ से कितने बड़े बड़े अक्षरों में लिखा है। 12ऐसे लोग जो शारीरिक रूप से अच्छा दिखावा करना चाहते हैं, तुम पर ख़तना कराने का दबाव डालते हैं। किन्तु वे ऐसा बस इसलिए करते हैं कि उन्हें मसीह के क्रूस के कारण यातनाएँ न सहनीं पड़ें।

13क्योंकि वे स्वयं भी जिनका ख़तना हो चुका है, व्यवस्था के विधान का पालन नहीं करते किन्तु फिर भी वे चाहते हैं कि तुम ख़तना कराओ ताकि वे तुम्हारे द्वारा इस शारीरिक प्रथा को अपनाए जाने पर डींगे मार सकें। 14किन्तु जिसके द्वारा मैं संसार के लिये और संसार मेरे लिये मर गया, प्रभु यीशु मसीह के उस क्रूस को छोड़ कर मुझे और किसी पर गर्व न हो। 15क्योंकि न तो ख़तने का कोई महत्त्व है और न बिना ख़तने का। यदि महत्त्व है तो वह नयी सृष्टि का है। 16इसलिये जो लोग इस धर्म–नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर शांति तथा दया होती रहे।

17पत्र को समाप्त करते हुए मैं तुमसे विनती करता हूँ कि अब मुझे कोई और दुःख मत दो। क्योंकि मैं तो पहले ही अपने देह में यीशु के घावों को लिए घूम रहा हूँ।

18हे भाइयों, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्माओं के साथ बना रहे। आमीन।

इफिसियों

1 पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का एक प्रेरित है, इफिसुस के रहने वाले संत जनों और मसीह यीशु में विश्वास रखने वालों के नाम:

[2]तुम्हें हमारे परम पिता परमेश्वर और यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह तथा शांति मिले।

मसीह में स्थितों के लिये आध्यात्मिक आशीषें

[3]हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता और परमेश्वर धन्य हो। उसने हमें मसीह के रूप में स्वर्ग के क्षेत्र में हर तरह के आशीर्वाद दिये हैं। [4-5]संसार की रचना से पहले ही परमेश्वर ने हमें, जो मसीह में स्थित हैं, अपने सामने पवित्र और निर्दोष बनने के लिये चुना। हमारे प्रति उसका जो प्रेम है उसी के कारण उसने यीशु मसीह के द्वारा हमें अपने बेटों के रूप में स्वीकार किये जाने के लिए नियुक्त किया। यही उसकी इच्छा थी और यही प्रयोजन भी था। [6]उसने ऐसा इसलिये किया कि वह अपनी महिमाय अनुग्रह के कारण स्वयं को प्रशंसित करे। उसने इसे हमें, जो उसके प्रिय पुत्र में स्थित हैं मुक्त भाव से प्रदान किया। [7]उसकी बलिदानी मृत्यु के द्वारा अब हम अपने पापों से छुटकारे का आनन्द ले रहे हैं। उसके सम्पन्न अनुग्रह के कारण हमें हमारे पापों की क्षमा मिलती है। अपने उसी प्रेम के अनुसार जिसे वह मसीह के द्वारा हम पर प्रकट करना चाहता था। [8]उसने हमें अपनी इच्छा के रहस्य को बताया है। [9]जैसा कि मसीह के द्वारा वह हमें दिखाना चाहता था। [10]परमेश्वर की यह योजना थी कि उचित समय आने पर स्वर्ग की और पृथ्वी पर की सभी वस्तुओं को मसीह में एकत्र करे। [11]सब बातें योजना और परमेश्वर के निर्णय के अनुसार की जाती हैं। और परमेश्वर ने अपने निजी प्रयोजन के कारण ही हमें उसी मसीह में संत बनने के लिये चुना है। यह उसके अनुसार ही हुआ जिसे परमेश्वर ने अनादिकाल से सुनिश्चित कर रखा था। [12]ताकि हम उसकी महिमा की प्रशंसा के कारण बन सकें। हम, यानी जिन्होंने अपनी सभी आशाएँ मसीह पर केन्द्रित कर दी हैं। [13]जब तुमने उस सत्य का संदेश सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार था, और जिस मसीह पर तुमने विश्वास किया था, तो जिस पवित्र आत्मा का वचन दिया था, मसीह के माध्यम से उसकी छाप परमेश्वर के द्वारा तुम लोगों पर भी लगायी गयी। [14]वह आत्मा हमारे उत्तराधिकार के भाग की जमानत के रूप में उस समय तक के लिये हमें दिया गया है, जब तक कि वह हमें, जो उसके अपने हैं, पूरी तरह छुटकारा नहीं दे देता। इसके कारण लोग उसकी महिमा की प्रशंसा करेंगे।

इफिसियों के लिये पौलुस की प्रार्थना

[15]इसीलिये जब से मैंने प्रभु यीशु में तुम्हारे विश्वास और सभी संतों के प्रति तुम्हारे प्रेम के विषय में सुना है, [16]मैं तुम्हारे लिये परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर कर रहा हूँ। अपनी प्रार्थनाओं में मैं तुम्हारा उल्लेख किया करता हूँ। [17]मैं प्रार्थना किया करता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर तुम्हें विवेक और दिव्यदर्शन की ऐसी आत्मा की शक्ति प्रदान करे जिससे तुम उस महिमावान परम पिता को जान सको। [18]मेरी विनती है कि तुम्हारे हृदय की आँखे खुल जायें और तुम प्रकाश का दर्शन कर सको ताकि तुम्हें पता चल जाये कि वह आशा क्या है जिसके लिये तुम्हें उसने बुलाया है। और जिस उत्तराधिकार को वह अपने सभी लोगों को देगा, वह कितना अद्भुत और सम्पन्न है। [19]तथा हम विश्वासियों के लिये उसकी शक्ति अतुलनीय रूप से कितनी महान है। यह शक्ति अपनी महान शक्ति के उस प्रयोग के समान है, [20]जिसे उसने मसीह में तब काम में लिया था जब मरे हुओं में से उसे फिर से जिला कर स्वर्ग के क्षेत्र में अपनी दाहिनी ओर बिठाकर [21]सभी शासकों, अधिकारियों, सामर्थ्यों

और प्रभुताओं तथा हर किसी ऐसी शक्तिशाली पदवी के ऊपर स्थापित किया था, जिसे न केवल इस युग में बल्कि आने वाले युग में भी किसी को दिया जा सकता है। [22]परमेश्वर ने सब कुछ को मसीह के चरणों के नीचे कर दिया और उसी ने मसीह को कलीसिया का सर्वोच्च शिरोमणि बनाया। [23]कलीसिया मसीह की देह है और सब विधियों से सब कुछ को उसकी पूर्णता ही परिपूर्ण करती है।

मृत्यु से जीवन की ओर

2 एक समय था जब तुम लोग उन अपराधों और पापों के कारण आध्यात्मिक रूप से मरे हुए थे [2]जिनमें तुम पहले, संसार के बुरे रास्तों पर चलते हुए और उस आत्मा का अनुसरण करते हुए जीते थे जो इस धरती के ऊपर की आत्मिक शक्तियों की स्वामी है। वही आत्मा अब उन व्यक्तियों में काम कर रही है जो परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते। [3]एक समय हम भी उन्हीं के बीच जीते थे और अपनी पापपूर्ण प्रकृति की भौतिक इच्छाओं को तृप्त करते हुए अपने हृदयों और पापपूर्ण प्रकृति की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए संसार के दूसरे लोगों के समान परमेश्वर के क्रोध के पात्र थे।

[4]किन्तु परमेश्वर करुणा का धनी है। हमारे प्रति अपने महान् प्रेम के कारण [5]उस समय अपराधों के कारण हम आध्यात्मिक रूप से अभी मरे ही हुए थे, मसीह के साथ साथ उसने हमें भी जीवन दिया (परमेश्वर के अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है।) [6]और क्योंकि हम यीशु मसीह में हैं इसलिये परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ ही फिर से जी उठाया और उसके साथ ही स्वर्ग के सिंहासन पर बैठाया। [7]ताकि वह आने वाले हर युग में अपने अनुग्रह के अनुपम धन को दिखाये जिसे उसने मसीह यीशु में अपनी दया के रूप में हम पर दर्शाया है। [8]परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा अपने विश्वास के कारण तुम्हारा उद्धार हुआ है। यह तुम्हें तुम्हारी ओर से प्राप्त नहीं हुआ है, बल्कि यह तो परमेश्वर का वरदान है। [9]यह हमारे किये कर्मों का परिणाम नहीं है कि हम इसका गर्व कर सकें। [10]क्योंकि परमेश्वर हमारा सृजनहार है। उसने मसीह यीशु में हमारी सृष्टि इसलिए की है कि हम नेक काम करें जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ही इसलिये तैयार किया हुआ है कि हम उन्हीं को करते हुए अपना जीवन बितायें।

मसीह में एक

[11]इसलिये याद रखो, वे लोग, जो अपने शरीर में मानव हाथों द्वारा किये गये ख़तने के कारण अपने आपको "ख़तना युक्त" बताते हैं, विधर्मी के रूप में जन्मे तुम लोगों को "ख़तना रहित" कहते थे। [12]उस समय तुम बिना मसीह के थे, तुम इस्राएल की बिरादरी से बाहर थे। परमेश्वर ने अपने भक्तों को जो वचन दिए थे उन पर आधारित वाचा से अनजाने थे। तथा इस संसार में बिना परमेश्वर के निराश जीवन जीते थे। [13]किन्तु अब तुम्हें, जो कभी परमेश्वर से बहुत दूर थे, मसीह के बलिदान के द्वारा मसीह यीशु में तुम्हारी स्थिति के कारण, परमेश्वर के निकट ले आया गया है [14]यहूदी और गैर यहूदी आपस में एक दूसरे से नफ़रत करते थे और अलग हो गये थे। ठीक ऐसे जैसे उन के बीच कोई दीवार खड़ी हो। किन्तु मसीह ने स्वयं अपनी देह का बलिदान देकर नफ़रत की उस दीवार को गिरा दिया। [15]उसने ऐसा तब किया जब अपने समूचे नियमों और व्यवस्थाओं के विधान को समाप्त कर दिया। उसने ऐसा इसलिये किया कि वह अपने में इन दोनों को ही एक में मिला सके। और इस प्रकार मिलाप करा दे। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा उसने उस घृणा का अंत कर दिया। और उन दोनों को परमेश्वर के साथ उस एकदेह में मिला दिया। [16]और क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा वैर भाव का नाश करके एक ही देह में उन दोनों को संयुक्त करके परमेश्वर से फिर मिला दे। [17]सो आकर उसने तुम्हें, जो परमेश्वर से बहुत दूर थे और जो उसके निकट थे, उन्हें शांति का सुसमाचार सुनाया। [18]क्योंकि उसी के द्वारा एक ही आत्मा से परम पिता के पास तक हम दोनों की पहुँच हुई।

[19]परिणामस्वरूप अब तुम न अनजान रहे और न ही पराये। बल्कि अब तो तुम संत जनों के स्वदेशी संगी–साथी हो गये हो। [20]तुम एक ऐसा भवन हो जो प्रेरितों और नबियों की नींव पर खड़ा है। तथा स्वयं मसीह यीशु जिसका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कोने का पत्थर है। [21–22]मसीह में स्थित एक ऐसे स्थान की रचना के रूप में, जहाँ आत्मा के द्वारा स्वयं परमेश्वर निवास करता है, दूसरे लोगों के साथ तुम्हारा भी निर्माण किया जा रहा है।

ग़ैर यहूदियों में पौलुस का प्रचार–कार्य

3 इसीलिये मैं, पौलुस तुम ग़ैर यहूदियों के लिये मसीह यीशु के हेतु बंदी बना हूँ। [2]तुम्हारे कल्याण के लिए परमेश्वर ने अनुग्रह के साथ जो काम मुझे सौंपा है, उसके बारे में तुमने अवश्य ही सुना होगा। [3]कि वह रहस्यमयी योजना दिव्यदर्शन द्वारा मुझे जनाई गयी थी, जैसा कि मैं तुम्हें संक्षेप में लिख ही चुका हूँ। [4]और यदि तुम उसे पढ़ोगे तो मसीह विषयक रहस्यपूर्ण सत्य में मेरी अन्तर्दृष्टि की समझ तुम्हें हो जायेगी। [5]यह रहस्य पिछली पीढ़ी के लोगों को वैसे नहीं जनाया गया था जैसे अब उसके अपने पवित्र प्रेरितों और नबियों को आत्मा के द्वारा जनाया जा चुका है। [6]यह रहस्य है कि यहूदियों के साथ ग़ैर यहूदी भी सह उत्तराधिकारी हैं, एक ही देह के अंग हैं और मसीह यीशु में जो वचन हमें दिया गया है, उसमें सहभागी हैं।

[7]सुसमाचार के कारण मैं उस सुसमाचार का प्रचार करने वाला एक सेवक बन गया, जो उसकी शक्ति के अनुसार परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान स्वरूप मुझे दिया गया था। [8]यद्यपि सभी संत जनों में मैं छोटे से भी छोटा हूँ किन्तु मसीह के अनन्त धन रूपी सुसमाचार का ग़ैर यहूदियों में प्रचार करने का यह अनुग्रह मुझे दिया गया [9]कि मैं सभी लोगों के लिए उस रहस्यपूर्ण योजना को स्पष्ट करूँ जो सब कुछ के सिरजनहार परमेश्वर में सृष्टि के प्रारम्भ से ही छिपी हुई थी। [10]ताकि वह स्वर्गिक क्षेत्र की शक्तियों और प्रशासकों को अब उस परमेश्वर के बहुविध ज्ञान को कलीसिया के द्वारा प्रकट कर सके। [11]यह उस सनातन प्रयोजन के अनुसार सम्पन्न हुआ जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में पूरा किया था। [12]मसीह में विश्वास के कारण हम परमेश्वर तक भरोसे और निर्भीकता के साथ पहुँच रखते हैं। [13]इसलिये मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे लिये मैं जो यातनाएँ भोग रहा हूँ, उन से आशा मत छोड़ बैठना क्योंकि इस यातना में ही तो तुम्हारी महिमा है।

मसीह का प्रेम

[14]इसीलिए मैं परम पिता के आगे झुकता हूँ। [15]उसी से स्वर्ग में या धरती पर के सभी वंश अपने अपने नाम ग्रहण करते हैं। [16]मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह महिमा के अपने धन के अनुसार अपनी आत्मा के द्वारा तुम्हारे भीतरी व्यक्तित्व को शक्तिपूर्वक सुदृढ़ करे। [17]और विश्वास के द्वारा तुम्हारे हृदयों में मसीह का निवास हो। तुम्हारी जड़ें और नींव प्रेम पर टिकें [18]जिससे तुम्हें अन्य सभी संत जनों के साथ यह समझने की शक्ति मिल जाये कि मसीह का प्रेम कितना व्यापक, विस्तृत, विशाल और गम्भीर है। [19]और तुम मसीह के उस प्रेम को जान लो जो सभी प्रकार के ज्ञानों से परे है ताकि तुम परमेश्वर की सभी परिपूर्णताओं से भर जाओ।

[20]अब उस परमेश्वर के लिये जो अपनी उस शक्ति से जो हममें काम कर रही है, जितना हम माँग सकते हैं या जहाँ तक हम सोच सकते हैं, उससे भी कहीं अधिक कर सकता है, [21]उसकी कलीसिया में और मसीह यीशु में अनन्त पीढ़ियों तक सदा सदा के लिये महिमा होती रहे। आमीन।

एक देह

4 सो मैं, जो प्रभु का होने के कारण बंदी बना हुआ हूँ, तुम लोगों से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें अपना जीवन वैसे ही जीना चाहिए जैसा कि सन्तों के अनुकूल होता है। [2]सदा नम्रता और कोमलता के साथ, धैर्यपूर्वक आचरण करो। एक दूसरे की प्रेम से सहते रहो। [3]वह शांति, जो तुम्हें आपस में बाँधती है, उससे उत्पन्न आत्मा की एकता को बनाये रखने के लिये हर प्रकार का यत्न करते रहो। [4]देह एक है और पवित्र आत्मा भी एक ही है। ऐसे ही जब तुम्हें भी बुलाया गया तो एक ही आशा में भागीदार होने के लिये ही बुलाया गया। [5]एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास है और है एक ही बपतिस्मा। [6]परमेश्वर एक ही है और वह सबका पिता है। वही सब का स्वामी है, हर किसी के द्वारा वही क्रियाशील है, और हर किसी में वही समाया है।

[7]हममें से हर किसी को उसके अनुग्रह का एक विशेष उपहार दिया गया है जो मसीह की उदारता के अनुकूल ही है। [8]इसीलिए शास्त्र कहता है,

"उसने विजयी को ऊँचे चढ़,
बंदी बनाया और उसने
लोगों को अपने आनन्दी वर दिये।"

भजन संहिता 68:18

[9]अब देखो, जब वह कहता है "ऊँचे चढ़" तो इसका अर्थ इसके अतिरिक्त क्या है? कि वह धरती के निचले

भागों पर भी उतरा था। [10]जो नीचे उतरा था, वह वही है जो ऊँचे भी चढ़ा था–इतना ऊँचा कि सभी आकाशों से भी ऊपर, ताकि वह सब कुछ को सम्पूर्ण कर दे। [11]उसने स्वयं ही कुछ को प्रेरित होने का बरदान दिया तो कुछ को नबी होने का तो कुछ को सुसमाचार के प्रचारक होने का तो कुछ को परमेश्वर के जनों की सुरक्षा और शिक्षा का। [12]मसीह ने उन्हें ये वरदान संत जनों की सेवा कार्य के, हेतु तैयार करने को दिये ताकि हम जो मसीह की देह हैं, आत्मा में और दृढ़ हों। [13]जब तक कि हम सभी विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में एकाकार होकर परिपक्व पुरुष बनने के लिये विकास करते हुए मसीह के सम्पूर्ण गौरव की ऊँचाई को न छू लें।

[14]ताकि हम ऐसे बच्चे ही न बने रहें जो हर किसी ऐसी नयी शिक्षा की हवा से उछले जायें, जो हमारे रास्ते में बहती है, लोगों के छलपूर्ण व्यवहार से, ऐसी धूर्तता से, जो ठगी से भरी योजनाओं को प्रेरित करती है, इधर उधर भटका दिये जाते हैं। [15]बल्कि हम प्रेम के साथ सत्य बोलते हुए हर प्रकार से मसीह के जैसे बनने के लिये विकास करते जायें। मसीह सिर है, [16]जिस पर समूची देह निर्भर करती है। यह देह उससे जुड़ती हुई प्रत्येक सहायक नस से संयुक्त होती है और जब इसका हर अंग जो काम उसे करना चाहिये, उसे पूरा करता है तो प्रेम के साथ समूची देह का विकास होता है और यह देह स्वयं सुदृढ़ होती है।

ऐसे जीओ

[17]मैं इसीलिये यह कहता हूँ और प्रभु को साक्षी करके तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि उनके व्यर्थ के विचारों के साथ अधर्मियों के जैसा जीवन मत जीते रहो। [18]उनकी बुद्धि अंधकार से भरी है। वे परमेश्वर से मिलने वाले जीवन से दूर हैं। क्योंकि वे अबोध हैं और उनके मन जड़ हो गये हैं। [19]लज्जा की भावना उनमें से जाती रही है। और उन्होंने अपने को इन्द्रिय उपासना में लगा दिया है। बिना कोई बन्धन माने वे हर प्रकार की अपवित्रता में जुटे हैं। [20]किन्तु मसीह के विषय में तुमने जो जाना है, वह तो ऐसा नहीं है। [21](मुझे कोई संदेह नहीं है कि तुमने उसके विषय में सुना है; और वह सत्य जो यीशु में निवास करता है, उसके अनुसार तुम्हें उसके शिष्यों के रूप में शिक्षित भी किया गया है।) [22]जहाँ तक तुम्हारे पुराने जीवन–प्रकार का संबन्ध हैं तुम्हें शिक्षा दी गयी थी कि तुम अपने पुराने व्यक्तित्व को उतार फेंको जो उसकी भटकाने वाली इच्छाओं के कारण भ्रष्ट बना हुआ है। [23]जिससे बुद्धि और आत्मा में तुम्हें नया किया जा सके। [24]और तुम उस नये स्वरूप को धारण कर सको जो परमेश्वर के अनुरूप सचमुच धार्मिक और पवित्र बनने के लिए रचा गया है।

[25]सो तुम लोग झूठ बोलने का त्याग कर दो। अपने साथियों से हर किसी को सच बोलना चाहिये, क्योंकि हम सभी एक शरीर के ही अंग हैं। [26]क्रोध मे आकर पाप मत कर बैठो। सूरज ढलने से पहले ही अपने क्रोध को समाप्त कर दो। [27]शैतान को अपने पर हावी मत होने दो। [28]जो चोरी करता आ रहा है, वह आगे चोरी न करे। बल्कि उसे काम करना चाहिये, स्वयं अपने हाथों से कोई उपयोगी काम। ताकि उसके पास, जिसे आवश्यकता है, उसके साथ बटाने को कुछ हो सके।

[29]तुम्हारे मुख से कोई अनुचित शब्द नहीं निकलना चाहिये, बल्कि लोगों के विकास के लिये जिसकी अपेक्षा है, ऐसी उत्तम बात ही निकलनी चाहिये, ताकि जो सुनें उनका उससे भला हो। [30]परमेश्वर की पवित्र आत्मा को दुःखी मत करते रहो क्योंकि परमेश्वर की सम्पत्ति के रूप में तुम पर छुटकारे के दिन के लिए आत्मा के साथ मुहर लगा दिया गया है। [31]समूची कड़वाहट, झुँझलाहट, क्रोध, चीख–चिल्लाहट और निन्दा को तुम अपने भीतर से हर तरह की बुराई के साथ निकाल बाहर फेंको। [32]परस्पर एक दूसरे के प्रति दयालु और करुणावान बनो। तथा आपस में एक दूसरे के अपराधों को वैसे ही क्षमा करो जैसे मसीह के द्वारा तुम को परमेश्वर ने भी क्षमा किया है।

ज्योतिर्मय जीवन

5 प्यारे बच्चों के समान परमेश्वर का अनुकरण करो। [2]प्रेम के साथ जीओ। ठीक वैसे ही जैसे मसीह ने हमसे प्रेम किया है और अपने आप को, मधुर–गंध–भेंट के रूप में, हमारे लिए परमेश्वर को अर्पित कर दिया है।

[3]तुम्हारे बीच व्यभिचार और हर किसी तरह की अपवित्रता अथवा लालच की चर्चा तक नहीं चलनी चाहिये। जैसा कि संत जनों के लिये उचित ही है। [4]तुममें न तो अश्लील भाषा का प्रयोग होना चाहिये, न मूर्खतापूर्ण

बातें या भद्दा हँसी ठट्टा। ये तुम्हारे अनुकूल नहीं हैं। बल्कि तुम्हारे बीच धन्यवाद ही दिये जायें। [5]क्योंकि तुम निश्चय के साथ यह जानते हो कि ऐसा कोई भी व्यक्ति जो दुराचारी है, अपवित्र है, अथवा लालची है (जो एक मूर्ति पूजक होने जैसा है) मसीह के और परमेश्वर के, राज्य का उत्तराधिकार नहीं पा सकता।

[6]देखो, तुम्हें कोरे शब्दों से कोई छल न ले। क्योंकि इन बातों के कारण ही आज्ञा का उल्लंघन करने वालों पर परमेश्वर का कोप होने को है। [7]इसलिये उनके साथी मत बनो। [8]यह मैं इसलिये कह रहा हूँ कि एक समय था जब तुम अंधकार से भरे थे किन्तु अब तुम प्रभु के अनुयायी के रूप में ज्योति से परिपूर्ण हो। इसलिए प्रकाश-पुत्रों का सा आचरण करो। [9]हर प्रकार के धार्मिकता, नेकी और सत्य में ज्योति का प्रतिफलन दिखायी देता है। [10]हर समय यह जानने का जतन करते रहो कि परमेश्वर को क्या भाता है। [11]ऐसे काम जो अंधकारपूर्ण हैं, उन बेकार के कामों में हिस्सा मत बटाओ बल्कि उनका भाँडा-फोड़ करो। [12]क्योंकि ऐसे काम जिन्हें वे गुपचुप करते हैं, उनके बारे में की गयी चर्चा तक लज्जा की बात है। [13]ज्योति जब प्रकाशित होती है तो सब कुछ दृश्यमान हो जाता है [14]और जो कुछ दृश्यमान हो जाता है, वह स्वयं ज्योति ही बन जाता है। इसीलिये हमारा भजन कहता है:

> "अरे जाग, हे सोने वाले!
> मृतकों में से जी उठ बैठ,
> तेरे ही सिर स्वयं मसीह प्रकाशित होगा।"

[15]इसलिये सावधानी के साथ देखते रहो कि तुम कैसा जीवन जी रहे हो। विवेकहीन का सा आचरण मत करो, बल्कि बुद्धिमान का सा आचरण करो। [16]जो हर अवसर का अच्छे कर्म करने के लिये पूरा-पूरा उपयोग करते हैं, क्योंकि ये दिन बुरे हैं [17]इसलिए मूर्ख मत बनो बल्कि यह जानो कि प्रभु की इच्छा क्या है। [18]मदिरा पान करके मतवाले मत बने रहो क्योंकि इससे कामुकता पैदा होती है। इसके विपरीत आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ। [19]आपस में भजनों, स्तुतियों और आध्यात्मिक गीतों का, परस्पर आदानप्रदान करते रहो। अपने मन में प्रभु के लिये गीत गाते उसकी स्तुति करते रहो। [20]हर किसी बात के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर हमारे परम पिता परमेश्वर का सदा धन्यवाद करो।

पत्नी और पति

[21]मसीह के प्रति सम्मान के कारण एक दूसरे को समर्पित हो जाओ।

[22]हे पत्नियो, अपने-अपने पतियों के प्रति ऐसे समर्पित रहो, जैसे तुम प्रभु को समर्पित होती हो। [23]क्योंकि अपनी पत्नी के ऊपर उसका पति ही प्रमुख है। वैसे ही जैसे हमारी कलीसिया का सिर मसीह है। वह स्वयं ही इस देह का उद्धार करता है। [24]जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियों को सब बातों में अपने अपने पतियों के प्रति समर्पित रहना चाहिये।

[25]हे पतियो, अपनी पत्नियों से प्रेम करो। वैसे ही जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और अपने आपको उसके लिये बलि दे दिया। [26]ताकि वह उसे प्रभु की सेवा में जल में स्नान करा के पवित्र कर हमारी घोषणा के साथ परमेश्वर को अर्पित कर दे। [27]इस प्रकार वह कलीसिया को एक ऐसी चमचमाती दुलहन के रूप में स्वयं के लिए प्रस्तुत कर सकता है जो निष्कलंक हो, झुरियों से रहित हो या जिसमें ऐसी और कोई कमी न हो। बल्कि वह पवित्र हो और सर्वथा निर्दोष हो। [28]पतियों को अपनी-अपनी पत्नियों से उसी प्रकार प्रेम करना चाहिये जैसे वे स्वयं अपनी देहों से करते हैं। जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है, वह स्वयं अपने आप से ही प्रेम करता है। [29]कोई अपनी देह से तो कभी घृणा नहीं करता, बल्कि वह उसे पालता-पोसता है और उसका ध्यान रखता है। वैसे ही जैसे मसीह अपनी कलीसिया का [30]क्योंकि हम भी तो उसकी देह के अंग ही हैं। [31](शास्त्र कहता है): "इसीलिये एक पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से बंध जाता है और दोनों एक देह हो जाते हैं।"* [32]यह रहस्यपूर्ण सत्य बहुत महत्त्वपूर्ण है और मैं तुम्हें बताता हूँ कि यह मसीह और कलीसिया पर भी लागू होता है। [33]सो कुछ भी हो, तुममें से हर एक को अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करना चाहिये जैसे तुम स्वयं अपने आपको करते हो। और एक पत्नी को भी अपने पति का डर मानते हुए उसका आदर करना चाहिये।

बच्चे और माता-पिता

6 हे बालको, प्रभु में आस्था रखते हुए माता-पिता की आज्ञा का पालन करो क्योंकि यही उचित है।

इसीलिये एक ... जाते है उत्पत्ति 2:24

[2]"अपने माँ-बाप का सम्मान कर।"* यह पहली आज्ञा है जो इस प्रतिज्ञा से भी युक्त है, [3]"तेरा भला हो और तू धरती पर चिरायु हो।"*

[4]और हे पिताओ, तुम भी अपने बालकों को क्रोध मत दिलाओ बल्कि प्रभु से मिली शिक्षा और निर्देशों को देते हुए उनका पालन-पोषण करो।

सेवक और स्वामी

[5] हे सेवको, तुम अपने सांसारिक स्वामियों की आज्ञा निष्कपट हृदय से भय और आदर के साथ उसी प्रकार मानो जैसे तुम मसीह की आज्ञा मानते हो। [6]केवल किसी के देखते रहते ही काम मत करो जैसे तुम्हें लोगों के समर्थन की आवश्यकता हो। बल्कि मसीह के सेवक के रूप में काम करो जो अपना मन लगाकर परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं। [7]उत्साह के साथ एक सेवक के रूप में ऐसे काम करो जैसे मानो तुम लोगों की नहीं प्रभु की सेवा कर रहे हो। [8]याद रखो, तुममें से हर एक, चाहे वह सेवक या स्वतन्त्र है यदि कोई अच्छा काम करता है, तो प्रभु से उसका प्रतिफल पायेगा।

[9]हे स्वामियो, तुम भी अपने सेवकों के साथ वैसा ही व्यवहार करो और उन्हें डराना-धमकाना छोड़ दो। याद रखो, उनका और तुम्हारा स्वामी स्वर्ग में है और वह कोई पक्षपात नहीं करता।

प्रभु का अभेद्य कवच धारण करो

[10]मतलब यह कि प्रभु में स्थित हो कर उसकी असीम शक्ति के साथ अपने आपको शक्तिशाली बनाओ। [11]परमेश्वर के सम्पूर्ण कवच को धारण करो। ताकि तुम शैतान की योजनाओं के सामने टिक सको। [12]क्योंकि हमारा संघर्ष मनुष्यों से नहीं है, बल्कि शासकों, अधिकारियों, इस अन्धकारपूर्ण युग की आकाशी शक्तियों और अम्बर की दुष्टात्मिक शक्तियों के साथ है। [13]इसीलिये परमेश्वर के सम्पूर्ण कवच को धारण करो ताकि जब बुरे दिन आयें तो जो कुछ सम्भव है, उसे कर चुकने के बाद तुम दृढ़तापूर्वक अडिग रह सको। [14-15]सो अपनी कमर पर सत्य का फेंटा कस कर धार्मिकता की झिलम पहन कर तथा पैरों में शांति के सुसमाचार सुनाने की तत्परता के जूते धारण करके तुम लोग अटल खड़े रहो। [16]इन सब से बड़ी बात यह है कि विश्वास को ढाल के रूप में ले लो। जिसके द्वारा तुम उन सभी जलते तीरों को बुझा सकोगे, जो बदी के द्वारा छोड़े गये हैं। [17]छुटकारे का शिरस्त्राण पहन लो और परमेश्वर के संदेश रूपी आत्मा की तलवार उठा लो। [18]हर प्रकार की प्रार्थना और निवेदन सहित आत्मा की सहायता से हर अवसर पर विनती करते रहो। इस लक्ष्य से सभी प्रकार का यत्न करते हुए सावधान रहो। तथा सभी संतों के लिये प्रार्थना करो।

[19]और मेरे लिये भी प्रार्थना करो कि मैं जब भी अपना मुख खोलूँ, मुझे एक सुसंदेश प्राप्त हो ताकि निर्भयता के साथ सुसमाचार के रहस्यपूर्ण सत्य को, प्रकट कर सकूँ। [20]इसी के लिये मैं ज़ंजीरों में जकड़े हुए राजदूत के समान सेवा कर रहा हूँ। प्रार्थना करो कि मैं, जिस प्रकार मुझे बोलना चाहिये, उसी प्रकार निर्भयता के साथ सुसमाचार का प्रवचन कर सकूँ।

अंतिम नमस्कार

[21]तुम भी, मैं कैसा हूँ और क्या कर रहा हूँ, इसे जान जाओ। सो तुखिकुस तुम्हें सब कुछ बता देगा। वह हमारा प्रिय बंधु है और प्रभु में स्थित एक विश्वासपूर्ण सेवक है [22]इसीलिये मैं उसे तुम्हारे पास भेज रहा हूँ ताकि तुम मेरे समाचार जान सको और इसलिये भी कि वह तुम्हारे मन को शांति दे सके।

[23]हे भाइयो, तुम सब को परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से विश्वास शांति और प्रेम प्राप्त हो। [24]जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से अमर प्रेम रखते हैं, उन पर परमेश्वर का अनुग्रह होता है।

अपने ... कर निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16

तेरा ... चिरायु हो निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16

फिलिप्पियों

1 यीशु मसीह के सेवक पौलुस और तिमुथियुस की ओर से मसीह यीशु में स्थित फिलिप्पी के रहने वाले सभी संत जनों के नाम जो वहाँ निरीक्षकों और कलीसिया के सेवकों के साथ निवास करते हैं:

[2]हमारे परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

पौलुस की प्रार्थना

[3]मैं जब जब तुम्हें याद करता हूँ, तब तब परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। [4]अपनी हर प्रार्थना में मैं सदा प्रसन्नता के साथ तुम्हारे लिये प्रार्थना करता हूँ। [5]क्योंकि पहले ही दिन से आज तक तुम सुसमाचार के प्रचार में मेरे सहयोगी रहे हो। [6]मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि वह परमेश्वर जिसने तुम्हारे बीच ऐसा उत्तम कार्य प्रारम्भ किया है, वही उसे उसी दिन तक बनाए रखेगा, जब मसीह यीशु फिर आकर उसे पूरा करेगा।

[7]तुम सब के विषय में मेरे लिये ऐसा सोचना ठीक ही है। क्योंकि तुम सब मेरे मन में बसे हुए हो। और न केवल तब जब मैं जेल में हूँ, बल्कि तब भी जब मैं सुसमाचार के सत्य की रक्षा करते हुए, उसकी प्रतिष्ठा में लगा था, तुम सब इस विशेषाधिकार में मेरे साथ अनुग्रह में सहभागी रहे हो। [8]परमेश्वर मेरा साक्षी है कि मसीह यीशु द्वारा प्रकट प्रेम से मैं तुम सब के लिये व्याकुल रहता हूँ।

[9]मैं यही प्रार्थना करता रहता हूँ:

तुम्हारा प्रेम गहन दृष्टि और
ज्ञान के साथ निरन्तर बढ़े।

[10] ये गुण पाकर भले बुरे में अन्तर करके,
सदा भले को अपना लोगे।
और इस तरह तुम पवित्र अकलुष
बन जाओगे उस दिन को
जब मसीह आयेगा।

[11] यीशु मसीह की करुणा को पा कर
तुम अति उत्तम काम करोगे
जो प्रभु को महिमा देते हैं,
और उसकी स्तुति बनते।

पौलुस की विपत्तियाँ प्रभु के कार्य में सहायक

[12]हे भाइयों, मैं तुम्हें जना देना चाहता हूँ कि मेरे साथ जो कुछ हुआ है, उससे सुसमाचार को बढ़ावा ही मिला है। [13]परिणामस्वरूप संसार के समूचे सुरक्षा दल तथा अन्य सभी लोगों को यह पता चल गया है कि मुझे मसीह का अनुयायी होने के कारण ही बंदी बनाया गया है। [14]इसके अतिरिक्त प्रभु में स्थित अधिकतर भाई मेरे बंदी होने के कारण उत्साहित हुए हैं और अधिकाधिक साहस के साथ सुसमाचार को निर्भयतापूर्वक सुना रहे हैं।

[15]यह सत्य है कि उनमें से कुछ ईर्ष्या और वैर के कारण मसीह का उपदेश देते हैं किन्तु दूसरे लोग सद्भावना से प्रेरित होकर मसीह का उपदेश देते हैं। [16]ये लोग प्रेम के कारण ऐसा करते हैं क्योंकि ये जानते हैं कि परमेश्वर ने सुसमाचार का बचाव करने के लिए ही मुझे यहाँ रखा है। [17]किन्तु कुछ और लोग तो सचाई के साथ नहीं, बल्कि स्वार्थ पूर्ण इच्छा से मसीह का प्रचार करते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि इससे वे बंदी-गृह में मेरे लिये कष्ट पैदा कर सकेंगे।

[18]किन्तु इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। महत्वपूर्ण तो यह है कि एक ढंग से या दूसरे ढंग से, चाहे बुरा उद्देश्य हो, चाहे भला प्रचार तो मसीह का ही होता है और इससे मुझे आनन्द मिलता है और आनन्द मिलता ही रहेगा। [19]क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा और उस सहायता से जो यीशु मसीह की आत्मा से प्राप्त होती है, परिणाम में मेरी रिहाई ही होगी। [20]मेरी तीव्र

इच्छा और आशा यही है और मुझे इसका विश्वास है कि मैं किसी भी बात से निराश नहीं होऊँगा बल्कि पूर्ण निर्भयता के साथ जैसे मेरे देह से मसीह की महिमा सदा होती रही है, वैसे ही आगे भी होती रहेगी; चाहे मैं जीऊँ और चाहे मर जाऊँ। [21]क्योंकि मेरे जीवन का अर्थ है मसीह और मृत्यु का अर्थ है एक उपलब्धि। [22]किन्तु यदि मैं अपने इस शरीर से जीवित ही रहूँ तो इसका अर्थ यह होगा कि मैं अपने कर्म के परिणाम का आनन्द लूँ। सो मैं नहीं जानता कि मैं क्या चुनूँ। [23]दोनों विकल्पों के बीच चुनाव में मुझे कठिनाई हो रही है। मैं अपने जीवन से विदा होकर मसीह के पास जाना चाहता हूँ क्योंकि वह अति उत्तम होगा। [24]किन्तु इस शरीर के साथ ही मेरा यहाँ रहना तुम्हारे लिये अधिक आवश्यक है। [25]और क्योंकि यह मैं निश्चय के साथ जानता हूँ कि मैं यहीं रहूँगा और तुम सब की आध्यात्मिक उन्नति और विश्वास से उत्पन्न आनन्द के लिये तुम्हारे साथ रहता ही रहूँगा। [26]ताकि तुम्हारे पास मेरे लौट आने के परिणामस्वरूप तुम्हें मसीह यीशु में स्थित मुझ पर गर्व करने का और अधिक आधार मिल जाये।

[27]किन्तु हर प्रकार से ऐसा करो कि तुम्हारा आचरण मसीह के सुसमाचार के अनुकूल रहे। जिससे चाहे मैं तुम्हारे पास आकर तुम्हें देखूँ और चाहे तुमसे दूर रहूँ, तुम्हारे बारे में यही सुनूँ कि तुम एक ही आत्मा में दृढ़ता के साथ स्थिर हो और सुसमाचार से उत्पन्न विश्वास के लिए एक जुट होकर संघर्ष कर रहे हो। [28]तथा मैं यह भी सुनना चाहता हूँ कि तुम अपने विरोधियों से किसी प्रकार भी नहीं डर रहे हो। तुम्हारा यह साहस उनके विनाश का प्रमाण है और यही प्रमाण है तुम्हारी मुक्ति का और परमेश्वर की ओर से ऐसा ही किया जायेगा। [29]क्योंकि मसीह की ओर से तुम्हें न केवल उसमें विश्वास करने का बल्कि उसके लिये यातनाएँ झेलने का भी विशेषाधिकार दिया गया है। [30]तुम जानते हो कि तुम उसी संघर्ष में जुटे हो, जिसमें मैं जुटा था और जैसा कि तुम सुनते हो आज तक मैं उसी में लगा हूँ।

एकतापूर्वक एक दूसरे का ध्यान रखो

2 फिर तुम लोगों में यदि मसीह में कोई उत्साह है, प्रेम से पैदा हुई कोई सांत्वना है, यदि आत्मा में कोई भागेदारी है, स्नेह की कोई भावना और सहानुभूति है [2]तो मुझे पूरी तरह प्रसन्न करो। मैं चाहता हूँ, तुम एक तरह से सोचो, परस्पर एक जैसा प्रेम करो, आत्मा में एका रखो और एक जैसा ही लक्ष्य रखो। [3]ईर्ष्या और बेकार के अहंकार से कुछ मत करो। बल्कि नम्र बनो तथा दूसरों को अपने से उत्तम समझो। [4]तुममें से हर एक को चाहिये कि केवल अपना ही नहीं, बल्कि दूसरों के हित का भी ध्यान रखे।

यीशु से निःस्वार्थ होना सीखो

[5]अपना चिंतन ठीक वैसा ही रखो जैसा मसीह यीशु का था।

[6]जो अपने स्वरूप में यद्यपि साक्षात् परमेश्वर था, किन्तु उसने परमेश्वर के साथ अपनी इस समानता को कभी ऐसे महाकोष के समान नहीं समझा जिससे वह चिपका ही रहे।

[7]बल्कि उसने तो अपना सब कुछ त्याग कर एक सेवक का रूप ग्रहण कर लिया और मनुष्य के समान बन गया। और जब वह अपने बाहरी रूप में मनुष्य जैसा बन गया [8]तो उसने अपने आप को नवा लिया। और इतना आज्ञाकारी बन गया कि अपने प्राण तक न्योछावर कर दिये और वह भी क्रूस पर।

[9]इसीलिये परमेश्वर ने भी उसे ऊँचे से ऊँचे स्थान पर उठाया और उसे वह नाम दिया जो सब नामों के ऊपर है [10]ताकि सब कोई जब यीशु के नाम का उच्चारण होते हुए सुनें, तो नीचे झुक जायें। चाहे वे स्वर्ग के हों, धरती पर के हों और चाहे धरती के नीचे के हों। [11]और हर जीभ परम पिता परमेश्वर की महिमा के लिए स्वीकार करे, "यीशु मसीह ही प्रभु है।"

परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनो

[12]इसलिये मेरे प्रियों, तुम मेरे निर्देशों का जैसा उस समय पालन किया करते थे जब मैं तुम्हारे साथ था, अब जबकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ तब तुम और अधिक लगन से उनका पालन करो। परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण आदर भाव के साथ अपने उद्धार को पूरा करने के लिये तुम लोग काम करते जाओ। [13]क्योंकि वह परमेश्वर ही है जो उन कामों की इच्छा और उन्हें पूरा करने का कर्म, जो परमेश्वर को भाते हैं, तुममें पैदा करता है।

[14]बिना कोई शिकायत या लड़ाई–झगड़ा किये सब काम करते रहो [15]ताकि तुम भोले भाले और पवित्र बन जाओ। तथा इस कुटिल और पथभ्रष्ट पीढ़ी के लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक बालक बन जाओ। उन के बीच अन्धेरी दुनिया में तुम उस समय तारे बन कर चमको [16]जब तुम उन्हें जीवनदायी सुसंदेश सुनाते होवो। तुम ऐसा ही करते रहो ताकि मसीह के फिर से लौटने के दिन मैं यह देख कर कि मेरे जीवन की भाग दौड़ बेकार नहीं गयी, तुम पर गर्व कर सकूँ।

[17]तुम्हारा विश्वास एक बलि के रूप में है और यदि मेरा लहू तुम्हारी बलि पर दाख मधु के समान उँडेल दिया भी जाये तो मुझे प्रसन्नता है। तुम्हारी प्रसन्नता में मेरा भी सहभाग है। [18]उसी प्रकार तुम भी प्रसन्न रहो और मेरे साथ आनन्द मनाओ।

तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस

[19]प्रभु यीशु की सहायता से मुझे तीमुथियुस को तुम्हारे पास शीघ्र ही भेज देने की आशा है ताकि तुम्हारे समाचारों से मेरा भी उत्साह बढ़ सके। [20]क्योंकि दूसरा कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसकी भावनाएँ मेरे जैसी हों और जो तुम्हारे कल्याण के लिये सच्चे मन से चिंतित हो। [21]क्योंकि और सभी अपने–अपने कामों में लगे हैं। यीशु मसीह के कामों में कोई नहीं लगा है। [22]तुम उसके चरित्र को जानते हो कि सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ उसने वैसे ही सेवा की है, जैसे एक पुत्र अपने पिता के साथ करता है। [23]सो मुझे जैसे ही यह पता चलेगा कि मेरे साथ क्या कुछ होने जा रहा है मैं उसे तुम्हारे पास भेज देने की आशा रखता हूँ। [24]और मेरा विश्वास है कि प्रभु की सहायता से मैं भी जल्दी ही आऊँगा।

[25]मैं यह आवश्यक समझता हूँ कि इपफ्रुदीतुस को तुम्हारे पास भेजूँ जो मेरा भाई है, साथी कार्यकर्ता है और सहयोगी कर्म–वीर है तथा मुझे आवश्यकता पड़ने पर मेरी सहायता के लिये तुम्हारा प्रतिनिधि रहा है, [26]क्योंकि वह तुम सब के लिये व्याकुल रहा करता था और इससे बहुत खिन्न था कि तुमने यह सुना था कि वह बीमार पड़ गया था। [27]हाँ, वह बीमार तो था, और वह भी इतना कि जैसे मर ही जायेगा। किन्तु परमेश्वर ने उस पर अनुग्रह किया (न केवल उस पर बल्कि मुझ पर भी) ताकि मुझे दुख पर दुख न मिलें। [28]इसीलिये मैं उसे और भी तत्परता से भेज रहा हूँ ताकि जब तुम उसे देखो तो एक बार फिर प्रसन्न हो जाओ और मेरा दुःख भी जाता रहे। [29]इसलिये प्रभु में बड़ी प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत करो और ऐसे लोगों का अधिकाधिक आदर करते रहो। [30]क्योंकि मसीह के काम के लिये वह लगभग मर गया था ताकि तुम्हारे द्वारा की गयी मेरी सेवा में जो कमी रह गई थी, उसे वह पूरा कर दे, इसके लिये उसने अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

मसीह सबके ऊपर है

3 अतः मेरे भाइयो, प्रभु में आनन्द मनाते रहो। तुम्हें फिर–फिर उन्हीं बातों को लिखते रहने से मुझे कोई कष्ट नहीं होता है और तुम्हारे लिये तो यह सुरक्षित है ही। [2]इन कुत्तों से सावधान रहो जो कुकर्मों में लगे हैं। उन बुरे काम करने वालों से सावधान रहो। [3]क्योंकि सच्चे ख़तना युक्त व्यक्ति तो हम हैं जो अपनी उपासना को परमेश्वर की आत्मा द्वारा अर्पित करते हैं। और मसीह यीशु पर गर्व रखते हैं तथा जो कुछ शारीरिक है, उस पर भरोसा नहीं करते हैं। [4]यद्यपि मैं स्वयं जो कुछ शारीरिक है, उस पर भरोसा कर सकता था। पर यदि कोई और ऐसे सोचे कि उसके पास शारीरिकता पर विश्वास करने का हेतु है तो मेरे पास तो वह और भी अधिक है। [5]जब मैं आठ दिन का था, मेरा ख़तना कर दिया गया था। मैं इस्राएली हूँ। मैं बेंजमीन के वंश का हूँ। मैं इब्रानी माता–पिता से पैदा हुआ एक इब्रानी हूँ। जहाँ तक व्यवस्था के विधान तक मेरी पहुँच का प्रश्न है, मैं एक फरीसी हूँ। [6]जहाँ तक मेरी निष्ठा का प्रश्न है, मैंने कलीसिया को बहुत सताया था। जहाँ तक उस धार्मिकता का सवाल है जिसे व्यवस्था का विधान सिखाता है, मैं निर्दोष था। [7]किन्तु तब जो मेरा लाभ था, आज उसी को मसीह के लिये मैं अपनी हानि समझता हूँ। [8]इससे भी बड़ी बात यह है कि मैं अपने प्रभु मसीह यीशु के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण आज तक सब कुछ को हीन समझता हूँ। उसी के लिए मैंने सब कुछ का त्याग कर दिया है और मैं सब कुछ को घृणा की वस्तु समझने लगा हूँ ताकि मसीह को पा सकूँ [9]और उसी में पाया जा सकूँ– मेरी उस धार्मिकता के कारण नहीं जो व्यवस्था के विधान पर टिकी थी, बल्कि उस धार्मिकता के कारण जो मसीह में विश्वास के कारण मिलती है, जो परमेश्वर

से मिलती है और जिसका आधार विश्वास है। [10]मैं मसीह को जानना चाहता हूँ और उस शक्ति का अनुभव करना चाहता हूँ जिससे उसका पुनरुत्थान हुआ था। मैं उसकी यातनाओं का भी सहभोगी होना चाहता हूँ। और उसी रूप को पा लेना चाहता हूँ जिसे उसने अपनी मृत्यु के द्वारा पाया था। [11]इस आशा के साथ कि मैं भी इस प्रकार मरे हुओं में से उठ कर पुनरुत्थान को प्राप्त करूँ।

लक्ष्य पर पहुँचने को यत्न करते रहो

[12]ऐसा नहीं है कि मुझे अपनी उपलब्धि हो चुकी है अथवा मैं पूरा सिद्ध ही बन चुका हूँ। किन्तु मैं उस उपलब्धि को पा लेने के लिये निरन्तर यत्न कर रहा हूँ जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे अपना बँधुआ बनाया था। [13]हे भाइयों! मैं यह नहीं सोचता कि मैं उसे प्राप्त कर चुका हूँ। पर बात यह है कि बीती को बिसार कर, जो मेरे सामने है, उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये मैं संघर्ष करता रहता हूँ। [14]मैं उस लक्ष्य के लिये निरन्तर यत्न करता रहता हूँ कि मैं अपने उस पारितोषिक को जीत लूँ, जिसे मसीह यीशु में पाने के लिये परमेश्वर ने हमें ऊपर बुलाया है।

[15]ताकि उन लोगों का, जो हममें से सिद्ध पुरुष बन चुके हैं, भाव भी ऐसा ही रहे। किन्तु यदि तुम किसी बात को किसी और ही ढँग से सोचते हो तो तुम्हारे लिये उसका स्पष्टीकरण परमेश्वर कर देगा। [16]जिस सत्य तक हम पहुँच चुके हैं, हमें उसी पर चलते रहना चाहिये।

[17]हे भाइयों, औरों के साथ मिलकर मेरा अनुकरण करो। जो उदाहरण हमने तुम्हारे सामने रखा है, उसके अनुसार जो जीते हैं, उन पर ध्यान दो। [18]क्योंकि ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो मसीह के क्रूस से शत्रुता रखते हुए जीते हैं। (मैंने तुम्हें बहुत बार बताया है और अब भी मैं यह बिलख बिलख कर कह रहा हूँ।) [19]उनका नाश उनकी नियति है। उनका पेट ही उनका ईश्वर है। और जिस पर उन्हें लजाना चाहिये, उस पर वे गर्व करते हैं। उन्हें बस भौतिक वस्तुओं की चिंता है। [20]किन्तु हमारी जन्मभूमि तो स्वर्ग में है। वहीं से हम अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आने की बाट जोह रहे हैं। [21]अपनी उस शक्ति के द्वारा जिससे सब वस्तुओं को वह अपने अधीन कर लेता है, हमारी दुर्बल देह को बदल कर अपनी दिव्य देह जैसा बना देगा।

फिलिप्पियों को पौलुस का निर्देश

4 हे मेरे प्रिय भाइयो, तुम मेरी प्रसन्नता हो, मेरे गौरव हो। तुम्हें जैसे मैंने बताया है, प्रभु में तुम वैसे ही दृढ़ बने रहो।

[2]मैं यूहोदिया और संतुखे दोनों को प्रोत्साहित करता हूँ कि तुम प्रभु में एक जैसे विचार बनाये रखो। [3]मेरे सच्चे साथी तुझसे भी मेरा आग्रह है कि इन महिलाओं की सहायता करना। ये क्लेमेन्स तथा मेरे दूसरे सहकर्मियों सहित सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ जुटी रही हैं। इनके नाम जीवनकी पुस्तक में लिखे गये हैं।

[4]प्रभु में सदा आनन्द मनाते रहो।

[5]इसे मैं फिर दोहराता हूँ, आनन्द मनाते रहो। तुम्हारी सहनशील आत्मा का ज्ञान सब लोगों को हो। प्रभु पास ही है। [6]किसी बात की चिंता मत करो, बल्कि हर परिस्थिति में धन्यवाद सहित प्रार्थना और विनय के साथ अपनी याचना परमेश्वर के सामने रखते जाओ। [7]इसी से परमेश्वर की ओर से मिलने वाली शांति, जो समझ से परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारी बुद्धि को मसीह यीशु में सुरक्षित बनाये रखेगी।

[8]हे भाइयों, उन बातों का ध्यान करो जो सत्य हैं, जो भव्य हैं, जो उचित हैं, जो पवित्र हैं, जो आनन्द-दायी हैं, जो सराहने योग्य हैं या कोई भी अन्य गुण या कोई प्रशंसा [9]जिसे तुमने मुझसे सीखा है, पाया है या सुना है या जिसे करते मुझे देखा है। उन बातों का अभ्यास करते रहो। शांति का स्रोत परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।

फिलिप्पी मसीहियों के उपहार के लिये पौलुस का धन्यवाद

[10]तुम निश्चय ही मेरी भलाई के लिये सोचा करते थे किन्तु तुम्हें उसे दिखाने का अवसर नहीं मिला था, किन्तु अब आखिरकार तुममें मेरे प्रति फिर से चिंता जागी है। इससे मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हुआ हूँ। [11]किसी आवश्यकता के कारण मैं यह नहीं कह रहा हूँ। क्योंकि जैसी भी परिस्थिति में मैं रहूँ, मैंने उसी में संतोष करना सीख लिया है। [12]मैं अभावों के बीच रहने का रहस्य भी जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि सम्पन्नता में कैसे रहा जाता है। कैसा भी समय हो और कैसी भी परिस्थिति, चाहे पेट भरा हो और चाहे भूखा, चाहे पास में बहुत

कुछ हो और चाहे कुछ भी नहीं, मैंने उन सब में सुखी रहे का भेद सीख लिया है। [13]जो मुझे शक्ति देता है, उसके द्वारा मैं सभी परिस्थितियों का सामना कर सकता हूँ।

[14]कुछ भी हो तुमने मेरे कष्टों में हाथ बटा कर अच्छा ही किया है। [15]हे फिलिप्पियो, तुम तो जानते ही हो, सुसमाचार के प्रचार के उन आरम्भिक दिनों में जब मैंने मैसिडोनिया छोड़ा था, तो लेने-देने के विषय में केवल मात्र तुम्हारी कलीसिया को छोड़ कर किसी और कलीसिया ने मेरा हाथ नहीं बटाया था। [16]मैं जब थिस्सिलुनीके में था, मेरी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिये तुमने बार बार मुझे सहायता भेजी थी। [17]ऐसा नहीं है कि मैं उपहारों का इच्छुक हूँ, बल्कि मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम्हारे खाते में लाभ जुड़ता ही चला जाये। [18]तुमने इपफ्रुदीतुस के हाथों जो उपहार मधुर गंध भेंट के रूप में मेरे पास भेजे हैं वे एक ऐसा स्वीकार करने योग्य बलिदान हैं जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। उन उपहारों के कारण मेरे पास मेरी आवश्यकता से कहीं अधिक हो गया है, मुझे पूरी तरह दिया गया है, बल्कि उससे भी अधिक भरपूर दिया गया है। वे वस्तुएँ मधुर गंध भेंट के रूप में हैं, एक ऐसा स्वीकार करने योग्य बलिदान जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। [19]मेरा परमेश्वर तुम्हारी सभी आवश्यकताओं को मसीह यीशु में प्राप्त अपने भव्य धन से पूरा करेगा। [20]हमारे परम पिता परमेश्वर की सदा सदा महिमा होती रहे। आमीन!

पत्र का समापन

[21]मसीह यीशु के हर एक संत को नमस्कार। मेरे साथ जो भाई हैं, तुम्हें नमस्कार करते हैं। [22]तुम्हें सभी संत और विशेष कर कैसर परिवार के लोग नमस्कार करते हैं।

[23]तुम में से हर एक पर हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे।

कुलुस्सियों

1 पौलुस जो परमेश्वर की इच्छानुसार यीशु मसीह का प्रेरित है उसकी, तथा हमारे भाई तिमुथियुस की ओर से।

[2]मसीह में स्थित कुलुस्से में रहने वाले विश्वासी भाइयों और सन्तों के नाम:

हमारे परम पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।

[3]जब हम तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं, सदा ही अपने प्रभु यीशु मसीह के परम पिता परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। [4]क्योंकि हमने मसीह यीशु में तुम्हारे विश्वास तथा सभी संत जनों के प्रति तुम्हारे प्रेम के बारे में सुना है। [5]यह उस आशा के कारण हुआ है जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में सुरक्षित है और जिस के विषय में तुम पहले ही सच्चे संदेश अर्थात् सुसमाचार के द्वारा सुन चुके हो। [6]सुसमाचार समूचे संसार में सफलता पा रहा है। यह वैसे ही सफल हो रहा है जैसे तुम्हारे बीच यह उस समय से ही सफल होने लगा था जब तुमने परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में सुना था और सचमुच उसे समझा था। [7]हमारे प्रिय साथी दास इपफ्रास से, जो हमारे लिये मसीह का विश्वासी सेवक है, तुमने सुसमाचार की शिक्षा पायी थी। [8]आत्मा के द्वारा उत्तेजित तुम्हारे प्रेम के विषय में उसने भी हमें बताया है।

[9]इसीलिये जिस दिन से हमने इसके बारे में सुना है, हमने भी तुम्हारे लिये प्रार्थना करना और यह विनती करना नहीं छोड़ा है:

प्रभु का अभिमत तुम्हें ज्ञात हो,
सब प्रकार की समझ–बूझ
जो आत्मा देता; और
तुम बुद्धि भी प्राप्त करो
[10] ताकि वैसे जी सको, जैसे प्रभु को साजे।
हर प्रकार से तुम प्रभु को सदा प्रसन्न करो।
तुम्हारे सब सत् कर्म सतत सफलता पावें
तुम्हारे जीवन से सत्कर्मों के फल लगें
तुम प्रभु परमेश्वर के ज्ञान में निरन्तर बढ़ते रहो।
[11] वह तुम्हें अपनी महिमापूर्ण
शक्ति से सुदृढ़ बनाता जाये
ताकि विपत्ति के काल खुशी से
महाधैर्य से तुम सब सह लो।

[12]उस परम पिता का धन्यवाद करो, जिसने तुम्हें इस योग्य बनाया कि परमेश्वर के उन संत जनों के साथ जो ज्योतिर्मय जीवन जीते हैं, तुम उत्तराधिकार पाने में सहभागी बन सके [13]परमेश्वर ने अन्धकार की शक्ति से हमारा उद्धार किया और अपने प्रिय पुत्र के राज्य में हमारा प्रवेश कराया। [14]उस पुत्र द्वारा ही हमें छुटकारा मिला है यानी हमें मिली है हमारे पापों की क्षमा।

मसीह के दर्शन में, परमेश्वर के दर्शन

[15]वह अदृश्य परमेश्वर का दृश्य रूप है। वह सारी सृष्टि का सिरमौर है। [16]क्योंकि जो कुछ स्वर्ग में है और धरती पर है, उसी की शक्ति से उत्पन्न हुआ है। कुछ भी चाहे दृश्यमान हो और चाहे अदृश्य, चाहे सिंहासन हो चाहे राज्य, चाहे कोई शासक हो और चाहे अधिकारी, सब कुछ उसी के द्वारा रचा गया है और उसी के लिए रचा गया है। [17]सबसे पहले उसी का अस्तित्व था, उसी की शक्ति से सब वस्तुएँ बनी रहती हैं। [18]इस देह, अर्थात् कलीसिया का सिर वही है। वही आदि है और मरे हुओं को फिर से जी उठाने का सर्वोच्च अधिकारी भी वही है ताकि हर बात में पहला स्थान उसी को मिले। [19]क्योंकि अपनी समग्रता के साथ परमेश्वर ने उसी में वास करना चाहा। [20]उसी के द्वारा समूचे ब्रह्माण्ड को परमेश्वर ने अपने से पुन: संयुक्त करना चाहा–उन सभी को जो धरती के हैं और स्वर्ग के हैं। उसी लहू के द्वारा परमेश्वर ने मिलाप कराया जिसे मसीह ने क्रूस पर बहाया था।

[21]एक समय था जब तुम अपने विचारों और बुरे कामों के कारण परमेश्वर के लिये अनजाने और उसके विरोधी थे। [22]किन्तु अब जब मसीह अपनी भौतिक देह में था, तब मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने तुम्हें स्वयं अपने आप से ले लिया। ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र, निश्कलंक और निर्दोष बना कर प्रस्तुत किया जाये। [23]यह तभी हो सकता है जब तुम अपने विश्वास में स्थिरता के साथ अटल बने रहो और सुसमाचार के द्वारा दी गयी उस आशा का परित्याग न करो, जिसे तुमने सुना है। इस आकाश के नीचे हर किसी प्राणी को उसका उपदेश दिया गया है, और मैं पौलुस उसी का सेवक बना हूँ।

कलीसिया के लिये पौलुस का कार्य

[24]अब देखो, मैं तुम्हारे लिये जो कष्ट उठाता हूँ, उनमें आनन्द का अनुभव करता हूँ और मसीह की देह, अर्थात् कलीसिया के लिये मसीह की यातनाओं में जो कुछ कमी रह गयी थी, उसे अपने शरीर में पूरा करता हूँ। [25]परमेश्वर ने तुम्हारे लाभ के लिये मुझे जो आदेश दिया था, उसी के अनुसार मैं उसका एक सेवक ठहराया गया हूँ। ताकि मैं परमेश्वर के समाचार का पूरी तरह प्रचार करुँ । [26]यह संदेश रहस्यपूर्ण सत्य है। जो आदिकाल से सभी की आँखों से ओझल था। किन्तु अब इसे परमेश्वर के द्वारा संत जनों पर प्रकट कर दिया गया है। [27]परमेश्वर अपने संत जनों को यह प्रकट कर देना चाहता था कि वह रहस्यपूर्ण सत्य कितना वैभवपूर्ण है। उसके पास यह रहस्यपूर्ण सत्य सभी के लिये है। और वह रहस्यपूर्ण सत्य यह है कि मसीह तुम्हारे भीतर ही रहता है और परमेश्वर की महिमा प्राप्त करने के लिये वही हमारी एक मात्र आशा है। [28]हमें जो ज्ञान प्राप्त है उस समूचे का उपयोग करते हुए हम हर किसी को निर्देश और शिक्षा प्रदान करते हैं ताकि हम उसे मसीह में एक परिपूर्ण व्यक्ति बनाकर परमेश्वर के आगे उपस्थित कर सकें। व्यक्ति को उसी की सीख देते हैं तथा अपनी समस्त बुद्धि से हर व्यक्ति को उसी की शिक्षा देते हैं ताकि हर व्यक्ति को मसीह में परिपूर्ण बना कर परमेश्वर के आगे उपस्थित कर सकें। [29]मैं इसी प्रयोजन से मसीह का उस शक्ति से जो मुझमें शक्तिपूर्वक कार्यरत है, संघर्ष करते हुए कठोर परिश्रम कर रहा हूँ।

2 मैं चाहता हूँ कि तुम्हें इस बात का पता चल जाये कि मैं तुम्हारे लिए, लौदीकिया के रहने वालों के लिये और उन सब के लिए जो निजी तौर पर मुझसे कभी नहीं मिले हैं, कितना कठोर परिश्रम कर रहा हूँ [2]ताकि उनके मन को प्रोत्साहन मिले और वे परस्पर प्रेम में बँध जायें। तथा विश्वास का वह सम्पूर्ण धन जो सच्चे ज्ञान से प्राप्त होता है, उन्हें मिल जाये तथा परमेश्वर का रहस्यपूर्ण सत्य उन्हें प्राप्त हो वह रहस्यपूर्ण सत्य स्वयं मसीह है। [3]जिसमें विवेक और ज्ञान की सारी निधियाँ छिपी हुई हैं।

[4]ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ कि कोई तुम्हें मीठी मीठी तर्कपूर्ण युक्तियों से भरमा न दे। [5]यद्यपि दैहिक रूप से मैं तुममें नहीं हूँ फिर भी आध्यात्मिक रूप से मैं तुम्हारे भीतर हूँ। मैं तुम्हारे जीवन के अनुशासन और मसीह में तुम्हारे विश्वास की दृढ़ता को देख कर प्रसन्न हूँ।

मसीह में बने रहो

[6]सो तुमने जैसे यीशु को मसीह और प्रभु के रूप में ग्रहण किया है, तुम उसमें वैसे ही बने रहो। [7]तुम्हारी जड़ें उसी में हों और तुम्हारा निर्माण उसी पर हो तथा तुम अपने विश्वास में दृढ़ता पाते रहो जैसा कि तुम्हें सिखाया गया है। परमेश्वर के प्रति अत्यधिक आभारी बनो।

[8]ध्यान रखो कि तुम्हें अपने उन भौतिक विचारों और खोखले प्रपंच से कोई भरमा न ले जो मानवीय परम्परा से प्राप्त होते हैं, जो ब्रह्माण्ड को अनुशासित करने वाली आत्माओं की देन है, न कि मसीह की। [9]क्योंकि परमेश्वर अपनी सम्पूर्णता के साथ सदैव उसी में निवास करता है। [10]और उसी में स्थित होकर तुम परिपूर्ण बने हो। वह हर शासक और अधिकारी का शिरोमणि है।

[11]तुम्हारा ख़तना भी उसी में हुआ है। यह ख़तना मनुष्य के हाथों से सम्पन्न नहीं हुआ, बल्कि यह ख़तना जब तुम्हें तुम्हारी पापपूर्ण मानव प्रकृति के प्रभाव से छुटकारा दिला दिया गया था तब मसीह के द्वारा सम्पन्न हुआ। [12]यह इसलिए हुआ कि जब तुम्हें बपतिस्मा में उसके साथ गाड़ दिया गया तो जिस परमेश्वर ने उसे मरे हुओं के बीच से जिला दिया था, उस परमेश्वर के कार्य में तुम्हारे विश्वास के कारण, उसी के साथ तुम्हें भी पुन: जीवित कर दिया गया। [13]अपने पापों और अपने ख़तना रहित शरीर के कारण तुम मरे हुए थे किन्तु तुम्हें परमेश्वर ने मसीह के साथ–साथ जीवन प्रदान किया तथा हमारे

सब पापों को मुक्त रूप से क्षमा कर दिया। [14]परमेश्वर ने उस अभिलेख को हमारे बीच में से हटा दिया जिसमें उन विधियों का उल्लेख किया गया था जो हमारे प्रतिकूल और हमारे विरुद्ध था। उसने उसे कीलों से क्रूस पर जड़कर मिटा दिया है। [15]परमेश्वर ने क्रूस के द्वारा आध्यात्मिक शासकों और अधिकारियों को साधन विहीन कर दिया और अपने विजय अभियान में बंदियों के रूप में अपने पीछे-पीछे चलाया।

मनुष्य की शिक्षा और उसके बनाये नियमों पर मत चलो

[16]सो खाने पीने की वस्तुओं अथवा पर्वों नये चाँद के त्योहारों, या सब्त के दिनों को लेकर कोई तुम्हारी आलोचना न करे। [17]ये तो, जो बातें आने वाली हैं, उनकी छाया भर हैं। किन्तु इस छाया की वास्तविक काया तो मसीह की ही है। [18]कोई व्यक्ति जो अपने आप को प्रताड़ित करने के कर्मों या स्वर्गदूतों की उपासना के कामों में लगा हुआ हो, उसे तुम्हें तुम्हारे प्रतिफल को पाने में बाधक नहीं बनने देना चाहिये। ऐसा व्यक्ति सदा ही उन दिव्य दर्शनों की डींग मारता रहता है जिन्हें उसने देखा है और अपने दुनियावी सोच की वजह से झूठे अभिमान से भरा रहता है। [19]वह अपने आपको मसीह के अधीन नहीं रखता जो प्रमुख है जो जोड़ों और नसों से सम्बद्ध तथा समर्थित होकर सारी देह का उपकार करता है, और जिससे आध्यात्मिक विकास का अनुभव होता है।

[20]क्योंकि तुम मसीह के साथ मर चुके हो और तुम्हे "संसार की बुनियादी शिक्षाओं से छुटकारा दिलाया जा चुका है।" तो इस तरह का आचरण क्यों करते हो जैसे तुम इस दुनिया के हो और ऐसे नियमों का पालन करते हो जैसे [21]"इसे हाथ मत लगाओ," "इसे चखो मत" या "इसे छुओ मत।" [22]ये सब वस्तुएँ तो काम में आते-आते नष्ट हो जाने के लिये हैं। ऐसे आचार व्यवहारों की अधीनता स्वीकार करके तो तुम मनुष्य के बनाये आचार व्यवहारों और शिक्षाओं का ही अनुसरण कर रहे हो। [23]मनमानी उपासना, अपने शरीर को प्रताड़ित करने और अपनी काया को कष्ट देने से सम्बन्धित ये नियम बुद्धि पर आधारित प्रतीत होते हैं पर वास्तव में इन मूल्यों का कोई नियम नहीं है। ये नियम तो वास्तव में लोगों को उनकी पापपूर्ण मानव प्रकृति में लगा डालते हैं।

मसीह में नया जीवन

3 क्योंकि यदि तुम्हें मसीह के साथ मरे हुओं में से जिला कर उठाया गया है तो उन वस्तुओं के लिये प्रयत्नशील रहो जो स्वर्ग में हैं जहाँ परमेश्वर की दाहिनी ओर मसीह विराजित है। [2]स्वर्ग की वस्तुओं के सम्बन्ध में ही सोचते रहो। भौतिक वस्तुओं के सम्बन्ध में मत सोचो। [3]क्योंकि तुम लोगों का पुराना व्यक्तित्व मर चुका है और तुम्हारा नया जीवन मसीह के साथ साथ परमेश्वर में छिपा है। [4]जब मसीह, जो हमारा जीवन है, फिर से प्रकट होगा तो तुम भी उसके साथ उसकी महिमा में प्रकट होओगे।

[5]इसलिये तुममें जो कुछ सांसारिक है, उसका अंत कर दो-व्यभिचार, अपवित्रता, वासना, बुरी इच्छाएँ और लालच जो मूर्ति उपासना का ही एक रूप है, [6]इन ही बातों के कारण परमेश्वर का क्रोध प्रकट होने जा रहा है।* [7]एक समय था जब तुम भी ऐसे कर्म करते हुए इसी प्रकार का जीवन जीया करते थे।

[8]किन्तु अब तुम्हें इन सब बातों के साथ साथ क्रोध, झुँझलाहट, शत्रुता, निन्दा-भाव, और अपशब्द बोलने से छुटकारा पा लेना चाहिये। [9]आपस में झूठ मत बोलो क्योंकि तुमने अपने पुराने व्यक्तित्व को उसके कर्मों सहित उतार फेंका है [10]और नये व्यक्तित्व को धारण कर लिया है जो अपने रचयिता के स्वरूप में स्थित होकर परमेश्वर के सम्पूर्ण ज्ञान के निमित्त निरन्तर नया होता जा रहा है। [11]परिणामस्वरूप वहाँ यहूदी और ग़ैर यहूदी में कोई अन्तर नहीं रह गया है, न किसी ख़तना युक्त और खतना रहित में, न किसी असभ्य और बर्बर* में, न दास और एक स्वतन्त्र व्यक्ति में कोई अन्तर है। मसीह सर्वेसर्वा है और सब विश्वासियों में उसी का निवास है।

[12]क्योंकि तुम परमेश्वर के चुने हुए पवित्र और प्रिय जन हो इसलिए सहानुभूति, दया, नम्रता, कोमलता और धीरज को धारण करो। [13]तुम्हें आपस में जब कभी किसी से कोई कष्ट हो तो एक दूसरे की सह लो और परस्पर एक दूसरे को मुक्त भाव से क्षमा कर दो। तुम्हें आपस में

पद 6 कुछ यूनानी प्रतियों मे ये शब्द जोड़े गये है: "उन पर जो आज्ञा को नहीं मानते।"

बर्बर शाब्दिक सिथियन, ये लोग बड़े जंगली और असभ्य समझे जाते थे।

एक दूसरे को ऐसे ही क्षमा कर देना चाहिए जैसे परमेश्वर ने तुम्हें मुक्त भाव से क्षमा कर दिया। [14]इन बातों के अतिरिक्त प्रेम को धारण करो। प्रेम ही सब को आपस में बाँधता और परिपूर्ण करता है। [15]तुम्हारे मन पर मसीह से प्राप्त होने वाली शांति का शासन हो। इसी के लिये तुम्हें उसी एक देह* में बुलाया गया है। सदा धन्यवाद करते रहो। [16]अपनी सम्पन्नता के साथ मसीह का संदेश तुम में वास करे। भजनों, स्तुतियों और आत्मा के गीतों को गाते हुए बड़े विवेक के साथ एक दूसरे को शिक्षा और निर्देश देते रहो। परमेश्वर को मन ही मन धन्यवाद देते हुए गाते रहो। [17]और तुम जो कुछ भी करो या कहो, वह सब प्रभु यीशु के नाम पर हो। उसी के द्वारा तुम हर समय परम पिता परमेश्वर को धन्यवाद देते रहो।

नये जीवन के नियम

[18]हे पत्नियो, अपने पतियों के प्रति उस प्रकार समर्पित रहो जैसे प्रभु के अनुयायियों को शोभा देता है।

[19]हे पतियो, अपनी पत्नियों से प्रेम करो, उनके प्रति कठोर मत बनो।

[20]हे बालको, सब बातों में अपने माता पिता की आज्ञा का पालन करो। क्योंकि प्रभु के अनुयायिओं के इस व्यवहार से परमेश्वर प्रसन्न होता है।

[21]हे पिताओ, अपने बालकों को कड़ुवाहट से मत भरो। कहीं ऐसा न हो कि वे जतन करना ही छोड़ दें।

[22]हे सेवको, अपने सांसारिक स्वामियों की सब बातों का पालन करो। केवल लोगों को प्रसन्न भर करने के लिये उसी समय नहीं जब वे देख रहे हों, बल्कि सच्चे मन से उनकी मानो। क्योंकि तुम प्रभु का आदर करते हो। [23]तुम जो कुछ करो अपने समूचे मन से करो। मानों तुम उसे लोगों के लिये नहीं बल्कि प्रभु के लिये कर रहे हो। [24]याद रखो कि तुम्हें प्रभु से उत्तराधिकार का प्रतिफल प्राप्त होगा। अपने स्वामी मसीह की सेवा करते रहो[25]क्योंकि जो बुरा कर्म करेगा, उसे उसका फल मिलेगा और वहाँ कोई पक्षपात नहीं है।

4 हे स्वामियो, तुम अपने सेवकों को जो उनका बनता है और उचित है, दो। याद रखो स्वर्ग में तुम्हारा भी कोई स्वामी है।

देह मसीह का आत्मिक शरीर अर्थात् उसकी कलीसिया अथवा उसके लोग।

पौलुस की मसीहियों के लिये सलाह

[2]प्रार्थना में सदा लगे रहो। और जब तुम प्रार्थना करो तो सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहो। [3]साथ ही साथ हमारे लिये भी प्रार्थना करो कि परमेश्वर हमें अपने संदेश के प्रचार का तथा मसीह से संबंधित रहस्यपूर्ण सत्य के प्रवचन का अवसर प्रदान करे क्योंकि इस के कारण ही मैं बंदीगृह में हूँ। [4]प्रार्थना करो कि मैं इसे ऐसे स्पष्टता के साथ बता सकूँजैसे मुझे बताना चाहिये।

[5]बाहर के लोगों के साथ विवेकपूर्ण व्यवहार करो। हर अवसर का पूरा–पूरा उपयोग करो। [6]तुम्हारी बोली सदा मीठी रहे और उससे बुद्धि की छटा बिखरे ताकि तुम जान लो कि किस व्यक्ति को कैसे उत्तर देना है।

पौलुस के साथियों के समाचार

[7] हमारा प्रिय बंधु तुखिकुस जो एक विश्वासी सेवक और प्रभु में स्थित साथी दास है, तुम्हें मेरे सभी समाचार बता देगा। [8]मैं उसे तुम्हारे पास इसलिए भेज रहा हूँ कि तुम्हें उससे हमारे हालचाल का पता चल जाये वह तुम्हारे हृदयों को प्रोत्साहित करेगा। [9]मैं अपने विश्वासी तथा प्रिय बंधु उनेसिमुस को भी उसके साथ भेज रहा हूँ जो तुम्हीं में से एक है। वे, यहाँ जो कुछ घट रहा है, उसे तुम्हें बतायेंगे।

[10]अरिस्तरखुस का जो बंदी गृह में मेरे साथ रहा है तथा बरनाबास के बंधु मरकुस का तुम्हें नमस्कार, (उसके विषय में तुम निर्देश पा ही चुके हो कि यदि वह तुम्हारे पास आये तो उसका स्वागत करना,) [11]यूसतुस कहलाने वाले यीशु का भी तुम्हें नमस्कार पहुँचे। यहूदी विश्वासियों में बस ये ही परमेश्वर के राज्य के लिये मेरे साथ काम कर रहे हैं। ये मेरे लिये आनन्द का कारण रहे हैं।

[12]इपफ्रास का भी तुम्हें नमस्कार पहुँचे। वह तुम्हीं में से एक है और मसीह यीशु का सेवक है। वह सदा बड़ी वेदना के साथ तुम्हारे लिये लगनपूर्वक प्रार्थना करता रहता है कि तुम आध्यात्मिक रूप से सम्पूर्ण बनने के लिये विकास करते रहो। तथा विश्वासपूर्वक परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल बने रहो। [13]मैं इसका साक्षी हूँ कि वह तुम्हारे लिये और लौदीकिया तथा हियरापुलिस के रहने वालों के लिये सदा कड़ा परिश्रम करता रहा है। [14]प्रिय चिकित्सक लूका तथा देमास तुम्हें नमस्कार भेजते हैं।

[15]लौदीकिया में रहने वाले भाइयों को तथा नमुफास और उस कलीसिया को जो उसके घर में जुड़ती है, नमस्कार पहुँचे। [16]और देखो, पत्र जब तुम्हारे सम्मुख पढ़ा जा चुके, तब इस बात का निश्चय कर लेना कि इसे लौदीकिया के कलीसिया में भी पढ़वा दिया जाये। और लौदीकिया से मेरा जो पत्र तुम्हें मिले, उसे तुम भी पढ़ लेना। [17]अखिप्पुस से कहना कि वह इस बात का ध्यान रखे कि प्रभु में जो सेवा उसे सौंपी गयी है, वह उसे निश्चय के साथ पूरा करे।

[18]मैं पौलुस स्वयं अपनी लेखनी से यह नमस्कार लिख रहा हूँ। याद रखना मैं कारागार में हूँ, परमेश्वर का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

1 थिस्सलुनीकियों

1 थिस्सलुनीकियों के परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में स्थित कलीसिया को पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से:

परमेश्वर का अनुग्रह और शांति तुम्हारे साथ रहे।

थिस्सलुनीकियों का जीवन और विश्वास

[2]हम तुम सब के लिए सदा परमेश्वर को धन्यवाद देते रहते हैं। और अपनी प्रार्थनाओं में हमें तुम्हारी याद बनी रहती है। [3]प्रार्थना करते हुए हम सदा तुम्हारे उस काम की याद करते हैं जो फल है, विश्वास का, प्रेम से पैदा हुए तुम्हारे कठिन परिश्रम का, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा से उत्पन्न तुम्हारी धैर्य पूर्ण सहनशीलता का हमें सदा ध्यान बना रहता है। [4]परमेश्वर के प्रिय हमारे भाइयो, हम जानते हैं कि तुम उसके चुने हुए हो। [5]क्योंकि हमारे सुसमाचार का विवरण तुम्हारे पास मात्र शब्दों में ही नहीं पहुँचा है बल्कि पवित्र आत्मा सामर्थ्य और गहन श्रद्धा के साथ पहुँचा है। तुम जानते हो कि हम जब तुम्हारे साथ थे, तुम्हारे लाभ के लिये कैसा जीवन जीते थे। [6]कठोर यातनाओं के बीच तुमने पवित्र आत्मा से मिलने वाली प्रसन्नता के साथ सुसंदेश को ग्रहण किया और हमारा तथा प्रभु का अनुकरण करने लगे। [7]और इसीलिये मैसीडोनिया और अखाया के सभी विश्वासियों के लिये तुम एक आदर्श बन गये [8]क्योंकि तुमसे प्रभु के संदेश की जो गूँज उठी, वह न केवल मैसिडोनिया और अखाया में सुनी गयी बल्कि परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास सब कहीं जाना माना गया। सो हमें कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है। [9-10]क्योंकि वे स्वयं ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुमने हमारा कैसा स्वागत किया था और सजीव तथा सच्चे परमेश्वर की सेवा करने के लिए और स्वर्ग से उसके पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा करने के लिए तुम मूर्तियों की ओर से सजीव परमेश्वर की ओर कैसे मुड़े थे। पुत्र अर्थात् यीशु को उसने मरे हुओं में से फिर से जिला उठाया था। और वही परमेश्वर के आने वाले कोप से हमारी रक्षा करता है।

थिस्सलुनीका में पौलुस का कार्य

2 हे भाइयों, तुम्हारे पास हमारे आने के सम्बन्ध में तुम स्वयं ही जानते हो कि वह निरर्थक नहीं था। [2]तुम जानते हो कि फिलिप्पी में यातनाएँ झेलने और दुर्व्यवहार सहने के बाद भी परमेश्वर की सहायता से हमें कड़े विरोध के रहते हुए भी परमेश्वर के सुसमाचार को सुनाने का साहस प्राप्त हुआ। [3]निश्चय ही हम जब लोगों का ध्यान अपने उपदेशों की ओर खींचना चाहते हैं तो वह इसलिए नहीं कि हम कोई भटके हुए हैं। और न ही इसलिए कि हमारे उद्देश्य दूषित हैं और इसलिए भी नहीं कि हम लोगों को छलने का जतन करते हैं। [4]हम लोगों को खुश करने की कोशिश नहीं करते बल्कि हम तो उस परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं जो हमारे मन का भेद जानता है। [5]निश्चय ही हम कभी भी ठकुर सुहाती वाणी के साथ तुम्हारे सामने नहीं आये। जैसा कि तुम जानते ही हो, हमारा उपदेश किसी लोभ का बहाना नहीं है। परमेश्वर साक्षी है [6]हमने लोगों से कोई मान सम्मान भी नहीं चाहा। न तुमसे और न ही किसी और से।

[7]यद्यपि हम मसीह के प्रेरितों के रूप में अपना अधिकार जता सकते थे किन्तु हम तुम्हारे बीच वैसे ही नम्रता के साथ रहे* जैसे एक माँ अपने बच्चे को दूध पिला कर उसका पालन–पोषण करती है। [8]हमने तुम्हारे प्रति वैसी ही नम्रता का अनुभव किया है, इसलिये परमेश्वर से मिले सुसमाचार को ही नहीं, बल्कि स्वयं अपने आपको भी हम तुम्हारे साथ बाँट लेना चाहते हैं क्योंकि तुम हमारे प्रिय

किन्तु … रहे कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग भी मिलता है: किन्तु तुम्हारे बीच हम बच्चे ही बने रहे।

हो गये हो। [9]हे भाइयो, तुम हमारे कठोर परिश्रम और कठिनाई को याद रखो जो हमने दिन–रात इसलिये किया है ताकि हम परमेश्वर के सुसमाचार को सुनाते हुए तुम पर बोझ न बनें।

[10]तुम साक्षी हो और परमेश्वर भी साक्षी है कि तुम विश्वासियों के प्रति हमने कितनी आस्था, धार्मिकता और दोष रहितता के साथ व्यवहार किया है। [11]तुम जानते ही हो कि जैसे एक पिता अपने बच्चों के साथ व्यवहार करता है[12]वैसे ही हमने तुममें से हर एक को आग्रह के साथ सुख चैन दिया है। और उस रीति से जाने को कहा है जिससे परमेश्वर, जिसने तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुला भेजा है, प्रसन्न होता है।

[13]और इसीलिये हम परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते रहते हैं क्योंकि हमसे तुमने जब परमेश्वर का वचन ग्रहण किया तो उसे मानवीय सन्देश के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के सन्देश के रूप में ग्रहण किया, जैसा कि वह वास्तव में है। और तुम विश्वासियों पर जिसका प्रभाव भी है। [14]हे भाइयो, तुम यहूदियों में स्थित मसीह यीशु में परमेश्वर की कलीसियाओं का अनुसरण करते रहे हो। तुमने अपने साथी देश–भाइयों से वैसी ही यातनाएँ झेली हैं जैसी उन्होंने उन यहूदियों के हाथों झेली थीं [15]जिन्होंने प्रभु यीशु को मार डाला और नबियों को बाहर खदेड़ दिया। वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते वे तो समूची मानवता के विरोधी हैं। [16]वे विधर्मियों को सुसमाचार का उपदेश देने में बाधा खड़ी करते हैं कि कहीं उन लोगों का उद्धार न हो जाये। इन बातों से वे सदा अपने पापों का घड़ा भरते रहते हैं और अन्तत: अब तो परमेश्वर का प्रकोप उन पर पूरी तरह से आ पड़ा है

फिर मिलने की इच्छा

[17]हे भाइयो, जहाँ तक हमारी बात है, हम थोड़े समय के लिये तुमसे बिछुड़ गये थे। विचारों से नहीं, केवल शरीर से। सो हम तुमसे मिलने को बहुत उतावले हो उठे। हमारी इच्छा तीव्र हो उठी थी। [18]हाँ! हम तुमसे मिलने के लिए बहुत जतन कर रहे थे। मुझ पौलुस ने अनेक बार प्रयत्न किया किन्तु शैतान ने उसमें बाधा डाली। [19]भला बताओ तो हमारी आशा, हमारा उल्लास या हमारा वह मुकुट जिस पर हमें इतना गर्व है, क्या है? क्या वह तुम्हीं नहीं हो। हमारे प्रभु यीशु के दुबारा आने पर जब हम उसके सामने उपस्थित होंगे [20]तो वहाँ तुम हमारी महिमा और हमारे आनन्द होंगे।

3 क्योंकि हम और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकते थे इसलिये हमने एथेंस में अकेले ही ठहर जाने का निश्चय कर लिया। [2]और हमने हमारे बन्धु तथा परमेश्वर के लिये मसीह के सुसमाचार के प्रचार में अपने सहकर्मी तिमुथियुस को तुम्हें सुदृढ़ बनाने और विश्वास में उत्साहित करने को तुम्हारे पास भेज दिया [3]ताकि इन वर्तमान यातनाओं से कोई विचलित न हो उठे। क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि हम तो यातना के लिये ही निश्चित किये गये हैं। [4]वास्तव में जब हम तुम्हारे पास थे, तुम्हें पहले से ही कहा करते थे कि हम पर कष्ट आने वाले हैं, और यह ठीक वैसे ही हुआ भी है। तुम तो यह जानते ही हो। [5]इसलिए क्योंकि मैं और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता था, इसलिये मैंने तुम्हारे विश्वास के विषय में जानने तिमुथियुस को भेज दिया। क्योंकि मुझे डर था कि लुभाने वाले ने कहीं तुम्हें प्रलोभित करके हमारे कठिन परिश्रम को व्यर्थ तो नहीं कर दिया है।

[6]तुम्हारे पास से तिमुथियुस अभी अभी हमारे पास वापस लौटा है और उसने हमें तुम्हारे विश्वास और तुम्हारे प्रेम का शुभ समाचार दिया है। उसने हमें बताया है कि तुम्हें हमारी मधुर याद आती है और तुम हमसे मिलने को बहुत अधीर हो। वैसे ही जैसे हम तुमसे मिलने को। [7]सो हे भाइयो, हमारी सभी पीड़ाओं और यातनाओं में तुम्हारे विश्वास के कारण हमारा उत्साह बहुत बढ़ा है। [8]हाँ! अब हम फिर साँस ले पा रहे हैं क्योंकि हम जान गये हैं कि प्रभु में तुम अटल खड़े हो। [9]तुम्हारे विषय में तुम्हारे कारण जो आनन्द हमें मिला है, उसके लिये हम परमेश्वर का धन्यवाद कैसे करें। अपने परमेश्वर के सामने [10]रात–दिन यथासम्भव लगन से हम प्रार्थना करते रहते हैं कि किसी प्रकार तुम्हारा मुँह फिर देख पायें और तुम्हारे विश्वास में जो कुछ कमी रह गयी है, उसे पूरा करें।

[11]हमारा परम पिता परमेश्वर और हमारा प्रभु यीशु तुम्हारे पास आने को हमें मार्ग दिखाये। [12]और प्रभु एक दूसरे के प्रति तथा सभी के लिए तुममें जो प्रेम है, उसकी बढ़ोतरी करे। वैसे ही जैसे तुम्हारे लिये हमारा प्रेम उमड़ा पड़ता है। [13]इस प्रकार वह तुम्हारे हृदयों को सुदृढ़ करे और उन्हें हमारे परम पिता

परमेश्वर के सामने हमारे प्रभु यीशु के आगमन पर अपने सभी पवित्र स्वर्गदूतों के साथ पवित्र एवम् दोष–रहित बना दे

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन

4 हे भाइयो, अब मुझे तुम्हें कुछ और बातें बतानी हैं। यीशु मसीह के नाम पर हम तुमसे प्रार्थना एवम् निवेदन करते हैं कि तुमने हमसे जिस प्रकार उपदेश ग्रहण किया है, तुम्हें परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये उसी के अनुसार चलना चाहिये। निश्चय ही तुम उसी प्रकार चल भी रहे हो। किन्तु तुम वैसे ही और अधिक से अधिक करते चलो। [2]क्योंकि तुम यह जानते हो कि प्रभु यीशु के अधिकार से हमने तुम्हें क्या निर्देश दिये हैं। [3]और परमेश्वर की यही इच्छा है कि तुम उसे पवित्र हो जाओ, व्यभिचारों से दूर रहो, [4]अपने शरीर की वासनाओं* पर नियन्त्रण रखना सीखो–ऐसे ढंग से जो पवित्र है और आदरणीय भी। [5]न कि उस वासनापूर्ण भावना से जो परमेश्वर को नहीं जानने वाले अधर्मियों की जैसी है। [6]यह भी परमेश्वर की इच्छा है कि इस विषय में कोई अपने भाई के प्रति कोई अपराध न करे या कोई अनुचित लाभ न उठाये; क्योंकि ऐसे सभी पापों के लिये प्रभु दण्ड देगा जैसा कि हम तुम्हें बता ही चुके हैं और तुम्हें सावधान भी कर चुके हैं। [7]परमेश्वर ने हमें अपवित्र बनने के लिये नहीं बुलाया है बल्कि पवित्र बनने के लिये बुलाया है। [8]इसलिये जो इस शिक्षा को नकारता है वह किसी मनुष्य को नहीं नकार रहा है बल्कि परमेश्वर को ही नकार रहा है। उस परमेश्वर को जो तुम्हें अपनी पवित्र आत्मा भी प्रदान करता है।

[9]अब तुम्हें तुम्हारे भाई बहनों के प्रेम के विषय में भी लिखा जाये, इसकी तुम्हें आवश्यकता नहीं है क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं तुमको एक दूसरे के प्रति प्रेम करने की शिक्षा दी है। [10]और वास्तव में तुम अपने सभी भाइयों के साथ समूचे मैसिडोनिया में ऐसा ही कर भी रहे हो। किन्तु भाइयो! हम तुमसे ऐसा ही अधिक से अधिक करने को कहते हैं।

[11]शांतिपूर्वक जीने को आदर की वस्तु समझो। अपने काम से काम रखो। स्वयं अपने हाथों से काम करो। जैसा कि हम तुम्हें बता ही चुके हैं। [12]इससे कलीसिया से बाहर के लोग तुम्हारे जीने के ढंग का आदर करेंगे। इससे तुम्हें किसी भी दूसरे पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

प्रभु का लौटना

[13]हे भाइयो, हम चाहते हैं कि जो चिर–निद्रा में सो गये हैं, तुम उनके विषय में भी जानो ताकि तुम्हें उन औरों के समान, जिनके पास आशा नहीं है, शोक न करना पड़े। [14]क्योंकि यदि हम यह विश्वास करते हैं कि यीशु की मृत्यु हो गयी और वह फिर से जी उठा, तो उसी प्रकार जिन्होंने उसमें विश्वास करते हुए प्राण त्याग दिए हैं, उनके साथ भी परमेश्वर वैसा ही करेगा। और यीशु के साथ वापस ले जायेगा। [15]जब प्रभु का फिर से आगमन होगा तो हम जो जीवित हैं और अभी यहीं हैं उनसे आगे नहीं निकल पाएँगे जो मर चुके हैं। [16]क्योंकि स्वर्गदूतों का मुखिया जब अपने ऊँचे स्वर से आदेश देगा तथा जब परमेश्वर की बिगुल बजेगी तो प्रभु स्वयं स्वर्ग से उतरेगा। उस समय जिन्होंने मसीह में प्राण त्यागे हैं, वे पहले उठेंगे। [17]उसके बाद हमें जो जीवित हैं, और अभी भी यहीं हैं उनके साथ ही हवा में प्रभु से मिलने के लिये बादलों के बीच ऊपर उठा लिया जाएगा और इस प्रकार हम सदा के लिये प्रभु के साथ हो जायेंगे। [18]अत: इन शब्दों के साथ एक दूसरे को उत्साहित करते रहो।

प्रभु के स्वागत को तैयार रहो

5 हे भाइयो, समयों और तिथियों के विषय में तुम्हें लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है [2]क्योंकि तुम स्वयं बहुत अच्छी तरह जानते हो कि जैसे चोर रात में चुपके से चला आता है, वैसे ही प्रभु के फिर से लौटने का दिन भी आ जायेगा। [3]जब लोग कह रहे होंगे कि "सब कुछ शांत और सुरक्षित है" तभी जैसे एक गर्भवती स्त्री को अचानक प्रसव वेदना आ घेरती है वैसे ही उन पर विनाश उतर आयेगा और वे कहीं बच कर भाग नहीं पायेंगे। [4]किन्तु हे भाइयो, तुम अन्धकार के वासी नहीं हो कि तुम पर वह दिन चुपके से चोर की तरह आ जाये। [5]तुम सब तो प्रकाश के पुत्र हो और दिन की संतान हो। हम न तो रात्रि से सम्बन्धित हैं और न ही अन्धेरे से। [6]इसलिये हमें औरों की तरह सोते नहीं रहना चाहिये, बल्कि सावधानी के साथ हमें तो अपने पर नियन्त्रण रखना

वासनाओं इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: अपनी ही पत्नी के साथ कैसे रहा जाता है।

चाहिये। [7]क्योंकि जो सोते हैं, रात में सोते हैं और जो नशा करते हैं, वे भी रात में ही मदमस्त होते हैं। [8]किन्तु हम तो दिन से सम्बन्धित हैं इसलिए हमें अपने पर काबू रखना चाहिये। आओ विश्वास और प्रेम की झिलम धारण कर लें और उद्धार पाने की आशा को शिरस्त्राण की तरह ओढ़ लें। [9]क्योंकि परमेश्वर ने हमें उसके प्रकोप के लिये नहीं, बल्कि हमारे प्रभु यीशु द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के लिये बनाया है। [10]यीशु मसीह ने हमारे लिये प्राण त्याग दिये ताकि चाहे हम सजीव हैं चाहे मृत, जब वह पुन: आए उसके साथ जीवित रहें।

[11]इसलिये एक दूसरे को सुख पहुँचाओ और एक दूसरे को आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ बनाते रहो। जैसा कि तुम कर भी रहे हो।

अंतिम निर्देश और अभिवादन

[12]हे भाइयो, हमारा तुमसे निवेदन है कि जो लोग तुम्हारे बीच परिश्रम कर रहे हैं और प्रभु में जो तुम्हें राह दिखाते हैं, उनका आदर करते रहो। [13]हमारा तुमसे निवेदन है कि उनके काम के कारण प्रेम के साथ उन्हें पूरा आदर देते रहो।

परस्पर शांति से रहो। [14]हे भाइयो, हमारा तुमसे निवेदन है आलसियों को चेताओ, डरपोकों को प्रोत्साहित करो, दीनों की सहायता में रुचि लो, सब के साथ धीरज रखो। [15]देखते रहो कोई बुराई का बदला बुराई से न दे, बल्कि सब लोग सदा एक दूसरे के साथ भलाई करने का ही जतन करें।

[16]सदा प्रसन्न रहो। [17] प्रार्थना करना कभी न छोड़ो। [18]हर परिस्थिति में परमेश्वर का धन्यवाद करो।

[19]पवित्र आत्मा के कार्य का दमन मत करते रहो। [20]नबियों के संदेशों को कभी छोटा मत जानो। [21]हर बात की असलियत को परखो, जो उत्तम है, उसे ग्रहण किये रहो [22]और हर प्रकार की बुराई से बचे रहो।

[23]शांति का स्रोत परमेश्वर स्वयं तुम्हें पूरी तरह पवित्र करे। पूरी तरह उसको समर्पित हो जाओ और तुम अपने सम्पूर्ण अस्तित्व अर्थात् आत्मा, प्राण और देह को हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूर्णत: दोष रहित बनाये रखो। [24]वह परमेश्वर जिसने तुम्हें बुलाया है, विश्वास के योग्य है। निश्चयपूर्वक वह ऐसा ही करेगा।

[25]हे भाइयो! हमारे लिये भी प्रार्थना करो। [26]सब भाइयों का पवित्र चुम्बन से सत्कार करो। [27]तुम्हें प्रभु की शपथ देकर मैं यह आग्रह करता हूँ कि इस पत्र को सब भाइयों को पढ़ कर सुनाया जाये। [28]हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

2 थिस्सलुनीकियों

1 पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में स्थित थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम:

[2]तुम्हें परम पिता परमेश्वर और यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह तथा शांति प्राप्त हो।

पौलुस का धन्यवाद तथा परमेश्वर के न्याय की चर्चा

[3]हे भाइयो, तुम्हारे लिये हमें सदा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिये: ऐसा करना उचित भी है। क्योंकि तुम्हारे विश्वास का आश्चर्यजनक रूप से विकास हो रहा है तथा तुममें आपसी प्रेम भी बढ़ रहा है। [4]इसीलिये परमेश्वर की कलीसियाओं में हम स्वयं तुम पर गर्व करते हैं। तुम्हारी यातनाओं के बीच तथा कष्टों को सहते हुए धैर्य पूर्वक सहन करना तुम्हारे विश्वास को प्रकट करता है।

[5]यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि परमेश्वर का न्याय सच्चा है। उसका उद्देश्य यही है कि तुम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने योग्य ठहरो। तुम अब उसी के लिये तो कष्ट उठा रहे हो। [6]निश्चय ही परमेश्वर की दृष्टि में यह न्यायोचित है कि तुम्हें जो दुख दे रहे हैं, उन्हें बदले में दुख ही दिया जाये। [7]और तुम जो कष्ट उठा रहे हो, उन्हें हमारे साथ उस समय विश्राम दिया जाये जब प्रभु यीशु अपने सामर्थ्यवान दूतों के साथ स्वर्ग से [8]धधकती आग में प्रकट हो। और जो परमेश्वर को नहीं जानते तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार पर नहीं चलते, उन्हें दण्ड दिया जाएगा। [9]उन्हें अनन्त विनाश का दण्ड दिया जायेगा। तथा उन्हें प्रभु और उसकी महिमापूर्ण शक्ति के सामने से हटा दिया जायेगा। [10]ऐसा तब होगा जब वह अपने पवित्र जनों के बीच महिमा मंडित तथा सभी विश्वासियों के लिए आश्चर्य का हेतु बनने के लिए आयेगा उसमें तुम लोग भी शामिल होवोगे क्योंकि हमने उसके विषय में जो साक्षी दी थी, उस पर तुमने विश्वास किया था।

[11]इसीलिये हम तुम्हारे हेतु परमेश्वर से सदा प्रार्थना करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें उस जीवन के योग्य समझे जिसे जीने के लिए तुम्हें बुलाया गया है। और वह तुम्हारी हर उत्तम इच्छा को प्रबल रूप से परिपूर्ण करे और हर उस काम को वह सफल बनाये जो तुम्हारे विश्वास का परिणाम है। [12]इस प्रकार हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम तुम्हारे द्वारा आदर पायेगा। और तुम उसके द्वारा आदर पाओगे। यह सब कुछ हमारे परमेश्वर के और यीशु मसीह के अनुग्रह से होगा।

प्रभु के आने से पूर्व दुर्घटनाएँ घटेंगी

2 हे भाइयो,अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के फिर से आने और उसके साथ परस्पर एकत्र होने के विषय में निवेदन करते हैं [2]कि तुम अचानक अपने विवेक को किसी भविष्यवाणी किसी उपदेश अथवा किसी ऐसे पत्र से मत खोना जिसे हमारे द्वारा लिखा गया समझा जाता हो और तथाकथित रूप से जिसमें बताया गया हो कि प्रभु का दिन आ चुका है, तुम अपने मन में डावाँडोल मत होना। [3]तुम अपने आपको किसी के भी द्वारा किसी भी प्रकार छला मत जाने दो। मैं ऐसा इसीलिये कह रहा हूँ क्योंकि वह दिन उस समय तक नहीं आयेगा जब तक कि परमेश्वर से मुँह मोड़ लेने का समय नहीं आ जाता और व्यवस्थाहीनता का व्यक्ति प्रकट नहीं हो जाता। उस व्यक्ति की नियति तो विनाश है। [4]वह अपने को हर वस्तु से ऊपर कहेगा और उनका विरोध करेगा। ऐसी वस्तुओं का जो परमेश्वर की हैं या जो पूजनीय हैं। यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मंदिर में जा कर सिंहासन पर बैठ यह दावा करेगा कि वही परमेश्वर है।

[5]क्या तुम्हें याद नहीं है कि जब मैं तुम्हारे साथ ही था तो तुम्हें यह सब बताया गया था। [6]और तुम तो अब यह

जानते ही हो कि उसे क्या रोके हुए हैं ताकि वह उचित अवसर आने पर ही प्रकट हो। [7]मैं ऐसा इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि व्यवस्थाहीनता की रहस्यमयी शक्ति अभी भी अपना काम कर रही है। अब कोई इसे रोक रहा है और वह तब तक इसे रोकता रहेगा, जब तक, उसे रोके रखने वाले को रास्ते से हटा नहीं दिया जायेगा। [8]तब ही वह व्यवस्थाहीन प्रकट होगा। जब प्रभु यीशु अपनी महिमा में फिर प्रकट होगा वह इसे मार डालेगा तथा अपने पुन:आगमन के अवसर पर अपनी उपस्थिति से उसे नष्ट कर देगा। [9]उस व्यवस्थाहीन का आना शैतान की शक्ति से होगा तथा वह बहुत बड़ी शक्ति, झूठे चिह्नों और आश्चर्यकर्मों [10]तथा हर प्रकार के पाप पूर्ण छल–प्रपंच से भरा होगा। वह इनका उपयोग उन व्यक्तियों के विरुद्ध करेगा जो सर्वनाश के मार्ग में खोये हुए हैं। वे भटक गए हैं क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम नहीं किया है; कहीं उनका उद्धार न हो जाये [11]इसीलिये परमेश्वर उनमें एक छली शक्ति को कार्यरत कर देगा जिससे वे झूठ में विश्वास करने लगे थे। इससे उनका विश्वास जो झूठा है, उस पर होगा। [12]इससे वे सभी जिन्होंने सत्य पर विश्वास नहीं किया और झूठ में आनन्द लेते रहे, दण्ड पायेंगे।

तुम्हें छुटकारे के लिये चुना गया है

[13]प्रभु में प्रिय भाइयो, तुम्हारे लिये हमें सदा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिये क्योंकि परमेश्वर ने आत्मा के द्वारा तुम्हें पवित्र करके और सत्य में तुम्हारे विश्वास के कारण उद्धार पाने के लिये तुम्हें चुना है। जिन व्यक्तियों का उद्धार होना है, तुम उस पहली फसल के एक हिस्से हो। [14]और इसी उद्धार के लिए जिस सुसमाचार का हमने तुम्हें उपदेश दिया है उसके द्वारा परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया ताकि तुम भी हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को धारण कर सको। [15]इसलिये भाइयो, अटल बने रहो तथा जो उपदेश तुम्हें मौखिक रूप से या हमारे पत्रों के द्वारा दिया गया है, उसे थामे रखो।

[16]अब हमारा प्रभु स्वयं यीशु मसीह और हमारा परम पिता परमेश्वर जिसने हम पर अपना प्रेम दर्शाया है और हमें परम आनन्द प्रदान किया है तथा जिसने हमें अपने अनुग्रह में सुदृढ़ आशा प्रदान की है। [17]तुम्हारे हृदयों को आनन्द दे और हर अच्छी बात में जिसे तुम कहते हो या करते हो, तुम्हें सुदृढ़ बनाये।

हमारे लिये प्रार्थना करो

3 हे भाइयो, तुम्हें कुछ और बातें हमें बतानी हैं। हमारे लिए प्रार्थना करो कि प्रभु का संदेश तीव्रता से फैले और महिमा पाये। जैसा कि तुम लोगों के बीच हुआ है। [2]प्रार्थना करो कि हम भटके हुओं और दुष्ट मनुष्यों से दूर रहें। (क्योंकि सभी लोगों का तो प्रभु में विश्वास नहीं होता।)

[3]किन्तु प्रभु तो विश्वासपूर्ण है। वह तुम्हारी शक्ति बढ़ायेगा और तुम्हें उस दुष्ट से बचाये रखेगा। [4]हमें प्रभु में तुम्हारी स्थिति के विषय में विश्वास है। और हमें पूरा निश्चय है कि हमने तुम्हें जो कुछ करने को कहा है, तुम वैसे ही कर रहे हो और करते रहोगे।[5]प्रभु तुम्हारे हृदयों को परमेश्वर के प्रेम और मसीह की धैर्यपूर्ण दृढ़ता की ओर अग्रसर करे।

कर्म की अनिवार्यता

[6]भाइयो! अब तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में यह आदेश है कि तुम हर उस भाई से दूर रहो जो ऐसा जीवन जीता है जो उस के लिए उचित नहीं है। [7]मैं यह इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि तुम तो स्वयं ही जानते हो कि तुम्हें हमारा अनुकरण कैसे करना चाहिये क्योंकि तुम्हारे बीच रहते हुए हम कभी आलसी नहीं रहे। [8]हमने बिना मूल्य चुकाये किसी से भोजन ग्रहण नहीं किया, बल्कि जतन और परिश्रम करते हुए हम दिन रात काम में जुटे रहे ताकि तुममें से किसी पर भी बोझ न पड़े। [9]ऐसा नहीं कि हमें तुमसे सहायता लेने का कोई अधिकार नहीं है, बल्कि हम इसलिये कड़ी मेहनत करते रहे ताकि तुम उसका अनुसरण कर सको। [10]इसीलिये हम जब तुम्हारे साथ थे, हमने तुम्हें यह आदेश दिया था: "यदि कोई काम न करना चाहे तो वह खाना भी न खाये।"

[11]हमें ऐसा बताया गया है कि तुम्हारे बीच कुछ ऐसे भी हैं जो ऐसा जीवन जीते हैं जो उनके अनुकूल नहीं है। वे कोई काम नहीं करते, दूसरों की बातों में टाँग अड़ाते हुए इधर–उधर घूमते फिरते हैं। [12]ऐसे लोगों को हम यीशु मसीह के नाम पर समझाते हुए आदेश देते हैं कि वे शांति के साथ अपना काम करें और अपनी कमाई का ही खाना खायें। [13]किन्तु हे भाइयो, जहाँ तक तुम्हारी बात है, भलाई करते हुए कभी थको मत।

[14]इस पत्र के माध्यम से दिये गये हमारे आदेशों पर यदि कोई न चले तो उस व्यक्ति पर नजर रखो और उसकी संगत से दूर रहो ताकि उसे लज्जा आये। [15]किन्तु उसके

साथ शत्रु जैसा व्यवहार मत करो बल्कि भाई के समान उसे चेताओ।

पत्र का समापन

[16]अब शांति का प्रभु स्वयं तुम्हें हर समय, हर प्रकार से शांति दे। प्रभु तुम सब के साथ रहे।

[17]मैं पौलुस स्वयं अपनी लिखावट में यह नमस्कार लिख रहा हूँ।

मैं इसी प्रकार हर पत्र पर हस्ताक्षर करता हूँ। मेरे लिखने की शैली यही है।

[18]हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर बना रहे।

1 तीमुथियुस

1 पौलुस की ओर से, जो हमारे उद्धार करने वाले परमेश्वर और हमारी आशा मसीह यीशु के आदेश से मसीह यीशु का प्रेरित बना है,

[2]तिमुथियुस को जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है, परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह, दया और शांति प्राप्त हो।

झूठे उपदेशों के विरोध में चेतावनी

[3]मार्कदुनिया जाते समय मैंने तुझसे जो इफिसुस में ठहरे रहने को कहा था, मैं अब भी उसी आग्रह को दोहरा रहा हूँ। ताकि तू वहाँ कुछ लोगों को झूठी शिक्षाएँ देते रहने, [4]काल्पनिक कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर जो लड़ाई–झगड़ों को बढ़ावा देती हैं और परमेश्वर के उस प्रयोजन को सिद्ध नहीं होने देतीं, जो विश्वास पर टिका है, ध्यान देने से रोक सके। [5] इस आग्रह का प्रयोजन है वह प्रेम जो पवित्र हृदय, उत्तम चेतना और छल रहित विश्वास से उत्पन्न होता है। [6]कुछ लोग तो इन बातों से छिटक कर भटक गये हैं और बेकार के वाद–विवादों में जा फँसे हैं। [7] वे व्यवस्था के विधान के उपदेशक तो बनना चाहते हैं, पर जो कुछ वे कह रहे हैं या जिन बातों पर वे बहुत बल दे रहे हैं, उन तक को वे नहीं समझते।

[8]हम अब यह जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था के विधान का ठीक ठीक प्रकार से प्रयोग करे, तो व्यवस्था उत्तम है। [9]अर्थात् यह जानते हुए कि व्यवस्था का विधान धर्मियों के लिये नहीं बल्कि उद्दण्डों, विद्रोहियों, अश्रद्धालुओं, पापियों, अपवित्रों, अधार्मिकों, माता–पिता को मार डालने वालों, हत्यारों, [10]व्यभिचारियों, समलिंग कामुकों, शोषण कर्त्ताओं, मिथ्या वादियों, कसम तोड़ने वालों या ऐसे ही अन्य कामों के लिए हैं, जो उत्तम शिक्षा के विरोध में हैं। [11]वह शिक्षा परमेश्वर के महिमा–मय सुसमाचार के अनुकूल है। वह सुधन्य परमेश्वर से प्राप्त होती है। और उसे मुझे सौंपा गया है।

परमेश्वर के अनुग्रह का धन्यवाद

[12]मैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह का धन्यवाद करता हूँ। मुझे उसी ने शक्ति दी है। उसने मुझे विश्वसनीय समझ कर अपनी सेवा में नियुक्त किया है। [13]यद्यपि पहले मैं उसका अपमान करने वाला, सताने वाला तथा एक अविनीत व्यक्ति था किन्तु मुझ पर दया की गयी क्योंकि एक अविश्वासी के रूप में यह नहीं जानते हुए कि मैं क्या कुछ कर रहा हूँ, मैंने सब कुछ किया [14]और प्रभु का अनुग्रह मुझे बहुतायत से मिला, और साथ ही वह विश्वास और प्रेम भी जो मसीह यीशु में है।

[15]यह कथन सत्य है और हर किसी के स्वीकार करने योग्य है कि यीशु मसीह इस संसार में पापियों का उद्धार करने के लिए आया है। फिर मैं तो सब से बड़ा पापी हूँ। [16]और इसीलिये तो मुझ पर दया की गयी। कि मसीह यीशु एक बड़े पापी के रूप में मेरा उपयोग करते हुए आगे चल कर जो लोग उसमें विश्वास ग्रहण करेंगे, उनके लिये अनंत जीवन प्राप्ति के हेतु एक उदाहरण के रूप में मुझे स्थापित कर अपनी असीम सहनशीलता प्रदर्शित कर सके। [17]अब उस अनन्त सम्राट अविनाशी, अदृश्य एक मात्र परमेश्वर का युग युगान्तर तक सम्मान और महिमा होती रहे। आमीन!

[18]मेरे पुत्र तीमुथियुस, भविष्यवक्ताओं के वचनों के अनुसार बहुत पहले से ही तेरे सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियाँ कर दी गयी थीं, मैं तुझे ये आदेश दे रहा हूँ, ताकि तू उनके अनुसार [19]विश्वास और उत्तम चेतना से युक्त हो कर नेकी की लड़ाई लड़ सके। कुछ ऐसे हैं जिनकी उत्तम चेतना और विश्वास नष्ट हो गये हैं। [20]हुमिनयुस और सिकंदर ऐसे ही हैं। मैंने उन्हें शैतान को सौंप दिया है

ताकि उन्हें परमेश्वर के विरोध में परमेश्वर की निन्दा करने से रोकने का पाठ पढ़ाया जा सके।

स्त्री-पुरुषों के लिये कुछ नियम

2 सबसे पहले मेरा विशेष रूप से यह निवेदन है कि सबके लिये आवेदन, प्रार्थनाएँ, अनुरोध और सब व्यक्तियों की ओर से धन्यवाद दिए जाएँ। [2]शासकों और सभी अधिकारियों को धन्यवाद दिये जाएँ। ताकि हम चैन के साथ शांतिपूर्वक सम्पूर्ण श्रद्धा और परमेश्वर के प्रति सम्मान से पूर्ण जीवन जी सकें। [3]यह हमारे उद्धार-कर्त्ता परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है। यह उत्तम है। [4]वह सभी व्यक्तियों का उद्धार चाहता है और चाहता है कि वे सत्य को पहचानें [5]क्योंकि परमेश्वर एक ही है और मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में मध्यस्थ भी एक ही है। वह स्वयं एक मनुष्य है, मसीह यीशु। [6]उसने सब लोगों के लिये स्वयं को फिरौती के रूप में दे डाला है। इस प्रकार उसने उचित समय पर इसकी साक्षी दी। [7]तथा इसी साक्षी का प्रचार करने के लिये मुझे एक प्रचारक और प्रेरित नियुक्त किया गया। (यह मैं सत्य कह रहा हूँ, झूठ नहीं) मुझे विधर्मियों के लिये विश्वास तथा सत्य के उपदेशक के रूप में भी ठहराया गया।

[8]इसीलिये मेरी इच्छा है कि हर कहीं सब पुरुष पवित्र हाथों को ऊपर उठाकर परमेश्वर के प्रति समर्पित हो बिना किसी क्रोध अथवा मन-मुटाव के प्रार्थना करें।

[9]इसी प्रकार स्त्रियों से भी मैं यह चाहता हूँ कि वे सीधी-सादी वेश-भूषा में शालीनता और आत्म-नियन्त्रण के साथ रहें। अपने आप को सजाने सँवारने के लिये वे केशों की वेणियाँ न सजायें तथा सोने, मोतियों और बहुमूल्य वस्त्रों से श्रृंगार न करें [10]बल्कि ऐसी स्त्रियों को जो अपने आप को परमेश्वर की उपासिका मानती हैं, उनके लिए उचित यह है कि वे स्वयं को उत्तम कार्यों से सजायें।

[11]एक स्त्री को चाहिये कि वह शांत भाव से समग्र समर्पण के साथ शिक्षा ग्रहण करे। [12]मैं यह नहीं चाहता कि कोई स्त्री किसी पुरुष को सिखाए पढ़ाये अथवा उस पर शासन करे। बल्कि उसे तो चुपचाप ही रहना चाहिए। [13]क्योंकि आदम को पहले बनाया गया था और तब पीछे हव्वा को। [14]आदम को बहकाया नहीं जा सका था किन्तु स्त्री को बहका लिया गया और वह पाप में पतित हो गयी। [15]किन्तु यदि वे माँ पने के कर्तव्यों को निभाते हुए विश्वास, प्रेम, पवित्रता और परमेश्वर के प्रति समर्पण में बनी रहें तो उद्धार को अवश्य प्राप्त करेंगी।

कलीसिया के निरीक्षक

3 यह एक विश्वास करने योग्य कथन है कि यदि कोई निरीक्षक बनना चाहता है तो वह एक अच्छे काम की इच्छा रखता है। [2]अब देखो उसे एक ऐसा जीवन जीना चाहिये जिसकी लोग न्यायसंगत आलोचना न कर पायें। उसके एक ही पत्नी होनी चाहिये। उसे शालीन होना चाहिये, आत्मसंयमी, सुशील तथा अतिथिसत्कार करने वाला एवं शिक्षा देने में निपुण होना चाहिये। [3]वह पियक्कड़ नहीं होना चाहिये, न ही उसे झगड़ालू होना चाहिये। उसे तो सज्जन तथा शांति-प्रिय होना चाहिये।उसे पैसे का प्रेमी नहीं होना चाहिये। [4]अपने परिवार का वह अच्छा प्रबन्धक हो तथा उसके बच्चे उसके नियन्त्रण में रहते हों। उसका पूरा सम्मान करते हों। [5](यदि कोई अपने परिवार का ही प्रबन्ध करना नहीं जानता तो वह परमेश्वर की कलीसिया का प्रबन्ध कैसे कर पायेगा?) [6]वह एक नया शिष्य नहीं होना चाहिये ताकि वह अहंकार से फूल न जाये। और उसे शैतान का जैसा ही दण्ड पाना पड़े। [7]इसके अतिरिक्त बाहर के लोगों में भी उसका अच्छा नाम हो ताकि वह किसी आलोचना में फँस कर शैतान के फंदे में न पड़ जाये।

कलीसिया के सेवक

[8]इसी प्रकार कलीसिया के सेवकों को भी सम्मानीय होना चाहिये जिसके शब्दों पर विश्वास किया जाता हो। मदिरा पान में उसकी रुचि नहीं होनी चाहिये। बुरे रास्तों से उन्हें धन कमाने का इच्छुक नहीं होना चाहिये। [9]उन्हें तो पवित्र मन से हमारे विश्वास के गहन सत्यों को थामे रखना चाहिये। [10]इनको भी पहले निरीक्षकों के समान परखा जाना चाहिये। फिर यदि उनके विरोध में कुछ न हो तभी इन्हें कलीसिया के सेवक के रूप में सेवा-कार्य करने देना चाहिये। [11]इसी प्रकार स्त्रियों को भी सम्मान के योग्य होना चाहिए। वे निंदक नहीं होनी चाहियें बल्कि शालीन और हर बात में विश्वसनीय होनी चाहियें। [12]कलीसिया के सेवक के केवल एक ही पत्नी होनी चाहिये तथा उसे अपने बाल-बच्चों तथा अपने घरानों

का अच्छा प्रबन्धक होना चाहिये। [13]क्योंकि यदि वे कलीसिया के ऐसे सेवक के रूप में होंगे जो उत्तम सेवा प्रदान करते हैं, तो वे अपने लिये सम्मानपूर्ण स्थान अर्जित करेंगे। यीशु मसीह के प्रति विश्वास में निश्चय ही उनकी आस्था होगी।

हमारे जीवन का रहस्य

[14]मैं इस आशा के साथ तुम्हें ये बातें लिख रहा हूँ कि जल्दी ही तुम्हारे पास आऊँगा। [15]यदि मुझे आने में समय लग जाये तो तुम्हें पता रहे कि परमेश्वर के परिवार में, जो सजीव परमेश्वर की कलीसिया है, किसी को अपना व्यवहार कैसा रखना चाहिये। कलीसिया ही सत्य की नींव और आधार स्तम्भ है। [16]हमारे धर्म के सत्य का रहस्य निस्सन्देह महान् है :

वह नर देह धर प्रकट हुआ,
आत्मा ने उसे नेक साधा,
स्वर्गदूतों ने उसे देखा,
वह राष्ट्रों में प्रचारित हुआ,।
जग ने उस पर विश्वास किया,
और उसे महिमा में ऊपर उठाया गया।

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

4 आत्मा ने स्पष्ट रूप से कहा है कि आगे चल कर कुछ लोग भटकाने वाले झूठे भविष्यवक्ताओं के उपदेशों और दुष्टात्माओं की शिक्षा पर ध्यान देने लगेंगे और विश्वास से भटक जायेंगे। [2]उन झूठे पाखण्डी लोगों के कारण ऐसा होगा जिनका मन मानो तपते लोहे से दाग दिया गया हो। [3]वे विवाह का निषेध करेंगे। कुछ वस्तुएँ खाने को मना करेंगे जिन्हें परमेश्वर के विश्वासियों तथा जो सत्य को पहचानते हैं, उनके लिये धन्यवाद देकर ग्रहण कर लेने को बनाया गया है। [4]क्योंकि परमेश्वर की रची हर वस्तु उत्तम है तथा कोई भी वस्तु त्यागने योग्य नहीं है बशर्ते उसे धन्यवाद के साथ ग्रहण किया जाये। [5]क्योंकि वह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना से पवित्र हो जाती है।

मसीह के उत्तम सेवक बनो

[6]यदि तुम भाइयों को इन बातों का ध्यान दिलाते रहोगे तो मसीह यीशु के ऐसे उत्तम सेवक ठहरोगे जिसका पालन–पोषण, विश्वास के द्वारा और उसी सच्ची शिक्षा के द्वारा होता है जिसे तू ने ग्रहण किया है। [7]बुढ़ियाओं की परमेश्वर विहीन कल्पित कथाओं से दूर रहो तथा परमेश्वर की सेवा के लिये अपने को साधने में लगे रहो। [8]क्योंकि शारीरिक साधना से तो थोड़ा सा ही लाभ होता है जबकि परमेश्वर की सेवा हर प्रकार से मूल्यवान है क्योंकि इसमें आज के समय और आने वाले जीवन के लिये दिया गया आशीर्वाद समाया हुआ है। [9]इस बात पर पूरी तरह निर्भर किया जा सकता है और यह पूरी तरह ग्रहण करने योग्य है। [10]और हम लोग इसीलिये कठिन परिश्रम करते हुए जूझते रहते हैं। हमने अपनी आशाएँ सबके, विशेष कर विश्वासियों के, उद्धारकर्त्ता सजीव परमेश्वर पर टिका दी हैं।

[11]इन्हीं बातों का आदेश और उपदेश दो। [12]तू अभी युवक है। इसी से कोई तुझे तुच्छ न समझे। बल्कि तू अपनी बात–चीत, चाल–चलन, प्रेम–प्रकाशन, अपने विश्वास और पवित्र जीवन से विश्वासियों के लिये एक उदाहरण बन जा। [13]जब तक मैं आऊँ तू शास्त्रों के सार्वजनिक पाठ करने, उपदेश और शिक्षा देने में अपने आप को लगाये रख। [14]तुझे जो वरदान प्राप्त है, तू उसका उपयोग कर यह तुझे नबियों की भविष्यवाणी के परिणामस्वरूप बुजुर्गों के द्वारा तुझ पर हाथ रख कर दिया गया है। [15]इन बातों पर पूरा ध्यान लगाये रख। इन ही में स्थित रह ताकि तेरी प्रगति सब लोगों के सामने प्रकट हो। [16]अपने जीवन और उपदेशों का विशेष ध्यान रख। उन ही पर टिका रह क्योंकि ऐसा आचरण करते रहने से तू स्वयं अपने आपका और अपने सुनने वालों का उद्धार करेगा।

व्यवहार के कुछ नियम

5 किसी बड़ी आयु के व्यक्ति के साथ कठोरता से मत बोलो, बल्कि उन्हें पिता के रूप में देखते हुए उनके प्रति विनम्र रहो। अपने से छोटों के साथ भाइयों जैसा बर्ताव करो। [2]बड़ी महिलाओं को माँ समझो तथा युवा स्त्रियों को अपनी बहन समझ कर पूर्ण पवित्रता के साथ बर्ताव करो।

[3]उन विधवाओं का विशेष ध्यान रखो जो वास्तव में विधवा हैं। [4]किन्तु यदि किसी विधवा के पुत्र–पुत्री अथवा नाती–पोते हैं तो उन्हें सबसे पहले अपने धर्म पर चलते

हुए अपने परिवार की देखभाल करना सीखना चाहिये। उन्हें चाहिये कि वे अपने माता–पिताओं के पालन–पोषण का बदला चुकायें क्योंकि इससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। [5]वह स्त्री जो वास्तव में विधवा है और जिसका ध्यान रखने वाला कोई नहीं है, तथा परमेश्वर ही जिसकी आशाओं का सहारा है वह दिन रात विनती तथा प्रार्थना में लगी रहती है। [6]किन्तु विषय भोग की दास विधवा जीते जी मरे हुए के समान है। [7]इसलिये विश्वासी लोगों को इन बातों का (उनकी सहायता का) आदेश दो ताकि कोई भी उनकी आलोचना न कर पाये। [8]किन्तु यदि कोई अपने रिश्तेदारों, विशेषकर अपने परिवार के सदस्यों की सहायता नहीं करता, तो वह विश्वास से फिर गया है तथा किसी अविश्वासी से भी अधिक बुरा है।

[9]उन विधवाओं की विशेष सूची में जो आर्थिक सहायता ले रही हैं उसी विधवा का नाम लिखा जाये जो कम से कम साठ साल की हो चुकी हो तथा जो पतिव्रता रही हो [10]तथा जो बाल बच्चों को पालते हुए, अतिथि सत्कार करते हुए, पवित्र लोगों के पांव धोते हुए दुखियों की सहायता करते हुए, अच्छे कामों के प्रति समर्पित हो कर सब तरह के उत्तम कार्यों के लिये जानी–मानी जाती हो।

[11]किन्तु युवती–विधवाओं को इस सूची में सम्मिलित मत करो क्योंकि मसीह के प्रति उनके समर्पण पर जब उनकी विषय वासना पूर्ण इच्छाएँ हावी होती हैं तो वे फिर विवाह करना चाहतीं हैं। [12]वे अपराधिनी हैं क्योंकि उन्होंने अपनी मूलभूत प्रतिज्ञा को तोड़ा है। [13]इसके अतिरिक्त उन्हें आलस की आदत पड़ जाती है। वे एक घर से दूसरे घर घूमती फिरती हैं तथा वे न केवल आलसी हो जाती हैं, बल्कि वे बातूनी बन कर लोगों के कामों में टाँग अड़ाने लगती हैं और ऐसी बातें बोलने लगती हैं जो उन्हें नहीं बोलनी चाहियें। [14]इसलिए मैं चाहता हूँ कि युवती– विधवाएँ विवाह कर लें और संतान का पालनपोषण करते हुए अपने घर बार की देखभाल करें ताकि हमारे शत्रुओं को हम पर कटाक्ष करने का कोई अवसर न मिल पाये। [15]मैं यह इसलिये बता रहा हूँ कि कुछ विधवाएँ भटक कर शैतान के पीछे चलने लगी हैं।

[16]यदि किसी विश्वासी महिला के घर में विधवाएँ हैं तो उसे उनकी सहायता स्वयं करनी चाहिए और कलीसिया पर कोई भार नहीं डालना चाहिये ताकि कलीसिया सच्ची विधवाओं की सहायता कर सके।

[17]जो बुजुर्ग कलीसिया की उत्तम अगुआई करते हैं, वे दुगुने सम्मान के पात्र होने चाहियें। विशेष कर वे जिनका काम उपदेश देना और पढ़ाना है। [18]क्योंकि शास्त्र में कहा गया है, "बैल जब खलिहान में हो तो उसका मुँह मत बाँधो।'* तथा, "मज़दूर को अपनी मज़दूरी पाने का अधिकार है।"*

[19]किसी बुजुर्ग पर लगाये गये किसी लांछन को तब तक स्वीकार मत करो जब तक दो या तीन गवाहियाँ न हों। [20]जो सदा पाप में लगे रहते हैं उन्हें सब के सामने डाँटो–फटकारो ताकि बाकी के लोग भी डरें।

[21]परमेश्वर, यीशु मसीह और चुने हुए स्वर्गदूतों के सामने मैं सचाई के साथ आदेश देता हूँ कि तू बिना किसी पूर्वाग्रह के इन बातों का पालन कर। पक्षपात के साथ कोई काम मत कर।

[22]बिना विचारे किसी को कलीसिया का मुखिया बनाने के लिए उस पर जल्दी में हाथ मत रख। किसी के पापों में भागीदार मत बन। अपने को सदा पवित्र रख।

[23]केवल पानी ही मत पीता रह। बल्कि अपने हाज़मे और बार बार बीमार पड़ने से बचने के लिए थोड़ा सा दाखरस भी ले लिया कर।

[24]कुछ लोगों के पाप स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं और न्याय के लिये प्रस्तुत कर दिये जाते हैं किन्तु दूसरे लोगों के पाप बाद में प्रकट होते हैं। [25]इसी प्रकार भले कार्य भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं किन्तु जो प्रकट नहीं होते वे भी छिपे नहीं रह सकते।

6 लोग जो अंधविश्वासियों के जूए के नीचे दास बने हैं, उन्हें अपने स्वामियों को सम्मान के योग्य समझना चाहिये ताकि परमेश्वर के नाम और हमारे उपदेशों की निन्दा न हो। [2]और ऐसे दासों को भी जिनके स्वामी विश्वासी हैं, बस इसलिये कि वे उनके धर्म भाई हैं, उनके प्रति कम सम्मान नहीं दिखाना चाहिये, बल्कि उन्हें तो अपने स्वामियों की और अधिक सेवा करनी चाहिये क्योंकि जिन्हें इसका लाभ मिल रहा है, वे विश्वासी हैं, जिन्हें वे प्रेम करते हैं।

मिथ्या उपदेश और सच्चा धन

इन बातों को सिखाते रहो तथा इनका प्रचार करते रहो। [3]यदि कोई इनसे भिन्न बातें सिखाता है तथा हमारे

बैल ... बाँधो व्यवस्था. 25:4
मजदूर ... है लूका 10:7

प्रभु यीशु मसीह के उन सद्‌वचनों को नहीं मानता है तथा भक्ति से परिपूर्ण शिक्षा से सहमत नहीं है [4]तो वह अहंकार में फूला है तथा कुछ भी नहीं जानता है। वह तो कुतर्क करने और शब्दों को लेकर झगड़ने के रोग से घिरा है। इन बातों से तो ईर्ष्या, बैर, निन्दा–भाव तथा गाली–गलौज [5]एवम् उन लोगों के बीच जिनकी बुद्धि बिगड़ गयी है, निरन्तर बने रहने वाले मतभेद पैदा होते हैं, वे सत्य से वंचित हैं। ऐसे लोगों का विचार है कि परमेश्वर की सेवा धन कमाने का ही एक साधन है।

[6]निश्चय ही परमेश्वर की सेवा–भक्ति से ही व्यक्ति सम्पन्न बनता है। इसी से संतोष मिलता है। [7]क्योंकि हम संसार में न तो कुछ लेकर आये थे और न ही यहाँ से कुछ लेकर जा पाएँगे। [8]सो यदि हमारे पास रोटी और कपड़ा है तो हम उसी में सन्तुष्ट हैं। [9]किन्तु वे जो धनवान बनना चाहते हैं, प्रलोभनों में पड़कर जाल में फँस जाते हैं तथा उन्हें ऐसी अनेक मूर्खतापूर्ण और विनाशकारी इच्छाएँ घेर लेती हैं जो लोगों को पतन और विनाश की खाई में ढकेल देती हैं। [10]क्योंकि धन का प्रेम हर प्रकार की बुराई को जन्म देता है। कुछ लोग अपनी इच्छाओं के कारण ही विश्वास से भटक गये हैं और उन्होंने अपने लिये महान दुख की सृष्टि कर ली है।

याद रखने योग्य बातें

[11]किन्तु हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से दूर रह तथा धार्मिकता, भक्तिपूर्ण सेवा, विश्वास, प्रेम, धैर्य और सज्जनता में लगा रह। [12]हमारा विश्वास जिस उत्तम स्पर्द्धा की अपेक्षा करता है, तू उसी के लिये संघर्ष करता रह और अपने लिये अनन्त जीवन को अर्जित कर ले। तुझे उसी के लिये बुलाया गया है। तूने बहुत से साक्षियों के सामने उसे बहुत अच्छी तरह स्वीकारा है। [13]परमेश्वर के सामने, जो सबको जीवन देता है तथा यीशु मसीह के सम्मुख जिसने पुन्तियुस पिलातुस के सामने बहुत अच्छी साक्षी दी थी, मैं तुझे यह आदेश देता हूँ कि [14]जब तक हमारा प्रभु यीशु मसीह प्रकट होता है, तब तक तुझे जो आदेश दिया गया है, तू उसी पर बिना कोई कमी छोड़े हुए निर्दोष भाव से चलता रह। [15]वह उस परम धन्य, एक छत्र, राजाओं के राजा और सम्राटों के प्रभु को उचित समय आने पर प्रकट कर देगा। [16]वह अगम्य प्रकाश का निवासी है। उसे न किसी ने देखा है, न कोई देख सकता है। उसका सम्मान और उसकी अनन्त शक्ति का विस्तार होता रहे। आमीन।

[17]वर्तमान युग की वस्तुओं के कारण जो धनवान बने हुए हैं, उन्हें आज्ञा दे कि वे अभिमान न करें। अथवा उस धन से जो शीघ्र चला जाएगा कोई आशा न रखें। परमेश्वर पर ही अपनी आशा टिकायें जो हमें हमारे आनन्द के लिये सब कुछ भरपूर देता है। [18]उन्हें आज्ञा दे कि वे अच्छे–अच्छे काम करें। उत्तम कामों से ही धनी बनें। उदार रहें और दूसरों के साथ अपनी वस्तुएँ बाँटें। [19]ऐसा करने से ही वे एक स्वर्गीय कोष का संचय करेंगे जो भविष्य के लिये सुदृढ़ नींव सिद्ध होगा। इसी से वे सच्चे जीवन को थामे रहेंगे।

[20]तीमुथियुस, तुझे जो सौंपा गया है, तू उसकी रक्षा कर। व्यर्थ की सांसारिक बातों से बचा रह। तथा जो "मिथ्या ज्ञान" से सम्बन्धित व्यर्थ के विरोधी विश्वास हैं, उनसे दूर रह क्योंकि [21]कुछ लोग उन्हें स्वीकार करते हुए विश्वास से डिग गये हैं। परमेश्वर का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

2 तीमुथियुस

तिमुथियुस के नाम

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है और जिसे यीशु मसीह में जीवन पाने की प्रतिज्ञा का प्रचार करने के लिये भेजा गया है:

[2]प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम। परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुझे करुणा, अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

धन्यवाद तथा प्रोत्साहन

[3]रात दिन अपनी प्रार्थनाओं में निरन्तर तुम्हारी याद करते हुए, मैं उस परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, और उसकी सेवा अपने पूर्वजों की रीति के अनुसार शुद्ध मन से करता हूँ। [4]मेरे लिये तुमने जो आँसू बहाये हैं, उनकी याद करके मैं तुमसे मिलने को आतुर हूँ, ताकि आनन्द से भर उठूँ। [5]मुझे तेरा वह सच्चा विश्वास भी याद है जो पहले तेरी नानी लोईस और तेरी माँ यूनीके में था। मुझे भरोसा है कि वही विश्वास तुझमें भी है। [6]इसीलिये मैं तुझे याद दिला रहा हूँ कि परमेश्वर के बरदान की उस ज्वाला को जलाये रख जो तुझे तब प्राप्त हुई थी जब तुझ पर मैंने अपना हाथ रखा था। [7]क्योंकि परमेश्वर ने हमें जो आत्मा दी है, वह हमें कायर नहीं बनाती बल्कि हमें प्रेम, संयम और शक्ति से भर देती है।

[8]इसलिये तू हमारे प्रभु या मेरी जो उसके लिये बंदी बना हुआ है, साक्षी देने से लजा मत। बल्कि तुझे परमेश्वर ने जो शक्ति दी है, उससे सुसमाचार के लिये यातनाएँ झेलने में मेरा साथ दे। [9]उसी ने हमारी रक्षा की है और पवित्र जीवन के लिये हमें बुलाया है–हमारे अपने किये कमो5 के आधार पर नहीं, बल्कि उसके अपने उस प्रयोजन और अनुग्रह के अनुसार जो परमेश्वर द्वारा यीशु मसीह में हमें पहले ही अनादि काल से सौंप दिया गया है। [10]किन्तु अब हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के प्रकट होने के साथ–साथ हमारे लिये प्रकाशित किया गया है। उसने मृत्यु का अंत कर दिया तथा जीवन और अमरता को सुसमाचार के द्वारा प्रकाशित किया है। [11]इसी सुसमाचार को फैलाने के लिये मुझे एक प्रचारक, प्रेरित और शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया है। [12]और यही कारण है जिससे मैं इन बातों का दुख उठा रहा हूँ। और फिर भी लज्जित नहीं हूँ क्योंकि जिस पर मैंने विश्वास किया है, मैं उसे जानता हूँ और मैं यह मानता हूँ कि उसने मुझे जो सौंपा है, वह उसकी रक्षा करने में समर्थ है जब तक वह दिन* आये, [13]उस उत्तम शिक्षा को जिसे तूने मुझसे यीशु मसीह में प्राप्त होने वाले विश्वास और प्रेम के साथ सुना है तू जो सिखाता है उसका आदर्श वही उत्तम शिक्षा है। [14]हमारे भीतर निवास करने वाली पवित्र आत्मा के द्वारा तू उस बहुमूल्य धरोहर की रखवाली कर जिसे तुझे सौंपा गया है।

[15]जैसा कि तू जानता है कि वे सभी जो एशिया में रहते हैं, मुझे छोड़ गये हैं। फुगिलुस और हिरमुगिनेस उन्हीं में से हैं। [16]उनेसिफिरुस के परिवार पर प्रभु अनुग्रह करे। क्योंकि उसने अनेक अवसरों पर मुझे सुख पहुँचाया है। तथा वह मेरे जेल में रहने से लज्जित नहीं हुआ है। [17]बल्कि वह तो जब रोम आया था, जब तक मुझसे मिल नहीं लिया, यत्नपूर्वक मुझे ढूँढता रहा। [18]प्रभु करे उसे, उस दिन प्रभु की ओर से दया प्राप्त हो, उसने इफिसुस में मेरी तरह तरह से जो सेवाएँ की हैं तू उन्हें बहुत अच्छी तरह जानता है।

मसीह यीशु का सच्चा सिपाही

2 जहाँ तक तुम्हारी बात है, मेरे पुत्र, यीशु मसीह में प्राप्त होने वाले अनुग्रह से सुदृढ़ हो जा। [2]बहुत से

वह दिन अर्थात् वह दिन जब सभी लोगों का न्याय करने के लिए यीशु मसीह आएगा और उन्हें अपने साथ रहने के लिए ले जाएगा।

लोगों की साक्षी में मुझसे तूने जो कुछ सुना है, उसे उन विश्वास करने योग्य व्यक्तियों को सौंप दे जो दूसरों को भी शिक्षा देने में समर्थ हों। [3]यातनाएँ झेलने में मसीह यीशु के एक उत्तम सैनिक के समान मेरे साथ आ मिल। [4]ऐसा कोई भी, जो सैनिक के समान सेवा कर रहा है, अपने आपको साधारण जीवन के जंजाल में नहीं फँसाता क्योंकि वह अपने शासक अधिकारी को प्रसन्न करने के लिये यत्नशील रहता है। [5]और ऐसे ही यदि कोई किसी दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेता है, तो उसे विजय का मुकुट उस समय तक नहीं मिलता, जब तक कि वह नियमों का पालन करते हुए प्रतियोगिता में भाग नहीं लेता। [6]परिश्रमी कामगार किसान ही उपज का सबसे पहला भाग पाने का अधिकारी है। [7]मैं जो बताता हूँ, उस पर विचार कर। प्रभु तुझे सब कुछ समझने की क्षमता प्रदान करेगा।

[8]यीशु मसीह का स्मरण करते रहो जो मरे हुओं में से पुनर्जीवित हो उठा है और जो दाऊद का वंशज है। यही उस सुसमाचार का सार है जिसका मैं उपदेश देता हूँ [9]इसी के लिये मैं यातनाएँ झेलता हूँ। यहाँ तक कि एक अपराधी के समान मुझे ज़ंजीरों से जकड़ दिया गया है। किन्तु परमेश्वर का वचन तो बंधन रहित है। [10]इसी कारण परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिये मैं हर दुःख उठाता रहता हूँ ताकि वे भी मसीह यीशु में प्राप्त होने वाले उद्धार को अनन्त महिमा के साथ प्राप्त कर सकें।

[11]यह वचन विश्वास के योग्य है कि:

यदि हम उसके साथ मरे हैं,
तो उस ही के साथ जीयेंगे,
[12] यदि दुःख उठाये हैं
तो उसके साथ शासन भी करेंगे।
यदि हम उसको छोड़ तजेंगे,
तो वह भी हमको तज देगा,
[13] हम चाहे विश्वास हीन हों
पर वह सदा सर्वदा विश्वसनीय रहेगा
क्योंकि नहीं हो सकता है
वह आत्म निषेधी,
अपने ही प्रति, मिथ्या वादी।

स्वीकृत कार्यकर्त्ता

[14]लोगों को इन बातों का ध्यान दिलाते रहो और परमेश्वर को साक्षी करके उन्हें सावधान करते रहो कि वे शब्दों को लेकर लड़ाई झगड़ा न करें। ऐसे लड़ाई झगड़ों से कोई लाभ नहीं होता, बल्कि इन्हें जो सुनते हैं, वे भी नष्ट हो जाते हैं। [15]अपने आप को परमेश्वर द्वारा ग्रहण करने योग्य बनाकर एक ऐसे सेवक के रूप में प्रस्तुत करने का यत्न करते रहो जिससे किसी बात के लिये लज्जित होने की आवश्यकता न हो। और जो परमेश्वर के सत्य वचन का सही ढंग से उपयोग करता है। [16]और सांसारिक वाद विवादों तथा व्यर्थ की बातों से बचा रहता है। क्योंकि ये बातें लोगों को परमेश्वर से दूर ले जाती हैं। [17]ऐसे लोगों की शिक्षाएँ नासूर की तरह फैलेंगी। हुमिनयुस और फिलेतुस ऐसे ही हैं। [18]जो सचाई के बिन्दु से भटक गये हैं। उनका कहना है कि पुनरुत्थान तो अब तक हो भी चुका है। ये कुछ लोगों के विश्वास को नष्ट कर रहे हैं। [19]कुछ भी हो परमेश्वर ने जिस सुदृढ़ नींव को डाला है, वह दृढ़ता के साथ खड़ी है। उस पर अंकित है, "प्रभु अपने भक्तों को जानता है।"* और "वह हर एक, जो कहता है कि वह प्रभु का है, उसे बुराइयों से बचे रहना चाहिये।"

[20]एक बड़े घर में बस सोने–चाँदी के ही पात्र तो नहीं होते हैं, उसमें लकड़ी और मिट्टी के बरतन भी होते हैं। कुछ विशेष उपयोग के लिए होते हैं और कुछ साधारण उपयोग के लिये। [21]इसलिये यदि व्यक्ति अपने आपको बुराइयों से शुद्ध कर लेता है तो वह विशेष उपयोग का बनेगा और फिर पवित्र बन कर अपने स्वामी के लिये उपयोगी सिद्ध होगा। और किसी भी उत्तम कार्य के लिए तत्पर रहेगा।

[22]जवानी की बुरी इच्छाओं से दूर रहो धार्मिक जीवन, विश्वास, प्रेम और शांति के लिये उन सब के साथ जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम पुकारते हैं, प्रयत्नशील रहो। [23]मूर्खतापूर्ण, बेकार के तर्क वितर्कों से सदा बचे रहो। क्योंकि तुम जानते ही हो कि इनसे लड़ाई–झगड़े पैदा होते हैं। [24]और प्रभु के सेवक को तो झगड़ना ही नहीं चाहिये। उसे तो सब पर दया करनी चाहिये। उसे शिक्षा देने में योग्य होना चाहिये। उसे सहनशील होना चाहिये। [25]उसे अपने विरोधियों को भी इस आशा के साथ कि परमेश्वर उन्हें भी मन फिराव करने की शक्ति देगा, विनम्रता के साथ समझाना चाहिये। ताकि उन्हें भी सत्य का ज्ञान हो जाये [26]और वे सचेत हो कर शैतान के उस

"प्रभु ... है" गिनती 16:5

फन्दे से बच निकलें जिसमें शैतान ने उन्हें जकड़ रखा है ताकि वे परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण कर सकें।

अंतिम दिनों में

3 याद रखो अंतिम दिनों में हम पर बहुत बुरा समय आयेगा। [2]लोग स्वार्थी, लालची, अभिमानी, उद्दण्ड, परमेश्वर के निन्दक, माता–पिता की अवहेलना करने वाले, निर्दय, अपवित्र, [3]प्रेम रहित, क्षमा–हीन, निन्दक, असंयमी, बर्बर, जो कुछ अच्छा है उसके विरोधी, [4]विश्वासघाती, अविवेकी, अहंकारी और परमेश्वर–प्रेमी होने की अपेक्षा सुखवादी हो जायेंगे। [5]वे धर्म के दिखावटी रूप का पालन तो करेंगे किन्तु उसकी भीतरी शक्ति को नकार देंगे। उनसे सदा दूर रहो। [6]क्योंकि इनमें से कुछ ऐसे हैं जो घरों में घुस पैठ करके पापी, दुर्बल इच्छा शक्ति की पापपूर्ण हर प्रकार की इच्छाओं से चलायमान स्त्रियों को वश में कर लेते हैं। [7]ये स्त्रियाँ सीखने का जतन तो सदा करती रहती हैं, किन्तु सत्य के सम्पूर्ण ज्ञान तक वे कभी नहीं पहुँच पातीं। [8]यन्नेस और यम्ब्रेस ने जैसे मूसा का विरोध किया था, वैसे ही ये लोग सत्य के विरोधी हैं। इन लोगों की बुद्धि भ्रष्ट है और विश्वास का अनुसरण करने में ये असफल हैं। [9]किन्तु ये और अधिक आगे नहीं बढ़ पायेंगे क्योंकि जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस की मूर्खता प्रकट हो गयी थी, वैसे ही इनकी मूर्खता भी सबके सामने उजागर हो जायेगी।

अंतिम आदेश

[10]कुछ भी हो, तूने मेरी शिक्षा का पालन किया है। मेरी जीवन–पद्धति, मेरे जीवन के उद्देश्य, मेरे विश्वास, मेरी सहनशीलता, मेरे प्रेम, मेरे धैर्य [11]मेरी उन यातनाओं और पीड़ाओं में मेरा साथ दिया है तुम तो जानते ही हो कि अंताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझे कितनी भयानक यातनाएँ दी गयी थीं जिन्हें मैंने सहा था। किन्तु प्रभु ने उन सबसे मेरी रक्षा की। [12]वास्तव में परमेश्वर की सेवा में जो नेकी के साथ जीना चाहते हैं, सताये ही जायेंगे। [13]किन्तु पापी और ठग दूसरों को छलते हुए तथा स्वयं छले जाते हुए बुरे से बुरे होते चले जायेंगे।

[14]किन्तु तुमने जिन बातों को सीखा और माना है, उन्हें करते जाओ। तुम जानते हो कि उन बातों को तुमने किनसे सीखा है। [15]और तुझे पता है कि तू बचपन से ही पवित्र शास्त्रों को भी जानता है। वे तुझे उस विवेक को दे सकते हैं जिससे मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा छुटकारा मिल सकता है। [16]सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। वह लोगों को सत्य की शिक्षा देने, उनको सुधारने, उन्हें उनकी बुराइयाँ दर्शाने और धार्मिक जीवन के प्रशिक्षण में उपयोगी है। [17]जिससे परमेश्वर का प्रत्येक सेवक शास्त्रों का प्रयोग करते हुए हर प्रकार के उत्तम कार्यों को करने के लिये समर्थ और साधन सम्पन्न होगा।

4 परमेश्वर को साक्षी करके और मसीह यीशु को अपनी साक्षी बना कर जो सभी जीवितों और जो मर चुके हैं, उनका न्याय करने वाला है, और क्योंकि उसका पुन: आगमन तथा उसका राज्य निकट है, मैं तुझे शपथ पूर्वक आदेश देता हूँ: [2]सुसमाचार का प्रचार कर। चाहे तुझे सुविधा हो चाहे असुविधा, अपना कर्तव्य करने को तैयार रह। लोगों को क्या करना चाहिये, उन्हें समझा। जब वे कोई बुरा काम करें, उन्हें चेतावनी दे। लोगों को धैर्य के साथ समझाते हुए प्रोत्साहित कर। [3]मैं यह इसलिये बता रहा हूँ कि एक समय ऐसा आयेगा जब लोग उत्तम उपदेश को सुनना तक नहीं चाहेंगे। वे अपनी इच्छाओं के अनुकूल अपने लिए बहुत से गुरु इकट्ठे कर लेंगे, जो वही सुनाएँगे जो वे सुनना चाहते हैं। [4]वे अपने कानों को सत्य से फेर लेंगे और कल्पित कथाओं पर ध्यान देने लगेंगे। [5]किन्तु तू निश्चयपूर्वक हर परिस्थिति में अपने पर नियन्त्रण रख, यातनाएँ झेल और सुसमाचार के प्रचार का काम कर। जो सेवा तुझे सौंपी गयी है, उसे पूरा कर।

[6]जहाँ तक मेरी बात है, मैं तो अब अर्घ के समान उँडेला जाने पर हूँ। और मेरा तो इस जीवन से विदा लेने का समय भी आ पहुँचा है। [7]मैं उत्तम प्रतिस्पर्द्धा में लगा रहा हूँ। मैं अपनी दौड़ दौड़ चुका हूँ। मैंने विश्वास के पन्थ की रक्षा की है। [8]अब विजय मुकुट मेरी प्रतीक्षा में है। जो धार्मिक जीवन के लिये मिलना है। उस दिन न्यायकर्ता प्रभु मुझे विजय मुकुट पहनायेगा। न केवल मुझे, बल्कि उन सब को जो प्रेम के साथ उसके प्रकट होने की बाट जोहते रहे हैं।

निजी संदेश

[9]मुझसे जितना शीघ्र हो सके, मिलने आने का पूरा प्रयत्न करना। [10]क्योंकि इस जगत के मोह में पड़ कर

देमास ने मुझे त्याग दिया है और वह थिस्सलुनी के चला गया है। क्रेस कैंस गलातिया को तथा तीतुस दलमतिया को चला गया है। [11]केवल लूका ही मेरे पास है। मरकुस के पास जाना और जब तू आये, उसे अपने साथ ले आना क्योंकि मेरे काम में वह मेरा सहायक हो सकता है। [12]तिखिकुस को मैं इफिसुस भेज रहा हूँ।

[13]जब तू आये, तो उस कोट को, जिसे मैं त्रोआस में करपुस के घर छोड़ आया था, ले आना। मेरी पुस्तकों, विशेष कर चर्म–पत्रों को भी ले आना।

[14]ताम्रकार सिकन्दर ने मुझे बहुत हानि पहुँचाई है। उसने जैसा किया है, प्रभु उसे वैसा ही फल देगा। [15]तू भी उस से सचेत रहना क्योंकि वह हमारे उपदेश का घोर विरोध करता रहा है।

[16]प्रारम्भ में जब मैं अपना बचाव प्रस्तुत करने लगा तो मेरे पक्ष में कोई सामने नहीं आया। बल्कि उन्होंने तो मुझे अकेला छोड़ दिया था। परमेश्वर करे उन्हें इसका हिसाब न देना पड़े। [17]मेरे पक्ष में तो प्रभु ने खड़े होकर मुझे शक्ति दी। ताकि मेरे द्वारा सुसमाचार का भरपूर प्रचार हो सके, जिसे सभी ग़ैर यहूदी सुन पायें। सिंह के मुँह से मुझे बचा लिया गया है। [18]किसी भी पापपूर्ण हमले से प्रभु मुझे बचायेगा और अपने स्वर्गीय राज्य में सुरक्षा पूर्वक ले जायेगा। उसकी महिमा सदा सदा होती रहे। आमीन।

पत्र का समापन

[19]प्रिसकिल्ला, अक्विला और उनेसिफुरुस के परिवार को नमस्कार कहना। [20]इरास्तुस कुरिन्थुस में ठहर गया है। मैंने त्रुफिमुस को उसकी बीमारी के कारण मिलेतुस में छोड़ दिया है।

[21]जाड़ों से पहले आने का जतन करना। यूबुलुस, पूदेंस, लिनुस तथा क्लौदिया तथा और सभी भाइयों का तुझे नमस्कार पहुँचे।

[22]प्रभु तेरे साथ रहे। तुम सब पर प्रभु का अनुग्रह हो।

तीतुस

1 पौलुस की ओर से जिसे परमेश्वर के चुने हुए लोगों को उनके विश्वास में सहायता देने के लिये और हमारे धर्म की सचाई के सम्पूर्ण ज्ञान की रहनुमाई के लिए भेजा गया है; [2]वह मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ कि परमेश्वर के चुने हुओं को अनन्त जीवन की आस बँधे। परमेश्वर ने, जो कभी झूठ नहीं बोलता, अनादि काल से अनन्त जीवन का वचन दिया है। [3]उचित समय पर परमेश्वर ने अपने सुसन्देश को उपदेशों के द्वारा प्रकट किया। वही सुसन्देश हमारे उद्धार कर्त्ता परमेश्वर की आज्ञा से मुझे सौंपा गया है।

[4]हमारे समान विश्वास में मेरे सच्चे पुत्र तीतुस को: हमारे परमपिता परमेश्वर और उद्धारकर्ता मसीह यीशु की ओर से अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

क्रेते में तीतुस का कार्य

[5]मैंने तुझे क्रेते में इसलिये छोड़ा था कि वहाँ जो कुछ अधूरा रह गया है, तू उसे ठीक ठाक कर दे और मेरे आदेश के अनुसार हर नगर में बुज़ुर्गों को नियुक्त करे। [6]उसे नियुक्त तभी किया जाये जब वह निर्दोष हो। एक पत्नी व्रती हो। उसके बच्चे विश्वासी हों और अनुशासनहीनता का दोष उन पर न लगाया जा सके। तथा वे निरंकुश भी न हों। [7]निरीक्षक को निर्दोष तथा किसी भी बुराई से अछूता होना चाहिये। क्योंकि जिसे परमेश्वर का काम सौंपा गया है, उसे अड़ियल, चिड़चिड़ा और दाखमधु पीने में उसकी रूचि नहीं होनी चाहिए। उसे झगड़ालू, नीच कमाई का लोलुप नहीं होना चाहिये [8]बल्कि उसे तो अतिथियों की आवभगत करने वाला, नेकी को चाहने वाला, विवेक-पूर्ण, धर्मी, भक्त, तथा अपने पर नियंत्रण रखने वाला होना चाहिये। [9]उसे उस विश्वास करने योग्य संदेश को दृढ़ता से धारण किये रहना चाहिये जिसकी उसे शिक्षा दी गयी है, ताकि वह लोगों को सद्‌शिक्षा देकर उन्हें प्रबोधित कर सके। तथा जो इसके विरोधी हों, उनका खण्डन कर सके।

[10]यह इसलिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से लोग विद्रोही हो कर व्यर्थ की बातें बनाते हुए दूसरों को भटकाते हैं। मैं विशेष रूप से यहूदी पृष्ठभूमि के लोगों का उल्लेख कर रहा हूँ। [11]उनका तो मुँह बन्द किया ही जाना चाहिये। क्योंकि वे जो बातें नहीं सिखाने की हैं, उन्हें सिखाते हुए घर के घर बिगाड़ रहे हैं। बुरे रास्तों से धन कमाने के लिये ही वे ऐसा करते हैं। [12]एक क्रेते के निवासी ने अपने लोगों के बारे में स्वयं कहा है: "क्रेते के निवासी सदा झूठ बोलते हैं, वे जंगली पशु हैं, वे आलसी हैं, पेटू हैं।" [13]यह कथन सत्य है, इसीलिये उन्हें बलपूर्वक डाँटो-फटकारो ताकि उनका विश्वास पक्का हो सके। [14]यहूदियों के पुराने वृत्तान्तों पर और उन लोगों के आदेशों पर, जो सत्य से भटक गये हैं, कोई ध्यान मत दो। [15]पवित्र लोगों के लिये सब कुछ पवित्र है, किन्तु अशुद्ध और जिन में विश्वास नहीं है, उनके लिये कुछ भी पवित्र नहीं है। [16]वे परमेश्वर को जानने का दावा करते हैं। किन्तु उनके कर्म दर्शाते हैं कि वे उसे जानते ही नहीं। वे घृणित और आज्ञा का उल्लंघन करने वाले हैं। तथा किसी भी अच्छे काम को करने में वे असमर्थ हैं।

सच्ची शिक्षा का अनुसरण

2 किन्तु तुम सदा ऐसी बातें बोला करो जो सदशिक्षा के अनुकूल हों। [2]वृद्ध पुरुषों को शिक्षा दो कि वे शालीन और अपने पर नियन्त्रण रखने वाले बनें। वे गंभीर, विवेकी, प्रेम और विश्वास में दृढ़ और धैर्यपूर्वक सहनशील हों।

[3]इसी प्रकार वृद्ध महिलाओं को सिखाओ कि वे पवित्रजनों के योग्य उत्तम व्यवहार वाली बनें। निन्दक न बनें तथा बहुत अधिक दाखमधु पान की लत उन्हें न हो। वे अच्छी अच्छी बातें सिखाने वाली बनें [4]ताकि युवतियों

को अपने–अपने बच्चों और पतियों से प्रेम करने की सीख दे सकें। [5]जिससे वे संयमी, पवित्र, अपने–अपने घरों की देखभाल करने वाली, दयालु, अपने पतियों की आज्ञा मानने वाली बनें जिससे परमेश्वर के वचन की निन्दा न हो।

[6]इसी तरह युवकों को सिखाते रहो कि वे संयमी बनें। [7]तुम अपने आप को हर बात में आदर्श बना कर दिखाओ। तेरा उपदेश शुद्ध और गम्भीर होना चाहिये। [8]ऐसी सद्‌वाणी का प्रयोग करो, जिसकी आलोचना न की जा सके ताकि तेरे विरोधी लज्जित हों क्योंकि उनके पास तेरे विरोध में बुरा कहने को कुछ नहीं होगा।

[9]दासों को सिखाओ कि वे हर बात में अपने स्वामियों की आज्ञा का पालन करें। उन्हें प्रसन्न करते रहें। उलट कर बात न बोलें। [10]चोरी चालाकी न करें। बल्कि सम्पूर्ण विश्वसनीयता का प्रदर्शन करें। ताकि हमारे मुक्तिदाता परमेश्वर के उपदेश की हर प्रकार से शोभा बढ़े।

[11]क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह सब मनुष्यों के उद्धार के लिए प्रकट हुआ है। [12]इससे हमें सीख मिलती है कि हम परमेश्वर विहीनता को नकारें और सांसारिक इच्छाओं का निषेध करते हुए ऐसा जीवन जीयें जो विवेकपूर्ण नेक, भक्ति से भरपूर और पवित्र हो। आज के इस संसार में [13]आशा के उस धन्य दिन की प्रतीक्षा करते रहें जब हमारे परम परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा प्रकट होगी। [14]उसने हमारे लिये अपने आपको दे डाला। ताकि वह सभी प्रकार की दुष्टताओं से हमें बचा सके और अपने चुने हुए लोगों के रूप में अपने लिये हमें शुद्ध कर ले–हमें, जो उत्तम कर्म करने को लालायित हैं।

[15]इन बातों को पूरे अधिकार के साथ कह और समझाता रह, उत्साहित करता रह और विरोधियों को झिड़कता रह। ताकि कोई तेरी अनसुनी न कर सके।

जीवन की उत्तम रीति

3 लोगों को याद दिलाता रह कि वे राजाओं और अधिकारियों के अधीन रहें। उनकी आज्ञा का पालन करें। हर प्रकार के उत्तम कार्यों को करने के लिये तैयार रहें। [2]किसी की निन्दा न करें। शांति–प्रिय और सज्जन बनें। सब लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करें।

[3]यह मैं इसलिये बता रहा हूँ क्योंकि हम भी, एक समय था, जब मूर्ख थे। आज्ञा का उल्लंघन करते थे। भ्रम में पड़े थे। तथा वासनाओं एवम् हर प्रकार के सुख–भोग के दास बने थे। हम दुष्टता और ईर्ष्या में अपना जीवन जीते थे। हम से लोग घृणा करते थे तथा हम भी परस्पर एक दूसरे को घृणा करते थे। [4]किन्तु जब हमारे उद्धार कर्ता परमेश्वर की मानवता के प्रति करुणा और प्रेम प्रकट हुए [5]उसने हमारा उद्धार किया। यह हमारे निर्दोष ठहराये जाने के लिये हमारे किसी धर्म के कामों के कारण नहीं हुआ बल्कि उसकी करुणा द्वारा हुआ। उसने हमारी रक्षा उस स्नान के द्वारा की जिसमें हम फिर पैदा होते है और पवित्र आत्मा के द्वारा नये बनाये जाते हैं। [6]उसने हम पर पवित्र आत्मा को हमारे उद्धार कर्ता यीशु मसीह के द्वारा भरपूर उँडेला है। [7]अब परमेश्वर ने हमें अपनी अनुग्रह के द्वारा निर्दोष ठहराया है ताकि जिसकी हम आशा कर रहे थे उस अनन्त जीवन के उत्तराधिकार को पा सकें। [8]यह कथन विश्वास करने योग्य है और मैं चाहता हूँ कि तुम इन बातों पर डटे रहो ताकि वे जो परमेश्वर में विश्वास करते हैं, अच्छे कर्मों में ही लगे रहें। ये बातें लोगों के लिए उत्तम और हितकारी हैं।

[9]वंशावलि सम्बन्धी विवादों, व्यवस्था सम्बन्धी झगड़ों झमेलों और मूर्खतापूर्ण मतभेदों से बचा रह क्योंकि उनसे कोई लाभ नहीं, वे व्यर्थ हैं। [10]जो व्यक्ति फूट डालता हो, उससे एक या दो बार चेतावनी देकर अलग हो जाओ। [11]क्योंकि तुम जानते हो कि ऐसा व्यक्ति मार्ग से भटक गया है और पाप कर रहा है। उसने तो स्वयं अपने को दोषी ठहराया है।

याद रखने की कुछ बातें

[12]मैं तुम्हारे पास जब अरतिमास या तुखिकुस को भेजूँ तो मेरे पास निकुपुलिस आने का भरपूर जतन करना क्योंकि मैंने वहीं सर्दियाँ बिताने का निश्चय कर रखा है। [13]वकील जेनास और अप्पुलोस को उनकी यात्रा के लिये जो कुछ आवश्यक हो, उसके लिये तुम भरपूर सहायता जुटा देना ताकि उन्हें किसी बात की कोई कमी न रहे। [14]हमारे लोगों को भी सत्‌कर्मों में लगे रहना सीखना चाहिये। उनमें से भी जिनको अत्यधिक आवश्यकता हो, उसको पूरी करना ताकि वे विफल न हों।

[15]जो मेरे साथ हैं, उन सब का तुम्हें नमस्कार। हमारे विश्वास के कारण जो लोग हमसे प्रेम करते हैं, उन्हें भी नमस्कार।

परमेश्वर का अनुग्रह तुम सब के साथ रहे।

फिलेमोन

यीशु मसीह के लिये बंदी बने पौलुस तथा हमारे भाई तिमुथियुस की ओर से: हमारे प्रिय मित्र और सहकर्मी फिलेमोन, [2]हमारी बहन अफफ़िया, हमारे साथी सैनिक अरखिप्पुस तथा तुम्हारे घर पर एकत्रित होने वाली कलीसिया को:

[3]हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

फिलेमोन का प्रेम और विश्वास

[4]अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारा उल्लेख करते हुए मैं सदा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। [5]क्योंकि मैं संत जनों के प्रति तुम्हारे प्रेम और यीशु मसीह में तुम्हारे विश्वास के विषय में सुनता रहता हूँ। [6]मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारे विश्वास से उत्पन्न उदार सहभागिता लोगों का मार्ग दर्शन करे। जिससे उन्हें उन सभी उत्तम वस्तुओं का ज्ञान हो जाये जो मसीह के उद्देश्य को आगे बढ़ाने में हमारे बीच घटित हो रही हैं। [7]हे भाई, तेरे प्रयत्नों से संत जनों के हृदय हरे–भरे हो गये हैं, इसलिये तेरे प्रेम से मुझे बहुत आनन्द मिला है।

उनेसिमुस को भाई स्वीकारो

[8]इसलिये कि मसीह में मुझे तुम्हारे कर्त्तव्यों के लिये आदेश देने का अधिकार है [9]किन्तु प्रेम के आधार पर मैं तुमसे निवेदन करना ही ठीक समझता हूँ। मैं पौलुस जो अब बूढ़ा हो चला है और मसीह यीशु के लिये अब बंदी भी बना हुआ है, [10]उस उनेसिमुस के बारे में निवेदन कर रहा हूँ जो तब मेरा धर्मपुत्र बना था,ज़ब मैं बंदीगृह में था। [11]एक समय था जब वह तेरे किसी काम का नहीं था, किन्तु अब न केवल तेरे लिए बल्कि मेरे लिये भी वह बहुत काम का है।

[12]मैं उसे फिर तेरे पास भेज रहा हूँ (बल्कि मुझे तो कहना चाहिये अपने हृदय को ही तेरे पास भेज रहा हूँ।) [13]मैं उसे यहाँ अपने पास ही रखना चाहता था, ताकि सुसमाचार के लिए मुझ बंदी की वह तेरी ओर से सेवा कर सके। [14]किन्तु तेरी अनुमति के बिना मैं कुछ भी करना नहीं चाहता ताकि तेरा कोई उत्तम कर्म किसी विवशता से नहीं बल्कि स्वयं अपनी इच्छा से ही हो।

[15]हो सकता है कि उसे थोड़े समय के लिये तुझसे दूर करने का कारण यही हो कि तू उसे फिर सदा के लिए पा ले। [16]दास के रूप में नहीं, बल्कि दास से अधिक एक प्रिय बन्धु के रूप में। मैं उस से बहुत प्रेम करता हूँ किन्तु तू उसे और अधिक प्रेम करेगा। केवल एक मनुष्य के रूप में ही नहीं बल्कि प्रभु में स्थित एक बन्धु के रूप में भी।

[17]सो यदि तू मुझे अपने साझीदार के रूप में समझता है तो उसे भी मेरी तरह ही समझ। [18]और यदि उसने तेरा कुछ बुरा किया है या उसे तेरा कुछ देना है तो उसे मेरे खाते में डाल दे। [19]मैं पौलुस स्वयं अपने हस्ताक्षरों से यह लिख रहा हूँ। उसकी भरपाई तुझे मैं करूँगा। (मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि तू तो अपने जीवन तक के लिए मेरा ऋणी है।) [20]हाँ भाई, मुझे तुझसे यीशु मसीह में यह लाभ प्राप्त हो कि मेरे हृदय को चैन मिले। [21]तुझ पर विश्वास रखते हुए यह पत्र मैं तुझे लिख रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि तुझसे मैं जितना कह रहा हूँ, तू उससे कहीं अधिक करेगा।

[22]मेरे लिये निवास का प्रबन्ध करते रहना क्योंकि मेरा विश्वास है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के परिणामस्वरूप मुझे सुरक्षित रुप से तुम्हें सौंप दिया जायेगा।

पत्र का समापन

[23]यीशु मसीह में स्थित मेरे साथी बंदी इपफ्रास का तुम्हें नमस्कार। [24]मेरे साथी कार्यकर्ता, मरकुस, अरिस्तर्खुस, देमास और लूका का तुम्हें नमस्कार पहुँचे।

[25]तुम सब पर प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह बना रहे।

इब्रानियों

परमेश्वर अपने पुत्र के माध्यम से बोलता है

1 परमेश्वर ने अतीत में नबियों के द्वारा अनेक अवसरों पर अनेक प्रकार से हमारे पूर्वजों से बातचीत की। [2]किन्तु इन अंतिम दिनों में उसने हमसे अपने पुत्र के माध्यम से बातचीत की, जिसे उसने सब कुछ का उत्तराधिकारी नियुक्त किया है और जिसके द्वारा उसने समूचे ब्रह्माण्ड की रचना की है। [3]वह पुत्र परमेश्वर की महिमा का तेज–मंडल है तथा उसके स्वरूप का यथावत प्रतिनिधि। वह अपने समर्थ वचन के द्वारा सब वस्तुओं की स्थिति बनाये रखता है। सबको पापों से मुक्त करने का विधान करके वह स्वर्ग में उस महामहिम के दाहिने हाथ बैठ गया। [4]इस प्रकार वह स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम बन गया जितना कि उनके नामों से वह नाम उत्तम है जो उसने उत्तराधिकार में पाया है।

[5]क्योंकि परमेश्वर ने किसी भी स्वर्गदूत से कभी ऐसा नहीं कहा:

"तू मेरा पुत्र;
आज मैं तेरा पिता बन गया हूँ।"

भजन संहिता 2:7

और न हीं किसी स्वर्गदूत से उसने यह कहा है,

"मैं उसका पिता बनूँगा, और वह मेरा पुत्र होगा।"

2 शमूएल 7:14

[6]और फिर वह जब अपनी प्रथम एवं महत्त्वपूर्ण संतान को संसार में भेजता है तो कहता है,

"परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसका नमन करें।"

व्यवस्था विवरण 32:43

[7]स्वर्गदूत के विषय में बताते हुए वह कहता है:

"उसने अपने सब स्वर्गदूत को पवन बनाये
और अपने सेवक आग की लपट बनाये।"

भजन संहिता 104:4

[8]किन्तु अपने पुत्र के विषय में वह कहता है:

"हे परमेश्वर! तेरा सिंहासन शाश्वत है,
तेरा राजदण्ड धार्मिकता है;
[9] तुझको धार्मिकता ही प्रिय है,
तुझको घृणा पापों से रही
सो परमेश्वर, तेरे परमेश्वर ने तुझको चुना है,
और उस आदर का आनन्द दिया।
तुझको तेरे साथियों से कहीं अधिक दिया।

भजन संहिता 45:6–7

[10]वह यह भी कहता है,

"हे प्रभु, जब सृष्टि का जन्म हो रहा था,
तूने धरती की नींव धरी।
और ये सारे स्वर्ग तेरे हाथ का कतृत्व हैं।
[11] ये नष्ट हो जायेंगे पर तू चिरन्तन रहेगा,
ये सब वस्त्र से फट जायेंगे।
[12] और तू परिधान सा उनको लपेटेगा।
वे फिर वस्त्र जैसे बदल जायेंगे।
किन्तु तू यूँ ही, यथावत रहेगा ही,
तेरे काल का अंत युग युग न होगा।"

भजन संहिता 102: 25–27

[13]परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत से ऐसा नहीं कहा:

"तू मेरे दाहिने बैठ जा
जब तक मैं तेरे शत्रुओं को,
तेरे चरण तल की चौकी न बना दूँ।"

भजन संहिता 110:1

[14]क्या सभी स्वर्गदूत उद्धार पाने वालों की सेवा के लिये भेजी गयी सहायक आत्माएँ नहीं हैं?

सावधान रहने को चेतावनी

2 इसीलिये हमें और अधिक सावधानी के साथ, जो कुछ हमने सुना है, उस पर ध्यान देना चाहिये ताकि हम भटकने न पायें। [2]क्योंकि यदि स्वर्गदूतों द्वारा दिया गया संदेश प्रभावशाली था तथा उसके प्रत्येक उल्लंघन और अवज्ञा के लिए उचित दण्ड दिया गया तो यदि हम ऐसे महान् उद्धार की उपेक्षा कर देते हैं [3]तो हम कैसे बच पायेंगे। इस उद्धार की पहली घोषणा प्रभु के द्वारा की गयी थी। और फिर जिन्होंने इसे सुना था, उन्होंने हमारे लिये इसकी पुष्टि की। [4]परमेश्वर ने भी चिह्नों, आश्चर्यों तथा तरह-तरह के चमत्कारपूर्ण कर्मों तथा पवित्र आत्मा के उन उपहारों द्वारा, जो उसकी इच्छा के अनुसार बाँटे गये थे, इसे प्रमाणित किया।

उद्धारकर्त्ता मसीह का मानव देह धारण

[5]उस भावी संसार को, जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं, उसने स्वर्गदूतों के अधीन नहीं किया [6]बल्कि शास्त्र में किसी स्थान पर किसी ने यह साक्षी दी है:

"मनुष्य क्या है, जो तू उसकी सुध लेता है?
पुत्र मानव का क्या है
जिसके लिए तू चिंतित है?
[7] तूने स्वर्गदूतों से उसे थोड़े से
समय को किंचित कम किया।
उसके सिर महिमा और
आदर का राजमुकुट रख दिया।
[8] और उसके चरणों तले उसकी अधीनता मे
सभी कुछ रख दिया।"

भजन संहिता 8:4-6

सब कुछ को उसके अधीन रखते हुए परमेश्वर ने कुछ भी ऐसा नहीं छोड़ा जो उसके अधीन न हो। फिर भी आजकल हम प्रत्येक वस्तु को उसके अधीन नहीं देख रहे हैं। [9]किन्तु हम यह देखते हैं कि वह यीशु जिसको थोड़े समय के लिये स्वर्गदूतों से नीचे कर दिया गया था, अब उसे महिमा और आदर का मुकुट पहनाया गया है क्योंकि उसने मृत्यु की यातना झेली थी। जिससे परमेश्वर के अनुग्रह के कारण वह प्रत्येक के लिये मृत्यु का अनुभव करे।

[10]अनेक पुत्रों को महिमा प्रदान करते हुए उस परमेश्वर के लिये जिसके द्वारा और जिसके लिये सब का अस्तित्त्व बना हुआ है, उसे यह शोभा देता है कि वह उनके छुटकारे के विधाता को यातनाओं के द्वारा सम्पूर्ण सिद्ध करे।

[11]वे दोनों ही-वह जो मनुष्यों को पवित्र बनाता है तथा वे जो पवित्र बनाए जाते हैं, एक ही परिवार के हैं। इसीलिए यीशु उन्हें भाई कहने में लज्जा नहीं करता। [12]उसने कहा:

"मैं सभा के बीच अपने बन्धुओं में तेरे
नाम का उदघोष करूँगा।
सबके सामने मैं तेरे प्रशंसा गीत गाऊँगा।"

भजन संहिता 22:22

[13]और फिर,

"मैं उसका विश्वास करूँगा।"

यशायाह 8:17

और फिर वह कहता है:

"मैं यहाँ हूँ।
और वे संतान जो मेरे साथ हैं।
जिनको मुझे परमेश्वर ने दिया है।"

यशायाह 8:18

[14]क्योंकि संतान माँस और लहू युक्त थी इसीलिये वह भी उनकी इस मनुष्यता में सहभागी हो गया ताकि अपनी मृत्यु के द्वारा वह उसे अर्थात् शैतान को नष्ट कर सके जिसके पास मारने की शक्ति है। [15]और उन व्यक्तियों को मुक्त कर ले जिनका समूचा जीवन मृत्यु के प्रति अपने भय के कारण दासता में बीता है। [16]क्योंकि यह निश्चित है कि वह स्वर्गदूतों की नहीं बल्कि इब्राहीम के वंशजों की सहायता करता है। [17]इसीलिये उसे हर प्रकार से उसके भाइयों के जैसा बनाया गया ताकि वह परमेश्वर की सेवा में दयालु और विश्वसनीय महायाजक बन सके। और लोगों को उनके पापों की क्षमा दिलाने के लिए बलि दे सके। [18]क्योंकि उसने स्वयं उस समय, जब उसकी परीक्षा ली जा रही थी, यातनाएँ भोगी हैं। इसलिये जिनकी परीक्षा ली जा रही है, वह उनकी सहायता करने में समर्थ है।

यीशु मूसा से महान

3 अत: स्वर्गीय बुलावे में भागीदार हे पवित्र भाइयों, अपना ध्यान उस यीशु पर लगाये रखो जो परमेश्वर

का प्रतिनिधि तथा हमारे घोषित विश्वास के अनुसार प्रमुख याजक है। [2]जैसे परमेश्वर के समूचे घराने में मूसा विश्वसनीय था, वैसे ही यीशु भी, जिसने उसे नियुक्त किया था उस परमेश्वर के प्रति, विश्वासपूर्ण था। [3]जैसे भवन का निर्माण करने वाला स्वयं भवन से अधिक आदर पाता है, वैसे ही यीशु मूसा से अधिक आदर का पात्र माना गया। [4]क्योंकि प्रत्येक भवन का कोई न कोई बनाने वाला होता है, किन्तु परमेश्वर तो हर वस्तु का सिरजनहार है। [5]परमेश्वर के समूचे घराने में मूसा एक सेवक के समान विश्वास पात्र था, वह उन बातों का साक्षी था जो भविष्य में परमेश्वर के द्वारा कही जानी थीं। [6]किन्तु परमेश्वर के घराने में मसीह तो एक पुत्र के रूप में विश्वास करने योग्य है और यदि हम अपने साहस और उस आशा में विश्वास को बनाये रखते हैं तो हम ही उसका घराना हैं।

अविश्वास के विरुद्ध चेतावनी

[7]इसीलिए पवित्र आत्मा कहता है:

[8] "आज यदि उसकी आवाज़ सुनो!
अपने हृदय जड़ मत करो।
जैसे बगावत के दिनों में किये थे।
जब मरुस्थल में परीक्षा हो रही थी।

[9] मुझे तुम्हारे पूर्वजों ने परखा था, उन्होंने मेरे
धैर्य की परीक्षा ली और मेरे कार्य देखे,
जिन्हें मैं चालीस वर्षो से करता रहा!

[10] वह यही हेतु था
जिससे मैं उन जनों से क्रोधित था,
और फिर मैंने कहा था,
इनके हृदय सदा भटकते रहते हैं
ये मेरे मार्ग जो जानते नहीं हैं।'

[11] मैंने क्रोध में इसी से
तब शपथ ले कर कहा था,
'ये कभी मेरी विश्रान्ति में
सम्मिलित नहीं होंगे।'"

भजन संहिता 95:7–11

[12]हे भाइयो, देखते रहो कहीं तुममें से किसी के मन में पाप और अविश्वास न समा जाय जो तुम्हें सजीव परमेश्वर से ही दूर भटका दे। [13]जब तक यह "आज" का दिन कहलाता है, तुम प्रतिदिन परस्पर एक दूसरे का ढाँढ़स बँधाते रहो ताकि तुममें से कोई भी पाप के छलावे में पड़कर जड़ न बन जाये। [14]यदि हम अंत तक दृढ़ता के साथ अपने प्रारम्भ के विश्वास को थामे रहते हैं तो हम मसीह के भागीदार बन जाते हैं। [15]जैसा कि कहा भी गया है:

"यदि आज उसकी आवाज सुनो,
अपने हृदय जड़ मत करो
जैसे बगावत के दिनों में किये थे।"

भजन संहिता 95:7–8

[16]भला वे कौन थे जिन्होंने सुना और विद्रोह किया? क्या वे, वे ही नहीं थे जिन्हें मूसा ने मिस्र से बचा कर निकाला था? [17]वह चालीस बरसों तक किन पर क्रोधित रहा? क्या उन्हीं पर नहीं जिन्होंने पाप किया था और जिनके शव मरुस्थल में पड़े रहे थे? [18]परमेश्वर ने किनके लिये शपथ उठायी थी कि वे उसकी विश्रान्ति में प्रवेश नहीं कर पायेंगे? क्या वे ही नहीं थे जिन्होंने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया था? [19]इस प्रकार हम देखते हैं कि वे अपने अविश्वास के कारण ही वहाँ प्रवेश पाने में समर्थ नहीं हो सके थे।

संतों के लिए विश्रान्ति

4 अत: जब उसकी विश्रान्ति में प्रवेश की प्रतिज्ञा अब तक बनी हुई है तो हमें सावधान रहना चाहिये कि तुममें से कोई अनुपयुक्त सिद्ध न हो। [2]क्योंकि हमें भी उन्हीं के समान सुसमाचार का उपदेश दिया गया है। किन्तु जो सुसंदेश उन्होंने सुना, वह उनके लिये व्यर्थ था। क्योंकि उन्होंने जब उसे सुना तो इसे विश्वास के साथ धारण नहीं किया। [3]अब देखो, हमने, जो विश्वासी हैं, उस विश्रान्ति में प्रवेश पाया है। जैसा कि परमेश्वर ने कहा भी है:

"मैंने क्रोध में इसीसे तब शपथ लेकर कहा था,
'ये कभी मेरी विश्रान्ति में सम्मिलित नहीं होंगे।'"

भजन संहिता 95:11

जब संसार की सृष्टि करने के बाद उसका काम पूरा हो गया था। [4]उसने सातवें दिन के सम्बन्ध में इन शब्दों में कहीं शास्त्रों में कहा है, "और फिर सातवें दिन अपने सभी कामों से परमेश्वर ने विश्राम लिया।" [5]और फिर उपरोक्त सन्दर्भ में भी वह कहता है:"ये कभी मेरी विश्रान्ति में सम्मिलित नहीं होंगे।"*

ये कभी ... होंगे उत्पत्ति 2:2

[6]जिन्हें पहले सुसन्देश सुनाया गया था अपनी अनाज्ञाकारिता के कारण वे तो विश्रान्ति में प्रवेश नहीं पा सके किन्तु औरों के लिए विश्रान्ति का द्वार अभी भी खुला है। [7]इसलिये परमेश्वर ने फिर एक विशेष दिन निश्चित किया और उसे नाम दिया "आज" कुछ वर्षों के बाद दाऊद के द्वारा परमेश्वर ने उस दिन के बारे में शास्त्र में बताया था। जिसका उल्लेख हमने अभी किया है:

"यदि आज उसकी आवाज सुनो,
अपने हृदय जड़ मत करो।"

भजन संहिता 95:7–8

[8]अत: यदि यहोशू उन्हें विश्रान्ति में ले गया होता तो परमेश्वर बाद में किसी और दिन के विषय में नहीं बताता। [9]तो खैर जो भी हो। परमेश्वर के भक्तों के लिये एक वैसी विश्रान्ति रहती ही है जैसी विश्रान्ति सातवें दिन परमेश्वर की थी। [10]क्योंकि जो कोई भी परमेश्वर की विश्रान्ति में प्रवेश करता है, अपने कर्मों से विश्राम पा जाता है। वैसे ही जैसे परमेश्वर ने अपने कर्मों से विश्राम पा लिया। [11]सो आओ हम भी उस विश्रान्ति में प्रवेश पाने के लिये प्रत्येक प्रयत्न करें ताकि उनकी अनाज्ञाकारिता के उदाहरण का अनुसरण करते हुए किसी का भी पतन न हो।

[12]परमेश्वर का वचन तो सजीव और क्रियाशील है, वह किसी दुधारी तलवार से भी अधिक पैना है। वह आत्मा और प्राण, सन्धियों और मज्जा तक में गहरा बेध जाता है। वह मन की वृत्तियों और विचारों को परख लेता है। [13]परमेश्वर की दृष्टि से इस समूची सृष्टि में कुछ भी ओझल नहीं है। उसकी आँखों के सामने, जिसे हमें लेखा–जोखा देना है, हर वस्तु बिना किसी आवरण के उघड़ी हुई है।

महान महायाजक यीशु

[14]इसीलिये क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु एक ऐसा महान् महायाजक है, जो स्वर्गों में से होकर गया है तो हमें अपने अंगीकृत एवं घोषित विश्वास को दृढ़ता के साथ थामे रखना चाहिये। [15]क्योंकि हमारे पास जो महायाजक है, वह ऐसा नहीं है जो हमारी दुर्बलताओं के साथ सहानुभूति न रख सके। उसे हर प्रकार से वैसे ही परखा गया है जैसे हमें फिर भी वह सर्वथा पाप रहित है। [16]तो फिर आओ, हम भरोसे के साथ अनुग्रह पाने परमेश्वर के सिंहासन की ओर बढ़ें ताकि आवश्यकता पड़ने पर हमारी सहायता के लिए हम दया और अनुग्रह को प्राप्त कर सकें।

5 प्रत्येक महायाजक मनुष्यों में से ही चुना जाता है। और परमात्मा सम्बन्धी विषयों में लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिये उसकी नियुक्ति की जाती है ताकि वह पापों के लिये भेंट या बलियाँ चढ़ाये। [2]क्योंकि वह स्वयं भी दुर्बलताओं के अधीन है, इसलिये वह ना समझों और भटके हुओं के साथ कोमल व्यवहार कर सकता है। [3]इसीलिये उसे अपने पापों के लिये और वैसे ही लोगों के पापों के लिये बलियाँ चढ़ानी पड़ती हैं।

[4]इस सम्मान को कोई भी अपने पर नहीं लेता। जब तक कि हारून के समान परमेश्वर की ओर से ठहराया न जाता। [5]इसी प्रकार मसीह ने भी महा याजक बनने की महिमा को स्वयं ग्रहण नहीं किया, बल्कि परमेश्वर ने उससे कहा,

"तू मेरा पुत्र है, आज मै तेरा पिता बना हूँ।"

भजन संहिता 2:7

[6]और एक अन्य स्थान पर भी वह कहता है,

"तू एक शाश्वत याजक है,
मलिकिसिदक* के जैसा!"

भजन संहिता 110:4

[7]यीशु ने इस धरती पर के जीवन काल में जो उसे मृत्यु से बचा सकता था, ऊँचे स्वर में पुकारते हुए और रोते हुए उससे प्रार्थनाएँ तथा विनतियाँ की थीं और आदरपूर्ण समर्पण के कारण उसकी सुनी गयी। [8]यद्यपि वह उसका पुत्र था फिर भी यातनाएँ झेलते हुए उसने आज्ञा का पालन करना सीखा। [9]और एक बार सम्पूर्ण बन जाने पर उन सब के लिए जो उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, वह अनन्त छुटकारे का स्रोत बन गया। [10]तथा परमेश्वर के द्वारा मिलिकिसिदक की परम्परा में उसे महायाजक बनाया गया।

पतन के विरुद्ध चेतावनी

[11]इसके विषय में हमारे पास कहने को बहुत कुछ है, पर उसकी व्याख्या कठिन है क्योंकि तुम्हारी समझ बहुत धीमी है। [12]वास्तव में इस समय तक तो तुम्हें शिक्षा देने

मलिकिसिदक इब्राहिम के समया का एख याजक और सम्राट था। देखें उत्पत्ति 14:17−24

वाला बन जाना चाहिये था। किन्तु तुम्हें तो अभी किसी ऐसे व्यक्ति की ही आवश्यकता है जो तुम्हें नये सिरे से परमेश्वर की शिक्षा की प्रारम्भिक बातें ही सिखाये। तुम्हें तो बस अभी दूध ही चाहिये, ठोस आहार नहीं। [13]जो अभी दुध–मुहा बच्चा ही है, उसे धार्मिकता के वचन की पहचान नहीं होती [14]किन्तु ठोस आहार तो उन बड़ों के लिये ही होता है जिन्होंने अपने अनुभव से भले–बुरे में पहचान करना सीख लिया है।

6 अत: आओ, मसीह सम्बन्धी आरम्भिक शिक्षा को छोड़ कर हम परिपक्वता की ओर बढ़ें हमें उन बातों की ओर नहीं बढ़ना चाहिए जिनसे हमने शुरूआत की जैसे–मृत्यु की ओर ले जाने वाले कर्मो के लिए मन फिराव, परमेश्वर में विश्वास, [2]बपतिस्माओं* की शिक्षा हाथ रखना, मरने के बाद फिर से जी उठना और वह न्याय जिससे हमारा भावी अनन्त जीवन निश्चित होगा। [3]और यदि परमेश्वर ने चाहा तो हम ऐसा ही करेंगे।

[4-6]जिन्हें एक बार प्रकाश प्राप्त हो चुका है, जो स्वर्गीय वरदान का आस्वादन कर चुके हैं, जो पवित्र आत्मा के सहभागी हो गए हैं जो परमेश्वर के वचन की उत्तमता तथा आने वाले युग की शक्तियों का अनुभव कर चुके हैं, यदि वे भटक जायें तो उन्हें मन–फिराव की ओर लौटा लाना असम्भव है। उन्होंने जैसे अपने ढंग से नये सिरे से परमेश्वर के पुत्र को फिर क्रूस पर चढ़ाया तथा उसे सब के सामने अपमान का विषय बनाया।

[7]वे लोग ऐसी धरती के जैसे हैं जो प्राय: होने वाली वर्षा के जल को सोख लेती है, और जोतने बोने वाले के लिए उपयोगी फसल प्रदान करती है, वह परमेश्वर की आशीष पाती है। [8]किन्तु यदि वह धरती काँटे और गोखरू उपजाती है, तो वह बेकार की है। और उसे अभिशप्त होने का भय है। अन्त में उसे जला दिया जायेगा।

[9]हे प्रिय मित्रो, चाहे हम इस प्रकार कहते हैं किन्तु तुम्हारे विषय में हमें इससे भी अच्छी बातों का विश्वास है–बातें जो उद्धार से सम्बन्धित हैं। [10]तुमने उसके जनों की सहायता करके और निरन्तर सहायता करते हुए जो प्रेम दर्शाया है, उसे और तुम्हारे दूसरे कामों को परमेश्वर कभी नहीं भुलायेगा। वह अन्यायी नहीं है। [11]हम चाहते हैं कि तुममें से हर कोई जीवन भर ऐसा ही कठिन परिश्रम करता रहे। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम निश्चय ही उसे पा जाओगे जिसकी तुम आशा करते रहे हो। [12]हम यह नहीं चाहते कि तुम आलसी हो जाओ। बल्कि तुम उनका अनुकरण करो जो विश्वास और धैर्य के साथ उन वस्तुओं को पा रहे हैं जिनका परमेश्वर ने वचन दिया था।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा अटल है

[13]जब परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की थी, तब क्योंकि स्वयं उससे बड़ा कोई और नहीं था, जिसकी शपथ ली जा सके, इसलिये अपनी शपथ लेते हुए वह [14]कहने लगा, "निश्चय ही मैं तुझे आशीर्वाद दूँगा तथा मैं तुझे अनेक वंशज दूँगा।"* [15]और इस प्रकार धीरज के साथ बाट जोहने के बाद उसने वह प्राप्त किया, जिसकी उससे प्रतिज्ञा की गयी थी।

[16]लोग उसकी शपथ लेते हैं, जो कोई उनसे महान होता है और वह शपथ सभी तर्क–वितर्कों का अन्त करके जो कुछ कहा जाता है, उसे पक्का कर देती है। [17]परमेश्वर इसे उन लोगों के लिये, पूरी तरह स्पष्ट कर देना चाहता था, जिन्हें उसे पाना था, जिसे देने की उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह अपने प्रयोजन को कभी नहीं बदलेगा। इसीलिए अपने वचन के साथ उसने अपनी शपथ को जोड़ दिया। [18]तो फिर यहाँ दो बातें हैं–उसकी प्रतिज्ञा और उसकी शपथ–जो कभी नहीं बदल सकतीं और जिनके बारे में परमेश्वर कभी झूठ नहीं कह सकता। इसलिए हम जो परमेश्वर के निकट सुरक्षा पाने को आये हैं और जो आशा उसने हमें दी है, उसे थामे हुए हैं, अत्यधिक उत्साहित हैं। [19]इस आशा को हम आत्मा के सुदृढ़ और सुनिश्चित लंगर के रूप में रखते हैं। यह परदे के पीछे भीतर से भीतर अन्तरतम तक पहुँचती है। [20]जहाँ यीशु ने हमारी ओर से हम से पहले प्रवेश किया। वह मिलिकिसिदक की परम्परा में सदा सर्वदा के लिये प्रमुख याजक बन गया।

याजक मिलिकिसिदक

7 यह मिलिकिसिदक सालेम का राजा था और सर्वोच्च परमेश्वर का याजक था। जब इब्राहीम राजाओं को पराजित करके लौट रहा था तो वह इब्राहीम

बपत्तिस्मा बपत्तिसमाओं से यहा या तो अभिप्राय मसीही बपत्तिस्मा से है या यहूदी रीति की जल में गोता लेने की बपतिस्मा से।

निश्चय ... दूँगा उत्पत्ति 22:17

से मिला और उसे आशीर्वाद दिया। [2]और इब्राहीम ने उसे उस सब कुछ में से जो उसने युद्ध में जीता था उसका दसवाँ भाग प्रदान किया। (उसके नाम का पहला अर्थ है–"धार्मिकता का राजा" और फिर उसका यह अर्थ भी है–"सालेम का राजा" अर्थात् "शांति का राजा।") [3]उसके पिता अथवा उसकी माँ अथवा उसके पूर्वजों का कोई इतिहास नहीं मिलता है। उसके जन्म अथवा मृत्यु का भी कहीं कोई उल्लेख नहीं है। परमेश्वर के पुत्र के समान ही वह सदा–सदा के लिये याजक बना रहता है।

[4]तनिक सोचो, वह कितना महान था। जिसे कुल प्रमुख इब्राहीम तक ने अपनी प्राप्ति का दसवाँ भाग दिया था। [5]अब देखो व्यवस्था के अनुसार लेवी वंशज जो याजक बनते हैं, लोगों से अर्थात् अपने ही बंधुओं से दसवाँ भाग लें। यद्यपि उनके वे बंधु इब्राहीम के वंशज हैं। [6]फिर भी मिलिकिसिदक ने, जो लेवी वंशी भी नहीं था, इब्राहीम से दसवाँ भाग लिया। और उस इब्राहीम को आशीर्वाद दिया जिसके पास परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ थीं। [7]इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जो आशीर्वाद देता है वह आशीर्वाद लेने वाले से बड़ा होता है। [8]जहाँ तक लेवियों का प्रश्न है, उनमें दसवाँ भाग उन व्यक्तियों द्वारा इकट्ठा किया जाता है, जो मरण शील हैं किन्तु मिलिकिसिदक का जहाँ तक प्रश्न है दसवाँ भाग उसके द्वारा एकत्र किया जाता है जो शास्त्र के अनुसार अभी भी जीवित है। [9]तो फिर कोई यहाँ तक कह सकता है कि वह लेवी जो दसवाँ भाग एकत्र करता है, उसने इब्राहीम के द्वारा दसवाँ भाग प्रदान कर दिया। [10]क्योंकि जब मिलिकिसिदक इब्राहीम से मिला था, तब भी लेवी अपने पूर्वजों के शरीर में वर्तमान था।

[11]यदि लेवी सम्बन्धी याजकता के द्वारा सम्पूर्णता प्राप्त की जा सकती (क्योंकि इसी के आधार पर लोगों को व्यवस्था का विधान दिया गया था) तो किसी दूसरे याजक के आने की आवश्यकता ही क्या थी? एक ऐसे याजक की जो मिलिकिसिदक की परम्परा का हो, न कि औरों की परम्परा का। [12]क्योंकि जब याजकता बदलती है, तो व्यवस्था में भी परिवर्तन होना चाहिये। [13]जिसके विषय में ये बातें कही गयी हैं, वह किसी दूसरे गोत्र का है, और उस गोत्र का कोई भी व्यक्ति कभी वेदी का सेवक नहीं रहा। [14]क्योंकि यह तो स्पष्ट ही है कि हमारा प्रभु यहूदा का वंशज था और मूसा ने उस गोत्र के लिए याजकों के विषय में कुछ नहीं कहा था।

यीशु मिलिकिसिदक के समान है

[15]और जो कुछ हमने कहा है, वह और भी स्पष्ट है कि मिलिकिसिदक के जैसा एक दूसरा याजक प्रकट होता है। [16]वह अपनी वंशावली के नियम के आधार पर नहीं, बल्कि एक अमर जीवन की शक्ति के आधार पर याजक बना है। [17]क्योंकि घोषित किया गया था: "तू है एक याजक शाश्वत मिलिकिसिदक के जैसा"*

[18]पहला नियम इसलिये रद्द कर दिया गया क्योंकि वह निर्बल और व्यर्थ था। [19](क्योंकि व्यवस्था के विधान ने किसी को सम्पूर्ण सिद्ध नहीं किया।) और एक उत्तम आशा का सूत्रपात किया गया जिसके द्वारा हम परमेश्वर के निकट खिंचते हैं।

[20]यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने यीशु को शपथ के द्वारा प्रमुख याजक बनाया था। जबकि औरों को बिना शपथ के ही प्रमुख याजक बनाया गया था। [21]किन्तु यीशु तब एक शपथ से याजक बना था, जब परमेश्वर ने उससे कहा था,

"प्रभु ने शपथ ली है,
और वह अपना मत कभी नहीं बदलेगा:
'तू एक शाश्वत याजक है।'"

भजन संहिता 110:4

[22]इस शपथ के कारण यीशु एक और अच्छे वाचा की जमानत बन गया है।

[23]अब देखो, ऐसे बहुत से याजक हुआ करते थे जिन्हें मृत्यु ने अपने पदों पर नहीं बने रहने दिया। [24]किन्तु क्योंकि यीशु अमर है, इसलिये उसका याजकपन भी सदा–सदा बना रहने वाला है। [25]अत: जो उसके द्वारा परमेश्वर तक पहुँचते हैं, वह उनका सर्वदा के लिए उद्धार करने में समर्थ है क्योंकि वह उनकी मध्यस्थता के लिये ही सदा जीता है।

[26]ऐसा ही महायाजक हमारी आवश्यकता को पूरा कर सकता है, जो पवित्र हो, दोषरहित हो, शुद्ध हो, पापियों के प्रभाव से दूर रहता हो, स्वर्गों से भी जिसे ऊँचा उठाया गया हो। [27]जिसके लिये दूसरे महायाजकों के समान यह आवश्यक न हो कि वह दिन प्रतिदिन पहले अपने पापों के लिये और फिर लोगों के पापों के

तू ... जैसा भजन. 110:4

लिए बलियाँ चढ़ाये। उसने तो सदा–सदा के लिये उनके पापों के हेतु स्वयं अपने आपको बलिदान कर दिया। [28]किन्तु परमेश्वर ने शपथ के साथ एक वाचा दिया। यह वाचा व्यवस्था के विधान के बाद आया और इस वाचा ने प्रमुख याजक के रूप में पुत्र को नियुक्त किया जो सदा–सदा के लिये सम्पूर्ण बन गया।

नये वाचा का प्रमुख याजक

8 जो कुछ हम कह रहे हैं, उसकी मुख्य बात यह है: निश्चय ही हमारे पास एक ऐसा महायाजक है जो स्वर्ग में उस महा महिमावान के सिंहासन के दाहिने हाथ विराजमान है। [2]वह उस पवित्र गर्भ गृह में यानी स्वर्गिक रावटी, में जिसे परमेश्वर ने स्थापित किया था, न कि मनुष्य ने, सेवा कार्य करता है।

[3]प्रत्येक महायाजक को इसलिये नियुक्त किया जाता है कि वह भेंटों और बलिदानों–दोनों को ही अर्पित करे। और इसीलिये इस महायाजक के लिए भी यह आवश्यक था कि उसके पास भी चढ़ावे के लिये कुछ हो। [4]यदि वह धरती पर होता तो वह याजक नहीं हो पाता क्योंकि वहाँ पहले से ही ऐसे व्यक्ति हैं जो व्यवस्था के विधान के अनुसार भेंट चढ़ाते हैं। [5]पवित्र उपासना स्थान में उनकी सेवा–उपासना स्वर्ग के यथार्थ की एक छाया प्रतिकृति है। इसीलिए जब मूसा पवित्र तम्बू का निर्माण करने ही वाला था, तभी उसे चेतावनी दे दी गयी थी। "ध्यान रहे कि तू हर वस्तु ठीक उसी प्रतिरूप के अनुसार बनाये जो तुझे पर्वत पर दिखाया गया था।" [6]किन्तु जो सेवा कार्य यीशु को प्राप्त हुआ है, वह उनके सेवा कार्य से श्रेष्ठ है। क्योंकि वह जिस वाचा का मध्यस्थ है वह पुराने वाचा से उत्तम है और उत्तम वस्तुओं की प्रतिज्ञाओं पर आधारित है।

[7]क्योंकि यदि पहली वाचा में कोई भी खोट नहीं होता तो दूसरे वाचा के लिये कोई स्थान ही नहीं रह जाता। [8]किन्तु परमेश्वर को उन लोगों में खोट मिला। उसने कहा:

"प्रभु घोषित करता है:
वह समय आ रहा जब मैं इस्राएल के
घराने से यहूदा के घराने से
एक नयी वाचा करूँगा।
[9] यह वाचा वैसा नहीं होगा जैसा मैंने उनके
पूर्वजों के साथ उस समय किया था।
जब मैंने उनका हाथ मिस्र से
निकाल लाने पकड़ा था।
क्योंकि प्रभु कहता है,
वे मेरे वाचा के विश्वासी नहीं रहे।
मैंने उनसे मुँह फेर लिया।
[10] यह है वह वाचा जिसे मैं
इस्राएल के घराने से करूँगा।
और फिर उसके बाद प्रभु घोषित करता है।
उनके मनों में अपनी व्यवस्था बसाऊँगा,
उनके हृदयों पर मैं उसको लिख दूँगा।
मैं उनका परमेश्वर बनूँगा, और वे मेरे जन होंगे।
[11] फिर तो कभी कोई भी, जन अपने पड़ोसी को
ऐसे न सिखायेगा अथवा कोई जन अपने बन्धु
से न, कभी कहेगा तुम प्रभु को पहचानो।
क्योंकि तब तो वे सभी छोटे से लेकर
बड़े से बड़े तक मुझे जानेंगे।
[12] क्योंकि मैं उनके दुष्कर्मो को क्षमा करूँगा
और कभी उनके पापों को यदि नहीं रखूँगा।"

यिर्मयाह 31:31–34

[13]इस वाचा को नया कहकर उसने पहले को व्यवहार के अयोग्य ठहराया और जो पुराना पड़ रहा है तथा व्यवहार के अयोग्य है, वह तो फिर शीघ्र ही लुप्त हो जायेगा।

पुराने वाचा की उपासना

9 अब देखो पहले वाचा में भी उपासना के नियम थे। तथा एक मनुष्य के हाथों का बना उपासना गृह भी था। [2]एक तम्बू बनाया गया था जिसके पहले कक्ष में दीपाधार थे, मेज़ थी, और भेंट की रोटी थी। इसे पवित्र स्थान कहा जाता था। [3]दूसरे परदे के पीछे एक और कमरा था जिसे परम पवित्र कहा जाता है। [4]इसमें सुगन्धित सामग्री के लिये सोने की वेदी और सोने की मढ़ी वाचा की सन्दूक थी। इस सन्दूक में सोने का बना मन्ना का एक पात्र था, हारून की वह छड़ी थी जिस पर कोंपलें फूटी थीं तथा वाचा के पत्थर के पतरे थे। [5]सन्दूक के ऊपर परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति के प्रतीक यानी करूब बने थे जो क्षमा के स्थान पर छाया कर रहे थे। किन्तु इस समय हम इन बातों की विस्तार के साथ चर्चा नहीं कर सकते।

[6]सब कुछ के इस प्रकार व्यवस्थित हो जाने के बाद याजक बाहरी कक्ष में प्रति दिन प्रवेश करके अपनी सेवा का काम करने लगे। [7]किन्तु भीतरी कक्ष में केवल प्रमुख याजक ही प्रवेश करता था और वह भी साल में एक बार। वह बिना उस लहू के कभी प्रवेश नहीं करता था जिसे वह स्वयं अपने द्वारा और लोगों के द्वारा अनजाने में किये गये पापों के लिए भेंट चढ़ाता था। [8]इसके द्वारा पवित्र आत्मा यह दर्शाया करता था कि जब तक अभी पहला तम्बू खड़ा हुआ है, तब तक परम पवित्र स्थान का मार्ग उजागर नहीं हो पाता। [9]यह आज के युग के लिये एक प्रतीक है जो यह दर्शाता है कि वे भेंटे और बलिदान जिन्हें अर्पित किया जा रहा है, उपासना करने वाले की चेतना को शुद्ध नहीं कर सकतीं। [10]ये तो बस खाने–पीने और अनेक पर्व विशेष–स्थानों के बाहरी नियम हैं और नयी व्यवस्था के समय तक के लिए ही ये लागू होते हैं।

मसीह का लहू

[11]किन्तु अब मसीह इस और अच्छी व्यवस्था का, जो अब हमारे पास है, प्रमुख याजक बनकर आ गया है। उसने उस अधिक उत्तम और सम्पूर्ण तम्बू में से होकर प्रवेश किया जो मनुष्य के हाथों की बनायी हुई नहीं थी। अर्थात् जो सांसारिक नहीं है। [12]बकरों और बछड़ों के लहू को लेकर उसने प्रवेश नहीं किया था बल्कि सदा–सर्वदा के लिये भेंट स्वरूप अपने ही रक्त को लेकर परम पवित्र स्थान में प्रविष्ट हुआ था। इस प्रकार उसने हमारे लिये पापों से अनन्त छुटकारे सुनिश्चित कर दिए हैं।

[13]बकरों और साँडों का लहू तथा बछिया की भभूत का उन पर छिड़का जाना, अशुद्धों को शुद्ध बनाता है ताकि वे बाहरी तौर पर पवित्र हो जायें। [14]जब यह सच है तो मसीह का लहू कितना प्रभावशाली होगा। उसने अनन्त आत्मा के द्वारा अपने आपको एक सम्पूर्ण बलि के रूप में परमेश्वर को समर्पित कर दिया। सो उसका लहू हमारी चेतना को उन कर्मों से छुटकारा दिलायेगा जो मृत्यु की ओर ले जाते हैं ताकि हम सजीव परमेश्वर की सेवा कर सकें।

[15]इसी कारण से मसीह एक नये वाचा का मध्यस्थ बना ताकि जिन्हें बुलाया गया है, वे उत्तराधिकार का अनन्त आशीर्वाद पा सकें जिसकी परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी। अब देखो, पहले वाचा के अधीन किये गये पापों से उन्हें मुक्त कराने के लिये फिरौती के रूप में वह अपने प्राण दे चुका है।

[16]जहाँ तक वसीयतनामे* का प्रश्न है, तो उसके लिए जिसने उसे लिखा है, उसकी मृत्यु को प्रमाणित किया जाना आवश्यक है [17]क्योंकि कोई वसीयतनामा केवल तभी प्रभावी होता है जब उसके लिखने वाले की मृत्यु हो जाती है। जब तक उसको लिखने वाला जीवित रहता है, वह कभी प्रभावी नहीं होता। [18]इसीलिए पहली वाचा भी बिना एक मृत्यु और लहू के गिराए कार्यान्वित नहीं किया गया। [19]मूसा जब व्यवस्था के विधान के सभी आदेशों की सब लोगों को घोषणा कर चुका तो उसने जल के साथ बकरों और बछड़ों के लहू को लाल ऊन और हिस्सप की टहनियों से चर्म पत्रों और सभी लोगों पर छिड़क दिया था। [20]उसने कहा था, "यह उस वाचा का लहू है, परमेश्वर ने जिसके पालन की आज्ञा तुम्हें दी है।" [21]उसने इसी प्रकार तम्बू और उपासना उत्सवों में काम आने वाली हर वस्तु पर लहू छिड़का था। [22]वास्तव में व्यवस्था चाहती है कि प्राय: हर वस्तु को लहू से शुद्ध किया जाये। और बिना लहू बहाये क्षमा है ही नहीं।

मसीह का बलिदान पापों को धो डालता है

[23]तो फिर यह आवश्यक है कि वे वस्तुएँ जो स्वर्ग की प्रतिकृति हैं, उन्हें पशुओं के बलिदानों से शुद्ध किया जाये किन्तु स्वर्ग की वस्तुएँ तो इनसे भी उत्तम बलिदानों से शुद्ध किए जाने की अपेक्षा करती हैं। [24]मसीह ने मनुष्य के हाथों के बने परम पवित्र स्थान में, जो सच्चे परम पवित्र स्थान की एक प्रतिकृति मात्र था, प्रवेश नहीं किया। उसने तो स्वयं स्वर्ग में ही प्रवेश किया ताकि अब वह हमारी ओर से परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट हो। [25]और न ही अपना फिर–फिर बलिदान चढ़ाने के लिये उसने स्वर्ग में उस प्रकार प्रवेश किया जैसे महायाजक उस लहू के साथ, जो उसका अपना नहीं है, परम पवित्र स्थान में हर साल प्रवेश करता है। [26]नहीं तो फिर मसीह को सृष्टि के आदि से ही अनेक बार यातनाएँ झेलनी पड़तीं। किन्तु अब देखो, इतिहास के चरम बिन्दु पर अपने बलिदान के द्वारा पापों का अंत करने के लिए वह सदा सदा के लिये

वसीयतनामे यूनानी में जो शब्द वाचा है वही शब्द वसीयत का अर्थ भी देता है।

एक ही बार प्रकट हो गया है। [27]जैसे एक बार मरना और उसके बाद न्याय का सामना करना मनुष्य की नियति है [28]सो वैसे ही मसीह को, एक ही बार अनेक व्यक्तियों के पापों को हर लेने के लिये बलिदान कर दिया गया। और वह पापों को वहन करने के लिए नहीं, बल्कि जो उसकी बाट जोह रहे हैं, उनके लिए उद्धार लाने को फिर दूसरी बार प्रकट होगा।

अंतिम बलिदान

10 व्यवस्था का विधान तो आने वाली उत्तम बातों की छाया मात्र प्रदान करता है। अपने आप में वे बातें यथार्थ नहीं हैं। इसीलिये उन्हीं बलियों के द्वारा जिन्हें निरन्तर प्रतिवर्ष अनन्त रूप से दिया जाता रहता है, उपासना के लिये निकट आने वालों को सदा–सदा के लिये सम्पूर्ण सिद्ध नहीं किया जा सकता। [2]यदि ऐसा हो पाता तो क्या उनका चढ़ाया जाना बंद नहीं हो जाता? क्योंकि फिर तो उपासना करने वाले एक ही बार में सदा सर्वदा के लिये पवित्र हो जाते। और अपने पापों के लिये फिर कभी स्वयं को अपराधी नहीं समझते। [3]किन्तु वे बलियाँ तो बस पापों की एक वार्षिक स्मृति मात्र हैं। [4]क्योंकि साँडों और बकरों का लहू पापों को दूर कर दे, यह सम्भव नहीं हैं।

[5] इसीलिये जब यीशु इस जगत् में आया था तो उसने कहा था:

"तूने बलिदान और कोई भेंट नहीं चाहा, किन्तु
मेरे हेतु, एक देह तैयार की
[6] तू किसी किसी होमबलि से न ही पापबलि से
प्रसन्न नहीं हुआ
[7] तब फिर मैंने कहा था,
'और पुस्तक में मेरे लिये यह भी लिखा है,
मैं यहाँ हूँ।
हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करने को आया हूँ।'"

भजन संहिता 40: 6–8

[8]उसने पहले कहा था, "बलियाँ और भेंटें, होमबलियाँ और पापबलियाँ न तो तू चाहता है और न ही तू उनसे प्रसन्न होता है।" (यद्यपि व्यवस्था का विधान यह चाहता है कि वे चढ़ाई जायें।) [9]तब उसने कहा था, "मैं यहाँ हूँ। मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूँ।" तो वह दूसरी व्यवस्था को स्थापित करने के लिये, पहली को रद्द कर देता है। [10]सो परमेश्वर की इच्छा से एक बार ही सदा–सर्वदा के लिये यीशु मसीह की देह के बलिदान द्वारा हम पवित्र कर दिये गये।

[11]हर याजक एक दिन के बाद दूसरे दिन खड़ा हो होकर अपने धार्मिक कर्त्तव्यों को पूरा करता है। वह पुन: पुन: एक जैसी ही बलियाँ चढ़ाता है जो पापों को कभी दूर नहीं कर सकतीं। [12]किन्तु याजक के रूप में मसीह तो पापों के लिये, सदा के लिए एक ही बलि चढ़ा कर परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठा [13]और उसी समय से उसे अपने विरोधियों को उसके चरण की चौकी बना दिये जाने की प्रतीक्षा है। [14]क्योंकि उसने एक ही बलिदान के द्वारा, जो पवित्र किये जा रहे हैं, उन्हें सदा–सर्वदा के लिए सम्पूर्ण सिद्ध कर दिया।

[15]इसके लिये पवित्र आत्मा भी हमें साक्षी देता है। पहले वह बताता है:

[16] "यह वह वाचा है जिसे मैं उनसे करूँगा।
और फिर उसके बाद प्रभु घोषित करता है।
अपनी व्यवस्था उनके हृदयों में बसाऊँगा
मैं उनके मनो पर उनको लिख दूँगा।"

यिर्मयाह 31:33

[17]वह यह भी कहता है:

"उनके पापों और उनके दुष्कर्मों को
और अब मैं कभी याद नहीं रखूँगा।"

यिर्मयाह 31:34

[18]और फिर जब पाप क्षमा कर दिये गये तो पापों के लिये किसी बलि की कोई आवश्यकता रह ही नहीं जाती।

परमेश्वर के निकट आओ

[19]इसलिये भाइयो, क्योंकि यीशु के लहू के द्वारा हमें उस परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने का निडर भरोसा है [20]जिसे उसने परदे के द्वारा, अर्थात् जो उसका शरीर ही है, एक नये और सजीव मार्ग के माध्यम से हमारे लिये खोल दिया है। [21]और क्योंकि हमारे पास एक ऐसा महान याजक है जो परमेश्वर के घराने का अधिकारी है। [22]तो फिर आओ, हम सच्चे हृदय, निश्चयपूर्ण विश्वास अपनी अपराधपूर्ण चेतना से हमें शुद्ध करने के लिये किए गए छिड़काव से युक्त अपने हृदयों को लेकर शुद्ध जल से धोये हुए अपने शरीरों के साथ परमेश्वर के निकट पहुँचते हैं। [23]तो आओ जिस आशा को हमने अंगीकार

किया है, हम अडिग भाव से उस पर डटे रहें क्योंकि जिसने हमें वचन दिया है, वह विश्वासपूर्ण है।

[24]तथा आओ, हम ध्यान रखें कि हम प्रेम और अच्छे कर्मों के प्रति एक दूसरे को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं। [25]हमारी सभाओं में आना मत छोड़ो। जैसी कि कुछों को तो वहाँ नहीं आने की आदत ही पड़ गयी है। बल्कि हमें तो एक दूसरे को उत्साहित करना चाहिये। और जैसा कि तुम देख ही रहे हो–कि वह दिन* निकट आ रहा है– सो तुम्हें तो यह और अधिक करना चाहिये।

मसीह से मुँह मत फेरो

[26]सत्य का ज्ञान पा लेने के बाद भी यदि हम जानबूझ कर पाप करते ही रहते हैं फिर तो पापों के लिए कोई बलिदान बचा ही नहीं रहता। [27]बल्कि फिर तो न्याय की भयानक प्रतीक्षा और भीषण अग्नि ही शेष रह जाती है जो परमेश्वर के विरोधियों को चट कर जायेगी। [28]जो कोई मूसा की व्यवस्था के विधान का पालन करने सेमना करता है, उसे बिना दया दिखाये दो या तीन साक्षियों की साक्षी पर मार डाला जाता है। [29]सोचो, वह मनुष्य कितने अधिक कड़े दंड का पात्र है, जिसने अपने पैरों तले परमेश्वर के पुत्र को कुचला, जिसने वाचा के उस लहू को, जिसने उसे पवित्र किया था, एक अपवित्र वस्तु माना और जिसने अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया। [30]क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा था: "बदला लेना काम है मेरा, मैं ही बदला लूँगा।" * और फिर, "प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।"*

[31]किसी पापी का सजीव परमेश्वर के हाथों में पड़ जाना एक भयानक बात है।

विश्वास बनाये रखो

[32]आरम्भ के उन दिनों को याद करो जब तुमने प्रकाश पाया था, और उसके बाद जब तुम कष्टों का सामना करते हुए कठोर संघर्ष में दृढ़ता के साथ डटे रहे थे। [33]तब कभी तो सब लोगों के सामने तुम्हें अपमानित किया गया और सताया गया और कभी जिनके साथ ऐसा बर्ताव किया जा रहा था, तुमने उनका साथ दिया। [34]तुमने, जो बंदीगृह में पड़े थे, उनसे सहानुभूति की तथा अपनी सम्पत्ति का जब्त किया जाना सहर्ष स्वीकार किया क्योंकि तुम यह जानते थे कि स्वयं तुम्हारे अपने पास उनसे अच्छी और टिकाऊ सम्पत्तियाँ हैं।

[35]सो अपने निडर विश्वास को मत त्यागो क्योंकि इसका भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा। [36]तुम्हें धैर्य की आवश्यकता है ताकि तुम जब परमेश्वर की इच्छा पूरी कर चुको तो जिसका वचन उसने दिया है, उसे तुम पा सको। [37]क्योंकि बहुत शीघ्र ही,

"जिसको आना है वह शीघ्र ही आयेगा,
[38] मेरा धर्मी जन विश्वास से जियेगा
और यदि वह पीछे हटेगा
तो मैं उससे प्रसन्न न रहूँगा।"

हबक्कूक 2:3–4

[39]किन्तु हम उनमें से नहीं हैं जो पीछे हटते हैं और नष्ट हो जाते हैं बल्कि उनमें से हैं जो विश्वास करते हैं और उद्धार पाते हैं।

विश्वास की महिमा

11 विश्वास का अर्थ है, जिसकी हम आशा करते हैं, उस के लिए सुनिश्चित होना। और विश्वास का अर्थ है कि हम चाहे किसी वस्तु को देख नहीं रहे हों किन्तु उसके अस्तित्त्व के विषय में सुनिश्चित होना कि वह है। [2]इसी कारण प्राचीन काल के लोगों को परमेश्वर का आदर प्राप्त हुआ था।

[3]विश्वास के आधार पर ही हम यह जानते हैं कि परमेश्वर के आदेश से ब्रह्माण्ड की रचना हुई थी। इसीलिये जो दृश्य है, वह दृश्य से ही नहीं बना है।

[4]हाबिल ने विश्वास के कारण ही परमेश्वर को कैन से उत्तम बलि चढ़ाई थी। विश्वास के कारण ही उसे एक धर्मी पुरुष के रूप में तब सम्मान मिला था जब परमेश्वर ने उसकी भेंटों की प्रशंसा की थी। और विश्वास के कारण ही वह आज भी बोलता है यद्यपि वह मर चुका है।

[5]विश्वास के कारण ही हनोक को इस जीवन से ऊपर उठा लिया गया ताकि उसे मृत्यु का अनुभव न हो। परमेश्वर ने क्योंकि उसे दूर हटा दिया था इसलिये वह पाया नहीं गया। क्योंकि उसे उठाये जाने से पहले परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले के रूप में उसे सम्मान मिल चुका था।

वह दिन अर्थात् वह जब मसीह फिर प्रकट होगा।
बदला ... लूँगा व्यवस्था. 32:35
प्रभु ... करेगा भजन. 135:14

[6]और विश्वास के बिना तो परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है। क्योंकि हर एक वह जो उसके पास आता है, उसके लिये यह आवश्यक है कि वह इस बात का विश्वास करे कि परमेश्वर का अस्तित्त्व है और वे जो उसे सच्चाई के साथ खोजते हैं, वह उन्हें उसका प्रतिफल देता है।

[7]विश्वास के कारण ही नूह को जब उन बातों की चेतावनी दी गयी जो उसने देखी तक नहीं थीं तो उसने पवित्र भयपूर्वक अपने परिवार को बचाने के लिये एक नाव का निर्माण किया था। अपने विश्वास से ही उसने इस संसार को दोषपूर्ण माना और उस धार्मिकता का उत्तराधिकारी बना जो विश्वास से आती है।

[8]विश्वास के कारण ही, जब इब्राहीम को ऐसे स्थान पर जाने के लिये बुलाया गया था, जिसे बाद में उत्तराधिकार के रूप में उसे पाना था, यद्यपि वह यह जानता तक नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है, फिर भी उसने आज्ञा मानी और वह चला गया। [9]विश्वास के कारण ही जिस धरती को देने का उसे वचन दिया गया था, उस पर उसने एक अनजाने परदेसी के समान अपना घर बना कर निवास किया। वह तम्बुओं में वैसे ही रहा जैसे इसहाक और याकूब रहे थे जो उसके साथ परमेश्वर की उसी प्रतिज्ञा के उत्तराधिकारी थे। [10]वह सुदृढ़ आधार वाली उस नगरी की बाट जोह रहा था जिसका शिल्पी और निर्माणकर्त्ता परमेश्वर है।

[11]विश्वास के कारण ही, इब्राहीम जो बूढ़ा हो चुका था और सारा जो स्वयं बाँझ थी, जिसने वचन दिया था, उसे विश्वसनीय समझकर गर्भवती हुई और इब्राहीम को पिता बना दिया। [12]और इस प्रकार इस एक ही व्यक्ति से जो मरियल सा था, आकाश के तारों जितनी असंख्य और सागर–तट के रेत–कणों जितनी अनगिनत संतानें हुई।

[13]विश्वास को अपने मन में लिए हुए ये लोग मर गए। जिन वस्तुओं की प्रतिज्ञा दी गयी थी, उन्होंने वे वस्तुएँ नहीं पायीं। उन्होंने बस उन्हें दूर से ही देखा और उनका स्वागत किया तथा उन्होंने यह मान लिया कि वे इस धरती पर परदेसी और अनजाने हैं। [14]वे लोग जो ऐसी बातें कहते हैं, वे यह दिखाते हैं कि वे एक ऐसे देश की खोज में हैं जो उनका अपना है। [15]यदि वे उस देश के विषय में सोचते जिसे वे छोड़ चुके हैं तो उनके फिर से लौटने का अवसर रहता [16]किन्तु उन्हें तो स्वर्ग के एक श्रेष्ठ प्रदेश की उत्कट अभिलाषा है। इसीलिये परमेश्वर को उनका परमेश्वर कहलाने में संकोच नहीं होता क्योंकि उसने तो उनके लिये एक नगर तैयार कर रखा है।

[17]विश्वास के कारण ही इब्राहीम ने, जब परमेश्वर उसकी परीक्षा ले रहा था, इसहाक की बलि चढ़ाई। वही जिसे प्रतिज्ञाएँ प्राप्त हुई थीं, अपने एक मात्र पुत्र की जब बलि देने वाला था [18]तो यद्यपि परमेश्वर ने उससे कहा था, “इसहाक के द्वारा ही तेरा वंश बढ़ेगा।” [19]किन्तु इब्राहीम ने सोचा कि परमेश्वर मरे हुए को भी जिला सकता है और यदि आलंकारिक भाषा में कहा जाये तो उसने इसहाक को मृत्यु से फिर वापस पा लिया।

[20]विश्वास के कारण ही इसहाक ने याकूब और इसाऊ को उनके भविष्य के विषय में आशीर्वाद दिया। [21]विश्वास के कारण ही याकूब ने, जब वह मर रहा था, यूसुफ के हर पुत्र को आशीर्वाद दिया और अपनी लाठी के ऊपरी सिरे पर झुक कर सहारा लेते हुए परमेश्वर की उपासना की।

[22]विश्वास के कारण ही युसुफ ने जब उसका अंत निकट था, इस्राएल निवासियों के मिस्र से निर्गमन के विषय में बताया तथा अपनी अस्थियों के बारे में आदेश दिये।

[23]विश्वास के आधार पर ही, मूसा के माता–पिता ने, मूसा के जन्म के बाद उसे तीन महीने तक छुपाये रखा क्योंकि उन्होंने देख लिया था कि वह कोई सामान्य बालक नहीं था और वे राजा की आज्ञा से नहीं डरे।

[24]विश्वास से ही, मूसा जब बड़ा हुआ तो उसने फिरौन की पुत्री का बेटा कहलाने से इन्कार कर दिया। [25]उसने पाप के क्षणिक सुख भोगों की अपेक्षा परमेश्वर के संत जनों के साथ दुर्व्यवहार झेलना ही चुना। [26]उसने मसीह के लिये अपमान झेलने को मिस्र के धन भंडारों की अपेक्षा अधिक मूल्यवान माना क्योंकि वह अपना प्रतिफल पाने की बाट जोह रहा था। [27]विश्वास के कारण ही, राजा के कोप से न डरते हुए उसने मिस्र का परित्याग कर दिया; वह डटा रहा, मानो उसे अदृश्य परमेश्वर दिख रहा हो।

[28]विश्वास से ही, उसने फसह पर्व और लहू छिड़कने का पालन किया, ताकि पहली संतानों का विनाश करने वाला, इस्राएल की पहली संतान को छू तक न पाये।

[29]विश्वास के कारण ही, लोग लाल सागर से ऐसे पार हो गये जैसे वह कोई सूखी धरती हो। किन्तु जब मिस्र के लोगों ने ऐसा करना चाहा तो वे डूब गये।

[30]विश्वास के कारण ही, यरिहो का नगर–परकोटा लोगों के सात दिन तक उसके चारों ओर परिक्रमा कर लेने के बाद ढह गया।

[31]विश्वास के कारण ही, राहब नाम की वेश्या आज्ञा का उल्लंघन करने वालों के साथ नहीं मारी गयी थी क्योंकि उसने गुप्तचरों का स्वागत सत्कार किया था।

[32]अब मैं और अधिक क्या कहूँ। गिदोन, बाराक, शिमशोन, यिफतह, दाऊद, शमुएल तथा उन नबियों की चर्चा करने का मेरे पास समय नहीं है [33]जिन्होंने विश्वास से, राज्यों को जीत लिया, धार्मिकता के कार्य किये तथा परमेश्वर ने जो देने का वचन दिया था, उसे प्राप्त किया। जिन्होंने सिंहों के मुँह बन्द कर दिये, [34]लपलपाती लपटों के क्रोध को शांत किया तथा तलवार की धार से बच निकले; जिनकी दुर्बलता ही शक्ति में बदल गयी; और युद्ध में जो शक्तिशाली बने तथा जिन्होंने विदेशी सेनाओं को छिन्न–भिन्न कर डाला। [35]स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को फिर से जीवित पाया। बहुतों को सताया गया, किन्तु उन्होंने छुटकारा पाने से मना कर दिया ताकि उन्हें एक और अच्छे जीवन में पुनरुत्थान मिल सके। [36]कुछ को उपहासों और कोड़ों का सामना करना पड़ा जबकि कुछ को ज़ंजीरों से जकड़ कर बंदी गृह में डाल दिया गया। [37]कुछ पर पथराव किया गया। उन्हें आरे से चीर कर दो फाँक कर दिया गया, उन्हें तलवार से मौत के घाट उतार दिया गया। वे ग़रीब थे, उन्हें यातनाएँ दी गई और उनके साथ बुरा व्यवहार किया गया। वे भेड़–बकरियों की खालें ओढ़े इधर–उधर भटकते रहे। [38]यह संसार उनके योग्य नहीं था। वे बियाबानों, और पहाड़ों में घूमते रहे और गुफाओं और धरती में बने बिलों में, छिपते–छिपाते फिरे।

[39]अपने विश्वास के कारण ही, इन सब को सराहा गया। फिर भी परमेश्वर को जिसका महान वचन उन्हें दिया था, उसे इनमें से कोई भी नहीं पा सका। [40]परमेश्वर के पास अपनी योजना के अनुसार हमारे लिये कुछ और अधिक उत्तम था जिससे उन्हें भी बस हमारे साथ ही सम्पूर्ण सिद्ध किया जाये।

परमेश्वर अपने पुत्रों को सिधाता है

12 क्योंकि हम साक्षियों की ऐसी इतनी बड़ी भीड़ से घिरे हुए हैं, जो हमें विश्वास का अर्थ क्या है इस की साक्षी देती है इसलिये आओ बाधा पहुँचाने वाली प्रत्येक वस्तु को और उस पाप को जो सहज में ही हमें उलझा लेता है झटक फेंकें और वह दौड़ जो हमें दौड़नी है, आओ धीरज के साथ उसे दौड़ें। [2]हमारे विश्वास के अगुआ और उसे सम्पूर्ण सिद्ध करने वाले यीशु पर आओ हम दृष्टि लगायें। जिसने अपने सामने उपस्थित आनन्द के लिये क्रूस की यातना झेली, उसकी लज्जा की कोई चिंता नहीं की और परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ विराजमान हो गया। [3]उसका ध्यान करो जिसने पापियों का ऐसा विरोध इसलिये सहन किया ताकि थक कर तुम्हारा मन हार न मान बैठे।

[4]पाप के विरुद्ध अपने संघर्ष में तुम्हें इतना नहीं अड़ना पड़ा है कि अपना लहू ही बहाना पड़ा हो। [5]तुम उस साहसपूर्ण वचन को भूल गये हो। जो तुम्हें पुत्र के नाते सम्बोधित है:

"हे मेरे पुत्र, प्रभु के अनुशासन का
तिरस्कार मत कर, उसकी फटकार का
[6] बुरा कभी मत मान, क्योंकि प्रभु
उनको डाँटता है जिनसे वह प्रेम करता है।
वैसे ही जैसे पिता उस पुत्र को दण्ड देता,
जो उसको अति प्रिय है।"

नीतिवचन 3:11–12

[7]कठिनाई को अनुशासन के रूप में सहन करो। परमेश्वर तुम्हारे साथ अपने पुत्र के समान व्यवहार करता है। ऐसा पुत्र कौन होगा जो अपने पिता के द्वारा सिधाया न गया हो? [8]यदि तुम्हें वैसे ही नहीं सिधाया गया है जैसे सबको सिधाया जाता है तो तुम अपने पिता से पैदा हुए पुत्र नहीं हो और सच्ची संतान नहीं हो। [9]और फिर यह भी कि इन सब को वे पिता भी जिन्होंने हमारे शरीर को जन्म दिया है, हमें सिधाते हैं। और इसके लिये हम उन्हें मान देते हैं तो फिर हमें अपनी आत्माओं के पिता के अनुशासन के तो कितना अधिक अधीन रहते हुए जीना चाहिये। [10]हमारे पिताओं ने थोड़े से समय के लिये जैसा उन्होंने उत्तम समझा, हमें सिधाया, किन्तु परमेश्वर हमें हमारी भलाई के लिये सिधाता है, जिससे हम उसकी पवित्रता के सह भागी हो सकें। [11]जिस समय सिधाया जा रहा होता है, उस समय सिधाना अच्छा नहीं लगता, बल्कि वह दुखद लगता है किन्तु कुछ भी हो, वे जो इसके द्वारा सिधाये जा चुके हैं, उनके लिये यह आगे चलकर नेकी और शांति का सुफल प्रदान करता है।

[12]इसलिये अपनी दुर्बल बाहों और निर्बल घुटनों को सबल बनाओ। [13]अपने पैरों के लिए मार्ग बना तू समतल। ताकि जो लँगड़ा है, वह अपंग नहीं, वरन चंगा हो जाये।

चेतावनी: परमेश्वर को नकारो मत

[14]सभी के साथ शांति के साथ रहने और पवित्र होने के लिये हर प्रकार से प्रयत्नशील रहो; बिना पवित्रता के कोई भी प्रभु का दर्शन नहीं कर पायेगा। [15]इस बात का ध्यान रखो कि परमेश्वर के अनुग्रह से कोई भी विमुख न हो जाये और तुम्हें कष्ट पहुँचाने तथा बहुतसों को विकृत करने के लिये कोई झगड़े की जड़ न फूट पड़े। [16]देखो कि कोई भी व्यभिचार न करे अथवा उस इसाऊ के समान परमेश्वर विहीन न हो जाये जिसे सबसे बड़ा पुत्र होने के नाते उत्तराधिकार पाने का अधिकार था किन्तु जिसने उसे बस एक जून के खाने भर के लिये बेच दिया। [17]जैसा कि तुम जानते ही हो बाद में जब उसने इस वरदान को प्राप्त करना चाहा तो उसे अयोग्य ठहराया गया। यद्यपि उसने रो–रो कर वरदान पाना चाहा किन्तु वह अपने किये को अनकिया नहीं कर पाया।

[18]तुम अग्नि से जलते हुए इस पर्वत के पास नहीं आये जिसे छुआ जा सकता था और न ही अंधकार, विषाद और बवंडर के निकट आये हो। [19]और न ही तुरही की तीव्र ध्वनि अथवा किसी ऐसे स्वर के सम्पर्क में आये जो वचनों का उच्चारण कर रही हो, जिससे जिन्होंने उसे सुना, प्रार्थना की कि उनके लिये किसी और वचन का उच्चारण न किया जाये। [20]क्योंकि जो आदेश दिया गया था, वे उसे झेल नहीं पाये: "यदि कोई पशु तक उस पर्वत को छुए तो उस पर पथराव किया जाये।"* [21]वह दृश्य इतना भयभीत कर डालने वाला था कि मूसा ने कहा, "मैं भय से थर थर काँप रहा हूँ।"*

[22]किन्तु तुम तो सिओन पर्वत, सजीव परमेश्वर की नगरी, स्वर्ग के यरूशलेम के निकट आ पहुँचे हो। तुम तो हज़ारों–हज़ार स्वर्गदूतों की आनन्दपूर्ण सभा, [23]परमेश्वर की पहली संतानों, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं, उनकी सभा के निकट पहुँच चुके हो। तुम सबके न्यायकर्त्ता परमेश्वर और उन धर्मात्मा, सिद्ध पुरुषों की आत्माओं, [24]तथा एक नये करार के मध्यस्थ यीशु और छिड़के हुए उस लहू से निकट आ चुके हो जो हाबिल के लहू की अपेक्षा उत्तम वचन बोलता है।

[25]ध्यान रहे! कि तुम उस बोलने वाले को मत नकारो। यदि वे उसको नकार कर नहीं बच पाये जिसने उन्हें धरती पर चेतावनी दी थी तो यदि हम उससे मुँह मोड़ेंगे जो हमें स्वर्ग से चेतावनी दे रहा है, तो हम तो दण्ड से बिल्कुल भी नहीं बच पायेंगे। [26]उसकी वाणी ने उस समय धरती को झकझोर दिया था किन्तु अब उसने प्रतिज्ञा की है, "एक बार फिर न केवल धरती को ही बल्कि आकाशों को भी मैं झकझोर दूँगा।" [27]"एक बार फिर" ये शब्द उस हर वस्तु की ओर इंगित करते हैं जिसे रचा गया है (यानी वे वस्तुएँ जो अस्थिर हैं) वे नष्ट हो जायेंगी। केवल वे वस्तुएँ ही बचेंगी जो स्थिर हैं।

[28]अत: क्योंकि जब हमें एक ऐसा राज्य मिल रहा है, जिसे झकझोरा नहीं जा सकता, तो आओ हम धन्यवादी बनें और आदर मिश्रित भय के साथ परमेश्वर की उपासना करें। [29]क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म कर डालने वाली एक आग है।

निष्कर्ष

13 भाई के समान परस्पर प्रेम करते रहो। [2]अतिथियों का सत्कार करना मत भूलो, क्योंकि ऐसा करते हुए कुछ लोगों ने अनजाने में ही स्वर्गदूतों का स्वागत–सत्कार किया है। [3]बंदियों को इस रूप में याद करो जैसे तुम भी उनके साथ बंदी रहे हो। जिनके साथ बुरा व्यवहार हुआ है उनकी इस प्रकार सुधि लो जैसे मानो तुम स्वयं पीड़ित हो।

[4]विवाह का सब को आदर करना चाहिये। विवाह की सेज को पवित्र रखो। क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और दुराचारियों को दण्ड देगा। [5]अपने जीवन को धन के लालच से मुक्त रखो। जो कुछ तुम्हारे पास है, उसी में संतोष करो क्योंकि परमेश्वर ने कहा है:

"मैं तुझको कभी नहीं छोड़ूँगा,
मैं तुझे कभी नहीं तजूँगा।
व्यवस्था विवरण 31:6

यदि कोई ... जायें निर्गमन 19:12
मैं ... रहा हूँ व्यवस्था. 9:19

[6]इसीलिये हम विश्वास के साथ कहते हैं:

"प्रभु मेरी सहाय करता है,
मैं कभी भयभीत न बनूँगा।
कोई मनुज मेरा क्या करे?"

भजन संहिता 118:6

[7]अपने मार्ग दर्शकों को याद रखो जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है। उनकी जीवन–विधि के परिणाम पर विचार करो तथा उनके विश्वास का अनुसरण करो। [8]यीशु मसीह कल भी वैसा ही था, आज भी वैसा ही है और युग–युगान्तर तक वैसा ही रहेगा।

[9]हर प्रकार की विचित्र शिक्षाओं से भरमाये मत जाओ। तुम्हारे मनों के लिये यह अच्छा है कि वे अनुग्रह के द्वारा सुदृढ़ बनें न कि खाने पीने सम्बन्धी नियमों के मानने से, जिनसे उनका कभी कोई भला नहीं हुआ, जिन्होंने उन्हें माना।

[10]हमारे पास एक ऐसी वेदी है जिस पर से खाने का अधिकार उनको नहीं है जो रावटी में सेवा करते हैं। [11]महायाजक परम पवित्र स्थान पर पाप–बलि के रूप में पशुओं का लहू तो ले जाता है, किन्तु उनके शरीर डेरों के बाहर जला दिये जाते हैं। [12]इसी लिये यीशु ने भी स्वयं अपने लहू से लोगों को पवित्र करने के लिये नगर द्वार के बाहर यातना झेली। [13]तो फिर आओ हम भी इसी अपमान को झेलते हुए जिसे उसने झेला था, डेरों के बाहर उसके पास चलें। [14]क्योंकि यहाँ हमारा कोई स्थायी नगर नहीं है बल्कि हम तो उस नगर की बाट जोह रहे हैं जो आनेवाला है।

[15]अत: आओ हम यीशु के द्वारा परमेश्वर को स्तुति रूपी बलि अर्पित करें जो उन ओठों का फल है जिन्होंने उसके नाम को पहचाना है। [16]तथा नेकी करना और अपनी वस्तुओं को औरों के साथ बाँटना मत भूलो। क्योंकि परमेश्वर ऐसी ही बलियों से प्रसन्न होता है।

[17]अपने मार्ग दर्शकों की आज्ञा मानो। उनके अधीन रहो। वे तुम पर ऐसे चौकसी रखते हैं जैसे उन व्यक्तियों पर रखी जाती है जिनको अपना लेखा जोखा उन्हें देना है। उनकी आज्ञा मानो जिससे उनका कर्म आनन्द बन जाये। न कि एक बोझ बने। क्योंकि उससे तो तुम्हारा कोई लाभ नहीं होगा।

[18]हमारे लिए विनती करते रहो। हमें निश्चय है कि हमारी चेतना शुद्ध है। और हम हर प्रकार से वही करना चाहते हैं जो उचित है। [19]मैं विशेष रूप से आग्रह करता हूँ कि तुम प्रार्थना किया करो ताकि शीघ्र ही मैं तुम्हारे पास आ सकूँ।

[20]जिसने भेड़ों के उस महान रखवाले हमारे प्रभु यीशु के लहू द्वारा उस सनातन करार पर मुहर लगाकर मरे हुओं में से जिला उठाया, वह शांति–दाता परमेश्वर [21]तुम्हें सभी उत्तम साधनों से सम्पन्न करे। जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी कर सको। और यीशु मसीह के द्वारा वह हमारे भीतर उस सब कुछ को सक्रिय करे जो उसे भाता है। युग–युगान्तर तक उसकी महिमा होती रहे। आमीन!

[22]हे भाइयो, मेरा आग्रह है कि तुम प्रेरणा देने वाले मेरे इस वचन को धारण करो मैंने तुम्हें यह पत्र बहुत संक्षेप में लिखा है। [23]मैं चाहता हूँ कि तुम्हें ज्ञात हो कि हमारा भाई तिमुथियुस रिहा कर दिया गया है। यदि वह शीघ्र ही आ पहुँचा तो मैं उसी के साथ तुमसे मिलने आऊँगा।

[24]अपने सभी अग्रणियों और संत जनों को नमस्कार कहना। इटली से आये लोग तुम्हें नमस्कार भेजते हैं।

[25]परमेश्वर का अनुग्रह तुम सब के साथ रहे!

याकूब

1 याकूब का, जो परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का दास है, संतों के बारहों कुलों को नमस्कार पहुँचे जो समूचे संसार में फैले हुए हैं।

विश्वास और विवेक

[2]हे मेरे भाइयों, जब कभी तुम तरह तरह की परीक्षाओं में पड़ो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो। [3]क्योंकि तुम यह जानते हो कि तुम्हारा विश्वास जब परीक्षा में सफल होता है तो उससे धैर्य पूर्ण सहन शक्ति उत्पन्न होती है। [4]और वह धैर्य पूर्ण सहन शक्ति एक ऐसी पूर्णता को जन्म देती है जिससे तुम ऐसे सिद्ध बन सकते हो जिनमें कोई कमी नहीं रह जाती है। [5]सो यदि तुममें से किसी में विवेक की कमी है तो वह उसे परमेश्वर से माँग सकता है। वह सभी को प्रसन्नता पूर्वक उदारता के साथ देता है। [6]बस विश्वास के साथ माँगा जाये। थोड़ा सा भी संदेह नहीं होना चाहिये। क्योंकि जिसको संदेह होता है, वह सागर की उस लहर के समान है जो हवा से उठती है और थरथराती है। [7]ऐसे मनुष्य को यह नहीं सोचना चाहिये कि उसे प्रभु से कुछ भी मिल पायेगा। [8]ऐसे मनुष्य का मन तो दुविधा से ग्रस्त है। वह अपने सभी कर्मों में अस्थिर रहता है।

सच्चा धन

[9]साधारण परिस्थितियों वाले भाई को गर्व करना चाहिये कि परमेश्वर ने उसे आत्मा का धन दिया है। [10]और धनी भाई को गर्व करना चाहिये कि परमेश्वर ने उसे नम्रता दी है। क्योंकि उसे तो घास पर खिलने वाले फूल के समान झड़ जाना है। [11]सूरज कड़कड़ाती धूप लिये उगता है और पौधों को सुखा डालता है। उनकी फूल पत्तियाँ झड़ जाती हैं और सुन्दरता समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार धनी व्यक्ति भी अपनी भाग दौड़ के साथ समाप्त हो जाता है।

परमेश्वर परीक्षा नहीं लेता

[12]वह व्यक्ति धन्य है जो परीक्षा में अटल रहता है क्योंकि परीक्षा में खरा उतरने के बाद वह जीवन के उस विजय मुकुट को धारण करेगा, जिसे परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों को देने का वचन दिया है। [13]परीक्षा की घड़ी में किसी को यह नहीं कहना चाहिये कि "परमेश्वर मेरी परीक्षा ले रहा है," क्योंकि बुरी बातों से परमेश्वर को कोई लेना देना नहीं है। वह किसी की परीक्षा नहीं लेता। [14]हर कोई अपनी ही बुरी इच्छाओं के भ्रम में फँस कर परीक्षा में पड़ता है। [15]फिर जब वह इच्छा गर्भवती होती है तो पाप पूरा बढ़ जाता है और वह मृत्यु को जन्म देता है।

[16]सो मेरे प्रिय भाइयों, धोखा मत खाओ। [17]प्रत्येक उत्तम दान और परिपूर्ण उपहार ऊपर से ही मिलते हैं। और वे उस परम पिता के द्वारा जिसने स्वर्गीय प्रकाश को जन्म दिया है, नीचे लाये जाते हैं। वह नक्षत्रों की गतिविधि से उत्पन्न छाया से कभी बदलता नही है। [18]सत्य के सुसंदेश के द्वारा अपनी संतान बनाने के लिये उसने हमें चुना। ताकि हम सभी प्राणियों के बीच उसकी फ़सल के पहले फल सिद्ध हों।

सुनना और उस पर चलना

[19]हे मेरे प्रिय भाइयों, याद रखो, हर किसी को तत्परता के साथ सुनना चाहिये, बोलने में शीघ्रता मत करो, क्रोध करने में उतावली मत बरतो। [20]क्योंकि मनुष्य के क्रोध से परमेश्वर की धार्मिकता नहीं उपजती। [21]हर घिनौने आचरण और चारों ओर फैली दुष्टता से दूर रहो। तथा नम्रता के साथ तुम्हारे हृदयों में रोपे गये परमेश्वर के वचन को ग्रहण करो जो तुम्हारी आत्माओं को उद्धार दिला सकता है।

[22]परमेश्वर की शिक्षा पर चलने वाले बनो, न कि केवल उसे सुनने वाले। यदि तुम केवल उसे सुनते भर हो

तो तुम अपने आपको छल रहे हो। [23] क्योंकि यदि कोई परमेश्वर की शिक्षा को सुनता तो है और उस पर चलता नहीं है, तो वह उस पुरुष के समान ही है जो अपने भौतिक मुख को दर्पण में देखता भर है। [24]वह स्वयं को अच्छी तरह देखता है, पर जब वहाँ से चला जाता है तो तुरंत भूल जाता है कि वह कैसा दिख रहा था। [25]किन्तु जो परमेश्वर की उस सम्पूर्ण व्यवस्था को निकटता से देखता है, जिससे स्वतन्त्रता प्राप्त होती है और उसी पर आचरण भी करता रहता है, और सुन कर उसे भूले बिना अपने आचरण में उतारता रहता है, वही अपने कर्मों के लिये धन्य होगा।

भक्ति का सच्चा मार्ग

[26]यदि कोई सोचता है कि वह भक्त है और अपनी जीभ पर कस कर लगाम नहीं लगाता तो वह धोखे में है। उसकी भक्ति निरर्थक है। [27]परम पिता परमेश्वर के सामने सच्ची और शुद्ध भक्ति वही है जिसमें अनाथों और विधवाओं की उनके दुःख दर्द में सुधि ली जाये और स्वयं को कोई सांसारिक कलंक न लगने दिया जाये।

सबसे प्रेम करो

2 हे मेरे भाइयो, हमारे महिमावान प्रभु यीशु मसीह में जो तुम्हारा विश्वास है, वह पक्षपातपूर्ण न हो। [2]कल्पना करो तुम्हारी सभा में कोई व्यक्ति सोने की अँगूठी और भव्य वस्त्र धारण किये हुए आता है। और तभी मैले कुचैले कपड़े पहने एक निर्धन व्यक्ति भी आता है। [3]और तुम जिसने भव्य वस्त्र धारण किये हैं, उसको विशेष महत्त्व देते हुए कहते हो, "यहाँ इस उत्तम स्थान पर बैठो", जबकि उस निर्धन व्यक्ति से कहते हो, "वहाँ खड़ा रह" या "मेरे पैरों के पास बैठ जा।" [4]ऐसा करते हुए क्या तुमने अपने बीच कोई भेद-भाव नहीं किया और बुरे विचारों के साथ न्यायकर्ता नहीं बन गये?

[5]हे मेरे प्यारे भाइयो, सुनो क्या परमेश्वर ने संसार की आँखों में उन निर्धनों को विश्वास में धनी और उस राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में नहीं चुना, जिसका उसने, जो उसे प्रेम करते हैं, देने का वचन दिया है। [6]किन्तु तुमने तो उस निर्धन व्यक्ति के प्रति घृणा दर्शायी है। क्या ये धनिक व्यक्ति वे ही नहीं हैं, जो तुम्हारा शोषण करते है और तुम्हें कचहरियों में घसीट ले जाते है? [7] क्या ये वे ही नहीं हैं, जो मसीह के उस उत्तम नाम की निन्दा करते हैं, जो तुम्हें दिया गया है?

[8]यदि तुम शास्त्र में प्राप्त होने वाली इस उच्चतम व्यवस्था का सचमुच पालन करते हो, "अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो, जैसे तुम अपने आप से करते हो"* तो तुम अच्छा ही करते हो। [9]किन्तु यदि तुम पक्षपात दिखाते हो तो तुम पाप कर रहे हो। फिर तुम्हें व्यवस्था के विधान को तोड़ने वाला ठहराया जायेगा। [10]क्योंकि कोई भी यदि समग्र व्यवस्था का पालन करता है और एक बात में चूक जाता है तो वह समूची व्यवस्था के उल्लंघन का दोषी हो जाता है। [11]क्योंकि जिसने यह कहा था, "व्यभिचार मत करो"* उस ही ने यह भी कहा था, "हत्या मत करो।"* सो यदि तुम व्यभिचार नहीं करते किन्तु हत्या करते हो तो तुम व्यवस्था को तोड़ने वाले हो। [12]तुम उन्हीं लोगों के समान बोलो और उन ही के जैसा आचरण करो जिनका उस व्यवस्था के अनुसार न्याय होने जा रहा है, जिससे छुटकारा मिलता है। [13]जो दयालु नहीं है, उसके लिये परमेश्वर का न्याय भी बिना दया के ही होगा। किन्तु दया न्याय पर विजयी है।

विश्वास और सत् कर्म

[14]हे मेरे भाइयो, यदि कोई व्यक्ति कहता है कि वह विश्वासी है तो इसका क्या लाभ जब तक कि उसके कर्म विश्वास के अनुकूल न हों? ऐसा विश्वास क्या उसका उद्धार कर सकता है? [15]यदि भाइयों और बहनों को वस्त्रों की आवश्यकता हो, उनके पास खाने तक को न हो [16]और तुममें से ही कोई उनसे कहे "शांति से जाओ, परमेश्वर तुम्हारा कल्याण करे, अपने को गरमाओ तथा अच्छी प्रकार भोजन करो" और तुम उनकी देह की आवश्यकताओं की वस्तुएँ उन्हें न दो तो फिर इसका क्या मूल्य है? [17]इसी प्रकार यदि विश्वास के साथ कर्म नहीं है तो वह अपने आप में निष्प्राण है।

[18]किन्तु कोई कह सकता है, "तुम्हारे पास विश्वास है, जबकि मेरे पास कर्म है अब तुम बिना कर्मों के अपना विश्वास दिखाओ और मैं तुम्हें अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा दिखाऊँगा।" [19]क्या तुम विश्वास करते हो

अपने ... हो लैव्य. 19:18

व्यभिचार मत करो निर्गमन 20:14; व्यवस्था. 5:18

हत्या मत करो निर्गमन 20:13; व्यवस्था. 5:17

कि परमेश्वर केवल एक है? अदभुत! दुष्टात्माएँ यह विश्वास करती है कि परमेश्वर है और वे काँपती रहती हैं।

[20]अरे मूर्ख! क्या तुझे प्रमाण चाहिये कि कर्म रहित विश्वास व्यर्थ है? [21]क्या हमारा पिता इब्राहीम अपने कर्मों के आधार पर ही उस समय धर्मी नहीं ठहराया गया था जब उसने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर अर्पित कर दिया था? [22]तू देख कि उसका वह विश्वास उसके कर्मों के साथ ही सक्रिय हो रहा था। और उसके कर्मो से ही उसका विश्वास परिपूर्ण किया गया था। [23]इस प्रकार शास्त्र का यह कहा पूरा हुआ था, "इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और विश्वास के आधार पर ही वह धर्मी ठहरा"* और इसी से वह "परमेश्वर का मित्र"* कहलाया। [24]तुम देखो कि केवल विश्वास से नहीं, बल्कि अपने कर्मो से ही व्यक्ति धर्मी ठहरता है।

[25]इसी प्रकार राहब वेश्या भी क्या उस समय अपने कर्मों से धर्मी नहीं ठहरायी गयी, जब उसने दूतों को अपने घर में शरण दी और फिर उन्हें दूसरे मार्ग से कहीं भेज दिया।

[26]इस प्रकार जैसे बिना आत्मा का देह मरा हुआ है, वैसे ही कर्म विहीन विश्वास भी निर्जीव है!

वाणी का संयम

3 हे मेरे भाइयों, तुममें से बहुत से को शिक्षक बनने की इच्छा नहीं करनी चाहिये। तुम जानते ही हो कि हम शिक्षकों का और अधिक कड़ाई के साथ न्याय किया जायेगा। [2]मैं तुम्हें ऐसे इसलिये चेता रहा हूँ कि हम सबसे बहुत सी भूल होती ही रहती हैं। यदि कोई बोलने में कोई भी चूक न करे तो वह एक सिद्ध व्यक्ति है तो फिर ऐसा कौन है जो उस पर पूरी तरह काबू पा सकता हैं? [3]हम घोड़ों के मुँह में इसलिये लगाम लगाते हैं कि वे हमारे बस में रहें। और इस प्रकार उनके समूचे देह को हम वश में कर सकते हैं। [4]अथवा जलयानों का उदाहरण भी लिया जा सकता है। देखो, चाहे वे कितने ही बड़े होते हैं और शक्तिशाली हवाओं द्वारा चलाये जाते है, किन्तु एक छोटी सी पतवार से उनका नाविक उन्हें जहाँ कहीं ले जाना चाहता है, उन पर काबू पाकर उन्हें ले जाता है। [5]इसी प्रकार जीभ, जो देह का एक छोटा सा अंग है, बड़ी बड़ी बातें कर डालने की डींगे मारती है।

अब तनिक सोचो एक जरा सी लपट समूचे जंगल को जला सकती है। [6]हाँ, जीभ: एक लपट है। यह बुराई का एक पूरा संसार है। यह जीभ हमारे देह के अंगों में एक ऐसा अंग है, जो समूचे देह को भ्रष्ट कर डालता है और हमारे समूचे जीवन चक्र में ही आग लगा देता है। यह जीभ नरक की आग से धधकती रहती है। [7]देखो, हर प्रकार के हिंसक पशु, पक्षी, रेंगने वाले जीव जंतु, पानी में रहने वाले प्राणी मनुष्य द्वारा वश में किये जा सकते हैं और किये भी गए हैं। [8]किन्तु जीभ को कोई मनुष्य वश में नहीं कर सकता। यह घातक विष से भरी एक ऐसी बुराई है जो कभी चैन से नहीं रहती। [9]हम इसी से अपने प्रभु और परमेश्वर की स्तुति करते हैं और इसी से लोगों को जो परमेश्वर की समरूपता में उत्पन्न किये गये हैं, कोसते भी हैं। [10]एक ही मुँह से आशीर्वाद और अभिशाप दोनों निकलते हैं। मेरे भाइयों, ऐसा तो नहीं होना चाहिये। [11]सोते के एक ही मुहाने से भला क्या मीठा और खारा दोनों तरह का जल निकल सकता है। [12]मेरे भाइयो, क्या अंजीर के पेड़ पर जैतून या अंगूर की लता पर कभी अंजीर लगते हैं? निश्चय ही नहीं। और न ही खारे स्रोत से कभी मीठा जल निकल पाता है।

सच्चा विवेक

[13]भला तुममें, ज्ञानी और समझदार कौन है? जो है, उसे अपने व्यवहार से यह दिखाना चाहिये कि उसके कर्म उस सज्जनता के साथ किये गये हैं जो ज्ञान से जुड़ी है। [14]किन्तु यदि तुम लोगों के हृदयों में भयंकर ईर्ष्या और स्वार्थ भरा हुआ है, तो अपने ज्ञान का ढोल मत पीटो। ऐसा करके तो तुम सत्य पर पर्दा डालते हुए असत्य बोल रहे हो। [15]ऐसा "ज्ञान" तो ऊपर अर्थात् स्वर्ग से, प्राप्त नहीं होता, बल्कि वह तो भौतिक है। आत्मिक नहीं है। तथा शैतान का है। [16]क्योंकि जहाँ ईर्ष्या और स्वार्थ पूर्ण महत्वकाँक्षाएँ रहती हैं, वहाँ अव्यवस्था और हर प्रकार की बुरी बातें रहती हैं। [17]किन्तु स्वर्ग से आने वाला ज्ञान सबसे पहले तो पवित्र होता है, फिर शांतिपूर्ण, सहनशील, सहज–प्रसन्न, करुणा–पूर्ण होता है। और उससे उत्तम कर्मों की फ़सल उपजती है। वह पक्षपात–रहित और सच्चा भी होता है। [18]शांति के लिए काम करने वाले लोगों

इब्राहीम ... ठहरा उत्पत्ति 15:6
परमेश्वर ... मित्र 2 इति. 20:7; यशा. 41:8

को ही धार्मिक जीवन का फल प्राप्त होगा यदि उसे शांतिपूर्ण वातावरण में बोया गया है।

परमेश्वर को समर्पित हो जाओ

4 तुम्हारे बीच लड़ाई-झगड़े क्यों होते हैं? क्या उनका कारण तुम्हारे अपने ही भीतर नहीं है? तुम्हारी वे भोग-विलासपूर्ण इच्छाएँ ही जो तुम्हारे भीतर निरन्तर द्वन्द्व करती रहती हैं, क्या उन्हीं से ये पैदा नहीं होते? [2]तुम लोग चाहते तो हो किन्तु तुम्हें मिल नहीं पाता। तुम में ईर्ष्या है और तुम दूसरों की हत्या करते हो, फिर भी जो चाहते हो, प्राप्त नहीं कर पाते। और इसीलिये लड़ते झगड़ते हो। अपनी इच्छित वस्तुओं को तुम प्राप्त नहीं कर पाते क्योंकि तुम उन्हें परमेश्वर से नहीं माँगते। [3]और जब माँगते भी हो तो तुम्हारा उद्देश्य अच्छा नहीं होता। क्योंकि तुम उन्हें अपने भोग-विलास में ही उड़ाने को माँगते हो। [4]अरे, विश्वास विहीन लोगो! क्या तुम नहीं जानते कि संसार से प्रेम करना परमेश्वर से घृणा करने जैसा ही है? जो कोई इस दुनिया से दोस्ती रखना चाहता है, वह अपने आपको परमेश्वर का शत्रु बनाता है। [5]अथवा क्या तुम ऐसा सोचते हो कि शास्त्र ऐसा व्यर्थ में ही कहता है कि, "परमेश्वर ने हमारे भीतर जो आत्मा दी है, वह ईर्ष्या पूर्ण इच्छाओं से भरी रहती है।" [6]किन्तु परमेश्वर ने हम पर अत्यधिक अनुग्रह दर्शाया है, इसीलिए शास्त्र में कहा गया है, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोधी है, जबकि दीन जनों पर अपनी अनुग्रह दर्शाता है।"* [7]इसीलिए अपने आपको परमेश्वर के अधीन कर दो। शैतान का विरोध करो, वह तुम्हारे सामने से भाग खड़ा होगा। [8]परमेश्वर के पास आओ, वह भी तुम्हारे पास आयेगा। अरे पापियो! अपने हाथ शुद्ध करो और अरे सन्देह करने वालो, अपने हृदयों को पवित्र करो। [9] शोक करो, विलाप करो और दुःखी होओ। हो सकता है तुम्हारे ये अट्टहास शोक में बदल जायें और तुम्हारी यह प्रसन्नता विषाद में बदल जाये। [10]प्रभु के सामने स्वयं को नवाओ। वह तुम्हें ऊँचा उठायेगा।

न्यायकर्त्ता तुम नहीं हो

[11]हे भाइयो, एक दूसरे के विरोध में बोलना बंद करो। जो अपने ही भाई के विरोध में बोलता है, अथवा उसे दोषी ठहराता है, वह व्यवस्था के ही विरोध में बोलता है और व्यवस्था को दोषी ठहराता है। और यदि तुम व्यवस्था पर दोष लगाते हो तो व्यवस्था के विधान का पालन करने वाले नहीं रहते वरन उसके न्यायकर्त्ता बन जाते हो। [12]व्यवस्था के विधान को देने वाला और उसका न्याय करने वाला तो बस एक ही है। और वही रक्षा कर सकता है और वही नष्ट करता है। तो फिर अपने साथी का न्याय करने वाले तुम कौन होते हो?

अपना जीवन परमेश्वर को चलाने दो

[13]ऐसा कहने वालो सुनो, "आज या कल हम इस या उस नगर में जाकर साल-एक भर वहाँ व्यापार में धन लगा बहुत सा पैसा बना लेंगे।" [14]किन्तु तुम तो इतना भी नहीं जानते कि कल तुम्हारे जीवन का क्या बनेगा! देखो, तुम तो उस धुंध के समान हो जो थोड़ी सी देर को उठती है और फिर खो जाती है। [15]सो इसके स्थान पर तुम्हें तो सदा यही कहना चाहिये "यदि प्रभु ने चाहा तो हम जीयेंगे और यह या वह करेंगे।" [16]किन्तु स्थिति तो यह है कि तुम तो अपने आडम्बरों के लिये स्वयं पर गर्व करते हो। ऐसे सभी गर्व बुरे हैं। [17]तो फिर यह जानते हुए भी कि यह उचित है, उसे नहीं करना पाप है।

स्वार्थी धनी दण्ड के भागी होंगे

5 धनवानो सुनो, जो विपत्तियाँ तुम पर आने वाली हैं, उनके लिये रोओ और ऊँचे स्वर में विलाप करो। [2]तुम्हारा धन सड़ चुका हैं। तुम्हारी पोशाकें कीड़ों द्वारा खा ली गयी हैं। [3]तुम्हारा सोना चाँदी जंग लगने से बिगड़ गया है। उन पर लगी जंग तुम्हारे विरोध में गवाही देगी और तुम्हारे मांस को अग्नि की तरह चट कर जायेगी। तुमने अपना खजाना उस आयु में एक ओर उठा कर रख दिया है जिसका अंत आने को है। [4]देखो, तुम्हारे खेतों में जिन मजदूरों ने काम किया, तुमने उनका मेहनताना रोक रखा है। वही मेहनताना चीख पुकार कर रहा है और खेतों में काम करने वालों की वे चीख पुकारें सर्वशक्तिमान प्रभु के कानों तक जा पहुँची हैं। [5]धरती पर तुमने विलासपूर्ण जीवन जीया है और अपने आपको भोग-विलासों में डुबोये रखा है। इस प्रकार तुमने अपने

परमेश्वर ... है नीति. 3:34

आपको वध किये जाने के दिन के लिये पाल–पोसकर हृष्ट–पुष्ट कर लिया है। [6]तुमने भोले लोगों को दोषी ठहराकर उनके किसी प्रतिरोध के अभाव में ही उनकी हत्याएँ कर डालीं।

धैर्य रखो

[7]सो भाइयो, प्रभु के फिर से आने तक धीरज धरो। उस किसान का ध्यान धरो जो अपनी धरती की मूल्यवान उपज के लिये बाट जोहता रहता है। इसके लिये वह आरम्भिक वर्षा से लेकर बाद की वर्षा तक निरन्तर धैर्य के साथ बाट जोहता रहता है। [8]तुम्हें भी धैर्य के साथ बाट जोहनी होगी। अपने हृदयों को दृढ़ बनाये रखो क्योंकि प्रभु का दुबारा आना निकट ही है। [9]हे भाइयों, आपस में एक दूसरे की शिकायतें मत करो ताकि तुम्हें अपराधी न ठहराया जाये। देखो, न्यायकर्त्ता तो भीतर आने के लिये द्वार पर ही खड़ा है। [10]हे भाइयों, उन भविष्यवक्ताओं को याद रखो जिन्होंने प्रभु के लिये बोला। वे हमारे लिए यातनाएँ झेलने और धैर्य पूर्ण सहनशीलता के उदाहरण हैं। [11]ध्यान रखना, हम उन की सहनशीलता के कारण उनको धन्य मानते हैं। तुमने अय्यूब के धीरज के बारे में सुना ही है और प्रभु ने उसे उसका जो परिणाम प्रदान किया, उसे भी तुम जानते ही हो कि प्रभु कितना दयालु और करुणापूर्ण है।

सोच विचार कर बोलो

[12]हे मेरे भाइयो, सबसे बड़ी बात यह है कि स्वर्ग की अथवा धरती की या किसी भी प्रकार की कसमें खाना छोड़ो। तुम्हारी "हाँ", हाँ होनी चाहिये, और "ना" ना होनी चाहिये। ताकि तुम पर परमेश्वर का दण्ड न पड़े।

प्रार्थना की शक्ति

[13]यदि तुममें से कोई विपत्ति में पड़ा है तो उसे प्रार्थना करनी चाहिये और यदि कोई प्रसन्न है तो उसे स्तुति–गीत गाने चाहिये। [14]यदि तुम्हारे बीच कोई रोगी है तो उसे कलीसिया के अगुवाओं को बुलाना चाहिये कि वे उसके लिये प्रार्थना करें और उस पर प्रभु के नाम में तेल मलें [15]विश्वास के साथ की गयी प्रार्थना से रोगी निरोग होता है। और प्रभु उसे उठाकर खड़ा कर देता है। यदि उसने पाप किये हैं तो प्रभु उसे क्षमा कर देगा। [16]इसलिये अपने पापों को परस्पर स्वीकार और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो ताकि तुम भले चंगे हो जाओ। धार्मिक व्यक्ति की प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण होती है। [17]एलिय्याह एक मनुष्य ही था ठीक हमारे जैसा। उसने तीव्रता के साथ प्रार्थना की कि वर्षा न हो और साढ़े तीन साल तक धरती पर वर्षा नहीं हुई। [18]उसने फिर प्रार्थना की और आकाश में वर्षा उमड़ पड़ी तथा धरती ने अपनी फसलें उपजायीं।

एक आत्मा की रक्षा

[19]हे मेरे भाइयो, तुममें से कोई यदि सत्य से भटक जाये और उसे कोई फिर लौटा लाये तो उसे यह पता होना चाहिये कि [20]जो किसी पापी को पाप के मार्ग से लौटा लाता है वह उस पापी की आत्मा को अनन्त मृत्यु से बचाता है और उसके अनेक पापों के क्षमा किये जाने का कारण बनता है।

1 पतरस

1 पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का प्रेरित है: परमेश्वर के उन चुने हुए लोगों के नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, एशिया और बिथुनिया के क्षेत्रों में सब कहीं फैले हुए हैं। [2]तुम, जिन्हें परम पिता परमेश्वर के पूर्व–ज्ञान के अनुसार चुना गया है, जो अपनी आत्मा के कार्य द्वारा उसे समर्पित हो, जिन्हें उसके आज्ञाकारी होने के लिए और जिन पर यीशु मसीह के लहू के छिड़काव के पवित्र किये जाने के लिए चुना गया है। तुम पर परमेश्वर का अनुग्रह और शांति अधिक से अधिक होते रहें।

सजीव आशा

[3]हमारे प्रभु यीशु मसीह का परम पिता परमेश्वर धन्य हो। मरे हुओं में से यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा उसकी अपार करुणा में एक सजीव आशा पा लेने के लिये उसने हमें नया जन्म दिया है। [4]ताकि तुम तुम्हारे लिये स्वर्ग में सुरक्षित रूप से रखे हुए अजर–अमर दोष रहित अविनाशी उत्तराधिकार को पा लो। [5]जो विश्वास से सुरक्षित है, उन्हें वह उद्धार जो समय के अंतिम छोर पर प्रकट होने को है, प्राप्त हो। [6]इस पर तुम बहुत प्रसन्न हो। यद्यपि अब तुमको थोड़े समय के लिए तरह तरह की परीक्षाओं में पड़कर दुखी होना बहुत आवश्यक है। [7]ताकि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास जो आग में परखे हुए सोने से भी अधिक मूल्यवान है, उसे जब यीशु मसीह प्रकट होगा तब परमेश्वर से प्रशंसा, महिमा और आदर प्राप्त हो [8]यद्यपि तुमने उसे देखा नहीं है, फिर भी तुम उसे प्रेम करते हो। यद्यपि तुम अभी उसे देख नहीं पा रहे हो, किन्तु फिर भी उसमें विश्वास रखते हो और एक ऐसे आनन्द से भरे हुए हो जो अकथनीय एवं महिमामय है। [9]और तुम अपने विश्वास के परिणामस्वरूप अपनी आत्मा का उद्धार कर रहे हो। [10]इस उद्धार के विषय में उन नबियों ने, बड़े परिश्रम के साथ खोजबीन की है और बड़ी सावधानी के साथ पता लगाया है, जिन्होंने तुम पर प्रकट होने वाले अनुग्रह के सम्बन्ध में भविष्यवाणी कर दी थी। [11]उन नबियों ने मसीह की आत्मा से यह जाना जो मसीह पर होने वाले दुःखों को बता रही थी और वह महिमा जो इन दुःखों के बाद प्रकट होगी। यह आत्मा उन्हें बता रही थी। यह बातें इस दुनिया पर कब होंगी और तब इस दुनिया का क्या होगा। [12]उन्हें यह दर्शा दिया गया था कि उन बातों का प्रवचन करते हुए वे स्वयं अपनी सेवा नहीं कर रहे थे बल्कि तुम्हारी कर रहे थे। वे बातें स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें सुसमाचार का उपदेश देने वालों के माध्यम से बता दी गयी थीं। और उन बातों को जानने के लिए तो स्वर्गदूत तक तरसते हैं।

पवित्र जीवन के लिए बुलावा

[13]इसलिए मानसिक रूप से सचेत रहो और अपने पर नियन्त्रण रखो। उस वरदान पर पूरी आशा रखो जो यीशु मसीह के प्रकट होने पर तुम्हें दिया जाने को है। [14]आज्ञा मानने वाले बच्चों के समान उस समय की बुरी इच्छाओं के अनुसार अपने को मत ढालो जो तुममें पहले थीं, जब तुम अज्ञानी थे। [15]बल्कि जैसे तुम्हें बुलाने वाला परमेश्वर पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने प्रत्येक कर्म में पवित्र बनो। [16]शास्त्र भी ऐसा ही कहता है: "पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"*

[17]और यदि तुम, प्रत्येक के कर्मों के अनुसार पक्षपात रहित होकर न्याय करने वाले परमेश्वर को हे पिता कह कर पुकारते हो तो इस परदेसी धरती पर अपने निवास काल में सम्मानपूर्ण भय के साथ जीवन जीओ। [18]तुम यह जानते हो कि चाँदी या सोने जैसी वस्तुओं से तुम्हें उस व्यर्थ जीवन से छुटकारा नहीं मिल सकता, जो तुम्हें

पवित्र ... हूँ लैव्य. 11:44,45; 19:2; 20:7

तुम्हारे पूर्वजों से मिला है [19]बल्कि वह तो तुम्हें निर्दोष और कलंक रहित मेमने के समान मसीह के बहुमूल्य रक्त से ही मल सकता है। [20]इस जगत की सृष्टि से पहले ही उसे चुन लिया गया था किन्तु तुम लोगों के लिये उसे इन अंतिम दिनों में प्रकट किया गया। [21]उस मसीह के कारण ही तुम उस परमेश्वर में विश्वास करते रहे जिसने उसे मरे हुओं में से पुनर्जीवित कर दिया और उसे महिमा प्रदान की। इस प्रकार तुम्हारी आशा और तुम्हारा विश्वास परमेश्वर में स्थिर हो।

[22]अब देखो जब तुमने सत्य का पालन करते हुए, सच्चे भाईचारे के प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए अपने आत्मा को पवित्र कर लिया है तो पवित्र मन से तीव्रता के साथ परस्पर प्रेम करने को अपना लक्ष्य बना लो। [23]तुमने नाशमान बीज से पुनर्जीवन प्राप्त नहीं किया है बल्कि यह उस बीज का परिणाम है जो अमर है। तुम्हारा पुनर्जन्म परमेश्वर के उस सुसंदेश से हुआ है जो सजीव और अटल है। [24]क्योंकि शास्त्र कहता है:

"प्राणी तो सभी घास के समान हैं
और उनकी सज–धज
सब घास के फूलों सी
घास सूख जाती है और फूल उड़ जाते हैं
[25] किन्तु प्रभु का सुसंदेश
सदा सर्वदा टिका रहता है।"

यशायाह 40:6–8

यह वही सुसंदेश है जिसका तुम्हें उपदेश दिया गया है।

सजीव पत्थर और पवित्र प्रजा

2 इसलिये सभी बुराइयों, छल–छद्मों, पाखण्ड तथा वैर–विरोधों और परस्पर दोष लगाने से बचे रहो। [2]नवजात बच्चों के समान शुद्ध आध्यात्मिक दूध के लिये लालायित रहो ताकि उससे तुम्हारा विकास और उद्धार हो। [3]अब देखो, तुमने तो प्रभु के अनुग्रह का स्वाद ले ही लिया है।"

[4]यीशु मसीह के निकट आओ। वह सजीव "पत्थर" है। उसे संसारी लोगों ने नकार दिया था किन्तु जो परमेश्वर के लिये बहुमूल्य है और जो उसके द्वारा चुना गया है। [5]तुम भी सजीव पत्थरों के समान एक आध्यात्मिक मन्दिर के रूप में बनाये जा रहे हो ताकि एक ऐसे पवित्र याजकमण्डल के रूप में सेवा कर सको जिसका कर्तव्य ऐसे आध्यात्मिक बलिदान समर्पित करना है जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों। [6]शास्त्र में लिखा है:

"देखो, सिय्योन में एक कोने का
पत्थर रख रहा हूँ,
जो बहुलूल्य है और चुना हुआ है
इस पर जो कोई भी विश्वास करेगा
उसे कभी भी नहीं लजाना पड़ेगा।"

यशायाह 28:16

[7]इसका मूल्य तो तुम विश्वासियों के लिये है किन्तु उनके लिये जो विश्वास नहीं करते हैं:

"वही पत्थर जिसे शिल्पियों ने नकारा था
सब से महत्त्वपूर्ण बन गया कोने का सिर।"

भजन संहिता 118:22

[8]तथा वह बन गया:

"एक पत्थर जहाँ लोग ठोकर खायें
और ऐसी एक चट्टान
जहाँ से जन फिसल जायें।"

यशायाह 8:14

लोग ठोकर खाते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के वचन का पालन नहीं करते और बस यही उनकी नियति रही है।

[9]किन्तु तुम तो चुने हुए लोग हो याजकों का एक राज्य, एक पवित्र प्रजा एक ऐसा नर–समूह जो परमेश्वर का अपना है, ताकि तुम परमेश्वर के अद्भुत कर्मों की घोषणा कर सको। वह परमेश्वर जिसने तुम्हें अन्धकार से अद्भुत प्रकाश में बुलाया। [10]एक समय था जब तुम प्रजा नहीं थे किन्तु अब तुम परमेश्वर की प्रजा हो। एक समय था जब तुम दया के पात्र नहीं थे किन्तु अब तुम पर परमेश्वर ने दया दिखायी है।

परमेश्वर के लिये जीओ

[11]हे प्रिय मित्रो, मैं तुमसे, जो इस संसार में अजनबियों के रूप में हो, निवेदन करता हूँ कि उन शारीरिक इच्छाओं से दूर रहो जो तुम्हारी आत्मा से जूझती रहती हैं। [12]विधर्मियों के बीच अपना व्यवहार इतना उत्तम बनाये रखो कि चाहे वे अपराधियों के रूप में तुम्हारी आलोचना करें किन्तु तुम्हारे उत्तम कर्मों के परिणामस्वरूप परमेश्वर के आने के दिन वे परमेश्वर को महिमा प्रदान करें।

अधिकारी की आज्ञा मानो

[13]प्रभु के लिये हर मानव अधिकारी के अधीन रहो। [14]राजा के अधीन रहो। वह सर्वोच्च अधिकारी है। शासकों के अधीन रहो। उन्हें उसने कुकर्मियों को दण्ड देने और उत्तम कर्म करने वालों की प्रशंसा के लिये भेजा है। [15]क्योंकि परमेश्वर की यही इच्छा है कि तुम अपने उत्तम कार्यों से मूर्ख लोगों की अज्ञान से भरी बातों को चुप करा दो। [16]स्वतन्त्र व्यक्ति के समान जीओ किन्तु उस स्वतन्त्रता को बुराई के लिये आड़ मत बनने दो। परमेश्वर के सेवकों के समान जीओ। [17]सबका सम्मान करो। अपने धर्म भाइयों से प्रेम करो। परमेश्वर का आदर के साथ भय मानो। शासक का सम्मान करो।

मसीह की यातना का दृष्टांत

[18]हे सेवको, यथोचित आदर के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो। न केवल उनके, जो अच्छे हैं और दूसरों के लिये चिंता करते हैं बल्कि उनके भी जो कठोर हैं। [19]क्योंकि यदि कोई परमेश्वर के प्रति सचेत रहते हुए यातनाएँ सहता है और अन्याय झेलता है तो वह प्रशंसनीय है। [20]किन्तु यदि बुरे कर्मों के कारण तुम्हें पीटा जाता है और तुम उसे सहते हो तो इसमें प्रशंसा की क्या बात है। किन्तु यदि तुम्हें तुम्हारे अच्छे कामों के लिये सताया जाता है तो परमेश्वर के सामने वह प्रशंसा के योग्य है। [21]परमेश्वर ने तुम्हें इसीलिये बुलाया है क्योंकि मसीह ने भी हमारे लिये दुःख उठाये हैं और ऐसा करके हमारे लिए एक उदाहरण छोड़ा है ताकि हम भी उसी के चरण चिह्नों पर चल सकें।

[22] "उसने कोई पाप नहीं किया
और न ही उसके मुख से कोई
छल की बात ही निकली।"

यशायाह 53:9

[23]जब वह अपमानित हुआ तब उसने किसी का अपमान नहीं किया, जब उसने दुःख झेले, उसने किसी को धमकी नहीं दी, बल्कि उस सच्चे न्याय करने वाले परमेश्वर के आगे अपने आपको अर्पित कर दिया। [24]उसने क्रूस पर अपनी देह में हमारे पापों को ओढ़ लिया। ताकि अपने पापों के प्रति हमारी मृत्यु हो जाये और जो कुछ नेक है उसके लिये हम जीयें। यह उसके उन घावों के कारण ही हुआ जिनसे तुम चंगे किये गये हो। [25]क्योंकि तुम भेड़ों के समान भटक रहे थे किन्तु अब तुम अपने गडरिये और तुम्हारी आत्माओं के रखवाले के पास लौट आये हो।

पत्नी और पति

3 इसी प्रकार हे पत्नियो! अपने अपने पतियों के प्रति समर्पित रहो। ताकि यदि उनमें से कोई परमेश्वर के वचन का पालन नहीं करते हों तो तुम्हारे पवित्र और आदरपूर्ण चाल चलन को देखकर बिना किसी बातचीत के ही अपनी-अपनी पत्नियों के व्यवहार से जीत लिये जायें। [3]तुम्हारा साज-श्रृंगार दिखावटी नहीं होना चाहिए। अर्थात् जो केशों की वेणियाँ सजाने, सोने के आभूषण पहनने और अच्छे-अच्छे कपड़ों से किया जाता है, [4]बल्कि तुम्हारा श्रृंगार तो तुम्हारे मन का भीतरी व्यक्तित्व होना चाहिये जो कोमल और शान्त आत्मा के अविनाशी सौन्दर्य से युक्त हो। परमेश्वर की दृष्टि में जो मूल्यवान हो। [5]क्योंकि बीते युग की उन पवित्र महिलाओं का, अपने आपको सजाने-सँवारने का यही ढंग था, जिनकी आशाएँ परमेश्वर पर टिकी हैं। वे अपने अपने पति के अधीन वैसे ही रहा करती थीं [6]जैसे इब्राहीम के अधीन रहने वाली सारा जो उसे अपना स्वामी मानती थी। तुम भी बिना कोई भय माने यदि नेक काम करती हो तो उसी की बेटी हो।

[7]ऐसे ही हे पतियो, तुम अपनी पत्नियों के साथ समझदारी पूर्वक रहो। उन्हें निर्बल समझ कर, उनका आदर करो। जीवन के वरदान में उन्हें अपना सह उत्तराधिकारी भी मानो ताकि तुम्हारी प्रार्थनाओं में बाधा न पड़े।

सतकर्मों के लिये दुःख झेलना

[8]अन्त में तुम सब को समानविचार, सहानुभूतिशील, अपने बन्धुओं से प्रेम करने वाला, दयालु और नम्र बनना चाहिये। [9]एक बुराई का बदला दूसरी बुराई से मत दो। अथवा अपमान के बदले अपमान मत करो बल्कि बदले में आशीर्वाद दो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें ऐसा ही करने को बुलाया है। इसी से तुम्हें परमेश्वर के आशीर्वाद का उत्तराधिकारी मिलेगा। [10]शास्त्र कहता है:

"जो जीवन का आनन्द उठाना चाहे
जो समय की सद्गति को देखना चाहे
उसे चाहिए वह कभी कहीं बुरे बोल न बोले।

वह अपने अधरों को छल वाणी से रोके
11 उसे चाहिये वह मुँह फेरे
उससे जो नेक नहीं होता
वह उन कर्मों को सदा करे जो उत्तम है,
उसे चाहिये यत्नशील हो शांति पाने को
उसे चाहिये वह शांति का अनुसरण करे
12 प्रभु की आँखें टिकी है उन्हीं पर जो उत्तम हैं
प्रभु के कान लगे उनकी प्रार्थनाओं पर
पर जो बुरे कर्म करते हैं
प्रभु उनसे सदा मुख फेरता है।"

भजन संहिता 34:12-16

[13]यदि जो उत्तम है तुम उसे ही करने को लालायित रहो तो भला तुम्हें कौन हानि पहुँचा सकता है? [14]किन्तु यदि तुम्हें भले के लिये दु:ख उठाना ही पड़े तो तुम धन्य हो। "इसलिए उनके किसी भी भय से न तो भयभीत होवो और न ही विचलित।" [15]अपने मन में मसीह को प्रभु के रुप में आदर दो। तुम सब जिस विश्वास को रखते हो, उसके विषय में यदि कोई तुमसे पूछे तो उसे उत्तर देने के लिये सदा तैयार रहो। [16]किन्तु विनम्रता और आदर के साथ ही ऐसा करो। अपना हृदय शुद्ध रखो ताकि यीशु मसीह में तुम्हारे उत्तम आचरण की निन्दा करने वाले लोग तुम्हारा अपमान करते हुए लजायें। [17]यदि परमेश्वर की इच्छा यही है कि तुम दु:ख उठाओ तो उत्तम कार्य करते हुए दु:ख झेलो न कि बुरे काम करते हुए। [18]क्योंकि मसीह ने भी हमारे पापों के लिये दु:ख उठाया। अर्थात् वह जो निर्दोष था हम पापियों के लिये एक बार मर गया कि हमें परमेश्वर के समीप ले जाये। शरीर के भाव से तो वह मारा गया पर आत्मा के भाव से जिलाया गया। [19]आत्मा की स्थिति में ही उसने जाकर उन स्वर्गीय आत्माओं को जो बंदी थीं उन बंदी आत्माओं को संदेश दिया [20]जो उस समय परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानने वाली थीं जब नूह की नाव बनायी जा रही थी और परमेश्वर धीरज के साथ प्रतीक्षा कर रहा था उस नाव में थोड़े से अर्थात् केवल आठ-व्यक्ति ही पानी से बच पाये थे। [21]यह पानी उस बपतिस्मा के समान है जिससे अब तुम्हारा उद्धार होता है। इस में शरीर का मैल छुड़ाना नहीं, वरन एक शुद्ध अन्त:करण के लिये परमेश्वर से विनती है। अब तो बपतिस्मा तुम्हे यीशु मसीह वे पुनरूत्थान के द्वारा बचाता है। [22]वह स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने विराजमान है, और अब स्वर्गदूत, अधिकारीगण और सभी शक्तियाँ उसके अधीन कर दी गयी हैं।

बदला हुआ जीवन

4 जब मसीह ने शारीरिक दु:ख उठाया तो तुम भी उसी मानसिकता को शस्त्र के रूप में धारण करो क्योंकि जो शारीरिक दु:ख उठाता है, वह पापों से छुटकारा पा लेता है। [2]इसलिए वह फिर मानवीय इच्छाओं का अनुसरण न करे, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कर्म करते हुए अपने शेष भौतिक जीवन को समर्पित कर दे। [3]क्योंकि तुम अब तक अबोध व्यक्तियों के समान विषय-भोगों, वासनाओं, पियक्कड़पन, उन्माद से भरे आमोद-प्रमोदों, मधुपान-उत्सवों और घृणा-पूर्ण मूर्ति-पूजाओं में पर्याप्त समय बिता चुके हो। [4]अब जब तुम इस घृणित रहन-सहन में उनका साथ नहीं देते हो तो उन्हें आश्चर्य होता है। वे तुम्हारी निन्दा करते हैं। [5]उन्हें जो अभी जीवित हैं या मर चुके हैं, अपने व्यवहार का लेखा-जोखा उस मसीह को देना होगा जो उनका न्याय करने वाला है। [6]इसीलिए उन विश्वासियों को जो मर चुके हैं, सुसमाचार का उपदेश दिया गया कि शारीरिक रूप से चाहे उनका न्याय मानवीय स्तर पर हो किन्तु आत्मिक रूप से वे परमेश्वर के अनुसार रहें।

अच्छे प्रबन्ध-कर्ता बनो

[7]वह समय निकट है जब सब कुछ का अंत हो जायेगा। इसलिये समझदार बनो और अपने पर काबू रखो ताकि तुम्हें प्रार्थना करने में सहायता मिले। [8]और सबसे बड़ी बात यह है कि एक दूसरे के प्रति निरन्तर प्रेम बनाये रखो क्योंकि प्रेम से अनगिनत पापों का निवारण होता है। [9]बिना कुछ कहे सुने एक दूसरे का स्वागत सत्कार करो। [10]जिस किसी को परमेश्वर की ओर से जो भी वरदान मिला है, उसे चाहिये कि परमेश्वर के विविध अनुग्रह के उत्तम प्रबन्धकों के समान, एक दूसरे की सेवा के लिए उसे काम में लाये। [11]जो कोई प्रवचन करे, वह ऐसे करे, जैसे मानो परमेश्वर से प्राप्त वचनों को ही सुना रहा हो। जो कोई सेवा करे, वह उस शक्ति के साथ करे, जिसे परमेश्वर प्रदान करता है ताकि सभी बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। महिमा और सामर्थ्य सदा सर्वदा उसी की है। आमीन!

मसीही के रूप में दुःख उठाना

[12]हे प्रिय मित्रो, तुम्हारे बीच की इस अग्नि–परीक्षा पर जो तुम्हें परखने को है, ऐसे अचरज मत करना जैसे तुम्हारे साथ कोई अनहोनी घट रही हो, [13]बल्कि आनन्द मनाओ कि तुम मसीह की यातनाओं में हिस्सा बटा रहे हो। ताकि जब उसकी महिमा प्रकट हो तब तुम भी आनन्दित और मगन हो सको। [14]यदि मसीह के नाम पर तुम अपमानित होते हो तो उस अपमान को सहन करो क्योंकि तुम मसीह के अनुयायी हो, तुम धन्य हो क्योंकि परमेश्वर की महिमावान आत्मा तुममें निवास करती है। [15]सो तुममें से कोई भी एक हत्यारा, चोर, कुकर्मी अथवा दूसरे के कामों में बाधा पहुँचाने वाला बनकर दुःख न उठाये। [16]किन्तु यदि वह एक मसीही होने के नाते दुःख उठाता है तो उसे लज्जित नहीं होना चाहिये; बल्कि उसे तो परमेश्वर को महिमा प्रदान करनी चाहिये कि वह इस नाम को धारण करता है। [17]क्योंकि परमेश्वर के अपने परिवार से ही आरम्भ होकर न्याय प्रारम्भ करने का समय आ पहुँचा है। और यदि यह हमसे ही प्रारम्भ होता है तो जिन्होंने परमेश्वर के सुसमाचार का पालन नहीं किया है, उनका परिणाम क्या होगा? [18]और "यदि एक धार्मिक व्यक्ति का ही उद्धार पाना कठिन है तो परमेश्वर विहीन और पापियों के साथ क्या घटेगा।"* [19]तो फिर जो परमेश्वर की इच्छानुसार दुःख उठाते हैं, उन्हें उत्तम कार्य करते हुए, उस विश्वास मय, सृष्टि के रचयिता को अपनी–अपनी आत्माएँ सौंप देनी चाहियें।

परमेश्वर का जन–समूह

5 अब मैं तुम्हारे बीच जो बुजुर्ग हैं, उनसे निवेदन करता हूँ: (मैं, जो स्वयं एक बुजुर्ग हूँ और मसीह ने जो यातनाएँ झेली हैं, उनका साक्षी हूँ तथा वह भावी महिमा जो प्रकट होने को है, उसका सहभागी हूँ) [2]राह दिखाने वाले परमेश्वर का जन–समूह तुम्हारी देख–रेख में है और निरीक्षक के रूप में तुम उसकी सेवा करते हो; किसी दबाव के कारण नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छानुसार ऐसा करने की स्वेच्छा के कारण तुम अपना यह काम धन के लालच में नहीं बल्कि सेवा करने के प्रति अपनी तत्परता के कारण करते हो। [3]देखरेख के लिये जो तुम्हें सौंपे गये हैं, तुम उनके कठोर निरंकुश शासक मत बनो। बल्कि लोगों के लिये एक आदर्श बनो। [4]ताकि जब वह प्रधान रखवाला प्रकट हो तो तुम्हें विजय का वह भव्य मुकुट प्राप्त हो जिसकी शोभा कभी घटती नहीं है।

[5]इसी प्रकार हे नव युवको! तुम अपने धर्मवृद्धों के अधीन रहो। तुम एक दूसरे के प्रति विनम्रता धारण करो, क्योंकि

"परमेश्वर अभिमानी का विरोध करता है
किन्तु दीन जनों पर सदा अनुग्रह रहता है।"
नीतिवचन 3:34

[6]इसलिए परमेश्वर के महिमावान हाथ के नीचे अपने आपको नवाओ। ताकि वह उचित अवसर आने पर तुम्हें ऊँचा उठाये। [7]तुम अपनी सभी चिंताएँ उस पर छोड़ दो क्योंकि वह तुम्हारे लिये चिंतित है।

[8]अपने पर नियन्त्रण रखो। सावधान रहो। तुम्हारा शत्रु शैतान एक गरजते सिंह के समान इधर–उधर घूमते हुए इस ताक में रहता है कि जो मिले उसे फाड़ खाये। [9]उसका विरोध करो और अपने विश्वास पर डटे रहो क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि समूचे संसार में तुम्हारे भाई बहन ऐसी ही यातनाएँ झेल रहे हैं।

[10]किन्तु सम्पूर्ण अनुग्रह का स्रोत परमेश्वर जिसने तुम्हें यीशु मसीह में अनन्त महिमा का सहभागी होने के लिये बुलाया है, तुम्हारे थोड़े समय यातनाएँ झेलने के बाद स्वयं ही तुम्हें फिर से स्थापित करेगा, समर्थ बनाएगा और स्थिरता प्रदान करेगा। [11]उसकी शक्ति अनन्त है। आमीन।

पत्र का समापन

[12]मैंने तुम्हें यह छोटा–सा पत्र, सिलवानुस के सहयोग से, जिसे मैं अपना विश्वासपूर्ण भाई मानता हूँ, तुम्हें प्रोत्साहित करने के लिये कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है, इस बात की साक्षी देने के लिए लिखा है। इसी पर डटे रहो।

[13]बेबिलोन की कलीसिया जो तुम्हारे ही समान परमेश्वर द्वारा चुनी गई है, तुम्हें नमस्कार कहती है। मसीह में मेरे पुत्र मरकुस का भी तुम्हें नमस्कार। [14]प्रेमपूर्ण चुम्बन से एक दूसरे का स्वागत सत्कार करो।

तुम सब को, जो मसीह में हो, शान्ति मिले।

यदि एक ... घटेगा नीति. 11:31

2 पतरस

1 यीशु मसीह के सेवक तथा प्रेरित शमौन पतरस की ओर से उन लोगों के नाम जिन्हें परमेश्वर से हमारे जैसा ही विश्वास प्राप्त है। क्योंकि हमारा परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह न्यायपूर्ण हैं।

[2]तुम परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह को जान चुके हो इसलिए तुम्हें परमेश्वर की कृपा और अनुग्रह अधिक से अधिक प्राप्त हों।

परमेश्वर ने हमें सब कुछ दिया है

[3]अपने जीवन के लिये और परमेश्वर की सेवा के लिये जो कुछ हमें चाहिये, अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा उसने सब कुछ हमें दिया है। क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने अपनी धार्मिकता और महिमा के कारण हमें बुलाया है। [4]इन्हीं के द्वारा उसने हमें वे महान और अमूल्य वरदान दिये हैं, जिन्हें देने की उसने प्रतिज्ञा की थी ताकि उनके द्वारा तुम स्वयं परमेश्वर के समान हो जाओ और उस विनाश से बच जाओ जो लोगों की बुरी इच्छाओं के कारण इस जगत में स्थित है।

[5]सो इसीलिये अपने विश्वास में उत्तम गुणों को, उत्तम गुणों में ज्ञान को, [6]ज्ञान में आत्मसंयम को, आत्मसंयम में धैर्य को, धैर्य में परमेश्वर की भक्ति को, [7]भक्ति में भाईचारे को और भाईचारे में प्रेम को उदारता के साथ बढ़ाते चलो। [8]क्योंकि यदि ये गुण तुममें हैं और उनका विकास हो रहा है तो वे तुम्हें कर्मशील और सफल बना देंगे तथा उनसे तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह का परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा [9]किन्तु जिसमें ये गुण नहीं हैं, उसमें दूर–दृष्टि नहीं है, वह अन्धा है। तथा वह यह भूल चुका है कि उसके पूर्व पापों को धोया जा चुका है।

[10]इसलिये हे भाइयो, यह दिखाने के लिये और अधिक तत्पर रहो कि तुम्हें वास्तव में परमेश्वर द्वारा बुलाया गया है और चुना गया है क्योंकि यदि तुम इन बातों को करते हो तो न कभी ठोकर खाओगे और न ही गिरोगे [11]और इस प्रकार हमारे प्रभु एवम् उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में तुम्हें प्रवेश देकर परमेश्वर अपनी उदारता दिखायेगा।

[12]इसी कारण मैं तुम्हें, यद्यपि तुम उन्हें जानते ही हो और जो सत्य तुम्हें मिला है, उस पर टिके भी हुए हो, इन बातों को सदा याद दिलाता रहूँगा। [13]मैं जब तक इस काया में हूँ, तुम्हें याद दिलाकर सचेत करते रहने को उचित समझता हूँ। [14]क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मुझे अपनी इस काया को शीघ्र ही छोड़ देना है। जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने मुझे समझाया है। [15]इसलिये मैं भरसक प्रयत्न करूँगा कि मेरे मर जाने के बाद भी तुम इन बातों को सदा याद कर सको।

हमने मसीह की महिमा के दर्शन किये हैं

[16]जब हमारे प्रभु यीशु मसीह के समर्थ आगमन के विषय में हमने तुम्हें बताया था, तब चतुरतापूर्वक गढ़ी हुई कहानियों का सहारा नहीं लिया था क्योंकि हम तो उसकी महानता के स्वयं साक्षी हैं। [17]जब परम पिता परमेश्वर से उसने सम्मान और महिमा प्राप्त की तो उस दिव्य–महिमा से विशिष्ट वाणी प्रकट हुई–"यह मेरा प्रिय पुत्र है, मैं इससे प्रसन्न हूँ।" [18]हमने आकाश से आयी वह वाणी सुनी थी। तब हम पवित्र पर्वत पर उसके साथ ही थे।

[19]हमें भी नबियों के वचन पर और अधिक आस्था हुई। इस पर ध्यान देकर तुम भी अच्छा कर रहे हो क्योंकि यह तो एक प्रकाश है, जो एक अन्धेरे स्थान में तब तक चमक रहा है जब तक पौ फटती है और तुम्हारे हृदयों में भोर के तारे का उदय होता है। [20]किन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि तुम्हें यह जान लेना चाहिये कि शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी नबी के निजी विचारों का परिणाम नहीं है [21]क्योंकि कोई मनुष्य जो

कहना चाहता है, उसके अनुसार भविष्यवाणी नहीं होती। बल्कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से मनुष्य परमेश्वर की वाणी बोलते हैं।

झूठे शिक्षक

2 जैसा भी रहा हो उन संत जनों के बीच जैसे झूठे नबी दिखाई पड़ने लगे थे बिलकुल वैसे ही झूठे नबी तुम्हारे बीच भी प्रकट होंगे। वे घातक धारणओं का सूत्र–पात करेंगे और उस स्वामी तक को नकार देंगे जिसने उन्हें स्वतन्त्रता दिलायी। ऐसा करके वे अपने शीघ्र विनाश को निमन्त्रण देंगे। [2]बहुत से लोग उनकी भोग–विलास की प्रवृत्तियों का अनुसरण करेंगे। उनके कारण सच्चाई का मार्ग बदनाम होगा। [3]लोभ के कारण अपनी बनावटी बातों से वे तुमसे धन कमाएँगे। उनका दंड परमेश्वर के द्वारा बहुत पहले से निर्धारित किया जा चुका है। उनका विनाश तैयार है और उनकी प्रतीक्षा कर रहा है।

[4]क्योंकि परमेश्वर ने पाप करने वाले दूतों तक को जब नहीं छोड़ा और उन्हें पाताल लोक की अन्धेरे से भरी कोठरियों में डाल दिया कि वे न्याय के दिन तक वहीं पड़े रहें। [5]उसने उस पुरातन संसार को भी नहीं छोड़ा किन्तु नूह की उस समय रक्षा की जब अधर्मियों के संसार पर जल–प्रलय भेजी गयी थी। नूह उन आठ व्यक्तियों में से एक था जो जल प्रलय से बचे थे। धार्मिकता का प्रचारक नूह उपदेश दिया करता था। [6]सदोम और अमोरा जैसे नगरों को विनाश का दण्ड देकर राख बना डाला गया ताकि अधर्मी लोगों के साथ जो बातें घटेंगी, उनके लिये यह एक चेतावनी ठहरे।

[7]उसने लूत को बचा लिया जो एक नेक पुरूष था। वह उद्दण्ड लोगों के अनैतिक आचरण से दुःखी रहा करता था। [8]वह धर्मी पुरुष उनके बीच रहते हुए दिन–प्रतिदिन जैसा देखता था और सुनता था, उससे उनके व्यवस्था रहित कर्मों के कारण, उसकी सच्ची आत्मा तड़पती रहती थी। [9]इस प्रकार प्रभु जानता है कि भक्तों को न्याय के दिन तक कैसे बचाया जाता है और दुष्टों को दण्ड के लिये कैसे रखा जाता है। [10]विशेषकर उनको जो अपनी पापपूर्ण प्रकृति की बुरी वासनाओं के पीछे चलते हैं और प्रभु की प्रभुता से घृणा रखते हैं। ये उद्दण्ड और स्वेच्छाचारी हैं। ये महिमावान स्वर्गदूतों का अपमान करने से भी नहीं डरते। [11]जबकि ये स्वर्गदूत जो शक्ति और सामर्थ्य में इन लोगों से बड़े हैं, प्रभु के सामने उन पर कोई निन्दापूर्ण दोष नहीं लगाते। [12]किन्तु ये लोग तो विचारहीन पशुओं के समान हैं जो अपनी सहजवृत्ति के अनुसार काम करते हैं। जिनका जन्म ही इसलिये होता है कि वे पकड़े जायें और मार डाले जायें। वे उन विषयों के विरोध में बोलते हैं, जिनके बारे में वे अबोध हैं। जैसे पशु मार डाले जाते हैं, वैसे ही इन्हें भी नष्ट कर दिया जायेगा। [13]इन्हें बुराई का बदला बुराई से मिलेगा। दिन के प्रकाश में भोग–विलास करना इन्हें भाता है। ये लज्जापूर्ण धब्बे हैं। ये लोग जब तुम्हारे साथ उत्सवों में सम्मिलत होते हैं तो [14]ये सदा किसी ऐसी स्त्री की ताक में रहते हैं जिसके साथ व्यभिचार किया जा सके। इस प्रकार इनकी आँखें पाप करने से बाज़ नहीं आतीं। ये अस्थिर लोगों को पाप के लिये फुसला लेते हैं। इनके मन पूरी तरह लालच के आदी हैं। ये अभिशाप के पुत्र हैं। [15]सीधा–सादा मार्ग छोड़कर ये भटक गये हैं। बओर के बेटे बिलाम के मार्ग पर ये लोग अग्रसर हैं; बिलाम, जिसे बदी की मज़दूरी प्यारी थी। [16]किन्तु उसके बुरे कामों के लिये एक गदही, जो बोल नहीं पाती, मनुष्य की वाणी में बोली और उसे डाँटा फटकारा तथा उस नबी के उन्मादपूर्ण काम को रोका।

[17]ये झूठे उपदेशक सूखे जल–स्रोत हैं तथा ऐसे जल रहित बादल हैं जिन्हें तूफान उड़ा ले जाता है। इनके लिये सघन अन्धकारपूर्ण स्थान निश्चित किया गया है। [18]ये उन्हें जो भटके हुओं से बच निकलने का अभी आरम्भ ही कर रहे हैं, अपनी व्यर्थ की अहंकारपूर्ण बातों से उनकी भौतिक वासनापूर्ण इच्छाओं को जगा कर सत् पथ से डिगा लेते हैं। [19]ये झूठे उपदेशक उन्हें छुटकारे का वचन देते हैं। क्योंकि कोई व्यक्ति जो उसे जीत लेता है, वह उसी का दास हो जाता है।

[20]सो यदि ये हमारे प्रभु एवम् उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह को जान लेने और संसार के खोट से बच निकलने के बाद भी फिर से उन ही में फंस कर जगत की बदी से हार गये हैं, तो उनके लिये उनकी यह बाद की स्थिति, उनकी पहली स्थिति से कहीं बुरी है [21]क्योंकि उनके लिये यही अच्छा था कि वे इस धार्मिकता के मार्ग को जान ही नहीं पाते बजाय इसके कि जो पवित्र आज्ञा उन्हें दी गयी थी, उसे जानकर उससे मुँह फेर लेते। [22]उनके साथ तो वैसे ही घटी

जैसे कि उन सच्ची कहावतों में कहा गया है: "कुत्ता अपनी उल्टी के पास ही लौटता है।"* और "एक नहलायी हुई सुअरनी कीचड़ में लोट लगाने के लिये फिर लौट जाती है।"

यीशु फिर आयेगा

3 हे प्यारे मित्रो, अब यह दूसरा पत्र है जो मैं तुम्हें लिख रहा हूँ। इन दोनों पत्रों में उन बातों को याद दिलाकर मैंने तुम्हारे पवित्र हृदयों को जगाने का जतन किया है [2]ताकि तुम पवित्र नबियों द्वारा अतीत में कहे गये वचनों को याद करो और हमारे प्रभु तथा उद्धारकर्ता के आदेशों का, जो तुम्हारे प्रेरितों द्वारा तुम्हें दिये गये हैं, ध्यान रखो। [3]सबसे पहले तुम्हें यह जान लेना चाहिये कि अंतिम दिनों में स्वेच्छाचारी हँसी उड़ाने वाले हँसी उड़ाते हुए आयेंगे [4]और कहेंगे–"क्या हुआ उसके फिर से आने की प्रतिज्ञा का? क्योंकि हमारे पूर्वज तो चल बसे। पर जब से सृष्टि बनी है, हर बार, वैसे की वैसी ही चली आ रही है।" [5]किन्तु जब वे यह आक्षेप करते हैं तो वे यह भूल जाते हैं कि परमेश्वर के वचन द्वारा आकाश युगों से विद्यमान है और पृथ्वी जल में से बनी और जल में स्थिर है, [6]और इसी से उस युग का संसार जल प्रलय से नष्ट हो गया। [7]किन्तु यह आकाश और यह धरती जो आज अपने अस्तित्व में हैं, उसी आदेश के द्वारा अग्नि के द्वारा नष्ट होने के लिये सुरक्षित हैं। इन्हें उस दिन के लिए रखा जा रहा है जब अधर्मी लोगों का न्याय होगा और वे नष्ट कर दिये जायेंगे।

[8]पर प्यारे मित्रो! इस एक बात को मत भूलो: प्रभु के लिये एक दिन हज़ार साल के बराबर हैं और हज़ार साल एक दिन जैसे हैं। [9]प्रभु अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में देर नहीं लगाता। जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं। बल्कि वह हमारे प्रति धीरज रखता है क्योंकि वह किसी भी व्यक्ति को नष्ट नहीं होने देना चाहता। बल्कि वह तो चाहता है कि सभी मन फिराव की ओर बढ़ें।

[10]किन्तु प्रभु का दिन चुपके से चोर की तरह आयेगा। उस दिन एक भयंकर गर्जना के साथ आकाश विलीन हो जायेंगे और आकाशीय पिंड आग में जलकर नष्ट हो जाएंगे तथा यह धरती और इस धरती पर की सभी वस्तुएँ जल जाएगी। [11]क्योंकि जब ये सभी वस्तुएँ इस प्रकार नष्ट होने को जा रही हैं तो सोचो तुम्हें किस प्रकार का बनना चाहिये? (तुम्हें पवित्र जीवन जीना चाहिये, पवित्र जीवन जो परमेश्वर को अर्पित है तथा हर प्रकार के उत्तम कर्म करने चाहियें)। [12]और तुम्हें परमेश्वर के दिन की बाट जोहनी चाहिए और उस दिन को लाने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए। उस दिन के आते ही आकाश लपटों में जल कर नष्ट हो जायेगा और आकाशीय पिण्ड उस ताप से पिघल उठेंगे। [13]किन्तु हम परमेश्वर के वचन के अनुसार ऐसे नये आकाश और नयी धरती की बाट जोह रहे हैं जहाँ धार्मिकता निवास करती है।

[14]इसलिये हे प्रिय मित्रो, क्योंकि तुम इन बातों की बाट जोह रहे हो, पूरा प्रयत्न करो कि प्रभु की दृष्टि में और शांति में निर्दोष और कलंक रहित पाये जाओ। [15]हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो। जैसा कि हमारे प्रिय बन्धु पौलुस ने परमेश्वर के द्वारा दिये गये विवेक के अनुसार तुम्हें लिखा था। [16]अपने अन्य सभी पत्रों के समान उस पत्र में उसने इन बातों के विषय में कहा है। उन पत्रों में कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है। अज्ञानी और अस्थिर लोग उनके अर्थ का अनर्थ करते हैं। दूसरे शास्त्रों के साथ भी वे ऐसा ही करते हैं। इससे वे अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हैं।

[17]सो हे प्रिय मित्रो, क्योंकि तुम्हें ये बातें पहले से ही पता हैं इसलिये सावधान रहो कि तुम बुराइयों और व्यवस्थाहीन लोगों के द्वारा भटकाये जा कर अपनी स्थिर स्थिति से डिग न जाओ। [18]बल्कि हमारे प्रभु तथा उद्धारकर्ता यीशु मसीह की अनुग्रह और ज्ञान में तुम आगे बढ़ते जाओ। अब और अनन्त समय तक उसकी महिमा होती रहे।

कुत्ता ... है नीति. 26:111

1 यूहन्ना

1 यह सृष्टि के आरम्भ से ही था:
हमने इसे सुना है,
अपनी आँखों से देखा, ध्यान से निहारा,
और इसे स्वयं अपने ही हाथों से
हमने इसे छुआ है।

हम उस वचन के विषय में बता रहे हैं जो जीवन है। [2]उसी जीवन का ज्ञान हमें कराया गया। हमने उसे देखा। हम उसके साक्षी हैं और अब हम तुम लोगों को उसी अनन्त जीवन की उद्घोषणा कर रहे हैं जो पिता के साथ था और हमें जिसका बोध कराया गया। [3]हमने उसे देखा है और सुना है। अब तुम्हें भी उसी का उपदेश दे रहे हैं ताकि तुम भी हमारे साथ सहभागिता रखो। हमारी यह सहभागिता परम पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। [4]हम इन बातों को तुम्हें इसलिए लिख रहे हैं कि हमारा आनन्द परिपूर्ण हो जाये।

परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है

[5]हमने यीशु मसीह से जो सुसमाचार सुना है, वह यह है: और इसे ही हम तुम्हें सुना रहे हैं: परमेश्वर प्रकाश है और उसमें लेशमात्र भी अंधकार नहीं है। [6]यदि हम कहें कि हम उसके साझी हैं और पाप के अन्धकारपूर्ण जीवन को जीते रहें तो हम झूठ बोल रहे हैं और सत्य का अनुसरण नहीं कर रहे हैं। [7]किन्तु यदि हम अब प्रकाश में आगे बढ़ते हैं क्योंकि प्रकाश में ही परमेश्वर है–तो हम विश्वासी के रूप में एक दूसरे के सहभागी हैं। और परमेश्वर के पुत्र यीशु का लहू हमें सभी पापों से शुद्ध कर देता है।

[8]यदि हम कहते हैं कि हममें कोई पाप नहीं हैं तो हम स्वयं अपने आपको छल रहे हैं और हममें सच्चाई नहीं है।

[9]यदि हम अपने पापों को स्वीकार कर लेते हैं तो हमारे पापों को क्षमा करने के लिये परमेश्वर विश्वसनीय है और न्यायपूर्ण है और समुचित है। तथा वह सभी पापों से हमें शुद्ध करता है। [10]यदि हम कहते हैं कि हमने कोई पाप नहीं किया तो हम परमेश्वर को झूठा बनाते हैं और उसका वचन हम में नहीं है।

यीशु हमारा सहायक है

2 मेरे प्यारे पुत्र-पुत्रियों, ये बातें मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो। किन्तु यदि कोई पाप करता है तो परमेश्वर के सामने हमारे पापों का बचाव करने वाला एक है और वह है धर्मी यीशु मसीह। [2]वह एक बलिदान है जो हमारे पापों का हरण करता है न केवल हमारे पापों का बल्कि समूचे संसार के पापों का।

[3]यदि हम परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं तो यही वह मार्ग है जिससे हम निश्चय करते हैं कि हमने सचमुच उसे जान लिया है। [4]यदि कोई कहता है कि, "मैं परमेश्वर को जानता हूँ!" और उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता तो वह झूठा है। उसके मन में सत्य नहीं है। [5]किन्तु यदि कोई परमेश्वर के उपदेश का पालन करता है तो उसमें परमेश्वर के प्रेम ने परिपूर्णता पा ली है। यही वह मार्ग है जिससे हमें निश्चय होता है कि हम परमेश्वर में स्थित हैं: [6]जो यह कहता है कि वह परमेश्वर में स्थित है, उसे यीशु के जैसा जीवन जीना चाहिये।

सबसे प्रेम करो

[7]हे प्यारे मित्रो, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा हूँ बल्कि यह एक सनातन आज्ञा है, जो तुम्हें प्रारम्भ में ही दे दी गयी थी। यह पुरानी आज्ञा वह सुसंदेश है जिसे तुम सुन चुके हो। [8]मैं तुम्हें एक और दूसरी नयी आज्ञा लिख रहा हूँ। इस तथ्य का सत्य मसीह के जीवन में और तुम्हारे जीवनों में उजागर हुआ है क्योंकि अन्धकार विलीन हो रहा है और सच्चा प्रकाश तो चमक ही रहा है।

[9]जो कहता है, "वह प्रकाश में स्थित है और फिर भी अपने भाई से घृणा करता है, तो वह अब तक अंधकार में बना हुआ है। [10]जो अपने भाई को प्रेम करता है, प्रकाश में स्थित रहता है। उसके जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे कोई पाप में पड़े। [11]किन्तु जो अपने भाई से घृणा करता है, अँधेरे में है। वह अन्धकारपूर्ण जीवन जी रहा है। वह नहीं जानता, वह कहाँ जा रहा है। क्योंकि अँधेरे ने उसे अंधा बना दिया है।

[12] हे प्यारे बच्चो, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ,
क्योंकि यीशु मसीह के कारण
तुम्हारे पाप क्षमा किये गये हैं।
[13] हे पिताओ, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम, जो अनादि काल से स्थित है
उसे जानते हो।
हे युवको, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुमने उस दुष्ट पर विजय पा ली है।
[14] हे बच्चो, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम पिता को पहचान चुके हो।
हे पिताओ, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम जो सृष्टि के
अनादि काल से स्थित है, उसे जान गये हो।
हे नौजवानो, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम शक्तिशाली हो,
परमेश्वर का वचन तुम्हारे भीतर
निवास करता है और तुमने उस
दुष्ट आत्मा पर विजय पा ली है।

[15]संसार को अथवा सांसारिक वस्तुओं को प्रेम मत करते रहो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उसके हृदय में परमेश्वर के प्रति प्रेम नहीं है [16]क्योंकि इस संसार की हर वस्तु:

जो तुम्हारे पापपूर्ण स्वभाव को आकर्षित करती है,
तुम्हारी आँखों को भाती है और इस संसार की
प्रत्येक वह वस्तु, जिस पर लोग इतना गर्व करते हैं।

परम पिता की ओर से नहीं है बल्कि वह तो सांसारिक है। [17]यह संसार अपनी लालसाओं और इच्छाओं समेत विलीन होता जा रहा है किन्तु वह जो परमेश्वर की इच्छा का पालन करता है, अमर हो जाता है।

मसीह के विरोधियों का अनुसरण मत करो

[18]हे प्रिय बच्चो, अन्तिम घड़ी आ पहुँची है! और जैसा कि तुमने सुना है कि मसीह का विरोधी आ रहा है। सो अब अनेक मसीह–विरोधी प्रकट हो गये हैं। इसी से हम जानते हैं कि अन्तिम घड़ी आ पहुँची है। [19]मसीह के विरोधी हमारे ही भीतर से निकले हैं पर वास्तव में वे हमारे नहीं हैं क्योंकि यदि वे सचमुच हमारे होते तो हमारे साथ ही रहते। किन्तु वे हमें छोड़ गये ताकि वे यह दिखा सकें कि उनमें से कोई भी वास्तव में हमारा नहीं है।

[20]किन्तु तुम्हारा तो उस परम पवित्र ने आत्मा के द्वारा अभिषेक कराया है। इसीलिये तुम सब सत्य को जानते हो। [21]मैंने तुम्हें इसलिये नहीं लिखा है कि तुम सत्य को नहीं जानते हो? बल्कि तुम तो उसे जानते हो और इसलिये भी कि सत्य से कोई झूठ नहीं निकलता।

[22]किन्तु जो यह कहता है कि यीशु मसीह नहीं है, वह झूठा है। ऐसा व्यक्ति मसीह का शत्रु है। वह तो पिता और पुत्र दोनों को नकारता है। [23]वह जो पुत्र को नकारता है, उसके पास पिता भी नहीं है किन्तु जो पुत्र को मानता है, वह पिता को भी मानता है।

[24]जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुमने अनादि काल से जो सुना है, उसे अपने भीतर बनाये रखो। जो तुमने अनादि काल से सुना है,यदि तुममें बना रहता है तो तुम पुत्र और पिता दोनों में स्थित रहोगे। [25]उसने हमें अनन्त जीवन प्रदान करने का वचन दिया है।

[26]मैं ये बातें तुम्हें उन लोगों के सम्बन्ध में लिख रहा हूँ, जो तुम्हें छलने का जतन कर रहे हैं। [27]किन्तु जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुममें तो उस परम पवित्र से प्राप्त अभिषेक वर्तमान है, इसलिये तुम्हें तो आवश्यकता ही नहीं है कि कोई तुम्हें उपदेश दे, बल्कि तुम्हें तो वह आत्मा जिससे उस परम पवित्र ने तुम्हारा अभिषेक किया है, तुम्हें सब कुछ सिखाती है। (और याद रखो, वही सत्य है, वह मिथ्या नहीं है।) उसने तुम्हें जैसे सिखाया है, तुम मसीह में वैसे ही बने रहो।

[28]सो प्यारे बच्चो, उसी में बने रहो ताकि जब हमें उसका ज्ञान हो तो हम आत्मविश्वास पा सकें। और उसके पुन: आगमन के समय हमें लज्जित न होना पड़े। [29]यदि तुम यह जानते हो कि वह नेक है तो तुम यह भी जान लो कि वह जो धार्मिकता पर चलता है परमेश्वर की ही सन्तान है।

हम परमेश्वर की सन्तान हैं

3 विचार कर देखो कि परम पिता ने हम पर कितना महान प्रेम दर्शाया है! ताकि हम उसके पुत्र-पुत्री कहला सकें और वास्तव में वे हम हैं ही। इसीलिये संसार हमें नहीं पहचानता क्योंकि वह मसीह को नहीं पहचानता। [2]हे प्रिय मित्रो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं किन्तु भविष्य में हम क्या होंगे, अभी तक इसका बोध नहीं कराया गया है। जो भी हो, हम यह जानते हैं कि मसीह के पुन: प्रकट होने पर हम उसी के समान हो जायेंगे क्योंकि वह जैसा है, हम उसे ठीक वैसा ही देखेंगे। [3]हर कोई जो उस पर ऐसी आशा रखता है, वह अपने आपको वैसे ही पवित्र करता है जैसे मसीह पवित्र है।

[4]जो कोई पाप करता है, वह परमेश्वर के नियम को तोड़ता है क्योंकि नियम का तोड़ना ही पाप है। [5]तुम तो जानते ही हो कि मसीह लोगों के पापों को हरने के लिये ही प्रकट हुआ। और यह भी, कि उसमें कोई पाप नहीं है। [6]जो कोई मसीह में बना रहता है, पाप नहीं करता रहता और हर कोई जो पाप करता रहता है, उसने न तो उसके दर्शन किये हैं और न ही कभी उसे जाना है।

[7]हे प्यारे बच्चो, तुम कहीं छले न जाओ। वह जो धर्म पूर्वक आचरण करता रहता है, धर्मी है। ठीक वैसे ही जैसे मसीह धर्मी है। [8]वह जो पाप करता ही रहता है, शैतान का है क्योंकि शैतान अनादि काल से पाप करता चला आ रहा है। इसीलिये परमेश्वर का पुत्र प्रकट हुआ कि वह शैतान के काम को नष्ट कर दे।

[9]जो परमेश्वर की सन्तान बन गया, पाप नहीं करता रहता, क्योंकि उसका बीज तो उसी में रहता है। सो वह पाप करता नहीं रह सकता क्योंकि वह परमेश्वर की संतान बन चुका है। [10]परमेश्वर की संतान कौन है? और शैतान के बच्चे कौन से हैं? तुम उन्हें इस प्रकार जान सकते हो: प्रत्येक वह व्यक्ति जो धर्म पर नहीं चलता और अपने भाई को प्रेम नहीं करता, परमेश्वर का नहीं है।

परस्पर प्रेम से रहो

[11]यह उपदेश तुमने आरम्भ से ही सुना है कि हमें परस्पर प्रेम रखना चाहिये। [12]हमें कैन* के जैसा नहीं बनना चाहिये जो उस दुष्टात्मा से सम्बन्धित था और जिसने अपने भाई की हत्या कर दी थी। उसने अपने भाई को भला क्यों मार डाला? उसने इसलिये ऐसा किया कि उसके कर्म बुरे थे जबकि उसके भाई के कर्म धार्मिकता के।

[13]हे भाइयो, यदि संसार तुमसे घृणा करता है, तो अचरज मत करो। [14]हमें पता है कि हम मृत्यु के पार जीवन में आ पहुँचे हैं क्योंकि हम अपने बन्धुओं से प्रेम करते हैं। जो प्रेम नहीं करता, वह मृत्यु में स्थित है। [15]प्रत्येक व्यक्ति जो अपने भाई से घृणा करता है, हत्यारा है और तुम तो जानते ही हो कि कोई हत्यारा अपनी सम्पत्ति के रूप में अनन्त जीवन को नहीं रखता। [16]मसीह ने हमारे लिये अपना जीवन त्याग दिया। इसी से हम जानते हैं कि प्रेम क्या है? हमें भी अपने भाइयों के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देने चाहियें। [17]सो जिसके पास भौतिक वैभव है, और जो अपने भाई को अभावग्रस्त देखकर भी उस पर दया नहीं करता, उसमें परमेश्वर का प्रेम है-यह कैसे कहा जा सकता है? [18]हे प्यारे बच्चो, हमारा प्रेम केवल शब्दों और बातों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिये बल्कि वह कर्ममय और सच्चा होना चाहिए।

[19]इसी से हम जान लेंगे कि हम सत्य के हैं और परमेश्वर के आगे अपने हृदयों को आश्वस्त कर सकेंगे। [20]बुरे कामों के लिये हमारा मन जब भी हमारा निषेध करता है तो यह इसलिये होता है कि परमेश्वर हमारे मनों से बड़ा है और वह सब कुछ को जानता है।

[21]हे प्यारे बच्चो, यदि कोई बुरा काम करते समय हमारा मन हमें दोषी नहीं ठहराता तो परमेश्वर के सामने हमें विश्वास बना रहता है। [22]और जो कुछ हम उससे माँगते हैं, उसे पाते हैं। क्योंकि हम उसके आदेशों पर चल रहे हैं और उन्हीं बातों को कर रहे हैं, जो उसे भाती हैं। [23]उसका आदेश है: हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम में विश्वास रखें तथा जैसा कि उसने हमें आदेश दिया है हम एक दूसरे से प्रेम करें। [24]जो उसके आदेशों का पालन करता है वह उसी में बना रहता है। और उसमें परमेश्वर का निवास रहता है। इस प्रकार, उस आत्मा के द्वारा जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है, हम यह जानते हैं कि हमारे भीतर परमेश्वर निवास करता है।

कैन कैन और अबेल आदम और हव्वा के पुत्र थे। कैन अबेल से जलता था। सो उसने उसे मार डाला। देखें उत्पत्ति 4:1-16

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

4 हे प्रिय मित्रो, हर आत्मा का विश्वास मत करो बल्कि सदा उन्हें परख कर देखो कि वे, क्या परमात्मा के हैं? यह मैं तुमसे इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि बहुत से झूठे नबी संसार में फैले हुए हैं। [2]परमेश्वर की आत्मा को तुम इस तरह पहचान सकते हो: हर वह आत्मा जो यह मानती है कि, "यीशु मसीह मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आया है।" वह परमेश्वर की ओर से है। [3]और हर वह आत्मा जो यीशु को नहीं मानती, परमेश्वर की ओर से नहीं है। ऐसा व्यक्ति तो मसीह का शत्रु है, जिसके विषय में तुमने सुना है कि वह आ रहा है, बल्कि अब तो वह इस संसार में ही है।

[4]हे प्यारे बच्चो, तुम परमेश्वर के हो। इसीलिये तुमने मसीह के शत्रुओं पर विजय पा ली है। क्योंकि वह परमेश्वर जो तुममें है, संसार में रहने वाले शैतान से महान है। [5]वे मसीह विरोधी लोग सांसारिक हैं। इसीलिये वे जो कुछ बोलते हैं, वह सांसारिक है और संसार ही उनकी सुनता है। [6]किन्तु हम परमेश्वर के हैं सो जो परमेश्वर को जानता है, हमारी सुनता है। किन्तु जो परमेश्वर का नहीं है, हमारी नहीं सुनता। इस प्रकार से हम सत्य की आत्मा को और लोगों को भटकाने वाली आत्मा को पहचान सकते हैं।

प्रेम परमेश्वर से मिलता है

[7]हे प्यारे मित्रो, हम परस्पर प्रेम करें। क्योंकि प्रेम परमेश्वर से मिलता है और हर कोई जो प्रेम करता है, वह परमेश्वर की सन्तान बन गया है और परमेश्वर को जानता है। [8]वह जो प्रेम नहीं करता है, परमेश्वर को नहीं जान पाया है। क्योंकि परमेश्वर ही प्रेम है। [9]परमेश्वर ने अपना प्रेम इस प्रकार दर्शाया है: उसने अपने एकमात्र पुत्र को इस संसार में भेजा जिससे कि हम उसके पुत्र के द्वारा जीवन प्राप्त कर सकें। [10]सच्चा प्रेम इसमें नहीं है कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया है, बल्कि इसमें है कि एक ऐसे बलिदान के रूप में जो हमारे पापों को धारण कर लेता है, उसने अपने पुत्र को भेज कर हमारे प्रति अपना प्रेम दर्शाया है।

[11]हे प्रिय मित्रो, यदि परमेश्वर ने इस प्रकार हम पर अपना प्रेम दिखाया है तो हमें भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिये। [12]परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा है किन्तु यदि हम आपस में प्रेम करते हैं तो परमेश्वर हममें निवास करता है और उसका प्रेम हमारे भीतर सम्पूर्ण हो जाता है।

[13]इस प्रकार हम जान सकते हैं कि हम परमेश्वर में ही निवास करते हैं और वह हमारे भीतर रहता है। क्योंकि उसने अपनी आत्मा का कुछ अंश हमें दिया है। [14]इसे हमने देखा है और हम इसके साक्षी हैं कि परम पिता ने जगत के उद्धारकर्त्ता के रूप में अपने पुत्र को भेजा है। [15]यदि कोई यह मानता है कि, "यीशु परमेश्वर का पुत्र है," तो परमेश्वर उसमें निवास करता है। और वह परमेश्वर में रहने लगता है। [16]सो हम जानते हैं कि हमने अपना विश्वास उस प्रेम पर टिकाया है जो परमेश्वर में हमारे लिये है। परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में स्थित रहता है, वह परमेश्वर में स्थित रहता है और परमेश्वर उसमें स्थित रहता है। [17]हमारे विषय में इसी रूप में प्रेम सिद्ध हुआ है ताकि न्याय के दिन हमें विश्वास बना रहे। हमारा यह विश्वास इसलिये बना हुआ है कि हम इस जगत में जो जीवन जी रहे हैं, वह मसीह के जीवन जैसा है। [18]प्रेम में कोई भय नहीं होता बल्कि सम्पूर्ण प्रेम तो भय को भगा देता है। भय का संबन्ध तो दंड से है। सो जिसमें भय है, उसके प्रेम को अभी पूर्णता नहीं मिली है।

[19]हम प्रेम करते हैं क्योंकि पहले परमेश्वर ने हमें प्रेम किया है। [20]यदि कोई कहता है, "मैं परमेश्वर को प्रेम करता हूँ," और अपने भाई से घृणा करता है तो वह झूठा है। क्योंकि अपने उस भाई को, जिसे उसने देखा है, जब वह प्रेम नहीं करता, तो परमेश्वर को जिसे उसने देखा ही नहीं है, वह प्रेम नहीं कर सकता। [21]मसीह से हमें यह आदेश मिला है।

वह जो परमेश्वर को प्रेम करता है, उसे अपने भाई से भी प्रेम करना चाहिये।

परमेश्वर की सन्तान संसार पर विजयी होती है

5 जो कोई यह विश्वास करता है कि यीशु 'मसीह' है, वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है और जो कोई परम पिता से प्रेम करता है वह उसकी सन्तान से भी प्रेम करेगा। [2]इस प्रकार जब हम परमेश्वर को प्रेम करते हैं और उसके आदेशों का पालन करते हैं तो हम जान लेते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम करते हैं। [3]उसके आदेशों का पालन करते हुए हम यह दर्शाते हैं

कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं। उसके आदेश अत्यधिक कठोर नहीं हैं। [4]क्योंकि जो कोई परमेश्वर की संतान बन जाता है, वह जगत पर विजय पा लेता है और संसार के ऊपर हमें जिससे विजय मिली है, वह है हमारा विश्वास। [5]जो यह विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, वही संसार पर विजयी होता है।

परमेश्वर का कथन : अपने पुत्र के विषय में

[6]वह यीशु मसीह ही है जो हमारे पास जल और लहू के साथ आया–केवल जल के साथ नहीं, बल्कि जल और लहू के साथ। और वह आत्मा है जो उसकी साक्षी देता है क्योंकि आत्मा ही सत्य है। [7]साक्षी देने वाले तीन हैं–[8]आत्मा, जल और लहू और ये तीनों साक्षियाँ एक ही साक्षी देकर परस्पर सहमत हैं। [9]जब हम मनुष्य द्वारा दी गयी साक्षी को मानते हैं तो परमेश्वर द्वारा दी गयी साक्षी तो और अधिक मूल्यवान है। परमेश्वर की साक्षी का महत्त्व इसमें है कि अपने पुत्र के विषय में साक्षी उसने दी है। [10]वह जो परमेश्वर के पुत्र में विश्वास रखता है, वह अपने भीतर उस साक्षी को रखता है। परमेश्वर ने जो कहा है, उस पर जो विश्वास नहीं रखता, वह परमेश्वर को झूठा ठहराता है। क्योंकि उसने उस साक्षी का विश्वास नहीं किया है, जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। [11]और वह साक्षी यह है: कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और वह जीवन उसके पुत्र में प्राप्त होता है। [12]वह जो उसके पुत्र को धारण करता है, उस जीवन को धारण करता है। किन्तु जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास वह जीवन भी नहीं है।

अब अनन्त जीवन हमारा है

[13]परमेश्वर में विश्वास रखने वालो, तुमको ये बातें मैं इसलिए लिख रहा हूँ जिससे तुम यह जान लो कि अनन्त जीवन तुम्हारे पास है। [14]हमारा परमेश्वर में यह विश्वास है कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार उससे विनती करें तो वह हमारी सुनता है [15]और जब हम यह जानते हैं कि वह हमारी सुनता है–चाहे हम उससे कुछ भी माँगे तो हम यह भी जानते हैं कि जो हमने माँगा है, वह हमारा हो चुका है।

[16]यदि कोई देखता है कि उसका भाई कोई ऐसा पाप कर रहा है जिसका फल अनन्त मृत्यु नहीं है, तो उसे अपने भाई के लिए प्रार्थना करनी चाहिये। परमेश्वर उसे जीवन प्रदान करेगा। मैं उनके लिये जीवन के विषय में बात कर रहा हूँ, जो ऐसे पाप में लगे हैं, जो उन्हें अनन्त मृत्यु तक नहीं पहुँचायेगा। ऐसा पाप भी होता है जिसका फल मृत्यु है। मैं तुमसे ऐसे पाप के सम्बन्ध में विनती करने को नहीं कह रहा हूँ। [17]सभी बुरे काम पाप हैं। किन्तु ऐसा पाप भी होता है जो मृत्यु की ओर नहीं ले जाता।

[18]हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर का पुत्र बन गया, वह पाप नहीं करता रहता। बल्कि परमेश्वर का पुत्र उसकी रक्षा करता रहता है।* वह दुष्ट उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाता। [19]हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के हैं। यद्यपि यह समूचा संसार उस दुष्ट के वश में है। [20]किन्तु हमको पता है कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें वह ज्ञान दिया है ताकि हम उस परमेश्वर को जान लें जो सत्य है। और यह कि हम उसी में स्थित हैं, जो सत्य है, क्योंकि हम उसके पुत्र यीशु मसीह में स्थिर हैं। परम पिता ही सच्चा परमेश्वर है और वही अनन्त जीवन है। [21]हे बच्चो, अपने आप को झूठे देवताओं से दूर रखो।

बल्कि ... रहता है शाब्दिक "जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ उसे वह बचाए रखता है।" या "अपने आप को बचाए रखता है।"

2 यूहन्ना

मुझे बुज़ुर्ग की ओर से उस महिला को–जो परमेश्वर के द्वारा चुनी गयी है तथा उसके बालकों के नाम जिन्हें मैं सत्य के सहभागी व्यक्तियों के रूप में प्रेम करता हूँ। केवल मैं ही तुम्हें प्रेम नहीं करता हूँ, बल्कि वे सभी तुम्हें प्रेम करते हैं जो सत्य को जान गये हैं। [2]यह उसी सत्य के कारण हुआ है जो हममें निवास करता है और जो सदा सदा हमारे साथ रहेगा।

[3]परम पिता परमेश्वर की ओर से उसका अनुग्रह, दया और शांति सदा हमारे साथ रहेंगी तथा परम पिता परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की ओर से सत्य और प्रेम में हमारी स्थिति बनी रहेगी।

[4]तुम्हारे पुत्र–पुत्रियों को उस सत्य के अनुसार जीवन जीते देख कर जिसका आदेश हमें परम पिता से प्राप्त हुआ है, मैं बहुत आनन्दित हुआ हूँ [5]और अब हे महिला, मैं तुम्हें कोई नया आदेश नहीं बल्कि उसी आदेश को लिख रहा हूँ, जिसे हमने अनादि काल से पाया है हमें परस्पर प्रेम करना चाहिये। [6]प्रेम का अर्थ यही है कि हम उसके आदेशों पर चलें। यह वही आदेश है जिसे तुमने प्रारम्भ से ही सुना है कि तुम्हें प्रेमपूर्वक जीना चाहिये।

[7]संसार में बहुत से भटकाने वाले हैं। ऐसा व्यक्ति जो यह नहीं मानता कि इस धरती पर मनुष्य के रूप में यीशु मसीह आया है, वह छली है तथा मसीह का शत्रु है। [8]स्वयं को सावधान बनाये रखो! ताकि तुम उसे गँवा न बैठो जिसके लिये हमने कठोर परिश्रम किया है, बल्कि तुम्हें तो तुम्हारा पूरा प्रतिफल प्राप्त करना है।

[9]जो कोई बहुत दूर चला जाता है और मसीह के विषय में दिये गये सच्चे उपदेश में टिका नहीं रहता, वह परमेश्वर को प्राप्त नहीं करता और जो उसकी शिक्षा में बना रहता है, परम पिता और पुत्र दोनों ही उसके पास हैं। [10]यदि कोई तुम्हारे पास आकर इस उपदेश को नहीं देता है तो अपने घर उसका आदर सत्कार मत करो तथा उसके स्वागत में 'नमस्कार' भी मत कहो। [11]क्योंकि जो ऐसे व्यक्ति का सत्कार करता है, वह उसके बुरे कामों में भागीदार बनता है।

[12]यद्यपि तुम्हें लिखने को मेरे पास बहुत सी बातें हैं किन्तु उन्हें मैं लेखनी और स्याही से नहीं लिखना चाहता। बल्कि मुझे आशा है कि तुम्हारे पास आकर आमने सामने बैठ बातें करूँगा। जिससे हमारा आनन्द परिपूर्ण हो। [13]तेरी बहन* के पुत्र पुत्रियों का तुझे नमस्कार पहुँचे।

बहन यहाँ 'बहन' से अभिप्राय उस स्थानीय कलीसिया से मालूम पड़ता है, जहाँ से यूहन्ना ने यह पत्र लिखा है तथा 'पुत्र पुत्रियों, से अभिप्राय है उस कलीसिया के सदस्य जो अपना नमस्कार भेज रहे हैं।

3 यूहन्ना

यूहन्ना की ओर से: प्रिय मित्र, गयुस के नाम जिसे मैं सत्य में सहभागी के रूप में प्रेम करता हूँ। [2]हे मेरे प्रिय मित्र, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू जैसे आध्यात्मिक रूप से उन्नति कर रहा है, वैसे ही सब प्रकार से उन्नति करता रह और स्वास्थ्य का आनन्द उठाता रह। [3]जब हमारे कुछ भाइयों ने मेरे पास आकर सत्य के प्रति तुम्हारी निष्ठा के बारे में बताया तो मैं बहुत आनन्दित हुआ। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि तुम सत्य के मार्ग पर किस प्रकार चल रहे हो। [4]मुझे यह सुनने से अधिक आनन्द और किसी में नहीं आता कि मेरे बालक सत्य के मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं।

[5]हे मेरे प्यारे मित्र, तुम हमारे भाइयों के हित में जो कुछ कर सकते हो, उसे विश्वास के साथ कर रहे हो। यद्यपि वे लोग तुम्हारे लिये अनजाने हैं! [6]जो प्रेम तुमने उन पर दर्शाया है, उन्होंने कलीसिया के सामने उसकी साक्षी दी है। उनकी यात्रा को बनाये रखने के लिए कृपया उनकी इस प्रकार सहायता करना जिसका समर्थन परमेश्वर करे। [7]क्योंकि वे मसीह की सेवा के लिये यात्रा पर निकल पड़े हैं तथा उन्होंने विधर्मियों से कोई सहायता नहीं ली हैं।

[8]इसलिये हम विश्वासियों को ऐसे लोगों की सहायता करनी चाहिये ताकि हम भी सत्य के प्रति सहकर्मी सिद्ध हो सकें।

[9]एक पत्र मैंने कलीसिया को भी लिखा था किन्तु दियुत्रिफेस जो उनका नेता बनना चाहता है। [10]वह जो कुछ हम कहते हैं, उसे स्वीकार नहीं करेगा। इस कारण यदि मैं आऊँगा तो बताऊँगा कि वह क्या कर रहा है। वह झूठे तौर पर अपशब्दों के साथ मुझ पर दोष लगाता है और इन बातों से ही वह संतुष्ट नहीं है। वह हमारे बंधुओं के प्रति आदर सत्कार नहीं दिखाता है बल्कि जो ऐसा करना चाहते हैं, उन्हें भी बाधा पहुँचाता हैं और उन्हें कलीसिया से बाहर धकेल देता है।

[11]हे प्रिय मित्र, बदी का नहीं बल्कि नेकी का अनुकरण करो! जो नेकी करता है, वह परमेश्वर का है! जो बदी करता है, उसने परमेश्वर को नहीं देखा।

[12] दिमेत्रियुस के विषय में हर किसी ने साक्षी दी है। यहाँ तक कि स्वयं सत्य ने भी। हमने भी उसके विषय में साक्षी दी है। और तुम तो जानते ही हो कि हमारी साक्षी सत्य है।

[13]तुझे लिखने के लिये मेरे पास बहुत सी बातें हैं किन्तु मैं तुझे लेखनी और स्याही से वह सब कुछ नहीं लिखना चाहता। [14]बल्कि मुझे तो आशा है कि मैं तुझसे जल्दी ही मिलूँगा। तब हम आमने-सामने बातें कर सकेंगे। [15]शांति तुम्हारे साथ रहे। तेरे सभी मित्रों का तुझे नमस्कार पहुँचे। वहाँ हमारे सभी मित्रों को निजी तौर पर नमस्कार कहना।

यहूदा

यीशु मसीह के सेवक और याकूब के भाई यहूदा की ओर से तुम लोगों के नाम जो परमेश्वर के प्रिय तथा यीशु मसीह के लिये सुरक्षित तथा परमेश्वर द्वारा बुलाये गये हैं।

2तुम्हें दया, शांति और प्रेम बहुतायत से प्राप्त होता रहे।

पापी दण्ड पायेंगे

3प्रिय मित्रो, यद्यपि मैं बहुत चाहता था कि तुम्हें उस उद्धार के विषय में लिखूँ, जिसके हम भागीदार हैं। मैंने तुम्हें लिखने की और तुम्हें प्रोत्साहित करने की आवश्यकता अनुभव की ताकि तुम उस विश्वास के लिये संघर्ष करते रहो जिसे परमेश्वर ने संत जनों को सदा सदा के लिये दे दिया है। 4क्योंकि हमारे समूह में कुछ लोग चोरी से आ घुसे हैं। इन लोगों के दण्ड के विषय में शास्त्रों ने बहुत पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी। ये लोग परमेश्वर विहीन हैं। इन लोगों ने परमेश्वर के अनुग्रह को भोग–विलास का एक बहाना बना डाला है तथा ये हमारे प्रभु तथा एकमात्र स्वामी यीशु मसीह को नहीं मानते।

5मैं तुम्हें स्मरण कराना चाहता हूँ (यद्यपि तुम तो इन सब बातों को जानते ही हो) कि जिस प्रभु ने पहले अपने लोगों को मिस्र की धरती से बचा कर निकाल लिया था, बाद में जिन्होंने विश्वास को नकार दिया, उन्हें किस प्रकार नष्ट कर दिया गया। 6मैं तुम्हें यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि जो दूत अपनी प्रभुसत्ता को बनाये नहीं रख सके, बल्कि जिन्होंने अपने निजी निवास को उस भीषण दिन के न्याय के लिये अंधकार में जो सदा के लिये है बन्धनों में रखा है। 7इसी प्रकार मैं तुम्हें यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि सदोम और अमोरा तथा आस–पास के नगरों ने इन दूतों के समान ही यौन अनाचार किया तथा अप्राकृतिक यौन सम्बन्धों के पीछे दौड़ते रहे। उन्हें कभी नहीं बुझने वाली अग्नि में झोंक देने का दण्ड दिया गया। वे हमारे लिये उदाहरण के रूप में स्थित हैं।

8ठीक इसी प्रकार हमारे समूह में घुस आने वाले ये लोग अपने स्वप्नों के पीछे दौड़ते हुए अपने शरीरों को विकृत कर रहे है। ये प्रभु के सामर्थ्य को उठा कर ताक पर रख छोड़ते है तथा महिमावान स्वर्गदूतों के विरोध में बोलते हैं। 9प्रमुख स्वर्गदूत माकाईल जब शैतान के साथ विवाद करते हुए मूसा के शव के बारे में बहस कर रहा था तो वह उसके विरुद्ध अपमानजनक आक्षेपों के प्रयोग का साहस नहीं कर सका। उसने मात्र इतना कहा, "प्रभु तुझे डाँटे–फटकारे।" 10किन्तु ये लोग तो उन बातों की आलोचना करते हैं, जिन्हें ये समझते ही नहीं और ये लोग बुद्धिहीन पशुओं के समान जिन बातों से सहज रूप से परिचित हैं, वे बातें वे ही हैं जिनसे उनका नाश होने को है। 11उन लोगों के लिये यह बहुत बुरा है कि उन्होंने कैन का सा वही मार्ग चुना। धन कमाने के लिये उन्होंने अपने आपको वैसे ही गलती के हवाले कर दिया जैसे बिलाम ने किया था। सो वे ही नष्ट हो जायेंगे जैसे कोरह के विद्रोह में भाग लेने वाले नष्ट कर दिये गये थे। 12ये लोग तुम्हारे प्रीति–भोजों में उन छुपी हुई चट्टानों के समान हैं जो घातक हैं। ये लोग निर्भयता के साथ तुम्हारे संग खाते– पीते हैं किन्तु उन्हें केवल अपने स्वार्थ की ही चिंता रहती है। वे बिना जल के बादल हैं। वे पतझड़ के ऐसे पेड़ हैं जिन पर फल नहीं होता। वे दोहरे मरे हुए हैं। उन्हें उखाड़ा जा चुका है। 13वे समुद्र की ऐसी भयानक लहरें हैं, जो अपने लज्जापूर्ण कार्यों का झाग उगलती रहती हैं। वे इधर–उधर भटकते ऐसे तारे हैं जिनके लिये अनन्त गहन अंधकार सुनिश्चित कर दिया गया है।

14आदम से सातवीं पीढ़ी के हनोक ने भी इन लोगों के लिये इन शब्दों में भविष्यवाणी की थी: "देखो वह प्रभु अपने हज़ारों–हज़ार स्वर्गदूतों के साथ 15सब लोगों

का न्याय करने के लिए आ रहा है। ताकि लोगों ने जो बुरे काम किये हैं, उन्हें उनके लिये और उन्होंने जो परमेश्वर के विरुद्ध बुरे वचन बोले हैं, उनके लिये दण्ड दे।"

[16]ये लोग चुगलखोर हैं और दोष ढूँढने वाले हैं। ये अपनी इच्छाओं के दास हैं तथा अपने मुँह से अहंकारपूर्ण बातें बोलते हैं। अपने लाभ के लिये ये दूसरों की चापलूसी करते हैं।

जतन करते रहने के लिये चेतावनी

[17]किन्तु प्यारे मित्रो, उन शब्दों को याद रखो जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों द्वारा पहले ही कहे जा चुके हैं। [18]वे तुमसे कहा करते थे कि "अंत समय में ऐसे लोग होंगे जो परमेश्वर से जो कुछ संबंधित होगा उसकी हँसी उड़ाया करेंगे।" तथा वे अपवित्र इच्छाओं के पीछे–पीछे चला करेंगे। [19]ये लोग वे ही हैं जो फूट डलवाते हैं।

[20]ये लोग अपनी प्राकृतिक इच्छाओं के दास हैं। इनके आत्मा नहीं है। किन्तु प्रिय मित्रो तुम एक दूसरे को आध्यात्मिक रूप से अपने अति पवित्र विश्वास में सुदृढ़ करते रहो। पवित्र आत्मा के साथ प्रार्थना करो। [21]हमारे प्रभु यीशु मसीह की करुणा की बाट जोहते हुए जो तुम्हें अनन्त जीवन तक ले जायेगी परमेश्वर की भक्ति में लीन रहो।

[22]जो डावाँडोल हैं उन पर दया करो। [23]दूसरों को आगे बढ़ कर आग में से निकाल लो। किन्तु दया दिखाते समय सावधान रहो तथा उनके उन वस्त्रों तक से घृणा करो जिन पर उनके पापपूर्ण स्वभाव के धब्बे लगे हुए हैं।

परमेश्वर की स्तुति

[24]अब उसके प्रति जो तुम्हें गिरने से बचा सकता है तथा उसकी महिमापूर्ण उपस्थिति में तुम्हें महान आनन्द के साथ निर्दोष करके प्रस्तुत कर सकता है। [25]हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमारे उद्धारकर्त्ता उस एकमात्र परमेश्वर की महिमा, वैभव, पराक्रम और अधिकार सदा सदा से अब तक और युग–युगांतर तक बने रहें। आमीन!

प्रकाशित वाक्य

1 यह यीशु मसीह का दैवी–सन्देश है जो उसे परमेश्वर द्वारा इसलिये दिया गया था कि जो बातें शीघ्र ही घटने वाली हैं, उन्हें अपने दासों को दर्शा दिया जाये। अपना स्वर्गदूत भेज कर यीशु मसीह ने इसे अपने सेवक यूहन्ना को संकेत द्वारा बताया। [2]यूहन्ना ने जो कुछ देखा था, उसके बारे में बताया। यह वह सत्य है जिसे उसे यीशु मसीह ने बताया था। यह वह सन्देश है जो परमेश्वर की ओर से है। [3]वे धन्य हैं जो परमेश्वर के इस दैवी सुसन्देश के शब्दों को सुनते हैं और जो बातें इसमें लिखी हैं, उन पर चलते हैं। क्योंकि संकट की घड़ी निकट है।

कलीसियाओं के नाम यूहन्ना का सन्देश

[4-5]यूहन्ना की ओर से एशिया प्रान्त* में स्थित सात कलीसियाओं के नाम: उस परमेश्वर की ओर से जो वर्तमान है, जो सदासदा से था और जो आनेवाला है, उन सात आत्माओं की ओर से जो उसके सिंहासन के सामने हैं एवम् उस यीशु मसीह की ओर से जो विश्वास–पूर्ण साक्षी, मरे हुओं में से पहला जी उठने वाला तथा धरती के राजाओं का भी राजा है, तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त हो। वह जो हमसे प्रेम करता है तथा जिसने अपने लहू से हमारे पापों से हमें छुटकारा दिलाया है। [6]उसने हमें एक राज्य तथा अपने परम पिता परमेश्वर की सेवा में याजक होने को रचा। उसकी महिमा और सामर्थ्य सदा सर्वदा होती रहे। आमीन! [7]देखो, मेघों के साथ मसीह आ रहा है। हर एक आँख उसका दर्शन करेगी। उनमें वे भी होंगे, जिन्होंने उसे बेधा था।* तथा धरती के सभी लोग उसके कारण विलाप करेंगे। हाँ! हाँ निश्चयपूर्वक ऐसा ही हो–आमीन!

एशिया प्रान्त एशिया माइनर का एक प्रान्त।
जिन्होंने उसे बेधा था देखें यूहन्ना 19:34

[8]प्रभु परमेश्वर वह जो है, जो था और जो आनेवाला है, जो सर्वशक्तिमान है, यह कहता है, "मैं ही अलफा और ओमेगा हूँ।"*

[9]मैं यूहन्ना तुम्हारा भाई हूँ और यातनाओं, राज्य तथा यीशु में, धैर्यपूर्ण सहनशीलता में तुम्हारा साक्षी हूँ। परमेश्वर के वचन और यीशु की साक्षी के कारण मुझे पत्तमुस* नाम के द्वीप में देश निकाला दे दिया गया था। [10]प्रभु के दिन मैं आत्मा के वशीभूत हो उठा और मैंने अपने पीछे तुरही की सी एक तीव्र आवाज सुनी। [11]वह कह रही थी, "जो कुछ तू देख रहा है, उसे एक पुस्तक में लिखता जा और फिर उसे इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थूआतीरा, सरदीस, फिलादेलफिया और लौदीकिया की सातों कलीसियाओं को भेज दे।"

[12]फिर यह देखने को कि वह आवाज किसकी है जो मुझसे बोल रही थी, मैं मुड़ा। और जब मैं मुड़ा तो मैंने सोने के सात दीपाधार देखे। [13]और उन दीपाधारों के बीच मैंने एक व्यक्ति को देखा जो "मनुष्य के पुत्र" के जैसा कोई पुरुष था। उसने अपने पैरों तक लम्बा चोगा पहन रखा था। तथा उसकी छाती पर एक सुनहरी पटका लिपटा हुआ था।

[14]उसका सिर तथा केश सफेद ऊन जैसे उजले थे। तथा उसके नेत्र अग्नि की चमचमाती लपटों के समान थे। [15]उसके चरण भट्टी में अभी–अभी तपाये गये उत्तम काँसे के समान चमक रहे थे। उसका स्वर अनेक जलधाराओं के गर्जन के समान था। [16]तथा उसने अपने

अलफा और ओमेगा हूँ मूल में 'मैं ही अलफा हूँ और मैं ही ओमेगा' ये यूनानी की बाहरखड़ी के पहले और अंतिम अक्षरों के नाम हैं। अर्थात् अल्फा यानि 'आदि' और ओमेगा यानी 'अंत', दोनों प्रभु परमेश्वर ही है।
पत्तमुस एइजियन सागर में एशिया माइनर (जो आजकल टर्की कहलाता है) के तट के निकट छोटा द्वीप।

दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए थे। उसके मुख से एक तेज दोधारी तलवार बाहर निकल रही थी। उसकी छवि तीव्रतम दमकते सूर्य के समान उज्ज्वल थी।

[17]मैंने जब उसे देखा तो मैं उसके चरणों पर मरे हुए के समान गिर पड़ा। फिर उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखते हुए कहा, "डर मत, मैं ही प्रथम हूँ और मैं ही अंतिम भी हूँ। [18]और मैं ही वह हूँ, जो जीवित है। मैं मर गया था, किन्तु देख अब मैं सदा-सर्वदा के लिये जीवित हूँ। मेरे पास मृत्यु और अधोलोक* की कुंजियाँ हैं। [19]सो जो कुछ तूने देखा है, जो कुछ घट रहा है, और जो भविष्य में घटने जा रहा है, उसे लिखता जा। [20]ये जो सात तारे हैं जिन्हें तूने मेरे हाथ में देखा है और ये जो सात दीपाधार हैं, इनका रहस्यपूर्ण अर्थ है: ये सात तारे सात कलीसियाओं के दूत हैं तथा ये सात दीपाधार सात कलीसियाएँ हैं।

इफिसुस की कलीसिया को मसीह का सन्देश

2 "इफिसुस की कलीसिया के स्वर्गदूत के नाम यह लिख: "वह जो अपने दाहिने हाथ में सात तारों को धारण करता है तथा जो सात दीपाधारों के बीच विचरण करता है; इस प्रकार कहता है: [2]मैं तेरे कर्मों कठोर परिश्रम और धैर्यपूर्ण सहनशीलता को जानता हूँ तथा मैं यह भी जानता हूँ कि तू बुरे लोगों को सहन नहीं कर पाता है तथा तूने उन्हें परखा है जो कहते हैं कि वे प्रेरित हैं किन्तु हैं नहीं। तूने उन्हें झूठा पाया है। [3]मैं जानता हूँ कि तुझ में धीरज है और मेरे नाम पर तूने कठिनाइयाँ झेली हैं और तू थका नहीं है।

[4]"किन्तु मेरे पास तेरे विरोध में यह है: तूने वह प्रेम त्याग दिया है जो आरम्भ में तुझ में था। [5]सो याद कर कि तू कहाँ से गिरा है, मनफिरा तथा उन कर्मों को कर जिन्हें तू प्रारम्भ में किया करता था, नहीं तो, यदि तूने मन न फिराया, तो मैं तेरे पास आऊँगा और तेरे दीपाधार को उसके स्थान से हटा दूँगा। [6]किन्तु यह बात तेरे पक्ष में है कि तू नीकुलइयों* के कामों से घृणा करता है, जिनसे मैं भी घृणा करता हूँ।

[7]"जिसके पास कान हैं, वह उसे सुनें जो आत्मा कलीसियाओं से कह रहा है। "जो विजय पायेगा मैं उसे परमेश्वर के उपवन में लगे जीवन के वृक्ष से फल खाने का अधिकार दूँगा।"

स्मुरना की कलीसिया को मसीह का सन्देश

[8]"स्मुरना की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख; वह जो प्रथम है और जो अन्तिम है, जो मर गया था तथा जो पुनर्जीवित हो उठा है, इस प्रकार कहता है-[9]मैं तुम्हारी यातना और तुम्हारी दीनता के विषय में जानता हूँ। (यद्यपि वास्तव में तुम धनवान हो) जो अपने आपको यहूदी कह रहे हैं, उन्होंने तुम्हारी जो निन्दा की है, मैं उसे भी जानता हूँ। (यद्यपि वे यहूदी हैं नहीं।) बल्कि वे तो उपासकों का एक ऐसा जमघट है जो शैतान से सम्बन्धित है। [10]उन यातनाओं से तू बिल्कुल भी मत डर जो तुझे झेलनी हैं। सुनो, शैतान तुम लोगों में से कुछ को बंदीगृह में डाल कर तुम्हारी परीक्षा लेने जा रहा है। और तुम्हें वहाँ दस दिन तक यातना भोगनी होगी। चाहे तुझे मर ही जाना पड़े, पर सच्चा बने रहना मैं तुझे अनन्त जीवन का विजय मुकुट प्रदान करूँगा।

[11]"जो सुन सकता है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है। जो विजयी होगा उसे दूसरी मृत्यु से कोई हानि नहीं उठानी होगी।

पिरगमुन की कलीसिया को मसीह का सन्देश

[12]"पिरगमुन की कलीसिया के स्वर्गदूत यह लिख: वह जो तेज दोधारी तलवार को धारण करता है, इस प्रकार कहता है: [13]मैं जानता हूँ तू कहाँ रह रहा है। तू वहाँ रह रहा है जहाँ शैतान का सिंहासन है और मैं यह भी जानता हूँ कि तू मेरे नाम को थामे हुए है तथा तूने मेरे प्रति अपने विश्वास को कभी नहीं नकारा है। तुम्हारे उस नगर में जहाँ शैतान का निवास है, मेरा विश्वास पूर्ण साक्षी अन्तिपास मार दिया गया था।

[14]"कुछ भी हो, मेरे पास तेरे विरोध में कुछ बातें हैं। तेरे यहाँ कुछ ऐसे लोग भी हैं जो बिलाम की सीख पर चलते हैं। उसने बालाक को सिखाया था कि वह इस्राएल के लोगों को मूर्तियों का चढ़ावा खाने और व्यभिचार करने को प्रोत्त्साहित करे। [15]इसी प्रकार तेरे यहाँ भी कुछ ऐसे लोग हैं जो नीकुलइयों की सीख पर चलते हैं। [16]इसलिये

अधोलोक मूल में हेइस अर्थात् वह लोग जहाँ मरने के बाद जाते है।

नीकुलइयों एशिया माइनर का एक धर्म समूह। यह झूठे विश्वासों और धारणाओं का अनुयायी था। इसका नामकरण किसी नीकुलइयो नाम के व्यक्ति पर किया गया होगा।

मन फिरा नहीं तो मैं जल्दी ही तेरे पास आऊँगा और उनके विरोध में उस तलवार से युद्ध करूँगा जो मेरे मुख से निकलती है।

[17]"जो सुन सकता है, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है, "जो विजयी होगा, मैं उसे (स्वर्ग में छिपा) मन्ना दूँगा। मैं उसे एक श्वेत पत्थर भी दूँगा जिस पर एक नया नाम अंकित होगा। जिसे उसके सिवा और कोई नहीं जानता जिसे वह दिया गया है।

थूआतीरा की कलीसिया को मसीह का सन्देश

[18]"थूआतीरा की कलीसिया के स्वर्गदूत के नाम: "परमेश्वर का पुत्र, जिसके नेत्र धधकती आग के समान हैं, तथा जिसके चरण शुद्ध काँसे के जैसे हैं, इस प्रकार कहता है [19]मैं तेरे कर्मों, तेरे विश्वास, तेरी सेवा तथा तेरी धैर्यपूर्ण सहनशक्ति को जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि अब तू जितना पहले किया करता था, उससे अधिक कर रहा है। [20]किन्तु मेरे पास तेरे विरोध में यह है: तू इजेबेल नाम की उस स्त्री को सह रहा है जो अपने आपको नबी कहती है। अपनी शिक्षा से वह मेरे सेवकों को व्यभिचार के प्रति तथा मूर्तियों का चढ़ावा खाने को प्रेरित करती है। [21]मैंने उसे मन फिराने का अवसर दिया है किन्तु वह परमेश्वर के प्रति व्यभिचार के लिये मन फिराना नहीं चाहती। [22]इसलिये अब मैं उसे पीड़ा की शैया पर डालने ही वाला हूँ। तथा उन्हें भी जो उसके साथ व्यभिचार में सम्मिलित हैं। ताकि वे उस समय तक गहन पीड़ा का अनुभव करते रहें जब तक वे उसके साथ किये अपने बुरे कर्मों के लिये मन न फिराव। [23]मैं महामारी से उसके बच्चों को मार डालूँगा और सभी कलीसियाओं को यह पता चल जायेगा कि मैं वही हूँ जो लोगों के मन और उनकी बुद्धि को जानता है। मैं तुम सब लोगों को तुम्हारे कर्मों के अनुसार दूँगा।

[24]"अब मुझे थूआतीरा के उन शेष लोगों से कुछ कहना है जो इस सीख पर नहीं चलते और जो शैतान के तथा कथित गहन रहस्यों को नहीं जानते। मुझे तुम पर कोई और बोझ नहीं डालना है। [25]किन्तु जो तुम्हारे पास है, उस पर मेरे आने तक चलते रहो।

[26]"जो विजय प्राप्त करेगा और जिन बातों का मैंने आदेश दिया है, अंत तक उन पर टिका रहेगा, मैं उन्हें जातियों पर अधिकार दूँगा।

[27] तथा 'वह उन पर लोहे के
डण्डे से शासन करेगा।
वह उन्हें माटी के भाँडों की तरह
चूर चूर कर देगा।'

भजन संहिता 2:9

[28]यह वही अधिकार है जिसे मैंने अपने परमपिता से पाया है। मैं भी उस व्यक्ति को भोर का तारा दूँगा। [29]जिसके पास कान हैं, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।

सरदीस की कलीसिया के नाम मसीह का सन्देश

3 "सरदीस की कलीसिया के स्वर्गदूत को इस प्रकार लिख–ऐसा वह कहता है जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएँ तथा सात तारे हैं, "मैं तुम्हारे कर्मो को जानता हूँ, लोगों का कहना है कि तुम जीवित हो किन्तु वास्तव में तुम मरे हुए हो। [2]सावधान रह। तथा जो कुछ शेष है, इससे पहले कि वह पूरी तरह नष्ट हो जाये, उसे सुदृढ़ बना क्योंकि अपने परमेश्वर की निगाह में मैंने तेरे कर्मो को उत्तम नहीं पाया है। [3]सो जिस उपदेश को तूने सुना है और प्राप्त किया है, उसे याद कर। उसी पर चल और मनफिराव कर। यदि तू जागा नहीं तो अचानक चोर के समान मैं चला आऊँगा। मैं तुझे कब अचरज में डाल दूँ, तुझे पता भी नहीं चल पायेगा। [4]कुछ भी हो सरदीस में तेरे पास कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने को अशुद्ध नहीं किया है। वे श्वेत वस्त्र धारण किये हुए मेरे साथ–साथ घूमेंगे क्योंकि वे सुयोग्य हैं। [5]जो विजयी होगा वह इसी प्रकार श्वेत वस्त्र धारण करेगा। मैं जीवन की पुस्तक से उसका नाम नहीं मिटाऊँगा, बल्कि मैं तो उसके नाम को अपने परम पिता और उसके स्वर्गदूतों के सम्मुख मान्यता प्रदान करूँगा।" [6]जिसके पास कान हैं, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।

फिलादेलफिया की कलीसिया को मसीह का सन्देश

[7]"फिलादेलफिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख: वह जो पवित्र और सत्य है तथा जिसके पास दाऊद की कुंजी है जो ऐसा द्वार खोलता है जिसे कोई बंद नहीं कर सकता, तथा जो ऐसा द्वार बंद करता है, जिसे कोई खोल नहीं सकता; इस प्रकार कहता है। [8]"मैं तुम्हारे कर्मो को जानता हूँ। देखो मैंने तुम्हारे सामने एक द्वार

खोल दिया है, जिसे कोई बंद नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि तेरी शक्ति थोड़ी सी है किन्तु तूने मेरे उपदेशों का पालन किया है तथा मेरे नाम को नकारा नहीं है। [9]सुनो कुछ ऐसे हैं जो शैतान की मण्डली के हैं तथा जो यहूदी न होते हुए भी अपने को यहूदी कहते हैं, जो मात्र झूठे हैं, मैं उन्हें यहाँ आने को विवश करके तेरे चरणों तले झुका दूँगा तथा मैं उन्हें विवश करूँगा कि वे यह जानें की तुम मेरे प्रिय हो। [10]क्योंकि तुमने धैर्यपूर्वक सहनशीलता के मेरे आदेश का पालन किया है। बदले में मैं भी उस परीक्षा की घड़ी से तुम्हारी रक्षा करूँगा जो इस धरती पर रहने वालों को परखने के लिये समूचे संसार पर बस आने ही वाली है।"

[11]"मैं बहुत जल्दी आ रहा हूँ। जो कुछ तुम्हारे पास है, उस पर डटे रहो ताकि तुम्हारे विजय मुकुट को कोई तुमसे न ले ले। [12]जो विजयी होगा उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर का स्तम्भ बनाऊँगा। फिर कभी वह इस मन्दिर से बाहर नहीं जायेगा। तथा मैं अपने परमेश्वर का और अपने परमेश्वर की नगरी का नये यरुशलेम का नाम उस पर लिखूँगा, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से नीचे उतरने वाली है। उस पर मैं अपना नया नाम भी लिखूँगा।" [13]जो सुन सकता है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है?

लौदीकिया की कलीसिया को मसीह के सन्देश

[14]लौदीकिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख: जो आमीन* है, विश्वासपूर्ण है तथा सच्चा साक्षी है, जो परमेश्वर की सृष्टि का शासक है, इस प्रकार कहता है:

[15]"मैं तेरे कर्मों को जानता हूँ और यह भी कि न तो तू शीतल होता है और न गर्म। [16]इसलिए क्योंकि तू गुनगुना है न गर्म और न ही शीतल, मैं तुझे अपने मुख से उगलने जा रहा हूँ। [17]तू कहता है, मैं धनी हो गया हूँ और मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है किन्तु तुझे पता नहीं है कि तू अभागा है, दयनीय है, दीन है, अंधा है और नंगा है। [18]मैं तुझे सलाह देता हूँ कि तू मुझसे आग में तपाया हुआ सोना मोल ले ले ताकि तू सचमुच धनवान हो जाये। पहनने के लिए श्वेत वस्त्र भी मोल ले ले ताकि तेरी लज्जापूर्ण नग्नता का तमाशा न बने। अपने नेत्रों में आँजने के लिये तू अंजन भी ले ले ताकि तू देख पाये।

[19]"उन सभी को जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, मैं डाँटता हूँ और अनुशासित करता हूँ। तो फिर कठिन जतन और मनफिराव कर। [20]सुन, मैं द्वार पर खड़ा हूँ और खटखटा रहा हूँ। यदि कोई मेरी आवाज़ सुनता है और द्वार खोलता है तो मैं उसके घर में प्रवेश करूँगा तथा उसके साथ बैठ कर खाना खाऊँगा और वह मेरे साथ बैठकर खाना खायेगा।

[21]"जो विजयी होगा मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने का गौरव प्रदान करूँगा। ठीक वैसे ही जैसे मैं विजयी बनकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा हूँ। [22]जो सुन सकता है सुने, कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।"

स्वर्ग के दर्शन

4 इसके बाद मैंने दृष्टि उठाई और स्वर्ग का खुला द्वार मेरे सामने था। और वही आवाज़ जिसे मैंने पहले सुना था, तुरही के से स्वर में मुझसे कह रही थी, "यहीं ऊपर आ जा। मैं तुझे वह दिखाऊँगा जिसका भविष्य में होना निश्चित है।" [2]फिर मैं तुरन्त ही आत्मा के वशीभूत हो उठा। मैंने देखा कि मेरे सामने स्वर्ग का सिंहासन था और उस पर कोई विराजमान था। [3]जो वहाँ विराजमान था, उसकी आभा यशब और गोमेद के समान थी। उसके सिंहासन के चारों ओर एक इन्द्रधनुष था जो पन्ने जैसा दमक रहा था। [4]उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन और थे। जिन पर चौबीस प्राचीन* बैठे हुए थे। उन्होंने श्वेत वस्त्र पहने थे। उनके सिर पर सोने के मुकुट थे। [5]सिंहासन में से बिजली की चकाचौंध, घड़घड़ाहट तथा मेघों का गर्जन-तर्जन निकल रहे थे। सिंहासन के सामने ही लपलपाती हुई सात मशालें जल रही थीं। ये मशालें परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। [6]सिंहासन के सामने पारदर्शी काँच का स्फटिक सागर सा फैला था। सिंहासन के ठीक सामने तथा उसके दोनों ओर चार प्राणी थे।

आमीन आमीन शब्द का अर्थ है उस परम सत्य के अनुरुप हो जाना। किन्तु यहाँ इसे यीशु के एक नाम के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

चौबीस प्राचीन कदाचित इन चौबीस प्राचीन में बारह वे पुरुष हैं जो परमेश्वर के संत जनों के महान नेता थे। हो सकता है ये यहूदियों के बारह परिवार समूहों के नेता हो। तथा शेष बारह यीशु के प्रेरित हैं।

उनके आगे और पीछे आँखें ही आँखें थीं। [7]पहला प्राणी सिंह के समान था, दूसरा प्राणी बैल के जैसा था, तीसरे प्राणी का मुख मनुष्य के जैसा था और चौथा प्राणी उड़ते हुए गरूड़ जैसा था। [8]इन चारों ही प्राणियों के छह छह पंख थे। उनके चारों ओर तथा भीतर आँखें ही आँखें भरी पड़ीं थीं। दिन रात वे निरन्तर कहते रहते थे:

"सर्वशक्तिमान परमेश्वर प्रभु
पवित्र है, पवित्र है, पवित्र है,
जो था, जो है और जो आनेवाला है।"

[9]जब ये सजीव प्राणी उस अजर अमर की महिमा, आदर और धन्यवाद कर रहे हैं जो सिंहासन पर विराजमान था तो [10]वे चौबीसों प्राचीन उसके चरणों में गिरकर, उस सदा सर्वदा जीवित रहने वाले की उपासना करते हैं। वे सिंहासन के सामने अपने मुकुट डाल देते हैं और कहते हैं:

[11] "हे हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर!
तू ही महिमा, समादर और
शक्ति पाने को सुयोग्य है।
क्योंकि तूने ही अपनी इच्छा से
सभी वस्तु सरजी हैं।
तेरी ही इच्छा से उनका अस्तित्व है।
और तेरी ही इच्छा से हुई है उनकी सृष्टि।"

5

फिर मैंने देखा कि जो सिंहासन पर विराजमान था, उसके दाहिने हाथ में एक लपेटा हुआ चर्मपत्र* अर्थात् एक ऐसी पुस्तक जिसे लिखकर लपेट दिया जाता था। जिस पर दोनों ओर लिखावट थी। तथा उसे सात मुहर लगाकर मुद्रित किया हुआ था। [2]मैंने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत की ओर देखा जो दृढ़ स्वर से घोषणा कर रहा था–"इस लपेटे हुए चर्मपत्र की मुहरों को तोड़ने और इसे खोलने में समर्थ कौन है?" [3]किन्तु स्वर्ग में अथवा पृथ्वी पर या पाताल लोक में कोई भी ऐसा नहीं था जो उस लपेटे हुए चर्मपत्र को खोले और उसके भीतर झाँके। [4]क्योंकि उस चर्मपत्र को खोलने की क्षमता रखने वाला या भीतर से उसे देखने की शक्ति वाला कोई भी नहीं मिल पाया था इसलिए मैं सुबक-सुबक कर रो पड़ा। [5]फिर उन प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा, "रोना बंद कर। सुन, यहूदा के वंश का सिंह जो दाऊद का वंशज है विजयी हुआ है। वह इन सातों मुहरों को तोड़ने और इस लपेटे हुए चर्मपत्र को खोलने में समर्थ है।"

[6]फिर मैंने देखा कि उस सिंहासन तथा उन चार प्राणियों के सामने और उन पूर्वजों की उपस्थिति में एक मेमना खड़ा है। वह ऐसे दिख रहा था, मानो उसकी बलि चढ़ाई गयी हो। उसके सात सींग थे और सात आँखें थीं जो परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। जिन्हें समूची धरती पर भेजा गया था। [7]फिर वह आया और जो सिंहासन पर विराजमान था, उसके दाहिने हाथ से उसने वह लपेटा हुआ चर्मपत्र ले लिया। [8]जब उसने वह लपेटा हुआ चर्मपत्र ले लिया तो उन चारों प्राणियों तथा चौबीसों प्राचीनों ने उस मेमने को दण्डवत प्रणाम किया। उनमें से हरेक के पास वीणा थी तथा वे सुगन्धित सामग्री से भरे सोने के धूपदान थामे थे; जो संत जनों की प्रार्थनाएँ हैं। [9]वे एक नया गीत गा रहे थे:

"तू यह चर्मपत्र लेने को समर्थ है,
और जो इस पर लगी मुहर खोलने को
क्योंकि तेरा वध बलि के रूप कर दिया,
और अपने लहू से तूने
परमेश्वर के हेतु जनों को
हर जाति से, हर भाषा से,
सभी कुलों से, सब राष्ट्रों से मोल लिया।
[10] और तूने उनको रूप का राज्य दे दिया।
और हमारे परमेश्वर के हेतु
उन्हें याजक बनाया।
वहीं धरा पर राज्य करेंगे।

[11]तभी मैंने देखा और अनेक स्वर्गदूतों की ध्वनियों को सुना। वे उस सिंहासन, उन प्राणियों तथा प्राचीनों के चारों ओर खड़े थे। स्वर्गदूतों की संख्या लाखों और करोड़ों थी [12]वे ऊँचे स्वर में कह रहे थे:

"वह मेमना जो मार डाला गया था,
वह प्राप्त करने को योग्य है
बल, धन, विवेक
समादर महिमा और स्तुति।"

[13]फिर मैंने सुना कि स्वर्ग की, धरती पर की पाताल लोक की, समुद्र की, समूची सृष्टि–हाँ, उस समूचे ब्रह्माण्ड का हर प्राणी कह रहा था:

चर्मपत्र एक लम्बा लपेटा हुआ कागज अथवा चमड़ा जिसे प्राचीन युग में लिखने के काम में लाया जाता था।

"जो सिंहासन पर बैठा है और मेमना!
वे सदा सदा स्तुति पावें,
पावें आदर, पावें महिमा,
और वे शक्ति को सदा सर्वदा प्राप्त करें।

[14]फिर उन चारों प्राणियों ने "आमीन" कहा और प्राचीनों ने नत मस्तक होकर उपासना की।

6 मैंने देखा कि मेमने ने सात मुहरों में से एक को खोला तभी उन चार प्राणियों में से एक को मैंने मेघ गर्जना जैसे स्वर में कहते सुना–"आ!" [2]जब मैंने दृष्टि उठाई तो पाया कि मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था। घोड़े का सवार धनुष लिये हुए था। उसे विजय–मुकुट पहनाया गया और वह विजय पाने के लिये विजय प्राप्त करता हुआ बाहर चला गया।

[3]जब मेमने ने दूसरी मुहर तोड़ी तो मैंने दूसरे प्राणी को कहते सुना "आ!" इस पर अग्नि के समान लाल रंग का [4]एक और घोड़ा बाहर आया। इस पर बैठे सवार को धरती से शांति छीन लेने और लोगों से परस्पर हत्याएँ करवाने को उकसाने का अधिकार दिया गया था। उसे एक लम्बी तलवार दे दी गयी।

[5]मेमने ने जब तीसरी मुहर तोड़ी तो मैंने तीसरे प्राणी को कहते सुना, "आ!" जब मैंने दृष्टि उठायी तो वहाँ मेरे सामने एक काला घोड़ा खड़ा था। उस पर बैठे सवार के हाथ में एक तराजू थी। [6]तभी मैंने उन चारों प्राणियों के बीच से एक शब्द सा आते सुना, जो कह रहा था, "एक दिन की मज़दूरी के बदले एक दिन के खाने का गेंहूँ और एक दिन की मज़दूरी के बदले तीन दिन तक खाने का जौ। किन्तु जैतून के तेल और मदिरा को क्षति मत पहुँचा।"

[7]फिर मेमने ने जब चौथी मुहर खोली तो चौथे प्राणी को मैंने कहते सुना, "आ!" [8]फिर जब मैंने दृष्टि उठायी तो मेरे सामने मरियल सा पीले हरे से रंग का एक घोड़ा उपस्थित था। उस पर बैठे सवार का नाम था 'मृत्यु' और उसके पीछे सटा हुआ चल रहा था प्रेत लोक। धरती के एक चौथाई भाग पर उन्हें यह अधिकार दिया गया कि युद्धों, अकालों, महामारियों तथा धरती के हिंसक पशुओं के द्वारा वे लोगों को मार डालें।

[9]फिर उस मेमने ने जब पाँचवी मुहर तोड़ी तो मैंने वेदी के नीचे उन आत्माओं को देखा जिनकी परमेश्वर के सुसन्देश के प्रति आत्मा के तथा जिस साक्षी को उन्होंने दिया था, उसके कारण हत्याएँ कर दी गयीं थीं। [10]ऊँचे स्वर में पुकारते हुए उन्होंने कहा, "हे पवित्र एवम् सच्चे प्रभु। हमारी हत्याएँ करने के लिये धरती के लोगों का न्याय करने को और उन्हें दण्ड देने के लिये तू कब तक प्रतीक्षा करता रहेगा? [11]उनमें से हर एक को सफेद चोगा प्रदान किया गया तथा उनसे कहा गया कि वे थोड़ी देर उस समय तक, प्रतीक्षा और करें जब तक कि उनके उन साथी सेवकों और बंधुओं की संख्या पूरी नहीं हो जाती जिनकी वैसे ही हत्या की जाने वाली है, जैसे तुम्हारी की गयी थी।

[12]फिर जब मेमने ने छठी मुहर तोड़ी तो मैंने देखा कि वहाँ एक बड़ा भूचाल आया हुआ है। सूरज ऐसे काला पड़ गया है जैसे किसी शोक मनाते हुए व्यक्ति के वस्त्र होते हैं तथा पूरा चाँद, लहू के जैसा लाल हो गया है। [13]आकाश के तारे धरती पर ऐसे गिर गये थे जैसे किसी तेज आँधी द्वारा झकझोरे जाने पर अंजीर के पेड़ से कच्ची अंजीर गिरती हैं। [14]आकाश फट पड़ा था और एक चर्मपत्र के समान सिकुड़ कर लिपट गया था। सभी पर्वत और द्वीप अपने–अपने स्थानों से डिग गये थे।

[15]संसार के सम्राट, शासक, सेनानायक, धनी शक्तिशाली और सभी लोग तथा सभी स्वतन्त्र एवम दास लोगों ने पहाड़ों पर चटटानों के बीच और गुफाओं में अपने आपको छिपा लिया था। [16]वे पहाड़ों और चटटानों से कह रहे थे "हम पर गिर पड़ो और वह जो सिंहासन पर विराजमान है तथा उस मेमने के क्रोध के सामने से हमें छिपा लो। [17]उनके क्रोध का भंयकर दिन आ पहुँचा है। ऐसा कौन है जो इसे झेल सकता है?"

इस्राएल के 1,44,000 लोग

7 इसके बाद धरती के चारों कोनों पर चार स्वर्गदूतों को मैंने खड़े देखा। धरती की चारों हवाओं को उन्होंने पकड़ा हुआ था ताकि धरती पर, सागर पर अथवा वृक्षों पर उनमें से कोई सी भी हवा चल न पाये। [2]फिर मैंने देखा कि एक और स्वर्गदूत है जो पूर्व दिशा से आ रहा है। उसने सजीव परमेश्वर की मुहर ली हुई थी। तथा वह उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें धरती और आकाश को नष्ट कर देने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे स्वर में पुकार कर कह रहा था, [3]"जब तक हम अपने परमेश्वर के सेवकों के माथे पर मुहर नहीं लगा देते, तब तक तुम धरती, सागर और वृक्षों को हानि मत पहुँचाओ।" [4]फिर

जिन लोगों पर मुहर लगायी गयी थी, मैंने उनकी संख्या सुनी। वे एक लाख चवालीस हजार थे। जिन पर मुहर लगायी गयी थी, इस्राएल के सभी परिवार समूहों से थे:

[5] यहूदा के परिवार समूह के	12,000
रूबेन के परिवार समूह के	12,000
गाद परिवार समूह के	12,000
[6] आशेर परिवार समूह के	12,000
नप्ताली परिवार समूह के	12,000
मनश्शे परिवार समूह के	12,000
[7] शमौन परिवार समूह के	12,000
लेवी परिवार समूह के	12,000
इस्साकार परिवार समूह के	12,000
[8] जबूलून परिवार समूह के	12,000
यूसुफ परिवार समूह के	12,000
बिन्यामीन परिवार समूह के	12,000

विशाल भीड़

[9]इसके बाद मैंने देखा कि मेरे सामने एक विशाल भीड़ खड़ी थी जिसकी गिनती कोई नहीं कर सकता था। इस भीड़ में हर जाति के हर वंश के, हर कुल के तथा हर भाषा के लोग थे। वे उस सिंहासन और उस मेमने के आगे खड़े थे। वे श्वेत वस्त्र पहने थे और उन्होंने अपने हाथों में खजूर की टहनियाँ ली हुई थीं। [10]वे पुकार रहे थे– "सिंहासन पर विराजमान हमारे परमेश्वर की जय हो और मेमने की जय हो।" [11]सभी स्वर्गदूत सिंहासन प्राचीनों और उन चारों प्राणियों को घेरे खड़े थे। सिंहासन के सामने दंडवत प्रणाम करके इन स्वर्गदूतों ने परमेश्वर की उपासना की। [12]उन्होंने कहा, "आमीन!* हमारे परमेश्वर की स्तुति, महिमा, विवेक, धन्यवाद, समादर, शक्ति और बल सदा सर्वदा होते रहें। आमीन!" [13]तभी उन प्राचीनों में से किसी ने मुझसे प्रश्न किया, "ये श्वेत वस्त्रधारी लोग कौन हैं तथा ये कहाँ से आये हैं?"

[14]मैंने उसे उत्तर दिया, "मेरे प्रभु तू तो जानता ही है।"

इस पर उसने मुझसे कहा, "ये वे लोग हैं जो कठोर यातनाओं के बीच से होकर आ रहे हैं उन्होंने अपने वस्त्रों को मेमने के लहू से धोकर स्वच्छ एवम् उजला किया है। [15]इसीलिये अब ये परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े तथा उसके मन्दिर में दिन रात उसकी उपासना करते हैं। वह जो सिंहासन पर विराजमान है उनमें निवास करते हुए उनकी रक्षा करेगा। [16]न कभी उन्हें भूख सताएगी और न ही वे फिर कभी प्यासे रहेंगे। सूरज उनका कुछ नहीं बिगाड़ेगा और न ही चिलचिलाती धूप कभी उन्हें तपायेगी। [17]क्योंकि वह मेमना जो सिंहासन के बीच में है उनकी देखभाल करेगा। वह उन्हें जीवन देने वाले जल स्रोतों के पास ले जायेगा और परमेश्वर उनकी आँखों के हर आँसू को पोंछ देगा।"

सातवीं मुहर

8 फिर मेमने ने जब सातवीं मुहर तोड़ी तो स्वर्ग में कोई आधा घण्टे तक सन्नाटा छाया रहा। [2]फिर मैंने परमेश्वर के सामने खड़े होने वाले सात स्वर्गदूतों को देखा। उन्हें सात तुरहियाँ प्रदान की गयीं थीं।

[3]फिर एक और स्वर्गदूत आया और वेदी पर खड़ा हो गया। उसके पास सोने का एक धूपदान था। उसे संत जनों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की उस वेदी पर जो सिंहासन के सामने थी, चढ़ाने के लिये बहुत सारी धूप दी गयी। [4]फिर स्वर्गदूत के हाथ से धूप का वह धुआँ संत जनों की प्रार्थनाओं के साथ–साथ परमेश्वर के सामने पहुँचा। [5]इसके बाद स्वर्गदूत ने उस धूप दान को उठाया, उसे वेदी की आग से भरा और उछाल कर धरती पर फेंक दिया। इस पर मेघों का गर्जन–तर्जन, भीषण शब्द, बिजली की चमकार और भूकम्प होने लगे।

सात स्वर्गदूतों का उनकी तुरहियाँ बजाना

[6]फिर वे सात स्वर्गदूत, जिनके पास सात तुरहियाँ थी, उन्हें फूँकने को तैयार हो गये।

[7]पहले स्वर्गदूत ने तुरही में जैसे ही फूँक मारी, वैसे ही लहू ओले और अग्नि एक साथ मिले जुले दिखाई देने लगे और उन्हें धरती पर नीचे उछाल कर फेंक दिया गया। जिससे धरती का एक तिहाई भाग जल कर भस्म हो गया। एक तिहाई पेड़ जल गये और समूची हरी घास राख हो गयी।

[8]दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी तो मानो अग्नि का जलता हुआ एक विशाल पहाड़ सा समुद्र में फेंक दिया गया हो। इससे एक तिहाई समुद्र रक्त में बदल गया। [9]तथा समुद्र के

आमीन जब कोई व्यक्ति आमीन कहता है तो इसका अर्थ होता है कि वह पूरी तरह उसके साथ सहमत है।

एक तिहाई जीव जन्तु मर गये और एक तिहाई जल पोत नष्ट हो गये।

[10]तीसरे स्वर्गदूत ने जब तुरही बजाई तो आकाश से मशाल की तरह जलता हुआ एक विशाल तारा गिरा। यह तारा एक तिहाई नदियों तथा झरनों के पानी पर जा पड़ा। [11]इस तारे का नाम था 'नागदौना'* सो समूचे जल का एक तिहाई भाग नागदौना में ही बदल गया। तथा उस जल के पीने से बहुत से लोग मारे गये। क्योंकि जल कड़वा हो गया था।

[12]जब चौथे स्वर्गदूत ने तुरही बजायी तो एक तिहाई सूर्य, और साथ में ही एक तिहाई चन्द्रमा और एक तिहाई तारों पर विपत्ति आई। सो उनका एक तिहाई काला पड़ गया। परिणामस्वरूप एक तिहाई दिन तथा उसी प्रकार एक तिहाई रात अन्धेरे में डूब गये।

[13]फिर मैंने देखा कि एक गरुड़ ऊँचे आकाश में उड़ रहा है। मैंने उसे ऊँचे स्वर में कहते हुए सुना, "उन बचे हुए तीन स्वर्गदूतों की तुरहियों के उद्घोष के कारण जो अपनी तुरहियाँ अभी बजाने ही वाले हैं, धरती के निवासियों पर कष्ट हो! कष्ट हो! कष्ट हो!"

9 पाँचवे स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी तब मैंने आकाश से धरती पर गिरा हुआ एक तारा देखा। इसे उस चिमनी की कुंजी दी गयी थी जो पाताल में उतरती है। [2]फिर उस तारे ने उस चिमनी का ताला खोल दिया जो पाताल में उतरती थी और चिमनी से वैसे ही धुआँ फूट पड़ा जैसे वह एक बड़ी भट्टी से निकलता है। सो चिमनी से निकले धुआँ से सूर्य और आकाश काले पड़ गये। [3]तभी उस धुआँ से धरती पर टिड्डी दल उतर आया। उन्हें धरती के बिच्छुओं के जैसी शक्ति दी गयी थी। [4]किन्तु उनसे कह दिया गया था कि वे न तो धरती की घास को कोई हानि पहुँचायें और न ही हरे पौधों या पेड़ों को। उन्हें तो बस उन लोगों को ही हानि पहुँचानी थी जिनके माथों पर परमेश्वर की मुहर नहीं लगी हुई थी। [5]टिड्डी दल को निर्देश दे दिया गया था कि वे लोगों के प्राण न लें बल्कि पाँच महीने तक उन्हें पीड़ा पहुँचाते रहें। वह पीड़ा जो उन्हें पहुँचाई जा रही थी, वैसी थी जैसी किसी व्यक्ति को बिच्छू के काटने से होती है। [6]उन पाँच महीनों के भीतर लोग मौत को ढूँढते फिरेंगे किन्तु मौत उन्हें मिल नहीं पायेगी। वे मरने के लिये तरसेंगे किन्तु मौत उन्हें चकमा देकर निकल जायेगी।

[7]और अब देखो कि वे टिड्डी युद्ध के लिये तैयार किये गये घोड़ों जैसी दिख रहीं थीं। उनके सिरों पर सुनहरी मुकुट से बँधे थे। उनके मुख मानव मुखों के समान थे। [8]उनके बाल स्त्रियों के केशों के समान थे तथा उनके दाँत सिंहों के दाँतों के समान थे। [9]उनके सीने ऐसे थे जैसे लोहे के कवच हों। उनके पंखों की ध्वनि युद्ध में जाते हुए असंख्य अश्व रथों से पैदा हुए शब्द के समान थी। [10]उनकी पूँछों के बाल ऐसे थे जैसे बिच्छू के डंक हों। तथा उनमें लोगों को पाँच महीने तक क्षति पहुँचाने की शक्ति थी। [11]पाताल के अधिकारी दूत को उन्होंने अपने राजा के रूप में लिया हुआ था। इब्रानी भाषा में उसका नाम है 'अबद्दोन'* और यूनानी भाषा में वह 'अपुल्लयोन' (अर्थात् विनाश करनेवाला) कहलाता है।

[12]पहली महान विपत्ति तो बीत चुकी है किन्तु इसके बाद अभी दो बड़ी विपत्तियाँ और आने वाली हैं।

[13]फिर छठे स्वर्गदूत ने जैसे ही अपनी तुरही फूँकी, वैसे ही मैंने परमेश्वर के सामने एक सुनहरी वेदी देखी, उसके चार सींगों से आती हुई एक ध्वनि सुनी। [14]तुरही लिये हुए उस छठे स्वर्गदूत से उस आवाज ने कहा, "उन चार स्वर्गदूतों को मुक्त कर दो जो फरात महानदी के पास बँधे पड़े हैं।" [15]सो चारों स्वर्गदूत मुक्त कर दिये गये। वे उसी घड़ी, उसी दिन, उसी महीने और उसी वर्ष के लिये तैयार रखे गये थे ताकि वे एक तिहाई मानव जाति को मार डालें। [16]उनकी पूरी संख्या कितनी थी, यह मैंने सुना। घुड़सवार सैनिकों की संख्या बीस करोड़ थी।

[17]उस मेरे दिव्य दर्शन में वे घोड़े और उनके सवार मुझे इस प्रकार दिखाई दिये: उन्होंने कवच धारण किये हुए थे जो धधकती आग जैसे लाल, गहरे नीले और गंधक जैसे पीले थे। [18]इन तीन महाविनाशों से यानी उनके मुखों से निकल रही अग्नि, धुआँ और गंधक से एक तिहाई मानव जाति को मार डाला गया। [19]इन घोड़ों की शक्ति उनके मुख और उनकी पूँछों में निहित थी क्योंकि उनकी पूँछों सिरदार साँपों के समान थी जिनका प्रयोग वे मनुष्यों को हानि पहुँचाने के लिये करते थे।

नागदौना मूल में अपसिन्तोस जो यूनानी भाषा का शब्द है और जिसका अंग्रेजी पर्याय है वर्मवुड जिसका अर्थ है एक बहुत कड़वा पौधा। इसलिए इसे गहन दु:ख का प्रतीक माना जाता है।

अबद्दोन अर्थात् विनाश का स्थान।

[20]इस पर भी बाकी के ऐसे लोगों ने जो इन महा विनाशों से भी नहीं मारे जा सके थे उन्होंने अपने हाथों से किये कामों के लिए अब भी मन न फिराया तथा भूत–प्रेतों की अथवा सोने, चाँदी, काँसे, पत्थर और लकड़ी की उन मूर्तियों की उपासना नहीं छोड़ी, जो न देख सकती हैं, न सुन सकती हैं और न ही चल सकती हैं। [21]उन्होंने अपने द्वारा की गयी हत्याओं, जादू टोनों, व्यभिचारों अथवा चोरी–चकारी करने से मन न फिराया।

स्वर्गदूत और छोटी पोथी

10 फिर मैंने आकाश से नीचे उतरते हुए एक और बलवान स्वर्गदूत को देखा। उसने बादल को ओढ़ा हुआ था तथा उसके सिर के आसपास एक मेघ धनुष था। उसका मुखमण्डल सूर्य के समान तथा उसकी टाँगें अग्नि स्तम्भों के जैसी थीं। [2]अपने हाथ में उसने एक छोटी सी खुली पोथी ली हुई थी। उसने अपना दाहिना चरण सागर में और बायाँ चरण धरती पर रखा। फिर वह सिंह के समान दहाड़ता हुआ ऊँचे स्वर में चिल्लाया। उसके चिल्लाने पर सातों गर्जन तर्जन के शब्द सुनाई देने लगे। [4]जब सातों गर्जन हो चुके और मैं लिखने को ही था, तभी मैंने एक आकाशवाणी सुनी, "सातों गर्जनों ने जो कुछ कहा है, उसे छिपा ले तथा उसे लिख मत।"

[5]फिर उस स्वर्गदूत ने जिसे मैंने समुद्र में और धरती पर खड़े देखा था, आकाश में ऊपर दाहिना हाथ उठाया। [6]और जो नित्य रूप से सजीव है, जिसने आकाश को तथा आकाश की सब वस्तुओं को, धरती एवम् धरती पर की तथा सागर और जो कुछ उसमें है, उन सब की रचना की है, उसकी शपथ लेकर कहा, "अब और अधिक देर नहीं होगी। [7]किन्तु जब सातवें स्वर्गदूत को सुनने का समय आयेगा अर्थात् जब वह अपनी तुरही बजाने को होगा तभी परमेश्वर की वह गुप्त योजना पूरी हो जायेगी जिसे उसने अपने सेवक नबियों को बता दिया था।"

[8]उस आकाशवाणी ने, जिसे मैंने सुना था, मुझसे फिर कहा, "जा और उस स्वर्गदूत से जो सागर में और धरती पर खड़ा है, उसके हाथ से उस खुली पोथी को ले ले।"

[9]सो मैं उस स्वर्गदूत के पास गया और मैंने उससे कहा कि वह उस छोटी पोथी को मुझे दे दे। उसने मुझसे कहा, "यह ले और इसे खा जा। इससे तेरा पेट कड़वा हो जायेगा किन्तु तेरे मुँह में यह शहद से भी ज्यादा मीठी बन जायेगी।" [10]फिर उस स्वर्गदूत के हाथ से मैंने वह छोटी सी पोथी ले ली और मैंने उसे खा लिया। मेरे मुख में यह शहद सी मीठी लगी किन्तु मैं जब उसे खा चुका तो मेरा पेट कड़वा हो गया। [11]इस पर वह मुझसे बोला, "तुझे बहुत से लोगों राष्ट्रों, भाषाओं और राजाओं के विषय में फिर भविष्यवाणी करनी होगी।"

दो साक्षी

11 इसके पश्चात् नापन के लिये एक सरकंडा मुझे दिया गया जो नापने की छड़ी जैसा दिख रहा था। मुझसे कहा गया, "उठ और परमेश्वर के मन्दिर तथा वेदी को नाप और जो लोग मन्दिर के भीतर उपासना कर रहे हैं, उनकी गिनती कर। [2]किन्तु मन्दिर के बाहरी आँगन को रहने दे, उसे मत नाप क्योंकि यह अधर्मियों को दे दिया गया है। वे बयालीस महीने तक पवित्र नगर को अपने पैरों तले रौंदेंगे। [3]मैं अपने दो गवाहों को खुली छूट दे दूँगा और वो एक हजार दो सौ साठ दिनों तक भविष्यवाणी करेंगे। वे ऊन के ऐसे वस्त्र धारण किये हुए होंगे जिन्हें शोक प्रदर्शित करने के लिये पहना जाता है।" [4]ये दो साक्षियाँ वे दो जैतून के पेड़ तथा वे दो दीपदान हैं जो धरती के प्रभु के सामने स्थित रहते हैं। [5]यदि कोई भी उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है तो उनके मुखों से ज्वाला फूट पड़ती है और उनके शत्रुओं को निगल जाती है। सो यदि कोई उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है तो निश्चित रूप से उसकी इस प्रकार मृत्यु हो जाती है। [6]वे आकाश को बाँध देने की शक्ति रखते हैं ताकि जब वे भविष्यवाणी कर रहे हों, तब कोई वर्षा न होने पाये। उन्हें झरनों के जल पर भी अधिकार था जिससे वे उसे लहू में बदल सकते थे। उनमें ऐसी शक्ति भी थी कि वे जितनी बार चाहते, उतनी ही बार धरती पर हर प्रकार के विनाशों का आघात कर सकते थे।

[7]उनके साक्षी दे चुकने के बाद, वह पशु उस महागर्त से बाहर निकलेगा और उन पर आक्रमण करेगा। वह उन्हें हरा देगा और मार डालेगा। [8]उनकी लाशें उस महानगर की गलियों में पड़ी रहेंगी। (यह नगर प्रतीक रूप से सदोम तथा मिस्र कहलाता है।) यहीं उनके प्रभु को भी क्रूस पर चढ़ा कर मारा गया था। [9]सभी जातियों, उपजातियों, भाषाओं और देशों के लोग उनके शवों को साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे तथा वे उनके शवों को कब्रों में नहीं

रखने देंगे। [10]धरती के वासी उन पर आनन्द मनायेंगे। वे उत्सव करेंगे तथा परस्पर उपहार भेजेंगे। क्योंकि इन दोनों नबियों ने धरती के निवासियों को बहुत दुःख पहुँचाया था।

[11]किन्तु साढ़े तीन दिन बाद परमेश्वर की ओर से उनमें जीवन के श्वास ने प्रवेश किया और वे अपने पैरों पर खड़े हो गये। जिन्होंने उन्हें देखा, वे बहुत डर गये थे। [12]फिर उन दोनों नबियों ने ऊँचे स्वर में आकाशवाणी को उनसे कहते हुए सुना, "यहाँ ऊपर आ जाओ।" सो वे आकाश के भीतर बादल में ऊपर चले गये। उन्हें ऊपर जाते हुए उनके विरोधियों ने देखा।

[13]ठीक उसी क्षण वहाँ एक भारी भूचाल आया और नगर का दसवाँ भाग ढह गया। भूचाल में सात हज़ार लोग मारे गये तथा जो लोग बचे थे, वे भयभीत हो उठे और वे स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा का बखान करने लगे।

[14]इस प्रकार अब दूसरी विपत्ति बीत गयी है किन्तु सावधान! तीसरी महाविपत्ति शीघ्र ही आने वाली है।

सातवीं तुरही

[15]सातवें स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी तो आकाश में तेज आवाजें होने लगीं। वे कह रही थीं:

"अब जगत का राज्य हमारे प्रभु का है,
और उसके मसीह का ही।
अब वह सुशासन युगयुगों तक करेगा।"

[16]और तभी परमेश्वर के सामने अपने-अपने सिंहासनों पर विराजमान चौबीसों प्राचीनों ने दण्डवत प्रणाम करके परमेश्वर की उपासना की। [17]वे बोले:

"सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर,
जो है, जो था,
हम तेरा धन्यवाद करते हैं।
तूने ही अपनी महाशक्ति को लेकर
सबके शासन का आरम्भ किया था।
[18] अन्य जातियाँ क्रोध में भरी थीं
किन्तु अब तेरा कोप प्रकटे समय
और न्याय का समय आ गया।
उन सब ही के जो प्राण थे बिसारे।
और समय आ गया कि
तेरे सेवक प्रतिफल पावें
सभी नबी जन, तेरे सब जन
और सभी जो तुझको आदर देते।
और सभी जो छोटे जन हैं
और सभी जो बड़े बने हैं
अपना प्रतिफल पावें।
उन्हें मिटाने का समय आ गया,
धरती को जो मिटा रहे हैं।"

[19]फिर स्वर्ग में स्थित परमेश्वर के मन्दिर को खोला गया तथा वहाँ मन्दिर में वाचा की वह पेटी दिखाई दी। फिर बिजली की चकाचौंध होने लगी। मेघों का गर्जन- तर्जन और घड़घड़ाहट के शब्द भूकम्प और भयानक ओले बरसने लगे।

स्त्री और विशालकाय अजगर

12 इसके पश्चात् आकाश में एक बड़ा सा संकेत प्रकट हुआ: एक महिला दिखायी दी जिसने सूरज को धारण किया हुआ था और चन्द्रमा उसके पैरों तले था। उसके माथे पर मुकुट था जिसमें बारह तारे जड़े थे। [2]वह गर्भवती थी। और क्योंकि प्रसव होने ही वाला था इसलिए प्रजनन की पीड़ा से वह कराह रही थी। [3]स्वर्ग में एक और संकेत प्रकट हुआ। मेरे सामने ही एक लाल रंग का विशालकाय अजगर खड़ा था। उसके सातों सिरों पर सात मुकुट थे। [4]उसकी पूँछ ने आकाश के तारों के एक तिहाई भाग को सपाटा मार कर धरती पर नीचे फेंक दिया। वह स्त्री जो बच्चे को जन्म देने ही वाली थी, वह अजगर उसके सामने खड़ा हो गया ताकि वह जैसे ही उस बच्चे को जन्म दे, वह उसके बच्चे को निगल जाये। [5]फिर उस स्त्री ने एक बच्चे को जन्म दिया जो एक लड़का था। उसे सभी जातियों पर लौह दण्ड के साथ शासन करना था। किन्तु उस बच्चे को उठाकर परमेश्वर और उसके सिंहासन के सामने ले जाया गया। [6]और वह स्त्री निर्जन वन में भाग गयी। एक ऐसा स्थान जो परमेश्वर ने उसी के लिये तैयार किया था ताकि वहाँ उसे एक हजार दो सौ साठ दिन तक जीवित रखा जा सके।

[7]फिर स्वर्ग में एक युद्ध भड़क उठा। मीकाईल और उसके दूतों का उस विशालकाय अजगर से संग्राम हुआ। उस विशालकाय अजगर ने भी उसके दूतों के साथ लड़ाई लड़ी। [8]किन्तु वह उन पर भारी नहीं पड़ सका,

सो स्वर्ग में उनका स्थान उनके हाथ से निकल गया। [9]और उस विशालकाय अजगर को नीचे धकेल दिया गया। यह वही पुराना महानाग है जिसे दानव अथवा शैतान कहा गया है। यह समूचे संसार को छलता रहता है। हाँ, इसे धरती पर धकेल दिया गया था।

[10]फिर मैंने ऊँचे स्वर में एक आकाशवाणी को कहते सुना: "यह हमारे परमेश्वर के विजय की घड़ी है। उसने अपनी शक्ति और संप्रभुता का बोध करा दिया है। उसके मसीह ने अपनी शक्ति को प्रकट कर दिया है क्योंकि हमारे बन्धुओं पर परमेश्वर के सामने दिन-रात लांछन लगाने वाले को नीचे धकेल दिया गया है। [11]उन्होंने मेमने के बलिदान के रक्त और उनके द्वारा दी गयी साक्षी से उसे हरा दिया है। उन्होंने अपने प्राणों का परित्याग करने तक अपने जीवन की परवाह नहीं की। [12]सो हे स्वर्गो, और स्वर्गो के निवासियो, आनन्द मनाओ। किन्तु हाय, धरती और सागर, तुम्हारे लिए कितना बुरा होगा क्योंकि शैतान अब तुम पर उतर आया है। वह क्रोध से आग बबूला हो रहा है। क्योंकि वह जानता है कि अब उसका बहुत थोड़ा समय शेष है।"

[13]जब उस विशाल काय अजगर ने देखा कि उसे धरती पर नीचे धकेल दिया गया है तो उसने उस स्त्री का पीछा करना शुरू कर दिया जिसने पुत्र जना था। [14]किन्तु उस स्त्री को एक बड़े उकाब के दो पंख दिये प्रदान किये गये ताकि वह उस वन प्रदेश को उड़ जाये, जो उसके लिये तैयार किया गया था। साढ़े तीन साल तक वहीं उस विशाल काय अजगर से दूर उसका भरण-पोषण किया जाना था। [15]तब उस महानाग ने उस स्त्री के पीछे अपने मुख से नदी के समान जल धारा प्रवाहित की ताकि वह उसमें बह कर डूब जाये। [16]किन्तु धरती ने अपना मुख खोल कर उस स्त्री की सहायता की और उस विशालकाय अजगर ने अपने मुख से जो नदी निकाली थी, उसे निगल लिया। [17]इसके बाद तो वह विशालकाय अजगर उस स्त्री पर बहुत क्रोधित हो उठा और उसके उन वंशजों के साथ जो परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं और यीशु की साक्षी को धारण करते हैं, युद्ध करने को निकल पड़ा।

[18]तथा सागर के किनारे जा खड़ा हुआ।

दो पशु

13 फिर मैंने सागर में से एक पशु को बाहर आते देखा। उसके दस सींग थे और सात सिर थे। तथा अपने सीगों पर उसने दस राजसी मुकुट पहने हुए थे। उसके सिरों पर दुष्ट नाम अंकित थे।

[2]मैंने जो पशु देखा था, वह चीते जैसा था। उसके पैर भालू के पैर जैसे थे और उसका मुख सिंह के मुख के समान था। उस विशालकाय अजगर ने अपनी शक्ति, अपना सिंहासन और अपना प्रचुर अधिकार उसे सौंप दिया। [3]मैंने देखा कि उसका एक सिर ऐसा दिखाई दे रहा था जैसे उस पर कोई घातक घाव लगा हो किन्तु उसका वह घातक घाव भर चुका था। समूचा संसार आश्चर्य चकित होकर उस पशु के पीछे हो लिया। [4]तथा वे उस विशालकाय अजगर को पूजने लगे। क्योंकि उसने अपना समूचा अधिकार उस पशु को दे दिया था। वे उस पशु की भी उपासना करते हुए कहने लगे, "इस पशु के समान कौन है? और ऐसा कौन है जो उससे लड़ सके?"

[5]उसे अनुमति दे दी गयी कि वह अहंकारपूर्ण तथा निन्दा से भरे शब्द बोलने में अपने मुख का प्रयोग करे। उसे बयालीस महीने तक अपनी शक्ति के प्रयोग का अधिकार दिया गया। [6]सो उसने परमेश्वर की निन्दा करना आरम्भ कर दिया। वह परमेश्वर के नाम और उसके मन्दिर तथा जो स्वर्ग में रहते हैं, उनकी निन्दा करने लगा। [7]परमेश्वर के संत जनों के साथ युद्ध करने और उन्हें हराने की अनुमति उसे दे दी गयी। तथा हर वंश, हर जाति, हर परिवार-समूह हर भाषा और हर देश पर उसे अधिकार दिया गया। [8]धरती के वे सभी निवासी उस पशु की उपासना करेंगे जिनके नाम उस मेमने की जीवन-पुस्तक में संसार के आरम्भ से ही नहीं लिखे जिसका बलिदान किया जाना सुनिश्चित है। [9]यदि किसी के कान हैं तो वह सुने:

[10] बंदीगृह में बंदी होना, जिसकी नियति बनी है
वह निश्चय ही बंदी होगा।
यदि कोई असि से मारेगा तो
वह भी उस ही असि से मारा जायेगा।

इसी में तो परमेश्वर के संत जनों से धैर्यपूर्ण सहनशीलता और विश्वास की अपेक्षा है।

[11]इसके पश्चात् मैंने धरती से निकलते हुए एक और पशु को देखा। उसके मेमने के सींगों जैसे दो सींग थे।

किन्तु वह एक महानाग के समान बोलता था। [12]उस विशालकाय अजगर के सामने वह पहले पशु के सभी अधिकारों का उपयोग करता था। उसने धरती और धरती पर सभी रहने वालों से उस पहले पशु की उपासना करवाई जिसका घातक घाव भर चुका था। [13]दूसरे पशु ने बड़े–बड़े चमत्कार किये। यहाँ तक कि सभी लोगों के सामने उसने धरती पर आकाश से आग बरसवा दी। [14]वह धरती के निवासियों को छलता चला गया क्योंकि उसके पास पहले पशु की उपस्थिति में चमत्कार दिखाने की शक्ति थी। दूसरे पशु ने धरती के निवासियों से उस पहले पशु को आदर देने के लिये जिस पर तलवार का घाव लगा था और जो ठीक हो गया था–उसकी मूर्ति बनाने को कहा। [15]दूसरे पशु को यह शक्ति दी गयी कि वह पहले पशु की मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करे ताकि पहले पशु की वह मूर्ति न केवल बोल सके बल्कि उन सभी को मार डालने का आदेश भी दे सके जो इस मूर्ति की उपासना नहीं करते। [16-17]दूसरे पशु ने छोटों–बड़ों, धनियों–निर्धनों, स्वतन्त्रों और दासों–सभी को विवश किया कि वे अपने–अपने दाहिने हाथों या माथों पर उस पशु के नाम या उसके नामों से सम्बन्धित संख्या की छाप लगवायें ताकि उस छाप को धारण किये बिना कोई भी ले बेच न कर सके। [18]जिसमें बुद्धि हो, वह उस पशु के अंक का हिसाब लगा ले क्योंकि वह अंक किसी व्यक्ति के नाम से सम्बन्धित है। उसका अंक है छः सौ छियाषठ।

मुक्त जनों का गीत

14 फिर मैंने देखा कि मेरे सामने सिय्योन पर्वत पर मेमना खड़ा है। उसके साथ ही एक लाख चवालीस हजार वे लोग भी खड़े थे जिनके माथों पर उसका और उसके पिता का नाम अंकित था। [2]फिर मैंने एक आकाशवाणी सुनी, उसका महा नाद एक विशाल जल प्रपात के समान था या घनघोर मेघ गर्जन के जैसा था। जो महानाद मैंने सुना था, वह अनेक वीणा वादकों द्वारा एक साथ बजायी गयी वीणाओं से उत्पन्न संगीत के समान था। [3]वे लोग सिंहासन, चारों प्राणियों तथा प्राचीनों के सामने एक नया गीत गा रहे थे। जिन एक लाख चवालीस हजार लोगों को धरती पर फिरौती देकर बन्धन से छुड़ा लिया गया था उन्हें छोड़ अन्य कोई भी व्यक्ति उस गीत को नहीं सीख सकता था। [4]वे ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने किसी स्त्री के संसर्ग से अपने आपको दूषित नहीं किया था। क्योंकि वे कुंवारे थे जहाँ कहीं मेमना जाता, वे उसका अनुसरण करते। सारी मानव जाति से उन्हें फिरौती देकर बन्धन से छुड़ा लिया गया था। वे परमेश्वर और मेमने के लिये फसल के पहले फल थे। [5]उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला था, वे निर्दोष थे।

तीन स्वर्गदूत

[6]फिर मैंने आकाश में ऊँची उड़ान भरते एक और स्वर्गदूत को देखा। उसके पास धरती के निवासियों, प्रत्येक देश, जाति, भाषा और कुल के लोगों के लिये सुसमाचार का एक अनन्त सन्देश था। [7]ऊँचे स्वर में वह बोला, "परमेश्वर से डरो और उसकी स्तुति करो। क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ गया है। उसकी उपासना करो, जिसने आकाश पृथ्वी, सागर और जल–स्रोतों की रचना की है।"

[8]इसके पश्चात् उसके पीछे एक और स्वर्गदूत आया और बोला, "उसका पतन हो चुका है, महान नगरी बाबुल का पतन हो चुका है। उसने सभी जातियों को अपने व्यभिचार से उत्पन्न क्रोध की वासनामय मदिरा पिलायी थी।"

[9]उन दोनों के पश्चात् फिर एक और स्वर्गदूत आया और ऊँचे स्वर में बोला "यदि कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की उपासना करता है और अपने हाथ या माथे पर उसका छाप धारण करता है [10]तो वह परमेश्वर के प्रकोप की मदिरा पीयेगा। ऐसी अमिश्रित तीखी मदिरा जो परमेश्वर के प्रकोप के कटोरे में तैयार की गयी है। उस व्यक्ति को पवित्र स्वर्गदूतों और मेमने से सामने धधकती हुई गंधक में यातनाएँ दी जायेंगी। [11]युग–युगान्तर तक उनकी यातनाओं से धूआँ उठता रहेगा। और जिस किसी पर भी पशु के नाम की छाप अंकित होगी और जो उसकी और उसकी मूर्ति की उपासना करता होगा, उन्हें रात–दिन कभी चैन नहीं मिलेगा।" [12]इसी स्थान पर परमेश्वर के उन संत जनों की धैर्यपूर्ण सहनशीलता की अपेक्षा है जो परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशु में अपने विश्वास का पालन करती है।

[13]फिर एक आकाशवाणी को मैंने यह कहते सुना, "इसे लिख अब से आगे वे ही लोग धन्य होंगे जो प्रभु में स्थित हो कर मरे हैं।"

आत्मा कहता है, "हाँ, यही ठीक है। उन्हें अपने परिश्रम से अब विश्राम मिलेगा क्योंकि उनके कर्म, उनके साथ हैं।"

धरती की फसल की कटनी

[14]फिर मैंने देखा कि मेरे सामने वहाँ एक सफेद बादल था। और उस बादल पर एक व्यक्ति बैठा था जो मनुष्य के पुत्र* जैसा दिख रहा था। उसने सिर पर एक स्वर्ण मुकुट धारण किया हुआ था और उसके हाथ में एक तेज हँसिया था। [15]तभी मन्दिर में से एक और स्वर्गदूत बाहर निकला। उसने जो बादल पर बैठा था, उससे ऊँचे स्वर में कहा, "हँसिया चला और फसल इकट्ठी कर क्योंकि फसल काटने का समय आ पहुँचा है। धरती की फसल पक चुकी है।" [16]सो जो बादल पर बैठा था, उसने धरती पर अपना हँसिया चलाया तथा धरती की फसल काट ली गयी।

[17]फिर आकाश में स्थित मन्दिर में से एक और स्वर्गदूत बाहर निकला। उसके पास भी एक तेज हँसिया था। [18]तभी वेदी से एक और स्वर्गदूत आया। अग्नि पर उसका अधिकार था। उस स्वर्गदूत से ऊँचे स्वर में कहा, "अपने तेज हँसिये का प्रयोग कर और धरती की बेल से अंगूर के गुच्छे उतार ले क्योंकि इसके अंगूर पक चुके हैं।" [19]सो उस स्वर्गदूत ने धरती पर अपना हँसिया झुलाया और धरती के अंगूर उतार लिये और उन्हें परमेश्वर के भयंकर कोप की धानी में डाल दिया। [20]अंगूर नगर के बाहर की धानी में रौंद कर निचोड़ लिये गये। धानी में से लहू बह निकला। लहू घोड़े की लगाम जितना ऊपर चढ़ आया और कोई तीन सौ किलो मीटर की दूरी तक फैल गया।

अंतिम विनाश के दूत

15 आकाश में फिर मैंने एक और महान एवम् अदभुत चिह्न देखा। मैंने देखा कि सात दूत हैं जो सात अंतिम महाविनाशों को लिये हुए हैं। ये अंतिम विनाश हैं क्योंकि इनके साथ परमेश्वर का कोप भी समाप्त हो जाता है।

[2]फिर मुझे काँच का एक सागर सा दिखायी दिया जिसमें मानो आग मिली हो। और मैंने देखा कि उन्होंने उस पशु की मूर्ति पर तथा उसके नाम से सम्बन्धित संख्या पर विजय पा ली है, वे भी उस काँच के सागर पर खड़े हैं। उन्होंने परमेश्वर के द्वारा दी गयी वीणाएँ ली हुई थीं। [3]वे परमेश्वर के सेवक मूसा और मेमने का यह गीत गा रहे थे:

"वे कर्म जिन्हें तू करता रहता, महान है।
तेरे कर्म अदभुत, तेरी शक्ति अनन्त है,
हे प्रभु परमेश्वर,
तेरे मार्ग सच्चे और धार्मिकता से भरे हुए हैं।
सभी जातियों का राजा,
[4] हे प्रभु, तुझसे सब लोग सदा भयभीत रहेंगे।
तेरा नाम लेकर सब जन स्तुति करेंगे
क्योंकि तू मात्र ही पवित्र है।
सभी जातियों तेरे सम्मुख उपस्थित हुई
तेरी उपासना करें।
क्योंकि उजागर तथ्य यही है
हे प्रभु, तू जो करता वही न्याय है।"

[5]इसके पश्चात् मैंने देखा कि स्वर्ग के मन्दिर अर्थात् वाचा के तम्बू को खोला गया [6]और वे सातों दूत जिनके पास अंतिम सात विनाश थे, मन्दिर से बाहर आये। उन्होंने चमकीले स्वच्छ सन के उत्तम रेशों के बने वस्त्र पहने हुए थे। अपने सीनों पर सोने के पटके बाँधे हुए थे। [7]फिर उन चार प्राणियों में से एक ने उन सातों दूतों को सोने के कटोरे दिये जो सदा–सर्वदा के लिये अमर परमेश्वर के कोप से भरे हुए थे। [8]वह मन्दिर परमेश्वर की महिमा और उसकी शक्ति के धुएँ से भरा हुआ था ताकि जब तक उन सात दूतों के सात विनाश पूरे न हो जायें, तब तक मन्दिर में कोई भी प्रवेश न करने पाये।

परमेश्वर के प्रकोप के कटोरे

16 फिर मैंने सुना कि मन्दिर में से एक ऊँचा स्वर उन सात दूतों से कह रहा है, "जाओ और परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को धरती पर उँड़ेल दो।"

[2]सो पहला दूत गया और उसने धरती पर अपना प्याला उँड़ेल दिया। परिणामस्वरूप उन लोगों के, जिन पर उस पशु का चिह्न अंकित था और जो उसकी मूर्ति को पूजते थे, भयानक पीड़ा पूर्ण छाले फूट आये।

मनुष्य के पुत्र देखें दानि. 7:13–14 यीशु स्वयं अपने लिए प्रायः इन नाम का प्रयोग किया करता था।

[3]इसके पश्चात् दूसरे दूत ने अपना कटोरा समुद्र पर उँड़ेल दिया और सागर का जल मरे हुए व्यक्ति के लहू के रूप में बदल गया और समुद्र में रहने वाले सभी जीव–जन्तु मारे गये।

[4]फिर तीसरे दूत ने नदियों और जल के झरनों पर अपना कटोरा उँड़ेल दिया। और वे लहू में बदल गये [5]तभी मैंने जल के स्वामी स्वर्गदूत को यह कहते सुना:

"वह तू ही है जो न्यायी
जो है, जो था सदा–सदा से
तू ही है जो पवित्र।
तूने जो किया है वह न्याय है।
[6] उन्होंने संत जनों का
और नबियों का लहू बहाया।
तू न्यायी है
तूने उनके पीने को बस रक्त ही दिया,
क्योंकि वे इसी के योग्य रहे।"

[7] फिर मैंने वेदी से आते हुए ये शब्द सुने:
"हाँ, हे सर्वशक्तिमान
प्रभु परमेश्वर!
तेरे न्याय सच्चे और नेक हैं।"

[8]फिर चौथे दूत ने अपना प्याला सूरज पर उँड़ेल दिया। सो उसे लोगों को आग से जला डालने की शक्ति प्रदान कर दी गयी। [9]और लोग भयानक गर्मी से झुलसने लगे। उन्होंने परमेश्वर के नाम को कोसा क्योंकि इन विनाशों पर उसी का नियन्त्रण है। किन्तु उन्होंने कोई मन न फिराया और न ही उसे महिमा प्रदान की।

[10]इसके पश्चात् पाँचवे दूत ने अपना प्याला उस पशु के सिंहासन पर उँड़ेल दिया और उस का राज्य अंधकार में डूब गया। लोगों ने पीड़ा के मारे अपनी जीभ काट ली। [11]अपनी–अपनी पीड़ाओं और छालों के कारण उन्होंने स्वर्ग के परमेश्वर की भर्त्सना तो की, किन्तु अपने कर्मों के लिए मन न फिराया।

[12]फिर छठे दूत ने अपना कटोरा फरात नामक महानदी पर उँडेल दिया और उसका पानी सूख गया। इससे पूर्व दिशा के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो गया। [13]फिर मैंने देखा कि उस विशालकाय अजगर के मुख से, उस पशु के मुख से और कपटी नबियों के मुख से तीन दुष्टात्माएँ निकलीं, जो मेंढक के समान दिख रहीं थीं। [14]ये शैतानी दुष्ट आत्माएँ थीं और उनमें चमत्कार दिखाने की शक्ति थी। वे समूचे संसार के राजाओं को परम शक्तिमान परमेश्वर के महान दिन, युद्ध करने के लिये एकत्र करने को निकल पड़ीं।

[15]"सावधान! मैं दबे पाँव आकर तुम्हें अचरज में डाल दूँगा। वह धन्य है जो जागता रहता है, और अपने वस्त्रों को अपने साथ रखता है ताकि वह नंगा न फिरे और लोग उसे लज्जित होते न देखें।"

[16]इस प्रकार वे दुष्टात्माएँ उन राजाओं को इकट्ठा करके उस स्थान पर ले आई, जिसे इब्रानी भाषा में हरमगिदोन कहा जाता है।

[17]इसके बाद सातवें दूत ने अपना प्याला हवा में उँड़ेल दिया। और सिंहासन से उत्पन्न हुई एक घनघोर ध्वनि मन्दिर में से यह कहती निकली, "यह समाप्त हो गया।" [18]तभी बिजली कौंधने लगी, गड़गड़ाहट और मेघों का गर्जन–तर्जन होने लगा तथा एक बड़ा भूचाल भी आया। मनुष्य के इस धरती पर प्रकट होने के बाद का यह सबसे भयानक भूचाल था। [19]वह महान् नगरी तीन टुकड़ों में बिखर गयी तथा अधर्मियों के नगर ध्वस्त हो गये। परमेश्वर ने बाबुल की महानगरी को दण्ड देने के लिए याद किया था। ताकि वह उसे अपने भभकते क्रोध की मदिरा से भरे प्याले को उसे दे दे। [20]सभी द्वीप लुप्त हो गये। किसी पहाड़ तक का पता नहीं चल पा रहा था। [21]चालीस चालीस किलो के ओले, आकाश से लोगों पर पड़ रहे थे। ओलों के इस महाविनाश के कारण लोग परमेश्वर को कोस रहे थे क्योंकि यह एक भयानक विपत्ति थी।

पशु पर बैठी स्त्री

17 इसके बाद उन सात दूतों में से जिनके पास सात कटोरे थे, एक मेरे पास आया और बोला, "आ, मैं तुझे बहुत सी नदियों के किनारे बैठी उस महान वेश्या के दण्ड को दिखाऊँगा। [2]धरती के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है और वे जो धरती पर रहते हैं वे उसकी व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गए।"

[3]फिर मैं आत्मा से भावित हो उठा और वह दूत मुझे बीहड़ वन में ले गया जहाँ मैंने एक स्त्री को लाल रंग के एक ऐसे पशु पर बैठे देखा जो परमेश्वर के प्रति अपशब्दों से भरा था। उसके सात सिर थे और दस सींग। [4]उस स्त्री ने बैजनी और लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे। वह सोने, बहुमूल्य रत्नों और मोतियों से सजी हुई थी। वह अपने

हाथ में सोने का एक कटोरा लिये हुए थी जो बुरी बातों और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ था। [5]उसके माथे पर एक प्रतीकात्मक शीर्षक था: "महान बाबुल:

वेश्याओं और धरती पर
की सभी अश्लीलताओं की जननी।"

[6]मैंने देखा कि उस स्त्री ने संत जनों और उन व्यक्तियों के लहू पीने से मतवाली हुई है। जिन्होंने यीशु के प्रति अपने विश्वास की साक्षी को लिये हुए अपने प्राण त्याग दिये।

उसे देखकर मैं बड़े अचरज में पड़ गया। [7]तभी उस दूत ने मुझसे पूछा, "तुम अचरज में क्यों पड़े हो? मैं तुम्हें इस स्त्री के और जिस पशु पर वह बैठी है, उसके प्रतीक को समझाता हूँ। सात सिरों और दस सीगों वाला यह पशु [8]जो तुमने देखा है, पहले कभी जीवित था, किन्तु अब जीवित नहीं है। फिर भी वह पाताल से अभी निकलने वाला है। और तभी उसका विनाश हो जायेगा। फिर धरती के वे लोग जिन के नाम सृष्टि के प्रारम्भ से ही जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं, उस पशु को देखकर चकित होंगे क्योंकि कभी वह जीवित था, किन्तु अब जीवित नहीं है, पर फिर भी वह आने वाला है।

[9]यही वह बिन्दू है जहाँ विवेकशील बुद्धि की आवश्यकता है। ये सात सिर, वे सात पर्वत हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है। वे सात सिर, उन सात राजाओं के भी प्रतीक हैं, [10]जिनमें से पहले पाँच का पतन हो चुका है, एक अभी भी राज्य कर रहा है, और दूसरा अभी तक आया नहीं है। किन्तु जब वह आयेगा तो उसकी यह नियति है कि वह कुछ देर ही टिक पायेगा।

[11]वह पशु जो पहले कभी जीवित था, किन्तु अब जीवित नहीं है, स्वयं आठवाँ राजा है जो उन सातों में से ही एक है, उसका भी विनाश होने वाला है।

[12]जो दस सींग तुमने देखे हैं, वे दस राजा हैं, उन्होंने अभी अपना शासन आरम्भ नहीं किया है परन्तु पशु के साथ घड़ी भर राज्य करने को उन्हें अधिकार दिया जायेगा। [13]इन दसों राजाओं का एक ही प्रयोजन है कि वे अपनी शक्ति और अपना अधिकार उस पशु को सौप दें। [14]वे मेमने के विरुद्ध युद्ध करेंगे किन्तु मेमना अपने बुलाए हुओं, चुने हुओं और अनुयायिओं के साथ उन्हें हरा देगा। क्योंकि वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।"

[15]उस दूत ने मुझसे फिर कहा, "वे नदियाँ जिन्हें तुमने देखा था, जहाँ वह वेश्या बैठी थी, विभिन्न कुलों, समुदायों, जातियों और भाषाओं की प्रतीक है। [16]वे दस सींग जिन्हें तुमने देखा, और वह पशु उस वेश्या से घृणा करेंगे तथा उससे सब कुछ छीन कर उसे नंगा छोड़ जायेंगे। वे शरीर को खा जायेंगे और उसे आग में जला डालेंगे। [17]अपने प्रयोजन को पूरा कराने के लिये परमेश्वर ने उन सब को एक मत करके, उनके मन में यही बैठा दिया है कि वे, जब तक परमेश्वर के वचन पूरे नहीं हो जाते, तब तक शासन करने का अपना अधिकार उस पशु को सौप दें। [18]वह स्त्री जो तुमने देखी थी, वह महानगरी थी, जो धरती के राजाओं पर शासन करती है।"

बाबुल का विनाश

18 इसके बाद मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश से बड़ी शक्ति के साथ नीचे उतरते देखा। उसकी महिमा से सारी धरती प्रकाशित हो उठी। [2]शक्तिशाली स्वर से पुकारते हुए वह बोला:

"वह मिट गयी, बाबुल नगरी मिट गयी।
वह दानवों का आवास बन गयी थी।
हर किसी दुष्टात्मा का वह बसेरा बन गयी थी
हर किसी घृणित पक्षी का वह बसेरा बन गयी थी!
हर किसी अपवित्र, निन्दा–योग्य पशु का।
[3] क्योंकि उसने सब जनों को व्यभिचार के क्रोध की
मदिरा पिलायी थी।
इस जगत के शासकों ने जो स्वयं जगाई थी
उससे व्यभिचार किया था।
और उसके भोग व्यय से
जगत के व्यापारी सम्पन्न बने थे।

[4]आकाश से मैंने एक और स्वर सुना जो कह रहा था:

"हे, मेरे जनो, तुम वहाँ से बाहर निकल आओ
तुम उसके पापों में कहीं साक्षी न बन जाओ;
कहीं ऐसा न हो,
तुम पर ही वे नाश गिरें जो उसके रहे थे,
[5] क्योंकि उसके पाप की ढेरी
बहुत ऊँची गगन तक है।
परमेश्वर उसके बुरे कर्मों को याद कर रहा है।
[6] हे! तुम भी तो उससे ठीक
वैसा व्यवहार करो जैसा

तुम्हारे साथ उसने किया था।
जो उसने तुम्हारे साथ किया
उससे दुगुना उसके साथ करो।
दूसरों के हेतु उसने
जिस कटोरे में मदिरा मिलाई
वही मदिरा तुम उसके
हेतु दुगनी मिलाओ।

7 क्योंकि जो महिमा और वैभव
उसने स्वयं को दिया
तुम उसी ढँग से उसे यातनाएँ और पीड़ा दो
क्योंकि वह स्वयं अपने
आप ही से कहती रही है,
'मैं अपनी नृपासन विराजित महारानी
मैं विधवा नहीं फिर शोक क्यों करूँगी?'

8 इसलिए वे नाश जो महा मृत्यु, महारोदन
और वह दुर्भिक्ष भीषण है।
उसको एक ही दिन घेर लेंगे,
और उसको जला कर भस्म कर देंगे
क्योंकि परमेश्वर प्रभु जो बहुत सक्षम है,
उसी ने इसका यह न्याय किया है।

[9]जब धरती के राजा, जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार किया और उसके भोग–विलास में हिस्सा बटाया, उसके जलने से निकलते घुआँ को देखेंगे तो वे उसके लिये रोयेंगे और विलाप करेंगे। [10]वे उसके कष्टों से डर कर वहीं से बहुत दूर ही खड़े हुए कहेंगे:

"हे! शक्तिशाली नगर बाबुल!
भयावह ओ, हाय भयानक! तेरा दण्ड
तुझको बस घड़ी भर में मिल गया।"

[11]इस धरती पर के व्यापारी भी उसके कारण रोयेंगे और विलाप करेंगे क्योंकि उनकी वस्तुएँ अब कोई और मोल नहीं लेगा, [12]वस्तुएँ–सोने की, चाँदी की, बहुमूल्य रत्न, मोती, मलमल, बैजनी, रेशमी और किरमिजी वस्त्र, हर प्रकार की सुगंधित लकड़ी हाथी दाँत की बनी हुई हर प्रकार की वस्तुएँ, अनमोल लकड़ी, काँसे लोहे और संगमरमर से बनी हुई तरह–तरह की वस्तुएँ [13]दार चीनी, गुलमेंहदी, सुगंधित धूप, रस गंध, लोहबान, मदिरा, जैतून का तेल, मैदा, गेहूँ, मवेशी, भेड़े, घोड़े और रथ, दास, हाँ, मनुष्यों की देह और उनकी आत्माएँ तक।

14 "हे बाबुल! वे सभी उत्तम वस्तुएँ,
जिनमें तेरा हृदय रमा था,
तुझे सब छोड़ चली गयी हैं
तेरा सब विलास वैभव भी आज नहीं है।
अब न कभी वे तुझे मिलेंगी।"

[15]वे व्यापारी जो इन वस्तुओं का व्यापार करते थे और उससे सम्पन्न बन गये थे, वे दूर–दूर ही खड़े रहेंगे क्योंकि वे उसके कष्टों से डर गये हैं। वे रोते–बिलखते [16]कहेंगे:

"कितना भयावह और कितना भयानक है,
महानगरी! यह उसके हेतु हुआ।
उत्तम मलमली वस्त्र पहनती थी
बैजनी किर और मिजी!
और स्वर्ण से बहुमूल्य रत्नों से
सुसज्जित मोतियो से सजती ही रही थी।'

17 और बस घड़ी भर में
यह सारी सम्पत्ति मिट गयी।"

फिर जहाज का हर कप्तान, या हर वह व्यक्ति जो जहाज से चाहे कहीं भी जा सकता है तथा सभी मल्लाह और वे सब लोग भी जो सागर से अपनी जीविका चलाते हैं, उस नगरी से दूर ही खड़े रहे [18]और जब उन्होंने उसके जलने से उठती धुआँ को देखा तो वे पुकार उठे, "इस विशाल नगरी के समान और कौन सी नगरी है?"

[19]फिर उन्होंने अपने सिर पर धूल डालते हुए रोते–बिलखते कहा,

"महानगरी! हाय यह कितना भयावह!
हाय यह कितना भयानक।
जिनके पास जलयान थे,
सिंधु जल पर सम्पत्तिशाली बन गये,
क्योंकि उसके पास सम्पत्ति थी
पर अब बस घड़ी भर में नष्ट हो गयी।

20 उसके हेतु आनन्द मनाओ
तुम हे स्वर्ग! प्रेरित! और नबियो!
तुम परमेश्वर के जनों आनन्द मनाओ!
क्योंकि प्रभु ने उसको ठीक
वैसा दण्ड दे दिया है
जैसा वह दण्ड उसने तुम्हें दिया था।

[21]फिर एक शक्तिशाली स्वर्गदूत ने चक्की के पाट जैसी एक बड़ी सी चट्टान उठाई और उसे सागर में फेंकते हुए कहा,

"महानगरी! हे बाबुल महानगरी!
ठीक ऐसे ही तू गिरा दी जायेगी
तू फिर लुप्त हो जायेगी,
और तू नहीं मिल पायेगी।

[22] तुझमें फिर कभी नहीं वीणा बजेगी,
और गायक कभी भी स्तुति पाठ न कर पायेंगे।
वंशी कभी नहीं गूँजेंगी
कोई भी तुरही तान न सुनेगा,
तुझमें अब कोई कला शिल्पी कभी न मिलेगा
अब तुझमें कोई भी कला न बचेगा!
अब चक्की पीसने का स्वर
कभी भी ध्वनित न होगा।

[23] दीप की किंचित किरण
तुझमें कभी भी न चमकेगी,
अब तुझमें किसी वर की किसी वधु की
मधुर ध्वनि कभी न गुंजेगी।
तेरे व्यापारी जगती के महा मनुज थे
तेरे जादू ने सब जातों को भरमाया

[24] नगरी ने नबियों का संत जनों का
उन सब ही का लहू बहाया था।
इस धरती पर जिनको बलि
पर चढ़ा दिया था।"

स्वर्ग में परमेश्वर की स्तुति

19 इसके पश्चात् मैंने भीड़ का सा एक ऊँचा स्वर सुना। लोग कह रहे थे:

"हल्लिलूय्याह!
परमेश्वर की जय हो, जय हो!
महिमा और सामर्थ्य सदा हो!

[2] उसके न्याय सदा सच्चे हैं, धर्म युक्त हैं,
उस महती वेश्या का उसने न्याय किया है
जिसने अपने व्यभिचार से
इस धरती को भ्रष्ट किया था
जिनको उसने मार दिया उन दास जनों की
हत्या का प्रतिशोध हो चुका।"

[3] उन्होंने यह फिर गाया:
"हल्लिलूय्याह!
जय हो उसकी उससे धुआँ युग युग उठेगा।"

[4]फिर चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर को झुक कर प्रणाम किया और उसकी उपासना करते हुए गाने लगे:

"आमीन!
हल्लिलूय्याह"
जय हो उसकी

[5]स्वर्ग से फिर एक आवाज आयी जो कह रही थी:

"हे उसके सेवको,
तुम सभी हमारे परमेश्वर का
स्तुति गान करो तुम चाहे छोटे हो,
चाहे बड़े बने हो, जो उससे डरते रहते हो।"

[6]फिर मैंने एक बड़े जन समुद्र का सा शब्द सुना जो एक विशाल जल–प्रवाह और मेघों के शक्तिशाली गर्जन–तर्जन जैसा था। लोग गा रहे थे:

"हल्लिलूय्याह!
उसकी जय हो,
क्योंकि हमारा प्रभु परमेश्वर!
सर्वशक्ति सम्पन्न राज्य कर रहा है।

[7] सो आओ, खुश हो–हो कर आनन्द मनाएँ
आओ, उसको महिमा देवें!
क्योंकि अब मेमने के ब्याह का समय आ गया
उसकी दुल्हन सजी–धजी तैयार हो गयी

[8] उसको अनुमति मिली
स्वच्छ धवल पहन ले वह निर्मल मलमल।"

(यह मलमल संत जनों के धर्ममय कार्यों का प्रतीक है।)

[9]फिर वह मुझसे कहने लगा, "लिखो वे धन्य हैं जिन्हें इस विवाह भोज में बुलाया गया है।" उसने फिर कहा, "ये परमेश्वर के सत्य वचन हैं।"

[10]और मैं उसकी उपासना करने के लिये उसके चरणों में गिर पड़ा। किन्तु वह मुझसे बोला, "सावधान! ऐसा मत कर। मैं तो तेरे और तेरे बंधुओं के साथ परमेश्वर का संगी सेवक हूँ जिन पर यीशु के द्वारा साक्षी दिये गये सन्देश के प्रचार का दायित्व है। परमेश्वर की उपासना कर क्योंकि यीशु के द्वारा प्रमाणित सन्देश इस बात का प्रमाण है कि उनमें एक नबी की आत्मा है।"

सफ़ेद घोड़े का सवार

[11]फिर मैंने स्वर्ग को खुलते देखा और वहाँ मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था। घोड़े का सवार 'विश्वसनीय' और 'सत्य' कहलाता था क्योंकि न्याय के साथ वह निर्णय करता है और युद्ध करता है। [12]उसकी आँखें ऐसी थीं मानों अग्नि की लपट हो। उसके सिर पर बहुत से मुकुट थे। उस पर एक नाम लिखा था, जिसे उसके अतिरिक्त कोई और नहीं जानता। [13]उसने ऐसा वस्त्र पहना था जिसे लहू में डुबाया गया था। उसे नाम दिया गया था–"परमेश्वर का वचन।" [14]सफेद घोड़ों पर बैठी स्वर्ग की सेनाएँ उसके पीछे पीछे चल रही थीं। उन्होंने शुद्ध श्वेत मलमल के वस्त्र पहने थे। [15]अधर्मियों पर प्रहार करने के लिये उसके मुख से एक तेज धार की तलवार बाहर निकल रही थी। वह उन पर लोहे के दण्ड से शासन करेगा और सर्वशक्ति–सम्पन्न परमेश्वर के प्रचण्ड क्रोध की धानी में वह अंगूरों का रस निचोड़ेगा। [16]उसके वस्त्र तथा उसकी जाँघ पर लिखा था:

राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु

[17]इसके बाद मैंने देखा कि सूर्य के ऊपर एक स्वर्गदूत खड़ा है। उसने ऊँचे आकाश में उड़ने वाले सभी पक्षियों से ऊँचे स्वर में कहा, "आओ, परमेश्वर के महा भोज के लिये एकत्र हो जाओ [18]ताकि तुम शासकों सेनापतियों प्रसिद्ध पुरुषों, घोड़ों और उनके सवारों का माँस खा सको। और सभी लोगों स्वतन्त्र व्यक्तियों, सेवकों छोटे लोगों और महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की देहों को खा सको।"

[19]फिर मैंने उस पशु को और धरती के राजाओं को देखा। उनके साथ उनकी सेना थी। वे उस घुड़सवार और उसकी सेना से युद्ध करने के लिये एक साथ आ जुटे थे। [20]पशु को घेर लिया गया था। उसके साथ वह झूठा नबी भी था जो उसके सामने चमत्कार दिखाया करता था और उनको छला करता था जिन पर उस पशु की छाप लगी थी और जो उसकी मूर्ति की उपासना किया करते थे। उस पशु और झूठे नबी दोनों को ही जलते गंधक की भभकती झील में जीवित ही डाल दिया गया था। [21]घोड़े के सवार के मुख से जो तलवार निकल रही थी, बाकी के सैनिक उससे मार डाले गये फिर पक्षियों ने उनके शवों के माँस को भर पेट खाया।

हज़ार वर्ष

20 फिर आकाश से मैंने एक स्वर्गदूत को नीचे उतरते देखा। उसके हाथ में पाताल की चाबी और एक बड़ी साँकल थी। [2]उसने उस पुराने महा सर्प को पकड़ लिया जो दैत्य यानी शैतान है फिर एक हजार वर्ष के लिये उसे साँकल से बाँध दिया। [3]तब उस स्वर्गदूत ने उसे महा गर्त में धकेल कर ताला लगा दिया और उस पर कपाट लगा कर मुहर लगा दी ताकि जब तक हजार साल पूरे न हो जायें वह लोगों को धोखा न दे सके। हजार साल पूरे होने के बाद थोड़े समय के लिये उसे छोड़ा जाना है।

[4]फिर मैंने कुछ सिंहासन देखे जिन पर कुछ लोग बैठे थे। उन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था। और मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा जिनके सिर, उस सत्य के कारण, जो यीशु द्वारा प्रमाणित है, और परमेश्वर के संदेश के कारण काटे गये थे, जिन्होंने उस पशु या उसकी प्रतिमा की कभी उपासना नहीं की थी। तथा जिन्होंने अपने माथों पर या अपने हाथों पर उसका संकेत चिह्न धारण नहीं किया था। वे फिर से जीवित हो उठे और उन्होंने मसीह के साथ एक हजार वर्ष तक राज्य किया। [5](शेष लोग हज़ार वर्ष पूरे होने तक फिर से जीवित नहीं हुए।) यह पहला पुनरुत्थान है। [6]वह धन्य है और पवित्र भी है जो पहले पुनरुत्थान में भाग ले रहा है। इन व्यक्तियों पर दूसरी मृत्यु को कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। बल्कि वे तो परमेश्वर और मसीह के अपने याजक होंगे और उसके साथ एक हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे।

[7]फिर एक हज़ार वर्ष पूरे हो चुकने पर शैतान को उसके बंदीगृह से छोड़ दिया जायेगा। [8]और वह समूची धरती पर फैली जातियों को छलने के लिये निकल पड़ेगा। वह गोग और मागोग को छलेगा। वह उन्हें युद्ध के लिये एकत्र करेगा। वे उतने ही अनगिनत होगें जितने समुद्र तट के रेत–कण। [9]शैतान की सेना समूची धरती पर फैल जायेगी और वे संत जनों के डेरे और प्रिय नगरी को घेर लेंगे। किन्तु आग उतरेगी और उन्हें निगल जाएगी, [10]इस के पश्चात् उस शैतान को जो उन्हें छलता रहा है भभकती गंधक की झील में फेंक दिया जायेगा जहाँ वह पशु और झूठे नबी, दोनों ही डाले गये हैं। सदा–सदा के लिये उन्हें रात दिन तड़पाया जायेगा।

संसार के लोगों का न्याय

[11]फिर मैंने एक विशाल श्वेत सिंहासन को और उसे जो उस पर विराजमान था, देखा। उसके सामने से धरती और आकाश भाग खड़े हुए। उनका पता तक नहीं चल पाया। [12]फिर मैंने छोटे और बड़े मृतकों को देखा। वे सिंहासन के आगे खड़े थे। कुछ पुस्तकें खोली गयीं। फिर एक और पुस्तक खोली गयी। यही 'जीवन की पुस्तक है। उन कर्मों के अनुसार जो पुस्तकों में लिखे गये थे, मृतकों का न्याय किया गया। [13]जो मृतक सागर में थे, उन्हें सागर ने दे दिया, तथा मृत्यु और पाताल ने भी अपने अपने मृतक सौंप दिये। प्रत्येक का न्याय उसके कर्मो के अनुसार किया गया। [14]इसके बाद मृत्यु को और पाताल को आग की झील में झोंक दिया गया। यह आग की झील ही दूसरी मृत्यु है। [15]यदि किसी का नाम 'जीवन की पुस्तक' में लिखा नहीं मिला, तो उसे भी आग की झील में धकेल दिया गया।

नया यरूशलेम

21 फिर मैंने एक नया स्वर्ग और नयी धरती देखी। क्योंकि पहला स्वर्ग और पहली धरती लुप्त हो चुके थे। और वह सागर भी अब नहीं रहा था। [2]मैंने यरुशलेम की वह पवित्र नगरी भी आकाश से बाहर निकल कर परमेश्वर की ओर से नीचे उतरते देखी। उस नगरी को ऐसे सजाया गया था जैसे मानों किसी दुल्हन को उसके पति के लिये सजाया गया हो। [3]तभी मैंने आकाश में एक ऊँची ध्वनि सुनी। वह कह रही थी, "देखो अब परमेश्वर का मन्दिर मनुष्यों के बीच है और वह उन्हीं के बीच घर बनाकर रहा करेगा। वे उसकी प्रजा होंगे और स्वयं परमेश्वर उनका परमेश्वर होगा। [4]उनकी आँख से वह हर आँसू पोंछ डालेगा। और वहाँ अब न कभी मृत्यु होगी, न शोक के कारण कोई रोना-धोना और नहीं कोई पीड़ा। क्योंकि वे सब पुरानी बातें अब समाप्त हो चुकी हैं।"

[5]इस पर जो सिंहासन पर बैठा था, वह बोला, "देखो, मैं सब कुछ को नया किये दे रहा हूँ।" उसने फिर कहा, "इसे लिख ले क्योंकि ये वचन विश्वास करने योग्य हैं और सत्य हैं।"

[6]वह मुझसे फिर बोला, "सब कुछ पूरा हो चुका है। मैं ही अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ। मैं ही आदि हूँ और मैं ही अन्त हूँ।" जो भी प्यासा है मैं उसे जीवन-जल के स्रोत से सेंत-मेत में मुक्त भाव से जल पिलाऊँगा। [7]जो विजयी होगा, उस सब कुछ का मालिक बनेगा। मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा। [8]किन्तु कायरों अविश्वासियों, दुर्बुद्धियों, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूटोना करने वालों मूर्ति-पूजकों और सभी झूठ बोलने वालों को भभकती गंधक की जलती झील में अपना हिस्सा बँटाना होगा। यही दूसरी मृत्यु है।"

[9]फिर उन सात दूतों में से, जिनके पास सात अंतिम विनाशों से भरे कटोरे थे, एक आगे आया और मुझसे बोला, "यहाँ आ। मैं तूझे वह दुल्हिन दिखा दूँ जो मेमने की पत्नी है।" [10]अभी मैं आत्मा के आवेश में ही था कि वह मुझे एक विशाल और ऊँचे पर्वत पर ले गया। फिर उसने मुझे यरुशलेम की पवित्र नगरी का दर्शन कराया। वह परमेश्वर की ओर से आकाश से नीचे उतर रही थी।

[11]वह परमेश्वर की महिमा से मण्डित थी। वह सर्वथा निर्मल यशब नामक महामूल्यवान रत्न के समान चमक रही थी। [12]नगरी के चारों ओर एक विशाल ऊँचा परकोटा था जिसमें बारह द्वार थे। उन बारहों द्वारों पर बारह स्वर्गदूत थे। तथा बारहों द्वारों पर इस्राएल के बारह कुलों के नाम अंकित थे। [13]इनमें से तीन द्वार पूर्व की ओर थे, तीन द्वार उत्तर की ओर, तीन द्वार दक्षिण की ओर और तीन द्वार पश्चिम की ओर थे। [14]नगर का परकोटा बारह नीवों पर बनाया गया था तथा उन पर मेमने के बारह प्रेरितों के नाम अंकित थे।

[15]जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था, उसके पास सोने से बनी नापने की एक छड़ी थी जिससे वह उस नगर को, उसके द्वारों को और उसके परकोटे को नाप सकता था। [16]नगर को वर्गाकार में बसाया गया था। यह जितना लम्बा था उतना ही चौड़ा था। उस स्वर्गदूत ने उस छड़ी से उस नगरी को नापा। वह कोई बारह हज़ार स्टोडिया पायी गयी। उसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई एक जैसी थी। [17]स्वर्गदूत ने फिर उसके परकोटे को नापा। वह कोई एक सौ चवालीस हाथ था। उसे मनुष्य के हाथों की लम्बाई से नापा गया था जो हाथ स्वर्गदूत का भी हाथ है। [18]नगर का परकोटा यशब नामक रत्न का बना था तथा नगर को काँच के समान चमकते शुद्ध सोने से बनाया गया था। [19]नगर के परकोटे की नीवें हर प्रकार के बहुमूल्य रत्नों से सजाई गयी थी। नींव का

पहला पत्थर यशब का बना था, दूसरी नीलम से, तीसरी स्फटिक से, चौथी पन्ने से, [20]पाँचवीं गोमेद से, छठी मानक से, सातवीं पीत मणि से, आठवीं पेरोज से, नवीं पुखराज से, दसवीं लहसनिया से, ग्यारहवीं धूम्रकांत से, और बारहवीं चन्द्रकाँत मणि से बनी थी। [21]बारहों द्वार बारह मोतियों से बने थे, हर द्वार एक–एक मोती से बना था। नगर की गलियाँ स्वच्छ काँच जैसे शुद्ध सोने की बनी थीं।

[22]नगर में मुझे कोई मन्दिर दिखाई नहीं दिया। क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना ही उसके मन्दिर थे। [23]उस नगर को किसी सूर्य या चन्द्रमा की कोई आवश्यकता नहीं है कि वे उसे प्रकाश दें; क्योंकि वह तो परमेश्वर के तेज से आलोकित था। और मेमना ही उस नगर का दीपक है। [24]सभी जातियों के लोग इसी दीपक के प्रकाश के सहारे आगे बढ़ेंगे। और इस धरती के राजा अपनी भव्यता को इस नगर में लायेंगे। [25]दिन के समय इसके द्वार कभी बंद नहीं होंगे और वहाँ रात तो कभी होगी ही नहीं। [26]जातियों के कोष और धन सम्पत्ति को उस नगर में लाया जायेगा। [27]कोई अपवित्र वस्तु तो उसमें प्रवेश तक नहीं कर पायेगी और न ही लज्जापूर्ण कार्य करने वाले और झूठ बोलने वाले उसमें प्रवेश कर पाएँगे उस नगरी में तो प्रवेश बस उन्हीं को मिलेगा जिनके नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।

22 इसके पश्चात् उस स्वर्गदूत ने मुझे जीवन देने वाले जल की एक नदी दिखाई। वह नदी स्फटिक की तरह उज्ज्वल थी। वह परमेश्वर और मेमने के सिंहासन के निकलती हुई [2]नगर की गलियों के बीच से होती हुई बह रही थी। नदी के दोनों तटों पर जीवन वृक्ष उगा था। उन पर हर साल बारह फसल लगा करतीं थीं। इसके प्रत्येक वृक्ष पर प्रतिमास एक फसल लगती थी तथा इन वृक्षों की पत्तियाँ अनेक जातियों को निरोग करने के लिये थीं। [3]वहाँ किसी प्रकार का कोई अभिशाप नहीं होगा। परमेश्वर और मेमने का सिंहासन वहाँ बना रहेगा। तथा उसके सेवक उसकी उपासना करेंगे [4]तथा उसका नाम उनके माथों पर अंकित रहेगा। [5]वहाँ कभी रात नहीं होगी और न ही उन्हें सूर्य के अथवा दीपक के प्रकाश की कोई आवश्यकता रहेगी। क्योंकि उन पर प्रभु परमेश्वर अपना प्रकाश डालेगा और वे सदा सदा शासन करेंगे।

[6]फिर उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “ये वचन विश्वास करने योग्य और सत्य हैं। प्रभु ने जो नबियों के आत्माओं का परमेश्वर है, अपने सेवकों को, जो कुछ शीघ्र ही घटने वाला है, उसे जताने के लिये अपना स्वर्गदूत भेजा है।”

[7]“सुनो! मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ। धन्य हैं वह जो इस पुस्तक में दिये गये उन वचनों का पालन करते हैं जो भविष्यवाणी हैं।” [8]मैं यूहन्ना हूँ। मैंने ये बातें सुनी और देखी हैं। जब मैंने ये बातें देखी सुनी तो उस स्वर्गदूत के चरणों में गिर कर मैंने उसकी उपासना की जो मुझे ये बातें दिखाया करता था। [9]उसने मुझसे कहा, “सावधान, तू ऐसा मत कर। क्योंकि मैं तो तेरा, तेरे बंधु नबियों का जो इस पुस्तक में लिखे वचनों का पालन करते हैं, एक सह–सेवक हूँ। बस परमेश्वर की ही उपासना कर।”

[10]उसने मुझसे फिर कहा, “इस पुस्तक में जो भविष्यवाणियाँ दी गयी हैं, उन्हें छुपा कर मत रख क्योंकि इन बातों के घटित होने का समय निकट ही है। [11]जो बुरा करते चले आ रहे हैं, वे बुरा करते रहें। जो अपवित्र बने हुए हैं, वे अपवित्र ही बने रहें। जो धर्मी हैं, वे धर्मी ही करते रहें। जो पवित्र हैं वे पवित्र बने रहें।”

[12]“देखो, मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ और अपने साथ तुम्हारे लिये प्रतिफल ला रहा हूँ। जिसने जैसे कर्म किये हैं, मैं उन्हें उसके अनुसार ही दूँगा। [13]मैं ही अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ। मैं ही पहला हूँ और मैं ही अन्तिम हूँ।” मैं ही आदि और मैं ही अन्त हूँ।

[14]“धन्य हैं वह जो अपने वस्त्रों को धो लेते हैं। उन्हें जीवन–वृक्ष के फल खाने का अधिकार होगा। वे द्वार से होकर नगर में प्रवेश करने के अधिकारी होंगे। [15]किन्तु ‘कुत्ते’, जादू–टोना करने वाले, व्यभिचारी, मूर्ति–पूजक या प्रत्येक वह जो झूठ पर चलता है और झूठ को प्रेम करता है, बाहर ही पड़े रहेंगे।”

[16]“स्वयं मुझ यीशु ने तुम लोगों के लिये और कलीसियाओं के लिये, इन बातों की साक्षी देने को अपना स्वर्गदूत भेजा है। मैं दाऊद के परिवार का वंशज हूँ। मैं भोर का दमकता हुआ तारा हूँ।”

[17]आत्मा और दुल्हिन कहती है “आ!” और जो इसे सुनता है, वह भी कहे, “आ” और जो प्यासा हो वह भी आये और जो चाहे वह भी इस जीवन दायी जल के उपहार को मुक्त भावसे गृहण करे।

[18]मैं शपथ पूर्वक उन व्यक्तियों के लिये घोषणा कर रहा हूँ जो इस पुस्तक में लिखे भविष्यवाणी के वचनों को सुनते हैं: उनमें से यदि कोई भी उनमें कुछ भी और जोड़ेगा तो इस पुस्तक में लिखे विनाश परमेश्वर उस पर ढायेगा। [19]और यदि नबियों की इस पुस्तक में लिखे वचनों में से कोई कुछ घटायेगा तो परमेश्वर इस पुस्तक में लिखे जीवन–वृक्ष और पवित्र नगरी में से उसका भाग उससे छीन लेगा।

[20]यीशु जो इन बातों का साक्षी है, वह कहता है, "हाँ! मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ।"

आमीन। हे प्रभु यीशु आ!

[21]प्रभु यीशु का अनुग्रह सबके साथ रहे! आमीन।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

These Scriptures:
- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html